

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली



क्रम संख्या

काय नं०

तपह

6203

030. C कालिका

बृहत् हिन्दी कोश

बृहत् हिन्दी कोश

शब्दसंख्या १,३८,०००

सम्पादक

कालिका प्रमाद

राजवल्लभ सहाय

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

वाराणसी

ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य ३०)

प्रथम संस्करण, रथयात्रा, संवत् २००९
द्वितीय संस्करण, रामनवमी, संवत् २०१३
तृतीय संस्करण, ज्येष्ठ, संवत् २०२०

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी १.

मुद्रक—ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस) ६०२८-१५

तृतीय संस्करणके संबंधमें

“बृहत् हिंदी कोश”का तृतीय संस्करण हिंदी-जगतके समक्ष प्रस्तुत है। इसने थोड़े समयके बाद इसका नवीन संस्करण प्रकाशित होना हम बातका चांतक है कि इस कोशको अन्य कोशोंकी अपेक्षा अधिक प्रियता प्राप्त है। इससे हमारा उत्साह बढ़ा है और इसीलिए हमने इसे पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगी एवं आधुनिकतम बनानेकी चेष्टा की है। इस संस्करणमें पिछले संस्करणोंकी बहुत-सी त्रुटियोंका आनुपूर्वी परिमार्जन कर दिया गया है; शब्दोंके अनेक नये अर्थ बढ़ा दिये गये हैं। द्वितीय संस्करणके परिशिष्ट ३ में दिये गये शब्द अर्थ सहित मूलमें यथास्थान निहित कर दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त लगभग दो हजार नये शब्द भी बढ़ाये गये हैं। उनमें कुछ तो यथास्थान बढ़ाये गये हैं और कुछ शब्द परिशिष्ट में। इस तरह अब इसमें १,३६,००० के स्थानपर १,३८,००० शब्द आ गये हैं। पाठक ही इसकी अच्छाई-बुराईके निर्णायक होंगे।

इच्छा न रहने तुल्य भी कागजकी अत्यधिक महंगाई, दफ्ती, जिल्दबंदीके कपड़े आदिकी मूल्यवृद्धिके कारण इस कोशका मूल्य बढ़ानेके लिए विषदा होना पड़ा है। इस संस्करणमें नये शब्दोंका चयन करनेमें श्री विद्याभास्करने विशेष परिश्रम किया है; तथा श्री श्रीधरकर शुक्लने मूल ग्रंथन करनेमें सहायता की है, इसके लिए हम इनको हार्दिक धन्यवाद देने हैं।

—प्रकाशक

द्वितीय संस्करणकी भूमिका

“बृहत् हिंदी कोश”का यह द्वितीय संस्करण पाठकोंके सामने प्रस्तुत करनेमें हमें हार्दिक प्रसन्नता होती है। इसके प्रथम संस्करणका जैसा स्वागत-सत्कार हिंदी-जगत्में हुआ है, उससे हमें घबेरा बल मिला है और अब हम तीन-चार वर्षोंके भीतर ही द्विगुणित उत्साहमें इसका दूसरा संस्करण लेकर हिंदी-प्रेमियोंका संघामें उपस्थित हो रहे हैं। इसमें आवश्यक संशोधन, परिवर्द्धन करनेमें हमने अपनी ओरसे भरसक कोई कोर-कसर नहीं होने दी है, फिर भी हम नहीं कह सकते कि हम इस प्रयास में कहाँतक सफल हो सके हैं। विवेकशील पाठक ही इसके वास्तविक निर्णायक हो सकते हैं, अतः उन्हींके ऊपर हमने मूल्यांकनका भार छोड़ देना हमारे लिए अलम् होगा।

प्रथम संस्करणकी ही तरह हम आकृतिमें भी प्रत्ययोंसे बने संस्कृतके शब्द मूल शब्दसे पृथक् रखे गये हैं किंतु अन्य भाषाओंके शब्द, जहाँ प्रत्ययोंके मिलनेपर उनके मूल रूपमें कोई परिवर्तन नहीं होता, मूल शब्दके साथ रख दिये गये हैं। इसी तरह जिन समस्त पदोंमें संधि के कारण विकार हो जाता है वे मूलशब्दसे पृथक् रखे गये हैं। इसका

कारण यह है कि जो लोग संचिके नियमोंसे अपरिचित हैं उन्हें उनका रूप पहचाननेमें कठिनाई हो सकती है। इसी सिद्धांतके अनुसार हमने कितने ही समस्त पद जो पहले मूलशब्दके साथ रखे गये थे, इस संस्करणमें पृथक् रखे हैं जिससे संस्कृत न जाननेवालोंके लिए भी उन्हें पहचानने या हूँदनेमें असुविधा न हो।

कभी-कभी समस्त पदका रूप सरसरी तौरसे देखनेपर साफ-साफ समझमें नहीं आता, अतः जब ऐसा कोई शब्द अपने स्थानपर अर्थात् क्रममें न मिले, तब पाठकोंको निराशा होनेके बजाय एक बार यह विचार कर लेनेका प्रयत्न करना चाहिये कि वह किसी अन्य शब्दसे तो नहीं बना है। ऐसा करनेसे उचित स्थानपर उक्त शब्दको हूँद निकालनेमें कुछ भी कठिनाई न होगी। लाचार, पाबंद, अरघट, कमजोर, दरकार, दुविधा, नटसाल, पलोपेश, सकरपाळा आदि ऐसे ही शब्द हैं जो क्रममें न मिलकर इन शब्दोंके साथ देख पड़ेंगे :—ला, पा, अर, कम, दर, दु, नट, पस तथा सकर।

समूचा कोश फिरसे दोहराया गया है और गद्य-पद्यकी कितनी ही अन्य पुस्तकें पद-पदकर छूटे हुए शब्दों तथा अर्थोंका संकलन किया गया है। ऐसे हजारों शब्द मूल भागमें ही समाविष्ट कर दिये गये हैं किंतु जो वहाँ नहीं दिये जा सके वे परिशिष्ट संख्या ३ में रखे गये हैं। इसके सिवा हम संस्करणकी उपयोगिता बढ़ानेकी दृष्टिसे हमने विभिन्न कवियों तथा लेखकोंकी रचनाओंसे हजारों उदाहरण भी यथास्थान दे दिये हैं जिससे कठिन तथा अप्रचलितसे प्रतीत होनेवाले शब्दोंका अर्थ और उनका प्रयोग समझनेमें जिज्ञासु पाठकोंको आसानी हो।

इसी तरह परिशिष्ट दोमें दिये हुए अंग्रेजीके पारिभाषिक शब्दोंकी भी संख्या काफी बढ़ा दी गयी है। प्रथम संस्करणमें यह परिशिष्ट कुल ३६ पृष्ठोंमें समाप्त हुआ था और अब इसका विस्तार ५९ पृष्ठोंका हो गया है। पहिले लगभग ३३०० पारिभाषिक शब्दोंके पर्याय दिये गये थे, अब इनकी संख्या कांई ५६५० तक पहुँच गयी है। इसीके परिणाम-स्वरूप प्रथम संस्करणमें जिन पारिभाषिक शब्दोंकी हिन्दीमें व्याख्या दी गयी थी (परिशिष्ट नम्बर एक), उनकी संख्या भी हम संस्करणमें काफी बढ़ा देने परी है।

इस संस्करणकी एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें साहित्य, राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रोंके कतिपय प्रसिद्ध व्यक्तियों—नेहरूजी, गोखले, रानी बेमेंट, बिस्माक, स्टालिन, जगदीशचंद्र बसु, बंकिमचंद्र, स्काट, होमर, टाल्सटाय आदि—के नाम और उनका संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है। आशा है, इसमें हमारे कोशकी सहायता लेनेवाले हिन्दीके पाठक विशेष लाभ उठा सकेंगे।

इस प्रकार इस संस्करणमें कुल मिलाकर दो सौ पृष्ठोंकी वृद्धि हो गयी है और शब्द संख्या भी १ लाख २६ हजारसे बढ़कर लगभग १ लाख ३६ हजार हो गयी है, फिर भी प्रकाशकोंका इरादा इसके मूल्यमें वृद्धि करनेका नहीं था। किन्तु काराजके दाममें तथा जिन्द-बंदीकी पीड़ाके मूल्यमें भी वृद्धि हो जानेके कारण उनके लिए इसका मूल्य बढ़ाना आवश्यक हो गया। इसका उन्हें आन्तरिक खेद है।

इस संस्करणके प्रुफ शोधनमें हमारे सहकारी तथा सहयोगी श्री श्रीशंकर शुक्ल तथा श्री मार्कंडेय शुक्लने विशेष परिश्रम किया है, इसके लिए हम उन्हें हृदयसे धन्यवाद देते हैं।

रामनवर्मा,
संवत् २०१३ }

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

प्रथम संस्करणकी भूमिका

इस कोशके निर्माणका कार्य आजसे कई वर्ष पहले आरम्भ हुआ था। हिंदीमें यद्यपि नागरी-प्रचारिणी सभाका बड़ा कोश “हिंदी शब्दसागर” निकल चुका था, फिर भी महार्घ होनेके कारण एक तो वह सर्वसाधारणके लिए उपलब्ध नहीं हो सकता था; दूसरे, उसकी सभी प्रतियाँ प्रकाशित होनेके कुछ ही वर्षोंके भीतर समाप्त हो चुकी थीं और उसका दूसरा संस्करण निकलनेकी कोई संभावना न थी। इसके सिवा यह भी अनुभव किया गया कि ‘शब्दसागर’का निर्माण जिम्मे समय किया गया था तबसे हिंदीमें कितने ही नये-नये शब्दोंका समावेश होता रहा है और संस्कृतके अधिकाधिक शब्दोंके प्रयोगकी ओर भी छायावादी कवियों तथा अन्य साहित्यिकोंका प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इन सब बातोंकी ध्यानमें रखते हुए हिंदीके ऐसे नये कोशकी आवश्यकता प्रतीत हुई जो आकार-प्रकारमें “शब्दसागर” जैसा भारी-भरकम न होते हुए भी अपने आपमें परिपूर्ण एवं सर्वोपयोगी हो, जिसमें हिंदीमें प्रयुक्त किये गये वा प्रयुक्त हो सकनेवाले प्रायः सभी शब्द और उनसे बने मुहावरे आदि आ गये हों, फिर भी जो यथासंभव एक ही जिल्दमें समाप्त हो सके। “बृहत् हिंदी कोश” का प्रकाशन इसी परिकल्पनाका परिणाम है।

इनमें लगभग १ लाख २६ हजार शब्द आये हैं, जिनमें हिंदीके अन्य किन्हीं भी कोशमें मन्विष्ट नहीं किये जा सके हैं।

प्रत्ययान्त शब्द

कार्यारम्भ होनेके बाद शब्दोंके चुनाव और उनके रखनेके ढंगमें किंचित् परिवर्तन करना पड़ा। पहले प्रत्ययोंके योगमें बननेवाले शब्द भी समस्त पदोंकी तरह मूल शब्दके साथ ही रखे गये थे (यह रूप ‘मिलनसार’ शब्दमें देखा जा सकता है जो भूलसे पूर्वरूपमें ही रह गया है,) और प्रत्ययान्त तथा समस्त पदोंमें संधि आदिके कारण होनेवाले विकारोंकी ओर संकेत-भर कर दिया गया था। यह पद्धति आकार छोटा रखनेके विचारसे तो ठीक थी, पर इससे पाठकोंका कोशका उपयोग करनेमें असुविधा और शब्दोंका रूप समझनेमें भ्रम होनेकी संभावना देखकर संस्कृतके सारे प्रत्ययान्त शब्द अलग रखे गये और अन्य भाषाओंके शब्दोंके साथ केवल ऐसे प्रत्यय रखने दिये गये जिनके मिलनेपर शब्दके मूल रूपमें कोई परिवर्तन नहीं होता। (‘ता’ और ‘त्व’ प्रत्ययोंमें बननेवाले शब्द कम ही दिये गये हैं।) संस्कृतके प्रत्ययान्त शब्दोंका अलग रखनेका एक कारण और था—समास-पद्धतिका प्रयोग। मूल और प्रत्ययान्त शब्दोंसे बने हुए समस्त पद अगर साथ-साथ दिये जाते तो उन्हें कममें रखने और पाठकोंका उन्हें ढूँढ़नेमें कम विघ्न न होना। श्री मोनियर विलियम्सने अपने कोशमें प्रत्ययान्त शब्द प्रायः मूल शब्दके साथ ही रखे हैं और अगर प्रत्ययान्त शब्दसे बननेवाले समासोंकी संख्या अधिक नहीं रही है तो उन्हें मूल शब्दसे बने हुए समासोंके सिलमिलेमें ही रख दिया है। अंग्रेजीमें एक ही आकारके तरह-तरहके टाइट होनेके कारण दोनों प्रकारके शब्दोंमें अंतर करना आसान है, पर दुर्भाग्यवश हम हिंदीवालोंके लिए यह स्थिति अभी नहीं आयी है।

समस्त पद

समास-पद्धतिका सहारा लेते हुए भी सारे समस्त पद मूल शब्दके साथ ही नहीं रखे गये हैं। जिन समस्त पदोंमें संधिके कारण विकार हुआ है वे मूल शब्दसे टूटकर रखे गये हैं—

समान विकारवाले समस्त पद अल्पसंख्यक होनेपर स्वतंत्र रूपमें और बहुसंख्यक होनेपर विकृत पूर्वपद स्वतंत्र शब्दके रूपमें रखकर उत्तरपद साथ रख दिये गये हैं। इस प्रकार मूल शब्दके साथ केवल ऐसे समस्त पद मिलेंगे जिनके रूपमें कोई विकार नहीं हुआ है। विकारवाले शब्द इस कारण अलग कर दिये गये हैं कि ऐसा न करनेपर संधिके नियमोंसे अपरिचित व्यक्तियोंको समास बनानेमें दिक्कत होना—‘विद्वस्’ शब्दमें ‘जन’ जोड़नेसे ‘विद्वज्जन’ कैसे बन गया, यह समझना उनके लिए सरल न होता।

समस्त पदों और मुहावरोंमें मूल शब्दके लिए डैश (—) का प्रयोग किया गया है और जहाँ समस्त पदसे पुनः समास बनानेकी आवश्यकता पड़ी है वहाँ मध्यवर्ती पदके लिए छान्ध (०) रख दिया गया है। ‘जल’ शब्दसे बने हुए ‘जलदकाल’ पर ध्यान देनेपर यह नियम स्पष्ट हो जायगा। मुहावरोंमें मूल शब्दके रूपमें परिवर्तन होनेपर या तो पूरा शब्द दे दिया गया है या परिवर्तनका संकेत कर दिया गया है।

इतर भाषाओंके शब्दोंके साथ भी समास-पद्धति बरनी गयी है, पर यह पद्धति अभी बर्हीतक सीमित रखी गयी है जहाँतक पूर्व या उत्तरपदका रूप इतना नहीं बिगड़ा है कि वह जल्द समझमें न आ सके। उदाहरणके रूपमें ‘तिरमठ’ और ‘तिरपन’ शब्द ले लीजिये। पहलेमें पूर्व और उत्तर—दोनों पदोंका रूप आसानीसे समझमें आ जाता है, पर दूसरेमें उत्तरपदका रूप उतना स्पष्ट नहीं है, इसलिए ‘तिरमठ’ तो हमने समस्त पदके रूपमें रखा है और ‘तिरपन’ स्वतंत्र रूपमें। उचित तो यह हुआ होता कि ‘तिरपन’ समस्त और स्वतंत्र—दोनों रूपोंमें रखा गया होता, पर कलेबर-बुद्धिके भयसे ऐसा नहीं किया जा सका। पाठकोंसे अनुरोध है कि समस्त पद मूल शब्दके साथ न मिलनेपर क्रममें भी देखनेका कष्ट करें। हिन्दी कोशके लिए यह पद्धति बिल्कुल नयी और यह पहला ही प्रयास है, इसलिए इसमें इस तरहकी कुछ त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। आशा है, यह पद्धति विद्वानोंको पसंद आयेगी।

विभिन्न भाषाओंके स्मरूप शब्दोंके अर्थ साथ ही रखे गये हैं, भाषा-संबंधी अंतर भाषा-परिचायक चिह्न द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है, पर अगर ऐसे शब्दोंमें विभिन्न भाषाओंके समास बनाने पड़े हैं तो वे अलग-अलग रखे गये हैं। बीचमें आनेवाले समस्त पदोंके मुहावरें अंतमें न रखकर समस्त पदके साथ ही कोष्ठोंके अंदर रख दिये गये हैं। सुविधाके विचारसे हमने पंचम वर्णके स्थानपर अनुस्वारका प्रयोग किया है और अनुस्वार तथा विस्मययुक्त वर्ण आरंभमें रखे गये हैं। ‘न’ के बाद ‘न’ और ‘म्’ के बाद ‘म’ आनेपर ‘न’ और ‘म्’का मूल रूप रहने दिया गया है।

शब्दोंका मूल रूप

संस्कृतके शब्द प्रथमा विभक्तिसे युक्त होकर हिन्दीमें आते हैं और कोशोंमें उनका यही रूप दिया जाना है। हमने इस रूपके साथ ही शब्दका मूल रूप भी दे दिया है जिसमें पाठक शब्दके मूल रूपसे परिचय प्राप्त कर सके और उन्हें समास बनाने या समस्त पदका रूप समझनेमें सहाय्य हो। मूल रूप न देनेपर समस्त पदका रूप गलत हो जानेकी संभावना रहती है। उदाहरणार्थ, कई कोशोंमें ‘अधिकारी’ शब्दके साथ भाषा-चिह्न [सं०] तो दिया गया है, पर उसका मूल रूप ‘अधिकारिन्’ नहीं दिया गया है। परिणाम यह होता है कि जो शब्दका रूप और नियम नहीं जानते—यह नहीं जानते कि समासमें मूल रूपके अंतिम ‘न’का लोप हो जाता है—वे चटपट ‘अधिकारीवर्ग’ बना लेते और उसके शुद्ध रूप ‘अधिकारिवर्ग’को ही अशुद्ध मानते हैं।

अरबी-फारसीके शब्दोंका मूल रूप सर्वत्र दिखलानेकी जरूरत नहीं जान पड़ी, वे बहुत कुछ उच्चारणके ही अनुसार रखे गये हैं—‘हमेशः’ न देकर सिर्फ ‘हमेशा’ दिया गया है।

संस्कृतके अलावा अन्य भाषाओंके शब्दोंके साथ कोष्ठके अंदर आया हुआ अंश उनके वैकल्पिक रूपका द्योतक है। 'कौचरी' के साथ कोष्ठमें 'ली' रखनेका अभिप्राय यह है कि 'कौचरी' और 'कौचली' दोनों रूप प्रयोगमें आते हैं।

कोशकी प्रामाणिकता

इस कोशकी उपयोगिता या उसकी 'उत्तमता' आदिके संबंधमें कुछ कहनेका हमें अधिकार नहीं; यह हम इसके गुणग्राही प्रयोगकर्ताओंपर ही छोड़ देते हैं। हाँ, इतना अवश्य हम कह देना चाहते हैं कि अपनी ओरसे हमने इसे "प्रामाणिक" और यथासंभव परिपूर्ण बनानेकी शक्तिभर चेष्टा की है। त्रुटियाँ तो हमसे हुई होंगी ही और हुई भी हैं, क्योंकि हम सर्वज्ञ एवं प्रमादहीन बननेका दावा नहीं करते। वस्तुतः प्रेसके भूतों, दृष्टिदोष, अभावधानी या हमारे अज्ञानके कारण इतने बड़े कोशमें, विशेषकर उस हालतमें जब कि मुद्रणके समय इसमें हमें कुछ शीघ्रता करनी पड़ी है, भूलोंका न रहना ही आश्चर्यका विषय होता। उदाहरणार्थ, 'अनद्गुण' शब्द 'अनर्गण' हो गया है और 'बहनावा' 'बहनाबा' बन गया है, 'गौम' के साथ भाषा-विद् [सं०] मातृम् नहीं कहाँसे टपक पड़ा है और 'सट्टेबाज' के साथ 'सट्टेबाजी'का अर्थ, जो शब्दके साथ ही निकाल दिया गया था, संबद्ध हो गया है। कहीं-कहीं क्रम और नियम-संबंधों भूलें भी देख पड़ती हैं। इस तरहकी और भी कई भूलें होंगी जो आत्मन्यासे स्पष्ट हो जायेंगी। आशा है, पाठक उनका सुधार कर लेनेकी कृपा करेंगे और जो स्वका तो हम भी शुद्धिपत्र लगाकर उन्हें स्पष्ट कर देंगे।

व्युत्पत्ति क्यों नहीं ?

व्युत्पत्ति कोशका एक महत्वपूर्ण अंग है, फिर भी हमें अपना कांश इस अंगसे वंचित रहना पड़ा है। शब्दसागर आदि दो-एक बड़े कोशोंमें कुछ शब्दोंकी व्युत्पत्ति या मूल रूप देनेका प्रयत्न किया है और उनका यह प्रयत्न श्लाघनीय भी है, पर खेदके साथ कहना पड़ता है कि इसमें उन्हें पूरी सफलता नहीं मिली है और कहीं-कहीं तो वह ऐसी उटपटाँग है कि उसमें पाठक गुमराह भी हो जा सकते हैं। उदाहरणके रूपमें कटोरा, कागद, गाजर, गेह, टार, टोम आदि कुछ शब्द लिये जा सकते हैं। ये सभी शब्द अन्य शब्दोंके विकृत रूप माने गये हैं, पर वाचस्पत्य आदि कोश देखनेपर पता चलता है कि ये संस्कृतके शब्द हैं और अपने वर्तमान अर्थोंमें ही संस्कृतके प्रंधोंमें प्रयुक्त होते रहे हैं। 'कटोरा' कटोरका खालिग रूप है जो हिंदीमें आकर पुलिग हो गया है, कांसा + ओरसे उसका बनना ठीक नहीं जान पड़ता; 'कागद' शब्द स्थानिक और 'कागज'का बिगड़ा हुआ रूप माना गया है; 'गाजर'का शुद्ध रूप 'गुंजन' माना गया है, 'गर्जर' भी नहीं। इसी तरह 'गेह' 'गृह'से, 'टार' 'स्तब्ध'से और 'टोम' 'टम'से बिगड़कर बना हुआ माना गया है। 'उद्योगीकरण'की व्युत्पत्ति तो प्रचलन करनेपर भी समझमें नहीं आती। इन कतिपय उदाहरणोंसे यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि यह कार्य कितना कठिन और असम्भव है।

शब्दोंका व्याकरण

शब्दोंका भेद या व्याकरण हिंदीमें अभी विवादका विषय बना ही हुआ है। एक ही शब्द एक व्यक्ति कीलिंगमें प्रयुक्त करता है और दूसरा पुलिगमें, और विचित्रता तो यह है कि दोनों ही प्रयोग शुद्ध माने जाते हैं। उदाहरणार्थ, नागरी-प्रचारिणी सभावाले 'ब्रंशट' कीलिंग मानते हैं और अन्य बहुतसे लेखक पुलिग। हिंदीमें इस तरहके कई शब्द हैं। हमने कहीं-कहीं प्रयोगके अनुसार दोनों रूप दिये हैं और कहीं-कहीं स्वतंत्र विचारसे काम लिया है। संस्कृतके शब्दोंका लिंग हिंदीके अनुसार रखा गया है। गरिमा, लक्षिमा, अग्नि आदि शब्द

संस्कृतमें तो पुंलिंग हैं, पर हिंदीमें वे क्लीलिंगमें प्रयुक्त होते हैं, इसलिए हमने भी ऐसे शब्दोंके संबंधमें हिंदीका ही प्राधान्य माना है। यह अंतर संस्कृतके पाठकोंको कुछ खटक सकता है, पर हमारे लिए और कोई मार्ग नहीं था।

शब्दोंका चुनाव

कोशका कलेवर बहुत अधिक न बढ़ने देते हुए इसे सर्वोपयोगी बनानेके विचारमें हमने अधिकसे अधिक शब्द और अर्थ लेकर सागर सरनेकी उक्ति चरितार्थ करनेका प्रयत्न किया है। शब्दोंके चुनावमें हमने बहुप्रचलित या अल्पप्रचलित होनेका भेद नहीं रखा है और इसमें ऐसे भी बहुतसे शब्द और अर्थ देख पड़ेंगे जो अब केवल कोशकी शोभा बढ़ाते हैं। हमारा ख्याल है कि कोशमें ऐसे शब्दोंका समावेश होना आवश्यक है। आज जब कि अप्रचलित शब्दतक ढूँढ-ढूँढकर प्रयोगमें लाये जाने लगे हैं, उपसर्गों और प्रत्ययोंके बांगसे नये-नये शब्द बनाये जा रहे हैं और 'नहिक' (नेगेटिव) और 'सहिक' (पोजिटिव) जैसे शब्द मनमाने तौरपर गड़कर कोशोंमें रखे जा रहे हैं और उन्हें चलानेका प्रयत्न किया जा रहा है तब उत्तराधिकारमें प्राप्त शब्दों और अर्थोंका केवल अल्पप्रचलित या अप्रचलित होनेके कारण बहिष्कार करना उचित नहीं जान पड़ता। कोशोंमें बने रहनेपर ऐसे शब्द और अर्थ भी धीरे-धीरे प्रयोगमें आने लगेंगे। हाँ, जिन शब्दोंकी रचना और उच्चारण बहुत क्लिष्ट हो और जो हिंदीकी प्रवृत्तिके अनुकूल न पड़ते हों उनका त्याग कर देनेमें कोई हर्ज नहीं है।

अंतमें परिसिष्टके रूपमें कुछ छूटे हुए शब्द और अर्थ, लाक्षणिक शब्दोंका व्याख्या और राजनीति, अर्थशास्त्र, विधान आदिमें प्रयुक्त होनेवाले लगभग ३२०० अंग्रेजीके पारिभाषिक शब्द हिंदी पर्यायके साथ दे दिये गये हैं जिसमें कोशकी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है।

इस कोशके निर्माणका कार्य 'आज्ञ'के प्रधान सहायक संपादक श्री कालिकाप्रसादने आरंभ किया था और रोगग्रस्त होनेके पूर्वतक यहाँ काम बराबर करते रहे, पर आज वे इसका वर्तमान रूप देखनेके लिए इस संसारमें नहीं हैं जिसका हमें हार्दिक दुःख है। आशा है, इसके प्रकाशनसे उनकी स्वर्गस्थ आत्माका अवश्य शान्ति मिलेगी।

श्री बंशदेव मिश्र एम. ए. ने काफी अरमेनक और श्री शिवनाथ एम. ए. ने भी कुछ दिनोंतक इसके संपादनमें सहयोग किया था। श्री मार्कंडेय शुक्लसे इसके सुदृढ़में विशेष और संपादनमें भी जहाँ-तहाँ सहायता मिली है। अगर हमें इन सज्जनोंका सहयोग न मिला होता तो इसके प्रकाशनमें दो-तीन वर्ष और लग जाते।

इसके संपादनमें हमें हिंदी शब्द-सागर, हिंदी शब्द-संग्रह, संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी (मॉनियर विलियम्स), संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी (शामन सिंघाराम आषटे), अमरकोष, वाचस्पत्य, शब्दकल्पद्रुम (संस्कृत), जामिउल्लुगान, लुगात सईरी, नूरुल्लुगान, प्रशामन शब्दकोष (डा० रघुवीर), शामन-शब्दकोश (राहुल सांकृत्यायन) से विशेष सहायता मिली है। एतदर्थ हम इन कोशोंके संपादकों, उनके सहयोगियों और इनके अतिरिक्त जिन व्यक्तियोंसे हमें अप्रत्यक्ष रूपमें सहायता मिली है उन सबका आभार स्वीकार करते हैं।

अंतमें सहृदय विद्वानोंसे हमारा प्रार्थना है कि वे इस कोशकी त्रुटियाँ दिखलाकर और सुपरामर्श देकर इसमें अनुगृहीत करेंगे जिसमें इसका दूसरा संस्करण अविक उपयोगी बनाया जा सके।

संकेत-सूची

॥-पद्यमें प्रयुक्त

†-स्थानिक

अ०-अभ्यवय

[अ०]-अरबी

अ० क्रि०-अकर्मक क्रिया

(अप्र०)-अप्रचलित

अमर०-अमरशब्द (बुद्धावनलाल वर्मा)

अल्प०-अल्पसूचक, (लघु रूपसूचक)

अहिंसा-(बुद्धावनलाल वर्मा)

(आ०)-आधुनिक

(आयु०), (आ० वे०)-आयुर्वेद

(इ०)-इत्यादि

[इ०], [इव०]-इश्वरार्ना

(उ०)-उदाहरण

उप०-उपसर्ग

(उपनि०) उपनिषद्

कवि० का०-कविताकांमुद्रा (रामरेश त्रिपाठी)

(का०)-कानून

(काम०)-कामदेवी या कामशास्त्र

(का०)-काटिल्य

(क०)-कवित्रि

(ग०)-गणित

(गी०)-गीता

गीता०-गीतावली, मुद्रा-कृत

गुलाब-गुलाबराग-कृत नवरत्न

ग्राम०-ग्रामगीत, रामनरेश त्रिपाठी

(ग्रा०)-ग्राम्य

घन०-घन आनन्द ग्रन्थावली

चंदा०-चंदायन

(चि०)-चित्रकारा

छत्तीस०-छत्तीसगढ़ी बोली

छत्र०-छत्रप्रकाश

(ज०)-जरमान

जिर्गा०-जिर्गा मुसकरापी-कन्हैयालाल प्रभाकर

(जे०)-जैन साहित्य

(ज्या०)-ज्यामिति

(ज्यो०)-ज्योतिष

(न०)-संनशास्त्र

[नि०]-तिरुवती

(तिर०)-तिरुकार-सूचक

[तु०]-तुर्की

दीनद०-दीनदयाल गिरि

दे०-देविये

नागरी०-नागरीदाम

(ना०)-नाटक

(म्या०)-म्याथ

प०-पद्मावत, जायसी-कृत

[पह०]-पहलवी

[पा०]-पाली

(पाराक्षरसं०)-पाराक्षरसंहिता

पु०-पुल्लिग

(पु०)-पुराण

[पुन०]-पुनर्गार्थ

प्र०-प्रत्यय

(प्रा०)-प्रार्थन

[फा०]-फारसी

[फे०]-फेव

(बे०)-बंगाली

[ब०]-बर्मी

(बहु०), (बहुव०)-बहुवचन

बि०-बिहारी रत्नाकर

बी०-बीमलदेव राय

बुंदेल०-बुंदेलखंडी बोली

(बु० सं०)-बुद्धसंहिता

(बो०), (बोल०)-बोल-बाल

(बौ०, बौद्ध०)-बौद्धसाहित्य

(भाग०)-भागवत

भाषवि०-भाषविलास देव-कृत

भु०, भूषणग्रंथावली

भु० क्रि०-भूतकालिक क्रिया

(मनि०)-मतिराम

(मनु०)-मनुस्मृति

(म० भा०)—महाभारत	(व्या०)—व्याख्य
(मी०)—मीमांसा	(व्या०)—व्याकरण
(मु०), (मुस०), (मुसल०)—मुसलमानोंमें प्रचलित	(शुक०)—शुकनीति
मृग०—मृगनयनी (हुंदावनलाल वर्मा)	शेखर—शेखर, एक जीवनी
[यू०]—यूनानी	[सं०]—संस्कृत
(योग०)—योगशास्त्र	स० क्रि०—सकर्मक क्रिया
रघु०—रघुराजसिंह-कृत रामम्वयंवर	स०, सर्व०—सर्वनाम
रतन०—रतनहजारा	(सांख्य०)—सांख्यशास्त्र
राम०—रामचंद्रिका, केशवदास-कृत	(सा०)—साहित्य
रामा०—तुलसीकृत रामचरितमानस	सुंद०, सुंदर०—सुंदरदाम
रासो—पृथ्वीराज रासो	सुज्ञान०—सुज्ञानचरित, सुदन-कृत
ललित०—ललितललाम, मतिराम-कृत	सू०, सूर—सूरदास
(का०)—काक्षणिक	(सूर्फा०)—सूर्फामत
[लै०]—लैटिन	(स्त्रि०)—स्त्रियोंका बाल-बाल
(लोक०)—लोकप्रचलित	स्त्री०—स्त्रीलिङ्ग
(बा०)—बाक्य	(स्मृति०)—स्मृतिग्रंथ
वि०—विशेषण	हजाराप्र०—हजारोंप्रमाणे द्विचंद्री
वि० स्त्री०—विशेषण स्त्रीलिङ्ग	(हरि०)—हरिवंशपुराण
विद्या०—विद्यापति	(हिं०)—हिंदीमें प्रयुक्त अर्थ
(वे०)—वेदांत	[हिं०]—हिंदी भाषाका शब्द
(वै०)—वैदिक	

बृहत् हिन्दी कोश

अ

अ-देवनागरी और सस्कृत-कुटुम्बी अन्य वर्णमालाओंका पहला अक्षर और स्वरवर्ण । इसका उच्चारणस्वान कंठ है । व्यंजनवर्णोंका उच्चारण हम अक्षरकी महावृत्ताके बिना नहीं हो सकता, इसीलिये क, ख, ग्रादि वर्ण 'अकार'के साथ बोधे और लिखे जाते हैं ।

अंक-पु० [सं०] चिह्न; छाप, सख्याका चिह्न (१, २, ३ आदि); अवयव; अक्षर; फलक; दाग; डिठोना; तम मुद्राका साम्प्रदायिक चिह्न; भूषण; नाटकका एक स्वयं या सग; रूपकका एक प्रकार; बुक जैसा टेडा औजार; बक रेखा; झुकाव, मोड़; गोद, झोट, बगल; तकली लड़ाई, चित्रयुद्ध; स्थान. देह; कदवा, बार; पाप; अपराध, पर्वत; एकवर्ध श्रवण । -**करण-पु०** चिह्न लगानेको क्रिया । -**कार-पु०** बाजी भाटिका निगायक; वह जोड़ा जिनके हारने या जीतनेमें हार या जीत मान ली जाना थी । -**गणित-पु०** मन्त्राश्रीका हिमाश्र, मन्त्राश्रीको जोड़ने-घटाने, गुणा-भाग आदि करनेकी विद्या । -**गत-वि०** पकटमें आया हुआ । -**तंत्र-पु०** अंकशाल, पाठ्यगणित या बीजगणित । -**धारण-पु०** देहपर साम्प्रदायिक चिह्न (शंख, चक्र, त्रिशूल आदि); छपवाना, छाप लगवाना । -**धारी(रिन्)-वि०** श्रम, चक्र आदिके चिह्न धारण करनेवाला । -**पत्र-पु०** निधार्तिन सूत्रपर मिलनेवाला कागजका टुकड़ा, टिकट, टिकट, टिकट । -**परिवर्तन-पु०** कदबत बदलना; बचनेका गोदमें रखनेमें उभर होना । -**पलई-स्त्री०** [हि०] दे० 'अक पलई' । -**पादव्रत-पु०** एक व्रत । -**पालि; पालिका-स्त्री०** गोद, दाढ़; आलियन । -**पाखी-स्त्री०** परिवारिका; वैदिकानामक गधद्रव्य; आलियन । -**पात्र-पु०** गणितकी एक क्रिया । -**पूरण-पु०** गुणन । -**बंच-पु०** मुक्तकर गोदका आकार बनाना; अमृतकहीन मनुष्यका चित्र अंकित करना । -**भाक् (ज्)-वि०** गोदमें बैठा हुआ, बहुत निकट । -**माळ-पु०** आलियन, अकवा । -**मालिका-स्त्री०** अकमाल; छोटी माला । -**मुल्ब-पु०** नाटकका आरम्भ; भाग जिसमें बीजकपमें कथानक दिया रहता है । -**लोड्य-पु०** वृत्रविशेष । -**लोप-पु०** अकेको घटना । -**बिद्या-स्त्री०** अकमणित । -**झायिनी-वि०** स्त्री० बगलमें होनेवाली । स्त्री० पत्नी । -**झायी(विन्)-वि०** बगलमें होनेवाली । **मु०-देना-गले** लगाना । -**अरवा, लगाना-गले** लगाना; लिपटाना ।

अंक-पु० [सं०] हिमाश्र लिखनेवाला; चिह्न करनेवाला । [स्त्री० 'अंकिका']

अंकदा-पु० छोटा बक; कंकड़का छोटा टुकड़ा ।

अंकटी-पु० [स्त्री०] बकड़का छोटा टुकड़ा, कंकड़ी ।

अंकरी-स्त्री० टेढ़ी कंटिया; लगी; टेढ़ी गौमी; लता ।

अंकलि-पु० [सं०] हवा; अग्नि, प्रज्ञा; अग्निहोत्री ।

अंकन-पु० [सं०] चिह्न करना; लेखन; दारीपर शब्द, चक्र आदि छपवाना; गिनती करना; चिह्न बनानेका साधन ।

अंकना-अ० क्रि० अँका जाना; लिखा जाना; अंकित होना ।

* सं० क्रि० अँकना ।

अंकनीय-वि० [सं०] अंकनके योग्य; मुद्रित करने योग्य ।

अंकपलई-स्त्री० अँकोंको अक्षरोंके रूपमें काममें लानेकी एक विद्या ।

अंकम-पु० अक, गोद ।

अंकरा-पु० एक घाम, अंकुर. १ कंकड़का टुकड़ा ।

अंकरासी-पु० देह टूटना; आलस्य; नीशिय ।

अंकरी-स्त्री० छोटा अकरा (अकराका अल्प) ।

अंकरोरी, अंकरीरी-स्त्री० कंकड़ी; कंकड़ आदिका बहुत छोटा टुकड़ा ।

अंकवान-स० क्रि० अंकित कराना; अंकनेके लिए प्रेरित करना, अँकाना ।

अंकवार-स्त्री० गोद, अक. आलियन । **मु०-देना-गले** लगाना । -**अरना-गोदमें** भरना, गोदमें बचका रहना ।

अंकवारना-अ० स० क्रि० अलियन करना, अँटना ।

अंकवारी-स्त्री० गोद ।

अंकम-पु० [सं०] चिह्न; शरीर । वि० चिह्नयुक्त ।

अंकक-पु० [सं०] त्रल ।

अँकाई-स्त्री० अंकनेकी क्रिया, कत, अँकाजा. आंकनेकी उन्नत ।

अँकाना-स० क्रि० अँकाया लगवाना, अँकवाना, चिह्न कराना मूल्य ठहरवाना ।

अँकाव-पु० अंकनेका काम; अँकाजा लगानेका काम ।

अँकावतार-पु० [सं०] अंकके अन्तका वह भाग जिसमें अगले अंकके अभिनेय विषयका सूचना रहती है ।

अंकित-वि० [सं०] चिह्नित; लिखित, गिना हुआ । -**मूल्य-पु०** वह मूल्य जो किसी मुद्रा, कणपत्र आदिपर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियों या विशेष कारणोंसे घटना-वटना रहे ।

अँकिनी-स्त्री० [सं०] चिह्निका मयूह; चिह्नवाली स्त्री ।

अँकिली-वि० अंकित, दागवाला । पु०-दागा हुआ सँक ।

अँकी(किन्)-पु० [सं०] छोटा नगाडा; मृग (जो अकमें लेकर बजाया जा सके) ।

अंकुट, अंकुडक-पु० [सं०] नाली, कुर्जी ।

अंकुश-पु० लोहेका देड़ा कौटा; लोहेकी छड़ या कटिवाके बने कुछ औजार; कुलावा; किवाड़की चूलमें ठोकनेका लोहेका पच्च; बुनकरोका एक औजार; गावचैलका एक रोग ।

अंकुशी-स्त्री० (अंकुशका अन्व०) हुक; लोहारोंका एक औजार; हलका बह भाग जिसमें फाल लगना है; एकके पवित्रके जोषीपर लगायी जानेवाली कील । -**दार**-वि० जिसमें अंकुशी लगी हो, गहारीदार (कसीदा) ।

अकुर-पु० [सं०] अंसुआ, डाब; कली; रौआ; अकुआ; संतति; जल; रुधिर; नोक, अंभुद; वृजन; धावका भराव; नोकदार जवका ।

अकुरक-पु० [सं०] घोंसला; मौद ।

अकुरना, **अकुराना**-अ० कि० अंसुआ फटना, अकुर उठना ।

अकुरित-वि० [म०] अकुरयुक्त; अंसुआवा हुआ; प्रम्पु-दित । -**बोवना**-स्त्री० वह स्त्री जिसमें धीवनके चिह्न प्रकट हो चुके हों ।

अकुरी-स्त्री० भिगोये हुए चने आदि; ऐसे चने आदि जिनमें भिगोनेके कारण अकुर निकल आये हों ।

अकुश-पु० [सं०] लोहेका कौटा या एक तरहका माला जिसे महावत हाथीके मिरपर कौचकर उभे चलाता है; रोक; दबाव; निर्वणन । -**ग्रह**-पु० महावन, पीलवान ।

-**बंसा**-पु० [हि०] वह हाथी जिसका एक दाँन सीधा और दूसरा नीचेकी ओर झुका हुआ हो । -**दुर्चर**-पु० मसा, अकुश न माननेवाला हाथी । -**धारी(रिज)**-पु० दे० 'अकुशग्रह' । -**मुद्रा**-स्त्री० उगलियीकी अकुशकार मुद्रा ।

अकुश, **अकुशी**-स्त्री० [म०] २४ जैन देवियोंमें एक ।

अकुशा-पु० अकुश, हाथीका मिर कौचनेका एक इधवार; नोककी तरह मुड़ा हुआ कौटा, हुक ।

अकुशित-वि० [म०] अकुश द्वारा बटाया हुआ ।

अकुसी(शिव)-वि० [म०] अकुशवाला, अकुशकी सहायतामें काटने करनेवाला ।

अकुस-पु० दे० 'अकुश' ।

अकुसी-स्त्री० लोहेकी धुकायी हुई काल; द्रुक, लोहेकी टेढ़ी छड़ जिसमें बाहरमें अंगठी या मिटकिनी खोली जाती है; फल तोड़नेकी लम्बीके मिरपर बंधी छोटी लकड़ी, भट्टीकी राख निकालनेका एक औजार, नायिलकी गिरि निकालनेका एक छोटा औजार ।

अकुर-पु० [म०] दे० 'अकुर' ।

अकृष-पु० [म०] अकुश; नकुल ।

अकौटा, **अकौटक**-पु० [म०] अकौल वृक्ष ।

अकौदा-पु० एक तरहका लगर, बड़ा कटिया ।

अकौर-पु० गोट, अकवार, अंत, नजर, धूम; -**टका** लाल रस दीन अकौरा'-पु० । कनेबा, छाक ।

अकौरी-स्त्री० गोट, आलिंगन ।

अकौल-पु० [सं०] एक पहाड़ी पेड़ जिसकी छाल दवाके काम आती है । -**सार**-पु० अकौलके पेड़से पैदा होनेवाला विष ।

अकौलिका-स्त्री० [सं०] आलिंगन ।

अकृष-वि० [सं०] चिह्न करने योग्य; दागने योग्य (अपराधी) । पु० दुर्ग, पखावज आदि ।

अकृषी-स्त्री० आंस; चितवन ।

अकसीचीनी-स्त्री०, **अकसूदनी**-पु० आंसमिचीनी ।

अकसाना-अ० कि० अनखाना ।

अखिया-स्त्री० नखायी करनेकी कलम; * आंस ।

अंसुआ-पु० अकुर, कल्ला ।

अंसुआना-अ० कि० अंसुआ फेंकना ।

अंग-पु० [सं०] देह; अवयव; भाग, विभाग; गौण या आश्रित वस्तु; वस्तु; प्रधान या अंगीका सहायक; उपाय; माधन; मन; जन्मलक्ष; (ला०) देवी सख्या; समस्तव शब्दका प्रत्ययरहित भाग, प्रकृति (व्या०); नाटककी पाँच मधियोंके अनगण एक उपविभाग; अंगी या नायकके सहायक पात्र (ना०); अग्रधान रस (ना०); वेदके छ अंग (शिक्षा); कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद; सेनाके चार अंग (हाथी, अश्व, रथ, पैदल); बीमके आठ अंग (यम, नियम, आमन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि); राजनीतिके सात अंग (स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना); एक संवोधन; आलपुरके आम्नासका प्रदेश; [हि०] और; कक्ष; प्रकार । वि० मल्ल, अगोवाला; निकट; गौण; प्रतीकस्वरूप ।

-**कर्म(र)**-पु० -**क्रिया**-स्त्री० शरीरमें उठन आदि मलना, देह-सम्भार । -**ग्रह**-पु० देहका जकड़ना; देहकी पीडा । -**चालन**-पु० हाथ-पैर हिलाना । -**छेदे**-पु० अंगको काटना; शरीरके अंग (हाथ, पाँच, नाक, कान आदि) कटवानेका दृष्ट । -**ज**, **जाल**-वि० देहमें उत्पन्न । पु० वेडा, घसीना; रोग; काम; मर; मात्सिक विकारोंमें नोन-हाव, भाव और हेला (मा०); रोग । -**जा**, **जाता**-स्त्री० देठा । -**जार्ह**-स्त्री० दे० 'अंगज' । -**ज्वर**-वि० ज्वरोत्पादक । पु० राजरोग, क्षयरोग । -**ज्राण**-पु० बर्म, कलगर; बन्ध । -**द्व**-पु० दे० 'कर्ममें' । -**दा**-स्त्री० दक्षिण दिशाके हन्सीकी भाषा । -**दान**-पु० बुद्धमें आत्म-समर्पण (स्त्रीका) देह-समर्पण । -**द्वार**-पु० मुख, कान, नाक, नेत्र, गुदा, उपस्थ-शरीरके ये ९ छिद्र (कबीर आदिने ठम द्वार माने हैं, जिनमें महाष्ट भी हैं) शरीरके दस छिद्र । -**द्वीप**-पु० छ द्वीपोंमें एक । -**धारी(रिज)**-पु० प्राणी; शरीर । -**ध्यास**-पु० भगो या शरीरको विशेष ध्यानमें रखना; अंगोच्चार करने हुए एक-एक अंगको हावने स्पर्श करना । -**धाक**-पु० अंगोंके पकनेका रोग । -**पाकि**, **पाखी**-स्त्री० आलिंगन । -**पालिका**-स्त्री० धाय । -**प्रव्यंग**-पु० देहका हर एक अंग । -**प्रायश्चित्त**-पु० अंगीचमें देहशुद्धिके लिए किया जानेवाला दानरूप प्रायश्चित्त । -**प्रोक्षण**-पु० अंग पोछना । -**अंग**-पु० किसी अंगका टूट जाना; अंगोंका पेटना; *अंगसंगी । वि० विकलांग । -**अंगिमा(मज)**-स्त्री० अंग द्वारा भावप्रकाश । -**अंगी**-स्त्री० मोहक अंगसंचालन, अदा । -**भाव**-पु० संगीत आदिमें अंगोंके द्वारा भावबोधन । -**भू**-पु० पुत्र; काम । वि० शरीरमें उत्पन्न । -**भूत**-वि० अंगस्वरूप बना हुआ; अंतर्गत । पु० पुत्र । -**आंसि**-स्त्री० एक रोग जिसमें किसी अंगके अन्य अंग होनेका

अन होता है। -**अर्ध**-पुं० हड़ियोंमें दर्द होना; मालिश करनेवाला नौकर। -**अर्धक**-**अर्ध**(रिच)-पुं० मालिश करनेवाला नौकर। -**अर्धन**-पुं० मालिश। -**अर्ध**-पुं० गठिया रोग। -**अर्ध**-स्त्री० पतली आकृति। -**रक्ष**-पुं० रक्षविशेष। -**रक्षक**-पुं० राजा-महाराजा आदि बड़े बादमियोंकी रक्षापर नियुक्त जन, बाबरी-गार्ड (दस्तार)। -**रक्षणी**, **रक्षणी**-स्त्री० लोहेकी जालीका बना हुआ बरत, गिरह, बस्तर; पोशाक। -**रक्षा**-स्त्री० शरीरकी रक्षा। -**रस**-पुं० पपी; फल आदिका कूटकर निचोड़ा हुआ रस। -**राम**-पुं० सुगंधित लेव या उबटन; इनका लेपन। -**राज**-पुं० अंग देशका राजा; कर्ण या लोभ-पाद। -**रज**-पुं० बाल; ऊन। -**रज**-पुं० दे० 'अंग-राम'। -**रज्ज्व**-पुं० वृक्षविशेष। -**रिक्त**-वि० विकलांग; सुष्ठिज। -**रिक्ति**-स्त्री० देहमें कोई विकार होना; मिरगीकी बीमारी। -**रिक्ते**-पुं० बीजने; गाने आदिमें हाथ, पैर, रिस आदि हिलाना; नृत्य। -**रिक्ता**-स्त्री० शानके माधनभूत स्वाकरण आदि शास्त्र; प्रधान-कालमें अंगोंकी चेष्टा या अंगोंके चिह्न देखकर शुभाशुभ कहनेकी विद्या। -**रिक्ता**-पुं० अगभ्रांति, एक रोग। -**रिक्ता**-पुं० स्वेत या सुखमुद्रा द्वारा आंतरिक भावोंका प्रकाश। -**रिक्ता**-स्त्री० स्नानादि द्वारा शरीर की शुद्धि। -**रिक्ता**-पुं० शरीरका ढोलपन। -**रिक्ता**-पुं० सुखा या सुखही नामकी बीमारी। -**रिक्ता**-पुं० समोम, शरीर-मग्न। -**रिक्ता**-वि० स्त्री० अंग-अंग करनेवाली। -**रिक्ता**-**(मिन्)**-वि० अंग-संग करनेवाला। -**रिक्ता**-पुं० हाथ-पांव आदि हिलानेकी क्रिया। -**रिक्ता**-स्त्री० दे० 'मंथन'। -**रिक्ता**-पुं० देहकी मवारना, मजाना, बनाव-निगार। -**रिक्ता**-स्त्री० अगममष्टि; अंगोंकी बनावट; छोटा-बड़ाईका मेल, गठन। -**रिक्ता**-पुं० प्रगाढ़ मैत्री। -**रिक्ता**-स्त्री० [हिं०] जड़ैया मुखारके पहलेकी कंपकंपी; जूनी। -**रिक्ता**-पुं० मित्रो सेवा-टहल करनेवाला नौकर। -**रिक्ता**-पुं० अंगोंकी बनावटकी सुंदरता। -**रिक्ता**-पुं० शरीरका स्पर्श। अशौच-वृत्त व्यक्तिका दूसरोंके छूने योग्य हो जाना। -**रिक्ता**-स्त्री० अंगविशेषकी हानि; विकृति; मुख्य कर्मके सहायक कर्मों न करना या ठीक तरहसे न करना। -**रिक्ता**-पुं० अंगविशेष; मुख। -**रिक्ता**-स्त्री० रंग-भूमि। पुं० दे० 'अंगहार'। -**रिक्ता**-वि० अंग-विशेष-रहित; विकलांग; उपकरण-रहित (पृष्ठा ४०)। पुं० अनंग, कामदेव। **मुं०**-करना-स्वीकार करना। -**रिक्ता**-कमल खाना। -**रिक्ता**-अंगारई आना; अंगरेके पहले देह टूटना (?)। -**रिक्ता**-पहनना, धारण करना। (कूले) -य समाना-अत्यंत प्रसन्न होना। -**रिक्ता**-लज्जासे देह निक्षेपना; अंगारई लेना। -**रिक्ता**-लिपटना; आहार-का पचकर देहकी पुष्टि करना; परचना। -**रिक्ता**-लिपटना; परचना; विवाहमें देना।

अंगारक-पुं० अंगीगा।

अंगक-पुं० [सं०] अंग; शरीर।

अंगारक-स्त्री० दे० 'अंगार'।

अंगक-अंगक-वि० टूटा-फटा; बचा-खुना। पुं० टूटा-फटा मामल।

अंगारक-स्त्री० अंगारके साथ अंगकी तानना; देहका टूटना। **मुं०**-**अंगारक**-अंगारके लेते समय किसीके कपेर हाथ रखकर अपनी देहका भार देना (जो आमतौरपर मनहूँ समझा जाता है); कुछ काम न करना।

अंगारक-अं० कि० अंगारई लेना।

अंगक-पुं० [सं०] दे० 'अंगन'।

अंगति-पुं० [सं०] अंगि; अग्निहोत्र; मन्त्रा; निष्पु; सवारी, यान।

अंगद-पुं० [सं०] बाजुद, बिजायठ; बालिका बेटा; लक्ष्मणका एक पुत्र; दुर्योधनके पक्षका एक योद्धा।

अंगदीबा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मणके पुत्र अंगदकी मिले राज्य-
(कालपके) राजधानी।

अंगन-पुं० [मं०] टहलनेका स्थान; अंगन, चौक; टहलना; यान, सवारी।

अंगना-स्त्री० [मं०] सुंदर अंगोंवाली स्त्री; स्त्री; कलहप्रिया स्त्री; उत्तर दिशाके हस्तीकी भाषा। -**अंगन**-पुं० स्त्रियोंका समूह। -**अंगन**-पुं० लीवर्ग। -**अंगन**-पुं० अंगीक वृक्ष।

अंगना-पुं० दे० 'अंगन'।

अंगनाई-स्त्री० भीम वा बजानखानेका अंगन।

अंगनैया-स्त्री० दे० 'अंगन'।

अंगरीक-पुं० [का०] शहर।

अंगरखा-पुं० एक लबा बन्दार मरदाना पहनावा, अमा, चपकन।

अंगरा-पुं० अंगार; बैलोंके पैरमें दर्द होनेका एक रोग।

अंगारना-अं० कि० दे० 'अंगारना'।

अंगरी-स्त्री० त्रिह, बस्तर; गोहरेके चमड़ेका दस्ताना।

अंगरेज-पुं० इंग्लैंड देशका रहनेवाला, 'इंग्लिशमैन'।

अंगरेजियत-स्त्री० अंगरेजपन, अंगरेजी बाल-ढाल।

अंगरेजी-वि० अंगरेज-संबंधी; अंगरेजका। स्त्री० अंगरेजोंकी भाषा।

अंगलेट-पुं० शरीरका गठन या ढांचा।

अंगवना-सं० कि० अंगीकार करना; सहना-'सुल कुल्लिम् अंगि अवबनिहारे, ते रनिनाथ मुमन सर मारे'-रामा०। अपने मिर पर लेना।

अंगवार-पुं० नैतिक जोनाईमें पारस्परिक सहायता, गाँवके छोटे हिस्सेका मालिक।

अंगानिभाष-पुं० [सं०] अंग और अंगीका संध; परस्पर अंग और देह, गौण और मुख्य, उपकारक और उपकार्यका मंच।

अंगा-पुं० अंगरखा।

अंगारकी-स्त्री० बाटी, लिट्टी (जो अंगारोपर सेंककर बनायी जाती है)।

अंगारिप, **अंगारिप**-पुं० [मं०] लक्षका स्वामी ग्रह; राजा कर्ण।

अंगार-पुं० [सं०] अंगार, दहकता हुआ कोयला या काष्ठखंड; कोयला; मंगल ग्रह; हितावली नामका पौधा; एक राजा; लाल रंग। वि० लाल। **अंगारी**-(रिच)-पुं० विक्रीके लिए कोयला तैयार करनेवाला। -**अंगार**-पुं० हितावली नामक पौधा। -**अंगारिका**, -**अंगारि**, -**अंगारि**, -**अंगारि**-स्त्री० अंगीठी। -**अंगारिप**-वि० अंगारोपर पकाया

हुआ। पु० ऐसा खाब पदार्थ। -**वर्ण**-पु० संभवपति चित्रण। -**पुष्प**-पु० हिमोष्का पेष्, इंगुरी। -**मंजरी**, -**मंजी**-स्त्री० रक्त करज वृक्ष, करौदा। -**मणि**-पु० मूंगा। -**बछरी**, -**बछी**-स्त्री० करज; भागी, पुंवची बेल। -**बेषु**-पु० एक तरका बीम। -**सकटी**-स्त्री० अंगीठी।

अंगारक-पु० [मं०] अगारा: छोटा अगारा. भगल ग्रह; मंगलवार; एक सौरीर-नरेश, कुरटक; श्वराज; एक अक्षर; एक रुद्र; औषधियोंके मेलने बना हुआ एक तेल; कनिष पदार्थोंमें पाया जानेवाला एक अवात्वीय मूल तत्व। (कारवन)-**मणि**-पु० मूंगा। -**वार**-पु० मंगलवार।

अंगारकाबी-स्त्री० शिवामलार्ह।

अंगारपेटी-स्त्री० दियासलाईकी दिविया।

अंगारकाम्ब-पु० [सं०] कार्वन और आक्सीजनके भ्रमने बनेवाला एक अम्ल।

अंगारकिल-वि० [मं०] आगमें जलाया या अगारोंपर भूना हुआ।

अंगारमती-स्त्री० [सं०] कणकी स्था; 'रायका उमलियोंमें होनेवाला एक रोग, गल्ला।

अंगारा-पु० दक्कना हुआ कोयला, कटा आदि. अग्निवृद्ध। वि० अंगारे जैसा लाल। **सु०**-**बनना**, -**हो जाना**, -**होना**-गुरुवेमें, क्रोधमें लाल हो जाना। -**(रे)** उगलना-जलीकड़ी सुनाना। -**कौकना**-ऐसा काम करना जिसका फल बहुत बुरा हो। -**बरसना**-आग बरसना, सम्पन्न गरमी पड़ना; दैवकोप होना। -**(रो)** पर पर रखना-जान-बखतर अपनेको खतरेमें टागना; इत्ताना। -**पर छोटना**-क्रोध या ईर्ष्यामें जलना, नष्ट पना, विकल होना। -**पर छोटना**-जलाना नष्टपाना।

अंगारा-पु० दे० 'अंगारा'।

अंगाराक्षेपण-पु० [मं०] अगारे बुझाने या कोयले फेंकनेका एक पात्र।

अंगारि, **अंगारिका**-स्त्री० [मं०] अगाठी. इक्षुष्ट किशुककी कली।

अंगारिणी-स्त्री० [सं०] छोटी अगाठी. अनन मयकी लालिमामें रजित रिशा; एक लता।

अंगारित-वि० [मं०] दग्ध, दग्धप्राय। पु० पलाश-कालका।

अंगारिता-स्त्री० [मं०] अगाठी; कलिका; एक लता, एक नदी।

अंगारी-स्त्री० चिनगारी। बाटी, अगाठी।

अंगारी (रिचु)-वि० [मं०] मूय द्वारा तप्त।

अंगारी-स्त्री० रंगामें काटे हुए ईम्बके छोटे-छोटे टुकड़े; ईम्बके स्प्रिपरकी पत्ती।

अंगारीय-वि० [मं०] कोयला पैदा करनेके काममें आने लायक।

अंगार्या-स्त्री० [मं०] कोयलेका टेर।

अंगिका-स्त्री० [मं०] अंगिया, कच्ची।

अंगिया-स्त्री० चोली, कच्ची; दे० 'अधिया'। -**का कंठा**, -**का घाट**-अंगियाका गंगान, गलेके नीचेका खुला भाग। -**का पान**-कटोरिका छोटा टुकड़ा। -**का बैंगला**-अंगियाकी कटोरिकी कवियों या कविकों में गोमन्त्र आदिके

दौकनेसे बन जाती है। (दो कवियों होनेसे 'बैंगला' और दस-बारह होनेसे सरद्वजा कहते हैं।) -**की कटोरी**, -**की मुलकट**-अंगियाका वह भाग जो खानपर पड़ता है। -**की सिधिया**-कटोरियोंके बीचकी सीधन। -**की दीवार**-कटोरियोंके नीचेका भाग। -**की लहर**-कटोरियोंपर तिक्तोना टेका हुआ साज। -**के पक्षुप**-अंगियाकी पीठकी ओरके टुकड़े। -**के बंद**-वे जोरियों जिनसे पीठकी ओर अंगिया बन्नी जाती है।

अंगिर-पु० [सं०] एक मंत्रकार कपि जो मन्त्रोंके दस मानस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र और सप्तविंशतिमेंसे एक कवि तथा एक सृष्टिकार कहे जाते हैं।

अंगिरस-पु० [मं०] परशुरामावतारमें विष्णुका एक दास।

अंगिरा(रस)-पु० [मं०] एक मंत्रस्तर; दे० 'अगिर'।

अंगिराना-अ० क्रि० दे० 'अगशाना'।

अंगी (रिचु)-वि० [मं०] देख्यक्त; अवयवविशिष्ट; प्रधान; अशी। पु० प्रधान पात्र या नायक; प्रधान रस (ना०)। (स्त्री०) अगी = अगवाली-ममासातमें।

अंगीकरण-पु० [मं०] स्वीकार या ग्रहण करनेकी क्रिया; वादा करना; राजी होना।

अंगीकार-पु० [मं०] स्वीकार, ग्रहण; ऊपर लेना, उठाना (काम, जिम्मेदारी आदि)।

अंगीकृत-वि० [मं०] अंगीकार किया हुआ।

अंगीकृति-स्त्री० [मं०] स्वीकृति, मंजूरी।

अंगीठा-पु० अगाठी (क०)।

अंगीठा-स्त्री० आग रखनेका बर्तन, आतिशदान, बोरमी।

अंगीय-वि० [मं०] अग देह-मन्त्रकी; शरीर-मन्त्र।

अंगुठा-पु० दे० 'अंगुठा'।

अंगुठी-स्त्री० पैरके अंगुठिका एक गहना।

अंगुर-पु० दे० 'अंगुल'।

अंगुरि, **अंगुरी**-स्त्री० [मं०] हाथ या पैरकी उगली।

अंगुरिया-स्त्री० दे० 'अंगुरी'।

अंगुरी-स्त्री० दे० 'अंगुरि'। -**की चाँदी**-एक तरहकी चाँदी जिसमें बरक बनाने हैं।

अंगुरीय, **अंगुरीयक**-पु० [मं०] उगलीका एक गहना, अंगुठी।

अंगुल-पु० [मं०] उगली; एक नाप, उगलीकी चौड़ाई, बिस्के १२ बों नाम; ग्राम या १२ बों भाग (उ०)। वाय्यायन मुनि। -**प्रमाण**, -**मान**-पु० अंगुलीका लंबाई। वि० अंगुलीका लंबाईवाला।

अंगुलि, **अंगुली**-स्त्री० [सं०] उगली; हाथकी मूखका अग्रभाग; अंगुल-मान; गजकर्ण नामक वृक्ष। -**तोरण**-पु० ललाटपर बना हुआ चंद्रमाला अर्धचंद्राकार चिह्न। -**त्र**-पु० अंगुलिज्जाण; मित्राश्रमे बजाया जानेवाला नवचाष (सितार, बीन आदि)। -**ज्राण**-पु० गोहृत्के चमरेका दमनाना जो बाण-चक्रामें उगलियोंकी रंगममें बचानेके लिए पहना जाना था। -**निर्देश**-पु० किस्तीका और उगली उठाना, निदा करना, बडनाम करवा। -**पंचक**-पु० हाथकी पाँचों उगलियों। -**पर्व**-पु० उगलीकी पैर या गाँठ। -**मुख**-पु० उगलीकी नोक। -**मुद्रा**, -**मुद्रिका**-स्त्री० नाम लुई हुई या मुहरका नाम

देवताली अंगुठी। -श्रीरत्न, -श्रीरत्न-पु० उंगली
चरमना; पुठकी। -बेहक, -बेहक-पु० चरमना।
-सहा-की० उंगलीसे किया हुआ संकेत। -सहस्र-
पु० उंगलीकी मुद्रा वा भाषाजसे द्वारा करना। -संभ्र-
-वि० उंगलीपर वा उंगलीसे संभव। पु० संभव।

अंगुलिका-की० [सं०] अंगुली; एक तन्त्रकी बाँटी।

अंगुली-की० दे० 'अंगुली'।

अंगुलीक, अंगुलीच, अंगुलीचक-पु० [सं०] अंगुठी।

अंगुल्यग्र-पु० [सं०] उंगलीकी नोक।

अंगुल्यक्ष-पु० [सं०] अंगुलीके द्वारा किया हुआ संकेत।

अंगुल्य-पु० [का०] उंगली। -मुमा-वि० जिसकी ओर

उंगली उठावी जाय, वरनाम। -मुमाई-की० अंगुल्य-

मुमा होना; वरनामो, सांछन। -रते-वर-पु० अंगुठा।

अंगुल्यरी-की० [का०] अंगुठी।

अंगुल्यता-पु० [का०] लोहे वा पीतलकी छोटी की
सिलाईमें उंगलीके बचावके लिए उसपर पहन ली जाती
है; तीरंदाजीके वक्त उंगलीपर पहननेके लिए लीय वा
हथौकी बनी हुई अंगुठी।

अंगुल्य-पु० [सं०] अंगुठा। -मात्र, -मात्रक-वि०

अंगुठीकी लम्बाई वा आकारका।

अंगुलिका-की० [सं०] एक छुप।

अंगुल्य-पु० [सं०] अंगुठीका नाखन।

अंगुल्य-पु० अंगुल्य।

अंगुल्यार्ता-अ० कि० अङ्कुरित होना।

अंगुली-की० हल्का काल; सुनारोंकी वह नली जिसमें
चिरागोंके बूझकर टीका भोजने है।

अंगुठा-पु० हाथ वा पैरकी पहली और सबसे मोटी उंगली।

मु०-चूमना-मुसामद करना; सम्मान वा बहुत विनय
प्रकट करना। -चूसना-यथा होकर वस्त्रों तरफ नासमझी-
का काम करना। -दिखाना-अवज्ञापूर्वक, किसीको तुच्छ

मानसनेका भाव दिखाने हुए, नाड़ी वा इनकार करना।

अंगुठी-की० उंगलीमें पहननेका एक घड़ना, मुद्रा।

अंगूर-पु० [का०] एक प्रसिद्ध फल जो पकनेपर बहुत
मोटा होता है, द्राक्षा, दाख; [हि०] भरते हुए भावके

बाल धाने; अंगुल्य, अङ्कुर। -की टट्टी-वह टट्टी
जिसपर अंगूरकी बेल चढ़ाते हैं। -की बेल-वह लता

जिसमें अंगूर फलते हैं, द्राक्षा-लता। मु०-तषकना-
फटना-भरते भावपरकी शिथिलता फट जाना। -बैचना

वा भरना-धावमें लागू धाने उठ जाना; भावका भरने
लगना।

अंगुरी-वि० [का०] अंगूरका बना; अंगूरके रंगका। पु०

हल्का हरा रंग जो अंगूरके रंगसे मिलता है। -बेक-

की० कपड़ेपर काटी वा छापी जानेवाली अंगूरकी बेलकी
राखकी बेल। -शरार-की० अंगूरसे बनायी हुई शरार।

अंगूर-पु० [सं०] नरकल; बाण।

अंगीजना-सं० कि० सहना; अंगीकार करना।

अंगैट-की० अंगुलीके 'यदी' तै शिक्षा ली है अंगुठिमें
अंगैट आछी-धन०।

अंगैटा-पु० दे० 'अंगैठा'।

अंगैटी-की० दे० 'अंगैटी'।

अंगैठ-पु० अंगैठी वा राखियारोका पेड़।

अंगैठना-सं० कि० दे० 'अंगैठना'।

अंगैठक, अंगैठक-पु० [सं०] अंगैठा, लीलावा।

अंगैठना-सं० कि० लीले गमछेसे बदन पीछना वा रगड़ना।

अंगैठा-पु० दे० पीछनेका कपड़ा, बमछा, अंगैठन।

अंगैठी-की० छोटा रंगछा; छोटी धोती।

अंगैठना-सं० कि० दे० 'अंगैठना'।

अंगैठा-पु० मच्छर; पंखवा।

अंगैठी-की० भाग; चिनगारी।

अंगैठा-पु० अनाम वा अन्ध किसी वस्तुका वह भाग जो
उपवीगमें आनेके पहले धर्माथ निकाल दिया जाय; पुरो-

हितकी देने वा देवताकी चढ़ानेके लिए राक्षसे निकाला
गया अन्न, अंगैठ।

अंगैठिया-पु० मजदूरीके बदले हल-वैक लेकर लेना करने-
वाला हलवाहा।

अंगैठ-वि० [सं०] अंगैठसे संबंध रखनेवाला।

अंगैठ-पु० दे० 'अंगैठ'।

अंगैठ-पु० [सं०] पाप।

अंगैठा-पु० पैरमें पहननेका कौंसिका छल।

अंगैठा-की० पशुओंपर लगनेवाला एक कर (श्राव)।

अंगैठा-की० छोटे कपड़ेसे बनी छलनी।

अंगैठ-पु० [सं०] पाँच, चरना; पैरकी जड़; छंदका करना।

-नाम(र), -नामक-पु० हुकूमत; पैर। -च-पु० हुकूम

(जसमें पाव करनेवाला)। पंथिका, पंथी, -बसिका,

-बसली-की० सिंहपुच्छी नामक पौधा। -बाग-वि०

बगोंकी तरह अंगैठा चूसनेवाला। पु० अंगैठा चूसना।

-स्कंध-पु० पुटला, पुट्टी, दसना।

अंगैठि-पु० [सं०] हवा; अंधि; आनेवाला।

अंगैठी-की० [सं०] दे० 'अंगैठ'।

अंगैठा-पु० दे० 'अंगैठ'।

अंगैठ-पु० [सं०] बसका छोरा; सारी, ओढ़नी आदिका
वह छोरा जो छाती और पेटपर रहता है, अंगैठ; छोरा;

देसका प्रांत-भाग; कोना; तट, किनारा।

अंगैठा-पु० दे० 'अंगैठ'।

अंगैठ-पु० दे० 'अंगैठ'।

अंगैठना-सं० कि० दे० 'अंगैठना'।

अंगैठना-सं० कि० दे० 'अंगैठना'।

अंगैठ-वि० [सं०] झुका वा मुड़ा हुआ, कुटल, टेढ़ा;
कुचाले (बाल); सुंदर; गया हुआ; सिकोड़ा हुआ; गूँथा

हुआ; सिला हुआ; अव्यभिचार; पूजित। -पञ्च-पु० एक
प्रकारका कमल जिसकी पत्तियाँ टेढ़ी वा मुड़ी होती हैं।

-अ-वि० की० टेढ़ी, कमान-न्ती सी। की० टेढ़ी
सीवाली की।

अंगैठ-की० अंगैठ, अंगैठ (रातो)।

अंगैठ-पु० एक सुखरोष; ई अन्न; मंत्र, दोना। मु०

-शरारना-जादू-टोना करना।

अंगैठ-पु० कंड, कमल।

अंगैठ-पु० [सं०] काजल; सिंकाजन; सुरमा; स्याही;
माया (निरवन्); रात्रि; पश्चिम दिशा; पश्चिम दिशाका
हस्ता; एक नाग; एक भिक्षागरेस; एक पर्वत, नौद्विजि;

एक वृक्ष; अञ्जना वृक्ष; अञ्जि; छिपकली; एक तरहका वृक्ष; अञ्जना; केपन; भिलास; अञ्ज करना। -केञ्-पु० दीपक। वि० जिसके शक बहुत काहे हैं। -केञ्जी-खी० इटलियासिनी नामक गंधद्रव्य जिसके कण्डावेले शक बहुत काहे होते हैं। -गिरि-पु० नीलगिरि। -शामिका-खी० अञ्जना एक रोग; बिछनी। -सकाका-खी० अञ्जन वा सुरमा लगानेकी सलाह। -साह-वि० [वि०] अञ्जनयुक्त। -हारी-खी० [वि०] बिछनी; चूंगी कीका।
अञ्जना-खी० [सं०] इन्सानकी माता; बिछनी; अञ्जना वृक्ष; एक तरहकी छिपकली; दे० 'अञ्जनावती'। पु० एक तरहका भान। -गिरि-पु० एक पहाड़। -अञ्ज-पु० इन्सान।
अञ्जना-सं० कि० दे० 'अञ्जना'।
अञ्जनाविका-खी० [सं०] एक तरहकी छिपकली।
अञ्जनावती-खी० [सं०] उत्तर-पूर्वके दिग्गज सुप्रतीककी भावी; काकाजन वृक्ष।
अञ्जविका-खी० [सं०] एक तरहकी छिपकली; चुड़िया; उत्तर-पूर्वके दिग्गजकी भावी।
अञ्जनी-खी० [सं०] इन्सानकी माता; चंदन; कुंजम आदिसे अनुलिप्त खी; बिछनी; माया; कड़का वृक्ष; काला-जन वृक्ष। -अञ्ज-पु० इन्सान।
अञ्जवार-पु० [फा०] दवाके काम जानेवाला एक पीषा।
अञ्जर-वि० उज्ज्वल।
अञ्जर-अञ्जर-पु० शरीरका जोर; ठठरी; हड्डी-पसली। अ० अलक-वगल। मु० -रीख हो जाना-जोर-जोर हिल जाना, सब अंगोंका शिथिल हो जाना।
अञ्जरी-खी० दे० 'अञ्जलि'।
अञ्ज-पु० अञ्जलि; † अञ्ज-जल (?)।
अञ्जलि-खी० [सं०] करसंपुट; अञ्जलिभर वस्तु; अभिवादनका संकेत। -कर्म(रु)-पु० आदरपूर्वक नमस्कार करना। -कारिका-खी० नमस्कार करनेकी सुझावाली मिट्टीकी छोटी मूर्ति; लक्ष्मण लता। -गस्त-वि० अञ्जलीमें या हथेलियोंपर रखा हुआ। -पुट-पु० दोनों हथेलियोंकी भिलासे बनेवाला गहवा। -अञ्ज-वि० करबद्ध।
अञ्जलि-पु० [सं०] अञ्जनाका एक बाण।
अञ्जलि-खी० [सं०] चुड़िया; अञ्जनाका एक बाण।
अञ्जली-खी० दे० 'अञ्जलि'।
अञ्जना, अञ्जना-सं० कि० अञ्जन लगवाना।
अञ्जस-वि० [सं०] सीषा, अकृति, ईमानदार।
अञ्जस-अ० [सं०] जन्दीसे, झपट; माक्षात्; ठीक नीचे, वधावत्।
अञ्जसाधन-वि० [सं०] सीषा जानेवाला।
अञ्जहार-वि० अनाजका। [खी० अञ्जही] गलेका बाजार।
अञ्जाम-पु० [फा०] अंल, ममांसि; पुंसि; फल, नतीजा। मु०-को पहुँचाना-पूरा करना। -देना-पूरा करना। -पाना-पूरा होना।
अञ्जि-पु० [सं०] प्रेरक, अञ्जनेवाला; आदेशक; त्रिपुट। खी० अनाम, राग; अनन्दिद्वि।
अञ्जित-वि० [सं०] अञ्जनयुक्त।

अञ्जि-वि० [सं०] पिच्छक, चिकना।
अञ्जि, अञ्जि-पु० [सं०] सूर्य।
अञ्जी-खी० [सं०] आशीर्षक, शुभकामना; पीसनेका थंर; दे० 'अञ्जि' (खी०)।
अञ्जीर-पु० [फा०] गूँदकी आतिका एक प्रसिद्ध फल; उसका पेड़।
अञ्जुम-पु० [फा०] समा, समिति, मजलिस, महासभा।
अञ्जुरी, अञ्जुलि, अञ्जुली-खी० दे० 'अञ्जलि'।
अञ्जोर, अञ्जोरा-पु० उजाला, प्रकाश।
अञ्जोरा-सं० कि० हरण करना; ममेद लेना; दिया बालना।
अञ्जोरी-खी० उजाला, चौरनी। वि० खी० उजियाली।
अञ्जा-पु० अनध्याय, छुट्टी; नागा; खी०-अंशासी दिन-की भर सप्तासी सकल दिशि-भू०। लीप।
अञ्जना-अ० कि० दे० 'अञ्जना'।
अञ्जना-अ० कि० समाना; ठीक जाना, ठीक नापका होना (कपडा, जूआ ह०); काफी होना; पूरा पचना; अथवा जाना।
अञ्जस्ट-वि०, पु० दे० 'अञ्जव'।
अञ्ज-पु० बकी गोली; बकी कीली; सून या देशमाका लच्छा; बिलियर्डका खेल। -अञ्ज-पु० बिलियर्ड खेलनेका कमरा।
अञ्जगुडगुड-वि० देतुप, बेहोश, नदमे चूर (शोक)।
अञ्जवित-वि० पूरी तरह चित्त; लम्ब; नदमे चूर, कैद; बर्बाद, बेकार (भा०)।
अञ्जव-पु० सब कुछ हार जानेपर दौघपर रखी जानेवाली खेलनेकी कीडी।
अञ्जि-खी० घाम, पतली लकड़ियों, हातुनों आदिका मुट्ठा, गठिया, पूला।
अञ्जिबाना-सं० कि० उंगलियोंके बीचमें छिपा लेना; गायब करना; छिपा बसाना; तामेकी पिंडी बसाना।
अञ्जी-खी० दो उंगलियोंके बीचकी जगह, धार; दोनोंको कमरके ऊपरकी लपेट; गाँठ; टेंट; कोहड़ा; पहलवानोंका एक दोब; अटेरन; अट्टा; सूत या देशमाकी लच्छी; विगाह; छोटी बानी। -अञ्ज-वि० दवाबाज, फेरी। मु०-करना-माल उठा लेना; सूत लपेटकर अट्टी बनाना। -देना-गर-दनिया देना। -अञ्ज-अञ्जना-धोखा खा जाना। -मारना-दूसरेकी चीज धीरेमें उड़ा लेना; कम लौचना, खीसी मारना।
अञ्जीतल-पु० कोल्हमें जुते हुए बैलकी ओंखोंपर लगाये जानेवाले ढक्कन।
अञ्जि-खी० कुत्तोंके बदनमें चिपटे रहनेवाले छोटे कोड़े, चिल्लनी।
अञ्जली-खी० नवोदयका उमजगा हुआ सन।
अञ्जी-खी० गुठली; बिस्ती; गाँठ; गिरह; अंठनी।
अञ्ज-पु० [सं०] अंजा; अंजकीया, फोगा; अंजाद; सौर्य; वृग-नाभि, नाफा; शिव। -कटाह-पु० अंजाद। -कोट-पुष्पी-खी० नीलबुझा नामक पीषा। -कोस, -कोक, -कोषक-पु० कीमा; सुसिवा अंजाद। -अञ्ज-पु० अंजिमे उपज होनेवाले प्राणी (पक्षी, सीप, मछली ह०)। वि० अंजिमे उपज। -अञ्ज-खी० कलगी। -अञ्ज-पु० शिव। -अञ्ज-पु०, -अञ्जि-खी० कीमा करनेकी बीमारी। -अञ्ज-वि० अंजिमे उपज होनेवाला।

अंतराजः ईश्वरः सक्षिपत अरका एक मेघः सीमा ।

अंतरा-श्री० अंत ।

अंतरः-अ० [सं०] अंतमें; कमरे बग; अशतः भीतर ।

अंतरतोषणा-अ० [सं०] निदान, आखिरकार, अंतमें ।

अंतरा-वि० [सं०] अति समीप ।

अंतरंग-वि० [सं०] भीतरी; अतिप्रिय या घनिष्ठ, दिली (मोस्त) । पु० सबसे भीतरके अंग (हृदय, मस्तिष्क); अंतराद्रिय-सचिव-पु० निजी सचिव, प्राइवेट मेन्ने-हरी । -समा-श्री० किसी मन्त्री कार्यकारिणी समिति । अंतरंगी(गिन्)-वि० [सं०] दिली, भीतरी । पु० दिली दोस्त ।

अंतरा-पु० [सं०] सीमा, बन्धुत्व ।

अंतर-वि० [सं०] भीतरका; आसन्न, निकट, आत्मीय; समान (स्वर, शब्द) बाहरी; भिन्न, दूसरा (समामने) ।

पु० भीतरका भाग; आशय; छिद्र; आत्मा; मन; हृदय; परमात्मा; बीच, अवकाश, स्थान; प्रवेश; पहुँच; अर्ध; काष्ठ; अक्षर; फल; श्रेय (गणित); फामला, दूरी; विशेषता; निर्गता, दीप, बुद्धि; निश्चय, निश्चय; प्रवीजन, गोपना; ओट; अमास; बन्ध; प्रतिनिधि । अ० दूर; भीतर ।

-अचन-पु० दे० 'अनगुह' । -चक्र-पु० शरीरके भीतरके छ चक्र (तंत्र); स्वजनमन्त्र, पिछियोकी बोलीके आधारपर शुभाशुभ जाननेकी विद्या; दिशा-विदिशाके बीचके अंतरका चतुर्थांश । -छात्र-श्री० [हि०] छात्रके भीतरका नाम भाग । -ज्ञ-वि० हृदयकी बात जानने-वाला । -दिशा-श्री० दो दिशाओंके बीचकी दिशा, विदिशा । -पट-पु० पट्टा, दुपट्टा; विवाहके समय वर और कन्याके बीच डाला जानेवाला पट्टा; कपडमिडी; मिडीके साथ लपेटा जानेवाला कपडा । -पतिन आय-श्री० मौदा ठीक करनेकी दम्पती । -पुरुष, पुरुष-पु० आत्मा; अंतःकरणमें दृष्टारूपमें स्थित परमात्मा । -प्रभव-पु० वर्णनकर । -प्रभव-पु० वह प्रत्येक जो पहले कहा हुई बातमें ही मौजूद हो । -प्रदेशिक-वि० अपने प्रांत या प्रदेशमें संबंध रखनेवाला; अपने प्रांत या प्रदेशमें होने-वाला । -राष्ट्रीय-वि० दे० 'अनागात्रिय' । -शाखी-वि० अंतर रहनेवाला; चित्तमय (जीवात्मा) ।

-संचारी-पु० संचारी भाव । -स्था, स्थायी(गिन्),-स्थित-वि० भीतर रहनेवाला (जीवात्मा) ।

अंतराल-पु० कमतर करनेकी एक लकड़ी ।

अंतरण-पु० [सं०] अंतर्गम करना; व्यवधान, व्यवधान डालना ।

अंतरतम-वि० [सं०] आत्मीय, अति समीप । पु० सर्वसे भीतरका भाग, दिलकी गहराई ।

अंतरद्व-पु० [सं०] दे० 'अंतरद्व' ।

अंतरा-पु० [सं०] दे० 'अंतरा' ।

अंतरा-पु० [सं०] कर्णोंके बीचका भाग, बर्ध-म्वल ।

अंतरा-अ० [सं०] भीतर, बीचमें; निकट; स्थिर, स्थिर, नवक; यदा-तदा; कुछ कालके किये; प्रसंगः । पु० स्थायी या टेककी छोटकर गीतके और मंच चरण । -दिक्-श्री० विदिशा । -भवदेह-श्री० भवतत्व; पृथु और जन्मके बीचकी स्थितिवाली आत्मा । -बेदी-श्री० धर्मोंके मन्त्रों

बना हुआ अक्षि ।

अंतरा-पु० अंतर, बीच-पारसमें अब संतर्पे कबे अंतरी जान । वह लोहा कंचन करे वह पुनि आप समान ।

अंतरा-पु० कोना, नागा; स्कावट; एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर । वि० एक छोड़कर दूसरा; जो एक दिनके अंतरमें हो या आवे (अंतरा नुसार; अंतरी दिन) ।

अंतरा-म० कि० भीतर करना, छिपाना; अलगा करना ।

अंतरापन्था-वि० श्री० [सं०] गर्भवती (श्री) ।

अंतरा-पु० [सं०] किन; अचलन; ओट; मनकी पक्षा-प्रणामे बाधक बाने (द०); मुक्तिकी प्राप्तिके प्रयत्नमें लगे हुए ब्यक्तिके मार्गमें बाधक होना ।

अंतराल, अंतरालक-पु० [सं०] मध्यवर्ती स्थान या काल; बीच, भीतरका भाग । -विज्ञा-श्री० विदिशा ।

अंतरिका-श्री० [सं०] मकानोंके बीचकी गली ।

अंतरिक्ष-पु० [सं०] पृथ्वी और स्वर्गके बीचका स्थान, आकाश । वि० अदृश्य । -ग, -चर, -चारी(गिन्)-पु० पक्षी । वि० आकाशमें चलनेवाला । -जल-पु० आम ।

अंतरिच, अंतरिच्छ-पु० दे० 'अंतरिक्ष' ।

अंतरित-वि० [सं०] भीतर आया या किया हुआ; छिपा हुआ, बीचमें आया हुआ; दबा हुआ; नष्ट; अदृश्य; पृथक् किया हुआ; तुच्छ समझा हुआ । पु० श्रेय (गणित) ।

अंतरिक्ष-वि० दो समयोंके बीचका; मध्यवर्ती (इंटरिक्स) ।

अंतरिया-वि० एक दिनके अंतर आनेवाला (अवर) ।

अंतरिक्ष-पु० [सं०] दे० 'अंतरिक्ष' ।

अंतराप-पु० [सं०] भूमिका नुकीला भाग जो समुद्रमें दूर तक चला गया हो; राम ।

अंतराप-पु० [सं०] अधोवक्ष; नीचे पहननेका कपडा, पोती; अनरीडा । वि० भीतरका ।

अंतराट-पु० बारीक भाँचके नीचे पहननेका कपडा, अंतर, माया ।

अंतर-अ० [सं०] भीतर, बीचमें । -अग्नि-श्री० जठ-गर्भ । वि० अग्निमय । -अचन-पु० नीचे जाना; गायब होना । -अवध-पु० भीतरका अंग ।

-आकाश-पु० मध्यस्थल; मनुष्यके हृदयमें रहनेवाला भाग । -आकृत-पु० गुप्त अभिप्राय या उद्देश्य । -आगत-पु० फरका भीतरी भाग । -आत्मा(सन्)-श्री० आत्मा; अन्तःकरण । -आपण-पु० नगरके बीचका बाजार । -आपास-पु० एक बानेज रोग । -आरा-वि० मनमें आनन्दका अनुभव करनेवाला । -इन्द्रिय-श्री० मन, बुद्धि आदि भीतरकी इंद्रियाँ । -गंग-श्री० गुप्त या छिपी हुई गंगा । -गङ्ग-वि० अनाधरपक; बेकार, जलाभर । -गत-वि० भीतर समाया हुआ; शामिल; गुप्त । -गति-श्री० आनन्द, मनकी वृत्ति । -गर्भ-वि० गर्भवृत्त । -गाधार-पु० एक विद्वत् स्वर (संगीत) । -गृह, -गोह-पु० मनका भीतरी खंड । -गुहरी-श्री० तीर्थस्थानके भीतर पड़नेवाले स्थानोंकी बाधा । -घट-पु० अन्तःकरण । -अदर-पु० वृद्धि, पैर । -आदि-वि०

बनना। बीसा, खाना, बाल-बूझकर, बिप्ला करना।
-बनावा-उल्टा बनाया; ठगना। -(बे) ली ककड़ी,
की छाती-एकमात्र सहारा।

अंशानुष-अं-विना, सोने-विचारे, बेहिसाब, बेतहाश।
वि० विचारहीन। ली० वना अंशकार; अंधे, बांघापी, अंधकथा।

अंशानुकर-अं० [सं०] अंश सूँझकर किसी पीछे चलना; किसी व्यक्ति या व्यवहारका विना विचारे अनुकरण करना।

अंशार-अं० अंशकार।

अंशाली-ली० अंश सोका।

अंशहिः अंशहिक-अं० [सं०] एक विपत्तीन सप्रेम; एक तरहकी मछली।

अंशाली-ली० बोरपुष्पी नामक धूप।

अंशिका-ली० [सं०] रात; अँकका एक रोग; वृद्धा; श्रियोंका एक भेद।

अंशिकार, अंशिकारा-अं० अंशकार। वि० अंधेरा।

अंशिकारी-ली० अंशकार; योही, गिकारी विधियों आदिकी अँलोर बाँधी जानेवाली पट्टी।

अंशिकाली-ली० अंशकार।

अंशु-अं० [सं०] कृपा; मेहन, शिष्टन।

अंशुड-अं० [सं०] शिरीष वृक्ष।

अंधेर-अं० अनीति, अन्याय, बांघापीगी; नियम-व्यवस्थाका भ्रमाव। -आता-अं० राइवड, अव्यवस्था, हिसाब-किताबका ठीक न रहना। -नगरी-ली० वह स्थान जहाँ कोई नियम-व्यवस्था न हो।

अंधेरना-अं० कि० अंधेर करना; अंधेरा करना।

अंधेरा-अं० अंशकार; मेरादव; उदासी; छाया (अंधेरा छोके)। वि० प्रकाशरहित; अंधकारमय। -उजाला-अं० मन्द और रंगीन कागजोंकी विशेष प्रकारसे छपेकर बनाया हुआ एक झिल्ली। -घुण्ड-घुण्ड-अं० गहरा अंधेरा, घोर अंधकार। -घास-अं० कुणपक्ष। सु०-छा जाना-अत्यधिक अंधकार होना; बहुत बड़ी छान आदिके एकाएक होवेपर कुछ दिखाई न देना। -(३)-उजेले-समय-कुसमय। -घरका उजाला-अति सुंदर या कानियुक्त; एकदलीता पैदा। -मुँह-पै फटते, उजाला होनेके पहले।

अंधेरिया-ली० अंशकार; अंधेरा पास; ईश्वरी पहली गोश्राई।

अंधेरी-ली० अंशकार; अंध; बोहे या बैलकी अँसपर डालनेका पट्टा या बाली; दक्षिण भारतका एक स्थान। वि० ली० अंशकारभरी। सु०-कोठरी-गर्म, कोस; गुप्त भेद। -आका धार-गुप्त प्रेम। -डालका बा देना-अँस सूँझकर बुगति करना; बीसा देना।

अँधोरी-ली० बोहे या बैलकी अँसपर डालनेका पट्टा, अंधकट।

अँधोरी-ली० दे० 'अम्पारी'।

अँधार-अं० अंधकार।

अँधारी-ली० अंधिकारी, अंधकार।

अँड-अं० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्रदेश, अंध; एक शैत्यक आति; बेलिया; मगधका एक राजवंश। -अँड-अँड-

अँड-अँड एक राजवंश की अंधवंशके बाद गया।

अँड-अँड [सं०] पिता; स्वर बेह; स्वर करनेवाला; अँड; अल; आम। ली० दे० 'अँडा'।

अँडक-अं० [सं०] अँड; शिवमेव (१); पिता; तौभा।

अँडर-अं० [सं०] आकाश; बका; एक विशेष प्रकारकी सारी; केसर; समुद्रके किनारे पायी जानेवाली एक क्षुब्धित वस्तु जो दबाके काम आती है; कपास; अमक; राजपूतानाका एक जंगल; बरिधि पैरा; धनेस; मीठ; पुराई, पाय; कृष्ण; आदक। -अँडर-अं० पक्षी; विपायर। -आरी-विष्णु-अं० ग्रह। -अँडर-अं० [सं०] स्वर्णस्तकालमें पश्चिम दिशामें दिखाई देनेवाली छाती। -अँड-अं० कपास। -अँडर-अं० अंसमय बात। -आरी-ली० [सं०] एक छाती जो दबाके काम आती है। -अँडर-ली० [सं०] आकाशमेक। -अँडर-अं० सुख। -अँडर-अं० ऊपर और नीचेका बका। -अँडर-अँडर-वि० गगनरश्मि। -अँडर-अं० बहुत अँडा पहाड़। -अँडर-ली० पृथ्वी।

अँडर-अँडर-ली० (१) एक पुराना कद जो करीब लगता था।
अँडर-अँडर-अं० [सं०] क्षितिज; बकका छोर।
अँडर-अँडर-ली०, अँडर-अँडर-अं० अमरती।
अँडर-अँडर-अं० [सं०] माय; दाना भूनेका मिट्टीका बरतन; युक्त; विष्णु; शिव; अनुताप; एक नरक; सुख; अमक; छोटा जानवर, बकका; अंधोभ्याका एक सर्ववशी राजा जो विष्णुमणिके लिए प्रसिद्ध है।

अँडर-अँडर-अं० [सं०] देवता।

अँडर-अँडर-अं० मादक पदार्थ; लहारा रन।

अँडर-अँडर-अं० [सं०] एक प्राचीन जनपद (लाहौर और उसके आस-पासका प्रदेश) और उसके निवासी एक जाति जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और वैश्य मातासे मानी जाती है; कायस्थोंकी एक उपजाति; महाजन।

अँडर-अँडर-ली० [सं०] दे० 'अँडर'।

अँडर-अँडर-ली० [सं०] जूही; अंधाका; नुक्तिका; अँडर जाति-की ली।
अँडर-अँडर-ली० [सं०] ब्राह्मी लता।
अँडा-ली० [सं०] माता, अम्मा; दुर्गा, शिवकी भार्या; काशिराज इंद्रधुन्नी तीन कन्याओंमेंसे सबसे बड़ी जिसका भीष्मने अपने भाई विचित्रवीर्यसे विवाह करनेके लिए हरेण किया था; पादा लता। * पु० आम। -पादरी-ली० [सं०] अमावस, अनरस।

अँडा-अँडा-ली० [सं०] माता; अमका।

अँडा-अँडा-ली० [सं०] माता।

अँडा-अँडा-अं० [सं०] देर, राशि। -आना-अं० गोदाम, अंधार।

अँडा-अँडा-अं० दे० 'अम्पारी'।

अँडा-अँडा-ली० [सं०] माता।

अँडा-अँडा-अं० [सं०] माता; पादा लता; काशिराज इंद्रधुन्नी भीष्म द्वारा हरी गयी कन्याओंमेंसे सबसे छोटी जो विचित्रवीर्यकी कनिष्ठा पत्नी और पांडुकी माता थी।

अँडा-अँडा-ली० [सं०] माता; दुर्गा, पार्वती; पादा लता; काशिराज इंद्रधुन्नी भीष्म द्वारा हरी गयी मँडली कन्या

जो विविधवीर्यकी कवी रानी और चतुराहूकी माता थी ।
अक्षति-पुं शिव । **पुत्र**-**सुत**-पुं चतुराहू । **अन**
 पुं एक पुराणवाग्विद कवि जयमल्लकी अंतर्गत एक कवि ।
अभिकेव-पुं [सं०] दे० 'अभिकेव' ।
अक्षिप-**क्षी** छोटा कब्जा आम जिसमें जाली न पड़ी हो,
 छिनीरा ।

अक्षिप-वि० बुरा ।

अंश-पुं [सं०] जल; रसका जलीय तत्त्व; एक छत्र; जन्म-
 दुःखमें चौथा स्थान; चारकी सत्त्वा । **अंशक**-**किरात**
 -पुं समर । **अंश**-**क्षम**-पुं धूम । **अंशर**-पुं
 जलस्य द्रव्य, नीच । **अक्षिप**-**क्षी** पितृतर्पण । **अ**-
क्षर-**क्षारी** (रिन्)-वि० पानीमें रहनेवाला (मत्स्य
 आदि जलचर) । **अन**-पुं ओला । **अक्षर**-पुं
 शील । **अक्षर**-**ताल**-पुं सिंघार । **अ**-वि० जल-
 में उपज । पुं कमल; चंद्रमा; सखी; वन; ईजक नामका
 पेड़; पैंग; कपूर; सारत पक्षी; इद्रका वृक्ष । **अ**-**क्षी**
 एक रागिनी । **अक्षर**-पुं सूर्य । **अ**-वि० जल देने-
 वाला । पुं बाढल । **अ**-वि० जल धारण करनेवाला ।
अ-वि० समुद्र; जलपात्र; चारकी सत्त्वा । **अ**-**क्षवा**-
क्षी बीकुरार । **अक्ष**-पुं समुद्र । **अक्षि**-**वि०**
 समुद्र । **अ**-पुं समुद्र; वरुण; चक्रमर्दक नामक पौधा
 वि० पानी पीनेवाला । **अक्षि**-पुं समुद्र, वरुण ।
अक्ष-**क्षी** उच्छा; नागरमोथा । **अक्ष**-**क्षी**-**पात**
 -पुं जलप्रवाह, धारा । **अक्ष**-**क्षी**-**प्रसादन**-पुं
 कतक, निर्मली । **अक्ष**-पुं कमल । **अक्ष**-पुं बाढल;
 समुद्र; मोथा; अन्नक । **अक्ष**-**क्षी**-पुं शंभूक, पौधा ।
अक्ष-पुं समुद्र; वरुण । **अक्ष**-पुं समुद्र । **अक्ष**-
 -पुं कमल । **अक्ष**-**क्षी** स्थलपक्षिनी । **अक्ष**-**क्षी**
 दशमीसे त्रयोदशीतकके चार दिनोंके लिए वृक्षके लिए
 प्रयुक्त होनेवाला एक विशेषण (इस समय पृथ्वा रजस्वला
 मानी जाती है और कृपिकमें बंद रहना है) । **अक्षिनी**
अक्ष-**क्षी** पाटला नामक पौधा । **अक्ष**-पुं
 बाढल; मोथा; १० की सत्त्वा; शील । **अक्षिनी**-**क्षी**
 नावका पानी उलीचनेका इतनन; जल छाननेवाली स्त्री ।
अक्षी (विन्)-पुं बाढल; पुष्पक । **अक्षि**-**वि०**
 जलक्षी । **अक्ष**-पुं पानीमें पंदा होनेवाला एक
 तरहका रेंत । **अक्ष** (विन्)-पुं विष्णु, नारायण ।
अक्षिप-**क्षी** एक पौधा । **अक्षिप**-**क्षी** बीक ।
अक्ष-**क्षी** जल छिड़कने या उलीचनेका (काष्ठका)
 पात्र ।

अंशुजक्ष-वि० [सं०] कमलके समान नेत्रोंवाला । पुं
 विष्णु ।

अंशुजासन-पुं [सं०] श्रद्धा ।

अंशुजासना-**क्षी** [सं०] लक्ष्मी ।

अंशुमती-**क्षी** [सं०] एक नदीका नाम ।

अंशुवा-पुं आम ।

अंबेकर, **बा० भीमराव रामजी**-पुं-प्रसिद्ध हरिजन
 नेता (जन्म १८९३), गोलमंड ममलतके सदस्य १९३०-
 ३१; १९४० से १९५१ तक भारतके विधिमंत्री थे ।

भारतीय संविधानका मसविदा मुख्य रूपसे उन्होंने कैपार
 किया था ।

अंबोह-पुं [का०] भीड़, मसमा ।

अंब-पुं [सं०] 'अंब'का समासगत रूप । **अक्षि**-पुं

वरुण । **अक्ष**-पुं मोती । **अक्ष**-पुं धूप ।

अंश (स्)-पुं [सं०] जल; आकाश; देवता; मनुष्य;
 क्षति; तेज; पितरः पितृलोक; जन्ममुक्तकीमें कर्मसे चौथा
 स्थान; आध्यात्मिक तुष्टि (योग); चारकी संगमा; एक
 राक्षस; एक वृत्त ।

अंशनिधि-पुं दे० 'अंशनिधि' ।

अंशस्तुष्टि-**क्षी** [सं०] चार आध्यात्मिक तुष्टियोंमेंसे
 एक (सा०) ।

अंश-'अंश'का समासगत रूप । **अ**-वि० जलमें
 उपज । पुं कमल; सखी; चंद्रमा; सारमा; कपूर । **अ**-

अक्षि-**क्षी** **अक्ष**-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष**-

पुं श्रद्धा । **अ**-**क्षर**-पुं बाढल; मोथा । **अक्ष**-

निधि-पुं समुद्र । **अ**-**क्ष**-**क्षी** **अक्ष**-**क्षी**-

मृगा । **अक्ष**-पुं समुद्र । **अक्ष**-पुं कमल; सारत ।

अंश (स्मृ)-**क्षी** [सं०] कमलिनी; कमलपुष्पोंका समूह;

वह स्थान जहाँ कमलोंकी बहुतसारी हो ।

अंश (स्मृ)-**क्षी** दे० 'अंश' ।

अक्षि-पुं अमृत; अविद्या, आमका छोटा फल ।

अक्ष-**क्षी**-वि० औषध; जिसका कुछ नीचेकी ओर हो ।

अक्ष, **अक्ष**-**क्षी**-पुं दे० 'अक्ष' ।

अक्ष (स्मृ)-**क्षी** छोटा अक्षर ।

अक्ष-पुं [सं०] भाग, हिस्सा, चौथा भाग, मोल्हवा

भाग, वृत्तकी परिधिका १६वां भाग; भाग्य अंक; जिस

की लकीरके ऊपरका अंक; एक आदिश्रव; दिन; पौधा ।

अक्ष-पुं भाग लगाता, बटवारा करना । **अक्ष**-

वि० भोज समयमें, पूरे समयके कुछ भागमें, जिसका संबंध

हो (नोकरी, सेवा) । किसी काममें पूरा समय न देकर थोड़ा

समय लगानेवाला (पाठ दाखल) (कार्यकर्ता) । **अक्ष**-पुं

वह लेखक जिसमें हिस्सेदारोंका हिस्सा लिखा हो ।

अक्ष (स्मृ), **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

क्षी **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-**क्षी** **अक्ष** (स्मृ)-

किरणें एकत्र होकर मिले। -पह-पुं एक तरहका रेशमी कपड़ा। -मर्दन-पुं एक मरुदुह। -आली (खिन्), -इन्स-पुं सूर्य।

अंशुक-पुं [सं०] बल; सूक्ष्म बल, बारीक कपड़ा; रेशमी कपड़ा; उपरना; दुपट्टा; तैय्यपात; अल्प प्रकाश।

अंशुमनी-स्त्री [सं०] साधवणी।

अंशुमत् (मत्)-पुं [सं०] सूर्य; चंद्रमा; सूर्यवंशी राजा सगरका पीत। वि० अंशुयुक्त; प्रभायुक्त; नौकटार; तनु-मय। - (मत्) फल-स्त्री करली।

अंशुक-वि० [सं०] घुमायुक्त। पुं चाणक्य मुनि।

अंशिक; अंशीक-स्त्री अंश, अक्षि।

अंस-पुं [सं०] अंश, कथा। -कूट-पुं सफ़िका कूब।

-अ-पुं कंधोका बस्तर। -कलक-पुं रीदका ऊपरी हिस्सा। -आरिक-वि० कंधोपर बोझ डोनेवाला।

अंसक-वि० [सं०] मजबूत कंधोवाला; तपका।

अंसुक-पुं माग; कथा; आँसू।

अंसुधा, अंसुवा-पुं दे० 'आँसू'।

अंसुधाना-अ० कि० आँसू भर आना।

अंश-वि० [सं०] कथा सवधा।

अंश (य)-पुं [सं०] पाप; निना; कष्ट।

अंशुवा-पुं बटवरा।

अंशुमि; अंशुली-स्त्री [सं०] दान; त्याग; कष्ट; रोग।

अंशुति; अंशुनी-स्त्री [सं०] दान।

अंशु-पुं [सं०] चरण, वृक्षमूल। -अ-पुं वृक्ष।

-अक्ष-पुं पत्नी और पुत्रोंके बीचका भाग।

अ-अप [सं०] यह व्यग्रनादि सभा और विशेषण शब्दोंके पहले लगकर सादृश्य 'अभाद्राण', अंद् (अपट), अल्पना (अदण, अनुदार), अभाव (अरुप, अकाम), विरोध (अर्त्ताति) और अप्राशम्य (अकाल, अकार्य) के अर्थ प्रकट करता है। ध्वने आरभ होनेवाले शब्दोंके पहले आनेपर प्रत्यय रूप 'अन्' हो जाता है। पुं विष्णु; शिव; ब्रह्मा; वायु, वैश्वानर; विश्व; अश्वत्।

अशुल-पुं मुद्ग; छेद।

अड, अडर-अ० और, तथा।

अडठा-पुं कपड़ा नापनेके काम आनेवाला जुलाहोंकी लकड़ी।

अडल-वि० निपूता, निम्नमान।

अडलना-अ० कि० तप्त होना, जलना; गरमा पड़ना; जुमना; छिलना।

अडल, अडली (विज)-वि० [सं०] जो भणी वा कज-दार न हो; जगमुक्त।

अडरना-अ० कि० अंगीकार करना, ग्रहण करना 'विद्यो सो मीम वदाम ले आशी मीनि अपरि'-वि०।

अडटक-वि० [सं०] बिना काँटेका, निर्दिष्ट; सजुरहित।

अडठ-वि० [सं०] जिसके कंठ न हो; स्वरहीन; कंकश।

अडप-वि० [सं०] कपूरहित, स्थिर।

अडपन-पुं [सं०] राखणके टप्पका एक राक्षस। वि० दे० 'अडप'।

अडरित-वि० [सं०] जो बंधा न हो, स्थिर। पुं महा-वीर (अनिम नौचकर) के प्यारक शिष्योंमेंसे एक।

अडप-वि० [सं०] जो कपनेवाला न हो, निश्चल।

अड-पुं [सं०] कष्ट, दुःख; पाप।

अडप-वि० [सं०] केशरहित, गंजा। पुं केतु ग्रह।

अडप-वि० [सं०] गंगा; छपट।

अडटक-वि० [सं०] जो कटु वा कषा न हो; अडुतांत।

अडठर-वि० [सं०] जो कठोर न हो; कमजोर।

अडप-स्त्री अकलनेका भाव, ठिठार; कड़ापन, तनान;

पेंठ, धर्मद; दंड; स्वाधिमाम। -सक-स्त्री ताव;

पेंठ; आन-वान; बाँकपन। -फों-स्त्री गर्वसूचक चाल,

वेष्टा। -बाई-स्त्री एक रोग जिसमें नसें तन जाती हैं।

-बाइ-वि० अकसर चलेवाला, धर्मही। -बाइ-स्त्री पेंठ, धर्मद।

अडपना-अ० कि० सूखकर बसा होना; ठिठरना; तनना,

पेंठना; धमड करना; सम्भ होना; तनना, तनकर चलना;

निद करना; भ्रष्टा करना; लट होना। सु० अडपकर

चलना-सीना उभारकर चलना।

अडपम, अडपह-पुं [सं०] एक तापिक चक्र।

अडपा-पुं बीपायोंका एक रोग।

अडपाव-पुं अकलनेकी क्रिया; तनान, पेंठन।

अडपू-वि० दे० 'अडपाव'।

अडपू-वि० दे० 'अडपाव'।

अकल-वि० कुल, सपूर्ण। अ० पूर्णतया, सरासर।

अकली-स्त्री अक्षयतृतीयाका त्योहार (वैशाख-शुक्ल

तृतीया) जिस दिन नववधूने उमकी सखियाँ, नैनद आदि

उसके पतिका नाम पूछी हैं वा उसे कामजवर छिन्न

देनेका आग्रह करती हैं (पुदेण्डाडका रिवाज), 'सुम

नाम जिम्मावनी हो हमसे हम नाम कहा कही छीजिये

जु'। कवि 'विचित्र' और 'अकली सक्ती नहीं हों

पर कीजिये जु'। -कवि० पौ०।

अकरप-वि० दे० 'अकध'।

अकथन-वि० [सं०] दपंथान, जो धमड न करे।

अकथ-वि० दे० 'अकध'।

अकथनीय-वि० [सं०] दे० 'अकध'।

अकथित-वि० [सं०] जो न कहा गया हो, अनुक्त; गौण

(कर्म-व्या०)।

अकध-वि० [सं०] जो कहा न जा सके, कथनके अयोग्य,

अकथनीय, कहनेकी शक्तिके बाहर।

अकध-पुं दे० 'अकध'।

अकधक-पुं आगपीछा; आशका।

अकलना-अ० कि० कान लगाकर सुनना; सुनना; आहट

लेना या पाना।

अकना-अ० कि० बचाना।

अकनिष्ठ-वि० [सं०] जो सबसे छोटा न हो। पुं बुद्ध;

बौद्ध देववर्गविशेष।

अकन्या-स्त्री [सं०] वह कन्या जिसका कोमार्य नष्ट हो

चुका हो।

अकचक-पुं अंबवट वारों; प्रयाप; सुखदुःख; चिंता; सटका।

वि० चकित, निस्तब्ध। सु० -करना-प्रयाप करना।

अकचकाना-अ० कि० जीतका होना; धराना।

अकसर-वि० [अ०] बहुत बधा, मज्जर। पुं भारतके

मुगल राजवंशका तीसरा और मुगल साम्राज्यकी नींव पक्की करनेवाला बादशाह ।

अकचरी-वि० अकचरका चलावा हुआ; अकचर-संबंधी; बेमेल (० विचार) । खी० एक मिठाई; लकड़ीपर की जानेवाली एक तरहकी नक़्क़ारी ।

अकलाख-पु० दे० 'अकाल' ।

अकल-वि० [स०] बिना हाथका; बिना महसूलका; करते मुक्त; दुष्कर; भिक्विय, जो कार्य न कर रहा हो ।

अकलकरा-पु० दवाकी काम आनेवाला एक पौधा, आकरकरहा ।

अकलखना-स० कि० आकृष्ट करना, खींचना, गानना ।

अकलण-वि० [सं०] इन्द्रिय-रहित देह, इन्द्रियादिसे रहित (परमात्मा); अकृत्रिम, स्वाभाविक । *अकारण, कारण-रहित; जिसका करना अनुचित या कठिन हो । पु० कुछ न करना, कर्मका अभाव ।

अकलणि-खी० [स०] असफलता; नैराश्य ।

अकलणीय-वि० [स०] न करने योग्य ।

अकलन-वि० अकाल; अकलणीय ।

अकलनीय-वि० दे० 'अकलणीय' ।

अकल-पु० [अ०] बिच्छु; दृष्टिक राशि; वह पौधा जिसके मुंहपर इतने रोमरात्रिके बीच दूसरे रंगके रोपे हैं ।

अकरा-खी० [स०] जामलकी । *वि० बहुमूल्य; खरा, चोला ।

अकराय-वि० व्यर्थ; निष्प्रयोजन ।

अकराम-पु० [अ०] अनुग्रह, बलिदान ('करम'का बहु०, इनाम-अकराम) ।

अकराल-वि० [स०] जो अथक न हो, सुंदर, सौम्य । *वि० भयानक ।

अकरास-पु० सुस्ती, आलस्य; अंगड़ाई ।

अकरासू-वि० [सं०] जिसे गर्भ हो, गर्भवती ।

अकरी-खी० हलमें लगा हुआ चौगा जिसमें बीज गिराने हैं; एक विशेष पौधा ।

अकरुण-वि० [स०] करुणारहित, निरुर ।

अकर्कश-वि० [सं०] कर्कशगारहित, नरम, मृदु ।

अकर्ण-वि० [सं०] जिसके कान छोटे हों; कर्णहीन, दहरा; जिसमें पगवार न हो । पु० माँव । -धार-वि० चालकहीन ।

अकर्णक-वि० [स०] कर्णहीन ।

अकर्ण्य-वि० [स०] जो कानोंके योग्य न हो ।

अकर्तन-वि० [स०] जो न काटे; शैला ।

अकर्तव्य-वि० [स०] न करने योग्य, अविहित, अनुचित । पु० अनुचित कर्म ।

अकर्तार(री)-वि० [स०] जो कर्ता न हो, कर्म न करनेवाला, कर्मसे अलिप्त (पुरुष) ।

अकर्तृक-वि० [स०] जिसका कोई कर्ता न हो ।

अकर्तृत्व-पु० [स०] कर्तृत्व, कर्तापनके अभिमानका अभाव ।

अकर्म(न)-पु० [स०] कर्मका अभाव, निष्क्रियता, कर्तव्य कर्मको न करना; पुरा काम । -भोग-पु० कर्मफलके भोगमें मुक्ति । -शील-वि० सुलभ, आलसी ।

अकर्मक-वि० [स०] (बह-क्रिया) जिसके लिए कर्मकी अपेक्षा न हो (आ०) । पु० परमात्मा ।

अकर्मण्य-वि० [सं०] कर्मके अवगम; निकम्मा; आकसी; न करने योग्य ।

अकर्म(संय)-वि० [सं०] कर्मरहित, जो कुछ करता न हो; निकम्मा; संस्कार आदिका अनधिकारी ।

अकर्मनिवृत्त-वि० [सं०] अपराधी; दुष्कर्मयुक्त; निठारा, बेकार ।

अकर्म(सिन्ध)-वि० [सं०] दुष्कर्म करनेवाला, पापी ।

अकर्षण-पु० [सं०] कर्षण या खिंचावका न होना; आकर्षण, खिंचाव ।

अकलंक-वि० [सं०] कलंकरहित, निर्दोष, बेदाग । पु० एक जैन ।

अकलंकता-खी० [सं०] दोषहीनता ।

अकलंकित-वि० [सं०] निर्दोष, शुद्ध, बेदाग ।

अकल-वि० स० अवयवरहित; अस्वच्छ; अशरहित; निराकार; कलाहीन; युगहीन । खी० अकल । -दाह-खी० जबान होनेपर निकलनेवाली दाह, अङ्कका दाह ।

अकलसुरा-वि० अकेला खानेवाला, स्थायी; ईर्ष्यालु; जो मिलनसार न हो ।

अकलबर, अकलबीर-पु० एक पौधा जिसकी जड़ रेशम-पर रंग करनेके काममें आती है ।

अकलुप-वि० [सं०] स्वच्छ, मलहीन, निर्दोष ।

अकलक-वि० [सं०] बिना लच्छटका, निर्मल, शुद्ध; निष्पाप ।

अकलकक, अकलकक, अकलककल-वि० [सं०] विनम्र, दमरहित; निरङ्कार; ईमानदार ।

अकलकता-खी० [सं०] ईमानदारी, शुद्धता ।

अकलका-खी० [सं०] चौंढनी, उद्योम्मा ।

अकलप-वि० [सं०] अनियमित; नियम न माननेवाला; दुष्कर्म; अक्षम; अनुत्तरीय ।

अकल्पित-वि० [सं०] कल्पनारहित, अकल्पनिक; अकृत्रिम ।

अकल्पय-वि० [सं०] वेदाग, निर्दोष, शुद्ध ।

अकल्प-वि० [सं०] अमन्य; मन्य ।

अकल्पण-पु० [सं०] अमगल; अहित । वि० अनुभूति ।

अकव, अकवा-वि० [सं०] अवर्णनीय; जो तुच्छ या कृपण न हो ।

अकवच-वि० [सं०] कवचरहित, जिसके बदनपर कवच न हो ।

अकवच-पु० अथ, आक्का पेड़ ।

अकवास-खी० [अ०] कीमका बहु० ।

अकम-पु० बैर, द्वेष, ईर्ष्या, बराबरी ।

अकम-अ० अकम्मान् (रामो) ।

अकमना-अ० कि० बराबरी करना; बैर करना; इमडना ।

अकमर-वि० [अ०] बहुत अधिक । अ० अधिकतर, बहुधा । *वि० अकेला । अकेले, बिना किसीकी साथ लिये ।

—'कवन हेतु मन व्यय अनि अकमर आयेथु तात'—रामा० ।

अकसी-वि० अकम रखनेवाला, शत्रु ।

अकसीर-खी० [सं०] कामिया, वह दवा जिससे सस्ती धातुसे मोना बनाया जा सके; रोगविशेषकी उत्पत्ति युगकारी, अचूक औषधि । वि० अचूक, अव्यर्थ । -दाह-वि० कामिया बनानेवाला । -की बूटी-सोना-चाँदी बनानेकी बूटी ।

अकस्मात्-अ० [सं०] सहसा, अचानक; इत्थात्; संदीपवश विना कारण ।

अकम्बुः-वि० अवर्णनीय, न कहने योग्य; अनुचित ।

अकम्बुवाः-वि० अकम्बनीय, जिसका वर्णन न हो सके ।

अकौट-वि० [सं०] विना पक्ष या तनेका; अचानक या असमय होनेवाला । अ० अकारण ही, अचानक -**जात**-वि० अचानक पैदा या असमय उत्पन्न । -**ताडित**-पु० व्यर्थकी बहस, उच्छन्न-कूट आदि । -**पात**-पु० अचानक घटित होनेवाली घटना । * **जात**-वि० जन्म लेते ही मरनेवाला । -**शूल**-पु० अचानक होनेवाला उदर-शूल ।

अकार्डेट-पु० [अं०] हिसाब, लेखा । -**बुक**-पु० बही-खाता ।

अकार्डेटेड-पु० [अं०] हिसाब लिखनेवाला, मुनीम; हिसाब जालनेवाला ।

अकाज-पु० कार्यहानि, हर्ज; हानि; विप्र; दुष्कर्म; पुरा काम । * अ० व्यर्थ ही, निष्प्रयोजन ।

अकाजवाः-सं० कि० हानि करना । अ० कि० नष्ट होना, न रहना ।

अकाजी-वि० अकाज करनेवाला; बहुत जरूरी ।

अकाट-वि० जो कट न सके (दलौल इ०), अखण्डनीय ।

अकाट्य-वि० दे० 'अकाट' (अनापु) ।

अकातर-वि० [सं०] जो भीम या हनोत्साह न हो ।

अकाथ-वि० अकम्बनीय, न कहने योग्य । अ० अकारण, व्यर्थ ।

अकाम-वि० [सं०] कामनारहित, निष्काम; इच्छारहित; उदामीन; अनिच्छुक । पु० दुःकर्म । * अ० निष्प्रयोजन, विना कामके । -**हृत**-वि० जो इच्छासे प्रभावित न हो, धीर, शान ।

अकामना-स्त्री० [सं०] इच्छाका अभाव ।

अकामो (निवृ)-वि० [सं०] दे० 'अकाम' ।

अकाथ-वि० [सं०] कायरवृत्ति, अजरार । पु० राहु; परमात्मा ।

अकार-पु० [सं०] 'अ' अक्षर या उमकी, उच्चारण-ध्वनि । * आकार ।

अकारण-अ० [सं०] विना कारण, बेमूलक । वि० हेतु-रहित । पु० कारणका अभाव ।

अकारत, **अकारथ**-अ० व्यर्थ, बेकार (जाना, होना) । वि० निष्फल, लाभरहित ।

अकारज-वि०, अ० दे० 'अकारण' ।

अकारांत-वि० [सं०] जिसके अंतमें 'अ' हो ।

अकारादि-वि० [सं०] 'अ'में आरम्भ होनेवाला क्रम ।

अकार्षण्य-वि० [सं०] जो विना नीचता या दीनता दिखाये प्राप्त किया गया हो । पु० दीनता या कृपणताका अभाव ।

अकार्य-वि० [सं०] न करने योग्य, अकर्तव्य, अनुचित । पु० पुरा काम, अनुचित कार्य । -**कारी** (निवृ)-वि० पुरा काम करनेवाला; कर्तव्यका पालन न करनेवाला ।

अकाक-पु० [सं०] अयोग्य या अनियत काल, कुसमय; अनवसत; अशुभकाल; कालके परे, परमात्मा; [हि०] दुर्भाग्य; कमी । वि० जो काला न हो, सफेद; बेमौसिमका, असम-यिक । -**कुसुम**-पु० बेमौसिमका फूल; बेमौसिमकी बीज ।

कुम्भाट, **कुम्भाट**-पु० बेमौसिमका कुम्हटा; बलिदान

यादिके काम न आनेवाला कुम्हटा; बेकार बीज; निरर्थक जन्म । (गांधारीके कुम्भाटकार मांसपिण्डका अकाल प्रसव हुआ था । उसीसे कुम्हटा-नामक दुर्वापन आदि सौ पुत्रोंका जन्म हुआ ।) -**ज**-वि० असमय उत्पन्न होने-वाला । -**जलद**-पु० बेवक्तका वादल । -**अकटोद्भव**,

-**मेघोद्भव**-पु० बेवक्त, बेमौसिम बादलोंका घिरना । -**जात**-वि० वक्तसे पहले, बेमौसिम उत्पन्न हुआ । -**पक्ष**-वि० समयसे पहले पक्ष आनेवाला (फल आदि) ।

-**पुरुष**-पु० परमेश्वर, परमात्मा (सिद्ध) । **प्रसव**-पु० स्त्रीको समयसे पहले प्रसव होना । -**श्रुत**-पु० एक प्रकार-का दास जो अकालमें मिला हो । -**मूर्ति**-पु० अविनाशी पुरुष । -**स्वाधु**-स्त्री० असामयिक या असमयमें होने-वाली स्त्रुष । -**हृद**-वि० समयसे पहले बूटा हो जाने वाला । -**बेला**-स्त्री० असमय । -**सह**-वि० जो देर न सहा सके, अवीर; जो देरतक चला पा टिक न सके ।

अकालिक-वि० [सं०] असामयिक ।

अकाली-पु० मिश्रोंका एक संप्रदाय; उस संप्रदायका अनुयायी ।

अकालोत्पन्न-वि० [सं०] जो समयसे पहले उत्पन्न हुआ हो ।

अकाबा-पु० आक, मदार ।

अकास-पु० दे० 'आकाश' । -**दीबा**-पु० आकाशदीप । -**नीम**-पु० एक पेड़ । -**हानी**-स्त्री० आकाशहानी । -**बेल**-स्त्री० अमरबेल । **मु०**-**बाँबसा**-अमरब काय करनेका पक्ष करना-‘सूषे शान कही सुख पावै, शौचन कहत अकाम’-मू० ।

अकासी-स्त्री० एक पक्षी, चील; ताड़ी ।

अकिंचन-वि० [सं०] जिसके पास कुछ न हो, अतिनिर्बन, दरिद्र; कर्मशून्य; अपरिग्रही । पु० वह वस्तु जिसका कोई मूल्य न हो; दरिद्र व्यक्ति; परिग्रहका त्याग (जैन) ।

अकिंचनता-स्त्री०, **अकिंचनत्व**-पु० [सं०] निर्बनता; परिग्रहका त्याग (जैन) ।

अकिंचिज्ज-वि० [सं०] जो कुछ भी न जानता हो, शानहीन ।

अकिंचित्कर-वि० [सं०] जिसके किये कुछ न हो सके; निरर्थक; तुच्छ ।

अकिं-अ० अथवा, या फिर-‘आगि जरै अकि पानी परै’-घन० ।

अकिनव-वि० [सं०] जो जुआरी न हो; निष्कपट ।

अकिल-स्त्री० दे० 'अह' । -**बाइ**-स्त्री० अवानीमें निकलने वाला दाँत । -**का अजीरन**-बुद्धिका अतिरेक (व्यं०) ।

अकिर्त्ति-स्त्री० एकाकिनी-‘कान्ह ! परे बहुतायतमें अकिलेनिकी बेदन जानी कहा तुम’-घन० ।

अकिधिवच-वि० [सं०] पापरहित, निर्मल ।

अकीक-पु० [अं०] लाल रंगका एक बहुमूल्य पत्थर ।

अकीदत-स्त्री० [अं०] अडा । -**मंद**-वि० अडाइ ।

अकीदा-पु० [अं०] अडा; विश्वास; धर्मविश्वास ।

अकीरति-स्त्री० दे० 'अकीर्ति' ।

अकीर्ति-स्त्री० [सं०] अपयश, बदनामी । -**कर**-वि० अपयश देनेवाला; अपमान करनेवाला ।

अकुंड-वि० [सं०] जो कुंडित या ओथरा न हो; कार्यक्षम;

शक्तिशाली; सुखा हुआ; सीधे, पैना; शिरः अप्रति-
हत (?) ।-**खिन्न**-पु० खर्ग ।

अकृति-वि० [सं०] दे० 'अकृति' ।

अकृति-वि० [सं०] सीधा; सरल; भोला-भाला ।

अकृताना-अ० क्रि० दे० 'उक्ताना' ।

अकृतोभय-वि० [सं०] जिसे कहीं या किसीसे भय न हो,
निर्भीत; अशङ्क, निश्च ।

अकृतित-वि० [सं०] अनिन्दनीय, जो बुरा न हो ।

अकृत्य, **अकृत्यक**-पु० [सं०] वह धातु जो बुरी न हो,
सोना या चाँदी ।

अकुमार-वि० जो कुमार न हो, प्राप्तवयस्क ।

अकुल-वि० [सं०] अकुलीन; कुलरहित । पु० शिव; बुरा
कुल ।

अकुल-स्त्री० [सं०] शिवा, पार्वती ।

अकुलाना-अ० क्रि० अकुल होना, बचाना; विहल होना,
मम होना ।

अकुलीनी-स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री । वि० स्त्री० व्यभि-
चारिणी ।

अकुलीन-वि० [सं०] हीन कुलका, नीच कुलमें उत्पन्न,
कमीना; पृथ्वीसे सज्ज न रखनेवाला, अपाधिष ।

अकुशल-वि० [सं०] अनादी, (किसी) काममें कच्चा; माय्य-
हीन; अशुभ । पु० बुराई, अभाग्य; बुरा शब्द ।

अकुसीद-वि० [सं०] रुद्र या लाभ न लेनेवाला ।

अकुह, **अकुहक**-पु० [सं०] ईमानदार आदमी ।

अकूट-वि० [सं०] जो धोखा न दे, अमोघ (अस्त्र); जो
छोटा न हो (सिक्का) ।

अकूत-वि० जिसकी कृत या अदाजा न हो सके; विपुल,
अपरिमित । अ० अचानक, अकस्मात् (?) ।

अकूपार, **अकूपार**-पु० [सं०] मनुष्य; स्वर्ग; कष्टप; वह
महाकण्ठ्य जिनपर पृथ्वीका भार माना जाता है; चट्टान ।
वि० अच्छे परिणामवाला; अपरिमित, असीम ।

अकूर्च-वि० [सं०] कष्टरहित; स्वच्छ; जिनके दाढ़ी न
हो । पु० बुद्ध ।

अकूल-वि० [सं०] बिना कूल, बिनारेका; नीमारहित ।

अकूल-वि० [सं०] अत्यधिक; अगणित ।

अकूल-वि० [सं०] बिना हँस, कठिनार्था, आमान । पु०
हँस या कठिनार्था अभाव ।

अकूष्ठी(**खिन्न**)-वि० स० केशरहित ।

अकृत-वि० [सं०] जो पूरा न किया गया हो; बिगड़ा हुआ
या अन्यथा किया हुआ; जो किसीके द्वारा बनाया न गया
हो; अकृत्रिम; जिसने कुछ किया न हो, अकर्मित; अपक्व ।
पु० अपूरा काम, किसी कामका पूरा न किया जाना;
प्रकृति कारण; मोक्ष । -**काल**-वि० वैरमीयादी, बिना
मुदतका (बंधक) । -**चिकीर्षा**-स्त्री० मामादि उपायोमें
नयी संधि बनाना और उनमें छोटे, बड़े एवं समकक्ष राजा-
ओंका वयवोग्य ध्यान रखना । -**ज्ञ**-वि० कुलज, उप-
कार न माननेवाला । -**धी**, -**बुद्धि**-वि० जिनमें पूरा
ज्ञान न हो । -**मुलक**-वि० चुगी या म्यानीय कर न
देनेवाला; जिनपर चुगी न लगती हो ।

अकृता-स्त्री० [सं०] वह लक्ष्मी जो पुत्रकी समानाधिकारिणी

मान ली गयी हो ।

अकृतात्मा(**अप्य**)-वि० [सं०] अशानी; असंस्कृत मतवाला;
जिसे ईश्वरका साक्षात्कार न हुआ हो (साधक) ।

अकृताभ्यागम-पु० [सं०] अकृत कर्मके फलकी प्राप्ति ।

अकृतार्थ-वि० [सं०] निफल ।

अकृतात्म-वि० [सं०] जिसने अर्थोंका चलापन न सीखा हो ।

अकृती(**खिन्न**)-वि० [सं०] अकुशल, अनादी; निष्कम्पा ।

अकृतोद्वाह-वि० [सं०] अविवाहित ।

अकृत-वि० [सं०] न कदा हुआ; जिसकी कतर-भ्योत न गयी
गयी हो ।

अकृत्य-वि० [सं०] जो करने योग्य न हो । पु० दुष्कर्म,
अपराध । -**कारी**(**खिन्न**)-वि० कुकर्मी ।

अकृत्रिम-वि० [सं०] जो बनावटी न हो, स्वाभाविक;
अनली, सच्चा ।

अकृत्य-वि० [सं०] अपूरा, जो पूरा न हुआ हो ।

अकृत्य-वि० [सं०] निर्दय, दयाहीन ।

अकृपण-वि० [सं०] जो कृपण न हो, उदार ।

अकृपा-स्त्री० [सं०] कृपाका अभाव, नाराजी ।

अकृत्-वि० [सं०] जो दुबला-पतला न हो, मजबूत, मोटा-
ताजा । -**लक्ष्मी**-वि० वैभवशाली । स्त्री० प्रभूत ऐश्वर्ये ।

अकृष्ट-वि० [सं०] जो खींचा न गया हो; जो जोना न
गया हो । पु० परती जमीन, वह जमीन जो जोनी न गयी
हो । -**पच्य**-वि० जिना जुते मेंगमें उगने पकनेवाला
(शम्य) । -**रोही**(**खिन्न**)-वि० बिना जुनी जमीनमें

अपने आप उगनेवाला ।

अकृत्य-वि० [सं०] जो काला न हो, मफेद; निर्मल, शुद्ध ।

अकृत्य-वि० [सं०] निष्कलंक चद्रमा । -**कर्मा**(**मन्त्र**)-वि० पुण्याभ्यास;
निर्दोष, निष्पाप ।

अकृतन-वि० [सं०] गृहहीन, बेघर-बारका ।

अकृत्य-वि० [सं०] अकृतिरहित; जिसकी एवञ्चान न हो
सके ।

अकृत्य-वि० दे० 'अकृत्य' ।

अकृत्य-वि० बिना मार्थका, उनहा; बेजोड; कर्त; स्वात्मा
(मकान) । पु० निर्जन स्थान । [स्त्री० 'अकृत्य'] । -**दम्भ**-
पु० एक ही प्राणी । -**दुर्कला**-वि० अकृत्य या जिसके

माथ एक और हो; दृक्-दुक्ता । -**(स्त्री)कहाभी**-स्त्री०
एकतरफा वान । -**जान**-स्त्री० जिसका कोई साथी न
हो, नन-ननहा ।

अकृत्य-अ० बिना किसी मार्थके; ननहा; येकल । -**अकृत्य**-
बिना किसीकी माथ जिये, शरीर किये (-मिठाइयों
स्थान) । -**दुर्कला**-अकृत्य या एक औरके माथ ।

अकृत्य-वि० [सं०] केशरहित; अल्प केशयुक्त; बुरे बालों-
वाला ।

अकृत्य-पु० [सं०] निष्कपटता । वि० निष्कपट, निश्चल ।

अकृत्य-पु० सामान लानेका शैला, मोल ।

अकृत्य-पु० [सं०] सुपारी या उम्का पेड़ । * वि० अगणित,
करोड़ों ।

अकोतर सौ-वि० मंसे एक अधिक, एक ही एक । पु०
एक सौ एककी संख्या, १०१ ।

अकोप-पु० [सं०] कोपका अभाव; राजा दशरथका

अक्षर-वि० [सं०] अक्षर ।

अक्षर-पु० [सं०] लेखनेका घासा; घासोका खेल; चौसर; प्रक्षिपा; चक्र; पक्षिकेका घुरा; घुरतोको धुरी; गंधी; भूमध्य-रेखाके उत्तर वा दक्षिण किसी स्थानका गोलिय अंतर; छात्र; सर्प; सोहल भाषेको एक तौल; कर्ष; एक पैमाना (१०४ अंगुल); तराजूकी बोरी; काल्प; लेखनेका झुका दमा; अक्षकुमार; हान; ज्ञानेन्द्रिय; अक्ष; जन्माक्ष; आत्मा; गुरु; पुरिया; सोचर मनक; सुखाया; बहेका । -कर्म-पु० समकीण त्रिमुक्तकी सबसे लंबी मुजा । -काम-वि० भूत-प्रिय । -कुमार-पु० रावणका एक पुत्र जिसे हनुमान् ने मारा था । -कुशाक्ष-कोविद-चौद-वि० जुआ खेलनेमें बहुत । -कूट-पु० अँलकी पुतली । -कीड़ा-को० घासोका खेल; जुआ । -ज-पु० होरा; वज्र; विष्णु; प्रत्यक्ष हान । -वृक्ष-पु० न्यायाधीश; धर्माध्यक्ष; जुए-का निरीक्षक । -देवी (विद्)-पु० जुआरी । -धृत्-पु० जुआ । -धृत्-पु० जुएमें होनेवाला झगडा । -धर-वि० धुरेको धारण करनेवाला । पु० विष्णु; पक्षिया; साखोट वृक्ष । -धुर-पु० पक्षिकेका घुरा । -धूर्त-वि० जुआ खेलनेमें कुशल । -पटल-पु० न्यायालय; मुकदमेके कामका रखनेका स्थान । -पाट-पाट-पु० अस्त्रावा; जुआला । -पाटक-पु० धर्माध्यक्ष । -पीडा-को० इन्द्रियों वा अंगोंकी क्षति; घबटिका लता । -बंध-पु० वह बंध देनेकी विधा, नजरबंदी । -मात्र-पु० निमित्त । -मापक-पु० ग्रह-चक्र देखनेका एक यंत्र । -माला-को० रुद्राक्षकी माला; वर्णमाला; वसिष्ठकी पत्नी, अरुंधती । -माली (विद्)-पु० रुद्राक्षकी माला धारण करनेवाला; शिष्यका एक नाम । -रेखा-को० घुरेको रोला । -बाम-पु० जुएमें कपट करनेवाला । -विशेष-पु० कटाक्ष । -विद्-वि० दोष । -विद्या-को० भूतविद्या; जुआ । -हुत्त-पु० अस्त्राक्ष-दशक हुत्त, राशिचक्र । वि० जुएका आदमी; जुआ खेलने समय घटित होनेवाला । -सूत्र-पु० रुद्राक्षकी माला; जपमाला । -सेन-पु० एक प्राचीन राजा । -हीन-वि० अंधा । -हृदय-पु० वृत्तकोशल ।

अक्षर-पु० [सं०] वृक्षविशेष, तिलिच वृक्ष ।

अक्षर-वि० [सं०] अनामयिक ।

अक्षरिङ्ग-वि० [सं०] शिष्ट, दंड; जो क्षणिक न हो ।

अक्षर-वि० [सं०] अलंकार, सम्पत्ति; क्षतहीन, जिसे चोट न आयी हो । पु० शिष्ट; अलंकार चाल; क्लावा; जी; धान्य; हानिका अभाव, कल्याण; जिज्ञासा । -बीज-वि० को० जिसका बीमार भा या पतित समागम न हुआ हो । को० ऐसी कन्या (विवाहित वा अविवाहित) । -वीर्य-वि० अच्युत-वीर्य, मज्जचारी । पु० क्षमाभाव; गिन; नपुंसक (क०) । अक्षर-को० [सं०] कुमारी; अक्षतयोगिन; कर्तव्यहीन, काकशालीनी ।

अक्षर-वि० [सं०] क्षत्रियोसे रहित ।

अक्षर-वि० [सं०] क्षमा-रहित, असहिष्णु; ईर्ष्या करनेवाला; क्षमता-रहित, अक्षम ।

अक्षर-को० [सं०] अधीरता; क्रोध; ईर्ष्या; असमर्था ।

अक्षर-वि० [सं०] क्षमा न करने योग्य ।

अक्षर-वि० [सं०] क्षयरहित, अविनाशी; निर्धन । पु०

परमात्मा । -गुण-पुरुष-पु० शिव । -मृती-को० नैसर्गिक-गुण । -धाम-पु० वैकुण्ठ; मोक्ष । -नवमी-को० कात्तिक-गुडनवमी । -बीबी-को० स्वामी दान या निधि (सौ) । -वृ-पु० मोक्ष । -कोर-पु० स्वर्ग । -वृ-पु० प्रयाग और गयाके पट्टशिवविशेष (रत्ना प्रलयमें भी नाश न होना माना जाता है) ।

अक्षर-को० [सं०] पुण्यतिथिविशेष ।

अक्षरिणी-वि० को० [सं०] दे० 'अक्षरी' । को० पार्वती ।

अक्षरी (विद्)-वि० [सं०] जिसका नाश न हो ।

अक्षर-वि० [सं०] क्षय न होने योग्य; कभी न नुकनेवाला ।

-नवमी-को० कात्तिक-गुड नवमी ।

अक्षर्योक्त-पु० [सं०] आर्यमें पिंडदानके बाद दिया जानेवाला जल, माप और तिलका अर्घ्य ।

अक्षर-वि० [सं०] अविनाशी, अपरिवर्तनशील, अच्युत, नित्य, अक्षय । पु० वर्ण, हर्फ; स्वर; शब्द; मन्त्रा; आत्मा; शिव; विष्णु; खड्ग; आकाश; मोक्ष; तपस्या; जल; अपामार्ग । -गणित-पु० बीजगणित । -चं-पु० चण, चन, चं-पु० मुल्लेख । -च्युत-पु० एक खेल । -जननी-को० लेखनी । -जीवक-जीविक-जीवी (विद्)-पु० जिसनेका पेशा करनेवाला, लेखक ।

-ज्ञान-पु० लिख-पद लेनेकी योग्यता, साक्षरता ।

-तुलिक-को० लेखनी । -धाम-पु० मन्त्रालय, मोक्ष ।

-न्यास-पु० लिखावट; तंत्रकी एक क्रिया । -पंक्ति-को० एक वैदिक हुत्त । -वृक्ष-वि० धार्मिक पुस्तकोंमें

लिखी बातोंका अक्षरशः पालन करनेवाला । -बंध-पु० एक वर्ण-हुत्त । -माला-को० वर्णमाला । -मुख-पु० विचार्य; विद्वान्; 'अ' अक्षर । वि० अक्षर सीखनेवाला ।

-मुद्रिका-को० जंगलियोंके संकेत द्वारा बोलना ।

-वर्जित-वाचु-वि० अपद, निरक्षर । -विन्यास-पु० वर्णविन्यास, डिज्जे; लिपि । -वृक्ष-पु० वर्ण-हुत्त ।

-संस्थापन-पु० लिखे हुए अक्षर, लिपि । -समाप्ताक्ष-पु० वर्णमाला । पु०-बोटना-अक्षर लिखनेका अभ्यास करना । -मे-बेट न होना-विलकुल अपद होना ।

अक्षरशः-अ० [सं०] एक-एक अक्षर, हर्फ-हर्फ; तोलहो

आने पूर्णतया ।

अक्षरांग-पु० [सं०] लिपि; लेखन-सामग्री ।

अक्षरा-को० [सं०] शब्द; भाषा ।

अक्षराक्षर-पु० [सं०] एक प्रकारकी समाधि ।

अक्षराक्षर-पु० [सं०] पहले पहल अक्षरोंका ज्ञान कराना (एक संस्कार), विचारक ।

अक्षरार्थ-पु० [सं०] सन्ध्यार्थ; संकुचित अर्थ ।

अक्षरी-को० [सं०] वर्षाकाल; बरानी, हिज्जे (आधुनिक) ।

अक्षरौदी-को० वर्णमाला; लिपिका ढंग; सितारपर बोल

निकाहनेकी क्रिया ।

अक्षर्य-वि० [सं०] अक्षर-संबंधी । पु० एक साम ।

अक्षरि-को० [सं०] ईर्ष्या; अधीरता; असहिष्णुता ।

अक्षर-पु० [सं०] भूमध्यरेखासे ऊपर वा दक्षिणका अंतर ।

अक्षर-पु० [सं०] घुरा वा घुरेका छोर । -कील-को०

-कील-पु० चक्रोंके लिए लगायी जानेवाली लैंदी;

लठे और जुएकी जोड़नेवाली लैंदी ।

अक्षर-वि० [सं०] क्षाररहित । पु० प्राकृतिका कण्ठ ।
 -अक्षय-पु० अत्यधिक कथन; वह नमक जिसमें क्षार न हो; विना नमकका द्रव्यभाव ।

अक्षाय-पु० [सं०] नुप्राय; नुप्रा सेवनेवाला ।
 अक्षि-की० [सं०] आँक; दोरी संख्या । -क्ष-पु० चलक मारना । -कूट-कूट-पु० आँसकी पुतली, नेत्रनीकम् ।
 -क्ष-वि० वट, देखा हुआ; विद्यमान; देख्य । -कोक-पु० आँसका डेहर । -सार-पु०, -सारा-पु० आँसकी पुतली । -विशेष-पु० पक्ष, क्षण । -पञ्च(र)-पु० बरौनी । -पटल-पु० आँसका परदा, आँसके गोलकके पीछे की झिली । -शू-वि० दरद, सत्व, यथार्थ । -नेत्र-पु० पट्टिकालोत्र । -कोर(र)-पु० बरौनी । -विकृषित, -विकृषित-पु० कटाक्ष, सिरछी, चितवन । -विशेष-पु० कटाक्ष ।

अक्षिक, अक्षीक-पु० [सं०] वृक्षविशेष, रंजन वृक्ष ।
 अक्षित-वि० [सं०] जिसका क्षय न हुआ हो; न छेजने वाला; जिसे चोट न लगी हो । पु० जल; दम लासकी संख्या । -बसु-पु० इंद्र ।

अक्षितर-पु० [सं०] अक्ष ।
 अक्षित-की० [सं०] नवरात्रि । वि० क्षररहित ।
 अक्षिष, अक्षिष-पु० [सं०] दे० 'अक्षीष' ।
 अक्षीय-वि० [सं०] क्षीण न होनेवाला; अनन्तर ।
 अक्षीय, अक्षीय-पु० [सं०] सहजिन; समुद्रलक्षण । वि० अमत्त ।

अक्षुण्ण, अक्षुण्ण-वि० [सं०] जलहित, अमल; अन्यून; अप्राजिन; अकुशल ।
 अक्षुद्र-वि० [सं०] जो नोक, छोटा या तुच्छ न हो । पु० सिब ।
 अक्षुण्य-वि० [सं०] भूल नष्ट करनेवाला; जिसे भूल न लगती हो ।

अक्षुब्ध-वि० [सं०] क्षोभरहित ।
 अक्षय-वि० [सं०] क्षेवरहित; कृषिके अयोध, परती । पु० भुरी जमीन; ज्वाभितिका अशुद्ध या खराब चित्र; मंद बुद्धि छात्र । -क्ष-वि०-वि० आध्यात्मिक ज्ञानसे शून्य, जिसे क्षीरकी प्रकृतिका ज्ञान न हो ।

अक्षोत्री (त्रिन्)-वि० [सं०] जिसे छेत न हो ।
 अक्षोटी-पु० [सं०] पर्वतीय पील वृक्ष, अक्षोटीका पेड़ ।
 अक्षोड, अक्षोडक-पु० [सं०] दे० 'अक्षोटी' ।
 अक्षोपुङ्ग-वि० [सं०] जो भूला न हो ।
 अक्षोनि-की० दे० 'अक्षोणिणी' ।
 अक्षोन-पु० [सं०] क्षोभका अभाव, शांति; हाथी बाँधने का छँटा । वि० शांत, शीत जो क्षुब्ध वा घबराया न हो ।
 अक्षोभ्य-वि० [सं०] शीर, गंभीर, अज्ञात न होनेवाला । पु० पुद्ग; एक बड़ी संख्या । -क्षय-पु० एक तनोक्त कवच ।

अक्षोहिणी-की० [सं०] चतुर्भिणी सेनाका एक परिमाण या विभाग (१,०९,१५० पैरल, १५, ११० घोड़े, २१, ८७० रथ और हथने ही हाथी) ।

अक्ष-वि० [सं०] अक्षं । पु० समय, काल ।
 अक्ष-पु० [अ०] परछाई, छाया; विज; कीड़े । पु०-इतारवा-हूबहू नकाश नमाना; कीटी लीचवा । -क्षणा-

-रंजका उत्तर जाना । -क्षेमा-मिठी लक्ष्मीरत्न मरीक कागज रखकर साक्षात् देना ।

अक्षर-ज० दे० 'अक्षर' श्राव्य; बहुधा; एकाकी ।
 अक्षरी-वि० छाया-संबंधी; अक्षरके जगति छिया जाने वाला (विज आदि); कीटोप्राक-संबंधी । -लक्षर-की० कीटी, छायाविज ।

अक्षर-वि० न चुकनेवाला ।
 अक्षर-वि० [सं०] संपूर्ण; अविकल; अटूट, शाश्वत, जिसका सिलसिला न टूटे । -आक्षर-की० आक्षेपीके छुट्टा शब्दवा । -आक्ष-पु० वह पाठ जो अक्षिराज बलता रहे । -सौमाक्ष-पु० क्षीका आमरण सौम्य-वती रहना ।

अक्षर-वि० [सं०] अक्षरित; अक्षरनीय; समूचा । पु० परमात्मा; काल; स्फोर; खडन न करना ।

अक्षरनीय-वि० [सं०] जिसका खंडन न किया जा सके; सुध, अविनाश्य ।

अक्षर-वि० अक्षर, संपूर्ण । पु० आक्षरल, इंद्र ।
 अक्षर-वि० [सं०] अक्षर, अटूट, अनाधित; जिसका खंडन न हुआ हो ।

अक्षरिका-पु० एक तरहका देवदार बोका ।
 अक्षर-वि० अक्षर ।

अक्ष-पु० [सं०] मियाल वृक्ष ।
 अक्ष-की० [सं०] दाक्ष कन्यका; अमरव्यवहार ।
 अक्ष-पु० तालके बीचका गड्ढा ।

अक्षर-पु० पक्षुवान, मछ ।
 अक्षरी-की० दे० 'अक्षरीज' ।
 अक्षरीज-की० अक्षर रत्नीया ।
 अक्षरी-की० यक्षनी, शीरवा ।

अक्षर-पु० [अ०] समाचार ('क्षर'का बहु); समाचारपत्र । -बकीस-पु० अक्षर लिखनेवाला, पत्रकार । -बकीसी-की० पत्रकारी ।

अक्षरारी-वि० समाचारपत्र-संबंधी ।
 अक्षर-वि० दे० 'अक्षर' ।
 अक्षर-पु० दे० 'अक्षर' ।

अक्षर-ज० कि० खलना, भुरा लगना; कठिन वा कष्ट-प्रद जान पड़ना ।

अक्षर-पु० विना कुटे जौका आटा; *अक्षर । *वि० जो खरा न हो ।

अक्षर-की० वर्णमाला; अक्षरक्रमके अनुसार आरंभ होनेवाला पञ्चसूत्र; जायसी-कृत एक लघुग्रंथ ।

अक्षर-की० दे० 'अक्षर' ।
 अक्षर-पु० एक प्रसिद्ध मेवा और उसका पेड़ । -जंगली-पु० जायफल ।

अक्षर-वि० [सं०] जो छोटा या टिगना न हो; बड़ा; लंबा ।

अक्षर-की० [सं०] एक पीथा ।
 अक्षर-पु० [अ०] शिष्टता, सौजन्य; सदाचार ।

अक्षर-पु० कुहती लड़ने या कसरत करनेका स्थान, व्यायामशाला; सामिराथिक साधुओंकी मंडली; साधुओंके रहनेका स्थान, मठ; कसरत दिखाने या गाने-बजानेवाली-

की अघात; समा; वरपात; अघात; अघात; अघात (संदर्भका अक्षरा) नृत्यशाळा, रंगशाळा। सु०-घरम होवा-जमा होवा होवा। -अघना-खेलावियोंका अक्षरमें जमा होना और दशकोंकी भीड़ लगना; किसी जगह बहुतसे आदिमियोंका जमा होना। - (हे)का अघात-कसरती बदनका आदमी। -में आना-मुकाबलेमें खड़ा होना। -में उतरना-मुकाबला करनेके लिए अक्षरमें आना।

अक्षरविद्या-वि० दंगली (पहलवान)।

अक्षरात-पु० [सं०] प्राकृतिक शीत, गाल; साड़ी।

अक्षराध-वि० [सं०] न खाने योग्य, अपक्षय।

अक्षरावी-खी० देवरीके समय डंठल पकड़ करनेका एक औजार।

अक्षरा-पु० नरिया आदि बनानेके लिए चाकपर रसा जानेवाला मिट्टीका लौटा।

अक्षरा*—पु० दे० 'अक्षरा'।

अखिल-वि० [सं०] खेदरहित; हेयरहित, अक्षय; प्रसन्न।

अखिल-वि० [सं०] संपूर्ण, सारा; कृपिके योग्य, कृष्ट (भूमि)।

अखिला-वि० अविकसित; अप्रसन्न।

अखिलारमा(मन्)-पु० [सं०] विशात्मा।

अखिलेश-पु० [सं०] सबका सामी, परमेश्वर।

अखीन*—वि० अक्षीण, न छीननेवाला, अविनाशी।

अखीर-पु० [अ०] अंत, समाप्ति।

अखीरी-वि० अखीरका, अन्तिम।

अखट-वि० अखंड, जो धटे नहीं, अक्षय, अत्यधिक।

अखेट-पु० दे० 'अखेट'।

अखेटक-पु० दे० 'अखेटक'।

अखेटिक-पु० [सं०] बृहत्; वह कुत्ता जिसे शिकारका पीछा करना सिलखलाया गया हो।

अखेट-पु० [सं०] दुःख या खेदका अभाव; प्रसन्नता। वि० प्रसन्न, दुःखरहित। अ० प्रसन्नतापूर्वक।

अखेदी(दिन्)-वि० [सं०] अज्ञात, जो धका न हो। [खी० 'अखेदिनी'।]

अखेलत*—वि० जो खेलना न हो अचंचल, स्थिर; आलस्ययुक्त।

अखै*—वि० दे० 'अक्षय'। -बट, -बर, -बट, -बर-पु० अक्षयवट।

अखैरी-खी० सुवाने आदिके लिए टटल उलटनेकी लम्बी।

अखोर-वि० निकम्मा, तुच्छ; * अच्छा, भद्र, सुंदर, निर्दोष। पु० निकम्मा चीज, कटा-कटकट; खराब घास।

अखोला-पु० अकोल बृक्ष।

अखोह-पु० अक्ष-स्वातंत्र्य जमीन।

अखोट, अखोट-पु० जाते या चक्कीकी किल्ला; गभरांका डटा।

अखुवाह-अ० [अ०] आश्चर्यस्यक्त उद्गार (किसीके अनपेक्षित आगमन, मिलन या कार्यपर बोलते हैं); बहुत खूब।

अखु-पु० [अ०] प्रष्टन करने, पकड़नेका भाव। सु०-करना-प्रष्टन करना, अर्थ या नतीजा निकालना, वाग्म्य वात निकालना।

अखुतर-पु० [अ०] तारा; झंडा। -खुमार-पु० ज्योतिषी।

-खुमारी-खी० जन्मपत्री बनाना; केदारोसे रात काटना।

खु०-असकना-नतीब जागना; आग्यका उदय होना।

अखिलवार-पु० दे० 'अखिलवार'।

अखलात-वि० [सं०] अप्रसिद्ध; अप्रतिष्ठित; अधिहित।

अखलान*—पु० दे० 'आख्यान'।

अखायिका*—खी० दे० 'आखायिका'।

अगड-पु० बिना हाथ-पैरका धड़।

अगता(तु)-वि० [सं०] न चलने, न जानेवाला। [खी० 'अगती'।]

अग-वि० [सं०] चलनेमें असमर्थ, स्थावर; टेढ़ा चलनेवाला;

अगम्य; * अग, अजान। पु० पहाड़; पेड़; सौंप; धर्य; बड़ा;

सातकी मलया। -अ-वि० पहाड़-या वृक्षसे पैदा होनेवाला;

पहाड़-पहाड़ धूमनेवाला जंगली। पु० शिलाजंतु; हाथी।

-अग-पु० [वि०] बराबर। -आ-खी० पारंगती।

अगच्छ-वि० [सं०] जो न चले। पु० बृहत्।

अगट-पु० मांसकी दुकान।

अगटना-अ० कि० एकत्र होना।

अगड*—पु० अकड़, ठेठ।

अगडबड, अगडबड-वि० लबा-तगडा; ऊंचा; बड़ा-बड़ा।

अगडबगड-वि० ऊलजलूल, बेसिर-पैरका। पु० अडबड वात या काम।

अगडम-अगडम-पु० तरह-तरहकी चीजों या काठ-कबाड़-का बेतरतीब ढेर।

अगड़ी-खी० ध्योडा, अंगल।

अगण-पु० [सं०] पितृगणके चार गण-जगण, मगण, रगण, सगण-जो छंदके आदिमें अभुज माने जाते हैं।

अगणन-वि० [सं०] अगणनीय, अमूल्य।

अगगनीय-वि० [सं०] दे० 'अगण्य'।

अगणित-वि० [सं०] अनगिनत, बेहिमाश। -प्रतिवात-वि० ध्यान न दिये जानेके कारण लौटा हुआ। -लज्ज-वि० लज्जाका ख्याल न करनेवाला।

अगड*—वि० [सं०] अमूल्य; तुच्छ, उपेक्षणीय।

अगत-वि० [सं०] न गया हुआ। † 'आगे चले' (विधि) वि० (हाथीकी आगे बढानेके लिए नहावनों द्वारा प्रयुक्त किया जानेवाला षट्प)। * खी० दे० 'अगति'।

अगति-खी० [सं०] गतिका अभाव; पहुँचना न हाना, उपायका अभाव, बुरी गति, असद्वृत्ति; गति अर्थात् मोक्षकी अप्राप्ति स्थिर पदार्थ। वि० गतिहीन; निरुपाय।

अगतिक-वि० [सं०] निरुपाय; निराश्रय। -गति-खी० आश्रयहीनका आश्रय, अनिम आश्रय (ईश्वर)।

अगती-वि० मर्दनिका अनधिकारी; कुकर्म, पापी। पु० पापी मनुष्य। खी० एक पौधा जो चर्मरोगकी दवाके काममें आता है, चक्रवर्ध। वि० पैशगी। अ० पहलने।

अगतीक-वि० [सं०] जिसपर चलना उचित न हो (कुमार); दे० 'अगतिक'।

अगाथा-अ० [सं०] आगे चलकर, अंतमें; सहसा; अन्य गति न रहनेसे, लम्बा होकर।

अगडका-पु० [सं०] बैल।

अगड-वि० [सं०] नीरोध, गम्य; न मोचनेवाला। पु०

औषध; स्वास्थ्य, आरोग्य। -लंघ-पु० आधुनिक ८ अंगोंमेंसे एक जिसमें सर्पादि के रंशकी चिकित्सा बतायी गयी है। -बेष्ट-पु० चिकित्सा-शास्त्र, आधुनिक।

अगदित-वि० [सं०] अकथित, जो कहा न गया हो।

अगनी-स्त्री० अग्नि। पु० दुष्ट गण (पिगल)। वि० आग्न्य, वैशुमार।

अगनत, अगनित*-वि० दे० 'अगणित'।

अगनिड*-पु० अशिक्षण, दक्षिण-पूर्वका कोना।

अगनी-स्त्री० घोड़े के गिरपरकी औरी; अग्नि। * वि० अगणित।

अगनू*-स्त्री० आग्नेय कोण।

अगनेड, अगनेत*-पु० अशिक्षण।

अगम-वि० [म०] न चलनेवाला, अगता; सुद्ध-लंका वसत दैन्य अह दानव, उनके अगम सरीरा। -ख०। पु० वृक्ष; पहाड। * वि० दे० 'अगम्य'। * पु० दे० 'आगम'। अगमन-पु० [म०] गमनका अभ्यास, न जाना। * अ० आगेसे; पहले।

अगमनीय-वि० स्त्री० [म०] दे० 'अगम्य'।

अगमानी*-पु० अग्रुआ, नायक। स्त्री० भगवानी।

अगमानी-स्त्री० दे० 'अगमानी'।

अगम्य-वि० [म०] दुर्गम; पधुचके बाहर, अप्राप्य; अचल; मन, बुद्धि के परे; कठिन; अपार; अवाह; त्रिमये महवास न किया जा सके। -गा-स्त्री० अपात्र पुरुषमें संबंध रखनेवाली स्त्री। -रूप-वि० त्रिमका रूप या म्वाभाव समझमें न आवे।

अगम्य-वि० स्त्री० [म०] न गमन करने योग्य (स्त्री)। स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ भोग निषिद्ध हो; अवज्ञा।

-गमन-पु० अगम्य स्त्रीमें सहवास करना (एक महा-पतक)। -गमनीय-वि० अवैध संबंध-विषयक।

-गामी(मिन्)-वि० आगम्यगमन करनेवाला।

अगर-पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ीमें सुगंध होती है और धुएँ, दवागमें पड़ती है; ऊड़। -बन्नी-स्त्री० अगरकी बन्नी। -मार-पु० अगर नामक वृक्ष।

अगर*-पु० आगर, घर-जैसे संसार-अंधिधार अगरमें भये मगनवर-काव्यागमन।

अगर-अ० [का०] यदि, जो। -चे-अ० यद्यपि। मु०-अगर करना-नर्क करना, आमापीछा करना; ढाल-मडोल करना।

अगरई-वि० कालापन लिये हुए सुनहले रंगका।

अगरना*-अ० कि० आगे जाना या बटना।

अगरपार-पु० क्षत्रियोंका एक भेद।

अगर-बगर*-अ० दे० 'अगल-बगल'।

अगरवाला-पु० बैद्योंकी एक जाति, 'अग्रवाल'।

आगराई*-स्त्री० अग्रना, भेड़ना-गिरा अगराई गुन-गरिमा-गमन को-घन०।

अगरावा*-म० कि० मन बटाना; लाइ-द्वारके कारण भूट बनाना। अ० कि० प्यार आदि के कारण भूटनापूर्वक व्यवहार करना।

अगरी-स्त्री० दे० 'अगरी'; फूसकी छाजसका एक ढंग; * बुरी बात; [सं०] एक विषयाशन ग्रन्थ; देवताका वृक्ष।

२-क

अगर-पु० [सं०] अगरका पेड़ या लकड़ी।

अगरी*-अ० सामने, आगे।

अगरी*-वि० अगल; अग्र; अधिक; निपुण।

अगर्भ*-वि० [सं०] गर्भ या अग्रिमानसे रहित।

अगर्हित-वि० [सं०] जो बुरा न हो, अनिष्ट।

अगल-बगल-अ० इपर-उपर; आस-पास।

अगला-वि० आगे या सामनेका; गीत समयका; पुराना; आनेवाला; बाद। पु० अगुआ; चतुर, बालक आदमी; पूर्वज; कर्णकूलमें आगे लगी हुई जंजीर; गाँव और उसकी सीमाके बीच पड़नेवाले क्षेत्र।

अगवानी*-स० कि० सहना, अंगेजना। अ० कि० अग्रसर होना।

अगवाँसी-स्त्री० हलकी वह लकड़ी जिसमें फाल लगता है।

अगवाई-स्त्री० अगवानी। पु० अगुआ।

अगवाडा-पु० घरके आगेका भाग या भूमि, 'पिछवाडा'का उलटा।

अगवान-पु० अगवानी करनेवाला; अगवानी।

अगवानी-स्त्री० आगे बढ़कर लेना या स्वागत करना; बरानके स्वागतार्थ कन्यापक्षका आगे जाना। * पु० अगुआ।

अगवारी*-पु० वह अन्न जो गाँवके पुरोहित, फकीर आदि को देनेके लिए खलियानमें राशिते अलग कर दिया जाता है; ओसाले समय भूसेके साथ उड़नेवाला हलका अन्न; गाँवका चमार; दे० 'अगवाडा'।

अगसर*-अ० आगे, 'अगसर लेती, अगसर भार, घाघ कई दे कबड्डी न हार'-अग्रर०।

अगसार, अगसारी*-अ० आगे।

अगस्त-पु० ईसवी सालका आठवाँ महीना, दे० 'आगस्त'।

अगस्ति-पु० [म०] एक प्राचीन ऋषि (पुराणोंमें इनके समुद्रको नुनून्ने घरका पी जानेकी बात लिखी है); एक नारा; एक पेड़।

अगस्त्य-पु० [सं०] दे० 'अगस्ति'; शिव। -कूट-पु० दक्षिणका एक पर्वत जिसमें ताम्रपर्णी नदी निकली है।

-गीता-स्त्री० महाभारत-ज्ञानपर्वमें कथित एक गीता।

-मार-आर्ग-पु० अगस्त्य नामक तारिका मार्ग। -तीर्थ-पु० दक्षिणका एक प्रसिद्ध तीर्थ। -बट-पु० एक पवित्र स्थान जो हिमालयपर है। -संहिता-स्त्री० अगस्त्य मुनि-रचित एक धर्मग्रन्थ।

अगस्त्योदय-पु० [म०] अगस्त्यका उदय (इमका समय माद्रपदका शुक्ल पक्ष है)।

अगह*-वि० अग्राह, एकड़में न आने लायक; चंचल; ग्रहणके अयोग्य; दुस्साध्य; बर्णन या चित्रनके बाहर।

अगहन-पु० अग्रहायण या मार्गशीर्ष मास।

अगहनिवा-वि० अगहनमें होनेवाला (धान)।

अगहनी-वि० अगहनमें तैयार होनेवाला। स्त्री० अगहनमें तैयार होनेवाली फसल।

अगहर*-अ० आगे, पहले।

अगहार-पु० वह भूमि जो बहुत दिनोंसे किसीके अधिकारमें नली आती है और जिसे वह छोड़नेको तैयार न हो।

अगहार-पु० दे० 'अग्रहार'।

अगहूँ*-अ० आगे आगे और। वि० आगे चलनेवाला।

अंगाडनी*-अ० अंगौनी, आगे।

अगाई*, **अगाड***-वि० पेशगी; आगेका। अ० आगेसे, पहलेसे।

अगाध*-पु० हुक्केकी निगाली; डेंकलीके छोरपर लगी पतली छकी।

अगाका*-पु० पहले भेजा जानेवाला यात्राका सामान।

अगाही*-अ० आगे; पहले; सामने; भविष्यमें। **खी०** किसी वस्तुका आगेका हिस्सा; घोड़ेकी गरदनमें बँधी रस्सियों; अंगरक्षे या कुरतेका सामनेका भाग; सेनाका पहला बावा।

अगाध*-अ० आगे, पहले।

अगास्ता(रु)*-पु० [सं०] अच्छा न मानेवाला व्यक्ति।

अगात्मजा*-खी० [सं०] पार्वती।

अगाद*-वि० अगाध।

अगाध*-वि० [सं०] अपाह; अपार; अधिक; दुर्बोध; अज्ञेय।

पु० साहाय्यकारी पाँच अभियोगोंमें एक; गहरा छेद, गहटा।

-**जल**-पु० गहरा जलाशय (झील आदि)। -**रुधिर**-पु० बहुत अधिक रक्त।

अगान*-वि० अगानी, नासमझ। पु० नासमझी।

अगामै*-अ० आगे।

अगार*-अ० आगे। पु० [सं०] दे० 'अगार'।

अगारी*-अ० खी० दे० 'अगावी'।

अगारी(रिन्)*-वि० [मं०] मकानवाला।

अगाव*-पु० ईश्वरके ऊपरका नीरस भाग।

अगास*-पु० दे० 'आकाश'; इसके सामनेका चबूतरा।

अगाह*-वि० अपाह; अप्रथिक; उदास, चिन्तित; दे० 'अगाह'। अ० आगेसे, पहलेसे।

अगि*-खी० 'अग्नि'का (समाप्तमें प्रयुक्त) विकृत रूप।

-**दूध***-वि० अभिद्रव्य, आगने जला हुआ। -**दाह**-पु० दे० 'अभिद्रव्य'। -**हाना***-पु० अग्नि जलने या रखनेका स्थान।

अगिन*-खी० आग; एक छोटी चिड़िया; एक पास; उसका ऊपरका हिस्सा। वि० बहुत अधिक, अग्रणीत। -**झाल**-खी० जलपिप्पली। -**बाव**-पु० चौपायी, विशेषकर घोड़ेकी होनेवाला एक रोग। -**बोट**-पु० स्टीमर, पुर्लोकश।

अगिनगोला*-पु० एक तरहका बम जिसके फटनेपर आग लग जाय।

अगिनत, अगिनित-वि० दे० 'अग्रणीत'।

अगिया*-खी० अगिन घाम। पु० एक पीसा; घोड़े-बैलेंका एक रोग; एक रोग जिसमें पैरमें छाले पड़ जाते हैं; विक्रमादित्यका एक बैनाल। -**कोइलिया**-पु० बैनाल-पचीसीमें बणित दो बैनाल जिन्हें विक्रमादित्यने सिद्ध किया था। -**बैताल**-पु० विक्रमादित्यको सिद्ध दो बैनालोंमें एक; मुहमें आग उगलनेवाला प्रेत; धूमती हुई-सी अग्नि (दरुलद आदिमें निकलनेवाली गैस जो आगके समान जलती दिखाई देती है)।

अगियाना*-अ० कि० गरम होना; उत्तेजित होना।

सं० कि० बरतनको आगमें डालकर शुद्ध करना।

अगियार*-पु० पूजाके लिए जलायी जानेवाली आग।

वि० जिसकी आग अधिक समयतक रहे या अधिक तेज

हो (लकड़ी, कोयला इ०)।

अगियारी*-खी० धूपको तरह अगिनमें जलनेकी वस्तु। पु० पारसियोंका मंदिर।

अगिर*-पु० [सं०] स्वर्ग; स्वर्ग; अधि; एक राक्षस।

अगिरी*-खी० घरका अगवाका।

अगिरीका(कस्)*-वि० [सं०] स्वर्गमें रहनेवाला (देवता); धमकीसे न सकनेवाला।

अगिछा*-वि० दे० 'अगल'।

अगिछाई*-खी० अभिद्रव्य-जो नही सु नई अगिछाई-घन०।

अगिहाना*-पु० दे० 'अगि' में।

अगीठ*-पु० सामनेका हिस्सा, अगवाका; पान-जैसे विस्तृत उससे बड़े पत्तोंवाला एक पौधा।

अगीठ-पछीठ*-पु० अगवाका-पिछवाका। अ० आगे-पीछे।

अगु*-पु० [सं०] राहु; अंधकार।

अगुआ*-पु० आगे चलनेवाला; मुखिया; पथप्रदर्शक; बिबाह तक करानेवाला, विचुआ, घटक; आगेका हिस्सा।

अगुआई*-खी० नेतृत्व; मार्गप्रदर्शन; अगवानों।

अगुआना-सं० कि० अगुआ बनना। अ० कि० आगे जाना।

अगुआनी-खी० आगे जाकर स्वागत करना।

अगुण-वि० [सं०] निर्गुण, गुणरहित; अनाशी। पु० अव-गुण, दोष। -**अ**-वि० जिसमें गुणकी परख न हो, गवार।

-**बानी(विन्)**-वि० दोष निकालनेवाला, छिद्रान्नेयी।

-**शील**-वि० अव्यय, निरुपमा।

अगुमी(गिन)-वि० [सं०] गुणहीन।

अगुह*-पु० [सं०] अगव; शीशमका पेड़। वि० हल्का; लघु (वर्ण); निगुरा; गुरुमें निम्न, जो गुरु न हो।

अगुवा*-पु० दे० 'अगुआ'।

अगुवानी-खी० दे० 'अगवानों'।

अगुसरना*-अ० कि० आगे बढ़ना।

अगुमारना*-सं० कि० आगे बढ़ाना।

अगुठना*-सं० कि० अगोठना, घेर लेना।

अगुठरी*-पु० घेरा।

अगुठ*-वि० [मं०] प्रकट; स्पष्ट; सहज। -**बांध**-पु०,-

गंधा-खी० हींग। -**भाव**-वि० जिनका भाव, अर्थ गूढ़,

छिपा हुआ न हो; सरलविन।

अगुता*-अ० आगे; सामने।

अगुह*-वि० [सं०] गृहहीन, बेघर-बारका। पु० वानप्रस्थ।

अगेंद्र*-पु० [सं०] हिमालय।

अगेधू*-पु० दे० 'अंगेधू'।

अगेह*-वि० [सं०] दे० 'अगुह'।

अगेह*-वि०, खी० जो गुप्त न हो, प्रकट।

अगोचर-वि० [सं०] जिसका दान इन्द्रियोंसे न हो सके, इन्द्रियातीत; अप्रकट। पु० वह जो इन्द्रियातीत हो; वह जो देखा या जाना न जा सके; मद्ध।

अगोठ*-पु० आड़, रोक; आश्रय, सहारा; सुरक्षित स्थान।

वि० अकेला, गुप्तहित; सुरक्षित।

अगोठना*-सं० कि० छेकना, घेरना; छिपा या रोक रखना,

कैद करना; स्वीकार करना; चुनना। अ० कि० रकना;

फँसना, उलझना।

अगोला-अ० सम्मुख, आगे । पु० अगबानी ।
 अगोरदार-पु० रस्खाली करनेवाला ।
 अगोरनारी-स० कि० घाट जोहना; रस्खाली करना; रोकना ।
 अगोरा-पु० अगोरनेकी क्रिया, रस्खाली, निपारनी ।
 अगोरिदारी-पु० सेत आदिकी रस्खाली करनेवाला ।
 अगोही-पु० आगेकी ओर निकले हुए साँगोवाला बैल ।
 अगोहा-वि० [सं०] जो छिपावे वा ढँके जाने योग्य न हो, प्रकाश्य ।
 अगोही-स्त्री० दे० 'अगाव' ।
 अगोहा(कस्)-पु० [सं०] पतवासी; सिंह; पक्षी; चरम ।
 अगोही-पु० पेशगी दी जानेवाली रकम ।
 अगोला-अ० आगे । पु० अगबानी; पेशगी ।
 अगोली-स्त्री० दे० 'अगबानी'; बरात आनेपर द्वारपूजाके समय छोड़ी जानेवाली आतिशबाजी । अ० आगे ।
 अगोरा-पु० दे० 'अगाव' ।
 अगोरी, अगोली-स्त्री० एक तरहकी रेश ।
 अगोद-अ० आगे; आगेकी ओर ।
 अग्रा-वि०, अ० दे० 'अग्र' ।
 अग्राह-स्त्री० हाथ-हाथमर लंबी वस्तिवोवाला एक वृक्ष जो अथर्वमें अधिकनाम पाया जाता है ।
 अग्रमाथी-स्त्री० [मं०] अग्रिदेवकी स्त्री, स्वाहा; नेमायुग ।
 अग्नि-स्त्री० [मं०] आग; पंचमहाभूतोंमें तेज तत्त्व; प्रकाश; उष्णता; गरमी; जठराग्नि; पिच; अश्विकर्म, जलानेकी क्रिया; मोना; ३ वी मन्त्रा (वैष्णवके मन्त्रागार अश्विके तीन भेद हैं-१. नौमाग्नि=पांडादिमें उत्पन्न, २. दिव्याग्नि=चित्तकी, उल्का आदि, ३. जठराग्नि=उदरमें उत्पन्न; कर्म-काण्डके अनुष्ठार तीन भेद हैं-१. गार्हपत्य, २. आहव-नीय, ३. दक्षिणाग्नि। इतरीय्य दम अग्नियों वे हैं-१. आन्तरिक, २. रचक, ३. क्रेटरक, ४. स्नेहक, ५. धारक, ६. वृक्षक, ७. द्रावक, ८. व्दापक, ९. माषक, १०. श्रेष्ठक); पिचक; नौदू; भिलावा; 'र'का प्रतीक । -कण-पु० चिनगारी । -कर्म(व)-पु० अग्निहोत्र; शवदाह; गरम लोहेमें दागना । -कला-स्त्री० अश्विके दशविध अवयवों-वर्णों या मूर्तियोंमें कोई । -कांड-पु० आग लगानेकी घटना, अगजनी । -कारिका-स्त्री० ऋग्वेदका 'अग्निदूत पुरोधे'.., मंत्र जिसमें अम्याधान किया जाता है । -कार्य-पु० अग्निमें आहुति आदि देना; लोहेमें दागना; गरम तेल आदिसे अयुध, मसे आदिकी जलाना, दे० 'प्रति-माण' । -काह-पु० अग्निकी लकड़ी । -कीट-पु० मर्मर नामक कीड़ा । -कुंड-पु० बेदी, हवनकुंड । -कुण्ड-पु० लूका । -कुमार-पु० शिवके पुत्र कात्तिकेय; एक अश्विर्धरक रम । -कुल-पु० क्षत्रियोंका एक वंश जिसकी उत्पत्ति अश्विकुंडसे मानी जाती है-प्रमार, परिहार, चातुर्व्य या सोलकी और चौहान । -केतु-पु० धुआँ; शिव; रावणके दलके दो राक्षस जो रामके हाथों मारे गये थे । -कोण-पु०, -दिहू (स्)-स्त्री० पूरव और दक्खिनका कोना । -क्रिष्ण-स्त्री० शक्का दाग; दागना । -कीडा-स्त्री० आतिशबाजी । -गर्भ-वि० जिसके भीतर भाग हो या जिसमें भाग पैदा हो । पु० अरणि; मूर्धकान

मणि; आसिही डीशा । -वर्ष-पु० ज्वालामुखी पहाड़ । -गर्भ-स्त्री० शरी वृक्ष; महाज्योतिष्मती कता; धूमि । -गृह-पु० होमाग्नि रखनेका घर वा स्थान । -चक-पु० शरीरके भीतरके छ चक्रोंमेंसे एक (बी०) । -चष-चष-पु० अम्याधान; वह मंत्र जिससे अम्याधान किया जाता है । -क्षि-वि० अग्निहोत्री । -अम्या (मन्त्र)-, -आल-पु० अग्निजार वृक्ष; सुवर्ष; कात्तिकेय; विष्णु । वि० अग्निमें उत्पन्न; अग्नि उत्पन्न करनेवाला; पाचक । -जार, -जाह-पु० सिधुफटा, गजपिच्छलीका पेड़ । -जिह्व-पु० देवता; वाराहरूपधारी विष्णु । वि० अग्नि की जिसकी जीभ है । -जिह्वा-स्त्री० आगकी लपट; अग्निकी जीभें जो ७ बतायी जाती हैं (काली, कराली, मनोवहा, सुलोहिता, भूजग्ना, उष्मा और प्रदीप्ता); कागली वृक्ष । -जीवी(विह्व)-पु० अग्नि के आधारपर काम करनेवाले-जैसे सुनार, लुहार आदि । -ज्वाल-पु० शिव । -ज्वाला-स्त्री० आगकी लपट; जलपिच्छली; धातकी । -तुंडावटी-स्त्री० अग्नीं दूर करनेकी एक गोली (आ० वे०) । -तेजा(जस्)-वि० अग्नि-सम्पन्न तेजोवारी । -त्रच-पु०, -त्रेता-स्त्री० यथाविधि स्थापित तीन प्रकारकी अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय और रक्षित) । -र्द्ध-पु० आगमें जलानेका दड़ । -इ-पु० आग ल्यानेवाला; दाहक । -इग्ध-वि० चितापर विधिपूर्वक जलाया हुआ । पु० एक पितृवर्ग । -इमनी-स्त्री० एक क्षुप । -दाता(व)-पु० अंतिम कृत्य (दाह) करनेवाला । -दान-पु० चितामें आग लगाना । -दाह-पु० जलाना; शवदाह । -दिष्ण-पु० अग्निपरीक्षा । -दीपक-वि० पाचनशक्ति बढ़ानेवाला । -दीपन-पु० जठराग्निका दीपन, पाचनशक्तिकी वृद्धि; पाचनशक्ति बढ़ानेवाली दवा । -दीप्ता-स्त्री० महाज्योतिष्मती कता । -वृत्त-पु० वक्ष; यक्षमें आवाहित देवता । -दैव-पु० अग्निकी पूजा करनेवाला । -देवा-स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र । -दान-पु० पवित्र अग्नि रत्नके जगह । -नक्षत्र-पु० कृत्तिका नक्षत्र । -निर्वाह-पु० अग्निजार वृक्ष । -नेत्र-पु० देवतामात्र । -पक्ष-वि० आगपर पकाया हुआ । -परिक्षा-स्त्री० अग्निचर्या, होमादि करना । -परिग्रह पु० शास्त्रिक अग्निकी अखट रखनेका व्रत । -परिधान-पु० वस्त्राग्निकी परदेसे घेरना । -परीक्षा-स्त्री० अग्नि द्वारा परीक्षा, जलनी आग, स्त्रीलते तेल आदिके जरिये, किमीके दोषी-निर्दोष होनेकी जाँच; सोना-चांदी आदिकी आगमें तपकर परखना; कठिन परीक्षा । -पर्वत-पु० ज्वालामुखी पहाड़ । -पुराण-पु० व्यासस्वरिण अक्षरह महापुराणोंमेंसे एक जिसे पहले पहले अग्निने वसिष्ठकी सुनाया था । -पूजक-पु० आगकी पूजा करनेवाला; धारमी । -प्रणवन-पु० अग्निहोत्रकी अश्विका मन्त्रपूर्वक मंस्कार करना । -प्रतिष्ठा-स्त्री० धार्मिक कृत्यों, विशेषकर विवाहके अवसरपर किया जानेवाला अश्विका आवाहन और पूजन । -प्रवेश-पु० आगमें प्रवेश; स्त्रीका पतिकी चितामें प्रवेश । -प्रस्तार-पु० कंकमक पत्थर । -बाण-पु० वह बाण जिससे आगकी लपट निकले । -बाहु-पु० धुआँ; स्वाधुब मनुका एक पुत्र । -बीज-पु० मोना; 'र' अक्षर ।

—**अ-पु०** सोना; कृषिका नक्षत्र । वि० अग्नि जैसा चमकनेवाला । —**अ-पु०** काशिकेय । —**अ-पु०** अंतिम शीर्षकरके स्वारह शिष्योंमेंसे एक । —**अंधा-अंधव-पु०** अरण्यसे रगबकर आग उत्पन्न करना, इस कार्यमें प्रयुक्त ऋषि; गनवादीका पेड़ । —**अथ-पु०** अरण्यकी दो टहनियोंसे रगबकर आग निकालनेवाला याशिक; अभिमन्यका मंत्र; अरण्यकी लक्ष्मी । —**अग्नि-पु०** सूर्यकांत मणि; जातिशी शीशा । —**मांध-पु०** जठराशिका मद हो जाना; मंदाग्नि, हाजमेकी झराही । —**मारुति-पु०** अमरस्य कृषि । —**मित्र-पु०** शुगवशका एक राजा; पुष्यमित्रका वेदा । —**मुख-पु०** माधव; देवता; प्रेत, अग्रहोत्री; चीनेका पेड़; भिलावां; एक अधिवर्द्धक चूर्ण । —**मुखी-स्त्री०** गायत्री मंत्र; भिलावां; पाकशाला । —**मुग-पु०** ज्योतिषमें माने गये पाँच युगोंमेंसे एक । —**योजन-पु०** अग्नि प्रज्वलित करनेकी क्रिया । —**रजा(जस्)-पु०** नीरवहूटी; सोना । —**रहस्य-पु०** अश्विकी उपासमाका रहस्य; शनपथ माधवका उदयों कांड । —**रुहा-स्त्री०** माग्नेरोहिणी नामक पौधा । —**रेता(तम्)-पु०** सोना । —**रोहिणी-स्त्री०** एक नष्टका पौधा जिसमें ज्वर होता है, कंखीरी । —**रिंगा-पु०** आगकी लपट देखकर शुभाशुभ बतानेकी विद्या । —**लोक-पु०** एक लोक जिसके अधिकारी अग्निदेव माने गये हैं । —**बंधा-पु०** अश्विकुल । —**बधू-स्त्री०** स्वाहा । —**बर्च(स्)-पु०** अश्विका तंत्र । —**वर्ण-पु०** अश्विकेमें रंगवाला । पु० एक सूर्यवशी राजा । —**वर्णा-स्त्री०** तंत्र शराप । —**वर्द्धक-वर्द्धन-वि०** पाचनशक्ति बढ़ानेवाला । —**वर्षा-स्त्री०** आगकी या नौपके गोली, वर्षा आदिकी वर्षा । —**वह्म-पु०** शालवृक्ष; राल । —**वामा(सम्)-वि०** अग्निमुल्य शुद्ध बलवाला; जो लाल कपड़े पहने हो । —**बाह-पु०** भूमी; बकरा । वि० अश्विवाहक । —**बाहन-पु०** बकरा । —**विदु-पु०** चिनमारी । —**विद-वि०** अग्निहोत्र जाननेवाला । पु० अग्निहोत्री । —**विद्या-स्त्री०** अग्निहोत्र । —**विसर्प-पु०** अर्द्ध-गेमजन्म जगज्ज । —**वीर्य-वि०** अग्नि जैमें तंत्रवाला । पु० अग्निका तंत्र मोना । —**वेष्टा-पु०** आयुर्वेदके आचार्य एक प्राचीन कृषि । —**धर्मा(मंत्र)-वि०** बहुत श्रेणी । पु० एक कृषि । —**शाला-स्त्री०** अम्याधानका स्थान । —**शिव-पु०** कुसुमका पेड़, केसर मोना; दीपक; बाण । वि० अश्विकीनी शिखा या ज्वालावाला । —**शिला-स्त्री०** आगकी आग या लपट; कलियारी पौधा । —**शुद्धि-स्त्री०** आगमें तपाकर शुद्ध करना; अग्निपरीक्षा । —**शेखर-पु०** केसर; कुसुम; मोना । —**टोम-पु०** यशविरोध । —**ट्ट-वि०** आगवग् रखा हुआ । पु० लोहेकी कटाही । —**प्लास-पु०** पितरोंका एक गण या वर्ग । —**संभव-वि०** आगमें उत्पन्न । पु० अग्ण्यकुसुम मोना; भोजनका रस । —**संस्कार-पु०** आग जलाना; तप्त करना; अग्नि दाग शुद्धि करना; सृष्टक-दाह; श्राद्धमें एक विधि । —**संहिता-स्त्री०** अग्निवेद्य-रचित चिकित्साग्रंथ । —**सखा-महाय-पु०** वायु; धूर्ध्रा; जंगली कस्तूर । —**साशिक-वि०** अग्नि जिसका माश्री हो; अश्विकी माश्री करके किया हुआ (कर्म) । —**सार-वि०** आगमें जलाया हुआ, अस्ममान । —**सार-पु०** रमाज । —**मेघव-पु०**

आग तापना । —**स्तंभ-स्तंभन-पु०** अग्निकी दाहक शक्ति रोकनेकी क्रिया; इस कार्यके लिए प्रयुक्त होनेवाला मंत्र या औषध । —**स्तोक-पु०** चिनमारी । —**होत्र-पु०** वैदिक मंत्रोंसे अग्निमें आहुति देना; विवाहकी साक्षीभूत अग्निमें नियमपूर्वक हवन करना । —**होत्री(मित्र)-वि०, पु०** अग्निहोत्र करनेवाला ।
अभिक-पु० [म०] इंद्रगोप; नीरवहूटी; एक पौधा; एक तरहका सौप ।
अभिमान्(मत्)-पु० [म०] यथाविधि अम्याधान करनेवाला द्वित्र, अग्निहोत्री ।
अग्नीध्र-पु० [म०] यथाश्रि जलानेवाला कृत्विक्; मध्या; यक्ष; होम; स्वायम्भुव मनुका एक पुत्र ।
अग्नीय-वि० [स०] अग्नि-अंबवर्ध; अग्निसे समीपका ।
अम्यगार, अम्यगार-पु० [म०] यथाश्रि रखनेका स्थान ।
अम्यव-पु० [म०] मंत्र-प्रेरित बाण जिसमें आग निकले; अश्विचालिन अम्भ (बटुक, तम-वा आदि) ।
अम्याधान-पु० [म०] वेदमंत्र द्वारा अश्विकी स्थापना; अग्निहोत्र ।
अम्यालय-पु० [म०] दे० 'अम्यगार' ।
अम्याशय-पु० [म०] जठराग्निका स्थान ।
अम्याहित-पु० [म०] अग्निहोत्री, माश्रिक ।
अम्युत्पान-पु० [म०] अश्विकाद; उन्मापात ।
अम्युत्सादी(विद)-वि० [म०] यथाश्रितकी श्रद्धा देनेवाला ।
अम्युद्धार-पु० [म०] जो अश्विकाओंकी रगबकर आग उत्पन्न करना ।
अम्युपस्थान-पु० [म०] अग्निहोत्रके अनम होनेवाली अश्विकी पूजा या उमका मंत्र ।
अम्य-वि० [म०] दे० 'अम्य' ।
अम्या-स्त्री० दे० 'आमा' ।
अम्यारी-स्त्री० आगमें गुट, दशाग आदि टालना; अम्यारा करनेका पात्र (?) ।
अम्य-वि० [म०] अम्या, पक्ष्वा; मुख्य; अधिक । अ० अग्ने । पु० अम्या भाग, मौक; शिखर; अग्ने बगका सबसे अच्छा पत्राध; बंद-चटकर होना; उत्पन्न; अम्य-आग्ने; एक मौक; आहारका एक मात्रा, समष्ट । —**कर-पु०** हाथका अम्या हिस्सा, उमली; पहली धिरण । —**ग-पु०** नेना, नायक । —**गण्य-वि०** गणनामें पहले आनेवाला, मुख्य । —**गामरी(मित्र)-वि०** आग्ने चलनेवाला । पु० नायक, अनुभा [स्त्री० 'अम्यमिनी'] । —**ज-वि०** पहले तनमा हुआ; * अष्ट । पु० बड़ा भाई; ब्राह्मण; * अनुभा । —**जम्मा(म्यन्)-पु०** बड़ा भाई; ब्राह्मण । —**जा-स्त्री०** बड़ी बहिन । —**जात-जातक-पु०, -जाति-स्त्री०** ब्राह्मण । —**जिह्वा-स्त्री०** जीभका अमला हिस्सा । —**मी-वि०** आग्ने चलनेवाला; अष्ट । पु० नेना; अनुभा; एक अग्नि । —**दानी(मित्र)-पु०** शुनकके निमित्त दिया हुआ पदार्थ या शूद्रका दान ग्रहण करनेवाला पतित ब्राह्मण । —**दुव-पु०** पहलेसे प्रदूषित किन्हींके आनेकी सूचना देनेवाला । —**निरूपण-पु०** अधिव्य-कथन । —**पर्णी-स्त्री०** अजन्मी भ्राता । —**पा-वि०** पहले पीनेवाला । —**पाद-**

पु० पर्वका अगला भाग, अंगुठा । -**बूजा-खी०** सर्व-प्रथम पूजा; सर्वाधिक पुज्य मानना । -**बीज-पु०** वह वृक्ष जिसकी डाल काटकर लगायी जाय; कलम । वि० इस प्रकार जमनेवाला (बीज) । -**भाग-पु०** श्रेष्ठ या अगला भाग; सिरा, नोक; ब्राह्म आदिमें पहले दी जानेवाली वस्तु; शेष भाग । -**भारी(विन्)**-वि० प्रथम भाग पानेका अधिकारी । -**भुक्(ञ्)**-वि० पहले खानेवाला; बिना देव-पितरको अर्पित किये खानेवाला; पैटू । -**भू-भूमि-खी०** लक्ष्य; मकानका सबसे ऊपरका भाग, छत । -**भट्टिची-खी०** पटरानी । -**भांस-पु०** हृदय; यकृतका एक रोग । -**बान-पु०** झनुसे लड़नेके लिए आगे बढ़नेवाली सेना । वि० अग्रगामी । -**बाकी(विन्)**-वि० आगे बढ़नेवाला, नेतृत्व करनेवाला । -**बोधी(विन्)**-पु० सबसे आगे बढ़कर लड़नेवाला; प्रमुख बोझा । -**लेख-पु०** समाचारपत्रका मुख्य (संपादकीय) लेख, 'लीडिंग आर्टिकल' । -**लोहिता-खी०** चिली शाक । -**बक्त्र-पु०** चौर-काष्ठका एक औजार । -**बर्ती(तिन्)**-वि० आगे रहनेवाला । -**छाला-खी०** ओसारा । -**संजानी-खी०** यमकी वह पुस्तक जिसमें मनुष्योंके कर्म लिखे जाते हैं । -**संध्या-खी०** प्रातःकाल । -**सर-वि०**, पु० आगे जानेवाला, अग्रगामी, प्रधान, अगुआ । [खी० 'अग्रमरी'] -**सारण-पु०** आगकी तपक बढ़ना; किमीका आवेदन-पत्रादि अपनाने वडे अधिकारिके पास भोजन, आदेश आदिके लिए भेजना । -**सारा-खी०** पीपका फलरहित मिरा । -**सूची-खी०** सूचकी नोक । -**सोची-वि०** [हि०] आगकी बान मोचनेवाला, दूरदर्शी । -**स्थान-पु०** प्रथम स्थान । -**हार-वि०** प्रथम देय (वस्तु) । -**इस्त-पु०** उगली; हाथीकी सूचकी नोक । -**हाथण-पु०** अगहनका महीना । -**हार-पु०** राज्यकी ओरमें ब्राह्मणकी निर्वाहार्थ भिलनेवाला भूमिदान; हम तरह दी हुई भूमि; ब्राह्मणकी देनके लिए रीतकी उपजमें निकाला हुआ अन्न ।

अग्रतः(तस्) - अ० [म०] आगे; पक्ष; आगेन ।

अग्रवाल-पु० वैद्यकीका पत्र, भेद, अग्रवाल ।

अग्रजः(शब्) - अ० [म०] आरम्भमें ही ।

अग्रह-पु० [म०] ग्रहण न करना; गृहहीन व्यक्ति; बानग्रह्य ।

अग्रोश-पु० [म०] दे० 'अग्रभाग' ।

अग्रोस्तु-पु० [म०] वैद्रीय विद् ।

अग्रोक्षण-पु०, अग्रोक्षि-खी० [म०] कटाक्ष, निरुद्धी चित्रवन ।

अग्रणीक, अग्रानीक-पु० [म०] फौजका आगे जानेवाला भाग ।

अग्रान्त-वि० [म०] जो देहाती न हो, नगरका; जो पालन न हो, जगती ।

अग्रान्तन-पु० [म०] भोजनका वह अन्न जो देवता, गौ आदिके लिए पहले निकाल दिया जाय ।

अग्रसन-पु० [स०] सम्मानका आसन वा स्थान ।

अग्रोद्ध-वि० [स०] ग्रहणके अधीन; त्याग्य; अविचारणीय; अविद्वत्तनीय ।

अग्रोद्धा-खी० [म०] औचादिके काममें न लाने लायक मिट्टी ।

अग्रिम-वि० [म०] पहला, अगला; [हि०] श्रेष्ठ, उत्तम; पेशगी; आगामी; मयमें बहा । पु० बहा भारी ।

अग्रिमा-खी० [स०] द्वािपजः, कोणा नामक फल या उसका वृक्ष ।

अग्रिष-वि० [म०] श्रेष्ठ, उत्तम । पु० बहा भारी; पहले लगनेवाले फल ।

अग्रोधिधिपु-पु० [स०] ऐसी खोसे विवाह करनेवाला द्विज जिसका पहले विवाह हो चुका हो ।

अग्रोधिधिपु-खी० [म०] वह विवाहिता खी जिसकी बही बहिन अविवाहिता हो ।

अग्रेसर-वि०, पु० [स०] आगे जानेवाला; अगुआ । [खी० 'अग्रेसरी']

अग्रेसरिक-पु० [स०] नेता; मालिककी आगे जानेवाला नौकर ।

अग्रय-वि० [स०] जो सबसे आगे हो; श्रेष्ठ; कुशल, योग्य । पु० बहा भारी; मकानकी छत ।

अघ-वि० [स०] खराब; पापी; दुष्ट । पु० पाप; दुष्कर्म; दुःख; विपत्ति; अशौच; संसका एक सेनापति । -**कृष्ण-पु०** प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला एक कठिन व्रत । -**कृत्-पु०** पाप करनेवाला । -**प्र-नाशक-नाशक-वि०** पापनाशक । पु० विष्णु । -**भोजी(जिन्)**-वि० जो देव, पितर, अतिथि आदिके लिए खाना न बनाकर केवल अपने लिए बनाये और खावे । -**भर्षण-वि०** पापनाशक (मंत्र) । पु० सधोपासनके अंतर्गत एक पापनाशनी किया; उस क्रियामें पढ़ा जानेवाला एक मंत्र । -**कृष्ण-पु०** दे० 'अपकृष्ट' । -**भार-वि०** पापका नाश करनेवाला । -**ल-वि०** पापनाशक । -**विष-पु०** बहुत विषैला मर्प । -**शंस-पु०** दुष्ट मनुष्य; दुराई चाहनेवाला; चोर; अपने कुकर्मको सचना देना । [वि० 'अशन्मी'(मिन्)] -**हार-पु०** मशहूर डाकू ।

अघट-वि० जो घटे नहीं; जो एक-सा बना रहे; वैमेल, अयोग्य; [स०] न होने योग्य, कठिन ।

अघटित-वि० [म०] जो हुआ न हो; न होनेवाला, अर्थात् अयोग्य; अनुचित; * अवश्यभावी; * न घटनेवाला । -**घटनापटीधर्मी-वि०** खी० जो कुछ नहीं हुआ है उसे करनेमें कुशल (माया) ।

अघट्ट-वि० दे० 'अघट' - दीपक दीन्हा तेल भरि बाती टई अघट्ट - माखी ।

अघन-वि० [म०] जो घना या ठोस न हो ।

अघर्म-वि० [स०] जो गरम न हो, ठंडा ।

अघर्मास्तु-पु० [म०] क्रूरमा ।

अघवाना-स० कि० इच्छाभर सिलाना; मनुष्ट करना ।

अघाड-पु० तुष्टि, संतोष ।

अघाटी-पु० वह भूमि जिससे बेचनेका अधिकार उसके स्वामीको न हो ।

अघात-पु० [स०] घात या क्षतिका अभाव; * आघात, प्रहार, चोट । वि० पेठभर, ज्यादा, बहुत ।

अघाती(तिन्) वि० [म०] जो घातक या क्षतिकारक न हो ।

अघाता-अ० कि० अफरना, तप्त होना, छकना; किसी वस्तुके मेहन या समर्पणसे होना; * प्रसन्न होना ।

अघातु(स) - अ० [म०] पापकर्म; अपना जीवन बितानेवाला ।

अचारी—पु० [सं०] पापका नाश करनेवाला; अब नामक दैत्य के मारनेवाले; कृष्ण ।

अचामुर—पु० [सं०] कृष्णके समवका एक दैत्य (यह भूतनाका छोटा भाई और कंसका सेनापति था) ।

अचो (चिन्)—वि० [सं०] पापी ।

अचोरना—पु० जौका मोटा आटा ।

अचोड़ी—वि०, पु० दे० 'अचोरी' ।

अचोर—पु० [सं०] शिवका एक रूप; एक शिवोपासक पथ । वि० जो शेर या भयानक न हो, सौम्य ।—**घोररूप**—पु० शिव ।—**नाच**—पु० शिव ।—**पंच**—पु० [हि०] अचोरियोंका पथ या संप्रदाय ।—**पंधी**—वि०, पु० [हि०] अचोर मतका अनुयायी ।—**पथ**—**मार्ग**—पु० शिवका उपासक एक संप्रदाय ।

अचोरा—स्त्री [सं०] मादृकृष्णा चतुर्दशी ।

अचोरी—वि० छणित; गदा । पु० अचोरपंथी, औधङ्ग; विनौनी भोजे खाने-पीनेवाला ।

अचौर—वि० [सं०] विना शब्दका; अल्प धनिवाला; ब्यालोते रहित । पु० एक वर्गसमूह (प्रत्येक वर्गके प्रथम दो अक्षर और श, ष, स) ।

अचौर—पु० [सं०] पापसमूह ।

अच्य—वि० [सं०] न मारने योग्य । पु० ब्रह्मा; सौंढ ।

अच्यवा—स्त्री [सं०] गाय ।

अग्रान—पु० दे० 'आग्रान' ।

अग्रानना—सं० क्रि० गंध लेना, घँसना ।

अग्रैय—वि० [सं०] न मँवने योग्य । पु० मय ।

अचंचल—वि० [सं०] जो चंचल न हो, स्थिर; धीर ।

अचंड—वि० [सं०] जो उग्र स्वभावका न हो, मौम्य ।

अचंडी—स्त्री [सं०] शान गाय; कोप न करनेवाली स्त्री ।

अचंड—वि० [सं०] अत्ररहित ।

अचंचल, **अचंचो**, **अचंचो**—पु० अच्यवा, आश्रय ।

अचंभा—पु० आश्रय, विम्वय; आश्रयजनक बान ।

अचंभित—वि० चकित, विस्मित ।

अचक—वि० भरपूर, न चुकनेवाला । *स्त्री० भीचकापन, भ्रवकचानेका भाव ।

अचकचाना—अ० क्रि० भीचका ढोना, विस्मित ढोना, चौक उठना ।

अचकन—पु० लक्ष कलीदार अंगरसा जिसमें पहले गेहोंमें कमर फूटनक अर्थचंद्राकार बड़ लगने थे और अब मधि बटन देकते हैं ।

अचकॉ—अ० अचानक ।

अचका—पु० अनजान ।—**(के)मे**—अचानक, धोखेमें ।

अचक—वि० [सं०] चक्ररहित, जिसमें पहिये न हों; अचल, स्थिर ।

अचकु (सु)—वि० [सं०] चक्षुरहित, अंधा । पु० बुरी अंखि ।

अचमुर—'अचमुस'का समासगत रूप ।—**दुर्जन**—पु० नेत्रर शस्त्रियों द्वारा प्राप्त क्षान ।—**विषय**—वि० दृष्टिमें परे ।

अचमुष्क—वि० [सं०] नेत्ररहित, अंधा ।

अचारी—वि० अचारी, नटखट, शरारती—'जो तरो सुत खरोई अचारी तऊ कोखकी जायो'—सूर० ।

अचारी—स्त्री० नटखटी, शरारत ।

अचतुर—वि० [सं०] चारसे बंचित, जिसके पास चारसे कम हो; जो चतुर या कुशल न हो ।

अचना—सं० क्रि० दे० 'अचवना' ।

अचपल—वि० [सं०] अचंचल, धीर, स्थिर; *चंचल, शोल ।

अचपलाहट—स्त्री० अचंचलता; † नुलनुलापन ।

अचपली—स्त्री० छेड़छाड़, झोठा ।

अचभीन—पु० अचरजकी बात; दे० अचंभा ।

अचमन—पु० दे० 'आचमन' ।

अचर—वि० [सं०] अचल, स्थावर । पु० स्थावर प्राणी या पदार्थ; स्थिर राशि—**(रूप, स्थि, पृथिवि और कुंभ)** ।

अचरज—पु० आश्चर्य, अचंभा । वि० अचरजमरा, अनोखा ।

अचरम—वि० [सं०] जो अतिम न हो ।

अचरित—वि० [सं०] जिसपर कोई चला न हो; अव्यवहृत; अछता । पु० गतिरोध ।

अचल—वि० [सं०] गतिहीन, स्थिर; चिरस्थायी, सदा रहनेवाला; अटल, अपरिवर्तनशील । पु० पहाड़; बौल, कुंटी; ७ बी सव्या (७ कुल-पर्वतोंपरसे); ब्रह्मा; शिव; आत्मा ।—**कचका**—**जा**—**तनवा**—**दुहिता (शु)**—**सुता**—स्त्री० पार्वती ।—**काला**—स्त्री० पृथ्वी ।—**ज**—**जात**—वि० पहाड़पर या पहाड़में उत्पन्न ।—**खिद (बु)**—पु० कोविल । वि० स्थिर कात्तिका ।—**खिद (बु)**—पु० इद्र ।—**छति**—स्त्री० एक वृक्ष ।—**पति**—**राज**—पु० हिलाल ।—**ब्यूह**—पु० अमहान व्यूहका एक भेद ।

अचल संपत्ति—स्त्री० [सं०] न हटायी जा सकनेवाली संपत्ति, गैर मनकृष्य जायदाद (घर, रैन आदि) ।

अचला—स्त्री० [सं०] पृथ्वी । वि०, स्त्री० न चलनेवाली ।

—**सप्तमी**—स्त्री० सांच शुक्र मंगनी ।

अचलाधिप—पु० [सं०] हिमालय ।

अचवना—पु० दे० 'आचमन' ।

अचवना—सं० क्रि० आचमन करना, पीना; छोड़ देना ।

अ० क्रि० भोजनोपराज कुरी आदि करना ।

अचवाह—वि० प्रक्षालित, स्वच्छ ।

अचवाना—सं० क्रि० आचमन करना ।

अचाक, **अचाका**—अ० अचानक ।

अचाक्षुष—वि० [सं०] जो देख न जा सके, अदृश्य, अप्रत्यक्ष ।

अचानुर्व—पु० [सं०] चतुर्गटेका न होना, अकुसुलता, अनोचीपन ।

अचान—अ० अचानक, मग्न ।

अचानक—अ० यकायक, अनपेक्षित या भ्रमभाविन रूपमें, औचक्य ।

अचापल, **अचापल**—वि० [सं०] अचपल, स्थिर । पु० अचपलता, स्थिरता, धर्मता ।

अचार—पु० चिरीबीका पेय; चिरीबीका फल; फल या तरकारीमें मिच-भमाले लगाकर कुछ दिनतक तेल या मिरकेमें रखनेमें बना चटपटा स्वाद * दे० 'आचार' ।

अचारज—पु० दे० 'आचार्य' ।

अचारी—वि०, पु० दे० 'आचारी' । स्त्री० आमीकी फाँकी-की धूपमें मित्राकर बनाया हुआ अचार ।

अन्वय-वि० [सं०] अनुसर ।

अन्वय-पु० न चलनेवाला वा कम चलनेवाला जहाज ।
अन्वय-स्त्री० चाहका अभाव, अनिच्छा । वि० इच्छा-
रहित, निष्काम; जिसकी चाह करनेवाला कोई न हो-
‘चाह-आलमाल औ अन्वयके कलपतर’-वन० ।

अन्वय-वि० जिसकी चाह न हो; जो प्रेमपात्र न हो;
प्रीति-रहित । पु० वह व्यक्ति जिसपर प्रेम न हो वा जो
प्रेम न करे ।

अन्वय-वि० इच्छा-रहित, निष्काम ।

अन्वय-वि० [सं०] चित्ता-रहित, बेफिक्र ।

अन्वयनीय-वि० [सं०] जिसका चित्तन न हो सके, अवेय;
आकस्मिक, अप्रत्याशित । पु० शिव ।

अन्वय-स्त्री० [सं०] लापरवाही, बेफिक्री ।

अन्वयित-वि० [सं०] जो सोचा न गया हो, अतर्कित;
आकस्मिक, अप्रत्याशित; उपेक्षित ।

अन्वय-वि० [सं०] दे० ‘अविनयीय’ । -कर्म(न)-
पु० ऐसा कार्य जो चित्तनसे परे हो । कर्मा(न)-
वि० अविनय कर्म करनेवाला । -रूप-वि० अवेय रूप वा
आकृतिवाला ।

अन्वयान्ता(स्मृ)-पु० [सं०] परमात्मा, जिसका रूप
समझमें न आवे ।

अन्वयिष्य-वि० [सं०] जो विविक्तताके योग्य न हो,
अमाध्य, लाजलाज (रोग) ।

अन्विकीर्ण-वि० [सं०] जिसे (कोई काम) करनेकी इच्छा
न हो, जो कुछ करना न चाहता हो, आलसी ।

अन्वय-पु० आश्चर्य, अचंभा ।

अन्वय-वि० [सं०] जो सोचा न गया हो; जो एकत्र न
किया गया हो ।

अन्वयवन-वि० पकटक, निर्निमेष ।

अन्वय-वि० [सं०] अवेनन, जड़ । पु० जड़ जगत् ।

अन्वय-वि० [सं०] जो समझके परे हो; निर्मुक्ति, अपान;
जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो; अप्रत्याशित, न
सोचा हुआ ।

अन्वय-वि० [सं०] अज्ञान, प्रानामाव ।

अन्वय-वि० [सं०] जो बहुराग न हो; जिसमें भेद न
किया जा सके ।

अन्वय-अ० [सं०] शीघ्र; हालमें, कुछ ही पहले । वि०
क्षणव्यापी; हालका । -सुति, -प्रभा, -भा(स्)-
रोचि(स्)-स्त्री० विजली । -प्रसूता-स्त्री० हालकी
व्यापी हुई गाय । -सूत-वि० जो कुछ ही देर पहले
मरा हो ।

अन्वयता-स्त्री० [सं०] क्षणिकता ।

अन्वयम्, अन्वयार, अन्वयार, अन्वयेण-अ० [सं०] शीघ्र,
अविलम्ब; हालमें, कुछ ही पहले ।

अन्वयानु-पु० [सं०] विजली ।

अन्वयारा-स्त्री० [सं०] विद्युत् ।

अन्वयता-वि० अनन्तता, आकस्मिक; अननुमेय, बहुत
अधिक; निश्चिन् । [स्त्री० ‘अन्वयती’] ।

अन्वय-वि० [सं०] वसहीन ।

अन्वय-वि० खाली न जानेवाला, अन्वय; निश्चित, प्रम-

रहित । अ० कोशलपूर्वक, सफाईसे; निश्चय-पूर्वक ।

अन्वय-वि० संज्ञा-रहित; जड़ । * पु० जड़ पदार्थ; जड़ता,
माया ।

अन्वय-वि० [सं०] चेतना-रहित; अज्ञान; निर्जीव; संज्ञा-
रहित, वेद्युष । पु० जड़ पदार्थ ।

अन्वय(तत्त्व)-वि० [सं०] चित्त-रहित; चेतना-रहित,
अचेत; निर्जीव । [स्त्री० ‘अन्वयती’] ।

अन्वय-वि० [सं०] निश्चेष्ट, प्रयत्नहीन; गतिहीन ।

अन्वय-वि० [सं०] चेतना-रहित, जड़ । पु० चेतनाका
अभाव; अज्ञान; बेहोशी; जड़ पदार्थ ।

अन्वय-वि० वैवेक । पु० वैवेकी ।

अन्वय-पु० लकीरका कुंदा जिसपर लकीर या घास रखकर
काटते हैं, ठोहर ।

अन्वय-पु० आचमनका पात्र ।

अन्वय-पु० दे० ‘अचमन’ ।

अन्व-पु० [सं०] स्वर वर्ण (स्वा०)।-संधि-स्त्री० स्वर-संधि ।

अन्व-वि० [सं०] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक । पु०
स्फटिक; भाव; एक पीथा; सामुख्य; * अस्ति; वस्त्र;
रावणका पुत्र अक्षकुमार; वि० अच्छा ।-अन्व-पु० भाव ।
अन्व-वि० अच्छा, सुंदर-‘मागहु विधि तन अच्छ छवि
स्वच्छ राखिबे काज’-वि० ।

अन्वय-पु० दे० ‘अक्षत’ । वि० अक्षतित; लगातार ।

अन्वय-पु० दे० ‘अक्षर’ ।

अन्वय-पु० दे० ‘अक्षर’ ।

अन्वय-वि० अला, बढिया; ठीक, सुंदर; खरा; सकुशल;
चंगा, नीरोग; सुपरता हुआ; स्वास्थ्यकर (जल-वायु);
सफल, प्रतिष्ठित; दाममें मुनासिब, सस्ता (?) ; जो बुरा न
हो; कामचलाक । पु० अक्ष पुरुष, गुरुजन; बका-बुदा ।

अ० अच्छी तरह; स्वीकार-युक्त उत्तर, हाँ; खैर (यह
आश्चर्य भी प्रकट करता है-अच्छा, आप है !) । -ई-

स्त्री० अल्ला; अच्छापन, खूबी । -आसा-वि० काफी
अच्छा । -वन-पु० उत्तमता, सुंदरता । -बुरा-वि० अला-
बुरा । -बिच्छा-दुस्तर; अला-चंगा । सु०-आना-ठीक
वक्तपर आना (अर्थमें इसका उलटा); सुंदर बनना ।

-करना-तंदुरुस्त करना; आफतसे बचना; अच्छा काम
करना । -कहना-तारीफ करना । -लगना-सुंदर
लगना, पसंद आना, अला मालूम होना । -(च्छी)
कटना-गुजरना-बीतना-आरामसे दिन बीतना ।

-(च्छे)-अच्छे-बड़े आदमी । -बक-जल्दतरके बक ।

-से पाछा पड़ना-बड़े वेदव आदमीसे वास्ता पड़ना ।

-हालीं गुजरना-आरामसे दिन बीतना ।

अन्वय-पु० [सं०] सोमयागका कृत्विक जो होताका
सहायक होता है ।

अन्वय-वि० [सं०] छिद्र-रहित; अक्षत; निर्दोष; अक्ष-
हित । पु० अक्षुण्ण अवस्था; निर्दोष कार्य ।

अन्वय-वि० [सं०] जो कटा न हो, अक्षतित; अवि-
भक्त, अदृष्ट; लगातार चलनेवाला । -वर्ण-वर्ण-पु०
शास्त्रादिक आदि वृक्ष जिनकी पत्तियाँ बराबर बनी रहती हैं;
ऐसे पक्षी जिनके पर कटे या क्षत न हुए हों ।

अन्वय-पु० अक्षर (रातो) ।

अष्टसुता-वि० स्त्री० [सं०] निष्पाप (स्त्री) । स्त्री० जैनोंकी एक देवी ।

अष्टरिका-स्त्री० [सं०] चक्र; मंडल ।

अष्टदिक, अष्टदिक-वि० [सं०] जो काटने या छेदने योग्य न हो ।

अष्टोद्य-वि० [सं०] जिसका छेदन न हो सके, अविभाज्य ।

अष्टोदन-पुं० [सं०] अस्ति, शिकार करना ।

अष्टोत्त-वि० पूरा; अधिक; बहुत ।

अष्टोद्-वि० [सं०] स्वच्छ जलनाला । पुं० हिमालयकी एक झील (काटबरी) ।

अष्टोदा-स्त्री० [सं०] एक नदी (पुराण) ।

अष्टोदिन, अष्टोदिनी-स्त्री० दे० 'अष्टोदिणी' ।

अष्ट्युत-वि० [सं०] जो अपने स्वरूप, सामर्थ्य, स्थानसे श्रुत न हुआ हो; अचल, अस्थित; निश्चिंत; स्थिर; न चूनेवाला । पुं० परमेश्वर; विष्णु; कृष्ण ।-कुल-शोत्र-पुं० रामानंदी साधुओंका मन्त्र या शिष्य-परंपरा ।

-ज-पुं० जैन देवताओंका एक वर्ग ।-पुत्र-पुं० कामदेव;

कृष्णका पुत्र ।-मन्त्र-पुं० मंगीमें एक विकृत स्वर ।

-मूर्ति-पुं० विष्णु ।-वास-पुं० वट वृक्ष; अश्वत्थ वृक्ष ।

-पद्म-पुं० मंगीमें एक विकृत स्वर ।

अष्ट्युतागज, अष्ट्युतामज-पुं० [सं०] कामदेव; कृष्णपुत्र ।

अष्ट्युतामज-पुं० [सं०] विष्णुके बड़े भाई, इन्द्र तथा वामन, दोनों कश्यपके पुत्र थे; कृष्णके बड़े भाई;

बलराम ।

अष्ट्युतानंद-वि० [सं०] जिसका आनंद नित्य हो ।

पुं० परमात्मा ।

अष्ट्युतावास-पुं० [सं०] दे० 'अष्ट्युतावास' ।

अष्टक-वि० जो छका न हो, अग्रसु ।

अष्टकना-अ० क्रि० न छकना, नष्ट न होना ।

अष्टमा-वि० अष्टक, अग्रसु ।

अष्टत-अ० विद्यमानतामें, रहते हुए; निवा, अलावा ।

वि० अविद्यमान ('छनहुँ अष्टत समान') ।

अष्टताना-पछताना-अ० क्रि० बार-बार पछताना या खेद करना ।

अष्टन-पुं० बहुत दिन । अ० पीछे-पीछे ।

अष्टना-अ० क्रि० विद्यमान रहना ।

अष्टप-वि० न शिपने लायक, प्रवृत्त ।

अष्टय-वि० दे० 'अष्टय' ।-कुमार-पुं० दे० 'अश्वकुमार' ।

अष्टरा, अष्टरी-स्त्री० दे० 'अम्प' ।

अष्टरौटी-स्त्री० वर्षामाला ।

अष्टल-वि० [सं०] निष्छल, मोबा-मादा ।

अष्टवाई-स्त्री० मफाई ।

अष्टवाना-अ० क्रि० साफ करना, मचराना ।

अष्टवानी-स्त्री० एक मरकब अवलंब जो प्रमत्ता स्त्रियोंकी दिया जाता है ।

अष्टमा-वि० जो दुबला न हो, मोटा-नाजा, दृढ़-पुष्ट ।

अष्टित-अ० दे० 'अष्टित' ।

अष्टि-वि० [सं०] छिद्ररहित; निर्दोष ।

अष्टत-पुं० अष्टत जातिका मनुष्य, अंत्यज, हरिजन ।

वि० न छूने योग्य; * दे० 'अष्टुता' ।

अष्टुता-वि० जो छुजा न गया हो, अस्पृष्ट; जो काममें न लाया गया हो, कोरा, नया ।

अष्टुतोद्धार-पुं० अष्टुतोंका उद्धार या सुधार; इसका बर्तन या आंदोलन ।

अष्टे-वि० अष्टेय, अमेय । पुं० छल-छिद्रका अभाव,

निष्पटता; अमेद ।

अष्टेय-वि० [सं०] जिसका छेदन या लट्ठन न हो सके, अविभाज्य; अविनश्य ।

अष्टेय-वि० छिद्र-रहित, निर्दोष ।

अष्टेय-वि०, अ० लगातार, निरंतर; अत्यधिक ।

अष्टोप-वि० नंगा, तुच्छ, नीन; दीन ।

अष्टोभ-वि० क्षोभरहित; गभीर, शान्त; निर्भीक; मोह-रहित; नीच ।

अष्टोर-वि० ओर-ओर रहित ।

अष्टोह-पुं० स्नेह, ममता या क्षोभका अभाव; शान्ति; निर्दयता । वि० निर्दय, निष्ठुर; स्नेहरहित; क्षोभरहित ।

अष्टोद्-वि० दे० 'अष्टोद्' ।

अष्टोभ-वि० [सं०] वनहीन । पुं० मेरक; मृग; बच्चेकी वह अवस्था जब उसके दाँत नहीं निकले होते ।

अञ-वि० [सं०] अकस्मा, अनादि कालमें विद्यमान । पुं० ईश्वर, ब्रह्मा; विष्णु; शिव; जीवतमा; दशरथके पिता; एक कृषि; बकरा; भेडा; कामदेव; चंद्रमा; मेघ राशि; एक धान्य; माक्षिक धातु; अग्नि; मृगका रथ; एक नक्षत्रीय ।

-कर्ज-पुं० असन नामक वृक्ष ।-कर्जक-पुं० मालववृक्ष ।

-गंधा, -गंधिका-स्त्री० अजमोदा ।-गंधिनी-स्त्री०

अजमोदा की पीथा; वनतुलसी ।-श-पुं० शिवका धनुष;

विष्णु; अग्नि ।-शर-पुं० अत्रदश; एक विशाल मर्प जो

बकरी, हिरन आदिको निगल जाता है; एक अमुर ।

-भुक्ति-स्त्री० निरुद्धम या अगवान्के मरीमें रहनेकी

वृत्ति ।-गरी-वि० [हिं०] अजमोदा, -कीमा, बिना

परिश्रमकी । स्त्री० अजमोदा की वृत्ति; एक पीथा ।-गलिका-

स्त्री० बच्चोंका एक रोग ।-जीव, -जीविक-पुं० बकरी

पाल और बच्चोंका जीविका चलातेवाला ।-ईडी-स्त्री०

एक पीथा, ब्रह्मडी ।-देवता-पुं० अग्नि; पूर्वा भाद्रपदा

नक्षत्र ।-नामक-पुं० एक, स्वनित्र द्रव्य ।-पति-पुं०

मर्मे अष्टा बकरा; मंगल ।-पथ-पुं० अजमोदा, छात्र-

पथ ।-पथ-पुं० नग गंगना, दरी ।-पद्म, -पद्म-

पुं० एक मृद ।-पाल-पुं० छात्रपालक; दशरथके पिता ।

-बंशु-पुं० बकरोंका भेडा । वि० मृग (का०) ।-अक्ष-

पुं० बच्चोंका पैर ।-भार-पुं० बकरा-कमाज; अजमेर ।

-मिद-पुं० दे० क्रममें ।-मुष-पुं० दक्षप्रजापति

(वीरभद्रने शिवकी आज्ञामें शिखरछेदे के बाद बकरोंका मिर

जोड़ दिया था) ।-मुखी-स्त्री० एक राक्षसी जो अशोक-

वाटिकामें सीता-तीर्थे नियरानी करती थी ।-मोदा-

मोदिका-स्त्री० अजवायनका एक भेडा; अजवायन ।

-लंबन-पुं० सोनावन ।-लोमा(मद)-पुं०, -लोमी-

स्त्री० अग्रपर्णी नामक पीथा, केशोंच ।-वाह-पुं० कच्छ-

काठियावाड़का पुराना नाम (उन दिनों वहाँके लोग बक-

रियोंमें जीविका चलाते थे) ।-वीथि, -वीथी-स्त्री०

मृग, चंद्रादिके गमनके गीन मार्गमेंसे एक, छायापथ ।

—अंजी—खी० शिवायी अजक पोषा ।

अज-अ० [फा०] से, साथ । —अज-अ० सुर-अजुव, अपने आप । —अज-अ० नैषके, परीक्षिते, अक्षित स्थानसे । *पु० अज स्वान । —अज-अ० गैष, अक्षित स्थानसे आनेवाला, आकस्मिक, आसम्बानी (अजवैषी पोषा, —तमाच, —मार—अचानक आनेवाली विपदा, वैषी कोष) । —अज-अ० नये हिरसे । —अज-अ० वेहव, अक्षयिक ।

अजक-पु० [सं०] पुस्तकाका एक संघाज ।

अजकव-पु० [सं०] शिवका धनुष ।

अजक-खी० [सं०] कम अजककी बकरी; अक्षक एक रोग, डेंडर; अजागलस्तन । —आज-पु० अक्षका एक रोग, डेंडर ।

अजकाव-पु० [सं०] शिवका धनुष; बलका पेद; एक नव-पात्र; डेंडर नामक अक्षका एक रोग ।

अजकाव-पु० [सं०] शिवका धनुष; अजवीषी ।

अजकाव-पु० [सं०] पिनक; अजवीषी; एक नागपुत्र; एक वधपात्र ।

अजकपु-पु० अजमेकी बात, विविध व्यापार; अजक बात । वि० आद्यदोषावक; अनुपमेय ।

अजकव्य-वि० [सं०] जो अतिम, तुच्छगम या सक्ते नाच न हो ।

अजटा-खी० [सं०] भूम्यामलकी ।

अजड-वि० [सं०] जो जड न हो, चेतन, समझदार । पु० चेतन पदार्थ ।

अजडवा-खी० [सं०] पीली जुड़ी; बकरीका झुड ।

अजडवा-पु० [सं०] अजगर ।

अजव-पु० [सं०] जडा; तुच्छ व्यक्ति; गमन । वि० निर्जन, गनबीन; * जन्मरहित; अजन्मा । —योनिज-पु० दक्ष ।

अजवक-वि० [सं०] अनुपादक; अकारक ।

अजवनि-खी० [सं०] जन्माह्वित ।

अजवनी-वि० [सं०] अपरिचित, अनजान; परदेशी ।

अजनि-खी० [सं०] मार्ग, पथक ।

अजन्म-वि० दे० 'अजन्मा' ।

अजन्म(न)-पु० [सं०] जन्मका अभाव ।

अजन्मा(व्यव)-वि० [सं०] जन्म-रहित; अनादि ।

अजन्म-वि० [सं०] जो उत्पादनके योग्य न हो; अजन-नाय; मनुष्यके लिए अनुपयुक्त । पु० मानवजातिके लिए अनुपयुक्त, घटना—भूषण आदि उपाय ।

अजप-पु० [सं०] उचित रूपसे पाठ न करनेवाला या धर्मविरोधी ग्रन्थ पढ़नेवाला ब्राह्मण; कुपाठक; छागपालक ।

अजपा-खी० [सं०] एक मंत्र जिसका उच्चारण सौंसके भीतर-बाहर आने-जाने मात्रमे किया जाता है, हस्त-मंत्र, 'सोहस' । —अजप-पु० अजपा मंत्रका जप ।

अजप-वि० [अ०] विविध, अनोखा । पु० अचरज, अचमा ।

अजम-पु० [अ०] अरबने भिन्न देश, विशेषतः ईरान, तुर्कान; वै लोग जो अरब न हों ।

अजमल-खी० [अ०] बर्फ, दलुनी; गौरव; चमत्कार ।

अजमी-वि० [अ०] अजमका । पु० अजमका रहनेवाला, ईरानी, तुर्कानी ।

अजमीद-पु० [सं०] अजमेर; उसके आम-पासका प्रदेश;

पुस्तकीय इतिहास पुन सुधिर; सुधिरका एक पुन ।

अजक-खी० [सं०] पराजय । वि० अजेव । पु० एक छंद; विष्णु; अक्षि; एक नदी ।

अजकवाक-पु० गैव रागका एक पुन; एक राजा; जमाकगोटा ।

अजका-खी० [सं०] माँग; माया; दुर्गादी एक सबकरी; * बकरी ।

अजकव-वि० [सं०] जो जीता न जा सके, अजेय; खेलमें न जीतने योग्य ।

अजक-वि० [सं०] जरा-रहित, जो सदा जवान रहे; क्षय-रहित; * जो पचे नहीं । पु० परमज; देवता; एक पोषा, जीर्णफंजी ।

अजकर-पु० [सं०] अक्षिमांश ।

अजरा-खी० [सं०] दूतकुमारी; छिपकली ।

अजरावक-वि० जीर्ण न होनेवाला, चिरन्मायी, टिकाक ।

अजवै-वि० [सं०] जरा-रहित; चिरन्मायी; जो पचावा न जा सके । पु० वैत्री ।

अजवापुन, अजवावक-खी० एक प्रसिद्ध पोषा और उसके दाने जो दवा और मसालेके काम आते हैं ।

अजस-पु० दे० 'अवस' ।

अजसी-वि० [सं०] बदनमा, जिसके हाथमें यज्ञ न हो ।

अजस-वि० [सं०] अविच्छिन्न, अनवरत । अ० निरंतर, सतत ।

अजहति-खी० दे० 'अजहत्त्व' ।

अजहव-वि० [सं०] जो छोड़े या छोड़े नहीं । —स्वार्थ-खी० वह लक्षणा जिसमें वाच्यार्थका त्याग किये बिना अन्यायका रोष होता है, उपादानलक्षणा (सा०) ।

अजहति-पु० [सं०] वह शब्द जो अन्य छिन्न वाचक शब्दके विशेषणरूपमें व्यवहृत होनेपर भी स्वछिन्नका त्याग न करे ।

अजहूँ, अजहूँ-अ० आज भी; अनतक ।

अजहूँ-खी० [अ०] दे० 'अजान' ।

अजोत्री-खी० [सं०] एक पोषा, नीलपुष्पी ।

अजा-खी० [सं०] प्रकृति, माया; शक्ति; बकरी; एक पोषा । —पाकलव-पु० बकरीके मलेमें लटकनेवाली सतानकार धैली; (ला०) उस जैसी निरर्थक वस्तु । —जीव, —पाकल-पु० छागपालक ।

अजा-खी० [अ०] कोक, मातम; मातमपुत्री । —अजान-पु० वह मकान जहाँ मातम किया जाय, मसिदे पड़े जाय या ताजिया रखा जाय । —आर-पु० मातम करने-वाला । —आरी-खी० मातम करना, मानना ।

अजागर-वि० [सं०] जो जाग्रत न हो । पु० भुंगराज ।

अजावक-वि० दे० 'अजावक' ।

अजावक, अजावी-वि० जिसे किसीसे कुछ माँगनेका आवश्यकता न हो, धन-धान्यसे भरपूर ।

अजावि, अजावी-खी० [सं०] श्वेत या कृष्ण जीरा ।

अजाविक-पु० [अ०] शैलान ।

अजाव-वि० [सं०] अजन्मा; अनुपपन्न; अविकसित ।

—ककुम्-पु० वह सौंघ जिसका विज्ञा अभी न उठा हो ।

—वक्ष-वि० जिसके पंख न निकले हो । —अजव-वि०

अजे, अजेह अजे-वि० दे० 'अजेय'।
 अजेतव्य-वि० [सं०] दे० 'अजेय'।
 अजेय-वि० [सं०] जिसे कोई जीत न सके।
 अजेयवाद्-पु० [सं०] एक वद; विष्णु।
 अजेय-वि० [सं०] जो जीव-संघी न हो; अप्राणिज (वन-अर्गेनिक)।
 अजीग-वि० अनुचित, अव्यय; बेमेल, बेजोड़।
 अजीतर-वि० स्वच्छंद।
 अजीरमा-स० कि० छीनना, हरण करना; बटोरना; प्रकाशित करना।
 अजी-अ० आज भी; आजतक, अबतक।
 अजब-अ० आज।
 अजान-अ० आज्ञा, पुटनेतक।
 अजका, अजका-खी० [सं०] बेव्या (ना०)।
 अजसटा-खी० [सं०] भूम्यामलकी।
 अजसल-पु० [सं०] काल; अंगार।
 अज-वि० [सं०] शान-रहित; मूर्ख, नासमझ; अचेतन।
 अजला-खी०, अजल-पु० [सं०] अज्ञान, नासमझी; अचेतनता।
 अजा-खी० दे० 'आहा'।
 अज्ञात-अ० अ० बिना जाने। वि० [सं०] न जाना हुआ; अप्रकट; अप्रत्याशित। -कूल-वि० जिसके कुल आदिका पता न हो। -वर्षा-खी० छिपकर रहना, गुप्तवास।
 -नामा(अन्)-वि० जिसका नाम ज्ञात न हो; अप्रसिद्ध। -विष्णु-वि० जिसके बापका पता न हो; रामजना। -पूर्व-वि० जो पहलेसे ज्ञात न हो।
 -शोधना-खी० मुग्धा नायिका जिसे यौवनागमका पता न हो। -बास-पु० गुप्तवास। -स्वामिक-वि० (बह धन) जिसके स्वामीका पता न हो।
 अज्ञातक-वि० [सं०] अविदित, अप्रसिद्ध।
 अज्ञाता-खी० [सं०] दे० 'अज्ञानपीठना'।
 अज्ञाति-पु० [सं०] वह व्यक्ति जो सबधी न हो।
 अज्ञान-पु० [सं०] ज्ञानका अभाव; मिथ्या ज्ञान, अविद्या। वि० ज्ञान-रहित, मूर्ख। -कूल-वि० अनजानमें किया हुआ; अज्ञात; अज्ञानवश किया हुआ। -तिसिर-पु० अज्ञानरूप अंधकार।
 अज्ञानतः(तत्)-अ० [सं०] अज्ञानके कारण, अज्ञानवश (किया हुआ)।
 अज्ञानता-खी०, अज्ञानपत्र-पु० मूर्खता, नादानी, नासमझी।
 अज्ञानी(निष्)-वि० [सं०] अज्ञ, मूर्ख, नासमझ।
 अजेय-वि० [सं०] जो जाना न जा सके, जानातीत; जो जानने योग्य न हो। -बाद्-पु० ईश्वर या परमतत्त्व अजेय है-यह मत।
 अजेय-वि० [सं०] जो सबसे बड़ा या सर्वश्रेष्ठ न हो; जिसके बड़ा भाई न हो।
 अजयी-अ० दे० 'अजी'।
 अजर-वि० जो न हरे; न बरसनेवाला (बादल)।
 अजना-अ० आग-शरि दिवौ दिवेयें उदैगकी अजनी है-धन।

अजीरी-खी० झोला (जो कंधेपर लटकाया जाता है)।
 अजर-पु० डेर, राशि।
 अट-खी० प्रतिबंध, रोक।
 अटक-खी० रोक; अचबन, उलझन, हिचक; अनाज; नदी। पु० इस नामका एक नगर। वि० [सं०] अटक करनेवाला, अमणशील।
 अटका-खी० जकृत-तोसरीकी अटक भी बना है। तुम्हारे और मैयाके लिए एक ही मछली बहुत है-युग०।
 अटकन-खी० रोक; अचबन, उलझन, हिचक; अनाज। अटकन-बटकन-पु० बच्चोंका एक खेल। मु०-खेदना-बेकार काम करना।
 अटकना-अ० कि० रुकना; मोलने या पढ़नेमें रुकना; उलझना; बहस करना; गल्ले न उतरना; प्रेमपाशमें बँधना।
 अटकर-खी० दे० 'अटकल'।
 अटकरमा, अटकलमा-स० कि० अनुमान करना, अंदाज लगाना।
 अटकल-खी० अंदाजा, अनुमान; पहचान। -पु०-वि० अंदाजी, अनुमानाश्रित। अ० अंदाजन, अटकलके सहारे। -बाज़-वि० जो अटकल लगानेमें तेज हो, अनुमान-कुशल। -बाज़ी-खी० अटकल लगाना।
 अटका-पु० जगजाघजीकी चढ़ाया हुआ भात। खी० रुकावट; जकृत।
 अटकावा-स० कि० रोकना; उलझाना; डेर लगाना।
 अटकाव-पु० प्रतिबंध, रुकनेका भाव, रुकावट; अचबन, बाधा।
 अटकर-वि० अट-बंद; टूटा-फूटा (सामान)।
 अटखेली-खी० दे० 'अटखेली'।
 अटव-पु० [सं०] चलना; घूमना, भ्रमण। वि० भ्रमणशील।
 अटजा-अ० कि० पूरा पचना, काफी होना; बीचमें पककर जोड़ करना; अटन करना, भ्रमण या यात्रा करना।
 अटनि, अटनी-खी० [सं०] धनुषका अग्रभाग जहाँ दोरी बांधनेके लिए गड़वा बना होता है।
 अटपट-वि० दे० 'अटपटा'। खी० कठिनाई।
 अटपटा-वि० टेढ़ा, कठिन; अटपटग; अनोखा; * लज-खकाता हुआ।
 अटपटाना-अ० कि० अटकना; पहराना; हिचकना; रुक-खकाना।
 अटपटी-खी० नटखटी, शरारत।
 अटबर-पु० आँवर; कुट्टे।
 अटल, अटलक, अटलक-पु० [सं०] बासक, अहंसा।
 अटल-वि० अचल; निर्य; स्थिर, निश्चित, अवश्यमावी, पद, पक्का।
 अटवाटी-अटवाटी-खी० आट-खटोला, घोरिया-बैचना।
 मु०-खेदक पक्का-कठक लग जा बैठना।
 अटवि, अटवी-खी० [सं०] वन। -खल-पु० जंगलियों की सेना।
 अटविक-पु० [सं०] दे० 'आटविक'।

अटहर—पु० डेर; कौठा; अवयव ।

अट—खी० अटारी; [सं०] पर्यटन; भ्रमणशीलता, घूमनेकी आदत (सम्प्रासिरीकी) । * पु० अटाला, डेर ।

अटारु—पु० विवाह; शरासत ।

अटारुट—वि० अनगिनत, बहुभार ।

अटारी—खी० कौठा; अट्टालिका ।

अटारु—पु० डेर, अवार; असावध; कसाहयोकी बस्ती ।

अटाला—पु० अट्टालिका, महल ।

अटी—खी० चाहा नामकी चिड़िया ।

अटूट—वि० न टूटनेवाला, दृढ़, बजबूत; अखंडित; न चुकनेवाला, बहुत, अपार; अजेय ।

अटेरव—पु० दूनीकी आँटी बनानेका यंत्र; कुश्तीका एक पंच; घोडा फेरनेका चक्र; पुर्ज । वि० दुबला; शीर्ण । —**कावा**—पु० बांधकर घोड़ेको चक्र देनेका एक खास तरीका ।

मु०—कर देना—हरा देना, बका देना । —**फेरना**—घोड़ेको कावा देना । —**हीना**—बहुत दुबला हो जाना ।

अटेरवा—सं० कि० सुतरी आँटी बनाना; † बहुत अधिक शराब पीना ।

अटोक—वि० परिबंधहीन ।

अट्ट—वि० [सं०] ऊँचा, उच्चस्वरवृत्त; सुखा हुआ; निरंतर । पु० कौठा; अटारी; महल; पुर्ज; अख; आत; हाट; रेशमी कपडा; वध; वायल करना; अतिशयता; प्राधान्य । —**खाली**—खी० महलोंसे भरा हुआ नगर या देश । —**इसित**—हास्य—**हास्य**—पु० मोर्करी हँसी, ठहाका । —**हासक**—पु० कुटका फूल और पौधा । वि० अट्टहास करनेवाला । —**हासी**(सिन्धु)—वि० अट्टहास करनेवाला । पु० शिव ।

अट्टक—पु० [सं०] कौठा; महल; बालाखाना ।

अट्टन—पु० [सं०] एक चक्काकार आवुध; उपेक्षा, अवमानना ।

अट्टाह—वि० अट्टवट, अगडम-वगडम । पु० निरर्थक बाल ।

अट्टा—पु० मचान ।

अट्टाहास—पु० [सं०] दे० 'अट्टहास' ।

अट्टाल, **अट्टालक**—पु० [मं०] अटारी; बालाखाना; महल; किलेका पुर्ज ।

अट्टालिका—खी० [मं०] महल; पक्षी इमारत; अटारी । —**कार**—पु० राज ।

अट्टी—खी० सूत या ऊनका लुब्धा ।

अट्टा—पु० ताशका वह पत्ता जिसपर आठ घुटियों हों ।

अट्टाहस, **अट्टाहस**—वि० बीम और आठ । पु० २८ की सख्या ।

अट्टानबे—वि० नबे और आठ । पु० ९८ की सख्या ।

अट्टारह—वि०, पु० दे० 'अट्टारह' ।

अट्टावन—वि० पंचाम और आठ । पु० ५८ की सख्या ।

अट्टासी—वि० अस्सी और आठ । पु० ८८ की सख्या ।

अट्ट्या—खी० [सं०] परिभ्रमण, पर्यटन ।

अट्टंग—पु० अट्टांग योगकी साधना करनेवाला ।

अठ—आठका समासमें प्रयुक्त रूप । —**करी**—खी० दे० 'अठाली' । —**फतिया**—खी० एक तरफकी नखाशी । —**पहला**—वि० आठ पहलोंवाला, जिसमें आठ पाक्ष हैं । —**मासा**—पु० दे० 'अठमासा' । —**बाँसा**—पु० गर्भके

आठवें महीने होनेवाला संस्कार; आठ ही मासमें जन्म लेनेवाला बच्चा; वह जेता जो आठ महीनेतक जीतकर बिना बेचे छोड़ दिया गया हो । वि० आठ ही मासमें उत्पन्न होनेवाला । —**बारा**—पु० आठ दिनका समय । —**बाळी**—खी० आठ कटारोंसे चलनेवाली पालकी; संगरसे उठानेके लिए भारी चीजमें बोधा जानेवाला बाँसा टुकड़ा । —**सिख्या**—पु० (?) सिंहासन ।

अट्टासी—खी० २८ गांधी कलोंकी सख्या ।

अट्टी—खी० अट्टमी ।

अट्टासल—पु० पंचायत; मण्डा, सलाह ।

अट्टखेल—वि० शोख, चुलबुला, खिलाड़ी (अग्र०) । —**एव**—पु० चुलबुलापन, शैली ।

अट्टखेली—खी० किलोल; शोखी, चुलबुलापन; ठसकभरी या मस्तानी चाल । (प्रायः बहुवचनमें ही व्यवहृत) ।

मु०—(छियाँ) करमा—किलोल करना, इतराकर, नाजके साथ चलना ।

अट्टसर—वि०, पु० दे० 'अठहत्तर' ।

अट्टसी—खी० आठ अनेका मिका ।

अट्टपाव—पु० शरासत, नटखड़ी ।

अट्टलाना—अ० कि० दे० 'इटलाना' ।

अट्टवना—अ० कि० जमाना, ठनना ।

अट्टहत्तर—वि० सत्तर और आठ । पु० ७८ की सख्या ।

अट्टाई—वि० उत्पत्ती; नटखट ।

अट्टन—वि० न ठानने, न करने योग्य (काम); कठिन (काम) । पु० बैर, विरोध ।

अट्टाना—अ० कि० मताना; ठानना; ठेकना; जमाना ।

अट्टारह—वि० दस और आठ । पु० १८ की सख्या ।

अट्टासी—वि०, पु० दे० 'अट्टमी' ।

अट्टिलाना—अ० कि० दे० 'इटलाना' ।

अट्टी—पु० मिपाही, योडा (रामो) ।

अट्टोठ—पु० ढोंग, आडबर ।

अट्टोतर सी—वि० एक मी आठ ।

अट्टोतरी—खी० एक मी आठ दानोंकी माला ।

अट्टोरा—पु० वह खींची त्रिमसे पानके आठ बीड़े रखे हों ।

अट्टंग—वि० दे० 'अट्टंग' ।

अट्टंगा—पु० अट्टकाव, रोक, रुकावट, बाधा; कुश्तीका एक पंच । —(मे)बाङ्ग—पु० अट्टंगे लगानेवाला । —**बाजी**—खी० अट्टगा लगाना । **मु०**—(गा) बाङ्गना,—

लगाना—अट्टन टालना, होने हुए कार्यमें बाधक होना ।

—**मारना**—अट्टंगका पंच करना; विघ्न टालना ।

अट्टह—वि० अट्टकाव, जिससे दंड न दिया जा सके ।

अट्टबर—पु० दे० 'आडबर' ।

अट्ट—खी० अट्टनेकी क्रिया, टेक, हट । —**गडा**—पु० बेल-गाड़ियोंके ठहरने या बैलों आदिके बिकनेका स्थान ।

—**गोडा**—पु० नटखट चौपायोंके गर्भमें छटकायी जानेवाली लकड़ी जो तेज दीजनेमें बाधक होती है । —**हंडा**—पु०

मस्तूलमें बंधा रहनेवाला पाल चढ़ानेका डंडा । —**सल**—पु० ओट; बहाना; आवय; छाया । **[मु०]**—**००कटना**,—

००लना—पनाह देना या पनाहमें आना । **[अट्ट]**—वि० अट्टनेवाला; मल (बाकी) ।

अक्षराना - स० कि० अक्षाना, टिकाना; उल्लाना ।
 अक्षय - वि० न ढिगनेवाला, स्थिर ।
 अक्षयन, अक्षयल - स्त्री० क्वापट, बाधा ।
 अक्षयपौष्पो - पु० हस्तरसाविद्; आरंभर फैलनेवाला ।
 अक्षयलसि, अक्षयलीस - वि० चालीस और आठ । पु० ४८वीं संख्या ।
 अक्षयसि - वि० तीन और आठ । पु० ३८ की संख्या ।
 अक्षय - अ० कि० रुकना; अटकना; हट करना ।
 अक्षयना - स० कि० डाँटना-खपटना ।
 अक्षयंग, अक्षयंगारी - वि० टेढ़ा, विकट; विलक्षण, वेदव; टेढ़े भिजाववाला ।
 अक्षर - वि० निहट ।
 अक्षर - पु० एक राग जिसमें पाँच स्वर लगते हैं ।
 अक्षयल - वि० साठ और आठ । पु० ६८ की संख्या ।
 अक्षयल - पु० लाल रंगका एक फूल जो देवीकी चढ़ाया जाता है, जपाकुसुम ।
 अक्षयली - स्त्री० होड़, लाग-डाट ।
 अक्षय - पु० चौपायोंकी रखनेका वेरा, खरक; अक्षर ।
 अक्षय - पु० रुकनेकी जगह; पचाव ।
 अक्षयना - स० कि० रोकना, अटकना; डाट लगाना; ठूसना; धरकाना । पु० एक राग; डाट; धुनी ।
 अक्षयनी - पु० बड़ा पत्ता । स्त्री० कुदनीका एक पेंच, अक्षय; लकड़ीकी रोक जो खिड़की-दरवाजेमें लगायी जाती है ।
 अक्षयनी - वि० आड़ करनेवाला ।
 अक्षर - पु० ढेर; जलानेकी लकड़ीका ढेर; लकड़ीकी दुकान ।
 * वि० नुकीला; निरुद्ध ।
 अक्षराना - स० कि० डालना; देना ।
 अक्षय - पु० [सं०] एक तरहका नाच, मयूर-नृत्य ।
 अक्षय - वि० जो अपनी जगहने ढिगे नहीं, अटल ।
 अक्षयल - वि० अक्षर चलनेवाला; मट्टर; डठी ।
 अक्षय - स्त्री० माधुओंकी कुबड़ी ।
 अक्षय - पु० दे० 'अक्षि' ।
 अक्षी - स्त्री० दे० 'अक्ष' ; जरूरतका वस्तु ।
 अक्षीठ - वि० जो विगड़े न दे; गुप्त ।
 अक्षयल - पु० [सं०] हलका एक भाग ।
 अक्षयना - स० कि० डालना, उकेलना ।
 अक्षय - पु० एक पीथा जिसकी पत्तों और फूलोंका रस काम-धर्मको उत्तम औषधि है ।
 अक्षर - पु० शीर-गुल, अक्षर ।
 अक्षय - वि० अटल; अक्षय; लम्ब ।
 अक्षय-पक्षय - पु० आस-पास, पास-पड़ोस ।
 अक्षय-पक्षय - पु० पास-पड़ोसमें रहनेवाले ।
 अक्षय - पु० [सं०] ढाल ।
 अक्षय - पु० मिलने या एकठा होनेकी जगह; चौरों, जुआरियों, रडियों आदिके मिलनेकी जगह; कुटुम्बिका डेरा; दोनो होनेवाले कष्टारोंके रहनेका स्थान; हकीं, ताँगों आदिके रुकने, ठहरनेकी जगह; किसीके उठने-बैठनेकी स्थान जगह; केंद्रस्थान; पिजड़ेके भीतर चिड़ियाके बैठनेके लिए लगी आधी लकड़ी या छब; कन्धरोंकी छतरी; कपड़ेका गद्दा जिसपर छोपी कपडा रलकर छापते हैं; जुगहेका

करवा; जाली काढ़नेका चौखटा; वह ढाँचा जिसपर बैठाकर मोटा बुनते हैं; † पुलस चौकी ।
 अक्षी - स्त्री० लंबी चीन्हे छेदनेका वरमा; जूतेका किलारा ।
 अक्षयल - पु० अक्षयलका फूल ।
 अक्षय - पु० आदतका कारबार करनेवाला, एजेंट ।
 अक्षय - स्त्री० मर्यादा ।
 अक्षय - अ० कि० लगना - 'रोझनि भीजे मुबारत स्वाम सरा वन आनंद पैंध अदी है' - वन० ।
 अक्षयना - स० कि० आधा देना ।
 अक्षयवर्का - पु० वह व्यक्ति जो दूसरोंकी काम करनेका आदिवा दे ।
 अक्षयवर्का - पु० दे० 'अक्षयवर्क' ।
 अक्षय - स्त्री० काठ या पत्थरका बना हुआ छोटा बरतन; लोहेकी हलकी छोटी कड़ाही जिसमें मजदूर गारा आदि ढोने हैं ।
 अक्षी - वि०, स्त्री० करनेवाली; युक्त ।
 अक्षय - पु० ठोकर ।
 अक्षयना - अ० कि० ठोकर खाना; सहारा लेना ।
 अक्षय - पु० डारें सेरकी लीक या बाट; डारेंदुनिका पहावा; आदेश देनेवाला ।
 अक्षय - वि० [सं०] बहुत छोटा; तुच्छ, कुत्सित, अधम । पु० एक तरहका पक्षी ।
 अक्षय - वि० [सं०] तुच्छ बरत-संघी ।
 अक्षय - पु० [सं०] चीना आदि जैसे भान्य उपवन्न करनेका क्षेत्र ।
 अक्षय - स्त्री० [सं०] अनी, नोक; धार; धुरीकी विल; धरका कोना; सीमा । - मांडव - पु० एक ब्राह्मण कवि (कहा जाता है कि इन्हें मूली दी गयी थी) ।
 अक्षय (अक्षय) - स्त्री० [सं०] अनुत्तल; मूहमता; योगकी ८ सिद्धियोंमें पहली जिसमें योगी अनुरूप प्राणन करके अक्षय हो सकता है ।
 अक्षय - स्त्री० [सं०] अक्षय आदि आठ सिद्धियाँ (अक्षय, महिमा, लविमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वजित्व) ।
 अक्षी - स्त्री० [सं०] दे० 'अक्षि' । * अ० अरी ।
 अणु - पु० [सं०] पदार्थका सबसे छोटा ईंद्रिय-प्राप्त विभाग या मात्रा; ६० परमाणुओंका संघात; परमाणु; कण; जरा; मात्राका चतुर्वांश (छद्); एक सुहूर्त (४८ मिनट)का ५,४६,७५,००० बां भाग; समीपमें तीन तारुके कालका चतुर्वांश; मरलों, कंगनी जैसे धान्य; सिब । वि० अति-मूहम । - भा - स्त्री० विजली । - भाष्य - पु० ब्रह्मसूत्रपर बलभाचार्यका भाष्य । - मात्र - मात्रिक - वि० अनुके आकारका । - रेणु - पु० बहुत छोटे कण (जैसे सूर्यरश्मिमें दिखाई देते हैं) । - रेवती - स्त्री० दंतो वृक्ष । - वाह - पु० जीवको अनु माननेवाला दर्शन, बलभाचार्यका मत; अनुको निल और प्रपंचका कारण माननेवाला सिद्धांत, न्याय-वैशेषिक दर्शन । - वाकी (विन्) - वि० अनुवादका अनु-यायी । - वीक्षण - पु० सूक्ष्मदर्शक यंत्र, सूक्ष्मीन । - व्रत - पु० जैनधर्मके अनुसार गृहस्थधर्मका एक अंग । - व्रीहि - पु० छोटा भान्य; एक बटिया पान, मोतीचूर ।

अणुक-वि० [सं०] अणुवर सूक्ष्म । पु० सरसों जैसे धान्य ।
 अणोरणीयान्(यस्) -वि० [सं०] छोटेसे छोटा, अति-
 सूक्ष्म (ईश्वरका विवेचन) । पु० उपनिषद्का एक मंत्र ।
 अण्वंश-पु० [सं०] बालकी खाल निकालनेवाला प्रबल ।
 अंतक-पु० दे० 'आतक' ।
 अंतर्त्ता-वि० दे० 'अत्यंत' ।
 अंतर्त्र-वि० [सं०] मंत्र या तंतुरहित । पु० अनिर्वाचित
 कार्य ।
 अंतर्द्र-वि० [सं०] तंद्रारहित, जागरूक, सतर्क ।
 अंतर्द्रित, अंतर्द्रित, अंतर्द्री(द्रिन्) -वि० [सं०] दे०
 'अंतर्द्र' ।
 अतः(तस्) -अ० [सं०] इसलिये, इस कारण; अबसे;
 इस स्थानसे; इसमें, इसकी अपेक्षा । -परस्-अ० अबसे
 आगे ।
 अतःऊर्ध्वस्-अ० [सं०] आगे, अगसे, बादमें ।
 अतपुत्र-अ० [सं०] इमलिये, इस कारण; इसीने ।
 अतट-वि० [सं०] तटहीन; खड़ी ढालवाला । पु० खड़ी
 ढालवाला पहाड़ या चट्टान; पहाड़की चौड़ी; जमीनका
 निचला भाग, अनल । -प्रपात-पु० सीधा गिरनेवाला
 झरना ।
 अतथ्य-वि० [सं०] जो तथ्य न हो; असत्य, अयथार्थ,
 गलत ।
 अतद्गुण-पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें सगति आदि
 कारण मौजूद होने हुए दूसरेका गुण ग्रहण न करना
 दिखाया जाना है ।
 अतद्वत्-वि० [सं०] जो उसके सदृश न हो ।
 अतनु-वि० [सं०] देहरहित; मोटा; पु० कामदेव ।
 अतप-वि० [सं०] ठंडा, अनुचित; आटवरहीन; जो
 किसी काममें न लगा हो, निठला ।
 अतस्त-वि० [सं०] जो तथा या गरम न हो । -तनु-वि०
 जिसने तम मुद्रा न धारण की हो; बिना छापका । पु०
 बिना छापका मनुष्य ।
 अतमा(मस्) -वि० [सं०] अशकारगहित ।
 अतमाविष्ट-वि० [सं०] जो अशकारमें आच्छन्न न हो ।
 अतमिच्छ-वि० [सं०] जो अशकाराच्छन्न न हो ।
 अतर-पु० इत्र, पुष्पसार । -दान-पु० अन्न रखनेका
 पात्र ।
 अतरल-वि० [सं०] जो तरल या द्रव न हो, गाढ़ा, ठोस ।
 अतरवन-पु० छज्जा घाटनेकी पत्थरकी पटिया; छाजनमें
 खपरिके नीचे फैलायी जानेवाली मूँज या इस तरहका और
 कोई तृण ।
 अतरसी-अ० परसोकें बाद या पहलका दिन, आजसे
 बादका या पहलका चौथा दिन ।
 अतरिक्ष-पु० दे० 'अग्रिक्ष' ।
 अतर्क-वि० [सं०] तर्कहीन, असंगत, अहेतुक । पु० तर्कका
 अभाव; तर्कहीन बहस करनेवाला ।
 अतर्कित-वि० [सं०] अनसोचा, अननुमित; आकस्मिक ।
 अतर्क्य-वि० [सं०] तर्क न करने योग्य; अक्षिप्य ।
 अतल-पु० [सं०] सात ओपशेरोमेंसे पहला; शिव । वि०
 नन्दहीन, अथाह । -स्पर्श, -स्पर्शी(विन्) -वि०

बहुत गहरा, अथाह ।
 अतलस-पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा ।
 अतल्लोतक-पु० वह महासागर जिसके पूर्वी तटपर अफ्रीका
 और यूरोप तथा पश्चिमी तटपर अमेरिका महाद्वीप हैं ।
 [अ० 'पेट्रोलॉजिक']
 अतल्लान-वि० बहुत अधिक ।
 अतल्लार-पु० रविवार ।
 अतल्लस-पु० [सं०] बायु; आत्मा; अतलीके रेशोंसे बना हुआ
 कपड़ा; एक अक्ष; गुल्म, क्षुब्ध ।
 अलसी-स्त्री० [सं०] अलसी; पटसन ।
 अल्ला-पु० [अ०] दान, बलिदान । -नामा-पु० बलिदान-
 नामा, दानपत्र । -बल्ला-वि० उदार, सखी । मु०-
 करना, -करमाना-देना । -होना-मिलना ।
 अल्लाई-वि० जिसने खुद सीखा हो, जो बिना सीखे हुए
 कोई काम करे; चतुर, चालाक, दक्ष; अनाधी; जिसे ईश्वरकी
 देनके रूपमें कोई विद्या प्राप्त हुई हो (भ्य०) । पु० वह
 गवैया या वैद्य जिसने अपने कामकी शिक्षा न पायी हो ।
 -नुरल्ला-पु० फकीरी नुरल्ला; इष्ट-उपरने सीखा हुआ
 नुरल्ला ।
 अल्लाना-पु० मालकोस रागकी एक रागिनी ।
 अल्लाप्री-वि० तापरहित; शांत ।
 अल्लाली-पु० [अ०] शिक्षक, गुरु ।
 अल्लि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो सवाके पूर्व आनेपर
 अनिश्चयता, सीमोल्लघन, भ्रष्टता, प्रशंसा आदिकी और
 विशेषण तथा अभ्ययके पूर्व आनेपर आधिक्यका सूचन
 करता है । स्त्री० अधिकता, अतिशयता, अनिश्चय;
 सीमोल्लघन ।
 अल्लिकद्व-पु० [सं०] हस्तिकद्व नामक पौधा ।
 अल्लिकथ-वि० [सं०] अनिरजित, अविश्वमनीय; कहनेके
 अयोग्य; मृत, मष्ट; समाजके नियमोंको न माननेवाला ।
 अल्लिकथा-स्त्री० [सं०] अनिरजित कहानी; निरर्पक भाषण ।
 अल्लिकर्षण-पु० [सं०] बहुत अधिक परिश्रम ।
 अल्लिकान-वि० [सं०] बहुत अधिक प्यारा ।
 अल्लिकाव-वि० [सं०] गारी डील-डीलवाला; विशालकाय ।
 पु० रावणका एक बेटा ।
 अल्लिकाल-पु० [सं०] बेलाका बीत जाना, अंधेरे ।
 अल्लिकुण्ड-पु० [सं०] बहुत बड़ा कट; एक कटिन जंग ।
 वि० अति कठिन ।
 अल्लिकृत-वि० [सं०] जिसे करनेमें अति या मयादाका
 अनिक्रम किया गया हो ।
 अल्लिकृति-स्त्री० [सं०] मयादाका अतिक्रम; १५ वर्षोंबाले
 वृत्त ।
 अल्लिकेशर-पु० [सं०] कुञ्जक नामक पौधा ।
 अल्लिक्रम, अल्लिक्रमण-पु० [सं०] सीमा या मयादाका
 उल्लघन, हदमें आगे जाना; कर्तव्यका उल्लघन; दुष्टप्रयोग;
 प्रबल आक्रमण; नीलना; गुजरना (समयका); बड़ जाना
 (बल, संख्या आदिका); जीतना, काबू पाना ।
 अल्लिकोत-वि० [सं०] आगे बढ़ा हुआ; नीला हुआ, अदीन;
 क्रमका उल्लघन किया हुआ । पु० सीधी हुई बात । -निषेध
 -वि० जिसमें निषेधाणाका उल्लघन किया हो ।

—भाषणीय-पु० योगियोंका एक भेद ।

अतिक्रमक-पु० [सं०] क्रम वा मर्यादाका उल्लंघन करनेवाला ।

अतिक्रम-वि० [सं०] बहुत नाराज । पु० एक तंत्रीक मंत्र ।

अतिकूर-वि० [सं०] बहुत निष्ठुर । पु० एक तंत्रीक मंत्र; कूर प्रह, शनि आदि ।

अतिहस्त-वि० [सं०] अत्यंत दूर वा सीमासे पार फैला हुआ । पु० जल आदिकी मीच, मुरकन ।

अतिकृद्व-वि० [सं०] चारपाईसे रहित वा परे; चारपाई-के अभावमें काम चला देनेवाला ।

अतिगंध-वि० [सं०] जिसके कपोल बड़े हों । पु० एक तारार; एक योग; बड़ा कपोल; बड़े कपोलोंवाला व्यक्ति ।

अतिगंध-पु० [सं०] चंपाका पेड़ या कूल; भूरण, सुहर आदि; गंधक । वि० तीक्ष्ण गंधवाला ।

अतिगंधास्तु-पु० [सं०] पुत्रदात्री लता ।

अतिगत-वि० [सं०] अतिके पहुँचा हुआ; अत्यधिक ।

अतिगति-स्त्री० [म०] उत्तम गति; सुक्ति ।

अतिगह-वि० [सं०] अत्यंत सूक्ष्म; वर्णनातीत ।

अतिगहन, अतिगह्वर-वि० [सं०] बहुत गहवा; जिसमें प्रवेश करना बहुत कठिन हो ।

अतिगुण-वि० [म०] बहुत अच्छे गुणोंवाला; निकम्मा । पु० अच्छा गुण ।

अतिगुरु-वि० [म०] बहुत भारी । पु० बहुत आदरणीय व्यक्ति, पिता आदि ।

अतिगुडा-स्त्री० [सं०] वृषिपर्णी नामक पौधा ।

अतिगो-स्त्री० [म०] बहुत बढ़िया गाय ।

अतिग्रह-वि० [सं०] दुर्घोष । पु० शान्तिद्वियोंका विषय; नहीं हान; आगे बढ़ जाना; बहुत प्रवृत्ति करनेवाला व्यक्ति ।

अतिग्राह-पु० [सं०] दे० 'अनग्रह' ।

अतिग्राह-वि० [म०] नियंत्रणमें रखने योग्य । पु० ज्योतिषीय यष्टमें लगानार गोन बार किया जानेवाला तर्पण ।

अतिघ-पु० [म०] एक आयुध; क्रीड ।

अतिघ्न-वि० [म०] अधिक नाश करनेवाला ।

अतिघ्नी-स्त्री० [सं०] ऐसी गहरी निद्रा या विमृष्टि जिसमें अनीतकी सागे अभ्रिय बाने मूल जायें ।

अतिचर-वि० [सं०] बहुत परिवर्तनशील ।

अतिचरण-पु० [सं०] जितना करना हो उमसे अधिक करना ।

अतिचरा-स्त्री० [म०] एक लता, रक्षपघिनी ।

अतिचार-पु० [सं०] अतिक्रमण, आगे बढ़ जाना; एक राक्षसा योगकाल समाप्त हुए बिना दूसरोंमें चला जाना; मर्यादाका उल्लंघन; बहुत खेल-तमाशे देखनेका दोष ।

अतिचारी (निम्न)-वि० [सं०] अतिक्रमण करनेवाला, आगे निकल जानेवाला ।

अतिच्छत्र, अतिच्छत्रक-पु० [सं०] भूरण, छत्रक ।

अतिच्छत्रक, अतिच्छत्रा-स्त्री० [सं०] दे० 'अतिच्छत्रक' ।

अतिजगती-स्त्री० [सं०] ११ वर्षोंके वृत्त ।

अतिजन-वि० [सं०] अवसित, जो आबाद न हो ।

अतिजघ-पु० [सं०] आसुधाधारण गति, बहुत तीव्र गति ।

वि० अति वेगवान्, बहुत तेज चलनेवाला ।

अतिजगद-वि० [सं०] सदा जागता रहनेवाला, जागृक । पु० नीला वस्त्र ।

अतिजाल-वि० [सं०] पितामे बढ़ा हुआ ।

अतिजीन-पु० [सं०] अनाधारण उष्ण (चिबियोंकी) ।

अतिसत-वि० [सं०] बहुत दूर फैलनेवाला; अपनेकी बड़ा दिखानेवाला, आडंबरी ।

अतिसरण-पु० [सं०] पार करना; परामृत करना ।

अतिसारी (निम्न)-वि० [सं०] पार करनेवाला; विजयी ।

अतिसीजन-वि० [म०] बहुत तेज । पु० शोभाजन वृक्ष ।

अतिसीज-वि० [सं०] बहुत तेज । पु० तीव्रसे भी ऊँचा स्वर (संगीत) ।

अतिसीमा-स्त्री० [सं०] गंधदूर्वा ।

अतिसृज्य-वि० [सं०] जिते बहुत अधिक लौट पहुँची हो ।

अतिसृज्य-वि० [सं०] बहुत व्यासा; अत्यधिक लाजवी ।

अतिसृज्या-स्त्री० [सं०] अत्यधिक व्यास; अत्यंत लालच ।

अतिस्त्र्यु-वि० [सं०] बहुत अधिक करनेवाला ।

अतिथि-पु० [सं०] अन्त्यागत; वह स्त्र्यन्तासी जो कहीं एक रातसे अधिक न ठहरे; अचानक आया हुआ मेहमान; कुम्भके पुत्र, सुहोत्र; अधि; यष्टमें सीम-संबन्धी कार्य करनेवाला अनुवर । -क्रिया-स्त्री० आगिज्य । -द्वेष-वि० जिसके लिए अतिथि देकर हो । -द्वेष-पु० अतिथियोंमें वृणा करना । -धर्म-पु० आतिथ्यका अधिकार, अतिथिके प्रम्य सत्कार । -धर्म (निम्न)-वि० आतिथिके प्राप्त होनेवाले सत्कारका अधिकारी । -पति-पु० मेहमान । -पूजा-स्त्री० आतिथिका स्वागत सत्कार । -बन्ध-पु० पंच महायज्ञोंमेंसे एक यज्ञ, न्ययज्ञ, मेहमानदारी । -संविधान-पु० चार शिक्षावर्तोंमेंसे एक (नैज) । -सत्कार-पु०, -सत्किष्ठा, -सेवा-स्त्री० अतिथिपूजा, मेहमानकी आवश्यकता ।

अतिवृत्त-वि० [म०] जिसके दाँत बहुत बड़े या बाहर निकले हो ।

अतिवृत्त-वि० [सं०] अत्यधिक अभिमानी । पु० अत्यधिक अभिमान; एक सर्प ।

अतिवृत्ती (निम्न)-वि० [सं०] बहुत दूरदर्शी ।

अतिदाता (रु)-पु० [सं०] बहुत बड़ा दानी व्यक्ति ।

अतिदान-पु० [सं०] बहुत अधिक दान, अत्यधिक उदारता ।

अतिदाह-पु० [सं०] अतिताप, बहुत अधिक जलन ।

अतिदिष्ट-वि० [सं०] प्रभावित; आकृष्ट; दूसरेके स्थानपर रखा हुआ ।

अतिदीप्य-पु० [सं०] रक्त चित्रक वृक्ष ।

अतिदुस्तह-वि० [सं०] जिसका सहन करना कठिन हो, अस्वस्थ ।

अतिदुर्गति-वि० [सं०] जिसकी स्थिति बहुत बुरी हो ।

अतिदुर्गति-वि० [सं०] जिसके पास जाना कठिन हो; जो बहुत अहकारी हो ।

अतिदेश-पु० [सं०] सब देवताओंसे बड़ा देवता; शिव; विष्णु (१) ।

अतिदेश-पु० [सं०] अन्य वस्तुके भर्त्सना अन्यपर आरोपण; निदिष्ट विषयके अलगा और विषयोंपर भी लागू होनेवाला नियम; माहद्वय, उपमा; निष्कर्ष; आत्ममाद

करना ।

अतिदोष-पु० [सं०] बहुत बड़ा दोष, अपराध ।
अतिद्वय-वि० [म०] दोनोंसे बड़ा हुआ; अद्वितीय ।
अतिद्वन्द्व (अन्वद्) -पु० [सं०] अद्वितीय वीर; वह जो मर-
भूमिका अतिक्रमण कर गया हो; एक वैदिक आचार्य ।
अतिदृष्टि-स्त्री० [म०] १९ वर्षोंके दृष्टि; १९ की संख्या ।
अतिद्वेष-वि० [म०] जो अपनी गायोंके लिए प्रसन्न हो ।
अतिनाट-पु० सन्नेह रागका एक भेद ।
अतिनाह-वि० [सं०] खतरसे बाहर ।
अतिनिद्र-वि० [म०] जो बहुत सोता हो; निद्रासे वंचित ।
अतिलु, **अतिनी**-वि० [सं०] नावने जमीनपर उतरा हुआ ।
अतिपंच-स्त्री० [म०] वह बालिका जिसका पाँचवाँ वर्ष
व्यतीत हो गया हो ।
अतिपटीक्षेप-पु० [सं०] पदोंका न उठाया जाना (ना०) ।
अतिपत्तन-पु० [सं०] भूल; गलतीसे छूट जाना; उधकर
आगे निकल जाना, सीमासे बाहर जाना, अतिक्रमण ।
अतिपतित-वि० [म०] अनिक्तात, सीमासे बाहर गया
हुआ; भूला हुआ ।
अतिपति-स्त्री० [सं०] अतिक्रमण; समयका व्यतीत होना;
कार्य पूरा न करना ।
अतिपत्र-पु० [सं०] इस्तिकद हस्त, सागौन ।
अतिपथ-पु० [सं०] उत्तम मार्ग, स्तमार्ग ।
अतिपद्-वि० [सं०] पदहीन; जितमें एक चरण अधिक
हो (छंद) ।
अतिपक्ष-वि० [म०] अतिक्रान्त; बीता हुआ; भूला या
छूटा हुआ ।
अतिपर-वि० [सं०] जिसने अपने शत्रुओंको पराजित कर
दिया है । पु० वह शत्रु जो शक्तिमें बड़ा-बड़ा हो ।
अतिपरोक्ष-वि० [म०] रहित, विलकुल परे, अदृश्य; जो
छिपा न हो; प्रपञ्च । -**वृत्ति**-वि० अभ्यवर्तिन, जिसका अब
प्रयोग न होता हो (शब्द) ।
अतिपादुकेबला-स्त्री० [सं०] तीर्थकरका सिंहासन (जैन) ।
अतिपात-पु० [सं०] अतिक्रम, नियम या मर्यादाका
उल्लंघन; (कालका) व्यतीत हो जाना; अव्यवस्था; घटना;
दुर्व्यवहार; विरोध; दुःप्रयोग; विक्ष ।
अतिपातक-पु० [म०] धर्मशास्त्रमें बनावे हुए महा-
पातकोंमेंसे सबसे बड़ा ।
अतिपातित-वि० [सं०] पूर्ण रूपमें तोड़ा हुआ, व्यंगित
किया हुआ । पु० हथुका विलकुल टूट जाना ।
अतिपाती (तिरु) -वि० [सं०] गतिमें आगे बढ़ जानेवाला
(ममासमें); तीव्र (रोग); भूल करनेवाला ।
अतिपातय-वि० [सं०] व्यंगित करने योग्य; कुल देर बाद
करने योग्य ।
अतिपुरुष, **अतिपुरुष**-पु० [सं०] प्रथम श्रेणीका मनुष्य;
वीर पुरुष ।
अतिप्रकाश-वि० [सं०] बहुत मझहूर; कुसुमा ।
अतिप्रकृत-वि० [सं०] जो प्रकृत या सामान्य रूपमें बहुत
बढ़ गया हो ।
अतिप्रबंध-पु० [सं०] अजलता, विलकुल लगा होना ।
अतिप्रबुद्ध-वि० [म०] अत्यधिक बढ़ा हुआ; अर्धकाय ।

अतिप्रबन्ध-पु० [सं०] मर्यादाका अतिक्रमण करके किया
गया प्रबंध; समुचित उत्तर मिल जानेपर भी किया
गया प्रबंध ।
अतिप्रसंग-पु०, **अतिप्रसक्ति**-स्त्री० [सं०] बहुत अधिक
संपर्क; घना संबंध; धृष्टता; किसी नियमका बहुत अधिक
वित्सार ।
अतिप्रौढा-स्त्री० [सं०] वह लक्ष्मी जो विवाह करने योग्य
हो गयी हो; सयानी लक्ष्मी ।
अतिप्रबन्ध-पु० एक छंद ।
अतिबल-वि० [सं०] अति बलवान्; (ऐसा योद्धा) जो
बहुतसे अकेले लड़ सके । पु० बहुत बड़ा बल; शक्तिशाली
सैन्य ।
अतिबला-स्त्री० [सं०] एक अलविद्या जो विधामित्रने
रामको सिखायी थी; एक वीधा जो दवाके काम आता है,
पीतबला, कंगारी ।
अतिबालक-पु० [सं०] शिशु । वि० बाल्य, बच्चों जैसा ।
अतिबाला-स्त्री० [म०] द्रा बर्बकी गाय । वि० स्त्री० बहुत
छोटी (लक्ष्मी) ।
अतिप्रबन्ध-पु० [सं०] मध्यमार्थ मतका बहुत अधिक
पालन । वि० जिसने मध्यमार्थमत भग कर दिया है ।
अतिभव-पु० [सं०] बढ़ जाना, पराजित करना ।
अतिभार-पु० [सं०] बहुत अधिक बोझ; (बाधकी)
अस्पष्टता; गति । -**ग**-पु० खबर ।
अतिभारोपण-पु० [सं०] पशुओंपर अधिक बोझ लादना
(जो जैनोंके अनुसार एक अत्याचार है) ।
अतिभारित-वि० (ओल्ह-कोडेड) जिसपर उचिनमें
अधिक भार लाद दिया गया हो ।
अतिभी-स्त्री० [म०] बज्रमाला, बिजली ।
अतिभू-वि० [म०] सपने बढ़ जानेवाला (विष्णु) ।
अतिभूमि-स्त्री० [सं०] अधिकता, प्राप्ति; श्रेष्ठता; सर्वांश
भंग; विस्तृत भूमि ।
अतिभोजन-पु० [सं०] अधिक खाना, पेटपूना ।
अतिभोग्य-वि० [म०] बहुत शुभ । पु० चिन्म हृक्ष ।
अतिमति-स्त्री० [म०] अहंकार, बहुत अधिक फहंड ।
अतिमर्षादिन-पु० [सं०] खरा दुपहरी ।
अतिमर्ष-वि० [म०] मनुष्योंकी शक्तिमें परे, अमानुषिक ।
अतिमर्ष-पु० [सं०] बहुत अधिक मर्षक ।
अतिमांस-वि० [म०] मांस, अधिक मांसवाला
(जैने ज्ञा) ।
अतिमात्र-वि० [सं०] अनिशय, अत्यधिक; मात्रामे अधिक ।
अतिमान-पु० [सं०] दे० 'अतिमति' । वि० अपरिमित,
बहुत विस्तृत (वस्त्र) ।
अतिमानुष-वि० [सं०] मानवशक्तिके बाहरका; अलौकिक ।
अतिमाय-वि० [म०] जो मायामे रहित हो गया हो,
वीतराग ।
अतिमित-वि० [सं०] अपरिमित, बेहिमाप; जो सीमा
न हो ।
अतिमित्र-पु० [सं०] वनिष्ठ मित्र; शुभ द्रव्य ।
अतिमिर्षि-वि० [सं०] शीघ्रमाते पल्लवें गिरानेवाला ।
अतिशुक्ल-वि० [म०] जिसे मुक्ति मिल गयी हो; वीतराग ।

पु० दे० 'अतिमुक्त' ।

अतिमुक्त-पु० [सं०] माधवी कृता; तिनिक ब्रह्म; तिमुक्त ब्रह्म; तारु ब्रह्म ।

अतिमुक्त-पु० [सं०] वज्रमूष रौप्य ।

अतिमोक्ष-पु० [सं०] अत्यधिक क्षी-संभोग ।

अतिमोक्षा-श्री० [सं०] सुगंधकी अधिक मात्रा; नम-मक्षिका, मेवाही ।

अतिमय-पु० [सं०] एक तरहका बी ।

अतिभोग-पु० [सं०] अतिशयता; देह-भोग; औषधमें द्रव्यविशेषकी निवत मात्रासे अधिक मित्राणा ।

अतिरंजन-पु० [सं०] बढ़ा-बढ़ाकर कहना ।

अतिरंजना-श्री० [सं०] बढ़ा-बढ़ाकर कहना, अति-संभोग ।

अतिरक्षा-श्री० [सं०] अधिकी मात्र मित्राजोमेंसे एक ।

अतिरक्ष, अतिरक्षी (विश्व)-पु० [सं०] अकेले बहुतोमें लक्षनेवाला तथासुंद योद्धा ।

अतिरम्य-पु० [सं०] अत्यधिक गति ।

अतिरसा-श्री० [सं०] मूर्धा कृता; रास्ना; क्षीतनक ।

अतिराम्य-पु० [सं०] अतिशय यक्षका एक वैकल्पिक अंग; इस यक्षमें संयुक्त एक मंत्र; बाधुष मनुका एक पुत्र; मध्वरात्रि ।

अतिराम्य-पु० [सं०] एक नाम ।

अतिरिक्त-वि० [सं०] बढ़ा हुआ, नियत परिमाणसे अधिक; फागिल; मित्र; अतिशय । अ० निवाय, अलावा ।

-कंबला-श्री० तीर्थंकरका मित्राभ्यन्त (तेज) । -पञ्च-पु० वह समाचार या विपत्ति आदि जो अलग छापकर ममाचारपत्रके साथ बाँटी जाय, औद्योग्य ।

अतिरुचिरा-श्री० [सं०] दो प्रकारके वृत्त ।

अतिरुद्ध-वि० [सं०] रुद्धा; कठोर, प्रेमहीन; बहुत स्नेही । पु० एक तरहका अन्न ।

अतिरूप-वि० [सं०] आकृतिहीन; अति सुंदर; रूपसे परे (परमेश्वर) ।

अतिरेक-पु० [सं०] अधिक, अतिमात्रा; आबद्धयत्तासे अधिक, फागिल होना; अंतर ।

अतिरोग-पु० [सं०] राजयक्ष्मा, क्षयरोग ।

अतिरोमश, अतिलोमश-वि० [सं०] बहुत बालोंवाला ।

पु० जगजी बकरा; एक तरहका बदर ।

अतिलक्षण-पु० [सं०] शीघ्र उपवास; अतिक्रमण ।

अतिलक्षी (विश्व)-वि० [सं०] गलती करनेवाला ।

अतिलोमशा-श्री० [सं०] जीलबुद्धा नामक पीषा ।

अतिलोम्य-पु० [सं०] बहुत तीव्र इच्छा ।

अतिवक्ता (कु)-वि० [सं०] वक्ताही, बहुत बोलनेवाला ।

अतिवक्ता-श्री० [सं०] प्रशंसी एक तरहकी चाल ।

अतिवक्ता (वस्त्र)-वि० [सं०] अतिवृद्ध; वृद्ध । [श्री० 'अतिवक्ता']

अतिवर्तन-पु० [सं०] शब्द अपराध; दंडसे मुक्ति ।

अतिवर्ती (सिंह)-वि० [सं०] पार करनेवाला; आगे बढ़ जानेवाला; सबसे आगे बढ़ा हुआ; बहुत अधिक ।

अतिवर्तुल-वि० [सं०] बहुत मोल । पु० एक जल, कलाव ।

अतिवाह-पु० [सं०] कठोर वचना; दोग; अतिरंजना ।

१-क

अतिवाही (विश्व)-वि० [सं०] बहुत बोलनेवाला; सबसे मत्तका खंडन कर अपने पक्षकी स्थापना करनेवाला; खरी बात कहनेवाला; दोग मारनेवाला ।

अतिवास-पु० [सं०] आठवें पहले दिन किया जानेवाला उपवास ।

अतिवाह-पु० [सं०] वृद्ध शरीरका अन्य देहमें जाना या ले जाना ।

अतिवाहक-पु० [सं०] वृद्ध शरीरके देहान्तरागतिमें सहायक देवता ।

अतिवाह्य-पु० [सं०] विताना, यापन; मेवना; बहुत अधिक परिश्रम करना ।

अतिवाहित-पु० [सं०] वृद्ध शरीर ।

अतिवाहित-वि० [सं०] विताया हुआ । पु० वृद्ध शरीर; अभीक्ष्णिक निवासी ।

अतिविह्वल-वि० [सं०] बहुत बराबना । पु० दुष्ट हाथी । अतिविधि-वि० [सं०] बहुतसे जंगलोंवाला; जिसमें प्रवेश पाना कठिन हो ।

अतिविध्वंस्य मर्षीदा-श्री० मध्या नायिकाका एक वेद ।

अतिविध-वि० [सं०] बहुत ही जहरीला ।

अतिविषा-श्री० [सं०] अनील नामकी एक औषधि जो जहरीली होती है ।

अतिविस्तर-पु० [सं०] बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता ।

अतिवृद्धि-वि० [सं०] पुष्ट या अशक्त किया हुआ ।

अतिवृष्टि-श्री० [सं०] बढ़ जाना; अतिक्रमण; अतिरंजना; तेजीसे निकलना (रक्त) ।

अतिवृद्ध-वि० [सं०] बहुत बड़ा । पु० एक तंत्रीक मंत्र । अतिवृद्धा-श्री० [सं०] बहुत बड़ी माय (जो वास्तव में बहा नके) ।

अतिवृष्टि-श्री० [सं०] अत्यधिक वर्षा, खेतीकी सुकसान पहुँचानेवाली वर्षा ।

अतिवेगिष्ठ-वि० [सं०] जोरसे चलाया गया; तेजीसे चलनेवाला ।

अतिवेध-पु० [सं०] निकट संपर्क; दशमी और एकादशीका संपर्क ।

अतिवेध-वि० [सं०] किनारेके ऊपर उठा हुआ; उडेलित;

मर्षादाका अतिक्रमण करनेवाला; अत्यधिक; सीमाहीन ।

अतिवेधका-श्री० [सं०] अतिक्रमण, अवेर; वेधका अतिक्रमण ।

अतिव्ययन-पु०, अतिव्यय-श्री० [सं०] तीव्र वेदना, अतिशय यातना ।

अतिव्ययकर्म (वृ)-पु० [सं०] व्यय सत्वा करनेका काम, फलसुखीका काम ।

अतिव्याप्ति-श्री० [सं०] लक्षणमें लक्ष्यके अतिरिक्त अन्य वस्तुका भी आ जाना (व्याप); लक्षणके तीन दोषोंमेंसे एक ।

अतिशङ्करी, अतिशङ्करी-श्री० [सं०] एक तरहके वृत्त ।

अतिशय-वि० [सं०] बहुत ज्यादा, अत्यधिक । पु०

अधिकता, अतिरेक; मेधता; एक बर्णालंकार ।

अतिशयन-पु० [सं०] आधिक्य, प्रानुवं ।

अतिशयनी-श्री० [सं०] एक वृत्त ।

अतिशयित-वि० [सं०] बहुत अधिक; आगे बढ़ा हुआ ।

अतिशयी (विश्व)-वि० [सं०] प्रधान; मेध; अत्यधिक,

बहुत ज्यादा ।

अतिसंशोभित-क्री० [न०] किसी वस्तुको बड़ा-बड़ाकर कहना; अतिरंजना; एक अभाष्यकार जिसमें किसी वस्तुका अतिरंजित वर्णन होता है ।

अतिसङ्घ-वि० [सं०] सखसे बड़ा हुआ ।

अतिसाधन-पु० [सं०] अधिक होना; बड़ जाना; भेद्यता ।

अतिसाधनी (विन)-वि० [सं०] आगे बड़ जानेवाला; भेद्य; अत्यधिक ।

अतिसौख्य-पु० [सं०] अत्यास करना ।

अतिसूत्र-पु० [सं०] अंतर्वच ।

अतिसौष-पु० [सं०] बचा हुआ अंश ।

अतिश्रेष्ठ-वि० [सं०] सर्वोत्कृष्ट; सबसे अच्छा ।

अतिसंच-पु० [सं०] बचनसंग; आवाका उत्कंठन ।

अतिसंचान-पु० [सं०] धोखा, छल-कपट; अतिक्रमण; (जेम्बर-सिडिंग, जेम्बर-सूडिंग) उचित लक्ष्यसे आगे चिसाना लगाना ।

अतिसंधि-क्री० [सं०] शक्तिके अधिक सहायता देनेकी प्रतिज्ञा; एक मित्रकी सहायतासे दूसरे मित्र या सहायक की प्राप्ति ।

अतिसंचित-वि० [म०] अतिक्रांत; बंचित, छला गया ।

अतिसंधार-क्री० [म०] सर्वोत्कृष्टके ठीक पहले और सर्वोत्कृष्टके ठीक बादका समय ।

अतिसर-वि० [सं०] आगे बड़ जानेवाला; सबसे आगेका । पु० प्रयत्न, प्रयास ।

अतिसर्ग-पु० [म०] इच्छा पूर्ण करना; देना; दृक् करना । वि० चिरस्थायी; नित्य; मुक्त ।

अतिसर्जन-पु० [म०] अधिक दान; उदारता; दण्ड; बोझा; पारंपर्य ।

अतिसंघर्ष-पु० [सं०] तीव्र गति; तेजीसे चलना (गर्भाशयमें बच्चेका) ।

अतिसर्व-वि० [सं०] दे० 'अतिश्रेष्ठ' । पु० ईश्वर ।

अतिसांतपन-पु० [सं०] एक कठिन मन जो प्रायश्चित्तरूपमें किया जाता है ।

अतिसावत्सर-वि० [म०] एक सालमें अधिक टिकने या चलनेवाला ।

अतिसाम्या-क्री० [म०] मधुपति ।

अतिस र-पु० [सं०] रदन या औंकी बीमारी ।

अतिसारकी (किन्), अतिसारी (रिन्)-वि० [म०] अतिसार रोगमें पीड़ित ।

अतिसौरभ-वि० [म०] अत्यधिक सुगंधवाला । पु० बहुत अधिक सुगंध; आस ।

अतिसौहित्य-पु० [मं०] कमकर खाना ।

अतिस्पृह-वि० [सं०] बहुत मोटा; अत्यंत मूख । पु० मोटापेका रोग ।

अतिस्पर्श-वि० [सं०] कज्जल; कमीना । पु० उच्चारणमें जीम और ताडुका अल्प स्पर्श (व्या०) ।

अतिस्वप्न-पु० [सं०] अत्यधिक निद्रा; स्वप्न देखनेकी अधिक प्रवृत्ति ।

अतिहस-वि० [सं०] मजबूतीसे जमाया हुआ; पूर्णतः नष्ट किया हुआ ।

अतिहसित-पु० [सं०] हासके छ भेदोंमेंसे एक, दे० 'हास'; कोरको हँसी ।

अतीश्रित-वि० [सं०] इन्द्रियोंकी पड़ुचके बाहर; अगोचर; प्रधान । पु० आत्मा; ब्रह्मण (सं०); मन (वे०) ।

अतीचार-पु० दे० 'अतिचार' ।

अतीत-वि० [सं०] बीता हुआ, गत; मृत; परे; पार गया हुआ; मिलेप; न्यारा । पु० भूतकाल; साधु, सम्प्राप्ती; गीतार्थोंकी एक जाति; * अतिथि । अ० परे ।

अतीतना-अ० कि० घेतना; गुजरना ।

अतीथ-पु० दे० 'अतिथि'; गीतार्थोंकी एक जाति ।

अतीरेक-पु० [सं०] दे० 'अतिरेक' ।

अतीथ-अ० [सं०] बहुत अधिक, अत्यंत ।

अतीस-पु० [सं०] एक बनीपथि ।

अतीसार-पु० [सं०] दे० 'अतिसार' ।

अनुग-वि० [सं०] जो ऊँचा न हो; नाटा, ढिंगा ।

अनुव-वि० [सं०] जो हट-पुट न हो; दुपला-बतला ।

अनुराई-क्री० आतुरता; बंचकता ।

अनुराना-अ० कि० आतुर होना, कन्दी मचाना ।

अनूक-हि० [सं०] जिसकी तोल-माप न हो सके; * अर्थात्, असीम; तुलनारहित । पु० तिलक इष्ट; अनुकूल नायक (किशुब); तिलगुप्पी; कनक, इलेमा ।

अनुकमीय-वि० [सं०] जिसकी तुलना न हो सके; अपरिमित ।

अनुलित-वि० [मं०] बिना तोला हुआ; बेहिसाब; अपार; बेजोड़ ।

अनुत्थ-वि० [सं०] बेजोड़ ।

अनुष-वि० [मं०] बिना भूँसीका ।

अनुषार-वि० [मं०] जो ठंडा न हो । -कर-पु० सूर्य ।

अनुष्टि-क्री० [सं०] अप्रमत्तता; असंनोष ।

अनुहिन-वि० [सं०] जो ठंडा न हो । -कर, -धाम, -न, -रसिम, -रुचि-पु० सूर्य ।

अनुष-वि० अपूर्व, अनुकूल ।

अनुल-वि० दे० 'अनुल' ।

अनुभाष-पु० [मं०] हाथका उत्पन्न हुआ बड़बा जो तुलन खाता हो ।

अनुस-वि० [मं०] अमनष्ट; भूला ।

अनुसि-क्री० [मं०] मनुष्य न होनेकी अवस्था, अमनुष्टि ।

अनुष्ण-वि० [सं०] गुष्णारहित, जिसे कोई बाह्य, कामना न हो ।

अतेज (स)-पु० [मं०] धुंधलापन; छाया; अंधकार; शक्तिका अभाव; सुखी ।

अतेजा (अस्)-वि० [मं०] जो चमकीला न हो, धुंधला; कमजोर; तुच्छ ।

अतोर-वि० अट्ट ।

अतोरक-वि० [मं०] बिना तोला हुआ; बेजोड़; बेहिसाब ।

अल-पु० [सं०] पथिक, मुसाफिर; शरीरका अंग ।

अल-वि० आस, प्राप्त ।

अल-क्री० अग्नि, ज्यादाती ।

अलम्ब-वि० [मं०] साने दोन्ध ।

अला-क्री० [सं०] माता; मौली; बड़ी बहन; सास ।

अच्चा(हृ)-पु० [सं०] खानेवाला; चराचरका ग्रहण करने-वाला; ईश्वर ।

अच्चाद-पु० [अ०] इत्र बेचनेवाला; दूनानी दबाएँ बनाने, बेचनेवाला ।

अच्छि०-को० अनि, ज्यादाती; कलम ।

अच्छि, अच्छिका-को० [म०] रही बहन ।

अक्ष, अक्षु-पु० [सं०] खरें; वायु; पक्षिक ।

अक्षयकुक्ष-वि० [सं०] निर्यजनमें न रहनेवाला ।

अक्षयत-वि० [सं०] इतने ज्यादा; अतिशय; पूर्ण, नितांत; अनंत; विरथायी । अ० अव्यधिक, पूरे तौरसे; सोलहों आने; हमेशाके लिए ।-श-वि० बहुत तेज चलनेवाला ।

-यत्त-वि० जो हमेशाके लिए चला गया हो ।-गामी- (मित्र)-वि० बहुत अधिक, बहुत तेज चलनेवाला ।

-तिरस्कृत बाध्यध्वनि-को० एक ध्वनि जिसमें बाध्यार्थाका पूर्ण रूपसे त्याग होता है (सा०) ।-निवृत्ति-को० पूर्ण अवशेन; पूर्ण रूपसे अव्यय या पृथक् हो जाना ।

-वासी(सिक्)-पु० हमेशा आचार्यके साथ रहनेवाला विद्यार्थी ।-सुकमार-वि० बहुत कोमल । पु० एक धान्य ।

अक्षयतासिद्धयोक्ति-को० [सं०] अतिशयोक्तिका एक भेद-जहाँ कारणका आरम्भ होनेके पूर्व ही कार्यका हो जाना वर्णित किया जाय ।

अक्षयताभाव-पु० [म०] किसी वस्तुका पूर्ण अभाव, तीनों कालोंमें समब न होना (जैन आकाश-कुसुम) ।

अक्षयतिक-वि० [म०] बहुत चलने या घूमनेवाला; अति समीपी ।

अक्षयतीन-वि० [सं०] बहुत अधिक चलनेवाला; बहुत तेज चलनेवाला ।

अक्षयमित्र-वि० [सं०] अक्षिमें बड़ा हुआ । को० पाचन-क्रियाका बहुत मजबूत होना ।

अक्षय्यक-पु० [म०] हमलीका पेड़; वृक्षमूल; विधाविल; विजोता नीबू । वि० बहुत अट्ठा ।-वर्णी-खा० लनाविशेष, रामबना ।

अक्षय्यला-को० [सं०] जगली विजोता नीबू ।

अक्षय्य-पु० [म०] बीतना; अभाव; विनाश; शून्य; अंत; वृद्ध; अपराध; आक्रमण; मर्यादाका अतिक्रमण; जेली; खनरा; कष्ट ।

अव्यधिक-वि० [सं०] दे० 'आव्यधिक' ।

अव्ययी(विस्)-वि० [सं०] आगे बढ़ जानेवाला ।

अव्यर्थ-वि० [सं०] उचित मानसे बाहर, बहुत अधिक ।

अव्यष्टि-को० [म०] १७ बणोंवाले वृत्त ।

अव्यह-वि० [सं०] एक दिनसे अधिक कालका ।

अव्याकार-पु० [सं०] छुणा; निद्रा; बहुत बड़ा डील-डौल ।

अव्याग-पु० [सं०] स्वीकार, ग्रहण ।

अव्यागरी(मिन्)-वि० [सं०] विषयोंका स्थाय न कर उनमें लक्ष रहनेवाला, विषयासक्त ।

अव्याचार-पु० [सं०] अनुचित आचरण, दुराचार; ढोंग; जुल्म, उपपीडन, अव्याध ।

अव्याचारी(रिक्)-वि० [सं०] अव्याचार करनेवाला ।

अव्याज-वि० [सं०] जो छोड़ा न जा सके या छोड़ने योग्य न हो ।

अव्याचार-पु० [सं०] किसीपर रखनेकी क्रिया; पोछा; अतिक्रमण; होमाक्षिकी सुरक्षित न रखना ।

अव्याचारी-को० [सं०] मैथुनसे उदासीनता जो क्षियोंका एक रोग है ।

अव्याध-पु० [सं०] सीमोर्द्धवन; अतिक्रमण; मर्यादामें; बहुत अधिक लाभ ।

अव्याकृष्ट-वि० [सं०] बहुत बड़ा हुआ ।

अव्याकृष्टि-को० [सं०] बहुत ऊँचा पद; अभ्युदय ।

अव्याक-पु० [सं०] रक्त चित्रक वृक्ष ।

अव्याचार्य-पु० [सं०] राजद्रोहियोंकी अधिकता ।

अव्याहारी(रिक्)-वि० [सं०] अधिक आहार करनेवाला ।

अव्याहित-वि० [सं०] अरुचिकर । पु० अरुचि, अप्रियता; संकट; खतरा, दुस्साहसिक कार्य ।-कर्मा(मंत्र)-वि० दुष्ट, बदमाश ।

अव्युक्त, अव्युक्ता-को० [म०] एक तरहके वृत्त ।

अव्युक्ति-को० [सं०] किसी बातको बड़ा-बड़ाकर कहना, सुवाकिया; एक अर्थकार जिसमें उदारता, शैरता आदिका बहुत बड़ा-बड़ाकर वर्णन किया जाता है ।

अव्युष्ट-वि० [सं०] बहुत प्रचंड । पु० एक गवद्रम्य, हाँव ।

अव्युपध-वि० [सं०] परीक्षित, विश्वस्त ।

अव्युपावन-पु० [सं०] मालका अधिक मात्रामें उत्पादन ।

अव्युह-पु० [सं०] बहुत सोच-विचार; दास्यह पक्षी; मीर ।

अव्युहा-को० [सं०] नीलिका नामक पौधा ।

अव्य-अ० [सं०] यहाँ, इस जगह; इस संबंधमें; यहाँ ।

-स्थ-वि० यहाँ रहनेवाला, इस जगहका ।

अव्यत्व-वि० [सं०] यहाँका; इस स्थानमें संबद्ध; यहाँ उपज ।

अव्यप-वि० [सं०] निर्लज्ज, अविनीत ।

अव्यस्त, अव्यस्तु, अव्यस्त-वि० [सं०] निर्भीक, बैकौफ, निडर ।

अव्यि-पु० [सं०] एक मन्त्रद्रष्टा कृषि जो सप्तपिथोंमें गिने जाते हैं; एक तारा ।-अ-पु० अधिक पुत्र-चंद्रमा, दत्तात्रेय, दुर्वांस ।-जात-पु० दे० 'अव्यि' ।-हृज्ज,-

नेत्रज्ज,- नेत्रप्रभव,- नेत्रप्रसूत,- नेत्रभू,- नेत्रसूत-पु० चंद्रमा; एकलौ संख्या (गणित) ।-प्रिया-को०

अव्यि पत्नी अनस्था ।-संहिता,-स्मृति-को० अव्यि-प्रणीत धर्मशास्त्र ।

अव्यिगुण-वि० [सं०] तीनों गुणोंसे परे ।

अव्यिज्ञात-पु० [सं०] प्रथम तीन बणोंमेंसे किसी वर्णका मनुष्य; द्विजन्मा; दे० 'अव्यि' ।

अव्यी(विक्)-पु० [सं०] सा जानेवाला, राक्षस ।

अव्येगुण्य-पु० [सं०] सत्त्व, रज, तमका अभाव ।

अव्यह-वि० [सं०] चर्मरहित ।

अव्यरा-को० [सं०] क्षीप्रताका अभाव ।

अव्य-अ० [सं०] आरम्भ तथा मंगल-शुक्ल शब्द; अव्य; तम; अनंतर; अग्र । पु० आरंभ, आदि ।-किस्-अ० और

क्या; हाँ; अवश्य ।-अ-अ० और; और भी ।-सु०-से

हस्तितक-आदिसे अंततक ।

अव्यह-वि० न कलनेवाला ।

अव्यथा, अव्ययना-अ० कि० अस्त होना ।

अव्ययना-पु० पश्चिम विद्या ।

अधरा-पु० नौद, मिट्टीका एक चौड़े भुँदका बड़ा बरतन जो कपड़ा रँगने आदिके काममें आता है ।

अधरी-स्त्री छोटा अधरा, मिट्टीका छिछला बरतन जिसमें दही जमाते हैं और कुम्हार हंडी रखकर बापीसे पीटते हैं ।

अधर्व-पु० [मं०] एक वेद जो चौथा वेद माना जाता है ।

-निधि, -विद्-पु० अधर्ववेदका छात्र । -शिक्षा-

स्त्री०, -शिर(स्)-पु० एक उपनिषद् ।

अधर्वण-पु० [सं०] शिव; अधर्ववेद ।

अधर्वणि-पु० [सं०] अधर्ववेदके कर्मोंको जाननेवाला ब्राह्मण; पुरोहित ।

अधर्वनी०-पु० यज्ञादि करानेवाला, पुरोहित ।

अधर्वा(वेज)-पु० [सं०] एक मुनि जो ब्रह्मके पुत्र और अधिको स्वर्गसे पृथ्वीपर उठानेवाले माने जाते हैं ।

अधर्वाण-पु० [सं०] अधर्ववेद या उम वेदमें कहे हुए कर्मोंको जाननेवाला ।

अध्वना०-अ० कि० अस्त होना । 'पूर्व' और 'पश्चिम' अध्वे भले पवनका फूल'-साखी ।

अधवा-अ० [सं०] वा. वा ।

अधाई-स्त्री बैठक; चौपाल, गाववालोंके एकत्र होनेका स्थान-'हाट बाट पर गली अधाई, कहाँ परस्पर लेग तुगाई'-रामा०; गोष्ठी, मंडली ।

अधान०-पु० अधरा ।

अधाना०-अ० कि० दे० 'अध्वना' । सं० कि० धाह लेना; हूँटना । पु० दे० 'अधान' ।

अधावत्-वि० अस्त, ढुंढा हुआ ।

अधाह-वि० बहुत गहरा, अगाध; अपार, बेहिसाब; अगम्य । पु० समुद्र; गहराई । सु०-में पड़ना-मुश्किलमें पड़ना ।

अधाही०-स्त्री० बन्दली, उगाही ।

अधिर्-वि० अतिर, क्षणस्थायी ।

अधैवा-स्त्री० दे० 'अधा' ।

अधोर०-वि० जो कम न हो, अधिक, बहुत ।

अर्द्ध०-पु० ढर, मय ।

अर्द्ध-वि० [मं०] अर्द्धनीय; * निर्भय; बिना महत्त्वका ।

अर्द्धनीय, अर्द्धव्य-वि० [मं०] दृढ़का अनधिकारी; दंडमुक्त ।

अर्द्धमान०-वि० अर्द्धव्य ।

अर्द्ध-वि० [सं०] दे-दाँतका; जिसे दाँत न निकले हों । पु० भैंस; एक आदिशय ।

अर्द्ध-वि० [सं०] दाँत-सम्बन्धी नहीं; जो दाँतोंके योग्य न हो, दाँतोंके लिए हानिकारक ।

अर्द्ध-वि० [सं०] दमरहित; मन्त्रा; सरल; * अकृत्रिम, स्वाभाविक । पु० शिव; दमका अभाव; खरापन ।

अर्द्ध-वि० [सं०] दतहीन । पु० विष-प्रतलीन सप ।

अर्द्ध-वि० [मं०] अकुशल; अर्द्धा, बरदाशक ।

अर्द्धिण-वि० [मं०] बायाँ; बिना दक्षिणका (बजादि); अनाड़ी; प्रतिकूल ।

अर्द्धिणीय, अर्द्धिण्य-वि० [मं०] जो दक्षिणका अधिकारी न हो ।

अर्द्धा-वि० वेदांग, निर्दोष; अशुद्ध ।

अर्द्धव्य-वि० [सं०] न जला हुआ; छाकबित्तिते न जलाया हुआ ।

अर्द्ध-वि० [सं०] अनुचित तरीकेसे दिया हुआ; जो दिया न गया हो; बिबाहमें जिसे न दिया गया हो; न देनेवाला; कंजूस । पु० वह दान जो रद्द कर दिया गया हो । -दाव

-पु० चोरी; डकैती (जैन) । -दूबा-स्त्री० वह कन्या जिसकी भंगनी न हुई हो ।

अर्द्धा-स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या । वि०, स्त्री० न दी हुई ।

अर्द्ध-पु० [अ०] संख्या, अंक ।

अर्द्ध-पु० [सं०] अक्षय, खानेकी क्रिया; [अ०] स्वर्गका वह उद्यान जहाँ ईश्वरने आदमकी रक्षा था; अरवसागरका एक बदरगाह ।

अर्द्धा-वि० [अ०] छोटा; तुच्छ ।

अर्द्धनीय-वि० [मं०] खाने योग्य ।

अर्द्ध-पु० [अ०] विनय, शिष्टाचार; बर्बोका सम्मान; साहित्यशास्त्र, बाष्प्य । -कायदा-पु० विनीत या शिष्ट व्यवहार । -लिहाज-पु० सम्मान । सु०-करना-

लिहाज करना । -की जगह-वह व्यक्ति या वस्तु जिसका अर्द्ध करना जरूरी हो ।

अर्द्धदाकर-अ० षठ करने; अवश्य ।

अर्द्धव्य-पु० दे० 'आदाव' ।

अर्द्ध-वि० [मं०] अनल, प्रचुर; * अपार ।

अर्द्ध-पु० [अ०] अभाव, अनित्यत्व; अनुपस्थिति; पर-लोक । -तामील-स्त्री० समन आदिका नायक न होना ।

-पैरवी-स्त्री० मुकदमेंमें किसी फकीरकी ओरमें जरूरी काररवाईका न होना । -फुरसत-स्त्री० अनवकाश ।

-शौचवृत्ति-स्त्री० अनुपस्थिति । -बसुली-स्त्री० लगान आदिका बसूल न होना । -बाकक्रीयन-स्त्री० अज्ञान, गैरज्ञानकारी । -सबूत-पु० प्रमाणका अभाव । -हाजिरी

-स्त्री० अनुपस्थिति । सु०-का रास्ता लेना, -को सिखा-रना-परलोक निवारना, मरना ।

अर्द्ध-वि० [मं०] जो दबाया न जा सके, उत्कट, प्रबल ।

अर्द्ध-वि० [मं०] निष्ठुर, निर्दय ।

अर्द्ध-पु० एक पीथा जिसकी गाँठें दबा, -वर्नी, अन्ध आदिके रूपमें खायी जाती हैं ।

अर्द्धकी-स्त्री० मोठीरा ।

अर्द्धा-स्त्री० दे० 'आर्द्ध' ।

अर्द्धा-अ० कि० आदर-सन्महारने गवष्टि होना, मित्राज विगडना; इनगना । मं० कि० आदर-सन्महारसे मित्राज विगाडना ।

अर्द्ध-पु० [मं०] नये चंद्रमाका दिन; आदर्श, आदेश ।

अर्द्ध-पु० [मं०] दर्शनका अभाव; दिखाई न देना; लोप, नाश; उच्छेद । वि० अर्द्ध, लुप्त ।

अर्द्धनीय-वि० [मं०] जो देखने योग्य न हो, अर्द्धा, कुरूप ।

अर्द्ध-वि० [मं०] बिना पचैका; बिना रसका । पु० एक पीथा, हिचल; [अ०] दे० 'अर्द्ध' ।

अर्द्ध-वर्द्ध-पु० हेर-हेर, परिवर्तन ।

अर्द्धा-स्त्री० [मं०] एक, पीथा, धनकुमारी ।

अव्वी-वि० न्यायी, न्यायशील ।
 अव्वीय-वि० [सं०] जो किसी दलका न हो; विना दलकावा ।
 अव्वाम्भ-क्ती० दे० 'अव्वान' ।
 अव्वान-क्ती० चरपाईके पैतानेकी रस्सी, ओजवन ।
 अव्वस-पु० [अ०] मसर ।
 अव्वहन-पु० दाह-चावळ आदि पकानेके लिए अगपर चढ़ाया गया पानी; खोलता हुआ पानी । सु०-देवा-अव्वहनका पानी अगपर चढ़ाना ।
 अव्वीत-वि० [सं०] जो दवाया न गया हो; कायमें न किया हुआ; जिसने अपनी इन्द्रियोंका निग्रह न किया हो ।
 अव्वीत-वि० विना दौलका (पशु) ।
 अव्वी-क्ती० [अ०] देना, नुकसान, पूरा करना; बर्बाद करना; [फा०] हाव-भाव, मोहक चेष्टा; डंग; तर्ज । -कार-पु० अभिनेता । -बंदी-क्ती० कित्तबंदी । -बगी-क्ती० सुगतान, नुकसान करना ।
 अव्वीह-वि० चालबाज; चतुर ।
 अव्वान, अव्वगी-वि० वैदाग, साफ, स्वच्छ; निष्कलंक ।
 अव्वाना(रु)-वि० [म०] जो न दे, अनुरार, कृपण; विवाह-के लिए (बन्धा) न देनेवाला; जिसने नुकसान न हो ।
 अव्वान-वि० नादान, नासमझ; [म०] न देनेवाला; कंजम । पु० विना मद्रतलका हाथी ।
 अव्वामी-वि० कृपण, कंजम ।
 अव्वाय-वि० [म०] जिसका पानेका अनधिकारी ।
 अव्वायी-वि० बाग, प्रतिकूल; बग ।
 अव्वानाद-वि० [म०] उत्तराधिकार-रहित; अनपेक्षित ।
 अव्वीयिक-वि० [म०] लावारिम; दाय-उत्तराधिकारमें मध्य न रखनेवाला ।
 अव्वार-वि० [म०] विषमता, रज्जुआ ।
 अव्वालत-क्ती० [अ०] न्यायालय ।
 अव्वालती-वि० अगलन-संबंधी; मुकदमेबाज ।
 अव्वार्व-पु० कुदाव, कठिनता ।
 अव्वालत-क्ती० [अ०] वैर, शत्रुता ।
 अव्वालती-वि० अदावन रखनेवाला; द्वेषमें किया गया ।
 अव्वाल-वि० [म०] जो दास न हो, स्वाधीन ।
 अव्वीह-क्ती० हाव-भाव, अदा ।
 अव्वीह-वि० [म०] न जलानेवाला ।
 अव्वीह-वि० [म०] न जलानेवाला; जो बिनापर जलाने-योग्य न हो; आत्मा या परमात्माका एक विशेषण ।
 अव्वीह-पु० आदित्य; रविवार ।
 अव्वीह-पु० [सं०] मयुर; ईश्वरका एक नाम । क्ती० दक्षकी पुत्री जो कश्यपसे ब्याही थी और जो आदित्यों या देवनाओंकी माता मानी जाती है; पृथ्वी; प्रकृति; वाणी; पुनर्वसु नक्षत्र; निर्धनता; स्वतन्त्रता; असीमता; प्राचुर्य; पूर्णता; गाय; दूध । -ज-पु० आदित्य, देवता ।
 -मद्व-पु० देवता ।
 अव्वीह-पु० कुदिन, कुमय, अमाव्य ।
 अव्वीह-वि० [सं०] लौकिक, स्थूल । पु० लौकिक नायक ।
 अव्वीह-क्ती० [म०] लौकिक नायिका ।
 अव्वीह-पु० दे० 'अव्वह'; दुर्गम्य ।
 अव्वीह-वि० अव्वहर्त्ता; रुढ़; अभावा ।

अव्वीह-वि० [सं०] जिसने दोषा नहीं छोड़े ।
 अव्वीह-वि० अव्वह, न देखा हुआ; छिपा हुआ ।
 अव्वीह-वि० [सं०] दीनता-रहित, अकारण; न दबनेवाला; तेजस्वी; उदार । -हृषि, -सख-वि० तेजोमय ।
 अव्वीह-वि० [सं०] दे० 'अदीनवृत्ति' ।
 अव्वीह-वि० अमकाशित ।
 अव्वीह-वि० [सं०] जो दिया न जा सके, अवेद ।
 अव्वीह-वि० [सं०] लंबा नहीं । -सूत्र, -सूत्री(विह्व)-वि० तेज, स्फूर्तिमान; काम करनेमें विरल न करनेवाला ।
 अव्वीह-वि० अदीर्घ, छोटा ।
 अव्वीह-वि० निर्दंड, बेफिक; शान्त; वैजोड ।
 अव्वीह-वि० [सं०] दुःख में रहित । -नवमी-क्ती० माद्र-शुद्ध नवमी (इस दिन शिवों दुःखके निवारणके लिए देवीकी पूजा करती है) ।
 अव्वीह-वि० अदीर्घ, वैजोड ।
 अव्वीह-वि० [सं०] दुर्ग-रहित, विना कित्तेबंदीका; अदुर्गम ।
 -विषय-पु० दुर्गहीन देश ।
 अव्वीह-वि० अदीर्घ ।
 अव्वीह-ज० [म०] निवृत्त, पास । वि० पामका । पु० सामान्य । -दुर्ग(सिद्ध)-वि० दुर्गक न मोचनेवाला; अविचारी । -अव-वि० पासमें ही स्थित ।
 अव्वीह-वि० [म०] दूषणरहित, निर्दोष ।
 अव्वीह-वि० [सं०] अविहृत, शुद्ध, निर्दोष । -क्ती० पवित्रात्मा, जिसकी बुद्धि अष्ट न हो ।
 अव्वीह-वि० [म०] कमजोर; अस्थिर, बंचल ।
 अव्वीह-वि० [म०] दर्प-रहित, निरभिमान ।
 अव्वीह-वि० [सं०] जो दिखाई न दे, जो देखा न जा सके, अगोचर; सुप्त, गायब; परमेश्वरका एक विशेषण ।
 अव्वीह-वि० [म०] न देखा हुआ; अव्वह; अभावा, अननु-भूत; अस्वीकृत; अवैध । पु० भाव्य, प्रारब्ध; कर्मजन्य मत्कार, पूर्वजन्मोंमें मर्चिण पुण्य-पाप जो इस-जन्मके सुख-दुःखके कारण माने जाते हैं; एक विषेया द्रव्य था कीट । -कर्म(मंजु)-वि० जिसके कार्याका अन्वयास या अनुभव न हो । -गति-वि० जिसकी गति-विधि, चाल समझमें न आवे । -वर, -पुरुष-पु० ऐसी संधि जो विना मध्यम्वके दोनों दल आपसमें मिलकर कर लें ।
 -वर-संधि-क्ती० ऐसी संधि वा प्रतिष्ठा जो किसीके साथ इमलिए की जाय कि वह किसी अन्य व्यक्तिके कोई कार्य सिद्ध करा देगा । -पूर्व-वि० जो पहले न देखा गया हो; अदभुत, विरुद्ध । -फल-पु० पुण्य-पापका भविष्यमें प्राप्त होनेवाला फल । वि० जिसका फल अभाव हो । -बाह-पु० प्रारब्धबाह, निवृत्तिबाह ।
 अव्वीह-पु० [सं०] ऐसी स्थाहीसे लिखे अक्षर जो माषारण अवस्थामें अव्वह रहें, विशेष उपायसे ही पढ़े जा सकें ।
 अव्वीह-वि० [सं०] आध्यात्मिक वा गूढ़ अर्थ रखनेवाला; जिसका विषय इन्द्रियगोचर न हो ।
 अव्वीह-क्ती० [सं०] रुढ़ या बुरी बह्ति; देख न पड़ना । वि० अंधा ।
 अव्वीह-क्ती० [सं०] दे० 'अव्वि' ।

अद्वैत-वि० अद्वय; न देखा हुआ; जो न देखा जाय ।
अद्वैती-वि० जो दूसरेका प्रत्यक्षदर्शन न देख सके, बाही ।
वि०, **की०** न देखी हुई ।
अद्वैत-वि० [सं०] न देने योग्य; जिसका दान उचित या वैध न हो; जिसे देनेकी कोई विवशता न किंवा जा सके (ऐसी वस्तु) । पु० वह वस्तु जिसे देना उचित या आवश्यक न हो ।-**दान**-पु० अवैध दान, अपरिहित दान ।
अद्वैत-पु० [सं०] देवविग्रह; अमर, दैत्य । वि० जो देवता-संघर्षी न हो; देवराहित; अपवित्र; अपात्मिक ।-**मातृक**-वि० जहाँ वर्षा न हुई हो; वर्षाके अभावमें तालाब आदिके जलसे सींचा हुआ ।
अद्वैत-वि० [सं०] जो देवताके निमित्त न हो ।
अद्वैतता-पु० [सं०] दे० 'अद्वैत' ।
अद्वैत-पु० [सं०] अन्योन्य, अनुपयुक्त देश; दुरा या निर्दिष्ट देश ।
अद्वैत-वि० [सं०] जो स्थल या अवसरविशेषसे संबद्ध न हो; जिसका अद्वैत या निरर्थक करना उचित न हो ।
अद्वैत-पु० आदेश; प्रणाम; दे० 'अदेश' ।
अद्वैत-वि० [सं०] देवराहित । पु० कामदेव ।
अद्वैत-वि० [सं०] दीनता या हीनतासे रहित । पु० दीनताका अभाव ।
अद्वैत-वि० [सं०] देवताओं वा उनके कार्योंसे असंबद्ध; जो भाग्य वा देवताओं द्वारा पूर्वनिर्धारित न हो ।
अद्वैत, **अद्वैतिल**-वि० दे० 'अद्वैत' ।
अद्वैत(गृह)-वि० [सं०] अशौचक, विचारवान् (नरेश) ।
अद्वैत-वि० [सं०] दोषरहित, वैशेष; निरपराध ।
अद्वैत-वि० दे० 'अद्वैत' ।
अद्वैत-पु० [सं०] वह समय जब दुहना सम्भव न हो; न दुहना ।
अद्वैती-**की०** उर्दकी सुखावी हुई बरी ।
अद्वैत-पु० [सं०] पुरोडास ।
अद्वैत-वि० दे० 'अद्वैत' ।
अद्वैत-पु० दे० 'अध्वयु' ।
अद्वैत-अ० [सं०] प्रत्यक्षतः; निश्चयपूर्वक, निरसदेह, सत्य ही ।-**पुरुष**-पु० सत्पुरुष; सच्चा आत्मी ।-**मिश्रित** **वचन**-पु० काल-संघर्षी मिथ्या वचन (त्रैल) ।
अद्वैत-पु० किसी चीजकी आधी तौल या नाप; बोलचाल आधा, शीतली; एक बीनली या एक पाँट धरात; आधे धँटेपर बजनेवाला बँटा; चार मात्राओंका एक ताल; रसीत आदिका आधा भाग जो देनेवालेके पाम रह जाता है, मुसफा; एक छोटी नाव; आधी ईंट ।
अद्वैत-**की०** दमश्रीका आधा, पैसका सोल्हवाँ भाग; मल-मलकी किरमका एक तरहका बढिया बारीक कपड़ा ।
अद्वैत-वि० [सं०] विविच, अनोखा, विस्मयजनक । पु० आश्चर्य; आश्चर्यजनक पदार्थ या घटना; कान्यके नौ रसोंमेंसे एक त्रिमका स्थायीभाव विस्मय है ।-**कर्म**(अन्त)-वि० अद्वयुत कर्म करनेवाला ।-**दर्शन**-वि० देखनेमें अद्वयुत, अनोखा लगनेवाला ।-**धर्म**-पु० बौद्धोंके नौ अंगोंमेंसे एक ।-**रस**-पु० कान्यके नौ रसोंमेंसे एक ।-**सार**-पु० खटिरमार ।-**स्वन**-वि० विविध स्वर-

वाला । पु० शिव० ।
अद्वैत-पु० [सं०] जहाँ अद्वयुत वस्तुओंका संग्रह हो, अजायबघर ।
अद्वैत-पु० [सं०] उपमा अर्थकारका एक भेद (उपमानमें ऐसे गुणोंकी कल्पना करना जिनसे युक्त होनेपर उसमें उपमेयकी तुलना की जा सके) ।
अद्वैत-पु० [सं०] अग्नि ।
अद्वैत-वि० [सं०] बहुत अधिक खानेवाला, पैट्ट ।
अद्वैत-अ० [सं०] आजकल; आज; अब; अभी । वि० खाने-योग्य । पु० आहार, खाद्य पदार्थ ।-**विन**, **विन**-अ० आजका दिन ।-**पूर्व**-अ० आजसे पहले । वि० आजसे पहलेका ।-**प्रवृत्ति**-अ० आजमें; अबसे ।-**धीन**-वि० आजकलमें पटित होनेवाला ।-**धीन**-**की०** आसन्नप्रसवा ।
अद्वैत-वि० [सं०] आजका, आजमें संबंध रखनेवाला । पु० पिछली आधी रातमें आनेवाली आधी राततकका समय ।
अद्वैतनीय-वि० [सं०] आजका, आधुनिक ।
अद्वैत-अ० [सं०] आज भी; अब भी; आजतक; अबतक ।
अद्वैत-अ० [सं०] आजतक; अबतक ।
अद्वैत-वि० [सं०] जुगसे नहीं, ईमानदारीसे प्राप्त किया हुआ ।
अद्वैत-अ० [सं०] आज ही ।
अद्वैत-वि० [सं०] तरल नहीं, ठोस, कठिन । पु० कठिन पदार्थ ।
अद्वैत-पु० [सं०] कुछ वस्तु, निकम्मी चीज । वि० जिसके पाम कोई भावति न हो, दरिद्र ।
अद्वैत-**की०** दे० 'अद्वैत' ।
अद्वैत-पु० [सं०] पहाड़, पर्वत; विजली; वृक्ष; वन; बादल; बादलोंका समूह; एक मान; सागकी संख्या; पशुका एक पौत्र ।-**कन्या**, **नंदिनी**, **सुता**-**की०** पार्वती ।-**कन्या**-**की०** अपराजिता ।-**कील**-पु० विष्णुका पर्वत ।-**कील**-**की०** पृथ्वी ।-**कुक्षि**-**की०** गुफा, कंदरा ।-**कुक्षि**-पु० विजली ।-**ज**-पु० शिवाजपुत्र; गेहूँ । वि० पर्वतमें उपपन्न ।-**ज**-**की०** पार्वती; गंगा; सेहली वृक्ष ।-**जनका**-**की०** पार्वती, एक वृत्त ।-**जोषी**-**की०** पहाड़ी घाटी; नदीका उद्गम ।-**हिंदू**(**ए**), **हिंदू**-पु० इद्र ।-**पति**, **राज**-पु० हिमालय ।-**भू**-**की०** अपराजिता; आलुकीनी कला ।-**बहि**-पु० पर्वताभि; दावाभि ।-**बाध**-पु० शिव ।-**भंग**, **सानु**-पु० पहाड़की चोटी ।-**सार**-पु० लोहा; मिलाबील । वि० पर्वत जैसा दृढ़, कठिन ।
अद्वैत, **अद्वैत**-पु० [सं०] हिमालय ।
अद्वैत-वि० [सं०] सत्य; देवराहित ।
अद्वैत-पु० [सं०] देवराहित्य ।-**वृत्ति**-**की०** श्रोत्ररहित आचरण ।
अद्वैती(**हिंदू**)-वि० [सं०] श्रोत्ररहित ।
अद्वैत-पु० [अ०] न्याय, ईमाफ ।-**परवर**-वि० न्याय-शील, इसाफ करनेवाला ।
अद्वैत-वि० [सं०] शत्रुनाहीन ।
अद्वैत-वि० [सं०] अतिथीय, अकेला । पु० द्वैतका अभाव, अद्वैत; कुछ ।-**वादी**(**हिंदू**)-वि० अद्वैतवादका अनुयायी ।
अद्वैत-पु० [सं०] आग्रहित आत; वह प्रवेश-मार्ग जो

हर न हो।

अद्वितीय-वि० [सं०] जैसा कोई दूसरा न हो, बेजोड़, कासाकी; अकेला; अद्वितीय, अनोखा। पुं० नका।

अद्वैत-वि० [सं०] देवदेवित्व, निर्वैद, देव-विरोध न रखने-वाला; शांत। पुं० देवहीनता।

अद्वैती (विभु)-वि० [सं०] देवहीन।

अद्वैत (व्यु)-पुं० वह जो देवी वा ब्रह्म न हो, मित्र।

अद्वैत-पुं० [सं०] द्वैत वा भेदका अभाव; जीव-ब्रह्म वा अज-चेतनकी एकता; ब्रह्म। वि० अद्वितीय। -**बाह्य-पुं०** जीव और ब्रह्मका अन्वय बतानेवाला; दर्शन, जगत्का मूल तत्त्व एक ही है यह मत, वेदांत। -**बादी (विभु)-वि०** अद्वैत-बादके सिद्धांतकी माननेवाला, वेदांती। -**सिद्धि-को०** ब्रह्म और जगत्के अन्वयकी सिद्धि; ध्याकर वेदांतका एक विशेष प्रकरण।

अद्वैत-वि० [सं०] जो दो भागोंमें बँटा न हो। अव्युत्पन्न; अतद्भवनारहित; सदा।

अद्वैत-मित्र-पुं० [सं०] जिसकी जैसीमें किसी तरहका संदेह न हो ऐसा मित्र (भ्राता या राक्ष)।

अवः (अव्)-अ० [सं०] नीचे; नीचेके लोकमें, पाताल वा नरकमें। (समासमें नाम वा विशेषणके पहले ऊपर 'नीचे' वा 'नीचेका' अर्थ प्रकट करता है)। -**काव-पुं०** देवका नामिके नीचेका भाग। -**क्रिया-को०** किसीकी अपमानित वा निरस्त कर्मा, नीचा दिखाना। -**पतन-पात-पुं०** नीचे गिरना; पतन, अवोगति, अवनति। -**पुष्पी-को०** गोजिहवा; अनाकपुष्पी। -**प्रस्तार-पुं०** भरणासीचवाले व्यक्तियोंके बैठनेकी एक चटाई। -**सामय-पुं०** जमीनपर सोना। -**शिरा (रस्)-वि०** सिर नीचे रखनेवाला। पुं० एक नरक। -**स्वस्तिक-पुं०** अधोवर्तु।

अव-वि० 'आधा'का समासमें व्यवहृत लघु रूप। -**कहरा-वि०** अपका; अधूरा; अधूरी जानकारी रखनेवाला, अकुशल; अकुट्टा। -**कण्ठा-पुं०** नदीके तटकी वह उच्च भूमि जो दाहिने होनी हुई पानीकी मलहसे मट जाती है। -**कहार-पुं०** पहाड़की तलहटीकी ढाल जमीन। -**कपारी-को०** आधे सिरका दर्द, आधामीसी। -**करी-को०** माल-गुमारी, कगान आदिकी आधी कित्त। -**कहा-वि०** अस्पष्ट रूपसे कहा हुआ। -**खिला-वि०** अर्धविकसित। -**खुला-वि०** आधा खुला हुआ, अधोन्मीलित (ओखें, कली इ०)। -**गोरा-वि०** दूरीविषय और पश्चिमाह मों-बाकी संतति, परेशियन, ऐलोनियन। -**घट-वि०** जो पूरा न पड़े; अस्पष्ट अर्थवाला, कठिन। -**चना-पुं०** गेहूँ और चनेकी समान मिलावट। -**चरा-वि०** आधा चरा या आधा खाया हुआ, अर्धभक्षित। -**जर-वि०** आधा जला हुआ। -**जळ-वि०** आधा भरा हुआ (पका इ०)। -**जळा-वि०** अर्धस्थ, आधा जला हुआ। -**पई-को०** एक पाद जो आधा पाद होता है। -**बर-पुं०** आधा रास्ता, दीव। -**बुध-वि०** अर्धशिक्षित। -**बैलु-वि०** अपेक्ष। -**भरा-बुजा-वि०** अर्धवृत्त, वृत्तभाग। -**रास-को०** आधी रात। -**रौंदा-वि०** आधा चबना वा पागुर किया हुआ। -**सेरा-पुं०** आध मेरका पाद।

अवकी-वि० अर्धमें क्षित; अर्धपटांग।

अवच-वि० [सं०] धनहीन; स्वतंत्र धन-संपत्तिक अवधिकारी।

अवचिन्ता-वि० आप जानेका, जो दो पैरोंमें भिंके।

अवचा-पुं०, **अवचारी-को०** आप जानेला लिका।

अवच-वि० [सं०] अमाया, दुष्की; निरा जो सम्पादिते भरापूरा न हो; जो उन्नति न कर रहा हो।

अवचर-पुं० अवच, अवचरि।

अवच-वि० [सं०] नीच, निम्न; दुष्ट; पापी; नीचतम, गतिहीन वा दुष्ट; निम्न। पुं० कामी; ग्रहोंका एक अक्षिप्त योग; परनिन्दक कवि। -**बुद्ध-बुद्धक-पुं०** निम्न भेगीका नीकर, पैसिया। -**हवि-को०** स्वर्गवश की जानेवाली प्रीति।

अवचार्थ-वि०, **अवचार्थ-को०** अवयवा, नीचता।

अवचार्थ-पुं० [सं०] कथ बनेवाला, कथंदा।

अवचार्थ-पुं० [सं०] शरीरका नीचेका भाग, पैर।

अवच-को० [सं०] नाविकाका एक भेद; निम्न भेगीकी की कर्मका की।

अवचार्थ-वि० [सं०] नुरेते कुरा, नीचतम।

अवचार्थ-पुं० [सं०] देहका नाभीके नीचेका भाग।

अवचुल-वि० दे० 'अवोमुल'।

अवचोद्धारक-वि० [सं०] पापियोंके तारनेवाला (महात्मा, परमात्मा इ०)।

अवच-वि० [सं०] नीच; नीचेका; पहलैका; नीच; कुरा; घटिया; (बाद वा मुकदमेंमें) पराजित; चंचल। पुं० नीचेका ओठ; होठ; शरीरका निचला भाग। बरती और आकाशके बीचका स्थान; अंतरिक्ष; पाताल; रतिग्रह, योनि; दक्षिण दिशा। -**कार्य-पुं०** शरीरका नीचेका भाग। -**वाच-पुं०** होठ चूसना, चुपन। -**बुद्धि-वि०** धृष्ट या नीच बुद्धिवाला। -**मधु-रस-पुं०** अवरावृत।

अवच-वि० जिसके शत्रु हारकर मौन हो गये हो। -**सुजा-को०** अर्ध-रसरूपी अवृत। -**स्वस्तिक-पुं०** अधोवर्तु। पुं० चवाना-कोषावस्थमें दोनोंसे ओठ चवाना, अत्यंत कूट होना। -**मैं झुकना-मैं चबना-मैं लटकना-नीचमें पड़ा रहना; अधूरा रहना; दुविधामें पड़ा रहना।**

अवचर-पुं० जोठोंकी लाली या पानकी कवर।

अवचर-पुं० दे० 'अवर्ध'। -**काव-पुं०** दे० 'अवर्धस्ति-काव'।

अवचर-पुं० [सं०] नीचेका ओठ।

अवचर-पुं० [सं०] अवरसके रूपमें रहनेवाला अवृत।

अवचर-कोष-पुं० [सं०] ओठ चवाना।

अवचरी-वि० [सं०] निरस्त; निरति; नीच।

अवचर-वि० [सं०] परे दिन, परसे (भीता हुआ)।

अवचर-वि० [सं०] ऊँचा-नीचा; अन्ध-दुरा; कमोवेश।

अवचर-वि० [सं०] नीचेका ओठ; नीचे और ऊपरके ओठ।

अवचर-पुं० [सं०] धर्म-विरुद्ध कार्य, शास्त्र-विरुद्ध कर्म वा आचरण; पाप, दुष्कर्म; अन्याय; अकर्तव्य; एक प्रजापति।

अवचर-पुं० वह बुद्ध जो दोनों पक्षोंका पूर्ण नाश करनेके लिए ही प्रारंभ किया गया हो।

अवचर-वि० [सं०] जैनमतानुसार द्रव्यके छ

जेदीमें ये एक ।

अधर्मी (मित्र) - वि० [सं०] अधर्म करनेवाला, पापी ।

अधर्मी - वि० [सं०] धर्म-विरुद्ध; अधर्मी; अवैध; अन्याय ।

अधर्षणी (मित्र) - वि० [सं०] जो दया या डरावा न जा सके, प्रबल, निर्मम ।

अधवा - की० [सं०] विषया, पतिरहिता, रॉष ।

अधवारी - की० एक वृक्ष ।

अधक्कर - पु० [सं०] लेंध लगाकर चोरी करनेवाला, चोर । वि० नीचे नीचे या जमीनपर रेंगकर चलनेवाला ।

अधस् - अ० [सं०] दे० 'अधः' । - लक्ष - पु० नीचेकी कोठरी; नीचेकी तह; तहखाना । - स्वस्तिक - पु० दे० 'अधःस्वस्तिक' ।

अधस्तन - वि० [सं०] नीचा, नीचे अवस्थित; पहलेका ।

अधस्तात् - अ० [सं०] नीचे ।

अधर्गा - पु० एक तरहकी चिकिया ।

अधालीच - वि० [सं०] जो धातुका न बना हो, धातुने भिन्न पदार्थसे बना हुआ ।

अधार्थ - अ० दे० 'अर्थार्थ' ।

अधाना - पु० खालका एक भेद (संसीत) ।

अधान्मबाध - पु० [सं०] वह स्थान या प्रदेश जहाँ धान न पैदा होता हो ।

अधामार्ग - पु० [सं०] अपमार्ग ।

अधार - पु० दे० 'आधार' ।

अधारणक - वि० [सं०] जो लाभदायक न हो ।

अधारिया - पु० बैलगाड़ीमें गाड़ीवानके बैठनेका स्थान-मोटा ।

अधारी - की० आधार, सहारा; साधुओंकी लकड़ी; मुसाफिरी बैला । वि०, की० अच्छी, भली लगनेवाली; सहारा देने-वाली । पु० बे-निकाहा हुआ बैल ।

अधार्मिक - वि० [सं०] अधर्मी, धर्मसे सर्वध न रखनेवाला; पापी, दुष्कर्म ।

अधावट - वि० जो औदनेपर आधा रह गया हो, औटकर आधा किया हुआ (दृष ३०) ।

अधि - उप० [सं०] यह ऊपर, मुख्य, प्रधान (अधिराज), अधिक, अतिरिक्त (अधिमार्ग), सम्पत्ति, विषयक (अधिदैव, अध्यात्म) आदि अर्थोंका बोधन करना है । की० वह स्त्री जिसका मासिक स्राव चल रहा हो; चित्ता, मन-पीडा ।

अधिक - वि० [सं०] बहुत, ज्यादा; बड़ा हुआ; असाधारण; अतिरिक्त, फाजिल; विशेष; बाढ़का; गौण । पु० एक अलंकार जिसमें आधेपक्षा आधारमें अधिक होता कहा जाता है; एक नियमस्थान-देतु, व्याप्ति और स्थानमें जो सिद्ध हो उसमें अधिक लिख करना (न्या०) । - तिथि - की० दो दिन मानी जानेवाली तिथि । - दिव्य - दिवस - पु० दे० 'अधिक तिथि' । - मास - पु० लौदका महीना, मलमास । - धात्वोक्ति - की० अतिरजना । - संवत्सर - पु० मलमास ।

अधिकतर - वि० [सं०] और अधिक, किसीकी तुलनामें अधिक बड़ा । अ० बहुत बरके, ज्यादातर ।

अधिकता - की० [सं०] बहुतायत, बढ़ती; विशेषता ।

अधिकरण - पु० [सं०] आधार, आश्रय, अधिष्ठान; मन्त्र; सामान, पदार्थ; दावा; प्राधान्य; व्याकरणमें क्रियाका

आधार, सातवाँ कारक; व्याख्यान; प्रकरण, अध्याय, वह प्रकरण या परिच्छेद जिसमें किसी विषयकी पूर्ण विवेचना की जाय; अधिकार-प्रदान, विनियुक्ति । - भोजक - पु० न्यायाधीश । - अक्षय - पु० न्यायालय । - विष्णव - पु० किसी वस्तुके गुणमें हास या वृद्धि करते जाना । - सिद्धांत - पु० वह सिद्धांत जिसमें कुछ और सिद्धांतों का अवलोक अंतर्भाव हो (न्या०) ।

अधिकारिक - पु० [सं०] न्यायाधीश; अधिकारी ।

अधिकारणी (मित्र) - पु० [सं०] निरोधक; अभ्यक्ष ।

अधिकरण्य - पु० [सं०] अधिकार ।

अधिकारि - वि० [सं०] सन्धिकर्ता ।

अधिकर्म (स) - पु० [सं०] निपारणी, निरोधक । - कर, - कृत्य - पु० मजदूरी आदिके कामकी देलमात्र करनेवाला, मेठ ।

अधिकर्मा (मित्र) - पु० [सं०] निरोधक; अभ्यक्ष ।

अधिकर्मिक - पु० [सं०] व्यापारियोंसे चुंगी वसूल करने-वाला अधिकारी, हट्टाध्यक्ष ।

अधिकारा - पु० [सं०] अनिरिक्त अंग । वि० अतिरिक्त अंगवाला ।

अधिकार - पु० [सं०] बड़ा भाग । वि० अधिकतर । अ० बहुधा, अक्सर ।

अधिकार - की० अधिकता; विशेषता; महत्त्व ।

अधिहाधिक - वि०, अ० [सं०] अधिकने अधिक, ज्यादासे ज्यादा ।

अधिकाना - अ० कि० अधिक होना, बढ़ना ।

अधिकामेदूरक - पु० [सं०] रूपक अलंकारका एक उपभेद जिसमें उपमान तथा उपमेयके बीच अभेद दिखा-लाते हुए भी पीछेमें उपमेयमें कुछ विशेषताका उल्लेख कर दिया जाय ।

अधिकार - पु० [सं०] प्रमुख, शक्ति; शक्तिपार; हक; निरीक्षण; कर्तव्य; पद; प्रयत्न; स्थान; स्वत्व; कृत्रा; राज्य, हुकूमन; पात्रता, योग्यता; धान; कर्म-विशेषको पात्रता; प्रकरण, विषय; नाटकमें प्रधान फलका प्रमुख वा उसे प्राप्त करनेवाला योग्यता; वह मुख्य नियम जिसका और नियमोंपर भी प्रभाव हो (व्या०) । - पात्र - वि० अधिकारको योग्यता रखनेवाला । - विधि - की० वह विधि जिसमें व्यक्तिविशेषके काम करनेमें अधिकारका बीच हो ।

अधिकारी (मित्र) - वि० [सं०] अधिकार रखनेवाला, हकदार । पु० वह वस्तु जिसपर किसीका स्वत्व हो; वह जिसमें पात्रता हो; मालिक; सामक; अफसर; पुरुष (सूचिकर्ता); वेदानका धान रखनेवाला व्यक्ति; नाटकका वह पात्र जिसे मुख्य फलको प्राप्त होनी है ।

अधिकार्य - वि० [सं०] अतिरिक्त । - बन्धन - पु० अतिरजना ।

अधिकृत - वि० [सं०] अधिकार वा कृत्रेमें आया हुआ, अधिकार-मन्त्र, आवश्यक योग्यता रखनेवाला । पु० अधिकारी, अध्यक्ष ।

अधिकृति - की० [सं०] अधिकार, स्वत्व ।

अधिकृत, अधिकृत्य - पु० [सं०] आरोहण; चढ़ाई, हमला ।

अधिकृत - वि० [सं०] अपमानित, निरस्त; फेंका हुआ; नियत किया हुआ; मेठा हुआ ।

अधिकार-पु० [सं०] कैकला; निदा, अपमान; दोषरीय; बन्ध; पृथक् करना ।

अधिराज्य, अधिराजनीय, अधिराज्य-वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य; सीखने योग्य ।

अधिराज्य(शु)-पु० [सं०] प्राप्त करनेवाला; सीखनेवाला ।

अधिराजन-पु० [सं०] गिनना; अधिक मूल्य लगाना; अधिक महत्त्व देना ।

अधिराज-वि० [सं०] प्राप्त; शान्त; पढ़ा हुआ ।

अधिराज-पु० [सं०] प्राप्ति; पशुचर्या; जानना; सीखना; भनादिको प्राप्ति; व्यापारिक काम; स्वीकार; मैत्रुण ।

अधिराज-वि० [सं०] गायमें या गायमें प्राप्त ।

अधिराज्य-वि० [सं०] विशिष्ट गुणयुक्त, सुबोध्य; त्रिमका गुण खिना हो (धनुष्) । पु० विशिष्ट गुण ।

अधिराज्य-वि० [सं०] सुरक्षित; छिपाया हुआ ।

अधिराज्य-पु० [सं०] किसीके ऊपर गमन करना ।

अधिराज-वि० [सं०] जनमा हुआ सद्गुणजात ।

अधिराजन-पु० [सं०] त्रिम ।

अधिराज्य-पु० [सं०] पक्षाधिक जीमोंवाला जीव, सौप आदि; एक रोग जिसमें जीम खूब जाती है ।

अधिराज्य, अधिराज्यिका-स्त्री [सं०] जीमकी एक बीमारी; गल्फा बीमारी ।

अधिराज्य-वि० [सं०] (धनुष्) त्रिमका चिह्न चढ़ा हुआ हो, तना हुआ । -**कारमुक**, -**धम्मा** (ध्वज) -वि० त्रिमके धनुष्का चिह्न चढ़ा हुआ हो ।

अधिराज्य-स्त्री [सं०] पहाड़के ऊपरकी समतल भूमि, 'टिब्ललेह' ।

अधिराज्य(शु)-पु० [सं०] यम ।

अधिराज्य-पु० [सं०] दानिक ऊपर निकलनेवाला दान ।

अधिराज्य-वि० [सं०] वाह-संधी; काठवा ।

अधिराज्य-पु० [सं०] दे० 'अधिक दिन' ।

अधिराज्य-वि० [सं०] जिसमें बहुत अधिक प्रभा, चमक हो ।

अधिराज्य-पु० [सं०] इष्ट देव; प्रधान देव; देवाधिप; पर-मेश्वर । वि० देव-सन्ध ।

अधिराज्य, अधिराज्य-पु० [सं०] दे० 'अधिराज्य' ।

अधिराज्य-वि० [सं०] आध्यात्मिक ।

अधिराज्य-पु० [सं०] अधीश्वर; प्रधान अधिकारी ।

अधिराज्य-पु० [सं०] मुसिया, नेगा, अनियन्त्रित, सर्वाधिकार-संपन्न शासक या अधिकारी, 'डिपटेटर' । -**संज्ञ** -पु० अधिराज्यके अधीन चलनेवाला सामान-प्रबंध; अधिराज्य-शासित राज्य ।

अधिराज्य-स्त्री [सं०] अधिराज्यका पद या कार्य ।

अधिराज्य-पु० [सं०] मालिक, स्वामी; राजा, शासक; प्रधान ।

अधिराज्य-पु० [सं०] दे० 'अधिप'; मलकका वह भाग जहाँका बाघ घातक होता है । -**प्रत्यक्ष-पु०** संभवका एक प्रकार (ज्ञेय) ।

अधिराज्य-स्त्री [सं०] स्वामिनी; शासिका ।

अधिराज्य-वि० [सं०] बल्लिमे भरा हुआ ।

अधिराज्य, अधिराज्य-पु० [सं०] पुरुषोत्तम, परमेश्वर ।

अधिराज्य-वि० [सं०] बहुतसे बच्चोंवाला ।

अधिराज्य-पु० [सं०] गर्भसंज्ञिके तेजः क्षीमिमे यः (ना०); किसीके रूप बदले हुए देखकर होनेवाला भोला ।

अधिराज्य-पु० [सं०] स्वामी, प्रभु; श्रेष्ठ व्यक्ति ।

अधिराज्य-वि० [सं०] मृत-सन्ध । पु० ब्रह्म या उसकी माया; जड़ जगत् ।

अधिराज्य-पु० [सं०] बहुत अधिक खाना; अतिभोजन ।

अधिराज्य-वि० [सं०] 'अधिराज्य' ।

अधिराज्य-पु० [सं०] आँसुका एक रोग; दे० 'अधिराज्य' ।

अधिराज्य-पु० [सं०] अधि उत्पन्न करनेके लिए अरणीकी लकड़ियोंकी व्यवस्था । वि० रगड़कर अधि उत्पन्न करने योग्य (काष्ठ) ।

अधिराज्य-वि० [सं०] अधिमध्य रोगसे ग्रस्त ।

अधिराज्य-पु० [सं०] आँसुके श्वेत भागमें या मधुमेके पृष्ठभागमें होनेवाला एक रोग ।

अधिराज्य-पु० [सं०] मधुमेके पृष्ठभागमें होनेवाला एक प्रकारका रोग ।

अधिराज्य-वि० [सं०] नामसे अधिक, बहुत ज्यादा ।

अधिराज्य-पु० [सं०] हर तीसरे वर्ष बढ़नेवाला चांद्र मास, लौकिक महोना ।

अधिराज्य-वि० [सं०] त्रिजने परस्पर मैत्री हो । पु० परस्पर मित्रपणकी योग ।

अधिराज्य-वि० [सं०] विश्वासयुक्त ।

अधिराज्य-स्त्री [सं०] विश्वास ।

अधिराज्य-पु० [सं०] महाकाल (शैव) ।

अधिराज्य-पु० [सं०] बुद्धका पूर्वजन्मका एक नाम (शैव) ।

अधिराज्य-वि० [सं०] यश-सन्ध । पु० प्रधान यश ।

अधिराज्य-पु० आपेका हिस्सेदार । स्त्री० आपेकी साक्षेदारी; भावली बन्धुसत्ता वह प्रकार जिसमें उपजका आधा मालिकों और आधा श्वेत जीवने-होनेवालेकी मिलना है ।

अधिराज्य-पु० योमुल्ली; जपनी; सुमिरनी ।

अधिराज्य-पु० कि० आधे-आध बाँट देना ।

अधिराज्य-पु० आधा हिस्सा या आपेका हिस्सेदार; वह जमींदार या काश्तकार जिसका आधा सबब एक गाँवमें और आधा दूसरेमें हो ।

अधिराज्य-स्त्री [सं०] आपेकी दावेदार या आपे हिस्सेकी हकदार स्त्री ।

अधिराज्य-स्त्री [सं०] किसी जायदादमें आपे हिस्सेदारी; किसीकी जमींदारी या काश्तका दो गाँवोंमें होना ।

अधिराज्य-पु० [सं०] ब्रह्मका एक योग जो यात्राके लिए शुभ माना जाता है ।

अधिराज्य-वि० [सं०] रथाखंड । पु० रथ हकिलेवाला, सारथि; कर्मकी पालनेवाला वृत्त ।

अधिराज्य-पु० [सं०] सम्राट्, अधीश्वर ।

अधिराज्य-पु० [सं०] सम्राट्का पद या अधिकार; साम्राज्य ।

अधिराज्य-वि० [सं०] चढ़ा हुआ; बढ़ा हुआ ।

अधिराज्य-पु० [सं०] उठाने या चढ़ानेकी क्रिया ।

अधिराज्य-पु० [सं०] गजारीही; चढ़ना । वि० चढ़ा हुआ ।

अधिराज्य-पु० [सं०] ऊपर चढ़ना, सवार होना; धनुषपर बिछा चढ़ाना ।

अधिरौहणी अधिरौहिणी-क्षी० [सं०] सोढ़ी, सोपान, जीना ।

अधिरौही (हिं०) -वि० [सं०] अधिरौहण करनेवाला ।

अधिष्ठाक-पु० [सं०] संसार; मन्दाह । वि० ब्रह्मांड-सर्वधी ।

अधिबक्ता (क-) -पु० [सं०] किसी पक्षका समर्थन करने-वाला; बकील; बक्का ।

अधिबचन-पु० [सं०] पक्षसमर्थन, हिमायत; नाम; उपाधि; अत्युक्ति ।

अधिवासित-वि० [सं०] अधुषित, आवाद, बसा हुआ ।

अधिवाचन-पु० [सं०] नामजदगी, निर्वाचन, चुनाव ।

अधिवास-पु० [सं०] निवासी; पदेसी; कपर रहनेवाला; वासस्थान, बस्ती; घरना; विरलवतक ठहरना; दूसरेके घर आकर रहना; इठ; झुगंध; झुगंधित उपवन आदिका उपभोग; यश्वरभके पूर्व देवताका आवाहन-पूजन आदि; विवाहके पहले इलदी आदि चढानेकी एक रीति; लबादा ।
-भूमि-क्षी० बस्ती, निवासस्थान ।

अधिवासन-पु० [सं०] झुगंधते बसाना; वधके पूर्व देवताका आवाहन-पूजन आदि करना; मूर्तिमें देवताकी प्राण-प्रतिष्ठा करना; घरना देना ।

अधिवासित-वि० [सं०] झुगंधित, बसाया हुआ ।

अधिवासी (सिन्०) -वि०, पु० [सं०] बसनेवाला, रहने-वाला; मुवासित करनेवाला ।

अधिवासी किसान-पु० वह किसान जो भूमिपर, सीर-दार कम्पा काश्तकार शरहमुअनसे लगानपर खेग लेकर जोतता है । वह उसे जीवनभर जोतता रह सकता है पर हस्तांतरित नहीं कर सकता ।

अधिबिष्ठा-क्षी० [सं०] वह स्त्री जिसके रहते पनि दूसरा विवाह कर ले ।

अधिधीत-वि० [सं०] लपेटा हुआ; आच्छादित ।

अधिबेत्तव्या-क्षी० [सं०] वह स्त्री जिसके रहते दूसरा विवाह करना उचित है ।

अधिबेत्ता (पु०) -पु० [सं०] एक स्त्रीके रहते दूसरा विवाह करनेवाला ।

अधिबेद, अधिवेदन-पु० [सं०] एक स्त्रीके रहते दूसरा विवाह करना ।

अधिबेदनीया, अधिवेद्या-क्षी० [सं०] दे० 'अधिबेत्तव्या' ।

अधिबेदान-पु० [सं०] बैठक, जल्सा ।

अधिशय-पु० [सं०] योग; वह वस्तु जो पीछे मिलायी या दी गयी हो ।

अधिशायन-पु० [सं०] किसी चीजपर लेटना या सोना ।

अधिशायित-वि० [सं०] (किसी चीजपर) लेटा हुआ; जो लेटने या सोनेके काममें आता हो ।

अधिशस्त-वि० [सं०] हटात (दुरे अर्थमें) ।

अधिभय-पु० [सं०] आधार; पात्र ।

अधिभयण-पु० [सं०] आगपर रखना, उवालना, चूल्हा ।

अधिभयणी-क्षी० [सं०] चूल्हा; अंगोठी ।

अधिभित-वि० [सं०] आगपर रखा हुआ; अधिवसित ।

अधिषवण-पु० [सं०] सोमरस निचोड़ना; हसका साधन ।

अधिष्ठाता (पु०) -पु० [सं०] देखभाल करनेवाला; न्याय-मक; अध्यक्ष; मुखिया; प्रभु । [स्त्री० 'अधिष्ठात्री' ।]

अधिष्ठाप-पु० [सं०] रखनेका स्थान; वास; रहना; आचार; आभय; बस्ती; नगर; निवस; आशीर्वाद; भ्रांति या अत्यासका आचार (वे०); पासमें होना, सत्पिथि; भोक्ता और भोग (आत्मा-देह, इन्द्रिय-विषय)का संयोग (सां०); अधिकार; शासन; राज्य; चक्र; प्रभाव । -देह-क्षी०, -शरीर-पु० मरनेके बाद जीवकी मिलनेवाली देह जिससे वह पितृलोकमें निवास करता है, प्रेतशरीर ।

अधिष्ठित-वि० [सं०] स्थित; स्थापित; अधिकृत; नियोजित ।

अधिष्ठी-क्षी० [सं०] उच्च भेणुकी, प्रथित स्त्री ।

अधीकार-पु० [सं०] दे० 'अधिकार' ।

अधीजना-अ० कि० अधीर होना ।

अधीत-वि० [सं०] पढ़ा हुआ (विषय); जिसने किसी वस्तुका अध्ययन कर लिया हो । -विद्य-वि० जिसने अध्ययन पूरा कर लिया हो ।

अधीति-क्षी० [सं०] अध्ययन, पठन ।

अधीती (सिन्०) -वि० [सं०] जिसका अध्ययन अच्छा हो, बहुत पढ़ा हुआ ।

अधीन-वि० [सं०] शश्वती, मातहत; आश्रित । -स्व-वि० जो किसीके अधीन हो ।

अधीनता-क्षी० [सं०] परबशता; विवशता; दीनता ।

अधीनता-अ० कि० अधीन होना ।

अधीमंथ-पु० [सं०] दे० 'अधिमंथ' ।

अधीयान-पु० [सं०] अध्ययन करनेवाला, विद्यार्थी ।

अधीर-वि० [सं०] धैर्यरहित, उगावला; उद्विग्न, आकुल; हृदयभ्रंशित; अस्थिरचित्त; भीरु ।

अधीरा-क्षी० [सं०] विजली; मध्या और प्रौढा नायिकाओंका एक भेद ।

अधीवास-पु० [सं०] अधिवास; ऐमा कंबा अंगरखा जिसमें मारा शरीर टक जाय, लबादा ।

अधीश, अधीश्वर-पु० [सं०] मालिक; अध्यक्ष; राजा; सर्वोपरि या सर्वश्रीम नरेश ।

अधीसारक-पु० [सं०] बार-बार बंध्याओंके पास जानेवाला ।

अधुना-अ० [सं०] अब; हम समय; इन दिनों ।

अधुनातन-वि० [सं०] आजकलका, आधुनिक ।

अधुर-वि० [सं०] भार या चिन्तामें रहित ।

अधृत-वि० [सं०] अकपित; निश्चर, डीठ ।

अधूमक-वि० [सं०] धूम-रहित । पु० जलती आग ।

अधूरा-वि० अधूर्ण; नातमाम; अप्रष्ट । सु०-जाना-अममय गर्भपान होना ।

अष्ट-वि० [सं०] धारण न किया हुआ; अनधिकृत; अनियमित । पु० विष्णुके सहस्र नामोंमेंसे एक ।

अष्टति-क्षी० [सं०] धृति या धीरताका अभाव; निर्यत्रणका न होना; अमयम; दुःख । वि० अस्थिर ।

अष्ट-वि० [सं०] जो डीठ न हो; मलज्ज; विनम्र; अजेय, जिसे क्षति न पहुँची हो ।

अष्टप-वि० [सं०] अजेय; लज्जाशील; अधिमानी ।

अर्ध्या-पु० दे० 'अर्ध्या' ।

अर्ध-वि० आधी उन्नका; डकली उन्नका ।

अधेनु-क्षी० [सं०] टैंड गाध ।

अधोक्ष-पु० पैतेका आधा, पेक्षा ।

अधोक्षी-स्त्री० आठ आनेका लिका, अठनी ।

अधोर्ध्व-पु० [सं०] अधोरता । वि० धैर्यरहित; आतुर ।

अधो-‘अधस्’का समासगत रूप । -राशि-स्त्री० पतन,

गिरावट; अवनति; दुर्गति, दुर्दशा; नरक जाना ।

-अमन-पु० दे० ‘अधोगति’ । -गामी(मिच्छ)-वि०

पतन वा अवनतिकी ओर जानेवाला; नरक जानेवाला ।

-धंदा-स्त्री० अपामार्ग । -शिष्टिका स्त्री० गलेका

कोमा । -दिक्(त्)-स्त्री० दक्षिण दिशा; अधोविपु ।

-द्वेष्ट-पु० शरीरका नीचेका भाग । -हार-पु० गुदा ।

-निलम्ब-पु० नरक । -शुक्ल-पु० पाताल आदि नीचेके

लोक । -भूमि-स्त्री० पर्वतके नीचेकी भूमि । -मर्म(त्)-

पु० गुह्य द्वार । -मार्ग-पु० सुरगंगा रास्ता; गुदा ।

-मुख, -चदन-वि० जिसका मुख नीचेकी ओर हो।

औषा । अ० मुँहके बल । -मुक्ता-स्त्री० गोमूत्र । -मूक

-वि० जिसका मूल नीचे हो । -धंस-पु० भ्रमका । -लम्ब

-पु० लंब, सागुल । -लोक-पु० नीचेका लोक । -बाधु-

स्त्री० अपान बाधु, गोत्र । -विपु-पु० पैरके नीचेका विपु ।

अधोक्षज-पु० [सं०] विष्णु; कृष्ण ।

अधोदी-स्त्री० शाय, भैस आदिकी खालका आधा राम जो

लाश कंकनेपर चमारने लिया जाय ।

अधोरध-अ० दे० ‘अधोर्ध्व’ ।

अधोर्ध्व-अ० नीचे-ऊपर, तले-ऊपर ।

अधोर्ध्वी-स्त्री० आधा चरमा; मोटा चमड़ा । -अस्तर-पु०

जनेके ललेके ऊपरका मोटा चमड़ा; एक तरहका जूता

जिममें अधोर्ध्वीका अस्तर हो । मु० -तनना-पेट खूब भर

जाना । -तानना-छककर खाना ।

अधोरी-स्त्री० एक वृक्ष जो विदेपनः हिमालयकी तराईमें

पाया जाता है, बकली, पीरा ।

अध्मान-पु० [सं०] पेट फूलना, अफरा ।

अध्वंश, अध्वंश-स्त्री० [सं०] अजर्मीय; भूम्यामलकी ।

अध्वज-वि० [सं०] गोचर, ह्दय । पु० निरीक्षक; निवामक;

मंचालक; मुख्य अधिकारी; अधिष्ठाता; मफेद मदार;

क्षीरिका नामका पौधा; साक्षी ।

अध्वक्षर-पु० [सं०] ‘ओम्’ मन्त्र । अ० अक्षरशः ।

अध्वमि-पु० [सं०] एक तरहका स्त्रीधन, विवाहके समय

अग्निकी माछी करके कन्याकी दिया जानेवाला धन । अ०

विवाहकी अग्निके पास ।

अध्वच्छ-पु० दे० ‘अध्वज’ ।

अध्वजन-पु० [सं०] ब्राह्मणके छ कर्माँमेंसे एक, पढ़ना;

पढ़ाई ।

अध्वयनीय-वि० [सं०] अध्ययन करने योग्य ।

अध्वर्ध्व-वि० [सं०] डेढ़ । पु० बाधु ।

अध्वर्ध्व-पु० [सं०] एक रोग, जिस स्थानपर एक बार

अर्ध्व हुआ हो उसी स्थानपर दोनेवाला अर्ध्व ।

अध्वसाय-पु० [सं०] निश्चय; प्रयत्न; अध्वसाय;

प्रकृत और अप्रकृतकी दोनो एकरूपता जिसमें एकका दूसरे-

के द्वारा निर्माण हो (सा०) ।

अध्ववसाय-पु० [सं०] यज्ञ, उद्यम; क्मातार कीशिया;

निश्चय; उत्साह ।

अध्ववसायित-वि० [सं०] जिसके लिए प्रयत्न किया गया हो ।

अध्ववसायी(विष्)-वि० [सं०] अध्ववसाय करनेवाला; उत्साही; उद्यमशील ।

अध्ववसित-वि० [सं०] जिसके लिए प्रयत्न या संयत्न किया गया हो ।

अध्ववसिति-स्त्री० [सं०] प्रयत्न, प्रयास ।

अध्वधान-पु० [सं०] अतिमीजन; एक बारका खाया पचे बिना फिर खा लेना ।

अध्वस्त-वि० [सं०] आरोपित; भ्रमवश प्रतीत या अनुभूत ।

अध्वस्थ-पु० [सं०] अस्थिके ऊपरका हिस्सा ।

अध्वस्थि-स्त्री० [सं०] अस्थिके ऊपर निकलनेवाली अस्थि ।

अध्वस्थ-वि० [सं०] आत्मासे संबंध रखनेवाला । पु०

आत्मा-परमात्मा-संबंधी विचार; परमात्मा । -ज्ञान-पु०

परमात्मा वा आत्मा-संबंधी ज्ञान । -दर्शी(सिद्ध)-

वि० परमात्माकी जाननेवाला । -द्योग-पु० इन्द्रियोंके

विषयोंसे मनको हटाकर परमात्माके ध्यानमें केंद्रित करना ।

-रति-वि० परमात्माके ध्यानमें मग्न रहनेवाला । -

रामायण-स्त्री० एक रामायण जिसमें रामचरितका वर्णन

करते हुए अध्यात्मतत्त्वका प्रतिपादन किया गया है । -

विद्या-स्त्री० आत्मा-परमात्माके स्वरूप, संबंध आदिका

विचार करनेवाला शास्त्र; मन्त्रविचार । -शास्त्र-पु०

अध्यात्म-विद्या ।

अध्यात्मिक-वि० [सं०] अध्यात्म-संबंधी ।

अध्यापक-वि० [सं०] पढ़ानेवाला, शिक्षक ।

अध्यापकी-स्त्री० शिक्षणकार्य, पाठन, पढ़ानेका काम ।

अध्यापन-पु० [सं०] ब्राह्मणोंके छ कर्माँमेंसे एक, पढ़ाना ।

अध्यापयिता(तु)-पु० [सं०] पढ़ानेवाला । [स्त्री० ‘अध्यापयित्री’]

अध्यापिका-स्त्री० [सं०] पढ़ानेवाली, शिक्षिका ।

अध्याय-पु० [सं०] पढ़ना, अध्ययन; पाठ; परिच्छेद;

पाठका समय; विधार्थी, पढ़नेवाला (ममासमें) ।

अध्यायी(विद्)-वि० [सं०] अध्ययनमें संलग्न । पु० विद्यार्थी ।

अध्याकृद्-वि० [सं०] सवार, चढ़ा हुआ; उच्चतर या निम्नतर ।

अध्यारोप, अध्यारोपण-पु० [सं०] एक वस्तुके गुण-धर्मका प्रत्यक्ष अन्य वस्तुमें आरोप करना; अध्यास; मिथ्या

ज्ञान (वे०) ।

अध्यारोपित-वि० [सं०] प्रत्यक्ष (एक वस्तुका गुण-धर्म अन्य वस्तुमें) आरोपित ।

अध्यावाह्निक-पु० [सं०] कन्याकी विदाईके समय दिया जानेवाला एक प्रकारका स्त्रीधन ।

अध्यास-पु० [सं०] मिथ्या ज्ञान; भ्रंत ज्ञान या प्रतीति

(रस्तीमें सोंप, सोंपमें चोरीका भ्रम) ।

अध्यासन-पु० [सं०] बैठना; निरीक्षण करना; आसन;

स्थान । [वि० ‘अध्यासित’, ‘अध्यासीन’]

अध्याहार-पु० [सं०] दे० ‘अध्याहार’ ।

अध्याहार-पु० [सं०] वाक्यमें छूटे हुए पर या पढ़ीको

अर्न्तपुष्टिके लिय ऊपरसे जोष लेना; तर्क-वितर्क; अनुमान ।
अष्टादशत-वि० [सं०] अष्टादशर किन्ता हुआ ।
अष्टपुष्टि-वि० [सं०] निवसित, बसा हुआ ।
अष्टपुष्ट-वि० [सं०] सादे तीन ।
अष्टपुष्ट-पु० [सं०] कंटगायी ।
अष्टपुष्ट-वि० [सं०] उन्नत; समृद्ध; उच्च; अत्यधिक । पु०
 विवाहके पूर्वके गर्मसे उत्पन्न पुत्र; शिव ।
अष्टपुष्टा-खी० [सं०] वह खी जिसका पति दूसरा विवाह
 कर ले, प्रथम विवाहिता खी ।
अष्टपुष्ट-पु० [सं०] (राज आदिको) परत डालना ।
अष्टपुष्ट-वि० [सं०] एतनेके योग्य ।
अष्टपुष्ट(तु)-पु० [सं०] अध्ययन करनेवाला । [खी०
 'अष्टपुष्टी']
अष्टपुष्ट-पु० [सं०] आदरपूर्वक किसी कार्यमें प्रवृत्त
 करना ।
अष्टपुष्ट-खी० [सं०] निवेदन, याचना ।
अष्टि-वि० [सं०] जिसका नियंत्रण न हो सके, जो वशमें
 न किया जा सके ।
अष्टिप्रमाण-वि० [सं०] जो प्रकृतिमें न आ सके; मृत ।
अष्टि-वि० [सं०] अक्षिर; अक्षयी; अनिश्चित; मंदिर्य;
 जो पृथक् किया जा सके । पु० अनिश्चय ।
अष्टि-पु० [सं०] गलेका एक रोग, कठमदाह ।
अष्टनीन, अष्टन्य-पु० [सं०] यात्री, पथिक । वि०
 यात्रा करने योग्य; तेज चलनेवाला ।
अष्टर-पु० [सं०] यश; सीमयश; आकाश; आठ वसुओंमें
 से एक । वि० अकुटिल; सावधान; व्यक्तिकमहिता; टिकाऊ ।
अष्टर-खी० कान्तेष्टि यह । **अष्टर-पु०** छनपथ
 प्राक्गणका एक खंड । **अष्टर-वि०** अष्टरके काममें आनेवाला ।
अष्टरु-पु० [सं०] नार कस्त्रिकों-यह करानेवालोंमेंसे
 एक, यजुर्वेदक कस्त्रिक । **अष्टर-यजुर्वेद** ।
अष्टरत-पु० [सं०] ईश्वर अष्टकार, छाया; यात्राका अंत ।
अष्टरव-पु० इयोनक नामक क्षुप ।
अष्टा(ध्वन्)-पु० [सं०] रास्ता; पथ; यात्रा; दूरी; काल
 (बी०); माधन; वेदकी शास्त्रा; न्याय; आक्रमण; हवा;
 तरीका । **(अष्ट)ग-पु०** पथिक, यात्री; सूर्य, ऊँट;
 खर । **अष्टग-पु०** आभातक वृक्ष । **अष्टग-पु०**
 लवार्का एक मान । **अष्टा-खी०** गंगा नदी । **अष्टा-खी०**
 (वि०) यात्रा करनेवाला । **अष्टा-खी०** स्वर्ण-
 पुष्पी । **अष्टा-पु०** पथ । **अष्टि-पु०** मृदे; मार्ग-
 निरीक्षक । **अष्ट-पु०** यात्रावान; यात्राकुशल दूत ।
अष्ट-पु० अपामार्ग । **अष्टि-पु०** रोगविशेष ।
अष्टाति-पु० [सं०] पथिक; चतुर व्यक्तिक ।
अष्टाधिप-पु० [सं०] मार्गनिरीक्षक ।
अष्टाधन-पु० [सं०] यात्रा, सफर ।
अष्टेश-पु० [सं०] दे० 'अष्टाधिप' ।
अष्टन-वि० [सं०] देह-रहित, बिना देहका; आकृतिहीन ।
 पु० वह जो अंग नहीं है; कामदेव; आकाश; मन । **अष्टा**
अष्टा-खी० कामकीश; मुक्तक वृत्तके दो अंशोंमेंसे एक ।
अष्ट-वि० कामोत्पादक । **अष्ट-पु०** कोकशास्त्रका एक
 प्रसिद्ध (संस्कृत) ग्रंथ । **अष्ट-पु०**, **अष्टा-खी०** प्रेमपत्र ।

अष्ट-पु० शिव । **अष्टर-पु०** दंडक छंदका एक भेद ।
अर्न्तगक-पु० [सं०] चित्र, मन ।
अर्न्तगना-अ० कि० वेद्युष होना, विदेह होना ।
अर्न्तगवली-वि०, **खी०** [सं०] कामिनी ।
अर्न्तगारि-पु० [सं०] शिव ।
अर्न्तगसुहृद्(तु)-पु० [सं०] शिव ।
अर्न्तगी(सिद्ध)-वि० [सं०] विना अंगका, अशरीरी ।
 पु० परमेश्वर; कामदेव ।
अर्न्तगुरि, अर्न्तगुरि-वि० [सं०] जिसे उंगलियाँ न हों ।
अर्न्तजन-वि० [सं०] अजन-रहित; वैदाग; निर्दोष; निर्भि-
 कार; निर्लसंघ । पु० परब्रह्म; विष्णु; आकाश ।
अर्न्त-वि० [सं०] जिसका अंग न हो; असीम, अपार;
 अक्षय । पु० विष्णु; विष्णुका शंख; कृष्ण; शिव; रुद्र;
 शेषनाग; लक्ष्मण; असीमता; नित्यता; मोक्ष; बलराम;
 वासुकि; आकाश; बादल; सिद्धांतर; अन्नक; भवण नक्षत्र;
 ब्रह्म; जैनोके एक तीर्थंकर; बौद्धर पहननेका एक गहना;
 अनंत चतुर्दशीके त्रयमें पहननेका एक गड़ा । **अर्न्त-वि०**
 बड़ाकर असीम करनेवाला; बहुत अधिक कर देनेवाला ।
अर्न्त-पु० वे वनस्पतियाँ जिनके खानेका जैन धर्ममें
 निषेध है । **अर्न्त-वि०** अनंत कालतक चलनेवाला । **अर्न्त-पु०**
 असीम विशेषताओंमें युक्त । **अर्न्त-वि०** अर्न्त-
 शृङ्गा चतुर्दशी । **अर्न्त-पु०** वातुदेव; चोदहर्ष जैन
 अर्न्त । **अर्न्त-पु०** एक राग जो मेघरत्नाका पुत्र माना
 जाता है । **अर्न्त-पु०** अनंतजित् । **अर्न्त-पु०**
 मम्यक दर्शन (जैन) । **अर्न्त-पु०** शिव; इन्द्र । **अर्न्त-पु०**
 शेषनाग; शेषशायी नारायण । **अर्न्त-पु०** जैनोके
 चोदहर्ष तीर्थंकर । **अर्न्त-वि०** सीमारहित । **अर्न्त-वि०**
 (वि०) अर्न्त छल-छथोवाला । **अर्न्त-पु०**
 एक रक्तगोपक पौधा, मारिवा । **अर्न्त-खी०** असीम
 राशि या परिमाण । **अर्न्त-वि०** अनशित रूपोवाला;
 विष्णुका एक विशेषण । **अर्न्त-वि०** सुषुप्तिरके अंशका
 नाम । **अर्न्त-वि०** अपार सामर्थ्यवाला । पु० जैनोके
 तैर्ममें तीर्थंकर (मावी) । **अर्न्त-पु०** अनंत चतुर्दशी
 त्रत । **अर्न्त-वि०** सर्वशक्तिमान् (परमेश्वर) । **अर्न्त-वि०**
 विष्णु, परमेश्वर । **अर्न्त-वि०** वासुकि नागकी
 पत्नी । **अर्न्त-वि०** असीम शैशववाला; परमेश्वरका एक
 विशेषण ।
अर्न्तक-वि० [सं०] असीम; निम्न । पु० अनंतदेव (जैन) ।
अर्न्तर-अ० [सं०] तुल्य वाद; पीछे । वि० अंतर-रहिता
 मटा या लगा हुआ; पाप या पदोपमा; अपने वर्णसे ठीक
 नीचेके वर्णका । पु० मामीप्य; लगा हुआ होना; ब्रह्म ।
अर्न्त-पु०, **अर्न्त-खी०** ऐसी समान जिसके पिताका वर्ण
 मानाके वर्णसे ठीक ऊपर हो (वैद्या माता, क्षत्रिय पिता);
 'नरपरिया' भार-पहन ।
अर्न्तरय-पु० [सं०] अंतरका अभाव; अपरित्याग ।
अर्न्तराय-वि० [सं०] अंतररहित; निर्विघ्न ।
अर्न्तरित-वि० [सं०] अर्न्तरित, अदृष्ट ।
अर्न्तराय-वि० [सं०] वंशक्रममें ठीक बादका ।
अर्न्तवान्(यत्)-वि० [सं०] असीम; नित्य । पु० ब्रह्मके
 चार चरणी(एवी), मध्यवर्गी भाग, आकाश और समुद्र-

मैत्रे एक ।

अनस्ता-की० [सं०] दृष्टी; पार्वती; अनस्तमूल; आमकपी;
द्वय आवि; एकही संख्या ।

अनस्ताम्ना(स्वयं)-पु० [सं०] परमात्मा ।

अनस्तामुर्ध्वी(विष)-पु० [सं०] जैनमतानुसार वह दोष
जो कभी न जाय ।

अनस्ताभिषेच-वि० [सं०] अनगिनत मामोवाला; परमेस्वर-
का एक विशेषण ।

अनस्ती-खो० [सं०] किसीके बाँये बायुपर बाँधनेका रंभा ।

अनस्व-वि० [सं०] अंतरहित, असीम । पु० नित्यता;
हिरण्यगर्भका चरण ।

अनस्व-वि० [सं०] आनंदरहित । पु० एक प्रेतलोक; एक
वर्णवृत्त; * दे० 'आनंद' ।

अनस्वभा-अ० [सं०] कि० आनंदित होना ।

अनस्वी-वि० दे० 'आनंदी' । † पु० एक धान ।

अनस्वर-वि० [सं०] निर्बल, नंगा । पु० एक तरहका जैन
साधु ।

अनस्त-वि० [सं०] जिसका कोई भाग न हो; जिसका
पैरुक्त संपत्तिपर कोई अधिकार न हो; भाग-रहित; विष्णु
या आकाशका एक विशेषण ।

अनस्तुमस्तका-खो० [सं०] कटकी, केला ।

अन-पु० [सं०] आस-प्रवास । * अ० बिना, बगैर (उप-
सर्गके गौरपर यह व्यञ्जनादि शब्दोंके पूर्व भी लगता है—
जैसे अनहोनी, अनमेल) । † पु० अनाज । वि० दूसरा ।

अनअहिंसा-पु० वैष्णव ।

अनअच्छिन्न-वि० जिसकी इच्छा न की गयी हो, बिना
चाहा ।

अनअस, अनअसा-वि० दे० 'अनैस', 'अनैसा' ।

अनअस्तु-खो० कि० इ क्रतु; अनुपयुक्त समय ।

अनअक-वि० कपनरहित, निर । पु० कपनका अभाव ।

अनक-वि० [मं०] दे० 'अणक' । पु० दे० 'अणक'; * दे०
'आनक' ।

अनकदुर्मुख-पु० [सं०] कृष्णके पितामह ।

अनकदुर्मुखि-पु० दे० 'आमकदुर्मुखि' ।

अनकमा-अ० [सं०] सुनना; लक्ष्मि-छिपकर सुनना ।

अनकरीष-अ० [मं०] जन्म, शीघ्र; करीब-करीब; पास;
प्रायः ।

अनकस्मात्-अ० [सं०] अचानक नहीं; अकारण नहीं ।

अनकहा-वि० बिना कहा हुआ, अनुक्त । [खो०
'अनकही' ।] सु० -(ही)देना-चुप रहना ।

अनका-पु० [अ०] दे० 'उनका' ।

अनकादा-वि० जो निकाला न गया हो, बिना निकाला
हुआ ।

अनकीय-वि० [सं०] दे० 'अणकीय' ।

अनक्ष-वि० [सं०] दृष्टिहीन, अंधा ।

अनक्षर-वि० [सं०] निरक्षर; बर्ला; गूँगा; जिसका कवन
उचित न हो । पु० दुर्बल, गाली ।

अनक्षि-खो० [सं०] सराप आँस ।

अनक्षिक-वि० [सं०] नेत्रहीन, अंधा ।

अनख-पु० क्षीय, गैर; स्थानि; बाह्य, अजन; अक्षय;
५

विहीन । वि० [सं०] नखहीन ।

अनखका-अ० [सं०] रक्ष होना, खीझना ।

अनखका-अ० [सं०] रक्ष होना, खीझना । स० कि० रक्ष
करना, खीझना ।

अनखाह-खो० खीझनेकी क्रिया, खीझ ।

अनखी-वि० अनख करनेवाला, क्षीही ।

अनखुल-वि० जो खुला न हो; जिसका कारण अज्ञात हो ।

अनखीही-वि० अनख-भरा, कुपित; चिकविषा; अनु-
चित; क्षीहीत्यारक । [खो० 'अनखीही' ।]

अनखण्ड-वि० बिना गया हुआ; वै-हीन; टेढ़ा-मेढ़ा; अस्त-
स्कृत; उग्रजु; *स्वयंभू ।

अनखण्ड, अनखण्ड-वि० दे० 'अनखण्ड' - 'अनखण्ड'
भीति करी बहुत लीला जसुदानंद निवाही-सर ।

अनखणा-वि० जो गिना न गया हो, वैशुमार । पु० धर्मका
जाठवाँ मास । स० कि० खपका फेरना ।

अनखानिधा-वि० अगणित, वैशुमार ।

अनखबन्धा-अ० [सं०] जान-बूझकर देर लगाना - 'मैं
बोवति, ऐसी बसति, हँसति, अनखबति तीर' । वि० टाल-
मटोल करना ।

अनखाना-अ० [सं०] देर लगाना । स० कि० मुलझाना
(किशोर) ।

अनखार-वि० [सं०] गृहरहित । पु० अगणकारी सन्मयकी ।

अनखारिका-खो० [सं०] अगणकारी सन्मयकी जीवन
का अवस्था ।

अनखणित-वि० अगणित, वैदित्य ।

अनखिना-वि० दे० 'अनखणित'; जो गिना न गया हो ।

अनखिणित-वि० दे० 'अनखणित' ।

अनखीरी-वि० अपरिचित, वै-जाना; गैर ।

अनखि-वि० [सं०] जिसे अधिकी आवश्यकता न हो;
अधिहीन न करनेवाला; शीत-स्पर्ता कर्म न करनेवाला;
अधिमार्ग रोममें प्रस्ता; अविवाहित ।

अनख-वि० [मं०] अपहीन, निष्पाप; पवित्र, अक्षुब्ध;
निर्मल; सुंदर; निरापद; शोकहीन । पु० वह जो पाप न
हो; पुण्य; विष्णु; शिव; सकेत सरसी ।

अनखरी-खो० कुसमय, अममय ।

अनखरी-वि० अनिमज्जित; अनाहृत ।

अनखोर-पु० अन्याय, अयादती ।

अनखोरी-अ० नुपकेने, अचानक - 'जीति पाह अनखोरी
जयि' - छन्द ।

अनखला-वि० जो बाधा न गया हो, अमिष, अनिच्छित ।

अनखला-वि० न चला हुआ ।

अनखाह-वि० न चालनेवाला, प्रेम-रहित । पु० न
चालनेवाला व्यक्ति ।

अनखीता-वि० बिना सोचा हुआ; न चाहा हुआ ।

अनखीन्हा-वि० अपरिचित, वै-जाना ।

अनखैव-पु० वै-वैनी ।

अनख-वि० [सं०] जो छाप न हो, कंदा ।

अनखला-वि० बिना इच्छाका ।

अनखका, अनखिका-खो० [सं०] छोटी बकरी ।

अनखान-वि० अज्ञान, नासमझ; न जाननेवाला-

अपरिचित । पु० अज्ञानावस्था; अज्ञानः एक पक्षः एक बात ।
अनकारित-वि० न माननेवाला; अमान ।
अनजोखा-वि० न लोका हुआ ।
अनजु-पु० अन्याय, अनाचार, अनौचित्य ।
अनजुष्ट-वि० न देखा हुआ, अजुष्ट ।
अनजुष्टि-श्री० [सं०] गोविन्दः अनन्तमूल ।
अनजुष्टि(अनजुष्ट)-पु० [सं०] बैल, नौब; दूध राखि;
 खल्ले (उपनि०) । [श्री० 'अनजुष्टि'; 'अनजुष्टि'-गौ ।]
अनजु-वि० [सं०] जो सूझ न हो । पु० मोटा अन्न ।
अनजु-वि० [सं०] न झुका हुआ, अनजु । * अ० अनजु,
 और कही ।
अनजु-श्री० [सं०] नम्रता या विनयका अभाव; धर्म ।
 वि० अतिका उल्टा, बोधा ।
अनजु-वि० न देखा हुआ ।
अनजु-पु० [सं०] सफेद सरसो । वि० न खाने योग्य ।
अनजु-वि० [सं०] आजके दिनसे संबंध न रखनेवाला;
 आजसे पहले या पीछेका । पु० अद्यतनसे विभक्त काल ।
अनजु-पु० मविष्यत् कालका एक भेद (व्या०) ।-भूत
 -पु० भूत कालका एक भेद (व्या०) ।
अनजु-वि० [सं०] जो अधिक न हो; असीम; पूर्ण;
 जिसमें कोई वद न सके या जो बढ़ाया न जा सके ।
अनजु-पु० [सं०] अधिकार, शक्ति, योग्यता, पात्रता,
 हक आदिका अभाव । वि० अधिकार-रहित ।-अनजु
 -श्री० विना जाने-समझे या योग्यताके बाहर किसी विषयमें
 बोलना, देखल देना ।-अनजु-श्री० जिस बात या कार्यका
 अधिकार न हो वह करना ।
अनजु(रिन्)-वि० [सं०] अधिकार न रखनेवाला;
 किसी विषयकी योग्यता, पात्रता न रखनेवाला । [श्री०
 'अनजु' ।]
अनजु-वि० [सं०] जिसकी अधिकारोंके पट्टपर नियुक्ति
 न हुई हो; जो अधिकारमें न किया गया हो ।
अनजु-वि० [सं०] न जाना हुआ; अप्राप्त ।-अनजु
 -वि० जिसकी अनिलापा पूरी न हुई हो; निराश ।-अनजु
 -वि० जिने शास्त्रोंका ज्ञान न हो ।
अनजु-वि० [सं०] पहुँचके बाहर; अप्राप्य; अज्ञेय ।
अनजु-पु० [सं०] निरीक्षणका अभाव ।
अनजु-वि० [सं०] जिसकी (अधिकारोंके पट्टपर)
 नियुक्ति न हुई हो; अनुपस्थित ।
अनजु-वि० [सं०] स्वाधीन, स्वतंत्र कार्य करनेवाला ।
 पु० वह स्वतंत्र बड़े जो अपने इच्छानुसार कार्य करता हो ।
अनजु-वि० [सं०] इन्द्रियोसे जिसका ज्ञान न हो,
 अप्रत्यक्ष; अन्वक्षमिन्न; श्रामकहीन ।
अनजु-पु० [सं०] अध्ययन न करना; अध्ययन करने
 समय बीचमें होनेवाला विराम ।
अनजु-पु० [सं०] अध्ययनसायका अभाव, स्तिहमे
 मिलता-जुलता एक अर्थालंकार जिसमें मिलती-जुलती
 कई वस्तुओंके बीच नहीं, बरन् किसी एक ही वस्तुके
 मर्यादमें स्तिह प्रवृत्ति किया जाय ।
अनजु-पु० [सं०] पटाई न होना; पटाई बंद रहनेका
 दिन, छुट्टी ।

अनजु-वि० [सं०] जो बाद न हो, विस्तृत; जो मूल
 गया हो ।
अनजु-पु० [सं०] सौत सेना, जीना ।
अनजु-वि० [सं०] जो अनुकूल न हो; प्रतिफल, उल्टा ।
अनजु-वि० [सं०] जिसकी अनुमति न मिली हो;
 अस्वीकृत ।
अनजु-पु० [सं०] (मोनकम्पायेंस) किसी आश्रय, आश्रय
 आदिका पालन न करना ।
अनजु-पु० [सं०] सौत स्वीकृति; एक निग्रह-स्वाम्य-
 बादीके अपनी बात तीन बार कह चुकनेपर भी प्रतिवादी-
 का नुप रहना जो उसकी हार समझा जाता है (न्या०) ।
अनजु-वि० [सं०] जिसका अनुमति न किया गया
 हो, अशक्त ।
अनजु-वि० [सं०] जिसकी स्वीकृति न मिली हो; जो
 पसंद न किया गया हो; अयोग्य ।
अनजु-पु० [सं०] अन्तर्मे निग्रह पदाथें जो खाने योग्य न हो ।
अनजु-पु० एक पौधा जिसमें ऊपरके हिस्सेमें फल जैसे
 एक गोंठ बन जाती है । इसका स्वाद खटमोटा होता है ।
अनजु-वि० [सं०] एकात्मिक; एकात्मिक; अन्तर्मे और न
 जानेवाला; अविभक्त; बही; अक्षितीय; एकाग्र; अविभक्त ।
 -अनजु-श्री० एकमात्र सहारा । वि० 'अनजु' ।
 -अनजु-वि० जिसकी दूसरा उपाय या सहारा न हो ।
 -अनजु-वि० जिसमें कोई बधा न हो । -अनजु-
 (सत्), -अनजु-अनजु(नत्), -अनजु-वि० एका-
 त्वविचि, जिसका मन और कही न हो । -अनजु-
 (नत्)-पु० कामदेव । -अनजु-श्री० एकटक देखते
 रहना; वि० जो एकटक देखता रहे । -अनजु-वि० जिसके
 और कोई देवता न हो; परमेश्वरका एक विशेषण ।
 -अनजु-श्री० एकनिष्ठता, एककी भक्ति । -अनजु-वि०
 जिसका और किसी(की)के प्रति प्रेम न हो । -अनजु-
 वह पुरुष जिसके और कोई श्री न हो । -अनजु-
 विनम्याही मी, कुमारी । -अनजु-पु० एकनिष्ठ भक्ति या
 साधना । -अनजु-वि० जो और किसीके योग्य न हो ।
अनजु(स्वाम्य)-वि० जिसका मन एक ही लक्ष्यपर
 जमा हो । -अनजु-वि० एकनिष्ठ मनोवृत्तिवाला; जिसकी
 दूसरी जीविका न हो; वैने ही स्वभावका । -अनजु-
 सामान्य-वि० दूसरेमें न मिलनेवाला, अप्रामाण्य ।
अनजु-श्री० [सं०] एकनिष्ठता ।
अनजु-वि० [सं०] किसी वस्तुके बनाने-बैचने
 आदिका एकाधिकार, हजारा ।
अनजु-वि० [सं०] जो किसी दूसरेके आश्रयमें न
 हो, स्वाधीन । पु० वह भंगति जिसपर कोई कान न
 किया गया हो ।
अनजु-पु० [सं०] अन्वय-संबंधका अभाव; एक अर्थ-
 लंकार जिसमें उपमेय स्वयं ही अपना उपमान होता है ।
अनजु-वि० [सं०] अमरबद्ध, वेल्गमान; असमता; संविध,
 रचित ।
अनजु-वि० [सं०] जलहीन (जैसे पकिल धूप जलाशय) ।
अनजु, **अनजु**, **अनजु**(इ)-पु० [सं०] नुकसान न पहुँ-
 चाना; रुपये न अदा करना (कानून) ।

अनपराधी-पु० [सं०] अपराधी नहीं, उत्तरी, उत्पत्ति + अनपराध-पु० [सं०] अहित व कृत्या; मित्रोक्ता ।
 अनपराधक-वि० [सं०] अनपराध; निर्दोष ।
 अनपराधी(विद्)-वि० [सं०] निर्दोष, बेगुनाह ।
 अनपराध-वि० [सं०] जिसका अहित न किया गया हो । पु० होनामात्र ।
 अनपराध, अनपराध-पु० [सं०] न इतना, न जाना ।
 अनपराध-की० [सं०] दे० 'अनपराध' ।
 अनपराध-पु० पराधनमी, अपराध ।
 अनपराध-वि० बेपना निराश्रय ।
 अनपराध-वि० [सं०] संतानहीन; जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो; जो बन्धोंके अनुकूल न हो ।-होष-पु० बौद्धपन ।
 अनपराध-वि० [सं०] निर्दोषता ।
 अनपराध-वि० [सं०] निर्दोष; बेपना ।
 अनपराध-पु० [सं०] रुचर दण्डो, अष्टाष्ट तर्क ।
 अनपराध-पु० [सं०] बह इष्ट व अष्ट न हो, आकर-की धृतिने शुद्ध सन्द ।
 अनपराध-वि० [सं०] दूसरेसे रहित; जिसका कोई अनुयायी न हो; अकेला; एकमात्र (नग्न) ।
 अनपराध-वि० [सं०] दे० 'अनपराधी' ।
 अनपराध-वि० [सं०] निर्दोष, बेगुनाह । पु० मित्रोक्ता ।
 अनपराधी(विद्)-वि० [सं०] बेकसूर, निरपराध ।
 अनपराध-वि० [सं०] जिससे निकलनेका मार्ग न हो; अन्याय; अक्षय्य ।
 अनपराधक, अनपराधक-पु० [सं०] इतरा पूरा न करना; कृण या मजदूरी न चुकाना ।-विवाद-पु० अभिकों और उद्योगपतियोंके बीचका बेगन-संरंभी विवाद ।
 अनपराध-वि० [सं०] क्षयरहित; अविनश्वर । पु० अनश्वरता, निर्याता; शिव ।
 अनपराधी(विद्)-वि० [सं०] अचल, न्यायी, स्थिर; नाशरहित; अविकारी । [की० 'अनपराधीनी'] - (वि)-पद-पु० स्थिरपद, मोक्ष ।
 अनपराध-वि० [सं०] जो किसीका आश्रित नहीं; स्वतंत्र ।
 अनपराध, अनपराधी(विद्)-वि० [सं०] चाह या परवाह न रखनेवाला; तटस्थ; निष्पक्ष; अक्षर; स्वतंत्र ।
 अनपराध-की० [सं०] अपेक्षाका अभाव, अनिच्छा, बे-परवाही ।
 अनपेक्षित, अनपेक्ष-वि० [सं०] जिसकी चाह वा परवाह न हो ।
 अनपेक्ष-वि० [सं०] जो गया या बीना न हो; अधुबद्ध; विश्वासपात्र; अविरोधित ।
 अनपराध-पु० [सं०] बंधन उलटा, मुक्ति ।
 अनपराध-पु० [सं०] औनिषके १९ श्रौतोंमेंसे एक ।
 अनपराध-की० विवाद; झगडा । * वि० विविध, अनेक ।
 अनपराध-पु० [सं०] कालू, दास ।
 अनपराध-वि० दे० 'अनपराधी' ।
 अनपराध-वि० [सं०] विन-विवा (मोती) ।
 अनपराध-वि० दे० 'अपराध' ।
 अनपराध-वि० न हुआ हुआ गहराई में न पैठा हुआ ।
 अनपराध-वि० दे० 'अनपराधी' ।

अनपराध, अनपराधी-वि० न बीकनेवाला; बे-जवाब (नग्न, धिम्बु ह०) ।
 अनपराधी-वि० दे० 'अनपराध' ।
 अनपराधी-वि० जिसका न्याय न हुआ हो, अविवक्षित ।
 अनपराध-पु० अहित; दानि । पु० -साक्ष्य-अहित चाहना ।
 अनपराध-वि० दुरा, कुतिल; निष ।
 अनपराध, अनपराधी-वि० न भानेवाला, अप्रिय, अविकर ।
 अनपराधी-वि० दे० 'अनपराधी' ।
 अनपराधी-वि० [सं०] भेद-भावे रहित । पु० भेदरहित ।
 सव मर्तोंको मोक्षप्रद माननेका मूलत सिद्धांत (नै०) ।
 अनपराधी-वि० [सं०] सूर्य, बुद्धिहीन; अनजान, अनादी; अपरिचित ।
 अनपराधी-वि० [सं०] सोने हुएके बिकर; जो अभीष्ट नहीं था; अनिष्ट ।
 अनपराधी-वि० [सं०] अपराधित; अनाश्रित ।
 अनपराधी-वि० [सं०] असम्पत्त; अनपरीष्ट; अप्रिय ।
 अनपराधी-वि० [सं०] अलक्ष्य; अनुन्द ।
 अनपराधी-वि० [सं०] इच्छारहित । पु० इच्छा वा भुल्लाका अभाव; रस या स्वाद न मिलना ।
 अनपराधी-वि० [सं०] जो अभिमानके योग्य न हो ।
 अनपराधी-वि० [सं०] जो अर्थ वा प्रकट न हो; गुप्त, अस्पष्ट ।
 अनपराधी-पु०, अनपराधी-की० [सं०] अभिप्राय वा प्रयोजनका अभाव ।
 अनपराधी-वि० [सं०] जिसका नाम न किया गया हो; अज्ञ ।
 अनपरीष्ट-वि० [सं०] अनाश्रित; अप्रिय; अनुपिष्ट (?) ।
 अनपरीष्ट-वि० भेद न जाननेवाला ।
 अनपरीष्ट-पु० अनपरीष्टी बात, अपरज । वि० अलौकिक, अदभुत ।
 अनपरीष्ट-की० मुकता, धैर्य ।
 अनपराधित-वि० दे० 'अनपराधी' ।
 अनपराध-वि० [सं०] जिसका अभ्यास न किया गया हो; जिसने अभ्यास न किया हो ।
 अनपराध-वि० [सं०] निकट नहीं, दूर ।
 अनपराध-पु० [सं०] अभ्यासका अभाव; अनुश्रुतन, भक्त या आदरका न होना । वि० दे० 'अनपराधी' ।
 अनपराधी(विद्)-वि० [सं०] अभ्यास न करनेवाला ।
 अनपराधी-वि० [सं०] बिना शरल्लाका । -अपराधी-पु० एकापक आ पकनेवाली विपत्ति । -अपराधी-की० ऐसा लाभ वा भाति जिसकी आशा वा अनुमान पहले न किया गया हो ।
 अनपराधी-पु० [सं०] आश्रण (जो दूसरेको नयस्कार न करे) । * वि० उद्धत ।
 अनपराधी-वि० मररहित; निरंतर ।
 अनपराधी-पु० [सं०] न मुकना । * वि० दे० 'अनपराधी' ।
 अनपराधी-वि० उदाह, शिक्षा; असत्य ।
 अनपराधी-वि० जिसमें भाषा हुआ, अनाश्रित ।

अनभ्यासः—वि० जिसकी भाषा न हो सकने की भाषा न गया हो ।

अनभ्यस्तः—पु० कुमारः; अर्धः, दुष्कर्म ।

अनभिज्ञः—वि० दे० 'अनभि' ।

अनभिज्ञवचः (= **मिर्तवचः**)—वि० [सं०] बिना लीले न पकनेवाला; संज्ञक ।

अनभिज्ञः—वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो । पु० शत्रु न होनेकी अवस्था; एक अनपनरेख ।

अनभिज्ञः, अनभिज्ञः—वि० बे-मेल, असंबद्ध; निरुद्ध ।

अनभिज्ञताः—वि० न मिलनेवाला, अप्राप्य ।

अनभिज्ञताः—सं० कि० अँलें खोलना ।

अनभिज्ञः—वि० बे-मेल; खालिप ।

अनभिज्ञः—वि० अमृत्यु; बहुमृत्यु ।

अनभिज्ञः—वि० [सं०] अविनीत; उद्धः; घमडी ।

अनवः—पु० [सं०] अनीति; अन्याय; दुर्नीति; कुप्रवचः; व्यसन; विषयः दुर्भाग्य; एक तरफका जुल्मा खेल ।

अनवचः—वि० [सं०] नेत्ररहित, अंधा ।

अनवचः—वि० दे० 'अनेत' ।

अनवचः—अ० दे० 'अनायास' ।

अनवचः—पु० दे० 'अनर्थ' ।

अनवचः—सं० कि० अन्याय करना ।

अनवचः—पु० रसका अभावः; रक्षाः; रोष; विगाहः दुःखः रसहीन रचना । वि० नीरस ।

अनवचः—अ० कि० उदास होना, खिन्न होना ।—'हेसे हँसत अनरसे प्रतिविम्बित ज्यों सार्थ'—गीता० ।

अनवचः—पु० एक मिठाई । * वि० अनमना ।

अनवचः—अ० दे० 'अनरस' ।

अनवचः—वि० न रेंगा हुआ ।

अनवचः—स्त्री० कुरीति; अनिनीति; अनुचित व्यवहार ।

अनवचः—वि० अस्मिकार ।

अनवचः—स्त्री० अस्मि, अनिच्छा; भद्राभि ।

अनवचः—वि० कुरुप; असदृश ।

अनवचः—वि० [सं०] वैरीक, कगानारः अनियंत्रित; मन-माना, विचारहीन ।—**प्रलापः**—पु० वैतुकी हाँकना; मनमानी बकवास ।

अनर्थः—वि० [सं०] अमृत्यु; कम मृत्युका । पु० गलन कीमत, अनुचित मूल्य ।—**कवः**—पु० बाजार-भावसे अधिक या कम मूल्यपर खरीदना (कौ०) ।—**राघवः**—पु० एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक ।—**विक्रमः**—पु० बाजार-भावसे अधिक या कम मूल्यपर बेचना ।

अनर्थः—वि० [सं०] अमृत्यु; कम मृत्युका; सर्वाधिक सन्तान्यः; पूजके अर्घ्य ।

अनर्थः—वि० [सं०] न कमाया हुआ; अप्राप्त ।—**आयः**—स्त्री० चीन्नेके दाम बकायक चढ़ जानेसे होनेवाली आय या लाभ ।

अनर्थः—वि० [सं०] निकम्मा; भ्रष्टहीन; हानिकारक; नुरा; अर्थहीन; निष्ठ अर्थवाला । पु० उल्टा अर्थ; अर्थका अभाव; अर्थहीन, मूल्यका न होना; नैराश्यजनक घटना; अनिष्ट; खराबी; निकम्मी चीज; भयकी प्राप्ति; विष्णु ।—**करः**,—**कारी** (रिद्ध) —वि० अनर्थ करनेवाला; हानि वा अनिष्ट

करनेवाला । [स्त्री० 'अनर्थकारी', 'अनर्थकारिणी' ।]

—**क्षीर** (सिद्ध) —वि० अहित सोचने या चाहनेवाला; अर्जु-पयोधी या निकम्मी चीजोंपर ध्यान देनेवाला ।—**माही** (सिद्ध) —पु० शिव ।—**मिरनुबंधः**—पु० किसी कमजोर राजाकी लकनेके लिए उमाङ्कक स्वयं अलग हो जाना ।

—**कुक्षि**—वि० जिसकी समस्त विलकुल गयी-थीती हो ।

—**मावः**—वि० तुरे स्वभाववाला ।—**सुखः**—वि० सारहीन विषयोंमें मुक्त ।—**संशयः**—पु० वह कार्य जिसमें बहुत बड़े अनिष्टकी आशंका हो; वह संपत्ति जिसके लिए कोई खतरा न हो ।—**संशयापदः**—पु० शत्रुओंसे मित्रोंके युद्धका अन्तर ।—**सिद्धि**—स्त्री० चल मित्र और आक्रामकी सधि ।

अनर्थकः—वि० [सं०] अर्थरहित; निष्प्रयोजन, बेमतलब; अलाभकर; भावहीन । पु० अर्थहीन या असंबद्ध बात ।

अनर्थानुबंधः—पु० [सं०] किसी बलवान् राजाको युद्धके लिए उमाङ्कक स्वयं अलग हो जाना ।

अनर्थानुबंधः—पु० [सं०] वैरीका पेना बिनाच न होना कि अनर्थका स्टेड न रहे ।

अनर्थार्थसंशयः—पु० [सं०] ऐसी स्थिति जिसमें एक ओर अर्थार्थिकी आशा हो और दूसरी ओर अनर्थका संदेह ।

अनर्थार्थानुबंधः—पु० [सं०] अपने लाभके लिए शत्रु या पड़ोसीको धन और मेला द्वारा सहायता पहुँचाना ।

अनर्थः—वि० [सं०] दे० 'अनर्थक' ।

अनर्थः—वि० [सं०] अयोग्य; अनुपयुक्त; अनधिकारी; दंड या पुरस्कारके अयोग्य ।

अनलः—पु० [सं०] अग्नि, आग; अग्निके अपिच्छाता देवता, पावनगति; पावन-रस; पित्त, वायु; अष्ट वसुओंमेंसे पंचम वसु; एक पितृदेव; परमेश्वर; जीवः; विष्णु; वासुदेव; एक बानर; एक मुनि; एक राक्षस; तीनकी मत्स्या; कृपिका नक्षत्रः ५०वाँ सप्तमः विषय; भिलाबी; 'रू' अक्षर ।

—**वर्णः**—पु० वास्व ।—**द्वः**—वि० ताप या अग्नि प्राप्त करनेवाला ।—**दीपनः**—वि० जठराग्नि तीव्र करनेवाला ।

—**पंचः**—[सं०],—**पक्षः**—पु० एक चिह्ना (काव्यपनिक ?) ।

—**प्रभा**—स्त्री० ज्योतिष्मती लता ।—**प्रिया**—स्त्री० आनन्द, स्वाहा ।—**मुलः**—वि० अग्नि जिसका मुख हो । पु० देवता; ब्राह्मणः विष्णु; भिक्षा ।—**सावः**—पु० अग्निमाध रोग ।

अनलसः—वि० [सं०] आलस्यरहित, जागरूक, चुस्त, फुनीला; अवीर्य; अममर्ष ।

अनलसितः—वि० आलस्यरहित ।

अनलहृदः—पु० [अ०] मैं हृद, अह ब्रह्मास्मि (परमेश्वर इ०) ।

अनलः—स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या; माल्यवान् नामक राक्षसकी एक कन्या ।

अनलायकः—वि० अयोग्य ।

अनलिः—पु० [सं०] बक हृत् ।

अनलेखः—वि० अमृत्यु; अयोग्य ।

अनल्यः—वि० [सं०] थोड़ेका उल्टा, अधिक, उटाराशय ।

—**घोषः**—पु० बहुत ज्यादा शोरगुल ।—**मन्युः**—वि० बहुत अधिक क्रुद्ध ।

अनवकाशः—वि० [सं०] जिसके लिए कोई गुंजाइश या मौका न हो; अप्रयोज्य । पु० अवकाशका अभाव, कृतमल

वा गुंजाइसका न होना ।
अनवकाशिक-पु० [सं०] एक पैरपर खड़ा होकर तप करनेवाला कपि ।
अनवगाह-वि० [सं०] अज्ञात, न जाना हुआ ।
अनवगाह, अनवगाह-वि० [सं०] अगाह, बहुत गहरा ।
अनवगाही(हिन्)-वि० [सं०] डुबकी न लगावेवाला; अध्ययन न करनेवाला ।
अनवगीत-वि० [सं०] अनिदित ।
अनवग्रह-वि० [सं०] अनियमित, जो रौका न जा सके, अपाधित, स्वच्छ ।
अनवपिच्छ-वि० [सं०] न विलगाया हुआ, अखंडित, अंतरहित; अपरितीमित; अनिर्विष्ट ।-**हास**-पु० जोरकी लगातार चलनेवाली हँसी ।
अनवद-पु० एक आभूषण जो पैरके अंगूठेमें पहना जाता है; कौन्की बैलकी आँखोंका डकन ।
अनवक-पु० [सं०] जीवनवृत्त होना ।
अनवद्य-वि० [सं०] अविद्य, निर्दोष ।
अनवद्योत-वि० [सं०] सुदूर अंगोवाला ।
अनवद्वारा-वि० [सं०] अमिदित ।
अनवधान-पु० [सं०] अमनोयोग, अमाधधानता । वि० प्रमादी, लापरवाह ।
अनवधि-वि० [सं०] अजीम, बेहद ।
अनवन-वि० [सं०] सहायता या आश्रय न देनेवाला; कष्टप्रद । पु० आश्रयामात्र ।
अनवनामित-वि० [सं०] जो सुकाया न गया हो ।
अनवन्न-वि० [सं०] अक्षुण्ण; अनन्तर, ब्यायी ।
अनवम-वि० [सं०] चुच्छ या हीन नहीं; बड़ा; श्रेष्ठ ।
अनवय-पु० बड़ा, कुल; दे० 'अनव' ।
अनवर-वि० [सं०] अकनिष्ठ; अम्यून; श्रेष्ठ ।
अनवरत-वि० [सं०] अविराम; निरन्तर । अ० लगानार ।
अनवरत्न-वि० [सं०] सर्वोत्तम; प्रधान ।
अनवरोध-पु० [सं०] बिना रोक-टोकका, मुक्त । पु० अवरोधका अभाव ।
अनवलंब, अनवलंबन-वि० [सं०] अवलंब-हीन, बेमहारा । पु० स्वतंत्रता ।
अनवलंबित-वि० [सं०] निराधार, आश्रयहीन ।
अनवलोकन-पु० [सं०] गर्भके तीमरे माममें किया जानेवाला एक संस्कार ।
अनवसर-पु० [सं०] निरवकाश, अवसरका अभाव; कुमय । वि० व्यस्त, बे-कुरतस्त; असामयिक, अप्राप्तकाल; अपने स्थानपर नहीं ।
अनवसान-वि० [सं०] अंतर-रहित; मृत्युरहित; जिमकी समाप्ति न हो ।
अनवसित-वि० [सं०] अममाप्त; जो अस्त न हुआ हो ।
-संधि-स्त्री० औपनिवेशिक संधि; जगल या ऊमरकी आवाज करनेके लिए दो व्यक्तियों या राज्योंकी संधि ।
अनवसिता-स्त्री० [सं०] एक वृत्त ।
अनवस्कर-वि० [सं०] स्वच्छ, मलरहित, साफ ।
अनवस्थ-वि० [सं०] अस्थिर, चंचल; अस्थवस्थिन ।
अनवस्था-स्त्री० [सं०] अवस्थितिका अभाव; अस्थिरता;

अस्थवस्था; चरित्रभ्रष्टता; एक तर्कदोष-तर्क वा कार्य-कारणकी ऐसी परंपरा जिसका न अंत हो, न किसी निर्णयपर पहुँचे ।
अनवस्थान-पु० [सं०] अस्थिरता; अनिश्चितता; वायु; आचरणभ्रष्टता । वि० दे० 'अनवस्थित' ।
अनवस्थापी(विन्)-वि० [सं०] क्षणस्थायी ।
अनवस्थित-वि० [सं०] अस्थिर; अस्थिरचित्त ।
अनवस्थिति-स्त्री० [सं०] चापल्य, अस्थिरता; अपैव; आश्रयका अभाव; आचरणहीनता; समाप्ति प्राप्त होने पर भी चिपका स्थिर न होना ।
अनवहित-वि० [सं०] असावधान ।
अनवर्त्तना-सं० कि० नये बरतन आदिकी प्रथम बार काममें लाना ।
अनवर्त्ता-पु० कटी हुई फसलका पूरा; एक अनवर्त्तोंमें उत्पन्न फसल ।
अनवर्त्ता-स्त्री० विस्वामीका बीसवों या बत्तीसवों भाग ।
अनवाद्य-पु० कुबोल, कड़बधन ।
अनवास-वि० [सं०] अप्राप्त ।
अनवाप्ति-स्त्री० [सं०] प्राप्तिका अभाव, अप्राप्ति ।
अनवेक्ष, अनवेक्षक-वि० [सं०] लापरवाह, उदासीन ।
अनवेक्षण-पु०, **अनवेक्षा**-स्त्री० [सं०] लापरवाही, असावधानता, उदासीनता; निरीक्षणका अभाव ।
अनवान-पु० [सं०] आहारत्याग, उपवास; किसी विशेष संकल्पके माथ आहार-त्याग । वि० उपवास करनेवाला ।
अनवर-वि० [सं०] सनातन, शाश्वत; ध्रुव; अविनाशी, निरल ।
अनसखरी-स्त्री० पकी रसोई ।
अनसख-वि० असल ।
अनसमक्ष-वि० नाममक्ष ।
अनसमक्षा-वि० नासमक्ष; जो समक्षा हुआ न हो ।
अनसह-वि० दे० 'अनसह्य' ।
अनसह्य-वि० असह्य ।
अनसाना-अ० कि० छुंछलाना, कुड़ होना ।
अनसुनी-वि० न सुनी हुई । **सु०**-करना-छनकर भी न सुनने जैसा आचरण करना; जान-बूझकर उपेक्षा करना ।
अनसूय-वि० [सं०] अव्यारहित, देष्टरहित ।
अनसूयक, अनसूय-वि० [सं०] दे० 'अनसूय' ।
अनसूया-स्त्री० [सं०] दूसरेके गुणोंमें दोष हँवनेकी वृत्तिकारिनी होना; ईर्ष्या वा द्वेषका अभाव; दक्षकी एक कन्या, अथि कपिकी पत्नी; शकुंतलाकी एक सखी ।
अनसुर-पु० [सं०] मूर्ख नहीं, चतुर व्यक्त ।
अनस्तमित-वि० [सं०] जो अस्त न हुआ हो; जिसका पतन न होता हो ।
अनस्तित्व-पु० [सं०] अस्तित्वका अभाव, अविद्यमानता, नेस्ती ।
अनस्थ, अनस्थिक-वि० [सं०] अस्थिरहित ।
अनहंकार-पु० [सं०] अहंकारका अभाव । वि० जिसे अहंकार न हो, निरहंकार ।
अनहंकृत-वि० [सं०] अहंकाररहित ।

अनार्यकृति-क्री०, वि० [सं०] दे० 'अनार्यकार' ।
अनार्यकृ-पु० दे० 'अनार्य' । -**वाद्**-पु० दे० 'अनार्य' ।
अनार्य(रु)-पु० [सं०] कुदिन, दुरा दिन ।
अनार्यकृ-पु० दुरादि, अहित । वि० अविष्य, अहितकारी ।
अनार्य-वि० अशुभ चाहनेवाला, अपकारी ।
अनार्यता-वि० निर्धन; अलौकिक; असंभव ।
अनार्योनी-वि० स्त्री० न होनेवाली, असंभव; अलौकिक ।
 स्त्री० अनार्योनी बात ।
अनार्यकनी, **अनार्यकानी***-स्त्री० दे० 'अनार्यकानी' ।
अनार्यकमण-पु० [सं०] देशादिपर आक्रमण न करना ।
अनार्यकार-वि० [सं०] निराकार, आकारहीन; परमेश्वरका धक विशेषण ।
अनार्यकाल-पु० [सं०] दुर्मिष्ट । -**भूत**-पु० वह व्यक्ति जो भुखमरीसे बचनेके लिए चाकरी करता हो ।
अनार्यकाल-वि० [सं०] अपरदर्शक; आकाशमे भिन्न ।
अनार्यकृत-वि० [सं०] जो रोका न गया हो, अनिवारित; जिसकी देख-भाल न की गयी हो ।
अनार्यकृत-वि० [सं०] जो आक्रान्त या पीकित न हो ।
अनार्यकृता-स्त्री० [सं०] कंदकारि नामक पौधा ।
अनार्यकृत-वि० [सं०] न धेया हुआ; अस्पृष्ट ।
अनार्यकृत-वि० [सं०] न आया हुआ; अप्राप्त; अक्षात; आनेवाला; भावी; * अनादि; अपूर्व । अ० अचानक ।
 पु० भविष्यत्काल; एक ताल (संगीत) । -**विद्या**(रु)-पु० आनेवाले अनिरुद्धको पहलेसे मोचकर उसके निराकरणका उपाय करनेवाला; भविष्यके विषयमें सावधान, दूरदर्शी व्यक्ति ।
अनार्यतावाच-पु० [सं०] भावी कष्ट, रोग आदि ।
अनार्यतावार्त-स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका मासिक स्नाय आरम न हुआ हो, अरुक्ता ।
अनार्यतावेक्षण-पु० [सं०] दूरदर्शिता ।
अनार्यता-स्त्री० [सं०] न आना; अप्राप्ति; पहुंच न होना ।
अनार्यता-पु० [सं०] न आना; अप्राप्ति । वि० अनार्यत; जिस (संपत्ति) का क्रयपत्र या अधिकारपत्र न हो ।
अनार्यतामोपयोग-पु० [सं०] अधिकारपत्रके बिना संपत्तिका उपभोग ।
अनार्यता-वि० [सं०] दुर्गम, अगम्य, अप्राप्य ।
अनार्यता(मिन्)-वि० [सं०] न आनेवाला; अभविष्यत्; न लौटनेवाला ।
अनार्यता, **अनार्यता**-वि० [सं०] बिना धका । पु० साधु-सन्ध्यासी ।
अनार्यता-पु० [सं०] मगीतका एक ताल ।
अनार्यता-वि० [सं०] जो मंसा न गया हो ।
अनार्यता-पु० [सं०] किसी निर्दिष्ट या निषीरित कामका न करना; दे० 'अनार्यता' ।
अनार्यता-पु० [सं०] अयोग्य आचरण; दुराचरण, दुरादि; कुरीति । वि० अधिदिष्ट; अमर्द; विविध ।
अनार्यता(रिन्)-वि० [सं०] तुरे आचरणवाला, आचारहीन, कुचाली ।
अनार्य-पु० अन्न, नात्र ।

अनार्यता-वि० [सं०] जिसके लिए आज्ञा न दी गयी हो ।
-कारी(रिन्)-वि० देसा काम करनेवाला जिसके लिए आज्ञा न दी गयी हो ।
अनार्यकारी(रिन्)-वि० [सं०] आज्ञाका पालन न करनेवाला ।
अनार्यता-वि० [सं०] अक्षात; जो कुछ अवगत ज्ञात है उसमें कदा हुआ ।
अनार्यता-वि० [सं०] अक्षान, अकुशल ।
अनार्यता-वि० [सं०] धनहीन, दरिद्र ।
अनार्यता-वि० [सं०] आतपहीन, छायादार; ठंडा । पु० आतपका अभाव, छाया; ठंड ।
अनार्यता-वि० [सं०] अनुत्कंठिन; उदासीन; अक्षात; स्वस्थ, अरुण ।
अनार्यता(रु)-वि० [सं०] आत्मा या चैतन्यरहित, जड़; आध्यात्मिक नहीं, शारीरिक; जिसने अपनेपर नियंत्रण नहीं किया है । पु० आत्मभिन्न, जड़ पदार्थ, देहादि । -**रु**, -**वेदी**(रिन्)-वि० आध्यात्मिक ज्ञानमे रहित, अज्ञान ।
-धर्म-पु० शारीरिक धर्म । -**वाद्**-पु० अज्वात ।
अनार्यता-वि० [सं०] अयधार्म; क्षणिक; संसारका विशेषण (वै०) । -**दुःख**-पु० अज्ञानसे उत्पन्न दुःख; अवस्था ।
अनार्यता(रु)-वि० [सं०] असयमी ।
अनार्यता-वि० [सं०] अशारीरिक । पु० अपने परिवारके प्रति स्नेहका अभाव ।
अनार्यता-वि० [सं०] अनित्य; अन्तिम नहीं. सविनाश, पुनरावर्तक ।
अनार्यता-वि० [सं०] जिसका कोई मालिक या रक्षक न हो; अशाय, निराश्रय, दीन । पु० बिना माँ-बापका बच्चा; आश्रयहीन व्यक्ति । -**रु**-स्त्री० अनायास्य ।
अनार्यतानुसारी(रिन्)-वि० [सं०] दीनोंका सहायक ।
अनार्यता, **अनार्यता**-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ बिना माँ-बापके बच्चे आदि रहे जायें, यमीमस्थान ।
अनार्यता-पु० [सं०] आदरका अभाव; निरस्कार; एक अर्थात्-रूपकार जिसमे अधिक अच्छी लयनेवाली किसी अप्राप्त वस्तुको पाकर या देखकर प्राप्त वस्तुका अनार्यता किया जाय । वि० उदासीन; उपेक्षा करनेवाला ।
अनार्यता-पु० [सं०] उपेक्षा या तिरस्कारपूर्ण व्यवहार ।
अनार्यता-वि० दे० 'अनार्यता' ।
अनार्यता-वि० [सं०] आतिरहित; नित्य; परमेश्वरका एक विशेषण । -**निधन**-वि० जिसका आदि-अन न हो; शाश्वत; विष्णुका एक विशेषण । -**अप्राप्त**-वि० आदि, मध्य, अंत तीनोंमे रहित । -**सिद्ध**-वि० अनादि कालमे चला आनेवाला ।
अनार्यता-वि० [सं०] आदेश न दिया हुआ ।
अनार्यता-वि० [सं०] जिसका आदर न किया गया हो; तिरस्कृत ।
अनार्यता-वि० [सं०] न लेने योग्य, अग्राह्य ।
अनार्यता-पु० [सं०] आदेशका न होना । -**कर**-वि० जिसके लिए आज्ञा न दी गई करनेवाला ।
अनार्यता-वि० [सं०] जिसका आदि-अंत न हो । पु० शिव ।
अनार्यता-वि० [सं०] अनादि; न स्थाने योग्य ।

अनाद्यन्त-वि०, पु० [सं०] दे० 'अनाद्यन्त' ।

अनाधार-वि० [सं०] निरवर्तक, बेसहारा (आकाश, महा) ।

अनाधि-वि० [सं०] चितारहित ।

अनादृष्ट, अनादृश्य-वि० [सं०] अज्ञेय; अनिर्वाचित; पूर्ण, अक्षुण्ण ।

अनाना-सं० कि० मँगाना ।

अनानुपूर्व-पु० [सं०] निरन्तर क्रममें न आना ।

अनापद्-खी० [सं०] संकट वा दुर्दिनका न होना ।

अनाप-शानाश-पु० अन्तर्बन्ध, वेतुकी बकवास ।

अनापा-वि० बिना नापा हुआ; अपरिमित ।

अनाप्त-वि० [सं०] जो आप्त-आत्मीय, यथाभंगात्, विश्वसनीय या कुशल न हो; जो प्राप्त न हुआ हो । पु० अजनबी ।

अनाम(न्)-पु० [सं०] अज्ञ, बबाली ।

अनामक-वि० [सं०] दे० 'अनामा' । पु० मलमास; अज्ञ ।

अनामय-वि० [सं०] रोगरहित; स्वस्थ । पु० आरोग्य; विष्णु; शिव ।

अनामा, अनामिका-खी० [सं०] कानी और बिचली उगलियोंके बीचकी उंगली ।

अनामा(मन्)-वि० [सं०] नामरहित; अप्रसिद्ध । पु० मलमास; अनामिका ।

अनामिष-वि० [मं०] मांसरहित; प्रलोभनरहित; लाभरहित ।

अनामृत-वि० [मं०] अमर ।

अनायक-वि० [मं०] नायकहीन; अव्यवस्थित ।

अनाद्यन्त-वि० [मं०] अनियमित, अनिवारित; बे-सहारा; अप्रसिद्ध; मलम; जिसमें लंबाई न हो ।

अनाद्यन्त-वि० [मं०] जो दूसरेके वशमें न हो, अवशील, स्वाधीन ।

अनायास-पु० [मं०] आयास-श्रम, कठिनाईका अभाव; आलस्य; लापरवाही । अ० बिना प्रयास-परिश्रमके, आसानीसे ।

अनाद्युष्य-वि० [मं०] दीर्घ जीवनके लिए वायक (जनि भोजन आदि) ।

अनारब्ध-पु० [सं०] आरम्भका अभाव । वि० आरम्भरहित ।

अनार-पु० एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़; एक आतिश-बाजी; * अन्याय; अधम (दुर्देल०); दो छप्पड़ोंकी जोड़ने-वाली रस्सी । -दाना-पु० अनारके सुखाये हुए दाने ।

अनारत्न-वि० [सं०] अनवरत; निरन्तर, स्थायी । पु० अविच्छिन्न ।

अनारब्ध-वि० [मं०] आरम्भ करनेके अयोग्य ।

अमारी*-वि० अनारके रंगका, लाल; दे० 'अनाड़ी' । पु० लाल आँखोंवाला कन्तर; एक पक्षमा ।

अनारोग्य-वि० [मं०] असव्य; स्वास्थ्यके लिए हानिकारक । पु० बीमारी । -कर-वि० अस्वास्थ्यकर ।

अनाज-पु० [सं०] कपट; कुटिलता; रोग । वि० कुटिल; बेवैना ।

अनाज-पु० [मं०] रजोधर्मका अवरोध । वि० असाधनिक, समयमें पूर्व, वै-औमिस ।

अनाज-खी० [मं०] अजस्रत्व ।

अनाज-पु० [सं०] जो आर्य न हो, शूद्र, म्लेच्छ । वि० असव्य, अप्रतिष्ठित, नीच; अनायोचित; (यह देश) जहाँ आर्य न हो । -कर्म(मिन्)-वि० ऐसा कार्य करनेवाला जो अनायोचित न हो । -ज-पु० अगुरु वृक्ष । वि० अनार्य या शूद्रमें उत्पन्न । -लुह-वि० अनायोचित । -सिक्क-पु० चितारवा ।

अनाजक-पु० [सं०] अगुरु काष्ठ ।

अनाज, अनाज-वि० [सं०] जो आर्य-कृषिकृत न हो; अवैदिक ।

अनाजक-वि० [सं०] बेसहारा अवलम्बहीन । पु० अवलम्बका अभाव ।

अनाजक-वि० [सं०] दे० 'अनाजक' ।

अनाजकी-खी० [सं०] शिवका एक बाध (वीणा ?) ।

अनाजकुका, अनाजकुका-खी० [सं०] रजस्वला स्त्री ।

अनाजाप-वि० [सं०] मौन; मितभाषी, अधिक न बोलने-वाला । पु० मौन; कम बोलना ।

अनाजोचित-वि० [मं०] जो देखा न गया हो; अविवेचित, विसपर भली भाँति विचार न किया गया हो ।

अनाजति-खी० [मं०] न लौटना; फिर जन्म न लेना, मोक्ष ।

अनाजर्षण-पु० [सं०] अवर्षण, सूखा ।

अनाजयक-वि० [मं०] गैरजकरी, जिसकी आवश्यकता न हो ।

अनाविद्ध-वि० [मं०] न विधा हुआ; अनाहत, जिसमें चोट न पहुँची हो ।

अनाविद्ध-वि० [सं०] अप्रसिद्ध; स्वच्छ; स्वास्थ्यकर (देश) ।

अनावृत्त-वि० [सं०] जो दूकान न हो, खुला ।

अनावृत्त-वि० [मं०] जो लौटा न हो; जो दोहराया न गया हो ।

अनावृत्ति-खी० [मं०] न लौटना; फिर जन्म न होना, मोक्ष ।

अनादृष्टि-खी० [मं०] अवर्षण, सूखा ।

अनावेदित-वि० [मं०] जिसकी विज्ञप्ति न की गयी हो, जो जनाया न गया हो ।

अनाश-वि० [सं०] निराश; जिसका नाश न हो; जो नष्ट न किया गया हो; जीवित ।

अनाशक-वि० [सं०] भोजनादिके भ्रान्तदत्ते वंचित; अविनश्वर; दुराई, लुकमान या नाश न करनेवाला । पु० उपवास ।

अनाशकायन-पु० [सं०] ब्रह्मचर्यावस्था ।

अनाशस्त-वि० [सं०] अप्रशंसित ।

अनाशा-खी० [सं०] निराश ।

अनाशी(मिन्)-वि० [सं०] अनश्वर (आत्मा, महा) ।

अनाशु-वि० [सं०] अनश्वर; अन्यापक; तेज नहीं, सुख ।

अनाश्व-वि० [सं०] अनश्वर ।

अनाश्वमी(मिन्)-वि० [सं०] जो किसी आश्रममें न हो; आश्रमधर्मका अनुसरण न करनेवाला ।

अनाश्व-वि० [सं०] आश्वरहित, बेसहारा ।

अनाश्रित-वि० [मं०] जो दूसरेपर आश्रित न हो, स्वाधीन ।

अनाश्व-वि० [मं०] नाशिकारहित ।

अनासक्त-वि० [सं०] आसक्तिरहित ।
अनासक्ति-स्त्री० [सं०] आसक्तिका अभाव ।
अनासादित-वि० [सं०] अनास; अनाकांत; अपठित; अस्थितहीन । -**विग्रह**-वि० जिसे मुक्त करनेका अवसर न मिला हो ।
अनासाध-वि० [सं०] अप्राप्य ।
अनासिक-वि० [सं०] बिना नाकका, नकटा ।
अनास्था-स्त्री० [सं०] आस्थाका अभाव, अश्रद्धा; अनादर; उदासीनता । [वि० 'अनास्थ'-उदासीन ।]
अनाजाब-वि० [सं०] हेयरहित ।
अनास्वाद-वि० [सं०] बिना स्वादका, विरम । पु० स्वादका अभाव, नीरसता ।
अनास्वादित-वि० [सं०] जिसका स्वाद न लिया गया हो ।
अनाह-पु० [सं०] पेट फूलना, अकरा ।
अनाहक-अ० नाहक, व्यर्थ- 'राहु भयो यह आनि अनाहक'-धन० ।
अनाहत-वि० [सं०] आघातरहित; कोरा; जो आघातमें उत्पन्न न हुआ हो; अगुणित । पु० हठयोगके अनुसार शरीरके ६ चक्रोंमेंसे एक जिसका स्थान हृदय बताया जाता है । -**नाद**-**शाब्द**-पु० योगियोंको सुनाई देनेवाली एक आंतरिक ध्वनि; ओम्-ध्वनि ।
अनाहार-पु० [सं०] आहारका अभाव या त्याग । वि० निराहार; जिसमें कुछ न खाया जाय । -**मार्गणा**-स्त्री० जैनियोंका एक व्रत ।
अनाहार्य-वि० [सं०] अक्रुशिम; अमोघ्य ।
अनाहिताग्नि-वि० [सं०] जिसने विषिष्ट अग्न्याधान न किया हो; अग्निहोत्र न करनेवाला ।
अनाहृत-वि० [मं०] बिन-डुलाया, अनिमग्नित ।
अनिष्ट-वि० दे० 'अनिष्ट' ।
अनिष्टनीय-वि० [मं०] जो निदाके योग्य न हो, निदोष ।
अनिदित-वि० [मं०] निद्राघ, उत्तम, निदारहित ।
अनिष्ट-वि० [मं०] निद्राघ; प्रशस्तनीय; सुंदर ।
अनिमार्ग-वि० अन्यायी ।
अनिकेत-वि० [सं०] जिसका कोई नियत वास्तव्य न हो; स्तम्भासी; खानाबदोश ।
अनिक्षिप्त संन्य-पु० [सं०] तोषी या कार्याभारमें मुक्त की हुई सेना ।
अनिष्ठ-पु० [सं०] ईश जैसा एक पौधा ।
अनिगीर्ण-वि० [मं०] जो निगला न गया हो; जो छिपा न हो, व्यक्त ।
अनिग्रह-पु० [सं०] बधन, रोक या टंक्का अभाव; तर्कमें हार न मानना । वि० अनियंत्रित; अजेय ।
अनिच्छ, **अनिच्छक**, **अनिच्छु**, **अनिच्छुक**-वि० [मं०] इच्छारहित, न चाहनेवाला ।
अनिच्छा-स्त्री० [मं०] इच्छाका अभाव; अरुचि ।
अनिच्छित-वि० [सं०] जो न चाहा गया हो ।
अनिजक-वि० [मं०] अपना नहीं, दूसरेका ।
अनित-वि० [मं०] रहित, वंचित; * अनित्य ।
अनित्य-वि० [मं०] जो मरना न रहे, नश्वर, क्षणस्थायी, अनियमित; अमाधारण; अस्थिर । -**कर्म**(न)-पु०, -**क्रिया**

-**स्त्री**- सामयिक कार्य (यथादि) । -**वृक्ष**, -**वृक्षक**, -**द्वित्रि**-पु० वह लक्षका जो गोद लिये जानेके लिये अम्बावी या आरंभिक रूपमें दिया जाय । -**भाष**-पु० क्षणभंगुरता । -**सम**-पु० जाति या अमृत उत्तरके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।
अनिदान-वि० [सं०] कारणरहित ।
अनिद्र-वि० [मं०] जिसे नींद न आवे ।
अनिद्रा-स्त्री० [मं०] नींद न आनेकी बीमारी ।
अनिद्रित-वि० [सं०] जो सोया न हो, जाग्रत ।
अनिष्ट-वि० [सं०] अपराधृत, अनियंत्रित ।
अनिप-पु० सेनापति ।
अनिपात-पु० [मं०] अपतन; जीवनका बना रहना ।
अनिपुण-वि० [सं०] अकुशल, अधकचरा ।
अनिबद्ध-वि० [मं०] अस्तबद्ध, बे-लगाव । -**प्रकाप**-पु० बे-मिर-चैरकी बात ।
अनिष्ट-वि० [मं०] निजी नहीं, सार्वजनिक; जो छिपा न हो; धृष्ट; अस्थिर । -**संधि**-स्त्री० विनी राजाकी अत्यंत उर्वरा भूमिको खरीद केनेके इच्छुक राजाकी वह भूमि देकर की हुई संधि ।
अनिभ्य-वि० [मं०] धनहीन, दरिद्र ।
अनिमग्नित-वि० [मं०] बिना बुलाया हुआ, अनाहृत ।
अनिमक-पु० [मं०] मेटक; कौयल; अन्नर; मधुमक्खी; पक्षकेदार; मधुपका पेड़ ।
अनिमा-स्त्री० दे० 'अणिमा' ।
अनिमिष-वि० [मं०] कारणरहित, अहेतुक, आकस्मिक । पु० उचित कारणका न होना; अपशकुन । अ० बिना किसी उचित कारणके । -**निराक्रिया**-स्त्री० अपशकुन या अनिष्टमूलक किस्साका निवारण । -**किंगनास**-पु० अन्वका एक रोग जिसमें मनुष्य अंधा हो जाता है ।
अनिमिषक-वि० [मं०] व्यर्थ, प्रयोजनरहित ।
अनिमिष, **अनिमेष**-वि० [मं०] जिसको पटक न गिरे, स्थिर-रष्टि; जागरूक; सुला हुआ, विकसित । अ० बिना पटक गिरावे, एकटक । पु० देवता; मछली; महाकाल ।
-रष्टि, -**नयन**, -**लोचन**-वि० एकटक देखनेवाला ।
अनिमिषाक्ष-पु० [मं०] वह व्यक्ति जो एकटक देख रहा हो ।
अनिमिषाचार्य-पु० [मं०] देवगुरु, बृहस्पति ।
अनिमिषीय-वि० [मं०] देवता-व्यवधी ।
अनिमेषी-अ० निमर ।
अनिमंत्रित-वि० [मं०] प्रतिबंधरहित; स्वच्छद; निरकुश । -**शामन**-पु० एकतंत्र या निरकुश राज्य ।
अनियत-वि० [मं०] अनिश्चित; अनियमित; अस्थिर; असौम्य; अमाधारण; आकस्मिक; कारणरहित; जो बंधा हुआ न हो । -**धुंस्का**-स्त्री० व्यभिचारिणी । -**हृत्ति**-वि० बंधा काम न करनेवाला; जिसको बाध नियम न हो ।
अनियतगमा(भन)-वि० [मं०] जिसका मन वशमें न हो, चंचलप्रकृति ।
अनियम-पु० [मं०] नियमका अभाव; व्यवस्थाका अभाव; बेकायदगी; निश्चित आदेशका न होना; सदेह; अविहित कर्म । वि० नियमहीन, अनियमित ।
अनियमित-वि० [मं०] नियमरहित; नियमविरुद्ध,

केकायदा ।

अनिवार्य—**अनिवार्य**—पुं० दे० 'अन्वार्य' ।

अनिवार्य—वि० अनिवार्य, पैना,—'जाहि क्यो सोई पै जाने प्रेम बान अनिवार्य'—धुं० कंदील; बाँका, पहाड़ुर,—'बम्पतिराय बडे अनिवार्य'—छत्र० ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जो नियुक्त न किया गया हो, जो अधिकारसंपन्न न हो । पु० विचारप्रतीका वह पदार्थ जिसकी नियमानुसार नियुक्ति न हुई हो और जिसे अपना मत देनेका अधिकार न हो ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] प्रयोगका अन्वार्य; अनुपयुक्त पद ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] निवारण न करना ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका सम्यक् निर्वाचन या न्यायता न हुई हो; अस्पष्ट ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके; बेरोक; स्वच्छंद । पुं० कृष्णके पौत्र, प्रद्युम्नके पुत्र; जेदिया, पुत्रचर ।—पथ—पुं० आकाश ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] निर्णयका अभाव, अनिश्चय । [वि० 'अनिर्णीत'—अनिश्चित ।]

अनिवार्य, **अनिवार्य**—वि० [सं०] जिसका दशाह—जनन या मरण—संधी अशोकके दम दिन—न हुआ हो ।

अनिवार्य, **अनिवार्य**—वि० [सं०] जिसका निर्देश न किया जा सके ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका निर्देश न किया गया हो; न बताया हुआ, भनादिष्ट ।—भोग—पुं० किसीकी विली वस्तुकी बिना उसकी आशयके काममें लाना ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] निश्चिन नियम या आदेशका अभाव ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अनिश्चिन ।

अनिवार्य—वि० [सं०] बधनरहित, स्वच्छंद ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अधिक नहीं, थोड़ा; हलका; अनवर्तमान ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] मंद न स्थाना ।

अनिवार्य—स्त्री० [सं०] गृहका नामक ओषधि ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अविवारित, अविविचिन ।

अनिवार्य—वि० [सं०] निर्वचनके अयोग्य; जिसके लक्षण आदि न बताये जा सकें; वर्णनके अयोग्य । पुं० माया, अज्ञान; जगत् ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका निर्वाचन न हो सके, जो चुना न जा सकें; दे० 'अनिर्वाचनीय' ।

अनिवार्य—वि० [सं०] न हुआ हुआ; अप्रसंगित ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] पूरा न होना, अनिष्पत्ति; अस्मात्ति; अपर्याप्त आय ।

अनिवार्य—वि० [सं०] निर्वाहके योग्य नहीं ।—पण्य—पुं० वह वस्तु जिसका राज्य या नगरमें लाया जाना मना हो ।

अनिवार्य—वि० [सं०] निर्वेदरहित; अदुःखिन ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अज्ञात ।

अनिवार्य—वि० [सं०] स्त्रिः; अज्ञात, दुःखी ।

अनिवार्य, **अनिवार्य**—स्त्री० [सं०] विना; बेवैनी; निर्धनता ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] विषादका अभाव; स्वावलम्बन ।

अनिवार्य—वि० [सं०] दुःखित; बे-री-जग्रा ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] बाहु, भवन, हवा; (इसके साथ येद मे है—आवर, निवर, बंदर, संवर, निवर, प्रवर, परिवर); पवन देव; अष्ट वस्तुओंमेंसे एक; वातरोग; पक्षाघात; ४९ पवनोंमेंसे एक; शरीरका एक तत्त्व; 'वृ' अक्षर; स्वाति नक्षत्र; विष्णु; ४९वीं सप्तम्या; साग्रीनीका पक्ष ।—कुमार—पुं० हनुमान्; शीम; देवताओंका एक वर्ग (त्रैलोक्य) ।

—ह्र—वि० बातअर्थ विकार दूर करनेवाला ।—प्रव—पुं० विगीतक वृक्ष ।—पर्यव—पर्याय—पुं० आँखका एक रोग जिसमें एकके सूख जाती है ।—प्रकृति—वि० बातकी प्रकृतिवाला । पुं० क्षति ग्रह ।—व्याधि—स्त्री० आंतरिक बातअर्थ विकार ।—सख—सारथि—पुं० अश्व ।—हा (हव)—हव—वि० दे० 'अनिलवृ' ।

अनिवार्य—वि० [सं०] विश्राम या विश्राम-स्थानसे रहित ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] अंगारपुष्प, ईशुदी ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] हनुमान्; शीम ।

अनिवार्य—वि० [सं०] दे० 'अनिलवृ' ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] वातरोग ।

अनिवार्य, **अनिवार्य**—वि० [सं०] सौंप । वि० हवा पीकर रहनेवाला ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अनुभवहीन ।

अनिवार्य—वि० [सं०] स्थिर; अपरिवर्त्याज्य ।

अनिवार्य—वि० [सं०] न लौटनेवाला; मुस्तर; पीठ न टिकानेवाला, वीर; विष्णु और परमेश्वरका एक विशेषण ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अनिवारित; जो रोक न गया हो ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका निवारण न हो सके; अटल; अत्यावश्यक ।

अनिवार्य—अ० [सं०] निरंतर, लगातार ।

अनिवार्य—पुं० [सं०] निश्चयका अभाव; स्तेह ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसका निश्चय न हुआ हो या न हो; कक्षा; मंदिर ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जो वजित या अविहित न हो ।

अनिवार्य—स्त्री० [सं०] पराजित औरत ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जो इष्ट न हो; अवांछित; हानिकार; बुरा । पुं० अहित; हानि; अमंगल; विपत् ।—कर—वि० हानिकार ।—प्रह—पुं० बुरा या हानिकार ग्रह ।—प्रकृतिक—वि० राष्ट्रदोही, बानी ।—प्रसंग—पुं० अवांछित घटना; बुरे विषय या तर्कका सन्ध ।—फल—पुं० बुरा परिणाम ।

—शंका—स्त्री० बुराई या अहितकी आशंका ।—हेतु—पुं० बुरा लक्षण ।

अनिवार्य—पुं०, **अनिवार्य**—स्त्री० [सं०] अनिष्टकी प्राप्ति; अवांछित घटना ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अनिष्ट या बुराईका सूचक ।

अनिवार्य—स्त्री० [सं०] अपूर्णता; असमाप्ति ।

अनिवार्य—वि० [सं०] अपूर्ण, असमाप्त ।

अनिवार्य—अ० अनिष्ट, लगातार, अहित—'कृतकथा आनंद-रसायन । गाथा अनिष्ट व्यास दीपायन'—धन० ।

अनिवार्य—वि० [सं०] जिसने आज्ञा या अधिकार न किया हो; जिसके उपयोग या व्यवहारकी आज्ञा न ली

गयी हो।

अभिव्यक्तशब्दकोश (कृ)-पु० [सं०] बरोहर रखनेवालेकी भाषा स्थिते बिना बरोहरको उपयोगमें खनेवाला व्यक्ति।
अविस्तीर्ण-वि० [सं०] जो पार न किया गया हो; जिससे छुटकारा न मिला हो; जिसका उपर न दिया गया हो।
अविस्तीर्णाभिधाय-पु० [सं०] वह अभिव्यक्त जिसने आरोपको असत्य प्रमाणित कर उससे छुटकारा नहीं पाया है।

अनी-खी० नौक, कोर; लगने, जुबनेवाली बात; स्थानि; कुसमय; नावकी गलती; जूतेकी नौक; पानीमें निकली हुई जमीनकी नौक; समूह; सेना।-**वार-वि०** तेज नौकवाला।
पु०-का हाथ,-की चोट-सामनेकी चोट।-पर कनी घाटना-स्थानिके कारण कनी नाटकर आत्महत्या करना।

अनीक-पु० [सं०] सेना; समूह; पक्ष; सैन्यपक्ष; कूच; युद्ध; प्रकल; कांति; विनारा। * **वि०** जो नौक अर्थात् अच्छा न हो, खराब।

अनीकिनी-खी० [सं०] सेना; अक्षौहिणी वा पूरी सेनाका दसवाँ भाग-२१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०५१५ पैदल; कमलिनी, नरिनी।

अनीठ*-वि० अनिष्ट; अप्रिय; बुरा।

अनीठि*-खी० बुराई; क्रोध।

अनीढ-वि० [सं०] बिना घोंसलेका; आश्रयहीन; अदारीर; अधिका एक विशेषण।

अनीत*-खी० अन्धकार, दुर्गन्धहार; दुष्कर्म।

अनीति-खी० [सं०] नीतिका उल्टा; अनैतिकता; अन्याय, अनुचित व्यवहार; बुराचार; रीति-संकटका अभाव।

अनीयित-वि० [सं०] अनमिलपित, अनिच्छित।

अनीलबाजी (जिन्)-पु० [सं०] सनेद घोड़ोंवाला, अजुन।

अनीश-वि० [सं०] जिसका कोई स्वामी या नियन्ता न हो; प्रधान; असमर्थ, अधिकारहीन; अस्तित्व। पु० ईश्वर-से भिन्न-जीव या माया; विष्णु।

अनीशा-खी० [सं०] असहायावस्था, दीनता।

अनीश्वर-वि० [सं०] जिसके ऊपर कोई न हो; ईश्वर-रहित ईश्वरको न माननेवाला; असमर्थ; समारका एक विशेषण (मा०)।-**वाद-पु०** ईश्वरका अस्तित्व न मानना; नास्तिक मत।-**बादी (विन्)-वि०** ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला; नास्तिक।

अनीस*-वि० अनाथ; दे० 'अनीश'।

अनीसून-पु० [सं०] एक प्रकारकी सीढ़ी।

अनीह-वि० [सं०] इच्छारहित; उदासीन; बेपरवाह। पु० अयोध्याका एक राजा।

अनीहा-खी० [सं०] अनिच्छा; उदासीनता; निश्चेष्टता।
अनु-उप० [सं०] शब्दोंके पहले मिलकर यह पीछे (अनुचर), समान (अनुवच), साथ (अनुपान), बारंबार (अनुशीलन), प्रत्येक (अनुदिन), ओर, योग्य, सुवासिब, हीन, गीण आदि अर्थोंका बोधन करता है। पु० वयाति-का एक पुत्र; * दे० 'अनु'। * अ० अव; हाँ; ठीक।

अनुकंपन-वि० [सं०] दयालु, हमदर्द। पु० दया, महा-

जुनूति।

अनुकंपा-खी० [सं०] दया, हमदर्दी।

अनुकंपित-वि० [सं०] जिसपर अनुकंपा की गयी हो।

अनुकंठ्य-वि० [सं०] दयनीय, दयाका पात्र।

अनुक-वि० [सं०] लोभुष; कामुक; आश्रित।

अनुकथन-पु० [सं०] पीछे कहना; वर्णन; बातचीत।

अनुकरण-पु० [सं०] नकल; किसीकी देखादेखी करना।

अनुकरणीय-वि० [सं०] अनुकरण करने योग्य।

अनुकर्ता (रुं)-पु० [सं०] नकल करनेवाला; अभिनेता। [खी० 'अनुकर्त्री']।

अनुकर्म (रुं), अनुकार-पु०, अनुकिया-खी० [सं०] नकल।

अनुकर्ष, अनुकर्षण-पु० [सं०] आकर्षण, खिंचाव; देवताका आवाहन; रथका तला; कर्तव्यका विलम्बे पालन।

अनुकल्प-पु० [सं०] गौण विधान; मुख्य वस्तुके अभावमें काममें लायी जानेवाली तत्सदृश वस्तु (जैसे-जौके अभावमें गेहूँ)।

अनुकांक्षा-खी० [सं०] इच्छा।

अनुकांक्षित-वि० [सं०] चाहा हुआ, इच्छित।

अनुकांक्षी (क्षिन्)-वि० [सं०] चाहनेवाला, इच्छुक।

अनुकाम-वि० [सं०] इच्छानुकूल; इच्छुक; कामुक। पु० उचित इच्छा।

अनुकामी (मिन्), अनुकामीन-वि० [सं०] अपने इच्छा-नुसार कार्य करनेवाला।

अनुकारी (रिन्)-वि० [सं०] नकल या देखादेखी करनेवाला; आशकादी।

अनुकाल-वि० [सं०] समयोचित; मामयिक।

अनुकालीन-पु० [सं०] कथन; प्रकाशन।

अनुकंचित-वि० [सं०] झुका या झुकाया हुआ।

अनुकूल-वि० [सं०] मेल रखनेवाला, सुआफिक; सहायक; प्रसन्न। पु० विवाहिता पक्षमें अनुरक्त रहनेवाला नायक; विणुका एक नाम (सर्वप्रिय), कृपा; अनुग्रह; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें प्रतिकूल वस्तुसे मनोऽनुकूल वस्तुकी मिद्धि दिखायी जाती है। * अ० और, अभिमुख।

अनुकूलना*-अ० कि० प्रसन्न होना; सुआफिक होना।

अनुकूला-खी० [सं०] एक वर्णरुद्ध; रंती शृंख।

अनुकूल-वि० [सं०] जिसको नकल की गयी हो।

अनुकृति-खी० [सं०] नकल; देखादेखी; एक काव्यालंकार जिसमें एक वस्तुका किसी अन्य कारणसे दुमरीके अनुरूप हो जाना दिखाया जाय।

अनुकृष्ट-वि० [सं०] आकृष्ट, खिंचा हुआ।

अनुक-वि० [सं०] अकथित, न कहा हुआ।

अनुक्ति-खी० [सं०] न बोलना, अनुकथित बात।

अनुकंदन-पु० [सं०] उत्तरमें क्रान करना।

अनुककच-वि० [सं०] जिसमें दाँत बनाये गये हों (आरा ह०)।

अनुक्रम-वि० [सं०] क्रमबद्ध। पु० उचित क्रम, सिल-सिला; एकके बाद एक होनेकी क्रिया; दे० 'अनुक्रमणी'।

अनुक्रमण-पु० [सं०] क्रमपूर्वक आगे बढ़ना; अनुगमन।

अनुक्रमणिका, अनुक्रमणी-की० [सं०] विषयसूची; शब्दसूची।

अनुकांति-वि० [सं०] पठित; क्रमपूर्वक किया हुआ; उचित-चित, परिगणित।

अनुकोष-पु० [सं०] दया; अनुकंपा।

अनुक्षण-अ० [सं०] प्रतिक्षण, लगातार।

अनुकषासा(सु)-पु० [सं०] पता लगानेवाला।

अनुकषाति-की० [सं०] पता लगाना।

अनुग-वि० [सं०] पीछे चलनेवाला (समासमें)। पु० अनुचर; साथी।

अनुगत-वि० [सं०] अनुगामी; अनुकूल, उपयुक्त; अर्थात्। पु० सेवक; खुशामद, मनुष्यार।

अनुगतार्थ-वि० [सं०] मिलने-जुलने अर्थका।

अनुगति-की० [सं०] अनुगमन; अनुकरण।

अनुगम, अनुगमन-पु० [सं०] पीछे चलना; नकल करना; सहमरण; अर्थबोध; समझना।

अनुगमित-पु० [सं०] गवनें हत्यादिकी प्रतिध्वनि।

अनुगामी-पु० [सं०] गोप, गोरक्षक।

अनुगामी(विन्)-वि० [सं०] हमरेके ग्रन्थोंको दुहराने, प्रतिध्वनित करनेवाला।

अनुगामी(विन्)-वि० [सं०] पीछे चलनेवाला, अनु-यायी; साथी; आशाकारी। [की० 'अनुगामिनी'।]

अनुगामक-वि० [सं०] आरंभ पीछे चलनेवाला, बराबर पीछे चलनेवाला।

अनुगमिति-की० [सं०] एक मात्रिक छंद।

अनुगमिता-की० [सं०] महाभारत-अध्यायपूर्वके १६ से १२ तकके अध्याय।

अनुगुण-वि० [सं०] समान गुणवाला; अनुकूल, अनुगम। १० अर्थोत्कारका एक, भेद जिसमें किसी वस्तुमें पहलेमे विद्यमान गुणका अन्य वस्तुकी संगति या समगमि बद्ध जाना दिखलाया जाय, स्वाभाविक विशेषता।

अनुगुप्त-वि० [सं०] छिपाया हुआ; रहित।

अनुगृहीत-वि० [सं०] जिसपर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत, गृहस्थानमद।

अनुग्रह-पु० [सं०] कृपा, प्रसाद; राज्यकी कृपासे प्राप्त महायना या सुभिता; सेनाके पृष्ठभागकी रक्षा करनेवाला दल; * अनिष्टनिवारण।

अनुग्रही(विन्)-वि० [सं०] बाजीगरीमें कुशल।

अनुग्रासक-पु० [सं०] कौर, नेवाला।

अनुग्राहक, अनुग्राही(विन्)-वि० [सं०] अनुग्रह करनेवाला, मेहरबान।

अनुग्राह्य-वि० [सं०] अनुग्रहका पात्र।

अनुग्रह्य-पु० [सं०] संबंध स्थापित करना; परस्पर मिलाना।

अनुघात-पु० [सं०] विनाश।

अनुचर-पु० [सं०] पीछे चलनेवाला; नौकर, टहलुआ; साथी। [की० 'अनुचरी'।]

अनुचारक-पु० [सं०] अनुचर। [की० 'अनुचारिका'।]

अनुचारी(विन्)-वि० [सं०] पीछे चलनेवाला। पु० नौकर, अनुचर।

अनुचित-पु० अनुचिता-की० [सं०] सोचना; याद करना; सतत चिंतन। [वि० 'अनुचितित'।]

अनुचित-वि० [सं०] नामुनासिध, बेना; पुरा।

अनुच्छिन्नि-की० पु० [सं०] कटकर अलग न होना; नाश न होना, अनवरता।

अनुच्छिन्न-वि० [सं०] जो जुड़ा न हो, अनुत्त; शुद्ध।

अनुच्छेद-पु० [सं०] दे० 'अनुच्छिन्नि'; प्रसार, वैराग्य। **अनुच्छेद-अ०** दे० 'अनुक्षण'।

अनुज, अनुजात-वि० [सं०] पीछे जनमा हुआ। पु० छोटा भाई; प्रपौष्टीक लगा, स्थलपथ।

अनुजम्मा(म्बन्)-पु० [सं०] दे० 'अनुज'।

अनुजा, अनुजात-की० [सं०] छोटी बहन; भावमाणा लता।

अनुजीवी(विन्)-वि० [सं०] किसीके सहारे जीनेवाला; आश्रित। पु० सेवक।

अनुज्ञप्ति-की० [सं०] दे० 'अनुज्ञापन'।

अनुज्ञा-की० [सं०] अनुमति, स्वीकृति, आज्ञा; एक काय्यालंकार जहाँ अच्छे गुणकी कालसासे दोषवाली वस्तुकी भी इच्छा की जाय।

अनुज्ञात-वि० [सं०] अनुमति-प्राप्त; आदिष्ट। -कथ-पु० सरकारकी ओरसे दिया गया कुछ वस्तुओंकी बेचने का ठेका।

अनुज्ञात-पु० [सं०] अनुमति, स्वीकृति।

अनुज्ञापक-पु० [सं०] अनुमति या आज्ञा देनेवाला। [की० 'अनुज्ञापिका'।]

अनुज्ञापन-पु० [सं०] आज्ञा देना; अनुमति या अवि-कार देना।

अनुज्येष्ट-वि० [सं०] सबसे बड़ेसे छोटा।

अनुत्तर-वि० [सं०] अनुताप-युक्त; रंजीदा, खिन्न।

अनुत्तर-पु० [सं०] नाव आदिका भाड़ा, किराया।

अनुत्तर-पु० [सं०] इच्छा; ध्यास; मक्ष; मद्यपान या पान-पात्र।

अनुत्तरण-पु० [सं०] मद्यपान या उसका पात्र।

अनुताप-पु० [सं०] खेद, रज; पछतावा; जलन, ताप।

अनुतापन-वि० [सं०] खेद उत्पन्न करनेवाला।

अनुत्क-वि० [सं०] जो चितित या खिन्न न हो, प्रसन्न।

अनुत्तम-वि० [सं०] सबसे अच्छा; सबसे अच्छा नहीं। पु० शिव; विष्णु।

अनुत्तर-वि० [सं०] निरुत्तर; प्रधान, सर्वोत्तम; स्थिर; पुच्छ; दक्षिणी। पु० उत्तरका अभाव; जैन-देवताओंका एक वर्ग।

अनुत्तरवाची(विन्)-वि० [सं०] जो अपना उत्तरदायित्व न समझे, कर्तव्यपालन और जिम्मेदारीका खयाल न रखे।

अनुत्तरित-वि० [सं०] जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अनुत्तान-वि० [सं०] चित नहीं, पट, सीनेके बल छेदा हुआ।

अनुत्ताप-पु० [सं०] रौंदोंके अनुसार दस छेदोंमेंसे एक।

अनुत्तीर्ण-वि० [सं०] जो परीक्षामें उत्तीर्ण (सफल) न हो सके।

अनुत्थाप-पु० [सं०] उत्थानका अभाव, चेष्टाका अभाव। [वि० 'अनुत्थित'।]

अनुप्रास-खी० [सं०] अक्षरलता; उत्पत्तिका अभाव ।
-सम-पुं० जाति वा असद्व-उत्तरके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जो अक्षरक उत्पन्न न हुआ हो ।
अनुप्रास-वि० [सं०] जो पैदा न हुआ हो; जो पूरा न हुआ हो ।

अनुप्रास, अनुप्रास-पु० [सं०] उत्पत्तिका अभाव ।
अनुप्रास-वि० [सं०] जो उत्पन्न न करे वा जिससे उत्पन्न न हो ।

अनुप्रास-पु० [सं०] चेष्टा या प्रयासका अभाव; संकल्प-
भाव । वि० जिसमें संकल्पकी धृति न हो; उत्साहहीन ।

अनुप्रास-वि० [सं०] औत्सुक्यवरहित; शांत ।

अनुप्रास-पु० [सं०] दृष्टीभाव, घमट न होना ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जलहीन (मरुभूमि); अल्प जलवाला;
जिसे कोई पानी देनेवाला न हो ।

अनुप्रास-वि० [सं०] ऊँचा नहीं; कीमल; कमजोर; निम्नोच्च ।

अनुप्रास-वि० [सं०] स्वीकृत; माफ किया हुआ; लौटाया
हुआ ।

अनुप्रास-वि० [सं०] पगली कमरवाला; क्षीण, पतला ।

अनुप्रास-पु० [सं०] निरीक्षण, पर्यवेक्षण ।

अनुप्रास-वि० [सं०] उदात्तका उलट, छोटा, नीचा । पु०
नीचा स्तर ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अदाना; कंजूस; स्वीर्ण-हृदय; बहुत
उदार; जिसकी पक्षी मली या अनुगमन करनेवाली हो
(अनु+दाता) ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अवधित; अवधानीय; निश्चय; जो
उचित वा प्रकट न हुआ हो ।

अनुप्रास, अनुप्रास-अ० [सं०] प्रतिदिन ।

अनुप्रास-खी० [सं०] अनुकूल दृष्टि । वि० अनुकूल दृष्टि
रखनेवाला ।

अनुप्रास-वि० [सं०] विनीत; शिष्ट; सौम्य ।

अनुप्रास-पु० [सं०] न हटना; प्रमाणित न करना ।

अनुप्रास-पु० [सं०] बैठकारा न करना, हिस्सा न लेना;
न हटना ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अविसक्त; अक्षत; अप्रमाणित, जिसकी
स्थापना न की गयी हो ।

अनुप्रास-वि० [सं०] नरम स्थाववाला, अधृष्ट; निरहंकार,
सौम्य ।

अनुप्रास-वि० [सं०] दे० 'अनुपम' ।

अनुप्रास-पु० [सं०] उद्यमका अभाव । वि० उद्यम न करने-
वाला; आलसी ।

अनुप्रास-वि० [सं०] उद्यम न करनेवाला, आलसी ।
अनुप्रास-पु० [सं०] उद्योगका अभाव; निश्चेष्टता । वि०
निलोभी, आलसी ।

अनुप्रास-वि० [सं०] उद्योग न करनेवाला;
निष्क्रिय; उदासीन ।

अनुप्रास-पु० [सं०] संगीतमें एक ताल, इतका आधा । वि०
अनुगत, अनुपातित ।

अनुप्रास-पु० [सं०] अपरिणय; विर-कौमार्य ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जिसका मन शांत हो, आशंका,
चिंता आदिसे मुक्त ।

चिंता आदिसे मुक्त ।

अनुप्रास-पु० [सं०] अश, आशंका आदिका अभाव । वि०
दे० 'अनुप्रास' ।

अनुप्रास-पु० [सं०] अनुसरण; चित्तन; अनुसंधान;
सफाई; किसी स्त्रीको पानेका प्रयत्न करना ।

अनुप्रास-पु० [सं०] चित्तन, ध्यान ।

अनुप्रास-पु० [सं०] विनय, प्रार्थना, मनान; अनुशासन ।

अनुप्रास-वि० [सं०] नम्र, विनयी ।

अनुप्रास-पु० [सं०] प्रतिध्वनि, गूंज ।

अनुप्रास-वि० [सं०] प्रतिध्वनित, जिसकी गूंज हुई हो ।

अनुप्रास-वि० [सं०] दे० 'अनुप्रास' ।

अनुप्रास-खी० [सं०] नायिकाके साथ रहनेवाली स्त्री
(मसी, दासी आदि) ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जिसका उच्चारण गुंज और नाकमें
हो- (हं, जं, गं, नं, रं और अनुस्वार) । पु० अनुप्रासिक
वर्ण; उसका उच्चारण ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अनुशासित; समाधत; मनुष्य; शांति
किया हुआ; प्रायित ।

अनुप्रास-खी० [सं०] दे० 'अनुप्रास' ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जो ऊपर उठाया न गया हो; जिसने
उन्नति न की हो । -गात्र-वि० जिसके अंग पुष्ट न हों वा
पूर्ण रूपमें बड़े न हों ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जो मत्त या पागल न हो ।

अनुप्रास-वि० [सं०] दे० 'अनुप्रास' ।

अनुप्रास-पु० [सं०] पालनका प्रभाव । वि० दे० 'अनुप्रास' ।

अनुप्रास-पु० [सं०] अहित, बुराई ।

अनुप्रास-वि० [सं०] उपकार न करनेवाला; कृतघ्न;
निकम्मा । - (रि) मित्र-पु० शत्रु गजका मित्र ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जिसे क्षति न पहुंची हो ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अप्राप्त; अननुभूत; दूरवर्ती ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अप्रगति ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जीविका न देनेवाला, जीविकाहीन ।

अनुप्रास-पु० [सं०] एकके शब्द दूसरेका मिश्रण; पीछा
करना; दे० 'अनुप्रास'; वैराशिक (गणित) ।

अनुप्रास-अ० [सं०] कदम-चक्रकदम; शब्द-प्रतिशब्द । पु०
गीतका टेक । वि० (किस्तीमें) पीछे-पीछे चलनेवाला,
पदानुसरणकारी; प्रत्येक शब्दकी व्याख्या करनेवाला
(भाष्य) (जिसे-अनुपदग्रह) ।

अनुप्रास-खी० [सं०] मार्ग, मसक ।

अनुप्रास-वि० [सं०] पीछे-पीछे चलनेवाला; पीछे गया
हुआ ।

अनुप्रास-वि० [सं०] जिसे शिक्षा न दी गयी हो,
अशिक्षित ।

अनुप्रास-वि० [सं०] अनुसरणकर्ता; अनुप्रास,
सौजी ।

अनुप्रास-खी० [सं०] मोता; जूता ।

अनुप्रास-वि० [सं०] छल-चपल-गति ।

अनुप्रास-वि० [सं०] न लया हुआ; उपनयनरहित ।

अनुप्रास-पु० [सं०] अमिद्धि, प्रमाणित न होना;
अनिश्चय, भ्रम । [वि० 'अनुप्रास'] ।

अनुपपत्ति-स्त्री० [सं०] अतिदि; अस्मति; युक्तिका अभाव; असम्पत्ता; दैव्य; संकट ।

अनुपपञ्च-वि० [सं०] जो प्रमाणित न किया गया हो, अनुक्त; जो कहा न गया हो; अनुपपादित ।

अनुपम-वि० [सं०] उपमाहित, बे-जोड़, सर्वोत्तम ।

अनुपमर्दन-पु० [सं०] किसी आरोप या अभियोगका खंडन न होना ।

अनुपमा-स्त्री० [सं०] दक्षिण-पश्चिम दिशाके गज (कुमुद)-की पत्नी ।

अनुपमित-वि० [सं०] दे० 'अनुपम' ।

अनुपमेय-वि० [सं०] अनुलनीय ।

अनुपयुक्त-वि० [सं०] तिमका उपयोग न हुआ हो; अव्यय; अनुचित, नामोझे; निरुत्तमा ।

अनुपयोग-वि० [सं०] बे-सम्पर्क, बेकार । पु० उपयोगी न होना; उपयोगमें न आना (आहार आदि) ।

अनुपयोगिता-स्त्री० [सं०] उपयोगी न होना, निरर्थकता ।

अनुपयोगी (निन्दा)-वि० [सं०] उपयोगरहित, बे-सम्पर्क ।

अनुपरत्न-वि० [सं०] दृष्ट नहीं; अवाधिन ।

अनुपलब्ध-पु० [सं०] ज्ञानाभाव, जानकारी न होना ।

अनुपलक्षित-वि० [सं०] तिमर्क पहचान न हुई हो; अचिह्नित, जो जाना न गया हो ।

अनुपलब्ध-वि० [सं०] अप्राप्त; जो जाना न गया हो; तिमका निश्चय न हुआ हो ।

अनुपलविष-स्त्री० [सं०] अप्राप्ति; जानकारी न होना ।
—व्यम-पु० ज्ञानिके चौबीस भेदोंमें एक (व्या०) ।

अनुपवीर्त्तनी (तिन्)-वि० [सं०] यथोपवीर्त्तन कारण न करनेवाला (ज्ञानिच्युत) ।

अनुपशब्ध-पु० [सं०] गैर बतानेवाला कारण ।

अनुपस्कृत-वि० [सं०] तिमका मस्कार या परिष्कार न किया गया हो; जो मित्रावा न गया हो; शुद्ध, निर्दोष ।

अनुपस्थान-पु० [सं०] अनुपस्थिति ।

अनुपस्थित-वि० [सं०] जो सामने या पासमें न हो, गैर-हाजिर, अविद्यमान ।

अनुपस्थिति-स्त्री० [सं०] अविद्यमानता, गैरहाजिरी ।

अनुपहत-वि० [सं०] अक्षत; कोरा, नया ।

अनुपाक-वि० [सं०] जो साफ-साफ देखा या पहचाना न जा सके ।

अनुपाक-पु० [सं०] मापेक्षिक संबंध; गौण ज्ञान मन्त्राओंके आधारपर चौबीसों निकालना; वैराक्षिक (गणित); एकले बाद दूसरेका गिरना; अनुमरण ।

अनुपातक-पु० [सं०] महाहत्यादि महापातकोंके बराबरके पाप—चोरी, हत्या, परस्त्रीगमनादि ।

अनुपादक-पु० [सं०] आकाशमें श्री मृकम एक तत्त्व (तंत्र) ।

अनुपाद-पु० [सं०] दवाके साथ या पीछे ली जानेवाली वस्तु ।

अनुपातक-वि० [सं०] पादत्राणरहित ।

अनुपातीय-वि० [सं०] दवा खानेके लिए पेयके रूपमें काम देनेवाला । पु० वह पीनेकी वस्तु जो बादमें ली जाय ।

अनुपातन-पु० [सं०] रक्षण; आश्रय ।

अनुपाध्या भूमि-स्त्री० [सं०] वह भूमि जो वहाँ मते

हुए लोगोंके अलावा और किसीकी आवश्यक न है सके ।

अनुपासन-पु० [सं०] ध्यान न देना । [वि०] 'अनुपासित'—उपेक्षित ।]

अनुपुक्क-पु० [सं०] अनुवाची; पूर्वोक्त व्यक्ति ।

अनुपुष्य-पु० [सं०] सरकसा ।

अनुपूर्व-वि० [सं०] क्रमबद्ध, मिलसिलेवार । —शास्त्र,—ईह—वि० जिसके साथ, दंत आदि बे-जोड़ न हो । —वस्त्रा—स्त्री० नियमित रूपसे बधा देनेवाली गाय ।

अनुपूर्व-वि० [सं०] क्रमबद्ध; नियमित ।

अनुपेत-वि० [सं०] अदीक्षित; अनुपनीत । (किसी गुण, वस्तु आदि)से रहित ।

अनुत्त-वि० [सं०] जो बोया न गया हो (बीज) । —शास्त्र—वि० परनी (जमीन) ।

अनुप्रज्ञान-पु० [सं०] परविज्ञानका अनुसरण, देख रूठाना ।

अनुप्रदान-पु० [सं०] दान (दी०); दृष्टि ।

अनुप्रवेश-पु० [सं०] प्रवेश, दाखिल होना; अनुकरण ।

अनुप्रज्ञ-पु० [सं०] पीछे किया हुआ प्रश्न ।

अनुप्रसक्ति-स्त्री० [सं०] प्रमाद संबंध ।

अनुप्रस्थ-वि० [सं०] चौधर्गके मुगविक ।

अनुप्राणन-पु० [सं०] प्राणसंचार; प्रेरण; स्फूर्ति ।

अनुप्राणित-वि० [सं०] प्रेरित; समर्थित, पोषित, पुष्ट किया हुआ; जिसे जीवन वा स्फूर्ति दी गयी हो ।

अनुप्राशन-पु० [सं०] खाना, भोजन ।

अनुप्रास-पु० [सं०] एक शब्दालंकार जिसमें वर्ण-विशेष या वर्ण-विशेषके वर्णोंकी आरुपि होती है; वर्णसाम्य ।

अनुप्रेक्षा-स्त्री० [सं०] गौरसे देखना; मनन, चिंतन ।

अनुसूच-पु० [सं०] साथी; अनुवाची, अनुकर ।

अनुसंध-पु० [सं०] बधन; संबंध; मिलसिला; आरभ; कल; नलीजा; मार्ग; छुट्टास; संबंध जोड़नेवाला; बाधा; अवल्य;

उद्देश्य, नीयत; आधार; प्रकृति; व्यास; गौण या अप्रधान वस्तु; मुख्य योगके साथ होनेवाला गौण विकार वा व्यापि; गुरुजनोक्त अनुवाची बालक । —अनुसंध-पु०

विषय, प्रयोजन, अधिकारी और संबंध—इन चारका समुदाय (१०) । (कट्टकट, कट्टकटका फार्म) बंधनपत्र, शर्तनामा,

—जिसको और प्रकाशकों बीच एक आदर्श अनुसंधका ममविश प्रकाशित किया—'आज' ।

अनुसंधक-वि० [सं०] संबद्ध ।

अनुसंधन-पु० [सं०] संबंध; क्रम; मिलसिला ।

अनुसंधी-स्त्री० [सं०] व्यास; द्विचक्षी ।

अनुसंधी (विन्)-वि० [सं०] अनुसंधयुक्त; संबद्ध ।

अनुसद्ध-वि० [सं०] संबद्ध, लगाव रखनेवाला ।

अनुसद्ध-पु० [सं०] पीछे स्थित रहस्य सेना ।

अनुसोच-पु० [सं०] स्मरण; पीछे होनेवाला स्मरण; कम वधी हुई सुगंधिकों तेज करना ।

अनुआह्वय-पु० [सं०] आह्वयका-सा कर्म ।

अनुभव-पु० [सं०] प्रत्यक्ष धाम, देख-सुनकर या प्रयोग-परीक्षासे प्राप्त ज्ञान; मनसे जानना; संवेदन, महसूस करना; सुख-दुःखरूपमें उपलब्धि । —सिद्ध-वि० अनु-

भव करके देखा हुआ; परीक्षा-सिद्ध ।

अनुभवमा-सं० कि० अनुभव करना ।

अनुमायी (विश्व) - वि० [सं०] अनुभव करनेवाला, चरित्रवेत्ता; मुक्तजीवी ।

अनुमाय-पु० [सं०] मनोमत भावकी सख्त बाध क्रियाएँ (सा०); प्रभाव; वक्रावृत्ति; संकल्प; धृष्ट विश्वास ।

अनुमायक-वि० [सं०] अनुभव करनेवाला ।

अनुमायन-पु० [सं०] अंगभंगी द्वारा मनोमत भावोंको व्यक्त करना ।

अनुमायी (विश्व) - वि० [सं०] अनुभव करनेवाला; चरम-दीप्त गवाह; भावजन्य चिह्न प्रकट करनेवाला; पीछे होने या आनेवाला ।

अनुभाषण-पु० [सं०] कही हुई बातको संबन्धके छिप छिप कहना; कथनको आशुति करना; वार्तालाप, कथोप-कथन ।

अनुभास-पु० [सं०] एक तरहका कौआ ।

अनुभूत-वि० [सं०] अनुभव किया हुआ; आजमाया हुआ, परीक्षित ।

अनुभूति-स्त्री [सं०] अनुभव; संवेदना; प्रत्यक्ष, अनु-मिति, उपमिति और शब्दबोध द्वारा प्राप्त ज्ञान (न्या०) ।

अनुभोग-पु० [सं०] उपभोग; सेवाके बदले मिलनेवाली भावकी जमीन ।

अनुभासा (पु०) - पु० [सं०] छोटा मार ।

अनुमता (पु०) - वि० [सं०] इजाजत देनेवाला; किसी कार्य-की होने देनेवाला ।

अनुमत-वि० [सं०] सम्मत; स्वीकृत; प्रिय; मनोरम । पु० स्वीकृति; सहमति; आश्वासन प्यार करनेवाला ।

अनुमति-स्त्री [सं०] स्वीकृति, इजाजत; चतुर्दशी-युक्त पूर्णिमा । -पत्र-पु० स्वीकृति-पत्रक पत्र या लेख ।

अनुमत्त-वि० [सं०] सुशीले मारे आपसे बाहर, आन-दीप्त ।

अनुमन-पु० [सं०] स्वीकृति देना ।

अनुमरण-पु० [सं०] सती होना, सहमरण ।

अनुमा-स्त्री [सं०] अनुमिति, अनुमान ।

अनुमात (पु०) - वि० [सं०] अनुमान करनेवाला । [स्त्री० 'अनुमात्री']

अनुमान-पु० [सं०] अटकल, अंदाजा, प्रत्यक्षसे अप्रत्यक्ष-की ज्ञान (पूर्वो वैखर आगवा ज्ञान), न्यायशास्त्रके माने हुए चार प्रमाणोंमेंसे एक; अनुमति, स्वीकृति ।

अनुमानतः (सह) - अ० [सं०] अनुमानसे ।

अनुमानना-सं० कि० अनुमान करना, सोचना; समझना ।

अनुमानोक्ति-स्त्री [सं०] तर्क, उक्ति ।

अनुमापक-वि० [सं०] अनुमान करानेवाला, जिसके सहारे अनुमान किया जा सके ।

अनुमित-वि० [सं०] अनुमान किया हुआ ।

अनुमिति-स्त्री [सं०] अनुमान; अनुमान द्वारा प्राप्त ज्ञान ।

अनुमृता-स्त्री [सं०] वह स्त्री जो मर्त्य हुई हो ।

अनुमेष-वि० [सं०] अनुमान करने योग्य ।

अनुमोद-पु० [सं०] सहानुभूतिजन्य प्रसन्नता; समर्थन, स्वीकृति ।

अनुमोदक-वि० [सं०] अनुमोदन, समर्थन करनेवाला ।

अनुमोदन-पु० [सं०] प्रसन्न करना या होना; भयभयः

स्वीकृति ।

अनुमोदित-वि० [सं०] समर्थित, स्वीकृत; प्रसन्न किया हुआ ।

अनुमाता (पु०) - पु० [सं०] अनुसरण करनेवाला, पीछे चलनेवाला, अनुयायी ।

अनुमात्रिक-पु० [सं०] अनुयायी; अनुचर ।

अनुमान-पु० [सं०] पीछे चलना ।

अनुमायी (विश्व) - वि० [सं०] पीछे चलनेवाला, अनु-गामी; किसी मत या नेताका अनुसरण करनेवाला; समान, सरल । पु० पीछे चलनेवाला; अनुचर । [स्त्री० 'अनुया-यिनी']

अनुयुक्त-वि० [सं०] जिससे पूछताछ की गयी हो; परी-क्षित; निर्दिष्ट ।

अनुयोक्ता (कु) - पु० [सं०] पूछताछ करनेवाला, परीक्षक, अध्यापक । [स्त्री० 'अनुयोजनी']

अनुयोग-पु० [सं०] प्रश्न; जिज्ञासा; पूछताछ ।

अनुयोज्य-वि० [सं०] जिससे प्रश्न किया जा सके; जिससे टॉट-फटकारके माथ पूछताछ की जा सके । पु० सेवक, आश्चर्यकारी सेवक ।

अनुरञ्जक-पु० [सं०] प्रसन्न, सन्तुष्ट करनेवाला । [स्त्री० 'अनुरञ्जिका']

अनुरञ्जन-पु० [सं०] प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ।

अनुरक्षित-वि० [सं०] प्रसन्न, सन्तुष्ट ।

अनुरक्त-वि० [सं०] अनुराग-युक्त, प्रेमी, आमक्त; वफा-दार; प्रसन्न, सन्तुष्ट; लाल । -प्रकृति-वि० (वह राजा) जिसको प्रजा उसमें अनुरक्त हो ।

अनुरक्ति-स्त्री [सं०] प्रेम, आमक्ति; भक्ति ।

अनुरणन-पु० [सं०] बटा, नूपुर आदिकी प्रतिध्वनि, गूञ्ज; ध्वनना ।

अनुरागित-वि० [सं०] प्रतिध्वनि; झंकून ।

अनुरत-वि० [सं०] अनुरक्त ।

अनुरति-स्त्री [सं०] अनुराग ।

अनुरध्या-स्त्री [सं०] सक्करी बगलकी राह, पटरी ।

अनुरस-पु० [सं०] गौणन्य (मा०); गौण स्वाद; प्रतिध्वनि ।

अनुरसित-पु० [सं०] प्रतिध्वनि । वि० प्रतिध्वनित ।

अनुरहस-वि० [सं०] एकांत ।

अनुराग-पु० [सं०] प्रेम, आमक्ति; भक्ति; लाल रंग । वि० लाल रंग हुआ ।

अनुरागना-सं० कि० प्रेम करना । अ० कि० अनुराग-युक्त होना; प्रेममें मग्न होना ।

अनुरागी (विश्व) - वि० [सं०] प्रेमी, आमक्त; भक्त ।

अनुरात्र-अ० [सं०] हर रात. रातमें ।

अनुराध-वि० [सं०] विन, भलाई करनेवाला; अनुराधा नक्षत्रमें उत्पन्न । * पु० विनती; अनुरोध ।

अनुराधना-सं० कि० विनती करना ।

अनुराधपुर-पु० [सं०] लंकाकी पुरानी राजधानी ।

अनुराधा-स्त्री [सं०] एक नक्षत्र ।

अनुरुहा-स्त्री [सं०] एक धाम ।

अनुरूप-वि० [सं०] समान रूपवाला, मर्यादा; योग्य,

उपयुक्त ।

अनुकूपक-पु० [सं०] प्रतिकृति ।

अनुकूपक-सं० कि० सप्तक बनाना ।

अनुकूप सिद्धि-श्री० [सं०] पुत्रों, माई-बंधुओं आदिको साम, दान आदिके द्वारा पक्षमें करना (श्री०) ।

अनुरोवती-श्री० [सं०] एक रीषा ।

अनुरोदन-पु० [सं०] सनकेदना-प्रकाश ।

अनुरोध-पु० [सं०] अनुसरण; लिखावट; विचार; प्रार्थना; विनय; आग्रह; भाषा; स्कावट ।

अनुरोधक-वि० [सं०] दे० 'अनुरोधी' ।

अनुरोधी (विश्व)-वि० [सं०] अनुसरण करनेवाला; अपेक्षा रखनेवाला ।

अनुलक्ष-वि० [सं०] संलक्ष ।

अनुलाप-पु० [सं०] पुनरुक्ति; बुमा-फिराकर बार-बार एक ही बात कहना ।

अनुलास, अनुलास्य-पु० [सं०] मोर ।

अनुलेप-पु० [सं०] सुगंधित लेप, उपवन आदि; पेसी वस्तुओंका लेप या मालिश ।

अनुलेपक-वि० [सं०] चटन, उपवन आदि लगा देनेवाला । [श्री० 'अनुलेपिका' ।]

अनुलेपन-पु० [सं०] दे० 'अनुलेप' । [वि० 'अनुलिप्त' ।]

अनुलेपी (विश्व)-वि० [सं०] दे० 'अनुलेपक' ।

अनुलोम-वि० [सं०] ऊपरमें नीचेकी ओर आनेवाला; यथाक्रम; अविलोम । पु० संगीतमें स्मरोंका उभार, अवरोह ।

-ज, -जम्मा (जम्मा)-वि० अनुलोम विवाहसे उत्पन्न ।

-विवाह-पु० उक्त वर्णके पुष्पका अपनेमें हीन वर्णकी स्त्रीमें विवाह ।

अनुलोमन-पु० [मं०] मलादिको नियत मागसे बाहर निकालनेका उपाय करना; उन्हे पचा-पिथकाकर नीचे लाना ।

अनुलोमा-श्री० [मं०] पत्निमें हीन वर्णकी स्त्री । -**सिद्धि-श्री०** पौरों, ज्ञानपत्नी और मेनापत्नियोंको दान और भेद द्वारा अपने अनुकूल बनाना (श्री०) ।

अनुवंश-पु० [मं०] वंशवृत्त; वंशवृक्ष ।

अनुवक्ता (कु)-पु० [सं०] पीछे बोलनेवाला; उत्तर देने वाला ।

अनुवचन-पु० [मं०] दुहराना; पाठ; शिक्षण; भाषण; अध्याप ।

अनुवसर-पु० [सं०] ज्योतिषोक्त पौन बर्षोंके सुगका चौथा वर्ष । अ० हर साल ।

अनुवर्तन-पु० [सं०] अनुसरण, अनुगमन; आश्रयपालन; परिणाम; सतृप्त करना ।

अनुवर्ती (विश्व)-वि० [सं०] अनुसरण करनेवाला, अनुयायी; आश्रयकारी; समान; उपयुक्त । [श्री० 'अनुवर्तिनी' ।]

अनुवश-वि० [सं०] आश्रयकारी; दूसरेकी इच्छाके अनुसार चलनेवाला । पु० आश्रयकारी ।

अनुवसित-वि० [सं०] वस्त्राच्छादित; आरक्ष, सख ।

अनुवह-पु० [सं०] अग्नि की सात त्रिहोत्रोंमेंसे एक ।

अनुवाक-पु० [सं०] दुहराना; अध्याप; वेदोंका उपनिषाद ।

अनुवाचन-पु० [सं०] अन्वयुक्त आदेशानुसार होना द्वारा कर-देके मंत्रोंका पाठ; पाठ करना या कराना ।

अनुवाच-पु० [सं०] फिरसे कहना; व्याख्या या समर्थन-

रूपमें पुनरुक्ति; समर्थन; अपवाद; जनश्रुति; विश्वास; भाषणका आरंभ; उल्लास; भाषांतर ।

अनुवाचक-पु० [सं०] अनुवाद करनेवाला; भाषांतरकार । [वि० दे० 'अनुवादी' ।]

अनुवादित-वि० [सं०] अनुवाद किया हुआ; भाषांतरित ।

अनुवादी (विश्व)-वि० [सं०] व्याख्याके साथ दुहरानेवाला; समर्थन करनेवाला; सच्य । पु० संगीतमें स्वरका एक मेघ ।

अनुवाद्य-वि० [सं०] अनुवाद करने योग्य ।

अनुवास, अनुवासन-पु० [सं०] चूपादि सुगंधित द्रव्योंसे सुगंधित करना; बसाना; स्नेहवस्ति—तैल पदार्थोंका घनिमा; उसकी क्रिया ।

अनुवासित-वि० [सं०] बसाया हुआ; वस्तिक्रिया द्वारा चिकित्सित ।

अनुवासी (विश्व)-वि० [सं०] बसनेवाला; पक्षीसम रहनेवाला ।

अनुवर्ति-श्री० [सं०] प्राप्ति । [वि० 'अनुवर्ति' ।]

अनुविद्ध-वि० [सं०] विधा हुआ, छिद्रित; मिश्रित, संयुक्त; जडा हुआ (जैसे रत्न) ।

अनुविधान-पु० [सं०] आदेशपालन, आज्ञाकारिता ।

अनुवृत्त-श्री० [सं०] अनुसरण या आज्ञापालन करनेवाला; अवशिष्टज; शीलानुगत; जिसकी अनुवृत्ति की गयी हो ।

अनुवृत्ति-वि० [सं०] अनुसरण; स्तुति; आज्ञापालन; आवृत्ति; अनुकरण; वाक्यार्थ स्पष्ट करनेके लिए पूर्ववर्ती वाक्यका कुछ अंश लेना ।

अनुवेष्ट-पु० [सं०] छेदना; खराब करना; मिश्रण ।

अनुवेष्टित-पु० [सं०] ढही बौध्या; धातुपर बौधनेकी एक तरहकी ढही ।

अनुवेष्ट, अनुवेष्टन-पु० [सं०] अनुसरण, पीछे प्रवेष्ट करना; बड़े भाईके पहले छोटे भाईका विवाह ।

अनुवेष्ट्य-वि० [सं०] बगलके घरमें रहनेवाला ।

अनुव्याख्यान-पु० [सं०] महादिका अर्थ-प्रकाशक व्याख्यान; किसी भाषणका; वह भाग जिसमें कठिन सूत्रादिकी व्याख्या हो ।

अनुव्याध-पु० [सं०] दे० 'अनुनेष' ।

अनुव्याहरण, अनुव्याहार-पु० [सं०] पुनरुक्ति; क्षाप ।

अनुव्रजन, अनुव्रज्या-श्री० [सं०] घरसे जाते या विदा होते हुए शिष्ट जन या मेहमानके साथ कुछ दूर जाना ।

अनुव्रत-वि० [सं०] निर्धारित कर्तव्यका समुचित रूपसे पालन करनेवाला । पु० एक तरहका जैन साधु ।

अनुव्रतिक-पु० [सं०] सीधे अधिक सिपाहियोंका नावक ।

अनुव्रत-पु० [सं०] कार्यभारसे ग्रहण किया हुआ अवकाश ।

अनुव्रत-पु० [सं०] पछतावा; दुःख; क्लिष्ट देव; पुराना रीति; आसक्ति; ओगे हुए कर्मोंका अवशेष (दे०); दान-संबंधी विवादोंका निर्णय ।

अनुव्रतान-वि० [सं०] पक्षाचार करनेवाला ।

अनुव्रताना-श्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो प्रियके भिन्न-स्वानके नष्ट हो जानेसे दुःखित हो ।

अनुव्रत-श्री० [सं०] पैरका एक रोग; मस्तक आदिमें निकलनेवाला कोष ।

अनुसंधान (विश्व) - वि० [सं०] पश्चात्प्राप करनेवाला; वैद या देव रखनेवाला; कर्म-फलका भोक्ता (जीव); आसक्त । पु० ब्रह्म-सन्ध्या विचारोक्ता निर्णय करनेवाला ।

अनुशासक - पु० [सं०] अनुशासन करनेवाला; शासक; शिक्षक ।

अनुशासन - पु० [सं०] आदेश; शिक्षा; (किसी विषयका) निरूपण; नियंत्रण या शासन; दंड; नियम-पालन । -पर - वि० आशाकारी । -पर्य - पु० महाभारतका एक पर्व ।

अनुशासित - वि० [सं०] जिसका अनुशासन किया गया हो; आदिष्ट; दंडित ।

अनुशासी (सिद्ध), अनुशास्ता (सु) - पु० [सं०] दे० 'अनुशासक' ।

अनुशिष्ट - वि० [सं०] अनुशासित ।

अनुशिष्टि - स्त्री [म०] शिक्षा, आदेश; शासन ।

अनुशीलन - पु० [सं०] सतत तथा धीमेर अभ्यास; नियमित अध्ययन ।

अनुशीलित - वि० [सं०] जिसका अनुशीलन किया गया हो; अधीत ।

अनुशोक; अनुशोचन - पु० [सं०] पछताना; दुःख करना ।

अनुशोचक, अनुशोची (विश्व) - वि० [सं०] पछताना करनेवाला; क्षेदजनक ।

अनुश्रव - पु० [सं०] वैदिक परंपरा ।

अनुश्रुति - वि० [सं०] परंपरासे प्राप्त (ज्ञान आदि) ।

अनुश्रुति - स्त्री [सं०] श्रुति-परंपरासे प्राप्त कथा, ज्ञान इ० ।

अनुश्रव - पु० [सं०] संरक्ष, लगाव; मिश्रण; अर्धपूर्विके लिए किसी बस्तुकी प्रासंगिक चर्चा या शब्दादिश्री आश्रुति; कण्ठा; अवस्थाकी परिणाम; एक शब्दका अन्य शब्दके साथ वा कारण और कार्यका संरक्ष; उत्कट इच्छा; उपनय और निगमनमें सर्वनाम आदि के द्वारा संबंध-स्थापन (न्या०) ।

अनुश्रविक - वि० [म०] सबद्ध; प्रसंगः प्राप्त; अनिवार्य फलस्वरूप ।

अनुश्रवंगी (गिन्) - वि० [म०] सबद्ध; अनिवार्य परिणाम-के रूपमें आनेवाला; सामान्य रूपमें प्रयुक्त होनेवाला; आसक्त, अनुक्त ।

अनुषक्त - वि० [म०] सबद्ध; मल्लभ ।

अनुषेक, अनुषेचन - पु० [म०] किरमे सींचना; बराबर सींचना या छिड़कना । [वि० 'अनुषिक्त'] ।

अनुष्टुप् (म्) - स्त्री [सं०] देव अक्षरीका एक प्रसिद्ध छन्द; गणिका; सरस्वती ।

अनुष्ठान - वि० [सं०] दे० 'अनुष्ठेय' ।

अनुष्ठाना (तु) - वि०, पु० [म०] अनुष्ठान करनेवाला; कार्य आरम्भ करनेवाला ।

अनुष्ठान - पु० [म०] करना; आरंभ करना; कोई धार्मिक कृत्य; फल-विशेषके लिए किसी देवताका आराधन ।

अनुष्ठान - पु० [म०] धार्मिक कृत्योंके करनेका क्रम । -शरीर - पु० सूक्ष्म और मृदुल शरीरके बीचका देह (सां०) ।

अनुष्ठान - वि०, पु० धार्मिक कृत्योंका सरण करनेवाला ।

अनुष्ठान - पु० [म०] कार्य कराना (प्रि०) ।

अनुष्ठानी (विश्व) - वि० [म०] कार्य करनेवाला ।

अनुष्ठित - वि० [सं०] विधिपूर्वक किया हुआ; आचरित ।

अनुष्ठेय - वि० [सं०] अनुष्ठानके योग्य; करणीय ।

अनुष्ठेय - वि० [सं०] जो गरम न हो, ठंडा; घुस; आलसी । पु० नील कमल । -गु - पु० चंद्रमा । -बहिरा - स्त्री नील दूरी ।

अनुष्णक - वि० [म०] दे० 'अनुष्ण' ।

अनुष्णक - पु० [म०] पीछेका पहिया ।

अनुसंधान - पु० [सं०] अन्वेषण, खोज, जाँच-पड़ताल; प्रयत्न; योजना, आयोजन; व्यवस्थित करना ।

अनुसंधानना - स० कि० हँदना; विचारना ।

अनुसंधानी (निन्), अनुसंधायी (विश्व) - वि० [सं०] जोच-पड़ताल या खोज करनेवाला; योजना बनानेमें कुशल ।

अनुसंधि - स्त्री [सं०] गुप्त यंत्रणा, गुप्त योजना ।

अनुसंधेय - वि० [सं०] खोज करने योग्य ।

अनुसंहित - वि० [म०] जिसकी खोज या जाँच-पड़ताल की गयी हो; (किमीके) अनुसार या अनुरूप ।

अनुसमापन - पु० [म०] नियमित रूपमें कार्य संवत्त करना ।

अनुसयाना - स्त्री [म०] दे० 'अनुशयाना' ।

अनुसर - वि० [म०] अनुसरण करनेवाला, अनुचर, हम-राही, साथी; * दे० 'अनुसार' ।

अनुसरण - पु० [म०] पीछे चलना; अनुकरण; अनुकूल आचरण; प्रथा; अभ्यास ।

अनुसरना - स० कि० अनुसरण करना; अनुकरण करना । किमीके अनुकूल कार्य करना ।

अनुसर्य - पु० [म०] मर्प मरुत प्राणी; मरीच्य ।

अनुसाम - वि० [म०] मनुष्य किया हुआ; अनुकूल ।

अनुसार - पु० [सं०] अनुसरण; प्रथा; प्रकृति या प्राकृतिक अवस्था; चरन; परिणाम । वि० अनुकूल, अनुरूप, मुनासिब ।

अनुसारक - वि० [म०] अनुसरण करनेवाला, खोज करने-वाला, अनुरूप ।

अनुसारणा - स्त्री [म०] अनुसरण करना, पीछा करना ।

अनुसारणा - स० कि० अनुसरण करना, पीछे हटाना करना । आरंभ करना; चलावा, भेजना, पठाना ।

अनुसारी (निन्) - वि० [म०] दे० 'अनुसारक' ।

अनुसार्क - पु० [म०] मुनषित पदार्थ-चरन, अगुक्त जाति ।

अनुसाल - पु० दूर, पीछा ।

अनुसासन - पु० दे० 'अनुशासन' ।

अनुसृत - वि० [म०] अनुसरण किया हुआ; आचरित ।

अनुसृति - स्त्री [म०] अनुसरण; कुलटा स्त्री ।

अनुसृष्टि - स्त्री [म०] क्रमानुसार रचना; हाजिरजबाब औरन ।

अनुसंधी (विश्व) - वि० [सं०] आदत करनेवाला; आदी ।

अनुस्तरण - पु० [सं०] विहरेना, छितरावा, फैलाना ।

अनुस्तरणी - स्त्री [म०] आच्छादन, आवरण; गाय; वह गाय जिसका अक्षि-संस्कारके अवसरपर बलिदान किया जाय ।

अनुस्तरण - पु० [सं०] बार-बार अरण; बाध करना ।

अनुसृष्टि-**स्त्री** [सं०] वह सृष्टि वा क्षरण जो प्रिय हो; और विषयोंका स्थान कर एक विषयका चिंतन या क्षरण।
अनुस्यूत-**वि०** [सं०] प्रथिता; पिरोया हुआ; सिला हुआ; संवद्ध।

अनुस्वान-**पु०** [सं०] प्रतिध्वनि, गूंज।

अनुस्वार-**पु०** [सं०] स्वरके बाद बोला जानेवाला हलंत अनुनासिक वर्ण जिसका चिह्न वह है (ँ), अनुस्वार-स्वक चिह्नी।

अनुहरण-**पु०** [सं०] अनुकरण, नकल करना; सादृश्य।

अनुहरत-**वि०** अनुसरण करता हुआ; अनुरूप; उपयुक्त; योग्य।

अनुहरना-**स०** कि० अनुसरण करना; नकल करना।

अनुहरिवा-**स्त्री** आकृति, चेहरा। **वि०** तुल्य, समान।

अनुहार-**स्त्री** मेढ, प्रकार; आकृति। **पु०** [सं०] अनुकरण, समानता। **वि०** तुल्य, समान।

अनुहारक-**वि०** [सं०] अनुहरण करनेवाला; नकल या समान कार्य करनेवाला।

अनुहारना-**स०** कि० समता करना, उपमा देना।

अनुहारि-**वि०** अनुसार, समान; योग्य; उपयुक्त। **स्त्री** मुखारुणि, चेहरा; देह।

अनुहारी(**तिङ्**)-**वि०** [सं०] अनुहारक।

अनुहार्य-**वि०** [सं०] अनुहरण करने योग्य।

अनुहो-**पु०** [सं०] ईश्वरार्थी (?)।

अनुअर-**अ०** अनागर, निरगर।

अनुक-**पु०** [सं०] मेरुधर, रौद्र; मेहरावके बीचकी ईंट; देशका पिछवा हिस्सा; वयस-सन्धी एक पात्र; पूर्व जन्म; वंश, स्वभाव; वंशज्य भाव।

अनुकाश-**पु०** [सं०] प्रकाशकी शक्तिक; हवाला; उदाहरण।

अनुक-**वि०** [सं०] दुहराया हुआ, अनुपठित।

अनुकि-**स्त्री** [सं०] दुहराना, अनुपाठ; व्याख्या; वेदाध्ययन।

अनुष्ठान-**वि०** [सं०] विद्वान्; आतक, वेद-वेदांगोंमें पारगन; दिनम, सुस्ती।

अनुजरा-**वि०** अनुज्जल, मिला।

अनुठा-**वि०** अदभुत, अलौकिक; सुंदर।

अनुड-**वि०** [सं०] अविवाहित; अविहित।

अनुडा-**स्त्री** [सं०] अविवाहिता स्त्री। -**गमन**-**पु०** अविवाहिता स्त्रीमें संवध रखना। -**आला**(**तु**)-**पु०** अविवाहिता स्त्रीका आर्ष; राजकी उपपत्नीका आर्ष।

अनुत्तर-**वि०** निरुत्तर; मीन।

अनुद्रक-**पु०** [सं०] जलाभाव; सूखा, अर्धपूर्ण।

अनुद्रव-**पु०** [सं०] प्राचीन कालकी एक प्रकारकी नाव (यह ४८ हाथ लंबी, २४ हाथ चौड़ी और २४ हाथ ऊंची होती थी)।

अनुदित-**वि०** [सं०] पीछे कहा हुआ; उलथा किंवा हुआ, आपातरित।

अनुध-**वि०** [सं०] पीछे कहे जाने योग्य; अनुवाद करने योग्य।

अनुन-**वि०** [सं०] अधिक; अमून; जो हीन या घटिया न हो। मपूर्ण, समग्र; जिसमें पूरा अधिकार हो।

अनूप-**वि०** उपमाराहित, बेजोड़; अनि सुंदर; [सं०] जलके पासका या जलकी अधिकतावाला; दलदलवाला। **पु०** जलप्राय स्थान या देश; दलदल; तालाब; (नदी आदिको) किनारा; मेढक; तीतरकी जातिका एक पक्षी; मैमा; हाथी। -**ग्राम**-**पु०** नदीतटपर बसा गाँव।

अनूह-**वि०** [सं०] जिसमें जंघा न हो। **पु०** सूर्यका सारथि, अरुण; अरुणोदय। -**सारथि**-**पु०** सूर्य।

अनूक्षिप्त-**वि०** [सं०] बलहीन, अशक्त; निरहंकार।

अनूर्ध्व-**वि०** [सं०] ऊँचा नहीं, नीचा।

अनूर्मि-**वि०** [सं०] लहराला नहीं, अतरंगित; अनति-क्रमणीय।

अनूपर-**वि०** [सं०] रेहवाला; जिसमें रेह न हो।

अनूह-**वि०** [सं०] समग्रमें न आनेवाला, अनर्क्य; विचारहीन, लापरवाह।

अनुशु-**वि०** [सं०] जो अनुशु-सीधा न हो; कुटिल, टेढ़ा; दुष्ट; बेईमान।

अनूय-**वि०** [सं०] अनुगामी, अनुगमक।

अनूणी(**जिन्**)-**वि०** [सं०] ई० 'अनुण'।

अनून-**पु०** [सं०] असत्य, झूठ; लेनी। **वि०** झूठा (शब्द, वाक्य); * अमया; उलटा। -**आषण**, -**बाध**-**पु०** झूठ बोलना। -**बादी**(**दिङ्**)-**वि०** झूठा। -**जन**-**वि०** अपने बचन या प्रविशका पालन न करनेवाला।

अनुतक, **अनुती**(**तिङ्**)-**वि०** [सं०] झूठ बोलनेवाला।

अनुतु-**स्त्री** [सं०] अनुपयुक्त समय, अममय। -**कन्या**-**स्त्री** वह कन्या जो अभी रजस्वला न हुई हो। -**प्राप्त संन्य**-**पु०** वह सेना जिसके अनुकूल शत्रु न पड़ती हो।

अनुसंस-**वि०** [सं०] जो निर्दय या कठोर न हो, सुदुल।

अनेऊ-**वि०** बुरा; कुटिल।

अनेक-**वि०** [सं०] एकसे अधिक; कई, बहुत। -**काम**-**वि०** बहुतनी इच्छाअनेवाला। -**कालावधि**-**अ०** चिरकालमें। -**ऊट**-**पु०** शिव। -**चर**-**वि०** झुंड बनाकर रहनेवाला, समूहमें रहनेवाला। -**चित्त**-**वि०** जिसका मन चंचल हो। -**ज**-**वि०** जिसका कई बार जन्म हो। **पु०** पक्षी इ०। -**य**-**पु०** हाथी। -**आर्थ**-**वि०** जिसके कई सिक्के हो। -**मुख**-**वि०** कई दिशाओंमें जानेवाला।

-**रूप**-**वि०** कई रूपोंवाला; अस्थिर, परिवर्तनशील। **पु०** परमेश्वर। -**लोचन**-**पु०** शिव; इंद्र; विराट् पुत्र। -**वचन**-**पु०** बहुवचन। -**वर्ण**-**पु०** अष्टात राशियों (बीजगणित)। -**विध**-**वि०** कई प्रकारका। -**काफ**-**वि०** फटे झुर्रेवाला। -**शब्द**-**वि०** पर्यायवाची। -**साधारण**-**वि०** बहुतोंमें पाया जानेवाला-सामान्य (सुण)।

अनेकता-**स्त्री**०, **अनेकत्व**-**पु०** [सं०] एकसे अधिक होनेका भाव, विविधता, बहुत्व।

अनेकज-**अ०** [सं०] कई जगह।

अनेकधा-**अ०** [सं०] कई तरहसे।

अनेकांत-**वि०** [सं०] अनिश्चित, बदलनेवाला। -**वाद्**-**पु०** जैनियोंका साहदा। -**वादी**(**दिङ्**)-**पु०** अनेकांतवाद माननेवाला।

अनेकाकार-**वि०** [सं०] बहुतसे आकारों, आकृतियोंवाला।

अनेकाकी(**किञ्**)-**वि०** [सं०] जो अकेला न हो, जिसके

साथ करे हों ।

अनेकाक्षर-वि० [सं०] करे अक्षरोंवाला ।

अनेकाग्र-वि० [सं०] करे कामोंमें लगा हुआ ।

अनेकाक्ष-वि० [सं०] जिसमें एकाधिक स्वर हों ।

अनेकार्यक-वि० [सं०] जिसके करे अर्थ हों ।

अनेकाक्ष-वि० [सं०] जिसमें एकसे अधिक अक्षर हों ।

अनेकाग्र्य, अनेकाग्रित-वि० [सं०] एकसे अधिकमें रहनेवाला, एकाधिकपर अवलंबित ।

अनेक-वि० दे० 'अनेक' ।

अनेह-वि० [सं०] मूल्य; निकम्मा, खराब; टेढ़ा-पियका मारग सुगम है, तेरा चलन अनेह-साही । -**मूक**-वि० गूंगा-बहारा; अंधा; दुष्ट; छली ।

अनेता-वि० [सं०] मालती लता ।

अनेरा-वि० स्वच्छद बिचरनेवाला, निरंकुश; बैरीकटोक; दुष्ट; शूद्रा; स्वयं; निकम्मा । अ० व्यर्थ ही ।

अनेस-वि० अनिष्ट, अग्रिय, बुरा । पु० अंदेशा, चिता ।

अनेह-पु० स्नेहका अभाव, अप्रीति । वि० स्नेह-रहित ।

अनेहा(हम्)-पु० [सं०] काल, समय ।

अनेही-वि० अनेही, जो स्नेह न करे ।

अनै-पु० दे० 'अनय' ।

अनैकाक्ष-वि० [सं०] दे० 'अनेकाक्ष' ।

अनैकाक्षिक-वि० [सं०] दे० 'अनेकाक्ष' । पु० एक हेत्वा-भास-व्यभिचारी हेतु ।

अनैकाक्ष-पु० [सं०] बदलनेवाली, अस्थिर प्रकृति ।

अनैक्य-पु० [सं०] एकताका अभाव या उलटा; बहुत्व; फूट, मतभेद; अव्यवस्था ।

अनैष्ठिक-वि० [सं०] जो स्वेच्छासे न किया गया हो ।

अनैतिक-वि० [सं०] नीतिविरुद्ध, अविरहित ।

अनैतिहासिक-वि० [सं०] जो इतिहासमें न आया हो या जो इतिहाससे प्रमाणित न होना हो, इतिहासविरुद्ध ।

अनेपुण-पु० [सं०] निपुणताका अभाव, अकुशलता ।

अनैकार्य-पु० [सं०] ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति इत्यादिका अभाव ।

अनैस-पु० अनिष्ट, बुराई; अंदेश । वि० बुरा ।

अनैसना-अ० कि० रूठना, अप्रमत्त होना ।

अनैसा-वि० अनिष्ट, बुरा । -तर्जनिको यह प्रकृति अनैसी धोरेहि वात सिलावै-सं० ।

अनैसे-अ० बुरे भावमें ।

अनैहा-पु० उन्पात; मचलना ।

अनोक्षायी(विश्व)-पु० [सं०] घरमें न सोनेवाला, मिथुन ।

अनोक्ष-वि० [सं०] घरका परित्याग न करनेवाला । पु० श्वश्रु ।

अनोखा-वि० अमूढा, अदभुत; अपूर्व; नया; सुंदर । -**पन**-पु० विलक्षणता; सुंदरता; नयापन ।

अनोट-पु० चरेके अंगुष्ठका एक आभूषण, अनवट ।

अनोदन-वि० [सं०] निराहार (अंसे व्रतमें) ।

अनोसर-पु० ठाकुरजीको श्रयन कराना ।

अनोचित्य-पु० [सं०] औचित्यका अभाव या उलटा; अनुचित या नायुक्तता ।

अनीजस्य-पु० [सं०] शक्ति, बलका अभाव ।

अनौट-पु० दे० 'अनवट' ।

अनौठा-वि० अमूढा । [खी० अनौठा] ।

अनौट्य-पु० [सं०] उच्छलकता या दर्पका अभाव; विन-व्रता; शांति; (नदीके पानीको) जंचा न होना ।

अनौचि-अ० शीघ्र, बिना देर किये ।

अनौपम्य-वि० [सं०] अद्वितीय, बेजोड़ ।

अनौरस-वि० [सं०] जो औरस-विवाहिता पत्नीसे उपज न हो, अवैध या गोद लिया हुआ (पुत्र) ।

अन्-उप० [सं०] 'अ'(नम्)का म्प्रादि शब्दोंके पहले लगनेवाला रूप (दे० 'अ') ।

अन्न-वि० अन्य, दूसरा । पु० [सं०] खानेकी चीज, भोज्य पदार्थ; पका अन्न; भात; अनाज, धान्य; जल; पृथ्वी; सूर्य; विष्णु । -**काल**-पु० भोजनका समय; आरोग्य-लाभ करते हुए रोगीको पच्य देनेका समय । -**किह**-पु० दे० 'अन्नमल' । -**कूट**-पु० भात या मिठायादिका पहाड़ या ढेर; कापिक-शुद्धा प्रतिपदाकी होनेवाला एक उत्सव । -**कोष्ठक**-पु० कोठिला, बखार; गोला; पका खाद्य पदार्थ रखनेकी आलमारी । -**गंधि**-खी० अतिसार । -**गति**-खी० अन्नप्रणाली । -**जल**-पु० दानापानी, आग-दाना; स्थानविशेषमें रहनेका संयोग । -**दा**-खी० दुर्गा, अन्नपूर्णा । -**दाता**(श्व)-वि० अन्न देनेवाला; प्रतिपालन करनेवाला । पु० मात्स्यिकोंके लिए सेवकों द्वारा प्रयुक्त संबोधन । -**दास**-वि० भोजनमात्र लेकर काम करनेवाला (नौकर) । -**दोष**-पु० दूषित अन्न खानेमें होनेवाला रोग इ०; निषिद्ध अन्न खाने या अग्र्यान्न अन्नके प्रतिग्रहमें होनेवाला पाप । -**द्रवक्षल**-पु० पेटमें हमेशा रहनेवाला दर्द । -**द्रव्य**-पु० भोजनकी अरुचि, भूख न लगना । -**पति**-पु० अन्नका स्वामी, सूर्य; अग्नि; शिव । -**पाक**-पु० अग्निपर या पेटमें खाद्य पदार्थका पकना । -**पूर्ण**-खी० अन्नकी अधिष्ठात्री देवी, दुर्गाका एक रूप । -**पूर्णचरी**-खी० अन्नप्रणाली; तंत्रीक एक अंग । -**प्रलय**-पु० मृत्युके बाद शरीरका अन्न या मूल रूपमें परिवर्तन होना । -**प्राशन**-पु० बच्चेको पहली बार अन्न खिलातेकी रस्स या संस्कार, चढ़ावन । -**उसुक्षु**-वि० अन्न खानेका इच्छुक । -**मल**-पु० सिद्धा, विष्टा; मद्य ।

-**बाही खोल**(स्)-पु० अन्न नलिका । -**विकार**-पु० अन्नका रूपांतर-रस, रक्त, मांस आदि । -**व्यवहार**-पु० खान-पान-संबंधी नियम या प्रथा । -**दोष**-पु० जठन, भ्रूमी-चोकर आदि । -**संस्कार**-पु० देवादिकोंके लिए अन्नका उत्सर्ग । -**मन्न**-पु० वह संस्थान जहाँ माधु-फलीरों, गरीश-अपाहिजोंको भोजन दिया जाता है । **मु०**-**जल** उठना-रहनेका संयोग या सहारा न होना ।

अन्नमय-वि० [सं०] अन्नसे बना; अन्नमें भरा । -**कोश**(श्व) पु० वेदान्तमें माने हुए पाँच कोशोंमें पहला, स्थूल शरीर ।

अन्ना-खी० धान्य; माता ।

अन्नाकाल-पु० [सं०] दे० 'अन्नाकाल' ।

अन्नाद्-वि० [सं०] अन्न खानेवाला; अन्नही भूखवाला । पु० विष्णु ।

अन्न-वि० [सं०] दूसरा, गैर; भिन्न; असाधारण; अतिरिक्त, अधिक; नया । -**कारका**-खी० मूलजान कीट । -**क्रीत**-वि०

दूसरेका खरीदा हुआ। -**वः** -**मासी(मिन्)** -वि० अन्यके यहाँ जानेवाला, व्यभिचारी। -**विस्** -वि० अन्य-मनस्क, जिसका मन अन्यत्र लगा हो। -**जात** -वि० भूली हुई या नष्ट (वस्तु)। -**दुर्बद्ध** -वि० जो दूसरोंकी बन्धन न हो। -**देशीय** -वि० अन्य देशका, विदेशी। -**धी** -वि० जिसका मन फिर गया हो। -**नाभि** -वि० दूसरे बंधका। -**पर** -वि० अन्यनिष्ठ; अन्यविषयक। -**पुरुष** -पुं० पुरुषवाचक सर्वनामका एक भेद; दूसरा आदमी। -**पुष्ट** -वि० दूसरेके द्वारा पाकृत। -**पुष्टा** -स्त्री० कोयल। -**पुष्टा** -स्त्री० एकसे मैंगनीके बाद दूसरेसे शादी जानेवाली स्त्रिया; पुनर्विवाह करनेवाली स्त्री, पुनर्भू। -**बीजज**, -**बीजसमुद्भव**, -**बीजोत्पन्न** -पुं० दत्तक पुत्र। -**भूता** -स्त्री० कोयल। -**भूत्** -वि० दूसरेका पालन करनेवाला। पुं० काक। -**मनस्क**, -**मना(नस्)**, -**मानस** -वि० जिसका चित्त कहीं और हो; अनमना। -**मातृज** -पुं० दूसरी मातासे उत्पन्न, सौतेला भाई। -**बादी(विन्)** -वि० छूटी गवाही देनेवाला; प्रतिवादी। -**बाध** -पुं० कोयल। -**विबर्धित** -वि० दूसरेके द्वारा पाला गया। -**शास्त्र**, -**शास्त्रज्ञ** -पुं० अपने धर्मका त्याग करनेवाला आश्रम। -**संज्ञित** -वि० जिसने अन्य(स्त्री)में संबंध कर लिया है। -**संगम** -पुं० अरथ मर्याद। -**संभूतकथ** -पुं० पहले लगाये गये मूल्यपर धीक मालके न बिकनेपर उमपर लगाया गया दूसरा मूल्य। -**संभोगदुःखिता** -स्त्री० वह नायिका जो यन्त्रिमें अन्यके साथ रतिके चिह्न देखकर दुःखित हो। -**साधारण** -वि० जो (बात, गुण) बहुतायें पाया जाय।

अन्य -अ० [म०] और भी; इनके सिवा।

अन्यतः(तस्) -अ० [म०] दूसरेसे; दूसरे स्थानसे; दूसरा या दूसरेकी ओर, अन्यथा।

अन्यतस्त्य -पुं० [म०] शत्रु, प्रतिपक्षी।

अन्यन्न -वि० [म०] बहुतायें एक; सर्वत्रेष्ट (?)।

अन्यतर -वि० [म०] दोमेंसे एक; दूसरा, भिन्न।

अन्यत् -वि० [म०] अन्य। अ० पुनः, अलावा।

अन्यत्र -अ० [म०] दूसरी जगह, और कहीं।

अन्यत्र -पुं० [म०] परायापन। -**भावना** -स्त्री० जीवात्माकी शरीरमें भिन्न मानना (ज्ञेय)।

अन्यथा -वि० [म०] उल्टा, विरुद्ध; सूट। अ० नहीं तो। -**अनुपपत्ति** -स्त्री० एक वस्तुके अभावमें दूसरोंके अस्तित्वकी अमभावना। -**भाव** -पुं० भिन्न रूपमें होना। -**बाही(हिन्)** -वि० बिना सुनी या महसूस दिये माल ले जानेवाला (झो०)। -**सिद्धि** -स्त्री० न्याय-संबंधी एक गेय, अमंभद कारण द्वारा सिद्धि।

अन्यथा -अ० [म०] दूसरे समय; एक समय; यदा-तदा।

अन्यदीय -वि० [म०] दूसरेका, अन्यका।

अन्यर्हि -अ० [म०] किसी और समय।

अन्यादा -वि० [म०] अन्य प्रकारका; परिवर्तित; विचित्र।

अन्यापदेश -पुं० [म०] अन्योक्ति।

अन्यापदेशिक -वि० [म०] जो दूसरेके बहाने, अन्योक्तिने रूपमें कहा गया हो।

अन्याय -पुं० [म०] न्यायविरुद्ध कार्य, वैश्वासी; अनौ-

चित्य, जुल्म अत्याचार।

अन्यादी(विन्) -वि० [म०] अन्याय करनेवाला।

अन्याय -वि० [म०] न्यायविरुद्ध, अनुचित।

अन्यारा -अ० [म०] जो जुदा न हो, अभिन्न; अनोखा; वीर; अनौदार; बहुत।

अन्यार्थ -वि० [म०] भिन्न अर्थ रखनेवाला।

अन्याभित -वि० [म०] दूसरेपर अवलंबित।

अन्यास -अ० [म०] 'अनायास'; अवस्था - 'मीको तुम जपराध लगावत कृपा भई अन्यास' -सू०।

अन्यासाधारण -वि० [म०] असाधारण, असाधारण; विचित्र।

अन्यून -वि० [म०] अल्प, अधिक, बहुत।

अन्येषु(धुस्) -अ० [म०] दूसरे दिन; एक समय।

अन्येषु -वि० [म०] दूसरे दिन या प्रतिदिन होनेवाला।

अन्यासाधारण -वि० [म०] असाधारण, असाधारण; विचित्र।

अन्योका(कस्) -वि० [म०] अपने घरमें नहीं, दूसरेके घरमें रहनेवाला।

अन्योक्ति -स्त्री० [म०] ऐसी उक्ति जो साधर्म्यके कारण कथित वस्तुके अतिरिक्त औरोपर भी घटित हो सके; कुछ लोगोंने इसे अर्थलकारका एक भेद माना है।

अन्योदर्थ -वि० [म०] सहीदर नहीं, अन्यसे उत्पन्न।

अन्योन्य -अ० [म०] परस्पर; एक दूसरेकी या पर। वि० पारस्परिक, आपसका। पुं० अर्थलकारका एक भेद जहाँ दो वस्तु परस्पर एक ही क्रिया करें; जैसे तुमसे वह रमणी शोभिणी होती है और उममें तुम। -**अन्ध** -पुं० आपसका भेद, शत्रुता। -**विभाग** -पुं० वैदिक संपत्तिका आपसमें बँटवारा। -**वृत्ति** -स्त्री० पारस्परिक प्रभाव।

व्यतिकर, -**संशय** -पुं० पारस्परिक संबंध (कारण और कार्यका)।

अन्योन्याभाव -पुं० [म०] अभावका एक भेद, किसी एक पदार्थका अन्य पदार्थ न होना।

अन्योन्याश्रय -पुं० [म०] एकका दूसरेपर अवलंबित होना, परस्पर कार्य-कारण संबंध। वि० एक दूसरेपर आश्रित।

अन्योन्याअर्थी(विन्), **अन्योन्याभित** -वि० [म०] एक दूसरेपर अवलंबित।

अन्यत् -अ० [म०] पीछे, बादमें; अनुकूल रूपमें।

अन्यत्र -वि० [म०] इदम्, प्रायः; अनुभवगम्य; बादका। अ० पीछे, बादमें; सामने, सीधे।

अन्यत्र -पुं० [म०] अनुगमन; संबंध; मेल; अवकाश; वाक्यमें पदोंका परस्पर उचित संबंध; आश्रय; बंधा नियमानुसार यथास्थान रखना; हेतु और साधका साहचर्य (न्या०); कारण-कार्यका संबंध। -**व्यतिकर** -पुं० नियम और अपवाद; संयति और असंयति। -**व्याप्ति** -स्त्री० निश्चयारूपक या लोकाराध्यक तक।

अन्यथागत -वि० [म०] वंशानुगत।

अन्यथार्थ -पुं० [म०] अन्यसे निकलनेवाला अर्थ।

अन्यथी(विन्) -वि० [म०] अन्यव्युत्पत्त; संबद्ध; एक ही कुलका।

अन्यर्थ -वि० [म०] अर्थका अनुसरण करता हुआ, यथार्थ; स्पष्ट अर्थवाला।

अन्वयकिरण-पु० [सं०] क्रमपूर्वक चारों ओर बिखेरना ।
अन्वयसर्ग-पु० [सं०] ढीला करना; इच्छानुसार व्यवहार करने देना ।
अन्वयसायी (विद्)-वि० [सं०] संबंध रखनेवाला; आश्रित, अवलंबित ।
अन्वयसित-वि० [सं०] संबद्ध; आबद्ध ।
अन्वयवाच-पु० [सं०] जाति; वंश, कुल ।
अन्वयवेष्टा-स्त्री० [सं०] विचार; लिहाज, खयाल (किसी व्यक्तिको) ।
अन्वयहका-स्त्री० [सं०] पोष, माष और फाल्गुनकी कृष्ण नवमी जब सांभियोंका माचक श्राद्ध होता है ।
अन्वयस्थान-पु० [सं०] पूर्वकथनकी व्याख्या; अध्याय, पर्व ।
अन्वयचय-पु० [सं०] मुख्य काम या विषयके साथ गौण काम या विषयको जोड़ना; इस प्रकारका काम या विषय ।
अन्वयचित-वि० [सं०] गौण; हीन ।
अन्वयदिष्ट-वि० [सं०] पश्चात्तकथित, महत्त्वकी दृष्टिसे गौण; पुनर्नियुक्त ।
अन्वयदेश-पु० [सं०] कहीं हुई बात या शब्दको फिर कहना; एक कार्य हो जानेपर दूसरे कार्यके लिए कहना ।
अन्वयदान-पु० [सं०] अधिहीनकी अधिक स्थापनके बाद उसमें ईप्सन् डालना ।
अन्वयधि-स्त्री० [सं०] जमानत, अधिकारी व्यक्तिको देनेके लिए किसी अन्य व्यक्तिको कोई वस्तु देना; पश्चात्ताप, ग्लानि, मानसिक व्याध ।
अन्वयधेय, अन्वयधेयक-पु० [सं०] विवाहके बाद स्त्रीको पतिकुल या पितृकुलसे मिलनेवाला धन ।
अन्वयध-पु० [सं०] एक देववर्म ।
अन्वयध-पु० [सं०] मैनाके किसी एक अंगकी अधकता ।
अन्वयधन-पु० [सं०] वह सामग्री जो बच्चे अपने पिताके घरमें लेकर आती हो ।
अन्वयार्भ, अन्वयार्भण-पु० [सं०] पृष्ठभागका स्पर्श (आशीर्वाद देने आदिके लिए) ।
अन्वारुद्ध-वि० [सं०] पीछे चढ़नेवाला ।
अन्वारोहण-पु० [सं०] पनिके श्रवके माथ या पीछे विषयाका चिन्तारोहण ।
अन्वालभन, अन्वालभन-पु० [सं०] मूठ (?) ।
अन्वासन-पु० [सं०] सेवा, आराधना; पीछे आसन ग्रहण करना; पश्चात्ताप; कौहवासि; कारखाना, शिपयगृह ।
अन्वाहार्य, अन्वाहार्यक-पु० [सं०] वस्त्रमें पुरोहितको दिया जानेवाला भोजन या दक्षिणा; मासिक श्राद्ध ।
अन्वाहिक-वि० [सं०] दैनिक ।
अन्वाहित-पु० [सं०] दे० 'अन्वाधि' । वि० अधिकारीकी देनेके लिए किसीके पास जमा किया हुआ ।
अन्वित-वि० [सं०] युक्त, सहित; ग्रन्थ (श्लोकान्वित); संबद्ध; समझा हुआ ।
अन्वितार्थ-पु० [सं०] ऐसा अर्थ जो अन्वय करनेसे सहज ही समझमें आ जाय । वि० ऐसा अर्थ रखनेवाला ।
अन्विति-स्त्री० [सं०] अनुगमन; आहार ।
अन्विष्ट-वि० [सं०] इच्छित; इँटा हुआ ।

अन्वीक्षण-पु० [सं०] गारीकीसे देखना; खोज, अन्वेषण; मनन ।
अन्वीक्षा-स्त्री० [सं०] अन्वीक्षण ।
अन्वीत-वि० [सं०] दे० 'अन्वित' ।
अन्वीप-वि० [सं०] जलके समीपका; प्राप्य ।
अन्वेष, अन्वेषण-पु०, **अन्वेषणा**-स्त्री० [सं०] खोज करना, जाँच-पड़ताल करना ।
अन्वेषक-वि० [सं०] अन्वेषण करनेवाला, खोजी ।
अन्वेषित-वि० [सं०] जिसका अन्वेषण किया गया हो ।
अन्वेषी (विद्), **अन्वेषेष्टा (वृत्)**-वि० [सं०] अन्वेषक ।
अन्वेष्य, **अन्वेष्य**-वि० [सं०] अन्वेषणके योग्य ।
अन्वहर्ता-पु० नेत्रहीन व्यक्ति । वि० अंधा ।
अन्वहाना-सं० क्रि० नहलाना ।
अन्वहाना-अ० क्रि० नहाना ।
अपकिल-वि० [सं०] बिना कीचड़का; सूखा; निर्मल ।
अपगा-वि० अगाहीन; लगाइ-छुला; अशक्त ।
अपंचीकृत-वि० [सं०] जिसका पचीकरण न हुआ हो (यह महाभूतोंका अमिश्र-सूक्ष्म रूप) ।
अपंहित-वि० [सं०] सुख, निरक्षर, शानहीन ।
अपःप्रवेशन-पु० [सं०] (राजद्रोही ब्राह्मणको) पानीमें डुबाकर मारनेका दंड (कौ०) ।
अप-उप० [सं०] एक उपगम जो वैपरील, वैरुद्ध, वुराह, आश्विन्य, निषेध, हीनता, दूषण, विकृति, विशेषता इत्यादिका बोधन करता है । सर्व० [सं०] आपका सक्षिप्त रूप (योगिक शब्दोंमें) । -**काजी**-वि० स्वार्थ, सुदृग-गर्ज । -**हेस्वा**-वि० धमती । -**रती**-स्त्री० स्वार्थ । -**वरा**-वि० जो दूसरेके वशमें न हो, स्वार्थान । -**स्वार्थी**-वि० सुदृग-गर्ज, मतलबी ।
अपकरण-पु० [सं०] दुष्यंभहार; दुष्कर्त ।
अपकरण-वि० [सं०] निर्दह, निगूढ़ ।
अपकर्ता(र्तृ)-वि० [सं०] अपकार करनेवाला, हानि या बुराई करनेवाला; दानुभाव रखनेवाला ।
अपकर्म(र्तृ)-पु० [सं०] बुरा काम, दुष्कर्म, कृणपरिशेष ।
अपकर्मा(र्तृ)-वि० [सं०] दुष्कर्मा, अष्टाचारी ।
अपकर्ष-पु० [सं०] नीचेकी ओर खींचना या लाना, अवनति, गिराव; हीनता; क्षय; अपमान; अपयश । -**सम**-पु० जातिके दोषोंसे अर्थमेंसे एक (न्या०) ।
अपकर्षक-वि० [सं०] अपकर्ष करनेवाला ।
अपकर्षण-पु० [सं०] दे० 'अपकर्ष' ।
अपकलंक-पु० [सं०] न मिटनेवाला कलंक ।
अपकल्मष, अपकल्पाय-वि० [सं०] वापरहित; निष्कलंक ।
अपकार-पु० [सं०] उपकारका उल्टा; बुराई; अहित; अनिष्टचिन्ता; नुकसान; शत्रुता; अपमान-अपवाचार; नीच कर्म ।
अपकारक, अपकारी(रिज)-वि० [सं०] अपकार करनेवाला ।
अपकारीचार-वि० अपकार करनेवाला; विप्रकर्ता ।
अपकिरण-पु० [सं०] बिखेरना, छिनटाना ।
अपकीरति-स्त्री० दे० 'अपकीर्ति' ।
अपकीर्ति-स्त्री० [सं०] अपयश, बदनामी ।

अपकृत-वि० [सं०] जिसका अपकार किया गया हो ।
पु० क्षति, हानि ।

अपकृति-स्त्री०, अपकृत्य-पु० [सं०] अपकार ।

अपकृष्ट-वि० [सं०] हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ;
गिराया हुआ; घटिया, खराब । पु० काफ़ । -चेतन-
वि० बुरे विचारोंवाला ।

अपकौशली-स्त्री० [सं०] समाचार, सूचना ।

अपक्लि-स्त्री० [सं०] कष्टापन; अजीर्ण ।

अपक्रम-पु० [सं०] पीछे हटना; आगना; भागनेकी सीमा;
व्यतीत होना (समयका) । वि० क्रमरहित, जिसका क्रम
ठीक न हो ।

अपक्रमण, अपकाम-पु० [सं०] दे० 'अक्रम' ।

अपक्रमी (मिन्)-वि० [सं०] जानेवाला, हटनेवाला; तेजी-
से न जानेवाला ।

अपक्रिया-स्त्री० [सं०] हानि, क्षति; अहित; दोष; दुष्कर्म;
कणपरिशील ।

अपक्रोश-पु० [सं०] निंदा करना, अपशब्दका प्रयोग
करना ।

अपक्व-वि० [सं०] न पका हुआ, कच्चा; न पकाया हुआ;
अन्यस्त ।

अपक्ष-वि० [म०] बिना पक्षका; जिसके साथी-समर्थक न
हों; निष्पक्ष । पु० वह जो राज्यके पक्षमें न हो; वह
जिसमें राज्यको कोई लाभ न हो; वह जिसका किसीसे
मेल-जोल न हो; वह जो किसीसे हिल-मिलकर न रह
सके । -पात-पु० पक्षपातका अभाव । -पाती (मिन्)-
वि० पक्षपात न करनेवाला, निष्पक्ष ।

अपक्षेय-पु० [म०] धीमना, हास; नाश । [वि० 'अपक्षेण']

अपक्षेय, अपक्षेयण-पु० [म०] कैवला; गिराना; पलटाना;
किसी वस्तुमें टकराकर फँका जाना । [वि० 'अपक्षित']

अपगंड-वि० [म०] दे० 'अपोगड' ।

अपगत-वि० [म०] गया हुआ; बीना हुआ; भागा हुआ;
निरीक्षित; मृत । -ध्याधि-वि० रोगमुक्त ।

अपगति-स्त्री० [म०] अधोगति; दुर्गति; दुर्भाग्य ।

अपगम, अपगमन-पु० [सं०] जाना; हट जाना; गत्य
हो जाना; मृत्यु ।

अपगर-पु० [म०] निंदा; निंदा करनेवाला ।

अपगर्जित-वि० [सं०] गर्जनरहित (शब्द) ।

अपगल्ब-वि० [सं०] भीरु, घबकाया हुआ ।

अपगा-स्त्री० [म०] दे० 'आपगा' ।

अपगुण-पु० [सं०] दोष, ऐव ।

अपगोपुर-वि० [सं०] द्वाररहित (नगर) ।

अपघन-वि० [म०] मेघरहित । पु० शरीर; शरीरका कोई
अंग-हाथ-पाँव आदि ।

अपघात-पु० [सं०] रोकना; हत्या; आघात या दुर्घटनामें
मरना; धाखा ।

अपघाती (मिन्)-वि० [म०] अपघात करनेवाला ।

अपघ-पु० बदहज्जी, अजीर्ण; [सं०] वह जो पाककार्य
करनेमें असमर्थ हो; वह जो अपने लिए पाककार्य न करे;
ग़ा पाक ।

अपघय-पु० [सं०] हानि; क्षीयना; व्यय; अस्वफल्गना;
५-क

दोष; कंजसी; सम्मान, पूजा । [वि० 'अपचयी']

अपचरित-वि० [सं०] गया हुआ; मृत । पु० दोष; दुष्कर्म;
शत्रु; अभाव; प्रस्थान । -प्रकृति-पु० वह राजा जिसकी
प्रजा अत्याचारसे उद्विग्न हो ।

अपचायी (मिन्)-वि० [सं०] बर्बोके प्रति सम्मान प्रकट
न करनेवाला ।

अपचार-पु० [सं०] अभाव, अनुपस्थिति; दोष; अनुचित
कर्म; दुराचार, अपव्य ।

अपचारी (मिन्)-वि० [सं०] दुष्कर्मी; बुरा, नीच; दुष्क
होनेवाला; अविवासी ।

अपचाल-स्त्री० कुचाल, खोटाई ।

अपचित-वि० [सं०] क्षीण; व्यय किया हुआ; दुबला-पतला;
सम्मानित, पूजित ।

अपचिति-स्त्री० [सं०] हानि; क्षय, नाश; व्यय; प्रायश्चित्त;
पृथक् करना; दंड देना; सम्मान करना ।

अपची-स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें गलेकी ग्रंथियाँ बढ़
जाती हैं ।

अपचेता (पु)-वि० [सं०] कंजस ।

अपच्छन्न-वि० [सं०] छन्नरहित ।

अपच्छाय-वि० [सं०] छायारहित; बुरी छायावाला;
धुपला । पु० देवता ।

अपच्छाया-स्त्री० [सं०] श्रेत; बुरी छाया ।

अपच्छी-वि० विपक्षी, बैरी; बिना पंखका ।

अपच्छेद, अपच्छेदन-पु० [सं०] काटकर अलग करना;
हानि; विभवाधा ।

अपच्युत-वि० [सं०] गिरा हुआ; गया हुआ; मृत; पिथल-
कर बहा हुआ ।

अपछरा-स्त्री० दे० 'अप्सरा' ।

अपछरी-स्त्री० अप्सरा, देवांगना ।

अपजय-स्त्री० [म०] हार, पराजय ।

अपजस-पु० अपवश, हटनामी; लांछन ।

अपजान-पु० [म०] कपूत, वह पुत्र जो अपने माता-पितासे
गुणादिकी दृष्टिसे डीन हो ।

अपज्ञान-पु० [म०] इनकार; छिपाना ।

अपज्य-वि० [सं०] ज्या या धनुर्युग्में रहित ।

अपटनी-पु० दे० 'उपटन' ।

अपटालर-वि० [म०] जो (पदेके जरिये) अलग न किया
गया हो, मिश्रा हुआ; संयुक्त; अव्यवहित ।

अपटी-स्त्री० [सं०] परदा; कपड़ेकी दीवार, कनात । -क्षेप-
पु० (पात्रोंके अचानक रगमंनपर आनेके लिए) परदे-
का हटाया जाना ।

अपटु-वि० [म०] अकुशल, कच्चा; बौदा; सुस्त, अस्वस्थ;
(वह ग्रह) जिसका प्रकाश मंद पड़ गया हो (ज्यो०) ।

अपटुमान-वि० न पढ़ने योग्य, अपाठ्य ।

अपट-वि० [सं०] अपढ़, निरक्षर ।

अपठित-वि० [सं०] अपढ़; जो नहीं पढ़ा गया है ।

अपहर-पु० हर, शंका ।

अपहरवा-अ० कि० डरना, शंकिता होना ।

अपहाना-अ० कि० खींचतानी करना, झगड़ना ।

अपवाच-पु० श्लेषा, 'जन्महिते अपवाच करत है गुनि

गुनि हृदय कहै'-सु०; तकरार, खीचातानी ।
अपङ्ग-वि० बेपदा, अशिक्षित ।
अपङ्गार*-वि० बेहो तरहसे ढलनेवाला-'अम जो अपङ्गार
 ढरे न ढरे'-घन० ।
अपङ्ग-वि० [स०] न बेचने योग्य; जिसका बेचना निषिद्ध
 हो । पु० न बेचने योग्य वस्तु ।
अपतंत्र; **अपतंत्रक**-पु० [स०] एक वातरोग ।
अपत*-वि० पत्रहीन, नगा; निर्लज्ज; अधम । स्त्री० विपत्ति ।
अपतई*-स्त्री० निर्लज्जता, दिठार; चंचलता (?) ।
अपतर्पण-पु० [स०] लघन, उपवास, भोजनस्थान (रोगमें);
 घृत्तिका अभाव ।
अपतानक-पु० [स०] अपतत्र जैसा एक रोग जिसमें बार-
 बार मूच्छा आती है ।
अपताना*-पु० जगल, झड़ ।
अपति-वि० [स०] पतिहीन, बिना मालिकता; कुमारी;
 विषयः * निर्लज्ज, दुराचारी । स्त्री० दुर्दशा ।
अपतिक-वि० [स०] जिसका कोई मालिक न हो, पतिहीन;
 [स्त्री० 'अपनिका'-कुमारी, विषया १]
अपती-स्त्री० नावमें दोनों सिरोंपर लगी जानेवाली एक
 लकड़ी जो लगभग बिचोर चौड़ी होती है ।
अपतोस*-पु० अफनोस, दुःख ।
अपत्नी-वि० स्त्री० [स०] अविवाहिता; पतिहीना ।
अपत्नीक-वि० [स०] बिना पत्नीका, रंजुआ ।
अपत्य-पु० [स०] सतान, बेड़ा या बेड़ी । -**काम**-वि०
 मतानका इच्छुक । -**जीव**-पु० एक पौधा । -**दा**-स्त्री०
 एक वृक्ष, यमदानी । -**पथ**-पु० योनि । -**विक्षयी**-
(विन्)-वि० मतान बेचनेवाला । -**शत्रु**-पु० वेकड़ा,
 सोंप ।
अपत्र-वि० [स०] बिना पत्तोंका; पत्थहीन । पु० बांसका
 कड़ा; वह वृक्ष जिसके पत्ते गिर गये हों; वह चिड़िया
 जिसे पंख न हो ।
अपत्रप-वि० [स०] निर्लज्ज, धृष्ट ।
अपत्रपण-पु०, **अपत्रपा**-स्त्री० [स०] लज्जा, मकोच;
 आकुलता ।
अपत्रस्त-वि० [स०] भीन, डरा हुआ ।
अपथ-वि० [स०] पथहीन; जहाँ अच्छे रास्ते न हों । पु०
 कुपथ, गलत या घुरी राह; पथका अभाव; प्रचलित धर्म
 या मतका विरोध; योनि । -**गामी**(**मिन्**)-वि० कुमाग-
 गामी । -**प्रपन्न**-वि० कुमार्गपर जानेवाला, दुरुपयोगमें
 लाया हुआ ।
अपथ-वि० [स०] गुरा, अयुक्त; अहितकर, स्वास्थ्य-
 नाशक । पु० प्रतिकूल आहार-विहार । -**निमित्त**-वि०
 अयुक्त आहार नया पानमें उत्पन्न ।
अपद*-अ० अनधिकारपूर्वक; अनुचित रूपमें । वि० [स०]
 बिना पैसा; बिना ओहदेका । पु० रंगनेवाला जतु; गुरा
 न्यान; आकाश । -**रुहा**; -**रोहिणी**-स्त्री० अन्य वृक्षके
 सहारे जीनेवाला वायवीय पौधा-विशेष ।
अपदम-वि० [स०] आभनियन्त्रणहित; जिसकी स्थिति
 बदलती रहती हो ।
अपदव-वि० [स०] दावाभिसे रहित या मुक्त ।

अपदस्थ-वि० [स०] पदसे हटाया हुआ, पदच्युत ।
अपदांतर-वि० [स०] सदा हुआ, मिला हुआ; अति निकट ।
 अ० जल्द, अविलंब ।
अपदान-पु० [स०] शुद्धाचरण; उत्तम कार्य; पूर्ण रूपमें
 किया हुआ कार्य ।
अपदार्थ-पु० [स०] अनस्तित्व; तुच्छता; नगण्यता । वि०
 तुच्छ, नगण्य ।
अपदेखा*-वि० दे० 'अप' में ।
अपदेवता-पु० [स०] वृद्ध देव; दैत्य; राक्षस ।
अपदेश-पु० [स०] न्याय, बहाना; वेश बदलना; छल,
 निर्देश; हेतुनिर्देश; लक्ष्य; कुदेश, गुरी जगह; इनकार;
 प्रमिदि ।
अपद्रव्य-पु० [स०] गुरा द्रव्य, गुरी वस्तु ।
अपद्रार-पु० [स०] बगलका दगवाजा ।
अपघावन-पु० [स०] मत्थका अपघात ।
अपधूम-वि० [स०] घुमहीन ।
अपघ्यान-पु० [स०] (किस्तीका) गुरा मौचना, अनिष्ट-
 चिन्तन ।
अपध्वंस-पु० [स०] पतन; नाश; अपमान; निन्दा । -**ज**-
 पु० वर्णमकर; वह जिसकी मांगा उध वर्णकी और पिना
 निम्न वर्णका हो ।
अपध्वंसी(**सिन्**)-वि० [स०] गिरानेवाला; अपमान
 करनेवाला; नाश करनेवाला, बिजयी ।
अपध्वन्-वि० [स०] मिदित; अपमानित; पराजित; चूर-
 चूर किया हुआ ।
अपध्वान्त-वि० [स०] गलन स्वर निकलानेवाला । पु०
 कर्कश स्वर ।
अपन*-सर्व० दे० 'अपना'; † हम । -**पौ**; -**पौ**-पु०
 अपनापन, आत्मीयता; अपना स्वरूप, होश, मुख-मुप;
 आत्मगौरव; गर्व ।
अपनय-पु० [स०] दूर करना; न्यानातरिण करना; खटन,
 दुर्नीति, अपकार ।
अपनयन-पु० [स०] दूर करना; दूरी जगह में जाना;
 (रोगादिका) दूर होना; कण-परिशील, खटन; घटना ।
अपनयक-पु० [स०] एक प्रकारका हार ।
अपना-सर्व० आत्म-स्वधी, निजका, स्वीय; आप, निज ।
 पु० स्वजन । -**पन**-पु० आत्मीयता, अपनापन, स्वा-
 मिमान । -**मु**-करना-मित्र या अनुकूल बना लेना;
 हाथम कर लेना । -**पराधा**; -**बेगाना**-स्वजन-परजन,
 दोस्त-दुश्मन । -**स्वा** **मुँह लेकर दूर जाना**-लज्जित होना;
 बेवज्र बनना । -**(नी)**-अपनी पदना-सबको अपनी
 चिन्ता होना । -**गाना**-अपनी ही बात कहना । -**गुफिका**
सँवार देना-मामथ्र्यानुसार कन्याका विवाह कर देना ।
 -**नींद सोना**-अपनी भर्त्तमि सोना-जागना, इच्छानुसार
 काम करना । -**बानका** एक-जो अपनी बातपर डटा
 रहे । -**बातपर आना**-हठ करना । -**(ने)** **आप**-स्वतः,
 खुद, अपनेमें । -**तक रखना**-किसीमें न रहना । -**पर**
आना अपने बुरे स्वभावके अनुसार काम करना । -**आवे**-
 अपनी जानमें । -**मुँह मियाँ मिट्ट**-आत्मप्रसांसक ।
अपनाइयता*-स्त्री० दे० 'अपनायन' ।

अपनाना-स० कि० स्वीकार कर लेना; अपना बना लेना; अपने पक्ष या वस्त्र में कर लेना ।

अपनाम-पु० [सं०] बदनामी, निंदा ।

अपनामा(मन्त्र)-वि० [सं०] बदनाम, निन्दित ।

अपनापत्त-स्त्री० आमीयता, आपसदारी ।

अपनाप-पु० अपनानेकी क्रिया; पेश्व ।

अपनीत-वि० [सं०] दूर किया हुआ; निकाला हुआ; संवित; खराब किया हुआ; चुकाया हुआ; विरोधी, जिसका अपनयन किया गया हो, जिते कीड़े भगा के गया हो । पु० दुराचरण ।

अपनुति-स्त्री०, अपनोद्, अपनोद्ग-पु० [सं०] सखन; हडाना, दूर करना; नष्ट करना; प्रायश्चित्त ।

अपपाठ-पु० [सं०] गलत या सदेष्ट पाठ ।

अपपात्र, अपपात्रित-वि० [सं०] जिते सब लोगोंके व्यवहारमें आनेवाला पात्र न दिया जाय, वर्णच्युत ।

अपपाद्-वि० [सं०] घुरे पैरोंवाला । -त्र-वि० पाद-प्राणहीन ।

अपपूत-वि० [सं०] जिसके नित्येकी बनाष्ट ठीक न हो ।

अपप्रजाता-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका गर्भ गिर गया हो ।

अपप्रदान-पु० [सं०] उत्क्रोच, रिश्ता, दम ।

अपवाहक-पु० [सं०] गडुका रोगविशेष ।

अपभय-वि० [सं०] अयहिन । पु० भय; अकारण भय; भयका न रहना ।

अपभाषण-पु० [सं०] निंदा करना, गाली देना ।

अपभ्रंश-पु० [सं०] लीचे गिरना, पतन; विगाड; शब्दका विकृत रूप; प्राकृत भाषाओंका परवर्ती रूप जिनने उत्तर भारतकी आधुनिक आर्य-भाषाओंकी उत्पत्ति मानी जाती है । वि० विगाडा हुआ ।

अपभ्रंशित-वि० [सं०] दे० 'अपभ्रष्ट' ।

अपभ्रष्ट-वि० [सं०] विगाडा हुआ; गिरा हुआ ।

अपमर्द-पु० [सं०] गद, धृत् ।

अपमर्श-पु० [सं०] स्पर्श; चरनेकी क्रिया ।

अपमान-पु० [सं०] भ्रमलभ, बेइज्जती, अनान्द, निरस्कार ।

अपमानना*-स० कि० अपमान करना ।

अपमानित-वि० [सं०] जिसका अपमान किया गया हो, निरस्कृत, निराह ।

अपमानी(विन्)-वि० [सं०] अपमान करनेवाला ।

अपमार्ग-पु० [सं०] कुमार्ग; अपपरिमार्जन ।

अपमार्गी(विन्)-वि० [सं०] कुमार्गगामी, पापी ।

अपमार्जन-पु० [सं०] शुद्धि, सफाई; बाल बनाना; लव, टुकड़ा । वि० नष्ट करनेवाला; हडानेवाला ।

अपमुख-वि० [सं०] टेढ़े मुंहवाला ।

अपमृत्-स्त्री० [सं०] अकार्य मृत्पु, मीप काटने, बिप खाने, कोई दुर्घटना हो जाने आदिमें होनेवाली मृत्पु; बहुत बड़ा स्नान या रोग (जिससे मनुष्य बच आवे) ।

अपमृष्टि-वि० [सं०] अपमृष्ट (वाक्पादि); असह्य ।

अपयस(स्)-पु० [सं०] अपवीर्य, बदनामी ।-(स्) कर-वि० अवीर्यकर ।

अपयान-पु० [सं०] पलायन, भागना; खिसक जाना ।

अपयोग-पु० [सं०] कुयोग; कुसमय; कुचाल ।

अपरंश-अ० [सं०] और भी; दूसरा भी; फिर ।

अपरंपार-वि० अपार, असीम ।

अपर-वि० [सं०] अन्य, दूसरा; पिछला; निरुद्ध; साधारण, दूसरेका; पवित्रभी; द्रव्यही; जिससे बदकर या जिसकी बराबरी करनेवाला कोई न हो । पु० हाथीका पिछला पैर; शत्रु; अविध्यत्काल या अविध्यत्कालमें किया जानेवाला कार्य ।

-काल-पु० बादका समय ।-अ-वि० बादमें उत्पन्न ।

पु० प्रलयाम्नि ।-दक्षिण-पु० दक्षिण-पश्चिम कोण ।

-दिशा-स्त्री० पश्चिम दिशा ।-पक्ष-पु० महीनेका दूसरा पक्ष; प्रतिपक्ष, प्रतिवादी पक्ष ।-धर-वि० एक ओर

दूसरा; कई ।-पुरुष-पु० संशय ।-प्रणेष-वि० जो

दूमरोंसे जलद प्रभावित हो जाय ।-आद्य-पु० मिला

होनेका भाव; भेद, अंतर ।-रात्रि-पु० रात्रिका अंतिम

भाग ।-लोक-पु० परलोक; स्वर्ग ।-बन्ध-पु०,

-बन्धना-स्त्री० कृत्-विशेष ।-वस्त-वि० परतत्र ।

अपरक्त-वि० [सं०] बिना रंगका; रक्तहीन; अमृतुद्ध ।

अपरक्त*-वि० अपच्छक, अनानृत, जो छिपा न हो;

आनृत, प्रच्छन्न, छिपा हुआ, गुप्त ।

अपरतंत्र-वि० [सं०] जो किसीके वशमें न हो, स्वतंत्र ।

अपरता-स्त्री० [सं०] मित्रता; पृथक्त्व; वैशेषिकोक्त २४

गुणोंमेंसे एक; नैकत्व; दूरी ।

अपरति-स्त्री० [सं०] विच्छेद; असंतोष ।

अपरती*-स्त्री० दे० 'अप'में ।

अपरत्र-अ० [सं०] अन्यत्र; और कभी ।

अपरना*-स्त्री० दे० 'अपरणा' ।

अपरबल*-वि० प्रबल; उद्बल; प्रबल ।

अपरब-पु० [सं०] हलग्राह, विवाद (स्पष्टि-वर्णनी) ।

अपरस-पु० एक चर्मेरोग ।-वि० अस्पृश्य; अलिप्त,

अनात्मन्त, दूर-अपरस रहन सनेह तगाले नाहिन मन

अनुरामी ।-मूर; नीरस ।

अपरस्पर-वि० [सं०] अन्यवहित, अविच्छिन्न (कार्य); जो

परस्पर या आपसका न हो ।

अपरांग-पु० [सं०] गुणीभूत व्यवस्था एक भेद (भाग) ।

अपरांत-पु० [सं०] पश्चिमी सीमांत; पश्चिमी सीमातका

देश या निवासी ।

अपरांतक-पु० [सं०] दे० 'अपरात'; एक गीत । वि०

पश्चिमी सीमांतका रहनेवाला ।

अपरांतिका-स्त्री० [सं०] बैनाली छंदका एक भेद ।

अपरा-स्त्री० [सं०] अध्यात्म-विधावले छोडकर दोष संपूर्ण

विद्या; लौकिक विद्या, वेद-वेदांगानादि; पश्चिम दिशा; पुरज, मेही । वि० स्त्री० दूसरी ।

अपराग-पु० [सं०] अमंथोप; शत्रुता ।

अपराग्नि-स्त्री० [सं०] दक्षिण और वाहंयल अग्नि; चित्ता-

की आग ।

अपराजित-वि० [सं०] जो जीता न गया हो । पु० विष्णु;

शिव, ११ रुद्रोंमेंसे एक; एक विषैला कोश ।

अपराजिता-स्त्री० [सं०] दुर्गा; शोफालिका, जवंती, विष्णु-

क्रांता, संखिनी आदि पौधे; अयोध्या नगरी; एक वर्णहृत्;

उत्तर-पूर्व दिक्दिशा; एक योगिनी ।

अपराजेश-वि० [सं०] जो जीता न जा सके ।

अपराध-वि० [सं०] जिसने अपराध किया हो; जो निन्दाया
पूक गया हो; दोषी; गलती करनेवाला; अतिक्रान्त; उल्लं-
घित । पु० अपराध उपराध ।

अपराध-स्त्री [सं०] भूल, दोष; अपराध; पाप ।
अपराध-पु० [सं०] दोष; दंड योग्य कर्म; दुर्म; गलती;
पाप ।-अज्ञान-पु० अपराधों या पापोंका नाश करने-
वाला; शिव ।-विज्ञान-पु० अपराधोंके कारणों इत्यादि-
का विवेचन करनेवाला विज्ञान ।

अपराधी (विद्यु) -वि० [सं०] अपराध करनेवाला; दोषी ।
-(वि) साक्षी (विद्यु)-पु० शकाली गवाह ।

अपराधरज-वि० [सं०] निःसंताप ।

अपराध-पु० [सं०] उत्तराध ।

अपराध-पु० [सं०] दोषहरके बादका काल, तीसरा पहर ।
अपराधतन-वि० [सं०] अपराध-मर्त्यो या इस कालमें
लपक ।

अपराधतन-वि० [सं०] दे० 'अपराधतन' ।

अपराध-पु० दे० 'अपराध' ।

अपरिकल्पित-वि० [मं०] अज्ञात; अष्ट ।

अपरिकल्प-वि० [सं०] चलनेमें असमर्थ; परिश्रम न
करनेवाला ।

अपरिकल्प-वि० [सं०] आर्द्र या तरल नहीं, सुखा ।

अपरिगण्य-वि० [सं०] अनगिनत; बहुभार ।

अपरिगत-वि० [सं०] अज्ञात; अप्राप्त ।

अपरिगृहीत-वि० [सं०] स्वीकार न किया हुआ; लक्ष्य ।

अपरिगृहीताग्रभ्रम-पु० [सं०] एक तरहका अग्नि-
चार (ज्ञे०) ।

अपरिग्रह-पु० [सं०] दानका अस्वीकार; शरीरयात्राके लिए
जितना आवश्यक हो उससे अधिक पैसा, अन्न आदि न
लेना; निर्भनता; योगदर्शनके यमोंमेंसे एक । वि० परिग्रह
न करनेवाला; संपत्ति, दाम आदिने रहित, अकिंचन ।

अपरिग्राह्य-वि० [सं०] जो लेने या स्वीकार करने योग्य
न हो ।

अपरिचय-पु० [सं०] परिचयका अभाव, ज्ञान-पहचान
न होना ।

अपरिचयी (विद्यु), अपरिचय-वि० [सं०] जिसकी ज्ञान-
पहचान ज्यादा न हो; जो मिलनसार न हो ।

अपरिचित-वि० [सं०] अज्ञात; अनभिज्ञ; परिचयहीन;
अजनबी ।

अपरिच्छद-वि० [मं०] बलहीन; फटेहाल, गरीब ।

अपरिच्छाद, अपरिच्छादित-वि० [सं०] आबरणरहित,
जो ढका न हो, नंगा; सर्वन्यापक ।

अपरिच्छिन्न-वि० [सं०] अंतररहित; सीमारहित; विभाग-
रहित ।

अपरिच्छेद-पु० [सं०] विभाग, विलगाव या सीमाका
अभाव; क्रम या व्यवस्थाका अभाव; नैरन्तर्य; विचार या
विवेका अभाव ।

अपरिणत-वि० [सं०] अनपका, कच्चा; अपरिवर्तित, उर्ध्व-
का स्त्री ।

अपरिणय, अपरिणयन-पु० [सं०] विक्रमार्थ, ब्रह्मचर्य ।

अपरिणाम-पु० [मं०] विकारग्राह्य ।-उत्सी (सिद्ध)-

वि० अद्वैतवादी ।

अपरिणामी (मिद्यु)-वि० [सं०] जो बदले नहीं, निर्वि-
कार, एकरस ।

अपरिणीत-वि० [सं०] अविवाहित, कौरा । [स्त्री० 'अप-
रिणीता']

अपरिपक्व-वि० [सं०] पका नहीं, कच्चा, अशक्चरा ।

अपरिपणित संधि-स्त्री [सं०] केवल थोड़ेमें रखनेके
लिए की जानेवाली एक प्रकारकी कपटसंधि ।

अपरिमाण-वि० [सं०] दे० 'अपरिमित' ।

अपरिमित-वि० [सं०] बे-हद; बे-हिसाब; अत्यधिक ।

अपरिमेष-वि० [सं०] जिसकी तौल-माप न हो सके, बे-
जंदाज; अनगिनत ।

अपरिस्थान-वि० [सं०] न मुरझानेवाला; जिसका क्षय
न हो । पु० महासहा वृक्ष ।

अपरिवर्तनीय-वि० [सं०] न बदलनेवाला; अटल; अनदय-
भावी; जो बदलेमें न दिया जा सके ।

अपरिवर्तित-वि० [सं०] जिसमें कोई परिवर्तन, हेर-फेर
न हुआ हो; अविच्छिन्न ।

अपरिवाच-वि० [सं०] जो मर्लनाके योग्य न हो ।

अपरिहृत-वि० [सं०] जो चारों ओरमें घिरा न हो (क्षेत);
अपरिच्छन्न ।

अपरिशेष-वि० [सं०] कुछ शेष न रहने देनेवाला;
व्यापक । पु० सीमा या शेषका अभाव ।

अपरिष्कार-पु० [मं०] अक्षयपन; मस्कारका अभाव; मैला-
पन; उच्छृंखलता ।

अपरिष्कृत-वि० [सं०] जो मौत्रा-धोया न गया हो; मैला,
अदृ; असंस्कृत ।

अपरिसर-वि० [मं०] निकट नहीं, दूर; अप्रशस्त । पु०
विलारभाव ।

अपरिरुद्ध-वि० [मं०] गतिहीन ।

अपरिहरणीय-वि० [मं०] दे० 'अपरिहार्य' ।

अपरिहार-पु० [सं०] अनिवारण; दूरीकरणके उपायका
अभाव ।

अपरिहारित-वि० [सं०] जिसका निवारण न किया गया
हो; जो दूर न किया गया हो ।

अपरिहार्य-वि० [सं०] जिसका परिहार न हो सके; अनि-
वार्य; अवश्यभावी; अत्याज्य ।

अपरीक्षित-वि० [सं०] जिसकी परीक्षा न हुई हो; न
जातमाया हुआ; सुखंतापूर्ण, विचारशून्य; अप्रमाणित ।

अपरुच-वि० [सं०] क्रोधरहित; अकडोर, मृदुल ।

अपरुष-वि० [मं०] कुरूप, अदृ; अपूर्व (ई०) । पु०
अद्याप, कुरूपता ।

अपरोक्ष-वि० [मं०] जो परोक्ष न हो, प्रत्यक्ष, इन्द्रिय-
गोचर; जो दूर न हो ।

अपरोक्षानुभूति-स्त्री [मं०] प्रत्यक्षज्ञान; वेदानका गव,
प्रकरण ।

अपरोष-पु० [मं०] वर्जन, निषेध ।

अपरोष-पु० [मं०] उन्मूलन, विध्वंस; राज्यच्युति ।

अपूर्ण-वि० [सं०] पञ्चरहित ।

अपूर्ण-स्त्री [मं०] पावनी (शिवकी) प्राप्तिके निमित्त

तप करते समय पहले तो रस्ते खाती रहती, किंतु आगे चलकर उन्होंने रस्ते खाना भी छोड़ दिया, इसीसे अपर्णा नाम पड़ गया। दुर्गा ।

अपठु-वि० [सं०] असामयिक, बे-मौसम; जिसके मासिक स्थावक समय बीत गया हो, निवृत्तरजस्का (खी) ।

अपर्यस्त-वि० [सं०] असीम, अपरिमित ।

अपर्याप्त-वि० [सं०] नाकाफी; अधूरा; असीम; अवशेष ।

अपर्याप्त-वि० [सं०] कमहीन । पु० कमहीनता ।

अपर्व(रू)-पु० [सं०] वह दिन जो पर्ववाला न हो ।

-ईश्व-पु० एक ईश्व ।

अपर्वक-वि० [सं०] संश्लिष्ट ।

अपर्व(ईश्व)-वि० [सं०] संश्लिष्ट ।

अपल-अ० अपलक । वि० [सं०] पलशून्य, मांसरहित । पु० किली, अर्गल ।

अपलक-अ० एकटक, निनिमेष ।

अपलक्षण-पु० [सं०] कुलक्षण; अन्यासि अथवा अति-व्याप्ति-दोषयुक्त लक्षण ।

अपलाप-पु० [सं०] छिपाना; (दोषादिसे) इनकार करना; स्तब्धता गोपन; कथे और पसलियोंके बीचका भाग; व्यास; सम्मान; बे-मतलबकी नकवास ।

अपलापी(विन्)-वि० [म०] अपलाप करनेवाला ।

अपलापिका-खी० [म०] अत्यधिक नृणा या लालसा ।

अपलापी(विन्), अपलापुक-वि० [म०] व्याप्ता; जिसे नृणा या लालसा न हो ।

अपलोक-पु० अपवाद, बदनामी ।

अपवचन-पु० [म०] निन्दा, अपशब्द ।

अपवचन-वि० [म०] बाधुरहित; बाधुमे कुरक्षित । पु० कुंज, उद्यान, उपवन ।

अपवरक-पु०, अपवरका-खी० [म०] जयनागार, अतः पुर; बातायन ।

अपवरण-पु० [म०] आवरण, पोशाक ।

अपवर्ग-पु० [म०] मोक्ष, निर्वाण; त्याग, दान; बिनेष नियम, अपवाद; (बाण) छेदना ।

अपवर्जन-पु० [म०] त्याग; दान; जुकाना (रूप आदि); वचनपालन; अपवर्ग ।

अपवर्जित-वि० [म०] त्याग किया हुआ; दिया हुआ ।

अपवर्त-पु० [सं०] धृक् करना; हटाना; सामान्य विभाजक (गणित) ।

अपवर्तक-वि० [सं०] सामान्य विभाजक ।

अपवर्तन-पु० [सं०] परिवर्तन; हटाना, स्थानांतरण; निःशेष भाग; विभाजक ।

अपवर्तित-वि० [सं०] परिवर्तित; हटाया हुआ, धृक् किया हुआ; सामान्य विभाजकसे निःशेष विभक्त किया हुआ ।

अपवर्च-वि० [सं०] जिसका सामान्य विभाजकसे निःशेष विभाग किया जा सके ।

अपवर्हित-वि० [सं०] हटाया हुआ, स्थानांतरित ।

अपवाद-पु० [सं०] निन्दा, बदनामी; लांछन; सामान्य नियमको बाधित या मर्यादित करनेवाला विशेष नियम, श्लिष्टता; खंडन, प्रतिवाद; भ्रान्त धारणाका निराकरण; आदेश; विश्वास; प्रेम; हिंन आदि मानवकी फलानेके

लिए शिकारियों द्वारा की जानेवाली विशेष प्रकारकी ध्वनि । **अपवादक, अपवादी(विन्)-वि०** [सं०] निन्दा, बदनामी खंडन आदि करनेवाला; वापक ।

अपवारक-पु० [सं०] आवरण; घिरी हुई या परदेदार जगह ।

अपवारण-पु० [सं०] छिपाना; ढकना; गायन हो जाना; व्यवधान; व्यवधानकारक वस्तु ।

अपवारित-वि० [सं०] छिपा हुआ, अंतर्हित ।

अपवाह, अपवाहक-पु० [सं०] स्थानांतरित करना; घटाना; एक वृत्त ।

अपवाहक-वि० [सं०] ढोने या ले जानेवाला । पु० किसी वस्तुको एक जगहसे दूसरी जगह ले जानेका साधन या यंत्र ।

अपवाहित-वि० [सं०] दे० 'अपवहित' ।

अपवित्र-वि० [सं०] अवाधित ।

अपवित्र-वि० [सं०] अशुद्ध, नोपाक; मैला ।

अपविद्ध-वि० [सं०] छोड़ा हुआ; बेधा हुआ; नीच, कमीना । -पुत्र-पु० बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक; वह पुत्र जो माता-पिता द्वारा त्यक्त होनेपर अन्य द्वारा पालित हो । -लोक-वि० जो इस सत्साराको छोड़ नुका है, वृत्त ।

अपविद्या-खी० [सं०] आध्यात्मिक अज्ञान, अविद्या ।

अपविष-वि० [सं०] विषयुक्त ।

अपविषा-खी० [सं०] निर्मयी नामक पौधा ।

अपवीण-वि० [सं०] खराब बीनवाला ।

अपवृत्त-वि० [सं०] समाप्त किया हुआ ।

अपवृत्ति-खी० [सं०] सूर्यास्त, छिद्र, रंभ ।

अपवृत्त-वि० [सं०] बुझाया या उलटा हुआ; क्षुब्ध किया हुआ; ममाप्त किया हुआ; औषा ।

अपवृत्ति-खी० [सं०] अत, समाप्ति ।

अपवेष-पु० [सं०] गलन जगह या बुरे तरीकेसे (मोती इत्यादिमें) छेद करना ।

अपवोहा(हृ)-वि० [सं०] ढोने या हटानेवाला ।

अपव्यय-पु० [सं०] अनुचित व्यवहार, फिजूलखर्ची ।

अपव्ययी(विन्)-वि० [सं०] व्यर्थ या अनुचित व्यवहार करनेवाला, फिजूलखर्च, उक्ताक ।

अपव्रत-वि० [सं०] शास्त्रविहित कर्म न करनेवाला; व्रत-त्यागी । पु० होन व्रत ।

अपवर्क-वि० [सं०] निःशुक्र, निर्भाक ।

अपवर्क-पु० [सं०] असंयुक्त, अनिष्ट-वृत्तक शकुन ।

अपवर्क-पु० [सं०] दे० 'अपवर्क' ।

अपवर्क-पु० [सं०] अशुद्ध, असाधु शब्द; विषय हुआ शब्द; ग्राम्य शब्द; दुर्बचन; गाली-गलौज; निन्दित शब्द; अपान वायुका स्वास, गौरव ।

अपवर्क-वि० [सं०] निराम, निवृत्ति ।

अपवृत्त-वि० [सं०] पशुरहित; निर्धन । पु० पशु नहीं; बुरा पशु; शाय या घोड़ेसे भिन्न पशु ।

अपवृत्त(रू)-पु० [सं०] आत्मा । वि० शोकहित ।

अपवृत्त-वि० [सं०] शोकहित । पु० अशोक वृक्ष ।

अपक्षिम-वि० [सं०] अंतिम, जिसके पीछे कोई न हो; अंतिम नहीं, पश्चात्, चरम ।

अपभ्रंश-पु० [सं०] तकिया ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] कीरीन ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अथान बाबु ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अंकुशकी नोक ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] उलटा, विपरीत; बाम; सोमन । पु० समय । अ० अच्छे दगसे; विपरीत रूपमें ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] उलटा, विपरीत ।
 अपभ्रंश-पु० दे० 'अपसकुन' ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अनुलोम विवाहसे उत्पन्न संतान । वि० नीच ।
 अपभ्रंश-अपसवना-अ० कि० अगना; नुपकेमे चल देना- 'गोन बाँधि अपसवहि अकासा'-प० ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] प्रस्थान; पलायन; उचित कारण; दूरी (व्या०) ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] हट जाना; पीछे हटना; भागना; निकल भागनेका रास्ता ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] म्याग; दान; मोक्ष ।
 अपभ्रंश-अपसर्प-पु० [सं०] भेदिता; जासूस ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] लौटना; पीछे हटना; जासूसी करना ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] गया हुआ ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] सव्य (बायाँ)का उलटा, दाहिना; उलटा; जिसका यथोपेक्षित दाहिने कंधेपर हो । मु० -करना-दाहिनी ओर रखते हुए किसीकी परिक्रमा करना । -होना-जनेऊमछा बायेंसे दाहिने कंधेपर रखना ।
 अपभ्रंश-पु० जलकण; माप । [सं०] दे० 'अपमरण' ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] दूर ले जाना; बाहर कत देना; फेंक देना ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] हटाय़ा हुआ; दूर किया हुआ ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] गलत या अत्युक्त निर्णय; एक निग्रहस्थान (म्या०); विरुद्ध मित्राण (त्रि०) ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] गया हुआ; भागा हुआ; च्युत; फैलाया हुआ; फेंका हुआ; बुझने भागा हुआ (कौ०) ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] दे० 'अपमरण' ।
 अपभ्रंश-पु० दे० 'अफमोस' ।
 अपभ्रंश-अपसोमना-अ० कि० अकमोम करना ।
 अपभ्रंश-पु० अपसकुन ।
 अपभ्रंश-पु०-अ० कि० जाना; पहुँचाना; प्राप्त होना ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] गाथीका कोई हिस्सा, पहिया आदि; मल; बिछा; योनि; गुदा ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] घुड़के नीचेका भाग ।
 अपभ्रंश-अपस्तंभ-पु० [सं०] मीनेके पामका वह अंग जिसमें प्राणवायु रहती है ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] कुट्टी या मंथकी मरनेपर किया जानेवाला स्नान, श्रुतस्नान । [वि० 'अपस्नात' ।]
 अपभ्रंश-पु० [सं०] मन्थन ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] शरी रोग; स्मरणशक्तिही क्षान्ति ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अपभ्रंश रोगवाला ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] विस्मरणशील; ध्वंसाया हुआ ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] कुरा या गलत स्वर (सगीत) ।

अपभ्रंश-वि० [सं०] निवारण या नाश करनेवाला (समा-सातमें-छेसापह) ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] नष्ट या दूर किया हुआ; मारा हुआ । -पाप्मा(अन)-वि० पापमुक्त ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] छीन लेना; उठा ले जाना; चुराना; छुट लेना; छिपाना, गायब करना; मछली मालकी दूसरी बीजेमें छिपाकर मछली बचाना (कौ०) ।
 अपभ्रंश-पु०-सं० कि० अपहरण करना ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अपहरण करनेवाला ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अकारण हँसी ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] गलहस्त; इस प्रकार हटाय़ा जानेवाला आदमी; फेंकना; ले जाना; चुराना; छुटना ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] फेंका हुआ; परित्यक्त ।
 अपभ्रंश-पु०, अपभ्रंश-वि०-कौ० [सं०] परित्याग; कर्म होना; गायब होना ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अपहरण; दूसरेकी संपत्तिका दुरुपयोग; हानि, क्षति ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] अपहरण करनेवाला । पु० चोर, डाकू ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] छीना हुआ, लूटा हुआ; छिपाया हुआ ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] दे० 'अपहारक' ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] छीनने या चुराने योग्य ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] अकारण या बे-मौका हँसी; उपहास, चिदावा ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] अपहरण किया हुआ, छीना या चुराया हुआ । -ज्ञान-वि० बे-मन, जिसके होश गायब हो गये हों ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] निरन्कार, अमन ।
 अपभ्रंश-पु० [सं०] छिपाना, वस्तुस्थिति का गोपन; बान बनाना; मर्यादा अन्वयापन; लुप्टीकरण, प्रेम । [वि० 'अपहनुन' ।]
 अपभ्रंश-वि० [सं०] अपभ्रंश; अधोकारका एक अंश जिसमें उपमयका निषेध कर उपमानकी स्थापना की जाती है ।
 अपभ्रंश-वि० [सं०] इनकार करनेवाला, छिपाने-वाला ।
 अपभ्रंश-अप्रांश, अप्रांश-वि० [सं०] पक्तिमें बैठने-माथ भोजन करनेका अनधिकारी (आश्रय), ज्ञान-सहित ।
 अप्रांश-वि० [सं०] अगदीन; अगदीन; पशु । पु० संश्रय-मूलक तिलक, अलंकार की; कामदेव; अपामार्ग । -दृष्टान्त-पु०, -दृष्टि-वि० निराली विलयन ।
 अप्रांश-वि०, पु० [सं०] दे० 'अप्राग' ।
 अप्रांश, अप्रांश-पु० [सं०] समुद्र; वरुण ।
 अप्रांश-पु० [सं०] अधि; एक पौधा ।
 अप्रांश-वि० [सं०] पतिव्रता स्त्री ।
 अप्रांश-वि० [सं०] दे० 'अप्रा' ।
 अप्रांश-पु० दे० 'अप्रा' ।
 अप्रांश-वि० [सं०] अनपका । पु० अपच; कच्चापन । -अ-

वि० जो पक वा पकाकर तैयार न हो; प्राकृतिक । —शाक-
—पु० अदरक ।

अपाकरण-पु०, अपाकृति-स्त्री० [सं०] दूर करना, निराकरण; अस्वीकृति; (कृपादि) नुकता करना । वि० 'अपाकृत' ।

अपाकर्म(श्)-पु० [सं०] नुकाना, अदायगी ।

अपाक्ष-वि० [सं०] उपस्थित, प्रत्यक्ष; नेत्रहीन; दुरी आँखोंवाला ।

अपाक्षी-स्त्री० [सं०] दक्षिण । [वि० 'अपाक्षीन', 'अपाक्ष्य' ।]

अपाक्ष्य-वि० [सं०] जो पकाया न जा सके; जो पच न सके; दक्षिणी ।

अपाटव-पु० [मं०] अपटुता, अनाशीपन; अहापन; रोग, अस्वस्थता । वि० अकुशल, अनाशी; रोगी; अहा ।

अपात्र-वि० [मं०] अयोग्य, सूर्य; अनधिकारी; दान, भाद्र आदिमें नियंत्रणका अनधिकारी (ब्राह्मण) । पु० निकम्मा बरतन; अयोग्य व्यक्ति दान आदि पानेका अनधिकारी ब्राह्मण । —कुट्या-स्त्री० वह कर्म जो ब्राह्मणको अपात्र बना दे । —द्राघी(विन्)-वि० अपात्रको दान देनेवाला । —खुद्-वि० अयोग्यका सम्पर्क करनेवाला ।

अपाट्-वि० विना पैरोका, पटु ।

अपाट्क-वि० [मं०] पटुहीन ।

अपादान-पु० [सं०] हटाना, दूर करना; विलगाव; व्याकरणमें पौनर्वी कारक ।

अपात्र-पु० आत्मघात; आत्मगौरव; होश-हवास; अहंकार । मर्म० अपना । पु० [मं०] पौनर्वी प्राणोंमेंसे एक; भीतरको स्वीयी जानेवाली साँस; गुदा-भागमें बाहर निकलनेवाली हवा; गुदा । वि० दुःस्वर्ता, ईश्वरका एक विशेषण । —हार-पु० गुदा । —पवन-पु०, —वायु-स्त्री० गुदा भाग । निकलनेवाली वायु, गोश्च ।

अपात्रन-पु० [सं०] मांस लेना; भूख, खाव ।

अपात्रन-वि० [मं०] मिथ्यापन रहित, सत्य ।

अपात्र-वि० [मं०] पापरहित, निर्दोष । पु० पुण्य ।

अपात्रार्ग-पु० [मं०] एक दूरी, विचित्र ।

अपात्रार्जन-पु० [मं०] सफाई, शुद्धि, दूर करना (रोगादि) ।

अपात्र्यु-स्त्री० [सं०] दे० 'अपत्र्यु' ।

अपाय-वि० विना पैरोका; निरुपाय । पु० [मं०] जाना; विलगाव; लोप, नाश; हानि; अतः दुराई; खतरा; विपत्ति; * उपद्रव ।

अपायी(विन्)-वि० [सं०] जानेवाला; नाशमान; हानिकर ।

अपार-वि० [सं०] जिसका पार न हो; असीम, असंख्य; अत्यधिक; पहुँचके बाहर; जिसे पार या परावृत्त करना कठिन हो । पु० एक तरहका मानसिक मतीप या सट-स्थता; असहमति; मदीका दूसरा तट; असीम सागर ।

अपारक-वि० [मं०] अशक्त, अयोग्य ।

अपारा-स्त्री० [मं०] धरती, पृथ्वी ।

अपार्ज-वि० [सं०] निकटवर्ती; दूरवर्ती ।

अपार्थ-वि० [सं०] अर्थहीन, निष्प्रयोजन । पु० निरर्थक या असंगत बात कहना या वैसी वृत्ति देना (न्या०) ।

—करण-पु० दावमें छूटी दलील पेश करना ।

अपार्थक-वि० [सं०] निकम्मा, निरर्थक ।

अपार्थिव-वि० [सं०] जो पृथ्वी या मिट्टी-सम्बंधी न हो या उसमें उत्पन्न न हुआ हो ।

अपार्थक-पु० [सं०] एक पौधा या साग ।

अपार्थ-वि० [सं०] अरक्षित ।

अपार्थ-पु० दे० 'उपाय' ।

अपार्थन-वि० [सं०] अपवित्र; मैला, गंदा ।

अपार्थन-पु०, अपार्थन-स्त्री० [सं०] खोलना, उद्घाटन; ढकना; छिपाना; घेरना ।

अपार्थन-पु०, अपार्थन-स्त्री० [सं०] लौटना; पीछे हटना; अस्वीकृति; घूमना, चक्कर देना ।

अपार्थन-वि० [सं०] खुला हुआ; ढका या छिपाया हुआ; घेरा हुआ; स्वनत्र, अनिर्वचन ।

अपार्थन-वि० [सं०] लौटना या पीछे हटाना हुआ; तिर-स्कारपूर्वक अस्वीकार करनेवाला । पु० लौटना (घोड़ेका) ।

अपार्थन-पु० [सं०] आश्रय; बंदोबा; सिरहाना । वि० आश्रयहीन ।

अपार्थन-वि० [सं०] अधिवचन; आवद्ध; अवलंबित, अवस्थित; विरक्त; त्यागी, सम्म्यक् ।

अपार्थन-पु० [मं०] तृणित ।

अपार्थन-पु० [सं०] छेकना; अलग करना; बंध करना । [वि० 'अपार्थित', 'अपार्थ' ।]

अपार्थन-पु० [सं०] अपमरण, गमन; पलायन । [वि० 'अपार्थन' ।]

अपार्थ-वि० [मं०] निर्वीच, मृत ।

अपार्थन, अपार्थन-पु० अपात्र; निकम्मा; मालसी; अकर्मण्य ।

अपार्थी(विन्)-वि० [मं०] पिंडरहित, अशरीरी ।

अपि-अ० [सं०] और, भी; अगारचे । —अ० और भी, बलिक । —तु-अ० किंतु ।

अपिगीर्ण-वि० [मं०] वर्णित, कथित ।

अपिच्छिन्न-वि० [मं०] अपकिल, स्वच्छ; गह्रा ।

अपिच-वि० [मं०] फिर जनमा हुआ । पु० जेष्ठ मास ।

अपितृक-वि० [मं०] पित्रहीन; अपैतृक ।

अपिम्ब-वि० [मं०] अपैतृक ।

अपिधान-पु० [सं०] ढकना; छिपाना; ढकन; आच्छादन, आवरण ।

अपिनद्ध-वि० [सं०] ढका हुआ; बंधा हुआ ।

अपिधत्त-वि० [सं०] धातुक कृत्यका सहभागी; रक्त द्वारा संबद्ध ।

अपिहित-वि० [मं०] ढका, छिपाया हुआ; जो छिपा या ढका न हो, स्पष्ट ।

अपीच-वि० दे० 'अपीच्य' ।

अपीच्य-वि० [सं०] अति सुंदर; युत, छिपा हुआ ।

अपीहन-पु० [सं०] पीका न देना; दबा, अनुकंपा ।

अपीत-वि० [सं०] जिसने सबपान नहीं किया है; जो पीका नहीं है । पु० पीतसे मिश्र वर्ण ।

अपीति-स्त्री० [सं०] प्रवृत्ति; नाश; हानि; प्रलय ।

अपीवस-पु० [सं०] नाककी छुपकता; प्राणशक्तिकी हानि; उन्माद ।

अधीक-श्री० [अं०] सामग्र्य प्रार्थना; खदे आदिके लिए सार्वजनिक प्रार्थना; किसी अदालतका फैसला बदलवानेके लिए उससे ऊपरकी अदालतमें दरखास्त देना, पुनर्विचारकी प्रार्थना ।—**अध्याकृत-श्री०** अधीक सुननेकी अधिकारिणी या मातहत अदालतोंके फैसले किये हुए मुकदमे सुननेवाली अदालत ।

अधीकांड-पु० [अं०] अधीक करनेवाला ।

अधुच्छ-वि० [सं०] बिना पृथक्का, पुच्छविहीन ।

अधुच्छा-श्री० [सं०] शीशमका पेड़ ।

अधुष्य-वि० [सं०] अधामिक; अपवित्र; दुरा । पु० पुण्यका अभाव ।

अधुन, अधुनक, अधुनीय-वि० [मं०] पुत्रहीन, निपूता ।

अधुनिक-पु० [सं०] ऐसी लक्ष्मीका पिता जो अधुन होनेके कारण उत्तराधिकारिणी न बनायी जा सके ।

अधुनिका-श्री० [सं०] पुत्रहीन पिताकी ऐसी बन्धा जिसे पुत्र न हो ।

अधुनपौ, अधुनपौ-पु० दे० 'अधुनपौ' ।

अधुनरावर्तन-पु० [सं०] फिर न लौटना; मोक्ष ।

अधुनरावृत्ति-श्री० [सं०] दे० 'अधुनरावर्तन' ।

अधुनसंब-पु० [सं०] पुनः जन्म न लेना, मोक्ष ।

अधुनीत-वि० [सं०] अपवित्र, दूषित ।

अधुराण-वि० [सं०] पुराना नहीं, नया ।

अधुरथ-वि० [सं०] अमानुषिक, अमानवोचित । पु० हिजबा ।

अधुष्कल-वि० [सं०] अधिक नहीं; नीच, कमीना ।

अधुष्ट-वि० [सं०] जिसका पोषण या बाद ठीक तरहसे न हुई हो; कमजोर; मंद (स्वर); एक अर्थदोष (सा०) ।

अधुष्य-वि० [सं०] पुष्पहीन, जो न फूले । पु० गूलरका पेड़ ।—**फलद्रु-वि०** बिना फूले फल देनेवाला ।

पु० कटहल; गूलर ।

अधुवृद्ध-वि० [सं०] अधामिक; अमक, अक्षिहीन ।

अधुजा-श्री० [मं०] भ्रान्नादर, अमक्ति ।

अधुजित-वि० [सं०] जिसकी पूजा या सम्मान न किया गया हो ।

अधुज्य-वि० [मं०] पूजा या सम्मानके अयोग्य ।

अधुठा-वि० अधुष्ट; अधकचरा; अनविश; अविकसित ।

अधुत-वि० [मं०] अपवित्र, अशुद्ध; अपरिष्कृत; * निपूता ।

अधुप-पु० [मं०] मालपुत्रा; गेहूँ; मधुचक्र, मधुमक्खलीका छत्ता ।

अधुष्य-वि० [मं०] पुत्राभिवध । पु० आटा ।

अधुर-वि० अधुर, मधुर ।

अधुरणी-श्री० [मं०] शास्त्रकी वृक्ष ।

अधुरना-वि० [मं०] भरना; फूंकना, बजाना ।

अधुरब-वि० दे० 'अधुर्व' ।

अधुरा-वि० दे० 'अधुर'; व्यास ।

अधूर्ण-वि० [सं०] जो पूरा या भरा न हो; अधूरा, नानामा; न्यून, कम ।—**भूत-पु०** क्रियाके कालका एक भेद जिसमें भूतकाल तो पाया जाय, पर क्रियाकी समाप्ति न हुई हो (व्या०) ।

अधूर्व-वि० [सं०] जो या जैसा पहले न हुआ हो; अदुन, बेजोड़; अज्ञात, अजनबी; पहला नहीं । पु० परब्रह्म;

कर्मका अष्ट फल, पापपुण्य ।—**पति-श्री०** कुमारी कन्या ।—**रूप-पु०** अधीककारका एक भेद ।—**बाह-पु०** ब्रह्मके संबंधमें किया जानेवाला बाद-विवाद ।—**विधि-श्री०** नया आधिकारिक आदेश ।

अधुक-वि० [सं०] असंयुक्त; अमंजब ।

अपेक्षण-पु० [सं०] अपेक्षा करना या रखना; चाह, आशा या आवश्यकता; विचारणा; कारणकार्य आदिका संबंध; ध्यान देना, देख-भाल; आदर ।

अपेक्षणीय, अपेक्ष-वि० [सं०] अपेक्षा करने योग्य ।

अपेक्षा-श्री० [सं०] दे० 'अपेक्षण' । अ० निरस्त, तुलनामें ('को'के साथ प्रयुक्त) ।—**कृत-अ०** किसीकी तुलनामें (न्यूनार्थिक), निरस्त ।—**बुद्धि-श्री०** भेदबुद्धि ।

अपेक्षित-वि० [मं०] जिसकी चाह, प्रतीक्षा या आवश्यकता हो ।

अपेक्षी (क्षिन्)-वि० [मं०] अपेक्षा करनेवाला; आकांक्षा, प्रतीक्षा करनेवाला (जैसे परमुखापेक्षी) ।

अपेक्ष्य-श्री० दे० 'अपेक्षा' ।

अपेत-वि० [सं०] गया हुआ; पलायित; बर्चित, रहित; मुक्त ।—**राक्षसी-श्री०** तुलसी नामक पौधा ।

अपेथ-वि० [सं०] न पीने योग्य ।

अपेथ-वि० अटल; अकाट ।

अपेठ-वि० पैठ या पट्टेके बाहर, दुर्गम ।

अपोगंड-वि० [मं०] सीलह वरमसे अधिक अवस्थावाला, बाल्मि; भीत; विकलांग, न्यून या अधिक अंगोंवाला; शिशु, किटोर ।

अपोड-वि० [मं०] दे० 'अपबहित' ।

अपोदिका-श्री० [मं०] एक पौधा ।

अपोह, अपोहन-पु० [मं०] दूर करना, निवारण; नर्क, युक्ति द्वारा अंकातिवारण; एक नर्ककी काटनेवाला दूसरा नर्क (ऊहापोह) ।

अपोरुष, अपौरुषेय-वि० [सं०] पुरुषाधीन; भीरु, अपुरुषोचित; अलौकिक, ईश्वरीय; मनुष्यकृत नहीं, ईश्वर कृत । पु० पौरुषका अभाव; अलौकिक शक्ति ।

अप्-पु० [मं०] पानी; हवा ।—**चर-पु०** जलजंतु ।

-पति-पु० वरुण; ममृद्र ।—**वित्त-पु०** अग्नि; एक पौधा ।—**स्वर-पु०** जलचर प्राणी ।

अप्-पु० [मं०] शरीर; अंग; यवपशु ।

अप्यान-वि० [मं०] अपान; अपनापन, श्वासापान ।

अप्यथ-पु० [मं०] नाथ, लय; सयोग, जोड़ ।

अप्यथन-पु० [मं०] मेल, संयोग; मैथुन ।

अप्रकंप-वि० [मं०] स्थिर; जिसका खंडन न हुआ हो; त्रिमका उत्तर न दिया गया हो ।

अप्रकट-वि० [सं०] जो प्रकट न हो, छिपा हुआ ।

अप्रकर-वि० [मं०] सुचारु रूपसे कार्य न करनेवाला ।

अप्रकरण-पु० [मं०] अप्रधान विषय; आकस्मिक या असंबद्ध विषय ।

अप्रकल्पक-वि० [मं०] जिसके लिए स्पष्ट आदेश न हो, जिसे करनेके लिए बाध्यता न हो ।

अप्रकांड-वि० [सं०] शाखागिन (छोटा) । पु० क्षुप, झाड़ी ।

अप्रकाश-पु० [सं०] प्रकाशका अभाव, अंधिरा; गुप्त बात, रहस्य । वि० प्रकाशरहित; छिपा हुआ; अंधकारपूर्ण; अप्रकट; स्वतः प्रकाशित ।

अप्रकाशित-वि० [सं०] प्रकाशहीन; अप्रकट; न छपा हुआ, जो छपकर जनसाधारणके सामने न आया हो ।

अप्रकाश्य-वि० [सं०] प्रकाशित या प्रकट करनेके अयोग्य ।

अप्रकृत-वि० [सं०] अव्ययार्थ; वनावदी; अप्रधान, आनु-वंगिक, योग्य; आकस्मिक; विषयसे असंबद्ध । पु० अप्रस्तुत, उपमान ।

अप्रकृति-स्त्री० [सं०] विकृति; पुरुष, आत्मा (सां०); -रूप-वि० अस्वस्थ; रोग, उद्वेग आदिके कारण जिसका तन-मन स्वाभाविक अवस्थामें न हो ।

अप्रकृष्ट-वि० [सं०] नीच, बुरा । पु० काफ ।

अप्रखर-वि० [सं०] अतीक्ष्ण; सुस्त; कोमल ।

अप्रखर-वि० [सं०] सलज्ज; विनीत; दम्बू; जो प्रौढ वा घोट न हो; डीला ।

अप्रगुण-वि० [सं०] व्याकुल, घबराया हुआ, व्यस्त ।

अप्रग्राह-वि० [सं०] अनिर्धत्त ।

अप्रचक्षित-वि० [सं०] जिसका चल्न या व्यवहार न हो ।

अप्रचक्षित-वि० [सं०] अनिश्चित; अनादिष्ट ।

अप्रचक्ष-वि० [सं०] अनादृत्य, प्रकट, खुला हुआ ।

अप्रच्छिन्न-वि० [सं०] अविभक्त ।

अप्रज्ञ-वि० [सं०] निस्त्वमान; अज्ञान, न जनमा हुआ; अव्यभि ।

अप्रनय-वि० [सं०] जो तर्क या अनुमानसे न जाना जा सके, अनय ।

अप्रति-वि० [सं०] अद्वितीय; अप्रतिबोधी ।

अप्रतिकर-वि० [सं०] विश्वस्त; विश्वामपात्र ।

अप्रतिकार-पु० [सं०] प्रतिकारका अभाव; उपाय वा बदलेमें वार न करना । वि० निरुपाय, ला-इलाज ।

अप्रतिकारी(रिन्)-वि० [सं०] प्रतिकार न करनेवाला ।

अप्रतिगृह्य-वि० [सं०] जिसका दाज म्बीकार न किया जा सके ।

अप्रतिग्रहण-पु० [सं०] दानादि न लेना; कन्यादान न लेना ।

अप्रतिग्राह्य-वि० [सं०] ग्रहण न करने योग्य ।

अप्रतिष्ठ-वि० [सं०] अत्रेय; जो रोकना न जा सके; अकूट ।

अप्रतिघात-वि० [सं०] प्रणिघात या विरोधसे रहित; आपातमें बचा हुआ ।

अप्रतिहृह-वि० [सं०] विना प्रतिहृदीका, बे-जोड़ ।

अप्रतिपक्ष-वि० [सं०] अप्रतिबोधी, विपक्षस्थ; असमान, अलग ।

अप्रतिपक्ष-वि० [सं०] जिसका विनिमय या विक्रय न हो सके ।

अप्रतिपक्षि-स्त्री० [सं०] निक्षयका अभाव; कर्तव्यका निक्षय न कर सकना; बिह्वलता; असफलता; स्फूर्तिका अभाव ।

अप्रतिपक्ष-वि० [सं०] अनिश्चित; असंपन्न; कर्तव्यहानतसे दान ।

अप्रतिबंध-पु० [सं०] रोक-टोक न होना, स्वच्छंदता । वि० बे-रोक-टोक, स्वच्छंद; विना किसी श्रगकेके प्राप्ति (का०) ।

अप्रतिबंध-वि० [सं०] बे-रोक; अनमना ।

अप्रतिबंध-वि० [सं०] बे-जोड़ ताकतवाला ।

अप्रतिब-वि० [सं०] प्रतिबाहीन, जिसे अभाव या बचाव न सुझे, अप्रत्युत्पन्नमति; उदात्त; मर; लम्बावील ।

अप्रतिमद-वि० [सं०] प्रतिमदहीन, जिसका मुकाबला करनेवाला कोई न हो । पु० ऐसा योद्धा ।

अप्रतिभा-स्त्री० [सं०] प्रतिभाहीनता; बादमें प्रतिवादीका वादीके तकौता उत्तर न दे सकना; दम्बपन, कम्ब-शीलता ।

अप्रतिम-वि० [सं०] बे-जोड़, अनुपम ।

अप्रतियोगी(रिन्)-वि० [सं०] जिसका कोई मुकाबला करनेवाला न हो; जिसके मुकाबलेका दूसरा हिस्सा न हो ।

अप्रतिरथ-वि० [सं०] अद्वितीय वीर; जिसका कोई मुकाबला करनेवाला न हो ।

अप्रतिरथ-वि० [सं०] विना विवाद या श्रगकेका ।

अप्रतिरूप-वि० [सं०] अनुरूप, अयोग्य; बे-जोड़ रूप-वाला; अद्वितीय ।

अप्रतिवीर्य-वि० [सं०] अनुलित शक्तिवाला ।

अप्रतिवासन-वि० [सं०] जिसका प्रतिहृदी शास्त्रक न हो; एक ही शासनके अधीन ।

अप्रतिष्ठ-वि० [सं०] बे-बख्त, बदनाम; अस्थिर; निकम्मा; फेंका हुआ । पु० एक नरक; ब्रह्म ।

अप्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] आदर-वान्मका अभाव; बे-इज्जती; ददता या स्थिरताका अभाव ।

अप्रतिष्ठित-वि० [सं०] प्रतिष्ठाहीन, समाजमें जिसका आदर-सम्मान न हो; जो स्थिर या सुस्थापित न हो ।

अप्रतिसंबद्ध भूमि-स्त्री० [सं०] वह भूमि जो एक दूसरी-से मदी न हो (की०) ।

अप्रतिहत-वि० [सं०] जिसे कोई रोकनेवाला न हो, अबाधित; अपराधित; अक्षुण्ण । पु० अकूट । -गति-वि० जिसकी गति किसी प्रकार रोकने न जा सके । -नेत्र-पु० एक बीड़ देवता । -रथ-पु० वह अग्न्यवस्थित व्यूह जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और सिपाही एक दूसरेके पीछे हों (की०) ।

अप्रतिहार्य-वि० [सं०] जिसका निरोध न किया जा सके ।

अप्रतीक-वि० [सं०] अंगहीन; शरीरहीन; ब्रह्मका एक विशेषण ।

अप्रतीकार-पु०, वि० [सं०] दे० 'अप्रतिकार' ।

अप्रतीकारी(रिन्)-वि० [सं०] दे० 'अप्रतिकारी' ।

अप्रतीघात-वि० [सं०] दे० 'अप्रतिघात' ।

अप्रतीत-वि० [सं०] अप्रसन्न; अगम्य; विरोधरहित; एक देशमें ही प्रसिद्ध (अर्थवाला-एक शब्ददोष) ।

अप्रतीति-स्त्री० [सं०] प्रतीतिका अभाव, अविश्वास; (अर्थ-दिक) स्पष्ट न होना ।

अप्रतीतिभाव-वि० [सं०] अनिश्चित ।

अप्रसूत-पु० [सं०] बचनकी कमी; अभाव; आवदयकता ।

वि० अनुकूलन, यद्वितीय ।
अग्रदा-वि० [सं०] अग्रदूत, न लौटाया हुआ ।
अग्रदा-स्त्री० [सं०] कुमारी कन्या ।
अग्रदूत-वि० [सं०] जो हिसाब न दे, अनोचर; परोक्ष ।
अग्रदूत-वि० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें शब्दको जीतनेकी योग्यताके कारण उससे सब रसनेवाली वस्तु-ओंका सिरस्कार न किया जाय ।
अग्रदूत-पुं० [सं०] विद्वत्सका अभाव; प्रतीतिका, हानका अभाव । वि० विभक्तिरहित (संज्ञा, प्रातिपदिक-व्या०); विस्वासरहित; अनभिज्ञ ।
अग्रदूत-वि० [सं०] जिसकी आशा न रही हो, अन-सोचा, आकस्मिक ।
अग्रधान-वि० [सं०] गौण; छोटा । पुं० गौण कार्य ।
अग्रदूत-वि० [सं०] अनेक ।
अग्रदूत-वि० [सं०] प्रमाण, पुंश्लोक; पुरा ।
अग्रदूत-वि० [सं०] अममय, अयोग्य ।
अग्रदूत-स्त्री० [सं०] अल्प बाल; अल्पता ।
अग्रदूत-वि० [सं०] लापरवाह नहीं, सावधान, जागरूक ।
अग्रदूत-वि० [सं०] आसीद-प्रमोदसे विरत; उदात्त, अग्रज ।
अग्रदूत-वि० [सं०] अनवर; अग्रज ।
अग्रदा-स्त्री० [सं०] ज्ञात हान ।
अग्रमाण-वि० [सं०] जो प्रमाण न माना जा सके, अग्र-माणिक; प्रमाणरहित, बिना सद्बलक; अनधिकृत; असीम, अपरिमित । पुं० वह जो प्रमाणिक न माना जाय; अग्र-सगिकता ।
अग्रमाद-पुं० [सं०] सावधानता, जागरूकता । वि० प्रमाद-रहित; चौकता; मुस्तैद ।
अग्रमिल-वि० [सं०] जो माया न गया हो; असीम; जो अधिकारी द्वारा प्रमाणित न किया गया हो ।
अग्रमेल-वि० [सं०] जिसकी माप न हो सके; बे-हद, बे-हिसाब; जो सिद्ध या प्रमाणित न किया जा सके; अनेक ।
अग्रमोद-पुं० [सं०] कष्ट दूर करनेकी असमता; प्रसन्नता-का अभाव ।
अग्रयज्ञ-वि० [सं०] प्रयत्न न करनेवाला, उत्साहहीन; उदासीन । पुं० प्रयत्नका अभाव ।
अग्रयुक्त-वि० [सं०] जो काममें न लाया गया हो, अन्व-वृत्त; गलत तरीकेसे काममें लाया हुआ; अप्रयोजित (शब्द) ।
अग्रयोग-पुं० [सं०] प्रयोगका अभाव या दुष्प्रयोग; काममें न लाना; प्रयोगमें न आना (शब्दका) ।
अग्रलक्ष-वि० [सं०] देर न लगानेवाला, तेज, चुस्त ।
अग्रवर्तक, **अग्रवर्त**(सिद्ध)-वि० [सं०] कार्यमें संलग्न होनेके लिये उत्तेजित करनेवाला; निष्क्रिय; अविलम्ब ।
अग्रवृत्त-वि० [सं०] जो प्रवृत्त न हो । -वृत्त-वि० जिसकी ओरसे आक्रमण न हुआ हो ।
अग्रवृत्ति-स्त्री० [सं०] प्रवृत्तिका अभाव; कोष्ठबद्धता ।
अग्रवस्त-वि० [सं०] अग्रद्विमत; निष्ठ, पुरा; अविहिता; क्षीण ।
अग्रसंग-पुं० [सं०] आसक्ति, संगति, लगाव प्रादिका

अभाव । वि० असंबद्ध; प्रसंगरहित ।
अग्रसक्त-वि० [सं०] आसक्तिहीन; बिना संगति या लगावका ।
अग्रसक्ति-स्त्री० [सं०] अनासक्ति; संयमन; परिमितता ।
अग्रसङ्ग-वि० [सं०] प्रसादरहित, खिन्न, उदात्त; नास्तुष्ट, नाराज ।
अग्रसाह-पुं० [सं०] अकृपा, अननुकूलता ।
अग्रसिद्ध-वि० [सं०] जिसे अधिक लोग न जानते हों, गुप्तनाम; असामान्य; अनिष्पन्न ।
अग्रसूता-स्त्री० [सं०] वप्या स्त्री ।
अग्रस्तुत-वि० [सं०] अनुपस्थित; असंबद्ध; अवर्ण्य; गौण, अप्रधान; अनुषत् । पुं० उपमान । -प्रशंसा-स्त्री० एक अर्थालंकार जहाँ प्रस्तुतके अर्थ अग्रस्तुतका वर्णन किया जाय ।
अग्रहृत-वि० [सं०] अट्टाता; न जोटा हुआ (सेत); कोरा या न पहना हुआ (कपडा) ।
अग्राकरणिक-वि० [सं०] जिसका प्रकरण या बिषयसे संबंध न हो ।
अग्राकृत-वि० [सं०] अस्वाभाविक; अलौकिक; असाधारण; संस्कृत ।
अग्राकृतिक-वि० [सं०] अस्वाभाविक, अलौकिक ।
अग्राग्रय-वि० [सं०] अग्रधान, गौण ।
अग्राज्ञ-वि० [सं०] ज्ञानहीन; अशिक्षित ।
अग्राचीन-वि० [सं०] पुराना नहीं, नया; पूर्वोक्त नहीं, पश्चिमीय ।
अग्राज्ञ-वि० [सं०] प्राणहीन, निर्जीव । पुं० ईश्वर ।
अग्राज्ञ-वि० [सं०] न मिला हुआ; न आया हुआ; न पहुँचा हुआ; अप्रस्तुत; जिसकी अबस्था विवाहके योग्य न हुई हो; अल्पवयस्क । -काल-वि० जिसका समय न आया हो, बे-वक्त । पुं० बादमें प्रसिद्धा, हेतु, उदाहरण आदि ब्याख्यान न करनेका दोष (न्या०) । -बोधन-वि० युवावस्थाकी न पहुँचा हुआ । [स्त्री० 'अग्रस्येवना' ।]
अग्र-वि० [सं०] दे० 'अग्रप्रवृत्ति' । -वप्या(स्त्री)-वि० वप्या उन्नता; नाबालिग । -वप्यहार-वि० २६ वर्षमें नीचेका (शालक) ।
अग्रसि-स्त्री० [सं०] न मिलना, अलगाव; पूर्वनिवृत्तसे प्रमाणित न होना; पट्टन न होना; अनुपपत्ति । -सम्प-पुं० ज्ञान या असत् उत्तरके चौबीस अंगोंमेंसे एक (न्या०) ।
अग्रप्य-वि० [सं०] न मिलनेवाला, अलभ्य ।
अग्रमाणिक-वि० [सं०] प्रमाणरहित; न मानने योग्य; अविश्वसनीय ।
अग्रहृत-वि० [सं०] जो ढका न हो, अनाहृत ।
अग्रधान-पुं० [सं०] अनशन ।
अग्रसंगिक-वि० [सं०] प्रस्तुत विषयमें अमरुद्ध; प्रसंगके विरुद्ध या बाहरका ।
अग्रिष्वद-वि० [सं०] दे० 'अग्रिष्वद' ।
अग्रिष-वि० [सं०] जो प्यारा न हो; अशुचिकर, नापसंद; बैर करनेवाला । पुं० अन्ध, शत्रुतापूर्ण कार्य; बैर । -कर,-कारक,-कारी(सिद्ध)-वि० अशुचिकर । -आरी(सिद्ध)-वि० दुआवपस्त । -आरी(सिद्ध)-वि० कटुभाषी, कठोर बात कहनेवाला ।

अभिधा-ली० [सं०] मृगी मछली ।
 अग्रिप्ति-ली० [सं०] अरुचि; वैर; दुर्भाव; केहाभाव ।
 -कर-वि० कटीर; अननुकूल; अभिय ।
 अग्नेरिस-पु० [अं०] काम सौख्यके लिए काम करनेवाला;
 उन्मोदवार ।
 अग्नेर-वि० [सं०] न गया हुआ ।-राक्षसी-ली० तुलसी
 नामक पौधा ।
 अग्नेर-पु० ईसवी सालका चौथा महीना, एप्रिल ।-फूक-
 पु० पहली अग्रेली मजकमें बेवकूफ बनाया जानेवाला
 व्यक्ति ।
 अग्रोचित-वि० [सं०] न गया हुआ; जो अनुपस्थित न हो ।
 अग्रोद-वि० [सं०] अधुन; भीर; नम्र; अशक्त; नाबालिग ।
 अग्रोद्वा-ली० [सं०] कुमारी कन्या; बह कन्या जिसका
 हाथमें ही विवाह हुआ हो, पर राजमन्त्र न हुई हो ।
 अग्रव-वि० [सं०] गेतहीन; जो तैरना न हो ।
 अग्रवरापति-पु० [सं०] इंद्र ।
 अग्रर-ली० दे० 'अग्रर' । पु० [सं०] दे० 'अग्र' ।
 अग्रर(रख्)-ली० [सं०] स्वर्गलोक-वासिनी देवता, परी ।
 अग्र्य-वि० [सं०] आकृतिहीन; कुरूप ।
 अग्र्यक्षि-पु० [सं०] देवता ।
 अग्र्युद्ध-वि० [सं०] जलमें रहनेवाला ।
 अग्र्युपवेशन-पु० [सं०] अपराधीको जलमें डुबाकर मारने-
 का ढंठ (कौ०) ।
 अग्र्युयोनि-पु० [सं०] घोडा; बैत ।
 अग्रयान-वि० [सं०] अग्रयानिष्ठानका रहनेवाला ।
 अग्रयानिष्ठान-पु० [सं०] भारतीकी पश्चिमोत्तर सीमा-
 पर अवस्थित एक देश ।
 अग्र्य-वि० [सं०] काजिल, बचा या उबरा हुआ ।
 अग्रतार-पु० [सं०] दे० 'इक्षतार' ।
 अफताली-पु० पहावर पहलेमें जाकर आरामका प्रबंध
 करनेवाला कर्मचारी ।
 अफनाना-अ० क्रि० ऊब उठना, घबराना, सॉम रुकने
 जैसा अनुभव होना; उथलना; झुझ होना ।
 अफयून-ली० [अ०] अफीम ।
 अफयूनी-वि० [अ०] अफीमची ।
 अफरना-अ० क्रि० जीभर खाना, अधाना; पेट फूलना;
 ऊबना ।
 अफरा-पु० पेट फूलनेका रोग; अपच या वायुविकारसे
 पेटका फूलना ।
 अफरा-सफरी-ली० [सं०] गवब, गोलमाल; बदहवासी;
 आनक ।
 अफराना-अ० क्रि० दे० 'अफरना' ।
 अफरीही-पु० भारतकी पश्चिमोत्तर सीमापर बसनेवाली
 एक पठान जाति ।
 अफल-वि० [सं०] फलरहित; निरर्थक; धोखा । पु० झापुक
 या झाऊ नामक वृक्ष ।
 अफला-ली० [सं०] भूम्यामलकी; बृत्तकुमारी ।
 अफलावृत्त-पु० [सं०] प्राचीन ज्ञानप्रका एक प्रमुख
 विद्वान् तथा दार्शनिक, ज्योतिषी ।-का वासी-अपने हकपन-
 की रीति मारनेवाला ।

अफलिख-वि० [सं०] फलहीन; परिणामशून्य ।
 अफल्यु-वि० [सं०] उत्पादक, लाभदायक, निकम्मा नहीं ।
 अफवा-ली० दे० 'अफवाह' ।
 अफवाह-ली० [अ०] किंवदंती, उड़ती खबर; गप्प ।
 अफसर-पु० [सं०] प्रधान अधिकारी; हाकिम; सरदार ।
 -ए-आका-पु० सर्वोच्च अधिकारी ।
 अफसरी-ली० प्रधानता; अधिकार ।
 अफसावा-पु० [सं०] कहानी, आख्यान; उपन्यास ।
 -नबीस-विगार-पु० कहानीलेखक; उपन्यासकार ।
 -सॉचा-पु० छोट्टे कहानी ।
 अफस-पु० [सं०] जाड़, मोहन-वर्षीकरण-विष ।-गर-
 पु० जादूगर ।
 अफसोस-पु० [सं०] दुःख; खेद; पछतावा ।
 अफोम-ली० पोस्तेके ढोंढका गोंद जो नशे और हवाके
 लिए काममें लाया जाता है ।-ची-वि० अफीम खाने-
 का आदी ।
 अफोमी-वि० दे० 'अफीमची' ।
 अफुल-वि० [सं०] अधिकसित (पुष्प) ।
 अफेन-वि० [सं०] जिसमें फेन न हो । पु० अफीम,
 अफेन ।
 अर्ब-वि० [सं०] जो धंनु न हो ।
 अर्ब-वि० [सं०] दे० 'अर्बधन' ।
 अर्बधन-वि० [सं०] बंधन-रहित, स्वच्छंद ।
 अर्बधु, अर्बध-वि० [सं०] मित्रहीन, अकेला; जिसके
 कोई न हो ।
 अब-अ० हम समय; इस क्षण, फिलहाल; आगेमें ।-का-
 वर्तमान कालका, हालका, आपुनिक ।-की-के-इस
 बार, अगली बार ।-आकर-इतनी देर बाद ।-जी-
 आज भी; इतनेपर भी ।-से-आगेमें, आर्बवा । जु०
 -तब करना-आजकल करना, डालमटोल करना ।
 -तब लगना या होना-मरणोत्पन्न होना, कुछ देरका
 मेहमान होना ।
 अब-पु० [अ०] बाप, पिता ।
 अबअर-पु० [अ०] भाप; पुहारका बटु ।
 अबदनी-पु० दे० 'उबदन' ।
 अबतर-वि० [सं०] विगड़; हुआ; घुरा, खराब ।
 अबतरी-ली० [सं०] बिगाड़; अवनति, खराबी ।
 अबद्ध-वि० [सं०] न बंधा हुआ, मुक्त; स्वच्छन्द, आजाद;
 अर्बहीन, बे-मतलब ।-मुल-वि० जो मनमें आवे वह
 बकनेवाला, बदबजान ।-मुल-वि० जिसकी जड़ रुद न हो ।
 अबद्ध-वि० [सं०] दे० 'अबद्ध' ।
 अबद्ध-वि० अबाध ।
 अबद्ध-पु० अवधूत, सन्ध्यासी । वि० अवोध ।
 अबध्य-वि० [सं०] न मारने योग्य; बधर्दके अवोध्य
 (ली, ब्राह्मण आदि) ।
 अबर-वि० अपर, अन्य । दे० 'अबल' ।
 अबरक-पु० अन्नक धातु; एक तरहका पत्थर ।
 अबरख-पु० दे० 'अबरक' ।
 अबरन-वि० अवर्णनीय; बिना रंग-रूपका; मित्र रंगका ।
 पु० आवरण ।

अक्षरसं-वि० [अ०] चितकवरा । पु० चितकवरा घोडा; ऐसा रंग ।

अक्षरी-पु० [फा०] ऊपरका पहा; उपहा; न खुलनेवाली गोंठ; उल्लूख । † वि० अक्षल ।

अक्षरी-वि० बादलकोटी धारिवोवाला; रगदार; पच्चादार ।
क्षी० एक तरहका रंगदार कागज जो जिल्दे के ऊपर लगाया जाता है, 'मार्बल'; एक तरहका पत्थर; एक तरहकी छालकी रंगाई ।

अक्षर-क्षी० [फा०] औ । **मु०** -पर (में) बल आना-कुट होना, खीरी चढ़ना । -पर मैल न आना- (आघात आदिका) असर न होना; अविचलित रहना ।

अक्ष-वि० [सं०] बलहीन, कमजोर; अक्षित । पु० वरण वृक्ष; निर्बलता ।

अक्षक-वि० [फा०] सफेद-काला; सफेद और काल रंगका; चितकवरा । पु० ऐसे रंगका घोडा ।

अक्षल-वि० दे० 'अक्षल' ।

अक्षल-क्षी० एक चित्रिया ।

अक्षल-क्षी० [सं०] क्षी, नारी ।

अक्षलक्ष-पु० [सं०] शिव ।

अक्षल-पु० [सं०] निर्बलता, कमजोरी; अलसता ।

अक्षलक्ष-पु० [अ०] मालगुजारी या लगानपर लगनेवाला अतिरिक्त कर; गोंबके व्यापारी आदिसे जमींदारकी मिलनेवाला कर ।

अक्ष-अ० [अ०] बेकार, व्यर्थ । वि० निरर्थक, बेफायदा; * जो अपने बचमें न हो ।

अक्षी-वि० बिना बाँधका; अनाथ ।

अक्ष-पु० [अ०] अगेके रंगका एक पहनावा जो उमसे अधिक लंबा होता है, 'गाउन' ।

अक्षली-वि० निवात; खिर रूपसे जलनेवाला ।

अक्षल-वि० निर्विवाद ।

अक्षल-वि० आवाद; समृद्ध ।

अक्षलानी-क्षी० दे० 'आवादानी' ।

अक्षल-वि० [म०] बाधारहित, बेरोग; निर्विष; कष्ट-रहित; * अपार, असीम । पु० बाधा या खडन न होना ।

अक्षल-क्षी० [सं०] विमुक्तके आधारका खंड; कष्टराहित्य । * वि० अक्षल ।

अक्षल-वि० [सं०] जो रौका न गया हो, स्वाधीन; जिसका खंड न किया गया हो; अनिषिद्ध ।

अक्षल-वि० [सं०] जो रौका न जा सके ।

अक्षल-वि० निरुद्ध ।

अक्षली-क्षी० [फा०] एक छोटी चित्रिया जो प्रायः खंडहरीमें घोंसला बनाती है ।

अक्षर-क्षी० अक्षर, देर । अ० बीध, जल्द ही- 'तुमको देखावहिं नहिं स्वयंवर होनहार अक्षर'-रघु० ।

अक्षल-वि० [सं०] जो बालक न हो, अवान; बालोचन नहीं, युवकोचित । † पु० चरलेकी पंखुवियोंमें बाँधी जाने-वाली रस्सी ।

अक्षल-पु० आवाम, घर ।

अक्षल-वि० [सं०] बाहरी नहीं, भीतरी; पूर्ण रूपसे परिवर्तित; जिसमें बहिर्भाग न हो ।

अक्षल-पु० [सं०] बाह्यभाग ।

अक्षल-पु० [सं०] रावणका एक मंत्री ।

अक्षी-वि० [सं०] बीजहीन; नपुंसक ।

अक्षी-क्षी० [सं०] अक्षरका घोडा; किशमिश ।

अक्षरी-पु० [अ०] वह काल रंग जिसे हिंदू अधिकतर होडी खेलनेके काममें लाते हैं, गुलाब ।

अक्षरी-वि० अक्षरीके रंगका ।

अक्षल-वि० अक्षल, नासमझ ।

अक्षल-वि० [सं०] दे० 'अक्षल' ।

अक्षल-क्षी० [सं०] अक्षल, नाममही । वि० मूर्ख, नासमझ ।

अक्षल-वि० [सं०] मूर्ख, नासमझ । पु० मूर्ख व्यक्ति ।

अक्षलकलाम आजाव-पु० (१८८९-१९५८) १९१२ में 'अक्षलकलाम' पत्र निकाला; सरकारने उसे बंद कर मोलाना-को नजरबंद कर दिया; जनवरी १९२० में मुक्त हुए; असह-योगमें महात्माजीके साथ रहे; १९४२ में किप्लके साथ और १९४६ में ब्रिटिश संविधानके साथ कांग्रेसके एकमात्र प्रतिनिधिरूपमें बाता की; केंद्रीय सरकारमें शिक्षामंत्री १९४७ में मृत्युपर्वत ।

अक्षलाना-अ० कि० प्रेतादिसे आविष्ट होकर हाथ-पैर पटकना; बक उठना ।

अक्ष-पु० [अ०] बाप, पिता ।

अक्षल-वि० नासमझ, निर्बुद्धि, अक्षल ।

अक्षल-वि० व्यर्थ, बेकार ।

अक्ष-अ० निरस्कार-मृत्तक संबोधन, क्यों रे, अरे । **मु०** -

तबे करना -अपमान-जनक दंगने बात करना ।

अक्षल-वि० जो विधा न हो, अनविधा ।

अक्षर-क्षी० देर, अतिकाल । पु० वरण ।

अक्षल-वि० अधिक, बहुत ।

अक्षल-वि० नृप, मौन ।

अक्षल-वि० [सं०] अक्षल, नाममझ; घबराया हुआ ।

पु० शानका अभाव । -**शम्य** -वि० अस्थिनीय, धारणा-शक्तिमें परे ।

अक्षल-वि० न बोलनेवाला, मूक, मौन; अनिवचनीय । पु० कुत्तल । अ० बिना बोले हुए, चुपचाप ।

अक्षल-पु० न बोलना; रोष या मानके कारण न बोलना ।

अक्षल-वि० [म०] जल्मे उत्पन्न । पु० कमल; शंख; चंद्रमा; धन्यतरि; निरुद्ध वृक्ष; कपूर; अरब (१,००,००,००,०००) ।

-**कर्मिका** -क्षी० कमलका छत्ता । -**ज-पु०** ब्रह्मा ।

-**हक** (क्ष), -**नयन**, -**नेत्र**, -**लोचन** -वि० कमल जैसे बड़े और सुंदर नेत्रोंवाला । -**बाध** -पु० सूर्य । -**अव**,

-**भू**, -**योनि** -पु० ब्रह्मा । -**भोग** -पु० जंजीर; बड़ी कोठी । -**बाहन** -पु० शिव । -**बाहना** -क्षी० लक्ष्मी ।

-**हस्त** -पु० सूर्य ।

अक्षल-पु० [अ०] अक्षी वर्णमालाके (१५) वर्ण; अक्षी वर्णमाला; वर्णोंसे अक्षोका काम लेनेकी प्रणाली । -**छाव** -पु० वर्णमाला पढ़नेवाला; नीतिशिक्षा ।

अक्षल-क्षी० [सं०] लक्ष्मी; मीठी (मीठीवाली) ।

अक्षल-पु० [सं०] हम ।

अभिजनी-खी० [सं०] कमखिनी; पय-सम्बन्ध; कमकका पौषा; कमकसे मरा हुआ जलाशय । -पयि-पु० सर्व ।
अब्ध-पु० [अ०] दास; सेवक; [सं०] पु० वर्ष; बादल; एक पर्वत; आकाश; मुस्ता नामक धातु । वि० जल देने-वाला । -ज-पु० ज्योतिषी । -ब-पु० ईंद्र । -बाह्व-पु० शिव; ईंद्र । -सार-पु० कपूर ।

अब्धूर्य-पु० [सं०] वह किछा जिसके चारों ओर पानीसे भरी खाई या झील हो ।

अविध-पु० [सं०] समुद्र; झील, ताल; सातवीं संख्या ।
-कक-पु० समुद्रका केन । -ज-पु० चंद्रमा; शंख; अविधनीकुमार । -ज-खी० लक्ष्मी; वाष्णी । -ह्रीषा-खी० पूषा; समुद्रसे घिरा हुआ भूभाग । -नगरी-खी० द्वारकापुरी । -नवनीतक-पु० चंद्रमा । -केन-पु० समुद्रका क्षाग । -मंजूकी-खी० मोतीका सीप । -सच, -बाचन-पु० विष्णु । -सार-पु० रत्न ।

अवधशि-खी० [सं०] बाइबागिन ।

अवधर-वि० अवल, कमजोर ।

अव्या-पु० [अ०] बाप, पिता ('अव' का मंथोपसङ्ग) ।
-जान-पु० पिताजी ।

अव्यास-पु० [अ०] मुहम्मदके चचा; एक पौषा जिसकी गङ्गा और कुल ढाँके काम आने हैं ।

अव्यासी-वि० [अ०] अव्यामके (फूलोंके) रगका, ताल ।
खी० मिन देशकी एक तरहकी कापस ।

अविधु-पु० [सं०] अभूकग, ओँझ ।

अवभक्ष-वि० [सं०] पानीके सहारे जीनेवाला । पु० पानीमें रहनेवाला एक माँष ।

अवभक्ष-पु० [सं०] पानी पीकर रहना; एक तरहका उपवास जिसमें केवल पानी पीने हैं ।

अवभ-पु० [सं०] दे० 'अभ' ।

अव-पु० [फा०] बादल, घटा ।

अवभाषण-वि० [सं०] भाषणके अव्यय, अभाषणोपित; भाषणके प्रति वैर रखनेवाला । पु० भाषणके अव्यय कर्म; हिंसादि कर्म ।

अभाषण-पु० [सं०] वह जो भाषण न हो; भाषणपर व्यक्ति । वि० भाषणहीन ।

अभाषण्य-पु० [सं०] भाषणके कर्तव्यका उल्लंघन; अभाषण्य ।

अव-खी० [फा०] दे० 'अव' ।

अव्य-वि० [सं०] अलक्षित, न टूटा हुआ; न टूटनेवाला । पु० मंगीतका एक ताल; मराठी भाषाके एक प्रकारके पद; रंग, परावय आदिका अभाव । -व-पु० स्त्रीय अलंकारका एक भेद जिसमें शब्दको बिना तोड़े दूसरे शब्द निकाल लिया जाता है ।

अव्ययी(विच्)-वि० [सं०] दे० 'अव्य'; जिसका कोई कुछ न छे सके ।

अव्ययुर-वि० [सं०] स्थिर; अनन्तर ।

अव्यजन-वि० [सं०] जिसका अंजन न हो सके । पु० किसी पदार्थका कई तत्वोंमें विभक्त न होना ।

अव्यक्त-वि० [सं०] जिसमें भक्ति या आत्मा न हो; अन्ध-वद; अप्रत्यक्ष; अस्वीकृत; न खया हुआ; जिसके दुबने न

हुए हो, सम्भूत । पु० आहार नही, खायेतर पदार्थ ।

अव्यक्त, अव्यक्त-पु० [सं०] आहार न ग्रहण करना, उपवास ।

अव्यक्त-वि० [सं०] न जाने योग्य; जिसके खानेका निषेध हो, जिसका खाना पाब माना गया हो । पु० वह खाद्य पदार्थ जो निषिद्ध हो ।

अव्यक्त-वि० [सं०] भाग्यहीन ।

अव्यक्त-वि० [सं०] जो भक्ति न करता हो ।

अव्यक्त-वि० [सं०] न टूटा हुआ, अक्षत; अबाधित ।

अव्यक्त-वि० [सं०] अनुम, अमंगल; असम्बन्ध, अक्षिप्त । पु० अक्षित, उरार्थ; शोक; पाप ।

अव्यक्त-पु० [सं०] अवका अभाव, निर्मयता; परमात्मा; परमात्मज्ञान; ज्ञान; भयने रक्षा; शिव; वह जिसके पास कोई संपत्ति न हो; एक बाजा-मुहूर्त; क्षम । वि० अवरहित, निरुदर; निरापद । -चारी(विच्)-पु० वे जंगली जानवर जिनके मारनेकी मनाही हो । -किंकि-पु० दुःकषा; सुखाकी वीषणा । -वृक्षिणा-खी०, -दान-पु० रक्षाका वचन देना; शरण देना । -पत्र-पु० रक्षाका लिखित आदेशपत्र । -प्रव-वि० अवय देनेवाला । -मुद्रा-खी० अवयदानकी मुद्रा; एक मंत्रोक्त मुद्रा । -वचन-पु० रक्षाकी प्रतिष्ठा । -वन-पु० रक्षित वन, रक्षा । -भरिप्रव-पु० सुरक्षित जंगल-संघी सरकारी नियमका उल्लंघन ।

अव्यक्त-खी० [सं०] इरीनकी; दुर्गाका एक रूप ।

अव्यक्त-वि० दुर्बल, जो उठाया या दीया न जा सके ।

अव्यक्त-पु० दे० 'आभरण' ।

अव्यक्त, अव्यक्त-वि० अमरहित; निःशक ।

अव्यक्त-वि० खी० [सं०] विषय; कुमारी ।

अव्यक्त-वि० भला नहीं, बुरा, खराब ।

अव्यक्त-पु० [सं०] न होना, अनस्तित्व; मोक्ष, प्रलय ।

अव्यक्त-वि० [सं०] न होने योग्य; अव्यय; असुंदर; अमायलिक; अभावा ।

अव्यक्त-वि० अव्यक्त; असुंदर, अशोभन; अमद ।

अव्यक्त-पु० दे० 'अभाव्य' । वि० [सं०] जिसका कोई हिंसा न हो; अविभक्त ।

अव्यक्त-वि० भाग्यहीन, वदनसीध ।

अव्यक्त(विच्)-वि० [सं०] जायदादमें हिंसा पानेका अनधिकारी; अभावा । [खी० 'अभाषिनी']

अव्यक्त-वि० [सं०] दुःखी; भाग्यहीन । पु० भाग्यहीनता, बदकिस्मती ।

अव्यक्त-पु० [सं०] न होना, अनस्तित्व; मृत्यु; क्षय; कमी; * दुर्भाव । वि० स्नेहहीन । -पदार्थ-पु० वह पदार्थ जिसकी सत्ता न हो । -प्रमाण-पु० न्यायमें माना जानेवाला एक प्रमाण ।

अव्यक्त-वि० सुंदर, रमिकर ।

अव्यक्त-खी० [सं०] विवेकका अभाव; ध्यान आविका अभाव ।

अव्यक्त-वि० [सं०] जिसका चिंतन न किया जा सके, अचित्तनीय ।

अव्यक्त-वि० [सं०] जिसकी भावना न की गयी हो ।

अव्यक्त(विच्), अव्यक्त-वि० [सं०] न होनेवाला ।

अभाष्य-पुं० [सं०] न बोधना, बोधनादर्शन ।

अभाषित-वि० [सं०] अभाषित, अनुक्त ।

अभाष्य-पुं० दे० 'आभाष्य' ।

अभि-उप० [सं०] यह शब्दोंके पूर्ण अक्षर जोड़, सामने (अभ्यास), पास; समीप (अभिसार), ऊपर (अधिष्ठा), श्रेष्ठ (अभिषेक), अति, अत्यधिक (अभिनव), बारंबार, पुनः-पुनः (अभ्यास) आदि अर्थोंका बोधन करता है ।

अभिक-वि० [सं०] कामी; लंघट । पुं० प्रेमिक; कामी पुरुष ।

अभिकाम-वि० [सं०] इच्छुक; स्नेही; कामुक । पुं० व्यास; इच्छा ।

अभिकर्तृ-पुं० [सं०] विहाइ ।

अभिक्रम-पुं० [सं०] आक्रम; प्रयत्न; आक्रमण; आरोहण ।

अभिक्रमण-पुं०, अभिक्रान्ति-स्त्री [सं०] दे० 'अभिक्रम' ।

अभिकोश-पुं० [सं०] अपशब्द कहना; निंदा करना ।

अभिकृपा-स्त्री [सं०] शोभा; कांति; नाम, प्रसिद्धि; माहात्म्य; बुद्धि ।

अभिक्रय-वि० [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी ।

अभिक्रय-पुं० [सं०] नाम; यश; प्रसिद्धि ।

अभिगम, अभिगमन-पुं० [सं०] पास जाना; संयोग ।

अभिगामी (विभू)-वि० [सं०] अभिगमन करनेवाला ।

अभिगुप्ति-स्त्री [सं०] रक्षण, रक्षणा ।

अभिगोष्ठा (पुं)-वि० [सं०] रक्षा करनेवाला ।

अभिग्रह-वि० [सं०] शत्रु द्वारा आक्रान्त ।

अभिग्रह-पुं० [सं०] ग्रहण; कलह; छट; आक्रमण; चुनौती; शिकायत; अधिकार ।

अभिग्रहण-पुं० [सं०] किसी वस्तुका उसके स्वामीके सामने अवहरण ।

अभिघट-पुं० एक प्राचीन राजा ।

अभिघात-पुं० [सं०] प्रहार, आपात, चोट पड़वाना; विनाश ।

अभिघातक, अभिघाती (विभू)-वि० [सं०] अभिघात करनेवाला ।

अभिघार-पुं० [सं०] वी; शीममें वीकी आहुति; वधार ।

अभिचर-पुं० [सं०] नैकर, अनुचर ।

अभिचार-पुं० [सं०] तंत्रोक्त मारण, मोहना, उन्माद आदि अनुष्ठान; दुरे कामोंके लिए मंत्रका प्रयोग ।

अभिचारक, अभिचारी (विभू)-वि० [सं०] अभिचार करनेवाला ।

अभिजन-पुं० [सं०] कुल, वंश; जन्म; उच्च कुलमें जन्म; जन्मभूमि; वह स्थान जहाँ बाप-पिता आदि जनमे या रहते हैं; परका मुसिबा या श्रेष्ठ व्यक्ति; स्वामी; अनुचर; हमराही ।

अभिजय-स्त्री [सं०] पूर्ण विजय ।

अभिजात-वि० [सं०] उच्च कुलमें उत्पन्न, कुलीन; योग्य; सुंदर; श्रेष्ठ; विद्वान्; बुद्धिमान् । पुं० उच्च वंश; कुलीनता ।

अभिजाति-स्त्री [सं०] कुलीनता ।

अभिजित-पुं० [सं०] एक नक्षत्र; दिनका आठवाँ ग्रह ।

अभिजित्-वि० [सं०] विजय प्राप्त करनेवाला; अभिजित् नक्षत्रमें उत्पन्न । पुं० एक नक्षत्र; एक लक्ष; दिनका आठवाँ ग्रह; दीपहरके एक घड़ी पहलेसे एक घड़ी बादतकका समय; एक यश; विजय ।

अभिज्ञ-वि० [सं०] जाननेवाला; कुशल ।

अभिज्ञा-स्त्री [सं०] पहचानना; वाद करना ।

अभिज्ञान-पुं० [सं०] पहचानना; वाद करना; जानना; पहचान; निशानी; सुझावी छाप, सुझार । -पत्र-पुं०

प्रमाणपत्र; सिफारिशकी चिट्ठी । -सर्कुलर-पुं० कांति-दासकृत एक प्रसिद्ध नाटक ('शाकुंतल' अंश ५) ।

अभिज्ञापक-वि० [सं०] जतानेवाला ।

अभितः (तस्य)-अ० [सं०] निकट; सब ओरसे; पूरे तौरसे ।

अभिताप-पुं० [सं०] अत्यधिक ताप (शारीरिक वा मानसिक); पीड़ा; क्रोध; भावविषा ।

अभिदर्शन-पुं० [सं०] देखना; दृश्य होना, प्रकट होना ।

अभिद्रव, अभिद्रवण-पुं० [सं०] आक्रमण ।

अभिद्रव-वि० [सं०] आक्रान्त; रौद्रा हुआ ।

अभिद्रोह-पुं० [सं०] दुराई; हानि; निन्दुरता; उपवीर्यन; गाली, निंदा ।

अभिधर्म-पुं० [सं०] श्रेष्ठ धर्म; अध्यात्मतत्त्व (ही०) ।

-पिटक-पुं० बुद्धके उपदेशोंके गीन संग्रहमेंसे एक, जो बौद्ध दर्शनका मूल है ।

अभिधर्म्य-पुं० [सं०] प्रेरान्तिसे आविष्ट होना ।

अभिधा-स्त्री [सं०] नाम, उपाधि, शब्द; शब्दका वाच्यार्थ या अक्षरार्थ; वाच्यार्थ प्रकट करनेवाली शब्दकी शक्ति ।

अभिधान-पुं० [सं०] नाम, उपाधि; कथन; शब्द, शब्द-कोश, उपात । -माहा-स्त्री शब्दकोश ।

अभिधानक-पुं० [सं०] शब्द, आवाज ।

अभिधायक-पुं० [सं०] (अभिधेयक) वाचक, नाम देने, कहने या प्रकट करनेवाला । [स्त्री 'अभिधायिका' ।]

अभिधाचक-वि०, पुं० [सं०] धावा करनेवाला; आक्रमण करनेवाला, आक्रामक ।

अभिधावन-पुं० [सं०] आक्रमण, धावा ।

अभिधेय-वि० [सं०] नाम देने योग्य; कथनीय, वाच्य; प्रतिपाद्य; नामवाला, नामक । पुं० भावार्थ; वाच्यार्थ; विषय ।

अभिधा-स्त्री [सं०] कालवश; इच्छा; चाह; प्राप्त करने की इच्छा ।

अभिध्यान-पुं० [सं०] चाह; इच्छा, क्रोध; चिन्तन ।

अभिर्नन्द-वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला । पुं० आनन्द, प्रसन्नता; प्रशंसा; कथन; इच्छा; प्रोत्साहन; अनुसुख; परमात्माका एक नाम ।

अभिर्नन्दन-पुं० [सं०] आनंदित या प्रसन्न करना; सराहना करना; प्रोत्साहन, बधाई देना; स्वागत करना; विनती; इच्छा; आम । -पत्र-पुं० मानपत्र, 'एडेम्' ।

अभिर्नन्दीय, अभिर्नन्द-वि० [सं०] अभिर्नन्दन करने योग्य ।

अभिर्नन्दित-वि० [सं०] जिसका अभिर्नन्दन किया गया हो ।

अभिर्नन्दी (विभू)-वि० [सं०] अभिर्नन्दन करनेवाला ।

अभिनय-पु० [सं०] मनोगत भाव व्यक्त करनेवाली शरीर-चैष्टा आदि; किसीके कार्य, चैष्टादिकी मकल करना; नाटक खेलना; मकल, खेला ।

अभिनय-वि० [सं०] नया; विलकुल नया; ताजा ।

अभिनयन-पु० [सं०] औसपर मौननेकी पट्टी ।

अभिनयन-वि० [सं०] जिसका नाश निकट हो । पु० सामवेदका एक मंत्र जिसका ऐसी अवसरपर जप करते हैं ।

अभिनयोन-पु० [सं०] संलक्ष होना; (कार्यमें) दृष्ट-चित्तता ।

अभिनयिष-पु० [सं०] कूच; आक्रमण; शत्रुपर आक्रमण करनेके लिए, आगे बढ़ना ।

अभिनयिष-वि० [सं०] अभिनयिष-युक्त ।

अभिनयिष-स्त्री० [सं०] कार्यकी समाप्ति; पूर्ति ।

अभिनयिष-पु० [सं०] आभय; संकल्प; उत्कट वा बढ़ अनुराग; पक्षी लगन, कार्यविशेषमें बढ़ निश्चय और मनो-योगके साथ लग जाना; योगदर्शनमें बताया पंच कुंडोंमेंसे एक-मरणभय-जनक अज्ञान ।

अभिनयिष-वि० [सं०] प्रविष्ट किया हुआ; दुःखा हुआ ।

अभिनयिष-पु० [सं०] बाहर जाना; प्रसज्याके लिए गृहत्याग (बी०) ।

अभिनयिष-स्त्री० [सं०] पूर्णता; समाप्ति; सिद्धि ।

अभिनयिष-वि० [सं०] पूर्ण; ममात्; सिद्ध ।

अभिनयिष-वि० [सं०] अभिनय किंवा हुआ; अनुकूल; निकट आया हुआ; सुसज्जित; अलङ्कृत; योग्य; उचित; धीर; क्रुद्ध; दयालु; कृपायुक्त ।

अभिनयिष-वि० [सं०] अभिनय करने योग्य ।

अभिनयिष-पु० [सं०] अभिनय करनेवाला, 'पेक्टर' । [स्त्री०] 'अभिनयि', 'पेक्ट्रे' ।

अभिनयिष-पु० दे० 'अभिनय' ।

अभिनयिष-वि० [सं०] जो अलग न हो; भेद या अंतर न रखनेवाला; एकरूप, अविभक्त; अपरिवर्तित; अविभक्त । -पद-पु० भेद अलंकारका एक भेद जिसमें पदका अर्थ न हो अर्थात् पूरे पदका शेष हो । -हृदय-वि० एकदिल, एकजान ।

अभिनयिष-स्त्री० [सं०] भेद या विलगावका अभाव; गहरी मित्रता; एकरूपता ।

अभिनयिष-पु० [सं०] एक तरहका मात्रिपातक ज्वर ।

अभिनयिष-पु० [सं०] मजदीक जाना; आक्रमण करना; प्रस्थान करना ।

अभिनयिष-स्त्री० [सं०] निकट जाना; समाप्ति; पूर्ति ।

अभिनयिष-वि० [सं०] निकट गया या आया हुआ; पलायन; पराभूत; भाव्यहीन; मकटप्रल; स्वीकृत; श्लोषी; शृंग; दूर हटाया हुआ ।

अभिनयिष-वि० [सं०] फुल्लोसे ढफा हुआ । पु० बहुत बढ़िया फूल ।

अभिनयिष-पु० [सं०] प्रेम; कृपा; अनुग्रह ।

अभिनयिष-पु० [सं०] वेद-मंत्रोंके द्वारा संस्कार करना ।

अभिनयिष-वि० [सं०] प्राप्त ।

अभिनयिष-पु० [सं०] सौप्त बाहर निकालना ।

अभिनयिष-पु० [सं०] उद्देश्य, प्रयोजन; इच्छा; आसय,

मतलब; राय; संबंध; विष्णु ।

अभिनयिष-वि० [सं०] उद्दिष्ट, अन्तर्हित; स्वीकृत; प्रिय ।

अभिनयिष-पु० [सं०] उपद्रव, उत्पात; उत्तराकर बहना; बाढ़;

गवांमयन बहका अंगरूप कर्मविशेष; प्राजापत्य आदित्य ।

अभिनयिष-पु० [सं०] हराना, दबा लेना; आक्रमण; तिर-

स्कार, अपमान; प्रवृत्ता ।

अभिनयिष, अभिभाषी (विच्), अभिभाषक-वि० [सं०]

हरानेवाला; बधमें करनेवाला, दबा रखनेवाला; आक्रमण

करनेवाला; तिरस्कार करनेवाला; संरक्षक, 'गात्रिवन' ।

अभिभाषण-पु० [सं०] बोलना, भाषण करना; भाषण;

समापिका (लिखित) भाषण ।

अभिभूत-वि० [सं०] पराजित; बधमें किया हुआ;

आक्रांत; पीडित ।

अभिभूति-स्त्री० [सं०] अभिभव ।

अभिमंडन-पु० [सं०] सजाना, पक्ष-समर्थन ।

अभिमंडा (तु)-वि० [सं०] गर्व करनेवाला, घमंडी ।

अभिमंडन-पु० [सं०] मंत्र द्वारा संस्कार या पवित्र करना;

आवाहन ।

अभिमंडित-वि० [सं०] मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ;

आवाहित ।

अभिमंडित-पु० [सं०] औसका एक रोग ।

अभिमंड-वि० [सं०] हट, प्रिय, मनचाहा; सम्मत; स्वीकृत;

आगत । पु० इच्छा; राय; मनचाही बात ।

अभिमंडि-स्त्री० [सं०] अभिमान; आदर; अमिताया; राय,

विचार ।

अभिमंडित-पु० [सं०] सुभद्रके गर्भसे उत्पन्न अर्जुनका बेटा (जो महाभारतमें चक्रव्यूहका भेदन करते समय मारा गया) ।

अभिमंड-पु० [सं०] नाश; बध; युद्ध, संबंध; अपने पक्ष द्वारा विधासपाय; कैद; वह जो निरास होकर शेर या हाथीमें लड़नेके लिए आगे बढ़े ।

अभिमंडित-पु० [सं०] पीसना, रगड़ना; निचोड़ना; कुच-

लना; युद्ध ।

अभिमंडित, अभिमंडी (सिन्), अभिमंडक, अभिमंडी- (सिन्)-वि० [सं०] अभिमंडन करनेवाला ।

अभिमंडन, अभिमंडन-पु० [सं०] छूना; आक्रमण;

समर्थ; बलात्कार (?) ।

अभिमंड-पु० [सं०] नशा ।

अभिमंड-पु० [सं०] गर्व, घमंड ।

अभिमंडित-पु० [सं०] अहंकार; प्रेम; मंजोल । वि०

गवित ।

अभिमंडी (विच्)-वि० [सं०] घमंडी, दपी, अपनेको बड़ा समझनेवाला ।

अभिमंड-वि० [सं०] जो किसीकी ओर मुख किये हुए हो; प्रवृत्त; उत्पत्त । अ० जोर, सामने ।

अभिमंड-वि० [सं०] छुना हुआ; आक्रांत ।

अभिमंड-पु०, **अभिमंडा-स्त्री०** [सं०] प्रार्थना; वाचना, आँगना ।

अभिमंडा (तु), अभिमंडी (विच्)-वि० [सं०] निकट

जानेवाला; आक्रमण करनेवाला ।

अभिवान-पु० [सं०] सामने जाना; युद्धमें लिण आगे बढ़ना; चढ़ाई; आक्रमण ।

अभियुक्त-वि० [सं०] जिसपर अभियोग लगाया गया हो; मुलनिम; अध्यक्षता; संलग्न; आक्रांत; नियुक्त; कथित; दक्ष; विद्वान् । पु० वह जिसपर अभियोग लगाया गया हो ।

अभियुक्ति-स्त्री० [सं०] अभियोग ।

अभिवोक्ता (वक्ता)-वि० [सं०] अभियोग लगानेवाला; आरोपी; करियादी; आक्रमण करनेवाला । पु० डाकु, आक्रामक; आरोप करनेवाला; दावा करनेवाला ।

अभिवोग-पु० [सं०] (किमीपर) अपराध-विशेषका आरोप; फौजदारी-फालिश; प्रक्रमण; मनोयोग; लगकर कोशिश करना; लगन ।

अभिवोगी (गिर्)-वि० [सं०] करियादी; आक्रमण करनेवाला; मनोयोग-पूर्वक लगा हुआ । पु० वादी ।

अभिवोध्य-वि० [सं०] जिसपर अभियोग लगाया जा सके । -दोष-पु० वह दोष जिसमें अभियोग चल सके ।

अभिरक्त-वि० [सं०] लगा हुआ, संबद्ध ।

अभिरक्षण-पु०, **अभिरक्षा**-स्त्री० [सं०] पूरा-पूरा रक्षा ।

अभिरक्ष-पु० [सं०] (वाह) दे० 'प्रपक्ष' ।

अभिरत-वि० [सं०] प्रसन्न; अनुरक्त; लगा हुआ; * युक्त ।

अभिरति-स्त्री० [सं०] अनुराग; लगन; मुखानुभव; काया-न्यास; संतोष ।

अभिरता*-अ० कि० भिन्नता; टकराना; किमीका सहारा लेना ।

अभिरमण-पु० [सं०] (किमी चीजमें) आनंद लेना ।

अभिराट्-वि० [सं०] प्रसन्न या मलुट किया हुआ ।

अभिराम-वि० [सं०] अच्छा लगनेवाला, सुंदर; मोहक; सुखद । पु० शिव; आनंद; सुख ।

अभिरामी (मिन्)-वि० [सं०] रमण करनेवाला; सवरण करनेवाला ।

अभिरुचि-स्त्री० [सं०] चाह; शौक; मुकाब; विशेष रुचि; रंगि आदिकी अभिलाषा ।

अभिरुत-वि० [सं०] शब्दायमान; सुनिज । पु० द्रव्य, स्वर ।

अभिरुता-स्त्री० [सं०] एक मूर्च्छना (मगीत) ।

अभिरूप-वि० [सं०] अनुरूप; मृदु, मनोहर; प्रिय; चतुर, विद्वान् । पु० चंद्रमा; विष्णु; कामदेव ।

अभिरोग-पु० [सं०] चौपायीका एक रोग ।

अभिलक्षित-वि० [सं०] विहीने युक्त; मकेलित ।

अभिलषण-पु० [सं०] चाहना, इच्छा करना; कल्पचना ।

अभिलषित-वि० [सं०] चाहा हुआ, वांछित ।

अभिलाष*-पु० दे० 'अभिलाष' ।

अभिलाषना*-सं० कि० चाहना, अभिलाष करना ।

अभिलाप-पु० [सं०] शब्द; कथन; वर्णन; संकल्प-बंधन ।

अभिलाव-पु० [सं०] घास, फसल आदि काटना ।

अभिलाप, अभिलास-पु० [सं०] चाह, इच्छा; लोभ; प्रियमें मिलनेकी इच्छा ।

अभिलाषक; अभिलाषुक-वि० [सं०] दे० 'अभिलाषी' ।

अभिलाषा, अभिलासा-स्त्री० [सं०] दे० 'अभिलाप' ।

अभिलापी (पिन्)-वि० [सं०] चाहनेवाला, इच्छुक ।

अभिलिखित-वि० [सं०] लिखा या खोदा हुआ ।

अभिलीन-वि० [सं०] अनुरक्त; आसक्त; पसंद किया हुआ ।

अभिलुलित-वि० [सं०] क्षुब्ध, अस्विर; क्रोधायुक्त ।

अभिलुता-स्त्री० [सं०] एक तरहकी मकड़ी ।

अभिलेख-पु० [सं०] लेख; पत्थर, ताम्रपट आदिपर खुदा हुआ लेख ।

अभिलेखन-पु० [सं०] लिखना; खोदना ।

अभिलेखित-पु० [सं०] लिपिबद्ध पत्रादि । वि० लिपिबद्ध ।

अभिवंचित-वि० [सं०] ओ छला गया हो, जिसे धोखा दिया गया हो ।

अभिवंदन-पु० [सं०] प्रणाम करना, बंदन ।

अभिवंदना-स्त्री० [सं०] नमस्कार; स्तुति ।

अभिवंदनीय, अभिवंद्य-वि० [सं०] प्रणाम करने योग्य, बंदनीय; स्तुति करने योग्य ।

अभिवंदित-वि० [सं०] अभिवादन, वंदित ।

अभिवचन-पु० [सं०] प्रतिज्ञा, वादा ।

अभिवद्वन-पु० [सं०] नमस्कार, प्रणाम ।

अभिवर्तन-पु० [सं०] (किमीको ओर) बदना; आक्रमण करना ।

अभिवारंछा-स्त्री० [सं०] इच्छा, अभिलाषा ।

अभिवारंछित-वि० [सं०] अभिलषित, मनवाहा । पु० इच्छा, अभिलाषा ।

अभिवाद्य, अभिवादन-पु० [सं०] प्रणाम करना; छोटेको ओरमें बड़ेको नमस्कार ।

अभिवाद्यक, अभिवाद्यिका (तु), अभिवादी (दिन्)-वि० [सं०] अभिवादन करनेवाला ।

अभिवादित-वि० [सं०] जिसका आदरपूर्वक अभिवादन किया गया हो ।

अभिवाद्य-वि० [सं०] अभिवादन करने योग्य ।

अभिवान्य, अभिवान्यन-पु० [सं०] आवरण, चादर; बग्यादिमें आच्छादित करना ।

अभिविनीत-वि० [सं०] मुशील, शिष्ट; शिक्षित; शुद्ध, पवित्र ।

अभिविमान-वि० [सं०] अपरिमित आकारका; परमात्मका एक विशेषण ।

अभिविधत्त-वि० [सं०] सुविध्यात, मुप्रमिद्ध ।

अभिवृद्धि-स्त्री० [सं०] सफलता; वृद्धि, अभ्युदय ।

अभिवर्जक-वि० [सं०] प्रकट करनेवाला ।

अभिवर्जन-पु० [सं०] अभिव्यक्ति ।

अभिवर्जना-स्त्री० [सं०] अभिव्यजन ।

अभिव्यक्त-वि० [सं०] प्रकट, स्पष्ट, प्रकाशित, कायंरूप-प्राप्त ।

अभिव्यक्ति-स्त्री० [सं०] व्यक्त, प्रकट होना; कारणका कायंरूपमें आविर्भाव; प्रकाशन ।

अभिव्यापक, अभिव्यापी (पिन्)-वि० [सं०] सब ओर फैला हुआ; समावेश करनेवाला ।

अभिव्याप्ति-स्त्री० [सं०] सर्वव्यापकता; समावेश ।

अभिर्वाका-स्त्री० [सं०] मतेह; चिन्ता; भांशका, भय ।

अभिर्वाचन-पु० [सं०] दोष लगाना, झूठा दोष लगाना; चोट पहुंचाना ।

अभिज्ञापन-पु० [सं०] झूठा आरोप ।

अभिज्ञास-वि० [सं०] शायित; अभियुक्त; जिमपर झूठी तुष्टमत लगायी गयी हो ।

अभिज्ञास-वि० [सं०] अभिज्ञास ।

अभिज्ञासि-खी० [सं०] अभिज्ञाप; विपत्ति ।

अभिज्ञाप-पु० [मं०] शाय, किसीका बुरा मनाना; छद्मन; मिथ्या आरोप; दुराह; अनिष्टका हेतु ।

अभिज्ञापन-पु० [मं०] शाय देना; कोसना ।

अभिषंग, अभिषंजन-पु० [मं०] पूर्ण संबंध या मिलन; आश्रित; सभोग; द्वार खाना; अचानक आया हुआ संकट या आघात; शयन; कोमला; प्रेतादिका आवेश; तिरस्कार ।

अभिषेक-पु० [मं०] स्नान; यज्ञका अंगभूत स्नान; यज्ञ; सोमरस निचोड़ना; सोमपान; जुआना (मद्य आदि); खमीर; कांजी ।

अभिषेकण-पु० [मं०] स्नान; सोमरस निचोड़नेका साधन ।

अभिषेकणी-स्त्री० [मं०] सोमरस निकालनेका एक साधन ।

अभिषावक, अभिषोता(तु)-पु० [मं०] सोमरस निचोड़नेवाला पुरोहित ।

अभिषेक-वि० [मं०] जिसका अभिषेक हो चुका हो; जिसपर बाधा दूर करनेके लिये अभिमन्त्रित जल छिड़का गया हो; अधिकारप्राप्त; पदारूढ ।

अभिषुत-वि० [मं०] निचोड़ा हुआ; जो स्नान कर चुका हो ।

अभिषेक-पु० [मं०] जल छिड़कना; राजाका सिंहासनांगेहन, गद्दीनशीनी, यज्ञादिके अन्तर्गत शान्तिके लिए किया जानेवाला स्नान; अभिषेकमें काम आनेवाला पवित्र जल ।
-शास्त्रा-स्त्री० राज्याभिषेकका मंत्र ।

अभिषेक(तु)-पु० [मं०] अभिषेक करनेवाला ।

अभिषेक्य-वि० [मं०] दे० 'अभिषेकनीय' ।

अभिषेचन-पु० [मं०] अभिषेक करना ।

अभिषेकनीय, अभिषेक्य-वि० [मं०] अभिषेकके योग्य, राज्यारोहणका अधिकारी; अभिषेक-सम्बन्धी ।

अभिषेकण-पु० [मं०] शत्रुका सामना करनेके लिए आगे बढ़ना ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] अस्त्रका एक रोग, अस्त्र आना; चूना, रसना, स्वाद ।

अभिषेकी(विन्)-वि० [मं०] चूने या रसनेवाला देवक ।
-वि० रमण-पु० उपनगर, बंधनगरमें लगा हुआ छोटा नगर ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] बहुत गहरी सवध, अनुरक्ति, प्रेम ।

अभिषेक-पु० [मं०] दे० 'अभिषेक' ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] संघर्ष, युद्ध, पीडा ।

अभिषेक्य, अभिषेक्य-पु० [सं०] विनिमय; जननेद्रिय ।

अभिषेक, अभिषेक्य-पु० [मं०] धोखा देनेवाला, वचक; निन्दक ।

अभिषेक्य-खी० [मं०] बचन; वादा; धोखा ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] बचन; लक्ष्य; लक्ष्य; लगन; लक्ष्य करना; धोखा देना; ठगना; मंथि या समझौता

करना ।

अभिषेक्य-खी० [मं०] बचन; अभिप्राय, मत; लक्ष्य; समझौता; धोखाजी, प्रतारणा; कुचक्र, बद्ध्य ।

अभिषेक्य-खी० [मं०] कलहातरिता नायिका ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] मिलन, संगम; युद्ध, संघर्ष; पतन; शाय ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] प्रगाढ़ संबंध ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] रक्षा, आश्रय, पनाह ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] मत, विचार, कल्पना; निरर्थक कार्य ।

अभिषेक्य-वि० [सं०] सम्मानित ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] अनुचर; अनुवायी; साथी ।

अभिषेक्य, अभिषेक्य-पु० [मं०] मिलनेके लिए जाना; नायक या नायिकाका मिलनेके लिए संकेतस्थलपर जाना ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] आश्रय, सहारा; अभिषेक ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] कि० जाना; मन्त्रोत्पलपर प्रियसे मिलनेके लिए जाना ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] रचना, सृष्टि ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] दान; देन; वध ।

अभिषेक्य(तु)-पु० [मं०] हमला करनेवाला, आक्रामक ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] अभिषेक; प्रियसे मिलनेके लिए जाना; मन्त्रोत्पल; साथी; अनुचर; युद्ध; शक्ति; यंत्र; हथियार, औजार; शुद्धिस्कार ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] दे० 'अभिषेक्य' ।

अभिषेक्य-खी० [सं०] प्रियसे मिलनेके लिए निदिष्ट स्थानपर जानेवाली स्त्री ।

अभिषेक्य(विन्)-खी० [सं०] अभिषेक्य; एक वृत्त ।

अभिषेक्य(विन्)-पु० [सं०] अभिषेक करनेवाला; धावा करनेवाला; सहायक, साथी, हमराही ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] दे० 'अभिषेक' ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] दे० 'अभिषेक्य' ।

अभिषेक्य-वि० [मं०] पीटा गया, आहत; आक्रान्त; पराभूत; गुणित ।

अभिषेक्य-स्त्री० [मं०] निशाना लगाना; मारना; गुणन किया; गुणनफल ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] दे० भागना; हटाना । वि० दे० भागनेवाला ।

अभिषेक्य-पु० [मं०] निकट लाना; लूटना ।

अभिषेक्य(तु)-पु० [सं०] लेकर चल देनेवाला; अपहरण करनेवाला, डाकू ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] चोर; डाका; हमला, हथियारसे लैम होना; मिश्रण, प्रयत्न; गोंडा आदि पीनेवाला, मद्य ।

अभिषेक्य-वि० [सं०] हरण करनेवाला; चुरानेवाला - 'राधासी न और अभिषेक्य लखारं दे' - रा० ना० ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] दिहगी, मसखरी, मजाक; विनोद ।

अभिषेक्य-वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त; अभिषेक वृत्ति द्वारा बोधित; आह्व । पु० नाम; उक्त । -स्त्री-स्त्री० विना लिखा-पढ़ीकी सधि (कौ०) ।

अभिषेक्य-खी० [सं०] आवाहन; पूजन ।

अभिषेक्य-पु० [सं०] धोकी आहुति देना ।

अभी-अ० इसी वक्त, इसी क्षण, तत्काल; अवतक; अब भी । वि० [सं०] अवरहित, निर्भीक ।

अभीक-वि० [सं०] निर्भय; लाजसा रखनेवाला; कासुक; उत्सुक; क्रूर; अभिगत; भयकर । पु० पति; स्वामी; कवि ।

अभीघात-पु० [सं०] दे० 'अभिघात' ।

अभीत-वि० [सं०] निडर, निर्भीक ।

अभीति-स्त्री० [सं०] निर्भीकता, हथला, धावा; नेकत्व । वि० निर्भीक ।

अभीप्सित-वि० [सं०] वांछित, चाहा हुआ, अभिलषित । पु० इच्छा, अभिलाषा ।

अभीप्सो(प्सित्), **अभीप्सु**-वि० [सं०] इच्छुक ।

अभीम-वि० [सं०] नय न उत्पन्न करनेवाला । पु० विष्णु ।

अभीमान-पु० [सं०] दे० 'अभिमान' ।

अभीर-पु० [सं०] अहीर, एक छर ।

अभीरणी-स्त्री० [सं०] एक तरहका सांघ ।

अभीराजी-स्त्री० [सं०] एक विचैला कोडा ।

अभीरी-स्त्री० [सं०] अहीरोंकी बोली ।

अभीरु-वि० [सं०] निडर; जो भयदायक न हो; निर्दोष । पु० शिव; भैरव, बुद्धभूमि ।-पत्नी-स्त्री० शतमूली, सतावर ।

अभीरण-वि० [सं०] निडर; निर्दोष ।

अभील-पु० [सं०] मकड़ कठिनार्थ; लयकर हृदय ।

अभीशाप-पु० [सं०] दे० 'अभिशाप' ।

अभीशु, **अभीशु**-पु० [सं०] लगाम; प्रकाश किरण; वाहु; डेगली ।

अभीष्ट-वि० [सं०] चाहा हुआ, अभिलषित; अभिप्रेत; प्रिय; ऐच्छिक, वैकल्पिक । पु० अभिलषित वस्तु; मनोरथ; प्रेमी; प्रिय व्यक्ति ।-**लाभ**-पु० अभीष्ट वस्तुकी प्राप्ति ।-**सिद्धि**-स्त्री० अभीष्ट कायकी सिद्धि ।

अभीष्टा-स्त्री० [सं०] प्रेमिका; पाल, नाबाल ।

अभीष्टि-स्त्री० [सं०] इच्छा ।

अभीसार-पु० [सं०] आक्रमण, हमला ।

अभुआना-अ० कि० प्रत्यक्षमें हाथ-पाँव पटकना, बक-सक करना आदि ।

अभुक्त-वि० [सं०] न खाया हुआ; न भोगा हुआ; अछुता, अव्यवहृत; जिसमें भोजन या भोग न किया हो ।

-**पूर्व**-वि० जिसका पहले उपभोग न किया गया हो ।

-**मूल**-पु० ज्येष्ठा नक्षत्रके अन्त और मूल नक्षत्रके आदि की तीनों घड़ियाँ ।

अभुग्न-वि० [सं०] न झुका हुआ, अकुटिल, मांथा; स्वस्थ, रोगहीन ।

अभुज-वि० [सं०] बाहुरहित, मूला ।

अभू-पु० [सं०] विष्णु । * अ० अब भी ।

अभूखन-पु० दे० 'अभूषण' ।

अभूत-वि० [सं०] जो हुआ न हो; अविद्यमान; मिथ्या; असाधारण ।-**दोष**-वि० निर्दोष ।-**पूर्व**-वि० जो पहले न हुआ हो; अनोखा, अजन ।-**शत्रु**-वि० जिसका कोई शत्रु न हो ।

अभूतार्थ-पु० [सं०] अश्रुतपूर्व या अनजोनी बात ।

अभूताहरण-पु० [सं०] कपटपूर्ण या व्यवयमय बात

कहना (ना०) ।

अभूति-स्त्री० [सं०] अविद्यमानता; धन या शक्तिका अभाव; निर्धनता । वि० निर्धन ।

अभूतोपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक उपभेद जिसमें उपमेयके विशेष उल्लेखके कारण उपमानका कथन न हो सके ।

अभूमि-स्त्री० [सं०] पृथ्वीमें मिश्र कोई चीज; अत्युक्त स्थान; स्थानाभाव ।-**प्राप्त सैन्य**-पु० ठेके स्थानपर पड़ी हुई सेना जहाँमें लड़ना समझ न हो, प्रतिकूल भूमिमें पड़ी हुई सेना (कौ०) ।

अभूरि-वि० [सं०] कुछ, थोड़ा; कनिष्ठ ।

अभूष, **अभूषित**-वि० [सं०] अनलकृत, विना गहनेका ।

अभूत, **अभूतक**-वि० [सं०] पारिश्रमिक आदि न पानेवाला ।-**सैन्य**-पु० वह सेना जिसमें बेलन या भत्ता न दिया गया हो (कौ०) ।

अभूतश-वि० [सं०] थोड़ा, कुछ, चंद ।

अभेद-पु० [सं०] भेदका अभाव, एकता; एकहृदयता । वि० भेदरहित, अनुरूप; अविभक्त; * दे० 'अभेद' ।-**रूपक**-पु० रूपकालंकारका एक भेद जिसमें उपमान और उपमेयकी एकता बनायी जाती है ।-**वादी(विद्)**-वि० अद्वैतवादी ।

अभेदनीय, **अभेदिक**-वि० [सं०] 'अभेद' ।

अभेद्य-वि० [सं०] जिसका भेदन न हो सके; जिसमें धुमा न जा सके, अविभाज्य । पु० हीरा ।

अभेद, **अभेद**-पु० अभेद, एकता । वि० अभिन्न, एक ।

अभेरना-स० क्रि० मथुक करना; मिश्रण करना, निगलना ।

अभेरा-पु० रगण, टकर, मुठभेद ।

अभे-वि० दे० 'अभय' ।

अभोक्तव्य-वि० [सं०] जिसका उपभोग थ; उपयोग न किया जाय ।

अभोक्ता(वन्)-वि० [सं०] उपभोग न करनेवाला; परहेज करनेवाला, विरक्त ।

अभोग-पु० [सं०] भोगका अभाव । * वि० अमुक्त ।

अभोगी(गिन्)-वि० [सं०] अभोक्ता; विरक्त ।

अभोग्य-वि० [सं०] जो भोग करने योग्य न हो, जिसे भोगना वञ्चित हो ।

अभोज-वि० दे० 'अभोज्य' ।

अभोजन-पु० [सं०] न खाना, खानेमें परहेज, उपवास ।

अभोज्य-पु० [सं०] न खाने योग्य; जिसके खानेका निषेध हो ।

अभौतिक-वि० [सं०] जो पंचभूतोंमें न बना हो, अपार्षथ ।

अभीम-वि० [सं०] जो भूमिमें उत्पन्न न हुआ हो, अपार्षथ ।

अभयंग-पु० [सं०] लेपन; तेल-उपचन आदिकी माजिश ।

अभ्यञ्जन-पु० [सं०] दे० 'अभ्यास' । आर्योमें मग्ग या अन्न लगाना; तेल, अगारादि ।

अभ्यन्तर-पु० [सं०] वस्तुका भीतरी भाग; भीतरका या बीचका अवकाश; अन्तःकरण । अ० भीतर, अन्दर । वि० भीतरी, आन्तरिक; अन्तरंग; परिस्थित, कुशल, जिसके भाष घनिष्ठ सबब हो ।

अभ्यन्तरक-पु० [सं०] घनिष्ठ मित्र ।

अभ्यक्त-वि० [स०] जिसे तेल आदिकी मालिश की गयी हो; जो तेल-कुत्तेल लगाये हुए हो ।
अभ्यसन-पु० [स०] आक्रमण; चोट; रीण ।
अभ्यमित-वि० [स०] खण; आहत ।
अभ्यर्चन-पु०, **अभ्यर्चना-स्त्री०** [स०] पूजा, आराधना ।
अभ्यर्ण-वि० [स०] निकट, आसन्न; निकट आनेवाला ।
 पु० नैकत्व, सामीप्य ।
अभ्यर्थन-पु०, **अभ्यर्थना-स्त्री०** [स०] विनती, प्रार्थना; दरखास्त; अगवानी, स्वागण ।
अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थ्य-वि० [स०] अभ्यर्थना करने योग्य ।
अभ्यर्थित-वि० [स०] जिसकी अभ्यर्थना की गयी हो ।
अभ्यर्थी(यिन्)-वि० [स०] अभ्यर्थना करनेवाला ।
अभ्यर्थन-पु० [स०] उत्पीडन, कष्ट देना ।
अभ्यर्थित-वि० [स०] जिसे कष्ट दिया गया हो, उत्पीडित ।
अभ्यर्हणा-स्त्री० [स०] पूजा, सम्मान, इज्जत करना ।
अभ्यवकर्षण-पु० [स०] स्वीचना, निकालना (अभ्यादि) ।
अभ्यवस्कन्द, अभ्यवस्कन्द-पु० [स०] शत्रुका उदक से मुकाबला करना; आक्रमण करनेके लिए आगे बढ़ना या जून करना; शत्रुको निःशस्त्र करनेके लिए प्रहार करना; आगल; पनन ।
अभ्यवहरण-पु० [स०] नीचे फेंकना; भोजन ग्रहण करना, गर्दने नीचे उतारना ।
अभ्यवहार-पु० [स०] भोजन करना; आहार ।
अभ्यसन-पु० [स०] अभ्यास करना; अभ्युत्थान करना ।
अभ्यसनीय, अभ्यसितव्य-वि० [स०] अभ्यास करने योग्य ।
अभ्यमित-वि० अभ्यसित ।
अभ्यमूढ-पु० [स०] कोष, ढेप ।
अभ्यस्त-वि० [स०] मच्छी तरह मीथा हुआ, मदक किया हुआ; अनात, पटा हुआ; जमने अभ्यास किया हो; कुशल; पका आदी ।
अभ्यान्त-वि० [स०] गगन; आकाश; क्षीणप्रान्त ।
अभ्याकर्ष-पु० [स०] चीनेपर ताल ठोकना (कुदनी) ।
अभ्याकाक्षित-वि० [स०] चाहा हुआ, अभिलषित । पु० मिथ्या अभियोग, झूठा दावा; अभिलाषा ।
अभ्यान्वयान-पु० [स०] झूठा अभियोग या नालिश ।
अभ्यागत-वि० [स०] सामने या पास आया हुआ; अतिथिके रूपमें आया हुआ । पु० अतिथि, मेहमान ।
अभ्यागम-पु० [स०] नजदीक आना, पहुंचना; पक्षी; किसी परिणामपर पहुंचना या उसका उपभोग करना; उठना, अगवानी; मारना, बध करना; मुकाबला; हमला; युद्ध; शत्रुता ।
अभ्यागारिक-वि० [स०] परिवारके पालनमें तत्पर या हैरान ।
अभ्याघात-पु० [स०] आक्रमण, धावा; बाध; क्कावट ।
अभ्यास-वि० [स०] प्राप्त; व्यास; परमहत्ता एक विशेषण ।
अभ्यासान-पु० [स०] आराम ।
अभ्यापात-पु० [स०] विपत्ति, म्लट; सुराई ।
अभ्यामर्द-पु० [स०] युद्ध, संग्राम ।
अभ्यास-वि० [स०] निकट, पासका । पु० पक्षी; सामीप्य; परिणाम; अभ्युदय ।
अभ्यास-पु० [स०] किसी कामकी बार-बार करना, मक्क;

सीखना; अध्ययन; साधन; आदत; सैनिक अनुशासन आदि; पक्षी; गुणन । -कक्षा-स्त्री० योगकी एक कक्षा ।
 -योग-पु० एक ही विषयके सतत चिंतनसे उत्पन्न समाय ।
अभ्यासादन-पु० [स०] आक्रमण; सामना ।
अभ्यासी(सिन्)-वि० [स०] अभ्यास करनेवाला, साधक ।
अभ्याहत-वि० [स०] बाधित; आहत, ताहित ।
अभ्याहार-पु० [स०] निकट लाना; चौर्य; अपहरण ।
अभ्युक्षण-पु० [स०] सिंचन, छिड़काव ।
अभ्युक्षित-वि० [स०] सिंचित, जिसपर छिड़काव हुआ हो ।
अभ्युक्षित-वि० [स०] नियमित, प्रचलित, प्रथाके अनुरूप ।
अभ्युदय-पु० [स०] बढ़ती, वृद्धि, उत्कर्ष, अभ्युदय ।
अभ्युदय-पु० [स०] उदयान; स्वरसाधनकी एक प्रणाली (मगीन) ।
अभ्युत्थान-पु० [स०] उठना; किसीके सम्मानमें उठकर खड़ा हो जाना; बढ़ती, उत्कर्ष; उदय ।
अभ्युत्थित-वि० [स०] उठा हुआ; जो सम्मानार्थ खड़ा हुआ हो; उन्नत, उदित ।
अभ्युदय-पु० [स०] सूर्य-चंद्रादिका उदय; वृद्धि, समृद्धि; उत्तरीतर वृद्धि; प्रह्लाद; उत्सव; आराम; मनानकी उत्पत्तिके अवसरपर किया जानेवाला श्राद्ध, वृद्धिश्राद्ध ।
अभ्युदय-पु० [स०] मिसाल या विपरीत बातके द्वारा किसी विषयका स्पष्टीकरण ।
अभ्युदित-वि० [स०] उगा हुआ, उदित; जो सूर्योदय हो जानेके बाद भी सोया हो; धृति; समृद्धिप्राप्त; उत्सव आदिके रूपमें मनाया हुआ ।
अभ्युपगत-वि० [स०] पान गया या आया हुआ; प्राप्त; माला हुआ; स्तब्ध ।
अभ्युपगम-पु० [स०] पान जाना, पहुँचना; पाना; बादा करना; मानना; स्वीकार करना । -मिद्धांत-पु० परीक्षाके लिए पहले स्वीकार कर पीछे मजदूर करना ।
अभ्युपपत्ति-स्त्री० [स०] सहायना देनेके लिए निकट जाना; रक्षा; कृपा, अनुग्रह; बादा; ममता ।
अभ्युपाध-पु० [स०] बादा; अगीकार, स्वीकार; साधन, उपाय ।
अभ्युपायन-पु० [स०] भेंट; रिशत ।
अभ्युपेत-वि० [स०] गया या पहुंचा हुआ; स्वीकृत; बादा किया हुआ ।
अभ्युप, अभ्युप, अभ्योप-पु० [स०] एक तरहकी रोटी; अर्द्धपक आहार ।
अभ्युपित-वि० [स०] साथ या निकट रहनेवाला । पु० दाम, नीकर ।
अभ्युह-पु० [स०] तर्क; निष्कर्ष, परिणाम या फल ।
अभ्रकष-वि० [स०] गगनचुंबी, बहुत ऊँचा । पु० हवा; पहाड़ ।
अभ्रलिह-वि० [स०] बहुत ऊँचा । पु० वायु ।
अञ्ज-पु० [स०] बादल; आकाश; सोना; अन्नक; कपूर; शूल (गणित); मुस्ता । -कूट-पु० बादलकी चौड़ी ।
 -गंगा-स्त्री० आकाशगवा । -जारा, -मार्तंग-पु० देरावत । -पञ्च-पु० गुन्जारा, 'बैलून' । -पिशाच-पिशाचक-पु० राहु । पृथ-पु० बैतका एक प्रकार;

पानी; कोई अस्वयं बात । -**जेदी(दिक्)**-वि० गगन-
चुंबी । -**मांसी-खी०** जदमासी । -**रोह-पु०** वैद्य
मणि । -**बाटिक-पु०**, -**बाटिका-खी०** अमातक वृक्ष ।
अजक-पु० [सं०] एक धातु, अवरक । -**सख-पु०**
हस्तात ।

अजम-वि० [सं०] अमरहित, स्पष्ट । पु० स्थिरता, दृढ़ता;
अमका अभाव ।

अजमु-खी० [सं०] पूर्वके दिग्गज गेरावकी भार्या ।
-**मिथ-**, -**बल्लभ-पु०** गेरावत ।

अज्रांत-वि० [सं०] अमरहित, यथार्थ धाता; धीर ।

अभावकाशिक, अभावकाशी(शिशु)-वि० [सं०] दिग्बर ।

अभित-वि० [सं०] बाइलोंसे आहत ।

अभ्रिच-वि० [सं०] बादल, आवाघ या मुस्तामे उत्पन्न
या संबद्ध । पु० बिजली ।

अभी-खी० [सं०] फुदाली; पेरेला ।

अजरे-पु० [सं०] औषध, न्याय ।

अभी-ध-पु० [सं०] वज्र ।

अजख-पु० [सं०] जगा रहनेवाला, दिग्बर साधु ।

अज्व-वि० [सं०] महात्; बहुत अधिक शक्तिवाला । पु०
विशालता; अधिक शक्ति ।

अमंगल-वि० [सं०] अशुभ, अकल्याणकर; माय्यहीन ।
पु० अकल्याण, अनिष्ट; दुर्भाग्य; परत वृक्ष ।

अमंगल्य-वि० [सं०] दे० 'अमंगल' ।

अमंड-पु० [सं०] एह वृक्ष । वि० बिना मांसका (चावल);
अनलकृत ।

अमंत्र, अमंत्रक-वि० [सं०] मंत्रहित या (वैदिक) मन्त्र-
पाठकी अपेक्षा न रखनेवाला (कर्म); अवैदिक; (वैद-)मंत्रका
अनधिकारी ।

अमंद-वि० [सं०] सुस्त नहीं, तेज; परिश्रमी; उग्र; कम
नहीं, न्यावा, सुंदर; कुशल । पु० वृक्ष ।

अम-पु० [सं०] गमन; दबाव; भार; बल, भय; गेगः
अनुसर, नौकर; प्राणवायु; अमित होनेकी अवस्था । वि०
कच्चा (फल) ।

अम-'आम'का सामान्यतः लघु रूप । -**चुर-**, -**चूर-पु०**
सुखाये हुए कच्चे आमका चूर । -**रस-पु०** अमावत ।
-**रसी-वि०** आमके रसके रगका, मुनहला । -**हर-**
-**खी०** कच्चे आमकी मुलावी हुई फाँट ।

अमर्का-वि० ऐसा-ऐसा, अमुक, फर्ग ।

अमरग-पु० अमर्ग, कुपय ।

अमजक-वि० [सं०] मज्जरहित ।

अमहा-पु० एक खट्टा फल जिसकी चटनी और अचार
बनाते हैं ।

अमणिव-वि० [सं०] मणिहीन, रत्नरहित ।

अमत-पु० [सं०] रोग; श्रृंखल; समय; धूलिकण; मतका
अभाव । वि० अभाव; अनुभूत; न चाहा हुआ, अस्वी-
कृत । -**परार्थता-खी०** एक शस्त्रोप (जहाँ दूसरा
अर्थ अवांछनीय या अमान्य जान पड़े वहाँ यह दोष
होता है) ।

अमति-खी० [सं०] अज्ञान; अदृग्दृश्या; मज्जाहीनता ।
वि० दुष्टबुद्धि, कटिल । पु० काल; चंद्रमा ।

अमस-वि० [सं०] जो नशेमें न हो; सही दिमागका; साव-
धान; विचारशील ।

अमस-पु० [सं०] पात्र; ताकत ।

अमत्सर-पु० [सं०] मात्सर्यका अभाव । वि० मात्सर्य-
रहित ।

अमय-वि० [सं०] मरारहित; गंभीर; शोकान्वित । पु०
[अ०] श्रादा, स्मरण ।

अमय-पु० [सं०] शिव । अ० [अ०] श्रादा करके,
जान-बूझकर ।

अमपुर-वि० [सं०] मधुर नहीं, कड़वा या किस्ती अन्य
स्वादका; अस्विकार ।

अमन-पु० [अ०] शान्ति, इतमीनान; रक्षा । -**अमान-**
पु० शांति और सुरक्षा या सुव्यवस्था । -**चैन-पु०** सुख-
शांति । -**परसंद-वि०** शांतिप्रिय ।

अमन(स्)-पु० [सं०] अनुभूतिका अभाव; अनवधानता ।

अमनस्क-वि० [सं०] दे० 'अमना' ।

अमना(नस्)-वि० [सं०] नासमय; अन्यमनस्क, जिसका
चित्त या ध्यान और कहीं हो; लापरवाह, बे-प्रज्ञ;
उदात्त; जिसका मनपर नियंत्रण न हो, स्नेहहीन । पु०
परमेश्वर ।

अमनाक्-अ० [सं०] थोड़ा नहीं, बहुत अधिक ।

अमनि-खी० [सं०] गति; रागता ।

अमनिपा-वि० पवित्र, शुद्ध; अछूता । खी० भोजन
बनानेकी क्रिया, रमोई पकाना ।

अमनुष्य-वि० [सं०] अमानवोचित; भ्रष्ट मनुष्यका
आना-जाना बहुत कम हो । पु० मनुष्य नहीं, राक्षस
आदि ।

अमनैक-पु० सरदार; अवधमें काश्तकारोंका एक विशेष
वर्ग । वि० दाँदेदार, अधिकारी; दीठ ।

अमनैही-खी० अमनैकपन ।

अमनोह-वि० [सं०] अचित्तकी प्रिय न लगनेवाला,
अस्विकार ।

अमम-वि० [सं०] अहंकारशून्य; निस्स्वाद्य; ममगाशय,
कामनाहीन । पु० भावी जिनविशेष ।

अमर-वि० [सं०] न मरनेवाला; अविनाशी । पु० देवता;
एक मन्त्र; पाग; सोना; ३३ की मर्यादा; देवदारका एक
भेद; स्नुही वृक्ष, मैथुन; अधिभोका देव । -**कंटक-पु०**
विष्य-श्रेणीका एक भाग जिसमें पामने नमंदा नदी निकली
है । -**कोट-वि०** [सं०] एक राजपुत्रानाका एक प्रसिद्ध नगर ।

-**कोश-**, -**कोष-पु०** अमरगमहका बनाया मन्त्रका
प्रसिद्ध कोश । (अमरगमह मारागज विक्रमादित्यके दर-
बारके नवरत्नोंमें माने जाते हैं) । -**गुरु-पु०** बृहस्पति ।
-**ज-पु०** एक तरहका स्तंभ-वृक्ष । -**सतिनी-खी०**
देवनादी, मृगा । -**नर-पु०** कम्पवृक्ष । -**ग्राह-पु०**
देवदार । -**द्विज-पु०** देवल ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो
मदिर या मूर्ति-सम्बधी कार्य करता हो । -**धाम(न)-**
पु० देवलोक, स्वर्ग । -**बाध-पु०** एक प्रसिद्ध तीर्थ ।

-**पख-पु०** [सं०] पितृपक्ष । -**पति-पु०** इंद्र । -**वद्-**
पु० देवपद; मोक्ष । -**पुर-पु०**, -**पुरी-खी०** इन्द्रपुरी,
अमरावती । -**पुष-**, -**पुष्पक-पु०** कम्पवृक्ष; फेतक; चून;

कौंस तुण । -पुष्पिका-खी० अथःपुष्पी । -प्रसु-पु० विष्णुका एक नाम । -बेल-खी० [हि०] अकासबेल । -रख-पु० स्फटिक । -राख-पु० इद्र । -लोक-पु० देवलोक, स्वर्ग । -बर-पु० इद्र । -बहुरी-बहुरी-खी० आकाशकला । -सिंह-पु० अमरकोश नामक प्रसिद्ध संस्कृतकोशके रचयिता ।

अमरख-पु० दे० 'अमर' ।

अमरणा-पु० [सं०] अमरत्व ।

अमरता-खी० [सं०] अमर होना ।

अमरत्व-पु० [सं०] अमरता, देवत्व ।

अमरमनित-पु० देववाणी ।

अमरांगना-खी० [सं०] देवपत्नी; अप्सरा ।

अमरा-खी० [सं०] अमरावती; नाल; अपरा, खेडी; दूध; गुडून; सेहुड़; धौकुआर आदि ।

अमराई-खी० आमका बाग; सुरकानन, उषान-दान-सी विराजित सुरम्य अमराई-लछिराम ।

अमराड-पु० दे० 'अमराई' ।

अमराचार्य-पु० [सं०] बृहस्पति ।

अमरादि-पु० [सं०] मृगम पर्वत ।

अमराचिप-पु० [सं०] इद्र ।

अमरापगा-खी० [सं०] मृगंगा ।

अमरारि-पु० [सं०] देवरात्रि, अमर । -पूज्य-पु० दैत्योंके गुण, शत्रु ।

अमरालय-पु० [सं०] स्वर्ग ।

अमरावती-खी० [सं०] इन्द्रपुत्री ।

अमरी-खी० [सं०] देवपत्नी, देवमन्या; एक वृक्ष ।

अमरीकन-वि०, पु० दे० 'अमरिका' ।

अमरीका-पु० पश्चिमी गोलार्द्धम अवस्थित एक महादेश, अमेरिका ।

अमरीकी-वि० अमरीकाका । पु० अमरीकाका रहनेवाला ।

अमर-पु० [सं०] एक राजा जो कवि भी थे ।

अमर-पु० एक रंजनी कपड़ा ।

अमरुत-पु० दे० 'अमरुद' ।

अमरुद-पु० एक प्रसिद्ध फल ।

अमरेश, अमरेश्वर-पु० [सं०] देवराज, इद्र ।

अमर्य-वि० [सं०] अनन्तर, मृत्युरहित, निर्व्य । पु० मानवमित्र, देवादि । -भुवन-पु० स्वर्ग ।

अमर्यापगा-खी० [सं०] स्वर्गना ।

अमर्यित-वि० [सं०] जिसका मर्दन न हुआ हो, अपरा-भूत, अपराजित ।

अमर्योद-वि० [सं०] सीमारहित; सीमाका उल्लंघन करने-वाला; प्रतिष्ठारहित ।

अमर्योदा-खी० [सं०] सीमोल्लंघन; आचरणहीनता; अमतिष्ठा ।

अमर्य-पु० [सं०] अमरिष्णुता, क्रोध, कोप; एक संचारी भाव, अपनी अवस्था, निरदकार आदिसे उत्पन्न क्षोभ ।

अमर्यण, अमर्यित-वि० [सं०] दे० 'अमर्य' ।

अमर्यो(विं)-वि० [सं०] अमर्य करनेवाला ।

अमल-वि० [सं०] सफाहित, स्वच्छ; निष्पाप; उज्ज्वल । पु० स्वच्छता; अश्रक; परमता । -कोशीर्-खी० कंठेकी

जातिका एक पेड़ । -गुच्छ-पु० पक्षपाद या पक्ष नामक वृक्ष । -पतत्री(त्रि)-पु० वन्य हंस । -मणि-रख-पु० स्फटिक ।

अमल-पु० [अ०] काम, क्रिया, व्यवहार; कर्म; आचरण; उन्मीर; [हि०] बान, आदत; अधिकार; छत; नशा; प्रवास; समय । -बल्ल-पु० कब्जा-बल्ल । -दरामद-पु० बान्ता काररवाई । -दारी-खी० राज्य, हुकूमत; अधिकार । -पट्टा-पु० कार्य करनेके लिए कारिंदेको शिवा जनिवाला अधिकारपत्र । मु० -दरामद होना-काममें लावा जाना । -धानी करना-नशा पीना, मंग पीना ।

अमलतास-पु० एक पेड़ जिसके फूल, फल और बीज दवाके काम आते हैं ।

अमलबेत-पु० एक लता; एक खट्टा फल जो दवाके काम आता है ।

अमलबेल-खी० एक लता ।

अमला-खी० [सं०] लक्ष्मी; नाल; ओबल; सातला वृक्ष; भूम्यामलकी । पु० [अ०] कर्मचारिमंडल; दफ्तर ('अमल'-का बहु०); गिरे हुए भकानका सामान, काठ-कबाड़ । -कैला-पु० कर्मचारिमंडल; सब तरहके अहलकार; नौकर-चाकर । -खाजी-खी० कर्मचारियोंको घुस आदिने हाथमें कटके काम निकालना ।

अमलातक, अमलातिक, अमलानक-पु० [सं०] अमलबेत ।

अमलिन-वि० [सं०] निर्मल, स्वच्छ; निर्दोष ।

अमली-वि० व्यावहारिक; कामकाजी (अमली काररवाई); नशेराज । खी० हमली; एक हाकीदार पेड़ । मु० -जामा पहनाना-कार्यरूप देना, कार्यमें परिणत करना ।

अमलूक-पु० एक पेड़ जो पत्राव आदिमें होता है और जिसका फल खाया जाता है ।

अमलोनी-खी० नीली या कुलफा नामक माग ।

अमस-पु० [सं०] रोग; समय; मृत्युना; मृत्यु व्यक्ति ।

अमसूल-पु० एक वृक्ष जो दक्षिण भारतमें बहुतायतमें होता है ।

अमसुण-वि० [सं०] मुलायम नहीं, कड़ा ।

अमस्तु-वि० [सं०] जिसमें छेना या मलाई न हो । पु० छेनेका पानी या मट्ठा ।

अमहल-वि० जिसका कोई नियत आवास न हो, छा-मकान; व्यापक ।

अमांस-वि० [सं०] मांसरहित; दुरत्ना-पतला, निर्बल । पु० मांस नहीं, हनर पदार्थ ।

अमांसक-वि० [सं०] 'अमांस' ।

अमा-खी० [सं०] अमावास्या; चंद्रमाकी १५वा कला; धर; आत्मा, अमिन होनेकी अवस्था; प्रामाणिक न होना । वि० अमित । अ० साध । -निशा-खी० अमावास्याकी रात, अंधेरी रात । -वसरी-मासी-खी० दे० 'अमावास्या' । -वस-खी० [हि०] दे० 'अमावास्या' । -वसरी, -वासी, -बसवा, -बासवा-खी० कृष्ण पक्षकी पंद्रहवीं या अंतिम तिथि ।

अमातना-सं० कि० आमत्रिण करना, न्योतना ।

अमातुक-वि० [सं०] मातृहीन, विना माँका ।

अमात्य-पु० [सं०] मंत्री ।

अमात्र-वि० [सं०] मात्रारहित; जिसकी माप-बोल न हो; असमग्र; अनारम्भिक । पु० परमत्रा; वह जो माप नहीं है ।
अमान-वि० [म०] परिमाण-रहित; असीम; अत्यधिक; बहुसंख्यक; निरिमान; सरल; जिसका आदर या प्रतिष्ठा न हो । पु० रक्षा; अभय; शरण; आश्रय; शक्ति । **मु०**-मार्गना-रक्षाकी प्रार्थना करना; शक्ति-प्राप्ति करना ।
अमानत-स्त्री० [अ०] धरोहर, धाती; धाती रखना; पैमा-इशका काम; अमीनका पद; अमन । -स्वाता-पु० वक या कोठीका वह स्वाता जिसमें अमानती रकमें जमा की जायें । -प्रावा-पु० वह जगह जहाँ चीजें अमानतमें रखी जायें । -दार-पु० अमानत रखनेवाला; अमीन । -में स्त्रवान्त-अमानतकी रकम खा जाना ।
अमानन-पु०, **अमानना**-स्त्री० [सं०] अनादर, अपमान, अवज्ञा ।
अमानस्य-पु० [म०] दुःख, पीडा, व्यथा । वि० दुःखिन, पीडित ।
अमाना-अ० क्रि० अटना, ममाना; * इतराना ।
अमानित सेना-स्त्री० [सं०] अपने पराक्रमका यथोचित आदर-सम्मान न पानेके कारण असंतुष्ट सेना (कौ०) ।
अमानिता-स्त्री०, **अमानित्व**-पु० [सं०] नज्जात ।
अमानिया-पु० एक तरहका पटसन ।
अमापी-स्त्री० वह तामीरी काम जो ठीकेपर न दिया गया हो; वह चीज जिसपर कोई रोक-टोक न हो; वह भूमि जो सरकारके अधिकारमें हो और जिसका प्रबंध सरकारी कर्मचारी करता हो; लगानकी वट्टी जिसमें फसल खराब होनेके कारण कुछ छूट दी जाय; † अघेर ।
अमापी (विन्)-वि० [सं०] निरिमान, विनीत ।
अमानुष-वि० [म०] मनुष्यसे न होनेवाला; अलौकिक; अमनुष्योचित; पाशव; पेशाचिक । पु० मनुष्य नहीं, ज्ञानहीन प्राणी । [स्त्री० 'अमानुषी']
अमानुषी-वि० अलौकिक; पेशाचिक ।
अमानुषीय, अमानुष्य-वि० [म०] अलौकिक ।
अमान्य-वि० [सं०] अमाननीय; मान या आदरके योग्य नहीं ।
अमाप-वि० [म०] अपरिमित; बहुत अधिक ।
अमापा-पु० दे० 'अमामा' ।
अमाप-वि० [म०] मायावाहित; छल-कपटसे रहित; ईमानदार; जो माया न मा सके । पु० परमत्रा ।
अमापा-स्त्री० [म०] छल-कपटका अभाव; अविद्या, भ्रान्तिका अभाव; ईमानदारी । * वि० मायावाहित ।
अमाधिक, अमायी (विन्)-वि० [म०] मायावाहित; निरछल; सधा ।
अमार-पु० [सं०] अमरण, अनाश ।
अमारग-वि०, पु० दे० 'अमार्ग' ।
अमारी-स्त्री० [अ०] दे० 'अमारी' ।
अमार्ग-पु० [म०] बुरा रास्ता, कुमार्ग; मार्गका अभाव । वि० मार्गरहित ।
अमार्जित-वि० [सं०] जो साफ न किया गया हो, अपरिष्कृत ।
अमार्ज्य-वि० [म०] जिसका मार्जन न हो सके; जो स्वच्छ

न किया जा सके ।
अमात्र-पु० अधिकारी; शासक ।
अमालनामा-पु० वह पुस्तक जिसमें कर्मचारियोंकी भली-बुरी काररवाइयाँ दर्ज की जाती हैं, कर्म-विवरण (मुसल०) ।
अमावस्य-स्त्री० पके आमका रस छुआकर बनायी हुई मोटी परत; एक तरहकी मछली ।
अमावसा-अ० क्रि०-अमाना, भीतर आ सकना ।
अमावास्या, अमावास्याक-वि० [सं०] अमावास्याकी रात्रिमें उत्पन्न ।
अमाह-पु० आँखकी एक बीमारी; नाखूना ।
अमाही-वि० अमाह रोग-सम्बधी ।
अमिस्व-पु० आमिष, मांस ।
अमिट-वि० न मिटनेवाला; सदा रहनेवाला; अटल ।
अमित-वि० [सं०] बे-हद, बे-हिमाय; अत्यधिक; उपेक्षित; अज्ञात; अस्फुट । -**क्रु**-वि० अपरिमित साहस या बुद्धिवाला । -**तेजा (जम्)**,-**शुति**-वि० बे-हद कांति और तेजवाला । -**विक्रम**-वि० असीम शक्तिवाला; विष्णुका एक विनिष्ण । -**वीर्य**-वि० बे-अज्ञात ताकतवाला ।
अमिताभ-वि० [म०] अति कांतियुक्त या तेजम्बी । पु० बुद्धका एक नाम ।
अमिताभन-वि० [म०] बहुत खानेवाला; सर्वभक्षी । पु० अग्नि; विष्णु ।
अमिते-स्त्री० [सं०] अमीयता ।
अमिताजा (जम्)-वि० [म०] असीम शक्तिवाला; सर्वशक्तिमान् ।
अमित्र-वि० [सं०] मित्रहीन; बैरी, विरोधी । पु० मित्र नहीं, शत्रु, प्रतिपक्षी । -**स्वाद**-पु० इद्र । -**घात**,-**घाती (तिन्)**,-**ह**-वि० शत्रुओंका नाश करनेवाला । -**जि**-वि० शत्रुओंको जीतनेवाला । -**तपन**-वि० शत्रुओंको पीडा देनेवाला । -**विषयातिगा (नौका)**-स्त्री० वह जहाज जो शत्रुदेशमें जानेवाला हो । -**सह**,-**साह**-वि० शत्रुओंको बशमें करनेवाला । पु० इद्र । -**सना**-स्त्री० शत्रु-सेना ।
अमित्रा (जिन्), अमित्राय, अमित्र्य-वि० [म०] बैरी, विपक्षी ।
अमिष-पु० अमृत । -**शूरि**-स्त्री० मजीबनी बूटी ।
अमिल-वि० बे-मेल, भिन्न वर्गका; जिससे मेल-जोल न हो; ऊबड़-खाबड़; न मिलनेवाला, अप्राप्य । -**पट्टी**-स्त्री० चौड़ी तुरपन ।
अमिलताई-स्त्री० अमलगा, खटाई; कपट, दूर-दूर रहनेका स्वभाव-‘मिलत न क्यों हूँ, भरे राखी अमिलताई’-धना० ।
अमिलतास-पु० दे० 'अमलनाम' ।
अमिलत इ-पु० [म०] दे० 'अमलनाम' ।
अमिलित-वि० [सं०] जो मिलान न हो, पृथक् ।
अमिली-स्त्री० वैमनस्य, अनवय; हमली ।
अमिल-वि० [म०] बिना मिलवट्टका, खालिस; असंयुक्त । -**राशि**-स्त्री० इकाईमें प्रकट होनेवाली राशि, १ से ९ तकके अंक (ग०) ।

अभिहित-वि० [सं०] अभिहित ।

अभिष्ट-वि० [सं०] निश्चल । पु० छल-कपटका न होना ; सांसारिक सुख ; निष्ठासही वस्तु ; मान ।

अमी-पु० दे० 'अमिय' । -कर-पु० चंद्रमा ।

अमी (मिन्)-वि० [सं०] रोनी ।

अमीच-अ० बिना मृत्युके ही-सुख या दुःख बीच अमीच मर-वना ।

अमीह-पु० दे० 'अमीरी' ।

अमील-वि० [सं०] जिसके क्षति न पहुँची हो । * पु० शत्रु ।

अमीन-वि० [अ०] अमानत रखनेवाला ; विश्वमनीय । पु० एक दीवानी अहलकार जो पैसादश, बँटवारे आदिका काम करता है ।

अमीमंसा-स्त्री० [सं०] मीमांसा या विवेचनका अभाव ।

अमीर-पु० [अ०] अधिकारी ; सरदार ; रईस ; धनी-व्यक्ति ; अफगानिस्तानके राजाकी उपाधि । वि० बनवान् । -ज्ञादा-पु० धनिकता पुत्र कुलीन । [स्त्री० 'अमीरजादी' ।]

अमीराना-वि० अमीरी जमानेवाला ; धनिकोचित ।

अमीरी-स्त्री० दौलतमयी । वि० अमीरके योग्य ।

अमीरुक्कहूर-वि० [अ०] नौसेनापति ।

अमीरुल-मोमिनीन-पु० [अ०] मोमिनों, ईमानवालोंका सरदार ; मुहम्मदकी एक उपाधि ।

अमीर-पु० [सं०] पाप ; कष्ट ; रोग ; शत्रु ; क्षति ।

अमुरु-वि० [सं०] कोई खाम आदमी या चीज जिसका नाम नहीं लिया जा रहा है, फल ।

अमुक-वि० [सं०] जो मुक न हो, बर्बा हुआ ; जिसका मोक्ष न हुआ हो । पु० छुरा, कठारी आदि हथियार जो हाथसे पकड़कर काममें लाये जाय । -हल्-वि० कम-खर्च, अल्पव्ययी ।

अमुल्ल-वि० [सं०] मुलहीन ।

अमुकर-वि० [सं०] अप्रयान, गीत ; निष्ठ श्रेणीका ।

अमुक-वि० [सं०] मूर्ख नहीं, चतुर ; अनामक, विरक्त ।

अमुक-अ० [सं०] बर्बा, उपलोकम, परलोकमें ।

अमुक-वि० [सं०] परलोक संधी ।

अमुद्र-वि० [सं०] जिनके पाम कहा जानेका परवाना या मुहर न हो ।

अमुक-वि० [सं०] जो मूक या गूंगा न हो, बक्ता ; चतुर ।

अमुमन्-अ० अनुमानन, बटुन करने ।

अमुद-वि० [सं०] बरदाया नहीं ; चतुर ; विद्वान् । पु० पचनम्मात्र ।

अमूर्त-वि० [सं०] आकार-रहित ; देह-रहित ; निरवयव (आकाश, काल, वायु, आत्मा, परमात्मा आदि) । पु० शिव । -गुण-पु० धर्म, अधर्म आदि गुण (जो अमूर्त होते हैं) ।

अमूर्ति-वि० [सं०] आकार-रहित । पु० विष्णु । स्त्री० भक्तारहीनता ।

अमूर्तिमान् (अमृ)-वि० [सं०] आकार-रहित । पु० विष्णु । अमृल-वि० [सं०] बिना जड़का ; निराधार ; प्रमाण-रहित, अमान्य ; मिथ्या ; जिसका कोई भौतिक कारण न हो (आकाश, काल) ।

अमृद-वि० [सं०] दे० 'अमूल' ; *अमृद, अनमोल ।

अमृला-स्त्री० [सं०] अभिषिक्ता नामक पौधा ।

अमृद-वि० [सं०] अनमोल ; बहुमूल्य ।

अमृणाल-पु० [सं०] एक सुगन्धदार पौधेकी जड़, वीरन-मूल, सस ।

अमृत-वि० [सं०] न मरा हुआ ; न मरनेवाला ; अमर ; अमरत्व देनेवाला ; सुंदर ; अभीष्ट, प्रिय । पु० अमरत्व ; वह वस्तु जिसके पीनेसे मुरादी जी उठे और जीवित प्राणी अजर-अमर हो जाय, सुधा, आवेहवात ; अति मधुर, हितकर वस्तु ; जल ; घी ; सीमरस ; दूध ; यक्षशेष ; अन्न ; भात ; अन्ध-चित्त मिथ्या ; औषध ; पारा ; सोना ; देवता ; धन्यतरि ; ईद ; सूर्य ; जीवात्मा ; ब्रह्म ; बाराही कठ ; विष ; वसन्तनाभ नामक विष ; बारनक्षत्रके कुछ विशेष योग ; चारकी संस्था ; कानि । -कर-पु० चंद्रमा । -कुंडली-गति-स्त्री० एक छंदके नाम । -क्षार-पु० नौसावर । -गर्भ-पु० जीवात्मा ; ब्रह्म । -जटा-स्त्री० जटामाली । -सरगिणी-स्त्री० चंदनी । -सिलका-स्त्री० एक छंदका नाम ।

-दीपिति-सुति-पु० चंद्रमा । -द्रव-पु० चंद्रकिरण ।

-घारा-स्त्री० एक छंदका नाम । -वनि-स्त्री० एक छंदका नाम । -व-पु० विष्णु ; देवता ; मधय । -फल-पु० नाशपाती ; परबल । -फला-स्त्री० अंगूर, दाख ; आंबला । -बंधु-पु० देवता ; चंद्रमा । -बिंदु-पु० एक उपनिषद् । -मुक् (अ)-पु० अमृतपान करनेवाला ; देवता । -मंथन-पु०-ममृदमंथन जिससे अन्य रसोंके साथ अमृतकी उत्पत्ति मानी जाती है । -भाकिनी-स्त्री० दुर्गा । -सूरी-स्त्री० सतीवनी जरी । -बोय-पु० फलित ज्योतिषमें एक शुभ योग । -रश्मि-पु० चंद्रमा । -रस-पु० सुधा ; परबल । -रसा-स्त्री० एक अंगूर ; अनरसा नामक मिठाई । -लगा-लसिका-स्त्री० गुडुव । -लोक-पु० स्वर्ग । -वपु (म्)-पु० चंद्र ; विष्णु ; शिव । -बहुरी, -बली-संभवा-स्त्री० गुडुव । -सहोदर, -सोदर-पु० दोहा ; उभै-अवा । -स्वार-पु० मन्त्रन, धी । -अ-पु० गुड । -सू-पु० चंद्रमा । -सखा-स्त्री० रुढ़नी नामक पौधा ।

अमृतक-पु० [सं०] अमृत ।

अमृतत्व-पु० [सं०] अमरता ; मोक्ष ।

अमृतदान-पु० एक दकनेदार वरतन ।

अमृतबान-पु० एक तरहका रोगन किया हुआ मिट्टीका वरतन ।

अमृतमती-स्त्री० [सं०] एक वृत्त ।

अमृतांबा (अम्)-पु० [सं०] देवता ।

अमृतांशु-पु० [सं०] चंद्रमा ।

अमृता-स्त्री० [सं०] मधु ; आमलकी ; हरीनकी ; गुडुच ; तुलसी ; इद्रवाकणी ; दुर्वा ; शरीरकी एक नाडी ; एक सर्व-रश्मि । -कल-पु० पटोल, परवर ।

अमृताक्षर-वि० [सं०] अविनश्य ।

अमृताक्ष-पु० [सं०] विष्णु ।

अमृताक्षन, अमृताक्षी (शिव)-पु० [सं०] देवता ।

अमृतासंग-पु० [सं०] तुष्टिवा ।

अमृताहरण-पु० [सं०] गरुड (काहेते है कि उन्होंने एक बार अमृत चुराया था) ।

पन; ओलापन ।

अव्ययता—**खी०** अज्ञानपन, अज्ञान ।

अव्ययव—**पु०** [सं०] अच्छा या बुरा भाव्य; विसृष्टपद मोहरीकी विशेष स्थिति ।

अव्ययी—**वि०** अज्ञान, अज्ञान ।

अव्यय-पु० [सं०] मार्ग नहीं; दिनका कोई समय ।

अव्ययल—**पु०** [फा०] घोड़े या सिंघकी गर्दनपरके बाल; [अ०] बाल-बन्धे, जुड़ब । —**दार**—**पु०** बाल-बन्धोवाला ।

अव्ययव—**पु०** [सं०] संयोग वा मिश्रण न होने देना ।

अव्ययस—**अ०** अगवासा; सहज गतिसे ।

अव्ययव—**पु०** [सं०] अंगिरा ऋषि; प्राणवायु ।

अव्यय—**अ०** [मं०] (संवेधन) हे, ए, अरी ।

अव्यय—**वि०** [मं०] दे० 'अव्यय' । —**छद्**—**पु०** छति-वन वृक्ष । —**पलाश**—**पु०** दे० 'अव्ययछद्' । —**शक्ति**—**पु०** शिव । —**हार**—**पु०** कामदेव ।

अव्यय—**वि०** [सं०] न जोता हुआ; न जोड़ा हुआ; बेलगाव अव्ययिक; अव्यय; अविवाहित; आपद्प्रस्ता; असवद्ध; अनुपयुक्त, वैदिक; अन्यमनस्का; अनभ्यस्त । —**कुम्भ**—**वि०** कुम्भी । —**चार**—**पु०** वह व्यक्ति जो जामुन न रहे ।

अव्यय—**खी०** [सं०] संबंध या लगावका अभाव; पार्थक्य; युक्ति, तर्कका अभाव; अनौचित्य; बंती बजाने समय छेरी-की बंद करनेकी क्रिया ।

अव्यय—**वि०** [सं०] दे० 'अव्यय' । —**पद्**—**अ०** एक ही साथ नहीं, क्रमशः ।

अव्ययल—**पु०** [मं०] शिव ।

अव्ययल—**वि०** [मं०] अलग; अकेला; विषम ।

अव्ययि—**पु०** [मं०] कामदेव ।

अव्यय—**खी०** [सं०] एक संतान उत्पन्न करनेके बाद बंध्या ही जानेवाली स्त्री, काकबन्धा ।

अव्ययवाण—**पु०** [मं०] कामदेव ।

अव्यय—**वि०** [मं०] जो जोडा न हो, अकेला; विषम । —**चक्र**—**पत्र**—**पु०** छतिवन वृक्ष (सप्तपर्ण) । —**नवन**—**नेत्र**—**पु०** (तीन आँखोंवाले) शिव । —**बाण**—**शर**—**पु०** कामदेव (बंधार) । —**बाह**—**सखि**—**पु०** सूर्य (मत्तावर-पद्माब्) ।

अव्यय—**वि०** [मं०] जिसका कोई माधी न हो, अकेला; वृक्ष ।

अव्यय—**पु०** [सं०] १० हजारकी संख्या । **वि०** असवद्ध, धृक् । —**सिद्ध**—**वि०** जिसकी अविच्छेद्यता सिद्ध हो ।

अव्यय—**पु०** [मं०] वह जो न लड़े; * दे० 'आव्यय' ।

अव्ययव—**वि०** [सं०] अजेय ।

अव्यय—**वि०** [सं०] अभिन्नक; अमरद्ध ।

अव्ये—**अ०** [सं०] संबोधनका शब्द; विस्मयादिभूतक शब्द । **अव्ये**—**पु०** [सं०] 'अव्यय'का समासगत रूप । —**गव**—**पु०** वैश्य स्त्री और दार पुत्रसे उत्पन्न वर्णसंकर संतान । —**गुह**—**पु०** लोहेका गैर । —**घन**—**पु०** मं० हथौडा । —**जाल**—**पु०** मं० लोहेका जाल या जाली । **वि०** लोहे-का जाल रखनेवाला । —**मल**—**पु०** जंग, मोरवा । —**मुख**—**वि०** जिसके मुँह या सिरेपर लोहा लगा हो । —**हृदय**—**वि०** जिसका हृदय लोहेकी तरह कठिन हो, निष्ठुर ।

अव्ययी—**पु०** [सं०] विलगाव; अव्यक्तता; अपासि; अक्षयता;

अनौचित्य; संकट; दुष्ट प्रथादिका योग; कुयोग; हथौडा; जोरदार कोशिश; विपुल; कूट । **वि०** असंवद्ध; जोरदार कोशिश करनेवाला । —**क्षेम**—**पु०** प्राप्त संपत्तिकी सुरक्षा न होना । —**बाह**—**पु०** अनुस्वार, विसर्ग, उपध्मानिय तथा त्रिह्रास्वलीय वर्ण (व्या०) ।

अव्ययी—**वि०** अव्ययी ।

अव्ययी—**वि०** [सं०] जिसने शास्त्रानुसार योगका अनुष्ठान नहीं किया है ।

अव्ययी—**वि०** [सं०] योगवताहीन, नाकाबिल; निकम्मा; अनधिकारी; नामुनासिब ।

अव्ययी—**पु०** [सं०] मोरवा, जंग ।

अव्ययी—**पु०** [मं०] वह जो बोझ नहीं है; निष्प्र-श्रेणीका बोझ ।

अव्ययी—**वि०** [मं०] जिसमें बूझ न किया जा सके; अजेय ।

अव्ययी—**खी०** [मं०] अव्ययी एक प्रसिद्ध नगरी, सूर्यवंशी राजाओंकी राजधानी, साकेत । —**काँह**—**पु०** रामायणका दूसरा कांड या खंड जिसमें रामके राज्याभिषेककी तैयारी, वनगमन आदिका वर्णन है ।

अव्ययीसिंह उपाध्याय हरिऔध—**पु०** (सं० १९२२-२००२)—हिंदीयुक्त प्रमुख साहित्यकार । रचनाएँ—महाकाव्य—प्रियप्रवास, वैदेही-वनवास; स्फुट काव्यमय—चोखे चौपदे, रमकलन, बोलचाल, पद्यप्रभुन, कव्यलता आदि; उपन्यास—ठेठ बिग्रीका डाठ, अधखिला फूल; आलोचना-रसक—हिंदी भाषा और साहित्यका विकास, कबीर-वचना-वलीकी आलोचना आदि ।

अव्ययी—**वि०** [मं०] अजन्मा; निल; मौलिक; कोखमें उत्पन्न नहीं; अवैध रूपसे उत्पन्न । **पु०** ब्रह्मा; शिव; योगि नहीं । —**ज**—**वि०** जो जराबुसे उत्पन्न न हो । **पु०** विष्णु; शिव । —**जा**—**संभव**—**खी०** सीता ।

अव्ययी—**वि०** [मं०] लोहेका बना हुआ ।

अव्ययी—**वि०** [मं०] युक्तिरुद्ध; अमंगल ।

अव्ययी—**वि०** [मं०] अनियमित रूपसे व्युत्पन्न, कूट; जिसका योगमें मवध न हो ।

अरंग—**पु०** सुगंध ।

अरंग—**पु०** [मं०] निकट आना; महायुगके लिए मौज्ज रहना ।

अरंग—**वि०** [मं०] चटपट प्रशमा करनेवाला; विषम बना हुआ ।

अरंगी—**वि०** [मं०] रागहीन ।

अरंग—**पु०** दे० 'अरंग' ।

अरंग—**पु०** [मं०] त्रयविशेष ।

अरंग—**पु०** दे० 'आरंग' ।

अरंग—**अ०** कि० बोलना; आरंभ होना । **मं०** कि० आरंभ करना ।

अरंग—**खी०** दे० 'अरंग' । **पु०** [मं०] पहिचोकी नामि और नेमिके बीचकी लकड़ी, आरा; कोण; पिंवार; चक्रवाक पक्षी; पितपायक । **वि०** तेज; थोडा । —**घट**—**घट्टक**—**पु०** रकट; कृप ।

अरंग—**वि०** दे० 'अव्यय' । **पु०** प्रयागमें गंगा-यमुना-का संगमस्थान ।

अरहूँ-**खी०** पैसेको नोकपर लगी हुई कील जिससे तेज चलाने लिए बैलको बौंचते हैं। **भु०**-**देना**, -**लगावा** ताकौर करना।

अरहू-**पु०** [सं०] आरागज; सिवार; पिस्तपापवा; * धर्त; अकनन; दे० 'अरु'।

अरहूटी-**पु०** नावकी पतवारपर रहनेवाला मीठी।

अरकना-**अ०** कि० टकरावा, मिटना; दरकना।
-**बरकना**-**अ०** कि० पकड़ने न आनेके लिए हटना, बचना।

अरकका-**पु०** रोक, मर्यादा; अरगल।

अरकाट-**पु०** मद्रासका एक नगर।

अरकाटी-**पु०** गिरमिटिया कुलियोंकी भरती करनेवाला।

अरकान-**पु०** [अ०] (रक-स्तम्भ-का बहु०) प्रधान कार्यकर्ता या कर्मचारी; वे लोग जिनपर किसी कार्य या प्रबंध का दारमदार हो, उर्दू छंदोंके भाषारूप अक्षर। -**(अ)**-**दीक्षित**, -**सख्तनक्ष**-**पु०** राज्यके आचारस्तम्भ-मन्त्री, सरदार आदि।

अरकोल-**पु०** वृक्षविशेष।

अरजित-**वि०** [सं०] जितकी रक्षा न की गयी वा की जानी हो; बिना बचावका।

अरग-**पु०** दे० 'अरगजा'।

अरगजा-**पु०** एक सुगन्धित लेश जो चंदन, केसर आदि मिश्रकर सैधार किया जाता है।

अरगजी-**वि०** अरगजा जैसे रंग वा मुगधवाला। **पु०** अरगजेके रंगमें मिलता हुआ पीला रंग।

अरगट-**वि०** अलग, भिन्न।

अरगन-**पु०** एक विवाचनी बाजा, 'आर्गन'।

अरगनी-**खी०** कपड़ा टँगनेके लिए बंधी हुई रस्सी, बॉस आदि।

अरगल-**पु०** किवाड़की भीतरसे बंद करनेके लिए लगायी जानेवाली भाड़ी लकड़ी, झोड़ा।

अरगवान-**पु०**[फा०] गहरे लाल रंगका एक फूल, लाल रंग।

अरगवानी-**वि०** अरगवानके रंगका, गहरा लाल। **पु०** गहरा लाल रंग।

अरगना-**अ०** कि० अलग होना; चुप्पी साधना-'खुले-मठन मयनियोंके दिन बैठे रहे अरगना'-**ग०**। **सं०** कि० अलग करना।

अरघ-**पु०** दे० 'अर्घ'।

अरघह-**पु०** [सं०] दे० 'अर्घ'के साथ।

अरघा-**पु०** अर्घ-पात्र; अर्घ-पात्रके आकारका बना पथरका भाषा जिसमें शिवलिंगकी स्थापना की जाती है, जलहरी; १८ पात्र जिनमें अर्घ रखकर दिया जाय; कुण्डी जगतपर गनीके निकासके लिए बना हुआ रास्ता।

अरधान, **अरधानि**-**खी०** गध।

अरदन-**पु०**, **अरदना**-**खी०** दे० 'अर्चन', 'अर्चना'।

अरच-**खी०** दे० 'अर्चन'।

अरवि-**खी०** क्योति, प्रकाश।

अरवि-**वि०** दे० 'अर्चित'।

अर-**खी०** दे० 'अर्च'।

अरजना-**सं०** कि० अर्ज करना; प्राप्त करना।

अरजम-**पु०** कुंभी नामक एक वृक्ष।

अरजल-**वि०** [अ०] बड़ा रजोल वा कमीना, नीच; नीची जातिका। **पु०** वह घोषा जिसके तीन पाँव सफेद वा एक रंगके हों।

अरजरु-**वि०** [सं०] धूर्तदक्षित, स्वच्छ; वासनारहित।

अरजरुका-**वि०** खी० [सं०] अरजसला।

अरज्जी-**वि०** [फा०] सस्ता। [खी० 'अरजानी']।

अरजा(**अस्**)-**वि०** दे० 'अरजस्'। **वि०** खी० दे० 'अरजस्का'। खी० कन्या; मार्गव कविकी पत्नी; धीकुमार।

अरजाल-**पु०** [अ०] कमीने, नीच लोग (रजौलका बहु०)।

अरजी-**खी०** दे० 'अर्जी'। * **वि०** अरज करनेवाला, मार्गी।

अरजु-**वि०** [सं०] जिसमें रस्सी न हो। **पु०** कारागृह।

अरहना-**अ०** कि० दे० 'अरहना'।

अरहना-**पु०** छोटी जातिका सन, सनई।

अरटु-**पु०** [सं०] अरल नामक वृक्ष।

अरणि, **अरणी**-**खी०** [सं०] एक वृक्ष, गनियार, अंगैबू; काठका एक वंश जिसमें (विशेषतः) बड़के लिए आम उत्पन्न करते हैं; धूर्य; अग्नि; एकमक पथर; मोनापाषा; पीतका पेड़ वा लकड़ी। -**केतु**-**पु०** अग्निबंध वृक्ष। -**सुत**-**पु०** शुक्रदेव।

अरष-**पु०** [मं०] वन, जंगल; कायफल; मनुष्यासिंघोंका एक भेद; कट्फूल नामक वृक्ष। -**कष**-**खी०** बंगली जीरा। -**कांड**-**पु०** रामायणका तीसरा कांड वा कण्ड।

अरगान-**पु०** सामयेंदका वनमें गाया जानेवाला गान-विशेष। -**अर्चिका**-**खी०** जंगलके चौदनी; (फा०)

निरर्थक श्रमार्थ वा आभूषण, ऐसा वनाव-सिंहार जिसमें कोई देखनेसराहनेवाला न हो। -**इमन**-**पु०** दीन नामक पौधा। -**नृपति**, -**राज**-**पु०** सिंह। -**पंडित**-**पु०** ऐसा मनुष्य जो वनमें ही (जहाँ कोई सुनने-देखने-

वाला नहीं होता) अपना पाठित्य प्रकट कर सके। **वि०** मूलं। -**अष**-**वि०** जंगलमें उत्पन्न। -**अशिका**-**खी०** हॉस। -**बान**-**पु०** बानप्रस्थ आश्रममें प्रवेश करना।

अरुवित, -**रोदन**, -**बिछाव**-**पु०** ऐसा रोना जिसमें कोई सुननेवाला न हो, निष्फल कथन, निवेदन इ०। -**बास्तुक**, -**बास्तुक**-**पु०** बनरत। -**आ**(**अन्**), -**आन**-**पु०** मेहिया; गीदड़। -**अरु**-**खी०** जेष्ठ-शुद्धा षष्ठीका व्रत।

अरष-**पु०** [सं०] जंगल; जंगलकी सभा; एक पौधा।

अरषवा-**खी०** [सं०] एक ओषधि।

अरषानि, **अरषयानी**-**खी०** [सं०] बहुत बड़ा जंगल वा वीरान; वनदेवी, वन्य पशुओंकी माता।

अरषायन-**पु०** [सं०] दे० 'अरषयान'।

अरषधी-**वि०** [सं०] जंगलवाला; जंगलके पासका।

अरत-**वि०** [सं०] सुख; विरक्त; अनसक्त; असंतुष्ट।

अरति-**खी०** [मं०] रागाका अभाव, विरक्ति; अस्वीय; क्रोध, उचाड़; चिता; उद्वेग; सुस्ती; व्यथा; एक वैदिक रोग। **वि०** असंतुष्ट; अशांत; सुस्त।

अरवि-**पु०** [सं०] बौद्ध; कुन्नी; कुहनीसे कानी जंगलीके छोटतकी माप।

अरब-पु० दे० 'अरब'।

अरबाबा-स० कि० समझाकर कहना, व्याख्या करते हुए कहना।

अरबी-स्त्री० एक सीढ़ी जैसी चीज जिसपर मुँहको मुला-कर श्मशान ले जाते हैं, टिकड़ी। वि० दे० 'अरबी'।

अरबी(विन्दु)-वि० [स०] जो रथपर सवार न होकर खड़े, पैदल।

अरद-वि० [स०] बिना दाँतका; जिसके दाँत टूट गये हों।

• पु० कष्ट पहुँचाना; विनाश।

अरद्वज-वि० [स०] दे० 'अरद'। • पु० दे० 'अरद'।

अरद्वना-स० कि० मसलना; कुचलना; मसल-कुचलकर मार डालना।

अरद्वल-पु० दक्षिणमें होनेवाला एक वृक्ष।

अरद्वली-पु० किसी बड़े अक्षरके साथ रहनेवाला खास चपरासी [अ० 'आर्दली']।

अरदाबा-पु० दूला हुआ अन्न; अरता।

अरदास-स्त्री० प्रार्थना; प्रार्थना-पत्र; नानकपंथी ईश्वर-प्रार्थना; भेंट, नजर [का० 'अर्दाशन']।

अरदांग-पु० दे० 'अर्दांग'।

अरदांगी, अरदांगी-पु० दे० 'अर्दांगी'।

अरब-वि० दे० 'अरब'। अ० अंदर, भीतर।

अरब-पु० एक तरहकी निहाई; • दे० 'अरब्य'।

अरबा-पु० जंगली भैंसा। अ० कि० दे० 'अरबा'।

अरभि-स्त्री० दे० 'अरभि'; • अरुना; रूकना; हट करना।

अरबी-स्त्री० अरुण, यशका अधिमधन-काष्ठ; जलन, दाह।

अरब्य-पु० दे० 'अरब्य'।

अरबन-पु० दे० 'अरबन'।

अरुपनाम-स० कि० अर्पण करना, भेंट करना; भोजनके पूर्व भोज्य वस्त्रों भगवान्‌को अर्पित करना।

अरपित-वि० दे० 'अर्पित'।

अरब-वि० सौ करोड़। पु० सौ करोड़की सम्य्या; • घोडा; इन्द्र; [अ०] दक्षिण-पश्चिम एशियाका एक प्रसिद्ध देश जहाँ इस्लाम धर्मके प्रवर्तक मुहम्मदका जन्म हुआ था; अरब देशका निवासी।

अरबर-वि० अरबवृक्ष; कठिन, टेढ़ा।

अरबरनाम-अ० कि० घबड़ाना; लटपटाना।

अरबरानि-स्त्री० घबराहट, हड़बड़ी-लोचें बही मूर्ति अरबरानि आवरे-वन०।

अरबरी-स्त्री० हड़बड़ी।

अरबिस्तान-पु० [अ०] अरब देश।

अरबी-वि० [अ०] अरब देशका। पु० अरब-निवासी; अरबका या अरबी नस्लका घोडा; अरबी ऊँट; एक तरहका बाजा। स्त्री० अरबीकी भाषा।

अरबीला-वि० अरुचंद, निरर्थक; गर्वयुक्त (?) ; अक्रिय, अज्ञेयवाला-ध्यान ध्यान अरबीले न मुरत-वन०।

अरबी-पु० दे० 'अरबी'।

अरभक-पु० दे० 'अरभक'।

अरम-वि० [स०] नीच, कमीना।

अरमण; अरममाण-वि० [स०] अशुचिकर; अमंजुर; असंतोषजनक; अविराम।

अरमानी-पु० आरमोनिया देशका रहनेवाला।

अरमा-स्त्री० चमक, -'मैथिली-विलास मीजुरीकी अरमा सोई'-लछिराम।

अरमाव-पु० [का०] लालसा, इच्छा, कामना। सु०-निकलना-इच्छा, कामनाकी पूर्ति होना। -रह आना-लालसा, कामनाका अंतुष रह जाना।

अर-अ० विलास, लतास आदिका सूचक शब्द। पु० मेनफल; [स०] दरवाजा; किबाब; उखल; युद्ध; डकन।

अररना-दररना-स० कि० धीमना, दलना।

अरराना-अ० कि० 'अर'की जिनके साथ (दीवार, पेड़, डाल आदिका) टूटकर गिरना; महराना।

अररि-पु०, अररी-स्त्री० [स०] दरवाजा; किबाब।

अरर-पु० [स०] झुंड; एक इधिया; एक असुर।

अररु-पु० [स०] सोना गाल।

अररन-पु० काटकर लायी जानेवाली कच्ची कसल, पहले पहल काटी जानेवाली फसल जो खलिहानमें न ले जाकर पर लायी जाय; † दे० 'अररिन'।

अररल-पु० घोड़ेके कानके पासकी भौरी।

अरबा-पु० बिना उबाले धानका चावल; † ताखा।

अरबासी-स्त्री० ओलनी।

अरबिद-पु० [स०] कमल; मारस; ताबा। -दुलभ-पु० ताबा। -नबन, -खोच-पु० विष्णु। -नाम, -नाभि-पु० विष्णु। -बंश-पु० सुंदर। -बोनि, -सव-पु० मन्ना।

अरबिद घोष-पु० (१८७२ से १९५०) सन् १९०८ में उनपर अलीपुर बमबेनमें मुकदमा चला पर वे छूट गये। बादमें वे राजनीतिसे युक्त हो गये और पाकिस्तान अपने आश्रममें रहते हुए आध्यात्मिक अध्ययनमें लग गये।

अरबिदाक्ष-पु० [स०] विष्णु।

अरबिदिनी-स्त्री० [स०] नलिनी; कमल-रत्ना; कमलभूष; कमलपुष्प रत्नान।

अरबी-स्त्री० एक बंद, घुड़वा।

अरस-वि० [स०] रसहीन, नीरम, फीका-अस-य; मूल; निर्बल; अयोग्य। पु० रमका अभाव; • आकरय, आकाश, -'जाकी तेरा अरममें डूरी'-छ० प्र० छन; महल।

अरमठ-वि०, पु० दे० 'अरमठ'।

अरसर्था-पु० मासिक आय-व्ययका लेखा रखनेकी बही।

अरमन-परसन-पु० दे० 'अरमन-परस'।

अरसना-अ० कि० डीला या मुल पड़ना।

अरसना-परसना-स० कि० छुना; आगिनन करना।

अरस-परस-पु० आँखमिचौनीका एक खेल; दृग्-परस।

अरसा-पु० [अ०] समया; अवधि; मैदान; देर, बहुत दिन, मुहल। सु०-तंग होना-कठिनाईमें पड़ना।

अरमात-पु० एक तरहका सनेवा छत।

अरमाना-अ० कि० अरमाना।

अरसाश-पु० [स०] स्वादरहित, रुखा-मुखा पदार्थ खाना।

अरखिक-वि० [स०] अरम, काबू, संगीन आदिका रस लेनेमें असमर्थ; स्वादहीन, रुखा; रुखे व्यवसाय।

अरसी-स्त्री० अलमी, मीसी।

अरसीका, अरसीहा—वि० अरसीका हुआ ।

अरस्तू—पु० प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो अफलातूनका शिष्य तथा सिन्दूर महानका शिक्षक था (३८४ से ३२३ ईसवी-पूर्व) ।

अरहत—पु० दे० 'अर्हत' ।

अरहत्—पु० [सं०] रहस्य या गुप्त भेदका अभाव ।

अरहट—पु० कुण्ड से पानी निकालनेका बंध, रहट ।

अरहान—पु० साग-भाजी में पकाने समय मिलाया जानेवाला आटा या बेसन ।

अरहना—क्री० पूजा ।

अरहर—क्री० दालके काम आनेवाला एक अनाज, तुअर ।

अरा—पु० आरा, झगड़ा ।—**अरी**—क्री० दे० 'अड़ाअरी' ।

अराक—पु० [अ०] अरब देश; बर्बाका घोड़ा ।

अराकान—पु० बर्माका एक प्रांत जो भारतकी पूर्वी सीमाके पास पड़ता है ।

अराण—वि० [म०] बामनारहित; दान ।

अरागी (गिन्)—वि० [म०] अरजित; रागाहीन, बामनारहित ।

अराज—वि० बिना राजाका, अराजक । पु० अराजकता ।

अराजक—वि० [म०] बिना राजा या राज्यका; अराजकता-वारी । पु० राजाका न होना; विद्रोह ।

अराजकता—क्री० [म०] शासनका अभाव; अभ्यवस्था, नद भ्रमन्ती ।—**बार्द**—पु० राज्यहीन समाज-व्यवस्थाका प्रतिपादन करनेवाला मतवाद ।—**बादी (द्विज)**—वि० उक्त मिथ्यापनका प्रतिपादक, समर्थक ।

अराजक्य—वि० [म०] क्षतिग्रस्त ।

अराजवीजी—वि० [म०] अराजकता फैलानेवाला; राज-विद्रोह प्रचारक ।

अराजक्यमन—पु० [म०] अराजकतामें उत्पन्न या तत्संबन्धी भ्रम ।

अराज़ी—क्री० [अ०] जमीन, भरती (अर्भक बहुत, अब कवचपनमें प्रयुक्त) ।

अरानि—पु० दे० 'अरानि' ।

अरानि—पु० [सं०] दुष्टमन, शत्रु; कंडलीका छठा स्थान; काम कीपाति षड्विध; षष्ठी मलया ।

अरादि—क्री० [म०] पाप; अपराध; द्वेष; अमफलता ।

अराधन—पु० दे० 'आराधन' ।

अराधना—स० क्रि० आराधन करना ।

अराधी—पु० आराधन करनेवाला ।

अराधा—पु० [अ०] गाड़ी, रथ; तोप लादनेकी गाड़ी; राजपुत्र एक ओर एक बार तोप दागना ।

अराध—पु० आराध, वाग ।

अराकट, अरारोट—पु० एक पौधा; उमकी जड़में निहित होनेवाला रस जो मीसूर तैला होता है और प्रायः मीसूरकी द्रिया जाता है ।

अराक—वि० [सं०] टेढ़ा । पु० राक; मनवाला हाथी; बक; एक समुद्र ।

अराक—क्री० [सं०] पुंश्चली, वेदया; अष्टक क्री ।

अराकल—पु० हरावल, अग्रगामी मैसूर ।

अराकली—पु० राजधानीका एक पहाड़ ।

अराक—पु० [सं०] राष्ट्र नहीं, राजसत्ताका अंत ।

अरिक्—पु० शत्रु ।

अरिद्व—वि० [सं०] शत्रुओंका रमन करनेवाला, शत्रुविजयी ।

अरि—पु० [सं०] शत्रु; काम, क्रोध आदि षड्विध; नरमकुंडली-

में लगनेसे छठा स्थान; ६ की संख्या; एक तरहका खदिर; स्वामी; हवा; धार्मिक व्यक्ति; रथका पहिया या और कोई भाग ।—**कर्षक**—वि० शत्रुओंको पीठित या पराभूत करने-

वाला ।—**केशरी**—पु० [सि०] केशीके शत्रु, कृष्ण ।—**ध्व**—वि० शत्रुओंका नाश करनेवाला । पु० शत्रुघ्न ।—**क्षित**—

पु०, **क्षिता**—क्री० शत्रुके नाशका उपाय मोचना ।—**दमन**—**मर्दव**—वि० शत्रुका नाश करनेवाला ।

—**निपात**—पु० शत्रुका आक्रमण ।—**नुत**—वि० जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करें ।—**प्रकृति**—क्री० युद्धमल्ल राजाके शत्रुओंकी स्थिति ।—**मेघ**—पु० विद्वत्पति; गंधिया नामका कीड़ा ।—**मेघक**—पु० मलमें उत्पन्न होनेवाला एक कीड़ा ।—**सुदन**—वि० शत्रुओंका नाश करनेवाला, शत्रुघ्न ।

अरिक्थभाक (ज्), **अरिक्थीय**—वि० [सं०] जो पैतृक संपत्तिमें हिस्सा पानेका अधिकारी न हो ।

अरिद्र—पु० [सं०] हाँस; लगर; नाब, योत । वि० शत्रुमें रक्षा करनेवाला; आगे बढ़ानेवाला ।—**ग्राध**—वि० छिछला ।

अरिया—क्री० विशेषतः पानीके किनारे रहनेवाली एक चिरिया ।

अरिधाना—स० क्रि० अपमानजनक शब्दमें संबोधन करना ।

अरिह—पु० १६ मात्राओंका एक छंद ।

अरिवन—पु० रस्मीका फंडा जिसमें घड़ा आदि फंसाया जाता है ।

अरिष—पु० [सं०] खानतार बर्बा होना; एक गुप्तरोग ।

अरिष्ट—पु० [सं०] दुर्भाग्य; अशुभ; विपत्ति; शत्रु; अनिष्ट ग्रह या ग्रहयोग, दृष्ट्युत्कारक योग; (रोगीके) दृष्ट्युत्पन्न लक्षण; भूकपाति उत्पात; तबाओके समीरमें बनावया जानेवाला मादक अर्घ; लहमन; बीआ; गिड़; रीठा; लंकाके पासका एक पर्वत; मीरी; तक्र; एक असुर जिसे कृष्णने मारा था; एक प्रकारका व्यूह । वि० अविनाशी; निरापड़; अशुभ ।—**गृह**—पु० मीरी ।—**नेमि**—पु० कश्यपका एक पुत्र; सोलहवें प्रजापति; जैनोंके बारहमें तीर्थंकर ।—**मधन**—पु० द्रिष्ट या विष्णु ।

अरिष्टक—पु० [सं०] रीठा ।

अरिष्टा—क्री० [म०] दस प्रजापतिोंका एक कन्या और कश्यप कपिके पत्नी जिसमें गंधर्वोंकी उत्पत्ति मानी जाती है; कुटवी; पट्टी ।

अरिष्टिका—क्री० [सं०] रीठी; कुटवी ।

अरिहव—पु० रेहन; जिन; * शत्रुघ्न ।

अरिहा (हव)—वि० [सं०] शत्रुका नाश करनेवाला । पु० शत्रुघ्न ।

अरी—अ० स्त्रियोंके लिए व्यवहृत संबोधन ।

अरीक्षना—अ० क्रि० उलझना, बंध जाना ।

अरीडा—पु० रीठा ।

अरुन्द—वि० [सं०] मर्मस्थलोंकी छेदनेवाला; मर्मपीडक; लगनेवाला । पु० शत्रु ।

अरुच्यती-खी० [सं०] वसिष्ठ ऋषिकी पत्नी; दक्षकी एक कन्या अथवा धर्मकी एक पत्नी; सप्तविंशत्येक के पासका एक छोटा तारा; जीम।-**अरुचिः**,-**माध्व**,-**सहस्र**-पु० वसिष्ठ।
-**दर्शनम्बाध**-पु० धर्मसे मुक्तकी ओर जाना (अरुच्यतीके बहुत छोटे होनेके कारण पहले उसके पामके बड़े तारे (वसिष्ठ) पर ही टि जाती है)।

अरुच-अ० और।

अरु(स्)-पु० [सं०] मय; रक्तसदिर; भक्त वृद्ध; जर्म, मर्मांग; आँख।

अरुणा-पु० एक वृक्ष जो बगाल, मद्रास आदिमें अधिकतामें होता है (इसकी लकड़ी ढोल, तलवारकी म्यान आदि बनानेके काम आती है); † तर्कारीके काम आनेवाला एक कंद।

अरुह†-खी० दे० 'अरुही'।

अरुह(ज्)-वि० [सं०] रोगमुक्त, नीरोग।

अरुण-वि० [सं०] नीरोग, स्वस्थ।

अरुचि-खी० [सं०] (किन्नी वस्तुका) अच्छा न लगना, अनिच्छा; दूषण; विरक्त; मूख न लगना, अभिमाध रोग; मंतीयजनक व्याख्याका अभाव।-**कर**-वि० जो पद न आये, न रुचनेवाला।

अरुचिः, **अरुच्य**-वि० [सं०] भला न लगनेवाला, अरुचिकर; कुदंत पैदा करनेवाला।

अरुच-वि० [सं०] नीरोग, तदुत्स। पु० आरम्भ नामक पौधा।

अरुजना-अ० कि० उलझना, फँसना, अटकना; झगडना; बुझमें संलग्न होना।

अरुजाना-म० कि० उलझना। अ० कि० उलझना।

अरुह-वि० रुह, जो रुठ गया हो।

अरुण-वि० [सं०] लाल, उषा या मिट्टीके रंगका; ध्वजया हुआ; मूक। पु० लाल रंग, उगते हुए सूर्यका रंग; माध्य लालिका; मय; मयका सारथि; माध्व मरानेका मय; मिट्टर; सोना; कुंकुम; गुड; एक तरहका कुछ रोग. एक छोटा विषैला जंतु; एक आदित्य; कैलासकी एक चोटी, पुत्राय वृक्ष।-**कर**,-**किरण**-पु० मय।-**वृद्ध**,-**शिखा**-पु० मुग।-**ज्योति(स्)**-पु० शिव।-**नेत्र**,-**लोचन**-पु० कबूतर।-**मिय**-पु० मय।-**मिया**-खी० मयकी पत्नी, मत्ता, छाया।-**मल्लार**-पु० मलार रंगका एक भेद।-**सारथि**-पु० मय।

अरुणा-खी० [सं०] उषा; मजीठ, वैद्यकी, अनिविषा, इड-वारुणी, काला अनंतमूल इ०।

अरुणाई-खी० लालिमा।

अरुणाग्रज-पु० [सं०] गरुड।

अरुणाग्रज-पु० [सं०] शनि, यम, जरायु, सुग्रीव, कर्ण इ०।

अरुणात्मजा-खी० [सं०] यमुना और ताप्ती।

अरुणानुज, **अरुणावरज**-पु० [सं०] गरुड।

अरुणाभ-वि० [सं०] लाल आभायुक्त, लालिमा लिये हुए।

अरुणार-वि० दे० 'अरुनारा'।

अरुणाचि(स्)-पु० [सं०] मय।

अरुणाध-पु० [सं०] अरुत्।

अरुणित-वि० [सं०] लाल रंगमें रंगा हुआ।

अरुणिमा(अन्)-खी० [सं०] लाली।

अरुणी-खी० [सं०] लाल गाव; उषा।

अरुणोदक-पु० [सं०] लाल सागर; एक झील।

अरुणोद्व-पु० [सं०] उपकाल, नडका, मोर।-**सप्तमी**-खी० माघ-शुक्ल सप्तमी।

अरुणोपल-पु० [सं०] लाल नामक रंग।

अरुन-वि० दे० 'अरुण'।-**ई**-खी०,-**ता**-खी० दे० 'अरुनाई'।-**वृद्ध**,-**शिखा**-पु० दे० 'अरुणवृद्ध',-**शिखा**।

अरुनाई-खी० ललाई।

अरुनाना-अ० कि० सुखी आना, लाल होना। स० कि० लाल करना।

अरुनारा-वि० लाल।

अरुनोद्वध-पु० दे० 'अरुणोद्वध'।

अरुनार्थ-अ० कि० सिकुडना, बल खाना।

अरुनारा-स० कि० सिकुडना; पेंडना, मरोडना।

अरुवा-पु० एक लता जिसकी जड़में रूढ़ होता है; अरुवा; उल्फ पक्षी।

अरुव-वि० [सं०] अग्रदूत; वमकीला, अश्म। पु० अश्विका लाल घोडा; ज्वाल; मय।

अरुषी-खी० [सं०] उषा, ज्वाला; भृगुपत्नी।

अरुष्क-पु० [सं०] मरुतक वृक्ष या उमकी गिरा; अथ मा।

अरुष्कर-वि० [सं०] वणकर, क्षणकारक। पु० अरुणव, वृक्ष।

अरुहा-खी० [सं०] भूखामलकी।

अरुश्च-वि० [सं०] कडा नहीं, मुलायम।

अरुश्चाना-अ० कि० मिडना, झगडना।

अरुद्ध-वि० [सं०] जो रुढ़ न हो, अप्रचलित; * दे० 'आरुद्ध'।

अरुष-वि० [सं०] आकृतिहीन, बिना रूप-आकारका कुरूप; अममान। पु० अर्धा शङ्ख।

अरुषक-वि० [सं०] आकृतिहीन, अपाथिव; रूपकान्तर आदिमें रक्षित (शाब्दिक)।

अरुषहार्य-वि० [सं०] जो मौर्य द्वारा आकृष्ट या वशम न किया जा सके।

अरुनार्थ-अ० कि० व्यवित होना, पीकित होना।

अरुलना-अ० कि० छिन्नना, कटना।

अरुष-पु० [सं०] मय; एक मय।

अरुष्य-पु० अरुमा।

अरे-अ० छोटीसे, किन्तु व्यवहृत और प्रायः निरस्कार-मूख, मरोधन; आशय, दुःख, आकृष्टता आदि प्रकट करनेवाला उद्गार।

अरेणु-वि० [सं०] जिसमें धूलि न लगी हो; जिसका धूलिमें रपडा न हो। खी० धूलि नहीं।

अरेरना-म० कि० रंगडना।

अरेल-वि० दे० 'अद्वैत'।

अरेली-खी० नेपाली कामज बनानेके काम आनेवाली एक प्रकारकी शादी।

अरुच-वि० अवाध्य, जो रोका न जा सके; [सं०] छिद्र-रहित; कानिहीन, निःप्रम।-**ई**-वि० जिसके टाँन काने या आपसमें मध मिले हों।

पु० निवेदन, प्रार्थना । -**हाल**-पु० निवेदन ।
अर्जक-वि० [सं०] प्राप्त करनेवाला । पु० सितपर्णास;
 छद्र तुलसी ।
अर्जन-पु० [सं०] कमाया; संग्रह करना ।
अर्जनीय-वि० [सं०] समग्र या प्राप्त करने योग्य ।
अर्जित-वि० [सं०] कमाया हुआ; बढ़ोरा हुआ ।
अर्जी-स्त्री० [अ०] प्रार्थनापत्र, वरस्वाम् । -**दावा**-पु०
 दीवानी या मालके मुकदमेमें बारी पक्षका प्रार्थनापत्र ।
 -**नवीस**-पु० अर्जी लिखनेवाला । -**नालिश**-स्त्री०
 दे० 'अर्जीदावा' । -**सरस्मत्**-स्त्री० आवेदनपत्रकी कोई
 भूल ठीक करने या कोई बात बढ़ानेके लिए दिया जाने-
 वाला प्रार्थनापत्र ।
अर्जुन-पु० [सं०] पांडुके पाँच पुत्रोंमेंसे मझले जो महा-
 भारत-युद्धमें पांडवपक्षके नायक थे; दैहयनरेश कातंबीय;
 इन्द्र; सफेद रंग; एक पेड़ जिसकी छाल दवायें, काम आती
 हैं; एकलौता बेटा; मोर; चंडी; सोना; ओखका एक रोग;
 दूब । वि० सफेद; चमकीला; स्वच्छ । -**चक्रवि**-वि०
 सफेद रंगका । -**ध्वज**-पु० हनुमान् । -**पाकी**-स्त्री०
 एक पौधा । -**पुरुष**-पु० अर्जुन नामक वृक्ष ।
अर्जुनक-वि० [सं०] अर्जुन-मवधी । पु० अर्जुनका पुत्रक ।
अर्जुनी-स्त्री० [सं०] श्वेत गौ; एक सर्प; अमिन्डकी पत्नी,
 अपा; कर्तोया नदी; कुटनी ।
अर्जुनोपम-पु० [सं०] समौम वृक्ष ।
अर्ज-पु० [सं०] जल; धारा (बै०); अक्षर, वर्ण; सागौन
 वृक्ष; एक ढंङक वृक्ष; युद्धादिका हौहस्ता, योगगुल ।
अर्ज(स)-पु० [सं०] जल ।
अर्जव-पु० [सं०] समुद्र; धागा; अतर्जिष्ठ; इन्द्र; भुव; एक
 वृक्ष; बारकी मंलया; रक्त । -**अ**-**अल**-पु० समुद्र-
 फेन । -**नेमि**-स्त्री० पृथ्वी । -**पति**-पु० महामागर ।
 -**पोत**-**यान**-पु० जहाज । -**मंदिर**-पु० वृण ।
अर्जवोद्भव-पु० [सं०] अग्निगर्ग नामक पौधा; चद्रमा,
 अमृत ।
अर्जवोद्भव-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।
अर्जस-वि० [सं०] तरंगोंमें भरा हुआ ।
अर्जस्वान्(स्वत्)-पु० [सं०] समुद्र । वि० अधिक
 जलवाला ।
अर्ण-स्त्री० [सं०] नदी (बै०) ।
अर्ण-पु० 'अर्णम्'का सामान्य रूप । -**द**-पु० वाय्व्य; मुलक
 नामक पौधा । -**निधि**-पु० समुद्र ।
अर्जगल-पु० [सं०] दे० 'आर्जगल' ।
अर्तन-पु० [सं०] निद्रा; अगुप्ता । वि० निद्रा करनेवाला;
 शोकाग्नि; श्लिख ।
अर्ति-स्त्री० [सं०] पीडा; धनुषका छोर ।
अर्तिका-स्त्री० [सं०] बड़ी बहन (जा०) ।
अर्थ-पु० [सं०] शब्धका अभिप्राय, मानी, मतलब; प्रयो-
 जन; काम; मामला; हेतु, निमित्त; द्रष्टव्यके विषय-शब्ध,
 मयंश, रस, रूप और गंध; धन, शारीरिक आवश्यक-
 कताओंकी पूर्तिका साधन; पैसा कमाया जो जीवनके चार
 पुरुषार्थोंमेंसे एक माना गया है; उपयोग; लाभ; दिलचस्पी;
 स्वार्थ; इच्छा; गरव; प्रार्थना; दावा; वस्तुस्थिति; तरीका;

मूल्य; निवारण; फल, परिणाम; धर्मपुत्रका एक नाम;
 कुटलीमें लक्ष्मी दूसरा स्थान; विष्णु । -**कर**-वि० जिससे
 पैसा मिले । [स्त्री० 'अर्थकरी'] । -**कर्म(र)**-पु० मुख्य
 कार्य । -**काम**-वि० धनेच्छा । -**किलिबपी(विन्)**-वि०
 रुपये-पैसेके मामलेमें बेईमानी करनेवाला । -**कृष्ण**-पु०
 'पैसेकी तंगी; राज्यकर्तकी भावसे व्यवसाय अधिक होना ।
 -**गत**-वि० (शब्दके) अर्थपर आश्रित । -**गृह**-पु०
 खजाना । -**गौरव**-पु० अर्थकी गंभीरता । -**गर्म**-वि०
 अर्थपूर्ण, जिसमें विशिष्ट अर्थ निहित हो । -**घन**-वि०
 अपम्ययी । -**चर**-पु० सरकारी नौकर । -**चित्तन**-पु०
 ब्रह्मोपार्जनका उपाय सोचना । -**चिता**-स्त्री० धन या
 पैसोंकी चिता । -**चंड**-पु० जुमानेकी सजा । -**द**-वि०
 धन देनेवाला । पु० कुबेर; धन देकर पढ़नेवाला शिष्य ।
 -**दर्शक**-पु० धन-संपत्ति-संबंधी मुकदमोंका विचार करने-
 वाला । -**दूषण**-पु० अपम्यय; अन्यायसे बिसीका धन
 ले लेना; दूसरेका धन नष्ट करना; अर्थमें दोष इतना ।
 -**दोष**-पु० अर्थ-मवधी दोष । -**पति**-पु० कुबेर;
 राजा । -**पिशाच**-पु० अति धनलोभी । -**प्रबंध**-पु०
 आय-व्ययकी व्यवस्था, 'किताबत' । -**बंध**-पु० छद्म,
 वाक्य आदिकी रचना । -**बुद्धि**-वि० स्वाधी । -**आक**-
 (ज्) -वि० हिस्सा पानेका अधिकारी । -**भूत**-पु०
 ननवाह लेकर काम करनेवाला, बेतनभोमी कर्मचारी ।
 -**भंडा**-पु० बरबारी; उद्देश्यका पूरा न होना । -**मंजरी**-
 (विन्) -पु० वह मंत्री जिसके तन्त्रमें राज्यका अर्थप्रबंध
 हो, विद्वत्पत्नी । -**युक्ति**-स्त्री० लाभ । -**वर्जित**-वि०
 महत्त्वहीन । -**बाद**-पु० किसी उद्देश्यका प्रवर्तकगण.
 उपदेशादिकी व्याख्या, तीन प्रकारके वाक्योंमेंसे एक
 (न्या०) । -**विकरण**-पु० मतलब उदघटना । -**विज्ञान**-
 पु० अर्थबोध, अग्रज्ञान । -**बिद्व**-वि० गणपेय समझने-
 वाला । -**व्यवस्था**-स्त्री० साधननिक, राजस्व और उसके
 आय-व्ययकी पद्धति । -**शास्त्र**-पु० अर्थविज्ञान; राजनीति-
 विज्ञान; मोतिशास्त्र । -**ज्ञाव**-पु० लेन-देन या पैसा
 कमानेमें ईमानदारीमें काम करना । -**मचिव**-पु० दे०
 'अर्थमन्त्री' । -**सिद्ध**-वि० प्रसंगमें ही जिसका अर्थ स्पष्ट
 हो । -**मिद्धि**-स्त्री० अर्थालोक प्राप्ति, उद्देश्यकी मिद्धि ।
 -**हर**-वि० उत्तराधिकारमें धन प्राप्त करनेवाला; । -**हीन**-
 वि० निर्धन; बे-मानी; अमकल ।
अर्थतः(तत्) -अ० [सं०] अर्थकी दृष्टिमें, वस्तुतः; मवमुच ।
अर्थना-स्त्री० [सं०] प्रार्थना, निवेदन दावा ।
अर्थांतर-पु० [सं०] दूसरा विषय; नयी स्थिति; दूसरा
 मतलब । -**न्याय**-पु० एक अर्थालोक जहाँ मामान्यमें
 विशेषका, विशेषमें सामान्यका अथवा कारणमें कायका या
 कायमें कारणका समर्थन हो ।
अर्थागम-पु० [सं०] धनागम, आय ।
अर्थानिक्रम-पु० [सं०] हस्तगत उत्तम वस्तुका त्याग (बै०) ।
अर्थात् -अ० [सं०] दानी, दूसरे शब्दोंमें ।
अर्थधिकारी(रिश्) -पु० [सं०] स्वजातीय; अर्थमन्त्री ।
अर्थानर्थापद-पु० [सं०] एक ओरमें लब्ध और दूसरी
 ओरमें राज्य जानेका अर्थ ।
अर्थाना -सं० क्रि० अर्थ ज्ञाना, व्याख्या करना ।

अर्थावुवाद-पु० [सं०] विधिविहित विषयका पुनः कथन वा अनुवचन (न्या०)

अर्थाश्वित-वि० [सं०] धनी; मारगर्म; महत्त्वपूर्ण ।

अर्थापत्ति-श्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें एक अर्थ द्वारा दूसरा स्वतः सिद्ध हो जाय, जिसमें वह दिखलाया जाय कि जब इतनी बरी बात हो गयी तब हम छोटी-सी बातके होनेमें क्या संदेह हो सकता है; परिणाम; एक प्रमाण जिसमें एक बातसे दूसरी बातकी सिद्धि होती है (मी०) । **-सम्प-पु०** आत्मिके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।

अर्थाप्रतिहार-पु० [सं०] कारखानेके नौकरों और कच्चा माल आदि देनेवाले मनुष्योंको बेतन, मूल्य आदि देनेका प्रबंध करनेवाला व्यक्ति ।

अर्थार्थी (थिन्) -वि० [सं०] धनकी कामना रखने वा उसकी प्राप्तिके लिए प्रयास करनेवाला; गरज वा मतलब रखनेवाला ।

अर्थालंकार-पु० [सं०] वह अलंकार जो शून्य-प्रयोगपर नहीं, किन्तु अर्थपर आश्रित हो ।

अर्थिक-पु० [सं०] प्रहरी; राजाको सोने और उठनेके समयकी सूचना देनेवाला मनुष्यपाठक । वि० किसी कन्तु-का चाहनेवाला ।

अर्थित-वि० [सं०] मोगा हुआ; चाहा हुआ ।

अर्थी (थिन्) -वि० [सं०] जाह, गरज रखनेवाला; प्रार्थी; बानी; सेवा करनेवाला; धनी । पु० मागनेवाला; शिष्टुक; बार्दी; मालिक ।

अर्थ्य-वि० [सं०] मागने योग्य; उपयुक्त; धनी; चतुर । पु० शिष्टाजित ।

अर्थन; अर्थन-पु० [सं०] पीडन; वध; याचना; जाना । वि० पीडा देनेवाला; नष्ट करनेवाला; बेचैनीसे घुमने वा चलनेवाला ।

अर्थना-श्री० [सं०] टे० 'अर्थन' । * सं० क्रि० कष्ट पहुँचाना ।

अर्थनि-पु० [सं०] रोग; प्रायना; मिश्रा; अग्नि ।

अर्थित-वि० [सं०] पीडित, हन; याचिन; गया हुआ । पु० एक बाररोग, गर्दन और मुहकी एक ओरकी पेशियोंका अक्षय जाना ।

अर्थ; अर्थ-वि० [सं०] आधा । पु० आधा भाग; भाग; इति; हवा; मनीषता । **-काल-** **-कूट-पु०** शिव । **-केतु-पु०** रुद्र । **-शंभा-** **-आह्वी-श्री०** कावेरी नदी । **-गुच्छ-पु०** चौबीस लक्षियोंका हार । **-गोल-पु०** भूगोल वा ग्लोबका आधा, गोलार्ध । **-चंद्र-पु०** आधा चंद्रमा; हिमालय; साधुनामिकाका चिह्न, चंद्रविदुः वह बाण जिसका फल अर्धचंद्राकार हो; मोरपक्षपरकी आँख; विशेष प्रकारका नम्रपत्र; निकाल बाहर करनेके लिए गर्दनेमें हाथ लगाया, गर्दनिया (दिना); एक प्रकारका विपुंड । **-चंद्रा-श्री०** अर्धफोट नामक पौधा, विधारा । **-चंद्रिका-श्री०** एक नम । **-जल-पु०** शक्ती का नकारक आधा बाहर, आधा नम्रमें रखनेकी क्रिया । **-उद्योतिका-श्री०** तालका एक नद (मं०) । **-सिद्ध-पु०** नेपालकी नीम । **-सूद-पु०** बाध-वध (मं०) । **-जयध-पु०** देवनाओंका तीसरा नेत्र ।

-नाराय-पु० एक तरहका बाण । **-नारायण-पु०** किशुका एक रूप । **-नारीश-** **-नारीश्वर-पु०** शिवका वह रूप जिसमें आधा भाग पार्वतीका हाँगा है, शिव-पार्वतीका संयुक्त रूप ।

-निशा- **-रात्रि-श्री०** आधी रात । **-पारारक्त-पु०** नीतर । **-प्राद्वेश-पु०** पुलके बीचसे खंभेनकका अंतर ।

-माक्ष (ज्)- **-आशिक-वि०** अधिक हिस्सेदार या हकदार । **-मास्कर-पु०** मध्याह्न । **-मामधी-श्री०** प्राकृतका वह रूप जो पटना और मधुराके बीच बोला जाना था । **-माणव-** **-माणवक-पु०** १२ लक्षियोंका हार । **-मात्रा-श्री०** आधी मात्रा; व्यंजन वर्ण । **-मास-श्रुत-पु०** अर्धमासिक बेतन पानेवाला मजदूर या नौकर ।

-रथ-पु० किसीके साथ होकर लड़नेवाला रथारीही । **-विमर्ग-** **-विसर्जनीय-पु०** क और फेंके पहले होनेवाला विमर्गमा उच्चारण । **-वीक्षण-पु०** तिरछी चितवन ।

-वृत्त-पु० वृत्तकी परिधिका आधा भाग । **-वृद्ध-वि०** अंधे उम्रका । **-वृद्धि-श्री०** घट या किरायेका प्राप्ति । **-वैनाशिक-पु०** कणादके अनुयायी । **-वैवात-पु०** आधा वर्ष, अचूरा वर्ष (जैसे पतिके नाशमें पत्नीका भी आधा नाश हो जाता है) । **-व्यास-पु०** केन्द्रसे परिधितककी दूरी । **-वाफर-पु०** एक तरहकी मछली ।

-शब्द-वि० धीमी आवाजवाला । **-शेष-वि०** जिसका आधा ही बचा हो । **-सम्प-वि०** आधेके बराबर । पु० वह वृत्त या छंद जिसका पहला और तीसरा तथा दूसरा और चौथा चरण समान हो (जैसे दोहा और सौरठा) । **-मासाहिक-वि०** सप्ताहमें दो बार निकलने वा होनेवाला । पु० सप्ताहमें दो बार निकलनेवाला पत्र । **-सौरी (रिन्)** **-पु०** बटाइदार, परिश्रमके बदले आधी फसल लेनेवाला रूपक । **-हार-पु०** ६४ (या ४०) लक्षियोंका हार । **-हृत्-पु०** लघु स्वरका आधा ।

अर्द्धक, अर्धक-वि० [सं०] आधा ।

अर्द्धांग, अर्द्धांग-पु० [सं०] आधी देह; पक्षापात रोग, फाल्जि; शिव ।

अर्द्धांगिनी, अर्द्धांगिनी-श्री० [सं०] पत्नी, महामणिणी । **अर्द्धांगी (गिन्), अर्द्धांगी (गिन्)-पु०** [सं०] शिव; पक्षा-वाणका गेयी, वह जिसे लकवा मार गया हो ।

अर्द्धांसी (गिन्), अर्द्धांसी (शिन्)-वि० [सं०] आधे हिस्सेका अधिकारी ।

अर्द्धा, अर्द्धा-श्री० [सं०] २५ मीनियोंका वह गुच्छ जिसकी तील ४ मांसे हो ।

अर्द्धार्ध, अर्द्धार्ध-वि० [सं०] आधे-आध; आधेका आधा, चौधार्ध ।

अर्द्धांसी, अर्द्धांसी-श्री० आधी चौपाई ।

अर्द्धावभेदक, अर्द्धावभेदक-पु० [सं०] आधासीसी ।

अर्द्धाशन, अर्द्धाशन-पु० [सं०] आधा भोजन ।

अर्द्धासन, अर्द्धासन-पु० [सं०] आधा आसन; बहुत अधिक सम्मानकी ब्रह्म; बराबरीका स्थान ।

अर्द्धिक, अर्द्धिक-वि० [सं०] मापमें आधा; आधेका अधिकारी । पु० ब्राह्मण पिता और वैश्य मातासे उत्पन्न संतान; आधासीसी ।

अर्द्धेदु, अर्द्धेदु-पु० [सं०] अर्ध चंद्र । **-मौलि-पु०** शिव ।

अर्द्धवृक्ष—**अर्धवृक्ष**-पु० [सं०] आधे शरीरतक गहरा पानी; सूत ब्यक्तिको आधा शरीरमें, आधा बाहर रहना।

अर्द्धवृक्ष—**अर्धवृक्ष**-पु० [सं०] एक एवं जिसमें स्नान करना सर्व-ग्रहण-स्नानका पुण्य देनेवाला माना जाता है।

अर्धवृक्ष-पु० दे० 'अर्द्धवृक्ष'।

अर्द्धवृक्ष-पु० दे० 'अर्द्धवृक्ष'।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] उन्नतिशील।

अर्धवृक्ष-पु० [सं०] देना, दान करना; भेंट करना; वापस करना; रखना (पदार्थ)। छेदन। -प्रतिभू-पु० ऐसी जमानत करनेवाला प्रतिभू जो कणोंके न दे सकनेपर स्वयं भन देना स्वीकार करे।

अर्धवृक्ष-सं० क्रि० 'अर्धवृक्ष'।

अर्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्धण किया हुआ।

अर्धवृक्ष-पु० [सं०] हृदय; हृदयका मांस।

अर्धवृक्ष-पु० धन-संपत्ति, माल-दौलत।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] दस करोड़को सख्या; आठ पहाड़; एक रोग जिसमें शरीरमें कहीं बड़े इन्ले जैसा मांसपिंड निकल आता है; एक वैद्य जिसे इन्द्रने मारा था; एक पुराणिक सर्प; दो महीनाका गर्भ; बादल; जैनियोंका एक तीर्थस्थान; एक नरक।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] अर्द्ध नामक राक्षस; सर्वव्यापक ईश्वर।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्द्ध रोगसे ग्रस्त।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] मिश्र, बन्धा; छाव; नेत्रवाला; कुशा।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] बन्धा; छौना; नेत्रवाला; कुशा; मूर्ख आदमी। वि० बोधा; दुबला; मूर्ख, निर्दुष्टि; लक्ष्म; बन्धो जैसा।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] आँखका एक रोग; गंतव्य देश; पुराना या भाषा उज्जवा हुआ गाँव।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्द्ध; पूज्य, सम्मान्य; सत्ता; प्रिय; दयालु। पु० स्वामी; वैद्य।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे एक; एक पितर जो पित्रराज माने जाते हैं; उत्तरा काल्युनी नक्षत्र; अक्षयन; अंतरय मित्र।

अर्द्धवृक्ष-खी० [सं०] वैद्य जातिकी स्त्री; रत्नेली।

अर्द्धवृक्ष-खी० [सं०] वैद्य जातिकी स्त्री।

अर्द्धवृक्ष-खी० [सं०] वैद्यकी स्त्री।

अर्द्धवृक्ष-पु० व्यर्थकी बात।

अर्द्धवृक्ष-पु० वृक्षविशेष।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] इंगलैडके सामंतों और बड़े-बड़े जमींदारोंकी एक सम्मानित उपाधि। (यह मार्किसे नीचे और बार-काउटके ऊपरकी उपाधि है और वंशानुक्रमके लिए दी जाती है।)

अर्द्धवृक्ष-[सं०] राख।

अर्द्धवृक्ष-खी० [सं०] बोधी; कुटनी; विवाधारी।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] वीक्षा; चंद्रमाके दस घोड़ोंमेंसे एक; इंद्र।

अर्द्धवृक्ष-[सं०] अ० [सं०] इश्वर, इस ओर; पीछे; पास, समीप; नीचे। -[सं०] कालिक-वि० हालका; आधुनिक। -शत-वि० सौसे नीचे। -खोता(सत्)-वि० व्याधि-बारी, कायिक, लपट।

अर्द्धवृक्ष-'अर्द्धवृक्ष'का समासगत रूप। -बिड-वि० जिसका मुँह नीचेकी ओर हो। -बसु-वि० धन देनेवाला। पु० बादल; वर्षा।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] जो पीछे उत्पन्न हुआ हो; इश्वरका; हालका; आधुनिक; नया; कृपावृद्धि रखनेवाला; उलटा।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] देवताओंका होता।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] महाभारतके एक जाति।

अर्द्धवृक्ष-पु० [अ०] तपस्व; छत; आकाश; हसलाम धर्मके अनुसार आठवीं विधिगत वा सर्वोच्च स्वर्ग; ऊन कातनेकी चरखी।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] गुदाका एक रोग, बवासीर।

अर्द्धवृक्ष-पु० [अ०] तपस्व; छत; आकाश; हसलाम धर्मके अनुसार आठवीं विधिगत वा सर्वोच्च स्वर्ग; ऊन कातनेकी चरखी।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] गुदाका एक रोग, बवासीर।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-पु० [सं०] अधि; एक राक्षस।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्द्धवृक्ष-वि० [सं०] अर्ध रोगवाला।

अर्कशुभा-श्री० [सं०] विद्यापदी; कजीनी; अकरेखा (प्रदेश रोकनेके लिए) ।

अर्कशु० [सं०] विष्णुका षंक; विष; हरताल । -गर्ह; -गर्ह-पु० एक तरहका पानीका सौंप ।

अर्कई-श्री० एक कैंटीली कृता ।

अर्कक-पु० [सं०] सिरके बाल; जुल्फ; पट्टा; हरताल; सफेद मदार; पाल कुता; शरीरपर लेपा हुआ केसर; * महावर । -नंद-श्री० < से १० सालतककी कन्या; एक नदी । -प्रभा-श्री० अलकापुरी । -प्रिय-पु० पीत-साल नामक वृक्ष । -संहति-श्री० जुल्फोंकी कतार ।

अर्ककत-पु० [अ०] काट देना; रद्द कर देना; न मानना ।

-त्रिस्ता-अ० सारांग, सुलासा यह कि । -शरत्-अ० निवान, चुनांचे ।

अर्ककरा-पु० काले रंगका एक गाढ़ा द्रव जो लकड़ी आदि रंगनेके काम आता है, 'कोलतार' ।

अर्ककलवा-वि० दे० 'अर्ककलवैता' ।

अर्ककलवैता, अर्ककसकोरा-वि० लावला, दुलगा ।

अर्कका-श्री० [सं०] कुबेरपुरी; आठ और दस बरसके बीचकी लकड़ी । -पति-पु० कुबेर ।

अर्ककाधिप, अर्ककेशर-पु० [सं०] कुबेर ।

अर्ककाबलि-श्री० [सं०] बालोंकी छटे, केशपात्र ।

अर्ककोइल-पु० [सं०] सुरामार, रिपारिड ।

अर्कक, अर्ककक-पु० [सं०] लास; महावर । -राग-पु० महावरका माल रस ।

अर्कक्षय-वि० [सं०] चिह्नारहित; जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो; अगुन । पु० अगजगुन; उरा चिह्न; अनुपशुक्त परिभाषा ।

अर्कक्षित-वि० [सं०] न देखा हुआ; अज्ञात; अदृश्य; गुप्त ।

अर्कक्षितांतक-वि० [सं०] अज्ञानक भरा हुआ ।

अर्कक्ष्मी-श्री० [सं०] दुर्भाग्य; दारिद्र्य ।

अर्कक्षय-वि० [सं०] अदृश्य; अक्षय; चिह्नारहित; जिसका लक्षण न किया जा सके । -गति-वि० अदृश्य रूपसे गमन करनेवाला । -किंवा-वि० जो देश बदले हुए हो; नाम-पता छिपा रखा हो ।

अर्कक्ष-वि० जो देखा न जा सके, अलक्ष्य; अगोचर । पु० परमेश्वर । -धारी, -नामी-पु० गोरक्ष-पथियोंका एक संप्रदाय और उसका अनुयायी । -निर्जन, -पुरुष-पु० परमात्मा । सु० -जगन्नाथ-अर्कक्ष-अर्कक्ष-पुकारकर परमात्माको याद करना और दुमरोंको उसकी प्रेरणा करना; 'अर्कक्ष' अर्कक्ष पुकारकर भीख माँगना ।

अर्कक्षित-वि० दे० 'अर्कक्षित' ।

अर्कक्षिया-पु० दे० 'अर्कक्षपारी' ।

अर्कक्ष-वि० जुदा; भिन्न; दूर; तटस्थ; सुरक्षित; न्याया, विशिष्ट । -अर्कक्ष-अ० व्यक्तिगत, प्रत्येककी या प्रत्येकसे । -अर्कक्ष-वि० जुदा; दूर । सु० -करना-दूर करना, धनाना; काम या नौकरीसे हटा देना; बेचना; संयुक्त कुंठसे धक्का करना; छेड़ना । -होना-दूर या किनारे सेना; संयुक्त परिवारसे धक्का होना; नौकरी या काम गेजना ।

अर्कक्षीर-पु० दे० 'अर्कक्षीर' ।

अर्कक्षी-श्री० कपड़े टँगनेके लिए बाँधी हुई रस्ती या बाँस ।

अर्कक्षर्जा-वि० लापरवाह ।

अर्कक्षर्जी-वि० लापरवाह । श्री० लापरवाही ।

अर्कक्षाल-वि० अलग करनेवाला; जो अलग करनेके पक्षमें हो ।

अर्कक्षाना-सं० कि० अलग करना; दूर करना; छेड़ना; † कोई मारी चीज कपर उठाना या उठानेमें सहायता देना । अ० कि० अलग होना ।

अर्कक्षोजा-पु० [अ०] एक तरहकी बाँसुरी ।

अर्कक्षोक्षा-पु० अलक्षद्वी, संयुक्त कुंठसे अलग होना, बँटवारा ।

अर्कक्षु-वि० [सं०] हलका नहीं; भारी; लंबा; उग्र; गंभीर ।

अर्कक्ष-वि० दे० 'अर्कक्ष' ।

अर्कक्ष-पु० एक तरहका पक्षी । * वि० दे० 'अर्कक्ष' ।

अर्कक्षी-श्री० [सं०] आँखका जलना या शीथ; एक संक्षिप्त ।

अर्कक्ष-वि० [सं०] लज्जारहित, बेहया ।

अर्कक्ष-पु० क्षियोंके पैरोंमें लगानेके काम आनेवाला एक प्रकारका लाल रंग; खमीकी धूम्रद्रव्य ।

अर्कक्ष-वि० दे० 'अर्कक्ष' ।

अर्कक्ष-पु० दक्षिणी अमेरिकाका एक जानवर जिसके बालोंका बढिया ऊन बनता है; अलपाकेका ऊन; अलपाकेका ऊन और रेशम या सूत मिलाकर बुना हुआ कपड़ा । [पुरुषविद्यन-पुरुषिका] ।

अर्कक्ष-पु० [अ०] धौंसेका पिछली टोंगीके बल खाद्य होना ।

अर्कक्ष-पु० [अ०] बिना बाँहका ढोलाढाला कुरता जिसे प्रायः मुसलमान कमीज पहना करते हैं । [श्री० 'अर्कक्षी']

अर्कक्ष-अ० [अ०] बेशक, निस्संदेह; हाँ ।

अर्कक्ष-पु० [कि०] तमकोर रखनेकी किताबि वा कापी; विप्राधार, विप्र-ग्रंथ ।

अर्कक्षी-तलक्षी-श्री० अत्यंत छिटे उर्दू या अरबी-कारमी आदि विदेशी भाषाएँ ।

अर्कक्ष-वि० सुंदर; अनुश; बाँका; मनमौजी । पु० नारियलका हुका । [श्री० 'अर्कक्षी']

अर्कक्ष-वि० [सं०] अग्रस्य । -नाथ-वि० संरक्षकहीन ।

-निर्ध-वि० जिसमें नींद न आती हो । -भूमिकक्ष-पु० ममाधि न लगानेकी अवस्था । -अग्रवामभूमि-श्री० मेना संग्रह करनेके अग्रोत्थ भूमि (क्षेत्र) ।

अर्कक्ष-वि० दे० 'अर्कक्ष' ।

अर्कक्ष-वि० [सं०] जो न मिलता हो, अप्राप्य; दुर्लभ; बहुमूल्य; अनमोल ।

अर्कक्ष-पु० [अ०] दुःख; शोक; हंटा, निशान; भाला ।

-नाक-वि० दुःखमय; अति दुःखद । -बरदार-पु० हंटा उठानेवाला; कार्य या अयोग्य-विशेषमें आगे रहनेवाला ।

अर्कक्ष-पु० दे० 'आलमनक' ।

अर्कक्ष-पु० एक वीष ।

अर्कक्ष-वि० मस्त, मत्तवाला; मौजी; बे-भिन्न ।

अर्कक्ष-श्री० पुस्तक आदि रखनेके लिए बना कई

खानीवाला कैंना सन्दूक या आला ।
अलमास-पु० [फा०] हीरा ।
अलम्-अ० [म०] पयोस, काफी, पूरा; बस, बहुत हो चुका ।
अलम-वि० [सं०] गृहहीन; चलता-फिरता; अनश्वर । पु० निलता; नाशभाव; जन्म, उत्पत्ति ।
अलक-पु० [म०] पागल कुत्ता; सफेद मदार; एक कीड़ा ।
अलकटपू-वि० अटकलपच्चू ।
अलकलठेबा-पु० घोबेका जवान बच्चा; अलहद आदमी ।
अलकलहिसाब-अ० [अ०] बिना हिसाब किये । मु०-
वेना-पावनेका हिसाब किये बिना कुछ रकम दे देना ।
अलखाना-अ० [अ०] चिठाना, गला फाड़कर बोलना ।
अलख-पु० घोड़ा (रातो) ।
अलखति, अलखती-खी० प्रसूता, जन्मा ।
अलवाई-वि० खी० जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो (गाय-भैस) ।
अलवान-पु० [अ०] एक तरहका ऊनी डाल ।
अलवाल-पु० [म०] दे० 'आलवाल' ।
अलस-वि० [म०] आलसी, मुस्त; अलमाया हुआ, छूत; निष्क्रिय । पु० परकी बेंगलियोंके चमड़ेका मछना; एक वृक्ष; एक छोटा विषैला जंतु ।
अलसक-पु० [म०] अजीर्ण रोगका एक भेद ।
अलसाना, अलसाना-अ० [अ०] थकावट वा सुस्ती मान्दना होना; कुछ करनेको जी न चाहना ।
अलसा-खी० [म०] हृमपदी लना, लज्जातु ।
अलसान, अलसानि-खी० आलस्य ।
अलसी-खी० एक पौधा और उसके बीज त्रिनमें तेल निकलता है, तीली । * वि० आलसी ।
अलसेद-खी० अश्बन; अश्मा; डिलारै, डालमटून ।
अलसेदिया-वि० अलसेद हालनेवाला ।
अलसीहा-वि० अलसागा हुआ, छूत ।
अलसबाह-अ० [अ०] मरेरे, नरके ।
अलहदगी-खी० बिलगाव, अलगीझा ।
अलहदा-वि० [अ०] अलमा, जुदा ।
अलहदी-वि० दे० 'अहदी' ।
अलहदीया-वि० अलहदी, अकर्मण्य ।
अलहिवा-खी० एक रागिनी ।
अलहदी-पु० [अ०] एक ही कूबजवाला ऊट ।
अलाई-वि० आलमी, काहिल । पु० घोड़ेकी एक जाति ।
अलाग लाग-पु० नृत्यका एक रंग ।
अलास-पु० [म०] अगार; लुकाठी । -**चक्र**-पु० लुकाठी या मुकौ घुमानेमें बन्दनेवाला मटल; जलती बनेदी ।
अलाव-पु० हाथी बाँधनेका खूँटा या लीक; बेड़ा; बेल चढानेके लिए गाड़ी हुई लकड़ी ।
अलानाहका-अ० नाहक, व्यर्थ ।
अलानिया-अ० [अ०] लुले खजाने, डफेंका चोट ।
अलाप-पु० दे० 'आलाप' ।
अलापना-अ० [अ०] बात करना; बोलना; गानेमें आलापका प्रयोग करना ।
अलापी-वि० आलाप करनेवाला; बोलनेवाला; गानेवाला ।

अलाबु, अलाबू-पु० [सं०] लोकी, कदरू; तूँड़ी ।
अलाम-वि० बात बनानेवाला; मिथ्यावादी ।
अलामत-खी० [अ०] चिह्न, पहचान, लक्षण; गुणी-भाग आदिके चिह्न ।
अलायक-वि० अयोग्य, निकम्मा ।
अलार-पु० [सं०] किवाड़; * अलाव, आगका ढेर ।
अलारम-पु० दे० 'अलार्म' ।
अलार्म-पु० खतरेकी सूचना । -**घड़ी**-खी० निश्चित समयपर घड़ी बजानेवाली घड़ी । -**सिगनल**-पु० खतरेकी सूचना देनेवाला संकेत, (रेलके डब्बेमें लगी) जंजीर आदि । मु० -**बजना**-खतरेकी घंटी बजना ।
अलाव-वि० अकर्मण्य, काहिल ।
अलाव-पु० [फा०] तापनेके लिए जलायी हुई आग, कौड़ा ।
अलावज-पु० [सं०] एक प्राचीन बाजा ।
अलावनी-खी० एक पुराना बाजा ।
अलावा-अ० [अ०] बिना, अनिश्चित ।
अलास-पु० [म०] एक रोग जिसमें जीभके नीचेका हिस्सा पक जाता है ।
अलास्य-वि० [सं०] जो नल्य न कर रहा हो; आलसी; जो काममें न लगा हो ।
अलि-वि० [म०] बिना चिह्न या लक्षणका; जिसका लक्षण न दिया जा सके; घुरे चिह्नेवाला; (बह शब्द) जिसका कोई लिंग न हो या जो सब लिंगोंमें व्यवहृत हो सके (इम, तुम आदि-व्या०) । पु० श्वर, परमात्मा; चिह्नाभाव ।
अलिज-पु० [म०] घड़ा; संक्षर ।
अलिद्र-पु० [म०] बाहरी दरवाजेके सामनेका चींला या छज्जा; द्वारकीछ, पैर; एक प्राचीन जनपद; * भींग ।
अलिपक, अलिबक-पु० [म०] दे० 'अनिमक' ।
अलि-पु० [म०] भीरा; बिच्छू; कोबल, बौआ; बुद्धिक, राशि, मद्रिग । खी० दे० 'अली' । -**कुल**-पु० मौरिका मसूह । -**प्रिया**, -**संकुला**-खी० चमेनी । -**संकुल**-पु० कुञ्ज नामक पौधा । वि० अमरपूर्ण । -**गर्द**, -**गर्ध**-पु० एक जलमय । -**जिह्वा**, -**जिह्विका**-खी० गलेके भीतरका कौआ, पाटी । -**दूर्वा**-खी० माणा-दूर्वा । -**पत्रिका**, -**पर्णी**-खी० बुद्धिकपत्र नामक वृक्ष । -**प्रिब**, -**वल्लभ**-पु० गाल कमल । -**मोदा**-खी० गणिका नामक पौधा । -**बिराग**, -**बिरुग**-पु० औरिका पुंजन ।
अलिक-पु० [म०] मावा, लुटार ।
अलिखित-वि० [म०] जो लिखित न हो, केवल जबानी नै किया गया या किया गया ।
अलिपक-पु० [म०] कोबल; भींग; कुत्ता ।
अलिह-वि० [म०] बिना लेपका, अमंलम; बे-लाग; अना-वृष; निदोष ।
अलिमक-पु० [म०] दे० 'अनिमक' ।
अली-खी० मल्ली (प्राय संशोधनमें प्रयुक्त); पत । * पु० भीरा; [अ०] सुममालोंके चौथे खलीका, सुहम्मदके दगाद और इमाम हुसैनके बाप । -**बंद**-पु० एक तरहका भुजबंद ।

अली (किन्) - पु० [सं०] अमर; विच्छु।

अलीक - वि० [सं०] अप्रिय; मिथ्या, झूठ, मनगढ़ंत; अल्प; कुछ। पु० लुटाट; अप्रिय विषय; झूठ; स्वर्ग। * शी० अप्रतिष्ठा।

अलीकी (किन्) - वि० [सं०] अप्रिय; झूठ।

अलीकई - पु० दे० 'अलिगढ़'।

अलीजा - वि० प्रचुर; बहुत-सा।

अलीन - पु० दरबारीकी चौखटा साह; बरामदे आदिका खंभा जो दीवारसे लगा हो। वि० अनुत्पिन; अग्रहा।

अलीपित - वि० अलिप्त।

अलीख - वि० [अ०] शीमर।

अलीह - वि० अलीक।

अलुक् - पु० [म०] एक समान जिनमें पूर्वपदकी विभक्तिका लोप नहीं होता (मरमिज, अवयवपदवा); आलुखुवारा।

अलुझना - अ० कि० दे० 'अलझना'।

अलुटना - अ० कि० लोटना; लड़खलाना।

अलुमिनम - पु० एक धातु जिनके वर्ण बने हैं, 'अनुमिनियम'।

अलुप - वि० दे० 'अलोप'।

अलुखा - पु० बुलबुला; लपट; उड़ार।

अलेख - वि० दे-हिमाव; अलेख्य। अरुध्य।

अलेख - पु० अरुध्य, निराकार वस्तु - 'भूल्यो कहा न अलेखहि लेखि जै' - वन०; देवता - 'मितामिन अल्लारे पानिपते गवियेकी मीरध्वे पनि है अलेख लखि हारि है' - नाम।

अलेखा - वि० अनगिनत; वृथा।

अलेखी - वि० अन्त्याही, अधर करनेवाला।

अलेपक - वि० [म०] वंदन। पु० परब्रह्म।

अलोक - वि० [म०] अरुध्य; निजंन, पुण्यहीन। पु० जगत् नष्ट, पागलादि लोक; स्मारका विनाश; आध्यात्मिक जगत्; * अपयश, बदनामी। - **मागाम्य** - वि० लोकोत्तर, प्रमाथान।

अलोकना - म० कि० देखना, अवलोकन करना।

अलोकनीय - वि० [म०] अरुध्य।

अलोपय - वि० [म०] अन्नाधारण; जिसे स्वर्गकी प्राप्ति न हो सके।

अलोचन - वि० [म०] नेत्रहीन; बिना खिखरीका (पकान)।

अलोना - वि० बिना नमस्कार; बे-मवा। **सु०** - रहना - नमक न खानेका व्रत रखना।

अलोप - पु० [सं०] लुप्त न होना (वर्ण आदिका)। * वि० लुप्त, अरुध्य, गायब।

अलोपक - वि० [सं०] कोशरहित।

अलोख - वि० [म०] अर्धचल, भिर; झुंझा या लुण्ठासे रहित। पु० एक वृत्त।

अलीकिक - पु० अर्धचलता।

अलोखु - वि० [सं०] विषयोंमें उदासीन।

अलोखुब - वि० [सं०] जो लालची न हो, लोभरहित।

अलोहित - वि० [सं०] जो लाल न हो; रक्तशून्य। पु० नाल कमल।

अलीकिक - वि० [सं०] जो लोकमें न मिलना हो, लोकी-

पर; अमानुषी; अतिप्रकृत; असाधारण, अद्भुत; विरल।

अलुक - पु० [सं०] वृक्ष; अवयव।

अल्प - वि० [सं०] तुच्छ; थोड़ा; कम; छोटा; मरणाधीन;

विरल; कम अवस्थाका। पु० जवासा। - **केसी** - शी०

भूतकेसी नामक पौधा। - **गर्ब** - पु० रक्त कैरव। - **जीवी** -

(किन्) - वि० अल्पायु। - **झू** - वि० थोड़ा जाननेवाला;

मूर्ख। - **तलु** - वि० ठिंगना; दुर्बल, पतला; छोटी इड्डियों-

वाला। - **दक्षिण** - वि० जो दक्षिण देनेमें लटार न हो।

- **दर्शन**, - **दृष्टि** - वि० संकुचित दृष्टिवाला, अदूरदर्शी।

- **धी** - वि० थोड़ी बुद्धि रखनेवाला, मूर्ख। - **पत्र** - पु०

एक तरफकी तुलसी। - **पक्ष** - पु० रक्त कमल। - **प्रमाण**, -

प्रमाणक - वि० थोड़े बजनका; जो बड़ा प्रमाण न हो।

पु० सरबूजा; नरबूजा। - **प्रसार** - पु० छोटीसी जामलिक

सेना वा सहायता (कौ०)। - **प्राण** - वि० अल्पशक्ति;

अल्पमत्त्व; क्षामरीही। पु० प्रत्येक व्यंजनवर्गका पहला,

नीसरा और चौथवाँ अक्षर तथा य, र, ल, व (व्या०)।

- **बुद्धि**, - **मति** - वि० दे० 'अव्ययी'। - **बापी (किन्)**, -

वादी (दिन्) - वि० काम बोलनेवाला। - **भृत्** - पु०

मालाना भत्ता वा तनखाह पानेवाला कर्मचारी। - **भस्** -

पु० छोटा, अल्पसमयक पक्ष वा समुदाय, बहुमतका उलटा।

- **भध्वज** - वि० जिनकी कमर पतली हो। - **मारिच** - पु०

शाक-विशेष। - **मेधा (धस्)** - वि० नासमझ, मूर्ख।

- **बयस्क**, - **बचा (यस्)** - वि० छोटी उम्रका, कमसिन।

- **विराम** - पु० अर्थबोधके लिए किसी शब्दके बाद थोड़ा

ठहरना; इनका चिह्न (.)। - **ध्वज** - पु० वह काम जो केवल

थोड़ासा भत्ता देनेमें हो जाय। - **व्यवहार** - वि० थोड़े ही

व्ययमें बन जानेवाला (कौ०)। - **क्षमी** - शी० क्षमीकी

जानिका। एक छोटा वृक्ष। - **संख्य**, - **संख्यक** - वि०

कम जनसंख्यावाला (समुदाय)। - **संतोषी (पिन्)** - वि०

थोड़ेमें सन्तोष कर देनेवाला। - **सार** - वि० थोड़े मूलका।

- **स्वाप** - पु० विश्राम करकेका बहुत कम स्थान वा

अवसर प्राप्त होना।

अल्पक - वि० [सं०] थोड़ा; छोटा।

अल्पजनसंघ - पु० [सं०] थोड़ेमें लोगों द्वारा शासित राज्य।

अल्पशः (शस्) - अ० [सं०] थोड़ा-थोड़ा करके।

अल्पायु (स्) - वि० [सं०] जिसकी आयु थोड़ी हो, छोटी

उम्रमें मरनेवाला।

अल्पार्थ - पु० [म०] छोटे पैमानेपर होनेवाला आरम।

अल्पाहार - वि० [सं०] दे० 'अल्पाहारी'। पु० साधारणसे

कम आहार।

अल्पाहारी (पिन्) - वि० [सं०] जिसका आहार थोड़ा वा

संयत रहना हो।

अभिवृत्त - वि० [म०] घटाया वा कम किया हुआ; उपेक्षित।

अल्पेतर - वि० [सं०] बड़ा; अनेक, बहुत।

अल - पु० वंश वा कुलका नाम (तिवारी, पोंडे, मिसिर इ०)।

अल्लम-गल्लम - पु० अंड-बंड, अनाप-सनाप।

अल्ला - पु० दे० 'अल्लाह'। शी० [सं०] माना; पराशक्ति।

अल्लावा - अ० कि० चिल्लाना।

अल्लामा - वि० [अ०] बड़ा आलम, महापंडित। † शी०

अल्लाही शी०।

अक्षर-पुं० [अ] परमेश्वर, खुदा। -**सत्ता**-पुं० परमेश्वर। -**अक्षरा**-विस्मय और क्षायायक उद्गार। -**आसीन**-आसीनार्थक उद्गार, 'खुदा सलामत रहे'। -**का नाम**-कुछ भी नहीं, नाम लेनेपर (उसकी पदार्थ-लिखाई बस आशा का नाम है)। -**बेखी**-ईश्वर रखक है। -**मियाँ की शाव**-सीमा, भोला, बिना छके-पंजेका। -**(हो) अकबर**-ईश्वर महान है (रसलामका मुख्य नारा)।
अक्षर-वि० लोल, चंचल।
अक्षर-पुं० श्वर-उपरकी बात, वप।
अक्षर-वि० बालोचित सरलताके साथ मस्त और कापर-वाह; दुनियादारी न जाननेवाला; भोला। पुं० बिना दाँतका या हलमें न निकाला हुआ बछड़ा। -**पन**-पुं० अक्षर स्वभाव; मोलापन और कापरवादी।
अक्षर-वि० अक्षर, मस्त और कापरवाह।
अर्बति, **अर्बती**-स्त्री० [अ] एक प्राचीन नगर, आधुनिक उज्जैन; मालव जनपद। -**सोम**-पुं० कौंजी।
अर्बतिका-स्त्री० [अ] उज्जैन; उज्जैनकी भाषा।
अर्बत-वि० [अ] निस्तान। पुं० नीच या खराब कुल।
अब-उप० [अ] यह दूर या नीचे होने, निश्चय, ब्याप्ति, अन्तर्गत, हास, हान आदिका बोध कराता है।
अबकर-पुं० [अ] बहादुरसे निकली हुई भूल आदि, कूबा।
अबकरी-पुं० [अ] टुकड़ा, खड।
अबकरीन-पुं० [अ] काटना, विभाजन।
अबकरीन-पुं० [अ] (किसी चीजकी) जोरसे खींचना, नीचे लाना; हटाना, दूर करना।
अबकलन-पुं० [अ] देखना; जानना; ग्रहण।
अबकलना-अ० कि० सूझना; समझमें आना।
अबकलित-वि० [अ] देखा हुआ; हात; शरीर; दुष्ट।
अबकलन-पुं० [अ] एक साथ मिलना।
अबका-स्त्री० [अ] घोड़ा।
अबका-पुं० [अ] स्थान; स्थान; अंतर, व्यवधान, फासला; अवसर; दरार; छिद्र; गुंजाइश; कुरसत, छुट्टी; रक्षित। -**ग्रहण**-पुं० काम या नौकरीमें अलग होना, पेंशन लेना, रिटायर होना। -**प्राप्त**-वि० जो काम या नौकरीसे अलग हो चुका हो, 'रिटायर्ड'।
अबकिरण-पुं० [अ] बिखेरना; दे० 'अबकर'।
अबकीर्ण-वि० [अ] बिखेरा हुआ; फैलाया हुआ; चूर किया हुआ; अस्त; तिसका ब्रह्मचर्य ब्रत भंग हो गया हो। -**शान**-पुं० ब्रह्मचर्य ब्रत भंग होनेपर प्रायश्चित्तरूप किया जानेवाला यशस्विशेष।
अबकीर्ण(गिन्)-वि० [अ] ब्रह्मचर्य ब्रतसे च्युत हो जानेवाला।
अबकीलक-पुं० [अ] लुंटी।
अबकुलन-पुं० [अ] सिकोचना; समेटना; मोड़ना; एक रोग।
अबकुलन-पुं० [अ] पाटना, ढकना; परिवेष्टित करना; आच्छाद करना।
अबकुलन-पुं० [अ] वैरूप्य, रूपविकृति। वि० बहुत गहरा।
अबकुलित-वि० [अ] निद्रित। पुं० निद्रा।
अबकुल-वि० [अ] बहिष्कृत; हटाया हुआ; नीच; शानिच्युत। पुं० निम्न श्रेणीका (बहादुर आदिका) कार्य

करनेवाला नौकर।
अबकेल-वि० [अ] जिसके बाल नीचे लटके हुए हों।
अबकेली(शिख)-वि० [अ] फल न उत्पन्न करनेवाला (वृक्ष); अव्य या छोटे बालोंवाला। पुं० फल न देनेवाला वृक्ष।
अबकलन-पुं० दे० 'अवक्षण'।
अबकलन-वि० [अ] जो कहने योग्य न हो, अश्लील; अनुचित; निषिद्ध; वर्णनातीत।
अबकलन-वि० [अ] बिना सुँडका (फोका, बरतन)।
अबकलन-पुं० [अ] कदन, चिन्ताकर रोना।
अबकलन-पुं० [अ] नीचे आना, गिराव, अपभ्रमन।
अबकलन-पुं० [अ] गर्भमें आना (बौ, जै)।
अबकलन-पुं० [अ] मूल्य; भाड़ा; उजरात; वर, महसूल; विरायपर देना।
अबकलित-स्त्री० [अ] दे० 'अबकलन'।
अबकलितक-वि० [अ] मैंगनी लिया हुआ।
अबकलन-पुं० [अ] कोसना; शाप देना; निन्दा।
अबकलन-वि० [अ] मीठा हुआ, तर।
अबकलन-पुं० [अ] रिसना, खराब।
अबकलन-पुं० [अ] नाश, बर्बादी -**कोष**-(किप्रोक्षितेश्वर फंड) दे० 'मूल्यप्राप्त कोष' (चिसाई कोष)।
अबकलन-वि० [अ] नीचे गिराया हुआ; निद्रित; लांछित।
अबकलन-वि० [अ] त्रिपर छीक पड़ी हो।
अबकलन-पुं० [अ] लांछन; निन्दा; आक्षेप; आपत्ति, उज।
अबकलन-पुं० [अ] नीचे फैलाना या गिराना; पछाड़ना; निन्दा करना; दोष लगाना; पराभूत करना; प्रकाशकी विरणका किसी वस्तुमें गुजरने समय बह होना।
अबकलनी-स्त्री० [अ] कलाम।
अबकलन-पुं० [अ] विभाजन करना; नष्ट करना।
अबकलन-पुं० [अ] गहरा गहटा या खाई।
अबकलन-पुं० [अ] बुरा आहार, अनुपयुक्त निवेद्यादि।
अबकलन-पुं० [अ] चेहरेपरकी फुनी या फुडिया।
अबकलन-वि० [अ] जो अपने मित्रोंमें प्रथक् हो, एकाकी।
अबकलन-पुं०, **अबकलना**-स्त्री० [अ] अवस्था; अवस्था; निरस्कार; हार खाना; निन्दा करना।
अबकलित-वि० [अ] अवधान, निरस्कुन; पराभूत; निद्रित।
अबकलन-वि० [अ] जाना हुआ; हात; गया या गिरा हुआ; बादा किया हुआ।
अबकलना-अ० कि० सोचना, विचारना।
अबकलित-स्त्री० [अ] हान, दोष; निश्चयात्मक ज्ञान; पुरी गति।
अबकलन-वि० [अ] प्रातःस्नान।
अबकलन, **अबकलन**-पुं० [अ] जानन, समझना; निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करना; नीचे जाना; अवगति होना।
अबकलन-वि० सूझसूझवाला।
अबकलनी-वि०, स्त्री० बुद्धिमती।
अबकलित-वि० [अ] गिरा हुआ।
अबकलना-अ० कि० बहाना।
अबकलन-वि० [अ] निमज्जन, भीतर पड़ा हुआ; गहरा;

जमा हुआ ।
अवगाह-पु० [सं०] नारसैका पानी उलीचनेका काठका छोटा बरतन ।
अवगारमा-स० कि० समझाना ।
अवगाह-पु०[सं०] पानीमें उतरकर नहाना; भीतर पैदना, डूबना; धाह लेना; खीज, छानबीन; नहानेका स्थान; गाल्टी * धतरकी जगह; कठिनार्ह । * वि० अवाह; कठिन ।
अवगाहन-पु० [सं०] अवगाहकी क्रिया ।
अवगाहना-स० कि० विलोडना; हलचल मचाना; पार करना; देखना; विचारना; छानबीन करना; प्रवृत्त करना ।
 अ० कि० डूबकी लगाना; जलमें घुसकर स्नान करना ।
अवगारित-वि० [सं०] नहाया हुआ; जिसमें नहाया जाय (नदी आदि) ।
अवगाह-वि० [सं०] नहाने या डूबकी लगाने योग्य ।
अवगीत-वि० [सं०] निरित; दुष्ट; बार-बार देखा हुआ ।
 पु० निदा; बेसुरा गान ।
अवगुंठन-पु० [सं०] घुंघट; खीका माथा और मुँह ढकना, घुंघट निकालना; बुका; पदा; स्रष्ट आदिमें उगलियोंकी मिलाकर बनायी जानेवाली एक विशेष मुद्रा; झाड़ ।
अवगुंठनवती-वि० खी० [सं०] घुंघटवाली ।
अवगुंठिका-खी० [सं०] घुंघट; परदा; आवरण; चिक ।
अवगुंठित-वि० [सं०] ढका, छिपा हुआ; चूणित ।
अवगुंठित-वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ ।
अवगुंठन-पु० [सं०] गूथना; बुनना ।
अवगुंठित-वि० [सं०] गूथा हुआ; बुना हुआ ।
अवगुण-पु० [सं०] दोष; ऐश, बुराई ।
अवगुण-पु० दे० 'अवगुण' ।
अवगुणन, अवगोणन-पु० [सं०] मारने-पीटनेके लिए उद्यत होना; आघात करनेके लिए हथियार उठाना ।
अवगृहण-पु० [सं०] छिपाना, गले लगाना ।
अवग्रह-पु० [सं०] हकाबट; बाधा; मंथि-विच्छेद (व्या०); शब्दके बीचमें ० और ओके बाद आनेवाला सुप्ताकार (S); अवर्षण; दह (अनुग्रहका उलटा); अकुश; हाथियोंका स्मूह; हाथीका लगाट; प्रकृति, स्वभाव; कोमला; भ्रांत मत ।
अवग्रहण-पु० [सं०] बाधा, स्काबट; अनादर; हान ।
अवग्रह-पु० [सं०] विच्छेद, पार्श्वक; बाधा; अभिप्राय ।
अवघट-वि० विकट, दुर्गम ।
अवघट-पु० [सं०] बिल; मॉद; गुफा; चक्री; हिलाना ।
अवघर्षण-पु० [सं०] रगड़ना; पीसना; साफ करना, मार्जन करना ।
अवघात-पु० [सं०] मारना; आघात करना; धान आदिकी फूटना; अपभ्रष्ट ।
अवचूर्ण-पु० [सं०] मातावर्न ।
अवचूर्णन-पु० [सं०] लुपकना; चक्र देना ।
अवचोदित-वि० [सं०] सब ओरसे ढका हुआ ।
अवचोपक-पु० [सं०] असल समाचार कहनेवाला, अफ-वाह फैलानेवाला ।
अवचट-खी० दे० 'जीवट' । अ० अचानक ।
अवचन-पु०[सं०] चुप्पी, मौनावलंबन; निदा । वि० मूक ।

अवचनीच-वि० [सं०] कहने योग्य नहीं; अक्षील; निदा-के योग्य नहीं ।
अवचन, अवचाच-पु० [सं०] पुष्पादिका चयन, तीक्ष्ण हकट्टा करना ।
अवचस्कर-वि० [सं०] मीन, न बोलता हुआ ।
अवचार-पु० [सं०] सवक; कार्यक्षेत्र ।
अवचित-वि० [सं०] बंदोरा हुआ; अधिपतित ।
अवचूच, अवचूच-पु० [सं०] अनाके अग्रभागमें बैठा हुआ अयोमुख नलखंड ।
अवचूरि, अवचूरिका-खी०[सं०] टिप्पणी, संक्षिप्त व्याख्या ।
अवचूर्णित-वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ; पीसा हुआ ।
अवचूलक-पु० [सं०] मोरके पंख या सुरा गावकी पूँछका बना हुआ चँवर ।
अवचेतना-खी० [सं०] अंशःसंज्ञा ।
अवच्छेद, अवच्छाद-पु० [सं०] आवरण, ढकन ।
अवच्छिन्न-वि० [सं०] अलगाया हुआ; सीमित; सविशेषण ।
अवच्छ्रित-वि० [सं०] मिश्रित । पु० अट्टहास ।
अवच्छेद-पु० [सं०] खर, अंश; परिच्छेद; विलगाव; सीमा (शब्दांशकी) सीमा रीचना; निश्चय; पदार्था बह गुण जो उसे औरोंमें अलग कर दे; व्याप्ति ।
अवच्छेदक-वि० [सं०] अवच्छेद करनेवाला । पु० विशेषण; सीमा ।
अवच्छेदन-पु० [सं०] काटकर अलग करना, विभाजन, हट रीचना इ० ।
अवच्छेद-पु० दे० 'उच्छेद' ।
अवजय-खी० [सं०] पराजय ।
अवजित-वि० [सं०] पराजित, विजित; तिरस्कृत ।
अवज्ञा-खी०[सं०] अनादर; अपमान; उपेक्षा, किस्ती आज्ञा या कानूनकी न मानना; अर्थलंकारका एक भेद जिसमें एकके गुण-दोषमें दूसरेमें गुण-दोषका न होना दिखलाया जाय ।
अवज्ञात-वि०[सं०] जिसकी अवज्ञा की गयी हो, तिरस्कृत ।
अवज्ञान-पु० [सं०] अवज्ञा, तिरस्कार ।
अवज्ञेय-वि० [सं०] अवज्ञाके योग्य ।
अवट-पु० [सं०] गड्ढा; कुर्जी; हाथी फँसानेका ठूणाच्छादित गड्ढा; एक नरक; काँस आदिका गड्ढा; दौतका गड्ढा; नाडीव्रण; बाजीगर । -**कच्छप-पु०** अनुभवहीन व्यक्ति । -**निरोधन-पु०** एक नरक ।
अवटना-स० कि० दे० 'जीटना' । **मु०** - (टि) **अवना-**कट उठाना, ठोकरें खाना ।
अवटि, अवटी-खी० [सं०] रूप, गर्ल, नाडीव्रण आदि ।
अवटीट-वि० [सं०] चिपटी नाकवाला ।
अवट्ट-पु० [सं०] गड्ढा; कुर्जी; मॉद; गलेका पिछला भाग; एक वृक्ष । -**ज-पु०** सिरके पिछले भागके बाल ।
अवट्टग-पु० [सं०] हाट, बाजार ।
अवट्टीव-पु० [सं०] पक्षियोंकी एक उड़ान; नीचेकी ओर उड़ना ।
अवहेर-पु० शंसाद, बसेरा ।
अवहेरना-स० कि० रहने न देना, उदासना; शंसादमें डालना, परेशान करना ।

अवतारा-वि० समुद्रवाला; चक्रदार; भद्र ।
अवर्तस-पु० [सं०] बाली; करनफूल; टीका; मुकुट; आभूषण; हार; † दुल्हा ।
अवर्तसक-पु० [सं०] बाली; करनफूल; आभूषण ।
अवर्तसित-वि० [सं०] जो हार या मुकुट पहने हो; विभूषित ।
अवतक्षण-पु० [सं०] काटकर टुकड़े-टुकड़े की हुई वस्तु ।
अवतन-वि० [सं०] फैलाया हुआ ।
अवतमस-पु० [सं०] अस्पांशकार; अशकार; अस्पष्टता ।
अवतरण-पु० [सं०] उतरना; नीचे आना या जाना; नहानेके लिए जलमें उतरना; पार होना; देशादिका पार्थिव रूपमें प्रकट होना; नदीका घाट; घाटकी मोड़ी; अनुवाद; भूमिका; उद्भूत अंश, उद्धारण; एकाएक गायब हो जाना; तीर्थ । -**चिह्न**-पु० उद्धारण-सूचक उलटे कामा (' ') । -**मंगल**-पु० अष्टापूर्वक स्वागत करना ।
अवतरणिका-स्त्री० [सं०] ग्रथारम्भमें की जानेवाली मर-स्त्री आदिकी मक्षिष वदना; प्रस्तावना ।
अवतरणी-स्त्री० [सं०] प्रस्तावना; परिपाटी ।
अवतरना*-अ० क्रि० अवतार लेना; प्रकट होना; उत्पन्न होना ।
अवतरित-वि० उतरा हुआ; अवतारके रूपमें उत्पन्न; पार पहुँचा हुआ; आत; अनूहित; उद्भूत ।
अवतरण-पु० [सं०] शांतिदायक उपचार । -
अवताडन-पु० [सं०] कुचलना, रौंदना; चोट देना ।
अवतान-पु० [सं०] फैलाना; कमानकी धोरी ढीली करना; मुँह लटकाना; पीछेका फैलाना; आवरण; चंदोबा ।
अवतापी (पिन्)-वि० [सं०] (वह स्थान) जहाँ मूर्खका ताप बहुत अधिक होता हो ।
अवतार-पु० [सं०] उतरना; नीचे आना; किसी देवता या ईश्वरका मनुष्यादिके रूपमें जन्म लेना या वैसी अभिव्यक्ति (इनकी मर्यादा २४ मानी गयी है-महा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यक्ष, कृपव्रत, वृष, मत्स्य, कच्छप, धन्वतरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वदव्याम, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, हंस और हयग्रीव । इनमेंसे ये दस अवतार मुख्य माने गये हैं-मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि), विष्णुके १० या २४ अवतारमें कोई एक; विशिष्ट व्यक्ति; किसी विषयकी लक्ष्य बनाना; तीर्थ; अनुवाद; सरोवर; भूमिका; पार करना; * सृष्टि, रचना । -**मंत्र**-पु० अवतार धारण करनेके लिए की जानेवाली देवतुति । -**बाह**-पु० वर्ममलानि होनेपर उमकी पुनः स्थापनाके लिए ईश्वर पृथ्वीपर जन्म लिया करता है, वह मत या विवास । **मु०**-**धरना**,-**लेना**-जन्म ग्रहण करना ।
अवतारण-पु०, **अवतारणा**-स्त्री० [सं०] उतारना; नीचे लाना; भूत-प्रेतका आशंश; अनुवाद; भूमिका; नक्का छोड़; उद्धारण ।
अवतारना*-स० क्रि० जन्म देना; पैदा करना ।
अवतारी (रिन्)-वि० [सं०] अवतार लेनेवाला; जिसने किसी देवताका अवतार ग्रहण किया है । पु० एक

मात्रिक छद्म ।
अवतीर्ण-वि० [सं०] उतरा हुआ, नीचे आया हुआ; प्रादुर्भूत; अवतारके रूपमें उत्पन्न; जलमें उतरा या कान किया हुआ; पार गया हुआ; अनूहित; उद्भूत ।
अवतीका-स्त्री० [सं०] वह स्त्री या गाय जिसका किसी दुर्घटनाके कारण गर्भ गिर गया हो ।
अवर्षा-पु० [सं०] उत्तेजक या व्यास उत्पन्न करनेवाली चटपटी चीज जो मद्यपानके समय खायी जाती है, गजक, चाट ।
अवर्षस-पु० दे० 'अवर्दश' ।
अवर्षण-पु० [सं०] फोड़ना; काटना; अलग करना ।
अवर्षाघ-पु० [सं०] ताप; जलन; शीघ्र भ्रतु ।
अवर्षात-वि० [सं०] उज्ज्वल; निर्मल; सुंदर; पीला; गुण-विशिष्ट । पु० सफेद या पीला रंग ।
अवर्षात-पु० [सं०] प्रशस्त कर्म; उज्ज्वल कर्म; पराक्रम; उल्लस; विभाजन; खंड; वीरणमूल ।
अवर्षात-वि० [सं०] पराक्रमी; कर्जुम ।
अवर्षात-पु० [सं०] चरना; विभाजन करना; खोदना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना; कुदाल, खता ।
अवर्षात-वि० दे० 'अवर्षात' ।
अवर्षाह-पु० [सं०] जलना; नाप; वीरणमूल ।
अवर्षात-वि० [सं०] खटित, विभक्त; टिफला हुआ; घब-झाया हुआ ।
अवर्षाह-पु० [सं०] दूध, दुग्धा ।
अवर्षा-वि० [सं०] निष्प; व्याज्य; अधम; पापी; दोषी; चंचल; अयोग्य । पु० अपराध; पाप; दोष; निंदा; लज्जा ।
अवर्षा-पु० [सं०] बोझिल, अयोध्या; उत्तर-प्रदेशका एक अंश; वध न करना । वि० जो बधके योग्य न हो । * स्त्री० दे० 'अवर्षा' ।
अवर्षात-पु० [सं०] दे० 'अवर्षा' ।
अवर्षात-पु० [सं०] ध्यान; मनोयोग; किसी विषयमें मनकी एकाग्रता; चैकज्ञापन; * गर्भ ।
अवर्षात-वि० [सं०] ध्यान देनेवाला; मनोयोग-युक्त ।
अवर्षात-पु० [सं०] निश्चय, सीमा; इच्छा ।
अवर्षात-वि० [सं०] अवधारण करनेवाला ।
अवर्षात-पु० [सं०] निश्चय करना; हद बोधना; शब्दार्थकी सीमा बोधना, (शब्दविशेषण) जोर देना ।
अवर्षात-वि० [सं०] निश्चय करने योग्य; विचारणीय ।
अवर्षात-पु० [सं०] क्रि० ग्रहण करना, धारण करना; मानना-‘उपजे जर्द जिय दुष्टता स अमृता अवर्षात’-भाव० ।
अवर्षात-वि० [सं०] निश्चित, सुष्ठान ।
अवर्षात-वि० [सं०] दे० 'अवर्षात' ।
अवर्षात-पु० [सं०] पीछा करना, पकड़ना; माफ करना ।
अवर्षात-वि० [सं०] पीछा किया हुआ; माफ किया हुआ, बोया हुआ ।
अवर्षा-स्त्री० [सं०] सीमा; अंतिम सीमा; नियत काल, सीमा; पक्षी; गृह; गृहवा । अ० तक । -**ज्ञान**,-**दर्शन**-पु० इन्द्रियोके संपर्कसे प्राप्त दूरकी वस्तुओंका ज्ञान (ज्ञे०) । **मु०**

—वैना,—बरना,—बचना—समय नियत करना, मुदत बोधना ।

अवधिसामन्त—पु० समुद्र ।

अवधी—वि० अवधसे सम्बंध रखनेवाला । स्त्री० अवधकी बोली ; * दे० 'अवधि' ।

अवधीरण—पु० [सं०] तिरस्कारपूर्वक स्तौति करना ।

अवधीरित्त—वि० [सं०] तिरस्कृत; विराष्ट ।

अवधू*—पु० दे० 'अवधूत' ।

अवधूक—वि० [सं०] पक्षीरहित ।

अवधूत—पु० [सं०] सम्न्यासी; साधुओंका एक भेद । वि० हिलाया हुआ; तिरस्कृत; अपमानित; धदा हुआ; विरक्त; आक्रांत; परामृत । —वेष्ट—वि० नग्न ।

अवधूषित—वि० [सं०] लुबासित ।

अवधूलन—पु० [सं०] धावपर दबाकी बुकनी मुरकना ।

अवधूत—वि० [सं०] दे० 'अवधारित' ।

अवधेय—वि० [सं०] ध्यान देने योग्य; रम्यते योग्य; जानने योग्य । पु० ध्यान ।

अवधेश—पु० [सं०] अवधनरेश; दशरथ ।

अवधेश—वि० [सं०] वधके अयोग्य ।

अवध्वंस—पु० [सं०] पतित्वाधः चूषण; अनादर; निन्दा; गिरकर अलग होना; छिड़काव ।

अवध्वन—वि० [सं०] विनष्ट; निरुद्ध; तिरस्कृत; चूर्णित; परित्यक्त. छिन्नगया हुआ, छिड़का हुआ ।

अवन—पु० [सं०] रक्षण. प्रमत्त करना; प्रमत्तता; प्रीति, इच्छा; मनोप. जन्मदात्री । * स्त्री० रास्ता. भूमि ।

अवनक्षत्र—पु० [सं०] नारीका मायक होना ।

अवनन—वि० [सं०] मुका हुआ; गिरा हुआ. पिच्छा हुआ. होना; भल होना हुआ. विनीत ।

अवनति—स्त्री० [सं०] झुकाव; गिराव, अधःपतन, उतार इत्यादि, अवन होना दडबन; विनम्रता ।

अवनद्ध—वि० [सं०] निर्मित. टका हुआ. बधा हुआ; बेठाया हुआ । पु० मृदम, होल ।

अवनमन; अवनाम—पु० [सं०] झुकना. पाव पडना ।

अवनयन—पु० [सं०] नाने नाना. नीचे गिराना ।

अवना*—अ० क्रि० आना ।

अवनाट, अवनामिक—वि० [सं०] शिपटी नाकवाला ।

अवनामक—वि० [सं०] नीचे गिरानेवाला ।

अवनाय—पु० [सं०] नीचे ले जाना; नीचे फेंकना ।

अवनाह—पु० बोधना, कमना; आकृति करना ।

अवति, अवनी—स्त्री० [सं०] धरती, जमीन; उगली; एक लता । —वर—वि० पुत्रहृत्, आवारामर्द । —ज, —सुख—पु० मंगल ग्रह । —तल्ल—पु० जमीनकी मनह, धरातल । —अ—पु० पहाड़ । —प, —पति, —पाल, —भृष्ट—पु० राजा ।

—पालक—पु० राजा; पहाड़ । —रुह—पु० वृक्ष ।

अवनिक्त—वि० [सं०] थोथा या साफ किया हुआ ।

अवनीर्ह—पु० [सं०] राजा ।

अवनीर्हनाथ ठाकुर—पु० भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति-शिल्पमें नवयुगके प्रवर्गक (१८७१-१९१२) ।

अवनीहा, अवनीधर—पु० [सं०] राजा ।

अवनेजन—पु० [सं०] थोना (हाथ या पाँव); हाक-पाँव

धोनेका पानी; पिठटानकी वेदीपर बिछाये हुए कुपोंपर पानी छिड़कना ।

अवपाक—वि० [सं०] तुरे तरौकेमे पकाया हुआ । पु० बुरा पाचक ।

अवपाटिका—स्त्री० [सं०] शिदनके अग्रभागके चमड़ेका फट जाना ।

अवपात—पु० [सं०] अधःपतन; झपट्टा; रंभ; गर्त; हाथी फँसानेका गद्दहा ।

अवपासन—पु० [सं०] गिराना, नीचे फेंकना ।

अवपात्र—वि० [सं०] म्लेच्छ—त्रिसके किसी पात्रमें खानेसे वह पात्र दूसरोंके उपयोगमें आने योग्य न रह जाय ।

अवपाद—पु० [सं०] नीचे गिरना ।

अवबाहुक—पु० [सं०] अत्यन्त, मुनाकी गति एक जाने-का रोग ।

अवबुद्ध—वि० [सं०] ज्ञान; जाननेवाला ।

अवबोध—पु० [सं०] जागना; ज्ञान; बोध; विवेक; जताना ।

अवबोधक—वि० [सं०] ज्ञापक । पु० जागनेवाला—मृत्यु; बरी; नौकोदार; शिक्षक; विचार ।

अवबोधन—पु० [सं०] बताना, जताना; ज्ञान ।

अवभंग—पु० [सं०] नीचा दिखाना; पराजित करना ।

अवभास—पु० [सं०] चमक, प्रकाश; ज्ञान; सिध्दा ज्ञान; प्रतीति; दिव्यई देना ।

अवभासक—वि० [सं०] प्रकाशमय; प्रकाशक । पु० परजगत् ।

स्वभासित—वि० [सं०] प्रकाशित; प्रकट, प्रतीति ।

अवभासिनी—स्त्री० [सं०] ऊपरका चर्म ।

अवच्युध—पु० [सं०] यत्ना अतः यत्नके अन्तमें शुद्धिके लिए किया जानेवाला स्नान; मुख्य यत्नकी समाप्तिपर दोष-वृत्तियोंके प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला यत्न । —खान—पु० यत्नकी पूर्णावृत्तिके बाद किया जानेवाला स्नान ।

अवअट—वि० [सं०] दे० 'अवनाट' ।

अवभंता(नृ)—वि० [सं०] अवमान करनेवाला ।

अवमंथ—पु० [सं०] एक रोग जिसमें लिगमें कुनियाँ हो जाती हैं । वि० गत्रन पंदा करनेवाला ।

अवम—वि० [सं०] अतिम, अथम, नीच, पापी; घटता हुआ । पु० पाप; चाद और मौर दिनका अंतर; रक्षक; पिनरोका एक वर्ग । —तिथि—स्त्री० वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो ।

अवमत्—वि० [सं०] अपमानित; तिरस्कृत ।

अवमति—स्त्री० [सं०] अवज्ञा, तिरस्कार, विरक्ति । पु० स्वामी ।

अवमर्ष—पु० [सं०] रोदन; उन्पीडन; वध; शत्रुके देशकी बर्बादी; ग्रहणका एक भेद ।

अवमर्दन—पु० [सं०] कुचलना; दमन; उत्पीडन; मालिश करना ।

अवमर्दित—वि० [सं०] रोदा हुआ; मर्दन किया हुआ; नष्ट किया हुआ ।

अवमर्ष—पु० [सं०] स्पर्श; संपर्क । —संधि—स्त्री० नाट्य-शास्त्रके अनुसार पाँच प्रकारकी संधियोंमेंसे एक ।

अवमर्ष—पु० [सं०] आलोचना; नाट्यकी पाँच मुख्य संधियों (मुख्य, प्रतिमुख्य, गर्भ, अवमर्ष और निर्वहण)मेंसे

एक; आक्रमण ।

अवमर्षण-पु० [सं०] अमहिष्णुता; मिटाना; हटाना ।

अवमान-पु० [सं०] अवघा, अपमान; तिरस्कार ।

अवमानन-पु०, **अवमानना**-स्त्री० [म०] तिरस्करण; अपमान करना ।

अवमानित-वि० [सं०] अपमानित; तिरस्कृत ।

अवमानी(निन्)-वि० [म०] अपमान या तिरस्कार करनेवाला ।

अवसृष्यशब्द-वि० [सं०] मुँहके बल छेड़नेवाला ।

अवमोचन-पु० [म०] मुक्त करना; छोड़ देना; डाला करना ।

अवयव-पु० [म०] शरीर या शरीरका कोई भाग, (हाथ-पाँव आदि) अंग; (वस्तुका) अंश; तर्क या वाक्यके पाँच अंगों (प्रतिमा, हेतु, उदाहरण, उपनयन और निगमन) मेंसे एक; उपकरण । -**धर्म**-पु० अंगोंका गुण या धर्म ।

-**रूपक**-पु० एक तरहका रूपक जिसमें अंगोंके गुणोंका ही माहुर्य दिखलाया जाता है ।

अवयवार्थ-पु० [म०] शब्दके अवयवों (प्रकृति-प्रत्यय) में निकलनेवाला अर्थ ।

अवयवी(विन्)-वि० [म०] जिसके अवयव या अंग हों । पु० कई अवयवों-अंगोंमें मिलकर बनी हुई वस्तु; देह उपनयन, निगमन आदिका संयोग (स्या०) ।

अवयवा-पु० [म०] तृष्टीकरण प्रायश्चित्त ।

अवर-* वि० और, दूसरा; बलहीन; [म०] छोटा. नीचा; हीन; पीछे होनेवाला; पश्चिमीय. बादका अन्तिम; अन्त्य भेद । पु० अनीत काम; हाथीका पीछेका भाग; पश्चाद्वर्ती देश । -**ज**-पु० छोटा माँस; शूद्र । -**वर्ण**-वि० शूद्र वर्णका । पु० शूद्र । -**वर्णक**,-**वर्णज**-पु० शूद्र । -**वर्णाभिनिवेश**-पु० निम्न जातियोंमें बसाया हुआ उपनिवेश । -**जन**-वि० हीन जन । पु० मर्त्य; अकलन । -**शैल**-पु० पश्चिमी पहाड़ जिसके पीछे मर्त्यका अन्त होना माना जाता है ।

अवरण*-पु० दे० 'अवर्ण' ।

अवरत-वि० [म०] रुका हुआ, निवृत्त; विरामयुक्त । * पु० पानीका बंध ।

अवरति-स्त्री० [सं०] ठहराव, विश्राम; निवृत्ति ।

अवरहस-वि० [म०] अवहित. वीरान ।

अवरा-स्त्री० [म०] दुर्गा, हाथीका पिछला हिस्सा; डिग्रा ।

अवराचक*-वि० आराधन करनेवाला ।

अवराधन*-पु० आराधन ।

अवराधना*-म० क्रि० पूजा करना; सेवा करना ।

अवराधी*-वि० दे० 'अवराधक' ।

अवराध-वि० [सं०] उत्तरार्द्ध । पु० पीछे या नीचेका भाग भाग ।

अवरावपतन-पु० [म०] गर्भपान ।

अवरावर-वि० [सं०] मर्त्यमें खराब; छोटेसे छोटा ।

अवरुद्ध-वि० [म०] रुका या रोक हुआ; पिरा हुआ; बंद; प्रच्छन्न ।

अवरुद्धा-स्त्री० [म०] गल्लेकी ।

अवरुद्ध-वि० [म०] उतरा हुआ, आरुढ़का उलटा;

उल्टा हुआ ।

अवरूप-वि० [सं०] जिसका रूप विकृत हो गया हो; जिसका पतन हो गया हो ।

अवरोहना*-म० क्रि० उरेहना, तमबीर खाँचना; देखना; जानना; सोचना ।

अवरोह-पु० कपड़ेकी तिरछी काट; बक्र गति; * उलटान, कठिनार्थ; झगडा; अश्व्य, उत्तुङ्गी वक्रता । -**दार**-वि० तिरछी काटका (कपडा) ।

अवरोक्त-वि० [म०] (लेख) जिसका अन्तमें उल्लेख हुआ हो; जो बादमें कहा गया हो ।

अवरोचक-पु० [म०] एक तरहका रोग जिसमें भूख जाती रहती है ।

अवरोध-पु० [म०] रोक, अटकाव; मुक्तमान; घेरा; आवरण, दफन; बाधा; अंतःपुर; मङ्गल; किसी राजाकी रानियोंका सम्बन्ध; प्रहरी; नीचे जाना; किसी पीछेके मूल आदिमें नतुआका निकलना ।

अवरोधक-वि० [म०] घेरा डालनेवाला; रोकनेवाला, बाधक । पु० रोक; बाधा; प्रहरी ।

अवरोधन-पु० [म०] वेग, रोक; बाधा; पिरा हुआ या निजी ध्यान; किसी चीजका भीतरी भाग; राजप्रासादका अंतःपुर ।

अवरोधना*-म० क्रि० रोकना, मना करना, बाधा डालना । **अवरोधिक**-पु० [म०] अंतःपुरका प्रहरी । वि० राधा डालनेवाला; रोक डालनेवाला ।

अवरोधी(विन्)-वि० [म०] दे० 'अवरोधक' ।

अवरोधण-पु० [म०] उन्मूलन; नीचे उतारना; हटाना ।

अवरोह-पु० [म०] उतार, ऊपरमें नीचे आना, भूमिमेंसे स्वर्गके ऊपरमें नीचे आनेका क्रम; अर्थोत्कारका एक भेद जिसमें किसी वस्तुके रूप या गुणका क्रमशः घटना जाना दिखाया जाय; बरोह; चढना; किसी वस्तुका वृक्षके नागों और लिपटना, मूल या शाखायें नतुआका निकलना, पीछे या वेल्का बाद; स्वर्ग । -**शाश्व**,-**शाश्वी(विन्)**,-**शायी(विन्)**-पु० बटवृक्ष ।

अवरोहक-वि० [म०] गिरने, नीचे आनेवाला, ऊपर चढनेवाला । पु० अमगध ।

अवरोहण-पु० [म०] उतरना. नीचे आनेका (किसी ऊपर जाना, चढना) ।

अवरोहना*-म० क्रि० उतरना; चढना । म० क्रि० रोकना. अकलन करना ।

अवरोहिका-स्त्री० [म०] अश्वगधा ।

अवरोहिणी-स्त्री० [म०] ग्रहोंके विशेष ध्यानके कारण उत्पन्न कुरी दशा ।

अवरोहित-वि० [म०] हलके लाल रंगका. नीचे गिरा हुआ; हीन ।

अवरोही(विन्)-वि० [म०] नीचे आनेवाला । पु० ऊपरमें नीचे आनेवाला मर; बटवृक्ष ।

अवर्ण-वि० [म०] श्रेणीरहित । पु० स्वर वर्ण ।

अवर्ण-वि० [म०] विना रंगका; बदरंग; सग. वर्ण-धर्म-रहित । पु० निरा, अपवाद ।

अवर्ण-वि० [सं०] वर्णनके अयोग्य । पु० उपमान ।

अवतन-पु० [सं०] जीविकारहित होना; अभित्तका न रहना । वि० जीविकाहीन ।
 अवर्ष-पु० दे० 'अवर्ष' ।
 अवर्षमान-वि० [सं०] न बढ़नेवाला ।
 अवर्ष, अवर्षण-पु० [सं०] वर्षाका न होना, सूखा ।
 अवलंबना-स० क्रि० लोपना ।
 अवलंब-पु० [सं०] सहारा, आश्रय, भरोसा; लकड़; परिशिष्ट; लंब (रेखा) ।
 अवलंबक-पु० [मं०] एक वृत्त ।
 अवलंबन-पु० [मं०] सहारा लेना; अपनाना; अवलंब; छड़ी ।
 अवलंबना-स० क्रि० आश्रय लेना ।
 अवलंबित-वि० [मं०] आश्रित, मुनहमर; लटकाया हुआ; सत्वर ।
 अवलंबी (विन्)-वि० [सं०] अवलंबन करनेवाला ।
 अवलंब-वि० [सं०] सफेद रंगका । पु० सफेद रंग ।
 अवलम्बन-वि० [मं०] लगा या लटका हुआ; सटाकर रखा हुआ । पु० कमर ।
 अवलि-स्त्री० दे० 'अवली' ।
 अवलित-वि० [मं०] (किमी वस्तुमें) पुता; चुपड़ा हुआ; लगाव रखनेवाला; धमटा ।
 अवली-स्त्री० पाग; समूह; जवाबके लिए धेनमें काटकर लाया हुआ कुछ अंश; एक बार काटा हुआ ऊन ।
 अवलीक-वि० निषाध; दौषगति ।
 अवलीह-वि० [मं०] चाटा हुआ; खाया हुआ ।
 अवलीला-स्त्री० [मं०] क्रीडा, खेल; अनादर; निरस्कार ।
 अवलुंचन-पु० [मं०] काटना; उखाटना, खोलना; हटाना ।
 अवलुंडन-पु० [मं०] लोटना; लुटना ।
 अवलुंठित-वि० [मं०] टुटका हुआ, लोटा हुआ; लुटा हुआ ।
 अवलुंपन-पु० [मं०] (किमी चीजपर) अवांनक टूट पड़ना, झपट्टा मारना ।
 अवलेख-पु० [मं०] सुर-ची दृष्ट चीज; सुरचना; तोड़ना ।
 अवलेखन-पु० [मं०] सुरचना; लब्धिर खानना; कधी करना, बाल झाड़ना ।
 अवलेखना-स० क्रि० सुरचना; बिह करना ।
 अवलेखनी-स्त्री० [मं०] कपी, ब्रह्म ।
 अवलेखा-स्त्री० [मं०] चित्रकारी; रमयना; मजाना ।
 अवलेष-पु० [मं०] लेप, उबटन, चंदन आदि; लेप करना; आभूषण; सग, लगाव; धमड; हस्ता; आक्रमण; अपमान ।
 अवलेपन-पु० [मं०] लेपन; उबटन, नेल आदि; लेपनेकी क्रिया; लगाव; धमड; चंदन वृक्ष ।
 अवलेह-पु० [मं०] चटनी; चाटकर खायी जानेवाली दवा; माजू ।
 अवलेहन-पु० [मं०] चाटना; चटनी ।
 अवलोका, अवलोकन-पु० [मं०] देखना; अनुसंधान; निरीक्षण; दृष्टि; दृष्टिपात ।
 अवलोकक-वि० [मं०] देखनेकी शक्ती रखनेवाला (गुप्त-चारके रूपमें) ।
 अवलोकना-स० क्रि० देखना ।
 अवलोकवि-स्त्री० देखनेका रंग, दृष्टि; चित्रवन ।

अवलोकनीय-वि० [सं०] देखने योग्य ।
 अवलोकित-वि० [सं०] देखा हुआ । पु० एक बुद्ध; चित्रवन ।
 अवलोकितेश्वर-पु० [सं०] एक बौधिसत्त्व ।
 अवलोक्य-वि० [सं०] देखने योग्य ।
 अवलोचना-स० क्रि० निवारण करना; दूर करना ।
 अवलोप-पु० [सं०] काटकर अलग करना; नष्ट करना; टाँन काटना; चूमना ।
 अवलोमन-पु० [सं०] विषयवासना ।
 अवलोम-वि० [सं०] अनुकूल (व्यक्ति); उपयुक्त ।
 अवलुञ्ज-पु० [मं०] सोमराजी नामक पीषा ।
 अववद्, अववदन-पु० [मं०] अपवाद, निन्दा ।
 अववदित-वि० [सं०] सिखलाया हुआ ।
 अववदिता(तु)-वि० [सं०] निर्णायक ।
 अववरक-पु० [मं०] छिद्र; खिडकी ।
 अववाद-पु० [मं०] निन्दा, अपवाद; विश्वास; उपेक्षा; निरस्कार; संहारा ।
 अवश-वि० [सं०] बे-बल, लाचार; इद्रियोका दास; जो दूसरेके वशमें न हो; निरकुश; स्वाधीन, दाब न माननेवाला । [स्त्री० 'अवशा']
 अवशास-वि० [मं०] अभिग्राम, ज़िमे शाप दिया गया हो ।
 अवशासन-पु० [मं०] नष्ट करना; मुरझाना; शीण होना ।
 अवशिष्ट-वि० [मं०] बचा हुआ, बाकी, फाजिल ।
 अवशीन-पु० [मं०] विच्छेद ।
 अवशीर्णक्रिया-स्त्री० [मं०] विरक्त मित्र या राज्यका कोष्ठ अपराध करनेके कारण निकाटे हुए व्यक्ति के माथ फिर मंथि करना (कोष्ठ) ।
 अवशीर्ष-वि० [मं०] जिसका मिर झुका हो । पु० एक नेत्रोग ।
 अवशीष-पु० [मं०] वह जो बच रहे या बाकी रहे, ममांसि ।
 * वि० बचा हुआ; ममांस ।
 अवशेषित-वि० [मं०] दे० 'अवशिष्ट' ।
 अवश्यभावो (विन्)-वि० [मं०] अटल, ज़िम्मा होना निश्चिन हो ।
 अवश्य-वि० [मं०] जो बशमें न किया जा सके; अनिवार्य ।
 अ० जरूर, निश्चय । -संख्य-वि० (वह राजा या राष्ट्र) जिसकी सेना बशमें न हो ।
 अवश्यमेव-अ० [मं०] निश्चयेव; यत्नोत्तम ।
 अवश्यव-पु० [मं०] कुहरा; ओस; पाला ।
 अवश्या-स्त्री० [सं०] पाला; कुहरा; भ्रंतत्र स्त्री ।
 अवश्यव-पु० [सं०] पाला; हिमकण, ओस; अमिमान ।
 अवश्यण-पु० [सं०] आग या चूल्हेपरमें कोई चीज उतारना ।
 अवषकवणी-स्त्री० [मं०] बहुत दिनोंके अतरसे बस देनेवाली गाय ।
 अवहंस-पु० [सं०] आश्रय, सहारा; लम्बा; धमट; आरम्भ; साहस; शक जाना; बाधा; पक्षाघात; सभ्यता; ज़मीभूत होना; भेष्टता; सोना ।
 अवहंसन-पु० [सं०] सहारा लेना; सहारा देना; ज़मीभूत करना; सतम; एकना ।

अवस्य-वि० [सं०] आश्रित, रक्षित; निकटवर्ती; बाधित; आश्रय; निशेधित; आश्रय; पराभूत ।

अवस्यज-वि० [सं०] आश्रित ।

अवस्यज-पु० [म०] पक्षियोंके समूहकी नीचेकी ओरकी उड़ान ।

अवस्य-पु० [सं०] राजा; सर्व; आका आहार; उपाहार; रक्षण । * अ० दे० 'अवस्य' । * वि० लाचार ।

अवस्यक-वि० [सं०] सलज्ज । पु० सपर्व ।

अवस्यविका-स्त्री [सं०] बैठनेकी एक मुद्रा जिसमें पीठ और घुटनोंको बाँधते हैं; इस प्रकार बाँधनेका कपड़ा; उचन ।

अवस्य-पु० [सं०] रहनेका स्थान, घर; भ्राम; विचाल्य; छात्रालय ।

अवस्य-पु० [सं०] विचाल्य । वि० गृह-संबंधी ।

अवस्य-वि० [सं०] बलहीन, विचल ।

अवस्य-वि० [सं०] सुस्त, बे-दम; उदास, निराश; अपना कार्य करनेमें असमर्थ; समाप्त; हारा हुआ (का०); नाशो-न्मुख ।

अवस्य-पु० [सं०] मौका; सुयोग अवकाश; वस्त्र; भूमिका; वर्षा; गुप्त परामर्श; अर्थोत्पन्नका एक भेद ।

—प्रास-वि० अवकाश-प्रास, 'रिटास' । **—बाद-पु०** मामयिक परिस्थितिके अनुसार नीतिका निर्धारण, जैसा मौका हो वैसा बन जाना । **—बादित-स्त्री** अवसरमे लाभ उठानेकी प्रवृत्ति । **—बादी (वि०)** अवसर-बादको मानने और बरतनेवाला । **सु०** **—चूकना** सुयोग-का लाभ न उठाना, भोकेपर काम न करना । **—ताकना** मौका छूटना । **—भारा जाना** मौका हाथमें निकल जाना ।

अवस्य-पु० [सं०] मुक्त करना; दीला करना; रोक न लगाना; स्वतंत्रता; दंड आदिमें क्षमा कर देना ।

अवस्य-पु० [सं०] छोड़ना, मुक्त करना ।

अवस्य-पु० [सं०] भेदिया, जाधूस ।

अवस्य-पु० [सं०] नीचे उतरना, अधोगमन ।

अवस्य-पु० [सं०] जैनियोंका एक लंबा काल ।

अवस्य-वि० [सं०] दाहिना ।

अवसाद-पु० [सं०] सुस्ती, शिथिलता; उदासी, नाश; अंत; हार (का०) ।

अवसादक-वि० [सं०] अवसादकारक, सुस्ती लानेवाला, समाप्त करनेवाला ।

अवसाद-पु० [सं०] पतन, नाश, कार्य करनेकी अक्षमता, उपेक्षा; समाप्त करना; सहम-पट्टी करना ।

अवसादी (वि०) [सं०] अवसाद युक्त ।

अवसान-पु० [सं०] विराम; समाप्ति, सन्तु; हद, समाप्त करना; पीछे आदिसे उतरनेका स्थान, छत्रका अंत या छंद ।

अवसानक-वि० [सं०] जो समाप्त या नष्ट हो रहा हो ।

अवसाय-पु० [सं०] अंत; नाश, शेष, समाप्ति; निश्चय; मकल्प ।

अवसायी (वि०) [सं०] गहनेवाला ।

अवसारण-पु० [सं०] हटाना; चलाता, गमनमे प्रवृत्त करना ।

अवसि-अ० अवस्य ।

अवसि-वि० [सं०] सींचा हुआ ।

अवसित-वि० न बसा हुआ; [सं०] समाप्त; गत; क्षात; परित्यक्त; माँबा हुआ (अनाज); संपन्न; जमा किया हुआ (अर्थ) । पु० रहनेका स्थान ।

अवसुप्त-वि० [सं०] सोया हुआ ।

अवसृष्ट-वि० [सं०] छोड़ा हुआ, परित्यक्त; बर्बाद किया हुआ ।

अवसेक-पु० [सं०] शिंचन; एक नेत्ररोग ।

अवसेख-पु० दे० 'अवशेष' ।

अवसेष-पु० [सं०] सींचना; छिन्नकना; सींचने इत्यादिके काममें आनेवाला पानी; पसीना निकलना; पसीना निकासनेकी क्रिया; गोंक, फस्ट आदिके जरिये रक्त निकासना ।

अवसेर-स्त्री [सं०] देर, अदेर-गयो रही दधि बेचन मधुरा तहाँ आज अवसेर लगायी-स०; उल्लस; केश-ग्राहक; अवसेर मिठावट-स०; चिना; व्याकुलता । पु० प्रतीक्षा ।

अवसेरना-स० कि० कष्ट देना, परेशान करना ।

अवसेषित-वि० दे० 'अवशिष्ट' ।

अवस्कन्द-पु० [सं०] आक्रमण; दूट पटना; शिविर, छावनी । **अवस्कन्द-पु०** [सं०] वह जो लोगोंको अकारण, राह चले मारे-पीटे, गुंडा ।

अवस्कन्दित-वि० [सं०] आक्रान्त; नीचे गया हुआ, क्षान्त । **—असी (वि०)** पु० मजदूरी लेकर भाग जानेवाला मजदूर ।

अवस्कर-पु० [सं०] विद्या, मूल्य; मूल्य सूचक; कृपा; पूर । **—अम-पु०** पाखानेका नल, 'सिंचन' (की० ?) । **—अवि-पु०** शोचालय ।

अवस्करक-पु० [सं०] मोहरौल; मेहनत; हाद ।

अवस्तार-पु० [सं०] परदा; खेमके चारों ओरकी कपड़ेकी दीवार, कनात; चटाई ।

अवस्तु-वि० [सं०] तुच्छ, निकम्मा; शून्य । स्त्री० अस-दस्तु, निकम्मी चीज; मारहीनता ।

अवस्य-वि० [सं०] बलहीन, नश ।

अवस्य-पु० [सं०] पुरुषोदय ।

अवस्थान-पु० [सं०] दूसरी या बदली हुई अवस्था ।

अवस्था-स्त्री [सं०] हालत, दशा; देशादिके कालकूल अवस्था-लक्षण, अवस्थान, उदात्तादि; उन्नत; स्थिति; स्थिरता; आकृति; भग । **—चतुष्टय-पु०** जीवनकी चार अवस्थाएँ-बाल्य, कौमार, यौवन और वृद्धत्व । **—अव-पु०** जीवात्मा या चित्तकी तीन अवस्थाएँ-जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति । **—वृक्षक-पु०** प्रेमकी दस अवस्थाएँ-अभिलाष, चिन्ता, स्थिति, गुणकथन, उद्वेग, मत्वाप, उन्माद, व्याधि, जडता और मरण । **—हृष्य-पु०** जीवनकी दो अवस्थाएँ-सुख और दुःख । **—परिणाम-पु०** दे० 'परिणाम' (की०) ।

—पदक-पु० वास्तविक मतमें वर्गबद्ध ६ अवस्थाएँ-जन्म, स्थिति, वृद्धि, विपरिणाम (वदलना), अपक्षय और नाश ।

अवस्थान-पु० [सं०] ठहरना; रहना; रहने, ठहरनेका स्थान, घर; रेलगाड़ीका स्टेशन; मौका; ठहरने या रहनेकी अवधि; ठहरनेका काल ।

अवस्थापन-पु० [सं०] रखना, स्थापित करना; बिठाना; रहनेका स्थान ।

अवस्थित-वि० [सं०] ठहरा हुआ, ठिका हुआ; कार्यलक्ष्य;

मौजुर; लक्ष्म; दृढनिश्चय ।
अवस्थिति-स्त्री० [सं०] अवस्थान ।
अवस्कृज-पु० [सं०] बाइलोका गरजना ।
अवस्वदन-पु० [सं०] रिसना, चूना, टपकना ।
अवह-वि० [सं०] न बहनेवाला; बिना नदी-नालैका (दे०) । पु० एक बाहु, 'हैर' (?) ।
अवहनन-पु० [सं०] डंठल पटककर दाने अलग करना; फटकना; बाम फुफ्फुस ।
अवहरण-पु० [सं०] अन्यत्र ले जाना; चुरा लेना; युद्धविराम ।
अवहस्त-पु० [सं०] हथेलीकी पीठ ।
अवहार-पु० [सं०] अपहरण; लौटाना; चोर; मँप, जल-हस्ती; रणविराम; जाति या धर्मका त्याग; आर्मन्थन; पाम लाने योग्य वस्तु ।
अवहारक-वि० [सं०] अवहरण-कारक; युद्ध बंद करने-वाला । पु० सँस ।
अवहार्य-वि० [सं०] ले जाने योग्य; जिसे लौटाना आवश्यक हो ।
अवहालिका-स्त्री० [सं०] प्राचीर, दीवार ।
अवहास-पु० [सं०] मुस्कराहट, मुस्कराना; उपहास, खिलौ उड़ाना ।
अवहित-वि० [सं०] एकाग्रचित्त, साधवान ।
अवहित्य-पु०, **अवहित्या**-स्त्री० [सं०] एक अभिचारी भाव जिसमें लज्जा, भय आदि भावोंकी छिपानेका प्रयत्न होता है; भावगोपन ।
अवहत-वि० [सं०] हरण किया हुआ; चुराया हुआ; जिसपर जुर्माना किया गया हो ।
अवहेलना, अवहेला-स्त्री० [सं०] अनादर, अवज्ञा; निर-द्वार; उपेक्षा ।
अवहेलित-वि० [सं०] अवमान; निरस्कृत ।
अवॉ-पु० दे० 'आवॉ' ।
अवाञ्छनीय-वि० [सं०] जिसकी चाहना न की जाय; अनभिलषणीय; अप्रिय ।
अवांतर-वि० [सं०] बीचमें स्थित, मध्यवर्ती; अनर्गल; गौण । -**दिशा**-स्त्री० विदिशा, दो दिशाओंके बीचका कोण । -**देश**-पु० दो स्थानों या देशोंके बीचका स्थान या देश । -**भेद**-पु० गौण भेद, उपविभाग ।
अवांसना-सं० क्रि० दे० 'अनवॉसना' ।
अवाँसी-स्त्री० नवावतके लिए फनलमेंसे काटकर लाया हुआ पहला बोल ।
अवाई-स्त्री० आगमन; गहरी जोताई ।
अवाक्(च्)-वि० [सं०] अधोमुख; मौन, चुप; स्तब्ध; दक्षिणी । अ० नीचे; दक्षिणको ओर । पु० बड़ा । -**पुष्पी**-स्त्री० अणुपुष्पी । -**शास्त्र**-पु० अश्वत्थ, पीपल । -**भ्रुति**-वि० गूँगा और बहारा ।
अवाक्ष-पु० [सं०] रक्षक, देख-भाल करनेवाला ।
अवागी-वि० मौन ।
अवाक्-'अवाक्'का समासगत रूप । -**गिरध**-पु० नीचेका नरक (पृथ्वी) । -**मनसगोचर**-वि० मन और बाणीके परे, अवर्गनीय और अचिंत (ईश्वर, परमतत्त्व) । -**मुख**-वि० अधोमुख, जिसका मुख नीचेकी ओर हो; लज्जित ।

अवाची-स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा; निम्न देश ।
अवाचीन-वि० [सं०] दक्षिणी; अधोमुख; अधोगत ।
अवाच्य-वि० [सं०] न कहने योग्य; बात करनेके अयोग्य; अस्पष्ट; दक्षिणी । पु० अपप्रश्न; न कहने योग्य बात ।
 -**देश**-पु० योनि ।
अवाज-स्त्री० दे० 'आवाज' ।
अवाजी-वि० आवाज करनेवाला ।
अवात-वि० [सं०] निर्वात, बिना हवाका ।
अवादी(दिक्)-वि० [सं०] जो वादी नहीं है, अविरोधी; अवका ।
अवान-वि० [सं०] सुखा हुआ, शुष्क (फलदि) ।
अवापित-वि० [सं०] बीया हुआ नहीं, रोपा हुआ; न कटा हुआ (बाल) ।
अवास-वि० [सं०] प्राप्त, मिला हुआ ।
अवासि-स्त्री० [सं०] प्राप्ति ।
अवाप्य-वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य; न काटने योग्य (केशदि) ।
अवाय-वि० अनिवार्य; उद्धत, निरंकुश ।
अवार-पु० [सं०] नदीका श्वरका मिलारा, पारका उलटा, इस पार । -**पार**-पु० समुद्र । -**पारीज**-वि० समुद्र-संघी; नदी पार करनेवाला ।
अवारजा, अवारिजा-पु० [सं०] खनियौनी; जमाखर्चकी बही; गोशवारा, रोजनामचा ।
अवारणीय-वि० [सं०] जिसका निवारण न हो सके, ला-हलाज ।
अवारना-सं० क्रि० रोकना, वारण करना ।
अवारा-वि० दे० 'आवारा' ।
अवारिका-स्त्री० [सं०] धनिया ।
अवारित-वि० [सं०] अनिवारित, जिसपर रोक न लगायी गयी हो । -**द्वार**-वि० जिसका द्वार खुला हो ।
अवारीज-वि० [सं०] पार गया हुआ ।
अवार्य-वि० [सं०] दे० 'अवारणीय' ।
अवावट-पु० [सं०] उमी बर्णके दूसरे पनिमे उत्पन्न पुत्र ।
अवास-पु० दे० 'आवास' ।
अवासा(सस्)-पु० [सं०] दिगंबर जैन । वि० नग्न ।
अवासव-वि० [सं०] जो यथार्थ न हो, मिथ्या; निराधार ।
अवाहन-वि० [सं०] जिसके पास चाहन न हो; जो स्वारीपर न हो ।
अवि-पु० [सं०] रक्षक; स्वामी; सूर्य; बाहु; पहाड़; दीवार, बेरा; अकतन; मूर्खिक कंठल; समू; मेघ; बकरा । स्त्री० भेड़; लज्जा; कृतमती स्त्री । -**कट**-पु० भेंड़ोका छुट ।
 -**गंधा**; -**गंधिका**-स्त्री० अलगंधा नामक पोषा । -**षट**-पु० ऊनी वस्त्र । -**पाल**-पु० गधेरीया ।
अविक-पु० [सं०] मेघ; होरा ।
अविकल, अविकचित-वि० [सं०] बंद, अविकसित ।
अविकर्य, अविकर्यन-वि० [सं०] घमंड न करनेवाला; डोंग न मारनेवाला ।
अविकल-वि० [सं०] जो घटाया-बढ़ाया या बदला न गया हो, ज्योंका त्यों हो; व्यवस्थित; जो बे-चैन न हो, शांत ।
अविकल्प-वि० [सं०] विकल्परहित; अपरिवर्तनीय; निश्चित ।

पुं विकल्प वा संवेदका अभाव ।
अधिका, अधिता-स्त्री [सं०] भेद ।
अधिकार-वि० [सं०] विकार-रहित, न बदलनेवाला, एक-
 रूप । पुं विकाराभाव ।
अधिकारी (रिन्) -वि० [सं०] दे० 'अधिकार'; जो किसी-
 का विकार न हो ।
अधिकार्य-वि० [सं०] जिससे विकार या परिवर्तन न हो,
 अपरिवर्तनशील ।
अधिकासी (शिन्), **अधिकासी (सिन्)** -वि० [सं०]
 जिसका विकास न हो, न खिलनेवाला; न चमकनेवाला ।
अविकृत-वि० [सं०] जो बदला या विगडा न हो ।
अविकृति-स्त्री [सं०] विकारका अभाव; मूल-प्रकृति
 (सं०) ।
अविक्रम-वि० [सं०] शक्तिहीन, कमबोद । पुं भीरुता ।
अविक्रान्त-वि० [सं०] जिससे कोई बड़ा हुआ न हो; कम-
 जोर, शक्तिहीन ।
अविक्रिय-वि० [सं०] अविकारी । पुं ब्रह्म ।
अविर्देय-वि० [सं०] जो विक्रीके लिए न हो ।
अविश्रुत-वि० [सं०] जिसकी कृति न हुई हो; समग्र ।
अविश्रित-वि० [सं०] जो फैका न गया हो; एकग्रचित्त ।
अविगत-वि० [सं०] जो गया वा भोगा न हो, मौजूद;
 * अशेष; अहात; अविनाशी ।
अविगीत-वि० [सं०] अनिदित ।
अविज्ञ-पुं [सं०] करमर्यक नामक वृक्ष वा उसका फल,
 करीदा ।
अविग्रह-वि० [सं०] निराकार, देहरहित, अघात; नित्य-
 समाप्त (स्या०) ।
अविघात-वि० [सं०] बाधा-रहित । पुं विघ्नाभाव ।
अविचल-वि० [सं०] अचल, स्थिर ।
अविचार-पुं [सं०] अविवेक, नासमझी; अन्याय; अनीति ।
 वि० अविवेकी ।
अविचारित-वि० [सं०] जिसपर विचार न किया गया
 हो, बिना सोचे-समझे किया हुआ ।
अविचारी (रिन्) -वि० [सं०] विवेकहीन, उचित-अनुचिन्
 का विचार न रखनेवाला ।
अविचालित-वि० [सं०] अटल, स्थिर; विजयी ।
अविच्छिन्न-वि० [सं०] अविभक्त; जो लगातार हो ।
अविच्छेद-वि० [सं०] विच्छेदरहित । पुं विच्छेद-विल-
 गावका अभाव ।
अविच्युत-वि० [सं०] जो अपने स्थानसे भ्रष्ट न हुआ
 हो; शाश्वत, नित्य ।
अविधीन*-वि० अविच्छिन्न, अदृष्ट-जो सुनि होइ राम-
 पद प्रीति सदा अविधीन-रामा० ।
अविजन*-पुं दे० 'अभिजन' ।
अविजित-वि० [सं०] जो जीता न गया हो ।
अविज्ञ-वि० [सं०] अज्ञान, अनादी ।
अविज्ञात-वि० [सं०] बे-ज्ञान-समझी; सदृग्ध; अस्पष्ट ।
 -कथ-पुं उक्त स्थानसे या मालिकों बिना जनासे
 कोई वस्तु खरीदना; व्यवहारमें आधा माल नष्ट हो जाना ।
 -गति-वि० जिसकी गतिविधि ज्ञात न हो ।

अविज्ञाता (स्) -पुं [सं०] परमेश्वर; विष्णु ।
अविज्ञेय-वि० [सं०] जो पढ़चाना न जा सके; जो जाना
 न जा सके; न जानने योग्य । पुं परमेश्वर ।
अविहीन-पुं [सं०] पक्षियोंका सीधे सामने उड़ना ।
अवितल-वि० [सं०] विकट । -करण-पुं साधारणतः
 दुरा समझे जानेवाले कार्यको करणीय मानना (पाशुपत);
 विकटकरण ।
अवितथ-वि० [सं०] जो गलत वा झूठ न हो, सही ।
 पुं सचार्थ ।
अवितस्पायण-पुं [सं०] अंदबंद बकना, निरर्थक बातें
 कहना ।
अवितर्कित-वि० [सं०] जिसपर विचार न किया गया
 हो; अस्पष्टपूर्व ।
अवित्त-वि० [सं०] निर्धन; अमसिद्ध; अहात ।
अवित्ति-स्त्री [सं०] अप्राप्ति; सुद्धिहीनता; निर्धनता ।
 वि० मूर्ख; जिसे प्राप्त न हुआ हो ।
अवित्यज-पुं [सं०] पारा ।
अविध्या-स्त्री [सं०] अजड्या नामक पौधा; जूही; पाठा ।
अविद्वज-वि० [सं०] अधजला; अधकचरा; अपठिन, मूर्ख ।
 पुं भेदका दूध ।
अविदित-वि० [सं०] अहात; अस्पष्ट । पुं परमेश्वर ।
अविद्ध-वि० [सं०] अनविद्या । -कर्णा, -कर्णी-स्त्री०
 पाठा लता ।
अविद्य-वि० [सं०] अघट, मूर्ख * नष्ट, लुप्त (?) ।
अविद्यमान-वि० [सं०] अनुपस्थित; अस्त ।
अविद्या-स्त्री [सं०] विद्या वा ज्ञानका अभाव; विपरीत
 ज्ञान; भ्रान्ति; वह भ्रान्ति जिसके कारण भ्रममें जगदर्थ
 प्रतीति होती है, माया, प्रकृति (सां०) । -कृत, -जन्य-
 वि० अविद्याने उत्पन्न ।
अविधान-पुं [सं०] विधानका अभाव, विधानका न
 होना । वि० विधिबिच्छेद, अवैध, अविहित ।
अविधि-वि० [सं०] अवैध, विधिबिच्छेद । स्त्री० विधि या
 विधानका अभाव ।
अविनय-स्त्री [सं०] विनय या नम्रताका अभाव; अशि-
 ह्ता; पृष्ठता, गुप्तासी; उजड़पन; घमट; अपराध । वि०
 विनयहीन ।
अविनय्वर-वि० [सं०] जिसका नाश न हो । पुं परब्रह्म ।
अविनाभाव-पुं [सं०] अविच्छेद सत्त्व (जैसे आग और
 पुष्पको); मन्थ, लगाव ।
अविनाशी (शिन्) -वि० [सं०] नाशरहित, अश्रय, नित्य ।
अविनाशी*-वि० दे० 'अविनाशी' । पुं ईश्वर ।
अविनीत-वि० [सं०] अनज, अशिष्ट; गुप्तासक उजड़;
 घमटी ।
अविनीता-स्त्री [सं०] कुष्ठता, व्यभिचारिणी ।
अविपक-वि० [सं०] पका नहीं, अधकचरा ।
अविपद्-स्त्री [सं०] दुःखाभाव; मसृष्टि ।
अविपक्ष-वि० [सं०] जो क्षतिग्रस्त न हुआ हो; निष्कलुष,
 पवित्र; स्वस्थ ।
अविपर्यय-पुं [सं०] विकार या क्रमभंगका न होना ।
अविपाक-पुं [सं०] अजीर्ण रोग । वि० अजीर्णसे ग्रस्त ।

अविबुध-वि० [सं०] दुर्दिहान, मूर्ख । पु० देवता नहीं, अक्षर आदि ।

अविभक्त-वि० [सं०] अविभाजित, अखण्ड; साधित; समूचा; एक ।

अविभाज्य-वि० [सं०] जो बाँटा न जा सके । पु० वह राशि जिसका किसी भागकने भाग न किया जा सके ।

अविभाजन-पु० [सं०] किसी वस्तुका स्पष्ट ज्ञान या पहचान न होना; लोप ।

अविमान-पु० [सं०] अपमान नहीं, आदर-सत्कार ।

अविमुक्त-वि० [सं०] अमुक्त, बन्ध । पु० (पंचकोशीसहित) काशी; कनपटी ।

अविमुक्क-वि० [सं०] काशीका एक प्रसिद्ध शिव-लिंग । **अविमुक्त-वि०** [सं०] अविभक्त, मिला हुआ, संयुक्त; जो पृथक् न हुआ हो ।

अवियोग-वि० [सं०] संबन्ध, मिला हुआ । पु० उपस्थिति; संयोग । —**व्रत-पु०** मार्गशीर्ष-शुक्ल तृतीयाको होनेवाला एक व्रत ।

अविरत-वि० [सं०] विरामहीन; अनिवृत्त, लगा हुआ; परित्यक्त । अ० लगातार, निरंतर ।

अविरति-स्त्री० [सं०] विरामका अभाव; आसक्ति ।

अविरथा-अ० नाटक, वेकार ।

अविरल-वि० [सं०] मिला, मटा हुआ; अविरत; घना ।

—**धारासार-पु०** लगातार होनेवाली मुसलधार वृष्टि ।

अविरहित-वि० [सं०] अविश्रुत, जो पृथक् न हो ।

अविराम-वि० [सं०] विरामहीन । अ० लगातार, बिना ठहरे-सुन्नाये ।

अविरुद्ध-वि० [सं०] जो विरुद्ध न हो, अप्रतिकूल; अनुकूल ।

अविरचन-पु० [सं०] कवच करनेवाली चीज ।

अविरोध-पु० [सं०] विरोधका अभाव; मेल; मार्गसम्य ।

अविलंब-वि० [सं०] विलंबरहित । अ० झटपट, तुरत ।

अविलम्ब-वि० [सं०] जिसका कोई लक्ष्य न हो; अनिश्चित ।

अविला-स्त्री० [सं०] भेड़ ।

अविलिख-वि० [सं०] न लिखनेवाला, बुरा लिखनेवाला;

लिखनेवालेमें भिन्न ।

अविलोकना-अ० कि० दे० 'अवलोकना' ।

अविवक्षित-वि० [सं०] अनुरिद्ध; जिसके विषयम कहना न हो ।

अविवाद-पु० [सं०] विवादका अभाव, महामति । वि० विवादरहित ।

अविवाहित-वि० [सं०] विन-व्याहारा, काँरा ।

अविबिक्त-वि० [सं०] अविभेदित; अंतरहित; मार्गजनिक;

विवेकरहित ।

अविवेक-पु० [सं०] भला-बुरा समझनेकी शक्तिका अभाव;

अविचार; नाममझी ।

अविवेकिता-स्त्री० [सं०] अविवेक ।

अविवेकी (किन्)-वि० [सं०] विवेकरहित, नाममझ ।

अविशंक-वि० [सं०] शंकाहरित; निडर ।

अविशुद्ध-वि० [सं०] जो शुद्ध न हो, अपवित्र; मिलावटी ।

अविशेष-वि० [सं०] अंतरहित, समान । पु० भेदक धर्मका

अभाव, समानता; एकता; सूक्ष्म भूत (सां०) । —**सम-पु०** जातिके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।

अविश्रम-पु० [सं०] विश्रामका अभाव, अविश्रास ।

अविश्रांत-वि० [सं०] न थकनेवाला; अविराम; जो क्षति-

ग्रस्त न हो । अ० लगातार ।

अविश्रमनीय-वि० [सं०] जो विश्रामके योग्य न हो ।

अविश्रल-वि० [सं०] जिसका विश्रास न हो; संदिग्ध ।

अविश्रास-पु० [सं०] विश्रामका न होना, बे-यतनारी;

शका, संदेह ।

अविश्रासी (सिन्)-वि० [सं०] विश्राम न करनेवाला;

अदाहीन; जो विश्रासके योग्य न हो ।

अविष-वि० [सं०] विषहीन; विषहरकर; रक्षक । पु० समुद्र;

राजा, आकाश ।

अविषय-वि० [सं०] जो किसी इन्द्रियका विषय न हो,

अगोचर; प्रतिपादनके अयोग्य; निर्विषय । पु० अभाव;

लोप; इन्द्रियोंके विषयोंकी उपेक्षा ।

अविषा-स्त्री० [सं०] निर्विषा चुन ।

अविषी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी; नदी; आकाश ।

अविसर्ग (सिन्)-वि० [सं०] न हटनेवाला, लगातार

बना रहनेवाला (ज्वर) ।

अविसृष्ट-वि० [सं०] (वह पदार्थ) जो रोग उत्पन्न करे;

जिसमें कोई शुण न हो । —**दुर्ग-पु०** वह दुर्ग जिसमें शत्रु

प्रवेश न कर सके (कौ०) ।

अविम्वर-वि० [सं०] बोधी लंबाईका, संक्षिप्त ।

अविस्मर्ण-वि० [सं०] जो अधिक न फैलाकर छोटा कर

दिया गया हो ।

अविरुत-वि० [सं०] ठसा हुआ, घना ।

अविहृष्ट-वि० अविनाशी; बाँहड़ ।

अविरुद्ध-वि० [सं०] शास्त्रविरुद्ध; निषिद्ध; अकर्म्य;

अनुचित ।

अवी-स्त्री० [सं०] कृतमनी स्त्री; बनकुलधी ।

अवीचि-वि० [सं०] बिना लहरोंका । पु० एक नरक ।

अवीज, अवीजक-वि० [सं०] दे० 'अबीज' ।

अवीजा-स्त्री० [सं०] दे० 'अबीजा' ।

अवीरा-स्त्री० [सं०] पुत्रहीना विधवा ।

अवृत्त-वि० [सं०] जो रोक न गया हो; बे-नुना हुआ;

अरक्षित; अपराधत ।

अवृत्ति-वि० [सं०] अस्तित्वहीन, स्थितिहीन; जीविका-

रहित । स्त्री० जीविकाका अभाव; स्थितिका अभाव ।

अवृथा-अ० [सं०] व्यर्थ नहीं, मफलापूर्वक ।

अवृद्धि-वि० [सं०] बिना वृद्धि या वृद्धका । पु० मूल धन ।

अवृष्टि-स्त्री० [सं०] अवर्षण, सूझा ।

अवेक्षण-पु० [सं०] देखना; निरीक्षण, देख-भाल । वि०

देख-भाल करनेवाला ।

अवेक्षणिय-वि० [सं०] देखने योग्य; निरीक्षण योग्य ।

अवेक्षा-स्त्री० [सं०] देखना; ध्यान, खयाल ।

अवेज-पु० बरका ।

अवेणि-वि० [सं०] कवरीरहित; जो साध मिलकर प्रवाहित

न हो (नदी) ।

अवेत-वि० [सं०] बीता हुआ; प्राप्त; संयुक्त ।

लागू न हो। -**वृत्ति**-स्त्री० वह वृत्ति जो देश-कालका दृष्टि से सीमित हो, व्यापक न हो (दुःख-सुख, द्वेष-प्रेम आदिके संश्लेष में प्रयुक्त)।

अभ्याहत-वि० [सं०] अभिभक्त, अटूट, अविच्छिन्न।

अभ्याहत-वि० [सं०] व्यापारहित; अबाधित; अवर्जित, अटूट।

अव्युच्छिन्न-वि० [सं०] अभ्याहत; अबाधित; अटूट।

अव्युत्पन्न-वि० [सं०] अकुशल, अरुक्ष, अनुभवहीन; जो (शरीर) व्याकरण से निष्ठ न हो सके; व्युत्पत्तिरहित। पु० व्याकरण न जाननेवाला व्यक्ति।

अव्रण-वि० [सं०] अशुभ; बिना बोधका; जो चोट आदिके कारण खराब न हुआ हो (मह, दहादि)। पु० आँख का एक रोग।

अव्रत-वि० [सं०] शास्त्रविहित नियमों, कर्तव्यों का पालन न करनेवाला, व्रतहीन। पु० व्रतशाय (शैव)।

अव्रथ-पु० [सं०] धार्मिक कर्मवृत्त का उल्लंघन।

अव्वल-वि० [अ०] पहला, प्रथम; सर्वश्रेष्ठ। पु० जाति, आरम्भ। -**तो**-पहले तो, प्रथमतः। **मु०**-आना, -

रहना-प्रतियोगिना में सर्वप्रथम आना।

अव्वलज-अ० [अ०] प्रथमतः।

अशंक, **अशङ्कि**-वि० [सं०] शङ्काहित, निर्भय, निराश्रय।

अशङ्कु-पु० [सं०] अशङ्काल; श्रित्तन; श्रमगल।

अशङ्कुभी-स्त्री० [सं०] एक स्त्रीय पात्र।

अशङ्कन-पु० [सं०] अशङ्कन, अशुभ लक्षण।

अशङ्क-वि० [सं०] शङ्किनी, शङ्काहीन; अशङ्क; अशङ्क्य।

अशक्ति-स्त्री० [सं०] निबलता, अशक्तता, वैदिका वैकाम होना (मा०)।

अशक्य-वि० [सं०] जो न हो सके, अशक्य, नो काबु में न आया वा सके।

अशक्त-वि० [सं०] शान्तरहित; निमग्न। शक्तश्री और में शरीर न हो। पु० चउमा शक्तिरहित होनेका अवस्था।

अशक्त-पु० [सं०] शक्तिहीन, शक्तिहीन; अशक्त, पशुवना; पात्र जाला; व्यापित, प्रसन्न, शीता, विचक्री गच्छी, शिलावा, अमन वृक्ष। -**पूर्ण**-स्त्री० पट्टमन।

अशक्त्या-स्त्री० [सं०] शक्तिहीनता, शक्ति।

अशक्तवित-वि० [सं०] शक्ति।

अशक्ति-पु० [सं०] शक्ति, शक्तिहीन; अशक्त, शक्ति, शक्ति।

अशक्त-वि० [सं०] जो शक्तिहीन शक्ति न हुआ हो, शक्ति, शक्तिरहित; अवैदिक। पु० शक्ति।

अशरण-वि० [सं०] अशरणहीन, अनशय। -**शरण**-वि० शरणहीन शरण देनेवाला (शरणदाता)।

अशरण-वि० [सं०] बहुत शरीर, उच्च।

अशरणी-स्त्री० [सं०] शरीर का शक्ति, मुक्ति, दे० 'शुल-अशरणी'।

अशरणी-पु० [सं०] शरीर का शक्ति, मुक्ति, दे० 'शुल-अशरणी'।

अशरणी-पु० [सं०] शरीर का शक्ति, मुक्ति, दे० 'शुल-अशरणी'।

अशरीर-वि० [सं०] शरीररहित, निराकार। पु० परमात्मा; कामदेव; मन्मथ।

अशरीर(रिक्)-वि० [सं०] शरीरहीन; अपरिचित। पु० ब्रह्मा, देवता।

अशरीर-स्त्री० दे० 'अशरीर'।

अशर्म(रिक्)-पु० [सं०] शर्म, दुःख, शोक।

अशर्म-वि० [सं०] शर्महीन, निःशर्म। पु० शर्म नहीं।

अशांत-वि० [सं०] शांतिरहित, बेचैन, उद्विग्न, अस्थिर; अपवित्र; अधार्मिक।

अशांति-स्त्री० [सं०] बेचैनी; श्रौंन, खलबली।

अशास्त्र-स्त्री० [सं०] शूल गृण।

अशास्त्र-वि० [सं०] जो शांत न किया जा सके (वैर आदि)।

अशास्त्री-वि० [सं०] विनयहीन, दौट।

अशासन-पु० [सं०] शासनका अभाव; अशक्तता; अशक्तता। वि० शासनहीन।

अशास्त्रीय-वि० [सं०] शास्त्रविच्छेद, अविहित।

अशिक्षित-वि० [सं०] अपठ, गवार।

अशित-वि० [सं०] खाया हुआ।

अशिश्र-पु० [सं०] शीर।

अशिर-पु० [सं०] अग्नि, सूर्य; वायु, हारा, एक राक्षस।

अशिव-वि० [सं०] अशक्त्यागवर; अमगल-सूचक; दरा-वना। पु० अमगल, दुर्भाग्य; अहित।

अशिशु-वि० [सं०] सनानहीन। पु० शिशुत्वका अभाव, शालाव्य।

अशिक्षिका, **अशिक्षी**-स्त्री० [सं०] निःशिक्षिता स्त्री; बिना बच्चेकी माय।

अशिक्ष-वि० [सं०] शिशुवारहित, अशक्त, उजड़, अवि-नात; अधार्मिक; अविहित।

अशिक्षता-स्त्री० [सं०] अशिक्ष व्यवहार, अशक्तता, उजड़पन।

अशीन-वि० [सं०] ठंडा नहीं, गरम। -**कर**, -**रहित**-पु० गूर।

अशीनि-स्त्री० [सं०] ८०, अश्वीर्वा मस्या।

अशीनिक-वि० [सं०] ८० वर्षमध्य, अश्वीमाला।

अशील-वि० [सं०] शीतरहित, अशिक्ष, उजड़; उदासीन। पु० उजड़ता, अशिक्षता।

अशुचि-वि० [सं०] अपवित्र, नापाक, नैला काला। स्त्री० अपवित्रता; अपकृत।

अशुद्ध-वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; माफ न किया हुआ, अशोधित; मर्याद; शून्य। -**वाचक**-पु० मर्यादा-व्यक्ति।

अशुद्धि-स्त्री० [सं०] अशुद्धता, शून्यता; शरीर।

अशुद्ध-पु० [सं०] अशुद्धता, शून्यता।

अशुद्ध-वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; अशुद्धमय; अपवित्र; शून्यहीन। पु० अमगल; पाप; दुर्भाग्य।

अशुद्ध-स्त्री० [सं०] अशुद्धता, शून्यता; शरीर।

अशुद्ध-पु० [सं०] अशुद्धता, शून्यता; शरीर।

अशुद्ध-वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; माफ न किया हुआ, अशोधित; मर्याद; शून्य। -**वाचक**-पु० मर्यादा-व्यक्ति।

अशुद्ध-वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; माफ न किया हुआ, अशोधित; मर्याद; शून्य। -**वाचक**-पु० मर्यादा-व्यक्ति।

अशुद्ध-वि० [सं०] अपवित्र, नापाक; माफ न किया हुआ, अशोधित; मर्याद; शून्य। -**वाचक**-पु० मर्यादा-व्यक्ति।

अक्षर-वि० [सं०] संपूर्ण, सम्पूना; सबका सब; अपार; असंख्य । —**साम्राज्य-पु०** शिव ।

अक्षरता-स्त्री० [सं०] समग्रता ।

अक्षर-पु० [सं०] अक्षर (जो अब शिक्षाधीन हो) ।

अक्षर-वि० [सं०] शोचरहित । पु० एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ लहरदार और सुंदर होती हैं और विशेषकर नंदन-वार बौधनेमें काम आती हैं; कटुक; राजा दशरथका एक मंत्री; मौर्यवंशका एक यशस्वी सम्राट्; विष्णु । —**पूर्णिमा-स्त्री०** फाल्गुनकी पूर्णिमा । —**मंजरी-स्त्री०** एक छंद; अशोकका पुष्प । —**रोहिणी-स्त्री०** कटुकी । —**वनिका-म्याच-पु०** वस्तुविशेषको तरजीह देनेका कारण न बताया जा सकना (रावणने सीताको और किसी चीजके बागमें न रखकर अशोकवाटिकामें ही बर्बाद रखा, यह बताना कठिन है) । —**वाटिका-स्त्री०** अशोककी बाड़ी; वह बगीचा जहाँ रावणने सीताको कैद कर रखा था । —**पट्टी-स्त्री०** चैत्र-शुद्धा वट्टी ।

अक्षर-स्त्री० [सं०] अशोककी कड़ी; पारा ।

अक्षरकारि-पु० [सं०] कर्तव्य ।

अक्षरकाष्टमी-स्त्री० [सं०] चैत्र-शुद्धा अष्टमी ।

अक्षर-पु० [सं०] चित्ताका अभाव; शान्ति; नम्रता ।

अक्षर-वि० [सं०] शोक न करने योग्य ।

अक्षरहित-वि० [सं०] जिसका शोषन या सत्कार न हुआ हो, साफ न किया हुआ ।

अक्षरभक्त-पु० [सं०] माणिक्यका एक दोष, दे० 'लहसुन' ।

अक्षरभक्त-वि० [सं०] अक्षर, अमर, न फटनेवाला ।

अक्षर-पु० [सं०] अपवित्रता, नापाकी; जन्म-मरणके कारण कुटुम्बियों और सपिण्ड जनोको लगनेवाली छूत । —**संकर-पु०** दो या अधिक अक्षरोंका एकमें मिल जाना ।

अक्षर-पु० [सं०] चूल्हा; खेत; मृत्यु; एक मन्त्र । वि० अक्षुभ; असीम ।

अक्षर-पु० [सं०] चूल्हा; दीपाधार, मूँजकी तरहकी एक घास जिसने ब्राह्मणकी मेखला बनायी जाती थी; लिखोडा; पाषाणभेद; कचनार ।

अक्ष-पु० दे० 'अक्ष' ।

अक्षक-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, निरुवाकुर; बर्हाके निवासी ।

अक्षर-वि० [सं०] पथरीला; पथर-सम्बंधी ।

अक्षरी-स्त्री० [सं०] पथरी नामक रोग । —**झ-भेद-पु०** वरुण वृक्ष । —**हर-पु०** वृक्षविशेष ।

अक्षर-पु० [सं०] पहाड़; पथर; चकमक, बादल; सोनामाखी; लोहा । —**(क्ष)कदली-स्त्री०** काष्ठकदली । —**कीट-पु०** नारकीट । —**केतु-पु०** छुद्र पाषाणभेदी नामक पौधा । —**गर्म-पु०** सरकत । —**ज-पु०** लोहा; गेरु; शिलाजतु । —**जतु-जनुक-पु०** शिलाजतु । —**जाति-स्त्री०** पत्ता । —**भाल-पु०** लोहे आदिका लाल । —**भेद-पु०** पाषाणभेदी पौधा । —**योनि-पु०** सरकत । —**सार-पु०** लोहा ।

अक्षरी-पु० [सं०] दे० 'अक्षरी' ।

अक्षर-पु० [सं०] शिलाजतु ।

अक्ष-पु० [सं०] अक्ष; रक्त । —**प-पु०** राक्षस, नरमक्षक ।

अक्षर-वि० [सं०] अक्षरहीन; अविश्वासी ।

अक्षर-स्त्री० [सं०] अक्षरका अभाव; अविश्वासी ।

अक्षर-वि० [सं०] कर्णहीन; बहरा । पु० साँप; बहरापन ।

अक्षर-वि० [सं०] न थका हुआ, अथक । पु० विश्रामाभाव ।

अक्षर-वि० [सं०] न सुनने योग्य ।

अक्षर-स्त्री० [सं०] कोना; नोक; अनी; धार ।

अक्षर-वि० [सं०] शीहीन, विवर्ण; मायहीन ।

अक्ष-पु० [सं०] अक्ष । —**कला-स्त्री०** अक्षविदु । —**पात-पु०** आँख गिरना, रौना । —**मुख-वि०** रुओसा; एकाएक रो पड़नेवाला ।

अक्षर-वि० [सं०] न सुना हुआ; विद्याहीन, अशिक्षित; अवैदिक । —**पूर्व-वि०** पहले न सुना हुआ; अक्षर ।

अक्षर-वि० [सं०] कर्णहीन । स्त्री० न सुनना; विमृष्टि ।

अक्षर-वि० [सं०] बेवैदिक न जाननेवाला; ध्यान न देनेवाला; याद न रखनेवाला ।

अक्षर-पु० [सं०] गुराई; अकल्याण; दुःख । वि० निकम्मा; हीनतर; अव्यवहारक ।

अक्षर-वि० [सं०] अवैदिक, अवैदिक ।

अक्षर-वि० [सं०] प्रशस्तके अयोग्य; निष ।

अक्षर-वि० [सं०] केवलरहित, जिसमें एकाधिक अर्थ न निकलते हो; अमरुक्त; असंगत ।

अक्षर-वि० [सं०] भदा; द्राव्य; गदा; लज्जा, घृणा या अमंगलकी व्यंजना करनेवाला ।

अक्षर-स्त्री० [सं०] भदापन; द्राव्यता; रचनामें अक्षर शब्दोंका प्रयोग ।

अक्षर-वि० [सं०] केवलरहित, जिसमें दुःखार्थ अर्थ न हो ।

अक्षर-स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र । —**अक्ष-भू-पु०** केतु ग्रह ।

अक्षर-वि० [सं०] अभागा; अक्षुभ; असीम । पु० मृत्यु; क्षेत्र; आग रखनेकी जगह; हठ, मर्यादा ।

अक्षर-पु० [सं०] घोड़ा; ७ की मर्यादा (मृगंके रथके घोड़ोंकी मर्यादा सात मानी गयी है) । —**कदा-कदिका-स्त्री०** अक्षरगथा । —**कर्ण-कर्णक-पु०** एक नरहवा झाल वृक्ष; घोड़ेका कान; अग्निभगका एक प्रकार । —**कुटी-स्त्री०** गुडसाल । —**कुशल-कोविद-वि०** घोड़ोंकी मधाने, मिष्ठानेमें कुशल । —**कैट-पु०** एक नरहवा पक्षी; देव-ताम्रोंकी सेनाका एक नायक । —**क्रांता-स्त्री०** सगीनेमें एक मूच्छंता । —**खर-पु०** खर । —**खुर-पु०** घोड़ेका खुर ।

एक सुगन्धिद्रव्य, नखी । —**खुर-खुरी-स्त्री०** अक्षरगथा ।

गंथा-स्त्री० अक्षरगथा । —**गति-स्त्री०** घोड़ेका कदम; एक वृत्त; चित्रकाम्यका एक चक्र । —**गोपुग-पु०** घोड़ोंकी जोड़ी । —**गोष्ट-पु०** अक्षर । —**ग्रीव-पु०** हयम्रीतनामका दानव; विष्णुका एक अवतार । —**झ-पु०** करंभीर पुष्प, कनेर । —**चक्र-पु०** घोड़ोंका समूह, एक तरहका पहिया; घोड़ोंके चिह्नोसं झुआभुका विचार । —**चिकित्सा-स्त्री०** पशुचिकित्साशास्त्र । —**चक्र-स्त्री०** गोखर । —**चूत-पु०** पुत्रवार दूत । —**नाथ-पु०** घोड़ोंका चरवाहा । —**निर्ब-वि०** —**पाल-पालक-रक्ष-पु०** सारंसे । —**पति-पु०** पुत्रमवार; घोड़ोंका मालिक; भरतके मामा । —**पुच्छी-स्त्री०** माघपणी । —**बंध-पु०** एक चित्रकाम्य; सारंसे ।

—**बला-स्त्री०** मेथी । —**बाल-पु०** काश । —**भा-स्त्री०**

विजली।-मार, -मारक, -हंता (ह) -पुं करवीर, कनेर।
 -माल-पुं एक तरहका साँप।-मुख-पुं किन्नर,
 गंधर्व।-मेघ-पुं एक प्रसिद्ध वैदिक यज्ञ जिसे कोई
 चक्रवर्ती राजा या सम्राट् ही कर सकता था और जिसमें
 सभी देशोंका भ्रमण करके लौटनेवाले घोड़ेको मारकर उसकी
 चर्बासे हवन किया जाता था; एक तान जिसमें घड़न स्वर
 नहीं लगता।-मेघिक-वि० अश्वमेधके संबंध रखनेवाला।
 पु० अश्वमेधके योग्य घोड़ा; महाभारतका चौदहवाँ पर्व।
 -मेघीय-वि० अश्वमेध-संबंधी। पु० अश्वमेधके योग्य।
 घोड़ा।-मुहू(ज्)-वि० जिसमें घोड़ा जुता हो (रथ);
 अधिनी नक्षत्रमें उत्पन्न। स्त्री० अधिनी नक्षत्र; आश्विन
 मास।-मूष-पुं अश्वमेधके घोड़ेकी बाँधनेका छुंटा।
 -मोग-पुं घोड़ेकी रथारिमें जोतना; घोड़ेकी तरह
 नेजोते पहुँचना।-रोधक-पुं कनेर।-लक्षण-पुं
 घोड़ेके भले-बुरे लक्षण।-ललित-पुं एक हस्त।-लाला-
 स्त्री० एक तरहका साँप।-वक्त्र-पुं किन्नर, गंधर्व।-बह,
 -बाह, -बाहक-पुं पुत्रमवार।-बार, -बारक-
 पुं पुत्रसवार; सारंग।-विद्व-वि० दे० 'अश्वोविद्व'।
 पुं राजा नर।-मूह-पुं पुत्रमवार सेनाको सामने
 और अगल-बगल रखकर रत्ना हुआ ब्यूह।-शंकु-पुं
 घोड़ा बाधनेका छुंटा।-शक, -शकुन्-पुं घोड़ेकी लीट।
 -शाला-स्त्री० पुत्रमाल।-शास्त्र-पुं घोड़ेके शुभाशुभ
 लक्षण बता देनेवाला शास्त्र, शालिहोत्र।-साद, -सादी-
 (दिन्)-पुं पुत्रमवार।-हृदय-पुं घोड़ेका चिकित्सा-
 शास्त्र, पुत्रसवारी।

अश्वक-पुं [म०] छोटा घोड़ा; ल्वागरिस घोड़ा; घोड़ा।
 अश्वकिनी-स्त्री० [म०] अधिनी नक्षत्र।
 अश्वतर-पुं [म०] सखर; एक मर्परात्र; एक गंधर्ववर्ग।
 अश्वध-पुं [म०] पीपल, पीपल्का गोत्रा; पीपलमें फल
 लगनेका समय, मृगका एक नाम; अधिनी नक्षत्र।
 अश्वत्था-स्त्री० [म०] आश्विन पूर्णिमा (जिस मासमें पीपलके
 फल पकते हैं)।

अश्वधाम-वि० [स०] घोड़ोंकी नयी शक्तिवाला।
 अश्वधामा(मन्)-पुं [म०] महाभारतमें कौरवपक्षका
 एक महारथी, द्रोणाचार्यका पुत्र; महाभारतमें हत एक
 हाथी।

अश्वधी-स्त्री० [स०] छोटा पीपल; पीपलकी शड़का एक
 छोटा पेड़।

अश्वल-पुं [म०] एक गोत्रकार ऋषि।

अश्वलन, अश्वलनिक-वि० [स०] आजमें ही संबंध रखने-
 वाला; अगले दिनके खानेका ठिकाना न रखनेवाला।

अश्वारोह-पुं [स०] कनेर।

अश्वारु-पुं [स०] देवमर्ष नामक पौधा; घोड़ेकी आँख।

अश्वजनी-स्त्री० [म०] चातुर्क।

अश्वध्वज-पुं [स०] पुत्रसवार सेनाका नायक।

अश्वानीक-स्त्री० [स०] पुत्रसवार सेना, रिसाला।

अश्वामुहूर्त-पुं [म०] अश्व-चिकित्सा-शास्त्र।

अश्वारि-पुं [स०] भैंसा; कनेर।

अश्वारुह, अश्वारोही(हिन्)-वि० [म०] जो घोड़ेपर
 सवार हो।

अश्वारोह-वि० [स०] दे० 'अश्वारुह'। पुं पुत्रसवार;
 पुत्रसवारी।

अश्वारोहक-पुं [स०] असंग।

अश्विनी-स्त्री० [स०] घोड़ी; २७ नक्षत्रोंमेंसे पहला नक्षत्र;
 जयमासी।-कुमार, -पुत्र, -सुत-पुं सूर्यकी पत्नी
 प्रभाके घोड़ीका रूप ग्रहण कर लेनेपर उससे उत्पन्न दो पुत्र
 जो देवताओंके वैध माने जाते हैं, स्वर्ध्व।

अश्विपुत्र-पुं [स०] दो कल्पित देवता जो किसी-किसी-
 के मतसे अधिनीकुमार भी माने जाते हैं।

अश्वीय-वि० [स०] अश्व-संबंधी; घोड़ेके छिप हितकर।

अश्वक्षीण-वि० [स०] जिसे दोहे अलगाव तीसरेने न देखा
 या जाना हो। पुं गुप्त भेद; दो आश्वियोंके बीचकी
 भ्रमणा।

अषाढ-पुं [स०] दे० 'आषाढ'।

अषाढक-पुं [म०] आषाढ मास।

अष्ट(इ)-पुं [म०] आठकी सख्या। वि० ७में १ अधिक या
 ९ में १ कम, आठ।-कमल-पुं हठयोगमें मूलाधारसे
 मस्तकतक माने गये आठ चक्र।-कूर्ण-पुं ब्रह्मा।-
 कुल-पुं पुराणोंमें बताये गये मर्त्यके आठ कुल।-
 कृष्ण-पुं बल्लभ-संपरायमें माने गये कृष्णके आठ
 रूप-श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मधुरानाथ, विट्ठलनाथ,
 द्वारकानाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।-
 कोण-वि० अठकोना, अठपहाल।-गंध-पुं पूजनमें
 व्यवहृत आठ मुगधिन वस्तुओंका समूह, गंधाष्टक।-छाप-
 [हि०] गोमार्ग विट्ठलनाथजी द्वारा स्थापित आठ कवियों-
 का दल, जिनके नाम ये हैं-सरदास, कुंभनदास, परमा-
 नदास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्गुंज-
 दास, नंददास।-ताल-पुं संगीतके आठ ताल।-बृह-
 वि० अठपहला, अठकोना। पुं आठ दलोंका कमल।
 -द्रव्य-पुं चरकी सामग्रियोंके आठ द्रव्य-पीपल, गूलर,
 पाकड़, बरगद, तिल, सरसों, रायस और हल।-धात्री-
 वि० [हि०] जिसके माता-पिताका ठीक पता न हो, वर्ण-
 संकर।-धातु-स्त्री० आठ मुख्य धातुएँ-मीना, चाँदी,
 तँबा, रौंदा, जस्ता, सोना, लोहा और पारा।-नायिका-
 स्त्री० दुर्गाकी ये आठ शक्तियाँ-उग्रचंडा, प्रचंडा,
 चंडीमा, चंडनायिका, अतिचंडा, चामुंडा, चंडा, चरुवती।
 -पद्म-पुं आठ दलोंका कमल।-पद्म-वि० आठ पैरों-
 वाला। पुं मकड़ा; कीड़ा; शरभ; मिटकिनी; विसात;
 सोना; कैलास।-पद्मी-स्त्री० एक छंद; एक प्रकारका
 गीत; एक तरहकी चमेली; बेलका फूल और पौधा।-पाद-
 वि० आठ पैरोंवाला। पुं शरभ; मकड़ा।-प्रकृति-
 स्त्री० राज्यके आठ प्रधान कर्मचारी-सुमंत्र, पंडित, मंत्री,
 प्रधान, सचिव, अमाल, प्राद्विवाक और प्रतिनिधि,
 अथवा आठ अंग-राजा, राष्ट्र, नीत्यार, दुर्ग, बल (सेना),
 कोष, सामंत और प्रजा (नौ शां०)।-प्रधान-पुं
 आठ प्रकारके मंत्री-प्रधान, अमात्य, सचिव, मंत्री, धर्म-
 पाल, न्यायशास्त्री, वैद्य और सेनापति।-मुञ्जा, -मुञ्जी
 स्त्री० दुर्गा।-मृग-पुं सिंह, हज, हाथी, कलश, पंखा,
 वैजयंती, भेरी और दीपक-ये आठ अथवा-माक्षण, गाय,
 अग्नि, सोना, धौ, सूर्य, जल और राजा (जो मांगलिक

माने जाते हैं)।—**मुष्टि**-**खी**—एक माप, कुट्टव।—**भूर्ति**—**पु**—शिव (धृति, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्र और कविवक्त्र-इन आठ रूपोंवाले)।—**लोह**,—**लोहक**—**पु**—**दं**—“अष्टमातृ”।—**वर्ण**—**पु**—शुभाशुभ जाननेवाला एक कव; वर्णमालाकी आठ वर्ण; आयुर्वेदज्ञ जाननेवाली औषधियों-का समूह—जीवक, कृपमक, मेदा, महमेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, कडि और बुद्धि; नीतिशास्त्रानुसार राज्यके अंगभूत कृषि, वस्त्र, दुर्ग, सेतु, हस्तितन्त्र, खान, कूर-प्रणय तथा मैत्र्यवस्था।—**वर्षा**—**खी**—आठ वर्षकी कन्या।—**अवषण**—**अवषा(स्)**—**पु**—ब्रह्मा।—**सिद्धि**—**खी**—योगसिद्धिसे मिलनेवाली आठ सिद्धियाँ या अलौकिक शक्तियाँ—अग्निमा, महिमा, गरिमा, लप्तिमा, प्राप्ति, प्रकाश, हेतुत्व और वसिष्ठ।

अष्टक—पु० [म०] आठ वस्तुओंका समूह या योग; आठ ऋषियोंका एक गण; विश्वामित्रका एक पुत्र; अष्टाध्यायी (व्या०) ।

अष्टका—श्वी० [म०] अष्टमी; अगहन, प०, माघ और
फागुनकी कृष्णाष्टमी; अष्टमीको किया जानेवाला यज्ञ
या आद ।

अष्टम, अष्टमक-वि० [म०] आठवों ।

अहमिका-स्त्री० [म०] चार तोल्लेका एक परिमाण ।

अष्टमी-श्वी० [म०] मित या अमिन पक्षमी आठवी तिथि,
क्षीरफाकोली ।

अष्टांग-वि० [स०] जिसके आठ अंग या भाग हों। पु०
शरीरके वे आठ अंग जिनमें मांस, प्रथम किया जाना
है-दुग्धा, हाथ, पाँव, छाती, मिर, वयन, दृष्टि और
बुद्धि। -**मार्ग**-वि० बुद्ध द्वारा उपदिष्ट धर्मनिरुक्तका
आठ अंगोंवाला मार्ग-सम्यग्दृष्टि, सम्यक्चर्य, सम्यक्साध, सम्यक्ज्ज्ञम,
सम्यक्प्रज्ञ, सम्यगाजीव, सम्यक्वायाम, सम्यकब्रह्मचर्य और
सम्यक्समाधि। -**योग**-वि० योगिके आठ अंग-यम,
नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और
समाधि।

अष्टांगसुखेद-पु० [म०] आयुर्वेदके आठ अंग या विभाग—
शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य,
अगदनीत्र, रसायनतन्त्र और बाजीकरण ।

अष्टाक्षर-वि० [म०] आठ अक्षरोंवाला । पु० '५० नमो नारायणाय' मन्त्र ।

अष्टादश-वि० [मं०] अट्टारह ।

अष्टाध्यायी-सू० [स०] पाणिनिवृत्त व्याकरण-ग्रन्थ ।

अष्टाध्यायी(यिन)-वि० [म०] आठ अध्यायोंवाला ।

अष्टावक्र-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध कृति । वि० जिम्मेके आर
अग देते हैं; कुरूप । -गीता-स्त्री० अष्टावक्र कृति-रचित
तत्त्वज्ञानका एक प्रमुख ग्रंथ ।

अष्टि—खी० [म०] १६ मात्राओंका एक छन्द; सोलहवीं संख्या; बीज; गिरी ।

अष्टी-स्त्री० [म०] एक रागिनी ।

अष्टीला-पू० [मं०] एक रोग त्रिमयें नाभिके नीचे स्थित हो जाता है, गुर्दे की एक बीमारी, गिरा; वीर्य; पत्थरवाली गोली।

अष्टीलिका-स्त्री० [म०] एक तरहका व्रण; पत्थर ।

असंक०-वि० द्वे० 'असंक' ।

असंका-स्त्री० द्वे० 'आशंका' ।

असंकुल-वि० [सं०] जहाँ भीड़ न हो, खुला हुआ; चौड़ा ।
 पु० चौड़ी सड़क ।

असंक्रांत-वि० [स०] जिसका भ्रमण न हुआ हो, जो एक क्षेत्रने दूसरेमें न गया हो । पु० अधिक मात्र ।

असं कृतिमास—पु० [म०] वह महीना जिसमें संक्रांति न पड़े, अधिक मास, मलमास ।

असंख्य-वि० दे० 'अमर्य' ।

असंख्य, असंख्यक, असंख्यात - वि० [३०] अगणित, बे-
हिम्माब, बे-शुमार ।

असंख्ये १-वि० [म०] अगणित, बेशुमार । पु० शिव; विष्णु;
बहुल वशी मर्यादा ।

असंग-वि० [म०] अनात्मक, बंधनरहित, निर्लिप्त; भवेत्ता, अवाधिग। पु० अनात्मक। पुरुष, आत्मा (मा०)। -चारी (वि०)-वि० अनियन्त्रित रूपसे विचरण करनेवाला।

असंगत-वि० [सं०] वे-मेल, असदृश, प्रसंगविरुद्ध; अनु-
चित, अयुक्त असमान; उजड़ ।

अमंगलि—खो [मं०] मेलका न होना; अनौचित्य; अथाकारका एक भेद जिसमें काय-कारण, देश-काल मन्धी अमंगलि (अन्यथात्व) का वर्णन किया जाय-कार्य कहा, कारण कभी दिखाया जाय ।

असंगम—पु० [म०] अनामन्ति; मेल या मन्थका अभाव;
पार्थक्य; अग्रामजग्य । वि० अयुक्त, पृथक् ।

असंख्य—वि० [म०] सभारतान, तिम्ले, पाग आवश्यक
वस्तुन मौजूद न हों । पु० सख्य या सभाका अभाव ।

अमंश्चयिक, अमंश्चयी (यिन) - वि० [म०] मन्थन कान्ते-
वाला ।

अभ्यंकर-पु० [म०] वह जो गमनागमनके लिए गुला मार्ग नहीं है ।

असंख्य-वि० [म०] जो स्था न हो, अनाद्यन ।

असंज्ञ-वि० [म०] भगवद्गीता ।

असंज्ञा-स्त्री० [म०] अस्वामवन्त्य, नाम नहा ।

असंज्वर-वि० [म०] जिमें क्रोध, शोकदि न हों ।

अस्यंत-वि० अस्मात्, खल ।

अम्यंतनि, अम्यंतान-वि० [म०] मयानरहित, भावद ।

अस्यंनष्ट-प० [म०] अनुम, अप्रमत्त ।

असंतोष—पु० [म०] अनभि, अप्रसन्नता, नाग वगीः श्वेसम्भी, लोभ ।

असतोषी(पिन) - वि० [म०] मनुष्य न होनेवाला. वैश्यः
लोभी ।

असंदिग्ध-वि० [सि०] मटेहरहिनः निश्चित, पक्का ।

असंखि-वि० [मं०] त्रिनका योग न हुआ हो (शब्द);
अवद्ध, स्वनत्र । स्त्री० सधिका प्रभाव ।

अमंपसि-वि० [म०] निर्धनः; आग्रहीनः । स्त्री० निर्धनताः
दुर्भाग्यः; अमपलता ।

असंपर्क—पृ० [म०] मध्य-लगावका न होना । वि० संपर्क-
हीन, सर्ववर्णीन ।

असंपूर्ण—वि० [स०] अपूर्ण, अग्न्यमाप्त, अधरा ।

अभ्यं प्रज्ञात-वि० [मं०] सम्यक्, प्रकाशमे न नाना तश्चा ।

-**ज्ञमाधि**-**खी०** वह समाधि जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञानका भेद नहीं रह जाता, निर्विकल्प समाधि ।
असंबन्ध-**वि०** [स०] दे० 'असंबन्ध' । पु० संबंधका अभाव ।
असंबन्ध-**वि०** [स०] संबंधहीन; बे-मेल; बे-लगाव; असंगत, बे-तुका । -**प्रकाश**-**पु०** बे-तुकी बकवास ।
असंबाध-**वि०** [स०] सबंधी नहीं; चौड़ा; सुनमान; खुला हुआ; सावकाश; कष्टरहित ।
असंबाधा-**खी०** [स०] एक वर्णवृत्त ।
असंभव-**वि०** [स०] न होने या हो सकनेवाला, नास्त्य-
 क्त । पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें यह दिखाया
 जाय कि जो बात हो गयी उमका होना असंभव या
 अनस्तित्व; असंभावना; असाधारण घटना ।
असंभव्य, **असंभावी**(**विद्**)-**वि०** [स०] दे० 'असंभव' ।
असंभार-**पु०** [स०] आवश्यक वस्तुओं या सहायका प्रस्तुत
 न रहना । **वि०** जिसके पास आवश्यक वस्तुएँ प्रस्तुत न
 हों; बिना सहायका; * जो समाला न जा सके; विशाल,
 अपार ।
असंभावना-**खी०** [स०] संभावनाका न होना; होने योग्य
 न होना; अशक्यता ।
असंभावनीय, **असंभाष्य**-**वि०** [स०] दुर्बोध; असंभव ।
असंभाषित-**वि०** [स०] जिसकी संभावना न रही हो;
 असंभव ।
असंभाव्य-**वि०** [स०] न कहने योग्य; वातांशपन करने
 योग्य । पु० कुप-जन ।
असंभूति-**खी०** [स०] अविसमानता, पुनर्जन्म न होना,
 अयाकृत प्रकृति ।
असंभूत-**वि०** [स०] प्राकृतिक, अकृत्रिम; जिसका पोषण
 मनुष्यरूप में न हुआ हो ।
असंभोज्य-**वि०** [स०] जिसके साथ भोजन उचित न हो ।
असंभ्रम-**वि०** [स०] उतावली या अयाकुलतासे रहित,
 शांत । पु० धीरता, शांति ।
असंघत-**वि०** [स०] मध्यमगति, अनियमित; बंधनहीन ।
असंयम-**पु०** [स०] गत्यका अभाव, मन, इन्द्रिय आदिकी
 बधामे न रचना, विलासिता ।
असंयुक्त-**वि०** [स०] बिलग, न जुड़ा हुआ, जुदा ।
असंयुत-**वि०** [स०] न मिलाया हुआ, अमिश्र । पु० विष्णु ।
असंयोग-**पु०** [स०] योग या मेल न होना । **वि०** जिसके
 साथ संबंध निषिद्ध है ।
असंरोध-**पु०** [स०] अक्षति, क्षति का अभाव ।
असंलक्ष्य-**वि०** [स०] जो लक्षित न हो सके, अवोधगम्य ।
असंभूत-**वि०** [स०] जो दया न हो, खला हुआ । पु० एक
 नरक ।
असंभव्यवहित-**वि०** [स०] अवकाशरहित, व्यवधानरहित ।
असंशय-**पु०** [स०] मशयका अभाव, भ्रम, शकका न
 होना । **वि०** सशयशून्य, शंकाहरित ।
असंभव-**वि०** [स०] जो सुनाई न दे ।
असंश्लिष्ट-**वि०** [स०] असंयुक्त । पु० शिव ।
असंसक्त-**वि०** [स०] अनासक्त; विभक्त ।
असंसक्ति-**खी०** [स०] अनासक्ति; विरक्ति; स्वयंका अभाव ।
असंसारी(**रिन्**)-**वि०** [स०] जिसका स्मरणसे कोई संबंध

न हो, निरक्त ।
असंसृति-**खी०** [स०] पुनर्जन्म न होना, मोक्ष ।
असंसृष्ट-**वि०** [स०] जो दूसरेसे सदा या मिला न हो;
 साथ न रहनेवाला ।
असंसृष्ट-**वि०** [स०] संस्कारहीन, जिसका कोई संस्कार
 न हुआ हो; जो संवारा-सुधारा न गया हो; अमन्य;
 व्याकरण-विरक्त ।
असंस्तुत-**वि०** [स०] अज्ञात, अप्रसिद्ध; विविध; सामं-
 जस्यरहित ।
असंस्थान-**पु०** [स०] अव्यवस्था; संबंध न होना; अभाव ।
असंस्थित-**वि०** [स०] अव्यवस्थित, क्रमरहित; असंगृहीत;
 चल ।
असंस्थिति-**खी०** [स०] क्रम या व्यवस्थाका अभाव ।
असंहत-**वि०** [स०] असंयुक्त, ढीला; बिखरा हुआ । पु०
 पुष्प या आत्मा (मा०); एक तरहकी व्यूहरचना । -**ध्वज**-
 पु० छोटे-छोटे समूहोंमें सेनाकी पृथक्-पृथक् स्थित करना ।
असं-**वि०** ऐसा, जैसा, समान, तुल्य ।
असंक्षान्ता-**अ०** [स०] आलस्य अनुभव करना ।
असंक्षान्ता-**पु०** रेतकी तरहका एक औजार ।
असंकल-**वि०** [स०] प्रसपूर्ण ।
असक्त-**वि०** [स०] आसक्तिरहित, बे-लगाव; उदासीन ।
 * अशक्त, दुर्बल ।
असंकार्य-**पु०** [स०] वह भूमि जिसमें अल्प अमल
 अन्न उत्पन्न हो; थोड़े परिश्रम और स्वल्प कृष्टिसे संपन्न
 होनेवाली उपज ।
असंक्षय-**वि०** [स०] जिसे ज्यों न हों ।
असंगंध-**पु०** एक पौधा जिसकी सब दवाके काम आती
 है, अक्षयपा ।
असंगुन-**पु०** अपसकून ।
असंगुनियाँ-**पु०** वह व्यक्ति जिसका मुह देखना अशुभ
 मानने हो ।
असंगोत्र-**वि०** [स०] भिन्न गोत्र या कुलका ।
असंछास्त्र-**पु०** [स०] अपरमकी ओर ले जानेवाला शास्त्र ।
असंजान्य-**वि०** [स०] जिसके साथ सम्बन्ध न हो ।
असंजल-**पु०** [स०] बुरा, दुष्ट आदमी ।
असंविद्या-**पु०** माँषोंका एक भेद ।
असती-**वि०** **खी०** [स०] अपवित्रता, पुश्ली ।
असत्-**वि०** [स०] अविद्यमान, जिसका अस्तित्व न हो;
 मिथ्या, बुरा; अनुचित । पु० अनस्तित्व; अहित; मिथ्यात्व ।
 -**कार्य**-**पु०** बुरा पैसा या काम । -**कृत्य**-**वि०** बुरा
 काम करनेवाला । -**ख्याति**-**खी०** मिथ्या ज्ञान । -**पथ**-
 पु० बुरा मार्ग; खराब मन्त्र । -**परिग्रह**, -**प्रतिग्रह**-
 पु० निषिद्ध व्यक्तिवाँका दिया हुआ या निषिद्ध वस्तुओंका
 दान लेना । -**पुत्र**-**पु०** पुत्रहीन मनुष्य; कपूत ।
असत्कार-**पु०** [स०] अन्याय, आचमगत न होना; अहित ।
असंस्कृत-**वि०** [स०] अनाष्टा; जिसके प्रति बुरा बर्ताव
 किया गया हो ।
असत्ता-**खी०** [स०] सत्ताका अभाव, नेस्ती; अनाधुना ।
असरव-**वि०** [स०] अशक्त, निर्बल; सस्वगुणरहित । पु०
 अक्षय; अनाधुना ।

असत्य-वि० [सं०] झूठ, मिथ्या, गलत । पु० झुठारैः झूठ बोलनेवाला व्यक्ति । -**बाह-पु०** झूठ बोलना । -**बाही-वि०** -**वि०** झूठ बोलनेवाला । -**बाीक-वि०** जिसकी झूठ बोलनेकी ओर प्रवृत्ति हो । -**संघ-वि०** धोखा देनेवाला, कमीना । -**सक्षिप्त-वि०** असत्य जैसा, असत्यवत् ।

असत्यता-स्त्री [सं०] झुठारैः ।

असत्-* 'अमत्'का समासगत रूप । -**आगम-पु०** धर्म-विरुद्ध शास्त्र; अनुचित साधनोंसे धन प्राप्त करना; दुरा साधन । -**आचार-पु०** धर्म, नीति-विरुद्ध आचरण, अधर्म । -**कुत्रि-वि०** मूलं । -**भाव-पु०** अस्तित्वका अभाव, अनुपस्थिति; दुरी भावना; दुरा स्वभाव; नव्य न्यायानुसार एक दोष । -**बाह-पु०** सत्ताकी कोई वस्तु न माननेका सिद्धांत । -**दृष्टि-वि०** दुराचारी, दुष्ट, बद-माश । स्त्री० दुष्टता; राठता । -**व्यवहार-वि०**, पु० दे० 'असद्वृत्ति' ।

असदृश-वि० [सं०] असमान; अयोग्य, अनुचित ।

असन-* पु० भोजन; [सं०] फेंकना, छोड़ना, चलाना (वाणारि); पीतशाल नामक वृक्ष । -**पर्णी-स्त्री** सातल नामक वृक्ष ।

असना-पु० वृक्षविशेष ।

असनाज-* पु० ज्ञान, महाना ।

असन्न-वि० [सं०] जो हविधार न बंधि हो या तैयार न हो; धमकी; पक्षितमम्य ।

असत्किर्त्त-* पु० [सं०] निकट न होना; (किसी वस्तुको) दूर होना ।

असत्स्थान-पु० **असत्स्थि-स्त्री** [सं०] अनुपस्थिति; दूर होनेकी स्थिति; अभाव ।

असत्स्थिति-वि० [सं०] दूरवर्ती; गलत तरीकेसे रखा हुआ ।

असपन्न-वि० [सं०] शत्रुपहित; अशत्रु । [स्त्री० 'असपत्नी' - (बहू स्त्री) जिसके सीत न हो ।]

असर्पिः-वि० [सं०] जो अपने कुलका या कुलमें सात पीढ़ियोंके अंदर न हो ।

असफल-वि० [सं०] विफल, नाकामयाव ।

असफलता-स्त्री [सं०] विफलता ।

असवर्ग-* पु० एक धातु जो देशम रंगनेके काममें आती है ।

असबाह-पु० [अ०] ('संव'का बहु०) कारण; आवश्यक सामग्री; चीज-वस्तु; मुसलमानोंके साथका सामान ।

असभ्य-वि० [सं०] समाजके अयोग्य; अशिष्ट; गंवार; सामाजिक व्यवस्थामें पिछड़ा हुआ; जगली ।

असभ्यता-स्त्री [सं०] अशिष्टता; गंवारपन; वंगलीपन ।

असमंजस-वि० [सं०] अस्पष्ट; अलुल, अमग्न; मूर्खतापूर्ण; अनुचित । पु० दुविधा; कठिनाई; अनौचित्य; अंतर; महाराज सगरका ज्येष्ठ पुत्र, अंशुमानका पिता ।

असमंत-* पु० चुल्हा ।

असम-वि० [सं०] जो बराबर न हो; असदृश; बे-जोड़, विषम; ताक; ऊँचा-नीचा, नाहमबरा । पु० अर्थात्कारका एक भेद जिसमें उपमानका मिलना अनेकव दिखलाया जाय, जैसे - 'मालति सम सुंदर कुसुम इंदु मिळिंदे नाहि'; दुष्ट । -**नवन-*, नेत्र-*, लोचन-पु०** तीन आँखोंवाले शिव । -**बाण-पु०** कामदेव । -**बृह-पु०** बह वर्णवृष्ट

जिसके सब चरणोंमें समान गण न हों, विषमवृष्ट ।

-**शर-*, सायक-पु०** कामदेव, पंचशर ।

असमग्र-वि० [सं०] अस्पृष्ट, असफल ।

असमस्त-स्त्री [अ०] पवित्रता, निष्पापता; सतीत्व ।

-**क्रोश-वि०** व्यभिचारीणी । -**क्रोशी-स्त्री** सतीत्व-विक्रम, व्यभिचार ।

असमन-वि० [सं०] विभिन्न रंगों या मतीवाला; विभिन्न मार्गीपर जानेवाला; असम, विषम ।

असमय-पु० [सं०] समयका उलटा; अयोग्य काल, कुसमय । अ० बे-जक्त, बे-गोके ।

असमर्थ-वि० [सं०] अशक्त, दुर्बल; अपेक्षित शक्ति या योग्यता न रखनेवाला; अभीष्ट अर्थ व्यक्त न कर सकनेवाला । -**पद्-पु०** अभिमत अर्थ प्रकट करनेमें असमर्थ शब्द । -**समास-पु०** अन्वयदोष-युक्त समास ('अप्राङ्-भोजी' और 'अस्यपदया'में 'अ'का अन्वय 'आद्' और 'स्य'के साथ न करके 'भोजी' और 'पदया'के साथ करना होता है) ।

असमवायी (विद्य-*)-वि० [सं०] जो सहज या अविच्छेद्य न हो, आनुषंगिक, समवाय-मंथन न रखनेवाला । -**(वि)-कारण-पु०** कार्य-कारणका अनित्य संबंध ।

असमस्त-वि० [सं०] जो पूरा या कुल न हो, असमग्र; आंशिक; जो एकत्र न किया गया हो; समावर्तित; असक्षिप्त, विस्तृत ।

असमान-वि० [सं०] जो बराबर न हो, असदृश । * पु० आकाश ।

असमास-वि० [सं०] अपूर्ण, नागमाम, अचूरा ।

असमावर्तक, असमावृत्त, असमावृत्तक, असमावृत्तिक-वि० [सं०] जिस (विचारों)का समावर्तन-संस्कार न हुआ हो, जिसका वेदाध्ययन समाप्त न हुआ हो ।

असमाहार-पु० [सं०] अमयोग, पार्थक्य; किसी वस्तुकी अप्राप्ति ।

असमाहित-वि० [सं०] जिसका चित्त एकाग्र न हो; अलिख ।

असमीचीन-वि० [सं०] अयुक्त, अनुचित ।

असमेध-* पु० दे० 'अधमेध' ।

असम्मत्-वि० [सं०] मतभेद रखनेवाला, विरुद्ध, अनाह्न; अस्वीकृत, नामजूर । पु० शत्रु, विरोध करनेवाला ।

असम्मति-स्त्री [सं०] मतभेद; अस्वीकृति; विकर्षण; अमन्मान, निरादर ।

असम्मान-पु० [सं०] निरादर ।

असम्मिन्न-वि० [सं०] अपरिमित, बहुत अधिक ।

असयाना-* वि० अचनूर, सीधा, मोला ।

असर-पु० [अ०] खोज; पदचिह्न, खंडहर; छाप, प्रभाव; गुण; दबाव; फल; दे० 'अस' [अ०] ।

असराह-पु० [अ०] भेद; रहस्य ('सिर'का बहु०) । * अ० लगाना ।

असरु-पु० [सं०] कुकुरमुत्ता नामक पौधा जो दवाके काम आता है ।

असल-पु० [सं०] लोहा; अक्ष; एक मंत्र जिसका अक्ष चरुतो समय प्रयोग किया जाता था; † एक क्षात्र जिसकी

छालसे चमड़ा सिझाते हैं। वि० [अ०] दे० 'अस्ल'।
असहिबत-स्त्री० [अ०] असल बात, वास्तविकता; जह; मूल तत्व।
असली-वि० मन्बा, शुद्ध; खालिस। पु० [अ०] शहर।
असलेख*-वि० दे० 'असख'।
असवर्ण-वि० [मं०] निच वर्ण या जातिका।
असवारी-पु० दे० 'सवार'।
असवारी-स्त्री० दे० 'सवारी'।
असह-वि० [सं०] असहिष्णु, न सहनेवाला; अधीर। पु० सीनेके बीचका हिस्सा।
असहकार-पु० [सं०] दे० 'असहयोग'।
असहन-वि० [सं०] सहन न करनेवाला, असहिष्णु; ईर्ष्या; न टिकनेवाला। पु० शत्रु; असहिष्णुता; प्रपीरता।
असील-वि० असहिष्णु, चिड़चिड़ा, क्रोधी।
असहनीय, **असहितव्य**-वि० [सं०] दे० 'असख'।
असहयोग-पु० [सं०] सहयोगका अभाव या उलटा; मिलकर या साथ काम न करना; सरकारमे या शासनकार्यमें सहयोग न करना। -बाद-पु० असहयोग द्वारा सरकार पर दबाव डालनेका सिद्धांत। -बादी (वि०)-वि० असहयोगवादी माननेवाला।
असहाय-वि० [सं०] जिसका कोई साथी, सहायक न हो, निराश्रय, बे-सहारा; निरप्राय।
असहिष्णु-वि० [सं०] बर्तावन न करनेवाला, चिड़चिड़ा, क्रोधी, झगड़ान्।
असह्य*-वि० जो दूसरेकी बढनी न देख सकें, अदेखी। स्त्री० ककही या कर्धोका पौधा।
असह्य-वि० [सं०] न सहने लायक, असहनीय। -ब्यूह-पु० वह ब्यूह जिसके दोनों पक्ष फैला दिये गये हों।
असाँच*-वि० अम्ल, झट।
असाँझ-वि० [सं०] बिरल, जो घना न हो।
असाँझ-वि० [सं०] अयोग्य, अनुचित; अमामयिक; कर्म-मान कालका नष्ट।
असाँझाधिक-वि० [सं०] जिसका किसी मंत्रदायमे संबंध न हो; परंपराविगड।
असा-पु० [अ०] डहा, मोटा; चाँदी या सोना मटा हुआ मोटा। -अ-शाही-पु० राजदंड। -बदवार-पु० राजा, दूल्हे आदिकी सवारीकी आगे-आगे असा लेकर चलनेवाला।
असाह*-वि० अश, मूर्ख।
असाक्षिक-वि० [सं०] जिसका कोई साक्षी न हो; जिसकी तसदीक न हुई हो; जिसका कोई अधिष्ठाता न हो।
असाक्षी (क्षिन्)-वि० [सं०] जो चरमदीन गबाह न हो; गबाह बननेके अयोग्य।
असाक्ष्य-पु० [सं०] गबाहका न होना।
असाक्षा*-सर्व० हमारा-‘आर्नैद-जीवन ज्या न असावी ज्यारिया’-घन०।
असाद-पु० आधा मास।
असादा-पु० रेशमका बटा हुआ तागा; एक तरहकी कच्ची चीनी।
असादी-वि० असादका। स्त्री० असादमें बोधी जानेवाली फमल; आधादकी पूर्णमा।

असाद*-पु० मोटी सिली, मोट (?)।
असाराम्य-वि० [सं०] असाराम्यकर; (वह आहार) जो स्वास्थ्यके अनुकूल न पड़े।
असाध*-वि० असाध्य; असाधु।
असाधन-वि० [सं०] साधनहीन। पु० साधन या सिद्धि न होना।
असाधारण-वि० [सं०] जो साधारण, आम न हो, खास, विशेष; साधारणसे अधिक, गैरमामूली। पु० एक हेन्वाभास; विशेषता; विशेष संपत्ति। -धर्म-पु० साधारण धर्मकी बाद कर देनेपर बच रहनेवाला धर्म, वस्तुका मुख्य धर्म, विशेषता।
असाधित-वि० [सं०] असिद्ध।
असाधु-वि० [सं०] खल, दुष्ट; असदाचारी; खोटा; अमा-मायिक; अस्वच्छ (शब्द)। पु० बुरा आदमी। -बुद्धा-स्त्री० पुंशक्ती।
असाध्य-वि० [सं०] जिसका साधन या सिद्धि न हो सके; अच्छा न होनेवाला, लाइलाज (रोग); अक्षय, अनि कठिन। -साधन-पु० असाध्य-न हो सकनेवाले कामकी कर लेना।
असाधी-स्त्री० [सं०] व्यभिचारीणी, अमनी।
असार्थ*-सर्व० हमको।
असामयिक-वि० [सं०] जो नियत समयपर न हो, बे-वक्त, बे-मैका।
असामर्थ्य-स्त्री० [सं०] अक्षमता, सामर्थ्यहीनता; निर्बलता।
असामान्य-वि० [सं०] असाधारण, जो औरोंमें न मिले, विशेष।
असामी-पु० [अ०] नाम; नाममूली ('इ+म'-नामका बहु०); पद; नौकरी; काशनकार; कर्जदार; माहक; मुलजिम; आदमी (लाखोंका अमासी)।
असाम्य-पु० [सं०] अगर; अस्मानता; अनुकूलता (दवा, आहारकी)।
असार-वि० [सं०] सारहीन, सत्त्वशून्य; पोला; निरर्थक, निकम्मा; बेदम। पु० एरंड; अगर; सहस्वहीन अंश। -भांड-पु० घटिया माल (कौ०)।
असार*-पु० असवार, मवार।
असालत-स्त्री० [अ०] खरापन; कुलीनता; जह।
असालतन्-अ० [अ०] स्वयम्, खुद, 'बकालतन्'का उलटा।
असाला-स्त्री० चसुर।
असावधान-वि० [सं०] जो सजग-चीकडा न हो, गाफिल, बेखबर।
असावधानता-स्त्री० [सं०] गफलत, बेखबरी।
असावधानी-स्त्री० दे० 'असावधानता'।
असावरी-स्त्री० एक रागिनी जो भैरव रागकी पत्नी मानी जाती है।
असास-पु० [अ०] माल-असबाब, चीज-वस्तु।
असि-स्त्री० [सं०] तलवार, खड्ग; भुजाली; थास; दे० 'असी'। -गंड-पु० मालके नीचे रखनेका तकिया। -जवाही-स्त्री० खड्गचालनका अभ्यास। -जीवी (वि०)-वि० तलवारसे जीविका करनेवाला, सिपाही। -ईस, -ईह, -ईहक-पु० मगर, पक्षिवाल। -चाराबत-पु०

तलवारको धारपर खड़े होने अंसा कठिन मत; पति-पत्नीका एक बिस्तरपर, किन्तु ब्रह्मचर्यके रक्षार्थ दोघमें तलवार रख कर सोना। -**चाव**, -**चावक**-पु० तलवार आदिकी सफाई करनेवाला, मिकलीगर। -**चेनु**-**खी**-छुरा; छुरी। -**पत्र**-पु० ईला, तलवारकी स्थान; एक नरक। -**पत्रक**-पु० ईला। -**पत्रवन**-पु० पुराणानुसार एक नरक जहाँके पेड़ोंके पत्ते तलवार जैसे हैं। -**पथ**-पु० आसमार्ग। -**पाणि**-वि० खड्ग धारण करनेवाला। -**पुच्छ**, -**पुच्छक**-पु० भैंस; मकुची मछली। -**पुत्रिका**, -**पुत्री**-**खी**-छुरी। -**मेद**-पु० विस्तर। -**बटि**, -**लता**-**खी**-तलवारका फल। -**हथ**-पु० खड्गयुद्ध। वि० खड्गसे बध करने योग्य। -**हेति**-पु० खड्गधारी।
असिक्क-पु० [म०] ओठ और ठुडुँके बीचका हिस्सा।
असिक्क-**खी**-**खी** [म०] युवती दासी।
असिक्की-**खी**-**खी** [म०] अन-पुरमें रहनेवाली युवती दाम्नी-चिनाब नदी; दक्षकी पत्नी; रात्रि।
असित-वि० [म०] अथेन, काला नीला। पु० काला या नीला रंग; शनि; देवल भक्ति; कृष्ण पक्ष; भय वृक्ष। -**केसा**-**खी**-काले बालोंवाली स्त्री। -**गिरि**, -**जग**-पु० नील गिरि, नीलाचल। -**ग्रीव**-पु० अक्षि। -**पक्ष**-पु० कृष्ण पक्ष। -**फल**-पु० मोठा नारियल। -**सुग**-पु० कृष्ण-सुग। -**ववन**-पु० कालववन। -**वम्मा**(**रम्मा**)-पु० अक्षि।
असितांग-पु० [म०] शिवका एक रूप। वि० काले अंगवाला।
असितांगुल-पु० [म०] नील कमल।
असिता-**खी**-**खी** [म०] नीलका पीधा; यमुना; अन-पुरकी अमितकेशा दाम्नी; दक्षपत्नी; पञ्चावकी एक नदी, रात्रि।
असिताचि(**स्**)-पु० [म०] अक्षि।
असिलोत्पल-पु० [म०] नील कमल।
असितोपल-पु० [म०] नीलम।
असिद्ध-वि० [म०] अप्रमाणित; न पका हुआ, कच्चा; अपूर्ण; अमफल; जिसे योगमिद्धि न मिली हो। पु० एक हेत्वाभास जिमें हेतु स्वयं अमिद्ध होता है।
असिद्धि-**खी**-**खी** [म०] अपूर्णता, विकल्पा; मावित न होना; स्थापनाकी अपूर्णता, कच्चापन।
असिक्क-वि० दे० 'असिक्क'।
असिस्टेंट-वि० [म०] सहायक, नायब (कर्मचारी)। -**एक्टिटर**-पु० सहायक मपादक। -**कलेक्टर**-पु० हिन्दी कलेक्टर; तहसीलदार।
असिस्टेंटी-**खी**-**खी** [म०] असिस्टेंटका पद या कार्य।
असी-**खी**-**खी** [म०] एक नदी (अथ नाला) जो काशीके दक्खिन गंगामें मिलती है।
असीन-पु० सजका पद।
असीम-वि० [म०] जिम्मेकी सीमा न हो, बे-हद, बे-हिमाब, अपार।
असीमित-वि० [म०] निम्मेकी हद न बंधी गयी हो, अपरिमित।
असीर-वि० [म०] बड़ी, केटी।
असीरी-**खी**-**खी** [म०] कैद।

असीर-वि० [म०] कुन्नीन, झुड़ रक्तवाला; शरीर, नेक; * अमल।
असीर-**खी**-**खी** आशीर्वाद।
असीरना-**म**-**म** [म०] आशीर्वाद देना।
असुद्ध-वि० [म०] अशुद्ध, जो सुद्ध न हो; अप्रशस्त।
असु-पु० [म०] प्राण, प्राण वायु; चित्त; गरमी; पानी; पलका छटा भाग; विचार; हृदय; शोक; श्रद्धा। -**त्याग**-पु० प्राणत्याग। -**धारण**-पु०, -**धारणा**-**खी**-जीवन धारण, अस्तित्व। -**नीत**-पु० समराज। -**पाद्**-पु० एक कालपरिमाण। -**भंग**-पु० प्राणनाश। -**भूत**-वि० प्राणी, जानदार (मनुष्यादि)। -**विलास**-पु० एक हस्त। -**सम**-पु० पति। वि० प्राणप्रिय।
असुकर-वि० [म०] जिमें करना कठिन हो।
असुख-वि० [म०] अप्रसन्न, दुःखी, कठिन। पु० दुःख, कष्ट। -**जीविका**-**खी**-**खी** दुःखी जीवन।
असुखी(**खिन्**)-वि० [म०] दुःखमय, शोकपूर्ण।
असुखोदय, **असुखोदक**-वि० [म०] दुःखकारक; दुःखान।
असुग-वि० [म०] पु० दे० 'असुग'।
असुचि-वि०, दे० 'असुचि'।
असुन-वि० [म०] पत्रगोन।
असुप्त-वि० [म०] जो सोया न हो, जागना हुआ।
असुभ-वि० दे० 'असुभ'।
असुमान(**मन**)-वि० [म०] दे० 'असुभ'।
असुर-पु० [म०] दैत्य मानव, गंध, राक्षस; हाथी; बाघ; खल, दुष्ट व्यक्ति; देवदार; भूमिी नमक। वि० जीवन, अपाधिव; जग या वर्णका एक विशेषण। -**गुरु**-पु० शुक्राचार्य। -**हृद्**(**ह**)-पु० देवता। -**हृद्**(**प**)-पु० विष्णु। -**राज**-पु० राजा बलि। -**रिपु**, -**मृद**-पु० विष्णु। -**विजयी**(**यिन्**)-पु० विजयकी प्राप्ति की इतने-की इच्छा करनेवाला राजा। -**मेन**-पु० व. ग्राह्य जगत्के प्रारंभ पर गया नगरीके चमनेकी बाज कही जाती है।
असुरा-**खी**-**खी** [म०] तलवार नामक पोशाक एक भद्र।
असुरा-**खी**-**खी** [म०] रात्रि, रात्रि; देवता।
असुराई-**खी**-**खी** अमरत्व, उन्मत्त।
असुराचार्य-पु० [म०] शुक्राचार्य शुक्र ग्रह।
असुराधिप-पु० [म०] राजा बलि।
असुरारि-पु० [म०] विष्णु; देवता।
असुराह-पु० [म०] कामा।
असुरी-**खी**-**खी** [म०] गंधारी, राक्षस।
असुविधा-**खी**-**खी** सुनीता न होना, अद्वय; कठिनाई।
असुख-वि० [म०] अस्वस्थ, बीमार।
असुहाती-**खी**-**खी** [म०] अक्षी न कसनेवाली, बुरी।
असुक्षण-पु० [म०] अपमान, अनदर।
असुप्त-वि० [म०] अकारमय; जिम्मेकी बारबार न सुते, अपार; निकट। **खी**-**खी** अदृग्दृष्टता।
असूत-वि० [म०] अमयद्ध।
असूतिका-वि० [म०] [म०] जिम्मेकी बंधा न जना हो; अध्या।
असूयक-वि० [म०] दुमरेके गुणमें दोष निकालनेवाला, ईर्ष्यालु; अमृतुष्ट, अप्रसन्न। पु० देखा करनेवाला व्यक्ति;

निद्रक ।

असुधा-स्त्री० [सं०] दूसरेके गुण, सुख, मष्टि आदिकी सहन न कर सकना; दूसरेके गुणमें दीध निकालना; जलन, ईर्ष्या; रोष; एक संवारी भाव ।

असुपिता(शु), **असुपु**-वि० [सं०] असुख ।

असुर्यपद्मा-वि० स्त्री० [सं०] ऐमे कबै परमें रहनेवाली कि सुर्यको भी न देख सके । स्त्री० राजमहिषी; पतिव्रता स्त्री ।

असूल-पुं० दे० 'बसूल'; 'उसूल' ।

असूक्ष्म(जु)-पुं० [सं०] रक्त; केसर; मंगल ग्रह; एक योग ।-(**क्षू**)कर-पुं० लसिका ।-**ष**-पुं० रक्तका पान करनेवाला, राक्षस ।-**पास**-पुं० रक्तपान ।-**खाव**-पुं० रक्तका खाव ।

असूर-'अमरु'का समामगत रूप ।-**ग्रह**-पुं० मंगल ग्रह ।-**दूर**-पुं० मासिक खावका अधिक मात्रामें या अनिवारि रूपमें होना ।-**दोह**-पुं० लून आना ।-**धरा**-स्त्री० चर्म ।-**धारा**-स्त्री० रक्तकी धारा; चर्म ।-**बहा**-स्त्री० रक्तबाहिनी नाडी ।-**विमोक्षण**-पुं० लून निकलना ।

अमेग*-वि० असहा; कठिन ।

असेचन, **असेचनक**, **असेचनीय**-वि० [सं०] त्रिसको देखनेमें मुक्ति न हो, अत्यधिक सुंदर ।

असेवन-वि० [सं०] सेवा न करनेवाला; उपेक्षा करनेवाला; अभ्यास न कर परित्याग करनेवाला । पुं० उपेक्षा; त्याग; ध्यान न देना ।

अमेवा-स्त्री० [सं०] (रोगी आदिकी) सेवा-शुश्रूषा न करना, उपेक्षा ।

अमेवित-वि० [सं०] उपेक्षित; त्रिभुकी ओर ध्यान न दिया गया हो; त्रिमये परहेज किया गया हो ।

असेममेंट-पुं० [अ०] कर लगानेके लिए मकान, जमीन आदिकी मालिकता आकला; तलसीम; करकी रकम निश्चिन करना ।-**आक्रिमर**-पुं० तलसीमका काम करनेवाला कर्मचारी ।

असेसर-पुं० [अ०] कौत्रदारी मामलोंमें जज या मजिस्ट्रेटकी मलाह देनेके लिए चुना गया व्यक्ति; करकी मात्रा निर्धारित करनेवाला; कर लगानेके लिए आय, मालिकता आदिकी जाँच करनेवाला ।

असेनिक-वि० [सं०] जिसका संबंध सेनामें न हो; मुल्की ।

असेला*-वि० कुमार्गगामी; अनुचित ।

असोक-वि०, पुं० दे० 'अनोक' ।

असोकी-वि० दे० 'अशोक' ।

असोच-वि० चिंतारहित, निर्द्वंद्व ।

असोजा*-पुं० आश्विन मास, कार ।

असोड-वि० [सं०] जिसका सहन न किया जा सके; जो बशमें न लाया जा सके ।

असोस*-वि० न सुखनेवाला, अशोभ्य ।

अयोधिवेशन-पुं० [अ०] संघ, समिति, सभा ।

अमौद्व-पुं० [सं०] सुंदरताका अभाव, कुरूपता ।

अमौध*-स्त्री० दुर्गंध ।

असीच-पुं० दे० 'अशीच' ।

असीम्य-वि० [सं०] अच्युत, महा; अप्रिय ।

असौडव-वि० [सं०] सौदर्वहीन, महा, कुरूप । पुं० निकम्मापन, गुणाभाव; महापन, कुरूपता ।

असकवित-वि० [सं०] जो गया न हो; जो फटा न हो; अनाक्रांत ।

अस्कन्न-वि० [सं०] अविदीर्ण, जो फटा न हो; जो उड़ेला न गया हो; अनाट्टन; स्थायी, टिकाऊ ।

अस्कर-पुं० [अ०] लश्कर, सेना ।

अस्करी-पुं० [अ०] सैनिक, सिपाही ।

अस्खल-पुं० [सं०] अधि ।

अस्खलित-वि० [सं०] जो फिसले-डगमगाये नहीं; उच्चारण आदिमें भूल-चूक न करनेवाला; शुद्ध; सत्यधसे न बहकनेवाला; अच्युत ।

अस्तंगत-वि० [सं०] डूबा हुआ; नष्ट; क्षुप्त ।

अस्त-वि० [सं०] डूबा हुआ; फँका हुआ; गत; समाप्त ।

पुं० (सूर्य-चंद्रका) डूबना; अक्षय होना; हाम; पतन; अंत; नाश; कुडनीमें लगने सातवों स्थान ।-**गमन**-पुं० डूबना, लोप; मृत्यु ।-**गिरि**-पुं० पश्चिमी पर्वत, अस्ता-चल ।-**प्राष**-वि० डूबता हुआ; मरता हुआ-**किनारेपर**

पड़े हुए अस्तप्राय सुअरको देखने लगा'-**शृंग** ।-**अवन**-पुं० उदयके लगने मानवों लग्न ।-**मय**-पुं० प्रलय;

डूबना (सूर्य आदिको); सूर्यके साथ अन्य ग्रहोंका योग ।

-**ग्रस्तक**, **-शिवर**-पुं० अस्ताचलका शिवर ।-**ध्वस्त**

-वि० निरत-विनत, जहाँ-हाँ बिखरा हुआ, अव्यवस्थित, बेनतीव ।

अस्तन*-पुं० दे० 'स्तन' ।

अस्तनी-स्त्री० [सं०] अति लघु, नहींके बराबर स्तनी-वाली स्त्री ।

अस्तबल-पुं० [अ०] अश्वशाला, तवेला ।

अस्तवध-वि० [सं०] घवकाया हुआ; चंचल, अस्थिर; विनयी ।

अलमनी-स्त्री० [सं०] शालपर्णी ।

अलमन-पुं० [सं०] डूबना, अस्त होना ।

अलमित-वि० [सं०] अमंगल ।

अलर-पुं० मिले कपड़े, जुने आदिके भीतरकी तह, भित्ति; अंतरीय; इन्की जमीन; चित्रकी जमीन बंधनेका समाला; नीचेका राग ।-**कारी**-स्त्री० पल्लार करना; चुनैका लेप करना ।-**बट्टी**-स्त्री० तसवीरकी जमीन घोटनेकी पत्थर-की बट्टी ।

अलाष-वि० [सं०] बहुत गहरा ।

अस्ताचल, **अस्तात्रि**-पुं० [सं०] पश्चिमका वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्यका अस्त होना माना जाता है ।

अस्ति-स्त्री० [सं०] सत्ता, भाव, विद्यमानता ।-**अस्ति***

-अ० वाह-वाह ।-**काष**-पुं० सिद्ध पदार्थ (जै०) ।

-**रूप**-वि० भावरूप, 'पात्रित्व' ।

अस्तित्व-पुं० [सं०] सत्ता, हस्ती, विद्यमान होना ।

अस्तिमाद्(मत्)-वि० [सं०] मालदार ।

अस्तु-अ० [सं०] जो हो, ऐसा हो ।

अस्तुति-स्त्री० [सं०] प्रशंसा न करना; *दे० 'स्तुति' ।

अस्तुरा-पुं० दे० 'उस्तुरा' ।

अस्तोच-पुं० [सं०] चोरी न करना; चोरी न करनेका व्रत; योगके अनुसार एक यम ।-**व्रत**-पुं० आवश्यकतासे

अधिक वस्तुके संग्रह या उपयोगकी चोरी मानना ।
अस्तीत्य-पु० [सं०] उदय-अस्त; बनना-विगड़ना ।
अस्थान-पु० [सं०] अस्तना; निदा ।
अस्त्र-पु० [सं०] हथियार; फेंककर चलाया जानेवाला हथियार (बाण आदि); मञ्जरीरित बाण आदि; धनुष; चीर-काष्ठाका औजार, नश्वर । -**कंडक-पु०** बाण । -**कार-**
कारक- -**कारी (विन्)** -**पु०** हथियार बनानेवाला । -
चिकित्सा-स्त्री० चीर-काष्ठ, शल्य-चिकित्सा । -**जीध-**
-जीवी (विन्) -**-घारी (विन्)** -**पु०** सैनिक । -**बंद-**
पु० बाणोकी अविराम वर्षा । -**मार्जक-पु०** अस्त्र साफ करनेवाला । -**लाघव-पु०** अस्त्र चलानेकी कुशलता ।
-विद्या-स्त्री० अस्त्र-संचालनकी विद्या, बाण-विद्या । -
वेद-पु० धनुर्वेद । -**शस्त्र-पु०** हथियार । -**शाला-स्त्री०** अस्त्र-शस्त्र रखनेका स्थान । -**शिष्टा-स्त्री०** अस्त्र-संचालनकी शिक्षा । -**सायक-पु०** लोहेका बाण ।
अस्त्रागार-पु० [सं०] हथियार रखनेका भंडार, सलह-खाना ।
अस्त्री (विन्) -**वि०** [सं०] अस्त्रसे लड़नेवाला, अस्त्रधारी ।
अस्त्रीक-वि० [सं०] बिना स्त्रीका, रेंडुआ ।
अस्त्राल-पु० दे० 'अस्त्र' ।
अस्त्राई-पु० दे० 'अस्त्रादी' ।
अस्त्राग-वि० [सं०] बहुत गहरा ।
अस्थान-वि० [सं०] बहुत गहरा । पु० भुरा स्थान या अवसर; *दे० 'स्थान' ।
अस्थायी (विन्) -**वि०** [सं०] जो सदा या अधिक दिन रहनेवाला न हो; क्षणिक; अस्थिर ।
अस्थाय-वि० [सं०] जगमग, चंचल (नपत्ति) ।
अस्थि-स्त्री० [सं०] हड्डी; गिरी । -**कुंड-पु०** एक नरक । -**हनु-** -**ज-तेज (स्)** -**पु०** -**मज्जा-स्त्री०** हड्डीके अंदरका स्नेह; वज्र । -**तुंड-पु०** एक पक्षी; पक्षी । -**धन्वा (न्वन्)** -**पु०** शिव । -**पंजर-पु०** हड्डियोंका ढाँचा, कंकाल । -**प्रक्षेप-पु०** शक्तीके जलनेपर बचे हुए अस्थि-खट्टोंका गंगा आदिमें विमर्जन । -**बंधन-पु०** स्नायु । -**भंग-पु०** हड्डीका टूट जाना । -**भस्त्र, मुक् (ज्)** -**पु०** हड्डियों खानेवाला, कुत्ता । -**भेद-पु०** दे० 'अस्थि-भग' । -**भाली (विन्)** -**पु०** शिव । -**विग्रह-वि०** बहुत दुबला । पु० शिवका एक अनुचर, भूमी । -**शंखला-स्त्री०** -**संहार-पु०** -**संहारिका-स्त्री०** प्रविमान् वृक्ष । -**शेष-वि०** जिसके शरीरमें हड्डियोंभर रह गयी हो, बहुत दुबला । -**संचय-पु०** शवदाहके बाद गंगा आदिमें प्रवाहके लिए हड्डियों या राख एकत्र करना, अस्थियोंका ढेर । -**संधि-स्त्री०** हड्डीका जोड़ । -**संभव-पु०** मज्जा; वज्र । -**समर्पण-पु०** संचित अस्थियोंकी गंगा आदिमें फेंकना । -**सार-** -**स्नेह-पु०** मज्जा ।
अस्थिति-स्त्री० [सं०] स्थिति या घटताका अभाव; मर्यादाका अभाव ।
अस्थिर-वि० [मं०] जो स्थिर न हो, डार्वो-टोल, चंचल; अनिश्चित, बे-भरोसेका ।
अस्थिर-वि० स्थिर ।
अस्थैव-पु० [सं०] अस्थिरता ।

अस्त्राधिर-वि० [सं०] स्त्रायुहीन; स्थूल शरीररहित ।
अस्थिग-वि० [सं०] जो चिकना न हो; कठिन; शुष्क; निर्वय । -**दाह-पु०** दैवदाहका एक भेद ।
अस्त्रेह-पु० [सं०] लोहेका अभाव ।
अस्पर्द-वि० [मं०] स्पर्दन-हीन, न छिलने-डुलनेवाला ।
अस्पताल-पु० दवाखाना, चिकित्सालय [अं० 'हॉस्पिटल'] ।
अस्पष्ट-वि० [सं०] जो साफ दिखाई न दे या साफ समझ में न आवे, धुंधला, सदृश ।
अस्पृश्य-वि० [सं०] स्पर्शके अयोग्य, न छूने लायक, अछूत ।
अस्पृष्टता-स्त्री० [सं०] स्पर्शकी अयोग्यता, अछूतपन ।
-आंदोलन-पु० अछूतीकार-छुआछूत मिटानेका आंदोलन ।
अस्पृष्ट-वि० [मं०] न छूना हुआ, अछूता ।
अस्पृह-वि० [मं०] निर्लोभ, जिसे लालच न हो ।
अस्पृष्ट-वि० [सं०] अस्पष्ट; अप्रकट ।
अस्मदादि-अस्मदादिक-सर्व० (वहु०) [सं०] हम लोग ।
अस्मदीय-वि० [सं०] मेरा ।
अस्मद्-सर्व० [मं०] मैं [अह्मादिका प्रातिपदिक रूप] । पु० जीवात्मा, प्रत्यगात्मा ।
अस्मात्-वि० [मं०] परंपराविक्रम, अवैध; स्मार्त मंत्रदायका नहीं; स्मृतिसि परे ।
अस्मिता-स्त्री० [मं०] अहंता, अहंकार; योगशास्त्रके पान प्रकारके कुंशोंमें एक ।
अस्त्र-पु० [सं०] कीण; रक्त; ओद्; केसर; केस । -**कंड-पु०** बाण । -**खदिर-पु०** रक्तखदिर वृक्ष । -**ज-पु०** माम । -**ए-वि०** रक्त पीनेवाला । पु० राक्षस; मूल नक्षत्र । -**पत्रक-पु०** भिरा वृक्ष । -**पा-स्त्री०** जोक; डाकिनी; चुईल । -**पित्त-पु०** मुख, नाक आदिमें स्थित गिरना; रक्तपित्त । -**फला-** -**फली-स्त्री०** सलथी नामक पौधा । -**मातृका-स्त्री०** शरीररत्न । -**रोधिनी-स्त्री०** लज्जालु नामक पौधा । -**विदुच्छदा-स्त्री०** लक्षणा कद ।
अस्त्र-पु० [अं०] काल; युग; उग्र; दिनका चौथा पहर । -**की नमाज-शामकी नमाज** ।
अस्त्रार्जक-पु० [सं०] धेत तुल्मी ।
अस्त्र-पु० [मं०] दे० 'अस्त्र' ।
अस्त्र-पु० [अं०] जड, मूल; रीज; मचाई; मूल धन, मूल वस्तु; नकलका उलटा । वि० दे० 'अस्त्री' । -**मैं-वास्तवमें, मंचमुच** ।
अस्त्री-वि० मौलिक; खालिम; स्वग; मचा ।
अस्त्रीयत-स्त्री० वस्तुस्थिति, मच्ची स्थिति या रूप; जड ।
अस्वत-पु० [मं०] शून्य; दे० 'अश्वत' ।
अस्व-वि० [मं०] धनहीन ।
अस्वच्छ-वि० [मं०] गंदा, धुँसला ।
अस्वतंत्र-वि० [सं०] परतंत्र, पराधीन ।
अस्वप्न-वि० [सं०] निद्राग्रहित । पु० देवता; अग्निदा ।
अस्वभाव-वि० [मं०] भिन्न स्वभावका । पु० भिन्न या अस्वाभाविक लक्षण ।
अस्वर-वि० [मं०] बुरे स्वरवाला अस्पष्ट, मंद (स्वर) । पु० मंद स्वर; व्यंजन वर्ण ।

अस्वार्थ-वि० [सं०] जिसने स्वार्थ की प्राप्ति न हो।
अस्वस्थ-वि० [सं०] अप्रकृतिस्थ, अनमना; रोगी।
अस्वावृकटक-पु० [सं०] गोरूक।
अस्वाधीन-वि० [सं०] जो दूसरे के वशमें हो।
अस्वाध्याय-वि० [सं०] जिसने वेदों की आशुति नहीं की है; जिसने वेदों की आशुति अथवा आर्य नहीं की है। पु० आशुतिके अंदर पढ़नेवाला व्यवधान या अवकाश।
अस्वाभाविक-वि० [सं०] स्वभावविरुद्ध; अनैसर्गिक, बनाबंदी।
अस्वाभिक-वि० [सं०] बिना मालिकता, छावारीन। पु० वह धन या संपत्ति जिसका कोई दावागौर न हो।
अस्वामी(मिन्)-वि० [सं०] जिसका स्वत्व न हो; जिसका कोई दावागौर न हो। - (मि)विकल्प-पु० ऐसा विकल्प जिसमें बेचनेवाला बिक्री बरतुका स्वामी न हो।
-संहत-वि० जिसका मैनापति मारा न गया हो।
अस्वार्थ-वि० [सं०] निःस्वार्थ; निःस्वार्थ; उदासीन।
अस्वास्थ्य-पु० [सं०] रोग, बीमारी।
अस्त्रिज-वि० [सं०] जो अच्छी तरह उबाला या पकावा न गया हो।
अस्वीकार-पु० [सं०] न मानना, इनकार; न लेना।
अस्वीकृत-वि० [सं०] न माना हुआ, नामजूर; ग्रहण न किया हुआ।
अस्वीकृति-स्त्री० [सं०] अस्वीकार।
अस्वेद, **अस्वेदन**-पु० [सं०] पसीनेका न निकलना।
अस्मी-वि० मस्तर और दग। पु० ८० की मर्यादा।
अह-‘अहम्’का सामान्यतः रूप। -**कार**-पु० अपनी मत्ताका बोध, गर्व, घमट; अंतःकरणको बोध वृत्तियोंमेंसे एक (ने०, मा०)। -**कारी**(रिन्)-वि० घमडी। -**कार्य**-पु० व्यक्तित्वगत कार्य। -**कृत**-वि० घमडी। -**कृति**-स्त्री० अहकार, घमट। -**धी**-स्त्री० अहकार। -**पद्**-पु० गर्व, घमट। -**पूर्व**-वि० होठमें बंद जानेका इच्छुक। -**पूर्विका**, -**प्रथमिका**-स्त्री० होठ, प्रतिद्विष्टा। -**प्रत्यय**-पु० गर्व। -**अह**-पु० अपने व्यक्तित्वको बहुत बड़ा समझना।
-वादी(विन्)-पु० ढंग मारनेवाला। -**श्रेयस्**-पु० अपनेकी बड़ा या श्रेष्ठ मानना।
अहंता-स्त्री० [सं०] घमट, गर्व।
अह-‘अहम्’का सामान्यतः रूप। -**पति**-पु० दे० ‘अहंपति’। -**शेष**-पु० सत्था।
अह-अ० अवरज, दुःख, क्रोध आदिका संचक उद्गार।
अह(न्)-पु० [सं०] दिन; दिनका अधिष्ठाता देवता; अहिकार्य; विष्णु; राशि; एक दिन पढ़नेके लिए पुस्तकका निर्धारित अंश (समासांतमें अह-जैसे मध्याह्न)। -**निसि**- * अ० दे० ‘अहनिश’।
अहक-पु० लालसा, अतृप्त आकांक्षा।
अहकना-अ० कि० इच्छा करना, कामना करना।
अहकान-पु० [अ०] आहार्य, आदेश (‘इक्ष्म’का बहु०)।
अहकाना-अ० कि० आहट मिलना; दुखना। सं० कि० पता लगाना।
अहस-वि० [सं०] अक्षत, अनाहत; जो पीटा न गया हो (पीते समय कपड़ा); बिना धुला हुआ, नया; बेदाग,

स्वच्छ; जो हताश न हो। पु० नया कपड़ा (जो धोया न गया हो)।
अहथिर-वि० दे० ‘थिर’।
अहद्-पु० [अ०] दे० ‘अहद्’।
अहदी-वि० आलसी। पु० वह सैनिक जिसमें अनाधारण आवश्यकताके समय ही काम लिया जाय (अकनरकी सेनाकी एक भेगी)। -**ज्वाला**-पु० अहथिरोंके रहनेकी जगह।
अहना-अ० कि० वर्तमान रहना, होना।
अहपति-पु० अहिपति, शेषनाग।
अहबाब-पु० [अ०] मित्र (‘हवीय’का बहु०)।
अहम-वि० [अ०] बहुत जरूरी, महत्त्वपूर्ण।
अहमक-वि० [अ०] जडमति, मूर्ख, नासमझ।
अहमिति-अ० दे० ‘अहमति’।
अहम्-सर्व० [सं०] मैं। पु० अहभाव, अहंत्व। -**अमिका**, -**अहमिका**-स्त्री० चंद्राक्षरी, होठ, प्रतियोगिता। -**एव**-पु० घमट, गर्व। -**भ्रति**-स्त्री० गर्व, घमट; ममता। -**अम्य**-वि० अपनेको बहुत बड़ा माननेवाला।
अहर्णीय-वि० [सं०] जो हटाने या इरण करने योग्य न न हो; हट, शिर। पु० पहाड़।
अहरन, **अहरनि**-स्त्री० निहाई।
अहरना-सं० कि० लकड़ी छीलकर सुदौल करना।
अहरा-पु० आग सुलगानेके लिए लगाये गये कड़े या उपले; इकट्ठा किये हुए कड़ेमें तैयार की गयी आग; लोगोंके ठहरनेका स्थान; प्याऊ।
अहराम-पु० [अ०] पुरानी इमारतें; मिलके जगत्प्रसिद्ध म्नुष, परामिड (हरम-पुरानी इमारत-का बहु०)।
अहरी-स्त्री० प्याऊ; होठ, चरहो; गड्ढा।
अहर-‘अहम्’का समासगत रूप। -**अह**-अ० दिन-दिन। -**आगम**-पु० दिनका आगमन। -**गण**-पु० मास; परिगणित दिनमध्य; यज्ञवाले दिनोंका क्रम। -**दल**-पु० मध्याह्न। -**निश**-अ० दिन-रान, आठों पहर। -**पति**, -**मणि**-पु० सूर्य। -**मुख**-पु० उपकाल, सबेरा, ओर।
अहल, **अहलि**, **अहल्य**-वि० [सं०] जो जीता न गया हो या जीता न जा सके।
अहलकार-अ० दे० ‘अहकार’।
अहलना-अ० कि० हिलना; दहलना।
अहलमद्-पु० दे० ‘अहमद्’।
अहल्या-स्त्री० [सं०] गौतम ऋषिकी पत्नी जो शापसे पत्थरकी शिला ही गयी थी और जिसने रामके चरणस्पर्शमें पुनः पूर्व रूप प्राप्त कर लिया। -**जार्**-पु० इद्र।
-नंवन-पु० अहल्याके पुत्र, सतानंद।
अहवान-पु० दे० ‘आहान’।
अहवाल-पु० [अ०] वृत्तान्त, समाचार; हाल (‘हाल’का बहु०)।
अहवर-वि० [सं०] दिनके समय भ्रमण करनेवाला।
अहसान-पु० दे० ‘एहसान’।
अहस्कर, **अहस्पति**-पु० [मं०] सूर्य; मंदार।
अहस्त-वि० [सं०] हस्तरहित; जिसका हाथ कट गया हो।
अहह-अ० [सं०] दुःख, क्रोध, आश्चर्य और संतोषन-स्वक उद्गार।

अहः, अहारा-अ० हर्ष तथा विस्मय-सूचक उद्गार ।
अहमसि-खी० आनन्दको स्थिति ।
अहाता-पु० [अ०] दे० 'पहाता' ।
आहान-पु० आह्वान, पुकार ।
आहार-पु० दे० 'आहार' ।
आहारना-स० कि० लक्ष्मीको छील-छालकर सुखीय करना; चिपकाना; * आहार करना, खाना ।
आहारी-वि० दे० 'आहारी' ।
आहारे-वि० [स०] जो हरा, चुराया न जा सके; जो धन या चक्रमा देकर वशमें न किया जा सके; हट, न बदलनेवाला ।
अहिंसक-वि० [सं०] हिंसा न करनेवाला ।
अहिंसा-खी० [सं०] किसी प्राणीको न मारना; मन, बचन, कर्मसे किसीको पीडा न देना; हिंस नामका पौधा ।
-बादी (दिन्)-वि० अहिंसा मित्रताको माननेवाला ।
अहिं-वि० [सं०] अहिंसक ।
अहि-पु० [सं०] साँप; सूर्य; राहु; वृत्रासुर; पथिक; जल; पृथिवी; ठग, बचक; बादल; नाभि; मीसा; अश्वेचा नक्षत्र ।
-कात-पु० वायु ।**-कोष**-पु० केंचुल; एक वृत्त ।**-गण**-पु० वृत्तविशेष; सपौका समूह ।**-चक्र**-पु० एक नास्तिक चक्र ।**-चक्र**-पु० दक्षिण पांचाल जिन अत्रुंनने जीवनकर द्रोणाचार्यको गुरुदक्षिणामें दे दिया था; एक वनस्पति-जन्म विष ।**-चक्र**-पु० कुकुरमुत्ता ।**-चक्र**-खी० अहिच्छत्र देशको राजधानी, शकंटा; मेघशृंगी ।**-जिह्व**-पु० कृष्ण ।**-जिह्वा**-खी० नागफनी ।**-तुंडिक**-पु० संतर ।**-वैद्य**, **-वैद्य**-पु० अश्वेचा नक्षत्र ।**-वृद्धि (प)**, **-मार**, **-रिपु**-पु० गरुड; नकुल; मयूर; इद्र ।**-नकुलिका**-खी० साँप और नेबलेका सहज वैर ।**-नाथ**-पु० दोषनाग ।**-नाथ**-पु० दोषनाग ।**-निर्मोक**-पु० केंचुल ।**-पताक**-पु० एक प्रकारका विषहीन सर्प ।**-पति**-पु० वासुकि; कोई बड़ा साप ।**-पुत्र**-पु० सर्पाकृति नौका ।**-पूतना**-खी० एक तरहका रोग ।**-फेन**-पु० साँपको लाय या विष; अफीम ।**-पुष्प**, **-पुष्प**-पु० शिव; एक रुद्र ।**-बेल**-खी० [हि०] दे० 'अहिबेली' ।**-भय**-पु० सर्पमें उत्पन्न होनेवाला भय; सपकके विश्वासपात्रको आशंका ।**-भृ**-खी० भूम्या-मल्लि ।**-भुक् (ज)**-पु० गरुड; मोर; नेवला ।**-भृ**-पु० शिव ।**-भर्तृ**-खी० गंधनाकुली नामक कदविशेष ।**-मारक**, **-मेद**, **-मेदक**-पु० अरिमेद नामक वृक्ष ।**-माली (जिन्)**-पु० शिव ।**-मेघ**-पु० मयमत्र, नागयश ।**-लम्हा**-खी० नागबली, पान; गंधनाकुली ।**-लोचन**-पु० शिवके एक मर्फका नाम ।**-लोहिका**-खी० भूम्यामल्लि ।**-वल्ली**-खी० नागबली, पान ।**-विषापहा**-खी० गंधनाकुली ।**-साव**-पु० सापका बच्चा, संपोला ।
अहिक-पु० [सं०] भ्रूव; अश मीप । वि० नियत दिनोंतक रहनेवाला (मर्यादासूचक शब्दके साथ-जैसे 'दशाहिक') ।
अहिका-खी० [सं०] समलका वृक्ष ।
अहित-पु० [सं०] हितका अभाव या उलटा, घुराई, अपकार, हानि; शत्रु । वि० अहितकर, अपथ्य; विरोधी ।

-कर, **-कारी (रिक्)**-वि० हानि, अपकार करनेवाला ।
अहिम-वि० [सं०] ठंडा नहीं, गरम ।**-कर**, **-किरण**, **-तेजा (जस्)**, **-वीचि**, **-सुति**, **-मयूख**, **-रक्षि**-पु० सूर्य ।
अहिमांशु-पु० [सं०] सूर्य ।
अहिमान-पु० चाकका वह गड्ढा जिसके बल चाक कील-पर रखा जाता है ।
अहिमान-पु० शेषशायी विष्णु ।**-पदी**-खी० (विष्णुके पदसे उद्भूत) गंगा-दिवनदी अहिमानपदी महिमान बंदी स्तुति साक्षि पितेखी-वन० ।
अहिबर-पु० ठीका एक भेद ।
अहिवाल-पु० सुहाग ।
अहिवातिन, **अहिवाती**-वि० खी० सौभाग्यवती, सचबा ।
अहीक-पु० [सं०] गौडोंके अनुसार एक प्रकारका जेरा ।
अहीन-वि० [सं०] अधुष्ण, समग्र, सम्पन्न; बहुत दिनोंतक टिकनेवाला; जो जातिच्युत न हो; नीच नहीं, भेद । पु० बड़ा साँप; वासुकि; बहुत दिनोंतक चलनेवाला वृक्ष-विशेष ।**-गु**-पु० एक मयबनी राता ।**-बादी (दिन्)**-पु० वह गवाह जो गवाही देनेको योग्य न हो ।
अहीर-पु० [सं०] आभीर, खाला ।
अहीरणि-पु० [सं०] त्रिमूख मर्प ।
अहीरी-खी० एक राग; [सं०] खालिन ।
अहीरा-पु० [सं०] मर्पराज, लक्ष्मण; बलराम ।
अहुजी-खी० कद, या लोके साथ एकमें पकाया हुआ चावल ।
अहुटना-पु० क्रि० हटना, अलग होना ।
अहुतना-पु० क्रि० हटाना, दूर करना ।
अहुठ-वि० साठे तीन ।
अहुन-वि० [सं०] जिसको आहुति न की गयी हो; जिने नैवेद्य न मिला हो । पु० स्तुति; ध्यान; वेदाध्ययन ।
अहुर-पु० [सं०] जठराक्षि ।
अहुरमज्द-पु० [पह०] पारसी धर्मानुसार धर्म, नेकी और प्रकाशका देवता ।
अहुराक्ष-पु० क्रि० खींच देना, हटा देना-**'फिरि-फिरि** पट ताने' गऊ बहुन्यो 'अहुराक्ष'-वन० ।
अहुरि-बहुरि-पु० अहुर-बहुरि, किसी प्रकार बचकर-**'ठहरनि वीत जिने' बहुरि अहुरि नीके'**-वन० ।
अहुठनी-पु० चारा काटनेका ठोहा ।
अहुद्व-वि० [सं०] हृदयहीन; विमरगशील ।
अहुद्व-वि० [सं०] अप्रिय; अनमिलपित ।
अहे-अ० [सं०] निंदा, शोक, पाथक्य आदिका योगक शब्द; हे । पु० वृक्षविशेष ।
अहेतु-वि० [सं०] हेतुरहित । पु० हेतुका अभाव; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ कई कारणोंने विद्यमान रहते हुए भी कार्यका न होना वर्णित किया जाय ।**-सम**-पु० जानित्वा एक भेद (न्या०) ।
अहेतुक, **अहेतुक**-वि० [सं०] हेतुरहित, अकारण ।
अहेरी-पु० आखेट, शिकार ।
अहेरी-वि० शिकारी । पु० शिकार करनेवाला, आखेटक ।
अहेर-पु० [सं०] शतमूली ।

अहो-अं [सं०] विस्मय, प्रशंसा, खेद, विषाद, विहार-
स्वक उद्गार; संवेदनमें भी व्यवहृत ।—**रूपमहोपनि-**
परस्पर प्रशंसा (लौ०) ।

अहो-‘अहन्’का समासगत रूप ।—रत्न-पुं० सुख ।—**रात्र**
—पुं० दिन और रात; दो स्वोदयके बीचका समय ।

अहोरा-अहोरा-पुं० व्याह वा गीर्णें दुर्लभिका ससुराल
आकर उसी दिन वापस आना । अं बार-बार ।

अह्व-पुं० [अ०] प्रतिष्ठा; काल; राजत्व ।—**नामा-पुं०**
प्रतिष्ठापत्र, इकरारनामा ।—**शिकनी-की०** प्रतिष्ठापत्र ।
—**(रे)हुकूमत-पुं०** राज्यकाल ।

अहिज-वि० [मं०] दिनमें उत्पन्न वा प्रकट होनेवाला ।

अहिष-वि० [सं०] निर्लेज; दूढ़; धर्मही ।

अहिमान-पुं० [पह०?] पासी धर्मोत्सार पाप और अंध-
कारका देवता, सैतान ।

अहीक-वि० [सं०] निर्लेज । पुं० वीर मिथु ।

अह्व-वि० [अ०] मोहक, अधिकारी, पात्र । पुं० कुटुंबी ।

—**कार-पुं०** कर्मचारी; राजकर्मचारी ।—**अह्व-पुं०** अदा-
कतका एक विशेष कर्मचारी ।—**(ह्ने)कलम-पुं०** लेखक,
लेखन-व्यवसायी; शिक्षित व्यक्ति ।—**किताब-पुं०** ऐसे
धर्मको माननेवाला जो किसी इहामी किताबपर आश्रित
है ।—**फ़ावा-की०** गृहलामिनी, पत्नी ।—**ज़र्ब-पुं०** वह
व्यक्ति जिसकी मातृभाषा कोई खान भाषा हो; वह आदमी
जिसकी बोल-चाल टकसाली मानी जाय ।—**बलव-पुं०**
देशवासी, देशवाई ।

अहिषा-की० [अ०] पत्नी, घरवाली ।

अह्वीक-की० [अ०] योग्यता, पात्रता ।

अह्व-वि० [सं०] ध्व, शिर ।

अह्वल-की० [सं०] मल्लिका वृक्ष ।

आ

आ-देवतागरी वर्णमालाका दूसरा (खर) वर्ण और ‘अ’का
दीर्घ रूप ।

आँ-अं विस्मयपूर्वक शब्द ।

आँक-पुं० अंक; अक्षर; चिह्न; अक्षर; अंकवार; गोद; सिखात;
निश्चय; अंश; किसीके नामपर चला हुआ वश; नौ
मात्राओंके छंद; पहिचानी धुरी डालनेका दाँवा ।

आँकवा-पुं० अंक; हुक; पशुलोका एक रोग ।

आँकना-सं० क्रि० कृपना, अदाज करना, अनुमान करना;
निदान लगाना ।

आँकर-वि० गहरा; मंहेगा; बहुत ज्यादा ।

आँकिक-पुं० [मं०] (मैट्रिशियन) सांख्यिक ।

आँकवा-पुं० अकृषा ।

आँकशिक-पुं० [मं०] अकुल मारनेवाला, महावत ।

आँकुस-पुं० २० ‘अंकुश’ ।

आँक-पुं० आँकनेवाला; कृतनेवाला ।

आँख-की० देखने-रूपबोध करनेकी इन्द्रिय, नयन, चक्षु;
निगाह, दृष्टि; कृपादृष्टि; परल, पञ्चानन; ईश्वरी गोंठपरकी
नोक जिसमें अंशुआ निकलता है; अंशुना; आँखोंकी शङ्का
चिह्न (मोहपंखपरका); छिद्र (सूँचका); ध्यान; संतान ।—
मिचौनी, मिचौली, मीचली-भी० लकड़ोंका एक खेल ।
—**मुँहाई, मुँचाई-की०** आँखमिचौनी । **मुं०-आना,**
—**उठना-आँखोंमें कागिमा आकर उनमें पीका और सृजन**
होना ।—उठाकर न देखना-ध्यान न देना, उपेक्षा करना;
लजा आदिके कारण सामने न देखना ।—उठाना-
निगाह सामने करके देखना; नुरी निगाह वा शुशुभावसे
देखना ।—उलट आना-मरनेके समय आँखोंका पथरा
जाना; घमंड होना ।—ऊँची न होना-लजाके कारण
सामने न देखना, नजर डराकर न करना ।—ऊपर न
उठाना-लजा वा भयसे सामने न देखना ।—ओट
पहाड़ ओट-सामने न होनेपर दूर-नजदीक एकता
होना ।—कड़वाभावा-आँख गहराकर देखने वा दैतक
ताकनेके कारण आँखमें पीका होना ।—का अंधा गाँठ का
पूरा-पैतेवाला, पर मूर्ख ।—का अंधा नाम नयनमुखा-

नाम-गुणमें विरोध, कालेकी गोरा कहना ।—**का काँटा-**
जिसे देखकर कष्ट हो; शत्रु; कार्यमें बाधक ।—**का काजल**
चुराना-सामने वा पासकी वस्तु चुरा लेना, मकाईसे हाथ
मारना ।—का कोवा, का देला-आँखका उभरा हुआ स्फेद
भाग जिसपर पुतली रहती है ।—का जाला-आँखका एक
रोग जिसमें पुतलीपर सफेद शिखी आ जाती है ।—का
नारा, का तिल-कनोनिगा; प्रिय व्यक्ति ।—का तेल
निकाटना-आँखोंपर जोर पड़नेवाला काम करना ।
—**कान खुला रहना-सावधान रहना ।—का परवा-**
आँखके भीतरकी शिखी ।—**का परदा उठाना-भ्रम दूर**
होना ।—**का पानी डल जाना-निर्लेज हो जाना ।**
—**की किरकिरी-आँखका काँटा ।—की डंठक-प्रिय**
व्यक्ति या वस्तु ।—**की पुतली-आँखके भीतरके परदेका**
वह भाग जो बाहरने काला दिखाई देता है; अतिप्रिय
व्यक्ति ।—**की पुतली फिरना-आँखका पथराना ।—की**
बड़ी आँके आते-किसीका दोष उसके मित्र वा संबंधीके
सामने कहना ।—खटकना-आँख किरकिराना ।
—**खुलना-पलक खुलना; जागना; भ्रम दूर होना;**
दिमागपर तरो-ताजीवी पहुँचना ।—**खुलवाना-आँख**
बनवाना ।—खोकरना-आँख बनाना; सावधान करना;
होशमें आना ।—गहना-आँख दुखना; दृष्टि जमना ।
—**गहना-टकटकी लगाकर देखना ।—खमकाना-**
आँखोंसे स्पर्श करना; आँख मटकना ।—**घरने जाना-**
नजर घायब होना ।—**धीर-धीरकर देखना-आँख काह-**
कर देखना ।—चुराकर कुछ करना-छिपकर कुछ
करना ।—चुराना, छिपाना-कतरा जाना, सामना
हवाना; लजासे सामने न देखना; वैशुवीत हो जाना ।
—**चूकना-गाँफिल होना ।—छससे लगना-मरनेके**
समय आँख टँग जाना ।—**जम्मा-दृष्टि स्थिर रहना ।**
—**जाना-आँख फूटना ।—झपकना-पलक गिरना,**
नींद आना ।—**झपकाना-आँखसे स्पर्श करना ।**
—**झँकना-लजित होना ।—टँगना-पुतलीका सम्बन्ध**
होना, टकटकी बँचना ।—**टेरी करना-वैशुवीत दिख**

जाना । -**हालना**-ध्यान देना । -**बुझाना**-फलक सिखाना; औख मचकाना । -**दिलाना**-रोष या अक्का-सूचक दृष्टिसे देखना । -**न खोलना**-(ज्वर आदिके कारण) गाफिल, बेसुध होना । -**न ठहरना**-चमक आदिके कारण दृष्टिका न टिकना । -**न पसीजना**-औख में औख न जाना । -**नाकसे डरना**-औख से डरना । -**निकालना**-औखके डेलकी निकालना; कोषपूर्ण दृष्टिसे देखना । -**नीची करना या होना**-लज्जित होना । -**नीली-पीली**,-**लाल-पीली करना**-गुस्ता दिखाना; धमकाना । -**पटपटा जाना**-औख फूटना । -**पचना**-दृष्टित्त होना; पानेकी इच्छा होना । -**पहरना**-घरनेके समय पुतलीका गतिहीन होना । -**पसारना**-फैलाना-दूरतक नजर दीडाना । -**फडकना**-फलकका बार-बार टिकना (रमके आधारपर शुभाशुभका अनुमान दिना जाता है) । -**फाड़-फाड़कर देखना**-आश्चर्य या औत्सुक्यके साथ देखना । -**फूटना**-अंधा होना; बुरा मानस होना, देखकर जलना । -**फेरना**-पहलेका प्रेम न रखना, निगाह बदलना । -**फोड़ना**-औख नष्ट करना; औखपर जोर बजनेवाला काम करना । -**बंदकर (मुँह-कर) कोई काम करना**-विना सोचे-समझे कोई काम करना; और किसी बातकी परवा न कर अपना काम करते जाना । -**बंद होना**,-**मुँदना**-औख क्षपकना; शृंखु-होना । -**बचाना**-औख सुराना । -**बनाना**-सोविधाविधि आदिका शक्योपचार करना । -**बराबर करना**-सामने ताकना; डटकर बात करना । -**बिगड़ना**-औख स्वाय होना; औख रेंगना । -**बिखना**-आदर-पूर्वक स्वागत करना । -**बैठना**-चोट आदिके कारण औखका नष्ट हो जाना । -**भर जाना**-औखका अशुपूर्ण होना । -**भर देखना**-अच्छी तरह देखना । -**जीं देरी करना**-नाराज होना । -**मचकाना**-बार-बार फलक गिराना; संकेत करना । -**मारना**-औखोंसे हथारा करना । -**मिलाना**-बराबरीके आक्से देखना । -**मूँड लेना**-न देखना, ध्यान न देना । -**में औख डालना**-औख मिलाना; धृष्टतापूर्ण दृष्टिसे देखना । -**में खटकना**-बुरा मायस होना । -**में गड़ना**-खटकना; मन दुभा लेना । -**में बुझना**-पसंद आना; बुरा लगना । -**में बसना**-ध्यान पर चढ़ना । -**मोड़ना**-औख फेरना । -**लगना**-नंदि आना; दिल लगना । -**लड़ना**-नजर मिलाना; प्रेम-दृष्टिसे देखना । -**लड़ाना**-औख मिलाना, घूरना । -**ललचायना**-देखनेकी इच्छा होना । -**लाल करना**-कोषपूर्ण दृष्टिसे देखना । -**सामने न करना**-लज्जा आदिके कारण सामने न ताकना । -**सँकना**-सौंदर्यदर्शनका सुख लेना, हसीनोंको घूरना । -**से औख मिलाना**-नजर बराबर करना; औख लड़ाना । -**से भी न देखना**-गुच्छ समझना । -**होना**-परख होना, हान होना । -**(खँ) झुलना**-बार औखें होना; औख मिलाना । -**झड़ना**-नींद आदिके कारण फलकका चढ़ जाना । -**बार करना या होना**-देखादेखी होना । -**ठंडी होना**-जी भरना, वृष्ट होना । -**डबडबाना**-औखोंमें औख भर जाना । -**तरेरना**-कोषकी दृष्टिसे

देखना । -**दीडाना**-नजर दीडाना, इधर-उधर देखना । -**फिर जाना**-बे-मुरोबत होना, नजर बदल जाना । -**बदल जाना**-नजर बदल जाना, कृपादृष्टि न रहना । -**(खँ) की ठंडक**-प्रिय श्वाक या वस्तु । -**की सुख्खाँ निकालना**-किसीके कोई काम लगभग पूरा कर लेनेपर बोधा करके सारा मेव लेनेका प्रयत्न करना । -**के आगे अँधेरा डालना**-भ्रूँछित्त होना; निर्बलना आदिके कारण क्षणमात्रके लिए कुछ न देख पड़ना । -**के आगे अँधेरा होना**-विपत्ति आदिमें अपनेको अमहाय पाकर निराश होना; भ्रूँछित्त होना । -**के आगे चिमगारी झूटना**-चोट आदिके कारण चकाचौध होना । -**के आगे नाचना** या **फिरना**-सामने ध्येय मौजूद रहना; स्थितिमें बना रहना । -**के आगे रखना**-सामने रखना । -**के डोरे**-औखोंके सफेद भागपर लाल रंगकी बारीक नसें । -**के सारे झूटना**-चोट आदिके कारण चकाचौध होना । -**के सामने नाचना**-स्थितिमें बना रहना; दृश्य सामने रहना । -**को रो बैठना**-औखें खो देना । -**तले न लगना**-कुछ न समझना, हकीर समझना । -**देखा हुआ**-स्वयं देखा हुआ । -**पर टिकरी रख लेना**-अनजान बनना; रुखाई दिखलाना । -**पर पट्टी बाँध लेना**-ध्यान न देना । -**पर परना पड़ना**-भ्रम होना, समझमें न आना । -**पर फलकका बोझ न होना**-अपने लोभोंका भार न मायस होना । -**पर बिठाना**,-**पर बैठाना**-आदर-सत्कार करना, आदरके साथ रखना । -**पर रखना**-स्वातिवरादीके साथ रखना । -**में**-नजरमें, परस्मै । -**में काजल झुलना**-कानलका ग्वब लगना । -**में खून उतरना**-कोषमें औखोंका लाल होना । -**में चढ़ना**-पसंद आना, जंचना । -**में खरीबी छाना**-धर्म या प्रसादमें किनी बन्धुकी और ध्यान न देना । -**में बुझना (खटकना)**-अच्छा न लगना । -**में चोब जाना**-चोट आदिके कारण औखोंका लाल होना । -**में झाँई पड़ना**-औखोंका पकना । -**में देसू, नीसी या सरसीं फूलना**-ध्यानमें रहनेवाली बात मध्वं त्रिशाई देना; मस्ती आना । -**में तकला बुझाना**-औखें फोड़ना । -**में धूल झींकना, डालना, देना**-धोखा देना । -**में नाचना**-ध्यान बना रहना; दृश्य सामने रहना । -**में नोन देना**-औखें फोड़ना । -**में फिरना**-ध्यान बना रहना । -**में बसना**-दिलमें घर कर लेना । -**में बैठना**-पसंद आना । -**में अंग झुटना**-भगके नशेमें होना । -**में रखना**-प्यारमें रखना, शिफाजतमें रखना । -**में रात काटना**-आगकर रात बिताना । -**में शील होना**-मुरोबती होना । -**में समाना**-ध्यानपर चढ़ना; सरण बना रहना । -**लगना**-कपर आना, शरीरपर पीतना । -**सुख कलेजे ठंडक**-पूरी प्रसन्नता । -**से उतरना**-नजरीसे उतर जाना । -**से थोझल होना**-नामने न रहना, दृष्टिसे परे होना । -**से काम करना**-इशारेसे काम निकालना । -**से गिरना**-औखोंसे हत-रना । -**से लगाकर रखना**-प्यारके साथ रखना ।

शैलेश्वरी-शैलेश्वरी-औखें, अँधेरी ।

शैलेश्वरी-पु-एक तरहकी चरुनी ।

आंग-वि० [सं०] शारीरिक; अंगशरीर; अंग देशमें उत्पन्न; निज बर्गके पात्रोंसे सर्वत्र रखनेवाला (ना०) । पु० कौमल शरीर ।

आंग*-पु० अंग; शरीर; स्तन ।

आंगक-पु० [सं०] अंगमें रहनेवाला; अंगराज । वि० अंग देशमें उत्पन्न ।

आंगन-पु० चौक, अङ्गिर, घरके भीतरका सहन ।

आंगविद्या-वि० [सं०] आंगविद्या, सामुद्रिक विद्या जानने-वाला ।

आंगार-पु० [सं०] अंगारोंका ढेर ।

आंगारिक-वि० [सं०] अंगार-संघर्षी; अंगार जलनेवाला ।

आंगिका-वि० [सं०] अंग या शरीर-संघर्षी; अंगचेष्टा द्वारा व्यञ्जित या कृत (भाव, अभिनय आदि) । पु० सूर्यगवादक; शारीरिक चेष्टा; काविक अनुभाव । -**अभिनय**-पु० अभिनयके चार भेदोंमेंसे एक-शारीरिक चेष्टाओं द्वारा किया जानेवाला अभिनय ।

आंगिरस-वि० [सं०] अंगिरा ऋषिसे संबद्ध या उत्पन्न । पु० अंगिराके पुत्र बृहस्पति आदि; अंगिरस गोपथे उत्पन्न जन; अर्धदेवका एक सत्त्व ।

आंगी*-स्त्री० अंगिया, चोली; छलनी ।

आंगूर, आंगुल-पु० अंगुल ।

आंगुरिया*-स्त्री० दे० 'आंगूर' ।

आंगुरी*-स्त्री० उगली ।

आँची।-स्त्री० महीन जालीमे घड़ी चलनी ।

आँच-स्त्री० गरमी; जलन; लपट; आग; नाव; तैल; चोट; क्षति, हानि, अग्नि; मकड़; प्रेम; कामनाप । **मु०**-**आना**-हानि होना; कष्ट, क्षति, आगत पड़ना । -**खाना**-आच-पर पकाया जाना; (पकायी जानेवाली चीजका) अधिक आँच खा जाना, ताव मारना ।

आँचन, आँछन-पु० [म०] अम्बिभंग, मोचे आदि ठोक करना, शरीरमें काटा, बाण आदि निकालना ।

आँचना*-म० कि० जलाना, तपाना ।

आँचर*-पु० दे० 'आँचल' ।

आँचल-पु० शाल, दुपट्टे आदिका छोर; माढी, धोती आदिका सामने रहनेवाला छोर, अंचला; स्तन (ला०) । **मु०**-**झाड़ना**-विवाहकी एक रीति (मुसल०) । -**दबाना**-दूध पीना । -**देना**-बच्चेको दूध पिलाना; विवाहकी एक रीति; आँचलमे हवा करना । -**में बाँचना**-गाठ रोपना, अच्छी तरह याद कर लेना; (किमी वस्तुकी) सर्वदा साथ रखना । -**लेना**-आँचलमे पैर झुक प्रणाम करना ।

आँजन-पु० [सं०] अञ्जन; अञ्जनीके पुत्र हनुमान् । वि० अञ्जन-संघर्षी ।

आँजन-पु० अञ्जन ।

आँजना-स० कि० अञ्जन लगाना ।

आँजनी-स्त्री० [सं०] अञ्जनी । -**कारी**-स्त्री० अञ्जन तैयार करनेवाली स्त्री ।

आँजनेय-पु० [सं०] हनुमान् ।

आँट-पु०, स्त्री० अंगुठे और तर्जनीके बीचकी अंगुष्ठ; दाँव; पूल; छाग-छाट; गोट । -**सँट**-स्त्री० साजिश, धँसि ।

मु०-**पर चढ़ना**-दबपर चढ़ना ।

आँटना*-अ० कि० आँटना, पूरा पढ़ना; बार पाना; पहुँचना; मिलना, हाथ लगना । स० कि० आँटना ।

आँटी-स्त्री० गुल्ली-बंदा खेलनेकी गुल्ली; पूल; स्तका लच्छा; कुत्ताका एक पेश; टेंट ।

आँठी-स्त्री० दही, कलगम आदिका थका; गोंड; गुठली; उठता हुआ स्तन ।

आँह-वि० [सं०] आँहसे उत्पन्न । पु० हिरण्यगर्भ; अंधकोश; अंधा; अँडोंका ढेर । -**अ**-वि० आँहसे उत्पन्न होनेवाला । पु० पक्षी, सर्प आदि ।

आँह-पु० अंधकोश ।

आँही-स्त्री० गोंड, बट; सिरा; पहियेकी सामी; † अंधकोश ।

आँहू-वि० जो बधिया न हो, अँधुआ (बैल) ।

आँत-वि० [सं०] अंतिम, अंतका ।

आँत-स्त्री० पाचन-संस्थानका आमाशयके बादसे मलद्वार-तकका भाग जिसमेंसे होकर आहार, रसग्रहणके बाद, मलरूपमें बाहर निकलता है, अन्न, अंतकी । -**कट्ट**-पु० चोपायोंका एक रोग । **मु०**-**उतरना**-आँत उतरनेकी बीमारी, अन्नहृदि, 'हार्मिया' । -**एँटना**-आँतमें ऐँठन होना, मरोज होना । -**(तँ)** उलट जाना-कै होना । -**कुलकुलाना**।-**कुलबुलाना**-भूखमे बेचैन होना । -**गलेमें या मुँहमें जाना**-आँतमें मल पड़ना, तग होना । -**ममेटना**-भूख सपना । -**खुलना**-बहुत भूखा होना । -**(सो)**का बल खुलना-छक्कर खाना ।

आँतर-वि० [म०] भीतरी, अंतरंग; गुप्त । पु० अंतरंग मित्र; हृदय; आंतरिक स्वभाव ।

आँतर-पु० अंतर; स्नेहका वह भाग जो एक बार जोतनेके लिए घेरा जाता है; पानीकी ब्यारियोंके बीच छोड़ा जाने-वाला रास्ता ।

आंतरांगारिक-वि० [सं०] अंदरीके कर्तव्योंमे संवध रखनेवाला ।

आंतराल-वि० [सं०] आंतरिक स्वभावका क्षान रखनेवाला ।

आंतरिक्ष, आंतरिक्ष-वि० [म०] अंतरिक्ष-संघर्षी, आकाशीय । पु० दे० 'अनरिक्ष' ।

आंतर्गहिक-वि० [सं०] अंतःपुरमें उत्पन्न या उसमें होने-वाला ।

आंतर्वैश्विक-वि० [सं०] दे० 'आंतर्गहिक' ।

आंतिका-स्त्री० [सं०] अंधी बहन ।

आंत्र-वि० [म०] अंतसे सवध रखनेवाला । पु० आंत ।

आंत्रिक-वि० [सं०] अंत्र-संघर्षी ।

आँव-पु० लोकर; वेदी ।

आँदोल-पु० [सं०] झुलना; कपन; झुल ।

आँदोलक-पु० [सं०] झुला; हिलाने, झुकानेवाला ।

आँदोलन-पु० [सं०] धरसे उधर आना-जाना, झुलना, हिलना; हलचल; किसी बातके लिए व्यापक सामूहिक प्रवृत्ति; तहकीक ।

आँदोलित-वि० [सं०] कंपित; झुलाया हुआ; हलचलमे पूर्ण ।

आँव-स्त्री० अँधेरा; रतौथी, आफत ।

आँवना*-अ० कि० हल्ला खोलना, टूट पड़ना ।

आँवरी, आँवरा-वि० अंधा ।

अंतर । -से बार्त करना-बहुत ऊँचा होना ।
आकाशवाणी-खीं [सं०] रेडियो द्वारा प्रसारित वाणी ।
-केंद्र-खीं वह स्थान जहाँसे रेडियो द्वारा बार्ता, समाचार, संगीत आदि प्रसारित किया जाय ।
आकाशालिकाय-पुं० [सं०] ६ प्रकारके द्रव्योंमेंसे एक (वे०) ।
आकाशी-खीं [सं०] धूपसे बचनेके लिए ताना गया चंदोवा ।
आकाशीय-वि० [सं०] आकाश-संबंधी; आकाशमें स्थित या उत्पन्न ।
आकाशेश-वि० [सं०] असहाय, निराश्रय । पुं० इंद्र ।
आकिंचन, आकिंचन्य-पुं० [सं०] निर्बलता; कंगाली ।
आकिंचत-खीं [अ०] दे० 'आकिंचत' ।
आकिंच-वि० [अ०] अक्षर रखनेवाला, समझदार ।
आकिलखानी-पुं० एक तरहका कपड़ा रंग ।
आकीर्ण-वि० [सं०] फैलाया, बिखेरा हुआ; भरा हुआ, व्याप्त ।
आकुंच-पुं० [सं०] सिमटना, सिकुटना; टेढ़ा होना; वैशेषिक मतके अनुसार पाँच कर्मोंमेंसे एक ।
आकुंचित-वि० [सं०] सिकुटा हुआ; कुटिल; घुपराले (केस) ।
आकुंडन-पुं० [सं०] लज्जा; ओधरा होना ।
आकुंडित-वि० [सं०] जल; लज्जित; कुद, ओधरा ।
आकुल-वि० [सं०] उद्विग्न, परेशान; बेचैन; भरा हुआ; अव्यवस्थित; दबा, अभिभूत (श्रीकाकुल) । पुं० आवाद जगह; खबर ।
आकुलता-खीं [सं०] बेचैनी, उद्विग्नता; परेशानी ।
आकुलित-वि० [सं०] आकुल; जोना हुआ; पकिल किया हुआ ।
आकृत-पुं० [सं०] अभिप्राय; आशय; इच्छा; प्रेरणा; अनुभूति; आशय ।
आकृति-खीं [सं०] इच्छा; अभिप्राय; इरादा; म्यायमुव मनुकी तीन कर्माग्रोंमेंसे एक ।
आकृषार-पुं० [सं०] समुद्र ।
आकृति-खीं [सं०] रूप, गठन; चेहरा; जाति, एक वर्णवृत्त । -च्छत्रा-खीं घोषातकी नामक लता ।
आकृष्ट-वि० [सं०] खींचा हुआ ।
आकृष्टि-खीं [सं०] सिखाव; गुरुत्वाकर्षण; धनुषको झुकाना ।
आकेश-वि० [सं०] अर्द्धनिर्मालित, आधा बढ़ ।
आकोकेश-पुं० [सं०] मकर राशि ।
आकोष-पुं० [सं०] षोडश क्रोध ।
आकृष्ट-पुं० [सं०] रीना, चिहाना; पुकारना; आवाज; लफाईका नारा; धोर युद्ध; चिहानेका स्थान; मित्र, सहायक; मित्र राजापर होनेवाले आक्रमणकी रोकनेवाला राजा ।
आकृष्टि-वि० [सं०] रेमे स्थानपर जाकर चिहानेवाला जहाँमें उसका चिहाना सुनाई दे ।
आकृष्टित-वि० [सं०] जोरसे रोने, चिहानेवाला; पुकारा गया, आहूत । पुं० रीना, चिहाना ।
आकृष्टी(विन्)-वि० [सं०] रोने, चिहाने या पुकारनेवाला ।

आक्रम-पुं० [सं०] निकट जाना; प्राप्त करना; पराभूत करना ।
आक्रमण-पुं० [सं०] प्राप्त जाना; टूट पड़ना; चोट करना; हमला, चढ़ाई; छीनना; कब्जा करना; पराभूत करना; आक्षेप; (ल०) चोट; शक्ति; आहार ।
आक्रमित-वि० [सं०] जिसपर आक्रमण किया गया हो, आक्रांत ।
आक्रमित-वि० [सं०] (वह नायिका) जो मनमा-वाचा-वर्मणा नायककी अपने बशमें करे ।
आक्रम-पुं० [सं०] व्यापार, व्यापारी; फेरीवाला ।
आक्रांत-वि० [सं०] जिसपर हमला किया गया हो; प्राप्त; पराभूत; जिसपर कब्जा किया गया हो; कष्टग्रस्त ।
आक्रांति-खीं [सं०] कब्जा करना; आरोहण; चढ़ जाना; पराभूत करना; मार डालना; शक्ति, बल ।
आक्रामक-वि० [सं०] आक्रमण करनेवाला ।
आक्रोह-पुं० [सं०] क्रोधाभ्यास, विहारस्थल, उपवन आदि; क्रोधा । वि० क्रोधाशील । -गिरि, -पर्वत-पुं० क्रोधाका पहाड़ । -भूमि-खीं क्रोधास्थल ।
आक्रोहन-पुं० [सं०] क्रोधा करना ।
आक्रोही(विन्)-वि० [सं०] क्रोधाशील । [खीं] 'आक्रो-जिनी' ।
आक्रुष्ट-वि० [सं०] जो कोमा गया हो; अभिशास । पुं० दुर्बल; परुष साधना; इटि-फटकार ।
आक्रोश-पुं० [सं०] कोमना, शाप; निन्दा-कुत्सा; कट्टिक; शपथ ।
आक्रोशक-वि० [सं०] कोमने, शाप देनेवाला ।
आक्रोशन-पुं० [सं०] कोमना; शाप देना; घुरा-भला कहना ।
आक्रोशित-वि० [सं०] दे० 'आक्रुष्ट' ।
आक्रोश(द्रु)-वि० [सं०] आक्रोशक ।
आक्रुष्ट-वि० [सं०] तर, मोगा हुआ; द्रवित, कर्णहार ।
आक्रुष्ट-पुं० [सं०] आँगना, आर्द्र बीना ।
आक्ष-वि० [सं०] अक्ष-सम्बन्धी । -पाटिक-पुं० धननिरीक्षक; म्यायाधीश ।
आक्षकी-खीं [सं०] एक तरहकी जराब ।
आक्षपाद्-पुं० [सं०] अक्षपाद-गोनम-का अनुयायी ।
आक्षारण-पुं० [सं०] व्यवहार आदिका दोषारोप ।
आक्षिक-वि० [सं०] जुआरी; जुग्मे संबंध रखनेवाला; जुग्मे जीना हुआ । पुं० एक वृक्ष, अक्षिक; जुग्में जीता या हारा हुआ धन ।
आक्षिप्त-वि० [सं०] फेंका, गिराया हुआ; छोना हुआ; जिसपर आक्षेप किया गया हो, लक्षित; अभिभूत; परित्यक्त; निर्दिष्ट; जिसे नुनीनी दी गयी हो ।
आक्षीब-वि० [सं०] मर । पुं० सहिजन, अक्षीब ।
आक्षेप-पुं० [सं०] फेंकना; उछालना; खींचना; अपवाद, लक्षण; आपत्ति, एतराज; संकेत, निर्देश; ध्वनि; एक लक्ष्यकार जिसमें विवक्षित वस्तुकी कुछ विशेषता प्रतिपादित करनेके लिए निरूपित किया जाता है (सा०); एक वातरोग ।
आक्षेपक-वि० [सं०] आक्षेप करनेवाला; शिकारी । पुं० एक वातरोग ।

आक्षेपण-पु० [सं०] आक्षेप करना ।
 आक्षेपी (विच्) -वि० [सं०] आक्षेपक ।
 आक्षेपट-पु० [सं०] अक्षरोट ।
 आक्षेपन-पु० [सं०] आक्षेप ।
 आक्षेपण-पु० [अ०] आक्षेपजन और धातुके मेलसे बना पर्याय, जग, मोरचा ।
 आक्षेपजन-पु० [अ०] एक गैस जो प्राणियोंके जीवनके लिए अत्यावश्यक है, अम्लजन, ओषजन ।
 आक्षेपल-पु० [सं०] द्रव ।
 आक्ष-पु० [म०] खंती; कुदाल ।
 आक्षण-वि० [सं०] कक्षा (जो खोदा न जा सके-जैसे परधर) ।
 आक्षत-पु० अक्षत; विवाह आदिसे नार्ह आदिके लिए निकाला जानेवाला अन्न; केसर आदिसे रंगा हुआ चावल जो दूधसे या दैवताके मस्तकपर लगाया जाता है ।
 आक्षता-वि० [फा०] वधिया ।
 आक्षत-अ० खलारकर धूकनेकी आवाज; शिकार-पुचक उद्गार ।
 आक्षन-पु० [सं०] ड्रे० 'आक्ष' । * अ० प्रसिद्ध ।
 आक्षनक-म० कि० कहना; देखना; चाहना; उल्लंघन करना; छलनीमे छानना ।
 आक्षनिक-पु० [म०] खोरनेवाला; ब्रान खोरनेवाला; चूहा; भूकुर; चोर; कुदाल ।
 आक्षर-पु० [म०] कुल्हाड़ी; कुदाल; सार; अस्तबल; * अक्षर, वर्ण ।
 आक्षा-पु० क्षाने कपड़ेसे मदी छलनी; सुरजी । * वि० पूरा, समूचा; अनगढ़ा ।
 आक्षात-पु० [म०] उत्खनन; कुदाल; खनी; उपमलार ।
 आखिर-पु० [फा०] अन्त, समाप्ति, सीमा; परिणाम । वि० अन्तका, पिछला । अ० अन्तमे, आखिरको; अवश्य; मला; मगर । -कार-अ० अन्तमे, अन्तः ।
 आखिरत-खी० [अ०] परलोक (वनन); विगड़ना ।
 आखिरी-वि० अन्तिम, सबसे पीछेका ।
 आखु-पु० [म०] चूहा; चोर; भूकर; कुदाल; कंजूस; देवताङ्क । -करीष-पु० कल्मीक । -कर्णपरिणका, -कर्णी, -परिणका, -पर्णी-खी० मूसाकानी नामक लता । -रा, -रथ, -बाहन-पु० गणेश । -वात-पु० सुसह, चूहना । -वाचन-पु० चुक्क; सखिया । -भुक् (बू) -पु० विशाल । -विषहा-पु० देवताङ्क वृक्ष । -भुक्ति-खी० आलुकर्णी ।
 आखेट-पु० [सं०] शिकार, मृगया ।
 आखेटक-पु० [सं०] शिकारी; शिकार ।
 आखेटिक-पु० [सं०] शिकारी; शिकारी कुत्ता । वि० शिकार करनेमें दक्ष; मयंक ।
 आखोट-पु० [सं०] अक्षरोट ।
 आखौर-पु० [फा०] पानी पीनेकी जगह; चौपायोंके चारा खानेका स्थान, सार, चरनी; उनके आगेकी घास; उनके स्थानसे बचा चारा; रद्दी, निकम्मी चीज; कूड़ा । वि० निकम्मा, खराब; सफा-गला; गदा । -की भर्ती-रद्दी चीजोंका डेर ।

आख्या-खी० [सं०] नाम; विवरण; व्याख्या; यथा ।
 आख्यात-वि० [सं०] कथा हुआ; जनाया हुआ; प्रसिद्ध । पु० कियापद ।
 आख्याता (तु) -पु० [सं०] कहने, बतानेवाला; शिक्षक ।
 आख्याति-खी० [सं०] कहना; बताना; नाम; प्रसिद्धि ।
 आख्यान-पु० [सं०] कहना; वर्णन; वृत्तांत; कथा-कथानी; पौराणिक कथा; भेदक धर्म; महाकाव्यका सर्ग; वह कथा जिसे कवि या लेखक स्वयं कहे ।
 आख्यानक-पु० [सं०] आख्यान; छोटा आख्यान; कथानक ।
 आख्यानकी-खी० [सं०] एक वृत्त ।
 आख्यायक-वि०, पु० [सं०] कहने, बतानेवाला; संदेश-वाहक ।
 आख्यायिका-खी० [सं०] सिलसिलेवार कहानी या वृत्तांत; वह आख्यान जिसमें पात्र भी अपना चरित्र अपने मुँहमे कुछ-कुछ कहते हैं; शिक्षा देनेवाली कल्पित कथा ।
 आख्येय-वि० [सं०] कहने, बताने योग्य ।
 आर्गता (तु) -वि० [सं०] आनेकी इच्छा करनेवाला ।
 आर्गतु-वि० [सं०] आनेवाला; बाहरसे आनेवाला; भटक हुआ; आकस्मिक । पु० अजनबी; मेहमान, अतिथि ।
 आर्गंतुक-वि० [सं०] विना बुलाये आनेवाला; अचानक आने या होनेवाला; अजनबी; प्रक्षिप्त; भूला-भटका (जान-बर); आकस्मिक । पु० क्षेपक; अजनबी; अतिथि । -ज्वर-पु० चोट, भय आदिसे होनेवाला ज्वर । -व्याधि-खी० किसी बीमारीके बीच आकस्मिक हेतुसे होनेवाला मौज रोग ।
 आग-वि० [सं०] आकस्मिक । खी० [हिं०] अधि; कामाग्नि; वातस्वप्न प्रेम; जलन; बाह; संताप; अतज्जाला । पु० ऊँसका अगोरा; हरमेकी नोकके पास बना हुआ खड्डा । वि० जलता हुआ, गरम, (ला०) अतिक्रुद्ध । * अ० आगे ।
 सु० -उठाना-हमधा उठाना; दूरी बेदनाको जगाना । -का पुतला-क्रोधी, अभिशर्मा । -का बाग-दुनार-का अंगीठा; आतशबाजी । -के मोल-बहुत मेहनत । -खाना अंगार इशाना-जैसी करनी वैसी भरनी । -हाइना-चकमकमे आग पैदा करना । -विखाना-आग लगाना; तोपमें बत्ती देना । -देना-दाहकमे करना; आगशबाजीमें आग लगाना; जलाना; नष्ट करना; तोपमें बत्ती देना । -घोना-अंगारेपकी राख झाड़ना । -पर आग डालना-जल्मी जलाना । -पर पानी डालना-क्रुद्धकी शांत करना, लड़नेवालोंको समझाना-सुझाना । -पर लोटना-तत्पन, बेचैन होना; ईर्ष्या करना । -पाकीका बैर-सहज बैर । -फाँकना-डोंग मारना । -हँकना-क्रुद्ध करना । -फूसका बैर-सहज बैर । -बहला, अर्भूका होना-गुस्सेसे लाल होना, अति क्रुद्ध होना । -बरसना-सख्त गरमी पड़ना या लू चलना; गोले-गोलियोंकी बौछार होना । -बरसाना-दुश्मनपर गोले-गोलियोंकी वर्षा करना । -बुझा लेना-कसर निकालना । -बोना-उत्पात खड़ा करना; झगड़ा लगाना । -अधकाना-बहुलक मचाना; ल्हाई बढ़ाना; जोश बढ़ाना । -भी ब लुगाना-बुच्छ समझना । -भूतना-अति करना । -में क्रुद्धना-अपने ऊपर विपत्ति लेना । -में भी छोड़ना या डालना-क्रोध भटकाना; हमधा

बढ़ना । -में झोंकना-(किमीको) आफत, खतर, अनिष्टमें डकेल देना । -में पानी डालना-क्रोध शांत करना; झगड़ा मिटाना । -छगना-क्रोध बरक उठना, गुस्सेसे काह हो जाना; डाहसे चलने लगना; किसी वस्तु का बहुत मर्हवा हो जाना; नष्ट होना । -छगाकर तमाशा देखना-झगडा खडा करके उसमें आनंद लेना । -छगाकर पानीको रौबना-पहले झगडा लगाकर फिर उसको शांत करनेका यत्न करना । -छगाना-क्रोध या ईर्ष्या बरकाना; चुगली खाना; नाश करना । -छगेपर कुर्छो खोदना-पहलेसे करनेके कामको ऐव बरकपर करने चलना । -छगेपर पानी कहरा-गुस्सेमें मुरीबत नही रहना । -छेने आना-उल्टे पांव लौट जाना । -से पानी होना-क्रोध करनेके बाद शांत होना । -होना-कूट होना ।

आव(स्) -पु० [सं०] अपराध, दोष; पाप; दंड ।

आवाजनी-खी० उपद्रवकारियों द्वारा घर, दुकान आदिमें आग लगा देनेका कार्य ।

आवाड़ा-पु० आर आदिको वह बाह जिसके दाने मूर गये हों ।

आवास्त-वि० [सं०] आवा हुआ, पहुँचा हुआ; घटित; प्राप्त; बाहरसे आया हुआ (माल) । पु० आगमन; अतिथि; घटना । -पतिका, -अर्चुका-खी० वह नायिका जिसका पति परदेससे लौटा हो । -स्वागत-पु० अतिथि, निमन्त्रित का स्वागत-सत्कार, आ-स्वात ।

आवाति-खी० [सं०] आगमन; प्राप्ति; वापस आना; मूल; अवसर ।

आवा-पीछ-पु० आगा-पीछा ।

आवापेटी-खी० दियासलाईकी डिबिया ।

आवास-पु० [सं०] आना, अवार्थ; समागम; प्राप्ति; जन्म, उत्पत्ति; वृद्धि; संयच (धनागम), आमदनी, प्रवाह, धारा; शान; वेद; शास्त्र; दर्शन; तंत्रशास्त्र; न्यायमें माने हुए कान प्रमाणोंमेंसे एक, शब्द-प्रमाण; सिद्धांत; साक्षिपत्र; शब्दसाधनमें किसी वर्णकी वृद्धि; होनहार; आनेवाला समय; उपक्रम । वि० आगामी । -जानी-वि० [हि०] होनहार-भविष्यको समझनेवाला । -जानी(निच)-वि० होनहार समझनेवाला । -निरपेक्ष-वि० साक्षिपत्रकी अपेक्षा न रखनेवाला । -नीत-वि० अधीत । -रहित-वि० जिसके पास साक्षिपत्र न हो; शास्त्रोंसे रहित । -वक्ता(कृ)-वि०, पु० भविष्य बनानेवाला । -बुद्ध-वि० शानबुद्ध, शंकराचार्यका एक विशेषण । -शपथुली-खी० अतिथिके आनेपर सेंट की बानेवाली पूरी । -जुति-खी० रिवाज, प्रथा । -सोचो-वि० [हि०] आगेकी बात सोचनेवाला, आकलन-अवेष्ट । मु० -करना-उपक्रम बोधना । -अनाना-होनहारकी सूचना देना । -बाँचना-आनेवाली बातका निश्चय करना ।

आगमन-पु० [सं०] आना; लौटना; प्राप्ति; उत्पत्ति ।

आगमापानी(विच)-वि०[सं०] जन्म-मरण-शील, अनित्य ।

आगमावर्त्ता-खी० [सं०] वृष्टिकाळी नायक पौषा ।

आगमित-वि० [सं०] अधीन, पठित ।

आगामी(विच)-वि०, पु० [सं०] ज्योतिषी; सामुद्रिक

जाननेवाला; शास्त्रज्ञ; जानेवाला; भावी ।

आगार-पु० आकर, खान; डेर; खजाना; घर; छपर; नमक जमानेका गडडा; * अगरी, भ्योरा; [सं०] अमावास्या । वि० बदकर, अधिक; कुशल, चतुर ।

आगरी-पु० नमक बनानेवाला ।

आगल*-पु० अगरी । अ० आगे, सामने ।

आगला*-वि० अगला ।

आगलित-वि० [सं०] लिख, उदास ।

आगवन*-पु० दे० 'आगमन' ।

आगस्ती-खी० [सं०] अगस्त्यकी दिशा; दक्षिण ।

आगस्त्व-वि० [सं०] अगस्त्य-संबंधी; दक्षिणी; अगस्त्य वृक्ष-से उत्पन्न । पु० अगस्त्यके वंशज; उस गोत्रके व्यक्ति ।

आगांतु-पु० [सं०] अतिथि, मेहमान ।

आगा-पु० वस्तुका आगेकी ओरका भाग; अँगरले आदिमें आगेका पहा या डुकडा; मकानके आगेका सहन, अगवारा; सेनाका अग्र भाग; किर्गद्विच; नेहरा; माथा; गलड़ी; भविष्य; आगम । -पीछा-पु० आगे-पीछे होनेवाली बातें; (कार्यका) परिणाम, नतीजा; हिलक, पसोपेश; देहका अगला-पिछला भाग, विशेषतः गोपनीय अंग । मु० -काटना-किसी अपशकुन-कारक व्यक्ति वा प्राणीका आगेले निकल जाना ।

-तागा लेना-आदर-सत्कार करना । -आरी होना-गर्भवती होना । -भारना-बाधक होना । -रोकना-हमला रोकना; किसी बड़े कामकी मैंमालना; ओट करना; बाधक होना । -लेना-हमला रोकना । -मैंमालना-दुश्मनका हमला रोकना; मुंसेद्रियको दकना ।

आगा-पु० [तु०] बड़ा भारी; मालिक; काबुलका रहनेवाला ।

आगाङ्ग-पु० [फा०] आरंभ, शुरु, उठान ।

आगाता(तु)-वि० [मं०] गानके द्वारा प्राप्त करनेवाला ।

आगाध-वि० [सं०] बहुत गहरा, अवाह; दुष्प्राप्य ।

आगावन-पु० प्रमग; हाल, वृत्तांत; [सं०] गानके द्वारा प्राप्त करना ।

आगावि-वि० दे० 'आगामी' ।

आगामिक-वि० [मं०] भविष्यत् कालमें मरण रखनेवाला; जानेवाला ।

आगामी(विच)-वि० [सं०] जानेवाला; भावी ।

आगामुक-वि० [सं०] जानेवाला; भावी ।

आगार-पु० [सं०] घर; स्थान; भांडार (अन्नागार); खजाना । -गोषिका-खी० छिछकली । -धूम-पु० मकानमें निकलनेवाला धुआँ; एक पौषा ।

आगाह-वि०[फा०] जानकार, खबर रखनेवाला, अभिज्ञ । * पु० होनहार, भवितव्य ।

आगाही-खी० [फा०] जानकारी, सूचना ।

आगि*-खी० आग । -बर्त-पु० एक तरहका मेघ ।

आगिल, आगिला*-वि० अगला ।

आगी*-खी० दे० 'आग' ।

आगू-खी० [सं०] हकरार, वचन, प्रतिज्ञा । * अ० आगे । पु० परिणाम ।

आगे-अ० सामने; सामनेकी ओर कुछ दूरपर; पहले; पीछे, बादमें; अधिक; आइदा; गोदमें । -आगे-अ० क्रमशः; कुछ दिन बाद; आगे चलकर । -पीछे-अ० एकके बाद

एक; मुँहपर और पीछे पीछे; अव्यवस्थित रूपमें; पास-पास; थोड़ा आगे या पीछे; बंधा, खानदानमें (उसके आगे-पीछे कोई नहीं है)। **झुं** - आना-सामना करना; कर्मका फल मिलना; घटित होना। - **करना**-सामने रखना, हाजिर करना; अगुआ बनाना; सतरे आदिके सामने कर देना, आक लेना। - **का उड़ा-जुठन** - की उल्लेख-कुश्तीका एक पंच। - **को**-आगेसे, आर्द्रता। - **छाछना**-खानेके लिए सामने रखना। - **छोलना**-आगे फिरना; छक्केका सामने होना। - **छेना**-सामने रखना। - **छीक पीछे चौक**-आगे काम करते आना और पीछेका खयाल न रखना। - **छरना**-रखना-हाजिर करना; भेंट करना; आदर्श बनाना। - **निकलना**-साथियों, प्रतिस्पर्धियों आगे बढ़ जाना। - **लेना**-अपवानी करना, आगे जाकर मिलना। - **से**-पहलेसे; अविष्यमें; नामनेसे। - **से छेना**-स्वागत करना। - **होकर लेना**-आगे बढ़कर स्वागत करना। - **होना**-अप्रसर होना; बढ़ जाना; सामना करना; परदा करना; स्वागत करना।

आगो*-वि० अग्रगण्य, बड़ा हुआ-ज्ञान कहाव अज्ञाननि आगो-वन०।

आगीन*-पु० आगमन।

आगिना*-वि०[म०] अग्नि या यज्ञाभिमे संबंध रखनेवाला।

आग्नीप्र-पु०[म०] अग्नीप्र; अग्नीप्रका कर्तव्य; यज्ञाभि जलानेका स्थान। वि० अग्नीप्र-संबंधी।

आग्नेय-वि०[म०] अग्नि-संबंधी; अग्निको अग्नि; अग्निने उत्पन्न; अग्निगर्भ; जिससे आग निकले; अग्निदीपन; अग्नि जैसा (झीका)। पु० स्मृत; अगस्त्य; किष्किधार्के पासका एक प्राचीन जनपद; अग्नि-पूजक; अग्निर्को अर्पित हवि आदि; कृत्तिका नक्षत्र सीना; रक्त; लाक; वारुद; आग्नेयास्त्र; वह कीर्ति जिसके काटनेमें जलन हो (मिथ आदि); ज्वालासुखी पर्वन। - **पुराण**-पु० अग्निपुराण।

आग्नेयास्त्र-पु०[म०] अभिमन्त्रित बाण जिसमें आग निकले; तीप-बंदक आदि।

आग्नेयी-स्त्री०[म०] अग्निपत्नी, स्वाहा; पूर्व-दक्षिणकी दिशा; प्रतिपदा; अग्नि उद्दीप्त करनेवाली औषध।

आग्रयण-पु०[सं०] वर्षा, शरत् या बसन्तमें नये अन्नसे किया शानेवाला औष यज्ञ; अग्रिका एक रूप।

आग्रह-पु०[सं०] ग्रहण, लेना, पकड़ना; किसी वस्तुको धृतामें पकड़ना; अ क्रमण; अनुग्रह; नैतिका बल; निश्चय; जोर देना, हसरत; हठ; मुस्तेदी।

आग्रहायण, **आग्रहायणक**-पु०[सं०] अग्रहणका महीना।

आग्रहायणी-स्त्री०[सं०] अग्रहणकी पूर्णमासी; सुगंधिरी नक्षत्र; एक पाकयज्ञ।

आग्रहारिक-वि०[सं०] अग्रहार भूमिका हरण कर लेनेवाला।

आग्रहिक-स्त्री०[सं०] अनुग्रह, कृपा; सहायता।

आग्रही(दिक्)-वि०[सं०] आग्रह करनेवाला।

आच*-पु० अर्घ, मूल्य।

आचहक-पु०[सं०] लाल चिचकी।

आचहना-स्त्री०[सं०] हिलना या कौपना; रवक; संवर्षण; संपर्क।

आचर्य, **आचर्यण**-पु०[सं०] रणक, संवर्षण।

आचर्यणी-स्त्री०[सं०] व्रत; रवर।

आघाट-पु०[म०] सरहद, सिमान; अपामार्ग; मूल्यके साथ बजाना जानेवाला एक वाद्य।

आघात-पु०[सं०] चोट, प्रहार; वाक; धक्का; वध; बूचक-खाना; विपत्ति; पेशाबका रुकना, मूत्राघात; चोट करनेवाला। - **स्थान**-पु० बथालय।

आघातव-पु०[सं०] आघात करना; वधस्थान।

आघार-पु०[सं०] छिक्कना; यज्ञाभिमें घीकी आहुति देना; घी।

आधी*-स्त्री० ब्याजके रूपमें मिलनेवाला अन्न; ब्याजके रूपमें अन्न मिलनेकी शर्तपर होनेवाला लेन-देन।

आधु-पु० दे० 'आध'।

आधुर्वा-वि०[सं०] चक्कर खाता हुआ, घूमता हुआ।

आधुर्वा-पु०[सं०] घूमना, चक्कर खाना।

आधुर्वा-वि०[सं०] घुमाया या चक्कर खाया हुआ।

आधुनि-पु०[सं०] सुख। वि० तेजसे चमकनेवाला।

आधोच-पु०[सं०] जोरसे पुकारना, ऊँची आवाजमें कहना; मुनारी।

आधोचण-पु०, **आधोचणा**-स्त्री०[सं०] धोषणा; मुनारी।

आध्रण-पु०[सं०] सँपना; रुसि। वि० सँपा हुआ; रुस।

आध्रत-वि०[सं०] सँपा हुआ; रुस; स्पष्ट। पु० ग्रहणका एक भेद (ज्यो)।

आध्रापण-पु०[सं०] सँपाना, संग्रह-दान।

आध्रय-वि०[सं०] जो सँपा जाय; सँपनेके योग्य।

आचक्षु(स्)-पु०[सं०] बिदार।

आचमन-पु०[सं०] पूजन आदिके पहले छुदिके लिए हथेलीपर जल लेकर पीना; इस प्रकार पीनेका जल; गरगर शब्दके साथ कुली करना; मुग्धबाला।

आचमनक-पु०[सं०] धुकने, कुली केंकनेका पात्र, पीक-दान; आचमन करनेका जल।

आचमनी-स्त्री० कलछीकी शक्तीका चम्मच जिसमें जल लेकर आचमन करते हैं।

आचमनीच-वि०[म०] आचमन करने योग्य। पु० आचमनके काममें लाया हुआ जल; पीकदान।

आचमनीयक-पु०[सं०] आचमन करनेका जल।

आचमित-वि०[सं०] पिया हुआ; आचमन किया हुआ।

आचय-पु०[सं०] चुनना, इकट्ठा करना; ढेर।

आचयक-वि०[सं०] चयन-कुशल।

आचरज*-पु० दे० 'अचरज'।

आचरजित*-वि० दे० 'आश्चर्यित'।

आचरण-पु०[सं०] करना; बरतना; अनुसरण; छुदिके लक्षण; चरित्र, चाल-चलन; आचमन; नियम; रथ, गाड़ी।

आचरणीय-वि०[सं०] आचरण करने योग्य, अनुसरणीय।

आचरन*-पु० दे० 'अचरण'।

आचरना*-सं० क्रि० व्यवहार करना।

आचरित-वि०[सं०] किया हुआ, अनुसृत; निर्दिष्ट; नियम द्वारा निश्चित। पु० कणिके की-पुत्रादि लेकर या उसके दरवाजेपर धरना देकर पावना बसूल करना।

आचर्य-वि०[सं०] आचरणीय।

आचर्य-वि० [सं०] जिसने आचमन कर लिया हो; कुली करके फेंका हुआ या आचमनके योग्य (जल) ।
आचरि-स्त्री० [सं०] दे० 'आचमन' ।
आचाम-पुं० [सं०] आचमन; मंत्र ।
आचामक-पुं० [सं०] आचमन करनेवाला ।
आचार-पुं० [सं०] चरित्र, चाल; अच्छा चाल-चलन; व्यवहार; शास्त्रीय आचार; रिवाजी या रूढ़ व्यवहार (लोकाचार, कुलाचार); आचारविधि, व्यवहारका तरीका; आहार; आचरण-संबंधी नियम । -संज्ञ-पुं० तंत्रका एक भेद (नौ०) । -दीप-पुं० आरती उतारनेका दीप ।
पतित-वि० दे० 'आचारभ्रष्ट' । -पूत-वि० शुद्धाचारी । -भेद-पुं० आचरण-संघी नियमोंका अंतर । -भ्रष्ट-वि० जिसका आचार-व्यवहार बिगड़ गया हो, पतित । -लाज-पुं० राजा आदिपर फेंका जानेवाला लाज । -बर्जित-वि० जातिभ्रुत; नियमविरुद्ध ।
विचार-पुं० आचार और औचादिका ध्यान । -बेसी-स्त्री० आर्यावर्ष, पुण्यभूमि । -हीन-वि० शास्त्रीय कर्म न करनेवाला, आचारभ्रष्ट ।
आचारज-पुं० दे० 'आचार्य' ।
आचारजी-स्त्री० पौरोहित्य; आचार्य होनेका भाव । वि० दे० 'आचार्य' ।
आचारवार्त्त(वत्)-वि० [सं०] शास्त्रीय कर्म करनेवाला, कर्मनिष्ठ, सदाचारी ।
आचारी-स्त्री० [सं०] हुदुर, हिलमोचिका ।
आचारी(रिक्)-वि० [सं०] आचारवान्, शुद्ध आचरण-वाला । पुं० रामानुज संप्रदायका अनुयायी, श्रवैष्णव ।
आचार्य-पुं० [सं०] गुरु, शिक्षक; उपनयन करने और वेद पढ़ानेवाला गुरु; महाविद्यालयका प्रधान प्राध्यापक; (किसी विषयका) असाधारण पंडित, पूज्यपुरुष; मतप्रवर्तक; यज्ञमें कर्मका उपदेश करनेवाला; पाठ्यों आदिके गुरु द्रौणका उपनाम । -करण-पुं० अध्यापकका कार्य करने । -देव-वि० जो आचार्यको अपना आराध्य देव मानता है । -भोगीन-वि० आचार्यको अच्छा लगनेवाला; आचार्यके उपयुक्त ।
आचार्य-वि० [सं०] आचार्यमे मिलनेवाला । पुं० पाठ, शिक्षा ।
आचार्या-स्त्री० [सं०] स्त्री गुरु; मंत्रकी व्याख्या करनेवाली ।
आचार्यानी-स्त्री० [सं०] आचार्यपत्नी ।
आचार्या-वि० आचार्य-संबंधी; आचार्यका ।
आचर्य-वि० जो चित्तनमें न आ सके । पुं० ईश्वर ।
आचित-वि० [सं०] भरा हुआ; लुटा हुआ; बंधा हुआ; इकट्ठा किया हुआ; फैलावा हुआ; व्याप्त । पुं० एक गाड़ीका नौस; एक परिमाण जो दस भार वा ८० हजार तोला होता था ।
आचरण-पुं० [सं०] चूना; तुनी लगाना ।
आच्छा-वि० [सं०] छिपा हुआ; ढका हुआ ।
आच्छा-पुं० [सं०] एक देश, आक्षिप्त ।
आच्छा-पुं० [सं०] वस्त्र; पहनावा ।
आच्छादक-वि० [सं०] ढकने, छिपानेवाला ।
आच्छादन-पुं० [सं०] ढकना, छिपाना; ढकन, ढोल;

वस्त्र, पहनावा; छाजन, ठाट; ढोप ।
आच्छादित-वि० [सं०] ढका, छिपा हुआ ।
आच्छादी(विद्)-वि० [सं०] आच्छादन करनेवाला ।
आच्छादक-पुं० [सं०] दे० 'आच्छादक' ।
आच्छुरित-वि० [सं०] मिला हुआ; ढका हुआ; झुंझ; नाखूनमे खरींचा हुआ । पुं० नाखूनसे नाखून रगड़कर बजाना, नखवाच; अट्टहास ।
आच्छुरितक-पुं० [सं०] नखलत; अट्टहास; सशब्द हास ।
आच्छेत्ता(त्)-पुं० [सं०] काटनेवाला ।
आच्छेद, **आच्छेदन**-पुं० [सं०] काटना, पृथक् करना; बलपूर्वक ले लेना ।
आच्छोटन-पुं० [सं०] उँगली फोड़ना या चटकाना ।
आच्छोदन-पुं० [सं०] शिकार, आखेट ।
आच्छत-अ० होते, रहते हुए, मौजूदगीमे ।
आच्छा-अ० कि० होना, मौजूद होना ।
आच्छा-वि० दे० 'अच्छा' ।
आच्छी-वि०, स्त्री० अच्छी । वि० खानेवाला ।
आच्छे-अ० अच्छी तरह ।
आच्छेप-पुं० दे० 'आक्षेप' ।
आच्छो-वि० दे० 'अच्छा' ।
आज-वि० [सं०] बकरा-संघी । पुं० घी; गिद्ध, फेंकना; [हं] वर्तमान, बीतता हुआ दिन । अ० वर्तमान दिनमें, वर्तमान कालमें; इस घड़ी, इस वक्त । -कल-पुं० वर्तमान काल; नया जमाना । अ० वर्तमान कालमें, इन दिनों । -कल करना, बताना-ढालमढोल करना । -कलका-हालका; नये जमानेका । -कलमें-दो-चार दिनोंमें ही, बहुत जल्द । -कल लगाना-मौत करीब होना । -को-इस समय । -तक-हाँ-वर्तमान दिन या घड़ीतक । -मुझे कल दूसरा दिन-मृत्युके बादकी बातकी ओर ध्यान न देना । -से-आजके दिनमें, अबमें ।
आजक-पुं० [सं०] बकरोंका समूह ।
आजकार-पुं० [सं०] शिवका वृषभ, नदी ।
आजगर-वि० [सं०] अजगर-संबंधी; अजगरविन; अजगरसा कार्य करनेवाला ।
आजगव-पुं० [सं०] शिवका धनुर् ।
आजनन-पुं० [सं०] उच्च वंश, सद्गम । अ० जन्मने ।
आजना-सं० कि० विद्याना-पदव्यय मन्त्र मनोहर गृध्र आसन आदि-पन० ।
आजन्म-अ० [सं०] जन्ममें, जन्मकालमें लगाकर; जन्म-पर, आजीवन ।
आजमाइस-स्त्री० [सं०] परीक्षा; जाँच; परीक्षार्थ प्रयोग ।
आजमाइसी-वि० [सं०] परीक्षेके लिए किया गया, परीक्षार्थ ।
आजमाना-सं० कि० परीक्षा, जाँच करना; परीक्षार्थ प्रयोग करना ।
आजमूसा-वि० [सं०] आजमाया हुआ, परीक्षित, अनुभूत ।
आजयन-पुं० [सं०] जीतना; बुद्धि ।
आजवह-वि० [सं०] बकरेसे दोषा जानेवाला । पुं० (हिमा-लयका) पर्वतीय देश जहाँ बकरा सामान देनेके काममें लगा जाता है ।
आजा-पुं० दादा, पितामह । -गुरु-पुं० गुरुका गुरु ।

आज्ञाव-वि० [फा०] स्वाधीन, जो हास या बंधुआ न हो; निरदर; उद्धत; हाजिरजवाब; अकिंचन; बे-निशान; शास्त्र या लोकाचारका बंधन न माननेवाला; बे-परवाह; दे० 'अबुल कलाम' ।-स्वयाच्छ-वि० स्वाधीनचेता, स्वतंत्र विचारका ।
-सबीयत-वि० सुले दिल्का, सरल ।

आज्ञादाना-अ० [फा०] आज्ञादीके साथ, सुलकर ।

आज्ञावी-खी० स्वाधीनता, मुक्ति ।

आज्ञाव-पु० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; जन्मस्थान; बंश । अ० सृष्टिकालसे ।-देव-पु० जन्मजात देवता; वह देवता जो सृष्टिके आदिमें देवरूपमें उत्पन्न हुआ ।

आज्ञावि-खी० जन्म; बंश; अच्छी नस्ल या बंश; जन्मदात्री, माता ।

आज्ञाव-अ० [सं०] औपेक्षिक अंत या घटनेतक ।-बाहु-वि० जिसकी बांहें घटनेतक पहुँचती हों ।

आज्ञावेय-वि० [सं०] अच्छी नस्लका (बोधा); कुलीन । पु० अच्छी नस्लका बोधा ।

आज्ञार-पु० [फा०] रोग; कष्ट, पीडा ।

आज्ञि-पु० [म०] युद्ध; युद्धस्थल; दौडका मैदान; सीमा; सड़का; क्षण; अपराध ।

आज्ञिग्रह-वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; हरण करनेवाला ।

आज्ञिज्ञ-वि० [अ०] दीन, लाचारी, अशक्त; तम आया हुआ; नम्र । मु०-आना-तंग आना, ऊब जाना ।

आज्ञिजी-खी० [अ०] लाचारी, अशक्तता; विनय; दीनता ।

आजी-खी० दादी, पितामही ।

आजीव-पु० [म०] जीविका, रोजी, पेशा; जीविकाका उपाय; उत्पन्न आय; राजकर (कौ०) ।

आजीवक-पु० [म०] रोज माप ।

आजीवन-पु० [सं०] जीविका । अ० जीवनपर्यंत, जिंदगी-भर ।

आजीविका-खी० [म०] रोजी; रोजगार, पधा ।

आजीव्य-वि० [म०] जीविका देने योग्य; पेदा बनानेके लयक; बमने योग्य; उपजाऊ । पु० जीविकाका साधन ।

आजु-पु०, अ० दे० 'आज' ।

आज्ञर्दगी-खी० [फा०] सख्तिना, रज ।

आज्ञर्दगी-वि० [फा०] शिष्ट, अप्रसन्न ।

आजू-पु० [सं०] बिना मजदूरीके काम करनेवाला व्यक्ति । खी० बेगार; नरकवास ।

आज्ञु-वि० [सं०] आदिष्ट; जिसके संबंधमें आज्ञा दी गयी हो ।

आज्ञुसि-खी० [सं०] आज्ञा, आदेश ।-हर-पु० आज्ञा-वाचक, दूत ।

आज्ञा-खी० [सं०] हुक्म, आदेश; अनुमति ।-कर-पु० नौकर, मेवक ।-करण-पाठन-पु० आदेशका पालन ।

-कारी(वि०)-वि० आज्ञापालक ।-चक-पु० तत्र और योगमें देहके भीतर आने हुए ६ चक्रोंमेंसे एक ।-पत्र-पु० हुस्मनामा, आदेशनामक पत्र ।-प्रतिवात-अंग-पु० आज्ञाका उल्लंघन, आज्ञाके विरुद्ध कार्य करना ।-फलक-वह पत्र जिसपर किसी विषयवार्तिका आज्ञा लिखी गयी हो ।

-विचेय-वि० दे० 'आज्ञाकारी' ।

आज्ञावा(न), आज्ञापक-वि० [सं०] आज्ञा देनेवाला ।

आज्ञाधि-खी० [सं०] राजाशासि रखी या रखायी गयी गिरवी ।

आज्ञान-पु० [सं०] बोध, अनुभव करना; देखना, समझना ।

आज्ञापक-वि० [सं०] आज्ञा देनेवाला । पु० मालिक, स्वामी ।

आज्ञापन-पु० [सं०] हुक्म देना; जताना ।

आज्ञापित-वि० [सं०] आदिष्ट ।

आज्ञावी(वि०)-वि० [सं०] जानने-समझनेवाला; बोध करनेवाला; अनुभव करनेवाला ।

आज्य-पु० [सं०] धी; धीकी जगह काम आनेवाला परार्थ-तेल, दूध आदि; प्रातःकालीन यज्ञ-संबंधी एक शास्त्र या स्तोत्र ।-ग्रह-पु०, -धानी-खी०, -पात्र-पु० दूतपात्र ।

-प-पु० पितरोंका एक वर्ग ।-पत्र-पु० धी पीनेवाला ।

-शुक्(ज)-पु० अधि; देवता ।-बारि-पु० एक पुराणोक्त समुद्र ।-स्थाकी-खी० दे० 'आज्यग्रह' ।

आठना-स० कि० तोपना, ठक देना ।

आठरूप-पु० [सं०] एक वृक्ष, अठरूप ।

आठविक्-पु० [सं०] बनवासी; सेनाका एक भेद ।

आठा-पु० पिसा हुआ अन्न, पिसान । मु०-आठा कर देना, -कर देना-बहुत बारीक करना, पीसना । (मुद्र-लिस्सिमें)-गोला होना-कठिनाईमें कठिनाई पैदा हो जाना ।-माटी होना-तबाह होना ।-(दे)की आषा

-बोलीमाली औरत ।-के साथ चुन पीसना-बने आदमीके साथ छोटकी मुकतान पहुँचाना ।-बालक भाव मालूम होना-अभिलषतका पना चलना; कियेका फल मिलना ।-बालकी फिक्र-गृहस्थीकी पिना ।-में नमक-बोधासा, जरासा ।

आदि-खी० [सं०] एक तरहकी चिड़िया; एक मछली ।

-मुग्ध-पु० चौर-पाठमें काम आनेवाला एक औजार ।

आदिक, आदिक्य-वि० [सं०] जिसकी स्थिति यात्रा या भ्रमण करने योग्य हो ।

आटी-खी० डाढ़, रोक ।

आटीकन-पु० [सं०] गायके बछड़ेकी उछल-कूद ।

आटीकर-पु० [सं०] सौंभ; वृष ।

आटीकैट-पु० [अ०] निरकुश राजा या सम्राट्; असौम अधिकारप्राप्त व्यक्ति; स्वेच्छाचारी मनुष्य ।

आटीकैसी-खी० [अ०] निरकुश राजा या सम्राट्की शक्ति; निरकुशता, स्वेच्छाचारिता; दूसरोंपर मनमानी करनेका अधिकार ।

आटीप-पु० [सं०] फूलना, फैलना; धमक; आठवार; पेटमें गुड़गुड़ाहट होना ।

आठ-वि० सात और एक, चारका दूना । पु० आठकी संख्या । मु०-आठरह होना-तितर-वितर होना; हैरान होना ।-आठ आँसू रोना-बहुत विलाप करना ।-आठ पहर-हर बत्त ।-आठसे बाहर रहना-हर बत्त गुस्सेमें रहना ।-पहर चौंसठ बघी-हर बत्त ।-(डों) गाँठ कुम्भेत-वह धोड़ा जिसके सब अंग दुस्त हों और रंग कुम्भेत हो; दुष्ट; चालाक ।-पहर-हर बत्त ।

-सुखीपर रहना-हमेशा कष्टमें रहना ।

आठक-वि० आठ ।

आठ, आठौं-खी० अष्टमी तिथि ।

आडंबर-पु० [सं०] दिखावा, ठाट-बाट; अनावश्यक वा दिखाव आयेजन; बाइलोंका गर्जन या हाथीका चिन्हाडना; लुकाईका डंका; लुकाईका डंका बजना; लुकाता कोलाहल; संतु; बर्ब, बर्बड; हर्ष; आर्भ; क्रोध; पलक; डंका बजाने-वाला; बदन देवाना, माक्षि ।

आडंबरघात-पु० [सं०] डंका बजनेवाला ।

आडंबरी(रिन्) -वि० [सं०] आडंबर करनेवाला ।

आडू-खी० ओट, परदा; बचाव, आश्रय; गेक; टेक; एक भूषण; लंबी टिकली; आडा तिलक; टीका; संगीतमें एक ताल; डंक । -**शीर-पु०** खेतके किनारेकी घास । -**बंद-पु०** फकीरों या पहलवानोंका जाधियेके ऊपर पहननेका लंगोटा । **मु०** -**(के)** देना-ओट करना ।

आडूना* -स० कि० रोकना; बधना; बधक रखना ।

आडा-वि० देखनेवालेके दाहिनेसे बायें या बायेंसे दाहिने गुवा हुआ, लड़ा या सीधाका उलटा, पवा । [खी 'आगी'] पु० एक धारीदार कपड़ा; जहाजका लट्टा; शहतीर; गुनाई-में सूत फैलानेकी लकड़ी । -**खेमटा-पु०** सूर्यके दो तरहके ताल । -**चौताल-पु०** सूर्यका एक ताल । -**डेका, -बैँखताल-पु०** संगीतके दो तरहके ताल । **मु०** -**तिरछा होना-कुछ होना । -पचना-होना-बाधक होना; बकाबट डालना । -**(के)** आना-संकटमें सहायक होना, कठिनाईमें काम आना; बाधक होना । -**हाथी लेना-ब्यंग-बाणीसे बधना, बुरा तरह बचाना ।****

आडि-खी० [सं०] दे० 'आटि' ।

आडि-खी० हट ।

आडिटा-पु० [अ०] हिंसा, आमद-खर्चकी जाँच करनेवाला ।

आडी-खी० संगीतका एक ताल; ओर, तरफ । वि० अपने पक्षका ।

आडू-पु० [मं०] उडुप, भेला ।

आडू-पु० एक खदमिट्टा फल और उसका पेड़ ।

आडू-पु० अनाजका एक बजन या परिमाण जो लगभग चार मेरके बराबर होता है । खी० आड, अतर; एक आभूषण, टीका । वि० कुशल । **मु०** -करना-डालमटूर करना ।

आडक-पु० [सं०] आड, चार सेरका बजन या माप ।

आडकी-खी० [सं०] अरहरकी दाल; एक तरहकी सुसब्ज दार मिट्टी ।

आडूत-खी० दूसरेका माल कमीशन लेकर बिकना देनेका रोजगार; वह स्थान जहाँ ऐसा माल रह । -**दार-पु०** अदतिया ।

आडूतिया-पु० अदतिया ।

आडू* -अ० नीचमें ।

आडूकर-वि० [सं०] धनी बनानेवाला ।

आडू-वि० [सं०] (कसी वस्तुमें) संपन्न, भरा-पूरा (धनाढ्य, बलाढ्य); धनवान्; प्रचुर । -**कुलीज-वि०** धनी कुलमें लक्ष्म । -**खर-वि०** जो कभी संपन्न था । -**रोगी-वि०** गठिया नामक रोगमें पीड़ित । -**बाख-पु०** वातजन्य कटि-पक्षाघात ।

आडूक-पु० [सं०] धन ।

आणक-पु० [सं०] एक रतिबंध; आना, रुपयेका सोलहवाँ

भाग (१) । वि० अथम, निच ।

आणक-वि० [सं०] अनुरूप, अति सूक्ष्म । पु० अणुता ।

आणकिक-वि० अनुरूपत्वकी ।

आणकीन-वि० [सं०] जिसमें अणु धान्य-सरसों, तिल, सोबा आदि-उत्पन्न किये या रखे जायें (खेत या बखार) ।

आणि-खी० [सं०] पड़ियेकी धुरीकी कील; सीमा; तलवारकी धार; मर्मस्थान; घुटनेके ऊपरका भाग; घरका कोना ।

आतंक-पु० [सं०] रोग; ज्वर; पीडा; भय, दहशत; दब-दबा; संदेह; अनिश्चय; डंकेका शब्द । -**बाद-पु०** राज्य या विरोधियोंकी दबानेके लिए भयोपादक उपायोंका अन्व-लंबन, 'टेरोरिज्म' । -**बायी (विन्)** -वि० आतंकवादका आश्रय लेनेवाला ।

आतंजन-पु० [सं०] दूधको जमानेके लिए जामन देना; जामन ।

आत-पु० शरीका ।

आत-वि० [सं०] फैला हुआ; बिना, चढा हुआ (धनुष, रोरा) ।

आतसाई-वि० दे० 'आतनाथी' ।

आतसायी (विन्) -वि० [सं०] जिसकी कमान दूसरेकी जान लेनेके लिए खिंच चुकी हो, बधोषत, हत्यारा; निन्द-रूप अपराध करनेवाला । पु० आग लगानेवाला; जहर देनेवाला; शस्त्रधारी; बन्, धरती, लीका हरण करनेवाला (स्थुनिकारोंने इसके बधमें दीष नहीं माना है) ।

आतन-पु० [सं०] तानना, फैलाना; दृश्य ।

आतप-पु० [सं०] धूप; गरमी; प्रकाश; ज्वर (१) । -**अत्र, -अक्र, -वारण-पु०** छतरी, छाता । -**खंघम-पु०** धूप लगाना, लू लगाना । -**मुष्क-वि०** धूपमें मूला हुआ ।

आतपन-पु० [मं०] शिव ।

आतपी (विन्) -पु० [मं०] मूर्ख । वि० धूप सघवी ।

आतपीष-वि० [मं०] धूपवाला ।

आतपीद-पु० [सं०] सुगन्धक ।

आतप* -वि० अपना, निजका ।

आतमा-खी० दे० 'आत्मा' ।

आतर-पु० [सं०] उतराई, सेवा ।

आतर्दन-पु० [मं०] खोलना; धका देकर खोलना ।

आतर्पण-पु० [सं०] नृषि, संतोष; मंगलारोपन ।

आतसा-पु० [का०] आग । -**कदू-पु०** बहुत गरम मकान । -**झावा, -शाह-पु०** अग्नि-पूजको (पारसियों) का अग्निमंदिर, आग रखनेका स्थान । -**जदरी-खी०** आग लगाना । -**जन-वि०** आग लगानेवाला । पु० चक-मक । -**जनी-खी०** आग लगाना । -**दान-पु०** अंगीठी । -**परस्त-पु०** अग्निपूजक; पारसी । -**फिसा-वि०** आग उगलनेवाला । पु० ज्वालामुखी पर्वत । -**बाज-पु०** आतिशबाजी बनाने या जलानेवाला । -**बाङ्गी-खी०** बारूद भरकर बनाये हुए खिलौने (अनार, महताबी, छट्पूर, पटाखा इत्यादि); इनके जलानेका दृश्य या तमाशा । -**मित्राख-वि०** शत्रु हृद हो जानेवाला, विमित्र । -**(शे)** तर-खी० छारा, मध ।

आतसक-खी० [का०] गरमीको बीमारी, उपद्रव ।

आतशी-वि० अग्नि-सम्बन्धी; अग्निसे उत्पन्न; अग्नि-उत्पत्तिक ।

—आईना,—हीशा—पुं वह शीशा जिसे सूर्यके सामने करनेसे उसके मध्यविन्दुके नीचे रस्सी रुक, तिनका आदि जल उठते है।

आतापि—पुं [सं] एक अमुर जिसे अगस्त्यने खा डाला था।

आतापी (पिन्), आतापी (विन्)—पुं [सं] चील।

आतार—पुं [सं] दे० 'आतरे'।

आति—स्त्री [सं] एक पक्षी, आडि।

आतिथेय—वि० [सं] अतिथि-निमित्तक, अतिथिके लिए उपयुक्त (भोजनादि); अतिथिमेवापरायण। पुं अतिथि-सत्कार; अतिथि-सत्कारकी सामग्री; [हिं०] अतिथि-सत्कार करनेवाला, अतिथिपति।

आतिथेयी—स्त्री [सं] अतिथि-सत्कार।

आतिथ्य—पुं [सं] अतिथि-सत्कार, आभयगत; अतिथि। वि० अतिथिके उपयुक्त; अतिथिमेवापरायण।—सत्कार—पुं,—सत्क्रिया—स्त्री—अतिथिकी खातिरदारी, आभयगत।—आतिथेय, आतिथेय—पुं [सं] अनिरेक, आतिथ्य; फाल्गु, फाजिल होना।

आतिबाहिक—वि० [सं] हम लोकसे परलोक ले जानेपर नियुक्त। पुं मूझ शरीर।

आनिश—पुं [फा०] दे० 'आनस' (समाम भी)।

आतिशायिक—वि० [सं] बहुत अधिक।

आतिसाध्य—पुं [सं] अतिशयता, बहुतायत।

आती—स्त्री [सं] दे० 'आति'।

आती-पाती—स्त्री लड़कोंका छिपने और छुनेका खेल।

आनुर—वि० [सं] पीडित; बीमार; अशक्त; अधीर, बेसम। पुं रोग, रण्य व्यक्ति। * अ० जन्म, शीघ्र।—आनुर—स्त्री दे० 'आनुरालय'।—सम्प्राप्त—पुं ऐसे रोगी द्वारा लिया हुआ सम्प्राप्त जिसके बच्चेकी आशा न रह गयी हो।

आनुरता—स्त्री [सं] अधीरता; उतावली; बेचैनी; *शीघ्रता।

आनुरताई—स्त्री—आनुरता।

आनुराना—अ० क्रि० उतावला होना; उत्पन्न होना।

आनुरालय—पुं [सं] विशिष्टालय, अस्पताल।

आनुरी—स्त्री—आनुरता।

आनुर्य—पुं [सं] रोग; एक तरहका ज्वर।

आनुर्य—वि० [सं] बिधा; कटा हुआ। पुं छिद्र; मुला जकम।

आनुर्य—पुं [सं] एक पेठ या उसका फल।

आतोष, आतोषक—पुं [सं] एक वाद्य (संगीत)।

आस—वि० [सं] गृहीत; स्वीकृत; आकृत; आरम्भ; निकाला हुआ।—गर्भ—वि० जिसका दर्प चूर कर दिया गया हो; अपमानित; परामृत; मँसा हुआ।—गर्भ—वि० अपमानित; नीचा दिखाया हुआ।—दंड—वि० राजदंड ग्रहण करनेवाला।—प्रतिद्वाम—पुं प्राप्त वस्तुकी लीटाना।—अनस्क—वि० हर्षविह्वल।—लक्ष्मी—वि० धनसे वंचित किया हुआ।

आमर्भरि—वि० [सं] अपना ही पेट फाटनेवाला, सुनमर्ज।

आम्य—'आत्मन्'का समासमें व्यवहृत रूप।—कृष्ण—

स्त्री—अपनी जीवनकहानी; स्वलिखित जीवनचरित।

—कृष्णाल—पुं अपना मला, हित।—काम्य—वि० अविधानी; आत्माकी जानने, पानेका अभिलाषी।—कार्य—पुं निजी काम।—कृत—वि० स्वयं किया हुआ; स्वयं अपने विश्व किया हुआ।—वात—वि० मनके भीतरका, स्वगत।

—गुप्त—स्त्री केनौच; सतावर।—गुप्ति—स्त्री गुफा, सुरंग; मंदिर।—गौरव—पुं अपना गौरव, प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान।—प्राही (विन्)—वि० स्वाधी; लोभी।—घात—पुं आत्महत्या, सुदकुशी।—घातक;—घाती (विन्)—वि० आत्महत्या करनेवाला।—घोष—पुं (अपनेकी ही पुकारनेवाला) कौआ; मुर्गा।—चरित;—चरित्र—पुं आत्मकथा।—ज—पुं वेदा, वंशपर; कामदेव।—जब—स्त्री—अपनेकी जीतना, मन, इदियादिकी वशमें कर लेना।—जा—स्त्री वेटी।—जात—पुं वेदा, वंशपर; कामदेव।—विज्ञात्ता—स्त्री अपनेकी जाननेकी इच्छा।—ज्ञान—पुं अपनेकी जानना; अन्व्यात्मज्ञान; आत्म-साक्षात्कार।—लक्ष्य—पुं आत्माका स्वरूप; रहस्य।—तुष्टि—स्त्री—आत्मसंतोष।—तृप्त—वि० जो अपने आपमें संतुष्ट हो।—तृप्ति—स्त्री अपनी अनारामका संतोष, आत्मसंतोष।—त्याग—पुं आत्महत्या; दूसरेके भलेके लिए अपनी हानि करना, स्वाध्याय।—त्यागी (विन्)—वि० आत्म-घाती; अविश्वासी, धर्मविरोधी परीपकारी।—प्राव्य—पुं आत्मरक्षा।—दृष्ट—पुं आर्द्रता।—दृष्ट—पुं आत्म-साक्षात्कार; आत्मज्ञान।—दाव्य—पुं स्वाध्याय।—दोह—पुं अपनेकी ही पीका पहुँचाना; अपनी ही हानि करना; आत्महत्या।—चारणभूमि—स्त्री—वह अधीन राज्य या भूमि जिसकी शासनव्यवस्था वहीकी सेना और मण्डितमे ही जाय।—निद्रा—स्त्री अपनी निद्रा।—निद्र—वि० बहुत म्रिय।—निरीक्षण—पुं अपनेकी देखना-सम-झना, अपने भावों, कृतियों, कृतियों, रीतियों जानने-सम-झनेका प्रयत्न।—निवेदन—पुं नववा भक्तिका एक अंग—अपना तन-मन-धन अपने आराध्यदेवको अर्पित कर देना; अपनी कैफियत।—निष्ठ—वि० आत्मामें निद्रा रखनेवाला; आत्मसाधनमें निरत।—प्रकाश—पुं भीतर-के भावोंकी व्यक्त करना।—प्रवाद्—पुं प्रकाश-विषयक बातलाप।—प्रसंस्त्र—स्त्री अपने मुँह अपनी तारीफ करना।—बल—पुं आत्माका, मनका बल।—बोध—पुं आत्मज्ञान।—आव—पुं आत्माका अस्तित्व; अपनी प्रकृति; शरीर।—भू—वि० स्वयं उपपन्न; अपनेसे उपपन्न। पुं प्रकाश; शिव; विष्णु; कामदेव; पुत्र।—भूत—वि० दे० 'आत्मन्'; संबन्ध; विश्वसत। पुं पुत्र; कामदेव।—अंधन—पुं अंतःकरणमें अनेक कृतियों, भावोंका मंथन होना।—आनी (विन्)—वि० स्वाभिमानी; धर्मवीर।—भूली—स्त्री—दुरालभा नामक पौधा।—भोनि—पुं प्रकाश; शिव; कामदेव।—अपना बचाव; इन्द्रावरणी ब्रह्म।—रस—वि० प्रकाशनी। पुं वही इन्द्रावन।—रति—स्त्री—आत्मामें रमना, आत्मानंद।—बंधक—वि० अपनेकी धोखा देनेवाला।—बंधना—स्त्री—अपनेकी धोखा देना, अपने दोषकी गुणरूपमें देखना।—बध—पुं आत्महत्या।—बाद्—पुं आत्माके अस्तित्वका प्रतिपादन।—बादी (विन्)—वि० आत्माका अस्तित्व माननेवाला।—विश्व

-पु० अपनेकी, अपनी आज्ञाकी वेच देना । -**बिकेता** (पु०)-पु० जो व्यक्ति अपनेकी वेचकर किसीका दास बन गया हो । -**बिचब**-पु० अपनी तलाशी देना । -**बिचार**-पु० आत्मतत्त्वका मनन, विवेचन । -**बिद्या**-स्त्री० अन्त्यात्मतत्त्व । -**विश्वास**-पु० अपनी शक्ति, योग्यतापर विश्वास । -**विस्मृति**-स्त्री० अपनेकी भूल जाना, सुष-पुत्र न रहना, वैशुदी । -**हृतांत**-पु० आत्मकथा । -**शक्या**-स्त्री० शतावरी । -**शास्त्र**-पु० दे० 'स्वराज्य' । -**श्रद्धा**, -**स्तुति**-स्त्री० आत्मप्रशंसा । -**संतोष**-पु० आत्मसुख, आत्मसुख । -**संदेह**-पु० व्यक्तिगत संदेह; अपनी ज्ञानका खतरा । -**संभव**, -**समुद्भव**-पु० पुत्र; शिव; प्रसा; कामदेव; ईश्वर । -**संभव**-पु० अपने मन, इंद्रियादिको बलमें रखना । -**संवेदन**-पु० आत्मबोध । -**संस्कार**-पु० अपना सुभार । -**समर्पण**-पु० अपनेको (प्रकृति, शत्रुसेना आदिके हाथ) सौंप देना; हथियार डाल देना । -**साक्षात्कार**-पु० आत्माका अपरोक्ष ज्ञान । -**साक्षी** (किन्)-वि० आत्माका द्रष्टा; जीवोंका द्रष्टा । -**साद्व**-अ० अपने अधिकारमें । -**साधन**-पु० आत्म साक्षात्कारकी साधना, मोक्ष-साधन । -**सिद्ध**-वि० आप ही आप होनेवाला । -**हत्या**-स्त्री०, -**हवन**-पु०, -**हिंसा**-स्त्री० अपने हाथी अपना बध, सुदकुशी । -**हन**, -**हा** (हृन्)-वि० मूर्खको पूजा करनेवाला; धर्मविरोधी; आत्मघाती; अपना भला न देखनेवाला । -**हित**-पु० अपना कल्याण । वि० अपने लिए कल्याणकर ।
आत्मिक-वि० [म०] (समासके अन्तमें व्यवहृत) पुत्र, पुण-धर्म-रूपवाला (रचनात्मक, पञ्चात्मक इ०) ।
आत्मकीय-वि० [स०] जिसपर अपना अधिकार हो ।
आत्मनीय-वि० [स०] जिसपर अपना अधिकार हो; अपने लिए लाभदायक; वैयक्त्यविशिष्ट, जीवित; वर्तमान । पु० पुत्र; साला; विद्वक ।
आत्मनेपद-पु० [स०] बातमें लगनेवाला एक प्रत्यय या इस प्रकार बनी हुई किया (स० व्या०) ।
आत्मवक्ता-स्त्री० [स०] आत्मनिवृत्त; बुद्धि; समझ, चेतना ।
आत्मा (मन्)-स्त्री०, पु० [म०] जीव, जीवनतत्त्व; व्यष्टि जीव, जीवात्मा; चेतन तत्त्व; परमात्मतत्त्व; अनन्तरण; मन; बुद्धि; स्वरूप; जात; स्वभाव; देही; सार तत्त्व; विचार-शक्ति; साहस; शक्ति; पुत्र; सूर्य; अधि; बायु । **मु**-ठंडी होना-स्त्री० होना । -**मनोसना**-भूख सहना ।
आत्माधिक-वि० [स०] अपनेसे भी अधिक (प्रिय) ।
आत्माधीन-वि० [स०] अपने बलमें । पु० पुत्र, प्राणाधार; साला; विद्वक ।
आत्मनन्द-पु० [स०] आत्मज्ञान, आत्म-साक्षात्कारसे मिलनेवाला आनन्द । वि० ज्ञानानन्दमें डीन ।
आत्मसाध्य-पु० [स०] आत्मा और तद्विषय संपूर्ण पदार्थ, चेतन और नञ तत्त्व । -**विचेक**-पु० आत्मीय और अनात्म वस्तुका विचार, विरुणाव ।
आत्मायुव-पु० [म०] अपना तबज ।
आत्मायुवृत्ति-स्त्री० [स०] आत्म-साक्षात्कार ।
आत्मायुव-वि० [स०] पुण आदिमें अपने समान ।

आत्मापहार-पु० [स०] आत्मनोपन, अपनेकी छिपाना ।
आत्माभिमान-पु० [स०] आत्म-सम्मान, स्वाभिमान ।
आत्माभिमुख-वि० [स०] आत्माकी ओर जौड़ा हुआ, अंतर्मुख ।
आत्माभिमुखि-स्त्री० [स०] अपनी सेनाको बलि देकर शत्रुके साथ की जानेवाली संधि ।
आत्माराम-पु० [स०] आत्मज्ञानका प्रयासी योगी; आत्मामें रमण करनेवाला ।
आत्मार्ष-पु० [स०] आत्मनिवेदन, अपनेको अर्पित कर देना ।
आत्मावलंबी (विन्)-वि० [स०] अपने भरोसे सब काम करनेवाला ।
आत्माशी (शिन्)-पु० [स०] मत्स्य ।
आत्माश्रय-वि० [स०] नेत्रक अपना वा अपनी बुद्धिका भरोसा करनेवाला । पु० आत्मनिर्भरता; सहज ज्ञान ।
आत्मिक-वि० [स०] आत्म-सर्वधी ।
आत्मीभाव-पु० [स०] परमात्मामें एकीभाव, व्यष्टि आत्माका परमात्मामें लय हो जाना ।
आत्मीय-वि० [स०] अपना । पु० स्वजन ।
आत्मीयता-स्त्री० [म०] अपनापन, मैत्री ।
आत्मोत्कर्ष-पु० [स०] अपना अभ्युदय, आत्मोन्नति ।
आत्मोत्सर्ग-पु० [स०] दूसरेके हितके लिए अपनेकी सकलमें डालना; अपना जीवन अर्पित कर देना ।
आत्मोद्व-पु० [म०] अपना अभ्युदय ।
आत्मोद्धार-पु० [स०] अपना उद्धार, मुक्ति; अपने ही प्रयत्नमें अपना छुटकारा ।
आत्मोज्ज्वल-पु० [म०] पुत्र; कामदेव; शोक; पीडा ।
आत्मोज्ज्वल-स्त्री० [स०] पुत्री; बुद्धि; माधवर्णा नामक पौष ।
आत्मोन्नति-स्त्री० [स०] अपनी वा अपनी आत्माकी उन्नति ।
आत्मोपजीवी (विन्)-पु० [स०] अपने भ्रममें जीविका चला नेवाला; मजदूर; अमिनेना ।
आत्मोपम-वि० [स०] अपने जैसा ।
आत्मोपम-पु० [म०] सबको अपने जैसा मानना ।
आत्म्यंतिक-वि० [स०] अविच्छिन्न; अबाधित; मार्वाकालिक, पूर्ण; जिसकी अतिशयता, इफरात हो । -**दुःखनिवृत्ति**-स्त्री० मोक्ष । -**प्रलय**-पु० महाप्रलय ।
आत्यधिक-वि० [स०] विध्वंसक; कष्टकारक; अशुभ; जिसको जल्दी हो, अत्यवश्यक ।
आत्येव-वि० [स०] अति-सबधी, अतिमें या उनके शोभमें उत्पन्न । पु० अत्रिका पुत्र; अत्रिका वंशज ।
आत्येवाव-पु० [म०] आत्येवका वंशज ।
आत्येविका-स्त्री० [म०] रजस्वला स्त्री ।
आत्येवी-स्त्री० [स०] अति-पत्नी; अतिगोत्रकी स्त्री; रज-स्वला स्त्री ।
आद्यभाव-अ० कि० होना ।
आद्यवर्ष-वि० [स०] अथर्ववेद या अथर्वण ऋषिसे संबंध रखनेवाला ऋषि उनमें उत्पन्न । पु० अथर्ववेदका शाखा ब्राह्मण; अथर्ववेदकी कर्म करानेवाला पुरोहित; अथर्ववेद;

अध्वन्य ऋषिका पुत्र या संज्ञा ।
आधुनिक-वि० [सं०] अधर्ववेदेसे संबंध रखनेवाला ।
 पु० अधर्ववेदका शाखा ब्राह्मण ।
आधी०-खी० पूँजी ।
आधुन्य-पु० [सं०] दौतसे काटनेका अस्त्र; दौत ।
आधु-वि० [सं०] (समासांतमें) लेनेवाला (श्राव्य) । * स्त्री०, पु० दे० 'आदि' ।
आदुत-खी० [अ०] अभ्यास, बान, टेक, छत; व्यवसाय; स्वभाव ।
आदुत-पु० -अ० आदतके अनुसार, अभ्यासतः; स्वभावतः; स्वभावानुरीधसे ।
आदुत-वि० [सं०] दे० 'आत' ।
आदुत-पु० [अ०] यहुदी, इस्लाम आदि धर्मोंके अनुसार ईश्वरस्य प्रथम मनुष्य, आदि-मानव; मनुष्य । -**क्रुद्ध-वि०** मनुष्यके आकारका । -**खोद-वि०**, पु० नरवासिधही ।
-खदम-पु० मनुष्यकी सी काली आँखोंवाला घोड़ा ।
-जगद-पु० आदम-संतान, मनुष्य ।
आधुमियत-खी० दे० 'आधुनीयत' ।
आधुनी-पु० [अ०] मनुष्य; व्यक्ति; नौकर; पति (शौल-चाय) । **मु०-बनना-मनुष्यता** आना, सभ्यता, शिक्षा, सीखना; सपन्न होना, पैसा पैदा कर लेना ।
आधुनीयत-खी० मनुष्यता, इनामासिधत; भलमननी ।
आधु-पु० [म०] मम्मन; इज्जत; पुण्यभावन; कद, उत्सुकता; प्रयत्न; आराम; प्रेम । -**आध-पु०** आदर-महकार, कद-इज्जत ।
आधुरण-पु० [म०] आदर करना ।
आधुरणीय, आधुन्य-वि० [म०] आदरके योग्य, मम्मन्य ।
आधुरना-सं० कि० मम्मन करना ।
आधुरस-पु० दे० 'आदरी' ।
आधुन्य-वि० [म०] 'आधुरणीय' ।
आधुन्य-पु० [म०] आधुना; मूल लेख; अमल; नमूना; अनुकरणीय वस्तु; टीका, व्याख्या । -**विष-पु०** गोल आधुना । -**मंडल-पु०** गोल आधुना; आधुनेकी मनुष्य; एक तरहका मौँप । -**मंदिर-पु०** शीशमहल । -**बाध-पु०** बह बाध या मत जिसके अनुसार रचनामें आदर्श चरित्र आदिकी स्थापना की जाती है । -**बादी(वि०)** -वि० अपनी रचनामें आदर्शवादका अनुसरण करनेवाला; ऊँचे सिद्धांतोंके अनुसरण पर जोर देनेवाला ।
आधुन्य-पु० [म०] आधुना ।
आधुन्य-पु० [सं०] दिखलाना, प्रदर्शित करना; आधुना ।
आधुन्य-वि० [सं०] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित; निर्देश किया हुआ ।
आधुन्य-पु० [सं०] जलाना; आहूत करना, मारना; घृणा करना; निंदा करना; श्मशान ।
आधुन्य-खी० [अ०] अभ्यास, स्वभाव; तौर-तरीका ('आदत' का बहु०) ।
आदुत(पु०)-वि० [सं०] लेने, पानेवाला ।
आदुत-पु० [सं०] लेना, ग्रहण; रोग-रक्षण; बौध्ना; अभ्यस्तज्ञा । -**प्रधान-पु०** लेना-देना, बदल-बदल ।
आदुनी-खी० [सं०] इस्तिषोषा नामक पौधा ।

आदाब-पु० [का०] व्यवहार-नियम; अदब-कायदा; शिक्षा-चार; नमस्कार ('अदब' का बहु०) । -**अर्ज-पु०** नमस्कार । -**बलकाब-पु०** (सरोध्वकी) पदवी, विशेषण आदि । -**तसकीमात-पु०** नमस्कार-प्रणाम । **मु०-अर्ज करना-सलाम करना; विदा लेना । -बधा कलना-विनयपूर्वक या यथोचित प्रकारसे अभिवादन करना ।**
आदाब-पु० [सं०] लेना, पाना । -**खर-वि०** कुछ लेकर जानेवाला ।
आदावी(वि०)-वि० [सं०] लेने, पानेवाला; लेनेका इच्छुक ।
आदि-वि० [सं०] प्रथम; मूल; प्रधान । पु० आरंभ; मूल कारण; परमेश्वर; सामीप्य । अ० बगैरह, हत्यादि । -**कर, कर्ता(सु०)-पु०** लडा । -**कवि-पु०** वाक्कीर्ति; ब्रह्मा । -**कांड-पु०** रामायणका प्रथम कांड, बालकांड । -**कारण-पु०** सृष्टिका मूल कारण, उपादान (सांख्यमतसे मूल प्रकृति, वैशेषिकमतसे परमाणु, वेदांतमतसे ब्रह्म) । -**काव्य-पु०** वाक्कीर्त्य रामायण । -**काव्य-पु०** एक ताक (समीप) । -**वैष-पु०** परमेश्वर; नारायण; विष्णु । -**वर्ष(रु०)-पु०** महाभारतका पहला वर्ष । -**पुराण-पु०** ब्रह्मपुराण । -**पुरुष-पु०** परमेश्वर; नारायण; विष्णु । -**भूत-वि०** आरंभमें उत्पन्न । पु० ब्रह्मा; विष्णु । -**रस-पु०** श्रृंगाररस (सां०) । -**राज-पु०** पुरु; मनु । -**शक्ति-खी०** महाभाषा; दुर्गा । -**सर्व-पु०** आदि, प्रथम सृष्टि ।
आदिक-अ० [सं०] बगैरह, हत्यादि ।
आदित्य-पु० आदित्य, सूर्य ।
आदित्येय-पु० [सं०] अदितिका पुत्र; देव; सूर्य ।
आदित्य-पु० [सं०] सूर्य; देव; अदितिके इन बारह पुत्रोंमेंसे कोई जो सभी सूर्य माने जाते हैं-धाता, मित्र, अर्यमा, रुद्र, वरुण, सूर्य, भग, विवस्वान्, पूषा, सविता, त्वष्टा और विष्णु; विष्णुका नामन अवतार; २२ की संख्या; मदार । वि० अदितिनि उत्पन्न; आदित्य-वर्षकी वा आदित्य-से उत्पन्न । -**केतु-पु०** धृतराष्ट्रका एक पुत्र; सूर्यका सारथि । -**पत्र-पु०** एक पौधा; आकका पत्ता । -**पर्मिनी-खी०** जलाशयोंके किनारे उत्पन्न होनेवाली एक कृता । -**पुराण-पु०** एक उपपुराण । -**पुष्पिका-खी०** लाल फूलवाला मदार । -**अक्षर-खी०** अक्षमत्ता नामक पौधा । -**मंडल-पु०** सूर्यके चारों ओरका प्रमा-मंडल । -**घार-पु०** रविवार । -**जल-पु०** सूर्यका जल । -**सुत-पु०** सूर्यपुत्र-सुमीव, यम, शनि और कर्ण ।
आदित्य-वि० [सं०] आदित्येय उत्पन्न; पहला; सर्वप्रथम ।
आदिक-वि० [अ०] अदक-हताक करनेवाला, न्यायी ।
आदिवासी(वि०)-पु० [सं०] किसी देशका मूल निवासी ।
आदिह-वि० [सं०] आदिश-प्राप्त; जिते (कार्यका) आदेश किया गया हो, कथित । पु० आज्ञा सम्पत्ति; जूठन । -**संधि-खी०** प्रबल शत्रुको कोई भूमिखंड देकर की जानेवाली संधि ।
आदिही(वि०)-वि० [सं०] आदेश देनेवाला । पु० ब्रह्म-चारी; विवाही; प्रत्यक्षित करनेवाला ।
आदी-वि० [अ०] अन्यस्त; जिसे किसी चीजकी आदत,

लत लय गयी हो, न्यसनी । * अ० विपद; तनिका जी ।
 † जी० अवरक । -अवरक-पु० एक प्रकारका अवरक ।
आधीन-पु० [सं०] डेरा, पीका; बेचैनी; अपराध;
 -उपपेक ।
आधीन-पु० [सं०] आय लगाना; उत्तेजित करना;
 दीवारको सफेदी करना ।
आधीनता, आधीन-वि० [सं०] प्रत्यक्षित किया हुआ;
 जलता हुआ ।
आहत-वि० [सं०] आहर-प्राप्त, सम्मानित; सावधान ।
आहव-वि० [सं०] सम्मान्य; आदरणीय ।
आहवि-स्त्री० [सं०] नजर, देखना ।
आदेय-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; जिसपर छुल्कादि
 किया जा सके । पु० वह काम जो बिना कठिनाईके प्राप्त
 हो, अच्छी तरह रखा जाय और छत्रु जिसे छीन न सके ।
-कर्म(वृ०)-पु० बाक्सिदि प्रदान करनेवाला कर्म (जै०) ।
आदेयक-वि० [सं०] क्रीडा करनेवाला ।
आदेयन-पु० [सं०] दूत; पासा खेलनेका स्थान वा
 विस्तार ।
आदेश-पु० [सं०] आज्ञा, हुक्म; विदायत; सलाह; विवरण;
 भविष्यकथन; एक अक्षरके स्थानपर दूसरे अक्षरका आना
 (व्या०); ग्रह-नक्षत्रोंकी स्थितिका फल (ज्यो०); * प्रणाम ।
आदेशक-वि० [सं०] आदेश-आज्ञा करनेवाला ।
आदेशन-पु० [सं०] आदेश करना ।
आदेशी(सिन्)-वि० [सं०] आदेश करनेवाला; ज्योतिषी,
 भविष्य-वक्ता ।
आदेशा-(ण्ड)-वि० [सं०] दे० 'आदेशक' ।
आदेशक-पु० दे० 'आदेश' ।
आर्धत-अ० [सं०] आदिसे अतत्तक । पु० आदि-अंत ।
आद्य-वि० [सं०] आदिका; पहला, प्रथम; प्रधान; अदि-
 तीय; 'के ठीक पहलेका; खाने योग्य । -कवि-पु० ब्रह्मा;
 बाल्मीकि । -बीज-पु० जगत्का मूल कारण; प्रधान ।
-आद्यक-पु० एक तीर (५ रसी) । -आद्य-पु० मृत्युके
 प्यारहवें दिन होनेवाले आद्योंमें पहला ।
आद्या-स्त्री० [सं०] दुर्गा; प्रतिपदा ।
आद्यून-वि० [सं०] पेट; भूखा; ठाकनी; आदिहीन ।
आद्योत-पु० [सं०] प्रकाश, चमक, कति ।
आद्योपात-अ० [सं०] आदिसे अंततक ।
आद्य-स्त्री० दे० 'आद्य' ।
आद्यिसार-वि० [सं०] लोहसे बना हुआ ।
आद्य-वि० दे० 'आद्य' ।
आद्यमर्थ-पु० [सं०] कर्मदार होना ।
आद्यमिक-वि० [सं०] अन्यायी; असाधु ।
आद्यवन-पु० [सं०] हिलाना, कँपाया; झुंझ करना ।
आधा-वि० वस्तुके दो समान भागोंमेंसे एक, अर्ध, नीम,
 निरु । -साक्षा-पु० बराबरका हिस्सा । -सीसी-
 स्त्री० आधे सिरका दर्द । मु० -सीतर, आधा बदेर-
 कुछ एक तरहका, कुछ दूसरी तरहका, बेमेल । -होना-
 दुबला होना, सुखना । - (जी) बास न बूझना-कहर न
 करना । आधे आध-दो बराबर या अर्ध भाग ।
आधाधारा-पु० चिन्चक ।

आधाता(पु०)-वि० [सं०] आपान करनेवाला; बंधक
 रखनेवाला ।
आधाव-पु० [सं०] रखना, स्थापन; ग्रहण, लेना; अग्नि-
 होत्रके लिए अग्निका स्थापन; बारण करना; (कोई कार्य)
 पूरा करना; उत्पन्न करना; प्रयत्न; कोई वस्तु रखने या
 जमा करनेका स्थान; पैरा; गर्मिथानके पहले किया जाने-
 वाला एक संस्कार; गर्म; बंधक, धरोहर ।
आधानिक-पु० [सं०] गर्मिथानके निमित्त किया जानेवाला
 एक विशेष संस्कार ।
आधावक-वि० [सं०] दे० 'आधाता' ।
आधार-पु० [सं०] सहारा, आलंबन; वह जो किसी वस्तुको
 धारण करे; बरतन; तालाब; नहर; परिखा; बाँध; अधिष्ठान;
 पात्र (ना०); धाता; संबंध; अधिकरण कारक । -रूपा-
 स्त्री० गलेका एक आभूषण । -क्षक्ति-स्त्री० प्रकृति, माया ।
-स्थान-पु० किसी कार्य वा वस्तुका मुख्य आधार ।
आधारक-पु० [सं०] नीध ।
आधारण-पु० [सं०] धारण करना; सहारा देना ।
आधाराधेवभाव-पु० [सं०] आश्रयाश्रयिभाव ।
आधारित-वि० दे० 'आधृत' ।
आधि-स्त्री० [सं०] मानसिक पीडा; अभिज्ञाप; विपत्ति;
 बंधक; धरोहर; स्थान; आवास; लक्षण; धर्मविना; आशा ।
-पाख-पु० धरोहरकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला राजकर्म-
 चारी । -भोग-पु० धरोहरकी चीजका उपयोग ।
-अभ्यु-पु० अवरका ताप । -मोचन-पु० बंधक छुड़ाना ।
-आधि-स्त्री० मन और धरोहरकी पीडा । -स्थान-पु०
 अधिकारीने पृष्ठे बिना धरोहरकी रकम खर्च करनेवाला
 व्यक्ति ।
आधिक-वि० आधा या आधेके लगभग । अ० लगभग
 आधा; किंचित् ।
आधिकरणि-पु० [सं०] न्यायाधीश; सरकारी पत्राधिकारी ।
आधिकारिक-वि० [सं०] अधिकार या अधिकारीसे मन्त्र;
 साधिकार; सरकारी, 'आधिकार' । पु० मूल कथावस्तु,
 प्रधान शास्त्र; परमात्मा ।
आधिक्य-पु० [सं०] अधिकता, बहुतायत; प्राधान्य ।
आधिदैविक-वि० [सं०] इन्द्रियोंके अधिष्ठाता देवताओंसे
 मन्त्र रखनेवाला; दैवकृत या भूत-प्रतकृत (हेशादि) ।
आधिपत्य-पु० [सं०] प्रभुत्व; राज्य ।
आधिभौतिक-वि० [सं०] प्राणियों या पंचभूतोंसे संबद्ध
 वा उनमें उत्पन्न ।
आधिराज्य-पु० [सं०] अधिराजका पद वा अधिकार;
 सर्वोपरि प्रभुत्व ।
आधिदैविक-पु० [सं०] दूसरा विवाह करनेपर पहली
 पत्नीको सतीपार्थ दिया जानेवाला धन ।
आधीन-वि० दे० 'अधीन' ।
आधीनता-स्त्री० दे० 'अधीनता' ।
आधुत-वि० [सं०] दे० 'आधृत' ।
आधुनिक-वि० [सं०] आजकलका, वर्तमान कालका, नये
 जमानेका ।
आधृत-वि० [सं०] कँपाया हुआ, हिलाया हुआ; क्षांत;
 झुंझ किया हुआ ।

आध्वन-पु० [सं०] हस्तुक्त करना; धुरैसे आहूत करना ।
 आधूमित-वि० [सं०] धुरैसे आहूत ।
 आध्वन-वि० [सं०] धुरैके रंगका ।
 आध्वन-वि० [सं०] किसीके सहारे टिका हुआ, अवलंबित ।
 आध्वन-वि०, अ० दे० 'आधिक' ।
 आध्वन-वि० [सं०] जो रखा या स्थापित किया जाय; जो धारण किया जाय; जो बंधक रखा जाय; किसी आधार-पर टिका हुआ; ठहराने या रखने योग्य । पु० किसी आधार-पर रखी या टिकायी हुई वस्तु; रखनेकी क्रिया ।
 आध्वन-पु० [सं०] मशायत, पीलबात ।
 आध्वन-वि० [सं०] फूला हुआ; गर्वित; दग्ध; शम्भित, ध्वनित; पेटकी बायुमें द्रव्य । पु० पेटका बायुरोग; बुद्ध ।
 आध्वन-पु० [सं०] गर्व करना; पेट फूलना, अफरा; शोथ; जलीश; पीकनी ।
 आध्वन-ली० [सं०] नलिका नामक गंधद्रव्य ।
 आध्वन-वि० [सं०] परमात्मा या आत्मासे संबंध रखनेवाला; मनमें संबंध रखनेवाला ।
 आध्वन-पु० [सं०] चिन्ता; दुःखपूर्ण स्थिति; चिंतन-मनन ।
 आध्वन-पु० [सं०] शिक्षक, गुरु ।
 आध्वन-वि० [सं०] वेदाध्ययनमें संलग्न ।
 आध्वन-वि० [सं०] अध्यास-जनित ।
 आध्वन-वि० [सं०] यात्रा करनेवाला ।
 आध्वन-पु० [सं०] व्यवधानराहित्य ।
 आध्वन-पु० [सं०] अमीमता; अमरत्व ।
 आध्वन-पु० [सं०] मोक्ष, हर्ष, खुशी, मीत्र; मद्रा; मदिरा; ४०वाँ संवत्सर; शिव; विष्णु; बुद्धका एक शिष्य; एक वृत्त ।
 -कानन-पु० वाशी । -घन-वि० आनंदमें भरपूर ।
 -जल-वि० आनंदमय अश्रु । -पट-पु० नवी-टाका वस्त्र । -प्रभव-वि० आनंद-पु० वीर्य, शुक्र; विश्व ।
 -बधाई-ली०, -बधावा-पु० [हिं०] उछाह-वधावा; उत्सव-मंगल । -अर्थ-वि० जो हर्ष और अर्थ दोनोंका जनक हो । पु० शिव; आयुर्वेदीक एक रस । -अर्थ-ली० शैव रामकी एक रागिनी । -अर्थ-पु० सुख-जैन, ईमी-मुंशी । -अर्थ-ली० दे० 'आनंदमम्माहिता' ।
 -लहरी-ली० अकराचार्य-विरचित पारंगती-स्तोत्र । -जन-पु० काशी । -मम्माहिता-ली० सभोगके आनंदमें मग्न रहनेके कारण मुग्ध हुई प्रौढा नायिका ।
 आध्वन-वि० [सं०] आनंद मनानेवाला ।
 आध्वन-वि० [सं०] प्रसन्न । पु० प्रसन्नता, हर्ष ।
 आध्वन-वि० [सं०] आनंदप्रद । पु० प्रसन्न करना; भद्रता; मित्रों आदिसे मिलने और विदा होनेके समयका सौम्य व्यवहार; आनंद प्रदान करनेवाली वस्तु ।
 आध्वन-अ० अ० कि० आनंदित होना ।
 आध्वन-वि० [सं०] आनंदसे भरा हुआ । -कोश-पु० वेदांतमें माने हुए आत्माके पाँच कोशों या आवरणों-मेंसे अंतिम ।
 आध्वन-वि० [सं०] आनंद देनेवाला ।
 आध्वन-ली० [सं०] अर्ग ।
 आध्वन-पु० [सं०] आनंदके अतिरिक्ते निकलनेवाले

धौध ।

आध्वन-पु० [सं०] प्रसन्नता, हर्ष; मौलुक्क्य ।
 आध्वन-वि० [सं०] प्रसन्न, खुश ।
 आध्वन-ली० [सं०] वृक्षविशेष ।
 आध्वन-वि० [सं०] प्रसन्न, मुदित; प्रसन्न करने-वाला ।
 आध्वन-ली० मर्यादा, गौरव, गर्व; ठसक; दुर्भाग्य; शपथ; दंग; शर्म; सय; अश्व, लिहाज; धोषणा; हठ । * वि० अन्य, दूसरा । -तान-ली० आन; नाज; आनक; बेतुकी बात । -तान-पु० सज्जन; ठसक; आन; प्रतिष्ठा; मर्यादा । मु०-तौबना-प्रतिष्ठा भंग करना; हठ छोड़ना । -रखना-अपनी बात रखना ।
 आध्वन-पु०, ली० (?) [अ०] क्षण, लहना । मु०-ली० आध्वन-बातकी बातमें ।
 आध्वन-पु० [सं०] वक्रा, नगाड़ा; गरमकाता हुआ बादल ।
 -धुधुनि-पु० कृष्णके पिता वसुदेव । -धुधुनी-ली० नगाड़ा ।
 आध्वन-वि० [सं०] बैलसे संबंध रखनेवाला ।
 आध्वन-वि० [सं०] झुका हुआ; नम्र, विनीत; नमस्कार करनेवाला । पु० एक जैन देवता ।
 आध्वन-ली० [सं०] झुकना; प्रणाम करना; सत्कार; संतुष्टि ।
 आध्वन-वि० [सं०] बैधा या मद्रा हुआ मोहक । पु० मद्रा हुआ बाबा-ढोल, धुंदल आदि; बनाव-सिंगार, सजावट । -वसिता-ली० पेशाब या मलका रुकना ।
 आध्वन-पु० [सं०] मुँह; चेहरा; प्रबंधका बड़ा खंड, अध्याय ।
 आध्वन-अ० अ० उरुत, अति शीघ्र ।
 आध्वन-अ० अ० कि० लाना ।
 आध्वन-पु० [सं०] दे० 'आनति' ।
 आध्वन-वि० [सं०] झुकाया हुआ, नवाया हुआ ।
 आध्वन-पु० [सं०] लाना; पास ले आना; उपनयन-सत्कार ।
 आध्वन-वि० [अ०] सम्मानार्थक (डिग्री); अवैतनिक (कर्मचारी); निर्वैतन ।
 आध्वन-पु० [सं०] सौराष्ट्र देश या बर्होका निवासी; रण-शाला; नृत्यशाला; नृत्य; युद्ध; जल; एक सर्वशेखी नरेश ।
 -नगरी-ली०, -पुर-पु० झारकापुरी ।
 आध्वन-वि० [सं०] आनर्त देखे संबंध या बर्हो उत्पन्न; नाचनेवाला ।
 आध्वन-पु० [सं०] नाचना ।
 आध्वन-पु० [सं०] उपयोग-राहित्य, निरर्थकता; अनुप-युक्तता ।
 आध्वन-अ० अ० कि० एक जगहसे चलकर दूसरी जगह (रुहने या रुमनेवालेके पास या उसके स्थानपर) पहुँचना; बर्होके लिए रवाना होना; लौटना; शुरू होना; फल-फूल लगना; मिलना; मौज्ज वस्तुका पकना; स्थिति होना; आन या अन्वेष होना; अँटना; बैठना; बटना (धान कमरतक आ गये हैं); अंतर्भाव होना; (क्रीडादिका) उत्पन्न होना । पु० रुपरेका सोलहवाँ भाग, चार पैसे; सोलहवाँ भाग । आना-आना-जाने-जानेवाला । आना-आना-आनद-

रफ्त, मिलना-जुलना । आनी-आनी-आने-जाने, बनने-बिगड़नेवाली, अस्थिर, नश्वर । आवा-वावा-मेहमान, अतिथि । आयेदिन-मिलप्रति । **आ** -आ धमकना-अचानक आ जाना । आ निकलना-अचानक पहुँच जाना । आ पढ़ना-पकायक आ जाना, टूट पड़ना ; संकट, विपद् आना । आ बनना-अवसर हाथ लगना । आ रहना-गिर पड़ना । आ लगना-आरंभ होना ; साथ लगना ; ठिकाने पहुँचना । आ लेना-पकड़ लेना, पहुँच जाना ।

आवाकानी-खी० डालमटूल, उज, एतराज ; कानाफूसी ।

आनापद-पु० [सं०] अस्तावायव्या ।

आनाथ-पु० [सं०] जाल ।

आवायी(विन्)-पु० [सं०] मछुआ ।

आनाह-पु० [म०] बंधन ; मलाबरी ; मल-भूयके अवरोध-से पैटका फूलना ; लंबाई (कपड़े आदिकी) ।

आनाहिक-वि० [सं०] कर्ममें इस्तेमाल किया जानेवाला ।

आनि०-खी० दे० 'आन' ।

आनिल-वि० [सं०] वायुसंबंधी । पु० हनुमान् ; भीम ; स्वाति नक्षत्र ।

आनिलि-पु० [सं०] दे० 'आनिल' ।

आनीत-वि० [सं०] लाया हुआ ; पास लाया हुआ ।

आनीति-खी० [सं०] आनयन ।

आनील-वि० [सं०] हल्के नीले या ग्याह रंगका । पु० स्याह घोड़ा ।

आनुकूलिक-वि० [सं०] अनुकूल ।

आनुकूल्य-पु० [सं०] अनुकूलना ।

आनुगतिक-वि० [सं०] अनुवाचीने संबंध रखनेवाला ।

आनुगत-पु० [सं०] अनुगत होना ; अनुगमन ; परिचय ; घनिष्ठता ।

आनुप्रासिक-वि० [सं०] अनुप्रास-प्रेरित । -कर-नीति-खी० कुछ धोखेपर रियायती कर लेनेकी नीति ।

-दारीदयशुल्क-पु० कुछ विशिष्ट वस्तुओंपर कम लिया जानेवाला शुल्क या चुगी ।

आनुप्रासिक-वि० [सं०] ग्राम-संबंधी ; ग्रामीण ।

आनुपदिक-वि० [सं०] पीछा करनेवाला, अनुसरण करनेवाला ; अध्ययन करनेवाला ।

आनुपूर्व-पु०, आनुपूर्वी-खी०, आनुपूर्व-पु० [सं०] एकके बाद एक धीना, सिलसिला, क्रम ; वर्णमयवस्था या उसका क्रम ।

आनुमानिक-वि० [सं०] अनुमान, अटकलपर आश्रित, कयासी ।

आनुयागिक-पु० [सं०] अनुवर, नेक ।

आनुरक्त-खी० [सं०] दे० 'अनुरक्त' ।

आनुलोमिक-वि० [सं०] क्रमबद्ध, सिलसिलेवार, अनुकूल ; उपयुक्त ।

आनुवंशिक-वि० [सं०] वंशपरंपरा से प्राप्त, पुरतैनी ।

आनुवंश-पु० [सं०] वह पकोनी जिसका घर अपने घरसे दूसरा (प्रतिश्रीके बाद) हो ।

आनुभविक, आनुभ्राविक-वि० [सं०] अनुभूति, अति-परंपरापर आश्रित ।

आनुवंशिक-वि० [सं०] संवद्ध ; संयुक्त ; अनिवार्य ; गोण ; सप्ला ; आनुपातिक ।

आनूप-वि० [सं०] दलदल, पंसाववाला, गीला (भूखंड) ; अनूप देशमें उत्पन्न । पु० जलमें विशेष संबंध रखनेवाला जानवर (मैंस, मछली) ।

आनूपक-वि० [सं०] दलदल आदिमें रहनेवाला ।

आनुष्य-पु० [सं०] कृण-परिचोप, अनुपाता ।

आनुत-वि० [सं०] हमेशा झूठ बोलनेवाला ।

आनुवंस, आनुवंस्य-वि० [सं०] दयाळु, कोमल स्वभावका । पु० कोमलता, दयालुता ; कृपा ।

आनेता(त)-वि० [सं०] लानेवाला ।

आनेपुण, आनेपुष्य-पु० [सं०] महापन ; अद्विष्टता ।

आनेश्वर्य-पु० [सं०] ऐश्वर्य या अधिकारका अभाव ।

आष-वि० [सं०] जिसके पास अन्न या खाद्य-सामग्री प्रस्तुत हो ; जिसे खाद्य पदार्थ मिलते हों ; खाद्य-संबंधी ।

आम्बधिक-वि० [सं०] कुलीन ; अवस्थित ।

आम्बधिक-वि० [सं०] प्रतिदिन होनेवाला ।

आम्बीलकी-खी० [सं०] तर्कशाल ; अभ्यारम्भ-शाल ।

आप-पु० [सं०] पानी ; प्राप्ति, एक वस्तु ; आकाश । वि०

प्राप्य । -गा, -वा-खी० नदी । -निधि-पु० समुद्र ।

-स्तंभिनी-खी० लिंगिनी नामक लता ।

आप-मर्व० खुद, स्वयं ; तुम, वे, येका आदरार्थक रूप ।

पु० परमात्मा । -काज-पु० अपना काम । -काजी-वि० अपना मनलब देखनेवाला । -आप-खी० दे० 'आपाधापी' । -बीती-खी० अपने ऊपर बीती हुई बात ; अपने जीवन या तदंगन घटना-विशेषकी कहानी ।

-रूप-वि० स्वयं ; साक्षात् । -स्वार्थी-वि० खुदगर्ज, मतलबी ।

-आप करना-खुदामद करना ।

-आपकी पढ़ना-अपने-अपने काममें व्यस्त रहना ।

-आपको-अलग-अलग, अपने-अपने ; अपनेकी । -से

आप-खुद-बमुद, अपने आप । -ही आप-स्वतः, अपने

मनमें ; मन ही मन ।

आपक-वि० [सं०] प्राप्त करनेवाला ।

आपकर-वि० [सं०] अमैत्रीपूर्ण ; हानिकायक ; अनिष्टकार ;

दुराई करनेवाला ।

आपक-वि० [सं०] कम पका हुआ ।

आपनेय-पु० [सं०] नीच ।

आपचारना०-मनमानी करना- 'के विमानी आपचारनी' घन० ।

आपण-पु० [सं०] बाजार ; दुकान ।

आपथिक-वि० [सं०] बाजार-संबंधी ; बाजारमें प्राप्त (कर आदि) पु० दुकानदार ; बाजार ; दुकानका कर ।

आपत्तन-पु० [सं०] पहुँचना, टूट पड़ना ; घटित होना ;

उत्तरना ; प्राप्ति ; हानि ; स्वाभाविक परिणाम ।

आपत्तिक-वि० [सं०] आकस्मिक ; दैवी ; अष्ट । पु० बाज ।

आपत्- 'आपद' का समासगत रूप । -कल्प-पु० आपत्-कालके लिए विहित विकल्प । -काल-पु० मुसीबत, कष्ट,

कठिनाईके दिन । -काकिक-वि० आपत्कालमें होनेवाला ;

आपत्कालके लिए उचित । -कृत आप-पु० संकटकालमें

लिखा हुआ कण ।

आपाधि-स्त्री० [सं०] विपत्, संकट; दोष; उज्ज, घतरान; अनिष्ट-प्रसंग; प्राप्ति ।

आपात्य-वि० [सं०] अपत्य-संबंधी; अपत्याधिकारमें विहित (प्रत्यय-व्या०) ।

आपादर्थ-पु० [सं०] जिसकी ग्रहण करनेसे अविष्यमें अनिष्ट हो वह धन-संपत्ति ।

आपादा-स्त्री० [सं०] विपत् ।

आपाद्-स्त्री० [सं०] विपत्, मुसीबत; कष्ट, कठिनाई ।
गात, -प्रल-वि० मुसीबतमें फँसा हुआ; आत्महीन ।
-धर्म-पु० वह आचरण, वृत्ति आदि जिसकी इजाजत केवल आपत्कालके लिए हो ।

आपन-पु० [सं०] पाना; पहुँचना; मँटना; भिँच । * सर्व० दे० 'अपना' । -**पो, -पौ-दे०** 'अपनो' ।

आपना, आपनो-सर्व० दे० 'अपना' ।

आपनिक-पु० [सं०] द्रवनीलमणि; किरात या असभ्य व्यक्ति ।

आपव-वि० [सं०] प्राप्त; संकटकी पहुँचा हुआ, आपदग्रस्त (संकटापन्न) । -**स्वस्था-स्त्री०** गर्भवती ।

आपमित्यक-वि० [सं०] विनिमय द्वारा प्राप्त । पु० विनिमय द्वारा प्राप्त वस्तु ।

आपयिता(तु)-वि० [सं०] पाने, जुटानेवाला ।

आपराधिक-वि० [सं०] तीमरे पहर होनेवाला ।

आपतुर्ग-वि० [सं०] किसी विशेष समय या क्रान्तिसे संबंध रखनेवाला ।

आपव-पु० [सं०] वसिष्ठा एक नाम ।

आपवार्थ-वि० [सं०] मोक्ष देनेवाला ।

आपस-पु० मत्स्य, हेल-मेल, जाला; परस्परका संपर्क ।
-**हारी-स्त्री०** परस्पर निकट संपर्क, भाईचारा । -**का-म्वजनी, मवाधियों, मिमोंके बीचका** (-का मामला, -की फूट) । -**में-परस्पर, एक-दूसरेके साथ** । -**वाले-स्वजन; सपथी; मैत्री** ।

आपसी-वि० आपसका ।

आपस्कार-पु० [सं०] धर या अरीरका छोर ।

आपस्सब-पु० [सं०] एक शाखाप्रवर्त्तक कृषि ।

आपा-पु० अपना स्वरूप, सत्ता, जात; अपनी सत्ताका ज्ञान, अहंभाव, सुरी; अहंकार, गर्व; सुध-बुध । स्त्री० बही बहन (मुलज) । **मु०-स्त्रीना-धमड छोड़ना; अपनेको बरबाद करना; भरना** । -**हालना-धमड छोड़ना** । -**तजना, -मेटना-द्वैतभावका त्याग; धमड छोड़ना** । -**दिखलाना-दर्शन देना** । -**बिसराना-अपनेको भूल जाना; सुध-बुध खो देना** । -**सँभालना-नेतना, सजग होना** । -**(दे) में आना या होना-होश-हवासमें होना; मनोभावोंपर काबू होना** । -**में न रहना, -से निकलना, -से बाहर होना-क्रोधादिके अभिप्रेमसे मनपर काबू न रहना, उत्तेजनमें विरेक खो देना, धैर्यच्युत होना** ।

आपाक-पु० [सं०] अँबी, मट्ठी ।

आपात-पु० [सं०] गिराना; गिराव; अचानक आ धमकना, टूट पड़ना; वर्तमान क्षण या काल; प्रथम दर्शन, पहली निगाह । -**दुस्सह-वि०** जिसका प्रथम आक्रमण सख्त न हो । -**रसणीय-वि०** (नेत्र) तत्काल सुख देनेवाला ।

आपाततः(तस्)-अ० [सं०] पहली निगाहमें, कपटसे देखनेमें; तत्क्षण, तुरत; अकस्मात् ।

आपाती(तिन्)-वि० [सं०] गिरनेवाला, उतरनेवाला; आक्रमक; घटित होनेवाला ।

आपाद्-पु० [सं०] प्राप्ति; पुरस्कार । अ० पैरसे लेकर; पैर तक । -**मस्तक-अ०** सिरसे पैर तक ।

आपाधापी-स्त्री० हर एकको अपनी या अपने कामकी चिंता होना; धौंधी ।

आपाध-पु० [सं०] कुछ लोगोंका मिलकर शराब पीना, पानगोष्ठी; इकट्ठा होकर शराब पीनेका स्थान । -**शोष्ठी-स्त्री०** एक साथ मद्य पीनेवाली मट्ठी । -**भूमि-स्त्री०** वह स्थान जहाँ कई आदमी बैठकर मद्यपान करें । -**शाळा-स्त्री०** शराबकी दुकान ।

आपार्थी-वि० धौंधीबाज, अपने मनकी करनेवाला, स्वच्छंद ।

आपालि-पु० [सं०] जूँ ।

आपिञ्जर-वि० [सं०] कुछ-कुछ लाल । पु० सोना ।

आपी-वि० [सं०] मोटा; बलवान् । स्त्री० पूर्वापादानक्षत्र ।

आपीड-वि० [सं०] पीड़ा देनेवाला; दबानेवाला । पु० सिरपर पहननेकी चीज; किरिट; माला; मुकुटमणि; एक विषम वृत्त ।

आपीडन-पु० [सं०] दबाना; मसलना; निचोड़ना; पीडा देना ।

आपीत-वि० [सं०] हल्का पीला, जर्दी-मायल । पु० नीनामाखी ।

आपीन-वि० [सं०] बलवान्; मोटा । पु० कूप; धन या छीनी ।

आपु-सर्व० दे० 'आप' ।

आपुन, आपुनी-सर्व० दे० 'अपना'; स्वयं ।

आपुस्य-पु० दे० 'आपस' ।

आपुषिक-वि० [सं०] अच्छा पुआ बनानेवाला; पुआ ज्यादा पसंद करनेवाला या बेचनेवाला । पु० पुआ बनाने या बेचनेवाला व्यक्ति; हलवाई ।

आपूय-पु० [सं०] आटा; मैदा; सत्तु; वेनन ।

आपूर-पु० [सं०] जलपारा; बाढ़; भरना ।

आपूरण-पु० [सं०] भरना, लबालब होना ।

आपूरना-अ० कि० भर जाना ।

आपूरित, आपूर्ण-वि० [सं०] पूरी तरह भरा हुआ ।

आपूरित-स्त्री० [सं०] भरना; भरा होना; सत्तिटि ।

आपूब-पु० [सं०] दीन; रागा ।

आपुच्छा-स्त्री० [सं०] बात-चीत; जिज्ञासा; औत्सुक्य; विदा करना ।

आपेक्षिक-वि० [सं०] अपेक्षा रखनेवाला; जिसका अस्तित्व दूसरी वस्तुपर आश्रित हो; तुलनात्मक, निस्वर्ती ।

-गुरुक-पु० दो वस्तुओंका तुलनात्मक धनत्व ।

आपो, आपी-पु० आपा; अहंभाव; सुध, होश ।

आपोक्षित-पु० [सं०] लक्ष्मसे तीसरा, छठा, नवौं और बारहवाँ स्थान ।

आपोजीवन-पु० [अ०] पार्लमेंट या व्यवसायिका समाजोंके सदस्योंका वह दल या गुट जो विरोधी दलका काम करता है ।

आस-वि० [सं०] प्राप्त; पाया; मिला हुआ पहुँचा हुआ; नियुक्त; प्रामाणिक; विश्वसनीय; यथार्थ ज्ञान रखनेवाला; कुशल, पूर्ण; यथार्थ; यथार्थ; अभियुक्त; युक्ति-संगत । पु० विश्वस्त व्यक्ति; मित्र; संबंधी; अर्हत्; शब्दप्रमाण (बी०) ।
-काम-वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो, संतुष्ट; जिसने सांसारिक कामनाएँ और आसक्तिपूर्ण त्याग दी हो । पु० परमात्मा । **-कारी (रिन्)** -वि० उचित ढंगसे या युक्त रूपसे कार्य करनेवाला । पु० विश्वस्त अनुचर । **-गर्भ-स्त्री** गर्भवती । **-गर्भ-वि०** गर्भही । **-बचन, -बाक्य-पु०** भुक्ति, स्मृति, इतिहास, पुराण आदि; प्रमादादि-शून्य वचन । **-वर्ण-पु०** मित्रमंडली । **-श्रुति-स्त्री** स्मृति, वेदादि ।
आसा-स्त्री [सं०] बालोंकी जटा ।
आसागम-पु० [सं०] दे० 'आसभूति' ।
आसाधीन-वि० [सं०] विश्वस्त व्यक्तियोंपर निर्भर रहने-वाला ।
आसि-स्त्री [सं०] प्राप्ति; पहुँचाना; संबंध; सयोग; उप-युक्तता; पूर्णता; अभिष्यत् काल ।
आसोकि-स्त्री [सं०] सिद्धांत-वाचक ।
आस्य-वि० [सं०] जल-संबंधी; प्राप्य । पु० एक देववर्ग; जलधिकार, फेन ।
आप्पावन-पु० [सं०] बाढ, बर्झन; तृप्ति; तृप्त करना; प्रसन्नता; मोटा करना; बढाना; बुद्धिकारक या बलकारक औषध ।
आप्पावित-वि० [सं०] तृप्त; प्रसन्न; वदित; बलवान्; मोटा-ताजा ।
आप्पच्छन-पु० [सं०] स्वागत करना या विदा देना; मिलन-के समयका कुशल-प्रश्न ।
आप्पच्छ-वि० [सं०] छिपा हुआ, गुप्त ।
आप्पद-पु० [सं०] पैरोक्त पहुँचनेवाला वस्तु । [वि० 'आप्पदीन'] ।
आप्प-पु० [सं०] खान; पानीमें नर कर देना; सिंचन । **-व्रती (सिन्)** -पु० ब्रह्मचर्य समाप्त कर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेवाला; खानक ।
आप्पवन-पु० [सं०] दे० 'आप्पव' ।
आप्पल-पु० [सं०] खान; बाढ ।
आप्पलवन-पु० [सं०] खान; सिंचन; पानीसे तर करना; डुबाना, नौरना ।
आप्पलित-वि० [सं०] क्षात; मित्त; डुबाया हुआ ।
आप्पुत-वि० [सं०] आप्पलित । पु० क्षातक ।
आप्प (त्र)-पु० [सं०] वायु; गर्दन ।
आप्पत-स्त्री [अ०] विपर, मुसीबत; दुःख, छेडा; संकट, बला; अथम । **मु०-उठाना-अथम** मचाना । **-का** टुकड़ा; **-का** परकाला-बहुत तेज, चलता, धूर्त आदमी; तुफानी । **-का** मारा-विपरुषस्त, दुर्दैव-पीडित । **-डाना** -उपद्रव मचाना, कष्ट पहुँचाना, पीड़ित करना; अनहोनी बात कहना । **-मचाना** -उपद्रव मचाना, खोर-गुल करना; (किन्ती काममें) बहुत उतावली करना । **-मोल छेना**, **-सिरपर छेना**-कोई शस्त्र, बंधवा अपने सिर छेना; संकट-को म्योता देना ।

आप्पल-पु० [का०] धर्म; धूप । **-झड़ा-वि०** धूपका जला हुआ । **-रू-वि०** जिसका मुँह सूर्यकी ओर हो ।
आप्पलता-पु० [का०] हाथ-मुँह धुलानेका गड्डा, टोटी-दार बचना ।
आप्पलता-वि० सूर्य-संबंधी; धूपमें बनाया या सिंहाया हुआ । **स्त्री** एक तरहकी आतशबाजी; जरीके कामका पन्ना जिसपर सूर्यका चित्र कदा होता है; क्षीप ।
आप्परी-अ० [फा०] शाबाश, धन्य !
आप्परीमिश-स्त्री [का०] सृष्टि, जगत्की उत्पत्ति ।
आप्पित-स्त्री [अ०] कुशल, खेरियत; बचाव ।
आप्पिस-पु० [अ०] दफ्तर, कार्यालय; पद ।
आप्पिसर-पु० [अ०] राजकर्मचारी; अधिकारी, अफसर ।
आप्पु-स्त्री दे० 'आप्पूक' ।
आप्पूक-पु० [म०] अफमी ।
आप्प-वि० **आप्पवन-पु०** [सं०] बंधन; हल आदिके जुएका बंधन; प्रेम; अलकार ।
आप्प-पु० [फा०] पानी; पसीना; आँसु; अर्क; शराब; मवाद; फूलोंका प्राकृतिक रस । **स्त्री** चमक, कालि; शोभा; ताजगी; धार; प्रतिष्ठा; उत्कर्ष । **-कार-पु०** शराब बनाने, बेचनेवाला, कलाल । **-कारी-स्त्री** शराब बनाने, बेचने-का स्थान, शराबखाना; मद्य या मादक वस्तुओंका व्यव-साय । **-कानून-पु०** आवकारीने संबंध रखनेवाला कानून । **-सहकमा-पु०** नशीली चीजोंके उत्पादन, विक्रय आदिका नियमन करनेवाला विभाग, 'एक्साइज डिपार्टमेंट' । **-झड़ा-वि०** पानी या मील खाया हुआ । **-खोरा-पु०** एक तरहका मिलास जो मुँहपर कुछ मक्का होता है । **-गीना-पु०** जोशा; स्फटिक । **-गीर-पु०** गढा; तालाब; जुलाहोंकी कुँची जिसमें तानीपर पानी छि-कने है । **-गुल-पु०** गुलाबका अर्क । **-जोश-पु०** लाल मुनका । **-दम-पु०** सींचना; पानी छूना; आवदलका पानी । **-द्वार-वि०** चमकदार; धारदार । पु० पानी पिलानेवाला नौकर; तोपमें सुधा और पानीका पुश्तारा देनेवाला । **-दीबा-वि०** जिसकी आँखोंमें आँसु भर आये हों, रोता हुआ । **-दोड़ा-वि०** पानीमें डूबकर, पानीके भीतर-भीतर चलनेवाली (नाव), 'संबरेरी' । **-पाप्पी-स्त्री** स्नेहकी सिंचाई । **-पारी-स्त्री** पेश-पेशोंकी सींचना । **-रू-स्त्री** मान, प्रतिष्ठा, उन्नत । **-शार-पु०** खरना, निर्झर । **-शिनास-पु०** पानीकी गहराई नापनेवाला जहाजी कर्मचारी । **-(बे) बजल-पु०** फोतेमें पानी आ जाना, अंधबुद्धि । **-रबो-पु०** बहुत बारीक मकलम । **-सुझ-पु०** शराब । **-हवात-पु०** अमृत । **-हैर्वा-पु०** अमृत । **-(बो) तार-स्त्री** चमकदार; शोभा । **-दाना-पु०** अन्न-जल । **-हवा-स्त्री** जल-वायु । **मु०-दाना उठाना**-स्थानविशेषमें जीविकाका उपाय (नौकरी आदि) न रह जाना ।
आप्प-वि० [सं०] पैना हुआ; बाधित; जकड़ा हुआ; निर्मिन्न; प्राप्त । पु० छट बधन; प्रेम; अलकार; जुआ ।
आप्पन-पु० तेंदू नामक एक जंगली वृक्ष ।
आप्पन-वि० आप्पन-का या आप्पन-के रंग जैसा गहरा काळा ।

आवृत्त-पुं० [फा०] छाला, फलोला ।
 आवरूप-पुं० [सं०] निबलता, कमजोरी ।
 आवाद-वि० [फा०] बसा हुआ, बस्तीवाला; सपन्न, सुख-
 हल; फलता-फलता । -कार-पुं० जंगल, बंजर जमीनमें
 आवाद होनेवाले रुक । पुं०-करना-उज्ज्वल, बजर
 जमीनको बसाना या कृषि योग्य बनाना ।
 आवादान-वि० बसा हुआ; भरा-पूरा; उन्नत, समृद्ध ।
 आवादान-वि०-सी० आवाद जगह; सभ्यता, संस्कृति; अभ्यु-
 दय; कृषि; आवारी; बहुतायत; कुरङ्गि; आमोद प्रमोद ।
 आवादी-वि०-सी० बस्ती; जनसंख्या; सुसाहली; कृषिभूमि ।
 आवाज-पुं० [सं०] पीका, कठ; क्षति; छेड़छाड़ ।
 आवाज-वि०-सी० [सं०] पीका; विता; बेवैनी ।
 आवाज-अ० [सं०] बालकसे लेकर ।
 आवाज-वि० [सं०] पकिल; गंदा; भग करनेवाला; साफ
 करनेवाला । -कद-पुं० मालाकद ।
 आवा-वि० जलोद; जलचर; हलका जीवा ।
 आवा-वि० [सं०] बादरसे उत्पन्न या संबंध रखनेवाला ।
 आवाज-वि० [सं०] प्रतिवर्ष होनेवाला, वार्षिक, साक्षना ।
 आवाज-पुं० दे० 'आवाज' ।
 आवा-वि०-सी० दे० 'आवाज' । पुं० पानी ।
 आवाज-पुं० [सं०] काला अगर; कूट नामक ओषधि ।
 आवाज-पुं० [सं०] आभूषण, गहना; पोषण ।
 आवाज-अ०-पुं० आभूषण ।
 आवाज-वि० [सं०] भरा हुआ; गँवारा हुआ; भूमि ।
 आवा-वि०-सी० [सं०] चमक, पुति; झलक; छाया; प्रतीति;
 सादर (स्वर्णम-सोने जैसी चमक-रमकवाला); बबूलका
 पेड़ ।
 आवाज-पुं० [सं०] कहावन, लोकोक्ति ।
 आवाज-वि० [सं०] कानियुक्त; चमकता हुआ; हृदय ।
 आवाज-वि०-सी० [सं०] चमक, पुति; प्रतिविंब ।
 आवाज-पुं० [सं०] बोझ, घका देख-मालका बोझ; एह-
 सान, एक वयस्कृत ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] एहसानमद, कृणी ।
 आवाज-पुं० [सं०] सरोधन, भूमिका ।
 आवाज-पुं० [सं०] बोलना, बात-चीत; सरोधन ।
 आवाज-पुं० [सं०] बुद्धि, चमक; झलक; छाया, परछाईं;
 सादर्य; प्रतीति (विदाभास); मिथ्या (दिखाऊ) प्रतीति
 (हेत्वाभास); सरोध; अभिप्राय ।
 आवाज-पुं० [सं०] आलोचित करना; स्पष्ट करना ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] चमकीला, बुद्धिमान् ।
 पुं० एक देवद्वार ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] अभिचार-संबंधी; अभिचारात्मक ।
 पुं० अभिचारके मन्त्रादि ।
 आवाज-वि० [सं०] जन्म या कुलसे संबंध रखनेवाला;
 कुलांग (नाम) । पुं० कुलीनता ।
 आवाज-पुं० [सं०] कुलीनता, ऊँचे कुलमें उत्पत्ति;
 नौदय; पक्षि ।
 आवाज-वि० [सं०] अभिजित नक्षत्रमें उत्पन्न ।
 आवाज-वि०-सी० [सं०] स्वर; शब्द; नाम; उल्लेख ।
 आवाज-पुं० [सं०] दे० 'आवाज' ।

आवाज-वि०-वि० [सं०] अभिपान-कोशमें लिखित ।
 पुं० कोलकार ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] ऐच्छिक ।
 आवाज-पुं० [सं०] (किसीकी ओर) रुक होना, आमने-
 सामने होना ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] सुंदर, प्रिय ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] सौंदर्य ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] राजतिलक-संबंधी ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] छल या बलपूर्वक किया हुआ;
 भेदके रूपमें दिया जानेवाला । पुं० भेद, उपहार; कमरा ।
 आवाज-पुं० [सं०] अहीर; एक जनपद या उसके निवासी;
 एक राम । -वद-पुं० एक राम । -पक्षि, -पक्षिका, -
 पक्षी-वि०-सी० अहीरोंका पुरवा या गाँव ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] गोप-संबंधी । पुं०
 अहीर जाति ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] अहीरिन; अहीरोंकी बोली; भारतकी
 एक प्राचीन भाषा (?) ; एक रागिनी ।
 आवाज-वि० [सं०] अमानक; ...से पीडित । पुं० शारीरिक
 कठ; क्षति; दुःख; दुर्भाग्य ।
 आवाज-वि० [सं०] उत्पन्न; अस्तित्वमय ।
 आवाज-पुं० [सं०] गहना, अलंकार; मनावद, शृंगार ।
 आवाज-पुं०-पुं० दे० 'आवाज' ।
 आवाज-वि० [सं०] अलंकृत, सजाया हुआ; शोभित ।
 आवाज-वि० [सं०] निकट लाया हुआ; उत्पातित; मरा
 हुआ; जकड़ा हुआ ।
 आवाज-वि०-सी० [सं०] एक रागिनी ।
 आवाज-पुं० [सं०] रूप; विस्तार; परिपूर्णता; पुमान्;
 योग; जीवन; बुद्धि; सङ्गणका छत्र; सांपका फैला हुआ फन;
 साप; प्रपन्न; पथमें केविका नामोल्लेख; वस्तुके परिचायक
 चिह्नको विचयान्ता ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] योगनेवाला; जीवन
 करनेवाला ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] योगने योग्य । पुं० योग्य पदार्थ ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] जानेवाला ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] भीतरका, अंदरूनी, आंतर । -
 कोष-पुं० मंत्री, पुरोहित, सेनापति आदिका विरोध ।
 -प्रयत्न-पुं० स्पष्ट उच्चारणके लिए किया जानेवाला
 आंतरिक (मुखके भीतर भागका) प्रयत्न ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] अपने देशमें आया हुआ
 विदेशी माल ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] दे० 'आवाज' ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] अभ्युदय-संबंधी; अभ्युदय-
 साधक; उन्नत । पुं० पुत्रजन्म, विवाह आदिके अवसरपर
 किया जानेवाला एक आद ।
 आवाज-वि० [सं०] सुंदर, मनोरम ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] परंका पेड़ ।
 आवाज-पुं० [सं०] संबोधन, बुलाना, पुकारना; न्योता,
 नियंत्रण; स्वागत; विदा लेना; अनुमति; विचार, सलाह-
 मशिवरा ।
 आवाज-वि०-वि० [सं०] दे० 'आवाज' ।

आमसविता(शु)-पु० [सं०] निमंत्रण देनेवाला ।

आमंत्रित-वि० [सं०] निमंत्रित, बुलाया हुआ । पु०
वातालाप; कुलाना; संवोधन कारक ।

आमन्त्र-पु० [सं०] बोधा गमनी स्वर ।

आम-वि० [सं०] कच्चा, अनपका; न पचा हुआ । पु०
कच्चा होनेकी अवस्था; अपक आहार-रस; ढंठलसे अन्न
किया हुआ अन्न; रोग; अजीर्ण । -**कुंम**-पु० कच्चा पका ।
-**गंधि**, -**गंधिक**, -**गंधी(चिन्)**-वि० कच्चे मांस या
जलते हुए शवकी गंधवाला । -**गर्म**-पु० भूण । -**ज्वर**-
पु० अरका एक भेद । -**पाक**-पु० शीघ्र या जलोत्तर
नामक रोगका आरम्भिक रूप; अर्जुनकी पकानेका एक
उपाय । -**पाथी(चिन्)**-वि० पाचनमें सहायक । -**पेष**-
पु० कच्चे अन्नका चूर्ण । -**भृष्ट**-वि० बोधा पकाया हुआ ।
-**रक्त**-पु० रक्त अतिसार । -**रस**-पु० आहारके पचनेपर
उत्पत्ति होनेवाला रस । -**बात**-पु० कोष्ठवृद्धता, कज्ज;
आँव पजनेका रोग । -**घृक्ष**-पु० अजीर्णके कारण होनेवाली
भयंकर पीडा; आँवके कारण पेट मरोड़नेका रोग । -**आद्**-
पु० एक आद् जो कच्चे अन्नसे किया जाता है ।

आम-पु० एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़, आम, रसाल ।
-**रस**-पु० अमकट । **मु०**-के आम, गुठलीके वाम-
दोहरा लाम ।

आम-वि० [अ०] फैला हुआ, व्यापक; प्रसिद्ध; साधारण,
सामान्य । -**ख्रास**-पु० राजमहलका वह भीतरी भाग
जहाँ राजा-बादशाह बैठ करते हैं । -**जलसा**-पु०
सार्वजनिक सभा । -**दरबार**-पु० सुलु दरबार जिसमें
सब लोग जा सकें । -**फहम्**-वि० जो सबकी समझमें
आ जाय, सुवीध । -**राय**-स्त्री लोकमत । -**लोग**-पु०
जनसाधारण ।

आमक-पु० वह इमशान जहाँ मृत व्यक्तियोंके शरीर
कौमो, गिद्धों आदिके खानेके लिए यों ही फेंक दिये
जाते हैं ।

आमरा-पु० एक खट्टा फल और उसका पेड़ ।

आमद्-स्त्री [फा०] आना, अवाई; आय; (कवितादिमें)
सहन प्रवाहने आनेवाला, स्वाभाविक भाव-अकृत्रिम,
अकृष्ट-कल्पित भाव । -**(ब)खर्च**-पु० आय-व्यय ।
-**रन्त**-पु० आना-जाना । **मु०**-**आमद् होना**-किसी
के आसन्न आगमनकी चर्चा या धूम होना ।

आमदनी-स्त्री [फा०] आय; प्राप्ति; नफा, निकास;
देसावरसे आनेवाला माल, आयण ।

आमन-पु० अमहनी धान (बंगाल); एकफसल खेत ।

आमनस्य-पु० [सं०] रंज, दुःख; पीडा ।

आमनाथ-पु० दे० 'आम्नाय' ।

आमना-सामना-पु० सामना; भेंट ।

आमनी-स्त्री वह खेत जिसमें आमन बोया जाय; आमनकी
खेती ।

आमने-सामने-अ० एक-दूसरेके सामने; मुकाबलेमें ।

आमय-पु० [सं०] रोग, बीमारी; क्षति; अधिमांश, अजीर्ण;
कूट नामक ओषधि ।

आमयात्री(चिन्)-वि० [सं०] रोगी; अग्निमांश रोगसे
ग्रस्त ।

आमरस-पु० क्रोध; अमर्ष ।

आमरसना-अ० [क्रि०] क्रोध करना ।

आमरण-अ० [सं०] मरणपर्यंत, जीवनके अंततक ।

आमरणांत, आमरणांतिक-वि० [सं०] मृत्युपर्यंत रहने-
वाला ।

आमर्द, आमर्दन-पु० [सं०] मसलना, रगड़ना; दबाना;
निचोड़ना ।

आमर्ष-पु० [सं०] दे० 'अमर्ष' ।

आमलक-पु० [सं०] आँवला ।

आमलकी-स्त्री [सं०] छोटा आँवला; फाल्गुन-शुद्धा
एकादशी ।

आमला-पु० आँवला ।

आमर्-पु० गरम छोहा पीटनेके लिए दूसरे लोहारकी
बुलना ।

आमातिसार-पु० [सं०] आँव, पेशिबकी बीमारी जिसमें
मलके साथ सफेद आँव आता है ।

आमात्य-पु० [सं०] दे० 'अमात्य' ।

आमादगी-स्त्री आमादा-तैयार होना, तत्परता ।

आमादा-वि० [फा०] तैयार, तत्पर, उद्यत ।

आमानस्य-पु० [सं०] दे० 'आमनस्य' ।

आमानाह-पु० [सं०] आँवके कारण पेटका फूलना ।

आमाह-पु० [सं०] कच्चा अन्न; कच्चा नाचल ।

आमावात्य-वि० [सं०] अमावस या उस दिन होनेवाले
जलसे सर्वत्र रखनेवाला ।

आमासय-पु० [सं०] पाचन-स्थानका वह वैलीनुमा
भाग जिसमें आहार शकड़ा होकर पचता है, मेघा ।

आमाहन्दी-स्त्री एक ओषधि ।

आमिक्षा-स्त्री [सं०] फटे दूधका ठोस भाग, छेना ।

आमिख-पु० दे० 'आमिष' ।

आमिर-वि० [अ०] हुक्म देनेवाला । पु० हाकिम, अधि-
कारी ।

आमिल-वि०, पु० [अ०] अमल-काम करनेवाला, साधक;
अधिकारी; शास्त्र-कर्म करनेवाला । वि० सिद्ध; * खट्टा ।

आमिश्र-वि० [म०] एक माथ मिलाया हुआ ।

आमिश्रा-स्त्री [म०] वह राज्य या प्रदेश जहाँ रामभक्त
और राजद्रोही दोनों समान रूपसे रहते हैं ।

आमिष-पु० [सं०] मांस; शिकार; भोग्य वस्तु; दुग्धावनी
वस्तु, चारा; दूध; कामना, भोगेच्छा; रूप; आकृति; पद्म;
जंगीरी नौद । -**मिष**, -**मुक्(ज)**-वि० जिसे मांस
पिय हो । पु० मामभक्षी पक्षी (गिद्ध, बाज आदि ।

-**ओजी(चिन्)**-वि० मामभक्षी; गोशतकी ।

आमिषार्शी(चिन्)-वि० [सं०] मांसाहारी ।

आमी-अ० [अ०] दे० 'आमीन' ।

आमी-स्त्री छोटा आम, आँवला; जो आदिको भूनी हुई
बाल ।

आमीक्षा-स्त्री [सं०] दे० 'आमिक्षा' ।

आमीन-अ० [अ०] ईश्वर ऐसा करे, तथास्तु ।

आमीलन-पु० [सं०] आँखें बंद करना ।

आमुक-वि० [सं०] मुक किया हुआ; कैका या छोहा
हुआ; धारण किया हुआ ।

आयुक्ति-खी० [सं०] मोक्ष; धारण करना, पहनना । अ० मुक्ति मिलनेके समयतक ।

आयुक्त-पु० [सं०] आरंभ; (नाट्यकी) प्रस्तावना; भूमिका ।

आयुक्तिक-वि० [सं०] परलोक-संबन्धी ।

आयुक्त-अ० [सं०] मूलपर्यंत, जगन्मय; जड़ते ।

आयुक्त-वि० [सं०] कृति पहुँचानेवाला; चतुता करनेवाला ।

आयुक्त-वि० [का०] मिठा हुआ, शुष्क (समाप्तमें व्यवहृत; रंगनेवा-रंग भरा हुआ) ।

आयुक्त-सं० कि० मिलाता ।

आयुक्त-खी० [का०] मिलावट, मिश्रण ।

आयोक्त-पु० [का०] पदे हुए पाठको दोहराना, उद्धरण ।

आयोक्त-पु० [सं०] छुटाना; मुक्त करना ।

आयोक्त-पु० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी; विस्मरण, फैलनेवाली सुगंध, सुरभि; सतावर । -प्रयोक्त-पु० मीन-चैन, रंग-रसिद्धि । -आयोक्त-खी० (द्विप) आनन्दके लिए, यत्र बहलानेके लिए की गयी छोटी सी यात्रा ।

आयोक्त-पु० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता देना; बसाना, बासना ।

आयोक्त-वि० [सं०] प्रसन्न, आनंदित; सुवासित ।

आयोक्ती (वि०) -वि० [सं०] सुवासित, सुगन्धदार, प्रसन्न रहनेवाला ।

आयोक्त-पु० [सं०] अपहरण, चोरी ।

आयोक्ती (वि०) -वि० [सं०] चोरी करनेवाला, चोर ।

आयोक्त-वि० [सं०] उद्धृत, उद्धिखित; विचारित; अभीत; याद किया हुआ; पवित्र ग्रन्थविके रूपमें परंपरासे प्राप्त (वि०) ।

आयोक्त-पु० [सं०] वेद, श्रुति; परंपराप्राप्त उपदेश; तत्र; कुल; कुलक्रम ।

आयोक्त-पु० [सं०] आम । -कूट-पु० अमरकटक पर्वत ।

-शंखक-पु० समष्टिल नामक पीषा । -वन-पु० आमका बाग, अमरार ।

आयोक्त, आयोक्तक-पु० [सं०] आमरा ।

आयोक्त-पु० [सं०] हमलीका पेव; खट्टापन ।

आयोक्त-खी० [सं०] हमली; खट्टापन ।

आयोक्तिका, आयोक्तिका-खी० [सं०] हमली; मुँहका खट्टा नज़र या टकार ।

आयोक्ती पायोक्ती-खी० सिरहाना-पावताना ।

आयोक्ता-अ० दे० 'आहता' ।

आयो-खी० [सं०] धनगम, आमदनी; लाभ । पु० जन्म-कुटुम्बमें स्वारहवर्षे स्थान; अंतःपुररक्षक; आगमन ।

-व्यव-पु० आमद-खर्च । -का चिट्ठा-बजट । -स्थान-पु० लगान जमा करनेकी जगह ।

आयोक्त-वि० [सं०] लंबा; विस्तृत; विशाल; आकृष्ट । पु० समकोण चतुर्भुज (स्पा०) । -फुल्ला-खी० केला । -वेष्ट, -खोचव-वि० बड़ी-बड़ी या लकी ओखोवाला ।

आयोक्त-खी० [अ०] कुरामका वाक्य; चिह्न, निशान ।

आयोक्त-पु० [सं०] (कैपेसिटी) किसी पात्रादिके अंदरका स्थान जिसमें कोई चीज आ सके; छम्बारे-चौधारी आदि; स्थान; घर; आश्रय; देवस्थान; यज्ञस्थान; बखार; रोगका कारण; भ्रुकान बनानेका स्थान ।

आयोक्ती-खी० [सं०] वह सीमा जहाँतक कोई वस्तु पहुँच

सकती हो; लम्बाई; विस्तार; भविष्यत् काल; तेज; प्रभाव; संगम, मिलन; संयम; भविष्यमें होनेवाली आय ।

आयोक्त-वि० [सं०] अभीत; आश्रित, अवलंबित ।

आयोक्त-खी० [सं०] अभीतता; दूसरेपर अवलंबित होना; प्रेम; सीमा; उपाय; प्रभाव; सामर्थ्य; महत्ता; दिन; आय-रणकी बढ़ता; लंबाई; भविष्यत् काल ।

आयोक्ताव्यव-पु० [सं०] जैसा होना चाहिये वैसा न होना; अव्यवस्था; अनौचित्य ।

आयोक्त-वि० [अ०] लौटनेवाला; घटित होनेवाला; लगनेवाला । **मु०** -होना-लगना; लगाया जाना (जुर्म, दफा आदि) ।

आयोक्त-पु० [सं०] लंबाई; फैलाव; नियमन; खींचना, तानना (धनुस् आदि) ।

आयोक्त-पु० [सं०] बरागाह ।

आयोक्त-पु० [सं०] लोहा; लोहेकी बनी चीज; हथियार; अगर; रत्न । वि० लौहनिमित्त; लोहेके रंगका । * खी० दे० 'आयुक्त' ।

आयोक्ती-खी० [सं०] लोहेका कवच, बस्तर ।

आयोक्ती-वि० [सं०] लोहेका, लौहनिमित्त ।

आयोक्त-खी०, पु० आदेश, आज्ञा ।

आयोक्त-खी० [पुर्न०] बन्धेकी दूध पिलानेवाली स्त्री, धाय । अ० [का०] क्या; या ।

आयोक्त-वि० [सं०] प्रार्थित । पु० प्रार्थना ।

आयोक्त-वि० [सं०] आया हुआ; आगत; देसावरने आया हुआ (माल) । पु० देसावरसे माल आना या मँगाना, आमदनी; अतिशयता, उद्रेक ।

आयोक्त-खी० [सं०] आना; पास आना ।

आयोक्त-पु० [सं०] आना; स्वभाव, प्रकृति ।

आयोक्त-पु० [सं०] लंबाई; फैलाव; तानना, खींचना; नियमन; रोक (प्राणायाम) ।

आयोक्त-वि० [सं०] खींचा, फैलाया हुआ ।

आयोक्ती (वि०) -वि० [सं०] नियमन करनेवाला; लंबा ।

आयोक्त-पु० [सं०] यक्ष; कभी कौशिक; श्रम; बकाबट; मानसिक पीषा ।

आयोक्तक-वि० [सं०] बकानेवाला; कष्टकारक ।

आयोक्ती (वि०) -वि० [सं०] आयास करनेवाला; बका हुआ ।

आयो, आयु -'आयु'का समासगत रूप । -शेष-पु० शेष जीवन, आयुका शेष भाग । -होम-पु० दीर्घायुके लिए किया जानेवाला यज्ञविशेष ।

आयु (सं०) -खी० [सं०] जीवन; जीवनकाल; जीवन-शक्ति; आहार; आयुष्टोम नामक यज्ञ । **मु०** -खुटाना* -आयु कम होना ।

आयुक्त-वि० [सं०] संतुष्ट; नितुष्ट । पु० मंत्री; कारिदा ।

आयुक्त-वि० [सं०] मिलाया हुआ; टिक्का हुआ । पु० आधा टिक्का हुआ मक्खन ।

आयुक्तिक-पु० [सं०] दस हजार सिपाहियोंका नायक ।

आयुक्त-पु० [सं०] युद्धका साधन, हथियार; आभूषण बनानेके काममें जानेवाला सोना । -जीवी (वि०) -वि० अकसे जीविका करनेवाला, सिपाही । -चर्मिणी-खी०

अयंती नामक हस्त । -भ्यास-पु० ध्वजनके पहले बाह्य शुद्धिका स्थान (दिव्य) । -पाक-पु० शस्त्रागारका अप्सर । -शूर-पु० योद्धा, सैनिक । -साक्षा-खी० शस्त्रागार । -सहाय-वि० शस्त्रविशिष्ट ।

आयुधभार-पु० [सं०] धरद्वे-हथियारका गोदाम, सिलहखाना ।

आयुधिक-वि० [सं०] आयुध-संबंधी । पु० सैनिक ।

आयुधी (धनु)-वि० [सं०] हथियार बंधनेवाला । पु० सैनिक । - (धि)काय-पु० वह राज्य जहाँ सेनामें काम करनेवाले अधिक हों (कौ०) ।

आयुधीय-वि० [सं०] दे० 'आयुधी' ।

आयुर्-‘आयुस्’का समासगत रूप । दाय-पु० जन्म-लक्षके आधारपर आयुका निर्णय करना । -ह्रस्व-पु० औषध; धी । -बल-पु० आयु, जिवनी । -योग-पु० ग्रहोंका योग जिसके आधारपर ज्योतिषी मनुष्यका भावी जीवन बताते हैं । -हृदि-खी० उन्नत बढना । -वेद-पु० स्वास्थ्य-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, भारतीय चिकित्सा-शास्त्र । -वेदी (विन्)-पु० आयुर्वेदका शास्त्र; चिकित्सक । वि० चिकित्सा-शास्त्र-संबंधी ।

आयुर्वेदिक-वि० [सं०] आयुर्वेद-संबंधी । पु० आयुर्वेदका शास्त्र ।

आयुष-पु० [सं०] जीवनकाल ।

आयुर्-‘आयुस्’का समासगत रूप । -कर-वि० आयु बढ़ानेवाला । -काम-वि० दीर्घायु या स्वास्थ्यकी कामना करनेवाला । -कौमारवृत्त्य-पु० बालरोगोंका उपचार । होम-पु० दे० 'आयुहोम' ।

आयुष्माद (यन्)-वि० [सं०] जीविन; लंबी उम्रवाला । पु० ज्योतिषका एक योग; कृतिका नक्षत्र ।

आयुष्य-वि० [सं०] दीर्घायु देनेवाला । पु० उन्नत; जीवन-शक्ति ।

आयोग-पु० [सं०] नियुक्ति, कोई काम ठेना या किसी काममें लगाना; पुष्पादि भेंट करना; कृत्, ततः काम; कार्य-मपादन; सवय ।

आयोगव-पु० [सं०] श्रेय माना और शूद्र पितामह उत्पन्न एक वर्णमकर प्राति ।

आयोन्नक-वि० [सं०] आयोजन करनेवाला ।

आयोजन-पु० [सं०] जोड़ना, एकट्ठा करना; ग्रहण; उद्योग; प्रयत्न; तैयारी ।

आयोजित-वि० [सं०] जिसका आयोजन किया गया हो; समुहोत्त, सबद्ध किया हुआ ।

आयोजन-पु० [सं०] युद्ध; युद्धभूमि; वध ।

आरभ-पु० [सं०] शुरु, दम्पिता, शीर्षणेश; कार्य; प्रयत्न, उपक्रम; शुरुका हिस्सा; उत्पत्ति; तीव्रता; अभिमान; वध । -निष्पत्ति-खी० उपलब्धि; मालकी जितनी गति हो उसको पूरा करना; वस्तु उत्पन्न करने या बनानेपर होनेवाला व्यय (कौ०) ।

आरभक-वि० [सं०] आरम्भ करनेवाला ।

आरभण-पु० [सं०] पकड़ना; मूठ ।

आरभना-सं० कि० शुरु करना । न० कि० शुरु होना ।

आरभिक-वि० [सं०] आरम्भका; शुरुमें होनेवाला ।

आरंभी (विन्)-वि० [सं०] नये नये संसदे बोलनेवाला ।

आर-खी० शत्रुता; घृणा; स्वर्ग; अन्या; सोटे या पछियेमें लगी कौल; * हठ, जिव; [अ०] धर्म; लज्जा । पु० [सं०] अशोधित लोहा; पीतल; कौना; मंगल; शनि; गमन; दूरी; गत; निकटता; उक; किनारा; सीमा, छोर; मधुराम्भ फल; हरताल ।

आरकाटी-पु० सर्वतन्त्र कुलियोंकी भरती करनेवाला व्यक्ति । आरकेस्ट्रा-पु० [अ०] नाट्यशालामें वह स्थान जहाँ शामिल बाजा बजानेवाले बैठते हैं; वहाँ बैठकर बाजा बजानेवाले; सिनेमामें सबसे आगेकी सीटें ।

आरक-वि० [सं०] हलका लाल, सुखी मायल । पु० छाल चंदन ।

आरक्ष-पु० [सं०] रक्षा; सेना; गजकुमसधि; हम संधिके नीचेका भाग । वि० रक्षित ।

आरक्षक-पु० [सं०] प्रहरी, पहरदार; पुलिस ।

आरक्षा-खी० [सं०] दे० 'आरक्ष' ।

आरक्षिक-पु० [सं०] दे० 'आरक्षक' ।

आरक्षी (विन्)-वि० [सं०] रक्षा करनेवाला ।

आरग्वध-पु० [सं०] दबाके काममें आनेवाला एक वृक्ष, अमिलताम ।

आरक्षित-वि० [सं०] व्यवस्थित किया हुआ, तैयार किया हुआ ।

आरज-वि० दे० 'आर्य' ।

आरजा-पु० दे० 'आरिजा' ।

आरङ्ग-खी० [फा०] इच्छा, कामना; बिनती । -मंद्-वि० इच्छुक । मु० -वर आना-इच्छा पूरी होना । -मिटाना-इच्छा पूरी करना ।

आरट-वि० [सं०] घिल्लाने या मोटरगुथ करनेवाला । पु० विदूषक ।

आरट्ट-पु० [सं०] उत्तर-पूर्व पञ्चाङ्गका एक, जनपद; बर्षाका निबानी या घोडा ।

आरणि-पु० [सं०] आवर्त, भँवर ।

आरण्य-वि० [सं०] अरणिमें उत्पन्न या उससे मयध रखनेवाला । पु० शुकदेव मुनि ।

आरण्य-वि० [सं०] जंगली, बर्नाला, जंगलका । पु० जंगल; बिना बोये उत्पन्न होनेवाला एक अन्न; जंगली पशु; सिंह आदि कुछ राक्षसों । -कांड-पु० रामायणका तीसरा कांड । -कुण्ड-पु० वनमार्ग । -पान-पु० सामवेदके बार गानोंमेंसे एक । -पर्व(ज)-पु० महाभारतका एक पर्व । -पञ्च-पु० बर्नाला जलवर । -राशि-खी० सिंह आदि कुछ राक्षसों ।

आरण्यक-वि० [सं०] वन्य; वनमें उत्पन्न । पु० वनबानी; बेरोंका एक भाग जिसमें बानप्रस्थोंके कृत्योंका विवरण है । आरत-वि० [सं०] वक्रा हुआ; सांस; सौम्य; * दे० 'आर्त' । आरति-खी० दे० 'आरती'; * दे० 'आर्ति'; [सं०] विराम, रोक ।

आरति-खी० लाम्सा-‘भोहन सोहन जोहन्की लमिये रहे औंखिमें उर आरति’-धन० ।

आरती-खी० पूजन अभिनन्दन आदिमें देवता या अभि-नन्दनीय व्यक्तिके मुखमें सब ओर कपूर-दीपक डुमाना; वह

पात्र जिसमें कपूर वा दीपक रखा जाय; उस समय पढ़ा जानेवाला स्तोत्र । **मु०** -उत्तरमा-अभिनदन करता ।
आरब-पु० [सं०] एक बोरे वा बैल द्वारा वाहित गाड़ी ।
आरब-पु० दे० 'आरव' ।
आरवाल, आरनालक-पु० [सं०] कौड़ी ।
आरवार-पु० नदीके दोनों किनारे । अ० इस पार्श्वसे उस पार्श्वतक ।
आरबल-पु० दे० 'आरुवल' ।
आरब-वि० [सं०] शुरू किया हुआ । पु० आरंभ ।
आरवि-स्त्री० [सं०] आरंभ ।
आरभट-पु० [सं०] साहस; साहसी पुरुष ।
आरभटी-स्त्री० [सं०] साहस; वह वृत्ति जो रौद्र, भवानक और वीर रसोंके वर्णनमें प्रयुक्त होती है (ना०); नृत्यकी एक शैली ।
आरमण-पु० [सं०] आनन्द लेना; विराम; विश्राम करनेका स्थान ।
आरव-पु० [सं०] आहट; चिल्लाहट; आवाज ।
आरवी-वि० स्त्री० दे० 'आरव' ।
आरस-पु० आलस । स्त्री० दे० 'आरसी' ।
आरसी-स्त्री० आईना; आईना जहा छल्ला बिने लिये टाहने हाथके अंगुठेमें पहनती है ।
आरस्य-पु० [सं०] नीरमया, विरसता, स्वादहीनता ।
आरा-पु० [सं०] लक्ष्मी चोरनेका एक दोतीदार औजार; चमड़ा सोनेका मृत्ता, पहिचकी गडारी और पुट्टीके बीचकी पट्टी; धोड़िया बंडानेके लिए दीवारपर रखी जानेवाली लक्ष्मी या पत्थरी पट्टी; * आला, लाखा । -कहा-पु० [हि०] आरा खींचनेवाला ।
आरा-वा-स्त्री० [फा०] सजावट, शृंगार; कागजके फूल-पत्ते, फुलवारी ।
आराजी-स्त्री० [अ०] दे० 'आराजी' ।
आराति-पु० [सं०] अर्घ्य ।
आरातीय-वि० [सं०] निकटवर्ती; दूरवर्ती ।
आरात्रिक-पु० [सं०] आरती उगारनेका दीप या ऐसा दीप रखनेका पात्र ।
आराधक-वि० [सं०] आराधना करनेवाला, पूजा करनेवाला ।
आराधन-पु० [सं०] पूजा, उपासना करना; तुष्ट, प्रसन्न करना; सेवा करना; सम्मान करना; पाककार्य; अर्जन; तुष्टीकरणका माधन ।
आराधना-स्त्री० [सं०] पूजा, उपासना; सेवा । * सं० कि० पूजा, उपासना करना, आराधन करना ।
आराधनी-स्त्री० [सं०] पूजा, उपासना ।
आराधनीय-वि० [सं०] आराधनके योग्य, पूज्य ।
आराधिता(तु)-वि० [सं०] आराधक ।
आराधित-वि० [सं०] पूजित; मेजित ।
आराध्य-वि० [सं०] आराधन करने योग्य ।
आराम-पु० [सं०] सुख, प्रसन्नता; शरीर, उद्यान, उपवन; एक वृत्त । -शीतला-स्त्री० आनन्दी नामक पौधा ।
आराम-पु० [फा०] सुख; चैन; विश्राम; आरोग्य । वि० चंगा, नीरोग । -कुरसी-स्त्री० लंबी कुरसी जिसपर बैठे भी जा सकता है । -गाह-पु०, स्त्री० सोनेका कमरा,

शयनागार । -खल-वि० सुख चाहनेवाला; आलसी ।
-खल-पु० पानदान; सिंघासना । **मु०** -करवा-सोना; चंगा कर देना । -खे-धीरे-धीरे, पुरसतमें । -खे गुजरना-चैनसे दिन कटना । -होस-चंगा होना ।
आरामाधिपति-पु० [सं०] बाग-बगीचाका अफसर । *
आरामिक-पु० [सं०] बागवान, माछी ।
आरालिक-पु० [सं०] छपकार, पाचक, रसोइया ।
आराब-पु० [सं०] दे० 'आरव' ।
आरावी(विन)-वि० [सं०] चिल्लनेवाला, शोर मचानेवाला ।
आरास्ता-वि० [फा०] सजा वा सजाया हुआ ।
आरि-स्त्री० हठ, जिद; मर्यादा ।
आरि-पु० [अ०] गाल, कपोल । वि० लगनेवाला (रोमादि); बाधक (तमाडी आरिज होना) ।
आरिजा-पु० [अ०] रोग, बीमारी; क्लेश ।
आरिजी-वि० आकस्मिक, अम्पादी, चंदरीडा ।
आरित्रिक-वि० [सं०] नाचके ढाँड़ने संबंध रखनेवाला ।
आरिबल-स्त्री० [अ०] उधार, मंगनी ।
आरियसन्-अ० [अ०] उधार वा मंगनीके रूपमें ।
आरिवा-स्त्री० ककड़ी जैसा एक फल ।
आरी-स्त्री० छोटा आरा; पैंनेकी नोकमें लुंती कील; झुतारी; जालबुंदरक, स्थूलकटक; बुरी; * किनारा, कौर । वि० [अ०] नगा; रिक, शून्य; भगा, ऊना हुआ ।
आरु-पु० [सं०] शक्ति; कैकया; एक वृक्ष; पहा ।
आरुक-वि० [सं०] हानिकारक; नुकसान पहुँचानेवाला । पु० एक पौधा जो हिमालयपर उत्पन्न होता है और दवाके काम आता है ।
आरुण-वि० [सं०] अरुणसे संबंध रखनेवाला ।
आरुणि-पु० [सं०] अरुणके वंशज; उग्रालक; यम आदि सर्वके पुत्र; विनयाके पुत्र ।
आरुकर-पु० [सं०] मलानरका फल ।
आरुह-वि० [सं०] चढ़नेवाला, ऊपर जानेवाला । पु० चढ़ाव ।
आरु-वि० [सं०] पिंगल वर्णका, भूरापन किये हुए लाल । पु० पिंगल वर्ण; दे० 'आरु' ।
आरुक-पु० [सं०] आरु, दुखारा ।
आरुह-वि० [सं०] सवार; आसीन; जमकर बैठे हुआ, हड़ । -चौबन्ना-स्त्री० मध्या नायिकाका एक भेद ।
आरुहि-स्त्री० [सं०] चढाव, आरोहण ।
आरुक-पु० [सं०] खाली करना; सकुचन; सदेह; अतिश्रुतता ।
आरुहित-वि० [सं०] खाली किया हुआ; मिश्रित; सकुचित ।
आरुव-पु० [सं०] अमिलता, आरम्य ।
आरुस-पु० [सं०] रूपा, दाह ।
आरु-पु० दे० 'आरव' ।
आरोग-वि० नीरोग, स्वस्थ ।
आरोगमा-सं० कि० खाना, अक्षय करना ।
आरोग्य-पु० [सं०] रोगका अभाव, मंदुहली । -प्रतिपद-ब्रह्म-पु० एक मत जो स्वास्थ्य-प्राप्तिके लिए किया जाता है । -शाला-स्त्री० चिकित्सालय, अस्पताल । -स्नान-पु० रोगमुक्तिके बादका स्नान ।
आरुचन-वि० [सं०] चमकीला ।
आरुच-पु० [सं०] वेरा, अवरोध ।

चार मुख्य सत्य माने गये हैं)। -समाज-पु० स्वाधी दयानंद द्वारा प्रणीत एक धार्मिक समाज। -समाजी-पु० आर्यसमाजके सिद्धांतोंको माननेवाला। -हृष-वि० कुलीनोंको मिय लगनेवाला।

आर्यक-पु० [सं०] आरणीय व्यक्ति; पितामह; पितरोंके सम्मानार्थ किया जानेवाला एक आद।

आर्यका, आर्यिका-स्त्री० [सं०] श्रेष्ठ स्त्री; एक नक्षत्र।

आर्यव-पु० [सं०] सज्जनोचित व्यवहार; ईमानदारी।

आर्या-स्त्री० [सं०] पार्वती; एक वृक्ष जिसके प्रथम तथा द्वितीय चरणमें १२-१२ तथा दूसरे-चौथेमें १५-१५ भागपड़े होती हैं; सास; श्रेष्ठ स्त्री। -गीति-स्त्री० आर्या छंदका एक भेद।

आर्योवर्त्त-पु० [सं०] विष्णुचलसे हिमालय और पश्चिमी समुद्रसे पूर्वी समुद्रतक विस्तृत आर्योंकी निवासभूमि (मध्य और उत्तर भारत)।

आर्योद्योगमार्ग-पु० [सं०] बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दुःख-निवृत्तिके आठ मार्ग-उत्तम कर्म, उत्तम वचन, उत्तम विचार आदि।

आर्य-वि० [सं०] ऋषिकृत; ऋषिप्रयुक्त; वैदिक। पु० विवाह-के ८ प्रकारोंमें एक; वेद। -ग्रंथ-पु० वेदादि। -प्रयोग-पु० ऋषियों या बड़े विद्वानों द्वारा किया गया शब्दोंका व्याकरण-विशुद्ध प्रयोग। -विवाह-पु० स्मृतियोंमें वैध माने हुए आठ प्रकारके विवाहोंमें एक जिसमें कन्याका पिता घरमें दो बैल झुकरूपमें लेकर कन्या देता था।

आर्यभ-वि० [सं०] सफ़िसे उत्पन्न। पु० ऋषभका वंशज।

आर्यभि-पु० [सं०] ऋषभका वंशज; भारतका प्रथम चक्र-वर्ती नरोत्तम।

आर्यमी-स्त्री० [सं०] केवौं।

आर्यव-वि० [सं०] ऋषियोंमें सबध रखनेवाला; श्रेष्ठ, आदरणीय। पु० ऋषियोंका गोत्र; ऋषियोंका कर्म; मंत्रद्रष्टा ऋषि।

आर्यव-वि० [सं०] अर्द्धसे या जैन-मित्रातोंसे संबंध रखनेवाला। पु० जैन-सिद्धान्त; जैन-मित्रातोंका अनुयायी।

आलंकारिक-वि० [सं०] अलंकार-संबंधी; अलंकारयुक्त; अलंकार-शास्त्र-वेत्ता।

आलंग-वि० [सं०] संलग्न, चिपटा हुआ, लगा हुआ।

आलं-वि० [सं०] आश्रित; सहारेसे लटकता हुआ। पु० सहारा; आधार; अधिष्ठान; लटकन, 'पेड़लक'।

आलंबन-पु० [सं०] सहारा; सहारा-लेना; आधार; रसकी उत्पत्तिका आधार (साधन); कारण; साधन; योगियों द्वारा किया जानेवाला एक प्रकारका मानसिक अभ्यास; पंच-तन्मात्र (बी०)।

आलंबित-वि० [सं०] आश्रित; सहारेपर टिका हुआ।

आलंबी(विन्)-वि० [सं०] आलंब लेनेवाला।

आलंब, आलंबन-पु० [सं०] पकड़ना; छूना; उखाड़ना; बंध (विशेषतः यद्यमें पशुका-अधालंब, गवालंब इ०)

आलंबी(विन्)-वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला; पकड़नेवाला।

आल-स्त्री० एक पीठा या उससे बना रंग; † एक कीड़ा; † करदू। वि० [सं०] बहा; विस्तृत; अधिक। पु० हस्ताक्षर;

छल; विषैले जंतुओंके शरीरसे होनेवाला विषका साव; हांसट; गीलापन; आँसू। स्त्री० [अ०] मंतलि; देदीने संताप; बंशज। -औलाद-स्त्री० बाल-बच्चे; नाती-पोते।

आलकसा-पु० आलस।

आलक्षण-पु० [सं०] देखना-समझना।

आलक्षि-वि० [सं०] देखने-समझनेवाला; अनुभव करनेवाला।

आलक्षित-वि० [सं०] देखा हुआ; समझा हुआ; अनुभूत।

आलगई-पु० [सं०] एक जलसर्प।

आलआल-पु० [सं०] कटपटंग, उल्लसल्ल।

आलधी-आलधी-स्त्री० दाहिनी एड़ी बायीं और बायीं एड़ी दाहिनी नजिपर रखकर बैठना।

आलन-पु० मिट्टीके गारे, पत्थरमें या उपले पायते समय गोबरमें मिलाया जानेवाला भूसा आदि; सागमें मिलाया जानेवाला वेसन।

आलना-पु० बीसला।

आलपाका-पु० दे० 'अलपाका'।

आलपीन-स्त्री० सूई जैसी पन्नी कँटिया, पिन।

आलबाल-पु० दे० 'आलबाल'।

आलभन-पु० [सं०] छुना; पकड़ना; मारना, बंध।

आलभ-पु० [अ०] दुनिया, जहाज, जगत्; मीठ; अवस्था, हालत; एक तरहका नाच। -बनाह-पु० जहाँपनाह, बादशाह आदिका संबोधन।

आलमनक-पु० [पुर्व०] निषिद्ध, पचांग।

आलमारी-स्त्री० दे० 'अलमारी'।

आलव-पु० [सं०] घर, मकान; आधार, अधिष्ठान; आश्रय-स्थान; संपर्क, संबंध। अ० लयपयन। -विज्ञान-पु० अहंकारका आधार (बी०)।

आलक-वि० [सं०] अलक-संबंधी; पागल कुत्तेका (विष)।

आलवण्य-पु० [सं०] विरसता; स्वादहीनता; अद्यापन; कुरूपता।

आलबाल-पु० [सं०] शाला; मेघ।

आलस-वि० [सं०] आलसी। * पु० आलस्य।

आलसी(सिन्)-वि० [सं०] आलस्य-दोषयुक्त, सुस्त, काहिल।

आलस्य-पु० [सं०] काम करनेकी अनिच्छा, सुस्ती, ढिलाई। वि० सुस्त, काहिल।

आला-पु० ताक, ताखा; पत्रावा। * वि० योगी; ताजा; हरा। पु० [अ०] औशर; उपकरण; साधन। वि० बहुत ऊँचा; बगिया, श्रेष्ठ। -ब्रजैका-नहुन बदिवा, उत्तम।

आलाह-स्त्री० [फा०] यल, गंदगी; औँतों आदिमें चिपकी हुई गंदगी; दोष; पूर; जीर्ण आदि।

आलात-पु० [सं०] अंगारा; जलती हुई लकड़ी, लक।

-चक्र-पु० जलते हुए लकड़ीके धुमानसे बननेवाला मंडल।

आलात-पु० [अ०] औशर; उपकरण ('आला'का बहु०)।

-तेजंग-पु० बुद्धयामयी; आयुध।

आलान-पु० [सं०] हाथी सौंपनेका खंभा, खँटा या रस्ता; बेड़ी, जंजीर; सौंपना।

आलाव-पु० [सं०] कथन, बातचीत; संगीतके सारों स्वर; स्वरोंका साधन; गानेका तान जैसा एक अंग जिसमें स्वर

साधकी तरह द्रुत व होकर विलंबित होते हैं; प्रश्न; पाठ (जै०) । -बारी-श्री० स्वर्गकी साधना ।

आकाशक-वि० [सं०] गानेवाला; वातचीत करनेवाला ।

आकाशपन-पु० [सं०] वातचीत करना; आलाप लेना; स्थापित करना ।

आकाशपना-सं० कि० आलाप लेना; गाना ।

आकाशित-वि० [सं०] कहा हुआ; गाया हुआ ।

आकाशपिनी-श्री० तुमही, बौद्धी आदि ।

आकाशी (विद्यु)-वि० [सं०] वातचीत करनेवाला; गानेवाला ।

आलाबु, आलाबू-पु० [मं०] तुम्ही, लौकी, अलाबु ।

आलारासी-वि० निर्द्वंद्व, वैयर्थ्य; जहाँ किसी बातकी परवाह न हो ।

आलाबर्त-पु० [सं०] कपरेका पंखा ।

आलास्य-पु० [मं०] मगर ।

आलिंग-पु० [मं०] एक तरहका ढोल; आलिंगन ।

आलिंगन-पु० [सं०] लिपटावना; गले लगाना, अंकमें भर लेना ।

आलिंगना-सं० कि० गले लगाना, भेंटना ।

आलिंगित-वि० [सं०] जो लिपटाया, गले लगाया गया हो ।

आलिंगी (विद्यु)-वि० [मं०] आलिंगन करनेवाला । पु० एक तरहका बहुत छेदा ढोल ।

आलिंग्य-वि० [मं०] आलिंगन करने योग्य । पु० एक तरहका घुटग ।

आलिङ्ग-पु० [मं०] बड़ा घड़ा; झंझर ।

आलिङ्ग, आलिङ्गक-पु० [मं०] दे० 'अलिङ्ग' ।

आलिपन-पु० [सं०] (कल), दीवार आदि लीपना, पोतना; लिपवाई, पुताई; सफाई ।

आलि-वि० [मं०] निकम्मा; सुस्ता; निरर्थक; ईमानदार । पु० विच्छु; झरमर । श्री० दे० 'आली' ।

आलिखित-वि० [मं०] लिखित, चित्रित, अंकित ।

आलिप्त-वि० [सं०] लिपा हुआ, पुना हुआ ।

आलिप्त-वि० [मं०] जाननेवाला, विद्वान्, पंडित ।

आली-श्री० [सं०] सखी, सहेली; पक्कि; रेखा; बाँध; पुल; सेतु; बरा । वि० [हिं०] आलके रगका; [अ०] ऊँचा; बड़ा ।

-प्रानदान-वि० ऊँचे घरानेका, कुलीन । -अलाब, आह-वि० ऊँचे पद, मन्त्रेवाला । -आर्द्ध-वि० बड़े होसलेवाला; उदारभाव । -विमाणा-वि० ऊँचे विमाणावाला, बुद्धिमान् । -ज्ञान-वि० बड़ी ज्ञानवाला, ज्ञानदार, गौरवमय ।

आलीढ-वि० [सं०] बाढा हुआ; मक्षित । पु० बाण चलाने के समयका एक विशेष अवसान ।

आलीढक-पु० [सं०] रछनेकी उछल-कूट ।

आलीन-वि० [मं०] आलिंगित; चिपटा हुआ, पिघला हुआ । पु० सपक; टीना; सीसा ।

आलीनक-पु० [मं०] दे० 'आलीन' ।

आलुचन-पु० [सं०] चौरना; चोरकर डकने-डुकने करना ।

आलुटन-पु० [सं०] छटना, बलाए छीन लेना, अपहरण करना ।

आलु-पु० [सं०] उछा; आवनूस; बेका; एक मूल; एक फल ।

आलुक-पु० [सं०] रोपनाम; आलू कद; एक तरहका आवनूस ।

आलुक-वि० [सं०] कौपता या हिलता हुआ, असिर ।

आलुलित-वि० [सं०] क्षुब्ध ।

आलू-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध कंदशक । -दम-पु० दे० 'दम आलू' ।

आलूचा-पु० एक पेड़ या उसका फल ।

आलून-वि० [मं०] काटकर अलग किया हुआ ।

आलूबासू-पु० एक वृक्ष जिसका फल आलूके समान होता है ।

आलूबुलारा-पु० आलूकेका सुखाया हुआ फल ।

आलेख-पु० [सं०] लिखावट, लिखाई; पत्र; लेख, तहरीर ।

आलेखन-पु० [सं०] लिखना; तस्वीर बनाना, चित्रांकन ।

-विद्या-श्री० चित्रकला, तस्वीरकशी ।

आलेखनी-श्री० [मं०] कूची, ब्रश; पेंसिल ।

आलेख्य-वि० [मं०] लिखने, चित्रित करने योग्य । पु० लेख; चित्र । -देवत-पु० चित्रांकित देवता । -पुरुष-पु० मनुष्यका चित्र । -विद्या-श्री० चित्रकारी । -शेष-वि० जिसका चित्रनाम ससारमें रह गया हो, मृत ।

-समर्पित-वि० चित्रित ।

आलेप-पु० [सं०] लेप, उबटन आदि; पलस्तर ।

आलेपन-पु० [सं०] लेप करना; पलस्तर करना; उबटन, लेप ।

आलोक-पु० [सं०] प्रकाश, उजाला, दर्शन, दृष्टिमीमा; प्रशंसा; अध्याय । -कर-वि० प्रकाश करनेवाला ।

-पथ, -मार्ग-पु० दृष्टिपथ ।

आलीकन-पु० [सं०] देखना, दर्शन; विचार करना ।

आलीकनीय-वि० [मं०] देखने योग्य ।

आलीकित-वि० [मं०] देखा हुआ; प्रकाशित ।

आलीकक-वि० [सं०] देखनेवाला; समीक्षक ।

आलीचन-पु०, आलीचना-श्री० [मं०] देखना; गुण-दोषका विश्लेषण, परख, समीक्षा ।

आलीचनीय, आलीच्य-वि० [मं०] आलीचना करने योग्य ।

आलीचित-वि० [मं०] जिसकी आलीचना की गयी हो; विश्रुति ।

आलीहन-पु० [सं०] मथना, विलोना; मर्दन; छान-बीन, ऊहा-पोह करना ।

आलीहना-सं० कि० मथना; ऊहा-पोह करना ।

आलीहित-वि० [मं०] मथित; विलोना हुआ; विचारित ।

आलील-वि० [मं०] थोड़ा हिलता हुआ, ईष्यबल्लभ; आनोहित ।

आलीलित-वि० [मं०] हिलाया हुआ, क्षुब्ध ।

आल्ला-पु० पृथ्वीराजके समकालीन महोबानरेश परमहिन्देवके सेनापति जो अपने समयके उन्नत योद्धा और वीर थे; वह वीरगाथा जिसमें आल्ला और उसमें अनुज ऊल्लके कायोंका वर्णन है; उक्त वीरगाथाका छंद, वीरछंद, जिसमें १६+१५ मात्राएँ होती हैं; बहुत लंबा वर्णन; कहानी । -का पैंबारा-निरर्थक लंबा वर्णन । सु०-गाथा-आपनीती सुनाना (१) ।

आवर्त-पु० [सं०] अवर्ति-नरेण ।
आवर्तक, आवर्तिक-वि० [सं०] अवर्तीमे संरंभ रखने-वाला ।
आवर्तक-वि० [सं०] अवर्तीका; अवर्तीमे उत्पन्न । पु० अवर्तीका राजा या निवासी; पतित ब्राह्मणकी सत्ता ।
आवर्तन-पु० [सं०] नमस्कार, प्रणाम ।
आवर्त-खी० आबु ।
आवर्ज, आवर्जा-पु० एक बाजा, ताशा ।
आवटना-सं० कि० औटना, खोलना । पु० हलचल, उथल-पुथल; मंथन ।
आवच-पु०, **आवचि**-खी० आगमन ।
आवनेय-पु० [सं०] अवनि-पुत्र, मंगल ।
आवपच-पु० [सं०] बोना, बोआई; बिलेरना; सारे सिरका मुडन; क्षयता; पात्र, भाँडा ।
आव-भगत-खी० स्वागन-सत्कार, खातिर-वात ।
आव-आव-पु० आव-भगत ।
आवच-पु० [सं०] आना; आनेवाला ।
आवरक-वि० [सं०] आवरण करने, छिपानेवाला । पु० परदा ।
आवरण-पु० [सं०] ढकना, छिपाना; धरना; ढकन, बैठन; परदा; बचाव; ढाल; चहामदीवारी; लावा; भूँका ।
पत्र-पु० पुष्पकके रत्नार्थ उमपर चढाया हुआ कागज जिमपर उमका नाम-दाम भी रहता है, 'कवर' ।-**हाकि**-खी० अज्ञान ।
आवरा-पु० आवरण, खोल, गिलाफ; ढकनेवाली चादर । [खी० 'आवरी' ।] * वि० आचून्, ढकी हुई- 'मोहमें आवरी है' कृषि बावरी'-पुन० ।
आवरिका-खी० [सं०] छोटी दुकान ।
आवरित-वि० दे० 'आवृत्त' ।
आवरिना, आवरीता(तु)-वि० [म०] आवरण करनेवाला ।
आवर्जक-वि० [म०] आकृष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला ।
आवर्जन-पु० [म०] आकृष्ट करना; तुष्ट करना; पराभूत करना, झुकाना; देना ।
आवर्जना-खी० [म०] दे० 'आवर्जन' ।
आवर्जित-वि० [सं०] झुकाना हुआ; उँटेला हुआ; बहाया हुआ; पराभूत, नीचा दिखाया हुआ, परित्यक्त । पु० चंद्रमाकी एक विशेष स्थिति ।
आवर्त-पु० [म०] घुमाव, चक्कर; मँवर; (चौकी) मँवरी; धनी जागदी; लाजवर्द; मादिक भातु; एक मेधापिप; भौके ऊपरका ललाटाका घँसा हुआ हिस्सा; भातुका पिपलना; किसी बातकी बार-बार सोचना-विचारना, चिन्ता; संसार; संशय । -**रुपि**-पु० लाजवर्द ।
आवर्तक-वि० [सं०] घूमने, चक्कर खानेवाला । पु० एक बिछा कौवा; एक मेधापिप; भौके ऊपरका घँसा हुआ भाग; मँवर; मँवरी; चक्कर; चितन; योगके पाँच प्रकारके विज्ञोमेंसे एक ।
आवर्तकी-खी० [सं०] विषाणिका नामक लता ।
आवर्तन-पु० [सं०] घूमना, चक्कर खाना; मंथन, गालो-डन; (भातु) गलाना, पिपलाना; दुहराना, फिर-फिर करना; दोहरा (रसके बाद पदार्थोंकी छाया पश्चिमके दृष्टे

पूर्वकी ओर पकने लगती है) ।-**रुपि**-पु० राजावर्त रुपि ।
आवर्तनी-खी० [सं०] भातु गलनेकी कुलिया, कपिया; चम्मच, कलछी; दोहरानेकी क्रिया ।
आवर्तित-वि० [सं०] घुमाया हुआ; मथा हुआ ।
आवर्तिनी-खी० [सं०] मँवर; अजस्यंगी ।
आवर्ती(सिन्)-वि० [सं०] घूमने, चक्कर खानेवाला; गलनेवाला । पु० वह घोड़ा जिसके शरीरपर मँवरियाँ हों ।
आवर्त, आवर्त-वि०, पु० दे० 'आवर्त', 'आवर्त' ।
आवर्त-पु० [सं०] वर्षा, हटि ।
आवर्हित-वि० [सं०] उन्मूलित, उत्पाटित ।
आवलि, आवली-खी० [सं०] पोंत, भेणी, सिलसिला, परपरा ।
आवलित-वि० [सं०] कुछ मुड़ा हुआ ।
आवलित-वि० [सं०] धीरे-धीरे हिलना हुआ ।
आवश्य-पु० [सं०] आवश्यकता; अनिवार्य कार्य या फल ।
आवश्यक-वि० [सं०] जरूरी, अवश्यभावी ।
आवश्यकता-खी० [सं०] जरूरत ।
आवश्यक-वि० जरूरी ।
आवस-खी० कमल, औम (भाप ?) ।
आवसति-खी० [सं०] रात्रिकालमें विश्राम करनेका स्थान; रात्रि ।
आवसथ-पु० [सं०] घर; गाँव; छात्रों या साधुओंके रहने-का स्थान, आश्रम; एक व्रत ।
आवसथ-वि० [सं०] घरमें स्थित । पु० बहामें व्यवहृत पाँच अक्षियोंमेंसे एक, लौकिकाक्षि; रात्रिकालमें विश्राम करनेका स्थान घर ।
आवसान-वि० [सं०] गाँवकी सीमापर रहनेवाला (चांडाल) ।
आवसित-वि० [सं०] पूरा किया हुआ; निर्धारित, निश्चित किया हुआ; जमा किया हुआ (अन्न); पका हुआ (अन्न) ।
आवस्थिक-वि० [म०] अवस्था या परिस्थितिके अनुकूल ।
आवह-पु० [म०] बायुके सात स्वधोमेंन पहला, भूलोक और स्वलोकके मध्यवर्ती आकाशकी बायु; अक्षिणी ७ त्रिहोमेंसे एक । वि० (समासात्मक) जनक, उत्पादक (मयावह, कुशावह) ।
आवहन-पु० [सं०] नजदीक लाना ।
आवर्-पु० मिट्टीके चलन पकानेका मट्टा; † गरम लोहा पीटनेके लिए दूसरे लोहारका झुलाया जाना । **मु०** -**विगडना**-वर्तनोका ठीक तौरने न पकना । -**खगाना**-वर्तनोके सभ ओर उपले चुनकर उन्हें पकानेके लिए आँच देना । -**(वै०)का आवर् विगडना**-सारे कुडुमें कोई दोष होना ।
आवागमन-पु० [सं०] आना-जाना; जन्म-मरणका चक्र या बंधन, संसृति । **मु०** -**खूटना**-मुक्ति मिलना ।
आवागमनी-वि० आने-जानेवाला, जीने-मरनेवाला ।
आवागमन, आवागमन-पु० दे० 'आवागमन' ।
आवाज-खी० [फा०] बोल, ध्वनि, स्वर; पुकार; शोर । **मु०** -**उठाना**, -**कैसी करना**-किसी बातके पक्ष या विपक्षमें कहना, बोलना । -**खलना**-गला बैठनेके बाद शब्दका साफ निकलना । -**गिरना**-स्वरका मंद होना । -**देना**-पुकारना, बुलाना । -**निकलना**-बोलना ।

—पड़ना—गला बैठना, खरबग होना । —पर काव रखना—ध्यान देना । —पर लगना—(तीतर, घेरे आवि-का) बोलकी धुन, सनेतपर चलना, काम करना । —फटना—आवाज भरना । —बैठना—गला बैठना, खरबग होना । —अरना, —अरी होना—गलेसे अस्पष्ट और मोटी आवाज निकलना । —आरना—जोरसे पुकारना । —लगाना—आवाज देना; ऊँची तान लगाना ।
आवाज्ञा—पु० [फा०] प्रसिद्धि, श्रुतः; ब्यंग्य, ताना ।
 —ए-खरक—पु० लोकप्रसिद्धि, लोकचर्चा (?) ।
 —कसना—बोली बोलना, ब्यंग्य करना ।
आवा-जानी—स्त्री० जन्म-मरण ।
आवा-जानी—स्त्री० आना-जाना, आमद-रफ्त ।
आवादाना—स्त्री० दे० 'आवादाना' ।
आवाप—पु० [मं०] बिलेचना; बीज बोना, फेंकना; किसी मिश्रणमें उपरने कुछ मिलाना; पात्रोंको व्यवस्थित करना; धाला; धान्यपात्र; शत्रुतापूर्ण अभिप्राय. एक विशेष अस्त्र-यज्ञ; एक पेय; ककण; विषम भूमि ।
आवापक—पु० [सं०] स्वर्ण-ककण ।
आवापन—पु० [मं०] कर्षा; बुननेका यज्ञ; सूर्ययज्ञ, वह गोल लकड़ी जिसपर तागा लपेटा जाना है ।
आवापिक—वि० [मं०] बपन, मुडन आदिके लिए उत्तम; अतिरिक्त, पूरक ।
आवाय—पु० [सं०] गृह-रचनासे बची हुई मेना (कौ०) ।
आवार—पु० [सं०] पनाह, बचाव; रक्षण, बचाना ।
आवारगी—स्त्री० [फा०] आबारापन ।
आवारजा—पु० [फा०] जमा-खर्च-बही, रोजानामचा; आवारजा ।
आवारा—वि० [फा०] जो बेकार धूमता-फिरता, भटकता रहे; कुमार्गगामी; निकम्मा । —गर्ही—वि० बेकार धूमने, भटकता रहनेवाला । —गर्ही—स्त्री० बेकार धूमना, भटकना ।
आवाल—पु० [सं०] धाला, आलवाल ।
आवास—पु० [मं०] बामस्थान, घर; कमरा ।
आवासी(सिन्)—वि०[सं०] रहनेवाला, वास करनेवाला ।
आवाह—पु० [सं०] आमंत्रण; विवाह ।
आवाहन—पु० [सं०] बुलाना, पुकारना; पूजनमें किसी देवताको मंत्र द्वारा बुलाना; अग्निर्को होम अर्पित करना ।
आवाहना—सं० कि० आमन्त्रित करना ।
आवाहनी—स्त्री० [मं०] देवताके आवाहन-कालमें बनायी जानेवाली हाथकी एक विशेष मुद्रा ।
आविक—वि० [मं०] मेघ-सम्बन्धी; ऊनी । पु० ऊनी वस्त्र, कबल । —सौत्रिक—वि० ऊनी धागेसे बना हुआ ।
आविन—वि० [सं०] उद्दिग्ध, परेशान । पु० एक फलबाला वृक्ष, अविन्न ।
आविद्ध—वि० [मं०] विधा, छेदा हुआ; जोरने केका हुआ; तोड़ा हुआ; मुका हुआ; कुटिल; विषय; हताश; मिथ्या; मूर्ख । पु० तलवारका एक हाथ । —कण्—वि० जिसके कान छिदे हो । —कणिका—कणी—स्त्री० पाठा ।
आविच—पु० [सं०] लकड़ी छेदनेका औजार, बरमा ।
आविनाय—पु० [सं०] प्रकट होना, अभिव्यक्ति; उत्पत्ति; अवतार; वस्तुधर्म ।

आविर्भूत—वि० [सं०] प्रकटित, अभिव्यक्त; अवतीर्ण; उत्पन्न ।
आविर्भूती—स्त्री० [सं०] औस ।
आविर्भूत—वि० [सं०] जिसकी जब खोद दी गयी हो (हृष्ट) ।
आविर्हित—वि० [सं०] प्रत्यक्ष किया हुआ ।
आविह—वि० [सं०] मिला, गदा, वक्ष्ययुक्त; सुंभला, अस्पष्ट ।
आविष्करण—पु०[सं०] प्रकट करना, दिखाना; कोई अज्ञात बात खोज निकालना; नयी चीज बनाना, ईजाद ।
आविष्कर्ता(र्तृ)—वि० [सं०] आविष्कार करनेवाला ।
आविष्कार—पु० [सं०] दे० 'आविष्करण' ।
आविष्कारक—वि० [सं०] दे० 'आविष्कर्ता' ।
आविष्कृत—वि० [मं०] प्रकट किया हुआ; ईजाद किया हुआ ।
आविष्किया—स्त्री० [मं०] दे० 'आविष्कार' ।
आविष्ट—वि० [सं०] आवेशयुक्त; प्रेताग्निसे प्रस्त; तत्पर; भरा हुआ, अभिभूत (क्रोधाविष्ट); प्रविष्ट ।
आवी—स्त्री० [सं०] कतुनती स्त्री; गर्भवती स्त्री; प्रसव-वेदना ।
आवीत—वि० [सं०] पहना हुआ; गया हुआ; प्रविष्ट; ढका हुआ; उपनीत । पु० एक विशेष ढंगमें पहना गया जनेक ।
आवृत्त—वि० [मं०] ढका, छिपा, लपेटा हुआ; बेरा हुआ; बाधित; कैला हुआ । पु० एक वर्णमकर जाति ।
आवृत्ति—स्त्री० [मं०] आवरण ।
आवृत्त—वि० [मं०] घुमाया, फिराया, लौटा, पीछे हटा, लौटया, दुहराया, पढ़ा हुआ ।
आवृत्ति—स्त्री० [मं०] घूमना; लौटना; चक्कर लगाना; पलायन; दुहराना; बार-बार पढ़ना, अभ्यास; मंस्तुति; पुस्तकादिका फिरने छपना, मस्तरण; उपयोग, प्रयोग ।
 —दीपक—पु० दीपक अलंकारका एक भेद जिसमें क्रिया-पदोंकी आवृत्ति की जाती है ।
आवृष्टि—स्त्री० [मं०] बरषा ।
आवेग—पु० [मं०] उदीप्त, प्रवल मनोरंज, बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठनेकी अनप्रेरणा, शोक; अज्ञाति; उगा-बली; एक सन्धारी भाव ।
आवेगी—स्त्री० [मं०] वृद्धारक वृक्ष ।
आवेज्ञा—पु० [फा०] लटकने या झूलनेवाली वस्तु; लटकने वाला गहना (लटकन, झूलनी, झूमक आदि) ।
आवेष्टक—वि०[सं०] आवेदन करनेवाला । पु० सुखी; प्रार्थी ।
आवेष्टन—पु० [सं०] निवेदन, अर्ज; प्रार्थना करना; नालिश । —पत्र—पु० अर्ज; प्रार्थनापत्र ।
आवेदनीय, **आवेष्ट**—वि० [सं०] निवेदन करने योग्य; प्रार्थनाका विषय बनाने योग्य ।
आवेदित—वि० [सं०] बताया हुआ, निवेदित; जिससे निवेदन किया गया हो ।
आवेदी(विद्यु)—वि० [सं०] आवेदन करनेवाला ।
आवेश—पु० [सं०] प्रवेश, व्याप्ति; दबा लेना, हावी हो जाना (क्रोधावेश); प्रेताग्निका पकड़ लेना; जोश; गुस्सा; घमंड; लगन, अभिनिवेश; मूर्च्छा; मृगी ।
आवेशन—पु० [सं०] भूतावेश; पकड़ना; प्रवेश; क्रोध;

निवासस्थान; सूर्य वा चंद्रमाका परिदेश; शिष्यशाला ।
आवेशनिक-पु० [सं०] प्रीतिमोह ।
आवेशिक-वि० [सं०] निजी; असाधारण; अंतर्निहित ।
 पु० अतिथि; प्रवेश; आतिथ्य ।
आवेष्टक-पु० [सं०] बहारदीवारी, वेरा; जाल ।
आवेष्टन-पु० [सं०] लपेटना; ढकना; बैठन, झोल; बहार-
 दीवारी, वेरा ।
आवेष्टित-वि० [सं०] छिपा, ढका वा ढिगा हुआ ।
आव्याधी (विन्द)-वि० [सं०] कष्ट देनेवाला; आहत करने-
 वाला ।
आशंकनीय-वि० [सं०] शका या संदिह करने योग्य;
 संदिग्ध ।
आशंका-स्त्री० [सं०] भय, खतरे, अनिष्टकी संभावना;
 संदिह, अविश्वास ।
आशंकित-वि० [सं०] असिकी आशंका हो; आशंकायुक्त ।
 पु० शंका, डर; संदेह ।
आशंकी (किन्)-वि० [सं०] आशंका करनेवाला ।
आशंसन-पु० [सं०] इच्छा, आशा, अपेक्षा करना; कहना ।
आशंसा-स्त्री० [सं०] इच्छा, अपेक्षा; आशा; कथन; चर्चा ।
आशंसित-वि० [सं०] जिसकी इच्छा, आशा या अपेक्षा की
 गयी हो, कहा, मोचा हुआ ।
आशंसिता (न्), **आशंसी (विन्)**, **आशंसु**-वि० [सं०]
 इच्छा, आशा, अपेक्षा करनेवाला ।
आश-पु० [सं०] आहार, भोजन (समाप्तमें प्रयुक्त-प्रान-
 राश) । * स्त्री० आशा । पु० [का०] पेय; लपमी । -**जौ**
 -पु० नौका जूल या लपमी ।
आशक-वि० [सं०] खानेवाला, भोक्ता ।
आशक-वि० [सं०] मन्त्रम, शक्तिशाली ।
आशक्ति-स्त्री० [सं०] क्षमता, सामर्थ्य; योग्यता ।
आशन-वि० [सं०] खिलानेवाला । पु० अशन नामक वृक्ष;
 वन, प्रशनि ।
आशना वि० [का०] परिचित, जान-पहचानवाला; जिससे
 मैत्री हो । पु०, स्त्री० प्रेमी, पार; प्रेमपात्र; रमेली ।
आशनाई-स्त्री० दोस्ती, प्रेम; अवैध संन्य ।
आशय-पु० [सं०] शयनस्थान, विश्रामस्थान; आश्रय;
 शयन; रहनेकी जगह; घर; अधिष्ठान, आधार; अर्थ, अभि-
 प्राय; तात्पर्य; उदर; चित्त, हृदय; पाप और पुण्य-सुख-
 दुःखके कारणरूप कर्मजन्य संस्कार (दो०); जानवर फँसने-
 का गहरा; कटहल; अशुद्धय; बसारी; भाग्य; संपत्ति;
 कृपण व्यक्ति ।
आशयास-पु० [सं०] अक्षि ।
आशयिता (न्)-वि० [सं०] खिलानेवाला; सरक्षण करने-
 वाला ।
आशार-पु० [सं०] राक्षस; अधि; बाहु ।
आशल-पु० [सं०] एक वृक्ष ।
आशय-पु० [सं०] वेग, क्षिप्रता; आशय ।
आशा-स्त्री० [सं०] किसी वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा और
 किञ्चित् विश्वास; उम्मीद, साधारण विश्वास या मरोसा;
 आशका आधार; आसरा; दिशा; एक राग; दक्षकी एक
 कन्या । -**गज**-पु० दिग्गज । -**जग**-वि० आशा उत्पन्न

करनेवाला । -**संतु**-पु० क्षीण आशा । -**निर्वेदित**-
 स्त्री० हताश मैना । -**पाल**-पु० दिक्पाल । -**पाश**-
 पु० अप्रणीय आशका बंधन या फंदा । -**विशक्ति**-
 स्त्री० झूठी आशा । -**प्राप्त**-वि० जिसकी आशा पूरी हो
 गयी हो । -**बंध**-पु० आशका बंधन, विश्वास । -**बंध**-
 पु० आशका टूटना, आशा पूरी न होना । -**बसन**-
 वि० दिग्बर, नक्ष । -**बह**-पु० सूर्य; वृष्णि । -**विभिन्न**-
 वि० हताश । -**हीन**-वि० निराश । **सु०**-**टूटना**-
 आशा भंग होना । -**खोइना**-निराश करना । -**वेना**-
 उन्मीद बंधाना । -**पूजना**-आशा पूरी होना । -**बंधना**-
 आशा उत्पन्न होना ।
आशाद-पु० [सं०] दे० 'आपाद' ।
आशासीत-वि० [सं०] आशासे अधिक ।
आशार-पु० [सं०] आश्रय, रक्षास्थान ।
आशासन-पु० [सं०] किसी वस्तुकी इच्छा करना या उसके
 लिये प्रार्थना करना ।
आशासनीय, **आशास्य**-वि० [सं०] अभिलषणीय । पु०
 इच्छा; आशीर्वाद ।
आशंसित-वि० [सं०] हानकार करता हुआ (गहना) ।
 पु० गहनोंकी हानकार ।
आशि-स्त्री० [सं०] खाना, भक्षण ।
आशिक-वि० [अ०] इत्क-प्रेम करनेवाला, अनुरक्त,
 आमक्त । पु० प्रेम करनेवाला व्यक्ति । -**आशिक**-पु० प्रेमी
 और प्रेमपात्र । -**मिज्ञाज**-वि० प्रेमप्रवण; दिलरफ्त ।
आशिकाना-वि० प्रेमोक्त अनुरूप या उपयुक्त; प्रेमवचक,
 प्रनुरामय ।
आशिकी-स्त्री० आशिक होना, प्रेम ।
आशित-वि० [सं०] खाया हुआ; भोजनवृत्त; पेट । पु०
 भक्षण ।
आशिता (न्)-वि० [सं०] पेट ।
आशिमाम (म्)-स्त्री० [सं०] तीव्रता, तेजी ।
अशियाँ, **आशिपाना**-पु० [का०] धौसला; बसेरा; घर ।
आशिच (स्)-स्त्री० [सं०] असीस, ईश्वरमे किसीके कल्याण-
 भंगलको प्रार्थना; अनुरोध; संपर्का विषय; एक जड़ी; वृद्धि ।
आशी-स्त्री० [सं०] साँपका जहरीला दाँत; सर्पविष;
 असीस । -**विष**-पु० साँप । वि० जिसके दाँतमें विष हो ।
आशी (सिन्)-वि० [सं०] खानेवाला (समाप्तमें प्रयुक्त-
 फलाशी) ।
आशीर्बचन, **आशीर्वाद**-पु० [सं०] असीस ।
आशु-वि० [सं०] तेज, द्रुत । अ० तेजीसे, फौरन । पु०
 आदोंमें एकनेवाला धान, आठम; बोधा । -**कवि**-पु०
 तुरत कविता बनानेमें समर्थ कवि । -**कोपी (विन्)**-वि०
 श्रद्धा हो जानेवाला, चिश्चिदा । -**ग**-वि० शीघ्रगामी,
 तेजरी । पु० बाहु; सूर्य; तार । -**गामी (सिन्)**-वि०
 तेज चलनेवाला । पु० सूर्य । -**तोष**-वि० श्रद्धा प्रसन्न
 होनेवाला । पु० शिब । -**पत्नी**-स्त्री० शलकी नामक
 लता । -**बोच**-वि० बल्द सिखलानेवाला । -**ब्रीहि**-पु०
 आठस धान ।
आशुशुद्धि-वि० [सं०] शत्रुओंको ताप देने या तेजीसे
 चमकनेके कारण पूजा जानेवाला । पु० हवा; अधि ।

आसोकेय-वि० [सं०] अशोक वृक्षके पासका (स्थान); अशोक-संबंधी।
आसौच-पु० [क०] फसाद; डर; झोर-गुल; आँखका दुखना। -गाह-पु० फसादकी जगह। -खसम-पु० आँखका उठना। -जान-खी० जानकी आपन; मायूक।
मु०-उठना-फसाद शुरू होना।
आसोपथ-पु० [सं०] सोखनेकी क्रिया।
आसौच-पु० [सं०] अशुद्धि, अपवित्रता।
आसौची(विन्)-वि० [सं०] अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।
आश्रय-पु० [सं०] अचरज, अचभा, विस्मय; अद्भुत रसका स्थायी भाव। वि० अचरज-भरा, अद्भुत।
आश्रयित-वि० [सं०] चकित, विस्मित।
आश्रम-वि० [सं०] पत्थरका बना हुआ। पु० पत्थरसे बनी दुर्ग बस्तु।
आश्रमन-वि० [सं०] दे० 'आश्रम'। पु० सूर्यका सारथि, अरुण।
आश्रमरिक्-वि० [सं०] अश्रमरी, पथरी रोगसे प्रस्त। पु० अश्रमरी रोग।
आश्रमक-वि० [सं०] अश्रम-पत्थरका बना; पत्थर होनेवाला।
आश्रयान-वि० [सं०] जो जमकर ठोस हो गया हो या अस्त: सुख गया हो।
आश्र-पु० [सं०] आँसू।
आश्रपण-पु० [सं०] धाकक्रिया।
आश्रम-पु० [सं०] माधु-स्तकी कुटी, मठ; तपोवन; साधक-समुदायके रहनेका स्थान; वर्षाश्रम-धर्मी दिनेके जीवनके चार विभाग या अवस्थार्थ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास); विद्यालय; विष्णु।-गुरु-पु० आचार्य।
-धर्म-पु० आश्रमविहित धर्म; ब्रह्मचारी, गृहस्थ आदिके विशेष धर्म। -पद-, -मंडल-, -स्थान-पु० तपोवन।
-ज्ञ-वि० जो आश्रमधर्ममें च्युत हो गया हो। -वास पु० तपोवन-निवास, वानप्रस्थका जीवन। -वासिक-वि० तपोवन या आश्रममें निवासमें संन्यत रहनेवाला।
-वासी(सिन्)-वि० आश्रममें रहनेवाला। पु० वानप्रस्थ।
आश्रमालय-पु० [सं०] तपोवनमें निवास करनेवाला।
आश्रमिक, आश्रमी(सिन्)-वि० [सं०] आश्रममें रहनेवाला, वार आश्रममेंमें किसी आश्रमका।
आश्रय-पु० [सं०] आधार; विषय; शरण; ठिकाना; घर; सहायता; सहाय, मरकक; पूर्णर; संध; बहाना; आचरणके अनुरूप कार्य; साक्षिण्य; उद्गम; उद्देश्य (व्या०); अभ्यास; ग्रहण, पथ ज्ञानेद्विर्वा और मन (बी०)।-मुक्-
(ज्)-पु० अग्नि; कृत्तिका नक्षत्र।
आश्रयण-पु० [सं०] सहारा लेना।
आश्रयस्थ-पु० [सं०] अग्नि।
आश्रयवासिन्-पु० [सं०] वह हेत्वाभास जिसका आश्रय-आधार गलत हो।
आश्रयी(विन्)-वि० [सं०] आश्रय लेनेवाला।
आश्रव-पु० [सं०] प्रतिष्ठा, बचन; दौध, डेरा; अंगीकार; धारा; नदी; उबलते हुए चावलका फेन।

आश्रि-खी० [सं०] तलवारकी धार।
आश्रित-वि० [सं०] (किसीके सहारे) ठहरा, टिका हुआ, अवलंबित; अधीन; अभ्यास करनेवाला। पु० वह जो अरण-पोषणके लिए किसीपर अवलंबित हो, खी-बच्चे, नौकर-चाकर; मन और ज्ञानेद्विर्वा द्वारा ज्ञात विषय।
आश्रुत-वि० [सं०] अंगीकृत, स्वीकृत; सुना हुआ।
आश्रुति-खी० [सं०] सुनना; अंगीकृति।
आश्रुह-वि० [सं०] लगा, जुड़ा हुआ; संबद्ध; आलिंगित।
आश्रुच-पु० [सं०] लगाव, संबंध; आलिंगन।
आश्रुषण-पु० [सं०] मेल, संयोग; अवलंबन।
आश्रुषा-खी० [सं०] अक्षेपा नक्षत्र।
आश्रुषित-वि० [सं०] आलिंगित।
आश्र-वि० [सं०] अश्व-संबंधी; घोड़ेसे खींचा जानेवाला। पु० घोड़ेका समूह; घोड़ेकी स्थिति या अवस्था; घोड़ेसे खींचा जानेवाला रथ।
आश्रथ-वि० [सं०] अश्वरथ-संबंधी; अश्वरथमें फल लगानेके समयमें संबद्ध। पु० पीपलका फल।
आश्रथ्वा-खी० [सं०] अश्वरथ नक्षत्रवाली राशि।
आश्रमेधिक-वि० [सं०] अश्वमेध-संबंधी। पु० महाभारतका चौदहवाँ पर्व।
आश्वयुज-पु० [सं०] आश्विन मास।
आश्वरथ-वि० [सं०] घोड़ेमें खींचे जानेवाले रथमें सवध रखनेवाला।
आश्वकक्षयिक-वि० [सं०] घोड़ेके लक्षण पहचाननेवाला।
आश्वलायन-पु० [सं०] आश्वलायन श्रौत और गृह्यसूत्रोंके निर्माता ऋषि।
आश्वस्त-वि० [सं०] आश्राम-प्राप्त, जिमका डर दूर कर दिया गया हो; जिसे दादस बंधाया गया हो; उत्साहित।
आश्वान-पु० [सं०] सुलकर मंस रत्ता; दादम, दिव्यासा; रक्षा या अमयका बचन; डरे हुएका भयनिवारण; विराम; ग्रथका अध्याय।
आश्वसक-वि० [सं०] आश्रामन देनेवाला। पु० वस्त्र।
आश्वसन-पु० [सं०] आश्राम; आश्राम देना; भयनिवारण; प्रीत्याहन।
आश्वसी(सिन्)-वि० [सं०] आश्रामसारक; प्रसन्न होनेवाला।
आश्वस-वि० [सं०] आश्रामके योग्य।
आश्विक-वि० [सं०] घोड़ेमें संबंध रखनेवाला; घोड़ेमें खींचा जानेवाला; अश्वारोही (सैनिक)। पु० अश्वारोही सैनिक।
आश्विन-पु० [सं०] वह महीना जिसमें चंद्रमा अधिनी नक्षत्रके पान रहता है, कार; एक यह जिसके अधिष्ठाता अधिनीकुमार होते हैं।
आश्विनेष-पु० [सं०] अधिनीकुमार; नकुल-सहदेव।
आषाढ-पु० [सं०] असाढका महीना; यतियों द्वारा धारण किया जानेवाला पलाशका दंत; मल्लगिरि।
आषाढक-पु० [सं०] आषाढ मास।
आषाढा-खी० [सं०] पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र।
-अष-, -श्व-पु० मगल ग्रह।
आषाढी-खी० [सं०] आषाढकी पूर्णिमा; इस दिन होनेवाला कुल। -बौर-पु० आषाढकी पूर्णिमाको अश्वकी

तौलमे किया जानेवाला हटिका निश्चय ।

आपाडी (विष्) - वि० [सं०] पलाशवृक्ष धारण करनेवाला ।

आपाडीच - वि० [सं०] आपाडा नक्षत्रमें उत्पन्न ।

आसंग - पु० [सं०] आमक्ति, लगाव; साथ; संलग्नता; कर्तृत्वाभिमान; मुलतानी मिट्टी । वि० अबाधित; अपिच्छिन्न ।

आसंग्य - पु० [सं०] पार्थक्य, अलग्गत्व, विवोग ।

आसंगिनी - स्त्री० [सं०] चक्रवात, बाखाचक्र, आवर्त ।

आसंगिम - पु० [सं०] एक तरहकी पट्टी (शल्यचिकित्सा) ।

आसंगी (गिष्) - वि० [सं०] आसक्त; संबद्ध ।

आसंजन - पु० [सं०] बंधना; धारण करना; उल्लस जाना; संबंध; मूठ ।

आसंद - पु० [सं०] विष्णु; वायुदेव ।

आसंदिका - स्त्री० [सं०] छोटी कुस्मी; मखिया ।

आसंदी - स्त्री० [सं०] मखिया; आराध-कुरसी; बेदी ।

आसंवाध - वि० [सं०] घिरा हुआ, अवरोध; आक्रोश ।

आसंसार, **आसंसृति** - वि० [सं०] प्रगतिशील, विकारी । अ० समार या पाबिब अस्तित्व बने रहनेवाला; सारे अस्तित्वकालमें ।

आस - पु० [सं०] बैठना; आसन; चूतक; राख; भारीपथ्य; धनुष । स्त्री० [सं०] आशा; भरोसा; महारा; कामना; * दिशा । **सु०** - **टूटना** - निगल होना । - **तकना** - प्रतीक्षा करना, मुँह जोड़ना । - **तोड़ना** - निराश करना । - **देना** - उम्मीद दिलाना । - **पूजना**, **पूरना** - आशा पूरी होना, मनचाही बात होना । - **कौंदना** - उम्मीद करना । - **लगाना** - आशा उत्पन्न होना । - **होना** - आशा या महारा होना; गर्व रहना ।

आसकल - स्त्री० सुनी, आलस्य ।

आसकनी - वि० आलसा ।

आसक्त - वि० [सं०] आमक्तियुक्त; मनका प्रबल लगाव रखनेवाला, अनुरक्त; फँसा हुआ, लिप्त (विषयामक्त); लगनवान्; घिरा हुआ; विश्राम करनेवाला ।

आसक्ति - स्त्री० [सं०] मनका लगाव; अनुराग, लगन ।

आसक्ति* - स्त्री० मन्य; आमक्ति; समीपता; मुक्ति ।

आसक्तीन - स्त्री० दे० 'आसक्ती' ।

आसक्ते* - अ० दे० 'आसक्ती' ।

आसक्तेष* - वि०, पु० दे० 'आसक्तेष' ।

आसक्ति - स्त्री० [सं०] निकट संबंध, समीपता; मेल; वाक्यमें संबंध पदेका पास-पास रहना; लाभ; प्राप्ति ।

आसयान* - पु० दे० 'आस्थान' ।

आसदन - पु० [सं०] समीपता; संबंध; बैठना; आसन; लाभ, नफा ।

आसन - पु० [सं०] बैठना; वह चीज जिसपर बैठा जाय (चपड़ा; कुर्सी आदि); बैठनेका ढग; हठयोगके अंदर बैठने और विभिन्न अंगोंके व्यायामकी विधियाँ; रतिक्रियाकी कोई विधि; रुकना; रहना; फँकना; हाथीका कंधा; शत्रुपर आक्रमण न कर अवसरकी प्रतीक्षामें अपनी जगहपर रुके रहना (यानका बल्टा); परराष्ट्रनीतिके ६ प्रकारोंमेंमें एक, उपेक्षाकी नीति; असन तथा जीवक वृक्ष, माधुओंके ठहरने या रहनेकी जगह । - **बंधपीर** - वि० अपनी जगहपर जमकर बैठा हुआ । **सु०** - **ठडवना** - जमकर (आसकर

आपाटी (विष्) - आसमानी

घोड़ेकी पीठपर) न बैठ सकता; बैठनेमें हिलना, डगमगाना । - **उठना** - स्थान छूटना । - **करना** - योगके अनुसार शरीरकी विशेष स्थितिमें रखना; टिकना । - **कसना** - अंगोंको तोड़-भरोड़कर बैठना । - **छेड़ना** - उठकर चल देना । - **जमना** - एक ही स्थानपर एक प्रकारसे ढेरकर बैठना; स्थिर होकर बैठना । - **जमना** - जमकर, अखिग भावमें बैठना; अपनी स्थिति, अधिकार हट कर लेना; ढेरा डालना । - **डिगना**, **डोलना** - चित्तका बिचलित हो जाना; मनमें भय या घबराहट पैदा हो जाना; मन ललचाना । - **तले आना** - वशमें होना । - **देना** - आदरपूर्वक बैठाना; टिकाना । - **बौंधना** - जोबोसे जकड़ना । - **भरना**, **छगाना** - आसन जमाना, जमकर बैठना ।

आसना - स्त्री० [सं०] आसन, छोटा विद्यावन; बैठना । * अ० कि० होना ।

आसनी - स्त्री० [सं०] छोटा आसन, बैठने भरका विद्यावन; बैठना; ठहरना; छोटी दुकान ।

आसन्न - वि० [सं०] पास आया हुआ; उपस्थितप्राय; लगा, सदा हुआ; जिसकी मृत्यु निकट हो । पु० सामीप्य; अंत, घृत्यु; दृढ़ता हुआ संघ । - **काल** - वि० जिसकी मृत्यु पास आ गयी हो । पु० मृत्युकाल । - **परिचारक** - पु० अमरशक्त; निजी काम करनेवाला नौकर । - **प्रसन्न** - वि० स्त्री० जिसे आज-कलमें ही बच्चा होनेवाला हो । - **अस** - पु० भूत कालका वह भेद जिससे क्रियाको पूर्णता और भूतकालकी निकटता सूचित होती हो (व्या०) । - **मरण**, **मृत्यु** - वि० जिसकी मृत्यु पास आ गयी हो, कुछ ही देरका मेरवमान ।

आस-पास - अ० अगल-बगल, चारों ओर; करीब, पासमें ।

आसबंध - पु० पटवोंका एक तागा जिसमें जेवर अटकाकर गुंथते हैं ।

आसमाँ, **आसमान** - पु० [फा०] आकाश; स्वर्ग 'सु०' - के तारे तोड़ना - दुस्साध्य, अनहोनी बात कर डालना । - **खुना** - बहुत ऊँचा होना, गगनचुंबी होना । - **जमीनके कुलाबे मिलाया** - दूल्हीकी हाँकना, लबी-चोबी बातें करना । - **झाँकना**, **ताकना** - धमक करना । - **टूटना** - अचानक भारी विपद् आ पड़ना, दैवकोप होना । - **दिखाना** - कुशतीमें प्रतिद्वंद्वीको हित कर देना । - **पर उड़ना**, **पर खदना** - गर्वमें इतराना, मित्राज बहुत बड़ जाना । - **पर खदना** - अति प्रशंसा करना; अति प्रशंसाके द्वारा मित्राज बियाड़ देना । - **पर धूकना** - बड़े आदमीको निन्दित करनेके प्रयत्नमें स्वयं निन्दित होना । - **कटना** - अचानक भारी विपद् आ पड़ना, दैवकोप होना । - **में छेड़ होना** - बर्बाकी न धमना, लगातार अनिष्ट होना । - **में घिंगली या धूनी लगाया** - कठिन, अनहोनी बात करना । - **सिरपर उठा लेना** - बहुत शौर, ऊँच, कोलाहल मचाना । - **सिरपर टूट पड़ना** - दैवकोप होना, अचानक कोई भारी विपद् आ पड़ना । - **से गिरना** - **से टपकना** - (किमी चीजका) अपने आप उपस्थित हो जाना । - **से बार्त कराना** - आसमान छूना । **आसमानी** - वि० आसमानका; आसमानके रंगका; दैवी ।

पु० इलका नीला रंग । ली० ताकी । -आसुसुत्र-पु० दैवकीप ।

आसुसुत्र-अ० [सं०] समुद्रसे लेकर; समुद्रगन्क ।

आसुसुत्र-पु० दे० 'आसुसुत्र' ।

आसुसुत्र-पु० दे० 'आसुसुत्र' ।

आसुसुत्र-स० कि० आश्रय लेना ।

आसुसुत्र-पु० सहारा, अवलंब; भरोसा; आशा; प्रतीक्षा; शरण; सहायक ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] मद्य; रस; पुष्परस; अमरावृत; फल अधिकै खमीरसे तैयार किया हुआ अर्क; मद्यपात्र; उत्तेजन । -हु-पु० ताब; खट्ट ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] आसुसुत्रेयी, शरानी ।

आसुसुत्र-ली० दे० 'आसा' । पु० दे० 'असा' । -मुली-वि० कितीका मुहताज, परमुखापेक्षी ।

आसुसुत्र-ली० [फा०] सुख; आराम ।

आसुसुत्र-पु० दे० 'आसाद' ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] रसना; आक्रमण करना; तेज चलकर पकड़ लेना; प्राप्ति ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] लब्ध, प्राप्त; रखा हुआ; फैलाया हुआ; पूरा किया हुआ; तेज चलकर पकड़ा हुआ; आक्रांत ।

आसुसुत्र-वि० [फा०] सहल, सुगम, सीधा ।

आसुसुत्र-ली० सहल होना, सुगमना ।

आसुसुत्र-पु० भारतका एक प्रांत जो उसकी उत्तर-पूर्वी सीमा है ।

आसुसुत्र-वि० आसामका; आसाम-संबंधी । पु० आसाम-वासी; दे० 'असामी' । ली० आसामकी भाषा, असमीया ।

आसुसुत्र-पु० [मं०] मूलधार वृष्टि; वृष्टी के घेर लेना; आक्रमण; मित्र राजकी सेना; रमद; [अ०] पटविह्वल; लक्षण; खंडहर; नौबै; दीवारकी चौड़ाई ('अस्त्र'का बहु०) । - (रे)कदीमा-पु० पुराने जमानेमें खंडहर आदि; पुरानी इमारत ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] प्रशंसा करनेवाला । पु० सोमरस निचोड़नेवाला ।

आसुसुत्र-ली० श्री रागकी एक रागिनी ।

आसुसुत्र-वि० [मं०] लक्ष्मीपारी; लक्ष्मी बुद्ध करनेवाला ।

आसुसुत्र, आसुसुत्रा-ली० आशीर्वाद ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] बैठे हुआ; आरामसे बैठे हुआ । पु० बैठना; आसन; रखनेका स्थान; बैठनेका ढंग ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] हिरामत या कैदमें रखा हुआ (प्रतिवादी) ।

आसुसुत्र-पु० आश्विन, कार ।

आसुसुत्र-ली० [फा०] चक्री, जाँता ।

आसुसुत्र-पु० आशीर्वाद ।

आसुसुत्र-पु० आशीर्वाद ।

आसुसुत्र-वि० दे० 'आशी' ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] बैठे हुआ । -पाठ्य-पु० लास्यके दस अंगोंमेंसे एक (आ०) ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] सीना, रोंके लगाना ।

आसुसुत्र-ली० आशीर्वाद ।

आसुसुत्र-पु० तक्षिया ।

आसुसुत्र-सर्व० इसका । अ० दे० 'आसु' । -श-वि० दे० 'आसु' । -तोष-वि०, पु० दे० 'आसुतोष' ।

आसुसुत्र-ली० [सं०] चुआना; शरान चुआना; कादा; प्रसव ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] पुरोहित; कलाय; कन्यापालक ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] असुरका; असुर-संबंधी; यक्ष न करने-वाला; ईश्वरीय, दैवी । पु० बह विवाह जिसमें बर कन्याके पिता-माताको धन देकर कन्याकी खरीदता है; काला नमक; राक्षस; रक्त ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] सांख्य दर्शनके प्रवर्तक कपिल मुनिका एक शिष्य ।

आसुसुत्र-ली० [सं०] असुर-ली, दानवी; शल्य-चिकित्सा; राक्ष; काली सरसों । वि० ली० दे० 'आसुर' । -चिकित्सा-ली० शल्य-चिकित्सा । -माया-ली० असुरोंकी माया ।

-संपत्-ली० नुरे तरीकेने प्राप्त किया हुआ धन । -सृष्टि-ली० दैवी आपत्ति ।

आसुसुत्र-वि० [मं०] माला बनाने या धारण करनेवाला; ओन-श्रीन; बुना हुआ ।

आसुसुत्र-ली० [फा०] आयुदा होना; वृत्ति ।

आसुसुत्र-वि० [फा०] वृत्त, संतुष्ट । -हाल-वि० खुशहाल, खाने-पीनेसे सुखी ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] भिगाना, तर करना, सिंचन करना ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] एक तरहका नपुंसक ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] दे० 'आसेक' । वि० सुंदर; प्रिय ।

आसुसुत्र-ली० [सं०] छोटा पात्र ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] सेतुबध रामेश्वरने हिमालय-तक विस्तीर्ण (भारत, राज्य) ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] कैद करनेवाला ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] कैद, रोक, प्रतिबंध (का०) ।

आसुसुत्र-वि० [मं०] कैद करनेवाला, रोक रखनेवाला ।

आसुसुत्र-पु० [फा०] चोट; कष्ट । प्रा, प्रतप्रा ।

आसुसुत्र-पु०, आसुसुत्र-ली०, सं० सतत संभन बार-बार होनेका भाव; संपर्क ।

आसुसुत्र-वि० [मं०] किया हुआ; बार-बार किया हुआ ।

आसुसुत्र-वि० [मं०] लगनके स.ध बार-बार करने-वाला; मेहनत करनेवाला ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] संभनके योग्य; बार-बार जाकर देखने योग्य ।

आसुसुत्र, आसुसुत्रा-पु० आश्विन मास ।

आसुसुत्र-अ० इस साल ।

आसुसुत्र, आसुसुत्र-पु० [मं०] आक्रमण; आरीहण; रौदना; युद्ध; घोड़ेकी सरपट चाल; तिरकार; गाली; आक्रामक; शोषण; नष्ट करना ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] आक्रमण । पु० घोड़ेकी सरपट चाल ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] दे० 'आसुसुत्र' ।

आसुसुत्र-वि० [सं०] आक्रमण करनेवाला; बहाने-वाला; देनेवाला; व्यव करनेवाला; अपहरण करनेवाला ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] आच्छादन; विस्तार; कंबल; कालीन; गद्दा; फैलाना ।

आसुसुत्र-पु० [सं०] फैलाना; बिछाना; दरी; गद्दा; झूल;

यहमें फैलाये हुए कुश।
आस्तरणिक-वि० [सं०] फैलाया जानेवाला; कालीन, दरि आदिपर सोनेवाला।
आस्तरा-पु० [सं०] फैलाना; बिखेरना। -पंक्ति-खी० एक वृत्त।
आस्ताव-पु० [सं०] स्तुति; यद्यपि स्तुतिपाठका स्थान।
आस्तिक-वि० [सं०] ईश्वर और परलोककी माननेवाला; वेदकी माननेवाला; धर्मनिष्ठ। पु० ईश्वर तथा परलोकमें विश्वास करनेवाला व्यक्ति।
आस्तिक्य-वि० [सं०] 'आस्तिक्य'।
आस्तिक्य-पु० [सं०] ईश्वर आदिमें विश्वास; धार्मिकता।
आस्तीक-पु० [सं०] एक ऋषि जिनकी सफारिशसे जनमे-जयने अपने सर्पसत्रमें लक्ष्मी नामकी जान बरुश दी।
आस्तीक-खी० [फा०] सिते कपड़ेका बाँहपरका भाग, बाँही। मु० -का सॉप-मित्र बनकर सघुता करनेवाला, दोस्तनुमा दुश्मन। -छद्मना-लड़नेको तैयार होना; किसी कामके लिए तैयार होना।
आस्ते-अ० दे० 'आहिता'।
आस्त्र-वि० [सं०] अस्त्र-संघर्ष।
आस्था-खी० [सं०] आदर; विश्वास; श्रद्धा; आर्चन, सहारा; सभा; वादा; आशा; स्थिति; प्रयत्न; रहनेका साधन या स्थान।
आस्थाता(मृ)-वि० [सं०] खड़ा होनेवाला; आरोहण करनेवाला।
आस्थान-पु० [सं०] स्थान; सभा; सभागृह; दरबार; मना-रजनका स्थान; श्रद्धा; आस्था।
आस्थानी-खी० [सं०] सभासभन।
आस्थापन-पु० [सं०] अच्छा तरह स्थापन; बलकारक औषध; स्नेहवास्ति।
आस्थापिका-खी० [सं०] दरबार।
आस्थित-वि० [सं०] रहा हुआ; सहारा लिया हुआ; पहुँचा हुआ; प्राप्त कर चुका हुआ; लब्ध; घेरा हुआ।
आस्थिति-खी० [म०] स्थिति, हालत।
आस्तान-पु० [म०] सञ्छता, पवित्रता; धोने या स्नान करनेका जल।
आस्पद-पु० [सं०] स्थान; अधिष्ठान, आर्चन; पद; अङ्ग, कुलकी उपाधि; काम; कुटुलीमें दशम स्थान।
आस्पर्धा-खी० [म०] स्पर्धा; लागडाट, होड़।
आस्पर्धी(चिन्म)-वि० [सं०] स्पर्धा करनेवाला।
आस्फाल-पु० [सं०] मारना; रगड़ना; हिलाना; हाथीका कान फफफाना; दाबना; धक्का देना।
आस्फाल-पु० [सं०] रगड़ना; हिलाना; फफफाना; धक्का देना; वमंड।
आस्फुवि-पु० [सं०] झुक ग्रह।
आस्फोट-पु० [सं०] ताली बजाने या ताल ठोकनेकी आवाज; रगड़ या धक्का; हिलना; काँपना; आक।
आस्फोटक-वि० [सं०] ताल ठोकनेवाला। पु० अस्फोट।
आस्फोटन-पु० [सं०] ताल ठोकना; हिलाना-डुलाना; फैलाना; फूलना; विकास; सिकुड़ना; प्रकट करना; फट-कना; मँडान।

आस्फोटनी-खी० [सं०] छेद करनेकी बरनी।
आस्फोट-खी० [सं०] नवमहिका; वनमहिका।
आस्फोट, **आस्फोटक**-पु० [सं०] अर्क; कोविदार; भू-पलाश।
आस्फोता, **आस्फोता**-खी० [सं०] महिका; अपराजिता; सारिका।
आस्फुव-पु० [सं०] बहना; क्षरित होना।
आस्व-पु० [सं०] मुँह, चेहरा। वि० मुख-संबंधी। -पत्र-पु० कमल। -कांगल-पु० कूकर; शूकर। -खोम(मृ)-पु० दाढ़ी।
आस्था-खी० [सं०] बैठना; निवास; निवासस्थान; विश्राम-वस्था।
आस्थासव-पु० [सं०] लाल।
आस्थूल-वि० [सं०] सिला हुआ; साथ सिला हुआ।
आस्त्र-पु० [सं०] रक्त। -प-वि० रक्त पीनेवाला। पु० राक्षस; मूल नक्षत्र।
आस्त्र-पु० [सं०] बहाव; जलाशयका बह द्वार जिससे आवश्यकता होनेपर पानी लेते और फिर बंद कर देते हैं; पकते हुए चावलका फेन; दोष; छेड़; बाधा विषयोंकी ओर प्रेरित करनेवाला क्षानेन्द्रियोंका कार्य।
आस्त्राव-पु० [सं०] बहाव; धाव; धूक; पीड़ा; एक विशेष रोग।
आस्त्रित-वि० [सं०] दे० 'आस्त्रांत'।
आस्त्रांत-वि० [सं०] शब्द किया हुआ, ज्वलित।
आस्त्राद-पु० [सं०] रस, स्वाद, सजा; रसानुभव, चखना।
आस्त्राव-पु० [सं०] रस, स्वाद लेना, चखना; खाना।
आस्त्रादित-वि० [सं०] चखा, स्वाद लिया, खाया हुआ।
आस्त्राव-वि० [सं०] चखने, स्वाद लेने योग्य; मजेदार।
आह-अ० छेड़, शोक, वेदना आदिका युक्त उद्गार, हाव।
खी० दुःख, पीडा प्रकट करनेवाली ज्वनि, कल्पने, करा-हनेकी आवाज; हाव, ठंडी साँस; श्वाप। * पु० साहस; जोर; बल; क्रोध; ललकार। मु० -करना-कल्पना।
-खी० चना-ठंडी साँसके साथ आह करना, कल्पना।
-पक्ष-श्वाप पक्षना, किसीकी सताने, स्तानेका फल मिलना। -भरना-दे० 'आह खी० चना'। -मारना-ठंडी साँस खी० चना। -लेना-सताना; सतानेका फल अपने ऊपर लेना।
आहक-पु० [सं०] नाकका एक रोग।
आहट-खी० किसीके चलने, हिलने आदिसे होनेवाली हल्की आवाज, चाप; किसीकी उपस्थितिका अनुमान करानेवाली ज्वनि; दोह। मु० -लेना-आहट पाने, दोह लेनेके लिए कान लगाये रहना।
आहस-वि० [सं०] त्रिस्तर प्रहार, आघात किया गया हो; धावक; मारा हुआ; हत; रौंदा हुआ; बजाया हुआ; हडाया, निकाला हुआ; गुणित; हात; छुड़काया हुआ; पुखा हुआ या नया (बख्श); पुराना; कंथित; व्याघातदोषयुक्त, असंगत (बाक्व)। पु० डोल; पुराना कपड़ा; नवीन बख्श; किसी अर्थ-अथ या मिथ्या बातपर जोर देना। -छाक्षण-वि० गुणोंके लिए प्रसिद्ध।
आहति-खी० [सं०] आघात; बध; गुणन।

आहन-पु० [फा०] लोहा । -**रखा**-पु० चुंबक पत्थर ।
आहनन-पु० [सं०] मारना, पीटना; डडा ।
आहननीय-वि० [सं०] ठंका बजाकर प्रसिद्धि करनेवाला; मारने योग्य ।
आहनी-वि० [फा०] लोहेका; लोहे जैसा कठिन, कठोर ।
आहर-पु० [सं०] लाना; ग्रहण; पूरा करना (यथादि); सँस लेना; सँसने खीनी गयी हवा; बलिप्रदान; * समय; दिन; युद्ध; पशुओंके धोने आदिके लिए बना हुआ जलाधार ।
आहरण-पु० [सं०] लेना; छीन लेना; उठा ले जाना; लाना; प्रवृत्त करना; हटाना; यथादि पूरा करना; विवाहके समय दुल्हिनको उपहार-रूपमें दिया जानेवाला धन ।
आहरन-प० निहाई ।
आहर्ता(र्तृ)-वि० [सं०] आहरण करनेवाला; छीनने, लेनेवाला; लानेवाला; अनुष्ठान, यथादि करनेवाला; प्रवृत्त करनेवाला ।
आहव-पु० [सं०] यज्ञ; युद्ध; आह्वान; ललकार ।
आहवन-पु० [सं०] यज्ञ; हवि ।
आहवनीय-वि० [सं०] आहुति देने योग्य । पु० यज्ञकी तीन अग्नियोंमेंसे एक ।
आह्वै-खी० दुहाई, पुकार, आह्वान । † अ० निपेययुक्त शब्द ।
आहा-अ० हर्ष, आश्चर्य व्यक्त करनेवाला उद्गार, अहहा ।
आहार-पु० [सं०] ग्रहण, लेना; लाना; खाना, भोजन; खानेकी वस्तु । -**पाक**-पु० पकानेकी क्रिया; अग्नियोंमें खाद्य पदार्थका पचना । -**विज्ञान**-पु० वह विज्ञान जिसमें खाद्य पदार्थोंके गुण-गोच, योग, पोषणतत्त्व, वर्गीकरण आदिका विचार किया गया हो । -**विरह**-पु० आहारकी कमी; सुखमरी । -**विहार**-पु० भोजन, शयन, श्रम आदि । -**संभव**-पु० शरीरका रस, रूमीका ।
आहारक-वि० [सं०] पास लानेवाला ।
आहारिक-पु० [सं०] आत्मके पोच प्रकारके शरीरोंमेंसे एक (जै०) ।
आहारी(रिच)-वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; खानेवाला; एकत्र करनेवाला ।
आहार्य-वि० [सं०] ग्रहण करने, लेने, लाने, छीनने, खाने योग्य; बनावटी; अभिप्रेत; ऊपरी; व्याप्य; पूजाके योग्य (जैमे अग्नि) । पु० अनुभावके चार प्रकारोंमेंसे एक, नायक-नायिकाका एक-दूसरेका भोग बनाना; अभिनयके चार प्रकारोंमेंसे एक; एक तरहकी पट्टी या बंध (अ० वे०); शस्त्रीपचारवाला रोग ।
आहार्याभिनय-पु० [सं०] बिना कुछ उड़े या किये केवल रूप या भेसमें भाव व्यक्त करना; वस्त्रादि द्वारा वेश-विन्यास (ना०) ।
आहार्योदक मेनु-पु० [सं०] ठेमी नहर जिसमेंका पानी कहीं से खींचकर लाया गया हो ।
आहाव-पु० [सं०] अग्नि; युद्ध; ललकार; पशुओंके पानी पीनेके लिए कुण्डके पास बनी हुई टंकी ।
आहिडिक-पु० [सं०] स्थितियोंके अनुसार निश्चय पित्त और वैदेशी मानासे उत्पन्न वर्णस्फुर ।

आहि०-अ० कि० है-'जानेको आहि बसे केहि घामा'-सुदामा० ।
आहिक-पु० [सं०] केतु; पाणिनि ।
आहित-वि० [सं०] रखा हुआ, स्थापित; अमानत या बंधक रखा हुआ; किया हुआ । -**ह्रम**-वि० थका हुआ । -**दास**-पु० कर्म पढानेके लिए दासत्व स्वीकार करनेवाला व्यक्ति । -**लक्षण**-वि० परिचायक चिह्नवाला । -**स्वन**-वि० शोर करनेवाला ।
आहितक-पु० [सं०] बंधक रखा हुआ माल ।
आहितक-वि० [सं०] विहित ।
आहितामि-पु० [सं०] अग्निकी स्थापना कर उसे रखनेवाला अग्निहोत्री ।
आहिति-खी० [सं०] स्थापना ।
आहिस्ता-अ० [फा०] धीरे-धीरे; धीरे-धीरे; धीमी आवाजसे । -**आहिस्ता**-अ० धीरे-धीरे, क्रमशः ।
आहुक-पु० [सं०] कृष्णके दादा ।
आहुत-वि० [सं०] देवादिके लिए हविरूपमें अर्पित, होमा हुआ । पु० अतिथियज्ञ, अतिथिका भोजनादिमें सत्कार; पौन्य यज्ञोंमेंसे एक, भूतयज्ञ ।
आहुति-खी० [सं०] यज्ञ या हवनमें हवननामप्रतीको अग्रिमें डालना; हवननामप्रती; उतनी हवननामप्रती जो एक बारमें अग्रिमें डाली जाय; बलि, कुबानी; ललकार, चुनौती ।
आहुती-खी० यज्ञाग्निके हवननामप्रती डालना, हवनके रूपमें डाली जानेवाली वस्तु ।
आहुत्य-पु० [सं०] एक क्षुप ।
आहु-पु० [फा०] किरन । -**(ग)तर**-पु० वादल । -**(ग)फलक**-पु० सूर्य ।
आहू-वि० [सं०] बुलाया, पुकारा, म्योना हुआ; नाम दिया हुआ । -**संयुक्त**-पु० प्रलयकाल ।
आहुति-खी० [सं०] बुलाना, पुकारना ।
आहत-वि० [सं०] छीना या लिया हुआ; लाया हुआ ।
आहोय-वि० [सं०] मर्पे-यथोक्ती ।
आह-वि० [सं०] दैनिक, रोजका ।
आहिक-वि० [सं०] दैनिक; एक दिन या प्रतिदिनका । पु० नित्यकर्म; एक दिनका काम; पाठ; अध्यापक । -**कर्म**(न)-पु० नित्यकर्म ।
आह्लाद-पु० [सं०] हर्ष, आनंद, खुशी ।
आह्लादन-पु० [सं०] हर्ष, आनंद देना । वि० हर्ष, आनंद देनेवाला ।
आह्लादित-वि० [सं०] आह्लादयुक्त, आनंदित ।
आह्लादी(दिन)-वि० [सं०] प्रमत्त; आह्लादजनक ।
आह्वय-पु० [सं०] नाम ।
आह्वयन-पु० [सं०] नाम; नाम लेना ।
आह्वान-पु० [सं०] पुकारना, बुलाना; पुकार, बुलावा; देवनाका आवाहन; अदालतमें हाजिर होनेका आदेश, तलबनामा; ललकार, चुनौती; नाम । -**दर्शन**-पु० अभियोगपर विचार होनेका दिन ।
आह्लाव-पु० [सं०] तलबनामा, मदन; नाम ।
आह्लावक-वि० [सं०] आह्वान करनेवाला । पु० संहिवाहक ।

इ-देवनागरी वर्णमालाका तीसरा (स्वर) वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।

ईक-खी-[अ०] स्वाही, रोशनार्थ। -**टेबुल**-पु० छापे-खाने (ईम्प्रेस)की वह मेज या चौकी जिसपर छपनेवाले मैटरपर देनेके लिए स्वाही पुती रहती है। -**पॉट**-पु० दाबात। -**पैड**-पु० स्वाही लगी गरी जो रबरकी सुहर आदिपर स्वाही क्लानेके काम आती है। -**मैन**-पु० छापेखानेमें स्वाही देनेका काम करनेवाला कर्मचारी। -**रोलर**-पु० छपनेवाले मैटरपर स्वाही देनेका रोलन।

ईग-पु० [स०] संकेत; चिह्न; अगोके द्वारा भाषाभिव्यक्ति; ज्ञान; हाथीदांत। वि० चल, गतिमान; आश्चर्यजनक।

ईगन-पु० [म०] चलना; हिलना; क्लाना; हिलाना; हथारा करना; ज्ञान, जानना।

ईगनी-खी० एक खनिज द्रव्य, मैगनीज।

ईगव्वा-खी० इडा नामकी नाडी।

ईगलिश, **ईग्लिश**-वि० [अ०] इंग्लैंडका; इंग्लैंडमें उत्पन्न या बना। खी० अंग्रेजी भाषा। -**मैन**-पु० अंग्रेज, इंग्लैंडवासी।

ईगलिस्तान, **ईग्लिस्तान**-पु० इंग्लैंड।

ईगलिस्तानी, **ईग्लिस्तानी**-वि० अंग्रेजी, इंग्लिश।

ईगलैंड, **इंग्लैंड**-पु० [अ०] इंग्लिस्तान, अंग्रेजोंका देश।

ईगित-पु० [स०] संकेत, इशारा, मनका भाव, अभिप्राय; मनका भाव बनानेवाली अंगवेंष्टा; हिलना, डोलना। वि० चलित, कपित; हिलना या डोलना हुआ। -**कोबिद्**, -**ज**-वि० अंगवेंष्टा द्वारा आन्तरिक भावोंकी जानने या प्रकट करनेमें कुशल।

ईगु-पु० [म०] एक रोग।

ईगुद्-पु०, **ईगुदी**-खी०, **ईगुल**-पु० [म०] हिगोटपा पत्र; मालकगनी; हिगोटपी गिरी।

ईगुर-पु० दे० 'ई गुर'।

ईगुरोटी-खी० ईगुर या सेंदुर गन्धकी डिब्बिया।

ईगुवा-पु० हिगोटका वृक्ष या उसका फल।

ईश-पु० [अ०] फुटका बारहवाँ भाग, तीन चौकी लबाई; अल्पाक्ष (ला०)।

ईचना-अ० कि० विचना।

ईचाक-पु० [म०] जलवृक्षिक, एक तरहकी मछली।

ईचार्ज-वि० [अ०] जिसपर किसी कार्य या विभागकी देखभालका भार हो।

ईजत-पु० साबन; कल, यंत्र; आप आदिकी मक्किको चालक शक्तिमें बदल देनेवाला यंत्र; रेलवे इंजन। -**झाहवर**-पु० इंजन चलानेवाला।

ईजर-पु० दे० 'समुंदरफल'।

ईजीनियर-पु० [अ०] इंजन बनानेवाला, यंत्रविशेषज्ञ; नहर, पुल आदिके नक़्शे बनाने और उनके निर्माणकी निगरानी करनेवाला।

ईजीनियरिंग-खी० [अ०] इंजीनियरका काम; लोहेके कल-पुरजे बनानेका काम।

ईजील-खी० [दू०] ईसाइयोंकी धर्मपुस्तक, बाइबिल:

सुसलबरी।

ईंटकीहरा-पु० ईंटका टुकड़ा, गिट्टी।

ईंटरनेशनल-वि० [अ०] दो या अधिक राष्ट्रोंके बीचका या उनमें संबंध, अंतराष्ट्रीय। पु० संयुक्त प्रयत्नके उद्देश्यसे किया गया अभिकर्षणका सार्वदेशिक सम्मेलन। [थर्ड **ईंटरनेशनल**-पु० उक्त प्रकारका तीसरा सम्मेलन जो बोलशेवी दलकी विजयके बाद १९१८ में रूसमें हुआ, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल।]

ईंटरमीडियेट-वि० [अ०] बीचका, दरमियानी। -**क्लास**-पु० कालेजकी पढ़ाईका पहला दरजा, हाईस्कूल और बी० ए० के बीचकी कक्षा; रेलमें तीसरे और दूसरे दरजोंके बीचका दरजा, खोदी दरजा, इंटर क्लास।

ईंटरव्यू-पु० [अ०] मिलना, मुलाकात; समाचार-पत्रके प्रतिनिधिका किसी किसी विषयपर उसका मत जानने या बातचीत लेनेके लिए मिलना (करना, लेना)।

ईंट्रेंस-पु० [अ०] द्वार, प्रवेशमार्ग; प्रवेशिका (अंग्रेजी) परीक्षा।

ईंटर-पु० उर्दूकी दालमें बना एक खाद्य पदार्थ।

ईंडियन-वि०, पु० [अ०] भारतीय, भारतवासी।

ईंडिया-पु० [अ०] भारतवर्ष, हिंदुस्तान।

ईंडुरी-खी०, **ईंडुवा**-पु० गेंडुरी, बिड़र।

ईंटेड-पु० [अ०] मालकी फरमाइश (वासकर देसावरमे); मालकी फरमाइशके माब भेजी जानेवाली मालकी सूची; छपाईमें मैटरके एक वा दोनों ओर अधिक जगह छोड़ना। **ईंटेक्स**-पु० [अ०] किसी पुस्तकके विषयों या विशेष शब्दोंकी अकागति-क्रमसे बनी हुई सूची जो प्रायः पुस्तकके अन्तमें दी जाती है, अनुक्रमशिका। -**नंबर**-पु० भाषाओं आदिकी सूची जिसमें उनका उच्चारण-व्याख्या जाना जा सके।

ईंतकाम, **ईंतिकाम**-पु० [अ०] कदला लेना।

ईंतकाल, **ईंतिकाल**-पु० [अ०] एकमे दूसरी जगह जाना; हस्तांतरित होना; (त्रायदादका) दूसरेके कब्जेमें जाना; मरना, मृत्यु (करना, फरमाना)। -**जावदाव**-पु० संपत्तिक (रेहन, बय आदिके जरिये) दूसरेके पास जाना।

ईंतज़ाब, **ईंतिज़ाब**-पु० [अ०] जुनाना, छोटना; जुनाब; खमरे-खनिषीनीके किसी कागजकी बामाभ्या नकल।

ईंतज़ाम, **ईंतिज़ाम**-पु० [अ०] प्रबंध करना; व्यवस्था, उपाय।

ईंतज़ामी, **ईंतिज़ामी**-वि० [अ०] प्रबंध-संबंधी।

ईंतज़ार, **ईंतिज़ार**-पु० [अ०] प्रतीक्षा करना, राह देखना; प्रतीक्षा।

ईंतज़ार, **ईंतिज़ार**-पु० [अ०] बिखरना; बिगित, उद्विग्न होना; चिंता, परेशानी।

ईंतहा, **ईंतिहा**-खी० [अ०] अंत, समाप्ति; सीमा। -**पसंद**-वि० अतिवारी, 'एक्सट्रीमिस्ट'। **सु०**-कर देना-अति करना, हद कर देना।

ईंतहाई, **ईंतिहाई**-वि० [अ०] अतिशय, हद दर्जेकी।

ईंश्वर-पु० [स०] दे० 'ईदीवर'।

ईश-अ० [अ०] पास, करीब; पर। * पु० दे० 'ईद'।

इंवर-० दे० 'ईं'।

इंदिराज-पु० [फा०] बही वा हिसाबमें नवाया जाना।

इंदुव-पु० एक वृक्ष; ४ दे० 'इंदु'।

ईंदाता-पु० कृप।

ईंदावन-पु० एक लता और उसका फल जो देखनेमें सुंदर पर स्वादमें बहुत कड़वा होता है (यह विष है, पर दवाके काम आता है), ईंदावन।

ईंदिदिर-पु० [सं०] अमर।

ईंदिवा-पु० [अ०] राय, विचार; इच्छा।

ईंदिवा-खी० [सं०] लक्ष्मी; कांति, सोमा; आश्विन-कृष्णा एकादशी। -मंदिर-पु० विष्णु; नील कमल। -रमण-पु० विष्णु।

ईंदिरालव-पु० [म०] लक्ष्मीका निवास, नील कमल।

ईंदिवर; ईंदीवर; ईंदीवार-पु० [सं०] नील कमल।

ईंदीवरिणी-खी० [सं०] उपलब्धि।

ईंदीवरी-खी० [सं०] शतमूली।

ईंदु-पु० [सं०] चंद्रमा; एककी सख्या; कपूर; मृगशिरा नक्षत्र। -कमल-पु० सितौपत्ती। -कर-पु० चंद्र-किरण। -कका-खी० चंद्रमाकी कला; अमृता; गुडुची; सोमलता। -कलिका-खी० केतकी; चंद्रकी कला। -कांत-पु० चंद्रकांत मणि। -कांता-खी० रात्रि; केतकी। -किरीट-पु० शिव। -ज-पु० बुध ग्रह। -जनक-पु० समुद्र; अग्नि ऋषि। -जा-खी० नर्मदा नदी। -नंदन-पु० बुध ग्रह। -पुष्पिका-खी० कलिकाटी। -अ-पु० मृगशिरा नक्षत्र। -भूषण-पु०, -भूष, -भूषि, -भूषर-पु० शिव। -मणि-पु० चंद्रकांत मणि; मोती। -रत्न-पु० मोती। -रेखा-खी० चंद्रमाकी कला; अमृता; गुडुची; सोमलता। -लोहक, -लोह-पु० चाँदी। -वदना-खी० चंद्रमुखी, एक वर्ण-वृत्त। -बल्ली-खी० सोमलता। -वार-पु० क्योतिष-का एक योग; सोमवार। -बासर-पु० सोमवार। -अत-पु० चंद्रायण व्रत।

ईंदुआ-पु० दे० 'इंदुटी'।

ईंदुक-पु० [सं०] अश्मत्तक नामक वृक्ष।

ईंदुमती-खी० [सं०] पूर्णिमा; अश्वकी पत्नी।

ईंदुमाव(मव)-पु० [सं०] अग्नि।

ईंदुलसलब-अ० [अ०] मांगनेपर; जब माँगा जाय।

ईंदुर-पु० [सं०] चूहा।

ईंम-पु० [सं०] देवराज; अंतरिक्षका देवता; वर्षाका देवता (देवताओंका राजा होनेके कारण इन्द्रकी देवराज या सुवर-पति भी कहते हैं)। वज्र धारण करनेले वज्री वा वज्रायुध भी इसका नाम है। इसकी पत्नी शची और पुत्रका नाम जयंत है। इसका वाहन पेरान्त है और रथके घोड़ेका नाम है उच्चैःश्रवा। इसने वृत्रासुरको मारा था और पर्वतोंके पंख काट दिये थे, इसमें वृत्रहा और पर्वतारि भी इसका नाम है; मेघ; राजा; अधिपति; अश्व, प्रधान न्यायि आदि (कवीन्द्र); दाहिनी ओंखकी पुतली; रात्रि; एक योग; कुट्टन वृक्ष; एक वनस्पतिजन्म विष; छप्पन छंदका एक भेद; १४ की संख्या; आत्मा; जंतुदीपका एक भाग। -कमो(मैन्द)-पु० विष्णु। -कार्मुक-पु० इन्द्रधनुष।

-कीक-पु० मंदर पर्वत। -कुंजर-पु० घेरावत हाथी। -कूट-पु० एक पर्वत। -कूट-वि० बिना जोते-बोधे उत्पन्न होनेवाला। -कोष, -कोष, -कोषक-पु० पलंग; मचान; छत्ता। -गिरि-पु० मईंद्र पर्वत। -गुरु-पु० बृहस्पति। -गोष, -गोषक-पु० गौरमहूटी। -चंदम-पु० हरिचंदन। -चाप-पु० इन्द्रधनुष। -चिमिंदी-खी० लताविशेष, दीर्घवृत्त। -छंद(स्)-पु० एक हजार आठ लक्षियों(मोतियों ?)का हार। -जाल-पु० जादू, नजर-बंदीके काम, हाथकी सफाईके काम, बाजीगर; अर्जुनका एक अस्त्र; एक रणकीशल। -जालिक-पु० इंद्रजाल करनेवाला, जादूगर, बाजीगर। -जित्-वि० इन्द्रकी जीतनेवाला। पु० रावणका बेटा, मेघनाद। -औ-पु० [हिं०] दे० 'इंद्रयव'। -लर-पु० दे० 'इंद्रद्रम'। -तापन-पु० बादलोंका गर्जन; एक दानव। -तूल, -तूलक-पु० रुईका डेर; हवामे उड़नेवाला सूत। -दमन-पु० बादमें नदीके पानीका किसी बट, पीपल या कुंडतक पहुँच जाना; मेघनाद; बाणासुरका एक बेटा। -दाह-पु० देवदाहका पेड़। -दुम-पु० अर्जुनका पेड़। -द्वीप-पु० वज्रद्वीपके ९ खंडोंमेंसे एक। -घनुष-पु० बरमातमें आकाशमें अवसर दिखाई देनेवाला सनगगा अर्द्धवृत्त। -ध्वज-पु० इन्द्रकी पताका; आदिसुहा आदिसौके होनेवाला इंद्रका पूजन जिसमें इन्द्रकी पताका चढ़ायी जाती है। -नील-पु० नीलकांत मणि। -नेत्र-पु० इन्द्रकी आँखें; एक हजारकी सख्या (इन्द्रकी आँखोंकी गिनतीसे)। -पर्णी, -पुष्पी-खी० एक वनौषधि, करियारी। -पुरोहित-पु० बृहस्पति। -प्रख-पु० पांडवोंकी राजधानी जो खाटव वन जगलकर बसायी गयी थी (स्मर्के खंडहर आजकालकी डिग्गीमें कुछ ही मीलपर मिलते हैं)। -प्रहरण-पु० वज्र। -मेघज-पु० सौंठ। -मंडल-पु० अभिजितमें अनुराधातकके सात नक्षत्र। -मख-पु० इन्द्रकी तुष्टिके लिए किया जानेवाला एक यज्ञ। -मद-पु० पहली वर्षासे मछलियोंकी होनेवाला एक रोग। -मह-पु० वर्षा ऋतु। -० कामुक-पु० कुत्ता। -यव-पु० कुंडजका धान, इंद्रजी। -लुस, -लुसक-पु० सिरके बाल झड़ जानेका रोग, गजापन। -लोक-पु० स्वयं। -वंशा-खी० एक वर्णवृत्त। -वज्रा-खी० एक वर्णवृत्त। -वधू-खी० गौरमहूटी। -बहरी, -बहरी-खी० पारिजात। -वरित-खी० पैका मासल भाग। -बारुणिका, -बारुणी-खी० इंद्रायन। -वृद्धा-खी० एक तरहका जण। -अत-पु० राजाका प्रजाके समृद्धिमाधनमें इंद्रका अनुसरण करना, जो जल बरसाकर संपूर्ण प्राणियोंका पोषण करता है। -शक्ति-खी० इंद्राणी। -शात्रु-पु० वृत्रासुर; प्रकाद। -शैल-पु० एक पर्वत। -सारथि-पु० मातङ्गि; बाघ। -सावधि-पु० चौदहने मनु। -सुत, -सुनु-पु० जयत; अर्जुन; वालि। -सुरस, -सुरिस-पु०, -सुरा-खी० सिंदुरा वृक्ष। -सेन-पु० राजा नलिका एक नाय। -सेनामी-पु० काक्षिकेय। -स्तोम-पु० इन्द्रकी प्रसन्नताके लिए किया जानेवाला एक यज्ञ; इंद्रका एक स्तोम। -का अस्त्रावा-इंद्रसभा; नाच-रंगकी खूब जमी हुई महफिल। की परी-अमरा; अति रूपवती खी।

इंद्रक-पु० [सं०] समाधुतः बन्धुकरा ।
इंद्रमख-पु० [सं०] दे० 'इंद्र' में ।
इंद्रा-खी० [सं०] इंद्रकी पत्नी; सखी, इंद्रायन ।
इंद्राभिधूम-पु० [सं०] हिम ।
इंद्राभिका-खी० [सं०] इंद्रसुरित, निर्दुर्धी ।
इंद्राणी-खी० [सं०] इंद्रकी पत्नी; दुर्गा; नर्वा जौलकी पुतली; बही इलायची; नील सिधुवार; इंद्रायन ।
इंद्राणी-खी० दे० 'इंद्राणी' ।
इंद्रावुध-इंद्रावरज-पु० [सं०] विष्णु ।
इंद्रावध-पु० एक लता जिसका फल कनका होता है और वषाके काम आता है ।
इंद्रावुध-पु० [सं०] वक्र; इंद्रवज्र ।
इंद्रावसान-पु० [सं०] मत्स्थल ।
इंद्रासन-पु० [सं०] भाग; धुँवनी ।
इंद्रासन-पु० [सं०] इंद्रकी गद्दी; इंद्रपद ।
इंद्रिय-खी० [सं०] शरीरके ज्ञान और कर्मके साधन-रूप अंग, वे अवयव जिनसे बहिरंगलका बोध होता या शारीरिक क्रियाएँ मपन्न होती हैं—(ज्ञानेन्द्रिय—आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा; कर्मेन्द्रिय—हाथ, पाँव, बाक, युद्धा और उपस्थ) । कुछ दर्शन मनकी भी इंद्रिय मानते हैं; इंद्रियकी शक्ति; बौर्य; किमेन्द्रिय; पाँचकी सरला ।—**गोचर-वि०** इंद्रियोंका विषय होने योग्य, इंद्रियग्राह्य; सेव । पु० इंद्रियोंका विषय ।—**ग्राम-वर्ग-पु०** पाँचों ज्ञानेन्द्रियोंकी प्रमति ।—**जिह्वा-वि०** इंद्रियोंकी वशमें रखनेवाला, ज्ञानेन्द्रिय ।—**निग्रह-पु०** इंद्रियों, भोगेच्छाओंकी वशमें या अनुसंगे रखना ।—**बुद्धि-खी०** इंद्रियोंके द्वारा होनेवाली अनुभूति ।—**बोधन-वि०** इंद्रियोंकी उत्तेजित करनेवाला ।—**क्लोलुप-वि०** विषय-भोगकी उत्कट इच्छा करनेवाला ।—**बध-पु०** इंद्रियोंका निम्नक होना ।—**बुद्धि-खी०** इंद्रियोंका व्यापार ।—**सुख-पु०** विषयसुख, भोग ।—**स्वाय-पु०** इंद्रियोंकी सुपुष्टि, इंद्रियोंकी किसी विषयका ज्ञान न होना; वशना; प्रलय ।
इंद्रियागोचर-वि० [सं०] असेय ।
इंद्रियातीत-वि० [सं०] इंद्रियोंका विषय न होने योग्य, असेय ।
इंद्रियावतन-पु० [सं०] इंद्रियोंका निवासस्थान, शरीर ।
इंद्रिशासन-वि० [सं०] इंद्रियमुख, विषयभोगमें आसक्त ।
इंद्रिशर्ष-पु० [सं०] बिनी इंद्रियका विषय-शब्द, स्पर्श रूप, रस, गंधमेंसे कोई ।—**सञ्चिकर्ष-पु०** इंद्रियोंका अपने विषयके साथ सर्वध (जो प्रत्येक ज्ञानका साधन होता है) ।
इंद्रिपासंग-पु० [सं०] वैराग्य, अनासक्ति, सल्यासङ्गति ।
इंद्रिया-खी० इंद्रिय ।
इंद्री-खी० दे० 'इंद्रिय' ।—**जुलाल-पु०** अधिक पेशाब कानेवाली दवा ।
इंद्रिय-पु० [सं०] बृहस्पति ।
इंध-पु० [सं०] इंधन; जलाना; परमेश्वर ।
इंधन-पु० [सं०] जलानेकी लकड़ी; कोयला, उपने आदि; जलाना ।
इंधतैरा-पु० जलावन रखनेका स्थान ।

ईनाहन-पु० इंद्रायन ।
ईपीरियल-वि० [अ०] साम्राज्य-संबन्धी; साम्राज्य-बोरी राष्ट्रसे संबन्ध; साम्राज्यके उपयुक्त; शाही ।—**गवर्नमेंट-खी०** साम्राज्य-सरकार; बही सरकार ।—**प्रेफरेंस-पु०** साम्राज्य-सरकारकी अपने अधीनस्थ देशोंमें साम्राज्यकी वस्तुओंपर आयात-निर्यातकर बँटानेकी वह नीति जिससे अन्य देशोंकी स्पर्धामें अपना माल सस्ता पड़े ।
ईपीरियलिस्म-पु० [अ०] साम्राज्यवाद; साम्राज्यकी उपयोगिताका विश्वास; साम्राज्य-विस्तारकी नीति ।
ईपीरियलिस्ट-वि० [अ०] साम्राज्यवादी ।
ईसा-खी० [अ०] इबारत; वह पुरातन जिसमें पन्नादि लिखनेके नियम दिये गये हैं ।
ईसान-पु० दे० 'इनसान' ।
ईसाक-पु० [अ०] न्याय, निर्णय, फैसला ।
ईस्पेक्टर-पु० [अ०] देखभाल करनेवाला, निरीक्षक ।
ह-पु० [सं०] कामदेव ।
हर्क-अ० निश्चय ही ।
हर्ग-वि० एकतरफा । पु० अर्द्धनारीश्वर, शिव ।
हर्कत-वि०, पु० दे० 'एकत' ।
हर्क-वि० दे० 'एक' ।—**ऑक-अ०** दे० 'एक-ऑक' ।
—ओर-अ० एक साथ ।—**हाल-वि०**, पु० दे० 'एक-हाल' ।—**तरा-पु०** एक दिनके अंतरसे जानेवाला व्यर ।—**ताना-वि०** एकनिष्ठ, अनन्यचित्त ।—**तार-वि०** एक-रस, समान । अ० निरंतर ।—**तारा-पु०** दे० 'एकतारा' ।—**ताला-पु०** दे० 'एकताला' ।—**तीस-वि०** तीस और एक । पु० २१ की संख्या ।—**पेचा-पु०** एक नरहकी पगरी ।—**बारगी-अ०** दे० 'एकवारगी' ।—**रदन-अ०** दे० 'एकरदन' ।—**रस-वि०** दे० 'एकरस' ।—**खा-वि०** दे० 'अकेला' ।—**खाई-खी०** एक पाटका बना बारीक दुपट्टा; बारीक फर्दी धोनी; अकेलापन ।—**खोता-वि०** अपने मौ-बापका अकेला (वेडा) । [खी० 'इकलोती'] ।—**सठ-वि०** साठ और एक । पु० ६१ की संख्या ।—**सूत-वि०** इकट्ठा; एक साथ ।—**हाई-अ०** एक साथ; एकबारगी ।
इकहम-वि०, पु० दे० 'इकीस' ।
इकट-पु० [सं०] सरकटेकी कोपल ।
इकट्टा-वि० बकड़ा, एकन; एक साथ ।
इकतर, इकत्र-वि० दे० 'एकत' ।
इकतरा-पु० दे० 'इक' में ।
इकता-खी० दे० 'एकता' ।
इकताई-खी० एक होनेका भाव; एकात्मियता ।
इकताम-पु० [अ०] कदम रखना; आगे बढ़ना; कुछ करनेका उपक्रम; चेष्टा ।—**(से)जुर्म-पु०** कोई अपराध करनेकी चेष्टा ।
इकली-खी० दे० 'एकली' ।
इकलाक-पु० [अ०] सीधाय, समुद्रि, प्रताप; कट्टल करना, स्वीकार ।—**दाधा-पु०** सुर्खके दाबेकी स्वीकार कर लेना ।—**अंध-वि०** नाग्यशाली, प्रतापी ।
इकलाकी गवाह-पु० अपराधि-साक्षी या राज-साक्षी ।
इकराम-पु० [अ०] वान, वकिश्रा; अनुग्रह; मान, बड़ाई ।

इकरार-पु० [अ०] हाँ करना; स्वीकृति; वचन, प्रतिष्ठा ।

—नामा-पु० प्रतिष्ठापन ।

इकहाई-स्त्री० दे० 'इक'में ।

इककीस-पु० [अ०] मूँड; दुनियाके आबार हिस्सेका सातवाँ भाग; राज्य ।

इकहा-वि० एकहरा; एकाकी ।

इकबाई-स्त्री० एक तरहकी निहाई ।

इकसर-वि० दे० 'अकसर' ।

इकसार-अ० समान ढंगसे ।

इकसीर-स्त्री० [अ०] कीमिया, सस्ती भातुकी सोना-चाँदी बनानेकी दवा; लाभदायक औषध; बहुत लाभदायक वस्तु ।

इकहरा-वि० दे० 'एकहरा' ।

इकहाई-अ० दे० 'इक'में ।

इकाँत-वि०, पु० दे० 'एकाँत' ।

इकाई-स्त्री० गणनामें प्रथम अंक या उसका स्थान; वह मान या माप जो दूसरी चीजोंकी नाप-तौलमें मानदण्डका काम दे; योगिक पदार्थके मूल अवयव ।

इकार-पु० [सं०] 'इ' स्वर ।

इकारांत-वि० [सं०] जिसके अंतमें 'इ' हो (अन्त) ।

इकेला-वि० दे० 'अकेला' ।

इकैठ-वि० इकठ्ठा ।

इकीतर-वि० एक अधिक, एकीतर । —स्त्री-वि० एक सौ एक, १०१ ।

इकीज-स्त्री० वह स्त्री जिसे एक ही मंतान हुं हो, काक-वंध्या ।

इकीना-पु० बिना छाँटा चावल आदि ।

इकीनी-वि०, स्त्री० बेजोड़, यकता ।

इकील-अ० अकेले, एकांतमें ।

इकीसा-वि० पकान ।

इकट-पु० [सं०] एक तरहका सरकड़ा, जिसकी चट्टाई बननी है ।

इकबाल-पु० [मं०] अभ्युदय; एक ग्रहयोग ।

इक्का-वि० अकेला; अद्वितीय । पु० एक घोड़ेकी गाड़ी; अकेले लड़नेवाला योद्धा; एक तरहकी बाली; अपने झुटते अलग रहनेवाला पशु; ताम्रका एक बूटीवाला पत्ता ।

—दुक्का-वि० अकेला-दुकेला ।

इक्कावन-वि०, पु० दे० 'इक्कावन' ।

इक्कासी-वि०, पु० दे० 'इक्कासी' ।

इक्की-स्त्री० एक बैलकी गाड़ी; ताशका इक्का ।

इक्कीस-वि० बीस और एक । पु० २१ की संख्या ।

इक्कावन-वि० पचास और एक । पु० ५१ की संख्या ।

इक्कासी-वि० अस्सी और एक । पु० ८१ की संख्या ।

इच्छ-पु० [सं०] ईश, कोकिला वृक्ष; इच्छा । —काई-पु० ईशका डठल; ईश; काम; मूँज । —कुट्टक-पु० ईश एकत्र करनेवाला । —गंध-पु० छोटा गोखरू; काम । —गंधा-स्त्री० गोखरू; तालमखाना; काम; शुद्ध भूमिकुम्भांड, सफेद विदारिकंद । —गंधिका-स्त्री० भूमिकुम्भांड । —ज-वि० ईशके रससे बननेवाला । पु० ईशके रससे बननेवाले पदार्थ, गुड़ आदि । —तुल्य-स्त्री० काम । —द्व-पु० ईशका डठल । —द्व-पु०, —द्व-स्त्री० नृणविशेष ।

—नेत्र-पु० ईशकी गोंठपरकी आँख; एक तरहकी ईश ।

—पत्र-पु० ज्वार; बाजरा । —पाक-पु० गुड़ । —प्र-पु०

श्रवण । —प्रमेह-पु० मधुमेह । —बालिका-स्त्री०

कास । —बालिनी-स्त्री० दे० 'इक्षुमती' । —बूछ-पु०

एक तरहकी ईश; ईशकी जड़ । —मेह-पु० मधु-

मेह । —बंध-पु० ईश घेरनेकी कल । —बाटि-स्त्री०

ईशका डठल । —रस-पु० ईशका रस; शीरा; कास ।

—रसोद-पु० इक्षुसमुद्र । —बछरी-बछी-स्त्री० पीले

रंगकी एक ईश; शीरविदारी । —बाटिका-बाटी-स्त्री०

पुंज । —विकार-पु० गुड़; चीनी आदि । —विद्यारी-स्त्री०

विदारिकंद । —शाकद-शाकिन-पु० ईश होने

योग्य खेत । —समुद्र-पु० पुराणोंके अनुसार वह समुद्र

जो ईशके रसमें भरा है । —सार-पु० शीरा, गुड़ आदि ।

इक्षुक-पु० [सं०] ईश ।

इक्षुमती-स्त्री० [सं०] पुराणवर्णित एक नदी ।

इक्षुर-पु० [सं०] ईश; गोखरू; तालमखाना ।

इक्ष्वाकु-पु० [सं०] वैवस्वत मनुका पुत्र और सूर्यवंशका

पहला राजा; कच्ची लौकी ।

इक्ष्वालिका-स्त्री० [मं०] नरकट; कास ।

इखद-वि०, अ० ईषट, बोझ ।

इन्द्रक्राव-पु० [अ०] छिपाना, गोपन । —(रे) वारदात-पु० ऐसी घटनाकी छिपाना जिसकी सूचना (पुलिसको) देना फर्ज हो ।

इन्द्रराज-पु० [अ०] निकालना, बाहर करना; खर्च ।

इन्द्रराजात-पु० [अ०] खर्चे, व्यय ।

इन्द्रलास-पु० [अ०] पवित्रता, मारुता; मन्त्री, हार्दिक मित्रता; मित्रता ।

इक्षु-पु० दे० 'इषु' ।

इत्तिनयार-पु० [अ०] ग्रहण, पमद करना या इमका अधिकार; अधिकार; वश; विचारधिकार । —(रे) समाजन

—पु० विचारधिकार, मुकदमा सुननेका अधिकार ।

इत्तिनयारी-वि० अपने बम, मर्जीका; वैयक्तिक, अपने इच्छाधीन ।

इत्तिनयार-पु० [अ०] भेद, अंतर; विरोध; अनबन ।

—(क्रे) शय-पु० मनभेद ।

इगारह, इगारह-वि० दस और एक । पु० ११ की संख्या ।

इग्यारी-स्त्री० अगिधारी; ग्रन्थ्याधान; आग्नी ।

इधिकिल-पु० [मं०] तालाब; पंख; दलदल ।

इच्छक-वि० [सं०] इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला । पु० एक वृक्ष, नारंगी ।

इच्छना-अ० [मं०] इच्छा करना ।

इच्छा-स्त्री० [सं०] चाह, कामना, स्वाहिदा; कवि; मालकी मोग, 'डिमाट' (कौ०) । —दान-पु० इच्छाकी पूर्ति करना । —निवृत्ति-स्त्री० इच्छाका दमन; विरक्ति ।

—अेटी (विद्य)-वि० जितने चाहे उतने दस लानेवाला (रेचक) । —ओजन-पु० अपनी कवि, पसंदका भोजन ।

—बसु-वि० जिसके पास जितना चाहे उतना धन हो । पु० कुनेर ।

इच्छिन-वि० [मं०] चाहा हुआ, अभिलषित ।

इच्छु-वि० [सं०] चाहनेवाला (प्रायः समासतः प्रयुक्त-
चित्च्छु, शुभेच्छु) । • पु० ईक्ष ।

इच्छुक-वि० [सं०] चाहनेवाला ।

इच्छु-वि० इच्छुक ।

इक्षमाक्ष-पु० [अ०] इक्ष्मा करना; स्नेह करना, ओषधें
कहना; साक्षा ।

इक्ष्मालम्-अ० [अ०] संक्षेपमें, सुस्तसरमें ।

इक्ष्माली-वि० साक्षिका, शिरकती ।

इक्ष्मा-स्त्री उर्वरता बढ़ानेके लिए पत्थरी छोड़ी हुई जमीन ।

इक्ष्मा-पु० [अ०] जारी करना, होना; काममें लाना या
लाना जाना ।-**किगरी-पु०** किगरीका जारी किना जाना
या अमलमें लाया जाना ।

इक्ष्मास-पु० [अ०] बैठना; बैठक; हाकिम या अधिकारीका
(विचारके लिए) बैठना; उसके बैठनेका स्थान, कचहरी ।

-**(ने)** कामिष्ठ-पु० विचारके लिए सब जनोंका एक
साथ मिलकर बैठना, 'कुल बैठ' (?) ।

इक्ष्मर-पु० [अ०] जाहिर करना, प्रकट करना; अदालतमें
दिया हुआ बयान या गवाही । -**(रे)** तहरीरी-पु०
लिखित बयान या गवाही ।

इक्षात-स्त्री [अ०] अनुमति, परवानगी ।

इक्षात-स्त्री [अ०] लगाव, मधव; एक शब्दका दूसरेसे
सुवध, समाग (व्या०) ।

इक्षाका-पु० [अ०] इक्षि, बढ़नी ।-**लगान-पु०** लगानका
बढ़ना, बढ़ती ।

इक्षाव-स्त्री [अ०] स्थापति, प्रार्थना स्वीकार करना;
श्रीव, मन्त्राग ।

इक्षार-पु० [अ०] पात्रामा, सुधना ।-**बंद-पु०** पात्रामा
या लहगा बानेका बंद या फीता ।

इक्षार-पु० [अ०] ठेका, पट्टा; एकाधिकार, किसी वस्तुके
बनाने, बेचने, भीगने आदिका अकेले अधिकारी होना ।
-**(रे)** दार-पु० ठेकेदार; एकाधिकारी ।

इक्षार-स्त्री [अ०] मान, प्रतिष्ठा, बडाई; आदर ।-**दार-**
वि० प्रतिष्ठित । **मु०** -उत्तारना, -विगाडना, -लेना-
बेजावर करना, अपमानित करना ।-**खोना, -गैबाना-**
मर्यादा खोना ।-**देना-मर्यादा खोना;** गौरवान्वित करना ।

इक्षार-पु० [म०] जलाशयके पास उत्पन्न होनेवाला एक
छोटा वृक्ष, हिजल ।

इक्षितार-पु० [अ०] बेचेनी, श्याकुलता, अथारता ।

इक्ष्या-स्त्री [म०] यश; पूजा ।

इक्ष्मी-पु० युरोपका एक देश ।

इक्ष्मिक, इक्ष्मिक-पु० [अ०] एक तरहका निरुद्धा शस्त्र ।

इक्ष्मिय-पु० [अ०] इक्ष्मीका निवासी; एक किस्मका
कपड़ा जो पहले इक्ष्मीने ही आना था । वि० इक्ष्मीने संवद्ध ।

इक्ष्म-पु० [सं०] स्वच्छंदतापूर्वक धूमनेवाला बैल या
साँड़ ।

इक्ष्मा-अ० कि० गर्वयुक्त चेष्टाएँ करना, ठमक, घेंठ
दिखाना; इतराना; नखरा करना; बनना ।

इक्ष्मा-स्त्री इक्ष्मालिका भाव, घेंठ ।

इक्ष्मा-स्त्री मित्रता, प्रीति; रुचि ।

इक्ष्म-पु० दे० 'इक्ष्म' ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] धरती; वाणी; जादूति, हवि; भारावाहिक
स्तुति; अन्न; वायु; स्वर्ग; एक नाडी जो रोड़की इक्ष्मि
होकर मस्तकतक पहुँचती है; मनुषी पुत्री जो दुष्पत्नी पत्नी
और पुरुषकी माता थी; दुर्गा ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] भिक्ष, तैयार ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] पत्नी ।

इक्ष्मि-पु० [सं०] जंगली बकरा ।

इक्ष्म-पु० [सं०] दे० 'इक्ष्म' ।

इक्ष्म(तस्)-अ० [सं०] यहाँ; वहाँसे; इधर; उधरसे;
इत्थि ।

इक्ष्म-अ० इधर, यहाँ ।-**उत्त-अ०** यहाँ-वहाँ ।

इक्ष्मा-पु० दे० 'एतकाद' ।

इक्ष्मा-अ० इस मात्रा, भिन्नारमें । वि० इस मात्राका ।

-**(ने)** म-इसी बीच या अरसेमें, तबतक ।

इक्ष्मा-पु० दे० 'इक्ष्मा' ।

इक्ष्मीनान-पु० [अ०] मरोसा, विश्वास; तसही, समा-
धान; शांति ।-**(ने)** कलह-पु० मनका समाधान ।

इक्ष्मीनानी-वि० [अ०] विश्वासी, भरोसेका ।

इक्ष्म-पु० दे० 'इक्ष्म' । वि० [सं०] दूसरा, और; भिन्न
(माझिगतरे); माधारा; हीन ।

इक्ष्म(तस्)-अ० [सं०] अन्यथा ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] दे० 'एतरा' ।

इक्ष्मा-अ० कि० गर्वने घेंठना; गर्वका इतना बढ़ जाना
कि बचन, व्यवहारमें प्रकट होने लगे; इठलाना ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] गर्व, इतरानेका भाव ।

इक्ष्म-अ० [सं०] परस्पर, एक-दूसरेकी या से ।-**बोरा**
-पु० परस्पर संबंध; इदं समानका एक भेद ।

इक्ष्म-अ० [सं०] अन्यथाभाव ।

इक्ष्म-अ० [सं०] एक तर्कदोष, यी वस्तुओंका
सिद्धिका एक-दूसरीपर अवलंबित होना ।

इक्ष्मा-वि० जिसमें इतराना प्रकट हो, गर्वयुक्त ।

इक्ष्मा-पु० [अ०] बधनयुक्त करना; जारी करना; व्यव-
हार, प्रयोग; समन आदिके जारी होने, तलबानेके आमद-
खर्चका हिसाब रखनेवाला दफ्तर ।-**मर्यादा-पु०** इन-
लाकका हिसाब-किताब रखनेवाला कर्मचारी ।

इक्ष्मा-स्त्री दे० 'इक्ष्म' ।

इक्ष्मा-पु० गविवार ।

इक्ष्म(तस्)-अ० [सं०] इधर-उधर, यहाँ-वहाँ ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] अथीनता, ताबेदारी; आधापालन ।

इक्ष्मा-स्त्री [सं०] दे० 'इक्ष्मा' ।

इक्ष्मा-पु० [अ०] कोप, रोष, खफगी ।

इक्ष्मा-अ० [सं०] समाप्ति-सुचक शब्द । स्त्री० समाप्ति; अत;
पूर्वता; गमन ।-**कक्ष-वि०** अविश्वसनीय; दुष्टापूर्ण ।

-**करणीय, -कर्तव्य-वि०** जिसका करना उचित या
आवश्यक हो, कर्तव्य ।-**कर्तव्यता-स्त्री** (किसी कार्यका)

आवश्यक या कर्तव्य होना ।-**मात्र-वि०** इतना ही ।

-**बुद्ध-पु०** पठना; कहानी; पुरानी (राजाओं, कविओं,
आदिकी) कहानियाँ ।

इक्ष्मा-पु० [सं०] अवतक धड़ित पटनाओं या उससे
मंथव रखनेवाले व्यक्तियोंका कालक्रमानुसार वर्णन; इस

शिक्षाप्रदः चेतावनी देनेवाला ।

हचरानी-वि० यहूदी-संभवी । पु० यहूदी, इसरायली । स्त्री० यहूदियोंकी पुरानी भाषा, तौरतकी भाषा ।

हचरायनामा-पु० [फा०] स्थापनपत्र ।

हचकीस-पु० [अ०] सैतान, मनुष्यकी बहकानेवाला फरिश्ता ।

हबावत-स्त्री० [अ०] पूजा, उपासना; वदना । -ज्ञाना -पु० उपासना-मंदिर ।

हबारत-स्त्री० [अ०] वाक्यकी बनावट, रचना; लिखनेका ढंग । -आराई-स्त्री० छच्छेदार, आर्थकारिक भाषा लिखना ।

हबारती-वि० हबारतमें कवित, स्थित ।

हमिदा-स्त्री० [अ०] आरंभ, आदि; उत्पत्ति । -ए-इस्क -स्त्री० प्रणवारंभ, पूर्वानुराग ।

हम्न-पु० [अ०] बेदा, पुत्र । -उल्खरौब-वि० जिसके नाम-धाम, कुल आदिका पता न हो । -उल्खरौब-वि० (स्वार्थसाधनके लिए) समय, अवसरके अनुकूल व्यवहार करनेवाला, अवसरवादी ।

हमाहीस-पु० [अ०] यहूदी जातिके आदि पुरुष और यहूदी, इसलाम धर्मके अनुसार एक कैबलर ।

हमाहीसी-पु० हमाहीस लौरीका सिका ।

हम्-पु० [सं०] हाथी । -कणा-स्त्री० गजपिप्पली । -कुम्भ-पु० हाथीका मस्तक । -केशर-पु० नागकेशर । -गंधा-स्त्री० एक पौधा जिसका फल विषैला होता है । -दंता-स्त्री० नागदंती । -निमीलिका-स्त्री० चातुर्व्य, वृद्धिमत्ता; भांग । -पोटा-स्त्री० अल्पवयस्क स्त्री । -राज-पु० मेरावत हाथी ।

हमबाचल-पु० [म०] मिह ।

हमधा-स्त्री० [म०] स्वर्णक्षौरी, अम्बडाह ।

हमाफ़-पु० [सं०] नागकेसर नामक पौधा ।

हमानन-पु० [म०] गणेश ।

हमी-स्त्री० [सं०] हथिनी ।

हमोषणा-स्त्री० [म०] गजपिप्पली ।

हम्भ-वि० [म०] हाथीनशील; धनी । पु० राजा; महावत; शत्रु ।

हम्भा-स्त्री० [सं०] हथिनी; शलकी, सलईका पेड़ ।

हमकान-पु० [अ०] समायना; शक्यता; शक्ति, सामर्थ्य ।

हमदाव-स्त्री० [अ०] मदद, सहायता; मदद करना ।

हमदाही-वि० मदद पाने या मदद लेनेवाला ।

हमरसी-स्त्री० एक प्रसिद्ध मिठाई ।

हमरसीवाल, **हमरसीदार**-वि० हमरसीके ढंगकी बनावटवाला ।

हमलाक-पु० [अ०] संपत्ति, जायदाद, मिलकियत ।

हमलिबा, **हमिलिया**-स्त्री० आलमारी आदिके पहले लगाया जानेवाला साँकल जैसा वह साधन जिसे कोठेमें फँसाकर ताला लगाते हैं ।

हमली-स्त्री० एक पेड़ और उसका फल जो पहले खट्टा, किंतु पकनेपर कुछ मीठा हो जाता है और चटनी, अचार आदिके काम आता है । **मु०**-**बौटाना**-ग्याहकी एक रस जो बर-बधूके मामाको कटनी पकती है ।

हमसाक-पु० [अ०] रीकना; स्तंभन; कंजुसी ।

हमाम-पु० [अ०] नेता, अगुआ; धर्मके कार्योंमें नेतृत्व करनेवाला (मुसल०); हसन-हुसैनकी उपाधि । -**बाषा**-पु० [हिं०] वह हद्दाता जिसमें ताजिबे दफनाये जाते हैं ।

हमामत-स्त्री० [अ०] हमामका पद; नेतृत्व, पेशवाई ।

हमामवस्ता-पु० एक तरहका खरक ।

हमामा-पु० बड़ी पगड़ी ।

हमारत-स्त्री० [अ०] मकान; पक्का मकान ।

हमि-अ० इस प्रकार ।

हमनाई, **हमिनाई**-वि० [अ०] निषेधक, रोक लगाने-वाला (हुकम हमिनाई) ।

हमनाय, **हमिनाय**-पु० [अ०] निषेध, मनाही ।

हमिहान-पु० दे० 'हमिहान' ।

हमिवाज-पु० [अ०] मेद, अंतर; विवेक; मेद, विवेक करना; विशेषता ।

हमिहान-पु० [अ०] परीक्षा, परख; आजमाइश ।

हयत्-वि० [सं०] इतना । अ० यहाँतक ।

हयला, **हयल**-पु० [सं०] परिमित, नियत संख्या या परिमाण; सीमा, हद; परिमाण; संख्या ।

हरण-पु० [सं०] मरुस्थल; बंजर भूमि ।

हरम्भ-वि० [सं०] पीनेमें आनंद माननेवाला; अशिका एक विशेषण । पु० बिजली; बज्राभि; बज्राभि ।

हरपा, **हरिया**-स्त्री० दे० 'हर्पा' ।

हरपिल-वि० दे० 'हर्पिल' ।

हरा-स्त्री० [सं०] भूमि; बाणों, सरस्वती; जल; मद्य; आहार; कोई पेय (दूध आदि) । -**क्षीर**-पु० क्षीरसागर । -**खर**-पु० ओला । वि० जलचर; भूचर । -**ज**-पु० कामदेव ।

हराक-पु० [अ०] पश्चिमी एशियाका एक देश; मेसो-पोटामिया ।

हराकी-वि० हराक देशका । पु० हराकनिवासी; हराकका पौधा ।

हरावत-अ० हरादा करके, संकल्पपूर्वक, जान-बूझकर ।

हरादा-पु० [अ०] सकल्प; इच्छा; विचार ।

हरावती-स्त्री० [सं०] पंजाबकी एक नदी; रावी; बर्मोकी एक नदी; कश्मिरकी एक कन्वा; बटपरी नामक पौधा ।

हरावाव(बव)-पु० [सं०] समुद्र; मेघ; एक पर्वत; अर्जुनका एक पुत्र । वि० सत करनेवाला; सुखकर ।

हरिका-स्त्री० [सं०] एक पौधा ।

हरिण-पु० [सं०] खारी जमीन; बंजर; मरुस्थल ।

हरिमेव-पु० [मं०] विद्वत्तरि ।

हरिविहा, **हरिविहिका**-स्त्री० [सं०] मिरमें होनेवाली पुसिया ।

हरेल-पु० [सं०] विष्णु; गणेश; सद्वाद; वरुण; ब्राह्मण ।

हर्गल-पु०, **हर्गला**-स्त्री० दे० 'अर्गल', 'अर्गला' ।

हर्तिकाव-पु० [अ०] कर्म करना; विशेषतः अपराध या कोई बुरा काम करना ।

हर्-गिर्द-अ० आस-पास, चारों ओर ।

हर्व-पु० [फा०] वह मोहरा जो शाहकी शहसे बचानेके लिए बीचमें लगाया जाता है (शतरंज); चौद बचानेवाला, बीचमें आनेवाला, रोकनेवाला ।

हर्षांक, हर्षांशु-पु० [सं०] एक तरहकी ककरी। वि० हिसक। -**झुकिता**-क्री० एक तरहका खरबूआ, फूट।

हर्षांक-पु० [सं०] मोदमें रहनेवाला जानवर।

हर्षाव-पु० [अ०] पथप्रदर्शन; हिदायत करना; आदेश।

हर्षाल-पु० [अ०] भेजना; पथ भेजना; लगान, माल-गुजारीकी शकटी रकम (नियत समयपर) सट्टर दफ्तरकी भेजना।

हल-वि० [सं०] निद्राल।

हलजाम-पु० [अ०] आरोप, अभियोग, दोष लगाना।

हलवा-पु० एक प्रकारका बौंस।

हलमास-पु० [अ०] होरा।

हलप-वि० [सं०] गतिहीन।

हलप-पु० [सं०] किसान; हलबाह; निधन व्यक्ति।

हलहाऊ-पु० [अ०] मिलाना, जोड़ना; (किसी प्रदेशकी) राज्यमें मिला लेना। -**द्वार**-वि० जिसके साथ माल-गुजारी अदा करनेका हकरारनामा हो।

हलहाम-पु० [अ०] ईश्वरका दिलमें कोई बात डालना, ईश्वरीय प्रेरणा या सदेश।

हलहामी-वि० हलहामसे प्राप्त, ईश्वरसे प्रेरित। -**किताब**-क्री० ईश्वर-प्रेरणामें रचित, ईश्वरकी भेजी हुई धर्मपुस्तक।

हला-क्री० [सं०] दे० 'हवा'। -**घर**-पु० पर्वत। -**बर्ल**-पु० दे० 'हलावत'। -**कुल**-पु० जनुद्वीपके भी नामोंमेंसे एक।

हलाऊ-पु० [अ०] लगाव, संबन्ध; जमींदारी; पूरे गाँवकी जमींदारी रियासत। -**(ऊँ)द्वार**-पु० जमींदार; पूरे गाँवका जमींदार। -**बंद**-पु० पटवा।

हलाऊ-पु० [अ०] निवारक उपाय, उपचार; चिकित्सा।

हलाम-पु० आभा, सूचना-'ढान्यो न सलाम मान्यो साहिको हलाम'-भू०।

हलायची-क्री० एक सुगंधित फल जिसके सूने दाने या बीज ममाले, दवा आदिके काम आते हैं। -**दाना**-पु० हलायचीका दाना; चीनीमें पगे हुए हलायची या पोस्तेके दाने।

हलाहिवात-पु० [अ०] अध्यात्मविद्या।

हलाही-अ० [अ०] (हल-ह-परमेश्वरका सर्वोपनका रूप) हे ईश्वर, या खुदा। पु० ईश्वर, खुदा। -**इश्क**-पु० फजूल खर्च, अपव्यय। -**राज़**-पु० अकबरका चलाया हुआ राज जो अब इमारत आदि नापनेके काम आता है। -**तौबा**-अ० हे ईश्वर, दया कर मेरा अपराध क्षमा कर (किसी पाप-कर्मसे नौजा करने समयकी प्रार्थना)। -**राख**-क्री० रनअंग्रेजी रात।

हलिका-क्री० [म०] पृथ्वी।

हली-क्री० [म०] लघुद, छोटी तलवार, करवाल।

हलीष, हलीय, हल्लिष, हल्लिख-पु० [म०] हिलसा मछली।

हलेकिट्टक-वि० [अ०] विजलीका; विजलीकी शक्तिसे होने-वाला, वैद्युत। -**पावर**-पु० विजलीकी ताकत, विद्युच्छक्ति। -**काइट**-क्री० विजलीकी रौशनी।

हलेकिट्टसिटी-क्री० [अ०] विजली, विद्युत्।

हलजाम-पु० दे० 'हलजाम'।

हस्तिजा-क्री० [अ०] प्रायना, विनती, निवेदन।

हस्तिहास-क्री० [अ०] ध्यान देना; कृपा, अनुग्रह।

हस्तिमास-पु० [अ०] निवेदन, अर्च।

हस्तिबा-पु० [अ०] मुल्लबी होना, टलना।

हृष्य-पु० [अ०] हान, जानकारी; विद्या, शास्त्र। -**(अ)**

अव्य-पु० साहित्यशास्त्र। -**इलाही**-पु० अध्यात्मविद्या, दर्शन, इलाहिवात।

हृष्ट-क्री० [अ०] कारण; रोग; दोष; झंझट; दुर्व्यसन, गुराह। **मु०**-**पालना**-क्री० झंझट, घुरी आदत आदि लगा लेना।

हृल्ल-पु० [सं०] एक तरहका पक्षी।

हृला-पु० चमड़ेपर निकलनेवाला छोटा कड़ा अर्द्ध।

हृली-क्री० उड़नेवाले कीड़ेके बच्चोंका अंडेसे निकलनेके बादका रूप।

हृल्ल-पु० [म०] एक तरहकी मछली; एक दैत्य।

हृल्ल-क्री० [सं०] दे० 'हृल्ल'।

हृव-अ० [सं०] समान, सद्यः, मानिंद।

हृशरत-क्री० [अ०] सुख-विलास, मौज-बैन। -**गाह**-क्री०, पु० विलासमयन, राग-रंगका स्थान।

हृसा-क्री० [अ०] रात्रिका अंधकार; रात। -**की नमाज़**-रात (पहले पहर)की नमाज़।

हृशाअत-क्री० [अ०] प्रकट, प्रसिद्ध करना; प्रचार करना, फैलाना; प्रकाशित करना; छापना।

हृशारत-क्री० [अ०] हृशारा करना; संकेत, मैन।

हृशारा-पु० [अ०] संकेत, मैन; गुप्त प्रेरणा छिपी, अस्पष्ट सूचना। -**(रे)बाज़ी**-क्री० हृशारे करना, अस्वीमे (विशेषतः प्रेमी प्रेमिकका) मदेन करना।

हृशीका-क्री० [म०] दे० 'हृपीका'।

हृशक-पु० [अ०] प्रेम, चाह, अनुग्रह; आसक्ति। -**देखा**-पु० एक बेल जो सुंदरताके लिए लगायी जाती है। -**बाज़**-वि० प्रेमी, रमिक, दिलफेंक। पु० ऐसा व्यक्ति। **मजाज़ी**-पु० लौकिक, मानव प्रेम; भोग-वासनायुक्त प्रेम। -**हृत्रीकी**-पु० ईश्वरने प्रेम; आत्माकी परमात्मासे मिलनेकी तत्त्व; सच्चा, वामनारहित प्रेम।

हृस्तहार-पु० [अ०] दे० 'हृदितहार'।

हृस्तहारी-वि० [अ०] दे० 'हृदितहारी'।

हृदितआल, हृदितवाल-पु० [अ०] नश्कना, प्रज्वलित होना; अडकना; उल्टेना। -**अंगेज़**-वि० उत्तेजित कर देनेवाला; मोहोत्पादक।

हृदिनआलक, हृदिनआलक-पु० [अ०] अडकाना; उत्सुकाना; चिरागकी बत्ती उमकाना; बत्ती उमकानेका तिनका।

हृदितआक-पु० [अ०] चौक होना; चाह, मालुमा।

हृदितराक-पु० [अ०] शिरकत, साझा।

हृदितराकिवा-पु० [अ०] समाजवादी व्यवस्थामें उत्पादन-के साधनोंपर सयुक्त स्वाभिव्यक्ति।

हृदितहा-पु० [अ०] भूख; इच्छा।

हृदितहार-पु० [अ०] प्रसिद्ध करना; प्रसिद्धि; विज्ञापन; सूचना। -**नीलाम**-पु० किसी चीजके नीलामकी सार्वजनिक सूचना।

हृदितहारी-वि० [अ०] जिसका हृदितहार निकला हो,

विहायित। -**मुजरिम**-पु० वह करार अपराधी श्रितकी गिरफ्तारीके लिए इशतहार (शायः इनामकी सूचनाके साथ) निकला हो।

इष-पु० [सं०] आशिन मास; बलवान् व्यक्ति।

इषय-**खी**-**खी** इच्छा, कामना।

इषणि-**खी**-**खी** [सं०] मेरना; इच्छा।

इषणवा-**खी**-**खी** [सं०] बलवती इच्छा।

इषय-**वि**-**वि** [सं०] बाणविषा में कुशल।

इषिका, **इषी का**-**खी**-**खी** [सं०] मरपत, मृत्यु आदिके बीचकी सीक; बाण; कुंभी; बाणकी आँसला डेला।

इषित-**वि**-**वि** [सं०] चालिन; प्रेषित; उत्प्रेषित; नीत्र।

इषु-पु० [सं०] बाण, तीर; पाँचकी संख्या; जीवाके मध्य-विन्दुने परिचितक स्त्रीकी गूदी स्त्रीकी रेखा(ज्या०)। -**कार**-

पु० बाण बनानेवाला। -**धर**-पु० तीरंदाज, बानेत।

-**धि**-पु० तुण्डी। -**पथ**-पु० तीरकी मार, तीरकी पहुँचकी दूरी। -**पुष्पा**-**खी**-**खी** एक पौधा, सरपुष्पा।

-**मात्र**-पु० धनुष्की लबाईके बराबर एक माप। ३ फुट।

इषुपुष्पा-**खी**-**खी** [सं०] गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना।

इषुमान्(मन्)-पु० [सं०] तीरंदाज।

इषल-पु० [सं०] कितनेका फाटकपर रखी जानेवाली एक तरहकी नौप।

इष्ट-**वि**-**वि** [सं०] बाहा इजा, अभिलषित; वाछनीय; स्पृहणीय; अनुकूल; प्रिय; उद्दिष्ट; पूजित। पु० मस्कार; अग्नि-होत्र; नष्टाध्ययन, अतिविमत्कार आदि कर्म; ईद; मित्र;

विष्णु; यज्ञ; इच्छा; प्रिय व्यक्ति; पति; इष्टदेव; घर।

-**कापय**-पु० वीरगमूल। -**काल**-पु० किसी घटनाके घटित होनेका ठीक समय (क० ज्यो०)। -**गंध**-पु०

सुगन्धित पदार्थ; बालू। -**देव**-**देवता**-पु० आराध्यदेव; कुम्भदेवता। **सु**-**होना**-किसी देवताकी आराधनामें

मिष्टि प्राप्त कर लेना, उमने आवाहन और अभिलषित

काय करानेमें मग्न होना।

इष्टका, **उष्टिका**-**खी**-**खी** [सं०] ईंट। -**चित**-**वि**-**वि** ईंटोंमें

बना हुआ। -**ग्याय**-पु० नीबू रखना, शिलन्पास।

-**पथ**-पु० ईंटों से बना हुआ रास्ता।

इष्टाप्ति-**खी**-**खी** [सं०] वादीका ऐसी बात कहना जो प्रति-

वादीके अनुकूल हो; इच्छित घटनाका होना।

इष्टार्त-पु० [सं०] इष्ट और पूर्ण कर्मोंकी कृपा (पूर्त-कुल-गालाब खुरबाना, मंदिर बनवाना, बाग लगवाना, अन्नदान करना आदि)।

इष्टि-**खी**-**खी** [सं०] इच्छा, चाह; निवेदन; निमंत्रण; प्राप्त करनेका प्रयत्न; यज्ञ; हवि। -**पथ**-पु० केंजूस; असुर।

-**पशु**-पु० बलिका पशु।

इष्टु-**खी**-**खी** [सं०] इच्छा, चाह।

इष्म-पु० [सं०] कामदेव; वसंत ऋतु; गमन; मार्ग।

इष्म-पु० [सं०] वसंत ऋतु।

इष्म-पु० [सं०] आध्यात्मिक गुरु।

इष्मनी-**खी**-**खी** [सं०] बाणकी नोक।

इष्मन, **इष्मन्**-पु० [सं०] धनुष।

इष्मन्-पु० [सं०] धनुष; तीरंदाज।

इस्त-सर्व० 'यह'का विभक्तिके पहले प्रयोगमें जानेवाला

रूप।

इस्तर्द्वर-पु० सिंहरद्वर, अलेकुँवर।

इस्तर्द्वरिषा-पु० भिलका एक प्रसिद्ध नगर और बंदरगाह।

इस्तर्पज-पु० मुर्दा बादल, स्पर्ज।

इस्तर्पात-पु० कफा और बढ़िया लोहा, फौलाद।

इस्तर्बगोल-पु० एक सुभाबदार दाना जो अतीसार आदि रोगोंमें दिया जाता है।

इस्तर्माईल-पु० [इ०] इनाहोमके पुत्र।

इस्तर्माईमी-पु० [इ०] खोया मुसलमानोंका एक फिर्की।

इस्तर्माईल-पु० [इ०] याकूब।

इस्तर्माईली-पु० [इ०] याकूबके बंराज, यहुदी।

इस्तर्माज-पु० एक सिपाह जिसका राजा जो सारंगीकी तरह कमानीने बजाया जाता है।

इस्तर्माज-पु० [का०] फजूलखर्ची, उष्ककपन।

इस्तर्माजील-पु० [अ०] इसलामके अनुसार वह फरिश्ता जो कबामन (प्रलय)के दिन सूर (तुर्ही, नरसिंह) कूँवेगा

और जिसके पहली बार बजानेमें जीवन प्रणी मृत और दूसरी बार बजानेमें सब मृत प्राणी जीवित हो जायेंगे।

इस्तर्माज-पु० [अ०] आग्रह, इठ; आग्रह करना।

इस्तर्माज-पु० [अ०] स्वीकार करना; ईश्वरेच्छाके सामने मिर झुका देना; मुसलमानोंका, मुहम्मदका चलाया हुआ

धर्म; मुसलमानोंकी मजहि, मुसलिम जगद्।

इस्तर्माजी-**वि**-**वि** [अ०] इसलाम संबंधी।

इस्तर्माह-पु० [अ०] सुधारना, शोधना, गलती दुरुस्त

करना; रचनाका सशोधन (दिना, मैना)।

इस्तर्माह-पु० [अ०] इस्तर्माज आदि धर्मोंके एक पैगंबर जो इनाहोमके बेटे थे।

इस्तर्माह-पु० [अ०] पहले दस्त आना, अतीसार।

इस्तर्माह-**खी**-**खी** इशारा, संकेत।

इस्तर्माह-पु० [अ०] गिरना, पतन; गर्भपात।

इस्तरी-**खी**-**खी** [अ०] 'इस्तरी'।

इस्तर्मा-पु० [अ०] पानीने धोना; शौच; पेशाब करनेके

बाद उनकी बूँतोंकी मिट्टीके ढेनेमें सुखाना। -**(जे)**का

ढेला-तुच्छ, निकम्मा आदमी। **सु**-**लबाना**-मित्रता

करना।

इस्तर्माज-पु० [अ०] [अ०] 'इस्तर्माज'।

इस्तर्माज-पु० [अ०] अगवानी, स्वागतके लिए आगे

जाना; स्वागत।

इस्तर्माज-पु० [अ०] हदता, निश्चय; संकल्पकी हदता;

स्वाधीनता।

इस्तर्माज-पु० [अ०] स्वाधीनता प्रार्थना, फरियाद; फौज-

दारी नालिश।

इस्तर्माज-**वि**-**वि** [अ०] सदा रहनेवाला, स्थायी, सार्व-

कालिक। -**बंदोबस्त**-पु० जमीनका वह बंदोबस्त जिसमें

मालगुजारी सदाके लिए निश्चिन हो जाती है, नये बंदो-

बस्तपर बढायी नहीं जा सकती।

इस्तरी-**खी**-**खी** पीतल या लोहेका वह औजार जिसके

भीतर जलते कीयले रखकर, या बिजलीसे, धुले या सिले

कपड़ोंकी धिकन दूर की और तब बैठायी जाती है।

इस्तिकाह-पु० [अ०] शब्दका मान लिया हुआ परिभाषा-

सिद्ध अर्थ; किसी कला, शास्त्र, व्यवसायकी विशेष पारि-
भाषिक शब्दावली ।

इस्त्रिकादी-वि० [अ०] पारिभाषिक, काण्डिक ।

इस्त्रिसनाय-पु० [अ०] अलगा करना; (गणना, कवन आदिमें) शामिल न करना; अपवादभूत मानना या होना ।

इस्तीफा-पु० [अ०] माफी माँगना; काम, नौकरीसे छुट-
कारकी प्रार्थना; त्यागपत्र ।

इस्तेमाल-पु० [अ०] काममें लाना, व्यवहार, उपयोग ।

इस्ती-स्त्री० दे० 'स्त्री' ।

इस्पर्ज-पु० दे० 'इसपर्ज' ।

इस्म-पु० [अ०] नाम, सहा । -**बबीसी-स्त्री०** नाम-
लिखाई; (गवाहों आदिकी) नाम-सूची । -**सिक्रत-पु०**
विशेषण-पद (श्या०) ।

इह-अ० [सं०] यहाँ, इस जगह; इस लोकमें; अब, इस
कालमें । पु० यह लोक । -**काल-पु०** यह जीवन ।

ई

ई-देवनागरी वर्णमालाका चौथा (चतुर्थ) वर्ण, 'ह'का दीर्घ रूप ।

ईस्व-पु० [सं०] झूलना, चक्कर खाना ।

ईगुर-पु० काल रंगका एक खनिज द्रव्य (सौभाग्यवती
चिद् खियाँ माथेपर इसकी बिंदी लगाती है) ।

ईदना-सं० कि० ऐदना, खींचना ।

ईद-स्त्री० आयातकार सोनेमें डालकर पकाया हुआ
मिट्टीका डुक्का जो दीवार बनानेके काममें आता है; धातु-
का चौभेड़ा डला हुआ डुक्का; ताशके चार रंगोंमेंसे एक ।
-**कारी-स्त्री०** ईदका काम । -**परधर-पु०** कुछ नहीं ।

इउ-का छल्ला देना-कच्ची दीवारकी मजबूतीके लिए
उससे सटाकर ईदें चुनना । (**वेद या दाई-की मस्जिद**
अलग बनाना-अपनी ही बातपर चलना; निराला ढग
रखना (ध्वं०) । -**गढ़ना-ईदोंको काट-छाँटकर जोड़ाईके काम-**
में आने योग्य बनाना । -बुनना-ईदोंको जोड़कर दीवार

उठाना । -पाथना-गीली मिट्टीको माँचेमें डालकर ईदकी
आकार देना । (गुद दिलाकर)-मारना-मलाईकी
आशा बंधाकर घुराई करना । -से ईद बजना-मकानका

ध्वस्त होना । -से ईद बजाना-मकान ध्वस्त करना ।

ईदा-पु० दे० 'ईद' ।

ईदरी, ईदुरी-स्त्री० गेंडुरी, पिकई ।

ईत-पु० सान चढ़ाते समय उसके नीचे रखी जानेवाली ईद ।
ईदर-पु० पेयूषकी ओटकर बनायी जानेवाली एक मिठाई ।

ईज-पु० जलावन, जलानेकी लकड़ी, उपला आदि ।

ई-पु० [सं०] कामदेव । स्त्री० लक्ष्मी । * सर्व० यह ।
* अ० ही ।

ईकार-पु० [सं०] 'ई' स्वर ।

ईकारांत-वि० [सं०] जिसके अंतमें 'ई' हो (शब्द) ।

ईकल-वि० पु० [सं०] देखनेवाला; विचार करनेवाला ।

ईक्षण-पु० [सं०] देखना, दर्शन, दृष्टि; देखमाल; आँख;
विवेचन; आलोचना ।

ईक्षणिक, ईक्षणीक-पु० [सं०] मविष्यवक्ता, ज्योतिषी ।

-लीला-स्त्री० इस लोकका जीवन । -**छोक-पु०** यह
लोक; यह जीवन । -**कौकिक-वि०** इस लोकका, इस
लोक-संबंधी; इस लोकमें सुख देनेवाला ।

इहतिमाम-पु० [अ०] प्रबंध; आयोजन; निगरानी ।

इहतिमाल-पु० [अ०] समावना; शक; संदेह ।

इहतिबाज-पु० [अ०] अभाव; गरज; हाजत ।

इहतिबास-स्त्री० [अ०] बचाव, परहेज; सावधानी ।

इहतिबास-अ० [अ०] सावधानीकी दृष्टिमें ।

इहतिपाती काररवाई-स्त्री० किसी अनिष्टकी संभावनाकी
रोकने लिए किया जानेवाला उपाय ।

इहतिखाम-पु० [अ०] स्वप्नमें बीर्यपात होना, स्वप्नदोष ।

इहसान-पु० [अ०] नेकी, भलाई, उपकार; नेकी, उपकार
करना । -**क्रामोश-वि०** कृतघ्न, उपकार न मानने-
वाला । -**मंथ-वि०** कुतूह, कण्ठ ।

इहामुत्र-अ० [सं०] इस लोक और परलोक दोनोंमें । पु०
यह लोक और परलोक ।

ईक्षा-स्त्री० [सं०] दर्शन, दृष्टि; पर्यालोचन, विवेचन ।

ईक्षिका-स्त्री० [सं०] आँख; दृष्टि, निगाह ।

ईक्षित-वि० [सं०] देखा हुआ; विवेचित ।

ईक्षिता(यु)-वि० पु० [सं०] देखनेवाला ।

ईक्ष्यबाष्क-पु० [सं०] (प्रफोटर) दे० 'शौष्यशोधक' ।

ईक्ष-स्त्री० गप्ता, जख ।

ईखना-सं० कि० देखना । स्त्री० दृष्टि, ईक्षा ।

ईखन-पु० ईक्षण, आँख ।

ईखना-सं० कि० ईक्षा करना ।

ईखा-स्त्री० दे० 'ईक्षा' ।

ईजति-स्त्री० ईजत, मर्यादा ।

ईजा-स्त्री० [अ०] पीसा, कष्ट ।

ईजाइ-स्त्री० [अ०] कोई नयी चीज बनाना, निकालना,
आविष्कार ।

ईजान-वि० [म०] यह करनेवाला ।

ईद-वि० पु० इष्ट; मित्र; प्यारा ।

ईदना-अ० कि० चाहना ।

ईदिक-स्त्री० मित्रता, प्रीति; यत्न; चाह ।

ईदी-स्त्री० आला । * वि०, स्त्री० प्यारी ।

ईदन-पु० [सं०] प्रशंसा करना ।

ईदा-स्त्री० [सं०] स्तुति, प्रशंसा ।

ईदित-वि० [सं०] म्नुत, प्रशंसित ।

ईदुरी-स्त्री० दे० 'ईदुरी' ।

ईद-वि० [म०] प्रशंसा करने योग्य ।

ईद-स्त्री० इष्ट ।

ईदर-वि० इतगनेवाला; ढीठ; साधारण; नीच ।

ईति-स्त्री० [सं०] बाधा, उपद्रव; खेतीकी नुकसान पहुँचाने-
वाले छ उपद्रव-अग्निदृष्टि, अमादृष्टि, चूहों, दिव्रियों और
पक्षियोंका फसल खा जाना और दूसरे राजाकी चढ़ाई;
मंकामक रोग; कलह; प्रवास ।

ईयर-पु० [अ०] आकाश, अंतरिक्ष; एक अत्यंत सूक्ष्म

पदार्थ जो समस्त दिक्(क्षुब्ध स्थान)में फैला हुआ है और वायु तथा अन्य पदार्थोंके परमाणुओंके मध्यवर्ती आकाशमें भी व्याप्त है; सुरासार(मलकोहल)पर गंधकी या दूसरे तेजावोंकी क्रियासे उत्पन्न वर्णीय द्रव ।

ईव-खी० [अ०] सुशोका दिन, लोहार; (मुसलमानोंका) एक लोहार । -**राह-खी०**, पु० ईदके दिन मुसलमानोंके एकत्र होकर नमाज पढ़नेकी जगह । **मु०-का बाँह-ऐसी** वस्तु जिसके दर्शन दुर्लभ हैं ।

ईदिया-पु० ईद या दूसरे त्योहारोंपर एक-दूसरेके यहाँ भेजी जानेवाली सौगात ।

ईदी-खी० ईदका इनाम, त्योहारी; ईद या इस प्रकारके त्योहारके अवसरपर उसके खानमें लिखित पद्य; वह सुंदर हाथिवेदार कागज जिसपर यह पद्य लिखा हो; वह पुरस्कार या त्योहारी जो ईदी लिखनेके लिए मौलवियोंकी उनके शागिर्दोंमें मिलनी है ।

ईदुम्मुहा-खी० [अ०] दसवीं जिल्हिनको मनायी जानेवाली ईद; बकरीद ।

ईदुलक़ितर-खी० [अ०] रमजानकी समाप्तिपर नया चाँद होनेके दूसरे दिन मनाया जानेवाला त्योहार ।

ईरश-वि० [स०] ऐसा, इस तरहका । अ० देने, इस तरह ।

ईम्न-पु० [स०] पानेकी इच्छा करना ।

ईप्ना-खी० [स०] पानेकी इच्छा; चाह, इच्छा ।

ईप्नित-वि० [स०] चाह। हुआ; जिमकी चाह हो, प्रिय ।

ईप्नु-वि० [स०] इच्छा, चाह रखनेवाला ।

ईफाय-पु० [अ०] पूरा करना, नचनपालन । -(ये) बाड़ा-पु० बाड़ा पूरा करना, प्रतिष्ठापालन ।

ईबी-सीबी-खी० सौत्कार, (रतिकालमें स्त्रीका) सीन्दी करना ।

ईमन-पु० एक रागिनी, ऐमन । -**करुणान-पु०** एक मिश्रित राग ।

ईमा-ईमाय-पु० [अ०] इमारा, सकेन; ध्वनि ।

ईमाय-पु० [अ०] धर्मविश्राम; ईश्वरपर विश्राम; धर्म; सचाई; खरापन; लेन-देन आदिमें सचाई; दयानत; नीयन । -**दार-वि०** सचा, विश्रमनीय; रूपवेष्टनेके भ्रामलेमें मन्त्रा, दयानतदार । **मु०-का सौदा-करा** व्यवहार । -**की कहना-सच** कहना, मन्त्री बात कहना । -**ठिकाने न रहना-धर्मपर** हट न रहना । -**बिगाना-नीयतमें** खामी आना । -**देना-सत्य** छोड़ना । -**बिगाना, में कर्क** आना-नीयत बिगड़ना; धर्ममें सच्ची निष्ठा न रहना । -**छाना-किस्ती** मत, सिद्धांत या धर्मकी मन्त्रांपर विश्राम करना; उमे धर्म-रूपमें स्वीकार करना ।

ईर०-खी० दे० 'ईद' । पु० [स०] वायु । -**ज, पुत्र-पु०** इन्माम् । -**पाह-पु०** एक सर्प ।

ईरला०-खी० दे० 'ईर्या' ।

ईरण-वि० [स०] क्षुब्ध या अश्विर करनेवाला । पु० वायु; कथन; घमन; प्रेषण; कष्टपूर्ण मन्त्रवाक्य ।

ईरमद्-पु० दे० 'इरमय' ।

ईराम-पु० [फा०] फारमका देश ।

ईरानी-वि० [फा०] ईरानका । पु० ईरानवासी ।

ईरिण-वि० [स०] उत्तर । पु० उत्तर जमीन ।

ईरित-वि० [स०] प्रेषित; कथित; कथित; गत ।

ईर्य-वि० [स०] क्षुब्ध; बराबर चलने या भड़कानेवाला । पु० बाहु; फोहा; घाव ।

ईर्या-खी० [स०] यतियोंकी तरह भ्रमण करना ।

ईर्याह-पु० [स०] एक तरकी की ककड़ी, फूट ।

ईर्याह-खी० दे० 'ईर्या' ।

ईर्या-खी० [म०] दे० 'ईर्या' ।

ईरित-वि० [म०] जिसने ईर्या की गयी हो ।

ईर्य-वि० [म०] डार करनेवाला ।

ईर्यक-वि० [स०] दे० 'ईर्य' । पु० एक प्रकारके नपुंसक (ये किसीकी मैथुन करते देखकर कामोत्तेजित होते हैं) ।

ईर्या-खी० [स०] दूसरेकी बदती न देख सकना, डार, जलन । -**रति, बंड-पु०** अर्द्धनपुंसक पुरुष ।

ईर्याह-वि० [स०] दे० 'ईर्य' ।

ईर्यु-वि० [स०] डार करनेवाला ।

ईह-खी० [अ०] बौंग मछली ।

ईकि, ईकी-खी० [स०] छोटी तलवार; लठ्ठ ।

ईश-पु० [स०] स्वामी, मालिक; राजा; पति; ईश्वर; शिव; एक रुद्र; पारा; ११की सव्या; एक उपनिषद् । वि० ऐश्वर्ययुक्त; समर्थ । -**कोण-पु०** उत्तर-पूर्वका कोना । -**नगरी, पुरी-खी०** काशी । -**बल-पु०** पाशुपतास्त्र । -**सख-पु०** कुबेर ।

ईशता-खी० [स०] प्रभुत्व; स्वामित्व ।

ईशा-खी० [म०] ऐश्वर्य; अधिकार; ऐश्वर्ययुक्त स्त्री; दुर्गा ।

ईशान-वि० [स०] ऐश्वर्ययुक्त; आधिपत्ययुक्त; शासक । पु० शिव; एक रुद्र; विष्णु; शिवरूप सूर्य; उत्तर-पूर्वका कोना; आर्द्रा नक्षत्र; एक माध्य; ज्योति, कामि, प्रकाश; शनी रुद्र । **ईशानी-खी०** [म०] दुर्गा; शास्त्रकी वृक्ष ।

ईशिता-खी०, ईशित्व-पु० [स०] ईश्वरत्व; प्राधान्य; आठ सिद्धियोंमें एक (इसके सिद्ध हो जानेपर दूसरोंपर प्रभुत्व किया जा सकता है) ।

ईशी(शिव)-वि० [स०] शासन करनेवाला । पु० देवता; पति; स्वामी ।

ईश्वर-पु० [स०] स्वामी; राजा; भनी या बडा व्यक्ति; पति; जगन्निवाता, परमेश्वर; आत्मा; एक स्वत्वर; शिव; काम-देव; पारा; पीतल; रामानुजी वैष्णवोंके अनुसार तीन पदार्थों(ईश्वर, चित् और अचित्)में एक । वि० ऐश्वर्ययुक्त; शक्तिमान्; समर्थ; भनी । -**निषेध-पु०** नास्तिकता ।

ईश्व-वि० ईश्वरमें विश्राम करनेवाला । -**प्रणिधान-पु०** संपूर्ण कर्म और उनके फल ईश्वरकी अर्पित कर देना ।

ईश्याह-पु० ईश्वरकी कृपा । -**भाव-पु०** ऐश्वर्य, स्वामित्व, सामर्थ्य इ० । -**विभूति-खी०** परमेश्वरके विभिन्न रूप । -**सदा(स्)-पु०** देवमंदिर ।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर-पु० दे० 'विद्यासागर' ।

ईश्वरा-खी० [म०] दुर्गा; लक्ष्मी या कोई शक्ति ।

ईश्वराधीन-वि० [स०] ईश्वरकी इच्छापर अवलंबित ।

ईश्वरी-खी० [स०] दुर्गा; लक्ष्मी; कोई शक्ति; लिंगिनी, बंधा कर्कटी, क्षुद्रव्रता, नाकुली आदि वीधे ।

ईश्वरीय-वि० [स०] ईश्वरका, ईश्वरसंबंधी; ईश्वर द्वारा किया गया, दिया गया या भेजा गया ।

ईष-पु० [सं०] आश्विन मास; तीसरे मनुका एक पुत्र; शिवका एक अनुचर ।
ईषण-वि० [सं०] शीघ्रता करनेवाला ।
ईषणा-स्त्री० [सं०] शिघ्रता; शीघ्रगति ।
ईषत्-वि० [सं०] योषा । अ० कुष्ठ-कुष्ठ; आंशिक रूपमें ।
 -**कर-**वि० अशमात्र या कम करनेवाला; सरल, आसान ।
 -**पुरुष-**पु० नीच व्यक्ति । -**स्पृष्ट-**पु० अर्धस्तर (य, र, क, घ) ।
ईषद्--'ईषत्'का समासगत रूप । -**उष्ण-**वि० योषा गरम, कुनकुना । -**दर्शन-**पु० चितवन; ईषद्दृष्टि ।
ईषद्वास-पु० [सं०] मुक्तराष्ट्र ।
ईषना-स्त्री० एषणा; बलवती इच्छा ।
ईषलभ-वि० [सं०] अल्प मूल्यमें मिलनेवाला ।
ईषा-स्त्री० [सं०] हरित । -**दृष्ट-**पु० हल्की मुठिया ।
 -**दत्त-**पु० लंबे दाँतोंवाला हाथी; हल्की मूठ; हाथीका दाँत । वि० जिसके दाँत लंबे हों ।
ईषिज्ञ, **ईषीज्ञ-**स्त्री० [मं०] हाथीकी अलंका गोलक; चित्रकारकी कूची; बाण; सीक ।
ईषिर-पु० [मं०] अधि ।
ईष्म-पु० [सं०] कामदेव; वसंत ऋतु ।

ईष्व-पु० [सं०] गुरु, आचार्य ।
ईस-पु० दे० 'ईश' ।
ईसन-पु० ईशान कोण ।
ईसबगोल, **ईसरगोल-**पु० दे० 'इसबगोल' ।
ईसर-पु० महादेव; ऐश्वर्य ।
ईसरमूल-पु० रुद्रमूला या रुद्रलता नामक पौधा ।
ईसवी-वि० [अ०] ईसासे संबंध रखनेवाला, मसीही ।
 -**सन्-**पु० ईसाके जन्मकालमें बला हुआ सन् ।
ईसा-पु० [अ०] ईसाई धर्मके प्रवर्तक, मसीह ।
ईसाई-पु० [अ०] ईसा-प्रवर्तित धर्मकी माननेवाला क्रिश्चियन ।
ईसान-पु० ईशान कोण ।
ईसार-पु० [अ०] स्वार्थत्याग, दूसरेके हितके लिए अपनी हानि करना ।
ईद्वार-स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह; उद्यम, चेष्टा । -**सूरा-**पु० भेडिया; रूपकका एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं (ना०) । -**बुक-**पु० भेडिया ।
ईद्वार्यी(धिन्)-वि० [सं०] धनलाभके लिए सचेष्ट; उद्देश्य-पूर्तिके लिए प्रयत्नशील ।
ईहित-वि० [सं०] चाहा हुआ, अभिलषित, चेष्टित ।

उ

उ-देवनागरी वर्णमालाका पौनवा (स्वर) वर्ण । इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है ।
उं-अ० प्रश्न, क्रोध आदिका सूचक एक अव्यय शब्द ।
उंङ्क-पु० [मं०] खटमल ।
उंखारी-स्त्री० दे० 'उखारी' ।
उंगनी-स्त्री० आँगने अर्थात् माछीकी धुरीमें तेल लगानेकी क्रिया ।
उंगल-पु० दे० 'अंगुल' ।
उंगलाना-स० क्रि० तंग करना, परेशान करना ।
उंगजी-स्त्री० हाथके फलोंके आकारवाले अतिम भाग जो छोटी वीरोंके पकड़ने-उठाने आदिके साधन होते हैं; पांवके ऐने ही भाग । -**मिकाब-**पु० नाचकी एक गत । मु०
 -**उठना-**वदनामी होना, उपहासका पात्र होना ।
 -**उठाना-**नीच, लांछन लगाना, बदनाम करना; बुरी निगाह, हानि पहुँचानेकी दृष्टि दे देना । -**करना-**परेशान करना, सनाना । -**चटकाना-**उंगलियोंमें चट-चट शब्द करना । -**चमकाना-**उंगलियोंकी देह, नखरेने हिलाना ।
 -**पकड़ते पहुँचा पकड़ना-**योषा पावर अधिक पानेका प्रयत्न करना, किसीकी भलमनमीका अनुचित लाभ उठानेका यत्न करना । -**रखना-**(किसीकी कृतिमें) दोष दिखाना । -**लगाना-**(किसी काममें) नाममात्र सहायता या सहाय देना, हाथ लगाना । -**(किये) नचाना-**उंगलियों चमकाना । -**(किये)पर नचाना-**इच्छा-नुसार काम करना, इशारोंपर नचाना; हैरान करना ।
उंघाई-स्त्री० उंधनेकी क्रिया, झपकी ।
उंधन-स्त्री० अंधान ।
उंधना-स० क्रि० अंधान कसना ।

उंखाई-स्त्री० ऊँचापन; ऊँचेपनकी मीमांसा; बडाई ।
ऊँखान-पु० ऊँचाई ।
ऊँखाना-स० क्रि० ऊँचा करना, ऊपर उठाना ।
ऊँचाव-पु० ऊँचाई ।
ऊँचास-वि० चालीस और नौ । पु० ४९वीं मस्य्या ।
ऊँचास-पु० ऊँचाई ।
ऊँछ-पु० [मं०] स्वेतमें (सुनाईके बाद) या रास्तेमें पड़े हुए दाने जीविकाके लिए चुनना, मीला बीनना । -**बुस्ति-**स्त्री० स्वेतमें छूटे हुए दाने चुनकर पुनर्र करना । वि० इस प्रकार निर्वाह करनेवाला । -**शिल** पु० उछवृत्ति ।
 -**शील-**वि० उछवृत्तिमें जीविका करनेवाला ।
ऊँजरिया-स्त्री० चाँदनी; रोशनी । वि० स्त्री० उँजेली ।
ऊँजियार-पु० प्रकाश । वि० प्रकाशमान; उज्ज्वल ।
ऊँजियारी **ऊँज्यारी-**स्त्री० चाँदनी, प्रकाश । वि० स्त्री० प्रकाशयुक्त ।
ऊँजेरा, **ऊँजेला-**पु० दे० 'उँजेला' ।
ऊँटवा, **ऊँटरा-**पु० गायकी अगला भाग तमीनपर टिकाने-के लिए जुके नीचे आयाही जानेवाली लकड़ी ।
उँहक-पु० [मं०] एक तरहका कुछ रोग ।
उँडेला-स० क्रि० दे० 'उँडेला' ।
उँदन-पु० [मं०] गीन्ना करना, मीगोना ।
उँदरी-स्त्री० गंजा होना ।
उँदूर-पु० बल्मकी जामिकी एक कौँटेदार झाड़ी ।
उँदुर, **उँदुर,** **उँदूर-**पु० [मं०] चूहा । -**कर्णिका,** -**कर्णी-**स्त्री० मृग्याकानी नामकी लता ।
उँबर, **उँबुर-**पु० [मं०] चौखटकी ऊपरकी लकड़ी ।
उँबी-स्त्री० [सं०] आँचपर धकायी हुई जौ-गेहूँकी हरी शाल ।

उह-अ० अस्वीकार, हृणा, वेदना आदिका स्वक शब्द ।
उ-पु० [सं०] शिव; ब्रह्मा; चंद्रमण्डल ।
उभना-अ० कि० उभना, उदय होना ।
उभावा-स० कि० उगाना; मारनेके छिप हाथ या हथियार उठाना ।
उभय-वि० ऋणमुक्त; जो किसीके प्रति अपने कर्तव्यका पालन कर चुका हो ।
उकचन-पु० मुचकुंदका फूल ।
उकचना-अ० कि० उखड़ना, उचड़ना; हट जाना ।
उकटना-स० कि० किसीपर अपने उपकार वा उसके अपकारको बार-बार कहना, उपटना ।
उकटा-वि० उकटनेवाला । पु० उकटनेका कार्य ।-**पुरान**-पु० पुरानी शिक्षायत्तोंकी उपटना; गये मुँदे उखाड़ना ।
उकटना-अ० कि० सुखकर रेंठ जाना ।
उकठा-वि० सुखकर रेंठा हुआ ।
उकई-पु० बैठनेका वह ढग जिसमें पुटने (खड़ेबल) मोड़े जाते हैं (बैठाना) ।
उकत-स०-खी० दे० 'उक्ति' ।
उकताना-अ० कि० ऊभना, अधीर होना ।
उकसाहट-खी० अधीरता, जलबाजी-‘पर जानेकी उकताहटमें थे’-अमर० ।
उकति-स०-खी० दे० 'उक्ति' ।
उकलना-अ० कि० लपेट या ढँठनका खुलना, उपड़ना; उखड़ना ।
उकलाई-खी० उलटी, कै; मिथली ।
उकलाना-अ० कि० कै करना । * अकुलाना, व्याकुल होना-‘आवण कह गये अजहुं न आवे जिवड़ी अति उकलावै’-मीरा ।
उकलैदिस-पु० रंखागणितका आविष्कारक यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड; रंखागणित ।
उकवत, उकवथ-पु० एक चर्मरोग, एक तरहकी सूखी या गीली दाद ।
उकमना-अ० कि० उभरना; अकुरित होना ।
उकमनि-खी० उभार ।
उकमाना-स० कि० उभारना; भड़काना; उछाल देना; (दीयेकी बत्तीकी) आगे मरकाना, बढ़ाना । अ० कि० हट जाना-‘हाथिनके हीटा उकसाने’-भू० ।
उकमाहट-खी० उकमानेका भाव; उत्तेजना ।
उकमौहा-वि० उठना, उभरना हुआ ।
उकौवा-पु० भूसा मिला हुआ वह अन्न जो जमी ओसावा न गया हो ।
उकाव-पु० [अ०] गरुड; बड़ी जातिका गिड़ ।
उकार-पु० [सं०] शिव; ‘उ’ स्वर ।
उकारात-वि० [सं०] जिसके अंतमें ‘उ’ हो (शब्द) ।
उकावना-स० कि० कपरकी ओर फेंकना ।
उकासी-खी० उभड़ जाना; छुटी; उत्सव ।
उकिलवा-अ० कि० दे० ‘उकलना’ ।
उकीरना-स० कि० उखाड़ना; खोदना ।
उकील-पु० दे० ‘बकील’ ।
उकुण-पु० [सं०] दे० ‘उकुण’ ।

उकुति-स०-खी० दे० ‘उक्ति’ ।
उकुस-पु० दे० ‘उकई’ ।
उकुसना-स० कि० उभेड़ना; उजाड़ना ।
उकेलना-स० कि० खोलना, उभेड़ना; उचाड़ना ।
उकीय, उकीया-पु० दे० ‘उकवथ’ ।
उकीना-पु० गर्मबसामें होनेवाली बूछाई, दोहद ।
उक्त-वि० [सं०] कहा हुआ, कथित ।-**निर्वाह**-पु० अपने कथनका समर्थन या रक्षण ।-**प्रत्युक्त**-पु० कसोपकथन; कासके दस अंगोंमेंसे एक (ना०) ।-**वाक्य**-वि० जो अपना मत व्यक्त कर चुका हो । पु० निर्णय ।
उकानुसासन-वि० [सं०] जिसे आदेश दिया गया हो ।
उकि-खी० [सं०] कथन; वाक्य; कथितमय वचन, पद्य; शब्दकी अर्थबोधनशक्ति ।
उकथ-पु० [सं०] स्तोत्र; साम-विशेष; एक यज्ञ; ऋषमक नामकी ओषधि ।
उकथी (विध्व)-वि० [सं०] स्तोत्र-पाठ करनेवाला ।
उक्षण-पु० [सं०] जल छिड़काना, सींचना ।
उक्षा (क्ष्व)-पु० [सं०] बैल; सूर्य; अग्नि; सोम; मरुद; अष्टवर्गके अंतर्गत ऋषमक नामक ओषधि ।
उक्षाल-वि० [सं०] क्षिप्र; भयकर; बड़ा; उत्तम । पु० बंदर ।
उक्षित-वि० [सं०] मिंगोया हुआ ।
उखटना-स० कि० खोदना; कुतरना । अ० कि० कड़खलाना ।
उखड़ना-अ० कि० जमी, गरी या जड़ी हुई चीजका कपर आ ताना, अपनी जगहमें हटना; हटाना (प्रम, सीट); निशान पड़ना, उपटना; हड्डिका जोड़में हट जाना; बेताल वा बैसुरा हो जाना; तितर-बितर होना; (गाने आदिका) न जमना । पु० उखड़ी-उखड़ी बार्ते करना-बेलौस होकर बात करना । **उखड़ी-पुखड़ी सुनाना**-अठबड़ सुनाना ।
उखनीद-स०-खी० उखड़ी, उचटी नींद ।
उखम-पु० गरमी ।-**ज**-पु० दे० ‘ऊखमज’ ।
उखर-पु० उखर बोलनेके बाद होनेवाली हलकी पूजा ।
उखरना-अ० कि० दे० ‘उखड़ना’ ।
उखराज-पु० ईसकी बीआईका पहला दिन ।
उखरबल-पु० [सं०] एक तरहकी घास, भूरिपत्र ।
उखली-खी० दे० ‘ओखली’ ।
उखा-खी० [सं०] बटलीई; हॉकी; * दे० ‘ऊखा’ ।
उखाड़-पु० उखाड़नेकी क्रिया; पैच वा दलीलकी काट; कुश्तीका एक पैच ।-**पछाड़**-खी० उलट-पुलट; चुगली खाना ।
उखाड़ना-स० कि० गरी, जमी, बैठायी हुई चीजको अपनी जगहमें हटा देना; कपर लाना; हड्डिको जोड़में हटा देना; तितर-बितर कर देना; रग; प्रभाव आदि न जमने देना; भगाना, उग्रवातना; नष्ट करना ।
उखाड़-वि० उखाड़नेवाला ।
उखारना-स० कि० दे० ‘उखाड़ना’ ।
उखारी-खी० ईसका खेत ।
उखासिवा-पु० सद्गुणों, व्रत आरंभ करनेके पूर्व कुछ रात रहते प्रथम किया जानेवाला अस्थाहार ।

उत्पत्ति-पु० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० तत्पत्ति बनाना, उद्देष्टना ।
 उत्पत्ति-वि० [सं०] इच्छा या इष्ट प्रकारके अन्य पदार्थों
 पदार्थों द्वारा (आदि) ।
 उत्पत्ति-स० कि० वृद्धि ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-अ० कि० उद्भव होना; उत्पत्ति फलना, जन्मना;
 उत्पत्ति ।
 उत्पत्ति-अ० कि० निकलना; कुपिते जमी हुई मिट्टी
 आदिकी सफाई होना ।
 उत्पत्ति-स० कि० मुँहमें ली हुई चीजको धुकर देना;
 खाद्य-पी हुई चीजको मुँहकी राह बाहर कर देना; छिपा
 रखी हुई बातको प्रकट कर देना; अपराध स्वीकार कर
 लेना; दबा, छिपा रखा हुआ माल लौटा देना; बाहर
 निकालना, बिखेरना (आग, जहर आदि) ।
 उत्पत्ति-स० कि० 'उत्पत्ति'का प्रेरणा-
 र्थक रूप ।
 उत्पत्ति-स० कि० उत्पत्ति, उत्पत्ति ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० कहना; प्रकट करना ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० जमाना, उत्पत्ति; उद्भव करना;
 उत्पत्ति; तानना ।
 उत्पत्ति-पु० निचुआ या निचोडा हुआ पानी; रंगे हुए
 कपड़ेके निचोडनेसे निकलनेवाला पानी; दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० कुपिते मिट्टी आदि निकालकर सफाई
 करना ।
 उत्पत्ति-पु० धुकर, स्नान; पीक । -दाब-पु० धुक्नेका
 रतन, पीकदान ।
 उत्पत्ति-पु० फलको मुकनान पहुँचानेवाला एक कीड़ा ।
 उत्पत्ति-स० कि० बहुतसे लोगोंसे लेकर एकत्र करना;
 चंदा करना; बटुल करना ।
 उत्पत्ति-स० कि० वृद्धि; चंदा; लगान ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-पु० उत्पत्ति; वमन; विचार या भावकी अभिव्यक्ति ।
 उत्पत्ति-वि० [सं०] उत्पत्ति, तीव्र; अथानक; क्रूर; तीव्रता, तेज;
 क्रूर; कोपनीय; उत्पत्ति; परिश्रमी । पु० शिव; क्रूर; क्षत्रिय
 पिता और शत्रु मातासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति; रौद्र
 रस; क्रूर देश; सहाजनका पेड़; वृक्षजाति (वत्सलाय)
 विष; पूर्वा काल्युगी, पूर्वापादा आदि पाँच नक्षत्रोंका समूह;
 बायु । -कर्म(सं०)-वि० उद्देष्टना काम करनेवाला,
 क्रूर-कर्म । -क्रूर-पु० करेला । -गंध-पु० लहसुन,
 हिंग, चंपा, कायफल इ० । वि० कही गंधवाला । -गंधा-
 स० अजवायन; अजमोदा; वच; नक्षत्रिका । -गंधा-
 चारिणी-स० दुर्गा । -जाति-विश्व जाति; नीच वंशमें
 उत्पन्न । -सारा-स० एक देवी । -तेजा(सं०)-

वि० अथानक तेजसे युक्त । -ईश-वि० कठोरतापूर्वक
 शासन करनेवाला; निष्ठुर । -वर्तन-वि० जो देखनेमें
 बराबरा हो, अथानक । -वृद्धा(सं०)-पु० शिव;
 ईश । -वासिक-वि० दीर्घ नासिकावाला । -पुत्र-
 वि० बड़े वंशमें उत्पन्न । पु० कापिकेय । -रसा(सं०)-
 पु० कृष्ण एक रूप । -शेखरा-स० गंगा । -सेन-
 पु० कंसके पिता, मथुराके राजा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।
 -सं०-पु० कंस ।
 उत्पत्ति-वि० [सं०] शीत; बलवान् ।
 उत्पत्ति-पु० ग्रहणमें छूटना, मोक्ष ।
 उत्पत्ति-स० कि० [सं०] दुर्गा, महाकाली; उग्र स्वभाववाली,
 कर्कशा सौ; अजवायन, वच इ० ।
 उत्पत्ति-स० कि० किसीपर अपने उपकारों या उसके अप-
 कारोंकी उद्देश्य करना, उत्पत्ति; कोसना; ताल देना ।
 उत्पत्ति-वि० उत्पत्तिवाला । -पुराण-पु० दे० 'उत्पत्ति-
 पुराण' ।
 उत्पत्ति-अ० कि० खुलना; प्रकट होना; नगा होना; बंधा-
 फोड़ होना । सु० उत्पत्ति माचना-मान-भर्यादाका
 खयाल छोड़कर मनमानी करना ।
 उत्पत्ति-अ० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-वि० खुला हुआ । पु० खुला स्थान ।
 उत्पत्ति-स० कि० खोलना; अनाश्रित करना; बलहरण,
 परीक्षा करना ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-पु० कोई चीज ऊँची करनेके लिए उसके नीचे
 दिया जानेवाला ईंट आदिका टुकड़ा ।
 उत्पत्ति-अ० कि० पत्थरके बल खड़ा होना; किसी चीजको
 पाने या देखनेके लिए ऊपर उठना; उछलना । स० कि०
 लपककर जै लेना; उठा लेना ।
 उत्पत्ति-अ० महसा, अथानक ।
 उत्पत्ति-स० कि० ऊपर उठाना ।
 उत्पत्ति-पु० चीज छीन-उठाकर भाग जानेवाला, चोरी,
 उठाईगीरा ।
 उत्पत्ति-अ० कि० उत्पत्ति; अलग होना, विलग्नाना,
 छूटना; मनका बट जाना, न लगना; भट्ठकना ।
 उत्पत्ति-स० कि० अलग करना, छुड़ाना; विरक्त करना;
 विचकना, भट्ठकना ।
 उत्पत्ति-अ० कि० सती, चिपकी हुई चीजका अलग हो
 जाना; उत्पत्ति; बल देना, उठ जाना (कौएके उड़नेके
 आधारपर शकुन-विचार-वि०) ।
 उत्पत्ति-अ० कि० उत्पत्ति, ऊपर उठाना । स० कि०
 ऊपर उठाना ।
 उत्पत्ति-स० कि० उठान, उभार ।
 उत्पत्ति-म० कि० उत्पत्ति करना, खोलना । अ० कि०
 खाना, खट्ठ होना ।
 उत्पत्ति-पु० विरक्ति, उदासी, जी न लगना । वि० उत्पत्ति
 हुआ, जो किसी काममें न लगे (मन उत्पत्ति है) ।
 उत्पत्ति-पु० दे० 'उत्पत्ति' ।
 उत्पत्ति-स० कि० उत्पत्ति कर देना, उत्पत्ति करना ।

उच्चादी—स्त्री० उच्चाट, उदासी ।

उच्चादना—स० क्रि० सटी, चिपकी चीन्नीकी जुटा करना; उखाड़ना ।

उच्चादना—स० क्रि० ऊँचा करना, उठाना ।

उच्चार—पु० दे० 'उच्चार' ।

उच्चारना—स० क्रि० उच्चारण करना, बोलना; उखाड़ना ।

उच्चावा—पु० सपनेमें बहबहाना ।

उचित—वि० [सं०] ठीक, योग्य, सुनासिध; स्तुत्य; विहित; शांत; माया हुआ; प्रिय, प्राज्ञ ।

उचेलना, **उचेलना**—स० क्रि० दे० 'उचाड़ना' ।

उचैहा, **उचैहा**—वि० उभरा हुआ, उठा हुआ ।

उचंड—वि० [सं०] अति उग्र, प्रचंड; अति क्रुद्ध; तेज; उतावला ।

उचंड—पु० [सं०] रात्रिशेष; रात्रिका चंद्रहीन या अंतिम भाग ।

उच—वि० [सं०] ऊँचा, लंबा; बड़ा, श्रेष्ठ; कुलीन; तेज; ओरदार; शुभ; ऊँचे, दूसरोंपर प्रभाव डालने योग्य स्थान पर बैठा हुआ । —**लह**—पु० नारियल या इस भेणीका ऊँचा वृक्ष । —**ताल**—पु० पानगोष्ठी, भोज आदिमें होनेवाला नाच-गाना ।

उचकित—वि० [सं०] नीचक, वषट्पाष्टमें ऊपर-नीचे देखनेवाला ।

उचल—पु० [सं०] मन ही मन हँसना, बह हसी जो प्रकट न हो ।

उचडा—स्त्री० [सं०] घमट; अन्धास; प्रथा; गुत्रा; भ्रूया-मलकी, नागरमुस्ता; लहसुनक एक भेद; चूटाला ।

उचय—पु० [सं०] ढेर, राशि; चयन, चुनना (पुष्पादि); नीचीबध, अभ्युदय ।

उचवापचय—पु० [सं०] उत्थान और पतन ।

उचरण—पु० [सं०] ऊपर उठना, आना; बाहर आना; ध्वनि, शब्दरूपमें (मुँहसे) बाहर आना ।

उचरना—स० क्रि० उच्चारण करना ।

उचरित—वि० [सं०] ऊपर, बाहर आया हुआ; कहा हुआ, कथित । पु० मल, विष्ठा ।

उचल—वि० [सं०] गतिशील । पु० मन; समझ ।

उचलन—पु० [सं०] जाना, रवाना होना ।

उचलित—वि० [सं०] जो जानेवाला हो हो, प्रस्थान कर रहा हो; बाहर आया या ऊपर गया हुआ; फटका हुआ ।

उचाकाक्षा—स्त्री० [सं०] ऊँची, वर्यपनकी आकांक्षा ।

उचाट—पु० [सं०] बैठीकी नट करना; मंत्रसे मनकी विरक्त कर देना ।

उचाटन—पु० [सं०] हडाना; निकालना; उखाड़ना; किसीके चित्तकी किसी व्यक्ति, स्थान, कार्य आदिसे उचटाना; तंत्रके छ अभिचारोंमेंसे एक ।

उचाटित—वि० [सं०] जिसका उचाटन किया गया हो ।

उच्चार—पु० [सं०] (शब्दको) बोलना, कहना; मल, विष्ठा ।

उच्चारक—वि० [सं०] उच्चारण करनेवाला, कहनेवाला ।

उच्चारण—पु० [सं०] शब्दको मुँहसे निकालना, बोलना; शब्द या उसके वर्णोंकी कहनेका ढग । —**स्थान**—पु० मुँहका वह स्थान जिसके प्रत्यक्ष कोई विशेष ध्वनि निकले

(कंठ, तालु, मोड़, जिह्वा आदि) ।

उच्चारणीय—वि० [सं०] उच्चारण करने योग्य ।

उच्चारित—वि० [सं०] कहा, बोला हुआ ।

उच्चार्य—वि० [सं०] उच्चारणीय ।

उच्चावच—वि० [सं०] ऊँचा-नीचा; छोटा-बड़ा; विविध, विभिन्न; विपन्न ।

उच्छिद्य—पु० [सं०] भावाविष्ट, क्रुद्ध व्यक्ति; एक तरहका केकड़ा; एक तरहका शीशुर ।

उचित—वि० [सं०] संगृहीत; एकत्र किया हुआ, चयन किया हुआ; राशीकृत ।

उच्छ, **उच्छ**—पु० [सं०] ध्वजा या उसका ऊपरका भाग; झंडेके सिरपरकी सजावट ।

उचै—(वस्त्र)—अ० [सं०] ऊँची आवाजमें, जोरसे । —**धवा**—(वस्त्र)—पु० धंरका घोड़ा । वि० ऊँचा धुननेवाला; लंबे कानोंवाला ।

उच्छल—वि० [सं०] अनाश्रुत; नष्ट, लुप्त ।

उच्छरना—अ० क्रि० दे० 'उच्छलना' ।

उच्छलन—पु० [सं०] उच्छलना; तरंगित होना ।

उच्छलना—अ० क्रि० छलकना; ऊपर उठकर गिरना ।

उच्छलित—वि० [सं०] उछला या उछलता हुआ; तरंगित, क्षुब्ध; कपित; गया हुआ ।

उच्छव—पु० उत्सव ।

उच्छादन—पु० [सं०] दकना; लेपना, उबटन लगाना ।

उच्छाव—पु० दे० 'उच्छाव' ।

उच्छास—पु० दे० 'उच्छास' ।

उच्छासन—वि० [सं०] नियंत्रणमें न रहनेवाला, निरंकुश ।

उच्छास—वि० [सं०] शास्त्र-विरोधी; शास्त्रके विरुद्ध चलनेवाला ।

उच्छाह—पु० दे० 'उच्छाह' ।

उच्छिद्यन—पु० [सं०] नाकसे सँत लेना; खरंटे भरना ।

उच्छिन्न—वि० [सं०] शिखायुक्त; जिसकी ज्वाला ऊपरकी ओर जा रही हो; चमकीला; प्रकाशमान ।

उच्छिप्ति—स्त्री० [सं०] विनाश, ध्वंस ।

उच्छिन्न—वि० [सं०] कटा, उखड़ा हुआ; नष्ट, मिटाया हुआ । —**संधि**—स्त्री० उर्वरा या खनिज पदार्थोंसे पूर्ण भूमि ढेकर की जानेवाली संधि ।

उच्छिष्ट—वि० [सं०] खानेमें बचा, खाकर छोड़ा हुआ; परित्यक्त; बाँसी; जिसके मुँहमें जूठन लगी हुई हो । पु० जूठा अन्न, जूठन; शहर । —**गणेश**, —**विनायक**—पु० तंत्रोक्त एक गणधर्ति । —**चांडालिनी**—स्त्री० मातंगी देवी (तंत्र) । —**भोक्ता**—(कु)—वि० जूठन खानेवाला । पु० नीच व्यक्ति । —**भोजन**—पु० जूठन खाना; देवताका प्रसाद या पंच महाभक्षसे बचे हुए अवशेष भोजन । —**भोजी**—(जिव्)—वि० उच्छिष्ट खानेवाला । —**भोजन**—पु० भोज ।

उच्छिष्ट—वि० [सं०] जिसका सिर उड़ा हो । पु० तकिया; सिर ।

उच्छिष्ट—वि० [सं०] जिस(माल)पर चुंगी न दी गयी हो (कौ०) । अ० बिना चुंगी या मसल दिये ।

उच्छुष्क—वि० [सं०] सूखा हुआ ।

उच्छ-—**खी०** गलेमें कुछ अटकनेसे आनेवाली खाँसी ।
उच्छन्न-—**वि०** [सं०] सूखा हुआ; मीटा, सूखकावा; कँचा ।
उच्छृंखल-—**वि०** [सं०] कमरहित; बंधन न माननेवाला, निरकुश, स्वेच्छाचारी ।
उच्छेत्ता(त्)-—**वि०, पु०** [सं०] उच्छेद करनेवाला, नाशकर्ता ।
उच्छेद, उच्छेदन-—**पु०** [सं०] काटना; जड़ उखाड़ना, उन्मूलन; नाश ।
उच्छेदी(दिन्)-—**वि०** [सं०] उच्छेद करनेवाला ।
उच्छेर, उच्छेषण-—**पु०** [सं०] अवशेष, बचा, छूटा हुआ भाग; बूटन ।
उच्छेषण-—**पु०** [सं०] सुखाना; रस ऊपर खींच लेना । **वि०** सुखानेवाला ।
उच्छ्रय, उच्छ्राय-—**पु०** [सं०] कँचाई; हृदि; अभिमान ।
उच्छ्रमन-—**पु०** [म०] साँस लेना; गहरी साँस लेना ।
उच्छ्रसित-—**वि०** [सं०] उच्छ्रासयुक्त; प्रसन्न; प्रफुल्ल, विकसित; आशानुप्राणित; आश्वासित, दादस बँधाया हुआ; चिंतामुक्त; क्षुब्ध ।
उच्छ्रास-—**पु०** [सं०] ऊपर खींचो या छोड़ी जानेवाली साँस; आह भरना; प्रोत्साहन, दादस; मरण; ग्रंथका अन्धास; जीवन; हवा खींचने या फूँकनेके निमित्त बनी हुई नलिका ।
उच्छ्रासित-—**वि०** [सं०] प्रसन्न किया हुआ; उठाया हुआ; दादस बँधाया हुआ; मुक्त, ढीला या पृथक् किया हुआ; धका हुआ; अव्यधिक ।
उच्छ्रासी(सिन्)-—**वि०** [म०] साँस लेनेवाला; स्कीन; आह भरनेवाला; मरता हुआ; मुरझानेवाला; ठहरनेवाला; आगे बढ़नेवाला ।
उच्छ्रा-—**पु०** गीत; हृदय ।
उच्छकना-—**अ०** कि० चौकना; होशमें आना ।
उच्छक्का-—**वि०, स्त्री०** व्यभिचारिणी, कुलटा ।
उच्छरना-—**अ०** कि० उच्छलना; कै करना; उतरना; उपटना ।
उच्छल-हृ-—**स्त्री०** उच्छलना-हृदना, हृद-काद; असंयत, अधीरता-युक्त चेष्टाएँ ।
उच्छलना-—**अ०** कि० तेजीके साथ नीचेमें ऊपर उठना, उझकना, हृदना; ऊपर उठकर नीचे गिरना; हर्ष या क्रोधकी अनिश्चयतासे उझकना; उपटना, उभरना; उफरना ।
उच्छाँटना-—**सं०** कि० उपाटना; चुनना, छँटना; उचाटना ।
उच्छार-—**स्त्री०** दे० 'उछाल' ।
उच्छारना-—**सं०** कि० दे० 'उछालना' ।
उछाल-—**स्त्री०** उछलनेकी क्रिया, कुदान, छलंग; उछलने, ऊपर उठनेकी हद; उलटी, कै; कँचाई; छीटा; ऊपर उठता हुआ कण । —**उछाल-**—**वि०, स्त्री०** कुलटा ।
उछालना-—**सं०** कि० ऊपर फेंकना; जाहिर, उजागर करना ।
उछाला-—**पु०** उलटी, कै; उफान ।
उछाव-—**पु०** उत्सव, खुशी; उत्साह, उमग । —**बचाव-**—**पु०** धूमधाम, आनंद ।
उछाह-—**पु०** उत्साह; हर्ष; खुशीके कामकी धूम, उत्सव; नाच, रौसल ।

उछाही-—**वि०** उत्साही; उछाह करनेवाला ।
उछिन्न-—**वि०** दे० 'उच्छिन्न' ।
उछिह-—**वि०, पु०** दे० 'उच्छिष्ट' ।
उछीनना-—**सं०** कि० उच्छेद, नाश करना ।
उछीर-—**पु०** कवकाश, दरार ।
उछेद-—**पु०** दे० 'उच्छेद' ।
उजका-—**पु०** पक्षियों इत्यादिकी उड़ानेके लिए खेतमें गाद दिया जानेवाला 'पुतला' ।
उजट-—**पु०** पर्णकुटी, उटज ।
उजबना-—**अ०** कि० जनशून्य, वीरान होना, बसनाका उलटा; तबाह, बर्बाद होना ।
उजहु-—**वि०** अशिष्ट, असम्य, गँवार; उद्धत । —**पन-**—**उर्-**—**हना**, अशिष्टता; उच्छृंखलता ।
उज्जबक-—**पु०** [त्र०] तातातरियोंकी धक जाति । **वि०** मूर्ख, निर्बुद्धि ।
उज्जर-—**वि०** दे० 'ऊज्जर' ।
उज्जरत-—**स्त्री०** [अ०] मजदूरी, पारिश्रमिक, मेहनतका बदला ।
उज्जरा-—**वि०** दे० 'उज्जरा' । —**हूँ-**—**स्त्री०** उजलापन, मफेगी; काति ।
उज्जराना-—**सं०** कि० उजाला करना; साफ करना; चमकाना ।
उज्जलत-—**स्त्री०** [अ०] जलरी, उनावली । —**पसंद-**—**बाज़-**—**वि०** जलदबाज । —**बाज़ी-**—**स्त्री०** उनावली ।
उज्जला-—**वि०** मफेद, उज्ज्वल; स्वच्छ । **पु०** पोथी । [स्त्री०] 'उजली' । **मु०** —**मुँह करना**—गौरव बढ़ाना, कलक मिटाना । —**(स्त्री०)ममझ**—निर्मल बुद्धि; स्वच्छ विचार ।
उज्जवासा-—**पु०** प्रयत्न, चेष्टा ।
उज्जागर-—**वि०** दीप्तिमय, प्रकट, प्रकाशित, प्रसिद्ध, कीर्तिशाली । **अ०** प्रकट रूपसे, खुलेआम ।
उज्जाह-—**वि०** ध्वस्त, उजवा हुआ; वीरान, जनशून्य । **पु०** उजवा हुआ, वीरान स्थान ।
उज्जाहना-—**सं०** कि० बसे हुएको निकाल बाहर करना, रहने न देना; नष्ट, बर्बाद कर देना, तीक्ष्ण फोड़ मचाना, दाहना ।
उज्जान-—**अ०** बहावकी उलटी दिशामें, चढ़ावकी ओर ।
उज्जार-—**वि०, पु०** दे० 'उज्जाह' ।
उज्जारना-—**सं०** कि० दे० 'उज्जाहना' ।
उज्जारा-—**पु०** दे० 'उज्जाला' ।
उज्जारी-—**स्त्री०** दे० 'उज्जाली'; अंगक ।
उज्जालना-—**सं०** कि० (गहने आदिका) मेल साफ करना, निखारना; चमकाना; जलगना ।
उज्जाला-—**पु०** प्रकाश, रोशनी; कुल बा जानिमें श्रेष्ठ व्यक्ति । **वि०** प्रकाशयुक्त, बेजोरा । —**पास्त**—**पु०** शुद्ध पक्ष । —**(स्त्री०)** का तारा—शुक्र ग्रह । **मु०** —**होना**—सवेरा होना; नाश होना ।
उज्जाली-—**स्त्री०** चोदनी । **वि०, स्त्री०** प्रकाशमयी, चोदनीवाली ।
उज्जास-—**पु०** उजाला, रोशनी; चमक । —'कछु उजाम मो प्रात समाना'—रामरसायन ।

उज्जयिनी-अ० कि० प्रकाशित होना ।
 उज्ज्वर-वि० उज्ज्वल ।
 उज्ज्वरिवा-की० उज्ज्वली, चौरनी ।
 उज्जिवा-अ० कि० उत्पन्न करना; प्रकट करना ।
 उज्जिवर-पु० उज्जाला, रौशनी । वि० प्रकाशित, रौशन; चतुर ।
 उज्जिवर-स० कि० रौशन करना, शकना ।
 उज्जिवरा-पु० प्रकाश, उज्ज्वल; प्रतापी व्यक्ति । वि० चमकना, कांसिमात्र; उज्ज्वल ।
 उज्जिवरी-की० चोदनी; रौशनी; सती-साथी स्त्री ।
 उज्जिवा-पु० दे० 'उज्जाला' ।
 उज्जीर-पु० दे० 'उज्ज्वर' ।
 उज्जुर-पु० दे० 'उज्ज्वर' ।
 उज्जुवा-पु० बैगनी रंगका एक पत्थर ।
 उज्जैनी-की० उज्जयिनी ।
 उज्जेर, उज्जेरा-पु० दे० 'उज्जैला' ।
 उज्जेर-पु० उज्जाला, चोदनी । वि० प्रकाशयुक्त । [की० 'उज्जैली']
 उज्जयन्त-पु० [सं०] रैवतक पर्वत जो विंध्य-श्रेणीका एक भाग है ।
 उज्जयनी, उज्जयिनी-की० [म०] मालव देशकी प्राचीन राजधानी, अर्थात्तः उज्जैन ।
 उज्ज्वर-वि० दे० 'उज्ज्वल' ।
 उज्जल-अ० [म०] भारते प्रतिकूल । * वि० उज्ज्वल ।
 उज्जाल-वि० [म०] उत्तेजित, झुंझ ।
 उज्जालन-पु० [सं०] मारण, बध ।
 उज्जीवन-पु० [सं०] नया जीवन मिलना, पुनः प्राण-संचार होना; मृतप्राय होकर फिर स्वस्थ, चंगा हो जाना ।
 उज्जीवित-वि० [सं०] जिसे पुनः जीवन प्राप्त हुआ हो ।
 उज्जीवी(विन्)-वि० [म०] पुनर्जीवन प्राप्त करनेवाला ।
 उज्जुम, उज्जुमण-पु०, उज्जुमा-की० [म०] मुँह शाना, जैमाई लेना; फैलना; सिलना; कटना; क्षोभ ।
 उज्जुमित-वि० [सं०] फैला, सिला हुआ ।
 उज्जैन-पु० उज्जयिनी नगरी ।
 उज्ज्वल-वि० [सं०] जलता हुआ; चमकता हुआ; उज्जाला; सज्ज, निर्मल; सुंदर; सिला हुआ । पु० प्रेम; सोना ।
 उज्ज्वलन-पु० [सं०] जलना; चमकना; दीप्त, चमक; अग्न; सोना ।
 उज्ज्वला-की० [सं०] कांति, चमक; स्वच्छता; एक वृक्ष ।
 उज्ज्वलित-वि० [सं०] जलता हुआ; प्रकाशित; चमकाया हुआ ।
 उज्ज्वलित-वि० [सं०] उलझा हुआ; कर्तव्य-वृत्त ।
 उज्ज्व-वि० मनमौजी, झट्टी; मूर्ख ।
 उज्ज्वन-पु० [सं०] परित्याग ।
 उज्ज्वल-वि० [सं०] परित्यक्त; वंशित ।
 उज्ज्वरा-पु० दे० 'उज्जाला' ।
 उज्जवास-पु० दे० 'उज्जाल' ।
 उज्ज-पु० [अ०] आपत्ति, विरोध, बहाना; हेतु । -**झाड़ी**-की० क्षमायाचना । -**झार**-वि० उज्ज करनेवाला ।
 -**हारी**-की० अशक्तकी किसी भाषा या उमे प्रप्त

करनेकी दरखास्तके खिलाफ ही नयी दरखास्त, आपत्ति-निवेदन ।
 उज्ज-की० [अ०] दे० 'उज्जवत' ।
 उज्जक-अ० कि० उचकना; चौकना । मु० -**विशकना**-उछकना-कूटना ।
 उज्जवना-अ० कि० झुलना ।
 उज्जवरा-स० कि० ऊपर उठना; सरकाना; ऊपरकी सरकाना ।
 उज्जलना-स० कि० उडेलना । * अ० कि० उमड़ना ।
 उज्जलना-अ० कि० उल्लकना; सिर उठाकर देखना ।
 उज्जल-की० उमड़ना-रूपकी उल्लिख आठे आननपै नवी-नवी-वन० ।
 उज्जलना-स० कि० दे० 'उज्जलना' ।
 उज्जल-की० उल्टनेके लिए भूनी हुई सरसों; पोस्ते और मनुष्यके मेरुसे तैयार किया जानेवाला एक खाद्य पदार्थ; सेतके गहरे पाटनेके लिए उसी सेतकी ऊँची अगहसे निकाली हुई मिट्टी । वि० भूनी या उँचाली हुई (सरसों) ।
 उडग-वि० जो पहननेमें काफी नीचेतक न आये, उचितसे कम लंबाईवाला, मोछा (कपड़ा) ।
 उडग-पु० चौपटिया नामकी घास ।
 उडगा-वि० दे० 'उडग' ।
 उड-पु० [सं०] पत्नी; घास, वृण । -**ज**-पु० क्षीयकी, पर्ण-शाला, कुटी ।
 उडकना-स० कि० अंदाजा लगाना ।
 उडकनाउडक-वि० ऊँचा-नीचा; अँध-बँध ।
 उडकलैस-वि० अटकलपस ।
 उडकपा, उडका, उडका-पु० गायीका अगला हिस्सा जमीनपर टिकानेके लिए जूँके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी ।
 उडारी-की० ठोहर ।
 उडेब-पु० ऊपरकी धरन रखनेके लिए नीचेकी धरनके बीचोबीच ठोकी जानेवाली छोटी लकड़ी ।
 उट्टी-की० प्रतिपोगितामें हार जाना । मु० -**बोलना**-हार मान लेना ।
 उट्टगन-पु० आर, धूनी, वह वस्तु जिससे टिककर बैठ जाय ।
 उट्टगना-अ० कि० बैठनेमें किसी चीजका सहारा लेना; बैठे-बैठे थकावट मिटानेके लिए थोड़ा सो लेना ।
 उट्टगना-स० कि० किताबोंकी बिना सँकल, सिटकिनीके बंद करना जिसमें वे केवल धकेलनेसे खुल जायें; किसी चीजको दूसरी चीजके सहारे टिकाना; लिटाना ।
 उडकना-अ० कि० दे० 'उडगना' ।
 उडतक-पु० टेक; थोड़ेकी पीठपर जीनके नीचे रखी जाने-वाली चीज ।
 उडवा-अ० कि० ऊपरकी ओर जाना, ऊँचाईमें बढ़ना, जुड़-जुड़कर ऊँचा होना; लेटे हुएका बैठना; बैठेका खड़ा होना; जागना; झुंझा छींकना; मनमें उपजना (विचार, शंका इ०); याद आना; अचानक उपस्थित होना (अँधी, पीड़ा इ०); उपना; खमीर या सड़न पैदा होनेसे उफनना; निर्माण होना; खर्च होना; बिकना; भाड़े या लगानपर

जाना; कुछ काल या सदाके लिए बंद होना; अत होना; चलना; प्रस्थान करना; मरना; (गाय आदिका) मर्त्यपर जाना; उपाति करना, ऊँची स्थिति को प्राप्त होना; रोगग्रस्त होना; श्रमादा होना; उभरना (छपने में अक्षर आदिका)।
मु० उठ खड़ा होना—चलनेको तैयार होना। (दुनिया-से)—जाना—मर जाना, चल बसना। **उठकी जगानी**—किशोरावस्था, उभरती, खिलती हुई जगनी। **उठके बैठे**—हर बस; हर हालतमें। **उठना-बैठना**—साथ, मेक-ओल। **उठा-बैठी**—उठने-बैठनेको कसरत; हँसना।
उठल्लू—वि० एक स्थानपर जमकर न रहनेवाला, जो कहीं टिके नहीं। **मु०—का चूल्हा**—बैसतलज घूमनेवाला।
उठाना—पु० बड़ा आँगन; बड़ा सदन।
उठाईगीरा—पु० वह जो छोटी-बोटी चीजें उठाकर बिक्री करने, बचका।
उठाव—की० उठनेकी क्रिया; बाव; आरंभ; व्यव; खपत; ऊँचाई।
उठावा—स० कि० नीचेसे ऊपर ले जाना; लेते हुएको बैठाना; बैठे हुएको खड़ा करना; जगाना; ऊपर लेना, बहन या धारण करना; हवाँ बा निकाल देना; अंगीकार करना; छेड़ना; आरंभ करना; कुछ काल या सदाके लिए बंद करना; अंत करना; खर्च करना; भोगना; भाड़ेपर देना; बसाना, निर्माण करना; कसम खानेके लिए हाथमें लेना (मंगोजल, तुलसी आदि)। **मु० उठा रखना**—कसर रखना, छोक रखना या बाकी रखना।
उठाव—पु० उठा, उभरा हुआ भाग; उठान।
उठावा—वि० जो उठाया जा सके, जो दूसरी जगह ले जाना जा सके।—**चूल्हा**—पु० वह चूल्हा जो जगया न गया हो, जहाँ बाहे बर्तों रखा जा सके।—**पाखाना**—पु० वह पाखाना जिसका मैला उठाकर बाहर फेंका जाता है।
उठौनी—की० उठानेकी उन्नत; पेशगी दिया हुआ मूल्य, दादनी; पुरखत; उधार लेन-देन; व्यापक पक्का करनेके लिए कन्यापक्षको दिया जानेवाला धन; पूजा आदिके निमित्त अलग रखा हुआ धन; श्रुतक-संबंधी एक रीति; एक तरहकी धानके खेतको जोतार्ह; प्रयत्नाकी शुभ्रता।
उठौवा—वि० दे० 'उठौय'।
उठई—वि० उठनेवाला; चलने-फिरनेवाला।
उठत—पु० कुश्तीका एक पंच।
उठईरी—की० एक पुराना राजा।
उठ०—पु० दे० 'उठु'।—**पति**,—**पाल**,—**राज**—पु० दे० 'उठुपति'।
उठतक—पु० दे० 'उठतक'।
उठव—पु० दे० 'उठव'।
उठन—की० उठनेकी क्रिया, उठान।—**खटोला**—पु० उठनेवाला खटोला, विमान।—**छू**—वि० गायब, अक्षय, लापता।—**झाई**—की० चकमा।—**फर**—पु० उठनेकी शक्ति देनेवाला फल।—**फाजला**—वि० सीधा-साधा, बेवकूफ।
उठना—अ० कि० पंखके सहारे हवामें चलना-फिरना; विमान आदिपर बैठकर आकाशमार्गसे यात्रा करना; हवा

के साथ डोलना-फिरना (पंखा, मूक आदिका); फिरना; फैलना; फहराना, लहराना; नष्ट, क्षुप्त होना; कीका पचना; कटक अलग हो जाना; खर्च होना; (आनंदपूर्वक) भोगा जाना; पचना, कमाना (जुते, बैत इ०); छल्लांग मरना, चौकेका चौकाल कूदना; उछलकर लॉप जाना; बहुत तेजीसे जाना, भागना; घोसा, चकमा देना। रात उठाना; इतराना; बहानेबाजी करना। **उठकी बैठक**—की० एक तरहकी बैठक। **उठती झबड़**—की० अफनाह, झुनी-झुनायी खबर। **मु० उठ जाना**—तेजीसे जाना। **उठ जाना**—अप्रिय लगना; उठ-उठकर काटना। **उठ चलना**—मसाधारण वेगसे जाना; अत्यधिक खिलना, कमाना; (घोसा, स्वाद आदिका) बहुत बढ़ जाना; कुमार्गपर जाना; इतराना।
उठप—पु० एक तरहका नाच; उठप।
उठरी—की० एक तरहका छोटा उरद।
उठव—पु० जोड़ब, एक तरहका राग जिसमें कोई दो स्वर भ्रमित होते हैं; वृद्धका एक प्रबंध।
उठसना—अ० कि० उठना, भंग होना।
उठाई, **उठाई**—वि० उठनेवाला; जिसमें उठनेकी योग्यता हो।
उठा—पु० रेशम खोलनेका एक तरहका परेता।
उठाइक, **उठाइक**—वि०, पु० (गुठ्ठी आदि) उठानेवाला।
उठाइ—वि० ऐसा बर्ताव करनेवाला, फुजूलखर्च।—**पन**—पु० फुजूलखर्च।
उठाक—वि० उठानेवाला; पतंग उठानेवाला।
उठाका—पु० उठनेवाला; हवाई जहाजपर उठनेवाला; हवाई जहाजका चालक।
उठाकू—वि० उठनेवाला; उठनेमें समर्थ।
उठान—की० उठनेकी क्रिया; उठनेकी सामर्थ्यकी सीमा; हवाई जहाज आदि एक उठानमें जहाँतक जा सकें; (लंबी) छल्लांग; कल्लाई।—**झाई**—की० चकमा, उठन-झाई।—**चरवा**—पु० बैलगाड़ीपर डाला जानेवाला परदा।—**फर**—पु० दे० 'उठनफर'। **मु०—मारवा**—बहाना करना, बातोंमें टालना।
उठाना—स० कि० उठनेकी क्रिया कराना, उठनेवाले शायी, वस्तुको चलाना; लहराना, फहराना; बिखेरना, फैलाना; गायब करना; सफाईसे चुराना; शरद लेना; नष्ट करना; मिटा देना; अलग कर देना, काटकर फेंक देना; बाक्य, गोले आदिसे नष्ट, भस्म कर देना (पुल, किला इ०); खर्च करना; भोगना; (चिकियों आदिकी) भगा देना, मारना; तेजीसे दौबाना; लगाना; चकमा, भुलावा देना; नुपके-नुपके कौशर्यसे कुछ सीख लेना। * अ० कि० उठना; छितरा जाना।
उठाव—पु० कचनारकी छाल; उससे बनी हुई रस्ती।
उठास—की० वासस्मान।
उठासना—स० कि० (बिस्तार आदि) समेटना, उठाना; भगाना, उरबासना; उठाबना।
उठिया—पु० उठानाका निवासी। **की० उठियाकी भाषा**।
उठियावा—पु० एक भाषिक वृत्त।
उठिक—पु० वह मेक जिसके धाक काटे न गये हों।

उचिसा-पु० दे० 'उचुस'।

उची-खी० मालखंकी एक कसरत। कछावाजी।

उचीकना-स० कि० प्रतीक्षा करना।

उचीसा-पु० भारतवर्षका एक पूर्वी प्रदेश, उत्कल।

उचुबर-पु० [सं०] गुरु; दरवाजेकी चौखट; हिक्का; एक तरहका जुड़ रोग; जुड़ रोगका बीटाणु; तौबा; दो तौलेकी एक तौल। -बूला, -धर्णी-खी० दंती नामक पौधा।

उचु-पु० [सं०] नक्षत्र; अरु। -प-पु० चंद्रमा; बरुण; एक तरहकी नाव, मेला; एक तरहका पान-पान। -पसि, -राज-पु० चंद्रमा; बरुण। -पथ-पु० आकाश।

उ.बुस-पु० खटमल।

उचैरना-स० कि० दे० 'उचेलना'।

उचेलना-स० कि० तरल पदार्थकी एक वर्तनसे दूसरे वर्तन में डालना या जमीनपर गिराना।

उचैनी-खी० जुगनू।

उचईहा-वि० उचनेवाला।

उचुवन-पु० [सं०] उड़ना; हठयोगका एक बंध जिसकी सिद्धिसे योगीमें उड़नेकी शक्तिका आ जाना माना जाता है। -विभागा-हवाई जहाजों आदिकी व्यवस्था करनेवाला सरकारी विभाग।

उडामर-वि० [सं०] झेड़; मम्माम्ब; दुर्घर्ष; प्रचंड।

उडूनी-वि० [म०] उड़ा हुआ; उड़ता हुआ। पु० उड़ान; पक्षियोंकी एक विशेष प्रकारकी उड़ान।

उडूनीच-पु० [सं०] उड़ना।

उडूनीचमान-वि० [म०] उड़नेवाला; उड़ता हुआ।

उडूनीस-पु० [सं०] शिप।

उडकन-पु० टेक, सहारा।

उडकना-अ० कि० ठीकर खाना; सहारा लेना; रकना।

उडकाना-स० कि० सहारा देकर खड़ा करना, भिडाना।

उडना-स० कि० बाहर निकालना।

उडरना-अ० कि० विवाहिता स्त्रीका परपुरुषके साथ निकल जाना, भगा जाना।

उडरी-खी० भगाकर लायी हुई स्त्री, रखेली।

उडाना-स० कि० दे० 'ओदाना'।

उडारना-स० कि० दूसरेकी स्त्रीको भगा लाना।

उडारनी, उडौनी-खी० दे० 'ओदनी'।

उडक-पु० [सं०] उराक नामके लुनि। * वि० ऊँचा।

-मेघ-पु० एक प्रकारका मेघ।

उडंग-वि० ऊँचा, उच्च।

उडत-वि० बधा, सयाना, जवान।

उड-अ० उधर, वहाँ।

उडध-पु० [सं०] अंगिराके पुत्र और बृहस्पतिके बड़े भाई।

-तमब-पु० गीतम।

उडधानुज-पु० [सं०] बृहस्पति।

उडन-अ० उधर।

उडना-वि० उस भावनाका; उस कदर। अ० उस भावनें।

उडजा-पु० कानमें ऊपर पहननेकी शाली।

उडपच-वि० दे० 'उडप'।

उडपात-पु० दे० 'उडपात'।

उडपावना-स० कि० उपजना। अ० कि० उपजना,

उपज होना।

उडतमंग-पु० दे० 'उडतमंग'।

उडतरंग-पु० दरवाजेमें साहके ऊपर बैठायी जानेवाली लकड़ी या पत्थर।

उडतर-पु० दे० 'उडतर'।

उडतरा-खी० उतारन, पुराने कपड़े। पु० उडतरंग।

-पुडतरन-खी० उतारे हुए पुराने कपड़े।

उडतरना-अ० कि० ऊपरसे वा किसी सवारीसे नीचे आना; हास, विगाहकी ओर आना; उठना; घटना; धक्का होना, निकलना; फाँका, हलका पड़ना; दूर होना (ज्वर, क्रोध आदिकी); हटना; योगका समाप्त होना (भास, नक्षत्र आदिकी); कटकर अलग होना; पके फलोंका तोड़ा जाना; (मौजे अदिपर चढ़ी चीजका) बनकर तैयार होना; पार होना; टिकना; उडरना; फिसल होना, निकलना; प्रवेश करना; बसल होना; डीला होना; खिंचना, अंकित होना; नकल होना; तीरमें ठीक आना; जन्म लेना; अशांतिमें सुदृढीके लिए आना; प्यादेका कोई बड़ा मोहरा बनना (सुतरंग); पकती हुई चीजका तैयार होना; बच्चोंका मर जाना; मर आना (नजला आदिकी); उपजना; घटित होना।

उडतराना-स० कि० 'उडतरना'का प्रे० रूप।

उडतराई-वि० उडतरका, उडती।

उडतराई-खी० उडतरनेकी क्रिया; चढाईका उलटा, डाह; नदीके पार उडतरनेका भाका, सेबा; पुलका महसूल; नाव आदिपरसे उडतरनेका खान।

उडतराना-अ० कि० पानीके ऊपर रहना, धबना वा आना; उफनना; हर जगह देख पड़ना; छा जाना; पीछे-पीछे लगे फिरना।

उडतराबल-वि० उडतरा हुआ; पहना हुआ।

उडतराव-पु० उडतर।

उडतरावना-स० कि० 'उडतराना'का प्रे० रूप।

उडतराहा-अ० उडतरकी ओर। वि० उडतरका।

उडतरिन-वि० कणमुक्त।

उडतलना-अ० कि० उतावली करना।

उडतल्ला-अ० दे० 'उताहल'।

उडतलसकंडा-खी० उडकंडा।

उडाहल, उडाबल-अ० उतावलीके साथ, जल्दी-जल्दी।

उडाहली, उडाबली-खी० उतावली।

उडान-वि० चित, पीछेके बल लेटा हुआ; जो छाती तावे हुए हो।

उडार-पु० उडतरनेकी क्रिया; चढावका उलटा, डाह; उडतरनेका क्रम, बढाव; याटा; बह जगह जहाँसे नदी हलकर पार की जा सके; (विष, मंत्रका) प्रभाव दूर करनेवाली दवा; बुक्ति; उडारन; * उडारा। -फडाव-पु० ऊँचाई-निचाई; हानि-लाभ।

उडारन-पु० पहना हुआ पुराना कपड़ा आदि जो नौकर, भिड्डक आदिकी दिवा जाय न्योछावर; निष्ठुर वस्तु।

उडारना-स० कि० ऊपरसे नीचे काना; पहनी हुई चीजको अलग करना; दूर करना; अंशदि पदकर प्रभाव दूर करना; अलग कर लेना, निकाल लेना, (मलाई आदि); काटकर जुदा कर देना; कमीकी ओर लाना, घटाना; (मौजे आदि-

पर चढ़ी बस्तुको) तैयार कर लेना; पका लेना; खींचना, जेड़ना; नकल करना; पढ़ाना, चुकाना; कस ठीका करना; मुकामलेमें लाना; पार पहुँचाना; प्यादेकी बड़ाफर बड़ा मोहरा बनाना; ठीकमें पूरा कर देना; ठिकाना, ठहरनेका प्रबंध करना; न्योछावर करना; सिर या चेहरेके चारों ओर घुमाना (आरती आदि); उत्तरा करना; बहुतांसे प्राप्य रकम बखल करना (चंदा आदि); कर्ज वा सार खींचना, (चमड़ी) खींचना; निकालना; * जन्म देना; तोड़ना।

उत्तरा-पु० रोग वा श्रेतवाधाको विवृष्टिके लिए शीघ्रित व्यक्तिपर कोई चीज बारकर चौराहे आदिपर पर देना; इस क्रियामें व्यवहृत सामग्री; * टिकना; पड़ाव; नदी पार करना।

उत्तरा-वि० उद्यत, आमादा।

उत्तरा-अ० शीघ्र। **स्त्री०** शीघ्रता।

उत्तरा-स्त्री० शीघ्रता, कुर्ती।

उत्तराबल-अ० शीघ्रतापूर्णक, जल्द।

उत्तराबला-वि० उत्तावली करनेवाला, जल्दबाज; बेसम।

उत्तरावली-स्त्री० जल्दी, जल्दबाजी; अधीरता। **वि०, स्त्री०** जल्दी मचानेवाली, अधीर।

उत्तराहल, उत्तराहिल-अ० दे० 'उत्तावल'।

उत्-पु० बेलवृद्धा निकालनेका जोजार; बेलवृद्धा; हुनाबट-चोली चुनाबट चोन्ने चुने चपि होत उजार दाग उत्के'-यन०।

उत्पुण-वि० उत्पन्न, क्रममुक्त।

उत्ते-अ० उत्स जेवर।

उत्तेला-वि० उतावला।

उद-उप० [सं०] यह शब्दोंके पहले लगकर ऊपर (उद्गमन), अतिक्रमण (उत्कांत), उत्कर्ष (उद्बोधन), प्राबल्य (उद्वल), प्राधान्य (उद्दिष्ट), जमाव (उत्पथ), विकास (उत्कुल), शक्ति (उत्साह) आदिका सूचन करता है।

उत्कंड-वि० [सं०] जो गरदन ऊपर किये हुए हो, उद्गमन; उद्यत; उत्कंडायुक। **पु०** इच्छा करना; रगिक्रियाका एक आसन।

उत्कंडा-स्त्री० [सं०] विलम्ब न सह सकनेवाली इच्छा, लालसा; बेचैनी; प्रियसे मिलनेकी उत्सुकता; रगिक्रियाका एक आसन।

उत्कंडित-वि० [सं०] उत्कंडायुक, उत्सुक; अधीर।

उत्कंडिता-स्त्री० [सं०] प्रियमिलनके लिए बेचैन नायिका; सकेतसंकेतपर प्रियके न मिलनेमें चिता करनेवाली नायिका।

उत्कर्षक-पु० [सं०] एक प्रकारका रोग।

उत्कर्षर-वि० [सं०] जिसने गरदन ऊपर उठाया हो, उद्गमन।

उत्क-वि० [सं०] इच्छुक; क्षित; विस्मरणशील। **पु०** इच्छा, अवसर।

उत्कच-वि० [सं०] जिसके बाल खड़े हों; गंजा।

उत्कट-वि० [सं०] तीव्र; उग्र; प्रबल; विकट; घमंडी; क्रमपत; श्रेष्ठ; विषम; कठिन। **पु०** यद; यदगज, वह हाथी जिसे यद क्षरता हो; ईश; दारजीनी; घमंड; नष्टा; मूँज; तत्र; तेजपत्ता।

उत्कटा-स्त्री० [सं०] सैलकी कता।

उत्कर-पु० [सं०] राशि, देर।

उत्कर्कर-पु० [सं०] एक वाध (संगीत)।

उत्कर्ण-वि० [सं०] जो कान खड़े किये हुए हो; झुननेकी उत्सुक।

उत्कर्णता-स्त्री० [सं०] झुननेकी उत्सुकता-‘वाक्य झुननेकी हुई उत्कर्णता’-साकेत।

उत्कर्तन-पु० [सं०] काटना; काटना; उन्मूलन।

उत्कर्ष-पु० [सं०] ऊपर खींचना, उठाना; ऊपर चढ़ना, उन्नति; श्रेष्ठता; समृद्धि; इफरात; दर्प; घमंड; प्रसन्नता।

उत्कर्षक-वि० [सं०] उत्कर्षकारक।

उत्कर्षण-पु० [सं०] उत्कर्ष करना।

उत्कर्षी(विन्)-वि० [सं०] उत्कर्षकारक।

उत्कल-पु० [सं०] वर्तमान उड़ीसा; बहेलिया; ब्राह्मणोंका एक उपभेद; सारवाहक।

उत्कलाप-वि० [सं०] जिसने पूँछ ऊपर फैला रखी हो (मोर)।

उत्कलिता-स्त्री० [सं०] कली; तरंग; कामक्रीडा, हेल्ला; उत्कंठा; गच्छी एक शैली जिसमें छंछे-छंछे समान होते हैं।

उत्कलित-वि० [सं०] उन्नतिशील; विकसित; बधनमुक्त; विपन्न।

उत्कलण-पु० [सं०] काटना; जोतना।

उत्का-स्त्री० उत्कटिता नायिका।

उत्काका-स्त्री० [सं०] प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली गाय।

उत्कार-पु० [सं०] अनाज फटकना; गल्लेका ढेर लगाना; बीज बोनेवाला।

उत्कारिका-स्त्री० [सं०] पुलटिम, नेप।

उत्काशन-पु० [सं०] आदेश देना।

उत्कास, उत्कासन, उत्कासिका-स्त्री० [सं०] खलारना, गलेकी साफ करना।

उत्कीर्ण-वि० [सं०] छिन्नराया या ढेर किया हुआ; खुदा हुआ; छिन्ना हुआ।

उत्कीर्तन-पु० [सं०] चिहाना; घोषणा करना; प्रशंसा करना।

उत्कुट, उत्कुटक-वि० [सं०] चित लेटा हुआ।

उत्कुज-पु० [सं०] खटमल; मूँ।

उत्कुज-पु० [सं०] कीकिलकी काकली।

उत्कूट-पु० [सं०] छतरी।

उत्कूर्दन-पु० [सं०] उछलना, कूदना।

उत्कुल-वि० [सं०] किनारेपर पहुँचनेवाला; तटके ऊपर होकर बहनेवाला।

उत्कृति-स्त्री० [सं०] २६ वर्षोंका एक वृत्त; २६की संख्या।

उत्कृष्ट-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; उन्नत; निकाला हुआ; श्रेष्ठ; उत्तम; जोता हुआ। —**वैद्य-पु०** उत्कृष्ट जातिके पुरुषसे विवाह करना।

उत्केंद्रक-वि० [सं०] सेंद्रसे दूर फँकनेवाला, विकेंद्रक। —**शाक्ति-स्त्री०** वस्तुको सेंद्रसे दूर फँकनेवाली शक्ति।

उत्कोच-पु० [सं०] घुस, रिश्ता।

उत्कोचक-वि०, पु० [सं०] घुस लेने, खानेवाला।

उत्कोटि-वि० [सं०] लोकद्वार; बारदार।

उत्कम-पु० [सं०] ऊपर जाना, चढ़ना; कमीबारी; बाहर

जाना; प्रस्नान; क्रममेव ।
उत्कर्मण-पु० [सं०] ऊपर जाना, चढ़ना; बढ़ जाना; प्रधान; देखते जीवात्माका प्रस्नान, नृत्य ।
उत्कर्त्त-वि० [सं०] प्रक्षित; मुरझाया हुआ; बढ़ा हुआ; युत ।
उत्कर्त्त-वि० [सं०] उत्कर्मण; क्रमिक उन्नति या विकास; नृत्य ।
उत्काम-पु० [सं०] प्रस्नान; बहिर्गमन; बढ़ जाना; उत्कर्मण; विरोध ।
उत्कलेश-पु० [सं०] शोर-गुल; घोषणा; कुररी पक्षी ।
उत्कलेव-पु० [सं०] दे० 'उत्कलेदन' ।
उत्कलेदन-पु० [सं०] गीली, तर होना । -बस्ति-श्री० तरी पहुँचानेके लिए ओषधियोंका काय बस्तिमें पहुँचाना ।
उत्कलेश-पु० [सं०] उत्तेजना; क्षोभ; वेवैनी; शरीरका ठीक हालतमें न रहना; अस्वस्था; मिचली, छर्दि ।
उत्कलेसक-पु० [सं०] एक विषैका कीड़ा ।
उत्कलस-वि० [सं०] ऊपर फेंका हुआ, उछाला हुआ; दूर फेंका हुआ; ध्वस्त; अलग किया हुआ । पु० चट्टा ।
उत्कलप-पु० [सं०] ऊपर फेंकना, उछालना; फेंक देना; भेजना; उछाली जानेवाली वस्तु; बमन; परित्याग; कनपटीके ऊपरका मिरका भाग ।
उत्कलपक-वि० [सं०] फेंकने, उछालने, भेजनेवाला; बसादि चुरानेवाला ।
उत्कलपण-पु० [सं०] फेंकना; उछालना; भेजना; बमन; स्रव; पंखा; नाज पीनेका टंडा; १६ पणका एक मान ।
उत्कलित-वि० [सं०] निकलकर गुँथा, बुना हुआ; जका हुआ ।
उत्कलन-पु० [सं०] खुदाई, खोदनेका काम; खोदकर बाहर निकालना; बाहर करना ।
उत्कला-श्री० [सं०] मुरा नामक गधधन्य ।
उत्काल-वि० [सं०] खोटा हुआ; खाला हुआ; खोदकर निकाला हुआ; नष्ट किया हुआ । पु० छेद, बिल; गदा; ऊबड़-खाबड़ जमीन । -कैलि-श्री० (मानवोंका) खेलमें मींग या दाँतसे भरती खोदना ।
उत्काला(नृ)-वि० [सं०] खोदनेवाला; उखाड़नेवाला ।
उत्काली(सिद्ध)-वि० [सं०] जो समतल न हो, ऊबड़-खाबड़, विषम; नाश करनेवाला ।
उत्काल-पु० [सं०] खोदना; खोदकर बाहर करना ।
उत्कलेव-पु० [सं०] काटना; निकालना ।
उत्कंक-पु० दे० 'उत्कंक' ।
उत्कंग-वि० दे० 'उत्कंग' ।
उत्कम, **उत्कर्मण**-पु० [सं०] सुहारा, टेक; रोकना ।
उत्कंस-पु० [सं०] कर्मपूर, कर्णभरण; शेरार, शिरोभूषण; आभूषण; * दे० 'अवर्तत' ।
उत्त-वि० [सं०] मीला, मीगा हुआ, तर । * पु० अचरज; संदेह । * अ० उत्तर ।
उत्तट-वि० [सं०] किनारेसे छलकता हुआ, उद्वेलित ।
उत्तपन्न-पु० [सं०] एक विशिष्ट प्रकारकी अग्नि ।
उत्तप्त-वि० [सं०] बहुत आंदा गरम; दून्धी; कुदरा हुआ; क्रुद्ध; कात; चिंतित । पु० सुखाया हुआ मांस; उत्ताप ।

उत्तक, **उत्तमित**-वि० [सं०] ऊपर उठाना हुआ; उत्तमित; उद्वेलित किया हुआ ।
उत्तर्मग-पु० उत्तमंग, सिर ।
उत्तम-वि० [सं०] सबसे अच्छा, भेड, बेहतरीन; प्रधान, सबसे बड़ा । पु० विष्णु; भूवका सौतेला भाई । -गंधा-श्री० चमेरी । -दुर्वा-वि० देखनेमें भला भाव्य होनेवाला । -पुरुष-पु० बोलनेवाला स्वक सर्वनाम (मैं, हम); ईश्वर; पुरुषोत्तम । -ककिनी-श्री० दुषिका नामक पीप । -मणि-पु० एक रत्न । -मित्र-पु० वह जो राजा या राष्ट्रका सबसे उत्तम मित्र हो । -बवस-श्री० जीवनका अंतिम भाग । -बर्ण-वि० अच्छे रंगका; सर्वोच्च जातिका । -बैद्य-पु० शिव । -सूत-वि० बहुत, बहुत बड़ा विद्वान् । -छोक-वि० अच्छी कीर्तिवाला, यशस्वी । -संग्रह-पु० परकीके साथ सौँत गौँत । -साहस-पु० एक हजार पण जुमानेकी सजा; कोई बड़ी सजा-प्राणदंड, निर्वासन, जामदग्दी जन्ती, अंग-जंग आदि ।
उत्तमसा-श्री० [सं०] मेहता; अच्छाई ।
उत्तमसाई-श्री० उत्तमसा ।
उत्तमण-पु० [सं०] अमीरता; दिल्का बैठ जाना ।
उत्तमर्ष, **उत्तमर्षि**-पु० [सं०] महान्न, कण देनेवाला ।
उत्तमंग-पु० [सं०] सिर ।
उत्तमंग(स्)-पु० [सं०] नौ प्रकारकी तुष्टियोंमेंसे एक जो अहिनासे प्राप्त होती है ।
उत्तमा-वि० श्री० [सं०] मछी, नेक । श्री० नेक श्री० एक तरहका फोडा; दुषिका नामक पीप; इंदीबरी ।
दूती-श्री० वह दूती जो नायक वा नायिकाकी बातोंसे मना ले । -नायिका-श्री० वह नायिका जो प्रतिकूल पक्षके साथ भी अनुकूल आवरण करे ।
उत्तमारणी-श्री० [सं०] इंदीबरी नामक पीप ।
उत्तमाई, **उत्तमार्थ**-पु० [सं०] उत्कृष्ट अर्थात् उत्तरार्थ ।
उत्तमाह-पु० [सं०] सुदिन; अंतिम दिन ।
उत्तमीय-वि० [सं०] सबसे ऊपरका, सर्वश्रेष्ठ; प्रधान ।
उत्तमोत्तम-वि० [सं०] अच्छेसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ ।
उत्तमोत्तमक-पु० [सं०] कात्यके दस अंगोंमेंसे एक (ना०) ।
उत्तमीजा(जस्)-वि० [सं०] बल-वीर्यमें सबसे यत्नकर । पु० महाभारतमें पांडवोंकी ओरसे लड़नेवाला एक राजा; मनुका एक पुत्र ।
उत्तरव-पु० [सं०] चौखटके ऊपरकी काठकी मेहराब । वि० छुप्प; तरगित; उछलता हुआ ।
उत्तरवि-वि० [सं०] हौफता हुआ ।
उत्तर-वि० [सं०] उत्तर दिशा-संबंधी; ऊपरवाला; ऊँचा; पीछे आनेवाला, पिछला; श्रेष्ठ (लोकोत्तर); अतीत; अधिक; * * * से अधिक (अष्टोत्तर श्रेष्ठ); बाम; शक्तिशाली; पार करने वा किया जानेवाला । पु० दक्षिणकी ऊलटी दिशा, छुमाक; जवाब; बदला; बादका जवाब, बचाव; राधा विराट्का पुत्र; मयिष्यत् काल; विष्णु; शिवा; अधिक; नीचे जाना; ऊपरकी सतह वा आवरण; निष्कर्ष; श्रेय; आतिथ्य; प्रस्थान; एक अर्धवर्त्मान्न जिसमें उत्तर सुनकर प्रसक्ता अनुमान लगा लिया जाय । अ० पीछे; श्रेष्ठ ।

—काँच-पु० रामायणका सातवीं वा अंतिम काँच ।
 —काच-पु० शरीरका ऊपरका भाग । —काळ-पु०
 आनेवाला समय; भविष्यद काळ । —काशी-श्री०
 बदरिकाश्रमके रास्तेमें पड़नेवाला एक स्थान । —कुङ्कु-
 पु० कुङ्कु देशका उत्तरी भाग, बम्बईपका एक खंड ।
 —कोशाळ-कोसल-पु० अथवा । —कोशाळा-श्री०
 अयोध्या नगरी । —किष्का-श्री० अन्वेष्टि, पिछड़ानादि ।
 —गुण-पु० मूल गुणोंकी रक्षा करनेवाले गुण (जै०) । —
 ग्रंथ-पु० ग्रंथका परिशिष्ट । —चक्रद-पु० विद्यावनकी
 चादर; आवरण । —तंत्र-पु० सुभक्तका परिशिष्ट भाग ।
 —दाता(रु)-दायक-वि० जबाब देनेवाला, जिम्मेदार;
 धृष्ट । —दायिज-पु० जवाबदेही, जिम्मेदारी । —दायी-
 (विश्व)-वि० जबाब देनेवाला, जिम्मेदार । —नाभि-
 श्री० यक्षमें उत्तर दिशामें बना कुंड । —पक्ष-पु० बाद
 या बहसका जबाब; सिद्धांतपक्ष । —पट-पु० दुपट्टा; चादर ।
 —पथ-पु० उत्तर्फा रास्ता; देवमार्ग । —पथ-पु० समाप्त
 का अंतिम पद । —पाद-पु० हाँकेका जवाब । —प्रभुत्तर-
 पु० सवाल-जवाब, बहस-दुवजत । —प्रोक्षपदा-श्री०
 उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र । —मंथ-श्री० संगीतके स्वरका
 एक प्रकार । —मीमांसा-पु० वेदांत दर्शन । —रामचरित-
 पु० भवभूति-रचित संस्कृतका एक प्रसिद्ध नाटक । —
 लक्षण-पु० उत्तर, जवाबके लक्षण । —बच-श्री०
 उद्गापा । —बचस-पु० [हि०] उद्गापा । —बलि-श्री०
 एक तराईकी छोटी पिचकारी । —बल्ल-पु० ऊपर पहनने-
 का बन्ध; दुपट्टा; उपरना । —बादी(विश्व)-पु० प्रति-
 बादी, मुद्दालेख; बादमें, पीछे करियाद करनेवाला । —
 साक्षी(विश्व)-पु० सुनी हुई बात कहनेवाला गवाह;
 प्रतिवादिपक्षका गवाह । —साधक-वि० शेषांशको पूरा
 करनेवाला; जवाबको साबित करनेवाला । पु० सहायक ।
 उत्तरण-पु० [सं०] पार होना; उतरना; पानीमें निकलना ।
 उत्तरप्रवेश-पु० [सं०] दिल्ली-पञ्जाब और बिहारके बीचका
 प्रदेश जिसे ब्रिटिश शासनकालमें संयुक्तप्रान्त कहते थे ।
 उत्तरा-श्री० [सं०] उत्तर दिशा; एक नक्षत्र; अग्निमन्वन्तुकी
 पचीसविसरी परीक्षितका जन्म हुआ । —खंड-पु० भारत-
 वर्षका उत्तरी, हिमालयके पासका भाग । —कास्तुनी-
 श्री० एक नक्षत्र । —भाद्रपदा-श्री० एक नक्षत्र ।
 उत्तराधिकार-पु० [मं०] किसीके (मरनेके) बाद उनकी
 संपत्ति पानेका हक, वारसत ।
 उत्तराधिकारी(विश्व)-वि० [सं०] किसीके बाद उसकी
 संपत्ति पानेका हकदार, वारिस ।
 उत्तराभास-पु० [सं०] सूझा जवाब; बहाना; दलमट्टल ।
 उत्तरायण-पु० [मं०] सूर्यका मकररेखासे उत्तर(कर्करेखा)-
 की ओर जाना; वह छ महीनेका काल जब सूर्यकी गति
 उत्तरश्री और रहती है ।
 उत्तरायणी-श्री० [सं०] एक मूर्च्छना (संगीत) ।
 उत्तरार्द्ध, उत्तरार्ध-पु० [सं०] देहका कमरमें ऊपरका
 भाग; पिछला, अंतकी ओरका आधा भाग (पूर्वार्धका
 उल्टा) ।
 उत्तराशा-श्री० [सं०] उत्तर दिशा ।
 उत्तरपादा-श्री० [मं०] एक नक्षत्र ।

उत्तरासंग-पु० [सं०] ऊपरका बन्ध, उपरना ।
 उत्तरीय, उत्तरीयक-वि० [सं०] उत्तरका; ऊपरका । पु०
 दुपट्टा, उपरना, ओढ़नी; एक अच्छी जातिका सन ।
 उत्तरेश्वर-वि० [सं०] उत्तरसे भिन्न; दक्षिणी ।
 उत्तरेश्वर-श्री० [सं०] दक्षिण दिशा ।
 उत्तरेशु(सुसु)-अ० [सं०] आगले दिन, कल ।
 उत्तरेश्वर-अ० [सं०] अधिकाधिक; दिन-दिन अधिक;
 लगातार ।
 उत्तर्जन-वि० [सं०] प्रचंड; भयंकर ।
 उत्तलित-वि० [सं०] ऊपरकी ओर फेंका हुआ, उछाला
 हुआ ।
 उत्ताम-वि० [सं०] ताना, फैलाया हुआ; पीठके बल सेटा
 हुआ, चित्त; सीधा (सधा); स्पष्टवक्ता; ऊर्ध्वमुख । —कर्मक
 —पु० बैठनेकी एक मुद्रा । —पत्रक-पु० रक्त परंज ।
 —पाद-वि० जिसकी टोंगें फैला दी गयी हैं । पु० स्वायं-
 भुव मनुका पुत्र जो भुवका पिता था; परमेश्वर । —अ-
 पु० भ्रवतारा; भ्रुव । —श्राव-वि० चित्त लेटा हुआ । पु०
 दुष्मंदा वक्ता । —हृदय-वि० खुले या साफ दिखवाला ।
 उत्तानक-पु० [सं०] उधटा नामक वृण ।
 उत्तानित-वि० [सं०] ऊपर उठाया या फैलाया हुआ
 (मुख) ।
 उत्ताप-पु० [सं०] तेज गरमी या आँव; दुःख; हेरा; चिता;
 क्रोध; उत्तेजना; शक्ति; प्रयास ।
 उत्तापित-वि० [सं०] गरम किया हुआ; पीड़ित; उत्तेजित
 किया हुआ ।
 उत्तापी(विश्व)-वि० [सं०] उत्तापयित ।
 उत्तार-वि० [सं०] औरतें बड़ जानेवाला, अँध । पु० उद्धार;
 मुक्ति; बचन; अखिरता; प्रयाण; पार ले जाना; तटपार
 उतारना ।
 उत्तारक-वि० [मं०] उद्धारक, तारनेवाला । पु० शिव ।
 उत्तारण-पु० [मं०] पार उतारना; उद्धार करना; विष्णु ।
 उत्तारी(विश्व)-वि० [मं०] पार करनेवाला; अखिर; परि-
 वर्तनशील; अवस्थ ।
 उत्तार्थ-वि० [सं०] पार करने योग्य; बचन करने योग्य ।
 उत्ताल-वि० [सं०] ऊँचा; प्रबल; प्रचंड; भयंकर; विशाल;
 कठिन; प्रकट; अँध । पु० बचनानुसंग; एक विशेष संख्या
 (बी०) ।
 उत्तीर्ण-वि० [सं०] पार पहुँचा हुआ; जिसका उद्धार किया
 गया हो; कर्तव्यमें मुक्त; परीक्षामें पास; चतुर, अनुभववी ।
 उत्तुंग-वि० [सं०] बहुत ऊँचा, गगनस्पर्शी; प्रवर्धित
 (धारा) ।
 उत्तुङ्गित-पु० [सं०] कौंटेका सिरा (जो बरनमें जुभवा है) ।
 उत्तुष-पु० [मं०] भूरी निकाला हुआ या धूना हुआ अन्न,
 छावा ।
 उत्तु-पु० [फा०] कपड़ेपर बेल-बूटे या बूनटके निक्षाल
 डालनेका औजार; बेल-बूटेका काम जो इस औजारके
 जरिये किया जाय । वि० अथ, नक्षेत्र चूर । —कस्त, —बल
 —पु० उष्णका काम करनेवाला । पु० —करना —इतना
 मारना कि देहपर दाग पड़ जाय ।
 उत्तेजक-वि० [मं०] उत्तेजित, बढ़ावा देनेवाला; काम,

कोष आदिको भङ्गनेवाला ।
उत्प्रेक्षण-पु० [सं०] उभारना, भङ्गना; बन्ना देना, तेज करना (भार आदि) ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] बदाया; प्रेरणा; रोष; कोष ।
-अनक-वि० भङ्गनेवाला; कोषोत्पादक ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] तोरण आदिसे सजा हुआ ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] ऊपर उठाना, तानना; तौटना ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] छोड़ा हुआ; उछाड़ा हुआ; अनासक ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] छोड़ना; फैलना; उछालना; सम्प्राप्त ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] अय, आतंक ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०]...से उत्पन्न या निकला हुआ (समासांत में अथवा-आनवीथ) ।
उत्प्रेक्ष्य-सं० कि० आरम्भ करना ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] उठाना; उठाना; बढ़ती, बल-बैभवकी वृद्धि; जागना; प्रसन्नता; बुद्धि; सेना; आंगन; वस्त्रभूषण; सीमा; पौरुष; पुस्तक; उषम; उग्रम; प्रलोत्सर्ग; प्रबंध, व्यवस्था; रोगका कारण । -**एकादशी**-स्त्री० कातिक-शुक्ल एकादशी । -**पतन**-पु० उठना-गिरना, वृद्धि-वृद्धि ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] उठाने, जगाने, उभारनेवाला ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] उठाना; जगाना; उभारना; घेरित करना; त्याग कराना (वासस्थान); वसन कराना; समाप्त कराना; उत्पन्न कराना; अमीष्ट राशि या उत्तर प्राप्त करना (ग०) ।
उत्प्रेक्ष्य(विद्)-वि० [सं०] उठने, उभारने, बढ़नेवाला ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] उठा हुआ; उठता हुआ; बल-बैभवमें बढ़ा हुआ; उद्धार किया हुआ, बचाया हुआ; उपज; उषमी; वृद्धिशील; वृद्धि होनेवाला; ऊँचा; फैलाया हुआ ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] उठान, ऊपर उठाना, उग्र होना ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] पैरके छिलकेने निकलनेवाला लसदार रस, गोंद; दुग्ध ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] पक्षी ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] ऊपर उठाना; ऊपर उठाना; गृहना; चढ़ना; उछलना; फैलना; उछालना; उत्पत्ति ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] जो संज्ञा ऊपर किये हुए ही; उठाये हुए झटके साथ ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] जन्म; उत्प्रेक्षण; आरंभ; जन्मस्थान; उग्रम; पुनर्जन्म; अस्तित्व ग्रहण करना; वृद्धि; उपज; ऊपर उठाना; लाभ । -**केतन**, -**बाम**(इ)-पु० जन्मस्थान ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] कुमार्य, बुरा या गलन रास्ता; मटका हुआ व्यक्ति ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] नगरमें शहर-उपर जाते-जाते हुए लोग ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] जनमा हुआ; उपजा हुआ । -**बुद्धि**-वि० चतुर, दक्ष । -**अज्ञाती**(विद्)-वि० जो खानेपरको ही क्या सके । -**विज्ञाती**(विद्)-वि० जनमते ही मर जानेवाला ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] कमल; नील कमल; कुमुद; विना साफ किये हुए अन्नकी पीठी; पौधा । वि० क्षीण, दुबला-पतला ।
-अधिक-पु० चंदनविशेष । -**पत्र**-पु० कमलका पत्ता; मल्लिका; चंदनका तिलक; चौड़े फलका बाकू । -**पत्रक**-

पु० चौड़े फलका बाकू । -**सारिवा**-स्त्री० श्वामा लता ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] कमल-पुष्पोंका समूह; कमलका पौधा; एक वृत्त ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] शुद्धीकरण, संस्क्रिया; पानी छानना; साफ करनेका यंत्र; कुदासे अधिपर धी छिन्नना ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] उखाड़ना; उन्मूलन, जड़से नाश करना; कानके लोचकमें छोथ, पीसा होना ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] उखाड़नेवाला । पु० कानका एक रोग ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] उखाड़ना; जड़-मूलसे नाश करना ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] पैरकी ऊपरी छाल । वि०, स्त्री० उखाड़नेवाली ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] जड़से उखाड़ा हुआ; घटाया हुआ; सिद्धासन-च्युत ।
उत्प्रेक्ष्य(विद्)-वि० [सं०] उत्प्रेक्षण करनेवाला (प्रायः समासांतमें प्रयुक्त) ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] ऊपर उठाना, उछलना; उछाल; छर्काया; विपस्वक आकस्मिक घटना; लौकिके लिए विपद्-रूप भौतिक घटना (भूकंपादि); सुराफात; उपद्रव; ऊषम; कानका एक रोग ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] उत्प्रेक्षण-जनक; ऊपर उठनेवाला । पु० एक कल्पित जानवर, शरभ ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] अतिप्रकृत (जै०) ।
उत्प्रेक्ष्य(विद्)-वि० [सं०] उत्प्रेक्षण करनेवाला, सुराफाती ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] जिसको पैर ऊपर उठे हैं । पु० जन्म, उत्पत्ति । -**शय**, -**शयन**-वि० शिष्ट; टिफिन पक्षी ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] पैदा करनेवाला । पु० मूल, कारण; शरभ नामक कल्पित पशु ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] पैदा करना, उपजाना; (माछ) तैयार करना; तैयार किया गया माछ ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] एक फीट, हिलमोचिका, दीमक (T); पृथिका, पोष; माता । वि०, स्त्री० उत्पन्न करनेवाली ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] उत्पन्न; उपजाया; पैदा किया हुआ ।
उत्प्रेक्ष्य(विद्)-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला (समासमें); जन्म, जात ।
उत्प्रेक्ष्य-स्त्री० [सं०] स्वास्थ्य, आरोग्य ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] विद्रोह; बहस ।
उत्प्रेक्ष्य, **उत्प्रेक्ष्य**-वि० [सं०] मुक्त किया हुआ; अव्यक्तित्व; व्याकुल ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] दवाना; पेरना; कुचलना; बह पड़ना; फैल; जलम ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] दवानेवाला; सतानेवाला ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] दवाना; सताना, जुलूम करना ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] दवाया, सताना हुआ, मजबूस ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] जिसकी पूँछ ऊपर उठी हो ।
उत्प्रेक्ष्य-वि० [सं०] सिद्धा हुआ ।
उत्प्रेक्ष्य-पु० [सं०] कानके बाहरी हिस्सेमें होनेवाला

एक रीति ।

उत्सुक-वि० [सं०] रोमांचित प्रसन्न ।

उत्सर्ग-वि० [सं०] अतिराम, अविच्छिन्न ।

उत्सर्ग-वि० [सं०] प्रकाश किरणनेवाला; प्रभापूर्ण । पु० इहकती हुई आग ।

उत्सर्ग-पु० [सं०] गर्भपात ।

उत्साह, उत्साह-पु० [सं०] छुटकाना; फेंकना; हँसी, हिकगी; ठहाका; ह्वय, कटुक्ति; आतिशय्य ।

उत्सेहक-वि० [सं०] देखने-समझने, विचार करनेवाला ।

उत्सेहक-पु० [सं०] ऊपर देखना; उद्गावना; छुलना करना ।

उत्सेहा-श्री० [सं०] उद्गावना, अनुमान; उपेक्षा; उदासीनता; अर्थसंस्कारका एक भेद जिसमें प्रस्तुत वस्तुमें साध्यके कारण अन्य वस्तुकी कल्पना की जाती है ।

उत्सृज-पु० [सं०] कुदान ।

उत्सृज-पु० [सं०] कूदना, उछलना; कुचसे तेल, धी आदिका ऊपरका मैक निकालना ।

उत्सृज-पु० [सं०] उछाल; छलंग; जस्त ।

उत्सृज-वि० [सं०] खिला हुआ, पूर्णतः विकसित; प्रसन्नतासे खिला हुआ; वित सोया हुआ; विस्फारित (नेत्र) । पु० दोगि; एक रतिबंध ।

उत्सर्ग-पु० [सं०] गोद, बंक; संपर्क, योग; निवृत्तके ऊपरका भाग; धका सवसे ऊपरका भाग; शिखर, चोटी; सतह; पार्श्व; ढाल; वितान; वसि; नाकीप्रणका भीतरी भाग; कर्द राजाभी और प्रजावसि राजकुमारके जन्मके अवसरपर उपहाररूपमें मिलनेवाला धन ।

उत्सर्गित-वि० [सं०] गोदमें लिया हुआ, आकृषित; संपर्कमें लाया हुआ ।

उत्सर्गिनी-श्री० [सं०] पक्षके अंदर होनेवाली कुंसी ।

उत्सर्गि(निर्) -वि० [सं०] साज रहनेवाला; गहराईतक पहुँचा हुआ (त्रण) । पु० नादीत्रण ।

उत्सर्जन-पु० [सं०] उठाना; उछालना ।

उत्स-पु० [सं०] सीत, सीता; जलमय स्थान ।

उत्स-वि० [सं०] क्षीण; नष्ट, उच्छिन्न, जिसकी जड़ उखाड़ दी गयी हो; उठाना हुआ; अमिश्रित; विरुद्ध; व्यवहारमें न आनेवाला; पूरा किया हुआ ।

उत्सर-पु० [सं०] वृत्तिवेष ।

उत्सर्ग-पु० [सं०] अलग करना; छोड़ना, त्यागना; दाखना; दान; भय; बलि; शुद्ध; अपान बाहु या मलका त्याग; समापन (अध्ययन आदिका); वैदिक कर्मविशेष; सामान्य नियम (अपवादका उलट) ।

उत्सर्गत(तत्स) -ज० [सं०] नियमरूपमें, आमतौरमें ।

उत्सर्गि(निर्) -वि० [सं०] उत्सर्ग करनेवाला ।

उत्सर्जन-पु० [सं०] उत्सर्ग करना; त्याग; दान करना; एक वैदिक कर्म जो सालमें दो बार किया जाता है; वेदाध्ययन समाप्त करना ।

उत्सर्गित-वि० [सं०] छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।

उत्सर्ग, उत्सर्ग-पु० [सं०] ऊपर बढ़ना; उठना; फूटना; फेंकना ।

उत्सर्गिनी-श्री० [सं०] जैनमतानुसार कालका एक

विमान ।

उत्सर्पी(विष्) -वि० [सं०] ऊपर उठने, बढ़नेवाला; अनुत्तम ।

उत्सर्पी-श्री० [सं०] गर्भ बोध अवस्थामें पहुँची हुई गाय, अर्लगपर आयी हुई गाय ।

उत्सर्ग-पु० [सं०] आनंद, प्रसन्नता; आनंदजनक कार्य, विवाह आदि; बलसा; उछाव-बचाव (मनाना); ऊँचाई; गुस्ता, क्रोध; इच्छा; प्रयंका खंड, भाग; कार्य-भार ग्रहण करना; काबोजन ।

उत्साह-पु० [सं०] नाश, क्षय ।

उत्साह-वि० [सं०] विध्वंसकारी, नाशक ।

उत्साह-पु० [सं०] नाश करना; बाधा डालना; धावका भरना; ऊपर बढ़ना; उठाना; मांछिष करना, उबटन कमाना; लेतकी दूसरी जोतार करना ।

उत्साहित-वि० [सं०] गष्ट किया हुआ; साफ किया हुआ; आरुढ़; उठाना हुआ ।

उत्सारक-पु० [सं०] शहरेदार, द्वारपाक ।

उत्सारक-पु० [सं०] हटाना, दूर करना; (सवारी आदिते) उतरनेमें सहायता देना; अतिथिका स्वागत करना ।

उत्साह-पु० [सं०] हौसला, उमंग; उद्यम, चेष्टा; प्रवृत्ति, इच्छा; अध्यवसाय; बढ़ सकल्य; योग्यता, क्षमता; बढ़त; कन्या; सुख; श्रुष; वीर रसका स्वाधी भाव । -बर्चन-पु० वीर रस; शक्तिही बुद्धि; उद्यम-बुद्धि । -हृत्त-पु० हौसला बढ़ाने, उत्तेजना बढ़ानेकी योजना । -क्षति-श्री० बढ़ता; अध्यवसाय; आक्रमण और युद्ध करनेकी शक्ति । -सिद्धि-श्री० उत्साह-शक्तिते सिद्ध होनेवाला कार्य । -हेतुक-वि० उत्साहित कर काममें प्रवृत्त करनेवाला ।

उत्साहक-वि० [सं०] अध्यवसायी; कर्मठ, क्रियाशील ।

उत्साह-पु० [सं०] उद्यम; अध्यवसाय; उत्तेजना देना, उत्साह बढ़ाना ।

उत्साहि-वि० दे० 'उत्साही' ।

उत्साही(हिन्) -वि० [सं०] उन्मादवृत्त; उद्यमी; अध्यवसायी ।

उत्सिक-वि० [सं०] अभिषिक्त; प्रभावित; मगंही; बंचलचित्त ।

उत्सुक-वि० [सं०] उत्कण्ठित; अत्यधिक इच्छुक; बेचैन; अफसोस करनेवाला; बहुत चाहनेवाला (किसी वस्तुकी) । उत्सुकता-श्री० [सं०] अजीर्ता, व्याकुलता, बेचैनी; उत्कण्ठा; प्रबल इच्छा; आसक्ति, प्रेम; पश्चात्ताप, अफसोस । उत्सृज-वि० [सं०] भागेसे निकाला हुआ; अनियमित; नियम वा सूत्रका त्याग करनेवाला ।

उत्सृज-पु० [सं०] सख्या ।

उत्सृज-वि० [सं०] उत्सर्ग किया हुआ, परित्यक्त; उठेला हुआ; प्रयोगमें लाया हुआ । -वृष्टि-पु० विशेष अवसरपर उत्सर्ग किया हुआ वर्ष । -वृष्टि-श्री० फेंका हुआ अन्न ग्रहण करना ।

उत्सृष्टि-श्री० [सं०] परित्याग ।

उत्सेक-पु० [सं०] छिन्नकना; उफनकर बहना; प्रभावित करना; बर्ष, वर्ष ।

उत्सेही(किन्) -वि० [सं०] प्रभावित करनेवाला; ऊपरसे

रहनेवाला; उफननेवाला; धमकी ।

उत्सेचन-पु० [सं०] छिड़कने या उफननेकी क्रिया ।

उत्सेह-पु० [सं०] ऊँचाई; मोझाई; भेडता; बकाई; शोध; देह; बध । वि० ऊँचा; बका ।

उत्समय-पु० [सं०] मुस्कराहट ।

उत्स्य-वि० [सं०] कृप या सोतेसे निकला हुआ ।

उत्स्वन-वि० [सं०] ऊँची आवाज करनेवाला; शोर करनेवाला । पु० ऊँची आवाज ।

उभयपना*-स० कि० उठा देना; उभार या उखाड़ देना ।

उभराई*-स्त्री० उठान-‘नैननि शेरति रूपके शौर अन्वये भरी छतिया उभराई’-घन० ।

उभराना*-अ० कि० किंचित् उठना, उन्नत होना ।

उधलना*-अ० कि० डगमगाना; उलटना । मु०-पुधलना-नीचे-ऊपर होना; श्वरका उधर होना ।

उधल-पुधल-स्त्री० उलट-पलट; भारी उलट-फेर; हलचल (मचाता) ।

उधला-वि० छिछला, कम गहरा ।

उर्दक-पु० [सं०] (नैपादिका) चर्मपात्र, कुप्पी ।

उर्दचन-पु० [सं०] घसा; कुपेसे पानी निकालनेकी बालटी; ऊपर फेंकना; आरोहण; डकन ।-स्थान-पु० पानी रखनेका स्थान ।

उर्दचित-वि० [सं०] उछाला हुआ; ऊपर उठाया हुआ; उक्त, प्रगल्भनिन; पूजित ।

उर्दचु-वि० [सं०] ऊर्ध्वगमनशील, जिनकी प्रवृत्ति ऊपर जानेकी हो ।

उर्दङ*-वि० दे० ‘उर्दङ’ ।

उर्दङपाल-पु० [सं०] एक तरहकी मछली; मयका एक भेद ।

उर्दत-पु० [सं०] समाचार, वार्ता, खबर; मञ्जन; व्यापार; यज्ञ आदिके महारे जीविके प्राप्त करनेवाला । वि० नीमा-तक पहुँचनेवाला (समाचार आदि) । * जिससे (दृष्टके) दूरे नैन न जमे हो ।

उर्दतक-पु० [सं०] वृत्तान्त, समाचार, खबर ।

उर्दतिका-स्त्री० [सं०] मनुषि, रूषि ।

उर्दथ-वि० [सं०] नीमाके बाहर रहनेवाला ।

उर्द(जू)-पु० [सं०] जल (साधारणतः समाममें या ‘उर्दक’ के विकल्परूपमें व्यवहृत होता है) ।-कीर्ण-कीर्ण-पु० महाकाव्य ।-कुंज-पु० पानीका या पानीमें भरा घास ।-कोह-पात्र-पु० पानीका घास ।-घोष-पु० जलका गर्जन ।-चमस-पु० पानी पीनेका गिलास ।-ज-वि० जलीय, जलमें उत्पन्न ।-घात्र-पु० घास; बादल ।-धि-पु० दे० क्रममें ।-ध-पु० नाव ।-पात्र-पु०,-पात्री-स्त्री० घास, जल रखनेका पात्र ।-पात्र-पु० कुपेके पासका गदा; कुञ्जी; कर्मदण्ड; पानीका छोटा गदा; तालाबके निकटकी भूमि या टीला ।-पुर-पु० हौज ।-ह्व-पु० जलप्रवाह ।-ध्रुव-वि० जलमें से रहनेवाला ।-विंदु-विंदु-पु० पानीकी बूँद ।-भार-पु० जल डोनेवाला, बादल ।-अंघ-पु० जोकी माथी, ‘बालीबादर’ ।-भान-पु०, -मेही(विन्)-वि० बहुवृत्त रोगसे ग्रस्त ।-बाप-पु० पितरोंकी जल देनेवाला व्यक्ति ।-बास-पु० जलरू निवासस्थान; जलाशयके किनारेका निवासस्थान ।-बाह

-पु० बादल ।-बाहान-पु० जलपात्र ।-धीबध-पु० पानी डोनेकी रैहगी, कौर ।-शराब-पु० जलपूर्ण घट ।

-सुख-वि० नहाया हुआ ।-विन्-पु० आधा पानी मिला हुआ मट्ठा ।-हरण-पु० पानी खींचनेका पात्र ।-हार-पु० बादल ।

उर्द(उ)-पु० दे० ‘वदय’ ।

उर्दक-पु० [सं०] पानी ।-कर्म(जू),-कार्य,-दान-पु० दे० ‘उर्दकिया’ ।-कुहू-पु० एक व्रत जिसमें

महीनेभर केवल ओके सप्ता और पानीपर रहना होता है ।-क्रिषा-स्त्री० पितरोंकी जल देना, पितृतर्पण ।-क्रीडन-पु० जलक्रीडा ।-गाह-पु० स्नान करना, गोसा

लगाना ।-गिरि-पु० जलाशयों/ पूर्ण पर्वत ।-चरण-पु० बुझा, पनडुब्बा ।-द,-दासा(तु),-दानिक,-दायी(विन्)-वि० पितरोंको पानी देनेवाला; उत्तरा-पिकारी ।-धर-पु० बादल ।-परीक्षा-स्त्री० एक

प्रकारकी दिव्य परीक्षा ।-प्रतीकाश-वि० जलीय; जल जैसा ।-विंदु,-विंदु-पु० पानीकी बूँद ।-शान्ति-स्त्री० रोग दूर करनेके लिए अभिमणित जल छिड़कना ।-शाक-पु० पानीमें पैदा होनेवाले शाक ।-सुख-वि० कात,

नहाया हुआ ।-स्पर्श-पु० शरीरके विभिन्न अंगोंका जलसे स्पर्श कराना; शपथ, प्रतिज्ञा आदिके पूर्व जलका स्पर्श करना ।-हार-पु० पनभरा, कहर ।

उर्दकअग्नि-पु० दे० ‘उदगग्नि’ ।

उर्दकना*-अ० कि० (उत्साहातिरेकसे) उछलना-फूटना; छटकना ।

उर्दकल, उर्दकिल-वि० [सं०] जलीय; जलवाला ।

उर्दकोत-पु० [सं०] तट, किनारा ।

उर्दकाधार-पु० [सं०] हौज, कूप आदि ।

उर्दकाधी(विन्)-वि० [सं०] व्यासा; जल चाहनेवाला ।

उर्दकेधर-वि० [सं०] जलधर ।

उर्दकेधिशिर्ष-वि० [सं०] पानीमें लुझाया हुआ अर्थात् अधतपूर्व, अमभव ।

उर्दकेशव-वि० [सं०] जलमें सोने या रहनेवाला ।

उर्दकोर्ध्वन-पु० [सं०] पानीका घास ।

उर्दकोदर-पु० [सं०] जलोदर रोग ।

उर्दकोदन-पु० [सं०] भात ।

उर्दक्(च्)-वि० [सं०] ऊपरका; उत्तरी; परवर्ती । अ० ऊपर; उत्तरकी ओर ।

उर्दक-वि० [सं०] ऊपर खीचा या उठाया हुआ; ऊपर उठा हुआ; उक्त ।

उर्दक्य-वि० [सं०] जलस्थ; जल चाहनेवाला ।

उर्दक्या-स्त्री० [सं०] रजस्वाली स्त्री ।

उर्दगारना*-अ० कि० निकलना, प्रकट होना; उमड़ना ।

उर्दगार*-पु० दे० ‘उद्गार’ ।

उर्दगारना*-सं० कि० उगलना; अ० कि० बकार लेना; बकाना ।

उर्दगारी*-वि० उगलने, बकार लेनेवाला ।

उर्दग्-‘उर्दक’का समासगत रूप ।-अग्नि-पु० विमलय ।

-अचन-पु०, -शान्ति-स्त्री० उत्तरायण ।-हार-वि० जिसका द्वार उत्तरकी ओर हो ।-भूस्-पु०, -भूमि-

श्री० उपजाक जमीन ।

उद्गम*—वि० दे० 'उदय' ।

उद्गम—वि० [सं०] ऊपरको उठा, उमरा हुआ; उदर; वयोवृद्ध; अँचा; उन्नत; प्रवर्धित; विशाल; असङ्ग; प्रचंड; प्रबल; उग्र; भयंकर; क्रुद्ध ।

उद्गमदना*—अ० कि० प्रकट होना ।

उद्गमदना*—पु० दे० 'उदघाटन' ।

उद्गमदना*—सं० कि० प्रकट करना; खोलना ।

उद्ग*—'उदक'का समासगत रूप । —मुख—वि० उत्तरा-
मुख । —सुखिक—पु० दे० 'उद्भूय' ।

उद्ग*—पु० मूर्ध ।

उद्गि—पु० [सं०] समुद्र; पहा; बादल । —कन्या,—सुनवा
श्री० लक्ष्मी । —कुमार—पु० एक देवता (जै०) । —कम,
—का—पु० केन्द्र, नाविक । —मल—पु० समुद्रफेन ।
—मेखला,—बन्ना—श्री० पृथ्वी । —संभव—पु० समुद्री
नमक । —सुत—पु० चंद्रमा, अमृत, शंख आदि । —सुता—
श्री० लक्ष्मी ।

उद्ग्व*—वि० [सं०] व्यासा; जलोत्थ ।

उद्ग्व्या—श्री० [सं०] व्यास ।

उद्ग्वु—वि० [सं०] व्यासा; जलमें चलनेवाला ।

उद्ग्वर्*—वि० [सं०] समुद्र ।

उद्ग्वर्तन—पु० दे० 'उद्वर्तन' ।

उद्ग्वस*—वि० उज्ज्वल हुआ, सना; उद्भासित; जो आज
यहाँ, कल वहाँ रमता रहे ।

उद्ग्वसना—सं० कि० किसी स्थानसे हटा, भगा देना;
उजाटना ।

उद्ग्वेग*—पु० दे० 'उद्वेग' ।

उद्ग्वेग*—पु० दे० 'उद्वेग' ।

उद्ग्वोत्त*—पु० अद्भुत घटना, अचंभेकी बात ।

उद्ग्वदना*—अ० कि० उन्मत्त होना, मुग्ध-बुध खी देना ।

उद्ग्वमार्ती—वि०, श्री० मस्तोले भरी हुई, मस्तानी ।

उद्ग्वमाद*—पु० उन्माद; मस्ती ।

उद्ग्वमादी*—वि० मस्त, मत्तवाला, उन्मत्त ।

उद्ग्वमान—पु० [सं०] दे० 'उद'के साथ । * वि० मत्तवाला,
उन्मत्त ।

उद्ग्वमानना*—अ० कि० उन्मत्त होना ।

उद्ग्व—पु० [सं०] (स्यौरिका) उगना, निकलना, आकाशमें
ऊपरकी ओर उठना; प्रकट होना; बढ़ती, चढ़ती, उत्थान;
सृष्टि; उद्गमस्थान; पूर्वपर्वत, उदवाचल; परिणाम; कार्यकी
पूर्णाता; लाभ; आय; सूत्र; कानि, ज्योति । —गङ्ग*—पु०
उदयगिरि । —गिरि,—पर्वत,—सैल—पु० पूर्वका एक
(कल्पित) पर्वत जिसके पीछेसे सूर्फका उगना माना जाता
है । —नक्षत्र—पु० वह नक्षत्र जिसपर कोई ग्रह स्थित
है । —पुर—पु० मेवांकी राजधानी । —प्रख—पु० उदय-
गिरिका पहाड़ । —से अस्तित्व—भरतीके एक सिरेसे दूसरे
तक, संपूर्ण भूमंडलमें ।

उद्ग्वन—पु० [सं०] ऊपर जाना, उगना; फल; समाप्ति;
सम्भावितव्यवस्थाका नायक वत्सराज; कुसुमाभिलाकर उद्-
ग्वनाचाय; अगस्त्य । वि० जिसका उदय ही रहा ही, ऊपर
उठता हुआ ।

उद्ग्वना*—अ० कि० उदय होना ।

उद्ग्वनाचल—पु० [सं०] उदयगिरि ।

उद्ग्वना तिथि—श्री० [सं०] ख्रीष्टव्यकालमें वर्तमान तिथि ।

उद्ग्वनाग्नि—पु० [सं०] उदयगिरि ।

उद्ग्वान*—पु० उधान, बाग ।

उद्ग्वान्त*—पु० [सं०] उधान-पतन; बनना-विगडना ।

उद्ग्वरी (विन्)—वि० [सं०] उगता हुआ, उठता हुआ;
प्रभावित होनेवाला; उन्नतिशील ।

उद्ग्वर, उद्ग्वरि—वि० [सं०] अपना ही पेट पालने-
वाला; पैदा; स्वामी ।

उद्ग्वरि—श्री० पैटपन ।

उद्ग्वर—पु० [सं०] पेट; वस्तुका मीनरी भाग, मतर;
मध्यभाग; विजातीय द्रव्य एकत्र होने या जलोदर आदिके
कारण पेटका बढना । —कुमि—पु० पेटमें उत्पन्न होनेवाला
कीड़ा; वृक्ष व्यक्ति (ला०) । —गुल्म—पु०,—ग्रंथि—
श्री० ग्रीहा मन्थी एक रोग । —ज्वाला—श्री० पेटकी आग,
भूल । —ज्राण—पु० पेटपर या शरीरके सामनेके भागपर
स्थायी जानेवाला कवच । —दास्य—पु० पैदाइशी गुल्म,
वह दाम जिसके माँ-बाप भी दाम रहे हों । —पिशाच—
पु० पेट, पिशाचकी तरह खानेवाला व्यक्ति । —रेखा—
श्री० शिखरी । —वृद्धि—श्री० रोगके कारण पेटका बढना ।
—स्रव—वि० पेटके बल सोनेवाला । —सर्पिं (पिन्)—
वि० पेटके बल रंगनेवाला । —सर्वस्व—वि० पेट । —स्थ—
वि० पेटके अन्दर पहुँचाना हुआ, हजम किया हुआ । पु०
जठराग्नि ।

उद्ग्वरक—वि० [सं०] उदर-संबंधी ।

उद्ग्वरि—पु० [सं०] सर्व; समुद्र ।

उद्ग्वरना*—अ० कि० विदीर्ण होना; (मेड, बीबार आदिका)
कटकर अलग हो जाना; टूट जाना; नष्ट होना; गिरना ।

उद्ग्वरि—श्री० [सं०] जठराग्नि, पाचनशक्ति ।

उद्ग्वरद—पु० [सं०] पेटमें रहनेवाला एक तरहका कृमि ।

उद्ग्वरध्मान—पु० [सं०] अफरा, अजीर्ण आदि ।

उद्ग्वरामव—पु० [सं०] पेटकी बीमारी ।

उद्ग्वरवर्त—पु० [सं०] नाभि ।

उद्ग्वरवेष्ट—पु० [सं०] पेटका कवच ।

उद्ग्वरि, उद्ग्वरि—वि० [सं०] मुदिल, स्थूल काय ।

उद्ग्वरी (विन्)—वि० [सं०] बड़ी तोंडवाला । [श्री० 'उदरिणी'
—गर्भवती श्री० ।]

उद्ग्वर*—पु० [सं०] अंत; समाप्ति; परिणाम; भावी फल; भवि-
ष्यकाल; मीनार, गुंबद; बढ जाना; मदनकंदक वृक्ष ।

उद्ग्वरि (स्)—पु० [सं०] अग्नि; शिव; कंदर्प । वि० ऊपरकी
ओर ज्वाला या कानि विकीर्ण करनेवाला ।

उद्ग्वर*—पु० [सं०] एक रोग, चर्मप्रदाह ।

उद्ग्वर*, उद्ग्वर*—पु० [सं०] ज्वरका एक भेद ।

उद्ग्वर*—वि० [सं०] उदर-संबंधी । पु० उदरके अंदरके
जंगादि ।

उद्ग्वना*—अ० कि० उदय होना ।

उद्ग्वनासित—पु० [सं०] गृह, मकान ।

उद्ग्वनाह*—पु० दे० 'उद्गाह' ।

उद्ग्वु—वि० [सं०] फूट-फूटकर रोनेवाला ।

उद्भव-पु० [सं०] कैकता; निकाह देना, निरसन; उठाना ।

उद्भव-अ० कि० उद्भवना; उद्भव होना ।

उद्भव-वि० [सं०] कैका हुआ; निकाहा हुआ, निरसा उठाया हुआ; नीचा दिखाया हुआ ।

उद्वाच-वि० [सं०] ऊँचा; महान्; श्रेष्ठ; उदार; प्रसिद्ध; प्रिय; ऊँचे स्वरमें उच्चरित । पु० स्वरके तीन भेदोंमेंसे एक; ऊँचा स्वर; दान; अर्थात्कारका एक भेद जहाँ अतिशय सद्बुद्धिका वर्णन किया जाय; नायकका एक प्रकार; एक तरहका बड़ा ढोल । -**भूति-वि०** उदात्त स्वरमें उच्चरित ।

उद्वाच-पु० [सं०] प्राणके पाँच भेदोंमेंसे एक जिसका स्थान कंठ और गति हृदयके कंठ-गल्लरुद्ध है; सँस; नाभि; बरनी; एक तरहका मीप; हर्षप्रकाश (सी०) ।

उद्वाच-वि० दे० 'उदात्त' ।

उद्वाच-वि० [म०] दानशील, सखी; ऊँचे दिलवाला; ईमानदार, खरा; उच्च; दबाहु; भला; सुंदर; उचित; विद्वान्, विद्याल; दूतोंमें गुण, बलाई देखनेवाला; धीर । पु० योगशास्त्रानुसार डेढ़का एक भेद; गुलु नामक वृक्ष । -**चरित-वि०** ऊँचे चरित्रवाला । -**वेत्ता(तत्त्व)**, -**अना(तत्त्व)** -**वि०** ऊँचे दिलवाला । -**दर्शन-वि०** देखनेमें भला लगनेवाला । -**धी-वि०** प्रतिभाशाली; ऊँचे दिलवाला, भला । पु० विष्णु । **की०** सद्गुण ।

उद्वाच-की० [सं०] दानशीलता, उदार स्वभाव ।

उद्वाच-वि० [सं०] ऊपर उठनेवाला; शान्तिद्विषीको प्रकाश देनेवाला, जिनमेंसे आप निकल रही हो । पु० विष्णु ।

उद्वाच-वि० [सं०] ऊँचे दिलवाला ।

उद्वाच-पु० [सं०] संवत्सरविशेष ।

उद्वाच-पु० [सं०] बड़ी आंतका एक रोग, कौच, गुग्गुलु ।

उद्वाच-पु० [सं०] शिरोका मामिक ज्ञान-संबंधी एक रोग जिनमें पीडाके साथ दृष्टि आदिका ज्ञान होता है ।

उद्वाच-पु० [सं०] तटस्थता; मन्मथता; दुःख । वि० जिनका मन उचटा रहना हो, निष्ठ; दुःखी; उदासीन; तटस्थ ।

उद्वाच-अ० कि० उदात्त होना । * सं० कि० उजाडना; समेटना (नितर) ।

उद्वाच-वि० उदासीन ।

उद्वाच-की० रजोगी, निष्ठता ।

उद्वाच-वि० [सं०] तटस्थ, निरपेक्ष, निरक्त । पु० सम्मानी, विरागी; मानकशाही साधु ।

उद्वाच-वि० [सं०] विरक्त; तटस्थ; निष्पक्ष । पु० अजन्मी; तटस्थ व्यक्ति या नरेश; अविशेषमें अवसद्ध व्यक्ति; पंच, तीसरा व्यक्ति; दंड देने, अनुग्रह करने आदिमें समर्थ वह शक्तिशाली राजा जो किसी दूरस्थ राज्यमें रहता हो । -**मित्र-पु०** ऐसा मित्र राजा जिसके कुछ सहायता करने या न करनेके बारेमें निश्चय न हो ।

उद्वाच-वि० [सं०] विरक्तिप्रदस्वता, निरपेक्षता ।

उद्वाच-वि० [सं०] निवृत्त । पु० निगलक; दारपाक; जायस; वह सम्मानी जो अपना मत छोड़कर गुप्तचर आदिका कार्य करता हो ।

उद्वाच-की० उजाडन ।

उद्वाच-पु० [सं०] कहना, वर्णन करना; उदात्त, मिलाव; वाचके पाँच अवयवोंमेंसे तीसरा (न्या०); आरंभ; एक अर्थात्कार जिसमें कोई सामान्य कथन करनेके बाद वाचकी तीसरी कोई बात कही जाय 'एक दीव गुप्तुं नमं होन निमग्न 'भुरार', जैसे चंद्र मधुसूदनमें अंक कलंक निहार' ।

उद्वाच-पु० [सं०] मिलाव; भाषणका आरंभिक भाग ।

उद्वाच-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ ।

उद्वाच-वि० [सं०] कथित, वर्णित; जिसका उदात्त दिया गया हो ।

उद्वाच-की० [सं०] उदाहरण; उत्कर्षयुक्त वाच्यका कथन (नार०) ।

उद्वाच-वि० [सं०] उगा हुआ; उदयप्राप्त; प्रकट, प्रकाशित; उत्पन्न; ऊँचा; कथित । पु० एक तरहकी सुगंध । -**की०** -**की०** सुगंध नायिकाका एक भेद ।

उद्वाच-की० [सं०] उदय; भाषण ।

उद्वाच-अ० कि० व्याकुल होना, परेशान होना, बक बाना ।

उद्वाच-पु० [सं०] ऊपरकी ओर देखना ।

उद्वाच-की० [सं०] उत्तर दिशा ।

उद्वाच-वि० [सं०] उत्तरी; उत्तराभिमुख ।

उद्वाच-वि० [सं०] उत्तरका; उत्तरका रहनेवाला । पु० सरस्वती नदीके उत्तर-पश्चिममें पड़नेवाला देश; गुजराती भाषाओंकी एक उपभाषा; बैतालवा छंदाका एक भेद; एक गणद्वय ।

उद्वाच-वि० [सं०] ज्ञात । पु० जलज्ञान, बाद ।

उद्वाच-पु० दे० 'उद्वाचन' ।

उद्वाच-वि० दे० 'उद्वाच' ।

उद्वाच-वि० [सं०] उग्रता, उदय होता हुआ ।

उद्वाच-पु० [सं०] कथन, उच्चारण, बोलना; अस्वस्तेपण ।

उद्वाच-वि० [सं०] कहा हुआ ।

उद्वाच-वि० [सं०] उत्थित; उत्पन्न किया हुआ; घर्षण; उत्तेजित; उदार; महान्; कथित; प्रस्तुत (बाण आदि चलानेके लिए) ।

उद्वाच-पु० [सं०] दे० 'उद्वाच' । -**पु०** -**की०** दंतिका ।

उद्वाच-पु० [सं०] दे० 'उद्वाच' ।

उद्वाच-वि० [सं०] उठाया हुआ; विवाहित; लंबा; भारी; स्थूल; प्राप्त; भारवान्; अत्यधिक ।

उद्वाच-पु० [अ०] विमुख होना; उलंघन; अवस्था । -**हुक्मी** -**की०** हुक्म न मानना, आज्ञाका उलंघन ।

उद्वाच-पु० दे० 'उद्वाच' ।

उद्वाच-वि० [सं०] हिलानेवाला, कँपावेवाला; भयंकर ।

उद्वाच-पु० दे० 'उद्वाच' ।

उद्वाच-पु० प्रकाश; शोभा; वृद्धि; उन्नति - 'जन राजवंत, अग्न योगवत । तिनको उदीरत, केहि भूति होत ।' -**राम०** ।

उद्वाच-वि० प्रकाशित, प्रकट; शुभ्र । -**कर-वि०** प्रकाश करनेवाला; चमकानेवाला ।

उद्वाच-वि० उदय करनेवाला; प्रकाश करनेवाला ।

उद्वाच-वि० [सं०] तीव्र गंधवाला ।

उद्वाच-वि० [सं०] ऊपर आया हुआ; गया हुआ; उत्पन्न;

बाहर निकाला, कै किया हुआ ।

उद्गता-की० [सं०] वृत्तविशेष ।

उद्गतार्थ-पु० [सं०] ऐसी वस्तु या धरोहर जिसका दाम स्लेरसे बढ़ गया हो ।

उद्गतासु-वि० [सं०] सूत ।

उद्गति-की० [सं०] आरोह, ऊपर जाना; उदय; मूक; वमन ।

उद्गम-पु० [सं०] ऊपर जाना; उठना; सीधे खड़ा होना (गालोंका); प्रस्नान; दृष्टि; जन्म, उत्पत्ति; उपपत्तिस्नान; निकलना; निकास; वमन; अँसुआ, अँकुर ।

उद्गमन-पु० [सं०] उदय, प्रकट होना ।

उद्गाढ-वि० [सं०] गहरा; प्रचंड; अतिशय । पु० आतिशय ।

उद्गाता(तु)-पु० [सं०] यन्त्रमें सामगान करनेवाला कृत्विक् ।

उद्गाथा-की० [सं०] आर्या छंदका एक भेद ।

उद्गार-पु० [सं०] मुँह से बाहर जाना; वमन; धूक, लार; डकार; दिलमें अंदी हुई बातका बाहर निकलना; हर्ष, शोक आदिके खचक शब्द (शोकोग्रार इ०); बार-बार कहना; शब्द; कंठगर्जन; प्रतिध्वनि; जलप्लावन ।-बूढ़क पु० एक तरहका पक्षी ।

उद्गारी(रिष)-वि० [सं०] डकार लेने या वमन करनेवाला; ऊपर जानेवाला, बाहर निकालनेवाला ।

उद्गिरण-पु० [सं०] उगलना, वमन; डकार, भीतरसे बाहर निकलना; उन्मूलन ।

उद्गीति-की० [सं०] गाना; सामगान; आर्या छंदका एक भेद ।

उद्गीथ-पु० [सं०] सामगान; सामवेदका दूसरा खण्ड; ओंकार ।

उद्गिरण-पु० [सं०] बाहर निकालना; वमन करना; धूकना; मुँहमें पानी लाना, लार निकालना ।

उद्गीर्ण-वि० [सं०] उगला हुआ; निकाला हुआ ।

उद्गृण्य-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; उत्तेजित; धुम्ध ।

उद्गृथ-वि० [सं०] गाने योग्य ।

उद्गृथी-की० [सं०] एक तरहकी चाँटी ।

उद्ग्रंथ-वि० [सं०] बधनमुक्त; ढीला किया हुआ । पु० पुस्तकका एक विभाग या अध्याय ।

उद्ग्रंथि-वि० [सं०] न बंधा हुआ; सांसारिक बंधनोंसे मुक्त, असंग ।

उद्ग्राह-पु० [सं०] ऊपर उठाना; प्रतिवाद, वादका उत्तर; करूपमें इकट्ठा किया हुआ अन्न ।

उद्ग्राहित-वि० [सं०] उपन्यस्त; हटाया हुआ; बद्ध; स्तुत; वणित; उत्पन्न ।

उद्ग्रीव, उद्ग्रीवी(विन)-वि० [सं०] जिसकी गर्दन ऊपर उठी हो, उर्कठ ।

उद्ग-पु० [सं०] श्रेष्ठता, उत्तमता; सुख, आनंद; अग्नि; नमूना ।

उद्गदित-पु० [सं०] संकेत ।

उद्गदक-पु० [सं०] तालका एक भेद ।

उद्गहन-पु० [सं०] खोलना; खंड; संवर्ष ।

उद्गहित-वि० [सं०] खोला हुआ; अलग किया हुआ ।

उद्गथ-पु० [सं०] वह लकड़ी जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ता है, ठोरा ।

उद्गथण-पु० [सं०] रगड़ना; बौटना; मारना; सोंटा ।

उद्गस-पु० [सं०] मांस ।

उद्गाढ-पु० [सं०] खोलना, चुंगीकी चौकी ।

उद्गाढक-पु० [सं०] कुंजी, कुर्छी चरखी ।

उद्गाढन-पु० [सं०] खोलना, प्रकट करना; किसी सम्मेलन या समारोहका किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा आरंभ किया जाना; ऊपर उठाना; कुजी; पानी निकालनेकी चरखी ।

उद्गादित-वि० [सं०] खोला, उपाहा हुआ; ऊपर उठाया हुआ, उत्प्रेलित; आरंभ किया हुआ ।

उद्गात-पु० [सं०] आरंभ; उल्लेख; हवाला; आवात; उगमगाना; धक्का; गदा; हथियार; प्राणायाम; अध्याय ।

उद्गातक, उद्गासी(सिद्ध)-वि० [सं०] आवात करने, धक्का मारनेवाला; आरंभ करनेवाला ।

उद्गृह-वि० [सं०] उद्गीष किया हुआ । पु० शोर, बोध ।

उद्गीष-पु० [सं०] कँची आनाजमें कड़ना; पीषणा, मुनादी करना; जनतामें चलनेवाली बात ।

उद्गृह-वि० [सं०] निहट, न दबनेवाला, अक्वड, सरकश ।-पाख-पु० दंड देनेवाला; एक तरहकी मछली; एक तरहका साँप ।

उद्गृह-वि० [सं०] जिसके दाँत लंबे या निकले हुए हों; कँचा; भयंकर, कारक ।

उद्गृह-पु० [सं०] खटमल; जू; मच्छड ।

उद्गृह-वि० [सं०] 'उद्यत' ।

उद्गम-पु० [सं०] दमन, पराभव; वशमें लाना, पौस मनवाना ।

उद्गमन-पु० [सं०] देखे जानेकी स्थितिमें लाना, स्पष्ट करना ।

उद्गम-वि० [सं०] अख्यत बधाया हुआ, विनम्र; उत्साही ।

उद्गम-पु० [सं०] बंधन; बक्षमें लाना, उद्गम; मध्य भाग, कटि; बृद्धा; लग्न ।

उद्गम-वि० [सं०] बंधनरहित, निरकुश; प्रचंड; उग्र; धमरी; विद्याल; असंधारण; असीम; भयकर । पु० यम; वरुण; एक वृत्त ।

उद्गल-पु० [सं०] वनकोष्ठ, बहुवारक नामक पौधा; उद्गलक कृषि ।

उद्गलक-पु० [सं०] एक कृषि; एक ज्ञन; वनकोटी ।

उद्गित-वि० [सं०] बंधा हुआ; दे० 'उदित'; 'उद्यत'; 'उद्यत' ।

उद्गित-पु० [सं०] मध्याह्न ।

उद्गित-पु० दे० 'उद्यम' ।

उद्गित-वि० [सं०] बताया हुआ; चाहा, सोचा हुआ, अभिप्रेत; वादा किया हुआ । पु० प्रस्तावके हिसाबसे छंटाका भेद जाननेकी धिगलकी एक क्रिया; लाल चंदन; अधिकारीकी आज्ञा प्राप्त कर किसी वस्तुका भोग करना ।

उद्गीष-पु० [सं०] प्रव्यलित करना; उत्तेजित करना; उत्तेजित करनेवाला; बौद जैसा एक लसदार पदार्थ, गुग्गुल ।

उद्गीषक-वि० [सं०] उद्गीषन करनेवाला, उत्तेजित करनेवाला; प्रव्यलित करनेवाला ।

उड़ीपन-पु० [सं०] उत्तेजित करना, मझकाना; जगाना; रसका पीपण-बर्द्धन करनेवाली वस्तु (सा०); जलाना; ज्वरदाह । वि० उड़ीपन करनेवाला ।

उड़ीपित-वि० दे० 'उड़ीप' ।

उड़ीस-वि० [सं०] जगाया, मझकाया हुआ; उत्तेजित; प्रज्वलित; चमकीला ।

उड़ीसि-खी० [सं०] उड़ीस होना ।

उड़ीस-वि० [सं०] प्रज्वलित, चमकता हुआ । पु० गुग्गुलु ।

उड़ेवा-पु० [सं०] चर्चोका विषय बनाना; संकेत या लक्ष्य करना, दृष्टिमें रखना; अमिप्राय, इरादा; उदाहरण, स्पष्टीकरण; निश्चय, निर्धारण; स्थान; ऊँचा पद या स्थान; अनुसंधान; तर्कों के लिए रखी जानेवाली प्रतिष्ठा । -**पादप**, -**वृक्ष**-पु० किसी विशेष प्रयोजनमें लगाया हुआ वृक्ष ।

उड़ेवाक-वि० [सं०] दृष्टांतरूप । पु० मिसाल; दिखलाने बनानेवाला; प्रश्न (ग०) ।

उड़ेवान-पु० [सं०] दिखलाने, बनलाने, लक्षित करनेकी किया ।

उड़ेव-वि० [सं०] स्पष्ट या इंगित किये जाने योग्य; लक्ष्य, दृष्ट । पु० त्रिमूर्ति विषयमें कुछ कहा जाय (स्था०); प्रयोजन ।

उड़ेवा (वृ)-वि० [सं०] बनलानेवाला, इंगित करनेवाला; कोई लक्ष्य दृष्टिमें रखकर काम करनेवाला ।

उड़ेविका-खी० [सं०] एक कीट, रीमक ।

उड़ोत-वि०, पु० दे० 'उड़ोत' । -'पुर पैठन श्रीरामके भवो मित्र उड़ोत'-राम० ।

उड़ोतताई-खी० प्रकाश ।

उड़ोत-वि० [सं०] प्रकाशमान, ज्वलन । पु० चमकना; प्रकाशित होना; प्रकट होना; प्रकाश; कानि; अध्याय । -**कर**, -**कारी (रिज)** वि० प्रकाशित करनेवाला ।

उड़ोतिन-वि० [सं०] प्रकाशित किया हुआ; प्रज्वलित किया हुआ; चमकीला ।

उड़वाव-पु० [सं०] ऊपरकी ओर जाना; भागना, पलायन ।

उड़वुत-वि० [सं०] भागनेवाला ।

उड़-अ० ऊपर ।

उड़त-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; अतिशय; कठोर; उग्र, अखड़; अविनीत; किमीका अदब-लिहाज न करने वाला; घमडी; उत्तेजित; क्षुब्ध; प्रचंड; राजसी । पु० राज-मल्ल । -**अनरक**, -**अना (जस)**-वि० अभिमानी ।

उड़ति-खी० [सं०] उड़ना; घमंड, हर्ष; उग्ररूपन; आधात ।

उड़ना-अ० कि० ऊपर उठाना; उठना; बिलहरना ।

उड़म-पु० [सं०] बजाना; जोरसे सॉस लेना, हाँकना ।

उड़रप-पु० [सं०] उठारना; निकालना; सुधार; उद्धार होना या करना; मुक्ति; विनाश; ऊपर उठाना; पदा हुआ दुहराना; कुछ अंश लेना; किसी उक्ति या लेखका दूसरी जगह अविकल रखा जाना, अवतरण; वमन; वमनसे निकली हुई वस्तु ।

उड़रणी-खी० [सं०] पड़े हुए पाठकी दुहराना, आगोस्ता ।

उड़रना-सं० कि० उद्धार करना ।

उड़ता(ई)-वि० [सं०] ऊपर उठानेवाला; संपत्तिका

विस्सेदार; संपत्तिका उद्धार करनेवाला । पु० नाश करनेवाला; श्राता, रक्षक ।

उड़र्ष-वि० [सं०] प्रसन्न । पु० प्रसन्नता, उमंग (कार्यभार ग्रहण करनेकी); व्रतोत्सव ।

उड़र्षण-पु० [सं०] उत्तेजन; रोमांच ।

उड़व-पु० [सं०] एक वाद जो कृष्णके सखा और संर्षी थे; यक्षाधि; उत्सव ।

उड़व्य-पु० [सं०] बौद्धोंके मतसे दस क्लेशोंमेंसे एक ।

उड़वस्त-वि० [सं०] जिसके हाथ ऊपर उठे या फैले हुए हों ।

उड़वत-वि० [सं०] वभित । पु० निर्मद हस्ती ।

उड़वान-वि० [सं०] उद्भूत; वभित; फूला हुआ । पु० चूल्हा; वमन ।

उड़ार-पु० [सं०] ऊपर उठाना; बाहर निकालना (विपत्ति, दुर्दशा आदिसे); छुटकारा, (जन्म-मरणके बंधनसे) मुक्ति कण या कणरूप कर्मव्यसे छुटकारा; बड़े पुत्रकी ऊपरसे मिलनेवाला संपत्तिका भाग; सुद्धमें प्राप्त धनका बर्धांश जो राजाकी मिलता है; पदस्थान; कण; प्रस्थान; पुस्तकके किसी अंशका उद्धरण; अभ्युदय ।

उड़ारक-वि० [सं०] उद्धार करनेवाला ।

उड़ारण-पु० [सं०] उठारना; ऊपर उठाना; भाग लेना ।

उड़ारना-सं० कि० उद्धार करना ।

उड़ारा-खी० [सं०] गुहृची ।

उड़ित-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ, उचोड़ित ।

उड़ुर-वि० [सं०] भारमुक्त; स्वतंत्र; दृढ़, साहसी; विजयी; ऊँचा (स्वर); भारी; मोटा; प्रसन्न; योग्य ।

उड़ूत-वि० [सं०] हिलाकर गिराया हुआ; उच्च; ऊपर फैला हुआ ।

उड़ूनन-पु० [सं०] उठाना; ऊपर फेंकना; हिलाना ।

उड़ूपन-पु० [सं०] धूप देना, सुवासित करना ।

उड़ूलन-पु० [सं०] धूल वा कोई चूर्ण मुरकना ।

उड़ूषण-पु० [सं०] रोमांच, पुलक ।

उड़ूत-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; उबारा, बचाया हुआ, उन्मूलित; धृष्ट किया हुआ; अन्य रचनासे (अवतरण रूपमें) लिखा हुआ; बंटबारा किया हुआ; चुना हुआ; बिखेरा हुआ; अनादृत; वभित । पु० गौबकी प्राचीन धटनाओंके जानकार बृद्ध जन ।

उड़ूति-खी० [सं०] निकालना; हटाना; ज्ञान ।

उड़ूजान-पु० [सं०] चूल्हा ।

उड़ूजस-पु० [सं०] कर्मक्षता (स्वरकी); विनाश; महा-भारी; आक्रान्त होना (रोगादिसे) ।

उड़ूजस्त-वि० [सं०] डहा, गिरा हुआ; नष्ट ।

उड़ूज-वि० [सं०] बधनमुक्त । पु० लटकाना, रँगना; स्वयं फँसी लगा लेना ।

उड़ूजक-पु० [सं०] धौवीका काम करनेवाली एक वर्ण-संकर जाति ।

उड़ूज-पु० [सं०] दे० 'उड़ूज' ।

उड़ूज-वि० [सं०] बलवान्, शक्तिशाली ।

उड़ूज-वि० [सं०] अशुपूर्ण ।

उड़ूज-वि० [सं०] जो बाई ऊपर उठाए हुए हो ।

उद्बुद्ध-वि० [सं०] जग या जगत्वा हुआ; विकसित; उदीर; याद आधा या दिलावा हुआ।

उद्बोध-पु० [सं०] जगना; स्वरूप, कर्तव्य आदिका स्मरण होना।

उद्बोधक-वि० [सं०] जगाने, उठाने, याद दिलानेवाला; उदीपक।

उद्बोधन-पु० [सं०] जगना, चेतना; जगाना।

उद्बोधिता-स्त्री० [सं०] परकीया नायिकाका एक भेद।

उद्भट-वि० [सं०] श्रेष्ठ; असाधारण; जबरस्त; प्रचंड। पु० कच्छप; स्य।

उद्भव-पु० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; उद्गम, मूल; विष्णु; शक्ति।

उद्भ-वि० उत्पन्न करनेवाला, उत्पादक। **-क्षेत्र-पु०** उत्पत्तिस्थान।

उद्भाव-पु० [सं०] उद्भव; कल्पना; उदाराशयता।

उद्भावक-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला; उद्भावना करनेवाला।

उद्भावन-पु० [सं०] उद्भावन; कल्पना करना; सोचना; कहना; बोलना; उपेक्षा करना।

उद्भावना-स्त्री० [सं०] उद्भव; कल्पना।

उद्भावयिता(तु)-वि० [सं०] उद्भावक।

उद्भास-पु० [सं०] चमक; दीप्ति; प्रकाश।

उद्भासित-वि० [सं०] व्यक्त; चमकता हुआ; प्रकाशित; अलंकृत।

उद्भासी(सिद्ध)-वि० [सं०] चमकीला, दीप्तिमान्; व्यक्त होनेवाला; चमकानेवाला।

उद्भासुर-वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकीला।

उद्भिज्ज-वि० [सं०] भरती फोड़कर बाहर निकलनेवाला; उगनेवाला। पु० पेड़-पौधे, वनस्पति। **-शास्त्र-पु०** वनस्पतिशास्त्र।

उद्भिद्-वि० [सं०] उगने, निकलनेवाला। पु० पाशु लवण, समुद्री नमक।

उद्भिद्-वि० [सं०] भरती फोड़कर उगने, निकलनेवाला। पु० अंशुआ; पौधा; उत्स, झरना।

उद्भिन्न-वि० [सं०] निकला हुआ; व्यक्त; उत्पन्न; विभक्त; विकसित; जिनके प्रति विश्वासघात किया गया हो।

उद्भूत-वि० [सं०] उत्पन्न, सृष्ट; उच्च; व्यक्त; गोचर।

उद्भूति-स्त्री० [सं०] उत्पत्ति; उत्पन्न।

उद्भेद-पु० [सं०] बीजका अङ्कुरित होना, भरती फोड़कर निकलना; प्रकट होना; उत्स; ज्वालामुखीका फूटना; विस्फोट; विश्वासघात।

उद्भेदन-पु० [सं०] फोड़कर बाहर निकलना; उगना; प्रकट होना।

उद्भ्रम-पु० [सं०] घूमना, चक्कर खाना; घूमना; पश्चात्ताप।

उद्भ्रमण-पु० [सं०] घूमना, भ्रमण करना; उदय होना।

उद्भ्रांत-वि० [सं०] घूमा, चकर खाया हुआ; मीत, अभिप्रेत; हरात; उद्विग्न; जो हाथ ऊँचा करके तलवार घुमाता हो।

उद्यत-वि० [सं०] उठाया हुआ, ताना हुआ; तैयार, आमादा; परिभवी; तना या खिंचा हुआ (चतुर्ध); अनु-

शासित, शिक्षित। पु० पुस्तकका अध्याय या विभाग; ताल (संगीत)।

उद्यति-स्त्री० [सं०] उठाना; प्रयत्न, चेष्टा।

उद्यम-पु० [सं०] उठाना; श्रम, मेहनत; उद्योग; पथा; तैयारी। **-अर्थ-पु०** प्रयत्नसे विरत होना या विरत करना; उत्साहसंग।

उद्यमी(मित्र)-वि० [सं०] मेहनती; उद्योगी।

उद्यान-पु० [सं०] बगीचा; वाटिका; प्रयोजन; टहलना। **-पाल, -पालक, -रक्षक-पु०** माली।

उद्यानक-पु० [सं०] वाटिका। **-व्यूह-पु०** एक प्रकारका अमंजित व्यूह।

उद्यापन-पु० [सं०] जवादीकी समाप्ति; व्रतकी समाप्तिपर किया जानेवाला हवनदि।

उद्यापित-वि० [सं०] विधिपूर्वक पूर्ण किया हुआ; जिसका उद्यापन हो चुका हो।

उद्याव-पु० [सं०] मिलाना, संयोग।

उद्युक्त-वि० [सं०] काममें लगा हुआ; उद्यमी; मुस्तेद।

उद्योग-पु० [सं०] अध्यवसाय; यत्न, श्रम; उद्यम; कार्य; कर्तव्य; उत्पादक-जीवनके लिए आवश्यक सामग्री उत्पन्न करनेका-पंथा; 'इडस्ट्री'। **-पंथा-पु०** [हिं०] उत्पादक पंथा। **-पति-पु०** [सं०] साल तैयार करनेवाले काम्बवानेका मालिक। **-शास्त्र-स्त्री०** उत्पादक पंथा सिखानेवाली सन्या; कारखाना।

उद्योगी(मित्र)-वि० [सं०] उद्योगशील, कोशिशमें लगा रहनेवाला; मेहनती।

उद्योगीकरण-पु० [सं०] जो पहले उद्योगके रूपमें नहीं था उसे उद्योगका रूप देना।

उद्योत-पु० दे० 'उद्योत'।

उद्योतन-पु० प्रकाशित करना या होना।

उद्गंग-पु० [सं०] उदग्रय; उदग्रग्रह; गोंधौसे एकत्र किया गया वह अन्न जो राजाका अन्न हो।

उद्ग-पु० [सं०] एक जलजंतु, कंदबिल्लाव।

उद्ग्रथ-पु० [सं०] रथके धुरेमें लगायी जानेवाली खूँटी; मुर्गा।

उद्गपात्र-पु० उद्गपात्र; वह व्यक्ति जिनके पास उद्गके मिठा और कोई वस्तु न हो।

उद्गाव-पु० [सं०] गीत, हल्ला।

उद्गिक्त-वि० [सं०] बढ़ा हुआ; अनिश्चय; प्रचुर; स्पष्ट। **-चित्त, चेता(नस्)-वि०** ऊँचे दिलवाला, उदाराशय।

उद्गुज-वि० [सं०] तोड़नेवाला; नष्ट करनेवाला; जड़ खोदनेवाला।

उद्ग्रेक-पु० [सं०] बदती, शफरात; उपक्रम, आरंभ; अर्धालंकारका एक भेद जहाँ कहे सजातीय वस्तुओं या गुणोंकी तुलनामें किसी सजातीय या विजातीय वस्तु या गुणकी उत्कृष्टता (अधिपत्ता) दिखाई जाय। **-अर्थ-पु०** आरंभमें ही हतोत्साह कर देना।

उद्ग्रेका-स्त्री० [सं०] महानिब।

उद्ग्रेचक-वि० [सं०] बहुत बढ़ा देनेवाला।

उद्गत्सर-पु० [सं०] वर्ष, वत्सर।

उद्घपन-पु० [सं०] दान; उबेलना; बिलाकर गिरना।

उद्घर्त-पु० [सं०] उषटन; उषटनकी मालिश; रोषाश; अतिरिक्त बंध; आतिशय्य। वि० फाजिल; शेष बचा हुआ।
उद्घर्तक-वि०, पु० [सं०] उषटन लगावेवाला; उठानेवाला।
उद्घर्तन-पु० [सं०] उत्थान; बाढ़, अभ्युदय; लेपन, उषटन लगाना; उषटन; सुगंधित लेप; मालिश; पीसना; तारकशी; उज्ज्वलन।
उद्घर्तित-वि० [सं०] जिसे उषटन लगाया गया हो; जिसकी मालिश की गयी हो; उठा हुआ; निकाला हुआ; सुवासित।
उद्घर्शन-पु० [सं०] रुद्धि; दबायी हुई हंसी।
उद्घर्षित-वि० [सं०] खींचा हुआ; उन्मूलित।
उद्घर्ष-वि० [सं०] अवसित; रिक; गत; लुप्त; मधु निकाला हुआ (छत्ता)। पु० निर्जन स्थान।
उद्घह-पु० [सं०] वेदा; वायुके सात स्तरोंमेंसे एक; तीसरे स्तरकी वायु; विवाह; उदान वायु; अग्नि की सात त्रिहोमोंमेंसे एक। वि० के जानेवाला; जारी रहनेवाला।
उद्घहन-पु० [सं०] उठाकर ले जाना; उठाना, संभालना; विवाह करना; (किन्नी वस्तुमें) चुक या संपन्न होना।
उद्घहा-स्त्री० [सं०] पुत्री।
उद्घादन-पु० [सं०] जोरमें विछाना; उद्घोष।
उद्घान-वि० [सं०] वसित; निकाला हुआ। पु० निकालना; वसन; चूल्हा।
उद्घाप-पु० [सं०] फंकना; हटाना; निकालना; ऊपर उठाना; मुडन; रंगी, फलन।
उद्घापन-पु० [सं०] बुझाना (आग)।
उद्घाप्य-वि० [सं०] दे० 'उद्घाप्य'।
उद्घाम-पु० [सं०] निकालना; खदेड देना; त्याग; बंध करनेके लिए ले जाना; बंध; मुक्त करना। वि० जिसने अपने कपड़े उतार दिये हैं।
उद्घाम्य-पु० [सं०] निकाल, खदेड देना; उजाड़ना; मार डालना; यशके पहले आभन बिछाना आदि।
उद्घाह-पु० [सं०] उठाना; संभालना; विवाह।
उद्घाहन-पु० [सं०] उठाना; संभालना, विवाह करना; एक बार जोने हुए वस्त्रकी जोतना; थिंता।
उद्घाहनी-स्त्री० [सं०] कौथी; रस्सी।
उद्घाहर्ष-पु० [सं०] विवाहके लिए छुन नक्षत्र।
उद्घाहिक-वि० [सं०] विवाह-संबन्धी, वैवाहिक।
उद्घाहित-वि० [सं०] खींचा हुआ; उठाया हुआ; विवाहित।
उद्घाहिनी-स्त्री० [सं०] रस्सी, कौथी।
उद्घाही (हिन्)-वि० [सं०] उठानेवाला; विवाह करनेवाला।
उद्घिघ्न-वि० [सं०] उद्देगयुक्त, परेशान; भित्ति; सिद्ध; आतंकित।
उद्घिह-वि० [सं०] उछलता हुआ; क्षुब्ध; उठा हुआ।
उद्घिक्षण-पु० [सं०] ऊपरकी ओर देखना; देखना; नजर; आँख।
उद्घीजन-पु० [सं०] पंखा झलना।
उद्घुहण-पु० [सं०] रुद्धि; बढ़ती।
उद्घुह्य-वि० [सं०] उठा हुआ; ऊपरसे बहा हुआ; बढ़ा हुआ; मरुदा; घमडी; उज्ज्वल; क्षुब्ध।
उद्देग-पु० [सं०] क्षोभ; बरगहट; परेशानी; चिन्तकी अभि-

रता; चिंता; भय; विषय; सुपारी। वि० बहुत तेज जाने-वाला (भावन); झांत, बीर; आरंभण करनेवाला; उछाड़।
उद्देगी (गिन्), **उद्देगी (खिन्)**-वि० [सं०] दुन्नी, कट-घस्त; चिंताजनक।
उद्देगक-वि० [सं०] उद्देगकारक।
उद्देगक-पु० [सं०] उद्देगका कारण होना; छेक; पीका देना।
उद्देजयिता (तु)-वि० [सं०] उद्देगक।
उद्देप-पु० [सं०] कंपन।
उद्देक-वि० [सं०] उफनकर, उत्तराकर बहनेवाला; मर्यादा-का अनिक्रमण करनेवाला; अतिशय।
उद्देहन-पु० [सं०] उफनना, उपटकर बहना।
उद्देहित-वि० [सं०] ऊपरसे बहाया हुआ।
उद्देक्षित-वि० [सं०] उछलता हुआ; किनारोंसे छलकता, उफनता हुआ।
उद्देहन-पु० [सं०] घेरना; वेरा; बाका; नितंब या पृष्ठ-भागमें होनेवाली पीड़ा। वि० बधनमुक्त।
उद्देहित-वि० [सं०] चारों ओरसे घिरा हुआ।
उद्देहा (ड)-पु० [सं०] पति।
उद्देहना-अ० क्रि० झुलना, टूटना (सीबन, टोंका); अलग होना (खाल डो); बिखरना; उलझना।
उधम-पु० दे० 'अधम'।
उधर-अ० उस ओर, वहाँ; उस पक्षमें। -से-उस ओरसे; दूसरे पक्षकी ओरसे। -ही उधर-बाहर ही बाहर, बत्ता-के पास न आकर।
उधरना-अ० क्रि० उधार होना, दे० 'उधरना'। स० क्रि० उधार करना।
उधराना-अ० क्रि० तिनर-वितर होना, बिखरना; उड जाना; मायब हो जाना।
उधार-पु० कुश्नीका एक पैच, उल्लाह।
उधार-पु० कर्ज; भंगनी; * उधार। -का व्यवहार-कर्ज देना; उधार माग बेचना। सु०-खाना-कर्जपर गुजर करना। -खाये बैठना-किसी बातपर लुठ जाना; किसी चीजके आसरे रहना।
उधारक, उधारन-वि० उधार करनेवाला।
उधारना-स० क्रि० उधार करना।
उधारी-वि० दे० 'उधारक'।
उधेहना-स० क्रि० खोलना, तोड़ना (सीबन, टोंका आदि); उलझना; अलग करना; बिखरना। सु० उधेहकर रख देना-कच्चा चिट्ठा खोल देना; सब दोष, दुराई उषट देना।
उधेह-बुन-पु० सोच-विचार, चिंता; उलझन; उधेहना और बुनना।
उधेरना-स० क्रि० दे० 'उधेहना'।
उन्त-वि० छुका हुआ, नमित।
उन-सर्व० 'उम'का बहु०।
उनहस-वि०, पु० दे० 'उन्नीस'।
उनका-पु० [अ०] एक कविपत पक्षी; अलभ्य वस्तु (ला०)।
मु०-होना-अलभ्य; अवश्य हो जाना।
उनपाकीसा-वि०, पु० दे० 'उनताकीसा'।

उभयस-वि० चालीस और नौ । पु० ४९की संख्या ।
उभयलीस-वि० एक कम चालीस । पु० ६९की संख्या ।
उभयलीस-वि० बीस और नौ । पु० २९की संख्या ।
उभयः, उभयद्विहा-वि० उभयौ ।
उभयस, उभयद्व-वि० उभयतः, यस्त, यतवाला ।
उभयवा-वि० भनयना, उद्गास ।
उभयवनी-स्त्री० दे० 'उभयनी' ।
उभयवाचना-स० कि० मथना ।
उभयवापी-वि० मथनेवाला ।
उभयवाक्-पु० दे० 'उभयवा' ।
उभयमात-पु० अनुमान, अंदाजा; भाव; बाह्य; सामर्थ्य ।
 वि० सरस; अनुरूप ।
उभयमायवा-स० कि० अनुमान करना; सोचना ।
उभयमीलन-पु० दे० 'उभयमीलन' ।
उभयमुनी-वि० चुर, खामीस (स्त्री० उभयमुनी) । -हँसे
 न बोले उभयमुनी चंचल मेला मोर'-साखी ।
उभयमुनी-स्त्री० दे० 'उभयमुनी' ।
उभयमुलना-स० कि० उखाटना; नष्ट करना ।
उभयमेक-पु० दे० 'उभयमे' ।
उभयमेकन-अ० कि० विकसित होना; अँस खुलना ।
उभयमेद-पु० प्रथम वर्षासे उत्पन्न जहरीला फेन, मॉत्र ।
उभयमेवन-पु० मुक्त करना; दूर करना ।
उभयवना-अ० कि० दे० 'उभयवना' ।
उभयवना-अ० कि० उभयवना, उठना; बढ़ना, फैलना;
 कूटते हुए चलना; उछलना ।
उभयवना-अ० कि० छुकना; गिरना; घटना, ऊपर
 जाना ।
उभयव-वि० तुच्छ; कम ।
उभयान-पु० [अ०] सिरनामा, शीर्षक; प्रस्तावना; ढँग;
 * अनुमान, खयाल ।
उभयसठ-वि० पचास और नौ । पु० ५९की संख्या ।
उभयसठ-वि० साठ और नौ । पु० ६९की संख्या ।
उभयानि-स्त्री० दे० 'उभयानि' ।
उभयहार-वि० दे० 'अनुहार' ।
उभयहारि-स्त्री० अनुरूपता, समानता ।
उभयाना-स० कि० छुकाना; लगाना; झुनना, आधा
 मानना ।
उभयवना-स० कि० उठाना; उकसाना; खसकाना,
 बढ़ाना । -'ज्योति बढ़ावत दशा उभयारि'-राम० ।
उभयारी-स्त्री० दे० 'उभयारी' ।
उभयारी-वि०, पु० दे० 'उभयारी' ।
उभयारी-वि० नींदमे भरा हुआ, अँसता हुआ ।
उभ-वि० [सं०] मीमा हुआ, मीला, तर; दयालु, द्रवित ।
उभयस-वि०, दे० 'उभयस' ।
उभयत-वि० [सं०] उठा हुआ; ऊँचा, आगे बढ़ा हुआ;
 श्रेष्ठ; विधा; कला आदिमें आगे बढ़ा हुआ; सम्बन्ध; ककुब्-
 वाला । पु० अजगर; उठान, ऊँचाई । -कोकिल-स्त्री०
 बाधविरोध (संगीत) ।
उभयति-स्त्री० [सं०] ऊँचाई; बढती; तरकी; गड्ढकी पक्षी ।
-क्षील-वि० आगे बढ़ने या उसका यत्न करनेवाला ।

उभयतः-पु० [सं०] वृत्त-संज्ञ आदिका उठा हुआ अंश ।
 वि० जिसका उतर या मध्यवर्ती भाग उठा हो ।
उभय-वि० [सं०] बँधा हुआ; फूला हुआ; बढ़ा हुआ;
 अत्यधिक; घनकी ।
उभयम-पु० [सं०] ऊपर ले जाना, उठाना; उन्नति करना;
 अभ्युदय ।
उभयमित-वि० [सं०] उन्नत किया हुआ; बढ़ाया हुआ ।
उभय-वि० [सं०] ऊँचा, खड़ा ।
उभयन-वि० [सं०] जिसकी ओर से ऊपर उठी हों । पु०
 उठाना, उन्नतिकी ओर ले जाना; निकालना; खींचना
 (पानी); बढ़ पाय जिससे कोई तरह पदार्थ निकाला जाय;
 विचार करना; देखना या सीमित बनाना (गर्मवती स्त्रीका);
 परिणाम, निष्कर्ष ।
उभय-वि० [सं०] ऊँची नाकवाला ।
उभय-वि० [सं०] बंधनमुक्त, अव्यद ।
उभय-पु० [सं०] विल्लाहट, शीर, हल्ला; गुंजन;
 (पक्षियोंका) कलरव ।
उभय-पु० [अ०] एक तरहका सुखाया हुआ बेर जो दवा
 के काम आता है ।
उभय-वि० [सं०] जिसकी नाभि उभरी हुई हो; तोंड-
 वाला । पु० एक सर्ववशी रात्रा ।
उभय-पु० [सं०] उठाना, ऊपर ले जाना; ऊँचाई; उठान;
 निष्कर्ष ।
उभय-वि० [सं०] ऊपर उठानेवाला; उन्नत करनेवाला;
 परिणामकी ओर ले जानेवाला ।
उभयारी-वि० सतर और नौ । पु० ७९की संख्या ।
उभय-पु० [सं०] आगेकी ओर निकलना; आतिशय्य,
 प्रानुय; दर्प; कौंजी ।
उभय-वि० [सं०] जिसे नींद न आती हो; पूर्णतः विक-
 मित । पु० एक रोग ।
उभय-वि० दस और नौ; कम; छोटा; घटकर । पु० १९-
 की संख्या । -बिस्व-अ० अधिकतर, प्रायः । सु०-क्षीस
 होना-कम-वेश होना, (एक-दूसरेमें) कुछ घट-बढ़कर
 होना, लगभग बराबर होना; भला-बुरा होना । -होना
 -घटना, कुछ कम होना ।
उभयतः-वि० [सं०] दे० 'उभयतः' । पु० यह कराने-
 वाले १६ कालिकोंमें एक ।
उभय-अ० कि० छुकना ।
उभय-पु० [सं०] कानका एक रोग; कष्ट देना; विलो-
 षना; धुंभ करना; बध करना ।
उभय-वि० [सं०] मथनेवाला; स्पंदन करनेवाला । पु०
 कानका शोथ ।
उभय-पु० [सं०] मकरकी आकृतिका एक कर्णाभरण ।
उभय-वि० [सं०] जलमे बाहर आनेवाला । पु० एक
 तरहका तपस्वी ।
उभय-पु० [सं०] जलसे बाहर आना, निमज्जनका
 उलटा ।
उभय-वि० [सं०] नदीमे चूर, मतवाला; पागल; सनकी ।
 पु० धनूरा; मुचकुंड । -कीर्ति, -वैद्य-पु० शिव । -
 प्रकपित, -प्रकाप-पु० पागलकी बहक, मतवालेकी बह-

वास; अर्ध-संगति-रहित रातें । -**हिमी (गिर)**-वि०
पागल होनेका बहाना करनेवाला ।
उन्मत्तक-वि० [सं०] पागल; नशेमें चूर ।
उन्मथन-पु० [सं०] हिलाना; छेड़ना; झुझ करना;
फँकना; विलोडना; मारण ।
उन्मथित-वि० [सं०] विकीर्णित; झुझा; मिश्रित, मिलाया
हुआ ।
उन्मथ-वि० [सं०] मतवाला; पागल; उन्मत्त करनेवाला ।
पु० नशा; पागलपन ।
उन्मथन-वि० [सं०] प्रेमाविष्ट ।
उन्मथिष्णु-वि० [सं०] पागल; मतवाला; मदकाव करता
हुआ (हाथी) ।
उन्मथन-वि० उद्विग्न; अन्यमनस्क; उदास; उत्कण्ठित ।
उन्मथनस्क-वि० [सं०] अन्यमनस्क; उद्विग्न; व्यथ; उत्क-
ण्ठित; शोकात्पित ।
उन्मत्ता (नस्)-वि० [सं०] उद्विग्न; उत्कण्ठायुक्त; अन्य-
मनस्क ।
उन्मत्ती-स्त्री० [सं०] हठयोगकी पाँच मुद्राओंमेंसे एक ।
उन्मथूख-वि० [सं०] चमकीला, कागिमार् ।
उन्मथ-पु० [सं०] रगड़ना, मलना (शरीर) ।
उन्मथन-पु० [सं०] मलना, रगड़ना; शरीरमें मलनेका
एक सुगन्धित द्रव्य; हवा शुद्ध करना ।
उन्माथ-पु० [सं०] कष्ट, पीड़ा; मारण; विलोडन, जाल,
बधिर; स्कन्दका एक अनुचर ।
उन्माद-पु० [सं०] पागलपन, सनक; अन्यधिक अनुराग;
एक मन्त्रा भाव । वि० उन्मत्त । -**प्रस्त**-वि० उन्माद
रोगमें पीड़ित, पागल ।
उन्मादक-वि० [सं०] उन्मत्त, उन्मादप्रस्त करनेवाला ।
पु० भन्ना ।
उन्मादन-पु० [सं०] उन्माद उपपन्न करना, उन्मत्त करना;
कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक । वि० उन्मादक ।
उन्मादी (दिन)-वि० [सं०] उन्मादप्रस्त, उन्मत्त ।
उन्मान-पु० [सं०] तौलना; नापना; तौल; नाप; मूल्य;
एक तौल ।
उन्मार्ग-पु० [सं०] कुमार्ग, उल्टा या गलत रास्ता;
कुचाल । वि० कुमार्गगामी ।
उन्मार्गी (गिर)-वि० [सं०] कुमार्गगामी, पथ-भ्रष्ट ।
उन्मार्जन-पु० [सं०] मलना, रगड़ना; मिटाना ।
उन्माजित-वि० [सं०] मलकर साफ किया हुआ; चम-
काया हुआ ।
उन्मत्त-वि० [सं०] नापा या तौला हुआ ।
उन्मिति-स्त्री० [सं०] नाप; तौल ।
उन्मिष-वि० [सं०] खुला हुआ; खिला हुआ । पु० आँख
खोलना ।
उन्मिषित-वि० [सं०] खुला हुआ; खिला हुआ ।
उन्मीकन-पु० [सं०] खुलना (आँख); खिलना, विकसित
होना; अंकन; व्यक्त होना ।
उन्मीकना-सं० क्रि० विकसित करना; खोलना ।
उन्मीकित-वि० [सं०] खुला हुआ; खिला हुआ; अंकित ।
पु० एक काम्बालकार जहाँ दो बस्तुओंमें, बहुत साध्य

होनेके कारण, भेद करना कठिन होनेपर भी किसी एक
बातमें भेद करना संभव हो सके, जैसे-“हिमगिरि तो
यश सौ मिल्यो छुप परत है जान” ।
उन्मुक्त-वि० [सं०] बंधनरहित, आजाद ।
उन्मुख-वि० [सं०] जिसका मुख था दृष्टि ऊपरकी ओर
हो; उन्नत; “की ओर जाता हुआ (पतनेमुख); उत्कण्ठित;
उत्सुक; सम्भाव्यमान ।
उन्मुखर-वि० [सं०] बहुत शब्द करनेवाला; शोर मचाने-
वाला ।
उन्मुख-वि० [सं०] चक्काया हुआ, जड़भुक्ति ।
उन्मुख-वि० [सं०] विना मुखका; विकसित; अनियंत्रित,
आपसे बाहर (हँसे) ।
उन्मुखन-पु० [सं०] जड़ उखाड़ देना; जड़-मूलसे नाश
करना ।
उन्मुखित-वि० [सं०] उखाड़ा हुआ; मिटाया हुआ ।
उन्मुख-वि० [सं०] रगड़ा, मला हुआ; मिटाया हुआ;
साफ किया हुआ ।
उन्मेष-स्त्री० [सं०] मोटापा ।
उन्मेष-पु० [सं०] खुलना (आँख); खिलना; स्फुरण;
प्रकाश; दीप्ति ।
उन्मेषन-पु० [सं०] उन्मेष होना ।
उन्मोचन-पु० [सं०] खोलना; ढीला करना ।
उन्मोच-स्त्री० [सं०] बराबरी ।
उन्मोच-स्त्री० दे० “उन्मोच” ।
उन्मोच-स्त्री० चेतमें तैयार होनेवाली कसल, चैती, रबी
(दुदेल) ।
उर्पग-पु० उर्वकके पित्त; एक तरफका बाजा ।
उर्पत-वि० उर्वक ।
उप-उप० [सं०] वह शब्दोंके पूर्व आकर समीपता (उप-
नयन, उपकूल), आरंभ (उपक्रम), सामर्थ्य (उपकार);
छुटार, गोपता (उपमयी, उपपुराण) इत्यादिका बोधन
करता है ।
उपकंड-अ०, वि० [सं०] निकट, समीप । पु० मामीप्य;
ग्रामकी सीमाके भीतरका स्थान; चौड़ेकी सरपट चाल ।
उपकथा-स्त्री० [सं०] छोटी कहानी ।
उपकनिष्ठिका-स्त्री० [सं०] कानो उँगलके पासकी उँगली,
अनामिका ।
उपकन्या-स्त्री० [सं०] कन्याकी सहेली ।
उपकरण-पु० [सं०] उपकार करना; साधन; औजार;
सामग्री; यंत्र; जीविकाका साधन; राजाओंके छत्र, चंबर
आदि; राजाके अनुचर ।
उपकरना-सं० क्रि० उपकार करना ।
उपकर्ण-पु० [सं०] सुनना ।
उपकर्णिका-स्त्री० [सं०] अफवाह, जनश्रुति ।
उपकर्ता (ई)-वि० [सं०] उपकार करनेवाला ।
उपकर्ष-पु० [सं०] खींचकर नजदीक लाना ।
उपकल्प-पु० [सं०] सामान, सामग्री; आवश्यक वस्तुएँ ।
उपकल्पन-पु० [सं०] आयोगन; तैयार करना, बनाना ।
उपकल्पित-वि० [सं०] तैयार, प्रस्तुत ।
उपकार-पु० [सं०] भलाई; सहायता; लाभ; तैयारी;

सजावट; बंदनवार; तोरण । **मु०-भावना-एहसान** मानना, कृतज्ञता-प्रकाश करना ।

उपकारक-वि० [सं०] मलाई करनेवाला; सहायक; लाभ-दायक; अनुकूल ।

उपकारिका-वि०, **खी०** [सं०] सहायिका । **खी०** महल; खेमा ।

उपकारी-खी० [सं०] राजमहल; शाही खेमा ।

उपकारी(रिन्)-वि० [सं०] उपकारक, उपकार करने-वाला; लाभदायक ।

उपकार्य-वि० [सं०] उपकार किये जाने योग्य ।

उपकार्य-खी० [सं०] शाही खेमा; राजभवन; पांथशाला; समाधिस्थान । **वि०** खी० उपकार करने योग्य (खी०) ।

उपकरण-पु० [सं०] छितराना, फैलाना; (मिट्टीसे) ढकना; गाड़ना ।

उपकीर्ण-वि० [सं०] छितराया वा फैलाया हुआ; उका हुआ ।

उपकुंभि, उपकुंभिका-खी० [सं०] छोटी श्लायची; स्याह जैरा ।

उपकुर्वाण-पु० [सं०] पढ़ाई पूरी होनेके बाद गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेवाला, जैनधर्म ब्रह्मचारी ।

उपकुम्भा-खी० [सं०] पिप्पली; नहर, खाई ।

उपकुम्भ-पु० [सं०] मद्यशेका एक रोग, मद्यउमें होनेवाला फोड़ा ।

उपकूप-पु० [सं०] छोटा कुआँ । **-जलाशय-पु०** पशुओं को पानी पिलानेके लिए कुएँके पाम बना हुआ कुंड ।

उपकूल-पु० [सं०] किनारा; किनारेके पामकी भूमि । **अ०** किनारेपर; किनारेके पाम ।

उपकृत-वि० [मं०] जिसका उपकार किया गया हो, एह-सानभंद ।

उपकृति-खी० [सं०] उपकार, मलाई ।

उपकृती(तिन्)-वि० [मं०] उपकार करनेवाला, महायक । **उपकृता(तु)-वि०** [मं०] आरम करनेवाला; उपक्रम करनेवाला ।

उपक्रम-पु० [सं०] निकट जाना; आरंभ; लेख या भाषण-का उठान, प्रस्तावना; योजना; शुश्रूषा; चिकित्सा; संचार्थ-की त्राँच; साहस; बंदारभके पूर्व किया जानेवाला सत्कार ।

उपक्रमण-पु० [सं०] आरम करना; आबीजन; पास जाना; चिकित्सा; उपचार ।

उपक्रमिका-खी० [मं०] प्रस्तावना; विषय-पूची ।

उपक्रमिता(तु)-वि० [मं०] उपक्रम करनेवाला ।

उपक्रांत-वि० [मं०] आरम किया हुआ; चिकित्सित; पूर्वकथित ।

उपक्रिया-खी० [सं०] उपकार, मलाई ।

उपकीडा-खी० [सं०] खेलनेका स्थान ।

उपकुट्ट-वि० [मं०] जिसकी निंदा की गयी हो; कोसा हुआ । **पु०** नीच जातिका व्यक्ति; बदई ।

उपकोश-पु० [सं०] निंदा, अपवाद ।

उपकोशज-पु० [सं०] निंदा करना; कोसना ।

उपकीछा(ट्ट)-वि० [सं०] निंदा करनेवाला । **पु०** गथा ।

उपकिङ्ग-वि० [सं०] गीला, तर; सफाया ।

उपकलेस-पु० [सं०] हलका ड्रेस (बी०); ड्रेसका कारण (क्रोधादि) ।

उपकण, उपकण-पु० [सं०] बीणाकी ध्वनि ।

उपकष-पु० [सं०] क्षय, हास ।

उपक्षेप-पु० [सं०] किसीकी ओर फेंकना; चर्चा; संकेत; आक्षेप; आरंभ; अभिनयके आरंभमें कथावस्तुका संक्षेपमें कथन ।

उपक्षेपण-पु० [सं०] फेंकना; आक्षेप करना; संकेत; शूद्रका स्थावपदार्थ ब्राह्मणके घरमें रखना ।

उपखंड-पु० [सं०] (सबखंड) (विधानकी) किसी धारा या उपधाराके खंडका कोई विभाग ।

उपखान-पु० दे० 'उपाख्यान' ।

उपगता(तु)-वि० [मं०] पास जाने, पाने, जानने, स्वीकार करनेवाला ।

उपगत-वि० [सं०] पास आया, गया हुआ; घटित; अनु-भूत; जाना हुआ; प्राप्त; स्वीकार किया हुआ; प्रतिष्ठात; गत, मृत ।

उपगति-खी० [मं०] पास आना; जाना; जानना; प्राप्ति, अंगीकार करना ।

उपगम-पु० [सं०] पाम जाना; आना; जानना; प्राप्ति; अंगीकार; वचन; वादा ।

उपगमन-पु० [मं०] पास जाना जाना, पाना; अंगीकार करना ।

उपगाता(तु)-पु० [सं०] एक कृत्विक् जो यक्षमें उड़ाता-के साथ गाता है ।

उपगामी(मिन्)-वि० [मं०] उपगमन करनेवाला ।

उपगार-पु० दे० 'उपकार' ।

उपगारी-पु० दे० 'उपकारी' ।

उपगीति-खी० [सं०] आर्या छत्रका एक भेद ।

उपगुप्त-वि० [मं०] छिपाया हुआ ।

उपगुरु-पु० [सं०] गुरुका सहकारी, सहायक अध्यापक ।

उपगृह-वि० [सं०] छिपाया हुआ; आलिंगित; दबाया हुआ । **पु०** आलिंगन ।

उपगृह-पु० [मं०] छिपाना; गोपन; आलिंगन; विम्व-जनक घटनाका होना ।

उपग्रह-पु० [मं०] छोटा ग्रह; बड़े ग्रहकी परिक्रमा करने-वाला छोटा ग्रह, गिरपतारी; कैद; कैदी. पराजय; अनुग्रह; प्रोत्साहन; कुसहाश । **-संघि-खी०** विजेनाको मर कुछ देकर की जानेवाली संघि ।

उपग्रहण-पु० [मं०] एकड़ना, गिरपतार या कैद करना-संभालना; सत्कारपूर्वक वधाध्ययन करना ।

उपग्राह-पु० [सं०] भेंट, उपहार; भेंट, उपहार देना ।

उपधात-पु० [मं०] आधात; नाश; क्षति पहुँचानेकी गरज-से सपर्कमें आना; आक्रमण; रोग; पाप ।

उपधातक-वि० [मं०] उपधात करनेवाला ।

उपधाती(सिन्)-वि० [सं०] दे० 'उपधातक' ।

उपग्र-पु० [मं०] निकटवर्ती सहारा; पनाह ।

उपचक्र-पु० [सं०] चक्रवाक पक्षीका एक भेद ।

उपचक्रु(स)-पु० [सं०] चक्रमा, ऐनक ।

उपचय-पु० [सं०] इकट्ठा होना; इकट्ठा करना; चयन;

बदती; देर; उन्नति; समृद्धि; लग्नसे तीसरा, छठा, दसवीं या ग्यारहवीं स्थान ।

उपचर-पु० [सं०] उपचार, चिकित्सा ।

उपचरण-पु० [सं०] पास जाना; सेवा, चिकित्सा आदि करना ।

उपचरित-वि० [सं०] जिसकी शुद्धता की गयी हो; सेवित, उपसित; लक्षणासे हात (सा०) ।

उपचर्या-स्त्री० [सं०] सेवा; उपचार, इलाज ।

उपचारी(विन्)-वि० [सं०] वृद्धि, उन्नति करनेवाला ।

उपचाव्य-पु० [सं०] एक तरहकी पवित्राग्नि; यज्ञकी अग्नि रखनेका कुंड ।

उपचार-पु० [सं०] सेवा; इलाज, चिकित्सा; विधान; पूजानुष्ठान; पूजाके अंग या द्रव्य (घोड़शोपचार पूजा); अभ्यास; व्यवहार; उपयोग; शिक्षाचार; प्रार्थना; चापल्य; दिलाऊ, रस्मी व्यवहार; बहाना; नमस्कारका एक ढंग ।

उपचारक-वि० [सं०] इलाज करनेवाला; सेवा, टहल करनेवाला । पु० शिक्षता; विनम्रता ।

उपचारना*-सं० कि० व्यवहार करना; विधान करना ।

उपचारी(रिन्)-वि० [सं०] दे० 'उपचारक' ।

उपचार्य-वि० [सं०] सेवा-टहल करने योग्य, पूज्य । पु० उपचार; चिकित्सा-कार्यका अभ्यास ।

उपक्षित-वि० [सं०] इकट्ठा किया हुआ; बढ़ा हुआ; जिसकी शक्ति बट गयी हो; जिसके पास बहुत अधिक हो, समृद्ध; दका हुआ; लिप्त, दम्प ।

उपक्षिति-स्त्री० [सं०] वृद्धि; जमा करना; लाभ, राशि, देर ।

उपक्षित्रा-स्त्री० [सं०] विश्वा नक्षत्रके चारके-हस्त और स्वाती-नक्षत्र; तनी वृश्च; मूमाम्बानी, एक छद्म ।

उपचेतना-स्त्री० [सं०] अतः संज्ञा ।

उपचेय-वि० [सं०] जमा, इकट्ठा करने योग्य, चयनीय ।

उपच्छदन-पु० [सं०] लोभ दिखलाकर तुष्ट करना, राजी करना ।

उपच्छदित-वि० [सं०] लोभ दिखानेकर राजी किया हुआ ।

उपच्छद्-पु० [सं०] दकन; चारर, परदा ।

उपच्छन्न-वि० [सं०] दका, छिपाया हुआ ।

उपज-स्त्री० उत्पत्ति, पैदावार; कल्पना, सूझ; मनगढ़त वान; गानेमें कोई नवीनता पैदा करना, नयी तान लगाना (किना) । मु० - की लेना - नयी उक्ति निकालना ।

उपजगती-स्त्री० [सं०] वृत्तविशेष ।

उपजस*-स्त्री० पैदावार ।

उपजन-पु० [सं०] उत्पत्ति; वृद्धि; मूल; अलगसे जोड़ी, बढ़ायी हुई वस्तु; शरीर ।

उपजजन-पु० [सं०] उत्पादन, प्रजनन ।

उपजना-अ० कि० उत्पन्न होना; उगना; मनमें उठना; ध्वंसना ।

उपजस-वि० [सं०] विद्रोहके लिए बहकाया हुआ ।

उपजल्पन, उपजल्पित-पु० [सं०] वार्तालाप ।

उपजाऊ-वि० जिसमें अधिक उपजे, जलखेज ।

उपजात-वि० [सं०] पैदा किया हुआ; उत्पादित; चरित ।

उपजाति-स्त्री० [सं०] इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्र-

वंशा और वंशस्थके मेलसे बननेवाले वर्णवृत्त; जातिका कोई उपभेद ।

उपजाना-सं० कि० उत्पन्न करना ।

उपजाप-पु० [सं०] विद्रोह करनेके लिए बहकाना ।

उपजापक-वि० [सं०] बहकानेवाला; कान भरनेवाला; विश्वासपावी ।

उपजिह्वा, उपजिह्विका-स्त्री० [सं०] जीभके मूलमें स्थित छोटी जीभ, घटिका; एक कीट; जीभके नीचेके मांसमें होनेवाला फोड़ा ।

उपजीवत, उपजीवी(विन्)-वि० [सं०] 'से जीविका करनेवाला, जीविकाके लिए दूसरेपर आश्रित ।

उपजीवक-पु० [सं०] जीविका, रोजी; जीविकाका साधन ।

उपजीविका-स्त्री० [सं०] दे० 'उपजीवन' ।

उपजीव्य-वि० [सं०] जीविका या जीविकाका साधन देनेवाला । पु० मरक्षक; आचार; साधन प्राप्त करनेका मूल स्थान ।

उपजीव्य-पु० [सं०] पमंद; इच्छा; आनंद ।

उपजीवण-पु० [सं०] उपभोग; ग्रहण (आहारका) ।

उपज्ञा-स्त्री० [सं०] अंतःकरणमें अपने आप उपजा हुआ, अनुपदिष्ट ज्ञान; आद्य ज्ञान ।

उपज्ञात-वि० [सं०] बिना किसीके बताये जाना हुआ; मनमें उपजा हुआ; अज्ञातपूर्व, आश्चर्यपूर्ण ।

उपटन-पु० आधात आदिका चिह्न; उभयन ।

उपटना-अ० कि० दाग या निशान पड़ना; उभरना; उखड़ना ।

उपटना*-सं० कि० उखाड़ना; उखड़वाना; उभटन लगाना या लगवाना ।

उपटारना*-सं० कि० उचाटना, विरक्त करना; उठाना; हटाना - 'मधुवन तै, उपटारि श्याम कई या ब्रज लैके आव'-म० ।

उपटना-अ० कि० उपटना, उखड़ना ।

उपटवाना, उपटाना-उखड़वाना ।

उपटौकन-पु० [सं०] भेंट, नजर ।

उपतपन-वि० [सं०] कष्ट देनेवाला; ताप पहुँचानेवाला ।

उपतप्त-वि० [सं०] ताप पहुँचाया हुआ; झुलसा हुआ; पीड़ित; क्रुण ।

उपतप्ता(पु)-वि० [सं०] ताप पहुँचानेवाला; जलानेवाला । पु० अमाधारण ताप; तापका कारण; जलन; रोगका एक भेद ।

उपताप-पु० [सं०] ताप, आँच; क्रोध, पीड़ा; रोग; त्वरा, जल्दीबाजी ।

उपतापन-पु० [सं०] ताप, आँच देना; क्रोध, पीड़ा पहुँचाना ।

उपतापी(विन्)-वि० [सं०] तप्त करनेवाला; पीड़ा देनेवाला; कष्ट सहनेवाला ।

उपतारक-वि० [सं०] उपटकर बहनेवाला ।

उपतिध्व-पु० [सं०] अलेश तथा पुनर्वसु नक्षत्र ।

उपत्यका-स्त्री० [सं०] पहाड़के पासकी जमीन, तराई, घाटी ।

उपदर्श-पु० [सं०] चाट, गन्धक; गरमीकी बीमारी, आत-शक; शिशु नामक वृक्ष; समशिल नामक पौधा ।

उपवृत्ती(विन्)-वि० [सं०] उपवृत्त रोगसे पीडित ।
उपवृत्तक-पु० [सं०] मार्गदर्शक; द्वारपाक; गवाह ।
उपवृत्तन-पु० [सं०] टीका, व्याख्या ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] मेट, नजर; रिश्त । -**ब्राह्मक**-वि० धूसर, रिश्ती ।
उपवृत्तन, **उपवृत्तक**-पु० [सं०] मेट, नजर; रिश्त ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] भंतर्दिश, कोण ।
उपवृत्त-वि० [सं०] निर्देश किया हुआ; उपदेश किया हुआ; सिखाया हुआ; जिसे उपदेश किया गया हो; दीक्षाप्राप्त ।
उपवृत्ती-स्त्री० [सं०] वंदाक नामक पौधा, बाँदा ।
उपवृत्तीका-स्त्री० [सं०] एक कौट; चाँटिका एक मेट ।
उपवृत्त, **उपवृत्तता**-पु० [सं०] छोटा देवता (यक्ष, गंधर्व आदि) ।
उपवृत्त-पु० [सं०] शिक्षा, सीख; नेकसलाह; दीक्षा; निर्देश; उल्लेख; गहाना ।
उपवृत्तक-वि०, पु० [सं०] उपदेश करनेवाला, सीख देनेवाला ।
उपवृत्तता-स्त्री० [सं०] उपदेश वा नियम होनेकी अवस्था; शिक्षा; सिखात ।
उपवृत्तन-पु० [सं०] उपदेश देना ।
उपवृत्तना-स्त्री० [सं०] सूचना; सिखात । * स० कि० दे० 'उपदेशना' ।
उपवृत्त(वृ)-पु० [सं०] दे० 'उपदेशक' ।
उपवृत्त-स० दे० 'उपदेश' ।
उपवृत्तना-स० कि० उपदेश, शिक्षा देना ।
उपवृत्त-पु० [सं०] गायकी छीमे; दूध दूहनेका पात्र ।
उपवृत्त-पु० [सं०] उत्पात; क्षति; सार्वजनिक संकट या आपत्ति (अतिवर्षण, विप्लव आदि); दगा-फसाट, गडबड, बखेला, झमेला; एक रोगके बीचमें होनेवाला दूसरा गौण रोग, उपसर्ग ।
उपवृत्ती(विन्)-वि० [सं०] उपवृत्त करनेवाला, उपपत्ती ।
उपवृत्ता(वृ)-वि० [सं०] देखनेवाला । पु० निरीक्षक; गवाह ।
उपवृत्त-वि० [सं०] उपवृत्त-पीडित; ग्रहण-युक्त (ज्यो०) ।
उपवृत्त-पु० [सं०] छोटा, भगलका दरवाजा ।
उपवृत्त-पु० [सं०] छोटा टापु ।
उपवृत्तना-स० कि० अपनाना; सहारा देना ।
उपवृत्त-पु० [सं०] गौण धर्म ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] छल; दगा-फरेब; ईमानदारीकी परीक्षा ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] अप्रधान या अर्थ पातु, मिश्र भात (यि सात है-सोनामाखी, रूपामाखी, तृतिमा, कोमा, सुर्दा-संख, सेटुर और सिलाजीत); शरीरख सात धातुओंसे उत्पन्न सात गौण धातुएँ-दूध, रज, चर्बी, पसीना, दूति, केस और ओज ।
उपवृत्त-पु० [सं०] वह वस्तु जिसका सहारा लिया जाय; तकिया; एक विशेष व्रत; प्रेम; विशेषता; यक्षकी ईंट रखते समय पदा जानेवाला संज्ञा विष ।
उपवृत्ती-स्त्री० [सं०] तकिया; गद्दा; पैर रखनेकी छोटी चौकी ।

उपवृत्तीक-वि० [सं०] पास रखने योग्य । पु० तकिया ।
उपवृत्ती(विन्)-वि० [सं०] सहारा लेनेवाला; तकिया हस्तेमाल करनेवाला ।
उपवृत्त-पु० [सं०] सम्यक् चिंतन; चित्तकी किसी एक विषयमें लगाना; अंजुसी आदिमें फंसाकर फलादिकी नीचे खींचना ।
उपवृत्त-पु० [सं०] अनुयायी; अनुसरण; विचार करना ।
उपवृत्ती-स्त्री० [सं०] छल, धोखेबाजी; (मुकदमेमें) सच्ची बात-को छिपाकर दूसरी बात कहना; धमकी; पहिया; आधार (बौ०) । -**युक्त**-वि० मिलावटी ।
उपवृत्त-वि० [सं०] ठग, धोखेबाज, छली ।
उपवृत्त-वि० [सं०] धूप दिया हुआ, धूपसे बासित; अत्यंत कष्टग्रस्त; मरणासन्न । पु० मृत्यु ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] किरण; ग्रहण ।
उपवृत्त-पु० [सं०] ओठ; फूंकना ।
उपवृत्तीक-पु० [सं०] 'प' और 'फ'के पहले आनेवाला महाप्राण विसर्ग ।
उपवृत्त-वि० [सं०] नष्ट किया हुआ; मिश्रित ।
उपवृत्त-पु० [सं०] नदके छोटे आई ।
उपवृत्त-पु० [सं०] छोटा या गौण नक्षत्र ।
उपवृत्त-पु० [सं०] नखका एक रोग, गलका ।
उपवृत्त-पु० [सं०] नगरका बाहरी भाग, शहरसे सटी हुई या उसके टाँडे-परकी बस्ती, शाखानगर ।
उपवृत्त-वि० [सं०] पास आया हुआ; उपस्थित; नज़र, झुका हुआ; शरणागत; निकटवर्ती (समय, स्थान) ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] पास आना, झुकना; नमस्कार करना ।
उपवृत्त-वि० [सं०] बँधा या नधा हुआ ।
उपवृत्त-स० कि० उपजना ।
उपवृत्त-पु० [सं०] प्राप्ति; नियुक्ति; पास ले जाना; गुरुके पास ले जाना; उपनयन संस्कार; बाबयकी पाँच अवयवों-मेंसे चौथा (व्या०) ।
उपवृत्त-पु० [सं०] पास ले जाना; गुरुके पास ले जाना; यज्ञोपवीत संस्कार ।
उपवृत्त-पु० [सं०] बंधना; गँठिमाना; वह कपड़ा जिसमें कोई चीज बाँधी, लपेटे जाय ।
उपवृत्त-स० कि० उत्पन्न होना "' सुनि हरि हिय गरब गूढ उपयो है'-गीता० ।
उपवृत्त-स्त्री० [सं०] वृत्त्यनुसारी तीन वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें अतिमधुर वर्ण बार-बार आते हैं और समाप्त नहीं होते, यदि होते हैं तो छोटे होते हैं ।
उपवृत्त-स० कि० उपजाना, पैदा करना ।
उपवृत्त(न)-पु० [सं०] गौण नाम; पुकारनेका नाम; पठवी; लेखकविना आदिमें व्यवहृत छोटा नाम, तखल्लुस ।
उपवृत्त, **उपवृत्त**-पु० [सं०] दे० 'उपनयन' ।
उपवृत्त-पु० [सं०] गौण या अप्रधान नायक; नाटक आदिमें वह पात्र जो नायकका प्रधान सहायक हो (जैसे रामायणमें लक्ष्मण); उपपत्ति, यार ।
उपवृत्तीक स्त्री० [सं०] नायिकाकी प्रधान सहायिका ।
उपवृत्तीक-पु० [सं०] नाकके पासका हिस्सा ।

उपनाह—पु० [सं०] गठरी; बीणा या सितारकी छँदी; मरहम; विलनी ।

उपनाहन—पु० [सं०] मरहम या लेप लगाना ।

उपनिक्षेप—पु० [सं०] बरोहर; सुहरबंद बरोहर ।

उपनिधाता(तु)—वि० [सं०] बरोहर रखनेवाला ।

उपनिधान—पु० [सं०] ...के पास रखना; बरोहर रखना; बरोहर ।

उपनिधायक—वि० [सं०] दे० 'उपनिधाता' ।

उपनिधि—खी० [सं०] बरोहर, अमानत; सुहरबंद अमानत । —भोक्ता(कु)—पु० दूसरेकी बरोहरकी स्वयं व्यवहारमें लानेवाला मनुष्य ।

उपनिपात—पु० [सं०] घटित होना; अचानक आ पड़ना; एकाएक आक्रमण करना; राजा, चोर, आग, पानी आदि का विगड़ना या नष्ट होना (कौ०) ।

उपनिपातन—पु० [सं०] अचानक घटित होना; अचानक आक्रमण करना ।

उपनिषद्—पु० [सं०] गौण नियम; म्युनिसिपल बोर्ड, रेलवे कंपनी आदिके बनाये हुए नियम, 'बाइ-लॉ' ।

उपनिवेश—वि० [सं०] सुशिक्षित; अनुभवी (सेना-कौ०) ।

उपनिवेश—पु० [सं०] दूसरे देशमें आये हुए लोगोंकी बस्ती; वह विजित देश जिनमें विजेता राष्ट्रके लोग आकर बस गये हों, 'कालोनी' । —पद—पु० स्वतंत्र उपनिवेशोंका दरजा; उम प्रकारका स्वराज्य या स्वतंत्रता जो उन्हें प्राप्त है, 'डोमिनियन स्टेट्स' ।

उपनिवेशित—वि० [सं०] उपनिवेश बनाया हुआ ।

उपनिवेशी(शिल्प)—वि० [सं०] दूसरे देशमें बस जानेवाला, उपनिवेशवासी, आबादकार ।

उपनिषद्—खी० [सं०] वेदोंका ज्ञानकांड माने जानेवाले ब्रह्मविद्या-प्रतिपादक ग्रंथविशेष (इनकी संख्या १८, ३४, ५२ अथवा १०८ तक मानी जाती है । इनमें वे १३ मुख्य हैं—ईश, केन, कठ, प्रदन, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक, कौशीनकी, मैत्रायणी, श्वेताश्वर १); वेदरहस्य; ब्रह्मज्ञान; निर्जन स्थान; वेदव्रती ब्रह्मचारीके लिए कर्तव्य एक विशेष सत्कार; समीपस्थ भवन ।

उपनिषादी(दित्र)—वि० [सं०] गुरुके पास रहनेवाला; बशमें लाया हुआ ।

उपनिष्कर—पु० [सं०] सक्क, राजमारग ।

उपनिष्क्रमण—पु० [सं०] बाहर निकलना; नवजात शिशु-को पहली बार बाहर ले जाना; राजमारग ।

उपनिहित—वि० [सं०] अमानत रखा हुआ ।

उपनीत—वि० [सं०] पास लाया हुआ; जिसका उपनयन हुआ हो ।

उपनृत्य—पु० [सं०] नाचबध, नृत्यशाला ।

उपनेत—वि० उत्पन्न—'कीनी नेम-धरम-कहानी उपनेत है'—वन० ।

उपनेता(तु)—वि०, पु० [सं०] पास ले जानेवाला; उपनयन करानेवाला (गुरु); नेताका नायक या सहाकारी ।

उपन्यस्त—वि० [सं०] (किस्तीके) पास रखा हुआ; अमानत रखा हुआ; कथित; उल्लिखित ।

उपन्यास—पु० [सं०] बरोहर, अमानत; प्रसादन; प्रमाण; वाक्यका उपक्रम; संविधा एक प्रकार; कल्पित और काफ़ी लंबी कहानी जिसमें प्रायः बहुतसे पात्र हों तथा जीवनकी विविध बातोंका चित्रण हो, 'नावेल' । —कार—पु० उपन्यास लिखनेवाला । —संघि—खी० मंगलकारी कार्यकी इच्छासे की जानेवाली संघि ।

उपपन्न—पु० [सं०] कौंस; कथा ।

उपपत्ति—पु० [सं०] परस्परसे प्रेम करनेवाला पुरुष; वार, आशना ।

उपपत्ति—खी० [सं०] घटित होना; प्रकट होना; उत्पन्न होना; वेत्त, युक्ति; तर्क; सिद्धिमें युक्ति-प्रमाण देना; सिद्धि, प्रतिपादन; समाधान; आधार, सहारा; संपर्क, संबंध; प्रमाण (ग०); प्राप्ति; औचित्य, उपयुक्तता; अंत; साधन; स्वीकृति समाप्ति ।

उपपत्ती—खी० [सं०] रखली ।

उपपद—पु० [सं०] पहले कहा, आया हुआ शब्द; समासका पहला पद; उपाधि, पदवी । —समास—पु० कदतके साथ हुआ नाम (संज्ञा) का समास (कुंभकार, बरूँक आदि न्या०) ।

उपपन्न—वि० [सं०] युक्तियुक्त; समब; सिद्ध किया हुआ; योग्य; युक्त; पूर्ण; प्राप्त; नैरीय किया हुआ ।

उपपशुंका—खी० [सं०] गौण पसली ।

उपपात—पु० [सं०] आपदा; विनाश; अचानक घटित होनेवाली घटना ।

उपपातक—पु० [सं०] छोटा पाप, इनकी संख्या ५० मानी गयी है—गोबध, परदारगमन, आत्मविक्रय, गुरुत्वाग्न, मातृत्वाग्न, पित्रुत्वाग्न, दारविक्रय, अपत्यविक्रय, पापद शास्त्रोंका अन्व्यास, स्त्रीवध, शूद्रवध, क्षत्रिय वध, आदि ।

उपपादक—वि० [सं०] प्रकट करनेवाला; घटित करनेवाला; सिद्ध करनेवाला; सुविचारित ।

उपपादन—पु० [सं०] युक्ति देकर सिद्ध करना, सम्यक् प्रतिपादन; सपादन ।

उपपादित—वि० [सं०] प्रमाणित, सिद्ध किया हुआ; पूरा किया हुआ; प्रदत्त; चिकित्सित ।

उपपादुक—वि० [सं०] स्वयंभू; पादत्राणयुक्त; नाल बंध-बाधा हुआ । पु० ईश्वर ।

उपपाद्य—वि० [सं०] उपपादन करने योग्य ।

उपपाप—पु० [सं०] दे० 'उपपातक' ।

उपपाश्व—पु० [सं०] कंधा; पक्ष, बगल; छोटी पसली; विपक्ष ।

उपपीडन—पु० [सं०] दवाना; विष्वंस करना; कह देना; पीका, फट ।

उपपुर—पु० [सं०] उपनगर ।

उपपुराण—पु० [सं०] छोटा या गौण पुराण; व्यासोक्त अठारह पुराणोंसे भिन्न, अन्य मुनियोंके रचे पुराण ।

उपयुक्तिका—खी० [सं०] जैसा; होफना ।

उपपौरिक—वि० [सं०] उपपुरका; उपनगरमें रहनेवाला ।

उपप्रदान—पु० [सं०] देना; उत्कीर्ण, रिशत; भेंट, नजर ।

उपप्रश्न—पु० [सं०] प्रश्नके अंदर पैदा होनेवाला प्रश्न, गौण प्रश्न ।

उपमेक्षण-पु० [सं०] उपेक्षा करना ।
उपप्लव-पु० [सं०] उत्पात, उपद्रव; भौतिक दुर्घटना; पीडन; भय; विप्लव; विप्ल; विपत्ति; हलचल; अराजकता; राहु; शिव; सदेह (बी०) ।
उपप्लवी(विन्)-वि० [सं०] उपप्लवसे पीडित ।
उपप्लुत-वि० [सं०] पीडित; आक्रांत ।
उपबर्ध-पु० [सं०] संवध; संयोग; एक रतिवध ।
उपबर्हण-पु० दे० 'उपवर्हण' ।
उपबर्ह, उपवर्हण-पु० [सं०] दधाना; तत्किवा ।
उपबाहु-पु० [सं०] हाथका बाहुमे नीचे (कुहनीमे कलाई-तक)का भाग, एडुवा ।
उपबृंहण-पु० [सं०] बढ़ाना, सशक्त करना ।
उपबृंहित-वि० [सं०] बृंहित ।
उपभंग-पु० [मं०] पलायन; छद्मका एक भाग ।
उपभाषा-स्त्री० [सं०] गौण भाषा, मुख्य भाषाका गौण भेद, बोली ।
उपभुक्त-वि० [सं०] भोगा हुआ, काममें लाया हुआ; जूठा । -**खन**-वि० जिसने अपने धनका उपभोग किया है ।
उपभुक्ति-स्त्री० [सं०] उपभोग; ग्रहका दैनिक चार ।
उपभूषण-पु० [मं०] निम्न श्रेणीका आभूषण ।
उपभुत-वि० [सं०] पास लाया हुआ ।
उपभेद-पु० [सं०] गौण भेद, उपविभाग ।
उपभोक्तव्य-वि०, पु० [सं०] दे० 'उपभोग्य' ।
उपभोक्ता(वत्)-वि० [सं०] उपभोग करनेवाला; बरतनेवाला; काविज ।
उपभोग-पु० [सं०] भोगना; सुख, स्वाद लेना; व्यवहार, बरतना; विषय-सुख; स्त्री-सम्बन्ध; कलभोग ।
उपभोगी(गिन्)-वि० [सं०] उपभोक्ता ।
उपभोग्य-वि० [सं०] भोगने योग्य । पु० भोगकी वस्तु ।
उपभोग्य-वि० [सं०] खाने योग्य । पु० आहार ।
उपमंत्रण-पु० [सं०] आमंत्रण; अनुरोध करना ।
उपमंत्री(त्रिन्)-पु० [मं०] सहायक मंत्री । वि० आमन्त्रण या अनुरोध करनेवाला ।
उपमंथनी-स्त्री० [मं०] आग सुलेड़नेकी लकड़ी ।
उपमज्जन-पु० [मं०] स्नान ।
उपमम्यु-पु० [मं०] एक गोत्रप्रवर्तक कृषि । वि० बुद्धिमान; उत्साही ।
उपमर्द, उपमर्दन-पु० [सं०] दधाना; मसलना, रगड़ना; खडन; नाश; निन्दा; अपमान; भूरी निकालना; हिलाना ।
उपमा-स्त्री० [सं०] समता, तुलना; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें दो वस्तुओंमें भेद होते हुए भी धर्मगन समता दिखायी जाती है ।
उपमाता(तृ)-पु० [मं०] मूर्ति या शवीह (व्यक्तिचित्र) बनानेवाला । वि० उपमा देनेवाला । स्त्री० धाव; मातृ-तुल्य संवर्धनी-मोरी, चाची आदि ।
उपमासि-स्त्री० [सं०] तुलना; मारण; अनुरोध, निवेदन ।
उपमाद-वि० [सं०] आनन्ददायक । पु० उपभोग; प्रसन्नता ।
उपमान-पु० [सं०] वह वस्तु जिसमें किसीकी तुलना की जाय । -**लुप्ता**-स्त्री० उपमा अलंकारका एक भेद ।

उपमाना-सं० कि० तुलना करना ।
उपमालिनी-स्त्री० [सं०] एक वृत्त ।
उपमित-वि० [सं०] जिसकी किसीसे उपमा दी गयी हो । पु० कर्मधारय समासका एक भेद, दो शब्दोंके बीच उपमा-वाचक शब्दका लोप करके वह बनाया जाता है (व्या०) ।
उपमिति-स्त्री० [सं०] साध्य, पटतर; साध्यसे होनेवाला ज्ञान (न्या०) ।
उपमित्र-पु० [सं०] साधारण मित्र, अतरंग नहीं ।
उपमेत-पु० [सं०] शाल वृक्ष ।
उपमेय-वि० [सं०] उपमा देने योग्य । पु० वह वस्तु जिसकी किसीसे तुलना की जाय, वर्ण्य । -**लुप्ता**-स्त्री० उपमा अलंकारका एक भेद, जिसमें उपमेय स्पष्ट रूपसे विद्यमान न हो ।
उपमेयोपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें उपमेयकी उपमा उपमानमें और उपमानकी उपमेयमें दी गयी हो ।
उपयंता(तृ)-पु० [सं०] पति ।
उपयंत्र-पु० [सं०] छोटा यंत्र या औजार; चौर-फांके काम आनेवाला एक विशेष यंत्र ।
उपयम-पु० [सं०] समय; विवाह ।
उपयमन-पु० [सं०] दधाना; समय करना; विवाह करना, सहारा ।
उपयाचन-पु० [मं०] माँगना, प्रार्थना करना ।
उपयाचित-वि० [सं०] प्रार्थित, निवेदित । पु० प्रार्थना; इष्टसिद्धिके लिए देवताकी अर्पित की जानेवाली वस्तु ।
उपयाय-पु० [मं०] पाम जाना ।
उपयाम-पु० [सं०] विवाह ।
उपयाची(विच)-वि० [सं०] पास जानेवाला ।
उपयुक्त-वि० [सं०] उपयोगमें लाया हुआ, प्रयुक्त; उचित, ठीक, मौजू; योग्य; अनुकूल ।
उपयोग-पु० [मं०] व्यवहार, काम लेना; लाभ; उप-युक्तता; मद्दचरण; संवध; दबा देना या तैयार करना; अर्थहीनता प्राप्ति करानेवाला कार्य ।
उपयोगिता-स्त्री० [मं०] उपयोगी होना, उपयुक्तता ।
-वाद-पु० अधिकमें अधिक लोगोका अधिकमें अधिक हितसाधन धर्म है-वह मन, 'भूटिकिदेनियनिउम' । -**वादी(दिन्)**-उपयोगितावादका अनुयायी ।
उपयोगी(गिन्)-वि० [मं०] काममें आनेवाला, कार-आमद; लाभजनक काममें लानेवाला; संपर्कवाला ।
उपरंजक-वि० [सं०] रंगनेवाला; प्रभाव डालनेवाला ।
उपरंजन-पु० [सं०] रंगना; पासकी चीज़पर अपना रंग या असर डालना ।
उपरंजनीय, उपरंज्य-वि० [मं०] रगने, प्रभावित किये जाने योग्य ।
उपरंध-पु० [सं०] लघु छिद्र; थोड़ेके शरीरका एक विशेष भाग, पसलियोंके बीचका खात ।
उपरक्त-वि० [सं०] विश्वासक्त; पीडित; विपद्ग्रस्त; जिसमें ग्रहण लगा हो; रजित; जिसमें उपाधिके साक्षिभ्यसे उसके गुणकी प्रतीति होती हो । पु० प्रसन्न स्वयं या चंद्र; राहु ।
उपरक्ष-पु० [सं०] अंगरक्षक, 'बाड़ीगाई' ।

उपरक्षण-पु० [सं०] पहरा; चौकी ।

उपरस-वि० [सं०] विरक्त; जिसका मन दुनिया या विषय-भोग में हट गया हो; रागरहित; निवृत्त; मृत । -सौमित्रा -स्त्री० वह स्त्री जिसे अब अधिक लाव न होता हो ।

उपरति-स्त्री० [सं०] विराम; विषय-भोगसे विरक्ति; उदासीनता; यथादि विहित कर्मोंका त्याग; मृत्यु; बुद्धि; समझ ।

उपरत-पु० [सं०] घटिया किस्मके रत्न (सोप, मरकतमणि, स्फटिक आदि) ।

उपरना-पु० दुपट्टा; उत्तरीय । * अ० कि० उलहना ।

उपरफट, उपरफट-वि० ऊपरी; बाहरी; निष्प्रयोजन, बेकार; निमित्तने अलगाव ।

उपरम-पु० [सं०] उपरति; विषयसे विराम; उपरति होना; निवृत्ति; विश्रान्ति; मृत्यु ।

उपरमण-पु० [सं०] विषयों से विरक्त होना; यथादि कर्मोंका त्याग; विश्रान्ति ।

उपरवार-स्त्री० ऊंची जमीन, बॉगर । † वि० ऊपरी ।

उपरस-पु० [सं०] पारके सट्टा गुणवाले पदार्थ-गन्धक, अभ्रक, मैगसिल, गेरू आदि; गौण भाव, थोड़ा-थोड़ा मात्रा होनेवाला अप्रधान स्वाद ।

उपरत-अ० [सं०] अनंतर, बाद ।

उपरता-पु० [सं०] रंग; माल रंग; लाली; चंद्र-पूर्य-ग्रहण; विषयामक्ति; प्रभाव; निकटस्थ वस्तुके प्रभावसे रंग-रूप बदलना (मा०), दुर्लभद्वार; निरा; राहु ।

उपराचरी-स्त्री० एक-दुसरेसे बंध जानेकी कोशिश, प्रतिस्पर्धा, लाल-टाल ।

उपराज-पु० [सं०] राजाका नायक, राजप्रतिनिधि, 'वाहसराय' । * स्त्री० उपज, पैदावार ।

उपराजना-अ० कि० उपरज काना, उपजाना; बनाना; उपार्जन करना ।

उपराना-अ० कि० ऊपर आना, उतरना । सं० कि० ऊपर करना, उठाना ।

उपराम-पु० [सं०] दे० 'उपरम' ।

उपराक्ष-पु० सहायता; श्वाभ; पक्षग्रहण ।

उपरावडा-वि० जो सिर ऊपर किये हुए हो, अकड़ना हुआ ।

उपराहना-अ० कि० प्रशंसा करना ।

उपराही-अ० ऊपर । वि० बटकर । -'धावहिं बोहित मन उपराही'-प० ।

उपरि-अ० [सं०] ऊपर; उपरंत । -**कर-पु०** एक प्रकारका कर । -**चर-वि०** ऊपर चलनेवाला । पु० पक्षी; एक वस्तु । -**चित-वि०** ऊपर रखा या सजा हुआ । -**श्रेणिक-वि०** ऊपरकी श्रेणीका । -**सद-वि०** ऊपर बैठा या लेटा हुआ । पु० एक देववर्ग ।

उपरितन-वि० [सं०] ऊपरका ऊंचा ।

उपरी-उपरा-पु० चढ़ा-उपरी ।

उपरीतक-पु० [सं०] एक रतिबंध ।

उपरुद्ध-वि० [सं०] रोका हुआ, बाधित; घेरा हुआ; कैद किया हुआ; परेशान किया हुआ । पु० बंदी, कैदी ।

-सैन्य-पु० शत्रु द्वारा रोकी हुई सेना (कौ०) ।

उपरुद्ध-वि० [सं०] भरा हुआ (घाव); परिवर्तित ।

उपरूप-पु० [सं०] बहुत हल्का या नगण्य लक्षण (आ० वे०) ।

उपरूपक-पु० [सं०] निम्न श्रेणीका या गौण रूपक जो १८ प्रकारका होता है ।

उपरीना-पु० दे० 'उपरना' ।

उपरीनी-स्त्री० ओढ़नी ।

उपरोक्त-वि० 'उपसृक्त'का असाधु रूप ।

उपरोच-पु० [सं०] रोक, बाधा; वेरना; परेशान करना; बाँधना; पकड़ना; दकना; रक्षा; फूट, कलह; सम्मान ।

उपरोचक-वि० [सं०] उपरोध करनेवाला । पु० भीतरका कमरा ।

उपरोधन-पु० [सं०] उपरोध करना ।

उपरोधी(विन)-वि० [सं०] उपरोध करनेवाला ।

उपरोहिता-पु० दे० 'पुरोहित' ।

उपरोहिती-स्त्री० दे० 'पुरोहिती' ।

उपरोटा-पु० किसी चीजका ऊपरका पल्ला ।

उपरीना-पु० दे० 'उपरना' ।

उपसृक्त-वि० [सं०] ऊपर या पहले कहा हुआ ।

उपलब्ध, उपलभन-पु० [सं०] लाभ, प्राप्ति; ज्ञान; अनुभव ।

उपलभक-वि० [सं०] ज्ञान या अनुभव करानेवाला ।

उपल-पु० [सं०] पत्थर; रत्न; ओला; बादल ।

उपलक-पु० [सं०] एक पत्थर ।

उपलक्षक-वि० [सं०] अनुमान करनेवाला; साँपनेवाला; बोधक । पु० उपलक्षण-शक्तियुक्त शब्द ।

उपलक्षण-पु० [सं०] देखना, लक्षना; बोधक चिह्न; विशेष लक्षण, पहचान; संकेत; शब्दकी वह शक्ति जिससे निर्दिष्ट वस्तुके अतिरिक्त उस तरहकी और वस्तुओंका भी बोध हो ।

उपलक्षित-वि० [सं०] लक्ष्य किया हुआ; अनुमान किया हुआ; इशारेसे बतलाया हुआ ।

उपलक्ष्य-वि० [सं०] अनुमान करने योग्य; लक्ष्य करने योग्य । पु० महारा; रक्षास्थान; अनुमान; संकेत; उद्देश्य ।

-मै- निमित्तसे (विवाहके उपलक्ष्यसे) ।

उपलधिग्रिथ-पु० [सं०] चमर-सूत्र ।

उपलब्ध-वि० [सं०] मिठा हुआ, प्राप्त; हात ।

उपलब्धा(कृष्ट)-वि० [सं०] प्राप्त करनेवाला; अनुभव करनेवाला । पु० आत्मा ।

उपलब्धि-स्त्री० [सं०] प्राप्ति; अनुभव; ज्ञान; प्रत्यक्ष ज्ञान; ग्रहणकी योग्यता ।

उपलब्ध-वि० [सं०] मिलने योग्य; सम्मान्य ।

उपला-पु० गोहरा । स्त्री० [सं०] शर्करा ।

उपलाम-पु० [सं०] ग्रहण करना; पकड़ना ।

उपलालन-पु० [सं०] प्यार करना, दुलारना ।

उपलालिका-स्त्री० [सं०] लुपा, प्यास ।

उपलिप्ता-पु० [सं०] उपद्रव; अरिष्ट ।

उपलिप्त-वि० [सं०] लेप किया हुआ ।

उपलिप्ता-स्त्री० [सं०] पानेकी लच्छा ।

उपली-स्त्री० गोहरा, विपरी ।

उपलेश-पु० [सं०] लीपना, लेप-सामग्री; (शंखियोंके

कार्यमें) बाधा पड़ना, (उनका) अवरोध या कुंठित होना ।
उपलेपन-पु० [सं०] लेप लगाना; लेपकी सामग्री ।
उपलेपी (पितृ)-वि० [सं०] लेप करनेवाला; लेपका काम देनेवाला; बाधा डालनेवाला ।
उपलोह-पु० [सं०] एक गौण धातु ।
उपल्ला-पु० ऊपरकी पत, भितल्लाका उल्ला ।
उपल्लंग-पु० [सं०] बंगालसे सटा एक जनपद ।
उपलक्ष्य (कु)-पु० [सं०] यक्षका एक कृत्विक्; (अपनी शक्तियों) प्रेरणा देनेवाला ।
उपलवट-पु० [सं०] प्रियाल, चित्तौड़ीका पेड़ ।
उपलवन-पु० [सं०] बगीचा; उद्यान ।
उपलवना*-अ० [क्रि०] उड़ जाना, अव्यय हो जाना; उदय होना ।
उपलवपन-पु० [सं०] ऊपर छितराना, बिखेरना ।
उपवर्ण, **उपवर्णन**-पु० [सं०] विस्तृत, व्योरेवार वर्णन ।
उपवर्ण्य-पु० [सं०] उपमान, अवर्ण्य ।
उपवर्त-पु० [सं०] एक वक्ती संस्था ।
उपवर्तन-पु० [सं०] निकट लाना; अभ्यासस्नान; बसित या अवसित स्थान; जिला; परगना; राज्य; दलदल ।
उपवर्ष-पु० [सं०] मीमांसा दर्शनके एक मास्यकार ।
उपवर्ह-पु० [सं०] दे० 'उपवर्ह' ।
उपवर्त्तिगत-वि० [सं०] वृत्ता हुआ; अनुपूर्ण (नेत्र) ।
उपवर्त्तिता-स्त्री [सं०] अवृत्तअवा नामक लता ।
उपवत्सल-पु० [सं०] ग्राम; बहने पहलेका दिन (प्रस दिन उपवास आदि करते हैं) ।
उपवत्सलन-पु० [सं०] पास रहना; उपवास करना ।
उपवत्स-पु० [सं०] उपवास ।
उपवत्सल (स्तु)-वि० [सं०] उपवास करनेवाला ।
उपवत्सि-स्त्री [सं०] जीवनका सहारा (आहार, निद्रा आदि) ।
उपवहन-पु० [सं०] ऊँचे स्तरमें जाना शुरू करनेके पहले अव्यय और मंद स्तरमें धुन बौधना ।
उपवाक-पु० [सं०] सरोधन; प्रशमा; हृदयव ।
उपवाक्य-पु० [सं०] (क्लेश) बड़े वाक्यके भीतर आया हुआ छोटा वाक्य, वाक्यखंड ।
उपवाजन-पु० [सं०] पक्षा ।
उपवाद-पु० [सं०] निद्रा; लोछन ।
उपवादी (विश्व)-वि० [सं०] निद्रक ।
उपवास-पु० [सं०] भोजनका त्याग या अप्राप्ति, फाका; प्रत-रूपमें भोजनका त्याग; अम्न्याधान; हवनकुंड; विशेष अधिकारसे रहित निम्न जातिके ग्रामीण ।
उपवासक-वि० [सं०] उपवास करनेवाला । पु० उपवास ।
उपवासी (सिन्धु)-वि० [सं०] उपवास करनेवाला । पु० विशेष अधिकारसे रहित निम्नजातीय ग्रामीण ।
उपवाहन-पु० [सं०] पास ले जाना ।
उपवाह-पु० [सं०] राजाकी सवारीमें काम आनेवाला वाहन-हाथी, रथ आदि; वाहन । वि० पास लाने योग्य; सवारीके काम आनेवाला ।
उपविक्रय-पु० [सं०] चोरीसे या संदिग्धवस्त्वामें होनेवाला किसी वस्तुका क्रय-विक्रय ।

उपविचार-पु० [सं०] पक्षेत् ।
उपविद्या-स्त्री [सं०] गौण विद्या; लौकिक विद्या ।
उपविष-पु० [सं०] कृत्रिम या हलके विष (मदर, धतूरा आदि) । -**प्रविषि**-पु० वह जो छिपे तीरसे मनुष्योंकी विष देकर वा संश-मंश आदिके प्रयोग द्वारा मारनेका काम करे ।
उपविषा-स्त्री [सं०] अतिविषा, अतीस ।
उपविष्ट-वि० [सं०] बैठ हुआ; प्रविष्ट (किसी अवस्थामें) ।
उपविष्टक-वि० [सं०] नियत समयके बाद गर्माशयमें ठिका रहनेवाला (अर्भक) ।
उपवीत-पु० [सं०] जनेक; उपनयन संस्कार ।
उपवीती (सिन्धु)-वि० [सं०] यक्षोपवीतधारी ।
उपवृंहण-पु० [सं०] दे० 'उपवृंहण' ।
उपवेद-पु० [सं०] वेदोंसे निकली लौकिक विद्याएँ-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और स्वापत्यवेद ।
उपवेधक-पु० [सं०] गुहा, बंदमार्ग ।
उपवेष्ट-पु० [सं०] बैठना; किसी कार्यमें सलस्य होना; मलस्य ।
उपवेशन-पु० [सं०] दे० 'उपवेश'; बैठाना ।
उपवेशित-वि० [सं०] बैठाना हुआ ।
उपवेशी (सिन्धु), **उपवेष्टा (धृ)**-वि० [सं०] बैठानेवाला ।
उपवेष्टन-पु० [सं०] लपेटनेकी क्रिया ।
उपवेष्टित-वि० [सं०] लिपटा हुआ, बिरा हुआ ।
उपवेष्टन-पु० [सं०] दिनके तीन भाग (प्रातःकाल, मध्याह्न और सन्ध्या) ।
उपव्याघ्र-पु० [सं०] चीता ।
उपशान-पु० [सं०] शान होना; तृष्णा, बासनाका नाश; इन्द्रिय-निग्रह; रोगकी पीडाका घटना, विश्रान्ति; निवृत्ति; उपाय; हलाज ।
उपशमन-पु० [सं०] शांत करना; तुष्ट करना; निवारण; दवाना; घटाना; क्षुभ होना; शूलनाशक औषध ।
उपशय-पु० [सं०] घाममें सोना; औषध या पथ्यविशेषके प्रभाव द्वारा रोगका निदान; अनुकूल औषध या पथ्य द्वारा रोगका उपचार; घाममें बैठना । वि० पास लेटनेवाला; शांतिदायक ।
उपशया-स्त्री [सं०] काममें लानेके लिए तैयार गौली मिट्टी ।
उपशय्य-पु० [सं०] आम्बा; गाँव या नगरका सिवान, डाँडा; पहाड़के पासकी जमीन ।
उपशांति-स्त्री [सं०] उपशम ।
उपशास्त्रा-स्त्री [सं०] छोटी शास्त्रा; शास्त्राकी शास्त्रा ।
उपशामक-वि० [सं०] उपशमकारक, शांत करनेवाला; निवारक ।
उपशाय-पु० [सं०] बारी-बारी सोना (पहरे आदिके बिचारसे) ।
उपशायक-वि० [सं०] बारीसे सोनेवाला ।
उपशायी (सिन्धु)-वि० [सं०] सोनेवाला; पास सोनेवाला; शांत करनेवाला ।
उपशाह-पु० [सं०] मकानके पासका या आगेका सड़न ।
उपसिंहन, उपसिंहन-पु० [सं०] द्यूधना; सूँघनेके लिए

दी गयी वस्तु ।

उपसिद्धक-पु० [सं०] सहायक शिक्षक; नावक सुदर्शन ।

उपसिध्य-पु० [सं०] शिष्यका शिष्य ।

उपसरीर्षक-पु० [सं०] छोटा शीर्षक, मुख्य शीर्षकके नीचे या बीचमें आनेवाला शीर्षक; सिरमें छोटी-छोटी कुंशियाँ निकलनेकी बीमारी ।

उपस्रोभन-पु० [सं०] अङ्कित करना; सजाना ।

उपस्रोमिक्ष-श्री० [सं०] सजावट; आभूषण ।

उपस्रोषण-पु० [सं०] धुलना; सुलाना ।

उपभूत-वि० [सं०] सुना हुआ; स्वीकृत; प्रतिष्ठात ।

उपभुति-श्री० [सं०] सुनना; सुनाई देनेकी हद; स्वीकृति; बचन; रातमें सुनाई देनेवाली मविष्यसूचक देववाणी; मविष्य-कथन ।

उपभोता(तु)-वि० [सं०] सुननेवाला ।

उपस्त्राघा-श्री० [सं०] गर्व, डींग ।

उपश्लिष्ट-वि० [सं०] मयकमें लाया हुआ; आसन्न ।

उपश्लेष-पु० [सं०] निकट संपर्क; आश्लिषण ।

उपसंज्ञात-वि० [सं०] दूसरी ओर गुया या मुका हुआ ।

उपसंज्ञान-पु० [सं०] इच्छि; वोग ।

उपसंगत-वि० [सं०] साथ मिला हुआ; सयुक्त (रति-क्रियाके लिए) ।

उपसंगमन-पु० [सं०] पास जाना; एकत्र होना; रति-क्रिया ।

उपसंगृहीत-वि० [सं०] लिया हुआ; अधिकारमें किया हुआ ।

उपसंग्रह-पु० [सं०] पादस्पर्शपूर्वक नमस्कार करना; प्रमत्त रखना; उपकरण; स्वीकार करना (श्रीको रूपमें); दिनप्रता-पूर्वक निवेदन करना; एकत्र करना ।

उपसंचात-पु० [सं०] एकत्र करना ।

उपसंचार-पु० [सं०] प्रवेश, पहुँच ।

उपसंचान-पु० [सं०] जोड़ना; बढ़ाना ।

उपसंपद(तु)-श्री० [सं०] बौद्ध भिक्षु होनेकी दीक्षा ।

उपसंपत्ति-श्री० [सं०] पहुँचना; अवस्थातरमें प्रवेश करना ।

उपसंपदा-श्री० [सं०] भिक्षु बनना (सौ०) ।

उपसंपन्न-वि० [सं०] प्राप्त किया हुआ; पहुँचा हुआ; परिचित; पर्याप्त; बलि बढ़ाया हुआ; मृत; रौंथा हुआ । पु० मसाला ।

उपसंपादक-पु० [सं०] सहायक संपादक, 'सब-एडिटर' ।

उपसंभाव-पु०, **उपसंभाषा**-श्री० [सं०] बानचित; मैत्रीपूर्ण अनुरोध ।

उपसंयम-पु० [सं०] संपर्कमें लाना; नियंत्रित करना; बाँधना; प्रलय ।

उपसंवाद-पु० [सं०] ममहीवा, एकमत होना ।

उपसंवीत-वि० [सं०] तोपा हुआ; लपेटा हुआ ।

उपसंव्यान-पु० [सं०] अंतपट ।

उपसंस्कार-पु० [सं०] पूरक वा गौण स्कार ।

उपसंस्करण-पु० [सं०] ले लेना; अलग कर लेना; अस्वीकार करना; आक्रमण करना ।

उपसंहार-पु० [सं०] समाप्ति; समेटना, बंदीरना; सारांश, निबंद; लेख आदिके अंतमें दिया जानेवाला सुल्लास;

पुस्तकका अंतिम अध्याय; नाश; अंत ।

उपसंहारी(रिज्)-वि० [सं०] अंतर्भाव करनेवाला ।

उपसंहित-वि० [सं०] (किसीसे) सबक या मुक्त; परि-वेष्टित ।

उपसक्त-वि० [सं०] आसक्त; संलग्न ।

उपसत्ति-श्री० [सं०] सर्वथ; संयोग; सेवा-उद्वह; पूजा; दान ।

उपसत्-वि० [सं०] पास आनेवाला । पु० निकट जाना; दान ।

उपसदन-पु० [सं०] निकट जाना; शिष्यता स्वीकार करना; पकौस; सेवा ।

उपसद्व-श्री० [सं०] बेरा; आक्रमण; सेवा; जमा करना ।

उपसमा-अ० कि० सम्भवा; बंदबंदार होना ।

उपसन्न-वि० [सं०] सहायता, सेवा आदिके लिए आया हुआ; प्राप्त; निकट रखा हुआ; प्रदत्त ।

उपसम्प्राप्त-पु० [सं०] परित्याग, छोड़ देना ।

उपसमाधान-पु० [सं०] एकत्र करना, राशिकरण ।

उपसमिचन-पु० [सं०] आग जलाना, प्रबलित करना ।

उपसमिति-श्री० [सं०] छोटी समिति, कार्यविशेषके लिए बनी छोटी कमेटी, 'सब-कमिटी' ।

उपसर-पु० [सं०] गायके निकट गर्भाधानके लिए साँझा जाना; गायका प्रथम बार गर्भ धारण करना ।

उपसरण-पु० [सं०] (किसीकी ओर) जाना; हृदयकी ओर रक्तका तेजीसे बहना (रोगमें); जिसके पास रक्षा आदिके लिए पहुँचा जाय, पनाह ।

उपसर्ग-पु० [सं०] वह अन्यथ जो धातु या धातुसे बने नाम(संज्ञा) के पहले लगाकर उसका अर्थ बदल देता है (प्र, अव, उप, सम् आदि); भौतिक या दैवी उपद्रव; एक रोगके बीचमें उत्पन्न दूसरा गौण रोग; उपद्रव; मृत्युवृत्तक चिह्न, प्रेतवाधा ।

उपसर्जन-पु० [सं०] उड़ेलना; दैवी उत्पत्त; द्रवण; अधीनस्थ व्यक्ति वा वस्तु; त्याग; गौण वस्तु ।

उपसर्पण-पु० [सं०] पास जाना ।

उपसागर-पु० [सं०] चौड़े मुँहकी खाड़ी ।

उपसादन-पु० [सं०] सेवामें उपस्थित होना; सम्मान करना; (ऊपर) रखना ।

उपसाना-स० कि० बासी करना, सजाना ।

उपसिक्त-वि० [सं०]...में भोगा हुआ ।

उपसीर-पु० [सं०] हल ।

उपसुंद-पु० [सं०] महाभारतमें वर्णित सुंद दैत्यका छोटा भाई ।

उपसुक्तिका-श्री० [सं०] बाकी ।

उपसुर्षक-पु० [सं०] सूर्यमंडल; एक तरहका और या जुगनू ।

उपसृष्ट-वि० [सं०] गृहीत; प्रेताविष्ट; प्रसूत । पु० मैथुन; प्रसूत सूर्य या चंद्र ।

उपसेक, **उपसेवन**-पु० [सं०] सींचना; छिड़कना; रसा ।

उपसेवन-पु० [सं०] भोग; सेवन; पूजन; आदी होना ।

उपस्कर-पु० [सं०] संस्कार-साधन; सामग्री; मसाला; घरकी सफाई-सजावटके साधन; आभूषणादि; लाँछन;

निदा; जीवन धारण के लिए आवश्यक सामग्री ।
उपकरण-पु० [सं०] हिंसा करना; संभारना, संभारना; विकार; निदा; समूह ।
उपकार-पु० [सं०] पूरक; रिक्तस्थानकी पूर्ति करनेवाला; संभारना, आभरण; आवास; समूह ।
उपस्कृत-वि० [सं०] बनाया, तैयार किया हुआ; एकट्ठा किया हुआ; बदला हुआ; आश्रित; हत ।
उपस्तंभ; उपस्तंभन-पु० [सं०] सहारा; जीवन-यापनका सहारा (आहारदि); आधार; प्रोत्साहन ।
उपस्करण-पु० [सं०] फैलाना, बिछाना; बिछाना; बाहर ।
उपकी-स्त्री [सं०] उपपत्नी, रत्नेली ।
उपस्थ-पु० [सं०] शरीरका मध्य भाग; पेड़; स्त्री या पुरुषकी जननेंद्रिय; गोद; गुदा; नितम्ब । वि० निकटवर्ती; पास बैठा हुआ ।-**दल; पत्र-पु०** पीपलका वृक्ष ।-**निग्रह-पु०** संयम, इन्द्रियदमन ।
उपस्वाता(तृ)-वि० [सं०] उपनत; समयपर आया हुआ । पु० नौकर; यक्षपुरोहित ।
उपस्थान-पु० [सं०] पास आना; सामने आना; उपस्थिति; मौजूदगी; देवताके सामने खड़ा होकर स्तुति या आराधना करना; उपसनास्त्व; मृत्युति; वासस्थान; प्राप्ति ।
उपस्थापक-वि० [सं०] पास लाने या रखनेवाला, उपस्थित करनेवाला; सिंहाने-समझानेवाला; सरण दिला देनेवाला ।
उपस्थापन-पु० [सं०] पास या सामने रखना; उपस्थिति; सेवा-द्वार; सरण दिलाना ।
उपस्थापी(विद्)-वि० [मं०] पास खड़ा या पास आनेवाला ।
उपस्थित-वि० [सं०] पास या सामने आया हुआ, मौजूद, हाजिर; वाद; निकटवर्ती; पूजित; सेवित; प्राप्त; पठित; ज्ञात; मांजित ।
उपस्थिति-स्त्री [मं०] हाजिरी, मौजूदगी, विद्यमानता; नैकत्व; वाद होना; स्मरणशक्ति; प्राप्ति; सेवा; कार्य-पूर्ति ।
उपस्नेह-पु० [सं०] आर्द्र होना, गीला होना ।
उपस्पर्श; उपस्पर्शन-पु० [मं०] छूना; संपर्क; स्नान करना; मुँह पीना; कुछा करना ।
उपस्सुति-स्त्री [सं०] गौण धर्मशास्त्र (त्रायासि, नाचिकेत आदिके रचे ग्रन्थ) ।
उपस्ववण-पु० [सं०] स्नाय; स्निग्धका मासिक स्नाय; मासिक स्नायका अंत ।
उपस्वत्व-पु० [सं०] जमीन या पूज्य होनेवाली आय, सूद, लगान ।
उपस्वेद-पु० [सं०] पसीना; वाष्प; आर्द्रता ।
उपहंता(तृ)-वि० [सं०] उपधापक ।
उपहत-वि० [सं०] चोट खाया हुआ, घायल; नष्ट; दूषित, विह्वल; अभिभूत; जिमपर वज्रपात हुआ हो; लाछित ।
उपहतक-वि० [मं०] दुर्भाग्यग्रस्त ।
उपहृति-स्त्री [सं०] अपात; वष; उपवास ।
उपहृत्वा-स्त्री [सं०] चोट; क्षति; आँखकी तिलमिलाहट; चकाचौध ।
उपहरण-पु० [सं०] पास लाना; ग्रहण; भेंट या नजर करना; खाना परसना ।

उपहृत्-पु० [सं०] आमंत्रण; आवाहन ।
उपहृत्त-वि० [सं०] जिसका उपहास किया गया हो । पु० व्यंग्य-कटाक्षभरी हँसी ।
उपहृत्क्षिप्त-स्त्री [सं०] पान आदि रखनेका बटुआ; पनटम्बा ।
उपहार-पु० [सं०] भेंट, सौगात; पूजनद्रव्य; नैवेद्य; मेह-मानोंके सामने परस गया भोजन; सम्मान; क्षतिपूर्ति, संधि के लिए दी जानेवाली रकम; आनंद-प्रसन्न ।
उपहारी(विद्)-वि० [सं०] भेंट नजर देनेवाला; पास लानेवाला ।
उपहास-पु० [सं०] निदास्यक; बनानेवाली हँसी; खिल्ली उड़ाना; निंदा, बदनामी; तमाशा ।
उपहासक-वि० [मं०] उपहास करनेवाला ।
उपहासास्पद-वि० [मं०] हँसने, खिल्ली उड़ाने योग्य, उपहास्य ।
उपहासी-स्त्री उपहास ।
उपहास्य-वि० [मं०] उपहासके योग्य ।
उपहित-वि० [सं०] ऊपर, नीचे या पास रखा हुआ; युक्त, संहित; उपाधियुक्त; कुछ अच्छा ।
उपही-पु० छजनगी, बाहरी आदमी, परदेसी-ये उपही कोउ कुँवर जोगी-गीता ।
उपहृति-स्त्री [सं०] चुनौती ।
उपहृत-वि० [मं०] नजर किया हुआ; निकट लाया हुआ; बलि चढ़ाया हुआ; परमा हुआ (भोजन); एकत्रीकृत ।
उपहृत्-पु० [मं०] निर्जन या एकान्त स्थान; नैवेद्य ।
उपांग-पु० [सं०] छोटा अंग, अंगका विभाग; पूरक; सहायक वस्तु; वेदांगके पूरक विषय-पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र; टीका; भालपर अवित पादुका-चिह्न; डोल जैसा एक बाजा ।
उपांजव-पु० [मं०] लीपना; सफेदी करना ।
उपांत-पु० [सं०] छोर, किनारा; ओल्लाका कोना; मांजिय; अन्तके पासका अक्षर; हाशिया । वि० अन्तके पासका ।-**स्थ-वि०**-हाशियापर लिखा जानेवाला; किनारेपर स्थित ।
उपांतिक; उपांतिस-वि० [सं०] निकटवर्ती, पासका ।
उपांथ-वि० [सं०] अन्तके पासका, आखिरीने पहल्लेका ।
उपांशु-पु० [सं०] मर स्वर्गमें मन्नका जप; मौन ।
उपाह्, उपाह-पु० दे० 'उपाय' ।
उपाकरण-पु० [सं०] कार्यांग्रह करकेका निमंत्रण; तैयारी, उपक्रम; उपक्रम संस्कारके बाद वेदाध्ययनका आरंभ; बलिप्रदान ।
उपाकर्म(तृ)-पु० [सं०] उपक्रम; आरंभ; वेदपाठ आरंभ करनेके पहल्ले श्रावणी पूणिमाको किया जानेवाला एक मंत्रकार ।
उपाकृत-वि० [सं०] पास लाया हुआ; आहूत; बलि चढ़ाया हुआ; आरम किया हुआ । पु० बलिका पशु; आमंत्रण, दैवी उपद्रव्य; आरंभ ।
उपास्थान, उपास्थानक-पु० [सं०] छोटी कथा या कहानी; पौराणिक कहानी ।
उपागत-वि० [सं०] आया हुआ; पठित; वादा किया हुआ; पीढ़ित ।

उपागम-पु० [सं०] निकट जाना; घटना; वाद; स्वीकृति; कथानुमति ।

उपाग्रहण-पु० [सं०] संस्कारपूर्वक वेदाध्ययनका आरम्भ करना ।

उपाटना*—स० कि० उलाटना ।

उपाङ्गा—पु० एक रोग जिसमें शरीरकी खाल उचक जाती है (यह प्रायः तेज दवा आदि खानेके कारण होता है) ।

उपाङ्गना*—स० कि० दे० 'उपाटना' ।

उपाती*—स्त्री० उपपति ।

उपात्त-वि० [सं०] लब्ध, प्राप्त, अधिकृत; गृहीत; अनुभूत; प्रयुक्त; उल्लिखित; आरम्भ । पु० निर्मेद हस्ती ।

उपात्त्यथ-पु० [मं०] विधि-विधानका परित्याग; औदत्य ।

उपादान-पु० [सं०] ग्रहण; स्वीकार; कारण; वह द्रव्य जिसमें कोई वस्तु बने; कार्यरूप प्राप्त करनेवाला कारण; प्रयोग; उद्देश; कथन; इन्द्रियोंके विषयोंमें प्रथक् करना; शरीरका प्रयत्न । —**कारण-पु०** समवायी कारण । —**लक्षणा-स्त्री०** अज्ञहस्तार्थी लक्षणा (सा०) ।

उपादि*—स्त्री० दे० 'उपाधि' ।

उपादेय-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; प्रशस्त; उत्कृष्ट ।

उपाधि-स्त्री० [मं०] छल, पोसा; विदेश लक्षण; अवच्छेदक गुणधर्म, सिद्ध, प्रयोजन; आः; पदवी; योग्यता या प्रतिष्ठा स्वीन करनेवाला शब्द । —**धारी (सिन्)-वि०** जिसे कोई उपाधि दी गयी हो ।

उपाधी (धिन्)-वि० [मं०] उपद्वी, उत्पाती; छली, धोखेवाज ।

उपाध्याय-पु० [मं०] शिक्षक, अध्यापक; वेद-वेदांग पढ़ाने वाला; ब्राह्मणकी एक उपजातिस्त्री उपाधि ।

उपाध्याया-स्त्री० [सं०] अध्यापिका ।

उपाध्यायानी-स्त्री० [मं०] गुरुपत्नी ।

उपाध्यायी-स्त्री० [मं०] अध्यापिका; गुरुपत्नी ।

उपाध्या (ध्वन्)-पु० [मं०] पगडंडी, टॉक, संझ ।

उपानन् (ह्)-पु० [मं०] ज्ञा; खड़ाक ।

उपानना*—स० कि० उत्पन्न करना ।

उपानह-पु० ज्ञा ।

उपाना*—मं० कि० उपज्ञाना, उत्पन्न करना; करना ।

उपाय-पु० [सं०] पास जाना; साधन; युक्ति, तद्वीर; इलाज; यत्न; शत्रुपर विजयप्राप्तिकी युक्ति-साम, दान, भेद और दंड; घटना; आरम्भ । —**चतुष्टय-पु०** शत्रुपर विजय प्राप्त करनेके चार उपाय-साम, दान, भेद और दंड । —**क्षिप्ता-स्त्री०** कार्यसिद्धिका उपाय मोचना । —**सुरीय-पु०** चौथा उपाय-दंड, हिंसात्मक उपाय ।

उपायन-पु० [सं०] पास जाना, सिध्य बनाना; भेद, उपहार ।

उपायिक-वि० [सं०] बढ़ानेवाला; उन्नत करनेवाला ।

उपायी (यिन्)-वि० [सं०] उपायकुशल; उपाय करनेवाला; निकट जानेवाला; स्त्रीसहवासके लिए जानेवाला ।

उपायंभ-पु० [सं०] आरंभ ।

उपाय-पु० [सं०] मूक; दोष; पाप; सामीप्य ।

उपायत-वि० [मं०] प्रसन्न, मुदित; प्रत्यागत; संलग्न ।

उपायना*—स० कि० उलाटना —**खातेसि** कल अर्ध विटप उपारे—रामा० ।

उपायक-वि० [सं०] कमाने, पैदा करनेवाला ।

उपायन-पु०, उपायना-स्त्री० [सं०] कमाना; पैदा करना; हासिल करना ।

उपायित-वि० [सं०] कमाया हुआ; प्राप्त; बढ़ोरा हुआ ।

उपायर्थ-वि० [मं०] अल्प मूल्य या महत्त्वका ।

उपायंभ, उपायंभन-पु० [सं०] उलाटना, शिकायत; निंदा, दुर्वाच्य; बर्जना; दैर लगाना ।

उपाय*—पु० दे० 'उपाय' ।

उपायर्तन-पु० [मं०] बापम आना; चक्कर देना; पास आना; विरत होना ।

उपायवृत्त-वि० [सं०] लौटा हुआ; विरत; उचित; चक्कर खाया हुआ; लौटा हुआ । पु० थकावट दूर करनेके लिए लौटनेवाला बोझ ।

उपायव्याध-पु० [सं०] अरक्षित स्थान ।

उपायश्रय-पु० [सं०] आश्रय, सहारा ।

उपायसंग-पु० [मं०] सामीप्य; स्वीर ।

उपाय*—पु० उपवास, फाका ।

उपायक-वि० [मं०] उपासना करनेवाला, आराधक; भक्त; अनुयायी । पु० शूद्र; मिथुने भिन्न बुद्धका पूजक । [स्त्री० 'उपायिका'] ।

उपासन-पु० [सं०] सेवा, पूजा करना, आराधन, ध्यान आदिके द्वारा इष्टदेवका चिंतन; शराभ्यास; यज्ञाग्नि; क्षति पटुचना ।

उपासना-स्त्री० [मं०] सेवा, आराधना; भक्ति । * स० कि० आराधना करना, पूजा-सेवा करना ।

उपासा-वि० जिसने उपास किया हो, निराहार । स्त्री० [मं०] सेवा; पूजा; इष्टदेवका ध्यान ।

उपासित-वि० [मं०] पूजित, आराधित; पूजा करनेवाला ।

उपासिता (न्)-वि० [मं०] आराधक, पूजक ।

उपासी*—वि० उपासक ।

उपासमन-पु० [सं०] मूर्च्छा ।

उपासित-स्त्री० [मं०] पूजा, आराधना ।

उपास्य-पु० [मं०] साधारण या छोटा भक्त ।

उपास्य-वि० [मं०] पूजा, आराधना करने या किये जाने योग्य ।

उपाहार-पु० [मं०] जलपान, नाश्ता । —**शुद्ध-पु०** वह स्थान या दुकान जहाँ जलपान, चाय आदिकी व्यवस्था हो, रेस्तराँ, होटल ।

उपाहित-वि० [सं०] रखा हुआ; पहना हुआ; संबद्ध; आरोपित; आपसकी रायसे किया हुआ । पु० अभिभव ।

उपेक्ष-पु० [सं०] इदके छोटे भाई; विष्णु, कृष्ण । —**वस्त्रा-स्त्री०** एक छद् ।

उपेक्षक-वि० [सं०] उपेक्षा करनेवाला; उदासीन; धीर ।

उपेक्षण-पु० [सं०] अनारद, अवहेलना, तिरस्कार, लापरवाही करना; परित्याग; सहन; सतर्कता; आसन-नीतिका एक भेद ।

उपेक्षणीय-वि० [सं०] उपेक्षा करने योग्य ।

उपेक्षा-स्त्री० [सं०] अपेक्षाका उल्टा, उदासीनता, अवहेलना, तिरस्कार, लापरवाही; सहन; कष्ट; ध्यान देना; योग्यता एक भावना । —**बान-पु०** मुख्य शत्रुकी जीतनेके

बाद उसके सहायक आदिपर आक्रमण करना ।
उपेक्षित-वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गयी हो ।
उपेक्ष्य-वि० [सं०] उपेक्षणीय ।
उपेक्षना-सं० कि० उपेक्षा करना ।
उपेत-वि० [सं०] मिष्टा हुआ; प्राप्त; युक्त ।
उपेय-वि० [सं०] उपाय करने योग्य, जिसका उपाय हो सके, साध्य; पास जाने योग्य; प्राप्य ।
उपैना-वि० खुला हुआ; नष्ट । अ० कि० उड़ जाना ।
उपोद-वि० [सं०] जमा किया हुआ, बढ़ोरा हुआ; निकट लाया हुआ; भूयस्क; शुरू किया हुआ । पु० भूह ।
उपोत-वि० [सं०] लपेटा हुआ; आच्छादित, ढका हुआ (बस्तरते) ।
उपोती-स्त्री० [सं०] पूतिका नामक पौधा ।
उपोदक-वि० [सं०] जलके पासका । पु० जलका सामीप्य ।
उपोदका, उपोदकी, उपोदिका, उपोदीका-स्त्री० [सं०] दे० 'उपोती' ।
उपोद्ग्रह-पु० [सं०] ज्ञान ।
उपोद्वास-पु० [सं०] आरंभ; प्रस्तावना, भूमिका; साधन; अन्तर; उद्गाहरण; विवेचन ।
उपोद्बल-पु० [सं०] समर्थन, पुष्टि ।
उपोषण-पु० [सं०] उपवास, लपन ।
उपोषित-वि० [सं०] उपासा । पु० उपवास ।
उपोसथ-पु० [पा०] निराहार व्रत (शै०) ।
उष-वि० [सं०] शेषा हुआ ।
उष-अ० [अ०] दुःख, पीडा, पछतावा आदिका सूचक उद्गार, आह, हा । स्त्री० आह, अफसोस । पु०-न करना-पीडाको पी जाना, मुँहमें आहतक न निकालना ।
उषना-अ० कि० उफनना ।
उषताद्-स्त्री० [अ०] पटना; संयोग; आरंभ; छेच; पीडा ।
उषताद्वा-वि० [अ०] गिरा हुआ, शून्य-हीन; परती (जमीन) ।
उफनना, उफनाना-अ० कि० उबलना, जोश खाना ।
उफान-स्त्री० उबाल, जोश साकर ऊपर उठना ।
उफाल-स्त्री० छडा हग ।
उषकना-अ० कि० कै करना ।
उषका-पु० अरिबन, कुपमें पानी निकालनेके लिए कलसे-में फँसाया जानेवाला रस्तीका फँदा ।
उषकाई-स्त्री० कै, मतली ।
उषट-वि० [सं०] ऊबड़-खाबड़; टेढ़ा; कठिन (रास्ता) । पु० ऊबड़ खाबड़ रास्ता ।
उषटन-पु० सरसो, तिल, चिरौजी आदिका लेप ।
उषटना-अ० कि०, सं० कि० उषटन लगाना, उषटन आदिकी मालिश करना ।
उषटपटा-पु० उद्गम, ऊबड़-खाबड़ रास्ता; गलत रास्ता, कुपथ ।
उषटारी-पु० रास्तेमें उभरे हुए छोटे पत्थरसे लगनेवाली पोंचकी चोट, ठोकर; धक्का, आघात ।
उषना-अ० कि० ऊबना; ऊपर उठना ।
उषरना-अ० कि० बचना, छुटकारा पाना; बाकी बचना ।
उषरी-स्त्री० दे० 'ओषरी'; एक तरहकी काश्तकारी ।
उषकना-अ० कि० खोलना, उफनना, जोश खाना । पु०

-**उषक पचना**-कुड़ होकर अड़-बड़ बचना, आपसे बाहर हो जाना ।
उषसन-पु० बरतन मॉजनेमें काम आनेवाला (धास-पात, नारियलके रेशे, बाघ आदिको) मूठा ।
उषसना-सं० कि० बरतन मॉजना । अ० कि० सड़ना, गलना ।
उषहना-पु०, स्त्री० कुपमें पानी निकालनेकी रस्ती ।
उषहना-सं० कि० (तलवार आदि) खींचना; ऊपर उठाना उलीचना; जोतना । अ० कि० ऊपर उठना, उभरना । वि० विना जुतेका ।
उषहनी-स्त्री० रस्ती ।
उषात-स्त्री० कै, उलटी ।
उषाना-सं० कि० ऊबनेका कारण होना, तंग, परेशान करना; * उगाना । पु० कपडा बुननेमें राखके बाहर रह जानेवाला सूत । * वि० नगे पॉव ।
उषार-पु० बचाव; छुटकारा; बचत, ओहार, पर्दा ।
उषारना-सं० कि० बचाना; छुड़ाना, उडार करना ।
उषारा-पु० जानवरोंके पानी पीनेके लिए कुपके पास बनाया जानेवाला कुंड ।
उषाल-पु० खींचकर ऊपर उठाना, उफान, जोश; क्रोध आदिका भक्क उठना ।
उषालना-सं० कि० खोलना, जोश देना; पानीमें (पिना घी, मसालेके) पकाना ।
उषासी-स्त्री० जंभाई ।
उषाहना-सं० कि० दे० 'उषहना' ।
उषिठना, उषीठना-सं० कि० अरुचि पैदा करना, उबाना; किरक करना । अ० कि० ऊबना, जी भर जाना ।
उषीधना-अ० कि० फँसना; धमना, चुभना ।
उषीधा-वि० कँटीला, गड़नेवाला, छेउनेवाला; गड़ा हुआ, धँसा हुआ; फँसा हुआ ।
उषेना-वि० नगे पॉव ।
उषेरना-सं० कि० दे० 'उषारना' ।
उष-वि० दे० 'उभय' ।
उभटना-अ० कि० अहकार करना ।
उभचना-अ० कि० दे० 'उभरना' ।
उभय-अ० कि० उठना ।
उभय-वि० [सं०] दोनों, दोनोंमें प्रत्येक ।-**चर**-वि० जल-खल दोनों जगह रह सकनेवाला (प्राणी) ।-**निष्ठ**-वि० दोनोंमें जिसकी निष्ठा हो; जो बीचमें होनेके कारण दोनों ओर सम्मिलित किया जा सके ।-**मुक्ती**-वि० स्त्री० गर्भवती ।-**बादी (विद्रु)**-वि० स्वर-ताल दोनोंका बोधक (बाजा) ।-**विच**-वि० दोनों प्रकारका ।-**विपुला**-स्त्री० एक वृक्ष ।-**वैतन**-वि० दोनों पक्षोंमें वैतन पाने-वाला; विवासापती ।-**व्यंजन**-वि० जिसमें स्त्री उपर्य दोनोंके चिह्न हों ।-**संभव**-पु० धर्मसंकट; धर्मसंकट जैसी स्थिति ।
उभवत(तत्त्व)-अ० [सं०] दोनों ओरसे, दोनों प्रकारसे, दोनों अवस्थाओंमें ।
उभयतो-'उभवत'का समासगत रूप ।-**अनर्थापद्**-पु० ऐसी स्थिति जिसमें दो ही मार्ग हों और वे भी अनिष्टकर

हो (कौ०)। -अर्धापद्-पु० ऐसा करनेमें भी विघ्न-
बाधा और वैसा करनेमें भी (कौ०)। -दंष्ट-वि० जिसके
दोनों ओर दाँत हों (दायाँ, दाँत)। -नाभि-वि० जिसके
दोनों ओर नाभि हो (पश्चिमा)। -भागी(विभु)-पु०
भिन्न और अभिन्न दोनोंका एक साथ उपकार करनेवाला
राजा (कौ०)। -मुक्त-वि० दोनों ओर मुक्तवाला।
-मुक्ती-वि० स्त्री० व्याती हुई (गाय)।

उभयात्मक-वि० [सं०] दोनों रूप, प्रकारसे बना; दोनोंसे
बना।

उभयाव्ययी(विभु)-वि० [सं०] दोनों (पद और वाक्य)-
से जुड़नेवाला (व्या०)।

उभयार्थ-वि० [सं०] द्व्यर्थी; अस्पष्ट।

उभयालंकार-वि० [सं०] वह अलंकार जो शब्दालंकार
और अर्थालंकार दोनों हो।

उभयाभिभिन्न-पु० [सं०] वह राजा जो युद्धरत दो
राजाओंमें किसीका भी अभिन्न न बने।

उभरना-अ० कि० ऊपर उठना, ऊँचा होना; प्रकट होना;
खुलना; बढ़ना; जबानीपर आना; गाय आदिका मस्त
होना; धन-मानकी वृद्धि होना; हिलना, उकसना।

उभरीहूँ-वि० उभरता हुआ; ऊपर उठा हुआ।

उभाड़-पु० दे० 'उभार'।

उभाड़ना-स० कि० दे० 'उभारना'।

उभाटना-अ० कि० अथुआना, सिर हिलाना और हाथ-
पैर पटकना-एक होय नौ उत्तर दीजै मूर सु उठी
उभानी-मू०।

उभार-पु० उभरने, बढ़नेकी किया या अवस्था, उठान,
बाढ़। -हार-वि० उभरा हुआ।

उभारना-म० कि० ऊपर उठाना, लाना; बढ़ाना; भड़-
काना; उकसाना।

उभिटना-अ० कि० हिचकना, अटकना।

उभै-वि० दे० 'उभय'।

उभ्भी-वि० उभय, दोनों।

उभंग-स्त्री० उल्लास; मोह; जोश; उभार, अमान,
आकांक्षा।

उभंगना-अ० कि० उमगमें आना, उल्लसित होना;
मोहमें आना।

उभंग-पु० उठान; जोश।

उभंगना-अ० कि० उमगना।

उभ-पु० [सं०] नगर; बाढ़।

उभकना-अ० कि० उमगना।

उभग, उभगन-स्त्री० दे० 'उभंग'।

उभगना-अ० कि० दे० 'उभंगना'।

उभगाना-स० कि० उमगनेका कारण होना; उत्साहित
करना।

उभगना-अ० कि० उमगना; चौकना।

उभग-स्त्री० बाढ़; धाना; किराज।

उभगना-अ० कि० बढ़कर फैलना; बह चलना; छाना;
जोशमें आना; छुल्ल होना। सु०-बुमबुम-बुम-बुमकर
फैलना।

उभगाना-स० कि० 'उमगना'का प्रे०।

उभगाव-पु० उमगनेका भाव वा किया।

उभगगी-स्त्री० दे० 'उमगगी'।

उभगना-अ० कि० दे० 'उमगना'।

उभगा-वि० दे० 'उमगा'।

उभगाना-अ० कि० मस्त होना; जोशमें आना।

उभगै-अ० उमगनावसे (राम्पे)।

उभर-स्त्री० दे० 'उमर'। -क्रीड-स्त्री० जिदगीभरकी
क्रीड। -कौली-वि०, पु० जिमे उमरकैरकी सजा हुई हो।

-पट्टा-पु० जिदगीभरका ठेका; सदा जीवित रहनेका
प्रकारनामा।

उभरली-स्त्री० एक बाजा।

उभरा-पु० [अ०] धनिक; सरदार; सामंत, दरबारी
(अमीरका बहुर)।

उभराव-पु० दे० 'उमरा'।

उभस-स्त्री० दे० 'उमस'।

उमहना-अ० कि० दे० 'उमगना'; उमगमें आना, प्रसन्न
होना।

उमहाना-स० कि० उमकाना; उमाहना।

उमा-स्त्री० [सं०] पार्वती; दुर्गा; कांति; कीर्ति; शान्ति;
राशि; हल्दी; अलसी: चद्रकांतमणि। -कूट-पु० अलसी-
का पराग। -गुरु, -जनक-पु० हिमाचल। -धवा, -
नाथ, -पति-सहाय-पु० शिव। -धो-पु० दे०
'उमा-धव'। -बन-पु० बाणपुर वा देवीकौट नगर।
-सुत-पु० काचित्केय: गणेश।

उमाकना-स० कि० दे० 'उमाहना'।

उमाकिनी-वि०, स्त्री० उमाहनेवाली।

उमाचना-स० कि० उमराना, निकालना।

उमाह-पु० दे० 'उम्माह'।

उमाह-उत्साह, उमग; आनंद-प्रगट करी सब चातुरी
मनमें विपुल उमाह-चावाहित०।

उमाहना-अ० कि० उमगना, उत्साहित होना, आवेशमें
आना। स० कि० उमकाना।

उमाहल-वि० उत्साह-भरा।

उमेठन-स्त्री० ऐंठन, मरोड़।

उमेठना-स० कि० मरोड़ना, ऐंठना।

उमेठवा-वि० घुमावदार, ऐंठनवाला।

उमेड़ना-स० कि० दे० 'उमेठना'।

उमेड़ा-स्त्री० दे० 'उम्मीद'।

उमेड़ना-स० कि० प्रकट करना, खोलकर बताना; बर्णन
करना।

उम्बगी-स्त्री० [अ०] अच्छाई, धूर्ती।

उम्मा-वि० [अ०] अच्छा, बढ़िया, उत्तम। पु० स्तंभ;
आधार; सरदार।

उम्म-स्त्री० [अ०] माँ, जननी; मूल।

उम्मात-स्त्री० [अ०] समुदाय; किसी खास पैगंबरके अनु-
यायी; सप्रदाय।

उम्मास-स्त्री० पीडा; दे० 'उमस'।

उम्मी-स्त्री० दे० 'उम्मी'।

उम्मीद-स्त्री० [फ्रा०] आशा; अपेक्षा; आकांक्षा, इच्छा;
गर्भ (का०)। -धार-वि० आशा, अपेक्षा रखनेवाला;

नौकरी या पदविशेषका प्रार्थी । पु० नौकरीकी आवासे विना बैठन काम करनेवाला; काम सीखनेवाला; चुनावके लिए खड़ा होनेवाला । **मु०-बर जाना-इच्छा पूरी होना, अमीट सिद्ध होना । -से होना-गमंभती होना ।**

उम्मुल कित्ताब-खी० [अ०] कुरानः सूर्ये फातिहा ।

उम्मेद-उम्मेद-खी० दे० 'उम्मीद' ।

उख-खी० [अ०] कपस, अवस्था, आयु । **मु०-का पैमाना वा ध्याका भर जाना-आयुका अंत आ जाना, मृत्यु निकट होना । -देरना-किसी तरह बिदगीके दिन पूरे करना ।**

उरंग-पु० [सं०] सौंप; नागकेसर ।

उरंगम-पु० [सं०] सौंप ।

उर-'उरम्'का समासगत रूप । -**कपाट-पु०** चौका और मजदूर सीना । -**क्षत-वि०** हृद्दीगते घात । -**क्षय-पु०** यक्ष्मा रोग । -**सुत्रिका-खी०** गलेमें पका हुआ मुकाहार । -**स्तंभ-पु०** दमा ।

उर(सु)-वि० [सं०] श्रेष्ठ, उत्तम । पु० छाती, हृदय, मन । **मु०-आनना; -खाना-छातीसे लगाना; सोचना, ध्यान करना । -बरना-मनमें रखना ।**

उरई-खी० लस ।

उरकना-अ० कि० रकना, ठहरना ।

उरगा-पु० [सं०] (छातीके बल रंगनेवाला) सौंप, नाग । -**भूषण-पु०** शिव । -**राज-पु०** वासुकि, शेषनाग । -**लता-खी०** नागवल्ली, पान । -**सात्रु-पु०** गहड़ । -**सारचंद्र-पु०** चंद्रनका एक भेद । -**स्थान-पु०** पाताल ।

उरगना-अ० कि० शेलना, अंगीकार करना ।

उरगाव-पु० [सं०] गहड़; मोर ।

उरगाव-वि०, पु० दे० 'उरगाव' ।

उरगारि; उरगाशन-पु० [सं०] गहड़; मोर ।

उरगिनी-खी० सर्पिणी ।

उरगी-खी० [म०] माटा सौंप, सर्पिणी ।

उरज; उरजाता-पु० दे० 'उरोज' ।

उरझना-अ० कि० दे० 'उलझना' ।

उरझाना-अ० कि० दे० 'उलझाना', अ० कि० फँसना 'बरणि न जाही । उर उरझाही'-राम० ।

उरक्षेत्र-पु० सकोरा ।

उरक्षेत्री-खी० हृदयकी व्याकुलता ।

उरख-पु० [सं०] मेडा, मेका; एक अक्षर ।

उरणक-पु० [सं०] मेक; बाटल ।

उरणाक्ष; उरणाक्षक; उरणाख्य; उरणाख्यक-पु० [सं०] बहुध्रुव नामक सौरा ।

उरणी-खी० [सं०] मेक ।

उरद-पु० दालके बर्गका एक अनाज, माष । **मु०-के आटे-की तरह पेंटना-कुड होना; खतरना । -पर सफेदी-बहुत कम मात्रा ।**

उरदावन-खी० अदवान, उंचन ।

उरदी-खी० दे० 'उरद'; दे० 'बरदी' ।

उरध-अ०, वि० दे० 'उर्ध्व' ।

उरधारना-अ० कि० फैलाना, बिखेरना; उपेक्षना ।

उरना-अ० कि० दे० 'उरना' ।

उरप-तरप-पु० मूलका एक भेद ।

उरबली-खी० दे० 'उर्वशी'; एक भूषण ।

उरबी-खी० दे० 'उर्वी' ।

उरभ-पु० [सं०] मेक; एक विषैला कीड़ा; दह्रन पौधा ।

उरमंडन-पु० भिखतम (हृदयका आभूषण) -'गादे मुजदंडनके बीच उरमंडनको धारि' -पना० ।

उरमना-अ० कि० लटकना, झूलना ।

उरमाना-अ० कि० लटकाना, झुलाना ।

उरमाल-पु० रुमाल ।

उरमी-खी० दे० 'ऊर्मि'; 'नू तो बट् उरमी रहित सदा एक रस'-सुन्दरदास ।

उररना-अ० कि० उमगित होना ।

उरला-वि० पिछला; बिरल, निराला ।

उरविज-पु० धरती-पुत्र, मंगल ।

उरच्छद-पु० [सं०] छातीपर बाँधनेका कपड़ ।

उरस-वि० [सं०] चौड़ी छातीवाला; *नीरस, सीठा ।

उरसना-अ० कि० उठाना-गिराना, ऊपर-नीचे करना ।

उरसिज; उरसिह-पु० [सं०] स्तन, उरोज ।

उरसिल-वि० [सं०] चौड़ी छातीवाला ।

उरस्क-पु० [सं०] छाती ।

उरकाण-पु० [सं०] दे० 'उरच्छद' ।

उरस्य-वि० [सं०] वैध; औरस, वक्षःस्थल-सम्बन्धी; जिसमें मीनेका प्रयत्न अपेक्षित हो; उत्तम । पु० पुत्र; सेनाका अगला भाग (कौ०) ।

उरस्वान(बट्)-वि० [सं०] चौड़ी छातीवाला ।

उरहन; उरहना-पु० दे० 'उलाहना' ।

उरा-खी० धरती ।

उराउ; उराव-पु० दे० 'उराव' ।

उराना-अ० कि० खतम हो जाना, चुक जाना ।

उरारा-वि० प्रशस्त, फैला हुआ, विस्तृत ।

उराव-पु० उस्ताह; उमग, हीसला; चाह; आनन्द ।

उराहना-पु० दे० 'उलाहना' । पु० कि० दे० 'ओगराना' ।

उरिज-वि० दे० 'उर्रज' ।

उरु-पु० दे० 'ऊरु' । वि० [मं०] विशाल; विस्तृत; प्रचुर; बहुल; श्रेष्ठ, महान्; मूल्यवान् । -**काल; -कालक-पु०** महाकाल लता । -**कम-वि०** लंबे डग भरनेवाला; उच्च वर्गका । पु० विष्णु; शिव; लंबा डग । -**गाव-वि०** बहु-प्रशंसित; चलने-फिरनेके लायक विस्तृत । पु० विष्णु; सीमा; ईद; प्रशस्त स्थान; स्तुति । -**जम्मा(भूमन्)-वि०** सद्ब्रह्म-ज्ञात । -**विक्रम-वि०** पराक्रमी; बलवान् । -**हार-पु०** मूल्यवान् हार ।

उरुजना-अ० कि० दे० 'उलझना' ।

उरुवा-पु० रुखा पक्षी ।

उरुबु; उरुबुक; उरुबुक-पु० [मं०] परर वृक्ष; रक्त एरंड ।

उरुक-पु० [मं०] एक तरहका उछ ।

उरुज-पु० [अ०] ऊपर उठना, चढ़ना; उत्थान; बढ़ती । -**(जो)जवाब-पु०** उत्थान-पतन, वृद्धि-हास ।

उरे-अ० परे, दूर ।

उरेखना-अ० कि० उरेहना; सीचना; देखना ।

उरह-पु० चित्रकारी; चित्र; आलेखन; नकशीनियार ।

उरहना-स० कि० तसवीर बनाना; चित्र खींचना । 'पुनि-
पनि सिंह उरहे लगी'—प० ।

उरी-उरस' का समासगत रूप ।—**राम-पु०** सर्व ।—**ग्रह-
पु०** पार्श्वशूल, 'व्यूरिसी' ।—**आ-रह-पु०** सन, कुच ।
—**विषय-पु०** दमा ।

उर्रित-वि० [स०] रक्षित; शक्तिशाली; प्रख्यात, धर्मवीर;
परिलक्ष ।

उर्ण-पु० [स०] दे० 'ऊर्ण' ।—**नाम-पु०** दे० 'ऊर्णनाम' ।
—**पर्णी-खी०** बन-उरदी ।

उर्ण-खी० [स०] दे० 'ऊर्ण' ।

उर्ण-पु० दे० 'उरर' ।

उर्ण-पु० [स०] लक्षर; छावनी । खी० हिंदी या हिंदुस्तानी-
का वह रूप जिसमें अरबी-फारसी शब्द अधिक व्यवहृत
होते हैं और जो फारसी अक्षरोंमें लिखा जाता है ।

—**पृ० मुख्या-खी०** उच्च उर्दू, टकसाली उर्दू ।—**बाज़ार-
पु०** लक्षरका बाजार; वह बाजार जहाँ सब चीज़ें मिलें ।

उर्ण-पु० [स०] ऊदविलास ।

उर्ण-वि०, **अ०** दे० 'ऊर्ण' ।

उर्ण-पु० [अ०] अधिक प्रचलित या प्रसिद्ध नाम, पुकारने-
का नाम, उपनाम ।

उर्मि-खी० दे० 'ऊर्मि' ।

उर्मिला-खी० [स०] लक्ष्मणकी पत्नी ।

उर्वर-वि० उपजाऊ; जिसमें बहुतसे विचार, सुझाव आदि
निकलें (—मस्तिष्क) ।

उर्वरता-खी० उपजाऊपन ।

उर्वरा-वि०, **खी०** उपजाऊ । **खी०** [म०] उपजाऊ, बरसेज
जमीन; जमीन ।

उर्वशी-खी० [म०] इंद्रलोककी एक प्रसिद्ध अप्सरा जो
भापवश कुछ दिन भूलोकमें पुरुषवाकी पत्नी बनकर
रही ।—**तीर्थ-पु०** महाभारतवर्णित एक तीर्थस्थान ।

—**रमण-बल्लभ-सहाय-पु०** पुरूरवा ।

उर्वार, उर्वारिक-पु० [स०] कर्पूरा; ककड़ी ।

उर्विजा-खी० दे० 'उर्वीजा' ।

उर्वी-खी० [स०] पृथ्वी; जमीन ।—**आ-खी०** पृथ्वीसे
उत्पन्न, सीना ।—**सक-पु०** धरातल, पृथ्वीकी सतह ।
—**धर-पु०** पर्वत; शेषनाग ।—**धच-पति-पु०** राजा ।

—**रह-पु०** पौधा, वृक्ष ।

उर्वीश, उर्वीश्वर-पु० [म०] राजा ।

उर्स-पु० [अ०] किसी मुसलमानकी निधनतिथिकी मनावा
जानेवाला उत्सव (फातिहाखानी और मजलिस) ।

उलंग-वि० नंगा ।

उलंगाना, उलंगना-स० कि० लौपना, उलघन करना;
न मानना ।

उलघन-पु० दे० 'उलघन' ।

उलघना-स० कि० लौपना, उलघन करना ।

उलका-खी० दे० 'उल्का' ।

उलचना-स० कि० दे० 'उलीचना' ।

उलछना-स० कि० उलीचना; छितराना, फैलाना ।

उलछा-पु० शीज बोलनेका एक तरीका ।

उलछारना-स० कि० ऊपरकी तरफ फेंकना; मकट करना ।

उलझना-खी० फँसना; गुथी; कठिनाई; चिता; सोच ।

उलझना-अ० कि० तागा, होरी आदिका फँस, गुँथ जाना;
लिपटना; झगडा, तकरार करना; आमत होना; लीन या
मशगूल होना; अटक जाना ।—**पुलझना-अच्छी** तरह
फँस जाना । **उलझा-सुकझा-टेडा-सीधा**; बुरा-भला ।

उलझा-पु० उलझान ।

उलझाना-स० कि० फँसाना; गिरहें, गुथियाँ ढाल देना ।
अटकाना; लगाये रखना; टेढ़ा करना । * **अ०** कि०
उलझना ।

उलझाव-पु० उलझाना; बसेवा; फेर ।

उलझेवा-पु० दे० 'उलझाव' ।

उलझाव-वि० उलझानेवाला; फँसाने, छुमानेवाला ।

उलटकंबल-पु० एक पौधा जिसकी छाल रंगी बनाने और
दवाकी काम जाती है ।

उलटना-अ० कि० सोपेका औषा होना; एकसे दूसरे रह
होना; विपरीत स्थितिमें जाना; पलटना; घूमना, मुड़ना;
उमड़ना; टूट पड़ना; कुछका कुछ हो जाना, बिलकुल
बदल जाना; अल्प-व्यस्त होना; नष्ट होना; चित होना;
बेहोश होना; मरना; गर्बसे बदल जाना; रेंडना । **स०** कि०
नीचेका ऊपर कर देना; एकसे दूसरे रह कराना, पलटना;
चित करना; नष्ट करना; बदल देना; कुछका कुछ कर देना;
बात दुहराना; उदेलना; कै करना; खोदकर फेंक देना;
रटना; बोये खेतकी फिरने बोलनेके लिए जोतना; सरसरी
तीरपर देखना या पढ़ना । **पु०**—**पलटना**—ऊपरसे नीचे,
हम बलमें उस बल कराना; अल्प-व्यस्त करना; कुछका
कुछ कर देना; हम बलमें उस बल होना, पलट खाना ।

उलट-पलट, उलट-पुलट-पु० अदल-बदल, परिवर्तन; गद-
बद; अस्तव्यस्तता । **वि०** अस्तव्यस्त; परिवर्तित । **अ०**
उलट-पुलटकर, पूर्ण रूपसे, अच्छी तरह—**उलट-पुलट** लंका
भग जाती—रामा ।

उलट-फेर-पु० उलट-पुलट, परिवर्तन ।

उलटवासी-खी० (कवितामें) ऐसी उक्ति जिसमें सामान्यसे
उलटी बात कही गयी हो ।

उलटा-वि० जो स्वाभाविक स्थितिमें न होकर विपरीत
स्थितिमें हो, जिसका ऊपरका भाग नीचे या दाहिनेका बायें
हो; औषा; विपरीतक्रम; असमान; जो होना चाहिये उसके
विपरीत, बेठीक, बेढंगा; विरुद्ध बत-अकसत । [**खी०** 'उलटी']
अ० जैसे होना चाहिये उसके विपरीत, अनुचित रूपमें,
बेजा तीरपर । **पु०** एक पकवान, एक तरहका बेसनका पराठा,
चौला ।—**जमाना-वह** काल जिसमें उलटी रीति चलती
हो, अथेका जमाना ।—**सबा-वि०** बहुत काला ।—**पलटा,
—पुलटा-वि०** अँधबँध, बेसिर-पैरका; क्रम-विरुद्ध ।
—पलटी-खी० उलट-पलट ।—**सीधा-वि०** सही-गलत;
अच्छा-बुरा । **पु०**—**(यै) खोपचीका-मूर्ख, नासमझ,**
उलटी अड्डावा ।—**गंगा बहना-रीतिविरुद्ध** या अनहोनी
बातका होना ।—**गंगा बहना-उलटी रीति** चलाना;
रीतिविरुद्ध बात करना ।—**पट्टी पड़ना-बढ़काना ।**
—**माछा फेरना-मारण** आदिका प्रयोग करना; बुरा
मानना, कोसना ।—**सँस चखना-दम** उखनना; मर-

पासक होना। -सॉस केना-अस-अस सॉस केना; मरणासक होना। -सोयी सुवाना-सरी-सोयी सुवाना, फटकारना। -हवा बहना-उल्लयी रीति चलना। - (२) कटि तौलना-कम तौलना। -छुरसे मुँहना-बेवक्रफ बनाकर पैसा पेंटना। -पॉष फिरना-पॉष खोदना-भ्रष्ट होना। -मुँह गिरना-दूतरेकी क्षति करनेके प्रयत्नमें अपनी क्षति कर लेना।

उल्लङ्घना-सं क्रि० दे० 'उल्लङ्घ'।

उल्लङ्घ-पु० चक्र; पलटवा।

उल्लयी-स्त्री० कै, बमन; मालखमकी एक कसरत।

उल्लटे-अ० बैसा होना चाहिये उसके विपरीत, बैसा तौरपर।

उल्लट-पुल्लट-दे० 'उल्लट-पुल्लट'।

उल्लटना-सं क्रि० दे० 'उल्लटना'।

उल्लङ्घना-सं क्रि० दे० 'उल्लङ्घना'।

उल्लङ्घना-अ० क्रि० उल्लङ्घना; उल्लङ्घना-‘लहरे उठी समुद्र उल्लङ्घना’-प०। सं क्रि० उल्लट-पलट करना।

उल्लथा-पु० करवट बदलना; बैठे-बैठे अंगोंकी मोड़ना; कला-बाजी; एक तरहका नाच; दे० 'उल्लथा'। सु०-मारना-कलाबाजी करते हुए (पानीमें) कूदना; करवट बदलना।

उल्लङ्घ-स्त्री० श्रद्धा; लगातार बर्षा।

उल्लङ्घना-सं क्रि० उल्लङ्घना; बरसाना।

उल्लघ-पु० [सं०] एक तुण, किल्लीणी कता।

उल्लपी (विद्यु)-पु० [सं०] मूस।

उल्लघ्व-पु० [सं०] बद्ध।

उल्लङ्घत-स्त्री० [अ०] प्रेम, मुहम्मत, चाह।

उल्लङ्घना-अ० क्रि० दे० 'उल्लङ्घना'।

उल्लङ्घना-अ० क्रि० ऊपर नीचे होना; उल्लङ्घना; झपटना; धावा करना।

उल्लङ्घना-पु० उल्लङ्घ होनेपर नीचे जानेसे गाड़ीकी रोकनेके लिए पीछेकी ओर लगायी जानेवाली रकबी।

उल्लङ्घना-अ० क्रि० उल्लङ्घना; उल्लङ्घना।

उल्लयी-स्त्री० एक तरहकी मछली।

उल्लङ्घना-अ० क्रि० शोभित होना।

उल्लङ्घना-अ० क्रि० फूटना; निकलना, -“... उल्ले पात गये”-सं०; खिलना; डुलसना। पु० दे० 'उल्लङ्घना'।

उल्लङ्घ-पु० बाक; एक तरहकी नाव। -पञ्च-पु० शीष्टकार्य।

उल्लङ्घी-पु० बाकका हरकारा।

उल्लङ्घना-सं क्रि० लॉडना; आश्वाका उल्लङ्घन करना।

उल्लङ्घ-वि० पीछेकी ओर (अधिक बोलने) झुका हुआ।

उल्लङ्घना-सं क्रि० उल्लङ्घना; ओलरना।

उल्लङ्घना-पु० चौतालकी अंतमें गाथा जानेवाला वद।

उल्लङ्घ-पु० उल्लङ्घ, उल्लास, उमंग-‘मिले मग आनि अनेक उल्लङ्घ’-धन०।

उल्लङ्घना-पु० किसी व्यवहार, बरतावकी शिकायत, उपा-लभ। * सं क्रि० दोष देना, मिटा करना।

उल्लङ्घ-पु० [सं०] शिव; देश-विशेष।

उल्लङ्घना, उल्लङ्घना-सं क्रि० पानी बाहर फेंकना।

उल्लङ्घ-स्त्री० [सं०] दे० 'उल्लङ्घ'।

उल्लघ-पु० [सं०] दे० 'उल्लघ'।

उल्लुपी (विद्यु), उल्लुपी (विद्यु)-पु० [सं०] दे० 'उल्लुपी'।

उल्लुङ्घ-पु० [सं०] उल्लुङ्घ, पक्षी, बुध्द; धर्म; महाभारतमें उल्लिखित एक देश; एक तुण, दर्म, * लुक, उल्लुङ्घ। -वर्तन-पु० वैशेषिक दर्शन।

उल्लुङ्घ-पु० [सं०] ओखली; खल; गूलरकी लकड़ीका बंडा; गुग्गुलु; कानका एक गहना।

उल्लुङ्घ-पु० [सं०] गुग्गुलु; छोटी ओखली।

उल्लुङ्घ-पु० [सं०] अजगर सोंप।

उल्लुपी-स्त्री० [सं०] एक नागकन्या जिसका ब्याह अर्जुनसे हुआ था।

उल्लङ्घना, उल्लङ्घना-सं क्रि० उल्लङ्घना।

उल्लङ्घ-पु० बाढ़; उमंग; उल्लङ्घ-कूद। वि० लापरवाह; अवोध।

उल्लङ्घ-स्त्री० [सं०] लुक; लौ; रातमें आकाशसे दृष्टकर गिरनेवाला प्रकाशमय पिंड या तारा; मशाल। -बद्ध-पु० ताराओंकी एक विशेष स्थिति (ज्यो०)। -विद्ध-पु० रामायणमें उल्लिखित एक राक्षस। -धारी (विद्यु)-पु० मशालची। -पात-पु० आकाशसे जलते पिंडका दृष्टकर गिरना। -पाषाण-पु० जमीनपर गिरी हुई उल्लङ्घ जो पत्थरकी तरह जैसी होती है, 'मोटियर स्टोन'। -माळी (विद्यु)-पु० शिबका एक गण। -मुल्ल-पु० प्रेतोंका एक भेद, अगिया बैताल; एक तरहका गीदड़।

उल्लुङ्घी-स्त्री० [सं०] उल्लङ्घ; मशाल।

उल्लुङ्घ-पु० आभांतर, तुलुङ्घी; अनुवाद।

उल्लुङ्घ-पु० [सं०] दे० 'उल्लुङ्घ'।

उल्लङ्घ-वि०, पु० [सं०] दे० 'उल्लङ्घ'।

उल्लङ्घ-पु० [सं०] शरीरके तीनों तन्कों-बाग, पित्त, श्लेष्मा-मेंसे किसी एकका दूषित हो जाना; विपदा। वि० गर्मोष्णत्व।

उल्लुङ्घ-पु० [सं०] लुक, लुकाठी; मशाल।

उल्लङ्घ-पु० [सं०] लॉडना; विश्रद्धाचरण; (आज्ञा, नियम आदिकी) तोड़ना।

उल्लङ्घना-सं क्रि० उल्लङ्घन करना।

उल्लङ्घित-वि० [सं०] लॉड हुआ; नौका हुआ; अतिक्रान्त।

उल्लङ्घन-पु० [सं०] कुदान।

उल्लङ्घित-वि० [सं०] खड़ा; उठा हुआ।

उल्लङ्घन-पु० [सं०] रोमांच।

उल्लङ्घ-वि० [सं०] कौपता, हिलता हुआ; रोमश; बहु-रोगग्रस्त।

उल्लङ्घित-वि० [सं०] आंदोलित, बुल्लुङ्घ; उठा हुआ।

उल्लङ्घ-वि० [सं०] चमकीला; प्रसन्न; प्रकट होनेवाला।

उल्लङ्घन-पु० [सं०] उल्लङ्घित होना; हर्ष, सुखी; रोमांच, पुलक।

उल्लङ्घित-वि० [सं०] हर्षयुक्त, मुदित; चमकता हुआ; निकाला हुआ (खज्ज); हिलता हुआ।

उल्लङ्घ-वि० [सं०] रोगयुक्त या रोगमें युक्त होता हुआ; दश; युद्ध; दुष्ट; प्रसन्न। पु० काली मिर्च।

उल्लङ्घ-पु० [सं०] मुँहदेकी बात कहना, मोठी बातोंसे मुट्ट करना; कैंडी आवाजमें पुकारना; रोगादिके कारण खरका परिवर्तन।

उल्कापन-वि० [सं०] नभर, क्षणस्वायी । पु० चापवृत्ती ।
 उल्कारी (पिन्)-वि० [सं०] चाटुकार, सुखापदी ।
 उल्काप्य-पु० [सं०] एक उपरूपक; एक तरहका गीत ।
 उल्काल-पु० [सं०] एक भाविक छंद ।
 उल्काला-पु० [?] एक भाविक छंद ।
 उल्कास-पु० [सं०] हर्ष; आह्लाद; उमंग; आरंभ; कांति;
 प्रकाश; परिच्छेद; अर्थात्कारका एक वेद जहाँ किसीके
 गुण या दोषसे किसी दूसरेका गुण या दोष होना
 दिखाया जाय ।
 उल्कासन-पु० [सं०] चयक, कांति; प्रकाश; नचाना;
 उछलनेमें प्रवृत्त करना ।
 उल्कासना-की० [सं०] प्रकट करनेकी क्रिया । भस्म किं०
 प्रकट करना; प्रसन्न करना ।
 उल्कासित-वि० [सं०] चमकावा हुआ; प्रकट किया हुआ ।
 उल्कासी (सिन्)-वि० [सं०] क्रोधा करनेवाला; नाचने-
 वाला ।
 ४ उल्लिखित-वि० [सं०] प्रसिद्ध, ख्यात ।
 उल्लिखित-वि० [सं०] लिखा हुआ; वर्णित; खोदा हुआ;
 उरोहा हुआ ।
 उल्लीड-वि० [सं०] मॉजा हुआ; रंगरा हुआ; चमकाया
 हुआ ।
 उल्लुंचन-पु० [सं०] उल्लाङ्गना (वाल आदि) ।
 उल्लुंडा-की० [सं०] व्यर्थकीर्ति ।
 उल्लू-पु० एक पक्षी जिसे दिनमें नहीं दिखाई देना और
 जो बहुत मनहूँ माना जाता है, उल्लू । वि० मूर्ख,
 नाममत्त । मु०-का गोरेन बिलाना-बेवकूफ बनाना;
 बधमें कर लेना । -का पट्टा-निपट मूर्ख । -बनाना-
 बेवकूफ बनाना; ठगना । -बोलना-उमङ्ग जाना, वीरान
 होना ।
 उल्लेख-पु० [सं०] चर्चा, जिक्र; लिखाई; सुदार्श; अर्थात्
 लकाका एक भेद, जिसमें एक ही वस्तुका विषयभेद या
 दृष्टान्तके कारण, अनेक प्रकारसे वर्णन किया जाय ।
 उल्लेखन-पु० [सं०] उल्लेख करना; लिखना; खोदना;
 बमन; ऊपर उठाना ।
 उल्लेखनीय उल्लेख-वि० [सं०] उल्लेख करने योग्य;
 कहने, बताने योग्य ।
 उल्लोच-पु० [सं०] चंदोवा ।
 उल्लोच-वि० [सं०] अति चंचल । पु० बढ़ी लहर ।
 उल्लू-पु० [सं०] गर्भस्थ बच्चेपर लिपटी रहनेवाली स्त्रिली,
 ओबल ।
 उल्लवण-वि० [सं०] उलट; प्रवृत्त । पु० ओबल ।
 उल्ला-अ० कि० ३० 'उगना' ।
 उल्लि-की० उदय; प्रकट होना ।
 उल्ली, उल्ली-की० [सं०] कटुक्ति; अनिष्टकर वाक्य ।
 उल्ला (मस)-पु० [सं०] शुक्राचार्य ।
 उल्ला-पु० [अ०] एक रक्तशीलक औषधि ।
 उल्ली-की० [सं०] बाहना, बच्छा ।
 उल्लीवर-पु० [सं०] गांधार देश और वहाँका निवासी;
 राजा शिकिंके पिता ।
 उल्लीर, उल्लीरक, उल्लीर, उल्लीरक-पु० [सं०] खस ।

उल्लीरक, उल्लीरक-वि० [सं०] खस बेचनेवाला ।
 उल्लीरी-की० [सं०] लघु काश ।
 उल्लु-पु० [सं०] शिब ।
 उल्ल (पस्)-की० [सं०] मोर, तक्का; मोरका उजाला;
 मोरकी लाली; उपकालकी अधिष्ठात्री देवी; कर्णरंभ;
 मलयश्रेणी । -कल-पु० जुलजुल । -काल-पु० मोर,
 तक्का । -पाव-पु० हठयोगकी एक क्रिया जिसमें तक्के
 नाकमें पानी खींचकर मुँहसे निकालते हैं ।
 उल्ल-पु० [सं०] मोर, तक्का; कामुक पुरुष; गुग्गुलु; खारी
 मिट्टी; खोना नमक ।
 उल्ल-पु० [सं०] काली मिर्च; अवरक; सोंठ; पिप्पलीमूल ।
 उल्ल-पु० [सं०] अनित; सूर्य; चित्रक ।
 उल्लु-वि० [सं०] उल्लकालमें उठनेवाला । पु० अग्नि;
 चित्रक; बवा ।
 उल्ली-की० [सं०] संख्या; सांध्य प्रकाश ।
 उल्ला-की० [सं०] मोर, प्रत्युष, तक्का; मोरका उजाला
 या लाली; बाणासुरकी कन्या जिसका ब्याह अनिरुद्धसे
 हुआ था; पांशुल लक्षण; वाय; राशि; बडली । -कर-पु०
 चन्द्रमा (वी०) । -कल-पु० मुर्गा । -पति, -रमण-पु०
 अनिरुद्ध ।
 उल्लि-वि० [सं०] वाली; बसा हुआ; जडा हुआ, दम्भ;
 फुर्तीला । पु० बली, आवादी ।
 उल्ल-पु० [सं०] चंद्रमा; अनिरुद्ध ।
 उल्ल-पु० [सं०] ऊँट; अंसा; ककुद्वाला सौँह; बैलगाड़ी; रथ ।
 -कोशी-की० एक पुष्प, रक्तपुष्पी । -कोशी (सिन्)-
 वि० ऊँटकी तरह आवाज करनेवाला । -प्रीथ-शिरोचर
 पु० अर्ध । -जिह्वा-पु० स्कंदका एक अनुचर । -पादिका
 -की० लताविशेष, मदनमाली । -पान-पु० ऊँटगाड़ी ।
 उल्लिका-की० [सं०] ऊँटनी; शराब रखनेकी एक तरहकी
 सुराही ।
 उल्ली-की० [सं०] ऊँटनी ।
 उल्ला-वि० [सं०] गरम; गरम तासीरवाला; तीखा;
 रागान्वित; चतुर; फुर्तीला । पु० गरमी; धूप; यौष्म ऋतु;
 गहरी सौँह; व्याज; एक नरक । -कटिबंध-पु० पृथ्वीका
 कर्क और मकर रेखाओंके बीचका, अधिक गरम, भाग ।
 -कर, -किरण, -दीधिति-पु० सूर्य । -काल, -ग-
 पु० गरमीका मौसम । -ह्र-पु० छाता । -मदी-की०
 वैतरणी नदी । -कला-की० एक पौधा । -रक्षि, -रुधि
 -पु० सूर्य । -बात-पु० पिताशयका एक रोग । -वारण
 -पु० छाता । -विदग्धक-पु० अँखिका एक रोग ।
 -वीर्य-वि० गरम तासीरवाला । पु० सँस ।
 उल्लक-वि० [सं०] गरम; गरमी पहुँचानेवाला; अवरुक्त;
 फुर्तीला; झुका हुआ; प्रगत । पु० अवर; ग्रीष्म ऋतु; चक्कर
 काटना; सोपारी ।
 उल्लता-की० [सं०] गरमी ।
 उल्ला-पु० [सं०] उल्लाता, गर्मी ।
 उल्लाक-पु० [सं०] विद्यानमें प्रचलित तापकी एक हकार,
 'केलोरी' ।
 उल्ला-की० [सं०] गरमी; क्षय; पित्त ।
 उल्ला-वि० [सं०] गरमी न सह सकनेवाला; तापपीडित ।

उष्णसह-पु० [सं०] झीत काल, जाड़ेका मौसम ।
 उष्णिका-झी० [सं०] मछि ।
 उष्णिका(मन्)-झी० [सं०] गरमी ।
 उष्णीष-पु० [सं०] पगडी, साफा; मुकुट ।
 उष्णीषी(विन्)-वि० [सं०] जो पगडी बंधि या मुकुट धारण किये हो । पु० शिव ।
 उष्णीष्ण-वि० [सं०] बहुत गरम ।
 उष्म-पु० [सं०] गरमी; ऊमस; धूप; ग्रीष्म ऋतु; जोश; सरसरमी; क्रोध; ऊम बर्ण । -ञ-पु० पसीने या मैलसे पैदा होनेवाले कोरें-जै, सटमल आदि । वि० गरमीसे उपन्न । -प-पु० पितर । -श्वेद्-पु० बाष्प-स्नान ।
 उष्मा(मन्)-झी० [सं०] ताप; बाष्प; ग्रीष्म ऋतु; जोश; ऊम बर्ण ।
 उस-सर्व० 'वह'का विभक्तिके पहले प्रयोगमें आनेवाला रूप (उसने, उसको इ०) ।
 उसकन-पु० बरतन भोजनेका तुणादिका मुट्ठा ।
 उसकाना-सं० कि० उभाड़ना; चला देना; ऊपर उठाना ।
 उसकारना*-सं० कि० दे० 'उसकाना' ।
 उसनना-सं० कि० उढालना, पकाना ।
 उसनावा-सं० कि० उसननेके कार्यमें प्रवृत्त करना ।
 उसनीस*-पु० दे० 'उष्णीष' ।
 उसमाँ-पु० दे० 'वस्सा' ।
 उसमान-पु० [अ०] मुख्यमदके बार साथियोंमेंसे एक जो उमरकी शहादतके बाद (तीसरे) खलीफा चुने गये ।
 उसमानिया-पु० [अ०] उसमानमें चला हुआ तुर्क राज-वश । -सदतनल-पु० तुर्क साम्राज्य जिसका अन्त १९१४-१८ ई० बाले महायुद्धके बाद हुआ ।
 उसरना*-अ० कि० हटना; अलग होना; शीतना; विसरना, भूलना ।
 उसलना*-अ० कि० दे० 'उसरना', -'रात्रनकी ठेल-पैल सैल उसलत है'-भू०; पानीमें उतरना ।
 उसबासाँ-पु० प्रवेग, प्रवृत्ति ।
 उससना*-सं० कि० सौम लेना; उसस लेना; किमकना ।
 उसाँस-झी० ऊपरकी खींची हुई या लबी सोंस; दुःख-सूचक सोंस; सोंस ।
 उसाना-सं० कि० दे० 'ओसाना' ।
 उसाराँ-झी० काम-धन्दा, सेवा, पशुओंका गोबर आदि हटकर सफाई करना -'समय कम है । डोरोंकी उसार करनी

है'-भृग० ।
 उसारावा, उसालना*-सं० कि० उलाड़ना; भगाना; मकान या दीवार आदि खसी करना ।
 उसारा-पु० सायबान, बरामदा ।
 उसारि*-झी० दे० 'उसारा' ।
 उसास-झी० दे० 'उसस' ।
 उसासी-झी० छनबर सुस्ताने, दम लेनेकी मुद्रस्त -'जाने को केसव केतिक बार मैं सेसके सीसन्ह दीन्ह उसासी'-राम० ।
 उसिननाँ-सं० कि० दे० 'उमनना' ।
 उसीर*-पु० दे० 'उशीर' ।
 उसीछा*-पु० कसीला; सहायक-साहब कहूँ न रामसे तोसे न उसीछे'-विनय० ।
 उसीस, उसीसा*-पु० सिरहाना; तकिया ।
 उसूल-पु० [अ०] नियम, कायदा; सिद्धांत ('असल'का बहु०) ।
 उसूली-वि० उसूलका; नैर्द्धांतिक ।
 उसुरा-पु० दे० 'उसुरा' ।
 उसाद्-पु० [फा०] गुरु; शिक्षक । वि० प्रवीण; विद्वत्, चालाक ।
 उस्तादी-झी० [फा०] गुरुआई; प्रवीणता; वृत्तता, चालाकी ।
 उस्तानी-झी० गुरुआनी; शिक्षिका; वृत्त की ।
 उसुरा-पु० [फा०] छुरा, बाल मूडनेका औजार ।
 उस-वि० [म०] प्रातःकाल-संभवधी; चमकीला । पु० रहस्य; सद्भि, धृष्ट; देवता, सत्य; दिन; अभिनीकुमार । -धन्वा-(न्वा)-पु० इ० ।
 उठा-झी० [मं०] प्रत्युष, तबका; प्रकाश; गाय, पृथ्वी; मृमाकानी ।
 उछिक-पु० [सं०] बछड़ा; छोटा बैल; दुग्दा बैल ।
 उत्वास*-झी० दे० 'उत्ताँस' ।
 उहट*-झी० उचाट, ऊब जानेकी क्रिया-'अति रम भगन उहट नहि मानन कनहुँ होति हाहा मनवागी'-वन० ।
 उहदा-पु० दे० 'ओहदा' ।
 उहाँ*-अ० वहाँ ।
 उहार-पु० पालकी आदिपर परदेके लिए पड़ा हुआ कपडा ।
 उही*-सर्व० दे० 'उई' ।
 उहै*-सर्व० वही ।
 उह-पु० [मं०] सोंस ।

ऊ

ऊ-देवनागरी वर्णमालाका छठाँ (स्वर) वर्ण । उच्चारण-स्थान ओष्ठ ।
 ऊँगा-पु०, ऊँगी-झी० चिचडी, अपामार्ग ।
 ऊँच-झी० नींदका झोका, निद्रागम; नंद, स्वप्नी; पधियेके आगे धुरेके सिरेपर लगायी जानेवाली सनकी गेंडुरी ।
 ऊँचन-झी० स्वप्नी, हलकी नींद ।
 ऊँचना-अ० कि० नींदमें धूपना, उनींदा होना; डिलाईसे काम करना ।
 ऊँच*-वि० ऊँचा; बड़ा; कुलीन, ऊँची जातिका । -जीब-

वि० छोटा-बड़ा; ऊँची-नीची जातिका, कुलीन-अकुलीन; भला-बुरा ।
 ऊँचा-वि० ऊपरकी ओर अधिक उठा हुआ, मुलंद; लंबाई या अर्थमें छोटा, उठंगा; बड़ा, श्रेष्ठ, उच्च, उदात्त; जोरका; पद-प्रतिष्ठामें बड़ा; सम्मानित । -ई-झी० ऊँचा होना, मुलंदी; बड़ाई । -जीबा-वि० ऊँच-खावक; भला-बुरा ।
 -कोल-पु० गर्वमयी उक्ति । मु०-जीबा सुनाना-भला-बुरा कहना । -सुनना-केवल जोरसे कही हुई बात ही सुन सकना, अर्थ-बिहर होना । -(की) हुकाय

कीका पकवान-नामके अदुरुप काम, गुण आदि न होना।

ऊँचे-अ० ऊँचाईपर, ऊपरकी ओर। झु०-नीचे पाँच पक्का-चूक-खता होना; कीका पक्कट होना।

ऊँछ-पु० एक राग।

ऊँछना-स० कि० कंथी करना।

ऊँट-पु० मोक्ष देने तथा सवारोंके काम आनेवाला एक जानवर जो गरम और रेगिस्तानी प्रदेशोंमें अधिकतर पाया जाता है, उष्ट्र। -ऊँटारा, ऊँटीरा-पु० एक कंटीली झाड़ी जिसे ऊँट बड़े चावसे खाते हैं। -बाग-पु० ऊँट चलावेवाला। झु० (देखिये)-किस करघट बैठता है-देखिये, माननेका क्या नतीजा होता है। -की खोरी और नीचे-नीचे (झुके-झुके)-न छिपनेवाली बातको छिपानेकी कोशिश। -के गलेमें बिलखी-बेमेल, असंगत बात। -के मुँहमें जीरा-अधिक खानेवाला या आवश्यक्तावालेको थोड़ीसी चीज देना। -जिगल जाई, हुमसे हिक्किर्को-बड़ी-बड़ी बानें कर जाना और छोटीमें अटकना। -झक्केको ही भागता है-हर चीज अपने असल, उद्गमकी ओर ही जाती है। -रे ऊँट, तेरी कौनसी कल मीची-बेतुके आदमीकी कोई बात ठीक नहीं होगी।

ऊँटनी-झी० मादा ऊँट। -सवार-पु० सौँझनी-सवार, हरकारा।

ऊँचा-पु० वह बरतन जिसमें रुपये आदि रखकर ग्राह दिये जायें; नहत्याना।

ऊँदर-पु० चूहा।

ऊँथा-पु० दातुवाँ किनारा; चौपायोंके पानी पीनेका घाट।

ऊँहूँ-अ० नहीं; कदापि नहीं।

ऊ-पु० [सं०] शिव; चंद्रमा; रक्षक। * अ० भी। सर्व० वह।

ऊअना-अ० कि० उदय होना, उगना।

ऊआबाई-वि० न्यर्थ, बेसिर-पैरका। खी० निरर्थक बान; धवसाइट।

ऊक-पु० तुक, उल्का। खी० जलना; अँच; चूक, गलनी। अ० आगेकी ओर, मुँहके बल।

ऊकना-अ० कि० चूकना। स० कि० छोड़ना; भूलना; तपाना; जगाना-‘ये ब्रजचंद चली किन बा ब्रज, लूक भसंतकी ऊकन लागी’-क० कौ०।

ऊकार-पु० [सं०] ‘ऊ’ अक्षर वा उसकी ध्वनि।

ऊख-पु०, खी० दे० ‘ईख’। * वि० गरम, तप्त।

ऊख-पु० पहाड़के नीचेकी लूनी भूमि।

ऊखम-पु०, खी० दे० ‘ऊम्’।

ऊखल-पु० दे० ‘ओखली’; एक तरहकी घास।

ऊखिल-वि०, पु० किरकिरी; अनजान, पराया-‘ऊखिल औ सरकै पुगारिमें-वन०। -ताई-खी० पराधापन।

ऊगना-अ० कि० दे० ‘उगना’।

ऊखर-वि० उगानेवाला, नीरस।

ऊज-पु० अंधेर, लपट, ज्वाला।

ऊज-वि० उजाक, बीरान।

ऊज-पु० उद्वेग का कारण-‘इनकोछि नित आदिन-

पूजन। नित कोहाइल नित ब्रज ऊजन।’-वन०।

ऊजना-अ० कि० पूरा होना।

ऊजर-वि० दे० ‘उजला’; दे० ‘ऊम्’।

ऊजरा-वि० दे० ‘उजला’।

ऊटक-पाटक-पु० अलछटपू, अनिश्चित काम।

ऊढा-अ० कि० जोशमें भरना; उत्साहित होना; सीच-विचार करना।

ऊटपटौंग-वि० बेतुका, असंगत, बेसिर-पैरका, निरर्थक।

ऊठ-खी० उठान-‘धूपवारिये ऊठ उमैठी’-वन०; दीप्ति-सुखकी कठ और कछु अंतरको रस बाहिर छलकवी’-वन०; उमंग-‘रिस-रुसनें रुखिये कठ अनूठिये’-वन०।

ऊढा-स० कि० ब्याह करना।

ऊढी-खी० पनडुब्बी चिड़िया; गोता; रेगम खोलनेवालोंकी चरखी।

ऊढ-वि० [सं०] विवाहित; धूल, बहित। -ऊँकट-वि० कनचधारी।

ऊढना-अ० कि० अनुमान करना; सोचना।

ऊढा-खी० [सं०] विवाहिता खी; वह परकीया नायिका जो विवाहित पतिकी छोड़कर अन्य किसीमें प्रेम करे।

ऊढि-खी० [सं०] बहन; विवाह।

ऊत-वि० निपुता; बेवकूफ। पु० निम्नतान व्यक्ति।

ऊतर-पु० बहाना; दे० ‘उतर’।

ऊतला-वि० उगावला; तेज।

ऊति-खी० [सं०] सिलाई; सोनेकी मजदूरी; दुनाई; रक्षण; सहायता; कीर्षा; कृपा, अनुग्रह; रक्षा।

ऊसिम-वि० दे० ‘उसम’।

ऊद-पु० [अ०] अगर; बरत नामका बाना; ऊदबिलाब। -शरकी-पु० एक तरहका ऊद। -बत्ती-खी० एक तरहकी अगरबत्ती। -बिलाब-पु० दे० क्रममें। -सोज-पु० अगरदान।

ऊदबिलाब-पु० नेवलेकी शक्का एक उमरबचर जंतु। वि० मूर्ख, बुद्ध, -की बेरी-कमी समाप्त न होनेवाला झगडा।

ऊदक-पु० आल्हाके नायक छुमसिद्ध वीर उदयसिंह; एक हथ।

ऊदा-वि० बैगनी रंगका। पु० बैगनी रंगका थोडा।

ऊदरी-वि० ऊदका; ऊदके रंगका, स्थायीभायल पु० ऊदरी रंग। -सेम-खी० केनाँच।

ऊद(स्)-पु० [सं०] स्नान; छाती; मित्रोंके मिलनेका गुप्त स्थान।

ऊदम्ब; ऊदम्ब-पु० [सं०] दूध।

ऊदम-पु० औरतुल, बंगामा; उत्पात।

ऊदमी-वि० ऊदम मचानेवाला; उत्पाती।

ऊदब, ऊढो-पु० दे० ‘ऊढव’।

ऊन-पु० मेढ़, दुबे आदिका कोमल बाक जिसका कपडा बनता है। वि० [सं०] न्यून थोडा; छोटा; बटिया। झु०

मानना-दिल छोटा करना, इंग्ली होना।

ऊनक-वि० [सं०] न्यून, हीन; अपर्याप्त; सदीप।

ऊनता-खी० [सं०] कमी; छोटाई; धटियापन।

ऊना-वि० दे० ‘ऊन’।

कवि-वि० [सं०] कम किया हुआ, घटाया हुआ ।

कमी-वि० उनका बना, पक्षमी । क्री० दुःख, प्लानि ।

कप-क्री० दे० 'ओप' । पु० कपका जन्मके ही रूपमें दिया जानेवाला ब्याज ।

कपना-अ० कि० उपजना ।

कपर-अ० ऊँचाईपर; आकाशकी ओर; नीचेका उल्टा; कोठे या छतपर, ऊपरकी मंजिलमें; सहारे; सिरपर, शिन्धे; बने या ऊँचे दरजेमें; (लिखाविमें) पक्षमें; अधिक; अतिरिक्त; जाहिरा, प्रकटमें; किनारेपर । -ऊपर-अ० (वकासे) बिना जताये, बाला-बाला, बाहिरा । मु० -ऊपरसे-जाहिरा, प्रकटमें । -क्री आमदनी-वैतन आदिकी वंशी आमदनीसे अतिरिक्त आय, बालाई आमदनी । -क्री कौनों जाना-देनों और फूट जाना । -सुलेके-आगे-पीछे होनेवाले, तरपरिया । -लेना-मिरपर या शिन्धे लेना । -बाला-ईश्वर । -बालियाँ-चोलें; चुहलें; परियाँ । -से-ऊँचाईसे; के अतिरिक्त, अलावा; श्वर-उपरसे; जाहिरा । -होना-पद या अधिकारमें बसा होना; प्रधान होना ।

ऊपरी-वि० ऊपरका, बालाई; बाहरी; दिखाऊ । -कसाद, फेर-पु० प्रेतबाधा ।

ऊब-क्री० ऊबनेका भाव, उकताना; * उमंग; उत्साह ।

ऊबट-वि० ऊब-खावड़; कठिन । पु० ऊबड़-खावड़ रास्ता ।

ऊबड़-खावड़-वि० ऊँचा-नीचा, अटपटा ।

ऊबना-अ० कि० देरतक एक ही स्थितिमें रहने, एक ही चीजको देखते-सुनते रहनेसे मनका उकता जाना, घबराना । * सुशोभित होना-‘मोरी कमरिया पाँच टकाकी सवरी ऊबै देह’-बुद्धेक वैभव ।

ऊबनी-क्री० (कन्यापक्षके) दारकी सोमा बढानेकी रम, द्वारचार (पुद्गल) ।

ऊबर-वि० ज्यादा ।

ऊबरना-अ० कि० दे० 'उबरना' ।

ऊभ-वि० ऊँचा । क्री० ऊमस; वैचैनी; उत्साह । -ऊभ-क्री० दूबने-उतरानेकी क्रिया ।

ऊभट-वि०, पु० दे० 'ऊबट' ।

ऊभना-अ० कि० खड़ा होना, उठना; ऊबना ।

ऊभा-वि० खरा ।

ऊभासोली-क्री० दम फूलना, ऊबना ।

ऊमक-क्री० झपट, झोंक, वेग ।

ऊमट-पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।

ऊमटना-अ० कि० उमडना-‘काली पीली घटा ऊमटी भरस्वी एक घरी’-मीरा ।

ऊमना-अ० कि० उमडना ।

ऊमर-पु० गूलर; एक वैद्य जाति ।

ऊमरि-पु० गूलर ।

ऊमस-क्री० हवा न चलनेसे माछस होनेवाली गरमी, बरसातकी गरमी, हम्स ।

ऊमडना-अ० कि० उमगमें आना; धिरना ।

ऊमा-क्री० दे० 'उंभी' ।

ऊर-पु० ओर, अंत ।

ऊर-पु० दे० 'ऊर्ज' ।

ऊर-वि०, अ० दे० 'ऊर्ज' ।

ऊर-पु० [सं०] वैद्य ।

ऊर-क्री०-क्री० [सं०] वैद्य ।

ऊर-वि० दे० 'ऊरस' ।

ऊर-पु० [सं०] जौध, रात । -ब्राह्म-पु० जौधका जकड़ जाना । -मल्लि-क्री० जौधकी कमजोरी । -ऊ, -ऊम्मा (मम्मा), -सम्भ-वि० जौधसे उत्पन्न । पु० वैद्य । -पर्व (वृ)-पु० पुटना । -फलक-पु० जौधकी हड्डी । -संधि-क्री० जौधका जोड़, पट्टा । -साद-पु० जौधकी कमजोरी । -स्त्र-पु० एक रोग, जौधों और पैरोंका जकड़ जाना । -स्त्र-क्री० केलेका पेड़ ।

ऊर-क्री० एक कंटीली लता, अलई ।

ऊर-वि० [सं०] जौधसे उत्पन्न । पु० वैद्य ।

ऊर्ज-वि० [सं०] बली, शक्तिशाली; बलकारक; शक्तिदायक । पु० बल; उत्साह; चेष्टा; उद्यम; जीवन; जननशक्ति; प्रण; अन्नका अत्यंत सारभूत रस; अन्न; जल; कार्तिक मास; अर्वाङ्गकारका एक भेद । -मेघ-वि० बहुत चतुर ।

ऊर्ज (स्)-पु० [सं०] शक्ति; उत्साह; आहार ।

ऊर्जस्व-वि० [सं०] बलवान्; तेजस्वी; श्रेष्ठ; उन्मत्त ।

ऊर्जस्वान् (वर्)-वि० [सं०] सायसपन्न; रसीला; बलवान, शक्तिशाली ।

ऊर्जस्वी (स्विन्)-वि० [सं०] दे० 'ऊर्जस्व' । पु० एक काव्यालंकार जो ऐसे स्थलोंपर आता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्वायी भावका अंग हो ।

ऊर्जा-क्री० [सं०] आहार; बल; उत्साह; बुद्धि; दक्षकी एक कन्या जो बसिष्ठकी स्वाही गयी थी ।

ऊर्जित-वि० [सं०] ओजस्वी (आवण); बलवान्, शक्तिशाली; सयुद्ध; गंभीर; तेजस्वी; श्रेष्ठ ।

ऊर्जा (जिन्)-वि० [सं०] जहाँ खाने-पीनेकी वस्तुओंका बाहुल्य हो ।

ऊर्ज-पु० [सं०] ऊन; ऊनी कपड़ा । -नाभ, -नाभि, -पट, -बाभि-पु० मकड़ा । -पिंड-पु० उनका मोला । -ज्व-वि० ऊन जैसा मुलायम ।

ऊर्णा-क्री० [सं०] ऊन; चित्ररथ गंधर्वकी पत्नी; भौहोंके बीचकी भेरी । -सूत्र-पु० ऊनका नागा ।

ऊर्णामय, ऊर्णावल-वि० [सं०] ऊनी ।

ऊर्णावि-वि० [सं०] ऊनी । पु० मेघा; मकड़ा; ऊनी बल ।

ऊर्णावान् (वर्)-वि० [सं०] ऊनी ।

ऊर्णित-वि० [सं०] ढका हुआ ।

ऊर्ण-पु० [सं०] गह्रा नापनेका एक पात्र; योद्धा; दैन्य ।

ऊर्ध्व-वि०, अ० [सं०] दे० 'ऊर्ध्व' ।

ऊर्ध्व-वि०, अ० दे० 'ऊर्ध्व' ।

ऊर्ध्व-वि० [सं०] ऊँचा; सीधा; उठाया हुआ; खड़ा; विश्राममें हुए (शाल); ऊपर फेंका हुआ । अ० ऊपर; ऊपरकी ओर; आगे; बाद । पु० ऊँचाई; ठीक ऊपरकी दिशा । -कंड-वि० जिसकी गरदन उठी हो । -कंडी-क्री० महा-शतावरी । -कध, -केस-वि० जिसके बाल खड़े हो बिखरे हों । पु० केतु । -कर्ण-वि० जिसके कान उठे हों । -क्रिया-क्री० उच्चपद या गतिकी प्राप्तिमें सहायक क्रिया ।

—**मति**—**की०** ऊपरकी ओर जाना; मुक्ति । **वि०** ऊपरकी ओर जानेवाला । —**गामी**(**मिन्**)—**वि०** ऊपरकी ओर जानेवाला; उप्यात्मा । —**वरण**—**वि०** जिसकी दौरे ऊपर की ओर उठी हों, सिरके बल खड़ा । **पु०** श्रम नामक पौराणिक जंतु । —**साख**—**पु०** संगीतका एक ताल । —**दृष्टि**—**वि०** ऊपरकी देखनेवाला; महत्वाकांक्षी । **की०** त्रिकुटी-पर दृष्टि जमानेकी क्रिया (वी०) । —**देव**—**पु०** विष्णु, नारायण । —**देह**—**की०** मृत्युके बाद मिलनेवाला शरीर । —**नेत्र**—**वि०** ऊपरकी ओर देखनेवाला; महत्वाकांक्षी । —**पाव**—**वि०**, **पु०** दे० 'ऊर्ध्वचरण' । —**पुङ्ख**—**पु०** खरा तिलक; वैष्णव या रामानंदी तिलक । —**बाहु**—**पु०** वह सतु या तपस्वी जो अपनी एक बाँह सरा ऊपर उठाये रहे । —**मंभी**(**मिन्**)—**वि०** ऊर्ध्वरेता; ब्रह्मचारी । —**मान**—**पु०** ऊँकार । —**मुख**—**वि०** जिसका मुँह ऊपरकी ओर हो । —**मूक**—**वि०** जिसकी जड़ ऊपरकी ओर हो । **पु०** संसार । —**रेता**(**सस्**) **वि०** नीचपात न होने देनेवाला; नैतिक ब्रह्मचारी । **पु०** शिव; मीथम पितामह; हनुमान् । —**किंग**, **किंगी**(**मिन्**)—**पु०** शिव । —**छोक**—**पु०** आकाश; स्वर्ग । —**बात**—**पु०**, **बायु**—**की०** शरीरके ऊपरी भागमें रहनेवाली वायु । —**हासी**(**मिन्**)—**वि०** मुँह ऊपरकी ओर करके सोनेवाला । **पु०** शिव । —**शोधन**—**पु०** बमन । —**वास**—**पु०** ऊपरकी चढ़नेवाली सँस, उल्टी सँस । —**सानु**—**वि०** अधिरूपाधिक ऊपर जानेवाला । **पु०** पहाड़की चोटी । —**विसिती**—**की०** सीधे खड़ा होना; अध-शिक्षण; गोरेकी पीठ, उत्थान । —**खोता**(**नस्**)—**वि०** ऊर्ध्वरेता ।
ऊर्ध्वक—**पु०** [म०] एक तरहका रुद्रग ।
ऊर्ध्वांग—**पु०** [म०] शरीरका ऊपरका भाग, सिर ।
ऊर्ध्वा—**की०** [स०] प्राचीन कालकी एक प्रकारकी नाव ।
ऊर्ध्वचन—**पु०** [स०] ऊपरकी ओर जाना; ऊपरकी ओर उठना ।
ऊर्ध्वरोहण—**पु०** [म०] स्वर्गगमन, मृत्यु ।
ऊर्ध्ववर्त—**पु०** [स०] अध-शिक्षण ।
ऊर्ध्वसित—**पु०** [म०] करेला ।
ऊर्ध्व—**की०** [स०] ऊपर, तरंग; प्रवाह; वेग; पक्ति; प्रकाश; कपड़ेकी शिकन, प्राण, चित और शरीरके ये छ क्लेश—भूख, व्यास, मोम, मोह, सर्दी और गरमी (न्या०); खेद, परिताप; इच्छा; ई की संस्था; व्यक्त या प्रकट होना । —**माखा**—**की०** तरपावली, तरंगोंकी श्रेणी; एक वृत्त । —**माळी**(**मिन्**)—**पु०** समुद्र ।
ऊर्मिका—**की०** [स०] लहर; अँगूठी; कपड़ेकी शिकन; खेद; औरका गुंजन ।
ऊर्मिमात्र(**मस्**)—**वि०** [स०] तरंगित; टेढ़ा; घुँघराखे(किञ्च) ।
ऊर्मिल—**की०** [स०] लक्ष्मणकी पत्नी ।

ऊर्मी(**मिन्**), **ऊर्म्य**—**वि०** [स०] लहरोंवाला, लहराता हुआ ।
ऊर्म्य—**की०** [स०] रात ।
ऊर्ध्व—**पु०** [स०] शील; ताल; समुद्र; पशुशाला; नेत्र; बह-बानल; पितरोंका एक वर्ग । **वि०** विस्तृत ।
ऊर्ध्व—**की०** [स०] दे० 'ऊर्ध्व' ।
ऊर्ध्वशी—**की०** [स०] दे० 'ऊर्ध्वशी' ।
ऊर्ध्वग—**पु०** [स०] छक्का ।
ऊर्ध्व—**की०** [स०] देवताक नामक वृण ।
ऊलजलुख—**वि०** कटपटांग, वेदंगा, वेसिर-पैरका; अनापी; अशिष्ट ।
ऊलना—**अ०** कि० उछलना ।
ऊलुपी(**मिन्**)—**पु०** [स०] दे० 'ऊलपी' ।
ऊलुख—**पु०** [स०] दे० 'ऊलुख' ।
ऊल—**पु०** [स०] ऊसर; रेहवाली जमीन; नौनी मिट्टी; अम्ल; दरार, विवर; कर्णखान; मलय वर्षा; मोर, प्रत्युष; शुक्र, शीर्ष ।
ऊलक—**पु०** [स०] ओर, तबका; नमक; काली मिर्च ।
ऊलण—**पु०** [स०] चित्रक, चीता; काली मिर्च; सीठ; पिप्पली; पिप्पलीमूल; चम्प ।
ऊलर—**वि०** [स०] खारा । **पु०** ऊसर जमीन । —**ऊ**—**पु०** नौनी मिट्टीमें निकास हुआ नमक; एक तरहका चुंबक ।
ऊषा—**की०** [स०] दे० 'उषा' ।
ऊषी—**की०** [स०] नौनी मिट्टी; खारी जमीन ।
ऊष्य—**पु०** [स०] गरमी; ताप; गरमीका मौसम । **वि०** गरम । —**ऊ**—**पु०** दे० 'उष्मज' । —**ए**—**पु०** जलिन; एक पितृवर्ग । —**वर्ण**—**पु०** स, प, म, र ।
ऊष्या(**धस्**)—**की०** [स०] गरमी; भाप; शीघ्र काल; आवेश; उग्रता ।
ऊष्यापह—**पु०** [म०] जाड़ेका मौसम ।
ऊष्याचण—**पु०** [स०] शीघ्र काल ।
ऊसर—**पु०** वह जमीन जिसमें रेह हो और कुछ पैदा न हो ।
ऊसीजना—**अ०** कि० उसनना, सोझना—'अंग उसीजै उदगकी आवस'—वन० ।
ऊह—**पु०** [स०] परिवर्तन; सुधार; अनुमान; तर्क-वितर्क; परीक्षण; तर्क-युक्ति; अनुक्त पदकी अभ्याहार द्वारा पूर्ति ।
ऊहन—**पु०** [स०] परिवर्तन; सुधार; तर्क-वितर्क करना; विचारना ।
ऊहनी—**की०** [स०] झाड़ू ।
ऊहा—**की०** [स०] दे० 'ऊह' । —**पोह**—**पु०** प्रश्नविशेषके पूर्व और उत्तर दोनों पक्षोंपर विचार करना; तर्कपूर्ण विचार या विवेचन ।
ऊहिनी—**की०** [स०] झुंड, समूह; झाड़ू ।
ऊही(**मिन्**)—**वि०** [स०] ऊहा करनेवाला ।
ऊहा—**वि०** [म०] ऊहा करने योग्य ।

अ

अ—देवनागरी वर्णमालाका मातृवर्ग (स्वर) वर्ण । उच्चारण-न्याय मूर्धा ।
अजसाव—**पु०** [स०] सादल ।

अ—**की०** [स०] देवमाता, अदिति; उपवास; निदा । **पु०** स्वर्ग ।
अक्षर—**पु०** [स०] 'अ' अक्षर या उसकी ध्वनि ।

कश्च(क्)-खी० [सं०] कश्चा, वेदमंत्र; कश्चदेका मंत्र; कश्चदेक; स्तोत्र; कांति; स्तुति; पूजा । -**(क)संज्ञ-पु०** सामवेदका परिशिष्ट । -**संहिता-खी०** कश्चदेक मन्त्रोंका संग्रह ।

कश्च-वि० [सं०] क्षत, आहत ।

कश्च-पु० [सं०] धन; जायदाद; सोना; मृत व्यक्तिकी छोटी हुई संपत्ति; उत्तराधिकारमें मिलनेवाली संपत्ति, वरसा, वपौती । -**ग्राह-सागी(गिन्)-हारी(गिन्)-पु०** कश्च पानेवाला, वारिस ।

कक्ष-पु० [सं०] रीछ, मल्लुक; तारा, नक्षत्र; राशि; रैवतक पर्वत । -**गंधा-खी०** क्षीरविदारी, महादंष्ट्रा ।

-गिन्-पु० एक तरहका कुष्ठ । -**नाथ-पति-राज-पु०** चंद्रमा; ज्ञानवान् । -**नेमि-पु०** विष्णु । -**विहंभी(गिन्)-पु०** उगनेवाला ज्योतिषी । -**विनाशन-पु०** ग्रहोंकी गतिका निरीक्षण ।

कक्षर-पु० [सं०] कौट्य; पुरोहित; वर्षा ।

कक्षवान्(गन्)-पु० [सं०] कक्ष पर्वत ।

कक्षा-खी० [सं०] उत्तर दिशा ।

कक्षी-सं० मादा रीछ ।

कक्षीक-वि० [सं०] मात्र जैसा मांसभक्षी ।

कक्षीक-खी० [सं०] एक देवी ।

कक्षेश-पु० [सं०] चंद्रमा ।

कक्ष- 'कश्च'का समासगत रूप । -**वेद-पु०** चारों वेदोंमेंसे एक जो पढ़ना और प्रथान माना जाता है । -**वेदी(गिन्)-वि०** कश्चदेका ज्ञाना या पढ़नेवाला; जिसके संस्कार कश्चदेक अनुसार होते हैं ।

कश्चा-खी० [सं०] वेदमंत्र; कश्चदेका मंत्र ।

कक्षीक-पु० [सं०] एक कवि, जमदग्निने पिता ।

कक्षीय-पु० [सं०] एक नरक; कगारी ।

कच्छ-पु० रीछ ।

कच्छका-खी० [सं०] इच्छा ।

कच्छरा-खी० [सं०] वदया ।

कक्षिमा(मन्)-खी० [सं०] सरलता ।

कक्षीक-पु० [सं०] इन्द्र; धुआँ; साधन । वि० मिश्रित; इटाया हुआ; भ्रष्ट किना हुआ ।

कक्षीय-पु० [सं०] एक नरक; कटाही; सोमकी मीठी; जल ।

कक्षु-वि० [सं०] मीधा, सरल, कुटिलनारहित; सचा; अनुकूल; हितकर । -**काय-वि०** जिसका शरीर सीधा हो । पु० कदम मुनि । -**कक्षु-वि०** सदाचारी । पु० इन्द्र । -**ग-पु०** बाण; सज्जन । वि० सरल व्यवहार करनेवाला । -**नीति-खी०** सदाचार । -**रोहित-पु०** इद्रका सीधा लाल धनुष । -**लेखा-खी०**-सीधी रेखा ।

कक्षुता-खी० [सं०] सीधापन, मिथ्याई; सचाई; सरलता ।

कक्षी-वि० खी० [सं०] सरल, मीधी (खी) ।

कक्ष-पु० [सं०] कर्ज, देना, उधार ली हुई रकम; पक्षसानका बोझ; फर्ज; घटाने या बाकीका चिह्न (गं०); अभाव; दुर्ग; जल; जमीन । वि० कर्णरूप, 'निगेटिव'; भाग जानेवाला; दोषी । -**कर्ता(र्)-वि०** कर्ज लेनेवाला ।

-प्रस्त-वि० कर्जमें फँसा हुआ, मकरुज । -**ग्राही(गिन्)-वि०** कर्ज लेनेवाला । -**छेद-पु०** कर्ज अदा करना । -**क्षय-पु०** देव-क्षण, कवि क्षण और विदु-क्षण ।

-द-वाता(र्),-वायी(गिन्)-वि० कर्ज चुकानेवाला । -**दान-पु०** कर्णपरिक्षोभ । -**दास-पु०** वह दास जो उसका कर्ण चुकाकर खरीदा जाय । -**निर्मोक्ष-पु०** पितरोंके कर्णसे मुक्ति । -**पञ्च-पु०** तमस्सुक, रक्षा, 'वांड' । -**मन्त्रण-मार्णज-पु०** कर्जकी अदायगीकी जमानत करनेवाला, प्रतिभू । -**मुक्त-वि०** जिसने कर्ण चुका दिया हो, उक्त । -**मुक्ति-खी०**, -**मोक्ष-पु०** कर्जकी अदायगी । -**मोक्षित-पु०** कर्ण-दास । -**लेख्य-पु०** कर्णपत्र । -**विद्युत्-पु०** विकर्षण करनेवाली बिजली ।

-शुद्धि-खी० कर्णका अदा होना । -**शोधन-पु०** कर्ण चुकाना । -**समुदाह-पु०** कर्जकी बंदली । **मु०**-उतारना-कर्ज अदा करना । -**चढ़ना-कर्ज** होना । -**पटाना-धीरे-धीरे कर्ज अदा करना । -मदना-देन-दार बनाना ।**

कर्णातक-पु० [सं०] मंगल ग्रह ।

कर्णात्मक-वि० [सं०] कर्णरूप, 'निगेटिव' ।

कर्णादान-पु० [सं०] कर्जका बंदल होना ।

कर्णापकरण-पु० [सं०] कर्णकी अदायगी ।

कर्णापनयन-पु० [सं०] कर्जकी अदायगी ।

कर्णापनोदन-पु० [सं०] कर्ज चुकाना ।

कर्णार्ण-पु० [सं०] कर्ज चुकानेके लिए लिया जानेवाला कर्ज ।

कर्णिक-वि० [सं०] कर्जदार ।

कर्णी(गिन्)-वि० [सं०] कर्जदार; एहमानमद, उपकृत ।

कर्णोद्ग्रहण-पु० [सं०] किसी प्रकार कर्ज बसल करना ।

कर्तव्य-वि० [सं०] सत्यका धारण-पोषण करनेवाला । पु० परमेश्वर ।

कर्तव्य-वि०, **खी०** [सं०] सदा एकरूप रहनेवाली, मध्यका ही धारण-पोषण करनेवाली । खी० पुष्प द्वीपकी एक नदी; ममाधिकी वह भूमि जिसमें सत्यका ही धारण होता है ।

कर्त-पु० [सं०] सत्य; सृष्टिका आदि और धारक तत्त्व; ईश्वरीय नियम; ग्राह्य; एक आदिभ्य; मय्यं; कर्मफल; जल; यक्ष; उच्छ्रित; अनुकूल वचन । वि० मय्य, सचा; अनुकूल; उचित; यथार्थ; पूजित; प्रकाशित, दीप्त; प्रभावित । -**धामा(मन्)-वि०** सत्यमें निवास करनेवाला । पु० विष्णु । -**खज-पु०** शिव । -**पर्ण-पु०** दे० कर्तुपर्ण । -**वायी(गिन्)-वि०** सत्य बोलनेवाला । -**व्रत-वि०** सत्यवादी, सत्य बोलना जिसका व्रत हो ।

कर्तव्य-वि० [सं०] यौसमी; यौसम-संबंधी ।

कर्तिक-वि० [सं०] कष्टप्रद, आश्वहीन ।

कर्ति-खी० [सं०] गति; आक्रमण; मार्ग; मंगल; अश्व-दय; स्थिति; दुर्भाग्य; दुःख; रक्षण; सत्य; निदा; ईर्ष्या; स्पष्टता ।

कर्त्तव्य-खी० [सं०] पणा, जुगुप्सा; लज्जा; निदा ।

ऋतु-खी—[सं०] वर्षके द्यौष्म, माघ, शरत्, हेमन्त, शिशिर वसन्त—ये छ विभाग, मौसम; किसी चीजके होनेका नियत काल; रजःस्त्राव; गर्भधारणके अनुकूल काल; निश्चित व्यवस्था; दीप्ति; दही संख्या ।—**काल**—पु० उपयुक्त काल; रजोदर्शनके बादकी १६ रातें जिनमें खीके गर्भधारणकी अधिक संभावना रहती है (पादचार्य विशेषण वह काल ११वीं से १७वीं रात तक मानते हैं) ।—**गामी** (भिन्नु) —वि० ऋतु-कालमें संयोग करनेवाला ।—**चर्चा**—खी० ऋतुविशेषके अनुकूल आहार-विहार ।—**दान**—पु० ऋतुत्वात् पत्नीके साथ संतानकामनासे संयोग करना ।—**नाथ**—**पति**—पु० वसन्त ।—**पर्ण**—पु० एक अयोध्या-नरेश ।—**पर्णाय**—पु० ऋतुओंका आवर्तन ।—**पा**—पु० ईद ।—**प्राप्त**—वि० फलनेवाला (पेश) ।—**प्राप्त**—वि०, खी० जो रजस्वला हो चुकी हो ।—**प्राप्ति**—खी० रजोदर्शन ।—**फल**—पु० ऋतुविशेषमें होनेवाले फल ।—**भाग**—पु० छटा हिस्सा ।—**मुख**—पु० ऋतुका पहला दिन ।—**राज**—पु० वसन्त ऋतु ।—**सिमा**—पु० ऋतुका परिचायक चिह्न; रजःस्त्रावका लक्षण ।—**विज्ञान**—पु० बायुमंडलमें होनेवाले परिवर्तनोंका विज्ञान जिसके आधारपर वर्षा, तुफानका अनुमान किया जाता है, 'मेटियोरॉलॉजी' ।—**विषय**—पु० ऋतुके विपरीत बान होना (जैसे—गर्मीकी वर्षा) ।—**वृषि**—खी० ऋतुओंका आवर्तन; वस्त्र ।—**वेडा**—खी०, मनस—पु० रजःस्त्राव था उसके बाद गर्भोपधानका समय ।—**संधि**—खी० दो ऋतुओंका मध्यकाल ।—**साम्य**—पु० ऋतुके उपयुक्त भाहार आदि ।—**स्तोम**—पु० एक विशेष वृक्ष ।—**स्नाता**—खी० ऋतुभाजन करने शुद्ध हुई खी ।—**स्नान**—पु० रजोदर्शनके बाद ८५ दिन किया जाने वाला स्नान ।

ऋतुमती—वि०, खी० [म०] रजस्वला ।

ऋतुरौन—ऋतुरमण, वसन्त—'गावत कोकिल रंगभरे, धावन छवि ऋतुरौन'—कान्थागकौ० ।

ऋतुवती—वि०, खी० रजस्वला, ऋतुमती ।

ऋत्त—पु० [सं०] पुष्ट वीर्य; गर्भाधानका उपयुक्त समय ।

ऋत्विक् (ज्) —पु० [सं०] यह करानेवाला (कुल १६ ऋत्विक् होते हैं जिनमें चार मुख्य हैं—होता, अन्वर्तु, उद्गाता और ब्रह्मा) ।

ऋद्ध—वि० [मं०] सुशुहाल, धन-धान्यमें संपन्न; जिसकी बढ़ती हुई हो; जमा किया हुआ । पु० विष्णु; वृद्धि; प्रत्यक्ष फल ।

ऋद्धि—खी० [सं०] संपन्नता, वृद्धि, बढ़ती, उत्कर्ष; गौरव; सफलता; सिद्धि; पार्वती; लक्ष्मी; पत्नी; गणेशकी एक दासी; अर्थात् छंदका एक भेद; दानके काम आनेवाली एक लता, प्राणदा ।—**काम**—वि० वृद्धि, समृद्धि चाहनेवाला ।—**सिद्धि**—खी० धन-शैलत और सफलता; गणेशकी दो अनुचरियाँ ।

ऋनिषा, ऋनी—वि० दे० 'ऋणी' ।

ऋतु—पु० [सं०] देवता; एक गणदेव; देवोंका एक अनुचर-वर्ग; शिवकी तीन अर्धदेवी (ऋतु, वाय और विष्वा) मेंसे पहली जिसके नामसे तीनोंका बोतान होता है ।

ऋतुक्ष—पु० [सं०] ईद; स्वर्ग; ईदका वस्त्र ।

ऋत्त—पु० [सं०] सुगविशेष; वध ।—**केतु**—**केतन**—पु० अनिरुद्ध; कामदेव ।—**वृ**—पु० दृग पकड़नेके लिए खोदा हुआ गड्ढा ।

ऋत्त—पु० [सं०] बैल; नर जानवर; संगीतके सात स्वरों मेंसे दूसरा; कर्णरश्मि; शूकर या मगरकी पूँछ; ८ प्रसिद्ध ओषधियोंमेंसे एक; विष्णुका एक अवतार । वि० उत्तम; श्रेष्ठ (समाप्तांतमें—पुरुषार्थ, अरतर्पण इ०) ।—**वृद्ध**—पु० एक पर्वत ।—**देव**—पु० विष्णुके २४ अवतारोंमेंसे एक; जैनोंके एक तीर्थंकर ।—**ध्वज**—पु० शिव ।

ऋत्त—पु० [सं०] अष्टवर्षके अंतर्गत एक ओषधि ।

ऋत्त—खी० [सं०] गाय; वह खी जिसे मूँछ, दाढ़ी या और कोई पुष्प-चिह्न हो; विषया; एक ओषधि; शूकरशिबी; शिराला ।

ऋत्ति—पु० [सं०] मंत्रब्रह्मा, वेदमंत्रोंका साक्षात्कार और प्रकाशन करनेवाला व्यक्ति; बहुत बड़ा तपस्वी; मुनि; प्रकाशकिरण; ऋतु संख्या; एक कल्पित वृत्त; एक भरत ।—**ऋण**—पु० मनुष्यका ऋत्तियोंके प्रति कर्तव्य (देव पटने-पदानेसे इससे मुक्ति मिलती है) ।—**ऋष**—वि० ऋत्तितुल्य ।—**कुमार**—पु० ऋत्तिका बेटा, ऋत्तिकावत ।—**कुल**—पु० ऋत्तिका वंश; ऋत्तिका आश्रम; वह विद्यालय जहाँ ब्रह्मचारियोंकी विद्या पढ़ायी जाय ।—**कुत्सा**—खी० महा-भारतमें उल्लिखित एक नदी ।—**गिरि**—पु० मगधका एक पर्वत ।—**चांद्राचण**—पु० व्रतविशेष ।—**जांगल**—पु०, **जांगलिका**—खी० कश्मिरा नामक वीष ।—**तर्पण**—पु० ऋत्तियोंकी तृप्तिके लिए जलदान ।—**देव**—पु० एक उद्क ।—**पंचमी**—खी० भादों सुदी पंचमी ।—**पतन**—पु० बनारसके पासका एक जगल, वर्तमान सारनाथ ।—**प्रोक्ता**—खी० माघपर्णी ।—**वृक्ष**—पु० ऋत्तियोंके लिए किया जाने वाला वृक्ष, वेदाध्ययन ।—**लोक**—पु० एक लोक जो सत्य लोकके पास माना जाता है ।—**साहस्य**—पु० दे० 'ऋत्ति-पतन' ।—**स्तोम**—पु० ऋत्तियोंकी स्तुति; एक वृक्ष ।—**स्वाध्याय**—पु० वेदोंकी आहुति ।

ऋत्तिक—पु० [सं०] निष्ठ भेणीका ऋत्ति; एक जनपद और उसका निवासी ।

ऋत्तिक—पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद और उसका निवासी; तुल्यविशेष ।

ऋत्ति—वि० [सं०] बड़ा; शक्तिशाली; चतुर । पु० सर्वरक्षि; मशाल; प्रज्वलित अग्नि; ऋत्ति ।

ऋत्ति—खी० [सं०] खड्ग, तलवार; दुधारी तलवार; हथियार ।

ऋत्तिक—पु० [सं०] देशविशेष ।

ऋत्त—पु० [सं०] एक तरहका हिरन; एक तरहका कोद;—**केतन**, **केतु**—पु० अनिरुद्ध ।—**गंधा**—खी० कश्मिरा ।—**गस्ता**, **प्रोक्ता**—खी० शतमूली; शूकरशिबी ।—**जिह्व**—पु० एक तरहका कुह ।—**मूक**—पु० पंजाबके पासका एक पर्वत जिसपर राम कुछ दिन सुग्रीवके साथ रहे ।—**शृंग**—पु० एक ऋत्ति जिन्हें दशरथकी कन्या शांता ब्याही गयी थी ।

ऋत्त—पु० [सं०] सुगविशेष ।

ए

ए-देवनागरी वर्णमालाका ११वाँ, अ, इ, एकी छोटनेपर
८वाँ (स्वर) वर्ण । उच्चारण-स्थान कंठ और तालु ।

ए-क-ए-च-पु० उल्लङ्घन, ऐच-पाच; चकर; चाल-पात ।

ए-जिब-पु० [अं०] दे० 'इज्जत' ।

ए-का-ब-का-वि० उलटा-सीपा ।

ए-की-खी० एक तरहका देश या उसका कीड़ा, अंभी ।

ए-कुआ-पु० गैबुरी, कुंठली ।

ए-पावर-पु० [अं०] साम्राज्य ।

ए-पुल्लेस-पु० [अं०] मुद्रक्षेत्रका अस्पताल जो आवश्यकता-
नुसार एकसे दूसरी जगह हटाया जा सके, मैदानी अस्प-
ताल; घायलों, बीमारोंको लिटाकर अस्पताल से जानेके
लिए बनी गाड़ी । -कार-खी० एंगुलैसकी छारी ।

ए-अ० [सं०] सृष्टि, असृष्ट, अनुकंपा, आह्वान, आग्रहण
आदिके संबंधमें हसका प्रयोग किया जाता है । पु० विष्णु ।
* सर्व० यह ।

ए-कंग-वि० अकेला ।

ए-कंग-वि० एकतरफा, एक ओरका ।

ए-कंगी-खी० मुठिया लगा हुआ छोटा लट्टूदार डंडा ।
वि० दे० 'एकगंगी' ।

ए-कंगिया-वि० जिसमें एक ही अंक वा गांठ हो । पु० एक
अंठीवाला लहसुनकी गांठ; एक अंठीवाला बैल वा
घोड़ा ।

ए-कत-वि०, पु० दे० 'एकांत' ।

ए-क-वि० [सं०] पहले अंक वा ईकांति से स्वित्त, दोका आधा;
अकेला; जैसा दूसरा न हो, बेजोड़; बही; अपरिवर्तित;
स्थिर; प्रधान; सत्य; ईश्वर; कोई; एक ही; कोई या कुछ
ही (एक न चलना, न मुनना); जो मिलकर एक चीज,
एकरूप हो गया हो, मेदरहित । पु० पहला अंक वा ईकांति;
१; विष्णु; परमात्मा; * ऐव्य, साम्य । -अंक-अ-क-
अ० निश्चय ही । -आध-वि० [हिं०] एक या आधा,
एक-दो, दो-एक । -एक-वि० [हिं०] इर एक, प्रत्येक ।

अ० एकके बाद एक, बारी-बारीसे । -कंठ-वि० साथ-
साथ एक स्वरमें उच्चारण करनेवाले । -कपाल-वि०

कटोरेमें चितना आ सके । -कर-वि० सिर्फ एक काम
करनेवाला; एक किरण या एक हाथवाला । -कलम-वि०

अ० [हिं०] एक बारगी; बिलकुल, पूरे तौरसे । -कालिक-
-कालीन-वि० एक ही बार होनेवाला; एक बारका;
समकालीन । -कुंडल-पु० कुनेरा; शेष; बलराम । -कुण्ड-

-पु० कुछ रोगका एक भेद । -कूट-वि० एक बार जोता
हुआ । -कोशी (शिव) -वि० जिस (प्राणी)की देह एक

ही कोश (मिल)की बनी हो । -गम्ब-पु० परमात्मा ।
-गाछी-खी० [हिं०] एक ही पेड़के तनेसे बनायी गयी

नाल, एकठा । -ग्राम-वि० एक ही गाँवमें बसनेवाला ।
-चक्र-वि० एक ही नरेश द्वारा शासित; चक्रवर्ती; एक

पक्षिवाला । पु० सर्वका रथ; सर्व । -चक्र-खी० महा-
भारतमें वर्णित एक प्राचीन नगरी । -चक्री-खी० एक

पक्षिकी गाड़ी । -चर-वि० अकेले रहने वा बिचरने-
वाला, एकाकी; एक नौकरवाला; एक साथ रहनेवाला ।

पु० गेंडा । -चक्ष-वि० [हिं०] काना । पु० वह तसवीर
जिसमें चेहरेका एक ही रस और एक अंश दिखाई दे ।

-चक्षी-वि० [हिं०] एकरसो । -चारी (रिज) -वि० दे० 'एकचर' ।

-चिच-वि० एक ही विषयकी सोचनेवाला, एकाग्र,
तहीन; एक मन, विचारके । पु० किसी विषयपर मनकी

एकाग्रता; एकमत्य । -चेला (तस्) -वि० दे० 'एकचित्त' ।
-छोबा-वि० [हिं०] एक चीज वा खंसेपर छड़ा किया

जानेवाला (लेमा) । -छल्ल-वि० जिसमें दूसरेका अधि-
कार, प्रभुत्व न हो, असफल, एकतंत्र (राज्य) । -ज-पु०

सगा भाई । वि० अकेले पैदा होने या बढ़नेवाला; * एक-
मात्र । -जही-वि० [हिं०] एक ही पुरखेसे उत्पन्न, एक

कुलके, सपिंड (जड़-दायाल) । -जम्मा (जम्न) -पु०
राजा; शूद्र । -जबान-वि० [हिं०] एकमत; एकवाक्य ।

-ज-खी० सगी बहन । -जात-वि० एक माता-पितासे
उत्पन्न, सहोदर । -जाति-वि० एक ही जाति वा वंशका ।

पु० शूद्र । -जान-वि० [हिं०] जो पुल-मिलकर एक हो
गया हो, एकरूप, एकविल, अभिन्न-वृद्ध । -जीव-वि०

एकरूप; अभिन्न । -टंगा-वि० [हिं०] एक टँगवाला;
लँगवा । -टक-वि०, अ० [हिं०] बिना पलक गिरे या गिरावे,
अनिमेष । -ठाक-वि० [हिं०] एक ही दुकनेका बना हुआ;

एक ही तरहका । पु० वह छुरा जिसका एक और बेंद एकमें
ही बने हों । -तंत्र-वि० जिसमें सब शक्ति, अधिकार एक

आदमीके हाथमें हो, एकहत्था (राज्य, शासनप्रबंध); एक
व्यक्ति द्वारा, एकके प्रबंधमें परिचालित । -शासनप्रणाली

-खी० वह शासनप्रणाली जिसमें सब अधिकार राजाके ही
हाथमें हों और उसके आदेशानुसार सब कार्य परिचालित

होते हों; एकहत्थी हुकूमत । -तरफा-वि० [हिं०] एक-
पक्षीय, जिसमें दूसरे पक्षका विचार न किया गया हो ।

-दिग्री-खी०, -फैसला-पु० [हिं०] वह दिग्री या
फैसला जो प्रतिबोधी पक्षका जबब मुने बिना (उसकी

अनुपस्थितिके कारण) दी या किया जाय । -शाय-
खी० [हिं०] एक ही पक्ष सुनकर कायम की हुई राय ।

-तल्ला-वि० [हिं०] (बह भूकान) जिसमें दूसरी मजिह
न हो । -तान-वि० एक ही विषयका ध्यान करनेवाला,
एकचित्त, तहीन । -तार-वि० [हिं०] एकमा, एक रंग-

रूपका । अ० लगातार । -तारा-पु० [हिं०] एक तरह-
का नैबूरा जिसमें एक ही तार होता है । -ताल-वि०

जिसमें ताल-सुरका पूरा मेरु हो । -ताला-पु० [हिं०]
संगीतका एक ताल । -तालिका-खी० एक मिश्रराग ।

-तीर्थी (थिन्) -वि० एक तीर्थमें स्नान करनेवाला;
एक ही पंथ वा आश्रमका । पु० सहपाठी; युध्भाई ।

-तीस-वि० [हिं०] तीस और एक । पु० ३१ की संख्या ।
-त्रिसार-वि०, पु० दे० 'इकतीस' । -दंडा-पु० [हिं०]

कुक्षीका एक पंच । -द्वंद्वी (द्विन्) -पु० सन्ध्यासिंघाका
एक भेद, हंस । -द्वंद्व-पु० गणेश । वि० एक दाँतवाला ।

-द्वंदा-वि० [हिं०] एक दाँतवाला (हाथी) । -द्वंद्व-
पु० गणेश । -द्व-अ० [हिं०] एकबारगी, दुरत; विक-

कुल । -दरा-वि० [हि०] एक दरका (दाकान, बैठक इ०) । -दरसी-खी० [हि०] कुस्तीका एक पैच । -दिक-वि० [हि०] एक विचारके; एकविच; अभिच; एककप । -दिखी-खी० [हि०] एकदिख होना, एका । -दूक्(बू), -दुष्टि-वि० काना । पु० शिव; तपस्वानी; कौमा । -देसी(शिक्), -देसीब-वि० एक ही देशका; जो किसी विशेष स्थल वा अवस्थामें ही लगे, सर्वत्र न लगे । -० समास-पु० बड़ी तपुस्वका एक भेद । -द्वैह-पु० दुध ग्रह । वि० एक शरीरवाला । -धर्मा(अर्थ), -धर्मी(शिक्)-वि० समान धर्म वा गुण-स्वभाववाला । -नयन-वि० एकाक्ष । पु० शिव; कौमा; कुवेर; शुक्र ग्रह । -नायक-पु० शिव । -निष्ठ-वि० एकके ही ऊपर निष्ठा, भ्रष्टा या एकमे ही अनुराग रखने-वाला, अनन्योपासक । -निष्ठा-खी० एकनिष्ठता; अनन्यता; वफादारी । -नेत्र-नेत्रक-पु० शिव । -पक्षी(शिक्), -पक्षीब-वि० एकतरफा । -पटा-वि० [हि०] एक पाटवाला । -पट्टा-पु० [हि०] कुस्तीका एक पैच । -पक्षी-खी० पतिव्रता । -पक्षीव्रत-पु० विवाहिता पक्षीके सिवा और किसी स्त्रीमे प्रेम न करनेका व्रत । -पत्रिका-खी० गंधपत्रा । -पद्-वि० लेंगवा, एक-टंगा । पु० एक रतिबंध । -पद्मी-खी० पगडोड़ी । -पद्मी(दिक्)-वि० एक पद या चरणवाला (पद्म, छंद) । -पर्णा-खी० दुर्गा । -पल्लवा-पु० वह छाजन जिसकी डाल एक ही ओर हो, बीचमें बँधेर न हो । -पाटला-खी० एक दुर्गा । -पाटी(दिक्)-वि० जिसे एक ही बार पढ़ने या सुननेसे पाठ याद हो जाय । -पात-वि० अचानक या अकालक होनेवाला । पु० मंत्रका पहला शब्द या प्रतीक । -पाद्-वि० लेंगवा; एकटंगा । पु० शिव; विष्णु । -० वच-पु० (प्राचीन समयमें प्रचलित) एक पाँच काट देनेका दृढ़ । -पास-अ० पान पास । -पिंगा-पिंगल-पु० कुवेर । -पुष्क-पु० कौटिल्ला पक्षी । -पुष्पी(शिक्)-वि० एक बीज-कोशवाला । -प्राण-वि० एकजान, एकदिल । -फसला-वि० [हि०] जिस (खेत या जमीन)में सालमें एक ही फसल उपजते । -ब-एक-अ० [हि०] अचानक, अकालक । -बद्री-खी० [हि०] एक तरबका लंगर । वि० एक रस्तीका । -बारगी-अ० [हि०] एक ही बारमें; बिल-कुल । -बाब-वि० समान भाववाला; एकनिष्ठ । -भुक्-वि० दिन-रातमें एक ही बार भोजन करनेवाला । पु० एक बार भोजन करनेका व्रत । -भुस-वि० एक-मंजिला (मकान) । -मंजिला-वि० [हि०] एक मंजिल या तल्लेवाला (मकान) । -मत्त-वि० एक वा समान मत रखनेवाले । -मति-वि० प्रकार; समान मत रखनेवाला । -मत्ता(मस्)-वि० एकविच, एक विचार वाले । -मात्रिक-वि० जिसमें एक ही मात्रा हो । -मुँहा-वि० [हि०] एक मुँहवाला । -मुक्क-वि० एक ही लक्ष्यकी ओर प्रवृत्त; एक ही दवाबजेवाला (मकान) । -० बिकब-पु० समते एक दाम कढ़ना, लेना (खी०) । -मुष्पी(शिक्)-वि० एक मुखवाला । -मुदत-अ० [हि०] एकट्ठा, एक बारमें । -भूका-खी० अन्तरी, शाल-

पर्णी । -भोका-वि० [हि०] एक दाम कढ़नेवाला, जो दाममें कमी-बेसी न करे । -रंग-वि० एक रंगवाला; एककप; बाहर-भीतरसे एक, दुर्गोपचरते रहित, सचा; निष्कपट । -रंगा-वि० [हि०] एक रंगवाला (चित्र) । पु० छाल रंगका एक कपडा । -रंगी-खी० [हि०] एक रंगका बीना, एककपडा, सचार्थ, साफदिली । -रव-पु० गणेश । -रस-वि० जो सदा एक रूपमें रहे, कभी बदले नहीं, अपरिणामी; जो मिलकर एक हो गया हो, एकदिख । -रात्र-पु० एक रात; रातभरमें पूरा होने-वाला एक वृद्ध । -रस्ता-वि० [हि०] एक रस्तावाला, जिसका मुँह एक ही ओर हो; एकतरफा; एकचरम । [खी० 'एकस्ती'] । -रूप-वि० एक ही रूपवाला, जो सब अवस्थामेंमें एकसा रहे; समान रूपवाला । -रंछा-पु० [हि०] कुस्तीका एक पैच । -रंछ-पु० द्रोणाचार्य-का निषाद शिष्य जिसने उनकी मूर्तियों शूर मानकर बाणविद्या सीखी और गुरुदक्षिणामें दाहिना अंगूठा काटकर दे दिया था । -रिंमा-वि० एक किंगवाला (शब्द) । पु० शिव; मेवाड़के राजबंशके कुलदेव; कुवेर । -रंछा-पु० [हि०] एक फूल; उसका पौधा । -रौता-वि० [हि०] अपने माँ-बापका अकेला (बेटा) । [खी० 'एक-लौता'] । -बचन-वि० एकका वाचक, 'सिगुल' । पु० एकका वाचक बचन वा शब्द । -बचनौत-वि० एकबचनकी विभक्तिवाला । -बर्ण-वि० एक रंगवाला; एक वर्ण या जातिका; वर्णभेद-रहित; एककप । -बखार-वि०, खी० जो एक ही कपड़े पहने रहे, रबस्ता । -बाँज-खी० [हि०] काकनंध्या । -बाबब-वि० एक-मत, प्रकारवा । -बाबबता-खी० प्रकारवा होना; एका-धंता; विधिवान्वय और अर्थवाक्यका एक ही अर्थ प्रकट करना (मी०) । -बासा(सस्)-पु० जैनोंका एक भेद । -विंश-वि० शक्तीसर्ग । -विंशति-वि० बीस और एक । खी० २१ की संख्या । -विच-वि० एक ही विधि, प्रकारवाला । -हुँद-पु० गलेसे एक रोग । -बेधि, -बेधी-खी० सीधे-सादे ढंगसे बँधा जूड़ा या चोड़ी । वि० इस प्रकारका जूड़ा बाँधनेवाली, विधवा, वियोगिनी (खी०) । -शासन-पु० एकहस्त्य हुकूमत । -शेष-पु० हँद समासका एक भेद जिसमें दोमें एक ही पद रह जाता है । -शुल-वि० एक बारका सुना डुगा । -०बर-जो एक बारका सुना याद रहे । -भुति-खी० वेदपाठका वह क्रम जिसमें उदात्त-अनुदात्त आदि विचार नहीं किया जाता । -बडि-वि० दे० 'एकसठ' । -सठ-वि० [हि०] साठ और एक । पु० ६१ की संख्या । -सत्ताक-वि० एकहत्था, एकतंत्र । -सौ-वि० [हि०] समान, सच्छ । -साक्षिक-वि० जिसका एक ही साक्षी हो, जिसे एकमे ही देखा हो । -सार्थ-अ० एक साथ; एक जमातमें । -साखा-वि० [हि०] एक सालका; एक सालकी मुदतवाला (पट्टा) । -सुत्र-पु० डमरू । वि० एक रूपमें परस्पर सम्बद्ध (एकसुत्रता)-एक रूपमें परस्पर संबद्ध होनेका भाव । -सुतु-पु० एकलौता लकड़ा । -रुब-वि० एकपर स्थित वा केंद्रित । -रुन्धा-वि० [हि०] एक हावमें केंद्रित, एक व्याक्ति द्वारा संचालित, एकतंत्र । पु० किसी

विषयपर एकाधिकार करना। -हृत्की-वि०, स्त्री० [हि०] दे० 'एकद्वार'। स्त्री० मालसंयुक्त एक कसरत। -हृत्त्व-वि० एक बार जोता हुआ। -हृत्त्वपाद्वच-पु० एक हाथ और एक पाँव काटनेका दंड (कौ०)। -हृत्त्ववच-पु० एक हाथ काटनेका दंड (कौ०)। -हृत्त्वच-वि० एक बर्तन अवस्थाका। सु०-अन्तर ही सीमार-चीज बोरी और चाहनेवाले बहुत। -आँख न आना-तनिक भी न आना, बिल्कुल नापसे होना। -आँखसे सबको देखना एकसा मानना, व्यवहार करना। -एकके दस-दस करवा-खर नफा कमाना। -एकके दो-दो करना-दिन काटना। -और एक ब्यारह होते हैं-दोके मिलकर काम करनेसे शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। -की चार (दस-दस) लगाना-बड़ा चढाकर कहना, शिकायत करना; अपनी ओरने बातें जोड़-मिलाकर कहना; मड़-काना। -की दवा दो-एकको दवाने, हरानेके लिए दो बहुत होते हैं। -के दस सुनाना-एक कभी बातके बदले दस कभी बातें सुनाना। -कना आइ नहीं कोइ सकता-एक आदमीके किये वह काम नहीं हो सकता जो कई आदमीके मिलकर करनेका हो। -कनेकी दाख-बिल्कुल एकसे, हर बातमें बराबर; सगे भाई। -जान दो झालिच-बहुत गहरे दोस्त, अभिन्नहृदय होना। -जान हवाय गम या सुसीबर्ते-एक आदमीको अगणित कितार्य, रंज, कोमल होना। -तवेकी रोटी, क्या मोटी और क्या छोटी-एक कुल, घरानेके सब आदमी बराबर हैं, कोई बड़ा-छोटा नहीं। -यैलीके चड़े-चड़े-दोनों एकसे हैं, दोनोंमें कोई वास्तविक अंतर नहीं। -न जुद्ध, दो जुद्ध-एक बच्चा थोड़ा, दूसरी और आ पकी, एक कष्ट या विपत्ति रहते दूसरीका आ जाना। -पंथ दो काज-एक पक्ष, उपायसे दो कार्य सिद्ध होना; एक काम करने हुए दूसरा हो जाना। -पाँव भीतर, एक पाँव बाहर-कानकी भीख या परेशानीमें एक जगह ठहर न सकना, कभी यहाँ कभी वहाँ आते-जाते रहना। -पाँव रिकाबमें होना-यात्राके लिए हर समय तैयार रहना; आज यहाँ, कल वहाँ जाते रहना। -पाँवसे लड़ा रहना-आहा-पाखनके लिए तैयार रहना, आशाकी प्रतीक्षामें खड़ा रहना; गावेदारी बजाना। -छाडीसे सबको हाँकना-सबके साथ एकसा बरताव करना, मले-बुरेका विचार न करना। -से दो होना-ब्याह होना, बीपीका घरमें आना। -इत्या करना-एकाधिकार, इजारा कायम कर लेना।

एकद्वार-वि० दे० 'एकद्वार'।
एकद्वार-पु० एक ही लकड़ीसे बनी दुर्ग नाव, एकगाछी।
एकद्वार-पु० [अ०] एक नाव जो २२ किस्के करीब होती है।
एकद्वारी-स्त्री० [अ०] पाठशाला, विद्यालय, स्कूल; विद्यानकी उन्नतिके लिए स्थापित संस्था।
एकद्वार-अ० एक ही स्थानपर, एकत्र-कहलाने एकत्र बसत अहि मयूर मृग बाघ'-वि०।
एकद्वारा-पु० एक दिवसे अंतरेसे आनेवाला ज्वर।
एकद्वार-स्त्री० [अ०] एक होना, एका, मेल; अनेक।
एकद्वारलीस-वि० बालीस और एक। पु० ४१ की संख्या।

एकद्वार-अ० [अ०] एकद्वार, यकना।
एकद्वार-वि० एकद्वार किया हुआ, एकत्रीकृत।
एकद्वार-पु० [अ०] दे० 'एकद्वार'।
एकद्वार-अ० [अ०] एक बार, एक समय।
एकद्वार-स्त्री० एक आनेका सिक्का।
एकद्वार-पु० [अ०] स्त्रीकार, हामी; प्रताप; मोभाव्य।
एकद्वार-पु० [अ०] स्त्रीकार; वादा। -नामा-पु० प्रतिष्ठापत्र।
एकद्वार-वि० [अ०] अकेला।
एकद्वार-वि० दे० 'एकद्वार'।
एकद्वार-स्त्री० दे० 'एकद्वार'।
एकद्वार-अ० एक सिरने दूसरे सिरतेका; एक ही दफा। वि० अकेला; एक पत्तेका।
एकद्वार-वि० सप्तर और एक, ७१। पु० ७१ की संख्या।
एकद्वार-वि० एक परतका।
एकद्वार-स्त्री० कुश्तीका एक पैर।
एकद्वार, एकद्वार (किन्)-वि० [अ०] एक अकवाला। (इय काव्य)।
एकद्वार-वि० [अ०] एक अंगवाला; विकलांग। पु० अंगरक्षक; विष्णु; शुभ या मंगल ग्रह; चंदन; सिर। -बाघ-पु० एक अंग काटनेका दंड (कौ०)। -बात-पु० पक्षाघात, फालिज।
एकद्वार-स्त्री० [अ०] चंदनने तैयार किया हुआ; एक लेप।
एकद्वार (किन्)-वि० [अ०] एक अंगवाला; एकपक्षीय।
एकद्वार-पु० [अ०] एक तरहका घोड़ा।
एकद्वार-वि० [अ०] अकेला; अलग; एक ही वस्तुको लक्ष्य करनेवाला; अत्यंत; निरपवाद; निश्चित; एक ही ओर लगा हुआ। पु० निराशा, सूता स्थान; तनहार। -कैवल्य-पु० मुक्तिका एक, वेद। -बास-पु० एकांत स्थानमें रहना, गोशानशोनी। -स्वरूप-वि० निश्चित, निश्चय।
एकद्वार-वि० [अ०] एकके बाद आने या पड़नेवाला। पु० अंतरा स्वर।
एकद्वार-वि० [अ०] एका, निश्चित।
एकद्वार-पु० एकता, मेल, इत्थिका, एकमत होना। स्त्री० [अ०] दुर्गा।
एकद्वार-अ० अचानक, सहसा।
एकद्वार-अ० दे० 'एकद्वार'। वि० एकाकी।
एकद्वार-वि० [अ०] एकरूप, मिला-जुला।
एकद्वार-वि०, स्त्री० [अ०] अकेली।
एकद्वार (किन्)-वि० [अ०] अकेला।
एकद्वार-वि० [अ०] एक आँसवाला, काना। पु० कौवा; शिव।
एकद्वार-वि० [अ०] एक अक्षरवाला। पु० एक अक्षरका मंत्र, 'ॐ'।
एकद्वार (विन्)-वि० [अ०] एक अक्षरवाला। -कोश-पु० संस्कृतका एक कोश जिसमें अलग-अलग अक्षरोंके अर्थ दिये गये हैं।
एकद्वार-वि० [अ०] एक ही नोकवाला; जिसका स्थान एक ही ओर, एक ही वस्तुमें लगा हो; अचंचल, यकन। पु०

चित्रकी पाँच छतियोंमेंसे एक (चौ०)।-**चित्र-वि०** चित्र-चित्र।-**दृष्टि-वि०** एक बिंदुपर दृष्टि जमानेवाला।-**भूमि-क्षी०** चित्रकी वह अवस्था जिसमें बाहरी छतियोंका निरोध होनेपर किसी विषयमें वह तत्कार हो जाता है।

एकाम्रता-क्षी० [सं०] एकत्र होनेका भाव; योगके अनुसार चित्रकी वह अवस्था जब उसमें किसी प्रकारकी चंचलता नहीं रह जाती।

एकाम्र-वि० [सं०] एक स्वरवाला (शब्द)।

एकाम्र-वि० [सं०] एकप्राण, अश्वि।-**बाह्य-पु०** आरमाकी एकता; जीव-मक्षकी एकताका सिद्धांत, अद्वैतवाद।

एकाम्र-वि० [सं०] दस और एक; ग्यारहवाँ। पु० ग्यारहकी मर्यादा।

एकाम्र-पु० [सं०] सृष्टि या हाथकी तिथिसे ग्यारहवाँ दिन; उस दिनका कर्म।

एकाम्र-क्षी० [सं०] चांद्र मानकी ग्यारहवाँ तिथि।

एकाम्र-वि० [सं०] एकने अधिक, अनेक।

एकाम्र-पु० [सं०] एक या अनेके आदमीका अधिकार, इजारा।

एकाम्र-पु० [सं०] मारे देशपर एकच्छत्र राज्य करनेवाला, अनेका स्वामी या शासक।

एकाम्र-पु० [सं०] एकाम्रिकार, एक आदमीको सर्वाधिकार प्राप्त होना।

एकाम्र-क्षी० [सं०] एक मालकी बधिया।

एकाम्र-वि० [सं०] एकके गमन करने योग्य (पगडंडी); एकत्र, विचारोंका एकता; नीतिशास्त्र।

एकाम्र-पु० [सं०] 'ए' अक्षर या उसकी ध्वनि।

एकाम्र-पु० [सं०] सत्सर्ववेष नामक योग।

एकाम्र-पु० [सं०] दावान; तलप्रत्यय।

एकाम्र-पु० [सं०] ममान अर्थवाला, हममानी, (सम्बन्धित)।

एकाम्र-क्षी० [सं०] अर्थवालाकार एक भेद जहाँ पूर्व-पूर्वके प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओंका विशेषणके रूपमें स्थापन या निरोध किया जाय, एक छंद; मोनियोंकी एक साथ लंबी मात्रा (क्षी०)। वि० एक लड़ीका।

एकाम्र-क्षी० [सं०] दे० 'एकाम्र'।

एकाम्र-पु०, **एकाम्र-क्षी०** [सं०] पाठा, वक्रवृत्त।

एकाम्र-वि० [सं०] एक दिनमें होनेवाला। पु० एक दिनका समय; एक दिन चलनेवाला यष्ट।

एकाम्र-पु० [सं०] दो या अधिक वस्तुओंकी मिलाकर एकत्र कर देना।

एकाम्र-वि० [सं०] मिलाकर एक किया हुआ।

एकाम्र-पु०, **एकाम्र-क्षी०** [सं०] मिलाकर एक हो जाना, पूरी तरह मिल जाना।

एकाम्र-वि० [सं०] जो मिलकर एक हो गया हो।

एकाम्र-वि० [सं०] (बह प्राणी) जिते एक ही इंद्रिय हो (नैचुअ, जैक इ०)।

एकाम्र-पु० [सं०] ईश्वर, जगत्का सर्वत्र-निधमन करनेवाली शक्ति एक ही है-यह मत।

एकाम्र-वि० एक ही और एक, एकाम्र-पु०

१०१ की संख्या।

एकाम्र-वि० [सं०] एक अधिक (जैसे पाँचसे छ)।

एकाम्र-पु०, **वि०** [सं०] एक ही पितरको जल देनेवाला, संबंधी।

एकाम्र-वि० [सं०] एकके उद्देश्यसे किया जानेवाला (प्राद)।

एकाम्र-वि० अनेका, तनहा।

एकाम्र-वि० अनेका; बेरोश। पु० दो पहियोंकी गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है; ताश; मंगीफेका वह पचा जिसपर एक ही बूटी हो, एकी; अनेके कठिन काम कर सकनेवाला सिपाही; सैनिकोंके संबंधमें रिपोर्ट करनेवाला सिपाही; बहिषर पहननेका एक गहना; वह भारी मुगदर जो दोनों हाथोंसे भौंजा जाय।-**दुष्काम्र-वि०** अनेका-दुष्काम्र; एक-दो (आदमी)।-**बान-पु०** एकाम्र हाँकनेवाला।

एकाम्र-क्षी० एक बैलकी गाड़ी; एक बूटीवाला ताश।

एकाम्र-पु० [सं०] प्रदर्शनी, नुमाइश।

एकाम्र-पु० [सं०] दे० 'एकाम्र'।

एकाम्र-वि० नम्बे और एक। पु० ११ की संख्या।

एकाम्र-वि० पचास और एक। पु० ५१ की संख्या।

एकाम्र-वि० अस्सी और एक। पु० ८१ की संख्या।

एकाम्र-पु० [सं०] विजलीकी विशेष किरणें जिनकी सहायतासे शरीर जैसे दोस एवार्थके भीतरके अंगोंका चित्र लिया जा सकता है।

एकाम्र-पु० [सं०] देशमें बने हुए मालपर लगनेवाला कर; उत्पादनकर; इस करकी बसुलीका प्रबंध; नमक और मादक वस्तुओंपर लगनेवाला कर; उसकी बसुली करने और चोरी रोकनेवाला विभाग।-**किपाटमेंट-पु०** आबकारी विभाग।-**कट्टी-क्षी०** देशमें बननेवाली वस्तुओं, मादक द्रव्य आदिपर लगनेवाला कर।

एकाम्र-पु० [सं०] दे० 'एकाम्र'।

एकाम्र-पु० [सं०] चमत्कार, करिष्मा, अलौकिक शक्ति-पूजक कार्य।

एकाम्र-पु० [सं०] शिक्षा, तालीम।-**किपाटमेंट-पु०** शिक्षा-विभाग।

एकाम्र-पु० [सं०] किसीकी ओरमें, उसके प्रतिनिधिके रूपमें काम करनेवाला; किसी व्यापारी या कर्मकाँ ओरसे खरीद-बेची आदि करनेवाला गुमास्ता; कमीशनपर माल बेचनेवाला; किसी राज्य या उपनिवेशमें प्रतिनिधिरूपमें रहनेवाला अधिकारी।

एकाम्र-क्षी० [सं०] एजेंटका पद, कार्य या कार्यक्षेत्र; वह स्थान जहाँ कमीशनपर माल बेचा जाय; किसी एजेंटके अधीन प्रदेश या इलाका; बड़े लटकके एजेंट या प्रतिनिधिके रहनेका स्थान या आफिस।

एकाम्र-पु० [सं०] बकील; नियमानुसार अधिकारप्राप्त प्रतिनिधि।

एकाम्र-वि० [सं०] बहारा। पु० एक तरहका मेड़ा।-**गज-पु०** एक ओषधि, उदण, चक्रपदक।

एकाम्र-पु० [सं०] सदद।

एकाम्र-क्षी० एकी। पु०-देना,-छमाना-(घोड़ेको) तेज

करने या आगे बढ़ानेके लिए एक मारना ।

एडक-पु० [सं०] भेड़ा; बनेला बकरा ।

एडिकांग-पु० [अं०] वेनरलके सहायकरूपमें काम करने-वाला कौड़ी अफसर ।

एडिटर-पु० [अं०] संपादक, संपादनकार्य करनेवाला ।

एडिटरी-खी० एडिटरका काम, संपादन ।

एडिसन-पु० [अं०] (पुस्तकता) संस्करण, आवृत्ति ।

एडिसनल-वि० [अं०] अतिरिक्त, बढ़ाया हुआ । -सेसल खज-पु० अतिरिक्त दौरा अज ।

एडिसन-पु० [अं०] सत्रहवीं शतीका एक प्रमुख अमेरीकी कवि और साहित्यकार जोनफ एडिसन (१६७२-१७१९ ई०); प्रायोगिकका आविष्कारक सुविख्यात अमेरिकन विज्ञानविद् टामस एडिसन एडिसन जिसने कुछ मिलाकर लगभग एक हजार विद्युत्संधी आविष्कार किये (१८४७-१९३२ ई०) ।

एडी-खी० तलवेका टलनेके नीचेका मांग । **मु०**-**खोटीका पसीना** एक करमा-बहुत मेहनत, कोशिश करना ।

-**से खोटीसक**-सिरसे घेतक । **एडियाँ** राबूना-बहुत कष्ट भीतना; बहुत अम, दीह-बूए करना ।

एज-पु० [सं०] काले रंगके हिरनका एक भेड़ । -**तिलक**, -**भूर**, -**लॉकन**-पु० चंद्रमा । -**हक्(श्)**-पु० मकर राशि ।

एजी-खी० [सं०] मादा एण । -**बाह**-पु० एक तरहका ज्वर । -**पद्**-पु० एक तरहका साँप । **वि०** हिरनी जैसे पैरोंवाला । -**पद्दी**-खी० एक तरहका बिबैला कौड़ा ।

एलब्राव-पु० [अं०] अक्का, विश्वास, एतबार, मरीसा ।

एलव-सर्व० [सं०] वह ।

एलवर्च-अ० [सं०] इसकिए; हमके लिए ।

एलवर्चि-अ० [सं०] अवतक; इस हदतक ।

एलवाह-पु० [अं०] साम्यावस्था, न कम, न अधिक होना; दीपसाम्य; न अधिक ठंडा, न अधिक गरम होना; बीचकी स्थिति या रास्ता । -**वर्सव**-वि० मध्यम मार्गका अनुसरण करने, अतिये बचनेवाला; नरम दलका ।

एलवेलीय-वि० [सं०] इस देशका ।

एलन-पु० [सं०] निःश्वास; एक मत्स्य ।

एलवार-पु० [अं०] विश्वास, मरीसा; साह ।

एलवारी-वि० [अं०] विश्वास करने योग्य, मानवर ।

एलमाव-पु० [अं०] विश्वास, मरीसा ।

एलमार्ज-पु० [अं०] विरोध, आपत्ति; दोष निकालना; नुक्ताचीनी ।

एलवार-पु० दे० 'इतवार' ।

एला-वि० इतना ।

एलाहक्(श्)-वि० [सं०] ऐसा, इस प्रकारका ।

एलाहसी-वि०, खी० [सं०] इस प्रकारकी, ऐसी ।

एलावव-वि० [सं०] इतना ।

एलिक-वि०, खी० इतनी ।

एल्(स्)-पु० [सं०] ईषन; अम्युदब ।

एलिस-वि० [सं०] वक्षित ।

एन, **एनी**-पु० मायका भन ।

एन-पु० दे० 'एन' ।

एन(स्)-पु० [सं०] पाप; अपराध, दोष ।

एनामेक-पु० [अं०] कोई आदिके पत्तरकी बनी चीजोंपर चढ़ाया जानेवाला एक तरहका लेप जिससे वे देखनेमें चीनी मिट्टीकीसी लगने लगती हैं; तामचीन ।

एनीबेसैंट-खी० (१८४७-१९३३) 'थिओसाफिकल सोसायटी'की अध्यक्ष (१९०७-३३); भारतमें 'होमरूल' आंदोलनकी प्रवर्तिका तथा काशीके हिंदू कालेजकी संस्थापिका ।

एम्बर-पु० [अं०] हकवाली गवाह ।

एम्बेडिड-पु० [अं०] हल्की बयान; हल्कनामा ।

एम्-अ० इस प्रकार ।

एम्-पु० [अं०] (मृगक्षेत्रमें प्रयुक्त) एक नाप, १।६ इंच ।

एम्ब-पु० एक मिश्रित राग ।

एम्बर-पु० [अं०] हवा, वायु । -**काफ्ट**-पु० हवाई जहाज । -**गन**-खी० हवाई बंदूक । -**ट्राइट**-वि० जिसमें हवा न जा सके । -**फोर्स**-पु० हवाई फौज, वायुसेना । -**मेक**-पु० हवाई ठाक, हवाई जहाजमें आने-जानेवाली ठाक । -**मैन**-पु० उड़का । -**रेड**-पु० हवाई हमला । -**शिप**-पु० हवासे हलका हवाई जहाज ।

एम्ब-पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।

एम्ब-पु० [सं०] रेह । -**खरबूजा**-पु० [हिं०] पपीता । -**पथिका**, -**फला**-खी० रंती वृक्ष । -**बीज**-पु० रंती ।

एम्ब-पु० [सं०] दे० 'एम्ब' ।

एम्ब-खी० [सं०] पिपली ।

एम्ब-पु० दे० 'इराक' ।

एम्ब-वि०, पु० दे० 'इराकी' ।

एम्ब-पु० [अं०] जहाजका पैदा ।

एम्ब-पु० [अं०] जेर, जबर, पेशकी मात्राएँ या उनके चिह्न ।

एम्ब-अ० जरे, हे !

एम्ब-पु० [अं०] हवाई अड्डा ।

एम्ब-पु० [अं०] हवासे भारी हवाई जहाज, विमान । **एम्ब**, **एम्ब**-पु० [सं०] एक तरहकी कमीरी ।

एम्ब-पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।

एम्ब-पु० कपड़ेकी एक नाप ।

एम्ब-पु० [सं०] भेड़ा; भेड़ा; † एक तरहकी छलनी ।

एम्ब-पु० [अं०] एक तरहका द्रव्य जो शराब आदि बनानेके काम आता है ।

एम्ब-पु० [तु०] दूत; राजदूत ।

एम्ब, **एम्ब**-पु० [सं०] कपिरथकी छात्र जो सुगंधित होती हैं; एक रसादार द्रव्य ।

एम्ब-पु० [सं०] कुबेर ।

एम्ब-† पु० एक कैंटीली लता जिसकी पत्तियाँ चरनी बनानेके काम आती हैं । खी० [सं०] इलायची; इलायचीका पेड़; बनरीठा; एक राग; आगोद-प्रमोद; कौड़ा ।

-**वथिका**-खी० कपिरथकी छात्र । -**पन्न**-पु० एक नाप । -**पणी**-खी० एक शीषा, युक्तरसा ।

एम्ब-पु० [सं०] नारंगी [अं०] सार्वजनिक घोषणा, मुमादी ।

एम्ब-पु० [अं०] संकटसक सन्ध या संकेत । -**बेज**-

औ० रेखाविनीमें लगी हुई जंजीर जो खतरे आदिके समय खींची जाती है। -सिखनख-पु० संकटवृत्त संकेत।

एकीक-औ० [सं०] छोटी इलाक्य।

एलुक-पु० [सं०] एक सुमंथित द्रव्य; एक द्रव्य या चौपा जो दबाके काम आता है।

एलुवा-पु० सुसम्भर।

एल्बरमैन-पु० [अं०] म्युनिसिपल कार्पोरेशनका मेबरसे नीचेका सरस।

एल्बालु, एल्बालुक-पु० [सं०] दे० 'एलवाल्'।

एल्-अं० [सं०] ही।

एल्ज़-पु० [अं०] बदला, प्रतिफल; वह जो (किसीके) बदलेमें काम करे, स्थानापन्न। अं० बदलेमें। -मुखाबखा-पु० अदल-बदल; एक चीजके बदलेमें दूसरी चीज देना या लेना।

एल्ज़ी-वि० [अं०] बदलेमें काम करनेवाला, स्थानापन्न।

एल्ज़-अं० [सं०] ऐसे, इस प्रकार। -एल्ज़ु-ऐसा ही। (मार्थनाकी शोकाति या बर देनेके समय कहा जाता है।)

-(ब)गुण-वि० ऐसे गुणोंवाला। -ज़ूल-वि०-वि० ऐसा, इस प्रकारका।

एल्म्यू-पु० [अं०] वह सबक जिसपर थोड़ी थोड़ी दूरपर पेड़ लगें हों; चौबी सड़क।

एशिया-पु० दुनियाके पाँच भूखण्डों या महाद्वीपोंमें सबसे बड़ा स्थल। (भारत, ईरान, चीन, जापान आदि देश इसीके अंतर्गत हैं। इसकी लंबाई ७,८०० मील, चौड़ाई ५,००० मील और उसका १ करोड़, ७० लाख, ५८ हजार वर्गमील है।) -ई-वि० एशियाका, एशियासे संबद्ध। पु० एशियावासी। -ए कोचक-पु० अनातोल्या, एशियामाइनर।

एषण-पु० [सं०] इच्छा, चाह; चाहना; पानेका यत्न करना; लोभमय वाण; दशाना; प्रविष्ट करना; मलाई आदिके जरिये रोगकी उचि करना।

एषण-औ० [सं०] इच्छा, चाह; प्रार्थना; याचना।

एषणिका-औ० [सं०] सोना-चाँदी तौलनेका कौटा।

एषणी-औ० [सं०] दे० 'एषणिका'; लोहसलाका।

एषणी(मिन्)-वि० [सं०] चाहनेवाला; पानेका यत्न करनेवाला।

एषणीय-वि० [सं०] चाहने योग्य।

एषा-औ० [सं०] इच्छा, चाह।

एषिता(तु)-वि० [सं०] चाहनेवाला, इच्छुक।

एषी(मिन्)-वि० [सं०] इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला (पायः समासार्तमें प्रयुक्त)।

एष्टि-औ० [सं०] इच्छा, चाह।

एष्य-वि० [सं०] इच्छा करने योग्य, अभिलषणीय; रोम-की आँके लिए सलाई खाने योग्य।

एसिड-पु० [अं०] तेजाब, अम्ल।

एसेम्ब्ली-औ० [अं०] सभा, परिषद; समूह, मजमा।

एसेंस-पु० [अं०] सार, सस; पुष्पसार, विलायती इन; सुगंध।

एस्तिरार्दो-पु० एक कृत्रिम भाषा जो विभिन्न देशवालोंके परस्पर व्यवहारके लिए गयी गयी है।

एह-सर्व० दे० 'यह'।

एहसिमाय-पु० [अं०] प्रकल्प, ईतजाम; आयोजन; निगरानी।

एहतिमाक-पु० [अं०] संभावना; आशंका, आशंका; शक, संदेह।

एहतिमाळी-वि० सदृश्य।

एहतिवाज-पु० [अं०] दे० 'इहतिवाज'।

एहतिवाल-पु० [अं०] बचाना, बचाव; चौकसी, होशियारी।

एहतिवाल-अं० [अं०] एहतिवालेके तौरपर; बचावकी हदिये।

एहतिवासी-वि० खतरेसे बचावके लिए किया जानेवाला; बचाव-सवधी, बिकानजी। -काररवाई-औ० संभाव्य अनिष्ट या खतरेमें बचावके लिए गयी काररवाई।

एहतिवासा-पु० [अं०] स्वप्नमें वीर्यपात, स्वप्नदोष।

एहसाब-पु० [अं०] नेकी, अलाई, उपकार; कृण। -करासीसा-वि० एहसान भूल जानेवाला, कृतघ्न। -अंश्-वि० उपकार माननेवाला, कृतज्ञ। सु० -जलाना-अपने उपकारीकी चर्चा करना; (किसीको) अपने एहसानकी याद दिखाना।

एहसा-पु० [अं०] घेरा; चहारदीवारीसे घेरी हुई जगह; सबा, प्रेसिडेसी।

एहि-सर्व० 'इस', 'एह'का विभक्तिके पहले प्रयुक्त होनेवाला रूप।

एहो-अं० संबोधनार्थक अव्यय, हे, ए।

हे

ऐ-देवनागरी वर्णमालाका बारहवाँ, ऋ, लृ, लको छोड़कर नववाँ (खर) वर्ण।

ऐ-अं० अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात फिरसे कहलानेके लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

ऐयुद्-वि० [सं०] हथियार। पु० ऐयुदीकी गिरी।

ऐयलो-वि० [अं०] अंग्रेजी, इंग्लिश (समस्तमें व्यवहृत रूप)। -ईन्डियन-पु० भारत, बर्मा आदिमें जनजा या वहाँ रहनेवाला अंग्रेज; यूरोपीय और एशियाई जात-पिताकी संतान, यूरोपियन। -बर्नाक्लूज(स्लूज)-पु० जहाँ अंग्रेजी और देवनागरी दोनों यहाँकी जाती हैं।

ऐचना-सं० कि० खींचना; अपने जिम्मे लेना; फटकना; घुप आदिके सहारे अनाजसे धूसी निकालना।

ऐचा-वि० खिछा, दूसरी तरफ सिना हुआ (ऐंची आँख)।

ऐकसाना-वि० किसी पुतली ताकते समय दूसरी तरफ खिंची रहे।

ऐकसानी-औ० अपनी-अपनी ओर खींचनेकी कोशिश।

ऐचीक-वि० लकीला; खींचे जाने योग्य।

ऐकसा-सं० कि० झाड़ना, कंधी करना-दिह पोंछि पुनि ऐँछि स्थान कच चोटी सुअग बनार्थ-रजराज सिंह।

ऐह-औ० ऐंठना; अफस, कर्मज; देख।

पैठन-खो० मरीछ, घुमाव; खिंचाव ।

पैठना-स० कि० मरीछ, घुमाव देना; थोखा देकर वा भय दिखाकर ले लेना । अ० कि० अकड़ना; बख खाना; टराना; मरना ।

पैठवाना, पैठाना-स० कि० पैठनेके काममें लगाना ।

पैठा-पु० रस्ती बदनेका एक वय ।

पैठू-वि० घमंडी, अकड़वाज ।

पैठ-पु० पैठ, खान, गवै; संवर । धार-वि० शानवाला, गर्बीला, घमंडी ।

पैठना-अ० कि० पैठना; अंगबाना; इतराना; सुखकर कया पढ जाना । स० कि० पैठना, बल देना; (बदन) तोड़ना ।

पैठ-बैठ-वि० बस; टेढ़ा, सिरछा ।

पैठा-वि० पैठा हुआ; हर्षयुक्त-पैठो रहै निसंक तासु हाँसी करि बोले'-सीत० ।

पैठाना-अ० कि० अंगड़ाई लेना; पैठ दिखलाना; इतराना ।

पैठव-वि० [सं०] इन्द्र-चंद्रमा-संबंधी । पु० मृगशिरा नक्षत्र; चांद्रायण व्रत; चांद्र मास ।

पैठवी-खो० [सं०] मोमराजी ।

पैठ-वि० [सं०] इंद्र-संबंधी । पु० अर्जुन; बालि; इंद्रका यन्त्राश; एक संवत्सर; ज्येष्ठा नक्षत्र; वन-अदरक ।

पैठजाल-पु० [सं०] जादूगरी, बाजीगरी ।

पैठजालिक-वि० [सं०] इंद्रजाल, जादू या नजरबंदीका (काम); बाजीगरी जाननेवाला । पु० इंद्रजाल करनेवाला, बाजीगर, जादूगर । -कर्म(रू)-पु० इंद्रजालके काम ।

पैठजालिक-वि० [सं०] खन्वाड ।

पैठशिर-पु० [सं०] एक प्रकारका हाथी ।

पैठि-पु० [सं०] इंद्रका पुत्र जवंत; अर्जुन; बालि; काल ।

पैठिय-वि० [सं०] इंद्रिय-संबंधी; इंद्रियमाद्य । पु० विषय ।

पैठियक-वि० [सं०] दे० 'पैठिय' ।

पैठ्री-खो० [सं०] इंद्रकी शक्ति; इंद्राणी; दुर्गा; कन्येदकी एक कचा जिसमें इंद्रकी स्तुति की गयी है; पूर्वं दिशा; ज्येष्ठा नक्षत्र; छोटी इलायची; दुर्भाग्य; एक तरहकी ककड़ी ।

पैठन-वि० [सं०] ईशनेसे उत्पन्न (अग्नि) । पु० सूर्य ।

पै-अ० [सं०] मंथेधन-है; पू० शिव ।

पैक-वि० [सं०] एकसे संबद्ध ।

पैकपत्थ-पु० [सं०] पूर्ण प्रभुत्व; एकतात्र शासन ।

पैकपट्टिक-वि० [सं०] एक पदवाला । पु० वास्तुके निपंडुका नेतृग ।

पैकमाध्य-पु० [सं०] एक भावका होना, स्वभाव या लक्ष्यकी एकता ।

पैकमत्त्व-पु० [सं०] एकराव होना, एका ।

पैकराज्य-पु० [सं०] एकच्छत्र या एकतंत्र राज्य ।

पैकांग-पु० [सं०] अगररक्षक मेनका सैनिक ।

पैकासिक-वि० [सं०] बिना शर्त या अपवादका; कठर; अकाट्य, पक्का ।

पैकागारिक-वि० [सं०] जिसके पास एक ही घर हो । पु० चौर ।

पैकाग्र-वि० [सं०] जिसका ध्यान एक ही विषयपर हो ।

पैकाक्य-पु० [सं०] एकात्मता, एकरूपता, तादात्म्य ।

पैकाधिकरण्य-पु० [सं०] एक ही विषयसे संबद्ध होनेकी

अवस्था ।

पैकार-पु० [सं०] 'पै' अक्षर या उसकी ध्वनि ।

पैकार्थ-पु० [सं०] उद्देश्य या प्रयोजनकी एकता; अर्थ-सामंजस्य ।

पैकारिक-वि० [सं०] एक दिन रहने या जीनेवाला; क्षणस्थायी ।

पैकट-पु० [अ०] काम, क्रिया; कोई खास कानून, अनि-नियम; अभिनय; नाटकादिका-अंक ।

पैक्य-पु०-[सं०] एकता, एका; एकरूपता; समाहार, जोड़ ।

पैक्य-वि० [सं०] ईच्छेसे उत्पन्न । पु० गुण; शकर; एक तरहकी शराव ।

पैक्यक-वि० [सं०] इक्ष्वाकुने संबंध रखनेवाला । पु० इक्ष्वाकुका वंशज; इस वंश द्वारा शासित देश ।

पैक्यकु-पु० [सं०] दे० 'इक्ष्वाकु' ।

पैगुन-पु०-पु० दे० 'अवगुण' ।

पैखी-खो० चंद्र या मदक पीनेकी नली ।

पैखिक-वि० [सं०] अपनी इच्छा या मर्जीपर अवलंबित, इस्तिमारी; वैकल्पिक ।

पैख-अ० [अ०] ऊपर लिखे या कहे अनुसार; फिर वही, उसी तरह [किसी शब्द या अंककी आकृतिमें बचनेके लिए, यह शब्द या इसका चिह्न (") लिखा जाता है] ।

पैख-वि० [सं०] शक्तिवर्द्धक तत्त्ववाला; भेड़से उत्पन्न या लब्ध । पु० पुरुवा ।

पैख-वि० [सं०] भेड़-संबंधी । पु० भेड़का एक भेद ।

पैखमिनिस्ट्रेटर-पु० [अ०] प्रबंधक; किसी राज्य या रियासतका (राजा या मालिककी भाषालिखी आदिमें) प्रबंध करनेवाला ।

पैखमिरल-पु० [अ०] नंगी बेबेका प्रधान सेनापति, नौ-मेनापति ।

पैखवर्दिज़मैद-पु० [अ०] विद्यापन, इस्तहार ।

पैखवांस-पु० [अ०] पेशगी; पेशगी वेना ।

पैखिड, पैखिल-पु० [सं०] कुंवर ।

पैखोकेट-पु० [अ०] बकील । -जेनरल-पु० हाईकोर्टमें सरकारी पक्षकी वकालत करनेवाला वकील ।

पैखानक-वि० [अ०] अतिरिक्त ।

पैण-वि० [सं०] एण-संबंधी ।

पैणिक-वि०, पु० [सं०] एणका शिकार करनेवाला ।

पैणैय-वि० [सं०] एणमें प्राप्त या संबद्ध । पु० एण; एक तरहका रतिबंध ।

पैत-वि० इतना ।

पैतरेय-पु० [सं०] कन्येदका एक ब्राह्मण; एक आरण्यक; इतर कृषिके वंशज; एक उपनिषद् । वि० ऐतरेयकृत (ब्राह्मण या उपनिषद्) ।

पैतरेयी(विद्)-वि० [सं०] ऐतरेय ब्राह्मण पढ़नेवाला ।

पैतिहासिक-वि० [सं०] इतिहास-संबंधी; इतिहासमें वर्णित । पु० इतिहासका ज्ञाता ।

पैतिह्य-पु० [सं०] परंपरा-प्राप्त उपदेश या प्रमाण ।

पैय-पु० दे० 'अयन' और 'एण' । खो० [अ०] अँख; चरमा; सेतो; बस्तुकी असंख्यता; उड़ और अग्नी वर्ण-मालाका एक अक्षर । वि० ठीक; असल; बहुवृत्त; परम ।

अ० हूबहु, ज्योंका त्यों। -इनाबत-औ० सची कृपा, परम अनुग्रह। -ठकलाह-पु० असल रूपया या राजस्व। -बक्क-पु० ठीक बक्क, ठीक मौका।
 ऐयक-औ० [अ०] चरमा। -फ़रोश-पु० चरमा बेचने-वाला। -साज़-पु० चरमा बनानेवाला।
 ऐयस-पु० [स०] पाप।
 ऐना-पु० दे० 'आईना'।
 ऐनि-पु० [स०] सूर्यपुत्र; इस्वाकु। -बैस-पु० सूर्यवंश।
 ऐय-वि० [स०] स्वायी या सूर्य-संबंधी।
 ऐयव-पु० चावल और इल्ली एक साथ पीसकर बनाया हुआ लेप जो मांगलिक कार्यों, पूजनोमें काम आता है।
 ऐव-पु० [अ०] दोष, खोट, बुराई; धम्मा, लाछन। -जो-वि० ऐव हूँ देनेवाला, छिद्रान्नेयी। -जोई-औ० ऐव हूँ देना, छिद्रान्नेयण। -द्वार-वि० ऐववाला, सदीप। -पौष्टी-औ० किसीका दोष छिपाना, किसीके ऐवपर परदा डालना। -बी-वि० दे० 'ऐवजे'। -बीबी-औ० दे० 'ऐवजे'। - (बो) हुनर-पु० दोष-गुण, बुराई-भलाई। सु०-करनेको हुनर कहिये-दोष करने (छिपाने)के लिए, गुणकी अपेक्षा है।
 ऐबी-वि० जिसमें कोई ऐव या दूषण हो; विकलांग।
 ऐअ-वि० [म०] हाथी-मन्थी।
 ऐमैवर-पु० [अ०] वह व्यक्ति जो धनकी लालसासे नहीं, बल्कि विदोष हार्तिक कर्मोंके कारण किसी कला आदिका अभ्यास करना हो, शौकीन।
 ऐमा-औ० बूढ़ी स्त्री; दादी।
 ऐयाम-पु० [अ०] दिन; समय, काल ('याम'-दिन-का बहु०)।
 ऐयार-पु० [अ०] धूर्त, चालाक, चलता-पुरजा व्यक्ति; बेश या रूप बदलकर अनोवे काम करनेवाला व्यक्ति।
 ऐयारी-औ० धूर्तता, चालाकी।
 ऐयश-वि० [अ०] विलासी, भोग-विलासमें रत, विषयामक, कामुक।
 ऐयारी-औ० विलासिता, विषयासक्ति, कामुकता।
 ऐरा-पौरा-वि० इधर-उधरका; बाहरी; अजनबी; ऐसा-वैसा, तुच्छ, नगण्य। सु०-नरथू लैरा-जिसकी कोई हैसियत न हो; माधारण जन; तुच्छ, नगण्य जन। -वैचकल्यानी-ऐरा-पौरा आदमी।
 ऐराक-पु० ऐराक देशका घोड़ा।
 ऐरापति-पु० दे० 'ऐरावत'।
 ऐरावण-पु० [स०] इन्द्रका हाथी, ऐरावत।
 ऐरावत-पु० [स०] इन्द्रका हाथी; उत्तम इल्ली; पूर्व दिशाका दिग्गज; विजलीसे चमकता हुआ बादल; इन्द्रधनुष; एक तरहकी विजली; नागोंका एक रास; नारंगी; चंद्रमाका उत्तरी मार्ग; लज्जुच वृक्ष; एक संपूर्ण राग।

ऐरावती-औ० [स०] ऐरावतकी भांगी; विजली; इरावती नदी; वटपत्ती; चंद्रबीधीका एक भाग।
 ऐरिज-पु० [स०] संधा नमक।
 ऐरेव-पु० [स०] एक तरहकी शराब।
 ऐल-पु० [स०] इलायना, पुकरवा; मंगल ग्रह; स्थाव पदार्थ; * प्रचुरता; बाद; कोलाहल; हलचल; समूह; † एक प्रकारकी लता।
 ऐलालुक-पु० [स०] एक गंधद्रव्य।
 ऐलविल-पु० [स०] कुबेर; मंगल ग्रह।
 ऐलाम-पु० [अ०] सार्वजनिक घोषणा, सुनादी।
 ऐलेव-पु० [स०] एक गंधद्रव्य; मंगल।
 ऐल-वि० [स०] ईश-शिवसे संबंध रखनेवाला; दैवी, ईशरीय; राजकीय। पु० [अ०] सुख, भोग, विलास; विषय-सुख। -गाह-पु० विलासमवन। -पसंद-वि० आराम-पसंद, विलासप्रिय। -ब आराम-पु०, -ब इशारत-औ० सुल-चैन, भोग-विलास।
 ऐलान-वि० [स०] शिव-संबंधी; उत्तर-पूर्व-संबंधी।
 ऐलानी-औ० [स०] ईशानकीर्ण; दुर्गा।
 ऐलिक-वि० [म०] शिव-संबंधी।
 ऐल-पु० [स०] प्रभुत्व; शक्ति।
 ऐलवर-वि० [स०] राजकीय; ईशरीय; शक्तिशाली; शिव-संबंधी।
 ऐलव-पु० [स०] ईश्वरता; शक्ति; प्रभुत्व; आधिपत्य; धन-वैभव; अणिमादि सिद्धियाँ; सर्वव्यापकता; सर्वशक्ति-मत्ता। -साली (लिन्)-वि० ऐलववाला।
 ऐलवैवान् (बत्)-वि० [स०] ऐलववाला।
 ऐलीक-वि० [म०] बेत या सरकड़ेका बना हुआ (बाण); सरकड़ेके बाणसे सबध रखनेवाला।
 ऐलक-वि० [स०] ईंटोंसे बना हुआ (मकान)। पु० ईंटोंकी जुलाई।
 ऐलिक-वि० [स०] इष्टि-यकमे संबंध रखनेवाला।
 ऐल-वि० दे० 'ऐसा'। पु० दे० 'ऐल'।
 ऐलन-वि० दे० 'ऐसा'।
 ऐसा-वि० इस तरहका। -वैसा-वि० साधारण; तुच्छ, नाबीज। (किसीकी) ऐसी-तैसी-गाली। -० में आच-चूल्हे, भाइमें जाय (खीझ या उपेक्षाके अर्थमें)।
 ऐसे-अ० इस प्रकार, इस ढंगसे।
 ऐलौकिक-वि० [स०] इस लोकसे सबध रखनेवाला, ऐहिक।
 ऐलिक-वि० [स०] इस लोकमें संबंध रखनेवाला, सासारिक; स्थानिक। पु० दुनियाका कारबार। -इर्ली (मिन्)-वि० दुनियादार।
 ऐलिकतापरक-वि० [स०] (सेक्लर) जिनका संबंध सासारिक बातोंसे हो।

ओ

ओ-देवनागरी वर्णमाळाका तेरहवाँ और ऋ, ८, ९ को छोड़कर दसवाँ (सर) वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठोष्ठ है।
 ओहूजना-स० कि० बारना; म्योछावर करना।

ओकना-अ० कि० कै करना, ऊबना; (मन) फिर जाना।
 ओकार-पु० [स०] 'ओम्' मंत्र या इसका उच्चारण; आरंभ, आगमना (का०)।
 ओङ्गा-पु० गाड़ीकी डुरीमें दिया जानेवाला तेल।

अंगिका-स० कि० गाँजी की धुरी में तेक लगाना ।
अंगिया-पु० अपामार्ग, लट्जरी ।
अंगि-पु० होंड; धरे हवादि के मुँहका किनारा । मु० -
उत्सावना-परती लेसकी पहले-पहल जोतना । -**चवाना**-
 ओठकी दाँतों तले दवाना, मोष प्रकट करना । -**चाटना**-
 सा चुकनेपर स्वाद के लालचसे ओठोंपर जीभ फेरना;
 स्वादकी लालसा रह जाना । -**चूसना**-अधरका चुंबन
 करना । -**पपवाना**-ओठोंपरके चम्बेका सूख जाना ।
 -**फड़कना**-मोषके कारण ओठोंका कौपना । -**मकना**-
 खराब बात कहनेवालेकी दँक देना । -**हिलाना**-मुँहसे
 शब्द निकालना । -**(ठों)** पर-जवानपर, प्रकट होनेके
 निकट । -**में कड़ना**-बहुत भीमी आवाजमें बोलना ।
अंगि-वि० गहरा । पु० गहड़ा; मेघ ।
ओ-पु० [सं०] प्रका । अ० पुकारनेमें प्रयुक्त-हे, ऐ, अरे;
 कोई विस्तृत बात बकायक बाद आनेपर भी बोलते हैं
 (ओ, आपने ठीक कहा); ओह (किसयके अर्थमें); और ।
ओक-खी० मतली । पु० अजलि; [सं०] बर; पनाह; पक्षी;
 शत्रु; नक्षत्रोंका मेल ।
ओक(स्)-पु० [सं०] घर, वास्तवान; आश्रय; विलास ।
ओकण, **ओकणि**-पु० [सं०] खटमल; जू ।
ओकना-अ० कि० कै करना; बैसकी तरह चिलाना ।
ओकाई-खी० ओक, मिचली ।
ओकार-पु० [सं०] 'ओ' अक्षर या उसकी ध्वनि ।
ओकूठ-पु० [सं०] बोधा मुना हुआ गेहूँ आदि ।
ओकोदनी-खी० [सं०] दे० 'ओकण' ।
ओकणी-खी० [सं०] दे० 'ओकण' ।
ओख-खी० दे० 'ओष' ।
ओखल-पु० ओखली; परती जमीन ।
ओखली-खी० पथर या काठका वह पात्र जिसमें अन्नादि
 फूटने हैं, कुँडी । मु० -**में सिर देना**-कोई संसट सिर-
 पर लेना, कष्ट, हानि सहनेकी तैयार होना ।
ओखा-पु० बहाना । वि० कठिन; क्षीना; मिलावटी;
 रूखा-मुखा ।
ओग-पु० उगहनी, चंदा; कर; गोद ।
ओगव-पु० अवगुण-**अँ**में ओगण वणा छे हो प्रयुजी
 ये हो सती ती सवों-मीरा ।
ओगरना-अ० कि० टपकना, रसना; साफ किया जाना
 (रूप आदिका) ।
ओगल-पु० परती जमीन; एक तरहका कुर्जा ।
ओगरना-स० कि० कीचड़ आदि निकासकर कुर्जेकी
 सफाई करना ।
ओह-पु० [सं०] धावन, धारा, बहाव; समूह; डेर, राशि;
 पूर्णांश; अभिच्छिन्नता; परंपरागत उपदेश; एक प्रकारका
 नृत्य; द्रुत लय (संगीत); कालवृत्ति (सां०) ।
ओछना-स० कि० दे० 'ओछना' । * पोंछना, साफ कर
 देना-**ललित** कपीलनि ओछैऊ पाछै लाछी लसत सुहावै
 है'-घन० ।
ओछा-वि० गंभीरता-रहित; छिछोरा; छुद्र; खोटा; छोटा;
 हल्का । -**पन**-पु० छिछोरापन, हल्कापन, छुद्रता;
 खोटाई ।

ओछाई-खी० दे० 'ओछापन' ।
ओह-वि० [सं०] विषय (पहला, तीसरा आदि । † पु०
 किफायतसारी, कंजूसी ।
ओज(स्)-पु० [सं०] शुककी सारभूत और शरीरकी
 कांति, तेज देनेवाली धातु; बल; भीर्य; तेज; कांति; जल;
 आविर्भाव; रचनाका वह गुण जिससे पढ़ने-सुननेवालेके
 हृदयमें उत्साह या जोश पैदा हो; शक्तीशुल ।
ओजना-स० कि० सजना, शेरना, अंगेजना ।
ओजस्विता-खी० [सं०] प्रताप; तेज; दीप्ति; प्रभाव; वर्णन-
 का प्रभावोत्पादक ढग ।
ओजस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] ओजभरा; जोश पैदा करने-
 वाला; बल-वीर्य-शाली ।
ओजोव-पु० [अ०] आभिसजन(अभ्यजन)का धनीभूत रूप ।
ओहा-पु० पेट; आमाशय, अंतरी ।
ओहापी-खी०, **ओहार**-पु०, **ओहारी**-खी० पेट; आमा-
 शय, पेदा ।
ओहाल-पु० ओट, आड़ ।
ओहा-पु० झाड़-फूँक करनेवाला; झाड़णोंका एक अल ।
 -**ई**-खी० झाड़-फूँक; झाड़फूँककी उन्नत; ओहाका काम ।
ओट-खी० आड़; रोक; शरण, सहारा; परदेके लिए बनायी
 गयी दीवार । † पु० एक वृक्ष जिसमें ताँबेके फल लगते
 हैं, कुसुमोदरा [अ०] जई । -**ओल**-पु० जईका आटा ।
ओटन-पु० कपास ओटनेकी चरखीके डंडे ।
ओटना-म० कि० कपासमें विनीलेको अलग करना; किसी
 बातकी बार-बार कहना, देरलक कहें जाना; ऊपर लेना,
 ओढ़ना ।
ओटनी-खी० वह चरखी जिसमें दवाकर कपासमें विनीले-
 को अलग करते हैं । † बमनी ।
ओटपाय-पु० धूर्तता-'कैसे गये नई नेडव ओटपाय
 तबके'-घन० ।
ओटा-पु० परदेके लिए बनी हुई दीवार; ओटनेका काम
 करनेवाला; सोनारोंका एक औजार; बैठकर पीमनेके लिए
 चक्कीके पास बना हुआ चबूतरा; † चबूतरा ।
ओटी-खी० कपास ओटनेकी चरखी ।
ओटैगना-पु० आधार, सहारा ।
ओटैगना-अ० कि० किसी चीजका सहारा लेकर बैठना;
 सुस्तानेके लिए बैठना ।
ओटैगाना-स० कि० टिकाकर रखना; सौकल आदि
 लगाये बिना ही किवाडमें किवाड लगा देना ।
ओठ-पु० ओष्ठ, होंठ ।
ओह-पु० गंधपर मिट्टी, चूना आदि दोनेवाला ।
ओहक-पु० [सं०] दे० 'ओहन' ।
ओहन-पु० वह चीज जिससे बाह रोक जाय, ढाक, करी ।
ओहना-स० कि० रोकना, ऊपर लेना; (हाथ) पसारना ।
ओहव-पु० [सं०] रागका एक भेद जिसमें केवल पंच
 स्वर लगते हैं ।
ओषा-पु० बड़ा टोकरा; ओषा; कमी, दोटा; दोकरेका मान ।
ओषिका, **ओषी**-खी० [सं०] नीवार, बिना बोये उपज
 होनेवाला धान ।
ओह-पु० [सं०] उगीसा; उगीसावासी; अमड़ुलका फूल ।

ओह-वि० [मं०] पास लाया हुआ।

ओहना-स० कि० किसी कपड़े, खाल आदिसे बदनको ढकना; छिपाना; अपने कपड़े, जिम्मे लेना। पु० ओहनेकी चीज। सु०-उतारना-अपमानित करना।-ओहाना रोज़ झोके साथ सगाई करना।-विछोना बना लेना-हर एक काममें लाना; लापरवाहीसे बरतना।-ओहूँ, कि चिछाऊँ ?-किस काममें लाऊँ ? किस कामकी है ?

ओहनी-ओ० छिपीके ओहनेका छोटा बुपट्टा। सु०-बढ़लना-सहेली बनाना, बहनापा ओहना।

ओहुर-पु० बहाना, ब्याज।

ओहाना-स० कि० (दूसरेको) कपड़ेसे ढकना।

ओत-ओ० आराम, चैन; लाभ, प्राप्ति; किकायत; कमी। वि० [सं०] हुना हुआ; गुंथा हुआ। पु० तानेका सूट।-ओल-वि० ताने-बानेकी तरह हुना या गुंथा हुआ; भरा हुआ; बिलकुल मिला हुआ। पु० ताना-बाना; बिबाहका एक प्रकार।

ओता-वि० उतना।

ओनु-पु० [सं०] बाना; नर बिलब।

ओतो-वि० उतना।

ओथ-ओ० [अ०] कमम, शपथ।

ओद्दा-वि० गीला, भोगा हुआ। पु० गीलापन, तरी।

ओद्व-पु० [सं०] जलजंतु, जलमें रहनेवाला प्राणी।

ओदन-पु० [सं०] भात; बादल।

ओदनाह्वा, ओदनाह्वा-ओ० [सं०] दे० 'ओदनिका'।

ओदनिका-ओ० [सं०] महासमगा नामक पौधा जो दबाके काम आता है; बल।

ओदनी-ओ० [सं०] बला, बरियारा।

ओदनीय, ओदन्व-वि० [मं०] भात-संबंधी।

ओदुर-पु० दे० 'उदर'।

ओदुरना-अ० कि० फटना; गिर पचना; नष्ट होना।

ओद्दा-वि० गीला, नम।

ओदारना-स० कि० गिराना, ढाना; फाटना; नष्ट करना।

ओध(स)-पु० [मं०] धन।

ओधना-अ० कि० (काममें) लगना; फँसना, डलझना।

ओनन-वि० अवनत, झुका हुआ।

ओनचन-ओ० अदसान, पैतानेकी रस्मी।

ओनचना-स० कि० पैतानेकी रस्सी खींचकर कड़ी करना।

ओनचना-अ० कि० झुकना; धिर आना; टूटना।

ओना-पु० पानी निकलनेका रास्ता।

ओनाना-स० कि० कान लगाकर सुनना; झुकना; प्रवृत्त करना; आदेशका पालन करना।

ओनामासी-ओ० अक्षरारंभ; आरंभ ('अ नमःसिद्धम्'-का विगड़ हुआ रूप)।

ओप-ओ० चमक, कानि, आब; जिला, पालिश।

ओपची-पु० कवचधारी योद्धा; रक्षकयोद्धा।-ओमा-पु० चौकी।

ओपना-स० कि० चमक छानेके लिए योजन, रगड़ना, पालिश करना। अ० कि० चमकना, आब आना।

ओपवि-ओ० झलक, चमक।-धारी-वि०, ओ० चमकवाली।

ओपवी-ओ० दंड या पत्थरका टुकड़ा जिसमें तलवार आदि मोजी जाय; मोहरा।

ओपासा-अ० कि० दूधको हँकिया आदि गरम करते समय अधिक आँच लग जानेसे उसमें कुछ मिश्रित गंधका आने लगना।

ओपी-चमकीला।

ओफ़-अ० [अ०] दे० 'ऊफ'।

ओबरी-ओ० तंग कौठरी, ऐसी कौठरी जिसमें हवा और रोशनीके लिए रास्ता न हो।

ओम्-पु० [सं०] मंत्रोंके आदिमें तथा वेदपाठके पहले और पीछे कहा जानेवाला पवित्र शब्द, प्रणव, ॐ।

ओर-ओ० तरफ, दिशा, पक्ष। पु० छोर, सिरा; अंत; आरंभ। (पहले दिशा वा संस्थावाचक विशेषण आनेसे पुलिग विभक्ति लगती है, जैसे-किलेके पविचम वा तीन ओर नदी बहती थी।) सु०-निबाहना, -निमाना-अंततक कर्तव्य पूरा करना।

ओरती-ओ० दे० 'ओलती'।

ओरमना-स० कि० झुकना; लटकना, झूलना।

ओरमा-पु० मिलाईका एक प्रकार।

ओरमाना-स० कि० झुकाना; लटकाना।

ओरहा-पु० दे० 'होरहा'।

ओररांग-डटोरा-पु० ममाना, रोनिथो आदि दीपोंमें पाया जानेवाला एक तरहका बनमानुस।

ओरा-पु० ओला।

ओराना-अ० कि० ममाना होना; झुकना।

ओरिवा-ओ० दे० 'ओरी'।

ओरी-ओ० ओलती।

ओलंदेजी-वि० हालैंड देशका।

ओलंबा, ओलंभा-पु० उलाहना, शिकायत।

ओल-पु०, ओ० आब; आश्रय; मोद; शरण; किसी बातकी जमानतमें रखी या रोक रखी गयी चीज वा आदमी; जमानत; बहाना। वि० [सं०] गीला, नम। पु० सूरन। ओलखा-पु० लकड़ीका दस्तेदार पात्र जो खेपके छिन्नककर सींचनेके काम आता है, हस्या; छिछली दौरी जिससे पानी उलीचने या अनाज ओमानेका काम लेते हैं।

ओलखी-ओ० गिलास नामका फल।

ओलसी-ओ० छप्पर वा छाननका छोर जहाँसे वर्षाका पानी जमीनपर गिरता है; ओलती गिरनेकी जगह।

सु०-तलेका भूत-पास रहनेवाला आदमी जो घरके सब भेद जानता हो।

ओलना-स० कि० परदा करना; रोकना; चुमाना; ओदना, ऊपर लेना।

ओलमना-अ० कि० लटकना; झुकना।

ओलरना-अ० कि० लेटना; झुकना।

ओलराना-स० कि० लिटाना; लटकाना, झुकाना।

ओला-पु० जमे हुए जलकणों वा वर्षाका गोला जो जाड़ेकी वर्षामें कभी-कभी गिरता है, बनीरी, उपल; मिश्री वा दानेदार चीनीका बना हुआ गोल लड्डू; भेद; परदा। वि० जलुत ठंडा, बर्फसा ठंडा।

ओलरना-स० कि० दे० 'ओलराना'।

ओक्षिक—पु० आश, पर्वत ।
ओक्षियाना—स० कि० गोदमें भरना; घुसाना ।
ओखी—खी० गोद; अंचल; खीजी ।
ओख्या—पु० बहाना—‘बैठो बहू’ शुरू लीमनमें लखि लाल गये करिके कछु ओख्यो’—भाववि० ।
ओखल—पु० [सं०] ओल, जमानत । वि० गीला, नम ।
ओखरकोट—पु० [अ०] कोटके ऊपर पहननेका ढंभा कोट, कनदा ।
ओखरसिंघर—पु० [अ०] इमारत आदिके कामका निरीक्षक ।
ओष—पु० [सं०] दाह, जलन; पकाना ।
ओषजन—पु० ‘आभिसजन’ नामक गैस जो एक निश्चित अनुपातमें ‘हाइड्रोजन’से मिलकर पानी बनती है ।
ओषध—पु० [सं०] तोषापन, कटुता, तेज स्वाद ।
ओषधी—खी० [सं०] एक शाक ।
ओषध—खी० दे० ‘ओषध’ ।
ओषधि, ओषधी—खी० [सं०] वनस्पति; जड़ी-बूटी; एक-फलवा पीषा ।—**गर्भ**—पु० चंद्रमा; सूर्य ।—**घर**,—**पति**—पु० चंद्रमा; कपूर; चिकित्सक ।
ओषधीश—पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।
ओष्ठ—पु० [सं०] ओठ ।—**कोष**,—**प्रकोष**—पु० ओठका एक रोग ।—**जाह**—पु० ओठकी जड़ ।—**पल्लव**—पु० कोमल ओठ ।—**पुट**—पु० ओठके खोलनेसे बननेवाला गवदा ।—**पुष्प**—पु० बंधूक-वृक्ष ।
ओष्ठक—वि० [सं०] ओठोंकी हिफाजत करनेवाला । पु० ओठ ।
ओष्ठी—खी० [सं०] ऊँड़कर, विषाफल ।
ओष्ठोपमफल—खी० [सं०] विषाफल ।

ओष्ण—वि० [सं०] ओठसे संघट्ट; ओठपर उपस्थित; ओठ-से उच्चरित ।—**वर्ण**—पु० उ, ऊ, ए, ई, अ, इ, उ, ए, ओ, औ ।
ओष्ण—वि० [सं०] बोधा गरम, कुनकुना ।
ओस—खी० हवाकी भाप जो रातमें जलकणके रूपमें जमीनपर गिरती है, सवननम । **मु०**—**का** ओसी-क्षणमंगुर ।—**काटनेसे** प्यास नहीं बुझती—पीसी-पीसी बस्तुसे बड़ी आवश्यकताकी पूर्ति नहीं हो सकती ।—**पड़ना**—बैतैनक हो जाना; उदासी छाना; उस्ताह नष्ट हो जाना; ठंढा हो जाना ।
ओसर, ओसरिया—खी० गर्म बारण करने योग्य भैस ।
ओसरी—खी० अवसर, बारी ।
ओसाई—खी० ओसानेकी मजदूरी या काम ।
ओसाना—स० कि० मछि हुए अनाजको हवामें उड़ाकर दानेकी भूसे आदिसे अलग करना ।
ओसार—पु० कैलाश; ओमारा । वि० चौड़ा ।
ओसारा—पु० सायबान, बरामदा ।
ओह—अ० दुःख या आश्चर्यसूचक शब्द ।
ओहट—खी० ओट ।
ओहदा—पु० [अ०] पद, स्थान ।—**(दे)वार**—पु० पदाधिकारी ।—**दारी**—खी० पदाधिकार ।—**के** पदवारसे—पदभी हैसियतसे, पदेन ।
ओहना—स० कि० डंठलों आदिको ऊपर उठाकर हिलाने हुए नीचे गिराना, खरही करना; किसी वस्तुको बिखेरना ।
ओहरना—अ० कि० कमीपर होना ।
ओहार—पु० पालकी आदिपर परदे या शोभाके लिए डाला हुआ कपड़ा ।
ओही—अ० हर्ष या आश्चर्यसूचक शब्द ।

औ

औ—देवनागरी वर्णमालाका चौदहवाँ, अ, ए, लको छोड़ कर प्यारहवाँ (चर) वर्ण । उच्चारण-स्थान कंठोष्ठ ।
औगना—स० कि० दे० ‘औगना’ ।
औगा—वि० गूँगा ।
औगी—खी० चुपड़ी, गूँगापन ।
औचना, औचाना—अ० कि० दे० ‘ऊँचना’ ।
औचार्ही—खी० ऊँचार्ही, झपकी, नौद ।
औजना—अ० कि० ऊजना, व्याकुल होना । स० कि० उझलना ।
औटना—पु० चारा आदि काटनेका ठोहा ।
औटना—स० कि०, अ० कि० दे० ‘औटना’ ।
औटाना—स० कि० दे० ‘औटाना’ ।
औठ—खी० कपड़ेकी किनारी; बरतन आदिका उठा हुआ किनारा; ओठ । **मु०**—**उठाना**—परती पड़े हुए लेनकी जोतना ।
औह—पु० ओह; बेहतर ।
औहना—अ० कि० उमड़ना, बढ़ना, उमड़ना ।
औहा—वि० गहरा—‘पहले बाह दिखाह करि औह देखी आनि’—साखी; उमका या उमकता हुआ ।
औदिना, औदाना—अ० कि० उम्यत होना; व्याकुल

होना ।
औचना—अ० कि० उलट जाना, औधा होना । स० कि० उलट देना ।
औचा—वि० जिसका मुँह नीचेकी ओर हो, उलटा; नीचा । पु० चिला । **मु०**—**हो जाना**—बेसुध होना, गिर पड़ना ।—**(धी)** खोपड़ी—मूँलं—**समझ**—जड़-बुद्धि ।—**(वे)** मुँह—मुँहके बल ।—**गिरना**—पीसा खाना; भूल करना ।
औचाना—स० कि० नीचा या उलटा करना ।
औहा—पु० औहना ।
औस—पु० [अ०] एक अंग्रेजी वजन जो हिंदुस्तानी दो या सवा दो तोलके बराबर होता है । (तरल वस्तुमें यह पौंड-का १.१२६ और ठोसमें १.१२ माप होता है ।)
औस—खी० ऊमस ।
औसिया—अ० कि० ऊमस होना ।
औ—पु० [सं०] शेषनाग; शङ्ख । खी० पृथ्वी । * अ० दे० ‘और’ ।
औकास—पु० [अ०] वक्त, समय; जमाना (‘वक्त’का बहु०) । खी० हैसियत ।—**बसरी**—खी० जीवन-निर्वाह, गुजर-बसर । **मु०**—**बसर करना**—जीवन-निर्वाह करना,

गुजर-वसर करना ।

औष्ठ, औष्ठक-पुं० [सं०] बैलेंका समूह ।

औष्ठक-स्त्री० दे० 'औष्ठ' ।

औष्ठा-पुं० नायका चमड़ा या चरसा ।

औगस्त-वि० दे० 'अवगत' । * औ० दे० 'अवगति' ।

औगाह-वि० दे० 'अवगाह' ।

औगाहना-अ० कि०, सं० कि० दे० 'अवगाहना' ।

औगी-स्त्री० वायुक, पैना; जंगली जानवर फँसानेके लिए बना हुआ गड़दा; कारचोरी जूतेका ऊपरका चमड़ा ।

औगुन-पुं० दे० 'अवगुण' ।

औगुनी-वि० दे० 'अवगुणी' ।

औग्र-पुं० [सं०] उम्रता, अयंकरता ।

औघ-पुं० [सं०] घ्रावन, बाढ़ ।

औघट-वि० कठिन, दुर्गम । पुं० दुर्गम मार्ग ।

औघड़-पुं० अयोरी; कफर; मनमौजी । वि० अटपट ।

औघर-वि० अनगढ़; अटपटा, टेढ़ा; विचित्र ।

औघुरना-अ० कि० घूमना-‘वर लागें औघूरि कहे मन कहा बँधावै’-सूर ।

औचक-अ० अचानक, चकायक ।

औचट-स्त्री० कठिनार्थ, संकट । अ० अचानक; भूलने ।

औचिन-वि० निश्चिन, बेखबर ।

औचिनी-स्त्री० [सं०] दे० 'औचिन्य' ।

औचिल्य-पुं० [सं०] उचित होना, उपयुक्तता, मुनासिबत ।

औज-पुं० दे० 'औज'; [अ०] ऊँचाई, बुलंदी; उत्कर्ष; महता । -(जे) कमाल-पुं० चरमोत्कर्ष; संगीतमें एक स्थान ।

औजक-अ० दे० 'औचक' ।

औजड़-वि० उजड़ु ।

औजस-पुं० [सं०] सोना ।

औजसिक-वि० [सं०] औजवाला; उत्साही, मुस्तैद । पुं० वीर पुरुष ।

औजस्य-पुं० [सं०] बल; उत्साह; औज । वि० शक्ति-वर्द्धक ।

औजार-पुं० [अ०] कोई काम करनेका साधन, आला, उपकरण ।

औज्य-पुं० [सं०] उज्जलापन; चमक ।

औष्ठक-अ० दे० 'औष्ठक' ।

औष्ठक, औष्ठर-अ० लगातार ।

औठन-स्त्री० औठनेकी क्रिया; ताब, औँच ।

औठना-सं० कि० दूध, रस आदिको औँच देकर गाड़ा करना, देरतक उठाकरना, खोलावा । अ० कि० खोलना, औँच खाना; पगना; तपना; * अठकना ।

औठनी-स्त्री० औठी जानेवाली चीजकी चलनेकी कलछी या चम्मच ।

औठपाई-स्त्री० दे० 'औठपाय' ।

औठावा-सं० कि० औठना, औँच देकर गाड़ा करना ।

औटी-स्त्री० ईशका औठा हुआ रस; गावकी ब्यानेपर दी जानेवाली पुष्टि ।

औट्टे-अ० बहो-भरने तो भारी औलू सतावै ये औट्टे विलमाया'-धन० ।

औठपाय-पुं० अठपाय, सरारत, धूर्तता ।

औठ-वि० [सं०] आर्र, गीला ।

औठक-पुं० [सं०] एक तरहका राग । वि० तारा-संबंधी ।

औठुवर-पुं० [सं०] दे० 'औठुवर' ।

औठुषिक-पुं० [सं०] नावका बान्नी । वि० नावसे (दरिया) पार करनेवाला ।

औठ-पुं० [सं०] उरीसा-निवासी ।

औठर-वि० बाहे जिधर डल जानेवाला; मोहमें प्रसक्त होकर निहाल कर देनेवाला, आशुतोष । -द्वानी-वि० प्रार्थी, भक्तकी निहाल कर देनेवाला ।

औठरना-अ० कि० अवतार ग्रहण करना, जन्म लेना ।

औठार-पुं० दे० 'अवतार' ।

औठक्य-पुं० [सं०] उत्कंठा; भित्त; इच्छा ।

औठक्य-पुं० [सं०] उत्तमता, श्रेष्ठता ।

औठमर्गिक-वि० [सं०] जो दूसरेंमें वृत्तर लिया गया हो ।

औठमि-पुं० [सं०] चौदह मनुओंमेंसे तीसरा ।

औठर-वि० [सं०] उत्तरी; उत्तरवासी ।

औठरेय-पुं० [सं०] उत्तरसे उत्पन्न, परीक्षित ।

औसानपाद, औसानपावि-पुं० [सं०] भ्रूषा, भ्रुवतारा ।

औसापिक-वि० [सं०] उत्साप-संबंधी; उत्साप-जनित ।

औसपिक-वि० [सं०] उत्पत्तिसे संबंध रखनेवाला; सहज, पैदाइशी ।

औसापिक-वि० [सं०] उत्पत्ति-संबंधी ।

औस्य-वि० [सं०] झरनेमें उत्पन्न या झरना-संबंधी ।

औस्यगिक-वि० [सं०] उत्सर्ग-संबंधी; सामान्य विधियोग्य, सामान्यतया मान्य (नियम-व्या०); सामान्य; समान होनेवाला; स्वाने, छोकनेवाला; स्वाभाविक, सहज ।

औसुक्क-पुं० [सं०] उत्सुकता ।

औधरा-वि० उधरा, छिछला-‘अति अगाध अति औधरी, नदी कूप सर बाव’-वि० ।

औधक-वि० [सं०] जडौय, जल-संबंधी । पुं० जलबहुल उपनिवेश (क्षौ०) ।

औधकना-अ० कि० चौकना ।

औधनिक-पुं० [सं०] भात पकानेवाला, पाचक; भात बेचनेवाला (क्षौ०) ।

औधिक-वि० [सं०] स्वयंदयसे गिना जानेवाला; शुभ कालमें होनेवाला ।

औधर-वि० [सं०] उदर-संबंधी; पाचन-संबंधी ।

औधरिक-वि० पुं० [सं०] उदर-संबंधी; बहुत खानेवाला, पेड़; उदरके लिए उपयुक्त ।

औधर्य-वि० [सं०] उदर-संबंधी; उदरका ।

औधित-पुं० [सं०] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा ।

औधसा-स्त्री० अन्धसा, दुर्दशा, विपत्ति ।

औधार्य-पुं० [सं०] उदरता; महत्ता; अर्थगामीर्थ ।

औधसीम्य, औधस्य-पुं० [सं०] उदासीनता, उदासी; एकाकीपन, निर्जनता; वैराग्य ।

औधस्य-पुं० गुजरती माझणोंकी एक उपजाति; उत्तरका रहनेवाला । वि० उत्तरी ।

औधुवर-वि० [सं०] ऊँच या गूलरका बना हुआ; ताज-

निमित्त । पु० गूलरका फल; गूलरकी लकड़ी; गूलरकी लकड़ीका बना यक्षपात्र; एक यम; एक प्रकारका कुष्ठ; तबिया ।
बौद्ध-शब्द-कोश—वि० [सं०] गूलरकी लकड़ी ।
बौद्धिक—पु० [सं०] दीर्घक आदिके विषये प्राप्त होनेवाला मनु जैसा एक पदार्थ जो कच्चा और कसैला होता है ।
बौद्धत्व—पु० [सं०] उद्वलता, उज्ज्वलपन ।
बौद्धिज्ज—वि० [सं०] धरतीसे प्राप्त । पु० खारी नमक ।
बौद्धि-वि० [सं०] धृष्टीसे जोषकर निकलनेवाला; विजयी । पु० क्षरनेका पानी; खारी नमक ।
बौद्धोपनिषद्—वि० [सं०] उद्योग-संघी, कल-कारखानोंसे संबंध रखनेवाला । —उच्छति—स्त्री० उद्योग-धर्मों, कल-कारखानोंकी उच्छति, बाढ़ ।
बौद्धोपनिषद्—पु० [सं०] उद्योग-धर्मोंकी उच्छति करने, नये कारखाने आदि खोलनेकी क्रिया ।
बौद्धाधिक—वि० [सं०] विवाह-सम्बन्धी; विवाहमें मिला हुआ । पु० विवाहके समय स्त्रीको उपहार रूपमें मिला हुआ धन, आभूषण आदि ।
बौद्ध—पु० दे० 'अवध' । स्त्री० दे० 'अवधि' ।
बौधस—वि० [सं०] बन या सनमें रहनेवाला (दूध) ।
बौधराना—सं० कि० दे० 'अवधारना'; प्रारंभ करना ।
बौधि—स्त्री० दे० 'अवधि' ।
बौध, **बौनि**—स्त्री० दे० 'अवधि' ।—(नि)प—पु० राजा ।
बौधे-पौधे—अ० कुछ कम दामपर, कुछ घाटा उठाकर ।
बु०—करना—बौधे-पौधे बेचना ।
बौधत्व—पु० [सं०] कैचर; उत्थान ।
बौधकार्य—पु०, **बौधकार्य**—स्त्री० [सं०] मकान; लेमा ।
बौधप्रसिद्ध—पु० [सं०] ब्रह्मण; ब्रह्म सूर्य या चंद्रमा ।
बौधप्रसिद्ध—वि०, [सं०] उपचार-संघी; रस्सी; दिखाक; गोप ।
बौधपटी—वि० स्त्री० अपपटी, काठिन ।
बौधदेशिक—वि० [सं०] उपदेश-संघी; उपदेशमें या शिक्षण-कार्यसे जोषिका चलनेवाला; शिक्षणकार्यमें प्राप्त (धन) ।
बौधद्विषय—वि० [सं०] रोग-लक्षणोंमें सब्ध रखनेवाला ।
बौधधर्म—पु० [सं०] धर्मविरोधी मन ।
बौधधर्म—वि० [सं०] छली । पु० ठग, भय दिखाकर धन ऐंठनेवाला ।
बौधधर्मिक—वि० [सं०] धरोहर-संघी; विवाहपर धरोहर रखा हुआ ।
बौधधर्मिक—वि० [सं०] उपनिवेश-संघी; उपनिवेशमें रहनेवाला ।—स्वराज्य—पु० एक प्रकारका स्वराज्य जो कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि मिटिश उपनिवेशोंकी प्राप्त है ।
बौधधर्म—वि० [सं०] उपनिषद्में कहा, बलया हुआ; उपनिषद्पर आश्रित । पु० धर्मज्ञ; उपनिषद्का अनुयायी ।
बौधधर्मिक कर्म—पु० [सं०] वे कर्म जो शत्रुका नाश करें (की०) ।
बौधनी—स्त्री० दे० 'अपनी' ।
बौधन्यासिक—वि० [सं०] उपन्यास-संघी; उपन्यासके ढंगका; अद्भुत । पु० उपन्यासकार ।
बौधपत्तिक—वि० [सं०] प्रस्तुत; उपपत्ति-युक्त; युक्ति-संगत,

ठीक, उपयुक्त ।
बौधपासिक—पु० [सं०] उपपासक करनेवाला ।
बौधपत्र—पु० [सं०] समता, साक्ष्य, बराबरी ।
बौधपत्र—वि० [सं०] न्याय्य; उपयुक्त; प्रयत्नसे प्राप्त । पु० साधन; उपाय ।
बौधयोगिक—वि० [सं०] उद्योग-संघी ।
बौधराजिक—वि० [सं०] उपराज या राजप्रतिनिधि-संघी ।
बौधर—वि० [सं०] प्रसार-संघी; पत्थरका बना हुआ; पत्थरसे मिलनेवाला (कर) ।
बौधवन्ध, **बौधवन्ध**, **बौधवन्ध**—पु० [सं०] उपवास ।
बौधवन्ध—पु० [सं०] उपवासके उपयुक्त आहार ।
बौधवास—वि० [सं०] उपवासकालमें दिया या किया जानेवाला ।
बौधवाह—वि० [सं०] सवारीके काम आनेवाला । पु० राजकी सवारीमें काम आनेवाला हार्थ या रथ ।
बौधधर्मिक—वि० [सं०] शमन करनेवाला; शमनमें उत्पन्न होनेवाला ।
बौधधर्मिक—वि० [सं०] उपसर्ग-संघी; उपसर्ग-रूपमें प्राप्त (रोग); विपत्तिका सामना करने योग्य । पु० एक प्रकारका नक्षिपात ।
बौधस्थि—वि० [सं०] जिसकी जीविका व्यभिचारसे चलनी हो ।
बौधस्थिका—स्त्री० [सं०] देवता, बारांगना ।
बौधस्थ—पु० [सं०] सहवास, भोग ।
बौधहारिक—वि० [सं०] उपहार-संघी; उपहारके काम आनेवाला । पु० उपहार ।
बौधधर्मिक—वि० [सं०] विशेष अवस्थाओंमें होनेवाला; विशेष धर्मोंमें संबंध रखनेवाला ।
बौधधर्मिक—वि० [सं०] उपहारमें मिला हुआ या दिया जानेवाला (की०) ।
बौधसन—वि० [सं०] गृहधर्म-संघी; पूजा-संघी । पु० गृहधर्म; पितरोंकी दिया जानेवाला विड ।
बौध—वि० [सं०] उपदेश-संघी ।
बौध—वि० [सं०] सनका बना हुआ; * दे० 'अवध' ।
बौध, **बौध**—वि० [सं०] दे० 'बौध' ।
बौधगोत्र—पु० [सं०] सुगलवंशका अर्जुन शक्तिशाली बादशाह (शासनकाल १६५९से १७०३) जो शाहजहाँका तीसरा पुत्र था ।
बौध—अ० दो शब्दों या वाक्योंको जोड़नेवाला एक शब्द, व, तथा । वि० दूसरा; अधिक । पु०—का और—कुछका कुछ, उलटा । —क्या ?—हाँ, अवश्य, नहीं तो क्या ? —तो और—दूसरोंकी बात जाने दो, दूसरोंकी तो बात ही क्या; दूसरी बात छोड़िये, हतना तो ? —ही कुछ—सबसे निराशा; बुद्धा; अन्धा ।
बौध—वि० [सं०] सौंपका; सौंध-संघी । पु० आशेषा नक्षत्र ।
बौध—स्त्री० [अ०] स्त्री; पत्नी ।
बौधना—अ० कि० आगे बढ़ना; सृष्टना ।
बौध—वि० [सं०] भेक-संघी । पु० भेकका मांस; कमी कपड़ा, कंचल ।

औरस्य-पु० [सं०] सेरोंका झुंड ।
 औरस्य-वि० [सं०] मेरु-संघी । पु० गयेरिया ।
 औरस-वि० [सं०] विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न, वैध, जायज ।
 पु० विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न पुत्र ।
 औरसना-अ० कि० रुठना, अनखाना ।
 औरसी-खी० [सं०] विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न कन्या ।
 औरस्य-वि०, पु० [सं०] दे० 'औरस' ।
 औरसा-वि० विलक्षण; वेड्या... 'कहाँ अब काल चाक औरसी'-सूर ।
 औरस-पु० तिरछापन, टेढ़ापन; कपड़ेकी तिरछी काट; पेच, चाक । -हार-वि० तिरछी काटवाला ।
 औरसदेह-पु० [सं०] अंशेष्टि, प्रेतकर्म ।
 औरसदेहिङ्क, औरसदेहिङ्क-वि०[सं०] मृत व्यक्तिसे संबद्ध या उसकी निमित्त किया गया ।
 औरस-वि० [सं०] भरतीसे सबद्ध या उत्पन्न; जाँपने उत्पन्न ।
 पु० एक प्रवर-प्रवर्तक कपि; बडबासि; खारी नमक ।
 औरसवे-पु० [मं०] उर्वशीका पुत्र; वसिष्ठ; अगस्त्य ।
 औरसमा-पु० दे० 'ओलमा' ।
 औरसमा-अ० कि० गरमी पकना; तप्त होना ।
 ओलाद-खी० [अ०] मनान, वेदा वेदो, वश ('वल्द'का बहु०) ।
 ओला-दोला-वि० लापरवाह, मौजी ।
 ओलान-पु० [सं०] महारा; पानीका ढौज ।
 ओलिया-पु० [अ०] सिद्ध पुरुष, मंग, महात्मा, पंडित ।
 हुआ मुनछमान कछीर ('वनी'का बहु०) ।
 ओली-खी० खेतने पहले पहल काटकर लाया हुआ नया हरा अन्न ।
 ओलू-खी० विरहकी स्थिति ।
 ओलूक-पु० [मं०] उलूकीका झुंड ।
 ओलूक्य-पु० [मं०] वैशेषिक दर्शनके प्रवर्तक महर्षि कणाद । -दर्शन-पु० वैशेषिक दर्शन ।
 ओलूल-वि० [मं०] ओललीमे फूटा हुआ; उलूल-संघी ।
 ओलूल-पु० [मं०] आधिक्य; अतिशयता; प्राकृत्य ।
 ओलूल-वि० [अ०] पहना, प्रथम; प्रधान; सर्वश्रेष्ठ । -ओलूल-अ० पहले, प्रथमतः ।
 ओलूल-अ० पहले, प्रथमतः ।
 ओसि, ओसि-अ० दे० 'अवस्य' ।
 ओसीर-पु० [सं०] खसकी जड़; खसका लेप; चटारें; फंसे

या चँवरकी ढोही; कुरसी ।
 ओसीरिका-खी० [सं०] (पीपिका) अंकुर, अँसुना; जलाधार ।
 ओषण-पु० [सं०] ककवापन; काठी मिरं । -शौडी-खी० सोंठ ।
 ओषधि-खी० दे० 'ओषधि' ।
 ओषध-खी० [सं०] दवा, ओषधि, जड़ी-बूटी; एक खनिज द्रव्य । वि० जड़ी-बूटियोंसे बनी ।
 ओषधालय-पु० [सं०] दवाखाना ।
 ओषधि, ओषधी-खी० [सं०] दे० 'ओषधि' ।
 ओषधोपचार-पु० [सं०] दवा-इलाज ।
 ओषर, ओषरक-पु० [सं०] खारी नमक; सुंक्क पत्थर ।
 ओषस-वि० [सं०] उपासे सबद्ध; उपकालीन ।
 ओषसी-खी० [सं०] ओर, प्रत्यक्ष ।
 ओह-वि० [सं०] उड़ने संबद्ध या उत्पन्न । पु० अँदनीका दूध । -रथ-पु० ऊँटगाड़ी ।
 ओहक-वि० [सं०] अँटसे प्राप्त । पु० अँदनीका झुंड ।
 ओहिक-वि० [मं०] अँटसे प्राप्त होनेवाला । पु० तैलिक, तेली ।
 ओह-वि० [सं०] ओठकी शकलका ।
 ओछ-वि० [मं०] ओठने संघर्ष रखनेवाला ।
 ओण, ओणक, ओणक-पु० [सं०] उष्णता, ताप, गरमी ।
 ओस-वि० [अ०] बीचका, दरमियाणी; साधारण । पु० बीचकी सख्या या राशि, राशियोंके जोड़की उनही सख्यासे भाग देनेपर भागफलके रूपमें प्राप्त संख्या, परता । -दूरेका-बीचका, न बहुत अछा, न दूरा ।
 ओसना-अ० कि० ऊमस होना; गरमीसे खानेकी चीजका विगड़ना; फलादिका सुखकर पकना ।
 ओसर-पु० दे० 'अवसर' ।
 ओसान-पु० होश-हवास, चेत-गै ओसान सवन्धकर देखि समुद्र के बाद-प०; * अत, अवसान । सु०-खसा होवा-हवास ठिकाने न रहना, ध्वरा जाना ।
 ओसाना-स० कि० फलादिकी भूसे आदिमें रखकर पकाना ।
 ओसी-खी० दे० 'ओली' ।
 ओसेर-खी० दे० 'अवसेर' ।
 ओहत-खी० अपचरु, कुगति ।
 ओहासी-वि०, खी० दे० 'अहिवासी' ।

क

क-देवनागरी वर्णमालाके कर्मर्गका पहला (ध्वंजन) वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान कंठ है ।
 कंठ-अ०-खी० दे० 'कौठा' ।
 कंक-पु० [सं०] एक मांसाहारी पक्षी जिसके पंख बाजमें लगाये जाते थे; एक तरहका आम; वम; क्षुधिय; सुषिष्ठिरका एक नाम जो उन्हींने विराट् मगरमें धारण किया था; कसका माँह । -औट-पु० एक तरहकी मछली ।
 -पत्र-पु० वह बाण जिसमें कंकका पर लगा हो; कंकका पर । -पत्री(भिन्)-वि० जिसमें कंकका पर लगा हो

(बाण) । -पूछी-खी० एक तरहकी मछली । -मुल-पु० एक तरहकी विमटी जिसमे चुमा हुआ कौठा या अन्य वस्तु पककर निकाली जा सकती है ।
 कंकड-पु० [सं०] कनक, वस्त्र; अंकुर । -कमाल-पु० कवच बनानेका कारखाना ।
 कंकड़-पु० जमीनके अन्दरसे निकलनेवाला एक तरहका रोषा जो सबक बनानेके काममें आता है और जिसे जलाकर चूना बनाया जाता है; पत्थरका छोटा टुकड़ा, गिट्टी; सड़ा या सुरतीका चूरा मिला हुआ तंवाकू जिसे गाँजेकी

तरह पीते हैं। —परधर-पु० कृष्ण-करकट, रबी चीनें।
कंकड़ी-खी छोटा कंकड़, छरी; छोटा डुकड़ा, बन्नी, रवा।
कंकड़ीला, कंकरीला-वि० कंकड़ मिला हुआ; जिसमें कंकड़ अधिक हों।
कंकण-पु० [सं०] कंगन; विवाहके पहले बर-कन्याके हाथमें बाँधा जानेवाला धागा; विवाहसूत्र; एक राख राग।
कंकणाब्ज-पु० [सं०] एक अक्ष।
कंकणी, कंकणीका-खी [सं०] कटि आदिमें पहननेके सुवस्त्रार गहने; छुद्रबंटिका।
कंकल-पु० [सं०] कंघी; एक हड्डी, एक विपैला जीव।
कंकतिका, कंकरी-खी [सं०] कंघी।
कंकण-पु० दे० 'कंकण'।
कंकर-वि० [सं०] बुरा, नीच। पु० मट्ठा; दे० 'कंकड़'।
कंकरीट-खी [अ० 'काकोट'] कंकड़, सीमेंट, बालू आदि-के मेलसे बना हुआ छल आदि बनानेका मसाला; छोटी कंकड़ी।
कंकरीत-खी दे० 'कंकरीट'; छतपर झूलनेका कंकड़।
वि० दे० 'कंकरीला'।
कंकरील-पु० [सं०] निकोचक नामक हड्डी।
कंका-खी [सं०] उग्रसेनकी बेटी औ बसुदेवके छोटे भाईकी प्याही थी।
कंकारी-खी एक हड्डी।
कंकाळ-पु० [सं०] हड्डियोंका ढाँचा, छरी। —**माखी**-(**किच्**)-वि० हड्डियोंकी माला पहननेवाला। पु० शिव।
—भार-पु० वह बाण जिसके सिरेपर हड्डी लगी हो।
—शेष-वि० जिसकी देहमें छरीभर रह गयी हो।
कंकाळब-पु० [सं०] शरीर।
कंकालिनी-खी [सं०] काली। वि०, खी० जगहालू, कर्नाला (खी)।
कंकाळी-पु० एक विज्ञानीकी जाति।
कंकु-पु० [सं०] एक अक्ष, कँगनी (?)।
कंकुड-पु० [सं०] आलुबेदमें बगित एक तरहकी पहाड़ी मिट्टी।
कंकूब-पु० [सं०] अंदरका शरीर; आन्तर देह।
कंकरी-पु० एक तरहका पान।
कंकेर-पु० [सं०] एक तरहका कौआ।
कंकेलि, कंकेल, कंकेलि-पु० [सं०] अशोक वृक्ष।
कंकोल-पु० [सं०] एक तरहको शीतल चीनी।
कंकोली-खी [सं०] दे० 'कंकोल'।
कंस-पु० [सं०] पापभोग, फलभोग।
कंसवारी-खी० कंसका पीठा।
कंसोरी-खी० दे० 'कंसवारी'; कंस।
कंगन-पु० कलाईमें पहननेका एक गहना; कंकण; वह धागा जिसमें हलदी, लोहिका छल्ला, पीली सरसों, चोकर आदि औषधर हलदीकी रसके समय बर-कन्याके हाथमें बाँध देते हैं।
कंगना-पु० कंगन बाँधते समय गाया जानेवाला गीत; कलाईपर पहननेका एक गहना। खी० एक तरहकी घास।
कंगनी-खी० छोटा कंगन, कलाईमें पहननेका एक गहना; लालकी बनी रंजानेदार लूनी; दीवारमें उमड़ी हुई लकीर,

कानिसे रंजानेदार चक्कर वा चक्करपरके उमड़े हुए दाने; सोबाकी जातिका एक अक्ष, काकुन। —**हुसा**-वि० गँदीली पुँछवाला। पु० वह हाथी जिसकी दुममें गाँठें हों।
कंगला-वि० दे० 'कंगल'; दुर्मिष्ठ-पीषित।
कंगली-खी० पंजा गँठना।
कंगली-खी० कंघी।
कंगहरा-पु० दे० 'कंविरा'।
कंगारू-पु० [अ०] आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी आदिमें पाया जानेवाला एक जानवर।
कंगाल-वि० निर्धन, गरीब; भुक्खर, मुहताज। —**मुँहा**, **बाँका**-पु० वह आदमी जो कंगाल होते हुए शीकोनी करे, मुफलिस शीकोन।
कंगाली-खी० गरीबी, निर्धनता।
कंगु-पु०, **कंगुनी**-खी० [सं०] एक कदम।
कंगुरिया-खी० दे० 'कनगुरिया'।
कंगुल-पु० [सं०] कर, दाय।
कंगुह-पु० [सं०] दे० 'कंगुड'।
कंगूरा-पु० गुंघर, गुंज। —(**र**) **बार**-वि० कंगूरेवाला।
कंघा-पु० बाल रंजानेसुलझानेका रंजानेदार आला; जुलाहोंका एक औजार।
कंघी-खी० छोटा कपा; जुलाहोंका एक औजार; एक पीठा। —**चोटी**-खी० बनाव-सिंगार।
कंघेरा-पु० कंघी बनानेवाला।
कंघ-पु० दे० 'कंघ'।
कंचन-पु० सोना; बल-शीलत; बतूरा; एक जाति जिसकी खिया प्रायः वेष्टाकर्म करती है। वि० निर्मल; नीरोग।
—पुरुष-पु० दे० 'कांचनपुरुष'।
कंचनिया-खी० एक तरहका कचनार।
कंचनी-खी० कंचन जातिकी खी; वेष्टा।
कंचार-पु०-[सं०] सूर्य; अक्षवत्।
कंचिका-खी० [सं०] कुशिया; बंसिकी शाखा।
कंचुक-पु० [मं०] भरतार; जामा, अंगरखा; चोली, अंगिया; केंचुल; भूमी, छिलका; तसमा।
कंचुकाळ-पु० [सं०] तोंप।
कंचुकित-वि० [सं०] बलतरदार; बल्ल्याच्छादिन।
कंचुकी-खी० चोली, अंगिया; केंचुल।
कंचुकी-(**किच्**)-वि० [सं०] कवचधारी। पु० रनिवासका रक्षक, अतःपुराण्यक्ष; द्वारपाल; तोंप; जो; लपट।
कंचुरि-खी० दे० 'केंचुल'।
कंचुलिका, कंचुली-खी० [सं०] चोली, अंगिया।
कंचुली-खी० दे० 'केंचुल'।
कंचेरा-पु० कोंचका काम करनेवाला।
कंछा-पु० पतली डाल।
कंछ-पु० [सं०] कमल; जम्बा; केश; अमृत। वि० जलसे उत्पन्न। —**ज**-पु० जम्बा। —**जाम**-पु० विष्णु।
कंजई-वि० कंचेके रंगका, गहरा लाली। पु० लाली रंग; इस रंगकी आँखोंवाला घोड़ा।
कंजक-पु०, **कंजकी**-खी० [सं०] एक प्रकारका पक्षी।
कंजब-पु० एक खानाबदोश जाति।
कंजब-पु० [सं०] कामदेव; एक तरहका पक्षी।

कंजर, कंजार-पु० [सं०] सर्व; हाथी; उदर; बन्धा; मोर; सम्बन्धी ।

कंजक-पु० [सं०] एक तरहका पक्षी ।

कंजा-पु० एक कंठीली हाथी । वि० खाकी रंगका; कंजी अर्थात्वाला ।

कंजावलि-स्त्री० [सं०] एक वर्णरूप ।

कंजिका-स्त्री० [सं०] ब्राह्मणयष्टिका नामक पौधा; भारंगी ।

कंजियाना-अ० कि० काला-सा पड़ना; सुरहाना; ठंडा पड़ना ।

कंजी-वि०, स्त्री० गहरे खाकी रंगकी ।

कंजूस-वि० सुम, कृपण, खसीस ।

कंजूसी-स्त्री० कृपणता ।

कंठ-वि० [सं०] कंठीला । पु० कंठा ।-पञ्चकला-स्त्री० ब्रह्मर्षी नामक पौधा ।-कल-पु० गोखरू; कटहल; धतूरा; लताकरंज ।

कंठक-पु० [सं०] कौंठा; सूई या किसी चुकीली चीजकी नोक; बाधा; छोटा शत्रु; वह जो परेशान करे; रोमांच; घबराहट; बस; दोष; कारखाना; जन्मकुटुलीमें पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान ।-हुस-पु० सेमलका पेड़ ।-कल-पु० कटहल; गोखरू; रेंह या धतूरे का पेड़ ।

-अक्षक-सुख(ज्)-पु० कंठ ।-शोधन-पु० कंठा निकालना, दूर करना; विम-बाधाओंको दूर करना; उप-द्रवियोंका नष्टन ।-श्रेणी-स्त्री० भटकटैया; साँगी ।

कंठकार-पु० [सं०] मेमल; एक तरहका बबूल ।

कंठकारिका, कंठकारी-स्त्री० [सं०] भटकटैया; मेमल ।

कंठकाल-पु० [सं०] दे० 'कठक-फल'; कौंठीका पर ।

कंठकालुक-पु० [सं०] जवामा ।

कंठकाशन-पु० [सं०] ऊँट ।

कंठकाशील-पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।

कंठकित-वि० [सं०] कठीला; रोमांचयुक्त ।

कंठकिनी-स्त्री० [सं०] भटकटैया ।

कंठकिल-पु० [सं०] एक तरहका कौंटेदार बंस ।

कंठकी-स्त्री० [सं०] भटकटैया ।

कंठकी(किन्)-वि० [सं०] कौंटीवाला; कट्टाढक । पु० मछली; कौंटेदार पेड़; खैर, बंस, बेर या गोखरूका पौधा ।

कंठबाँस-पु० एक तरहका अधिक कौंटीवाला बंस ।

कंठर-पु० शीशेकी सुराही जो शराब, गुलाबजल आदि रखनेके काम आती है ।

कंठल-पु० [सं०] बबूल ।

कंठाइन-स्त्री० चुईस; भूतनी; लबाकी स्त्री ।

कंठाप-पु० भारी सिरा ।

कंठाप-स्त्री० एक कंठीला पेड़ ।

कंठा-पु० दे० 'कठाड़' ।

कंठा-पु० [सं०] भटकटैया; कौंटेदार बंस; बबूल; हडती ।

कंठाह्व-पु० [सं०] पञ्चकंद ।

कंठिया-स्त्री० छोटी क्रीडा; मछली फँसानेकी कंठी; अंकुसीके आकारकी चीज जिसमें कोई चीज फँसायी जाय; शयनीकी नीजस्थित छोटी फलियाँ ।

कंठियारी-स्त्री० दे० 'बनदरे' ।

कंठी (टिप्प)-वि० [सं०] कौंटेदार । पु० अपामार्ग; गोखरू;

खदिर ।

कंठीला-वि० कौंटेदार ।

कंठनमेंद-स्त्री० [अ० 'कैन्थनमेंट'] छावनी ।

कंठिरी-स्त्री० भटकटैया ।

कंठेला-पु० कठकेला ।

कंठीप-पु० दे० 'कनदीप' ।

कंठैषट-पु० [अ०] ठेका; निवत मूल्यपर कोई माल देने, निवत उन्नतपर कोई काम करनेका मुआहिदा ।

कंठैषट-पु० [अ०] कंठैषट करनेवाला; ठेकेपर सबक, मकान आदि बनानेका काम करनेवाला, ठेकेदार ।

कंठील-पु० [अ०] निर्वन्धन ।

कंठ-वि० कंठस्थ, याद, बरजवान । पु० [सं०] गला, हलक; स्वर, आवाज; घड़े आदिका गला; तोते आदिके गलेपरकी रगीन हुआकार लकीर; कोण; किनारा ।-कुम्भ-पु० एक तरहका सज्जिपात ।-कृणिका-स्त्री० गीणा ।-जस-वि० गलेमें आवा, जटका हुआ ।-सकासिका-स्त्री० घोड़ेके गलेमें बाली जानेवाली चमड़ेकी पट्टी ।-साकल्य-वि० जिसका उच्चारण कठ और ताल दोनोसे हो ('ए', 'ऐ'-ज्या०) ।-प्राण-पु० बुद्धमें गलेकी रखाके किय पड़नी जानेवाली लीहेंकी एक प्रकारकी जाली (को०) ।

-नीलक-पु० मशाल; लुक ।-शणि-पु० गलेमें पहननेका मणि; म्रिय वस्तु; घोड़ेको गरदनकी भेंबरी ।-माहा-स्त्री० गलेका एक रोग जिसमें लगातार बहुतन फोड़े निकलते हैं ।-मालुक-पु० गलेके भीतरका ऊर्ध्व ।-खुंही-स्त्री० गलप्रक्षिका शोथ ।-शूल-पु० घोड़ेके गलेकी भेंबरी ।-शोष-पु० गलेका सूखना; बेकारकी बकवास ।

-श्री-स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना ।-संगीत-पु० गाना ।-सिरी-स्त्री० कंठश्री ।-स्व-वि० कंठमें स्थित; कंठागत; जवानी याद ।-हार-पु० हार । मु०

-खुलना-आवाज निकलना ।-कूटना-आवाज निकलना; जवानी आनेपर आवाजका बदलना ।-बैठना-गला बैठना; बैसुर होना ।-होना-जवानी याद होना ।

कंठला-पु० दे० 'कठला' ।

कंठहरिया-स्त्री० कंठी ।

कंठा-पु० बड़े मनकोंकी माला जो गलेसे सटी होती है; तोते आदिके गलेकी रगीन रेखा; कुरतेका गलेपर रहनेवाला अर्द्धचन्द्राकार भाग ।

कंठाग्र-वि० [सं०] कंठस्थ, बरजवान ।

कंठा-पु० [सं०] नाव; कुदाल; पटेला; बुद्ध; ऊँट; एक भक्ष्य मूल, ओल; पैला; मंथनपात्र ।

कंठिका-स्त्री० [सं०] एक लकीका हार ।

कंठी-स्त्री० [सं०] कंठ; घोड़ेके गलेकी रस्ती; छोटे मनकोंका कठा; [हिं०] तुलसीके छोटे दानोंकी छोटी माला जो वैष्णवत्वका प्रथम चिह्न है ।-धारी,-बद्ध-वि० [हिं०] जो कंठी पहने हो ।-रच-पु० सिंहा; मस्त हाथी; कद्दतर; स्पष्ट कथन, लुके शब्दोंमें कह देना । मु०

-खुना-कंठीकी शपथ खाना ।-सोबदा-वैष्णवत्वका त्याग कर फिर मांस-मछली खाने लगना ।-बाँधना,-लेना-वैष्णव सम्प्रदायकी दीक्षा लेना ।

कंठी(टिप्प)-वि० [सं०] शीवा-संघी ।

कंठील-पु० [सं०] कंठ; मंथनपात्र ।
 कंठीला-खी० [सं०] मंथनपात्र ।
 कंठकाल-पु० [सं०] शिव ।
 कंठोष्ण, कंठोष्ण-वि० [सं०] जिसका उच्चारण कंठ और ओठ दोनोंसे हो ('ओ', 'औ'-व्या०) ।
 कंठ्य-वि० [सं०] कंठसंबंधी; कंठके लिए उपयुक्त या हितकर; कंठसे उच्चारित । -वर्ण-पु० वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठसे होता है (अ-आ, क, ख, ग, घ, ङ और विसर्ग) ।
 कंठन-पु० [सं०] कूटना, छोटना ।
 कंठनी-खी० [सं०] ओसली; मुसल ।
 कंठरा-खी० [सं०] मोटी नस, महालाया, महानाडी ।
 कंठा-पु० वह गोबर जो यों ही पका-पका सूख गया हो, बिना पात्रा उपला; सूखामल; सरकंठा । सु०-होना-मर जाना; रेंड जाना ।
 कंठानक-पु० [सं०] शिवका एक अनुचर ।
 कंठाल-पु० मोले मुँहका गहरा लोहे-नीचे आदिका बरतन जो पानी रखनेके काम आता है; नरसिंहा; जुलाहोंका एक औजार ।
 कंठिझ-खी० [सं०] छोटा खंड; वैदिक ऋचाओंका छोटा समूह; पैरा; अनुच्छेद ।
 कंठी-खी० छोटा कंठा; सूला मल, गोदा ।
 कंठील-खी० दे० 'कंठील' ।
 कंठीलिखा-खी० प्रकाश-स्तम्भ; कंठील आदि लटकानेका बीस ।
 कंठ, कंठ-खी० [सं०] छात्र, खारिज । -ज-पु० सफेद सरसों ।
 कंठक-पु० थिलानों; तमाल ।
 कंठुर-वि० [सं०] सुजली पैदा करनेवाला । पु० एक तरहका सरकंठा ।
 कंठुबा-पु० बालवाले अर्धोंका एक रोग ।
 कंठुति-खी० [सं०] दे० 'कंठ्या' ।
 कंठुधन-वि० [सं०] सुजली पैदा करनेवाला । पु० सुजलाने या सहलानेकी क्रिया ।
 कंठुधनक-वि० [सं०] सुजली पैदा करनेवाला ।
 कंठुषा-खी० [सं०] सुजली ।
 कंठुरा-खी० [सं०] केवौंच ।
 कंठुल-वि० [सं०] छात्र पैदा करनेवाला । पु० एक खाद्य कंद, ओल ।
 कंठेरा-पु० एक जाति जो रुई धुनती है, धुनिया ।
 कंठोल-पु० [सं०] अनाज रखनेका बीस या बीसका टोकरा; दौरा; मंवार; कंठ । -बीणा-खी० बाडाल बीणा; कमरी ।
 कंठोलक-पु० [सं०] टोकरा; मंवार-पर ।
 कंठोच-पु० [सं०] शुक्रकीट, एक तरहका फनगा ।
 कंठौर-पु० अन्नका एक रोग ।
 कंठौरा-पु० कंठे रखनेकी बगइ; कंठोंका डेर ।
 कंठ-वि० [सं०] प्रसन्न । * पु० पति; प्यारा; ईश्वर ।
 कंठारि-पु० कातार, वन ।
 कंठार-पु० कातार, वन, जंगल ।
 कंठु-वि० [सं०] प्रसन्न । पु० कामदेव; हृदय; अन्नभांवार ।

कंठ-पु० दे० 'कंठ' ।
 कंठा-खी० [सं०] शुद्धी; कपरी; दीवार; नगर । -धारी- (वि०)-पु० योगी ।
 कंठारी-खी० कपरी ।
 कंठारी-खी० [सं०] एक वृक्ष ।
 कंठी (वि०)-वि० [सं०] शुद्धी धारण करनेवाला । पु० साधु, फकीर ।
 कंठ-पु० [सं०] गौंठदार या गूदेदार जक, ओल, सरन; बादल; लहसुन; कपूर; यौनिका एक रोग; गौंठ; शोध; एक वर्णवृत्त । -शुद्धी-खी० एक तरहकी शुद्धी; पिहाऊ, बहुच्छिन्ना । -मूल-पु० एक पौधा जिसकी जड़ मूल या उबालकर खायी जाती है; मूली । -वर्धन, -सूरण-पु० ओल । -सार-पु० मंदनकानन ।
 कंठ-पु० [अ०] सफेद शकर; मिछी ।
 कंठक-पु० [सं०] पालकी ।
 कंठुर-पु० [सं०] गुफा; अंकुश; सौंठ; * मूल; कंभर, बादल ।
 कंठरा, कंठरी-खी० [सं०] गुफा; वाटी ।
 कंठराकर-पु० [सं०] पहाड़ ।
 कंठरिया-खी० जड़, मूल ।
 कंठर्ष-पु० [सं०] कामदेव; प्रणय; एक ताल (मंगीत) । -रूप-पु० योगी । -उत्तर-पु० कामज्वर । -वहन, -मथन-पु० शिव । -सुषल, -सुसल-पु० मेहन, पुरुष-दिव । -मूल-पु० एक रतिबंध ।
 कंठल-पु० [सं०] कपाल; नया अंशुआ; सीना; युद्ध; वाद-विवाद; अपवाद; कलध्वनि; एक तरहका केला ।
 कंठला-पु० तार खींचनेमें व्यवहृत चाँदीकी गुली; पासा; सीने-चाँदीका तार; एक तरहका कचमार । -कचहरी-खी० तारकशीका कारखाना । -कश-पु० तारकशीका काम करनेवाला ।
 कंठली-खी० [सं०] केला; कमलका बीज; एक पौधा । -कुसुम-पु० कुकुरमुत्ता; केलेका फल ।
 कंठा-पु० शकरकंद; अरहर ।
 कंठाल-पु० वनकंद ।
 कंठिरी-खी० [सं०] लज्जालू ।
 कंठी (वि०)-पु० [सं०] धन ।
 कंठील-खी० [अ०] कागज, मिट्टी या अवरकका लैप जिसमें दिया जलाकर लटकाते हैं । -खी-पु० मस्जिदमें विग्या जलानेवाला व्यक्ति ।
 कंठु-पु० [सं०] भट्ठा; भाङ । -पक-वि० भाङमें घूना हुआ ।
 कंठुक-पु० [सं०] गेंद; गलतकिया; सुपारी; एक वर्णवृत्त । -कीड़ा-खी० गेंद उछालने आदिका खेल । -तीर्थ-पु० ब्रजमंदलका वह स्थान जहाँ कृष्णने कंठुकलीला की थी ।
 कंठ-पु० कीचड़-अग्नि जु लगनी नीरमें कंठु जलिया हारि-साखी ।
 कंठरी-खी० कुँदल ।
 कंठला-वि० कंदला; मिट्टी-कीचड़वाला ।
 कंठोट-पु० [सं०] शेत पथ; नीलोत्पल ।

कंघोल-पु० [सं०] शेत पथ ।
 कंघीरा-पु० करपनी ।
 कंघप*—पु० कंरप, कामदेव ।
 कंघ-पु० [सं०] बादल; मोथा; *तनेका ऊपरी भाग; कंघा ।
 कंघनी-खी० करपनी, मेखला ।
 कंघर-पु० [सं०] गरदन; बादल; मोथा; एक शाक ।
 कंघरा-खी० [सं०] गरदन । -बघ-पु० गरदन काटनेका दंड (कौ०) ।
 कंघा-पु० शरीरका गरदन और बाइमूलेकी बीचका भाग, स्कंध, शाना; मोड़ा रेल या भैंसेकी गरदनके ऊपरका भाग जिसपर जुआ रखा जाता है । मु०-डाख देना-कल्ला कंधेपर जुआ न लेना; हिम्मत हराना; (कोई) शोक, जिम्मेदारी उठानेसे भागना ।-देना-अरबी डोनेमें बन्हा लहाना; शामिल होना; मदद देना । -बदलना-पालकी, कौबर आदि एकमे दूसरे कंधेपर लेना; पालकीके धके हुए कहराको छुड़ानेके लिए किसी साथीका कंधा लगाना ।-लगाना-जुएकी राखसे कंधेमें घाव हो जाना ।
 -(धे)से कंधा छिलना-आरी भीव होना ।
 कंधार-पु० अफगानिस्तानका एक नगर और प्रदेश, गांधार; * दे० 'कंधार' ।
 कंधारी-वि० कंधारका; कंधारमें उपजा हुआ । पु० कंधार देशका घोड़ा ।
 कंधावर-खी० छोटा दुपट्टा जो कंधेपर बांध लिया जाता है; जूएका वह भाग जो बैलके कंधेपर रहता है; तासेकी वह रस्सी जिसके सहारे उसे गलेमें लटकाकर बजाते हैं ।
 कंधि-खी० [मं०] गरदन । पु० समुद्र ।
 कंधेला-पु० मीठीका कंधेपर डाला हुआ छोर ।
 कंधेली-खी० घोड़ेका एक साज; घोड़े या बैलकी पीठपर रगड़ने बचानेके लिए रखी जानेवाली गद्दी ।
 कंधैया-पु० दे० 'कन्हैया' ।
 कंध-प० [मं०] झिलना; कोंपना; एक सात्विक भाव; स्तंभ-के नीचे या ऊपरकी कंगनी । -ऊवर-पु० जूही-बुखार ।
 कंध-पु० [अ० 'कंध'] डेरा, पड़ाव ।
 कंधकैपी-खी० कोंपना; कंध ।
 कंधति-पु० [सं०] समुद्र ।
 कंधन-पु० [सं०] कोंपना; कंधकैपी; शिश्तिर कतु ।
 कंधा-अ० कि० कोंपना, झिलना; डरना ।
 कंधनी-खी० [अ०] सलुक धनसे व्यापार करनेवाले व्यक्तियोंका समूह; जत्था; सेनाका एक विभाग ।
 कंधा-पु० बौंसकी तीलियोंमें लासा लगाकर बनाया हुआ एक तरहका फंदा जिससे बहेलिये चिड़ियोंको फंसाते हैं ।
 खी० [सं०] कपस; मय ।
 कंधाउंहर-पु० [अ०] डाक्टरका वह सहायक जो बवाएँ मिलानेका काम करता है ।
 कंधाउंहररी-खी० कंधाउंहरका कार्य या पेशा ।
 कंधाक-पु० [सं०] बघा ।
 कंधागा-सं० कि० किसीकी कोंपनेमें प्रवृत्त करना; झिलाना; डराना ।
 कंधाबमाव-वि० [सं०] कोंपता हुआ ।
 कंधास-खी० [अ०] दिव्यशक्त ब्रज, कुसुबनुमा; परकार ।

मु०-लगाना-पैसाश करना; घातमें रहना ।
 कंधिल-वि० [सं०] कोंपता, झिलता हुआ; कंधाया, झिलावा हुआ ।
 कंधिल-पु० [सं०] रोचनी ।
 कंधिल-पु० [सं०] दे० 'कांधिल' ।
 कंधू-पु० [अ० 'कंध'] कौनकी छावनी, पड़ाव; खेमा; फौज ।
 कंधोल-पु० [अ०] छापनेके लिए टाइपके अक्षरोंकी जोड़ना; रचना करना ।
 कंधोजिग-खी० [अ०] कंधोज करनेका काम; कंधोजकी उजरत । -डिठक-खी० टाइप बैठानेकी छोटी पट्टी ।
 कंधोजिटर-पु० [अ०] टाइप बैठानेवाला ।
 कंधोजिटररी-खी० कंधोजिटरका धंधा ।
 कंधोटरी-पु० कपाउंहर, मलहम-पट्टी करनेवाला या दवा तैयार कर देनेवाला डाक्टरका सहायक ।
 कंध-वि० [सं०] झिलता हुआ; कोंपता हुआ; चंचल; तेज ।
 कंधल-वि० दे० 'कमल' ।
 कंधर-वि० [सं०] कई बणोंका । पु० चित्र बर्ण; * दे० 'कल' ।
 कंधल-पु० [मं०] कमल; गांव-बैलके गलेमें नीचे लटकनेवाली खाल, सामना; जल; एक तरहका हिरन; दीवार; पानी; एक छोटा कौआ ।
 कंधलक-पु० [सं०] कनी वस्त्र, कंधल ।
 कंधलिका-खी० [सं०] कमली; एक तरहकी हिरनी ।
 कंधली(लिङ्ग)-वि० [सं०] कंधलवाला; कंधलसे ढका हुआ । पु० बैल ।
 कंधिका-खी० [सं०] एक प्राचीन राजा ।
 कंधी-खी० [सं०] करछी; बौंसका भेंखुआ या गोंठ ।
 कंधू-पु० [सं०] शंख; गला; हाथी; चित्र बर्ण; कंगन; नली (अस्त्रीकी) । वि० कई बणोंका । -कंठी-वि०, खी० शंख जैसी गरदनवाली (खी०) । -काट्टा-खी० अश्ववाधा ।
 -ग्रीव-वि० शंख जैसी सुराहीदार गरदनवाला ।
 -ग्रीवा-खी० शंख जैसी सुराहीदार गरदन । -पुष्पी, -मालिनी-खी० शंखपुष्पी ।
 कंधुक-पु० [सं०] शंख; अधम व्यक्ति ।
 कंधुका-खी० [सं०] अधगंधा; ग्रीवा ।
 कंधू-वि० [मं०] चोरी करनेवाला । पु० (?) चोरा कंगन ।
 कंधोज-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद जो अब अफगानिस्तानका भाग है; शाख; एक तरहका हाथी ।
 कंधारी-खी० [सं०] दे० 'धंधारी' ।
 कंधू-पु० [सं०] खस, उशीर ।
 कंधोव*—पु० कुमुद ।
 कंधल-पु० दे० 'कमल' । -ककड़ी-खी० मसीँह ।
 -गड्ड-पु० कमलका बीज । -बाव-पु० दे० 'कमल-बाव' ।
 कंधासारी-पु० मातीका लकड़ा ।
 कंध-पु० [सं०] कौंसा; एक माघ कटोरा; सुराही; शौंश; कौंसिका बरतन; उम्रतेनका कण्डा जिसे कुण्ठने मारा था । कुण्ठकी माता देवकी हसीकी बहिन थी । -शाक-पु० शौंश । -निबूदन, -बाबु-पु० कुण्ठ । -बाव-पु०

कौंसाक बरतनः एक माप, आढक ।
कंसक-पु० [सं०] कौंसा; कौंसाका पात्र; कसौस ।
कंसकहोरना-ली० मारना-पीटना; बसीटना-‘दारी, होंटा पकवकर कंसकहोरन करूंगी बहुत मुँह चलाया तो’-अमर० ।
कंसरटीना-पु० [अं०] एक तरहकी अंगरेजी भाजा ।
कंसरवेडिब-वि० [अं०] वर्तमान व्यवस्था बदलने, नवीनता या सुधार आदिका विरोधी । पु० कंसरवेडिब दलका सदस्य; ऐसे विचारका आदमी । -**पार्टी**-ली० ब्रिटेनका एक राजनीतिक दल जो वर्णमान या पुरानी व्यवस्थाको सवासंभव बनाये रखना चाहता है ।
कँस-कौंसाका समासात् विकृत रूप । -**कुट**-पु० दे० ‘कसकुट’ । -**हँस**-पु० कौंसेके बरतनोंके डुकने । -**हँसा**-पु०, -**हँसी**-ली० देग या बटलोहीके डगका एक बरतन ।
कंसर्ट-पु० [अं०] कई बाजोंका समूह या उनका एक साथ बजना; गाने या बजानेवालोंके स्वरका मेल ।
कंसवती-ली० [मं०] कंसकी बहिन ।
कंसारासि, **कंसारि**-पु० [सं०] कृष्ण ।
कंसिक-वि० [सं०] काँसाका बना हुआ ।
कंसीब-वि० [मं०] कदोरेके लावक या उसमें संवंध रखनेवाला । पु० कौंसा ।
कँसुका-पु० कौंसाका एक चौकोर डुकड़ा जिसपर सोनार खीरिया बनाते हैं ।
कँसुकी-ली० छोटा कँसुका ।
कँसुका-पु० ईलके नये पौधेमें लगनेवाला एक कीड़ा ।
कंसोज़बा-ली० [सं०] एक तरहकी सुसुन्दार सफेद मिट्टी ।
क-पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु; कामदेव; सूर्य; अग्नि; वायु; धर्म; प्रजापति; राजा; मेघ; बाल; गौंड; आत्मा; मन; शरीर; शब्द; मोर; पक्षिराज गवक; धन; सोना; प्रकाश; सुख, आनंद; पानी; मस्तक । -**ब**-वि० सुखर; जल देनेवाला । पु० बादल ।
कहू, **कहनी**-ली० बाँसकी पतली, लची टहननी; टहननी ।
कहूँ-वि० एकाधिक, कुछ, चंद ।
ककंद-पु० [मं०] सोना ।
ककर्हू-ली० कवी ।
ककबालीगी-ली० दे० ‘काकबालीगी’ ।
ककबी-ली० गरमी और बरसातमें भी होनेवाली एक बेल जिसका फल खोरेने मिलते-जुलते आकारका होता है ।
मु० -का चौर-छोटा अपराध करनेवाला । -**के चौरको कठारीसे मारना**-छोटे अपराधके लिए भारी सजा देना ।
-खीरा करना-तुच्छ समझना ।
ककनारी-पु० दे० ‘कंगन’ ।
ककनी-ली० दे० ‘कंगनी’; दानेदार चक्कर; कंगनीके आकारकी एक मिठाई ।
ककनू-पु० एक पक्षी जिसके संवंधमें यह प्रमिद्धि है कि जब यह गाता है तब इसकी चोंचके छिद्रोंमेंसे आग निकलने लगती है और यह उसीमें जल मरता है ।
ककमारी-ली० एक प्रकारकी लता ।
ककराखी-ली० दे० ‘कँखीरी’ ।

ककरी-ली० दे० ‘ककरी’ ।
ककरेजा-पु० दे० ‘काकरेजा’ ।
ककरेजी-वि०, पु० दे० ‘काकरेजी’ ।
ककरील-पु० खेसता ।
ककसी-ली० एक तरहकी मछली ।
ककहरा-पु० ‘कसे’ हतक अक्षर, वर्णमाला; किसी विषयकी आरंभिक मोटी-मोटी बातें, अल्प-वे; एक तरहकी कविता जिसके चरण अक्षरोंके क्रमसे आरंभ होते हैं ।
ककहरी-ली० एक तरहकी कपास; चौबगला; दे० ‘कंधी’ ।
ककटिका-ली० [सं०] सिरका पीछेका एक भाग ।
ककार-पु० [सं०] ‘क’ अक्षर या उसकी ध्वनि ।
ककुंजल-पु० [सं०] चातक ।
ककुंदर-पु० [मं०] जघन-कूप ।
ककुल-पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशका एक राजा ।
ककुद, **ककुद**-पु० [सं०] चौटी, पर्वत-शिखर; बैल या साँझके कंधेपरका डिहा; सींग; राजचिह्न ।
ककुमान्(**मत्**)-वि० [सं०] चौटी या हिलेवाला । पु० बैल; पर्वत; क्रमम नामकी ओषधि ।
ककुधरी(**मिन्**)-वि० [मं०] चौटी या हिलेवाला । पु० वह बैल जिसके कंधेपर डिहा या कूच ही; पर्वत; विष्णु; रैवतक नामका राजा जिसकी कन्या रेवनीका व्याह बल-रामने हुआ था ।
ककुनी-ली० दे० ‘कंगनी’ ।
ककुप, **ककुम्**-ली० [मं०] दिशा; प्रवेणी; शोभा; चपक-माला; शास्त्र; चौटी; मौस; दहकी एक कन्या; रागिनी ।
ककुम्-पु० [मं०] बीणाके अंतका सुधा हुआ भाग (?) , अनुंजका पेड़; कुटज पुष्प; एक राग; एक दैत्यराज ।
ककुमा-ली० [सं०] दिशा; एक रागिनी ।
ककुना-पु० रेशमके कीड़ेका कोया ।
ककेवा, **ककोवा**-पु० खेखना नामकी तरकारी ।
ककेरुक-पु० [मं०] उदर-कुम्भ ।
ककैवा-वि० कपोके आकारकी (ईंट) । ली० लखौरिया ईंट ।
ककरोरना-सं० कि० खरोंचना; मोड़ना, सिफोड़ना (बुदेल०) ।
ककोरा-पु० दे० ‘ककेवा’ ।
ककब-पु० घुरनीका चूरा मिला और मेककर बनाया हुआ घुरमुरा तमाकू ।
कका-पु० कैकय देश; मिख; दे० ‘काका’ ।
ककनी-ली० एक प्रकारका छोटा पेड़ ।
कककुल-पु० [मं०] बकुल वृक्ष ।
ककल-पु०, **ककली**-ली० [मं०] एक फलदार वृक्ष ।
ककखट-वि० [सं०] कठिन; हंसनेवाला ।
ककखटी-ली० [सं०] खड़िया ।
कका-पु० [सं०] कौंसा; कछीटा; कमरा; कछार; सुखी बास; लना; सुखा जंगल; जगलका भीतरी भाग, राजका अंग-पुर, रनिवास; बगल; बाजू; मेनाका दाहिना-बायाँ बाजू; बदल जमीन; कटिबंध; नावका एक हिस्सा; प्रहस्य; छिपनेका स्थान; चहारदीवारी; अंचल, थोटी आदिका छोर, मैसा; काटक; पाप; तारा । -**ब**-पु० कच्छप; कुपेरीकी एक मिषि । -**घाव**; -**शाव**-पु० कुसा ।

कक्षा-**की०** [सं०] परिधि, शायरा; दरवा; प्रहोका जमण-पथ; कौल; कौलका फोडा; कछोटा; एक रणोकी लोह; कमर; कमरपट्टी; च्छदयीदारी; अँगण; अंतपुर; समता; आपत्ति; दोष; शकटका एक विशेष माग; पल्ला। -**पट**-**पु०** कछोटा, लोण; कटिबल, कौपीन।

कक्षवेष्टक-**पु०** [सं०] अंतपुरका निरीक्षक; उद्यानपाल; हाराका; लंघन; विषका; अभिनेता।

कक्षीवायू(**वयू**)-**पु०** [सं०] एक वैदिक ऋषि।

कक्षोष्ण-**खी०** [सं०] गरम, नागरमोवा।

कक्ष्या-**खी०** [सं०] घोड़े आदिकी पैटी, कटिबंध; उँगली; उपरना; होश; अचल; अंतपुर; घेरा, दीवार; रणो; गुंवही; उद्योग।

कक्ष्याखी-**खी०** दे० 'कक्षराखी'।

कक्षौरी-**खी०** दे० 'कक्षौरी'।

कक्षर-**पु०** कगार; बारी; मैत्र; कारनिस। * **अ०** किनारेपर; निकट; अलग।

कक्षरी-**खी०** दे० 'कगार'।

कक्षरे-**अ०** किनारे, अलग।

कगार-**पु०** ऊँचा किनारा; नदीका करारा; टीला।

कगिरी-**पु०** एक पेड़ जिसके दूधसे रबर बनता है।

कगग-**पु०** काग, काक, कौआ।

कगगद-**पु०** कागद, कागज; पत्र, बिट्टी।

ककुली-**खी०** कागज बनानेके काम आनेवाली एक प्रकारकी हामी।

कचंगल-**पु०** [मं०] समुद्र।

कच-**पु०** [सं०] सिरके बाल, केश; सूखा फोडा या पाव; वष; मेघ; बृहस्पतिक एक पुत्र। -**प**-**पु०** लुण; पत्र। -**माल**-**पु०** पुत्र।

कच-**पु०** दौन, फाँटे आदिके किसी नरम चीजमें तेजीसे धनने या कुचने जानेकी आवाज ('कच'से जुम गया)। वि० 'कचा'का समासमें व्यवहृत रूप। -**विला**-**वि०** कचे दिल्का। -**पँदिया**-**वि०** कची पंदीका; जिसकी बातका भरोसा न हो, डुलमुल। -**छोँदा**-**पु०** छोई। -**छोहा**-**पु०**, -**छोही**-**खी०** कचा छोहा। -**छोहू**-**पु०** पछा।

कचका-**खी०** कुचल जाने, दब जानेकी चोट।

कचकच-**खी०** दे० 'किचकिच'।

कचकचाना-**अ०** कि० कचकचकी आवाज होना; दौत धँसाना।

कचकड़, **कचकड़ा**-**पु०** कछुएका खोपड़ा।

कचकना-**अ०** कि० दबना; ठेस लगना।

कचकाना-**सं०** कि० दबाकर तोड़ना; दबाना; धँसाना।

कचकेल-**पु०** केलेका एक भेद।

कचकोछ-**पु०** दे० 'कचकोल'।

कचका-**पु०** दे० 'कचका'।

कचनार-**पु०** एक पेड़ जिसकी कली तरकारी और छाल तथा फूल दवाके काम आते हैं, काँचनार।

कचपच-**खी०** घोड़ी अगहमें बहुतसी नीयोंका जमा हो जाना, मिचपिच; कचकच।

कचपचिवा, **कचपची**-**खी०** आकाशमें पूर्वकी ओर दिखाई

देनेवाला छोटे तारोंका एक समूह; कृपिका नक्षत्र; चमकीला बुदा, सितारा।

कचपची-**खी०** चमकदार बुदा, सितारा।

कचरई **अनीवा**-**पु०** एक तरहका रंग जो हरापन लिये बाढानी होता है।

कचर-कचर-**खी०** कचा फल खानेका शब्द; कचकच।

कचरकूट-**पु०** कसकर पीट देना, पूरी भरमस्तकी ढटकर जोड़न करना।

कचरवान-**पु०** कचपच; कीचड़; मार-पीट; कचवे-चचवे; बहुतसी वस्तुओंके एकत्र होनेके कारण गड़बड़ी होना।

कचरवा-**सं०** कि० कुचलना, रौंदना; मूच खाना।

कचर-पचर-**पु०** मिचपिच; किचकिच।

कचरा-**पु०** कूड़ा-करकड़; रईका पीनोला, मैल आदि कुचरा; दाहका बेकार अंश; खरबूजा; कचनी; समुद्री सेवार।

कचरी-**खी०** एक लता जिसका फल तरकारीके काम आता है, पकुंदा; पकुंटेके मुखाये हुए गोल टुकड़े। मूखी कचरीकी तरकारी; छिलकेदार दाह। † वीमें तले हुए आलू आदिके कतरे जिनमें मिर्च और नमक लगा हो; † हरे और पुष्ट दानोंमें युक्त चनेका पीसा।

कचलोच-**पु०** एक प्रकारका नमक।

कचबोसी-**खी०** सेत नापनेका एक मान, बिस्वासीका बीसवाँ भाग।

कचहरी-**खी०** इजलास; अदालत; दरबार; दफ्तर; जमा।

कचा-**खी०** [सं०] हथिनी; घोडा।

कचाई-**खी०** कचापन; अनुभवहीनता; दोष; दुष्टि; खामी।

कचाकु-**वि०** [सं०] दुष्ट, कुटिल; असह्य; दुष्प्राप्य। **पु०** सपे।

कचाटुर-**पु०** [सं०] वनमुर्गा।

कचाना-**अ०** कि० कचिपाना, आगा-पीछा करना।

कचाचँच-**खी०** कचेपनकी गध।

कचावन-**खी०** कचाई-भ्रमण, किचकिच।

कचार-**पु०** नदीके किनारेका छिछला और जमा हुआ जल।

कचारना-**सं०** कि० पछाड़ना, पीचना।

कचाल-**पु०** उबाले आलू आदिके टुकड़े जिनपर नमक, मिर्च, खटारी आदि छिड़की हो; बडा, अमरूद आदिके टुकड़े जिनमें नमक-मिर्च मिलायी होती है। **मु०**-**करना** या **बनाना**-**खुब** पीटना।

कचिया-**पु०** कौचसे बनाया जानेवाला एक प्रकारका नमक।

कचीची-**खी०** कचपचिया; जबर्दस्ती जोर; दाद। **मु०**-**चँचवा**-दाँत बैठना। -**छेवा**-मरनेके समय दौत पीसना।

कचु-**खी०** (?) [सं०] एक खाद्य वद, घुघरी; बडा।

कचुल्ला-**पु०** बोरी पंदीका कटोरा, प्याला।

कचुमर-**पु०** कुचली हुई चीज, भर्ता। **मु०**-**करना**-**मिचालना**-भर्ता बना देना, पीटकर बेदम कर देना; लापरवाहीसे बरतकर चीजको नष्ट कर देना।

कचूर-**पु०** हल्दीकी जातिका एक पीसा जो दवाके काम आता है; * कटोरा।

कचेल-**पु०** [सं०] ग्रंथके पत्रोंको एक साथ बाँधनेकी डोरी या कपडेकेका कागज।

कचोका-पु० कोरै नोकदार चीज बुमाने-बसानेकी क्रिया ।
कचोटना-अ० कि० बुमाना; गबाना; किसी शिथ जगकी
बाद कर दुःखी होना ।

कचोना-स० कि० बुमाना, गबाना ।

कचोर-पु० कटोरा ।

कचोरी-क० कटोरी ।

कचोरी, **कचोरी**-क० उरव या किसी और चीजकी पीठी
भरकर बनायी हुई पूरी; समोसेका मसाला भरकर बनायी
हुई छोटी टिकिया ।

कचट-पु० [म०] जगदीश पौधा ।

कचर-वि० [सं०] बुरा; बंदा; दुष्ट, कमीना । पु० मट्ठा,
छाँछ ।

कचा-वि० अनपका, अपक; हरा (फल); औंछमें न
तपाया हुआ (कचा पचा); अपकचरा; जिसके पकनेमें
कसर हो (बावल अभी कुछ कचे हैं); अस्मकृत, साफ न
हिया हुआ; मिट्टीका बना; प्रामाणिक तौल-मापसे कम
(कचा सेर, कचा बीघा); जो पके रूपमें न हो; जिसमें
काट-छाँट, रद-बदल हो सके (कचा मसोदा); जो निय-
मित रूपमें, बाकायदा न हो (कचा रसीद); अधिक दिन
न टिकनेवाला (कचा रंग); पूरी शक्ती न पहुँचा हुआ;
अपरिपक्व, अनुभवहीन; जिसमें पैरै, धृति न हो, कम-
जोर, वैधिम्यत; अपट्ट, अनाधी; अनभ्यस्त; नकली
(गोदा) । [क० 'कची'] । पु० खाका; कची सिलाई;
मसोदा; खरा; कनपटी । -**असामी**-पु० वह असामी
जिसे खेतपर कोई खाकी अधिकार न हो, शिकमी असामी;
जो बातका पनी, केन देनेमें खरा न हो । -**कनाङ्ग**-पु०
तेल आदि छाननेका कागज; वह दस्तावेज जिसकी रजि-
स्ट्री न हुई हो । -**काम**-पु० कचे गोटे, कलावत् आदि-
का काम । -**कोर**-पु० लुब्धता; गरमीकी बीमारी ।
-**गोदा**-पु० झूठा गोदा । -**बङ्गा**-पु० न पका हुआ
पचा; सीलनेकी उन्नका, संस्कार ग्रहण करने योग्य व्यक्ति
(बालक आदि) । -**चिट्ठा**-पु० पूरा विवरण, सच्चा
हाल, कथा; किसीकी श्रुत या गोपनीय बातें (खोलना,
छानना) । -**चूना**-पु० बिना बुझाया हुआ चूना । -**जिन**-
पु० धूलें; हठी, पीछे पड़ जानेवाला आदमी । -**जोब**,
टोँका-पु० रंगिका जोब । -**तागा**-पु० बेंचटा धागा;
कमजोर चीज । -**पक्का**-वि० सिद्धा-अनसिद्धा । -**पैसा**-
पु० स्थान-विशेषमें प्रचलित पैसा-नौरङ्गपुरी, बालासाही
आदि । -**बागा**-पु० देशमका धागा जो बटा न गया हो;
देशमी कपडा जिसमें मीठी न रगो हो । -**माछ**-पु०
वह कस्तु जिसमें (मिलप द्वारा) कोई चीज बनायी जाय
(जैसे कपड़ेके लिए बड़े); कच्चा-बाना; कचा गोदा । -**सोरा**-
पु० नोनी मिट्टी उगलनेसे जमा हुआ झोरा । -**हाथ**-
पु० अनभ्यस्त हाथ । -**हाल**-पु० दे० 'कचा चिट्ठा' ।
-**(की)** असामी-क० चंदरीजा जगह, नीकरी ।
-**कली**-क० मुँहबंदी कली; अग्रज बीकना क० । -
कर्म-क० मुकरमेका फैसला होनेके पहले निकलवायी
जानेवाली कुकी । -**गोटी**, **गोखी**-क० चौतरकी वह
गोटी जिसने आधा या अधिक दास्ता पार न कर लिया हो ।
-**बची**-क० समयका एक मात्र जो २४ मिनटके बराबर

होता है । -**चौखी**-क० चौखी चाँदी । -**चीनी**-क०
राखने झोरा निकालकर बनायी हुई चीनी जो 'अधिक
साफ नहीं होती । -**झाबान**-क० गाली, अपशब्द ।
-**आकब**-क० वह बही जिसमें कबी बिक्री, जाकबपर
गयी हुई चीजका ब्यौरा लिखा जाय । -**नकल**-क०
खानगी तौरपर की हुई सरकारी कागजकी नकल । -**बीई**-
क० वह नौद जो पूरी न हुई हो । -**पक्की**(बाल)-क०
अपशब्द, गाली । -**पेखी**-क० मुकरमेकी पहली पेखी
जिसमें फैसला नहीं होता । -**बही**-क० वह बही
जिसमें कचा हिसाब, याददाश्त आदि लिखी जायें ।
-**मिली**-क० मिश्रित समयके पहलेकी मिली; लैन-देन-
की मिली । -**रसोई**-क० पानीमें पका हुआ भल, पक्की
रसोईका उलटा । -**रोकब**-क० वह बही जिसमें रोजके
आय-व्ययका कचा हिसाब लिखा जाय । -**साकर**-क०
दे० 'कची चीनी' । -**सबक**-क० वह सबक जिसपर
गिट्टियाँ या कंकड़ न कूटे गये हों । -**सिलाई**-क०
बसिया करनेके पहले डाला हुआ रँग का जो पीछे खोल
दिया जाता है, रंगार । -**(बे)बचे**-पु० छोटे बच्चे;
बाल-बच्चे । **मु०**-**करना**-वातिल ठहराना, काट देना;
लजित करना; कची सिलाई करना । -**जाना**-गर्म
गिरना । -**पङ्ना**-गलत ठहरना, मिसरा ठहरना;
सिसियाना, लजित होना । -**बैठना**-हाँस बैठना;
निराहारसे कनपटीका थेंस ताना । -**(बी)** करना-
चोसर, पचासीमें बिपक्षीकी गोटी मारनेके लिए अपनी
लाल या पक्की गोटीकी फिर बाहर निकालना । -**गोटी**-
वा गोली (गोलियरी) खोलना-अनाधी, अनुभवहीन होना;
बेवकूफीमें समय बिताना । -**(बे)** बचे पानी भरना-
कठिन काम करना । -**पक्के** दिन-चार पाँच महीनेका
गर्म; दो ऋतुओंका मधिकाल ।

कचू-क० अरबी, बंडा ।

कच्छ-पु० [सं०] किनारेकी जमीन, कछार; अनूपदेश;
दलदल जमीन; घाँसीकी काछ या लॉग; नौकाका आग-
विशेष; कच्छ देश; एक छत्र; तुलका पेड़ । -**प**-पु०
कछुआ; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे एक; एक तरहका
मयका; तालुमें होनेवाला बतौधी; कुबेरकी निधियोंमेंसे
एक । -**पी**-क० माटा कछुआ; एक तरहकी बीणा;
सरस्वतीकी बीणा; कच्छपिका । -**सोच**-पु० त्रिगंबर
जनोंका एक भेद ।

कच्छटिका-क० [सं०] घाँसीकी लॉग ।

कच्छपिका-क० [सं०] एक छत्र रोग जिसमें पाँच-छ
कुत्रियाँ पास-पास निकलती हैं; कुंभी ।

कच्छ-क० [सं०] झीपूर; बाराही नामक पौधा । पु०
[हिं०] चौबे छोरवाली बड़ी नाव जिसमें दो पतवारें लगती
हैं; कई बड़ी नावोंको मिलाकर बनाया गया बेड़ा । **मु०**-
पाटना-क० कच्छी या बड़ी नावोंको साथ बंधकर
जलसा बगेरबके लिए तस्तीसे पाटना ।

कच्छटिका, **कच्छारी**-क० [सं०] दे० 'कच्छटिका' ।

कच्छर-पु० [सं०] एक प्रदेश, कच्छ ।

कच्छी-वि० कच्छ देशका । पु० कच्छ देशका निवासी; कच्छ
देशका पौधा जिसकी पीठ चीचमें कुछ बहरी होती है ।

कच्छु-श्री० [सं०] सुजलीकी बीमारी, खासत । -श्री-
श्री० पटेल आदि ।

कच्छुमरी-श्री० [सं०] केवॉन आदि पौधे जो सुजली पैदा
करते हैं ।

कच्छुर-वि० [सं०] जिससे सुजलीकी बीमारी हो; कण्ट;
कंगाल ।

कच्छुरा-श्री० [सं०] शकशिबी, डुरालमा आदि पौधे;
पुंल्लो ली ।

कच्छु-पु० दे० 'कच्छुमा' । श्री० [सं०] दे० 'कच्छु' ।

कच्छोटिका-श्री० [सं०] दे० 'कच्छटिका' ।

कच्छोर-पु० [सं०] कचूर ।

कच्छी-श्री० [सं०] दे० 'कच्छ' ।

कछना-पु० दे० 'कछनी' । अ० कि० काछा जाना । * सं०
कि० पहनना, धारण करना ।

कछनी-श्री० पुटनेतककी कसी हुई थोती जिसमें दोनों ओर
लॉग बोधी जाती है; पुटनेके ऊपरकी थोती, छोटी थोती;
पुटनेतक रहनेवाला एक तरहका पोषरा; वह वस्तु जिससे
कोई चीज काछी जाय ।

कछरा-पु० चौड़े मुँहका मटका ।

कछराळी-श्री० दे० 'ककराळी' ।

कछरी-श्री० छोटा कछरा ।

कछवारा-पु० दे० 'कछिवाना' ।

कछवाहा-पु० राजपूतोंकी एक उपजाति ।

कछान-पु० कछनी काछना ।

कछार-पु० नदीके किनारेकी तर और नीची जमीन, वाटी;
ग्रामाम प्रांतका एक जिला ।

कछिवाना-पु० काछियोंकी बस्ती; वह खेत जिसमें तरका-
रियों बोधी जायें; तरकारियोंकी बेती ।

कछु-वि० दे० 'कछु' ।

कछुआ, कछुआ-पु० एक प्रसिद्ध जल-जंतु, कच्छप ।

कछुक-वि० दे० 'कूठ' ।

कछु-पु० कच्छप । वि० कूठ ।

कछोटा-पु०, कछोटी-श्री० कछनी; लीकी कछनीके ढग-
पर पहनी हुई थोती । मु० -झरना-श्रीका कछोटा
बोंधना ।

कछोहा-पु० दे० 'कछार' ।

कच-वि० [का०] टेढ़ा, झुका हुआ, बक्र । पु० दे० (१) ।
-अदा-वि० वैमुतासत; बेवफा । -अजू-वि० जिसकी
मंठें देव, कामन-बैती ही । -ऊहस-वि० लकी समझ-
वाला; नासमझ । -रफ्तार-वि० टेढ़ा चलनेवाला;
कुटिल ।

कचक-पु० [का०] अंकुश ।

कचकाल-पु० [का०] मुसलमान फकीरोंका निवासस्थान जो
दरियाई नारियलका होता है ।

कचनी-श्री० पीतल आदिका बरतन खुरचनेका औजार ।

कचरा-पु० काजल; काली आँखोंवाला बैल । वि० काली
आँखोंवाला; जिसकी आँखोंमें काजल लगा हो । -ई-
कालापन ।

कचरारा-वि० काजल लगा हुआ, अंजनयुक्त; काला ।

कचरी-पु० एक भाषा । † श्री० दे० 'कचली' ।

कचरीटा, कचलीटा-पु० काजल पारनेरखनेकी काँचीदार
विधिया ।

कचरीटी, कचलीटी-श्री० छोटा कचरीटा ।

कचका-पु० स्वाह रंगका एक पक्षी, मटिया । वि० काली
आँखोंवाला; जिसकी आँखोंमें अंजन लगा हो ।

कचकाना-अ० कि० स्वाह पचना; आगका खँवाना । सं०
कि० काजल लगाना ।

कचकी-श्री० कालिख; पारे और गंधककी छुगदी; काली
आँखोंवाली गाय; एक तरहकी बैक; घोरसेका एक रोग;
एक तरहकी मछली; खियोंका एक लोहार जो भारों
बढ़ी लीजकी मनाया जाता है; इस अवसरके छिप मिट्टीमें
गोदकर उगाये गये जोके पौधे, जई; एक तरहका गीत
जो बरसातमें मिर्जापुर आदिमें इस स्थोहारतक गाया
जाता है । -लीज-श्री० भारों बढ़ी लीज ।

कजा-श्री० मॉक, काँजी ।

कजा-श्री० [अ०] ईश्वरीय आदेश; नियति, भाग्य; वस्तु;
कर्तव्य-पालन; निर्णय वा न्याय करना । -ए-कजाही-
श्री० ईश्वरका आदेश, सुदामकी मर्जी । -कार-अ० सबीन-
बरा, अचानक । मु० -कजाना-मौत जाना । -करना,
-होना-नमाज वा दूसरे मजहबी फर्जका नियत समयपर
अदा न होना ।

कजाक-पु० दे० 'कज्जक' ।

कजाकी-श्री० दे० 'कज्जकी'; * छल, धोखेवाजी ।

कजावा-पु० एक तरहकी ऊँटकी काठी ।

कजिया-पु० [अ०] झगडा, टंटा । -काल-वि०, पु०
झगडा लगानेवाला ।

कजी-श्री० [का०] टेढ़ापन, बक्रता; दोष ।

कजल-पु० [सं०] काजल; कालिख; खुरमा; बादल; एक
छंद । -जज-पु० दीया । -रोचक-पु० रोचद,
दीपाधार ।

कजलिख-वि० [सं०] कालिखसे पुता हुआ; आँजा हुआ,
जिसमें काजल लगा हो ।

कजली-श्री० [सं०] एक तरहकी मछली; रोशनाई; पारे
और गंधकके मिश्रणसे बना हुआ एक द्रव्य ।

कज्जाक-पु० [पु०] पशियाई रुसकी एक तुर्क जाति जो
वीरताके लिय प्रसिद्ध है; बाकू, कट-मार करनेवाला ।

कज्जकी-श्री० छुटेरापन, राखनी ।

कटक-पु० [सं०] आम; सोमा; गणेश; शिव, चित्रक वृक्ष ।

कटकटोरी-श्री० [सं०] दाखवन्दी ।

कटब-पु० [सं०] एक सगीत-बाद्य; बाज ।

कटबर-पु० [सं०] कटमी वृक्ष ।

कटबर-श्री० [सं०] नागबला, रोहिणी, सूर्या आदि पौधे ।

कट-पु० [सं०] हाथीका गडल्ल; कटिदेश, भोगि; चटार;
ठंडी; बास, सरपस; शर; अरधी; श्मशान; तस्ता; नवि-
कता; समय; एक स्वाह रंग । वि० अधिक; उग्र । -कट-
वि०, पु० दे० 'क्रममें' । -कुटी-श्री० होपरी । -कोक-
पु० पीकदान । -काक-वि० सर्वमक्षी । पु० स्वाह;
कोमा । -कृतन-पु०, -कृतना-श्री० एक तरहकी
प्रेतात्मा । -साकिनी-श्री० अंगूर आदिकी शराब ।
-कटारा-श्री० चटारका छोटा टुकड़ा; एक पौधा ।

—स्वाङ्ग-पु० निर्वर्त और कटि ।

कट-पु० [अं०] काट, तराश । —बीस-पु० नये कपड़ोंके टुकड़े, वह नया कपड़ा जो मुनाईके समय ही कट गया हो । —झोझ-पु० वह ताजा मांस जो किसी तरह कुछ खराब हो गया हो ।

कटक-पु० [सं०] सीना; सीनेका कटा; सेना; फौज; बहादुरका मध्य भाग; राजधानी; घर; समुद्र; चक्र; हाथोंके वींतर लगावा जानेवाला छला; समुद्र; ज्वन; ज्वार; जमीनकी राजधानी ।

कटकई-—खी० मेना, फौज ।

कटकट-खी० दाँतोंके एक-दूसरेपर लगनेसे होनेवाला शब्द । पु० [सं०] शिव । वि० बहिया, लस ।

कटकटका-—ज० कि० दे० 'कटकटानी' ।

कटकटाना-—अ० कि० दाँत पीसना ।

कटकटिका-खी० एक तरहकी चुकचुक ।

कटकटकाख-पु० मियादी पै ।

कटकई-—खी० कटक, सेना ।

कटकी (किन्)-पु० [सं०] पहाड़ ।

कटखना-वि० काट खानेवाला; विश्विका, कीपी । पु० बुझि; चक्र ।

कट-'काठ'का समासगत और विकृत रूप । —बरा-पु० दे० 'कटभरा' । —ताल-पु० दे० 'करताल' । —देसी-खी० काठ रेतनेका एक औजार । —बाँसी-खी० एक तरहका ठोस बाँस ।

कटजीरा-पु० स्वाङ्गजीरा ।

कटती-खी० बिक्री; खपत; छँटना ।

कटन-पु० [सं०] बकानकी छाजन या छत ।

कटनी-अ० कि० दो टुकड़े होना; टुकड़े होना; विभक्त होना; किसी भारदार चीजका झरोमें बँसना, जख्मी होना; पिसना; मलगा होना; दूर होना; बीतना; क्षय होना; उज्जित होना; काटा जाना; कतरा जाना; झुड़में मरा जाना; मिलना; साथ लगना (मांस कटना); रद्द होना; कारिज होना; मुहरा या मिनहा होना; खाने वा प्यारीके रूपमें विभाजित होना; किसी सत्त्वाका पूर्ण विभाजन या बराबर हिस्सोंमें बँट जाना; गाड़ी आदिसे राहमें मालका नुरा लिया जाना । (कट) कख-वि० नैसङ्गार; नै-ज्गान । पु० कट मरना-कटकर मर जाना; रुक मरना । कटपर नमक छिड़कना-दुखियाको और दुःख देना, कट पाते हुएको कट पहुँचाना ।

कटनास-—पु० नीलकण्ठ ।

कटनि-—खी० काट; आसक्ति ।

कटवी-खी० फलज्झी कटार; काटनेका औजार; आने-सिरछे भागना ।

कटवी-खी० [सं०] एक प्रकारका वृक्ष; ज्योतिष्मती रुता; अपराजिता ।

कटर-खी० एक तरहकी घास [अं०] मोटर-बीट; मोटरबीट-की शकलकी घास । पु० काटनेवाला ।

कटर-पु० छोटा चौकीर बाजार; मैसका नर बघा; * कटार ।

कटरी-खी० नदीके किनारेकी नीची और हलुहलु जमीन;

† धानका एक रोग ।

कटख-पु० कटार ।

कटवाई-वि० जिसमें कटाईका काम हुआ हो । —व्याख-पु० वह चूड़ जो कुछ मूल धन जुकना हो जानेपर शेषपर लगे ।

कटवा-पु० गलेका एक गहना; एक तरहकी छोटी मछली ।

कटवाना-सं० कि० दे० 'कटाना' ।

कटसरैया-खी० एक कौंटेदार पीथा ।

कटहर-पु० दे० 'कटहल' ।

कटहरा-पु० दे० 'कठहरा' । खी० एक तरहकी छोटी मछली ।

कटहल-पु० एक बड़ा फल जो खानेके काम आता है; इसका पेड़ ।

कटहारा-वि० काटनेवाला । पु० महानाशन ।

कटा-—खी० कटाकटी, मारकाट; हत्या; पहार, चोट ।

कटाहक-—वि० काटनेवाला ।

कटार्-खी० काटनेका काम; काटनेकी मजदूरी; भटकटैया ।

कटाङ-—पु० दे० 'कटार' । वि० काटे जाने लायक ।

कटाकट-पु० कटकट शब्द ।

कटाकटी-खी० मारकाट, जून-खराबा ।

कटाकु-पु० [सं०] पक्षी ।

कटाख-पु० [सं०] तिरछी निगाह; आक्षेप, चोट, तनज ।

कटाभि-खी० [सं०] कटकी अभि, घास-फूसकी आग ।

कटाख-—पु० दे० 'कटाख' ।

कटाछनी-खी० मारकाट ।

कटावक-पु० [सं०] शिव ।

कटान-खी० कटने वा काटनेकी क्रिया ।

कटाना-सं० कि० काटनेकी क्रिया दूसरेमें कराना; इस-वाना; गाड़ी आदि बलसे घुमाकर लै जाना (गाड़ीवान) ।

कटार-खी० एक दुधारा हथियार; खजर । पु० एक तरहका बनविलाव; [सं०] लंघट पुरुष; नागरिक ।

कटारा-पु० बड़ी कटार; ऊँटकटारा ।

कटारिया-पु० एक तरहका भारीदार देशमी कपड़ा ।

कटारी-खी० छोटी कटार ।

कटाखी-खी० भटकटैया । * कटारी, काटनेवाली ।

कटाव-पु० काट; काट या खोदकर बनाये हुए फूल आदि ।

—वार-वि० जिसपर कटावका काम हुआ हो ।

कटावव-पु० कटार् करनेका काम या उजरत; कतरन ।

† वि० काटनेवाला, भयंकर ।

कटास-पु० बनविलावका एक भेड़, कटार ।

कटासी-खी० कमरिस्तान ।

कटाह-पु० [सं०] कटाह; कूप; कछुएकी पीठका कटा आवरण; सूप; टूटे हुए खेका टुकड़ा; मैसका बघा जिसे सींग निकल रहे हों; राशि, बैर; एक दीप; हूह; नरक ।

कटाहक-पु० [सं०] कटाह ।

कटि-खी० [सं०] कमर; कमरके नीचेका मांसल भाग, चूतड़; पैर; हाथीका गंडल । —झेब-पु० [हिं०] कर-वही । —लट-पु० कमर । —ब-पु० पीछी; करवनी, मेखला, कमरबंद । —वेश-पु० पैर, ओगि । —बंद-पु० कमरबंद; सरदी-नरमीकी कमी-बेसीके विचारसे किये गये पृथ्वीके विपुल देशोंके समानांतर चाल विभाजनोंसे बंध ।

-बबू-वि० कमरबन्दा, सैवार, आभादा । -रीहूक-
पु० पीलवान । -सूख-पु० कपनी, कमरपट्टी । -बन्दा
-पु० टवमें बैठकर किया जानेवाला एक तरहका भाग
जिसमें केवल कटि तथा बेषका भाग पानीमें डुबाया जाता
है, शेष भाग पानीकी सतहसे ऊपर रहता है (प्राकृतिक
चिकित्सा) ।

कटिका-खी० [सं०] कमरके नीचेका मांसल भाग, नूड ।
कटिका-पु० हक्काक; चौपायीका घटा हुआ पाद । खी०
कटिया ।

कटिबाना-अ० कि० कंटफिल; रोमांशित शीमा ।

कटी-खी० [सं०] पिप्पली; कटि ।

कटीरा-पु० एक वृक्षका गोंद, कटीरा ।

कटीराना-वि० कटिदार; नुकीला; तीक्ष्ण; पेना; तेज असर
करनेवाला; मुख्य करनेवाला; आनधानवाला । पु० कर्तार ।

कटुकता-खी० [सं०] कर्कशता; उग्रपुन ।

कटु-वि० [सं०] कड़वा, चरपर; अमिय; दुरा लगनेवाला ।
पु० ६ रसोंमेंसे एक; कड़वापन । -कटु-पु० अदरक; लह-
सुन । -कीट-कीटक-पु० मच्छर । -काण-पु० टिट्ठिम ।

-प्रथि-खी० मोटा; पिपरायू । -चातुर्जातक-पु० चार
कड़वी बीजों-इलायची, त्रज, तेजपान और मिर्च-का
समूह । -चक्र-पु० नगर वृक्ष । -तिष्ठक-पु० भूनिव,

शग वृक्ष । -सिका-पु० तुंबी-खी० तिलग्रीही । -ज्व-पु०
त्रिकुटा । -वृक्षा-खी० कर्कटी नामक पीपल । -पर्णी-

खी० मटमौड़, सत्यानासी । -फल-पु० परबल; काय-
फल; कंरुका (?) । -बीजा-खी० पीपल । -अंगा-खी०

एक तरहकी जंगली भांग । -अन्न-पु० अदरक । -भाषी-

(विष्)-वि० कड़वी बात बोलनेवाला । -अंजरिका-

खी० अपामार्ग । -रब-पु० मेदक । -रस-वि० कड़वे
स्वाभाव । -बचन-पु० कड़वी बात । -विपाक-वि०

पचनेके बाद जिसका स्वाद कड़वा हो जाय; अम्लकारक ।
-स्नेह-पु० मफेद सरसों ।

कटुभा-पु० धानका एक कीड़ा । वि० अनेक दुककोंमें
कटा हुआ ।

कटुक-वि० [सं०] दे० 'कटु'; मयंकट; कठोर । पु० कड़वा-
पन; पटील, कुटज, अर्क, राजसर्प आदि । -ज्व-पु०

मिर्च, सोंठ और पीपल । -फल-पु० ककोल ।

कटुर-पु० [सं०] छाछ, मट्ठा ।

कटुकि-खी० [सं०] कड़वी बात ।

कटुमर-पु० [सं०] जंगली गूलर ।

कटोरी-खी० मटकटोरी ।

कटोहर-पु० हलके नीचेकी फाल लगानेकी लकड़ी ।

कटोया-पु० काटनेवाला; फसल काटनेवाला । खी० मट-
कटोया ।

कटोला-पु० एक बहुवृत्त्य पथर ।

कटोह-पु० [सं०] मिट्टी आदिका छोटा पात्र । -दान-पु०

[वि०] पीतल आदिका एक दक्षिणदेशी वस्तु ।

कटोरा-पु० [सं०] फूल, कांसे आदिका प्याला । कु०-

चकना-चोरका पटा लगानेके लिए मंत्रकी शक्तिसे
कटोरेकी चकना ।

कटोरिया-खी० दे० 'कटोरी' ।

कटोरी-खी० छोटा कटोरा; कटोरीकीसी साकलवाली खीज;
अंगिकाका वह भाग जिसमें सन रहते हैं; तलवारकी मूठ-
मेंका ऊपरका गोला भाग; हरी पत्तियोंका कटोरेके आकार-
का वह भाग जिसमें फूल निकलते और रहते हैं ।

कटोरा-वि० [सं०] कड़वा । पु० कड़वापन; चंका ।

कटोरी-खी० किसी रकममेंसे (कर्मदा, दस्तुरी आदिके
रूपमें) कुछ काट लेना । -का प्रस्ताव-किसी विभागके
कार्यपर अस्तीष प्रकट करनेके लिए उसके सर्वकी मर्मासे
कोई छोटी रकम घटा देनेका प्रस्ताव ।

कटुर-वि० काट खानेवाला; दृढ़; जिसे अपने मत या
-विधासका अधिक आग्रह हो; दुराग्रही; असहिष्णु; अनुदार
विचारवाला ।

कटुहा-पु० दे० 'कटुहा' ।

कटु-वि० तपका, मोटा-पात्र (बट्टाके साथ प्रयुक्त) । पु०
त्रक; जूँ । पु० कट्टे लगना-किसीके कारण किसीकी
या उसकी निगाहपर चढ़ी हुई चीजका नष्ट होना ।

कटार-पु० [सं०] कटार ।

कटार-पु० जमीनकी एक नाप, जरीफा बीसवीं भाग; एक
प्रकारका (लाल) गेहूँ ।

कटफल-पु० [सं०] कायफल ।

कट्याना-अ० कि० दे० 'कटियाना' ।

कटुवर-वि० [सं०] घृणित, हेय । पु० छाछ; चटनी, अचार
आदि ।

कटेश्वर-वि० मोटा; कड़ा ।

कठ-पु० [सं०] एक मुनि जिनके नामपर यजुर्वेदकी एक
शाखाका नाम पड़ा; कठ शाखाका अध्ययन या अनुसरण
करनेवाला; एक उपनिषद्, जाग्रण । -बह्नी-खी० एक
उपनिषद् ।

कठ-पु० एक राजा; 'काठ'का समासगत रूप । वि० काठ-

का बना; घटिया, निकट; कठोर (ममासमें) । -कीली-

खी० पक्ष । -केला-पु० एक घटिया केला जो कड़ा और
कम मोटा होता है । -कोला-पु० कठफोड़ा चिकिया ।

-गुलाब-पु० एक तरहका जंगली गुलाब । -गूलर-

पु० एक प्रकारका गूलर, कटुमर । -घरा-पु० काठका
जंगलदार घर या बेरा; बड़ा पित्रा जिसमें कोई जंगली

जानवर रहता जा सके । -बोड़ा-पु० धोरेकी सवारिका
एक भाग । -जामुन-पु० घटिया जामुन, छोटा और

अधिक खट्टा जामुन । -खाल-पु० दे० 'करताल' ।

-पुलसी-खी० काठकी पुगली या गुडिया जिसे तार या
सूत हिलाकर नचाते हैं; दूसरेके आदेश या इशारेपर काम

करनेवाला व्यक्ति । -का नाच-एक तमाशा जिसमें
कठपुतलियोंका नाच दिखाया जाता है । -फला-पु०

कुकुरमुत्ता । -कोड़का-कोड़ा-पु० एक चिकिया जो
अपनी चोंचसे पेड़ोंकी छाल छेदकर उसके नीचेके कीड़ोंको

खाती है । -बंघन-पु० काठकी बेरी या छल्ला जिसे
हाथीके पाँवमें पहनाते हैं । -कांसी-खी० दे० 'कट-

वांसी' । -बाप-पु० सौतेला बाप । -बेर-पु० घूँटका
पेड़ । -बेल-पु० कैव । -बैह-पु० अनारी या अतार्ह

बैह । -बैर-पु० एक छोटे आकारका पेड़, कड़ी ।
-अलिशा-वि० जो काठकी माछा पचने हो । पु० बना

दुआ साधु । -मल्ल-मल्ला-वि० मल्ल, वैफिक; दुस्तुबा ।
 -माटी-ली० जल सुखकर कबी हो जानेवाली पंक्ती
 मिट्टी । -मुल्ला-पु० कम पड़ा हुआ, कट्टर, अक्षर-पूजक
 मुल्ला या मीलवी । -सेमल्ल-पु० सेमल्लकी जातिका एक
 वृक्ष । -सोला-पु० एक प्रकारकी शाही । -हँसी-
 ली० बनावटी, जबरदस्तीकी हँसी ।
 कठरा-पु० दे० 'कठरा' ।
 कठण-वि० कठिन, निरुद्ध-लागी सो हो जाने कठण
 लगण दी पीर-मीरा ।
 कठतार-पु० दे० 'कठताल' ।
 कठनेरा-पु० वैद्यकीकी एक जाति ।
 कठप्रेम-पु० प्रियके उदासीन रहनेपर भी उससे किया
 जानेवाला प्रेम-नेह कथे सठ नीर मथे हठके कठप्रेमकी
 नेम निबाहें-वन० ।
 कठमई-पु० [सं०] शिव ।
 कठर-वि० [सं०] सख्त, कड़ा ।
 कठरा-पु० दे० 'कठरा'; कठौता; काठका संदूक ।
 कठरी-ली० छोटा कठरा ।
 कठला-पु० चाँदीकी चौकीकी, बघनला, बजरबटू आदिकी
 माला जो बच्चोंको पहनायी जाती है ।
 कठवल-ली० दे० 'कठौत' ।
 कठवला-पु० दे० 'कठौत' ।
 कठाकु-पु० [सं०] दे० 'कठाकु' ।
 कठारा-पु० नदी आदिका किनारा ।
 कठारी-ली० कर्मवृद्ध; काठका बरतन ।
 कठिका-ली० [सं०] खरिया मिट्टी ।
 कठिन-वि० [सं०] कड़ा, सख्त; दुस्साध्य, मुश्किल; टेढ़ा ।
 पु० शाही । * ली० कठिनार्थ; कठ । -पूछ-पूछ-पु०
 कछुआ ।
 कठिनताई-ली० दे० 'कठिनार्थ' ।
 कठिन-ली० [सं०] चीनीकी मिठाई; भोजन बनानेका
 मिट्टीका बरतन ।
 कठिनार्थ-ली० कठिन, दुस्साध्य होना; कठ; संकट; दिकल,
 संसद ।
 कठिनिका, कठिनी-ली० [सं०] कानी उँगली, छिगुनी;
 खरिया मिट्टी ।
 कठिया-वि० कड़े छिलकेवाला । पु० एक तरहका लाल
 नेहूँ । ली० एक तरहकी मींग ।
 कठुला-पु० दे० 'कठल' ।
 कठुबाना-अ० कि० सुखकर काठकी तरह कड़ा हो जाना ।
 कठुमर-पु० दे० 'कठुमर' ।
 कठेठ, कठेठा-वि० कठोर, कड़ा ।
 कठेर-वि० [सं०] कठप्रसूत । पु० मुफलस ।
 कठेल-पु० सुनिर्वाणी कमान; कसेरोंका एक औजार ।
 कठेला-पु० कठौता ।
 कठेही-ली० छोटा कठौता ।
 कठोवर-पु० [सं०] एक उदररोम ।
 कठोर-वि० [सं०] कड़ा, सख्त; निष्ठुर, बेरहम; विकास-
 प्राप्त । -गर्भा-ली० वह ली जिसका गर्भ पूर्ण विकसित
 -७८ मासका-हो चुका हो ।

कठोरता-ली० [सं०] कड़ापन, सख्ती, निरिबता ।
 कठोरताई-ली० दे० 'कठोरता' ।
 कठोल-वि० [सं०] दे० 'कठोर' ।
 कठौत, कठौती-ली० छोटा कठौता ।
 कठौता-पु० काठका वह छिछला बरतन जिसमें प्रायः
 खानेका सामान रखा जाता है ।
 कर्कश, कर्कश-पु० [सं०] गुणा, मूँग आदिके बँठल ।
 कर्कश-पु० [सं०] एक तरहकी शराब ।
 कर्कशा-वि० कड़े जगौवाला; बट्टाकट्टा; अपखड़ा ।
 कर्कशिका-ली० [सं०] विद्यान; सर्वविद्या ।
 कर्क-वि० [सं०] गुंगा; कर्कश, मुत्तिका; अगोच, मूर्ख ।
 कर्क-पु० [सं०] समुद्री जन्मक ।
 कर्क-ली० बहुत कड़ी और डरावनी आवाज; बिजली
 चमकनेके बाद होनेवाली आवाज; जोरसे डीठने-डपटनेकी
 आवाज; बिजली; पेशाबका रुक-रुककर जलनके साथ
 आना; रुक-रुककर होनेवाला दर्द; बोझकी सरपट चाल;
 पटेबाजीका एक हाथ । -नाल-ली० एक तरहकी तोप ।
 -बिजली-ली० तोड़ेदार बंदूक; कानमें पड़नेवाली एक
 गहना; शरीरमें उपचारके लिए बिजली रौशनका एक बंत्र ।
 कर्कश-पु० कड़ी चीजके टूटने, ताँबेके बजने, दिन आदि-
 की चारदरपर किसी चीजके जोरसे गिरनेकी आवाज ।
 कर्कशता-वि० जिससे 'कर्कश'की आवाज निकले,
 कलफटार; तेज ।
 कर्कशाना-अ० कि० 'कर्कश' शब्द करना; धीसेलका
 इतना गरम हो जाना कि उसमेंसे 'कर्कश'की आवाज
 निकले । स० कि० लूब गरम करना (बी आदि) ।
 कर्कशाहट-ली० 'कर्कश'की आवाज ।
 कर्कशना-अ० बिजली कौधनेकी आवाज होना, गरजना;
 किसी चीजका तेज आवाजके साथ फटना-टूटना; डटते
 हुए जोरसे बोलना ।
 कर्कश-पु० कबजेकी आवाज ।
 कर्कश-पु० बीरोंकी प्रशंसामें रचित गीत जो योद्धाओंकी
 उत्साहित करनेके लिए गाया जाता है ।
 कर्कश-पु० कबला गानेवाला, भाट ।
 कर्कश-पु० [सं०] दे० 'कर्कश'; चूतक; एक तरहका पात्र ।
 कर्कश-वि० चितकरा । पु० वह मनुष्य जिसकी दाढ़ीके
 कुछ बाल नफेद हो गये हों ।
 कर्कशी-ली० दे० 'कर्कशी' ।
 कर्कश-वि० जीभकी लगनेवाला, झालदार; कटु; अग्रिय;
 नागवार; क्रीची; चिक्चिका; रुष्ट; खफा; कठिन; टेढ़ा ।
 -कर्सला-वि० कटु; अग्रिय । -बूँट-पु० अग्रिय, कटकर
 बात । -तंबाकू-पु० वह तंबाकू जिसमें गुड़ कम पड़ा हो,
 तीखे स्वादका तंबाकू । -तेल-पु० सरसोंका तेल ।
 -पव-पु०, -हट-ली० कड़वा होनेका भाव, कड़वा ।
 खु-बूँट पीना-अति कटकर बातकी सह लेना ।
 -होना-खफा होना, विगड़ना ।
 कर्कशाना-अ० कि० दे० 'कर्कशाना' ।
 कर्कशी-वि०, ली० दे० 'कर्कशी' । ली० जुआरके बँठल जो
 चारेके काममें लाये जायें । -खिचकी, -रोटी-ली० वह
 खाना जो दूध व्यक्तिके निकट-संबंधी या मित्र उसके

कुटुंबियोंके लिए भेजते हैं।

कवच-पुं० एक तरहका धान।

कवा-वि० सख्त, कठोर; जो नरम या लचीला न हो; कसा हुआ; ठोस; रिमायत न करनेवाला; हृदयस्थ, धीर; कठिन; दुष्कर; न दबने, न हरनेवाला; तेज; गहरी; कर्मश; तीव्र; असह्य; रोषधृक्क (तेवर); कड़ी देखना; सशक्त। पुं० चूरीके आकारका एक गहना जो हाथ या पाँवमें पहना जाता है, कवचा; लोहेका बड़ा छछा जिससे सिल पहनते हैं; कंबाल-कवाही आदिमें एकवने, उठाने आदिके लिए लगा हुआ छछा; एक तरहका कवच। **मु०** -पचना-धुना-पिना, न दबना।

कवाई-स्त्री० कवापन, सख्ती; कठोर व्यवहार।

कवाका-पुं० कवी नीजके टूटनेकी आवाज; उपवास, फाका।
-**(कै)का-तेज, सख्त, जोरका।**

कवाबीज-स्त्री० पोषकसारोंके उपयुक्त छोटी बंदूक।

कवार-वि० [सं०] धर्मधी; पिगल वर्णका। पुं० पिगल वर्ण; नीकर।

कवाह, कवाहरा-पुं० लोहेका गोला, छिछला बरतन जो भक्षिक मामलोंमें पूरियों, तरकारी, गुड़ आदि बनानेके काम आता है।

कवाही-स्त्री० कवाहीकी शकलका छोटा पाव। **मु०** -में हाथ डालना-अभिरुचि देना।

कविचुल-पुं० [सं०] स्रग्, तन्त्रवा।

कविचा-स्त्री० अरहरका सूखा डंठल।

कविहरा-स्त्री० कमर।

कविहार-पुं० उद्धारक, निकालनेवाला।

कवी-स्त्री० कठिनार्द्र, सुमीनत; जनीका एक छछा; कोई चोच लटकानेका छछा; गीतका एक पद; छोटी धरन या शङ्गीर; भेद आदिकी छापीकी हथुड़ी, जरीका १/१०० भाग। वि०, स्त्री० दे० 'कवा' -**कैव-स्त्री०** वह सजा जिसमें कीर्त्य कही मेहनतके काम लिये जायें, सपरिश्रम कारावास। -**वार-वि०** छहादार। पुं० एक तरहका कसीदा। -**नजर, निगाह-स्त्री०** रोषधृक्क दृष्टि; निगरानी।

मु० -उठाना-सुसीनते खेलना। -**सुनाना-स्त्री०** खरी सुनना।

कच्चा-वि० दे० 'कचवा' (समास भी)। **मु०** -करना-पैना लगाना।

कच्चागा-अ० कि० कच्चा लगाना; आँखें गहना; खका होना।

कचला-पुं० बच्चोंके हाथ या पाँवमें पहनाया जानेवाला छोटा कड़ा।

कचरा-पुं० खरादनेवाला।

कचैलोट, कचैलोडन-पुं० सालखंभकी एक फसरत।

कचोडा-पुं० बहुत कड़ा अकसर।

कचना-अ० कि० निकलना; खिचना; * उदय होना; काम होना; बढ़ जाना; काढ़ा जाना; दूधका खीलकर गाढ़ा होना। **मु०** कच आना-किसी स्त्रीका किसीके साथ निकल जाना।

कचनी-स्त्री० नेती; † बरसातमें खेतोंकी बड़ जुताई जिसके रात अन्न बोना ही छेप रहता है।

कदरावा, कदलाना-अ० कि० घसीटकर बाहर निकालना।

कदवावा-अ० कि० दे० 'कदना'।

कड़ाई-स्त्री० बेलभूटे बनानेका काम या उजरत; निकालनेकी क्रिया या उजरत; दे० 'कवाही'।

कड़ाना-अ० कि० निकलवाना, बाहर करना; बेल-भूटे बनवाना।

कड़ाव-पुं० बेल-भूटेका काम; दे० 'कड़ाव'।

कड़ावना-अ० कि० दे० 'कड़ाना'।

कड़ी-स्त्री० बेसन, दही और मसालेके योगसे बननेवाला ठोली लपसी जैसा एक व्यंजन। **मु०** -**का(कासा)** उबाक-क्षणिक उत्साह या आवेश। -**में कंकड़ी, -में कोयला**-अत्यंत सुंदर वस्तुमें खटकनेवाला दोष होना। **कड़ुआ, कड़ुआ-पुं०** मटके आदिसे पानी निकालनेका बरतन; आटा-चावल आदि निकालने या नापनेका काम देनेवाला बरतन; कण; बच्चोंके प्रातःकाल-खानेके लिए बचाकर रखा गया रातका भोजन।

कड़ेरना-पुं० बरतनपर नकाशी करनेका एक औजार।

कड़ेया-पुं० निकालनेवाला। स्त्री० कवाही।

कड़ीना, कड़ीलना-अ० कि० घसीटना।

कण-पुं० [सं०] अनाजका दाना; चावल आदिका बहुत छोटा टुकड़ा; जलसीकर; जरी, रवा; भिक्षा। -**जीर, -जीरक-पुं०** सफेद जीरा। -**मिच-पुं०** गौरवा। -**भक्ष, -भुक्ष(ज)-पुं०** कणव मुनि। -**भक्षक-पुं०** कणव; एक पक्षी।

कणायक, कणाय-पुं० केवौच; करव।

कणप-पुं० [सं०] लोहेका भाला।

कणा-स्त्री० [सं०] पीपल; जीरा; एक तरहकी मक्खी।

कणाटीन, कणाटीर, कणाटीरक-पुं० [सं०] खजन पक्षी।

कणाव-पुं० [सं०] वैद्यकीक दस्तके प्रवर्तक उलूक मुनि।

कणिक-पुं० [म०] कण; अनाजकी बाण; गेहूँका आटा; शत्रु।

कणिका-स्त्री० [सं०] कण; तिनका; जीरा; अधिमंभ वृक्ष।

कणिस-पुं० [म०] जो, गेहूँ आदिकी बाल।

कणिह-वि० [सं०] छोटेमे छोटा; अति सूक्ष्म।

कणी-स्त्री० [सं०] कणिका; एक अन्न।

कणीक-वि० [सं०] बहुत छोटा, अल्पत्व।

कणीची-स्त्री० [सं०] सप्प; एक वृक्ष; शकट; पुष्पित लता।

कणेर, कणेर-पुं० [म०] कनियार या कर्णिकारका पेड़।

कणेश-स्त्री० [म०] जलहस्तिनी; वेधवा।

कण्व-पुं० [सं०] शकुंतलाका पालन करनेवाले एक कवि; यजुर्वेदीय काण्व शास्त्रके प्रवर्तक कविविशेष।

कत-अ० कवों, किसलिए। पुं० [सं०] निर्मली; रीठा।

-**फल-पुं०** निर्मली या रीठेका फल।

कत-पुं० [अ०] कलमकी नोककी तिरछा काटना; कलमकी नोककी कोर (देना, रखना, लगाना)। -**शीर, -जस-पुं०** वह चपटी लकड़ी जिसपर कलम रखकर कत लगाते हैं।

कतबन्-अ० [अ०] पूरे तीरसे, बिलकुल; हगिज।

कतई-वि० [अ०] पक्का, निश्चित; बिना शर्तका। अ० एकदम, नितांत, बिलकुल। -**कैसकहा-पुं०** पक्का, अतिम निर्णय। -**हुकूम-पुं०** पक्का, अवश्यकर्तव्य आदेश।

कतक-पु० [सं०] निर्मली; रीठा । * अ० बर्षा, किसलिय; कैसे; कितना ।

कतना-अ० कि० काता जाना ।

कतनी-खी० तकली; सत कातनेका सामान रखनेकी दोकरी ।

कतना-पु०, **कतनी**-खी० दे० 'कतरना', 'कतरनी' ।

कतना-पु० [सं०] अग्रि ।

कतर-छाँट-खी० काट-छाँट ।

कतरन-खी० कपड़े, कागज आदिके काटनेके बाद बच रहनेवाले छोटे, एरी टुकड़े ।

कतरना-स० कि० कैची या सरीतेसे काटना । पु० बड़ी कतरनी; बात काटनेवाला व्यक्ति ।

कतरनी-खी० कतरनेका साधन, औजार; कैची ।

कतर-बोत-खी० काट-छाँट; हिसाब या खर्चमें काट-छाँट; किरायेतशास्त्र; जोड़-तोड़ । -से-नाप-तौलकर; हिसाबसे (चलना, खर्च करना) ।

कतरबो-वि० औरेश्वर; तिरछा ।

कतरबाना-स० कि० कतरनेका काम दूसरेसे कराना ।

कतरा-पु० दे० 'कतला'; एक तरहकी (बड़ी) नाव; पत्थर गढ़नेमें निकलनेवाला छोटा टुकड़ा ।

कतरा-पु० [अ०] दूँ । -रसाज-पु० बेसनसे बननेवाला एक पकवान, खैंडा ।

कतराई-खी० कतरनेका काम या मजदूरी ।

कतराना-अ० कि० किसीसे बचनेके लिए बोझ हटकर कितारेसे निकल जाना । स० कि० कतरबाना, कटवाना ।

कतरी-खी० कोलूका पाट; एक गहना; कतरनी; जमी हुई मिठाई; गढ़े जानेवाले पत्थर या फल आदिका पनला-सा टुकड़ा; जहाँजौपर जाँवे चढ़ानेका एक यंत्र ।

कतल-पु० दे० 'कल' । -की रात-दे० 'कल' में । -बाज़-पु० बधिक, हत्या करनेवाला ।

कतला-पु० किसी खाद्य वस्तुका तिकोने या चौकोने आकारमें कटा हुआ टुकड़ा, फाँक ।

कतलामा-पु० दे० 'कल्लाम' ।

कतली-खी० पकवान आदिके चौकोर कटे टुकड़े; चीनीकी वाशनीमें पये खरदूने आदिके टुकड़े या बीज आदि ।

कतवाना-स० कि० कातनेका काम कराना ।

कतवार-पु० कूड़ा-करकट; * काननेवाला । -खाना-पु० कूड़ा-करकट आदि फेंकनेका स्थान ।

कतहूँ, **कतहूँ**-अ० कहीं, किनी जगह ।

कता-पु० [अ०] काटना; काट; तराश; काट-छाँट; ढंग, तौर; रूप, आकार । -कलाम-पु० बात काटना, बातके बीचमें बोल देना । -तअकलुक-पु० सर्वध-विच्छेद, विल-गाव । -जज़र-अ० हसके सिवा ।

कतार्ह-खी० कातनेकी क्रिया; कातनेकी मजदूरी ।

कतान-पु० अधिक ऐंठनवाले धागेका धारीक, रेशमी कपड़ा जिससे साड़ियाँ, दुपट्टे आदि बनाये जाते हैं; पुराने बस्तानेका एक अवयव सुंदर कोमल वस्त्र (प्रसिद्ध है कि चंद्रमाका प्रकाश पड़नेसे भी यह फट जाता था) ।

कताना-स० कि० 'कातना'का प्रे०, कतवाना ।

कतार-खी० [अ०] पंक्ति, पंक्ति; क्रम, सिलसिला; समूह ।

कतारा-पु० कलकी एक किस ।

कतारी-खी० दे० 'कतार'; एक तरहकी ईख ।

कति-वि० [सं०] कितना; कितने; * कितने ही; कौन; बहुतसंख्यक ।

कतिक-वि० कितना; बोझ; बहुत ।

कतिपय-वि० [सं०] कसै; कुछ ।

कतीरा-पु० एक पेशका गोंद ।

कतेक-वि० दे० 'कितेक' ।

कतेब(ब)-पु० धर्मग्रन्थ । * किताब (कबीर) ।

कतौनी-खी० कतार; दिलाईसे काम करना; बहुत देर लगाना; कातनेकी क्रिया या भाव; कातनेकी उन्नत ।

कतल-पु० कतला; पत्थर गढ़नेमें निकलनेवाला छोटा टुकड़ा ।

कता-पु० बेंसफोटीका बॉस काटनेका एक औजार, बॉक; छोटी और कुछ टेढ़ी तलवार; पासा ।

कतारी, **कतारवा**-पु० मध्यम आकारका एक सदा-बहार पेड़ ।

कतिन-खी० सत कातनेका काम करनेवाली खी ।

कची-खी० छोटी तलवार; कटार; सोनारोंकी कतरनी; एक तरहकी पगड़ी । पु० सत कातनेवाला ।

कसूण-पु० [मं०] एक सुगन्धित वृक्ष, लौघ ।

कथई-वि० कथेके रंगका, खेरा । पु० कथई रंग ।

कथक-पु० गाने-बजानेका पेशा करनेवाली एक-हिंदू जाति । -नृत्य-पु० कथकोमें प्रचलित नाचका ढंग ।

कथन-पु० [सं०] डींग मारना । वि० डींग मारनेवाला ।

कथना-खी० [मं०] डींग ।

कथा-पु० खेरी लकड़ीका सग जो पानमें खाया जाना है । **कल**-पु० [अ०] जानमे मार डालना, बध, हत्या । -की रात-मुहरमकी दसवीं रात । -गाह-पु० बधस्थल ।

-ब खै-पु० मार-काट । -ब शारत-खी० हत्या और खट-पाट । -(ले) अमर-पु० जान-बूझकर, इरादेके साथ कल करना । -आम-पु० अंधाधुंध बध, अपराधी-निरपराध, बच्चे-बूढ़ेका विचार किये बिना सबको कल करना ।

कत्तवद-पु० [सं०] कथा ।

कथक्खि-अ० [सं०] कदाचित्, शायद ।

कथा-पु० कथा । -कीकर-पु० खेराका पेड़ ।

कथक-पु० [सं०] कथा कहनेका पेशा करनेवाला; पुराण बॉचनेवाला; नाटककी कथाका वर्णन करनेवाला; दे० 'कथक' ।

कथकली, **कथाकली**-खी० नृत्यकी एक विशिष्ट शैली ।

कथकड़-पु० कथा बॉचनेका पेशा करनेवाला; रामायणादि-के तरह-तरहके अर्थ करनेवाला ।

कथन-पु० [सं०] कहना; बचन, उक्ति; वर्णन; उपन्यास-का एक भेद ।

कथना-स० कि० कहना; निरा करना ।

कथनी-खी० बात, कथन; बकवाद ।

कथनीय-वि० [सं०] कहने योग्य ।

कथय-अ० [सं०] किस रूपमें; कैसे; कहाँसे । -(थ) **कथिक**-पु० प्रसक्तता; कैसे, क्या हुआ आदि पूछनेवाला । -भूत

—वि० कैसा, किस प्रकारका ।

कथरी-झी—झी चौथरे जोककर बनावा हुआ ओढ़ना-विछोना, उपरी ।

कथांतर-पु० [सं०] दूसरी कथा; किसी कथाके अंतर्गत दूसरी गीण कथा ।

कथा-खी० [सं०] कहानी; कथित कहानी, विकायत; वृत्तांत-वर्णन; चर्चा, चिह्न, हाल। रामायण-पुराणादिका अर्थसहित वाचन । —**नाथक-पु०** कथाका प्रधान पात्र वा आलन । —**पीठ-पु०** कथाका मुख्य भाग; कहानीकी प्रस्तावना । —**प्रबंध-पु०** कहानी, (कथित) आस्वा-यिका । —**प्रसंग-पु०** बातचीत; बातचीतका सिलसिला; कथावार्ता; संप्रेष । वि० मूल्य; वकतादी । —**प्राण-पु०** अभिनेता; कथका । —**मुख-पु०** कथाकी प्रस्तावना । —**योग-पु०** कथा वा वागोका सिलसिला । —**वस्तु-खी०** कथाका मूल रूप । —**वाचा-खी०** पुराणादिकी कथाओंकी चर्चा; अनेक प्रकारके प्रयोग । —**सरस्वतागर-पु०** संस्कृतका एक प्रसिद्ध कहानी-संग्रह । **मु०**—**डठना**—कथा बंद होना । —**मुकाला**—हाथ मिटाना; मार खाना । —**बैठना**—कथाका आरंभ होना । —**बैठाना**—पुराणादिसे कथाका आयोजन करना ।

कथानक-पु० [सं०] छोटी कथा; कहानीका खुलासा ।

कथिक-पु० [मं०] कहनेवाला; कथक; कहानियाँ सुनाने-वाला ।

कथित-वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त । पु० परमेश्वर; वार्ता-लाप; मृदंगका एक प्रबंध ।

कथीर-पु० रोंगा ।

कथील, कथीला-पु० दे० 'कथीर' ।

कथोद्गत-पु० [मं०] रूपककी प्रस्तावनाके पाँच भेदोंमेंसे दूसरा; कथाका आरंभ ।

कथोपकथन-पु० [सं०] बातचीत, सवाद ।

कथ्य-वि० [मं०] कहने योग्य, कथनीय ।

कदंब-पु० [सं०] एक सुंदर पेड़ जिसमें गोले, पीले फूल लगते हैं, वृद्ध; देवताइक लृण; समूह; सरसोंका पौधा; एक खनिज द्रव्य । —**जट-पु०** एक राज । —**पुष्पा-**
पुष्पी-खी० कदंबकेसे फूलवाला एक पौधा, गोरखमुंडी ।

कदंबक-पु० [सं०] दे० 'कदंब'; हरिद्रा ।

कदंबा-पु० [सं०] हीन, निकृष्ट भाव ।

कदं-अ० कद, किस समय । **खी०** [अ०] दे० 'कद' । पु० [फा०] घर । —**झुझा-पु०** घरका आकिक, गुच्छस्त्री; पति; दूता । —**झुझाई-खी०** झ्याल ।

कद-पु० [फा०] डील, देहकी ऊँचाई-लम्बाई । —**ब क्कामस**—**खी०** डील-डील । —**(रे) आदम-वि०** आदमीकी देह-के बराबर ऊँचा ।

कदक-पु० [सं०] चंदोबा; तंबू; डेरा ।

कदक्षर-पु० [सं०] कुतिसत वर्ण; बुरी लिखावट ।

कद्वच-पु० कुमारी ।

कदन-पु० [सं०] वध; विनाश; युद्ध; पाप; छुरी—'विरह कदन करि भारत छुनै'—चर । * कद, पीका—'अब पिय कपट न करिये हरिये कदनकी'—वच० ।

कदब-पु० [सं०] खरब, मोटा अन्न—साँवा, कीदो आदि ।

कद्वच-पु० [सं०] कपूत, बुरी संतान ।

कदम-पु० दे० 'कदंब' ।

कदम-पु० [अ०] पाँव; पग; डग; चलनेमें दोनों पैरोंके बीचका अंतर; पदचिह्न; कार्यविशेषके लिए किया गया बल, कोशिश; काम; घोड़ेकी एक चाल । —**बा-पु०** पैर रखनेकी जगह; पाखानेकी खुदड़ी; पाखाना । —**ब-कदम-अ०** साथ-साथ । —**बाज़-वि०** कदमकी चाल चलनेवाला (घोड़ा) । —**बोसी-खी०** पाँव चूमना; गुरुजनोंवित सम्मान-प्रदर्शन; साक्षात्कार । **मु०**—**उखड़ना**—पाँव उखड़ना, भाग जाना । —**डठाना**—आगे बढ़ना । —**चूमना**—पाँव छूना; गुरुजनोंवित सम्मान करना; गुरु मान लेना । —**छूना**—पाँव पकड़ प्रणाम करना; किसीकी कसम खाना; खुशामद करना । —**निकालना**—(घोड़ेकी) कदमकी चाल सिखाना; बाहर जाना । —**पर कदम रखना**—पीछे-पीछे चलना, अनुसरण करना । —**ब-कदम चलना**—साथ-साथ चलना; अनुसरण करना । —**बढ़ाना**—चाल तेज करना; आगे बढ़ना । —**मारना**—दौड़ बूट करना; बल-प्रयत्न करना । —**खेना**—पाँव पड़ना, पाँव छूकर प्रणाम करना; आदर-भ्रमण करना । (इस शब्दके बहुतने मुहा-वरे 'पाँव' में मिलेने ।)

कदमा-खी० कदंबके फूलके आकारकी एक मिठाई ।

कदर-पु० [मं०] आरा; अंशुश; पाँवके तलवेका गोखरू; छेना; मफेद खैर ।

कदर-खी० [अ०] माप; मात्रा, माप्य, तकतीर; दे० 'कद' । —**दान-वि०** दे० 'कददान' । —**दानी-खी०** दे० 'कददानी' ।

कदरई-खी० कायरपन ।

कदरज-पु० दे० 'कदर्य'; एक प्रसिद्ध पापी ।

कदरमय-खी० मार-पीट, लड़ाई ।

कदरई-खी० कायरपन ।

कदराना-अ० कि० इरना; कविशाना, पीछे हटना ।

कदरौ-खी० मैनाके बराबर एक पक्षी ।

कदर्य-वि० [मं०] निरर्थक, निकम्मा ।

कदर्य-पु०, **कदर्यना-खी०** [सं०] सताना, पीका पहुँचाना; तिरस्कार; दुर्दशा ।

कदर्थित-वि० [सं०] जिसकी कदरधना की गयी हो; तिरस्कृत ।

कदर्थ-वि० [सं०] रूपण, कजस; तुच्छ; छुद्र । पु० राज्यकी आय उसकी भलाईके लिए खर्च न कर कोश एकत्र करनेके लिए प्रजापर कठोर अत्याचारतक करनेवाला रूपण राजा (की०) ।

कदल, कदलक-पु० [सं०] केला ।

कदला-खी० [सं०] पक्षी; चिंका; शांभली ।

कदलिका-खी० [सं०] हंडा ।

कदली-खी० [सं०] केला; एक हिरन; हंडा; हाथीपर रखा जानेवाला हंडा ।

कदली(खिन्)-पु० [सं०] एक तरहका हिरन ।

कदा-अ० [सं०] कब, किस समय ।

कदाकार-वि० [सं०] कुरूप, अर्ध, मौंझ । पु० बुरा रूप ।

कदाच, कदाचि-अ० कदाचिद ।

कदाचन-अ० [सं०] दे० 'कदाचिद्' ।
 कदाचन-पु० [सं०] दुरा, कुत्सित आचार । वि० दुरे
 आचरणाला, दुराचारी ।
 कदाचिद्-अ० [सं०] कभी, सायद ।
 कदापि-अ० [सं०] कभी, हमिस ।
 कदामत-खी० [अ०] प्राचीनता ।
 कदाहार-पु० [सं०] दुरा भोजन; खराब चीजें खाना ।
 कदी-वि० कद् रखनेवाला; हठी; कुनही । * अ०
 कमी-कमी ।
 कदीम-वि० [अ०] पुराना; प्राचीन ।
 कदीमी-वि० दे० 'कदीम' ।
 कदुष्य-वि० [सं०] बोका गरम; कुनकुना ।
 कदुरत-खी० दे० 'कुदुरत' ।
 कदे-अ० कदा; कमी ।
 कद्-खी० [अ०] हठ, आग्रह; कट; कठिनाई; पक्ष, प्रवास;
 देप, कुनह ।
 कद्-पु० कर्म, कीचड़ ।
 कदावर-वि० बड़े डील-डौलका, लंबा-चोड़ा ।
 कदी-वि० हठी, जिद्द करनेवाला ।
 कद्-पु० [का०] एक प्रसिद्ध तरकारी, लौकी ।-कद्-पु०
 कद्, कुम्हड़ा आदि रेतनेका आला ।-दावा-पु० मल-
 के साथ निकलनेवाले कीड़े ।
 कद्-खी० [अ०] बड़ा; हज्जत; दरजा; भरतवा ।-दान
 -वि० कद्द समझनेवाला; सिरपरस्त ।-दावी-खी०
 सिरपरस्ती; गुणकी परचान ।
 कद्, कद्-खी० [सं०] कल्पपत्नी पत्नी जो साँपोंकी माता
 मानी जाती है ।-अ०-पुत्र-सुत-पु० साँप, नाग ।
 कद्-वि० [सं०] दुरा या गलत कहनेवाला ।
 कद्-पु० [सं०] छाछ, मट्ठा ।
 कदी-अ० कमी ।
 कनक-पु० सोना-पुन्य कारुण देत विप्रन तौलि-तौलि
 कनक-रामचन्द्रिका ।
 कन-पु० कण; प्रसाद; मीठा; कण; बूँद; सत; 'कान'का
 समासमें अव्ययत सक्षिप्त रूप ।-कदा-वि० जिसका कान
 कदा हो । [खी० 'कनकदी']-कदी-खी० कानकी एक
 बीमारी ।-कूटकी-खी० एक वृक्ष ।-कूट-पु० दे०
 'कुतकुट' ।-कूट-पु० जमींदार और असामीसे उपजके
 बेंदरके लिए खरी फसलका कूट होना ।-खजूरा-पु०
 गोजरकी जातिका एक बीड़ा जो कमी-कमी कानमें चुप
 जाता है ।-खोदनी-खी० कोड़े, तौबे आदिका बना
 कान झुनझुने और उसका मैल निकालनेका एक औजार ।
 -छेदन-पु० कान छेदे जानेकी रस, कर्णव्यसंस्कार ।
 -टोप-पु० बग टोपी जिससे कान ढके रहें ।-धार-
 पु० कर्णधार, केवट ।-पट-पु०, पटी-खी० कान और
 आँखके बीचका स्थान, गढसल ।-पेक्षा-पु० कानका
 एक रोग ।-फटा-पु० गोरखपथी साधु जिसके कान फटे
 होते हैं ।-फुँकवा-पु० कान फूँकनेवाला, दीहाण ।
 -फुँका-वि० दीक्षा देने या लेनेवाला । पु० कान फूँकने-
 वाला गुरु; शिष्य ।-फुसका-पु० कानमें धीरेसे बात
 कहनेवाला, चुगुलखोर; बहकानेवाला ।-फुसकी-खी०

दे० 'कानाफूसी' ।-फूल-पु० दे० 'करनफूल' ।-फोड़ा
 -पु० एक कला जो दवाके काम आती है ।-प्रस-पु०
 कण चुननेकी भादत ।-बसिया-खी० कानमें धीरेसे
 कही हुई बात ।-बिबा-वि० कान छेदनेवाला; जिसका
 कान छेदा गया हो ।-मैलिया-पु० कानका मैल निका-
 लेनेवाला ।-रस-पु० संगीतका रस; गाने-बाने या
 बात सुननेका व्यवसन ।-रसिया-वि० संगीत-प्रिय ।
 -सखाई-खी० छोटा कनखजूरा; कुश्तीका एक पैर ।
 -सुई-खी० छिपकर सुनना, टोह लेना ।-हार-
 पु० कर्णधार ।
 कनडंगली-खी० कानी डंगली, छिपुनी ।
 कनडक्क-वि० दे० 'कनोका' ।
 कनक-खी० गेहूँका आटा । पु० [सं०] सोना; भट्टारा;
 पञ्चाश; कालीय वृक्ष; नागकेशर; चंपा ।-कद्दी-खी०
 एक तरहका केला ।-कडी-खी० कानमें धाननेकी लौंग ।
 -कसियु-पु० हिरणकश्यप ।-क्षार-पु० सुहागा ।
 -गिरि-लेख-पु० सुमेरु पर्वत ।-चंपा-खी० कनि-
 वारीका पेड़ ।-जीर-जीरा-पु० [हि०] उत्तम जाति-
 का एक धान ।-द्वंद्व-पु० राजच्छत्र ।-नंदी (विज्)-
 पु० शिवका एक गण ।-निकष-पु० कसौटी ।-पत्र-
 पु० कानका एक गहना ।-परात-पु० सोनेकी धूल ।
 -प्रभ-वि० सोनेकीसी आभा, चमकवाला ।-प्रभा-
 खी० महाज्योतिष्मती ।-प्रसवा-खी० स्वर्णकैतकी ।
 -भंग-पु० सोनेका टुकड़ा, डक ।-रंभा-खी० स्वर्ण-
 कदली ।-रस-पु० तरल मोना; हरताल ।-शक्ति-
 पु० कांतिकेय ।-सूत्र-पु० सोनेका हार ।-खली-
 खी० सोनेकी खान ।
 कनकना-वि० हलकी-सी नोटसे भी टूट जानेवाला; चिद-
 चिद; अनुकमिआज ।
 कनकनाना-अ० कि० चौकड़ा होना; रोमांचित होना;
 चुनचुनाना; नागवार लगना ।
 कनकनाहट-खी० कनकनानेका भाव ।
 कनका-पु० कनकी, कण ।
 कनकाचल, कनकादि-पु० [सं०] सुमेरु पर्वत ।
 कनकाचक्ष-पु० [सं०] खजंत्री, मोषाध्यक्ष ।
 कनकानी-पु० घोड़ेकी एक जाति ।
 कनकालुका-खी० [सं०] स्वर्णपट ।
 कनकाह-पु० [सं०] कनरा; नागकेशर ।
 कनकाह्व-पु० [सं०] भट्टारा ।
 कनकी-खी० चावलका टूटा हुआ कण; छोटा कण ।
 कनकैया-खी० दे० 'कनकीवा' ।
 कनकौवा-पु० बड़ा पतंग, गुड्डा ।-(वे) बाज़-पु०
 पतंग उड़ानेवाला । सु० -(वे)से दुमछाहा
 बड़ा-मुख्य वस्तुमें अंगभूत, उससे उपजी वस्तुका बड़ा
 होना ।
 कनका-पु० कालमें फूटनेवाली छोटी-तिरछी टहनी; धड़े
 आदिका ऊपरका हिस्सा ।
 कनखियाला-सं० कि० कनखीने देखना; इशारा करना ।
 कनखी-खी० आँखकी कीर; तिरछी निगाहसे देखना;
 दूसरोंकी निगाह बचाकर देखना; आँखका इशारा; सैन;

छोटा कनका । **मु०** -भारवा-ऑखउ इशारा करना ।
कनकौषा-**खी०** दे० 'कनखी' ।
कनगुरिया-**खी०** कानी उँगली, छिगुनी ।
कनतूरा-**पु०** एक अर्थात् विपैना और बड़ी आतिका मेडक ।
कनन-**वि०** [सं०] काना ।
कननबाजार-**अ०** कि० सोनेमें आइट धाकर वा बेचैनीसे हाथ-पाँव हिलाना, सिकोड़ना; विरोध-यत्न चेष्टा करना ।
कनच-**पु०** कनक, सोना; कनिक, आटा ।
कनरहू-**खी०** एक पीथा जिससे कतीरा निकलता है ।
कनरहयाम-**पु०** एक राग ।
कनबहूँ-**खी०** छट्यैक ।
कनबहूँ-**पु०** छट्यैक ।
कनबोला-**पु०** नवामेका वेदा ।
कनवास-**पु०** [अ० 'कैनवस'] सन, पटसन आदिका बना मोटा कपडा जिसके पदें, जूते आदि बनते हैं, 'किरमिच' ।
कनबोकेवान-**पु०** [अ०] विधविद्यालयका उपाधिदानोत्सव ।
कनसार-**पु०** लॉबे आदिके पत्रपर लेख खोदनेवाला ।
कनसाळ-**पु०** चारपाईके पावेका वह छेद जो तिरछा हो गया हो ।
कनसीरी-**खी०** एक वृक्ष, हावर ।
कनसुई-**खी०** गोबरकी गौर फेंककर सगुन विचारना ।
कनसार-**पु०** [अ० 'कनिस्टर'] टीनका चौथड़ा पीथा ।
कनहा-**पु०** कनकून करनेवाला कर्मचारी ।
कना-**पु०** कन; सरकडा ।
कनाई-**खी०** पतली, शाखा, टहनरी ।
कनाडवा-**वि०** दे० 'कनौडा' ।
कनामात-**वि०** दे० 'कन्यागत' ।
कनात-**खी०** [तु०] कपडेकी दीवार जो खेमे या किसी खुले स्थानमें चारों ओर खड़ी करते हैं ।
कनाती-**वि०** कनातसे बनाया हुआ । -**अस्त्रिभू**-**खी०** कनात खड़ी कर नमाज पढ़नेके लिए बनाया हुआ स्थान ।
कनारा-**पु०** मद्रास प्रांतका एक भाग ।
कनारी-**खी०** कनारा प्रदेशकी भाषा, 'कनड' । **पु०** कनारा-का निवासी ।
कनाबवा-**वि०** दे० 'कनौडा' ।
कनासी-**खी०** रेती ।
कनिजारी-**खी०** कनकचंपा ।
कनिक-**खी०** रोहूँका आटा ।
कनिका-**खी०** दे० 'कणिका' ।
कनिगर-**वि०** आनवाला ।
कनिचौ-**खी०** गौद ।
कनिधामा-**अ०** कि० कतराना, ऑख बचाकर निकल जाना; गुच्छिका एक और छुकना ।
कनिधार-**पु०** कनकचंपा ।
कनिह-**वि०** [सं०] उन्नमें सबसे छोटा; छोटा; क्लवष । **पु०** शिब ।
कनिहक-**वि०** [सं०] कनिह । **पु०** एक तृण ।
कनिहा-**वि०**, **खी०** [सं०] सबसे छोटी; छोटी । **खी०** कानी उँगली; सबसे पीछे ब्याड़ी हुई पंखी; वह नायिका जो

पतिकी कम प्यारी हो; छोटे भाईकी स्त्री ।
कनिहिका-**खी०** [सं०] छिगुनी ।
कनिहार-**पु०** कर्णधार, महाह- 'ज्यों कनिहार न भेद करे कछु भार चढ़े तेहि नांव चढ़ावे'-सुंदरदास ।
कनी-**खी०** [सं०] बालिका, कन्या; [हिं०] छोटा डकना, कणिका; **हीकी** कणिका; चावलका छोटा डकना; चावल वा मातका वह (छोटा) भाग जो कच्चा रह गया हो; बूँद -'हलकी भरि माछ कनी जलकी...' -कवितावली ।
मु० (बनीपर)-खाना, -बाटना -हीरेकी कनी खाकर जान देना ।
कनीचि-**खी०** [सं०] शकट गुंजा ।
कनीज-**खी०** [फा०] लौटी, बौटी ।
कनीज-**वि०** [सं०] तरण; कम उमरका ।
कनीनक-**पु०** [सं०] लक्षका; किशोर; ऑखका तारा ।
कनीनका-**खी०** [सं०] कौरी लक्षकी; ऑखकी पुतली ।
कनीनिका, **कनीनी**-**खी०** [सं०] छिगुनी; ऑखकी पुतली ।
कनीनस-**वि०** [सं०] अधिक छोटा; जन्मपर । **पु०** लॉबा ।
कनीर-**पु०** कनेर वृक्ष या उसका फूल ।
कनु-**पु०** दे० 'कन' ।
कनूका-**पु०** दाना; कण ।
कने-**अ०** पास; ओर ।
कनेखी-**खी०** दे० 'कनखी' ।
कनेटा-**वि०** काना; पैचा-ताना ।
कनेटी-**खी०** कान बैठना, गोशमाली ।
कनेर, **कनेर**-**पु०** एक पीथा जिसमें सफेद, पीले और लाल रंगके फूल लगते हैं, कबीर ।
कनेरा-**खी०** [सं०] दे० 'कनेरा' ।
कनेरिया-**वि०** कनेरके फूलके रंगका ।
कनेरी-**खी०** [अ० 'कनेरी'] एक पीले रंगकी छोटी चिकिया ।
कनोई-**खी०** कानका मेल, धुँद ।
कनोखा-**वि०** कटाक्षपुल ।
कनोजिया-**वि०**, **पु०** कनौजका रहनेवाला; कान्यकुब्ज ।
कनौडा-**पु०** कोना; किनारा; भाई-बन्धु ।
कनौड-**पु०** सकौब ।
कनौबना-**अ०** कि० दबना -'काहूकी कानि कनौबत कै को'-पन० ।
कनौबा-**वि०** काना; अंगण, बदनमा; छुद्र; हीन; लज्जित; एहसानमद । **पु०** क्रीत दास ।
कनौसी-**खी०** पशुका कान वा उसकी नोक; कान खड़े करनेका ढंग; बाली । **मु०** कनौसिया बच्चन -बोदेका कान खड़ा करना; चौकन्ना होना ।
कन-**पु०** [सं०] पास; मूच्छरी ।
कनरहयाम-**पु०** दे० 'कनरहयाम' ।
कनका-**पु०** किनारा, कोर; परतमें ऊपर-नीचे बँधा हुआ वह भाग जिसमें लंबी और चौकट उठे उठाते हैं; चाबकी धूल जो छोटनेमें निकलती है; पीछका एक रोग ।
वि० कनका लगा हुआ (फल या लकड़ी) । **मु०** -छीका डोना -होसका पल्लु होना; बैठ डीली पड़ जाना ।
-साबना-कनैकी गाँठ ठीक जगहपर बँधनेके लिए उसकी कंधा नापना । -**(स्ने)** से कटना-परतयका

कपेपरसे कट जाना ।

कबी-खी० किनारा; कोरा हाथिया; पतंगका किनारा; बजन बराबर करनेके लिए पतंगकी कौप या कमानमें बाँधी जानेवाली ध्वजी; बह औरार जिससे राजगीर गारा लगाता, पल्लवर करता है; पेक्का नवा कला; तंबाकूके वे कले जो पत्ते काट लेनेपर फिरसे निकलते हैं । **खु**० - **काटना** - कलराना, किनारेसे निकल जाना । - **खाना** - पतंगका बजनेमें एक और झुका । - **दबाना** - काटने, अधीनतामें खाना ।

कबीज - पु० फर्रुखाना जिलेका एक कस्बा जो पुराने समयमें बहुत बड़ा नगर था ।

कन्याका-खी० [सं०] कन्या; अविवाहित लक्ष्मी ।

कन्यास - पु० [सं०] सवसे छोटा भाई ।

कन्यासा-खी० [सं०] कानो उँगली ।

कन्यासी-खी० [सं०] सवसे छोटी बहिन ।

कन्या-खी० [सं०] लक्ष्मी; कारी लक्ष्मी; दशवर्षीया अविवाहिता बालिका; बारह राशियोंमेंसे छठी; दुर्गा; बही हलायची; धनकुमारी; एक वर्णवृत्त । - **कुम्ह** - पु० कान्य-कुम्ह देश । - **कुमारी-खी**० एक अनारीप जो दक्षिणमें भारगकी ललसीमा है; दुर्गा । - **गल** - वि० कन्या राशिमें स्थित (घरे) । - **दान** - पु० विवाहमें बरको कन्याका दान । - **धन** - पु० दहेज, दायज । - **घाल** - पु० दासी कन्याओंको बेचनेवाला; बगलकी एक शूद्र जाति । - **पुर** - पु० अन्तःपुर । - **भत्ता** (रुँ) - पु० जामाता, कन्याका पति; कान्तिकेय । - **राशि** - वि० जिसका जन्म कन्याराशिमें हुआ हो । - **रासी** - वि० [हिं०] कन्याराशिमें उत्पन्न; खी-समाववाला; दम्प; दुर्बल । - **बेनी** (दित्र) - पु० जामाता । - **घुल्ल** - पु० कन्याका मूल्य जो करकी औरसे कन्याके पिताके दिया जाय । - **हरण** - पु० कन्याको (विवाहाधी) पकड़, उड़ा ले जाना ।

कन्याट - वि० [सं०] लक्ष्मीका पीछा करनेवाला । पु० अन्तःपुर; लक्ष्मीका पीछा करनेवाला व्यक्ति ।

कन्याका-खी० [सं०] कन्या, अविवाहिता कन्या ।

कन्युष - पु० [सं०] हाथका कलाईके नीचेका माग ।

कन्युषी - खी० कर्णोटी ।

कन्याई - पु० दे० 'कनैया' ।

कन्यावर - पु० दुपट्टा; बैलकी गरदनपर रहनेवाला जुपका हिस्सा ।

कनैया - पु० कृष्ण; सुंदर बालक; भियजन; एक पहाड़ी पेड़ ।

कप - पु० [सं०] वस्त्रा दैर्घ्यकी एक जाति; [जं०] व्याला ।

कपट - पु० [सं०] बनाबटी व्यवहार; छल, धोखा; मनके भावको छिपाना; दुराव । - **तापस** - पु० बना हुआ साधु; साधुका मेस बनाकर उगनेवाला व्यक्ति । - **भाटक** - पु० कपट-व्यवहार; ठगने, धोखा देनेका काम । - **प्रबंध** - पु० धोखा देनेकी योजना । - **लेख** - पु० जाली या दुर्गर्ह दस्तावेज । - **बेख** - पु० बनाबटी मेस । वि० बनाबटी मेसवाला ।

कपटना - सं० कि० वस्तुको ऊपरसे धोखा तोड़-नीच लेना; खोटना; हथिये-पैने, रकममेंसे कुछ काट-निकाल लेना ।

कपटा - पु० धानके पीपोंमें लगनेवाला एक कीड़ा ।

कपटिक - वि० [सं०] कपटी ।

कपटिनी - खी० [सं०] चिन्ता नामक गंधद्रव्य ।

कपटी - खी० धानकी फसलका एक कीड़ा; [सं०] एक अंजुलीकी मात्रा ।

कपटी (दित्र) - वि० [सं०] छल-कपट करनेवाला, फरेबी ।

कपड़ - पु० 'कपड़ा' का छोटा और समासमें व्यवहृत रूप ।

- **कोट** - पु० लेमा, तंबू । - **गंध** - खी० कपड़ा जलनेकी दुर्गंध ।

- **छन** - **छान** - पु० पिसी हुई (सखी) वस्तुकी कपड़ेसे छाननेकी क्रिया (करना) । वि० कपड़ेसे छाना हुआ; बहुत महीन ।

- **हार** - पु० कपड़ोंका भंडार ।

- **खि** - खी० करेव । - **मिट्टी** - खी० रस-भस्मादि बनानेमें संपुटपर गौली मिट्टी और कपड़ा लपेटनेकी क्रिया (करना) ।

कपड़ा - पु० कपास, ऊन आदिके धागोंसे बुनी हुई ओठने-पहननेके काममें आनेवाली वस्तु; पहनावा । - **छत्ता** - पु० पहननेका सामान । **खु**० - **उत्तार लेना** - सव कुछ छैन लेना; बदनपर कपड़ा न रहने देना । - **रँगना** - गेरखा बाना लेना, निरक्त होना । - **(रुँ) में न समाना** - पूरे अंग न समाना । - **से होना** - रजस्वला होना ।

कपड़िया, कपड़िया - पु० एक नीच जाति ।

कपड़ोटी, कपड़ोटी - खी० दे० 'कपड़मिट्टी' ।

कपड़, कपड़क - पु० [सं०] कौड़ी; (शिवका) जटा-जूट ।

कपड़िका - खी० [सं०] कौड़ी ।

कपड़िनी - खी० [सं०] दुर्गा ।

कपड़ि (दित्र) - वि० [सं०] जटा-जूटधारी । पु० शिव ।

कपसा - खी० एक तरहकी मिट्टी, काविस; गारा ।

कपसेदा - पु०, **कपसेटी** - खी० कपासके ढंठल ।

कपाट - पु० [मं०] किनाड़ा, दरवाजा । - **बह** - पु० एक चित्रकान्य । - **रंगल** - पु० दरवाजा बंद करना (बल्लभ-कुल) । - **बहल** (क्षस्) - वि० किनाड़ा वैसी चौड़ी छाती-वाला । - **संधि** - खी० दरवाजेके दोनों पतोंका जोड़ ।

- **संधिक** - पु० कानका एक रोग ।

कपार - पु० दे० 'कपाल' ।

कपाल - पु० [सं०] खोपड़ी, मस्तक; भारवलेख; घटेका टुकड़ा; मिट्टीका भिक्षापात्र, लक्ष्मण; वह पात्र जिसमें पुरी-बास पकाया जाता है; अडेका छिलका; अभर्भूजेकी स्पर्श; एक प्रकारका कोट, समूह; उल्लन; बराबरीकी शौनैर की जानेवाली मुल्ल; पर या और किसी अंगकी चौड़ी हड्डी ।

- **केतु** - पु० एक केतु । - **क्रिया** - खी० शब्दाद्यमें सुंदरी खोपड़ीकी बगमें फोड़नेकी क्रिया; किसी चीजकी पूरी तरह नष्ट कर देना । - **चूर्ण** - पु० मूलकी एक क्रिया ।

- **बालिका** - खी० तकला । - **भासी** - खी० एक विशेष प्रकारकी भासक्रिया । - **भासिनी** - खी० दुर्गा । - **भासी** (खिन्) - पु० शिव । - **मोचन** - पु० काशीका एक तालाब । - **संधि** - खी० बराबरीकी शौनैर की हुई संधि ।

- **संधय** - पु० दो रातोंके मध्यमें स्थित और दोनोंका मिश्र बना रहनेवाला राष्ट्र ।

कपालक - वि० [सं०] व्यानेकी शकलका । पु० व्याला ।

कपालाक्ष - पु० [मं०] एक अक्ष; ढाल ।

कपालि - पु० [सं०] शिव ।

कपालिका - खी० [सं०] खोपड़ी; घटेका टुकड़ा; दाँतकी

पयशः दूता ।

कपाकिनी-खी० [सं०] दूता ।

कपाडी (किन्)-पु० [सं०] शिव; कपाड लेकर भीष्म मीननेवाला, एक वर्णसंकर जाति, कपरिवा ।

कपास-खी० एक पीषा जिसमें बीड़ेसे सब निकलती है ।

कपासी-वि० कपासके फूलके रंगका । पु० एक रंग जो कपासके फूलने मिलता और हलका पीला होता है । खी० एक छोटा पेव ।

कर्पिचड-पु० [मं०] पपीहा; गौरा; भरदूल; तीतर; एक मुनि । वि० पीले रंगका ।

कपि-पु० [सं०] बंदर; हाथी; करंजका एक भेद; हर्ष; शिलारस; एक भूप; एक क्षत्रि । -कंदुक-पु० खोपड़ी । -कण्डू-खी० केवॉच । -केतन-पु० अर्जुन (महाभारतमें उनकी पताकापर हनुमानजी बैठे रहते थे) । -केस-वि० भूरे बालोंवाला । -कूट-पु०, -कूट-खी०, -कूट-पु० अमड़ा । -जंझिका-खी० तैलपिपीलिका । -ज, -तैल-पु० शिलारस । -ज्वाज-पु० अर्जुन । -जासस-पु० एक मात्रक पेव । -प्रभा-खी० केवॉच । -प्रभु-पु० राम; सुमीव । -प्रिय-पु० अमड़ा; कैव । -रथ-पु० राम; अर्जुन । -लना-खी० केवॉच । -लोमफला-खी० केवॉच । -लोह-पु० पीतल; गौरा; तीतर । -शाक-पु० कामकला ।

कपिथ-पु० [सं०] कैव ।

कपिथप्रक-पु०, कपिथपर्णी-खी० [सं०] एक क्षुप, वनमा ।

कपिथानी-खी० [सं०] एक पीषा ।

कपिल-वि० [मं०] भूरा, बादामी । पु० एक मुनि जो राजा सगरके साठ हजार पुत्रोंको शाप देकर भस्म कर देनेवाले, साम्प्रदर्शनके प्रवर्तक और विष्णुके चौबीस भवतारोंमें माने जाते हैं; अश्विना एक रूप; सूर्य; शिला; मनु; कृता; एक देश; भूरा रंग । -सुति-पु० सूर्य । -सुम-पु० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है । -धारा-खी० काशाके पानका एक तीर्थस्नान । -स्पृति-खी० माखन-सूत्र ।

कपिलाञ्जन-पु० [सं०] शिव ।

कपिका-वि०, खी० [सं०] भूरे या बादामी रंगवाली । खी० भूरे या सफेद रंगकी गाव; सीपी गाव; अश्विकोणके त्रिगुण पुष्टीककी पत्नी; दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या; जौक; रेणुका नामक गंधद्रव्य; एक बीटा, माया (?) ।

कपिकाङ्गी-खी० [सं०] एक तरहकी स्त्री; एक प्रकारका शिंपा वृक्ष ।

कपिकावर्ष-पु० [सं०] विष्णु ।

कपिकावृष-पु० [सं०] इन्द्र ।

कपिश-वि० [सं०] भूरा, बादामी, जिसमें काला-पीला रंग मिला हो । पु० भूरा या बादामी रंग; वृष ।

कपिशा-खी० [सं०] माथवी कता; एक नदी; एक तरहकी शराव ।

कपिशी, कपिशीका-खी० [सं०] एक प्रकारका मय ।

कपिस-पु० रेशमी बल ।

कर्पा-पु० [सं०] सुमीव; हनुमान्; बांधवान् ।

कबी-खी० चिन्ता; [सं०] मर्कटी ।

कपीव-पु० [सं०] सुमीव; राम; क्षीरिका वृक्ष ।

कपीवन-पु० [सं०] अमृत, अमड़ा, शिरीष, विल आदि वृक्ष ।

कपीष-पु० [सं०] हनुमान्; सुमीव ।

कपीष्ट-पु० [सं०] कपरिवा ।

कपूत-पु० नाकायक वेदा, कुलका नाम डुबोनेवाला लकड़ा, ऊपुष ।

कपूती-खी० नाकायकी; कपूतका काम ।

कपूर-पु० रक्तिकके रंग-रूपका एक गंधद्रव्य जो रखनेसे कुछ दिनोंमें उड़ जाता है; स्त्रियोंका एक जल । -कचरी-खी० एक बेल जो दवाके काम आती है । -काट-पु० एक चावल जो शरीक और खुसबूदार होता है । मु० -खाना-विष खाना ।

कपूरी-वि० कपूरके रंगका । पु० हलका पीला रंग; एक तरहका पान । खी० एक वड़ी जिसकी जड़से कपूरकी गंध निकलती है ।

कपोत-पु० [सं०] कबूतर; पंडुक; चिबिया; कबूतरका भूरा रंग । -कप्या-खी० एक गंधद्रव्य । -पालिका, -पाली-खी० कबूतरोंका दरवा; कबूतरोंकी छतरी । -बंदा-खी० ब्राह्मी कता । -बर्णी-खी० छोटी श्लायवी । -बाणा-खी० एक गंधद्रव्य । -बुष्टि-खी० सनव न करनेकी वृष्टि । -ब्रत-पु० दूसरीका अत्याचार सहन करना । -खार-पु० सुरमा धातु ।

कपोतक-पु० [सं०] छोटा कबूतर; हाथ जोड़नेका एक ढंग; सुरमा धातु ।

कपोतनी-खी० कपोती, कबूतरी-‘करमें निकल कपोतनी, तसवे निकल कपोन’-‘माधुरी’ पत्रिका ।

कपोतांघ्रि-खी० [सं०] एक गंधद्रव्य ।

कपोताञ्ज-पु० [सं०] सुरमा धातु ।

कपोतारि-पु० [मं०] बाज ।

कपोती-खी० [मं०] कबूतरी; पंडुकी ।

कपोती (तिन्)-वि० [सं०] कबूतरकी शकलका; कपोतके रंगका, फासनी; कबूतर रखनेवाला ।

कपोल-पु० [मं०] गाल । -कप्यना-खी० मनसे गद लेना; मनसे गदी हुई बात । -कपिपत-वि० मनगढ़त ।

-राग-पु० गालपरकी लाली ।

कप्तान-पु० [अ० ‘केप्टेन’] जल-स्थल सेनाका एक अफसर; दलनायक; पुलिस सुपरिटेण्डेंट ।

कप्पर, कप्पर-पु० कपड़ा ।

कप्फा-पु० अपेक्षका पसेव ।

कप्यारुष-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य, वृष ।

कप्यास-पु० [सं०] बंदरका चूतड़ । वि० लाल ।

कफ-पु० [सं०] शरीरकी तीन धातुओं (वात, पित्त, कफ) मेंसे एक; बह गाढ़ी, लसीली चीज जो अक्सर खाँसनेसे बाहर आती है, बलगम; हाग, फेन । -कर, -कारक-वि० कफ पैदा करनेवाला । -कूर्चिका-खी० लार, मूक । -क्षय-पु० बरसात । -रॉह-पु० गलेका एक रोग । -गुस्स-पु० पेटका एक रोग । -ज्व, -वाशज, -हृ-वि० कफनाशक । -अवर-पु० कफके सचय और

प्रकोप होनेवाला बुझार। -विरोधी(विद्व)- पु० निर्व।

कक-पु० [अ०] कमीत्र, कुरते आदिकी आस्तीनका बह दुररा भाग जिसमें बदन लगाता है; खोँसी; जोड़ेका अर्ध-चंद्राकार टुकड़ा जो चक्रमकसे आग हावनेके काम जाता है। -दार-वि० [हि०] जिसकी आस्तीन कफदार हो।

कक-खी० [अ०] इयेली। -बस-पु० इयेली। -पा-पु० तल्ला। सु०-(के) अफसोस मखना-हाथ मखना, पछताना।

कक-पु० [फा०] हाग, फेन; लुआव; बलगम। -वीर-पु० एक तरहकी कलछी जिससे घी, बाइनी आदिका हाग, मेल आदि निकालते हैं। -चा-पु० छोटा कफलीर।

ककवि-खी० [सं०] कुहनी।

ककन-पु० [अ०] मुँदपर लपेटा जानेवाला कपड़ा, खवा-च्छादन, लवबल, धृतचेल। -काटी-खी० सबदाई; अंत्येष्टिका प्रबंध, सामग्री। -खसोटी-वि० कंजूस; दूसरेका माल जबरदस्ती हथ्थ जानेवाला। -खसोटी-खी० बमछालका बर जिससे डीम कफन फाफकर बसूल करता था; कंजूसी; मोच-खसोटीकर धन बटोरना। -खोर-पु० वह जो कज खोदकर मुर्देका कफन चुराये; मारी चोर; दुष्ट व्यक्ति। -खफन-पु० अंत्येष्टि; अंत्येष्टिका प्रबंध। सु०-को कौकी न रखना-कुछ भी बचा न रखना, जो कुछ कमाना सब खर्च कर डालना। -को कौकी न होना-अकिंचन, बहुत गरीब होना। -काफकर उठना-मुर्देका जो उठना। -काफकर लिखाना, बोलना-बहुत जोर से बोलना। -मैला न होना-बुल्लू हुए अधिक दिन न होना, भरे हुए बोरे ही दिन होना (मुसल)। -सर या सिरसे खोँचना-रजधूमिमें जाते हुए सैनिकका कफनके काम आनेके लिए सिरमें तकड़े कपड़ा बाँधना, मरनेकी तैयार होना; जानवर खेळना।

ककनागा-स० कि० मुर्देको कफनमें लपेटना। अ० कि० कफनमें डक जाना।

ककनी-खी० [अ०] बिना आस्तीनका कुरता जो (मुसलमान) मुर्देको पहनाया जाता है; साधु-फकीरोंका बिना शॉहका पहननेका ढोला-ढाला कुरता।

ककल-वि० [सं०] दलेण्यायुक्त; कफी।

ककली-पु० एक प्रकारका गेहूँ, खपली।

ककस-पु० [फा०] जूता। -बरदार-पु० जूते डोनेवाला तुच्छ सेवक; तुच्छ जन।

ककस-पु० [अ०] पितृका; कैदखाना; तंग या बंद जगह। ककाबंद-खी० [अ०] कुपरीका एक पैव।

ककारि-पु० [सं०] सौँठ।

ककाकस-खी० [अ०] जिम्मेदारी; जमानत। -वामा-पु० जमानतनामा।

ककासाव-पु० [सं०] कफ रहनेका स्थान (कंठ, अमाशय आदि)।

ककी(फिर)-वि० [सं०] कफप्रधान; कफकी अधिकतासे पीड़ित। पु० हाथी।

ककीना-पु० जहाजके फंशपर लगे हुए तख्ते।

ककीक-पु० [अ०] जमानत करने, देनेवाला; जिम्मेवार।

ककेलु-वि० [सं०] कफी, शैमिक।

ककीवि-खी० [सं०] कुहनी।

ककोदर-पु० [सं०] एक उदररोग।

ककब-पु० [सं०] सिरकटा या बिना सिरका धक; पैद; बादल; जल; पुच्छल तारा; राहु; एक राक्षस जो दंष्टक बनमें रामके हाथों मारा गया।

ककंधी(विद्व)-वि० [सं०] जलवाला (मरुत)। पु० कात्थावन।

कक-अ० किस समय, कदा; कभी नहीं (बह मेरी बात कब सुनता है)। -का-कितनी देरसे; बहुत देरसे; बहुत पहले।

ककक-पु० [फा०] ककोर।

ककड़ी-खी० लकड़ोंका एक खेल; कंपा।

ककर-वि० [सं०] चितकनरा। पु० व्याख्याता; बँधी हुई चोटी; लवण; अम्ल।

ककर-खी० दे० 'कज'।

ककरखान, ककरिखान-पु० दे० 'कमिस्तान'।

ककरा-वि० जिसमें दूसरे रंगके दाग-धब्बे हों; चितकनरा। पु० एक प्रकारकी शक्की, कौर।

ककरी-खी० [सं०] दे० 'कवरी'।

ककल-अ० दे० 'कल'।

कका-पु० [अ०] एक लड़ा, ढोला पहनावा जो अंगरखे आदिके ऊपर पहना जाता है, चोपा।

ककाब-पु० टूटा-फूटा सामान; रद्दी चीजें।

ककाबा-पु० शंभट, बलेह।

ककाबिया, ककाबी-पु० टूटी-फूटी चीजें खरीदने, बेचने वाला।

ककाब-पु० [फा०] कुटे या बारीक कटे हुए मांसकी गोली या टिकिया जो सीखचेमें गोदकर आगपर सुर्ख की गयी हो। वि० भुना हुआ; जला-भुना। सु०-करना-भूनना; जलाना; बहुत कट पहुँचाना। -होना-जलना-भुनना; अति मूढ़ होना।

ककाबचीनी-खी० एक दवा जिसके दाने मिचकेले होते हैं।

ककाबी-पु० ककाब बेचनेवाला।

ककाब-पु० दे० 'कबा'।

ककार-पु० व्यवसाय, व्यापार; छोटा व्यवसाय; लेन-देन; यशका कीर्तन; रद्दी या छोटी-भोटी चीजें।

ककारबा-स० कि० उल्लाखना।

ककाखा-पु० [अ०] सपष्टि दूसरेको देनेका दस्तावेज; बैनामा; दानपत्र; अधिकारपत्र। -ए-नीलाम-पु० नीलाम लेनेवालेको नीलाम करनेवाले अधिकारीमें मिछने-वाला प्रमाणपत्र। -बबीस-पु० ककाला लिखनेका पेशा करनेवाला। - (के)दार-वि० जिसके पास (किसी चीजका) ककाला हो। सु०-लिखाना, -लेना-ककजा कर लेना, मालिक बन जाना।

ककाहट-खी० दे० 'ककाहत'।

ककाहट-खी० [अ०] दोष, खोट, खराबी; कठिमाई; शंभट।

ककि-पु० माट; दे० 'कवि'।

ककिथ-पु० [सं०] दे० 'कपिथ'।

कविकी-श्री० एक तरहका मटर ।

कवीर-वि० [अ०] बहा; दुजुनी सम्मानित । पु० एक प्रसिद्ध संत, संप्रदाय-वर्तक और हिंदी कवि (समय अनुमानतः १४५९-१५७५ ई०); होलीमें गाथा जानेवाला एक प्रकारका गीत । -पंथ-पु० कवीरका चलाया हुआ पंथ या संप्रदाय । -पंथी-वि०, पु० कवीरके पंथ या संप्रदायका अनुयायी । -बन्ध-शरीरके पासका बन्ध बूझ जो दुनियाका सत्ते बका बरकर मल्ला जाता है ।

कवीर-पु० [अ०] मनुष्य; समुदाय ।

कवीर-पु० दे० 'कमीर' ।

कवीर-पु० [अ०] कुल, वंश; जाति; असम्भव, जंगली आदिमयोका व्यक्तिविशेषकी नेता या सरदार माननेवाला समूह । श्री० पत्नी, जोर ।

कबुलबाना-स० कि० स्वीकार करना ।

कबुलबाना-स० कि० दे० 'कनुलबाना' ।

कबुलि-श्री० [सं०] जानवरका पिछला भाग ।

कबुतर-पु० एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके पाखण्ड और जंगली दो भेद होते हैं । -झाड़ा-पु० कबुतर रखनेका घर या कातक । -झाड़-पु० एक झाड़ी । -बाज़-पु० कबुतर पालने, उभाने, लहानेवाला । सु०-करी तरह छोड़ना-नष्ट करना, बहुत बेचैन होना ।

कबुतरी-श्री० कबुतरकी मादा, कपीती नर्तकी; सुंदर स्त्री ।

कबू-वि० [फा०] नीला, आसमानी । पु० नीला रंग; नीलकण्ठ, रमणीय ।

कबू-वि० नीला, आसमानी ।

कबूल-पु० [अ०] मानना, स्वीकार करना, शकल करना ।

-ले) कब-वि० झुंझ, झुंझ ।

कबूलना-स० कि० स्वीकार करना, मान लेना ।

कबूलियत-श्री० [अ०] स्वीकृति; वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला देनेवालेको लिखकर उसकी शर्तोंकी स्वीकृतिके रूपमें देता है ।

कबूली-श्री० चनेकी दालकी खिचड़ी या पुलाव ।

कब्ज़-पु० [अ०] पकड़; अधिकार; अवरोध; कोहरबला, मलका आँतोंमें रुकना, पेट साफ न होना । -कुसा-वि० कब्ज दूर करनेवाला, रोक । सु०-करना-पकड़कर खींचना, ले जाना (रुद्ध कब्ज करना); मलाबरोबर करना ।

कब्ज़ा-पु० [अ०] दखल; अधिकार; पकड़; काबू, बस; दस्ता, मुठ; बाज़; छोड़े या पीतलका पुरजा जिससे किवाड़े आदि चौखटमें जोड़नेपर धूम सकते हैं; कुश्तीका एक पंच । -दार-वि० कब्जा रखनेवाला; अधिकारी; जिसमें कब्जा रखा हो । सु०-(कब्जे) पर हाथ रखना-नलवार खींचने, किसीपर बार करनेकी उद्यत होना ।

कब्जियत-श्री० 'कब्ज' ।

कब्ज़ खवसूल-पु० [फा०] वह रजिस्टर जिसपर बेसन पानेवालोंके हस्ताक्षर कराये जाते हैं ।

कम-श्री० [अ०] वह गद्दा जिसमें मुर्दा गाढ़ा जाय; उसके ऊपर रखा हुआ पक्कर या कमाया हुआ कबूतर ।

-गाह-श्री० कमिस्तान । सु०-का अज़ाब- (सुसलमानोंके विश्वासानुसार) पातकीकी कब्रमें भिलनेवाला कलेश । -का मुँह झाँक आना-मौतके मुँहसे निकल

जाना, मरते-मरते बचना । (अपनी) -खोदना-अपने सर्वनामका उपाय करना । -में पाँच, पैर छटकाये होना-धुलुका दिन करीब होना; अति बूढ़ होना । -में साब छे जाना-मरते दम तक याद रखना, कमी न मूलना । -से उठकर आना-मरते-मरते बचना, नव-जीवन पाना ।

कमिस्तान-पु० [अ०] वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जायें, जहाँ बहुतसी कब्रें हैं ।

कमल-अ० [अ०] पहले, पेशवर, आगे । -अज़ बक्त-अ० समयसे पहले ।

कमी-अ० (कम-हो) किसी समय । -कमी-ज-तब, यदा-तदा । -का-कमका, बरसेसे । -न कमी-एक-न-एक दिन, किसी-न-किसी समय ।

कमू-अ० दे० 'कमी' ।

कमंगर-पु० कमान बनानेवाला; चित्रकार; उसकी हुई हड्डी बैठानेवाला ।

कमंगरी-श्री० कमंगरका काम या पेशा ।

कमन्दा-पु० बदशर्तोंका कमानकी शङ्खवाला एक औजार ।

कमंडल-पु० दे० 'कमंडलु' ।

कमंडली-वि० कमंडलधारी; माया; दौंगी । पु० ब्रह्मा ।

कमंडलु-पु० [सं०] साधु-सन्त्यासियोंका दरियाई नारियल, तुँबी आदिका बना जलपात्र । -सह-पु० पाकरका पेश । -खर-पु० शिब ।

कमंड-पु० दे० 'कर्म' । श्री० [फा०] फंदा; फंदिदार रस्ती जिसके सहारे नीचे मकानोंपर चढ़ जाते हैं; रस्तीकी सीढ़ी ।

कमंड-पु० दे० 'कर्म'; झगड़ालुवाई ।

कम-वि० [फा०] बीड़ा, अल्प; छोटा; दूरा, सराव । अ०

कचित्, बहुत कम । -अज़क-वि० मूर्ख, निर्बुद्धि ।

-असल-वि० दोगला; कमीना, नीच । -उज़-वि०

छोटी उम्रवाला, अल्पवयस्क । -क्रीमस-वि० सस्ता, अल्पमूल्य ।

-ज़ुर्ब-वि० किफायतसे चलनेवाला ।

(-आलाक बर्सी-सस्ती पर बढिया, यथेष्ट उपयोगी) ।

-ज़ुराक-वि० कम खानेवाला । -ज़ुबाब-पु० एक

रेशमी कपड़ा जिसपर सोने-चाँदीके तारोंका काम होता है । -शो-वि० कम बोलनेवाला, अल्पभाषी । -ज़ुफ़-वि०

जोछा; कमीना, नीच । -ज़ोर-वि० दुरल, कम ताकत या असरवाला । -ज़ोरी-श्री० दुर्बलता, अशक्तता ।

-तर-वि० अधिक छोटा, लघुतर; अल्पतर ।

-तरीब-वि० छोटेमें छोटा, लघुतम; कमसे कम ।

-तबज़ाही-श्री० कापरवाई । -तोछा-वि० कम तोलनेवाला, बर्फी मरनेवाला । -नज़र-वि० जिसकी निगाह

भीरी हो दूर तक जाय, अद्दर्शी । -नसीब-वि०

अभाग्या, बदनसीब । -नसीबी-श्री० दुर्भाग्य, बद-किस्ती ।

-बफ़ू-वि० अभाग्या, हतभाग्य । -बफ़ूरी-श्री०

दुर्भाग्य, बदनसीबी । (-आ सारा-अभाग्या) ।

-बाब-वि० कम मिलनेवाला, दुर्लभ । -ब(शो)ज़ादा,

-बैस-अ० बीड़ा-बहुत । -सज़ाब-वि० कम बोलनेवाला, अल्पभाषी । -सिन-वि० कमउम्र, जवान ।

-हिम्मत-वि० पराहिम्मत, डरपीक, कायर ।

—हेसिधस-वि० अत्यधिक छोटा, नीचा ।
कमलकर-पु० कदारकी जेगीकी एक जाति ।
कमलस-वि० कामचोर, काछती ।
कमलसोरा-पु० बैक आदिके मुँहमें होनेवाला एक रोग ।
कमली-स्त्री० [पु०] पतली, लफ्फनेवाली स्त्री; बौस आदिकी पतली टहनी, कंचिका; तौली; पंजा लहानेका एक प्रकार जिससे पैगलिवी दूट जाया करती है ।
कमलपत्र-स्त्री० दे० 'कामाख्या' ।
कमली-स्त्री० पतली, नरम टहनी ।
कमल-पु० [सं०] कसुआ; बौस; कमंडलु; तूँही, सलबका पंच; एक दैत्य ।
कमल-पु० कमल ।
कमली-स्त्री० कमी । वि० कम ।
कमल-वि० [सं०] कामी; सुंदर । पु० कामदेव; ज्योतिष; ब्रह्मा । -**कमल**-पु० एक पत्नी, कंक, कोंक ।
कमला-अ० कि० कम होना, घटना ।
कमली-वि० दे० 'कमलीय' ।
कमलीय-वि० [सं०] कामना करने, जादूने योग्य; सुंदर ।
कमलैत-पु० कामान बाँधनेवाला, तीरंदाज ।
कमलैती-स्त्री० तीरंदाजी ।
कमर-वि० [सं०] कामी । स्त्री० [फा०] सरिरका मध्य, पेट और पेड़के बीचका भाग, कटि; मध्य भाग; कुश्तीका एक पंच । -**कस**-पु० पलासका गोंद; कमरमें पहननेका एक गहना । -**कोटा**-**कोटा**-पु० परकोटेके ऊपरकी दीवार जो लगभग कमरपर ऊँची रहती है; रक्षाके लिए, बेटी हुई दीवार । -**कोटा**-पु० कोटेकी वह कड़ी जो दीवारसे बाहर निकली हो । -**दूटा**-वि० कुचका; नामद । -**सेवा**-पु० कुश्तीका एक पंच । -**खोड़**-पु० कुश्तीका एक पंच । -**खोखल**-स्त्री० जीन कसनेका लसमा । -**पट्टी**-स्त्री० अंगरत्नी आदिमें कमरके ऊपर लगायी जानेवाली पट्टी । -**पेटा**-पु० मालखंभकी एक कसरत । -**बंद**-पु० कमर बाँधनेका एक दुपट्टा, पट्टा; पेटी; हमारबंद; लडाही । वि० कटिबद्ध, मुस्तैद । -**बंदी**-स्त्री० मुस्तैदी; लडाईकी तैयारी । -**बंद**-पु० कुश्तीका एक पंच । -**बल्ल**-पु० खपरेलमें कोरीमोंके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी । -**बल्ला**-वि० कमर बाँधे हुए, तैयार, सज्ज । पु० दे० 'कमरबल्ला' । **मु०**-**करवा**-घोड़ेका सवारिमें कमर बल्लाना । -**कसना**-(किसी कामके लिए) तैयार, आमादा होना; पक्का इरादा करना । -**कोखना**-कमरबंद खोखना; दम लेना; (माथा वा किसी कामका) सकल, विचार स्वाय देना । -**दूटना**-हिम्मत फट्ट होना; हिल बैठ जाना; कुछ करनेका दम न रह जाना । -**बाँधना**-कमरबंद बाँधना; सफरके लिए तैयार होना; कमर कसना । -**बैठ जाना**-दे० 'कमर दूटना' । -**खीची करना**-भगवद गिदाना, सुस्तावना ।
कमरल-पु० एक वृक्ष या उसका फल जो फाँकदार और कुछ खट्टा होता है ।
कमरली-वि० कमल जैसा; कमरबंदके समान फाँकदार । स्त्री० किसी चीजके किनारे कटी हुई कंगुरदार फाँके ।
कमरा-पु० कोठी; इजलासे सदी कोठी जिसमें विचार

रक आराम, मिनी बातचीत करता और कमी-कमी मुकदमा भी सुनता है, 'वेबर'; कोटो खींचनेका बंधा; दे० 'कमल' ।
कमरिवा-पु० रौना हाथी । * स्त्री० दे० 'कमली'; 'कमर' ।
कमरी-स्त्री० दे० 'कमली'; सलबका । पु० घोड़ेका एक रोग । वि० पीठ मारनेवाला (गोधा) ।
कमल-पु० [सं०] पानीमें होनेवाला एक प्रसिद्ध पौधा और उसका फूल, पत्र; जल; गोधा; डोम; सरस; ब्रह्मा; गोप; धर्मोका एक भेद; अलंकार; गोधा; गर्भाशयका मुँह; मूत्र तालिका का एक भेद; एक राग; एक वृक्ष; पीलिया रोग; मोमबत्ती जलानेका काँचका गिलास; मूत्राशय । -**कंडा**-पु० [हि०] कंबलघट्टा । -**कंड**-पु० कमलकी जड़, मुरार । -**गड्डा**-पु० [हि०] कमलका बीज । -**गर्ज**-पु० कमलका छप्पा । -**ज**-पु० ब्रह्मा । -**मयन**-वि० कमलका छप्पा । -**ज**-पु० ब्रह्मा । -**मयन**-वि० कमलकी पैलुकी ओल्लोवाला । पु० विष्णु, राम; कृष्ण । -**नाम**-पु० विष्णु । -**नाल**-स्त्री० कमलकी डंडी । -**पाणि**-वि० जिसके हाथ कमलकी तरह हों । -**बंद**-पु० एक चिकनाई । -**बंद**-**बंद**-पु० सूर्य । -**बाई**-स्त्री० [हि०] कंबल रोग, पीलिया । -**मय**-**मय**-पु० ब्रह्मा । -**मूल**-पु० कमलकी जड़ । -**मोनि**-**संमय**-पु० ब्रह्मा । -**बन**-पु० कमलोंका समूह । -**बायु**-स्त्री० एक रोग जिसमें आँखें पीली हो जाती हैं, पीलिया ।
कमलक-पु० [सं०] छोटा कमल ।
कमल-पु० स्पर्शने सुगमली पैदा करनेवाला मूँधी नामक गोधा; सरे फल आदिमें पहननेवाला कौषा । स्त्री० [म०] लक्ष्मी; धन; एक नदी; एक वर्णवृक्ष; एक तीव्र । -**कोत**, -**पति**-पु० विष्णु ।
कमलाकर-पु० [सं०] कमलोंका समूह; कमलोंसे भरी झील, तालाब आदि ।
कमलाकार-वि० [सं०] कमलके आकारका । पु० छपपत्रका एक भेद ।
कमलाक्ष-वि० [सं०] कमलकी ओल्लोवाला । [स्त्री० 'कमलाक्षी'] पु० कमलघट्टा ।
कमलाग्र-स्त्री० [सं०] लक्ष्मीकी बड़ी बहन, दरिद्रा; दुर्भाग्य ।
कमलाकषा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।
कपलासन-पु० [सं०] ब्रह्मा; एक आसन, पद्मासन ।
कमलिनी-स्त्री० [म०] कमलका पौधा या डंडी; कमल-समूह; कमल; कमलसे पूर्ण जलाशय । -**कोत**, -**बंद**-पु० सूर्य ।
कमली-स्त्री० छोटा कंबल; [सं०] पद्मसमूह ।
कमली(किह)-पु० [सं०] ब्रह्मा ।
कमलेक्षण-वि० [सं०] कमलकी ओल्लोवाला ।
कमलेश-पु० [सं०] विष्णु ।
कमलामा-सं० कि० 'कमलामा' का प्रे० ।
कमलसिख-पु० [अ०] 'कमलसिख' । पौजी रसदका प्रबंध करनेवाला विभाग ।
कमल-पु० [अ०] सेना-नामका सेनाका एक विशेष अङ्क

सर । —**हृ-वीक**—पु० प्रधान सेनापति ।
कमा-झी—[सं०] सौदर्य ।
कमापच—**झी**० कमानी; छोटी कमान ।
कमाई—**झी**० परिश्रमसे पैसा किया हुआ पैसा वा माल, उपार्जित धन; अम-फल; मजदूरी; परिश्रम, काम; कर्मगत; पैसा कमानेका धंधा; उद्यम; वस्तुको सुधारने-बनानेका काम ।
कमाह—**वि**० कमानेवाला, कमासुत ।
कमाच—पु० एक देशकी कपडा ।
कमाची—**झी**० खुली हुई नीली ।
कमान—**झी**० [फा०] बनुष; द्रव्यपुत्र; मेहराब; दो तारोंके कोणांशको दूरी या क्षितिजसे किमी तारोंकी ऊँचाई नापनेका यंत्र; मालखंभोंकी एक कसरत; * तीप । —**घर**—पु० कमान बनावेवाला । —**घा**—पु० छोटी कमान; सारंगी बजानेका यंत्र; पुनकी । —**घर**—**वि**० मेहराबदार; कमान बंधने-वाला । —**पुस्त**—**वि**० कुपडा । —**(जे)अम्**—**वि**० जिबकी अर्धे कमानसी हों; झुंदा । **मु०-झी**—**चला**—तीर फेंकनेके लिए कमानके रौंदेको अपनी ओर खींचना । —**कदना**—बोलवाला होना; गुरसेमें होना ।
कमान—**झी**० [अं० 'कमांड'] आदेश, हुक्म; फौजी क्यूटी । —**अकसर**—पु० कमांडर; कमांडिंग अकसर । —**अकसरी**—**झी**० सेना-विशेषज्ञ नायकत्व, संचालन । —**घर**—पु० फौजी अकसर । **मु०-पर जाना**—लगाईपर जाना । —**बोलना**—लगाईपर जाने, फौजी क्यूटीका आदेश देना ।
कमाना—**म**० कि० अम-उद्यमसे पैसा पैदा करना; अन्नादि उपजाना, पैदा करना; बरकी कुछ विशेष सेवाएँ (नार्स, बारी आदिके काम) नियमपूर्वक करना; पाखाना नाक रगना; वस्तुको श्रम द्वारा सुधारना, काम लेने लायक बनाना (खेत, चमड़ा इ०); मजदूरी करना (पाप, पुण्य इ०); कसब, वेदना-वृत्ति करना; † घटाना; छीलकर पतला करना । (कमाची हुई देह या हड्डी—व्यायामसे बलिष्ठ, गठीला बनाना हुआ शरीर) ।
कमानिघर—पु० कमांडर ।
कमानिवा—पु० तीरदात्र, कमनेत । **वि**० कमानीदार; मेहराबदार ।
कमानी—**झी**० छोटे आदिकी लकड़ी और कुछ सुकायी हुई तीली; यही आदिका तारोंके चकरकी शृङ्खला पुरजा; वह पेड़ जो आँत छत्रनेकी बीमारीमें पड़नी जाती है; सारंगी बजानेका यंत्र; बर्द है आदिका एक औज़ार जिसमें बरमा फँसकर खींचे है । —**घर**—**वि**० कमानेवाला ।
कमायज—**झी**० सारंगी बजानेकी कमानी ।
कमाह—पु० [अं०] पूर्णता, समाप्ति; पराकाष्ठा; निपुणता, कौशल; पुण; जोहर; ज्वलुत चमत्कारिक कार्य; कबीरका वेदा । **वि**० सर्वोत्तम; पूर्ण; अतिशय । **मु०-करना**—अद्भुत कुशलता, योग्यताका परिचय देना ।
कमाहपाखा—पु० आधुनिक तुर्कीका निर्माता (१८८१-१९३८) । १९१५में उत्तरे अफ्रीकासे इरेदानीयलकी वृद्धतासे रक्षा की और १९२२से तुर्कीसे बुल्गारियाकी बाहर खदेड़ दिया । तुर्क प्रजासत्तका प्रथम राष्ट्रपति १९२३से १९३८ तक ।

कमाहा—पु० अम्वासके लिए लड़ी जानेवाली कुत्ता ।
कमाहिवत—**झी**० [अं०] दक्षता; पूर्णता ।
कमासुत—**वि**० कमानेवाला, कमाक ।
कमिदि—**झी**० [अं०] दे० 'कमेटी' ।
कमिला(व)—**वि**० [सं०] कामी, व्यवसायी । [**झी**० 'कमित्री']
कमिधर—पु० [अं०] कमिधरों या किस्मतका प्रधान अधिकारी; कमीसमका सदस्य; सरकारके प्रतिनिधिकर्षमें काम करनेवाला अधिकारी ।
कमिधरी—**झी**० [अं०] कमिधरके अधीन प्रदेश, विभाग, किस्मत; कमिधरकी कहचरी ।
कमी—**झी**० कम होना, अवपना; पुटि; मूल्यता; घाटा; कोताही । —**बैसी**—**झी**० कम या ज्यादा होना, अवस्था-अधिकता ।
कमीज—**झी**० कफ और कलरदार कुरता, 'सर्ट' ।
कमीन—**झी**० [फा०] बात, हमला करनेके लिए छिपकर बैठना । **वि**० दे० 'कमीना' । —**हाह**—**झी**० बात लगाने-की अगह । —**पन**—पु० दे० 'कमीनापन' ।
कमीना—**वि**० [फा०] नीच, झुढ़, खोटा । —**पन**—पु० नीचता, झुढ़ता ।
कमीला—पु० एक फलदार छोटा पेड़ ।
कमीस—पु० [अं०] किसी विषयकी जाँच, विचारके लिए नियुक्त छोटी समिति वा मंडल; दूरस्थ व्यक्तिके इन्हारके लिए एक या अधिक बकीलोंकी नियुक्ति; एजेंडका काम करनेका अधिकार; दखली, दख्खी ।
कमीस—**झी**० [अं०] दे० 'कमीन' ।
कमुजा, कमुजा—**झी**० [सं०] बालोंका गुच्छा ।
कमुजा—पु० नावके ढाँका दस्ता ।
कमुद्धर—पु० वनुष तोड़नेवाले रामचंद्र ।
कमुन—पु० [अं०] मोरा ।
कमुनी—**वि**० जोरेका बना ।
कमेटी—**झी**० किसी खास कामके लिए बनायी गयी समिति ।
कमेरा—पु० काम करनेवाला; नौकर ।
कमेला—पु० जानवरोंकी जिवह करनेका स्थान, कसाईखाना ।
कमेहरा—पु० चूरी डालनेका मिट्टीका सौंचा ।
कमेह—पु० [अं०] चीनी मिट्टीका बना एक पात्र जो मल्लयागके लिए स्टूलमें लगा दिया जाता है ।
कमेहन, कमेविन—**झी**० दे० 'कुमुदिनी' ।
कमेहिक—पु० कामीर राग गानेवाला; गवैया ।
कमेरा—पु० मटका ।
कमेरी—**झी**० छोटा कमेरा, मटकी ।
कम्मल—पु० ओढ़ने-विछानेके कामका ऊनका बना मोटा कपडा, कंबल ।
कम्मा—पु० तापत्रपर लिखा हुआ लेख ।
कम्पू—पु० [अं०] सपत्तिके समान और संयुक्त अधिकारी मनुष्योंका समूह वा संघ; फ्रांस आदिमें देशका सबसे छोटा तथा स्वशासक विभाग; उक्त विभागके निवासी वा सरकार ।
कम्प्यूटिज्म—पु० [अं०] समाजकी वह व्यवस्था जिसमें संपत्तिपर समाजका अधिकार होता है और प्रत्येक व्यक्ति

अपनी योग्यताके अनुसार कार्य करता और आवश्यकता-
नुसार इष्टि पाता है, साम्यवाद।

कम्प्यूनिस्ट-पु० [अ०] कम्प्यूनिज्मका मनुवाही, मार्क्स-
वारी।

कन्न-वि० [सं०] कामुक संदर।

कन्या-स्त्री० दे० 'काया'।

कन्याधू-स्त्री० [सं०] विरम्यकविपुकी पत्नी, प्रह्लादकी माता।

कन्यास-पु० [अ०] ठिकाना; ठहराना, ठहरना; ठठना,
सका होना।

कन्यासत-स्त्री० [अ०] सुसलमानों, ईशान्यों आदिके
विवाहासुनुसार प्राणियोंके कर्मोंका लेखा लेनेका दिन, रोजे-
जवा, प्रहवा; आरुण; हंगामा, हलचल। -**का**-बलका,
वज्रका। -**की** चषी-प्रलयका; धोर संकटका काल।
मु०-बरपा करना-गजब डाना, संकट उपस्थित करना,
मुसीबत काना; क्रोध करना।

कन्यास-पु० [अ०] अनुमान, अटकल; कल्पना।

कन्यासी-वि० अनुमित; माना हुआ; अटकलपत्र।

कर्क-पु० [सं०] खोपड़ी; ठठरी; अस्थि; नरियरी; कर्म-
बहु; † आर आदिमें बिना हुआये पहुँचकर बिना भोजन
किये न टकनेवाला, कैमाल।

कर्कष-पु० [सं०] मेला; बाजार।

कर्कग-पु०, **कर्करी**-स्त्री० एक तरहका मोटा घान।

कर्क, **कर्कक**-पु० [सं०] एक साह, कंठा जिसके फल
आदि दवाने काम आते हैं; [हिं०] मुरगा। -**झाना**-
पु० मुरगे रखनेकी जगह।

कर्कजा-पु० दे० 'कर्क'। वि० भूरी आँखोंवाला।

कर्कजुना-पु० दे० 'कर्क'; कर्कजनासा रंग; † जौके पौधों-
का एक रोग; घमोह। वि० कर्कजके रंगका।

कर्कड-पु० कुशल पत्थर; [सं०] बौंसका बना टोकरा या
पिंदारा; साहदका छप्पा; तलवार; एक तरहकी बछल,
कारकवा; यकृत; एक तरहकी चमेली।

कर्कडक-पु०, **कर्कडिका**-स्त्री० [सं०] बौंसकी बनी टोकरी
या पिंदारी।

कर्कडी-स्त्री० अजीकी चादरा; [सं०] कर्कडिका।

कर्कडी(विन्)-पु० [सं०] मछली।

कर्कड़ा-पु० वह कंगाल जो बिना जीवन किये न लगे,
कर्क।

कर्क-वि० [सं०] दे० 'कर्कित'। पु० दे० 'कर्क'।

कर्कित-वि० [सं०] मिश्रित, मिला हुआ; खचित।

कर्कभ-पु० [सं०] दहीमें सना हुआ सत्तु; दलिया; एक
मिश्रित गंध; पंक।

कर्कभक-पु० [सं०] दलिया; दहीमें सना हुआ सत्तु।

कर-पु० [सं०] हाथ; किरण; हाथीकी घँक; मालगुजारी,
महसूल; ओला; हस्त मक्षर; लंबाईकी एक माप। वि०
करनेवाला (समासातमें-'सुखकर', 'दुःखकर')। * पु०
कल, छल, धूर्तता। * प्र० का [ताकर नाम भरत जस
होई, रामा०]। -**कलक**-पु० नाकूल। -**कमक**, -**पंकज**,
पण्ड-पु० कमलसा कोमल सुंदर हाथ। -**कलसा**-पु०
अंजलि। -**कोष**-पु० पानी लेनेके लिए गह्रायी हुई
हथेली, नुल्ल। -**गद**-वि० हस्तगत। -**ग्रह**, -**ग्रहण**-

पु० कर लगाना या बसूल करना; पाणिग्रहण। -**ग्रह**-
पु० पति; कर बसूल करनेवाला। -**घंका**-पु० [हिं०]
एक तरहका ढक। -**ज**-पु० नाकूल; उँगली; करंज।

-**जोडी**-स्त्री० [हिं०] एक जोपटि, हरथानवी। -**ज्योति**-
पु० एक हथु, करजोरी। -**खल**-पु० हथेली। -०

खनि-स्त्री० ताड़ी। -**खली**-स्त्री० हथेली; ताड़ी।

-**सारी**-स्त्री० दे० क्रममें। -**साळ**-पु० ताड़ी, करतल-
ध्वनि; हाथसे बजानेका, कीर्तन आदिमें ध्वनिकृत, एक
बाजा। -**साळिका**-स्त्री० ताड़ी। -**साळी**-स्त्री० छोटा

करताल; ताड़ी। -**सोधा**-स्त्री० पूर्वं बंगालकी एक नदी।

-**द**-दे० 'क्रम'। वि० कर खिराज देनेवाला (राजा,
राज्य); सधारा देनेवाला। पु० किसान। -**दाता**(सु)-
पु० कर देनेवाला। -**धर**-पु० बादल। -**पत्र**, -**पत्रक**-
पु० आरा। -**पकई**-स्त्री० दे० 'करवली'। -**पल्लव**-
पु० उँगली। -**पल्लवी**-स्त्री० उँगलियोंके संकेतसे शब्दोंके

घोतनकी विद्या। -**पात्र**-पु० कुछ लेनेके लिए गह्रायी
हुई हथेली। -**पाषी**(विन्)-वि० अंगुलीमें हो अन्न-जल
लेकर ग्रहण करनेवाला(साधु)। -**पाळ**-पु० खट्टा,

करवाल। -**पाळिका**-स्त्री० सोटा। -**पिचकी**-स्त्री०
दोनों हाथोंकी मिलाकर बनायी हुई पिचकारी। -**पीचन**-
पु० पाणिग्रहण, विवाह। -**पुड**-पु० हाकका कपर-

वाला, हथेलीका उलटा भाग। -**बाल**-पु० दे०
'करवाल'। -**भार**-पु० करका बोझ; भारी कर। -**भई**,
-**भईक**-पु० करौदा; ओंठका। -**माळ**-पु० धुआँ।

-**माळा**-स्त्री० जपमें माणिक रूपमें काम देनेवाली उंग-
लियोंकी पोरें। -**माळी**(विन्)-पु० स्वयं। -**मुक**-
वि० करते मुक। पु० फेंककर बार करनेका हाथियार।

-**मूळ**-पु० कलाई। -**कह**-पु० नाकूल। -**बारक**-
पु० दे० 'करवाल'। -**बाल**-पु० सन्न; नाकूल। -**बालिका**-
स्त्री० छोटा बच्चा। -**बाळी**-स्त्री० करौली। -**बीर**,
-**बीरक**-पु० कनेर; तलवार; श्मशान; ब्रह्मावर्त देशका एक

प्राचीन नगर; चेदि देशका एक प्राचीन नगर। -**शाखा**-
स्त्री०, -**छूक**-पु० उँगली। -**संयुद**-पु० दोनों हथे-
लियोंके मिलानेसे बना गड्ढा, अंजलि। -**साह**-पु०

किरणोंका मंद पड़ना; हाथकी कमजोरी। -**सूत्र**-पु०
विवाहका कनन। -**स्वाक्षी**(विन्)-पु० शिव। -**स्वन**-
पु० ताड़ी।

करई-स्त्री० छोटा करवा; एक छोटी चिड़िया।

करक-स्त्री० पेशाबका थोड़ा-थोड़ा और जलनके साथ होना;
थोड़ी-थोड़ी देरके बाद होनेवाली पीसा; टीस। पु० [सं०]
कर्मबहु; करवा; नारियलकी खोपड़ी; अनार; हाथ; मह-

सुख; एक पक्षी; उपल।

करकच-पु० समुद्रके पानीसे बनाया जानेवाला नमक;
नखेका।

करकचहारा-पु० अमलतास।

करकट-पु० कूबा, कतवा; † छोटेकी कलईदार चादर
जिससे कंडाल, बाटडी आदि बनाते हैं।

करकटिवा-स्त्री० एक तरहका सारस।

करकना-अ० कि० आवाजके साथ फटना, तड़कना;
नुमना, साकना।

करवी—खी० जुआर वा बाजरेके षंडळ जो चारेके काम आते है।

करबुर—पु० दे० 'कर्बुर'।

करबुरस—पु० घोड़ेकी जीनमें देँकी हुई पट्टी जिसमें हथियार लटकया जाता है।

करभ—पु० [सं०] कृषक; हाथीकी सूँड; हाथीका बच्चा; ऊँटका बच्चा; ऊँट; एक सुगन्धित द्रव्य; नख।

करभक—पु० [सं०] ऊँट; करभ, हाथीका बच्चा।

करभा—पु० कोल, मौक आदि जंगली जातिबोंका एक विशेष गाना।

करमी—खी० [सं०] ऊँटनी।

करमी (भिखू)—पु० [सं०] हाथी।

करमीर—पु० [सं०] सिंह।

करमोह—वि० खी० [सं०] जिसकी जाँव हाथीकी सूँडके समान हो, सुंदर जाँववाली।

करम—पु० कर्म, काम; कर्मफल; भाग्य।—**करम**—पु० कर्म।—**ओष**—पु० कर्मफल; कर्मफलके रूपमें मिलनेवाला दुःख।—**का धनी**—भाग्यशाली। **मु०**—**कूटना**—भाग्य कूटना।

करम—पु० [अ०] कृपा, अनुग्रह; उदारता; क्षमा।—**करमा**—वि० कृपा, अनुग्रह करनेवाला।

करमकला—पु० पत्तैवाली गोभी, पातगोभी।

करमहा—वि० कज्ज।

करमठ—वि० दे० 'कर्मठ'।

करमरी (रिखू)—पु० [सं०] वह बंदी जिसे आजीवन कारावासका दंड मिला हो।

करमा—पु० एक वृक्ष; कैमा।

करमात—पु० कर्म; भाग्य।

करमी—वि० दे० 'कर्मी'। † खी० दे० 'करेयू'।

करमुँहा, **करमुखा**—वि० काले मुँहवाला; जिसके मुँहमें कालिख लगी हो; कलकित।

करमैला—पु० एक प्रकारका बड़ी जातिका तोता।

करमोद—पु० एक तरहका धान।

करना—अ० कि० चर-चर करके कूटना; कर्मक्ष बोली बोलना।

करान—खी० धनुषकी टंकार।

कराना—अ० कि० दे० 'करना'।

कररी—खी० बनतुलसी; एक पक्षी, कुररी।

करल—पु० कजाबी।

करला—पु०, **करली**—खी० कला, कोमल पत्ता।

करबट—खी० दाहने या बायें बाजू लेटना; इस तरह लेटनेकी स्थिति; पक्ष; बाजू। पु० आरा; एक विषैला वृक्ष, जमूँद। **मु०**—न लेमा—कर्मभ्यपर ध्यान न देना; जुप्पी साधना।—**बदलना**—लेटनेमें पक्ष बदलना, दूसरी ओर हो जाना; पलटना; बेचैनीसे बार-बार पक्ष बदलना; सो न सकना।—**लेना**—लेटे या सोते हुए आदमीका दूसरी ओर घूमना, पक्ष बदलना; बदलना; पलटना; स्वर्ग-प्राप्तिकी आशासे काशी, प्रयाग आदिमें विशेष आरंभके नीचे कटकर जान देना।

करबल—पु० करपन, आरा।

करबर—खी० घात; संकट, विपत्ति; कठिनाई। पु० करवाल।

करबरवा—अ० कि० चहकना, कलब करना।

करबा—पु० मिट्टी या धातुका लोटेका काम देनेवाला टोटीदार बरतन।—**खी०**—खी० कार्तिक-कृष्ण चतुर्थी।

करबानक—पु० गौरैया पक्षी, चिवा।

करबीराह—पु० [सं०] रामके हाथों मारा गया खरका सेनापति।

करबील—पु० कटील।

करवैया—पु० करनेवाला, करतब करनेवाला।

करबोटी—खी० एक विधिया।

करमा—पु० [फा०] आँख या भौका इशारा; नाजनखरा। अनेखी बात; बमत्कार, करामात।

करभ—पु०, खी० खिचाव; अवस; वैर; ताप; क्रोध।

करभक—पु० कृषक, किसान।

करभना—सं० कि० तानना, खीचना; सोखना; पुष्पाना; बटोरना।

करसना—सं० कि० दे० 'करभना'।

करसाहल, **करसायल**—पु० काला हिरन।

करसान—पु० किसान।

करसी—खी० खड़े गीबर, उपलों आदिका चूर या छोटे टुकड़े।

करहंस—पु० दे० 'करहंस'।

करहँज—पु० चने आदिकी वह फसल जो बढ़ी तो कापी हो पर दाने कम पड़े हों।

करहंस—पु० दे० 'करहंस'।

करहंस—पु० [सं०] एक वर्षावृत्त।

करह—पु० ऊँट; पुष्पकालिका।

करहनी—खी० एक तरहका धान।

करहाट, **करहाटक**—पु० [सं०] कमलकी जड़; कमलका छत्ता; मैनफल।

करही—खी० एक प्रकारका वृक्ष।

कराकुल—पु० मौच पक्षी।

करागण—पु० [सं०] हाट, बाजार; वह स्थान जहाँ कर या चुगी इकट्ठी की जाय।

कराँव—पु० आरा।

कराँवी—पु० आरा चलनेवाला।

करा—खी० कला।

कराहत—पु० दे० 'करेत'।

कराई—खी० भूँस, अरहर आदिका छिलका जो पशुओंको खिलाया जाता है; करने या करानेका भाव; करने वा करानेकी उबरत; * कालापन।

कराघात—पु० [सं०] हाथका प्रहार; आघात।

करात—पु० एक बजन जो लगभग ३॥ ग्रैनके बराबर होता है और सोना, जवाहरात आदि तौलनेके काम आता है।

कराना—सं० कि० 'करना'का प्रे०।

कराबल—खी० [अ०] समीपता; नाता, रिश्ता।—**द्वार**—वि० नातेदार, संबंधी।

कराबा—पु० [अ०] शीशेका सुराही जैसा बरतन जिसमें अर्क इत्यादि रखते हैं; शीशेकी सुराही।

करामत-खी० [अ०] महारा; बहाई; अनुग्रह; चमत्कार, सिद्धि ।

करामात-खी० [अ०] चमत्कार, सिद्धि, अचरजमयी बात (करामत'का बहु०) ।

करामामी-वि० करामात करने-दिखानेवाला, चमत्कारी ।

करायल-पु० तेल मिली हुई राख । † खी० कलीजी; मगरेला ।

कराशिका-खी० [सं०] एक पक्षी; सारसका एक भेद जो छोटा होता है ।

करार-पु० नदीका ऊँचा और कुछ सजा किनारा, कगार ।

करार-पु० [अ०] ठहराव; बैन, आराम; पीरज; प्रतिष्ठा, इकरा । -दाब्-पु० ठहरी हुई बात; निश्चय । खु०-पाना-तै होना; ठहरना; बैन, आराम पाना ।

करारना-अ० कि० कौब-कौब करना; कर्कश स्वरमें बोलना ।

करारा-वि० कडा; नेत्र, दृढ़; खूब मिका हुआ; गहरा । पु० कगार; शैला; कौआ ।

करारोट-पु० [सं०] मुँदरी ।

कराल-वि० [सं०] बड़े-बड़े शौतेला; डरावना, भयानक; अधिक ऊँचा । पु० राख मिला हुआ तेल; दाँतोका एक रोग ।

कराना-खी० [मं०] डरावने रूपवाली दुर्गा; अनंतमूल, माग्नि ।

कराफिक-पु० [मं०] वृक्ष; तलवार ।

कराफिका-खी० [मं०] दुर्गा ।

कराली-खी० [मं०] अश्विनी मान त्रिजाओमेंसे एक । वि० खी० उगवनी ।

कराव-पु० दे० 'करावा' ।

करावल-पु० [तु०] आगे जाकर खबर लानेवाला सैनिक या दस्ता, शिकार लेलानेवाला ।

करावा-पु० पनिके जीवित रहते हिंदू खीका दूसरा ब्याह, मगाई ।

कराह-पु० दर्द या पीडाकी आवाज, आह; * दे० 'कड़ाह' ।

कराहत-खी० [अ०] विन, नफरत ।

कराहना-अ० कि० आह-आह करना, पीडा-सूचक ध्वनि निकालना ।

कराहा*-पु० दे० 'कड़ाहा' ।

कराहियत-खी० [अ०] दे० 'कराहत' ।

कराही*-खी० दे० 'कड़ाही' ।

करिगा-पु० मसखरा ।

करिद्-पु० ऐरावत; गोलमें सबसे बड़ा हाथी; बड़ा हाथी । करि*-पु० हाथी ।

करिकट-पु० मछलियोंका शिकार करनेवाला एक पक्षी ।

करिका-खी० [सं०] नावूनसे छिल जानेका पाष ।

करिम्ह*-खी० कालापन ।

करिखा-पु० कालिख ।

करिणी-खी० [सं०] हथिनी ।

करित-पु० [सं०] फरमाहशी सामान, आश्वा देकर नमवावी डुई वस्तु ।

करिनी*-खी० दे० 'करिणी' ।

करिया-पु० उलझा एक रोग; * पतवार; कर्णभार, मँझी -'उन विन ब्रजवासी यों सोहत ज्यों करिया विन नाथ' -सूर । वि० काला । -ई*-खी० कालापन; कालिख ।

करियारी*-खी० दे० 'कलियारी'; लगाम ।

करिळ*-खी० बोलका नया कला, कौपल । वि० काला ।

करिझा-पु० [फा०] दे० 'करझा' ।

करिहो, करिहोई*-खी० कटि, कमर -'कै गयी काटि करेजनि के करेकरे पनरे करिहोई'-पद्माकर -'नलिन खंड दुख तस करिहोई'-पृ० ४०१ ।

करिहोई*-खी० दे० 'करिहो' (पूर्व०) ।

करीद्-पु० [सं०] ऐरावत; श्रेष्ठ, बहुत बड़ा हाथी ।

करी*-खी० कली -'यों करबीर करी वन राजी'-रामचं० । करी, बचन -'करकि-करकि उठै करी बखनको'-हरिकेश । † सौरी नामकी मछली; कड़ी, धरन ।

करी(विन्)-पु० [सं०] हाथी । -(रि)कुंभ-पु० हाथीका मस्तक । -कुसुंभ-पु० एक वर्ण जो नागकेसारे फूलों-न तैयार किया जाता है । -दारक-पु० सिंह । -नासिका-खी० एक नाथ । -प-पु० महावत । -पोख, -शाव, -शावक-पु० हाथीका बच्चा । -बंछ-पु० हाथी बाँधनेका बंध । -माखल-पु० सिंह । -स्कंध-पु० हाथीका कंधा; हाथियोंका झुंड ।

करीब-वि० [अ०] मिला हुआ; साथ बैठनेवाला; समान, तुल्य । -(से) क़राब-वि० जिन बुद्धि स्वीकार करे, जो अनन्तमें बैठे । -मसखल-वि० उचित, मुनासिब ।

करीना-पु० [अ०] मेरु, समानता; ढग, सलीका; तरतीब, क्रम ।

करीब-वि० [अ०] निकटस्थ, समीपी । अ० पास, निकट; लगभग । -क़रीब-अ० लगभग । -सरीब-वि० सबसे पासका, निकटस्थ ।

करीबन्-अ० लगभग ।

करीबी-वि० निकट सवधी ।

करीबुलमर्ग-वि० [अ०] आसन्नमृत्यु ।

करीम-वि० [अ०] करम करनेवाला, उदार; दयालु; अपराध क्षमा करनेवाला; नेक । पु० ईश्वर ।

करीर-पु० [सं०] बौसका नया कला; करील; घडा ।

करीरक-पु० [सं०] बुद्ध, लफाई ।

करीरा, करीरी-खी० [सं०] हाथीके दाँतकी जड़; शीपूर; फनगा ।

करीरिका-खी० [सं०] हाथीके दाँतकी जड़ ।

करील-पु० हाथीके रूपमें उगनेवाला एक कंदील और बिना पत्तेका पेड़ ।

करीषा, करीशर-पु० [सं०] दे० 'करीद्र' ।

करीष-पु० [सं०] सूखा गोबर, बनफडा, करसी ।

करीषिणी-खी० [मं०] लक्ष्मी ।

करीस*-पु० दे० 'करीस' ।

कदमा, कदमा*-वि० दे० 'कदवा' । † पु० करवा; घडा । - (आ)ई*-वि० खी० कदवापन ।

कदमाजा, कदमाजा*-अ० कि० दुखना, गडना; कड़आ लगना, दुखका स्वाद कड़वा हो जाना । सं० कि० कड़-

बाहटमे मुँह बिचकाना ।

कहली-खी-कनली, तिरछी चितवन ।

कहल-पु० [सं०] अनुकंपा, दया; एक काव्य-रस, पर-मात्मा । वि० कल्याणुक; दयनीय, कल्या उत्पन्न करने-वाला । -सङ्गी-खी० गलिका । -विप्रलम्ब-पु० विरोध श्रृंगार ।

कहला-खी० [सं०] अनुकंपा, दया । -विधान, -विधि-वि० कल्याण, दयासे भरा हुआ । -पर-वि० कल्याणसे भरा हुआ, अति दयालु ।

कल्याण-वि० [सं०] दे० 'कल्याण' ।

कहली-खी० [सं०] एक पुष्पवृक्ष, चारिणी ।

कहली(विद्यु)-वि० [सं०] कल्याणका पात्र, दयनीय, कष्टप्रस्त ।

कहला-खी० दे० 'कल्याण' ।

कहल-खी० इन्द्रायन नामकी लता ।

कहल-वि० कल्या ।

कहल-पु० एक बड़ी जातिकी चिड़िया ।

कहवार-पु० पतवार ।

कहवारि-खी० पतवार ।

कहल-वि० क्रूर, कठोर, निष्ठुर ।

कहल-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।

करंट-पु० [अ०] मवाह, धारा; विशुद्धवाह । वि० प्रचलित, हालका ।

करेबा-पु० दे० 'करेजा' ।

करेजी-खी० दे० 'करेजी' ।

करेद-पु० [सं०] नाखून ।

करेड-पु० दे० 'करड' ।

करेय-पु० [सं०] बाथी, कर्मिकारका पेड़ । खी० हथिनी ।

-सू-सुस-पु० इतिहासके प्रवर्तक पालकाय्य मुनि ।

करेयुक-पु० [सं०] करेयुका विषैला फल ।

करेयुका-खी० [सं०] हथिनी ।

करेयू-खी० [सं०] हथिनी । पु० बाथी ।

करेनर, करेवर-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य, लोवान ।

करेनुका-खी० दे० 'करेयुका' ।

करेब-पु० [अ० 'क्रप'] बारीक और झीनी बुनावटवाला एक रेशमी कपड़ा ।

करेभू-पु० पानीमें होनेवाली एक वेष्ट जिसके पत्ते सामकी तरह खाने जाते हैं ।

करेर, करेरा-वि० कड़ा, सख्त ।

करेल-पु० एक तरहका बड़ा मुयदर; करेल बुझानेकी कसरत ।

करेला, करेला-पु० एक तरकारी, कारवेड ।

करेली, करेली-खी० छोटी जातिका करेला; जंगली करेला ।

करैत-पु० नौपोंका एक भेद जो काला और बहुत जहरीला होता है ।

करैल खी० काली मिट्टी जो गीली होनेपर बहुत कसरार हो जाती है; इस तरहकी मिट्टीवाली जमीन । पु० बौसका नरम कड़ा; वीमकौआ ।

करैट-खी० करवट ।

करोट-पु०, करोदि-खी० [सं०] खीपकी प्याला ।

करोटव-पु० [अ० 'क्रोटन'] वनस्पतिका एक वर्ग जिसके पौधोंके पत्ते सुंदर और रंग-बिरंगे होते हैं ।

करोटी-खी० दे० 'करोट' ।

करोड़-वि० सौ लाख, एक कोटि । पु० सौ लाखकी संख्या ।

-सूक्ष्म-वि० बौध भारनेवाला । -गरीरी-खी० सुंगी विभाग । -पत्ती-वि० जिसके पास करोड़ या करोड़ों रुपये हों, बहुत बड़ा जमीर ।

करोड़ी-पु० रोकथिया; महसूल इकट्ठा करनेवाला, कर-संग्राहक (मुसल) ।

करोत-पु० आरा ।

करोदना-सं० क्रि० दे० 'कुरेदना' ।

करोना-सं० क्रि० खुरचना, कुरेदना ।

करोनी-खी० खुरचन; खुरचनी ।

करोर-वि०, पु० दे० 'करोड़' ।

करोला-पु० गड़आ ।

करौल-खी० दे० 'कलौस' ।

करौला-वि० काला ।

करौजी-खी० दे० 'कलौजी' ।

करौद-खी० करवट ।

करौदा-पु० एक कटिहार झाड़ या उसका फल, करमर्द; एक जंगली फल जो मटरके बराबर होता है और पकनेपर काला हो जाता है ।

करौदिया, करौदी-वि० करौदिके रंगका । पु० गुलाबीने मिलता-जुलता एक रंग ।

करौत-पु० आरा । खी० रलेखी खी ।

करौता-पु० आरा; करेल मिट्टी; कटाबा ।

करौती-खी० जारी; कोंचकी भट्टी; छोटा कराबा ।

करौवा-पु० बरतनपर नक्काशी करनेकी कलम ।

करौल-पु० [सं० 'करावल'] हँकवा करने, शिकार खेलने-वाला -'बाह के सिंह कभी समुद्राह, करौलनि आह अचेत उठाने'-सू० ।

करौली-खी० सीपी, सूठरार छुरी; राजपूतानाकी एक छोटी रियामग ।

करौपु-पु० [मं०] बेरका फल; सखा कुर्जों ।

करौधू-खी० [मं०] बेर ।

करौ-पु० [सं०] केकड़ा; बारह राशियोंमेंसे चौथी; आग; आर्धना; घटा, मफेद घोडा; काकहासींगी । वि० मफेद; बडिया । -बिमिटा, -बिमिटी-खी० एक तरहकी ककरी ।

करौट-पु० [सं०] केकड़ा; कर्क राशि; कमलकी जड़; भारत-का एक भेद; कौंदा; तराजूकी खंडीका सिरा जिसमें पल्लेकी तली बाँधी जाती है; एक रनिषप; वृत्तकी त्रिज्या; मूलका एक हस्तक । -श्रृंगी-खी० काकहासींगी ।

करौटव-पु० [सं०] केकड़ा; कर्क राशि; वृत्त; एक तरहकी ईल; अंकुशी; एक विषैला मूल; एक प्रकारका अस्थिमं ।

करौटकी-खी० [मं०] मादा केकड़ा ।

करौटा-खी० [सं०] लेखसा ।

करौटिका-खी० [सं०] छोटी ककरी ।

करौटी-खी० [सं०] मादा केकड़ा; छोटा घड़ा; सेमकका फल; तराजूकी बाँझीका टेढ़ा छोर; एक तरहकी कमनी;

तरोई; सर्प (?) ।
कर्मदु-पु० [सं०] एक तरहका सारस ।
कर्मर-वि० [सं०] कठोर; दृढ़ । पु० कर्मर; कुरट पत्थर;
 आरना; हथौड़ा; अस्थि; खोपड़ीका डुकड़ा; चमकेकी पट्टी ।
कर्मरांग-पु० [सं०] खजान पक्षी ।
कर्मरांचक, **कर्मरांचुक**-पु० [सं०] अंधकूप ।
कर्मराक्ष-पु० [सं०] दे० 'कर्मरांग' ।
कर्मराडु-पु० [सं०] कड़ाख, तिरछी चितवन ।
कर्मराडुक-पु० [सं०] एक तरहका सारस ।
कर्मराख-पु० [सं०] सुवासित घुँघराके बाल ।
कर्मरी-खी० [सं०] सारी; एक पौधा ।
कर्मरिट-पु० [सं०] अर्द्धचंद्र, गरदनियाँ ।
कर्मरिट, **कर्मरिटुक**-पु० [सं०] दे० 'कर्मराडुक' ।
कर्मर-वि० [सं०] कठोर; खुरदरा; तीव्र; परुष; निर्दय;
 उग्र; बड़ा-कट्टा; दुराचारी; अस्थिर । पु० ईख; तलवार;
 कमीला वृक्ष ।
कर्मशा-वि०, खी० [सं०] लड़ाकी; कटुभाषिणी । खी०
 कर्मशा खी; हथिकाणी पौधा ।
कर्मशिका, **कर्मशी**-खी० [सं०] बननेर ।
कर्मा-पु० [सं०] कुम्हड़ा ।
कर्माख-पु० [सं०] तरबूज ।
कर्मेतन-पु० [सं०] एक रत्न, जमुराद ।
कर्कोट, **कर्कोटक**-पु० [सं०] पुराणोंक ८ नागराजोंमेंसे
 एक; कौश; मेखसा; बेलका पेड़; ईख ।
कर्कोटकी-खी० [सं०] पीनघोषा ।
कर्कोटिकी-खी० [सं०] कौकोली ।
कर्कोटी-खी० [सं०] ककोरी; बनतोरई ।
कर्कना-म० कि० दे० 'कर्पना' ।
कर्पा-पु० दे० 'करपा' ।
कर्पर, **कर्पर**-पु० [सं०] कवर; सोना ।
कर्परिका-खी० [सं०] कचोरी ।
कर्परक-पु० [सं०] हल्दी ।
कर्ज-पु० [अ०] कण, उधार, देना । -**कृषाह**-पु० कर्ज
 देनेवाला । -**द्वार**-पु० कणी, कर्ज लेनेवाला । -**(ज)**
हमना-पु० बेसुद और बेमोयाद कर्ज । **सु०** -**खाना**-
 कणी होना, कणभारसे दबा होना ।
कर्ज-पु० दे० 'कर्त' ।
कर्ण-पु० [सं०] कान; नावकी पतवार; त्रिभुजके समकोणके
 सामनेकी भुजा; महाभारतीयक कौरवपक्षका एक महारथी
 जो कुंतिका अश्विद्विषावस्थामें उत्पन्न पुत्र माना जाता
 है; एक प्राचीन जाति । -**कटु**-वि० कानोंको अभिघ-
 रणनेवाला । -**कीटी**-खी० कनखजुरा । -**कुहर**-पु०
 कानका छेद । -**क्रोश**, **कृषे**-पु० कानका एक रोग
 जिसमें गूँससी आवाज माहस होती रहती है । -**गृध**-
 पु० कानका मेल, छूँट । -**गृधक**-पु० कानके सँटका
 संस्कार करना हो जाना । -**गोखर**-वि० जो सुना जा सके ।
 -**ग्राह**-पु० कर्णधार । -**ज**-पु० कानका मेल । -**जप**
 वि०, पु० चुगलखोर । -**जलका**, **जलीका**-खी०
 कनखजुरा । -**जाह**-पु० कानकी जड़ । -**जिल्**-पु०
 अजुन । -**ताख**-पु० हाथीका कान धिलाना या उसकी

आवाज । -**बेवसा**-पु० बासु । -**धार**-पु० पतवार
 पकनेवाला, मोही । वि० दुःस्वार्थिका निवारण करनेवाला ।
 -**बाद**-पु० कानमें सुनाई पड़नेवाली गूँस; कानका एक
 रोग जिसमें गूँस सुनाई पड़ती है । -**पटह**-पु० कानके
 भीतरी हिस्सेका मध्य भाग । -**पथ**-पु० अवनसीमा ।
 -**परवर**-खी० किसी बातके एक कानसे दूसरे कानमें
 पहुँचने, एकसे दूसरेके सुननेका सिद्धिसिद्धा, अतिपरवा ।
 -**पाक**-पु० कानका पकना । -**पाली**-खी० कानकी ली;
 वाली । -**पिशाची**-खी० एक देवी या पिशाचिनी; उसकी
 प्रसन्नतासे मिलनेवाली परीक्ष-ज्ञानकी शक्ति । -**पुट**-पु०
 अवनमार्ग । -**पुर**-पु० अंग देशकी पुरानी राजधानी
 चंपा । -**पूर**-पु० करनफूल; सिरिस; कर्दब; नील कमल ।
 -**पूरक**-पु० करनफूल; कर्दब; अशोक; नील कमल ।
 -**प्रणाद**, **प्रतिनाद**-पु० कानका एक रोग । -**प्रवाग**-
 पु० बदरिकाश्रमके रास्तेमें पड़नेवाला एक तीर्थ ।
 -**फल**-पु० एक मछली । -**फूल**-पु० [वि०] कानका
 एक गहना । -**भूषण**-पु०, -**भूषा**-खी० कानका
 गहना । -**भूल**-पु० छूँट । -**भूल**-पु० कानकी जड़;
 कानकी जड़के पासकी छजन । -**सुदंग**-पु० कानकी
 शिही जिसपर शब्दजनित कंपनके आघातसे शब्द-ज्ञान
 होता है । -**झोटी**-खी० चामुड़ा देवी । -**कोनी**-वि०
 जो कानमें जनमा हो । -**रंझ**, **विषर**-पु० कानका छेद ।
 -**रोग**-पु० कानमें उत्पन्न होनेवाले रोग, कर्णपाक आदि ।
 -**लता**, **लसिका**-खी० कानकी ली । -**वंश**-पु०
 रौमका मंच । -**बजित**-वि० बिना कानका । पु० सोंप ।
 -**विश्रुति**-खी० कानके भीतर होनेवाली कुत्ती या बाव ।
 -**बेध**-पु० कनछेदनका संस्कार या रस । -**बेधनी**,
बेधनिका-खी० कान छेदनेका औजार । -**बेध**, **बेधन**
 -पु० कुडल । -**शच्छली**-खी० कानका बाहरी हिस्सा ।
 -**शूल**-पु० कानका दर्द । -**शब्**-वि० जो सुना जा
 सके । -**सू**-खी० कुंती । -**सूखी**-खी० एक छोटा कीड़ा ।
 -**स्कोटा**-खी० एक लता, चित्रपर्णी । -**साव**-पु०
 कानका गहना । -**हलिका**-खी० कानका एक रोग ।
 -**हीन**-वि० बहरा । पु० सोंप ।
कर्णक-पु० [सं०] बरतनका कान; पेशके पत्ते और द्य-
 नियाँ; एक लता; एक न्वर ।
कर्णादु-पु०, **कर्णादू**-खी० [सं०] करनफूल ।
कर्णाट-पु० [सं०] करनाटक; एक राग ।
कर्णाटी-खी० [सं०] कर्णाट देशकी खी, एक राग ।
कर्णाद्वी-पु० [सं०] करनफूल ।
कर्णानुज-पु० [सं०] युधिष्ठिर ।
कर्णारि-पु० [सं०] अजुन ।
कर्णिक-वि० [सं०] कानवाला; जिसके हाथमें पतवार हो ।
 पु० मोंही, कर्णधार ।
कर्णिका-खी० [सं०] करनफूल; बिचली जंगली; कमलका
 लता; हाथीकी सूँकेकी नोक; लेखनी; गोंद, गिलटी; एक
 योनिरोग; अस्मिध वृक्ष ।
कर्मिकाचल-पु० [सं०] सुमेरु पर्वत ।
कर्णिकार-पु० [सं०] कनिषारका पेड़ या फूल; एक तरह-
 का अमलतास ।

कर्णी-खी-पु० [सं०] फलवाला बाण; चौथे शास्त्रके प्रवर्तक मूलदेवकी माता; कंसकी माता । -**देव**-पु० म्याना, डोकी, पालकी (जो शिष्योंकी सवारीके काम आती है) । -**सुप्त**-पु० चौथे शास्त्र-प्रवर्तक मूलदेव; कंस ।
कर्णी(सिन्)-वि० [सं०] कानवाला; बड़े कानोंवाला । पु० कर्णधार; बरछीकेसे फलवाला बाण; सप्त वर्ष-पर्वतोंमेंसे एक; गया; गंगाशयका एक रोग ।
कर्णेजप-वि०, पु० [सं०] कानमें लगाकर धरनिदा करनेवाला; नुगुलखोर; भेद बतानेवाला ।
कर्णोपकर्णिका-खी० [सं०] एकसे दूसरे कानमें पहुँचनेवाली रात, जनशक्ति, अफवाह ।
कर्तब-पु० [सं०] काटना; कतरना; काटना ।
कर्तनी-खी० [सं०] कतरनी, कैची ।
कर्तब-पु० दे० 'कर्तब' ।
कर्तारि, **कर्तरिका**-खी० [सं०] कैची; छुरी; कटारी ।
कर्तारी-खी० [सं०] कैची, कतरनी; छुरी; कटारी; बाणका वह भाग जहाँ धंस लगाया जाता है; नृत्यका एक प्रकार; ज्योतिषका एक योग । -**फल**-पु० छुरीका फल ।
कर्तव्य-वि० [सं०] जिसे करना उचित या आवश्यक हो, करणीय; काटने योग्य; नष्ट करने योग्य । पु० करणीय कार्य, कर्म । -**सूत्र**-वि० जो घबराहटके कारण अपने कर्तव्यका निश्चय न कर सके ।
कर्ता(र्तृ)-वि० [सं०] करनेवाला, बनानेवाला । पु० विधाना, प्रज्ञा; ईश्वर; करनेवाला; क्रियाके करनेवालेका बोधक कारक (व्या०) । -**कर्ता**-पु० सब कुछ करने-धरनेवाला, वह जिसे सब कुछ करनेका अधिकार हो । -**(र्तृ)प्रधान**-वि० जिसमें कर्ताकी प्रधानता हो (व्या०) ।
कर्तव्य-वि० कर्ताको बतानेवाला (व्या०) । -**वाच्य**-पु० क्रियाका वह रूप जिसमें कर्ताकी प्रधानता हो (व्या०) ।
कर्तार-पु० कर्ता; ईश्वर ।
कर्तृक-वि० [सं०] करनेवाला (समासमें-'मापकर्तृक'-माप है कर्ता जिसका) ।
कर्तृका-खी० [सं०] छुरी; कटारी ।
कर्तृत्व-पु० [म०] कार्य; करनेवालेकी अवस्थामें होना ।
कर्त्रिका, **कर्त्री**-खी० [सं०] छुरी; कैची ।
कर्तृ-पु० [सं०] कीचड़ ।
कर्तृट-पु० [सं०] कीचड़; पक्कड़ ।
कर्तृन-पु० [सं०] चेटकी गुग्गुलुहाइट ।
कर्तृम-पु० [सं०] कीचड़; मांस; पाप (ला०); एक प्रजापति ।
कर्तृमक-पु० [सं०] एक तरहका चावल; साँपका एक भेद ।
कर्तृमाटक-पु० [सं०] विद्या फैलानेका स्थान ।
कर्तृमित-वि० [सं०] कीचड़वाला ।
कर्तृमी-खी० [सं०] चैत्र-पूर्णिमा ।
कर्तृल-पु० [अ०] सेनाका एक अफसर, कर्नल ।
कर्नेता-पु० धौधौका एक भेद ।
कर्पट-पु० [सं०] फटा, मैला कपड़ा, चीपड़ा ।
कर्पटिक, **कर्पटी(टिन्)**-वि० [सं०] जो चीपड़े लपेटे हो; गिखारी ।

कर्पण-पु० [सं०] एक शास्त्र ।
कर्पर-पु० [सं०] कड़ाह; कपाल; ठीकरा; एक हथियार; गुलर ।
कर्पराल-पु० [सं०] पीछे बृक्ष ।
कर्परी-खी० [सं०] एक उपधातु; खपरिया ।
कर्पास-पु० [सं०] कपास ।
कर्पासी-खी० [सं०] कपासका पौधा ।
कर्पर-पु० [सं०] कपूर । -**गौर**-वि० कपूर-जैसा सफेद । -**गौरी**-खी० एक रागिनी । -**नालिका**-खी० मैदेसे बननेवाला एक पकवान । -**अग्नि**-पु० दवाके काम आनेवाला एक पत्थर; एक रत्न ।
कर्परक-पु० [सं०] कचूर ।
कर्पर-पु० [सं०] आँसू ।
कर्पर-पु० [सं०] दे० 'कर्पर' ।
कर्तुदार-पु० [म०] लमोड़ा; सफेद कचनार; तेंदूका पेड़ ।
कर्तुदारक-पु० [सं०] ज्येष्ठांतक वृक्ष ।
कर्तुर-वि० [सं०] चितकबरा, रंग-विरंगा । पु० चितकबरा रंग; पाप; राक्षस; सीना; जल; धनूरा; कचूर ।
कर्तुरा-खी० [म०] बनतुलसी ।
कर्तुरित-वि० [म०] दे० 'कर्तुर' ।
कर्तुरी-खी० [सं०] दुर्गा ।
कर्म(न्)-पु० [सं०] शास्त्रविहित नित्य-नैमित्तिक आदि कर्म; काम; क्रिया; धर्मा; आचरण; वह पूर्वकृत कर्म जिसका फल हम जन्ममें मिल रहा हो; आश्रय; वह जिसपर क्रियाका फल पड़े (व्या०) । -**कर**-पु० मजदूर, उन्नततर काम करनेवाला; प्राचीन कालकी एक मेबाहुत्तिपरायण जाति, कमकर; यम । -**करी**-खी० मजदूरिन, दामी ।
-कांड-पु० वेदका वह विभाग जिसमें नित्य-नैमित्तिक आदि कर्मोंका विधान है; यद्य, स्मृत्यादिनां विधि बनाने वाला शास्त्र । -**कांडी(विन्)**-पु० कर्मकांडका ज्ञाना, पुरोहित । -**कर**-पु० मजदूर; बेगार; कारीगर; दुबहार ।
-कारक-पु० कारकता एक भेद (व्या०) । -**कारुक्त**-पु० मजदूर धनुष । -**कीलक**-पु० धोबी । -**क्षम**-वि० काम करनेमें समर्थ । -**क्षेत्र**-पु० कर्मभूमि, कार्यक्षेत्र ।
-गुण-पु० कामकी अच्छाई बुराई; कर्म-सामर्थ्य (की०) ।
-गुणापकर्ष-पु० ठीक काय न होना; कर्म-सामर्थ्य कम होना । -**गृहीत**-वि० जो कोई काम (चोरी आदि) करता हुआ पकड़ा जाय । -**घात**-पु० कर्मक्षय ।
-चांडाल-पु० वह जो कर्ममें चांडाल माना जाय, नीच कर्म करनेवाला-बशिष्ठके अनुसार अशुद्ध, पिशुन (नुगुल-खोर), कृमज और दीर्घगेषक (बहुन दिनोत्तक, बेर, दुग्ध रखनेवाला) कर्मचांडाल है । -**चारी(विन्)**-पु० काम करनेवाला, अहंकार । -**चोदना**-खी० कर्मप्रेरक हेतु, कर्मप्रेरणा । -**ज**-वि० कर्ममें उपपन्न । पु० कर्मफल । -**धारव**-पु० तत्पुरुष समामका एक भेद जिसमें विशेष और विशेषण समानाधिकरण हैं । -**देव**-पु० पुण्यकर्ममें देवपद प्राप्त करनेवाला (आजान देवमें भिन्न) । -**मासा**-खी० शाखावाद जिलेकी एक नदी जिसके जलस्पर्शसे समस्त पुण्यका नाश होना माना जाता है । -**निह**-वि० शास्त्रविहित कर्मोंमें आत्मा रखने, उन्हें अद्यापूर्वक करने-

बाला। -**निष्पक्षितन**-पु० काम हो जानेपर दिया जानेवाला वेतन; कार्यकी उसमता वा निष्ठाका अनुसार दिया जानेवाला वेतन (कौ०)। -**निष्पाक**-पु० परिश्रमी मजदूरोंसे अंततक काम करवाना। -**न्यास**-पु० कर्मन्यास। -**पंचमी**-स्त्री० एक रात्रिनी। -**पाक**-पु० पूर्वकृत कर्मोंका फल। -**प्रधान**-वि० जिस (किया-बाध्य) में कर्मोंका प्रधानता हो-कियाका लिंग और वचन कर्मका अनुसरण करता हो। -**फल**-पु० पूर्वजन्ममें किये हुए कर्मोंका फल (सुख-दुःख)। -**बंध**, -**बंधव**-पु० जन्म-मरणका बंधन। -**भू**, -**भूमि**-स्त्री० यहारि कर्मोंके लिए उपयुक्त भूमि; आर्वावर्त। -**भोग**-पु० कर्मफल; कर्मफलके रूपमें प्राप्त दुःख। -**भार्य**-पु० विहित कर्म करते हुए मोक्ष प्राप्त करनेका मार्ग। -**भास**-पु० ३० सावन दिनोंका एक प्रकारका महोना. सावन भास। -**भूल**-पु० कुश। -**भुम**-कलियुग। -**भोग**-पु० कर्ममार्गकी साधना। -**योगी (मिन्)**-पु० कर्ममार्गकी साधना करनेवाला। -**रंग**-पु० कर्मरत्न। -**रेख**-स्त्री० [हिं०] कर्म-की रेखा, नकदी। -**बच**-पु० यिकित्सागत असावधानी जिनमें हाथ पहुँचे (कौ०)। -**बाध्य**-वि० (कियाका वह रूप) जिसमें कर्मोंका प्रधानता हो (व्या०)। -**बाध**-पु० कर्मका फल अवश्य होता और भोगना पड़ता है-यह मत, प्रारब्धवाद। -**विपाक**-पु० पिछले जन्मोंमें किये हुए शुभाशुभ कर्मोंका फल; किम पापका कौनसा दुःख है-यह ब्रह्मज्ञेयवादा श्राव्य। -**बीर**-कर्मव्य, लोकहितके कर्म करनेमें वीर; विन-बाधाओंसे भिडने हुए कर्मव्य-पालन करनेवाला, पुण्यायी। -**शाला**-स्त्री० कारखाना। -**शील**-वि० उद्योगी परिश्रमी। -**शूर**-वि० कर्मवीर। -**शौच**-पु० विनय; नम्रता। -**संग**-पु० कर्मों और उमरोंके फलोंमें अमर्क। -**संधि**-स्त्री० दो राज्योंमें दुर्ग-रचनाके विषयमें हो जानेवाली संधि। -**सम्न्यास**-पु० कर्मन्यास। -**साक्षी (मिन्)**-पु० कार्यविशेषकी देखनेवाला नयनदीप्त गवाह; मनुष्यके भले-बुरे कर्मोंके साक्षी देवता (सूर्य, चंद्र, यम, काल, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। -**स्थान**-पु० कार्यालय, दफ्तर; कारखाना; गृहस्थीम लयसे दसवें स्थान। -**हीन**-वि० जिसमें कोई अच्छा कार्य न हो; हतमाय्य।

कर्मठ-वि० [सं०] काममें कुशल; मुत्तदेदीसे काम करनेवाला; श्राव्यविहित कर्मोंमें लगा रहनेवाला, कर्मनिष्ठ।

कर्मणा, **कर्मतः**(सस्)-अ० [सं०] कर्मसे, कर्म द्वारा।

कर्मण्य-वि० [सं०] कर्मकुशल; उद्यमी। पु० कार्यनिष्ठा; मक्रियता।

कर्मण्य-स्त्री० [सं०] पारिश्रमिक।

कर्मणा-अ० दे० 'कर्मणा'।

कर्मांत-पु० [सं०] कार्य-समाप्ति; कार्य-संपादन; अर्ध-आधार; जोनी हुई जमीन; कारखाना।

कर्मानिक-पु० [सं०] कर्मचारी।

कर्मांश-पु० [सं०] किसी पेशेसे जीविका-निर्वाह करनेवाला।

कर्माश्रम-पु० [सं०] श्रावकोंके लिए निषिद्ध १५ कर्मोंमेंसे कोई।

कर्मापरोध-पु० [सं०] रोगोंके उपचारमें ढीला-ढाली।

कर्मार-पु० [सं०] कर्मकार; कारीगर; लुहार; नौस; कर्मरत्न।

कर्मावधा श्रुति-स्त्री० [मं०] कामके अनुसार वेतन या मजदूरी।

कर्मिष्ठ-वि० [सं०] कर्मकुशल; कर्मनिष्ठ।

कर्मी (मिन्)-वि० [सं०] काम करनेवाला; उद्यमी; कारीगर; फलकी आकांक्षासे कर्म करनेवाला।

कर्मीर-वि० [सं०] चितकबरा। पु० नारंगी रंग।

कर्मद्विब-स्त्री० [मं०] वह इन्द्रिय जिससे कोई काम किया जाय (हाथ, पंख, नापी, गुदा और उपर्य)।

कर्मावघाती (मिन्)-वि० [सं०] काम बिगाड़नेवाला (कौ०)।

करा-वि० कषा; कठिन। [स्त्री० 'करा']। पु० दुनाईके लिए लूकी फैलाकर तानना।

कराना-अ० कि० कष्ट होना, सख्त होना।

कर्बट-पु० [मं०] मछी, बाजार; नगर; जिल्ला मुख्य स्थान; पहाड़की ढाल।

कर्वर-पु० [मं०] पाप; बाध; दाखल। वि० चितकबरा।

कर्वरी-स्त्री० [मं०] दुर्गा; रात्रि; राक्षसी; ब्याघ्री।

कर्शन-वि० [सं०] क्षीण करनेवाला। पु० अक्षि।

कर्शित-वि० [सं०] क्षीण, दुबला-पतला।

कर्ष-पु० [सं०] खींचना; जोतना; जुताई; कूँच; खरौंच; १६ मासेका मान (५ रत्तीके मासेमें); पुराने जमानेका एक सिक्का; हुण; जोश; ताव। -**फल**-पु० विभीतक वृक्ष। -**फला**-स्त्री० आमलकी।

कर्षक-वि० [सं०] खींचनेवाला। पु० किसान।

कर्षण-पु० [सं०] खींचना; जोतना; झुकाना; कृषिकर्म; खरौंचना; समय बढ़ाना; क्षति पहुँचाना; जोता हुई जमीन।

कर्षि-स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी स्त्री।

कर्षणी-स्त्री० [सं०] खिरनीका पेड़।

कर्षणा-अ० कि० खींचना; तानना।

कर्षिणी-स्त्री० [सं०] खेतीके लगाम; खिरनीका पेड़।

कर्षित-वि० [सं०] खींचा हुआ; जोता हुआ; क्षीण; पीड़ित। [स्त्री० 'कर्षिता']। -**(स)**भूमि-स्त्री० शत्रु द्वारा पूरी तरह निचोरी हुई भूमि।

कर्षी (मिन्)-वि० [सं०] खींचनेवाला, आकर्षक। पु० हल जोतनेवाला, हलवाह।

कर्षू-स्त्री० [सं०] कूँच; जुताई; नदी; नहर। पु० कठिकी आग; सेती; जीविका, रोजी।

कर्षि-अ० [सं०] कर्ष। -**चिन्**-अ० कर्म, किसी समय।

कर्लक-पु० [मं०] बन्धा, दाग; काला दाग; लछन, बन्धनामी; चंद्रमामें दिखाई देनेवाला काला दाग; दोष; छोटेका मोरचा; पारेकी कबली। -**का टीका**-बदनामीका बन्धा, लछन।

कर्लक-पु० [सं०] सिंह; एक बाघ।

कर्लकपी-स्त्री० [सं०] सिंहनी।

कर्लकिल-वि० [सं०] कर्लकयुक्त; मोरचा लगा हुआ।

कर्लकी (किन्)-वि० [सं०] जिसे कर्लक लगा हो; बन्ध-

नाम । पु० चंद्रमा ।

कलङ्कुर-पु० [सं०] पानीका मँवर, आवतें ।

कलङ्गी-पु० बरतनपर नकाशी करनेकी छेनी; एक पौषा ।

कलङ्गी-खी० दे० 'कलमी' ।

कलङ्गी-खी० पहाडी या जंगली आँग ।

कलंज-पु० [सं०] चिड़िया; जहरीले अलसे मारा हुआ सूग या पक्षी; ऐसे पशु-पक्षीका मांस; तंबाकूका पौषा ।

कलंदर-पु० [सं०] एक बर्णसंकर जाति; उस जातिका व्यक्ति ।

कलंदर-पु० [अ०] मुसलमान साधुओंका एक समुदाय; उस समुदायका व्यक्ति; बंदर-आलू नचानेवाला; ईश्वरके ध्यान-भजनमें मस्त रहनेवाला; कफ़र; खेमका आँकड़ा ।

कलंदर-पु० [अ०] एक तरहका रेशमी कपड़ा; हेमिका आँकड़ा ।

कलंदरी-वि० [फा०] कलंदरका; कलंदरकासा । खी० कलंदरकी वृत्ति, पेक्षा; कलंदरा लगी हुई छोलदारी; एक तरहका रेशमी कपड़ा ।

कलंदिका-खी० [सं०] बुद्धि; समझ ।

कलंब-पु० [सं०] बाग; कदंब; का आदिका बंठल ।

कलंबक-पु० [सं०] एक तरहका कदंब ।

कलंबिका-खी० [सं०] गर्दन, पीठकी ओरका गलेका भाग; एक साग ।

कलंबुट-पु० [सं०] ताजा मन्खन ।

कल-वि० [सं०] अस्पष्ट मधुर, मंद मधुर (ध्वनि), सुहावना; श्रुतिमधुर, कोमल; ऐसा शब्द उत्पन्न करनेवाला; कमनोर; अजीर्ण । पु० अस्पष्ट मधुर ध्वनि; वीर्य; पितरोंका एक वर्ग; चार भाजाओंका काल; सालका पेड़ । -कंड-मीठी आवाजवाला । पु० कोयल; कन्नूर; हंस । -कल-पु० झरने या नदीके प्रवाह आदिकी कोमल मधुर ध्वनि; अनेक लोगोंके एक साथ बोलनेकी आवाज; शिव; चूना । -कीट-पु० संगीतमें एक ध्राम । -कृजिका, -कृणिका-खी० मोठे बोल बोलनेवाली; पुंशली । -घोष-पु० कोयल । -ज-पु० मुर्गा । -तुलिका-खी० पुशली । -धूत-पु० चाँदी । -धौत-पु० सोना; चाँदी; मंद, मधुर ध्वनि । वि० सुनहला । -ध्वनि-खी० कोमल, मधुर ध्वनि । पु० कोयल; मीर; कन्नूर । -नाद-पु० हंस । वि० मंद, मधुर स्वरवाला । -बल-वि० अस्पष्ट लघारित (वचन) । -रब-पु० कोमल, मधुर ध्वनि । -री-पु० दे० 'कलरव' । -लिपि-खी० सोनेके पानीकी लिखावट; सुनहरी रेखाओंमें अलंकृत लेख । -हंस-पु० हंस, राजहंस; उत्तम राजा; परमेश्वर; राजपूतकी एक जाति । -हास-पु० केशवदासके मतसे हासका एक भेद ।

कल-अ० अगले या पिछले दिन, आगे चलकर, पीछे ।

-का-कुछ ही दिनोंका, निकलुल हालका (कलकी बात) ।

-का छोकरा (बच्चेमें) उन्नयमें बहुत छोटा; नादान, नासमझ । -की कलपर है-अगली बात आगे, वया-समय देखी जायगी । -को-कल, कलके दिन ।

कल-कालाका समासमें व्यवहृत रूप । -चिक्का-पु० एक चिड़िया जिसका पेट काला और चोंच लाल होती है । [खी० 'कलचिकी'] । -चौंचा-पु० वह कन्नूर

जिसकी सारी देह सफेद पर चोंच काली हो । -जिम्मा-वि० काली जीभवाला; जिसकी कही हुई अमंगल बातें सत्य हो जायें । -जीहा-वि० दे० 'कलजिम्मा' । -झोंबा-वि० स्वाह, काहा । -ठोरा-पु० कलचोंचा कन्नूर । -दुम्मा, -दुम्मा-वि० काली पँछवाला । पु० काली दुमवाला कन्नूर । -पोटिया-खी० एक चिड़िया । -मुँहा-वि० काले मुँहवाला; कलंकित । [खी० 'कल-मुँहा'] । -सिरी-खी० एक चिड़िया जिसके सिरका रंग स्वाह होता है । वि०, खी० लकाकी (खी) ।

कल-खी० जैन, आराम, शांति; इतमीनान; बुद्धि, कौशल; धन, मशीन; पंच-पुरजा; बद्धका घोड़ा; करवट, बल; अंग । -दार-पु० कलमें डाला हुआ सिका, रपया । वि० कल-पंचवाला । -बल-पु० दाव-पंच; जोड़-तोड़ ।

सु० -दूँटना, -बुझाना-कल चलाना; किसीके मनकी अभीष्ट दिशामें मोड़ देना; पट्टी पढ़ाना । -बेकल होना-बेचैन होना; किसी पंच-पुरजेका डीला होना, अपनी जगहसे हट जाना । -हाथमें होना-नकेल हाथमें होना, बाहे बिधर घुमानेमें समर्थ होना ।

कलई-खी० [अ०] रोंगा; रोंगीका मुलम्मा जो तँबे-पीतलके बरतनोंपर किया जाता है; लेप; मुलम्मा; चूना; चूनेकी पुतार्; सफेदी; असलीघतकी छिपानेवाली वस्तु, बनावट; चाल, तदबीर । -गर-पु० कलई करनेवाला । -दार-वि० जिसपर कलई की गयी हो । -का कुहना-रोंगीका भस । -का चूना-परधरका, सफेदीके काम आनेवाला चूना । सु० -खुलना-असलीघतका प्रकट हो जाना, पील खुलना ।

कलक-पु० [सं०] एक तरहकी मछली; घघकी एक मैली ।

कलक-पु० [अ०] दुःख, रज; पछतावा, ग्लानि; विकलता, बेचैनी ।

कलकना-अ० कि० चिधाइना, नीकार करना ।

कलकान, कलकानि-खी० दुःख; परेशानी; कलह ।

कलकटर-पु० [अ०] जिलेमें मालका सबसे बड़ा अफमर ।

कलकटरी-खी० कलकटरकी कचहरी; कलकटरका पद या कार्य । वि० कलकटरका; कलकटरसे संबद्ध ।

कलगा-पु० मरनेकी तरहका एक पौषा ।

कलगी-खी० [फा०] डोपी, पगड़ीमें लगाया जानेवाला तुर्रा या फूँटना; मोर या झुर्रेंके सिरपरकी चोटी; मिरका एक गहना; ऊँची इमारतका शिखर; लानकी एक तर्ज ।

कलघी-खी० एक कंटीली झाड़ी, काँजा ।

कलचुरी-पु० दक्षिण भारतका एक राजवंश ।

कलछा-पु० बड़ी कलछी ।

कलछी-खी० लबी डाँधीका गोल कटोरीवाला चम्मच जिसमें दाल आदि निकालते हैं ।

कलछुला-पु० लंबी डाँधीका कलछा जिससे भड़भूजा भाङसे जलनी बाढ़ निकालता है ।

कलछुवा-पु० दे० 'कलियुग' ।

कलट-पु० [सं०] मकानकी छान ।

कलहर-पु० दे० 'कलकटर' ।

कलह-वि० [सं०] खलवाट, गंजा ।

कलत्र-पु० [सं०] पत्नी, माया; श्रोगि; दुर्गा । -गहिँसैव्य-

पु० परिवारकी विंता या बन्धमें रहनेवाली सेना ।
कलहरा—पु० जुलाहोंका एक लकड़ीका औजार, चक्र ।
कलत्र—पु० [सं०] प्रार्थना; जानना, समझना; शपथ करना; गणितकी क्रिया; गर्भकी विलकुल पहली, शुक्रशीणितके संयोगके बादकी अवस्था; धम्मा; दोष; वंश ।
कलना—स्त्री० [सं०] शान; प्रार्थना, लेना; छोड़ना, मोचन ।
कलष—पु० दे० 'कलक' और 'कल्प'; क्षिप्ताव ।
कल्पना—अ० कि० विकाप करना, अंतर्बेदनाको शब्दोंमें व्यक्त करते हुए रोना; विवर्णना; दुःख पाना; कुदना; आह करना । * सं० कि० काटना—'कल्पौ माथ वेगि निस्तरकें'—प०; कल्पना करना । स्त्री० आह, हाय (पचना); दे० 'कल्पना' ।
कल्पाना—सं० कि० कल्पनेका कारण होना; सताना, रहाना ।
कलक—पु० धुले कपड़ेमें कड़ाई, चिकनाई लानेके लिए लगायी हुई लेई या मँची; नेहरेपरका काठा धम्मा ।
हार—वि० जिसमें कलक दिया गया हो ।
कलर्वा—पु० टेसके फूलसे बनाया जानेवाला एक रंग ।
कलबीर—पु० एक गौषा जिसकी जड़ रेशमपर रंग चढ़ानेके काम आती है, अकलबीर ।
कलबूत—पु० डॉवा; गोलवर ।
कलभ—पु० [सं०] हाथीका बच्चा; हाथी; ऊँटका बच्चा; धनुरा ।—बल्लभ—पु० पीलुका पेड़ ।
कलभक—पु० [मं०] हाथीका बच्चा ।
कलमी—स्त्री० [सं०] हाथी या ऊँटका बच्चा (मादा); एक तरकारी, चन्नु ।
कलम—स्त्री० [सं०] लेखनी । पु० एक तरहका धान जिसका चावल महीन और सुगंधित होता है; चौर; बंदमाश ।
कलम—स्त्री० [अ०] काटना; सरकड़े, नसरल आदिका टुकड़ा जिसमें लिखनेका काम लेने हैं; लकड़ी, सेतुलाइड आदिका मोल लंबोतरा टुकड़ा जिसमें लोहे आदिकी जीभ (निब) लगाकर लिखते हैं, लेखनी; किसी पेड़-पौधेकी टहनी जो नया पेड़ पैदा करनेके लिए काटी जाय; ऐसी टहनीसे लगाया हुआ पौधा; कनपटियोंपर सुदरताके लिए छोड़े और कुछ लक्ष्योंमें कटे हुए बाल; चित्र बनाने या रंग भरनेकी कृती; कौंच या स्फटिकाका पहलदार लंबोतरा टुकड़ा; नकासी या खुदाई करनेका औजार; होरीकी कनी जूई लकड़ी जिससे शीशा काटा जाता है; शोरे, नौमावर आदिका रवा; लिखावट, लिपि; आदेश, हुक्म; एक तरहकी फुलझड़ी । वि० कटा, तराशा हुआ ।—**कलसाई**—पु० [हिं०] वह जो लिखने-पढ़नेमें कठोरतामें काम ले, कर ।—**कार**—पु० लेखक; चित्रकार; किसीकी देखाओंमें रंग भरनेवाला; एक तरहका बाफना ।—**कारी**—स्त्री० कलमकी कारीगरी; कलमसे बनाये हुए बेल-वृत्ते ।—**कीली**—स्त्री० कुत्तेका एक पैर ।—**जूड़**—वि० कटा हुआ ।—**तराश**—पु० कलम बनानेका चाकू ।—**दाग**—पु० काठ, पीतल आदिकी संदूकनी या लुला आधार जिसमें कलम दवावत रखी जाय ।—**बंद**—वि० लिखा हुआ, लिपिबद्ध । पु० कृत्तीपर बाल बाँधनेवाला ।—**रौ**—स्त्री० राज्य, सत्त-
 नत । मु०—**करना**—काटना; छँटना ।—**खींचना**—

लिसे हुएको काटना ।—**बसीटना**,—**बलाना**—**लिखना** ।
तोड़ना—रचनामें ऐसी सुदर, अनूठी बात कहना जिसमें अधिक सुदर अनूठी बात न कही जा सके, रचना-
 कोशककी पराकाष्ठा कर देना ।—**दान देना**—संजी या गौर-मुशीका पद देना ।—**करना**—लिखे हुएको काटना, रर करना ।
कलमख—पु० दे० 'कलम' ।
कलमना—सं० कि० कलम करना, काटना ।
कलमलाना—अ० कि० दे० 'कलमलाना' ।
कलमलाना—अ० कि० कलमसाना ।
कलमा—पु० [अ०] सार्थक शब्द; बात, उक्ति; वह वाक्य जो मुसलमानोंके धर्म-विश्वासका मूल मंत्र है—'हा इलाह इकिहाइ, मुहम्मद रसुलिहाइ' ।—**ए-सूर**—पु० अच्छी, मली बात; साधारण प्रशंसा ।—**शो**—पु० कलमा पढ़ने-
 वाला, मुसलमान । मु०—**पढ़ना**—इस्लाम धर्म स्वीकार करना; ईमान लाना । (**किसीका**)—**पढ़ना**,—**अरना**—
 (किसीका) मक्त, अनुगत, प्रेमी, प्रशंसक होना; (किसीके) रूप-गुणपर मुग्ध होना ।—**पढ़ाना**—इस्लामकी दीक्षा देना, मुसलमान बनाना ।—**(मे)का सरीक**—सहधर्मी, धर्मबंधु (मुसलमान) ।
कलमास—वि० दे० 'कलमा' ।
कलमी—वि० [फा०] इस्तिस्लिन; कलम काटकर लगाया हुआ (पेड़); रवादार ।—**शोरा**—पु० लवे रवेवाला और अधिक साफ शोरा ।
कलमुँदी—स्त्री० कलैया (कलमुँदी खाकर—'गंध भारती') ।
कलक—पु० [सं०] गर्भका आरंभिक रूप जब वह केवल कुछ कोषोका गोला रहता है; गर्भाशय ।—**ज**—पु० राज; गर्भ ।
कलवरिवा—स्त्री० कलवारकी डुकान, शराबखाना ।
कलवार—पु० एक बिंदू जाति जो पहले मुख्यतः शराब बनाने-बेचनेका पेशा करती थी; उस जातिका व्यक्ति, कलाल । [स्त्री० 'कलवारिन'] ।
कलविक—पु० [सं०] गौरवा; कोयल; कलक; दाग, धम्मा; तरबूज; सफेद चंबर ।—**स्वर**—पु० एक तरहकी समाधि ।
कलश, **कलस**—पु० [सं०] घडा, कलसा; मंदिर आदिका शिखर, कँगुरा; ८ सेरका मान; चोटी (कां०); सिरमौर ।
जन्मा (जन्म),—**जन्म**—पु० अगस्त्य मुनि ।
कलशी, **कलसी**—स्त्री० [सं०] छोटा घडा, गगरा; छोटा कँगुरा; पृथ्वणी; एक राजा ।—**सुस**—पु० अगस्त्य मुनि ।
कलसरी—स्त्री० कुत्तेका एक पैर ।
कलसा—पु० घडा; कँगुरा ।
कलहंतरिता—स्त्री० दे० 'कलहंतरिता' ।
कलह—पु० [सं०] झगडा, लफाई; युद्ध; रास्ता; तलवारका न्यान ।—**कार**—वि० झगडा, लफाई ।—**कारिका**—स्त्री० एक पक्षी ।—**कारी (रिच)**—वि० कलह करनेवाला ।—**ग्रिब**—वि० झगडा, पु० नारद ।—**ग्रिया**—वि० स्त्री० लडाकी । स्त्री० मैना ।
कलहनी—वि० स्त्री० झगड़नेवाली ।
कलहान्तरिता—स्त्री० [सं०] पति या नायकका अपमान कर पीछे पछलानेवाली नायिका (सा०) ।
कलहारी—वि०, स्त्री० झगड़नेवाली ।

कञ्जु(हिन्)-वि० [सं०] खगडाह् ।

कलौ-वि० [फा०] बहा; दीर्घाकार ।

कलाङ्गुर-वि० [सं०] सास, कलाङ्गुर; कंसाङ्गुर ।

कलाङ्गुर-पु० [सं०] दूसरी कला; म्याङ्ग; लाम ।

कलावि; कलाविका-स्त्री० [सं०] कर्ज देना; सूखसोरी ।

कला-स्त्री० [सं०] अश; छोटा भाग; चद्रमदलका सोलहवाँ भाग; दे० 'षोडश कला'; राशिके तीसवें अंशका साठवाँ भाग; कालका एक मान (१६ मिनट); रक्त-मांस-मेद आदिको अलग रखनेवाली शरीरकी क्षितियाँ; हुनर, गुण (कामशास्त्रके अनुसार ६४ कलाएँ मानी गयी हैं । वे ये हैं-१. गीत, २. वाद्य, ३. नृत्य, ४. नाट्य, ५. आलेख्य (चित्रकारी), ६. विशेषकण्ठ्य (ललाटपर तिलक बनाना), ७. तंडुल-कुसुमकलि-विकास (चावल तथा फूलों-का चौक बनाना), ८. पुष्पास्तरण (फूलोंकी नेत्र बनाना), ९. दशनवसनंगारग (शौंती, कपड़ों तथा अंगोंकी रंगना...), १०. मणिभूमिका-कर्म (चर सजाना), ११. शयन रचना, १२. उदकवाद्य (जलतरंग बनाना), १३. उदकवात (गुलाबजलादि छिड़कना), १४. विशायोग (बनानकी बुझा, बुझेकी जवान बनाना), १५. मास्य-ग्रंथ-विकल्प (माला गूँथना), १६. केश-शेखरापीड-योजन (सिरपर फूल सजाना), १७. नेपथ्ययोग (वस्त्रपुष्पादि पहनना), १८. कर्णपत्रमंग (कर्णफूलदि बनाना), १९. गंधयुक्ति (हजर, फुलेक बनाना), २०. भूषणयोजन, २१. इन्द्रजाल, २२. कौतुमार योग (कुरूपकी सुंदर बनानेका उद्योगादि तैयार करना), २३. हस्तलाभ, २४. चित्रशाकापूप-भक्ष्य-विकार-क्रिया (तरह-तरहके शाक, पूष, पकवानादि बनाना), २५. पानकरन-रागात्मक-योजन (जर्जन, आसवादि बनाना), २६. सूचीकर्म (सौनेका काम), २७. मृत्रक्रीडा (बेलबूटे काडना), २८. प्रहेलिका, २९. प्रतिमाला (अत्यासरी), ३०. दुर्वाचकयोग (कठिनपदोंका अर्थ करना), ३१. पुस्तक-वाचन, ३२. नाटिकाख्यायिका-दर्शन (नाटक देखना, दिखलाना), ३३. काव्य समस्यापूरण (समस्यापूर्ति), ३४. पट्टिकावेष्ट-वाण-विकल्प (नकार, बाध आदिमे चार-पाई हुनना), ३५. तर्जुकर्म, ३६. तक्षण, ३७. वास्तु-विद्या, ३८. हृत्पार-परीक्षा, ३९. धानुवाद (कीमिया-गिरी), ४०. मणिराज-ज्ञान (रत्नोंके रंग जानना), ४१. आकरहान (खानोंकी विधा), ४२. वृक्षयुर्वेद-योग, ४३. मेघ-कुम्भद्र लावक-युद्धविधि, ४४. शुक्रसारिका-प्रलापन, ४५. उत्सादन (उबटन लगाना), ४६. केशमात्रं-कौशल, ४७. अक्षरमुद्रिका-कथन (रंगकलियोंके सकेतसे बोलना) ४८. स्तेष्ठितक विकल्प (विदेशी भाषाएँ जानना), ४९. देश-भाषाज्ञान, ५०. पुष्पशाकिका-निमित्तज्ञान (द्वैदी लक्षण देखकर अविव्यकन), ५१. यत्र-मातृका (यत्र बनाना), ५२. धारण-मातृका (स्मरण बढ़ाना), ५३. संपाठ्य (किसीके कुछ पदनेपर उसी प्रकार पद देना), ५४. मानमीकाव्यक्रिया (मनमें काव्य कर सुनाते जाना), ५५. क्रियाविकल्प (क्रियाका प्रभाव बढ़ देना), ५६. छलिनक-योग (ऐसारी करना), ५७. अधिधानकौषष्ठईज्ञान, ५८. वल्लभोपन (कपड़ोंकी रक्षा), ५९. वृत्तविशेष, ६०. आकर्षण-क्रीडा (पासा फेंकना), ६१. बालक्रीडाकर्म

(बच्चोंको खिलाना), ६२. वैनायिकी विद्याज्ञान (विनय तथा शिष्टाचार), ६३. वैजयिकी विद्याज्ञान, ६४. वैतालिकी विद्याज्ञान; गाने-बजाने आदिकी विधा; सुंदर रचना या उसकी रीति; म्याङ्ग; स्त्रीका रज; अणु; भ्रूण; लगाव; नौका; उल्क-कपट; चाल, युक्ति-‘कितो सोम कला करो, करो सुधाको दान’-दीनद०; लोला; मात्रा (छंद); यंत्र; * ज्योति, तेज; छटा, शोभा । -कार-पु० किसी कलाकी ज्ञानने, उसमे जीविका करनेवाला; ललित कलाओंमेंने किसीकी जानने, उसमे जीविका करनेवाला, कलावन, ‘आर्जित’ । -कुशल-वि० किसी कलामें निपुण । -कृति-स्त्री० कलामयी रचना । -केलि-पु० कामदेव । स्त्री० कामक्रीडा । -कौशल-पु० कला-विशेषमें निपुणता; हुनर । -क्षय-पु० चद्रमाका घटना । -जंग-पु० [हि०] कुर्नीका एक पैच । -धर, -नाथ, -निधि-पु० चद्रमा; * कलाविद् । -म्यास-पु० एक नम्रौक न्यास । -भाज-पु० [हि०] कलावाजी करनेवाला; नटका काम करनेवाला । -बाजी-स्त्री० [हि०] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाना, लोटनियों; नटविधा । -भृत्-पु० चंद्रमा; कलाकार । -मुख-पु० [हि०] चद्रमा (दास) । कलाई-स्त्री० हाथमें हथेलीके जोड़के ऊपर, हथेली और पट्टीके बीचका भाग, गट्टा; कलाई एक-दने-पुष्पादिकी कसरत; मृतका छच्छा; पला; हाथीके गलेमें लगायी जानेवाली रस्सी जिसमें पीलवान पैर फँसाता है; अलान ।

कलाकंद-पु० एक तरहकी बरफी ।

कलाकुल-पु० [सं०] हलहल विष ।

कलाधिक-पु०, कलाची-स्त्री० [सं०] कला; कलह्री ।

कलाटीन-पु० [सं०] खजानकी जातिका एक जलपक्षी ।

कलान्, कलाद्क-पु० [सं०] सोनार ।

कलादा* -पु० हाथीकी गरदनपरका वह भाग जहा पीलवान बैठता है ।

कलाधिक-पु० [सं०] मुर्गा ।

कलानक-पु० [सं०] शिवका एक गण ।

कलानुनादी(विद्)-पु० [सं०] धनर; गौरवा; वणिजल; चाणक ।

कलाप-पु० [सं०] समूह; पला; मोरकी ंश; एक गहना; कर्पनी; तरकश; बाण; चंद्रमा; एक अर्द्ध चक्राकार अम्ब; हाथीके गलेकी रस्सी; एक रागिनी ।

कलापक-पु० [सं०] समूह, पला; मोरियोंकी गट्टी; कर्पनी; चार ऐसे ढंगोंका समूह जिनको मिलातेमे एक वाक्य होता है; हाथीके गलेकी रस्सी; ललाटपर अंकित होनेवाला मांसदायिक चिह्न ।

कलापिनी-स्त्री० [सं०] मोरनी; रात; नागरमोहा ।

कलापी(विद्)-वि० [सं०] तरकशधारी; दुस कलनेवाला (मोर) । पु० मोर; कोयल; बटइश; मोरोंके नाचनेका समूह ।

कलावद्क-पु० [सं०] कलावत् ।

कलावत्की-वि० कलावत्का बना हुआ ।

कलावत्-पु० रेशमके धागेपर लपेटा हुआ सोने या चांदीका तारा; सोने-चांदीका तारा; कलावत्का बना पतल फीता ।

कलाबा-पु० [अ०] सतका लच्छा या गोला; तकलीपर लिपटा हुआ घुन; हाथीके गन्धेकी रस्सी; हाथीकी गरदन ।
 कलाम-पु० [अ०] बचन, उक्ति; बात-चीन; रचना; वादा; उन्न, पतराज ।-(से)पाक, मजीद-पु० कुरानशरीफ ।
 -मुलाह-पु० कुरान ।
 कलामक-पु० [सं०] जायमें तैयार होनेवाला एक धान ।
 कलामत-पु० कलावत, संगीतज्ञ ।
 कलाप-पु० [सं०] मटर, केराव (एक कदम) ।-खंज-पु० संशयोका एक रोग ।
 कलाचन-पु० [सं०] नर्तक ।
 कलार, कलाल-पु० दे० 'कलवार' ।
 कलार्बत-पु० विधिवत शिक्षाप्राप्त गायक या वादक । वि० कला-कुशल ।
 कलावती-वि०, स्त्री [सं०] कलावाली, कला जाननेवाली; सुदरी ।
 कलाबा-पु० दे० 'कलाबा' ।
 कलाविक-पु० [सं०] सुर्गा ।
 कलाविकल-पु० [सं०] गौरवा पक्षी ।
 कलाम-पु० [म०] एक प्राचीन बाजा ।
 कलाहक-पु० [म०] एक बाजा ।
 कलाही-पु० स्त्री० कलाही, पड़नेका निचला भाग ।
 कलित-वि० [म०] चन्द्र, धूँ, कलित देशका । पु० प्राचीन भारतका एक जनपद; बर्हाका निवासी; कुल्लंग; इ० गीः मित्रित, वटवृक्ष; तन्त्र; एक राग ।
 कलिका-पु० [म०] इन्द्रजी, नानूज ।
 कलिग-पु० एक राग ।
 कलिया-स्त्री० [सं०] मूरी स्त्री ।
 कलित-पु० [म०] वडाई; परदा ।
 कलिद-पु० [म०] वह पवन जिसने यमुना निकलती है; बर्हा; मूरी ।-कम्बा, -जा, -तनया, -नंदिनी, -सुता, -स्त्री० यमुना ।
 कलिदी-पु० स्त्री० दे० 'कालिदी' ।
 कलि-पु० [म०] कलह, झगडा; युद्ध; चार युगोंमें चौथा जिसमें आयु ४ लाख है इन्द्र मानव-वर्ष मानी जाती है; कलियुगका अधिष्ठाता असुर; पाप-वृद्धि; पापोंका एक विरोधात्मा पशु; बर्हा, बीर पुरुष; बाण । स्त्री० कली ।
 * वि० काला ।-कर्म(र)-पु० मर्यादा ।-कार, -कारण-पु० नारद; पूतिकर ।-कारी-स्त्री० कलियारी ।
 -काल-पु० कलियुग ।-कुम्भ, -कुम्भ-पु० बहेडा ।
 -पुर-पु० पचरान मणिका एक भेद ।-प्रह-पु० शराव-की दुकान ।-प्रिय-वि० क्षमशालू । पु० नारद; बर ।
 -मल-पु० पाप ।-मरि-स्त्री० कर्मनाशा नदी ।
 -युग-पु० कलिकाल ।-युगाद्या-स्त्री० मावकी पूर्णिमा (ममें कलियुगका आरंभ माना जाता है) ।-युगी-वि० [हिं०] कलियुगका; कलियुगी बुद्धि, प्रवृत्तिवाला ।-बर्ज-वि० जिसका कलियुगमें निषेध हो । पु० कलियुगमें निषिद्ध कर्म (अश्वमेध, गोमेध, सन्नास, मासका पिंडदान और देवरस नियोग) ।-हारी-स्त्री० कलियारी ।
 कलिक-पु० [सं०] कौच पक्षी ।
 कलिका-स्त्री० [सं०] कली; एक छंद; कला, अंश;

वीणामूल ।

कलिकान-वि० हैरान, परेशान ।

कलित-वि० [सं०] गृहीत; हात; प्राप्त; युक्त; विभूषित; गणना किया हुआ; अन्नित; सुंदर ।

कलिया-पु० [अ०] पकाया हुआ रमेटर मांस ।

कलियामा-अ० कि० कलियोंसे मुक्त होना; पक्षियोंका नया पक्ष निकलना ।

कलिबारी-स्त्री० एक घोषा जिसकी जक या गोंठमें विष होता है और दवाके काम आता है ।

कलिल-वि० [सं०] आशुत; मिला; हुआ; परिपूर्ण; से प्रभावित; अमेध, वना । पु० बड़ी राशि ।

कलीद, कलीदा-पु० तरङ्ग, कालिद ।

कली-स्त्री० [सं०] मुँह बना फूल, बोली; चिकियाका पहले निकलनेवाला छोटा पर; अप्राप्तयौवना कन्या (ला०); [हिं०] कुंने आदिमें लगनेवाला तिकोना कपडा; पत्थर आदिक मुँका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है ।
 मु०-कूटना-विधियाके पहले परोका निकलना ।

कलीट-वि० काला, कलटा ।

कलीरा-पु० कौबियों, छुहारी आदिकी गूँधकर बनाया हुआ हार ।

कलील-वि० [अ०] थोडा, कम; छोटा ।

कलीसा-पु० [यू० 'इक्लीसिया'] गिरजा, ईसाइयोंका उपासना-मन्दिर ।

कलीसाई-वि० कलीसेमे संबद्ध । पु० ईसाई ।

कलीसिया-पु० एक ईसाई समुदाय ।

कलुधावीर-पु० झाड़ू-आदिके मन्त्रोंसे आनेवाला एक प्रेतदेव ।

कलुह-पु० [म०] एक वाष, झाडा ।

कलुहा-स्त्री० [म०] सराय; उल्का ।

कलुख-पु०, कलुखाई-स्त्री० दे० 'कलुष' ।

कलुखी-वि० दोषी, कलुषयुक्त ।

कलुष-पु० [सं०] मेल, बदगी; पाप; क्रोध; संसा । वि० मिला, मश; पापी; निरिहा; क्रुद्ध, क्रूर ।-चेता(तस्)-वि० दुष्ट ।-बीनिज-वि० वर्णस्फुर ।

कलुषाई-स्त्री० दोष; अपवित्रता ।

कलुषित, कलुषी(पिन्)-वि० [सं०] कलुषयुक्त; बह; दुष्ट; दुष्ट ।

कलुष-वि० काले रंगका, काला ।

कलुष-पु० कुत्ता ।

कलुष-पु० [अ०] तिथिपत्र ।

कलुष-पु० दे० 'कलेबा' ।

कलुष-पु० [अ०] दे० 'कलुष' ।

कलुष-पु० नुनोटिया रंग । वि० कलुष रंगका ।

कलुष-पु० प्राणियोंका एक भीतरी अवयव जो सोनेके अंदर बोधी और रहता है और जिसने पिप्त बनाता और दूधिन रक्त शुद्ध होता है, यकृत, जिगर; छाती, दिल; साहस, हिम्मत; अति प्रिय व्यक्ति या वस्तु । मु०-उद्ध-कलुष-हर्ष, उद्वेग, आशंका आदिसे दिलका पकटना ।
 -कलुष-विश्रांतिसे अतीतमें छेद होना; दिलको चोट पहुँचना; झूठी दस्त आना । -कलुष होना-दिल जलना;

अति दुःख, सताप अनुभव करना। -**कापना**-दिख दहलना, बरसे काँप जाना। -**कापना**, -**निकापना**-वेदना पहुँचाना; म्रिय वस्तु या सर्वस्व ले लेना। -**खाना**-सताना, पीड़ा देना; किसी चीजको बार-बार मोंगकर कष्ट पहुँचाना। -**खिलाना**-म्रिय वस्तु देना; आदर-सत्कारमें कोई बात उठा न रखना। -**खुरचना**-बहुत मूख लगना; म्रिय वस्तुके पृथक् होनेपर व्याकुल होना। -**छकनी होना**-ताने, व्यय-भागोंसे कलेजा छिद जाना। -**छिदना**, -**विचनना**-कमी बातसे जी दुखना। -**जकना**-मनको अति ड़ेस होना; असहा लगना; छाती जकना। -**जझाना**-कष्ट पहुँचाना; सताना। -**टूटना**-जी टूटना, होसला पस्त होना। -**टंडा होना**-मनको छाँति भिलना, जकन-नेकलीका दूर होना। -**तर होना**-कलेजेमें ठंढक पहुँचाना; निर्दह रहना। -**धाम कर रह जाना**-असहा कष्ट-वेदनाको बिना ओह किये, दिख पकड़कर सह लेना; वेदनाको बाहर न आने देना। -**धाम लेना** वा **पकड़ लेना**-वेदनाको बाहर न आने देनेके लिए दिखको पकड़ लेना, दबा रखना। -**धक-धक करना**, -**धक्कना**-भय, आशंकासे असहा कष्टके सहनके लिए मनमें बल-संचय करना; चिन्तका विचलित, विकल हो जाना; दिख दहलना। -**धक्के हो जाना**-एकाग्र कर जाना; सन्ध हो जाना, विस्मित होना। -**निकालकर बर या रख देना**-अति म्रिय वस्तु अर्पण कर देना; जान दे देना; सारी शक्ति लगा देना। -**पकड़ जाना**-किमी कष्टमें ऊब जाना, उसका असहा हो जाना। -**पकड़ लेना**-कष्ट सहनेके लिए जी कड़ा करना। -**पकाना**-नाकमें दम करना, परेशान करना। -**परधरका करना**-असहा दुःखके सहनके लिए जी कड़ा करना; निम्बुर, निर्मय बन जाना। -**फट जाना**-किसीके दुःखसे हृदयका विदीर्ण, द्रवित होना। -**बहिरि, बौसी उठलना**-हर्ष, भय, आशंका आदिसे हृदयका जोरसे स्पर्धित होना, दिखका बहे जोरसे बहकना। -**मुँहको आना**-किसी कष्ट, व्यथासे व्याकुल, बेचैन होना, अति ड़ेस होना। -**(जे)का टुकड़ा**-सताना, बेदा। -**की कोर**-संतान, बेदी। -**पर घुरी कल जाना** वा **फिरना**-हृदयपर गहरा आघात होना, कलेजा कटने, चिरनेका-सा कष्ट होना। -**पर साँप खोटना**-किसी बातकी याद कर, किसी चीजकी देखकर पकायक बहुत दुःखी हो जाना; व्यथासे बहुत बेचैन हो जाना; ईर्ष्यासे जल उठना। -**पर हाथ केरना** वा **रखना**-अपनी बातकी यथाभंताके विषयमें अपने दिल, अंतरात्मासे पृथना। -**में आग लगाना**-देष होना; प्यास लगना; शोक होना। -**में बालना**-प्यारने पास रखना। -**में तीर लगना**-दिलमें गहरी चोट लगना। -**में पैठना**-मेद लेने वा मतलब निकालनेके लिए हेर-मेल बढ़ाना। -**से लगाना**-छातीसे चिपटा लेना, प्यार करना।

कलेजी-खी० कलेजेका मांस।

कलेवर-पु० [सं०] देह, चोला; शील, आकार। **सु०** -**बड़लना**-नया शरीर धारण करना, चोला बदलना; जग-साधनीके पुरानी मूर्तिकी जगह नयीकी स्थापना होना।

कलेबा-पु० सवैरका जलपान, मात्ता; ब्याहकी एक रस; मार्गमें खानेके लिए साथ लिया गया भोजन, पायेय। **सु०** -**करना**-खा जाना।

कलेस-पु० दे० 'क्रेत'।

कलेया-खी० कलवाजी (खाना, मारना)।

कलोरे-खी० जवान गाय जो ब्यायी या गामिन न हो।

* पु० बछड़ा-‘माती हरे तुन चार चरे बगरे सरपेनुके धोल कलोरे’-कवितावली।

कलोरी-खी० जवान गाय, कलोरे।

कलोख-पु० क्रीड़ा, खेल। खी० लहर, तरंग-‘खर यह सुख गोप-गोपी प्रियत अमृत कलोख’-खर।

कलोचना-अ० क्रि० कलोल करना।

कलौड-खी० दे० ‘कलौस’।

कलौजी-खी० मसाला भकर बीतेलमें तली हुई समूची मिर्ची, बैंग आदि; मयरील।

कलौस-खी० कलक; कालिमा; स्याही। वि० जो कालापन लिखे हो।

कलीबी-खी० मुँगरा चावल, कुलस्थ।

कलक-पु० [सं०] तेल आदिके नीचे जमनेवाला मेल, कीट; मेल; कानका मेल, श्लेष्म; विद्या; पीठी; एक तरहका काढा; दम; पाप; शत्रुता; बहेड़ा; एक गंधद्रव्य, तुरूप्य। वि० पापी; दुष्ट। -**कल**-पु० अनार।

कलिक-पु० [सं०] विष्णुका दसवाँ और अंतिम अवतार जो पुराणोंके अनुसार कलियुगके अतमें सभल(मुरादाबाद)में होगा। -**पुराण**-पु० एक उपपुराण जिसमें कल्कि अवतारकी कथा वर्णित है।

कल्की (फिक्न्) -वि० [सं०] कल्क, दंभ, पापादिमें युक्त। पु० दे० ‘कल्कि’।

कल्प-पु० [म०] धार्मिक कर्मोंका विधि-विधान; विहित विकल्प; वेदके ९ अंगोंमेंसे वह जिसमें यज्ञों, मन्त्रादी आदिकी विधियाँ बतायी गयी हैं; ब्रह्माका एक दिन (एक हजार महायुग-४ अरब ३२ करोड़ मानव-वर्ष); प्रलय; चित्तिमा; आयुर्वेदका विष-चिकित्सा-अंग; विभाग (पूतक-दिका); स्वर्गका एक वृक्ष; शराव; शरीरको पुनः नया एवं नीरोग करनेका उपाय। वि० लगभग बराबर, जरासा कम (केवल समासातमें-दैवकल्प, श्रुतकल्प इत्यादि); उचित, योग्य; सशक्त; संभव; व्यवहारमें लाने योग्य।

-**कार**-पु० कल्पवृक्षोंका रचयिता (आश्वलायन, आप-स्तव, बोधायन, कात्यायन); नारद; शराव बनानेवाला। वि० सजाने-सँवारनेवाला। -**क्षय**-पु० कल्पांत। -**सह**, -**दुम**, -**पाप**-पु० दे० ‘कल्पविट’। -**पाळ**-पु० शराव बेचनेवाला। -**अव**-पु० जैनशास्त्रोंमें वर्णित एक प्रकारके देवगण। -**लता**-खी० कल्पवृक्ष; कल्पवृक्षकी शाखा। -**बर्ष**-पु० उग्रमेनके आई देवकता पौत्र। -**वास**-पु० माघके महीनेभर गगानटपर ब्रह्मनयपूर्वक रहकर धर्मकृत्य करना। -**विटप**, -**वृक्ष**, शास्त्री(खिन्)

-पु० नन्दनकाननका एक वृक्ष जो समुद्रमंथनसे निकले हुए १४ राजोंमें जोर जी कुछ जी मागिये उसे देनेवाला माना जाता है-एक वृक्ष जो अफ्रीका और भारतके मद्रास, बंबई आदि प्रदेशोंमें होता है; अति उदार पुरुष (का०)।

—विद्-वि० कल्पसूत्रोंका ज्ञाता । —सूत्र-पु० वैदिक ब्रह्मदि या गृह्य-कर्मोंका विधान करनेवाला सूत्रग्रंथ (श्रौत और गृह्य सूत्र) । —हिंसा-झी० अन्नके पीसने आदिमें होनेवाली हिंसा (जै०) ।

कल्पक-वि० [सं०] कल्पना करनेवाला; रचनेवाला; काटने-वाला । पु० नारी; कचूर एक संस्कार ।

कल्पक-पु० [सं०] रचना; बनाना; सजाना, सँवारना; एक वस्तुमें दूसरीका आरोप करना; जालसाजी; कल्पना करना; छोटना, कतरना ।

कल्पना-झी० [सं०] रचना; कोई नयी बात सोचना, उद्भावना; इतकी शक्ति; इस तरह मोची हुई बात, उपज; मनकी यह शक्ति जो परोक्ष विषयोंका रूप, चित्र उसके सामने ला देती है; सोचना; मान लेना; एक वस्तुमें दूसरीका आरोप; सँवारना; सजारीके लिए हाथोंकी सजाना । —चित्र-पु० कल्पनामें खींचा हुआ चित्र, नकशा । —प्रसूत-वि० कल्पनासे उपजाया हुआ, मन-वर्त । —बाह-पु० कला अनुभव की हुई कल्पना है—यह मत । —शक्ति-झी० कोई नयी बात सोचनेकी शक्ति, उद्भावना-शक्ति । —सृष्टि-झी० कल्पनाकी रचना, मनो-राज्य ।

कल्पनी-झी० [सं०] कतरनी ।

कल्पनीय-वि० [सं०] जिसकी कल्पना की जा सके ।

कल्पांत-पु० [सं०] प्रलय, सृष्टिका अंत । —स्वायी (चित्र)
—वि० सृष्टिसे अणक बना रहनेवाला ।

कल्पातीत-पु० [सं०] जैनशास्त्रानुसार एक देवगण ।

कल्पांती (चित्र)-वि०, पु० [सं०] प्रशंसाके लालचने काम करनेवाला ।

कल्पिक-वि० [सं०] योग्य, उपयुक्त ।

कल्पिन-वि० [सं०] सोचा, माना हुआ; मनसे गढ़ा हुआ, फनी, मजाया, सँवार हुआ ।

कल्पितोपमा-झी० [सं०] एक तरहका उपमा अलंकार जहाँ प्रकृत उपमान न मिलनेपर मनमाना उपमान कल्पित कर लिया जाय ।

कल्प्य-पु० [सं०] मेल; मेल; पाप; एक तरहका कलार्थका नीचेका भाग । वि० पापी; दुष्ट; गदा ।

कल्पाव-वि० [सं०] चितकवरा । पु० चितकवरा रंग; काला रंग; राक्षस; अश्लिका एक रूप; एक सुसून्दर चावल; धन्वा, दाग । —कंठ-पु० दिव । —पाद्-पु० एक राजा, सुदासका पुत्र ।

कल्पापी-झी० [सं०] यमुना नदी ।

कल्प-पु० [सं०] मोर, तक्षक; मधु; मंगलकामना; सुसंवाद । वि० म्लक्ष, नीरीग; प्रस्तुत; चतुर । कुञ्जल; शुभ, कल्याणकर; गूँगा; बहारा । अ० कल, आनेवाले दिन । —पाल, —पालक-पु० कलवार, मधुसूक्तवासी । —बर्त-पु० सवरेका भोजन, कलेवा ।

कल्पा-झी० [सं०] शराव; कल्याणचक्र; हरीतकी; कलौर गाय (?) । —पाल, —पालक-पु० कलवार ।

कल्पाण-पु० [सं०] मंगल; सुखसौभाग्य; अलार्थ; अन्वुदय; सोना; स्वर्ग; शुभ कर्म; एक राग । वि० मंगलकारी; सुंदर; सौभाग्यवाली । —कर, —कारी (चित्र)-वि०

कल्याण, मंगल करनेवाला । —कामोद्-पु० एक संकर राग । —कृद्-वि० शुभ कर्म करनेवाला; कल्याणकारी । —नट-पु० एक संकर राग । —बीज-पु० मसूर । —आर्य-पु० वह पुत्र जो बार-बार विवाह करे और ली मरती रहे ।

कल्पाणक-वि० [सं०] शुभ, मंगलकारक; उत्पत्तिशील ।

कल्पाणिका-झी० [सं०] सैनसिद्ध ।

कल्पाणी-वि०, झी० [सं०] कल्याणकारीणी; कल्याणमयी; सुंदरी । झी० गाय; कलौर गाय; प्रवागीकी एक देवी; जंगली उरद ।

कल्पाणी (चित्र)-वि० [सं०] सुखी; समृद्ध; साम्यवादी; मंगलकारक ।

कल्पानक-पु० दे० 'कल्याण' ।

कल्पाक्ष-पु० [सं०] सवरेका भोजन, कलेवा ।

कल्पोर्ना-पु० कलेवा ।

कल-वि० [सं०] बहारा ।

कलूर-पु० नौनी मिट्टी, रेह ।

कल्लाच-वि० गुहा; कंगाल ।

कल्ला-पु० अंशुला; गोफा (फूटना); जवका; जवकेके नीचे गलेतकका भाग; लपका बर्जर । —शौच-वि० मुँहसौंका; मुँह बंद कर देनेवाला (जवाब) । —द्वराज-वि० मुँहजोर, जिसकी जवान बहुत तेजीसे चले; लकाका । —द्वराजी-झी० मुँहजोरी, जवाँदराजी । —पाव, —पावका-पु० जान-करके सिर और पैरका मास । मु० —द्वाना-बोलनेसे रोकना । —कुलाना-मुँह कुलाना । —मारना-माख बजाना । —(छे)तले दबा लेना-बीख-बिहाकर दूसरे को दबा लेना ।

कल्लाना-अ० कि० जलनके साथ दर्द होना ।

कल्लिष-झी० कली, पुष्पकलिका ।

कल्ल-वि० काला, कल्टा ।

कल्लोल-पु० [सं०] कुछ ऊँची और आवाज करनेवाली लहर, मीन; आनंद; झोका । वि० शानुतापूर्ण ।

कल्लोलिनी-झी० [सं०] लहरोंवाली नदी । वि० कल्लोल, झोका करनेवाली ।

कल्लण-पु० [सं०] प्रसिद्ध इतिहासग्रंथ राजतरंगिणीके कर्ता ।

कल्लर-पु० नौनी मिट्टी । वि० बंजर ।

कल्लरना-अ० कि० कल्लरोंमें भूना या तला जाना ।

कल्लर-पु० दे० 'कलधरा' ।

कल्लार-पु० [सं०] एक पुष्प, सफेद कोई ।

कल्लारवा-सं० कि० (हरे वा भिगोये चने, मटर आदिकी) धी या तेल डालकर हलका तलना । अ० कि० कराहना ।

कल्ल-पु० [सं०] कवल, निवाला; कुकुरमुत्ता ।

कल्ल-पु० [सं०] कल्लर, बर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-यंत्र; उस यंत्र से बना यंत्र, ताबीज; बधा नगाधा; पाकरका पेड़ । —धर-हृद्-वि० कल्ल धारण करनेवाला; कल्ल धारण करने योग्य अवस्थाका । —पत्र-पु० भोजपत्र ।

कल्ल-पु० [सं०] कवल, निवाला; कुकुरमुत्ता ।

कल्ल-पु० [सं०] कल्लर, बर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-यंत्र; उस यंत्र से बना यंत्र, ताबीज; बधा नगाधा; पाकरका पेड़ । —धर-हृद्-वि० कल्ल धारण करनेवाला; कल्ल धारण करने योग्य अवस्थाका । —पत्र-पु० भोजपत्र ।

कल्ल-पु० [सं०] कवल, निवाला; कुकुरमुत्ता ।

कल्ल-पु० [सं०] कल्लर, बर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-यंत्र; उस यंत्र से बना यंत्र, ताबीज; बधा नगाधा; पाकरका पेड़ । —धर-हृद्-वि० कल्ल धारण करनेवाला; कल्ल धारण करने योग्य अवस्थाका । —पत्र-पु० भोजपत्र ।

कल्ल-पु० [सं०] कवल, निवाला; कुकुरमुत्ता ।

कल्ल-पु० [सं०] कल्लर, बर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-यंत्र; उस यंत्र से बना यंत्र, ताबीज; बधा नगाधा; पाकरका पेड़ । —धर-हृद्-वि० कल्ल धारण करनेवाला; कल्ल धारण करने योग्य अवस्थाका । —पत्र-पु० भोजपत्र ।

कल्ल-पु० [सं०] कवल, निवाला; कुकुरमुत्ता ।

कल्ल-पु० [सं०] कल्लर, बर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-यंत्र; उस यंत्र से बना यंत्र, ताबीज; बधा नगाधा; पाकरका पेड़ । —धर-हृद्-वि० कल्ल धारण करनेवाला; कल्ल धारण करने योग्य अवस्थाका । —पत्र-पु० भोजपत्र ।

कल्ल-पु० [सं०] कवल, निवाला; कुकुरमुत्ता ।

बस्तरपोस। पु० शिवा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र।
कवटी-खी० [सं०] दरनायेका पत्ता; एक छद्म वातिकी
 खी।
कवड-पु० [सं०] कुहरी करनेका पानी।
कवन-पु० [सं०] पानी। * सर्व० कौन।
कवनी*-वि० कमनीय, सुंदर।
कवयिता(तृ)-पु० [सं०] कवि।
कवयित्री-खी० [सं०] काव्यरचना करनेवाली स्त्री।
कवयी-खी० [सं०] एक मछली।
कवर-पु० [सं०] जूड़ा, चोटी; अल्ल; नमक; चितकवरापन;
 व्याख्याता; दे० 'कवल'। वि० चितकवरा; मिला-जुला;
 संचित। पु० [अ०] ढकना; बैठन; लिफाफा; पुस्तकके
 ऊपर चढाया हुआ कागज; कापीपर जिल्दकी जगह लगाया
 हुआ कागज।
कवरकी-खी० [सं०] बंदिनी।
कवरना*-स० कि० मैकना; जरा-जरा भूनना।
कवरी-खी० [सं०] चोटी; बलमुल्लसी।
कवर्ग-पु० [सं०] 'क'से 'ड'तकके अक्षरोंका समूह।
कवल-पु० [सं०] कौर, श्रास; कुहरी, एक मछली; एक
 तौल; एक पक्षी; एक तरहका घोषा; पीलिया रोग।
 -ग्रह-पु० एक तौल।
कवल्ल-पु० [सं०] खाना; चवाना; निगलना।
कवल्लिका-खी० [सं०] कौड़े आदिपर बौंधी जानेवाली
 पट्टी।
कवल्लित-वि० [सं०] खाया, चवाना, निगला हुआ;
 गूथित।
कवच-पु० [सं०] ढाल; एक मंत्रद्रव्य कृषि।
कवस-पु० [सं०] कवच; एक कौंटेजरा झाड़ी।
कवाट-पु० [सं०] दे० 'कपाट'। -ज-पु० चोर। -वक-
 पु० एक पोषा।
कवाम-पु० [अ०] शीरा, चाशनी; पानके साथ खानेके
 लिए सुरतीका पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस।
कवाच-पु० [अ०] नियमावली; कार्यविधि ('कायदा'का
 बहु०)। खी० व्याकरण; सेना या पुलिसके सिपाहियोंका
 बुखकलाका अभ्यास करना, परेड।
कवार-पु० [सं०] कमल; एक जलपट्टी।
कवारी-खी० दे० 'अरवन'।
कवि-पु० [सं०] कविता करनेवाला; शायर; कृषि; ब्रह्मा;
 वाल्मीकि; सूर्य; उल्लू; शुक्राचार्य। वि० अनीट्रिय विषयो-
 की जाननेवाला, ज्ञातदर्शी; मनीषी, मेधावी। -कर्म(तृ)
 पु० कविता; काव्यरचना; उद्गावन। -ज्येष्ठ-पु० आदि-
 कवि वाल्मीकि। -पुत्र-पु० शुक्राचार्य। -राज-पु०
 कविश्रेष्ठ; माद; वैद्यकी एक उपाधि। -रामाचर-
 पु० वाल्मीकि। -राय* -पु० दे० 'कविराज'। -लासिका
 -छासिका-खी० एक तरहकी बीणा। -समय-पु० वे
 मान्यताएँ जिनका कवि कीम प्राचीन कालसे वर्णन करते
 आ रहे हैं (जैसे खीके पद्मावतसे अशोकका पुष्पित होना
 आदि)।
कविक-पु० [सं०] लगाय।
कविका-खी० [सं०] लगाम; कैदवा; एक मछली।

कविता-खी० [सं०] रसात्मक छंदीबद्ध रचना।
कविताई*-खी० दे० 'कविता'।
कवित्त-पु० कविता; एक वर्णवृत्त।
कवित्व-पु० [सं०] काव्यरचनाकी शक्ति; काव्यका गुण,
 रस।
कविनासा*-खी० कर्मनाशा नदी।
कविथ, **कवीथ**-पु० [सं०] दे० 'कविक'।
कविलास*-पु० कैलास; स्वर्ग।
कवींद्र-पु० [सं०] वाल्मीकि।
कवींद्र-पु० [सं०] श्रेष्ठ कवि।
कवीथ-पु० कैथा।
कवेरा-वि० गंवार।
कवेला-पु० [सं०] कमल।
कवेला-पु० कौएका बधा।
कवोष्ण-वि० [सं०] थोड़ा गरम, कुनकुना।
कव्य-पु० [सं०] पितरोंको दिया जानेवाला अन्न। -बाल,
 -वाह, -वाहन-पु० अग्नि।
कश-पु० [सं०] चाबुक; [फा०] खीच; तंवाक; निगरेट
 आदिके धूपका धेंडू फूँक। वि० खींचनेवाला; उठानेवाला
 (केवल समासमें-आराकश, मेहनतकश)। -मकश-खी०
 खींचा-तानी; संधर्ष; भीड़-भाड़, धकमधक। - (सो)इयात
 -खी० जीवन-संग्राम; अस्तित्व-रक्षाके लिए संधर्ष।
कशकु-पु० [सं०] एक करक, गंधेधुका।
कशकोल-पु० [फा०] सुसलमान फकीरोंका भिक्षापत्र,
 खल्पर।
कशा-खी० [सं०] चाबुक; रस्ती।
कशाघात-पु० [सं०] चाबुक या कोड़ा मारना।
कशिक-पु० [सं०] नेवला।
कशिपु-पु० [सं०] चटार; बिछौना; तकिगा; अन्न; बन्ध;
 धास।
कशिप-खी० [फा०] खिचाव, आकर्षण; खींचनेकी शक्ति;
 शुक्राव, प्रवृत्ति।
कशीश्-खी० [फा०] अर्क खींचना (करना, होना)।
 -गी-खी० खिचाव; मनमुदाव, नाराजगी। -पा-
 पु० कुश्तीका एक पंच।
कशीश-वि० [फा०] खिचा या खींचा हुआ; उठाया
 हुआ। पु० सूर्य-भागमें कपडेर बनाया हुआ बेल-बूटा, शुल
 कारी (काढ़ना)। - (शु)क्रामस्त-वि० लथे काटका।
कसेरु-पु० [सं०] कमेरु; रीद; जवुदीपके नौ खट्टोंमेंसे एक।
कसेरुका-पु० [सं०] कमेरु।
कसेरुका-खी० [सं०] रीद।
कश्चित-वि०, सर्व० [सं०] कौरे; कौरे एक।
कश्ती-खी० [फा०] दे० 'कश्ती'।
कश्मल-पु० [सं०] सूच्छा; मोह; उत्साहहीनता; पाप।
 वि० मलिन, गंदा।
कश्मीर-पु० [सं०] भारतके पश्चिमोत्तर कोणमें स्थित
 एक सुंदर पहाड़ी प्रदेश। -ज-पु० कैसर।
कश्मीरी-वि० कश्मीरका; कश्मीरमें उपजा। खी० कश्मीर-
 की भाषा। पु० कश्मीर-निवासी।
कश्य-वि० [सं०] चाबुक मारने योग्य, जहाँ चाबुक मारा

जाय । पु० घोड़ेकी पीठ या पादर्य; मच । -प-पु० एक कवि विनकी विभिन्न पक्षियोंसे सुर, असुर, मनुष्य, यक्ष, पक्षी आदि संपूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति मानी जाती है; सप्तर्षिमंडलका एक तारा; कठुआ। एक तरहकी मछली; एक तरहका हिरन । वि० काले दाँतवाला; मचपान करनेवाला । -० भव्य-पु० गहक ।

कच-पु० [सं०] कसौटी; परीक्षा; सान, रगड़ना ।
-पट्टिका-खी० कसौटी ।

कचण-वि० [सं०] अपक, कच्चा । पु० रगड़ना; चिड़ करना; खरोचना; कसौटीपर कटना ।

कचा-खी० [सं०] दे० कशा ।

कपाकु-पु० [सं०] अग्नि; सूर्य ।

कपाय-वि० [सं०] कसेला; सुगन्धयुक्त; गेरूके रंगका; मयुर खरवाला; अनुचित; गदा । पु० कसेला स्वाद या रस; गेरूआ रंग; एक तरहका काष्ठ जिसमें चतुर्धा जल शेष रहता है; लैप, अंगराग लगाता; गोंद; क्रीष, मान, माया और लोभमें कोई (जै०); कलियुग; धूल, गंदगी; मूर्खता; भ्रष्टता; भावावेश, राग ।

कपायित-वि० [म०] गेरूए रंगका; प्रभावित ।

कपायी (विष्) -वि० [म०] कसेला; जिसमें गोंद या लस-दाय रस निकले; गेरूए रंगका; कपाय-श्रेष्ठयुक्त; दुनिया-घार । प० धव, शाल आदि वृक्ष ।

कषि-वि० [म०] हानिकारक; लुकमान पहुँचानेवाला ।

कषित-वि० [म०] क्षतिग्रस्त, जित्त लुकमान पहुँचा हो ।

कषिका-खी० [सं०] पक्षी ।

कषीका-खी० [म०] एक तरहका पक्षी ।

कपेरुका-खी० [म०] रीढ़ ।

कपय-पु० [म०] एक तरहका विपैला कीड़ा ।

कट-पु० [सं०] पीका, व्यथा; पाप; दुष्टता; कठिनाई; सुसी-वत; अम । वि० उरा, हानिकर; दुःखकर; कठिन; दुःखी ।

-कर-वि० तकलीफ देनेवाला । -कल्पना-खी० वह वान जिसकी उपपत्तिमें बहुत खीच-तान करनी पड़े; जो मुदिकलसे दिमागमें आवे । -कारक-वि० कट देनेवाला । पु० मसारा । -भागिलेय-पु० खीकी बहनाका लक्षका ।

-मानुल-पु० सौतेली माँका भाई । -मोचन-वि० कष्टमें छुड़ाने, उबारनेवाला । -लम्ब-वि० जो कठिनाईसे प्राप्त हो सके । -साध्य-वि० जो कठिनाईसे किया जा सके; जिने करनेमें बहुत श्रम करना पड़े । -स्थान-पु० दुःखजनक स्थान ।

कष्टजित-वि० [सं०] कष्ट, श्रममें कमाया हुआ ।

कष्टार्थ-पु० [सं०] खीकी रजोधर्ममें पीका होना ।

कष्टार्थ-पु० [म०] खीच-तानकर लाया हुआ अर्थ ।

कष्टि-खी० [सं०] पीका; बोझ; परीक्षा ।

कष्टी-वि०, खी० [सं०] प्रसववदनासे पीकित (खी) ।

कष्टी (हिन्) -वि० [सं०] कष्ट पानेवाला ।

कम-पु० [सं०] कमौटी; [वि०] और, कच; धृष्टता, मज-बूती; काबू, दान; रोक; जाँच; लक्ष्यकारी लचक; अर्क, मार; कसाव । खी० वह रस्ती जिससे कोई चीज बाँधी जाय । * अ० कैसे, कभीकर । -का-कायका, बधका ।

-बछ-पु० जोर-बल; दम-लम । शु०-में रखना-

रोक या दबावमें रखना ।

कसक-खी० रह-रहकर होनेवाली पीका, दीस; खटक; अरमान, अगिलाश; पुराना बैर; हमदर्दी ।

कसकन-खी० कसकनेकी क्रिया, कसक ।

कसकना-अ० कि० पीका होना, दीसना; सालना ।

कस-‘कौसा’का समासगत विकृत रूप । -कुट-पु० तंगे और जस्तेके मेखसे बनी एक धातु । -हँस-हँस-पु०, -हँसी-खी० दे० ‘कंसहंस’, ‘कंसहंसा’ और ‘कंसहंसी’ ।

कसगर-पु० मिट्टीके बरतन बनानेवाली मुसलमानोंकी एक जाति ।

कसन-खी० कसनेकी क्रिया, कसना; कसाव; कसनेकी रस्ती; कनेश; धोनेका तंग ।

कमनई-खी० एक पक्षी ।

कमना-खी० [मं०] एक जहरीली मकड़ी । सं० कि० [हिं०] बचन या तनावकी कड़ा करना; ठोड़ी चीज, गोंठ, फदि आदिकी कड़ा करना; खीचकर बाँधना; मुहकें बाँधना; जकड़ना; पेच, पुरजेको कड़ा बैठाना; (सुस्त बैठनेवाली चीजको) पहनना, बाँधना (बर्दा, चपराम आदि); कद्दू आदिकी रेतना; दाग अधिक लेना; ठूँसकर भरना; धोखे, हाथीकी चारनामा, बौडा रखकर (मबारीके लिए) तैयार करना; मोनेकी कमौटीपर धिसना; परखना; * क्लेश देना; तपाना; अर्थ, कटाक्षमरी उत्तिका लक्ष्य बनाना (कहनी कमना) । अ० कि० तंग, नुस्त होना; बचन, कंदा आदिका कड़ा होना; खिचना; कसा, जकड़ा जाना । पु० कमने, बाँधनेका साधन; बैठन; खोल । कसकर-अ० मजबूतीसे, जकड़कर; पूरा-पूरा; जोरसे; बेरहमीसे ।

कसा-कसावा-माज कसा हुआ, तैयार ।

कसनि-खी० दे० ‘कसन’ ।

कसनी-खी० वह रस्ती जिससे कोई वस्तु कसी जाय; बैठन; अंगिया; कसौटी; जाँच-‘कह कभीर कसनी सही, कै हारा कै हेम’-कबीर; कसावका पुट; हथौड़ी ।

कसय-पु० [अ०] अर्जन, कमाला; पेशा, धंधा; वेव्यावृत्ति ।

कसबा-पु० [अ०] छोटा शहर ।

कसबात-पु० [अ०] कसवे (‘कसबा’का बहु०) ।

कसबासी-वि० नगरवासी, नागरिक ।

कसबिन-खी० दे० ‘कसबी’ ।

कसबी-खी० वेव्या, व्यवचारसे जीविका कमानेवाली ।

-खाना-पु० वेव्यालय ।

कसम-खी० [अ०] शपथ, सौगंध; शपथपूर्वक की हुई प्रतिज्ञा । शु०-उसारना-शपथके बचन या प्रभावसे अपने आपको मुक्त करना (लक्षकोंका); रस-अदार्थ, कहनेभरके लिए कुछ करना । (किसी बातकी)-खाना-किसी बातके करने या न करनेकी प्रतिज्ञा करना । -खानेकी-नाम-मात्रकी ।

कसमसा-पु०, खी० कसमसाइट ।

कसमसाना-अ० कि० गीरके कारण आपसमें रगड़ खाते हुए हिलना, कुलबुलाना; ऊबकर हिलना-झेलना; धव-बाना, बेचैन होना; हिचकना ।

कसमसाइट-खी० कुलबुलाइट; बेचैनी, धवसाइट ।

कसबा-कसमी—खी० दोनों पक्षोंका कसम खाना ।
कसमिया, **कसमीया**—अ० कसम खाकर, शपथपूर्वक ।
कसर—खी० [अ०] कमी, न्यूनता; घाटा; वैर, दुश्म; विकार ।
झु०—करना;—रखना—(किसी बातके करनेमें) कमी रखना, कोताही करना ।—**खाना**—घाटा खाना ।—**बिक-खना**—क्षतिपूर्ति होना; बदला मिलना ।—**निकाखना**—वैर फैरना, बदला लेना; घाटा या कमी पूरी करना ।
कसरत—खी० [अ०] शरीरको पुष्ट, बलवान् बनानेवाली क्रियाएँ, व्यायाम, बमिडा; बहुलता, आधिक्य ।—**राज-खी०** बहुमत ।
कसरती—वि० कसरत करनेवाला; कसरतसे बनाया हुआ (वदन) ।
कसरबा—पु० साधपान नामक क्षुप ।
कसरबानी—पु० बनिबोंकी एक उपजाति ।
कसरहल्ला—पु० कतेरोंकी हाट, वह बाजार जहाँ बरतन बने और बिकें ।
कसली—खी० छोटा काबका ।
कसबाबा—स० कि० कसनेका काम कराना ।
कसाई—पु० [अ०] मांस-विक्रेता; गोमांस बेचनेवाला, दूध । वि० बेरहम, बेदर्द ।—**झाना**—पु० वह स्थान जहाँ मांसके लिए पशुओंका बध किया जाय । **झु०**—**का पिछा**—मीठा-ताना आदमी ।—**के खँटे बैचना**—निर्दय व्यक्तिसे पाले पचना; बेदर्दसे व्याधा जाना ।
कसाकसी—खी० तनातनी, वैर-विरोध ।
कसाबा—अ० कि० कसौला खाद हो जाना; धातुका कसाव उत्तर आनेसे विगड़ना । स० कि० कसवाना ('कसना'का प्रे०) ।
कसाकस—खी० [अ०] गाढ़ापन; मोटाई, स्थूलता; गंदगी ।
कसार—पु० भूने हुए आटे या चोरेठेका धी, शकर, येना आदि मिलाकर बनाया हुआ मलीदा या लड्डू; धीमें भूना हुआ आटा जिसमें चीनी पड़ी हो ।
कसाकस—खी० [अ०] सुस्ती, थिथिलता ।
कसाका—पु० कठिन, कटकर श्रम; कष्ट; वह खटाई जिसमें छीनार गहना साफ करते हैं ।
कसाव—पु० कसौलपन; कसनेका भाव; तनाव; * कसाई ।
कसाबट—खी० तनाव, खिचाव ।
कसावका—पु० कसाई ।
कसावर—पु० एक देहाती राजा ।
कसिपु—पु० [स०] भोजन; भात ।
कसिया—पु० देवरिया जिलेका एक कसबा जो नुबके महा-निर्वाणका स्थान है, कुशीनगर । † खी० एक थिथिया ।
कसिबाना—अ० कि० कसावयुक्त हो जाना ।
कसी—खी० जमीनकी एक नाप जो रो करमके बराबर होती है; एक पौधा जिसके फलकी गिरीकी आसाम आदिकी जंगली जातियाँ रोटी पकाकर खाती हैं; कशकु; हलका फाल ।
कसीटना—स० कि० कमना; रोकना ।
कसीदा—पु० दे० 'कसीदा' ।
कसीदा—पु० [अ०] उर्दू-कारसीका वह पद्य जिसमें किसीकी प्रशंसा या (कवि) निंदा की गयी हो ।—**घी**—वि०

कसीदा लिखनेवाला ।
कसीर—वि० [अ०] बहुत, अधिक, ज्यादा ।
कसीस—पु० एक लौहजन्य पदार्थ । * खी० निर्दयता; क्रोशिक ।
कसीसना—स० कि० खींचना—'साँस दिये न समाव सकोचन हाव इतेपर बान कसीसत'—धन० ।
कसुम—पु० कुसुमी रंग ।
कसुमी—वि० कुसुमके रंगका; हल रंगमें रंगा हुआ ।
कसुमर—पु० दे० 'कुसुम' ।
कसूर—पु० दे० 'कुधर' ।—**मंथ**—वि० दे० 'कसूरमंथ' ।
कसेई—खी० दे० 'कसी' ।
कसेरा—पु० एक हिंदू जाति जो कौने आदिके बरतन बनाने-बेचनेका धरा करती है । [खी० 'कसेरन', 'फनेरिन']
कसेर—पु० [स०] एक तरहकी घास; दे० 'कशेर' ।
कसेरका—खी० [स०] दे० 'कसेरका' ।
कसेर—पु० एक प्रकारके मोथेकी जब जो छीलकर खायी जाती है ।
कसेपा—पु० कसने या त्रकनेवाला; परखनेवाला ।
कसेला—वि० जिसमें कसाव या कसौलपन हो ।
कसीली—खी० झुपारी ।
कसोरा—पु० मिट्टीका बना प्याला जो छिछला होता है; कटेरा ।
कसौजा, **कसौदा**—पु० कास-जैसा एक पौधा जो छाजन आदिके काम आता है; चकवक्की जातिका एक पौधा, कासमर्द ।
कसीटी—खी० एक काला पत्थर जिसपर सोना चिसकर परखा जाता है; परख; जॉच (ला०) ।
कस—पु० दे० 'कसद' ।
कसरी—खी० दूध जीटनेका एक तरहका मिट्टीका पात्र ।
कसीर—पु० [स०] टीन ।
कस्तूर—पु० कस्तूरी-शृंग; कस्तूरी-जैसा एक पदार्थ जो शीवर नामक जंतुकी नाभिमें निकलता है ।
कस्तूरा—पु० कस्तूरीवाला हिरन; लोमड़ी-जैसा एक जंतु ।
कस्तुरिका—खी० [स०] कस्तूरी ।
कस्तुरिबा—वि० कस्तूरीका; कस्तूरीसे मिलकर बना; कस्तूरी-के रंगका । पु० कस्तूरी-शृंग ।
कस्तूरी—खी० [स०] एक सुगंधित पदार्थ जो एक तरहके नर हिरनकी नाभिके पासकी गोंठमें पैदा होता और दवाके काम आता है—**मल्लिका**,—**बल्लिका**—खी० एक लता । जिसके बीजसे कस्तूरीकी गंध निकलती है, लताकस्तुरिका, मुस्कदाना ।—**सूरा**—पु० वह हिरन जिसकी नाभिमें पामकी गोंठ(नाफा)में कस्तूरी पैदा होती है ।
कसूर—पु० [अ०] बरादा; संकष; शब्दा ।
कसूर—अ० [अ०] जानबूझकर, बरादा करके ।
कस—खी० अंश, भाग; इकाईका अंश; अंश (भा०), जेदकी इकाई ।—**आशारिबा**—पु० दशमछव भिन्न ।
कसा—खी० [अ०] जेदकी भाषा ।
कस्ता—पु० बल्लकी छाछ; बल्लकी छाछसे बननेवाली शराब ।
कसराव—पु० [अ०] दूध ।—**झाना**—पु० दूध-खाना ।

कहँ*-प्र० को; के लिए। अ० दे० 'कहाँ'।

कहरना-अ० कि० कराहना।

कह-० वि० क्या। पु० [का०] घाम ('काह'का छोटा रूप)
-कहा-पु० एक पीले रंगका मुहरा जो चमड़े या रेशम-
पर रगड़कर खली वास्ते पास लामेसे उत खींच लेता है।

कहकशा-पु० [का०] आकाशगंगा।

कहकहा-पु० [अ०] खिलखिलाकर हँसना, जोरकी हँसी
(लगाना)। -हीवार-खी० दे० 'चीनी की दीवार'।

कहगिर-खी० [का०] मिट्टीमें भूना, पुआलकी कुट्टी आदि
सानकर बनाया हुआ गारा।

कहहत-पु० [अ०] अवर्णन; अकाल; दुष्प्राप्यता (किसी
जीवका को)। -झड़-वि० अकालपीड़ित, कहतका मारा
हुआ। -खाकी-खी० दुर्मिश्र, काल।

कहता-वि० कहने, बोलनेवाला।

कहन-खी० उक्ति, वचन; कहनावन।

कहना-म० कि० शब्द द्वारा भाव-प्रकाश करना; बोलना;
बयान करना, बयाना प्रकट करना; सूचित करना; पुका-
रना; बहकाना; आश्वा देना; अनुक्त वाम कहना, कविता
रचना। पु० उक्ति, कथन; आश्वा, आदेश। सु० -सुचना

-ममझाना-दुशाना; अनुरोध, प्रार्थना करना। कहनेको
-नामको, बरायनाम। (किसीके)- (मे) में आना

(किसीकी बहकानेवाली बातको मान लेना, किसीके चकमेमें
आना। (किसीके)-में होना-किसीके हाथमें, वशमें
होना। कह-बदकर-प्रशिक्षा करके; ललकारकर।

कहनाउत-खी० दे० 'कहनावत'।

कहनावत-खी० कथन, कहानत।

कहन-खी० दे० 'कहन'।

कहनी-खी० कहानी; कथन।

कहनूत-खी० कथावत।

कहर-पु०, वि० [अ०] दे० 'कह'।

कहरना-अ० कि० कराहना।

कहरवा-पु० एक तार; कहरवा तालपर गाय। जानेवाला
दादर।

कहरी-वि० कहर करनेवाला।

कहव-० पु० जमव, बवा बढ हो जानेये होनेवाली गरमी;
ताप; दुख-दर्द; [अ०] सुरमा।

कहलना-अ० कि० (गायपे) व्याकुल, बेचैन होना।

कहलवाना-म० कि० दमरके जरिये किसीने कुछ कहना;
मेंना भेजना; उधारण कराना। अ० कि० पकारा जाना।

कहलाना-म० कि० दे० 'कहलवाना'। अ० कि० पकारा
जाना; * दे० 'कहलना'-'कहलाने एकत वसत'-वि०।

कहवा-पु० [अ०] एक पेड़का बीज जिसे भूतकर पीमते
और दूध, शकर मिलाकर चायकी तरह हस्तेमाल करते
हैं। -झावा-पु० कहरैसी दुकान, जहाँ लोग रकट्टे
होकर कच्चा पिये।

कहवाना-म० कि० दे० 'कहलवाना'।

कहवैशा-पु० कहनेवाला।

कहाँ-अ० किम जगह। पु० तरंग पैदा हुए बच्चेके रोनेका
दाव्र। सु०-अमुक, कहाँ अमुक-दोनोंमें बहुत अंतर

है, दोनोंकी कोई तुलना नहीं। -का-कैसा; वैसा बरा
विकट (पूर्व श्वादि); नाहकका, व्यर्थका। -का कहाँ-
कहाँस कहाँ। -की बात-कैसी अनहोनी बात।

कहा-पु० सलाह; आदेश; कहना। * खी० क्या। अ०
कैसे; कब। सर्व० क्या। वि० क्या। -कही-खी० उत्तर-

प्रत्युत्तर, तत्कार। -सुना-पु० बोलनेमें दूर भूल-चूक;
अनीनित्य। -सुनी-खी० दुखन, तत्कार।

कहाउति-खी० दे० 'कहावत'।

कहाना-स० कि०, अ० कि० कहलाना।

कहानी-खी० कथा; वृत्तान्त; आख्यायिका, उपन्यासके
दगकी छोटी रचना जो प्रायः एक ही घटना या परिस्थिति-

को लेकर लिखी गयी हो; मनने गदी, उपजावी हुई बात।

कहार-पु० एक हिंदू जाति जो प्रायः डोली डोने, पानी
भरने आदिके काम करती है।

कहारा-पु० टोकरा।

कहाल-पु० एक बाजा।

कहावत-खी० ममन, लोकोक्ति; उक्ति, कथन; मृगकर्म
आदिकी सूचना देनेके लिए सचबिघी आदिकी भेजा जाने-

वाला संदेश या पत्र।

कहाह-पु० [स०] भसा।

कहिया-अ० कब, किस दिन। पु० राँगा जोबनेके काममें
आनेवाला एक औजार।

कहीं-अ० किसी जगह, दूसरी जगह; (प्रश्न रूपमें, काकुते)
नहीं, कदापि नहीं; अमर; शायद। वि० बहुत; बहुत
ब्यादा। -कहीं-अ० कुछ स्थानोंमें, जहाँ-तहाँ। -का-

किसी जगहका; न जाने कहाँ (उल्लू कहीका)।

कही-खी० कही हुई बात, कथन।

कहुँ, कहुँ-अ० दे० 'कही'।

कहुवा-वि० काला।

कहुवा-पु० लुकाममें दिवा जानेवाला धी, मीच आदिसे
बना हुआ एक अवलेह; † अर्जुनका पत्र।

कह-पु० [अ०] बला, आफत; जुलम। वि० भीषण।

-कहाही-पु० सुदार्ह गजब। -का-गजबका। सु०
-करना-जुलम करना। -दूदगी-दही सकट पड़ना।

-ठाना-किसीपर आफत लाना।

कह्लार-पु० [स०] श्वेत पत्र।

कह-पु० [स०] बगला; एक तरहका सारस।

कौँ-वि० चालाक, धूर्त।

कौँ-अ० कबो।

कौँ-पु० मफेट चील, कक, कँगनी नामक एक कदम।

कौँ-पु० ककड।

कौँ-खी० छोटा कंकड़।

कौँ-पु० दे० 'कौँ-कौँ'।

कौँकुनी-खी० कँगनी।

कौँकणीय-वि० [म०] चाहने योग्य।

कौँका-खी० [स०] रच्छा, चाह; मुकाव, प्रवृत्ति।

कौँकित-वि० [म०] चाह हुआ।

कौँकी-खी० [म०] एक तरहकी सुगंधित मिट्टी।

कौँकी (शिशु)-वि० [स०] चाहनेवाला।

कौँकोह-पु० [स०] बगलेकी जातिका एक पक्षी।

कॉल-खी० बाहुयुक्त के नीचेका गडा, बगल ।

कॉलना-अ० कि० मलस्यायमें जोर लगाने वा भारी बोझ उठाने आदिने गलेमें खोसनेकीसी भावाय निकलना ।

कॉलसोती-खी० दुपट्टा डालनेका एक ढंग जिसमें वह बायें कंधेके ऊपर और दाहिनी बगलके नीचेसे जनेऊकी तरह निकाला जाता है ।

कॉलवा-पु० एक पक्षी; पंजाबका एक जिला ।

कॉलकी०-खी० कश्मीरियोंकी गलेमें लटकानेकी एक अंगठी ।

कॉलनी-खी० कंगनी ।

कॉलरू-पु० दे० 'कंगारू' ।

कॉलही०-खी० दे० 'कंबी' ।

कॉलगुरा०-पु० दे० 'कंगुरा' ।

कॉम्रेस-खी० [अं०] सम्मेलन; संपदन वा समुदाय-विशेषके प्रतिनिधियोंकी वार्षिक बैठक; भारतकी राष्ट्रीय महासभा, इंडियन नेशनल कांग्रेस; संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी पार्लमेंट वा राष्ट्रसभा ।-जन्-पु० [हिं०] कांग्रेसका अनुयायी या सचिव ।-मैत्र-पु० कांग्रेसजन ।

कॉम्रेसी-वि० कांग्रेससे संबद्ध । पु० कांग्रेसका अनुयायी ।

कॉच-पु० घोड़ा । खी० गुद्राका भीतरका भाग; काष्ठ ।

मु०-खोलना-प्रसंग करना ।-निकलना-एक रोग जिसमें मलस्यायके समय कॉच बाहर निकल आती है; अमादि सहनेमें असमर्थ होना ।

कांचन-पु० [सं०] सोना; दीप्ति, चमक; धन; धत्ता; चंपा; पक्कसर । वि० सोनेका बना; सुनहरा ।-कंदूर-पु० सोनेकी खान ।-गिरि-पु० हुमेर ।-चंगा-पु० [हिं०] हिमालयकी एक चोटी ।-पुरुष-पु० सोनेके पत्तरपर बनायी हुई पुरुषकी मूर्ति जो एकादशाक्ष कर्ममें महा-श्राद्धणकी दान दी जाती है ।-ग्रभ-वि० सोनेके समान चमकनेवाला । पु० एक वंशमें उत्पन्न एक राजा ।-संस्थि-खी० बराबरीके वज्रपर की हुई संधि ।

कांचनक-पु० [सं०] हरनाल; अन्न; चपा ।

कांचनार-पु० [सं०] कंचनार ।

कांचनी-खी० [मं०] हलदी; गोरोचन ।

कांचरी, कांचली-खी० दे० 'केंचुली' ।

कांचा०-वि० कचा; अस्तिर ।

कांचि, कांची-खी० [सं०] कश्मीर; मेखला; दक्षिण भारतका एक प्रसिद्ध नगर जो सप्त पुरियोंमें है, कांचि-वरम् ।-कच्छ-पु० मेखला ।-गुणस्थान,-पद्-पु० कनर ।-पुरी-खी० कांची ।

कांचिक-पु० [सं०] कांची ।

कांचुरी, कांचुली-खी० दे० 'केंचुली' ।

कांच-वि० जिसे कांच निकलनेका रोग हो । पु० केंचुल ।

काँछा०-पु० दे० 'काष्ठ' ।

काँठना-सं० कि० काठना; सँवारना; पहनना ।

काँछा०-खी० दे० 'काँछा' ।

काँचिक-पु० [सं०] कांची ।

काँचिक-खी० [सं०] जीवंती लता; पलाशी लता; काँजी ।

काँचिवरम्, काँचिवारम्-पु० कांची नगरी ।

काँची-खी० [सं०] मोंग, रावेंके बोल, सिरके आदिमें जीरा,

नमक आदि डालकर बनाया जानेवाला एक सड़ा पेय जो स्वादिष्ट और पाचक होता है; दही या फटे हुए दूधका पानी ।

काँजी-खी० दे० 'काँजी' ।

काँजी-हाउस-पु० [अं० 'काहन-हाउस'] मवेशीखाना, बहू बाड़ा जिसमें दूसरेका खेत आदि खानेवाले या लावारिस चौपाये बंद किये जाते और कुछ रूढ़ लेकर छोड़े या नीलाम किये जाते हैं । [काँजी (तामिल)]-लावारिस पशु, हाउस (अं०)-घर ।

काँट०-पु० दे० 'काँटा' ।

काँटा-पु० पेड़-पौधोंकी टहनियोंमें निकली हुई सूई जैसी पैनी नोकवाली चीज, कंटक; लोहेकी लंभी, पतली कील। मछली पकड़नेकी काँटिया; अंकुशोंका समूह जिससे कुर्छमें गिरे हुए कलश, बाल्टी आदि निकालते हैं; मछलीकी बारीक हाडियाँ जो खाते हुए गलेमें चुभती हैं; लोहे-पीतल आदिके तराजूकी बाँटोंमें नीची-नीच लगी सूई; सोना-चाँदी लौलनेका काँटेदार तराजू; धवीकी सूई; बहू आला जिससे किसान भूसा उठाते हैं; बहू किया जिसमें हिसाबके सही-गलत होनेकी जाँच की जाय (ग०); एक आला जिसमें दूरीय खाना उठाकर खाते हैं; फल आदि तोड़नेकी अंकुमी; झाड़ टँगनेका हुक; नाककी कील। मु०-निकलना-मनका क्लेश, कमक भिटना ।-होना-सूखकर कड़ा हो जाना; सूखकर ठठरीभर रह जाना ।

-(टे)की लौल-विलकुल ठीक, न कम, न अधिक ।

-पचना-गले या जीभका प्याम्मे सूखना । (राहमें)-

-बिछाना-बाधाएँ खड़ी करना, रोके अटकना ।-होना-दुराई करना; भावी अनिष्टका कारण बनना ।

-(टीं) पर लोटना-देवैन होना, तत्पन्ना; ईर्ष्यामें त्रलना ।

-में घसीटना-(अनुचित प्रशंसा इत्यादि) लजित करना ।

काँटी-खी० छोटा काँटा; बेडिया; ईँका कुचड़ा । मु०-

-लडाना-लडकोंका एक खेल, लगर लडाना ।

काँटा०-पु० गला; किलारा; पार्श्व; तोतेके गलेकी मंडला-

कार रेखा ।

कांड-पु० [सं०] अश, विभाग; ईश्वर-नरकुल आदिकी पौर;

पेठका मना, वृक्ष-स्कंध; ग्रथका विभाग, परिकेष्ट; गुच्छा;

समूह; बाँध; डबा; बाण; सरकड़ा; डठल; नाथ; हाथ-

पाँवकी लबी इड्डा; नली; अवसर, निर्जन स्थान; खुशामद;

जल; एक भाग; फटना (हत्याकांड) । वि० कुत्तित, खराब

(केवल समासात्ते) ।-कटुक-पु० कोरेला ।-कार-

पु० बाण बनानेवाला; सुपारीका पेड़ ।-गोचर-पु०

लोहेका बाण, नाराच ।-सिक्क-पु० चिरायता ।-जय-

पु० तीन काँडोंका समूह-कर्म, उपामना और हान ।

-धार-पु० कंधार (?) ।-पट-पटक-पु० कनात ।

-पाठ-पु० तीरकी मार; बहू दूरी जहाँतक तीर आ

सके ।-पूछ-पु० सैनिक, शस्त्रजीवी; वधवाका पति;

बाण बनानेवाला; जीव व्यक्ति; अपनी जाति, कुलका

त्याग करनेवाला; मारी धनुष; कर्णका धनुष; दत्तक

पुत्र । अंग-पु० इड्डाका टूट जाना ।-संस्थि-खी०

ईश्व आदिकी गोंड ।-स्थूड-पु० शस्त्रजीवी, सैनिक ।

-हीम-पु० एक वृण, मनुसुस्तक ।

कॉपना—स० कि० कुचलना, 'मट भारी-भारी राबरे के बाजर ने कॉपिगे'—कविता०; कृदना ।

कॉडकी—खी० कुलका ।

कांडबाबू(बबू)—पु० [सं०] तीरदात्र ।

काँदा—पु० रसिका कीड़ा; पेशोंका एक रोग; लकड़ीमें लगने-वाला एक कीड़ा ।

कांडाल—पु० [सं०] दे० 'कांडील' ।

कांडिका—खी० [सं०] एक अन्न; एक तरहका कुम्हड़ा ।

काँदी—खी० छाजनमें लगनेवाली लकड़ीका बड़ा या बौंस; अरहरकी सूखी लकड़ी; ओखलीका गह्वर; हाथीका एक रोग जो तल में होता है; भारी चीजे ठमेलनेका लकड़ीका बड़ा; मछलियोंका झुंड; † चौपायोंको दबा पिलानेका डरका ।

काँधीर—पु० [सं०] तीरदात्र; जपामार्ग ।

काँधीरी—खी० [सं०] मजिहा ।

काँदेरी—खी० [सं०] नामवंती ।

काँदेरुहा—खी० [सं०] कटुकी ।

काँदोल—पु० [सं०] नरकटका देकरा ।

कांत—वि० [सं०] प्रिय; मनोरम, शोभन । पु० प्यार करने-वाला; पति; प्रिय व्यक्ति; विष्णु; चंद्रमा; बर्मन; कार्तिकेय; कृष्ण; कुकुम; एक तरहका लोहा । —**पक्षी(शिव)**—पु० मयूर । —**पाषाण**—पु० चुपक । —**लक**—पु० नदी वृक्ष । —**खीह**—पु० कातसार; हस्पान । —**सार**—पु० एक तरहका लोहा जो वैयकमें काम आता है ।

कांता—खी० [सं०] प्रिया; पत्नी; सुःखी स्त्री; प्रियगु लता; एक गंधद्रव्य; पक्षी, बड़ी इलायची ।

कांतार—पु० [सं०] गहन वन; दुर्गम पथ; विवर, गड्ढा; †क ईल; बीम; एक आननस; लक्षण; कमल ।

कांतारक—पु० [सं०] एक ईल ।

कांति—खी० [सं०] मौन्य; चमक, दीप्ति; इच्छा; प्रेमके कारण बड़ा हुआ मौन्य; शृंगार; सुंदर स्त्री; रुद्रमात्री मोल्ल बलाओंमेंसे एक; दुर्गा । —**कर**—वि० मौन्य बढ़ाने-वाला । —**इ**—पु० पित्त; धा । वि० सुंदरता देनेवाला । —**दा**—खी० मोमराजी । —**दायक**—वि० शोभा देने-वाला । पु० कालीयक वृक्ष । —**खुत्**—पु० चंद्रमा । —**सार**—पु० एक अच्छी मिस्मका लोहा । —**हर**—वि० मौन्य नष्ट करनेवाला; कुत्त कर देनेवाला ।

कांती—खी० एक प्रकारका घटिया लोहा जिसमें मिट्टीकी मिश्रवट होती है, जो रेलिंग, कड़ाही आदि बनानेके काम आता है ।

कांती—खी० बिच्छूका ढंका; तीव्र व्यवसा; सुखी; कैची ।

कांतिरि—खी० गुदकी ।

काँदना—अ० कि० रोना-चिल्लाना ।

काँदब—पु० [सं०] वृद्ध या कड़ाहीमें भूनी हुई चीज ।

काँदबा—पु० दे० 'काँदो' ।

काँदबिक—पु० [सं०] भूनेने, पकानेका पेशा करनेवाला, हलवाई ।

काँदा—पु० एक शुष्म जिसमें प्याज जैसी गाँठ पड़ती है; प्याज ।

काँदिसीक—वि० [सं०] मयने भगा हुआ; बरा हुआ ।

काँदू—पु० बनियोंकी एक उपजाति ।

काँदो—पु० एक, कीचड़ ।

काँद—पु० कंधा; कोखके जाठका ऊपरका भाग । **मु०**—**देना**—सहारा देना; स्वीकार करना । —**भारना**—थोड़ा देना ।

काँधना—स० कि० उठाना; संभालना; दानना; स्वीकार करना; भार सहना ।

काँधर—पु० कृष्ण ।

काँधा—पु० कृष्ण; † कंधा ।

काँधी—खी० कंधा । **मु०**—**देना**—डालमट्टल करना । —**भारना**—सवारको गिरानेकी गरजसे धोकेका झटकेसे गरदन फेरना ।

काँन—पु०—कृष्ण ।

काँप—खी० कानमें पहननेका एक गहना; करनफूल; पतली, लचीली तीली; पतलमें लगायी जानेवाली तीली; कलहका चूना; हाथीका दाँत; सूरका खँग ।

काँपना—अ० कि० हिलना; लरजना; डरते हिलना, धरना ।

काँपा—पु० बौंसकी पनली तीली ।

काँपिल—पु० [सं०] एक प्राचीन प्रदेश ।

काँपिल्य—पु० [सं०] एक प्राचीन प्रदेश; एक पौधा ।

काँपिल्ल—पु० [सं०] दे० 'कापिल्य'; एक गंधद्रव्य, कमीला ।

काँपिल्लक—पु० [सं०] काँपिल्य नामक पौधा; एक गंध-द्रव्य ।

काँपील—पु० [सं०] दे० 'कापिल्य' ।

कांबलिक—पु० [सं०] काँजी ।

कांबोज—वि० कंबोज देशका । पु० कंबोज देशका निवासी; कंबोज देशका पौधा; पुष्पाग वृक्ष ।

काँय-काँय, काँय-काँय—पु० बौंसका शब्द ।

काँवर—खी० बौंसका मोटा फट्टा जिने कपेपर रखकर और छोटोपर बंधे छोटीपर चोखे रखकर शीते है, बहरींग; बह बड़ा जिसके छोटोपर टोकरीयाँ बाँधने और उनमें गंगाजल आदि रखकर के जाते हैं ।

काँवरधी, काँवरधु—पु० दे० 'काँवरधी' ।

काँवरि—खी० दे० 'काँवर' ।

काँवरिया—पु० काँवर लेकर चलनेवाला व्यक्ति ।

काँवरी—खी० दे० 'कामरी' ।

काँवरू—पु० कामरूप देश ।

काँवरधी—पु० काँवर लेकर तीर्थयात्रा करनेवाला ।

काँस—पु०—एक लंगी घास जो शरद ऋतुमें फूलती है ।

काँसा—पु० तबि और जस्तेके मेलमें बनी एक धातु; मीछ मँगनेका छप्पर । —**गर**—पु० काँसेका काम करनेवाला ।

काँसार—पु० कमेरा ।

काँपी—खी० काँसा; धानके पौधेका एक रोग ।

काँपीय—पु० [सं०] जस्ता ।

काँसुला—पु० सोनारोंके चुंडी आदि बनानेके काममें आने-वाला काँसेका लोकोर टुकड़ा ।

काँस्टेबिल—पु० [अ०] दे० 'कांस्टेबिल' ।

काँख—पु० [सं०] तबि और जस्तेके मेलसे बनी एक धातु; धातुनिमित्त पानपात्र । वि० काँसेका बना हुआ । —**कार**—

पु० कर्नेरा; ठठेरा । -साल-पु० शौस । -भाजव-पु० कौसेका बरतन । -भल-पु० तौवे-पीतल आदिका मोरचा । -भुग-पु० शनिपत्तका वह भुग जिसमें हथियार, बरतन आदि सौंफके ही बनते थे ।

काक्यक-पु० [सं०] पीतल ।

का-प्र० संभव कारकनी विभक्ति । * सर्व० क्या; विभक्तिने पहले 'किस'के बदले प्रयुक्त रूप-जैसे 'कासे' इत्यादि । काहूयाँ-वि० पूर्त; चालाक ।

काहूँ-खी० पानी या सीलमें रहनेवाले पत्थर आदिपर जमनेवाली बारीक; रेसे जैसी घास; बंधे पानीके ऊपर आनेवाली गोल पत्तियोंकी एक घास; किट्टकी तरह जमा हुआ मैल; तौवे-पीतल आदिपर लगनेवाला मोरचा । मु० -छुवाना-जमा हुआ मैल छुवाना । -सा फटना-बिखर जाना ।

काहूँ-अ० काक, कमी -सूदास घेते अलि जगमें गिनकी गति नहि काहूँ-सूर ।

काक*-अ० कमी । सर्व० कुछ; कोर ।

काक-पु० [सं०] कौआ; एक प्रकारका तिलक; लँगड़ा आदमी; एक दीप; एक माष; कौएकी तरह मिर्ग सिर उठाकर लान करना; अनि घृष्ट; नीच व्यक्ति (ला०) ।

-कंगु-पु० कँगनी, काकुन । -कला-खी० काकजवा; एक ताल । -गोलक-पु० कौएकी आँखकी पुगली (कौएकी आँखमें एक ही डेला या गोलक होना माना जाता है जिने वह आवश्यकतानुसार दोनों ओर घुमा लेता है) ।

-बिन्हा-खी० घुँघची या घुँघरी । -चोटा-खी० कौएकी तरह चौकता रहना । -छल्ल-पु० काकपक्ष; खजन ।

-जंघा-खी० एक वनौषधि; चक भंती; घुँघची । -जंघु-पु० काकाफला, ध्मलजनु । -जात-पु० कौयल ।

-ताकीय-वि० अचानक, मयोगवश होनेवाला । -म्याव-पु० किसी पटनाका केवल मयोगवश होना (जै० कौएके बैठते ही उसपर ताड़के पड़े फलका नू पड़ना) । -तिन्हा-खी० काकजवा; घुँघची ।

-तुंडी-खी० कौमाठोड़ी । -दूत-पु० कौएका दांत; कोरें अनहोनी बात (ला०) । -गवेषण-पु० अनहोनी वस्तुकी खोज, बेकार कोशिश । -ध्वज-पु० बाइबासि ।

-नासा; नासिका-खी० काकजवा । -पक्ष-पु० कन पटियोंपर लटकनेवाले बालके, पट्टे, डुल्फ । -पद-पु० कौएके पदका परिमाण जो शिलाका शाखविहित परिमाण है; छूटे हुए शब्दके लिए पकिले नीचे बनाया जानेवाला चिह्न (A); एक रनिचप; धीरेका एक दीप; चर्मच्छेद ।

-पाली-खी० कौयल । -पीलु-पु० कुचला । -पुच्छ-पुच्छ-पु० कौयल । -पैय-वि० छिल्ला, मुंहतक भरा हुआ । -फल-पु० नीमका फल । -फला-खी० बन-जामुन । -बंध्या; -बंध्या-खी० एक बंधा जनकर बंध्या हो जानेवाली स्त्री । -बलि-खी० आद आदिमें कौएके लिए निकाला जानेवाला अन्न । -भांडी-खी० महाकरज ।

-भीरु-पु० उल्लू । -भुभुभि-पु० एक रामभक्त जो शापवश कौआ हो गया था । -मदगु-पु० दाख पत्ती ।

-माथिका; -माथी; -माता-खी० मकोव । -मारी-खी० दे० 'कमारी' । -बाब-पु० अन्नका वह पौधा

जिसकी बालमें दाने न हों । -रब-वि० कायर, डरपीक ।

-रुक; -रुक-वि० डरपीक; जनमुदीर; निर्धन । पु० उल्लू । [खी० 'काकलूकी'] । -रुत-पु० कौएकी फर्कवा बोली । -रुहा-खी० पैरोंके सहारे जीनेवाला पौधा, बंधा आदि । -हरीर्ष-पु० वक्रशृङ्ग ।

काकवा-पु० एक पहाड़ी वृक्ष । -सींगी-खी० दवाके काम आनेवाला एक द्रव्य, कर्कट-शृंगी ।

काकण-पु० [सं०] एक तरहका कोढ़ ।

काकणी-खी० [सं०] घुँघची ।

काकरासिंगी-खी० दे० 'काकशासी गी' ।

काकरी*-खी० ककरी ।

काकरेज-पु० [फा०] एक तरहका ऊदा-काले और लाल रंगके मेलसे बना हुआ-रंग ।

काकरेजा-पु० काकरेज रंगका कपड़ा; काकरेजी रंग ।

काकरेजी-वि० काकरेज रंगका । पु० काकरेज रज ।

काकरील-पु० खेखसा ।

काकल-पु० [सं०] कठमणि; कौआ; टेंडुआ; काला कौआ, होणकाक ।

काकलक-पु० [सं०] कठमणि; एक तरहका धान; खर-नलिकाका सिरा ।

काकलि-खी० [सं०] अस्तुट मधुर ध्वनि ।

काकली-खी० [म०] मधु, अस्तुट ध्वनि, पनली, मीठी आवाज; चोरीमें महायक एक औजार; ममीतमें एक म्यान; एक बण्ड; बँधी; घुँघची । -त्राक्षा-खी० किशमित्री मधुर । -निषाद-पु० एक विद्वान स्वर । -रब-पु० कौयल ।

काकलीक-पु० [सं०] मंद, मधुर स्वर ।

काकांगा, काकांगी-खी० [म०] काकजवा ।

काकांची-खी० [सं०] काकजवा ।

काका-पु० धवा । खी० [सं०] काकजवा; काकोली; घुँघची; मकोव ।

काकाशिलोलकन्याय-पु० [सं०] एक शब्द या पदसे, कौएकी आँखके टेन्नेसी तरह, दो काम निकालना ।

काकातुआ-पु० एक तरहका उतला, बंधा माना जिसके भिरपर थोड़ी होनी है ।

काकादनी-खी० [सं०] गुना; मफेद घुँघची ।

काकावु-पु० [म०] भगवत्ता ।

काकारि-पु० [म०] उल्लू ।

काकिणी-खी० [म०] कौडी; पणका कौपार्ह, पाँच गहे कौडी; माजेका कौपार्ह; घुँघची ।

काकिनी-खी० [म०] दे० 'काकिणी' ।

काकिल-पु० [सं०] कठमणि; परदनका ऊपरका भाग ।

काकी-खी० काकाकी स्त्री; [म०] कौएकी मादा ।

काकु-पु० [सं०] भाव या अर्थक भेदम ध्वनिमें भेद होना; वक्तृक्ति अलंकारका एक भेद जिसमें ध्वनिमें, सहनेका दग बदलनेमें अर्थ बदल जाता है; नकारका ऐसा प्रयोग जिसमें 'हो'का अर्थ निकले; * व्यंग्य, छिपी चोट करनेवाली उक्ति ।

काकुत्स्थ-पु० [सं०] ककुत्स्थके वंशमें उत्पन्न व्यक्ति-दशरथ, गम आदि ।

काकुल-पु० [स०] तालु ।

काकुल-खी० एक मोटा अन्न, कौनी ।

काकुल-खी० [फा०] कनपदीपर लटकते हुए बाक, जुलक ।

काकुल-पु० [स०] सौप ।

काकोल-पु० [स०] काका कौआ, रोम कौआ; सर्प; शूकर; एक विष; कुम्भार; एक नरक ।

काकोली-खी० [स०] एक वनौषधि जो अह्वगर्गे अंतर्गत है, जीवती ।

काकोलिका-खी० [स०] कौप और उल्लकासा सहज ने ।

काक-पु० [स०] कटाक्ष; चट्टी हुई खोरी ।

काकी-खी० [स०] एक गंधद्रव्य; एक तरहकी सुगंधित मिट्टी ।

काक-पु० दे० 'काक'; [स०] कौआ । -कुसुंदि, -कुसुंकी-पु० दे० 'काककुसुंदि' ।

काका-पु० [फा०] सन, बाँस, चौपड़े आदिकी छगदीसे बनायी हुई वस्तु जो लिखने-छापने आदिके काम आती है, 'पेपर'; लिखी हुई चीज; लेख; लिखित प्रमाण, दस्तावेज; रक्षा; कथपत्र; अन्वहार । -वच-पु० किसी नामलेसे संबद्ध लिखी हुई बातें, कागजात; सन्त । -का कपचा-नोट । -करी नाव-कागज मोड़कर (लेखके लिपि) बनायी हुई नाव; न टियनेवाली, छगमगुर वस्तु । सु०-काका

करना-वेकार बाँने लिखना । -के बोड़े दोहाना-लगी लिखा-पढ़ी, पत्र-व्यवहार करना; (केवल) कागजी कार-वाई करना ।

काका-पु० [फा०] कागजपत्र ('कागज'का बहु०) ।

काका-पु० [स०] कागजका बना; लिखित (सन्त इ०); पत्रलेखकेवाला (नादाम, लोड इ०) । पु० कागज बनाने या बेचनेवाला; बिलकुल मुफेद कबूतर । -काकरबाई-

खी० लिखा-पढ़ी । -जौक-खी० बहुत पतली और छोटी जोक । -सन्त-पु० लिखित प्रमाण ।

कागद-पु० [स०] कागज ।

कागमारी-खी० एक तरहकी नाव ।

कागर-पु० कागज-पुम्हरे देश कागर मसि लुटी'-मूर; मैनुली; पक्ष ।

कागरी-वि० पुच्छ ।

कागा-पु० कौआ । -बासी-खी० तबके छानी जाने वाली भीस; एक तरहका मोती । -रोल-पु० कौआका कोंब-कोंब करना; शोरगुल ।

कागरी-पु० काकबलि ।

काक-पु० [स०] शीशा; खारी मिट्टी; काका नमक; भोग; आँखकी एक बीमारी । -आजन्-पु० शीशेका बरतन । -मणि-पु० स्फटिक । -मल, -कवण-पु० काका नमक ।

काक-पु० [स०] शीशा; पत्थर; खार ।

काकन, काकन-पु० [स०] बैठन या पुस्तक बाँधनेकी मोटी ।

काकरी-खी० कैनुली ।

काका, काको-वि० दे० 'काका' ।

काकी-खी० मिहारे, कुम्हरे आदिका बहुता ।

१८-क

काक-पु० पेड़ और बाँधका जोड़; भीतीका छोर जिते जाँघोंके बीचसे ले जाकर पीछे खोलेते हैं, लँग; लिखोंका कच्छ; मटोका वेश-विस्वास । सु०-कोलना-नंगा कौना; संभोग करना । -कगना-चलनेमें रातोंका रगड़ खाना; गीली धोती पहनने, पमीना मरने आदिसे कुंठियाँ निकलना या चमड़ेका छिस्कर लाक हो जाना ।

काकना-स० कि० लँगकी पीछे से जाकर खोसना; संभारना, पहनना; किसी तरह चीजकी पीछकर इकट्ठा करना ।

काकनी-खी० पुटनीतक कसकर पहनी हुई भीती जिसमें दोनों लँगें पीछे खुली हों; मूँतियाँ आदिकी पहनाया जानेवाला एक तरहका पोषा ।

काका-पु० कुछ ऊपर चढ़ाकर और कमकर पहनी हुई भीती जिसकी दोनों लँगें पीछे खोसी जाती है ।

काकी-पु० एक हिंदू जाति जो तरकारियाँ बोलने-बेचनेका काम करती है, कोयरी ।

काका-पु० कलुआ ।

काके-अ० पास, निकट ।

काके-अ० दे० 'काके' ।

काक-पु० काम, कार्य, पंथा; अर्थ, प्रयोजन; विवाहादि कृत्य; * स्याह; बदनका छेद । (के काक-के छिप, के वास्ते ।)

काकर-पु० दे० 'काकल' ।

काकरी-खी० वह गाय जिसकी आँखोंके चारों ओरका हिस्सा काका हो ।

काकल-पु० दिनेके सुबहके कालिख जो सुरमेकी तरह आँखमें लगायी जाती है । सु०-की कोठरी-ऐसी जगह जहाँ जानेसे, ऐसा काम जिस करनेसे, कलक लगना, अवि-बाय हो, बदनामीका पर । -पारवा-दियेकी छीपर का-रीटा आदि रखकर कालिख इकट्ठा करना ।

काकरी-पु० [अ०] सुसज्जमान न्यायाधीश जो शराके भु-सार मामलोंका निर्णय करे; बिचारक; निकाह पढ़ानेवाला मोलवी । -उल-कुम्हल-पु० कामियोंका अफसर, प्रभान न्यायाधीश । सु०-जीकी दाढ़ी लबकमें गयी

-किसी अच्छी चीजका वो ही समाप्त हो जाना, -"मिट्टी के देवता तिलकमें ही उजाड़" । -ओ दुबले कपड़े, सहरेके अंदेखोसे-ऐसी बातोंकी चिन्तामें डुलना जिनका अपनंत संबंध न हो ।

काक-पु० एक पेड़ और उसका फल जिसकी गिरी मेरेके तौरपर खायी जाती है ।

काट-पु० [स०] कुर्ज । खी० [हि०] काटनेका काम; काटनेका बंग; तराश; चोट, धाबा; चालवाजी; पेचका लोच; तेल आदिकी तलछट; मैल, मोरचा; धाबपर किसी चीजके लगनेसे होनेवाली छुरछराहट । -कपट-खी० छिपाकर वा अनुचित रीतिसे काटना । -किबाळा-पु० ऐसा कमाळा जिसमें निवत अवधिके अंदर मूय लौटा न दिया जाय तो है पक्का हो जाता है, सती या मीयादी है ।

-कूट-खी० मार-काट; लिबावमें शोधन, परिवर्तन । -कौट-खी० कतर-भ्योत; घटाव-बढ़ाव; शोधन । -वेधा-पु०, -कौल-खी० दाँव-पंच; जोड़-तोड़ ।

काटकी-खी० वह छवी जिते कलंदर बंदर-भाण्ड नचाते

समय हाथमें रखते हैं।

काठन-पु० काठा हुआ नरक, कतरन।

काठना-स० कि० छुरी-सैनी आदिसे किसी चीजके टुकड़े करना; अलग करना; तराशना; फाँक उतारना; कतरना; छुरछाहट पैदा करना; बाध करना; कल करना; रगड़ या रेतकर (पतंगकी) डोर काटना। दाँत भँसाना, दाँतसे चोट करना; धक्के, धरेरेसे तोड़ देना, बहा ले जाना (शोध, जमीन)। (कुछ अंश) निकाल लेना, कम कर देना; बट्टा, मिनहा करना; वारीक पीसना (भांग, मसाला); दूर करना; हटाना; दूर करना; खंडन करना; बिसाना, गुजारना; खारिज करना; नष्ट, नाकी, बगारी आदि बनाना; एक रेखा, लाइन, सड़क आदि का दूसरीके ऊपरसे निकल जाना; एक संस्कारा दूसरीसे पैसा बिभाजन कि कुछ बचे नहीं; हँसना; हँक मारना; कट, पीसा पहुँचाना (का०); उकसाना; हथियाना। मु० काठ खाना-दाँतसे बाध करना; हँसना; हँक मारना। -(३) वीक्षक-बहुत दूरमें बोलना, अति कीच प्रकाश करना। -(४) काथा-खुलेपन, किसीकी याद बिलाने आदिके कारण दुःख होना; मनकी छेड़ देना। -(५) तो खूब नहीं-अचानक उत्पन्न हुए अवाधिके कारण स्तब्ध होना।

काठर-वि० कट्टर।

काठक-पु० [सं०] अन्तता।

काठ-पु० [सं०] बट्टान, पत्थर; [हिं०] लकड़ी; ईंधन; काठकी बनी बेड़ी; कठपुतली।-कथा-पु० लकड़ीकी रदी, बैकर चीजें।-नीम-पु० गणिक नामक वृक्ष।-बैक-खी० इन्धन जैसी एक बैक। मु०-का उल्ल-बज मूल।-का बोधा-बैसाखी।-की हाँकी-पैलकी टट्टी, रिखाक चीज।-भारवा-काठकी बेड़ी पहनाना; चलने-फिरनेपर रोक लगाना।-मैं पौध पैसा-काठकी बेड़ी पहनाना; स्वयं ईंधनमें पचना।-होना संघाटीन होना।

काठका-पु० काठका कठौता।

काठिक-पु० [सं०] कथापन, कठोरता; कठुरका फल।

काठिण-पु० [सं०] कठिनाई; कथापन; निपटुरता; आन-रपकी छटा।-कल-पु० कथित।

काठियावाड़-पु० गुजरातका पच्छिमी भाग।

काठियावाड़ी-पु० काठियावाड़का निवासी; काठियावाड़का बो। वि० काठियावाड़का।

काठी-खी० वह जिन जिलमें नीचे काठ होता है; अग्नेजी ईंफकी जिन; महाभित्त; काठका बना स्थान; देखकी गठन। कट्ट-पु० एक तरफका पीचा जिसकी खेती विमाख्य प्रदेशमें होती है।

काठरी-खी० अरबका सला डंडल, रडठा।

काठना-स० कि० निकालना; बाहर लाना; उरेहना; (सू३) बेक-बूटे बनाना; लेना (कजी); की-सेलमें छानना। कथा-पु० खानोंकी पानीमें ओटकर बनाया हुआ पेय, काथ।

काथ-वि० [सं०] काना; छेद किया हुआ। पु० कौआ।

काथक-पु० [सं०] कौआ; मुर्गा; एक तरफका हंस; क्या नामक चिरिया।

काणेव, काणैर-पु० [सं०] कानी खीका बैठा।

काणेकी-खी० [सं०] असी, व्यवहारिणी खी; विन-व्याही खी।

काणव-पु० [सं०] कणवका बंधन।

कासक-पु० [सं०] सर्वव्यापक संस्कृत-व्याकरण।

कास-पु० मेरुके बाल काटनेकी कैंची; मुर्गेके पैरका कौटा।

कासना-पु० कि० करले या तकलीपर हरे या उनसे पाणा निकालना; सनने सुतली बनाना।

कासर-खी० कोलूकी कतरी। वि० [सं०] अभीर; उद्विध, परेशान; कटसे आकुल, आर्ष; विवश; भीत; भीर। पु० पकनई; एक बड़ी मछली।

कासक-पु० [सं०] कातरता, भीरता।

कासक-पु० [सं०] एक बड़ी मछली।

कासा-पु० कता हुआ सत; सँस छीलनेकी अर्ध-चंद्राकार छुरी, रॉक।

कासि-वि० [सं०] हट्टा करनेवाला।

कासिक-पु० कासिक नास; एक प्रकारका बड़ी जातिका सेता।

कासिक-पु० [अ०] लिखनेवाला; कौथी प्रेसके लिए कापी लिखनेवाला।

कासिक-पु० [अ०] कल करनेवाला, हत्यारा। वि० वातक।

कासी-खी० कैंची; कपी; छुरी।

कासीव-वि० [सं०] कात्यायन-संबंधी। पु० कात्यायनका शिष्य।

कापु-पु० [सं०] कुआँ।

कावृण-पु० [सं०] रोषिण वृण।

काव्य-वि० [सं०] कत कवि-संबंधी। पु० कात्यायन।

कात्यायन-पु० [सं०] कत योजनमें उत्पन्न पुरुष; पाणिनीय सूत्रपर बार्तिक लिखनेवाले बरकचि; विश्वामित्रके वंशज एक कवि जिन्होंने और सूत्र, गृथ सूत्र आदिकी रचना की है; पालीका व्याकरण लिखनेवाले आचार्य 'कचायन'।

कात्यायनी-खी० [सं०] कत योजनमें उत्पन्न खी; याज्ञवल्क्यकी एक पत्नी बृह या अथेय विषया; पार्वती।-पुत्र, सुत-पु० कौत्तिकेय।

कात्यायनीय-वि० [सं०] कात्यायन-रचित।

काथ-पु० कथा-जहाँ बीरा तहँ नून है, पान सेपारी काथ-प०। खी० गुदकी।

काथरी-खी० गुदकी, कपरी।

काथिक-पु० [सं०] कथा-निर्णय करने या लिखनेवाला।

काथक-वि० [सं०] कथक या समूहमें संबद्ध या उत्पन्न। पु० कथकका पेय या फूल; ईंस; वाण; कलहंस।

काथक-पु० [सं०] राण।

काथक-पु० [सं०] कथकके फूलोंसे बना मद्य; मद्य गुण; दहीकी मलाई।

काथरी-खी० [सं०] कथकके फूलोंकी सरास; सराव; बज-मद; कीकिला; मैना; वाणमट्ट-रजित प्रसिद्ध गणकाम्य और उमकी नाविका; सरस्वती; गहदोंमें एकत्र बर्षाका जल

काथिनी-खी० [सं०] बादलोंकी छंदी पत्ति, मेघमाला; एक रागिनी।

कादर वि० दे० 'कातर'।

कादिर-वि० [अ०] कुश्रतवाला, समर्थ, शक्तिमान्।-२)

सुतकञ्ज-वि० सर्वशक्तिमान् (परमात्मा)।

कादिरि-खी० एक तरहकी चोरी।

काद्व-वि० [सं०] गहरे पीले रंगका।

काद्वदेव-पु० [सं०] एक तरहका सोप।

कान-पु० शब्दबोधकी इच्छा, मुक्ति, कर्ण; सुननेकी शक्ति;

कानमें पहननेका एक गहना; सरतनका वस्त्रा; तराजूका

पसंभा; बंदूकी रजकदानी; चारपाईका टेढ़ाबन; सिंहा

आदिकी शैली; नावकी पतवार। * खी० दे० 'कानि'।

- (नीं)काव-यकते दूसरे कानतक, कर्णपरंपराके द्वारा।

कु०-उठाना-(पशुका) चौकड़ा होना; आइट लेना।

-उठाना-शोर-गुल या खंजी बकनासे बहुत कट

मिलना।-उठेठना;-दुँठना-बुँठ वा चेतावनी देनेके

लिए कान मरोटना; कान पकटना।-कतरना,-

काटना-भड़कना, नीचा दिखाना।-करना-सुनना,

कान देना।-का कना-जो कुछ सुने उसपर बिना

विचार किये विश्वास कर लेनेवाला।-खड़े करना,

होवा-सचेत, चौकटा होना।-खड़े रखना-होश-

वार रहना।-खाना-खंजी बकनासे कट पहुँचाना,

देरतक बकते रहना।-खुलना-सजग होना।

-खोकना-सावधान कर देना।-गरम करना-कान

मलना, उमेठना।-बघाना-विरोध न करना।-बैना-

सुनना ध्यान देना।-घरना-ध्यानमें सुनना; कान

उमेठना।-न दिया जाना-शोरके मारे सुनाई न देना;

शोर और ध्वनिकी कर्मक्षतामें असह्य कट होना।-न

हिकाना-बै न करना; विरोध, आपत्ति न करना।

-पकड़कर उठना-बंदना-बन्धोकी दी जानेवाली एक

मज।-पकड़कर निकाल देना-अनादरपूर्वक निकास

बाहर करना।-पकड़ना-अपनी भूल स्वीकार कर

मनश्चिन्में बैनी बात न करनेकी प्रतिज्ञा करना, तोषा

करना; आगेके लिए सचेत हो जाना।-घड़ी आवाज

सुनाई न देना-शोर-गुलके कारण कानमें पूरी हुई

बातका सुनाई न देना।-वर जै न रँगना-तनिक भी

परबाह न होना; बिल्कुल ध्यान न देना।-कूँटना-

दीक्षा देना; कान भरना, बहकाना।-बँद वा बहरे कर

लेना-जान-रुकर किसीकी बात न सुनना, सुनकर भी

उसपर ध्यान न देना।-बकना-कानमें सौब-सौबकी

आवाज होना।-बहना-कानसे अस्थिर और कुछ

गाढे स्पर्शका बहना।-भर जाना-सुनते-सुनते कब

बाता।-भरना-किसीके विषयमें किसीकी धारणा

विशाल देना, बहमान कर देना।-मकना-कान उमे-

ठना।-में खौबी डाकना-गुलाब बनाना।(कोई

बात)-में डाक देना-सुना देना।-में लेक डाकना-

कान बहरे कर लेना।-में पाहा वा लीखा भरना-

हरम पारा वा विचलना हुआ लीखा काममें भरकर बहना

कर देना (पुताने सजावटी एक मजा)।-कगना-कानसे

सबक धीरे-धीरे कुछ कहना; चुपके-चुपके कान भरना।

-होवा-दुम्परीकी कान भरनेवाली बातोंकी कुबजा,

उपपर ध्यान देना; चेताना।-(नीं) काव खबर न

होवा-तनिक भी खबर, पता न होना।-पर हाथ
भरना-अनविद्यता प्रकट करना, अनजान बनना, साफ
बनकार करना।

कानक-वि० [सं०] सुवर्णका। पु० जमाखोटा, जप-
पाक दीप।

कानका-वि० काना।

कानक-पु० [सं०] वप, जंगल; बाग; घर।

कानका-वि० [सं०] शमी वृक्ष।

काना-वि० जिसकी एक आँख फूट गयी हो। एकाक्ष;

कीवा खावा हुआ, दागी (फल आदि); टेढ़ा, तिरछा।

पु० चौमरके पायेकी बिग्री (तीव्र कामे)।

कानाकानी-खी० काना फूटी; एकते दूसरे कानतक पहुँ-
चना, कर्णपरंपरा।

कानाकानी-खी० काना फूटी।

कानाकूसी-खी० कानमें लगकर धीरे-धीरे बात करना;
रम तरह की जानेवाली बात।

कानाकानी-खी० कानमें कही जानेवाली बात (क्योंकि
हैमानेके लिए उनके कानमें 'कानाकानी-कानाकानी-कू'
कहते हैं। 'कू' छत्र खींचकर और जोरसे कहा जाता
है जिससे बड़ा प्रायः क्लिष्टिकाकर होल पकता है)।

कानि०-खी० लोकलज्जा; मर्यादा, लिहाज।

कानि, कानी०-खी० कट, दुःख-सूरास प्रभु तुम्हरे
वरस भिन्न कैसे बढत कठिन कानी'-धूर।

कानिडि०-पु० [सं०] छिपुनी।

कानी-वि०, खी० एक आँखवाली (खी); फूटी हुई (आँख);
सबसे छोटी।-डँडकी-खी० छिपुनी।-कौबी-खी०
फूटी कौबी।

कानीन-पु० [सं०] भिन प्यारी खीर बेठा, कौरेपनमें
पैदा पुत्र; ब्यास; कर्ण। वि० अविवाहिता खीसे उपपन्न।

कानीहाउम-पु० [अ० 'काउन-हाउस' दे० 'कानीहाउस']
कानीहाउ-खी० दे० 'कानीहाउम' (पशु बंदीगृह)।

कानून-पु० [अ०] राजनियम, वह नियम जिसे मानना
राज्यविशेषके प्रत्येक प्रजाजनका कर्ज हो, आईन, विधान,
विधि, नियम।-हो-पु० ग्राह्य मजकमेका एक कर्मचारी
जिसका काम पट्टारियोंके कागजातकी जाँच करना है।

-हूँ-वि० कानून जाननेवाला।

कानून-अ० कानूनके मुताबिक, नियमतः।

कानूनिवा-वि०-कानूनका श्रातः कुशल करनेवाला।

कानूनी-वि० कानूनमें संबद्ध; कानूनका; कानूनके अनु-
कूल; कानून बचानेवाला, कुजगी।

कानूनरस-खी० [अं०] सम्मेलन; किसी विषयपर विचार
करनेके लिए बुलायी गयी सभा।

कान्धकुञ्ज-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद; कान्धकुञ्ज
देवका निवासी।

कान्धजा-खी० [सं०] एक बंध; ध्व।

कान्धेबिह-पु० [अं०] मुक्तिदा सिपाही।

कान्ध-पु० कुण्ड, कन्दैया।

कान्धवा; कान्धरा-पु० एक राव।-मट-पु० एक संतर
राव।

कान्धवी-खी० एक रागिनी।

कवि-शब्द-कोश—वि० [सं०] कवट करनेवाला, दुष्ट । पु० काट-
/कोर; विवाधा ।

कापज—पु० [सं०] दुहता, छलछल ।

कापज—पु० [सं०] कुमारी, बुरा रास्ता; खस ।

कापज—पु० [सं०] कवश; [अं०] तौरा । —**कूट**—पु० तौबेकी
चादरका टुकड़ा या पट्टी जिसपर प्लाक बनाया जाय ।

कापाल—वि० [सं०] कपाल-संबंधी । पु० कापालिका; एक
प्रकारका कोठ; एक प्राचीन अस्त्र; बाणविद्यया; एक तरहकी
संधि जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरेका समान स्वत्व स्वीकार
करते हैं ।

कापालिक—पु० [सं०] एक नाममार्गी शैव संप्रदायका अनु-
यायी जो मनुष्यकी खोपड़ी लिये रहता और उसीमें खाता-
पीता है । वि० कपाल-संबंधी ।

कापाली—श्री० [सं०] कपालोंकी माला; चालाक औरत ।

कापली (किन्)—पु० [सं०] शिव । वि० कपालोंकी माला
पहननेवाला ।

कापिक—वि० [सं०] बंदरकीसी झकलवाला वा बैठा ब्यव-
हार करनेवाला ।

कापिक—वि० [सं०] कपिल-संबंधी; कपिलका कहा हुआ;
भूरा । पु० सांख्यमतकी माननेवाला; भूरा रंग ।

कापिक—पु० [सं०] एक प्रकारका भय ।

कापिकपय—पु० [सं०] भय; एक देवता ।

कापिकी—श्री० [सं०] एक स्नान जहाँ शराब अच्छी
बनती थी ।

कापिकेश—पु० [सं०] पिशाच ।

कापी—श्री० [अं०] नकल, प्रतिलिपि; सारे कागजकी बही;
छापाखानेमें छपनेके लिए दिया जानेवाला लेखादि ।

—**काट**—पु० प्रथकार वा प्रकाशककी ;चना-विशेषपर
प्राप्त स्वत्व, उसके छापने, बेचने आदिका अधिकार ।

कापुल—पु० [सं०] कायर, नीच, कुत्सित पुरुष ।

कापय—वि० [सं०] बंदर-संबंधी । पु० बंदरोंकी पुष्पकी आदि ।

कापोस—वि० [सं०] दूसर वर्णका, कपोत वर्णका । पु०
कपोतोंका झुंड; सुरमा; सज्जी; धूसर रंग ।

काप्य—पु० [सं०] कवि कविका गीत; पाप ।—**कर**—वि०
अपने पापोंकी दूस्तीसे कहने या उनपर पश्चात्ताप करने-
वाला ।—**कार**—पु० अपने किये हुए कर्मोंकी कहने या उनपर
पश्चात्ताप करनेवाला व्यक्ति; अपना पाप स्वीकार करना ।

काक—पु० [अं०] अरबी-फारसी वर्णमालाका एक अक्षर ।

काक—पु० [अं०] अरबी-फारसी वर्णमालाका एक अक्षर;
एक कल्पित पौराणिक पर्वत; कृष्णसागर और कास्पियन
सागरके बीच अवस्थित पर्वतमाला—'काकेशस' ।—**से**
क्राप्रकत-संपूर्ण भूखंडमें ।

काकल—पु० [सं०] कायफल ।

काकिया—पु० [अं०] तुक, अंशानुप्रास ।—**बंदी**—श्री०
काफिया मिलाना । **सु०**—संज्ञा करना—हेरान, परेसान
करना ।—**मिलाना**—तुक मिलाना ।

काकिर—पु० [अं०] ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला; मुत्त-
लिम धर्मको न माननेवाला; अमीकीकी एक इच्छा जाति;
अफगानिस्तानकी सरहदपर बसनेवाली एक जाति । वि०
मुनकिर, नास्तिक; दुष्ट, उत्पत्ती; निर्दय; ध्वारा, माधुक

(तुक—न मानना, इनकार करना) ।

काकिरिस्तान—पु० [अं०] अफगानिस्तानका यह प्रदेश
जहाँ काकिर जाति बसती है ।

काकिरी—श्री० काकिर जातिकी भाषा ।

काकिला—पु० [अं०] बागियों, एकसे दूसरे देशको गाल ठे
जानेवालोंका समूह ।—**सात्कार**—पु० काकिलेका नेता,
सरदार ।

काजी—श्री० [अं०] कहवा । वि० [अं०] किकायत करने—
पूरा पकनेवाला; पूरा, पर्याप्त; बहुत । पु० एक रात ।—**से**
इबादा—भावयकतासे अधिक ।

काकूर—पु० [फा०] कपूर । **सु०**—होना—उड़ जाना;
अवश्य हो जाना ।

काकूरी—वि० काकुरा बना हुआ; कपूरके रंगका । पु०
कपूरी रंग; कपूरी पान ।

काक—पु० [तु०] बाल, बड़ा तट ।

काक—वि० चित्तकहरा । पु० एक तरहकी जमीन ।

काका—पु० [अं०] चौकीर इमारत; अकानो एक चौकीर
इमारत जिसकी नीचे इबादीमकी रखी हुई मानी जाती है ।

काकिज—वि० [अं०] कच्चा करने, रखनेवाला, भोका;
कच्चा करनेवाला ।

काकिल—वि० [अं०] योग्य, लायक; विद्वान् ।—**(ले)**
सारीक—वि० भराहने योग्य ।—**दीन्**—वि० देखने योग्य;
वर्जनीय ।—**समाप्त**—वि० (मुकदमा) जिनके सुननेका
अधिकार हो ।

काकिलीयत—श्री० योग्यता; विद्वान् ।

काकिल—पु० एक रंग जो कच्चे बरगन रँगनेके काम आया
है; इस रंगमें पड़नेवाली लाल मिट्टी ।

काबुक—श्री० [फा०] कबूतरोंका दरवा; कपड़ेका गढ़ा जिस-
पर गेटियाँ रखकर तनूरमें लगाते हैं ।

काबुल—पु० अफगानिस्तानकी राजधानी और एक प्रांत ।
श्री० एक नदी जो अटक नदीमें मिलती है । **सु०**—**में क्या**
गये नहीं होने ।—**अच्छोंके** बीच दूरे, पंडितोंके कुलमें
मूर्ख भी हो सकते हैं ।

काबुली—वि० काबुल्का, काबुलमें उत्पन्न । पु० काबुल्का
रहनेवाला, अफगान; बहुत ऊँचे और दरतक उड़नेवाला
एक तरहका कपूर; एक तरहका मटर ।—**मटर**—पु० एक
तरहका बड़े डालेका मटर ।

काबू—पु० [तु०] वन, अधिकार, जीर, नियंत्रण ।

काबुली—पु० [सं०] बुरा पत्थि या मांसिक ।

काम—पु० [सं०] इच्छा, चाह, कामना; इच्छि या विषय-
मुखकी इच्छा; अनुवर्गमेंमे एक; संभोगकी इच्छा; कामदेव-
प्रयुक्त; बलराम; परमेश्वर; कामनाका विषय; प्रेम; सुक;
एक तरहका आम ।—**काम**—श्री० कामकी पत्नी रति;
कामका उद्योग; मैथुन; एक तंत्रके विद्या; रतिमुखबद्ध
करनेवाली कला ।—**काम**—**कामी**—वि० कामना-
का अनुसरण करनेवाला ।—**कूट**—पु० वषट्का वार, वषट्का-
गात्री; वषट्का छलछल ।—**कूट कृष्ण**—पु० विषयमोह-
संबंधी कायोंके लिए किया गया जप (स्मृति) ।—**केकि**—
कीका—श्री० रतिमोहा ।—**श**—वि० जहाँ जो चाहें वहाँ
जा सकतेवाला; कष्ट ।—**वसि**—वि० जहाँ चाहें वहाँ जातेमें

समर्थः। -अर-खी० पुंल्लि०। -सिरि-पु० विभक्त०। -अर-
-अर-वि० अयेच्छावादी, जो समयमें आवे वह करने
वाला। -अररी(रिक्)-वि० अयेच्छावादी; लंपट। पु०
मल्ल। -अर-वि० वासनाजनित। -अरि-आम-पु०
कोयल। -सिक्-वि० कामकी जीत देनेवाला। पु०
शिव; स्वर्ग; जिनदेव। -अर-पु० आनुवंशिक अनुसार
एक प्रकारका स्वर जो अर्द्ध मल्लचर्यके पालनसे उत्पन्न
होता है। -अर-पु० कल्पवृक्ष; बाँदा। -ताल-पु०
कोयल। -सिचि-खी० कामकी पूजाकी तिथि, ज्योतिषी।
-ए-वि० अमीह-आयक, कामना पूरी करनेवाला। पु०
शिव; स्वर्ग। -अरि-पु० विनाशण। -वर्षान-वि०
देखनेमें सुंदर लगनेवाला। -वृह-पु० कामकी भला
करनेवाले शिव। -ए-खी० कामपेनु। एक देवी; वैत्र-
शुद्धा एकादशी। -हान-पु० ऐसा नृत्य-गान आदि कि
लोग अपना काम-काज छोड़कर उसमें रमे रहें। -हुध-
वि० अमीह-आयक। -हुध-खी० कामपेनु। -हुध-
वि० दे० 'कामपु'। -वृत्तिका-खी० नागर्तरी। -वृत्ती-
खी० नागर्तरी; कोयल। -वैच-पु० कामका देवता, रति-
पति, कंदर्प; विष्णु; शिव। -वृह-खी० कामपेनु। -वेनु
-खी० चर्मकी गाय जो सब कामनाओंकी पूर्ति करनेवाली
माना जाती है; बमिछकी गाय नदिनी जिमके लिए विशा-
मित्रके माथ उसका युद्ध हुआ। -वृह-पु० मछली।
-वाल-पु० विष्णु; शिव; वल्गम। -कल-पु० एक
गरवका आम। -बाज-पु० कामदेवके पाँव बाज-मोहन,
ऊमादेवन, सतपन, शोषण और निमोहीकरण अथवा ये पाँच
पुष्प-लाल कमल, नील कमल, त्र्यंशुक, आम और चमेला।
-भूरुह-पु० कल्पवृक्ष। -मह(म्)-पु० कामदेवका
उपमा जो वैत्र-पुण्याकी मनाया जाता है। -मुद्रा-खी०
तपकी एक मुद्रा। -मूढ-मोहित-वि० कामवश,
कामानुर। -रिपु-पु० शिव। -रुचि-खी० रामकी
विशामित्रने प्राप्त एक अक्ष। -रूप-पु० आमापका एक
जिला जहाँ कामालया देवीका मंदिर है। वि० मनचाहा
रूप धारण कर सकनेवाला; सुंदर। -रूपी(रिक्)-वि०
इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला। -रक्षा-लेखा-खी०
वेद्या। -लता-खी० पुरुषेद्रिया; लिंग। -लोह-पु० एक
परोक्ष लोक (बी०)। -वृह-पु० वसंत; चंद्रमा; आम।
-वृहमा-खी० चंद्रनी। -वृह-वि० कामी, लंपट।
-वृह-पु० वृहविशेष। -सर-पु० दे० 'कामवाण';
आम। -साक्ष-पु० कामकला सिखनेवाला शास्त्र, रति-
शास्त्र, कोकशास्त्र। -सखा-पु० वसंत। -सुत-पु०
प्रसुक्तके पुत्र अनिरुद्ध। -सुत-पु० वात्स्यायनकृत काम-
शास्त्रका प्रसिद्ध ग्रंथ। -हा(हृ)-पु० शिव; विष्णु।
काम-पु० जो कुछ किया जाय, काम, क्लेश, कार; अर्थ,
प्रयोजन, मतलब, धर; अंधा; रोग; रोग; नीकती; उपयोग;
दुस्साध्य कार्य; देल-बूटे, नकाली आदि; कारीगरी।
-काज-पु० काम-अर्थ, कारबार। -काजी-वि० काम-
काजने लगा रहनेवाला, बन्धी। -कलाह-वि० जिससे
फिलहाल काम निकल जाय, आवश्यकताकी पूर्ति हो
जाय। -कोर-वि० कामसे जो बुरानेवाला, आलसी।
-दानी-खी० बंद दूती या देशकी कथा जिसपर बंदी-

की वृत्ति बनी हो; मल्ले-सितारे आदिका काम। -कोर-
-वि० बंदीकी या कलावस्तुके कामवाला (दीपी, जूता)।
-काम-पु० कामकाज। सु० -आना-इस्तेमाल होना;
काममें जाना; बुद्धिमें मारा जाना; साथ देना, सहायक
होना। -करमा-असर करना; कारगर होना; कृतकार्य
होना; अर्थ सिद्ध करना। -का-जिससे काम निकले,
उपयोगी। -कलना-काम होना; कामका जारी रहना।
-कलना-प्रयोजन, आवश्यकताकी पूर्ति करना; क्यौ-
लों काम निकाल लेना; काम चलता, जारी रहना।
-समाप्त करवा-काम पूरा करना; मार हाटना।
-समाप्त होना-काम पूरा होना; मारा जाना; मरना।
-निकलना प्रयोजन सिद्ध होना। -बनना-प्रयोजन
निकलना। -रखना-बास्ता, सरोकार रखना; कठिन
होना। -लगना-रकरार होना। -से काम रखना-
अपने काम, प्रयोजन, अर्थका ही ध्यान रखना, जोर
बालोंमें न पकना। -होना-मतलब पूरा होना।
काम-पु० [का०] इच्छा, कामना; इरादा, मतलब; ताहु;
सुँह। -मार-वि० सफलमनोरथ; सौभाग्यशाली। पु०
प्रसिद्ध, मजदूर (आ०)। -बाज-वि० सफलमनोरथ,
कृतकार्य; परीक्षामें उत्तीर्ण। -बाजी-खी० सफलता,
कृतकार्यता। -हान-वि० सफलमनोरथ; सौभाग्यशाली;
प्रसन्न। -हानी-खी० सफलता; सौभाग्य, प्रसन्नता।
कामठ-वि० [सं०] कसुए; सबंध रखनेवाला।
कामबिया-पु० रामदेव-पत्नी साधु।
कामता-पु० विभक्तके पासका एक स्थान।
कामदारी-पु० जायदादका प्रबंध करनेवाला अधिकारी-
'कामदारी में काम नहीं दे, मैं तो जाब कलें दरबार'-मीरा।
कामन-वि० [सं०] लपट, कायुक; [अ०] आम, साधारण।
-बैरव-पु० स्वच्छा-सबक हुए राहोंका मछल।
-समा-खी० [हिं०] ब्रिटिश पार्ल-मेंटकी साधारण सभा।
कामना-खी० [सं०] इच्छा, चाह।
कामरेश, कामरी-खी० कमली।
कामरू-पु० दे० 'कामरूप'।
कामरेह-पु० [अ०] साही, साथ काम करनेवाला (साध्व-
बादियोंका एक-दूसरेको सहायन)।
कामरु-पु० [अ०] व्यापार, वाणिज्य।
कामरु-वि० [सं०] कामी। पु० वसंत; पित्तवर्धक; पीलिया
रोग; मधुमति।
कामरु-खी०-खी० कमली।
कामरु-पु० एक प्रकारका रोग, पीलिया।
कामरुका-खी० [सं०] शराब।
कामरु-खी० कमली; [सं०] पीलिया रोग।
कामरु(रिक्)-वि० [सं०] जिससे पीलिया रोग हुआ हो।
कामरुकी-खी० [सं०] दाहदहरी। वि०, खी० काम-
वासनावाली।
कामरु-पु० [सं०] नाचन; मेहन।
कामरु-पु० [सं०] काम।
कामरु-वि० [सं०] जो कामसे अथा हो गया हो,
कामानुर।
कामा-खी० एक वृत्त; आसक्ति। पु० [अ०] लघु विराम।

कारक, कार्यक-पु० [सं०] एक तरहका ईस या वस्तु ।
कारकमी(मिच)-पु० [सं०] कीमियाघर ।
कारमा-मी० [सं०] प्रियंयु नामक वृक्ष ।
कार-पु० [का०] काम, कार्य; (समासके अंतमें) करने-वाला । -**करवा-वि०** अनुभवप्राप्त, जो काम कर चुका हो । -**काम-पु०** काम करनेवाला, कारिदा । -**झावा-पु०** वह जगह जहाँ कोई निजीकी चीज बनानी जाय; कार्यालय; कारबार; मामला; घटना । -**झानेदार-पु०** कारखानेका मालिक । -**शह-वि०** उत्तर करनेवाला, प्रभावकर । -**शाह-खी०** कारखाना; करवा; दुनिया । -**गुजार-वि०** कार्यकुशल, काममें चतुर । -**गुजारी-खी०** मुस्लीमी और होशियारीसे काम करना । -**खोब-पु०** लकड़ीका चौबूटा ढाँचा जिसपर कपडा तानकर कसीदे या गुल्कारीके काम करते हैं। जखोजीका काम करनेवाला; गुल्कारीका काम । -**खोबी-खी०** गुल्कारी, कसीदेका काम । **वि०** कसीदेका (काम) । **झार-पु०** युद्ध, रण । -**झावा-पु०** प्रशसनीय काम; कार्यावली; कर्तव्य । -**परदाज़-वि०** काम करनेवाला, प्रबंधक । -**परदाज़ी-खी०** कारगुजारी । -**बंद-वि०** अमल करनेवाला; आधा पालन करनेवाला (होना) । -**बार-पु०** काम-काम; रोजगार, व्यापार । -**बारी-वि०** काम-काशी; रोजगारी । -**दबाई-खी०** किसी कामकी करना, जती रखना; काम; इरकात; उपाय, तदवीर; चाख । -**साज़-वि०** काम बनाने, न्यंबारनेवाला । -**साज़ी-खी०** काम बनानेकी योग्यता; चालबाजी । -**स्तानी-खी०** साजिदा, चालबाजी । -**(रं)** खैर-पु० नेक काम, पुण्य कार्य, भलाईका काम । -**(रो)** धार-पु० दे० 'कारबार' ।
कार-वि० काला । पु० [सं०] (समासके अंतमें) करने-वाला, कर्ता (प्रयत्नकार, चित्रकार इ०); किया, काम (चमत्कार इ०); वर्णके अंतमें उसके उच्चारणके अर्थमें ('टकार', 'नकार' इ०); स्वानुकारी शब्दके अंतमें उमकी ध्वनिके अर्थमें; प्रयत्न; प्रयत्नानुष्ठान; पति; स्वामी; सम्बन्ध; शक्ति; कर; बर्षका डेर; हिमालय; बर; ओलेसे उत्पन्न जल । **खी०** [अ०] यात्री; मोटर गाड़ी ।
कारक-पु० [सं०] संज्ञा या सर्वनामका वह रूप जिससे वाक्यमें दूसरे शब्दोंके साथ उसका संबंध प्रकट होता है । **वि०** करनेवाला (लाभकारक, हानिकारक इ०-प्रायः समासात्तमें) । -**दीपक-पु०** एक अर्थालंकार जिसमें बहुत-सी क्रियाओंके साथ कारक अर्थात् कर्ताका एक ही बार कथन हो । -**विभक्ति-खी०** छठीकी छोककर और सब विभक्तियाँ । -**हेतु-पु०** वह हेतु जो कार्यका उत्पादक हो ।
कारक-वि० [सं०] उगली संवधी । * पु० दे० 'कार्य' ।
कारदा-पु० करट, कोसा ।
कारदून-पु० [अ०] किसी सामयिक घटना या *वक्तकी शब्दजनक रूपमें सामने आनेवाला चित्र, अंगवचित्र ।
कारदुमिष्ट-पु० [अ०] कारदून बनानेवाला, अंगवचित्रकार ।
कारण-पु० [सं०] किसी शक्ति होनेका हेतु, वह जिससे कार्यको उत्पत्ति हो, निमित्त, सबब; साधन; अभावस्तुका

आधार (ना०); नानैविक; शरीर; चिह्न; प्रमाण; बर; कार्य; देव; अणु । -**माका-खी०** एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारणसे उत्पन्न होनेवाला कार्य स्वयं अपनीतर कारण बनते हुए अन्य कार्य उत्पन्न करता चलता है । -**बाबी(विच)-पु०** रावा, करिबाद करनेवाला । -**बारी-पु०** वह जल जो सृष्टिके आरंभमें उत्पन्न हुआ था । -**बारीर-पु०** अधिरूप शरीर, आदर्शनय कोश (न०) ।
कारणा-खी० [सं०] पीका; वेदना; यम-चातना; बढ़ावा ।
कारणिक-पु० [सं०] विचारक; परीक्षक; सुधारक, अजी-नवीस ।
कारतूस-पु० पीतल, दफती आदिकी बनी खोली जिसमें बंदूक, तमंचे आदिके एक कैमरके लिए गोली, शरद भरी रहती है ।
कारव-पु० दे० 'कारण'; कथन स्वर-'नागमती कारम के रोह'-पु० ।
कारविच-खी० [अ०] दीवारकी कँगनी ।
कारनी-* **वि०** किसी विेरणा करनेवाला; नेद करावे-वाला । † पु० प्रेतवाधा आदि । प्रस्त व्यक्ति ।
कारपोरक-पु० [अ०] कौनका एक छोटा अफसर ।
कारबकळ-पु० [अ०] पीठका (जहरीला) कोड़ा ।
कारबन-पु० [अ०] भौतिक सृष्टिके मूलभूत तत्त्वोंमेंसे एक जो हारे, कोयले, कार्बोनिक एसिड (गैस) आदिमें पाया जाता है । -**पैवर-पु०** गहरे रंगका कागज जिसे नीचे रखकर कभी पेंटिले लिखने या टाइप करनेपर उसके नीचे रले हुए कागजपर नेक उतर आती है, मसिपत्र ।
कारम-वि० [सं०] कंठसे प्राप्त वा संबंध रखनेवाला ।
कारमिष्टिका-खी० [सं०] कपूर ।
कारयिता(तु)-वि० [सं०] करनेवाला ।
कारव-पु० [सं०] कोजा ।
कारवा-पु० [का०] देशोत्तर जानेवाले यात्रियों, व्यापारियोंका झुग ।
कारबेलक, कारबेलक-पु० [सं०] करेला ।
कारस्कर-पु० [सं०] एक इक्षु, किराक ।
कारा-खी० [सं०] कैद; कैदखाना; पीका; दूती; सुनारिन; स्वर । * **वि०** काला । * पु० सप । -**गुल-पु०** कैरी । -**गुह-पु०** कैदखाना । -**पच-पु०** रामायणमें बर्णित एक जनपद । -**पाछ-पु०** जेलका रहक, 'जेकर' । -**बास-पु०** कैद । -**बासी(सिच)-पु०** कैदी, बंदी ।
कारागार-पु० [सं०] कैदखाना ।
कारामद-वि० [का०] काम आनेके लायक, उपयोगी ।
काराविका-खी० [सं०] सारसी ।
कारिवा-पु० काम करनेवाला, कर्मचारी, गुमास्ता ।
कारि-खी० [सं०] कार्य । पु० कलाकार; वनविद् ।
कारिक-पु० [अ०] कुली करनेवाला ।
कारिका-खी० [सं०] इलोकरव व्याख्या; नदी, नर्तकी; उत्पीड़न; धरा; एक संकीर्ण राग; व्यापार ।
कारिक-* **खी०** दे० 'कारिख' ।
कारित-वि० [सं०] कटावा हुआ ।
कारिता-खी० [सं०] वह स्रु जो कणीने देना स्वीकार किया हो । -**कुदि-खी०** कण छिने हुए बनकी कितली

देकर उससे लिया जानेवाला सूत्र ।

काही-वि० काही; [का०] असर करनेवाला; गहरा ।

-**काही**-पु० घातक चोट ।

कारी (शिक्)-वि० [य०] (समाससंघे) करनेवाला ('कल्याणकारी' इ०) । पु० कारीगर; कलाकार ।

कारीगर-पु० [का०] रत्नकार, शिल्पी ।

कारीगरी-श्री० [का०] शिल्प, रत्नकारी; शिल्प-कौशल ।

कारीश-पु० [सं०] सुखे गोबर, करसीका ढेर ।

कार्कश इ०, **कार्कशी**-श्री० [सं०] जोक ।

काश्-पु० [सं०] शिल्पी, कारीगर; विश्वकर्मा; शिल्प ।

वि० करने, बनानेवाला; मयकर । -**काश्**-पु० शिल्पकार्य, जाळी, लकड़ी आदिका कार्य । -**काश्**-पु० संध मारने-

वाला; बाहु । -**काश्**-पु० शिल्प, काम; कारीगरीका काम

(शिल्प, सुति आदि); देहके तिल आदि; हाथीका बच्चा;

गेरु; बस्तीका; फेन । -**शासिता (शु)**-पु० कारीगरीकी

देख-भाल करने या उन्हें कार्यमें नियुक्त करनेवाला ।

काश्क-पु० [सं०] कलाकार, शिल्पी ।

कारुणि इ०-वि० [सं०] दयाशील, करुणा करनेवाला ।

काश्क-पु० [सं०] दया, करुणा ।

काश्क-पु० दे० 'कारापथ' ।

कार्क-पु० [अ०] मूलाका चचेरा भार जो बहुत धनवान्,

पर बड़ा कज्जल था । -**काश्क** इ०-वि० रोहिताव दौलत ।

कार्कनी-श्री० घोड़ोंकी एक जाति ।

काश्क-पु० [अ०] विकिसक्तकी रोगीका पेशाव दिखानेकी

शोथी; पेशाव; बाइदकी कुत्ती । **मु०**-**मिखना**-गहरी

दोस्ती होना, बहुत मेह होना ।

कार्क-श्री० दे० 'काले' छ ।

कारो-वि० काला ।

कारोवर-पु० [अ०] वह अफसर जो दुर्घटना, आपात, अवार

आदिमें मरा हुआ माने जानेवाले व्यक्तिकी लाशकी जाँच

करता है ।

कार्क-पु० [अ०] एक पेड़की छाल, उम्र छालसे बनी शीशी-

बोतलोंमें लगायी जानेवाली छाल, काम ।

कार्क-पु० [सं०] कठोरता; दृढ़ता; दोसपन; निर्दयता ।

कार्क-पु० [अ०] मोटे कागजका डकका; ताशका पत्ता;

पोस्टकार्ड । -**कार्क**-पु० दस्त ।

कार्क-वि० [सं०] कर्ण-संघर्ष । पु० कानका मैल; कर्णफूल ।

-**कार्क**-पु० एक तरहका कुआँ ।

कार्तपुत्र-वि० [सं०] कृतयुग-संबंधी ।

कार्तवीर्य-पु० [सं०] कृतवीर्यका बेटा, सहजार्जुन ।

कार्त्यार-पु० [सं०] सीना; घट्टा ।

कार्तिक-पु० [सं०] आधिनके बादका महीना; बार्हस्पत्य

वर्ष; स्कंद ।

कार्तिकी-श्री० [सं०] कार्तिककी पूजिमा ।

कार्तिकेय-पु० [सं०] स्कंद । -**प्रस्**-श्री० कार्तिकेयकी

माता, पार्वती ।

कार्द-वि० [सं०] कीचटसे सना, मरा हुआ; कर्दम प्रजा-

पनिसे संबध रखनेवाला ।

कार्पट-पु० [सं०] कार्याधी, उम्मेदवार; नीधका; लाल ।

कार्पटिक-पु० [सं०] यानी; यात्रियोंका समूह; गंगा आदि

नदियोंका जल लाकर जीविका करनेवाला; अनुभवी व्यक्ति; प्रयोगजीवी व्यक्ति ।

कार्पण्य-पु० [सं०] कृपणता, कंजूसी; निर्धनता; दया ।

कार्पास-वि० [सं०] कपासका बना । पु० कपासका बना

(रंगी) बस्त्रादि । -**नासिका**-श्री० लज्जा ।

कार्पासोन्निक-वि० [सं०] कपासकी छतका बना हुआ ।

कार्पासिक-वि० [सं०] दे० 'कार्पास' ।

कार्पासिका, **कार्पासी**-श्री० [सं०] कपासका पौधा ।

कार्म-वि० [सं०] कर्मशील, परिश्रमी ।

कार्मज-वि० [सं०] काममें होशियार, कर्मकुशल । पु०

जंघ, औषधि आदिसे मारण, मोहन आदि करना ।

कार्मना-श्री० दे० 'कार्मज' ।

कार्मार-पु० [सं०] शिल्पी, कारीगर ।

कार्मारक-पु० [सं०] लीहाराका काम ।

कार्मिक-पु० [सं०] वह वस्तु जिसमें चक्र, स्वस्तिक आदि

चिह्न डुनकर बनाये गये हों ।

कार्मु इ०-पु० [सं०] धनुस्, चाप; धनुराधि; बाँस । वि०

कर्मशील ।

कार्य-पु० [सं०] जो कुछ किया जाय या करना है, कर्तव्य;

काम; धंधा, व्यवसाय; धार्मिक कृत्य; अभाव; कारणका

विकार, परिणाम; लेन-देनका विवाद; मुकदमा; प्रयोजन;

हेतु; फलित व्योमिषमें लग्नसे दसवीं स्थान; नाटकका

अंतिम फल । -**कर**-वि० काम करनेवाला; प्रभावकर ।

-**करण**-पु० कार्यालय, दफ्तर, आफिस । -**कर्त** (शु)-

पु० काम करनेवाला, कर्मचारी । -**कारण-भाव**-पु०

कार्य और कारणका संबंध । -**काक**-पु० कार्य करनेका

अवसर, समय; किसी पदपर रहनेका काल । -**कुशल**-

वि० काममें होशियार, दक्ष । -**कर्म**-पु० होने या किये

जानेवाले कार्योंका क्रम या उमकी सूची । -**चित्त**-वि०

साधन, सोच-समझकर काम करनेवाला । पु० शासक;

स्थानीय प्रबंधक । -**दर्शन**-पु० कामकी निगरानी ।

-**दर्शी** (शिक्)-वि० निगरानी करनेवाला, निरीक्षक ।

-**पंचक**-पु० ईश्वरके पाँच काम-अनुग्रह, निरोध, भाव,

आदान, स्थिति और उद्भव । -**पुट**-पु० अङ्ग-बन्धमें समय

बितानेवाला, सनकी आदमी । -**भार**-पु० किसी कार्य या

पदका दायित्व । -**धस्तु**-श्री० उद्देश्य । -**वार्हा** (शिक्)-

-वि०, पु० कार्यका भार उठानेवाला । -**विषय**-पु०

समा, संस्था आदिमें हुए कार्योंका विवरण या हाल ।

-**वेष**-पु० किसी कामका बाकी भाग । -**सिद्धि**-श्री०

कार्यकी सफलता, कामयाबी । -**स्थान**-पु० कार्यालय,

दफ्तर ।

कार्यत (तस्)-अ० [सं०] कार्यकर्ममें; फलतः ।

कार्यवाही-श्री० किसी समा आदिमें हुआ काम, काररबाही ।

कार्यकार्य-पु० [सं०] कर्तव्य-अकर्तव्य । -**विचार**-पु०

कर्तव्य-अकर्तव्यका विचार ।

कार्यक्षम-वि० [सं०] कार्य करनेमें असमर्थ ।

कार्यविष-पु० [सं०] कार्यनिरीक्षक; प्रभका निर्णायक

ग्रह (ज्यो०) ।

कार्याध्यक्ष-पु० [सं०] नगरपालिकाका वह प्रधानाधिकारी

जो प्रशासन-संबंधी कार्योंकी देख-रेख करता है ।

कार्यान्वित-वि० [सं०] कार्यसे संबद्ध; कार्यरूप प्राप्त ।
कार्यार्थी(विन्)-वि० [सं०] स्वकार्यसिद्धिका यत्न करने-वाला; उम्मेदवार; मुकदमेकी पैरवी करनेवाला ।
कार्यालय-पु० [सं०] काम करनेका स्थान, दफ्तर; कार-स्थान ।
कार्यो(विन्)-वि० [सं०] कार्यार्थी ।
कार्यक्षेत्र-पु० [सं०] कामकी नियरानी ।
कार्य-पु० [सं०] दुबलापन, सालका पैर, बहहर; कचूर ।
कार्य, कार्यक-पु० [सं०] कृषक, खेतिहर ।
कार्यापण, कार्यिक-पु० [सं०] भारतमें पुराने समयमें चलनेवाला एक सिक्का ।
कार्य-वि० [सं०] कृष्ण, कृष्ण दैपायन वा कृष्ण युगसे संबंध रखनेवाला; काला । पु० काले युगका चर्म ।
कार्यि-पु० [सं०] प्रयुक्त, कामदेव; शुक्रदेव ।
कार्य-पु० [सं०] कालापन ।
कालकल-पु० [सं०] एक वृक्ष ।
कालंजर-पु० [सं०] एक पहाड़ तथा उसके पासका प्रदेश; सन्यासियोंकी सभा; शिव ।
काल-पु० [सं०] समय, अवसर; अवधि; समयका कोई विभाग (घड़ी, घटा आदि); मौसम; अतः मृत्यु; महाकाल; यम; काला या गहरी नीला रंग; शिव; शनि; प्रारम्भ; आँखका काला भाग; कोयल; लोहा; एक गणद्रव्य । वि० काला, गहरे नीले रंगका, हानिकार । -कंठ-पु० शिव; नीलकंठ; मीर. सौर्या; खजन । -कंडक-पु० पानीका सोंप, टेढ़ा । -कटंकट-पु० शिव । -करंज-पु० एक तरहका काज । -कर्णिका, -कर्णी-स्त्री दुर्भाग्य । -कर्म(मंत्र)-पु० मृत्यु । -कल्प-वि० घातक, जानलेवा । -कवि-पु० अग्नि । -काल-पु० परमज्ञ । -काल-पु० कोलाहल । -कुंज-पु० विष्णु । -कुंठ-पु० यम । -कूट-पु० एक भवानक विष, हलाहल विष । -कृष्-वि० कालका पैदा किया हुआ । -कृष्-पु० सूर्य; मीर; मय । -कोठरी-स्त्री [हि०] सर्वकर अपराधियोंकी एकाकी रखनेके लिए जेलमें बनी हुई एक कोठरी जो बहुत तग और अँधरी होती है । -क्रम-पु० समयकी गति । -क्षेप-पु० समय विताना, दिन काटना । -खंज, -खंजन-पु० यकृत । -खंड-पु० यकृत; परमेश्वर । -गंगा-स्त्री यमुना नदी । -गंडेस-पु० [हि०] एक तरहका विषैला सोंप । -ग्रंथि-स्त्री-० वर्ष, माल । -चक्र-पु० समयका चक्र; भाग्यपरिवर्तन; सूर्य । -चिह्न-पु० मृत्यु निशान होनेके लक्षण । -ज्ञ-वि० (कार्यविशेषके) अवसरको पहचाननेवाला । पु० ज्योतिषी; मुग्धा । -ज्येष्ठ-वि० उन्नत; बड़ा; प्रामवयस्क, सयाना । -त्रय-पु० तीनों काल-मृत्यु, मविष्य और वर्तमान । -द्व-पु० मृत्यु; यमराजका दंड । -धर्म-पु० अवसर, ऋतुविशेषके उप-युक्त आचरण; मृत्यु । -जाभ-पु० शिव; कालदेव । -निर्वास-पु० गुरुगुल । -निशा-स्त्री दीपावलीकी रात; घोर अंधेरी रात । -नेमि-पु० रावणका मामा; एक दानव जो विष्णुके हाथों मारा गया । -पक्ष-वि० अपने समयपर, स्वाभाविक रूपमें पका हुआ । -पाक्ष-पु० यमका फंदा; पॉसी । -पाशिक-पु० जलाद । -पुरुष-

पु० कालरूप ईश्वर; ज्योतिष शास्त्र; काला आदमी; बाध-चक्र; काल । -पृष्ठ-पु० एक तरहका हिरन; कक पक्षी । -प्रभात-पु० शरद ऋतु । -प्रमेह-पु० एक तरहका प्रमेह रोग । -बंजर-पु० [हि०] बहुत पुरानी परती । -अँरब-पु० शिव; काशीमें शिवके एक मुख्य गण । -मान-पु० कालकी मात्रा, माप । -मुख-पु० काले मुँहवाला बंदर, लंगूर । -मेघी-स्त्री-० मजिछा । -यव-पु० एक यवनराज जिमने मसुरापर चढ़ाई की थी और कृष्णके कोयलने मुचकुंदका कीपभाजन होकर मस हुआ । -बापन-पु० वक्त गुजारना, दिन काटना । -पुरुष-पु० एक संवत्सर । -योग-पु० नियति, भाग्य । -योगी(मिन्)-पु० शिव । -रात, -राशि-स्त्री-० दे० 'कालरात्रि' । -रात्रि, -रात्री-स्त्री-० अंधेरी, डरावनी रात; प्रलयकी रात; मौनकी रात; दिवालीकी रात; हर आदमीके ७७वें वर्षके ७वें मासकी ७वीं रात; दुर्गाका एक नाम; यमराजकी बहिन । -लौह, -लौह-पु० हस्पात । -बाष्पक-वि० जिसमें समयका बोध हो । -विपाक-पु० किसी कामके पूरा होनेके लिए नियत काल । -वृद्धि-स्त्री-० बंधे समयपर दिया जानेवाला म्याज (माहवार, तिमाही, छमाही आदि) । -वेला-स्त्री-० शनिका काल, वह आधी घड़ीका समय जब कोई धर्मकृत्य करनेका निषेध है (भिन्न-भिन्न वारोंमें यह समय भिन्न भिन्न होता है) । -शाक-पु० पटुआ; करेम् । -सर्प-पु० काला सोंप जो अति विषधर होता है । -सार-पु० काला हिरन; पीत चंदन । -सूत्र-पु० २८ प्रधान नरकोसे एक; मृत्यु । -सूर्य-पु० प्रलयकालका सूर्य । -मेघ-पु० हरिश्चंद्रको मेल लेनेवाला डोम । -रक्ष-पु० तमाल वृक्ष । -हर-पु० शिव ।
काली-पु० अकाल, दुर्मिह ।
कालक-वि० [सं०] काला । पु० तिलकका काला दाग; पानीका सोंप, आँखका काला भाग; एक अन्न; यकृत; एक केतु; अन्यत्र राशि (ग०) ।
कालवृत्त-पु० मेहराव बानेके लिए रखा गया कच्चा भराव ।
कालम-पु० [अं०] अस्ववार आदिके पृष्ठका खड़ी रेखा या रिक स्थानने किया गया खंड ।
कालर-पु० [अं०] कपड़ेकी इकहरी या दुहरी पट्टी जो कोटकमीज आदिमें लगाकर या अलगाव गलेमें पहनी जाती है; कुत्तेके गलेमें बाँधनेका चमड़े या धातुका पट्टा; * कलर, रेह-ते नर कपी न नीपनै ज्यौं कालरका खेत'-साक्षी ।
कालशेष-पु० [सं०] छाछ, मट्ठा ।
कालसिर-पु० जहाजके मस्तूका सिरा ।
कालांग-वि० [सं०] काले शरीरवाला सख आदि ।
कालांजन-पु० [सं०] एक तरहका सुरमा ।
कालांजनी-स्त्री [सं०] एक छोटी सादी जो दबाके काम आती है ।
कालांज-पु० [सं०] कोहिल ।
कालांतर-पु० [सं०] दूसरा समय, अन्य काल । -विष-पु० वह जंतु जिसके काटनेका जहर कुछ अरसेके बाद

चढ़ता है (पूजा, पायल कुरा आदि) ।

कालांतरित पञ्च-पु० [सं०] वह माछ जो बहुत समय पहलेका बना हो ।

काला-वि० कौयलेके रंगका, स्याह, कृष्णवर्ण; कछाहित; भारी, बहुत बड़ा । [ली० 'काली'] पु० काला सौंघ; काले रंगका आदमी । -**कालान्-पु०** लोकमतके विरुद्ध बनाया गया कानून (प्रिडिड शासनकालका आर्दिनेस) । -**कंद-पु०** एक तरहका धान । -**कण्डू-वि०** बहुत काला । -**चौर-पु०** भारी चौर; कौई निकट, हीन जन । -**जीरा-पु०** स्याह रंगका जीरा । -**तिल-पु०** काले रंगका तिल । (यु० - **कचाना-दबैल** होना) । -**दावा-पु०** एक लता जिसके बीज दबाके काम आते हैं । -**देव-पु०** इंद्रसभाकी कथामें वर्णित एक देव (दानव); काला और बरबनी सूरतका आदमी । -**बटुरा-पु०** एक प्रकारका धतूरा । -**नमक-पु०** सौंघर नमक । -**नाग-पु०** काला सौंघ; अति दुष्ट, क्रुदिल जन (ला०) । -**पहाड़-पु०** दुःखद, रोक्षिल वस्तु । -**पाज-पु०** ताशमें डुकुमका रंग । -**पानी-पु०** अश्वमानका घाघू जहाँ पहले आजीवन कैदका दंड पालेवाले अपराधी भेजे जाते थे; आजीवन कैदकी सजा । -**बाल-पु०** पशु । -**शुद्ध-वि०** अति काला । -**भोहरा-पु०** सींगियाकी जातिका एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है । -**(ली) बंड़ी-ली०** एक कौंठियार झाड़ी । -**बोधी-ली०** वह बोधी जिसके आनेमें अपेरा छा जाय, भयानक बोधी । -**खोसी-ली०** बच्चोंको होनेवाली एक तरहकी खोसी जो बहुत कष्टकर होती है । -**छटा-ली०** काले रंगके घने बादलोंका समूह । -**जवान-ली०** वह जीम जिसकी अमगल बातें प्रायः सत्य हो जायें । -**जीरी-ली०** एक पौधेके बीज जो दबाके काम आते हैं । -**मिट्टी-ली०** बिकनी करेली मिट्टी । -**मिर्च-ली०** गोल स्याह रंगकी मिर्च । -**शीतला-ली०** काले दानोंवाली चेचक जो खरनाक होती है । -**दड़-ली०** छोटी दड़ । यु० -**(छे)का मंतर-सौंपका मंत्र** । -**कोस-कोसी-बहुत दूर** । -**सिरका-जवान** । -**के आगे चिराग नहीं जलता-जवरदस्तके आगे कुछ जोर नहीं चलता (कहते हैं, काले सौंपके फुक-कारने चिराग बुझ जाता है) ।**

कालागुरु-पु० [सं०] एक तरहका काला जगह ।

कालागि-ली० [सं०] दे० 'कालानल' ।

कालाजिन-पु० [सं०] काले मृगकी खाल ।

कालातिरुमण-पु० [सं०] समय भीत जाना, देर होना ।

कालातिपात-पु० [सं०] समयका नाश; जलब ।

कालातिरेक-पु० [सं०] दे० 'कालातिपात' ।

कालातीत-वि० [सं०] जिसका समय भीत गया हो ।

कालात्मा-(अन्)-पु० [सं०] परमात्मा ।

कालाज्य-पु० [सं०] सूर्य; परमेश्वर ।

कालानल-पु० [सं०] प्रलयकालकी अग्नि; रुद्र, पंचमुखी रुद्राक्ष ।

कालाप-पु० [सं०] सिरके बाल; सौंपका फग; दानव ।

कालाचनी-ली० [सं०] दुर्गा ।

कालावधि-ली० [सं०] नियत काल, मुरत ।

कालागुवि-ली० [सं०] शुभ कार्योंके लिए निषिद्ध समय ।

कालाशी-पु० [सं०] जन्म या मरणसे लगनेवाला अजीब ।

कालास-पु० [सं०] वह राग जिसके प्रचारसे प्राणोंत निश्चित हो ।

कालिंग-वि० [सं०] कालिंग देशका । पु० कालिंग देशका निवासी; बहौका राजा; कालिंग देशका सर्प; हाथी; एक तरहकी ककरी; तरबून; एक विषैला पौधा; एक तरहका लोहा ।

कालिगिका-ली० [सं०] त्रिवृत्, त्रिवारा नामक पौधा जो दबाके काम आता है ।

कालिगी-ली० [सं०] एक तरहकी ककरी ।

कालिजर-पु० [सं०] शंदाके पूरवमें पड़नेवाला एक पहाड़ जो तीर्थस्थान माना जाता है; हस्त नामका नगर ।

कालिद-वि० [सं०] कालिद पर्वत था कालिंदी नदीसे संबद्ध । पु० तरबून ।

कालिदक-पु० [सं०] तरबून ।

कालिंदी-ली० [सं०] (कालिद पर्वतमें निकली हुई) यमुना नदी; सगरकी माता; कृष्णकी एक पत्नी; एक रागिनी । -**कर्बज-मेद्व-पु०** बलराम (कहा जाता है कि वे अपने हस्तसे यमुनाको बुझानमें लौच लाये) । -**सू-ली०** सूर्यपत्नी, सहा । -**सोद्व-पु०** दम ।

कालि-अ० कल, बीता हुआ या आनेवाला दिन । -**काला-अ०** कभी, किसी समय ।

कालिक-वि० [सं०] समय-सम्बन्धी; सामयिक, मौसमी । पु० कौच पक्षी; गल्ला; काला चंदन; शत्रुता ।

कालिका-ली० [सं०] देवीकी एक मूर्ति, चंडिका; कालिमा; काला रंग; स्याही; मेघमाला; कई किस्तीमें दिया जानेवाला मूल्य या दंड; चार बरसकी लकड़ी जो कुमारी पूजनमें दुर्गास्वप्राप्ति जाती है; काले रंगकी स्त्री; माया कीजा; इयामा पक्षी; एक शराब; बिच्छु; श्विआ नामका पेड़; एक तरहकी सुगंधित मिट्टी । -**पुराण-पु०** कालिका देवीके माहात्म्यका वर्णन करनेवाला उपपुराण । -**बुद्धि-ली०** महीने-महीने लिखा जानेवाला सूद ।

कालिदेव-पु० [सं०] दक्षकन्या कालिकाम उत्पन्न एक असुर जाति ।

कालिख-ली० कलौछा; स्याही; कल्क (लगना) ।

कालिज-पु० [अ० 'कालेज'] वह विद्यालय जहाँ ऊँचे, हाई स्कूलसे ऊपरके दर्जोंकी पढ़ाई हो और जो किसी विश्व-विद्यालयमें संबद्ध हो ।

कालिवास-पु० [सं०] रघुवंश, कुमारसंभव आदि काम्योंके रचयिता जो महाराज विक्रमादित्यके सभा-पंडित, संस्कृतके सर्वश्रेष्ठ कवि और विश्वके सर्वश्रेष्ठ कवियोंमेंसे एक थे (समय विवादग्रस्त) ।

कालिब-पु० [अ०] सौंचा; देह ।

कालिमा(अन्)-ली० [सं०] कालापन, स्याही; कालिख; कल्क ।

कालिब-पु० [सं०] यमुनामें रहनेवाला एक नाग जिसका दमन कृष्णने किया और बुंदवान छोड़कर चले आनेकी विवश किया । -**खिद-दमन-अर्द्ध-पु०** कृष्ण ।

—दृष्ट-पु० वह दृष्ट जिसमें काव्य नाम रहता था ।
काशी-शी० [सं०] शिवा, पार्वती, दुर्गा, कालिका; महा-
 विषा; दश महारविषाओंमें से पहली; अग्निशी ७ बिहानों-
 मेंमें एक; काले रंगकी शी; रात्रि; अँधेरी रात; हिमालयसे
 निकली एक नदी; सत्यवती; निवा; कालाजनी; यमकी
 रक्षिनी; मौमकी शी । * पु० काव्य नाम । —तमस्य-
 पु० भेसा ।
काशीक-पु० [सं०] कौच पक्षी ।
काशीची-शी० [सं०] यमका विचार-भवन ।
काशीन-वि० [सं०] (समासात्तमें) कालका; काल-संर्षणी ।
काशीन-पु० [सं०] बहा गलीचा; गलीचा ।
काशीय-पु० [सं०] काला चंदन; दे० 'काव्य' ।
काशीयक-पु० [सं०] एक तरहका चंदन; एक तरहकी
 इल्ली; केसर ।
कासुध्य-पु० [सं०] मलिनता; अपवित्रता; अस्वच्छता;
 मतभेद ।
काशेय-वि० [सं०] कलियुग-संर्षणी । पु० यकृत; काला
 चंदन; केदार ।
काशेयक-पु० [सं०] एक तरहका काला चंदन; एक सुगं-
 धिन लकड़ी; पीलिया जैसा एक रोग; कुत्ता ।
काशेय-पु० [सं०] कुत्ता; एक तरहका चंदन ।
कालेश-पु० [सं०] मूत्र; शिव ।
कालीच-वि० [सं०] दे० 'काली' ।
कालीछ-शी० कालिमा; कालिख ।
काश्य-वि० [सं०] कश्यप-संर्षणी । पु० कचूर ।
काश्यपिक-वि० [सं०] कश्यपनामें सित, कल्पित, फनी ।
काश्य-वि० [सं०] सामयिक; शुभ; अनुकूल । पु० तड्का,
 प्रातःकाल ।
काश्या-शी० [सं०] गर्मोष्णके योग्य शी या गाय ।
काश्व, काश्वि-अ० दे० 'कल' ।
काबा-पु० [फा०] घोड़ेकी कृत् या दावरेमें चक्कर देना;
 चक्कर । —बाज़-वि० चक्कर लगानेवाला; छापामार ।
—बाज़ी-शी० काबा काटना; दुश्मनपर जब जहाँ मौका
 मिले, छापा मारते रहना । **मु०**—काटना-चक्कर मारना,
 लगाना; किसी विशेष स्थिति में बचनेके लिये चक्कर लगाना ।
काबार-पु० [सं०] सेवार ।
कावारी-शी० [सं०] बिना डबेकी छतरी ।
कावुक-पु० [सं०] सुगाँ; चक्काक ।
कावेर-पु० [सं०] केसर ।
कावेरी-शी० [सं०] दक्षिण भारतकी एक प्रधान नदी;
 वेदया; इल्ली ।
काश्य-पु० [सं०] वह रचना जो रसात्मक हो; कविता;
 शुकाचार्य । —चौर-पु० दूसरेके काव्यकी अपना काव्यकर
 प्रसिद्ध करनेवाला । —लिङ्ग-पु० एक अर्थालंकार ।
—हास्य-पु० प्रहसन (ना०) ।
काव्या-शी० [सं०] समझ, बुद्धि; पूनना ।
काव्यार्थोपसि-शी० [सं०] एक अर्थालंकार ।
काश-पु० [सं०] कौम; कौमका फूल; कौसी; एक मुनि;
 कांति । अ० [फा०] इच्छा आदिका स्वयं करनेके लिये
 इसका प्रयोग होता है, ईश्वर करता !

काशि-पु० [सं०] मुद्धी; सर्व; ज्योति । शी० दे० 'काशी' ।
—राज-पु० काशीका राजा, रिमोदास-धर्मतरि ।
काशिका-शी० [सं०] काशीपुरी; पाणिनीय व्याकरणपर
 लिखी एक वृत्ति ।
काशी-शी० [सं०] उत्तर भारतकी एक प्रसिद्ध नगरी जो
 सप्त सौधदा पुरियोंमें से एक है, वाराणसी । —करवट-पु०
 [हि०] काशीके अंतर्गत एक तीर्थयात्रा जहाँ पुराने समयमें
 लोग सष्टशिकी आशाने आरके नीचे कटकर जान देते थे ।
—खंड-पु० काशीका माहात्म्य बतानेवाला एक प्रसिद्ध
 ग्रंथ । —बाध-पु० शिव । —फल-पु० कुम्हड़ा । **मु०**—
करवट लैमा-काशीकरवटमें आरके नीचे कटकर जान
 देना ।
काश्त-शी० [फा०] खेती; जोत; किमीकी जोतकी जमीन ।
—कार-पु० खेतिहर, खेती करनेवाला । —कारी-शी०
 खेती, किसानी, कृषिकर्म; वह जमीन जिसपर किसीकी
 खेती करनेका अधिकार हो ।
काश्मरी-शी० [सं०] गंमारी नामक वृक्ष ।
काश्मीर-वि० [सं०] कश्मीरका; कश्मीरमें उत्पन्न; कश्मीर-
 में बसनेवाला । पु० कश्मीर देश; केदार; पुष्करमूल ।
—ज-पु० केसर ।
काश्मीरक, काश्मीरि-वि० [सं०] कश्मीरमें उत्पन्न ।
काश्मीरा-पु० एक जमी कपड़ा ।
काश्मीरी-वि० कश्मीरका । पु० कश्मीर-निवासी; रबरका
 पेड़ ।
काश्मीर्य-पु० [सं०] केसर ।
काश्य-पु० [सं०] मय । —य-पु० मांस; दे० क्रममें ।
काश्यप-वि० [सं०] कश्यप-संर्षणी; कश्यप गोजका । पु०
 कश्यप गोजमें उत्पन्न एक ऋषि; कणाद मुनि; दे० 'काश्य'-
 में । —नंदन-पु० गरुड; अरुण; असुर; सोना ।
काश्यपि-पु० [सं०] गरुड; अरुण ।
काश्यपी-शी० [सं०] बरती ।
काश्यपेय-पु० [सं०] सूर्य; आदित्यगण; गरुड ।
काष-पु० [सं०] वह वस्तु जिसपर कोई चीज चिन्ती, रगड़ी
 जाय; कमीठी; मान; एक ऋषि ।
काषाय-वि० [सं०] हज, बड़ेड़े आदिसे रंगा हुआ; गेरुआ ।
 पु० गेरुआ वस्त्र ।
काष्ठ-पु० [सं०] काठ, लकड़ी; ईंधन; छड़ी; लंबाई नापने-
 का एक औजार । —कटली-पु० कठकेला । —कीट-पु०
 पुन । —कूट-कूट-पु० कठकोइया । —तंतु-पु०
 लकड़ीके भीतर मिलनेवाला एक सूत जैसा कीड़ा । —तड्का-
 तड्का-पु० बड़ेई । —हु-पु० पलाश । —पुस्तिका-
 शी० कठपुतली । —प्रज्ञा-पु० चित्ता सजाना ।
—आरिक-पु० लकड़ी डोनेवाला; लकड़हारा । —झठी-
 शी० चित्ता । —झाड़-पु० अरली । —रंजनी-शी०
 दारुहल्ली । —लेखक-पु० पुन । —बाट-पु० लकड़ीकी
 दीवार । —संज्ञा-पु० लकड़ियोंका पेड़ा (को०) ।
काष्ठक-पु० [सं०] अगक ।
काष्ठ-शी० [सं०] दिशा; भीमा; चरम, अंतिम भीमा;
 कलाका दे० बौं अग; पुष्पनीका मैदान या मार्ग; जल;
 स्थिति; कश्यपकी एक पत्नी जो दक्षकी कन्या थी ।

काङ्गार-पु० [सं०] लकड़ीका बना घर ।
 काङ्गिठ-पु० [सं०] लकड़ीहारा ।
 काङ्गिका-खी० [सं०] लकड़ीका छोटा टुकड़ा, चैली ।
 काङ्गीला-खी० [सं०] केला ।
 काङ्गीपथि-खी० [सं०] जड़ी-बूटी जो दवाके काममें प्रयुक्त हो ।
 कास-पु० [सं०] खाँसी; छोक; सहिजनका पेय; एक वास ।
 -कंद्-पु० कनेरु । -कुंठ-वि० ब्रिते खाँसी हुई हो ।
 पु० यम । -घ्न-वि० खाँसी दूर करनेवाला । -मर्द्-पु० कनौदा ।
 कासवी-खी० [फा०] एक पौधा; उसने बीज जो दवाके काम आते हैं; कामनीके फूलकासा हल्का नीला रंग ।
 कासर-पु० [सं०] सेसा ।
 कासा-पु० [फा०] प्याला; कटोरा; खाना (भा०); फल्लेरो-का मिखापात्र, कचकोल । -मर्द् गन्नाई-पु० मील मंगनेका प्याग, खपर । - (सा)सर-पु० खोपड़ी ।
 -लेस-वि० प्याला चाटनेवाला, लोभी; खुशामदी ।
 कासार-पु० [सं०] मालाव; ताल; झील ।
 कासारि-पु० [सं०] दे० 'काममर्द्' ।
 कामालु-पु० [मं०] एक तरहका आलू ।
 कामिहा-खी० [सं०] खामी ।
 कामिद्-पु० [अ०] पत्रवाहक; दूत, सँदेसा ले जानेवाला । वि० कटर, हरादा करनेवाला ।
 कासिर-वि० [अ०] कुम्हार, कमी, कोताही करनेवाला ।
 कासी(सिन्)-वि० [सं०] कास रोगवाला, खाँसीसे पीड़ित ।
 कासीस-पु० [सं०] पीरा-कसीस ।
 काल्-खी० [सं०] अस्पष्ट बाणी; बुद्धि; रोग; काति; भाला; भक्ति ।
 कास्ति-खी० [सं०] गली; गुप्तमार्ग; पगडंडी ।
 कासिठ-पु० [अ०] त्वचा आदिको जला देनेवाला एक तेजाव ।
 काहू-मर्व० क्या, क्या बात । पु० [फा०] सुखी घास ।
 -रुवा-पु० दे० 'कहलवा' ।
 काहल-पु० [मं०] बिली; सुगां; कौवा; शब्द; अस्पष्ट बाणी; एक बाज । वि० मूला, मुरझाया हुआ; हानिकारक; भ्रष्ट, पकिल-“...तो है मध करिहै काहल”-दीनदयाल ।
 काहला-खी० [सं०] फीजी ढोल ।
 काहलि-पु० [मं०] शिव ।
 काहली-खी० [मं०] युवती ।
 काहि-सर्व० किने; किससे ।
 काहिल-वि० [अ०] सुस्त, आलसी, कामचोर ।
 काहिली-खी० सुस्ती, आलस्य, ढिलाई ।
 काही-अ० की; पास; द्वारा ।
 काही-वि० स्वाही लिये हुए हरे रंगका, पासके रंगका । पु० गहरा हरा रंग, घासका रंग ।
 काहु-सर्व० किसी ।
 काहु-सर्व० किसी । पु० [फा०] एक पौधा जो दवाके काम आता है ।
 काहू-अ० क्यों, किसलिए ।

किंकर-पु० [सं०] सेबक, टहल; राक्षसोंका एक जाति ।
 किंकराभ्यविमूढ-वि० [सं०] जिसकी समझमें न आये कि अब क्या करना चाहिये, मोचका ।
 किंकिणी-खी० [सं०] करधनी; एक तरहका खट्टा अंगूर ।
 किंकिनी-खी० करधनी ।
 किंकिर-पु० [सं०] घोड़ा; कीयल; एक बड़ा भ्रमर; काम-देव; लाल रंग; गजकुंभ ।
 किंकिरा-खी० [मं०] रक्त ।
 किंकिरात-पु० [सं०] लोता; कीयल; कामदेव; अशोक; कटमरैया ।
 किंगरी, किंगिरी-खी० छोटा चिकारा ।
 किंजन-पु० [मं०] पलाश; असाकश्य ।
 किंजि-वि० [मं०] कुछ, थोड़ा ।
 किंजिलिङ्ग, किंजिलुङ्ग-पु० [सं०] केंचुआ ।
 किंज, किंजल, किंजलङ्ग-पु० [मं०] कमलका केसर, पद्म-केसर; नागकेसर । वि० पद्मकेसरके रंगका, पीला ।
 किंजरगार्टन-पु० [अ०] बच्चोंको बस्तुपाठ, बिलौनों आदि-के द्वारा शिक्षा देनेकी प्रणाली (किंजरगार्टन-बच्चोंका बाग) ।
 किन्-अ० [सं०] लेकिन, परंतु; बल्कि ।
 किन्धन-पु० [मं०] एक करण ।
 किंपाक-पु० [मं०] एक दूध, कारस्कर ।
 किंपुरुष-दे० 'किंपुरुष' ।
 किंपुरुष-पु० [सं०] किंभर; जब्दोपका एक खड; नीच व्यक्ति ।
 किंमति-खी० दे० 'कीमत' ।
 किंमर्त्ती-खी० [सं०] अनरब, अफवाह ।
 किंवा-अ० [मं०] या, या तो, अथवा ।
 किंशारु-पु० [मं०] बालका ढूँड़; बाण; शंक पक्षी ।
 किंशुक-पु० [मं०] पलाश ।
 किंशुलङ्ग, किंशुलुङ्ग-पु० [मं०] दे० 'किंशुक' ।
 कि-अ० एक योजक शब्द; अथवा; * क्यों, क्योंकि; क्या ।
 किंकि-पु० [मं०] नारियलका पेय; नीलकण्ठ पक्षी ।
 किंकिबाना-अ० किं० रोना, चिल्लाना ।
 किंकिचि-खी० अमश, विवाद; अशान्ति ।
 किंकिचिबाना-अ० किं० दाँतपर दाँत रगड़कर दबाना, दाँत पीमना ।
 किंकिचिचाइट-खी० किंकिचिबानेका भाव ।
 किंकिचि-खी० किंकिचिचाइट ।
 किंकिबाना-अ० किं० (श्रीलंके) कीचड़ भरना ।
 किंकिचि-खी० भीड़भाड़; फिसलन; गिचपिच । वि० अस्पष्ट; क्रमरहित ।
 किंकिचिचि-खी०, वि० दे० 'किंकिचि' ।
 किंकिट-पु० झगडा, किंकिचि ।
 किंकिटाना-अ० किं० गुस्सेमें दाँत पीसना; खाते समय दाँतके नीचे कंकड़ी पड़ना । स० किं० (दाँत) पीमना ।
 किटकिना-पु० ठेकेदारमें लिया हुआ, ठेकेदारकी ओरने दूसरोंको दिया जानेवाला ठेका; किरायेदार; थोड़े पैसोंसे काम चलानेका ढंग; चालाकी; मोनारोंका ठप्पा । - (ने)-दार-पु० ठेकेदारसे ठेका लेनेवाला । -बाज़-वि०

किरायत, चतुराई ने काम करनेवाला ।
 किरीन्दा-पुं सोनारोंका ठप्पा ।
 किरि-पुं [सं०] सूर ।
 किरिका-खी० [सं०] चमड़े या बॉसले बना हुआ कपड़ा ।
 किरिय-पुं [सं०] जूँ, खटमल ।
 किह, किहक-पुं [सं०] तलछटी तरह पैठा हुआ, अना
 हुआ मेल, कौटः धातुक मेल ।
 किहकना-अ० कि० चुपकेसे चल देना ।
 किज-पुं [सं०] बट्ठा; खुरदरा मल्ला; लकड़ीका एक कीड़ा ।
 कित-अ० किर, किस ओर; कहाँ; तरफ । वि० कितना ।
 कितक-वि० कितना; कहाँ, कितनी दूर-“कहै कितक
 सब धाम”-चाचा हित० ।
 कितना-वि० किस मात्रा या गिनतीका; किस दरजेका;
 बहुत अधिक; बहुत बड़ा । अ० किस मात्रामें; कहाँतक;
 बहुत ज्यादा ।
 कितने-वि० बहुतेरे, बहुतसे ।
 कितव-पुं [सं०] जुआरी; भूत; ठग; दुष्ट; सनकी; चतुरा;
 गोरोचन ।
 किना-पुं [अ०] टुकड़ा, खंड; एक उर्दू पद्य; दे० ‘कना’ ।
 किनाब-खी० [अ०] लिखी हुई चीज; पोथी; बही; इल-
 हामी फिताब । -झाना-पुं पुस्तकालय । -क्रारीब-
 पुं पुस्तक-विक्रेता ।
 किनाबत-खी० [अ०] लिखाई; नकल करनेका काम ।
 किनाबी-वि० किनाबसे संबंध; पुस्तकीय । -हकम-पुं
 पुस्तकने प्राप्त, पुस्तकीय विद्या । -कीका-पुं किनाबमें
 लगनेवाला कीड़ा; वह आदमी जो बाराबर पुस्तक पढ़ता
 रहता है । -चेहरा-पुं लगेतरा चेहरा ।
 कितिक, कितैक-वि० कितना; बहुत ।
 कितैक-खी० किनाब ।
 कितै-अ० कहाँ, किस जगह ।
 कितौ-वि०, अ० कितना ।
 किति-खी० दे० ‘कीति’ ।
 किदारा-पुं दे० ‘केदारा’ ।
 किथर-अ० किस ओर, कहाँ । सु० -से चाँद निकला ?
 -किथर मूल पड़े ? (कित्ती भिक्के अरनके बाद अचानक
 आ जानेपर कहते हैं ।)
 किथी-अ० या, अथवा; या तो ।
 किन-सर्व० ‘कित’का बहु० । अ० क्यों न । * पुं चिह्न;
 पट्टा; गोशक ।
 किनका-पुं कण; टूटा हुआ दाना ।
 किनर-मिनरी-खी० नाक में सिकोबने, होला-हवाला
 करनेका भाव या ध्वनि-“अन्न देनेमें वे किनर-मिनर कर
 रहे थे”-वृग० ।
 किनबारी-खी० हथी, कुहार ।
 किनहा-वि० त्रिममें लोहे पथ गये हों (फल) ।
 किनाट-पुं [अ०] पेठकी नींगरी छाल ।
 किनार-पुं [फा०] किनासा । -काह-वि० त्रिममें किनारा
 हो । -पेच-पुं दरीके तानेके दोनों ओर लगी हुई
 ओठियाँ ।
 किनारा-पुं [फा०] तट, तीर; हाथिया; गोद; ओर;

बगल, पहलू । -कहरी-खी० किनारा खींचना, किनारे
 रखना । सु० -करना, खींचना-अलग होना, दूर होना ।
 -कहा होना-अलग, एक ओर हो जाना ।
 किनारी-खी० पतका गोदा जो दुपट्टों आदिके किनारे
 लगा होना या लगाया जाता है । -काक-पुं किनारीपर
 गोदा लगायेवाला ।
 किनारे-अ० किनारेपर; अलग । सु० -कगना-पार
 पहुँचना; काम समाप्त होना । -होना-दूर हटना;
 छुट्टी पाना ।
 किनिका, किनुका-पुं ‘किनका’ ।
 किन्नर-पुं [सं०] देवताओंकी एक योनि जिनका मुँह
 घोड़ेके जैसा होना माना जाता है, किपुत्र; गाने-बजाने-
 वाली एक जाति ।
 किन्नरी-खी० [सं०] किन्नर स्त्री; एक तरहका तंबूरा,
 किनारी ।
 किनायत-खी० [अ०] काफी, पूरा होना; कमखर्ची;
 बचत; थोड़ा मूल्य । -सिंहाह-वि० किनायतसे काम
 करनेवाला; थोड़े खर्चमें काम चलानेवाला । -का-कम
 दामका, सस्ता ।
 किनायती-वि० किनायत करनेवाला ।
 किनखा-पुं [अ०] काबा, वह स्थान जिसकी ओर मुँह
 करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं; पश्चिम दिशा; पूर्व
 पुरुष; बाप-दादा आदिका स्मोधन । -ए-आकम-पुं
 बादशाह । -शाह-पुं बाप, पिता । -नुमा-पुं एक
 यंत्र जिसकी सूई सरा पच्छिमकी ओर रहती है । -क-
 वि० जो किनखाकी ओर मुँह किये हो ।
 किमखाब-पुं दे० ‘कमखाब’ ।
 किमरिह, किमरिख-पुं एक चिकना सफेद कपड़ा ।
 किमाळ-खी० केवॉब ।
 किमाम-पुं दे० ‘कवाम’ ।
 किमार-पुं [अ०] शर्त लगाकर खेला जानेवाला खेल,
 जुआ । -झाना-पुं जुएका अड्डा । -बाज़-वि०
 जुआरी । -बाज़ी-खी० जुएका खेल ।
 किमाव-पुं [अ०] डग, तर्ज ।
 किमि-अ० कैसे ।
 किम्-सर्व० [सं०] कौन, क्या । अ० क्यों, कैसे; कहाँसे;
 समासादिमें यह ‘कु’का श्रवण होता है (किसखा-
 कुमित्र) ।
 किमसत-अ० खी० कौशल; बहादुरी; दे० ‘कीमत’ ।
 किमव-वि० [सं०] कितना ।
 किबारी-खी० दे० ‘क्यारी’ ।
 किबाह-पुं [सं०] काल रंगका घोड़ा ।
 किर्दय-पुं तुच्छ किस्तान ।
 किर-पुं [सं०] शूकर ।
 किरक-पुं [सं०] लेखक; खरका बच्चा ।
 किरका-पुं कंकड़, नन्हों टुकड़ा ।
 किरिन्दी-खी० दे० ‘किरिन्ती’ ।
 किरकिरा-वि० कँकरील । पुं कोहरीका एक जीवार ।
 सु० - (अज) होना-आनंदमें विप्र पड़ना ।
 किरकिरावा-अ० कि० होत या आँखमें किरकिरी पड़नेसे

गमना, कष्ट होना ।

किरकिराहट-**झी०** किरकिरी पड़नेका अनुभव वा कष्ट; कष्टकीलपन ।

किरकिरी-**झी०** रेत वा किसी कड़ी चीरका छोटा कण; छोटे संकरी; अपमान, हेठ ।

किरकिर-**पु०** गिरगिट । **झी०** वह शरीरस्व बाहु जिससे छीक आती है ।

किरकिरा-**पु०** दे० 'किलकिला' ।

किरच-**झी०** दे० 'किरिच'; नुकीला रवा ।

किरचा-**पु०** दे० 'किरच' ।

किरची-**झी०** रेशम या सूतकी लच्छी; एक तरहका मुका-बम रेशम ।

किरण-**झी०** [सं०] ज्योतिसे प्रवाहरूपमें निकलनेवाली रेखा, अंशु, रश्मि; द्युलक्षण । -केतु, -पति, -पाणि, -माली (किन्)-**पु०** सूर्य ।

किरपा-**झी०** [सं०] काशी-खंडोदक एक नदी ।

किरतम-**पु०** मायिक प्रपंच-‘पूरन ब्रह्म कहति प्रकटे किरतम किन उपराज’-बीजक ।

किरच-**झी०** दे० 'किरण'; कलावत्तुकी बनी हुई एक तरहकी झालर । झु०-कूटना-सूचोदय होना ।

किरपा-**अ०** कि० विमुक्त होना-‘अब तो देखिये त्रिव आषि प्रीतमके पनते क्यों किरिहौ’-वन०; कष्ट महाना-‘मन भाषि जित अहंकार एक तुम बरहु कृपा कितहूँ न किरौ’-वन० ।

किरपा-**झी०** दे० 'कृपा' ।

किरपान-**पु०** दे० 'कृपान' ।

किरम-**पु०** दे० 'किर्म' ।

किरमई-**झी०** एक तरहकी लास ।

किरमाक-**पु०** तलवार ।

किरमाका-**पु०** अमलतास ।

किरमिच-**पु०** एक तरहका चिकना मोटा कपड़ा जिसके परदे, जूने आदि बनते हैं ।

किरमिज-**पु०** एक तरहका ठाऊ रंग; किरिमदानेका चूर्ण; किरमिजी रंगका पौधा ।

किरमिजी-**वि०** किरमिज या किरिमदानेके रंगका ।

किरपास-**पु०** चिरायता ।

किरपाना-**अ०** कि० दाँत पीसना; किरकिरीकी आवाज करना ।

किरपान, किरवार-**पु०** कृपाण, तलवार ।

किरवार-**पु०** अमलतास ।

किरपुन-**पु०** दे० 'कृष्ण' ।

किरींकी-**झी०** असहाय होनेवाली गरीबी; भूमा आदि होनेवाली वैलगाही ।

किरास-**पु०** [सं०] एक जंगली जाति; सार्ईस; गौना, शिब; एक प्राचीन देश; चिरायता ।

किरास-**झी०** [अ०] एक वजन जो जबाहरात तोलनेके काम आता है (लगभग ४ औंस बराबर) ।

किरासुनीय-**पु०** [सं०] भारविभूत एक महाकाव्य ।

किरासि-**झी०** [सं०] दुर्गा; गंगा ।

किरासिनी-**झी०** [सं०] किरासकी स्त्री; जटामाती ।

किरासी-**झी०** [सं०] किरास जातिकी स्त्री; किराती-बेरा-भारिणी पार्वती; स्वर्गगा; कुटनी; चमरभारिणी ।

किराव-**अ०** पास, निकट ।

किरावा-**पु०** पंसादीकी दुकानसे मिलनेवाली चीजें, मिर्च-मसाला आदि ।

किरावी-**पु०** अंभेजी दफ्तरका डर्क; बुरेशिवन ।

किरावा-**पु०** दूसरेकी चीज काममें लानेका बदला, भाड़ा ।

-(बे)बार-**पु०** कोई चीज, खासकर मकान, किरायेपर लेनेवाला । झु०-उत्तारना-भाड़ा बसल करना । -करना-किरायेपर लेना ।

किराव-**पु०** एक नीच जाति ।

किराबल-**पु०** सेनाका वह भाग जो रुझाईका मैदान साफ करनेके लिए आगे जाता है; बंदूकसे शिकार करनेवाला ।

किरासन-**पु०** मिट्टीका तेल, 'केरोसिन' ।

किरि-**पु०** [सं०] शूकर; बादल ।

किरिझ-**झी०** [सं०] दावात, मसिपाव ।

किरिच-**झी०** नुकीला डुकड़ा या रवा; नोककी ओरसे भोंकी जानेवाली लीपी तलवार । -का मौला-जहाजी मौला त्रिमके भीतर कीलें या छरें अरे हों ।

किरिटि-**पु०** [सं०] बिताक फल ।

किरिमदाना-**पु०** एक छोटा कीड़ा जिसे सुखाकर किरमिजी रंग बनाते हैं ।

किरिवा-**झी०** क्षयच; कर्तव्य; दृढकर्म ।

किरीट-**पु०** [सं०] एक शिरोभूषण जिसे राजा या राजकुमार धारण करते थे, मुकुट; एक वर्णद्वय व्यापारी । -चारी(सिन्)-**पु०** राजा । -माझी(किन्)-**पु०** अर्जुन ।

किरीटी(दिन्)-**वि०** [सं०] किरीटधारण करनेवाला । पु० ईश; अर्जुन ।

किरीरा-**झी०** दे० 'कीरा' ।

किरीच-**पु०** दे० 'कीच' ।

किरीरा-**वि०** पु० दे० 'करोर' ।

किरीलना-**सं०** कि० खुरचना ।

किरीनार-**प०** कीरा ।

किर्च-**झी०** दे० 'किरिच' ।

किर्तनिया-**पु०** कीर्तन करनेवाला ।

किर्म-**पु०** [का०] कीड़ा । -खर्रा-**वि०** कीड़ा खाया हुआ । -पीका-**पु०** रेशमका कीड़ा । -शबलाव-**पु०** जंगल ।

किर्मि, किर्मी-**झी०** [सं०] बड़ा कमरा; इमारत, सुवर्ण वा कोहेकी प्रतिमा; पल्लव वृक्ष ।

किर्मिज-**पु०** दे० 'किरमिज' ।

किर्मिर-**पु०** [सं०] नारंगी; एक राक्षस जो भीमसेनके हाथों मारा गया; चितकबरा रंग । वि० चित्र वर्णमाला । -जिन्, -जिस्बन्, -सूब-**पु०** भीमसेन ।

किर्मिरित-**वि०** [सं०] चितकबरा ।

किर्वाणी-**झी०** [सं०] जंगली शूकरी ।

किर्वा-**झी०** धातुपर नकाशी करनेके कामकी एक छेनी ।

किळ-**पु०** [सं०] कीड़ा । अ० निक्षय हो । -किर्कि-**पु०** मनोगत श्रृंगारका एक ढाव जिसमें नायिका एक साध

की भाव प्रकट करती है।

किष्क-पु०, खी० किष्कारी: एक तरहका नरकट।

किष्कन-खी० किष्कनेकी किया।

किष्कन-अ० कि० बची-बंदरी आदिका किष्कारी मारना।

किष्कार, किष्कारी-खी० बची, बंदरी आदिके मुससे अधिक हर्षकी अवस्थामें निकलनेवाली अवष्ट व्यति या चीज।

किष्कारना-अ० कि० जोरसे आवाज करना।

किष्किल-खी० सगवा, किचकिच। पु० [सं०] हर्षव्यक्त ध्वनि, किष्कारी: शिष।

किष्किला-खी० [सं०] हर्षव्यक्त ध्वनि, किष्कारी: [वि०] मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया। पु० समुद्रका वह भाग जहाँ लहरें तेज आवाज करती हैं; एक समुद्र।

किष्किलाना-अ० कि० किष्कारी मारना, हर्षध्वनि करना।

किष्किलाहट-खी० किष्कारी।

किङ्गो-खी० बंदरोंका एक और; जिससे वे नापकर काठपर गिद्ध लगाते हैं।

किष्किया-पु० एक छोटी जातिका बगला।

किष्ना-अ० कि० कीला जाना; बशमें किया जाना।

किष्नी-खी० एक छोटा कीड़ा जो कुत्तों, गाय-बैलों आदि-को देखे चिमटा रहता है।

किष्मना-अ० कि० विलस-विलसकर रोना, विलाप करना, हाय-हाय करना, कल्पना, भीतर ही भीतर व्याकुल होना (अमर०)।

किष्मिलाना-अ० कि० चंचल होना; बहुधा कहीं आदिका छोटी-सी जगहमें एक साथ हिलना-डोलना।

किष्मिक-पु० काहुनी घोड़ेका एक अंग।

किष्मना-अ० कि० कील ठुकवाना; कीलनेकी क्रिया दूसरेन कराना; मन्त्रादि द्वारा प्रेतादिके विघ्नको बंद कराना।

किष्मारी-खी० छोटी नावों, डोंगियों आदिमें पतवारका काम देनेवाला छोटा बौंदा।

किष्मिष-पु० दे० 'किल्मिष'।

किष्मिषी-वि० रोगी; पापी; दोषी।

किष्मिट्टा-पु० मिटोही नामक पक्षी। [खी० 'किल्मिट्टा'।]

किष्ठा-पु० [अ०] वह संगीत और लक्ष्मी-वीथी इमारत जिसके भीतरने रक्षात्मक युद्ध किया जा सके, गढ़, दुर्ग; विशाल और मजबूत बनावटवाली इमारत; शतरंजमें बाद-शाहके लिए शहसे सुरक्षित स्थान। —(छे)शूर-पु० किलेमें रहनेवाली सेनाका प्रधान नायक, दुर्गरक्षक।

—द्वारी-खी० किलेदारका पद वा कार्य। —बंद-वि० किलेके भीतर बैठना हुआ।

—बंदी-खी० किसी स्थानको चहारदीवारी, खाई आदिसे सुरक्षित करना; ऐसी दामोदर; शतरंजमें बादशाहके लिए किला बनाना। मु०—कलह,

—सर करना—किला जीत लेना; अति कठिन कार्य करना।

—बौधना—शतरंजमें बादशाहके हर्ष-गिर्न मुहरोंको इस तरह रखना कि शह न पक सके।

किष्ठाह-पु० [सं०] फटे हुए दूधका बनीभूत वा जमा हुआ भाग।

किष्ठाटी(टिङ्ग)-पु० [सं०] नौस।

किष्ठावा-पु० हाथीके गलेमें लपेटे हुए रस्ती जिसपर महा-बल पैर रखता है; सोनारोंका एक औजार।

किष्ठास-पु० [सं०] एक प्रकारका कीड़, सिध्म रोग। वि० किष्ठास रोगमें पीणित।

किष्ठासी(सिङ्ग)-वि० [सं०] किष्ठास रोगवाला।

किष्किच, किष्किच, किष्किच-पु० [सं०] चटाई।

किष्किच-पु०, खी० दे० 'किष्कि'।

किष्लोमीटर-पु० [अ०] दूरीकी एक नाप जो लगभग ५४८ मील होती है।

किष्लोर-खी० किल्लोल, कल्लोल, लहर।

किष्लोली-पु० दे० 'कल्लोल'।

किष्लोवाट-पु० [अ०] विजलीका परिमाण जो १०० वाटके बराबर होता है।

किष्क-पु०, खी० [फा०] एक नरकट जिसकी कलम बनायी जाती है।

किष्कत-खी० [अ०] कमी, तंगी; दुर्लभता।

किष्ठा-पु० बगी मेख, लूँटा; चक्री या जँतैके बीचोबीच गधी मेख। मु०—शाघकर बैठना—अटल होकर बैठना।

किष्ठावा-अ० कि० कल्लोल करना; किलकिलाना।

किष्ठी-खी० लूँटा; एक तरहका अंगूर, मिटकिनी; कलकी मुठिया; कुजी। मु०—दूँटना;—बुमाना—पेच बुमाना;

किमीका मन फेर देनेकी युक्ति करना; जोड़ तोड़ लगाना।

(किसीकी)—हाथमें होना—किसीका किसीके बल, कार्यमें होना; किसीसे मनचाहा काम करा लेनेकी युक्ति माखस होना।

किष्मिष-पु० [सं०] पाप; दोष, रोग।

किष्मिषी(विङ्ग)-वि० [सं०] पापी; दोषयुक्त।

किष्मिष-खी० दे० 'केमिष'।

किष्मिष-पु० लकड़ी, शीमे आदिका पल्ला जिससे दरवाजा बंद किया जाता है, कपाट। मु०—देना—दरवाजा बंद करना। —बंद हो जाना—परमें किसीका न रहना, सबका मर जाना।

किष्मारी-पु० दे० 'किष्मारी'।

किष्ठा-पु० एक तरहका छोटा शफनाह।

किष्मनाह-पु० काले तावूलाका हाथी।

किष्मिष-खी० [फा०] सुखाया हुआ छोटा अंगूर जिसमें बीज नहीं होते।

किष्मिषी-वि० किष्मिषका; किष्मिषाने रंगका। पु० एक तरहका रंग। —अंगूर-पु० अंगूरकी एक जाति जिसे सुखाकर किष्मिष बनाते हैं।

किष्क, किष्कल-पु० [सं०] कौपल, नवपल्लव।

किष्लोर-पु० [सं०] ११ में २५ तककी उम्रवाला लड़का; बेटा; बछेरा; पिछ आदिका बच्चा जो जवान न हुआ हो।

[खी० 'किष्लोरी'।]

किष्लोह-पु० [सं०] बघा।

किष्क-खी० [फा०] खेती, कृषिकर्म; शतरंजमें बादशाहका विपक्षीके किसी मुहरकी जदमें आना, शह (देना, लगाना)।

—कर-पु० कृष्क, कायतकार । —बार-पु०, खी० खेती; हरा-भरा खेत । —बार-पु० पटवारियोंका एक कागज जिसमें खेतोंका विवरण लिखा रहता है ।

किस्सी-खी० [फा०] नाम; बोंगी; लकड़ी या बाटुकी बनी लंबी तश्तरी; खप्पर, कबकोल । —बुझा-वि० नाचकी सकलका ।

किष्किच, किष्किच्य-पु० [सं०] मेसूरके आस-पासका देश; उस देशमें स्थित एक पर्वत ।

किष्किचा, किष्किच्या-खी० [सं०] किष्किच देशकी—वालि-सुग्रीवकी राजधानी; किष्किच पर्वतकी एक गुफा ।

—(वा) काँच-पु० रामायणका एक काँच ।

किस-सर्व०, वि० 'कौन'का (सब उसमें या उसके विशेष—में विभक्ति लगनेसे बननेवाला) रूप ।

किसनई—खी० किसानी, कृषिकर्म ।

किसब—पु० दे० 'कसब' ।

किसबस-खी० [फा०] वह कई खानोंवाला पैसा जिसमें भार अपने औजार रहता है ।

किसमिल-खी० दे० 'किशमिल' ।

किसमी—पु० मजदूर ।

किसल, किसलय-पु० [सं०] 'किसल', 'किसलय' ।

किसान-पु० खेतिहार; कृषक ।

किसानी-खी० किसानका काम, खेती ।

किसिम-खी० दे० 'किसिम' ।

किस्सी-सर्व० वि० 'कौन'का (सब उसमें या उसके विशेष—में विभक्ति लगनेसे बननेवाला) रूप ।

किस्—वि० दे० 'किस्ती' ।

किसल-खी० [अ०] अंश, भाग; देन या लगान, माल-गुजारीका वह भाग जो नियत समयपर दिया जाय या देव हो; देन, मालगुजारी आदिके अंशविशेषके चुकालेका नियत समय । —झिझात्री-खी० किरतका नियत समय-पर भदा न होना । —बंई-खी० कितल बाँचना, देनकी कई हिस्सोंमें बाँटकर हर एकके चुकावे जानेका समय बाँच देना । —ब-किसल-अ० कितल-कितल करके, (देनको) कई अंशोंमें बाँटकर । —बार-अ० कितल कितल करके; कितलके अनुसार ।

किस्म-खी० [अ०] प्रकार, भेद, तरह ।

किसमल-खी० [अ०] अंश, भाग; भाग्य, तकदीर; कस्मि-इतरी, विभाग । —आजमाई—खी० भाग्यकी परीक्षा ।

—बर-वि० भाग्यवान्, सुखानीय । सु० —आजमाना—भाग्यके भरोसे, सफलताका निश्चय न होते हुए भी काम करना । —का धनी—भाग्यवान्, बड़े भाग्यवाला ।

—का केर-बदकिस्मती; अमानेका उल्ट-केर । —का लिखा—जो भाग्यमें बदा हो, नियति । —कमकमा,—

जायना—भाग्य खुलना; बदतीके दिन आना । —एक-टमा—स्थिति बदल जाना, दुःखसे सुख या सुखमें दुःखके दिन आना । —फूटना—भाग्यका भ्रष्ट पड़ना । —छबना—

भाग्यका अनुकूल होना; भाग्यकी परीक्षा होना ।

किस्सा-पु० [अ०] कहानी, हिकायत, वृत्तांत; विज्र, चर्चा; झगडा, तकरार । —कहानी-खी० मनगढ़ंत या निरर्थक बात । —कोसाह—सुखदसर-अ० बोधे,

संशेपमें । —कुबई,—गो-वि० कहानी कहनेवाला ।

—कुबानी,—गोई—खी० कहानी कहने-सुननेका काम ।

सु० —कोसाह करना—बोधेमें मतलबकी बात कहना ।

—अधम, तसाम या पाक होना—झगडा खत्म होना; मिटना, मरना ।

किबुयी-खी० दे० 'कुबयी' ।

की०—अ० वा, अथवा; क्या—'हय्ये' आमत नाहि तु की तकसीर है'—वन० । खी० [अ०] कुमी; दीक्षा ।

कीक—खी० चीख, चीत्कार ।

कीकड़-पु० [सं०] मगध देश; बहाँकी एक प्राचीन अवस्थे जाति; घोडा । वि० निर्धन; कृपण ।

कीकना—अ० कि० 'की-की'की आवाजके साथ चीखना ।

कीकर-पु० बबूलका पेड़ ।

कीकरी-खी० कीकरका एक भेद; एक तरहकी सिराई ।

कीकश-पु० [सं०] बाँडाल ।

कीकस-पु० [सं०] बड्डी; एक तरहका कीडा । वि० कठिन ।

—मुख-पु० पक्षी ।

कीका—पु० घोडा ।

कीकाना—पु० केकाण देश; इस देशका घोडा; घोडा ।

कीच-पु०, खी० पंक, कीचड़—'मीच है कबूल पै न कीच लखनऊकी'—बेनी ।

कीचक-पु० [सं०] घोडा बाँस; वह बाँस जो बवाके संपर्कसे सभ्य ढरपर करता हो; महाभारतमें उल्लिखित राजा विराट्का साका जिसे भीमसे मारा था ।

कीचड़-पु० पैरोंमें चिपकनेवाली गीली मिट्टी, पक; आँखसे निकलनेवाला बल्यमयी शास्त्रका मैल । सु०—में फैसना—कठिनाई, झगड़े-झमेलेमें फैसना ।

कीचर—पु० दे० 'कीचक'—ऑखिन बरौनिनमें कीचर छपानी है'—बेनी ।

कीट-पु० [सं०] कीडा । —झ-पु० गंधक । —ज-पु० रोसम । —आ-खी० लाख । —भूंग-पु० एक न्याय जो दो वस्तुओंके एकलपता प्राप्त करनेपर प्रयोगमें लाया जाता है । —मणि-पु० जुगल ।

कीटक-पु० [सं०] कीडा; एक मागध जाति ।

कीटाणु-पु० [सं०] वे छोटे-छोटे कीड़े जो अनेक रोगोंके मूल कारण माने जाते हैं ।

कीटिका-खी० [सं०] छोटा कीडा; तुच्छ प्राणी ।

कीडा-पु० रेंगने या उड़नेवाले छुद्र जंतु, कीट (मिध, गुब-रैला, खटमल आदि); किसी चीजके सड़नेमें पैदा होनेवाले छुद्र कीट, कृमि; बाँस; बोड़े दिनका बच्चा । सु० —काटना—बेनैनी होना । —एबना—(किसी चीजमें) सड़नेमें कीडा पैदा हो जाना; (किसी चीजका) सड़, बिगड़ जाना । —खना—कीडोंका किसी चीज(कपडा, किताब आदि)की खा जाना या उसमें पर करना ।

कीडी-खी० छोटा और बारीक कीडा; चोटी ।

कीदई—अ० दे० 'किथी' ।

कीनझाब-पु० दे० 'कमकाब' ।

कीनवा—अ० कि० खरीदना, क्रय करना ।

कीना-पु० [फा०] देह, वैर, मुज । —कधा,—परवर,—

वर-वि० कीना करनेवाला ।

कीर्तिनाम-पु० [सं०] यम; विस्तार। एक तरहका बंदर।
वि० लेती करनेवाला; मुग्ध, व्यक्तियन, मोघा; छोटा।

कीर्तिबार्-वि० कीर्ति रखनेवाला।

कीर्प-श्री० बर्क, तेल आदिको आसानीसे कोतलमें ढाकनेके
लिए काममें लायी गलेवाली बाहु आदिको चीनी।

कीमत्त-श्री० [म०] मूल्य, दाम; गुण। योग्यता।

कीमती-वि० [अ०] बहुमूल्य, दामी।

कीमा-पु० [ज०] छोटे-छोटे टुकड़ोंमें काटा हुआ मांस।
मु० -करमा-बहुत छोटे-छोटे टुकड़े, रेखा रेखा करना।

कीमिया-श्री० [अ०] रसायन-विद्या। सीमा-चौदी बनानेकी
विद्या; अकस्मि रसायन; कार्य-साधक युक्ति। -गर्ह-
साङ्ग-पु० रसायनविद्, सीमा-चौदी बनानेवाला, कार-

धनी। -गुरी-श्री० सीमा-चौदी बनाना।

कीमुल्ल-पु० [फा०] सोने वा जवली गंधकी पीठका हरे
रवका चमड़ा जिसके जूते बनते हैं।

कीमुल्ली-वि० कीमुल्लका बना।

कीर-पु० [सं०] लोता; मांस। कश्मीर देश; * व्याघ्र; सर्प।

कीरक-पु० [सं०] कवि, प्राप्ति; एक दुष्ट; एक वृक्ष।

कीरणा-श्री० [मं०] एक नदी।

कीरसव-पु० दे० 'कीरन'।

कीरति-श्री० दे० 'कीर्ति'।

कीरतिश-श्री० यशोदा।

कीरदात-पु० [अ०] दे० 'करात'।

कीरी-श्री० दे० 'कीरी'।

कीर्ण-वि० [मं०] बिखरा हुआ; टका हुआ; धून; खिण;
मारा या चीट पड़वाया हुआ।

कीर्तन-पु० [मं०] कीर्ति-वर्णन, वशोगान; राम, कृष्ण
आदिकी कथा गाते-बजाते हुए कवना; गाते-बजाते हुए
माषण करना (नगर-कीर्तन); कथन, वर्णन। -कार-पु०
कीर्तन करनेवाला।

कीर्तविद्या-पु० कीर्तन करनेवाला।

कीर्ति-श्री० [सं०] वर; ख्याति, नामवरी; दीप्ति; शब्द;
विस्तार; आर्या छंदका एक भेद; एक ताल; दक्ष प्रजा
पतिकी कन्या और धर्मकी पत्नी। -शाखी(खिन्)-वि०
यशस्वी, नामवर। -शेष-वि० जिसकी कीर्तिमान इस
दुनियामें रह गयी हो, नामशेष, धून। -स्तम्भ-पु०
(किमीने) आरकुरूपमें बनाया गया स्तम्भ नाम कावम
रखनेवाली चीज, यात्रागार।

कीर्तिम-वि० [मं०] कविन, बर्णिन। प्रशंसित; कवात।

कीर्तिमार्(अर्)-वि० [मं०] दे० 'कीर्तिशाखी'।

कीर्त-श्री० छायापक्षीका कर्तव्य; नाममें पहनलेका एक गहना,
लौह; मुँहाने, कुंभी आदिको दबानेसे निकलनेवाली कड़ी
पीस; चक्रीसे पीचीपीच गयी लुँटी; वह लुँटी जिसपर चाक
घुमा है; [सं०] लोहेका कौटा; मेख, काठकी लुँटी या
लुँटा। पु० कुहनी; कुहनीका भावात; बाला; स्तम्भ; एक
मख; शिव; आगरी कौं मूठ गर्ज। -कौटा-पु० [हिं०]
औबार, माज-सामान, हरहा-द्विपार। -संस्पर्श-पु०
दृष्टविशेष।

कीलक-पु० [सं०] लुँटी; लुँटा; एक नञ्जोत देवता; संजका
मध्य भाग; अन्य संजका प्रभाव नष्ट कर देनेवाला संज।

कीलक-पु० [सं०] कीलका; बंधना।

कीलना-सं० कि० कील ठोकना, लुँटी पाचना। सीपकी
गलीमें सामनेकी ओरसे लकड़ी ठोक देना; बंधना; संभकी
प्रभावहीन कर देना; सीपकी संभ-प्रभावसे हिलने-ढीकनेसे
असमर्थ कर देना; बधमें करना।

कीला-पु० वही लुँटी; जाँतेका लुँटा; चमकी लुँटी; मूठ,
गर्ज।

कीलक-पु० [सं०] देवताओंका अमृत जैसा एक पेय;
मधु; पशु; जल; सीमा; दूधिर। वि० बंधन हटानेवाला।
-ज-पु० मांस। -वि-पु० समुद्र। -घ-पु० राक्षस।

कीलिका-श्री० [सं०] धुरेकी लुँटी; एक तरहका बाण;
धनुष्यके सरोरकी एक अस्त्र।

कीलित-वि० [सं०] कीला हुआ; बड़ा निरुद्ध।

कीलिया-पु० पुर हँकनेवाला, फैरा।

कीली-श्री० लुँटी; धुरा; कुत्तोंका एक दाँव।

कीस-पु० [सं०] बंदर; सदैव; त्रिभिन्न। वि० जंगा।
-केतु, -ध्वज-पु० अजुन। -वर्ण-पु०, -वर्ण-श्री०
अवामर्ग।

कीस-पु० बैली; वह बैली या सिद्धी जिसकी मोतर गर्ज
रहता है; * बंदर।

कीसा-पु० [फा०] जेब, खरोल, बैली।

कुँवर-पु० कुमार, लकड़ा; राजकुमार। -विरास-पु०
दे० 'कुँवरविरास'। -विरास-पु० एक तरहका बढिया
धान या चावल।

कुँवरि-श्री० कुमारी; राजकुमारी।

कुँवरदा-पु० छोटा बाकल।

कुँवा-पु० दे० 'कुम्भ'।

कुँवारा-वि० जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित।

कुँवारी-वि०, श्री० जो ब्याही न हो, कुमारी। श्री०
कुमारी, अविवाहिता कन्या।

कुँह रौं-श्री० छोटा कुँआ।

कुँह-श्री० दे० 'कुई'।

कुँकुम-पु० [सं०] केसर; रौली; कुंकुमा।

कुँकुमा-पु० लाखका पीला पीला जिसमें गुलाब भरकर
मारते हैं।

कुँकुमाद्रि-पु० [सं०] कश्मीरका एक पर्वत।

कुँचन-पु० [सं०] सिकुड़ना, सिमटना; देड़ा होना; आँखों-
का एक रोग।

कुँचि-श्री० [मं०] माठ मुठ्ठीका एक परिमाण।

कुँचिका-श्री० [मं०] ताली, कुंजी। बौमकी टबनी; एक
तरहका नरकटा; एक तरहकी मछली; गुंजा; काला जीरा।
कुँचित-वि० [सं०] सिकुड़ा हुआ; देड़ा, मुड़ा हुआ; घुँप-
राले (बाल)।

कुँची-श्री० कुंजी।

कुँज-पु० [फा०] बोना, गोधा; दुहाकेको कोनेपर बसाये
जानेवाले दूदे; [सं०] कता आदिसे फिरा या ढंका हुआ
खान, हाथीका दाँत दाँत मोचेका जवहा; युफा। -
कुँजि-पु० कताशुद्ध। -मखी-श्री० [हिं०] कतामेंसे
ढंका हुआ पक्ष तंग, बकराए गली। -बिहारी(रिद्ध)-
पु० कुंजमें बिहार करनेवाले, कृष्ण।

कुंजक-पु० अंतःपुरमें वा सकनेवाला देवहीदार, कंजुकी।

कुंजक-पु० विस्तेका गोट।

कुंजका-पु० तरकारी बेचनेवाला; एक जाति जो तरकारी बेचनेका बंधा करती है। [खी० 'कुंजविन' १]-(वे)का गल्ल-गोलमाग विसाव, वह विसाव जो साफ और व्यवस्थित न हो।

कुंजर-पु० [सं०] हाथी; पीपल; एक देश; एक नाम; रामायणमें बणित एक पर्वत। छप्पय छंदका एक भेद; हस्त मन्त्र; बाल; आठवीं संस्था; (केवल समासात्ममें) अपने वर्गमें भेद जन वा प्रणी (कपिकुजर)।-अह-पु० हाथी पकड़नेवाला।-विष्णुकी-खी० गजविष्णुकी।-सक्ति-पु० [हिं०] गजमुक्ता-कुंजर(मणि कंठा कण्ठित उरग्न तुलसिका माक'-मौरा।

कुंजहा-खी० [सं०] हथिनी; बातकी; पाटला।

कुंजरावीक-पु० [सं०] हाथियोंकी सेना, हस्तिदल।

कुंजरावति, कुंजरावि-पु० [सं०] सिंहा; हारम।

कुंजराटोह-पु० [सं०] पीलवान।

कुंजराधन-पु० [सं०] पीपलका पेड़।

कुंजरी-खी० [सं०] हथिनी।

कुंजल-पु० [सं०] कौंजी * हाथी।

कुंजारी-पु० पुरवा। * क्षीचपक्षी-अंजर कुंजारी कुरलिवाँ गरज अरे लव ताक'-साखी।

कुंजिका-खी० [सं०] ब्याह जीरा; निकुंजिकाम्बा; कुंजी।

कुंजित-वि० कूजित।

कुंजी-खी० ताकी; अर्ध खोलनेवाले पुस्तक।

कुंड-वि० [सं०] मोथर; मनुष्य; सुल्ल; कमनोर।

कुंडक-पु० [सं०] मूर्ख व्यक्ति। वि० मूर्ख।

कुंडा-खी० बिंद; क्षीब-अपनी कुंडा उतार रही थी; भाव-प्रति ('काट्टेक्स'-मनोविज्ञान); निराशा ('फस्टेशन'-माहित्य)।

कुंडित-वि० [सं०] कुंड या मोथर किवा हुआ; मूर्ख; जिसका भोग-भोग हुआ हो; गृहीत; घिरा हुआ; निरास ('फस्टेटेड')।

कुंड-पु० [सं०] पानी रखनेका कुंडा; मटका; छोटा साधार; होज; हवनकी अग्नि वा जलसंचयके लिए खोत्रा हुआ गदा; बटली; कमबल; ऐसी खीका जारज पुत्र जिसका पति जीवित हो; शिवका एक नाम; क्षपरा; [हिं०] पूला; * जोहेका टोप; होरा।-कीट-पु० चावांक मतकी माननेवाला; रसेली रखनेवाला; जारज भाक्षण।-कीक-पु० नीच आदमी।-गोलक-गोलक-पु० कौंजी।

कुंड-पु० दे० 'कुंज'।-पुंजी-मुदनी-खी० कितानोंका एक ऊमव जो रबीकी बीआई समाप्त होनेके दिन मनाया जाता है।

कुंडक-पु० [सं०] पात्र; मटका; धुतराट्टका एक पुत्र।

कुंडकोर-वि० [सं०] मटके जैसे पेटवाला। पु० एक नाग; शिक्का एक गण।

कुंडनी-खी० [सं०] एक प्रात।

कुंडरा-पु० कुंडा; रेंडुरी।

कुंडरा-पु० रेंडुरी; मंडलाकार खींची हुई रेखा जिसके भीतर होकर शपथ ग्रहण करते-या भोजन रखकर उसे

छूतते बताते हैं।

कुंडल-पु० [सं०] काममें पहननेका बांला, बाली; कदा वा दूधा; गोल बनाबटका वह गहना जिसे कनकपे कानोंमें पहनते हैं; रक्ती वा साँपकी कैंटी; एक छंद।

कुंडलाकार-वि० [सं०] कुंडलके आकारका, गोल।

कुंडलिका-खी० [सं०] मंडलाकार रेखा; कुंडलिया छंद; जलेबी।

कुंडलित-वि० [सं०] जो कुंडली मारे हुए हो; चक्रके रूपमें लपेटा हुआ।

कुंडलिनी-खी० [सं०] दुर्गा वा शक्तिका एक रूप; मूलाधार चक्रमें स्थित एक शक्ति जिसे तंत्र और हठयोगका मायक जगाकर ब्रह्मधर्ममें लयानेका यत्न करता है; जलेबी; गुडुच।

कुंडलिवा-खी० एक मात्रिक छंद।

कुंडली-खी० [सं०] जन्मकुंडली; कुंडलिनी; जलेबी; साँपकी कैंटी; रेंडुरी।

कुंडली (विष्)-वि० [सं०] कुंडलधारी; कुंडलाकार; जो कुंडल वा कैंटी मारे हुए हो; लपेटा हुआ। पु० साँप; मौर; वण्ण; शिव; वह हिरन जिसके बदनपर चित्तिर्वा हो।

कुंडा-पु० नाद; बहा मटका; कौंदा। खी० [सं०] दुर्गा।

कुंडासी (विष्)-पु० [सं०] जारज देवकी कनार खाने-वाला।

कुंडिका-खी० [सं०] मटका; बहा; कमंडलु; कूंजी।

कुंडिन-पु० [सं०] विदर्भ देशकी राजधानी (सविमणो वशीके राजाकी बेटी थी)।

कुंडिवा-खी० शोरेके कारखानेमें खारी मिट्टी मिला पानी रखनेका गदा; दे० 'कूंड'।

कुंडी-खी० पत्थरका बना मोला, गहरा पात्र जिसमें भोग बोटी जाती है, पथरी; एक तरहका शिरकाण; दरबानेकी जनीर वा साँकल; लय के सिरेपरका छछा; मुर्दा भैत।

-सौंटा-पु० भोग घंटनेका मामान। मु०-खटखटामा-दरबाना खुलवानेके लिए साँकलकी इस तरह हिलाना कि मोरकी आवाज हो।

कुंड-पु० [सं०] कौडिल; भाडा; क्रोध; जूँ; एक अन्न; बासना।

कुंडल-पु० [सं०] सिरके बाल; प्याला; हल; जो; एक गणद्वय; एक प्राचीन जनपद; एक रागा; बहुवचिवा; सूत्र-धार।-बहुद-पु० अंगरा। वि० बाल बढ़ानेवाला।

कुंडलिका-खी० [सं०] एक पोषा; मन्त्रन आदि काटने-निकालनेका चमपच।

कुंडली-खी० एक तरहकी मधुमक्खी; [सं०] छुरी, चाकू। कुंता-खी० दे० 'कुंती'।

कुंतिमोक्ष-पु० [सं०] योजदेशका राजा जिसने दूधा-कुंती-को गोद लिया था।

कुंती-खी० बरछी; एक तरहकी मधुमक्खी; [सं०] सुषि-छि, नीम नीर अजुनकी माता; दूधा।

कुंड-पु० [सं०] एक पोषा जिसके फूल दाँतोंके उपमान माने गये हैं; कनेरका पेश; कमल; विष्णु; कुंभरकी नौ निधियोंमेंसे एक; *श्री संस्था, खराह।-कह-पु० खरादनेवाला।

कुंभ-वि० [फा०] मोहरा, गुठला; मंड । -**जेहव-वि०** मंत्रपुत्रि; मोटी बल्लका । **कुं०-कुंरीसे** हकाक करना-बहुत कष्ट देना, सताना ।

कुंदव-पु० स्त्रालिप्त और दमकता हुआ सोना; शुद्ध, स्वच्छ सोनेका पत्थर । **वि०** परे हुए सोने जैसा शुद्ध और निरंश; क्रांतियुक्त; स्वस्थ; दृढ़तर । -**स्त्राज-पु०** कुंदनका पत्थर बनानेवाला; जविया ।

कुंदवपुर-पु० दे० 'कुंदिन' ।

कुंदन-पु० [सं०] विहाल ।

कुंदर-पु० [सं०] विष्णु; एक तृण जो दवाके काम आता है ।

कुंदरू-पु० एक बेल और उसका फल जिसकी तरकारी बनती है ।

कुंदा-पु० [फा०] लकड़ीका बड़ा और मोटा टुकड़ा; वह मोटी और चपटी लकड़ी जिसपर रखकर कुंदीगर कापेपर कुंदी करता और बकरकावा मांस काटता है; बंदूकका काठका बना वह भाग जिसमें घोड़ा और जली बन्नी होती है, यत्ना; काठकी बेबी काठ; चिबियाका डेना; पतंगका भागा कीना; कुल्लिका एक पेना; सोया । **कु०-(दे)ओव**; लौक या बाँवकर उत्तरवा या गिरवा-उत्तरना, गिरना; (पक्षीका) परोंकी समेटकर भरतीपर आना । -**लौकना**-पक्षीका डेने कैलाकर उबनेकी चेष्टा करना ।

कुंदी-खी० कापेकी मिलवट दूर करने और चमक लानेके लिए उसे मुँगरनी पीटना । -**गर-पु०** कुंदी करनेवाला ।

कु०-करना-लूना पीटना, पूरी भरमत कर देना ।

कुंदु-पु० [सं०] चूहा ।

कुंदुर-पु० [म०] एक सुगंधित गोंद ।

कुंदुर-पु० [सं०] शलकी वृक्ष; उसका निर्यास ।

कुंदेरना-सं० कि० खरादना; छीलना ।

कुंदेरा-पु० दे० 'कुनेरा' ।

कुंदी-खी० कायफल; जलकुंदी; एक पेड़ ।

कुंभ-पु० [सं०] मिट्टीका बर्तन; कलस; हाथीके सिरका कुछ उमरा हुआ भाग जो इसकी दोनों ओर होता है; एक राशि जनाजका एक मान; एक पुण्यजनक पर्व जो हर बारहवें बरस पड़ता है; कुंभक प्राणाध्याम; वेद्यापति; गुग्गुलु; एक हठयोग; एक राग । -**कर्ण-पु०** एक विद्याभ्यास राक्षस जो रावणका छोटा भाई था । -**कार-पु०** कुम्हार। एक संस्कार जाति; संपन्न; उत्कृष्ट । -**कारिका**, -**कारी-खी०** कुम्हारकी खी; कुलधी; मेनसिल । -**ज**, -**जम्मा(अम्ब)**, -**जाल-पु०** अगस्त्य मुनि; द्रोणाचार्य । -**दासी-खी०** कुटनी । -**वर-पु०** कुंभ राशि । -**ध्वी-खी०** द्रोणपदी । -**मंहुक-पु०** मननुमकी व्यक्ति । -**कोनि-पु०** अगस्त्य मुनि; द्रोणाचार्य । -**देता(तम्)** -**पु०** अधिक एक रूप । -**साख-खी०** मिट्टीके बरतन बनानेका स्थान, कारखाना । -**संभव-पु०** अगस्त्य मुनि; द्रोणाचार्य ।

कुंभक-खी० [सं०] प्राणाधानके अंतर्गत नाक-मुँह बंद करके धास रोक रखनेकी क्रिया ।

कुंभरी-खी० [सं०] एक दुर्गा ।

कुंभा-खी० [सं०] वेद्या; नागपदी नामक ओषधि ।

कुंभिका-खी० [सं०] छोटा बर्तन; वेद्या; जलकुंदी; परिचालनी कला; एक नेत्ररोग, चिन्नी; कायफल; एक शिखरोग ।

कुंभिक-पु० [सं०] सेंव लगानेवाला चोर; दूसरीकी रचनाकी चोरी करनेवाला; साला; अपूर्ण गर्भसे पैदा बाळका; एक तरहकी मछली ।

कुंभी-खी० [सं०] छोटा बर्तन; हंडी; अनाजका एक परिमाण; एक जलीय पौधा, जलकुंदी; सलईका पेड़; गनिवारी; रंगी; पौंडर । -**घाणक-पु०** पद्माभर अन्न रखनेवाला । -**घाण्य-पु०** ९ दिनोंके खर्चके लिए रखा हुआ मष्टाभर अन्न । -**जस-पु०** एक विषैला लौह ।

-**पाक-पु०** एक नरक; इंधनेमें पकानी हुई चीज; एक तरहका मर । -**सुख-पु०** एक तरहका बीबा ।

कुंभी(अम्ब)-पु० [सं०] हाथी; मवाद; कुंभीपाक नरक; एक मछली; एक विषैला बीबा; एक तरहका गुग्गुलु ।

-**(जि) पाकी-खी०** कायफल । -**पुर-पु०** हस्तिनापुर । -**मव-पु०** मन्वजल ।

कुंभीक-पु० [सं०] पुष्पाय वृक्ष; एक तरहका नपुंसक; जलकुंदी ।

कुंभीका-खी० [सं०] जलकुंदी; कुंभिका रोग ।

कुंभीपर-पु० हस्तिनापुर ।

कुंभीर-पु० [सं०] बन्धियाल; एक छोटा बीबा; एक वृक्ष ।

कुंभीरक-पु० [सं०] चौर ।

कुंभीरासन-पु० [सं०] बटवोगके अंतर्गत एक आसन ।

कुंभील-पु० [सं०] बन्धियाल; मैथ मारनेवाला ।

कुंभोदर-पु० [सं०] महादेवका एक गण । **वि०** दे० 'कुंभकोदर' ।

कुंभोलूक-पु० [सं०] एक तरहका उत्कृष्ट ।

कुंभर-पु० लकड़ा; राजकुमार ।

कुंभरि, कुंभरी-खी० कुमारी; राजकन्या ।

कुंभरेटा-पु० छोटा लकड़ा ।

कुंभर-पु० दे० 'कुम्भी' ।

कुंभारा-वि० दे० 'कुंभारा' ।

कुंभकुंभ-पु० दे० 'कुम्भकुम्भ' ।

कु-खी० [सं०] चरती, वृद्धी; विमुक्तका आधार । -**कीक-पु०** पर्वत । -**ज-पु०** मंगल ग्रह; वृक्ष; नरकासुर । **वि०** लाल । -**जम्मा(अम्ब)-पु०** मंगल ग्रह । -**जा-खी०** जानकी; कालायनी, दुर्गा । -**दिन-पु०** एक धर्मोपदेश लेकर दूसरे धर्मोपदेशका काल (दे० अन्य 'कु'के साथ) ।

-**देव-पु०** भूदेव, ब्राह्मण । -**धर, धृत्-पु०** पहाड़; शेषनाग । -**पव-पवरी-पु०** सूर्य । -**भा-खी०** दे० क्रममें । -**कह-पु०** वृक्ष । -**बल्लव-पु०** दे० क्रममें ।

-**सुत-पु०** मंगल ग्रह ।

कु-ज० [सं०] हीनता, नीचता, दुष्टता, अपत्या, कुत्सा आदिके अर्थ देता है । (स्वराशि शब्दोंके पहले इसका रूप का, कम और का हो जाता है-जैसे कराचार, कपोष्ण, कोष्ण आदि) । -**कर्म(मंहु)**, -**कृष्ण-पु०** दुरा काम, पापकर्म । -**कर्म(मिंहु)** -**वि०** कुकर्म करनेवाला ।

-**कोतक-पु०** डरी जगह, कुठार । -**क्यात-वि०** बदनाम । -**क्याति-खी०** निरा, बदनामी । -**गति-खी०**

कुर्बानि, मुर्दका । -**कहनि**-**खी**० हठ, दुराग्रह । -**अह**-**पु**० बुरे घर । -**बाह**-**पु**० [हिं०] कपटमयी बाह, छल-छद्म; कुठार । -**बर्ब**-**पु**० काह बंदन; कुकुम । -**कह**-**पु**० किसीको विषयमें रसाने, मुक्तान पहुँचानेकी बात, साविक, बर्बन । -**कली**(**किन्**) -**वि**० साविक, बर्बन करनेवाला । -**कर**-**वि**० रेंगनेवाला; रोहब कानोंमें बाने, बूझनेवाला; बदरितक । [खी० 'कुबरा', 'कुचरी' ।] **पु**० सिर, रहनेवाला तारा । -**कबरी**-**खी**० दुराचरण । -**काह**-**खी**० [हिं०] दुराचार; दुष्टता, खोटाई । -**काही**-**वि**० [हिं०] दुराचारी; दुष्ट, खोटा । -**किल**, -**कील**, -**कीका**-**वि**० दे० 'कुचैक' । -**केह**-**केह**-**वि**० जिसके काने बहुत मैले या कटे हों । **पु**० मलिन बक । -**केहा**-**खी**० कुरितत वेष्टा; बुरी नीयत बतानेवाली वेष्टा । -**केव**-**खी**० बेवैनी । -**कैका**-**वि**० [हिं०] मैले कपड़ेवाला, मलिन । -**कंध**-**पु**० टोना टोका । -**कन**-**पु**० दुर्जन, बुरा आदमी । -**कमा**(**कम**) -**वि**० नीच कुल, जातिमें उपबन्ध । -**कस**-**पु**० अपयश; बदनामी । -**कासि**-**खी**० नीच जाति । **वि**० हीन जातिवाला; जातिव्युत् । -**कुवा**-**पु**० कुपेला, कुसमय । -**जोव**-**पु**० कुसंग; प्रतिभूत व्यवहार । -**जोगी**-**वि**० दे० 'कुयोगी' । -**डेक**-**खी**० [हिं०] अनुचित हठ । -**डेव**-**खी**० [हिं०] बुरी बात, कत । -**डौड**, -**डौड**, -**डौव**, -**डौव**-**पु**०, **खी**० [हिं०] बुरी जगह; बेनीका । -**डार**-**पु**० [हिं०] बुरे, किसीको बुराई करनेवाले कामका आचरण, कुचक्र । -**डार**, -**डोर**-**पु**० [हिं०] दे० 'कुडौव' । -**डौक**-**वि**० [हिं०] बेवैल, भरा, कुरूप । -**डंग**-**पु**० [हिं०] बुरा ढंग, चाल । **वि**० बेईना । -**डंगी**-**वि**० [हिं०] बेईना; बेवकाल । -**डंगी**-**वि**० [हिं०] कुपधनानी । -**डब**-**वि**० [हिं०] डेवब; कठिन, विकट । -**तप**-**पु**० दे० क्रममें । -**तक**-**पु**० दूषित, असंगत तर्क, विवाद । -**तकी**(**किन्**) -**वि**० कुतर्क करनेवाला, कठबुद्धि । -**तस**-**वि**० कुरूप, बदशुद्ध । -**तौव**-**पु**० [हिं०] कुपात; विवासापात; कुठार । -**तौव**-**वि**० कुपात करनेवाला । -**दाड**, -**दाव**-**पु**० दे० 'कुतार' । -**दाव**-**पु**० [हिं०] खोटा सिक्का । -**दाव**-**पु**० निकम्मा सेवक । -**दिन**-**पु**० दुर्दिन; विपत्तिदे दिन । -**दिह**-**खी**० दे० 'कुदष्टि' । -**दुष्टि**-**खी**० बुरी, खोटी निगाह, पावदष्टि; अनुश दष्टि । -**देव**-**पु**० वैद्य; राक्षस । -**देव**-**पु**० बुरा वैद्य, खान, भरेस । -**देह**-**वि**० कुरूप । **पु**० कुरे । -**दाव**-**खी**० निरुद्ध धातु, लोहा । -**दाव**-**पु**० निरुद्ध अक्ष; पापसे पैसा कमानेवालेका धान्य । -**धी**-**वि**० मंदबुद्धि । -**नख**-**पु**० नखीका एक रोग । -**नखी**(**किन्**) -**वि**० कुनख रोग या बुरे नखूनवाला । -**नामि**-**पु**० बर्बदस एक निधि । -**नाम**-**पु**० बदनामी । -**नामा**(**मन्**) -**वि**० जिसका नाम सदैर लेतेसे आंगलकी आशंका की जाय । **पु**० अति रूपन व्यक्त । -**पंथ**-**पु**० [हिं०] दे० 'कुपथ' । -**पंथी**-**वि**० [हिं०] कुचाली, कुमासी । -**पथ**-**वि**० [हिं०] अनपढ़, मूर्ख । -**पथ**-**पु**० अर्थ, अनौचित्य रास्ता, कुमार्ग; कुपथ । -० गामी-

(**किन्**) -**वि**० बुरे आचरणवाला, कुचाली । -**पथ**-**वि**० अशुभ, अस्वास्थ्यकर । **पु**० अशुभ, अस्वास्थ्यकर आहार-विहार, व्यवहारेजी । -**पाव**-**पु**० बुरी सलाह, कुमंजरा । -**पासी**(**किन्**) -**वि**० दुष्ट, छपाती । -**पराव**-**वि**० (किसी वस्तुका) अपिकारी, अयोग्य । -**पुव**-**पु**० नाकाबक वेष्टा, कपूत । -**प्रब**-**पु**० बुरा, स्वीय प्रबंध, बदरतनामी । -**बल**-**खी**० बुरी बात; बुराई; कुचाल । -**बाक**-**पु**० दे० 'कुबचन' । -**बावि**-**खी**० बुरी आदत, डेव । -**बानी**-**खी**० बुरा वाग्विषय । -**बुवि**-**खी**० दुर्बुद्धि; नासमझी । **वि**० जिसकी अकल ठीक न हो, नासमझ । -**बेला**-**खी**० [हिं०] अतिकाह; कुसमय । -**बोल**-**पु**० [हिं०] कड़ु, कठोर वा अमंगल वचन । -**बोलनी**-**वि**०, **खी**० कुमापिणी, बुरे बोल बोलनेवाली । -**भा**-**खी**० दे० क्रममें । -**भाब**-**पु**० बुरा भाव, द्वेषभाव । -**भंज**-**पु**० बुरी सलाह, कुपात । -**भसि**-**खी**० दुर्बुद्धि; अपनी बुराई करनेवाली बुद्धि । -**भासा**-**पु**० दे० 'कुमार्य' । -**भार्य**-**पु**० कुपण, बुरा रास्ता । -**भासी**(**किन्**) -**भागी**(**किन्**) -**वि**० अर्थ, अनौचित्य राहवर जानेवाला, कुचाली । -**भुख**-**पु**० रागणकी मेमका एक बीडा, दुर्मुख । -**भोग**-**पु**० अशुभ योग; अनिष्ट संयोग । -**भोगी**(**किन्**) -**वि**०, **पु**० योग-साधनका ढोंग करनेवाला । -**रब**-**वि**०, **पु**० दे० क्रममें । -**रस**-**वि**० जिसका स्वाद खराब हो वा हो गया हो । -**राव**-**खी**० दे० 'कुराह' । -**राह**-**खी**० [हिं०] कुमार्ग, अन्ध-खावट रास्ता । -**राही**-**वि**० [हिं०] कुपधनानी । -**रीति**-**खी**० बुरा ढंग; निन्दनीय प्रथा । -**रूप**-**वि**० [हिं०] जिम्मा रख खराब हो, नाराज । -**रूप**-**वि**० धवी, डेवगी शकलवाला । -**रूप**-**पु**० टीन । -**रोग**-**पु**० कठिन, दुस्साध्य रोग । -**रक्षण**-**पु**० बुरा रक्षण, अनिष्ट-व्यक्त चिह्न । **वि**० बुरे रक्षणवाला । -**रक्षणी**-**वि**०, **खी**० बुरे, अनुश वृत्त रक्षणवाली । **खी**० बुरे रक्षणवाली **खी** । -**रक्षन**-**वि**०, **पु**० दे० 'कुलक्षण' । -**रक्षनी**-**वि**०, **खी**० [हिं०] दे० 'कुलक्षण' । -**रंवा**-**पु**० तीसा । -**बचन**, -**बाच**-**पु**० दुर्बचन, गाली । -**बर्ब**-**पु**० अति दुष्टि । -**बख**-**पु**० दे० क्रममें । -**बाथ**-**वि**० न कहने योग्य । **पु**० गाली, दुर्बचन । -**बाद**-**वि**० दूसरीकी निंदा करनेवाला, नीच । -**बासना**-**खी**० पापमय वासना । -**विचार**-**पु**० बुरा, दूषित विचार । -**विषादी**(**किन्**) -**वि**० बुरे विचारवाला । -**वृत्ति**-**खी**० निरिदित आचरण । **वि**० निरिदित आचरणवाला । -**वेणी**-**खी**० दे० क्रममें । -**बेस**-**पु**० अमर्द वेष्ट । -**बैच**-**पु**० अशास्त्रीय ढंगसे चिकित्सा करनेवाला, आतार । -**बासन**-**पु**० बुरा राज्य-प्रबंध, कुराख । -**संघ**-**पु**० बुरेका संग, बुरी मोहबत । -**संगति**-**खी**० बुरी लोहबत । -**संस्कार**-**पु**० विचार-पत्रा इत्यादि बुरा अस्तर; विश्वमें जमी हुई कुपासना वा कुपा-रणा । -**सगुन**-**पु**० अपशकुन । -**समय**-**पु**० बुरा समय, व्यवहार; कुलका । -**साहूत**-**खी**० [हिं०] कुसमय; बुरा सुहृद । -**खासी**-**पु**० बुरा पेय, कुदह । -**सूत**-**पु**० बुरा धन; बुरा प्रबंध । -**सूत**-**वि**० बुराचारी । -**सुवि**-**खी**० बेवैलवाली; ईदवाक; दुराचार ।

कुर्मी-पु० भृगुर्मख जक बा सेक गिकाकनेके छिय सोदा गया बहुत गहवा और साधारणतः गौका (कच्चा बा पक्का) गदा, कूप । **कु०**-**कोयला**-किसीकी हानि, गुराई करनेका उपाय करना । रोखीके छिय मेहनत करना । -(**रै**) की मिथी कुर्मीमें लगाना-जहाँकी कमाई वहाँ कर्न हो जाना । -**होकाया**-परेसान करना । तलाशमें दीखाना । -**होकाया**-किसी चीजकी कोशिशमें बहुत जगह मचलना, बहुत होरान होना । -**परसे प्यासे जाना**-कार्यसिद्धि की गहव में निराश होटना । -**में गिरना**-भान देनेके छिय कुर्मीमें रुटना ; जान-बूझकर बिपदमें फँसना । -**में डाकना**, **में डकेलना**-कपड़ोकी घुरे करने काक डेना, उसकी थिथरी बर्बाद कर देना । -**में बॉल डाकना**-बहुत ईदना, खोमना । -**में भौरा पड़ना**-परके परका बेवकूफ बन जाना, सबकी मकलका मग्रा जाना ।

कुमावो-**खो** एक तरहको लव (संगीत) ।

कुमार-पु० आश्विन मास ।

कुमार-वि० कुमारमें होनेवाला ।

कुमारी-वि० आश्विनमें तैयार होनेवाला (धान आदि) । पु० एक मोटा धान जो कुमरमें पकता है ।

कुर्वा-**खो** छोटा कुर्मी ।

कुर्-**खो** कमल जैसा एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते और रातमें बिल्लते हैं, कुमुद ।

कुकटी-**खो** एक तरहकी कपास जिसकी बई हलके सुँपनी रंगकी होती है ।

कुङ्कुमा-**ख** कि० सिमटना ।

कुङ्कुमखी, **कुङ्कुमख**-**खो** बंहाल ।

कुङ्कु-**खो** कच्चे सूतका लच्छा ; मदारका फल ; लुलही । * मुर्गी (कौर) ।

कुङ्कु-पु० [यु०] एक कल्पित पक्षी जिसने यूनानियोंके विश्व मानुसर मगीतकी उत्पत्ति हुई ।

कुङ्कु-पु० [स०] एक तरहकी धारा ।

कुङ्कु-पु० [अ०] खाना पकानेका एक यंत्र जिसमें बई चीनें एक साथ पकायी जा सकती हैं ।

कुङ्कु-**खो** कुककुटी, मुर्गी ।

कुङ्कुई, **कुङ्कुई**-पु० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवाके काम आती हैं ।

कुङ्कुइर, **कुङ्कुइर**-पु० [स०] जपनकूप ; कुकतौष ।

कुङ्कुसं-पु० [स०] गीतम नुस्ते पड़ते हुए एक मूढ़ ।

कुङ्कु, **कुङ्कु**-पु० [स०] बकालकार-सहित कन्यादान करनेवाला ।

कुङ्कु-पु० [स०] एक राग, ककुम ।

कुङ्कु-**खो** [स०] एक रागिनी, ककुमा ।

कुङ्कु-पु० [स०] वाद्ययंत्र छवियोंकी एक शाखा ; वाद्ययंत्र राजा मंत्रका पुत्र जिससे उक्त शाखा बनी ; एक जनपद, दशार्ह ; कुतः ; प्रथिपर्णी ; एक सौप । -**बॉली**, **बॉली**-**खो** [सि०] एक तरहकी बहुत बड़ दैनेवाली और संक्रामक रोगी खोसी । -**बूँस**-पु० साधारण धँतौने कुछ नीचे निकलनेवाला अनिष्टिक बात । -**बूँस**-वि० [सि०] जिसने कुङ्कुदंत निकल्य हो । -**बूँसि**-**खो** [सि०] कुपेकी नीद, जरासे खटनेसे कुक जानेवाली नीद ।

-**बंगरा**-पु० [सि०] मंगरवा । -**आली**-**खो** [सि०] एक तरहकी मक्खी जो बोरे, कुपे आदिकी लगा करती है । -**मुला**-पु० [सि०] एक तरहका पौधा जो बरसातके दिनोंमें पेड़ोंकी जड़ोंमें वा सीलकी जगहोंमें उगा करता है, छक्क ।

कुङ्कुली-**खो** दे० 'कुङ्कुमाळी' ।

कुङ्कुली-**खो** बनमुर्गी ।

कुङ्कुल-पु० [स०] आँसूका एक रोग, रोधा ।

कुङ्कु-पु० [स०] भूती ; भूनीकी भाग ; विनगी ; कवच ; ककरीके छोटे-छोटे टुकड़ों ; जरा डुबा गइया ।

कुङ्कुगिन-**खो** [स०] भूलीकी आग, गुपानि ।

कुङ्कुड-पु० [स०] मुर्गी ; बनमुर्गी ; छका विनगारी ।

-**आली**-**खो**, **बंगरा**-पु० पानी आदि डालनेकी एक तरहकी छेदी नली । -**बाद**-पु० गवाके पासका एक पर्वत, कुङ्किहार । -**अनक**-पु० वन्द, यत्रपिण्यकी । -**अन**-पु० आइसुका सतमीकी किया जनेवाला एक जत ।

-**सिख**-पु० कुसुंज ।

कुङ्कुडक-पु० [स०] भृगा ; बनमुर्गी ; एक स्तंभ जाति ।

कुङ्कुडो, **कुङ्कुडो**-पु० [स०] एक तरहका धान ।

कुङ्कुडाम-पु० [स०] एक तरहका सौप ।

कुङ्कुडाल-पु० [स०] बीजाका एक आसन ।

कुङ्कुडि, **कुङ्कुडि**-**खो** [स०] मुर्गी ; छिपकली ; ढींग ; शाकमी ।

कुङ्कुड-पु० [स०] बनमुर्गी ; मुर्गी ; बानिख ।

कुङ्कुड-पु० [स०] कुता ; प्रथिपर्णी ।

कुङ्कु-पु० [स०] फेट ।

कुङ्कुमरि-वि० [स०] पेट ; स्त्री ।

कुङ्कु-**खो** [स०] पेट, कोला ; गर्मोत्प ; किसी वस्तुका मध्य भाग ; गुहा ; म्यान ; खोली । पु० इस्पाकुका एक पुत्र ; एक प्राचीन देश ; बलिका दूसरा नाम ।

कुचा-**खो** दिशा, ओर ।

कुच-पु० [स०] सन, उरोज । -**कुक**-पु० अनार ।

-**मुल**-पु० सनका अग्रभाग, चूतुक ।

कुचकुच-पु० उल्ल ।

कुचकुचा-वि० खानेमें गीका-कच्चा लगनेवाला, पिच-पिचा । [खो 'कुचकुचो']

कुचकुचाना-स० कि० बार-बार हलके हाथों कोचना ; थोडा कुचलना ।

कुचना-**ख** कि० सिङ्कुचना, संकुचित होना ।

कुचकना-स० कि० किसी भारी चीजसे जोर-न दबाना, मसलना ; रौटना । **मु०** कुचक देना-पील डालना, बल तोड़ देना ।

कुचका-पु० एक पेड़ और उसका बीज जो विष है और दवाके काम आता है ; कुपीड ।

कुचाप-पु० [स०] सनका अग्रभाग ।

कुचाइ-**खो** अमंगल बात, सवाद ।

कुचिक-पु० [स०] उत्तर-पूर्व दिशाका एक प्राचीन देश ।

कुचिस-वि० [स०] संकुचित ; थोडा ।

कुचिवा-**खो** छोटी सिधिया ; कम बढायी हुई रोटी ।

कुचिस-पु० दे० 'कुचका' ।

कुन्नी-कुन्नी, ब्रह्म; कुन्नी-‘हाम कपट कुन्नी जनु
‘कोलत’-राजः।

कुन्नी-कुन्नी-वि० नैऋत, वंश-‘बसन कुन्नी, विहुर लपटाने,
देह पीनां पररणी’-सूर।

कुन्नी-पु० [सं०] कामशास्त्रके एक प्राचीन आचार्य।

कुन्नी-वि० दे० ‘कुन्नी’।

कुन्नी-वि० योशासा, तनिक। सर्व० कोई चीज (कुन्नी देते-
सिलते हो ?); कोई नदी वात, काम (कुन्नी कर दिखाना);
कोई अनुचित, अनिष्ट बात (कुन्नी कर बैठना, कह देना)।

—कुन्नी-वि० योशासा।—देखा-वि० विलक्षण।—कुन्नी-
जन्म योशा, किमी कदर। कुन्नी-कर देना-बाहू देना कर
देना।—कर बैठना-कोई अनुचित, अनिष्ट बात कर
दिखाना।—कहना-कोई नदी वात कहना।—कन्नी कुन्नी-
चलना, ओरका ओर।—कन्नी लेना-उधर का लेना।—
कुन्नी हीका, कुन्नी बनिना,—सीना सोझ, कुन्नी सीनार-
दोष सीनी ओर है।—कन्नी चला-बस न चलना।

—न कुन्नी-कहनेकी बात नहीं; क्या कहना, क्या बात
है।—कन्नी-समझना (अपने भाषकी) क्या समझना,
अपने धन, वल आदिका गर्व करना।—हो-चाहे जो हो।
—हो जाना-दोग, प्रेनधाया आदि हो जाना।

कुन्नी-कुन्नी-वि० [सं०] सेव लगानेवाला चोर।

कुन्नी-पु० [मं०] एक अनुम यौग जो जन्मकुन्नीमें
मंगलके आठवें स्थानमें होने। होता है।

कुन्नी-पु० पुराण, मिष्टिका प्याला जैसा पात्र (कुन्नी);
मिष्टिके प्यालेमें जमायी हुई मिश्री।

कुन्नी-पु० कुन्नी-वि० [सं०] कुन्नी।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

कुन्नी-पु० [सं०] छत; छपर।

नामः समूहः । -कलह-पु० गृह-कलह ।
 कुटुंबक-पु० [सं०] दे० 'कुटुंब' एक पक्ष ।
 कुटुंबिकः कुटुंबी (विभू)-पु० [सं०] कुनबै, बाल-बच्चे-
 बालाः कुटुंबकात्मिकः देख-भाळ करनेवाला (ल०);
 किमान ।
 कुटुंबिनी-स्त्री [सं०] गृहिणी; बाल-बच्चेवाली स्त्री;
 गृहिणी नामका ध्रुप ।
 कुटुंबी-स्त्री [सं०] कुटनी ।
 कुटुम्ब-पु० दे० 'कुटुंब' । -कबीला-पु० बाल-बच्चे;
 कुटनी ।
 कुटुंबा-पु० कुटनेवाला; बैलको बधिया करनेवाला ।
 कुटनी-स्त्री [सं०] भान कुटनेका काम; कुटनेकी उन्नत ।
 -पिमौनी-स्त्री कुटने पीमनेका काम ।
 कुट्टक-पु० [सं०] कटने, कुटने वा पीसनेवाला ।
 कुट्टन-पु० [सं०] कुटना, पीमना; काटना ।
 कुटनी, -कटिनी-स्त्री [सं०] कुटनी ।
 कुट्टमित-पु० [सं०] नायिकाभेदमें माने हुए लिवोंके ११
 हावोंमेंसे एक-सुखानुभवके समय बनावटी कष्ट-वेष्टा ।
 कुट्टा-पु० परकटा कटनर; वह पक्षी जिसके पाँव बंधे हो
 और पिंजरेमें बंधे का रिया गया हो (ऐसे पक्षीको रिसा-
 का इमरा पक्षी कैनाया जाता है) ।
 कुट्टाक-वि० [सं०] कटने, तोड़ने, अलग करनेवाला ।
 कुट्टार-पु० [सं०] पक्क; रत्निकिया; कलह; पाथंष्य ।
 कुट्टित-वि० [सं०] काटा कुटा, या पीमा हुआ ।
 कुट्टिम-पु० [सं०] पथर बैठाकर बनाया हुआ, पक्कीकारी-
 के कामका फर्ज; रत्न हो खान; अनार; झोपड़ी; कुटी ।
 कुट्टिमिन-पु० [सं०] दे० 'कुट्टमित' ।
 कुट्टिहारिका-स्त्री [सं०] दे० 'कुट्टहारिका' ।
 कुट्टी-स्त्री चारोको छोटे-छोटे टुकड़ोंमें काटनेकी क्रिया;
 बाँक काटा हुआ चारा; लकड़ोंका लेखमें किसी भाषीसे
 मैत्री-प्रगः कृता और मझाया हुआ कागज । सु०-करना
 -चारा काटना; मित्रता भग करना ।
 कुट्टीर-पु० [सं०] छोग पहाड़, पहाड़ी ।
 कुट्टीरक-पु० [सं०] कुटिया ।
 कुट-पु० [सं०] हृक्ष ।
 कुट्टर-पु० [सं०] दे० 'कुट्ट' ।
 कुठला-पु० अनाज रखनेके लिए मिट्टीका बना बड़ा पात्र ।
 कुठाक-पु० [सं०] कठकोष्ठका पक्षी ।
 कुठार्दक-पु०, -कुठार्दका-स्त्री [सं०] कुल्हाड़ी ।
 कुठार-पु० कुठला; [सं०] कुल्हाड़ा, फावड़ा; नाश करने-
 वाला; हृक्ष । -पाणि-वि० जिसके हाथमें कुठार हो ।
 पु० परशुराम ।
 कुठारक-पु० [सं०] कुल्हाड़ी ।
 कुठारावात-पु० [सं०] कुल्हाड़ीका पात्र; पातक चोट ।
 कुठारिक-वि०, पु० [सं०] लकड़ी काटनेवाला ।
 कुठारिका-स्त्री [सं०] कुल्हाड़ी । वि०, स्त्री नाश करने-
 वाली (केवल सभामें) ।
 कुठारी-पु० मंडारी । स्त्री नाश करनेवाली; [सं०]
 कुल्हाड़ी ।
 कुठार-पु० [सं०] पेड़; बंदर; हविहार बनावेवाला ।

कुठाली-स्त्री सीमा-बोर्दी शकनेकी बरिया ।
 कुठि-पु० [सं०] हृक्ष; पक्षी ।
 कुठिला-पु० दे० 'कुठला' ।
 कुठेर-पु० [सं०] जमिन; तुलसी ।
 कुठेरक-पु० [सं०] बसेत तुलसी ।
 कुठेह-पु० [सं०] पंखे या चमरकी हवा ।
 कुठंग-पु० [सं०] निरुज ।
 कुष-पु० कुट नामक जोषण । स्त्री हल्की लगवानी ।
 कुषकुष-पु० कोप आदिकी उठानेके लिए की जानेवाली
 आवाज ।
 कुषकुषाना-अ० कि० दे० 'कुषकुषाना' । स० कि० क्षेपते
 विधिवीको उठाना या जानबरीकी भ्रमाना ।
 कुषकुषी-स्त्री अजीर्ण आदिते पैटका शुष्कपुषाना । सु०
 -होना-किनी बातकी जाननेके लिए आतुर होना ।
 कुषप-पु० [सं०] दे० 'कुषव' ।
 कुषपुषाना-अ० कि० और ही और कुषना, कुँसलाया ।
 कुषमल-पु० दे० 'कुषमल' ।
 कुषरिवा-स्त्री दे० 'कुषरी' ।
 कुषरी-स्त्री ईंडुरी; नदीके जुगमसे फिरी हुई जमीन ।
 कुषिसा-स्त्री दे० 'कुषी' ।
 कुषक-पु० रत्नकी कमीसे होनेवाली शरीरकी रेंठन ।
 कुषव-पु० [सं०] अलकी एक माष जो १२ मुट्टीके बराबर
 होती है ।
 कुषा-पु० कुँसया; दे० 'कुड़ा' ।
 कुषिला-स्त्री [सं०] मिट्टी या काठका जलपात्र ।
 कुडी-स्त्री [सं०] झोपड़ी, कुटी ।
 कुडक-पु० एक प्राचीन बादा । स्त्री भंडा न देनेवाली
 युग्म । वि० व्यर्थ; खाली । सु०-बोछना-पैकार जाना ।
 कुडमल-पु० [सं०] सिलती हुई कली; एक नरक ।
 कुष-पु० [सं०] दीवार; दीवारपर पलस्तर करना;
 औत्सुक्य । -छोटी (विभू)-पु० सेष करनेवाला चौर ।
 -पुछला, -अन्सी-स्त्री, -आस्थ-पु० छिपकली ।
 कुड-स्त्री कुडन, खोश ।
 कुडन-स्त्री कुडनेका भाव, खोश; जलन; दूसरेके दुःख और
 उससे निवारणमें अपनी विवशताकी अनुभूतिसे होनेवाला
 मनस्ताप ।
 कुषना-अ० कि० और ही और जलना, खोशना, विदना;
 मन-ही-मन खिन्न होना, संताप होना, जलना ।
 कुषा-पु० मृत्राकषे पेशावकी नलीमें पडनेवाली गाँठ ।
 कुषाना-अ० कि० विदना, खिन्नना, जलना ।
 कुष-पु० [सं०] नीलर; नाभिपरका मेरु ।
 कुषक-पु० [सं०] नकजात पशुशावक ।
 कुषप-पु० [सं०] लाश; माला; दुर्गंध । वि० दुर्गंधवाला ।
 कुषपाप्सी (शिव)-पु० [सं०] शुरा खानेवाला (शिव,
 गौडक आदि); प्रेताका एक भेद ।
 कुषि-पु० [सं०] तुलका पेड़; वह जिसका हाथ टेढ़ा हो गया
 हो या सूख गया हो; मलका ।
 कुतः(तस्)-अ० [सं०] कहाँ; कहाँ; कैसे, क्योंकि ।
 कुतक, कुतका-पु० सीटा; गतका; भंडा ।
 कुतवा-अ० कि० कृता जाना ।

कुसुम-पु० [सं०] दिव्यः कतिपयः एक क्षणः दिव्यः आदर्शः
 कुसुमः पुनः अयिः भानवाः नवासाः नैपाकुल्यः कुसुमः ।
 कुसुम-की० कुसुमः हुना उदकः ।
 कुसुम-स० कि० बौतेते किरी चीनका कुसुम अंश कट
 केनाः किरीकी मिलनेवाली रसममेते कुसुम का केना ।
 कुसुम-पु० कृत करनेवाला; २० 'कोतवाल' ।
 कुसुमारी-की० दे० 'कोतवाल' ।
 कुसुमार्का-पु० दे० 'कोतवाल' ।
 कुसुमार्की-की० दे० 'कोतवाली' ।
 कुसुमारी-की० दे० 'कोतवाली' ।
 कुसुम-की० कुसुमे की माता ।
 कुसुम-पु० [सं०] उत्सुकता; कुसुमः ।
 कुसुम-पु० [सं०] वनके की कुप्पी; दिव्यः आदर्शः मुहूर्तः ।
 कुसुम-पु० [अ०] 'मिताव' का बहु० । -आका-पु०
 पुस्तकालय । -करोर-पु० किताब बेचनेवाला ।
 कुसुम-पु० [अ०] भुव तारा । -अन्वी-पु० बहिणी
 भुव । -बुना-पु० एक पंथ जिसकी दरवाजा एक सिरा
 सदा उत्तरी भुक्की ओर रहता है । -अन्वी-की०
 पुरानी दिल्लीकी एक मीनार जो कुसुमुदय केवकी वन-
 बायी हुई ओर अपनी ऊँचाईके लिए प्रसिद्ध है । -आही-
 की० दक्षिण भारतके पूर्व वनयनी राज्यमेंसे एक जिसकी
 राजधानी गोलकुंडा थी । -कुसुम-पु० उत्तरी भुव ।
 -साहबकी काद-कुसुमानीके पास गयी हुई लोहेकी
 काद जो महाराज पृथ्वीराजकी वनबायी हुई मानी
 जाती है ।
 कुसुम-की० [सं०] तेज रखनेकी चमके की कुप्पी ।
 कुसुम-पु० [सं०] किनी वस्तु या व्यक्तिकी देखनेकी
 उत्कण्ठ इच्छा, उत्सुकता; अन्वी; की० ।
 कुसुमकी (किन्) -वि० [सं०] कुसुमयुक्त; उत्सुक;
 कीयुकी ।
 कुसुम-पु० मेसिये, स्मर आदिकी जातिका एक मांसमयी
 जानवर जो अब अफिराष्ट्रमें पाएँ पशु वन गया है,
 याना; बंदूकका गोदा; कराइनेमें लगा हुआ लकड़ीका
 टुकड़ा जिसे गिरा देनेसे दरवाजा बाहरने नहीं खुल
 सकता; यही या ताकेका एक पुरवा; लपटेंवाँ धास; दुष्क,
 धुंध जन (का०); पैटका गुलाम (का०) । सु०-(ले)का
 काटना-सनक जाना, पागल हो जाना (जुसे कुतेने नहीं
 काटा है तो बहुत बुरा करे) । -की पुन कभी सीरी
 नहीं होती-प्रकृतिगत सुटारपर समझाने-सुझानेका कोई
 असर नहीं होता । -की नींद-पेसी नींद जो जरासे
 लडकेसे खुल जाय । -की मौत मरना-बड़ी दुर्दशाके
 साथ मरना । -की दुश्क-पागल कुतेके काटनेसे होने-
 वाला ज्वरार्तक रोगका दौरा । -उठना-जवानक किसी
 चीनके लिए आहुर, महीर हो जाना । -के पूर्व जगना-
 बहुत तेज, दीपते हुए जाना । -के भूकेनेसे हाथी
 नहीं बरता-शक्तिवाली पुत्र दुष्क आदमीकी वमकी
 परमाह नहीं करता ।
 कुसुम-की० कुसुमे की माता, कुसुमा ।
 कुसुम-अ० [सं०] कर्मा, किस जगह ।
 कुसुम-पु० [सं०] मित्र करना ।

कुसुम-की० [सं०] मित्र, गार्हणा ।
 कुसुम-वि० [सं०] मित्रित, नीच, गार्हित । पु० कुसुम
 नामक ओषधि, कुसुम, कीरवा; मित्र ।
 कुसुम-पु० [सं०] हाथीकी सूखी दरी; कंधा; कुसुम; एक की० ।
 कुसुम-अ० कि० पीटा जाना, मार खाना ।
 कुसुम-की० [सं०] कंधा, कंधरी; सूख ।
 कुसुम-पु० बच्चोंका एक नेत्ररोग ।
 कुसुम-अ० कि० कूटना ।
 कुसुम-वि० कूटनेवाला ।
 कुसुम-पु० लछल-कूट ।
 कुसुम-की० [अ०] ईश्वरीय शक्ति, प्रकृति; शक्ति, सामर्थ्य;
 कारीगरी । -(ले)आवा-की० ईश्वरी महिमा, सुदा
 की शान । -का सेक-भगवान्की लीला ।
 कुसुम-वि० [का०] प्राकृतिक, असली ।
 कुसुम-पु० कुदास ।
 कुसुम-अ० कि० कूटते हुए चलना ।
 कुसुम-की० कूटनेकी क्रिया; छर्छा; कूटनेका स्थान ।
 सु०-अरवा-कूटना ।
 कुसुम-की० दे० 'कुदास' ।
 कुसुम, कुसुम-की० मिट्टी खोदनेका एक औजार जो
 कावेने कम चौड़ा होता है ।
 कुसुम-की० [अ०] मैलापन; रंजित; कीना, देव ।
 कुसुम, कुसुम-पु० [सं०] कुसुम; कोविदार वृक्ष; काक
 कचनार ।
 कुसुम-पु० [सं०] दे० 'कुसुम' ।
 कुसुम-पु० [सं०] दे० 'कुसुम' ।
 कुसुम-पु० [सं०] घटापर ।
 कुसुम-पु० [सं०] कोदी ।
 कुसुम-पु० [सं०] काक ।
 कुसुम-वि० थोड़ा गरम ।
 कुसुम-स० कि० खरादना ।
 कुसुम-पु० दे० 'कुसुम' ।
 कुसुम-पु० कुसुम, परिवार ।
 कुसुम-पु० दे० 'कुसुम' ।
 कुसुम-पु० दे० 'कुसुम' ।
 कुसुम-पु० संथित बैर, देव, शत्रुता ।
 कुसुम-वि० कुसुम रखनेवाला, देवी ।
 कुसुम-की० लकड़ी चीरने, खरादने आदिसे निकलनेवाला
 चूर; कोयलेका चूर (बरतन) खरादनेका काम; खरादने-
 की मजदूरी ।
 कुसुम-पु० [सं०] एक पहाड़ी पक्षी ।
 कुसुमिका-की० [सं०] कोयल ।
 कुसुमिका-वि० बजता, शनकार करता हुआ, कणित ।
 कुसुमिका-पु० कुसुम; कृत करनेवाला ।
 कुसुमिका-पु० खरादनेवाला, खरादी ।
 कुसुम-की० [अ०] 'किनाहन' एक कच्चा सत जो श्रावः
 मनेरिया नरमें दिया जाता है ।
 कुसुम-पु० चाद, नूने आदिकी राशि ।
 कुसुम-पु० एक मयूर खरवाला पक्षी ।
 कुसुम-पु० अचक, अनोनी ।

कुम्भा-अ० [अ०] कि० दे० 'कोपना' ।
 कुम्भार-पु० दे० 'अम्भार' ।
 कुम्भिर-पु० [सं०] दे० 'कुम्भिर' ।
 कुम्भित-वि० [सं०] कोपयुक्त; क्रुद्ध; लता; विकृत; विषका हुआ (रोग) । -बृद्ध-पु० भवकी हुई क्रोध ।
 कुम्भीन-पु० दे० 'कीर्त्तनी' ।
 कुम्भक-पु० [सं०] सोरोका एक रोग ।
 कुम्भा-पु० चमड़ेका बना गोल आकारका पात्र जिसमें बी या तेल रखते हैं । -साङ्ग-पु० कुम्भा बनानेवाला ।
 मु०-लुङ्गना-लुङ्गना-किसी घड़े आदमीका मरना ।
 -सा मुँह करना-मुँह फुलाना । -होना-दृग्ना; मोटा होना; रुठना ।
 कुम्भी-खी० छोटा कुम्भा ।
 कुम्भर-पु० दे० 'कुम्भ' ।
 कुम्भेन-खी० कानुल नदीका पुराना नाम ।
 कुम्भ-पु० [अ०] इनकार, न मानना; ईश्वरके अस्तित्वके इनकार, नास्तिकता; हठ, दुराग्रह; कृपणा । -का कलमा-सुनाली शानमें सुनाली करनेवाली बात; ईश्वर या धर्मकी निंदा । -का कृतसा-अधिकारी मीलकी या मीलविशोंकी दी हुई किसीके काफिर होनेकी व्यवस्था ।
 मु०-हूटना-हठ छूटना, दुराग्रही जनका किसी बातकी मान लेना ।
 कृष्ण-पु० [अ०] ताला ।
 कृष्णी-खी० [अ०] दे० 'कृष्ण' ।
 कुम्भ-पु० धनुष । वि० विकलाग ।
 कुम्भ-पु० दे० 'कृष्ण' ।
 कुम्भ-खी०-खी० दे० 'कुम्भा' ।
 कुम्भा-वि० जिसकी पीठ टेढ़ी हो गयी हो, टेढ़ा । पु० टेढ़ी पीठवाला आदमी ।
 कुम्भी-खी० टेढ़ी पीठवाली स्त्री; वह छकी जो सिरपर या बीचमें टेढ़ी हो ।
 कुम्भी-खी० कमकी दासी कुम्भा; कैनेयीकी दासी मधरा; दे० 'कुम्भी' ।
 कुम्भपापी-पु० दे० 'कुम्भपापी' ।
 कुम्भी-खी० पिंटी ।
 कुम्भी-खी० दे० 'कुम्भा' ।
 कुम्भी-वि० ऊपर-लावक, ऊँचा-नीचा-राजपंथके दारि बतावन उरख कुम्भी कुम्भे-सुर ।
 कुम्भ-पु० [मं०] एक देवता जो उत्तर दिशाके अधिष्ठाता और धन-समुद्रिके स्वामी माने जाते हैं, यक्षराज ।
 कुम्भराचल, कुम्भराद्रि-पु० [सं०] कौलस पर्वत ।
 कुम्भ-वि० [सं०] कुम्भ, जिसकी पीठ टेढ़ी हो । पु० कुम्भ; लक्ष्म; एक रोग; चिचिका, अपामार्ग । -शामी-मिर्च-वि० छूकर चलनेवाला ।
 कुम्भ-पु० [सं०] एक पुष्पवृक्ष, इतपुष्प ।
 कुम्भा-वि० खी० [सं०] कुम्भी । खी० कंसकी कुम्भी दासी जिसकी पीठ कृष्णमें सौपी कर दी थी ।
 कुम्भिक-खी० [सं०] अष्टवर्षीया अविवाहिता कन्या ।
 कुम्भा-पु० छिन्ना ।
 कुम्भ-पु० [सं०] वन; वक्त्रक; शकट; तंतु; अंगुली; गाली ।

कुम्भा-खी० [सं०] कानुल नदी; पृथिवीकी छाया ।
 कुम्भी-खी०-खी० पतली, कपोली ठन्नी ।
 कुम्भ-पु०, वि० दे० 'कुम्भे' ।
 कुम्भ-खी० [सं०] सहायता; किसी सेनाके सहायताार्थ भेजी हुई सेना । मु० (हिली की)-वर होना-किसीका पक्ष, हिमायत करना, मददगार होना ।
 कुम्भी-खी० सिलायी हुई हथिनी जिससे हाथियोंके पकड़नेमें सहायता की जाती है । वि० कुम्भका ।
 कुम्भ-पु० केसर; कुम्भका ।
 कुम्भ-पु० लक्ष्मका बना गोल लकड़ जिसमें अक्षर-गुलाल भरकर होलीमें एक-दूसरेकी मारते हैं; कौचका बना गोल गोल जो माला बनाने या सजावटके काममें लाते हैं ।
 कुम्भ-वि० कुम्भके आकारका ।
 कुम्भ-पु० एक तरहका हाथी ।
 कुम्भी-खी० [अ०] पंडुकी जातिकी एक चिड़िया ।
 कुम्भा-पु० एक तरहका देवामी कपडा; केलाँच ।
 कुम्भ-पु० [सं०] देवा, लक्ष्मका; पाँच वर्षसे कम उम्रका लक्ष्म; युवावस्था या उसमें पहलेकी अवस्था का पुष्प; राजकुमार; युवराज; काण्डिक; अग्नि; सारस; तोता; सिंधु नदी; वन्य वृक्ष; मंगल ग्रह; खरा तोना । वि० अविवाहित, कुँआरा । -जीव-पु० पुत्रजीवक वृक्ष ।
 -वज्र-पु० आयुर्वेदका वह भाग जिसमें बाल-रोमोंका निदान और चिकित्सा हो । -शूल-पु० प्रसव करानेकी विद्या; गर्भिणी या नवजात शिशुकी परिचर्या । -शूल-खी० शिशुओंकी देखभाल । -बाह्य-बाह्यी (विष्)-पु० मक्ख । -अक्ष-पु० आजीवन ब्रह्मचर्य-पालनका व्रत ।
 -सर्वभ-पु० काष्ठिदासका एक प्रसिद्ध महाकाव्य । -खी० पार्वती ।
 कुम्भ-पु० [सं०] कुम्भार; आँखकी पुतली ।
 कुम्भ-पु० जुआरी ।
 कुम्भ-पु० [सं०] राजकुमार; युवराज ।
 कुम्भ-वि० [सं०] जिसके लक्ष्मियाँ हों; जिसके बहाँ बहुत लक्ष्मियाँ हों ।
 कुम्भ-खी० [न०] कुम्भारी ।
 कुम्भ-पु० [सं०] सुप्रसिद्ध मीमांसक और भाष्यकार जो शंकराचार्यके समकालीन माने जाते हैं ।
 कुम्भ-खी० [मं०] १०से १२ वरमनकी कन्या; कुँआरी कन्या; लक्ष्मी; दुर्गा; पार्वती; भीता; भारतवर्षके दक्षिणी छोरपरका अंगरीप; वीकुम्भार; बही इलायची । वि०, खी० अविवाहिता, कुँआरी (लक्ष्मी) । -पुत्र-पु० कर्ण । -पुत्र-पु० एक तमोका पूजा जिसमें कुँआरी लक्ष्मीका पूजन किया जाता है ।
 कुम्भ-पु० [सं०] कुम्भ; रत्नकमल; चाँदी; विष्णु; कपूर; दक्षिण-पश्चिम कोणका दिग्गज; एक नाम जिसने अपनी छोटी बहिन कुमुदती कुसकी ब्याह दी; एक तरहका वंश ।
 -कल-खी० चंद्रकला । -किरण-खी० चद्रकिरण ।
 -माय-पति-बंशु-बाँव-सुहृ-पु० चंद्रमा ।
 कुम्भ-खी० दे० 'कुमुदिनी' ।
 कुमुदिक-वि० [सं०] कुमुदीसे पूर्ण ।

कुमुदिङ्ग-ली० [मं०] कटफल ।

कुमुदिनी-ली० [सं०] कुरा का बीजा; कुमुदीने सरा हुआ तालाव आदि; कुमुद पुष्पोंका समूह ।-बाध,-पति-पु० चंद्रमा ।

कुमुद्वती-ली० [सं०] कुमुदिनी; नामराज कुमुदकी छोटी बहन जो कुशको ब्याही गयी ।

कुमेरिया-पु० एक तरहका हाथी ।

कुमेर-पु० [सं०] दक्षिणी भूब ।

कुमोदक-पु० [मं०] विष्णु ।

कुमोदनी, **कुमोदिनी**-ली० दे० 'कुमुदिनी' ।

कुम्भेत-पु० [फ्रा०] स्थायी भायल लाल रंग; इस रंगका बीजा । वि० कुम्भेत रंगका ।

कुम्भेद-पु०, वि० दे० 'कुम्भेत' ।

कुम्हवा-पु० एक प्रसिद्ध देव और उसका फल जिसकी तरकारी, मुरब्बा आदि बनाते हैं, काशीफल; पेठा ।

-(**र**)**बसिया**-ली० दे० 'कुम्हवेकी बसिया' ।-(**रे**)-**की बसिया**-बहुत ही कमजोर, बेजान चीज ।

कुम्हबोरी-ली० रेतें हुए सफेद कुम्हरे(पेठे)की पीठमें मिश्राकर बनायी हुई रेत ।

कुम्हरोटी-ली० काली, चिकनी मिट्टी ।

कुम्हलाना-अ० कि० मुरसाना, ताजगी, प्रफुल्लताका न रहना, दुखने लगना ।

कुम्हार-पु० मिट्टीके बरतन बनानेवाला; इस धंधेकी करनेवाली हिंदू जाति, कुम्हार । [ली० 'कुम्हारिन']

कुम्ही-ली० दे० 'कुकी' ।

कुम्हेडा-पु० कुम्हवा-सूरजदास समाज काहीं लौ अजके बदन कुम्ही-सूर ।

कुरं हर, **कुरं कुर**-पु० [सं०] सारस ।

कुरंग-वि० खारा रंगका । पु० बुरा हाल; बुरा लक्षण; कुम्भेत; [मं०] हिरन; तामरे रंगका हिरन; एक छंद ।

-**नयना**,-**नयनी**,-**नेत्रा**,-**लीचना**-वि०, ली० हिरन-कीमी ओलौवाली ।-**नामि**,-**सार**-पु० कस्तूरी ।-**काँछन**-पु० चंद्रमा ।

कुरंग ह, **कुरंगम**-पु० [मं०] शृंग ।

कुरंगिन-ली० हिरनी ।

कुरंट, **कुरंटक**-पु०, **कुरंटिका**-ली० [सं०] पीली कटसरैया ।

कुरंड-पु० एक तरहका कड़ा पत्थर जिससे सान बनती है, मानिकरेत; [सं०] अष्टवृक्ष रोग; साकुर्द नामक बीजा ।

कुरंड ह-पु० [सं०] पीली कटसरैया ।

कुरधान-पु० [अ०] दे० 'कुरान' ।

कुरका-ली० [मं०] मलकी, सलई ।

कुरकी-ली० दे० 'कुकी' ।

कुरकुंड-पु० एक तरहकी घास ।

कुरकट-पु० छोटा प्रकार; * कुनकट, मुर्गा ।

कुरकटा-पु० टुकड़ा; रोटीका टुकड़ा ।

कुरकुर-पु० खरी चीजोंके दबकर टूटनेका शब्द ।

कुरकुरा-वि० (खरी, भिकी या तली हुई चीज) जिसे तोषने या चबानेसे 'कुरकुर'की आवाज निकले ।

कुरकुरावा-अ० कि० 'कुरकुर'की आवाज करना ।

कुरकुराहट-ली० कुरकुरी चीजके टूटनेकी आवाज ।

कुरकुरी-ली० घोड़ेकी एक बीमारी; कोमल मसि । वि० ली० दे० 'कुरकुरा' ।

कुरसेत-पु० बह सेत जो जोता गया हो, पर बीया न गया हो; * दे० 'कुरसेत्र' ।

कुरगरा-पु० छोटी बापी जिससे कारनिस आदिका बारीक काम किया जाता है ।

कुरक-पु० कुराकुल पक्षी ।

कुरकिह-पु० [सं०] केमना ।

कुरट-पु० [सं०] चर्मकार, मोची ।

कुरता-पु० कमीजके ढंगका एक पहनावा ।

कुरती-ली० कियोंका एक पहनावा जिसमें आगे बटन लगे होते हैं ।

कुरन-पु० दे० 'कुरंड' ।

कुरना-स० कि० डेर लगाना; एक बारगी उल्ल देना ।

* अ० कि० डेर लगना; उल्ल दिया जाना; दे० 'कुरलना' ।

कुरब, **कुरबक**, **कुरबक**-पु० [सं०] लाल कटसरैया; आक ।

कुरबनही-ली० बढबोंका कोर बनानेका एक औजार ।

कुरबान-पु० [अ०] बलि, निछावर; बह तस्मा जिसमें तरकस बँधा रहता है ।-**गाड**-ली० कुरबानी करनेकी जगह, बलिस्थान । **मु०** -**जाना**,-**होना**-निछावर होना, बलि जाना ।

कुरबानी-ली० [अ०] (मुसलमानोंका) बकरीदके दिन ईश्वरप्रीत्यर्थ पशुबलि करना; पशुबलि; आत्मत्याग ।

कुरमा-पु० कुटुंब, परिवार ।

कुरर-पु० [मं०] कौच, कुराकुल; एक तरहका गिड़ ।

कुररा-पु० कौच; टिटिहरी ।

कुररी-ली० [मं०] साधा कुरर; एक छंद ।

कुरस-पु० [मं०] कौच; पुँचराले बाल ।

कुरलना-अ० कि० कलरव करना-'धूँदहि कुरलहि जनु सर हसा'-पु० ।

कुरला-पु० कुहा; कीड़ा ।

कुरब-पु० [सं०] लाल फुलवाली कटसरैया; आक; गीदड़; बुरा शब्द । वि० कर्दई आवाजवाला ।

कुरबना-स० कि० डेर लगाना; एक साथ अधिक परिमाणमें गिराना ।

कुरबारना-अ० कि० खोदना; खरौचना ।

कुरविंद-पु० दे० 'कुरविंड' ।

कुरमारा-पु० जंगली गोभी ।

कुरमी-ली० ऊँचे पायेका एक आदमीके बैठनेका आसन जिसमें पीठके सहारेके लिए पट्टीकी और अकसर हाथोंके सहारेके लिए बाजू की होते हैं; मकानकी सतह ऊँची करनेके लिए बनाया गया चबूतरा; पीढ़ी; पश्त; षोंगियोंमें दोनों तरफ बनी हुई बैठनेकी जगह; उरबनी ।-**मात्ता**-पु० बंधवृक्ष, पुष्पनामा । **मु०** -**देना**-आदर करना, इज्जत देना ।

कना-पु० पुराने कोंबेमें पड़नेवाली गाँठ; * कटसरैया ।

कगल-पु० [अ०] मुसलमानोंका धर्मग्रंथ जो इल्हामी किताब माना जाता है ।-**अजीद**,-**शरीफ**-पु० कुरान

(आदरसूचक)। **मु०**—उठाना,—पर हाथ रखना—कुरान-की कसम खाना।—का आमा पहचाना—परमिष्ठ बनना।

कुरानी—वि० कुरानसे संबंध; कुरानकी माननेवाला (मुसलमान)।

कुराहूर—पु० कोलाहल।

कुरिया—स्त्री० दे० 'कुरिया'; छोटा बॉय; डेर, राशि।

कुरिवाल—स्त्री० पक्षियोंका मौजमें पंख खुलाना, कुर-हरी लेना।

कुरिहार—पु० कोलाहल।

कुरी—स्त्री० डेर, राशि; खंभ, डुकड़ा; टीला; * कुल, कराना; [मं०] एक अन्न, वेना।

कुरीर—पु० [सं०] मैथुन; शिवोंका एक तरहका सिरका पहनावा।

कुरंट, कुरंटक, कुरंठ—पु० [सं०] ठाक कटसरेवा।

कुरंठ—पु० [सं०] नारणी।

कुरंवा, कुरंविक्क—स्त्री० [सं०] दौगपुष्पी।

कुर—पु० [सं०] एक चंद्रवंशी राजा जिसके वंशज कीरव कहलाये; दिल्लीके आसपासका देश जिमपर कुरुवशियोंका शासन था; कुरुवशी; मात; पुरोहित।—**कंठक**—पु० मूली।—**क्षेत्र**—पु० दिल्लीके पश्चिम कराना जिल्लाका एक मैदान जहाँ कौरवों-पांडवोंमें संग्राम हुआ था।

—**क्षेत**—पु० दे० 'कुरुक्षेत्र'।—**जंगल**—पु० कुरुक्षेत्र।—**राज**—पु० दुर्गोधन।—**बर्च**—पु० उत्तरकुक्ष।

—**विद्**—पु० माणिक; आईना; काला नमक; शिगरफ।

—**बिल**—पु० एक तौल।—**बिदब**—पु० पधराग मणि।

—**बिल्वक**—पु० बनकुलम्ब।—**बुद्ध**—पु० भीष्म।—**ओह**,

—**सचन**—पु० अर्जुन।

कुरुआ—पु० अन्नकी पक माप।

कुरुई—स्त्री० मूँन या बॉमकी छोटी डलिया।

कुरुबि—स्त्री० गिरछी बितवन, कटाक्ष—'बार-बार अबलोकिक कुरुबियन कपट नेह मन हरत हमारे'—मूर।

कुरुम—पु० दे० 'कूर्म'।

कुरुना—अ० कि० पक्षियोंका बोलना—'मोरे अँगनवाँ चननकर गछिया ताहि चदि काग कुरुये रे'—विद्या०।

कुरुल—पु० [सं०] माथेपर बिखरी हुई जुल्फ।

कुरुला—स्त्री० [सं०] एक तरहकी गमक (संगीत)।

कुरेवना—स० कि० खुरचना, खरीचना।

कुरेदनी—स्त्री० नौकरदार छत्र-त्रैली चीज जिससे भट्टेकी आग खुलेके है।

कुरेमा—स्त्री० वह गाय जो सालमें दो बार बच्चा दे।

कुरेर—स्त्री० किण्ठल, कौषा।

कुरेलना—स० कि० दे० 'कुरेदना'।

कुरेलनी—स्त्री० दे० 'कुरेदनी'।

कुरैल—पु० बिस्मेदार।

कुरैना—स० कि० डालना, गिराना; डेर लगाना। पु० राशि, डेर।

कुरैया—स्त्री० एक जंगली पेड़ जिसका बीज—हंजवी—अर्ध, अनिमार आदिकी दवा है, कुटज।

कुरौना—स० कि० डेर लगाना, राशि करना।

कुरी—पु० [सं०] रोकना; माल-जायदादकी रोक, जम्मी।—**अमीन**—पु० माल कुर्क करनेवाला अहमकार।—**बाभा**—पु० कुर्कीका परवाना।

कुरी—स्त्री० देन, जुर्माने आदिकी वसूलीके लिए माल या जायदादका जप्प किया जाना।

कुरीट—पु० [सं०] मुर्गी; कूड़ा।

कुरीर—पु० [सं०] कुत्ता, कूकुर।

कुरिक्क—स्त्री० [सं०] दे० 'कुरिका'।

कुरी—पु० दे० 'कुरता'।

कुरी—पु० [सं०] दे० 'कुरेन'।

कुरीर—पु० [सं०] पुटना; कुबनी।

कुरीस, कुरीसक—पु० [सं०] चोली, अंगिया।

कुरी—पु० [अ०] कटीब होना; समीपता।—**ख**—स्त्री० समीपता।—**ब**—अवार—पु० आस-पास, पास-पड़ोस।

कुरीन—पु० [अ०] दे० 'कुरवान'।

कुरीनी—स्त्री० [अ०] दे० 'कुरानी'।

कुरी—पु० एक कृषिजीवी हिंदू जाति, कुनबी।

कुरी—पु० [अ०] टिकिया; दबाकी टिकिया; अरब देशका एक चोरीका सिक्का।

कुरी—स्त्री० दे० 'कुरती'।

कुरंग—पु० [फा०] एक पक्षी; मुर्गा।† स्त्री० छायांग।

कुरंज, कुरंजन—पु० [सं०] एक घोषा।

कुरंवर—पु० [सं०] कुलका मिलसिका बचानेवाला।

कुरंवर—पु० [सं०] संध मारनेवाला चोर।

कुक्ष—वि० सब, सारा। पु० [सं०] बंश, बराना; गोत्र; उच्च कुल; एक जातिवालोंका समूह, समुदाय; जाति; शिवियमों-व्यापारियोंका संघ, अंणी; कुलीनतन्त्र राज्य; घर, आवास; जनपद; देश; आगेका हिस्सा; एक नीला पत्थर; दो बलोंसे जितनी जोती जा सके उसनी जमीन; वाम मार्ग; मूलाधार चक्र; मूलाधार चक्रमें स्थित कुंडलिनी शक्ति (त०)।—**कंठक**—पु० अपने घुरे काथों-न कुलके लोगोंकी दुःखी करने वाला।—**कजल**—पु० बसके लिए अपमानका कारण।

—**कन्या**—स्त्री० ऊँचे कुलमें जनमी हुई लड़की।—**कसती**—(स्त्री०) पु० बंश-संस्थापक।—**कलंक**—पु० कुलमें दाम लगानेवाला, कुलकी मान-प्रतिष्ठा नाश करनेवाला।—**कानि**—स्त्री० [हिं०] कुलकी मर्यादा।—**कुंडलिनी**—स्त्री० तंत्रमें मानी हुई मूलाधारमें अवस्थित एक शक्ति।

—**केतु**—पु० कुलमें पञ्चक्रमे समान, कुलश्रेष्ठ भयति।

—**क्षत्र**—पु० कुलनाश।—**शुरू**—पु० अक्षका पुरोहित।

—**ज**—**जात**—वि० ऊँचे कुलमें उत्पन्न, कुलीन।—**जन्म**—पु० कुलीन जन।—**जा**—स्त्री० दे० क्रममें।—**तंतु**—पु० बंश चलानेवाला; बंशका सहारा।—**तारन**—वि० [हिं०] कुलकी तारनेवाला; बहुत बड़ा पुण्य करनेवाला।

—**तिथि**—स्त्री० किसी पक्षकी चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी या चतुर्दशी तिथि।—**तिलक**—पु० अपने बंशका गोत्र।—**दीप**—**दीपक**—पु० वह जिसने कुलका नाम उच्चारण हो, कुलभूषण; कुलाचारमें विहित दीप।—**देव**—पु० वह देवता जिसकी पूजा कुलविशेषमें पीढ़ी-पर-पीढ़ी होती आ रही हो।—**देवता**—पु० कुलदेव। स्त्री० १६ मातृकाओंमेंसे एक।—**द्रुम**—पु० बेल, बरगद, पीपल, गूलर, नीम,

समका, लसोका, हमकी, करंज और करंव-ये दस प्रधान
हल। -अम-पु० कुलका क्रमागत धर्म; कुकरीति। -
धर-पु० पुत्र। -धारक-पु० वेदा। -वायिका-खी०
बह खी जो वामभागियोंके चक्रमें पृथी जा सकती हो-
नदी, कापालिनी, रज्जुकी, वेदपा, नापिता, ब्राह्मणी,
शूद्रा, योपिनी और याक्निनीमेंसे कोई (सं०)। -
जीबीझाहक-पु० किसी समान, संघ या संसका
सजांची। -परि-पु० कुलका मुखिया; बह अर्थों को
१० हजार मुनियों या विचारियोंका भरण-पोषण करता
हुआ उन्हें पढ़ाये; विश्वविद्यालय या विद्यापीठका मुख्या-
धिकाता, वास्तुचांसकर। -परंपरा-खी० वंश-परंपरा।
-पर्वत-पु० भारतवर्षके इन ७ प्रधान पर्वतमेंसे कोई
-मईर, मलय, सहा, शक्ति, क्षत्र, विंध और पारियात्र।
-पांशुका-खी० व्यभिचारिणी। -पाकि, पाकिका,
-पाकी-खी० सतीसाची खी; उच्च कुलकी खी।
-पुत्र-पु० प्रतिष्ठित, कुलोन जन। -पुत्र-वि०
कुल-परंपरासे पूजा-सम्मानका अधिकारी। -चोरवा-
वि० कुलका नाम दुबानेवाला, नाकायक (खी०-बोरनी)।
-वृत्ता-खी० नमिणीके परिचयों। -अबादा-खी०
कुलकी प्रतिष्ठा; कुलकी परंपरागत रीति-नीति। -राज्य-
पु० कुल-विशेषके नायकों या मुखियों द्वारा चालित राज्य।
-बधू-खी० भले वरकी खी। -बार-पु० मंगल और
शुक्रवार। -बुद्ध-पु० घरका बहा-बुद्धा, बुद्धि। -सता-
वर ग्राम-पु० सौ० अधिक आबादीवाला गांव। -अष्ट-
वि० कुलमें योग्यतम। पु० कायलोंकी एक उपजाति।
-संघ-पु० कुलोनसभ राज्यका शासकमंडल। -सभ-
पु० (प्राचीन आर्योंके) कुलविशेषमें होनेवाला विशेष दण्ड।
-खी-खी० दे० 'कुलबधू'।

कुलक-पु० [सं०] शिष्योंकी भेषिका मुखिया; गौरी; पर-
बलीकी कता; कुचिका; समूह; एक तरहका गण। वि०
अच्छे कुलका।

कुलक-पु० (१८) सहा एवं संवह वस्तुओंका समूह।

कुलकना-अ० कि० प्रेमक होना।

कुलक-पु० [अ०] सुराही या बोटलका पानी या मद्य
उदेलनेसे निकलनेवाली आवाज।

कुलकुलना-अ० कि० कुलकुलकी आवाज निकलना।

कुलका-पु० एक तरहकी समीरी दीदी; सेपेके चौबके ऊपर
रंगा हुआ। लट्ट।

कुलका-खी० एक तरहकी जंगली मेक; [१०] कुलबधू।

कुलट-पु० व्यभिचारी, लंपट; [सं०] अनौरस पुत्र-दत्तक,
गोल्क आदि।

कुलटा-खी० [सं०] व्यभिचारिणी, अनेक पुरुषोंसे प्रेम
करनेवाली खी।

कुलथ-पु०, कुलथिझा-खी० [सं०] कुलथी।

कुलथ-पु० कुलथी।

कुलथी-खी० तरहकी जातिका एक मोटा अन्न।

कुलथ-खी० टीस।

कुलना-अ० कि० दर्द करना, दीसना।

कुलवार-पु० संगमराहत।

कुलक-पु० दे० 'कपक'।

कुलक-खी० [अ०] मनोमया, रज; विकलता।

कुलका-पु० एक पोषा जिसका साथ खाया जाता है;
बोल्के आकारका आला जिसमें मलाई, संतरे आदिकी
बरफ बसाते हैं।

कुलका-खी० बह नली जैसा सॉचा जिसमें दूध, मलाई
आदि भरकर बरफमें जमाते हैं; उक्त सॉचमें भरकर
जमायी हुई चीज; पीतल या ताँबेकी नली जो नैवे और
मियालीकी जोहती है।

कुलकुल-पु० छोटे-छोटे जीवोंका चलना-फिरना।

कुलकुलाना-अ० कि० कौनों, मछलियों आदिका एक साथ
हिलना-बोलना; धीरे-धीरे हिलना; हाथ-पाँव हिलाना;
सोतेमें हिलना; बेचैनी प्रकट करना।

कुलकुलाना-खी० कुलकुलानेका भाव।

कुलरा-पु० कुट्टर, परिवार-‘यो संसार सकल जग छठे
छूटा कुलरा नाती’-मीरा।

कुलवंत-वि० कुलोन।

कुलवंती-वि०, खी० कुलोन और सती (खी)।

कुलवान् (वर)-वि० [सं०] कुलोन। [खी० 'कुलवती']।

कुलव-खी० दीपी; शिकारी चिड़ियोंकी अँखें ठक रखने-
वाली दीपी, भंषियारी।

कुलहा-पु० दे० 'कुलब'।

कुलही-खी० बच्चोंकी दीपी, कनदीप।

कुलंगमा-खी० [सं०] कुलबधू।

कुलंगार-पु० [सं०] कुलका नाश करनेवाला; कुल-कलंक।

कुलौच-खी० छलंग, चौकरी (भरना, मारना)।

कुलौचना-अ० कि० चौकरी भरना; दीह-धूप करना।

कुलौट-खी० दे० 'कुलौच'।

कुलाच-खी० कलैया, सिर नीचे पाँव ऊपर कर उलट
जाना-‘नदिनी कुलोंचें खाने लगी’-सूर्य०।

कुलाचल-कुलाहि-पु० [सं०] दे० 'कुलपर्वत'।

कुलाचर-पु० [सं०] कुलकी रीति-नीति; कुलधर्म; वाम-
मार्ग।

कुलाचि-खी० पाप।

कुलाबा-पु० किवाड़की चौखटेसे जकड़नेका कौंटा; मछली
फसानेका कौंटा; मोरी।

कुलाब-पु० [सं०] योग्यता; स्थान; देह; खोला।

कुलायिका-खी० [म०] विधि-वासना, पक्षिशृङ्ग; पिंजड़ा।

कुलाह-पु० [म०] कुम्हार; वनसुर्गा; उल्लू।

कुलाहिका-खी० [सं०] दे० 'कुलायिका'।

कुलाही-खी० [सं०] वनकुलधी; कुम्हारिन।

कुलाह-पु० [सं०] काले बुदनीवाला भूरे रंगका घोड़ा;
[फा०] ऊँची नोककी दीपी जिसे ईरान-अफगानिस्तानके
लोग पगड़ीके नीचे पहनते हैं; राजमुकुट, ताज; दीपी।
-ज़र-पु० सुनहरे कायकी दीपी। -किरंगी-पु०
अग्नेयी दीपी, हेट।

कुलाहक-पु० [सं०] गिरगिट; एक शाक।

कुलाहल-पु० दे० 'सोलाहल'।

कुलिया-पु० [सं०] चिड़िया; गौरा; एक तरहका चूहा।

कुर्कि-पु० [सं०] पश्चिमोत्तर भारतका एक प्राचीन जन-
पद; कुलिद-निवासी।

कुलि-पु० [सं०] हाथा मटकटैया । -ज-पु० नाखून ।
कुलिक-वि० [सं०] कुलीन । पु० शिखि-भेणीका प्रधान कुलीन शिष्या; स्वयन; शिकारी; एक रईसा पोथा; कुलवार; एक विष ।
कुलिबारी-खी० संग गली, कोलिया ।
कुलिर-पु० [सं०] दे० 'कुलीर' ।
कुलिस-पु० [सं०] इंद्रका वज्र; विजली; हीरा; कुल्हाड़ी, कुठार; एक तरहकी मछली । -बदर, -पाणि-पु० इंद्र । -नाचक-पु० एक रतिबंध ।
कुलिशासन-पु० [सं०] बुद्ध ।
कुलिस-पु० वज्र; हीरा-‘मानिक भरकत कुलिस पिरोजा । नीरि कोरि पचि रचे सरोज’-(काम्यांगकौ०) ।
कुलीजन-पु० दे० ‘कुलजन’ ।
कुली-खी० [सं०] बही साली; मटकटैया ।
कुली-पु० [पु०] गुलाम; मोटिया; रेलवे स्टेशनोंपर बोल दोनेवाला मजदूर । -कबारी-पु० निज भेणीके लोम ।
कुली (खिद)-वि० [सं०] उच्च बसाका । पु० पर्वत ।
कुलीन-वि० [सं०] जैसे कुलमें जनमा हुआ; शुद्ध; निर्मल । पु० अच्छी जातिका पोथा; शक्ति-पूजक; नाखूनका एक रोग; बंगाली ब्राह्मणोंका एक वर्ग ।
कुलीनस-पु० [सं०] जल ।
कुलीर, कुलीरक-पु० [सं०] केकड़ा; ककट राक्ष ।
कुलीम-पु० [सं०] दे० ‘कुलिम’ ।
कुलुक-पु० [सं०] जीभपर जमा हुआ मेल या सिली ।
कुलुकगुजा-खी० [सं०] लुकाठी ।
कुलुक-पु० ताला, कुचल ।
कुल-पु० दे० ‘कुलुव’; एक पेड़ ।
कुलुत-पु० [सं०] पश्चिमोत्तर भारतका एक जनपद ।
कुलेल-खी० दे० ‘कुलील’ ।
कुलेलना-अ० कि० कुलील करना ।
कुलीन-वि० [म०] कुल (विशेष)में उत्पन्न; कुलीन ।
कुलोपदेश-पु० [सं०] कुलगत नाम ।
कुलफ-पु० [म०] एक रोग ।
कुलफी-खी० दे० ‘कुलफो’ ।
कुस्माप-पु० [सं०] कुलधी; वनकुलधी; बोरो धान; चना आदि दिहल; कौंजी; एक रोग ।
कुलप-पु० [सं०] भद्र पुरुष; कुशल-क्षेम पूछना; मांछ; अभि; धृप ।
कुलषा-खी० [सं०] नहर; नाला; छोटी नदी; कुलीन स्त्री; जीवती; एक तोल ।
कुला-पु० दे० ‘कुली’; काकुल; बोरेका एक रंग या उस रंगका पोथा; एक तरहकी कैंची या कटोरानुमा टोपी (खेल) ।
कुली-खी० मुँह साफ करनेके लिये मुँहमें पानी भरकर फेंकना; पानीका एक घुंटा; लुफ; पट्टा ।
कुलुव-पु० [सं०] मनुस्मृतिके एक प्रसिद्ध टीकाकार ।
कुलव-पु० [सं०] दे० ‘कुलुक’ ।
कुलव-पु० पुरवा, मिट्टीका छोटा जलपात्र ।
कुलदा-पु० लकड़ी काटने, फाड़नेका औजार, कुल्हाड़ा, रोंगी ।
कुलदारी-खी० छोटा कुल्हाड़ा, रोंगी ।

कुल्हाड़ा-पु० लकड़ी चीरने, काटनेका एक औजार ।
कुल्हाड़ी-खी० छोटा कुल्हाड़ा ।
कुलिहवा-खी० छोटा पुरवा, धरिया । सु० -में गुब कोइना-छिपाकर काम करना ।
कुव-पु० [सं०] कमल; फूल । -ज-पु० ब्रह्मा ।
कुवम-पु० [सं०] सूर्य ।
कुवल-पु० [सं०] कुई; मोती; जल; सौंपका पेट ।
कुवलप-पु० [सं०] कुई; नीली कुई; नील कमल; भूमंडल ।
कुवलवानंद-पु० [सं०] अप्य दक्षिणतः संस्कृतका एक अलंकार प्रभ ।
कुवलवापी-पु० [सं०] एक हस्त-रूपधारी असुर जो कृष्णके हाथों मारा गया ।
कुवलवाध-पु० [सं०] धुंधमार राजा; ऋतुध्वज; मर्दान ।
कुवलविनी-खी० [सं०] नीली कुईका पोथा; नीली कुईके फूलोंका समूह ।
कुवो-पु० दे० ‘कुवो’ ।
कुवाट, कुवाटक-पु० [सं०] दरवाजेका पल्ला ।
कुवार-पु० दे० ‘कुवार’ ।
कुवारी-वि० कुमारके महीनेमें होनेवाला (धान आदि) ।
कुवाहुल-पु० [सं०] ऊँट ।
कुविंद-पु० [सं०] जुलाहा ।
कुवेणी-खी० [सं०] मछली रखनेकी डलिया, टोकरी; ठीक तौरमें न गुंथी हुई बेणी ।
कुवेर-पु० [सं०] दे० ‘कुवेर’ ।
कुवेराचल, कुवेराद्रि-पु० [सं०] कैलास पर्वत ।
कुवेख-पु० [सं०] कमल ।
कुवा-पु० [सं०] कड़ी और तुकीली पत्तियोंवाली एक घास जो यज्ञ, पूजन आदि धर्मकृत्योंकी आवश्यक सामग्री है, धर्म; रामके दो पुत्रोंमेंसे एक; राजा उपरिचर बहुधा पुत्र; कुशधीप; जल; हरिसंकी जुएमें जोड़नेवाली रस्ती, नाथा; फाल । वि० दुष्ट; विक्षित । -कंडिका-खी० बेदीपर या कुचमें अग्नि-स्थापनाकी क्रिया । -केतु-पु० ब्रह्मा; राजा कुशध्वज । -हीप-पु० पुराणवर्णित सात महादीपोंमेंसे एक । -ध्वज-पु० राजा जनकके छोटे भाई जिनकी नेतियों भरत और शत्रुघ्नकी ब्याही गर्वी; एक ऋषि । -नाम-पु० अयोध्यानरेश कुशका एक पुत्र । -पुष्प-पु० भ्रंशियाण । -पुष्पक-पु० एक विष । -मुद्रिका-खी० पवित्री, पैती । -स्तरण-पु० हवनके पूर्व यज्ञकुंडके चारों ओर कुश बिछाना । -खली-खी० द्वारका; कुसावती । -हस्त-वि० दान, आह्न आदि करनेकी उचित ।
कुशाप-पु० [सं०] पानपात्र ।
कुशाव-पु० [सं०] जलकुंड, झील; पानपात्र ।
कुशल-वि० [सं०] चतुर, होशियार; कार्यविशेषमें निपुण (नीतिकुशल, कर्मकुशल); उचित; प्रसन्न । पु० शिव । खी० क्षेम, मंगल, खैरियत, सलामती; सहाई; चातुर्य । -काम-वि० कुशल चाहने, माननेवाला । -क्षेम-पु० आनंद-मंगल, सुख-स्वास्थ्य, खैरी-आफियत । -प्रद-पु० कुशल-मंगल, र रियत पूछना । -भंग-पु० कुशल-क्षेम, खैरियत ।
कुसकाई, कुसकात-खी० दे० ‘कुसकाई’ ।

कुशली-ली० [मं०] अमृतक वृक्ष; सुद्रामलकी ।
 कुशली(लिङ्ग)-वि० [सं०] कुशलयुक्त; स्वस्थ; सुखी ।
 कुशागुरीय, कुशागुरीय-ली० [सं०] पैती, पवित्री ।
 कुशा-ली० [सं०] रस्ती; लुगम; काठका डुकड़ा या तस्ता ।
 कुशाकर-पु० [सं०] यशाधि ।
 कुशाक्ष-पु० [सं०] बंदर ।
 कुशाम-वि० [सं०] कुशकी नोक जैसा तीक्ष्ण, तेज ।
 -कुक्षि-वि० पैती, तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।
 कुशादगी-ली० [फा०] कुशादा हीना; कैलाश, विस्तृति ।
 कुशादा-वि० [फा०] फैला हुआ; लबा-चोड़ा; खुला हुआ । -दस्ता, दिल-वि० उदार, खुले हाथों खर्च करनेवाला । -पेशानी-वि० हँसमुख, प्रसन्नचित्त ।
 कुशारणि-पु० [सं०] दुर्वास कृषि ।
 कुशावती-ली० [सं०] रामके पुत्र कुशकी राजधानी ।
 कुशाक्ष-पु० [सं०] श्वाकुवशाका एक राजा ।
 कुशासन-पु० [सं०] कुशका बना हुआ आसन; दे० 'कु'के साथ ।
 कुशिक-पु० [सं०] एक राजा जो विश्वामित्रके दादा थे; फाल्गु सेल्की तलछट; बहेड़ा । वि० ऐजाताना ।
 कुशित-वि० [सं०] जलमिश्रित ।
 कुसी-ली० [सं०] फाल्गु; एक तरहका भुवा ।
 कुसी(विन्)-वि० [सं०] कुशवाला । पु० बाल्मीकि ।
 कुसीद-पु० [सं०] दे० 'कुसीद' ।
 कुसीनगर-पु० बुढ़का निर्वाणसल्ल, कसिया ।
 कुसीनार-पु० दे० 'कुशीनगर' ।
 कुसील-पु० [सं०] माट, चारण; नद; गायक; बाल्मीकि ।
 कुसुम-पु० [सं०] सन्ध्यासिद्धोंका जलपाय; पत्रा ।
 कुसुल-पु० [सं०] बसरा; भूसीकी आग; कड़ाही ।
 -धाम्यक-पु० वह गृहस्थ जिसके पास तीन बरसतक खानेकी अन्न हो ।
 कुशेश-पु० दे० 'कुशेश्वर' ।
 कुशेश्व-पु० [सं०] कुश; कमल; सारस ।
 कुशोदक-पु० [सं०] कुश सहित जल ।
 कुस्तमकुस्ता-पु० गृध्रमगुत्था, कुत्ती ।
 कुस्ता-वि० [फा०] मारा हुआ, हत । पु० धातु या औषध-द्रव्यका भस्म; काष्ठ । कुस्तीके पुस्तो-लाशोंके ढेर ।
 कुस्ती-ली० [फा०] दो आदमियोंका एक-दूसरेको पछा-बनेके लिए गुथकर लड़ना, मल्लयुद्ध । -बाज-वि० कुस्ती लड़नेवाला । सु० -खाना-कुस्तीमें हार जाना ।
 -मारना-कुस्ती जीतना, विपक्षीको पछाड़ देना ।
 -लड़ाना-कुस्ती लड़ना सिखाना ।
 कुस्तोखन-पु० [फा०] मारकाट, खेरेजी ।
 कुसल-वि० [सं०] दे० 'कुशल' ।
 कुषाकु-वि० [सं०] जलाने, झुलसानेवाला । पु० अग्नि; सूर्य; बदर ।
 कुषित-वि० [सं०] दे० 'कुषित' ।
 कुषीतक-पु० [मं०] एक कवि; एक पक्षी ।
 कुषीद-वि० [सं०] उदासीन, तटस्थ । पु० दे० 'कुसीद' ।
 कुसुम-पु० [सं०] जहरीले कीड़ेका विषकोश ।
 कुह-पु० [सं०] कीड़ा; कुट; कुका; एक विष । -केतु-पु०

भूवाहुन्व । -गंधि-ली० पड़ना । -झ-पु० वितावले नामक औषधि । -झी-ली० कटमार, काकीदुर्बरिका ।
 -नाशन-पु० क्षीरक वृक्ष । -नाशनी-ली० सोमराशि ।
 -सुद्व-पु० अमलतास । -हंता(सु)-पु० हस्तिकंद ।
 -हंती-ली० वाकुची । -हृत्-पु० खदिर ।
 वृहदरि-पु० [सं०] गंधक; अर्कपत्र; परवल; खदिर । वि० कुडनाशक ।
 कुष्टी(विन्)-वि० [सं०] कुष्ठ रोगसे पीड़ित, कीड़ी ।
 कुष्मल-पु० [मं०] पत्र; छेदन, काटना ।
 कुष्मांड, कुष्मांडक-पु० [सं०] कुम्हड़ा ।
 कुष्मांडी-ली० [सं०] यज्ञकिया; पार्वती; कर्कश ।
 कुम्-पु० दे० 'कुम्' ।
 कुसर-ली० दे० 'कुशल' ।
 कुसरास-ली० 'कुमलात' ।
 कुसल-वि०, पु० दे० 'कुशल' ।
 कुसलई, कुसलाई-ली० कुशल-क्षेम ।
 कुसलात-ली० कुशल-समाचार ।
 कुसली-ली० आमकी गुठली; गोष्ठा । वि० दे० 'कुशली' ।
 कुसबा-पु० जहन्नका एक रोग ।
 कुमवारी-पु० रेशमका जंगली बीड़ा; रेशमका बीया ।
 कुसबाहा-पु० एक हिंदू जाति जो तत्काली आदिमक मेती विशेष रूपमें करती है ।
 कुसियार-पु० एक प्रकारकी ईंख ।
 कुसियारी-पु० दे० 'कुमवारी' ।
 कुम्मी-ली० हल्का फाल्गु; * सुसी, आनंद (मीरा) ।
 कुसीद-पु० [मं०] सुदृष्ट रूपसे देना, महाजनी; सुदृष्ट लिया हुआ कर्ज; सुखोर । वि० काहिल । -जीवी(विन्)-पु० महाजनी करनेवाला, सुखोर । -पथ-पु० महाजनी; व्याज । -हृत्-ली० व्याज ।
 कुसीदा-ली० [मं०] महाजनी करनेवाली स्त्री ।
 कुसीदिक, कुसीदी(विन्)-पु० [सं०] महाजनी करनेवाला, सुदृष्ट ।
 कुसीनार-पु० दे० 'कुशीनगर' ।
 कुसुंब-पु० [मं०] एक वृक्ष जिसकी रकड़ी गान्धर्वों आदि बनानेके काम आती है ।
 कुसुम्-पु० [सं०] कुसुमका फूल; केंसर; मोन; सन्ध्यासीका जलपाय; कपरी प्रेम ।
 कुसुम्भा-पु० कुसुमका रस; एक मादक द्रव्य । ली० [मं०] आपाद-मुष्ठा वृक्ष ।
 कुसुमी-वि० कुसुमके रंगका ।
 कुसुम-पु० [मं०] फूल; स्त्रीका रज; औखीका एक रोग; एक पौधा जिसके फूल लाल, गुलाबी, पीले आदि रंगके होते हैं; अक्षिका एक रूप । -कार्मुक-चाप, -घन्वा-(नव)-पु० कामदेव । -पंचक-पु० कामदेवके बाण-रूप पोंच फूल । -पल्ली-ली० रजसला स्त्री; पाटलि-पुत्र । -पुर-पु० पाटलिपुत्र, पटना । -प्रवृत्ति-ली० फूल लगना, आना । -बाण-सार्गण-हार-सायक-पु० कामदेव । -रेणु-पु० परास । -विचित्रा-ली० एक वृत् । -वाचन-पु० फूलोंकी सेवा । -शय्या-ली० फूलोंका बिछोना; ऐसा काम जो आसानीसे किया जा सके ।

—लवक-पुं फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता; एक वृत्त ।
कुसुमाञ्जन-पुं [सं] जस्तेके बस्मका स्रग्मा ।
कुसुमाञ्जलि-स्त्री [सं] फूलोंसे बरी अञ्जलि; उदबना-
 चार्यकृत न्यायका एक ग्रन्थ ।
कुसुमाकर-पुं [सं] बाग; वसंत ।
कुसुमागम-पुं [सं] वसंत ।
कुसुमाभिषेक, **कुसुमाभिराज**-पुं [सं] चंपाका पेड़ ।
कुसुमावुष-पुं [सं] कामदेव ।
कुसुमाळ-पुं [सं] चौर ।
कुसुमासव-पुं [सं] शब्द; फूलोंसे बनी शराब ।
कुसुमित-विं [सं] फूला हुआ, पुष्पित ।
कुसुमेष्टु-पुं [सं] कामदेव ।
कुसुमोदर-पुं [सं] ओट नामक वृक्ष ।
कुसूर-पुं [अं] जूना, अपराधी; धूल-चूक; कोनाही; दोष ।
 —अंध, —बार-विं अपराधी; दोषी ।
कुसूल-पुं [सं] एक देवयोगिनि; दे० 'कुशूल' ।
कुमय, **कुसेसय***-पुं दे० 'कुशेशय' ।
कुस्ती*-विं कोटी ।
कुस्तूंबरी,-स्त्री, **कुस्तूंबर**-पुं [सं] धनिया ।
कुस्तुभ-पुं [मं] समुद्र; विष्णु ।
कुस्तूक*-पुं दे० 'कुमकुम' ।
कुम्भा*-पुं कलश ।
कुह-पुं [मं] कुंवर; छलिया; दुष्ट । * अंधकार ।
कुहक-स्त्री मीर या कोयलका बोल । पुं [मं] इन्द्रजाल;
 बौध्वाजी; ठगा; ठग, बचक, एग, तरहका मेटक; नागोंका
 एक भेद ।—कार-पुं ठग ।—स्वभ, —स्वर-पुं मुग्धा ।
कुहकना-अं किं मीर, कोयल आदिका मीठी आवाजमें
 बोलना, कृत्रमा ।
कुहकनी-स्त्री कोयल ।
कुहकह*-पुं कुकुम; केसर ।
कुहकृत्ताना-अं किं कोयलका बोलना, कृत्ताना—'कुह-
 कृत्ता' आये बसत कृतु अत मिलै कुल अपने जाय'—सूर ।
कुहक-पुं [सं] तालका एक भेद ।
कुहल-विं [मं] ईशानुज; टभी । पुं मिट्टीका बरतन;
 योगिका बरतन; चूल्हा; माँप ।
कुडना-विं [फां] पुराना । † सं किं दे० 'कृषना',
 माना—'राम पाहि कानी कामधेनु कलि कुहल वसाई
 है'—कविनाबली । अं किं गाना । स्त्री [सं] दे०
 'कुशनिका' ।
कुडनिहा-स्त्री [सं] दोग, दंभ; दिखाऊ ध्यान-पूजा
 आदि ।
कुडनी-स्त्री बाहु और धुवाका जोड़; डुबकी निगालीमें
 लगायी जानेवाली नली ।—डडाम-स्त्री कुश्तीका एक
 पंच ।
कुहप-पुं राक्षस ।
कुहवर-पुं दे० 'कोहवर' ।
कुहर-पुं [सं] गदा; छेद; कान या गलेका छेद; कान;
 गन्ध; सामीप्य; रतिक्रीड़ा; कंठलुर; * दे० 'कुहरा' । †
 स्त्री एक शिकारी पक्षी, बहरी ।
कुहरा-पुं इषामे मिले हुए जलकण जो ठंडसे जमकर

नीचे गिरते हैं ।

कुहराम-पुं कई आदमियोंका एक साथ रोना-पीटना;
 शोरगुल, बावला; रोने-पीटनेका शोर ।
कुहरित-पुं [सं] शब्द, स्वर; कोयलका कूजन; रति-
 कालमें निकला हुआ शब्द । * विं शब्दायमान ।
कुहलि-पुं [सं] पान, ताबू ।
कुहसार-पुं [फां] पहाड़ी स्थान; पहाड़ ।
कुहा-स्त्री [सं] कड़की ।
कुहाप, **कुहारा**-पुं कुल्हाका । [स्त्री 'कुल्हाड़ी']
कुहावा*-अं किं कूटना, नाराज होना ।
कुहासा-पुं दे० 'कुहरा' ।
कुहिरा-पुं दे० 'कुहरा' ।
कुही-स्त्री बहरी, कुहर । पुं एक तरहका पौधा ।
कुहु, **कुहु**-स्त्री [सं] अमावस्या; अमावस्याकी अधिष्ठात्री
 देवी; कोयलकी कूक ।—कंठ,—मुख,—रघ-पुं कोयल ।
 —कूह-स्त्री [हिं] कोयलकी बोली ।
कुहूक-स्त्री चिड़ियोंकी मधुर बोली, कूजन ।—बाज-पुं
 एक तरहका बाण जिसे चलाते समय कुछ आवाज निक-
 लती है ।
कुहेषिका, **कुहेडी**, **कुहेलिका**-स्त्री [सं] कुहरा ।
कुही-कुही*-स्त्री दे० 'कुह-कुह' ।
कूकस-पुं भूरी—'कूकसकी कूटे कूहें निकलन कन हैं'—
 मृदं ।
कूँख†-स्त्री कोख; पेट; कौखनेका शब्द ।
कूँखना-अं किं कौखना ।
कूँग-पुं बरतन खरादनेका एक औजार, खराद ।
कूँच-स्त्री तानेका खून नाफ करनेका ग्रन्थ; लोहारोंकी
 बड़ी मेंदनी; पैरकी मोटी नस ।
कूँचना†-मं किं कुचलना ।
कूँचा-पुं बढनी; करछा; † कुचला हुआ कच्चे आम,
 ओखले आदिका गूदा जो चढनीके तौरपर खाया जाता है ।
कूँची-स्त्री छोटी बढनी, ग्रन्थ; नुलिका; मिसरी जमानेकी
 कुल्हिया; * ताली । **मुं**-देना-कूँचीन साफ करना;
 रंग चढाना; एक कोनेन दूसरे कोनेतक लेन जोतना ।
कूँज-पुं कूच पक्षी ।
कूँजना*-अं किं दे० 'कूजन' ।
कूँब-पुं लोहेकी दोषी; पानी निकालनेका ढोल जैसा एक
 बरतन; जोतनेसे बनी हुई गहरी लकीर; एक गहरी पात्र
 जो तबलेका बायाँ बजानेके काम आता है ।
कूँबा†-पुं पानी रखनेका चौड़ा बरतन, कुटा; गमला;
 कठौता; एक तरहकी शीशेकी हॉकी जो रोशनी करनेके
 काम आती है ।
कूँबी-स्त्री पत्थरकी कटोरी, पथरी; छोटी नाद; कोलहका
 कल्ल जैसा बह भाग जिसमें जाठ रख जाता है ।
कूँया-अं किं बीबासे 'कूँह'की आवाज निकालना;
 दबी आवाजसे कराहना; कबूतरोंका गुडगूँ करना ।
कू-स्त्री [सं] पिशाची ।
कूहँ-स्त्री दे० 'कूह' ।
कूक-स्त्री कोयलकी बोली; लंबी गहरी आवाज, कीक;
 चकी, बाजे आदिमें कुंजी देना ।

कूकना-अ० कि० कीयलका बोलना, 'कूह-कूह' करना ।
स० कि० बरी वा बानेमें ताजी भरना ।

कूकरा-पु० कृपा । -**कौर**-पु० कुत्तेके आगे डाली जाने-
वाली जूठन, दुकस; गुच्छ बस्तु । -**बंदी**-खी० एक
पीवा जिसकी पत्तियों कुत्तेके काटे हुएपर लगायी जाती
है । -**बसेरा**-पु० भोजा विश्राम । -**मैगरा**-पु० काला
मैगरा । -**मुसा**-पु० दे० 'कुकरमुसा' । -**छेप**-पु०
कुत्तोंका मैथुन ।

कूका-पु० सिल्लोंका एक संग्रहाय; ँ लंबी गहरी आवाज ।

कूकी-खी० जावेकी फसलमें लगनेवाला एक बीजा ।

कूकुद-पु० [सं०] दे० 'कुकुद' ।

कूका-खी० कोस ।

कूच-पु० [सं०] खीका स्तन (विशेषतः जवान वा अवि-
वाहिताका); [का०] एकमे दूसरी जगह जाना, रवानगी;
गुच्छ, परलोकयात्रा । -**कूच**-अ० कूचपर कूच बोलते,
मंजिलपर मंजिल तै करते हुए । **मु०**-का डंका वा
मझारा बजना- (कीजका) रवाना होना, प्रस्थान करना ।
-**बोखना**-रवानगीका इकम देना; रवाना होना ।

कूचा-* पु० कौच पक्षी- 'बायें कुरी, दहिने कूचा'-प०;
[का०] गली, सेंकरा रास्ता । -**गद्दी**-खी० वेमतलव
हथर-उभर धूमते रहना, आवागमनी । -**बंद**-पु० बंद
गली, बंद गली जिनमें एक ही मोरी रास्ता हो ।

कूचिका-खी० [सं०] जूँबी; कुजी ।

कूची-खी० दे० 'जूँबी' ।

कूचन, कूचन-पु० [सं०] किसी पक्षीका कलरव; पहियोंकी
धबधबाहट ।

कूचना-अ० कि० मधुर ध्वनि करना ।

कूचा-पु० कुल्हड़; कुल्हड़में जमायी हुई मिसरी; बेलेका
कूल ।

कूजित-वि० [सं०] ध्वनित, गुँजा हुआ । पु० कूजन ।

कूट-खी० कूटनेकी क्रिया, कुटार, (सैल मार-कूट, काट-
कूट जैसे समासोंमें व्यवहृत); एक औषधि; कुटी । पु०
[सं०] छल, धोखा, कपट, बनावट; ध्यान आदिमें छिपाया
हुआ हथियार; जटिल प्रश्न; पहाड़की चोटी; सींग; राशि,
वेर; कोहेका मुँगरा; फाल; असत्य; व्यंग्य; निहाई; कीना;
नगर-दारा; गुह; अगस्त्य मुनि; ललाटकी अलिख; शीर्ष;
हिरन फँसानेका जाल; धरा; वह बैल जिसकी सींग टूटे
हो । वि० अचल; बनावटी; दृणित; असत्य । -**कर्म**(**रू**)-
पु० छल, धोखेबाजी । -**कार**-पु० छल-कपट करनेवाला,
धोखेबाज । -**कूत**-वि० नकली बाट, सिके आदि बनाने-
वाला, जालसाज । पु० शिव । -**लहंग**-पु० छिपी तर-
वार, गुप्त । -**गुला**-खी० वह तराजू जिससे तीलमें
चोरी की जा सके, जिसमें पातंग हो । -**नीति**-खी०
छल-कपटकी नीति, चालबाजी । -**पणकारक**-वि० जाली
सिखा आदि बनानेवाला, जालसाज । -**पर्व**-**पाकल**-
पर्व-पु० हाथियोंकी होनेवाला क्रियात्मक । -**पाकल**-
पु० कुम्हार; अर्वा । -**पास**, -**बंध**-पु० चिहियों आदि-
की फँसानेका जाल; फदा । -**प्रश्न**-पु० पहेली । -**मान**-
पु० ठीक मानसे छोटा या बड़ा बाट, माप । -**मुझ**-पु०
जाली मुहर वा सिका, बनानेवाला (खी०) । -**मुझा**-

खी० जाली मुहर वा आवेष्ट (खी०) । -**मोहन**-पु०
स्नंद । -**बंध**-पु० कृपाया । -**मुह**-पु० छल, धोखेकी
लगाई, अपमंयुद्ध । -**बोखना**-खी० कुचक, बद्धंध ।
-**बोबी**(**बिन्**)-पु० कूटबुद्ध करनेवाला । -**रक्ता**-
खी० फँसानेकी युक्ति; फदा । -**रूप**-पु० जाली सिका
(खी०) । -**कारक**-पु० जाली सिका बनानेवाला
(खी०) । -**निर्वापण**-पु० जाली सिका निकालना वा
चलना (खी०) । -**प्रतिग्रहण**-पु० जाली सिका
लेना (खी०) । -**छिपि**-खी०-**छेख**, -**छेख**-पु० जाली
दस्तावेज । -**शास्मलि**-पु० शास्मलिका एक भेद, काला
शास्मलि; यमराजकी गदा । -**शासन**-पु० जाली आभा-
पत्र, फरमान । -**साक्षी**(**किन्**)-पु० छूटी गवाही देने-
वाला । -**साक्ष**-पु० छूटी गवाहट । -**स्य**-वि० चोटी-
पर, सबसे ऊपर अवस्थित; जो सदा एक रूपमें स्थित रहे,
अपरिणामी । पु० परमात्मा । -**वर्ण**-पु० खोटा,
नकली सोना ।

कूटक-पु० [सं०] छल, धोखा; उठान; निकला हुआ भाग;
फाल; कबरी; एक गंधद्रव्य ।

कूटकारयान-पु० [सं०] कल्पित, बनावटी कथा ।

कूटन-खी० कूटनेकी क्रिया वा भाव; मारना, पीटना ।

कूटना-स० कि० मूसल-मुँगरोंमें किसी चीजको लगातार
पीटना; सिल-चक्की आदिमें टोंकीसे दाँता निकालना;
मारना-पीटना; बधिया करना । **मु०** कूट-कूटकर
भरा होना- (किसी दोष वा गुणकी) अतिशयता, अत्य-
धिकता होना ।

कूटाक्ष-पु० [सं०] सीसा वा पारा भरा हुआ पासा जो
फँकनेपर किसी खास बलसे ही चित हो; बनावटा हुआ
पासा ।

कूटारयान-पु० [सं०] कूटार्यवाले वापों, वायवोंमें रक्षित
कहानी ।

कूटारार-पु० [सं०] सबसे कपरकी, छपरकी कोठरी;
तहखाना; मानुष बुद्धोंके लिए बना हुआ मंदिर (खी०) ।
कूटायुध-पु० [सं०] छद्म आदिके मातर छिपाया हुआ
हथियार ।

कूटार्थ-पु० [सं०] जल्दी समझमें न आनेवाला गूढ़ अर्थ ।

कूटारपात-पु० [सं०] जमली जानवर फँसानेके लिए
बनाया हुआ गद्दा जो उका हो ।

कूटी-खी० दूती ।

कूह-पु० एक पीपेका बीज जो ज़तादिमें खाया जाता है ।

कूषा-पु० धूँ, राख आदि, नुहारन; रदी, निकम्मी चीजें ।

-**करकट**-पु० रदी, निकम्मी चीजें; कतवार । -**ज्वाभा**-
पु० कूड़ा फँकनेकी जगह ।

कूख-पु० [सं०] दे० 'कूख' ।

कूह-वि० मूर्ख, निरुद्धि । पु० हलका एक भाग, परिहृता;
बीज बीनेका एक तरीका । -**मज्ञ**-वि० मंदबुद्धि, जिसकी
समझमें कुछ न आवे ।

कूणिका-खी० [सं०] बीणा, सितार आदिकी खूँटी सींग ।

कूणित-वि० [सं०] बद्ध, संकुचित ।

कूणितेक्षण-पु० [सं०] बाज ।

कूत-खी० संख्या, माप, तील आदिका मंदाजा, तखमीना ।

कृतना-सं कि० कंठाना, तसवीना करना ।
 कृतनारी-सं कि० नुती तरह मारना; पीटना ।
 कृद-क्री० कृदनेकी क्रिया । -कौद-क्री० उछल-कूद ।
 कृदना-अ० कि० उछलना; ऊँचाई उछलकर नीचे आना;
 इतराना । सं कि० फाँटना, लोपना ।
 कृदर-पु० [सं०] जातिविशेष ।
 कृप-पु० [सं०] कुर्मा; गद्दा; छेद; चमड़ेका बना लेकका
 कुप्पा; नदीके बीचमें अवस्थित वृक्ष वा चट्टान; मस्तूल;
 नाब बाँधनेका खँदा । -कृष्ण-पु०-अ० कुरैया
 कछुआ या मेढक; वह जिसके हानकी सीमा बहुत सकु-
 चित हो । -कार-पु० कुर्मा खोदनेवाला । -कृष्ण-
 यंत्र-पु० पानी निकालनेकी चरखी ।
 कृपक-पु० [सं०] छोटा कुर्मा; कुप्पा; मस्तूल; नाब बाँधने
 का खँदा; चिता; नदीके बीच स्थित चट्टान ।
 कृपन-पु० [अ०] वह टिकट या पुरना जिसे दिखातेसे
 कोई (निर्धन) स्तु मिले; मनोआर्चर तामेका वह भाग
 जिसपर पानेवालेको पत्र लिखा जा सकता है ।
 कृपार-पु० [सं०] वसुध ।
 कृपी-क्री० [सं०] छोटा कुर्मा; कुप्पा; नायिका गदा ।
 कृपुपु-पु० [म०] मृत्राशय, मसाना ।
 कृष-पु० दे० 'कृष' ।
 कृष-पु० पीठकी हड्डीका हम तरह निकल आना कि
 वह टेढ़ी हो जाय ।
 कृषर-पु० [सं०] कुश्का; रथ या गाड़ीका वह बाँस जिसमें
 जूआ बाँधा जाता है, सुग्घर; रथीके बैठनेकी जगह ।
 वि० सुगर; मिय; कृषवाला ।
 कृषरी-क्री० [म०] दे० 'कृषरी' ।
 कृषा-पु० दे० 'कृष'; वह लकड़ी जिसपर भँकेरा रखा
 जाता है ।
 कृम-पु० [म०] झील; माल; तालाब ।
 कृर-वि० निर्धर; कुर; मनहूस; निकम्मा; नालायक;
 कायर; मूर्ख; * मिथ्या । पु० [सं०] भोजन; भात ।
 कृम-पु० दे० 'कृम' ।
 कुरा-पु० डेर; राशि; भाग । वि० कुटिल; खराब ।
 कुरी-क्री० छोटी राशि; * टीला, पुस ।
 कृर्च-पु० [सं०] पला; मुद्दीमर कुश; कूँची; दाढ़ी; मोरका
 पल्ल; धर्प; डोंग; छल; कपट; सिर; नाकका ऊपरी भाग;
 नहर । -कृर्च-पु० जीवक वृक्ष; नारिकेल । -कृषर-
 पु० नारियलका पेड़ ।
 कृर्चक-पु० [सं०] कूँची; शीत साफ करनेका ब्रह्म ।
 कृर्चिका-क्री० [सं०] कूँची; तसवीर बनानेकी कूँची; कुंजी;
 कमी; धर; फटा हुआ दूध ।
 कृर्चन-पु० [सं०] कृदना; खेल-कूद करना ।
 कृर्चनी-क्री० [म०] चैत्रकी पूर्णिमा ।
 कृर्प-पु० [सं०] मौहके बीचका हिस्सा ।
 कृर्पर-पु० [सं०] कुश्नी; कुटना ।
 कृर्पास-पु० [सं०] दे० 'कृर्पास' ।
 कृर्म-पु० [सं०] कछुआ; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे दूसरा,
 कच्छपावतार; वह प्राण वा वायु जिसने पलके सुखी-
 मुँदगी है; एक तंत्रीक मुद्रा । -कृष-पु० एक विद्

तीय । -कृर्च-पु० पुराणानुसार एक खंड वा वर्षका
 नाम । -कृर्च-पु० एक तंत्रीक शुभाशुभ-सूचक चक्र ।
 -कृर्चनी-क्री० पीर-मुद्रा शक्ती । -पुराण-पु०
 अठारह पुराणोंमेंसे एक । -कृर्च-पु० कछुएकी पीठ; बाण-
 पुष्प । -कृर्चा-क्री० तांत्रिकोंकी एक मुद्रा । -राज-
 पु० बहुत बड़ा कछुआ; विष्णुका कूर्मावतार ।
 कूर्मासच-पु० [सं०] इडयोगका एक आसन ।
 कूर्मी-क्री० [सं०] कछुआ; एक प्राचीन राजा ।
 कूर्मकच-वि० [सं०] किनारेकी छूने, किनारेसे टकराने-
 वाला ।
 कूर्मकपा-क्री० [सं०] नदी ।
 कूर्मज-पु० [म०] अंतर्धियाँका दर्द, 'कोलिक' ।
 कृ-पु० [सं०] नदी आदिका किनारा; तट; सामीप्य; दूध;
 तालाब; सेनाका पृष्ठभाग । * अ० पास । -कृ-वि०
 किनारेपर; कछारमें बरनेवाला (हिरन, हाथी आदि) ।
 कृक-पु० [सं०] किनारा; दूध; बाँधी ।
 कृकवती-क्री० [सं०] नदी ।
 कृका-पु० छोटी नहर; दे० 'कृन्हा' ।
 कृलिका-क्री० [सं०] शीणका नीचेका भाग ।
 कृलिनी-क्री० [सं०] नदी ।
 कृलेचर-वि० [सं०] दे० 'कृलेचर' ।
 कृल्हा-पु० बड़ और जाँघका जोड़; कमरके दोनो ओरकी
 हड्डी; कुश्तीका एक पैर । मु०-सरकना-कृल्हेका अपनी
 जगहमें हट जाना ।
 कृल्ह-क्री० [अ०] शक्ति, बल । -[ते]जिसमानी-क्री०
 शरीरकी शक्ति । -बाजू-क्री० बाहुबल । -बाह-क्री०
 रतिशक्ति; बाँध । -कृल्हानी-क्री० आध्यात्मिक शक्ति ।
 -हाजिमा-क्री० पाचनशक्ति ।
 कृर-पु० [सं०] दे० 'कृर' ।
 कृरार-पु० [सं०] दे० 'कृरार' ।
 कृम्पाड-पु० [सं०] कुम्हा; पिशाचोंका एक भेद; एक
 भयकार कृषि ।
 कृम्पाडी-क्री० [सं०] दुर्गा; एक ओषधि ।
 कृम्क-पु० एक तरहकी पास ।
 कृह-क्री० हाथीकी चित्रपाक; चीख ।
 कृहा-क्री० [सं०] कुहरा ।
 कृत्न-पु० [सं०] काटना; कतरना; डुकड़े करना ।
 कृत्नी-क्री० [सं०] काटने, कतरनेका साधन; कैंची ।
 कृक-पु० [सं०] मला । -कृल्ह-पु० गिरसिट; छिपकली ।
 कृकण-पु० [सं०] तीतरकी जातिका एक पक्षी; कृमि ।
 कृकर-पु० [सं०] शिब; शरीरल वायु; कृकण; कनेर ।
 कृकल-पु० [सं०] दे० 'हम्बर' ।
 कृकला-क्री० [सं०] पिप्पली ।
 कृकाटिका-क्री० [सं०] गददनका उठा हुआ भाग; सिर
 और गददनका जोड़ ।
 कृक-वि० [सं०] कष्टमय; कठिन; कष्टसाध्य; दुष्ट; कष्टकर ।
 पु० कष्ट; दुःख; कठिनाई; साततन प्रायश्चित्त, व्रत; पाप;
 मूलकृष्ण रोग । -कृरक-पु० १२ दिनका एक निरा-
 हार व्रत ।
 कृष्णसिंहकृत-पु० [सं०] २१ दिनोंका एक दुग्धाहार व्रत ।

कृत-वि० [सं०] किया हुआ; बनाया हुआ; पकाया हुआ ।
 पु० काम; उपकार; कर्मफल; उद्देश्य; सतयुग; ४ की संख्या;
 पुण; दौब; युद्धमें मिला बन; भेद । —**कर्म**(**मंजु**)-वि०
 जो अपना काम कर चुका हो; दक्ष, कुशल । पु० (कण-
 श्रपते मुक्त) सम्प्राप्ति; परमेश्वर । —**काम**-वि० जिसकी
 कामना पूरी हो गयी हो । —**कारण**-वि० दे० 'कृत-
 कार्य' । —**कार्य**-वि० जो अपना कार्य या अभीष्ट सिद्ध कर
 चुका हो; सफलमनोरथ । —**काल**-वि० अवधि निर्धारित
 कर, नियत कालतक; अध्ययन आदि करनेवाला । पु०
 नियत काल, अवधि । —**दास**-पु० एक नियत समय-
 तकके लिए अपनेको किसीका दास बनानेवाला व्यक्ति ।
 —**कृत्य**-वि० सफलमनोरथ, कृतार्थ । —**कृत्व**-पु०
 करीदार । —**व्य**-वि० नेकी, उपकार न माननेवाला,
 नाशुका । —**धी**-वि० दे० 'कृतघ्न' । —**ज्ञ**-वि०
 नेकी, उपकार माननेवाला, दक्षसानन्द । —**ईश्वर**-पु०
 यमराज । —**दास**-पु० नियत कालके लिए किसीका
 दासत्व या नौकरी करनेवाला । —**धी**-वि० स्थिरचित्त;
 धानी । —**विद्वक्**-वि० कृतघ्न । —**निश्चय**-वि० जिसने
 किसी बातका पक्का इरादा, निश्चय कर लिया हो ।
 —**पुंस्त**-वि० बाणविद्यामें कुशल । —**पूर्व**-वि० पहले
 किया हुआ । —**प्रतिज्ञा**-वि० जिसने कोई प्रतिज्ञा की हो,
 बचनबद्ध । —**फल**-वि० सफल । पु० शीतलजीनी;
 कौलक्षिणी । —**बुद्धि**-वि० दे० 'कृतधी' । —**माल**-पु०
 एक तरहका धिरन; कणिकार हथ, आरम्भ । —**मुख**-
 वि० पणित, विद्वान् । —**युग**-पु० चारों युगोंमेंसे पहला,
 सतयुग । —**योग्य**-वि० दंडमें सम्मिलित होनेवाला ।
 —**रूप**-वि० कृद् । —**लक्षण**-वि० जिसका लक्षण किया
 गया हो; चिह्नित; जो अपने गुणोंसे प्रसिद्ध हो । —**बर्मा**-
 (**मंजु**)-पु० एक दृष्टिबन्धीय महापथी जो महाभारतमें
 दुर्योधनके पक्षमें लड़ा था और अंतमें बचा रह गया ।
 —**विद्वेषणसंज्ञि**-खी० शत्रुपर सधर्मगता दोष सिद्ध
 करनेके सधर्मग करना (खी०) । —**विद्य**-वि० विद्वान् ।
 —**वीर्य**-वि० वीर्यशाली, बली । पु० सहस्राजुनका पिता ।
 —**बुद्धि**-वि० (शब्द) जिसके आदि स्वरकी बुद्धि हुई हो ।
 —**वैतन**-वि० वेतन या उमरत पानेवाला । —**वेदी**(**विद्व**)-
 वि० कुतूह । —**वैद्य**-वि० जो कपड़ा-लगा पहने हो, वस्त्र-
 सज्ज । —**शिव**-वि० किमी शिष्य या धर्मेमें कुशल,
 अभ्यस्त । —**सुख**-वि० जिसकी सुगी चुका दी गयी हो
 (खी०) । —**शीघ्र**-वि० जिसने शारीरिक गदगी, अशुचि
 दूर कर दी हो । —**स्नेहणसंज्ञि**-खी० मित्रोंकी मध्यस्थ
 रखकर की जानेवाली पक्की संधि (खी०) । —**संकल्प**-वि०
 जिसने कोई संकल्प, निश्चय किया हो । —**संज्ञ**-वि० जगा
 हुआ; होशमें आया हुआ; जिसकी बुद्धि पैनी हो ।
 —**संस्कार**-वि० जिसने अपने सारे संस्कार कर लिये हों ।
 —**सपत्निका**—**सापत्निका**—**सापत्नी**-खी० वह खी
 जिसके पतिने उसके जीवित रहते दूसरा विवाह कर लिया
 हो । —**हस्त**—**हस्तक**-वि० कुशल; बाणविद्यामें कुशल ।
कृतक-वि० [सं०] बनाया हुआ, बनावटी; अनित्य
 (न्या०) । पु० खारी नमक । —**पुत्र**-पु० नोद किया
 हुआ पुत्र, दत्तक ।

कृतप्रता-खी० [सं०] अहसान न मानना ।
कृतप्रताई-खी० दे० 'कृतप्रता' ।
कृतार्थ-वि० [सं०] चिह्नित ।
कृतार्थि-वि० [सं०] जो अंजलि जोषे या रोपे हुए हो ।
 खी० लाजवंती ।
कृतार्थ-वि० [सं०] अंत या निश्चय करनेवाला । पु० बस;
 सिद्धांत; पूर्व जन्ममें किये हुए शुभाशुभ कर्म जिनका फल
 इस जन्ममें प्राप्त हो; शान्ति; शानिहार ।
कृताकृत-वि० [सं०] किया और न किया हुआ; अंशतः किया
 हुआ ।
कृतागम-वि० [सं०] योग्य, कुशल । पु० परमात्मा ।
कृता मा(**मंजु**)-वि० [सं०] संस्कृत मन्त्रवाला, शुद्धचित्त ।
कृताव्यय-पु० [सं०] भोग द्वारा कर्ममाश्र (सां०) ।
कृताव्य-पु० [सं०] पकाया हुआ अन्न ।
कृतापराध-वि० [सं०] अपराधी ।
कृताभय-वि० [सं०] खतरोंमें बचाया हुआ ।
कृताभिषेक-वि० [सं०] अभिषिक्त, सिंहासनासीन । पु०
 राजा ।
कृतार्थ-वि० [सं०] कृतकार्य, सफलमनोरथ, संतुष्ट ।
कृतालक्ष-वि० [सं०] जो कहीं बस गया हो । पु० मेढक ।
कृतावधि-वि० [सं०] जिसकी अवधि, सीमा नियत हो ।
कृताव्य-वि० [सं०] अक्ष-सज्ज; अक्ष-प्रयोग, बाण-विद्यामें
 कुशल ।
कृताह्वान-वि० [सं०] जो पुकारा या ललकारा गया हो ।
कृति-खी० [सं०] किया; काम; रचना; रची, बनायी हुई
 वस्तु; जादू; अभिचार; जादूगरनी; दो समान अंकोंका
 घात (ग०); कैची; २०की सख्या; बध; छुरी । —**कर**-
 पु० राखन ।
कृती(**तिवृ**)-वि० [सं०] कृतकार्य; भाग्यवान्; जिसने
 अच्छे काम किये हों, पुण्यवान्; कुशल; आशाकारी ।
कृतीद्वक्-वि० [सं०] ज्ञात ।
कृतीद्वह-वि० [सं०] विवाहित ।
कृत्-पु० [सं०] धातुमें लगकर संज्ञा और विशेषण बनाने-
 वाले प्रत्ययोंका एक वर्ग । वि० करने, बनानेवाला; कर्ता
 (केवल कर्तृवाचक संज्ञा बनानेमें व्यवहृत—जैसे 'प्रयुक्त',
 'पुण्यकृत') ।
कृत्-वि० [सं०] कटा हुआ, विभक्त; अमिलपित ।
कृत्ति-खी० [सं०] स्नातक; सुगम्य; भोजनपत्र; कृतिका
 नक्षत्र । —**बास**—**बासा**(**सर्व**)-पु० शिष्य ।
कृतिका-खी० [सं०] २० नक्षत्रोंमेंसे तीसरा ।
कृत्-वि० [सं०] करने योग्य, कर्तव्य । पु० कर्तव्य कर्म;
 शास्त्रविहित कर्म (पूजन, हवन आदि); काम; तन्त्र, अनौप
 आदि प्रत्यय (न्या०) ।
कृत्तका-खी० [सं०] जादूगरनी ।
कृत्ता-खी० [सं०] काम; अभिचार; जादूगरनी; एक शक्ति
 या देवी जो अभिचार द्वारा किसीको मारनेके लिए अनु-
 हानविशेषसे उत्पन्न की जाती है; कर्तेशा खी० । —**वृषण**-
 पु० कृत्तके प्रतिकारके लिए किया जानेवाला एक विशेष
 कृत्य ।
कृत्तकृत्य-पु० [सं०] कर्तव्यकर्म ।

कृत्रिम-वि० [सं०] बनाया हुआ, बनावटी; गीद लिया हुआ। पु० माँ-बापकी सहमतिसे बिना गीद लिया हुआ पुत्र; पुत्रवत् पाकित अनाथ बालक; काका नमक रसीत; कोबान १-भूप पु० दशांग या सोढसांग बृष।-पुत्र-पु० माँ बापकी सहमतिसे बिना गीद लिया हुआ पुत्र।-पुत्रक-पु० पुत्र।-भूमि-स्त्री० मकानकी कुरसी।-मित्र-पु० वह मित्र जिससे साथ उपकारके कारण मित्रता हुई हो।-रख-पु० नकली या बनावटी रख।-बब-पु० उधान, बनीका।

कृत्रिमारिक्कृति-पु० [सं०] वह विजित राजा जो जीतने वाले राजाके विरुद्ध दूसरोंको उमाकता हो।

कृत्स्न-पु० [सं०] जल; समुद्राद्य; पाप।

कृच्छ-वि० [सं०] संपूर्ण। पु० जल; कुक्षि, पेट।

कृद्ध-पु० [सं०] धातुमें कृद प्रत्यय लगानेसे बना हुआ शब्द।

कृप-पु० [सं०] दे० 'कृपाचार्य'; एक राजर्षि।

कृपण-वि० [सं०] सूत, कंजूस; दीन; नीच; धृद; विवेकहीन। पु० कंजूस आदमी; कोड़ा।-धी-धुद्धि-वि० छोटे दिलका, धुद्धाशय।-बल्लस-वि० दीनोंपर दया करनेवाला।

कृपणता-स्त्री० [सं०] कंजूनी; दैन्य।

कृपणी(गिद्ध)-वि० [सं०] दुःखी; दीन।

कृपण-वि०, पु० दे० 'कृपण'।

कृपणाई-स्त्री० दे० 'कृपणता'।

कृपण-म० [सं०] कृपापूर्वक, कृपा करके।

कृपा-स्त्री० [सं०] प्रत्युपकारकी अपेक्षा न रखते हुए पर-दुःखनिवारणकी इच्छा, अनुग्रह, दया।-दृष्टि-स्त्री० मेहरबानीकी निगाह, कृपाभाव।-पात्र-वि० जो कृपाके योग्य हो, अनुग्रहमात्र।-सिद्धि-वि० कृपाके समुद्र (मगवान्)।

कृपाचार्य-पु० [सं०] अप्रथमामाके मामा और कौरवपक्षके एक महारथी।

कृपाण-पु० [सं०] तलवार; सुरी; कटारी; एक दंढक वृक्ष।

कृपाणक-पु० [सं०] तलवार।

कृपाणिद्रा-स्त्री० [सं०] छोटी तलवार; कटारी।

कृपाणी-स्त्री० [सं०] छोटी तलवार; कटार, कतरनी; सुरी।

कृपाल-वि० दे० 'कृपाल'।

कृपालु-वि० [सं०] कृपायुक्त, दयालु।

कृपिन-वि०, पु० दे० 'कृपण'।

कृपिनाई-स्त्री० कृपणता।

कृपी-स्त्री० [सं०] कृपाचार्यकी रहन और द्रोणाचार्यकी पत्नी।-सुत-पु० अप्रथमामा।

कृमि-पु० [सं०] कीड़ा; मकड़ा; चोंटी; ठास।-कंकट-पु० विडग; चित्रांग; उडुवर।-कर-पु० एक विषैला कीड़ा।

कर्ण-कर्णक-पु० कानका एक रोग।-कोष्ठ-वि०

कोष्ठ-पु० रेशमके कीड़ेका कोया, क्यूना।-झ-वि० कीड़ेका नाश करनेवाला।-झी-स्त्री० हल्दी।-ज-वि०

कीड़ोंसे उपपन्न। पु० रेशम; अगर।-जा-स्त्री० ठास।-ईतक-पु० कीड़ोंके कारण होनेवाला दैनिका रोग; दर्द।-पर्वत-स्त्री० बंसी, बमौटा।-कल-

पु० गूलर।-ओजण-पु० एक नरक।-रिपु-स्त्री०-सन्तु-पु० विडग।-रोग-पु० आँतोंमें कीड़े या केंचुए पैदा हो जाना।-ख-वि० दे० 'कृमिण'।-छा-स्त्री० वह स्त्री जिसके बहुत बच्चे हों, बहुमसला नारी।-वर्ण-पु० लाल कपड़ा।-झुकि-स्त्री० लीपी।

कृमिक-पु० [सं०] छोटा कीड़ा।

कृमिण-वि० [सं०] जिसमें कीड़े हों, कृमियुक्त।

कृमीलक-पु० [सं०] जगली मूंग।

कृष्ण-वि० [सं०] दुबला, कमजोर; घोड़ा; अकिंचन।-कृद-पु० एक पक्षी।-नास-पु० शिव।-भृत्त्व-वि० नौकरोंको कम खिला देनेवाला।

कृषाता-स्त्री० [सं०] दुबलापन।

कृषताई-स्त्री० दे० 'कृषता'।

कृसर-पु० [सं०] तिल-चावलकी खिचड़ी; खिचड़ी।

कृसराज-पु० [सं०] खिचड़ी।

कृसला-स्त्री० [सं०] सिरके बाल, केश।

कृसांग-वि० [सं०] दुबला। पु० शिव।

कृसांगी-स्त्री० [सं०] दुबली-पतली स्त्री; प्रियंगु लता।

कृशाक्ष-पु० [सं०] मकड़ा।

कृशानु-पु० [सं०] अधि; चित्रक।-रेता(तस्)-पु० शिव।

कृशाच-पु० [सं०] तृणविद्-वंशका एक राजर्षि।

कृशाची(विद्ध)-पु० [सं०] नट, नाट्य करनेवाला।

कृशित-वि० [सं०] क्षीणकाय, दुबला-पतला।

कृशोदरी-वि०, स्त्री० [सं०] पतली कमरवाली (स्त्री)। स्त्री० अनतमूल।

कृषक-पु० [सं०] हल जोतनेवाला; किसान; बैल; फाल। वि० खींचनेवाला।

कृषाण-पु० [सं०] किसान, खेतिहर।

कृषि-स्त्री० [सं०] जोतना-बीना, खेती; जमीन जोतना।

-कर्म(र्)-पु० खेतीका काम।-कार-पु० कृषक।

-जीवी(विद्ध)-वि० खेतीसे निर्वाह करनेवाला (किसान)।

कृषिक-पु० [सं०] कृषक।

कृषी-स्त्री० [सं०] खेत; * खेती, कृषि।

कृषीबल-पु० [सं०] किसान, खेतिहर।

कृष्कर-पु० [सं०] शिव।

कृष्ट-वि० [सं०] खींचा हुआ; जोया हुआ।-पच्य-पाच्य-वि० खेतमें पकनेवाला।-फल-पु० किसी फसलकी उपज।

कृष्टि-स्त्री० [सं०] अकृष्ट करना, खींचना; जोतना। पु० विद्वान् व्यक्ति।

कृष्टोत्त-वि० [सं०] जोती-बोयी हुई (जमीन)।

कृष्य-वि० [सं०] काला, दयाम; भूर; नीला; कुम्भित या पापकर्म करनेवाला, दृष्ट। पु० काला या गहरा नीला रंग; गदुबंशी बसनेवाला और देवकीके पुत्र जो विष्णुके आठवें अवतार माने जाते हैं; परब्रह्म; काला हिरन; कौआ; कोकिल; अशुभ या पापकर्म; अंधेरा पाख; कलियुग; वेदव्यास; अर्जुन; काला अगर; काली मिर्च; लोहा; सुरमा; करीना; एक मंत्रकार जाति; दूतसे प्राप्त धन।-कंद-पु० लाल कमल।-कर्म(र्)-पु० काली करतूत, पापकर्म।

-कर्म(मन्)-वि० पापकर्म करनेवाला।-कान-वि० काले रंगवाला। पु० मैसा।-काह-पु० काका अगर।-केलि-खी० गुलाबस।-कोइल-पु० जुआरी।-मंशा-खी० कृष्णा नदी।-शंखा-खी० शोभावन, सज्जन।-शशि-पु० माघ।-शर्भ-पु० कायफल।-गिरि-पु० नीलगिरि।-गोधा-खी० एक विहरी का कीरा।-चंद्र-पु० वासुदेव।-वृषा-वृषिका-खी० घुँघरी।-वृष-पु० लोहेका मल।-वैतम्ब-पु० वैतन्य महाप्रभु।-पञ्चवि-खी० काले मृगका चमड़ा।-अट्टा-खी० अटमासी।-खीरक-पु० स्वाह जीरा।-ताम्र-पु० एक तरहका चंदन।-तार-पु० एक तरहका हिरन।-वैह-वि० कृष्णकाय। पु० और।-हैपाचय-पु० महाभारत और पुराणोंके रचयिता वेदव्यास।-अन-पु० जुए आदिसे कमाया हुआ धन, पापकी कमाई।-पक्ष-पु० अंधेरा पास; अर्जुन।-पर्णी-मल्लिका-खी० काली पत्तियोंवाली तुलसी।-पवि-पु० अग्नि।-पाक-पु० करौदा।-पिंगला-खी० दुर्गा।-पुच्छ-पु० रोहू मछली।-पुष्प-पु० काका पट्टा।-फल-पु० करौदा।-फला-खी० मिचंकी लता; एक जामुन।-बीज-पु० तरबूज।-भक्ष-पु० कृष्णका भस्म, उपासक।-भुजंग-पु० करैत साँप।-भूम-पु० काली मिट्टीवाली जमीन।-भेरा-खी० कुटकी।-मंदक-पु० मीछका काका भाग।-मुल्ल-बक्कू-बदन-वि० काले मुँहवाला। पु० लँगूर; एक दानव।-मृग-पु० काका या काले भस्मवाला हिरन।-यजुर्वेद-पु० यजुर्वेदके दो भेदोंमें एक।-याम-पु० अग्नि।-रक्त-पु० गहरा लाल रंग। वि० गहरे लाल रंगका।-रुद्रा-बलिङ्गा-खी० एक पौधा, जतुका।-लखन-पु० काला नमक।-खोह-पु० चुनक।-बेणी-खी० कृष्णा नदी।-सत्ता-सारथि-पु० अर्जुन।-सार-पु० कृष्ण मृग। भूहक; शीशम; खैरका पेड़।-स्कंद-पु० तमाल वृक्ष।
कृष्ण-पु० [सं०] काले मृगका चर्म; काली सरसों।
कृष्ण-पु०, कृष्णला-खी० [सं०] गुआ।
कृष्णा-खी० [सं०] द्रोपदी; दक्षिण भारतकी एक नदी, कृष्णगंगा; काली दास; दुर्गा; काली पत्तियोंवाली तुलसी; पिप्पली; काला जीरा; कुटकी; राई; अमिकी ७ जिह्वाओं मेंसे एक; एक तरहकी जींस; एक गंधर्व।
कृष्णाचल-पु० [सं०] देवनक पर्वत; नीलगिरि।
कृष्णाजिन-पु० [सं०] काले मृगका चर्म।
कृष्णाभिसारिका-खी० [सं०] अंधेरी रातमें अभिसार करनेवाली नायिका।
कृष्णाचय-पु० [सं०] लोहा।
कृष्णार्जव-पु० [सं०] सुप्रमत्तक, गरज, जंगली बर्बरी।
कृष्णावास-पु० [सं०] अवश्य वृक्ष।
कृष्णादमी-खी० [सं०] माद्र-कृष्णा अट्मी, कृष्णकी जन्म-तिथि, जन्माष्टमी।
कृष्णिका-खी० [सं०] काली सरसों; हयमा पक्षी।
कृष्णिमा(मन्)-खी० [सं०] कालिमा।
कृष्णी-खी० [सं०] अंधेरी रात।

कृष्णोदर-पु० [सं०] एक तरहका साँप।
कृष्णोदुंबरक-पु०, कृष्णोदुंबरिका, कृष्णोदुंबरी-खी० [सं०] कठगूर।
कृष्ण-वि० [सं०] सेती करने योग्य (भूमि)।
कृसर-पु० [सं०] दे० 'कृश'।
कृश-खी० कुत्तेके पिछेकी आवाज। मु०-करना-पिछेकी तरह चीखना।
केंचुआ, केंचुआ-पु० एक बरसाती कीड़ा जिसकी देह बिना हड्डीकी और लगभग एक चिरा लंबी होती है; आँतोंमें पैदा हो जाने और मलके साथ बाहर आनेवाला कीड़ा।
-छंद्-पु० वह छंद जिसके चरणोंकी मात्राएँ बराबर न हों, रबर छंद।
केंचुल-खी० दे० 'केंचुली'।
केंचुली-खी० साँपकी त्वचा जो जाड़ेमें झुलकर अपने आप खोलकी शकमें गिर जाती है। वि० केंचुल-जैसा।-लचका-पु० एक तरहका लचका जो खींचनेसे बढ़ता है। मु०-झाड़ना-साँपका केंचुली छोड़ना।-बदलना-केंचुली झाड़ना; वेशभूषा बदलना।
केंता-पु० एक तरहका बैत।
केंदु-पु० [सं०] तेंदुका पेड़।
केंदुक-पु० [सं०] गालव वृक्ष, एक तरहका तेंदु; एक माप।
केंदू-पु० दे० 'केंदु'।
केंद्र-पु० [सं०] वृत्तका मध्य बिंदु, नाभि; मध्यवर्ती स्थान; मुख्य स्थान; किसी वस्तुके उत्पादन, वितरण, प्रसारका स्थान, 'सेटर'; जन्मकुंडलीमें लग्नमें पड़ना, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान।-ग,-शामी(मिद्)-वि० केंद्रकी ओर जानेवाला।-ख-वि० केंद्रमें स्थित।-स्थान-पु० केंद्ररूप स्थान।
केंद्रापारी(रिन्)-वि० [सं०] केंद्रसे दूर जानेकी प्रवृत्तिवाला।
केंद्रामिधुव-वि० [सं०] केंद्रकी ओर जानेकी प्रवृत्तिवाला।
केंद्रामिारी(रिन्)-वि० [सं०] केंद्रकी ओर जानेवाला।
केंद्रित-वि० [सं०] केंद्रमें स्थित; स्थानविशेषमें एकजुट।
केंद्री(त्रिन्)-वि० [सं०] केंद्रमें स्थित।
केंद्रीकरण-पु० [सं०] केंद्रित करना, एक जगह लाना; जमा करना; एक हाथमें, एक व्यवस्थामें लाना।
केंद्रीभूत-वि० [सं०] 'केंद्रित'।
केंद्रीय-वि० [सं०] केंद्र-सम्बन्धी; केंद्रमें स्थित; मुख्य।
के-पु० 'का' विभक्तिका बहु०। † सर्व० कौन।
केडा-सर्व० कौन; कोई।
केइटा-पु० करैत साँप।
केइर-पु० दे० 'केयूर'।
केइ-मर्व० कोई। वि० कई।
केइरा-पु० एक गोलकार क्षुद्र जलजंतु जिसके आठ टाँगें होती हैं।-(हे) की चाल-टेढ़ी-तिरछी चाल।
केइव-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, आधुनिक कक्षा (कसीर); उम देशका निवासी।
केइवी-खी० [सं०] केइव देशकी खी; दशरथकी पत्नी और भरतकी माता।
केइर-वि० [सं०] देवाता। पु० मेरी या ऐंकी लौंस।

केका-खी [सं०] मोरकी बोली ।
 केकाबल, केकिङ, केकी (किङ्) -पु० [सं०] वीर ।
 केचिर्-सवं [सं०] कोई, कोई-कोई ।
 केका-पु० कोंपल, कला; नवयुवक (का०) ।
 केकिङ-खी [सं०] खेमा; तंदू ।
 केत-पु० [सं०] घर; स्थान; बसना; पताका; संकल्प;
 मंत्रणा; शुद्धि; निमंत्रण; धन, संपत्ति; आकाश, विवेक;
 *केतकी ।
 केतक-पु० [सं०] केवडा; केवडेका फूल; पताका । * वि०
 कितना; बहुत ।
 केतकी-खी [सं०] एक फूल, केवडा ।
 केतन-पु० [सं०] घर; स्थान; निमंत्रण; पताका; परिचायक
 चिह्न; धम्मा, चिह्न ।
 केतकी-खी [अ० 'केटिल'] टोंटी और दस्तेदार बरतन
 जिसमें पानी गरम करते हैं ।
 केता, केसिक-वि० कितना । अ० कितना ही ।
 केतित-वि० [सं०] आमंत्रित, आहूत; बसा हुआ ।
 केतु-पु० [सं०] पताका; चिह्न, सौरमण्डलका नवौं ग्रह जो
 पुराणोंके अनुसार सैहिकेय राक्षसका कवच है और जिसका
 सिर राहु हुआ; पुच्छल तारा; श्रेष्ठ; सर्वोच्च स्थानका
 अधिकारी पुरुष ('रघुकुलकेतु'); चमक; किरण; दिनका
 समय; विवेक; बौनोंकी एक जाति; एक रोग; शत्रु ।
 -कुंडली-खी १२ खानोंका एक चक्र जिसमें ज्योतिषी
 वर्षविशेषके स्वामीका पता लगाते हैं । -तारा-पु० पुच्छल
 तारा । -पताका-खी वर्षा निकालनेका नौ कोठीका
 एक चक्र (ज्यो०) । -माल, -मालक-पु० जड़ोपका
 एक मंड । -घटि-खी ध्वजदंड । -हन-पु० लह-
 सुनिया । -वसन-प० धना, पताका ।
 केमुमान् (अन्) -वि० [सं०] ध्वजयुक्त; चिह्नयुक्त; तेजस्वी ।
 पु० काशिराज विनोदसके बंशका एक राजा ।
 केतो-वि० 'कितना' । अ० कितना ही ।
 केद्र-वि० [सं०] देवताता । पु० एक गैधा ।
 केद्वी-खी दे० 'कदली' ।
 केदार-पु० [सं०] धानका खेत; कियारी; बाला; हिमालय-
 की एक चोटी; एक शिवलिंग; एक राग । -खंड-पु०
 स्कंद-पुराणका एक खंड जिसमें केदारनाथका माहात्म्य
 वर्णित है; पानीका आना रोकनेके लिए बना हुआ बांध ।
 -गंगा-खी गङ्गबालकी एक नदी । -नट-पु० एक
 संसार राग । -नाथ-पु० केदार पर्वतपर प्रतिष्ठित एक
 शिवलिंग ।
 केदारा-पु० एक राग ।
 केदारी-खी दीपक रागकी एक रागिनी ।
 केन-खी बौदा जिलेकी एक नदी जो यमुनामें गिरती
 है । पु० [सं०] ११ प्रधान उपनिषदोंमेंसे एक ।
 केना-पु० अनाज देकर खरीदी जानेवाली चीज (साग,
 भाजी आदि); † एक धाम ।
 केनार-पु० [सं०] मित्र; कणिक; जोड़; कुंभीपाक नरक ।
 केनिपात, केनिपातक, केनिपास-पु० [सं०] शक्ति,
 अतिशय ।
 केम, केम-पु० कंद ।

केमकुम-पु० [सं०] चंद्रमाका एक योग (ज्यो०) ।
 केमुक-पु० [सं०] बटा ।
 केयूर-पु० [मं०] विनायक, मुनबंध; एक रतिबंध ।
 केयूरी (रिङ्) -वि० [सं०] केयूरी ।
 केर-प्र० का; के । पु० केला ।
 केरक-पु० [सं०] महाभारतमें उल्लिखित, एक जनपद,
 केरल ।
 केरल-पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक जनपद या प्रदेश,
 आधुनिक मलबार; केरलवासी ।
 केरली-खी [सं०] केरल देशकी स्त्री ।
 केरा-पु० केला ।
 केराना-पु० दे० 'किराना' ।
 केरावा-पु० दे० 'किरावा' ।
 केरावा-पु० मटरकी जातिका एक कदम, कलाय ।
 केरि-प्र० की । खी० केलि ।
 केरी-प्र० की ।
 केरोसिन-पु० [मं०] मिट्टीका तेल ।
 केरुङ-पु० [सं०] तलवारकी धारपर नाचनेवाला ।
 केला-पु० एक प्रसिद्ध फलवृक्ष, करली; उसका फल;
 * केलि, क्रीडा ।
 केलास-पु० [सं०] स्फटिक ।
 केलि-खी [सं०] क्रीडा; कामक्रीडा, रति; हँसी-मजाक;
 धरती । -कला-खी० केलि-कुशलता; कामकला; सर-
 स्वतीकी बीणा । -किल-पु० विदूषक (ना०) । -किला,
 -किलावती-खी० कामदेवकी स्त्री, रति । -कीर्ण-पु०
 ऊंट । -कुंषिका-खी० पक्षीकी छोटी बहन । -कोच-
 पु० नट, नर्तक । -गृह, -निकेतन, -मंदिर, -खवन-
 पु० रतिगृह; क्रीडागृह । -पर-वि० क्रीडाप्रिय ।
 -पल्लव-पु० जलक्रीडाका तालाब । -सुख-पु०
 मजाक, हँसी । -रंग-पु० क्रीडास्थान । -वृक्ष-पु०
 एक तरहका कंद । -सचिव-पु० नायकको कामक्रीडा-
 के विषयमें सलाह देनेवाला, नर्मसचिव ।
 केलिङ-पु० [सं०] अशोक वृक्ष ।
 केली†-खी० एक तरहका केला; [मं०] क्रीडा; काम-
 क्रीडा । -पिक-पु० मनोरंजनके लिए पाली गयी
 कीयल । -बनी-खी० प्रमोदोद्यान । -खुल-पु० मनो-
 रंजनके लिए पाला गया तोता ।
 केव-पु० एक पहाड़ी वृक्ष ।
 केवका-पु० प्रसूताकी दिया जानेवाला मसाला ।
 केवट-पु० केवर्त, महाह ।
 केवटी-खी० दो या अधिक प्रकारकी दाँतें मिलाकर पकायी
 हुई दाँत ।
 केवडई-पु० एक तरहका रंग जो केवड़ेके रंगसे मिलता
 है । वि० केवड़ेके रंगका ।
 केवडा-पु० एक छोटा वृक्ष जिसका फूल अपनी सुगंधके लिए
 प्रसिद्ध है, सफेद केतकी; उसका फूल; केवड़ेके फूलका अर्क ।
 केवडा†-पु० दे० 'केवडा' ।
 केवल-वि० [सं०] असंग, अकेला; संपूर्ण; शुद्ध; अमिश्र ।
 अ० सिर्फ, मात्र । -व्यक्तिरेकी (किन्) -पु० अनुमानका
 एक नेट, क्षेत्रवत् । वि० पार्थक्यसे संबंध रखनेवाला (न्या०) ।

केवला जा(अन्)-पु० [सं०] हेम्बर; शुद्ध स्वभाववाला मनुष्य।

केवलान्वयी(विन्)-पु० [सं०] अनुमानका एक भेद, पूर्ववत्।

केवली(विन्)-पु० [सं०] केवल ज्ञानवाला, मुक्तिका अधिकारी साधु।

केवौव-खी० दे० 'कौव'।

केवा-पु० कमल-भोर खोज जस पावे केवा-पं०; बहाना; सकोच।

केवा-पु० दे० 'किराव'।

केश-पु० [सं०] सिरके बाल; बाल; घोरे या सिंहकी गर्दनपरके बाल; किरण; एक गंधद्रव्य; विष्णु; वरुण।

-कर्तनालय-पु० (हेयर कटिंग हाउस) सिरके बाल कटवानेकी दुकान।-कर्म(व)-पु० बाल मेवारना, कंधी-बोटी।-कलाप-पु० केश-राशि।-कीट-पु० जूँ।

-गर्म-पु० बरुण; कवरी।-घ्न-पु० गंजापन।-पर्णी-खी० अगमार्ग।-पाश-पु० केशसमूह; लटकती हुई लटे, लट्ठोंका फर; केशरूपी पाश।-प्रसाधनी-खी०-मार्जक-पु० कंधी।-बंघ-पु० जूना बंधनेका फोता आदि; नृत्यका एक दस्तक।-मधनी,-हंथी-खी० शमी वृक्ष।-मार्जन-पु० बालोंकी मलना, साफ करना; कंधी।-रंजन-पु० मेवरा।-रचना-खी० बालोंको सवारना, मॉग-पट्टी।-राज-पु० भंगरा।

-रूपा-खी० पेझका बौदा।-सुंघक-पु० जैन साधु।-वपन-पु० बाल कटवाना या सुंघवाना।-विन्यास-पु० मॉग-पट्टी।-बेस-पु० कवरी-वधन।-बेष्ट-पु० केश-विन्यास; सीमत।

केशक-वि० [सं०] बालोंकी सवारने, केशरचनामें कुशल; बालोंपर विशेष रूपसे ध्यान देनेवाला।

केशट-पु० [मं०] बकरा; खटमल; जूँ; कामदेवका एक-बाण; विष्णु; टेंदू।

केशर-पु० [सं०] दे० 'केसर'।

केशव-पु० [सं०] विष्णु; परमेश्वर; विष्णुकी एक मूर्ति; हिंदीके एक सुप्रसिद्ध कवि। वि० सुंदर बालोंवाला।

केशवावुध-पु० [सं०] विष्णुका अस्त्र; आभूषण।

केशवालय, केशवावास-पु० [सं०] अश्वत्थ वृक्ष।

केशाव-पु० [सं०] १६ संस्कारोंमेंसे एक जो उपनयन और समावर्तनके अन्तर्गत् होता है; मुंडन; बालका सिर।

केशाकेशि-खी० [मं०] दो आदमियोंका हागड़ेमें एक-दूसरेके सिरके बाल एक-दूसरे खींचना, नीचना।

केशि-पु० [सं०] एक अक्षर जिसे कृष्णने मारा था।

केशि-वि० [मं०] सुंदर बालोंवाला।

केशिका-खी० [सं०] धमनी आदिसे निकलनेवाली सूक्ष्म-नलिकाएँ; सतावरी।

केशिनी-खी० [सं०] सुंदर बालोंवाली स्त्री; रावणकी माता कैकेयी; एक अप्सरा; दमयन्तीकी दूती जो नलके पास उसका स्नेह ले ययी थी; ब्रह्मास्त्री; दुर्गा।

केशी-खी० [सं०] नौदी; दुर्गा; अजलोमा; नीली, भूतकेसी।

केशी(विन्)-पु० [सं०] सिंह; घोडा; कृष्ण; कृष्णके हाथों मारा गया एक अश्वरूप दानव; केवौव; सुंदर बालोंवाला

व्यक्ति। वि० सुंदर घने बालोंवाला।

केस-पु० बाल; [अ०] खाना; वस्त्र; मामला, मुकदमा; लकड़ीकी खानेदार किस्ती जिसमें छापके दाहप रले जाते हैं; रोग, आघात आदिकी घटना।

केसर-पु० [सं०] फूलके बीचका सीका या रेशा; बाल; एक विशेष फूलका सीका जो पीलापन लिये लाल रंगका और सुगंधयुक्त होता है, कुमकुम, नाफरान; सिंह या घोड़ेकी गर्दनपरका बाल, अयाल; नागकेसर; मौलसिरी; पुष्पाग; सीना; कसीस।

केसराचल-पु० [मं०] मेरु पर्वत।

केसराम्ब-पु० [सं०] विजौरा नीचू।

केसरि-पु० [सं०] हनुमान्के पिता।

केसरिका-खी० [सं०] सहदेई लता।

केसरिया-वि० केसरके रंगका; केसरमें रंगा हुआ; केसर मिला हुआ। पु० केसरका रंग; केसर जैसा रंग।

केसरी(विन्)-पु० [सं०] सिंह; घोडा; पुष्पाग; विजौरा नीचू; नागकेसर; हनुमान्के पिता। वि० सिंह जैसा पराक्रमी (समासोत्तम-जैसे महाराष्ट्रकेसरी, पंजाबकेसरी इत्यादि)।-(रि)किशोर-पु० सिंहशावक; हनुमान्।

-सनय, -नंदन, -सुत-पु० हनुमान्।

केसारी-खी० मटरकी जातिका एक मोटा अन्न।

केसू-पु० देस, पलासका फूल।

केहरि-पु० केसरी।-नहा-पु० वधनहा।

केहरी-पु० दे० 'केसरी'।

केहा-पु० मोर; नीलर जैसा एक पक्षी।

केहि-वि० किम। मर्व० किमे।

केहुनी-खी० दे० 'कृष्नी'।

केहू, केहू-अ० किमी तरह।

कैकर्य-पु० [सं०] नासब, मेवा-टहल।

कैका-पु० बकी कैनी। वि० पैका-नाना।

कैली-खी० [सं०] कानरनी; दो लकड़ियों जो कैलीकी शकलमें बंधी या जड़ी हों; कुश्नीका एक पैच; मालत्वभकी एक कमरत।-का जैंगला-लकड़ीकी तीक्ष्णियों या मलाखोंको नीचे-ऊपर तिरछे रखकर बनाया हुआ जैंगला।

मु०-करना-कैलीमें काटना।-बाँधना-रानोमें बंधाना।

कैका-पु० खाका उतारनेका आला; पैमाना; मोटा अंदाजा; रंग; रौंचा; बालकी। मु०-खेना-खाका उतारना।

कैप-पु० [अ०] सेनाका पड़ाव, शिविर; खेमों, क्षीपकों आदिका बना अस्थायी निवास।

कै-वि० कितने। अ० या, अथवा; * मे, द्वारा-'दंष्टि-सुजान फूली कै फलित सदा'-घन०। प्र०की (संबंध-कारक)।

कै-खी० [अ०] उलटी, वमन।

कैकय-पु० [मं०] कैकय-नरेश।

कैकस-पु० [सं०] राक्षस।

कैकसी-खी० [सं०] रावणकी माता।

कैकेय-पु० [सं०] कैकय-नरेशके बंशज।

कैकेयी-खी० [मं०] कैकय-नरेशकी बेटी, भरतकी माता।

कैट-वि० [सं०] कीट-संबंधी।

कैदम-पु० [सं०] विष्णुके हाथों मारा गया एक दैत्य, मयुका छोटा भाई । -**खिल**,-**रिपु**-पु० विष्णु ।

कैदभा, **कैदमी**-**खी** [सं०] दुर्गा ।

कैदभारि-पु० [सं०] विष्णु ।

कैतक-पु० [सं०] कैतकका पुष्प । वि० कैतकसे प्राप्त या सज्ज रखनेवाला ।

कैतब-पु० [सं०] पोखा, छल; ठगी; जुगा; पण; बहस-निया; भयुर । -**ब्रचोष**-पु० ठगी; धोखेवाजी ।

कैतबक-पु० [सं०] जुयकी धोखेवाजी ।

कैतवापहनुति-**खी** [सं०] अपहनुति अलंकारका एक भेद जिसमें बार्थ बातका निषेध प्रत्यक्ष रूपसे न किया जाकर मिस, ब्याज आदि शब्दों द्वारा किया जाता है ।

कैतव-पु० [पु०] जरी और रेशमकी बटी हुई छोटी जिते कपड़ेके हाथियार लगाते हैं ।

कैब-पु० एक फल-वृक्ष; उसका फल, कपित्थ ।

कैभा-पु० कैव ।

कैयी-**खी** नामकी लिपिका एक भेद जिसमें कुछ अक्षर कम हैं और उनपर शिरोरेखा नहीं होती; छोटी जातिका कैव ।

कैय-**खी** [अ०] रथन; कारावास; बर्त, प्रतिबंध । -**छाना** पु० बंदीगृह, जेलखाना । -**सनहाई**-**खी** कैदीको अकेला बंद रखने, कालकोठरीकी सजा । -**महज**-**खी** सारी कैद । -**खलत**-**खी** कड़ी कैद ।

कैयक-**खी** कामच रखनेका एक तरहका कामका बंद ।

कैयार-वि० [सं०] ब्यापारीमें उपजा हुआ । पु० धान; क्षेत्र-समूह ।

कैयी-वि० पु० [फा०] रेंपुआ; बंदी, कैदीकी सजा भोगनेवाला ।

कैय-अ० कदाचित् ।

कैयी-अ० या, वा, किथी ।

कैय-वि० [म०] विव्रत मधुषी ।

कैय-पु० [अ०] नडा; मस्ती; लुत्क, आनंद ।

कैक्रियत, **कैक्रीयत**-**खी** [अ०] झल, समाचार; विवरण; लुत्क, आनंद । -**का छाना**-बह खाना जिसमें विवरण-लेखक अपनी राय, घटनाविशेषका कारण इत्यादि लिखता है । **मु०**-**सलब करना**-जवाब माँगना; कारण पूछना ।

कैक्री-वि० [अ०] नशेमें चूर, मस्त ।

कैबर-**खी** तीरकी गौनी ।

कैबा-अ० कई बार -**कैसा** आबत यह गली रहे चलाव चले न'-वि० ।

कैबाह-पु० किवाड़ ।

कैविनेट-पु० [अ०] छोटा, साइज लोगोंने मिलनेका कमरा; मन्त्रागृह, मंत्रिमण्डल; खानेवार अलमारी । -**फोटोग्राफ**-पु० फोटोका वह आकार जो कार्ड साइजका दूना होता है ।

कैभा-पु० कर्तबकी जातिका एक वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत चिकनी और हलके पीले रंगकी होती है; * कर्तब ।

कैमरा-पु० [अ०] फोटो खींचनेका यंत्र ।

कैपा-पु० एक औजार जिसने धीन आदि रींगसे जोड़ते हैं ।

कैट-पु० [अ०] १॥ प्रेनका बजन, करात; सोनेकी शुद्धताका एक मान (खासिस सोना २४ कैटका होता है) ।

कैव-पु० [सं०] कुमुद, कुई; श्वेत कमल; शत्रु; ठग;

जुआरी । -**बंशु**-पु० चंद्रमा ।

कैविणी-**खी** [सं०] कुमुदिनी; कुमुद-पुष्पोंका समूह; कुमुदयुक्त जलाशय ।

कैरबी-**खी** [सं०] चंद्रनी ।

कैरबी(**बिन्**)-पु० [सं०] चंद्रमा ।

कैरा-पु० भूरा रंग; वह सफेदी जिसके नीचे सुखीको झलक हो; ऐसे रंगका बैल । वि० भूरा, कंजा; भूरी आँखोंवाला ।

कैराटक-पु० [सं०] एक तरहका वनस्पतिजन्य विष ।

कैरात-वि० [सं०] किरात जाति वा देखने सज्ज रखनेवाला । पु० किरातोंका राजा; बलवान् पुरुष; विरायता; शंकर चंदन; एक राग ।

कैरातक, **कैरातिक**-वि० [सं०] किरात-संबंधी ।

कैराळ-पु० [सं०] विहंग ।

कैलंडर, **कैलंडर**-पु० [अ०] अंग्रेजी तिथिपत्र; सूची ।

कैल-पु० [सं०] क्रीडा; मनोविनोद ।

कैलास-पु० [सं०] हिमालयकी एक चोटी जो पुराणोंमें शिव और कुंजरका वासस्थान मानी गयी है; * स्वर्ग । -**नाथ**,-**पति**-पु० शिव; कुंजर । -**निकेतन**-पु० शिव । -**वास**-पु० श्रृंग ।

कैवर्त-पु० [म०] केवट, निपाद । -**मुल्ल**,-**मुल्लक**-पु० केवटीमोथा ।

कैवर्तक-पु० [मं०] केवट ।

कैवर्ति **का**-**खी** [सं०] एक लता जो दवाके काम आती है ।

कैवल-पु० [मं०] दे० 'कैराल' ।

कैवलय-पु० [सं०] आत्माका अमंग, अलिप्त भाव; स्वल्पमें स्थिति, मोक्ष; एक उपनिषद् । -**ज्ञान**-पु० सशय-विषय-रहित ज्ञान ।

कैवा-अ० कई बार ।

कैश-पु० [अ०] रुपया, मिका; नकद रुपया । -**बुक**-पु० रोक-बंदी । -**मेसो**-पु० मालका नकद दाम पानेकी रसीद, नकदी पुरजा ।

कैसिक-वि० [सं०] कैश जैसा; कैश जैसा सूक्ष्म । पु० प्रणय; श्वगार रस; नृत्यका एक भाव; एक राग; कैश-गुच्छ ।

कैसि **ही**-**खी** [सं०] नाटककी चार दृष्टियोंमेंसे एक जिसमें नृत्य, गीतादिका विशेष वर्णन हो; दुर्गा ।

कैसिबर-पु० [अ०] खज्जनी ।

कैसोर-पु० [मं०] किशोरावस्था ।

कैसर-पु० [अ०] सम्राट्, शाहंशाह; जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस आदिके पूर्व सम्राटोंकी उपाधि; प्रथम मह युद्धके समय जर्मनीका सम्राट् । -**(२) हिंदू**-पु० भारत-सम्राट् (भारत-सम्राट्के रूपमें ब्रिटिश नरेशकी उपाधि) । -**पदक**-पु० एक पदक जो (ब्रिटिश) भारत-सरकारकी ओरसे सम्मानार्थ दिया जाता था ।

कैसरा-**खी** [अ०] सम्राज्ञी ।

कैसा-वि० किस तरहका । अ० किस तरह; कितना ।

कैसिक-अ० किस प्रकार ।

कैसे-अ० किस प्रकार ।

कैसो-वि० कासा, जैसा ।

कौटुम्बिक—पु० शक्ति अंशलका वह विस्तार जिसमें कुछ शक्तिशाली और कमरमें खोस किये जाते हैं ।

कौटुम्बिक—खी० दे० 'कुटुम्ब' ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] सखि त्रिके पश्चिमका प्रदेश; एक हथियार । —रथ-वि० कौटुम्बिक रथनेवाला । पु० महाराष्ट्र प्राकृतिकी एक जाति ।

कौटुम्बिक—खी० [सं०] परशुरामकी माता, रेणुका । —सुख-पु० परशुराम ।

कौटुम्बिक—खी० कौटुम्बिकी भाषा ।

कौटुम्बिक—म० कि० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—खी० कौटुम्बिक ।

कौटुम्बिक—पु० एक जलपक्षी; बालू निकालनेका मछलीनेका कलछा; दे० 'खो' वा; † लिट्टीकी तरह मोटी रोटी ।

कौटुम्बिक—पु० अंशलका कोना । सु० —अरना—सौभाग्यवती शक्ति अंशलके (विदा देते समय) बाबल-हन्दी आदि कालना ।

कौटुम्बिक, **कौटुम्बिकाना**—स० कि० कौटुम्बिक भरकर अंशलके छोटेको कमरमें पीछेकी ओर खोस लेना; कुवती चुनना ।

कौटुम्बिक—पु० छोटे, पीतल आदिका छछा जिसमें नबीर या कौटुम्बिक नीच बटकायी जाय ।

कौटुम्बिक—खी० छोटा कौटुम्बिक; मुँहवैषी कली ।

कौटुम्बिक—अ० कि० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—खी० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—अ० कि० कौटुम्बिक निकलना ।

कौटुम्बिक—पु० डालका पका आम ।

कौटुम्बिक—खी० नवी कोमल पत्ती, कछा ।

कौटुम्बिक, **कौटुम्बिक**—वि० कोमल, मुलायम ।

कौटुम्बिक—पु० दे० 'कुटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—खी० दे० 'कुटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—पु० दे० 'कुटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—पु० दे० 'कुटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—पु० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक, **कौटुम्बिक**—पु० नाग, तरकारी बोनेका खेत; बस्तीके विलकुल पासका खेत ।

कौटुम्बिक—पु० मधुपका फल ।

कौटुम्बिक—पु० एक खेतिहर जाति, काछी ।

कौटुम्बिक, **कौटुम्बिक**—खी० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—पु० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—खी० काले दामवाला कच्चा आम; आमकी गुठली; कौटुम्बिक ।

कौटुम्बिक—सर्व० अज्ञात, अनिर्दिष्ट वस्तु या व्यक्ति; चाहे जो एक । अ० लगभग । —न कौटुम्बिक—सर्व० चाहे जो एक; हर एक ।

कौटुम्बिक—सर्व० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—सर्व० कुछ लोग; कौटुम्बिक एक ।

कौटुम्बिक—सर्व० दे० 'कौटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] कबी सिलाई, लंगर [सं०] चकना, चकनाका कौटुम्बिक; मेरका; कामशास्त्रके एक प्रसिद्ध आचार्य (कौटुम्बिक); विष्णु; जंगली खरगुर; मेरिका; छिपकली । —

कौटुम्बिक—पु० कटार; कामशास्त्रके एक आचार्य । —नह—पु० लाल कमल; लाल कुई । —० छवि—वि० लाल । पु० लाल रंग । —बहु—पु० खर । —शास्त्र—पु० कामशास्त्र ।

कौटुम्बिक—वि० गुलाबीकी लटक लिये हुए नीला । पु० ऐसा रंग । खी० छोटी कैंटिया ।

कौटुम्बिक—खी० दे० 'कुटुम्बिक' ।

कौटुम्बिक—पु० आसाम और पूर्वा बंगालमें होनेवाला एक पेड़ ।

कौटुम्बिक—स० कि० कबी सिलाई करना, लंगर चलाना ।

कौटुम्बिक—पु० एक तरहका रंग ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] एक तरहका राग ।

कौटुम्बिक—पु० चंदना ।

कौटुम्बिक—पु० दक्षिण अमेरिकामें होनेवाला एक झाड़ जिसकी पत्तियाँ उत्तेजनके लिए चबायी जाती हैं; घायकी संतान; एक कटु; † होवा । खी० नीली कुई । —बेरी, —बेरी—खी० नीली कुमुरिनी ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] महाभारतमें उल्लिखित एक तीर्थ ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] सफेद घोड़ा ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] कौटुम्बिक; अंगारा; एक छं; एक तरहका चूड़ा; एक तरहका सौंघ; एक जहरीला कीड़ा । —कड़ी—वि०, खी० कौटुम्बिकमें गले, जावाजवाली । —नख—पु० दे० 'कौटुम्बिक' । —रथ—पु० तालका एक भेद ।

कौटुम्बिक—खी० [सं०] कौटुम्बिक ।

कौटुम्बिक—पु० [सं०] तालमखाना ।

कौटुम्बिकवास, **कौटुम्बिकवास**—पु० [सं०] आमका पेड़ ।

कौटुम्बिक—खी० [सं०] बका जामुन ।

कौटुम्बिक—खी० [सं०] मादा चकना ।

कौटुम्बिक—पु० दे० 'कौटुम्बिक' । —खी, —बाज—पु० कौटुम्बिक खानेका आदि, कौटुम्बिक खानेवाला ।

कौटुम्बिक—पु० एक कैंटीला पौधा, ममलिक ।

कौटुम्बिक—पु० [अ०] कौटुम्बिकी पत्तियोंसे निर्मित द्रव्य जो लगानेमें कुछ देरके लिए अगकी सुख कर देता है और नष्टके तौरपर पालनेमें खाय जाता है ।

कौटुम्बिक—खी० कौटुम्बिक (बहकानेके लिए बच्चोंमें कहा जाता है 'कौटुम्बिक ले गयी') । पु० [अ०] लण कटिबंधके उदरोंमें पाया जानेवाला एक तरहका ताक; उसके फलका चूर; उसके फलमें बनाया जानेवाला चाय जैसा पेय ।

कौटुम्बिक—पु० साफ किया हुआ नारियलका तेल जो बीकी तरह काममें लाया जाता है ।

कौटुम्बिक—खी० पेटका दोनों पम्पियोंके नीचेका भाग, कुक्षि; पेट; गर्भशय । —खली—वि०, खी० जिसमें बच्चे न जाते हैं (ऐसी खी) । सु० —डज्जना—बच्चेका मर जाना । —खुलना—बच्चा होना; बंधान्ध दूर होना । —बंद होना, —भारी होना—गर्भ न रहना; संतान न होना ।

कौटुम्बिक—पु० लोमड़ीकी शकलका एक जंगली जानवर, सोनहा ।

कौटुम्बिक—वि० [सं०] संकुचित करनेवाला । पु० संकोच; एक संकर जाति; [अ०] एक तरहकी बन्नी—घोडगाड़ी; गधेदार पलंग, कुत्ता या बच्च । —बकस, —बकस—पु० घोडगाड़ी-

में होकरनेवालेके बैठनेकी जगह । -बान-पु० चौकागी
होकरनेवाला ।

कोचना-स० कि० कोई नुकीली चीज चुभोना । पु० पैना ।

कोचनी-खी० कोचनेका साधन-औजार; छोटा पैना; तल-
बारके म्यानका चमका सीनेकी सुर ।

कोच-पु० नौकरदार हथियारका धाब जो पार न हुआ
हो; नुकीली बात, व्यव्व (मारना) ।

कोचिहा-पु० जंगली ध्याज ।

कोचिला-पु० दे० 'कुचला' ।

कोचीन-पु० दक्षिण भारतका एक राज्य ।

कोचीनचीन-पु० हिंदचीनका एक प्रदेश जो फ्रांसका
खपनिश है ।

कोजागर-पु० [सं०] शरत्पुर्णिमाकी होनेवाला एक त्योहार;
शरत्पुर्णिमा ।

कोट-पु० [सं०] गढ़, दुर्ग; परकोटा; राजप्रासाद; कुटि-
लता; दाढ़ी । -चक्र-पु० एक तंत्रीक चक्र जिससे (युद्ध
के पहले) दुर्गका शुभाशुभ परिणाम जाना जा सकता
है । -पाल-पु० दुर्गरक्षक, किलेदार । -बार-पु०

दुर्गरक्षक; शांतिरक्षक, चौकीदार ।

कोट-वि० दे० 'करोड़' । पु० बूध, समूह; दे० 'करोड़';
[अं०] अंग्रेजी ढंगका एक पहनावा । -पल्लन-पु०

श्रीपीय पहनावा, साहबी पोशाक ।

कोटक-पु० [सं०] झोपड़े बनानेवाला, बढ़ई; एक छोटी
जाति ।

कोटर-पु० [म०] पेड़के तनेका खोलला भाग; किलेके
आसपामका जगह जो उसके रक्षार्थ लगाया गया हो ।

कोटरी, कोटवी-खी० [म०] नगी खी; दुर्ग ।

कोटा-पु० [अ०] किसीकी देने या किसीसे लेनेके लिए
निर्धारित अंश ।

कोटि-खी० [म०] बनूषकी नोक, मिरा; किसी चीजका
मिरा; किसी हथियारकी मोक; दर्जा, वर्ग; बादका पूर्वपक्ष,
परमोत्कर्ष; आविरी दर्जा; कोरकी सख्या; अर्द्ध चंद्रका

सिरा; राशिचक्रका तीमरा अंश; ९० अंशके चापके दो
समान भागोंमेंसे एक । वि० ली लाख, करोड़ । -ज्या-

खी० ग्रहीकी स्पष्टताके लिए बनाये गये एक विशेष प्रकार-
के क्षेत्रका एक अंश । -ज्वज-पु० करोड़पती । -पात्र-

पु० पनवार । -पाल-पु० दुर्गरक्षक । -फली(लिङ्ग)-
पु० गोशायरी नदीके सागरसमयके पासका एक तीर्थ ।

-बेबी(चिङ्ग)-वि० कठिन काम करनेवाला । -झी-
खी० दुर्ग ।

कोटिक-वि० [सं०] चरमोत्कर्ष, पराकाष्ठाको प्राप्त; करोड़;
अगणित, अत्यधिक । पु० एक तरहका मेढक; इन्द्रगोप ।

कोटिर-पु० [सं०] सींगके रूपमें बँधी हुई जटा; हृद; नेबला;
गौरवहृदी ।

कोटिशः(शस्त्र)-अ० [सं०] करोड़ों बार या तरहसे ।

कोटी-खी० [सं०] दे० 'कोटि' ।

कोटीर-पु० [सं०] कीटा; जटा ।

कोटीचर, कोट्यचीन-पु० [सं०] करोड़पती ।

कोट्ट-पु० [सं०] कोट, किला । -पाल-पु० दुर्गरक्षक,
किलेदार ।

कोट्टवी-खी० [सं०] नगी खी; दुर्ग; बाणासुरकी माता ।

कोट्टार-पु० [सं०] किलेबंदीवाला नगर; किला; कुर्ग;
तालाबकी सीढ़ियाँ; कंठ ।

कोठ-पु० [सं०] एक तरहका कोद । [वि० कुठित (दाँत) ।

कोटर-पु० [सं०] अंकोठ । -पुष्पी-खी० कृशदारक
नामक वृक्ष ।

कोठरी-खी० छोटा कमरा ।

कोठवाली-खी० दे० 'कोठीवाली' ।

कोठा-पु० बड़ा कमरा, अटारी; बागखाना; मंबार, कोठार;
पेट; मेढा; खाना, घर (चौतर, शतरंज आदिका); मस्जिद-
का वृत्ति-विशेषका अधिष्ठानरूप विभाग । -कुचल-पु०

हाथियोंका एक खररोग । -द्वार-पु० कोठारी, भवारी ।
-(ठे)वाली-खी० देव्या । सु०-विगबना-पावन

विगबना । -साक होना-पेटका साक होना; सुलकर
हलत आना । -(ठे)पर बैठना-देव्यावृत्ति करना । -

(ठे)में चित्त जाना या भरमना-अनेक प्रकारकी
आशंकाएँ होना ।

कोठार-पु० मंबार, बखार ।

कोठारी-पु० भवारी ।

कोठिला-पु० दे० 'कुठिला' ।

कोठी-खी० पक्का और काफी ऊँचा-बड़ा मकान, हवेली,
अमीर या रईमका आवास; वह मकान जहाँ लेन-देन

या बड़े पैमानेपर कोई कारबार हो; थोक बिक्रीकी दुकान;
कोठा; बखार; बट्टकी वह जगह जहाँ बांखर रहती है;

एक जबसे निकले हुए बाँसोंका समूह; पुलके खंभे या
कुण्डकी दीवारकी धानीके अंदरकी जोड़ाई जो जमबटके

ऊपर होती है; पत्थरके कोष्ठमें जाठके आसपासका स्थान
जिसमें ईंखकी गेंडेरियाँ भरी जाती हैं । -बाल-पु० देन-

लेन करनेवाला महाजन । -वाली-खी० देन-लेनका
काम; मुखिया अक्षर । सु०-गलाना-जमबटके ऊपर

होनेवाली जोड़ाईकी नीचे रेंसताना । -चलना-देन-
लेनका कारबार होना ।

कोड-पु० [अ०] नियम-संग्रह; संकेत-लिपि; संकेत-प्रणाली ।

कोडना-स० कि० दे० 'नोडना' ।

कोड़ा-पु० चापका; सोंटा; लगनेवाली बात; कुस्तीका एक
पैव ।

कोड़ाई-खी० कोड़नेका काम; कोड़नेकी मजदूरी ।

कोड़ी-खी० बीसका समूह, बीसी । वि० बीस ।

कोड़-पु० एक चर्मरक्त-रोग जिसके एक उग्र भेदमें हाथ-
पैरकी उँगलियाँ गल-गलकर गिर जाती हैं; घृणित और

विनाशकारी दुराई (ला०) । सु०-की खाज, -में खाज-
कोड़में खुजली होना; स्फटपर संकेत आना । -चूना,-

टपकना-कोड़के वावसे पीव बहना ।

कोड़ा-पु० खेतका वह स्थान जहाँ खादके लिए पशुओंकी
रखते हैं ।

कोड़िया-पु० तंबाकूके पत्तोंका एक रोग ।

कोड़ी-वि० कुछ रोगसे ग्रस्त । पु० कोद रोगसे पीड़ित;
काहिल, निकम्मा आदमी ।

कोण-पु० [सं०] कोना; एक-दूसरीसे मिलने, एक-दूसरीकी
काटनेवाली दो रेखाओंके बीचका अंतर; अतदिशा;

सारीकी कमान; तलवार जाविकी धार; बंका, सौदा; डोल, नगाडा बजानेकी चोभ; सनि ग्रह; मंगल ग्रह ।
 -कुप-पु० खटमल । -बापी(विन्)-पु० शिव ।
 कोषप-पु० [स०] दे० 'कोषप' ।
 कोषाघात-पु० [स०] दस हजार डोलों और एक लाख हुडकोके एक साथ बजनेकी आवाज; अनेक बाघोंकी तुलुल ध्वनि ।
 कोषार्क-पु० [स०] जगन्नाथपुरीका तीर्थ ।
 कोषि-वि० [स०] टेढ़े हाथवाला ।
 कोत-पु०-खी० बल; दिशा, तरफ ।
 कोतरी-पु०-खी० एक छोटी मछली ।
 कोतल-पु० [तु०] किसी राजापरसकी खास सवारीका घोडा; जुलूस आदिके साथ सजा-सजाया खाली चलने-वाला घोडा; वह घोडा जो खास मौकोंपर ही काममें लाया जाय । वि० जिसे कोई काम न हो, खाली ।
 कोतल गारद-पु० छावनीका वह स्थान जहाँ हर समय गारद रहती है ।
 कोतवाल-पु० जिलेके मुख्य नगरका पुलिस अफसर जिसके मातहत वहाँके सब थानेदार और थाने होते हैं; वह व्यक्ति जो घड़ियोंकी सभा आदिके लिए उनका परिचय देता और निमन्त्रण-पत्र बाँटता है ।
 कोतवाली-खी० कोतवालका पद; कोतवालका दफ्तर; नगरका क्षेत्रीय थाना ।
 कोतह-वि० [फा०] घोडा; छोटा; तग । -अर्द्ध-वि० अर्द्धदर्शी, जो आगेकी बात न सोच सके, अल्पबुद्धि ।
 -क्र-वि० नाटा, टिंगना । -गर्दन-वि० जिसकी गर्दन तग, कम ऊँची हो । -नज़र-वि० अदूरदर्शी ।
 कोताह-वि० दे० 'कोताह' ।
 कोताह-वि० [फा०] घोडा; छोटा; तग । -हिम्मत-वि० छोटी हिम्मतवाला, पस्त-हिम्मत ।
 कोताही-खी० कमी, दुष्टि ।
 कोति-पु०-खी० दिशा, ओर, तरफ ।
 कोथ-पु० [स०] आँखका एक रोग; मधन; सञ्जन । वि० पीबित; मथित ।
 कोथला-पु० बड़ा थैला; पेड़ ।
 कोथली-खी० रुपये रखनेकी थैली जो कमरमें बाँधी जाती है; * कोठरी ।
 कोथी-खी० म्यानकी सामी ।
 कोर्द-पु० [स०] धनुष; धनु राशि; मोह ।
 कोर्दरी(विन्)-पु० [म०] शिव ।
 कोर्द-खी० दिशा, ओर-एक कोर्द रघुनाथ उदार ।
 भरन दूसरी कोर्द विचार-रामचन्द्र; कोना ।
 कोर्दरा-पु० दे० 'कोर्द' ।
 कोर्द-पु० दे० 'कोर्द' ।
 कोर्दवला-खी० कोर्दोंके पीछे जैसी एक घास ।
 कोर्दार-पु० [स०] एक अन्न ।
 कोर्दी, कोर्दी-पु० साँवाकी जातिका एक मोटा अन्न । सु० -दुल्हा-अधिक अमवाला निरुद्ध काम करना । -देकर पक्ष-सेतमें पड़ना, फलतः कुछ सीख न पाना, मूर्ख रह जाना ।

कोर्द-पु० [स०] कोर्द ।
 कोष-पु०-खी० दे० 'कोर्द'-'...दावा लम्बो चहुँ कोष'-सूर ।
 कोष-पु० कोना; खेतका कोना जो जुताईमें छूट जाता है ।
 सु०-मारवा-जोतनेमें छूटे हुए कोनोंको गोड़ना ।
 कोषसिख-पु० कोनियाकी छाजनमें धरनेसे दीवारके कोनेतक लगायी जानेवाली लकड़ी ।
 कोना-पु० कोण, गोशा; खंड; कमरे आदिका वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिलती हैं; वह स्थान जहाँ जल्दी किसीकी निगाह न जाय; चहाकम (दलाल) । -अँसरा-पु० घरका कोना और अँसरा । - (ने)द्व-पु० टटका एक प्रकार ।
 सु०-झाँकना-भय या लजामें मुँह चुराना । -दबना-दे० 'कोर दबना' । - (ने) में बैठ रहना-एकानमें छिप कर बैठ रहना ।
 कोनालक-पु० [स०] एक जलपक्षी ।
 कोनिया-खी० छाजनका एक प्रकार; धरके कोनेमें दीवारसे लगाकर बाँस, काठकी पट्टी आदिसे बनाया हुआ छोटा तिकोना मचान; पानीके नलमें मोड़पर लगाया जानेवाला जुड़नीके ढंगका टुकड़ा ।
 कोप-पु० [म०] क्रोध, रोष; दोष या मलका विगड़ना ।
 -पद्-पु० क्रोधका कारण । -अवच-पु० वह मकान या कमरा जिसमें कोई रुठी हुई स्त्री या नायिका जाकर बैठ रहे । -लता-खी० कर्णफोटा लता ।
 कोपक-पु० [स०] वह लाभ जो मन्त्रियोंके उपदेश या राज-द्रोही मन्त्रियोंके अनादरमें हो ।
 कोपन-पु० [स०] कोपना, कुपित होना । वि० कुपित; कुपित करनेवाला; शरीरमें विकार उत्पन्न करनेवाला ।
 कोपनक-पु० [म०] चोबा । वि० क्रुद्ध ।
 कोपना-पु०-अ० कि० कोप करना, क्रुद्ध होना । खी० [म०] क्रुद्ध स्त्री । वि०, खी० कोप करनेवाली ।
 कोपविष्णु-वि० [म०] कोप करनेवाला ।
 कोपरी-पु० टपका आम; बड़े थाल जैसा एक गोला गहरा बरतन जिसमें उठानेके लिए दोनों ओर कुड़े लगे रहने हैं ।
 कोपल-खी० दे० 'को पल' ।
 कोपली-वि० आमके नये पत्तेके रंगका, बैंगनी । पु० बैंगनी रंग ।
 कोपित-वि० [म०] कोपयुक्त, क्रुद्ध ।
 कोपी-वि० कोर्द श्री (कांसिधि) ।
 कोपी(विन्)-वि० [स०] कोप करनेवाला; कोपकारक । पु० जलपारावत; संकीर्ण रागका एक भेद ।
 कोपीन-पु० दे० 'कोपीन' ।
 कोप्यापणवात्रा-खी० [स०] नकली सिक्कोंका चलना (कौ०) ।
 कोप्रत-खी० [फा०] दुग्ध, रंज, मदमा; परेशानी; लोहे-पर सोने या चाँदीका जड़ाव । -गर-पु० लोहकी बीजो- (तलवार आदि) पर चाँदी-सोनेकी पचीकारी करनेवाला । -गरी-खी० कोस्तगरका धंधा ।
 कोप्रता-वि० [फा०] जिसके दिलको चोट, सदमा पहुँचा हो । पु० कटा हुआ मांस; कुटे हुए मांसका कबाब ।
 कोषा-पु० [फा०] मुँगरी; चमड़ा फूटनेका बीजार ।

कोविद्-वि० दे० 'कोविद' ।

कोविदार-पु० दे० 'कोविदार' ।

कोबी-खी० गोभी ।

कोमल-वि० [सं०] नरम, सुलायम; सुकुमार; अपरिपक्व; मधुर; मनोहर; दयाई । पु० गानके तीन प्रकारके स्वरोंमें से एक; जल; गोली मिट्टी । -**विस्त**-वि० नरम दिख-वाला, दयाईचित्त ।

कोमलक-पु० [सं०] मृणाल ।

कोमलता-खी० [सं०] नरमी; सुकुमारता ।

कोमला-खी० [सं०] एक वृत्ति या वर्णयोजना जिसमें य, र, ल, व, स, ह आदि कोमल अक्षरों तथा छोटे समासों का प्रयोग किया जाय (मा०); खिरनी ।

कोमासिका-खी० [सं०] फलका आरंभिक रूप, बतिया ।

कोय-सर्व० कोई; कोन ।

कोयरी-पु० सज्जी; हरा चारा ।

कोयल-खी० काले रंगकी एक चिड़िया जो अपने बोलकी मिठासके लिए प्रसिद्ध है, कोकिल; अपराजिता लता ।

कोयला-पु० पूरी तरह न जली हुई लकड़ीका टुकड़ा हुआ अवशेष; कोयलेकी शकलका एक खनिज पदार्थ जो जलाने के काम आता है । **मु०**-(ले)की दूलाखीमें हाथ काला -बुरे काममें बदनामी ही हाथ लगती है । -**(लौ)**पर **सुहर**-छोटे, मामूली खर्चोंमें ही अधिक काट-छाँट, किफायतशारी होना; तुच्छ वस्तुओंकी बहुमूल्य वस्तुओंकी तरह रखा होना ।

कोयटि, कोयटिक-पु० [सं०] जङ्गलकुम्भ पक्षी ।

कोबा-पु० आँखका डेला; आँखका कोना; देखनेके कोनेका घर या घोंसला; पके कड़हलेका बीजकोष ।

कोरजा-पु० मजदूरी या मर्चके रूपमें दिया जानेवाला खरा अन्न ।

कोर-पु० [सं०] वह मधि या जोड़ जिसपरने अंग मोड़ा जा सके; कर्मी । -**वृष**, -**वृषक**-पु० कोरी ।

कोर-वि० करोड़-अकत न खजान नवन ये जनन कीजियन कोर-रननहं । खी० किनारा, हाथिया, कोना; बैर, वृक्ष; इधियारकी धार; पक्ति । -**कमर**-खी० कमी, छुटि । -**द्वार**-वि० किनारदार; नुकीला । **मु०**-**द्वाना**-दवावमें होना ।

कोर-पु० [अ०] मेनाका विभाग; पलटन; कार्यविशेषके लिए सभ्यतनै नियुक्त । वि० [का०] अंधा । -**बपुल**-वि० अमागा, बदमसीब । -**बासिन**-वि० अल, मूर्ख ।

कोरक-पु० [सं०] कली; फूलकी फटीरी, मृणाल; शीतल-चीनी; एक गंधद्रव्य ।

कोरट-पु० दे० 'कोर्ट आब् वाट्स' । **मु०**-**खूटना**-जाय-दादका 'कोर्ट आब् वाट्स'के प्रबंधमें निकलना । -**बैठना**, -**होना**-किसी जायदादका 'कोर्ट आब् वाट्स'के प्रबंधमें किया जाना ।

कोरना-सं० कि० पत्थर या काठपर खुदाई करना; खोद-खुरकर चित्रादि बनाना; कोर निकालना ।

कोरनी-खी० पत्थरपर खुदाईका काम ।

कोरम-पु० [अ०] किसी सभा-समितिके सदस्योंकी वह नियत संख्या जिससे कमकी उपस्थितिमें होनेवाली बैठक

या कार्य विधिसंगत नहीं माना जाता, गणपूर्ति ।

कोरमा-पु० मसाला देकर भूना हुआ मोस्त जिसमें शोरवा न हो । -**फुलाव**-पु० बतिया स्वादिष्ट भोजन, तर माल ।

कोरहवा-पु० एक प्रकारका धान ।

कोरा-वि० नवा, न बरता हुआ; जो पछाड़ा न गया हो, मौखीदार (कपड़ा); जो धुला न हो; जिसपर पानी न पड़ा हो (मिट्टीका बरतन); सादा, अलिखित; रक्षित, बचित; अपढ़, मूर्ख, अनभिद्ध; खाली, केवल । † पु० गोद । -

उल्लरा, -**छुरा**-पु० वह छुरा जो सान भरनेके बाद बरता न गया हो । -**जवाब**-पु० साफ इनकार । -**बद-तन**-पु० मिट्टीका बरतन जिसमें पानी न पड़ा हो ।

कोरि-वि० करोड़ ।

कोरित-वि० [सं०] कलियाया हुआ; अंकुरित; चूर किया हुआ ।

कोरिया-पु० एक नीच जाति । खी० सोपनी-'हूँफि फिरे घर कीउ न बनावे म्पच कोरिया लौ'-सर ।

कोरी-पु० हिंदू जुलाहा । वि० 'कोरा'का खी० रूप ।

कोरी-खी० कोरी, बीमका समूह ।

कोरिया-खी० दे० 'कुरिया' ।

कोर्ट-पु० [अ०] दरबार, राजसभा; अदालत, न्यायालय; न्यायासन; कोर्टपीसके केलमें नौतका एक प्रकार । -

आब् वाट्स-पु० नाबालिगों, विधवाओं, कणप्रसूतों आदिकी संपत्तिका प्रबंध करनेवाला सरकारी महकमा ।

-**इस्पेक्टर**-पु० फौजदारी अदालतमें पुलिसकी ओरसे मुकदमोंकी परीची करनेवाला अफसर । -**पीस**-पु० ताशका एक खेल । -**क्रीस**-खी० दीपानी और माल-के मुकदमोंमें लगनेवाला अदालती रयस, न्याय-शुल्क ।

-**मार्शल**-पु० फौजी अफसरोंकी अदालत । -**(मार्शल होना-फौजी अदालतमें विचार होना)** -**सिए**-खी० बर या विवाहार्थका कन्याकी विवाहके लिए राजी करना ।

कोलंबक-पु० [सं०] तारोंकी छोड़कर दोष होना ।

कोलंबस, क्रिस्टाफर-पु० जिनोआ(इटली)का निवासी प्रसिद्ध नाविक जिसने १४९८ में दक्षिण अमेरिकाका पता लगाया (१४९५-१५०६) ।

कोल-पु० [सं०] सूअर; बेडा; कूबड; गोद; अँकवार, आलि-गन; एक तोलेकी तोल; शनि ग्रह; एक जंगली जाति; कान्ची मिर्च; एक बेर । -**कंब**-पु० बाराही बंद । -**कक**-

टिका, -**ककडी**-खी० एक लज्ज । -**कुण**-पु० खटमल । -**गिरि**-पु० दक्षिण भारतका एक पर्वत, कोलाचल ।

-**वृल**-पु० एक गंधद्रव्य, नली । -**पुच्छ**-पु० सफेद चील, कक पक्षी । -**मूल**-पु० पिप्पलीमूल । -**बल्ली**-खी० गजपिप्पली । -**शिबी**-खी० एक लता, दधिपुष्पी ।

कोलक-पु० [सं०] कान्ची मिर्च; अखरोट; शीतलचीनी ।

कोलना-सं० कि० लकड़ी या पत्थरकी बीचसे काटकर पोखा करना; छेद करना, नुकीली चीजसे खोदना-'निची-ने रोका, मेरा सिर न कोल खानो'-सृग० ।

कोला-खी० [सं०] पिप्पली; बेरका पेड़ । पु० [अ०] पच्छिमी अफ्रिकामें होनेवाला एक वृक्ष जिसके बीज मसाले और ताकतकी दवाके तौरपर काममें लाये जाते हैं ।

कोकाहल-पु० [सं०] बहुतसे लोगोंके एक साथ बोलनेसे होनेवाला शोर, हंगामा, हल्ला; एक संकर राग ।
कोकि-झी० [सं०] वृक्षविशेष, बररी, कर्कशु ।
कोखिया-झी० तंग रास्ता, कुलिया; बह छोटा खेत जो ऊँचा और बहुत कम चौड़ा हो ।
कोखियाना-म० कि० तंग रास्तेसे जाना । पु० कोखियोंके रहनेका स्थान ।
कोकी-पु० कोरी । झी० अँकनार; संकरी गली; [सं०] दे० 'कोकि' ।
कोखेवा-पु० मनुष्यका फका फल, कोरना ।
कोक्या-झी० [सं०] पिप्पली ।
कोख्हाड़-पु० ईल पेरने और गुड़ बनानेका स्थान ।
कोख्हा-पु० कुबरीका एक बेंच; † कोख्हा ।
कोखल-पु० ईल या तेल पेरनेका यंत्र । सु०-काटकर सुँगरी बनाना-छोटे लामके लिए बड़ी हानि करना ।
 -का बैल-करी मेहनत करने, हर वक्त सिसनेवाला; एक ही जगह चक्कर खानेवाला ।
कोबंद-पु० कोबंद, बनसु (रासी) ।
कोबिद-वि० [सं०] पंडित, विद्वान्; प्रवीण ।
कोबिदार-पु० [सं०] कचनारका पेड़ या फूल ।
कोक्ष-पु० [सं०] अंडा; गोलक (नेत्रकोष); पानपात्र; भ्रूण; भ्रूणगार, खजाना, सीना-चौदी; संचित धन; शब्दकोश, संग्रह; खोल, आवरण; रेशमका कोया; कटहल आदिका कोया; वेदात्ममें माने हुए जीवात्माके पाँच (अजमय, प्राणमय आदि) आवरण; अक्षकोश; कली; गुठली; पाल; योगि; मेहन; पाहुका; एक तरहकी दिव्य या कठिन परीक्षा; अनाजकी बाल; बाबपर बाँधनेकी एक पट्टी ।-कार-पु० शब्दकोश बनानेवाला; भ्रूण बनानेवाला; रेशमका कोष ।-कोरक-कोट-पु० रेशमका कोष ।-ग्रहण-पु० दिव्य परीक्षा देना ।-खंख-पु० सारस ।-ख-पु० रेशम, सीप, मोती आदि ।-नाचक-पु० खजांची; कुबेर ।-पति-पु० कोषाध्यक्ष ।-पान-पु० अभियुक्तके अपराधी या निरपराध होनेकी जाँचकी एक प्राचीन विधि ।-पाळ-रक्षी(किन्)-पु० दे० 'कोश-नायक' ।-पेटक-पु० रुपये, रखादि रखनेकी पेटी, संदूक ।-फल-पु० जायफल, तरौई, कदई, कुम्हड़ा, तरबूज आदि फल ।-फली-झी० तरौई, लीकी, ककरी आदिकी लता ।-वासी(सिन्)-पु० कोशमें रहनेवाले-घोषा, शंख आदि प्राणी ।-बुद्धि-झी० अंबुद्धिका रोग; धनबुद्धि ।-शापिका-झी० भ्रूणके अंदर रखी हुई कटारी आदि ।-बुद्धि-झी० दिव्य परीक्षासे होनेवाली बुद्धि ।-संधि-झी० कोश देकर की जानेवाली संधि ।-स्थ-पु० कोश-वासी प्राणी । वि० कोशमें स्थित ।
कोशक-पु० [सं०] अंडा; अक्षकोश ।
कोशल-पु० [सं०] एक राग; दे० 'कोशल' ।
कोशला-झी० [सं०] दे० 'कोशल' ।
कोशलिङ्ग-पु० [सं०] घूस, रिशत ।
कोशार्ग-पु० [सं०] एक तरहका सरकंडा ।
कोशाङ्ग-पु० [सं०] अक्षकोश ।
कोशांभी-झी० [सं०] दे० 'कोशांभी' ।

कोशागार, **कोषागार**-पु० [सं०] खजाना, रुपया-पैसा रखनेका घर, तीसखाना ।
कोशासक-पु० [सं०] यजुर्वेदकी कठ शाखा; तरौई; राख ।
कोशासकी-झी० [सं०] तरौई; चौंदीन रात ।
कोशासकी(किन्)-पु० [सं०] व्यापारी; व्यापार; बाढ़-बाधि ।
कोशाधिप, **कोशाध्यक्ष**, **कोषाधिप**, **कोषाध्यक्ष**-पु० [सं०] खजांची ।
कोशाभिसंहरण-पु० [सं०] कोशकी कमी पूरी करना ।
कोशाब्ज-पु० [सं०] कोसम नामक वृक्ष ।
कोशिका-झी० [सं०] प्याला, गिलास ।
कोशिश-झी० [पा०] अम; यत्न, उद्योग ।
कोशी, **कोषी**-झी० [सं०] कली; अनाजका टूँड; चप्पल, स्लिपर ।
कोसी(सिन्), **कोषी(सिन्)**-वि० [सं०] कोशयुक्त । पु० आमका पेड़ ।
कोष-पु० [सं०] दे० 'कोश' (समास भी) ।
कोष्ठ-पु० [सं०] बरका भीतरी भाग; कोठा; शरीरके भीतरका आमाशय, मूत्राशय, पित्ताशय जैसा कोई अंग; पेड़; बड़ी अँत, मलाशय; शरीरके अंदरका एक चक्र; अंडार; बहार; चहारदीवारी; 'नैवेड' ।-पाळ-पु० अंडारी; कोषाध्यक्ष ।-बद्धता-झी० कर्म ।-बुद्धि-झी० पेटकी सफाई, अँतका मकरहित हो जाना ।
कोष्ठक-पु० [सं०] लकीरोंसे बनाया हुआ खाना; कई खानोंवाला चक्र, सारणी; चहारदीवारी; अँकों, शब्दों आदिकी घेरनेमें व्यवहृत चिह्नोंका जोड़ा, 'मैकेट' ।
कोष्ठागार-पु० [सं०] अंडार, कोषागार ।
कोष्ठागारिक-पु० [सं०] कोशवासी प्राणी; अंडारी ।
कोष्ठमि-झी० [सं०] पाचनक्षक्ति, आशेय रस ।
कोष्टी-झी० [सं०] जन्मपत्री ।
कोष्ण-वि० [सं०] कुनकुना, कटुष्ण । पु० उष्णता ।
कोस-पु० दूरीकी एक नाप जो लगभग दौ मीलके बराबर होती है । **कोसौ**, **कासे कोसौ**-बहुत दूर ।
कोसना-स० कि० निंदा करना; बुरा-भला कहना; गालियोंके रूपमें शाप देना । (सु०) पानी पी-पीकर कोसना-बहुत अधिक कोसना ।
कोसम-पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी हल आदि बनाने और बीज बताने काम आते हैं; दे० 'कोशांभी' ।
कोसल-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, अवध; कोसल-वासी ।
कोसला-झी० [सं०] कोमल प्रदेशकी राजधानी, अयोध्या ।
कोसली-झी० एक रागिनी ।
कोसा-पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; मिट्टीका कसोरा; बटुजा; एक गाढ़ा अवलेह जो बिकनी सुपारी बनाते समय निकलता है (इसमें रदी सुपारियोंको रंगा और स्वादिष्ट बनाया जाता है) ।-काटी-झी० शापके रूपमें गाली ।
कोसिया-झी० मिट्टीका छोटा कसोरा ।
कोसिका-झी० दे० 'कोशस्या' ।
कोसी-झी० एक नदी जो नेपालके पहाड़ोंसे निकलकर

गंगामें मिलती है; † दानिके बाद बालमें छने रहनेवाले दाने ।

कोईबा-पु० दे० 'कुम्बा' ।

कोईबारी-खी० दे० 'कुम्बारी' ।

कोइ-पु० कोष; [फा०] पहाक, पर्वत । -आसिहा-पु० आकासुखी पहाक । -कन-वि० पहाक कोदने-वाला । पु० फरहाद । -झाऊ-पु० काफ पर्वत, काकेसस पर्वतमाला जिसके आसपासके लोग बहुत सुंदर होते हैं । -जिगार-वि० वीर, साहसी । -सार-पु० पहाकी स्थान, प्रदेश; पहाक । -**(हे) आवम**-पु० रुंकाके एक पर्वतकी चोटी जिसपर बिबिधते निकाले जानेके बाद आदमका उठरना माना जाता है । -रूर-पु० मारतका एक इतिहास-प्रसिद्ध हीरा जिसका एक हिस्सा मिटेनके महाराजके और दूसरा महारानीके मुकुटमें जड़ा है ।

कोहनी-खी० दे० 'कुहनी' ।

कोहवार-पु० वह घर या कसरा जिसमें विवाहके समय कुलदेवताकी स्थापना और कुछ रस्में अंश की जाती हैं ।

कोहरा-पु० दे० 'कुहरा' ।

कोहक-पु० [स०] एक मुनि जो नाट्यशास्त्रके आदि आचार्य माने जाते हैं; एक राजा; एक शराब । वि० अस्पृष्टभाषी ।

कोहरी-पु० दे० 'कुम्हार' ।

कोहारा-पु० छोटी नदी ।

कोहान-पु० [फा०] ऊँची पीठपरका कुबड़ ।

कोहाना-अ० कि० कठना, रुठ होना; कुड़ होना ।

कोहिल-पु० नर शाही बाज ।

कोहिल्ला-पु० [फा०] पहाकी प्रदेश; पर्वतमाला; ईरानी-हराक ।

कोहिरतानी-वि० पहाड़ी । पु० पहाड़ी प्रदेशका रहने-वाला ।

कोही-वि० कोषी; [फा०] पहाड़ी । † खी० बाज पक्षीकी मादा ।

कौंक, **कौंकण**-पु० [म०] कौंकण ।

कौंकिर-खी० हारेकी कनी; कौंचकी रेत ।

कौंकुम-वि० [स०] केसर-संबंधी; केसरके रंगका; केसरमें रंगा हुआ । पु० एक कौतुबर्ग ।

कौंच-पु० [स०] विमालयका एक पहाड़ ।

कौंच-खी० सेम जैसी एक फली जिसकी तरकारी बनती और दवाके काम भी आती है; इसकी बेल, केवोंच ।

कौंचारा-पु० ऊलका ऊपरी भाग जो नीरस होता है ।

कौंछ-खी० दे० 'कौंच' ।

कौंझर-वि० [स०] हाथी-संबंधी । पु० बैठनेका एक ढग ।

कौंझ-पु० [स०] सीधरापन ।

कौंडक, **कौंडलिक**-वि० [स०] कुंडलधारी ।

कौंडिय्य-पु० [स०] कुंडिन ऋषिके गोत्रमें उत्पन्न व्यक्ति ।

कौंतल-वि० [स०] कुंतल देशका ।

कौंतिक-पु० [स०] भाला चलानेवाला, नेत्रावरदार ।

कौंती-खी० [स०] एक मंत्रद्वय ।

कौंतेव-पु० [स०] कुतिपुत्र-कुपिष्ठिर, भीम, अर्जुन ।

कौंथ-खी० विजलीकी चमक; चमक ।

कौंथना-अ० कि० विजलीका चमकना ।

कौंथनी-खी० दे० 'कौंथनी' ।

कौंथा-खी० विजलीकी चमक; विजली-‘अनु कौंथा लौकहि पुर कोने’-प०; चमक ।

कौंम-वि० [स०] धनेमें रखा हुआ; धनेसे संबंध रखनेवाला ।

कौंछ-पु० कमल ।

कौंथरा-वि० कोमल ।

कौंहर-पु०, **कौंहरी**-खी० ब्राह्मणकी जातिका एक फल जो पकनेपर बहुत ठाक होता है ।

कौं-अ० कर्म, संप्रदान और संबंध कारककी विभक्ति ।

कौंथा-पु० एक पक्षी जो अपने काले रंग, धूर्तता आदिके लिए प्रसिद्ध है; धूर्त मनुष्य (ला०); गलेके भीतरकी घोंटी; कनकुट्टी; एक मछली । -**डौंझी**-खी० एक कला जिसके फूलकी शकल कीएकी नौचकीसी होती है । -**परी**-खी० काठी, बंदशकल खी । -**रोर**-पु० हठा, कागारीक ।

कौंथाना-अ० कि० चकपकाना; रत्नमें बड़बड़ाना ।

कौंथारा-पु० दे० 'कौंथारो' ।

कौंथाल-पु० दे० 'कौंथाल' ।

कौंथाली-खी० दे० 'कौंथाली' ।

कौंथल्य-पु० [स०] कुकर्म करना; पश्चात्ताप ।

कौंथकटिक-वि०, पु० [स०] झुंगें पाछनेवाला; दोग करनेवाला ।

कौंथेवक-पु० [स०] तलवार ।

कौंथुमार-पु० [स०] कुरुपको सुंदर बनानेकी कला ।

कौंठ-पु० [स०] छल; धोखा; जाल; कुटज वृक्ष । वि० अपने पर रहनेवाला, स्वतंत्र; बरेछ; छली; बेईमान; पाशयुक्त, जालवाला । -**साश्च**-पु० झूठी गवाही ।

कौंठिक-पु० [स०] पक्षी आदि फँसानेवाला, बहेलिया; मासविकेता ।

कौंठनी-खी० [स०] दुर्गा ।

कौंठल्य-पु० [स०] दे० 'कौंठल्य' ।

कौंठवी-खी० [स०] नगी खी ।

कौंठिक-पु० [स०] दे० 'कौंठिक' । वि० पाश-संबंधी; छली; बेईमान ।

कौंठिलिक-पु० [स०] व्याप, बहेलिया; लुहार ।

कौंठिलीच-वि० [स०] कौंठिल्यकृत ।

कौंठिल्य-पु० [स०] कुठिलता, टेढ़ापन; फरेब, बेईमानी; अर्थशास्त्रके कर्ग और कूटनीतिके आचार्य चाणक्य ।

कौंठीर-वि० [स०] कुंठीर पौधा-सम्बन्धी; कुंठीरका बना ।

कौंठीचा-खी० [स०] दुर्गा ।

कौंठुब-वि० [स०] कुठुंबके मरणके लिए आवश्यक । पु० परिवार; रिश्ता ।

कौंठुबिक-वि० [स०] कुठुंब-संबंधी; कुठुंबी, कुनवेवाला । पु० पिता; गृहस्थानी ।

कौंठा-पु० बगी कौंठी; अलाव; बूढ़ नामक पौधा जिससे सब्जीसार बनाते हैं ।

कौंठिया-वि० कौंठीके रंग-रूपका । * पु० दे० 'कौंठिया' ।

कौंठियाला-वि० कौंठीके रंगका; कौंठर । पु० कोकरे रंग; एक जहरीला सोंप; एक वनौषधि; कंजूस धनवान् ।

कौंठियाकी-खी० कौंठियाला पौधा ।

कौंठियाही-खी० मिट्टी, रेंदी आदिकी डुल्लई जो क्षेप पीछे

कुछ कौषिकों के हिसाबसे दी जाती है। वि०, खी० बहुत छोटी रकम लेकर काम करनेवाली।

कौषिक-पु० एक मत्स्यमत्सी जलपक्षी।

कौषी-खी० घोघे, धंख आदिके बर्गका एक कौषा; उस कौषेका अस्थिकोश जो विनिमयके साधनके रूपमें भी काममें लाया जाता है, बटाटिका; पैसा, धन; बर, मत्स्य; जाय, कौल आदिमें निकलनेवाली छोटी मिलटी; औखका देखा; सीनेकी बह दूधी जिसपर नीचेकी पसलियाँ मिलती हैं; कटारकी नोक। -का-भूत्यरहित; तुच्छ, हेय। -भर-कौषी बराबर; बहुत थोड़ा। मु०-ककनको न होना-विलकुल मुफलिस, मुहाजरा होना। -के सीन, -के सीन-सीन-बहुत सस्ता, जिसके कोई न पूछे। -के सीन होना-तुच्छ, हेय होना। -के मोल-बहुत सस्ता या सस्तेमें।

-०न रुछमा; -०न लेना-मुक्तमें भी न लेना; एक-दम निकम्मा समझना। -०विकना-बहुत सस्ता विकना; तुच्छ, बेकरार होना। -कौषीका हिसाब-छोटीसे छोटी रकमका, पार्श्व-पार्श्वका हिसाब। -कौषीको मुहाजरा-विलकुल मुफलिस, अति निर्धन। -कौषी मुका देना-पूरा पावना, पार्श्व-पार्श्व बेबाक कर देना। -कौषी ओढ़ना-एक-एक पैसा-थोड़ा-थोड़ा करके धन बढ़ाना। -फिरना-जुएमें अपना सब पड़ने लगना।

कौषेरा-पु० बरतनपर नक्काशी करनेका एक औजार।

कौणप-पु० [सं०] मुराखीर; राक्षस। वि० पातकी, अर्धमाँ।

-वत्-पु० भीष्म।

कौणयी-खी० [सं०] राखसी।

कौणिक-वि० [सं०] जिसमें कौण हो, तुकीला।

कौतिक, कौसिग-पु० दे० 'कौतुक'।

कौतुक-पु० [सं०] कुतूहल, उत्सुकता; कुतूहल जगानेवाली वस्तु; अर्चभा; तमाशा; उत्सव; आनंद; हास्य-विनोद, हँसी-मजाक; विबाहका रंगन; कगनकी विधि। -मिथ-वि० जिसे खेल-तमाशा या हँसी-मजाक पसंद हो।

कौतुकित-वि० [सं०] उत्सुक।

कौतुकिया-वि० कौतुक करनेवाला; विनोदी।

कौतुकी (किन्)-वि० [सं०] खेल-तमाशा करनेवाला, विनोदी; विबाह-संबंध करानेवाला-‘लौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं’-रामा०।

कौतुह-पु० लीला, कौतुक।

कौतूहल-पु० [सं०] कुतूहल; त्योहार, उत्सव।

कौत्स-पु० [सं०] एक ऋषि, कुत्स ऋषिका पुत्र; कुत्स-रचित साम।

कौथी-खी० कौनसी निधि; कौन-सा नादा, संबंध।

कौथी-वि० किस स्थानका, किस सस्यका।

कौथुम-पु० [सं०] कौथुमी शाखाका अध्ययन करनेवाला।

कौथुमी-खी० [सं०] कुथुमीके गोनकी खी; सामवेदकी एक शाखा।

कौवन-वि० [फा०] मंदबुद्धि, नासमझ।

कौदालिक, कौदालीक-पु० [सं०] एक संस्कार जाति, महाह।

कौप्रविक-पु० [सं०] काष्ठा नमक।

कौचनी-खी० करपनी।

कौच-सर्व० प्रसवाचक सर्वनाम। वि० किस प्रकारका।

कौचप-पु० दे० 'कौचप'।

कौच-वि० [सं०] कृष-संबंधी; कुपैका। पु० कुपैका पानी।

कौचीन-पु० [सं०] शरीरका शुद्ध भाग; पुरुषका हिम; शुद्ध भागको ढकनेवाला वस्त्र-खड, लँगोटी; चौपचा; कुकर्म, पाप।

कौचीकी-खी० [सं०] विष्णुकी गदा।

कौच्य-वि०, पु० [सं०] दे० 'कौच'।

कौचेर-वि० [सं०] कुचेर-संबंधी।

कौचेरी-खी० [सं०] उत्तर दिशा; कुचेरकी शक्ति।

कौच्य-पु० [सं०] कृषपन।

कौम-खी० [अ०] मनुष्य-समूह; जाति; बंध, नस्ल; राष्ट्र।

-परस्व-वि० राष्ट्रवादी।

कौमार-पु० [सं०] कुमार-(जन्मसे पाँच बरसतककी) अवस्था; कुंवारापन; सनकुमारादि-रचित सृष्टिविरोध; कुमारीका पुत्र; एक पर्वत। वि० कुमार-संबंधी; कोमल; युद्धदेव संबंधी। -चारी (रिन्)-वि० मन्त्रचारी। -बंधकी-खी० वेद्या। -भृत्-पु० बन्धोंका पालन-पोषण, दवा-इलाज; आयुर्वेदका शिशु-चिकित्सा-अंग। -व्रत-पु० अविवाहित रहनेका व्रत।

कौमारक-पु० [सं०] कुमारावस्था; एक राग।

कौमारिक-वि० [सं०] कुमार-संबंधी। पु० लक्ष्मियोंका पिता।

कौमारिकेय-पु० [सं०] कुमारी खीका बेटा।

कौमारी-खी० [सं०] ऐसे पुरुषकी खी जिसने दूसरा विवाह न किया हो; काश्तिकेयकी शक्ति; वाराहीबंध; एक रागिनी।

कौमार्य-पु० [सं०] कौमार, कुंवारापन; (प्रायः अविवाहिता लक्ष्मीके सवधमें प्रयुक्त)। मु०-भंग करना-किसी लक्ष्मीका अश्रुतयोनि महिलामें प्रथम बार समागम करना। **कौमियत, कौमीयत**-खी० [अ०] जाति, कोमका भाव, जातीयता, राष्ट्रीयता।

कौमी-वि० कोमसे संबंध रखनेवाला, जातीय; राष्ट्रीय।

कौमुद्य-पु० [सं०] काश्तिकका महीना।

कौमुदिक-वि० [सं०] कुमुद-संबंधी; कुमुदपूर्ण।

कौमुदिका-खी० [सं०] उमाकी एक सखी; चौदनी।

कौमुदी-खी० [सं०] चौदनी; काश्तिककी पूर्णिमा; आश्विन-की पूर्णिमा; उत्सव; दीपोत्सव; कुमुद; ब्याख्या, टीका (ग्रंथके नामके साथ)। -चार-पु० शरत्पूर्णिमा, आश्विन-की पूर्णिमा। -पति-पु० चंद्रमा। -महोत्सव-पु० काश्तिकी पूर्णिमाकी होनेवाला उत्सव। -द्वय-पु० दीपद, चिरागदान।

कौमुदीकी, कौमुदी-खी० [सं०] विष्णुकी गदा।

कौर-पु० कवल, निवाला।

कौरना-सं० कि० हलका भूतना।

कौरव-पु० [सं०] कुरूका वंशज; कुरु नरेश। वि० कुरु-वंशियोंमें संबंध रखनेवाला (-मेना)।

कौरवेय-पु० [सं०] कुरूका वंशज।

कौरव्य-पु० [सं०] कौरव।

कौरा-पु० दरबानेके अगल-बगलकी, चौखटके पीछेकी

दीवार; कुत्तेकी दिया जानेवाला खाना; दे० 'कौष'।
मु०—(२) लगना—किसीकी बातें सुननेके लिए दरवाजेकी बगलमें छिपकर खड़ा रहना; मुँह फुलाना; बातमें बैठना।
कौरी—खी० अंक, गोद।
कौर्म—वि० [सं०] कूर्म-संबंधी; विष्णुके कूर्मावतार-संबंधी।
 पु० एक कल्प।
कौलज—पु० पसलियोंके नीचे होनेवाला एक तरहका दर्द।
कौल—पु० कौर; * कौर; कमल; [सं०] वाममार्गी, शाक्त।
 वि० कुलकमागत, खानदानी; कुलीन।
कौल—पु० [अ०] बचन, उक्ति; प्रतिज्ञा; इकरार; वह स्फुटि-
 याना गीत या शेर जो कौबल गाते हैं।—(ब) **कौल**—
 पु० परस्पर प्रतिज्ञा।—(ब) **कौल**—पु० बचन और कर्म।
मु०—का पक्षा—बातका बनी।—देना—बचन देना।
कौलई—वि० सतरेके रंगका। पु० नारंगी रंग।
कौलटिनेव—पु० [सं०] मिथुनकी पुत्र; जारज पुत्र।
कौलटेव, कौलटेर—पु० [सं०] कुलटाका पुत्र, जारज पुत्र;
 मिथुनकी पुत्र।
कौलटुमा—पु० एक तरहका कन्तर।
कौलव—पु० [सं०] ११ करणमेंसे एक (अयो०)।
कौलव—पु० एक तरहका सतरा; इसके इश्वर-उभरका, चौलटे-
 के पीछेका भाग।
कौलाचार—पु० [सं०] वाममार्ग।
कौलाक—वि० [सं०] कुम्हार-संबंधी या उसका बनाया
 हुआ। पु० मिट्टीका बरतन।
कौलिक—वि० [सं०] कुरु-सबन्धी; कुलपरंपरागत। पु०
 वाममार्गी; दौंगी; पालंदी; जुलाहा।
कौलीन—वि० [सं०] कुलीन; कुलकमागत। पु० वाममार्गी;
 मिथुनकी पुत्र; अपवाद, सुधनम; गुण भग; पशुओं, मुर्गों
 आदिकी लड़ाई; युद्ध; कुलीनता।
कौलीन्य—पु० [सं०] कुलीनता।
कौलीरी—खी० [सं०] कर्कटस्थी।
कौलेयक—वि० [सं०] उच्च वंशका; वंश-सबन्धी। पु०
 कुत।
कौली—अ० कवतक।
कौल—वि० [सं०] कुलीन; शाक्त मतका।
कौल—पु० [सं०] कौल, बेर।
कौला—पु० दे० 'कौल'।
कौवाल—पु० [अ०] कौवाली गानेवाला; गवैया।
कौवाली—खी० स्फुटियाना गजर या गीत; संगीतमें एक
 ताल।
कौवेरी—खी० [सं०] जुलाहेकी खी।
कौवेर—वि० [सं०] दे० 'कौवेर'।
कौवेरी—खी० [सं०] दे० 'कौवेरी'।
कौष—वि० [सं०] रेशमी; कुश-निर्मित (पवित्री आदि)।
 पु० कुशद्वीप; कान्यकुब्ज देश।
कौषा—पु० [सं०] कुशलता, दक्षता; मंगल, कल्याण।
कौशलिक—पु० [सं०] घूस, रिशत।
कौशलिका, कौशली—खी० [सं०] कुशल-प्रभ; जेंट,
 उपहार।
कौसलेय—पु० [सं०] कौसल्याके पुत्र, राम।

कौसल्य—पु० [सं०] दे० 'कौशल'।
कौशल्य—खी० [सं०] दशरथकी पट्टमहिषी, रामकी माता।
कौशल्यपानि—पु० [सं०] कौशल्यके पुत्र, राम।
कौशाव—पु० [सं०] कुशके एक पुत्र।
कौशावी—खी० [सं०] वल्लदेशकी प्राचीन राजधानी जिसे
 कुशके पुत्र कौशावने बसाया था, आधुनिक कोसम।
कौशिक—पु० [सं०] कुशिका वंशज; विश्वामित्र; इंद्र;
 शिव; कौशकार; कौशाभ्यक्ष; उलू; नेबला; शृंगार रस;
 मज्जा; गुग्गुलु। वि० म्यानमें रखा हुआ; चक्क-संबंधी;
 कुशिकवंशका; रेशमी।—मिच—पु० राम।—फल—पु०
 नारियलका पेड़।
कौशिका—खी० [सं०] पानपात्र, गिलास, कटोरा।
कौशिकापुत्र—पु० [सं०] इद्रका वज्र; इद्रपुत्र।
कौशिकारति, कौशिकारि—पु० [सं०] काक।
कौशिकी—खी० [सं०] दुर्गा; कोसी नदी; इय कान्यकी
 चार वृत्तियोंमेंसे एक, दे० 'कैशिकी'; एक रागिनी।
—कान्हावा—पु० [हिं०] कौशिकी और कान्हाके योगसे
 बना एक संकर राम।
कौशीधाम्य, कौपीधाम्य—पु० [सं०] कोशसे उत्पन्न होने-
 वाला धाम्य, तिलादि।
कौशील्य—पु० [सं०] नट, अभिनेताका पेशा।
कौशेय, कौषेय—पु० [सं०] रेशम; रेशमी कपड़ा; रेशमी
 साड़ी। वि० रेशमी।
कौपीतक—पु० [सं०] एक कपि जो कुपीतक कपिके पुत्र
 और कन्वेदकी एक शाखाके प्रवर्तक थे।
कौपीतकी—खी० [सं०] कन्वेदका एक शाखा; कन्वेदकी
 एक शाखा; एक उपनिषद्; अगस्त्य मुनिकी पत्नी।
कौष्ठेयक—पु० [सं०] केवल खजाना या भंडार भरनेके लिए
 जनतामें समय-समयपर लिया जानेवाला कर।
कौसल्या—खी० [सं०] दे० 'कौशल्य'।—बंदू—पु०
 रामचंद्र।
कौसिक—पु० दे० 'कौशिक'।
कौसिला—खी० दे० 'कौशल्य'।
कौसीद्—वि० [सं०] कण-संबंधी; सूक्ष्म।
कौसीध—पु० [सं०] कुसीद-वृत्ति, महाजनी, सूदखोरी;
 आलस्य; तंद्रा।
कौसुम—वि० [सं०] कुसुमके फूलका बना या उससे रंगा
 हुआ। पु० बनकुसुम।
कौसुम—वि० [सं०] पुष्पयुक्त। पु० कुसुमांजन, पुष्पांजन;
 पराग।
कौसुतिक—पु० [सं०] छल करनेवाला; बाजीगर।
कौस्तुभ—पु० [सं०] समुद्र-मंथनसे निकला हुआ एक रत्न
 जिसे विष्णु छातीपर धारण किये रहते हैं; उगलियाँ
 मिलानेकी एक मुद्रा; एक तरहका तेल।—लक्षण,—
बद्धा(क्षत्),—हृदय—पु० विष्णु।
कौह—पु० अजुन शूद्र।
कौहरी—पु० 'कौहरी'।
कवा—सर्वे प्रसवाचक सर्वनाम। वि० कितना; बहुत;
 कैसा; बहुत बढ़िया। अ० किस्ति लिए, किस्ति कारण; प्रस-
 त्यक्त शब्द।

क्याद-प्र० दे० 'का' । † पु० पैका वाला ।
 क्वारी-श्री० बग या क्षेत्रकी मंड बनाकर प्रायः चौकोर
 खानेकी शकलमें किया हुआ विभाग ।
 कुल्ली-श्री० दे० 'कवारी' ।
 क्वी-अ० कित लिप, कित कारण । -कर-कैसे । -कि-
 कारण यह कि, इसलिए कि । -जही-अवश्य, वैशक ।
 -ज हो-क्या कहना, साक्षात् ।
 क्वीन-पु० [सं०] रीना, विनाय; शुद्धके लिए आह्वान,
 लकारना; भारी ।
 क्वित-वि० [सं०] लकारा हुआ, आहूत ।
 क्वच-पु० [सं०] आरा; एक राजा; एक नरक; करीलका
 पैर; प्रक्षिप्त वृक्ष, एक योग (ज्यो०) । -पत्र-पु० सगौन ।
 -पाद-पु० शिरविट । -पृष्ठी-श्री० एक मछली ।
 क्वच-श्री० [मं०] केतकी ।
 क्वर-पु० [सं०] एक चिड़िया, किलकिला; आरा; करील;
 एक रोग; केका; दीन अर्थिक ।
 क्व-पु० [सं०] विष्णु; एक प्रजापति; संकल्प; इंद्रिय;
 योग्यता; प्रज्ञा, विवेक; आवाह मांस; इच्छा; प्रेरणा;
 देवताकी स्तुति आदि; यक्ष; अभ्येष्ट यक्ष; प्यारकी
 अधिकता । -हुद् (ह्) -पु० असुर । -ज्योसी (सिन्) -
 पु० (दक्षप्रजापतिका यह विष्णुसं करनेवाले) शिव ।
 -पति-पु० यक्ष करनेवाला । -पञ्चु-हृष-पु० यक्षका
 घोड़ा । -पुरुष-पु० विष्णु । -फल-पु० यक्षका उद्देश्य ।
 -खुद् (ख्) -पु० हविष्य खानेवाला, देवता । -बहि-
 श्री० एक चिड़िया । -राज-पु० अभ्येष्ट यक्ष; राजमय
 यक्ष । -विक्रमी (विन्) -वि० धन लेकर यक्षका फल
 बेचनेवाला ।
 क्वकैशिक-पु० [सं०] एक प्राचीन देश ।
 क्वन-पु० [सं०] काटना; बघ; एक दानव ।
 क्वम-पु० कर्म, कीचक; कष्ट, विपत्ति ।
 क्व-पु० [सं०] आगे बढ़नेके लिए कदम उठाना, बग
 भरना; बग, कदम; आरंभ; घटनाओं, वस्तुओं, व्यक्तियोंकी
 आगे-पीछे या ऊपर-नीचेके विचारसे यथास्थान अवस्थिति,
 तरदीव, सिलसिला; नियमित व्यवस्था; वेदपाठकी एक
 विशेष प्रणाली; शक्ति; आक्रमणकी सुझा; तैयारी; कल्प;
 विष्णु (वामनरूपमें); एक अर्थालंकार, दे० 'यथासंख्य';
 कर्म, कार्य, कृत्य । -जटा-श्री० वेदपाठका एक प्रकार ।
 -नासा-श्री० दे० 'कर्मनासा' । -पाठ-पु० वेद-
 पाठका एक प्रकार । -बद्ध-वि० क्रमयुक्त, सिलसिले-
 वार । -अंग-पु० कग-तरतीवका दूट जाना । -विकास-
 पु० धीरे-धीरे, क्रमशः उन्नति, विकास होना, क्रमोन्नति ।
 -संख्या-श्री० किसी वस्तु, व्यक्तिकी क्रमप्राप्त संख्या,
 सिलसिलेका नंबर । -सम्प्राप्त-पु० ब्रह्मचर्यादि आश्रमों-
 में रह चुकनेके बाद लिया हुआ सम्प्राप्त ।
 क्वक-वि० [मं०] क्रमयुक्त; आगे बढ़नेवाला । पु० क्रम-
 पाठ जाननेवाला; नियमित अभ्यास करनेवाला विद्यार्थी ।
 क्वमण-पु० [सं०] एकसे दूसरे स्थानकी, दूसरी स्थितिमें
 जाना; कदम उठाना; लौटना; घोड़ा; पैर ।
 क्वमतः (तस्) -अ० [सं०] दे० 'क्रमशः' ।
 क्वमशः (शस्) -अ० [सं०] यथाक्रम, सिलसिलेमें; धीरे-

धीरे ।

क्वमक-पु० [सं०] क्रमसंख्या ।
 क्वमवस-वि० [सं०] क्रमप्राप्त; कुलक्रमगत, बाप-दादासे
 चला आता हुआ ।
 क्वमवसा-अ० [सं०] यथाक्रम, सिलसिलेमें ।
 क्वमि-पु० [सं०] दे० 'क्रमि' ।
 क्वमिक-वि० [सं०] क्रमागत; कुलक्रमगत ।
 क्वमु-पु० [सं०] सुपारीका पैर ।
 क्वमुक-पु० [सं०] सुपारीका पैर; नागरमोथा; पठनी
 लोथ; शब्दतुलका पैर; कपासकी रोंधी ।
 क्वमुकी-श्री० [सं०] सुपारीका पैर ।
 क्वमेक, क्वमेकल-पु० [सं०] ऊँट ।
 क्वमोद्वेग-पु० [सं०] बैल ।
 क्व-पु० [सं०] मोल लेना, खरीदना । -लेख्य-पु०
 बैनामा, कपाला । -पत्र-पु० किसी वस्तुके क्रय-
 विक्रयसे संबंध रखनेवाला पत्र । -विक्रय-पु० खरीद-
 विक्री, व्यापार । -विक्रयिक-पु० व्यापारी । -विक्रयी-
 (विन्) -वि० खरीद-विक्री करनेवाला । पु० व्यापारी ।
 क्वण-पु० [सं०] खरीदना ।
 क्वारोह-पु० [सं०] हाट, बाजार; मेला ।
 क्वचिक-वि० [सं०] खरीदनेवाला । पु० व्यापारी ।
 क्वचिम-पु० [मं०] किसी वस्तुके क्रय-विक्रयपर किया
 जानेवाला कर (को) ।
 क्वयोपघात-पु० [सं०] कदबंधन, खरीदमें रकबाट
 डालना (को) ।
 क्वच-वि० [मं०] जो खरीदा जा सके; बिक्रीके लिए रखा
 हुआ (माल) ।
 क्वान-पु० कृपाण, तलवार ।
 क्वर-पु० [सं०] कक्षा मांस । -घातन-पु० हिरन ।
 क्वयाद्, क्वयाद्-वि० [सं०] कक्षा मांस खानेवाला ।
 पु० राक्षस; मांसभक्षी जंतु-बाघ, भेड़िया आदि; चिन्ता-
 की जति ।
 क्वसित-वि० [सं०] क्षीणकाय, दुबला-पतला ।
 क्वत-वि० [सं०] गया हुआ; बीता हुआ; लौंघा हुआ;
 आक्रान्त; दब हुआ; बंदा हुआ । पु० पौव; घोड़ा; गमन;
 बग; चंद्रमाके किसी ग्रहके साथ योगकी स्थिति । -वृक्षी-
 (सिन्) -वि० भूत-भविष्य, अनिद्रिय विषयोंकी जानने-
 वाला, सर्वज्ञ ।
 क्वति-श्री० [सं०] क्रमण; गति, जाना; लौटना; सूर्यका
 भ्रमण-मार्ग; स्थितिमें आरी उलट-कर; पूर्ण परिवर्तन;
 राजव्यवस्थाका उलट दिया जाना, राजक्रांति । -कक्ष-
 पु० सूर्यका भ्रमणमार्ग । -कारी (रिन्) -वि० स्थिति,
 व्यवस्थामें आरी उलट-कर कर देनेवाला । पु० राजक्रांतिका
 प्रवासी । -क्षेत्र-पु० क्रांति जाननेके लिए बनाया जाने-
 वाला क्षेत्र । -पात-पु० बह हिंदु जहाँ क्रांतिबल विपु-
 बर रेखामें मिलता है । -मंडल-पु० सूर्यका भ्रमणमार्ग ।
 -बल-पु० क्रांतिवृत्त । -वृत्त-पु० दे० 'क्रांति-
 मंडल' । -साम्ब-पु० ग्रहोंकी तुल्य क्रांति ।
 क्वहस्ट-पु० [मं०] ईसाई धर्मके प्रवर्तक ईसा ।
 क्वकचिक-पु० [सं०] लकड़ी चोरनेवाला ।

काय-पु० [सं०] मारण, बध; स्तंभका एक अनुचर; शूत-
राष्ट्रका एक पुत्र; एक नगर।

कायक, कायिक-पु० [सं०] खरीदनेवाला; व्यापारी।

क्रिकेट-पु० [अ०] गेंदका एक खेल जो बल्लेसे खेला जाता
है।-बाल-पु० क्रिकेट खेलनेका गेंद।-मैच-पु०
क्रिकेटका दंगल।

क्रिमि-पु० [सं०] दे० 'कृमी'।-झी-स्त्री० सोमराजी।

-ज-पु० अगुह।-खा-स्त्री० काख।-भक्ष-पु० एक
नरक।-शैक-पु० बस्तीक।

क्रिय-पु० [सं०] मेघ राशि।

क्रियमाण-वि० [अ०] जो किया जा रहा हो, होता हुआ।

क्रिया-स्त्री० [म०] कुछ किया जाना; कर्म; व्यापार; चेष्टा;
काम करनेका विधि; शिक्षण; हाना; अभ्यास; रचना;
धार्मिक स्तुकार; प्रायश्चित्त; भ्राज; पूजन; उपचार;
अभ्ययन; साधन, उपकरण, अभियोगका विचार आदि।

-कर्म(रू)-पु० धनक-क्रिया; अव्येष्टि।-कलाप-पु०

मूर्ध्ना शास्त्रविहित कर्म।-कार-पु० काम करनेवाला;

शिक्षारम्भ करनेवाला छात्र।-चतुर-पु० श्रुतार रसमें

बह नायक जो कार्य व्यवहारमें चतुराई दिखलाकर असीष्ट-

मिद्धिमें समर्थ हो।-दूषी(विन्)-पु० माक्षीका एक

प्रकार; माध्य, प्रमाण आदि न माननेवाला प्रतिवादी।

-निर्देश-पु० साक्ष्य।-निष्ठ-वि० कर्मनिष्ठ।-पंथ*-

पु० कर्मकाण्ड।-पट्ट-वि० कार्यकुशल।-पथ-पु०

उपचार-विधि।-पद्-पु० क्रियावाचक शब्द (व्या०)।

-पाद्-पु० व्यवहार (मुद्रा)में के चार पादों या अंगोंमें

तीसरा निजमें बाधा अपने टाँवेकी पुष्टिमें मधुन-जहादत

पेश करना।-फऊ-पु० कर्मका परिणाम।-योग-

पु० क्रियात्प योग नय, व्याध्याय और ईश्वर-प्रणिधान

(योग); क्रियाके साथ मध्य (व्या०)।-लोप-पु० शब्द-

विहित नियम नैमित्तिक कर्मोंका न किया जाना।-वाचक,

-वाची(विन्)-वि० क्रियाका अर्थ देनेवाला (व्या०)।

-वादी(विन्)-पु० (मुकदममें) दावा पेश करनेवाला।

-विग्रहा-अ० क्रियाके द्वारा अपना अभिप्राय बताने-

वाला नायिका।-विक्षेपण-पु० वह शब्द जो क्रियाकी

विशेषना-उमका काल, स्थान, रीति आदि बतावे (व्या०)।

-शक्ति-स्त्री० ईश्वरका भूदिकारिणी शक्ति।-शीक-

-वि० कर्मनिष्ठ।-शून्य-वि० कर्महीन।-संक्रांति-स्त्री०

शिक्षण, विद्यादान।-ज्ञान-पु० स्नानका एक विशेष

विधि जिसके अनुसार स्नान करनेसे तीर्थस्नानका फल

प्राप्त होता है।

क्रियातिपत्ति-स्त्री० [सं०] एक कान्यालंकार।

क्रियात्मक-वि० [सं०] क्रियात्पमें किया हुआ, अमली।

क्रियावर्त-पु० [सं०] कार्यकी समाप्ति।

क्रियामुपगम-पु० [म०] दो व्यक्तियोंका किसी कामके

समयमें आपसका समझौता।

क्रियार्थ-वि० [म०] क्रियाविधायक; कर्तव्यनौषक (विरका

वाच्य)।

क्रियावसन्न-वि० [म०] गवाहोंके बयानके कारण मुकदमा

हारनेवाला।

क्रियावाद्(वत्)-वि० [सं०] कर्मनिष्ठ।

क्रियेद्रिय-स्त्री० [सं०] कर्मेद्रिय।

क्रिस्टल-पु० [अ०] बिलौर, स्फटिक; शीशे, शकर आदिका

रसादार टुकड़ा।

क्रिस्मान-पु० ईसाई।

क्रिस्तानी-वि० ईसाईयोंका।

क्रीड-पु० दे० 'क्रीड'।

क्रीड-पु० [म०] क्रीडा, खेल-कूद, हँसी-मजाक।

क्रीडक-पु० [सं०] क्रीडा करनेवाला; द्वारपाल।

क्रीडन-पु० [म०] खेलना; खेलनेका साधन, खेलौना।

क्रीडनक, क्रीडनीयक-पु० [सं०] खेलौना।

क्रीडना-अ० क्रि० क्रीडा करना, खेल करना।

क्रीडा-स्त्री० [म०] खेल-कूद, क्रीमोल; हास्य-विनोद; तालके

मुख्य भेदोंमें एक।-कानन, वन-पु० क्रीडाके लिए

उपयुक्त उद्यान, प्रमोदवन।-कोष-पु० बनावटी गुस्सा।

-कौतुक-पु० खेल-कूद; आमोद-प्रमोद।-गृह,-

मंदिर-पु० कैलिंग।-चक्र-पु० हस्तविशेष।-नारी-

स्त्री० बहया।-पर्वत, शैल-पु० उद्यान आदिमें बनावी

जानेवाला कृत्रिम पर्वत।-सधूर-पु० मनोरजनके लिए

पाला गया मोर।-सुग-पु० मंजले, जो बहलानेके लिए

पाला हुआ हिरन।-थान,-रथ-पु० मौर-उत्सव आदि-

में सवारीके उपयुक्त रथ, पुष्परथ।-रत्न-पु० रतिक्रिया।

-शील-वि० खेलवादी।

क्रीडित-वि० [सं०] खेला हुआ, जो खेल चुका हो।

क्रीडी(विन्)-वि० [सं०] क्रीडाशील।

क्रीत-वि० [म०] जय किया हुआ, खरीदा हुआ। पु० मां-

बापकी धन देकर खरीदा हुआ पुत्र।* स्त्री० क्रीति,

यश-'हो कहा कहीं मरके प्रभुकी निगम कहत जाकी

क्रीत'-सूर।

क्रीतक-पु० [म०] क्रीत पुत्र। वि० कय द्वारा प्राप्त।

क्रीतानुगय-पु० [म०] खरीदी हुई चीजकी लौटाना।

क्रीलना*-अ० क्रि० काबा करना।

क्रीला*-स्त्री० क्रीडा-'जा बनमें क्रीला करी, दाहान है

वन सोह'-माखी।

क्रीड-वि० [सं०] क्रीडयुक्त, गुस्सेमें भरा; निर्दय।

क्रीडा(शब्द)-पु० [म०] गौदक, स्यार।

क्रीड-वि० [म०] बुलावा हुआ, आहूत, जिसे बुरा-भला

कहा गया हो। पु० रोदन; शोर।

कूजर-पु० [अ०] हलका और हलकीमां जगी जहाज।

कूर-वि० [सं०] निर्दय, सगदिक, परपीडक; बराबना;

हानिकारक; आहान; हिंस्र; अपक, अशुभ, गरम; अप्रिय।

पु० बाज पक्षी; मकैद चील; पापग्रह, भात; बध; चोट;

निर्दयता; मयकर कार्य; मयकर रूप।-कर्म(रू)-पु०

निर्दयता; परपीडनका काम; शेर भयावना कर्म।-कर्मा

(मन्)-वि० कर कर्म करनेवाला।-कोष्ठ-वि० कड़े

कोठेवाला, जिसपर खुद विवेचनका अमर न हो।-गंध

-पु० गंधक।-ग्रह-पु० रवि, शनि, राहु, भगल और

केतुमेंसे कोई।-चरित,-वेष्टित-वि० निर्दय कार्य

करनेवाला।-दंती-स्त्री० दुर्गा।-हक(रू)-वि०

बुरी दृष्टिवाला; खल, दुष्ट। पु० शनि; मंगल।-धूर्त-

पु० कृष्ण धचूरक।-रथ-पु० श्रावण, गौदक।-राधी-

(विश्व)-पु० श्लोकक। -**कोचन**-पु० सनि; बीम-
कोबा।

कूरा-वि० **खी** [सं०] कूर स्वभाववाली। **खी**० काळ
भूलवाली गदहपुत्री।

कूराकृति-वि० [सं०] बराबनी सकलवाला। पु० रावण।

कूराभा(**सम्ब**)-पु० [सं०] क्षति। वि० कूर स्वभाव-
वाला।

कूराशव-वि० [सं०] कःत्रवाला; जिसमें भयंकर जानवर
हो (जैसे नदी); निम्नुर स्वभाववाला।

कूस-[अ० 'कास'] सूखी, सलीब; ईसाहयोंका धर्मविह
जो सूखने मिलते-जुलते आकारका होता है।

केणि, केणी-**खी**० [सं०] क्रय, खरीद।

केता (**रु**)-पु० [सं०] खरीदनेवाला। -(**रु**) **संचर्च**-
खरीदारोंकी बदा-ऊपरी (को०)।

केष-वि० [सं०] खरीदने योग्य।

क्रौच-पु० [सं०] क्रौच पर्वत।

क्रौर-पु० [सं०] छाती, वस्त्रखल; गोद, अंक; पेशका
खोलका; दूर; शनि ग्रह; किसी वस्तुके बीच या अंदरका
हिस्सा। -**कम्बा**-**खी**० बाराहीकंद। -**बूडा**-**खी**०

महाश्रावणिका नामक पौधा। -**पत्र**-पु० पुस्तकादि
लिखनेमें छूटे हुए अंशकी पूर्तिके लिए अलगसे लिखकर
रखा हुआ चिह्न सहित पत्र; समाचारपत्रके साथ अलगसे

छापकर वितरित लेख, विज्ञापन आदि। -**वर्णी**-**खी**०
मदकट्या। -**पाद्**-पु० कछुआ। -**पाली**-**खी**० सीना।

-**मुख**-पु० गैरा।

क्रोवाक, क्रोवावि-पु० [सं०] कण्ठप।

क्रोवीकरण-पु० [सं०] छातीसे लगाना, आलिंगन।

क्रोवीमुख-पु० [सं०] गैरा।

क्रोवेडा-**खी**० [सं०] मोथा।

क्रोष-पु० [सं०] किसी अनुन्नित कर्म, अपकार आदिमें
दूसरेका अपकार करनेका तीव्र मनोविकार, कोप, गुस्सा;
रौद्र रसका स्वायी भाव (मा०)। -**ज**-वि० कोषसे

उत्पन्न। पु० मोह। -**मूर्च्छित**-वि० गुस्सेमें बहवत्तास,
आपेमें बाहर। -**वर्जित**-वि० कोषरहित। -**वसा**-

-**खी**० दहकी एक कन्या। -**डा**(**हन्**)-पु० विष्णु।

क्रोधन-वि० [सं०] क्रोधी स्वभाववाला, गुस्मेवर। पु०
क्रोशिकका एक पुत्र; माठ सवत्सरोंमें एक; क्रोध करना।

क्रोधना-वि०, **खी**० [सं०] क्रोधी स्वभाववाली।

क्रोधवतः-वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधा-**खी**० [सं०] दह प्रजावतिकी एक कन्या।

क्रोधाखु-वि० [सं०] क्रोधी।

क्रोधित-वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधी(**विश्व**)-वि० [सं०] क्रोध करनेवाला, जिमें जल
गुस्सा आ जाय। पु० मैसा; कुशा; गैरा; एक सवत्सर।

क्रोधा-पु० [सं०] रौना; जोरसे चिल्लाना; पुकारना; कोस।
-**ताळ**-**भ्वनि**-पु० एक तरहका नगाड़ा, डका।

क्रोधान-पु० [सं०] चिल्लाना।

क्रोडा(**रु**)-पु० [सं०] शृगाल।

क्रोष्टु-पु० [सं०] शृगाल। -**पुच्छिका**, -**मेखला**,
-**विष्ठा**-**खी**० शूनिपणी। -**फल**-पु० रंघुदी।

क्रोष्टुक-पु० [सं०] दे० 'क्रोष्टु'।

क्रोष्टी-**खी**० [सं०] शृगाली; कांगली; डेत भूमिकुम्भाङ;
कुम्भाविदारी।

क्रौंच-पु० [सं०] एक तरहका बगला, कर्कोतुल; एक पर्वत
जो पुराणोंमें हिमवान् (हिमालय)का पोता और मैनाकका
बेटा बताया गया है; सात महाद्वीपोंमें एक; मय दानवका
पुत्र जो स्कंदके हाथों मारा गया। -**क्षारण**-पु० दे०
'क्रौंचरिपु'। -**रंघ**-पु० हिमालयकी एक घाटी। -**रिपु**,
-**बन्धु**, -**सूदन**-पु० कालिकेय; परशुराम।

क्रौंचावन-पु० [सं०] शृगाल।

क्रौंचावनी-**खी**० [सं०] पशवीज।

क्रौंचारति, क्रौंचारि-पु० [सं०] कालिकेय; परशुराम।

क्रौंचाण-पु० [सं०] एक तरहकी व्यूहरचना।

क्रौंची-**खी**० [सं०] मादा क्रौंच; कश्यप कपिकी एक
कन्या।

क्रौंच-वि० [सं०] शूकर-संबंधी; बराहवतार-संबंधी।

क्रौंच-पु० [सं०] क्रूरता।

क्रौंचासक्त-पु० [सं०] सौ क्रौंच चलनेवाला सन्ध्यासी;
वह व्यक्ति जिससे सौ क्रौंचका दूरीमें आकर मिला जाय
(शिक्षक)।

क्रुच-पु० [अ०] साहित्य-सगीत आदिकी चर्चा या मनवह-
लावके कामोंके आयोजनके लिए स्थापित समिति।

क्रम, क्रमय, क्रमय-पु० [सं०] थकावट, हानि।

क्रक-पु० [अ०] लिखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, मुन्शी,
किरानी।

क्रकी-**खी**० क्रकका पंथा, किरानीगिरी।

क्रांत-वि० [सं०] थका हुआ, आंत; मुरझाया हुआ; क्षीण-
काय; हतोत्साह।

क्रांति-**खी**० [सं०] थकावट।

क्रांक-पु० [अ०] बड़े आकारकी घड़ी जो लगाकर मंहारे
चलती और प्रायः दीवारमें लगाकर रखी जाती है, दीवार
घड़ी। -**टावर**-पु० घटावर।

क्रारनेट-पु० [अ०] शहनाईके ढंगका एक विलायती
बाजा।

क्राव-पु० [अ०] दरजा, भेणी; विवाहियोंका वर्ग, कक्षा।

-**टीचर**-पु० किसी खास क्लास; दरजेका मुख्य अध्यापक।

क्रिच-वि० [सं०] गीला, आर्द्र। -**बर्म**(**रु**)-पु० आँखों-
का एक रोग जिसमें पलकोंमें सूजली होती और उनसे

पानी गिरता है। -**हद्द**-वि० कोमल हृदयवाला।

क्रिवाक्ष-वि० [सं०] जिसकी आँखमें पानी गिरता हो।

क्रिप-**खी**० [अ०] कागज-पत्रकी शकृद् रखने, वानेकी
पटिया बैठाने, जूड़ा बाँधने आदिमें काम देनेवाला आला,
पंजा।

क्रिशित-वि० [सं०] दे० 'क्रिष्ट'।

क्रिष्ट-वि० [सं०] क्लेशयुक्त, पीड़ित; क्रांत; पूर्वापर-विकट
अर्थवाला (वाक्य); जिसका अर्थ बहुत सोचने या खींच-
तानसे निकले; क्षतिग्रस्त; लजित किया हुआ; मुरझाया
हुआ। -**कल्पना**-**खी**० बहुत खींच-तान या पुमाव-

फिरावली कल्पना। -**चात**-पु० कट देकर मारना।
-**बर्म**(**रु**)-पु० पलकोंका एक रोग।

क्रिष्ण-खी [सं०] आत्माको क्लेश पहुँचानेवाली चित्त-वृत्ति (सौ०) ।

क्रिष्टि-खी [सं०] क्लेश, पीड़ा; नौकरी ।

क्रीत-पु० [सं०] एक विप्रेका कीड़ा ।

क्रीतक-पु० [सं०] जेठा मधु ।

क्रीतकिका-खी [सं०] नीलका पौधा ।

क्रीतनक-पु० [सं०] अतिरसा; मधुलिका ।

क्रीब, क्रीब-वि० [सं०] दिवङ्गा, बंध, नपुंसक, नामर्द; कमीना; कायर, बरपोक । पु० नपुंसक पुरुष; नपुंसक लिंग ।

क्रेद्-पु० [सं०] गीलापन, आर्द्रता; दुःख; पसीना; सपना; फोबेका साप ।

क्रेद्क-वि० [सं०] गीला करनेवाला; पसीना छानेवाला । पु० कफ; शरीरस्य दस अग्निवर्षोंसे एक (दो० 'अक्षि') ।

क्रेदन-वि० [सं०] क्लेशक । पु० आयुर्वेदके अनुसार शरीरस्य पाँच प्रकारके कर्मांशोंमें एक जिससे पसीना निकलता है ।

क्रेदु-पु० [सं०] चंद्रमा; सन्निपात ।

क्रेष-पु० [सं०] दुःख, पीड़ा; अविद्या; अरिमता; क्रोध; चिन्ता; राग, द्वेष और अभिनिवेशोंमेंसे कोई वृत्ति (सौ०) ।

—**कर-वि०** क्लेश देनेवाला ।

क्रेषक-वि० [सं०] क्लेश देनेवाला ।

क्रेषित-वि० [सं०] पीडित, क्लेशयुक्त ।

क्रेषी (शिरः)-वि० [सं०] क्लेश देनेवाला; क्षतिकारक ।

क्रेष्टा (पृ०)-सं० क्लेश देनेवाला ।

क्रेम-पु० दे० 'क्लेश' ।

क्रीतकिक-पु० [सं०] जेठा मधुमें तैयार की हुई शराब ।

क्रीदक, क्रीव-पु० [सं०] क्रीडना, नपुंसकता; कायरपन ।

क्रोम-पु० [सं०] दाहना फेफड़ा ।

क्रोरोफार्म-पु० [सं०] एक तरल औषध जिसे सुंघाकर चौर-काष्ठके लिए रोगीकी बेहोश करते हैं ।

कंगु-पु० [सं०] कंगनी, काकुन ।

क-अ० [सं०] कहाँ । —**चिद्-अ०** कहाँ-कहाँ; बहुत कम; कमी ।

कण-पु० [सं०] ध्वनि; वीणा, पुँषक आदिकी आवाज ।

कणन-पु० [सं०] कण; वीणा, धुँषक आदिका बजना; मिट्टीका छोटा बरतन ।

कणित-वि० [सं०] ध्वनित; गुँजता हुआ । पु० शब्द, ध्वनि ।

कणितेक्षण-पु० [सं०] ग्रन्थ ।

कण-पु० [सं०] काढ़ा, काथ ।

कथन-पु० [सं०] औटना; काढ़ा करना ।

कथित-वि० [सं०] औटा हुआ; काढ़ा किया हुआ ।

कथिता-खी [सं०] आयुर्वेदमें कथित एक तरहकी कटी जो बहुत रोचक, पाचक और अग्निदीपक बतायी गयी है ।

कौर-वि० दे० 'कातर' ।

काचिक-वि० [सं०] कविद् होने, मिलनेवाला, विरल ।

काच-पु० दे० 'काष्ठे' ।

काष्ठे-पु० [अ०] सीसेका आधेसे चार पयसककी चौड़ाई-का चौकोर टुकड़ा जो कंघोज करनेमें लाइनकी खाली

जगह भरनेके काम आता है ।

काण-पु० [सं०] वीणा आदिका शब्द; कण ।

काथ-पु० [सं०] काढ़ा, जोशिया; काठ, दुःख; व्यसन ।

काथोज्ज्व-पु० [सं०] रसीत ।

काण-पु० पु० हनकार; कण ।

कारंटाह्व-पु० [अ०] सुतले रोगोंसे पीकित मुसाफिर्ओं आदिकी रोककर कुछ दिन अलग रखनेका प्रबंध; बह स्थान जहाँ ऐसे लोग रहे जायें; सुतहा अस्पताल ।

कार-पु० आश्विन मास ।

कारच्छक, कारपन-पु० अविवाहित अन्त्या; कारापन ।

कारा-वि० कुँआरा, अविवाहित ।

कार्दर-पु० [अ०] चौधारी, चौधा भाग; सालका चौधा हिस्सा, तिमाही; २८ पीठका बजन; बर्गविशेषवालोंकी बस्ती; रेलवे, स्कूल, कालिज आदिके कर्मचारियोंके छिद्र संस्थाकी ओरमें बनवाया हुआ मकान; पीजके रहने या ठिकनेका स्थान, पक्का । —**मास्टर-पु०** पीजका एक अफसर जिसका काम सैनिकोंके छिद्र रसद, मकान आदि-का प्रबंध करना होता है; एक जहाजी अफसर जिसका काम मछाहोंको आवश्यक समेत देना आदि होता है ।

—**जेनरल-पु०** सैनिकोंके छिद्र रसद, आवासका प्रबंध करनेवाला विभागका सबसे बड़ा अफसर ।

कैला-पु० कोयला ।

क्षतस्थ-वि० [सं०] क्षमा करनेके योग्य, सहन करनेके योग्य ।

क्षता (पु०)-वि० [सं०] क्षमाशील, सहिष्णु ।

क्ष-क' और 'य' के योगसे बना हुआ संयुक्त अक्षर । पु० [सं०] क्षेत; किमान; नाश, प्रलय; विजली; एक राक्षस; विष्णुका चतुर्थ-नरसिंह-अवतार ।

क्षण-पु० [सं०] छन, लमहा; $\frac{1}{4}$ सेकेंड, निमेषका चौथाई या ३० कलाके बराबर काल; अवसर; अवकाश; शुभ काल; उत्सव; आनंद । —**क्ष-पु०** ज्योतिषी; जल; रत्नौषी । —**दा-खी** रात; हल्दी । —**कर-पु०** चंद्रमा । —**क्षुप्ति-प्रकाशा, प्रभा-खी** विजली ।

—**निःश्वास-पु०** मुँस । —**भंग-पु०** दे० 'क्षणिकवाद' (सौ०) । —**भंगु-वि०** दे० 'क्षणभंगुर' । —**भंगुर-वि०**

छनभरमें, थोड़ी ही देरमें मिट जानेवाला । —**मात्र-अ०** छनभर । —**मूल्य-पु०** नगद दाम । —**रामी (मिर्)-पु०** कद्दतर । —**विध्वंसी (सिन्)-वि०** क्षणभरमें नष्ट होनेवाला । पु० 'क्षणिकवाद' माननेवाला व्यक्ति (सौ०) ।

क्षणु-पु० [सं०] जरूम, धाव ।

क्षणन-पु० [सं०] बघ करना; आहत करना ।

क्षणिक-वि० [सं०] क्षणस्थायी । —**वाद-पु०** बौद्ध दर्शन-का यह मत कि प्रत्येक वस्तु उत्पत्तिसे दूसरे ही क्षणमें नष्ट हो जाती अर्थात् प्रतिक्षण बदलती रहती है ।

क्षणिका-खी [सं०] विजली ।

क्षमिनी-खी [सं०] रात ।

क्षणी (मिर्)-वि० [सं०] क्षणस्थायी; अवकाशप्राप्त ।

क्षत-वि० [सं०] घायल; कटा-फटा हुआ; क्षतिग्रस्त; खंडित, भग्ना । पु० घाव, जरूम; चोटसे होनेवाला कोड़ा; दुःख; मय, खतरा । —**कास-पु०** क्षतज खाँसी । —**ज-**

पु० कुकरोषा । -झी-स्त्री० काल । -ख-पु० रक्त; पीव । वि० धानसे उत्पन्न । -०कास-पु० फेफड़ेमें जलम होनेमें पैदा हुई खोसी जिसमें कफके साथ खून मिला होता है । -खोनि-वि०, स्त्री० जिस(स्त्री)का पुरुषसे समागम हो चुका हो, कौमार्य नष्ट हो चुका हो । -रोहण-पु० धातुका भरना । -विक्षत-वि० जिसकी देह धावोंसे भरी हो, बहुत जगह कट-फट गयी हो । -कुक्षि-स्त्री० जीविकाका साधन न होना । -व्रण-पु० चोट एक जानेमें होनेवाला कोड़ा । -व्रत-वि० जिस(ब्रह्मचारी)का व्रत खंडित हो गया हो । -सर्पण-पु० गमनशक्तिका नाश । -हर-पु० अगुरु ।

क्षता-स्त्री० [स०] वह कन्या जिसका कौमार्य ब्याहके पहले ही नष्ट हो चुका हो ।

क्षतारि-वि० [स०] विजयी ।

क्षताशौच-पु० [स०] धातल होनेका अशौच ।

क्षति-स्त्री० [स०] हानि, हस्त; धात; चोट । -प्रक्ष-वि० जिसकी हानि हुई हो । -पूर्ति-स्त्री० हानिका भर जाना, धाटेका पूरा हो जाना; नुकसानका मुआवजा ।

क्षतोदर-पु० [स०] एक उदर-रोग जिसमें आंतें कोरें कड़ी, नुकीली चीज मिलाए जाने आदिमें कट जाती हैं ।

क्षता(वृ)-पु० [स०] काटने, पाव करनेवाला; डारपाल; दासीपुत्र; शत्रु पिता और क्षत्रिय मानाये उत्पन्न स्नान; निवेग करनेवाला पुण्य, मारपीत; ब्रह्मा; मछली, रथी; कोषाध्यक्ष ।

क्षत्र-पु० [स०] क्षत्रिय; क्षत्रिय जाति, योद्धा; बल; राज्य; दैह; धन । -कर्म(न्)-पु० क्षत्रियोचित कर्म । -धर्म-पु० क्षत्रियका धर्म, क्षत्रियके कर्तव्य; शौर्य । -धर्मा-वि० क्षत्रधर्मका पालन करनेवाला । पु० योद्धा, मित्राही । -हृति-स्त्री० एक यक्ष; राज्यय यक्षका एक अंग । -ष-पु० प्राचीन पारसीक साम्राज्यके माहर्षि, राजाशोक उपाधि; प्राजापति, राज्यपाल । -पति-पु० राजा । -बंधु-पु० क्षत्रिय; हीन, नाममात्रका क्षत्रिय । -योग-पु० एक योग (उपयोग) । -विद्या-स्त्री० धनुर्विद्या, युद्धविद्या । -वृक्ष-पु० मुचकुंद । -वेद्-पु० धनुर्वेद । -सख-पु० एक यक्ष त्रिम केवल क्षत्रिय कर सकता है ।

क्षत्रांतक-पु० [स०] परशुराम ।

क्षत्राणी-स्त्री० धीर नारी; क्षत्रिया ।

क्षत्राण्वय-वि० [स०] क्षत्रिय जातिका; क्षत्रिय-संबन्धी ।

क्षत्रिय-पु० [स०] हिंदुओंके चार वर्णोंमेंसे दूसरा; योद्धा जाति । -हण-पु० परशुराम ।

क्षत्रियका; क्षत्रियिका-स्त्री० [स०] दे० 'क्षत्रिया' ।

क्षत्रिया-स्त्री० [स०] क्षत्रिय स्त्री ।

क्षत्रियाणी, क्षत्रियी-स्त्री० [स०] क्षत्रियको पत्नी ।

क्षत्री(त्रिन्)-पु० [स०] क्षत्रिय ।

क्षदन-पु० [स०] काटना; चीरना, फाटना; खाना ।

क्षप-पु० [स०] जल ।

क्षपण-पु० [स०] अशौच; ध्वसन, दमन; बौद्ध या जैन मन्त्राधी ।

क्षपणक-पु० [स०] बौद्ध या जैन मन्त्राधी, निष्क्रमादित्य-की राजमहाके नी रक्तोंमें एक ।

क्षपणी-स्त्री० [स०] डोंडा; जाल ।

क्षपणु-पु० [स०] अपराध ।

क्षपंत-पु० [स०] प्रभात ।

क्षपंत्य-पु० [स०] रतौषी ।

क्षपा-स्त्री० [स०] रात; हल्दी । -कर-पु० चंद्रमा; कपूर । -चन-पु० काला बादल । -चर-पु० निशाचर । -नाथ, -पति-पु० चंद्रमा; कपूर ।

क्षपाट-पु० [स०] रात्रिकालमें चलनेवाला, निशाचर ।

क्षपित-वि० [स०] नष्ट किया हुआ; दबाया हुआ ।

क्षम-वि० [स०] सहन करनेमें समर्थ; योग्य; उपयुक्त; (हिंदीमें यह शब्द केवल समासमें आता है-कार्यक्षम, ज्ञानक्षम आदि) पु० औचित्य, उपयुक्तता; युद्ध; शिव; एक तरहका गौरा पक्षी ।

क्षमणीय-वि० [स०] क्षमा करने योग्य, क्षम्य ।

क्षमता-स्त्री० [स०] शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता ।

क्षमना-स० कि० माफ करना ।

क्षमनीय-वि० दे० 'क्षमणीय' ।

क्षमवाना-स० कि० 'क्षमना'का प्रेरणाधरूप कृप ।

क्षमा-स्त्री० [स०] परकृत अपवार, अपराधकी बिना क्रोध किये या दंड-प्रतिकारकी बाग मोचे सह लेनेवाली विस्त-वृत्ति, दरगुजर, माफी, सहनशीलता; धरती, दुर्गा; बैनवा नदी; वृक्षकी एक कच्चा; एककी मन्त्रा; खदिर वृक्ष; एक वृत्त । -ज-पु० मंगल ग्रह । -हल-पु० धरातल । -दंश-पु० महिजनका पेश । -भुक्(ज्)-पु० राजा । -भुत्-पु० पहाड़ । -मंडल-पु० भूमटल । -पुक्त, -शील-वि० क्षमा करनेवाला, सहनशील ।

क्षमाना-स० कि० क्षमा करना ।

क्षमान्वित-वि० [स०] दे० 'क्षमायुक्त' ।

क्षमापन-पु० [स०] क्षमा करना, माफी मागना ।

क्षमावान्(वन्)-वि० [स०] दे० 'क्षमायुक्त' ।

क्षमित-वि० [स०] क्षमा किया हुआ ।

क्षमिता(न्)-वि० [स०] क्षमाशील, सहिष्णु ।

क्षमी(मिन्)-वि० [स०] क्षमाशील, ममर्थ ।

क्षम्य-वि० [स०] क्षमा करने योग्य ।

क्षयंकर-वि० [स०] नाश करनेवाला, क्षयकारक ।

क्षय-पु० [स०] क्षयस्थान; क्षीजन, क्षय; नाश; अर्थ-हानि; मृत्युादिका भिगना; प्रलय; यक्षमा रोग; रोमा; कणराशि (ग०); ६० सक्त्वगेमेंसे अंतिम; वंश, जाति; यमालय । -कर-वि० दे० 'क्षयकर' । -काल-पु० प्रलयकाल । -काम्य-पु० क्षयगममें होनेवाली खोमी । -कासी(मिन्)-वि० क्षयकास रोगमें पीड़ित । -ग्रंथि-स्त्री० क्षयरोगमें (अंतर्गम) होनेवाली मिल्दी । -निधि-स्त्री० वह निधि जो व्यवहारमें लुप्त मानी जाय । -नाशिनी-स्त्री० जीवनीका पेश । -पक्ष-पु० कृष्ण पक्ष । -माय-पु० दो संक्रान्तियोंवाला चांद्र मास जो ३२३वें वर्ष और कभी-कभी ३०वें वर्ष भी आता है, होन साम । -रोग-पु० एक दुःसाध्य रोग जिसमें रोगीको सदा मंर-ज्वर बना रहना है और उसके फेफड़ेमें त्रय्य हो जाता है । -रोगी(मिन्)-वि० क्षयरोगमें पीड़ित, क्षयी । -बाधु-स्त्री० प्रलयकालमें रहनेवाली वायु । -संपद्-

श्री० बर्बादी, सर्वनाश ।
 क्षयण-पु० [सं०] शांत जलाशय; खाड़ी या बंदर; निवास-
 स्थान । वि० नाश करनेवाला ।
 क्षयधु-पु० [सं०] क्षयकी सौंसी ।
 क्षयाह-पु० [सं०] वह चांद्र दिन जो चांद्र और सौर
 पंचांगमें मेरू बैठानेके लिए छोड़ दिया जाता है ।
 क्षयिक-वि० [सं०] क्षयरोगमें पीडित ।
 क्षयित-वि० [सं०] नष्ट; क्षयप्राप्त; विभक्त (ग०) ।
 क्षयिष्णु-वि० [सं०] क्षय होनेवाला, छीजनेवाला, नष्ट;
 नाशकारी ।
 क्षयी(यिन्)-वि० [सं०] क्षय होनेवाला; नष्ट होनेवाला;
 क्षयरोगग्रस्त । [श्री० 'क्षयिणी' ।] पु० चंद्रमा ।
 क्षय्य-वि० [सं०] जिसका क्षय हो सके ।
 क्षर-वि० [सं०] चल; नाशमान । पु० जल; बादल; देह;
 अहान; ईश्वर; कारण और कार्य ।
 क्षरण-पु० [सं०] चूना, रसना; छूटना; उँगलियोंका
 पसीजना ।
 क्षरित-वि० [सं०] क्लृप्त, चुआ हुआ ।
 क्षरी(रिन्)-पु० [सं०] वर्षा ऋतु ।
 क्षव-पु० [सं०] छोक; खोसी; राई । -पत्रा-पत्री-श्लो०
 द्रोणपुष्पी ।
 क्षवक-पु० [सं०] अपामार्ग; राई ।
 क्षवधु-पु० [सं०] अधिक श्रेष्ठे आना; खोसी; गल्लिका दाह;
 गल्लिका दुखना ।
 क्षविका-श्लो० [सं०] एक तरहका वनमृदा; एक तरहका
 चावल; स्त्री ।
 क्षान-वि० [सं०] क्षमाशील, सहनशील; क्षमा किया हुआ;
 महा हुआ । पु० शिव ।
 क्षान्ता-श्लो० [सं०] पृथ्वी ।
 क्षान्ति-श्लो० [सं०] क्षमा, सहिष्णुता ।
 क्षानु-वि० [सं०] सहनशील, क्षमा करनेवाला । पु० पिता ।
 क्षा-श्लो० [सं०] पृथ्वी ।
 क्षात्र-वि० [सं०] क्षत्रिय-मन्थी; क्षत्रियोचिन । पु० क्षत्रिय-
 का कर्म; क्षत्रिय जाति; क्षत्रियका भाव, क्षत्रियत्व ।
 -तंज(स्)-पु० क्षत्रियोचिन तंज, पराक्रम ।
 क्षात्रि-पु० [सं०] क्षत्रिय पुरुष और अन्य जातिकी स्त्रोसे
 उत्पन्न मतान ।
 क्षाम-वि० [सं०] क्षीण, दुर्बल; कमजोर; अल्प । पु०
 विष्णुका एक नाम; क्षय, नाश ।
 क्षामा-श्लो० [सं०] पृथ्वी ।
 क्षार-पु० [सं०] जड़ी-बूटियोंकी राख या खनिज द्रव्योंका
 रासायनिक विधिसे बनाया हुआ नमक, खार; नमक;
 शोरा; मुहागा; काला नमक; जवाखार; कोंच; राख; गुश्;
 रम, सन; रंग; दृष्ट; जल । -कर्म-पु० एक नरक । -गुण-
 पु० खारापन । -त्रय-पु० सजी, शोरा और मुहागा ।
 -द्र-पु० सोरठा नामक वृक्ष । -नदी-श्लो० खारे
 पानीकी नदी जिसका नरकमें होना माना जाता है । -पत्र-
 पत्रक-पु० वपुष्का साग । -पत्रा-श्लो० चिल्ली
 नामक साग । -भूमि-श्लो० कसर । -भूमिका-श्लो०

रेह मिट्टी । -मेह-पु० प्रमेह रोगका एक मेद । -लघण-
 पु० खारी नमक । -श्रेह-पु० खारी मिट्टी; पलाश;
 मोरवा ।
 क्षारक-पु० [सं०] खार; सजी; कलिका; धोबी; चिबियोंका
 पिङ्गवा या दागा चिबिया फेंमानेका जाल; मछली पक-
 डनेकी खोँची ।
 क्षारण-पु० [सं०] खार बनाना; टपकाना; पारेका १५वाँ
 संस्कार; अपवाद लगाना (खासकर व्यभिचारका) ।
 क्षाराश्ल-पु० [सं०] कोंचकी बनी हुई आँस ।
 क्षारिका-श्लो० [सं०] भूल ।
 क्षारित-वि० [सं०] टपकाया हुआ; जिसपर (व्यभिचारका)
 मिथ्या अपवाद लगाया गया हो ।
 क्षारोद्-क्षारोद्क-क्षारोद्गच्छि-पु० [सं०] लघण समुद्र ।
 क्षाल-पु० [सं०] धोना; धुलाई ।
 क्षालन-पु० [सं०] धोना, साफ करना ।
 क्षालित-वि० [सं०] धोया हुआ, साफ किया हुआ ।
 क्षित-वि० [सं०] छीना हुआ, क्षयप्राप्त; दीन । पु० वध;
 क्षति ।
 क्षिता-श्लो० [सं०] पृथ्वी ।
 क्षिति-श्लो० [सं०] पृथ्वी; घर, वास्तुस्थान; क्षय; प्रलयकाल;
 एककी सख्या । -कष-पु० भूकंप । -कण-पु० धूलिकण ।
 -क्षम-पु० खैरका देह । -क्षोद्-पु० धूलि । -अनु-
 पु० अनुवा । -ज-पु० वृक्ष; मंगल ग्रह; केचुवा; वह
 रथान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं,
 दृष्टिस्तीमा; नरकामुर । -जा-श्लो० माता । -तनय-पु०
 मंगल ग्रह । -तनवा-श्लो० सीता । -तल-पु० धरातल ।
 -देव-पु० ब्राह्मण । -चर-पु० पहाड़ । -नन्दन-सुत
 -पु० मंगल ग्रह । -नाग-पु० केचुवा । -नाय-पति
 -प्राण-भुक्(ज्)-पु० राजा । -मंडल-पु० भूभंडल ।
 -रह-पु० वृक्ष । -वर्चन-पु० गव । -व्युदास-पु०
 गुफा ।
 क्षितीन्द्र, क्षितीश, क्षितीश्वर-पु० [सं०] राजा ।
 क्षिन्धव्रिति-श्लो० [सं०] कृष्णकी माना देवकी ।
 क्षिष्यक्षिप-पु० [सं०] राजा ।
 क्षिद्र-पु० [सं०] रोग; मूर्ख; साँग ।
 क्षिप-वि० [सं०] फेंकनेवाला, मारनेवाला । पु० फेंकना;
 अपमानित करना ।
 क्षिपक-वि० [सं०] फेंकनेवाला । पु० तीरदाज; बोझ ।
 क्षिपण-पु० [सं०] भेजना; फेंकना; आक्षेप करना ।
 क्षिपणि-पु०, क्षिपणी-श्लो० [सं०] डोंच; जाल; हथियार;
 कशाघात ।
 क्षिपणु-पु० [सं०] बानैत; हथियार; हवा ।
 क्षिपण्यु-वि० [सं०] सुगंधित । पु० शरीर; वस्त्र ऋतु;
 सुवास ।
 क्षिपा-श्लो० [सं०] भेजना; फेंकना; रात्रि ।
 क्षिप्त-वि० [सं०] फेंका हुआ; त्यागा हुआ; अवज्ञात, उपे-
 क्षित; चंचल; बहिर्मुख (चित्ति); बातरीगग्रस्त, पागल ।
 पु० चित्तकी पाँच वृत्तियोंमेंसे एक (चो०) । -कुक्षुर-
 पु० पागल कुत्ता । -चित-वि० चंचल चित्तवाला ।
 क्षिप्ता-श्लो० [सं०] रात्रि ।

किंकि-श्री० [सं०] कंकना; छिमे हुए अर्धका स्पर्शकरण ।
किम्प-वि० [सं०] तेज, क्षीप्रगामी; कञ्जीका । अ० जलद, तत्काल । पु० अँगूरी और तर्जनीके बीचका स्थान; सुहृत्के पंद्रहवाँ मास । -**कारी(विन्)**-वि० तेजीसे काम करने-वाला, मुस्तेद । -**हृत्**-वि० जिसका हाथ तेजीसे चले; तेज काम करनेवाला । -**होम**-पु० मिल्कमेके रूपमें साय-प्रातः किया जानेवाला होम ।
किंया-श्री० [सं०] हानि, बर्बादी; क्षय, अनौचित्य, आचार भेद ।

क्षीजन-पु० [सं०] बौस, सरकड़े आदिकी सरसराहट ।
क्षीण-पु० [सं०] दुबला-पतला, कमजोर; घटा हुआ; क्षति-प्रसा; क्षयप्राप्त; वृत्त; समाप्त; थोका; निर्धन । -**काच-वि०** दे० 'क्षीणशरीर' । -**चंद्र**-पु० सात वा इससे कम कलाजोवाला चंद्रमा । -**चय-वि०** जिसके पास पैसा न रह गया हो, निर्धन । -**पाप-वि०** जो पापकर्मोंका फल भोगकर निष्पाप हो गया हो । -**पुण्य-वि०** जो अपने सब पुण्यकर्मोंका फल भोग चुका हो । -**प्रकृति-वि०** जिस (राजा) की प्रजा दीन-हीन हो गयी हो या होती जा रही हो । -**मध्य-वि०** जिसकी कमर पतली हो । -**माली(सिन्)**-वि० खंडहरमें रहनेवाला । -**विक्रांत-वि०** पीतबहीन । -**वित्त-वि०** दे० 'क्षीणधन' । -**वीर्य-वि०** जिसका वीर्य, पराक्रम घट गया हो, नष्ट हो गया हो । -**वृत्ति-वि०** जिसके घाम जीविकाका सहारा न हो बेरोजगार, बेकार । -**शक्ति-वि०** जिसकी शक्ति नष्ट हो गयी हो । -**शरीर-वि०** दुबला-पतला, कमजोर । -**सार-वि०** जिसका रस नष्ट गया हो, सूखा (वृक्ष) ।

क्षीगार्थ-वि० [सं०] जिसकी भंपति नष्ट हो गयी हो, निर्धन ।

क्षीब-वि० [सं०] दे० 'क्षीब' ।
क्षीयमाण-वि० [सं०] जो बराबर घटता, क्षीयता जाय ।
क्षीर-पु० [सं०] दूध; बरगद, गूलर आदि वृक्षोंसे निकलने-वाला दुग्धरूप रस; जल । -**कंड-कंडक-पु०** दूध पीनेवाला बच्चा । -**कंद-पु०** क्षीरविदारी । -**कंडक-पु०** दूधब; मदार । -**काकोलिका, काकोली-श्री०** काकोलीका एक भेद जो अष्टवर्गके अंतर्गत है । -**वृत्त-पु०** दूध मथकर निकाला हुआ मक्खन । -**ज-पु०** चंद्रमा; यही; मक्खन; अमृत; कमल । वि० दूधसे उत्पन्न । -**जा-श्री०** लक्ष्मी । -**जाल-पु०** एक तरहकी मछली । -**जुंबी-श्री०** लोकी । -**दल-पु०** मदार । -**दुम-पु०** पीपल । -**घात्री-श्री०** दूध पिलानेवाली धाय । -**धि, निधि-पु०** समुद्र; क्षीरसागर । -**धेनु-श्री०** दूध देनेवाली गाय; कल्पित गाय (गायके स्थानमें दुग्धपूर्ण कलश) । -**नीर-पु०** दूध-पानी; गाढ़ा आलिंगन । -**प-पु०** दुधमुखा बच्चा । -**पर्णी-श्री०** मदार । -**पलांडु-पु०** सफेद प्याज । -**पाक-वि०** दूधमें पकाया हुआ । पु० पानी मिले हुए दूधमें ओटकर तैयार की हुई दवा । -**पुष्पी-श्री०** शंख-पुष्पी । -**भृत्-वि०** केवल दूधपर रहनेवाला, अपनी तनखाहमें केवल दूध लेनेवाला (चरवाहा) । -**बल्ली-श्री०** क्षीरविदारी । -**बिकृति-श्री०** दूधसे बना पदार्थ । -**विदारी-श्री०** सफेद और अधिक दूधवाली विदारी ।

-**वृक्ष-पु०** वह वृक्ष जिससे दूध निकले-गूलर, पीपल, बरगद, महुआ इ० । -**व्रत-पु०** केवल दूध पीकर रहनेका व्रत । -**शर-पु०** मलाई, सादी । -**शाक-पु०** कच्चा फटा हुआ दूध । -**चटिक-पु०** दूधमें पकाया हुआ साठी-का चावल । -**संतानिका-श्री०** एक तरहका विणवा हुआ दूध, छेना । -**समुद्र, सागर-पु०** पुराण-वर्णित सात समुद्रोंमेंसे एक । -**सार-पु०** मक्खन । -**स्फटिक-पु०** एक तरहका स्फटिक । -**हिंदीर-पु०** दूधका फेन ।

क्षीरस-पु० [सं०] मलाई ।
क्षीरा-श्री० [सं०] काकोली ।
क्षीराद्-पु० [सं०] दुधमुहों बच्चा ।
क्षीरादि-पु० [सं०] क्षीरसागर ।
क्षीरिक-पु० [सं०] एक तरहका साँप ।
क्षीरिका-श्री० [सं०] पिंडखनूर; बशलोचन ।
क्षीरिणी-श्री० [सं०] क्षीरकाकोली; खिरनी ।
क्षीरी(विन्)-वि० [सं०] दुग्धयुक्त; जिससे दूध निकले ।
क्षीरोद्-पु० [सं०] क्षीरसमुद्र । -**तनय-पु०** चंद्रमा । -**तनया-श्री०** लक्ष्मी ।
क्षीरोदक-पु० [सं०] एक वृक्ष; एक तरहका रेशमी कपड़ा ।
क्षीरोदधि-पु० [सं०] क्षीरसागर ।
क्षीरोदन-पु० [सं०] दूधमें पका हुआ चावल, खीर ।
क्षीव-वि० [सं०] उन्मत्त, मतवाला ।
क्षुण-पु० [सं०] टीठा ।
क्षुणी-श्री० [सं०] पृथ्वी ।
क्षुण्य-वि० [सं०] नूर किया हुआ; पिटा हुआ; खडित; दलित; अनुगन; पराजिन; अभ्यस्त । -**मना(नस्)-वि०** पश्चात्ताप करनेवाला ।
क्षुण्णक-पु० [सं०] अत्यधिक समय बजाया जानेवाला एक तरहका ढोल ।
क्षुत्क-पु० [सं०] राई ।
क्षुति-श्री० [सं०] छींकना ।
क्षुत्-श्री० [सं०] छींक ।
क्षुत्(ध्)-श्री० [सं०] दे० 'क्षुपा' । -**क्षाम-वि०** अन्न, आहार न मिलनेसे दुर्बल, क्षुधाक्षीण । -**पिपासा-श्री०** भूख-प्यास ।
क्षुद्-पु० [सं०] आटा, मैदा ।
क्षुद्र-वि० [सं०] छोटा, नन्हा; तुच्छ; नीच, खोटा; ओछा; कजूस । पु० बालकका कण, सुदी । मधुमक्खी या बरें । -**कुलिश-पु०** एक बहुमूल्य पत्थर, वैकात मणि । -**वटिका-श्री०** एक तरहकी करपनी जिसमें धटियों या घुंघरु लगे रहते हैं । -**चंचु-पु०** एक क्षुप । -**चंदन-पु०** लाल चंदन । -**चूच-पु०** एक छोटा पक्षी । -**जंतु-पु०** नन्हा, अस्वस्थित प्राणी, कीड़ा-मकोड़ा; शतपदी । -**दंशिका-श्री०** डाँस । -**दुःस्पर्शा-श्री०** अग्निदमनी । -**दुरालभा-श्री०** एक बौद्धिक पोषा । -**घात्रा-श्री०** कर्कट वृक्ष । -**घाम्य-पु०** वृणधान्य, कुधान्य (कंगनी, कोदी आदि) । -**नासिक-वि०** छोटी नाकवाला । -**पति-पु०** कुंभरे । -**पत्रा-श्री०** नोनिया साग । -**पत्री-श्री०** नच । -**पनस-पु०** लकुच वृक्ष । -**पर्ण-पु०** तुलसी । -**पिप्ली-श्री०** बनपिप्ली । -**प्रकृति-**

वि० छोटे, ओछे स्वभाववाला। -कल-कलक-पु० जीवन नामक वृक्ष; भूमिबन्धु नामक वृक्ष। कल्ला-खी० गोपालकर्मन्दी; इन्द्रवाक्पाणी; कंटकारी; अधिदमनी। -बुखि-वि० ओछे विचारवाला, जो सदा छोटी, ओछी बातें सोचै, देखै। -भंडाकी-खी० कंटकारी। -भ-पु० एक परिमाण। -मुखा-खी० कसेरु। -रस-पु० मधु; विषव-सुख। -रोग-पु० छोटा रोग, फोफा-कुंसी जैसी बीमारी (सुप्तमें ऐसे ४४ रोग गिनाने गये हैं)। -बर्षणा-खी० बरें, मित्र; डॉल। -बार्ताकिनी-खी० दूधेत कंटकारी। -बार्ताकी-खी० इहती। -सावूल-पु० चीना। -सार्थ-पु० मन्त्रशिखा वृक्ष। -सामा-खी० कटभी नामक वृक्ष। -सुवर्ष-पु० पीतल। -हा(हन्)-पु० शिव। -हिगूलिका-खी० कंटकारी।

छुद्रक-वि० [सं०] छुद्र। पु० तोला; एक प्राचीन जनपद। छुद्रता-खी० [सं०] छोटाई; नीचता, ओछापन। छुद्रक-वि० [सं०] बहुत छोटा (रोग, जानवर)। छुद्राजन-पु० [सं०] रोगमें लगाया जानेवाला एक तरहका अंजन।

छुद्रा-खी० [सं०] मक्खी; मधुमक्खी; वेष्टा; लबाकी स्त्री; विकलांग स्त्री; अमलोनी; जटामारी; कटकारी; हिचकी; प्राचीन समयकी एक नाव।

छुद्राग्निमंथ-पु० [सं०] छोटी गनिचारी। छुद्रात्मा(मन्त्र)-वि० [सं०] नीच, हीन विचारवाला।

छुद्राश्व-पु० [सं०] कौशिक।

छुद्रावली-खी० [सं०] छुद्रपटिका।

छुद्राशय-वि० [सं०] छोटी, ओछी तबीयतका।

छुद्रिहा-खी० [सं०] डीम; छोटी घंटी।

छुद्रेंगुदी-खी० [सं०] जवामा।

छुधा-खी० [सं०] भूया; भोजनेच्छा। -क्षीण-वि० अनाहारमें सखा हुआ, दुर्बल। -निवृत्ति-खी० भूखकी शांति, पेट भरना।

छुधानुर, छुधार्थ-वि० [सं०] भूया, भूखमें पीड़ित।

छुधालु-वि० [सं०] जिसे प्रायः भूख लगी रहती हो, पेड़।

छुधावन्त-वि० भूखा।

छुधित-वि० [सं०] भूखा।

छुप-पु० [सं०] छोटे तने, डालियोंवाला पेड़, झाड़; हथका कुके पिता; कृष्णका एक पुत्र।

छुपक-पु०, छुपा-खी० [सं०] साड़ी।

छुक्क-वि० [सं०] क्षोभयुक्त, उत्तेजित, अशान्त; भीत, खफा; जिसमें जोरकी लहरें उठ रही हों, नूफानी (समुद्र)। पु० मयानीकी डोही; एक रतिबंध।

छुभ-वि० [सं०] उत्तेजित करनेवाला; प्रवर्तक।

छुभा-खी० [सं०] एक तरहका हथियार।

छुभित-वि० [सं०] अभात; भीत; क्रुद्ध।

छुमा-खी० [सं०] रोशेदार पौधा-अलसी, सन, नील इ०।

छुर-पु० [सं०] छुरा, उल्लुग; [खी०] 'छुरी'। छुर; चार पाँचका पावा; बाणकी छुरेकी धार जैसी गॉसी; गोखरू; तालमखाना। -कर्म(रू)-पु०, -क्रिया-खी० छुरेसे रेंहना, क्षौर। -चतुष्टय-पु० क्षौरके लिए आवश्यक चार वस्तुएँ-उत्तुग, कुशटण, शलजी (ब्रह्म) और जल। -चान,

-चाँह-पु० छुरा रखनेकी धैली, मिसवत। -धार-वि० छुरेकी धारवाला। पु० छुरेकी धार जैसी गॉसीवाला बाण; एक नरक। -पत्र-वि० छुरेकी धार जैसी पत्तीवाला। पु० छुरधार बाण; छुर नामका वृक्ष। -पत्रा, -पत्रिका-खी० पालक। -प्र-पु० छुरपा; छुरे जैसा फलवाला बाण। -मर्दी(रिन्), -मुंकी(रिन्)-पु० नारै।

छुरक-पु० [सं०] छुरा; भूताकुण्ड; गोखरू; तालमखाना।

छुरिका-खी० [सं०] छुरी; पालक; एक तरहका मिट्टीका बरतन।

छुरिणी-खी० [सं०] नाहन।

छुरी(रिन्)-पु० [सं०] नारै।

छुल-वि० [सं०] छोटा; थोड़ा, अल्प। -सात्त-पु० बापका छोटा भाई, छोटा चचा।

छुलक-वि० [सं०] छुद्र, छोटा; थोड़ा; कुटिल; नीच; पीवित; कठिन। पु० छुद्र शूल।

छुब-पु० [सं०] छोक; खोसी।

छेत्र-पु० [सं०] क्षेत्र; जमीन; स्थान; उत्पत्तिस्थान; घर; नगर; मिदस्थान; तीर्थस्थान; वह स्थान जहाँ जीवन बढ़ा जाता है, सत्र; उर्वरा भूमि; पत्नी; कार्य(विद्ये)का स्थान; मैदान; कार्यके लिए अवकाश; देह; अंतःकरण; राशि (कर्क, मिथुन आदि); रेखाओंसे विरा स्थान; शान्तिद्वीप, कर्मद्वीप, शम्भ, स्वर्ण आदि तथा मन, इच्छा, द्वेष आदिका समाहार (गीता)। -कर, -कर्म-पु० किसान। -गणित-पु० क्षेत्र, जमीनका रकबा निकालनेकी विद्या, भूमिति, रेखागणित। -ज-वि० क्षेत्रमें उपजा हुआ, शरीरन उत्पन्न। पु० विषयवत्, विद्युक्त पुरुषसे उत्पन्न पुरुष (धर्मशास्त्रमें जायज माने हुए १२ प्रकारके पुरुषोंमें एक)। -जा-खी० क्षेत्र कंटकारी; एक ककड़ी; गोमूत्रिका; शिल्पिका। -जात-वि० परपुरुष द्वारा उत्पन्न (मनान)। -ज्ञ-पु० जीवात्मा; परमात्मा; साक्षी; अंतर्-यामी; बड़का शैवका एक भेद; किसान। वि० शानी; दक्ष। -दूतिका, -दूती-खी० श्वेत कंटकारी। -पति-पु० क्षेत्र, जमीनका मालिक। -पाल-पु० क्षेत्रकी रखवाली करनेवाला; शैवका एक भेद। -कल-पु० क्षेत्र, स्थान, रेखागणितकी शक्त्तिका रकबा, उसकी लंबाई-चौड़ाईका गुणनफल। -मक्ति-खी० क्षेत्रका बँटवारा। -भूमि-खी० जमीनी-बौधी जानेवाली जमीन। -मिति-खी० क्षेत्रगणित, भूमिति। -रुहा-खी० एक तरहकी ककड़ी। -विद्-वि० क्षेत्र 'क्षेत्र'। -व्यवहार-पु० क्षेत्रफल निकालना। -सम्वास्त-पु० स्थानविशेषकी भीमाके अंदर ही रहनेका ज्ञत। -हिंसा-खी० क्षेत्रकी हानि पहुँचाना।

क्षेत्राजीव-पु० [सं०] किसान। वि० किसानीसे जीविका चलानेवाला।

क्षेत्राधीपिक-पु० [सं०] क्षेत्र फूँकने, जलानेवाला।

क्षेत्राधिदेवता-पु० [सं०] क्षेत्र, सिद्धस्थान-विशेषका अधि-हता देवता।

क्षेत्राधिप-पु० [सं०] क्षेत्रका मालिक; रावरी।

क्षेत्रानुगत-वि० [सं०] घाटपर लगा हुआ (जहाज)।

क्षेत्रामलकी-खी० [सं०] भूम्यामलकी।

क्षेत्रिक-वि० [सं०] क्षेत्रवाला। पु० किसान।

खंडनी—स्त्री० मातृगुजारीकी किरत; दे० 'खंडिनी' ।

खंडनीय-वि० [सं०] खंडन करने योग्य ।

खंडर-पु० खंडहर; [सं०] मिठाई ।

खँडरना—स० क्रि० खंड-खंड करना, टुकड़े-टुकड़े करना ।

खैंडरा-पु० बेसनका बना एक पकवान ।

सैंडरिच-पु० खंजरीट ।

सैंबर-पु० कर्शपर निछानेका कपडा, जाजिम ।

सैंडला-पु० दुकाना, कतला ।

खंडशः (शस्) - ७० [सं] खंड-खंड करके, कई खंडोंमें बाँटकर ।

खैरहर-पु० हर, गिरे हुए मकानका अवशेष; गिरा, ढहा हुआ मकान ।

सैफुल्ला-पु० ने० 'खैर' ।

संज्ञाभ-पु० [सं०] निखरे कुप बादल; दंतक्षत (रतिप्रतीकामें)

खंडाली-खी० [स०] तेलुगु एक माप; ताल; तालाव;
कामगुनी खी ।

संक्षिप्त-पु० [सं०] केराव; काँस्त; विद्यार्थी; चीनी बनाने-वाला ।

संज्ञिका-खी० [मं०] केरावका भोजन; काँस; एक लय ।

खंडित-वि० [सं०] तोड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ; टूटा हुआ, भंगन; गलत ठहराया हुआ, निराकृत। -विग्रह-वि० जिसके अंग अंग हो गये हों, विस्फालांग। -वृत्त-वि० वृत्तचरित्र; परित्यक्त।

संहिता-श्री० [सं०] नायकमें अन्य श्रीसे संभोगके चिह्न
देखकर कपिल हुई नायिका ।

संविनी-खो० [सं०] पृथिवी ।

लंबिया-पु० ऊँसकी गँबेरियाँ बनानेवाला । ली० दुकड़ा ।

संक्षोभ, संक्षोभ-त-पु० [सं०] दे० 'संक्ष' ।

खंडोष्ठ-पु० [सं०] ओठका एक रोग ।

खैरौरा-पु० मिसरीका लड़कू ।

अंतरा-पु० दरार, अंतरा, छोटा गड्ढा (प्रायः 'कोना' के साथ अंतर्में जाता है) ।

खंता—पु० मिट्टी खोदनेका एक औजार; वह गड्ढा जिसमें-
से कुम्हार मिट्टी लाते हैं।

पुनर्विक्र-श्री० [अ०] स्याई, गहरा गडढा ।

खंडौं-वि० [फा०] हँसनेवाला; हँसता हुआ ।

संवाद-पु० खोदनेवाला ।

झंदा-वि० [फा०] हँसता हुआ । पु० हँसी; खिलखिलाहट ।
-पेशानी-वि० हँसमुख ।

सँधवाना-स० क्रि० खाली कराना (पात्र) ।

સ્વંધા-પુ. એક છંદ ।

संस्कारः-पु० तब; छावनी ।

संधियाना -स० क्रि० खाली करना (पात्र) ।

संवायची-ली० एक रागिनी, सप्तमाच ।

खंभ-पु० स्तंभ, खंभा; सहारा ।

खंभा—पु० पथर, लकड़ी, लोहे या ईंटों आदिका बना खंभा
भाधार; सहारा ।

संभात-पु० अरब सागरकी एक खाड़ी; पश्चिमी गुजरातका एक राज्य ।

खँभार, खंभार-प० चिंता; हर; घनकाष्ठ; श्लोक-

‘फिरहु त सबकर मिटहि खैभारु’-रामा० । खी० गंभारी नामक पेश ।

सँभारी, सँभारी-खी० गंभारी नामक पेड़ ।

संभावती-सी० एक रागिनी ।

लैंगिक-सी० छोटा खंभा ।

संज्ञा-अ० क्रि० गिरना, खसकना ।

ख-पु० [सं०] शून्य स्थान, आकाश; तर्क; शून्य; विदी;
स्वर्ग; पुर, नगर; क्षेत्र; अभ्रक; शानेंद्रिय; ज्ञान; ऊनसे
दसवों स्थान; गद्य; सुख; कर्म; गडदा; छेद; निकास;

शासनलिका; जस्म । -कक्षा-ली० आकाशकी परिधि ।

-कामिनी-श्री० दुर्गा । -कुंतल-पु० व्योमकेश,
विश्व । -कोकल-पु० शर्वक भक्त भण्डार । -शंख-श्री०

सखेटना*—स० कि० खरेबना; दहना; छेरना; धावक करना; व्याकुल करना।

सखेटा, सखेट्यो*—पु० छिद्र; गंका, खटका,—‘सोच भयो छुरनायकके कल्पद्रुमके शिव मौख सखेट्यो’—सुधामा-चरित्र।

सखेना*—स० कि० दे० ‘सखेटना’।

सखौंहरा*—पु० पेक्षे कोटरमें बना हुआ उख्ख आदिका घोंसला।

सखवा*—पु० दे० ‘सखट’।

सखमा*—अ० कि० गहना, चुभना; चितमें बैठना; अनु-रूप होना; चिह्नित होना, उपट आना; असर होना; अङ्क रहना।

सखमगी*—खी० भँसना।

सखहा—पु० सैका।

सखासक—पु० [सं०] बाज।

सखासन—पु० [सं०] विष्णु; उदयगिरि।

सखेंद्र, सखेश—पु० [सं०] गदक।

सख्वा*—पु० दे० ‘सख्वा’।

सखन—पु० अङ्कने, उलझने या अंकित होनेकी क्रिया।

सखना—अ० कि० जका जाना; अंकित होना; उलझ जाना; रम जाना।

सखरा—वि० दोगला; नीच।

सखासख—अ० बिरकुल (भरा हुआ), ठसाठस।

सखाना—स० कि० विह—लकीर—बनाना, सखित करना; तेजीसे लिखना।

सखावट—खी० सचन; गठन।

सखित—वि० [सं०] अकित; चिह्नित; आवद्ध; जका हुआ।

सखिया*—खी० दे० ‘संखिया’।

सखर—पु० घोड़ेमें मिलता-जुलता एक जानवर जो घोड़े और गधेकी मिश्र संतति है।

सख—पु० [सं०] मथानी; मंथन; करछुल; खुद। * वि० लाघ, खाने योग्य।

सखक—पु० [सं०] मथानी।

सखप—पु० [सं०] घी।

सखमजाना—अ० कि० (तबीयतका) कुछ अल-व्यस्तता होना, अलसता जैसी प्रतीति होना।

सखला—पु० खानेकी तरहकी एक मिठाई।

सखहजा*—पु० खाने योग्य अच्छा फल; मेवा।

खज्जोन्धी—पु० [फा०] खजानेका अधिकारी, कोषाध्यक्ष।

सखा—खी० [सं०] मथानी; कलछी; मथन; बथ, बिनास; युद्ध।

खजाक—पु० [सं०] चिबिया।

खजाका—खी० [सं०] कलछी।

खजानकी—पु० दे० ‘खजोन्धी’।

खजाना—पु० [फा०] रक्पा, सोना-चाँदी रखनेका स्थान, कोष, भनागर, भंडार; धन-माल; बंदूकमें बाकूद रहनेका स्थान; राजस्व। —खकसर—पु० छिपटी कलखरके दरजेका अफसर जिसके यहाँ जिलेकी सरकारी भाष जमा होती है और उसकी स्वीकृतिसे व्यव होता है।

खजिका—खी० [सं०] दे० ‘खजाका’।

खजिल—वि० [फा०] लजित।

खजाना—पु० [फा०] खजाना, कोष।

खजुआ, खजुबा—पु० खाना; खजल; भटवॉस।

खजुरइठ, खजुरही*—खी० खजुरका बाग; एक तरहका खजुर।

खजुराही*—खी० खजुरका बाग।

खजुलामा—अ० कि०, स० कि० दे० ‘खुजलाना’।

खजुली*—खी० दे० ‘खुजली’; एक मिठाई।

खजूर—पु० ताककी जातिका एक पेक्ष जिसका रस ताककी तरह पिया जाता है और उससे शुष्क-शकर भी बनाते हैं; मैदेकी बनी एक मिठाई। —छत्री—खी० एक देशकी कपडा जिसपर खजुरकी पत्तियोंकीसी भारियाँ होती हैं।

खजूरी—वि० खजुरका; खजुरके (पैसेके) आकारका (खजूरी चोटी)। * खी० खजुर।

खजोहरा—पु० एक तरहका रौयेदार कीका जिसके स्पर्शसे खुजली पैदा होती है।

खट—पु० [सं०] रकगम; अंधा कुर्मी; कुल्हाड़ी; बूँसला; हल; एक तृण जो छाजनके काम आता है। —खादक—पु० स्थार; कौआ; जानवर; खानेवाला; शीशेका बरतन।

खट—खी० दो चीजोंके टकरानेकी ध्वनि। —खट—खी० ‘खट-खट’की आवाज; झमेला, खटराग; झगडा; किचकिच।

—खटा—पु० पक्षियोंकी भगानेके लिए बूझों बाँधा जानेवाला बँसला टुकड़ा। —पट—खी० ‘खट-खट’की आवाज; अनवन, झगडा। —पटिया—वि० झगडाइ; उपद्रवी। खी० काठका बना चप्पल; बट्टी। —खे—तुरत।

खट—‘खाट’का समासमें व्यवहृत रूप। —कीका—कीरा—पु० खटमल। —पाटी—खी० खाटकी पाटी। —खुना—पु० खाट बुननेवाला। —मख—पु० मैली खाट, बिलार आदिमें पैदा होनेवाला एक ऊमज कीका जो आदमीका खून पीकर जीता है। —मखी—वि० खटमलके रगका।

—मुखा—वि० सीते समय खाटपर पेशाब कर देनेवाला (बच्चा)। खु०—पाटी, —बाट, —बाटी केना—(खीका) मान या कौधसे खाटपर, पाटीसे ऊमकर, पक रहना।

खट—वि० ‘खटा’का समासमें व्यवहृत रूप। —मिठा, —मीठा—वि० जिसमें खटास-मिठास दोनों हों; खटा-मीठा (फल)।

खट*—वि० छ। —करम—पु० टेढ़े विधि-विधानवाला पूजन, अनुष्ठान; झमेला, खटराग। —करमी—वि० खट-करम करने, खटराग फैलानेवाला। —पट—पु० दे० ‘पटपट’। —पट्टी—खी० दे० ‘पटपट’। —मुख—पु० दे० ‘बम्पमुख’। —रस—वि०, पु० दे० ‘बहस’। —रसा—पु० झंझट, झमेला; काठकनाइ (कैलाना)।

खटक—खी० खटकनेका भाव; चुभन, दीस; दुःख, शिकायत; खटका, आशंका (बिखट)। पु० [सं०] घटका; आधी खुली ग्रंथी; मुटुका।

खटकना—अ० कि० खटक होना, चुभना, गहना; बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना; उचटना; अनवन, बिगाड़ होना; ‘खट-पट’ शब्द होना।

खटका—पु० ‘खट-खट’की आवाज; आशंका; चिंता; पेक्ष, पुरजा; सितकरी; पक्षियोंकी उड़ानेके लिए बूझों बाँधा

आनेवाला बौसका डुकना ।

सद्वक्ता-स० कि० सद्वक्ता, सवक्ता; अनवन, निगाव करना ।

सद्वक्ता-स० [स०] बाण चलानेमें हाथकी एक मुद्रा; इस मुद्रावाला आदमी ।

सद्वक्ता-स० [स०] सिक्की ।

सद्वक्ता-स० कि० किसी चीजको पीट, हिलाकर 'सद्व' की आवाज निकालना; याद दिखाना, दोहराना ।

सद्वक्ता-अ० कि० कठोर मन करना, पिसना; धनोपार्जन करना, कमाना ।

सद्वक्ता-स० देले तोड़नेकी मुँहरी ।

सद्वक्ता-पु० बाल-बच्चे, परिवार; पत्नी; कानमें वाली पहननेका छेद ।

सद्वक्ता-स० सदस, दुर्गति; सट्टी चीज (आम, इमली आदि) । सु० - मैं डाखना-गहना साफ करनेके लिए सद्वक्ता(इमली आदि)में डालना; (किसी कामकी) डाल देना, लटकाये रखना, कुछ तैय करना । - मैं पक्का-सद्वक्तामें डाल जाना (सभी अर्थोंमें) ।

सद्वक्ता-पु० 'सद्व'की आवाज ।

सद्वक्ता-पु० 'सद्व-सद्व'की आवाज । अ० 'सद्व-सद्व'की आवाज करते हुए; तुरत, तत्काक ।

सद्वक्ता-अ० कि० सदस आना, सट्टा हो जाना; निगाह होना; टिकना; परस्मै ठीक उतरना । स० कि० कामके काम लेना ।

सद्वक्ता-सद्वक्ता-स० [स०] झगड़ा, विरोध, अनवन ।

सद्वक्ता-पु० निगाह, मुँह ।

सद्वक्ता-स० [स०] सट्टापन, दुर्गति । पु० गंधविलास, सट्टापन ।

सद्वक्ता-पु० फल, तरकारी आदि बेचनेवाली एक हिंदू जाति; [स०] आधी सुली मुट्ठी ।

सद्वक्ता-स० [स०] खबिया मिट्टी; कानका छेद ।

सद्वक्ता-स० [स०] खबिया मिट्टी ।

सद्वक्ता-स० छोटी चारपाई ।

सद्वक्ता-पु० तरकारी बेचनेका काम करनेवाली एक हिंदू जाति; कसारा ।

सद्वक्ता-पु० दे० 'सट्टोला' ।

सद्वक्ता-पु० छोटी खाट; बुदेलसंडके अंतर्गत एक प्रदेश ।

सद्वक्ता-स० छोटा सद्वक्ता ।

सद्वक्ता-वि० [स०] सट्टा ।

सद्वक्ता-वि० [स०] ठिगना, खर्ब । पु० ठिगना आदमी, बीना ।

सद्वक्ता-स० [स०] चारपाई; एक लुण । वि० [हि०] जिसमें सद्वक्ता हो, दुर्गति, अमृत । पु० गल्लक नीबू (?) । - सूक-वि० बहुत सट्टा । सु० - खाना-नीचा देखना; विकल होना; दिक फिर जाना । - होना-अप्रसन्न होना ।

सद्वक्ता-पु० [स०] गंधविलास ।

सद्वक्ता-स० [स०] यादा गंधविलास ।

सद्वक्ता-स० [स०] अरबी, टिकडी ।

सद्वक्ता-पु० [स०] कसारा; बहेलिया, चिड़ीमार ।

सद्वक्ता-स० [स०] छोटी खाट; अरबी; मास बेचनेवाली स्त्री ।

सद्वक्ता-स० [स०] सट्टी नारंगी; गल्लक नीबू; एक सट्टीठा नीबू । - मिट्टी-स० एक लुण ।

सद्वक्ता-वि० [स०] ठिगना ।

सद्वक्ता-वि० [स०] सट्टा ।

सद्वक्ता-पु० [स०] पावा जड़ी हुई पाटी जो शिवका अल्ल बतायी जाती है; दिखीपका एक नाम; एक मुद्रा (सं०); सट्टी लकड़ीपर आधी लकड़ी जकड़ बनायी हुई एक चीज जिसे सम्न्यासी प्रायः साथ रखते हैं; प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगनेका पात्र । - खर-पु० शिव ।

सद्वक्ता-स० [स०] शिव ।

सद्वक्ता-स० [स०] खाट, चारपाई; झूला; सुश्रुतमें वर्णित एक तरहकी पट्टी ।

सद्वक्ता, सद्वक्ता-स० [स०] छोटी खाट ।

सद्वक्ता-पु० इंटोंकी खोरी जोड़ी ।

सद्वक्ता-पु० [स०] पास, खर; पवाल; आयुर्वेदमें बताया हुआ एक तरहका पक्का; सीनापाठा ।

सद्वक्ता-अ० कि० 'सद्व-सद्व'की आवाज होना; सूखे पत्तोंके परस्पर टकराने या दबनेकी आवाज होना; खींच-तलवारके बहुर आदिपर गिरनेकी आवाज होना; सद्वक्ता ।

सद्वक्ता-स० कि० सद्वक्ता ।

सद्वक्ता, सद्वक्ता-स० [स०] सिक्की ।

सद्वक्ता-अ० कि० 'सद्व-सद्व'की आवाज होना, निकलना । स० कि० किसी चीजको पीट, बजाकर 'सद्व-सद्व' आवाज पैदा करना, सद्वक्ता ।

सद्वक्ता-सद्वक्ता-स० 'सद्व-सद्व'की आवाज; 'सद्व-सद्व' आवाज होना ।

सद्वक्ता-सद्वक्ता-स० एक तरहकी (पट्टिया) पालकी; धोईकी शिक्षा देनेके काम आनेवाली एक प्रकारकी गाड़ी या गाड़ीका ढाँचा ।

सद्वक्ता-पु० दे० 'सद्व' ।

सद्वक्ता-वि० सट्टापारी । पु० गेंदा ।

सद्वक्ता-पु० गेंदा ।

सद्वक्ता-स० पत्थर, भात आदिकी चीजोंके टकाने, गिरने आदिकी आवाज; गडगड, गोलमाल; सलबली ।

सद्वक्ता-अ० कि० सवराना; क्रम बिगड़ जाना; अस्त-व्यस्त हो जाना । स० कि० सलबल करना; क्रम उलट-पुलट देना ।

सद्वक्ता-सद्वक्ता-स० सलबली ।

सद्वक्ता-सद्वक्ता-स० [स०] सलबली; सवराना ।

सद्वक्ता-वि० [स०] सलबली ।

सद्वक्ता-पु० गडगड, गोलमाल ।

सद्वक्ता-पु० दे० 'सद्व-सान' ।

सद्वक्ता-वि० सीधा ऊपरकी वडा हुआ, स्वरूप; पौधोंके सट्टारे स्थित; स्थिर, ठहरा हुआ; रुका हुआ; तैयार; उपस्थित; उच्चत; बानी, मौजूद; कच्चा, अपक; जारी जो काटा न गया हो, खेतमें मौजूद (सखी फसल); सम्पत्ति, सामित; प्रतीक्षामें ठहरा हुआ । - सलब-पु० बह खेत जिसमें फसल मौजूद हो । - (दे०) सलब-अ० सलब; रहते हुए; (दिरतक) सलब रहनेसे; जल्दी, तुरत; थोड़ी देर, कुछ

धनके लिए । -**काह**-**अ०** सुरत । **मु०**-**०** कोष-**रश्मि** हो करवा लेकर बिना बहुत दिनें भी देना। कुछ वंशों में भी कपक भी देना । **मु०**-**करवा**-**तैयार** करना; बनाना; बाँचा बनाना; कभी सिलाई करना; माइना (बंभा) आदि; पुनावमें (मैयरी आदिका) उम्मेदवार बनाना । -**होना**-**तैयार** होना; बनना; बाँचा बनना; सहायक होना; पुनावमें उम्मेदवार होना ।

खपाई-**खी०** काठकी बनी लुईदार, लुकी पादुका ।

खपाका-**पु०** खड्कनेका लच्छ ।

खपावन-**पु०** काँतिके ।

खपिका-**खी०** [सं०] खपिया मिट्टी ।

खपिया-**खी०** लकड़, मुकायम मिट्टी या एक तरहके बूनेका पत्थर जो लिखने और लकड़ी आदिके काममें आता है ।

खरी-**खी०** [सं०] खपिया मिट्टी ।

खरी-**खी०** खपिया मिट्टी । वि० खी० दे० 'खड़ा' ।

-**खड़ा**-**खी०** सीधी, बहुत कम डालवाली खड़ाई ।

-**तैराकी**-**खी०** खरे रश्मि, केवल पाँच चलाते हुए तैरना । -**निवाज**-**खी०** मनोरम सिद्ध होनेपर तुरत ही जानेवाली निवाज । -**पाई**-**खी०** सीधी, छोटी रेखा; मार्गदर्शक रेखा में अक्षरेके आगे या पीछे बनायी जानेवाली सीधी लकीर; पूर्ण विरामका चिह्न । -**बोली**-**खी०** रिहो-मैरठ प्रदेशकी बोली जो आधुनिक हिंदीका रूप है ।

-**लकीर**-**खी०** लंबके रूपमें सीधी लकीर । -**सवारी**-**अ०** तुरत, खरे-खरे (-मलमत करना) । -**मुंडी**-**खी०** वह हठी जिसका रूपका चुकाया न गया हो । **मु०**-**बछाई**

खाना-खडे हो-होकर गिर पड़ना, पछाई खाना ।

-**सवारी** आना-तुरत लौट जानेकी तैयार होना ।

खड्ड-**पु०**, **खड्ड**-**खी०** [सं०] अरबी ।

खड्ड-**पु०** [म०] तलवारकी शङ्कना एक प्राचीन अक्ष,

श्रीरा; तलवार; कोड़ा; मरेका सीमा; पैरा । -**कोश**-**पु०**

खड्ड या तलवारका ग्यान । -**घर**-**पु०** तलवार धारण

करनेवाला । -**घार**-**पु०** बदतिकाग्रमका एक पर्वत ।

-**धारा**-**खी०** तलवारका फल; (लग) बहुत कठिन

कार्य । -**धेनु**, **धेनुका**-**खी०** छोटा खड्ड; कटार; मादा

पैरा । -**पन्न**-**पु०** बमपुरीका एक कल्पित वृक्ष जिसमें

पन्नरूपमें तलवारें लगी हुई बतायी जाती हैं; तलवारका

फल । -**विधान**-**पु०** तलवारका ग्यान । -**पुत्रिका**-**खी०** कटार । -**फल**-**पु०** खड्डकी धारा; तलवारका काटने-

वाला भाग । -**बंघ**-**पु०** विनकायका एक मेद जिसमें

शब्द खड्डकी शङ्कमें लिखे जाते हैं । -**लेखा**-**खी०**

तलवारकी कटार । -**हस्त**-**वि०** जिसके हाथमें खड्ड,

तलवार हो; मारनेकी उद्यत ।

खड्ड-**पु०** [सं०] एक तरहका बड़ा कौंस ।

खड्डखर-**पु०** [सं०] खड्डकीश ।

खड्डारिड-**पु०** [सं०] तलवारका फल; अतिधाराव्रतधारी;

दाह ।

खड्डिक-**वि०** [सं०] खड्डारी । **पु०** शिकारी; कसाई ।

खडी(**जिद**)-**वि०** [सं०] खड्डारी । **पु०** पैरा; विष ।

खडी-**पु०** [सं०] हँसिया ।

खड्ड, **खड्ड**-**पु०** बहुत गहरा गड्ढा ।

खट-**पु०** खट; पाव । -**खोट**-**खी०** सुरंद, मुकते हुए

पावके ऊपर जनी हुई बघरी ।

खट, **खट**-**पु०** [अ०] लकीर, रेखा; चिह्न; लिखापंड; पत्र,

चिट्ठी; लेख, लखरी; बनी जगती धात्री-बैठके सिधे जैसे

वाल, रेखा; सुरत-शङ्क, डुलिया । -**कस**-**पु०** वह आला

जिसमें बड़े चौरनेके लिए लकड़ीपर निधान लगाते हैं ।

-**कसी**-**खी०** चित्र बनानेके लिए रेखाएँ खींचना ।

-**किताबत**-**खी०** पत्र-व्यवहार; चिट्ठी-पत्री । -**कुत्त**-**पु०**

चिट्ठी-पत्री । -**(सि)मुकामी**-**पु०** सेवाका प्रतिष्ठापन ।

-**बख्शगीर**-**पु०** सुरंद, गोल अक्षरीवाली लिखापंड

जिसमें उर्दू लिपिवाली भाषाएँ आम तौरसे लिखी-छापी

जाती हैं । -**शिकल**, **शिकल**-**पु०** (उर्दू-फारसीकी)

वसंत लिखापंड । **पु०**-**खी** पैसानी-पत्र जिसमें ऊपर

छोटी हुई खाली जगह । -**खींचना**-**लकीर** खींचना;

काटना । -**खिलना**-**दाढ़ी**के बाल उगना । -**बनाना**-

बनामत बनाना; दाढ़ी और कनपटीके बाल उस्तुरेसे ठीक

करना ।

खसना-**पु०** [अ०] मुसलमान बघनेके छिंगके अगळे

विस्सेकी खवा काट देनेकी रस्म वा संस्कार, सुन्नत ।

खसम-**पु०** दे० 'खलम' ।

खतमी-**खी०** एक पैरा जिसकी जड़ और बीज दवाके

काम आते हैं ।

खतर, **खतरा**-**पु०** [अ०] डर, भय; आशंका; जोखिम ।

-**(र)माक**-**वि०** खतरवाला, खतरेसे भरा हुआ;

भयजनक ।

खतराभी-**खी०** खत्री की ।

खतरेटा-**पु०** खत्रीका बेटा; खत्री ।

खता-**पु०** खत, पाव ।

खता-**खी०** [अ०] बूक; दोष; अपराध; पोखा-जानू जनि

आगे, खता खाडू मति यारी-भूषण । -**कार**-**पु०** गल्ती,

दोष करनेवाला । -**बार**-**वि०** दोषी, अपराधी । **मु०**-

होना-**कटर** होना; भूख जाना; (होश) ठीक-ठिकाने न

रहना; अनजानमें निकल जाना (पेशाबका) ।

खति-**खी०** दे० 'खति' ।

खतिपा-**खी०** छोटा गड्ढा । † **पु०** एक जाति जो जमीन

खोदनेका पंथा करती है ।

खतियाना-**सं०** कि० जातेमें चढाना, लिखना ।

खतियानी-**खी०** दे० 'खतौनी' ।

खतियी-**पु०** [अ०] खतवा पढ़नेवाला, पत्रोपदेशक

(मुसलम) ।

खतौनी-**खी०** वह कामज या बही जिसमें पटवारी हर

कास्तकारकी जौतका रकना, नवैत (मकर), लगान

आदि लिखता है; बही-खाता; खतियानेका काम । -**मु०**-

करना-खालेमें चढाना, खतियाना ।

खपा-**पु०** गड्ढा; कोरे चीज बनाने, रखने आदिके लिए

बना गड्ढा; प्रात, खान ।

खची-**खी०** छोटा खपा या खाता, बखार ।

खलम-**पु०** [अ०] अंत, समाप्ति; पूरा होना; कुरानका पाठ

सुलत होना ।

खत्री-**पु०** क्षत्रियोंके अंतर्गत एक जाति जो प्रायः व्यापार

करती है।

अव्यय-पुं० [का०] तीर, बाण; केकड़ा; चमारका पेड़।

अव्यय-स्त्री० तीर, बाण।

अव्यय-पुं०, अव्यय-स्त्री०-अ० कि० किसी चीजका अवलोकन समग्र 'अव्यय' शब्द करना।

अव्यय-वि० विकल्पा, रदी। पुं० गहड़ा।

अव्यय-पुं० [अ०] डर, अटका, चिंता।

अव्यय-स्त्री० खान।

अव्यय-स्त्री० [सं०] काना, काका।

अव्यय-पुं० [सं०] खेरका पेड़; ईद्र; चंद्रमा।-अव्यय-पुं०

अव्यय-स्त्री० काजवती।-सार-पुं० कत्ता।

अव्यय-स्त्री० [सं०] काजवती, बरहकांता कता।

अव्यय-स्त्री० [अ०] बुद्धिमदकी प्रथम पत्नी जो इस्लाम ग्रहण करनेवाली पहली स्त्री और फातिमाकी माँ थी।

अव्यय-पुं० [पुं०] सांख्यिक नरेश; जिसने बादशाहीकी उपाधि।

अव्यय-पुं० कणी, कर्जदार।

अव्यय-सं० कि० भगाना; हटाना; पीछा करते हुए भगाना।

अव्यय-सं० कि० दे० 'अव्यय'।

अव्यय-पुं० हाथका कता-पुना कपड़ा, खादी।

अव्यय-पुं० छन; खंड, मजिह; † वृक्षविशेष; एक तरहका कपड़ा। अ० तुरत, तत्काल। स्त्री० रुपये-पैसे आदिके बजनेकी ध्वनि, खनक।

अव्यय-स्त्री० खनकनेकी क्रिया, आवाज; रुपये, चूकियों आदिके बजनेकी आवाज। पुं० [सं०] खोदनेवाला; खान खोदनेवाला; सैध मारनेवाला; चूड़ा; खान।

अव्यय-अ० कि० 'खन-खन' करके बजना, खनखाना।

अव्यय-सं० कि० 'खन-खन' ध्वनि उत्पन्न करना; रुपये आदिको परखनेके लिए बजाना।

अव्यय-स्त्री० खनक, झंकार।

अव्यय-पुं० दे० 'खनखनरा'।

अव्यय-वि० जिसके हिलने-डुलने, बजनेसे 'खन-खन' ध्वनि निकले।

अव्यय-अ० कि० खनकना। सं० कि० खनकाना, हथवा आदि बजाना।

अव्यय-पुं० [सं०] खोदना; गाड़ना।

अव्यय-सं० कि० खोदना।

अव्यय-स्त्री० [सं०] खोदनेका औजार, खंती।

अव्यय-पुं०, अव्यय-स्त्री०-सं० कि० खोदनेका काम करना।

अव्यय-वि० सुंदर; दुबला-पतला।

अव्यय-स्त्री० [सं०] खान; गहड़ा; गुफा।-(नि)अ-वि० खानसे निकला हुआ (सोना आदि)।-अव्यय-पुं० खानोंवाला प्रदेश।

अव्यय-पुं० [सं०] खोदनेवाला।

अव्यय-पुं० [सं०] खंती; काचका।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अव्यय-पुं०, अविनयिका-स्त्री० [सं०] खंती; छोटी कुदाली।

अक्षर-खी—[अ०] ध्वना; आमकारी; पता; हाल, समाचार; संदेश; चेत, होश। —**शीर-वि०** खोज-खबर लेनेवाला; देखरेख रखनेवाला; सहायक। —**शीरी-खी** खोज-खबर लेना; देखरेख; सहायता। —**धार-वि०** सावधान, चौकता। —**धारी-खी** सावधानता, होशियारी। —**नवीस-पु०** [फा०] समाचार लिखनेवाला कर्मचारी। —**रसॉ-पु०** खबर पहुँचानेवाला, संदेशवाहक। **मु०**—**लेना**—**खोज-खबर लेना**, हाल पूछना; जवाब तलब करना; बौटना, फटकारना; दंड देना।

खबरि, **खबरिया**—**खी०** दे० 'खबर'।

खबीस-वि० [अ०] नाशक; दुष्ट; क्रूर। **पु०** भूत-प्रेत।

खबीसी-खी० नापाकी; खराब खी।

खब्त-पु० [अ०] शक; सनक; गुन।

खब्दी-वि० जिते खन्त हो, सनकी।

खम्बुलइबास-वि० (रेकमेंटमाइंडेड) जिसके होश-इबास ठिकाने न हों; जिसका ध्यान किसी दूसरी ओर हो।

खभचना, **खभरना**—**स०** कि० मिलाना; हलचल, खल-मचाना।

खभरना-वि० पुंश्रुतीसे उत्पन्न (छक्का)।

खभार—**पु०** खराबट, परेशानी—'दिसि निविड तम दसडु दिमि, कपिदल भयेउ खभार'—रामा०; भय; दुःख।

खम-वि० [फा०] झुका हुआ, टेढ़ा, बक्र। **पु०** घुमाव; टेढ़ापन; बाजू। —**दम-पु०** हिम्मत, जोश। —**धार-वि०** टेढ़ा; घुंघराते (वाल)। **मु०**—**खाना**—**धारना**, नीचा देखना—'घुरकी तुरक बहो खम खार'—छत्रप्रकाश। —**ठाँककर**—**ललकारकर**, निडर होकर। —**ठाँकना**—**लबनेके** लिए ताल ठोकना, ललकारना।

खमकना—**अ०** कि० 'खम-खम' सम्प्र करना।

खमसा-वि० [अ०] पाँचमे संबंध रखनेवाला; पाँचका समाहार, पंचक। **पु०** वह पक्ष जिसके हर बरमे पाँच-पाँच मिसरे हों; पाँचों अंगुलियों; संगीतमें एक ताल।

खमियाज़ा-पु० [फा०] अंगड़ाई; शिकंजेमें कसकर अंगोंको ताननेकी सजा; बदला, प्रतिफल; दंड; कष्ट; हानि। **मु०**—**उठाना**—**बदला**, दंड पाना।

खमीदगी-खी० [फा०] टेढ़ापन, बकता।

खमीदा-वि० [फा०] झुका हुआ, टेढ़ा।

खमीर-पु० [अ०] गुँपे आटे आदिमें (दिरतक रखनेसे) पैदा होनेवाली खट्टास और उभार; वह खीज जिसमें यह गुण पैदा हो गया हो, पौस; प्रकृति; बनावट। **मु०**—**उठना**—**आटे आदिका खमीर पैदा हो जानेसे फूलकर उठना**, फैलना।

खमीरा-वि० [फा०] खमीरवाला। **पु०** मिसरी वा चीनीकी चाशनीमें पकायी हुई दवा; कटल आदिका खमीर मिलाकर बनाया हुआ सुगंधित तैलाह।

खमीरी-वि० खी० खमीरवाली (रोटी)।

खमो-पु० एक सगावहार पेड़।

खमोख-वि० [फा०] दे० 'खामोश'।

खमोखी-खी० [फा०] दे० 'खामोशी'।

खम्माच-खी० शतमें गयी जानेवाली एक राशिनी।

—**कान्हा**—**पु०** एक संकर राग। —**टोकी-खी०** एक

संकर रागनी।

खम्माची-खी० दे० 'खम्माच'।

खच-पु० दे० 'खुब'।

खचा-पु० मुसमूल—'अंचक उकत मन होत गहगहो फरकत मन खचे'—मुर।

अखाबख-खी० [फा०] अमानत रखी हुई चीज, रकमकी सुरा, दवा लेना; गवन; बन्दयानसी; बैरमानी।

अखाख-पु० [फा०] ध्यान, चिंता, सीच-विचार; कल्पना; मत, विचार; लिहाज; वाद; दे० 'खाल'। —(खे) **अख**—**पु०** असंगत, नासमझीका विचार। **मु०**—**में न खाना**—**लिहाज**, परवाह न करना। —**में समाना**—**ध्यानमें चढ़ जाना**, हर वक्त याद रहना। —**से उतरना**—**याद न रहना**, भूल जाना।

अखाखी-खि० कल्पित, सीचा-माना हुआ। —**पुलाख-पु०** मनसे गढ़ी हुई बात, मनोराज्य। —**भज्जमूल-पु०** मनसे सीखा हुआ, स्वतंत्र कल्पनासे उद्भूत विषय, लेख। **मु०**—**पुलाख पकाना**—**कल्पनाके महल खड़े करना**, अन-होनी बातें सीचना।

खरजा-पु० हाँवा; खरजा।

खर-वि० [सं०] कसा; तेज, तीक्ष्ण; बना; मोटा; अशुभ; हानिकर; तीक्ष्ण धारवाला; गरम; निम्नर। **पु०** गधा; खबर; बगला; कौआ; रामके हाथों मारा गया एक राक्षस; ६० सबत्नरोंमेंसे पचीसवाँ; कुर पक्षी। —**कर**—**रसि**—**पु०** मर्य। —**कुटी-खी०**—**खर-पु०** गधोंको रखनेका घर; नार्कका घर। —**कोण-पु०** तीतर। —**कोमल-पु०** जेठका महीना। —**बातन-पु०** नामकेशर। —**खर-पु०** कुंजर तृण; भूमिसह हल। —**खर-पु०** कमल। —**खर-खी०** कठगूर। —**खर-पु०** खर और दुषण नामके राक्षस जो रावणके भाई थे; धरुर। **वि०** बहुत दोषोंवाला। —**धार-वि०** प्रखर, तीक्ष्ण धारवाला। —**खसी(सिख)-पु०** राम। —**नाद-पु०** गधेकी बोली, रेंकना। **वि०** गधेकीसी आवाजवाला। —**नादिनी-खी०** रेणुका नामक गंधद्रव्य। —**नादी(विख)-वि०** गधेके जैसा नाद करनेवाला। —**पाख-पु०** कोहका बना बरतन। —**खाल-पु०** काठका बरतन। —**पुष्प-पु०** मरवा। —**मिख-पु०** कद्दूर। —**अखरी-खी०** अथा-मार्ग। —**माख-पु०** दे० 'खरवास'। —**खान-पु०** वह गांधी जिसमें गया जोता जाय। —**रोमा(मख)-खी०**—**खोमा(मख)-वि०** कसे रोयेवाला। —**बाँस-पु०** [हिं०] धनु-मकरकी संक्राति (पूस) वा जेष्ठ-वृश्चकी संक्राति (चैत्र) जिसमें शुभ कार्यका निषेध है। —**धार-पु०** अशुभ दिन—**रवि**, मंगल आदि। —**खख-पु०** कुरर पक्षी। —**शाक-पु०** मार्गी। —**खाल-खी०** गधे रखनेका घर। —**खान-खी०** [हिं०] अधिक तेज सान, 'मानपु सकल जगत जीतनकी काम बान खरसान सेंसर'—धर। —**खर-पु०** चिरीवीका पेड़; खजूर। —**खर-खी०** जंगली चमेली, बनमहिषा।

खर-वि० खरा, ज्यादा सिका हुआ (संकरका उलटा)।

खर-पु० तृण, घास। —**खीकी-खी०** आग (तृण खाने-वाली)। —**खर-पु०** मर्य। —**पाख-पु०** पाख-पात।

खर-पु० [फा०] गवा । वि० मूली; बहुत बड़ा; मवा, बड़ाफल । -गोश-पु० खरहा । -विमारा-वि० नासमरी; बड़ी; बर्मादी । -विमारी-की० नासमरी; हठ; बर्मा । -अस्त-अस्त-वि० मस्त; कामी; मूर्ख । -अस्ती-की० मस्ती; कामुकता; मूर्खता । -सुमा-वि० (धोवा) जिसके सुम गंधके ड्रम जैसे हों । -(रे)ईसा-पु० ईसाकी सवारीका गवा ।

खरक-पु० बस, बसोसे बनाया हुआ गाय रखनेका बाड़ा, गोद; बरगाह । की० खचक; खटक ।

खरकना-अ० कि० दे० 'खचकना'; 'खटकना'; खिसकना, चुपकेसे भाग जाना-...खग खगे खपुआ खरके'-कवितामाली ।

खरका-पु० स्या कड़ा तिनका; दाँत जोदनेका तिनका; खरक ।

खरखरा-वि० खुरखुरा ।

खरखरा-पु० [फा०] झगड़ा, विवाद; खेड़ा, संशय ।

खरग-पु० दे० 'खग' ।

खरब-पु० दे० 'खर्ब' ।

खरबना-स० कि० खर्ब करना; काममें लाना ।

खरका-पु० दे० 'खच' ।

खरबी-खी० दे० 'खबी'; † रसद आदि ।

खरज-पु० दे० 'बहज' ।

खरजर-पु० दे० 'खर्जर' ।

खरतनी, खरदनी-की० खरादनेका औजार ।

खरतुआ-पु० एक निकम्मी घास ।

खरवा-पु० अंगूरकी रंगनेवाला एक रोग ।

खरबुक-पु० एक पुराना पहनावा ।

खरपत्त-पु० एक पेड़ ।

खरपा-पु० एक तरहकी मिर्जई; † एक तरहका देहाती चापल जिते केवल खियाँ पहनती है ।

खरब-वि० सी अरब, खर्ब । पु० सी अरबकी संख्या ।

खरबुजा-पु० [फा०] दे० 'खरबूजा' ।

खरबुजा-पु० गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक प्रसिद्ध फल । मु०-(जे) जो देखकर खरबुजा रंग पकड़ता है-आदमी बैनैका संग करे बैसा ही हो जाता है ।

खरबूजी-वि० खरबूजेके रंगका ।

खरबर-पु० खलबल, हलचल; शोर, हल्ला ।

खरबरना, खरबराना-अ० कि० खलबलाना; हलचल मचाना ।

खरबरी-की० दे० 'खरमर' ।

खरल-पु० स्तर या लोहेकी सूँधी जिसमें दवाएँ फूटते, घोटते हैं । मु०-करना-खरलमें घरीक पीसना, हल करना ।

खरली-खी० खली ।

खरस-पु० रीछ, माछ ।

खरसा-पु० एक पकवान ।

खरसैका-वि० खुरली रोगवाला (पशु) ।

खरहर-पु० हिमाचलकी तराईमें होनेवाला एक पेड़; † दे० 'खरहरा' ।

खरहरना-स० कि० खरहरसे बहारना ।

खरहरा-पु० लोहेकी कई दंतमस्तिष्कीवाली चौकीर कंबी जिससे चोरेके बगलकी गर्द साफ की जाती है; अरहरके बंठलोंकी काट ।

खरहरी-की० एक मेवा, छुहरा ।

खरहरी-वि०, की० (खाट) जिसपर कोई कपड़ा आदि न बिछाया गया हो ('निखर')-नींद न जाने खरहरी खाट ।

खरहा-पु० लोमड़ीकी जातिका, कदमें बिल्लीके बराबर, एक जंतु जिसके कान बहुत लंबे होने हैं, खगोश ।

खराईक-पु० [स०] शिवका एक अनुचर ।

खराङ्ग-पु० [स०] मूँव ।

खरा-वि० विधुद्ध, खालिस; सच्चा; छल-कपटसे रहित; स्पष्टभाषी; व्यवहारमें सच्चा; नकद; खूब पका या सपा हुआ; खूब सिका हुआ; करारा । -असामी-पु० देन-लेनेमें सच्चा, ईमानदार आदमी । -ई-खी० खरापन, खराई, ईमानदारी; दे० क्रममें । -कईथा-वि० खरी बात कहनेवाला । -खेक-पु० सच्चा खेक, व्यवहार । -खोटा-वि० अच्छा-पुरा । मु०-खोटा बरखना-अले-बुरेकी पहचान करना ।

खराई-खी० भोरके समय कुछ धानेकी न मिलनेके कारण तबीयतका कुछ खराब होना; दे० 'खरा'में ।

खरागरी-खी० [स०] देवताकृद् दृष्ट ।

खराज-पु० [अ०] दे० 'खिराज' ।

खराद्-पु० [फा०] खरादनेका आला, खरख; खरादनेका काम; गदन । मु०-पर चढ़ाना-खरादनेके लिए खरख पर चढ़ाना; सुधारना, दुरुस्त करना ।

खराद्वा-स० कि० खरखपर चढ़ाकर लकड़ी या धातुकी चिकना, मुबौल करना; छील-छालकर दुरुस्त, मुबौल करना ।

खरादी-पु० खरादका काम करनेवाला ।

खराब-वि० [अ०] उजड़ा हुआ, बीरान; नष्ट, बरबाद; पुरा, होना; दुःखरिच ।

खराबा-वि० [फा०] उजड़ा हुआ, बीरान; खेतीके अयोग्य ।

खराबात-पु० [फा०] खराबखाना; जुएका अड्डा; चक्कल ।

खराबाती-पु० [फा०] शराबी; जुआरी; रंजीवाज ।

खराबी-खी० [फा०] दोष, बुराई; तबाही, बरबादी ।

खराब्दांजुरक-पु० [स०] वैद्यूँ मणि ।

खरारि-पु० [स०] विष्णु; राम; कृष्ण; बलराम ।

खरासी-पु० दे० 'खरारि' ।

खराखक, खराखिक-पु० [स०] नाई, किमबत; लोहेका तीर; तकिवा ।

खराखा-खी० [फा०] खचाका छिल जाना, खरौँव; खुरली ।

खराखा-खी० [स०] मयूरशिला नामक लता ।

खराङ्ग-खी० [स०] अन्नमोहा ।

खरिक-पु० गोठ; बरगाह ।

खरिका-खी० [स०] चूर्ण की हुई कस्तूरी । * पु० दे० 'खरिक'; † दे० 'खरका' ।

खरिया-खी० रस्सीकी बनी जाली जिसमें भूसा आदि बाँधकर ठे जाते हैं; पैली; कंदेकी राख; दे० 'खरिया' ।

सरिवावा-स० कि० होलीमें सर लेना; प्राप्त, इस्तगत करना ।

सरिवावा-पु० दे० 'खलियान' ।

सरी-खी० [सं०] गयी ।-अक्ष-पु० शिव ।-विषाण-पु० ऐसी वस्तु जिसका अस्तित्व न हो ।-हृष्ट-पु० गया ।

सरी-वि०, खी० दे० 'सरा' । † खी० दे० 'खरिया' ; 'खली' ; * खारी ।-खोटी-खी० कच्ची-कटौली, कच्ची लगनेवाली बात । मु०-सरी सुनावा-साफ, दो ठूक बात कहना; अभिय सत्य कहना ।-खोटी सुनावा-सही बात कहना; भला-पुरा कहना ।

सरी०-वि०, खी० उत्कट-सरी अभिलाषनि सुज्ञान पिय भेटिहो'-धन० ।

सरीक०-पु० तिनका ।

सरीसा-पु० [अ०] पैली; बड़ा छिकाफा जिसमें सरकारी आदेश भेजे जाते हैं; इस प्रकार प्रेषित सरकारी आदेश; जेब; सुर-भाग रखनेकी पैली ।

सरीद-खी० [फा०] सरीदनेकी किया या भाव्य क्रय; खरीद की हुई वस्तु ।-क्रोडक-खी० खरीदना-बेचना, लेना-बेची ।

सरीदना-स० कि० मोल लेना, दाम देकर लेना ।

सरीद-वि० [फा०] खरीद किया हुआ; क्रीन । पु० दास-पुत्र; अनविधा मीनी ।

सरीदार-पु० [फा०] सरीदनेवाला; द्राहक; इच्छुक ।

सरीदारी-खी० [फा०] खरीद, क्रय ।

सरीक-खी० [अ०] वह फमल जो असह-सावनमें बोयी और कागि-अगहनक काट ली जाय-धान, मकई, बाजरे आदिकी फमल ।

सह-वि० [मं०] सफेद; मूर्ख; निष्ठुर; निषिद्ध वस्तुओंका इच्छुक । पु० घोडा; दौत; घमड़; कामदेव; शिव; वजित वस्तुएं, लेनेका इच्छा; सफेद रंग । खी० अपना पति स्वयं चुननेवाली कन्या ।

सरेई, सरीई०-अ० सचमुच; अर्पत ।

सरेरा-पु० दे० 'सरहरा' ।

सरेटी-खी० एक पौधा; बला, बरियारा ।

सरेँच-खी० लवाका काँटे, नाभन आदिसे छिल जाना, खराग; छिल जानेका निशान ।

सरीचना-स० कि० घुसचना; छीलना ।

सरेँट, सरोट-खी० दे० 'सरोँच' ।

सरोच-खी० दे० 'सरोँच' ।

सरोचना-स० कि० दे० 'सरोँचना' ।

सरोटना-स० कि० दे० 'सरोँचना' ।

सरोश-पु० [फा०] जौरकी आवाज, शोर ।

सरोछी, सरोछी-खी० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो फारसीकी तरह दाहनेसे बायें लिखी जाती थी और मौर्य-कालमें पश्चिमोत्तर भारतमें चलती थी ।

सरेँट०-खी० दे० 'सरोँच' ।

सरेँटना-स० कि० दे० 'सरोँचना' ।

सरोई०-वि० कुछ-कुछ सारा ।

सरोई-पु० [सं०] एक तरहका ईंद्रजाल ।

सरी०-पु० तलवार ।

सरी०-पु० [फा०] पैते, चीकरा किसी काममें लगना, सफा होना, व्यव; आवश्यक कार्योंमें लगनेवाला पैसा ।

सरागी-खी० निजी खर्च; भरोख खर्च । मु०-उठाना-सफा बदोश करना, व्यवहार बहन करना ।

-निकलना-सफा, लागत निकल जाना ।

सराणा-स० कि० दे० 'सरचना' ।

सरा०-पु० [फा०] सफा, लागत खर्च ।

सराँ-वि० खर्च करनेवाला । खी० कसकी उजरत ।

सराँका-वि० बहुत खर्च करनेवाला, खरीच ।

सराँन-पु० [सं०] सुखलाना ।

सराँका-खी० [सं०] उपरंश रोग, गरमीकी बीमारी; पानेच्छा उत्पन्न करनेवाला खाद्य पदार्थ, गन्धक ।

सराँ-खी० [सं०] सुखली; जंगली खजूर; एक कोड़ा ।-म-पु० भूरा; चक्रमरी; आक ।

सराँर-पु० [सं०] चाँदी; खजूरका एक भेद ।

सराँ-खी० [सं०] सुखली; एक कोड़ा ।

सराँर-पु० [सं०] खजूरका पेड़; उसका फल; चाँदी; इस्ताक; धतूरा; बिच्छू ।-रस-पु० ताड़ी ।-बेच-पु० विवाहमें बजित एक बीण, एकार्णल ।

सराँरक-पु० [सं०] बिच्छू ।

सराँरी-खी० [सं०] खजूर ।

सराँर-पु० [सं०] चौर; ढग; खल; खपर; कपाल, लोपरी; मिट्टीका कूटा हुआ बरतन; छाता; खपरिया ।

सराँरिका-खी० [मं०] छतरी ।

सराँरी-खी० [सं०] खपरिया ।

सराँ, सराँ-वि० [सं०] बिकलाग; बीना; ठिंगना; छोटा; सौ अरब । पु० सौ अरबकी संख्या; कुबेरकी ९ निधियोंमेंसे एक ।-शाख-वि० ठिंगना ।

सराँट, सराँट-पु० [सं०] पहारी गौँव; बाजार, मंडी ।

सराँज, सराँज-पु० [मं०] खरबूजा ।

सराँ-पु० लंबा लेख; विवरण; मसौदा; एक चर्मरोग ।

सराँच-वि० [फा०] बहुत खर्च करनेवाला ।

सराँट-वि० बीशियार; अनुभवही; बुद्ध ।

सराँटा-पु० सोतेमें नाकसे निकलनेवाली सर-सरकी आवाज । मु०-(डे)भरना,-भारना,-लेना-गहरी नींद, बेखबर सोना ।

सराँट-पु० [अ०] खरादका काम करनेवाला, खरादी ।

सराँती-खी० [अ०] खरादीका पेशा ।

सराँद-पु० [फा०] दे० 'सराँट' ।

सराँस-वि० [सं०] सराँ, छोटा किया हुआ ।

सराँसा-खी० [सं०] चतुर्दशीयुक्त अमावस्या; वह तिथि जिसका योगकाल पिछले दिनकी तिथिसे कम हो ।

सख-वि० [सं०] दुष्ट, खोटा; बेहया; नीच; चुगलखोर । पु० खलियान; सरल; भरती; खान; तलछट; भूखिटाश; दुई; बुद्ध; धतूरा ।-जान,-जाम्ब-पु० खलियान ।

-ह-वि० सफाई करनेवाला ।-सूँसि-पु० पारा ।

-बख-पु० खलियानसे किया जानेवाला एक बह ।

-संसरा-वि० दुष्टका साथ ।

सख नायक-पु० [सं०] (जिह्वेन) नाटक या उपन्यासके मुख्य नायकका वह प्रतिद्वंद्वी जो उसकी लक्ष्यप्राप्तिमें बाधार्थ

उपस्थित करता रहता है और जो दुष्प्रवृत्तियोंका प्रतीक होता है।

सकई*-श्री० दुष्टता।

सकड़-पु० [म०] घडा।

सकड़-पु० [अ०] जोबसमष्टि, लोकसमूह, जगत्।- (कं)

सकड़ा-पु० ईश्वरका जगत्वा हुआ जगत्।

सकड़सक*-श्री० दे० 'सिलकत'।

सकसक-पु० तरल पदार्थकी बोलत आदिसे उठेजने वा सिलसिलाकर हँसनेकी आवाज।

सकड़ी-श्री० खाल।

सकलित-वि० [सं०] सत्वात्।

सकलित-पु० [सं०] पडा।

सकलना-अ० कि० बुरा लगना, क्लेशकर होना, चुभना।

सं० कि० मोचना, झुकाना; पुँवकमें गड्ढा बनाना; * खरलमें घोंटना।

सकलक-पु० दे० 'सलबली'।

सकलबलाना-अ० कि० खोलना; धुक्क, बेचैन होना।

सकलबलाहट-श्री० सलबलानेका भाव, बेचैनी; सलबली।

सकलबली-श्री० हलचल; बेचैनी, घबराहट; क्षोभ।

सकलभल-पु०, सलभली-श्री० दे० 'सलबली'।

सकलभलाना-अ० कि० दे० 'सलबलाना'।

सकलभलाहट-श्री० दे० 'सलबलाहट'।

सकल-पु० दूध।

सकल-पु० [अ०] बाधा, अक्वचन; विगाह; रोग।

—अंदाज़-वि० बाधा डालनेवाला।-अंदाज़ी-श्री० बाधा, अक्वचन डालना।-दिमागा-पु० दिमागका विगड जाना; मनक, पागलपन। वि० जिसका दिमाग विगड गया हो, समझी।

सकलसा-श्री० एक बड़ी मछली।

सकलई-श्री० दुष्टता।

सकलधारा-श्री० [सं०] तेलचट्टा।

सकलाना-सं० कि० खाली करना; गड्ढा करना; भँसाना।

सकलर-वि० नीचा, गह्रा।

सकलक-श्री०, पु० दे० 'सिलकल'।

सकलस-पु० [अ०] छुटकारा, मुक्ति, निवृत्ति (पाना, होना)।

सकलसी-श्री० दे० 'सकलस'। पु० जहाज, तोपखाने आदिमें छोट-मोटे काम करनेवाला मजदूर; दैमा आदि खडा करनेवाला नौकर।

सकल-श्री० [सं०] खली।

सकलित*-वि० सखलित; कलित; हिला हुआ; गिरा हुआ।

सकल-पु० [सं०] लगातारका काँटा।

सकलियान-पु० वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी और मँड़ी जाय; ढेर। सु० -करना-काटी हुई फसलका ढेर लगाना; नष्ट करना।

सकलियाना-सं० कि० खाल उतारना (फटे बकरे आदिकी); † खाली करना।

सकलिस-श्री० [फा०] चुभन; खटक; रंजिश, वैर।

सकलहान-पु० दे० 'सकलियान'।

सकली-वि० सलनेवाला। श्री० [सं०] तेलहनकी सीठा।

सकली(खिज)-वि० [सं०] जिसमें तलछट हो। पु० शिव।

सकलीज-श्री० [अ०] खादी।

सकलीता-पु० दे० 'सलीता'।

सकलीन-पु० [सं०] दे० 'सकलिन'।

सकलीका-पु० [अ०] उत्तराधिकारी, जानशोन; पैगबर- (मुहम्मद)का उत्तराधिकारी; नेता; गतके आदिके उत्तराधिकारी; बड़ा दरबी; नार्ड; वाक्पथी।

सकल-अ० [सं०] निश्चय, निषेध, जिहासा; अनुनय इ० अर्थमें प्रयुक्त।

सकलरिका, सकली-श्री० [सं०] अल-संवालनके अभ्यासका स्थान।

सकल-पु० तेलमें रह जानेवाला सलीका अंश।

सकल-मकल-वि० गड्ढा-मड्ढा, मिला-जुला।

सकल-श्री० [सं०] खलियानोंका समूह।

सकल-पु० [सं०] खाल, चमड़ा; मशक; खरल; गड्ढा; चातक; नहर; जलप्रणाली।

सकल-पु० सलबी, मशक; अतिरुद्ध भ्यक्ति (जिसकी खाल लटक गयी हो)।

सकलिका-श्री० [सं०] कड़ाही।

सकलिट, सकलीट-पु० [सं०] मिरके बाल झटनेका रोग, गजापन। वि० गंजा।

सकली-श्री० खली; [सं०] एक रोग जिसमें हाथ-पैरमें दर्द होता है।

सकलवाट-वि० [सं०] गंजा। पु० गजापन।

सकल-पु० कंधा, मुजमल। सु०-(बे)से सक्वा खिलना-बहुत मीठ, धक्क-धक्का होना।

सकलई-श्री० खानेकी क्रिया।

सकलाना-सं० कि० खिलाना।

सकलारा*-वि० खोटा, खराब-'कर्म सक्लारा पुट भगि लाईं ताते बहु विधि भयी अचेत'-सुदरदान।

सकलस-पु० [अ०] चुने हुए लोभ, विशिष्ट जन (अवामका उल्टा); खास खिदमतगार, मुमाहिद; मन्था; गुण; तामीर; *नाई। श्री० लोटी; भोले।

सकलसी-श्री० [अ०] खवामका कान, पद; होरे या गाड़ी-में खास टहलुके बैठनेकी जगह।

सकलैया-पु० खानेवाला; अधिक खानेवाला।

सकल-पु० [सं०] दे० 'सकल'।

सकलस-पु० [फा०] पोस्तेका पीथा; पोस्तेका बीज, खमखस।

सकली(खिज)-वि० [सं०] पोस्तेके फूलके रंगका आसमानी। पु० उक्त रंग।

सकल-पु० [फा०] क्रोध, रोष।-गीन, -नाक-वि० गुस्सेसे भरा हुआ, क्रुद्ध।

सकल-पु० [सं०] क्रोध; हिंसा; निष्ठुरता।

सकल-पु० [सं०] गदवालके उत्तरका प्रदेश; उस प्रदेशका निवासी; नेपाल आदिमें बसनेवाली एक (त्राय) क्षत्रिय जाति, खामिया; खुजली; पोस्तेका पीथा।-सकल-पु० पीसा।-कलकीर-पु० अकीर।

सकल-पु० [फा०] खसी घास; गाबर नामकी घासकी जड़ जिसकी टट्टियाँ गरमीके दिनोंमें कमरेकी ठंडा रखनेके लिए खिचकियों, दरवाजोंपर लगायी जाती है।-सकल-पु०

पु० खसकी टट्टियोंने पिरा हुआ खान, कमरा। -पोख-
ति० उसी वासते बैठा हुआ। -ब(सो)प्रापाक-पु०
वास-पात; कृपा-करकट।

खसकना-अ० कि० दे० 'खिसकना'।

खसकाना-स० कि० दे० 'खिमकाना'।

खसखस-पु० पोस्तोका दाना, खण्डखण्ड।

खसखसर-वि० मुरसुरा; बहुत छोटा; पोस्तके दानेसा।

खसखास-पु० दे० 'खसखासा'।

खसबां-अ० कि० खिमकना; गिरना।

खसनीब-पु० एक तरहका गंधाविरोजा।

खसबो-अ० कि० दे० 'खुशबू'।

खसम-पु० [अ०] दुबमन, लज्जनेवाला; मालिक, पति।

-पीटी-वि०, पु० विषया (माकी)। मु० -करना-
किसीकी पति बनाना, (शोक) प्याह करना।

खसरा-पु० एक तरहकी खुजली।

खसरा-पु० [फा०] पटवारीकी बही जिसमें गाँवके हर
भेतका नंबर, रकबा, काश्तकारका नाम इ० लिखे रहते हैं;
हिसाबका कच्चा बिट्टा, अर्थात् -खाबादी-पु० वह कागज
जिसमें गाँवके हर मकालका नंबर, रकबा, मालिकका नाम
आदि लिखे हों। -खससीस-पु० बटवारेका खसरा।

खसलल-खी० [अ०] आदत, स्वभाव, गुण।

खसाना-स० कि० गिराना; फेंकना।

खसारी-खी०, खसारा-पु० [अ०] घाटा, दोटा, हानि।

खमासत-खी० [अ०] खमीमपन, कज्मी; छुद्रना, नीचता।

खसिया-पु० आमासकी एक पधाधी; उस पधाधीके आम-
पामका प्रदेश। * वि०, पु० दे० 'खसी'।

खसियाना-स० कि० खसी करना।

खसी-वि० [अ०] बधिया; हिंजवा, नपुंसक। पु० बधिया
करना। मु० -करना-बधिया करना।

खसीस-वि० [अ०] कज्म; छुद्रहृदय।

खसांट-खा० खसोटनेकी क्रिया या भाव।

खसोटना-स० कि० नोचना, उखाड़ना; छीन लेना।

खसोट्टा-पु० कुदरतीका एक पेंच।

खसोट्टी-खी० दे० 'खसोट्ट'।

खसखस-पु० [म०] पोस्ता, खसखस।

खसखसी-खी० [फा०] खसापन।

खस्ता-वि० [फा०] धायल, विज्र; क्वात; दुर्दशामस्त;
अराम दवानेसे चूर हो जानेवाला, बहुत नरम।
-कचौबी-खी० टिकियाकी शकलकी मोयनदार कचौडी।

-हाल-वि० विज्र; विपन्न; दुर्दशामस्त, फटेहाल।

खस्सी-वि०, पु० [अ०] दे० 'खसी'।

खी-पु० दे० 'खान'।

खीखी-खी० झुझा।

खीखरी-वि० जिसमें बहुत खराखर हों; झीना।

खीग-पु० कांटा; जगली सुमरका वह दाँत जो बाहर
निकला रहता और शककासा काम देता है; गेहेके मुँहपर
रहनेवाला सींग; तीमर, मुर्ग आदिके पैरका काँटा; गाय-
बैल आदिके खुर पक जानेका रोग। * खी० बुटि; कमी-
'वरिस वीस लखि खीग न होई'-प०।

खीगना-अ० कि० लँगडा हो जाना; पचना। स० कि०

छेदना।

खीनी-खी० कमी।

खीबना-स० कि० दे० 'खीबना'।

खीबा-पु० अरहर आदिके डंठलका बना दीकरा; झाव;
बड़ा पित्रका।

खीची-खी० छोटा खीचा, खींचिया।

खीड-पु० [सं०] खचित होना; खीडते बनी बीज; मिसरी।

खीब-खी० गुश्का वह भेद जो गीला होता है और जिससे
शकर बनता है, राव; शकर, कच्ची चीनी; गड़ड़ा।
-सारी-खी० दे० 'खंबसारी'।

खीबारी-स० कि० कुचलना; डुकड़े-डुकड़े करना; चबाना।

खीडर-पु० खीडरा; कतला।

खीडव-पु० [सं०] महामारतमें वर्णित एक वन जिसे
अग्निने जर्जुनकी सहायतासे जलाया; खीडते बनी बीज,
मिसरी आदि। -प्रख-पु० धृतराष्ट्रने पांडवोंकी मिला
हुआ खान जहाँ उन्होंने द्रपस नगर बसाया। -खग-
पु० मिसरी; मिठाई।

खीडविक-पु० [सं०] हलवाई।

खीबा-पु० खड्ड; सीपी और कुछ चौड़ी तलवार; भाग,
खंड। मु० -बजना-तलवार चलाना, युद्ध होना।

खीडिक-पु० [सं०] हलवाई।

खीदा-पु० पदचिह्न, जानवरके खुर आदिके निशान-
'जानवरोंके खीद तो मिलते हैं, पर दिखलाई घूँछतक नहीं
पड़ती'-नृग०।

खीधना-स० कि० खाना-'चोरि दधि कोनै खीधो'
-सूर।

खीप-खी० फाँक, डुकड़ा।

खीम-पु० खंसा; दे० 'खाम'।

खीमना-स० कि० दे० 'खामना'।

खीव-पु० दे० 'खावो'।

खीमना-अ० कि० गलेसे बलगम आदि निकालने या
सकेतके लिए फेफड़ेसे झटके और आवाजके साथ हवाका
बाहर निकलना।

खीसी-खी० खींसनेकी क्रिया; गले या थासनालीमें खुर-
सुराहट होनेसे फेफड़ेने झटके और आवाजके साथ हवाका
बाहर निकलना; एक रोग जिसमें बार-बार यह क्रिया
होती है।

खीइन-वि० [अ०] खयानत करनेवाला, रूपया खा जाने-
वाला, बेईमान।

खीहँ, खीहँ-खी० किले, परकोटे आदिके चारों ओर रक्षाार्थ
खोदी हुई नहर, खदक।

खीऊ-वि० बहुत खानेवाला; घूस लेनेवाला। -खीत-पु०
खानेके लिए दोस्ती करनेवाला, मतलबका यार।

खीक-खी० [फा०] धूल; मिट्टी; राख, मल; तुच्छ वस्तु;
धृत्त्व। वि० तुच्छ; छोटा। अ० कुछ नहीं; किस लिए।

-खीकाज-पु० चूल्हेसे राख निकालनेका बरतन; किले
आदिकी दीवारका वह छेद जिससे शत्रुपर गोली आदि
चलाते हैं। -खान-पु० चूल्-मिट्टी, कूड़ा फेंकनेकी जगह;
दुनिया (ला०)। -खाब-पु० खल-उग्रमध्य। -खत्तर
-अ० कुछ नहीं (खाक-पत्थर समझा)। -खोब-पु०

हाथ, देनेवाला, संगी । -साद-वि० तुच्छ, नाचीज; दोन; विनीत । -सारी-खी० दीनता; विनम्रता । -साही-खी० काली राख, छार (भू०) । - (के)वा-खी० पदरज । वि० अतिदीन; विनीत । मु०-उबना-तपाह, बरबाद हो जाना; बदनामी, बेइज्जती होना । -उबाना-मटकते फिरना, खाक छानना । -ऊबना-जकाकर राख कर देना, मल्ल, कुश्ना बनाना; तपाह, बरबाद कर देना । -का पुतला-मनुष्य । -का पैबंद होना-दफन होना, मरना । -खादकर-अति नम्रतापूर्वक (कोई बात कहना) । -खाटना-भूल खाटना; दोलता दिखाना; स्वीकार करना । -छाबना-किसी चीजकी तलाशमें बहुत हैरान होना, मारा-भारा फिरना । -हालना- (दरपर) पर्दा डालना, छिपाना; भूल जाना । -बरसना-उबाह लगाना, भूल उबना । -में मिलना-भूल में मिलना; नष्ट, बरबाद होना । -सिपाह कर देना-जकाकर राख कर देना; नष्ट कर देना । -सिरपर उबाना-मातम मनाना, शोकमें रोना-धोना ।

साकसी-खी० [फा०] एक वनस्पतिका दाना जो दवाके काम आता है ।

साकसीर-खी० दे० 'साकसी' ।

झाका-पु० [फा०] नकशी या चित्रपर पारदर्शी कागज रखकर बनाया हुआ नकशा या चित्र; कच्चा भकशा; रेखा-चित्र; डोंचा; स्थूल योजना; एक तरहका कशीदा (उत्तारना; खींचना) मु०-उबाना-खिल्ली उबाना; बदनाम करना ।

झाकान-पु० [तु०] सत्राद्; चीनके पुराने सम्राटोंकी उपाधि ।

झाकिस्तर-खी० धूल; राख, भूसत ।

झाकी-वि० [फा०] मिट्टीका बना; मिट्टीके रंगका, मट्टिया । पु० मट्टियाला रंग; इस रंगका कपड़ा; पुलिस या फौजकी बर्दा; साधुओंका एक सम्प्रदाय । -अंडा-पु० वह अंडा जिसमेंसे बच्चा न निकले, खाली, विगष्ट अंडा; दोगला (ला०) ।

साख-खी० साक; धूल; बूँद ।

साखरा-पु० एक तरहका बाजा ।

साग-पु० दे० 'खोंग' ।

झाग-पु० [फा०] मुर्गीका अंडा ।

सागना-अ० कि० चुभना ।

झागीना-पु० [फा०] तले हुए अंडे या उनका सालन ।

साज-खी० स्वचममें सुजली होनेका रोग, खारिज ।

साजा-पु० साध; सानेकी चीज; मैदेकी बनी एक प्रसिद्ध मिठाई; एक जंगली वृक्ष ।

साजिक-पु० [सं०] भूना हुआ पान, ठावा ।

झाजिब-पु० [अ०] खनांची, कौशाध्वज ।

साजी-खी० खाद्य पदार्थ ।

साट-पु० [सं०] टिखटी, जरपी । खी० [हिं०] चारपाई, सटिया । -साटीका-पु० [हिं०] गृहस्थीका सामान, वीरिया-बनना । मु०-कटना-खाटपर हो मछ-मूत-लायका प्रबंध होना, ससत बीमार होना । -बर पकना-बीमार होना । -से उत्तारा जाना-आसन्नमरण

होना । -से लगाना-रोगके कारण उठने-बैठनेमें असक्त हो जाना ।

साटा, साटो-वि० खट्टा, अम्ल ।

साटि, साटिका, साटी-खी० [सं०] जरपी ।

साव-पु० गहटा ।

साव-पु० छ खरौंवाला राग, पावह ।

सावी-खी० समुद्रका वह भाग जो तीन ओर खुल्लेसे घिरा हो, खलीज ।

सास-पु० [सं०] खोदना; तालाब; कुआँ; गड्ढा; खाई ।

वि० खोदा हुआ । -भू-खी० खार । -रूपकार-पु०

कुम्हार । -इयबहार-पु० तालाब आदिका क्षेमफल निकाशनेका गणित ।

सासक-पु० [सं०] खोदनेवाला; खारई कर्मदार ।

झासम-पु० [अ०] मुहर; मुहरवाली अंगुठी । -बंद-पु०

मुहर खोदनेवाला; हड्डी, हाथी-दाँत आदिपर गुरु-बूटे बनानेवाला ।

झासमा-पु० [अ०] दे० 'साविमा' ।

सासा-खी० [सं०] तालाब । पु० [हिं०] वह बही जिसमें हर एक ग्राहक, असामी आदिका अलग-अलग हिसाब लिखा जाय; लेखा; हिसाब; मर्ग; बखार । मु०-खोलना, -हालना-किसीसे लेन-देन आरम्भ करना । - (ने)में पकना-किसीके नाम, किसीके हिसाबमें लिखा जाना; पकौ बहीमें लिखा जाना ।

सासि-खी० [सं०] खुदाई ।

झासिस-वि० [अ०] समासि करनेवाला । पु० समासि ।

जासिमा-पु० [अ०] अंत, समासि; मृत्यु; पुस्तकका अंतिम अध्याय ।

झासिर-खी० [अ०] मन, दिल; ध्यान, खयाल; आदर, लिहाज; सत्कार, आबमगत; इच्छा, मरजी । अ० बाग्नं, लिफ । -फूबाह-अ० इच्छानुसार, जैसा मन चाहे ।

-जमा-खी० इतमीनान, दिलजबई । -दारी-खी० आबमगत, सत्कार । -बशी-वि० जो दिलमें बैठ, जम गया हो । -शिकनी-खी० (फिमीका) अमनुष्ट, अप्रसन्न होना । मु०-में न छाना-परवाह न करना, तुच्छ समझना ।

झासिर-अ० वास्ते; (किसीकी) असन्नताके लिए ।

झासिरी-खी० दे० 'सातिर' ।

सासी-खी० गहड़ा; छोटा तालाब । पु० खतिया जाति; बईई ।

झासून-खी० [तु०] अन्न, कुलेन महिला । (जिबोंके नामके साथ आदरार्थं भी प्रयुक्त होता है-'जुबेदा खातून') । - (ने) अरब, -झाबा-खी० फातिमा ।

-झाबा-खी० गृहिणी । -झलक-खी० सूई ।

सात्र-पु० [सं०] फावक; तालाब; सूत; वन; भय ।

साद-खी० जमीनका उपजाऊपन बढ़ानेवाली, पेश-पौधोंके लिए खाद्यरूप वस्तु । पु० [सं०] खाना, भक्षण ।

सावक-वि०, पु० [सं०] खानेवाला; कर्मदार ।

सावन-पु० [सं०] खाना, भक्षण; दाँत; खाद्य पदार्थ ।

सादर-पु० नीची जमीन जहाँ बरसातका पानी इकट्ठा हो जाय, कछार; र संचा हुआ गोबर आदि, खार ।

साहित्य-वि० [सं०] खाबा हुआ ।
 साविता (शु)-वि०, पु० [सं०] खानेवाला ।
 खादिस-पु० [अ०] खिरमत् करनेवाला; सेवक ।
 खादिमा-स्त्री० [अ०] दबडूँ, नेविका ।
 खादिर-वि० [सं०] खादिरसे उपजित । पु० कत्था ।
 खादी-स्त्री० हाथका पुना मोटा कपड़ा; गजी; हाथके कते
 साका हाथ-करघेपर बुना हुआ कपड़ा । -कैंडा-पु०
 खादी बुने जानेका कैंडा, वह स्थान जहाँ खादीका उत्पादन
 बड़े पैमानेपर हो । -खारी-वि० खादी पहननेवाला;
 केवल खादीका व्यवहार करनेवाला । -अँडार-पु०
 खादीकी दुकान ।
 खादी (विद्)-वि०, पु० [सं०] खानेवाला ।
 खादुक-वि० [सं०] दुराई करनेवाला; हानिकारक ।
 खाद्य-वि० [सं०] खाने योग्य । पु० खानेकी चीज, भोजन ।
 -मलिका-स्त्री० (एलिमेंटरी कैनाल) दे० 'पोषिका' ।
 खाद्य-पु० दे० 'खाद्य'-सीस न देह पतन होइ तब लधि
 लहै न नाथ'-पं० ।
 खाद्य, खापुक-पु० खानेवाला, भक्षक ।
 खान-स्त्री० वह जगह जहाँसे धान, कोयला आदि खोद-
 कर या पत्थरकी भिले तोड़कर निकाली जायें; खानि, खीत;
 आकर, भटार, खजाना । पु० [सं०] खोदना; हिसा
 करना; पीढ़न; खानेकी क्रिया; भोजन । -पान-पु०
 खाना-पीना; खाने-पीनेका ङग; खाने-पीनेका व्यवहार,
 संवध ।
 खान-पु० [तु०] स्वामी, मालिक, मरदार; रईस; पठान;
 कुछ पठान शासकोंकी उपाधि; तातार और खताके पुराने
 बादशाहोंकी उपाधि । -ज़ाह-गाह-स्त्री० दरवेशोंके
 रहनेका स्थान, दरगाह । -खानान-पु० सरदारोंका
 सरदार; प्रधान सेनापति; प्रधान मंत्री (बैरम खॉँ और
 उनके पुत्र अब्दुर्हीम (रहीम कविकी उपाधि) । -ज़ाहा-
 पु० खॉँका वेडा, शाहजादा । -बहादुर-पु० ब्रिटिश
 सरकारकी एक उपाधि या ग्लिनाब जो मुमलमानों और
 पारसियोंको दिया जाता था । -सार्मा-पु० शाही
 महलका भटारी या पाकशालाका प्रबंधक; अंग्रेजोंका
 बाबची । -साहब-पु० एक उपाधि; पठान ।
 खान-'खाना'का समासगत रूप । -शी-वि० परका,
 घरेलू, निजी, जानी । स्त्री० कसब, वेष्टावृत्ति करने-
 वाली स्त्री । -खान-पु० घराना, कुल; कुटुंब । -दानी-
 वि० कुलक्रमगत, वैदिक; ऊँचे कुलका, कुनीन ।
 खानक-पु० [सं०] खोदनेवाला; खान खोदनेवाला ।
 खानम-स्त्री० [तु०] खॉँकी पत्नी, बेगम; कुलीन, प्रतिष्ठित
 महिला ।
 खाना-सं० कि० ठोस आहारको चबाकर निगलना, भक्षण
 करना; निगलना; मारकर भक्षण करना (हिंस्र जंतुओंका);
 चूसना, चबाना (पान, गॅरेरियों); बाट जाना (क्षीरों
 आदिका); खर्च करना; नष्ट करना; कमजोर, खोखला
 करना; काटना; सहना, अंग्रेजना; लगने, पड़ने देना (बूध,
 हवा आदि); हड़पना, गृहण करना; चोरी, बेईमानीसे
 हथियाना, पैदा करना । पु० भोजन । मु० खा जाना,
 -हालना-निगल जाना; मार डालना; खर्च कर देना;

हजम, नवन कर लेना । खाना-कमाना-मेहनत-भज-
 दूरीसे पैसा कमाकर सुख-वसूल करना । -खिलाना-
 अच्छी चीजें बनाकर खाने और दूसरोंको खिलातेका शौक
 रखना । खाना-पीना-भोजन-पान, खाने-पीनेका मुख
 भोगना । -छहूँ करना-भोजनके समय या बाद कोई
 पुच्छ, संताप देनेवाली बात करके उसका मुख नष्ट कर
 देना । - (ने)पीनेसे झुश या सुष्पी-सुशहा । खा-पी
 जाना-खा-पीकर व्यतम करना, उषा डालना ।
 खाना-पु० [फा०] घर, आलम; स्थान; द्विवा, केस;
 अलमारी, संदूकका विभाग; कागज या कपड़ेपर रखागोते
 बना विभाग, कोष्ठक । -आबाद-घर बसा, धन-धान्यसे
 भरा रहे (आशुर्वचन) । -आबादी-स्त्री० घर बसना;
 समृद्धि; व्याह । -खराब-वि० आबारा; बेकर-बारका;
 बरकी बरबाह करनेवाला । -खरा-पु० मरिज; उपा-
 सना-स्थान । -अंगी-स्त्री० आपसी लड़ाई, गृहयुद्ध ।
 -जान्द-वि० (किस्तीके) घरमें जनमा, पला हुआ (लोही
 या शुष्मका संज्ञा) । पु० सेवक, दास । -तलाशी-
 स्त्री० खरीकी तलाशी । -दामाद-पु० ससुरके घर रहने-
 वाला दामाद, घरजोई । -दार-वि० घर-गृहस्त्रीवाला,
 गृहस्थ । -दारी-स्त्री० घर-गृहस्त्रीका काम, गार्हस्थ्य ।
 -नशीब-वि० जो घरमें ही बैठा रहे, कही जाये-आये
 नहीं; बेकार । -पुरी, पूरी-स्त्री० किसी नक़्शे, सारणीके
 खानोंको भरना । -बदोश-वि० जिसका कोई घर, ठौर-
 ठिकाना न हो । पु० खेमें, सिरकियोंमें रहनेवाली, स्त्री
 आबासरहित जाति, जन । -बरबाद-वि० घर-उजाड़,
 उधाल । -बरबादी-स्त्री० घरका उजड़ना । -सुमारी-
 स्त्री० (किसी गाँव, नगरके) घरोंकी गिनती करना ।
 -साज़-वि० घरका बना ।
 खानि-स्त्री० [सं०] खान; * खूँद; ओर; प्रकार, भेद ।
 खानिक-पु० [सं०] शीशारमें किया हुआ छेद, दरार; संघ ।
 * स्त्री० खानि ।
 खानिल-पु० [सं०] संघ मारनेवाला ।
 खानोदक-पु० [सं०] नाट्यलका पेइ ।
 खापगा-स्त्री० [म०] आकाश गंगा ।
 खापट-स्त्री० काविस मिट्टीवाली जमीन ।
 खाब-पु० दे० 'स्वाय'; † खाना ।
 खाभा-पु० कोल्लूके नीचेके बरतनने नेल निकालनेका
 मिट्टीका बरतन ।
 खाम-पु० लिफाफा; जोड़; * खंभा । * वि० घटनेवाला ।
 खाम-वि० [फा०] कंथा; जो पका-पकाया या पका न
 हो; अप्रौढ़, अनुभवहीन; पक्केसे कम, छोटा (हाट, तौल);
 अव्यक्त, अस्पष्ट । -हलाका-पु० वह हलाका या गाँव
 जिसकी तहसील सरकार, रियासत खुद करे । -खबाख-
 वि० नासमझ, बेवकूफ । -खबाखी-स्त्री० नासमझी,
 नासमझीका, बुद्धि-विरुद्ध विचार । -तहसील-स्त्री०
 लगानकी वसूली जो सरकार खुद करे । मु०-पचना-
 पटना, कम पड़ना ।
 खामखाह-अ० दे० 'स्वाहास्वाहा' ।
 खामबा-सं० कि० आगे आदिसे (वषे आदिका) मुँह बंद
 करना; लिफाफेमें बंद करना ।

प्राप्ता - पु० [फा०] कलम, लेखनी ।
 प्राप्ती - स्त्री० [फा०] कक्षा; कमी; दोष; अनुभवहीनता ।
 प्राप्नुष - वि० [फा०] दे० 'प्राप्नुष' ।
 प्राप्नुषी - स्त्री० [फा०] दे० 'प्राप्नुषी' ।
 प्राप्नुष - वि० [फा०] चुप, मौन ।
 प्राप्नुषी - स्त्री० [फा०] चुप्पी ।
 प्राप्ता - पु० [फा०] अक्षर, फोटा; मुर्गीका अंडा ।
 -प्रदा - वि० वापस । -प्रदायी - स्त्री० वापसी ।
 प्रार - पु० प्रार; प्रार गुण, प्रारपन; रेखा; लोना; सज्जी; राख; * पोखरा; बर - 'दे' न जात प्रार उतराई चाहत बदन जवाब - सर; [सं०] दे० 'प्रारि' ।
 प्रार - पु० [फा०] कौंटा, फँस; मुर्ग; तीतर आदि के पाँव में निकला हुआ कौंटा; देष, जलन । -प्रार - पु० कौंटो में भरी जगह; कौंटोका जगल । -प्रार - वि० कौंटेदार ।
 -प्रार - पु० पीठ सुजलानेका कौंटा; कटहल; साड़ी ।
 -प्रार - पु० कौंटोकी बाह । मु० - प्रार - जलन, देष करना । -देना - कट, कट्टा देना (फ०) ।
 -निकलना - खटक, जलन मिटना । -निकलना - बरला लेना, जलन मिटना ।
 प्रारक - पु० दे० 'प्रारिक' ।
 प्रार - वि० जिनमें प्रारपन हो, प्रार गुणवाला; नमकीन; बरमज । पु० पास, पचे भौनेकी जाली; बका टोकरा, झापा; एक धारीदार कपड़ा ।
 प्रार - पु० [फा०] कड़ा पथर, चट्टान; एक लहरदार रेखमी कपड़ा । -प्रार - वि० पथर में दरार डाल देने, पथरको काट देनेवाला (तेग, तलवार) ।
 प्रारि - स्त्री० [म०] १६ द्रौणिकी एक तौल ।
 प्रारिक - पु० [फा०] खजूर, छुहारा; फारसीकी खायेका एक टापु ।
 प्रारिज - वि० [अ०] बाहर; बाहर किया हुआ, बहिष्कृत; अलग किया हुआ । -प्रारिज - पु० अन्नफल, लम्बि (ग०) । मु० - करना - बाहर करना, निकाल देना; विचारके अयोग्य मानना, 'प्रारिज', नामजूर करना (नालिश, दरखास्त आदि) ।
 प्रारिजा - वि० [अ०] बाह्य; प्रारिजी ।
 प्रारिजी - वि० [अ०] बाहरी, बाह्य; पराङ्ग-संबंधी । पु० मुसलमानोंका एक संप्रदाय जो अलीकी खिलाफतकी न्यायवशात् नहीं मानता । -प्रारिजा - पु० कपरी उपचार; औषधके बाह्य प्रयोगवाला इलाज ।
 प्रारिज, प्रारिज - स्त्री० [फा०] सुजली; सुजलीकी बीमारी ।
 प्रारिज्जी - वि० [फा०] जिसे सुजलीका रोग हो ।
 प्रारिस्तान - पु० दे० 'प्रारिज' ।
 प्रारि - स्त्री० [सं०] दे० 'प्रारि'; [हि०] खारी नमक ।
 वि० प्रारि । -नमक - पु० लोना मिट्टीसे निकला हुआ नमक जो बैलें आदिको खिलाया जाता है ।
 प्रारि, प्रारि - पु० एक तरहका गहरा लाल रंग; उक्त रंगमें रंगा कपड़ा ।
 प्रारि - पु० बंगली कुष्ठम ।
 प्रारि - पु० [मं०] गंधका रेंकना ।

प्रारि - पु० [सं०] खजूरके रससे बनी छरा । वि० खजूर संबंधी या खजूरसे बना हुआ ।
 प्रारि - स्त्री० [सं०] जैतायुग ।
 प्रारि - स्त्री० लवा, चमड़ा; छिलका; धौकनी; माथा चरसा; * मृत देह; नीची जमीन; गहरी जगह; खाली । † वि० खाली । -प्रारि - पु० धौकनी चालनेवाला । मु० - उचेलना - इतना पीटना कि खाल उड़ जाय, बहुत मारना । -प्रारि - पु० भूसा भर देना - पुराने जमानेका एक कठोर ढंढ । -प्रारि - जीवित शरीरपरसे चमड़ा अलग कर लेना । (अपनी) - मैं मरूँ होना - अपनी स्थितिसे संतुष्ट होना; बेपरवा होना ।
 प्रारि - पु० [अ०] बदनपरका प्राकृतिक काला चिह्न, तिल; मार्ग ।
 प्रारि - पु० [अ०] बहुत बिरल, कहीं-कहीं ।
 प्रारि - वि० [सं०] गंजापन ।
 प्रारि - वि० दे० 'प्रारि' । पु० वह सरकारी जमीन या इलाका जिसका प्रबंध सरकार खुद करे और जो किसीकी जागीर, जमींदारी न हो; स्थानीय एक (प्रमुख) संप्रदाय । -दीवान - पु० सिखोंकी धर्मसभा । मु० - करना - सरकारका किसी जमीन, जायदादका प्रबंध अपने हाथमें ले लेना, जप्त कर लेना ।
 प्रारि - वि० नीचा (ऊँचा-खाली) ।
 प्रारि - स्त्री० [फा०] माँकी बहन, मौसी । -प्रारि - वि० मौमेरा (माँ-बहन) । - (जी)का घर - बहुत आसान काम ।
 प्रारि - वि० [म०] खलियान जैसा ।
 प्रारि - वि० [अ०] बनानेवाला, सज्जित । - प्रारि - स्त्री० अमीर खुसरो-रचित एक पद्य-पुस्तक जिसमें प्रचलित अरबी-फारसी शब्दोंके हिंदी पर्याय दिये गये हैं ।
 प्रारि - वि० [अ०] शुद्ध, बेमेल; खरा, सचा ।
 प्रारि - वि० [अ०] शुद्ध, खालिस; जो राज्यके प्रबंधमें, राज्यकी सपत्ति हो ।
 प्रारि - वि० [अ०] नेकनीयतीसे, शुद्ध, निस्स्वार्थ भावसे (-मथिरी) ।
 प्रारि - वि० [अ०] जिनमें कुछ भरा-भरा न हो, रीना, रहित, शून्य; जिसमें कोई रहता न हो (मकान); जिससे काम न लिया जा रहा हो, अव्यवहन; जिसके पास कोई काम न हो, सावकाश; व्यर्थ, बेकार । अ० कंबल । पु० तबले आदि बजानेमें खाली छोड़ा हुआ ताल । -दिन - पु० शुभ कार्य या नये कामके लिए अनुयुक्त दिन । -वेद - वि० जो कुछ खाने न हो, भूखा । अ० बिना कुछ खाने; बासी भूँह । -हाथ - वि० जिसके हाथमें, पास कुछ न हो, निर्धन; जिसके हाथमें कोई हथियार न हो । अ० हाथमें बिना कुछ लिये, बिना पैस या हथियारके । -का बौद्ध या महीना - मुसलमानोंका ग्यारहवाँ महीना जोकाल जो मनहूस समझा जाता है (इससे पहले महीनेमें ईद और बादके महीनेमें बकरीद पड़ती है) । मु० - जाना - निशानेपर न लगना, व्यर्थ होना । -देना - बट-बटकर बार बचाना । -बैठना - बेकार बैठना । -हाथ लौटना - वैर, बिरल लौटना ।

श्राव्य-पुं० [अ०] शीता; मार्ग ।
 स्वासे-अ० नीचे । -स्वासे-अ० नीचे-नीचे ।
 स्वास-पुं० लेत या भागके चारों ओर छोटा हुआ गढ़ा या मेड़; कम चौड़ी, लघु खार्ह ।
 स्वासिद-पुं० [फा०] मासिक, स्वामी, पति ।
 स्वासिदी-स्त्री० रूपा, अनुग्रह ।
 स्वासाक-पुं० [फा०] कृषा-करकट ।
 स्वास-वि० [अ०] आमका ललाटा, विशेष; विशिष्ट; चुना हुआ; मुख्य; व्यक्ति विशेषसे संबंध रखनेवाला; निजका; बढ़िया; प्रिय, प्यारा; ठेठ; ठीक । पुं० विशिष्ट जन; प्रिय जन । -कह-अ० विशेषतः, स्वाम तौरसे । -कलम-पुं० निजका मुश्री । -स्वास-वि० चुने हुए, प्रमुख (लोग) ।
 -शी-स्त्री० स्वासीयत; विदोषता । -तरासा-पुं० राजा, बादशाहकी हजामत बनानेवाला नाई । -तहसील-स्त्री० उस स्थानकी तहसील, मालगुजारी जहाँ राजा खुद रहता हो; वह मालगुजारी जिसे राजा, सरकार खुद वसूल करे ।
 -दान-पुं० पानदान । -नवीस-पुं० सामकलम ।
 -पसंद-वि० खास लोगों, विशिष्ट जनोंकी मन्नेवाला ।
 -बरदार-पुं० वह मिपाही जो बंदूक लेकर राजा, बादशाहकी सवारीके आगे-आगे चले; वह नौकर जो (राजा, रईसका) पानदान लेकर साथ चले । -बाजार-पुं० राज-महलके सामने या पामका, उसकी आवश्यकताओंके लिए बसाया गया बाजार । -महल-पुं० अंतःपुर, जमान-स्थान; प्रधान बेगम, पट्टमहिषी । -महाल-पुं० वह जावदाग तिमका प्रबंध राज्य या सरकार खुद करे ।
 स्वासा-वि० [अ०] काफी अच्छा, बढ़िया; औसत दरजेका; सुंदर । पुं० रईसका खाना; राजाकी सवारीका घोड़ा; हाथी; महमलकी किस्मका एक सूती कपड़ा; एक तरहकी घूरी ।
 श्रासियत-स्त्री० दे० 'स्वामीयत' ।
 स्वासिया-पुं० दे० 'स्वमिया' ।
 स्वासियाना-पुं० एक तरहकी मजीठ ।
 स्वासी-वि०, स्त्री० दे० 'स्वामा' ।
 स्वासीयत-स्त्री० [अ०] गुण, प्रभाव; प्रकृति, स्वभाव ।
 स्वास्तई-पुं० [फा०] कनूरका एक रंग । -टैंड-पुं० सफेद हलक जो स्वास्तई कनूरकी गरदनके नीचे होता है ।
 स्वास्ता-पुं० [अ०] गुणविशेष, स्वभाव, स्वामीयत ।
 स्वाह-अ० दे० 'स्वाह' । -मज्राह-अ० दे० 'स्वाहमस्वाह' ।
 स्वाह-वि० दे० 'स्वाहाह' ।
 स्वाहिश-स्त्री० दे० 'स्वाहिश' ।
 स्वाहि-पुं० [मं०] लोमड़ी ।
 स्वासिर-पुं० [मं०] लोमड़ी; खाटका पावा; एक गणद्वय ।
 स्वािग-पुं० [फा०] सफेद । पुं० सज्जा घोड़ा ।
 स्वािच-पुं०-अ० कि० खींचा जाना, तनना; किसी दिशामें बढना, आकृष्ट होना; कसा जाना; (स्थान आदिमें) बाहर निकलना; बिरक, अग्रसक्त होना; चित्रित होना; उतरना; दूर होना; सोखा जाना ।
 स्वािचवा-पुं० (नायका गुण, खरादकी बढी आदि) खींचनेवाला ।
 स्वािचवाना-स० कि० 'स्वीचवाना' का ये० ।

स्वािचार्ह-स्त्री० खींचनेकी क्रिया; खींचनेकी उन्नत ।
 स्वािचाना-स० कि० दे० 'स्वािचवाना' ।
 स्वािचाव-पुं० खींचे जानेका भाव, तनाव; बिरकि; नाराजगी ।
 स्वािचावट, स्वािचावट-स्त्री० दे० 'स्वािचाव' ।
 स्वािचिवा-पुं० दे० 'स्वािचवा' ।
 स्वािह जाना-अ० कि० छितरा जाना, बिखर जाना; बह जाना ।
 स्वािआल-पुं० हंसी, मजाक, मियाल ।
 स्वािबिद-पुं० किष्किष पर्वत; गीहक भूमि ।
 स्वािखि-स्त्री० [मं०] लोमड़ी ।
 स्वािचबवार-पुं० मकर-संक्रांति ।
 स्वािचवा-पुं० गेहूं और कई तरहकी दालें मिलाकर पकायी हुई खिचड़ी जो प्रायः सुहरममें बंटी जाती है ।
 स्वािचरी-स्त्री० मिला हुआ या मिलाकर पकाया हुआ दाल-स्वावल; दो या अधिक चीजोंकी मिलावट; दो रंगकी चीजों (स्वाह मफेद वालों, हथों और अशफियों) की मिलावट; स्वािचकी एक रस्म जिसमें बर और उसके छोटे भाइयोंकी खिचड़ी खिलते हैं; मकर-संक्रांति; नाचकी सार्ह ।
 वि० मिला-जुला, खल-मल । -बोली; -भाषा-स्त्री० वह बोली, भाषा जिसमें दो या अधिक भाषाओंके शब्दोंका मिश्रण हो । मु० -आना-मकर-संक्रांतिके अवसरपर बच्चे मैकेसे खिचड़ी, चुड़ा, तिलवा आदिका आना, भेजा जाना । -स्वासे पहुँचा उतरना-बहुत नाजुक होना; बहुत नज़ाकत दिखाना । -पकना-गुप्त मंत्रणा; साजिशा होना । -होना-खल मल होना; बालोंका पकने लगना ।
 स्वािचना-अ० कि० दे० 'स्वािचना' ।
 स्वािचाव-पुं० दे० 'स्वािचाव' ।
 स्वािजना-अ० कि० दे० 'स्वािजना' । † वि० चिड़चिड़ा ।
 स्वािजमत-स्त्री० दे० 'स्वािदमत' ।
 स्वािजमनि-स्त्री० दे० 'स्वािदमत' । -गार-पुं० दे० 'स्वािदमनगार' ।
 स्वािजगर, स्वािज-पुं० [अ०] एक पैगंबर जो मुसलमानोंके विश्वासानुसार अमृत पीकर अमर हो गये हैं; पथ-प्रदर्शक ।
 -सूरत-वि० सप्त-महाराजा जैसे रूप, वेशवाला । -रे-राह-पुं० पथ-प्रदर्शक ।
 स्वािजलाना-अ० कि० चिढ़ना । स० कि० चिढ़ाना, तंग करना ।
 स्वािज-पुं०, स्त्री० [फा०] पतझड़की ऋतु; हाम; हासकाल; बुढ़ापा; वरैनकी ।
 स्वािजाना-सं० कि० दे० 'स्वािज्ञाना' ।
 स्वािजाव-पुं० [अ०] सफेद बालोंकी स्याह कर देनेवाली दवा, केशकल्प (करना, लगाना) ।
 स्वािजावी-वि० स्वािजावका । पुं० स्वािजाव लगानेवाला ।
 स्वािजालत-स्त्री० [अ०] लज्जित होना, शर्मिंदगी ।
 स्वािज्ञ-स्त्री० दे० 'स्त्रीज्ञ' ।
 स्वािज्ञा-अ० कि० दे० 'स्वािज्ञाना' । † वि० दे० 'स्वािजना' ।
 स्वािज्ञाना-स० कि० चिढ़ाना, छेड़ना; गुस्सा दिलानेवाली बात करना ।

शिक्षाववा-स० कि० दे० 'शिक्षाना' ।

शिक्षकना-स० कि० दे० 'शिक्षकना' ।

शिक्षकाना-स० कि० इतना, अलग करना; बेच देना ।

शिक्षकी-स्त्री० मकान, देल, जहाज आदिमें इवा और

रोशनी आनेके लिए बनाया हुआ छोटा दरवाजा, झरोखा,

वातायन, खड्को; किले या परकोटेका चौर-दरवाजा;

मकानमें जाने-आनेका गैंग या पीछेका द्वार । -द्वार-

वि० जिसमें शिक्षकी या शिक्षकियाँ हों । -०अंगरखा-पु०

बह अंगरखा जिसमें छातीका कुछ हिस्सा खुला रहता है ।

-०पगड़ी-स्त्री० इस तरह बँधी हुई पगड़ी कि ऊपरका

कुछ भाग खुला रहे । -बंद-वि० जो स्वतन्त्र रूपसे,

पूरा, किरायेपर लिया गया हो (मकान) ।

सिख-स्त्री० दे० 'क्षिति' ।

सिखाव-पु० [अ०] किसीकी ओर मुँह करना, मुखातिब

होना; बात-चीत; पदवी; राज्यकी ओरसे दी जानेवाली

उपाधि । -बाप्रता-वि० जिसे सिखाव मिला हो ।

सिखाबी-वि० जिसे सिखाव मिला हो ।

सिखा-पु० [अ०] भूखंड, प्रदेश ।

सिद्धमत-स्त्री० [अ०] सेवा, टहल, चाकरी; काम; पद ।

-गार-पु० खिरमत करनेवाला, टहल । -गारी-स्त्री०

खिरमतगारका काम, टहल । -गुजार-पु० सेवा करने-

वाला । -मै-सामने, पात, सेवामें ।

सिद्धमती-वि० खिरमत करनेवाला; सिद्धमतके बदलेमें

प्राप्त (सिद्धमती जमीन) ।

सिद्धि-पु० [सं०] चद्रमा; तपस्वी; दरिद्र; ईद्र ।

सिद्ध-पु० [सं०] निर्धन-व्यक्ति; रोग ।

सिख-पु० [सं०] छन, छण ।

सिख-वि० [सं०] खेदयुक्त; दुःखी; कष्टयुक्त; उदास; चिंतित;

छात; दीन ।

सिखना-अ० कि० खपना; मिल जाना; निमग्न होना ।

सिखकृत-स्त्री० [अ०] खर्चाफ होनेका भाव; हलका, छोटा

होना, बनना; ओछापन; क्षम्यदगी; बेइज्जती ।

सिखरानि-स्त्री० खेदमयी स्थिति ।

सिखानत-स्त्री० दे० 'सुखानत' ।

सिखाना-अ० कि० विस जाना । स० कि० खिलाना ।

सिखाबी-पु० [फा०] क्यारी, रविश ।

सिखाली-पु० खयाल, विचार; हंसी, मजाक ।

सिखर-पु० [अ०] शुद्धी, कथा; पुराना कथा ।

सिखर-पु० दे० 'खरक'-रामति गौ खिरकनमे बछरा

हित थारै-खर ।

सिखरी-स्त्री० दे० 'खिरकी' ।

सिखर-स्त्री० [फा०] बुद्धि, अह । -संद-वि० बुद्धिमान् ।

सिखरी-स्त्री० एक फलवृक्ष या उसका फल, क्षीरिणी ।

सिखरन-पु० [फा०] सखियान, अवार; फसल ।

सिखर-पु० [फा०] रीक, भाङ्ग ।

सिखराज-पु० [अ०] कर, मालगुजारी; अधीन राज्यकी

ओरसे प्रभु राज्यकी दिया जानेवाला कर । -गुजार-

वि० करद (राज्य, राजा) ।

सिखराम-पु० [फा०] मटकते हुए, नाज-नखरेके साथ चलना;

देसी चाल ।

सिखराम-वि० [फा०] मटककर; नाज-नखरेके साथ चलने-

वाला ।

सिखरना-स० कि० अनाजको साफ करनेके लिए सूखा-

दार छात्रमें रखकर छानना; सुरचना ।

सिखरी-स्त्री० बरियारा ।

सिखरी-पु०, सिखरी-स्त्री०-स्त्री० केवलेमें सुवासित कपड़ेकी

टिकिया ।

सिखर-वि० खिलवाव करनेवाला ।

सिख-पु० [सं०] परती जमीन, ऊसर; खाली जगह; परि-

शिष्ट, पूरक; शेषांश; विष्णु; ब्रह्मा ।

सिखर-पु०, स्त्री० [अ०] शोभा, पोशाक, बह पहनावा

जो राजा, बादशाह किसीको सम्मानार्थ प्रदान करे ।

सिखर-स्त्री० [अ०] सृष्टि, रचना; प्रकृति; जगत् ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

सिखर-स्त्री० [अ०] खेल ।

कारके विरुद्ध उठाया गया आंदोलन ।

शिवकाव्यी-श्री० मुखाकृत, विरोध ।

शिवकाव्य-श्री० [अ०] दौत खोदनेका तिनका; दो चीजोंके बीचका फासला; मास, (गाछके खेलमें) हार ।

शिवकाव्य-पु० खेलनेकी चीज, साधन; काठ, मिट्टी आदिका बना हुआ बाजी, घोड़ा, आदि; मनबहालकी चीज ।

शिवकाव्य-पु० [अ०] मिलाबट; न्तानी वैधानिकोंकी मानी हुई शरीरको खार धातुओं (सफरा, सौदा, बलम, खून)-मेंसे कोई एक । -मिलवट-वि० मिला-जुला, एकमें मिला हुआ ।

शिवकाव्य-पु० [सं०] खारी नमक । वि० परिशिष्टमें वर्णित, कथित ।

शिवकाव्य-श्री० हँसी, मजाक; कौल; पानका बीड़ा । -बाज़-पु० खिली उठानेवाला । मु० -उठाना-किलीका मजाक उठाना, उपहास करना ।

शिवकाव्य-अ० 'कि० चमकना'-विजुरीनी खिये शकलौ छतियाँ'-यन० ।

शिवकाव्य-श्री० [फा०] हँट ।

शिवकाव्य-श्री० [फा०] छोटी हँट; चौबगल ।

शिवकाव्य-अ० कि० टपक पड़ना; खिसक जाना, चला जाना (सर) ।

शिवकाव्य-अ० कि० हटना, सरकना; चुपकेमें चल देना ।

शिवकाव्य-सं० कि० हटाना, सरकाना; चुपकेमें हथिया लेना, उठाना ।

शिवकाव्य-अ० कि० दे० 'फिसलना' ।

शिवकाव्य-श्री० फिसलनेका भाव ।

शिवकाव्य-अ० कि० दे० 'मिमियाना' ।

शिवकाव्य-पु० दे० 'मसारा' । † वि० ब्योमबाला (अगली सुअर) ।

शिवकाव्य-श्री० दे० 'खेतारी' ।

शिवकाव्य, शिवकाव्य-अ० कि० लज्जित होना; लज्जित होकर, बेवकूफ बनकर खोसना; कुठ जाना; खका होना । वि० शिवकाव्य हुआ; लज्जित । [श्री० 'शिवकाव्य' ।] मु० - (नी) खिली खंभा मोचे-शिवकाव्य हुआ आदमी अपनी खोस दूसरोंपर उतारता है ।

शिवकाव्य-श्री० शिवकाव्यका भाव ।

शिवकाव्य-अ० कि० शिवकाव्य, फिसलना ।

शिवकाव्य-श्री० लज्जा; खोस; धृष्टता ।

शिवकाव्य-वि० लज्जित-सा, शिवकाव्य हुआ या क्रुद्ध-सा ।

शिवकाव्य-श्री० खोचनेकी क्रिया वा भाव । -खान-श्री० खोच-खोचनी, नोक-नोक; किसी तरह, खोच-खोचकर कर्षण लगाया ।

शिवकाव्य-सं० कि० अपनी ओर आकृष्ट करना, पेंचना; धसीटना; चूसना; सारपदार्थ भिन्नक लेना; चिमित करना; रोक रखना; व्यापारिक बस्तुएँ मँगाना ।

शिवकाव्य-श्री० किसी बस्तुकी प्राप्तिके क्षिप्त दो व्यक्तियोंका परस्पर विरोधी वर्णन, नोक-नोक ।

शिवकाव्य-साध, शिवकाव्य-श्री० दे० 'खोचतान' ।

शिवकाव्य-श्री० खोचनेका भाव, छुंछलाहट, कुदना, गुस्सा ।

शिवकाव्य-अ० कि० छुंछलाना, क्रुद्ध होना ।

शिवकाव्य-श्री० दे० 'खोच' ।

शिवकाव्य-अ० कि० दे० 'खोचना' ।

शिवकाव्य-वि० दे० 'खोच' । -सा-श्री० दे० 'खोचतान' ।

शिवकाव्य-श्री० दुर्बलता, सख्यता; बंदी ।

शिवकाव्य-पु० एक पेड़ जिसके देखोंसे रस्ती बनानी जाती है; लज्जाजु लता ।

शिवकाव्य-पु० [अ०] खेमा; तंबू ।

शिवकाव्य-श्री० दूधमें पकाया हुआ चावल; दूधमें पकाया हुई सूजी, लौकी, मखाना आदि । * पु० दूध । -खटाई-श्री० नम्रप्राशन । -नोहना-पु० छेनेसे बननेवाली एक मिठाई ।

शिवकाव्य-पु० बकरीकी जातिका एक फल । मु० - (रे) ककड़ीकी तरह काटना-पचापक, बिना प्रयास, काटना ।

शिवकाव्य-श्री० गाय, भैंस आदिके भनके ऊपरका मांस; * खिरनी ।

शिवकाव्य-श्री० गुना हुआ धान, [लाभा; † कंटा; गुनासे आदिते निकलनेवाला सम्राटका नील जैसा अंश; बकरीकी गोचकी खँटी; चाकनी खँटी ।

शिवकाव्य-सं० कि० पानके बीड़े, दोने आदिमें तिनका गोदना ।

शिवकाव्य-पु० नील, खँटी ।

शिवकाव्य-श्री० पानका बीड़ा ।

शिवकाव्य, शिवकाव्य-श्री० मस्ती, मत्त होना ।

शिवकाव्य-वि० बीर, बहादुर ।

शिवकाव्य-श्री० शिवकाव्यका भाव; लज्जा; शिवकाव्य शिवकाव्यका भाव; दीनता दिखाते हुए दाँत बाहर कर देना; पैसी हँसी जिसमें दाँत खुल जायें; बाहर निकले हुए दाँत, पेटसा; * नुकसान, खराबी-अब सलाह इन सों करे, कब न हँसे खोस'-छत्रप्रकाश; नाश । * वि० नष्ट, विध्वस्त । मु० - या खीसें काटना या निकालना-इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दें; बेवंधी हँसी हँसना, निगिगिगकर मँगना, भाविकी करना ।

शिवकाव्य-अ० कि० नष्ट होना; ऊबना, बरपाव होना ।

* सं० कि० नष्ट करना-तुमहीं तु दोसि परी सोई देखी पनहि न खोसत ही'-यन० ।

शिवकाव्य-पु० पैसी, बटुआ, जेब ।

शिवकाव्य-श्री० [सं०] एक तरहकी बीणा ।

शिवकाव्य-पु० [सं०] काका घोड़ा ।

शिवकाव्य-पु० काकाका पैर निकालनेवाला ।

शिवकाव्य-पु० शोषण ।

शिवकाव्य-सं० कि० घोड़ेकी टापसे कुचलवाना, रौदवाना ।

शिवकाव्य-सं० कि० घोड़ा कुदना ।

शिवकाव्य, शिवकाव्य-श्री० दे० 'खुनी' ।

शिवकाव्य-वि०, पु० दे० 'कवार' ।

शिवकाव्य-श्री० दे० 'कनारी' ।

शिवकाव्य, शिवकाव्य-वि० खाली, छँछा; नाश ।

शिवकाव्य-श्री० तड़पपर छेदा हुआ वस्तु, कम एक तरहका बड़ा घुरा, नेपाकी कटार, करीकी; एक पासका सल्ला बँडल जो कागकी तरह काममें लाया जाता है ।

शिवकाव्य-पु० दे० 'जोगीर' ।

सुचर, सुचर, सुचुर-**खी** किसी काममें खादमखाद दीप निकालना, शिष्टान्तेषण (करना, छगाना) ।

सुचरी, सुचरी, सुचुरी-**वि०** सुचर निकालनेवाला ।
सुजकाना-**अ०** कि० सुजली साहज होना, त्वचामें देसी चुलकन उठना जो सहजाने, रगड़नेसे मिटे; (अंगविशेषका) किसी कामके लिए नैचन होना; फड़कना (हाथ, पीठ, मुँह सुजकाना) । **स०** कि० सुजली मिटानेके लिए त्वचाकी मरुता, रगड़ना, नाखुनसे खरोचना ।

सुजकाहट-**खी** सुजली ।

सुजली-**खी** त्वचामें अनुभव होनेवाली चुलकन या सुर-सुरी जो रगड़ने, सहजानेसे मिटे, खाज; एक रोग जिसमें त्वचापर दाने निकलते और उनमें तीख सुजली होती है, खारिज; (किसी बातकी) तीख इच्छा ।

सुजाना-**अ०** कि०, **स०** कि० दे० 'सुजकाना' ।

सुजाक-**पु०** [सं०] देवताक इच्छा ।

सुज्जा, सुसका-**पु०** दे० 'सुखा' ।

सुसर-**पु०** बुझकी बह जड़ जो धरतीके अंदर न जाकर ऊपर ही ऊपर फैलती है ।

सुद-**'खोट'** या **'खोटा'** का समासगत रूप । -**खाल**-**खी** खोटापन, दुष्टता । -**खाली**-**वि०** खोटा, दुष्ट ।

-**पन**, -**पना**-**पु०** खोटापन, दुष्टता, पाजीपन ।

सुदक-**खी** खटका, झंका ।

सुदकना-**स०** कि० किसी पौषकी फुनगी वा ऊपरका भाग नीच लेना, खोदना ।

सुदका-**पु०** दे० 'सुदक' ।

सुदना-**अ०** कि० 'सुलुना'-विकट ज़टे जो लगि निपट सुटे न कपट कपाट'-**वि०**; समाप्त होना ।

सुदाई-**खी** खोटापन, दीप ।

सुदाना-**अ०** कि० पूरा होना, समाप्त होना ।

सुदिखा-**पु०** करनकूक ।

सुदी-**खी** संबंध-विच्छेद सूचित करनेवाली बालकोंकी एक क्रिया जिसमें वे दूसरेकी कानी उँगलीमें अपनी कानी उँगली मिलाकर चूम लेते हैं ।

सुडी-**खी** सुद ।

सुडी, सुडी-**खी** पाखानेके बूँदोंका पायदान, कदमचा; पाखाना फिरनेका चूल्हा ।

सुत्ता-**पु०** [अ०] बह धार्मिक ब्याख्यान जो जुमे या ईदकी नमाजके बाद इमाम मेंबरपर खड़ा होकर देता है और जिसमें अंतमें उस समय जो खलीफा होता है उसके लिए दुआ की जाती है; ब्याख्यान; भाषण (पदना); प्रसक्तकी भूमिका ।

सुत्थ-**पु०** कटे हुए पेन्की जड़ और उसके ऊपरका भाग ।

सुत्थी-**खी** छोटा सुत्थ, सूँटे; धरोहर, भाती; कभरमें रुपये बाँधकर रखनेकी पतली लंबी पैली, बसनी ।

सुद्-**अ०** [फा०] स्वयं, आप । -**आराई**-**खी** बनाव-सिंगार । -**इफ़्तियार**-**वि०** स्वतंत्र, स्वयं अधिकार रखनेवाला । -**इफ़्तियारी**-**खी** स्वतंत्रता, मनचाहा करनेका अधिकार । -**कास्त**-**वि०** अपनी जमीनमें खुद खेती करनेवाला । **खी** इर (सूँटेसे मिश्र) जमीन भित्ति जमींदार खुद जोने । -**कुशी**-**खी** आत्महत्या; आत्म-

घातक कार्य । -**शरफ़**-**वि०** अपनी गरज, मतलब देखने-बाका, स्वाधीन, मतलबी । -**शरफ़ी**-**खी** स्वाधीनता ।

-**हार**-**वि०** आत्मसम्मान; अपने ऊपर काबू रखने-बाका । -**दारी**-**खी** आत्मसम्मान । -**नुमाई**-**खी** अपने रूप, गुण, बहम्यकला गर्व और उसकी नुमायश ।

-**परस्त**-**वि०** धर्मशी; स्वाधीन । -**पसंद**-**वि०** इडी, सुदराय; धर्मडी । -**फ़रामोश**-**वि०** अपने आपको भूला हुआ, भचेत । -**फ़रोश**-**वि०** अपनी बक़ाई आप करने-बाका । -**ब-बुद्द**-**अ०** अपने आप, स्वतः । -**बी**-**वि०** धर्मडी, अपने रूप-गुणका गर्व रखनेवाला । -**बीनी**-**खी** गर्व, धर्मड । -**मतलब**-**वि०** सुदगरज । -**मतलबी**-**खी** सुदगरजी । -**मुस्तार**-**वि०** जिसपर किसीका दाब, नियंत्रण न हो, स्वतंत्र । -**मुस्तारी**-**खी** सुदमुस्तार होना, स्वतंत्रता । -**रंग**-**वि०** सहज, स्वाभाविक रंगवाला । -**राई**-**खी** स्वेच्छाचारिता । -**राब**-**वि०** दूसरेकी राय, सलाह न माननेवाला, स्वेच्छाचारी ।

-**रो**, -**री**-**वि०** अपने आप उगा हुआ, जंगली (देव-पौधा) । -**सर**-**वि०** स्वतंत्र, सुदमुस्तार; इडी । -**सरी**-**खी** सुदमुस्तारी; इडीलापन । -**साक़्त**-**वि०** अपना बनाया हुआ, स्वनिर्मित; स्वयंभू (नेता आदि) । -**सिताई**-**खी** आत्मप्रशंसा, अपने मुँह मिर्वाँ मिट्ट बनना ।

सुर्का-**पु०** दे० 'कुनका' ।

सुदना-**अ०** कि० खोदना जाना ।

सुदरा-**पु०** दे० 'सुरी' ।

सुदवाई-**खी** सुदवानेका भाव वा क्रिया; सुदवानेकी मजदूरी ।

सुदवाना-**स०** कि० 'खोदना' का प्रे० ।

सुदा-**पु०** [फा०] स्वयंभू; ईश्वर, मालिक । -**ई**-**खी** ईश्वरता; ईश्वरकी महिमा, विभूति; सृष्टि, दुनिया । **वि०** ईश्वरीय । -**सर्ल**-**वि०** ईश्वरसे डरनेवाला, धर्म-मीर ।

-**दाव**-**वि०** ईश्वरका दिवा हुआ, सहज, स्वाभाविक । -**परस्त**-**वि०** ईश्वरकी मानने, पूजनेवाला, भक्त । -**रसीदा**-**वि०** ईश्वरके पास पहुँचा हुआ, पहुँचनेवाला, तंग; नेक, धर्मनिष्ठ । -**बंदी**-**पु०** मालिक, स्वामी; (संबो-धनमें) शीमन्त । -**बंदी**-**खी** मालिकी, बादशाहत; अनुग्रह । -**का ऊहर**, -**का राज़**-**ईश्वर**का कोप, विपत् ।

-**का कारवाना**-**विश्व-प्रपंच**, दुनिया । -**का घर**-**अर्थ**, वैकुण्ठ; उपासनास्थल, मस्जिद । -**की मार**-**ईश्वर**का कोप एवं (शाप) । -**की राह**-**सुदा**के मायपर, ईश्वरके मोलबर्त । -**की शान**-**भगवान्**की महिमा, विभूति । **सु०** -**के घर** जाना-भरना । -**को दरमिदान देना**-**ईश्वर**को साक्षी बनाना । -**खुदा करके**-**बरी** कठिनाईसे । -**ज़ैर करे**-**ईश्वर** कुशल करे, भगवान् रखा करें । -**रजिने**की माय़ुन न दे-**ईश्वर** जोड़े, कमीनेकी धन, अधिकार न दे । -**न छबास्ता**-**ईश्वर** न करे (पेसा हो) । -**हाकिम**-**ईश्वर** रखक है ।

सुदाई-**खी** खोदनेकी क्रिया, खोदा जाना; खोदनेकी उज्जरत ।

सुदाय-**पु०** सुदाईका काम ।

सुरभी-की० [फा०] आपा, अहंता गर्व, अहंकार ।
सुरी-की० चावल, रात आदिके बहुत छोटे डुन्ने ।
सुनक-वि० [फा०] ठंडा, सर्द ।
सुनकी-की० [फा०] ठंड, सरदी ।
सुनस-की० रोष, क्रोध ।
सुनसना-अ० कि० क्रोध करना ।
सुनसी-वि० क्रोधी, गुस्सवार ।
सुफिया-वि० [फा०] छिपा हुआ, गुप्त । -**झावा-पु०** चकला । -**मबीस-पु०** सुफिया रिपोर्ट लिखनेवाला, मुकदिर । -**पुलिस-की०** गुप्त रूपसे काम करनेवाली पुलिस, सी. आई. बी.; सुफिया पुलिसका आदमी, 'वास्त' ।
सुचना-अ० कि० दे० 'सुचना' ।
सुच्चाज्ञी-की० [अ०] एक पौधेका फल जो दवाके काम आता है ।
सुचना-अ० कि० सुचना, बसना, गठना ।
सुभरना-अ० कि० इठलते फिरना; उत्पन्न करनेके लिए घूमना ।
सुमिया-की० दे० 'सुमी' ।
सुमी-की० काममें पहननेकी नील या कौंग; हाथीके दाँत पर चढ़ाया जानेवाला धातुका पौधा - 'मनमथ नेत्रा नौक-सी सुमी सुमी जिय मॉहि -वि० ।
सुम-पु० [फा०] मटका, धावा; शराबका मटका; भट्ठी; ढील । -**झावा-पु०** शराबखाना, मदिरालय । **सु०** -**खपना-कपड़ेकी** धोनेसे पहले भट्ठी देना ।
सुमरा-पु० [फा०] सुसलमान फकीरोंका एक भेद; एक सुसलमान जाति जो बीरिये बुननेका धवा करती है ।
सुमान-वि० आयुमान्, बड़ी आयुवाला । पु० शिवाजी-की उपाधि ।
सुमार-पु० [अ०] नशा, मद; आँखोंमें छाया हुआ मद्य; नशेका उतार; नशा उतरते समय मालूम होनेवाली बकावट, सिर-दर्द आदि; जागरण, कभी नींद टूटनेमें आँखोंका चढ़ जाना । -**सु०** -**तोड़ना-नशेके** उतारका अवसाद दूर करनेके लिए थोड़ी-सी शराब फिर पी लेना ।
सुमारी-की० दे० 'सुमार' ।
सुमी-की० एक वस्त्रिद्वय जिसके अंदर सुई-फोड़, कुतुर-पुत्ता आदि रोपे जाते हैं; दाँतमें जड़ी हुई सोनेकी कील; हाथीके दाँतपर चढ़ाया हुआ धातुका पीला ।
सुम्हारि-की० दे० 'सुमार' ।
सुरद-पु० दे० 'सुराद' ।
सुरद-पु० सुखते हुए चाबके ऊपर बमनेवाली पत्थरी, कुट्टी ।
सुर-पु० [सं०] सुम, नख; सुरा, उत्सुरा; चारपाईके पाये-का एक हिस्सा; एक गंधद्रव्य । -**नस-वि०** सुर जैसी चिपटी नाकवाला । -**सुर-पु०** सुरका आधात । -**नाथ-पु०** नाल । -**म्बास-पु०** सुरका निशान, सुरवाले पङ्कटा पदचिह्न । -**पका-पु०** [हिं०] गाय, बैल आदिका सुर और मुँह एक जानेका रोग । -**पदवी-की०** धोरेके पैरका चिह्न । -**सु-पु०** एक तरहका तेज भरवाला बाण । -**बंदी-की०** [हिं०] नालबंदी । -**हुरा-की०** नखल आदिमें पशुओंके जलनेसे बना हुआ राख; पगडबो ।

-**हा-पु०** पशुओंका एक रोग, सुर-पका ।
सुरक-पु० [सं०] मूलाका एक प्रकारा तिल । † **की०** सटका, जेडा; सुजली (?) ।
सुरसुर-की० साँस लेते समय, कफ आदि रहनेके कारण, होनेवाली आवाज, घरघराहट ।
सुरसुरा-वि० दे० 'सुरदरा' ।
सुरसुरावा-अ० कि० साँसेमें घरघराहटकी आवाज निकलना; 'सुर-सुर' शब्द होना; सुरसुरा माथम होना ।
सुरसुराहट-की० घरघराहट; सुत्तरापन ।
सुरचम-की० सुरचकर निकाली हुई चीज; कनाबी आदिमें नीचे जमा हुआ दूध जो सुरचकर निकाला जाय; कड़ाही-से खीं और सुरचकर निकाली हुई मलाईकी परत; कड़ाहीसे सुरचकर निकाला हुआ गुड़ ।
सुरचना-सं० कि० बरतनमें जमी, निपकी हुई चीजको छीलकर भंग करना; कुरेदना ।
सुरचवी-की० सुरचनेका भाषा ।
सुरचाका-की० दे० 'सुटवाल' ।
सुरचाकी-वि० दे० 'सुटवाकी' ।
सुरजी-की० बीचमें सुला डंवा पैला या झोला जिसमें घोसवार जरूरी सामान रखकर पीछेकी पीठसे बाँध लेता है ।
सुरद-पु० सुर-पका रोग ।
सुरदरा-वि० जिसकी सतह चिकनी, हमकार न हो; दाने-दार, सुरसुरा ।
सुरपा-पु० घास काटने, छीलनेका एक औजार । -**जाकी-की०** सुरपा और जाली, घास छीलने आदिका सामान ।
सु० -**जाकी सँभालना-घसियारेका** धवा करना ।
सुरपी-की० छोटा सुरपा ।
सुरक-पु० दे० 'सरका' ।
सुरका-पु० [फा०] कुल्लेका सग ।
सुरमा-पु० [फा०] सजूर; छुहारा; एक मिठाई, बाल-घारी ।
सुरकी-की० [सं०] शशाभ्यास या उसका स्थान ।
सुरा-पु० सुर-पका रोग; फालकी इदताके लिए लगाया जानेवाला कौटा ।
सुराई-की० पशुओंके आगेके पैर साथ बाँधनेकी रस्ती ।
सुराक-पु०, **सुराका-की०** [सं०] पशु ।
सुराक-की० [फा०] खाना, आहार; एक जलमीका एक समयका (नियत) भोजन; दवाकी एक मात्रा ।
सुराकी-वि० अधिक खानेवाला । **की०** सुराकके बदले खाया जानेवाला पैसा; खानेका खर्च, (दैनिक) भोजनम्ब्य ।
सुराबात-पु० [सं०] सुरका आधात; दापसे मारना ।
सुराकात-की० [अ०] नेहूरा बाँटे, बकास; शराबत, झगड़ा खपा करनेवाली बात; बलेका ।
सुराकाती-वि० सुराकात करनेवाला ।
सुराक-पु० [सं०] कोरेका बाण, नाराच ।
सुरालिक-पु० [सं०] नारीको किसमत; नाराच; तकिया ।
सुरासाव-पु० [फा०] एक देश जो अब ईरानका पूर्वांश है ।
सुरासानी-वि० [फा०] सुरासानका । पु० सुरासानक

रहनेवाला।

सुविधा-ली० कटोरी। घुटनेके जोड़परकी हड्डी।

सुरी-ली० टापका विह।

सुरी(रिह)-पु० [सं०] सुरवाला जानवर।

सुर-पु० सुरते मिट्टी कोदनेकी क्रिया; ऊपरत; टंटा, बलेश; बांटी।

सुर-वि० [फा०] छोटा; उम्रमें छोटा, अल्पवयस्क। पु० साना। -कीम-ली० एक आला जिससे नीलोत्ते न दिखाई देनेवाली चीजें देखी जा सकती हैं, ज्योतीक्षण बंध। -सुर-पु० सापी जाना; गवन, खपानत। वि० गह। -साक-वि० छोटा, कमसिन। -साखी-ली० कमसिनी, बचपन।

सुराही-वि० खानेके योग्य। -ली० खानेकी चीज।

सुरा-वि० [फा०] साया हुआ। पु० डुकरा, रेजा; रेज-गारी; बोरी मात्रा (भोकरा उलटा); विसातबानेका सामान; छोटी-बोटी चीजें। अ० बोरी भागमें, तोपकर, फुटकल (बिक्री)। -क्रोश-पु० फुटकल देवनेवाला, विसाती। -क्रोशी-ली० फुटकल देवनेका रोजगार। सु०-करना-बयस भुजाना।

सुरा-ली० [फा०] सुराई।

सुराई, सुराई-वि० बुटा; असुखी, चालाक, छस्ता।

सुराई, सुराई पु० दे० 'सुराई'।

सुखती-ली० दे० 'कुलकी'।

सुखना-अ० कि० रोक हटना; आवरण हटना; बंधन छूटना, फटते निकलना, बंधी हुई चीजका बंधन न रहना; घटना; छेद या दरार होना; प्रकट होना; बताया जाना; आरंभ होना, कायम होना; निकलना; बंद, रुके हुए कामका फिर जारी होना (स्कूल, दफ्तर); घटना (रेल, नाव आदि); काममें आने लगना (माइन, सड़क); उषकना (सिलसि); सजना; विलना; ममकी बात कहना; निस्संकोच होकर बात करना; (रंग) साफ होना, साँवलापन घटना; जगना (भाग्य)। सुखकर-अ० निस्संकोच; स्पष्टतः; प्रकट रूपमें। सु० सुख सेकना-छिप-छिपाकर किये जानेवाले कामको सुखकर करने लगना; छुआ, संकोच लाग देना। सुखता रंग-हल्का सींहावन रंग।

सुखाना-सं० कि० खोलनेका काम कराना।

सुखा-वि० जो बँधा या बंद न हो; जिसमें रोक न हो; जो छका-छिपा न हो, प्रकट; आदि; जो रंग, विरा हुआ न हो; छंदा-चीना (महल, मेदान); जहाँ काफी हवा-रीशानी आवे। [ली० 'सुली']। -पछा-पु० तबका बजनेका एक ढंग (लीन)। सु०-(ली)सुड़ी होना-दान देने, खर्च करनेमें उदार होना। -(ले)आख, -प्रज्ञा, -बर्दा, -बाज़ार, -मैदान-दे-बयक, सबके सामने, अलानिया। -विकका-उदार, साफविल। -विलसे-उदारतापूर्वक।

सुखसा-पु० [अ०] निचोक, सार, संश्लेष। वि० संक्षिप्त; चुना, छोटा हुआ। अ० सुखकर, साफ-साफ (बी०)।

सुखेबना-सं० कि० सुरेदनी, चलाना; उलट-पुलट करना।

सुख-वि० [सं०] छोटा; कमीना। -साख-पु० पिताका छोटा भाई।

सुखम-पु० [सं०] सखक।

सुखमसुखा-अ० सुखे आम, प्रसन्न वयसे।

सुखारी-ली० दे० 'कपारी'।

सुख-वि० [फा०] सुखित, प्रसन्न; सुखी; प्रफुल्ल; अच्छा, मला। -आमदीह-अ० अच्छे भाये, स्वागत (स्वागत-वाक्य)। -आवाज़-वि० अच्छी आवाजवाला, सुदीन।

-हंसिनाम-वि० प्रबंधपट, अच्छा हंसनाम करनेवाला।

-हंसिनामी-ली० सुप्रबंध। -किस्मत-वि० अच्छे भाग्यवाला, भाग्यवाह। -किस्मती-ली० सीमाव्य।

-सुख-वि० सुंदर अक्षर लिखनेवाला, सुलेखक।

-सुखरी-ली० सुख करनेवाली क्षर, सुग समानकार।

-सिरास-वि० सुंदर, मोहक गतिवाला। -सिरासी-ली० सुंदर, मोहक चाल। -सुराक-वि० अच्छा कान

खानेवाला, खानेका शौकीन। -सुरा-अ० सुखी-सुखी, प्रसन्नतापूर्वक। -सु-वि० अच्छी आदत, लभाव-वाला। -गवार-वि० मिय, शक्तिर; सुखर। -सु-राम-वि० खानेपीनेसे सुखी, सुखने जीवन विताने-वाला। -ज्ञायाज्ञा-वि० अच्छे स्वादवाला, मजेदार।

-दामन-ली० सास। -दिल-वि० प्रसन्नचित्त, आनंदी, हंसमुख। -विली-ली० सुखादिल होना। -नशील-वि० सुंदर अक्षर लिखनेवाला, सुशायत। -नशीली-ली० सुंदर अक्षर लिखना, लिखनेकी कला। -नशीब-वि० भाग्यवान्, सुशक्तित्त। -नशीबी-ली० सीमाव्य।

-नुमा-वि० मला लगनेवाला, सुंदर। -नुमाई-ली० सुंदरता। -बचान-वि० सुवक्ता, भाषणपट। -ब-ली० सुगंध। -द्वार-वि० सुगंधयुक्त। -अज्ञा-वि० स्वादिष्ट, मजेदार। -मिज्ञाज-वि० प्रसन्नचित्त, हंस-मुख। -रंता-वि० अच्छे, शील रंगवाला। पु० अच्छा, शील रंग। -हाल-वि० सुंदर, सुख्य। -हाल-वि० संपन्न, रुपयेपैसेसे सुखी। -हाली-ली० संपन्नता, सुख।

सुखी-ली० दे० 'सुखकी'।

सुखामद-ली० [फा०] सुख करनेवाली बात, चापलुती (गुप्त-आमद = आदर-सत्कार, जाबजवाब)।

सुखामयी-वि० [फा०] चापलस, सुखामद करनेवाला।

-टट्ट-सुखामदकी कमाई खानेवाला; जोड़ुर।

सुखी-ली० [फा०] सुख होना, प्रसन्नता, हँस, हँखा, मरनी। -सुखी-अ० प्रसन्नतापूर्वक, सुखीके साथ।

-का सौदा-बह काम जिने करवाना करना अपनी मरजीकी बात हो। सु०-से कूल उठना-अति प्रसन्न होना, खिल उठना।

सुख-वि० [फा०] सुखा; रुखा; असुख; जिससे साथ और कुछ न हो, लाजी (-तमस्वाह, रोटी)। -साखी-ली० अवर्णन; अक्षर।

सुख-पु० [फा०] सादा, पानीमें पका हुआ चावल।

सुखी-ली० [फा०] सुखापन; रुखापन; रसहीनता; अवर्णन; खल भाग, जमीन (तीका उलटा)। -की राह-खलमगले।

सुसकुसाका-अ० कि० दे० 'कुसकुसाना'।

सुसामति-ली० दे० 'सुसामय'।

सुसाध, सुसाधक-वि० सुख, भगन।

शुद्धि-शब्द-कोश [अ०] कोता, अंकोश । -**बरदार-वि०** शुद्धामरी ।

शुद्धि-शब्द-कोश [अ०] कानाफूसी । अ० बहुत धीमी भावार्थ ।

शुद्धि-शब्द-कोश [अ०] शुद्धता, अदावत; श्रम ।

शुद्धि-शब्द-कोश [अ०] विशेषता; मेल, सीधार् ।

शुद्धि-शब्द-वि० [अ०] विशेष, सास ।

शुद्धि-शब्द-कोश लवादेकी तरह ओढ़ा हुआ कनक, मोषी ।

शुद्धि-शब्द-कोश कोना; मकानके कोनेपर लगाया जानेवाला पत्थर; ओढ़, दिशा; भाग्य कामका मेल; छोटी पूरी; कान-का एक गहना; डार; रोक ।

शुद्धि-शब्द-कोश कि० घटना; चुकना-‘मसि लुंटी कागर जल भोजे’-सु०; टटना । स० कि० रोकना; छेछछा करना; खोटना ।

शुद्धि-शब्द-कोश लकड़ी या बॉलकी मेल जिसे गाकर गाय, बैल आदिकी बंधते हैं; लकी गयी हुई लकड़ी । **शुद्धि-शब्द-कोश** गुना-गुना करना, जम जाना । -**(३)**के बल **शुद्धि-शब्द-कोश** दूसरेके बल-बुल्लेपर करना, हलाना ।

शुद्धि-शब्द-कोश छोटी मेल; लकड़ीकी मेल जो कपड़े आदि टाँगनेके लिए दीवारमें गादी जाय; जैसे या चक्कीकी किछी; सितार, सारंगी, सझाके आदिमें जहाँ छोटी मेल; अरहर, ज्वार आदिकी सुन्थी जो फसल काटनेके बाद खेतमें रह जाय; बालकी जड़ जो उस्तरेमें सूँझनेके बाद रह जाय । **शुद्धि-शब्द-कोश** सितार, सारंगी आदिके तार कटना । -**लेना**-इस तरह सूँझना कि बालोंकी खंटीयाँ निकल जाय ।

शुद्धि-शब्द-कोश [अ०] दे० ‘सुन्थी’ ।

शुद्धि-शब्द-कोश सूँझनेकी क्रिया ।

शुद्धि-शब्द-कोश कि० कोरेका बलागू रोकने जानेपर उसी जगह हटना-भटना, घूमना; पाँव मारना, टापने जमीन खोदना; रौटना ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] आदत, स्वभाव, चाल । -**गर-वि०** आदी । -**बू-कोश** आदत, चाल ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] शूकर ।

शुद्धि-शब्द-कोश रबीकी फसलकी लगनेवाला एक कीड़ा, मेरुई । **शुद्धि-शब्द-कोश** फल, तरकारीका रेशेदार भाग; अधिक उलझा हुआ जलछा ।

शुद्धि-शब्द-कोश कि० घटना; चुकना; ककना, अवस्य होना । स० कि० टोकना, पूछताछ करना; टंकना ।

शुद्धि-शब्द-कोश किसी तरह चीजको छानने, निवारनेसे निकलने-वाला मेल, तलछट ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] दे० ‘लूट’ ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] रक्त, लहू; हत्या, कतल । -**झराबा-पु०** मार-काट, खून-कतल; एक लाल रंग जो लाल बान्निश बनाने और दवाके भी काम आता है । -**(झू)**झार-वि० दे० ‘लूट’ । -**झार-वि०** क्रूरकर्मा, जालिम; खूनी, हिंसा बराबनी । -**झार-पु०** हत व्यक्तिका उत्तराधिकारी जो (शरीरगतके अनुसार) खूनका बरला लेनेका अधिकारी हो । -**झार-पु०** वह धन जो हत्याकारी हत व्यक्तिके धारियोंको दे । -**झार-वि०** खून बहानेवाला, खूनी; मार-काट मचायेवाला । -**झार-कोश** मारकाट, रक्तपात ।

शुद्धि-शब्द-कोश [अ०] उतरना-कोपसे ओंसे लाल हो जाना, अति क्रुद्ध होना । -**का ओषा**-कुल, बंशके नाते उत्पन्न स्नेह, ममता, संगेपकी मुहम्मत । -**का ओषा**-शरीरमें होनेवाला रक्तका संचार । -**का प्यासा**-जान केनेपर ठुका ठुका, जानी दुश्मन । -**के बौद्ध** रोग-बहुत शोक करना; अतिशय व्यथित होना । -**के बौद्ध** पीना-भारी गुस्सेको पी जाना, सह लेना । -**के बौद्ध** होना-दे० ‘खून खलना’ । -**खोखला**-अति क्रुद्ध होना, गुस्सेसे लाल हो जाना । -**गरदनपर होना**-(किसीके) कण्ठका निम्नेदार होना । -**धूकना**-मुंहसे खून धुकना; क्षयसे पीथित होना । -**पानी एक करना**-खून पानीकी तरह बहाना । -**पानी होना**-बहुत गम होना; ससत तकलीफ पहुँचना । -**पीना**-बहुत सताना; जान लेना, मार डालना । -**बहाना**-रक्तपात करना, खून-कतल करना । -**मुँह(को) लगा**-खूनका मज्रा मिछना, बाट लगा; काटनेकी आदत पब जाना । -**खाना**-बहुत पीना, डेरा देना । -**खानाकर शहीद बनना** या **शहीदोंमें शामिल होना**-कामका नाम करके उधका यश बहाना । -**सिरपर चढ़कर खोखला है**-हत्याका पाप धिया नहीं रहता । -**सिरपर चढ़ना**-खूनीके चेहरे, चेष्टा आदिसे भय, धराइष्ट प्रकट होने लगना; किसीका खून करनेपर आमादा हो जाना । -**खुर्द होना**-प्रेम, आत्मीयताकी भावना न रहना; मिट्टर हो जाना । -**खुखना**-बहुत डर, धरना जाना ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] रक्तमिश्रित जल; रक्त-मिश्रित ओंछ; लाल रंग ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] रक्तर्जित, रक्तपातमय; लाल; खूनी । **शुद्धि-शब्द-कोश** [फा०] खून करनेवाला, कातिल । **वि०** क्रूर, जालिम; हत्या-चालक, हत्याके भावसे पूर्ण (-ओंछ); रक्त-पातमय, मारकाटवाला । -**बवासीर-कोश** वह बवासीर जिसमें मस्सेसे खून निकलता है ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] अच्छा, बढ़िया; सुंदर । अ० अच्छी तरह, पूरी तरह; बहुत; साधु, बाह । -**रू-वि०** सुंदर, सुकृप । -**रूई-कोश** सुंदरता । -**सूरस-वि०** सुंदर, रूपवान् । -**सूरती-कोश** सुंदरता ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] एक तरहकी घास जिसके बीज दवा-के काम आते हैं ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] एक प्रसिद्ध मेवा; जरादा ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] मलार्, अच्छाई; गुण, विशेषता ।

शुद्धि-शब्द-कोश हाथीके नाखूनका एक रोग ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] दे० ‘ख्राक’ ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] पानकी जड़, कुलंज ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] जराजीर्ण; अरसिक; मनहूस । पु० उल्लू ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] दे० ‘खुसट’ ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] दे० ‘सिटीय’ ।

शुद्धि-शब्द-कोश [फा०] एक मेल जिसका फल तरकारीके काम आता है; † एक तरहके सफेद भारी जैसे चिह्न जो बुधावस्थामें मनुष्यके पैर, जोड़ आदिपर प्रायः दिखाई देते हैं ।

शुद्धि-शब्द-कोश [सं०] आकाशमें चलनेवाला । पु० ग्रह; पक्षी;

बायु; बादल; विमान; देवता; राक्षस; शिव; भूत-प्रेत; परा; कसीस ।

लेखराज-पु० [सं०] चावलसे बना एक स्वंजन ।

लेखरी-वि०, स्त्री० [सं०] आकाशचारीणी । स्त्री० दुर्गा; परी । -**मुद्रिका**-स्त्री० एक तंत्र-वर्णित गोली जिसके संव-
में बड़े माना जाता है कि मुद्रमें रखनेवाला आकाशमें उड़
सकता है । -**मुद्रा**-स्त्री० योगकी अंगभूत एक मुद्रा जिसमें
जीम उल्टकर साक्षुमें लगायी और दृष्टि त्रिकुटीपर स्थापित
की जाती है ।

लेट-पु० [सं०] किसानोंका गाँव; लेड़ा; पोड़ा; ढाल; आलेट;
रुफ; रूपा; प्रह; बलरामकी गदा; लाठी; खाल; चमड़ा ।
वि० सख्तपारी; नीच; अप्रम ।

लेटक-पु० [सं०] छोटा गाँव, लेका; ढाल; बलरामकी गदा;
* आलेट, शिकार ।

लेटकी-पु० भेंदेरिया, उद्योतिषा; शिकारी ।

लेटिलान, लेटिताल-पु० [सं०] वैतालिक ।

लेटी (दिन्)-वि०, पु० [सं०] नगरवासी; कामी, लंपट ।

लेह-पु० [सं०] देह, गाँव ।

लेवा-पु० छोटा गाँव । -**पति**-पु० गाँवका मुखिया वा
पुरोहित । - (**हे**)की दूध-पुच्छ, बलरीन ।

लेवी, लेवी-स्त्री० एक तरहका हसपात; ओवल ।

लेवारी-पु० जमात (साधुओंका सेवा) ।

लेव-पु० जमीनका टुकड़ा जो जोता रोया जाय वा जा
सके, क्षेत्र; सेतमें खड़ी फसल (ला०); घोड़े-बैल आदिकी
किसी जातिका उत्पत्तिस्थान, नस्ल; रणक्षेत्र; तलवारका
फल । **मु०**-**आना**-वीरगति प्राप्त करना । -**कमाना**-
जुतार, खाद आदिसे सेतकी उपजाऊ बनाना । -**करना**-
चोद उगते समय चोदनीका फैलना; युद्ध करना; *
समनल करना । -**काटना**-खड़ी फसलकी चोरी करना ।

-**कोटना**-पीठ दिखलाना । -**पर कदे किसानी**-
योग्यताका पता काम पड़नेपर लगता है । -**बटना**-
लड़नेका स्थान, काल नियत करना । -**रखना**-युद्धमें
मारना, शत्रुको जीता न जाने देना । -**रखाना**-सेतकी
रखवाली करना । -**रहना**-**होना**-युद्धमें मारा जाना ।

लेतिहर-पु० किसान, बैली करनेवाला ।

लेती-स्त्री० सेत जोतने-रोनेका काम, किसानी; मोथाई,
कदम; फसल । -**बारी**-स्त्री० किसानी, कृषिकर्म ।

लेद्-पु० [सं०] दुःख, रंज; उदासी, ग्लानि; भकावट;
अंधा; निर्धनता; रोग । -**जनक**-वि० दैद देनेवाला;
शोचनीय ।

लेदन-पु० [सं०] भकावट; अंधा; ग्लानि, अपसोस;
निर्धनता ।

लेदना-स० कि० शिकारका पीछा करना; दे० 'खदेना' ।
लेधा-पु० किसी जगही जानवरकी घेरकर शिकारकी जगह
ले जाना, हँकना; आगेट ।

लेदित-वि० [सं०] वेदयुक्त, सिद्ध; आहत; पीड़ित; क्रांत ।

लेदिनी-स्त्री० [सं०] अश्वनपर्णा लता, परसन ।

लेदी (दिन्)-वि० [सं०] लेदप्रनक; क्रांत ।

लेना-स० कि० नाव चला देनेके लिए डाँड मारना; विताना,
गुजारना ।

लेव-स्त्री० उतना माल, बोझ, जितना एक बारमें ढोया जा
सके; एक बारका बोझ; बोझ ढोनेवाले (आदमी, घोड़ा,
गाड़ी आदि)का एक बार आना-जाना, एक बेरा; छोटा
सिक्का । **मु०**-**छद्वाना**-रतना सामान देना जो बैलगाड़ी
आदिपर ढोया जा सके । -**छादना**-बैलगाड़ीपर माल
छादना । -**हारना**-मालमें धाड़ उठाना ।

लेपना-स० कि० विताना; विधा करना ।

लेम-पु० दे० 'लेम' ।

लेमटा-पु० एक ताल; उस तालपर गाया जानेवाला गीत ।

लेमा-पु० डेरा, तबू । **मु०**-(**मे**)**हालना**-(सिनाका)
पहाव करना, ठिकना ।

लेव-वि० [सं०] जो खोटा जा सके, खननीय । पु०
पुल; खार ।

लेरा-पु० दे० 'हेड़ा' ।

लेरी-स्त्री० बंगालमें ढोनेवाला एक तरहका नेटू ।

लेरीरा-पु० एक तरहका लद्दू ।

लेल-वि० [सं०] क्रीडाशील । पु० मनबहलाव वा
आश्वामके लिए वा केवल चिपके उल्लाससे किया जाने-
वाला काम, चेष्टा, क्रीडा; वाजी; करतब; तमाशा, अभि-
नय; लीला; चाल; कारसाजीका काम; बहुत आसान काम;
कामकेलि । -**कूद्**-स्त्री० [हिं०] देल, क्रीडा; बच्चोंकी उछल
कर । **मु०**-**करना**-किसी कामकी तुच्छ समझकर हँसोमें
उठाना । -**के दिव**-लेलने-खानेके दिन; लक्ष्मण ।

-**लेलना**-चाल चलना । -**लेलाना**-तंग, हँराज करना ।

-**शानना**-समझना-बहुत आसान समझना । -

-**बनना**-काम बनना । -**बिगड़ना**-काम बिगड़ना ।

लेलक-पु० लेलनेवाला, लेलाड़ी ।

लेलन-पु० [सं०] हिलना-डोलना; खेलना; दैल, क्रीडा;
लेलनेका साधन ।

लेलना-अ० कि० मनबहलावके लिए वा चिपके उल्लाससे
दौधना, नाचना, उछलना-कूदना, क्रीडा करना; काम-
केलि करना; अनुमाना; *चला जाना-ईम लजाइ मान-
सार लेले-प०, विचरना । स० कि० कोई खास दैल
(ताश, शतरंज, जुआ आदि) रँलना; अभिनय करना ।

मु०-**खाना**-बेवल् लेलने-खानेमें मतलब रखना;
निश्चित, निर्दंड रहकर जीवनके आनंद लेना । (**खेला**-
खावा-वि० जो दुमियाकी देह, समझे हुए हो, अनुभवी)।
खेली-खावी-वि०, स्त्री० पुरुष-समागमका अनुभव
रखनेवाली, सिलाइ ।

खेलनी-स्त्री० [सं०] विताल; गोट, मोहरा ।

खेलवाव-पु० खेल, क्रीडा ।

खेलवाड़ी-वि० खेल-कूदमें अधिक रुचि रखनेवाला (लड़का) ।

खेलवार-पु० खेल करनेवाला, खिलाड़ी ।

खेला-स्त्री० [सं०] खेल, क्रीडा; मनबहलाव (साकेन) ।

खेलाड़ी-वि०, पु० दे० 'खिलाड़ी' ।

खेलाना-स० कि० खेलमें प्रवृत्त वा शामिल करना; खेलने-
का व्यवसर देना; (बच्चोंकी) बहलाना, घुमाना-फिराना;
शिकारकी थकाने वा क्रीडाके लिए दौडाना, नाचना आदि;
उल्लास रखना । **मु०** **खेला-खेलाकर मारना**-साँसत
देकर मारना ।

लेखार*-पु० खिलारी ।

लेखि-स्त्री० [मं०] लेख, क्रीडा । पु० जानवर; पक्षी; सर्प; बाण; गीत ।

लेखार्थ*-पु० चमड़ा रंगनेवालोंका काठका एक औजार ।

लेखीना-पु० दे० 'खिलौना' ।

लेखिया*-पु० दे० 'लेखा' ।

लेखक*-पु० लेखेवाला; केवट ।

लेखट-पु० पटवारीका एक कागज या वही जिसमें गाँवके हर जमींदार या पट्टेदारके हिस्से, माहजुगारी आदिका भ्योरा रहता है; *लेखेवाला; केवट । -वार-पु० पट्टेदार ।

लेखटिया*-पु० मछाह, केवट ।

लेखनहार-पु० लेखेवाला; पार लगानेवाला ।

लेखना-स० कि० दे० 'लेना' ।

लेखरिया*-पु० लेखेवाला ।

लेखा-पु० नाव लेनेकी उजरत, नावका भाषा, उत्तरार्ध; नावकी खेप; वार; * बौद्ध-रुढ़ी नाव ।

लेखाई-स्त्री० लेनेका काम; लेनेकी उजरत । मु०-भी लेना और वह भी जाना-पैने देकर बेवकूफ बनना ।

लेखेवा-पु० नाव लेकर पार ले जानेवाला व्यक्ति ।

लेख-पु० एक तरहकी मोटे खतकी बुनी चादर ।

लेखर-पु० [स०] खबर ।

लेखारी-स्त्री० केरावकी जानिका एक कदम ।

लेह-स्त्री० धूल; राख । मु०-खाना-धूल फँकना; दुर्दशा-ग्रस्त होना ।

लेहर*-स्त्री० दे० 'लेह' ।

लेचना-स० कि० दे० 'ले' 'चना' ।

लेवनी-स्त्री० औजार माफ करनेकी लकड़ीकी तख्ती ।

लेवातान; लेवातानी-स्त्री० दे० 'ले' 'चातानी' ।

लेवर-पु० हिंदुस्तान और अफगानिस्तानके बीच पश्चिम-वाला एक दर्रा जो उस दिशासे भारतका मुख्य प्रवेश-मार्ग है ।

लेवात-पु० [अ०] सीनेवाला, दरजी ।

लेवाम-पु० [अ०] रूमा सीने, बनानेवाला; फारसीका एक प्रसिद्ध कवि, उमर लैवाम ।

लेर-पु० बबूलकी जानिका एक पेड़ जिसकी लकड़ी उबालकर कच्चा बनाते हैं, खदिर, कच्चा । -सार-पु० कच्चा ।

लेर-स्त्री० [अ०] भलाई, नेकी; कुशल, सलामती । अ० अच्छा, अस्तु । -अदेश-वि० शुभचित्तक, खैरवाह ।

-छाह-वि० दे० 'खैरवाह' । -छाह-वि० खैर, भलाई, चाहनेवाला, हितचित्तक । -छाहारी-स्त्री० शुभ-चित्तक, खैरदेशी । -ब आक्रियत-स्त्री० कुशल-क्षेम (पूछना-खिलना) । -ब (रो)बरकस-स्त्री० भलाई, मंगल; समृद्धि । -ब (रो)सल्लाह-स्त्री० कुशल-क्षेम, खैर व आफियत । -सल्ला-स्त्री० दे० 'खैरोसल्लाह' । मु०-बाद कहना-विदा करना ।

लेरमैर, लेरमैल*-पु० खलबली, बलबल; शोरगुल ।

लेरा-वि० कथई । पु० कथई रंगका कपूतर या घोड़ा; इस रंगका बगुना ।

लेरात-स्त्री० [फा०] (लेर'का बहु०) पुष्पकर्म, दानपुष्प ।

-छाना-पु० लंगरखाना; अन्नस्थल ।

लेराती-वि० [फा०] लेरातका, धर्मांध संचालित; मुफ्तमें मिला हुआ । -अस्पताल, बचावखाना-पु० वह दवा-खाना जहाँ धर्मांध, मुफ्त दवा दी जाय, दातव्य औषधा-

लव । -भाल-पु० मुफ्त मिली हुई चीज; रटी चीज ।

लेरित्त, लेरीवत्-स्त्री० [फा०] कुशल; भलाई; नेकी ।

मु०-पूछना, -मिलना-कुशल पूछना, मिलना ।

लेर-पु० [अ०] समूह, दल ।

लेकर, लेका*-स्त्री० मशानो ।

लेका-वि०, स्त्री० [अ०] कूड़क; मूलां । -पापैचा-स्त्री० कूड़क, बौद्ध स्त्री ।

लेहिया, लेहियाँ-पु० मोडा हुआ आँचल ।

लेखनार-अ० कि० खोसना ।

लेखर-वि० खोखला ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

लेखी-स्त्री० खोसी ।

कोटर; बचा छेद ।

शोखा-पु० वह कावज जिसपर हुंड़ी लिखी हो; चुकानी हुई हुंड़ी; † बालक (बै०) ।

श्रोणी-पु० [फा०] जिनकी भरती; नमदा । -**की भरती-रही**, निम्मी चीज ।

श्रोत्र-श्री० श्रोत्रनेकी क्रिया, तलाश, अन्वेषण; निशान, चिह्न; पहिचानी लौक; पदचिह्न । **शु०** -**झबर लेना-हाल पूछना**, पता लेना । -**मारना-लौक या पदचिह्न मिटा देना** (पहचानमें आने लायक न रहने देना) । -**मिटाना-नाम-निशान मिटा देना**; लौक, पदचिह्न मिटाना ।

श्रोत्रक-वि०, पु० श्रोत्र करनेवाला ।

श्रोत्रना-स० कि० ढूँढ़ना, तलाश करना, पता लगाना ।

श्रोत्रवाना-स० कि० 'श्रोत्रना'का प्रे० ।
श्रोत्रा-पु० [फा०] हिजबा; हिजबा सेबक जो मुसलमान बावशाहोके हरममें रखा जाता था; एक तिजारत-पेया मुसलमान जाति ।

श्रोत्री-वि० श्रोत्र करनेवाला, अन्वेषक ।

श्रोद-श्री० दोष; बुराई; खता, कुसूर; पाप; दुष्टता, खुदाई; सोने-चाँदीमें किसी घटिया धातुकी मिलावट; इस तरह मिलायी हुई चीज; सुरङ्ग । **वि०** दुष्ट; ऐसी । **शु०** -**होना-दूषित होना**, खराब होना ।

श्रोदता-श्री० खुदाई, बुराई ।

श्रोदा-वि० जिसमें श्रोद हो, 'खरा'का उलटा; सरोष, बुरा, घटिया; मिलावटवाला; खल, दुरात्मा । -**ई-श्री०** दे० 'खुदाई' । -**खरा-वि०** भला-बुरा; सच्चा-झूठा; घटिया-बढ़िया । -**माख-पु०** घटिया, मिलावटी माख । -**सिखा-पु०** जाड़ी, अग्रामाणिक, न चलनेवाला सिक्का । **शु०** -**खाना-बैरैमानोकी कमाई खाना** । -**(टी)खरी सुनाना-बुरा-भला कहना**, गालियाँ देना ।

श्रोदामा-अ० कि० दे० 'खुदाना' ।

श्रोदि-श्री० [स०] चालबाज औरत ।

श्रोद-वि० [स०] विकलांग, लँगड़ा-डुल्ला; खोँडा ।

श्रोद-श्री० मृत प्रेतका आवेश; दैवकोप । पु० खोखला ।

श्रोदरा-पु० कोटर; दाँत आदिके भीतरका गड्ढा ।

श्रोद-पु० लोहेका बना दीप, शिरछाण । पु० श्रोदनेकी क्रिया; छाननी । -**पूछ-श्री०** छाननी, पूछताछ ।

श्रोदना-स० कि० सुरचना, कुरेदना; गड्ढा करना; श्रोद-कर उखाड़ना; उठाना; लकड़ी आदिको कुरेदकर चित्र खेदना, बनाना; नक्काशी करना; कोई नुकीली चीज धीरेमें चुभोना; उकसाना; उभारना । **शु०** **श्रोद-श्रोद कर पूछना-पूरी बात जाननेके लिए त्रिरह करना**, एक-एक बातपर शंका-प्रश्न करते हुए पूछना ।

श्रोदनी-श्री० श्रोदनेका बीनार ।

श्रोदवाना-स० कि० 'श्रोदना'का प्रे० ।

श्रोदाई-श्री० दे० 'खुदाई' ।

श्रोधा-स० कि० गँवाना, अपनी चीज कहीं भूल, छोड़ जाना; नष्ट, नरबाद करना । **शु०** **श्रो जाना-शुभ हो जाना**; किसी चिंता-विचारमें दूब जाना; हक्का-बक्का हो जाना । **श्रोधा-श्रोधा रहना-किसी चिंता-विचारमें निमग्न**

रहना; शुभ-शुभ रहना ।

श्रोद-श्री० बचा थाक जिसमें केरीवाले मिठाइयाँ आदि रखकर बेचते हैं, 'क़ानाना' । -**फ़रीश-पु०** फ़रीवाला । **श्रोपडा-पु०** कपाळ, सिर; गरीका गोला; नारियल; भीख माँगनेका खम्पर ।

श्रोपदी-श्री० कपाळ, सिर । **शु०** -**खा जाना-खाद जाना-बहुत बकनास करके कष्ट पहुँचाना** । -**खाली हो जाना-किसीकी बकनास या अधिक श्रमसे** दिमागका थक जाना । -**खुल्ला-मार खानेका उपाय करना**, पिटनेको जी चाहना । -**गंजी होना-हतनी मार खाना** कि सिरके बाल झड़ जाँय, सिरपर खून जूते पड़ना ।

श्रोपनि-श्री० फटना-**'हिय-श्रोपनि पोपनि-कोपनि झालरि'-घन०** ।

श्रोपरा-पु० दे० 'श्रोपडा' ।

श्रोपा-पु० छाननका कोना; जूझ बंधी हुई-बोटी; केश-विन्यासका एक भेद; गरीका गोला ।

श्रोभरना-अ० कि० बीचमें पड़ना ।

श्रोभरा-पु० गड़नेवाली चीज, लूँटी आदि ।

श्रोभारा-अ० कि० दे० 'खुभराना' ।

श्रोभार-पु० तंग दरवाजेवाला श्रोपडा जिसमें सुहर रातकी बद्द किये जाते हैं; तंग अँधेरी कोठरी; कूड़ा फेंकनेका अड्डा ।

श्रोम-पु० झुंड-**'बसे खलनके खेन खबीमनके खोम है'-भूषण**; जाति ।

श्रोया-श्री० दे० 'त्व' ।

श्रोया-पु० ओटाकर लुगदीमा बनया हुआ दूध, मावा; रूँट पापनेका गारा ।

श्रोय-श्री० गली; गाय-बैलको चारा-पानी देनेकी नाद; दे० 'खोरी' । **वि०** [स०] लँगड़ा ।

श्रोयना-अ० कि० नहाना । स० कि० खोखला; आग आदि झुलेझुला ।

श्रोयनी-श्री० वह लकड़ी जिसमें अट्ठूँज बाहर बचा हुआ ईंधन आबके भीतर करते हैं ।

श्रोरा-पु० कोटोरा; आबखोरा । * **वि०** खोँडा, विकलांग ।

श्रोराक-श्री० दे० 'खुराक' ।

श्रोराकी-श्री० दे० 'खुराकी' ।

श्रोरी, श्रोरी-श्री० गली, संकरी गली; दोष, बुराई-**'झूठे सुतहि लगावति खोरी'-सर**; कोटोरी-**'काहू हाथ चदन कै खोरी'-प०**; दे० 'खोरी' ।

श्रोरीया-श्री० कोटोरी; बुंदेके रूपमें कटे हुए लौकके टुकड़े । **श्रोख-पु०** गिलाफ, आकरण; बैठन; मोठी नादर; कीर्तीकी कपरी त्वचा जो केंचुलकी तरह झुग करती है; [स०] शिरछाण, खोद । **वि०** विकलांग, लँगड़ा ।

श्रोख-पु० [फा०] खोख; म्यान ।

श्रोखक-पु० [स०] शिरम्भाण; कपाळ; सुपारीका छिलका; बाँबी; कंसाही ।

श्रोखना-स० कि० आबरण, अवरोध इटाना; बंधनरहित करना; दरार, छेद करना; खीरना, उधेड़ना; प्रकट, जाहिर करना; आरंभ करना; चलाना; स्थापित करना; कार्यारंभ करना । **श्रोखकर-अ०** झुले श्शरोंमें, साफ-साफ ।

शोधि-श्री० [सं०] तरकश ।
शोधी-श्री० गिराफ; यैली; दुलाई जैसा कपड़ा जिसमें रई न भरी हो ।
शोधा-पु० दे० 'शोधा' ।
शोधा-पु० [फा०] भनाजकी ढाळ; फलोंका गुच्छा ।
शोधी-वि० श्वेतमें गिरे हुए दाने चुननेवाला; दूसरेकी विधा, पंथिलसे काम उठानेवाला ।
शोसना-स० क्रि० छीनना, लुचकना ।
शोह-श्री० गुफा; कंदरा; दो पहाड़ोंके बीचकी रंग जगह, दर्रा ।
शोही-श्री० पत्तोंकी छतरी; भीषी; पहाड़ोंके बीचका गहरा गड्ढा; * धूल-‘घर सुबस्तुहिं छोड़ि अभागे हमहिं बतारत शोहि’-सूर ।
शौ-श्री० खात, गड्ढा; अन्न एकत्र करनेका गहरा गड्ढा ।
शौचा-पु० सादे छका पहाड़; मिठाई आदि खानेकी चीजें रखनेका एक तरहका सटूक ।
शौह-श्री० खोदनेकी क्रिया; खरोच । पु० सुरंज ।
शौझ-पु० [अ०] गंभीर-चिंतन, सोच-विचार, गौर ।
शौक-पु० [अ०] डर, भय, आतंक । -**नाक**-वि० डरा-बना, भयानक ।
शौर-पु० चंदनका आका तिलक, त्रिपुंड्र; क्षियोंका एक गहना; एक तरहका मछली पकड़नेका जाल ।
शौरवा-स० क्रि० खौर करना, तिलक लगाना; † उलटना-पुलटना; * छेड़छाड़ करना-‘मोही सौं जवतव शौरत हो सुब मिलि करै नवाब’-घन० ।
शौरहा-वि० शौरा रोगवाला; गंगा ।
शौरा-पु० कुत्तों आदिकी होनेवाली एक तरहकी लुजड़ी । वि० शौरा रोगवाला ।
शौरि-श्री० तिलक; गली ।
शौरी-वि०, श्री० कटारायिनी, दूरी-‘यह वैरिनि बंधु-रिया अति हो शौरी है’-घन० ।
शौलमा-अ० क्रि० उबलना, जोश खाना ।
शौलमा-स० क्रि० उबालना, औयाना ।
शौहा-वि० अधिक खानेवाला, पैट; दूसरेकी कमाई खानेवाला ।
श्याम-वि० [सं०] प्रसिद्ध; कथित, वर्णित । -**गहंज**, -**गहंस**-वि० बदनामीमें मशहूर, बदनाम ।
श्यासि-श्री० [सं०] प्रसिद्धि; शुद्धत, नाम; † स्थापन;

प्रशंसा; वर्णन; हान ।
श्यापक-वि०, पु० [सं०] स्थापन करनेवाला ।
श्यापन-पु० [सं०] शुद्धत करना; प्रकट, प्रकाशित करना । स्थापन; दीन-प्रापकी प्रकट रूपसे स्वीकार करना ।
श्याळ-पु० दे० ‘खयाल’; एक विशेष गान-पद्धति; * लेख; मजाक ।
श्याळिया-पु० खयाल गानेवाला ।
श्याळी-वि० दे० ‘खयाली’; लेख, क्रीडा-कौतुक करनेवाला; सनकी, बहमी ।
शिरा-पु० ईसाई ।
शिरीष-वि० शीट-संघर्ष, ईसाई ।
शीह-पु० कास्ट, ईसा ।
शीर्वा-वि० [फा०] पदा हुआ, शिक्षित ।
श्याजा-पु० [फा०] मालिक, सरदार; कुछ मुसलमान जमातोंकी पदवी; हिजरा; खोजा जाति । -**झिझर**-पु० दे० ‘मिखर’ । -**सरा**-पु० रनिवासका हिजरा सेवक; हाथी गडहका (हिजरा) दारोगा ।
श्याम-पु० [फा०] बाल, तश्त । -**चा**-पु० छोटा बाल, लोमचा । -**पौचा**-पु० खाना डैकनेका कपड़ा ।
श्यामी-श्री० [फा०] पदना, कहना (समाप्तके अंतमें व्यवहृत-‘शिरबानी’) ।
श्याम-पु० [फा०] नौद, सपना । -**गाह**-पु० सोनेका कमरा, शयनागार । -**ब(बी)श्याळ**-पु० कल्पना, अम, बहम । -**(बे)शरगोश**-पु० शरगोशकी नौद, बेखबरीकी नौद । -**शारकल**-श्री० बेखबरीकी नौद; बेखबरी, अवेतपन ।
श्यार-वि० [फा०] जलीब, बेजहत; तबाह, परेशान ।
श्यारी-श्री० [फा०] जिलत, बेजजती; खराबी, बरबादी ।
श्यास्त-श्री० [फा०] स्वादिश, इच्छा; प्रार्थना (केवल समाप्तमें व्यवहृत) । -**शार**-वि० चाहनेवाला, इच्छुक; प्रार्थी ।
श्यास्ता-वि० [फा०] चाहा हुआ, कांक्षित ।
श्याह-अ० [फा०] चाहे, अवधा, या । -**मश्याह**-अ० चाहे या बिना चाहे, मजबूरन; अवधर ।
श्याही-वि० [फा०] चाहनेवाला, इच्छुक ।
श्याहिर-श्री० [फा०] बहिन । -**झादा**-पु० भानजा ।
श्याहिस-श्री० [फा०] इच्छा, चाह । -**मंश्**-वि० इच्छुक, आकांक्षी ।

ग

ग-देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका तीसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान कंठ ।
गंग-श्री० गंगा । पु० अक्षिकालका एक प्रसिद्ध हिंदी कवि; एक मात्रिक छंद; [फा०] गंगा । -**बराह**-श्री० गंगा या दूसरी नदीकी धाराके नीचेसे निकली हुई (नदी) जमीन । -**शिकस्त**-श्री० वह जमीन जो नदीकी धारासे कट जाय ।
गंगाई-श्री० मैनाकी जातिकी एक चिबिया ।
गंगका-श्री० [सं०] गंगा ।

गंगगा-पु० एक तरहका शूलजम् ।
गंगोड-पु० [सं०] गंगाका जल; वर्षाका शुद्ध जल ।
गंगा-श्री० [सं०] भारतवर्षकी एक प्रधान और पवित्रतम नदी जिसका मगधके तपसे स्वर्गसे पृथ्वीपर आना माना गया है, जाह्नवी, भागीरथी । -**क्षेत्र**-पु० गंगाकी धारा और दोनों किनारोंमें दी-दी कोमतकका भूमि । -**गति**-श्री० गंगाजल, मुक्ति । -**चिह्नी**-श्री० [हिं०] एक जलपक्षी । -**जमुनी**-वि० [हिं०] दोरंगा; सोने-चाँदीका बना; सोने-चाँदीके कामवाला; काला-उजला । श्री० कानका

एक गङ्गना; घौसीकी दोरंगी गदनी; केयदी दाऊ; सुनहले-
बपहले कामकी जरतारी । -जल-पु० गंगाका पानी;
पवित्र जल जिससे कसम स्मिताते है: [हि०] एक तरहका
सफेद देशमी कपड़ा-‘गंगाजलकी पाग सिर लौटत भी
रघुनाथ’-रामचरित्र। -जली-खी० [हि०] धातु वा
शीथेली सुराही जिसमें वाणी हरदार आदिसे गंगा-जल
काते है: धातुकी सुराही छोटे जैसा पात्र जिसमें कबिदार
इकन लम्ब होता है; एक तरहका गेहूँ । -वृत्त-पु०
भीष्म । -हर-पु० हरिद्वार । -घर-पु० शिव; समुद्र;
एक वर्णवृत्त । -घार-पु० समुद्र । -पानी-खी० एक
वृक्ष, सुगंधा, गंधपत्रिका । -घाट-पु० [हि०] बोरेके तंगके
नीचे होनेवाली एक मौरी । -घार-पु० गंगाका दूसरा
तट । -घुत्र-पु० भीष्म; कातिकेय; गंगा आदिके धातुपर
बैठने और पंथोका काम करनेवाला मन्त्राण; एक संकर
जाति । -घुजेबा-खी० [हि०] दे० ‘गंगा-पूजा’ । -पूजा-
खी० व्याहके बाद घर-बधुकी लेकर गाजे-बाजेके साथ
होनेवाली गंगा, देवताओं आदिकी पूजा । -बात्रा-खी०
कौमारकी गंगातटपर इसलिये ले जाना कि वहाँ उसकी
धृत्य हो । -राम-पु० [हि०] तोतेका प्यारका नाम
जिसने पदाते समय उसका संगोपन करते है । -लहरी-
खी० पंक्तिराज जगन्नाथरचित गंगास्तोत्र । -छाम-पु०
गंगाकी प्राप्ति, गंगातटपर वृष्ट्यु वा दाहकमें होना; वृष्ट्यु ।
-चासी(सिन्ध)-वि० गंगातटपर रहनेवाला । -सामर-
पु० एक तीर्थस्थान जहाँ गंगा समुद्रमें मिलती है । -सुत-
पु० भीष्म; कात्तिकेय । सु०-उठाना, -जली उठाना-
गंगाजल लेकर कसम खाना । -नहाना-पिंसी कठिन
कार्यकी पूरा कर लेना, कृतकार्य होना । -पार करना-
देशमें निकालना । -पीना-सूखी कसम खाना ।

गंगाका, गंगिका-खी० [सं०] गंगा ।

गंगाजल-पु० बंहाल, बहा जलपात्र ।

गंगावतरण, गंगावतार-पु० [सं०] गंगाका उतरना,
स्वर्गमें धरतीपर आना ।

गंगोटी-खी० एक बनीपथि ।

गंगेय-पु० दे० ‘गंगेय’ ।

गंगेरन, गंगेरु-पु० एक पीप जो ढवाके काम आता है ।

गंगेरुवा-पु० एक पहाड़ी पेड़ ।

गंगोन्न-पु० दे० ‘गंगोरक’ ।

गंगोत्तरी-खी० हिमालयकी एक चौड़ी जहाँमें गंगा
निकली है ।

गंगोदक-पु० [सं०] गंगाजल; एक वर्णवृत्त ।

गंगोद्वे-पु० [सं०] गंगाका उद्गमस्थान ।

गंगोल-पु० [सं०] गोमेद मणि ।

गंगोटी-खी० गंगाके किनारेकी रेत वा मिट्टी ।

गंगीक्षिया-पु० एक तरहका खट्टा, नीदू ।

गंज-पु० सिन्धे बाल झड़ जानेका रोग, गंजापन, बालक्षोरा
रोग; [सं०] खान, रक्षोकी खान; खजाना, धनराशि; ढेर,
भंडार; मही, बाजार; मोठ; पानपात्र; अवज्ञा, तिरस्कार;
[फा०] सजाना, धनराशि, ढेर, भंडार; मही; बह चीज
जिसमें कई उपयोगी चीजें एक साथ हैं । -गुबारा-
पु० बमगोला । -गोला-पु० तोपका बह गोला जिसमें

बहुतसी-चीजें भरी हों । -बड़वा-वि० खाना छुटा
देनेवाला, महादानी । -का खाकू-बह चाकू जिसमें
साथ-साथ कैली, मोचना आदि भी हों ।

गंजब-पु० [सं०] अवज्ञा, तिरस्कार करना; हरा देना;
नाश; नीचा दिखाना; संगीतके आठ तालोंमेंसे एक;
* दुस्त । वि० गंजनकरी, अवज्ञा करनेवाला; नाशक ।

गंजबा-सं० क्रि० अवज्ञा करना; नाश करना ।

गंजनी-खी० एक वास जिसमें नीचुकीसी सवई होती है ।

गंजका-पु० [फा०] दे० ‘गंजीका’ ।

गंजा-वि० गंज रोगवाला, खल्वाट । पु० गंजापन; गंज
रोग । खी० [सं०] मरिदालय; शीपरी; पानपात्र; रक्षोकी
खान ।

गंजिका-खी० [सं०] मरिदालय ।

गंजिया-खी० रुपये रखनेकी जालीदार थैली; पाम रखने-
की आली; एक तरहका मिट्टीका बरतन; शकरकंद ।

गंजी-खी० छोटा गंज, ढेर, राशि; एक हुना हुआ पद-
नावा जो बड़ी-नीमास्तीन आदिकी तरह नीचे पहना
जाता है, बनिवासन; † शकरकंद ।

गंजीना-पु० [फा०] खाना, गंज ।

गंजीका-पु० [फा०] ताश जैसा एक खेल जिसमें पत्ते
गोल और सल्बामें ९६ होते है ।

गंजेबी-वि० गाँजा पीनेवाला ।

गंडम-पु० एक तरहकी लोहेकी कलम जो ताश्पत्रपर
लिखनेके काम आती थी ।

गँठ-‘गँठ’का समासमें व्यवहन रूप । -कटा-पु० गिरह-
कट, पाकेटमार । -जोबा, -बंधन-पु० विवाहकी एक
रिति जिसमें घर-बधुके कपड़ेके छोर एकमें बांध दिये जाते
हैं; पक्का नाता, अटूट संवध ।

गँठिवन-पु० दे० ‘गठिवन’ ।

गंड-पु० [सं०] गाल; कनपटी; गालमें कनपटीनका मुख-
भाग; हाथीकी कनपटी; फोहा, पुंसी; घेया; योद्धा; गँठ;
गडा; गंधा; हलका; मडलाकार देवा; विद्र, निशान;
वीधि (नाटक)का अंगविशेष; एक अनिष्ट योग (ज्यो०) ।

-कुसुम-पु० हाथीकी कनपटीन भरनेवाला मद ।

-कूप-पु० पहाडकी चोटीपर बना कुआँ । -गात्र-
पु० एक मीठा फल, शरीरका । -गोपालिका-खी०
व्यालिन नामक कोष । -ग्राम-पु० बहा गाँव । -वृषा-
खी० गँठवाली, दूरतक फैलनेवाली दूध । -देश, -प्रदेश,
-मंडल, -स्थल-पु० कनपटी । -भित्ति-खी० हाथीके
गडबलका छिद्र जिमने मद शरता है । -मालक-पु०

गंडमाला । -माला-खी० कठमाला रोग । -मालिका-
खी० लज्जातु लता । -माखी(सिन्ध)-वि० गंडमाला
रोगमें ग्रस्त । -मूर्ख-वि० घोर मूर्ख । -शिला-खी०

विशाल चट्टान । -सूचि-खी० नृत्यका एक भाग ।

-खाली-खी० दे० ‘गंडखल’ ।

गंडक-खी० एक नदी जो हिमालयमें निकलकर गंगामें
मिलती है । पु० [सं०] गडा; गिरह; चार कौंधियोंके मूल्य-
का एक सिक्का; गैरा; निशान; बाधा; फोहा; पार्थिव्य;
व्योतिषका एक अंग ।

गंडकी-पु० संगीतमें एक ताल । खी० [सं०] गंडक नदी;

मादा नैका । -पुत्र-पुं०, -सिका-स्त्री० शास्त्रात्मकी बटिया ।

गैडरारा-पुं० वह मोटा और छोटा बख या कपड़ी जो छोटे बच्चों के नीचे बिछा दी जाती है ताकि पेशाब-पाखाने से निस्त न लग्न हो ।

गंदनी-स्त्री० सरपोका ।

गैडरा-पुं० तर जमीन में होनेवाली एक घास ।

गैडरी-स्त्री० गौडर नामक घास ।

गंडली(खिन्)-पुं० [सं०] शिव ।

गंडोल-पुं० [सं०] जेडा, अदलेपा आदि कुछ नष्टनों के अंतर्के तीन बंड ।

गंडा-पुं० गौड; मंत्र पढवर गौड लगाया हुआ भाषा जो जतर-सावीरकी तरह पढ़ना जाय; तोते आदिके शब्दों का रगीन हलका कंठा; घोड़े के लगे में पहनानेका पट्टा; बाड़ी धारी, चारका समूह (कौरी, पैसा), आना; † नौने के लिए काटा हुआ ईमका टुकड़ा । -खावीज-पुं० जतर-संतर, झाड़-कुँक ।

गंडारि-पुं० [सं०] कचनार ।

गंडाली-स्त्री० [सं०] छपरे दूध ।

गैडाला-पुं० एक हथियार जिसमें टंडे के सिरेपर कोड़ेका खमदार फलक लगा होता है, परशु; एक औजार जिससे चारा काटने है ।

गैडाली-स्त्री० एक औजार जिसमें चौपायों के लिए चारा काटने है ।

गंडि-स्त्री० [सं०] पेड़का पत्र, तना; घेवा ।

गंडिका-स्त्री० [सं०] एक तरहका छोटा पत्थर; एक पेड़; ऐसी कोई चीज जो पहली अवस्था पार कर दूसरी में पहुँच गयी हो ।

गंडिनी-स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

गंडीर-पुं० [सं०] घोंसका साग; सेरुब; नीर ।

गंडीरी-स्त्री० [सं०] सेरुड ।

गंडु-पुं० [सं०] मोठ; हड्डी; तकिया । -पद्-पुं० केंचुआ ।

गंडुक-पुं० दे० 'गडूष' ।

गंडू-वि० गौड । स्त्री० [सं०] दे० 'गंडु'; तेल ।

गंडूक-पुं० दे० 'गडूष' ।

गंडूल-वि० [सं०] गाँठवाला; टेढ़ा ।

गंडूष-पुं० [सं०] चूल्हा; कुली; हाथीकी नुँडकी नोक ।

गैडरी-स्त्री० ईव या गन्नेका कुछ लंबीतरा टुकड़ा जो चूमने या कोल्हूम घेरने के लिए काटा जाय; छोटा लंबीतरा टुकड़ा ।

गंडोपचान-पुं० [सं०] तकिया ।

गंडोपल-पुं० [सं०] बड़ा शिलासड ।

गैडोरा-पुं० हरा कच्चा खजूर ।

गंडोल-पुं० [सं०] गुड; कोर, निवाला ।

गंडव-वि० [सं०] जाने योग्य, गम्य ।

गंता(गु)-पुं० [सं०] जानेवाला; पानेवाला; सहवास करनेवाला ।

गंतु-पुं० [सं०] मार्ग; पथिक, जानेवाला ।

गंडिका-स्त्री० [सं०] छोटी माँदी ।

गंडी-स्त्री० [सं०] घोसाघरी; बैरगाड़ी ।

गैड-स्त्री० [फा०] मलिनता; सर्प, गंदगी, बद्व । सु० - बकमा - गंदी बातें, गालियाँ बकना ।

गैडगी-स्त्री० [फा०] मलिनता, मिलाजत; मल; नापाकी; बद्व; सर्प; भ्रष्टता ।

गैडना-पुं० प्याज-लहसुनकी जातिका एक भसला; एक विशेष घास, दंदना ।

गैडला-वि० गंदा, मैला-कु मैला ।

गैडा-वि० [फा०] मैला; नापाक; बदबूदार; बिगड़ा हुआ, खराब, पुरा । -दूध-वि० जिसने मुँहने बद्व आये; गंदी बातें बकनेवाला । -बाल-पुं० वह घोड़ा जिसके दोनों बगल गौरियों हों ।

गैडीला-पुं० एक तरहकी घास ।

गैडुम-पुं० [फा०] गेहूँ । -जुमा जी क्रोश-पुं० गेहूँ दिखाकर जो बेवनेवाला, ठग, बचक ।

गैडुमी-वि० [फा०] गेहूँ परतका, दूधनी गोराईवाला ।

गैड-स्त्री० [सं०] बास, दू; पृथ्वीतत्त्वा गुण(भा०)सुगंध; सुगंधित द्रव्य; विमा हुआ चंदन; चंदन, केसर आदिका लेप; मैला, छुलाई, नाममात्र; गंधक । पुं० सहजन । -कंदुक-पुं० कनेर । -कारिका-स्त्री० सुगंधित उबटन आदि तैयार करने, कपड़े बसानेका काम करनेवाली दासी ।

काडिका, -काली-स्त्री० व्यासकी माना सत्यवती । -काड-पुं० अगर । -कुटी-स्त्री० सुरानामक मधुद्रव्य ।

-कुसुमा-स्त्री० गनिकारी । -केलिका, -केलिका-स्त्री० कस्तूरी । -कोकिला-स्त्री० गंधद्रव्य-विशेष ।

-गज-पुं० वह हाथी जिसके कुंभजे मर जाता हो, श्रेष्ठ, महाबली हाथी । -गुण-वि० गंध गुणवाला; गंधयुक्त । -जल-पुं० सुवासित, सुगंधित जल । -जास-पुं० तेज-पात । -ज्ञा-स्त्री० नासिका । -गंडूल-पुं० बासमती चावल । -तूँ-पुं० वाद्यविशेष, रणवाद्य । -गुण-पुं० भूतल, रक्षा । -तैल-पुं० सुगंधित द्रव्योंकी पकाकर बनाया हुआ तेल, सुशुद्ध तेल । -श्राव-पुं० अवर-कुश । -द-पुं० चंदन । -दला-स्त्री० अजमोदा ।

-दर-पुं० अगर । -द्रव्य-पुं० सुगंधित द्रव्य (चंदन, केसर आदि) । -धारी(रिज्)-वि० जो सुगंधित द्रव्य लगाये या धारण किये हो । पुं० शिव । -धूलि-स्त्री० कस्तूरी । -बकुल-पुं० छट्टर । -नाकुली-स्त्री० राक्षा ।

-नाडी-स्त्री० नाक । -नामा(मप्र)-पुं० लाल तुलसी । -नाल-पुं० दे० 'गंधनाली' । -नालिका, -नाली-स्त्री० नाक । -निलया-स्त्री० एक तरहकी चमेली ।

-निशा-स्त्री० गंधपत्रा । -प-पुं० एक पितृवर्ग । -पत्र-पुं० संकेत तुलसी; मरुवा; बैल; नारंगी । -पत्रा, -पत्रिका-स्त्री० कपूरकचरी । -पत्री-स्त्री० अजमोदा । -पलासिका-स्त्री० हरिद्रा । -पलाशी-स्त्री० गंधपत्रा । -पसार, -पसारी-स्त्री० [हिं०] दे० 'गंधपसारिणी' । -पाषाण-पुं० गंधक ।

-पिशाचिका-स्त्री० धूनेका धुआँ । -पुष्प-पुं० सुशुद्ध फूल; बेत; केवड़ा; गनिधारी । -पुष्पा-स्त्री० नीलका पीठा । -प्रवध-पुं० नाक । -प्रसारिणी-स्त्री० दवाके उपयोगमें आनेवाली एक कृता । -फल-पुं० कपित्थ ।

-फला-स्त्री० मिर्गु । -फली-स्त्री० मिर्गु; जंपकली । -गंध-पुं० आम । -बद्ध-पुं० [हिं०] किलावती

बद्ध। -विद्याव-पु० [वि०] नेकसे मिलता-जुलता एक जंतु, मुद्रकविद्या। -बीजा-की० मेघी। -बेज-पु० [वि०] गंधवेणु, एक सुगंधित घास। -आँव-पु० गर्दमाँव। -माँसी-की० एक तरहकी जटामासी। -माता(पु०)-की० पृथ्वी। -माव-पु० राम-सेनाका एक प्रमुख बर; एक वादन जो अकराका भाई था। -मावून-पु० एक पुराणवर्णित पर्वत जिसकी अवस्थिति इलाहूत और मद्राश-खंडके बीच बतायी गयी है; उस पर्वतपर लगा हुआ सुगंधित वृक्षोंका जगज; भौरा। -मावनी-की० मदिरा। -मादिनी-की० लाल। -माघार-पु० गंध-विलास। -माखती-की० एक गंधद्रव्य। -खंड-पु० गंधमाँव। -मूख-पु० कुलजन। -मूखक-पु०, -मूखा, -मूखिका, -मूखी-की० गंधपत्रा। -सूयिक-पु०, -सूयी-की० छल्लूर। -सुरा-पु० कस्तूरीधुग; गंध-विलास। -मैयुन-पु० साँव। -मोदन-पु० गंधक। -मोहिनी-की० चंगोकी कली। -युक्ति-की० गंधद्रव्य बनानेकी कला। -रस-पु० सुगंधसार; गुग्गुलु। -राज-पु० भोगरा। वेला; चंदन; जवादि नामक गंधद्रव्य। -राजी-की० नखी नामक गंधद्रव्य। -लता-की० प्रियंगु लता। लुब-पु० भ्रमर। -कोलुप-पु० मक्खी, मच्छ। बयिक(ज्)-पु० गंधी, हफरीति। -बप्-की० गंध-पलाशी। -बकक-पु० दारचीनी। -बलरी, -बली-की० सतदेई। -बह-पु० बायु। वि० गंध वहन करने-वाला। -बाहा-की० नाक। -बाह-पु० बायु; कस्तूरी-धूत। -बाहा, -बाही-की० नाक। -बिहल्ल-पु० गेहूँ। -हृक्ष-पु० सालका पेड़। -वेणु-पु० एक सुगंधित घास। -व्याकुल-पु० कंकरी वृक्ष। -शाखि-पु० बासमती चावल। -सुविनी-की० छल्लूर। -कोखर-पु० कस्तूरी। -सार-पु० चंदन; भोगरा वेला। -सुखी-सूयी-की० छल्लूर। -सोम-पु० कुपुद। -हस्ती(सिन्)-पु० गंधगज। -हारिका-की० गंधकारिका; स्वामिनीके पीछे-पीछे सुगंध लेकर चलनेवाली दासी।

गंधक-पु० की०, [सं०] एक तीक्ष्ण गंधयुक्त पीतवर्ण खनिज पदार्थ जो दवा, बाकूद आदि बनानेके काम आता है; शोभाजन; सुगंध। -वेयिका-की० गंधद्रव्य पीसने-वाली छी। -बटी-की० एक प्रसिद्ध पाचक औषध (आ० वे०)।

गंधकाम्ब-पु० [सं०] गंधकका तेजाव।

गंधकी-वि० गंधकके रंगका। पु० गंधकी रंग। -तेजाव-पु० गंधकका तेजाव।

गंधक-पु० दे० 'गंधन'; [सं०] गंधका प्रसार, एक चावल; अतिराम प्रयत्न; वर्ष, प्रहार; दोष-प्रदर्शन; संकेत, सूचना।

गंधरब-पु० दे० 'गंधर्व'।

गंधरबिन-की० गंधर्व की या गंधर्वकी स्त्री।

गंधर्व-पु० [सं०] देवताओंका एक भेद जो देवलोके गायक माने जाते हैं; गायक; कस्तूरीधुग; घोड़ा; अन्न-भरणके बीचकी अवस्थावाला जीव; सूर्य; कोकिल; एक हिंदू जाति जिसकी लक्षकियाँ माचने-पानेका पेशा करती हैं; परंड; संत; एक ताल; एक मानस रोग या उन्माद। -खंड-पु० भारतवर्षके नौ भागोंमेंसे एक। -ग्रह-पु० गंधर्व

रोग। -तैल-पु० परंडका तेल। -नगर-पु०-पु० दृष्टिदोषसे आकाशमें दिखाई देनेवाला मिथ्या आभासरूप नगर, कल्पित नगर; महाभारतमें वर्णित मानसरोवरके पासका एक नगर। -राज-पु० गंधर्वोंका राजा चित्रवर्ण। -रीग-पु० एक प्रकारका साधारण उन्माद रोग। -कोक-पु० गुहक लोकके ऊपर और विद्याधर लोकके नीचे अवस्थित एक लोक। -विद्या-की० गानविद्या। -विद्या-पु० अनुसृष्टिमें जायज माने हुए आठ प्रकारके विद्याओंमेंसे एक, वह विद्या जिसे बर-कन्या परस्पर-प्रेमसे प्रेरित होकर माता-पिताकी अनुमति लिये बिना ही करें। -वेद-पु० चार उपवेदोंमेंसे एक, संगीत-शास्त्र। -हस्त, -हस्तक-पु० परंड वृक्ष।

गंधर्वा-की० [सं०] दुर्गा।

गंधर्वा-पु० [सं०] एक दिव्याक्ष।

गंधर्विन-की० गंधर्वकी या गंधर्व जातिकी स्त्री।

गंधर्वी-वि० गंधर्वका। की० [सं०] गंधर्वकी स्त्री; सुरमिकी पुत्री।

गंधर्वोन्माद-पु० [मं०] दे० 'गंधर्वग्रह'।

गंधवती-की० [सं०] पृथ्वी; बरहणपुरी; व्यासकी माता; सुरा; वनमण्डिका; सुरा नामक गंधद्रव्य। वि०, स्त्री० गंधवाली।

गंधाव-पु० [मं०] छल्लूर।

गंधाजीव-पु० [सं०] गंधी, हफरीति।

गंधाव-वि० [सं०] लुबधूत। पु० नारंगीका वृक्ष; चंदन; जवादि नामक गंधद्रव्य।

गंधाव्या-की० [सं०] गंधपत्रा, स्वर्णपृथ्वी; रामतरुणी; आरामशीतला; गंधाली।

गंधाधिक-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य।

गंधाना-अ० कि० महकना, दुर्गंध निकलना। पु० एक वृक्ष।

गंधाविरोधा-पु० एक गोंद जिसका मरहम कोड़े आदिपर लगाते हैं।

गंधाव्या-की० [सं०] जंगली नीबू।

गंधार-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद, कंधारके आम-पासका देश; समकका तीसरा स्वर; एक राग।

गंधारी-की० दे० 'गंधारी'।

गंधाला-की० [सं०] एक गंधयुक्त लता।

गंधाली-की० [सं०] प्रसारिणी, गंधपसार; मिड़।

गंधालु-वि० [सं०] गंधयुक्त, वृद्धादूत।

गंधान-पु० [सं०] बायु।

गंधाह्मा(हम्व)-पु० [सं०] गंधक।

गंधाहक-पु० [सं०] आठ गंधद्रव्योंका मिश्रण, अष्टगंध (भिन्न-भिन्न देवताओंके लिए यह योग भिन्न-भिन्न है)।

गंधिक-वि० [सं०] गंधवाला। पु० हफरीति; गंधक।

गंधिनी-की० [सं०] मदिरा; एक गंधद्रव्य। वि०, स्त्री० गंधवाली।

गंधिया-पु० एक दुर्गंध करनेवाला वरसाती कौड़ा; एक फनगा जो धान आदिकी फसलकी नुकसान पहुँचाता है।

गंधी(चिन्)-पु० [सं०] हफरीति; खटमल; एक घास। वि० गंधवाला। - (चि)वर्ण-पु० गंधर्वा।

गंधीला*—वि० गंधा, गंधा, गंधा पानी गिर्मला, गंधा गंधीला होय—साखी।
 गंधीरिप—खी० [सं०] गंधीरिप।
 गंधीर—पु० एक गंधीर का वास।
 गंधीर—पु० एक गंधीर जिसकी पत्तियाँ मसालेके और छाल, जक आदि दवाके काम आती है।
 गंधीर—पु० एक गंधीर। † वि० दुर्गंध करनेवाला।
 गंधीर—पु० [सं०] दीना; दमनक।
 गंधीर—खी० [सं०] अंगुरी सराव।
 गंधीरजीवी (विन्)—पु० [सं०] गंधी, इन्फरोस।
 गंधीर—पु० [सं०] गंधक।
 गंधीर—खी० [सं०] भिन्न; सोठ; रंदाणी।
 गंधीर—पु० [सं०] सिंह।
 गंधीर—पु० [सं०] गंधीराल।
 गंधीर—पु० [सं०] दुर्गंध; अच्छी गंधवाली वस्तु।
 गंधीरिका, गंधीरी—खी० [सं०] एक पेड़ जिसकी छाल और फल दवाके काम आते हैं।
 गंधीर—वि० [सं०] गंधीर; ऊँचा और भारी (आवाज); मंद (ध्वनि); गंधीर; गंधीर; दुर्गंध; सोच-विचारकर सोचने, काम करनेवाला; काम सोचने और हँसी-मजाकसे दूर रहनेवाला, संजीरा। पु० गंधीरी नीर; कमल; एक राग।—बेदी- (विन्)—वि० अंकुशकी परवाह न करनेवाला, बार-बार अंकुश मारनेपर भी आरिष्ट कार्य न करनेवाला, हठीला (हाथी)।
 गंधीरक—वि० [सं०] गंधीर।
 गंधीर—खी० [सं०] एक नदी।
 गंधीरिका—खी० [सं०] एक नदी।
 गंधी—खी० दे० 'गंधी'।—हिं०—अ० गंधी, नुपकेने।
 गंधी—खी० छोटा गांव।
 गंधी—गंधीर का समासगत रूप।—बुद्ध—वि० गंधीरों जैसा; भद्र।—असल्ला—पु० गंधीरोंकी उक्ति।
 गंधीर—वि० गंधीरवाला, उठाक।
 गंधीर—सं० कि० खोना, नष्ट करना या हो जाने देना; (समय) काटना।
 गंधीर—वि० गाँवका रहनेवाला, देहाती; मूर्ख, अनाड़ी; उजड़।—सा*—खी० गंधीरपन।—का लुह—उजड़, बेशुद्ध।
 गंधीरिन—खी० गंधीर की।
 गंधीरी—वि० गंधीरकीसी, गंधीर। खी० गंधीर की।
 गंधीर—वि० गंधीरकासा, बेरंग; भोडा।
 गंधीर—खी० गंधीर की।
 गंधीर—पु०, खी० दे० 'गंधी'।
 गंधीर—सं० कि० अकलना, कसना। अ० कि० कसा जाना; छा जाना।
 गंधीर—वि० जिसमें गंधी हो; खुशनेवाला; गंधीर हुआ, गंधी।
 गंधी—पु० [सं०] गीत; गणेश, युक्त साक्षा; गंधीर। वि० गंधीर करनेवाला; गंधीरवाला (समासके अंतमें व्यवहृत—'अजय' 'सामय', इ०)।
 गंधीर—पु० दे० 'गंधी'।

गंधीर—खी० ज्ञान, जानकारी।
 गंधीर—वि०, खी० ('गंधी' का खी० रूप) जो चली गयी हो।
 गंधीर—वि० गंधी, गंधीर दुर्गंधीर की पुनः प्राप्त करना, गंधीरकी बनानेवाला। मु०—करना—तरह देना, खयाल न करना।
 गंधीर—खी० गांव। वि० सीधा (ला०)—'ऐसे गंधीर सति प्यारी तक तुव आनन आगे न आदर पाये'—रघुनाथ।
 गंधीर—पु० गंधीरकी पानी पीनेके लिए बनाया हुआ दाढ़, बिना सीढ़ियोंका बाट।
 गंधीर—खी० छिड़ी, बाड़ी।
 गंधीर—पु० गंधीरके पश्चिमोत्तर भागमें रहनेवाली एक जाति।
 गंधीर—पु० [सं०] आकाश, अंतरिक्ष; शब्द।—कुसुम—पु० आकाशकुसुम।—गंधीर—पु० गंधीरस्पर्शी, बहुत ऊँचा महल।—गंधीर—वि० आकाशवादी। पु० गंधीर; देवता।—गंधीर—खी० आकाशवाणी।—गंधीर—वि० आकाशवादी। पु० पक्षी; शशिचक्र; राशिचक्र; नक्षत्र; देवता।—गंधीर— (विन्)—वि० आकाश छूनेवाला, बहुत ऊँचा।—गंधीर—खी० केनके पेड़परकी भूल; एक तरहका कुकुरमुत्ता।—गंधीर—पु० बादल; सूर्य।—गंधीर—पु० इन्द्र।—गंधीर—खी० [सं०] कर्तुल नामक पक्षी।—गंधीर—वि० आकाशका भेदन करनेवाला, बहुत ऊँचा, प्रबल।—गंधीर—पु० असंभव बात।—गंधीर—खी० आकाशकी बाटिका, असंभव बात।—गंधीर—वि० आकाशमें चिचरण करनेवाला। पु० प्रकाशपिंड; सूर्य; देवता।—गंधीर—खी० आकाशगंगा।—गंधीर—पु० बाहु, आठ भस्त्रोंमेंसे एक।—गंधीर—वि० दे० 'गंधीर-कुंजी'।
 गंधीर—खी० [सं०] अमर।
 गंधीर—पु० [सं०] वर्षाका जल।
 गंधीर—पु० [सं०] सूर्य; गंधीर; देवता।
 गंधीर—पु० [सं०] एक मात्रिक छंद।
 गंधीर—पु० [सं०] आकाशगंगा।
 गंधीर—वि०, पु० [सं०] दे० 'गंधीर'।
 गंधीर—पु० [सं०] गंधीर।
 गंधीर—पु० तीर्थ, पीतल या लोहेका बना घड़ा, कलस।
 गंधीर—खी० दे० 'गंधीर'।
 गंधीर—खी० मिट्टीका घड़ा; छोटा गंधीर, गंधीर।
 गंधीर—पु० [सं०] सर्वका विष।
 गंधीर—खी० किसी नरम चीजमें कड़ी पैनी चीजके धँसने, घुसनेकी आवाज; पक्का फल; पक्की छत; छत बानेका मसाला; संगमरमरका चूना।—गंधीर—खी० पक्की छत या फल बनाना।—गंधीर—पु० गंधीर बानेवाला।—गंधीर—खी० गंधीर।
 गंधीर—सं० कि० गंधीर; दुँसकर भरना।
 गंधीर—वि० दे० 'गंधीर'।
 गंधीर—पु० गंधीर गिरनेकी आवाज। खी० जवान खी। वि० मरपु।
 गंधीर—पु० [सं०] पेड़, गंधीर जैन साधुओंका मठ।
 गंधीर—अ० कि० जाना।
 गंधीर—अ० कि० जाना। सं० कि० गंधीर; अपने ऊपर लेना; गंधीर—'...हवा गंधीर मल सौंसे'—

ग्रामगीत; बनाना ।

शब्दः, शब्दार्थः-पुं० दे० 'गर्ज' ।

शब्द-पुं० [फा०] सदा; दुःख; क्रोध; क्रूर; हावि ।

गज-पुं० [मं०] हाथी; आठकी संख्या; लंबाईकी एक माप, ३० अंगुल; गजासुर; < विष्णुजोमेंसे एका; नीच, पुष्टता ।

-अस्त्र-पुं० दे० 'गजाशन' ।-कंड-पुं० एक बनौ-पत्ति, हस्तिकंड ।-कर्म-पुं० एक नक्षः † दाद; दंड ।-कर्म-पुं० एक बनौपत्ति ।-कुंज-पुं० हाथीके मस्तकका उमरा हुआ भाग ।-कुसुम-पुं० नागकैसर ।-कूर्मांश-पुं० गृह ।-केसर-पुं० एक बड़िया धान ।

-क्रीडित-पुं० मूलका एक भाव ।-रवि-पुं० हाथी-कीसी मंद, गौरवमयी चाल, एक कर्णवृत्त; इस प्रकारकी चालवाली स्त्री । वि० गजगामी ।-राम-पुं० हाथीकीसी मंद चाल ।-गामिनी-वि०, स्त्री० हाथीकीसी मंद, गौरवमयी चालवाली ।-गाह-पुं० हाथीपर डाली जानेवाली झूल, गाहर ।-गौन-पुं० 'गजगमन' ।

-गौनी-वि०, स्त्री० दे० 'गजगामिनी' ।-गौहर-पुं० [हिं०] गजमोती ।-धर्म(मंत्र)-पुं० हाथीकी खाल; एक चर्मरोग ।-धर्मिन्दा; धर्मिन्दा-पुं० रंजवन ।

-धर्मिन्दा-पुं० एक तरहकी कंकरी ।-धर्मवा-पुं० फलित उद्योतिषका एक योग जो श्राद्धके लिए प्रशस्त माना गया है ।-धर्म-पुं० हाथीका दांत; गणेश; कपडे टाँगनेके लिए दीवारमें गाड़ी हुई झुंडी; एक तरहका घोडा; दांतपर निकला हुआ दांत; नृत्यका एक भाव ।

-धर्म-पुं० ध्वजा ।-धर्म-वि० [हिं०] हाथी-दांतका बना हुआ ।-धर्म-पुं० हाथीका दान; हाथीके गंदबल्लके बहनेवाला भस्म ।-धर्म-पुं० स्थापित, मेसरा ।

-धर्म-पुं० गंडा ।-नाल-पुं० भारी तोप जिसे पहले हाथी खींचते थे ।-नाला-पुं० हाथीकी सूँड ।-निर्मि-पुं० हाथी रखनेवाला; विशालकाय; गहैका सरदार हाथी; विजयनगरके राजाओंकी उपाधि ।-पाद-पुं० वेलिया पीपल ।-पाल-पुं० हाथीवान, महावत ।-पिप्पली-पुं० गजपीपल ।-पीपल-पुं० हाथी ।-पुं० एक पीपल जिसकी मंजरी दवाके काम आती है ।-पुं० बड़ा हाथी ।-पुं० बाहुकी फूँककर रस्त बनानेके लिए बनाया हुआ नियत मानका गदा; उस गदेमें रखकर बाहु आदिकी फूँकना ।-पुर-पुं० हस्तिनापुर ।-पुष्पी-पुं० नागदीन ।-प्रिया-पुं० शलकी, चीड़ ।-बंघ-पुं० विजकाम्यका एक भेद ।-बंघ-पुं० हाथी बाँधनेका झुंड ।-बंघनी, बंघिनी-पुं० हाथियोंका अस्तबल, हस्तिशाला ।-बंघ-पुं० गणेश ।-बॉक; बाय-पुं० [हिं०] हाथीका अंगुल ।-बेली-पुं० [हिं०] एक तरहका कौलाद, कौलासर ।-अक्ष-पुं० पीपलका पेड़ ।-अक्ष-पुं० अक्ष-पुं० शलकी, चीड़ ।-अभि-पुं० गजमुक्ता ।-अक्ष-पुं० गजदान ।-माच्छ-पुं० मोटा-पुं० सिंह ।-मुक्ता-पुं० कश्मिर-वसिष्ठ मोती जिसका हाथीके मस्तकसे निकलना माना जाता है ।-मुख-पुं० गणेश ।-मोक्ष-पुं० विष्णुका एक रूप ।

-मोती-पुं० [हिं०] गजमुक्ता ।-मौक्तिक-पुं० गजमुक्ता ।-मूष-पुं० हाथियोंका झुंड ।-रथ-पुं० विशाल रथ जिसे हाथी खींचते थे ।-राज-पुं० बहुत बड़ा हाथी, गर्ज ।-लील-पुं० एक ताल ।-बल्लमा-पुं० गिरिकली ।-विकसिता-पुं० एक वृत्त ।-वीथी-पुं० रोहिणी, शृंगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रोंका समूह ।-वज्र-पुं० हाथियोंकी सेना ।-वाक्का-पुं० फलखाना ।-विष्णु-पुं० हाथियोंकी सिसाने, साधनेकी विद्या, हस्तिशाल ।-स्नातक-पुं० हस्तिनापुर ।-स्नान-पुं० हाथीका नहाना; निरर्थक कार्य (हाथी नहानेके बाद कीचड़, धूल देखकर डाल लेता है) ।

गज-पुं० [फा०] लंबाईका एक मान, १६ गिरह, ३६ इंच; सारंगी आदि बजानेकी कमानी; कोड़ेका छड़ या छड़ जैसी लकड़ी जिससे बंदूक बनी जाती है; एक तरहका तीर; धोबियोंके ऊपर रखी जानेवाली लकड़ीकी पट्टी ।

-हलाही-पुं० अकबरी गज जो ४१ इंचका होता है ।

गजक-पुं० [फा०] वह चटपटी चीज जो शराबके साथ या शराब पीनेके बाद सुरत स्वादी जाय, चाट, तबियाक; तिलनकरी; कलेबा ।

गजट-पुं० [अं०] सरकारी अवधार, वह सामयिक पत्र जिसमें सरकारी सूचनाएं प्रकाशित हों; समाचारपत्र (अखबारोंके नाममें), 'गैजेट' । मु०-होना-किमी सूचना या वृत्तिका पत्रमें छप जाना ।

गजता-पुं० [मं०] हाथियोंका झुंड ।

गजानवी-पुं० [फा०] गजनीका रहनेवाला; एक तुर्क राज-वश जिनमें प्रसिद्ध विजेता महमूद गजनीका हुआ ।

गजना-पुं० अं० गजने करना ।

गजनी-पुं० [फा०] अफगानिस्तानका एक नगर जो मह-मुदकी राजधानी था ।

गजब-पुं० [अं०] क्रोध, कोप; विषय, आफन, अंधर, जुलूम ।-हलाही-पुं० ईश्वरीय कोप, ईश्वरीय ।-नाक-वि० प्रतिक्रोध, कुपित ।-का-अतिशय, बेहज; बहुत बड़ा; अद्भुत, विलक्षण ।-इश्वरका-ईश्वरका कोप ।

मु०-टूटना; पड़ना-अचानक भारी विपत्ति आ पड़ना ।

-हाना-आफत करना, जुलूम करना, भारी अनर्थ करना ।

गजबीला-पुं० गजब करने, गजब दानेवाला ।

गजर-पुं० पहर-पहर पर बजनेवाला घंटा; भोरका घंटा; जगानेकी घंटी; चार, आठ, बारह बजनेपर लगनी ही बार जल्द-जल्द बजनेवाला शब्द; लाल और भूरेमें मिला हुआ गेहूँ ।-दस-अं० तक्के, पी पड़ते ।-बजर-पुं० अंडबड; अट्ठा-मट्ठा ।

गजरभत्ता, गजरभात-पुं० गाजरके साथ पकाया हुआ भात ।

गजरा-पुं० फूलोंकी माला; हार; कलाईपर पहननेका एक गहना; एक रंथमी कपड़ा; गाजरका पत्ता ।

गजरी-पुं० कलाईपर पहननेका एक गहना; छोटी गाजर ।

गजरीट-पुं० गाजरकी पत्ती ।

गजल-पुं० [अं०] फारसी-उर्दूमें मुक्तक काव्यका एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है ।-गो-वि० गजल रचने, बनानेवाला ।

गजबान्(बन्)-पु० [सं०] महावत ।

गजहोत्री-स्त्री० बहू मथानी जिसने कच्चा दूध मक्खन मक्खन निकालते हैं ।

गज्या-पु० मगडा बजानेका छटा; एक बँगला मिठाई ।

गजाक्या-स्त्री० [सं०] यक्रमर्द नामक पौधा ।

गजाजीव-पु० [सं०] हाथीबान्, महावत ।

गजाधरा-पु० दे० 'दाधर' । (किसल व्यक्तियोंके नाममें व्यवहृत) ।

गजानन-पु० [सं०] गणेश ।

गजाधुर्वेद-पु० [सं०] हस्ति-चिकित्सा-शास्त्र ।

गजारि-पु० [सं०] शिव; सिंह; एक वृक्ष ।

गजारोह-पु० [सं०] महावत ।

गजाश्वन-पु० [सं०] घोषलका पेड़; कमलकी जड़ ।

गजामुर-पु० [सं०] एक दैत्य जो शिवके हाथों मारा गया ।

गजास्थ-पु० [सं०] गणेश ।

गजाङ्ग-स्त्री० [सं०] गजविष्पली ।

गजिर्वा-स्त्री० विदारका एक औजार ।

गजी-स्त्री० [सं०] इयिनी ।

गजी(जिह्वा)-वि०, पु० [सं०] गजारीही ।

गजी-पु० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गाड़ा । -गाड़ा-पु० मोटा, मस्ता कपड़ा ।

गजेंद्र-पु० [सं०] बड़ा हाथी, गजराज; ऐरावत; इंद्रवन्त नामक राजा जो अगस्त्यके शापसे हाथी हो गया और द्वाहग्रस्त होनेपर भगवान्‌को याद कर शापमुक्त हुआ ।

गजेश-स्त्री० [सं०] विदारी वृक्ष ।

गजोपधा-स्त्री० [सं०] गजविष्पली ।

गज्जह-पु० हाथियोंका झुंड, गजगूथ ।

गक्षिन-वि० घना, गाढ़ा ।

गट-स्त्री० किसी तरह पदार्थको निगलने या घोंटनेमें होनेवाली आवाज । -गट-अ० 'गट गट'की आवाजके साथ; जम्ही-जल्दी; लगातार (पीना, निगलना) । स्त्री० 'गट-गट'की आवाज ।

गटहूँ-स्त्री० गला, गहरन ।

गटकना-स० क्रि० निगलना, उदरस्थ करना; हड़पना ।

गटकीला-वि० निगल जानेवाला, खा जानेवाला ।

गटमा-अ० क्रि० बँधना, जकड़ना ।

गटपट-स्त्री० दो या अधिक वस्तुओं, व्यक्तियोंका बिलकुल मिल-जुल जाना; सहवास ।

गटरमाला-स्त्री० बड़े दानोंकी माला ।

गटा-पु० नेत्रगोलक, डेला ।

गटागट-अ० दे० 'गटगट' ।

गटापाखा-पु० एक तरहका गोंद जो रबरकी तरह काममें लाया जाता है ।

गटी-स्त्री० गोंठ; समूह; * गठरी-'अथ ओषधी बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी पुष्पाजि-गटी'-राम० ।

गह-पु० दे० 'गट' ।

गहा-पु० कपाड़; गुट्टी, टखना; नैचेकी गोंठ जो फरशीके छेड़पर रहती है; शूट; बीज (कमलगट्टी); चीनी वा शुष्क एक तरहकी मिठाई ।

गहुर-पु० बड़ी गठरी, गट्टा । मु०-साधना-तैराकका गठरी बांधकर ऊँचाईसे कूटना ।

गट्टा-पु० बड़ी गठरी, गहुर; घास, लकड़ी आदिका गोसा; प्लाज इत्यादिकी गोंठ; कट्टा ।

गट्टी-स्त्री० गोंठ ।

गठ-स्त्री० दे० 'गोंठ' ।

गठन-स्त्री०, पु० बनावट, रचना; अँगोका कसाव, रद्दता ।

गठना-अ० क्रि० जुड़ना; गोंठ जाना; सिला जाना, टीका भरा जाना; ठीक तौरसे बनना; कसा हुआ, रद्द होना; अधिक हेर-भेल होना; किसी पद्वित्रमें सम्मिलित होना; स्त्री-पुरुषका संयोग होना ।

गठरी-स्त्री० कपड़ोंमें बँधा हुआ सामान, बुकवा; गोसा; संचित धन, जमा; बड़ी रकम; तैराकीमें घुड़मोंको छातीसे लगाने और दोनों हाथोंसे बाँध देनेकी मुद्रा । -मुटरी-स्त्री० गठरीमें बँधा हुआ सामान, बाप्रीका सामान । मु०-कटना-मारी रकम हाथसे निकल जाना, खर्च होना । -बाँधना-सफरकी तैयारी करना । -मारना-दूसरेका धन हड़प, हथिया लेना ।

गठरेवाँ-पु० चौपायोंका एक रोग ।

गठवाँसी-स्त्री० किस्मती ।

गठवाई-स्त्री० (जुता) गोंठनेकी उजरत ।

गठवापा, गठानर-स० क्रि० 'गठना'का प्रे० ।

गठा-पु० दे० 'गट्टा' ।

गठाव-पु० गठन ।

गठित-वि० ग्रथित, गठा हुआ, बना हुआ ।

गठिबंध-पु० दे० 'गोंठबंधन' ।

गठिया-पु० बैल आदिपर अनाज आदि लानेका दुइरा डेला या बीरा, खुरजी; छोटी गठरी; एक बासीरोग, संघिवाल ।

गठियाना-स० क्रि० गोंठ देना; गोंठमें बाँधना ।

गठिचन-पु० एक पेड़ जिसकी कलियाँ दबाके काम आती हैं, ग्रथिपर्णी ।

गठोला-वि० गटा हुआ, कसा हुआ, रद्द ।

गठुआ, गठुवा-पु० भूमेकी गोंठ ।

गठौँद-स्त्री० गोंठकी बंधाई; धरोहर ।

गठोत, गठोती-स्त्री० मेलजोल, दोस्ती; अभिसंधि ।

गठंक, गठंग-पु० शस्त्रागार ।

गठंस-स्त्री० टोटेकेके लिए गाड़ी गयी वस्तु ।

गठ-पु० [सं०] ओट, घेरा; डीला; अंतर; व्यवधान; खारि; एक मछली; भालवाका एक भाग । -दूँधराज, -लक्षण-पु० सौंभर नमक ।

गठक-पु० [सं०] एक मछली ।

गठकना-अ० क्रि० 'गठ-गठ' शब्द करना; गर्क होना, डूबना ।

गठगज-पु० दे० 'गरगज' ।

गठगका-पु० एक तरहका हुका, बड़ी गुड़गुड़ी ।

गठगकाना-अ० क्रि० 'गठ-गठ' शब्द होना, गरजना (बादलका) । संक्रि० 'गठ-गठ' शब्द उरपन्न करना; हुका पीना ।

गठगकाहट-स्त्री० गठगकाने, बादल गरजने आदिकी

आवाज; हुकेकी आवाज ।

गद्यशब्द-श्री० नयाबा; दुग्गुणी ।

गद्यशब्द-पु० चीपका ।

गद्यशब्द-पु० मतवाले हाथीके साथ भागा लेकर चले-
वाला; महावत ।

गद्यशब्द-अ० कि० चुभना, भंसना; चुभनेकी पीका होना;
चुसना, समाना; जमना, ठहरना, स्थिर होना; गाका
जाला, दफन होना; (हंडा आदि) सड़ा किया जाना ।
मु० गद्य शब्द-ऊँचासे तिर मुक जाना, अत्यधिक ऊँचा
अनुभव करना । गद्य शब्द या गद्य-धरतीमें गद्यकर
रखा हुआ धन, दफीना । गद्य मुर्दा या गद्य मुर्दे
उखाड़ना-पुनर्जी भूली हुई (अधिम) बातोंकी खर्चा
करना, बाद दिखाना ।

गद्यशब्द-पु० लकड़ीका एक लेख; एक पक्षी ।

गद्यशब्द-श्री० पानी, दलदलमें किसी चीजके जलीसे भँसने,
दुबनेका शब्द । -से-‘गद्य’ आवाजके साथ; झट,
तुरत । मु०-होना-दुब जाना, भँस जाना ।

गद्यशब्द-स० कि० मिलाकना, गपकना ।

गद्यशब्द-पु० भारी गड्ढा, दलदल, पाल जिसमें चीज,
आदमी भँस, दुब जाय ।

गद्यशब्द-वि० गद्य-बहु, अस्त-व्यस्त । पु०, श्री० अन्ववस्था,
गोलमाल; बर-अमल, उपद्रव; खराबी; रोगादिका प्रकोप ।
-हाला-पु० गोलमाल, अन्ववस्था, समेका ।

गद्यशब्द-पु० बर गड्ढा जिसका मुँह ऊपरसे वास आदि
रखकर छिपा दिया गया हो ।

गद्यशब्द-अ० कि० गद्यक होना । स० कि० गद्यक
करना ।

गद्यशब्द-वि० गद्यक करनेवाला, अन्ववस्था उत्पन्न
करनेवाला ।

गद्यशब्द-श्री० दे० ‘गद्यक’ ।

गद्यशब्द-गद्यशब्द-पु० [सं०] बादल ।

गद्यशब्द-पु० एक हिंदू जाति जो भेड़ें पालती है ।

गद्यशब्द-श्री० पहियेकी छीक ।

गद्यशब्द-स० कि० ‘गद्यना’का प्रे० ।

गद्यशब्द-श्री० लाट ।

गद्यशब्द-पु० दे० ‘गड्ढा’ ।

गद्यशब्द-श्री० छोटा गड्ढा ।

गद्यशब्द-पु० डेर, गॉज, राशि । -बटाई-श्री० खेतकी
उपजका बिना मँडि हुए बँटा जाना ।

गद्यशब्द-श्री० एक तरहकी मछली ।

गद्यशब्द-स० कि० चुभाना, भँसाना; दे० ‘गद्यवाना’ ।

गद्यशब्द-पु० दे० ‘गद्य’ ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-पु० दे० ‘गद्यना’ ।

गद्यशब्द-वि० गद्यने, चुभनेवाला ।

गद्यशब्द-श्री० बूच, घेरा; आदी लकीर; धिरनी, गोल
चरखी; धिरनीके बीचका गड्ढा; एक वास । -हार-वि०
आदी धारियेवाला, घेरदार; जिसमें गहारी जैसा गड्ढा हो ।

गद्यशब्द-पु० एक तरहका नमक ।

गद्यशब्द-पु० दे० ‘गँगासा’ ।

गद्यशब्द-पु० [सं०] बछ्मा; अभियल, गरियार बैल ।

गद्यशब्द-वि० दे० ‘गरियार’ ।

गद्यशब्द-पु० [सं०] कूचक; गल्लगंड; वेवा; गद्यशब्द; बरछी; निर-
र्थक वस्तु; कूचकवाला आदमी; केंतुवा । वि० कूचकवाला ।
गद्यशब्द, गद्यशब्द-पु० दोहीदार लोटा, सारी, गद्यशब्द;
कूचका लोटा ।

गद्यशब्द-श्री० छोटा गद्यशब्द ।

गद्यशब्द-पु० [सं०] गद्यशब्द; अंगूठी ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-वि० [सं०] कुचका ।

गद्यशब्द-श्री० एक पक्षी ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-पु० बच्चोंकी घुमानेकी छोटी गहरी ।

गद्यशब्द-पु० [सं०] बादल ।

गद्यशब्द-वि० घेरदार ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-श्री० गद्यशब्द शब्द ।

गद्यशब्द-पु० दे० ‘गद्यशब्द’ ।

गद्यशब्द-पु० चौपायोंका एक रोग ।

गद्यशब्द-स० कि० चुभाना, भँसाना ।

गद्यशब्द-पु० [सं०] घास; कच्ची चीनी ।

गद्यशब्द-पु० बच्चोंकी घुमाने-फिरानेकी छोटी गहरी ।

गद्यशब्द-पु० एक तरहका पान; * कंदा ।

गद्यशब्द-पु० एकपर एक रखी हुई चीजोंकी राशि; ताशके
पत्तों, कागज आदिका ढेर; * गड्ढा । -गद्यशब्द; -गद्यशब्द-
वि० बिना किसी क्रम-नियमके मिला हुआ, खल-मल ।
-का गद्यशब्द-ढेरका ढेर, बहुत ब्यादा ।

गद्यशब्द-गद्यशब्द-पु० गद्यशब्दशब्द ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-पु० [सं०] सेव, सेव ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-श्री० [म०] भेड़ोंकी पोंत, अविच्छिन्न
प्रवाह । -प्रवाह-पु० भेड़ियाघसना, अधानुसरण ।
गद्यशब्द-वि० पाजी, लुच्चा; नारकीय (गाइ बैम यी-ईश्वर
तुझे नरक दे) । -जुला-पु० भेड़ोंकी जुला, बूट । -बोली
-श्री० भेड़ोंकी, गोरोंकी बोली ।

गद्यशब्द-श्री० छोटा गद्यशब्द, डेर; ताशके पत्तों, कागजों, सोने-
चाँदीके ढेरों आदिका एकपर एक जमाकर रखा हुआ ढेर ।

गद्यशब्द, गद्यशब्द-पु० [सं०] जलपात्र-विशेष, गड्ढा ।

गद्यशब्द-पु० गद्या, गर्त ।

गद्यशब्द-वि० गद्या हुआ, कल्पित । श्री० गद्या हुई बात ।

गद्यशब्द-पु० कोट, किला; अड्डा, केंद्र; खाई । -कसान-पु०
किलेदार । -पति-पाख-पु० गद्यका प्रधान अधिकारी,
किलेदार । -बाह-पु० गद्यवाक । -बाह-पु० गद्यपति;
उत्तराखण्डका एक प्रदेश । मु० -जीतना, -तोड़ना-
किला फतह करना; कठिन, बड़ा काम करना ।

गद्यशब्द-श्री० गद्यन, बनावट ।

गद्यशब्द-श्री० बनावट, आकृति; गद्यन ।

गद्यशब्द-स० कि० किसी चीज, उपादानभूत पदार्थसे
जो ज़रूरीकी सहायतासे कुछ बनाना, रचना, निर्माण
करना; काट-छँट या टोक-पीटकर सुझौल करना; कल्पना
करना, मनसे उपजाना; पीढ़ना, मरम्मत करना (धा०) ।
गद्यशब्द-स० कि० गद्याना ।

गद्यशब्द-पु० जमीनमें खोदकर बनाया हुआ या प्रकृति-निर्मित
खेद, गर्त, गार; दबी, घँसी हुई जगह; पेठ (का०) ।
मु० (किसीके लिए)-खोदना-किसीकी बुराईका,

कितीकी मुकतान पहुँचानेका उपाय करना । -अरवा-
धाटा पूरा होना। येट भरना । -(३) में गिरना-विपद्
में कँसना; पतन होना ।

गणार्ह-खी० गदनेका काम; गदनेकी उन्नत ।

गदना-स० कि० गदवाना, बनवाना । अ० कि० खलना;
कटकर होना ।

गदास-खी० गदन-‘मान-मवास गदासी घाटी’-बन० ।
गदासी-वि०, पु० विद्रोही, विद्रोही-‘बोधि लिये कुल-
नेम गदासी’-बन० ।

गदिबा-खी० गदनेवाला ।

गदी-खी० छोटा गद, किला; किले जैसा बसा और मजबूत
मकान; छोटा गदा ।

गदीरा, गदीर-खी० गदपति, किलेदार ।

गदिया-खी० गदनेवाला । खी० गदही, छोटा तालाब ।

गदोई-खी० गदपति ।

गण-पु० [सं०] समूह; गरोह; बर्ग, भेणी; जाति; समान
उद्देश्यवाले मनुष्योंका समूह; संप; अनुचर या अनुयायि-
बर्ग; अष्टौभिणीका एक विभाग-२७ रथ, २७ हाथी, ८१
घोड़े और १३५ पैदल; छंदःशास्त्रमें तीन वर्णोंका समूह
(भगव, यगण आदि); सख्या; समान कौष, आगम आदि-
वाले शस्त्रों, धातुओंका बर्ग (भ्या०); शिवके मेबकोंका
समुदाय; प्रमथ; सेवक, अनुचर; पक्षपोषक; नक्षत्रोंकी तीन
कोटियोंमेंसे एक; गणेश । -कर्णिका-खी० इंद्रवाकणी ।
-कार-पु० वर्णकरण करनेवाला; भीमसेन । -तंत्र-
पु० शासनका एक प्रकार जिसमें शासनका कार्य जुने हुए
मुखियोंके द्वारा होता है । -० निवस-पु० गणतंत्र
स्थापित होनेके स्वरूपमें माना जानेवाला दिन या उत्त
संवत्समें होनेवाला समारोह (२६ जनवरी) । -दीक्षा-
खी० बहुतीकी एक साथ, सामूहिक दीक्षा । -दीक्षी-
(शिव)-वि०, पु० बहुतीकी एक साथ दीक्षा देने, साथ
यज्ञ करनेवाला; गणेशकी दीक्षा लेनेवाला । -देवता-
पु० सधमन, मनुष्योंमें रहने, विचरनेवाले देवता (आदित्य,
वसु, रुद्र, मरु आदि) । -द्रव्य-पु० पचावती धन,
माल । -धर-पु० किसी वर्ग या समूहका मुखिया; जैन
आचार्योंका एक वर्ग । -नाथ, -नायक-पु० गणस्वामी;
गणेश; शिव । -नायिका-खी० दुर्गा । -प-पु० गणेश ।

-पति-पु० गणस्वामी; गणेश; शिव । -पर्वत-पु०
कैलास । -पाठ-पु० एक ही नियमके अंतर्गत जानेवाले
शब्दोंका समूह । -पठक-पु० सीना, बह । -पुंगव,
-मुख्य-पु० जातिका मुखिया । -ओजव-पु० बहुती-
का एक साथ बैठकर खाना, सबभोज । -बह-पु० सामू-
हिक वन । -हाज्य-पु० बह राज्य जिसमें शासन जुने
हुए मुखियोंके द्वारा होता हो; दक्षिणका एक राज्य ।
-रूप-पु० अकनन । -वेष्ट-पु० बरती, विपरिधान ।
-हास, -हासक-पु० एक गंधर्ब ।

गमक-पु० [सं०] गणना करनेवाला, ज्योतिषी ।

गमही-खी० [सं०] ज्योतिषोक्ती पत्नी ।

गमक-पु० [सं०] गिनना; हिसाब करना; मानना,
समझना ।

गमना-खी० [सं०] गिनना; गिनती; हिसाब; किहाज ।

-पति-पु० अंकशास्त्री; गणेश । -महामात्र-पु०
अर्थमंत्री ।

गमनीय-वि० [सं०] गिननेकायक; मान्य; किहाज करने
योग्य ।

गणाग्रणी-पु० [सं०] गणेश ।

गणाच्छ-पु० [सं०] कैलास ।

गणाधिप, गणाधिपति, गणाध्यक्ष-पु० [सं०] गणस्वामी;
सेनानायक; गणेश; शिव ।

गणाच्छ-पु० [सं०] बहुतेके व्यक्तियोंके लिए एक साथ बना
हुआ भोजन ।

गणि-खी० [सं०] गणना ।

गणिका-खी० [सं०] वेदया; धनके लोभसे नायकते प्रेम
करनेवाली नायिका; गनियारीका पैश; हथिनी; एक फूल
जो चमेलीसे मिलता है ।

गणिकारिका, गणिकारी-खी० [सं०] गनियारी, छोटे
अरनी ।

गणित-पु० [सं०] संख्या, अवकाश, मात्रा आदिका विचार
करनेवाला शास्त्र, अंकशास्त्र; हिसाब । वि० गिना हुआ;
जोड़ा हुआ । -ज्ञ-वि० गणितशास्त्री, ज्योतिषी । -
विकच-पु० चीजोंको गिनतीके हिसाबसे बेचना (की०) ।

-विद्या-खी० अंकशास्त्र, हस्तेहिसाब ।

गणेर-पु० [सं०] कणिकार वृक्ष । खी० वेदया; हथिनी ।

गणेरक-पु० [सं०] दे० ‘गणेर’ ।

गणेरका-खी० [सं०] कुंदनी; हथिनी ।

गणेश-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध हिंदू देवता जो शिव-पार्वती-
के पुत्र माने जाते हैं और पंचदेवोंमें परिगणित हैं; शिव;
गणनायक । -कुसुम-पु० लाल कनेर । -क्रिया-खी०
गुदाका मल साफ करनेकी एक योगक्रिया । -खंड-
पु० स्तंभपुराणका एक खंड जिसमें गणेशकी उत्पत्ति आदि
बतायी गयी है । -चतुर्थी-खी० किसी भी मासकी विशेष-
कर आश्विन और माघकी कृष्ण चतुर्थी जिस दिन गणेश-
का व्रत रखा और पूजन किया जाता है । -चीथ-
खी० [हिं०] दे० ‘गणेश-चतुर्थी’ । -पुराण-पु० गणेशकी
उत्पत्ति, महिमा आदिका वर्णन करनेवाला एक उपपुराण ।
-श्रवण-पु० सिद्ध । -संहिता-खी० गाणपत्य संप्र-
दायका एक उपपुराण ।

गण्य-वि० [सं०] गणनीय । -मान्य-वि० सम्मानित ।

गत-वि० [सं०] गया हुआ; बीता हुआ; पिछला (गत
सप्ताह; मास); मृत; पहुँचा हुआ, प्राप्त; स्थित; 'मे संबंध;
रहित; हात । -कलम-वि० पाप-शोधसे मुक्त । -काल-
पु० बीता हुआ समय । -कल-वि० लावारिस (माल,
जायद्वार) । -कलम-वि० जिसकी थकावट दूर हो गयी
हो । -चेतन-वि० नष्टचेतन, बेहोश । -जीव-वि०
मृत । -तोषद-वि० बादलोंसे रहित । -प्रप-वि०
लज्जा या भयसे मुक्त । -दिव, दिवस-पु० बीता हुआ
दिन । अ० कल । -पार-वि० चरम सीमापर पहुँचा
हुआ । -प्रस्थान-वि० जाकर लौटा हुआ । पु० ताल-
का एक मेद (संगीत) । -प्रस्थागता-खी० वह स्त्री जो
पतिकी अनुमतिके बिना घरसे चली जाय और कुछ दिन
बाद फिर लौट आये । -प्राण-वि० मृत, वैजान । -प्राव-

वि० गषा, बीता हुआसा। -अर्जुका-खी० विषवा।
-रस-वि० जिसका रस, स्वाद चखा गया हो।
-लक्ष्मीक-वि० भाग्यहीन; बाधा उठानेवाला। -लक्ष-
वि० निर्लक्ष। -बयस्क-बया(यस्क)-वि० अधिक
अवस्थाका। -इयव-वि० पीछासे मुक्त। -सैराव-वि०
आठ वर्षसे अधिक अवस्थाका। -संग-वि० अनासक्त,
फलकामना-रहित। -स्वर-वि० सुदी, बेजान; सरव-
रहित। -सौहृद्-वि० मैत्रीने रहित; उदासीन। -स्पृह
वि० जिने कोई चाह; इच्छा न हो।

गस-खी० गति, हालत; नुरी गति; रंग; रूप; सितार
आदिपर बजाया जानेवाला रागका 'सरगम'; नृत्यमें विशेष
अंगनेष्ट। सु०-का-ठिकानेका, अच्छा। -बजाना-
सितार आदिपर रागका 'सरगम' बजाना। -बनाना-
दूरक्षा करना; शङ्क शिगाड़ देना; ग्लू भरम्मत करना।

गतक-पु० [सं०] गमन, गति।
गतका-पु० लकड़ीका डेढ़-दो हाथ लंबा, चमड़ा चढ़ा,
मुठियादार डडा जिमें एक खाम लेल खेला जाता है;
गमका फरीका लेल जो लाठी लकड़नेमें मिलता-जुलता है।

गताक-पु० [सं०] पिछला अक, सख्या (सामयिक पत्र
आदिमें)। वि० गया-बीता।

गतात-वि० [सं०] जिसका अंत आ गया हो।

गताव-वि० [सं०] अंश।

गतागत-पु० [सं०] जाना-आना; जन्म-मरण। वि० आया-
गया; आने-जानेवाला।

गसगति-खी० [सं०] मरना और फिर जन्म लेना।

गताधि-वि० [सं०] निश्चित, निनाविहीन ('अमुल')।

गतानुगत-पु० [सं०] प्रयाका अनुमरण।

गतानुगतिक-वि० [सं०] आँख मंदकर दूसरोंके पीछे
चलनेवाला, अंधानुयायी।

गतापात-पु० [सं०] जाना और आना।

गताप(ह्)-वि० [सं०] जिसकी आयु समाप्त हो चली
हो; कमजोर; बेजान।

गतार, गतारि-खी० बोझ बांधनेकी रस्सी; जूटें बैलकी
गरदन बांधनेकी रस्सी।

गतार्तवा-खी० [सं०] वह खी जो ऋतुमयी न होती हो,
मुटिया।

गतार्थ-वि० [सं०] अर्थहीन; समझा हुआ; निर्धन।

गतालोक-वि० [सं०] आलोकहित, महत्त्वहीन।

गतानु-वि० [सं०] नृत।

गति-खी० [सं०] जाना, गमन; चाल, रफ्तार; हरकत;
छीला; पहुँच, प्रवेश; जाने-पहुँचनेकी सामर्थ्यकी सीमा;
दशा, हालत; स्थिति; रूप-रंग; धृष्टिके बाद जीवात्माकी
मही-नुरी दशा; सद्गति; मार्ग; प्रद्वीकी चाल; नाथर;
ज्ञान; उपाय; अवलंब, सहारा; साधन; प्रवाह; नृत्य;
पैतरा; दे० 'गत'। -अंग-अद्-पु० छट, गान आदिमें
पढ़ने, गानेकी लयका टूट जाना। -विज्ञान-पु०, -विद्या
-खी०, -शास्त्र-पु० विज्ञानका वह विभाग जिसमें द्रव्या-
दिकी गति और शक्ति-संबंधी सिद्धांतोंका निधारण किया
जाता है, 'हायनामिस्व'। -विधि-खी० चेष्टा, हरकत;
कार्य (क०)। -शील-वि० गतिमान्। -हीन-वि०

असहाय, परित्यक्त; गतिरहित।

गतिक-पु० [सं०] गमन, चाल; मार्ग; अवस्था; आश्रय।

गतिमान्(अत्)-वि० [सं०] गतियुक्त, हरकत करनेवाला।

गतिछा-खी० [सं०] परस्पर अभेद होना; एक नदी;
एक पोषा।

गसा-पु० एक तरहकी घटिया द्रव्य।

गसालखाता-पु० बट्ठाखाता।

गस्य-पु० दे० 'गस'।

गस्य-वि० [सं०] जाता हुआ; गतिमान्; नाशमान।

गस-पु० बूँजी, जमा; माल-तुम्हरो गस लादो गयंदपर
हींग मिरिच पीपरि कह गावति-सूर०; धन; झुंड।

गसना-सं० क्रि० जोड़ना, एक साथ बांधना; गदकर
बाँटें करना।

गद्-पु० किसी नरम चीजपर कड़ी या कड़ी चीजपर नरम
चीजके गिरनेकी आवाज; [सं०] रोम; एक विष; माषण;
अक्षय माषण, मेघध्वनि; बलरामका छोटा भाई; एक अक्षुर;
रामकी बानरी सेनाका एक नायक। -खाम-पु०-[हिं०]
हाथीकी पीठपर घाब हो जाना। -हा(हन्)-पु० बैध;
दे० क्रममें।

गद्-पु० स्थूला, भोटापन (रतन०)।

गद्का-पु० दे० 'गतका'।

गद्कारा-वि० गुलगुला, नरम। [खी० 'गदकारी'।]

गद्गद्-वि० दे० 'गद्गद्'।

गद्ग-पु० [सं०] कथन, वर्णन।

गद्गा-सं० क्रि० कहना, बोलना।

गद्गद्गा-वि० मुलायम, कोमल।

गद्गर्-पु० नाव बनाते वा उसकी भरम्मत करते समय
उने उठाने रखनेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी,
बाम।

गद्विलु-वि० [सं०] बाचाला; कामी। पु० कामदेव।

गद्वर-पु० ठाकुर जीकी पहनायी जानेवाली रुईदार बगलारी।

गद्वर-पु० [अ०] विप्लव, बगावन, विद्रोह।

गद्वरा-वि० गद्वराया हुआ, अपघका।

गद्वराना-अ० क्रि० एकनेपर होना, धौनगममें अंगोका
भरना, खिलना, ओसमें कीचड़ आना, आल दुसने
आना। * वि० गद्वराया हुआ।

गद्वला-वि० मैला, मिट्टी वा कीचड़ मिला हुआ (पानी)।

गद्वलाना-अ० क्रि० गद्वला होना। सं० क्रि० मैला करना।

गद्वह-गद्वह'का समासमें व्युद्भूत रूप। -पचीसी-
खी० १६ मे २५ बरसतकड़ी अवस्था, मस्ती और नासमझीके
दिन। -पच-पु० मूर्खता। -छोट-पु० कुञ्चीका एक
पंच। -छोटन-पु० थकान मिटानेके लिए गंधेका घूलमें
लोटाया; वह जगह जहाँ गंधेके छोटनेका निशान हो।

गद्वहूरमा-खी० एक पोषा जो दबाके काम आता है,
गुननवा।

गद्वहूर-पु० गषा; गधा।

गद्वहा-पु० दे० 'गषा'।

गद्वहिला-पु० वह गषा जिसपर हंड आदि लादते हैं;
गोवकीरे जैसा एक विपैका कीड़ा।

गद्वतक-पु० [सं०] अधिनीकुमार।

गदांबर-पु० [सं०] बादल ।

गदा-खी० [सं०] लोहेका बना एक पुराना हथियार जिसके एक सिरेपर नोकदार बड़ा लट्टू लगा होना था, दुर्ग; भौंसके दंड़ेमें पहनाया हुआ पत्थरका गोला जिसे मुद्गरकी तरह भोजते हैं । -बर-वि० गदा बाण करनेवाला । पु० विष्णु । -बुद्ध-पु० गदाकी लकड़ी ।

गदा-पु० [फा०] भिखारी, भैया । वि० रंक, निर्धन ।

-हँ, -गरी-खी० भिक्षावृत्ति ।

गदाई-खी० दे० 'गदा' । † वि० तुच्छ, निकम्मा, रही ।

गदाकां-पु० किसीकी उठाकर जमीनपर दे मारना ।

वि० मुड़ौल शरीरवाला ।

गदाख्य-पु० [सं०] कुष्ठ ।

गदागद्-अ० एकपर एक, लगातार (आघात करना) ।

पु० [सं०] अधिभोग्य ।

गदाग्रज-पु० [सं०] कृष्ण ।

गदाग्रणी-पु० [सं०] क्षत्र, यक्ष्मा ।

गदाराति-पु० [सं०] औषध ।

गदाख्य-पु० हाथीकी पीठपर कसा जानेवाला गद्दा ।

गदाह, गदाह्वय-पु० [सं०] कुष्ठ ।

गदि-खी० [सं०] कवन, भाषण ।

गदित-वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त ।

गदी(दिङ्)-वि० [सं०] गदाधारी; रोमी । पु० विष्णु ।

गदेला-पु० गद्दा, * लड़का, बालक-‘फिरे मुलकमें मुगल गदेले’-छत्र ।

गदेकी†-खी० हथेली-‘लाखीने हाथकी गदेली पसार दी’-सृग०; लखवी ।

गद्व-वि० [सं०] हर्ष, प्रेम आदिके अतिरेकसे जिसका गला भर आया हो, जिसके मुहसे स्पष्ट शब्द न निकलते हों, पुलकित; आनंदित । पु० हकलाना । -कंठ-पु० हर्षादिमें भरा हुआ गला । -स्वर-पु० अस्पष्ट स्वर ।

गद्वदिका-खी० [सं०] हकलाहट ।

गद्व-पु० मुलायम जगहपर किसी चीजके गिरनेका शब्द; जल्द न पचनेवाली चीज खानेके कारण पेटका भारी होना; एक कल्पित लकड़ी जिसके स्पर्शसे लोगोंका वशमें हो जाना माना जाता है । वि० मूर्ख ।

गद्वर्मा-पु० एक छोटी पिडिया ।

गद्वर्त-वि० अधपका । पु० मोटा गद्दा ।

गद्दा-पु० भारी, मोटा तोशक; टाटकी बनी मोटी गद्दी जिसे हाथीकी पीठपर रखकर होजा कसते हैं; गद्विद्या; मुलायम चीजोंका बोझ; किसी मुलायम चीजकी मार ।

गद्दी-खी० छोटा गद्दा जिसपर दुकानदार, साहूकार बैठता है; अधिक सम्मानित व्यक्तिके बैठनेके लिए लगाया हुआ आसन; राजा, मठाधीश आदिका पद्म; कई भरा हुआ कपड़ा जो जीन या काठीके नीचे रखने हैं; कई तरह किया हुआ कपड़ा जो घाव आदिपर रखते हैं । -नशी-वि० गदीपर बैठा हुआ; सिंहासनासीन । -नशीनी-खी० गदीपर बैठना । मु०-बलना-बंशपरंपरा वा शिष्यपरंपरा जारी रहना । -पर बैठना-राजगद्दीपर बैठना ।

गद्य-पु० [सं०] वह रचना जो छंदोबद्ध न हो, वार्तिक, पद्यका उलटा, नल । वि० कथनीय, कहने योग्य ।

-काव्य-पु० गद्यमें की गयी काव्यके गुणोंसे युक्त रचना । -पद्य-पु० वह रचना जिसमें गद्य और पद्य दोनों हों ।

गद्यालक, गद्यानक, गद्यालक-पु० [सं०] एक प्राचीन तोल ।

गद्या-पु० घोड़ेकी नातिका एक चौपाया जो अधिकतर शीघ्र लादनेके लिए पाला जाता है, खर, रातम । वि० नासमझ, मूर्ख, अहमक (ला०) । -पन-पु० मूर्खता, नासमझी । मु०-पीटे बोझ नहीं होता-मूर्ख भिखानेसे समझदार, कमीना समझानेसे भला आदमी नहीं हो सकता ।

-(वे)को बाप बनाना-काम निकालनेके लिए मूर्खकी खुशामद करना । -पर चढ़ाना-जलील, बेरज्जत करना । -से हल चलावाना-खुदवाकर जमीनको बराबर करा देना, बिलकुल उजाड़ देना ।

गधी-खी० गधेकी मादा ।

गधीला-पु० एक जगली नाति ।

गधूला†-पु० एक फूल ।

गन-पु० दे० ‘गण’ । -नायक, -पति-पु० दे० ‘गण नायक’, ‘गणपति’ । -घ-पु० दे० ‘गणप’ । -राघ-पु० गणेश ।

गनक-पु० दे० ‘गणक’ ।

गनकेरुआ†-पु० एक घात ।

गनगाना-अ० कि० जाड़ेमें कौपना, रोमांच होना; दे० ‘गिनगिनाना’ ।

गनगौर-खी० चैत्र-शुक्ल तृतीया ।

गनती-खी० गिनती ।

गनना-अ० कि० गिनना । खी० दे० ‘गणना’ ।

गननाना-अ० कि० गूँजन; † धुमना, फिरना ।

गनाना-अ० कि० दे० ‘गिनाना’ । अ० कि० गिना जाना ।

गनाल-खी० एक तरहकी तोप ।

गनिका-खी० दे० ‘गणिका’ ।

गनिवारी-खी० एक झाड़ जिसकी लकड़ी रगड़नेमें आग निकलती है, छोटी अरनी ।

गनी-वि० दे० ‘सनी’ । खी० [अं०] पटमनका बना मोटा टाट जिसके रोरे, धैरे आदि बनते हैं । -बैंग-पु० बोरा ।

गनी-वि० [अं०] धनी, मालदार; बेपरवा; समुद्ध ।

गनीम-पु० [अं०] बाढ़, छुटेरा; दुश्मन ।

गनीमल-खी० [अं०] लट्का माल; मुपत्ता माल; बड़ी बात; सतोष करने योग्य बात (ज्ञानना, समझना, होना इत्यादि) ।

गनौरी-खी० नागरमोघा ।

गन्ना-पु० ईल ।

गन्नी-खी० दे० ‘गनी’ [अं०] ।

गप-पु० गिगलने, गपकनेकी क्रिया । खी० शर-उभरकी बातें, निष्प्रयोजन बातें; मनबहलावके लिए की जानेवाली बातचीत; झूठी बात; झूठी खबर; झूग । -खप-खी० शर-उभरकी बातचीत; मनबहलावकी बातचीत । मु०-उबना-झूठी खबर फैलना । -मारना, -हॉकना-झींग मारना; लकी-चौकी बातें करना, बकवास करना ।

-छवावा-गणपत करना ।

गणकना-सं किं निपक लेना, छटसे खा लेना; * छूट कटना ।

गणकचौध-पुं गणक, मोक्षमाल; देकारकी बकवास, गप । वि० ऊपरटोंग, जंबुदंड ।

गपना-सं किं गप मारना ।

गपागप-अ० जल्दी-जल्दी ।

गपिया-वि० गप मारनेवाला ।

गपिहा-वि० गप्यी ।

गपोह, गपोहिया-वि० गप मारनेवाला ।

गपोहा-पुं गप । -(हे)बाग्री-खीं छूटी बकवास ।

गप्प-खीं दे० 'गप' ।

गप्पी-वि० गप हाँकनेवाला ।

गप्पा-पुं बड़ा प्रास; नफा, लाभ ।

गफ-वि० ठस, घना (घुना हुआ), 'हीना'का उलटा ।

गफकत-खीं [अ०] भूक; असावधानता, बेखबरी ।-क्री

जीव-बेखबरीको, गादी नीह ।

गफिलाई-खीं गफलत ।

गफर-वि० [अ०] क्षमा करनेवाला, दयालु ।

गफकार-वि० [अ०] बड़ा क्षमाशील । पु० ईश्वर ।

गबकी-खीं कबजु ।

गबजुगी-खीं कबजु ।

गबह-वि० मूर्ख, जकमति ।

गबन-पुं [अ०] अमानतकी रकम खा जाना, खवानत ।

गबर-पुं सब पालोंके ऊपर लगाया जानेवाला पाछ ।

गबरगंड-वि० मूर्ख, जकजुकि ।

गबरहा-वि० गोबर मिला या लगा हुआ ।

गबराह-वि० दे० 'गम्बर' ।

गबक-वि० नौजवान, जिसकी देख भिन रही हो; भोला-भाजा । † पु० दूहा ।

गबरून-पुं एक तरहका मोटा चारखाना ।

गबी-वि० [अ०] मंदबुद्धि, कुंदजेहन ।

गब्बर-वि० पर्मबी; हठी; धनी; मट्टर, मुन्त ।

गब्बा-पुं गदा, तोशक ।

गब्ब-पुं [फा०] भारती, अभिपूजक ।

गब-पुं [सं०] गप ।

गभक-वि० गिप ।

गभसि-पुं [सं०] किरण; सूर्य; हाथ । खीं अभिगी पत्नी खाहा । -कर, -पाणि, -माकी (लिन्), -इस्त-पुं

सूर्य । -मेमि-पुं विष्णु ।

गभस्तिमान् (मन्)-वि० [सं०] चमकवाला । पु० सूर्य; पातालका एक विभाग; भारतका एक खंड ।

गभीर-वि० [सं०] दे० 'गंभीर' ।

गभीरिका-खीं [सं०] बड़ा ढोल ।

गभुआर, गभुआर-वि० पेटका, पैदाशी (किश); जिसका मुहन न हुआ हो; छोटा (बालक) ।

गभोछिक-पुं [सं०] छोटा गायतकिवा; मसर ।

गभ-खीं पहुँच, गुजर । पु० [सं०] गमन; सकल; राह; कूच, अभिवान; ऊपरवाही; बिना ध्यान दिने पटना; श्रीप्रसंग; पासे आदिका सेह । मु० -करना-खा

जाना ।

गभ-पुं [अ०] दुःख, शोक; मातम; चिंता; परवा ।

-झार-वि० सहनशील । -झारी-खीं सहनशीलता ।

-खीर-वि० दे० 'यमखवार' । -खीरी-खीं दे० 'यमखारी' । -झार-वि० दुःख बटानेवाला, हमदर्द;

सहनशील । -झारी-खीं हमदर्द; सहनशीलता ।

-गीन-वि० सिद्ध, उदासी । -गीनी-खीं सिद्धता, उदासी । -गुसार-वि० हमदर्द; दुःख बटानेवाला, दूसरे-

के दुःखसे दुःखी होनेवाला । -झाड़ा-वि० सिद्ध, दुःखी ।

-बाक-वि० दुःखभरा; दुःखर । मु० -खाना-क्षमा करना, सख लेना; दूसरेके दुःखसे दुःखी होना । -गलत

करना-दुःख देनेवाली बातको भूलना; जी बहलाना ।

गमक-खीं वास, मर्हक; गूँदनेकीसी आवाज । वि० [सं०] बोधक, सूचक । पु० गानेमें एक भुतिसे दूसरी भुतिपर जानेकी एक रीति ।

गमकना†-अ० किं मर्हकना; गूँदनेकीसी आवाज उत्पन्न होना; * उस्तादपूर्ण होना (भू०) ।

गमकीला†-वि० सुगंधित ।

गमत-पुं रास्ता; पैशा ।

गमथ-पुं [सं०] पथिक, मुसाफिर; रास्ता ।

गमन-पुं [सं०] जाना; पास जाना; चढ़ाई; विजययात्रा करना; संभोग करना ।

गमनना-अ० किं जाना ।

गमना, गमिना-अ० किं जाना; चलना; गम करना, ध्यान देना ।

गमनागमन-पुं [सं०] आना-जाना, वातायात ।

गमनीय-वि० [सं०] गमन करने योग्य, पास जाने योग्य; सुबोध; अभ्यास करने योग्य ।

गमला-पुं बाल्दी नेता मिट्टीका बरतन जिसमें फूलोंके पीछे लगाये जाते हैं; कमीड ।

गमागम-पुं [सं०] आना-जाना ।

गमावा-अ०-सं किं दे० 'गंवावा' ।

गमार-वि० दे० 'गंवार' ।

गमि-खीं दे० 'गम' (पहुँच)-'आम अगोबर गमि नहीं तहाँ जगमगै जोति'-साखी ।

गमी (मिन्)-वि० [सं०] जो जानेवाला हो । पु० पथिक ।

गमी-खीं मृत्युशोक, मातम; धरतु ।

गम्य-वि० [सं०] गमन करने, जाने योग्य; जिसके पास जाया जा सके; समझाने योग्य; बाध; कर्म्य; व्यंग्य (अर्थ) ।

गम्या-वि०, खीं [सं०] जिसके साथ सव्वास किया जा सके, संभोग्या ।

गम्य-पुं दोहेका एक अंश; * गजेंद्र, बड़ा हाथी ।

गभ-पुं [सं०] घर; धन; प्राण; आकाश; सतति, पुत्र; एक राजपिं जिनकी यक्षभूमिका नाम, महाभारतके अनुसार, गया पड़ा; एक अक्षर जिसको ब्रह्मा, विष्णु आदिने मिला हुआ बरदान गयाके तीर्थस्थ और माहात्म्यका कारण हुआ । -सिर(स्)-पुं गयाके पासका एक पर्वत; गया; पश्चिमी क्षितिज ।

गभ-पुं गज; हाथी । -माछ-खीं दे० 'गजनाल' ।

गभक-खीं गभी; रास्ता ।

गया-खी० [सं०] मगधकी एक पुरी और प्रसिद्ध तीर्थस्नान जहाँ, बाणपुराणके अनुसार, विष्णुदान आदि करनेवालेकी एक हजार पीढ़ियाँ तर जाती है। -पुर-पु० गया। मु० -करना-गयामें जाकर पिबदान आदि करना।

गया-य० कि० 'जाना'का भूतकालिक रूप। वि० गया हुआ। [खी० 'गयी'।] -गुहरा-बीसा-वि० सराय; निकट; फटे हालवाला, बीन दशाकी प्रातः।

गयाबाक-पु० गयाका पैवा।

गरह-पु० बड़ी चक्कीके हर्द-गिर्द आटा गिरनेके लिए बना हुआ घेरा।

गरह-पु० प्रय, पुस्तक (१०)।

गर-पु० [सं०] एक कच्चा पेय; विष; रोग; निगलना; ११ करणोंमेंसे एक। -ग-वि० विष-नाशक; स्वास्थ्यकर।

-ह-वि० विष देनेवाला; अस्वास्थ्यकर। पु० विष; एक तरहका देशमी कपड़ा। -मिह-पु० शिव। -मल-पु० मयूर। -हा(हृह)-पु० बनतुलसी; समरी।

गर-प्र० [फा०] बनानेवाला। * पु० गला, गरदन। -माल-खी० चौड़े मुँहकी तोप, घननाद; † मंथलाकार भारी लोहा या पत्थर जिसे गलेमें डालकर बैठक लगाते हैं। -हर-पु० नटखट चौपायोंके गलेमें बाँधा जानेवाला टेंगा।

गरहू-खी० एक छोटी मछली।

गरह-वि० [अ०] हवा हुआ, निमग्न; नष्ट; लीन; तन्मय।

गरहाव-वि० [अ०] हवा हुआ। पु० हवनेभर पानी, हुआ।

गरहनी-खी० [अ०] वह जमीन जो पानीमें डूब जाय या हवी रहें; लेंगोदी; बाढ़; गराफी। वि० डूब जानेवाला।

मु०-आना-बाद आना; फमलका पानीमें डूब जाना।

गरगज-पु० किनेकी चहारदीवारीपरका बुज्ज जिमपर तोप चढ़ी रहती है; युद्ध-सामग्री रखनेके लिए बना हुआ टीला; नावके ऊपरकी छत; टिकड़ी।

गरहाव-वि० दे० 'गरहाव'।

गरज-खी० ऊँची, गंभीर आवाज; कक्ककर बोलनेकी आवाज; मेघध्वनि; शेरकी दहाड़।

गरज-खी० [अ०] मतलब, प्रयोजन; चाह, जरूरत।

-मंद-वि० गरज रखनेवाला, अर्था। मु०-का आसना-मतलबका दोस्त। -का बाबल-अपनी गरज निका-रनेके लिए सब कुछ करनेकी तैयारी। -कि-मतलब यह कि, खुलासा यह कि। -बापकी होती है-गरजमंद आदमी सब कुछ करनेकी तैयार होता है, अले-भुरेका विचार नहीं रख सकता।

गरजन-पु० दे० 'गरजन'।

गरजना-अ० कि० जोरसे कक्ककर बोलना; बादलोंका मगगड़ाना; शेरका दहाड़ना; तपकना। † वि० गर्जन करनेवाला।

गरजनी-वि० गरजमंद।

गरजुआ-पु० एक तरहकी सुनी।

गरजू-वि० दे० 'गरजी'।

गरह-पु० झुंड।

गरज-पु० [सं०] निगलना; छिपकना; विष।

गरह-खी० दे० 'गरह'। वि०, पु० [सं०] दे० 'गरह'।

गरह-खी० [फा०] गला, ग्रीवा; घड़े, सुराही आदिका मुँहके नीचेका तंग, कंभीतर भाग। -बुमाव-पु० कुरती-का एक पैच। -जानी-खी० कतल करना। -तोह-पु० कुश्तीका एक पैच। -बुलार-पु० एक संतामक, सांघातिक रोग। -बंद-पु० गलेमें पहननेका एक गहना, गुलबंद। -बाँह-पु० कुश्तीका एक पैच। मु०-उठना-विरोध करना। -उठाना-सिर धक्के अलग कर देना, कतल करना। -पुँदी रहना-घमंडमें खुर या नाराज रहना। -काटना-गला काटना; भारी अहित करना। -छुकना-अधीन होना; लजित होना; बेहोश होना। -न उठना-लजित होना; बीमारीसे पड़े रहना; सब कुछ सह लेना। -आपना-थके देकर निकास बाहर करना; बैरखती करना। -पर छुरी फैरना-हलाल करना; भारी जुलूम, अन्याय करना। -पर उठा रहना-भारी काम सुपुर्द करना। -पर होना-ऊपर होना, जिम्मेदार होना (हत्या, पाप)। -कैसना-बचये होना। -अरोचना-मार डालना। -मारना-सिर काटना, बध करना। -में हाथ देना-गरदनियाँ देना; बैरखत करना।

गरदना-पु० गरदन; गरदनपर लगाया जानेवाला झडका।

गरदनियाँ-खी० निकाल बाहर करनेके लिए किसीके गले-में हाथ लगाया, अर्द्धचंद्र (देना)।

गरदनी-खी० बोझकी गरदन और पीठपर उढ़ाया जाने-वाला एक कपड़ा; गलेमें पहननेका एक गहना; गरदान; कारनिस; गरदनियाँ; गरदनपर लगाया जानेवाला वस्त्र।

गरदा-पु० दे० 'गर्द'।

गरदान-वि० [फा०] जो हिर-फिरकर अपनी जगहपर लोट आये। पु० वह कदतर जो घूम-फिरकर अपने अङ्गुपर लोट आये। खी० शब्दोंका रूपसाधन (भ्या०); कुरानकी आधुपि।

गरदानना-स० कि० गरदान करना, शब्दोंके रूप साधना; दुहराना; कल्ल करना, मानना; समझाना।

गरदिया-खी० दे० 'गरिद'।

गरदुआ-पु० पशुओंकी होनेवाला एक तरहका ज्वर।

गरना-अ० कि० निचोड़ा जाना; निचुड़ना; * दे० 'गलना'; टपकना, गिरना-'जबने बिछुरे कमल नयन सखि रहत न नयन नीरकी गरिशो'-सुरा; दे० 'गड़ना'।

गरब-पु० दे० 'गर्ब'; हाथीका मड़। -गहेला-वि० गरबीला, घमंडी।

गरबहू-खी० गर्व, घमंड।

गरबना, गरबाना-अ० कि० गर्व करना।

गरबा-पु० एक तरहका गुजराती नाच।

गरबाहीँ-खी० दे० 'गलबाहीँ' ('गल'के साथ)।

गरबित-वि० दे० 'गर्बित'।

गरबीला-वि० घमंडी, गर्वयुक्त।

गरब-पु० दे० 'गर्ब'; [सं०] दे० 'गर्भ'। -दाव-पु० ऋतुदान।

गरभाना-अ० कि० गर्भ धारण करना; पौधोंमें बाक लगना।

गरमी-वि० बर्मेडी ।

गरम्-वि० बि० छूनेमें उष्णता या तापका अनुभव हो; ऊँचे तापक्रमवाला, जलता हुआ; तेज, तीखा; क्रुद्ध; क्षीमे उत्तेजित हो जानेवाला (बून्, मित्राज); जोशीला; क्रमही करनेवाला, उष्णवीर्य । -कपड़ा-पु० जाड़ेमें पहनने-का कपड़ा, ऊनी या रेशेदार कपड़ा । -खबर-खी० वह खबर जिसकी बहुत चर्चा हो । -झाना, -घर-पु० वह भूकान जिसमें गाजुक पीछे जाके दिनोंमें रहे जावें । -चोट-खी० तुरतकी, तामा चोट । -मसाखा-पु० पतियाँ, भिच, लौग, हलायची हलादि वा इनका चूर्ण । -मिजाज-वि० जल्दी क्रुद्ध हो जानेवाला; तैले स्वभाव-का । मु०-(ब)सर्व उठाना, देवना, सहना-दुनिया-का मला-पुरा, दुःख-सुख देख लेना, दुनियाका अनुभव प्राप्त करना । -होना-क्रुद्ध होना ।

गरमागर्म-वि० तुरतका पका हुआ, तत्ता, ताजा; जिसमें गरमी या उज्जना हो (गरमागर्म बहस) ।

गरमागरमी-खी० जोश, सरगमी; (दो आदमियों या पक्षियों) उत्तेजित हो जाना, गुस्सेमें आ जाना ।

गरमाना-अ० क्रि० गरमाइत अनुभव करना; गरम होना; मस्तीपर आना; क्रुद्ध होना । † स० क्रि० गरम करना ।

गरमाइत-खी० गरमी, उष्णता ।

गरमी-खी० गरम होनेका भाव, उष्णता; इरादत; तेजी; क्रोध; आवेश; जोश, उमंग; प्रीति कृतु; गर्व, बर्मेडी; उप-दंश रोग, आतंकक; हाथी-घोंसला एक रोग । -दाना-पु० जम्बीरी । मु०-निकलना, -पचना-बर्मेडी चूर हो जाना, पेट ढीली हो जाना ।

गररा-पु० दे० 'गरी' ।

गरराना-अ० क्रि० गरजना, गंभीर ध्वनि करना; जोशमें आना ।

गरसी-खी० एक बिबिया, सितोही ।

गरल-पु० [सं०] जहर, विष; सर्पविष; पास्ता पूला; एक माप । -घर-पु० साँप; सिन । -अत-पु० मयूर ।

गरकारि-पु० [सं०] पन्ना ।

गरकी (सिन)-वि० [सं०] जहरीला, विषयुक्त ।

गरबा-वि० दे० 'गर्भा' । पु० गला ।

गरबी-वि०, खी० गर्बी ।

गरबी-पु० दे० 'ग्रह' । मु०-कटना-अरिष्ट दूर होना, विपत्ति टलना ।

गरहन-पु० दे० 'ग्रहण' ।

गरहूँचा-पु० कौबिडा ।

गरी-वि० [फा०] भारी, बजनी; महेगा; कठिन; अभिष, नागना । -कट्टा-वि० बड़े मरतवेवाला, सम्मानित ।

-क्रीमत-वि० बहुमूल्य । -झातिर-वि० दूसर लगने-वाला, अभिष; अमसब । -बार-वि० बोझसे लदा हुआ ।

मु०-गुजरना-भारी होना; नागवार होना ।

गरीहील-वि० लंघा-तर्ंगा, ऊँचे करका ।

गरीबा-पु० फंदेदार रस्सी जो बेल आदिके गलेमें पहनायी जाती है ।

गरा-खी० [सं०] देववाली लता ।

गरागरी-खी० [सं०] देवताइ ।

गराख-पु० मोटरखाना, 'गैरेज' । *खी० गर्जन ।

गरापी-खी० करछी, फिरनी; रंगबरे पकी हुई लकीर ।

गराबिका-खी० [सं०] लाखका कीड़ा; लाखका रंग ।

गराना-अ० क्रि० गलाना; निकोबना ।

गरामि, गरामी-खी० क्वालि ।

गरामी-खी० भारीपन; महेगा; पेटका भारी होना, अजीर्ण ।

गरामी-वि० [फा०] सम्मानित; पूज्य, हुजुर्ग । -नामा-पु० पूज्य पुरुष (गुरु, पिता आदि)का पत्र ।

गरारा-वि० बर्मेडी; उद्वत ।

गरारा-पु० [अ०] गलेमें पानी लेकर 'गरगर' आवाजके साथ कुली करना; कुली करनेकी दवा; पानामेकी ढीली मोहरी; शामियानेके चौका गिलाफ । - (रे)गार-वि० ढीली मोहरीका (पाजामा) ।

गराख-पु० दे० 'ग्रास' ।

गरासना-अ० क्रि० प्रसना; निगलना; कट देना ।

गरिका-खी० [सं०] नारियलकी गरी ।

गरिब-वि० [सं०] विषाक्त ।

गरिमा (ग्रन्)-खी० [सं०] गुरुता, भारीपन; गौरव, महत्त्व; गर्व; आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिससे अपना देह-भार चाहे जितना बढ़ाया जा सकता है ।

गरिमाना-अ० क्रि० गाली देना ।

गरिबार, गरियाल-वि० अविश्व, मट्टर (बैल); लुप्त ।

गरियाल-पु० एक तरहका काला-नीला रंग ।

गरिह-वि० [सं०] सबसे भारी; सबसे सम्मानित; बहुत कसा, दुष्पाच्य (भोजन); सबसे खराब ।

गरी-खी० नारियलका मगज, खोपर; गोजका मगज, गिरी; [सं०] देवताइ ।

गरीब-वि० [अ०] परदेसी; मुमाफिर; अनोखा; निर्धन, मुफलिस; दीन-हीन । -झाना-पु० दीनकी कुटिया (नम्रतावश अपने घरको कहते हैं) । -गुरबा-पु० दीन-दरिद्र, गरीब लोग । -निबाइ-वि० दीनपर दया, अनु-ग्रह करनेवाला, दीनदयालु । -परवर-वि० गरीबोंका पालन करनेवाला ।

गरीबान-पु० [फा०] अंगरवे, कुरते आदिका वह भाग जो गलेके नीचे और छातीके ऊपर रहता है । -गरीर-वि० दावेदार, अभियोक्ता । मु०-पाक करना, -फाड़ना-उन्मादमें कपड़े फाड़ना; पागल होना । -में मुँह ढाकना-लज्जित होना; अपराध स्वीकार करना । -में सिर ढाकना-लज्जित होना, लज्जाने मुँह छिपाना । गरीबाना-वि० निर्धनोचित । अ० निर्धनोचित रूपमें, गरीबी उँगने ।

गरीबामऊ-वि० गरीबके योग्य, निर्धनोचित ।

गरीबी-खी० [अ०] निर्धनता, मुफलिसी; दीनता ।

गरु-वि० भारी, बजनदार; गंभीर, शांत ।

गरुज, गरुजा-वि० बजनदार; गौरवयुक्त । [खी० 'गर्भ'] । - (आ)ई-खी० भारीपन, गुरुत्व ।

गरुमाना-अ० क्रि० भारी वा बजनदार होना ।

गरुह-पु० [सं०] विनताके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र जो पक्षिराज और विष्णुके बाहन माने जाते हैं; ऊकाव; ढंकी

गरदनवाला एक पक्षी जो मछलियों पर कब्जा करता है; गरुडवाक्य-वीर्य के बोधा, आगे-पीछे नीकदार प्रासाद; वीर्यवर्धक; एक प्रकारकी व्यूहवचना; एक वृत्त; नृत्यका एक स्तानक।-केतु-पुं कृष्ण।-गामी- (मिन्)-पुं विष्णु।-बंटा-पुं वह बंटा जिसपर गरुडकी प्रतिमा बनी हो।-बज्ज-पुं विष्णु; वह खंभा जिसमें ऊपर गरुडकी मूर्ति बनी होती है; गुप्त सम्राटोंका राजविह।-पक्ष-पुं नृत्यमें एक विशेष भाव।-पाश-पुं पुराने समयमें आवुधरूपमें व्यवहृत एक तरहका फंदा।-पुराण-पुं अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें नरकीका वर्णन, प्रेतकर्मका विधान आदि है।-च्युत-पुं नृत्यमें एक प्रकारका भाव।-जक्ष-पुं प्राचीन कालका एक गरुडोपासक संप्रदाय।-मंत्र-पुं एक विषमकारक मंत्र जिसके देवता गरुड हैं।-हस्त-पुं वृत्तविशेष।-व्यूह-पुं वह व्यूह या सैन्य-वचना जिसमें सेनाका मध्यभाग चौड़ा और अगला-पिछला मांग पतला हो।

गरुडांक-पुं [सं०] विष्णु।
गरुडांकिल-पुं [सं०] दे० 'गरुडास्मा'।
गरुडाग्रज-पुं [सं०] सूर्यका मारथि अरुण।
गरुडास्मा (इमन्)-पुं [म०] पक्षा।
गरुता-क-खी० दे० 'गुरुता'।
गरु-पुं [सं०] पक्षा; निगलना, मक्षण।
गरुमाव् (मव्)-पुं [सं०] पक्षी; गरुड; अग्नि।
गरुड-पुं [सं०] गरुड।
गरुडाई-क-खी० दे० 'गरुडा'।
गरु-क-वि० गुरु, भारी; बड़ा।
गरु-पुं [अ०] गर्व, घमंड।
गरुत-क-खी० गरुत होनेका भाव।
गरुताई-क-खी० मरती; घमंड।
गरुता-क-वि० मगरुत; मगबाला।
गरुती-क-वि० घमंडी, मगरुत।
गरुवान-पुं [फा०] दे० 'गरोवान'।
गरुवान-क-सं० कि० घेरना, मुहासिरा करना; रोकना।
गरुवा-क-पुं घेरा। वि० घुमावदार।
गरुवी-क-खी० चरखी, घिरनी; गंहेरी। * वि०, खी० 'घुमावदार, चक्रदार'।
गरी-क-वि०, खी० टेढ़ी-सोढ़ी घुमान गुमान गरी-क-वन०।
गरेली-क-खी० दे० 'गरेरी'।
गरी-क-पुं दे० 'गरी'।
गरोह-पुं [फा०] समूह, जमान, दल, हुंकर।-बंड़ी-क-खी० दलबंदी।
गर्-क-वि० [सं०] एक मंत्रकार कवि; ब्रह्माका एक मानस पुत्र; एक प्राचीन ज्योतिषी; बैल, साँक; कैंतुआ; एक ताल।-त्रिरात्र-पुं एक योग।
गर्गर-पुं [सं०] अँबर; वैदिककालका एक राजा; दही मथनेका मटका; एक तरहकी मछली।
गर्गरी-क-खी० [सं०] घडा; कलसी; मथानी; दहेरी।
गर्ग-पुं [सं०] हाथीका चित्रारुना; बादलोंका गरजन;

गर्जन; (विष्वाकटा हुआ) हाथी।
गर्ग-क-खी० दे० 'गर्ग'।
गर्जक-पुं [सं०] एक तरहकी मछली।
गर्जन-पुं [सं०] गरजनेकी क्रिया, गरजना; गरजनेकी आवाज; बादलोंकी गरगगाहट; गर्भीर ध्वनि; गुंफत; गुंफ; फटकार, मरतना।-तर्जन-पुं गरज-तकप; अँटना-धमकाना।
गर्जक-क-खी० [सं०] गर्जन।
गर्जर-पुं [सं०] गाजर।
गर्जा-क-खी० [सं०] बादलोंका गर्जन।-फर-पुं विरंठक, जवाब; मुक; मरतना।
गर्जि-क-खी० [सं०] बादलोंका गर्जन।
गर्जित-वि० [सं०] गरजा हुआ। पुं बादलोंका गर्जन; मद्रवाला हाथी।
गर्त-पुं [सं०] गढ़ा, खड्ड; बिल; नहर; कम; समाधि; कटिवात; एक रोग; त्रिगर्त देशका एक भाग।
गर्तकी, गर्तिका-क-खी० [सं०] तंतुशाण, जुलाहेका बर।
गर्त-क-खी० [सं०] बिल; गुफा।
गर्ताग्रज-पुं [सं०] बिलमें रहनेवाला जंतु (बूढ़ा, खरगोश आदि)।
गर्द-वि० [सं०] चिहानेवाला। खी० [फा०] धूल, राख। वि० धूमनेवाला, मटकनेवाला (केवल समासमें-'आवारा-गर्द', 'जहाँगर्द')।-ग्राह-पुं-खी०-वि० धूलकी जम्ब कर लेनेवाला, जल्दी मैदान होनेवाला। पुं दरवाजेके सामने फेर पीछनेके लिए बिछाया हुआ नारियल आदिकी चढाई, पार्श्वदाज, पागोश।-अर्ग-पुं एक तरहका गीता।-(क) गुहार-पुं लाक-धूल; धूल-धक्क। मु०-क-वि० न पहुँचना; न छू सकना-बराबरी न कर सकना।
गर्दनाक्ष-पुं [सं०] कुमुद।
गर्द-पुं [सं०] घषा; सफेद कुर्द; गध।-गद-पुं एक चर्मरोग।-घाव-पुं मध्यचर्ममें च्युत होनेके पापके प्राथमिकरूपमें किया जानेवाला बहविशेष।-हाक-पुं-शाखा;-शाखी-क-खी० भारगी; मध्यविधि।
गर्दमक-पुं [सं०] एक कीड़ा, गुनरैला; एक चर्मरोग।
गर्दमोह-पुं [सं०] पाकड़; पीपड़।
गर्दमिका-क-खी० [सं०] एक चर्मरोग।
गर्दमी-क-खी० [सं०] गंधी; गर्दमिका रोग; एक कीड़ा, गुनरैला।
गर्दभाह-वि० [फा०] धूलसे भरा हुआ; उजाड़, बीरान।
गर्दो-पुं आन्ध्र नुसारा।
गर्दो-क-खी० [फा०] घुमान, फेरा; चक्र; परिभ्रमण; गति; परिवर्तन; दिनका फेर, विपत।-(से) जमाना-क-खी० दिनका फेर, हुंकाय।
गर्दो-पुं दे० 'गरदुआ'।
गर्द-पुं [फा०] आकाश; गार्गी, रथ।
गर्द-पुं [सं०] बच्छा; औसुध; लालच।
गर्दक, गर्दित-वि० [सं०] लालची।
गर्दी (विन्)-वि० [सं०] चाहनेवाला; लोभी।
गर्दाक-क-खी० दे० 'गरनाक'।
गर्द-पुं दे० 'गर्द'।

गर्भीका-वि० धर्मही ।

गर्भक-पु० [सं०] नामिकी दृष्टि; अन्तिकी तरह उभरी हुई नाभि ।

गर्भ-पु० [सं०] शुक्र-रिक्तके संयोगसे उत्पन्न मांस-पिच, गर्भाशयमें स्थित बच्चा या भ्रूण, हसल; कोख, गर्भाशय; गर्भाधानकाळ; किसी वस्तुका भीतरी, मध्यवर्ती भाग; विल; नदीका पैदा; फल; आहार; सूर्य-किरणों द्वारा कोषित और आकाशमें संचित वाष्प-राशि; घर-भंदिरका भीतरी, केंद्रवर्ती भाग; अन्न; अधि; नाटककी ५ प्रकारकी संविधो-मेंसे एक; कटहलका कंदीला छिलका; संयोग; पक्षकोश ।

-कर-वि० गर्भ धारण करनेवाला । पु० पुत्रजीव वृक्ष ।

-कारी(रिन्)-वि० गर्भधारण करनेवाला । -काळ-पु० कृतकाल, गर्भ धारणका समय । -केसर-पु० कूल्के दूत जैसे देते जो गर्भनालके अंदर होते हैं । -कोषा,-

-कोष-पु० गर्भाशय, बच्चादानी । -क्लेष्ट-पु० प्रसव-पीडा । -क्षय-पु० गर्भपात । -गुर्मी-वि०, स्त्री

गमिणी । -गृह-पु० घरके बीचोबीचका कमरा, घरका मध्य भाग; मंदिरकी वह कोठरी जिसमें मुख्य देवताकी प्रतिमा हो । -ग्रन्थ-पु० गर्भधारण । -ग्राहिक-स्त्री० धानी, 'मिद्वारक' । -घातिनी-स्त्री० लंगलिका वृक्ष ।

-घाती(तिन्)-वि० गर्भपात करनेकरानेवाला ।

-क्लन-पु० गर्भाशयमें बच्चेका हिलना-खोलना ।

-च्युति-स्त्री० प्रसव; गर्भपात । -ज,-आज-वि० जन्मका, पैदाइशी । -ह-वि० गर्भ देनेवाला । पु० पुत्र-जीव वृक्ष । -हा,-हात्री-स्त्री० सफेद भटकटैया । -दास-पु० पैदाइशी शुलभ, जन्मका दास । -दिबस-पु० गर्भकाल । -हुद्(ह)-वि० गर्भाधान न चाहनेवाला; गर्भपात करनेवाला । -हुहा-वि०, स्त्री० गर्भधारणकी विरोधिनी (स्त्री) । -जरा-वि०, स्त्री० गर्भवती । -चारण-पु० गर्भवती होना, हसल रहना । -जात्री-स्त्री० नाभि-रज्जु । -नाल-स्त्री० कूल्के भीतरकी पतली नाली जिसके सिरेपर गर्भकेसर होता है । -पञ्च-पु० कोपल; कूल्के अंदरके पत्ते । -पाकी(किन्)-पु० साठी धान । -पात-पु० गर्भका गिर जाना, चौथे महीनेके बादके गर्भका गिरना । -पातक-वि० गर्भपात करनेवाला । पु० लाल सहजन । -पातन-वि० गर्भपातकारी । पु० रीठा । -पातिनी-स्त्री० करियारी; विशाल्या । -अन्न-पु० गर्भगृह; सौरी । -अक्षय-पु० शयनागार; गर्भगृह । -मास-पु० वह महीना जिसमें गर्भ रहे । -मोक्ष-पु० बच्चेकी पैदाइश । -छक्षण-पु० गर्भके चिह्न । -वध-पु० ब्रूहत्या । -वास-पु० (बच्चेका) गर्भके भीतर रहना; कोख, गर्भाशय । -व्याकरण-पु० गर्भकी उत्पत्ति और दृष्टि; (सूरी) आयुर्वेदका वह अंग जिसमें इनका वर्णन हो । -व्यूह-पु० एक व्यूह या सैन्य-रचना जिसमें सेना कमलके आकारमें खोकी गयी जाती है । -शंकु-पु० एक तरहकी सेंकरी जिससे मरा हुआ बच्चा पेटसे निकाला जाता है । -शब्दा-स्त्री० गर्भाशय । -संधि-स्त्री० नाट्यशास्त्रमें कथित शब्द प्रकारकी संविधोमेंसे एक-पूर्वसंविधोमें कुछ-कुछ प्रकट हुए फलप्रधान उपायका जहाँ हास और अभ्येक्षणसे युक्त बार-बार विकास हो ।

-स्थ-वि० गर्भमें स्थित । -स्नाय-पु० गर्भपात, बार महीनेतकके गर्भका गिर जाना । -स्नापी(विन्)-वि० गर्भपात करनेवाला । पु० हिताल वृक्ष । -हत्या-स्त्री० ब्रूहत्या ।

गर्भक-पु० [सं०] बालोंके बीच धारण की हुई माछा; दो रातों और उनके बीचके दिनका समय ।

गर्भवती-वि०, स्त्री० [सं०] गर्भवती, गमिणी, हामिका ।

गर्भाक-पु० [सं०] रूपकमें अंकके अन्तर्गत अंक या दृश्य-विशेष ।

गर्भागार-पु० [सं०] गर्भाशय; गर्भगृह; शयनागार; प्रयुतिगृह ।

गर्भादाय-पु० [सं०] गर्भ रहना, गर्भधारण; १९ संस्कारों मेंसे एक ।

गर्भादि-पु० [सं०] छोटी इलायची ।

गर्भासय-पु० [सं०] स्त्रीके पेटकी वह थैली जिसमें बच्चा रहता है, बच्चादानी ।

गर्भाष्टम-पु० [सं०] गर्भमें आठवाँ महीना या वर्ष ।

गर्भिणी-वि०, स्त्री० [सं०] जिने गर्भ हो, गर्भवती, हामिका । -दोहद्-पु० गर्भवतीका कुछ खास चीजोंपर मन चलना ।

गर्भित-वि० [सं०] गर्भयुक्त; भरा हुआ । पु० काव्यका एक दोष, किसी अतिरिक्त वाक्यका किसी वाक्यके बीचमें आ जाना ।

गर्भी(विन्)-वि० [सं०] गर्भयुक्त ।

गर्भोपनिषद्-स्त्री० [सं०] अथर्ववेदमें सबूद्ध एक उपनिषद् ।

गर्भ-वि० [सं०] गर्भ । -जोरी-स्त्री० उसाह, उहास; सरगमी । -बाजारी-स्त्री० बहुत थिकी, मोग होना; बहुत दूढ़ होना; चर्चा, झुझरत । -मिजाज-वि० जल्दी क्रुद्ध हो जानेवाला, उग्र स्वभावका । -रस्ताद्-वि० नेत्र चलनेवाला, ब्रूगामी ।

गर्भटिका; गर्भोटिका-स्त्री० [सं०] एक कदम्ब, जयाश्रया ।

गर्भुत्-स्त्री० [सं०] एक धाम; एक कदम्ब; एक तरहका सरकंडा; सीना; एक तरहकी मधुमक्खी ।

गर्भारी-स्त्री० दे० 'गलियारी' ।

गर्भ-वि० लाखके रंगका । पु० लाखी रंग; लाखी रंगका बोधा जिसके कुछ बाल सफेद हों; लाखी रंगका कदतर; गराही; चरखी; पानीका आघात ।

गर्भ-पु० [सं०] गदर, घमंड ।

गर्भ-पु० [सं०] घमंड, गदर-रूप, धन, विद्या आदिमें अपनेको दूसरोंमें बदकर समझनेका भाव; एक संघारी भाव । -प्रहारी(रिन्)-वि० गर्भका नाश करनेवाला ।

गर्भ-वि० [सं०] धर्मही । पु० घमंड ।

गर्भरी-स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

गर्भरत्न-वि० गर्भव्युक्त ।

गर्भट-पु० [सं०] चौकीदार; द्वारपाल ।

गर्भना-वि० [सं०] गर्भ करना ।

गर्भित-वि० [सं०] गर्भव्युक्त, धर्मही ।

गर्भिता-स्त्री० [सं०] अपने रूप-शुणका गर्भ करनेवाली नाविका ।

गर्भी(विन्)-वि० [सं०] गर्भ करनेवाला, धर्मही ।

गर्बीका-वि० बर्मेदी ।

गर्बीय-पु० [सं०] निद्रा करना, दोष लगाना ।

गर्हणा-खी० [सं०] दे० 'गर्हण' ।

गर्हणीय-वि० [सं०] निद्रा करने योग्य, निच ।

गर्हा-खी० [सं०] निद्रा, कुस्ता ।

गर्हित-वि० [सं०] निरित, बुरा, दूषित ।

गर्ह्य-वि० [सं०] गर्हणीय, निच ।

गर्लसिका, गर्लसी-खी० [सं०] छोटी कलसी; छेददार वक्रा जिसमें शिथिलिग आदिपर पानी चूसा रहता है ।

गर्लस-पु० वह संपत्ति जिसका मालिक या वारिस न हो ।

गल्-पु० [सं०] गला, कंठा; सासका गोंद; गकाहू मछली; एक भाजा; रस्ती । -कंवल-पु० गाय-बैलके गलेका नीचे लटकनेवाला भाग, झारकर । -गंज-पु० गलेका एक रोग जिसमें एक गोंदसी निकल आती और कभी-कभी वह बढ़कर लटकने लगती है, घेवा । -ग्रह-पु० गला पकड़ना, थोड़ना; गलेका एक रोग; मछलीका कोंठा; कृष्ण पक्षी कुछ तिथियाँ, वह चीज जिसमें जल्दी जान न छूटे; मछलीका रसा; अव्ययन आरम्भ होनेपर उसमें भाषा पकना । -जंद्वा-पु० [हि०] गीला न छोड़नेवाला; गलेसे बंधी हुई हाथपरकी पट्टी । -जोड़, -जोत-खी० [हि०] वह रस्ती जिससे दो बैल एक साथ बंधि, जोते जायें; गलेका हार । -जंघ-पु० [हि०] (युद्धमें) हाथीके गलेपर डाली जानेवाली लोहेकी झूल । -तनी-खी० [हि०] बैलोंके गर्तके साथ बांधनेकी रस्ती । -बन, -धना-पु० [हि०] गलस्तन । -हार-पु० मुख । -कॉस-खी० [हि०] मालखम्बी एक कसरत । -कॉसी-खी० [हि०] गलेकी कॉसी; फटा; जंगल, गलप्रह । -फेब-पु० [हि०] गलेकी गलटी । -बंदनी-खी० [हि०] गलेका एक गहना, गुलबंद । -बहिर्वा, -बाहरी-खी० [हि०] गलेमें गोंद डालना, बगलमें आलिंगन । -मेखला-खी० कंठहार । -बल-पु० मयूर । -झुंझिका, -झुंझी-खी० छोटी जीभ, उपजिह्वा; एक रोग जिसमें तालमें शोथ हो जाता है । -सिरी-खी० [हि०] गलेका एक गहना, कंठश्री । -स्तन-पु० बकरियोंके गलेमें लटकनेवाली धन जैसी थैली, गलधन । -स्तनी-खी० गलस्तनवाली बकरी । -हस्त-पु० अर्धचंद्र, गरदनियाँ; अर्धचंद्राकार भाग ।

गल-गालका समासमें व्यवहृत रूप । -कोबा, -खोबा पु० एक तरहका चाबुक; मालखम्बी एक कसरत; कुश्तीका एक पंच । -गंज-पु० शीर, हड्डा । -गुच्छा-पु० दे० 'गलमुच्छा' । -बुमनी-खी० कानका एक गहना जो गालोंकी घृता रहता है । -छट-पु० मछलीके गलफंदेका एक भाग । -तकिया-पु० गालके नीचे रखनेका छोटा नरम तकिया । -बैली-खी० बंदरके गालके अंदर रहनेवाली थैली । -फबा-पु० जलचरों आदिका वह अवयव जिससे वे साँस लेते हैं; गालका चमड़ा । -फूट-खी० बबबड़ानेकी छत । -फूला-वि० जिसके गाल फूले हों । पु० गलमुखा । -अंदरी-खी० दे० 'गलमुखा' । -मुच्छा-पु० गालोंपर दोनों ओर मूँछकी लीपमें रखे हुए बाल, गलगुच्छा । -मुमा-खी० शिवकी पूजामें उन्हें प्रसन्न करनेके छिप गाल बजाना । -सुग्ग-पु० एक रोग

जिसमें गालोंके नीचेके हिस्से पूज भगते हैं और ऊपर रहता है । -सुर्ग-खी० गलतकिया ।

गलई-खी० दे० 'गलही' ।

गलक-पु० [सं०] गला; गकाहू मछली ।

गलका-पु० हाथ या पाँवकी उँगलियों होनेवाला एक तरहका छाले जैसा कोड़ा ।

गलगाजना-अ० अ० कि० दे० 'गल्गाजना' ।

गलगल-पु० चकोतरेके आकारका एक बहुत लहड़ा नीबू; चूना और अलसीका तेल मिलाकर बनाया हुआ एक तरहका मसाला; एक विनिया ।

गलगला-वि० गीला, तर ।

गलगलाना-अ० अ० कि० गीला वा तर होना ।

गलगलजना-अ० अ० कि० खुशीसे फूलकर, इतराकर बकी-बकी बातें करना; जोर-जोरसे बोलना ।

गलगुग्गना-वि० मोटा-ताजा ।

गलस्त-पु० येमें आदमीकी संपत्ति जो अपने पीछे किसीकी छोड़ न गया हो; निम्नतान मृत व्यक्ति । मु०-हो-जाना-निर्वास हो जाना, बंशका नाश हो जाना ।

गलस्त-वि० [अ०] जो सही वा ठीक न हो, नादृस्त; मिथ्या, अस्त्य । -अंद्वा-वि० जो ठीक जगह, ठीक निशानेपर न पड़े । -कार-वि० बोला देनेवाला; दुराचारी । -कारी-खी० ठगी, भोलेबाजी; अनाचार, दुराचार । -नामा-पु० छुद्रिपत्र । -गहमी-खी० गलत समझना, कुछका कुछ समझना । -बबानी-खी० अव्यर्थ कथन ।

गलस्त-वि० [फा०] लोटता, लुढ़कता हुआ; लोटनेवाला ।

-ब पैर-वि० लोटता और चकर खाता हुआ, परेशान ।

गलस्ता-पु० [फा०] रेशम और सूतकी मिलावटसे बना एक चमकदार कपड़ा ।

गलस्तान-वि० दे० 'गलता' ।

गलसी-खी० [अ०] गलत होना, अझुझि, भूल-चूक ।

गलतुल्यभास-पु० [अ०] वह असाध प्रयोग जो आम होनेके कारण साधु मान लिया जाय ।

गलद्वय-आयुक्ता-खी० [सं०] (मोहलिन सेंटिमेंटालिज्म) छोटी-छोटी बातमें भी आँसू ला देनेवाली भावुकता ।

गलन-पु० [सं०] चूना, खरण; हड्डना; गलना; सरकना ।

गलनहर्ही-पु० हाथियोंका एक रोग जिसमें उनका माँवून गलने लगता है । हि० रेशे रोगवाला (हाथी) ।

गलना-अ० अ० कि० दोस वस्तुका तरल होना, पिघलना; कभी चीजका पककर नरम होना, सीझना; घुलना; जीर्ण होना; सफना; दुबला होना; सूझना; ठिठुना; नष्ट होना; गलना जाना ।

गलबल-पु० खलभल, कोलाहल-भई भीर गलबल मच्यो'-छत्रप्रकाश ।

गलबा-पु० [अ०] प्रबलता; जीत, विजय (होना-पाना) ।

गलबाना-सं० कि० गलानेका काम कराना ।

गलही-खी० नाबका अगला हिस्सा जहाँ दोनों पादर्व मिलते हैं ।

गलहूँ-पु० [सं०] गलेका एक रोग, 'टोसिल'का बहना ।

गल्य-पु० सिरकी पकसे जोड़नेवाला अंग, कंठ, हलक;

सुर, आवाज; सँवरले आदिका गरेवान; घरे, लोटे आदिका मुँहके नीचेका तंग भाग । —(ले)बाज़-पु० मच्छे गलेवाला गवेया । —बाज़ी-खी० ताल-सुरसे गाना;तान लेना । सु०-उडावा-करना-पटो बैठाना । —कटना-कतल किया जाना; (दूसरेके कामसे) भारी हानि होना, हकतलकी होना । —कटवाना-कटवाना-जान देना, कतल होना; अपनी भारी हानि करना । —काटना-गरदन मारना, बच करना; घोर अहित करना; गयेमें सुजली, चुनचुनाहट पैदा करना (अमीकर आदिक) । —खुडना-पक्षी हुई आवाजका साफ हो जाना । —झुड़क होना-गला सुलना; चिल्लाते-चिल्लाते गला बैठ जाना । —बुँटवाना-गला दबाये जानेसे सौंस रुकना । —बँटवाना-गलेको इस तरह दवाना कि सौंस रुक जाय; गलेको इस तरह दबाकर जान लेना । —छुटवाना-परेसान करनेवाले व्यक्ति वा वस्तुने पीछा छुटाना । —हचाना-गला घोंटना; दबाव डालना, जबरदस्ती करना । —पकड़ना-गलेमें विपकना; गलेमें सुजली वा जलन पैदा करना; सताना, तंग करना; मजदूर करना । —पड़ना;-बैठना-(सीध, बहुत शोलने, गाने आदिसे) साफ आवाज न निकलना, स्वर विकृत हो जाना । —फँसना-बंधना, बिराड होना; कणप्रसन्न होना; साफ आवाज न निकलना । —फाड़कर चिल्लाना;-फाड़ना-बीखकर शोलना, हतने जोरसे शोलना कि गला बैठ जाय । —रेतवाना-गला काटना, हलाल करना; बहुत पीड़ा देना । —(ले)का हार-जो हतना प्यारा हो कि जुदा न किया जा सके, अनि विषय; जिससे ज्ञान न छुड़ायी जा सके, हर नक्त साथ लगा रहनेवाला (बनना, बनाना, होना) । —के नीचे डसवाना-घोंटा, निगला जाना; समझमें आना; ठीक लगना । —पकड़ देना-जबरदस्ती देना, मरथे मढ़ना । —पड़ना-अनचाही, अवधिकर वस्तुकी प्राप्ति होना, उसके ग्रहणके लिये विवश होना, मरथे मढ़ा जाना । —घर छुरी कैरवाना-घरों अहित, अन्याय करना, गला काटना । —मढ़ना-(किनीक) गले पकड़ कर कोई चीज़ देना; कोई काम सौंपना । —मिलना,-लगवाना-आलियन करना; बगलगीर होना; भेटना । —में अटकना-घोंटा, निगला न जा सकना; मनमें न बैठना, दुश्मिकी स्वीकार न होना । —लगवाना-आलियन करना; गले मढ़ना ।

गलाऊ-वि० गलनेवाला ।

गलाना-स० कि० किसी ठोस चीज़को तरल, किसी कड़ी चीज़को नरम बनाना, डुलाना, पिघलाना; घोंटा, गिन्टी आदिकी धीरे-धीरे गायब कर देना; (कोठी) भंसाना; खर्च कराना ।

गलानि-खी० दे० 'गलानि' ।

गलानिख, गलाविख-पु० [सं०] मत्स्यविशेष ।

गलार-पु० वृक्षविशेष । † वि० हलगुल ।

गलारी-खी० एक पक्षी, सितोही ।

गलावट-खी० गलनेका भाव; गलनेवाली चीज़ ।

गलि-पु० [सं०] बछड़ा; सुस्त बैल ।

गलिख-वि० [सं०] गला हुआ, पिघला हुआ; चुनरा, मिरा हुआ; जीर्ण; क्षयप्राप्त; सरका हुआ; निगला हुआ;

* परिपक । —कुह-पु० वह कौद जिसमें हाथ-पोंक्की उँगलियाँ आदि गलकर गिर जाती हैं । —मखईत-वि० जिसके नख और दाँत गिर गये हों । —नबन-वि० जिसकी ओँलें अंधी हो गयी हों, अंधा । —बीबना-वि०, खी० जिल- (खी)की जबानी डल गयी हो, डलती उम्रवाली ।

गलिक-पु० [सं०] नुलका एक वंग, अंगमंगी ।

गलिबारा-पु०, गलिबारी-खी० सँकरा, गली जैसा रास्ता ।

गली-खी० सँकरा, सन्कटे कम चौड़ा रास्ता जिसके दोनों ओर मकानोंकी कतार हो; कूबा; (किसीके) घरके आस-पासका स्थान, टीला । —कूबा-पु० गली । —गली-अ० हर गलीमें, इस गलीसे उस गलीमें; दर-बदर । सु०-कमाना-गलीमें झाड़ू लगाना; गलीकी मोरी, पाखाने साफ करना । गलियाँ छानना, झाँकना-किसीकी खोजमें बहुत भटकना, हेरान होना ।

गलीचा-पु० सूत या ऊनके धागेसे बुना हुआ बिछौना, कालीन ।

गलीज़-वि० [अ०] गाढा; गंदा; मैला । पु० मैला, बिछा ।

गलील-वि० गलित, जीर्ण; दुर्दशाकी प्राप्ति-‘सीत न नीति, गलीत है जो धरिये धन जोरि’-वि०; क्षयप्राप्त ।

गलू-पु० एक तरहका कीमती पत्थर ।

गलेगड-पु० [सं०] एक तरहका पक्षी ।

गलेक-पु० गिलाक; गिलेक ।

गलेमनी-खी० [सं०] बकरी ।

गलेका-पु० ‘गलीचा’ ।

गली-पु० चंद्रमा ।

गलीआ-पु० बंदरोंके गालके अंदरकी पैली ।

गलीच-पु० [सं०] गलेका अर्ध ।

गल्प-पु०, खी० गल्प; कौंय कहानी; वृदंगका एक प्रबंध ।

गलभ-वि० [सं०] ढीठ; धमकी; बाचाल ।

गलु-पु० [सं०] गाल; * हल्ला, धोर । —चातुरी-खी० गलसुरै ।

गलुई-वि० जो गलेके रूपमें हो । पु० उपजके रूपमें लिया जानेवाला लगान; बटाईपर जीना जानेवाला खेत ।

गलुऊ, गलुऊ-पु० [सं०] मधपानपात्र ।

गलाव-पु० शोर, हल्ला; दे० ‘गला’; [फा०] जानबरोका झुठ, खेड़ । —बाव-पु० भेड़, बकरी आदि चरानेवाला, चरवाहा, गुरिया ।

गलाव-पु० [अ०] अनाज; वह अनाज जिसका आटा पीसकर खाया जाय; रोजकी भिन्नोकी आमदनी, गोलक; गिरे या तोड़े हुए आमोंका ढेर । —क्रोरोश-पु० अनाज बेचनेवाला ।

गल्वक-पु० [सं०] स्फटिक; स्फटिक आदिका बना हुआ मधपानका पात्र ।

गई-खी० दे० ‘गौ’ ।

गबन-पु० गयन; गौना । —बार-पु० गौना ।

गबनबा-अ० कि० जाना ।

गबनार-पु० दे० ‘गौना’ ।

गवच-पु० [सं०] वृष वा वृषकी जातिका एक जानवर, नीलगवचका नर (!) ।

गवधी-श्री० [सं०] नीलगाय (१) ।
 गवधि-श्री० गौरी, पार्वती ।
 गवर्नमेंट-श्री० [अ०] शासन, हुकूमत; शासन-मंडल, सरकार; शासन-पद्धति ।
 गवर्नर-पु० [अ०] शासक; देश, प्रदेश या नगरका राजा या राज्यकी ओरसे नियुक्त शासक किसी सूत्रका प्रधान शासक, राष्ट्रपाल ।-जेवरल-पु० प्रधान शासक; ब्रिटिश साम्राज्यके देशोंमें ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त सम्राट्का प्रतिनिधिरूप प्रधान शासक ।
 गवर्नरी-वि० गवर्नरका (शासन, करमान इत्यादि) । श्री० गवर्नरका पद, कार्य या शासनकाल ।
 गवर्मेंट-श्री० दे० 'गवर्नमेंट' ।
 गवर्मेंटी-वि० सरकारी ।
 गवल्-पु० [सं०] जगली भंसा; जंगली जैतेका सौर्य ।
 गवाँना-सं० कि० खोना ।
 गवाक्ष, गवाक्षक-पु० [म०] छोटी खिड़की, झरोखा ।
 गवाक्षित-वि० [सं०] गवाक्षयुक्त, खिड़कीदार (मकान) ।
 गवाक्षी-श्री० [सं०] ह्रस्वाक्षी, अपराजिता ।
 गवाक्ष, गवाक्ष-पु० दे० 'गवाक्ष' ।
 गवाधी-श्री० [सं०] एक तरहकी मछली ।
 गवाधन-पु० [म०] घास ।
 गवाधनी-श्री० [म०] गाय-बैलको चारा देनेका पात्र, नौद; घास ।
 गवाधिका-श्री० [सं०] लाक्षा, लाख ।
 गवाधयन-पु० [सं०] दस या बारह महीनेमें पूरा होने-वाला एक वैदिक यज्ञ ।
 गवार-वि० [फा०] पचनेवाला; रुचनेवाला, अनुकूल (केवल समामर्श-‘सुश्रवण’, ‘नागवार’ इत्यादि) ।
 गवारा-वि० [फा०] पचनेवाला; रुचकर, मनोनुकूल ।
 गवारिश-श्री० [फा०] पाचक, चूरन ।
 गवायु-पु० [सं०] दे० 'गवय' ।
 गवाधान-वि० [सं०] गोमक्षी । पु० चमार; चांडाल ।
 गवाध-पु० गोमक्षी, कसाई । † श्री० गानेकी इच्छा ।
 गवाह-पु० [फा०] जिसने किसी घटनाको अपनी आँखों देखा हो या उसको जानता हो, साक्षी; अदालतमें किसी घटना, गाने, बयानकी सच्चाईकी गवाहदत देनेवाला ।
 गवाही-श्री० [फा०] गवाहीक हैसियतने दिया जानेवाला बयान, साक्ष्य ।
 गविष्ठ-पु० [सं०] सूर्य ।
 गविष्ठि-श्री० [सं०] इच्छा; उत्सुकता; लभनेकी इच्छा । वि० गाय चाहनेवाला; इच्छुक ।
 गवीपु-पु० [सं०] दे० 'गवेपु' ।
 गवीश-पु० [सं०] गायोंका मालिक, गोस्वामी; गोपालक; साँव ।
 गवेआ-श्री० वातचीत, बहस ।
 गवेहु-पु० [सं०] बाइल; दे० 'गवेपु' ।
 गवेपु, गवेपु-पु० [सं०] रुग्णधान्य-विशेष ।
 गवेपुका-श्री० [सं०] कथकु नामक कदम, दे० 'गवेपु' ।
 गवेक-पु० [सं०] गेरू ।
 गवेल-वि० गँवार ।

गवेस-पु० [सं०] दे० 'गवीश' ।
 गवेथ, गवेथण-पु० [सं०] (हरी, नुरावी दुई) गायको छेड़ना, खोचना; छेड़ना; चाहना ।
 गवेथणा-श्री० [सं०] खोज, छानबीन ।
 गवेथिल-वि० [सं०] तलाश किया हुआ, अन्वेषित ।
 गवेथी(विन्)-वि० [सं०] गवेथण करनेवाला, खोजी ।
 गवेथना-सं० कि० खोजना । श्री० दे० 'गवेथणा' ।
 गवेसी-वि० दे० 'गवेथी' ।
 गवेही-वि० देहाती, ग्रामका ।
 गवेया-पु० गानेवाला ।
 गव्व-वि० [सं०] गायसे उत्पन्न, प्राप्त (दूध, दही, गोबर आदि); गोवंशके उपयुक्त । पु० गायोंका भुङ्ग; दूध; बरा-गाह; ज्या; गोरोचन; * पचगव्य ।
 गव्या-श्री० [सं०] गायोंका भुङ्ग; दो कोसकी एक माप; ज्या; गोरोचना ।
 गव्यु-वि० [सं०] गो-व्यातिमें दिलचस्पी लेनेवाला; गाय या दूध चाहनेवाला; उत्सुक; युद्धका इच्छुक ।
 गव्युत-पु०, गव्युति-श्री० [सं०] लगभग एक कोसकी एक माप; दो कोसकी एक माप; बरागाह ।
 गव्य-पु० [अ०] बेहोशी, मूर्च्छा । मु०-खाना-मूर्च्छित होना ।
 गव्यी-श्री० बेहोशी ।
 गव्य-श्री० [फा०] फिरना, भ्रमण, चक्कर; पुलिस कर्म-चारीका पहरेके लिए रातमें घूमना, रौद (करना, लगाना) ।
 -सखामी-श्री० दोरेपर गये हुए अफसरकी मिलनेवाला नजराना । मु०-नाचना-वेदयात्रोंका बरातके आगे नाचते हुए चलना ।
 गव्यी-वि० गव्य करनेवाला; फिरनेवाला; एकमे दूसरेके पास जानेवाला (दुश्मन, परवाना इ०) ।-विही-श्री०, -हुक्म-पु० वह विही या हुक्म जो सब मातहत कर्म-चारियोंके पास क्रमशः भेजा जाय ।
 गलना-सं० कि० पकड़ना, असना; कसना ।
 गलीला-वि० गंठा हुआ; ठस ठस हुआ ।
 गल्ला-पु० घास, निवाला ।
 गल-श्री० टेक ।
 गलकना-अ० कि० ललकना, लालसायुक्त होना ।
 गलगड-वि० दे० 'गलगडु' ।
 गलगह, गलगहा-वि० प्रकुल, आनंद-उत्साहसे भरा हुआ । अ० भ्रमभ्रमसे, हर्ष-उत्साहके साथ ।
 गलगहाना-अ० कि० लुग्टी भर उठना, बहुत आनंदित होना ।
 गलगहे-अ० भ्रमभ्रमसे, हर्ष-उत्साहके साथ ।
 गलगहोरना-सं० कि० गंदा करना ।
 गलग-वि० [सं०] गहरा; घना, अमेध, निविड; दुर्गम; कठिन । पु० गहराई; गुफा; जल; जंगल; दुर्गम स्थान; गहना; पीस, परमेश्वर; * अग्रण; विपद्; बंधक । * श्री० पकड़; हठ ।
 गलगता-श्री० [सं०] गंभीरता, गहराई; दुर्गमता ।
 गलग-पु० बंधक; [सं०] जेवर, आभूषण । * सं० कि० पकड़ना; दे० 'गलग' ।

गहनि*—स्त्री० पक्क; हठ, जिद ।

गहनी—स्त्री० नावका छेद बंद करनेकी क्रिया; पशुभोका एक रोग; सेतकी घास निकालनेका एक औजार ।

गहने*—अ० बंधकते तौरपर ।

गहवर*—वि० दुर्गम; गहर; निकुंज, गुप्तस्नान; शोकविह्वल; आत्मविम्वृत; व्याकुल; ध्यानमग्न ।

गहवरना*—अ० कि० बचकाना, व्याकुल होना—‘तत्तखन रतनमेन गहवरा’—प० ।

गहवरनि*—स्त्री० व्याकुलता, अफनाहट—‘गहकि-गहकि गहवरनि गर्दे मवै’—धन० ।

गहवराना*—स० कि० बचका देना । अ० कि० बचकाना ।

गहमह*—स्त्री० चहल-पहल—‘गोकुल गन्यारिजमे महा गहमह मौवी’—धन० ।

गहमहई*—स्त्री० प्रचुरता, भूषणवत्ता—‘वर-वर लुहक जैनकी रहई । जित जित गोपनकी गहमहई’—धन० ।

गहर*—स्त्री० देर । वि० गहन, दुर्गम ।

गहरना*—अ० कि० देर लगाना; लकना; कुपित होना; कुठना ।

गहरवार—पु० एक क्षत्रियवंश ।

गहरा—वि० जिसकी सतह आमपासके स्थान वा किनारेसे नीची हो, निम्नगामी, उथलाका उलटा; गंभीर; गाढ़ा; भारी; कठिन; बहुत उमरा; जिनके मनकी बात जल्दी जानी न जा सके, गंभीर स्वभावका; गुढ़, जो जल्दी समझमें न आ सके (चाल) । [स्त्री० ‘गहरी’] । —ई—स्त्री० गहरापन, गहरा होना; गहरेपनकी माप । सु०—जलामनी—बड़ी पूँजी रखनेवाला आदमी, मालदार आदमी ।—पेट—भेद न खोलनेवाला । —हाथ मारना—ऐसा बार करना कि गहरी चोट बैठे; भारी रकम, भारी मूल्यकी चीज हथियाना, उठाना । —(री)बूँटना—गाढ़ी भाँग पिसना; गाढ़ी मिश्रता होना; खूब आमीद प्रमीद होना । —छमना—गाढ़ी या अधिक भाँग पीना; दिखी दोस्ती होना; बुल-बुलकर बात होना । —सौंस भरना—ठंडी सौंस लेना ।

गहराना*—अ० कि० गहरा होना; नाराज होना । स० कि० गहरा करना ।

गहरावा*—पु० गहराई ।

गहरु*—वि० दे० ‘गहर’ ।

गहरेबाजी*—स्त्री० एवके, तंगिके खूब तेज दौकाना; एवके आदिकी तेज दौकाने, आगे बढ़ जानेकी गहरी प्रति-योगिता ।

गहकौत—पु० राजपूतोंका एक वंश ।

गहका*—पु० संकष्टी ।

गहकारा—पु० [फा०] घालना, बच्चेकी सुलनेका झुला; वह स्थान जहाँ कोई चीज घाल-पोसकर बची की जाय, बिसालस्थल ।

गहाई*—स्त्री० गहन, पक्क ।

गहागह*—वि० गहरा; खूब तेज ।

गहागह—अ० दे० ‘गहगह’ ।

गहाना—स० कि० पकसाना, ‘गहना’का प्रे० ।

गहासना*—स० कि० निगलना; पकड़ना ।

गहिरा*—वि० दे० ‘गहरा’ ।

गहिरावा*—पु० दे० ‘गहिराई’ ।

गहिरा*—वि० दे० ‘गहरा’ ।

गहिरा*—वि० पागल, बावला ।

गहिरा*—वि० दे० ‘गहरा’ ।

गहिरा*—वि० गर्वीला, घमंडी ।

गहुआ—पु० एक तरहकी संकष्टी ।

गह्युआ*—पु० छुईंदर ।

गहेलरा*—वि० बावला; मूर्ख ।

गहेला—वि० हठी; घमंडी; पागल, बौद्ध ।

गहेया*—पु० एकजनेवाला, ग्रहण करनेवाला ।

गहर—वि० [सं०] गहरा; घना; निविड; दुर्गम; गुप्त । पु० गुफा, कंदरा; वि० ऊँचरी, छिपने लायक अगह; निकुंज; गडदा; रंस; गंभीर विषय; जल ।

गह्वरी—स्त्री० [सं०] गुफा, कंदरा ।

गह्वर—स्त्री० छिछी, बाटी ।

गांग—वि० [सं०] गंगा-संबंधी; गंगाका । पु० भीष्म; कर्तिकेय; भीमा; धन्वा; बर्षाका विशेष प्रकारका जल ।

गांगड, गांगडक, गांगडेय—पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।

गांगापनि—पु० [सं०] भीष्म; कर्तिकेय ।

गांगी—स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

गांगेय—पु० [सं०] भीष्म; कर्तिकेय; भीमा; कनेक; हिलसा मछली । वि० गंगामें या गंगातटपर स्थित ।

गांगेयी—स्त्री० [सं०] हिलसा मछली ।

गांगेयका, गांगेयकी—स्त्री० [सं०] नागवल्ली; एक फल ।

गांगेड़ी—स्त्री० [सं०] एक लता, कटशर्करा ।

गांगेय—वि० [सं०] गंगा-संबंधी ।

गाँलना—स० कि० गँयना ।

गाँज—पु० देर; पयाल-पत्ती आदिका देर ।

गाँजना—स० कि० देर लगाना ।

गाँजा—पु० भाँगकी जातिका एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशेके लिए तबकूकी तरह पीते हैं ।

गाँजकाय, गाँजीकाय—पु० [सं०] हगल ।

गाँह—स्त्री० रस्सी, धागे आदिका फटा कसने या जोड़नेसे पड़ी हुई शुल्की, गिरह, धमि; कपड़ेके छोरमें कुछ रलकर लगायी हुई गिरह; जेब; डेंट; गठरी; उँगली, हाँथ-पाँव आदिके जोड़, हँस, बाँस आदिके पोरोंके जोड़, पर्व; गाँठकी शकलकी जड़; गट्टा; गिल्टा; बैर, बुरज । —कट, —कटरा—पु० जेब काटनेवाला, पाकेटमार; उबका; ठग । —गोभी—स्त्री० एक तरहकी गोभी जिसमें जड़से कुछ ऊपर गाँठ होती है । —द्वार—वि० गाँठवाला । —का—पासका, जो अपने पास हो । सु०—कटना—जेब कटना; गाँठका पैसा निकल जाना; ठग जाना । —कटरना, —काटना—जेब कटाना । —करना—सम्राज करना । —का पूरा—पैसेवाला, मालदार । —का पूरा, गाँसका अंधा—पैसेवाला, घर मूर्ख । —खुलना—उलझन दूर होना; दिलकी सफाई होना; मनकी बात खोलकर कह दिया जाना । —छोड़ना—कठिनाई दूर करना । —जोड़ना—गठबंधन करना । (अवर्त)—पड़ना—बिगाड़ होना;

(किसीके प्रति) मनमें बैर-दुराई पैदा होना। —वर गॉड पदना—कठिनाई, पेचीदगी या दुराई वैमनसका बढ़ते जाना। —गॉडना—(किसी बातको) अच्छी तरह बार कर लेना कि भूल जानेका डर न रहे।

गॉडना—स० कि० गिरह लगाना; ओढ़ना; जूता सीना; जूतेकी गरम्यत करना; मिथाना; हाथमें कर लेना; मन-चाही बात करनेको तैयार कर लेना; कसना (पंजा, सवारी); निश्चय करना; बाँधना (मजबूत, मंसूहा); दबाना; बार रोकना।

गॉडि—खी० दे० 'गॉड'।

गॉदी—खी० एक गहना; टंठलका गॉटदार टुकड़ा।

गॉव—खी० गुवा; तला; पेंदा।

गॉवर—खी० एक घास जिसकी जड़को खस कहते हैं; एक दूब।

गॉडा—पु० ईस्का गोने या घेरनेके लिए काटा हुआ टुकड़ा; झंझ; मेहरा।

गॉडाली—खी० [स०] एक तरहकी घास।

गॉडिच—पु० [स०] दे० गाडीच।

गॉदी—खी० एक तरहकी घास जिसे चौपाये खाते हैं।

गॉदीर—वि० [म०] गद्दीर पेषिते प्राप्त या उसका बना।

गॉदीब—पु० [स०] अजुनका धनुष जो उन्हें अग्निसे मिला था; धनुष। —धम्बा (धम्बा)—पु० अजुन।

गॉदीवी (विन्)—पु० [स०] अजुन।

गॉडि—वि० जिसे गुदाभजन करानेकी लत हो; कमजोर दिक्का; निकम्मा; डरकोय।

गॉती—खी० दे० 'गाती'।

गॉव—पु० [स०] चरनेवाला, पशु; गायक।

गॉवी—खी० [स०] बेलगाड़ी।

गॉधना—स० कि० गंधना; गठना।

गॉदिनी—खी० [स०] गंगा; अमरकी माता। —सुल—पु० भीष्म; कापिकेय; अक्षर।

गॉदी—खी० [स०] दे० 'गदिनी'।

गॉधर्व—वि० [स०] गंधर्व-संघी; गंधर्व-देशमें उत्पन्न। पु० गंधर्वदेव, गानविद्या; गंधर्व-विवाह; भारतवर्षका एक उपद्वीप; घोड़ा। —वेद—पु० दे० 'गंधर्व-वेद'; सामवेदका उपवेद।

गॉधर्वक, गॉधर्विक—पु० [स०] गवैया।

गॉधर्वी—खी० [स०] दुर्गा; बाणी।

गॉधार—पु० [स०] भारतवर्षका एक प्राचीन जनपद, पेशावरसे कंभारतकका प्रदेश, कंधार; गंधार देशवासी; गंधारका राजा; सात स्वर्गमेंसे तीसरा; सिद्ध; एक राग; एक गंधर्व—। —पंचम—पु० एक राग। —मैरव—पु० एक राग।

गॉधारि—पु० [स०] दुर्धोषनका मामा शकुनि।

गॉधारी—खी० [स०] गंधारकी राजकुमारी, दुर्धोषनकी माता; एक रागिनी; बायीं ओरकी एक नाडी; एक फलगा; एक विधादेवी (जै०); जवासा; गाँजा।

गॉधारेव—पु० [स०] दुर्धोषन।

गॉधिक—पु० [स०] गंधी, इन्द्रप्रोष्ठ; गंधद्रव्य; एक गंधदार कीड़ा; डेखक।

गॉधी—पु० गुजराती वैद्योंका एक अहा; हरे रंगका एक

छोटा कीड़ा जिसमें तेज दुर्गंध होती है; एक घास; हँग; हैसाकी बीसवीं सदीके एक बहुत बड़े नेता जिन्होंने छत्त और जहिसाके आधारपर राष्ट्रीय आंदोलन चलाकर भारतको स्वराज्य दिलाया (जन्म—२ अक्टूबर, १८६९, मृत्तु—२० जनवरी, १९४८)। —टोपी—खी० खादीकी किश्वीनुमा टोपी। —दुर्धर्न—पु० गंधीका जीवन-संबंधी दृष्टिकोण। —बाद—पु० खल और आदिशाका सिद्धांत जिसका समर्थन, प्रतिपादन और बड़े पैमानेपर प्रयोग गंधीने किया था।

गॉधीयै—पु० [स०] गंधीरता, गह्वार; चित्तकी स्थिरता, अचंचलता; जटिलता।

गॉव—पु० आम, छोटी बस्ती।

गॉस—खी० रुकावट; मेढकी बाग; बैर; गॉठ, फंदा; तीरका फल; * निगरानी; शासन; अधिकार।

गॉसना—स० कि० गूँधना; कसना; छेदना; † रोकना; बधमें रखना।

गॉसी—खी० तीर आदिका फल, हथियारकी नोक; गॉठ; कपट; चुननेवाली बात।

गॉहर्का—पु० दे० 'गाहक'।

गाह—खी० दे० 'गाय'।

गाहू—पु० [अ०] पथ-प्रदर्शक; यात्रियों, पर्यटकोंकी किसी नगर या देशके दर्शनीय स्थान, वस्तुएँ आदि दिखानेवाला; वह पुस्तक जिसमें नगर, अजायबघर आदिका विवरण हो।

गाऊचवर्षा—पु० दे० 'गावचप'।

गावर—खी० घड़ा, कलस। मु०—में सागर भरना—धोनेमें बहुत अधिक बातोंका समावेश करना।

गामरी—खी० दे० 'गमरी'।

गाचा—पु० एक तरहका जालीदार कपड़ा।

गाछ—पु० पेड़, पौधा।

गाछी—खी० बाग; गोनी, लुरजी।

गाज—खी० गर्जन; बिजलीकी कड़क; बिजली। पु० फेन, झाग। मु०—गिरना, पड़ना—बिजली गिरना; आफत आना।

गाजना—अ० कि० गरजना; लुझीके मारे जोर-जोरसे बोलना।

गाजर—खी० [स०] एक मीठा मूल जो कच्चा और अचार-मुरब्बे आदिके रूपमें भी खाया जाता है। —झूकी—खी० गुच्छ वस्तु।

गाज्ञा—पु० [अ०] सुगंधित पाउडर जिसे स्त्रियाँ सौंदर्यवृद्धिके लिए गालोंपर मलती हैं।

गाज्ञी—पु० [अ०] काफिरोंसे लड़नेवाला मुसलमान योद्धा; विजेता; शूरवीर। —मर्द—पु० वीर पुरुष; घोड़ा। —मिर्च—पु० मसूर गजनबीका माना सालार मसकट जो भावस्ती-के राजा शुद्धदेवके हाथों बहराचर्ममें मारा गया।

गाटर—पु० [अ० 'गटर'] कोरेकी भत्री या शहतीर।

गाटा—पु० खेतका छोटा टुकड़ा; पथाल दानेके लिए बैलों-को नाचना।

गाह—पु० गहदा; अनाज रखनेका गहदा, खप्ता, खची; खेतकी पैर; कुपंकी ढाल।

गाहना—स० कि० गहदेमें रखकर मिट्टीसे ढकना, दफन करना; भरतीमें बँसाना; छिपाकर रखना।

शाब्द-श्री० मेघ ।

शाब्द-पु० [सं०] शाब्द ।

शाब्द-पु० वातमें बैठनेका गद्दा, कमौलाबा; * छकड़ा, बैलगाड़ी; कोलूके नीचेका गद्दा जिसमें तैल आदि जमा करनेके लिए बरतन रखा जाता है ।

शाब्दी-श्री० पहिलेके सहारे चलनेवाली सवारी, चकट; रेल्गाड़ी । -खाना-पु० शाब्दी या गाथियाँ रखनेका खान । -बाग-पु० शाब्दी हाँकनेवाला ।

शाब्द-वि० [सं०] अवगाहन किया हुआ; गाढा; गहरा; ठस; घना; खूब मजबूत; अत्यधिक; कठिन; तीव्र; दुर्गम । -मुष्टि-वि० कंजूस, जिसकी मुट्ठी न खुले ।

शाब्द-पु० संकट, कठिनाई; कष्ट ।

शाब्द-वि० जो अधिक घसला न हो, जिसकी तरलतामें ठोस पदार्थका बंध कुछ अधिक हो; घनिष्ठ; मोटा; ठस; गहरा; कठिन; विकट । * अ० दे० 'गाढे' । पु० हाथका मुना मोटा कपड़ा, गजी; मतवाला हाथी । -मु० -(री) छबना-भंगका खूब पिया जाना; गहरी मित्रता होना; पुष्ट मंजणा होना; विरोध होना । -(रे)का साथी-विपद्कालमें साथ देनेवाला । -दिन-गाढ, सुसीपतके दिन । -पसीनेकी कमाई-कमी मेहनतसे कमाया हुआ पैसा । -मै-विपतमें ।

शाब्दे-अ० कसकर; जोरमें; अच्छी तरह ।

गणपति-वि० [सं०] गणपति-संबंधी ।

गणपत्य-पु० [सं०] गणपतिका उपासक; गणपतिकी उपासना; गणनायकत्व ।

गाथिपत्य-पु० [सं०] वेध्याओंका समूह ।

गाणेष्ट-पु० [सं०] गाणेष्टका उपासक ।

गात-पु० शरीर, गात्र ।

गातव्य-वि० [सं०] गात वीच्य ।

गाता(रु)-पु० [सं०] गायक, गवैया; गंधर्व ।

गातानुगतिक-वि० [सं०] अंतानुसरणज्य ।

गाती-श्री० चादर आदि ओढ़नेका एक खास डग; उस डंगसे ओढ़ा हुआ कपड़ा ।

गातु-पु० [सं०] गीत; गवैया; कोयल; और ।

गात्र-पु० [सं०] देह; अंग; हाथीके अंगले पैरका कपरी बाग । -कूर्चण-पु० शरीरका कमजोर होना । -गुप्त-पु० कृष्णके एक पुत्रका नाम । -अंग-श्री० शूकाश्विनी । -मार्जनी-श्री० अंगोछा, तौलिया । -बहि-कृता-श्री० पदला बदन । -रुह-पु० बाल, रोआँ । -विह-पु० लक्ष्मणके गर्भसे उत्पन्न कृष्णके एक पुत्रका नाम । -संकोचनी-श्री० साही । -सम्मिल-वि० तीन महीनेसे ऊपरका (अण) । -सौष्ठव-पु० देह, अंगोंकी सुवर्णाई ।

गात्रक-पु० [सं०] शरीर ।

गात्रवर्ण-पु० [सं०] सूर साधनेकी एक पद्धति ।

गात्रबाह्(रु)-पु० [सं०] कृष्णके एक पुत्रका नाम । वि० सुंदर शरीरवाला ।

गात्रानुलेपनी-श्री० [सं०] अंगराग ।

गात्रावरण-पु० [सं०] शिरबल्लर, कनच; ढाल ।

गाथ-पु० [सं०] स्तौत्र; गान । * श्री० गाथा; यश ।

गाथक-पु० [सं०] गायक; स्तौत्रका गान करनेवाला ।

गाथा-श्री० [सं०] अवैदिक स्तौत्र; कोक; प्राकृतका एक वेद; कथा; छंदोबद्ध कथा; छंद; आवाँ छंद । -कार-पु० महाकाव्यका रचयिता; गायक ।

गाथिक-पु० [सं०] दे० 'गाथक' ।

गाथिका-श्री० [सं०] गाथिका, गानेवाली; गान ।

गाथी(भिन्)-वि० [सं०] गानोंसे परिचित । पु० साम-वेदका गायक ।

गाथा-श्री० तलछट ।

गाथ-पु० गरियार बैल; मेढा; गीदड़ । वि० डरपोक ।

गाथ-वि० डरपोक; गदरावा डुम्रा; मट्टर, सुल । पु० गीदड़; मट्टर बैल ।

गाथा-पु० अथवा अनाज या फसल; मट्टिका फूल ।

गाथी-श्री० गरी; एक पकवान ।

गाथुर-पु० चमगादड़ ।

गाथ-वि० [सं०] जिसकी थाह मिल सके; हलकर पार करने लायक; उथला; स्वल्प । पु० वह जगह जहाँ नदी हलकर पार की जा सके, थाह; खान; प्रासिकी इच्छा, लिप्सा; तल ।

गाथि-पु० [सं०] विश्वामित्रके पिता जो इंद्रके अश्वसे उत्पन्न माने जाते हैं । -सनय, -नंदन, -पुत्र, -सुत, -सुनु-पु० विश्वामित्र । -नगर, -पुर-पु० कान्यकुब्ज, आपुमिक कन्नौज ।

गाथेय-पु० [सं०] विश्वामित्र ।

गाथेवा-श्री० [सं०] गाथिकी कन्या, सत्यवती ।

गान-पु० [सं०] गाना, गीत; बखान, सवन; शब्द; गमन । -बाध-पु० गाना-बजाना । -विद्या-श्री० संगीत-विद्या ।

गाना-सं० कि० लयतालके साथ शब्दोंका उच्चारण करना, किसी गीतकी ताल-सुरके माथ कहना; वर्णन करना, बखानना (गुण गाना); स्तुति करना; सींटे बोल बोलना (कोयल आदिका) । पु० गीत, गान । मु० - बजाना-राग-रंग, गाल-बाधा; उत्सव; उत्सव मानना ।

गानिनी-श्री० [सं०] बचा ।

गानी(भिन्)-वि० [सं०] गानेवाला; जानेवाला ।

गाफिल-वि० [अ०] गफल करनेवाला, बेखबर, असावधान, लापरवा ।

गाभ-पु० दे० 'गामा'; पशुका गर्भ ।

गामा-पु० कठा, कोपल; डाल; पेड़ आदिका हीर ।

गामिन-वि०, श्री० गर्भवती (गाय, मैत आदि) ।

गाम-पु० दे० 'ग्राम'; [का०] पाँव, पद; कदम, डग; लगाम । -जून-वि० चलनेवाला; तेज चलनेवाला ।

गामिनी-श्री० [सं०] प्राचीन कालकी एक समुद्री नाव ।

गामी(भिन्)-वि० [सं०] गमन करनेवाला, जाने, चलनेवाला; पहुँचनेवाला; समीप करनेवाला (केवल समासांतमें व्यवहृत) । [श्री० 'गामिनी']

गामुक-वि० [सं०] जानेवाला ।

गाम-पु० [सं०] गाना । श्री० [हिं०] गोजातीय मादा पशु जो दूध देनेवाले पशुओंमें सर्वप्रधान और हिंदूधर्ममें पूज्य मानी जाती है, बैलकी मादा, धेनु । वि० बहुत सीधा, दीन (आदमी-ला०) । -गीठ-श्री० वह बाढ़ या छपर

जिसमें गायें रखी, बाँधी जायें, गोष्ठ। -कगला-पु० एक तरहका कगला जो पशुओंके झुंडके साथ रहकर कीर्तकी खाता है। -रौन-पु० गोरोंचन। मु० -की तरह काँपना-बहुत डरना।

गायक-पु० [सं०] गानेवाला, गवैया; अभिनेता।

गायकबाह-पु० बहोदानरेशकी उपाधि।

गायकी-स्त्री० गानेकी उच्च कला; गानेका पेश।

गायक-स्त्री० [अ०] अंत, सीमा; मतलब, गरज। -बुरजा-वि० बेहद, हृद दुरतेका।

गायताल-पु० दे० 'गैताल'।

गायत्र-पु० [सं०] (वैदिक) स्तोत्र; गायत्री छंदमें रचित स्तोत्र।

गायत्री-स्त्री० [सं०] एक वैदिक छंद जिसमें आठ-आठ वर्णोंके तीन चरण होते हैं; उक्त छंदमें रचित एक वैदिक मंत्र जिसका उपदेश उपनयन संस्कारमें द्विज बालकको किया जाता है, सावित्री; दुर्गा; गंगा।

गायत्री(त्रिन्)-पु० [सं०] सामगायक; खैरका पेड़। [स्त्री० 'गायित्री']।

गायन-पु० [सं०] गवैया, गायक, गानोपजीवी; गाना।

गायनी-स्त्री० [सं०] गानेका पेश करनेवाली स्त्री।

गायक-वि० [अ०] छिपा हुआ; अनुपस्थित; छुप्त; अदृश्य। -गुहा-वि० गायक, लापता। -बाज़-वि० बिना देखे शनरज खेलनेवाला। मु० -करना-उठा लेना। -खेलना-बिना देखे शतरंज खेलना (उसका आदमी खिलाडीके बताये अनुसार चालें चलता है)।

गायबाना-अ० [अ०] अनुपस्थितिमें, पीठ-पीछे।

गार-स्त्री० गाली। प्र० [का०] करनेवाला (खिदमत-गार, गुनहगार); साधन (बादगार); योग्य (रुस्तगार)। गार-पु० [अ०] गड्ढा; गर्त; युफा; खोह; जगली जानवर-का बिल, मंदिर।

गारहू-पु० दे० 'गाहरी'।

गारत-स्त्री० [अ०] छड़-मार; तबाही, बरबादी (करना, होना)। वि० नष्ट, बरबाद; तबाह। -गार-पु० छड़-मार करनेवाला, छुटेरा; तबाह करनेवाला।

गारद-स्त्री० [अ० 'गार्द'] सिपाहियोंका छोटा दस्ता; सैनिकोंका दस्ता या टुकड़ी जो किसी स्थान, व्यक्ति आदि-की रक्षापर नियुक्त की गयी हो; पहरा; रखक, प्रहरी। मु० -में करना-में रखना-पहरमें रखना; हवालातमें बंद कर देना।

गारना-† सं० क्रि० निचोड़ना; * घिसना, रगड़ना; गलाना; * त्यागना; नष्ट करना-‘आछे गात अकारथ गारयो’-सू०।

गारा-पु० मिट्टी या चूने-सुर्खोंका लेप जिसमें ईंटें जोड़ी जाती हैं; पल्लर करनेके लिए आलन देकर बनाया हुआ मिट्टीका लेप। -काम्हड़ा-पु० एक राग।

गारित्र-पु० [सं०] चाल; अक्ष।

गारी-स्त्री० दे० 'गाली'।

गारह-वि० [सं०] गवक-संबंधी; गवकके आकारका। पु० बह मंत्र जिसका देवता गवक हो; सौंपका जहर दूर करनेवाला मंत्र; पक्षा; गवका; गवक-भ्यूह; सोना।

गारहिक; गारही(त्रिन्)-पु० [सं०] सौंपका जहर उतारनेवाला, विषवैद्य; संपेरा।

गार-अत-वि० [सं०] गवक-संबंधी; गवक। पु० गवकका अक्ष; पक्षा।

गारी-पु० आसामका एक पहाड़; वहाँ बसनेवाली एक जंगली जाति; * गर्व; गौरव; प्रतिष्ठा; घर-‘गौरकी गारी सु तौ मोहि लने प्यारो’-रसखान।

गार्नि-वि० [सं०] गर्ग-संबंधी।

गार्नि-पु० [सं०] गर्ग मुनिका पुत्र।

गार्नि-स्त्री० [सं०] गर्गकी पुत्री; लपनिषदोंमें प्रसिद्ध एक महावादिनी स्त्री; दुर्गा।

गार्नि-पु० [सं०] गर्ग गौत्रमें उत्पन्न पुरुष; गर्ग द्वारा रचित ग्रंथ।

गार्नि-स्त्री० [सं०] गर्ग गौत्रवाली स्त्री।

गार्नि-पु० [सं०] गर्ग गौत्रमें उत्पन्न पुरुष; पाणिनिके पूर्व-वर्ती एक वैयाकरण।

गार्ज-पु० [सं०] गाजर।

गार्ज-पु० [अ०] रखक, प्रहरी; ट्रेनकी रक्षाके लिए ब्रिम्मे-दार अधिकारी जो सबसे पीछेके रुम्बेमें बैठता है।

गार्ज-वि० [सं०] गर्ज-गणसे संबंध रखनेवाला; गंधका।

गार्ज-पु० [सं०] कालच।

गार्ज-वि० [सं०] गुप्त-संबंधी। पु० लोभ; बाण। -पक्ष-बासा(सत्)-पु० बह बाण जिसमें मित्रके घर लगे हों।

गार्ज-वि० [सं०] गर्भ-संबंधी; गर्भके पोषण-वर्धनके लिए कर्तव्य।

गार्ज-पत-वि० [सं०] गृहपति-संबंधी। पु० गृहपतिका माव, गृहपतिव्य।

गार्ज-पत्य-पु० [सं०] साधिक गृहस्थ।

गार्ज-पत्याग्नि-स्त्री० [सं०] एक तरहकी अग्नि जो परिवारमें वंशानुगत चलायी जाती है।

गार्ज-मेघ-पु० [सं०] गृहस्थके लिए कर्तव्य पंचयज्ञ।

गार्ज-स्थ-पु० [सं०] गृहस्थाश्रम; गृहस्थके लिए कर्तव्य पंचयज्ञ; गिरस्ती; गृहकार्य।

गाल-पु० चेहरेके दोनों ओरका दुइड़ी और कनपटीके बीचका भाग, कपोल, क्लेशार; मुँहजोरी, बाचालता; मध्य; मुँह (कालके गालमें); झींक। -गूल-पु० व्यर्थ बात। -असूरी-स्त्री० एक पक्षना। मु० -करना-बद-बदकर बात करना; मुँहजोरी करना-‘गाल कर केहिकर बल पार्द’-रामा०। -पिच्छक-गालोंका धंस जाना; दुबका होना। -फुलना-गर्व जानना; मुँह फुलाना, रुठना। -बजाना-बद-बदकर बात करना; बकना करना। -मारना-डोंग हाकना; मुँहमें घ्राण खालना। -में जाना-मुँहमें पड़ना।

गालन-पु० [सं०] निचोड़ना; गलाना।

गालना-स्त्री० [सं०] गोलना।

गालक-पु० [सं०] एक ऋषि जो विद्यामित्रके शिष्य थे; पाणिनिके पूर्ववर्ती एक वैयाकरण; लोभ; मंद।

गाला-पु० पुनी हुई नरम रस्सी गोला, पुनी; * मुँहजोरी; डेर, पुंज (कलस)।

गाली-स्त्री० [सं०] गाली।

शक्ति-वि० [सं०] विचोका हुआ; गलना हुआ ।
 शक्तिनी-स्त्री [सं०] तंको एक मुद्रा ।
 शक्ति-वि० [अ०] जीतनेवाला, विजयी; प्रबल; बड़ जमानेवाला । पु० उर्के प्रसिद्ध कवि मिरजा कसद अताइ खोंका उपनाम ।
 शक्ति-अ० [अ०] संभवतः अधिकतर संभव है ।
 शक्ति-वि० दे० 'शक्ति' ।
 शक्ति-स्त्री गंधा या अक्षी शब्द, अपसम्बन्ध; चरित्रपर छान्न लगानेवाली बात; कलंक; विवाहपरिमें गाथा जानेवाला अक्षी गीत । -गलीज, -गुल्ला-स्त्री एक-पुसरे की गाथियाँ देना; अपसम्बन्ध, दुर्वचन । मु० -कड़ना-विवाहके पूर्व किसीको किसी लकड़ीका पत्ति, सास, ससुर आदि बताना । -पड़ना-किसी स्त्रीके बारेमें नातेके विरुद्ध बात कहना; बैसा भजाक करना । शक्तिपौर उत्तरना-गाथियाँ बकने लगना ।
 गल-वि० गल बजानेवाला; शेखी बघारनेवाला ।
 गलित-वि० [सं०] नष्टमें चूर; बीमार; मूर्ख । पु० परीक्षा; जीव-पक्षता ।
 गलीज-पु० [सं०] कमलगुह्य ।
 गलना-सं० कि० गोलना, कहना ।
 गाव-पु० [फा०] गाव-पैल; दूध राशि । -कुसी-स्त्री गोपथ । -कोड़ा-पु० वह बीका जिसकी पीठपर कूब निकला हो । -झाना-पु० मवेशीखाना; मुदा जानवरोंकी खाल तारनेकी जगह । -झर्झ-वि० गाव, नष्ट (होना) ।
 -घष, घष-वि० दूसरेका माल-जमा हजम करनेवाला; बने पेटवाला (आदमी) । -वेहरा-वि० गाव-पैल जैसे वेहरनेवाला । -जबो, -जवान-पु० एक प्रसिद्ध वनीषधि ।
 -जोर-वि० बलवान्; बलवान्, पर दाब पैच न जाननेवाला । -जोरी-स्त्री बल; लकनेकी बच्छा; हाथापाई ।
 -तकिया-पु० बड़ा तकिया, मसनद । -दूरी-पु० जंगली पैल । -दी-वि० मूर्ख, दुर्ध, जड़-बुद्धि । -हुम, -हुमा-वि० जो ऊपरसे नीचेकी पतला होता जाय, डाढ़ ।
 स्त्री गुरदी । -दोसा-दोसा-पु० दूध दुहनेका बरतन ।
 -पछा-पु० कुशी एक पैच । -पैकर-वि० साँझ जैसे भारी-भरकम शरीरवाला । -बहल-पु० कुपतीका एक पैच । -मुल्ल-पु० पेटेबाजीमें एक खास ढंगसे लड़ा होना । -धल-पु० तलवाकी लड़ाईमें बिपक्षीपर बार करनेका एक खास ढंग । -धुमारी-स्त्री पशुगणना ।
 -धुमा, -धुम्मा-पु० वह बीका जिसके सूर फटे हो ।
 मु० -जोरी दिखाना-बलके करतब दिखाना; बल-परीक्षा करना ।
 गाव-स्त्री-स्त्री गानेका ढंग ।
 गाव-पु० दहाक ।
 गाव-गणि-पु० [सं०] घुतराहूका मंत्री संजय ।
 गास-पु० दुःख, संकट ।
 गासिवा-पु० जीनपोश ।
 गाह-पु० [सं०] अगवाहन; गहराई; * ग्राहक; पकड़; मगर, ग्राह । वि० गाहन करनेवाला । स्त्री [फा०] खान, जगह; समय; काल; बारी । -बग्राह-अ० कमी-कमी; समय-समयपर । -गाहे-गाहे, गाहे-गाहे-अ० कमी-कमी;

कचित् ।
 ग्राहक-पु० ग्राहक, खरीदार; कद्रदाता । [सं०] अगवाहन करनेवाला ।
 ग्राहक-स्त्री-स्त्री खरीदारी; कद्रदाता ।
 ग्राहकी-स्त्री खरीदारी; लिकी ।
 ग्राहन-पु० [सं०] पानीमें घँसना, पैठना, गोता लगाना, निमज्जना; बाह्र लेना; छानना; बिकीटना ।
 ग्राहना-सं० कि० बाह्र लेना; अगवाहन करना; बिकीटना; पार करना -'फेरि भीमरा कृष्णा गाही'-छत्रप्रकाश; ग्रहण करना; अनाज मीकनेमें दाना झाड़नेके छिप छँठकी ढंठेसे उठाना -'बहुरि पवारहि गाहत'-सूर ।
 ग्राह-स्त्री-स्त्री कथा, गाथा, वृत्तान्त ।
 ग्राहित-वि० [सं०] गाहन किया हुआ ।
 ग्राहिता(सु)-वि० [सं०] गाहन करनेवाला ।
 ग्राही-स्त्री-स्त्री पाँच बीजोंका समूह; फल आदि गिननेका एक मान ।
 गिजना-अ० कि० गीजा जाना ।
 गिजाई-स्त्री गीजनेकी क्रिया; बरसातमें पैदा होनेवाला एक कीड़ा ।
 गिदुरी-स्त्री-स्त्री दे० 'ई' 'दुरी' ।
 गिदुल-पु० [सं०] मंद, कंदुक ।
 गिदीबा, गिदीरा-पु० मोटी रीटीकी शकलमें जमायी हुई चीनी ।
 गिजान-पु० दे० 'गान' ।
 गिड-स्त्री-स्त्री शीबा, गला ।
 गिचपिच-वि० पास-पास लिखा हुआ, अस्पष्ट ।
 गिचपिचा-स्त्री-स्त्री कचपचिया ।
 गिचर-गिचर-वि० दे० 'गिचपिच' ।
 गिजगिजा-वि० गीला; पिलपिला ।
 गिजा-स्त्री-स्त्री [अ०] आहार, खाद्य पदार्थ ।
 गिजाई-स्त्री-स्त्री एक बरसाती कीड़ा, बालिन ।
 गिजाई-वि० आहार-संबन्धी; जो आहार-रूपमें हो ।
 गिटकिरी-स्त्री-स्त्री तान लेनेमें स्वरकी कँपना ।
 गिटकीरी-स्त्री-स्त्री कंकरी, पत्थरका गोल छोटा टुकड़ा ।
 गिटपिट-स्त्री-स्त्री विकृत, अंधहीन सम्प्रदाय । -बोली, -भाषा-स्त्री-स्त्री अंग्रेजी । मु० -करना - (टूटी-फूटी) अंग्रेजी बोलना ।
 गिट्ट-पु० चिलमके छेदपर रखनेकी कंकरी; धातु, लकड़ी आदिका छोटा और मोटा टुकड़ा; गिटकिरीके कपमें निकलनेवाले स्वरका सवने छोटा अंश ।
 गिट्टा-पु० चिलमके छेदपर रखनेकी कंकरी ।
 गिट्टी-स्त्री-स्त्री ईंट-पत्थरके छोटे तोड़े हुए टुकड़े जो छत बनाने आदिमें काम आते हैं; मिट्टीके बरतनका छोटा टुकड़ा; चिलमके छेदपर रखनेकी कंकरी; धागेकी गोली ।
 गिट्टिगिट्टा-अ० कि० दोन भावसे प्रार्थना करना, आनिबी करना; चिरोरी करना ।
 गिट्टिगिट्टा-स्त्री-स्त्री गिट्टिगिट्टाके भाव ।
 गितार-पु० एक बाजा ।
 गिह्रा-पु० कियोंके गानेका एक गीत, नकदा ।
 गिह-पु० मरे जानवरोंका मांस खानेवाला एक बड़ा पक्षी

जिसकी दृष्टि बड़ी तीव्र होती है; एक तरहकी बड़ी परतंग ।

—राज-पु० जटापु ।

गिरगिराना—अ० कि० देहका कौपमा; रोमांच होना ।

स० कि० झकझोरना ।

गिरगिरी—स्त्री० गिरनेकी क्रिया; गणना; संख्या; मूल्य; महत्त्व; हाजिरी (सेना) । —के-गिने हुए, बोधेसे । सु० — पर जाना—हाजिरी देने जाना । —में आना—में होना— कुछ मूल्य, महत्त्वका होना, कुछ समझा जाना । —होना— महत्त्वका समझा जाना ।

गिरना—स० कि० धंस्या, गिरती मादम करना, गणन, गणना करना; हिसाब लगाना; समझना; कुछ मूल्य, महत्त्व रखनेवाला मानना । सु० गिरन-गिरनकर—गिरनकर, गिरते, हिसाब करते हुए । —० कदम रखना—बहुत धीरे-धीरे चलना, छोटे-छोटे कदम रखना । —गालियाँ देना—करके हर आदमीका नाम ले-लेकर गालियाँ देना । गिर देना—तुरत चुकता कर देना । गिरे-गिराने, —चुने-बोधेमें, गिरतीके ।

गिरनामा—स० कि० दे० 'गिनामा' ।

गिराना—स० कि० गिरनेका काम दूसरेसे कराना ।

गिनी—स्त्री० [अ०] एक विलासती वास; सोनेका अंग्रेजी सिक्का जो २१ शिलिंगका होता है । —गोचर—पु० वह सोना जिसमें ताँबेका मेल हो ।

गिनी—स्त्री० चक्कर; † दे० 'गिनी' । सु० —खाना— (पनगका) चक्कर खाना ।

गिच्छन—पु० [अ०] जावा, सुमात्रा आदिमें पाया जाने-वाला एक तरहका वृक्ष ।

गिरम—स्त्री० गदगद ।

गिरमटी—स्त्री० बिछानेके काम आनेवाला एक सूती कपड़ा ।

गिरम—स्त्री० गला; गरदन ।

गिराह—पु० एक तरहका घोड़ा ।

गिराँट—पु० एक देशी कपड़ा, 'गिरानट' ।

गिराँट—पु० फंदा ।

गिराँदा—वि० फंदा डालनेवाला ।

गिरम—पु० दे० 'गिरि' । —घर, —घारन, —घारी—पु० दे० 'गिरिघर' । —घरम—पु० बड़ा, श्रेष्ठ पहाड़, गिरिवर । —०घारी—पु० कृष्ण, गिरिधारी ।

गिराँ—स्त्री० एक छोटी मछली ।

गिरगिट—पु० छिपकलीकी जातिका एक जंतु जो कई तरहके रंग बदल सकता है । सु० —की तरह रंग बदलना—मत, वृत्ति बदलते रहना, कभी कुछ, कभी कुछ बनना ।

गिरगिटाना—पु० गिरगिट ।

गिरगिरी—स्त्री० एक पेड़ ।

गिरगिरी—स्त्री० जिकारेकी तरहका एक खिलौना ।

गिरजा—पु० ईसापूर्वका उपासनागृह; एक पक्षी । • स्त्री० दे० 'गिरिजा' ।

गिरव—अ० दे० 'गिर' ।

गिरदा—पु० चक्कर तकिया; फरशीके नीचे रखनेका गोला कपड़ा; ढाल; अंग्रेजीका मेडल ।

गिरदान—पु० गिरगिट ।

गिरदाघर—वि० दे० 'गिराघर' ।

गिरना—अ० कि० कपूरसे, अपनी जगहसे नीचे आना, खड़े रहनेमें असमर्थ होकर जमीनपर जा जाना; उड़ना (पर, दीवार); उलझना; खपना; (मरी आदिका) दूधरी बड़ी नदी आदिमें मिलना; छीजना; भ्रमनत होना; मंदा होना, घटना (माक); बरसना; धावक होकर गिर जाना, हारना; मारा जाना या पतन होना; (शक्ति, प्रतिष्ठा आदिका) घटना, हास होना; बीमार होना, खाट पड़ना; टूटना (बाजका शिकारपर); किसी जीवके लिए बहुत चाब दिखाना; सुस्त, उत्साहहरित होना; ऐसे रोगका होना जिसका सिर या दिमागसे नीचेकी ओर जाना माना जाता हो (फालिज, नजला गिरना) । गिरता-पड़ता—अ० गिरते-उड़ते, बड़ी कठिनाईसे । गिर-पड़कर—अ० गिरते-पड़ने । गिरा-पड़ा—वि० जमीनपर पड़ा हुआ; झूटा-छटका हुआ; उड़ा हुआ; जीर्ण शीर्ण । सु० गिरकर मामला, सौदा करना—गरजमंद बनकर, रक्कर मामला ह० करना ।

गिरनार—पु० गुजरातका एक पर्वत जो जैनोंका एक प्रधान तीर्थ है ।

गिरनारी—वि० गिरनार पर्वतपर रहनेवाला; गिरनारका ।

गिरप्रत—स्त्री० [फा०] पकड़; दोष; भूल पकड़ना; एतराज; गूठ ।

गिरप्रतार—वि० [फा०] पकड़ा हुआ; फँसा हुआ; बँधा हुआ, बंदी ।

गिरप्रतारी—स्त्री० [फा०] गिरप्रतार करना या होना; कैद ।

गिरबी—स्त्री० दे० 'गिरबी' ।

गिरमिट—पु० बड़ा बरमा; [अ० 'एग्रोमिट'] एकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र; एकरार ।

गिरमिटिया—पु० किसी उपनिवेशमें गया हुआ शतर्बंद हिंदुस्तानी मजदूर (मिटिन्स-कालमें) ।

गिरवान—पु० दे० 'गीर्वाण'; दे० 'गरीवान' ।

गिरवाना—स० कि० 'गिराना'का प्रे० ।

गिरवी—स्त्री० बंधक; रेहन; बंधक रखी हुई चीज । —गाँठ—पु० बंधक । —दार—पु० बंधक रखनेवाला, रेहनदार ।

—जामा—पु० रेहननामा ।

गिरस्ती—स्त्री० दे० 'गृहस्ती' ।

गिरह—स्त्री० [फा०] गाँठ, बंधन; गुप्ती, उलझन; जेब, टेंड; ईश आदिके पीरोका जोष; बैर, घुराई जो अधिक दिनमें मनमें हो; कलाबाजी; बंदके आखिरका दौरा कुश्तीका एक पंच; एक भाप जो सदा दो ईन्चके बराबर होती है ।

—कट—पु० जेब कतरनेवाला, पाकिटमार । —गीर—वि० गाँठवाला; बल लावा हुआ, पंचदार । —दार—वि० जिसमें गाँठें हों । —बाज़—पु० वह कत्तार जो उबते हुए कलाबाजी करता है । —०डबी—स्त्री० सली कलाबाजी । सु० —काटना,—खुलना—दे० 'गाँठ कटना,—खुलना' इत्यादि । ('गाँठ' शब्दके प्रायः सभी मुहावरे इसके साथ आते हैं) ।

गिरही—वि०, पु० दे० 'गृही' ।

गिराँ—वि० दे० 'गरी' ।

गिराँबा—पु० दे० 'गरीब' ।

गिरा—स्त्री० [सं०] बाणी, सरस्वती; वाक्य; शैली, जवान ।

—पति-पु० अन्ता । —विनु०-पु० अन्ता ।
 गिराना-स० कि० नीचे ढालना; केंचना; ढालना; पटक देना; अंगीतर लड़का देना; गहाना (नाली आदिके) गिरनेका बर्णन करना; मूख, कफिक, प्रतिष्ठा आदि बटाना; गुरी दबाकी से जाना; सहास उपस्थित करना; बुद्धि मार डालना ।
 गिरानी-को० दे० 'गरानी' ।
 गिराव-पु० दे० 'गिरावट' ।
 गिरावट-को० गिरनेका भाव, पतन, अधःपात ।
 गिरास-पु० दे० 'ग्रास' ।
 गिरासना-स० कि० दे० 'ग्रासना' ।
 गिराह-पु० दे० 'ग्राह' ।
 गिरि-पु० [सं०] पहाड़, पर्वत; सम्प्रदायिकोंकी एक उपाधि; अश्विका एक रोग; पारेका एक दोष; गैद; वादक; आठकी संख्या । को० नुबिया; गिराण । —कंडक-पु० इंदका बज, बिजली । —कंदर-पु० पहाड़की गुफा । —कच्छप-पु० पहाड़की गुफा में रहनेवाला कछुवा । —कदंब-कदंबक-पु० कदंबका एक भेद । —कदली-को० पहाड़ी केला । —कर्मिका-को० पूज्या; अपराजिता कता । —कर्ण-को० अपराजिता । —काण-वि० जिसकी एक आँख गिरि रंगसे नष्ट हो गयी हो । —कानन-पु० पहाड़ के ऊपर जंगल हुआ बाग । —कुहर-पु० गिरिकंदर । —कूट-पु० पहाड़की चोटी । —कृषि-पु० स्वफल्कका एक पुत्र, अम्बका भाई । —गुह-पु० खेलेनेका गैद । —गुहा-को० पहाड़की गुफा । —हर-पु० पर्वतवासी । —ज-पु० शिलाजल; गेरू; लोहा; अन्नक; महुआ । वि० पहाड़से उत्पन्न । —जा-वि० पार्वती; गंगा; पहाड़ी केला; त्रायमाणा लता; महिला । —पति-पु० शिव । —मल-पु० अन्नक । —जाल-पु० पर्वतमेणी । —अर-पु० बज । —दुर्ग-पु० पहाड़पर या पहाड़के बीच बना हुआ किला । —दुर्गिना(रु)-को० पार्वती । —द्वार-पु० दर्रा । —धर, धारी(रिह)-पु० कृष्ण । —धारन, धारन-दे० 'गिरिधर' । —धातु-को० गेरू । —ध्वज-पु० बज । —नंदिनी-को० पार्वती; गंगा । —नगर-पु० गिरानार पर्वतपर बसा हुआ नगर (?) । —नदी-को० पहाड़ी नदी । —नाथ-पु० शिव । —निच-पु० कानयन । —नथ-पु० दो पहाड़ोंके बीचका संकरा मार्ग, दर्रा । —पीछ-पु० फालसा । —पुष्पक-पु० शिलाजल; पथरीक । —प्रख-पु० पहाड़के ऊपरका चौरस मैदान । —शिवा-को० सुरा नाथ । —बाँवब-पु० कृष्ण । —मिह-पु० भद्र; पाषाणभेद । —मलिका-को० कुंडल । —मान-पु० हाथी; विशालकाय हाथी । —खु-को० गेरू । —खुजब-पु० गेरू । —मेह-पु० बिट्ठलदर । —राव-पु० बका पहाड़; हिमालय । —बसिका-को० एक पहाड़ी हंसिनी, बतख । —जब-पु० जरासंघकी राजधानी, राजगृह । —हा-पु० शिव । —शाकिनी-को० गिरिकर्ण । —शिखर-पु० गिरिकूट । —श्रंग-पु० पहाड़की चोटी; गणेश । —संभव-पु० एक पहाड़ी वृक्ष । —सातु-पु० पठार, अधिलका । —सार-पु० कौट; रंगी। शिलाजल; मल्ल पर्वत । —सुत-पु० मैनाक पर्वत । —सुवा-को०

पार्वती । —खवा-को० पहाड़ी नदी ।
 गिरिक-वि० [सं०] पर्वतसे उत्पन्न । पु० शिव; गैद ।
 गिरिका-को० [सं०] नुबिया ।
 गिरिकक, गिरियाक, गिरिकक, गिरियाक-पु० [सं०] खेलेनेका गैद ।
 गिरिखी-को० दे० 'गृहखी' ।
 गिरिह-पु० [सं०] बका पहाड़, हिमालय; शिव; आठकी संख्या ।
 गिरी-को० बीजके भीतरका गूदा, मज्जा ।
 गिरीहा-पु० [सं०] हिमालय; शिव; हृत्स्पति ।
 गिरेबा-पु० छोटी पहाड़ी, टीला; चढ़ाईका रास्ता ।
 गिरेबाव-पु० दे० 'गरीबाव' ।
 गिरैबा-को० गलेका छोटा रस्ता ।
 गिरो-वि० गिरवी; बंधक रखा हुआ ।
 गिरोही-पु० दलका आदमी, समी, साथी—'काली सिहका कोई गिरोही'—अमर० ।
 गिर-को० [सं०] दे० 'गिरा' ।
 गिरा-पु० दे० 'गिराज' ।
 गिरा-अ० [फा०] आस-पास; पास । पु० गोलाई; घेरा ।
 —बाद-पु० बगुला, बजदर ।
 गिरागिरा-अ० [फा०] चारों ओर, इर्द-गिर्द ।
 गिराव-पु० [फा०] मँबर ।
 गिरावर-वि० [फा०] घूमनेवाला, दौरा करनेवाला ।
 —कानूनगो-पु० एक माल कर्मचारी जिसका काम पट-बारियोंके कागजोंकी जाँच करना है ।
 गिल-वि० [सं०] भक्षक; निगलनेवाला । पु० पक्षियाल; बौंदीरी नीच । —गिल, —ग्राह-पु० नक, नाक ।
 गिल-को० [हा०] मिट्टी; गीली मिट्टी, गारा । —अंदाजी-को० सबक, बोध आदिपर मिट्टी डालना; पुष्टावदी; —कार-पु० मिट्टीका पल्लर करनेवाला । —कारी-को० पल्लर करनेका काम । —हिकमत-को० कपडोंदी ।
 गिलगिलिया-को० सिरोंही पक्षी ।
 गिलगई-को० भारतीय पथिनोत्तर नीमा और अफगा-निस्तानमें रहनेवाली एक कबूली जाति ।
 गिलह-को० सुलम्मा, सोनेका पानी चढ़ानेका काम; बौंदीके रंगकी एक पटिया धातु ।
 गिलही-को० शरीरके सविस्त्रानकी गोंड; एक रोग जिसमें यह गोंड सूज जाती है या अस्थि गोंड निकल आती है ।
 गिलह-पु० सरल पदार्थकी एक माप, 'गैलन'; [सं०] निगलना ।
 गिलभा-स० कि० निगलना—'कुंजर भुंकीरी गिल वैदी'—सुदरदास; मनमें रखना ।
 गिलबिला-वि० पिलपिला ।
 गिलबिलाना-अ० कि० अस्पष्ट बोल बोलना ।
 गिलम-को० कनी कालीन; मोटा गरा—'गुलगुली गिलमै गलीचा है गुनीजन है'—पद्माकर । वि० मुलायम ।
 गिलसिह-पु० एक तरहका बहिया कपड़ा ।
 गिलहारा-पु० बोंसकी चपटी तीलियोंका बना पनडम्बा; एक कपडा ।
 गिलहरी-को० पेड़ोंपर रहनेवाला चूहे जैसा एक छोटा

अंतु, गिलाई, चिखुरी ।

गिला-पु० [फा०] शिकायत; उल्हास ।

गिलाई-खी० गिलहरी ।

गिलाजल-खी० [अ०] गाढापन; गंदगी; नापाक़ी; मिला ।

गिलान-खी० दे० 'ग्लानि'; घृणा-रहित दरिद्र विद्याभू-
को जगजन करे गिलान'-दीनदयाल ।

गिलाक़-पु० [फा०] तकियेकी खोली; सितार आदिकी
खोली; लिहाफ़; म्यान ।

गिलाय-खी० दे० 'गिलाई' ।

गिलाबु-पु० [सं०] गलेका एक रोग जिसमें उसके भीतर
छोटीसी गोंठ हो जाती है ।

गिलाब, गिलाबा-पु० गारा, कीचड़ ।

गिलास-पु० शीशे या बाहुका बना पानी पीनेका गोल,
लंबोतरा प्याला; कटोरीमें होनेवाला एक स्फटिक कल ।

गिलित-वि० [सं०] निगला हुआ, खाया हुआ ।

गिलिम-खी० दे० 'गिलम' ।

गिली-खी० दे० 'गुली' । वि० [फा०] मिट्टीका ।

गिलेक़ा-पु० दे० 'गिलाफ़' ।

गिलोय-खी० [फा०] गुडूच ।

गिलोल-खी० दे० 'गुल्ल' ।

गिलोका-पु० गुल्लके फँकी जानेवाली मिट्टीकी गोली ।

गिलौंदा-पु० दे० 'गुल्ले' ।

गिलौरी-खी० पानका तिकोना या चौकोना बीड़ा ।-दान
-पु० पनडब्बा ।

गिल्दी-खी० दे० 'गिल्दी' ।

गिल्हान-खी० दे० 'ग्लानि' ।

गिल्हा-पु० दे० 'गिला' ।

गिल्ही-खी० गुली ।

गिल्जु-पु० [सं०] गायक; सामगायक ।

गीजना-म० कि० नरम, नाजुक चीजको मसलकर
खराब कर देना; खानेकी चीजोंकी भड़े तरीकेने एकमें
मिलाना ।

गीबा-खी० प्रीबा, मरदन ।

गीडा-पु० दे० 'गीहर' ।

गीहरी-पु० आँसुका मेल, कीचड़-'धकर लार मन्यो मुख
दीप्त अँखिमें गीहर नाकमें सेढो'-सुंद० ।

गीत-वि० [सं०] गाथा हुआ; कथित, वर्णित; जिसका यश
गाया गया हो । पु० वह जो गाथा जाय, गानेकी चीज;
गान; बर्णन ।-क्रम-पु० किसी गीतका गानक्रम, स्वरोंका
उतार-चढ़ाव; एक तरहकी तान ।-गीर्षि-पु० जय-
देव-रचित संस्कृतका एक प्रसिद्ध गीतिकाव्य ।-प्रिय-
वि० जिसे गाना प्रिय हो । पु० शिव ।-प्रिया-खी०
कापिकेयकी एक मातृका ।-मोषी(विष्)-पु० कित्तर ।
-साक्ष-पु० संगीतविद्या । मु० (किसीके)-गाना-
बर्णन; बखान करना ।

गीतक-[सं०] गान; स्तोत्र ।

गीता-खी० [मं०] गुरु-शिष्य-संवाद-रूपमें आध्यात्म-तत्त्व-
का उपदेश करनेवाला पद्यबंध, शिकगीता, रामगीता आदि;
श्रीमद्भगवद्गीता; एक राग; एक माथिक छंद; * गाथा,
कथा ।

गीतायन-पु० [सं०] गीतका साधन, गीता आदि ।

गीति-खी० [सं०] गीत; एक माध्याह्न । -काव्य-पु०
गीतके रूपमें बना हुआ काव्य जो प्रायः आत्मपरक होता
है । -नाटक-रूपक-पु० वह नाटक जिसमें पद्य वा
गानेकी चीजोंकी प्रधानता हो ।

गीतिका-खी० [सं०] छोटा गीत; एक माथिक छंद; एक
वर्णवृत्त ।

गीती(विन्)-वि० [सं०] गाकर पढ़ने, पाठ करनेवाला ।

गीथा-खी० [सं०] बाणी; गीत ।

गीद-पु० मेक्सिको जातिका एक जानवर, स्वार,
शृगाल । वि० डरपोक । -मखली-खी० दिखाऊ धमकी,
डरानेके लिए झूठी धमकी देना । -रुख-पु० एक फल-
दार वृक्ष ।

गीदकी-खी० श्रमगी, मादा गीद ।

गीदरी-पु० दे० 'गीद' ।

गीदी-वि० [फा०] डरपोक; कायर; बेहया; बेगैरत ।

गीध-पु० दे० 'गिद्ध' ।

गीधना-अ० कि० परचना ।

गीधल-खी० [अ०] अनुपस्थिति; पीठ पीछे बुराई करना,
जुगलखोरी ।

गीर-खी० बाणी, बोली; सरस्वती । -बाण, -बान-
पु० दे० 'गीर्वाण' ।

गीरय-पु० [सं०] बृहस्पति ।

गीर-'गिर'का समासगत रूप । -देवी-खी० सरस्वती ।
-पति-पु० दे० 'गीर्वाण' । -भाषा-खी० दे०
'गीर्वाणी' । -कस्त-खी० महाज्योतिष्मती, बड़ी माल-
कंगनी । -बाण-पु० देवता (जिसकी बाणी ही जिसका
अल है) । -कुसुम-पु० लौह । -बाणी-खी० देव-
भाषा, संस्कृत ।

गीर्ण-वि० [सं०] निगला हुआ; वर्णित ।

गीर्णि-खी० [सं०] निगलना; वर्णन ।

गीर्धि-वि० [सं०] निगलनेवाला ।

गीछा-वि० भीगा हुआ, नम, आर्द्र । -पन-पु० नमी,
आर्द्रता ।

गीर्ण-खी० दे० 'प्रीबा' ।

गीर्णपति-पु० [सं०] बृहस्पति; पंडित ।

गुंन-वि० दे० 'गुंता' । -बहरी-खी० एक मछली ।

गुंता-वि० दे० 'गुंता' ।

गुंती-वि०, खी० दे० 'गुंती' ।

गुंजाना-अ० कि० गुंनेकी तरह बोलना; धुआँ देना,
जच्छी तरह न जलना ।

गुंजा-पु० [फा०] कली; झुरमुट; मेड़ । वि० घना आबाद,
गुंजन । -देहन-वि० कलौसे, छोटेसे मुंहका; सुंदर
मुंहवाला; मायूक ।

गुंजी-खी० गुंजा ।

गुंज-खी० गलेमें पहननेका एक गहना, गोप; * दे०
'गुंजा' । पु० [सं०] मौरिका गुंजार; गुच्छा । -निकेतन-
पु० नीरा ।

गुंजक-पु० [मं०] एक पीषा ।

गुंजन-पु० [सं०] मौरिका समनमाना, गुंजार; गुनगुनाना;

कलरव ।

गुंजना-अ० कि० भौरेका गुंजार करना; गुनगुनाना ।

गुंजरना-अ० कि० गुंजार करना; गरजना ।

गुंजलिका-स्त्री० केंटा, शिकंजा-‘बह अजगरकी तरह उसे अपनी गुंजलिकामें लपेटनेके लिए चले पड़ी’-गुनाहोंके वेवना ।

गुंजलक-स्त्री० [फा०] शिकन, सिलबट; गौंठ, गुल्फी; उलझन ।

गुंजहरा-पु० बन्धोंके हाथका कड़ा ।

गुंजा-स्त्री० [सं०] पुंजची; भनभनाहट; कलध्वनि; पटह; मयिरालय; धितन; एक विषैला पौधा ।

गुंजाहट-स्त्री० [फा०] स्थान; अवकाश; समाई; बचतका अवकाश ।

गुंजान-वि० [फा०] घना, सटा हुआ ।

गुंजायमान-वि० [सं०] गुंजना हुआ ।

गुंजार-पु० भौरेकी भनभनाहट ।

गुंजारना-अ० कि० गुंजना ।

गुंजिका-स्त्री० [सं०] पुंजची ।

गुंजित-वि० [सं०] गुंजनयुक्त ।

गुंजिषा-स्त्री० कानका एक गहना ।

गुंजी(जिद्)-वि० [सं०] गुंजनयुक्त ।

गुंठन-पु० [सं०] ढकना; छिपाना; लेपन ।

गुंठा-पु० एक तरहका चौड़ा । † वि० नाटा, छोटे कदका ।

गुंजित-वि० [सं०] ढका, छिपाया हुआ; लेप किया हुआ; पीसा हुआ ।

गुंज-पु० मलार रागका एक भेद; [सं०] चूर्ण करना, पीसना; कनेक ।

गुंजई-स्त्री० गुंजापन, दुष्टता ।

गुंजक-पु० [सं०] धूलि; तैलपात्र; धूल मिला आटा; माधुर्यपूर्ण मंद स्वर ।

गुंजन-पु० [सं०] गुंठन ।

गुंजली-स्त्री० मेंडुरी; कुंजली ।

गुंजा-वि०, पु० बदमाश, दुईंस, छोटे चाल-चलनवाला ।

गुंजासिनी-स्त्री० [सं०] गुच्छमूलिका, गोंदला नामकी घास ।

गुंजिक-पु० [सं०] आटा ।

गुंजित-वि० [सं०] चूर्ण किया हुआ; धूल किया हुआ; धूलमे ढका हुआ ।

गुंजी-स्त्री० मेंडुरी, सतकी लच्छड़ी; † पीतलका छोटा गगरा ।

गुंथना-अ० कि० गुंथा जाना; गुंथना ।

गुंथना-पु० नागमोथा ।

गुंथ-पु० [सं०] सरवण ।

गुंथना-अ० कि० गुंथा जाना; गुंथना ।

गुंथाई-स्त्री० गुंथनेकी किया या भाव; गुंथनेकी जरूरत ।

गुंथावट-स्त्री० गुंथने या गुंथनेकी किया या ढंग ।

गुंफ-पु० [सं०] गुंथना; संयुक्त करना; सजावट; मूँछ, गलमुच्छा; बाजूईद ।

गुंफन-पु० [सं०] गुंथना; सजाना, तरतीब देना ।

गुंफना-स्त्री० [सं०] गुंथना; सुंदर, अर्थात्सुकल शब्द-

बोधना, वाक्य-रचना ।

गुंफित-वि० [सं०] गुंथा हुआ; सजाया हुआ ।

गुंथ-पु० दे० ‘गुंथ’ ।

गुंथ-पु० [फा०] मरिजद आदिकी गोल छत विसमें आबाब गुंजे ।

गुंथरी-वि० गुंथरी शकलका । पु० एक खंभेका गोल जेमा ।

गुंथा-पु० (चोट लगनेसे होनेवाली) कड़ी गोल सजन, गुंथा ।

गुंथी-स्त्री० अंकुर; कोपल ।

गुंथा-पु० दे० ‘गुंथाक’ ।

गुंथार-स्त्री० कुलथी । * पु० ब्याला ।

गुंथारपाठा-स्त्री० दे० ‘गुंथारपाठा’ ।

गुंथारि-स्त्री० ग्वालिन ।

गुंथारी-स्त्री० कुलथी ।

गुंथारिज-स्त्री० ग्वालिन ।

गुंथार-पु० लेलका साथी । स्त्री० सखी ।

गुंथर-पु० दे० ‘गोथर’ ।

गुंथर-पु० दे० ‘गुंथर’ ।

गुंथर, गुंथर-पु० [सं०] एक कैंटीला पेड़; उस पेड़का गोंद जो गंधद्रव्य है और दवाके काममें भी आता है; दक्षिण भारतमें बोधा जानेवाला एक पेड़ जिसकी राल बामिश बनानेके काम आती है ।

गुंथरक-पु० [सं०] गुंथरका व्यापारी ।

गुंथी-स्त्री० आधी दोली ।

गुंथी-स्त्री० गुंथी आदि खेलनेके लिए जमीनमें बना हुआ बहुत छोटा गढ़ा । वि०, स्त्री० बहुत छोटी ।

गुंथ-पु० [सं०] गुच्छा; फूलोंका गुच्छा गुलदस्ता; कलाप, मोरकी पूँछ; झाड़; ३२ लक्षियोंका मुक्ताहार ।

-कमिष-पु० रागी धान । -करज-पु० करजका एक भेद । -ईसिका-स्त्री० कदली । -पन्न-पु० ताईका पेड़ । -फल-पु० अंगूर; केला; मकौय; रीठा । -फला-स्त्री० अक्षि-रमनी; द्राक्षा, कदली; कान्कभाची । -मूलिका-स्त्री० एक घास, गुंजासिनी ।

गुंथक-वि० [सं०] दे० ‘गुच्छ’ ।

गुंथल-पु० [सं०] एक तरहकी घास ।

गुंथा-पु० एक दहनमें पास-पास लगे हुए फूल या फल; एकमें बंधे हुए फूल; एकमें लगी, बँधी छोटी चीजोंका समूह; हम्बा; कुंदना । -सारा-पु० कनकचिया । -[रुंथ]वार-वि० गुंथेवाला ।

गुंथाई-पु० [सं०] १६ या २४ लक्षियोंका मुक्ताहार ।

गुंथी-स्त्री० करज; रीठा; कदमीरकी तरह होनेवाला एक फूल जो सुखाये जानेपर सखी बनानेके काम आता है और बड़ा स्वादिष्ट होता है ।

गुंथ-पु० [अ०] रास्ता; पाठ; पर्वच, प्रवेश; जाला, निकलना; निर्वाह; गुंथार । -गाह-पु० रास्ता; आम रास्ता । -नामा-पु० राह्यारिका परवाना । -बसर-पु० निर्वाह; गुंथार । -बान-पु० रास्तेकी रखवाली करनेवाला; मछार; वाटका महसूल वसूल करनेवाला । गुं०-करना-निर्वाह करना; दिन काटना । -होना-निर्वाह

होना; (किसी और रास्तेसे) निकलना; जा निकलना ।
 गुजराती-अ० कि० बीतना, कटना; जाना, निकलना;
 गुजर होना; (नदी) पार होना; निम्नना; घटित होना;
 कट, कटिनाइयाँ आना; भोगरूपमें प्राप्त होना; (रखाला
 आदिका) पेश होना; (जीमें) आना (भाव, विचार) ।
 (गुजर जाना = मर जाना) ।
 गुजरात-पु० भारतवर्षके दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित एक
 प्रदेश ।
 गुजराती-वि० गुजरातका; गुजरातका बना । पु० गुज-
 रातमें बसनेवाला । श्री० गुजरातकी भाषा ।
 गुजरात-पु० [अ०] गुजर, निर्वाह ।
 गुजरातवार-स० कि० पेश करना ।
 गुजरिया-श्री० दे० 'गुजरी' ।
 गुजरी-श्री० शामको सड़कके किनारे लगनेवाला बाजार;
 गुदवा; एक तरहकी पहुँची दे० 'गुजरी' ।
 गुजरेटी-श्री० गुजर कन्या; गुजरी ।
 गुजरात-वि० [फा०] बीता हुआ, अतीत; पिछला (मास,
 वर्ष इत्यादि) ।
 गुजरा-वि० [फा०] (समासांतमें) अदा करनेवाला ('शुक्र-
 गुजार', 'खिलमतगुजार') ।
 गुजारा-स० कि० बिताना; काटना; अदा करना (नमाज);
 पेश करना (अरजी, नजर) ।
 गुजारा-पु० [फा०] रास्ता; बाट; पुल या नावसे नदी
 पार करना; निर्वाह; निर्वाहार्थ दी जानेवाली रकम ।
 - (रे) की नाव-आर-पार जानेवाली नाव, घट्टा ।
 गुजारा-श्री० [फा०] निवेदन, अर्ज, प्रार्थना । -नामा
 -पु० निवेदनपत्र (छोटेकी ओरसे बड़ेकी लिये गये पत्रके
 लिए व्यवहृत) ।
 गुजी-श्री० नाकका सूजा हुआ मल, नकदी ।
 गुजरी-श्री० [सं०] दे० 'गुजरी' ।
 गुजरा-पु० बँसकी कील, गोश्रा; रेशेदार गुदा । † वि०
 छिपा हुआ, गुप्त ।
 गुसरोट, गुसरोट-पु० कपड़ेकी शिकन-कर उठाव
 बुँघट करत उसरत पट गुसरोट'-वि०; सियोंकी नाभिके
 आस-पासका भाग ।
 गुसिया-श्री० मैदेकी कुसलीमें मेवा, खोवा आदि भरकर
 बनाया हुआ एक पकवान; सोयेकी बनी एक मिठाई ।
 गुस्रोट-पु० दे० 'गुसरोट' ।
 गुद-पु० दे० 'गुद' ।
 गुदकना-अ० कि० कन्नूरका मक्का होकर गुदगू करना ।
 स० कि० निगलना ।
 गुदका-पु० गोली, गुटिका; छोटे आकार, पाकेट साइजकी
 पुस्तक; लट्टू; पानमें खानेका एक मसाला ।
 गुदकाना-स० कि० (तबला) बजाना ।
 गुदरगू-श्री० कन्नूरकी बोली ।
 गुदिका, गुदी-श्री० [सं०] बटी, गोली; रेशमका कोवा;
 मोती; मंत्रसिद्ध गोली जिसे सुँघमें रखनेवालेका दूसरोंके
 लिए अश्वय हो जाना माना जाता है; फुंसी, फुषिया ।
 गुद-पु० दल, समूह; बोधसे आदिमियोंका दल । -बंदी-
 श्री० दल बनाना । पु० -बँधना-दल बनाना ।

गुद-पु० काखकी चौकीर गोदी जी खकियोंके लेखनेके
 लिए बनायी जानी है ।
 गुदक-वि० गौँठ, गुठलीवाला; कठिन; मोहरा; बज,
 मूर्ख । पु० बई आदिसे दबनेसे बनी हुई गौँठ; मिछटी ।
 गुद्वी-श्री० मोटी गौँठ; टखना ।
 गुदकाना-अ० कि० कुंज, मोहरा हो जाना; खटाईके असर-
 से दौँतीका काटने, चवाने लायक न रहना ।
 गुदकी-श्री० (आम, जामुन आदि) फलका कड़ा और कुछ
 बड़ा बीज, कुमली; मिछटी; गुदधी ।
 गुदबा-पु० गुदकी चाशनीमें डालकर पकाया हुआ कबा
 आम ।
 गुद-पु० [सं०] दे० 'गुद'; गेंदा; प्रास, निवाला; गोला
 पिंड; कपास; हाथीका सड़ाह । -गुण-दार-पु० ईश ।
 -खक- (ब), -खका-श्री० दार-चीनी । -धानी-श्री०
 दे० 'गुदधनिया' । -धेनु-श्री० दानके लिए बनायी हुई
 गुदकी गाव । -पाक-पु० गुदकी चाशनीमें डालकर औषध
 बनानेकी प्रक्रिया; उस प्रक्रियासे बनी औषध । -गुद्व-
 पु० महुआ । -कल-पु० पीछे हट । -शकरी-श्री०
 सकर, चीनी । -हरीतकी-श्री० गुदकी चाशनीमें डुबोयी
 हुई हरे ।
 गुद-पु० ईश वा ताक्ष-खक-रसको गाढ़ा करके बनायी
 हुई बट्टी वा मेली । -धनिया-धानी-श्री० जुने हुए
 गेहूँको गुदमें पायकर बनाया हुआ लट्टू । पु०-खाना,
 गुदगुलेसे परहेज करना-बकी डुराई करना, छोटीसे
 बचना । -गोबर करना-चौपट करना, मट करना । -
 गोबर होना-बरबाद होना, नष्ट होना-गुमारी मूलसे
 ही सब गुद गोबर हो गया । -दिल्लाकर डेला मारना-
 लाभका लाभ दिखाकर कह देनेवाला काम करना ।
 -भरा ईसिया-देदा, सौंपछुंदरकी यतिवाला काम ।
 -से भरे तो ज़हर क्यों दे-नरमीसे काम चले तो
 कसई क्यों करे ।
 गुदक-पु० [सं०] गोलकाय पदार्थ; गेंदा; गुद; गुदपक्व
 औषध ।
 गुदगुद-पु० डुका पीने या अँतोंमें बाधुके संचारसे होने-
 वाला शब्द ।
 गुदगुदना-अ० कि० 'गुदगुद'की आवाज होना,
 निकलना । स० कि० डुका पीना ।
 गुदगुदाइट-श्री० 'गुदगुद'की आवाज; वैसी 'आवाज
 होना ।
 गुदगुदी-श्री० काठकी निगालीवाला छोटा डुका ।
 गुद्व-श्री० दे० 'गुद्व' ।
 गुदधी-श्री० [सं०] दे० 'गुद्व' ।
 गुदक-पु० एक चिड़िया, गड्ढी ।
 गुदका-पु० नमक डालकर बनाया हुआ गोला मात ।
 गुदहर, गुदहल-पु० अड़डुलका फूल, जपाकुसुम; एक
 छोटा पेड़ ।
 गुदा-श्री० [सं०] कपास; पोछी, गुटिका; धूँह ।
 गुदाका-श्री० [सं०] आलस्य; नींद ।
 गुदाक, गुदाक-पु० वह संज्ञा जिसमें गुद मिला हो ।
 गुदाकेश-पु० [सं०] अर्जुन; शिव ।

गुणिका-**की०** कपड़ेकी बनी हुई पुतली, छोटे-छोटे पोंच-
छोटी-छोटी गुणियाँ अंगुरियाँ छोटी छत्रीकी-**सू०**।-**सी-**
नन्दी-सी, सुंदर (लक्ष्मी, दुर्गादि)। **सु०**-**सँवारना**-
अपनी हैसियतके अनुसार लक्ष्मीकी झाड़ी कर देना।
-**(सी)** का **सेख**-बहुत आसान काम।-**का ब्याह**-
गृह्य और गुणिकाका ब्याह जिसे लक्ष्मीयाँ सेलमें करती
हैं; गरीबामक ब्याह।

गुणिका।-**पु०** बही गुणिया; नृत्ति, प्रतिभा।
गुणी-**की०** सिकुवन, सिलवट; **पुण्य**; गौड; कीना।
गुणीकरा-**वि०** गुण जैसा मीठा।
गुणच-**की०** एक रेश जिसका कंठल दवाके काम आता है,
गुच्छी।

गुच्छा-**की०** किवाबकी ठेठरी; चूर छोटा गच्छा।

गुच्छा-**पु०** गुच्छा।

गुच्छी-**की०** [सं०] गुच्छ, गुच्छ, गिलोच।

गुच्छे, **गुच्छेरक**-**पु०** [सं०] गुच्छे; गुच्छे; मास।

गुच्छा-**पु०** बही गुणिया, नर गुणिया; बही पतंग। **सु०**-
बाँधना-भाटका किसी कंठस अजमानके बदनमान करनेके
लिए बोलके सिरेपर उसका पुसला बाँधना और घूम-धूमकर
उसकी निंदा करना।

गुच्छी-**की०** पतंग, कनकौवा; एक छोटा गुच्छा; उड़नेके पहले
चिरियोंके पंखों की भाँति; पुड़नेकी हड्डी।

गुच्छ-**पु०** एक छोटा कौवा। **की०** गुच्छरु।

गुच्छ-**पु०** छिपने, बचनेका स्थान।

गुच्छा-**अ०** कि० छिपना।

गुण-**पु०** [सं०] जाति-स्वभाव, धर्म; सद्गुण, अच्छी सफ़त;
निगुणा, कमाल; प्रभाव, असर; लाभ, फायदा; प्रशंसनीय
बात; विशेषता; प्रकृतिका धर्म-सत्त्व, रज, तम; बीजा
आदिका तार; बागा; बीरी, प्रयत्न; गौण वस्तु; नाव
बोचनेकी बीरी; स्लासु; ज्ञानेन्द्रियका विषय; बरी; गुणा;
आवृत्ति; घ, ओ और अरु जो क्रमशः अ+इ, अ+उ तथा
अ+ऊके स्थानपर होते हैं (व्या०); तीनकी संख्या; अति-
शयता; रसका अंगरूप धर्म (सा०); पाचक, सूद; भीम;
परिहास; विभाग।-**कथन**-**पु०** गुणवर्णन, गुणमान;
शृंगाररसमें नायककी दस दशाओंमेंसे एक (दे० 'दशा',
'स्मरदशा')।-**कर**-**वि०** लाभदायक।-**करी**-**की०** एक
रागिनी।-**कर्म**(**रु**)-**पु०** गुण और कर्म; गौण कर्म।
-**करी**-**की०** दे० 'गुणकरी'।-**कार**-**वि०** लाभदायक।
पु० खानेकी छोटी-छोटी चीजें तैयार करनेवाला; भीम।
-**कारक**, **कारी**(**रिन्**)-**वि०** असर करनेवाला; लाभ
करनेवाला।-**कीर्तन**-**पु०** गुणमान।-**गान**-**पु०** बखाना,
गुणवर्णन।-**ग्रहण**-**पु०** (किरीका) गुण समझना,
गुणका आदर करना।-**ग्राहक**, **ग्राही**(**रिन्**)-**वि०**,
पु० गुण समझने, गुणका आदर करनेवाला, कदवान।
-**ग्राम**-**पु०** गुणोंका समूह। **वि०** गुणनिधान।-**बाली**
(**रिन्**)-**वि०** देव करनेवाला।-**ज्ञ**-**वि०** गुण जानने,
समझनेवाला, कदवान।-**ज्ञ**-**पु०** गुणोंके आधारपर
विचार करना।-**ज्ञ**, **तम**।-**ज्ञ**-**पु०** गुण और ज्ञ, अज्ञ-
ज्ञाई।-**धर्म**-**पु०** विशेष गुणकी भाँतिसे लिए आवश्यक

धर्म।-**विधान**, **विधि**-**वि०** जो गुणोंका खबाना हो।

-**शोका**(**रु**)-**पु०** वस्तुओंके गुणका अनुभव करनेवाला।

-**राग**-**पु०** दूसरोंके गुणमें आनंद माननेवाला।-**राशि**-

वि० गुणविधि। **पु०** शिव।-**कक्षण**-**पु०** आंतरिक गुणका

परिचायक चिह्न।-**लघनिका**, **लघनी**-**की०** लेमा,

तंजु।-**बचन**, **बाचक**-**पु०** गुणघोतक सत्य, विशेषण।

वि० गुणका बोध करनेवाला।-**बाह**-**पु०** अच्छे गुणों-

की बतलाना।-**विधि**-**की०** वह विधि जिसमें गुण-कर्म-

का विधान हो (मी०)।-**वृक्ष**, **वृक्षक**-**पु०** नाव बाँधने-

का कंटा।-**वृत्ति**-**की०** गौण वृत्ति।-**व्रत**-**पु०** मूल

व्रतोंकी रक्षा करनेवाले तीन व्रत (जै०)।-**व्यवह**-**पु०**

विशेषण।-**संग**-**पु०** गुणोंके साथ मेल; विषयासक्ति।

-**सागर**-**वि०** गुणविधि। **पु०** मछा; गुणी व्यक्ति।

-**हीन**-**वि०** गुणरहित, निर्गुण।

गुणक-**पु०** [सं०] वह अंक जिससे गुणा करें।

गुणविह्वल-**अंकन**-**पु०** [सं०] (कालिंदी मार्किंग) बी, करघे-

के कपड़े आदिपर उनकी उत्तमताका सूचक अंक डालना,

निशान बनाना।

गुणन-**पु०** [सं०] गुणा करना।-**विह्वल**-**पु०** गुणन वा

गुणाका सूचक चिह्नविशेष (X)।-**कल**-**पु०** एक अंक-

की दूसरेसे गुणन करनेसे उपलब्ध अंक, हासिल जरब।

गुणनिका-**की०** [सं०] पूर्वग (ना०); आवृत्ति; नृत्त;

नृत्तविधा; हार; सत्य; रक्ष।

गुणनीय-**वि०** [सं०] गुणन करने योग्य।

गुणवाच(**वर**)-**वि०** [सं०] गुणशाली, गुणी।

गुणा-**पु०** गणितमें जोड़नेकी एक संक्षिप्त रीति जिसमें कोई

संख्या कई बार जोड़नेके बजाय एक बारमें ही उतनी गुनी

बदा जा सकती है।

गुणाकर-**वि०** [सं०] जो गुणोंकी खान हो, गुणराशि।

गुणाकार-**अ०** गुणनके चिह्न जैसा, उभ तरह; एक-दूसरेकी

काटकर, स्पर्शकर जाते हुए-‘नटने बाँझोंकी गुणाकार गांघ-

कर रस्मेंको कसकर तान लिया’-कृ०। **वि०** गुणितके

चिह्न जैसा।

गुणाभ्य-**पु०** [सं०] तीन गुणोंमें सबसे अच्छा गुण,

सत्त्वगुण।

गुणाब्ज-**वि०** [सं०] बहुतसे अच्छे गुणोंवाला, सद्गुण-

शाली।

गुणातीत-**वि०** [सं०] प्रकृतिके तीनों गुणोंसे अक्षित, परे।

पु० परमेश्वर।

गुणापुरोच-**पु०** [सं०] अच्छे गुणोंके अनुकूल होना।

गुणानुवाद-**पु०** [सं०] गुणमान. गुणकनन।

गुणाभिव्य-**वि०** [सं०] गुणोंमें युक्त।

गुणाव्य-**वि०** [सं०] बहुतसे गुणोंवाला।

गुणिका-**की०** [सं०] अर्ध, सूजन।

गुणित-**वि०** [सं०] जिसका गुणन किया गया हो, राशी-

कृत; जिसकी गणना की गयी हो।

गुणी(**रिन्**)-**वि०** [सं०] गुणयुक्त; कोई हुनर-कला

जाननेवाला।

गुणीमूल-**वि०** [सं०] मुख्य अर्धसे रहित; गौण बनावा

हुना।-**व्यवह**-**पु०** काव्यका वह अंश जिसमें व्यंग्यार्थ

गाम्याभंते अधिक चमत्कारवाला न हो।

गुप्तेश्वर-पु० [सं०] परमेश्वर; विश्वकूट पर्वत।

गुणोपेत-वि० [सं०] अच्छे गुणोंसे युक्त।

गुण्य-वि० [सं०] गुणा करने योग्य; अच्छे गुणोंवाला; वर्णनीय। पु० वह अंक जिते गुणा करना हो।

गुण्यार्क-पु० [सं०] वह अंक जिसका गुणन किया जाय।

गुण्यमगुण्या-पु० गुण जानेका भाव, भिन्नत।

गुल्मी-स्त्री० तागे आदिमें उलझनेसे पड़ी हुई गौंठ, उलझन; कठिनाई।

गुल्म-पु० [सं०] गुच्छा; चँवर; ग्रंथका परिच्छेद; ३२ लक्ष्योका मुक्ताहार।

गुल्मक-पु० [सं०] गुच्छा; चँवर; ग्रंथपरिच्छेद।

गुणना-अ० [सं०] उलझना; लिपटला; भिदना; गूँथा जाना।

गुणवान्ता-सं० कि० 'गुणना'का प्रे०।

गुणुर्वा-वि० गुणकर बनाया हुआ।

गुव्-पु०, स्त्री० [सं०] गुदा, मलहार। -कील, -कीलक

-पु० बवासीर। -ग्रह-पु० कञ्च, मलमरोध। -निर्गम

-पु० गुदाका एक रोग, कौंच निकलना। -वाक-पु०

मलहारका पक जाना। -झंझ-पु० कौंच निकलना।

-रोग-पु० गुदामें होनेवाला रोग। -बदन-पु० गुदा।

-वर्त्म-पु० कञ्च।

गुव्कार, गुव्कारा-वि० गूदेदार; भरा, फूला हुआ; गुदगुदा।

गुव्गुदा-वि० भरा हुआ; नरम, गुल्गुला, गुदाज।

गुव्गुवान्ता-सं० कि० बगल, तलवे आदिको उँगलियोंमें इस तरह सजलाना कि सुरसुराहट या सुन्दर लुजली मालूम हो; छेड़ना; उभारना।

गुदगुदाहट-स्त्री० गुदगुदी।

गुदगुदी-स्त्री० गुदगुदानेमें पैदा होनेवाली सुखर सुरसुराहट या हँसानेवाली लुजली; चाब, चुल।

गुव्दिया-पु० वह जो गुदनी ओढ़े या चौथड़े लपेटे हो; खेमा आदि साक्षर देनेवाला; गुद वेचनेवाला। -पीर-पु० गौंठके पासका वह वृक्ष जिसमें चौथड़े लपेटकर गैवार मनोती मानते हैं। -ककीर-पु० गुदको पहननेवाला ककीर।

गुव्दकी-स्त्री० चौथड़ों, रंग-विरंगे डुकर्जोंको सीकर बनाया हुआ ओढ़ना, छिछावन, कथा; खर्क; दूटी-फूटी चीजोंका ढेर; गुदनी बाजार। -क्रोरोस-पु० फटे-पुराने कपड़े, दूटी-फूटी चीजें बेचनेवाला। -बाज़ार-पु० फटी-पुरानी, दूटी-फूटी चीजोंका बाजार। गु० -का छाछ-साधारण घरमें जनमा हुआ, साधारण वेश-भूषामें रहनेवाला असाधारण गुणी। -में छाछ-गुच्छ स्थानमें अच्छी बस्तु।

गुव्दगहारी-स्त्री० गोदनेवाली।

गुदना-अ० कि० गणना, चुमना। पु० गोदना।

गुदर-पु० राजदरबारमें हाजिरी।

गुदरना-अ० कि० त्यागना, अलग होना; निवेदन करना, गुबारिश करना; अत्यंत होना, गुबरना।

गुदराना-सं० कि० दे० 'गुजराना'; निवेदन करना -निकट विभीषण आब लुगाने। कपिपति सौं तबही गुराने'-रामचंद्रिका।

गुदरैन-स्त्री० पाठ बाद होनेकी परीक्षा देना; परीक्षा।

गुदवाना-सं० कि० गुदाना।

गुदौकर-पु० [सं०] बवासीर।

गुदा-स्त्री० [सं०] मलहार, गुद। -अंजन-पु० पुष्प-पुष्पका आपसी (अप्राकृतिक) मैथुन।

गुदाक्ष-वि० [का०] नरम, गुदगुदा; (समासमें) पिचकाने-वाला (दिलगुदाक्ष)। पु० गलाब; पिचकना; मनोव्यथा, वेदना।

गुदाना-सं० कि० 'गोदना'का प्रे०।

गुदाम-पु० दे० 'गोदाम'।

गुदारा-वि० गूदेदार, मांसरु; गुदाज।

गुदरना-सं० कि० झुनाना; पदना-'मुलना तहाँ निबाज गुदरै'-छत्रप्रकाश।

गुदारा-पु० नावपर नदी पार होना, गुजारा; दे० 'गुजारा'। वि० गूदेदार।

गुदावर्त-पु० [सं०] कीडवदता।

गुदौड-पु० [सं०] गुदाके मुखपरका चर्म।

गुरी-स्त्री० मञ्च, मीठी।

गुन-पु० दे० 'गुण'। -कारी-वि० दे० 'गुणकारी'।

-गाहक-वि०, पु० 'गुणग्राहक'। -गौरि-स्त्री० गौरी जैसी सीमाग्यवती, पतिव्रता स्त्री; कियोंका एक व्रत।

-वैत-वान-वि० गुणी, गुणवान्।

गुनगुना-वि० दे० 'कुनकुना'; नाकमें बोलनेवाला।

गुनगुनावा-अ० कि० नाकसे बोलना; बहुत धीमे स्वरमें, अस्पष्ट शब्दोच्चारण करते हुए माना।

गुनवा-सं० कि० विचार करना, सोचना; * वर्णन करना; माना।

गुनह-पु० [का०] 'गुनाह'का लघु रूप। -गार-वि० दोषी, अपराधी। -गारी-स्त्री० दोष, अपराध।

गुनही-वि० गुनहगार।

गुना-वि० गुणित (यह शब्द सस्यवाचक शब्दोंके अंतमें लमकर विशेष्य शब्दकी संख्या या मात्रामें उसनी बारका अर्थ उत्पन्न करता है, जैसे-तिगुना, चौगुना इ०)। [स्त्री० 'गुनी'।]

गुनारी-पु० बेसनका बना एक पकवान।

गुनावन-पु० विचार।

गुनाह-पु० [का०] पाप, दुष्कर्म; दोष, अपराध। -गार-वि० दोषी, अपराधी; जिसने पाप किया हो।

गुनाही-वि० गुनहगार।

गुनिवा-पु० दे० 'गोनिवा'; विचार करनेवाला। वि० गुणी।

गुनिवाला-वि० गुणोंवाला।

गुनी-वि० गुणीवाला। पु० क्लृप्त मनुष्य; शाप-भूँक करनेवाला।

गुनीला-वि० गुणोंवाला, गुणी।

गुनीश्वर-पु० एक तरहका देवदार।

गुनी-स्त्री० एक तरहका कोड़ा जो होलीके अवसरपर ब्रजमें काममें लाया जाता है।

गुपगुप-अ० छिपकर, गुप्त रीतिसे। स्त्री० एक मिठाई। गुलाबजामुन; लक्ष्मीका एक लेख; एक खिलौना।

गुपाक्ष-पु० दे० 'गोपाक्ष'।

गुणिक-पु० [सं०] राजा; रक्षक ।

गुणुत*-कौ० गूढ बात, रहस्य-‘कपी वृक्षति गुणुत तिहारी’-सूर । वि० दे० ‘गुप्त’ ।

गुप्त-वि० [सं०] रहित; छिपा या छिपाया हुआ; अदृश्य; गुह्य; संछुक्त, संयुक्त । पु० वैष्णोका उपनाम या वर्णसूचक उपाधि; भारतका एक प्राचीन राजवंश । -काशी-कौ० बदरिकाश्रमके राक्षसें पकनेवाला एक तीर्थस्थान । -गति-पु० गुप्तचर । -गृह-पु० शयनागार । -गोदावरी-कौ० एक तीर्थस्थान जो विश्वकूटके निकट है । -क्षर-पु० जाह्नव, छिपकर टोह लेनेवाला । -दान-पु० छिपाकर दिया जानेवाला दान; वह दान जिसे दाताके सिवा दूसरा न जाने; वह दान जिसका दाता प्रकट न हो । -मार-कौ० [हि०] ऐसी मार जिसमें मारनेका कोई चिह्न ऊपर न देख पड़े । -श्मशान-कौ० वह लकड़ी जिसका मांसिक स्नायु आरम हो गया हो । -बेहा-वि० जो भेस बदले हो, छद्मवेश; बदला हुआ भेस । -स्नेह-वि० गुप्त रूपसे प्रेम करनेवाला । -स्नेहा-कौ० अंकोठ वृक्ष ।

गुप्तक-पु० [सं०] रक्षा करनेवाला ।

गुप्तांग-पु० [सं०] स्त्री या पुरुषके गुप्त अंग, उपस्थ ।

गुप्ता-कौ० [सं०] परकीया नायिकाके ६ भेदोंमेंसे एक, छुरति छिपानेवाली नायिका; रखेली; वैद्य स्त्रीका उपनाम या वर्णसूचक उपाधि ।

गुप्तासन-पु० [सं०] सिंहासन ।

गुप्ति-कौ० [सं०] ढकने, छिपानेकी क्रिया, गोपन; रक्षण; रक्षका साधन; गह्वा; गुफा; मलद्धार; कारागार; नाकका छेद ।

गुप्ती-कौ० वह डंडा या छड़ी जिसके भीतर तलवार जैसा हथियार छिपा हो ।

गुप्तोन्मेषा-कौ० [सं०] नाचकपद(मानो, जानो इत्यादि)-रहित उन्मेषा ।

गुप्ता-पु० गुच्छा; फुंदना ।

गुफा-कौ० पहाड़ या जमीनमें बना हुआ लंबा गढ़ा, खोह, गुहा ।

गुप्त-कौ० [फा०] कथन, उक्ति; गोल (केवल सामान्यमें व्यवहृत) । -गू-कौ० बातचीत, गोलचाल । -ब(प्रतो) शानीद; -शानु-कौ० कहना-सुनना; बातचीत ।

गुप्ता-कौ० [फा०] गोलचाल, बातचीत ।

गुप्तरेखा-पु० गोबर, मैला आदि खानेवाला एक कीड़ा ।

गुप्ता-पु० [अ०] गूल, गर्द; मनमें संचित दुस्स, शिकायत, मेल । सु० -निकालना-मनमें भरी हुई बातें कब डालना, मजास निकालना ।

गुप्ता-पु० दे० ‘गुप्ता’ ।

गुप्ति-पु० दे० ‘गोविंद’ ।

गुप्ता-पु० दे० ‘गुप्ता’ ।

गुप्ता-पु० कागजका बना हुआ गोला थैला जो नीचेसे खुला रहता है और तारमें चीयके लपेटकर जला देनेसे धुआं उठता है; देशम आदिका बना और धुआंसे इलकी गैससे भरा हुआ थैला जो आकाशमें उड़ सकता है, बैलून; गोलेकी शक्ती एक आतिशबाजी जो गुप्तारेकी तरह उड़ायी जाती और ऊंचाईपर जाकर फटती है; सिली जैसे

रबरका बना एक खिलौना जिसे हवा भरकर फुलाते और तानेमें बंधकर उड़ाते हैं ।

गुप्त-वि० [फा०] खोया हुआ, नायब, छुप्त, कायता । -नाम-वि० जिसका नाम प्रसिद्ध न हो, जिसे बहुत ही कम लोग जानते हों; बिना नामका (पत्र, लेख) । -राह-वि० जो रास्ता भूल गया हो, भटक हुआ; गुरे रास्तेपर जानेवाला, पथभ्रष्ट । -राही-कौ० पथ-भ्रष्टता । -खुदा-वि० खोया हुआ, भूला हुआ । -खुश-वि० चुप और निश्चेष्ट, स्तब्ध (हीना) ।

गुप्तक-कौ० दे० ‘गमक’ ।

गुप्तकना-अ० कि० भीतर ही भीतर गुंजना, बाहर प्रकट न होना ।

गुप्तजी-कौ० छोटा गुंबद ।

गुप्त-पु० चोट आदिके कारण होनेवाली माथेपरकी गोल सूजन; कपासका एक कीड़ा ।

गुप्ती-कौ० मकानमें सबसे ऊपर उठी हुई कमरे या सीढ़ीकी छत; रेलवे लाइनकी हिफाजत करनेवाले चौकीदारके रहनेके लिए लाइनके पास बनी हुई छोटी कीठरी । पु० नावका पानी बाहर फैकनेवाला महाह ।

गुप्तना-अ० कि० खो जाना ।

गुप्त-पु० घमंड; देश, गुबार; कानाफूसी ।

गुप्ता-पु० [फा०] संदेह, शक; अनुमान; गर्व, घमंड; * बद्रुमानो, कुपारणा ।

गुप्ताना-अ० कि० खो देना, गँवाना ।

गुप्ता-वि० गुप्तान करनेवाला, घमडी ।

गुप्ता-पु० [फा०] किसी व्यापारी या कोठीकी ओरसे माल खरीदने-बेचनेवाला, एजेंटके रूपमें काम करनेवाला कमचारी । -गिरी-कौ० गुप्तालाका पद या काम ।

गुप्तिना-अ० कि० लिपटना, लपेटा जाना ।

गुप्तिना-अ० कि० लपेटना ।

गुप्ति-पु० दे० ‘गुब्द’ ।

गुप्ति-पु० कडा मसा, अर्बुद ।

गुर्गु, गुर्गु, गुर्गु-पु० दे० ‘गुब्द’ ।

गुर्गु-पु० मीठे आमका पेड़ ।

गुर-पु० हिसाब निकालनेका संक्षिप्त और पक्का कायदा; कार्य साधनेकी सुक्ति, उपाय; * दे० ‘गुरु’; दे० ‘गुरु’; † दे० ‘गुरु’ । -मुख-वि० दे० ‘गुरुमुख’ । -मुखी-कौ० दे० ‘गुरुमुखी’ ।

गुप्ता-पु० लौकर, दहलू; दुष्ट सेवक; जादूस ।

गुप्ता-पु० सुखा जूना ।

गुप्ति-कौ० दे० ‘गुप्ति’ ।

गुरसिखाना-अ० कि० सिकुड़कर टेढ़ा हो जाना ।

गुरसी-कौ० बल, सिकुड़न ।

गुरसी-पु० दे० ‘गुरसी’ ।

गुरस-कौ० गाँठ-‘ममता गुरस उरसावन क्यों ?’ -वन० ।

गुरस-कौ० गाँठ-‘राम भरे हियमें विराग-गुरसनि है’-वन० ।

गुरसिखाना-अ० कि० दे० ‘गुरसिखाना’ । स० कि० उल्लाना, गाँठ डालना ।

गुरुण-पु० [सं०] दे० 'गूरण' ।

गुरदा-पु० [का०] शरीरके अंदर रीढ़के दोनों ओर अवस्थित ग्रंथ जिनका काम आहारसे पेशाबकी अलग करना और खूनसे बेकार 'नत्रजनीय' द्रव्यकी निकासकर उसे साफ करना है, इन्हें; हिम्मत, जीवत् । -(दे)का वरु-एक रोग जिसमें गुरदेके भीतर पथरी पैदा हो जाती है ।

गुरुबिनी-०-०-० दे० 'गुरुिणी' ।

गुरुबी-०-वि० धर्मवी ।

गुरुसी-०-०-० अंगीठी, गोरसी ।

गुराह, गुराह-पु० तोप डोनेकी गाड़ी ।

गुराह-०-०-० दे० 'गोराह' ।

गुराब-पु० तोप लादनेकी गाड़ी ।

गुराब-पु० चारा काटना; गेंडासा ।

गुरिदा-पु० दे० 'गोवंदा' ।

गुरिद-पु० गुर्ज, गदा ।

गुरिया-०-० छोटी गोष्ठी; मनका, मालाका दाना; (मांस भाविका) छोटा डुकड़ा, मोटी ।

गुरिहा-पु० दे० 'गोरिहा' । छापामार दस्तका सैनिक, 'गोरिहा' । -दस्ता-पु० छोटा फौजी दस्ता जो मौका पाकर दुश्मनपर छापा मारता है । -बुद्ध-पु० वह लड़ाई जिसमें छोटे-छोटे दस्तोंमें बड़ी हुई सेना मौका पाकर दुश्मनपर छापे मारा करती है ।

गुरीरा-०-वि० सुदूर; माधुर्यमय ।

गुरु-वि० [सं०] भारी, वजनदार; बड़ा; दुष्प्राप्य, देरमें पचनेवाला; पूर्य; महत्; कठिन; दीर्घ या दो मात्राओं-वाला (वर्ण, ताल); भिन्न; द्रव्यपूर्ण (उक्ति); दुर्लभ; शक्ति-शाली । पु० पिता; पूर्य पुरुष; बुजुर्ग; शिक्षक; विद्या देनेवाला, कोई कला, विद्या सिखानेवाला, उस्ताद; गायत्री मन्त्रका उपदेश करनेवाला; बृहस्पति ऋषि; देवताओंके गुरु बृहस्पति; पुण्य नक्षत्र; श्रोणाचार्य; परमेश्वर दो मात्राओंवाला वर्ण, ताल । -काबै-पु० भारी, कठिन कार्य, महत्त्ववाला काम; आचार्यका पद या कार्य ।

-कुंडली-०-० फलित ज्योतिषके अनुसार बनाया जानेवाला एक चक्र जिसके मध्यमें बृहस्पति होते हैं । -कुल-पु० गुरु या आचार्यका वासस्थान जहाँ रहकर शिष्य विद्याभ्यास करते हैं; गुरुगृह; प्राचीन पद्धतिपर स्थापित विद्यापीठ । -गंधर्व-पु० एक ताल । -गृह-पु० गुरुकुल ।

-ज-पु० गौर सर्वप । वि० गुरुको मारनेवाला । -जर्वा-०-० गुरुकी सेवा । -कांदीययोग-पु० बृहस्पति और चंद्रमाके कर्क राशिमें एकत्र होनेसे पहलेवाला योग ।

-जन-पु० बड़ा, बुजुर्ग, पूर्य पुरुष, माता, पिता, आचार्य आदि । -लक्ष-पु० गुरुका विलस (भागी); गुरुपक्षोंके साथ अनुचित सर्वप । -लक्ष्य-पु० लक्ष्य (विषय) । -वि०, पु० गुरुपक्षी या विमाताके साथ अनुचित सर्वप करनेवाला ।

-ताल-पु० संगीतका एक ताल । -तोमर-पु० एक छंद । -दक्षिणा-०-० पढ़ाने या मंत्रीपदेशके लिए गुरुकी दो जानेवाली दक्षिणा । -दैवत-पु० पुण्य नक्षत्र ।

-द्वारा-पु० [हिं०] गुरुके रहनेका स्थान; सिखोंका मठ या मंदिर । -पञ्च-पञ्चक-पु० बंश बाहु, रौंवा । -पञ्चा-०-० हमछोका पैर । -पाक-वि० देरमें पचनेवाला,

भारी । -पुण्य-पु० एक योग, शुक्रवारकी पुण्य नक्षत्र पड़ना (ज्यो०) । -पुर्णिमा-०-० आषाढकी पूर्णिमा जिस दिन गुरुकी पूजाका विशेष विधान है । -भ-पु० पुण्य नक्षत्र; मीन राशि; धनु राशि । -भाई-पु० [हिं०] एक ही गुरुसे शिक्षा या टीका पानेवाला, एक गुरुका शिष्य होनेके नाते भाई । -अंत्र-पु० गुरुसे प्राप्त मंत्र । -मर्ह-पु० एक तरहका ढोल या नगाका । -मुख-वि० दीक्षाप्राप्त, दीक्षित । -मुखी-०-० देवनागरी लिपिका एक रूप जिसमें पंजाबी भाषा लिखी जाती है । -रख-पु० पुखराज । -बार, -बासर-पु० बृहस्पतिवार । -वासी (सिन्धु)-पु० गुरुगृहमें रहनेवाला शिष्य, भती-वासी । -बुद्धि-०-० गुरु, आचार्यके प्रति शिष्यके लिए कर्तव्य व्यवहार; गुरुभाई । -व्यय-वि० बहुत पोषित या शोकाश्रित । -सिखरी (सिन्धु)-पु० हिमालय । -सिंह-पु० बृहस्पतिके सिंह राशिमें जानेपर लगनेवाला एक वर्ष ।

गुरुभाई, गुरुभाई-०-० गुरुका काम; मंत्रीपदेश देनेका काम; उस्तादी । दे० 'गुरुदत्त' ।

गुरुभाइना-०-० दे० 'गुरुभानी' ।

गुरुभानी-०-० गुरुपक्षी; शिक्षा देनेवाली स्त्री ।

गुरुक-वि० [सं०] जो बीड़ा ही भारी हो; दीर्घ (छंद; शास्त्र) ।

गुरुका-०-०-० दे० 'गुरुव' ।

गुरुज-पु० दे० 'गुरु' ।

गुरुज-पु० साहित्यादिके क्षेत्रमें 'गुरुभाई' फैलानेका वस्तु ।

गुरुता-०-० [सं०] भारीपन, गैरस; महत्त्व, गौरव; गुरुका पद; गुरुत्वाकर्षण ।

गुरुताई-०-० दे० 'गुरुता' ।

गुरुव-पु० [सं०] गुरुता । -केंद्र-पु० पदार्थ या पिंडमें वह मध्य बिंदु जिसपर पूरे पदार्थका भार केंद्रित हो सके ।

गुरुवाकर्षण-पु० [सं०] भारके कारण वस्तुका पृथ्वीके केंद्रकी ओर खींचा जाना ।

गुरुबिनी-०-० दे० 'गुरुिणी' ।

गुरा-पु० गुरु । -चंडाल-वि०, पु० बहुत चालाक, भूर्त, काश्ची । -हम-पु० दे० 'गुरुदत्त' ।

गुरेना-०-० कि० घूरना ।

गुरेरा-पु० दे० 'गुरेला'; घूरनेकी क्रिया, देखादेखी । -अंत कंठों भवो गुरेरा'-प० ।

गुरा-पु० [का०] भेषिया । -आनानाई-०-० दिखाऊ, कपटभरी मित्रता, ऊपरसे दोस्ती, भीतरसे दुश्मनी रखना ।

गुरा-पु० दे० 'गुरा' ।

गुरा-पु० [का०] गदा; गुर्ज । -बरदार-पु० गदाधारी सैनिक । -मार-पु० एक तरहके मुसलमान फकीर जो हाथमें लोहेका गुर्ज लिये रहते हैं और शिक्षा न पानेपर अपने सिरपर मार केते हैं, मुंश्चिरा ।

गुरा-पु० [सं०] गुजरात देश; गुजरातका रहनेवाला, गुजराती ।

गुरा-पु० गुजरात ।

गुरा-०-० [सं०] गुजरात देशकी स्त्री; एक रागिनी ।

-दोही-०-० [हिं०] एक राग ।

गुर्वा-पु० दे० 'गुरवा'; * एक तरहकी छोटी तोप ।

गुर्वा-पु० [अ०] सुलतमानोंके बाद मात्की प्रतिष्ठा (द्वितीया); नागा, अंसा । **गुर्वा-बलाना**-डाल-मट्टक करना ।

गुर्वा-अ० कि० (कुचे-विहोका) क्रोधमें गुँह बंद करने भादी आवाज निकालना; (ला०) क्रोधध्वज आवाजमें बोलना ।

गुर्वाहित्य-पु० [सं०] एक योग, बहस्पति और सर्वका एक राशि, एक नक्षत्रपर स्थित होना (ज्यो०) ।

गुर्वाणी, गुर्वा-खो० [सं०] गर्भवती स्त्री; गुल्फनी; भेड स्त्री । वि०, खो० गर्भवती; विशाल, बहुत बड़ी ।

गुर्वाच-पु० [सं०] एक कंद ।

गुर्वादाज-पु० दे० 'गोलदाज' ।

गुल-पु० [सं०] गुल; [फा०] गुलाबका फूल; फूल; कपड़े आदिपर बना हुआ पुष्पाकार वृत्त; गोल निशान; जलने या दागनेका निशान; बत्तीका सिरा जो तिलकुल जल गया हो; फूलके आकारकी कारचोपीकी बनी हुई बड़ी टिकली; ईस्ते समय भरे हुए गालोंमें पड़नेवाला गहवा; पशुओंके शरीरपरका भिन्न रंगका दाग; छाप, दाग; कनपटीपर लगायी जानेवाली चुनैकी निंदी; एक चलता गाना; जलता हुआ कौयल, अगारा; तंबाकूका जट्टा; अँसका डेला; जूतेमें पड़ीके नीचेका चपचा; (ला०) सुंदर, सुकुमार स्त्री-पुरुष; * कनपटी । -**अंदाज**-वि० फूलसी देहवाला, सुंदर, सुकुमार । -**अंदाज**-पु० एक फूलदार पौधा । -**अजाब**-पु० गुलहका फूल; उसका पौधा । -**अजाब**-पु० अनारका फूल । -**अजाब**-पु० एक फूल; उसका पौधा । -**अजाबारी**-पु० गुलअम्बासके फूलका रंग । वि० उस रंगका । -**अजाबी**-खो० एक पीले रंगका फूल । -**आसानी**-आसानी-पु० गहरे लाल रंगका गुलाब । -**औरंग**-पु० एक तरहका मेडा । -**कंद**-पु० गुलाबकी पैलबियोंमें शकर मिलाकर बनायी हुई एक सरस औषध । -**कट**-पु० कपड़ेपर बेल-बूटे छापनेका ठप्पा । -**कटा**-पु० फुलवारी, उथान । -**कार**-पु० गुलकारी करनेवाला; वह चीज जिसपर गुलकारी की गयी हो । -**कारी**-खो० बेल-बूटे काढ़ने-बनानेका काम, कशीदाकारी । -**केश**-पु० कलंगका फूल; उसका पौधा, जटाधारी । -**जून**-पु० मट्टी, माड़; तनूर; अग्निजुंड । -**जुरा**, **जुरैर**-पु० एक फूल; उसका पौधा । -**गहल**-खो० बागकी सेर, उथान-भ्रमण । -**गीर**-पु० बत्तीका गुल काढ़नेकी बैची । -**गू**-वि० गुलाबके रंगका, गुलाबी । -**गुला**-पु० एक तरहका उर्वेटन जिससे सुंदरता बढ़ानेके लिए औरते सुंदर पर लगाती है । -**गुलम**-वि० जिसकी आँखमें फूली हो । -**गुलदानी**-खो० एक सफेद फूल जो प्रायः चाँदनी रातमें खिलता है; उसका पौधा । -**गुली**-पु० फूल चुननेवाला, माली; एक सदाबहार फूल; उसका पेड़ । वि० लाम उठाने वाला । -**घीम**-पु० एक तरहका हल जो हमेशा फूलता है । -**घीनी**-खो० फूल चुनना । -**जलील**-पु० अस्-बर्गका फूल । -**ज़ार**-पु० बाटिका, उथान । वि० खिला हुआ, प्रफुल्ल; चहल-चहलवाला । -**तरास**-पु० गुल कतरनेकी बैची, गुलगीर; वह बैची जिससे बगीचेके पौधों-

की काट-छाँट की जाय; पत्थरपर बेल-बूटे बनानेका औजार; बिरागका गुल काढ़ने या पौधोंकी काट-छाँट करनेवाला आदमी । -**गुरी**-पु० कलंगका फूल । -**दस्ता**-पु० फूलों का गुच्छा; चुनी हुई चीजों (पेष आदि)का संग्रह, चयनिका । -**दाब**-पु० गुलदस्ता रखनेका पात्र । -**दावरी**, **दावरी**-खो० शरद ऋतुमें फूलनेवाला एक फूल; उसका पौधा । -**दार**-वि० दागरा; जिसपर फूल बने हैं । पु० एक तरहका सफेद कनूर जिसपर लाल या काले दाग होते हैं; एक तरहका कशीदा । -**दावरी**-खो० दे० 'गुलदावरी' । -**दुपहरिया**-खो० गहरे लाल रंगका एक फूल; उसका पौधा । -**दुम**-खो० एक तरहकी बुलबुल जिसकी दुमके नीचे लाल दाग होता है । -**नरगिस**-खो० नरगिसका फूल; उसका पौधा । -**नार**-पु० अनारका फूल; एक तरहका अनार; अनारके फूल जैसा गहरा लाल रंग । -**पपरी**-खो० एक तरहकी मिठाई । -**प्यावा**-पु० गुलाबका एक भेड जिसमें नाममात्रकी सुगंध होती है । -**फान्स**-पु० शोभाके लिए लगाया जानेवाला एक छोटा पेड़ । -**फाम**-वि० गुलाबके रंगका सुंदर । पु० ईंदर-सभाकी कहानीमें सख प्रेमीका प्रेमाश्रम । -**फिरंग**-पु० एक सदाबहार फूल जो सफेद और गुलाबी रंगका होता है । -**फिरकी**-खो० एक पौधा जिसमें गुलाबी रंगके फूल लगते हैं । -**फिस्ता**-वि० फूल बसेरने-वाला; सुवचा, सुसवयान । पु० फुलहरी; गुलाब छिन्न-कनेकी शोशी । -**फिशानी**-खो० फूल बसेरना; सुंदर शब्दावलीकी हकी लगाना, सुसवयानी । -**बकावली**-खो० अमरकटके जगलोंमें होनेवाला एक सफेद, सुगंधित फूल जो अँसोंके रोगीकी अच्छी दवा बनाया जाता है; उर्दूकी एक प्रसिद्ध कहानी और प्रबंध-काव्य । -**बदन**-वि० फूलसी देहवाला, सुंदर । एक तरहका धारोदार रेशमी कपड़ा । -**बाज़ी**-खो० फूलोंमें खेलना, एक-दूसरेपर फूल फेंकना । -**बावला**-पु० एक वृक्ष । -**बूटा**-पु० फूल-पत्ती, बेल-बूटा । -**मजमूल**-पु० एक छोटा फूल; उसका पौधा । -**मेख**-खो० वह कील जिसका सिरा फूल जैसा गोल होता है । -**मेहंदी**-खो० एक निर्गंध फूल; उसका पौधा । -**रंग**-वि० गुलाबके रंगका, लाल, गुलाबी । -**रुद्र**, **रू**-वि० फूलसे सुलना, सुंदर । -**रेज़**-वि० फूल बसेरनेवाला । पु० एक तरहकी फुलहरी, एक कपड़ा । -**खाला**-पु० एक फूल जो पीसते फूलसे मिलता है; उसका पौधा । -**शकर**-खो० गुल-कंद । -**शकरी**-खो० शकरमें गुलाबकी पैलबियों मलकर बनाया हुआ कट्टू जिससे शरबत बनाते हैं । -**शब**-पु० बाग, बाटिका । -**शम्मी**-पु० एक फूल जिसकी सुगंध रातकी अधिक होती है । -**सुम**-पु० नकाशी करनेका सुनारोंका एक औजार । -**सौसन**-पु० एक फूल जो हल्के आसमानी रंगका होता है । -**हजारा**-पु० मेवा; दोहरा गुलका । **गु०-कतरना**-कागज-कपड़े आदिके फूल कतरकर बनाना; बत्तीका गुल काढ़ना; अन्धेकी बात करना । -**खाना**-बदनपर धरम धातुने दाग लगवाना; जलना । -**खिलना**-भेद सुलना; कोई अनोखी, अजेदार बात होना; बसेरा उठना ।

-खिलाना-कोई मदभूत, अचभेकी बात करना; बहेबा उठाना। -बैचना-बत्तीके सिरेका धुँव जल जाना; आग भुलन जाना। -होना-(रीफेक) भुलना।

गुल-पु० दे० 'गुल'। -गुलवा-पु० शोरगुल, हल्ला।

गुल-गोला'का समासगत रूप। -गुल्ला-पु० गोला चलानेवाला, गोलेन्द्र।

गुल-पु० [फा०] शोर, हल्ला। -गुला-पु० शोर, धूम।

गुलगाधिया-खी० गिलगिधिया।

गुलगुल-वि० दे० 'गुलगुल'।

गुलगुला-वि० नरम, मुलायम, गुदात। पु० आटेमें गुड़, खीरे मिलाकर और तेल या घीमें तलकर बनाया जानेवाला एक पकवान।

गुलगुलाना-स० कि० किसी गुदेदार चीजको दबाकर पिलपिला करना; * गुदगुदाना।

गुलगुली-खी० गुदगुदी; * एक तरहकी मछली। वि०, खी० मुलायम।

गुलगोथना-पु० वह नाटा आदमी जिसका शरीर खूब भरा और फूला हो।

गुलचना-स० कि० गुलचेका आवात करना।

गुलचा-पु० मुट्ठी बौंधकर जँगलियोंकी पोरसे, प्रेममय विनोदमें गालोंपर आवात करना (मारना)।

गुलचाना, गुलचियाना-स० कि० गुलचा मारना।

गुलची-खी० बटवियोंका एक औजार।

गुलछरा-पु० मौज, चैन, ऐश। मु० (रं) उड़ाना-निर्दंड होकर छल भोगना, मौज करना।

गुलझटी-खी० धागे आदिमें उलझकर पड़ी हुई गाँठ, गुथी; शिकन। मु०-निकलना-मनोमालिन्य दूर करना। -पड़ना-मनमें गाँठ पड़ना।

गुलझरी-खी० दे० 'गुलझटी'।

गुलटप्पा-पु० गप्प।

गुलता-पु० गुलेनेमें फँसी जानेवाली मिट्टीकी गोली।

गुलथी-खी० अधिक गोला और गलाया हुआ चावल।

गुलथी-खी० चोट लगनेमें शरीरमें होनेवाला गिलटी या गुठली जैसा शोथ; मैदा आदि घोलनेसे बनी हुई गाँठ।

गुलफ-पु० गुल्फ, टखना।

गुलमा-पु० गिरपर चोट लगनेमें होनेवाली गोल घजन; मसालेदार कीमा भरी हुई बकरीकी आँत।

गुलहथी-खी० दे० 'गुलथी'।

गुलाब-पु० [फा०] एक कंटीला पौधा या झाड़; उसका फूल जो बहुत सुंदर और मीठी सुगंधवाला होता है; गुलाबके फूलोंका अरक, गुलाबजल। -आमसो-पु० गुलाबवास। -जल-पु० गुलाबका अरक। -आमस-पु० एक प्रसिद्ध मिठाई, तामनकी शकलके घीमें छानकर शीरेमें डुबोये हुए खोयेके छट्ट। -पास-पु० गुलाबजल छिड़कनेका एक हजारादार यंत्र। -बाड़ी-खी० गुलाबके फूलोंकी बाड़ी, बाटिका।

गुलाबस-पु० गुलअश्राम।

गुलाबा-पु० एक वस्त्रन।

गुलाबी-वि० गुलाबके रंगका, हल्का लाल; हल्का (जाड़ा, नशा); गुलाबमें बसाया हुआ (रिबन आदि);

गुलाबसंधी। पु० गुलाबकी पेंसवियोंका लाल रंग। खी० शराब पीनेकी प्याली; गुलाबकी पेंसवियोंसे बनी एक मिठाई; एक तरहकी मैना।

गुलाम-पु० [अ०] खरीदा हुआ और मालिककी संपत्ति समझा जानेवाला नौकर, दास; नौकर; अमीन, बखशी, पराधीन व्यक्ति; ताशका एक पत्ता। -गुलदिर-पु० एक बहेला सूरदार जिसने दिखीपर कब्जा करके शाह आलम (द्वितीय)की आँखें निकलवा दी थी। -गर्विस-पु० महल आदिके चारों तरफका बरामदा; जनानखानेकी भीतरी दरवानेके सामने आबके लिए बनी हुई दीवार। -चौर-पु० ताशका एक खेल। -जाड़ा-पु० गुलामका वेडा (वक्ता नम्रतावश अपने बेटेके लिए कहता है)।

गुलामी-खी० दासता; चाकरी; पराधीनता।

गुलाक-पु० अरी।

गुलाख-पु० दे० 'गुल्लाख'।

गुलिङ-पु० [स०] गौरवा।

गुलिका-खी० [स०] खेलनेका छोटा गेंद; दे० 'गुली'।

गुलिवा-वि० महुएके बीजका।

गुलियाना-स० कि० दे० 'गोलियाना'; बोंगेमें औषध आदि भरकर पशुको पिलाना।

गुलिस्ता-पु० [फा०] पुष्पाटिका, उद्यान; खेलसादीरचित फारसीका एक प्रसिद्ध नीतिग्रंथ।

गुली-खी० [स०] गोली; चेचक; * दे० 'गुल्ली'।

गुलुङ, गुलुङ-पु० [स०] गुल्जा।

गुल-पु० [फा०] गला, गरदन। -गुलासी-खी० गला छटना, छुटकारा। -बंद-पु० सरदासे बचनेके लिए गलेमें लपेटी जानेवाली पट्टी; गलेमें पहननेका एक जेवर।

गुल्ला-पु० [फा०] गुलेल; गोली।

गुल्ला-पु० महुएका फल, कोलेंदा।

गुलेटन-पु० एक पत्थर जिसपर सिकलीगर अपना मसाला रगड़ते हैं।

गुलेनार-पु० दे० गुलनार।

गुलेराना-पु० छुर फूल; एक फूल जो भीतरकी ओर लाल और बाहर पीला होता है।

गुलेल-खी० [अ०] दो तौनोंकी कमान जिसपर मिट्टीकी गोली रखकर फेंकते हैं। -खी-पु० गुलेल चलानेवाला।

-बाड़ी-खी० गुलेल चलाना; गुलेलसे चिड़िया आदि मारना।

गुलेला-पु० गुलेलमें फेंकनेकी मिट्टीकी गोली; गुलेल।

गुलीह-खी० गुलच।

गुलीर, गुलीरा-पु० वह स्थान जहाँ रस पकाकर गुड़, राब बतावें।

गुलक-पु० [स०] एकीके ऊपरको गाँठ; टखना, बुट्टी।

गुलम-पु० [स०] बिना तनेका पौधा जिसमें जड़से ही कई शाखाएँ निकलती हैं (ईश, धान, सरकंदा इत्यादि); झाड़; सेनाका एक विभाग-१ हाथी, १ बघ, २७ घोड़े और ४५ पैदल; नदीके घाटपर रखाई स्थापित चौकी; तिहरी; एक उदररोग, पेटके भीतर गोलासा बंध जाना; दुर्ग। -केमु-पु० अम्बवेतस। -केश-वि० सूरतीके बालोंवाला। -प-पु० गुलमका नावक। -मूल-पु० अदरक। -बल्ली-

खी० सोमलता ।-बात-पु० डीहेका एक रोग ।-खू-
 पु० खू रोगका एक भेद ।
 गुल्मी-खी० [सं०] खेमा; पेड़ोंका झुरझुर; जौलेका पेड़;
 छोटी इलायचीका पेड़ ।
 गुल्मी (खिन्) -वि० [सं०] गुल्म रोगसे पीड़ित; गुल्मके
 रूपमें लगनेवाला । [खी० 'गुल्मिनी' ।]
 गुल्मोद्गर-पु० [सं०] दे० 'गुल्मवात' ।
 गुल्म-पु० [सं०] मिठास, मीठा स्वाद ।
 गुल्मक-पु० [सं०] गोलक ।
 गुल्मा-पु० [फा०] गुलेलपर फेंकी जानेवाली मिट्टीकी बनी
 गोली ('गुल्मा'का लघु रूप); * शीर, गुल (हस्ता-गुला) ।
 गुल्माळा-पु० दे० 'गुलमाला' ।
 गुल्मी-खी० लंबोतरा डुकडा जिसके दोनों छोर मुकीले हों;
 काठका लंबोतरा डुकडा; सोने या चाँदीका डाला; गुठली;
 मधुपके फलकी गुठली; केबरेका फूल; छपेमें मधु रहनेका
 स्थान; मकईकी सुलसी; ऊखकी गँदेरी; एक तरहकी मैना;
 छोटा गोल पासा; एक जौवार जिससे सिक्कीयर जग
 झुरन्ते हैं । -इँडा-पु० लकड़ीका एक लेख जिसमें
 गुहोंको खड़ेसे मारते हैं । मु० -इँडा खेल्ना-लेख-
 कूदने समय नष्ट करना ।
 गुवाक-पु० दे० 'गुवाक' ।
 गुवाक-पु० [सं०] सुपारी; बिकनी सुपारी ।
 गुवार-पु० दे० 'ग्वाल' ।
 गुवारपाठा-पु० दे० 'ग्वारपाठा' ।
 गुवाल-पु० दे० 'ग्वाल' ।
 गुवालि-खी० 'ग्वालि' ।
 गुविद-पु० दे० 'गोविद' ।
 गुसला-पु० दे० 'गुसल' ।-खाना-पु० दे० 'गुसलखाना' ।
 गुसल-पु० दे० 'गोसामी' ।
 गुसा-पु० दे० 'गुस्ता' ।
 गुसयॉ-पु० स्वामी; ईश्वर ।
 गुस्ताज़-वि० [फा०] डीठ, अविनीत, बेमदब ।
 गुस्ताज़ाना-अ० [फा०] डिठारके साथ, अधिष्ठापूर्वक ।
 गुस्ताज़ी-खी० [फा०] डिठार, अधिष्ठाता, बेमदबी ।
 गुसल-पु० [अ०] सारे शरीरको धोना; स्नान; मुँहको
 नहलाना ।-खाना-पु० नहानेकी कोठरी, स्नानागार ।
 -(स्ते)सेहत-पु० बीमारीसे उठनेके बाद किया जाने
 वाला प्रथम खान ।
 हास्सा-पु० [अ०] क्रोध, रोष, कोप ।-बर-वि० जिसे
 जल्दी गुस्सा आवे । मु० -उतारना,-निकासना-
 क्रोधकी शक्तिके लिए (किसीपर) बिगड़ना, मारना हल्लादि ।
 -धूक देना-क्षमा कर देना; गुस्सेको पी जाना ।
 गुस्सल-वि० गुस्सावर, क्रोधी ।
 गुह-पु० दे० 'गू'; [सं०] कार्तिकेय; घोड़ा; श्रृंगवेरपुरका
 निषादराज जिसने ब्रह्ममनके समय रामकी गंगा पार
 कराया; गुहा; विष्णु; बंगाली कायस्थोंकी एक उपजाति ।
 -पट्टी-खी० मार्गशीर्ष-शुद्ध पञ्च । * वि० युक्ति, गुहा ।
 गुहना-सं० कि० गूँधना ।
 गुहराना-सं० कि० पुकारना ।
 गुहवाना-सं० कि० 'गुहना'का प्रे० ।

गुह-खी०-खी० बिलनी ।
 गुहा-खी० [सं०] गुफा, खोह; मॉर; छिपनेकी जगह;
 (ला०) इद्रय, अंतःकरण; सिद्धपुष्पी; शालग्रणी; बुकि ।
 -बर-वि० गुहायें रहने, बिचरनेवाला । पु० मख ।
 -शब-पु० मॉरमें रहनेवाले बंशु, चूहा, सिंह आदि;
 परमात्मा ।
 गुहाई-खी० गुहनेकी क्रिया; गुहनेकी मजदूरी ।
 गुहाना-सं० कि० 'गुहना'का प्रे० ।
 गुहार-खी० दोहाई, रक्षाके लिए पुकार ।
 गुहारि-खी० दे० 'गुहार' ।
 गुहाहित-वि० [सं०] गुहा, इद्रयदेशमें स्थित । पु०
 परमात्मा ।
 गुहिव-पु० [सं०] वन, जंगल ।
 गुहिल-पु० [सं०] धन, संपत्ति ।
 गुहेर-पु० [सं०] अभिभावक, रक्षक; लोहार ।
 गुहेरा-पु० मोह ।
 गुहेरी-खी० बिलनी ।
 गुहा-वि० [म०] छिपाने लायक; गुप्त; गुह, कठिनतासे
 समझमें आनेवाला । पु० भेद, रहस्य; गुप्त अंग, उपस्य;
 (गुदा क०); डँग, दम; कछुआ; विष्णु ।-गुह-पु० शिव ।
 -दीपक-पु० जुगनू ।-हार-पु० मलहार, गुदा ।
 -निष्कंद-पु० मूत्र ।-पुष्प-पु० पीपल ।-बीज-
 पु० भूतल ।-भाषण,-भाषित-पु० गुप्त बातों;
 गुप्त संज्ञा ।
 गुहक-पु० [सं०] कुनेरके खजानेकी रक्षा करनेवाले यक्षोंका
 वर्ग; गुप्तिया ।-पति-पु० कुनेर ।
 गुहकेसर-पु० [सं०] कुनेर ।
 गूँ-पु० [फा०] रंग, वर्ण; डग (नीलगू) ।-नागून-वि०
 रंग-विरंगा ।
 गूँगा-वि० जो बोल न सके, मूक; न बोलनेवाला; जो मौन
 माधे हो । पु० गूँगा आबमी । मु० -(ते)का गुह;-
 का सपना-वह बात जो अनुभव की जाय पर कभी न
 जा सके, अकथनीय अनुभव ।
 गूँगी-वि०, खी० न बोलनेवाली । खी० न बोल सकनेवाली
 स्त्री; एक तरहकी बिछिया; तोमूँहा साँप ।-पहेली-खी०
 इशारोंमें कही जानेवाली पहेली ।
 गूँच-खी० घुँघरी ।
 गूँच-खी० प्रतिध्वनि, टकराकर लौटनेवाली आवाज; देर-
 तक बनी रहनेवाली ध्वनि; गुजार; बाली या नथकी मुड़ी
 हुई नोक; लट्ठकी कील ।
 गूँचना-अ० कि० आवाजका टकराकर लौटना, प्रतिध्वनित
 हो जाना; किसी ध्वनिके किसी स्थानका व्यास हो जाना;
 किसी ध्वनिका देरतक सुनाई देते रहना; भोरे या मधु-
 मक्खीका गुजार करना; यरजना ।
 गूँचाना-पु० दे० 'गुंजहरा' ।
 गूँठा-पु० पहाड़ी दूध ।
 गूँधना-सं० कि० दे० 'गूँधना'; दे० 'गूँधना' ।
 गूँधना-सं० कि० दे० 'गूँधना' ।
 गूँदा-पु० दे० 'गो दा' ।
 गूँदी-खी० गंधिका नामक वृक्ष ।

गूँवना-स० कि० आटेमें पानी डालकर उसे हाथोंसे मम-
लना, मॉइना; बाणों वा हाथोंके लड़ी बनाना, चोटी
करना; पिरोना ।

गू-पु० [सं०] गंदगी; मैला, पाखाना, विहा । -**मूल**-पु०
[हिं०] मलमूत्र । **मु०**-उछलना-कलंक उत्रागर होना,
बदनामी लगना । -उछलना-कलंककी गूहरत करना ।
-**का कीबा**-मैलेमें उसके सन्नेसे पैदा होनेवाला कीबा;
बहुत मैला रहनेवाला, विनोना आदमी । -**का कोब**-
भरा, विनोना, निफम्मा आदमी । -**का टोकरा**-बद-
नामीका बोझ; भारी कलंक वा बदनामी (उठाना) ।
-**खाना**-अत्यंत अनुचित, बहुत बुरा काम करना ।
-**मूल करना**-बच्चेका पालन-पोषण करना । -**में**
घसीटना, -**में** महलाना-बहुत जलील करना, दुईसा
करना । -**में** देखा फँकना-कमीनेको छेवना, नीचके
मुँह लगना ।

गूगल, गूगल-पु० दे० 'गुगल' ।

गूजर-पु० अहीरोंका एक भेद; क्षत्रियोंका एक भेद ।

गूजरी-**खी** गूजर **खी**; एक रागिनी; पैरका एक गहना ।

गूझा-पु० बड़ी गुप्तिया; ↑ फलोंके भीतरका रेशा ।
* वि० गुप्त ।

गूड-वि० [सं०] छिपा हुआ, ढका हुआ, गुप्त; समझनेमें
कठिन; गहन; जिसमें कोई छिपा अर्थ वा व्यंग्य हो (गूड
गिर) । पु० प्रकार स्थान; गुमांगी; रहस्य; एक अलंकार
(दे० 'सूझ' अलंकार) । -**खारी(विज)**-वि० छिपकर
धूमने, टोह लेनेवाला । पु० मेरिया, जावस । [**खी**]
'गूडगारिणी' । -**ज**, -**जात**-पु० विवाहिता स्त्रीका
जात पुत्र । -**जीवी(विज)**-वि० जिसकी आजीविका
पना न हो । -**नीड**-पु० खंडरिध, खजन । -**पत्र**-
पु० करील; अकोट शृङ्ख । -**पथ**-पु० छिपा हुआ रास्ता;
भतःकरण; बुद्धि । -**पाव**, -**पाव**-पु० सोंप । -**पुरुष**-
पु० जावस, गुप्तचर । -**पुष्पक**-पु० बकुल, मौलसिरी ।
-**फल**-पु० रेर । -**आपिल**-पु० गुप्त वार्ता, सूचना ।
-**मार्ग**-पु० सुरंग; छिपा रास्ता । -**मैथुन**-पु० कोषा ।
-**व्यंग्य**-पु० लक्षणाका एक भेद जिसमें व्यंग्यका अर्थ
कठिनार्थमें सुलना है । -**साक्षी(विज)**-पु० वह गवाह
जिसे अर्थ(बादी)ने स्वीकृतिके लिए प्रत्यर्थी (प्रतिवादी)
का बचन सुना दिया हो ।

गूढता-**खी**, **गूढत्व**-पु० [सं०] गूढ होना, गुप्त, गहन,
गंभीर होना ।

गूढांग-पु० [सं०] कलुषा ।

गूढांग्रि-पु० [सं०] सोंप ।

गूडा-पु० नावकी लंबाईके हिसाबमें डेढ़-दो हाथकी दूरीपर
लगायी जानेवाली लकड़ी ।

गूढोक्ति-**खी** [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ कोई गुप्त बात
जिससे उसका संबंध हो उसको छोड़कर किसी अन्यके प्रति
लक्ष्यकर कही जाय, जिससे मनीषवाले अन्य लोग उसे
समझ न सकें ।

गूढोत्तर-पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रश्नका
उत्तर कोई गूढ अर्थ लिये हुए दिया जाता है ।

गूढोत्पन्न-पु० [सं०] गूढन पुत्र ।

गूथ-पु० [सं०] मल, विहा ।

गूथना-स० कि० (मनका, फूल आदि) धागेमें पिरोना;
लड़ी बनाना, गुंफना; टोंकना; मोटी सिलाई करना ।
↑ पु० गोफन, डेलबॉस-‘गूथने घुमा-घुमाकर चिबियोंकी
मगाना’-मृग० ।

गूदा-पु० गूदा । **खी** गूदा; चिह्न ।

गूदब-पु० नीधमा । -**शाह**, -**साह**-पु० गूदबीषी साधु,
फकीर ।

गूदर-पु० दे० 'गूदर' ।

गूदा-पु० फलका छिलकेके नीचेका खाद्य भाग; मगज,
मीमी; मोटी रीठेका छिलकेके नीचेका नरम भाग; सार-
भाग । [**खी** 'गूदी']-**(दे)**दूर-वि० जिसमें गूदा हो ।
गून-**खी** बह रस्ती जिससे नाव खींची जाती है, गुण;
एक वास ।

गूना-पु० एक तरहका झुनझरा रंग ।

गूनी-**खी** दे० 'गूनी' ।

गूथबा-पु० सिरपर चोट लगनेसे होनेवाली गोल सूजन ।

गूमा-पु० एक छोटा वीषा, द्रोणपुष्पी ।

गूरण-पु० [सं०] प्रयत्न; मध्यवसाय ।

गूर्-पु० [सं०] कुदनेकी क्रिया; कुदान ।

गूलर-पु० बरगद-बीपलकी जातिका एक पेड़, उदुवर; उसका
फल जो अजीरसे मिलता-जुलता है । -**कबाब**-पु० एक
तरहका कबाब । **मु०**-**का कीबा**-कूप-मंडक । -**का**
कूल-येमी कीज जो कमी देछनेमें न आवे, अलस्य वस्तु ।

गूबाक-पु० [सं०] दे० 'गूबाक' ।

गूवना-**खी** [सं०] मोरकी पूँछपरके अर्धचंद्र जैसे चिह्न ।

गूह-पु० दे० 'गू' ।

गूहन-पु० [सं०] छिपाना ।

गूहाजनी-**खी** दे० 'गूहाजनी' ।

गूहाजीजी-**खी** गंदी कबा-मुनी; कलंक ।

गूजन-पु० [सं०] गाजर; शूलजम; लाल लहसुन; गाँजा;
विषाक बाणसे मारे हुए पशुका मांस ।

गूडिब, गूडीब-पु० [सं०] एक तरहका शृंगार ।

गूदव-वि० [सं०] मेधावी; चतुर । पु० कामदेव ।

गूदु-पु० [सं०] कामदेव । वि० कामी ।

गूधू-वि० [सं०] दुष्ट, खल । **खी** अपान बायु; समझ,
बुद्धि ।

गूधु-वि० [सं०] लोभी, लोलुप ।

गूध-पु०, **गूध्वा**-**खी** [सं०] इच्छा; लोभ ।

गूध-पु० [सं०] मित्र । वि० लोभी । -**कूट**-पु० राजगृहके
पासका एक पर्वत । -**राज**-पु० जटायु । -**व्यूह**-पु०
वह व्यूह जिसमें सेना मित्रकी शक्तमें खड़ी की जाय ।

गूध्रसी-**खी** [सं०] एक वातरोग जिसमें कमरसे आरंभ
होकर सारे पैरोंमें दर्द होता और गर्दं जकड़ती जाती है ।
गूध्रिका-**खी** [सं०] गिबोंकी आदिमाता जो ताम्रासे
उत्पन्न कश्यपकी पुत्री थी ।

गूध्री-**खी** [सं०] मादा मित्र ।

गूष्टि-**खी** [सं०] एक बार भ्यायी हुई गाय; वह स्त्री जिसे
एक ही बच्चा हुआ हो, सकुष्ट प्रसूता ।

गूह-पु० [सं०] घर, वासस्थान; पत्नी, गृहिणी; गृहस्थाश्रम;

मेधादि राशि । -उद्योग-पुं० घरमें किया जानेवाला
 र्थका । -कन्या, -कुमारी-स्त्री० शोकवार । -कपोतः-
 कपोतक-पुं० पालतू कबूतर । -कर्म(श्)-पुं० गृह-
 कार्य; गृहस्थके लिए विहित कर्म । -कलह-पुं० घरेलू
 झगडा, भाई-भाईकी लड़ाई । -कारक-पुं० घर बनाने-
 वाला; राज । -कारी(रिन्)-पुं० घर बनानेवाला; एक
 तरहकी मिट्टी । -कार्य-पुं० घरका कामकाज । -गोधा,
 -गोधिका-स्त्री० छिपकली । -चिह्न-पुं० घरका छिपा
 दूषण, कलंक, अपवाद । -ज, -जात-वि० घरमें पैदा
 हुआ । पुं० सात प्रकारके दासोंमेंसे एक, अपने घरमें पैदा
 दास (दे० 'दास') । -जन-पुं० कुटुंबी; कुटुंब । -जाह्निका
 स्त्री० छल-छद्म । -ज्ञानी(विन्)-वि० जिसका ज्ञान,
 पांडित्य घरमें ही प्रकट हो सके, पूर्ण । -तटी-स्त्री०
 प्रवेश-पथ । -त्याग-पुं० घर छोड़ना; गृहत्यागमका
 त्याग । -त्यागी (गिर)-वि० घर छोड़कर चला
 जानेवाला । पुं० सन्तपासी । -वाह-पुं० घरमें आग
 लगना या लगाना । -दीप्ति-स्त्री० घरकी शोभा, सती-
 साध्वी स्त्री । -देवता-पुं० अग्निसे ब्रह्मातक ४५ देवता
 जिनकी गृहके विविध अंगोंमें स्थिति मानी जाती है । -
 देवी-स्त्री० जरा नामकी राक्षसी; गृहिणी । -धूम-पुं०
 मेदभ्यंगी । -वाशन-पुं० जगली कबूतर । -नीह-पुं०
 गौरैया । -प-पुं० गृहपति; गृह-पालक; कुत्ता । -पति-
 पुं० घरका मालिक; गृहस्थ; वज्रमान; अग्नि । -पत्नी-
 स्त्री० गृहस्वामिनी । -पशु-पुं० कुत्ता । -पाल-पुं०
 घरकी रखवाली करनेवाला; कुत्ता । -पालित-वि०
 घरमें पाला-पोसा हुआ । -पोतक-पुं० गृहभूमि ।
 -प्रबंध-पुं० घर, गृहस्थीका प्रबंध, रीतनाम । -प्रवेश-
 पुं० नये घरमें विधिपूर्वक प्रवेश करना । -बलि-स्त्री०
 घरमें दी जानेवाली बलि, वैशदेव । -० मिष-पुं० बक
 पक्षी । -० मुद्ग(ज)-पुं० काक; गौरैया । -भद्रक-पुं०
 बैठक । -भूमि-स्त्री० वह जमीन जिसपर कोई मकान
 बना हो, वास्तुस्थान । -मेघ-पुं० घरमें झगडा लगाने;
 संघ लगाना । -मेघी(विन्)-वि० घरमें झगडा लगाने-
 वाला; संघ मारनेवाला । -मन्त्री(विन्)-, सचिव-पुं०
 दे० 'सराष्ट्रसचिव', दे० 'शासनमन्त्री' । -मणि-पुं०
 दीपक । -भाषिका, -भोचिका-स्त्री० चमगादड़ । -मृग-
 पुं० कुत्ता । -मेघ-पुं० मकानोंका समूह । -मेघ-पुं०
 पंचयज्ञ; पंचयज्ञ करनेवाला, गृहस्थ । -मेघी(विन्)-
 पुं० गृहस्थ; गृहस्थ ब्राह्मण । -मंत्र-पुं० उत्सव आदिके
 अवसरपर शंका फहरानेका शब्द । -मुद्ग-पुं० घरका,
 भाई-भाईका झगडा; किसी देशके निवासियों वा विभिन्न
 वर्गोंकी आपसकी लड़ाई, खानाजंगी । -म्रंश्र-पुं० पारि-
 वारिक कलह या झूट । -लक्ष्मी-स्त्री० घरकी लक्ष्मी,
 सुशीला गृहिणी । -वाटिका-स्त्री० घरसे सटा हुआ बाग,
 पार्श्व बाग । -वासी(सिन्)-वि०, पुं० घरमें रहनेवाला,
 गृही; घरमें हुआ रहनेवाला । -विच्छेद-पुं० परिवारकी
 बरबादी । -विच-पुं० घरका स्वामी । -वायी(विन्)-
 पुं० कपोत । -सज्जा-स्त्री० घरका साज-सामान, असबाब ।
 -स्थ-पुं० ब्रह्मचर्य पाकनेके बाद विवाह करके दूसरे
 आश्रममें प्रवेश करने वा रहनेवाला, गृही; घर-बारवाला;

खेती-बारी करनेवाला, किसान । वि० गृहवासी ।
 -स्वामिनी-स्त्री० घरकी मालकिन, पत्नी ।
 गृहणी-स्त्री० [सं०] कौजी ।
 गृहस्थाश्रम-पुं० [सं०] ब्रह्मचर्यके बादका आश्रम, गृहस्थ
 का जीवन; विवाहित जीवन ।
 गृहस्थी-स्त्री० गृहस्थका जीवन; गार्हस्थ्य, घर-बार; घरका
 कामकाज; घरका माल-असबाब; बाल-बच्चे; कुटुंब; खेती ।
 गृहाक्ष-पुं० [सं०] गवाक्ष, खिचकी ।
 गृहामृत-वि० [सं०] घर आया हुआ (अतिथि) ।
 गृहापण-पुं० [सं०] बाजार ।
 गृहाम्भ-पुं० [सं०] कौजी ।
 गृहाराम-पुं० [सं०] गृहवाटिका ।
 गृहाश्रम-पुं० [सं०] गृहस्थाश्रम ।
 गृहासक्त-वि० [सं०] घर-गृहस्थी, बाल-बच्चोंसे बहुत अनु-
 राग रखनेवाला ।
 गृहिणी-स्त्री० [सं०] गृहस्वामिनी, पत्नी ।
 गृही(विन्)-वि०, पुं० [सं०] गृहस्थ, घर-बारवाला ।
 गृहीत-वि० [सं०] ग्रहण किया हुआ; पकड़ा हुआ; स्वी-
 कृत, प्राप्त; ज्ञात; संगृहीत; वादा किया हुआ । [स्त्री०
 'गृहीता'] । -गर्भो-वि०, स्त्री० गर्भवती ।
 गृहीतार्थ-वि० [सं०] जिसने अर्थ समझ लिया है, अर्थ-
 ज्ञाता ।
 गृहोद्यान-पुं० [सं०] गृहवाटिका ।
 गृहोद्योग-पुं० [सं०] दे० 'गृह-उद्योग' ।
 गृहोपकरण-पुं० [सं०] बरतन आदि घरका सामान ।
 गृहा-वि० [सं०] गृह-सम्पत्ति; घरमें किया जानेवाला (कर्म);
 पालतू; आश्रित; ग्रहण करने योग्य । पुं० पालतू पशु-पक्षी;
 गृहजन; युद्धा; गृहासि । -कर्म(श्)-पुं० गृहस्थके लिए
 विहित कर्म, संस्कारादि । -सूत्र-पुं० गृहकर्मों, सम्भारों-
 की विधियाँ बतानेवाला वैदिक ग्रन्थ ।
 गृहाक-वि० [सं०] पालतू; आश्रित । पुं० पालतू जानवर ।
 गृहा-स्त्री० [सं०] नगरके पासका गाँव ।
 गृहवा-पुं० दे० 'गो'इहा' ।
 गृहवा-पुं० केकडा ।
 गृही-स्त्री० बाराही कंद ।
 गृहना-सं० कि० दे० 'ग्रेनना' ।
 गृहली-स्त्री० धेरा, फेडा, चकर ।
 गृहा-पुं० ईखके ऊपरके हरे पत्ते; गेंडा ।
 गृही-स्त्री० बाँसके दो डंडे जिनमेंसे प्रत्येकपर खड़ाकें जैसा
 एक-एक पाषाण लगा रहता है-इनपर चढ़कर लोग
 चल्ते-फिरते, कूदते-फाँदते हैं (अंग्रेजी 'स्टैल्ड') ।
 गृह, गृहक-पुं० [सं०] खेलनेका गेंदा ।
 गृहबा, गृहबा-पुं० तकिया; बड़ा गेंदा ।
 गृहुरी, गृहुरी-स्त्री० गृहुरी; कुलड़ी ।
 गृह-पुं० कपड़े, रबर, काठ, कार्क आदिका बना गोला जिससे
 लकड़के लेखने हैं, कंदक; टोपी बनाने वा पगड़ी बाँधनेका
 कालिब; तारकी मालियोंका बना गोला जिसमें दिया रख-
 कर जलाते हैं । -ग्रह-पुं० क्रिकेट या टेनिस आदि खेलने-
 का स्थान; विलियम-रूम । -लक्ष्मी-स्त्री० लक्ष्मीका एक
 खेल । -मृग-पुं० गेंदा और बड़ा, क्रिकेट खेलनेकी

सामग्री: किकेटका लेख ।

गँई-वि० गँईके फूल जैसे रंगका, जर्द । पु० गँईके फूल-से मिलता रंग ।

गँईबा-पु० दे० 'गँईबा' ।

गँई-पु० एक पौधा; उसका फूल जो पीले रंगका होता है, एक आतिशबाजी; एक गहना; † गँई, कंडुक ।

गँईबा, गँईबा-पु० गोल तकिया ।

गँईक-पु० [सं०] खेलनेका गँई; गद्दा ।

गँईरा-पु० दे० 'गँईरा' ।

गेगला-पु० मसुरकी जातिका एक पौधा जो प्रायः गेहूँ आदिके साथ पैदा होता है । वि० मूल ।

गेदिस-पु० सोना बँधनेका फीता ।

गेदना-स० कि० लकीर आदिसे घेरना । * म० कि० चारों ओर फिरना ।

गेदा-पु० बेपरका चिकियाका बच्चा ।

गेब-वि० [सं०] गाने लायक, जो गाया जा सके ।

गेदना-स० कि० गिराना; घँटेलना; डालना; आरोप करना । म० कि० चारों ओर फिरना ।

गेरौबा-पु० चौपायोंके बंधनका वह भाग जो गलेमें रहता है ।

गेरुआ-वि० गेरुके रंगका; गेरुमें रंगा हुआ; जोगिया । पु० गेरुके रंगका एक क्रीडा; गेहूँके पौधोंका एक रोग । -बाना-पु० गेरुआ बन्ना, सन्यासियोंका जोगिया पहनावा ।

गेरुई-वि० गेहूँ, जो आदिकी फसलका एक रोग जिसमें उनके पत्ते लालसे हो जाते हैं ।

गेरु-पु०, जी० खानोंसे निकलनेवाली एक तरहकी लाल मिट्टी जो रंगने और रङ्गके भी काम आती है ।

गेला-पु० बड़ी गेली ।

गेली-जी० [अ०] कालमकी नापकी छोड़े या लकड़ीकी बनी छिछली किशोरी जिसपर कपोज किया हुआ मैटर कालम-पेज आदि बनानेके लिए रखते हैं । -प्रूक-पु० कपोज किये हुए मैटरका पहला या पेजके रूपमें कसे जानेके पहलका उठाया गया प्रूफ ।

गेल्हा-पु० गेल रखनेका चमड़ेका कुप्पा ।

गेण्य, गेण्य-पु० [सं०] गवैया, गायक; अभिनेता ।

गेस्-पु० [फा०] कियोंका लड; काकुल, पट्टा । -दराङ्ग-वि० जिसके गेस् लंबे हों ।

गेह-पु० [सं०] घर, मकान । -पति-पु० गृहपति ।

गेहनी-स० जी० दे० 'गेहिनी' ।

गेहिनी-जी० [सं०] गृहिणी, गृहस्वामिनी ।

गेही(हिन्)-वि०, पु० [सं०] घरवाला; घर-बारवाला ।

गेहूँअन-पु० एक बहुत जहरीला सँप जिसका रंग गेहूँके रंगसे मिलता है ।

गेहुआँ-वि० गेहूँके रंगका, गंदुमी ।

गेहूँ-पु० एक अन्न जिसकी फसल जैममें कटती है ।

गेहूँदो(हिन्)-वि० [सं०] दे० 'गेहूँद' ।

गेहूँमेही(हिन्)-वि० [सं०] आलसी, काहिल ।

गेहूँर-वि० [सं०] जो घरमें ही बहादुरी दिखानेवाला हो, कायर ।

गँई-पु० भैसेकी शकलका विशालकाय जंतु जिसकी नाक पर एक या दो सँग होते हैं और जिसके चमड़ेकी डाल बनायी जाती है ।

गँसी-जी० मिट्टी खोदनेका एक जोरार ।

गँज-पु० [अ०] अति कोष, कीप । -ब(जो)गँज-पु० अति कोष ।

गँताक-पु० निज कोटिका बैल; निहल पशु; बेकार, रद्दी चीज ।

गँज-पु० रास्ता, गैक; गमन-'सुख पायो तो विरमियो नाहि करि जैयो गैन'-वाचाहित रुंदावन; गमन; गर्व ।

गँजा-पु० नष्टा बैल ।

गँनी-वि०, जी० गामिनी ।

गँज-पु० [अ०] छिया होना, बहिगोचर न होना; परोक्ष; परोक्ष विषय । -दूँ-वि० परोक्षदर्शी, मूल-भविष्य जाननेवाला ।

गँबर-† पु० एक पक्षी; * अन्न हाथी ।

गँबी-वि० [अ०] ईश्वरीय; दुःख; अज्ञात; अज्ञेय ।

गँबर-पु० बड़ा हाथी, गजवर ।

गँबा-जी० गाय ।

गँर-जी० अंधिर; अन्यायपूर्ण बर्ताव; * गैक; निदा । पु० बड़ा हाथी । वि० [सं०] पहाड़-संबंधी ।

गँर-वि० [अ०] दूसरा, अन्य; भिन्न, बदला हुआ (हालत गैर होना); बेगाना, पराया । -आबाद्-वि० जो आबाद न हो; उजाड़; परती (जमीन) । -इनसाजी-जी० नाहसाफी, अन्याय । -हकाज-पु० दूसरा गाँव; दूसरेकी जमींदारी । -ज़करी-वि० अनाबन्धक ।

-ज़िम्मेदार-वि० (अपनी) जिम्मेदारी न समझनेवाला, दायित्वहीन; जिसका आरोप न किया जा सके । -मज़क-वि० जो जोती-बोधी न गयी हो, परती (जमीन) ।

-मनकूला-वि० अचल, स्थावर (संपत्ति) । -मर्द-पु० पतिते भिन्न पुरुष; बेगाना आदमी । -मामूली-वि० असाधारण । -मिसिल-वि० अनुचित, अयोग्य (स्थानमें) । -मुकम्मल-वि० अधूरा, अपूर्ण । -मुनासिब-वि० अनुचित, जो मुनासिब न हो । -मुमकिन-वि० संसर्ग, असंभव, न हो सकनेवाला । -मुक्की-वि० विदेशी । -मुलकिल-वि० अस्विर; अस्वाधी ।

-मुस्तरका-वि० बिना साजेका, एकजोर; जो एककी ही संपत्ति हो । -मौकसी-वि० जो बपौती न हो; जिसपर या जिसे मौकसी हक हासिल न हो । -बसूल-वि० बिना बसूला हुआ, जो बसूला न गया हो, नाकी ।

-बाजिब-वि० जो बाजिब, मुनासिब न हो, अनुचित । -सरकारी-वि० जो सरकारी न हो । -हाज़िर-वि० अनुपस्थित, जो हाज़िर, मौजूद न हो । -हाज़िरी-जी० अनुपस्थिति, नाया ।

गँर-जी० [अ०] लज्जा, हया; जान । -दूर-मंद-वि० जिसे गैरत हो, लज्जाशील ।

गँरि-पु० [सं०] गेरु; सोना । वि० पहाड़से उत्पन्न; गेरु रंगका ।

गँरिहा-पु० [सं०] जलमयूक ।

गँरिचल-जी० दे० 'गैरिचल' ।

वैरी-वो [सं०] लंगछिकी, बिषलंगगळा; † खाद जमा करनेका मद्धा ।

वैरीबत-वो [अ०] गैर होना, बेगानगी, परावापन; आभीषयताका लक्षण ।

वैरेव-वि [सं०] गिरिसे या गिरिपर उत्पन्न; पहाड़ी । पु० नेक; शिखाजतु ।

वैक-वो रास्ता; गली । **वु० (किसीकी)**-जाना-किसीका अनुसरण करना । -बताना-दगाबाजी करना । **वैकन-पु०** [अ०] तरल पदार्थका एक मान जो लवण सादे तीन सेरका होता है ।

वैकरी-वो [अ०] नाट्यशाला, व्याख्यानभवन आदिमें बैठनेके लिए बना हुआ सीढ़ीनुमा स्थान; असेंबली आदिमें इच्छाके बैठनेके लिए बना हुआ बारजा; वह भूकान या कभरा जिसमें कलकत्ती वस्तुओंका प्रदर्शन किया जाय । **वैका, वैकारा-पु०** गाँवकी लीक या गाँवी जाने लायक रास्ता ।

वैस-वो [अ०] बायुरूप सूक्ष्म और चारे जितना फैल सकनेवाला द्रव्य (ऐसे ही द्रव्योंके संयोगसे जल, बायु आदिकी उत्पत्ति होती है, अक्सिजन, हाइड्रोजन आदि) ।

वैइडा-पु० उपल ।

वैइवा-पु० दे० 'वोइवा' ।

वैइवा-पु० गाँवके पासका स्थान ।

वैवा-वो जोक ।

वैव-वो गलमुच्छा ।

वैव-वो पीतकी लपेट, मुर्ती ।

वैवना-स० कि० देखासे घेरना, (किसी चीजके) सब ओर देखा खींचना; गुप्तिया, मोठी पूरी आदिकी नोक या कोर मोड़ना; नोक या कोर मोहरा कर देना ।

वैवनी-वो गुप्तियाकी कोर बनानेका औजार ।

वैव-पु० [सं०] उमरी हुई नाभि; ऐसी नाभिवाला आदमी; एक चीज जाति, गौड़ । -**किरी-वो** [हिं०] एक रागिनी । -**बाना-पु०** [हिं०] मध्यभारतका एक प्रदेश जो गौड़ जातिका आदि वासस्थान है ।

वैव-पु० भारतकी एक जंगली या आदि हिंदू जाति (उत्तरप्रदेश, बिहारमें इस जातिके लोग खासकर पत्थर गढ़ने और दाना भूतनेका पेशा करते हैं); गौड़ देश; एक राग; गौड़ ।

वैवरी-वो हँडुरी, मेहरा ।

वैवछा-पु० छकीका घेरा ।

वैववा-पु० बहारदीवारीने घिरा हुआ स्थान, बाका; बहारदीवारीसे घिरा हुआ पाछा; मोहला; गोबंदा; चौड़ी सड़क; सहन; परछन ।

वैवी-वो मध्यभारतकी एक बोली ।

वैव-पु० पेसका लसदार पमेव जो सूख गया हो, निर्यास ।

• **वो** एक वृक्ष, गोदी । -**कसा-पु०** कागजपर गोंद फैलानेका आला । -**दानी-वो** भिंगीया हुआ गोंद रखनेका बरतन । -**पंखीरी-वो** प्रसूताकी खिल्ली जानेवाली वह पंजीरी जिसमें गोंद मिला रहता है ।

-**पाग-पु०** गोंद और चीनीके मेष्ठसे बनी हुई एक मिठाई । -**मखाना-पु०** गोंद, मखाने आदिका पाक बी

प्रसूताकी पुष्टिके लिए खिलाना जाता है ।

वैवरी-वो एक जलीय पोषा जिसकी चट्टाई बनती है; पवालकी चट्टाई ।

वैवछा-पु० बहा नागरमोवा; एक पुण जिससे चट्टाई बनती है ।

वैववा-पु० पानीमें गुंथा हुआ चनेका सप्पू जो बुलदुल्लोंकी खिलाना जाता है; † मिट्टीका साना हुआ डेर या पिंड, लोहा ।

वैवी-वो इंदुदी; मौलसिरीसे मिलता हुआ एक पेड़ ।

वैवीछा-वि (पेड़) जिससे गोंद निकले ।

वो-वो [सं०] गाय; रश्मि, किरण; इंद्रिय; बाणी, सरस्वती; आँख; बुध राशि; भरती; माता; विशा; जीम । पु० **वैव**; पशु; आकाश; सूर्य; चंद्रमा; बाण; जल; स्वर्ग; वज्र; होरा; शब्द; १० अंक; रोम; गायक; गोमेध यज्ञ । -**कंडक-पु०** गायका खुर; गायके खुरका निशान; गोखुर । -**कन्या-वो** -**वो** कामपेनु । -**कर्ण-वि** गायकेसे कानी-बाल । पु० खबर; सौंप; बालिष्ठ, विश्वास; मलबारमें स्थित जैबोंका एक तीर्थ; बहो स्थापित शिवकी मूर्ति; एक तरहका चिह्न; एक तरहका बाण । -**कर्णी-वो** सूँची लना । -**किराटा, किराटिका-वो** सारिका पक्षी ।

-**किल, कली-पु०** हल; मूसल । -**कुंजर-पु०** मोटा-ताया बैल; शिवका नदी । -**कुल-पु०** गाँवोंका कुंड; गोशाला, गोठ; बृंदावनके पासका एक गाँव जो नरका वास-स्थान था और जहाँ कृष्ण तथा बलरामका पालन-पोषण हुआ । -**नाथ, पति-पु०** कृष्ण । -**व्य-वि** गोकुलवासी । पु० बलम-कुलवाले गोस्वामियोंका एक भेद; तैलंग ब्राह्मणोंका एक भेद । -**कुलिक-वि** पक्षमें फँसी गायकी सहायता न देनेवाला; पैचाताना । -**कृत-पु०** गोबर । -**कोय-पु०** [हिं०] उमनी दूरी जहाँतक गायकी आवाज सुनाई दे । -**क्षीर-पु०** गायका दूध । -**खुर, खुरक-पु०** गायका खुर; गोखुर । -**खग-पु०** स्थल-चर प्राणी, पशु । -**खुर-पु०** गायका खुर; गायके खुरका निशान । -**खुरा-पु०** [हिं०] करैत सौंप । -**गुष्टि-वो** सकल प्रसूता गौ । -**गुह-पु०** गोठ, गोशाला । -**ग्रंथि-वो** सूखा हुआ गोघर, करसी; गोठ; गोत्रिष्ठिका । -**ग्रास-पु०** भोजनका वह भाग जो गायके लिए अलग कर दिया जाता है; गायकी तरह सूँहमें उठाकर बिना चबाये भोजन करना । -**घात-पु०** गोहत्या । -**घातक, घासी (तिव्)** -**वि** गोवध करनेवाला । पु० बसाई । -**घृत-पु०** गायका घी; वर्षा । -**घ्व-वि** गोवध करनेवाला; जिसके लिए गोवध किया जाय (अतिथि) । -**चंदन-पु०** एक तरहका चंदन । -**चंदना-वो** एक तरहकी जहरीली जौक ।

-**चर-वि** इंद्रिय द्वारा जानने योग्य; इंद्रियग्राह्य । पु० इंद्रियका विषय (रूप, रसादि); इंद्रियग्राह्य वस्तु; साक्षात्कार; चरगाह; व्यक्तिके नामके अनुसार निकाह हुआ यज्ञ (६० ज्यो) । -**चरी-वो** भिक्षावृत्ति । -**चर्न-वो** -**पु०** गायका चमका; भूमिकी एक नाप, चरसा ।

-**चारक, चारी (तिव्)** -**पु०** गाय चरानेवाला, ग्वाला । -**चारण-पु०** गाय चराना । -**ज-वि** गौसे उत्पन्न । पु० दूधसे बना एक पदार्थ; अभिषेकके अनधिकारी एक

प्रकारके क्षत्रिय । -खल-पुं गोमूत्र । -जागरिक-पुं मंगल, कल्याण; कंटकारिका; पावक । -जाति-स्त्री गो-वंश, सारी दुनियाके सारे गाय-बैल, गोसमष्टि । -जिह्वा-जिह्विका-स्त्री बनगोभी । -कुंवा-स्त्री तरबूज । -सीर्थ-पुं गोशाला, गोठ । -त्र-पुं दे० क्रममें । -वर्त-पुं गोदंती हरताल । वि० कबचबुज । -दान-पुं गायका दान; विवाहाके पहल्लेका एक संस्कार, केशांत । -दारुण-पुं हल; कुदाल । -दुह(ह्)-, दुह-पुं गाय दुहनेवाला, ब्याला । -दोहन-पुं गाय दुहना; गाय दुहनेका समय । -दोहनी-स्त्री दूध दुहनेका रतन । -द्रव-पुं गाय या बैलका दूध । -घन-पुं गोभी, गाय-बैलका समूह; गाय-बैल रूप धन; चौबे फलका बाण; * गोवर्द्धन पर्वत । -घर-, घ-पुं पर्वत । -घर्म-पुं पशुधर्म; पशुवर विचारहीन समीप । -भूलि, -भूली-स्त्री गायोंके चरकर लौटनेका समय; संख्या बेल । -घेनु-स्त्री दूध देनेवाली सबसवा गाय । -नर्द-, नर्द-पुं एक प्राचीन जनपद जो पतंजलिका जन्मस्थान था; शिव; नागरमोथा; सारस । -नर्दीय-पुं महाभाष्यकार पतंजलिमुनि । -नस, -नास-पुं एक तरहका सौंप; बैकान्तमणि । -नाथ-पुं बैल; गोस्वामी; भूस्वामी । -नाथ-पुं ब्याला । -निष्यंद्-पुं गोमूत्र । -ष-पुं गोपालक; ब्याला, अहीर; गोष्ठका अपथक; रत्नक; एक पौधा; भूमिपति, राजा; प्राचीन हिंदू राज्यव्यवस्थामें गाँवकी सीमा, आबादी, खेती-बारी, क्रय-विक्रय आदिका लेखा रखनेवाला कर्मचारी; * गोपन, छिपाया; दे० क्रममें । -०कन्या-स्त्री गोपकुमारी; ब्यालिन, गोपी । -०कर्कटिका-स्त्री एक पौधा । -०दल-पुं सुपारीका पेड़ । -०शह-पुं प्राचीन भारतका एक गोपप्रधान जनपद । -०बभ्रू, -०बभ्रूटी-स्त्री गोप पत्नी; गोप-खुवती, ब्यालिन, गोपी । -०बह्वी-स्त्री मद्रवतिका, अनंतमूल । -पति-पुं गायोंका भालिक, गोस्वामी; सौँस; ब्याला; राजा; कृष्ण; शिव; विष्णु; सूर्य । -पद्-पुं गायके खुरका निशान या उममें बना गदा; चरगाछ । -पदी-विं गोपदके जितना छोटा । -पा-स्त्री गोप स्त्री, ब्यालिन; श्यामा लता; बुढ़की पत्नी, यक्षीधरा । -पाल-पुं गोपालक; ब्याला, अहीर; राजा; कृष्ण; शिव । -०कर्कटी-स्त्री एक पौधा, छुद्रफल । -०सापन, -०सापनीच-पुं एक उपनिषद् । -०मंदिह-पुं बलभ्रमसम्राट्वालोका मंदिर । -पालक-पुं दे० 'गोपाल' । -पालि-पुं शिव । -पालिका-स्त्री ब्यालिन; गोपबधू; ब्यालिन नोमका कीड़ा । -पाली-स्त्री ब्यालिन । -पी-स्त्री गोपबधू, ब्यालिन; कृष्णकी बाललीकामें सम्मिश्रित हृदावनकी गोपकन्याएँ या गोपबधूएँ; गोपन करनेवाली । -०गीता-स्त्री श्रीमद्भागवत-दशम स्कंधमें गोपियों द्वारा की हुई कृष्णस्तुति । -०चंद-पुं दे० क्रममें । -०चंदब-पुं एक तरहकी पीली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं । -०जव-पुं गोपियोंका समूह । -०जनबल्लभ-पुं कृष्ण । -०जाच-पुं कृष्ण । -पीच-पुं खंजनका एक भेद । -पीता-स्त्री गोपी । -पीथ-पुं रक्षा; तीर्थस्नान, बह सरोवर जहाँ गोएँ जल पीती हैं । -पुच्छ-पुं गायकी पूँछ; एक तरहका बंदर;

एक तरहका हार; एक प्राचीन बाजा । -पुष्टा-स्त्री बनी इलायची । -पुत्र-पुं बछड़ा; कर्ण । -पुर-पुं नगरद्वार, शहरका फाटक; महल या मंदिरका मुख्य द्वार; तोरण । -पुरीच-पुं गोबर । -प्रचार-पुं चरगाछ । -प्रवेष्ट-पुं गायोंके चरकर लौटनेका समय, गोधूलि । -फणा-स्त्री कुद्दी, नाक आदिपर बाँधनेके लिए विशेष प्रकारमें बनायी हुई पट्टी; गोफन, बैलगाँव । -फन-पुं [हिं०] डेलगाँव । -वर-पुं [हिं०] दे० क्रममें । -शुक्(श्)-पुं राजा । -श्व-पुं पहाड़ । -मंत-पुं सत्तादि पर्वतमालाके अंतर्गत एक पहाड़ी । -मक्षिका-स्त्री कुकुरीछी, मँस । -मस्व-पुं सुभुतमें वर्णित एक तरहकी मछली । -मथ-पुं ब्याला । -मर-पुं गोघातक, कसाई । -मल-पुं गोबर । -मस-पुं गाय बैलका मांस । -माता(तृ)-स्त्री मातृश्रान्धीय नोजाति, गायरूपी माता; गोवधकी आदिमाता, कश्यपकी पत्नी सुरभि । -मायु-पुं म्हाल; एक तरहका मेढक । -मुख-विं गायकेने मुखवाला । पुं एक तरहका रत्न; नरसिंह; नाक वा चबियाल; एक तरहकी सेंध; गोमुखी । -०नाहर, -०नाहर-पुं देखनेमें सीधा पर असलमें बहुत कुटिल मनुष्य । -मुखी-स्त्री जपमाला रखनेकी गोमुखके आकारकी बैली जिसमें हाथ डालकर जप करते हैं; नंगोचरीकी गोमुखाकृति गुहा जिसमें यगा निकलती है । -मूत्र-पुं गायका दूध । -मूत्रिका-स्त्री वित्र-कायिका एक भेद; इस आकृतिकी बैल; एक मणि जिसका रंग लाली लिये कुछ पीला होता है, पीत मणि; शीतल-चीनी । -मूत्र-पुं नीलगाय । -मेद्-पुं एक रत्न । -मेदक-पुं गोमेद; एक विश, काकोल; अगारा लगाना । -मेघ-पुं कलियुगके लिए निषिद्ध एक वैदिक यज्ञ जिसमें गोवतिका विधान है । -वान-पुं बहली, बैलगाड़ी । -रंङ्क-पुं एक जलपक्षी; कैदी; दिगंबर साधु; मन्त्रवाक । -रक्ष-पुं गोरक्षण; नारंगी; ब्याला । -०कर्कटी-स्त्री चिमिदा । -०जंबू-स्त्री गोधूम; गोरक्षतडुला । -०रंङ्कला स्त्री छुद्र लताविशेष । -०तुंकी-स्त्री कुभटुपी । -०मुग्धा-स्त्री एक झाड़ी । -रक्षक-पुं गौरीकी रक्षा करनेवाला, गोपालक; ब्याला । -रक्षिणी-विं, स्त्री गोरक्षा करनेवाली, गोरक्षाके लिए स्थापित (सभा) । -रख-पुं [हिं०] दे० क्रममें । -रज(स्)-स्त्री गायके खुरोंमें उड़ी हुई मूत्र । -रज-पुं जाकरना । -रस-पुं दूध; दही; भूँस; हृदियसल । -रसा-विं [हिं०] गायके दूधसे पला हुआ (बच्चा) । -राटिका, -राटी-स्त्री मैना पक्षी । -रत्न-पुं दो कोमकी दूरीकी एक माप । -रूप-विं गायके रूपवाला । पुं गायका रूप, आकार; शिव । -रोच-पुं हरताल । -रोचन-पुं एक सुगंधित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गायके पिसने मानी जाती है । -रोचना-स्त्री गोरोचन । -रोगल-पुं एक तरहका बंदर । -लोक-पुं बैकुंठ । -०वास-पुं स्वर्गवास, मृत्यु । -लोकेस-पुं कृष्ण । -लोचन-पुं दे० 'गोरोचन' । -लोमी-स्त्री वंश्या; बच; सफेद दूध । -बत्स-पुं बछड़ा । -बच-पुं गायकी हला कराना, गावकुशी । -बर-पुं करती, गोमलका चूर । -वर्चन-पुं हंदा-

भगका एक पहाड़ जिने पुराणोंके अनुसार इन्द्रके कोपसे मन्मथमिकी रक्षा करनेके लिए भगवान्ने अपनी डेङलीपर उठा लिया था । -०अरु, -०आरज, -०आरी (विष्) - पु० कृष्ण । -विष्-पु० गोपालक; गोशालका अन्धश; कृष्ण; दृष्टपति । -०आदसी-खी० फाल्गुनके शुक्ल पक्षकी द्वादशी । -०पद्-पु० मोक्ष । -०पाद् (पादाचार्य) - पु० संकराचार्यके गुप्त । -०सिंह-पु० सिलोंके दसवें और अंतिम गुप्त । -विस्तर्ण-पु० ओर, तस्का । -वीची-खी० चंद्रमाके भ्रमणपथका अंशविशेष । -ईद-पु० गायोंका समूह, गौसमूह । -बैद्य-पु० पशुचिकित्सक; अनाड़ी वैद्य । -अज-पु० गोट; गायोंका शृङ्ग; चरागाह । -अज-पु० गोहत्याके प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला एक व्रत । -शङ्ख-पु० गौर । -शाखा-खी० गायोंके रहनेका स्थान, बाड़ा, गोष्ठ । -शीर्ष-पु० ऊपर पर्वत; उस पर्वतपर होनेवाला चंदन । -शृंग-पु० गायका सींग; दक्षिण भारतका एक पर्वत; एक कवि । -ह-पु० गोशाला, गोठ, पशु-शाला; अश्वारोंका गाँव, गोष्ठी; कई आदमियोंके साथ मिलकर करनेका एक आश्रम । -०पति-पु० गोष्ठका अध्यक्ष; ग्वालोंका सरदार । -खी-खी० समा, मंडली, समाज; वार्तालाप; समूह; पारिवारिक संबंध; नाटकका एक भेद जिसमें एक ही अंक होता है । -खंख-पु० गोचारक । -सर्ग-पु० गायोंकी चरनेके लिए छोड़नेका समय, भोर । -सर्प-पु० गोह । -सब-पु० गोमेध । -सख-पु० एक हजार गायोंका महादान । -सहखी-खी० कांसिक या ज्येष्ठकी अमावस्या । -साई-पु० [हिं०] गोस्वामी; ईश्वर; गृहस्थ श्रेष्ठ साधुओंका एक संन्याय, अतीथ । वि० मालिक; भेड़ । -खुल-पु० बछड़ा । -खुल-पु० अश्वभेदका एक शृङ्ग । -खेयाँ-पु० मालिक, स्वामी । -खाना-खानी-खी० अंगूर । -खान-पु० गोष्ठ । -खामी (विष्) -पु० गायोंका मालिक; गायें रखनेवाला; त्रिभेदिय; बलभक्तुल, निष्कर्मप्रदाय और मन्मन्प्रदायके आचार्याधीन पदवी । -हत्या-खी० गोपथ । -हित-वि० गोरक्षक । पु० विष्णु ।

गो-वि० [फा०] (ममासातमें) कहनेवाला ('रास्तगो', 'सुशगो', 'कहानीगो') । पु० गेंद, तुकमा । अ० यद्यपि, अगदवे । -कि-यद्यपि । -अगो-न कहने लायक, गोपनीय; अस्पष्ट; संदिग्ध (रखला, रहना) ।

गोईठा-पु० उपज ।

गोईध; गोईधारा-पु० गाँवका सामीप्य, गाँवका किनारा ।

गोईधे-अ० समीप, पास ।

गोईधा-पु० दे० 'गोयंदा' ।

गोई-पु० गेंद ।

गोहन-पु० एक तरहका हिरन ।

गोहर्षा-पु०, खी० दे० 'गुरवा' ।

गोई-खी०, सखी, गोहर्षा ।

गोड-वि० चुरानेवाला ।

गोका-खी० [सं०] छोटी गाय; नीलगाय ।

गोक्ष-पु० जौक ।

गोखर-पु० एक क्षुप; उसका कँटीला फल जो दवाके काम आता है; गोखरके फलके आकारके लोहे आदिके बने

कँटीले डुकड़े; गोडे; पाँवमें पहननेका एक गहना; तल्ले या हथेलीमें पड़ा हुआ वस्तु ।

गोखले-पु० महाराष्ट्र आदिप्रान्तोंका एक अन्न; कामेसके नरम दल्लेके नेता और भारत सेवक समितिके संस्थापक स्व० गोपालकृष्ण गोखले ।

गोखारा-पु० शरीरका, गवाश; ताक ।

गोगापीर-पु० एक मुसलमान पीर जिसकी समाधिपर बड़ा मेला लगता है और बहुसंख्यक भंगी, मेहतर आदि जिसकी पूजा करते हैं । -खी छविशा-भादों सुदी ८-९ को गोगापीरकी समाधिपर लगनेवाला मेला ।

गोचना-पु०, गोचनी-खी० बना मिठा हुआ गेहूँ ।

गोची-खी० [सं०] एक तरहकी मछली ।

गोच्छाल-पु० [सं०] कुलाहल नामक पोषा ।

गोज-पु० [फा०] अपान वायु । -खुसुर-वि० जिसका

कोई मूल्य-महत्त्व न हो, बेवक्त (शात) ।

गोजई-खी० जो मिठा हुआ गेहूँ ।

गोजर-पु० कनकजूरा ।

गोजरारा-पु० दे० 'गोजर' ।

गोडिया-खी० एक घास; बनगोभी ।

गोजी-खी० लाठी, डंडा ।

गोझा-पु० गुहिया; गुच्छा ।

गोट-खी० कपड़ोंकी दुहरी पट्टी जो सुंदरताके लिए कपड़ोंके किनारे लगाते हैं, मगजी, सजाफा किनारी; चौसर, पचीसी आदि खेलनेकी लकड़ी आदिकी बनी गोटी, नर्द; मंडली; नगरके बाहरकी वह सैर जिसमें खाना-पीना भी हो । पु० गाँव; तोपका गोला । -बल्ली-खी० वह भूमि जिसपर बल्ली बली हो ।

गोटा-पु० झनहले या रुपहले और रेशमके तारोंकी मिलाकर बना पीता, पट्टा; लच्छका; छोटे डुकड़ोंमें कनरी हुई गिरी, सुपारी, बागम, हलायची आदि जो पानके बदले खाते हैं; धनियाकी गिरी; ख़ला हुआ मल, कड़ी; गोला - 'ओ ज्यों छुटहि बजकर गोटा'-पं० ।

गोटिया खाल-खी० दाँव-वाल भरी चाल, चालबाजी ।

गोटी-खी० गोठ, नर्द; ककब या पत्थर, सपने आदिके छोटे डुकड़े जिनसे लकड़े कई तरहके खेल खेलते हैं; गोटियोंकी सहायतामें पत्थर आदिपर कोष्ठक बनाकर खेला जानेवाला खेल; युक्ति, उपाय; प्रासिका टीक । सु० -जमना-बैठना-युक्ति सफल होना; प्रासिका डील बनना । -अरना-किमी गोटीका घृन मान लिया जाना, खेलमें काम न आ सकना । -खाल होना-चौर या पचीसीकी गोटीका सब खानोंमें फिरकर उठ जाना; काम बनना; काम होना ।

गोठ-पु० गोष्ठ, गोशाला; गोष्ठी-आश्रम; गोष्ठी; सैर-सपाटा ।

गोठा-पु० सलाह ।

गोठिया-वि० मोथरा ।

गोठ-पु० [सं०] मांसल नाभि ।

गोवा-पु० पावें, पैर । -बाव-पु० वह रस्ती जो पिछड़ी-वाली रस्तीके साथ लगाकर घोड़ेके पिछले पैरोंमें फँसायी जाती है । -बाँस-खी० किसी पशुके पाँवमें बाँधनेकी रस्ती । सु० -अरना-पाँवमें महाकर लगाता । -लगना

-पार्व छूना ।

गोबद्धा-स० पु० गौका चौकीदार ।

गोबना-स० कि० मिट्टीको नरम और भुरभुरी करनेके लिए कुदाल आदिसे खोदना, खोदना; खोदना ।

गोबना-स० कि० 'गोबना'का प्रे० ।

गोबा-पु० चारपाई आदिका पाया; बेधिया; बाळा ।

गोबाई-खी० गोबनेकी किया; गोबनेकी मजदूरी ।

गोबाना-स० कि० 'गोबना'का प्रे० ।

गोबापाई-खी० बार-बार आना-जाना ।

गोबिया-खी० छोटा पैर; छोटा पाया । वि० चुकि भिजानेवाला ।

गोबी-खी० बकरे आदिके पैरकी लकी; फायदा; प्राप्ति; पार्व । मु० -जमाना; लगाना-प्रयत्नका सफल होना ।

-हाथसे जाना-कुछ गलत न होना ।

गोबी-खी० [सं०] गोनी; जो दुपकी माप; चीपडा ।

गोत-पु० वंश; गोत्र; समूह; दे० 'गोत' ।

गोत-पु० [अ०] गरा, बेहोशी, मूच्छा ।

गोतम-पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि, अहल्याके पति; न्यायशास्त्रके प्रवर्तक गौतम मुनि ।-पुत्र-पु० शतानंद ।

-क्षीम-पु० दानशील संतानकी कामनासे किया जानेवाला एक यज्ञ; एक यज्ञ ।

गोतमी-खी० [सं०] अहल्या ।

गोता-पु० [अ०] पानीमें डूबना, डुबकी ।-खोर-वि०, पु० डुबकी लगानेवाला; क्रुपमे गिरी हुई चीजें निकालनेवाला ।-भार-पु० समुद्रवे सीप, मोती आदि निकालनेवाला, पनडुब्बा; पनडुब्बी नौका । वि० गोताखोर । मु०

-खाना-डूबना; धोखा खाना ।-देना-डुबकी देना, डुबोना; धोखा देना ।-भारना-डुबकी लगाना; नापा करना, चुपकेने गैरहाजिर हो जाना ।

गोतिवा, गोती-वि० अपने गोत्रवाला, गोत्रज ।

गोतीत-वि० अगोचर, जो इन्द्रियग्रहण न हो (गो+अतीत) ।

गोत्र-पु० [सं०] कुल; वंश; गोत्रप्रवर्तक माने हुए ऋषियोंकी संतानपरंपरा; आदि-पुरुषके नामने प्राप्त वंशसंज्ञा; समूह, बंध; वृद्धि; वन; क्षेत्र; रास्ता; छत्र; पर्वत; गोष्ठ । कतां (र्तु),-कार,-कारी (रिज्)-वि०, पु० गोत्रप्रवर्तक ।-कीला-खी० पृथ्वी ।-गमन-पु० सगोत्रके साथ विवाह या शरीर-संबंध ।-ज-वि० एक ही गोत्रका; गोनी ।-पट-पु० वंशवृक्ष ।-प्रवर्तक-वि०, पु० गोत्र चला देनेवाला, गोत्रकार ।-भिद्व-पु० रंज ।-मुता-खी० पार्वती ।-रखलन-पु० गलत नामसे संबोधन करना ।

गोत्रा-खी० [सं०] पृथिवी; गायोंका समूह ।

गोत्री (त्रिज्)-वि० [सं०] एक ही या अपने ही गोत्रमें उत्पन्न, गोती ।

गोत्रीच-वि० [सं०] गोत्रवाला; (अयुक्त) गोत्रमें उत्पन्न (गर्भगोत्रीय) ।

गोर्ती हरताल-पु० सफेद हरताल ।

गोद-पु० [सं०] मस्तक, मेजा । खी० [वि०] क्रोध, पहर; आंचल ।-नहीं-वि० गोद लिया हुआ, दत्तक ।

-नशीनी-खी० गोद लिया जाना ।-भरी-वि०, खी०

माक-बन्धेवाली । मु०-का-गोदमें लेलनेवाला; छोटा (बच्चा) ।-का बच्चा-छिछु, दूध-पीता बच्चा ।-देना-अपना लष्का दत्तक बनानेके लिए दूसरेको देना ।

-बिडाना-गोद लेना, दत्तक लेना ।-बैठना-दत्तक बनना, गोद लिया जाना ।-भरना-छोम अवसरीपर सौभाग्यवती स्त्रीके आंचलमें नारियल आदि डालना; संतान होना ।-लेना-किसी लष्केको दत्तक बनाना ।

गोदबहर, गोदबहारी-खी० गोदना गोदनेवाली स्त्री ।

गोदवा-स० कि० चुभाना, गहाना; कचोके देना; ताना मारना; अंकुश देना; बदनमें छुरे चुभोकर और छुछाहमें नीलका पानी आदि भरकर सुंदरताके लिए बिंदी, फूल आदि बनाना । पु० छुरे चुभाकर बदनपर बनायी हुई बिंदी आदि; खेत गोबनेका औजार ।

गोदनी-खी० गोदना गोदनेकी छुरे; टीका लगानेकी छुरे ।

गोदर-वि० गदरावा हुआ; बीबनेके कारण भरा हुआ ।

गोदा-पु० बर, पीपल या पाकका पका फल; नयी डाल । खी० [सं०] गोदावरी नदी ।

गोदाम-पु० माक, विशेषकर तिजारती माक रखनेका स्थान; † बटन ।

गोदावरी-खी० [सं०] दक्षिण भारतकी एक प्रधान नदी ।

गोदी-खी० दे० 'गोद' ।

गोच-खी० गोद ।

गोचा-खी० [सं०] गोष्ठ; वनस्पति चिह्नोंकी चोटसे बचनेके लिए बायीं कलाईपर बांधनेका चमड़ा; धरियालकी माद ।

-पदिका, -पदी-खी० मूत्तली; हसपदी ।-रक्क-पु० बिस्तर ।

गोधि-पु० [सं०] लकाट; धरियाल ।

गोधिका-खी० [सं०] छिपकली; धरियालकी मादा ।

गोधिकाज-पु० [सं०] एक तरहका गिरगिट ।

गोधूम-पु० [सं०] गेहूँ ।-चूर्ण-पु० आटा ।-सार-पु० गेहूँका सत ।

गोघेर-पु० [सं०] रक्क, अभिषावक ।

गोन-खी० बैलपर अनाज आदि लादनेका दीनी और लटकानेवाला बैला, गोनी, बोर। अनाजकी एक तौल; नाब खींचनेके लिए नाबके मस्तूलमें बंधी हुई रस्ती, गुन। † एक घास जो साथ बनानेके काम में आती है ।-रखा-पु० नाबका मस्तूल ।

गोनरी-पु० एक तुण जो पशुओंके खाने और चटारें बनानेके काम आता है ।

गोना-स० कि० छिपाना, गोपन करना ।

गोनिचा-पु० बैल लादनेवाला; बोर कोनेवाला; रस्ती बांधकर नाब खींचनेवाला । खी० दीवार आदिकी सीध नापनेका एक औजार ।

गोनी-खी० टाटका बैला, बोर। पाट, सन ।

गोप-पु० गलेमें पहननेका एक गहना; दे० 'गो'में ।

गोपक-पु० [सं०] गोप; बहुतसे गौनों, हलाकोंका अध्यक्ष; गोपनकर्ता; रक्षक । [खी० 'गोपिका'] ।

गोपन-पु० [सं०] छिपाना, छिपाव; भर्त्सना; निंदा; संरक्षण; दीप्ति; भव, त्रास; दंष्ट्र; घबराहट ।

गोपना-खी० [सं०] रक्षण; दीप्ति । * स० कि० छिपाना ।

गोपनीय-वि० [सं०] छिपाने लायक; रहणीय ।
 गोपधिता(तु)-वि० [सं०] संरक्षक; छिपानेवाला ।
 गोपयोगी-को० [सं०] व्याखिन; गोपवधू ।
 गोपाचक्र-पु० [सं०] व्याखिरके पासका एक पर्वत;
 व्याखिर ।
 गोपाचक्र-वि० [सं०] रक्षक; रक्षवाला ।
 गोपायन-पु० [सं०] रक्षण; गोपन ।
 गोपाह्वरी-को० [सं०] कासिक-शुद्धा अष्टमी ।
 गोपिका-को० [सं०] व्याखिन; गोपवधू ।
 गोपित-वि० [सं०] रक्षित; छिपाया हुआ ।
 गोपिनी-को० [सं०] ब्यामा लता ।
 गोपिल-वि० [सं०] गोपनकर्ता; रक्षक ।
 गोपी-को० [सं०] शारिवा लता; छिपानेवाली; दे० 'गो'में ।
 गोपी(पिबू)-वि० [सं०] रक्षक; गोपनकर्ता । [को०
 'गोपिली'] ।
 गोपीचंद्र-पु० एक मध्यकालीन राजा जो अर्जुनरिका
 भानजा बताया जाता है और जो राजपाट छोड़कर विरागी
 हो गया ।
 गोपेन्द्र-पु० [सं०] कृष्ण ।
 गोसा(तु)-वि० [सं०] गोपनकर्ता; रक्षक । पु० विष्णु ।
 गोप्य-वि० [सं०] गोपनीय (आयु, वित्त, गृहछिद्र, मंत्र,
 मैथुन, भेषज, तप, दान और अपमान-ये नौ विषय
 मुख्यतः गोप्य माने गये हैं) । पु० दासीपुत्र, दास ।
 गोच-पु० एक तरहका कंठा, गोप ।
 गोच्छा-पु० कंठा, गंगा । * को० गुफा, तहखाना-
 'गोफन मॉडेल पीटले परिमल अंग लमाय'-साखी ।
 गोबर-पु० गोमल; गोबर । -गणेश-वि० मूर्त्ति, बुद्ध;
 वेङ्गल । -परकी-को० गोबर पाधनेवाली को । -हारा-
 पु० गोबर उठानेवाला नौकर । मु० -का कोय-वेङ्गल;
 मूर्त्ति । -खाना-प्रायश्चित्त करना । -पाथना-गोबरके
 कंठे, उपले बनाना ।
 गोबरामा-सं० कि० गोबरी करना ।
 गोबरिया-पु० बछनागकी जातिका एक पौधा ।
 गोबरी-को० गोबरका लेप (करना); कंठा, उपला ।
 गोबरैला, गोबरौरा, गोबरौला-पु० दे० 'गुबरैला' ।
 गोबी-को० दे० 'गोभी' ।
 गोम-पु० पौधोंका एक रोग । * को० लहर, तरंग ।
 गोमा-को० लहर-... उठति सखि आनदकी गोमा'-
 गदाधर भट्ट । पु० अंकुर; प्राकट्य, अभिव्यक्ति ।
 गोमिल-पु० [सं०] एक शुद्धस्वकार कपि ।
 गोमी-को० एक प्रसिद्ध शाक जो फूलगोमी, पातगोमी
 या करमकला और गाँठगोमीके भेदसे तीन तरहका होता
 है; बनगोमी; पौधोंका एक रोग ।
 गोम-पु० स्थान । को० सोहोंकी एक खेती ।
 गोमरी-को० [सं०] मध्यदेशकी एक नदी जो बनारस और
 गाजीपुर जिलेकी सीमापर गंगामें मिलती है; एक वृक्ष ।
 गोमय-पु० [सं०] गोबर ।
 गोपेन्द्र-पु० दे० 'गोपेन्द्र' ।
 गोपेन्द्र-वि० [सं०] कहने, बोलनेवाला । पु० जासूस,
 भेदिया ।

गोय-पु० [फ्रा०] गैद ।
 गोबा-वि० [फ्रा०] बोलनेवाला, बक्ता; सच्य । अ० मानो,
 जैसे । -ई-को० बोलनेकी शक्ति, वक्तृत्व शक्ति ।
 गोर्-वि० दे० 'गोरा' । पु० [फ्रा०] वह गदा जिसमें
 सुदौ की दफन करें, कम । -कन-पु० कम खोदनेका पंथा
 करनेवाला । -परस्त-वि० कमकी पूजा करनेवाला,
 भेत-पूजक । -र(री)ब-पु० वह स्थान जहाँ परदेसी
 या मुसाफिर दफन किये जायें ।
 गोर-पु० [फ्रा०] कंधारके पासका एक प्रदेश ।
 गोरख-पु० गोरखनाथ । -ककड़ी-को० दे० 'गोरख-
 कर्कटी' । -पंथा-पु० तार, कवियों आदि जो एकमें
 जोड़कर फिर अलग की जा सकें; गोरखपथी साधुओंके
 हाथमें रहनेवाला खंटा जिसमें बहुतसी कवियों अजी
 होती हैं; पंचपाचवाली, जल्दी समझमें न आनेवाली चीज,
 सामला, पहेली; झमेला । -नाथ-पु० १५वीं शताब्दी
 एक प्रसिद्ध बठयोगी और पंथप्रवर्तक संत । -पंथ-पु०
 गोरखनाथका चलाया हुआ एक शैव पंथ या संप्रदाय,
 नाथसंप्रदाय । -पंथी-वि०, पु० गोरखनाथका अनु-
 गामी । -मुंजी-को० एक पास जो दबाके काम आती है ।
 गोरखर-पु० [फ्रा०] गंधेकी जातिका एक जगली जानवर ।
 गोरखा-पु० नेपालका एक प्रदेश या बहोका निवासी ।
 गोरखाली-पु० नेपालकी एक जाति । को० इस जातिकी
 बोली ।
 गोरखी-को० एक ककड़ी, गोरखकर्कटी ।
 गोरखुली-पु० दे० 'गोखरू' ।
 गोरदा-वि० गोरा ।
 गोरण-पु० [सं०] उदम; अश्वयस्ताय ।
 गोरसरा-पु० बँसके पंखे(बने)की टंडीके साथ बँधी
 कमाची ।
 गोरसी-को० भैंसा ।
 गोरा-वि० गौर, भेनवर्णवाला (मनुष्य), जिसके चमड़ेका
 रंग सफेद हो । -ई-को० गोरापन; सुंदरता । -खिटा-
 वि० खूब गोरा ।
 गोराधार-वि० दे० 'गोलाधार' ।
 गोरािका-को० [सं०] दे० 'गोराटिका' ।
 गोरिछा-पु० अफ्रीकामें पाया जानेवाला विशालकाय,
 बलवान्, हिंस्र बनमानुस ।
 गोरी-वि०, को० गौर वर्णवाली । को० सुंदरी को ।
 गोरी-वि० [फ्रा०] गोरका । पु० गोरका रहनेवाला; शाह-
 बुद्दीन गोरीका उपनाम ।
 गोर्का-पु० चौपाया, डोर (गाय, बैल, भैंस आदि) ।
 गोर्का, मैक्सिम-पु० प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार (१८६८-
 १९३६) ।
 गोर्द, गोर्ध-पु० [सं०] मस्तिष्क ।
 गोर्ददाज-पु० गोला चला देनेवाला तोपची ।
 गोर्ददाजी-को० गोर्ददाजका काम ।
 गोर्दबर-पु० गुंफ; गुंफ जैसी गोल उठी हुई कोई चीज;
 कालिब; बागमें बना हुआ गोल चबूतरा ।
 गोल-पु० [सं०] मंडल; गोलाकार पिंड, वृत्त; विषयाका
 आरवात पुत्र, मैनफल; धरतीका मंडल या गोला; आकाश-

मंडल; गोलचरन; मुर नामक औषधि; मिट्टीका गोक घटा।
 -चरन-पु० वह चरन जिससे ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति
 आदि जानी जा सकती है। -योग-पु० ज्योतिषका
 एक योग, एक राशिमें ६ या ७ ग्रहोंका एकत्र हो जाना;
 गोलमाल। -बिछा-खी० ज्योतिषविद्याका अंग-विशेष;
 भरतीका आकार, विस्तार, गति आदि जाननेकी विधि।
 गोक-वि० गोला, वृत्ताकार; ठिगना और मोटा; अस्पष्ट।
 -कलम-पु० बरतनपर नक्काशी करनेमें काम आनेवाली
 एक तरहकी छेनी। -कली-खी० एक तरहका अंगूर।
 -गप्पा-पु० छोटी, सूख फली हुई करारी पूरी जिसे
 चाटकी तरह खाते हैं। -गोक-वि० गोला; अस्पष्ट।
 -चंआ-पु० मुंडा चूना। -मटोल-वि० जिससे कोई
 साफ अर्थ न निकले, अस्पष्ट। -माख-पु० गन्धक,
 घपला। -मिच-खी० काली मिच। -मेख कान्ठ-
 खी० सर्वपक्ष-सम्मेलन, ऐसा सम्मेलन जिसमें सभी पक्षोंके
 लोग एक साथ बैठकर विचार करें।
 गोक-पु० दे० 'गोक'; 'गोला'का समासगत रूप। -
 चला-पु० गोलराज।
 गोक-पु० [अ०] फूटबल आदिके खेलमें वह स्थान जहाँ
 गेंद पहुँचनेसे पक्ष-विशेषकी जीत होनी है; इस तरह हुई
 जीत (करना, होना)। -कीपर-पु० गोककी रक्षापर
 नियुक्त खिलाड़ी।
 गोक-पु० [फा०] मडली, मुंड, भीड़। मु०-बाँचना-
 भीड़ लगाना।
 गोक-पु० वह मंदक जिसमें कार्यविशेषके लिए धन
 पकाव किया जाय; इस तरह इकट्ठा हुआ धन; गुंभद;
 [सं०] गोक पिंड; गोली; काठका गेंद; मटल; व्याही; मैन-
 सिल। वि० [हि०] गोलाईवाला, वृत्ताकार। पु० गोक
 वृत्ताकार वस्तु या पिंड; लोहेकी बड़ी गोली जिसे तीपमें
 भरकर दागते हैं; नारियलका साबित मग्न; रस्सी आदिकी
 पिंडी; गहने, किराने आदिका बाजार जो किसी इलाके
 अंदर हो; गोक शहतीर, बहा; घासका गट्टा; बायुगोला
 रोग; जगली बीस जो भीतरसे गोला नहीं होता; जंगली
 कद्दूर; एक तरहका बैत; † एक तरहका बड़ा कंड़ा-
 'अंगीठीके पेटमें गोला डालो'-जिदगी०। -ई-खी०
 गोलापन। -घार-वि० मूलधार। -बारी-खी०
 तोपसे की जानेवाली गोलेकी बर्षा। -बारूद-खी० गोला
 और बारूद; युद्धसामग्री।
 गोलाकार, गोलाकृति-वि० [सं०] गोला, पिंडाकार।
 गोलाध्वज-पु०[सं०] मास्करावायेंकृत एक ज्योतिष-ग्रंथ।
 गोलाई-पु० [सं०] ध्रुवीका आधा भाग जो एकसे दूसरे
 ध्रुवतक रेखा क्षिप्यसे बने।
 गोलास-पु० [सं०] छक्का, कुकुरमुत्ता।
 गोलासन-पु० [सं०] एक तरहकी तीप।
 गोलायाना†-स० कि० गोक आकारका बनाना; गोक
 बंधना।

गोली-खी० छोटा गोला; मिट्टी, कोंच आदिका बना
 छोटा गोला जिससे लकड़े सेलते हैं; गोलीका खेल; सीसे
 वा लोहेका छोटा गोला जिसे बंदूक, तमचेमें भरकर छोड़ते
 हैं; गोलीके रूपमें बनानी हुई दवा, बंदी; छोटा घना;
 पशुओंका एक रोग; मदकनी गोली। मु०-खाना-बंदूक-
 की गोलीसे घायल होना, गोलीकी चोट सहना। -चलना
 -बंदूकसे गोलीका चलावा जाना, फेंक दिया जाना।
 -मारना-गोलीसे घायल करना; उपेक्षापूर्वक त्याग देना,
 ठुकरा देना।

गोलीब-वि० [सं०] गोल-संबंधी।

गोलीदा†-पु० मधुपर्क फल, कोरेंदा।

गोलक-पु० [अ०] डंडे और गेंदसे खेला जानेवाला एक
 अंग्रेजी खेल।

गोवना*-स० कि० छिपाना; ढकना।

गोवर्धन-पु० [सं०] दे० 'गो'।

गोविंदसिंह-पु० दे० 'गो'।

गोश-पु० [फा०] कान। -पेश-पु० कानमें पड़नेका

एक गहना। -मायल-पु० पगड़ीमें लगी मोतियोंकी

लकी जो कानके पास झूलती रहती है। -माख-माखी-

खी० कान मलना, उमैठना, कनेठी; ताड़न। -माही-

खी० सीप। -बारा-पु० बाला, कुंवल; बड़ा मोती; पग-

ड़ीका कलावचने हुना हुआ अंचल; कलगी; जीव, बीजाना;

हिसाबका खुलासा; रजिस्टर आदिके खानोंका शीर्षक;

एक पेकका गेंद। मु०-शुझार करना-सुनाना। -हीना

-सुनना, कानमें पड़ना।

गोशम-पु० कीमम नामक पेड़।

गोश-पु० [फा०] कोना, कोण; दिशा; एकांत स्थान;

कमानकी नोक। -ए-लनहाई-खी० एकांत स्थान।

-ए-दिल-पु० दिल, हृदयका कोना। -नशी-वि०

एकांतवासी; संसारत्यागी। -नशीनी-खी० एकांतवास।

गोश्त-पु० [फा०] मांस, साजन, लहम; गूदा। -फवार-

वि० गोश्त खानेवाला, मासाहारी।

गोष-पु० गवाक्ष, गोशा, खिफ़ी।

गोहागार-पु० [सं०] मभागृह।

गोष्वद-पु० [सं०] दे० 'गोपद'।

गोस-पु० [सं०] ओर; प्रीत्य क्रतु; लोबान।

गोसमावल-पु० दे० 'गोशमावल'।

गोसा-पु० कड़ा, उपला।

गोसी†-खी० एक समुद्रवासी नौका।

गोह-खी० छिछकणीकी जातिका एक जहरीला जंतु जो

आकारमें नेवलेके बराबर होता है।

गोहन-पु० [सं०] ढकना; छिपाना; † संग, साथ; संग

लगा रहनेवाला, हरदम साथ रहनेवाला।

गोहर-पु० विसलीपका।

गोहरा-पु० उपला।

गोहराना*-स० कि०, अ० कि० आवाज देना; चिहाना;

पुकारना।

गोहरी†-पु० उपलोंका सजाकर लगाया हुआ ढेर।

गोहलौत-पु० दे० 'गहलौत'।

गोहार-खी० पुका; सहायताके लिए चिहाना; शार-गुरु;

सुधार सुनकर एकत्र होनेवाली भीड़ ।
गोहारि, गोहारी—**खी०** दे० 'गोहार' ।
गोहिर—**पु०** [सं०] घादमूल, घरी ।
गोही—**खी०** छिपाव, गोपन; गुप्त बात ।
गोहुअत, गोहुअव—**पु०** एक अति विषधर सौंष जिसको चमकेका रस गंधुनी होता है ।
गोहूँ—**पु०** दे० 'गोहूँ' ।
गोहूँरा—**पु०** गोहः विसखीपत्र ।
गौ—**खी०** काम निकलनेका मोका; अवसर; धातु; मतलब; बुक्ति; * गति, पहुँच; धँस, चाल । **गु०**—**क्य०**—मतलबका, कामका । —का बहर—मतलबका दोस्त । —**गौदना**—काम निकालना, अपनी गरज देखना । —**निकलना**—काम निकलना । —**पढ़ना**—काम पढ़ना । —**से**—नुपकेसे ।
गौच—**खी०** दे० 'गौच' ।
गौजिक, गौजिय—**पु०** [सं०] जोहरि; सुवर्णकार ।
गौद—**पु०** एक छोटा वृक्ष ।
गौहौँ—**वि०** गौच-संबंधी; गौचका ।
गौ—**खी०** [सं०] गाय । —**चरी**—**खी०** [हिं०] गाय चरानेका कर । —**हुमा**—**वि०** गावधुम, गायकी पूँछ जैसा । —**मुख**—**वि०**, **पु०** दे० 'गोमुखी' । —**मुखी**—**खी०** दे० 'गोमुखी' । —**शाखा**—**खी०** दे० 'गोशाखा' ।
गौखी—**खी०** गवाक्ष; चौपाल ।
गौखा—**पु०** झरोखा, गवाक्ष; ताखा; गायका चमड़ा ।
गौशा—**पु०** [अ०] शीत-गुल, हला; अफवाह । —**हूँ**—**वि०** हला; मचावेवाला ।
गौड—**पु०** [सं०] बंगालका पुराना नाम; गौड देशवासी; ब्राह्मणोंका एक वर्ग, पंच गौड; भारतके ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; कायस्थोंकी एक उपजाति; एक राग; मिठाई । —**जट**—**पु०** एक संकर राग । —**पाद**, —**पादाचार्य**—**पु०** संकराचार्यके गुरुके गुरु जिन्होंने मांडव्य उपनिषद्पर कारिका लिखी । —**महार**—**पु०** गौड और महार रागके योगसे बना एक संकर राग । —**सारंग**—**पु०** एक संकर राग ।
गौडिक—**वि०** [सं०] गुरु-संबंधी; गुरुका । **पु०** ईंख; एक तरहकी शराब जो चोटसे बनायी जाती है ।
गौडिया—**वि०** गौड देशका । —**संप्रदाय**—**पु०** चैतन्य महाप्रभुका चलाया हुआ एक संप्रदाय ।
गौडी—**खी०** [सं०] गुरुमें बनायी हुई शराब; एक रागिनी; काव्य-नाटककी तीन रचना-रीतियोंमेंसे एक, दे० 'पक्ष-श्रुति' ।
गौडीय—**वि०** [सं०] गौड देशसंबंधी । **पु०** गौडनिवासी । —**भाषा**—**खी०** बँगला भाषा; उत्तर बंगालकी भाषा ।
गौडेश्वर—**पु०** [सं०] चैतन्य महाप्रभु ।
गौण—**वि०** [सं०] अप्रधान; महत्त्वमें दूसरे दर्जेका; गुण-संबंधी । —**पक्ष**—**पु०** बादका वह पक्ष जो अप्रधान या अपुष्ट हो ।
गौणिक—**वि०** [सं०] गुण-संबंधी; सत्त्व-रज-तमसे संबंध रखनेवाला; गौण; बोरे जैसा ।
गौणी—**वि०**, **खी०** [सं०] गुण-संबंधी; अप्रधान । —**लक्षणा**

—**खी०** लक्षणाका एक भेद जिसमें केवल एक वस्तुका ही गुण लेकर अन्यमें आरोपित किया जाता है (सा०) ।
गौतम—**पु०** [सं०] गौतमका वंशज; न्यायशास्त्रके प्रवर्तक अक्षपाद ऋषि; एक ऋषि जिन्होंने पुराणोंके अनुसार अपनी पत्नी अहल्याकी शाप देकर पत्थर बना दिया था; गौतम ऋषिके पुत्र क्षातानंद; बुद्ध; कृपाचार्य; एक श्रुति-कार ऋषि; क्षत्रियोंका एक भेद; नासिकके पासका एक पर्वत जो गोदावरी नदीका उद्गम है; एक विष । —**संभवा** **खी०** गोदावरी नदी ।
गौतमी—**खी०** [सं०] अहल्या; द्रोणाचार्यकी पत्नी; गोदावरी नदी; दुर्गा; गौरीचन; बुद्धकी शिक्षा ।
गौह, **गौहा**—**पु०** गुच्छा, गौ ।
गौहार, **गौधेय**, **गौधेर**—**पु०** [सं०] गोपिकात्मज ।
गौध—**पु०** गमन; गौना । **वि०** बंचल ।
गौनई—**पु०** [सं०] गौनई देशमें उत्पन्न, पतत्रलि ।
गौनहर—**खी०** दे० 'गौनहारी' ।
गौनहारी—**खी०** वह वधू जिसका गौना हालमें आया हो, दुल्हिन ।
गौनहार—**खी०** दुल्हिनके साथ उसकी समुदाय जानेवाली स्त्री ।
गौनहारिन—**खी०** दे० 'गौनहारी' ।
गौनहारी—**खी०** गानेका पेशा करनेवाली, ताम्रपत्रके रूपमें गाने-बजानेवाली स्त्री ।
गौना—**पु०** विवाहके कुछ काल बाद दुल्हिनका भँकेने बिदा होकर समुदाय जाना; दियामन ।
गौपिक—**पु०** [सं०] गोपीका पुत्र ।
गौपुच्छ—**वि०** [सं०] गायकी पूँछके समान ।
गौपुच्छक—**वि०** [सं०] गोपुच्छ-सबध ।
गोसेव—**पु०** [सं०] गौध स्त्रीका पुत्र ।
गौर—**वि०** [सं०] बँस; पीला; नाला; म्यच्छ, विशुद्ध; चमकीला । **पु०** सफेद रंग; पीला रंग. ग्याळ रंग; चंद्रमा; मोना; धक्का पेठ; सफेद (पीली) मरुतों, आफतान; चैनम्य महाप्रभु; एक तरहका हिरन; एक तरहका भैंस; पध-केसर, बृहस्पति ग्रह । —**चंद्र**—**पु०** चैतन्यदेव । —**वर्ण**—**वि०** गोरे रंगवाला, गोरा । **पु०** गोरा रंग । —**शाक**—**पु०** मधुक । —**शाकि**—**पु०** एक तरहका धान । —**सर्प**—**पु०** पीली सर्पों । —**सुवर्ण**—**पु०** एक वनशाक ।
गौर—**पु०** [अ०] सोच-विचार, ध्यान । —**तलब**—**विचार**—**गौध**, विचारने योग्य । —**ब झूझ**—**पु०**, —**ब झिंक**—**खी०** सोच-विचार । —**से**—ध्यान देकर, ध्यानपूर्वक ।
गौरक—**पु०** [सं०] एक तरहका धान ।
गौरद्व—**पु०** [सं०] गोपालन, गोरक्षण (वैद्यके लिये निहित तीन विशेष कर्मोंमेंसे एक) ।
गौरव—**पु०** [सं०] गुरुता, भारीपन; महत्त्व, बड़पन; आदर सम्मान; प्रतिष्ठा, मर्यादा; गह्वरार्थ; गौभीर्य । —**शास्त्री**—**(खिन्)**—**वि०** गौरवयुक्त; सम्मानित ।
गौरवा—**पु०** चटक पक्षी ।
गौरवान्वित—**वि०** [सं०] गौरवयुक्त ।
गौरवासव—**पु०** [सं०] गौरवका आसन, सम्मानित पद ।
गौरवित—**वि०** [सं०] गौरवयुक्त; सम्मानयुक्त ।

गौरीश-पु० [सं०] वैष्णवदेव; कृष्ण; विष्णु । वि० गौरा; गुरोपीय । -महाप्रभु-पु० वैष्णवदेव ।

गौरींगी-वि०, स्त्री० [सं०] गौरी । स्त्री० गुरोपीय स्त्री, मेम । गौरा-पु० नर गौरैया स्त्री । स्त्री० [सं०] गौरी स्त्री; पार्वती; हल्दी; एक रागिनी ।

गौरादिक-स्त्री० [सं०] एक तरहका कौवा ।

गौराईक-पु० [सं०] स्थावर विष ।

गौरास्य-पु० [सं०] एक तरहका बदर ।

गौराहिक-पु० [सं०] एक तरहका लौं ।

गौरिक-वि० [सं०] गौरा । पु० सफेद सारों ।

गौरिका-स्त्री० [सं०] अविवाहिता कन्या, गौरी ।

गौरिल-पु० [सं०] सफेद सारों; लोहिका चूरा ।

गौरी-स्त्री० [सं०] गौरी स्त्री; पार्वती, आठ वर्षकी अविवाहिता कन्या; भरती; बाणी; सफेद दूब; हल्दी; गौरीचन; भारगवी पश्चिमोत्तर सीमापर बहनेवाली एक प्राचीन नदी; बरुणकी पत्नी; मलिका; तुलसी; मंजिष्ठा । -कौल, -नाथ-पु० शिव । -गुरु-पु० हिमालय । -चंदन-पु० लाल चंदन । -अ-पु० कात्तिकेय; गणेश; अन्नक । -पद्म-पु० शिवलिंगका अर्धा । -पुष्प-पु० प्रियंगु नामक वृक्ष । -भर्ता(र्तृ)-पु० गौरीनाथ । -कल्लि-पु० हरगल । -वर-पु० शिव; गौरीका बरदान । -संकर-पु० हिमालयकी सभसे ऊँची चोटी । -शिखर-पु० हिमालयकी वह चोटी जिसपर पार्वतीने तपस्या की थी । -मर-पु० हमराज नामक वृद्धी ।

गौरीश-पु० [सं०] शिव ।

गौरुपदिक-पु० [सं०] गुरुश्रौंसे अनुचित सक्थ रखनेवाला ।

गौरेश-स्त्री० एक छोटी विविधा; १ एक तरहका मिट्टीका टुकड़ा ।

गोलक्षणीक-पु० [सं०] गाय-बैलोंके भले-बुरे लक्षण पहचाननेवाला ।

गोला-स्त्री० [सं०] पार्वती ।

गोलिक-पु० [सं०] मुष्कक नामक वृक्ष, एक प्रकारका लोष ।

गोस्मिक-पु० [सं०] ३० सिपाहियोंका नायक, गुल्मनायक; गुल्मका सिपाही । वि० गुल्म, अतुंग रोग-सम्बन्धी ।

गोदय-पु० [सं०] शरबत; शराब ।

गोसातिक-वि० [सं०] सौ गावें रखनेवाला ।

गोडीन-पु० [सं०] गुराणी गोशालाका स्थान ।

गोसम-पु० गोसम नामका पेड़ ।

गोसहसिक-वि० [सं०] एक हजार गावोंका मालिक ।

गोहर-पु० [फा०] मोती; जोहर । -ताब-पु० एक बहुत बारीक कपड़ा जिसके भीतरसे बदन झलकता रहता है ।

ग्या-स्त्री० [सं०] पत्नी ।

ग्यासि-स्त्री० जाति । पु० दे० 'जाति' ।

ग्यान-पु० दे० 'ज्ञान' ।

ग्यारस-स्त्री० एकदश ।

ग्यारह-वि० दस और एक । पु० दस और एककी संख्या, ११ ।

ग्रंथ-पु० [सं०] ग्रंथन; पुस्तक, किताब; धन; अनुष्ठान

छंदमें रचित श्लोक । -कर्ता(र्तृ), -कार, -कृत-पु० ग्रंथ लिखने, रचनेवाला । -कुटी-पु० [सं०] पुस्तकालय । -शुबक-पु० पुस्तकके कुछ पन्ने पढ़कर ही, विषयका स्वल्प ज्ञान प्राप्त करके रह जानेवाला, पलभन्नाही । -माला-स्त्री० कार्यालय-विशेषसे क्रमपूर्वक प्रकाशित पुस्तकें । -रचना-स्त्री० पुस्तक-रचना, किताब लिखना । -संक्षि-स्त्री० पुस्तकका अध्याय, परिच्छेद । -साहच-पु० [हिं०] सिखोंका धर्मग्रंथ, सिख गुरुओंके उपदेशोंका संग्रह ।

ग्रंथन-पु० [सं०] गौंठ देकर बांधना, गठियाना; गूंथना, गुंथन; रचना ।

ग्रंथना-सं० कि० गूंथना ।

ग्रंथांतर-पु० [सं०] अन्य ग्रंथ ।

ग्रंथागार-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विविध विषयोंकी पुस्तकें संग्रहीत हों, पुस्तकालय, लाइब्रेरी ।

ग्रंथालय-पु० [सं०] पुस्तकालय ।

ग्रंथावलि, ग्रंथावली-स्त्री० [सं०] ग्रंथमाला ।

ग्रंथावलोकन-पु० [सं०] पुस्तकाभ्ययन ।

ग्रंथि-स्त्री० [सं०] गौंठ, गिरह; गुठली; गुथी; रंज, बॉल आदिकी गौंठ; अंगोंका जोड़; शरीरके अंदरकी गौंठें जिनसे रस निकलना है; अंडी; कुटिलता; (ला०) माया-पाश । -च्छेदक-पु० गिरहकट । -दूषा-स्त्री० गाबर दूब । -पत्र-पु० चौरक नामक गंधद्रव्य । -पर्ण-पु० गठिवन । -पर्णक-पु० एक सुगंधित पौधा । -पर्णा-स्त्री० जलुका कृता । -पर्णी-स्त्री० अघिवर्षा । -फल-पु० कैय, मैगफल । -बंधन-पु० गौंठबन्धन । -बर्हि(हिं०)-पु० अघिवर्णक । -अघ, -अघक-पु० गिरहकट । -मूल-पु० लहसुन, शलजम, गाजर, मूली हलादि । -हर-पु० मंत्री ।

ग्रंथिक-पु० [सं०] पिपरामूल; गठिवन; करीर; गुग्गुलु; देवश; सहदेवका अष्टातवासकालका नाम ।

ग्रंथित-वि० [सं०] दे० 'ग्रथित' ।

ग्रंथिमान्(मन्)-वि० [सं०] बंधा हुआ । पु० अविश्वहारक वृक्ष । - (मन्)कल-पु० लकुच ।

ग्रंथिल-वि० [सं०] गौंठदार । पु० पिपरामूल; अंदरक; विरंकत वृक्ष; करीर; चौरक नामक गंधद्रव्य; चौराईका साग; विरंकत वृक्ष; पिंडाशु ।

ग्रंथिला-स्त्री० [सं०] अद्रमुखा; मालादूबा; गाबर दूब ।

ग्रंथी(थिन्)-वि० [सं०] जिसके पास बहुतसे ग्रंथ हों; जिसने बहुतसे ग्रंथ पढ़े हों, विद्वान् । पु० ग्रंथकता; ग्रंथका पाठ करनेवाला ।

ग्रंथ-पु० कुटिलता, छलछिद्र ।

ग्रथन-पु० [सं०] गूंथना, ग्रंथन; रचना करना; जमना ।

ग्रथित-वि० [सं०] गूथा हुआ; हकट्टा बांधा हुआ; रचित; क्रमबद्ध किया हुआ; जो जम गया या ठोस हो गया हो; क्षत; गृहीत; विजित; आक्रांत । पु० कठिन गौंठवाला अशुद्ध ।

ग्रथक-पु० गर्व, घमंड, दयें । -हन-वि० गर्वहृन्, घमंड दूर करनेवाला, दर्पहार ।

ग्रथन-पु० [सं०] अक्षण, निगलना; पकड़ना; जकड़ना; प्राप्त; ग्रहण; चंद्र-धर्याका संद ग्रहण ।

असना-सं० किं प्रसक्त, प्राप्त करना; सताना ।

असित-वि० दे० 'अस' ।

असिष्ठ-वि० [सं०] निगलनेका आदी, असनशील । पु० परमज्ञ ।

अस्त-वि० [सं०] अस्ता हुआ, पकना, निगला हुआ; पीरित; ग्रहण लगा हुआ । पु० अर्द्धाचारित शब्द ।

अस्ता(स्तु)-वि० [सं०] आस्त करनेवाला, भक्षक ।

अस्तास्त-पु० [सं०] सूर्य वा चंद्रमाका ग्रहण लगे हुए ही अस्त हो जाना ।

अस्ति-की० [सं०] आस्त; असन ।

अस्तोदय-पु० [सं०] सूर्य वा चंद्रमाका ग्रहण लगे हुए ही उदय होना ।

अस्य-वि० [सं०] असनके योग्य ।

अह-पु० [सं०] सूर्यकी परिक्रमा करनेवाला तारा; सौर-मंडलके ९ प्रधान तारों—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु और केतु—मेंसे कोई एक; नौकी संख्या; ग्रहण; प्राप्ति; पकन; चोरी; छुटका भाग; नामादिका कथन; वक्षिवाळ; आशंका; अध्यवसाय; मकान, करछी; पात्र; बनूका मध्य भाग; रोक रखना, बंचित करना; दोष; बालग्रह । -कडोल-पु० राहु । -गति-की० अहोंकी गति; ग्रहदोष । -ग्रस्त-वि० प्रेताविष्ट; पापग्रह द्वारा प्रभावित । -ग्रामणी-पु० सूर्य । -पित्तक-पु० ज्योतिषी । -दृष्टा-की० जन्मराशिकी दृष्टिसे अहोंकी स्थिति; उनका शुभ या अशुभ फल देनेवाला होना; दुरे दिन, विपत्काल । -हास-पु० अहोंकी स्थितिके अनुसार मनुष्यकी आयु । -वैषत्ता-पु० ग्रह-विशेषका अधिष्ठाता देवता । -वोष-पु० ग्रह-विशेषकी अशुभ, भारिष्कारक दृष्टि । -हुम-पु० काकशासीगी । -जाचक-पु० सूर्य; शनि । -नास्त-नाशन-पु० छतिबनका पेड़ । -नेमि-पु० चंद्रमा । -पति-पु० सूर्य; चंद्र; आक । -पीडन-पु०, -पीडा-की० ग्रहजनित पीडा, ग्रहबाधा । -पुच-पु० सूर्य । -भीतिजित्-पु० चीड नामक गंधद्रव्य । -मर्द-पु० ग्रहयुद्ध । -मैत्री-की० वरकन्याके ग्रह-स्वामियोंका परस्पर मित्र या अनुकूल होना । -बज्र-बाध-पु० ग्रहदोषकी शांतिके लिए किया जानेवाला यज्ञ । -भुक्ति-की०, -योग-पु० राशि-विशेषके एक ही अक्षरपर ही अहोंका आ जाना । -युद्ध-पु० अहोंका परस्पर विरोध या सवर्ष । -राज-पु० सूर्य; चंद्र; बृहस्पति । -वर्ष-पु० अहोंकी गतिके हिसाबसे माना जानेवाला वर्ष । -विचारी(विन्)-पु० ग्रहचिंतक । -विप्र पु० ज्योतिषी । -वेध-पु० अहोंकी स्थितिका ज्ञान प्राप्त करना । -वाप्ति-की० जप, पूजन आदिके द्वारा ग्रह-दोषकी निवृत्तिका उपाय किया जाना । -श्रृंगाटक-पु० अहोंका एक तरहका योग । -संगम-पु० कई अहोंका झड़ना हो जाना । -स्वर-पु० राग आरंभ करनेका स्वर ।

अहक-पु० [सं०] कैरी ।

अग्रह-पु० [सं०] पकनकी क्रिया, पकन लेना, स्वीकार; प्राप्ति; धारण; वरण, चुनाव; समझना, अर्थबोध; ग्रह-विशेषका दूसरे ग्रहकी छायासे कुछ कालके लिए छिप जाना; सूर्य और धृविबीके बीचमें चंद्रमाका या सूर्य और चंद्रमाके बीचमें धृविबीका आ जाना (पौराणिक मतानुसार राहुका सूर्य या चंद्रमाकी निगलनेकी कोशिश करना); हाथ; हार्नेद्विज; बंदी, कैदी; पाणिग्रहण; कैद करना; आकर्षण; सेवा; प्रसंसा; आभरण ।

अग्रणी-पु० [सं०] अध्यक्षकी समाप्ति ।

अग्रणि, अग्रणी-की० [सं०] उदर और पकाशयके बीचकी एक नारी; एक तरहका अतिसार । -हर-पु० लौग ।

अग्रणीय-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य ।

अग्राम-पु० [सं०] प्रेतादिका आवेश ।

अग्रमेसर-पु० [सं०] चंद्रमा ।

अग्रार्च-पु० [सं०] ग्रहविप्र ।

अग्रधार-पु० [सं०] भ्रुव नक्षत्र ।

अग्रधीस-पु० [सं०] सूर्य ।

अग्रामय-पु० [सं०] मूर्च्छा, मृगी; ग्रहपीडा, प्रेतादिका आवेश ।

अग्रालुचन-पु० [सं०] शिकारपर हथकर उसे फाड़ डालना ।

अग्रवमर्द-पु० [सं०] ग्रहयुद्ध; राहु ।

अग्रवर्त-पु० [सं०] जन्मपत्री ।

अग्रशी(शिव)-पु० [सं०] ग्रहनाश वृक्ष ।

अग्रध्व-पु० [सं०] भ्रुव तारा ।

अग्रह्व-पु० [सं०] भूताकुश नामक पौधा ।

अग्रिल-वि० [सं०] दिलचस्पी लेनेवाला; हठी; भूताविष्ट ।

अग्रित-वि० दे० 'गृहीत' ।

अग्रितव्य-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य ।

अग्रिता(तु)-वि०, पु० [सं०] ग्रहण करनेवाला; ग्राहक; कर्ज लेनेवाला; निरीक्षण करनेवाला । [की० 'अग्रही']

अग्रील-वि० बड़े डीलडौलका 'ग्रहण' ।

ग्राम-पु० [सं०] बस्ती; गाँव; जाति; समूह; एक पञ्चसे दूसरे पञ्चजनकका स्वर-समूह, स्वर-सप्तक । -कंडक-पु० वह जो ग्राममें झगड़े-बखेड़े उठाता है, ग्रामद्रोही । -कुक्कुट-पु० पालतू मुरगा । -कूट, -कूटक-पु० गाँवका मुखिया; गृह । -गृह-वि० गाँवके बाहर स्थित । -गृहाक-पु० देहाती बदर । -जात-पु० गाँवकी नूटना । -घर-पु० ग्रामवासी । -वर्ष-की० क्षीमय । -वैश्य-पु० गाँवका पवित्र वृक्ष । -ज, -जात-वि० गाँवमें जनमा हुआ, देहाती; लेतमें उपजा हुआ । -णी-पु० गाँवका मुखिया; प्रधान, नायक; हजाम; वित्तु; कामी पुरुष, लंपट । की० वेदया; नीलका पौधा । -तक्ष-पु० गाँवका बदर । -देव, -देवता-पु० गाँवका अधिष्ठाता; गाँवकी रक्षा करनेवाला, देवता । -द्रोही(विन्)-वि०, पु० ग्राम-के नियमका भंग, ग्रामपंचायतके निर्णयका उल्लंघन करनेवाला । -धर्म-पु० मैतृण, क्षी-सय । -पंचायत-की० [वि०] गाँवके झगड़े सुनने और स्वास्थ्य, सफाई आदिका प्रबंध करनेवाला मंडल । -पाठशाला-की० गाँवकी पाठशाला, देहाती मदरस । -पाल-पु० गाँवका रक्षक; ग्रामरक्षक सेना । -प्रेष्य-पु० गाँवका दूत या सेवक । -मुख-पु० बाजार । -खग-पु० कुत्ता । -याचक, -बाजी(विन्)-पु० गाँवका पुरोहित; पुजारी । -युद्ध-पु० दंगा, बल्ला । -व्यथा-की० गाँवकी लकी । -वास-पु०

गौवमें बसना । -**ब्राह्मी(सिन्धु)**-वि०, पु० गौवमें बसने-
वाला, देहाती । -**संकर**-पु० गौवकी नाकी, मोरी ।
-**संबटन**-पु० ग्राम-जीवनको संघटित, व्यवस्थित करने
का कार्य । -**सिंह**-पु० कुत्ता । -**सुबार**-पु० [वि०]
ग्रामके सपूर्ण जीवनको सुधारनेका काम । -**सेवक**-पु०
ग्रामवासियोंकी सेवा, ग्रामजीवनके सुधारका कार्य करने-
वाला । -**हासक**-पु० भगिनीपति, बहनोई ।

ग्राम-पु० [अ०] एक अंग्रेजी तौल ।

ग्रामटिका-खी० [सं०] गवा-नीता गौव, खराब बस्ती ।

ग्रामांत-पु० [सं०] गौवकी सीमा, सिमाना; गौवका बस्तीके
बाहरका भाग ।

ग्रामांतर-पु० [सं०] दूसरा गौव ।

ग्रामाचार-पु० [सं०] गौवकी प्रथा, रीति ।

ग्रामाधान-पु० [सं०] आग्रेट, शिकार; छोटा गौव ।

ग्रामाधिकृत, ग्रामाधिप, ग्रामाध्यक्ष-पु० [सं०] गौवका
मुखिया ।

ग्रामिक-वि० [सं०] देहाती, गँवार; अमन्य; गीत-वाद्य-
विषयक । पु० ग्रामके रक्षार्थ नियुक्त अधिकारी, मुखिया;
ग्रामवासी ।

ग्रामिणी-खी० [सं०] नीलका पौधा ।

ग्रामी(सिन्धु)-वि० [सं०] गौवका; गँवार; कामी, विषयी ।

पु० ग्रामन्यायी; ग्रामवासी ।

ग्रामीज-वि० [सं०] ग्राममंथी; गँवार; गौवका । [खी०
'ग्रामीणा'] पु० ग्रामवासी; कुत्ता; कौवा; झूकर ।

ग्रामीणा-खी० [सं०] ग्रामीण खी; पालकका साग; नीलका
पौधा ।

ग्रामीय-वि० [सं०] गौवका । पु० ग्रामवासी ।

ग्रामेश-वि० [सं०] गौवमें जनमा हुआ; गँवार । [खी०
'ग्रामेशी'] पु० ग्रामवासी ।

ग्रामेशी-खी० [सं०] वेश्या ।

ग्रामेश, ग्रामेश्वर-पु० [सं०] गौवका प्रधान ।

ग्रामोफीन-पु० [अ०] एक यंत्र जिसमें शब्दध्वनि भरकर
जब चाहें प्रायः-दीक उसी रूपमें सुन सकते हैं ।

ग्राम्य-वि० [सं०] ग्राम-सम्बन्धी; ग्रामीणः मूल, अनाड़ी;
अमन्य, अशिष्ट; अश्लील (शब्द); पालू (पशु);
मैथुनसम्बन्धी । पु० कान्यका एक दीप जिसमें ग्राम्य
शब्दोंका प्राधान्य हो; अशिष्ट, अश्लील शब्द; ग्रामधर्म;
देहाती मौजना; पालू कुत्ता; एक रतिबंध; मेघ
राशि; वृष राशि; स्त्रीकृति । -**कंद**-पु० खलकंद ।
-**कंदी**-खी० कुत्ता । -**कर्म(न)**-पु० ग्राम-
वासीका पेशा; औपमस । -**कुम्भ**-पु० बर, कुम्भ ।

-**दोष**-पु० कान्य या रचनार्थ गँवार शब्द अधिक
माना । -**धर्म**-पु० मैथुन । -**पक्षु**-पु० कौवा, कुत्ता,
झूकर आदि । -**बुद्धि**-वि० गँवार, अनाड़ी । -**मव-**
गुरिका-खी० शूंगी मछली । -**मृग**-पु० कुत्ता । -**बल्लभा**
-खी० वेश्या, पालकका साग । -**सुख**-पु० मैथुन, खी-
संग ।

ग्राम्या-वि०, खी० [सं०] गौवमें रहनेवाली; गँवार (खी) ।
खी० तुलसी; नीलका पौधा ।

ग्राम्याध-पु० [सं०] गवा ।

२६-क

ग्राव-पु० दे० 'ग्रावा'; मोला ।

ग्रावा(बन्धु)-पु० [सं०] पत्थर; पहाड़; बाटल । वि०
कड़ा, सख्त ।

ग्रास-पु० [सं०] कौर, निवाला; आहार निगलना; ग्रसना;
आहार; चंद वा सूर्यका ग्रस्तांश; अस्पष्ट उच्चारण; ग्रहण ।
-**कारी(विन्)**-वि० ग्रसने, निगलनेवाला । -**क्षय**-
पु० गलेमें चुन, अटक जानेवाली चीज (मछलीका कौंटा
आदि) ।

ग्रसना-सं० क्रि० दे० 'ग्रसना' ।

ग्राह-पु० [सं०] ग्रहण; पकड़; आग्रह; मगर, धड़ियाल;
कैदी; समझ, बोध; निश्चय; रोग; बड़ा मत्स्य; कार्यारंभ ।
वि० पकड़नेवाला; लेनेवाला ।

ग्राहक-वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; मलरोधक । [खी०
'ग्राहिका'] पु० ग्राहक, खरीदार; बाग पक्षी; पुलिस
अफसर; विप चिकित्सक ।

ग्राहिका-खी० [सं०] शिवलीको तीसरी बली ।

ग्राही(हिन्)-वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला; पकड़ने
वाला; कर्म करनेवाला । [खी० 'ग्राहिणी']

ग्राहक-वि० [सं०] ग्रहण करनेवाला, ग्राहक ।

ग्राह्य-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; पकड़ने, लेने, सम-
झने योग्य; मान्य ।

ग्रीह-पु० गृह, घर- 'गृह देव्यां विन कल न पवन है
ग्रीह अंगणे न सुहार्दे दे'-मीरा ।

ग्रीक-वि० [अ०] ग्रीस, यूनान देशका । पु० ग्रीस-निवासी
यूनानी । खी० ग्रीस देशकी भाषा ।

ग्रीष्म-पु० दे० 'ग्रीष्म' ।

ग्रीवा-खी० [सं०] गरदन, गला । -**चंडा**-पु० बैल
आदिके गलेसे लटकनेवाली धड़ी ।

ग्रीवालिका-खी० [सं०] ग्रीवा ।

ग्रीवी(विन्)-वि० [सं०] लंबा, सुंदर गरदनवाला ।
पु० ऊँट ।

ग्रीष्म-पु० दे० 'ग्रीष्म' ।

ग्रीष्म-पु० [सं०] गरमीका मौसम (वैशाख, ज्येष्ठ या
ज्येष्ठ, आषाढ़), गरमी, निदाघ । -**काल**-पु० गरमीके
दिन । -**कालीन**-वि० ग्रीष्म ऋतु-सम्बन्धी । -**जा**,
-**भवा**-खी० नवमलिका, नेवारी । -**ग्राम्य**-पु० गरमीमें
होनेवाला अनाज । -**पुष्पी**-खी० करणी पुष्पवृक्ष ।
-**प्रधान**-वि० जहाँ गरमी अधिक पकती हो । -**सुंदरक**-
पु० शाकविशेष । -**हास**-पु० बुद्धिका स्त ।

ग्रीष्मी-खी० [सं०] नेवारी, नवमलिका ।

ग्रीष्मोजवा-खी० [सं०] नवमलिका ।

ग्रीष्मरट-पु० [अ०] जो किसी विश्वविद्यालयकी उपाधि-
परीक्षा पास कर चुका हो, बी. ए. पास व्यक्ति; स्नातक ।
ग्रीट-वि० [अ०] बड़ा, महान् । -**ग्रीटेन**-पु० इंग्लैंड, स्कॉट-
लैंड और वेल्सका संयुक्त नाम ।

ग्रेन-पु० [अ०] एक अंग्रेजी तौल (आधी रसी) ।

ग्रेह-पु० गेह ।

ग्रेही-वि० ससारी- 'जाका गुर ग्रेही अहै, चेला ग्रेही
होय'-साखी ।

ग्रेव, ग्रेवेष, ग्रेवेषक-वि० [सं०] गला-संबन्धी । पु० हार;

हाथीके गलेमें पहनायी जानेवाली मूंछला ।
प्रेम, प्रेमिक-वि० [सं०] प्रीत्य-संबंधी ।
प्रेमिक-वि० [सं०] गरमीमें बोया जानेवाला; गरमीमें चुकाया जानेवाला ।
गुणन-वि० [सं०] भक्षने या छांट करेवाला । पु० मुरसाना; भक्षन या तनाब दूर करना ।
गुणित-वि० [सं०] छांटा; शिथिल ।
गुणन-वि० [सं०] भक्षा हुआ; शिथिल, ग्लानियुक्त ।
गुणन-स्त्री० [सं०] भक्षावट, शिथिलता; अपने किसी कार्य-पर उपयुक्त खेद, पश्चात्ताप; अनुत्साह; एक संवारी भाव ।
गुणन-पु० [अ०] शोशा; दे० 'गिलास' ।
गुण-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर; पृथ्वी ।
गुण-स्त्री० कुलधी । * पु० ग्वाल ।
गुणन-पु० एक बढिया रेखमी कपडा ।
गुणपाठा-पु० धौकुआर ।

गुणन-स्त्री० दे० 'गुणन'; दे० 'गुणन' ।
गुण-स्त्री० दे० 'गुण'; ग्लानि ।
गुण-पु० दे० 'गुण' । -**गुण**-पु० अहीरीके लड़के, कुणके बालसखा ।
गुणन-स्त्री० अंगली चिचका ।
गुण-पु० गोप, गहौर; एक छंद ।
गुणन-स्त्री० अहीरिन; गुण; एक बरसाती किरण; एक तरकारी ।
गुण-पु० दे० 'गुण' ।
गुण-सं० कि० पैठना, मरोड़ना, टेढ़ा करना ।
गुण-पु० उपला । * वि० पैठा हुआ, टेढ़ा ।
गुण-स्त्री० सीमा-‘सुंदरताकी खैर पैसा सो पैसा चलेया’-रत्नाकर ।
गुण-पु० दे० 'गुण' ।
गुण-अ० निकट, पास ।

घ

घ-देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका चौथा वर्ण । उच्चारण-स्वान जिह्वा-मूल या कंठ ।
घंघरा-पु० दे० 'घघरा' ।
घंघरी-स्त्री० दे० 'घघरी' ।
घंघोना-सं० कि० दे० 'घंघोरना' ।
घंघोरना, **घंघोलना**-सं० कि० पानीकी हिलाकर उसमें मिट्टी आदि धोलना; पानीको गंधा करना ।
घं-पु० प्रेतक्रियामें पीपलसे लटकया जानेवाला वृक्ष; घंटा; [सं०] एक व्यंजन; शिव ।
घंटा, **घंटाक**-पु० [सं०] एक छुप ।
घंटा-पु० [सं०] कौमेका गोल पट्ट जिससे मुँगरीसे पीठकर पूजनमें या समयकी सूचनाके लिए बजाते हैं, घड़ियाल; मंदिरमें आदिमें लगाया जानेवाला कौमेका लगरदार बाजा जो लंगर हिलानेसे बजता है; घंटा बजनेका शब्द; [हिं०] ६० मिनट या २॥ घड़ीका काल-मान; ठेगा (कुछ नहीं) ।
घरन-पु० [हिं०] एक घास । -**घरन**-पु० शिवका एक गण । -**घर**-पु० ऊँची मीनार जिसमें इतनी ऊँचाई पर धरम घड़ी लगी हो कि बहुत दूरसे दिखाई दे और उसके घंटा बजानेकी आवाज सुनाई दे । -**ताड़**-पु० घंटा बजानेवाला, घड़ियाल । -**बाद**-पु० घंटेकी ध्वनि; कुंहेका एक मंत्री । -**घघ**-पु० राजमार्ग, चौड़ी सड़क (कौटिल्यके मतसे इसकी चौड़ाई १० धनु होनी चाहिये) । -**घाट**-पु० युष्मक नामक वृक्ष । -**घीज**-पु० जमाल-गोटका पौधा; उसका बीज । -**रघ**, **स्वन**-पु० घंटेका शब्द; एक राग । -**रघ**-स्त्री० दृक्शिक्षेप । -**बाद**-पु० घंटा बजानेवाला । -**घाट**-पु० घंटेकी आवाज; कौसा । सु०-**हिलाना**-पेसा काम करना जिससे कुछ हाथ न लगे ।

घंटिक-पु० [सं०] घड़ियाल, मगर ।
घंटिका-स्त्री० [सं०] छोटी घंटी; घुंकर; उपजिहा; रईयकी घड़िया ।
घंटी-स्त्री० बहुत छोटा घंटा, घुंकर; घंटीकी आवाज; जीभ-

की जड़के ऊपर लटकनेवाला मांसखंड, कौआ; गलेकी वह छोटी बड़ी जो आगेकी ओर निकली रहती है; छुटिया ।
घंटी-वि० [सं०] घंटायुक्त; जिसमें घंटियाँ लगी हों; घंटेकी तरह बजनेवाला । पु० शिव ।
घंटील-स्त्री० चारेके काम आनेवाली एक घास ।
घंटु-पु० [सं०] ताप; प्रकाश; गजघंटा ।
घं-पु० [सं०] मधुमक्खी ।
घं-स्त्री० अंतर-परवो मानो घोर घं है'-गीता०, प्रवाह, ध्वनी । वि० बहुत गहरा ।
घघरबेल-स्त्री० वृक्षमें लगनेवाली एक तरहकी बेल, बदाल ।
घघरा-पु० स्थिरका एक पहनावा, लहंगा ।
घघरी-स्त्री० छोटा लहंगा ।
घट-पु० [सं०] घटा, कलसा; पिंड, देह; कुंभ राशि; हृदय, अंतर; कुंभक; हाथीका कुंभ, २० द्रोणकी तौल; किनारा । -**कंठुकी**-स्त्री० तानिकोंकी एक अनैतिक रीति । -**कंकट**-पु० एक ताल । -**कण**-पु० कुंभकण । -**कपूर**-पु० एक कवि जो विक्रमादित्यकी सभाके नवरत्नोंमें थे; पटल, ठीकरा । -**कार**-पु० कुम्हार । -**ग्रह**-पु० पानी भरनेवाला । -**ज**-पु० अगस्त्य । -**दासी**-स्त्री० कुटनी । -**पर्वसन**-पु० प्रायश्चित्त न करनेवाले पतित जनकें छाति-जनों द्वारा उसके जीवित रहते ही किया जानेवाला उसका प्रेतकर्म । -**पल्लव**-पु० धरे और पसे जंम सिरेवाला खया । -**योगि**, **संभव**-पु० अगस्त्य । -**स्थापन**-पु० पूजनमें किसी देवताके आवाहनार्थ पदकी स्थापना । सु०-**पट** करना-न्याय, वेदांतकी चर्चा करना या बहस करना ।
घट-स्त्री० कमी । -**बड़**-स्त्री० कमी-पेशी (संभारूपमें 'घट' का प्रयोग इस समासमें ही होता है) । वि० कम-ज्यादा ।
घटक-वि० [सं०] करानेवाला, साधक; मिलानेवाला, योजक । पु० ब्याह तै करानेवाला, विनुआ, दलाल; वह वस्तु जिसके मेलन कीर्ष पदार्थ बना हो, अवयव-भूत वस्तु; बंदावली सुनानेवाला; वह वृक्ष जिसमें बिना फूल लगे

फट लगे; वषा ।

घटकना—स० कि० पीना, गलेके नीचे उतारना ।

घटका—पु० आसन्नमरण व्यक्तिकी ससिका शक-रुकर और वषाहटके साथ चलना, कपड़े गलेका रुक हो जाना (लगना) ।

घटती—स्त्री० कमी; अवनति; हेटी, अप्रतिष्ठा ।

घटन—पु० [सं०] होना, बनना; मिलना, जोड़ना; गड़ना; गति; कलह ।

घटना—स्त्री० [सं०] जो बात हो वा घटित हो, व्यापार, बाकिया; रचना; योजना; अवाजक होनेवाली बात, हादिसा; समूहीकरण; गजदल । —**क्रम**—पु० घटनाओंका सिलसिला । —**चक्र**—पु० घटनाओंका सिलसिला, घटना-परंपरा ।

घटना—अ० कि० घटित होना; लगना—‘सपने नृप कई बटे शिव वष ’—विनयपत्रिका । उक्ति या बचनका द्यार्थ सिद्ध होना; काम जाना; कम होना; छीजना; तोलमें कम होना; (किसी चीजकी) कमी; अभाव होना (उन्हीं वषा घटा है) । **मु०—बढ़ना**—कम वेश होना छोटा-रहा होना । **घट-बढ़कर**—कुछ कमी-बेशी करके ।

घटनाबली—स्त्री० [सं०] घटनाओंका सिलसिला, समूह ।

घटबाई—वि० घाटवाला, रूकावट डालनेवाला—‘आवन जान न पावन कीऊ तुम मगमें घटबाई’—सु० ।

घटवाना—स० कि० ‘घटाना’का प्रे० ।

घटवार—पु० घाटका ठेकेदार, घाटकी नाव खेनेवाला; घाटिया ।

घटवारिश, **घटवालिषा**—पु० घाटिया; केवट ।

घटवाह—पु० घाटका ठेकेदार, घाटका महसूल लेनेवाला ।

घटहारा—पु० घाटका ठेकेदार; आर-पार जाने-आनेवाली बड़ी नाव ।

घटा—स्त्री० [सं०] प्रयत्न; समूह; गोष्ठी; युद्ध आदिके लिए एकत्र हथियारोंका समूह; एक तरहका ढोल; संतरा; घटना; [हिं०] जलभरे काने बादलोंका समूह, मेघमाला । **मु०—उठना**—मेघमालाका उमड़ना । —**चिरना**, **छाना**—आकाशका बादलोंमें बँक जाना ।

घटाई—स्त्री० अप्रतिष्ठा, मानहानि ।

घटाकाश—पु० [सं०] आकाशका वह अंश जो धरेके भीतर आ जाय, घटसे अवच्छिन्न आकाश ।

घटाप्र—पु० [सं०] वास्तुस्तंभका आठवाँ भाग (त्रिसमें देवताका आवाहन किया जाता है) ।

घटाटोप—पु० [सं०] गाड़ी, पालकी आदिका ओहारा जो उसे पूरी तरह ढक ले; कोई ढक लेनेवाली वस्तु, सामान; धनघटा, आडंबर ।

घटाना—म० कि० कम करना; बाकी निकालना; मान-प्रतिष्ठामें गिराना ।

घटाव—पु० घटी, कमी; अवनति; बाढका घटना ।

घटिचम—पु० [सं०] कुम्हार ।

घटिक—पु० [सं०] धरे, धनईके सहारे नदी पार करने-करानेवाला; धक्कियाल बजानेवाला; निरतव ।

घटिका—स्त्री० [सं०] २४ मिनटका समय, घड़ी; छोटा वषा; एक छोटा वषा जिससे दिनकी घंटियाँ मापस की

जाती थीं घुटना । —**वर्ष**—पु० दे० ‘घटीवर्ष’ । —**सासक**—पु० घड़ी भरमें १०० श्लोक बनानेवाला वा स्त्री काम करनेवाला व्यक्ति । —**स्वाध**—पु० सराय, चट्टी ।

घटिकावधान—पु० [सं०] दे० ‘घटिकाशतक’ ।

घटित—वि० [सं०] जो हुआ हो; जोड़ा, मिलाया हुआ; जो ठीक उतरा हो; रचित ।

घटिताई—स्त्री० कमी, घुटि ।

घटिया—वि० जो बढिया न हो, खराब, निरुद्ध ।

घटिहा—वि० चौला देनेवाला, बिनासवाली; नीच; मझार; कूँपट ।

घटी—स्त्री० कमी; घाटा, नुकसान; [सं०] २४ मिनटका काळ-मान, घड़ी; छोटा वषा, कलसी; रहंडकी घंटिया; समय जाननेके लिए काममें लाया जानेवाला जलपात्र । —**कार**—पु० कुम्हार । —**ग्रह**, **ग्राह**—पु० पानी भरने-वाला । —**वर्ष**—पु० घड़ी, कालहापक वंश; रहंड ।

घटी (टिब)—पु० [सं०] कुंभ राशि; शिव —(टि)घट—पु० शिव ।

घटका—पु० घटोत्कच ।

घटोत्कच—पु० [सं०] हिडिंबा राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न भीममेनका पुत्र ।

घटोन्नव—पु० [सं०] अगस्त्य मुनि ।

घटोर—पु० मेढा ।

घट—स्त्री० पेशा—‘सुमट-ठट्ट धन-घट्ट सम, मर्वाहि रच्छन पुच्छ’ ।

घट—पु० [सं०] घाट; चुंगी या महसूल लेनेकी जगह; स्थूल करना । —**कुटी**—स्त्री० चुंगीकी चौकी । —**जीवी**—(बिबू)—वि० घाटके महसूल या घटहा नावके खेबेसे गुजर करनेवाला । पु० एक बर्णसंकर जाति ।

घटन—पु० [सं०] हिलाना; चलाना (चाशनी आदि); घोटना; मचटन ।

घटना—स्त्री० [सं०] हिलाना, चलाना; रगड़ना; पेशा, घुति ।

घटा—पु० घटी; घाटा; छिद्र; दरार; घट्टा; * घटा ।

घटित—वि० [सं०] रगड़ा हुआ, चिकनाया हुआ; दबाया हुआ; हिलाया, चलाया हुआ, निर्मित । पु० नृत्यका एक ढंग ।

घट्टा—पु० लगातार रगड़ लगनेसे शरीरपर पड़नेवाला चिह्न । **मु०—खुलना**—फट जाना, दरार होना ।

—**पड़ना**—आदत पड़ना, अभ्यास होना ।

घक्कड़—पु० बादलके गरजने, गाड़ी आदिके चलनेकी आवाज ।

घक्कड़ाना—अ० कि० ‘घड़-घड़’ आवाज होना, निकलना ।

घक्कड़ाहट—स्त्री० ‘घड़-घड़’ शब्द ।

घक्कड़—स्त्री० दे० ‘घटत’ ।

घक्कड़—स्त्री० बाँसके ढाँचेमें धरे बाँधकर बनायी हुई काम-चलाक नाव ।

घक्कड़ा—स० कि० गड़ना ।

घक्कड़—स्त्री० दे० ‘घक्कड़’ ।

घड़ा—पु० मिट्टीका कलसा, पानी रखनेका बरतन । **मु०** **घड़ा पानी पड़ जाना**—शर्मसे गब जाना, बहुत लजित

होना ।

बर्बाई-खी० दे० 'गदाई' ।

बर्बाना-स० कि० दे० 'गदाना' ।

बर्बिया-खी० मिट्टीका बना धबके आकारका छोटा बरतन, कुश्बिया; सोनारोंकी कुश्बिया या बरिया जिसमें सोना-चौडी गलाते हैं; रहतेमें लगी हुई टिलिया; शहदका छला; गर्मीशब ।

बर्बियाल-पु० घंटा, पहर आदि बजानेके लिए वा घूबनेके समय बजाना जानेवाला घंटा; छिपकलीकी शकलका एक हिंसक बड़ा जलजंतु, ग्राह । -का कटोरा-एक तरहका कटोरा जिससे पुराने समयमें धरौका काम लेते थे (उसकी पैरीमें एक छोटा छेद बना रहता था । पानीकी नौदमें छोड़ देनेसे धवी वा धंटेभरमें उसमें इतना पानी आ जाता था कि बह बूब जाय) ।

बर्बियाली-पु० बर्बियाल बजानेवाला । खी० पूजाके समय बजानेका एक तरहका घंटा, झालर ।

बर्बी-खी० ६० पल वा २४ मिनटका कालमान, घटी, दंड; समय, बक्त; अवसर; घटा बतानेवाला एक यंत्र, 'झाक' आदि; पानी, बिजली आदिके खर्चके परिमाणका सूचक यंत्र (मीटर) । -बर्बी-अ० बार-बार; थोड़ी-थोड़ी देर बाद । -बर-अ० थोड़ी देर, क्षणभर । -साझ पु० धवीकी सफाई, भरम्भत करनेवाला । -साझी-खी० धवीसाजका काम, पेशा । मु० बर्बियाँ गिनना-बकी उकठाने साथ प्रतीक्षा करना; आसन्नमरण होना । बर्बी टलना-समय बीतना, किसी बातका निवत काल, मुहूर्त टलना । -में बर्बियाल है-श्रिदगीका भरोसा नहीं, छनभरमें न जाने क्या हो जाय । -साइत का मेहमान-थोड़ी देरका मेहमान, आसन्नमरण ।

बर्बीदिआ-पु० (खतिवोमें) दूत व्यक्तिके घर घुसुके स्वागपर दस दिनतक रखा जानेवाला वषा जिसके पैदेमें पानी चुनेके लिए छोटासा म्हास रहता है और मुँहपर दिआ जलया जाता है ।

बर्बोला-पु० छोटा वषा ।

बर्बीली-खी० घंटा रखनेके लिए बना हुआ चबूतरा या तिपारी ।

बर्बना-स० कि० दे० 'बर्बना' ।

बर्बिया-पु० घाटी, थोखा देनेवाला ।

बर्बियाना-स० कि० बातमें लाना; छिपाना ।

बर्ब-वि० [म०] घना, ठस; ठोस; अमेघ; निविड; धड; गंभीर; निरत; पूर्ण; घुम; विशाल । पु० मेघ, बादल; छुआरका बड़ा हथौड़ा; किमी अकती उली अकते दो बार गुणा करनेसे उपलब्ध गुणफल, 'क्यूव' लबाई-चौकाई-मोटाई, विस्तार; बढ़ता; घनत्व; वेदभंगोंके पाठकी एक विशेष विधि; धातुका बना शीशकरताल जैसा एक बाजा; घंटा; लोहा; त्वचा, छाल; शरीर; मध्यम नृत्य; केश्या; समूह; अन्नक; अंधकार; * कपूर । -कफ-पु० ओला । -काल-पु० वर्षा क्रतु । -कोई-पु० द्रव्यनुप । -क्षेत्र-पु० लंबाई, चौड़ाई और गहराईका विस्तार । -गरज-खी० [हि०] बादलकी गरज; एक पौधा; एक तरहकी तोप । -गर्जित-पु० बादलोंका गर्जन । -गोलक

-पु० सोने और रुपेकी मिलावट । -घटा-खी० बादलोंका जमाव; गहरी काली घटा । -घोर-वि० बहुत घना; जबरदस्त; गहरा; डरावना । पु० डरावनी गम्भिरावट, आवाज । -घटा-खी० [हि०] काली डरावनी घटा । -बर्बर-वि० [हि०] मूर्ख, नासमझ; अधिभ्रमति; आवागर्द । पु० एक आतिशबाजी, चरखी; बकरा; दुई-मुलीका छला । -ज्वाल-खी० बिजली । -ताल-पु० करताल; चातक पक्षी । -तोल-पु० पपीहा । -घुम-पु० विवर्तक वृक्ष । -घातु-खी० लसीका । -माद-पु० मेघगर्जन; मेघनाद । -नाभि-पु० घुम । -पत्र-पु० पुनर्नवा । -पद-पु० घनमूल । -पदवी-खी० आकाश । -पार्थ-वि०-भिय-पु० गोर । -फल-पु० लबाई-चौकाई-मोटाईका गुणफल; विवर्तक वृक्ष । -बान-पु० [हि०] एक तरहका बाण । -बेल-वि० जिसपर धने बेल-बूटे बने हों । -बेली-खी० बेलका एक भेद । -मूल-पु० घन राशिका मूल अंक । -रब-पु० मेघगर्जन । -रस-पु० अर्क; जल; कपूर; मोट नामक पौधा । -रूपा-खी० भिस्ती । -बर-पु० चेहरा, मुख । -बर्बा-पु० घनका वर्ग । -बर्बिका-खी० बिजली । -बर्बी-खी० अशुभनवा लता । -बास-पु० कुम्हाल । -बाह-पु० वायु; [हि०] घन चलनेवाला । -बाही-खी० [हि०] घनसे पीठनेका काम; वह स्थान जहाँ घन चलानेवाला खड़ा होता है । -बाहन-पु० इंद्र; शिव । -ब्याम-वि० जलभरे बादल जैसा काला । पु० काला बादल; कृष्ण, राम । -अणी-खी० मेघमाला । -सार-पु० जल; कपूर; एक वृक्ष । -स्वन-पु० मेघगर्जन; तंतुलीय शाक । -हस्त-पु० एक हाथ धोधा, एक हाथ धोधा और एक हाथ गहरा क्षेत्र वा एक हाथ मोटा पिंड; अत्रादि नापनेका एक मान । घनक-खी० गर्जन, गम्भिरावट, चोट, प्रहार-'घनकी घनक घन घंटा घनक आली'-दीनदयाल । घनकना-अ० कि० गरजना, आवाज करना । घनकारा-वि० ऊँची आवाज करनेवाला, गरजनेवाला । घनघनाना-अ० कि० 'घन-घन'की आवाज होना, निकलना । घनघनावट-खी० 'घन-घन'की आवाज । घनता-खी०, घनत्व-पु० [म०] घनापन; ठोसपन, दृढता; लंबाई, चौड़ाई और मोटाईका भाव । घनहरा-पु० दाना भुनानेवाला । घनांजनी-खी० [सं०] दुर्गा । घनांत-पु० [सं०] शरद क्रतु । घनांधकार-पु० [सं०] अंधेराकुप, निविड अंधकार । घना-वि० गुंजाज, जिसके अवयव पास-पास सटे हों (जंगल, बाल); ठस, गाढ़ा; * बहुत अधिक, अतिशय; दृढ । * पु० जंगल, पेड़ोंका समूह । खी० [सं०] माधवणी; रुद्रजटा; एक बाघ । घनाकर, घनागम-पु० [सं०] वर्षा क्रतु । घनाक्षरी-खी० दृढ छंद, कविच । घनाघन-पु० [सं०] इंद्र; बरसनेवाला बादल; मल हाथी । घनाख्य-पु० [सं०] दे० 'घनांत' । घनानंद-पु० [सं०] गम्भिरावटका एक भेद; मजभाषाके एक प्रमुख कवि ।

धनामय-पु० [सं०] खरुत ।
धनामय-पु० [सं०] आकाश ।
धनिष्ठ-वि० [सं०] बहुत धना; बहुत गाढ़ा; गहरा; बहुत निकटका; अंतरंग (मित्र) ।
धनिष्ठता-स्त्री० [सं०] धनिष्ठ होनेका भाव; गहरी दोस्ती ।
धनीभवन, धनीभाष-पु० [सं०] गाढ़ा, गहरा होना, जमाना, ठोस बनना; कँड़ीभूत होना ।
धनीभूत-वि० [सं०] गाढ़ा; गहरा; ठोस बना हुआ; कँड़ीभूत ।
धनेतर-वि० [सं०] तरल ।
धनेरा-वि० दे० 'धना' ।
धनोत्तम-पु० [सं०] चैहरा, मुल्ला ।
धनोदधि-पु० [सं०] एक नरक ।
धनोदय-पु० [सं०] वर्षा ऋतुका आरंभ ।
धनोपल-पु० [सं०] ओला ।
धनई-स्त्री० दे० 'धनई' ।
धपचियाना-अ० कि० धराना; सिद्धिपाना; धराहटमें कर्तव्य स्थिर न कर सकना ।
धपची-स्त्री० दोनों हाथोंसे कसकर पकड़ लेना ।
धपला-पु० गडबड़, गोलमाल ।
धपुआ, धप्पू-वि० मूले, ऊल्लू ।
धबधाना-अ० कि०, म० कि० दे० 'धराना' ।
धबकाहट-स्त्री० दे० 'धराहट' ।
धबराना-अ० कि० अधीर होना; भय, चिंतासे अस्थिर, उद्विग्न होना; बुद्धिमें काम न लेना; धपचियाना; हक्का-बक्का होना; उगावलीमें होना । सं० कि० अस्थिर, अधीर करना; परेशान करना; उबाना; हड़बड़ीमें डालना ।
धराहट-स्त्री० अधीरता, उद्विग्नता; परेशान; हड़बड़ी ।
धर्मका-पु० धर्म, धृष्टा, धृष्टा ।
धर्म-पु० धर्म, धर्म; श्रेणी; भरोसा, सहारा ।
धर्म-वि० धर्म करनेवाला, मगर; श्रेणीवाज ।
धम-पु० नरम चीजपर कड़ी चीजके गिरनेकी आवाज, धमाका ।
धमक-स्त्री० धृष्टा इत्यादिके प्रहारका शब्द; चोट ।
धमकना-म० कि० धृष्टा मारना । * अ० कि० गरजना, धराना ।
धमका-पु० दे० 'धमाका'; कमस-कमस होन धमका विषम यों न पातु खरकतु है'-मेनापति ।
धमखोरी-वि० धाम सह सकनेवाला ।
धमधमाना-स० कि० लगातार धूम मारना । अ० कि० 'धम-धम' शब्द होना ।
धमर-पु० नगाड़े आदिकी आवाज, गंभीर ध्वनि ।
धमरा-पु० मंगरा, मंगराज ।
धमरोल-स्त्री० ऊपम; हल्ला-गुल्ला; गडबड़ ।
धमस-स्त्री० दे० 'धमसा' ।
धमसा-पु० कमस; धमापन ।
धमसान-पु० धीर युद्ध, भयानक मारकाट (हीना, मचना) । - **झी लड़ाई**-धीर युद्ध, विकट सग्राम ।
धमाका-पु० 'धम'की आवाज; धुँसे वा और किसी भारी आवातका शब्द ।

धमाधम-पु० 'धम-धम'की आवाज; धमाका । अ० 'धम-धम'के साथ ।
धमाधमी-स्त्री० दे० 'धमाधम'; मारपीट ।
धमाधारी-अ० कि० धूप खाना; धूपकी गरमीसे पकना, पीका हो जाना ।
धमाधक-वि० धामसे पका हुआ; धाम खाया हुआ ।
धमासाव-पु० दे० 'धमासान' ।
धमीका-वि० धामसे मुरझाया हुआ ।
धमोई-स्त्री० बाँसका एक रीप जिससे उसमें नये कले नहीं निकलते ।
धमोद-पु० एक पौधा जिसका रस नेत्ररोगकी दवा माना जाता है, मधुगोक्ष ।
धमोरी-स्त्री० अम्बोरी, पत्तीना मरनेसे उत्पन्न होनेवाली छोटी-छोटी कुसियाँ ।
धर-पु० [सं०] आग्नीके रहनेकी जगह, आवास; दीवारसे घिरा और छाया हुआ स्थान, मकान; [हिं०] कमरा; स्थान, ठिकाना; पैरुक्त वासस्थान; स्वदेश, वतन; कुल, घराना; कार्यालय (तारपर); उपविष्टस्थान; जहाँ किसी चीजकी बहुतायत हो; वह स्थान जहाँ धरका-सा आराम, सुपास मिले; कोठा, खाना (चौरस, सड़क, सतरज आदिका); स्थान, कोश; जन्मकुंडलीमें ग्रहविशेषका स्थान; चौखटा, फ्रेम, किसी चीजके जड़ने, बैठनेका स्थान; छेद; रागका स्थान; धरका माल-अमवाश, धर-बार, धरका कामकाज, गृहस्त्री; चोट मारनेका स्थान; अँलका गोलका; दाँव ।
-गभी-वि०, स्त्री० त्रिमका धर उजड़ गया हो; निगोही ।
-गिरस्ती, -गृहस्ती-स्त्री० धरका कामकाज । - **धर-अ०** हर धरमें, सबके वहाँ । - **धराना-पु०** कुल कुटुंब ।
-घाट-पु० रंग-रंग; ठौर-ठिकाना । - **घाक, -घाकन-वि०** धर धालने, बिगाड़नेवाला । - **धुलवा, -धुलना-वि०** जो सदा धरमें धुला, जनानालानेमें बैठा रहे ।
-धिसा-पु० एक तरहका लॉप जो प्रायः धरमें रहता है । - **झँझाई-पु०** वह दमाद जिससे सास-समुद्र अपने धर रख लें । - **झाया-पु०** गुलाम, गृहदास । - **झुगत-स्त्री०** धर-गृहस्त्रीका ब्योत, प्रबंध । - **जोत-स्त्री०** निजकी खेती, खुदकाशन । - **झँकनी-वि०** स्त्री० जो अपने धर न रहकर पड़ोसियोंके धरमें धूमती रहे । - **झासी-स्त्री०** गृहिणी, पत्नी । - **झार-पु०** धर, वासस्थान; धरकी चीज-वस्तु, माल-असबाज; गृहस्त्री । - **झारी-स्त्री०** धरपीछे लिया जानेवाला कर । - **धप्पी-स्त्री०** धरपीछे लगाया जानेवाला चदा । - **फोड़नी-वि०** स्त्री० धरमें झगडा लगानेवाली । - **फोड़ी-वि०** स्त्री० दे० 'धरफोड़नी' ।
-बसा-वि० दे० 'धरधुमना' । पु० उपपति । - **बसी-स्त्री०** उपपत्नी । वि० स्त्री० सौभाग्यवती; धर बसानेवाली; धरका नाश करनेवाली (व्यर्थ) । - **बार-पु०** धर, वासस्थान; गृहस्त्री; बाल-बच्चे; धरकी चीज-वस्तु, माल-असबाज । - **बारी-पु०** बालबच्चोंवाला, गृहस्थ । - **बारू-पु०** दे० 'धरबारी' । - **बैदे-अ०** बिना काम दिने । - **बास-स्त्री०** धरका सामान, चीज-वस्तु । - **बाळा-पु०** गृहस्त्रीमा, पति । - **बाखी-स्त्री०** गृहस्त्रामिनी, गृहिणी, पत्नी । - **हाई-वि०** स्त्री० धरमें कलह करने, धर बिगाड़नेवाली;

धरकी डुराई फैलाने, धरनामी करानेवाली, मुगलखोर ।
मु०-आबाद होना-दे० 'धर बसना' । -उजड़ना-
धरका तबाह होना, धरके धन-जनका नाश होना; पत्नीका
मर जाना । -उठना-धर बनना; धरपर तबाही जाना ।
-करना-अपने लिए जगह निकालना; बसना; धर
बनाना । -का-अपने धरका; कुटुंबका (मादमी); अपना;
निजका; आपसका; स्वजनोंके बीचका; पति, धरवाला ।
-का अच्छा-सुखवाला । -का आँगन हो जाना-
खेहर हो जाना; संतान उत्पन्न होना । -का उजाला-
धरभरका प्यारा, बहुत सुंदर (बेटा); धरकी शीमा,
सहृदिक कारण । -का काटे खाना-धरमें तनिक भी
जी न लगना, धरका भयानक लगना । -का धरौदा-
करना-सत्यानास करना । -का धिरसा-दे० 'धरका
उजाला' । -का न घाटका-जो कहींका न हो; निकम्मा ।
-का मोड़ उठाना वा सँभालना-धरका कामकाज
देखना, धर-धार सँभालना । -का भेदिना-का भेदी-
धरके सब भेद जाननेवाला । -का मर्द-का शेर-जो
धरमें ही बहादुरी दिखा सके, गेहेधूर । -का रास्ता-
आसान काम । -का रास्ता लेना-चल देना, सिधारना;
धरकी बापस जाना । -की-धरवाली, स्त्री, पत्नी । -की
खेती-अपने यहाँ पैदा होनेवाली चीज; अपना माल ।
-की बात-धरका मामला; स्वजनोंसे संबंध रखनेवाली
बात; धरका भेद । -की मुर्गी-धरका लायक, धर केकर
आदमी; पत्नी । -की मुर्गी बाल वा साग बराबर-
धरकी अच्छी चीजकी भी कद नहीं होती । -के-पति,
धरवाला । -के धर-धर ही धरमें; अंदर ही अंदर । -के
धर रहना-किसी सोदे वा रोजगारमें न घाटा होना, न
नफा । -के जाले बुहारना-धर-धर फिरना, भटकना ।
-के कोश-कुटुंबी; स्त्री-बच्चे । -धरका हो जाना-
तितर-वितर हो जाना, मारे-मारे फिरना । -धाममें-
छवाना-कष्टमें डालना, सजा देना । -घाड़ना-धर
विगाड़ना; नाश करना; धरकी मर्यादा, प्रतिष्ठा नष्ट करना ।
-जमना-गृहस्थी ठीक होना । -जुबना-धर तबाह
होना । -तक पहुँचना-बाप-दादा बखानना; खी-बहिन-
की गाली देना; पूरा करना । -देख लेना-बार-बार कुछ
मँगने आना; धरच जाना । (किसीके)-पक्षना-पत्नी,
बहू होकर जाना; ब्याह जाना । -धर गंगा जाना-
पिना मेहनतके काम पूरा हो जाना । -हूँक तमाशा
देखना-धरकी बराबद कर, धरकी दौलत छुटाकर, धर
केबकर मौज-चैन वा धूमधाम करना । -कोड़ना-धरमें
फूट डालना, झगडा लगाना । -बंद होना-झरज या
चौसरमें किसी मोहरे वा गोटका किसी धरमें न जा सकना ।
-बसना-धरका आबाद होना; धरमें लीका जाना,
ब्याह होना । -बसाना-धरको आबाद करना; शादी
करा देना । -बिगाड़ना-धरको विगाड़ना, बर्बादीकी ओर
ले जाना; धरमें फूट डालना । -बेधिरा हो जाना-बेटेका
मर जाना; कोई नामलेना न रह जाना । -बैठना-बाहर
निकलना बंद कर देना; एकांतवासी होना; मौकरी छोड़
देना; वर्षोंसे मकानका उध जाना । (किसीके)-बैठना
किसीकी पत्नी वा रखेली बनना । -बैठी रोटी-धर बेटे

मिलनेवाली रोजी, पेंशन । -धरना-धरका धन-जनसे
भरा होना; धरको धन-धान्यसे भरना; धन जोड़ना; माल
जमा करना । -धौब-धौब करना-धुनेपनके कारण
धरका डरावना लगना । -में-पत्नी, धरवाली । -में
कहना-ठीक खरके साथ गाना । -में डालना-रखेली
बना लेना । -में पक्षना-दे० 'धर पक्षना' । -सिरपर
उठा लेना-बहुत शौर, ऊधम मचाना । -से-पाससे,
गोंठमें । -सेना-बेकार बैठे रहना । -से पाँव निकालना-
कुल-भर्यादाका अतिक्रमण करना, स्वच्छंदाचारी, बेकहा
हो जाना । -होना-गृहस्थी चलना ।

धरधरना-अ० कि० 'धर-धर'की आवाज निकलना, धर-
घराहट होना ।

धरधराहट-स्त्री० 'धर-धर'की आवाज; गलेमें कक होनेपर
साँस लेनेमें होनेवाली आवाज ।

धरदू, धरदूह-पु० [सं०] चक्की, जौता ।

धरटिका-स्त्री० [सं०] चक्की ।

धरणी-स्त्री० धरती; [सं०] बह स्त्री जिसके पास धर हो ।

धरन-स्त्री० एक तरहकी पक्षीय भेड़ ।

धरनई-स्त्री० दे० 'पञ्चनई' ।

धरनाछ-स्त्री० एक तरहकी पुरानी तोप-तिमि धरनाछ
ओर करनाछे, सुतुरनाल जवाले । -रघुराजनिह ।

धरनी-स्त्री० गृहिणी, पत्नी ।

धरम*-पु० दे० 'धर्म' । -कर-पु० सूर्य ।

धरवार*-पु० दे० 'धविवाल' ।

धर-धर-पु० रगबनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

धरना-अ० कि० रगड़ खाना, पिसना ।

धरबा, धरबाहा-पु० छोटा धर; परीडा ।

धरसा*-पु० दे० 'धिसा' ।

धरा-पु० दे० 'धरा' ।

धराऊ-वि० धरू, धरूऊ ।

धरासी-पु० (ब्याहमें) कन्यापक्षका आदमी, कन्यापक्ष-
वाला, 'धराती'का उलटा ।

धराना-पु० कुल, बंस; किसी विधा-कलाके लिए प्रसिद्ध
कुल ।

धरिआ, धरिबारा-पु० दे० 'धविवाल' ।

धरिणी-स्त्री० [सं०] दे० 'धरणी' ।

धरिया-स्त्री० दे० 'धविआ' ।

धरियानी-सं० कि० धरी लगाना, तह करना ।

धरियारी*-पु० बडा बजानेवाला ।

धरी-स्त्री० दे० 'धरी'; छोटा पक्ष; धविआ; तह, लपेट ।

धरीक*-ज० धरीभर, छनभर ।

धरुआ, धरुआ-पु० धरका अच्छा प्रबंध; चहमा आदि
रखनेका डिम्बा ।

धरू-वि० धरका, खानगी ।

धरेखा-वि० दे० 'धरेख' ।

धरेख-वि० धरका; धरमें संबंध रखनेवाला; धारदू ।

धरेशा-पु० धरका आदमी, स्वजन । वि० धरका; धनिष्ठ
संबंधवाला ।

धरौदा, धरौदा-पु० लेखनेके लिए बच्चोंका बनाया हुआ
मिट्टीका नक्का-सा धर ।

घरीना-पु० घर; घरीरा ।

घर्बर-पु० [सं०] गायी; चक्री आदि के चलनेकी आवाज, घरघराहट; जलते समय लकड़ी आदि के चटकनेकी आवाज; हात्स; उल्लूक; भूलीकी आवाज; परदा; द्वार; पर्वतहार; दर्रा; मधानी; घाघरा नदी ।

घर्बरक-पु० [सं०] घर्बर शब्द; घाघरा नदी ।

घर्बरा-खी० [सं०] ध्रुव धंदिका, ध्रुवचक्रार करधनी; घोड़े के गलेकी धंदी; गंगा; एक तरहकी घीणा ।

घर्बरिका-खी० [सं०] ध्रुव धंदिका; एक वाद्य; लजा ।

घर्बरित-पु० [सं०] घर्बर के घुरघुरानेका शब्द ।

घर्बरी-खी० [सं०] दे० 'घर्बरा' ।

घर्म-पु० [सं०] घृष, घाम; ग्रीष्मकाल; पसीना; पसीली ।

-घर्षिका, -विघर्षिका-खी० घमौरी, अम्बौरी । -जल,

-तोष, -वारि-पु० पसीना । -दीप्ति, -द्युति, -रश्मि

-पु० घर्म । -बिबु-पु० अमसीकर । -स्वेध-वि० जिसके

शरीरसे तापके कारण पसीना निकल रहा हो ।

घर्मात-पु० [सं०] वर्षा ऋतुका आरंभ ।

घर्मातु-पु० [सं०] पसीना ।

घर्मातु-पु० [सं०] घर्म ।

घर्मातु-वि० [सं०] पसीनेसे तर ।

घर्मातुक-पु० [सं०] घमौना ।

घर्मा-पु० एक तरहका अंजन; गलेकी घरघराहट (चलना) ।

घर्माटा-पु० खराटा (भरना) ।

घर्माती-पु० छप्पर छानेवाला ।

घर्मा-पु० [सं०] रगड़, घर्षण; पसीना ।

घर्षक-वि०, पु० [सं०] घिसनेवाला; पालिश करनेवाला ।

घर्षण-पु० [सं०] घिसना, रगड़ना; मॉजना; घिसना (सिल-बट्टी) ।

घर्षित-वि० [सं०] घिसा, घिसा, रगड़ा, माज्रा हुआ । [खी० 'घर्षिता'] ।

घलना-अ० क्रि० मारा, फेंका जाना (तीर आदिका); मार-पीट हो जाना ।

घलाघल, घलाघली-खी० परस्पर आघात, मारपीट ।

घलुआ-पु० घाल, घाता ।

घवदा-पु० दे० 'जौद' ।

घवरी-खी० दे० 'घोरी' ।

घसकना-अ० क्रि० घिसकना ।

घसखुदा-पु० घास छीलनेवाला ।

घसना-स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'घिसना' ।

घसिना-अ० क्रि० घमीटा जाना ।

घसिबारा-पु० घास खोदने, बेचनेवाला; तुच्छ, बेवकाल आदमी ।

घसिबारिन, घसिबारी-खी० घास खोदने, बेचनेवाली खी ।

घसीट-खी० घसीटनेका भाव; जल्दीमें लिखे हुए अक्षर जिनकी झुड़ि और सुंदरताका खयाल न रहा गया हो, शिकस्त लिखावट ।

घसीटना-स० क्रि० किसी चीजको इस तरह खींचना कि वह जमीनमें रगड़ खाती हुई खिंचे; किसीको किसी समयमें उसकी इच्छाके विरुद्ध शामिल करना; जल्दी-जल्दी, घसीट लिखावट लिखना ।

घस्मर-वि० [सं०] घेर । पु० भक्षक ।

घस्म-वि० [सं०] घानिक । पु० शिव; दिन; घर्म; केसर ।

घस्सा-पु० दे० 'घिस्सा' ।

घहराना-अ० क्रि० दे० 'घहराना' ।

घहरना-अ० क्रि० दे० 'घहराना' ।

घहराना-अ० क्रि० गर्जन जैसा शब्द करना; गरजना, गवगवाना ।

घहरानि-खी० घहरानेका भाव; गर्जन; गंभीर ध्वनि ।

घहरारा-पु० घहरानेकी ध्वनि, गर्जन । वि० गरजनेवाला ।

घहरारी-खी० दे० 'घहरानि' ।

घों-खी० ओर, तरफ, दिशा; प्रकार, तरह-‘कहिबो न छिपे किहि घों सुतमें’-वन० ।

घोंघरा-पु० लहंगा; ढोडा, लोविया ।

घोंघरी-खी० दे० 'घोंघरा' ।

घाटिक-पु० [सं०] स्तुतिपाठक; वंदी ब्रजानेवाला; भट्टा ।

घाटी-खी० गलेके अंदरकी घटी, कौआ ।

घाँटी-पु० एक तरहका गीत जो चेतमें गमा जाता है ।

घाँह, घाँही-खी० ओर, तरफ ।

घा-खी० ओर, तरफ ।

घाह-खी० दे० 'घाव' ।

घाहल-वि० दे० 'घायल' ।

घाँह-खी० ओर, तरफ; दो वस्तुओंके बीचकी जगह,

संधि; मँवर; वार, दफा ।

घाँह-खी० दो उँगलियोंके बीचकी जगह, अंग्ठी; * घोखा;

दे० 'घाव' ।

घाड़-पु० दे० 'घाव' ।

घाड़घप-वि० दूसरेका माल-जमा चुपचाप बकार जाने-वाला; जिसका भेद गन्ती न लुके, भोटी खंड ।

घाग-पु० दे० 'घाव' ।

घाघ-पु० भोजपुरी बोलीके एक कवि जिनकी कृषिकर्म, नीति आदि संबंधी कहानिें बहुत प्रसिद्ध हैं; बहुत चालाक आदमी, काहवा; जादूगर; उल्लूकी जातिका एक पक्षी, घावस ।

घाघरा-पु० लहंगा; एक तरहका कबूतर । खी० सरजू नदी । -पलटन-खी० स्काटलैंडवासी गोरोंकी पलटन जिसके घुटने(निकर)का घेरा लहंगे जैसा होता है ।

घाघस-पु० घाघ पक्षी ।

घाघी-खी० मछली पकड़नेका बड़ा जाल ।

घाट-पु० [सं०] गरदनका पिछला भाग; वहां; नाव आदि-

से उतरनेका स्थान; [हिं०] नदी, झील आदिमें बह स्थान जहाँ लोग नहायें-धोयें, जानवर पानी पियें, धोबी कपड़ा धोयें; बड़ स्थान जहाँसे नदी हलकर पार की जायें; पहाड़-

पर बढ़ने या उसके पार जानेका रास्ता; पहाड़; नाव या पुलकी उतराई, महसूल; ओर, तरफ; अंगिकाका गला;

तलवारका बाइसे ऊपरका भाग; रंग-रंग, चाल-बाल; जी-की गिरी; लहंगा । * वि० न्यून, कम, थोड़ा । † खी० कपडा; कुकर्म । -कपटान-पु० बरगगाहका बड़ा अफसर ।

-बंही-खी० नाव खोलनेकी मनाही । -बाल-पु० घाटिया, गंगापुत्र । मु० -घाटका घासी पीना-जगह-जगह फिरना, भटकना; कई घर बदलना; बहुतेरोंकी बोधी

बनना । - धरना-राह लेकना । - बहाना-जित घाट या तालाब आदिपर प्रेतकर्म किया जा रहा हो वहाँ नहाकर तिलांजलि देना । - झारना-घाटका महसूल, उतराई न देना । (किसी)-छगना-कहीं ठिकाना लगाना, आश्रय मिलना ।

घाटा-पु० टोटा, घटी; नुकसान । खी० [सं०] घडा; नाव आदिते उतरनेका स्थान; गरदनके पीछेका भाग ।

घाटारीहू-पु० घाटका अवरोध, घाटबंदी, घाटसे किसीको उतरने न देना ।

घाटि-वि० कम, न्यून । खी० नीच कर्म; घुराई; कपट ।

घाटिका-खी० [सं०] गरदनका पिछला भाग ।

घाटिया-पु० घाटपर बैठकर खानापिथीसे दान लेनेवाला ब्राह्मण ।

घाटी-खी० दो पहाड़ोंके बीचकी नीची जमीन, मैदान; दर्रा; पहाड़का ढाल; महसूली वस्तुएँ ले जानेका माहापथ ।

घात-पु० [सं०] चोट, आघात, प्रहार; वध, हत्या; अहित; गुणनफल; बाण; जन्मनक्षत्रसे सातवाँ, सोलहवाँ या पचीसवाँ नक्षत्र; * टकर । -कूचकू-पु० एक मूत्ररोग । -तिथि-खी० अशुभ तिथि । -नक्षत्र-पु० अशुभ नक्षत्र । -बार-पु० अशुभ बार । -स्थान-पु० बधस्थान ।

घात-खी० कार्यमिदिका अच्छा अवसर, ताक; दौब-पैंच; छल, विश्वासघात; घात लगानेका स्थान; चाल; तौर-तरीका । मु०-पर चटना, -में आना-बशमें आना, दौबपर चटना । -में फिरना-ताकमें घूमना । -में बैठना-आक्रमण आदि करनेके लिए छिपकर बैठना । -में रहना-किसीके खिलाफ कोई काम करनेका मौका हुँदते रहना । -लगाना-अच्छा मौका मिलना । -लगाना-ताकमें बैठना, आक्रमण आदिके अवसरको खोज-में रहना । -(ते)बताना-चाल सिखाना, चालबाजी करना ।

घातक-वि० [सं०] घात करनेवाला, कत्तल करनेवाला, हत्यारा; हानिकार । पु० घात करनेवाला व्यक्ति; वह जो नुकसान पहुँचावे ।

घातन-वि० [सं०] वध करनेवाला । पु० मारना, वध करना । -स्थान-पु० बधस्थान ।

घातकी-वि० दे० 'घातक' ।

घाता-पु० वह चीज जो ग्राहकको तौल या गिनतीके ऊपर दी जाय, घाल ।

घाति-खी० [सं०] आघात, चोट; जरूम; पक्षियोंको फँसाना या मारना; विविधा फँसानेका जाल ।

घाटिया-वि० दे० 'घाती' ।

घाती-वि० घातमें रहनेवाला; छली, विश्वासघाती ।

घाती(तिरु)-वि० [सं०] घात करनेवाला; नाशक ।

घातुक-वि० [सं०] घातक, हिंस्र, मिथुर; हानिकारक ।

घाव-वि० [सं०] घात करने योग्य, बध्प ।

घान-पु० उतना अनाज गितना एक बार पीसनेके लिए चक्कीमें डाला जाय; उतना तेलहन गितना एक बार कंछू-में डाला जाय; उतनी चीज गितनी एक बार भाड़में भूनी या कढ़ाहमें छानी जाय; आघात, चोट ।

घाना*-सं० क्रि० मारना; नष्ट करना; पकड़ना । पु०

प्रहार; बुद्ध ।

घामी-खी० घान; डेर । -की सबारी-माखनकी एक कसरत ।

घाम-पु० धूप । -मिथि*-पु० सूर्य ।

घामक-वि० मूर्ख; आलसी; धूपका सताया हुआ (पशु) ।

घाव*-पु० दे० 'घाव' ।

घावक*-वि० नाश करनेवाला ।

घावक-वि० जो चोट खाये हो, जरूमी, क्षतयुक्त, आहत ।

घार-पु० [सं०] मिचन, जलमें तर करना । † खी० पानी-

के बहावसे बना हुआ गड्ढा ।

घारी-खी० सरक, बाहर, गोठ ।

घाल-पु० ग्राहकको तौल या गिनतीके ऊपर दी जानेवाली चीज, घुत्ता । मु० -न गिनना-कुछ न समझना ।

घालक-वि० मारनेवाला, नाश करनेवाला ।

घालकृता-खी० विनाशक्रिया ।

घालना-सं० क्रि० नाश करना; बिगाड़ना; फँकना; प्रहार

करना, मारना, चलाना-'घालनि छुरी प्रेमकी बानी'-

सूर०; (हथियार) डालना, रखना-'कनहुँ पालने धाकि

मुलावह'-रामा०; करना ।

घाल-भेल-वि० गड्ढा-मड्डा, खलत-मस्त (करना, होना) ।

घाला-वि० दे० 'घाल' ।

घालिका, घालिनी-खी० नाश करनेवाली, घातिनी ।

घाव-पु० चोट, आघात; ऋण, क्षत । मु० -खाना-आहत

होना । -देना-दुःख देना । -पर नमक छिड़कना-

दुःखकी हालतमें कष्ट देना । -पूजना, -भरना-घावका

भरकर स्वयं आना ।

घावरिया*-पु० जराह, घावका इलाज करनेवाला ।

घास-खी० एक तरहका रेशमी कपड़ा; ताम्रिये आदिमें लगाये जानेवाले पर्शोंके टुकड़े; [सं०] खाद्य पदार्थ; मैदान-

में उगनेवाला दूबकी जातिका चौपायोका एक चारा, चूण ।

-कुँद, -स्थान-पु० चरगाहा । -कूट-पु० चूणस्वरूप ।

-पात, -कूस-पु० [हिं०] खर-पतवार; कृत्रिमकट ।

मु० -काटना, -खोदना, -छीलना-तुच्छ, निरर्थक

काम करना । -खाना-पशुतुल्य होना; धार मूर्खताका

परिचय देना ।

घासलेट-पु० मिट्टीका लेह; तुच्छ वस्तु ।

घासलेटी-वि० निकट; निकम्मा; गदा ।

घासी*-खी० घास ।

घाह*-पु० दे० 'घाह' ।

घिज, घिड़ा-पु० धी ।

घिर्नाँवा-पु० धी रखनेका मिट्टीका पात्र ।

घिआ-पु० दे० 'घिया' ।

घिघी-खी० अधिक बरके कारण मुँहसे बोल या साफ आवाज न निकलना; रोते-रोते साँसका रुकने लगना,

हिचकी (बैथना) ।

घिघिबाना-अ० क्रि० रोते हुए बिनती करना, गिड़-

गिहाना ।

घिचपिच-खी० थोड़ी जगहमें अधिक चीजों, आदमियोंका जमा हो जाना, भीड़; जगहकी कमी; आगा-पीछा । वि०

मिला-जुका; अस्पष्ट, घिचपिच (खिलावट) ।

विश्वविद्यालय-अ० कि० आगा-पीछा करना, सिटपिना।

विन-खी० घुणा, नफरत।

विनाना-अ० कि० घुणा करना।

विनाचना-वि० दे० 'विनीना'।

विनीना-वि० पिन उपजानेवाला, दणित।

विनी-खी० दे० 'गिनी'; दे० 'विरनी'।

विनी-पु० दे० 'वी'।

विबरा-पु० वी।

विबरा-पु० वी रखनेका मिट्टीका बरतन, घृतपात्र।

विबा-पु० कन्दू; लौकी; नेनुआँ। -कस-पु० कन्दूकस।

-सरोई-मुरई-तोरई-सोरी-खी० एक बेल जिसके फल तरकारीके काम आते हैं; नेनुआँ; सतपुतिया।

विरत, विरित-पु० दे० 'वृत'।

विरना-अ० कि० बेरेमें आना, बेरा जाना; छाना, फैलना, (घटा विरना)।

विरनी-खी० कुपेंसे पानी खींचनेकी चरखी; रस्सी बटनेकी चरखी। पु० एक जलपक्षी; लोटन कबूतर।

विरवाना-स० कि० घेरनेका काम कराना; एकत्र कराना।

विराई-खी० घेरनेकी क्रिया; पशुओंको चरानेका काम या उमकी मजदूरी।

विराई-खी० मृगकी दुर्गम।

विराव-पु० घेरनेकी क्रिया या भाव; बेरा।

विरावना-स० कि० दे० 'विरवाना'।

विरिनि, विरिनी-खी० पु० दे० 'विरनी'।

विरिया-खी० शिकार घेरनेके लिए बनाया हुआ आद-मियोंका बेरा।

विरौरा-प० घूसका बिल।

विबा-पु० वी।

विसकना-अ० दे० 'खिसकना'।

विसविस-खी० देर, ढिलाई; अनिश्चय।

विसना-स० कि० किसी कबी चीजको किसी कबी चीजपर हम तरह रगड़ना कि उसका कुछ अंश कटना जाय (परवर, चरन विसना)। अ० कि० रगड़से कटना, छीरना।

विसा-विटा, विसा-पिसा-वि० जो बहुत दिनोंसे चला आ रहा हो, निरन्तरवृत्त, पुराना।

विसपिसा-खी० खी० घिसपिस; सट्टा-बट्टा।

विसवाना-स० कि० 'विसना'का प्रे०।

विसाई-खी० घिसनेकी क्रिया या भाव; घिसनेकी उजरत; घिसनेसे नष्ट हुआ अंश।

विसाना-स० कि० 'विसना'का प्रे०।

विसाव-पु० घिसनेका भाव, रगड़; छीज।

विसावट-खी० दे० 'विसाव'।

विमिआना-स० कि० घसीटना।

विसिरविसिर-खी० घिसपिस।

विस्समविस्सा-पु० बकसपका; लकड़ोंका एक खेल।

विस्सा-पु० रगड़; एक पतंगकी ओरका दूसरी पतंगकी ओरसे रगड़ खाना, बहा; कुत्तोंमें प्रतिस्पर्धीकी गरदनपर कुहनी और कलाईके बीचकी हड्डीकी रगड़ देना, रंदा।

वीब-खी० गरदन।

वीबना-स० कि० खींचना।

वी-पु० दूधकी चिकनाई जो उससे बहना कर ली गयी हो; गलाया हुआ मक्खन। -कुमार-कुमार-पु० दूध-कुमारी, बहारपाठा। -का खोरा-तपाये हुए चीनी बार। सु०-का कुप्पा लुँटना-बने धनी या रईसकी वस्तु होना; भारी हानि होना। -के चिराया या विचे जलना-धराद पूरी होना, बहुत आनंद होना। -के चिराया या विचे जलाना-मन-कामना पूरी होनेपर खुशी मनाना, उत्सव मनाना। -खिचड़ी होना-प्रगाढ़ भेग, गहरी दोस्ती होना।

वीबा-पु० कन्दू; लौकी।

वीबा पत्थर-पु० गौरा पत्थर।

वीसा-पु० रगड़।

वुँचवी-खी० एक बेल; उसका छाल या सफेद रंगका बीज, गुआ।

वुँचनी-खी० उवाला या भिगीकर तला हुआ चना, मटर आदि।

वुँचरारा-वि० दे० 'वुँचराला'।

वुँचराला-वि० बल खाया हुआ, छल्लेदार (किस), कुँचित (बहुवचन-वुँचराले-रूपमें ही प्रयुक्त)। [खी० 'वुँचराली'।]

वुँचरू-पु० चौंदी, पीतल आदिका गोछ, पोछा दाना जिसके भीतर कंकड़ी बरी होती है और छिलनेसे बजता है, मजीर; ऐसे दानोंका बना हुआ पौबोंमें पकानेका गहना; घटका; चनेके ऊपरका खोल। -बार-वि० जिसमें वुँचरू लगे हों। -बंद-वि० नाचने-गानेका पैसा करने-वाली (बेध्या)। -मोतिषा-पु० मोतिया बेलाका एक भेद। सु०-बौधना-नाचनेकी तैयार होना; मूलशिक्षामें शिष्य बनाना।

वुँचबारा, वुँचबारा-वि० दे० 'वुँचराला'।

वुँट, वुँटक-पु० [सं०] टखना, गुल्फ।

वुँटना-अ० कि० दे० 'घुटना'।

वुँटिक-पु० [सं०] कंदा।

वुँटिका-खी० [सं०] दे० 'घुट'।

वुँडी-खी० कपड़ेकी गोली जिसमें बटनका काम लेते हैं; कड़े, जोशन आदिकी गुहनेमें छोरपर बनी हुई गोळ, नोकदार गोंठ; एक बास। -दार-वि० जिसमें वुँडी बनी हो।

वुआ-पु० दे० 'वूआ'।

वुईया-खी० एक शाक, अरुई।

वुग्गी-खी० घोसी; पडुका।

वुग्घ-पु० उल्लू।

वुघरी, वुघुरी-खी० वुँवनी।

वुघुआ-पु० दे० 'वुघरू'।

वुघुआना-अ० कि० उल्लूका मोलना; उल्लूकी तरह मोलना; विह्वली तरह घुराना।

वुटकना-स० कि० वुँट-वुँट करके पीना; निगल जाना।

वुटकी-खी० गलेकी बह नली जिससे होकर आहार पेटमें पहुँचना है; घटका। सु०-लगना-प्राणका काँठगत होना।

वुटना-अ० कि० बोंटा जाना; पीसा जाना; घुल-मिल जाना, एक हो जाना; रगड़से चिकना होना; (सिर) मूँहा जाना; साँस रुकना, अटकना। सु० वुट-वुट करके जान

देवा वा मरना-पुल-पुलकर अस्स कट् सस्ते डुर मरना। सुटा हुआ-मुँहा हुआ, सफाचट्ट (सिर); बहुत चालाक, काश्ची।

शुद्धा-पु० जीप और दोंगेके बीचका जोड़। सु०-(वे) टेकना-पुटने जमीनसे लगाना; जमीनता स्वीकार करना, पराजय स्वीकार कर लेना।-(मैं) के बल चलना-बन्धका पैरों-पैरों चलना।-में सिर देना-सोचमें बैठना, चिंतित, उदास होना; कञ्जित होना।-से लगकर बैठना-हरदन पास रहना, सटे रहना।

शुद्धी-श्री० शुद्धा।

शुद्धा-पु० शुद्धनेतकका पाजामा, निकुर तंग मोहरीका पाजामा जो दलनोंसे कपर रहता है।

शुद्धः शुद्धः-पु० शुद्धा।

शुद्धाना-स० कि० पिसवाना; रगवाना; सिर मुँडाना।

शुटाई-श्री० धौदनेकी क्रिया या भाव; धौदनेकी उज्जरत।

शुटाना-स० कि० 'धौदने'का प्रे०।

शुटी-श्री० दे० 'पुट्टी'; घूँट।

शुद्धभन-शुद्धन, शुद्धवचन-अ० पुटनेकी बल (चलना)।

शुटी-श्री० नवजात शिशुकी पिछाची जानेवाली एक रेचकपाचक दवा। सु०-में पचना-स्वभावरूप होना; खमीर, बनावटमें होना।

शुष-‘धोड़ा’का समासमें व्यवहृत रूप।-चड़ा-वि० पोषसवार। पु० पोषसवारीका एक स्वरूप।-शुष्की-श्री० व्याहकी एक रीति, बरका धोषेपर चढ़कर बच्चे पर जाना; देहाती वा छोटे-मोटे बाजारमें रहनेवाली वध्वा जो प्रायः जाड़ेके दिनोंमें धोषेपर चढ़कर गाँव-गाँव घूमकर नाचती-गाती है; घुमनाल।-दौड़-श्री० धोषेकी दौड़; धोषेकी वह दौड़ जो शर्त या बाजी बटकर की जाय; धोषेकी मरदाना; वह नाच जिसका अग्रभाग धोषेके मुँह जैसा हो; बच्चोंकी दौड़, उछल-कूट। अ० बड़ी तेजीसे।-नाल-श्री० धोषेपर दोसी जानेवाली हल्की तोप।-बहल-पु०, -बहली-श्री० बह रथ जिसमें धोषे जोते जायें।-मक्खी-श्री० भूरे रंगकी बड़ी मक्खी जो धोषेकी काटती है।-मुँहा-वि० जिसका मुँह धोषेके जैसा अधिक लबा हो। पु० एक कल्पित जाति जिसका मुँह धोषेका और शेष शरीर मनुष्यका माना जाता है, किन्नर।-सवार-पु० अश्वारोही।-सार-श्री० दे० 'पुष्कसार'।-साल-श्री० अस्तबल, अश्वशाला।

शुषकना-स० कि० धमकीके स्वरमें ऊँटना, उपटकर बोलना।

शुषकी-श्री० शुषकनेकी क्रिया या भाव; धमकी मरी डाँट।

शुषला-पु० छोटा घोडा; धोषेकी शकलका चीनी त्वादिवा खिलौना।

शुषिया-श्री० दे० 'धोषिया'।

शुषकना-स० कि० दे० 'पुष्कना'।

शुण-पु० [स०] पुन।-क्षिपि-श्री० दे० 'पुणाक्षर'।

पुणाक्षर-पु० [स०] पुनोके मानेसे लकड़ीमें या दीमकके चाटनेसे पुस्तकमें बनी हुई लकीर।-व्याघ-पु० किसी बातका विना प्रयत्नके, संयोगवशात् हो जाना।

पुन-पु० अनाज, लकड़ी आदिमें लगनेवाला एक छोटा

कीड़ा। सु०-सड़ना-पुन लगी हुई लकड़ीके चूरका छम-छमकर गिरना।-लगना-अनाज या लकड़ीकी पुनका खाना; ऐसा रोग लगना जो भीतर-भीतर देहको खा जाय, वस्तुको धीरे-धीरे नष्ट कर डाले।

पुनपुना-पु० लकड़ी, दीम आदिका बना और हिलानेसे बजनेवाला एक खिलौना।

पुनना-अ० कि० लकड़ी, अनाज आदिकी पुन लगना, पुन द्वारा खाया जाना।

पुष्पा-वि० चुप्पा, अपने मनके भावोंकी गुप्त रखनेवाला।

पुष्पी-वि० श्री० अपने मनका भाव गुप्त रखनेवाली (श्री)।

श्री० चुप्पी।

पुष-वि० गहरा, घोर (इस शब्दका प्रयोग 'अंधेरापुष' रूपमें ही होता है)।

पुमैशना-अ० कि० दे० 'पुमचना'।

पुमक-वि० बहुत घूमनेवाला, सैर-सपाटेका शौकीन।

पुमटा-पु० सिरका चक्कर।

पुमचना-अ० कि० बादलोंका इधर-उधरसे आकर जमा होना, जाना।

पुमचाना-अ० कि० दे० 'पुमचना'।

पुमची-श्री० सिरका चक्कर खाना; परिक्रमा।

पुमना-वि० घूमनेवाला, घुमक।

पुमनी-वि० श्री० घूमनेवाली (केवल समासमें व्यवहृत-‘वरपुमनी’, ‘मंलापुमनी’)। श्री० पशुओंका, एक रोग, घुमड़ी।

पुमरना-अ० कि० दे० 'पुमचना'; गदगड़ाना, बहुत जोरसे बजना।

पुमराना-अ० कि० दे० 'पुमरना'।

पुमरी-श्री० दे० 'पुमरी'; पानीका भँवर; पशुओंका एक रोग, घुमनी।

पुमाना-स० कि० फिराना, चक्कर देना; भीटना; घेंटना।

पुमाच-पु० घूमने, घूमनेका भाव; चक्कर, फेरा; उननी जमीन जितनी एक जोड़ी बैल दिनभरमें जोत सकें; रास्तेका मोड़।-घार-वि० घेचदार, चक्करदार।

पुमेरी-श्री० वेधुष होनेकी स्थिति, बेधोड़ी-'निमि-धीस पुमेरिनि ओ'रि पर वी'-धन०।

पुमरना-अ० कि० दे० 'पुमरना'।

पुर्-‘पूर’का ममासगत रूप।-बिनी-वि० पूरपर फेंके हुए दाने चुननेवाला; गलीमें पड़ी हुई दूदी-फुटी चीजें इकट्ठी करनेवाला।-बिनिवा-श्री० पूरपर फेंके हुए दाने या सड़क-गलीमें पड़ी दूदी-फुटी चीजें इकट्ठी करना।

पुर्कना-स० कि० दे० 'पुर्कना'।

पुर्का-पु० चौपायोंका एक रोग।

पुर्-पुर्-पु० गलेमें कफमय होनेपर साँस लेनेमें निकलनेवाली आवाज; चिल्ली, सुआ आदिके गलेसे निकलनेवाली आवाज।

पुर्सुरा-पु० गलेमें होनेवाला एक तरहका फोड़ा, कठमाळा।

पुर्सुरा-अ० कि० गलेमें 'पुर्-पुर्' आवाज निकालना।

पुर्सुराहट-श्री० 'पुर्-पुर्' आवाज निकालनेकी क्रिया या भाव।

सुरज-पु० [सं०] एक विशेष प्रकारका शब्द, 'पुर-पुर' आवाज ।

सुरमा-अ० कि० बजना- 'पुरत निशान सूरंग संख धुनि मेरि शोख सहनाई'-सूर; कसना- 'पुरि आसकी पाछ उसास-गरे जु परो'-घन० । दे० 'बुलना' ।

सुराना-अ० कि० छाना, भर जाना ।

सुरिका-खी० [सं०] खरीटा ।

सुरी-खी० [सं०] सुरका बृजन ।

सुरहरी, **सुरहुरी**-खी० जंगलमें दोरोंके चलनेसे बना हुआ रास्ता; पगहंडी ।

सुर्घुर-पु० [सं०] 'पुर-पुर'की आवाज; यमकोट ।

सुर्घुरक-पु०, **सुर्घुरिका**-खी० [सं०] 'गङ्ग-गङ्ग' या 'कल-कल' शब्द ।

सुर्मिल-वि० दे० 'घृणित' ।

सुर्दबा-पु० पशुओंका एक रोग ।

सुर्लच-पु० [सं०] एक कदन्न, गंधधुका ।

सुलबुलारब-पु० [सं०] एक तरहका कतार ।

सुलना-अ० कि० किसी तरह बस्तुमें हल हो जाना, गल-कर मिल जाना, गलना; पिघलना, एककर नरम होना; (रोगादिमें) मूखना, क्षीण होना; व्यतीत होना । **सुल-सुलकर** काँटा होना-बहुत दुबका हो जाना । **सुल-सुलकर** जान देना, मरना-रोग-शोकमें क्रमशः क्षीमकर, मूलकर, बहुत दिनोंतक कष्ट उठाकर मरना । **सुल-मिल-कर**-प्यार, सुहृद्भक्तके साथ, हिल-मिलकर । **सुना हुआ**-मृत पक्षा हुआ; विप्लविला; बूझा ।

सुलधाना-अ० कि० 'धूलाना' या 'धोलना'का प्रे० ।

धूलाना-सं० कि० गलाना, पिघलाना; नरम, पिघपिघा करना; चुमलाना, (सुरमा, काजल) लगाना, रचाना; विनाना ।

धुलावट-खी० नरमी, पिघपिघापन; काजल, सुरमेकी शोभा ।

धुवा-पु० दे० 'धुआ' ।

धुवना-अ० कि० याद होना ।

धुषित, **धुष्ट**-वि० [सं०] त्रिस्तरी घोषणा की गयी हो, शम्भित ।

धुष्ट-पु० [सं०] शकट, गाड़ी ।

धुसना-अ० कि० भीतर जाना, दाखिल होना; बलपूर्वक प्रवेश करना; घँसाना; किसी काममें दखल देना; दूर हो जाना; ध्यान देना ।

धुस-पैठ-खी० पट्टेच, रसाई ।

धुसवाना-सं० कि० धुसानेका काम कराना ।

धुसाना-सं० कि० भीतर पहुँचाना, दाखिल करना; घँसाना ।

धुसेबना-सं० कि० भीतर पहुँचाना; घँसाना; ठूसना ।

धुँघट-पु० साड़ी, दुपट्टे या चादरका किनारा जो खी लम्बावश परदेके लिए मुँहपर खींच लेती है, अर्धगुंठन; बाहरी दरवाजेके पीछेकी दीवार जो आँगनके परदेके लिए बनायी जाती है, गुलाम-गर्दिस; घोड़ेकी आँखपर डालनेका परदा, अँधेरी । **धुँघ**-अडामा, -उलटना-मुँह खोलनेके लिए धुँघटकी ऊपर उठाना, परदा हटाना । - **करना**, -**काटना**, -**निकालना**-साड़ी-दुपट्टे आदिसे मुँहकी टक

लेना, परदा करना ।

धुँघर-पु० बालोंमें पका हुआ छका । -**काका**-वि० धुँघ-राका (वाक) ।

धुँघरी-खी० धुँघर, नूपुर ।

धुँघा-पु० धुँघा ।

धुँट-पु० जल या किसी पेय पदार्थकी वह मात्रा जो एक बारमें गलेके नीचे उतारी जा सके; किसी तरह पदार्थकी थोड़ी मात्रा; एक तरहका पहाड़ी टट्टा; एक पेड़, कठनेर । **धुँ**-फँकना-पीनेके पहले पेय पदार्थकी एक मात्रा, नजर आदिसे थपनेके लिए, जमीनपर गिरा देना ।

धुँटना-सं० कि० किसी तरह पदार्थकी गलेके नीचे उतारना ।

धुँटा-पु० पैरके बीचका जोड़ ।

धुँटी-खी० बच्चोंकी एक दवा ।

धुँस-खी० दे० 'धूस' ।

धुँसा-पु० प्रहारके लिए बँधी हुई मुट्ठी, मुका; ऐसी मुट्ठीका प्रहार । -**(से)बाजी**-खी० धूसीकी लड़ाई । **धुँ**-**(सँ)का क्या उधार** ?-मारका बदला तुरत लेना, मारनेवालेकी तुरत मारना चाहिये ।

धुँचा-पु० कंस, सरकडे आदिका रत्न जैसा फूल; कीचड़में रहनेवाला एक कीड़ा; चूल् अटकानेका छेद ।

धुक-पु० [सं०] उल्ट, धुग्गू । [खी० 'धुकी']-वादिनी-खी० गंगा ।

धुका-पु० सकेर मुहकी बाँस आदिकी टोकरी ।

धुकारि-पु० [सं०] कौआ ।

धुध-पु० युद्धमें मिरके रक्षार्थ पहनी जानेवाली छोटे या पीतलकी बनी टोपी, शिरकाण; † धूज ।

धुधी-खी० धैली; धुधवी; पेंडुकी ।

धुधु-पु० दे० 'धुग्गू' ।

धुटना-सं० कि० दे० 'धुटना' ।

धुठन-अ० धुटनोके बल ।

धुठा-पु० दे० 'धूरा' ।

धूम-खी० धुमाव, मोक्ष; वेरा । -**धुमारा**-वि० घेरदार; मतवाला; उनी टा । -**धुमाव**-वि० चकरदार ।

धूमना-अ० कि० फिरना, चकर खाना; एक धुरीके चारों ओर चकर खाना; भ्रमण करना; मुडना; लौटना; * उन्मत्त होना ।

धूमनि-खी० धेरा ।

धुमरा-वि० नशीला, मदयुक्त-'किसरि खोरि धुमरे नैना विधुरी अलक बदन रंग भीनी'-घन० ।

धूर-पु० दे० 'धूरा' ।

धूरघार-खी० दे० 'धूराघारी' ।

धूरना-अ० कि० आँसे गडकार, तीखी निगाहने देखना; काम या क्रोधरती दृष्टिने देखना ।

धूरा-पु० कृश-करकट फँकनेकी जगह; कूड़े-करकटका ढेर ।

धूराघारी-खी० धूरनेकी क्रिया, धूरना ।

धूर्ण-पु० [सं०] धूमना, चकर खाना । वि० धूमता हुआ; आत । -**धायु**-खी० बवडर ।

धूर्णन-पु०, **धूर्णना**-खी० [सं०] धूमना, चकर खाना; भ्रमण; धुमाना ।

धूर्णि-खी० [सं०] धूर्णन ।

वृषित-वि० [सं०] वृषता हुआ, अग्रित; वृषावा हुआ ।

-जल-पु० अंबर ।-बाल-पु० बवंडर ।

वृष-श्री० वह धन वा वस्तु जो अपने अनुकूल, पर अनु-
चित, अवैध कार्य करनेके लिए किसीकी दी जाय, रिशत
(खाना, देना, छेना) । पु० एक तरहका बड़ा चूहा ।

-खोद-वि० धूस खानेवाला ।

वृषा-श्री० [सं०] विन, नफरत; भीमस्व रसका खावी
भास; दया, कष्ट ।-बाल-पु० कुम्मांड ।

वृषालु-वि० [सं०] दयालु ।

वृषास्पद-वि० [सं०] वृषा करने योग्य ।

वृषि-पु० [सं०] किरण; ज्वाला; जल; तरंग; सूर्य; क्रोध ।
वि० चमकदार; अग्रिम ।-विधि-पु० सूर्य । श्री० गंगा ।

वृषित-वि० [सं०] वृषाका पात्र, वृषा करने योग्य;
निवित, तिरस्कृत, गहिँत ।

वृषी(विन्)-वि० [सं०] वृषा करनेवाला; दयालु; दीप्त ।

वृषव-वि० [सं०] वृषा करने योग्य, वृषापात्र ।

वृष-पु० [सं०] धी; जल । वि० सिंचित; तर किया हुआ;
आलोकित ।-करंज-पु० एक तरहका करंज वृक्ष ।

-कुमारी-श्री० धौकुआर ।-कुम्भा-श्री० धौकी नदी;

धौकी धारा ।-केश-धीधिति-पु० अग्नि ।-धारा-

श्री० धौकी धारा; एक पुराणवर्णित नदी ।-घ-वि० धी

पीनेवाला । पु० आन्ध्र नामक पितृगण ।-पर्ण-, पर्णक-

-पु० करंज ।-धूर-, धूर्णक-, धूर-पु० एक मिठाई,

वेद ।-प्रसीक-, धोनि-पु० अग्नि ।-प्रमेह-पु० प्रमेह

रोगका एक भेद ।-मंड-पु० धी तपानेसे निकलनेवाला

मेल ।-मंडा-श्री० काकमाची; कौवाठोड़ी ।-लेखनी-

श्री० काठका चिमचा ।

वृषाक-वि० [सं०] धी चुपड़ा हुआ ।

वृषापी-श्री० [सं०] एक अस्त्र; शूबा ।

वृषाध-पु० [सं०] धनयुक्त अश्व; अग्नि ।

वृषाधि(स्)-पु० [सं०] अग्नि ।

वृषाहवन्-पु० [सं०] अग्नि ।

वृषावृत्ति-श्री० [सं०] धौकी आवृत्ति ।

वृषी(विन्)-वि० [सं०] धनयुक्त, जिममें धी हो ।

वृषेली-श्री० [सं०] एक कौश, तैलपायिका ।

वृषोर्दक-पु० [सं०] धौकी कुप्पी ।

वृषोद-पु० [सं०] धौका समुद्र (पु०) ।

वृष्ट-वि० [सं०] पिसा हुआ ।

वृष्टि-श्री० [सं०] वर्षण, पिसाई; स्पर्द्धा । पु० शूकर ।

वृष्टी-श्री० [सं०] शूकरी ।

वृष्टिला-श्री० [सं०] वृष्टिपर्णा ।

वृष्टि-पु० [सं०] शूकर ।

वृष्ट, वृष्टा-पु० दे० 'वृष्टा' ।

वृष्टा-पु० सुअरका बच्चा ।

वृष्टी-श्री० चना आदिका बौंछ जिसके भीतर दाना रहता
है, वैँडी-खेतके चने हरी-पीली वैँटियोंसे ढक गये-
अमर; एक प्रकारका पक्षी ।

वृष्टा-पु० गलेका एक रोग, मलमल ।

वृष्टी-श्री० दे० 'वृष्टी-श्री०' ।

वृष्ट-पु० वृष्ट; फैलाव; वृष्टे-फैलनेकी क्रिया ।-वार-पु०

वृष्टा, सब ओरसे जमना, इकट्ठा होना (बादलोंका वृष्ट-
वार); कार्यविशेषके लिए अनुनय-विनय, अति आग्रह ।

-वार-वि० बड़े घेरेवाला; चौड़ा ।

वृष्टा-सं० कि० आवेष्टित करना; अवरोध करना; रोकना;
छेकना; हँचना; किसी कामके लिए किसीके यहाँ बार-बार
जाना; चराना (दोरे); प्रसन्न करना ।

वृष्टा-पु० विस्तार, फैलाव; परिधिका मान; वृष्टेवाली
चीज, दीवार आदि; पिरा हुआ स्थान; अवरोध ।

वृष्टाई-श्री० दे० 'वृष्टाई' ।

वृष्टाव-पु० दे० 'वृष्टाव' ।

वृष्ट-पु० वेद, धी, चीनीके योगसे बनी हुई एक मिठाई ।

वृष्टा-पु० दे० 'वृष्टा' ।

वृष्टा-श्री० धनसे निकलती हुई धूधकी धार; ताजा धूधके
ऊपरका मक्खन; इस तरहका मक्खन एकत्र करनेका काम;
चोट; प्रहार; ओर, दिशा ।

वृष्ट, वृष्ट-पु० बदनामी; चुगली ।

वृष्टा-पु० घडा, कलसा ।

वृष्टा-वि० धावल, आहत-वृष्टन लगे समरमें वृष्टा-
छत्र ।

वृष्ट-पु० [सं०] एक जानवर; बीचकी जगह; एक विधिया ।

वृष्टा-पु० शंखकी आतिका एक बीड़ा, शयुक; गेहूँकी
बालका कौश जिसमें दाना रहता है । वि० मूर्ख, बेवकूफ;
खोखला, निम्सार ।-बर्त्त-वि० महामूर्ख ।

वृष्टा-पु० वह बैल जिसके सींग नीचेकी तरफ मुड़े हों ।

वृष्टा-पु० धीर, पुच्छा; दे० 'वृष्टा' ।

वृष्टी-श्री० वह गाय जिसके सींग नीचेकी तरफ मुड़े हों ।

वृष्टा-पु० दे० 'धौ सल' ।

वृष्टना-सं० कि० वृष्टना; गलेको इस तरह दवाना कि
नॉस रुक जाय, हजम करना; रगड़ना, पीमना; रटना,
खूब पटना ।

वृष्टा, वृष्टी-श्री० [सं०] एक क्षुप; वृष्ट; शृगाल-कोकि;
सुपारीका पेड़ ।

वृष्टना-सं० कि० भोंकना, चुनेटना; चली सिलाई करना ।

वृष्टना-पु० वृष्टापर वृष्टादिका बना हुआ पक्षीके रहने-
का स्थान, नीड़, खोता ।

वृष्टना-पु० दे० 'धौ सल' ।

वृष्टना-सं० कि० बाद करनेके लिए बार-बार पटना,
रटना ।

वृष्टना, वृष्टना-सं० कि० 'वृष्टना'का प्रे० ।

वृष्टा-पु० एक छोटा बीड़ा ।

वृष्टी-श्री० दे० 'पुच्छी' ।

वृष्ट-पु० [सं०] दे० 'धौटक' ।

वृष्ट-पु० [सं०] धौड़ा ।-वृष्ट-पु० किन्नरोंका एक भेद ।

वृष्टारि-पु० [सं०] भैंसा ।

वृष्टना-सं० कि० रगड़कर बारीक करना (भौंग); रगड़कर
चिकना करना (तस्ती), कागज इत्यादि); हड्ड करना;
मूँटना (हाल); अभ्यास करना; वृष्टना । पु० वृष्टनेका
औजार ।

वृष्टनी-श्री० वृष्टनेका छोटा औजार ।

वृष्टना-सं० कि० वृष्टनेकी क्रिया कराना ।

घोटा-पु० घोटनेका साधन; ऋँग घोटनेका सोंटा; पुटा हुआ चमकीला कपड़ा; पशुओंको दवा आदि पिलानेका बँसका चोंगा; डॉक चमकीला करनेका एक औजार; घोटनेका काम; इजाजत।

घोटाई-खी० घोटनेकी क्रिया या भाव; घोटनेकी उजरत।

घोटाका-पु० घपला; गोलमाल; गबबर।

घोटिका, घोटी-खी० [सं०] घोड़ी।

घोट्टी-वि० घोटनेवाला।

घोटाई-पु० गोट, गोष्ट।

घोड़-घोड़ा का समानमें व्यवहृत रूप।-**चड़ा-वि०**, पु० दे० 'घुड़चड़ा'।-**चड़ी-खी०** दे० घुड़चड़ी।-**दौड़-खी०** दे० 'घुड़दौड़'।-**सुह्राँ-वि०**, पु० दे० 'घुड़सुहा'।

-**बच-पु०** खुरासानी बन्का एक भेद जो घोड़ोंकी खिलाया जाता है।-**राई-खी०** बड़े दानेकी राई जो घोड़ोंकी खिलायी जाती है।-**रासन-पु०** रासा नामक ओषधिका एक भेद।-**रोज-पु०** एक तरहकी नीलगाय जो बहुत तेज दौड़ती है।-**साळ-खी०** दे० 'घुड़साळ'।

घोड़ा-पु० एक चौपाया जो गधेसे बड़ा होता है और सवारी आदिके काम आता है, अथ, तुरंग; बंदूक, तमबेका खटका जिसे दबानेसे वह दगता है; शतरंजका एक मोहरा; गैदी; छत्रके नीचे दीवारसे लगाया जानेवाला लकड़ी आदिका टेंटा।-**करंज-पु०** एक तरहका करंज।-**गाड़ी-खी०** वह गाड़ी जिसमें घोड़ा या घोड़े जोने जायें, पालकी गाड़ी; ढाकने पैंने दोनेवाली गाड़ी।-**घोली-खी०** एक बनीचधि।

-**नम-खी०** एहीमें ऊपरकी ओर जानेवाली मोटी नस।

-**नीम-खी०** बकाइन।-**बच-पु०** दे० 'घोड़बच'।

-**बस्त-पु०** एक तरहका बँस।-**बेल-खी०** एक लता जिसकी जड़को विलाईकंद कहते हैं। **मु०-उढ़ाना-घोड़ेकी** सरपट दौड़ाना।-**कसना-घोड़ेपर** जिन या चारजामा कसना।-**डालना-फँकना-घोड़ेको** किमी दिशामें तेजीमें दौड़ाना।-**फेरना-घोड़ेकी** मथाना, सवारी या गाड़ीके लायक बनाना।-**बेचकर मोना-बेफिक्र** होकर सीना, खुराँटे मरना।-**(डे)जोड़ेकी** लैर-दूल्हा-दुल्हन और उनकी सवारी सज्जश रहें।-**पर चढ़ आना-घोटनेकी** जल्दी मचाना।

घोड़िया-खी० छोटी घोड़ी; छोटा दोटा; कपड़े रँगनेकी लैंटी।

घोड़ी-खी० घोड़ेकी माथा; पाटा; ब्याडकी एक रन्म;

ब्याहमें बरपसकी ओरसे गाये जानेवाले गीत; जुलाहीका एक औजार; घोषियोंकी अलगनी; पानीके धरे रखनेके लिए खंभोंके सहारे लगायी हुई पट्टी। **मु०-चड़ना-ब्याहमें** दूल्हा घोड़ीपर चढ़कर दुल्हिनके घर जाना।

घोणस, घोनस-पु० [सं०] एक तरहका सोंप।

घोणा-खी० [सं०] नाक; घोड़े या शूकरका धूधन; उल्लूकी चोंच; एक पौधा जिसे सेंपनेमें छीक आती है।

घोणी(गिन)-पु० [सं०] शूकर।

घोर-खी० ध्वनि, शब्द। **वि०** [सं०] डरावना, भयानक;

घन, निषिद्ध; गाढ़ा, गहरा; कठिन, कठोर; भारी; कुरा।

पु० शिष्य; विषय आतंक; जाफरान; पूजनीयता।-**घुण्ड-**

-**घुण्ड-पु०** पीतल; काँसा।-**घोरतर-पु०** शिव।

-**बूँह-वि०** डरावने शौँतेवाला।-**बूँहन-वि०** डरावना,

विकराल। **पु०** उल्लू।-**रासन, -रासी(सिन्), -वासन,**

-**वासी(सिन्)-पु०** शृगाल।-**रूप-पु०** शिव।

बोरना-सं० कि० धोलना। अ० कि० गर्जन करना।

घोरा-वि०, खी० [सं०] घोर। **खी०** रात; अंधण, बिना

आदि नक्षत्रोंमें बुझी गति। * **पु०** घोड़ा; खँटा; दोडा।

घोराकार, घोराकृति-वि० [सं०] डरावना।

घोरिया-खी० दे० 'घोड़िया'।

घोरिया-पु० बच्चोंके खेलनेका मिट्टीका बना घोड़ा; घोड़े जैसे मुँहवाला लैंटा।

घोल-पु० [सं०] तक; बिना पानी डाले मधा हुआ दही,

लस्सी; घोलकर बनायी हुई चीज।

घोलना-सं० कि० किमी चीजको पानी आदिमें इस तरह मिलाना कि वह उसमें घुल जाय। **मु०** **घोलकर** पी जाना-पारंगन हो जाना; निगल जाना।

घोला-पु० घोलकर बनायी हुई चीज (अफीम आदि);

खेतमें पानी ले जानेकी नाली। **मु०** **(ले)में डालना-**

खड़ाईमें डालना, उमखनमें डाल रखना।

घोलुवा-वि० घोलकर बनाया हुआ। **पु०** घोली हुई

पतली दवा; रसा, शोरवा; घोली हुई अफीम।

घोष-पु० [सं०] ध्वनि; घोषणा; अफवाह; बादलोंकी गरज,

अगौरोंका गँव, बस्ती; चरवाहा; ब्याला; मच्छर; कौमा;

बर्णोंके उच्चारणके बाह्य प्रयत्नोंमेंसे एक; तड़; तालका एक भेद; बगाली कायस्थोंकी एक उपाधि; शिव; * गोशाला।

घोषक-पु० [मं०] घोषणा, मुनादी करनेवाला।

घोषण-पु०, घोषणा-खी० [मं०] औरसे बोलकर जताना,

मुनादी या एलान करना; ध्वनि।

घोषयित्व-पु० [सं०] घोषणा करनेवाला; चारण; कोकिल।

घोषवती-खी० [सं०] वीणा।

घोषा-खी० [सं०] सौफ; काकड़ासीनी।

घोषाल-पु० बगाली अगौरों और कायस्थोंकी एक उपाधि।

घोसना-खी० दे० 'घोषणा'। **सं०** कि० घोषित करना,

उच्चारण करना।

घोसी-पु० अगौर; मुसलमान अगौर।

घौर, घौरा-पु० दे० 'घौर'।

घौड़-पु० फलोंका गुच्छा।

घौर, घौरा-पु० दे० 'घौड़'।

घौरी-खी० दे० 'घौर'।-**काडु** नहीं केरा कै घौरी।

घन-वि० [सं०] नष्ट करनेवाला (केवल समासांतमें-

विषय)। **खी०** 'घ्नी'।

घ्राण-पु० [सं०] गन्ध; सूँघना; सूँघनेकी शक्ति; नाक।

-**घुण्ड(सु)-वि०** अंधा; सूँघकर किसी वस्तुका ज्ञान

प्राप्त करनेवाला (पशु)।-**तर्पण-वि०** सुगंधयुक्त।

प्राणेंद्रियको तृप्त करनेवाला। **पु०** सुगन्ध।-**पाक-पु०**

नासिका एक रोग।-**पुटक-पु०** नासाग्रे।

घ्राणेंद्रिय-खी० [सं०] नाक।

घ्रात-वि० [सं०] सूँघा हुआ।

घ्रातव्य-वि० [सं०] सूँघने योग्य।

घ्राता(सु)-वि० [सं०] सूँघनेवाला।

घ्राति-खी० [मं०] घ्राण।

श्रेय-वि० [सं०] सूँघने योग्य।

क

क-देवनागरी वर्णमालाके कवर्णका अंतिम वर्ण । इसका उच्चारणस्वान कंड और नासिका है ।

क-पु० [सं०] इन्द्रिय-विषय; विषयेच्छा; शिष्यका एक नाम (शेरव) ।

ख

ख-देवनागरी वर्णमालामें चवर्णका पहला वर्ण । उच्चारण-स्वान तात्तु ।

खंख-वि० समूचा । पु० उत्तर भारतका एक उत्सव ।

खंडुर-पु० [सं०] रथ; सवारी; दृष्ट ।

खंक्रम, खंक्रमण-पु० [सं०] घूमना; टहलना; कूदना; टहलनेका स्थान ।

खंक्रम-खी० [सं०] घूमना; टहलना ।

खंक्रमिल-वि० [सं०] घूमा या चकर खाया हुआ ।

खंरा-वि० [सं०] स्वस्थ; सुंदर; चतुर । पु० [का०] डफकी शकलका एक बाजा; गंजीफकी एक बाजी; सितारका एक दूर । खी० पतंग; बह पतंग जिसमें दिवा बालकर उड़ाते हैं । -नबाज़-पु० चंग बजानेवाला । मु०-उमहना, -खनना-जोर होना । -पर खदाना-मिजाज बढ़ा देना; अपने अनुकूल बनाना ।

खंराना-स० कि० खीचना, कसना ।

खंराला-खी० एक रागिनी ।

खंरा-वि० स्वस्थ; नरींग; निर्मल; भला ।

खंरु-पु० दे० 'खंगुल' ।

खंगुल-पु० विचियों, खासकर शिकारी विचियोंका पजा; पकड़, काबू । मु०-में खँसना-पकड़में आना ।

खंगेर, खंगेरी-खी० फूल रखनेकी डलिया; छिछली टोकरी; मशक; टोकरीका रस्तीसे बनाया हुआ झूल ।

खंगेरा-पु० दे० 'खंगेर' ।

खंगेरिङ-पु०, खंगेरिङ्गा-खी० [सं०] टोकरी, डलिया ।

खंगेखी-खी० दे० 'खंगेरी' ।

खंख-पु० [सं०] टोकरी, डलिया; पाँच अँगुलकी एक माप ।

* खी० खीच-‘मरते दम जलमें पड़ा, तब न बोरी खंच’-कबीर ।

खंखक-वि० [सं०] उछलने, कूदनेवाला; गमनशील; कोपने, झिलनेवाला ।

खंखमाना-अ० कि० नुननुनाना ।

खंचरी-खी० [सं०] अमरी; एक अर्णवृत्त; एक मात्रिक छंद; चाचरि ।

खंचरी(रिच), खंचरीक-पु० [सं०] अमर ।

खंचरीकावली-खी० [सं०] अमरीका समूह; एक अर्णवृत्त ।

खंचल-वि० [सं०] एक अगह; एक स्थितिमें न रहनेवाला, अस्थिर; डौंवाडोल; कंपित; नुलनुला, चपक; झोला; कासुक । पु० बायु; प्रेमी; कामी । -खिच-वि० अस्थिरचित ।

खंचलता-खी० [सं०] अस्थिरता; चपलता ।

खंचलताई-खी० दे० 'चंचलता' ।

खंचला-खी० [सं०] विजली; लक्ष्मी; पिप्पली ।

खंचलाई-खी० चंचलता ।

खंखालख-पु० [सं०] एक सुगंधित द्रव्य ।

खंखा-खी० [सं०] वेत आदिकी बनी डलिया; चढाई ।

-पुरुष-पु० विचियों आदिकी डरानेके लिए बनाया जानेवाला पुआल आदिका पुतला; तुच्छ व्यक्ति ।

खंखु-पु० [सं०] परंठ; बरसातमें होनेवाला एक साग, खेंच; हिरन । खी० खेंच । वि० चतुर; प्रसिद्ध । -पन्न-पु० एक साग । -पुट-पु० पक्षीकी बंद चौंच । -प्रवेख-पु० किसी विषयका अल्प ज्ञान । -ग्रहार-पु० खेंचसे मारना ।

-भृत्-पु० पक्षी । -सुचि-पु० कारंठव पक्षी ।

खंखुका-खी० [सं०] खेंच ।

खंखुमाख(मख)-पु० [सं०] पक्षी ।

खंखुर-वि० [सं०] दक्ष, चतुर ।

खंख-खी० [सं०] खेंच ।

खेंचोरना-स० कि० दाँतोंसे दवाकर चूसना ।

खंड-वि० चतुर; चालाक; उस्ताद ।

खंड-वि० [सं०] तीक्ष्ण; उग्र; तीव्र; अग्नि रोषशील; गरम; हानिकर; जिसका किंवाग्रचर्म कटा हो । पु० उष्णता, गरमी; क्रोध; मुंड दैत्यका भाई; शिष्य; स्वंद; इमलीका पेड़ । -कर-दीधिति, -आनु-पु० सूर्य । -कौशिक-पु० एक ऋषि; संस्कृतका एक प्रसिद्ध नाटक । -घंटा-खी० दुर्गा । -तुंडक-पु० गहडका एक पुष्प ।

-नायिका-खी० दुर्गा । -मुंड-पु० शुभ-निशुभके दो मेनापति जो दुर्गाके हाथों मारे गये । -मुंडा-खी० चामुंडा देवी । -मुंडी-खी० एक तत्रवर्णि देवी । -रश्मि-पु० सूर्य । -रश्मिका-खी० अष्ट-नायिकाओंके पूजनेसे प्राप्त होनेवाली सिद्धि (दे० 'अष्ट-नायिका') । -रूपा-खी० एक देवी । -विक्रम-वि० प्रचंड पराक्रमवाला, प्रतापी । -वृत्ति-वि० हठी; विद्रोही । -शक्ति-वि० प्रचंड शक्ति, पराक्रमवाला पु० बलिकी सेनाका एक दानव । -शील-वि० कामी ।

खंडता-खी० [सं०] उग्रता; तीक्ष्णता ।

खंडवती-खी० [सं०] दुर्गा; ताविकोंकी अष्टनायिकाओंमेंसे एक ।

खंडाशु-पु० [सं०] सूर्य ।

खंडा-वि० खी० [सं०] उग्र स्वभाववाली, कोपनशील (खी०) खी० दुर्गा; अष्टनायिकाओंमेंसे एक; एक गहद्रव्य; सौक; सोबा; सफेद द्रव ।

खंडाई-खी० उतावली; जोर-जबर्दस्ती ।

खंडात-पु० [सं०] करवीर ।

खंडातक-पु० [सं०] लहंगा; सावा ।

खंडा-पु० [सं०] दे० 'खंडाल' । वि० क्रूरकर्म । -कंद-पु० एक तरहका कंद । -पक्षी (शिर) -पु० कौआ । -बल्लकी, -बीजा-खी० एक तरहका तंबूरा या

विकारा ।

चंडाकिका-खी [सं०] दुर्गा; चंडालवीणा; एक पेड़ ।

चंडाकिनी-खी [सं०] चंडाल, वृद्ध स्त्री ।

चंडाबल-पुं० सेनाका दृढभाग; वीर सैनिक; पहरेदार ।

चंडि, चंडिका-खी [सं०] दुर्गा ।

चंडिक-वि० [सं०] तेज स्वरालास; जिसका किमाम्रचर्म कटा हो । -चंड-पुं० शिव ।

चंडिमा(मन्)-खी [सं०] रोष; निष्ठुरता; ताप; जोष ।

चंडिल-पुं० [सं०] वस्त्र; हज्जाम; बनुना साग ।

चंडी-खी [सं०] दुर्गा; उग्र स्वभावकी, कर्मशा स्त्री ।

-**कुसुम-पुं०** छाल कनेर । -**पति-पुं०** शिव ।

चंडीश-पुं० [सं०] शिव ।

चंडू-पुं० [सं०] चूड़ा; एक छोटी बंदर ।

चंडू-पुं० अकीमका किनाम जिते नरोके लिए तंबाकूकी

तरह पीते हैं । -**खाना-पुं०** चंडू पीनेका स्थान । -**बाज़**

-**पुं०** चंडू पीनेवाला, जिसे चंडू पीनेकी उत हो । **मुं०**

छानेकी गड़-झूठी, बेतुकी बात ।

चंडूल-पुं० एक विधिया; अर्ध शकलका आदमी ।

चंडेबंद-पुं० [सं०] शिवका एक रक्तवर्ण रूप ।

चंडोघ्रा-खी [सं०] दुर्गाकी एक शक्ति या नायिका ।

चंडोल-पुं० एक तरहकी पालकी; मिट्टीका एक खिलौना;

चौपड़ा ।

चंद-पुं० [सं०] चंद्रमा; कपूर; पृथ्वीराजके दरबारी कवि चंद्रबरदाई जो पृथ्वीराजतामोके रचयिता माने जाते हैं ।

-**चूट-पुं०** दे० 'चंद्रचूट' । -**चूर-पुं०** दे० 'चंद्रचूट' । -**सिरी-खी** [हिं०] हाथीके मस्तकपर पहनाने-

का एक गहना । -**बान-पुं०** [हिं०] दे० 'चंद्रबाण' ।

चंद-वि० [का०] कुछ, थोड़ेमे, दो-चार; (समासके अंतमें)

गुणित (रोचद, सेवचद) । -**रोज़-पुं०** थोड़े दिन, दो-

चार दिन । -**रोज़ा-वि०** कुछ ही दिन टिकने, रहने-

वाला । -**साखा-वि०** कुछ बरतोंका ।

चंदक-पुं० [मं०] चंद्रमा; चॉदनी; एक छोटी मछली; सिर-

पर पहननेका एक गहना । -**पुष्प-पुं०** लौंग ।

चंदन-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक

प्रधान गंधद्रव्य है, संदल; उसकी लकड़ी; चंदनको घिस-

कर बनवाया हुआ लेप । -**गिरि-पुं०** मलयचल । -

गोपा-खी [सं०] अनंतमूल लता । -**गोह-खी** [हिं०]

एक तरहकी छोटी गोह । -**बेनु-खी** [सं०] सीमाव्यवृत्ति श्रुत

माताके उद्देश्यसे श्वीत्सर्मके स्थानपर दी जानेवाली चंद-

नाकित गाव । -**पुष्प-पुं०** चंदनका फूल; लौंग । -**बाघ्रा**

-**खी** [सं०] अक्षय्य तृतीया । -**शाशिरा-खी** [सं०] दे० 'चंदन-

गोपा' । -**सार-पुं०** घिसा हुआ चंदन; नीसारद; बज्र-

क्षार । -**हार-पुं०** [हिं०] दे० 'चंद्रहार' ।

चंदना-खी [सं०] चंदनशारिवा । * **पुं०** चंद्रमा ।

चंदनादि-पुं० [सं०] चंदन, खस, कपूर, बकुची, इलायची,

कपूर आदि विचक्षामक दवाओंका एक योग । -**तैल-पुं०**

दवाओंके योगसे बनाया जानेवाला आयुर्वेदका एक

प्रसिद्ध तैल ।

चंदनी-खी [सं०] रामायणमें वर्णित एक नदी; * चॉदनी ।

चंदनी(निज्)-वि० [सं०] चंदनसे लिप्त । **पुं०** शिव ।

चंदनीबा-खी [सं०] मोरी-न ।

चंदनीता-पुं० एक तरहका लहंगा ।

चंदनार्वा-अ० किं० किसी बातकी जानते हुए अनजानकी तरह चूचना ।

चंदना-वि० गंजा, खलवाट ।

चंदना-पुं० गद्दी आदिके ऊपर खड़ा किया गया छोटा शामियाना, चंदोबा; गोल चकनी; मोरपंखकी चंद्रिका; टोपीके ऊपरका गोल भाग; एक तरहकी मछली; तालाबके नीतरका गहड़ा जिसमें मछली पकड़ी जाती है; एक शिरीभूषण ।

चंदनी-वि० [का०] इतना; अधिक; बहुत ।

चंदना-पुं० बहुतसे उगहनी कर, थोड़ा-थोड़ा लेकर इकट्ठा किया हुआ धन, बेहरी; सदस्यताका शुल्क; सामयिक धन, पुस्तकका वार्षिक, छनाही आदि मूल्य; चॉर । -**मामा,-आर्य-पुं०** चॉद (बचोकी) बहलानेके लिए कहा जाता है ।

चंदनवत्-पुं० क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

चंदनवती-खी [सं०] एक रागिनी ।

चंद्रिका-खी [सं०] दे० 'चंद्रिका' ।

चंद्रिनि, चंद्रिनी-खी [सं०] चॉदनी । **वि०** खी चॉदनी-वाली ।

चंद्रिया-खी [सं०] सिरका मध्य भाग, लोपड़ी; † पीछेकी छोटी रोड़ी; चॉदनीकी ठिकिया; तालका बड़ भाग जो अर्धक गहरा हो । **मुं०** -**खाना-पुं०** बकवाद करना । -**खुजावा-सिर** खुजलाना; मार खानेका काम करना । -**पर बाल न छोड़ना-सं०** कुछ ले लेना । -**चंदनना-हमामत** बनाना; लटकर खाना ।

चंद्रि-पुं० [सं०] चंद्रमा; हाथी; कपूर ।

चंदे-अ० [का०] कुछ दिन, थोड़े दिन ।

चंदेरी-खी [सं०] एक प्राचीन नगर । -**पति-पुं०** चंदेरीनरेश, शिशुपाल ।

चंदेल-पुं० क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

चंदोवा-पुं० दे० 'चंदवा' ।

चंदोबा-पुं० छोटा शामियाना ।

चंद्र-पुं० [सं०] चंद्रमा; कपूर; जल; सोना; हीरा; चंद्रमा जैसा चिह्न; मोरपंखका अर्ध चंद्राकार चिह्न; अर्ध विसर्गका चिह्न; अर्ध अनुनासिकका चिह्न, चंद्रबिंदु; लाल रंगका मोती; चंद्रद्वीप; बुधशिर नक्षत्र; (ला०) पत्तकी मंथवा; सुंदर, उज्ज्वल; आकाशजनक वस्तु । **वि०** कमनीय; श्रेष्ठ (समासांतमें-पुरुषचंद्र) । -**कर-पुं०** चंद्रकिरण, चॉदनी ।

-**कल-वि०** चंद्रमाकी सी कातिवाला । -**कला-खी**

चंद्रमंडलका १६ बॉ आग; चंद्रमाकी १६ कलाएँ (काम-

शास्त्रके अनुसार-पूषा, यशा, सुमनसा, रति, प्राप्ति,

धृति, क्षति, सौम्या, मरीचि, अंशुमालिनी, अंगिरा,

शशिनी, छाया, संपूर्णमंडला, तुष्टि और अवृत्ता); चंद्रमाकी

किरण; माथेपर पहननेका एक गहना; एक वर्णश्रुत; एक

सतताका ताल; छोटा ढोल; एक मछली; नखलत । -

चर-पुं० महादेव । -**कांत-पुं०** एक मणि जिसके विषयमें

प्रसिद्धि है कि चंद्रकिरणके स्पर्शसे वह पसीज जाता है;

चंदन; कुमुद; एक राग । -**कांता-खी** चंद्रमाकी पत्नी;

रास; चॉदनी; लक्ष्मणके पुत्र चंद्रकेतुकी राजधानी; एक

वर्णवृत्त । -कांति-श्री० चैदनी; चैदी । -कुमार-पु० चंद्रमाका पुत्र, पुत्र । -कूट-पु० कामरूप प्रदेशका एक पर्वत । -क्रेतु-पु० लक्ष्मणका एक पुत्र जिसे रामने महभूमिका राज्य दिया । -क्रीड-पु० एक ताल । -क्षत्र-पु० अमावस्या । -गिरि-पु० काठमांडू (नेपाल)के पासका एक पर्वत । -गुप्त-पु० विजयगुप्त; मौर्यवंशका प्रथम सम्राट् जो सिकंदरका समकालिक था; गुप्तवंशका प्रथम सम्राट्, समुद्रगुप्तका पिता; गुप्तवंशका सम्राट् जो समुद्रगुप्तका पुत्र था; द्वितीय चंद्रगुप्त । -गृह-पु० कर्क राशि । -गोक्ष-पु० चंद्रमण्डल । -गोलिका-श्री० चैदनी । -ग्रह, -ग्रहण-पु० पृथिवीकी छायासे चंद्रमण्डलका छिप जाना, पौराणिक मतमें राहु द्वारा चंद्रमाका घसन । -घंटा-श्री० एक देवी जिनकी गणना नौ दुर्गाओंमें है । -चंचल-पु०, -चंचला-श्री० चंद्रक नामक मछली । -चूड-पु० शिव । -चूडामणि-पु० शिव; प्रहोका एक योधा । -जवक-पु० समुद्र । -जोत-श्री० [हिं०] चैदनी; एक आतश-भाजी, महताबी । -ताल-पु० एक ताल (संगीत) । -द्वारा-श्री० चंद्रमाकी पत्नी, अथिनी इत्यादि २७ तक्षत्र । -देव-पु० चंद्रमा; महामारतमें कौरवोंकी ओरसे छपनेवाला एक राजा । -द्युति-श्री० चैदनी । पु० चंद्रन । -द्वीप-पु० पुराणवर्णित १८ द्वीपोंमें एक (पूर्व बंगालके बरीमाल फरीदपुर और खुलना जिलोंका कुछ भाग) । -बनु(स्)-पु० चैदनीमें दिखाई देनेवाला इन्द्रधनुस् । -धर-पु० (चंद्रमाकी धारण करनेवाले) शिव । -निभ-वि० चमकीला; सुंदर । -पंचांग-पु० चांद्र तिथि-मासके आधारपर निर्मित पंचांग । -पर्णी-श्री० प्रसारीणी लता । -पाद-पु० चंद्रकिरण । -पाषाण-श्री० पु० चंद्रकांत मणि या प्रस्त । -पुत्र-पु० पुत्र ग्रह । -पुष्पा-श्री० चैदनी; बकुची; सफेद भटकटैया । -प्रभ-वि० चैदनीकी प्रभा, कांतिवाला । पु० जैनोंके आठवें तीर्थंकर; एक बोधिमत्त्व । -प्रभा-श्री० चंद्रव्योति, चैदनी; बकुची; कचूर । -प्रमर्दन-पु० राहुका एक भाई । -प्रासाद-पु० छतपरका कमरा । -बंश-पु० शख; कुमुद । -बधूटी-श्री० वीरबहूटी । -बाण-पु० बह बाण जिसका फल चंद्राकार हो । -बाला-श्री० चंद्रमाकी पत्नी; चंद्रकिरण; बही इलायची । -बिंदु-पु० सानुनासिक वर्णके ऊपर लगाया जानेवाला अर्द्धचंद्राकार चिह्न सहित बिंदु । -बिंब-पु० चंद्रमाका प्रकाशमय वस्तु-लाकार रूप । -बोका-पु० [हिं०] एक तरहका अमर । -भस्म-पु० कचूर । -भा-श्री० दे० 'चंद्रपुष्पा' । -भाग-पु० चंद्रमाकी कला, अंश; हिमालयके अतर्गत एक पर्वत । -भागा-श्री० चंद्रमाग पर्वतसे निकली हुई चनाब नदी । -भाट-पु० [हिं०] अर्द्ध गृहस्थ शैव संप्रदायका एक भेद । -भाजु-पु० सत्यभामासे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र । -माल-पु० शिव । -भास-पु० तलवार । -भ्रति-श्री० चैदी । -भूषण-पु० शिव । -अंडल-पु० चंद्रमाका बिंब; चंद्रमाके चारों ओर कभी-कभी दिखाई देनेवाली गोलाकार परिधि । -मणि-पु० चंद्रकांत मणि । -मल्लिका-श्री० एक तरहकी चमेड़ी । -मह-पु० कुपा । -मात्रा-श्री० तालका एक भेद । -माका-श्री०

एक छंद । -मुकुट-पु० शिव । -मुख-वि० चंद्रमा जैसे सुंदरवाला । -मुखी-वि० श्री० चंद्रमा जैसे मुखवाली, विधुवदनी, सुंदरी । -मोक्षि-पु० शिव । -रत्न-पु० मोती । -रेखा, -लेखा-श्री० चंद्रकला; चंद्रकिरण; एक अप्सरा; बाणासुरकी कन्या उषाकी सखी; एक वर्णवृत्त । -रेणु-पु० काव्यवीर । -लोक-पु० चंद्रमाका लोक । -वंश-पु० भारतवर्षका दूसरा प्रधान राजवंश जिसका आरंभ बुधके पुत्र पुरुवासे माना जाता है । -वंशी-वि० [हिं०] दे० 'चंद्रवंशीय' । -वंशीय-वि० चंद्रवंशमें उत्पन्न । -वदन-वि० चंद्रमा जैसे मुखवाला । [श्री० 'चंद्रवदनी'] । -बधू-श्री० वीरबहूटी । -बर्जे(न्)-पु० एक वर्णवृत्त । -वल्लरी-श्री० सोम लता । -वल्ली-श्री० सोम लता; मापवी लता । -वार-पु० सोमवार । -विंदु-पु० दे० 'चंद्रविंदु' । -वेध-पु० शिव । -प्रत-पु० चांद्रायण प्रत । -बाला, -शालिका-श्री० चैदनी; इसके ऊपरका कमरा या बंगला जिसमें चैदनीका पुरा जानंद लिया जा सके । -शिला-श्री० चंद्रकांत मणि । -शुक्र-पु० जनुदीपका एक उपदीप । -शूर-पु० चंद्र । -शेखर-पु० चंद्रमा है शेखर (शिरोभूषण) जिसका, शिव; एक पर्वत; आठ तलोंमेंसे एक । -संज्ञ-पु० कचूर । -संभव-पु० बुध । -संभवा-श्री० छोटी इलायची । -सरोवर-पु० ब्रजमण्डलमें गोवर्द्धनके पासका एक तीर्थ-स्थान । -सुत-पु० बुध । -हार-पु० एक तरहका कंठ-हार । -हास-पु० मलबार, खजूर; रावणकी तलवार । -हासा-श्री० सोम लता । चंद्रक-पु० [सं०] चंद्रमा; चैदनी; मोरपंखपरका चंद्राकार चिह्न; नाखून; सफेद बिनां; एक मछली; सहजन; एक राग; चंद्र जैना गोल चिह्न । चंद्रही (किन्)-वि० [सं०] चंद्रकवाला । पु० मोर । चंद्रगुप्त-पु० [सं०] दे० 'चंद्र' । चंद्रमा (अस्)-पु० [सं०] नौरमण्डलका एक उपग्रह, चंद्र (व्यास २१६२ मील, परिमाण पृथिवीका १/४०, पृथ्वीसे दूरी २३८८०० मील); मास; कचूर । -लकाट, -ललाम-पु० [हिं०] शिव । चंद्रांकित-पु० [सं०] महादेव । चंद्राक्षु-पु० [सं०] चंद्रकिरण; विष्णु । चंद्रा-श्री० [सं०] चंदोबा; सुला दालान; छोटी इलायची; गुडुच । चंद्रासिचात-पु० [सं०] शृदंगकी एक थाप । चंद्रातप-पु० [सं०] चंदोबा, वितान; चैदनी; सुला दालान । चंद्राभज-पु० [सं०] बुध । चंद्रानन-वि० [सं०] चैदमा मुखबैवाला । पु० कांतिवैद्य । चंद्रानना-वि० श्री० [सं०] चैद जैसे मुखबैवाली, चंद्रमुखी । चंद्रापीड-पु० [सं०] शिव; कदमरका एक राजा, प्रतापा-दित्यका बड़ा बेटा; कालवरी गवकाभका नायक । चंद्रायण-पु० चांद्रायण । चंद्रावसन-पु० [सं०] चंद्रशाला । चंद्रार्द्ध-पु० [सं०] अर्द्धचंद्र । -चूडामणि-पु० शिव ।

चंद्राखण्ड-पु० [सं०] चंद्रिनी; अवदेवकृत एक प्रसिद्ध अलंकारग्रंथ ।

चंद्रावती-खी० [सं०] एक वर्णवृत्त ।

चंद्रावली-खी० [सं०] राधाकी एक सखी; एक योगिनी ।

चंद्रिकांडुज-पु० [सं०] कुसुद ।

चंद्रिका-खी० [सं०] चंद्रिनी; प्रकाश; चंद्रमाया नदी; वही श्लायची; जूही या चमेखी; चाँदा मछली; मेची; एक गहना, बेंदी, बेदा । —**द्राव-पु०** चंद्रकांत मणि ।

—**पाथी(विष्)**-पु० चकोर ।

चंद्रिकातप-पु० [सं०] चंद्रिनी ।

चंद्रिकाभिसारिका-खी० [सं०] मित्रसे मिलनेके लिए चंद्रिनी रातमें संकेतस्वली और जानेवाली नायिका, झुझाभिसारिका नायिका ।

चंद्रिकोत्सव-पु० [सं०] शरत्पूर्णिमाको मनाया जानेवाला उत्सव ।

चंद्रिमा-खी० [सं०] चंद्रिनी ।

चंद्रिल-पु० [सं०] हज्जाम; शिव; बधुएका साग ।

चंद्री(चिन्त्र)-वि० [सं०] जिसके पास सुवर्ण हो ।

चंद्रोद-खी० [म०] कुमुदिनी ।

चंद्रोदय-पु० [सं०] चंद्रमाका उदय; चंद्रोबा; आयुर्वेदकी एक प्रसिद्ध रसोपध ।

चंद्रोपराग-पु० [सं०] चंद्रग्रहण ।

चंद्रोपल-पु० [सं०] चंद्रकांत मणि ।

चंप-पु० [म०] चपा; कचनार । —**कली-खी०** गलेमें पहननेका एक गहना, चंपाकली । —**कुंड-पु०** एक तरहकी मछली ।

चंपई-वि० चंपाके फूल जैसे रंगका । पु० उक्त रंग ।

चंपक-पु० [सं०] एक पुष्पवृक्ष, चपा; उसका फूल; एक राग; चंपाचेल्ला; एक गंधद्रव्य । —**माला-खी०** चंपाके फूलोंकी माला; चंपाकली; एक वर्णवृत्त । —**ईमा-खी०** चपा केला ।

चंपकारण्य-पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ, आधुनिक चंपारन ।

चंपकालु-पु० [सं०] कटहल ।

चंपकावती-खी० [सं०] चपापुरी ।

चंपकोश-पु० [सं०] कटहल ।

चंपल-वि० चलता, गायब (रस शब्दका प्रयोग सदा 'बनना' या 'होना'के साथ मुद्रावरेकी तरह होता है) ।

चंपना-स० कि० दवाना, चोपना, चंद बैठना ।

चोपना-अ० कि० चोपा जाना, दबना; लज्जा या उपकारके बोझसे दबना ।

चंपा-पु० एक पुष्पवृक्ष; उसका हलके, पीले रंगका फूल जो अपनी तीव्र गंधके लिए प्रसिद्ध है; एक तरहका मीठा केला; रेशमके कौबेका एक भेद; एक सदाबहार पेड़; बोबेकी एक जाति । —**कली-खी०** एक तरहका द्वार जिसके दाने चंपाकी कलीकेसे होते हैं ।

चंपा-खी० [सं०] अंगदेशकी राजधानी, कर्णपुरी । —**पुरी-खी०** कर्णकी राजधानी कर्णपुरी ।

चंपारण्य-पु० [सं०] दे० 'चंपकारण्य' ।

चंपालु-पु० [सं०] दे० 'चंपकालु' ।

२०-क

चंपावती-खी० [सं०] चंपापुरी ।

चंर-पु० [सं०] गण-पद्य-मय काव्य ।

चंबल-खी० एक नदी जो बिम्बाचलके पहाड़ोंसे निकलकर यमुनामें मिली है । पु० नील मँगनेका प्लाहा; चिलमका सरपोश; पानीकी बाढ़; नहरके किनारे लगी हुई पानी चढ़ानेकी लकड़ी ।

चंबली-खी० एक तरहका छोटा प्लाहा ।

चंबी-खी० कपड़ेकी छपाईमें काम आनेवाला कागज या योजामेका टुकड़ा ।

चंबेकी-खी० दे० 'चमेखी' ।

चेंबर-पु० सुरागायकी पूँछके बालोंका गुच्छा; घोड़े आदिके सिरपर लगानेकी कलंगी; † वह विस्तृत नीची जमीन जिसमें बरसाती पानी इकट्ठा होता और धानकी खेती होती हो । —**डार-पु०** चेंबर डुलानेवाला ।

चेंबरी-खी० चेंबरकी शकलका घोड़ेकी पूँछके बालोंका गुच्छा जिसमें उसके बदनपरसे मलिनर्थाँ उड़ते हैं ।

चंसुर-पु० एक साग ।

च-पु० [सं०] शिव; चराना; चंद्रमा; कलुषा; दुर्जन; चोर । अ० और । वि० चीवरहित; बुरा, नीच; विद्युद् ।

चई-खी० एक वृक्ष जिसकी जड़ और लकड़ी दवाके काम आती है ।

चउतरा, चउतरां-पु० दे० 'चवृत्ता' ।

चउपाई-खी० दे० 'चोपाई' ।

चउर-पु० दे० 'चंबर' ।

चउरा-पु० दे० 'चौरा' ।

चउइह्रां-पु० चौहट्ट, चौराहा ।

चउहान-पु० दे० 'चौहान' ।

चक-पु० चकवा; चकई नामका खिलौना; पहिया; त्रमीनका बहा खड; एक अन्न, चक्र; करवेंमें लगनेवाला एक लकड़ीका औजार, कलधरा; छोटा गाँव, पुरबा; एक गहना; आधिक्य; अधिकार । वि० भरपूर; मोचकता, चकित । —**चाल-खी०** चकर । —**डोर-खी०** चकईकी डोरी । —**तरासी-खी०** चकंदी । —**फेरी-खी०** परिक्रमा । —**बंदी-खी०**—जमीनका बड़े-बड़े टुकड़ोंमें बँटवारा । —**बल-वि०** चकोंमें बँटा हुआ । पु० कश्मीरी प्राक्षर्णोंकी एक उपजाति । सु०—जमना—रंग जमना ।

चकई-खी० मादा चकवा; पिरनीके आकारका एक खिलौना जिसे डोर लपेटकर नचाते हैं । वि० गोल बनावटका ।

चकचकाना-अ० कि० रसना; गीला होना ।

चकचकी-खी० करताल ।

चकचाना-अ० कि० चौपियाना ।

चकचाव-पु० चकाचौध ।

चकचून, चकचूर-वि० 'पिसा हुआ, चकनाचूर—'टूटई परतत मेह पहारा । दोह चकचून उइहिं तेहिं शारा'—प० ।

चकचूराना-स० कि० चकनाचूर करना ।

चकचोड़ा-पु० चकाचौध ।

चकचोही-वि० खी० चिकनी-चुपकी ।

चकचौध-खी० दे० 'चकाचौध' ।

चकचौजना-अ० कि० चौपियाना । स० कि० आँखोंमें चकाचौध पैदा करना ।

चकचौबी, चकचौह*—स्त्री० दे० 'चकाचौ' व ।
 चकचौहना*—स० कि० आशाभरी दृष्टिसे देखना ।
 चकचवा—पु० दे० 'चकरवा' ।
 चकत—पु० चकोटा ।
 चकता—पु० दे० 'चकता' ।
 चकताई*—पु० दे० 'चपताई' ।
 चकती—स्त्री० कपड़े या चमड़े आदिका छोटा टुकड़ा जो दूसरे कपड़े या चमड़े आदिमें जोड़की तरह लगाया गया हो, पैरबंद; पञ्जी; दुपैकी दुम ।
 चकत्ता—पु० स्वचापर पड़ा हुआ बड़ा निशान; दाँत काँटनेका निशान; दरीदर; दे० 'चपत्ता' ।
 चकना*—अ० कि० चकित होना; चौकना ।
 चकनाचूर—वि० जो टूटकर चूर-चूर हो गया हो, चूर्णित; बहुत धका हुआ ।
 चकमक—वि० चकित, भौचक ।
 चकपकाना—अ० कि० भौचक होना, चौकना, चकित होना ।
 चक्रमङ्ग—पु० [तु०] एक तरहका पत्थर जिसपर आपात करनेसे आग निकलती है (दियासलाहके आधिकारके पहले इसीसे आग झाड़कर दिया बालते, आग सुलगते थे) ।
 चकमा—पु० पोखा, भुलावा, जुग (खाना, देना); शक्ति; लज्जोका एक खेल ।
 चक्रमङ्ग—पु० [तु०] चकमक ।
 चक्रमङ्गी—वि० जिसमें चकमक लगा हो । स्त्री० वह बंदूक जिसमें बारूदमें आग देनेके लिए चकमक लगा हो ।
 चकर*—पु० चकवा; दे० 'चकर' ।
 चकरवा—पु० चकर, फेर; विकट परिस्थिति; झगड़ा, फसाद; दंगा ।
 चकरा*—वि० चौड़ा । † पु० पानीका भवर ।
 चकराना—अ० कि० सिरका घूमना, चकर खाना; चकित, हैरान होना, चकपकाना ।
 चकरानी—स्त्री० दे० 'चाकरानी' ।
 चकरी—स्त्री० चक्की; चकई । वि० स्त्री० चौड़ी ।
 चकल—पु० दूसरी जगह लगानेके लिए मिट्टीके माथ पीथेकी उखाडना; ऐसे पीथेमें लगा हुई मिट्टीकी पीथी ।
 चकलई*—स्त्री० चौड़ाई ।
 चकला—पु० रौंदी बेलनेका पाटा, चौका; चक्की, प्रदेष्टा, इलाका; व्यवहारसे जीविका चलानेवाली बियौका अड्डा, दसबीखाना । वि० चौड़ा ।—(ले)दार—पु० चकलेका हाकिम; मालगुजारी बटूल करनेवाला अफसर ।
 चकलाना—स० कि० चौड़ा करना; दूसरी जगह लगानेके लिए पीथीके साथ पीसा उखाडना ।
 चकली—स्त्री० छोटा चकला; गबारी । वि० स्त्री० चौड़ी ।
 चकलस—स्त्री० झगडा-टंटा; झंझट, कलेश; मिर्चोका आपसमें हास-परिहास ।
 चकवैह—पु० एक बरसाती पौधा जिसकी छाल, पत्तियाँ आदि दवाके काम आती हैं; चक्रमर्द; कुम्हारोंका पात्र जो हाथ धोनेके लिए चाकके पास रखा रहता है ।
 चकवा—पु० एक पक्षी जो भारतवर्षमें जाड़ेके दिनोंमें जलाशयोंके किनारे पाया जाता है और जिसके विषयमें यह प्रसिद्धि है कि रातमें जोड़ेसे उसका वियोग हो जाता

है, चकवाक; † चपटी करने कीही बढ़ाई हुई छोई ।
 चकवाना*—अ० कि० चकित होना ।
 चकवारि*—पु० कछुआ—'उर निरखि चकवारि बिषके, कटि निरखि बनराज'—सूर ।
 चकवाह*—पु० दे० 'चकवा' ।
 चकवी*—स्त्री० दे० 'चकई' ।
 चकहा*—पु० चक्का, पहिया ।
 चका*—पु० दे० 'चक्का'; चकवा । वि० चकित ।
 चकाचक—वि० तर-बतर । अ० तुम होकर, अवाकर । स्त्री० तलवार आदिके लगातार आघातका शब्द ।
 चकाचौह—स्त्री० प्रकाशकी प्रखरतासे दृष्टिका स्थिर न रह सकना, अँखला झपकना, तिलमिलाहट; हैरानी ।
 चकाचौबी*—स्त्री० दे० 'चकाचौ' व ।
 चकाना*—अ० कि० चकित होना, हैरान होना ।
 चकान्-चकान्—पु० दे० 'चकान्' । मु०—में पड़ना, फँसना—चकरोंमें पड़ना ।
 चकार—पु० [सं०] सहानुभूतिपूर्वक शब्द; व अक्षर या उसकी ध्वनि ।
 चकासना*—अ० कि० चमकना, प्रकाशित होना—'आपने भावतें तारे अनत जु आपने भावतें बीज चकासै'—सुंदरदास ।
 चकासित—वि० [सं०] प्रकाशित, दीप्तियुक्त ।
 चकित—वि० [सं०] विस्मित, आश्चर्यित; हैरान, भौचक; चौंका हुआ; शक्ति; भीत; पराया हुआ ।
 चकितवर्त*—वि० चकित, विस्मित ।
 चकिता—स्त्री० [सं०] वर्णावृत्त ।
 चकिताई*—स्त्री० अचमा, विस्मय ।
 चकुला*—पु० चिड़ियाका चक्का ।
 चकुलिया—स्त्री० एक तरहकी झाड़ी ।
 चकुत*—वि० दे० 'चकित' ।
 चकट—पु० चाक घुमानेका टटा ।
 चकैया*—स्त्री० चकई । † वि० चिपटापन लिये दुप गोल ।
 चकोटना*—स० कि० चिकोटी काटना, चकोटना ।
 चकोटरा—पु० एक तरहका बग नावू, सधानीवू ।
 चकोता—पु० एक चर्मरोग ।
 चकोर, चकोरक—पु० [सं०] तीतरकी जातिका एक पक्षी जो चंद्रमाका परम प्रेमी माना जाता है ।
 चकोरी—स्त्री० [सं०] मादा चकोर ।
 चकोड़ा—पु० पानीका भवर ।
 चकोई†—पु० चकवैह ।
 चकौचि*—स्त्री० दे० 'चकाचौ' व ।
 चक—पु० [सं०] कट, पीडा; चकवा; चाक; दिशा, झुंटा ।
 चकर—पु० पहिये जैसी वस्तु; चाक; चक्र; घेरा, मडल; (वीथीके आदिका) इत्ताकार मार्ग; फेरा, परिक्रमा; घुमाव; फेर; हैरानी; पेच-पाच; सिरका घूमना; अँकर; कुदलीका एक पेच; एक अक्ष ।—हार—वि० घुमाव, पेच, फेरना। मु०—काटना—गोलाईमें घूमना; फेरा करना; भटकना ।—खाना—घूमना; पहिये या चाककी तरह घूमना; घुमावके रास्ते जाना ।—पड़ना—गान पिरना, बजपात होना ।—बाँचना—इस तरह घूमना कि हृष्ट बन

जाय ।-भारना-चक्र क्खाना; मटकना ।-में जाना-
हैरान होना, मौचक होना ।

चक्रक-वि० [सं०] गोल, वतुल ।

चक्रवर्त्त-वि०, पु० दे० 'चक्रवर्ती' ।

चक्रवर्त्त-पु० चक्रवर्ती राजा ।

चक्रवा-पु० दे० 'चक्रवा' ।

चक्रवै-वि०, पु० दे० 'चक्रवर्ती' ।

चक्रस-पु० बुलबुल आदिका अड्डा ।

चक्रा-पु० पहिया; धक्का; ठेला; बग, जमा हुआ टुकड़ा;
गिनतीके लिए क्रमसे लगाये हुए पथरी या रईयाका ढेर ।

-चक्रवृ-पु० चक्रव्यूह ।

चक्की-खी० पत्थरका बना आटा पीसने या दाल दलनेका
यंत्र, जौता; घुटनेकी गोल हड्डी; ऊँटके बदनपरका गोल
घड़ा ।-रहा-पु० चक्कीकी कूटकर खुरदरी करनेवाला ।

-का घाट-यो गोल, कुटे हुए पत्थरोंमेंसे एक जिससे
चक्की बनती है । मु०-पीसना-आटा पीसना, चक्की
चलाना; कड़ी मेहनत करना ।

चक्करी-खी० चाट, चटपटी चीज; बुलबुल आदिकी लड़ते
समयकी चुगाई ।

चक्कनस-पु० [म०] बेईमानी; कुदिलता; छल-कपट ।

चक्र-पु० [म०] चाका, पहिया; चाक; तेल घरेनेका कोष्ण;
चक्की; पहियेके आकारका एक अम्ब; भवर; बबडर; समूह;
मेना; राज्य, मेनाका मङ्गलाकार व्यूह; एक समुद्रसे दूसरे
समुद्रका फैला हुआ प्रदेश; रेखाओंमें विभे हुए खाने;
ग्रामसमूह, मंडल; योगवर्णित देहके भीतरके ९ पद्म
(मूलाधार, मणिपूर आदि, दे० 'पञ्चचक्र'); वृत्त, घेरा;
हथेली, तलवेकी मङ्गलाकार रेखा; पक्षियोंका मंडलाकार
उड़ना; भ्रमण, चक्कर (कालचक्र); वर्षसमूह; तगरका फूल;
चित्रकाव्यका एक भेद; षडयंत्र, साजिस; छल; चक्का;
एक वर्णवृत्त; * दिशा ।-कारक-पु० नाम्बून; नखी नामक
गंधद्रव्य ।-कुल्ला-खी० पिठवन ।-गंडु-पु० गोल
तकिया ।-गज-पु० चक्रवर्त्त ।-राशि-खी० चक्राकार गति,
गोलाईमें घूमना ।-गुच्छ-पु० अशोक वृक्ष ।-गोष्ठा-
(व्यूह) पु० रथचक्रकी रक्षा करनेवाला; सेनापति; राज्य-
रक्षक ।-ग्रहणी-खी० दुर्गप्रान्तीर ।-चर-पु० कुम्हार;
तेली; बाजीगर ।-घारी(विज्)-पु० रथ । वि० मंडला-
कार भ्रमण करनेवाला (पक्षी) ।-जीवक-जीवी(विज्)-
पु० कुम्हार ।-ताल-पु० चौलाता तालका एक भेद ।

-तीर्थ-पु० प्रभास क्षेत्रके अंतर्गत एक तीर्थ (दिवाघुर-
संग्रामके बाद सुप्रदर्शन चक्रमें लगा रुधिर धीमेसे इसकी
उत्पत्ति मानी जाती है) ।-तुंड-पु० एक तरहकी मछली ।

-हंड-पु० एक तरहकी कसरत ।-हंसी-खी० दंती वृक्ष;
अमालोटा ।-हंड-पु० खर ।-हृक्ष-पु० चक्रपाणि-
रहित एक वैद्यकग्रन्थ ।-घर-वि० चक्रधारण करनेवाला ।

पु० विष्णु; कृष्ण; राजा; मंडलाधिप; बाजीगर; सर्प;
एक राग ।-घारा-खी० पहियेका घेरा ।-नख-पु०
व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य ।-नदी-खी० बंदकी नदी ।

-नाभि-खी० चक्रकी नाभि, मध्य बिंदु ।-नामा(अव्)-
पु० मासिक धातु; चक्का ।-नाथक-पु० व्याघ्रनख
नामक गंधद्रव्य ।-नेमि-खी० चक्रकी परिधि ।-पछाट

-पु० चक्रवर्त्त ।-परिष्कार-पु० आरम्भ नामक वृक्ष ।

-पर्णी-खी० पिठवन ।-पाणि-पु० विष्णु ।-पाद,-

-पादक-पु० रथ; हाथी ।-पानि-पु० चक्रपाणि ।

-पाल-पु० प्रदेश-विशेषका शासक, चक्रवेदार; सेनापति;

सूत्ररक्षक; चक्रपर; वृत्त, मंडल; क्षितिज ।-पूजा-खी०

एक नर्तकी पूजा ।-फल-पु० चक्र जैसे गोल कलवाला

एक अक्ष ।-बंध-पु० चित्रकाव्यका एक भेद ।-बंधु,

-बांधव-पु० स्वर् ।-भूत्-पु० चक्र धारण करनेवाला;

विष्णु ।-मेदिनी-खी० रात ।-ओग-पु० राशिचक्रका

मोग, ग्रहका एक स्थानसे चलकर फिर उसी स्थानपर

पहुँचना ।-भ्रम,-वि० चक्रकी तरह घूमनेवाला । पु० दे०

'चक्रभ्रमि' ।-भ्रमि-खी० खराद, सान ।-भ्रानि-खी०

चक्रका घूमना ।-मंडल-पु० मूलका एक प्रकार ।-

-मंडली(लिन्)-पु० अजगर सोंप ।-मर्द,-मर्दक-पु०

चक्रवर्त्त ।-मुल-पु० खर ।-मुद्रा-खी० नात्रिक पुरनमें

प्रयुक्त एक मुद्रा; शंख, चक्र आदिके चिह्न जो वैष्णव अपने

शरीरपर छपवाते हैं ।-मेदिनी-खी० रात्रि ।-बाव-

-पु० पहियेके चलनेवाला वाहन ।-रक्ष-पु० दे० 'चक्र-

-गोता' ।-रव्-पु० दे० 'चक्रवर्त्त' ।-लक्षणा-खी०

गुच्छ ।-वर्तिनी-खी० जनी नामक गंधद्रव्य; अलकक;

जटामासी ।-वर्ती(तिन्)-वि० सार्वभौम । पु० सम्राट्,

समुद्रपर्यंत पृथिवीका अधिपति; समूहका नायक; बहुधा ।

-काक-पु० चक्का ।-बाट-पु० सीमा; चिरागदान;

कार्यमें प्रवृत्त होना ।-बाड-पु० अग्नि; चक्रवाल ।

-बात-पु० बवंडर, बगुला ।-वाल-पु० पत्र पुराण-

वर्णित पर्वत ।-वालधि-पु० कुत्ता ।-वृद्धि-खी० बह

व्याज जिसमें मंचित व्याज भी मूलमें शामिल हो जाय,

मूद-वर-सूद; गाथी आदिने माल लौनेका माघ ।-व्यूह-

-पु० चक्रके आकारमें मेनाकी स्थापना (महाभारतमें द्रौणा-

चार्यने इसी व्यूहकी रचना की थी जिसमें अभिमन्यु

मारा गया) ।-शक्का-खी० सफेद पुँचवी; काकतुकी ।

-खेणी-खी० अजशुभी ।-संश-पु० रौंगा; चक्का ।

-संबर-पु० एक वृक्ष ।-साहूव-पु० चक्रवाक ।

-स्वामी(मिन्)-,हन्-पु० विष्णु ।

चक्रक-वि० [म०] पहियेके आकारका, गोल, मंडलाकार ।

पु० एक तरहका सॉप; युद्धका एक ढंग; एक प्रकारका तर्क ।

चक्रवान्(वन्)-वि० [सं०] जिसमें चक्र, पहिया हो;

चक्रधारी । पु० तेली; चक्रवर्ती ।

चक्रांक-पु० [सं०] बाहु आदिपर दगवाया हुआ चक्रका

चिह्न ।

चक्रांकित-वि० [सं०] चक्रचिह्नयुक्त । पु० एक वैष्णव

संग्रहाव ।

चक्रांकी-खी० [सं०] हमिनी ।

चक्रांग-पु० [सं०] रथ, गाथी; चक्का; हंस ।

चक्रांगना-खी० [सं०] चक्रवाकी ।

चक्रांगा-खी० [सं०] सुरशेना कत; काकचांसिगी ।

चक्रांगी-खी० [सं०] हमिनी; कुटकी; बुरदुर; मजीठ ।

चक्रांत-पु० [सं०] दुरभिसिध, षड्यंत्र ।

चक्रांतर-पु० [सं०] एक वृक्ष ।

चक्रांश-पु० [सं०] राशिचक्रका ३६० वां अंश ।

चक्रा—**ली०** [सं०] नामरमोधा; काकडासिंगी ।
चक्रकी—**ली०** [सं०] हंसिनी ।
चक्रट—**पु०** [सं०] मरारी, सेंपेरा; बाजीगर; ठग स्वर्ण-
 मुद्रा, दीनार ।
चक्राचिवासी—**(सिद्ध)**—**पु०** [सं०] नारंगीका पेड़ ।
चक्राचुच—**पु०** [सं०] विष्णु ।
चक्राचल—**पु०** बौद्धोंका एक रोग ।
चक्राह, **चक्राहृष**—**पु०** [सं०] चक्रवा; चक्रवैज ।
चक्रिक—**वि०** [सं०] चक्र धारण करनेवाला ।
चक्रिका—**ली०** [सं०] सयूह; सेना; दुरभिसंधि; पुटनेपरकी
 गोल हड्डी ।
चक्रित—**वि०** दे० 'चक्रित' ।
चक्रिव—**वि०** [सं०] रक्पण जाता हुआ; यात्रा करता हुआ ।
चक्री—**(क्रि०)**—**वि०** [सं०] चक्रयुक्त; चक्रधारी; गोल;
 रबाधिर सवार; सूचक । **पु०** चक्रवर्ती; कुम्हार; तेली;
 व्यायस नामक गंधद्रव्य; सौष; मुखविर; षडयंत्रकारी;
 विष्णु; शिव; मंडलाधीश, सम्राट्; बाजीगर; ठग; चक्रवा;
 कौवा; चक्रवैज; बकरा; गधा । [ली० 'चक्रिणी' १]
चक्रेश्वर—**पु०** [सं०] चक्रवर्ती; तांत्रिक; चक्रवा अभिषाता;
 विष्णु ।
चक्रेश्वरी—**ली०** [सं०] जैनोंकी एक महाविद्या ।
चक्र—**पु०** [सं०] नकली दोस्त ।
चक्रण—**पु०** [सं०] चक्रना; चक्रनेकी चीज, चाट; कपन;
 अनुग्रह ।
चक्रा—**(अर्थ)**—**पु०** [सं०] इहस्पति; आचार्य ।
चक्रुः—'चक्रुस्'का समासगत रूप । —**पथ**—**पु०** दृष्टिपथ;
 क्षितिज । —**पीड़ा**—**ली०** आँखका दर्द । —**अवा**—**(बस्)**—
पु० सर्प ।
चक्रु—**(स्)**—**पु०** [सं०] आँख; दृष्टि, देखनेकी शक्ति;
 रोशनी; तेज, कांति ।
चक्रुर—'चक्रुस्'का समासगत रूप । —**अपेक्ष**—**वि०** नेत्रहीन ।
 —**इन्द्रिय**—**ली०** आँख । —**गोचर**—**वि०** दृष्टिगोचर ।
 —**दान**—**पु०** प्राणप्रतिष्ठाके समय मूर्तियों आँखोंमें रंग
 भरना । —**निरोध**—**पु०** आँखपर लगायी जानेवाली पट्टी ।
 —**बंध**—**पु०** आँख ढकना । —**बहल**, **बहान**—**पु०** अत्र-
 भ्रंभी । —**भ्रुव**—**वि०** दृष्टिवर्द्धक । —**मल**—**पु०** आँखका
 मल, कीचड़ । —**बन्ध**—**वि०** नेत्ररोगमें ग्रस्त । —**विषय**—
पु० दृष्टिपथ; दृष्टिका विषय; क्षितिज । —**हा**—**(हृद्)**—**वि०**
 दृष्टिमात्रने नष्ट करनेवाला ।
चक्रुस्—'चक्रुस्'का समासगत रूप । —**कर्ण**—**पु०** सर्प ।
 —**पथ**—**पु०** दृष्टिपथ; क्षितिज ।
चक्रुष्मान्—**(अर्थ)**—**वि०** [सं०] आँखवाला; सुंदर आँखों,
 अच्छी निगाहवाला ।
चक्रुष्य—**वि०** [सं०] आँखोंके लिए हितकर; सुंदर, प्रिय-
 दर्शन; नेत्रने उत्पन्न । **पु०** अंजन; कैवला; संहितन ।
चक्रुष्या—**ली०** [सं०] सुंदरी ली; वनतुलसी; अजशृंगी;
 सुरमा ।
चक्रुः—'चक्रुस्'का समासगत रूप । —**राश**—**पु०** आँखकी
 लाली; आँखकी मिय बल्लु । —**रोश**—**पु०** नेत्ररोग ।
चक्र—**पु०** आँख ।

चक्र—**ली०** [का०] झगडा, तकरार; वैर । —**चक्र**—**ली०**
 झगडा, कडाघुनी ।
चक्रचौब—**ली०** चक्रचौब ।
चक्रना—**सं०** क्रि० स्वाद लेना; रसास्वादन करना; स्वादके
 लिए खाना ।
चक्राचल—**ली०** तलवारोंकी झनकार ।
चक्राचली—**ली०** विरोध, तनातनी; लंग-बौट ।
चक्राना—**सं०** क्रि० 'चक्राना'का प्रे० ।
चक्रिया—**वि०** झगडाव, झकझक करनेवाला ।
चक्रु—**पु०** दे० 'चक्रु' ।
चक्रोवा—**पु०** दिठौना ।
चक्रोरी—**ली०** चटपटी चीजें खाना ।
चक्रा—**वि०** चंद, चालाक ।
चक्राताई—**पु०** [का०] चंग्र खोंके चेटे चक्रताई खोंसे चला
 हुआ मंगोलबंध जिसमें बाहर, अकबर अदि हिंदुस्तानके
 मुगल बादशाह हुए ।
चक्रा—**पु०** [सं०] दे० 'चक्रताई' ।
चक्र—**ली०** वह परती जमीन जो एक सालमें जोतमें
 आवी हो ।
चक्रा—**पु०** बापका माई । —**क्रा**—**वि०** चक्करा । **मु०** —
 बनाना—खुद बदला लेना ।
चक्रिया—**वि०** चक्करा, चंचासंबंधी (समुद्र, सास) ।
चक्रिया—**पु०** दे० 'चक्रिया' ।
चक्र—**ली०** चक्राकी ली ।
चक्रा—**पु०** दे० 'चक्रिया' ।
चक्र—**वि०** चक्रामे उत्पन्न, चक्रासाद ।
चक्रोवना—**सं०** क्रि० दाँतोंमें बढाकर चूसना ।
चक्रोवना—**सं०** क्रि० 'चक्रोवन'का प्रे० ।
चक्र—**पु०** चक्र, होलीके समय गाया जानेवाला गीत ।
चक्र—**पु०**, **चक्र**—**ली०** चक्र, आँख ।
चक्रु—**पु०** दे० 'चक्रु' ।
चट—**अ०** झट, तुरत । —**पट**—**अ०** झटपट, शीघ्र । —**से**—
 झट, तुरत ।
चट—**ली०** किसी चीजके टूटनेकी आवाज; उँगलियों फोडने-
 का शब्द । —**चट**—**ली०** 'चट-चट'की आवाज । **मु०** —
 चट बछाएँ लेना—उँगलियाँ चटकाते हुए (नजर लगा-
 नालेका नाश मनाते हुए) बलाएँ लेना ।
चट—**ली०** चाटनेका भाव । **वि०** चाट-पोंछकर खाया हुआ ।
मु० —कर जाना—चाट-पोंछकर खा जाना; निगल जाना ।
चट—**पु०** दाग, धक्का; लाँछन, कलक; † पटसनका
 टाट । —**कल**—**ली०** पटसनकी वस्तुएँ निर्मित करनेवाली
 फेस्टरी या मशीन । —**झाला**—**ली०** छोटे बच्चोंकी पाठ-
 शाला । —**सार**, **साल**—**ली०** चटशाला; * रंभभूमि ।
चटक—**पु०** [सं०] गौरवा । * **वि०** चटकीला; फुर्तीला;
 चटपटा । * **अ०** झटपट । **ली०** चमक; रंगकी शोखी;
 अस्वक; तेजी, फुरती; कलियोंके चटकनेकी क्रिया । —**दार**—
वि० चटकीला, शोख । —**मटक**—**ली०** ठसक, नाज-नखरा;
 सजधज । —**बाह**—**वि०** फुरतीला । —**बाही**—**ली०**
 फुरती, शीघ्रता ।
चटकका—**ली०** [सं०] माया चटक ।

चव-पु० लकड़ी आदिके फटनेका शब्द । -चव-पु० खड़ी लकड़ीके टूटने या अलनेका शब्द । -से-‘चव’ शब्दके साथ ।

चवचव-खी० बक-बक, टर-टर ।

चवचवार्-पु० चटककर टूटनेका शब्द ।

चवरी-खी० उछलकर गरी हुई छात ।

चवड़ा, चवड़ा-पु० जोपके ऊपरका जोड़; एक तरहका फोड़ा; मसखरा ।

चवुरी-खी० एक तरहका लँगोट ।

चवुरी-खी० पीठकी सवारी; एक बच्चेका दूसरे बच्चेकी पीठपर सवार होनेका खेल । मु०-गोटना-सवारी करना । -देना-हारकर पीठपर सवार करना ।

चवुर-खी० डेबताको चढ़ायी हुई वस्तु, चढ़ावा ।

चवुरा-वि० बढ़ना, उठना, उमरना, आरम्भ होता हुआ । [खी० ‘चढती’] ।

चवना-खी० चढ़नेकी क्रिया ।

चवना-अ० क्रि० नीचेमे ऊपरकी जाना; ऊँचा होना; तेज, तीखा होना (स्वर); सवार होना; दबलके साथ जाना, चढ़ाई करना; उठना, उन्नति करना; बढ़ावके बिस्म जाना; चढ़ावा जाना (कागज, खोल चढ़ना); तनना, कसा जाना; देवतादिकी भेंट किया जाना; लगना, आरम्भ होना (मास, नक्षत्र आदि); पावना होना, निकलना; बिस्सा जाना (नाम रकम); असर होना; आवेश होना (भूत); पोता जाना; पकनेके लिए चूल्हेपर चढ़ाया जाना; नेत्र, मईया होना (शाम); मामला अदालतमें ले जाना; (नदीका) बढना, नादपर होना । चढ़-चढ़कर, चढ़ा-चढ़ा-वि० अधिक अच्छा, श्रेष्ठ । मु० चढ दौबना-चढ़ाई करना, चढ़ जाना । -बढना-मनचाही होना, बढ जाना । -बढना-सवार हो जाना, दवा लेना ।

चढ़वाना-स० क्रि० चढ़ने या चढ़ानेकी क्रिया करना ।

चढ़ाई-खी० चढ़नेकी क्रिया, भाव; ऊँचाई या उत्तरीचर ऊँची हीती जानेवाली भूमि; * चढ़ावा ।

चढ़ा-उतरी-खी० बार-बार चढ़ना-उतरना ।

चढ़ा-उपरी, चढ़ा-चढ़ी-खी० लाग-जाट, होव, प्रति-योगिता ।

चढ़ाना-स० क्रि० ऊपर ले जाना; लटकती हुई चीजको स्थिरकरकाकर ऊपर ले जाना (आस्तीन); तेज, ऊँचा, तीखा करना (भाव, स्वर); कसना; देवतादिकी भेंट देना, अर्पण करना; (बही आदिमें) लिखना, दर्ज करना; स्वीचना, तानना (भी, कमान); लादना (कजे); पोतना; मढना; पी जाना, उदरस्थ करना; चढ़ने, चढ़ाई करनेको प्रेरित करना; स्वीचना (नाकसे पानी); प्रवेश कराना; दीठ, शोख, चमड़ी बना देना ।

चढ़ानी-खी० वह स्थान जो उत्तरीचर ऊँचा होना गया हो ।

चढ़ाव-पु० चढ़नेका भाव, चढ़ाई; बढ़ाव; ब्याहके समय बधूकी वरपक्षकी ओरसे पहनाया जानेवाला गहना, चढ़ाव; धारा या बहावकी उलटी दिशा ।

चढ़ावा-पु० पूजामें देवताको चढ़ाधी जानेवाली सामग्री; चढ़ाव या बालका पहना या बधूको इसे पहनानेकी रस्म; बढ़ावा; चौराहे आदिपर रखी जानेवाली टोटकेकी सामग्री ।

चढ़ैस-पु० चढ़नेवाला ।

चढ़ैसा-पु० घोड़ा चढ़नेवाला सवार ।

चढ़ीबाँ-पु० उठी हुई परीका जूता ।

चण-पु० [सं०] चना । -हुम-पु० छत्र गोहुर । -पत्री-खी० खुरती नामक धूप ।

चणक-पु० [सं०] चन; एक गोशकार कवि ।

चणका-खी० [सं०] तीसी ।

चणकारमञ्ज-पु० [सं०] चाणक्य, वात्स्यायन ।

चणिका-खी० [सं०] एक घास जो दवाके भी काम आती है ।

चतरंग-पु० दे० ‘चतुरंग’ ।

चतरमंग-पु० बैलेंका एक दोष ।

चतरमंगा-वि० चतरमंग दोषवाला (बैल) ।

चतुर-‘चतुर’का समासगत रूप । -शाक-वि० चार छुरों-वाला । -शाख-पु० शरीर । -होम-पु० दे० ‘चतु-होम’ । -संप्रदाय-पु० दे० ‘चतुस्संप्रदाय’ । -सन-पु० ब्रह्माके चार पुत्र-सनक, सनंदन, सनातन और सन-कुमार; विष्णु । -सम-पु० दे० ‘चतुस्सम’ । -समुद्र-वि० चार समुद्रोंसे परिबेष्टित (पृथ्वी) । -सीमा-खी० दे० ‘चतुस्सीमा’ । -सूत्री-खी० दे० ‘चतुस्सूत्री’ ।

चतुर-वि० [सं०] चालाक, होशियार, कार्यदर्श; तेज, कुर-तीला; सुंदर । पु० क्रिया-चतुर या बचम-चतुर मायक (सा०); इर्थाखाना; गोल तकिया; बक गति; होशियारी ।

-क्रम-पु० एक ताल (संगीत) । -ग-वि० तेज जाने-वाला ।

चतुरई-खी० दे० ‘चतुराई’ । मु०-घोलना, -तौलना

-चालाकी करना -‘जाहू चले गुन प्रगट सर प्रभु कहा

चतुरईं घोलत हो’-सूर ।

चतुरक-वि० [सं०] दक्ष, होशियार ।

चतुरपन, चतुरपन-पु० चतुराई ।

चतुरसम-पु० दे० ‘चतुस्सम’ ।

चतुरख पांडित्य-पु० [सं०] चौमुखी विद्वता, चारों

दिशाओंमें व्याप्त ज्ञान ।

चतुराई-खी० होशियारी, चालाकी ।

चतुर-वि० [सं०] चार । पु० चारकी मर्यादा (इस रूपमे

यह शब्द केवल मसाममें व्यवहृत होता है) । -अंग-वि०

चार अंगोंवाला । पु० चतुरगुणी मेना; ऐसी मेनाका प्रधान

अधिकारी; शतरंज; एक तरहका गाना जिसमें सरगम,

तनना, तबले आदिके बोल बैठेये होते हैं । -अंगिणी-वि०

खी० चार अंगोंवाली (सिना) । खी० हाथी, घोड़ा,

रथ और पैदल-इन चारों अंगोंमे युक्त मेना । -अंगी-

(गिन्)-वि० चार अंगोंवाला । -अंगुल-वि० चार

अंगुल चौड़ा या लंबा । पु० अमलतास । -अंगुला-खी०

शीतली छता । -अंत-वि० चारों ओरमे सीमित । -

अंता-खी० पृथ्वी । -अमल-पु० अमलवेत, इमली,

जंबीरी नीबू और कागनी नीबू-इन चार खट्टे फलोंका

समाहार । -अञ्ज-वि० चौकीर, चतुष्कोण; सुदीर्घ । पु०

चौकीर आकृतिका क्षेत्र; चौथी या आठवीं राशि (ज्यो०);

ब्रह्मस्तान नामका क्षेत्र । -अञ्ज(न)-पु० चार दिनोंका

काल; चार दिनोंमें पूरा होनेवाला एक सोमयज्ञ ।

—आत्मा(स्वप्न)—पुं० परमेश्वर; विष्णु । —आनन—पुं०
ब्रह्मा । —आश्रम—पुं० ब्रह्मचर्य, मार्गस्थ, वानप्रस्थ और
संन्यास—इन चार आश्रमोंका समाहार । —ईश्वर—पुं०
चार इन्द्रियोंवाले जीव । —ऊष्ण—पुं० सौंठ, पीपल, मिर्च
और पिपरामूल—इन चार गरम चीजोंका समाहार ।
—शक्ति—पुं० परमेश्वर; विष्णु; कछुआ । —गव—पुं० बह
गायी जिसमें चार बैल जोते जायें । —गुण—वि० चीयुना;
जिसमें चार बंद वा बंधन हों (बदनपर पहननेका कपडा) ।
—जातक—पुं० इलायची, दारचीनी, तेजपत्ता, नागकेसर—
इन चार चीजोंका समाहार । —द्वंद्व—वि० चार दोंतों-
वाला । पुं० पेरारत हाथी । —दंष्ट्र—वि० चार दोंतोंवाला ।
पुं० एक हिल पशु; विष्णु; स्फंदका एक अनुचर; एक
दानव । —द्वय(द्व)—वि० चौदह; चौदहवाँ । पुं० १४वीं
संख्या । —००पदी—स्त्री० चौदह पदीवाला एक छंद जो
अंग्रेजीके 'सानेट'के अनुकरणपर चलाया गया है ।
—० भुवन—पुं० भू; भुवः, स्वः, महः, जन, तपः,
सत्य—ये सात स्वर्ग और अतक, सुलल, वितल, तलातल,
महानल, रसातल और पाताल—ये सात अभीलोक । —०
विद्या—स्त्री० चार वेद, ६ वेदान और धर्मशास्त्र, पुराण,
मीमांसा और तर्क (न्याय)—ये १४ विद्याएँ । —द्वयी—
स्त्री० पक्षविशेषकी चौदहवीं तिथि । —दिक्(श्)—अ०
चारों ओर, चौधुँद । स्त्री० चारों दिशाएँ । —दिस—पुं०
चारों दिशाओंका समाहार । अ० चारों ओर । —दोल—
पुं० चार आधमियोंसे दौयी जानेवाली सवारी (पाखंडी,
नालकी आदि); चंडेर; चार डंठोंका पालना । —द्वार—
वि० (मकान) जिसमें चारों ओर दरवाजे हों । पुं० चार
दरवाजे । —द्वाम(म्)—पुं० हिंदुओंके चार तीर्थ, दे०
'चारों धाम' । —द्वाम्—वि० चतुर्मुख । पुं० विष्णु; शिव ।
—द्वीज—पुं० काला गीरा, अत्रवायन, मेथी और वंसुर—
इन चार चीजोंका समाहार । —द्वाम्—पुं० धर्म, अर्थ,
काम और मोक्ष—ये चारों पुरुषार्थ । —भाक्(ञ्)—वि०
चौधारे लेनेवाला । पुं० प्रजाकी आयका चतुर्धास कररूपमें
लेनेवाला राजा । —भाक्—पुं० विष्णु । —भुज—वि०
चार भुजाओंवाला । पुं० चतुष्कोण भेज; विष्णु । —भुजी-
(विन्)—पुं० बैष्णवोंका एक संप्रदाय; इस संप्रदायका
अनुयायी । वि० चतुर्भुज । —मास—पुं० बरसातका
चौमासा; आषाढ़की पूर्णिमा या शुद्ध ऋषीसे कार्तिक-
शुद्ध द्वादशीतकका काल । —मुख—वि० चार मुँहोंवाला ।
पुं० ब्रह्मा; चौपाला तालका एक भेद । [स्त्री० 'चतुर्मुखी']
अ० चारों ओर । —मूर्ति—पुं० ब्रह्मा; स्फंद; विष्णु ।
—मुक्त—वि० जिसमें चार धोखे या बैल जोते जायें
(गाड़ी) । —पुग—पुं०, पुगी—स्त्री० चारों पुगों—सल,
मेठा, दापर और कलिका समाहार, चौकडी । —वचन—
पुं० ब्रह्मा । वि० चार मुँहोंवाला । —वर्ण—पुं० चारों
पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । —वर्ण—पुं० चारों
वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । —वाही(हिक्)—
वि० दे० 'चतुर्बुक्' । पुं० चौकडी । —विद्य—वि० चारों
वेदोंका हाता । —विद्या—स्त्री० चारों वेद । —विध—वि०
चार प्रकारका । —वीर—पुं० चार दिन चलनेवाला एक
सोमयज्ञ । —वेद—पुं० कक, बज्र; साम और अथर्व—ये

चारों वेद; परमेश्वर । वि० चारों वेदोंका हाता । —वेदी-
(विन्)—वि० चारों वेदोंका हाता । पुं० ब्राह्मणोंकी एक
उपजाति । —व्यूह—पुं० चार पुरुषों, पदायोंका समुदाय
[देवे वासुदेव, संकर्षण, प्रभुल्ल, अभिरुद्ध; देव (संसार),
देवदेव, हान (मोक्ष), मोक्षका उपाय; रोग, रोगनिदान,
आरोग्य, वैषम्य; इ०]; विष्णु । —द्वयन—द्वयन—वि०
चार बरसोंका, बीमाला; चार बरसोंमें बना, उत्पन्न ।
[स्त्री० 'चतुर्हावनी' (प्राणी), 'चतुर्हावना' (वस्तु)]
—द्वीता(त्)—पुं० वेदोंक चारों होम करनेवाला । —द्वीज
—पुं० विष्णु ।

चतुर्थ—वि० [सं०] चौथा । पुं० एक ताल । —काक—पुं०
भोजनका विहित काक, दोपहर (अधोरात्रिका चौथा
भाग) । —भाक्(ञ्)—वि० उपज आदिका चतुर्धास
पानेवाला (राजा) ।

चतुर्थक—पुं० [सं०] चौथिया तुलार ।

चतुर्धास—पुं० [सं०] चौथा भाग, चौधाराँ । वि० चौधारेका
मासिक (राजा) ।

चतुर्धासी(शिव्)—वि० [सं०] चतुर्धास पानेवाला ।

चतुर्धास—पुं० [सं०] संन्यास ।

चतुर्थिका—स्त्री० [सं०] दशावीं एक तौल जो चार कर्षके
बराबर होती थी ।

चतुर्थी—वि० स्त्री० [सं०] चौथी । स्त्री० पक्षविशेषकी
चौथी तिथि; संप्रदान कारक (व्या०) । —कर्म(म्)—पुं०
व्याहकें चौथे दिनका कर्म, ग्रामदेवतादिका पूजन आदि ।
—क्रिया—स्त्री० माता-पिताकी मृत्यु होनेपर विवाहिला
कन्या द्वारा चौथे दिन किया जानेवाला श्राद्ध । —तत्पुरुष
—पुं० तत्पुरुष समासका वह भेद जिसमें संप्रदानकारककी
विभक्तिका लोप हो (व्या०)

चतुर्धा—अ० [सं०] चार प्रकारसे, चतुर्विध, चार खंडों में ।

चतुल—पुं० [सं०] आपयिता ।

चतुर्श—'चतुर्'का समासगत रूप । —चरण—वि० जिसमें
चार माग हों । पुं० चौपाया । —श्रृंग—वि० चार सीमों-
वाला । पुं० कुशद्वीपका एक पर्वत ।

चतुष्—'चतुर्'का समासगत रूप । —कर्ण—वि० जो (राग)
चार कानोंमें ही पड़ी हो, दो आदमियोंकी ही मातृस ही ।

—कर्णी—स्त्री० स्फंदकी एक मातृका । —कल—वि० चार
कलाओं, माताओंवाला । —कोण—वि० चार कोनोंवाला,
चौकोर । —पद्—पुं० चौराहा; ब्राह्मण । —पद्—वि०
चार पैरोंवाला । [स्त्री० 'चतुष्पदी'] पुं० चौपाया
जानवर; ११ कर्णोंमेंसे एक; अमावस्याका पूर्वार्ध ।

—पद्मा—स्त्री० चौपैया छद् । —पदी—स्त्री० चार चरणों-
वाला पद्म; गीत; चौपारें छद् । —पर्णी—स्त्री० छोटी
अमलोनी; सुमना । —पाटी—स्त्री० नदी । —पाटी—स्त्री०
वह विचालय जिसमें चारों वेद पढ़ाये जाते हों । —पाणि-
पुं० विष्णु । —पाद्—वि०, पुं० दे० 'चतुष्पद्' । —पार्थ-
वि० जिसमें चार पार्थ या पर्वक हों, चौपहला । —फला-
स्त्री० नागबला नामक ओषधि ।

चतुष्क—पुं० [सं०] चारका समाहार, चौकडी; चार खंभों-
वाला मंडप; आवताकार आंगन; चौराहा; चार लड़ियोंका
हार ।

कपुष्पी-खी [सं०] बड़ा चौकोर तालाब; चौकी; मस-
हरी; चबूती (संक्षिप्तशब्द)।
कपुष्प-पु [सं०] चारकी संख्या; चार वस्तुओं, व्यक्तियों-
का समाहार (अंतःकरणचतुः, अनुबंधचतुः); जन्मकुंडली-
में लघ और लगने चौपा, सातवाँ तथा दसवाँ स्थान।
कपुष्प-पु [सं०] एक वैदिक यज्ञ।
कपुष्प-चतुर् का समासगत रूप। -ताल-पु० चौताला
तालका एक भेद। -संभवाच-पु० वैष्णवोंके ये चार
संभवाच-श्री, माध्व, रुद्र और सनक। -सप्त-पु० दे०
'चतुःसप्त'। -सप्त-पु० एक औषध जिसमें लौह, जीरा,
अजवायन और इक्के सप्त भाग होते हैं; एक गंधद्रव्य जो
कस्तूरी, चंदन, कुंकुम और कपूरके योगसे बनता है।
-सीमा-खी० चौहरी। -सूत्री-खी० मन्त्रावलीके प्रथम
चार सूत्र जो बड़े महत्त्वके समझे जाते हैं।
कपुष्पना, कपुष्पनी-वि० खी० [सं०] चार स्तनोंवाली।
खी० गाय।
कपुष्प-पु [सं०] एक वैदिक यज्ञ जो चार रातोंमें पूरा
होता है।
कपूर-पु० [सं०] चौकोर स्थान; चौराहा, चौमुहानी,
बड़ेके छिप साफ किया हुआ मैदान; चार दीर्घका समूह।
-तल-पु० चौराहेपरका पैर। -वासिनी-खी० स्वरकी
एक मालिका।
कपुष्प-पु [सं०] होमकुंड; कुश, दम; गर्भ।
कपूर-पु० दे० 'चादर'।
कपूरिया-खी० दे० 'चादर'।
कपूर-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर; हाथी; सर्प।
कपूरि-खी० [सं०] हस्तिनी; युगली।
कपूर-खी० दे० 'चादर'; * एक तरहकी तोप।
कपूर-पु० चना।
कपूर-खी० चपत, तमाचा।
कपूरना-अ० कि० चिदना, दरकना; नाराज होना।
कपूरना-अ० कि० चिदना; चनकना।
कपूरना-पु० तंबाकूकी फसलको लगनेवाला एक बीड़ा।
कपूर-पु० दे० 'चंदन'।
कपूर-पु० घ्रास, कौर -'आपने हाथ लै दैत है चनवर
दूध दही घृत सानि'-अष्टछाप।
कपूर-पु० वैती फसलका एक प्रधान अन्न जो कई रूपोंमें
खाया जाता है, रहिला। -खार-पु० चनेके डंठल,
पत्तियों आदिको जलाकर निकाला हुआ खार।
कपूर-खी० पंजाबकी पाँच प्रधान नदियोंमेंसे एक जो
लद्दाखके पहाड़ोंसे निकलकर सिंधमें गिरती है, चंद्रमागा।
कपूर-पु० एक ऊँचा पैर जो कर्मियोंमें बहुत होता है और
बड़ा सुंदर होता है।
कपूर-पु० एक तरहकी घास।
कपूर-वि० [का०] बायाँ। -दल-पु० वह घोड़ा जिसका
अगला दाहना पैर सफेद हो। -व राख-वि० दाहना-
बायाँ। अ० दाहने-बाये।
कपूर-खी० एक तरहका जंगरखा; † एक तरहकी लकड़ी
इमलिया।
कपूरना-अ० कि० दे० 'चिपकना'।

कपूरलक्ष-खी [पु०] तलवारकी लड़ाई; दंगा, झगड़ा;
भीड़; जगहकी लंगी; अङ्गचन, काठिनार्थ।
कपूर-पु० एक तरहका बीड़ा।
कपूरना-स० कि० दे० 'चिपकना'।
कपूरलक्ष-खी० दे० 'कपूरलक्ष'।
कपूर-पु० [सं०] दे० 'कपूर' (सं०)।
कपूरना-अ० कि० दे० 'चिपकना'।
कपूर-वि० दे० 'चिपकना'।
कपूरना-स० कि० चिपकाना, चिमडाना।
कपूर-खी० ताली; चुटकी; एक बीड़ा; किलनी; योनि।
† वि० खी० चिपटी।
कपूरलक्षनातिहा-वि० चापलस, खुशामदी।
कपूरलक्ष-वि० दे० 'चपराङ्ग'।
कपूर-खी० दे० 'चमक-चमक'।
कपूर-पु० साफ की हुई लाल; पसर; एक बीड़ा।
कपूर-खी० तमाचा; भील; धक्का, मुकसान। -गाह-पु०
लोपकी। -बाहरी-खी० मनोविनोदके छिप किसीकी चपत
लगाना। सु० -बैठना, -लगाना-मुकमान होना।
कपूर-खी० छत्र जैसी काठकी पट्टी जिससे लकड़के लकीर
खींचते हैं।
कपूर-अ० कि० दबना, कुचल जाना; दाबमें पड़ना;
लक्षित होना।
कपूर-खी० कटोरी; दरियाई नारियलका कमडल; पुडनेकी
हड्डी; हंडीका डकन।
कपूरलक्ष-वि० अमागा, विपक्ष, युद्धमयुग्मा।
कपूरना-स० कि० दे० 'चुपड़ना'; सानना। * अ० कि०
फुरती करना।
कपूर-पु० दे० 'कपूर'।
कपूरना-स० कि० बहकाना-('चोरी करि कपूरनावत
सौ हनि काहे को' इतने फौफट फौकन'-चन०)।
कपूर-खी० सिपाही; अरली आदिका धातुनिमित्त
चिह्न जिने पेटी या परतलेमें लगाकर पहनते हैं; मुकुम्मा
करनेकी कलम; मालखनकी एक कसरत; कुरतेके मोटेपरकी
चौकी धज्जी।
कपूरसी-पु० कपूरस धारण करनेवाला, अरली,
सिपाही।
कपूर-अ० झपटकर, फुरतीसे-'हठि न पिनाक काहू
चपरि चदायो है'-कवितावली।
कपूर-खी० एक कदन्न, केसारी।
कपूर-पु० एक घास।
कपूर-वि० [सं०] चंचल, अस्थिर; तेज, जल्दबाज; अवि-
चारी; क्षणिक। पु० पारा; मछली; पपीहा; एक तरहका
गुह्रा; हवा; राई; एक तरहका गंधद्रव्य, चोकर; एक तरह-
का पत्थर; क्षय।
कपूरलक्ष-वि० [सं०] अस्थिर; अविचारी।
कपूरलक्ष-खी० [सं०] चंचलता, अस्थिरता; तेजी; जल्दबाजी।
कपूर-वि० खी० [सं०] चपल, चंचल (खी०)। खी० लक्ष्मी;
विजली; पुंछली खी०; जीम; अंग; मध; पिप्पली।
कपूरलक्ष-खी० चपलता।
कपूरलक्ष-अ० कि० बिलना, चलना। स० कि० चलाना,

हिलाना ।

अपवादा-स० कि० दबवाना ।

अपाक*—अ० अचानक; अचपट ।

अपाट-पु० बह जूता जिसकी पंजी उठी न हो ।

अपाती-खी० पतली रोटी, कुल्हा । —सा पेट-भीतरकी ओर दबा, पेंसा हुआ पेट ।

अपाता-स० कि० दबवाना; रस्ती वा सूतकी ओढ़ना ।

अपेट-खी० भक्षा; रगड़ा; दबाव । पु० [सं०] अचपट, तमाचा ।

अपेटना-स० कि० दाबना; पीछा करते हुए मगाना; डटना ।

अपेटा-पु० भक्षा; दबाव; रगड़ा; लकड़ी, काष्ठ आदिका छपहला छोटा टुकड़ा जिसे उछालकर लकड़ियों से खेल खेला जाता है । खी० [सं०] अचपट, तमाचा ।

अपेटिका-खी० [सं०] तमाचा ।

अपेटी-खी० [सं०] भाइ-बुझा बड़ी ।

अपेरना-स० कि० दबाना, चोंपना ।

अपीटी-खी० छोटी दीपि; सिरमें जमी हुई दीपि ।

अप्यह-पु० दे० 'विप्यह' ।

अप्यम-पु० छिछला कटोरा ।

अप्यल-पु०, खी० चपटी एड़ीका जूता जिसमें पंजा प्रायः खुला होता है ।

अप्या-पु० चार अंगुल या चार बिचा स्थान; धोखामा स्थान; चतुर्थांश । —अप्या-अ० रणो-रणो; हर जगह ।

अप्यी-खी० चोंपनेकी क्रिया; धीरे-धीरे चोंच दबाना ।

अप्य-पु० पनवारका काम देनेवाला एक तरहका डोंड ।

अचका*—खी० दीस । वि० डरपोक ।

अचकना*—अ० कि० दीसना, दर्द करना ।

अचवाना-म० कि० 'चवाना' का प्रे० ।

अचाई*—पु० दे० 'चवाई' ।

अचाना-स० कि० दोनोंमें कुचलना, चूर करना । अचा-अचाकर-रक-रककर, कुछ बातोंकी छोड़ने, छिपाते हुए (मोलना) । मु० अचा जाना-खा जाना; काट खाना ।

अचारा*—पु० चौबारा ।

अचाव*—पु० दे० 'चवाव' ।

अचावन*—पु० दे० 'चवाव' ।

अचुतरा-प० मिट्टी, ईंटों आदिसे बैठनेके लिए बनाया गया धोखा ऊँचा स्थान ।

अचैना, अचैना-पु० अचाकर खानेकी चीज, मुना हुआ चना, चावल आदि, भूँजा ।

अचैनी, अचैनी-खी० तली दाल, मिठाई आदि जलपानकी सामग्री; अचैना; जलपानका मूल्य ।

अचक-खी० किसी चीजके पानीमें डूबनेसे निकलनेवाली आवाज ।

अचक-अचक-खी० कुत्ते-बिल्ली आदिके पानी पीते या तरल वस्तु खाते समय मुँहसे निकलनेवाली आवाज; खाते समय मुँहसे उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

अचना-अ० कि० कुचला जाना, रौंदा जाना ।

अचाना-स० कि० खिलाना; तर माल खिलाना; कुचल-वाना ।

अचोरना-स० कि० गोता देना, डुबीकर तर करना ।

अचमकना*—अ० कि० दे० 'चमकना' ।

अचम—'चम'का समासगत रूप । —गादच, —गीदच—प० चूहेकी झलकला खनपायी जीव जो चिचियोंकी तरह उड़ सकता है । —चिचच—वि० किलनीकी तरह चिपटनेवाला, पिंढ न छोड़नेवाला । —जुई, —जोई—खी० एक तरहकी छोटी किलनी; चिमटनेवाली चीज । —हस—खी० चमड़ेकी चकती जिसमेंसे होकर चरलेका तकला चूमता है । वि० खी० दुबली-पतली (खी) । —हस-पु० जूतेकी रगड़का धाव ।

अचक-खी० ओप, कांति; झलक (दिना, मारना); अचक; लचक; झटके आदिसे कमर आदिमें अचानक पैदा होनेवाला दर्द । —चौदनी-खी० बहुत दनाब-सिंगारसे रहनेवाली खी । —साई*—खी० अचमक, अचकीलापन । —अचक-खी० क्रांति-दीप्ति; तश्क-भक्क । —द्वार-वि० अचमकना, कातियुक्त ।

अचमकना-अ० कि० अचमक देना, झलकना, जगमगाना; प्रसिद्ध होना; उन्नति-समृद्धि प्राप्त होना; जीर पकड़ना; चौकना; भडकना; झटपट चल देना, खिलक जाना । रह-रहकर एकबारगी तीव्र पीड़ाका अनुभव होना, अचमक होना, खिलकना ।

अचमकी-वि० खी० झट भडक जानेवाली; अचक-भटक-वाली ।

अचमकाना-स० कि० अचमकदार बनाना, उत्पन्न करना; चिढ़ाना; भडकाना; दब लगाकर धोषेकी दयावक चंचल और तेज करना; अचमकानेके लिए दिखाना, हिलाना (छुरी, तलवार); भडकाना (उंगलियाँ, आँखें) ।

अचमकारा-पु० अचमक; अचाचौष पैदा करनेवाली रोशनी । वि० अचमकीला ।

अचमकारी*—खी० दे० 'अचमकारा' । वि० खी० अचमकीली ।

अचमकी-खी० कारचौबीमें जमीन भरनेके काम आनेवाला बूटा, सिंगारा; नकली देशमका कपड़ा ।

अचमकीला-वि० अचमकदार ।

अचमकीबल-खी० अचमकानेकी क्रिया ।

अचमकी-खी० अचमकानेवाली खी; कुलटा खी; झगडालू खी ।

अचमगादच-पु० दे० 'अचम'के साथ ।

अचमचम-पु० एक बेंगला मिठाई । अ० दे० 'अचमचम' ।

अचमचमाना-अ० कि० अचमकना, हतना साफ-सच्छ होना कि अचमक निकले । स० कि० अचमकाना, अचमचम करना ।

अचमचा-पु० छिछली कलछी जैसा पात्र जिससे खाना परोसने और चावल आदि उठाकर खाने-पीनेका काम लेते हैं; चिमड़ा; कोयला निकालनेका पात्र ।

अचमची-खी० छोटा अचमचा; चौड़ी-चपटी नोकवाली सलाई जिसमें कढ़ा-चूना निकालते और पानपर फैलाते हैं ।

अचमटा-पु० दे० 'चिपटा' ।

अचमचा-वि० प्राणिशरीरका नैमर्गिक आवरण, चर्म, त्वचा; शरीरसे अलग की हुई त्वचा, खाल; छिलका ।

अचमई-खी० चर्म, त्वचा ।

अचमत्करण-पु० [सं०] विस्मित, अचमकृत करना; उत्सव;

काव्योत्कर्ष ।

चमत्कार-पु० [सं०] लोकोत्तर वस्तु देखकर मनमें उत्पन्न होनेवाला आनन्दरूप विस्मय; अद्भुत बात, करामात; तमाशा; उत्सव; मोक्ष; काव्योत्कर्ष; अपामार्ग; डमक ।

चमत्कारक-वि० [सं०] चमत्कारी ।

चमत्कारित-वि० [सं०] चमत्कृत, विस्मित ।

चमत्कारी (रिच)-वि० [सं०] विस्मित करनेवाला; चमत्कारयुक्त ।

चमत्कृत-वि० [सं०] अचनेमें आया हुआ, विस्मित ।

चमत्कृति-जी० [सं०] चमत्कार ।

चमन-पु० [सं०] पीना; खाना; [फा०] बगारी; फुलबारी; हराभरा स्थान । -बंदी-जी० बाग उगाना; बगारियाँ आदि बनाना ।

चमनितान-पु० [फा०] पुष्पाढिका; हरियाली और फूलों-से शोभित स्थान ।

चमर-पु० [सं०] झुरा गाय नामका एक पशु; चँवर ।

-चुच्छ-पु० गिलहरी; लोमड़ी; चँवर । -शिक्षा-जी० बोझीकी कल्पना ।

चमर -'चमार'का समासमें व्यवहृत रूप । -जुलाहा-पु० हिंदू जुलाहा, कोरी । -बगडी-जी० काले रंगका छोटो बगला । -रंग-जी० चमारकासा स्वभाव, नीच प्रकृति ।

चमरक-पु० [सं०] सधुमनली ।

चमरका-पु० एक सुगंधित जड़ जो उबटनमें डाली जाती है ।

चमराकस-जी० चमड़ा कमाने, मोट आदि बनानेकी मजदूरी ।

चमरिक-पु० [सं०] कचनारका पेड़ ।

चमरी-जी० [सं०] झुरा गाय; चँवरी; मंजूरी ।

चमरीट-पु० चमारोंकी उनके कामके बदले मिलनेवाला फसल आदिका भाग ।

चमरीटी-जी० चमारोंकी बस्ती या टोली ।

चमरीधा-पु० देशी डगका बना, भारी, भड़ा जूता, चमौआ ।

चमला-पु०, चमली-जी० दे० 'चम्मल' ।

चमस-पु० [सं०] सोमपान करनेका लकड़ीका बना चमचे-के आकारका यज्ञपात्र; चमचा; धुआँम; पापड़; लहड़ ।

चमसि-जी० [सं०] एक तरहकी पीठी ।

चमसी-जी० [सं०] छोटा चमस; उरद, मूँग आदिकी पीठी ।

चमसी (सिन्)-वि० [सं०] चमस (सोमरससे पूर्ण) पाने-का अधिकारी ।

चमाऊ-पु० चँवर; † चमरोधा ।

चमाऊ-जी० चमक; कति ।

चमाचम-अ० चमकके साथ ।

चमार-पु० चमड़ा कमाने, जूते आदि बनानेका पंथा करने-वाली एक कलाज जाती । -चौदस-जी० चमारोंका जलसा; बार दिनकी भूमधाय; शोर-शुल, हड्डा ।

चमारिन-जी० चमार की ।

चमारी-जी० चमार की; चमारका पंथा ।

चमीकर-पु० [सं०] सोनेकी एक (प्राचीन) खान ।

चमुपति-पु० [सं०] दे० 'चमुपति' ।

चम्-जी० [सं०] सेना; सेनाका एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ दूध, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे; कफन; कम । -चर-पु० सैनिक, सिपाही । -बाध, -बाधक, -प, -पति-पु० सेनानायक । -हर-पु० शिव ।

चमू-पु० [सं०] एक तरहका हिरन ।

चमेलिया-वि० चमेलीके रंगका ।

चमेली-जी० एक झाड़ी या लता जिसके फूल अपनी सुगंधके लिए प्रसिद्ध हैं । -का आल-एक तरहका कसीदा ।

-का लेख-चमेलीके फूलोंसे बसाये हुए तिलका लेख ।

चमोटा-पु० चमकेका टुकड़ा जिसपर छुरेकी भार तेज करनेके लिए रगड़ते हैं ।

चमोटी-जी० चमोटा; चाबुक; पतली छड़ी; सान या खरादमें छपेटा जानेवाला तम्बा ।

चमीआ, चमीचा-पु० चमरीका जूता ।

चम्मच-पु० दे० 'चमचा' ।

चम्मल-पु० मोक्ष मँगनेका व्याला, मिश्रापात्र ।

चय-पु० [सं०] समूह, ढेर; नीबू; हूह, टीला खाईकी मिट्टी-से बना हुआ बाँध या धुस्म, दुर्गप्राचीर; किलेका फाटक; तिपार्थ, चौकी; लकड़ीका ढेर; आवरण; वात, पित्त, कफमें-से किसीका बढ़ जाना; अग्नि-चयन ।

चयक-वि० [सं०] चयन करनेवाला; चयन करनेमें कुशल ।

चयन-पु० [सं०] इकट्ठा करना; चुनना; फूल चुनना; कमसे लगाना; चुनी हुई वस्तुओंका समूह; यक्षके लिए अग्निका एक सत्कार; लकड़ी जमा करना; * दे० 'चैन' । -शील-वि० संग्रह करनेवाला, संग्रही ।

चयनिका-जी० [सं०] चुनी हुई कविताओं, कहानियों आदिका समूह ।

चयनीय-वि० [म०] चयन करने योग्य ।

चर-पु० कपड़े आदिके फटनेका शब्द; [सं०] खराब या पराङ्गकी छिपी बातें मालूम करनेपर नियुक्त व्यक्ति, गुप्त दूत, भेदिया; दूत; कौड़ी; पानेका मेल; खँडरिच; मंगल ग्रह; मंगलवार; मेघ, वर्षा, तुला; मकर राशियाँ; सातवाँ करण; करणोंका समाहार; वायु; दौं देशांतर-रेखाओंके बीच पड़नेवाला समयका अंतर । वि० चल, अस्थिर; चलनेवाला; जीवधारी, मज्जीव । -काळ-अ० दिनमान जाननेमें उपयोगी कालभेद । -रुह-अ०, अचयन-पु० चर राशि-मेघ, कर्क, तुला और मकर । -द्रव्य-पु० चल पदार्थ, सपत्ति । -नक्षत्र-पु० स्वाती, पुनर्वसु, अश्लेष, धनिष्ठा आदि नक्षत्र । -पुष्ट-पु० मध्यस्थ । -मूर्ति-जी० वह मूर्ति जिसकी सवारी निकाली जाय ।

चरई-जी० पशुओंकी चारा या पानी देनेके लिए पत्थर आदिका बना हुआ दौड़; नारकी लुंटी (कबीर) ।

चरक-जी० दे० 'चरको' । पु० एक प्रकारका कुष्ठ जिसमें बदनपर सकेद दाग हो जाते हैं, फूल; [सं०] चर, दूत; आयुर्वेदके एक प्रधान आचार्य जिनका ग्रंथ 'चरकसंहिता' आयुर्वेदका प्रधान चिकित्साग्रंथ माना जाता है; चरक-संहिता; पिचापात्र; मिश्र । -संहिता-जी० चरक मुनि-का बनाया हुआ चिकित्साग्रंथ ।

चरकटा-पु० ऊँट, हाथी आदिके लिए चारा काटकर लाये-
वाला; मुच्छ जन ।

चरकथा*-अ० कि० दूटना, छूटना, दरकना ।

चरका-पु० इलकासा जस्म, खरोच; गरम जीहसे दायने-
का निशान; हासि, घाटा; चकमा, धोखा (खाना, देना) ।

चरकी-खो० [मं०] एक विषैली मछली ।

चरख-पु० चाक; चरखी, घिरनी; खराद; चरखा; रेशम
या कलबस्त्र छपेटनेकी चरखी; डेलबॉस; तीप होनेवाली
गाड़ी; लकड़बग्घा; एक शिकारी चिड़िया । -**ऊखा**-पु०
खरादकी खोरी खींचनेवाला, खरादी । -**पूजा**-खो० चैत्र-
की संक्रांतिकी शिवकी प्रसन्न करनेके लिए होनेवाली एक
सांभूषिक पूजा ।

चरखा-पु० हाथसे स्तत काटनेका काष्ठनिर्मित यंत्र (कातना,
चलाना); रस्स; स्तत छपेटनेकी चरखी; घिरनी; खड़खड़िया;
पुश्तीका एक पेंस; ऊखका रस निकालनेकी कल; बैटोल
पड़िया; शिथिलांग बुद्ध व्यक्ति; हस्तवाला काम ।

चरखी-खो० घूमनेवाला चक्कर; चाक; ओटनी; छोटा
चरखा; स्तत छपेटनेकी घिरनी; एक आतिश्याजी की चक्कर
छाती हुई छूटती है; जुगहांका एक औजार; कुएँसे पानी
निकालनेकी गराही; हिंडोला ।

चरग*-पु० चरख नामकी शिकारी चिड़िया; लकड़बग्घा ।

चरचना-स० कि० चंदन, केसर आदिका लेप करना; पह-
चानना; ताड़ना; भीषण-‘तेननि चरचि लई गौननि
धकित मई नैननिमें चाह करै नैननिमें नहिथी’-रस-
विलास; पूजा करना-‘सुदृशस्त मुनि चरन चरचि करि
सुरलोकन रुचि मानी’-सूर ।

चरचरा-पु० खाकी रंगकी एक चिड़िया जिसकी छाती
सफेद होती है ।

चरचराना-अ० कि० ‘चर चर’की आवाजके साथ दूटना
या जलना; चराना; तनावके कारण दर्द होना ।

चरचराहट-खो० चरचरानेकी क्रिया या भाव; किसी चीज-
के चरचरानेका शब्द ।

चरचित*-वि० दे० ‘चचित’ ।

चरचा*-खो० दे० ‘नचि’ ।

चरचारी*-वि०, पु० चर्चा करनेवाला; निंदक ।

चरज*-पु० चरल पक्षी ।

चरजना-स० कि० बहकाना । अ० कि० अंदाजा लगाना ।

चरट-पु० [सं०] खेंबरिच ।

चरण-पु० [सं०] पौत्र, पग, कदम; श्लोकका चतुर्थांश,
छंदका एक पाद, मिसरा; चौथाई, चतुर्थांश; उपविभाग;
वेदकी कोई शाखा-कठ, चौधुम आदि; मूल, जड़; स्तंभ;
सहारा; पदाति; मूर्त; चंद्र आदिकी किरण; चलना, अग्रण;
अक्षण; अनुष्ठान; वर्गविशेषका विहित कर्म; आचरण;
(ला०) चरणोंकी समीपता, आश्रय; गोत्र, जाति; क्रम ।

-**कमल**, -**पद्म**-पु० पादप, सुंदर चरण । -**गल**-वि०
चरणोंपर गिरा हुआ । -**गुल**-पु० चित्रकाम्यका एक क्ले
विसमें कीटक बनाकर अक्षर भरे जाते हैं । -**प्रवि**-खो०
गुल्फ, टखना । -**विह्व**-पु० पौषका निशान, पदचिह्न ।

-**खल**-पु० पैरका तलवा, पदतल । -**दास**-वि० चरण-
सेवी । पु० दिल्ली के रहनेवाले एक संप्रदाय-प्रवर्तक संत

(सं० १७६०-१८३९) । -**दासी**-पु० [हिं०] चरणदास-
के अनुयायी । खो० चरणोंकी दासी, सेविका; पत्नी; जूती ।

-**प्याम**-पु० कदम; पदचिह्न । -**प**-पु० गुल । -**पर्व**(त्र)
-पु० गुल्फ, टखना । -**पादुका**-खो० खड़ाऊँ; पत्थर

आदिपर बना चरणचिह्न । -**पीठ**-पु० खड़ाऊँ; पौषकी ।

-**भुग**, -**भुगज**-पु० दोनों पैर, पादद्वय । -**रज**(त्र)-

खो० चरणचिह्न । -**खरन**-वि० दे० ‘चरणगत’ । -**खुह**-
पु० वेदशास्त्रात्मिका विभाग करनेवाला ग्रंथविशेष ।

-**खुचा**, -**सेवा**-खो० चरणगत होना; पौष इषाना,
पौषपी; सेवा, स्त्रिमत । -**सेवी**(विन्)-पु० टखल,
सेवक; चरणोंमें रहनेवाला । **मु**-**छना**-पौष छूकर

प्रणाम करना; प्रणाम करना । -**देना**-पौष रखना ।
-**पचना**-आगमन, प्रवेश होना । -**छेना**-पौष पचना,

चरण छूना ।

चरणाक्ष-पु० [मं०] अक्षपाद, गौतम ।

चरणाग्नि-पु० [सं०] चुनार ।

चरणानसि-खो० [सं०] चरणोंपर गिरना ।

चरणानुग-वि० [सं०] (किसीके) पीछे चलनेवाला,
अनुगामी ।

चरणामृत-पु० [सं०] वह जल जिसमें किसी देवमूर्ति या
पुण्य पुरुषके पौष पसारे गये हों; देवमूर्तिकी कान कराया
हुआ जल या पंचामृत ।

चरणायुध-पु० [सं०] मुरगा ।

चरणारविंद-पु० [सं०] दे० ‘चरणकमल’ ।

चरणार्द्ध-पु० [सं०] चरणका आधा भाग; वस्तुका आठवाँ
भाग ।

चरणारूढ़न-पु० [सं०] पैरोंसे कुचलना, रौंदना ।

चरणोदक-पु० [सं०] चरणामृत ।

चरणोपधान-पु० [सं०] पैर रखनेकी चीज, पौषदान ।

चरता-खो० [मं०] चलनेका भाव; पृथ्वी ।

चरती-पु० व्रत न करनेवाला व्यक्ति ।

चरथ-वि० [मं०] जगमग; चलनेवाला ।

चरन*-पु० दे० ‘चरण’ । -**दासी**-खो० जूती (साधु) ।

-**चरदार**-पु० जूता पहनाने या जूता लेकर चलनेवाला
नौकर, कफज-चरदार ।

चरना-स० कि० पशुओंका मैदान या खेतमें घास, शसपादि
खाना; * लीचना, हवाना-‘...जो हडि जनकी सीधे चरे’
-विनयपत्रिका । * अ० कि० चलना; व्यवहार करना;

फिरना, विचरना । पु० काछा ।

चरणायुध*-पु० दे० ‘चरणायुध’ ।

चरनि*-खो० चलनेकी क्रिया या रंग; चाल ।

चरनी-खो० मैश्चर लंबोतरा चतुर्ता जिसपर गाय-बैलको
चारा-पानी दिया जाता है; गाय-बैलको चारा-पानी देनेके
लिए गाड़ी हुई नौडि; * घास, चारा; चरागाह; चरनेकी

क्रिया ।

चरणी*-खो० चवन्नी ।

चरपट-पु० उचका; चपल, तनाचा; एक छंद ।

चरपर-वि० दे० ‘चरपरा’ ।

चरपरा-वि० तीखे स्वादवाला, झालदार; तेज, छटपट ।

चरपराना-अ० कि० चराना; धावमें झुसकीके कारण

तलाक़से पीका होना; चरपराहट होना ।

चरपराहट-खी० स्वादका तीखापन, क्षार; वायवी चखन; डाह, द्वेष ।

चरफारा-वि० दे० 'चरपरा' ।

चरफराना-अ० कि० तड़फराना, भ्वाकुल होना ।

चरब-वि० [फा०] चरबीदार, चिकना; मोटा; तेज; चतुर । -बुरत-वि० कुशल, चतुर; कारीगर; (छा०) गठकनरा । -जुबान-वि० जिसकी जवान तेजीसे चले; चिकनी-चुपची बातें करनेवाला, चापलूस । -जुबानी-खी० बाचालता; चापलूसी । **मु०-करना-धीतेलमें** तलना; धीतेल लगाना; चिकनाना ।

चरब-पु० चरैना ।

चरबाँक, चरबाक-वि० चतुर; ठीठ, निडर; चंचल ।

चरबा-पु० [फा०] वह चिकना, बारीक कागज या कपडा जिसे ऊपर रखकर चित्र या नक्शेका अक्स उतारते हैं, छाका (उतारना); प्रतिछिपि, नकल ।

चरबाना-स० कि० डौलपर चमडा चढ़ाना ।

चरबी-खी० [फा०] मांसके ऊपर और त्वचाके नीचे रहनेवाला सफेद या हलके पीले रंगका चिकना पदार्थ, वसा, भेद; मांसको पिघलाकर अलग की हुई चिकनाई; मोटाई । **मु०-चढ़ना-मोटा** होना; भर चढ़ना, घमंड होना । (**ऑल्लोमें**)-छाना-घमंड, लापरवाही आदिसे किसी वस्तुपर ध्यान न जाना ।

चरम-वि० [सं०] अंतिम, आखिरी; हृदय दर्जेका; सबसे पीछेका; पश्चिमी; जरठ (अवस्था) । -काल-पु० क्षुल्लकाल ।

-गिरि-पु० अस्ताचल । -बचा(यस्)-वि० हृद ।

चरमर-पु० चलनेमें जूतेसे, चारपाईपर बैठने आदिसे होनेवाली आवाज ।

चरमरा-वि० 'चरमर' शब्द करनेवाला ।

चरमराना-अ० कि० 'चरमर' आवाज होना । **स०** कि० 'चरमर' शब्द उच्चारण करना ।

चरमवती*-खी० दे० 'चर्मप्वती' ।

चरलीला-पु० एक काव्यपिथ ।

चरबाँक-वि० दे० 'चरबाँक' ।

चरबाई-खी० चरानेका काम; चरानेकी उजरत ।

चरबाना-स० कि० चरानेका काम कराना ।

चरबाहा-पु० गाव-ईस चरानेका काम करनेवाला ।

चरबाही-खी० चरबाहेका काम; पशु चरानेकी उजरत ।

चरबेयाँ-पु० चरनेवाला; चरानेवाला ।

चरब्य-वि० [सं०] जिसमें चर बनाया जाय (तंडुलादि) ।

चरस-पु० गाँवके पेड़से निकला हुआ गोंद जो गाँवकी ही तरह पिया जाता है; दे० 'चरस' ।

चरसा-पु० बैल, सैस आदिका चमड़ा; चमड़ेका बना बडा थैला; चमड़ेका ढोल जिसमें खेत सींचनेके लिए पानी निकालते हैं; पुर; जमीनकी एक नाप, गोचर्म ।

चरसिया, चरसी-पु० चरम पीनेवाला, चरसका व्यवसयी; चरसके जरिये पानी निकालने या खेत सींचनेवाला ।

चरसी-खी० दे० 'चरनी' ।

चराई-खी० चरने या चरानेका काम; चरानेकी उजरत; चरानेका कर ।

चरागा-पु० [फा०] चिराय, दिया ।

चरागान-पु० [फा०] ('चराय'का बहु०) बहुतसे दिवोंका साथ चलना, दीपोत्सव ।

चरागाह-पु० [फा०] पशुओंके चरने-चरानेकी जगह; घासका मैदान ।

चराहर-वि० [सं०] चलनेवाला और न चलनेवाला, स्थावर और जंगम । **पु०** संपूर्ण जंगम; आकाश । -**शुद्ध-पु०** ब्रह्मा; परमेश्वर; शिव ।

चरान-पु० चरागाह; समुद्रतटके पास खारे पानीका इलदल जिसमेंसे ममक निकाला जाता है ।

चराना-स० कि० गाय, बैल आदिकी जंगल, मैदान आदिमें ले जाकर घास, चारा खिलाया; बैवकूप बनाना, पोखा देना ।

चराब-पु० चरनी; चरागाह ।

चराबर*-खी० बकनास ।

चरिंद-पु० [फा०] दे० 'चरिदा' । -**ब परिंद-पु०** पशु-पक्षी ।

चरिदा-पु० [फा०] चरनेवाला प्राणी, जानवर; चौपाया ।

चरि-पु० [सं०] पशु ।

चरिस-पु० [सं०] आचरण; कर्म; शील, स्वभाव; जीवन-वृत्ति । **वि०** आवरित, किया हुआ; प्राप्त; गम; ज्ञान ।

-**कार, -लेखक-पु०** जीवनचरित्रका लेखक । -**नायक-पु०** किसी कथा-कहानीका प्रधान पात्र ।

चरितव्य-वि० [सं०] आचरण करने योग्य; जाने योग्य ।

चरितार्थ-वि० [सं०] जिसका अर्थ, प्रयोजन सिद्ध हो गया हो, कृतार्थ; सतुष्ट; जो ठीक उतरे, यथार्थ सिद्ध हो (उक्ति चरितार्थ होना) ।

चरितार्थता-खी० [सं०] कृतार्थता; यथार्थ सिद्ध होना; घटित होना ।

चरितार्थी(चिंद्र)-वि० [सं०] सफलताकी आकांक्षा करनेवाला ।

चरितावली-खी० [सं०] वह पुस्तक जिसमें बहुतोंके जीवन-चरित दिये गये हों, चरितमाला ।

चरितरा-पु० चरित्र; छत्र, परेवा; ढोंग ।

चरित्र-पु० [सं०] आचरण, व्यवहार; चाल-चलन; कर्मव्य, कर्म-कलाप; शील, स्वभाव; सदाचार; जीवन, वृत्ति; पैर; गमन । -**गठन-पु०** [सं०] शील, सदाचार-वृत्तिका निर्माण । -**दोष-पु०** चाल-चलनकी खराबी, आचरणकी सुटाई । -**नायक-पु०** दे० 'चरितनायक' । -**बंधक-पु०** मैत्रीपूर्ण प्रतिष्ठा । -**हीन-वि०** दुश्चरित्र, खराब चाल-चलनवाला ।

चरित्रवान्(वद)-वि० [सं०] अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी । [खी० 'चरित्रवती']

चरित्रा-खी० [सं०] इमलीका पेड़ ।

चरित्र्यु-वि० [सं०] चलने-फिरनेवाला, जंगम ।

चरी-खी० पशुओंके चरनेके लिए जमीनदारकी ओरसे बिछा लगाय मिली हुई जमीन, गोचारणभूमि; हरी ज्वार जो गाय-बैलोंको खिलानेके लिए बोयी गयी हो; [सं०] इत्ती; खी जाइस; दासी; जवान खी ।

चरीत्र-पु० [सं०] दे० 'चरित्र' ।

चह-पु० गोचर भूमि; गोचर भूमिका कर; [सं०] यहाँ आहुति देनेके लिए पकाया हुआ अन्न; हव्यान्न; वह बरतन जिसमें चर पकाया जाय; मेघ; यज्ञ । -**चेली (चिन्)** - पु० शिव । -**पात्र-पु०**, -**स्थाली-स्त्री** चर पकानेका बरतन । -**झण-पु०** एक तरहकी पीठी या पकवान ।
चहभा-पु० चौड़े मुँहका मिट्टीका पात्र; वह पात्र जिसमें जघाके लिए पानी गरम किया जाय ।
चहखला-पु० चरखा ।
चह-पु० दे० 'चह' ।
चहरे-वि० सुरदरा; रुखा ।
चहरे-पु० पक्षी ।
चहरी-स्त्री ब्राह्मी नृती ।
चहरी-पु० चरनेवाला; चरानेवाला ।
चहरे-पु० एक तरहका चूल्हा जिसपर चार चोखे एक साथ पकायो जा सकती हैं ।
चहरेखरी-पु० चरी, गोचर भूमि ।
चहरोत्तर-पु० किसीके निर्वाहार्थे भिदगीभरके लिए दी गयी जमीन ।
चहर्न-पु० [फा०] धूमनेवाला चक्र; चाक; आकाश; खराद; किसी हुई कमना; चरखी; देलबॉम; चरखा; एक तरहका बाज । -**कषा-पु०** खरादकी डोरी खींचनेवाला । -**झन-पु०** चरखा कातनेवाला ।
चखी-पु० दे० 'चरखी' ।
चखी-स्त्री दे० 'चरखी' ।
चर्च-पु० [सं०] विचारना; [अ०] ईसायोंका उपामना-मंदिर, गिरजा; ईसाई धर्म माननेवालोंकी समष्टि; ईसाई धर्मपथ; ईसाई धर्मका कोई विशेष सप्रदाय ।
चर्चक-पु० [सं०] चर्चा करनेवाला; आहुति करनेवाला ।
चर्चन-पु० [सं०] चर्चा; अभ्ययन; आहुति; चंदनारिका लेपन ।
चर्चरिका-स्त्री [सं०] नाटकमें एक परदा गिरनेके बाद और दूसरा उठनेके पहले गाया जानेवाला गाना; तालीमे ताल देना; आभोद-प्रमोदकी धूम; उत्सव; चापलमी; घुंगाले बाल; दो आदमियोंका बारी-बारी कवितापाठ करना ।
चर्चरी-स्त्री [सं०] चर्चरिका; चोचर, फग; रगरगियाँ मनाना, हर्षकीडा, आभोद-प्रमोद; गाना-बजाना; करतल-झनि; तालका एक भेद; एक वर्णभूत; एक तरहका ढोल; अंगभगी ।
चर्चरीक-पु० [सं०] महाकालदेव, बाल सँवारना; साग-भाजी ।
चर्चा-स्त्री [सं०] पाठ, आहुति; वाद-विवाद; त्रिक, बयान; वार्तालाप; अफवाह; विचारणा; चंदनारिका लेपन; दुर्गा ।
चर्चा (चंस)-पु० [सं०] कुचरेकी नौ निधियोंमेसे एक ।
चर्चि-स्त्री [सं०] आहुति; विचारणा ।
चर्चिका-स्त्री [सं०] दे० 'चर्चा' ।
चर्चिक-पु० [सं०] चंदनारिका लेपन; अगराम ।
चर्चित-वि० [सं०] लेपित; विचारित; इच्छित; जिसकी चर्चा की गयी हो । पु० लेपन ।

चर्चिल, चिस्सटन-पु० ब्रिटिश राजनेता; जन्म १८७४; ब्रिटेनके प्रधान मंत्री १९४०-४५ तथा १९५१ से १९५५ तक ।
चर्नार-पु० दे० 'चरणादि' ।
चर्नट-पु० [सं०] सुली, कैली हुई इपेली, चपत ।
चर्नटी-स्त्री [सं०] चपाती ।
चर्नरा-वि० दे० 'चरपरा' ।
चर्नन-पु० [सं०] दे० 'चर्वण' ।
चर्नित-वि० [सं०] दे० 'चर्वित' ।
चर्नी-स्त्री दे० 'चरनी' ।
चर्नट-पु० [सं०] एक तरहकी ककड़ी ।
चर्नटी-स्त्री [सं०] आनदमें उल्लसना-कूरना, हर्षकीडा; चर्चा; गर्वाक्ति ।
चर्न-पु० [सं०] खाल; ढाल ।
चर्न (न)-पु० [सं०] चमड़ा, खाल; स्पर्शद्वय; ढाल ।
-करण-पु० चमड़ेका काम करना । -**कषा-कषा-स्त्री** एक गंधद्रव्य, चमरखा । -**कार, -कारक-पु०** चमार, चमड़ेका काम करनेवाला, मोची । -**कारिणी-स्त्री** वह स्त्री जिसके मासिक ज्ञावका दूसरा दिन चल रहा हो । -**कारी-स्त्री** चर्मकवौषधि । -**कीक-पु०** बयामीर; एक रोग जिसमें देहमें नुकीला मग्मा निकल आता है । -**कूप-पु०** चामकी कुप्पी । -**प्रीव-पु०** शिवका एक अनुचर । -**घटिका-स्त्री** ओक । -**चक्षु- (स्)** -पु० स्थूल दृष्टि । -**चटक-पु०**, -**चटका**, -**चटिका**, -**चटी-स्त्री** चमगादड़ । -**चित्रक-पु०** सफेद कोढ़, कुल । -**चेल-पु०** चमड़ा उलटकर बनाया हुआ पहनावा । -**ज-वि०** चमड़ेमे उत्पन्न । पु० रोअ; रक्त ।
-तरंग-स्त्री खालकी सिकुड़न, झुरी । -**तिल-वि०** पुस्तियोंमे भरा हुआ (शरीर) । -**हँद-पु०** चमड़ेका बना चाबुक । -**दुल-पु०** एक तरहका कोढ़ । -**दुषिका-स्त्री** दाढ़ । -**हुम-पु०** भोजपत्रका पेड़ । -**नालिका**, -**नासिका-स्त्री** चमड़ेका बना चाबुक । -**पट्टिका-स्त्री** चमोटी । -**पत्रा-स्त्री** चमगादड़ । -**पादुका-स्त्री** जूता । -**पीड़िका-स्त्री** एक तरहकी शीतल । -**पुट, -पुटक-पु०** चमड़ेका बना हुआ कुप्पा या बैला; पीकनी । -**प्रसेविका-स्त्री** पूजा, सुगारी । -**प्रसेवक-पु०**, -**प्रसेविका-स्त्री** दे० 'चर्मपुट' । -**बच-पु०** चमड़ेकी पट्टी, तस्सा । -**मसूरिका-स्त्री** मसूरिका रोगका एक भेद । -**मुंडा-स्त्री** दुर्गा । -**मुद्रा-स्त्री** तांत्रिक पूजामें प्रयुक्त एक मुद्रा । -**दष्टि-स्त्री** चमड़ेका चाबुक । -**रंगा-स्त्री** आवर्तकी नामक पौधा । -**वंश-पु०** एक प्राचीन बाजा । -**वसन-पु०** शिव । -**वाघ-पु०** ढोल; नगाडा । -**वृक्ष-पु०** भोजपत्रका पेड़ । -**व्यवसायी- (विन्)** -पु० चमड़ेका कार-बार करनेवाला । -**संभवा-स्त्री** बड़ी इलायची । -**सार-पु०** देहमें आहारसे उत्पन्न होनेवाला रक्त, लसीका ।
चर्मपा-स्त्री [सं०] एक तरहकी मखली ।
चर्मप-वि० [सं०] चमड़ेका बना । पु० चमड़ेका काम ।
चर्मपती-स्त्री [सं०] चबल नदी ।
चर्ममय-वि० [सं०] चमड़ेका बना हुआ ।

चर्मरु-पु० [सं०] दे० 'चर्मर' ।
चर्मात-पु० [सं०] चर्मखट, चर्मरुका टुकड़ा; चौर-फाड़के काम आनेवाला एक प्राचीन यंत्र ।
चर्माभ(स्)-पु० [सं०] लसीका ।
चर्माख्य-पु० [सं०] कुछ रोगका एक भेद ।
चर्मानुरंजन-पु० [सं०] वरन रंगनेके काम आनेवाला सिद्ध जैसा एक द्रव्य ।
चर्मरि-पु० [सं०] चर्मकार, चमार ।
चर्मरुह-पु० [सं०] दे० 'चर्मानुरंजन' ।
चर्मावकर्तन-पु० [सं०] चर्मरुका काम ।
चर्मावकर्ता(रुं), **चर्मावकर्ता(रिन्)**-पु० [सं०] चर्मकार ।
चर्मिक-वि० [सं०] जिसके पास डाल हो ।
चर्मी(मिन्)-वि० [सं०] डालवाला, चर्मधारी; चर्मरुका बना हुआ । पु० भोजपत्रका पेड़; केला; चर्मधारी सैनिक ।
चर्म्य-वि० [सं०] गमन करने योग्य (स्नानादि); करने योग्य, आचरणीय ।
चर्म्य-स्त्री० [सं०] आचरण; पालन, जीविका; नियमपूर्वक अनुसरण; गति गमन; भ्रमण; भोजन; चाल; प्रथा; दुर्गो ।
चर्मना-अ० क्रि० स्नातमें खुदकीमें ननाथ या हलका दर्द होना; 'चर-चर' करके टूटना; (ला०) प्रबल इच्छा होना (श्रीक चर्मना) ।
चर्मी-स्त्री० लगनेवाली बात ।
चर्वण-स्त्री० [सं०] चबाना; रमास्वादन; चबेना; ठोस खाद्य पदार्थ ।
चर्वणा-स्त्री० [सं०] चर्वण, रमास्वादन; चबानेवाला ढँल ।
चर्वा-[सं०] चपत; चबाना ।
चर्वित-वि० [सं०] चबाया हुआ । -**चर्वण**-पु० चबाये हुएको चबाना; (ला०) कही हुई बातको फिर-फिर कहना ।
पात्र, -**पात्रक**-पु० पीकदान ।
चर्व्य-वि० [सं०] चबाने योग्य । पु० चबाकर खानेकी चीज ।
चर्वणि-पु० [सं०] मनुष्य ।
चर्वणी-स्त्री० [सं०] कुलड़ा स्त्री ।
चर्लता-वि० चलनेवाला, चालू ।
चर्लदरी-स्त्री० पीमरा ।
चल-वि० [सं०] गतिमान; हिलना डोलना, अधिग; जगमग; व्यवसाय हुआ; क्षणस्थायी । पु० परा; कप; बाहु; भूल; रोष; छल; शिव; परमेश्वर; विष्णु; नृत्यमें एक विशेष चेष्टा । -**कर्ण**-पु० एकवीने प्रहोकी बालनिक दूरी; हाथी । वि० जिसके कान मृदा हिलते रहें । -**केनु**-पु० पक्षिममें उगनेवाला एक पुच्छल तारा । -**चंचु**-पु० चको । -**चिच**-वि० अधिरात्रिच, चंचल चिचवाला । -**चित्र**-पु० तिनैमा, वाद्यकोष (आ०) । -**चूक**-स्त्री० छलकपट । -**दल**, -**पत्र**-पु० पीपलका पत्र । -**चिचल**-वि०, स्त्री० [हि०] दे० 'चलविचल' । -**मित्र**-पु० अस्थिर मित्र । -**विचल**-वि० जो अपनी जगहमें हट गया हो; अस्थिर, डावाँडोल; अव्यवस्थित । स्त्री० [हि०] व्यातिक्रम, क्रमभंग ।
चलकना-अ० क्रि० चिलकना; चमकना ।
चलचलाव-पु० झुच; मौत; चलनेकी तैयारी; प्रस्थानकाल;

प्रस्थानकी हडबडी, रवारवी ।
चलचल-वि० चंचल, डावाँडोल ।
चलता-स्त्री० [सं०] चल या गतिशील होनेका भाव; अस्थिरता । वि० [हि०] चलता हुआ; गतिमान्; जिसका चलन हो, प्रचलित; जो सदा खुला, जारी रहे (खाता); चलनेवाला, काम देने लायक; बदता, चमकता हुआ (चलनी दुकान, बकालत); सरसरी, ऊपरी (चलती निगाह); चालाक (व्यवहारकुशल); कामचलाक (काम्य); हलका, अशास्त्रीय (गाना, चीज) । -**खाता**-पु० बकका वह खाता जिसमें चाहे जब रुपया जमा किया और निकाला जा सके । -**पुरझा**-वि० चालाक, धूर्त । **मु०** -**करना**-हडाना, बिदा करना; निपटाना । -**फिरता** बज़र आना-चलता बनना । -**बनना**, -**होना**-चल देना, खिचक जाना । -**(रुं)बाजू**, -**हाथ**-जबनक अपने पास शक्ति-सामर्थ्य रहे ।
चलती-स्त्री० जोर, असर ।
चलतू-वि० दे० 'चलता' ।
चलत्पुर्णिमा-स्त्री० [सं०] चंद्रक नामकी मछली ।
चलदंग, **चलदंगक**-पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।
चलद्विष-पु० [सं०] कौकिल ।
चलन-पु० [सं०] हिलना-डोलना; गति, चाल; भ्रमण, गणन; हरिण । -**कलन**-पु० ज्योतिषका एक गणित जिसके द्वारा दिनमानका घटना-बढ़ना जाना जाता है । -**समीकरण**-पु० गणितकी एक विशेष क्रिया जिसके द्वारा शत राशिकी सहायनामें अज्ञान राशि निकाली जाती है ।
चलन-पु० चलनेका भाव; व्यवहार, रिवाज; रीति; चाल, ढंग; प्रचार । -**सार**-वि० जिसका चलन, व्यवहार हो, प्रचलित (सिक्का); टिकाक ।
चलनक-पु० [सं०] (नर्सरी आदिका) ५/१२२ ।
चलनदरी-स्त्री० दे० 'चलदरी' ।
चलना-पु० बड़ी चलना; छला । अ० क्रि० हिलना, हरकत करना; एकसे दूसरी जगह जाना; प्रस्थान करना; चलन होना, प्रचलित होना; आरंभ होना, छिड़ना (नचो, बात), बिदा होना, मरना; जारी, कायम रहना (नाम, बजा; निभना; टिकना; बहना; काममें लया जाना (मलबार, लडाई ह०); छूटना, फँका जाना (नौर, मोली); हो सकना; उठना; बदलावर होना, चमकना; चलनी होना, काम देना, करना; अरार करना; कारगर होना (जादू-मंत्र); जोर, बस चलना; आचरण करना; परमा जाना; पढा जाना (पद्यादि); खाया जाना; पुनर होना; दाख होना (मुकदमा ह०) । स० क्रि० (अंतरज, चौमर आदिमें) मोहरे या गोदकी एकन दूसरे घरम रखना, हडाना, बढ़ाना; (नाश, गंभीरमें) कोरे पत्ता खेलने-वालोंके नाममें फेंकना । **मु०** **चल निकलना**-ठीक नौरमें चलने लगना, जमना; सकलताकी ओर बढ़ना (काम, बकालन आदि) ।
चलनि-स्त्री० दे० 'चलन' ।
चलनिका-स्त्री० [सं०] रेसमी शावर ।
चलनी-स्त्री० दे० 'छलनी'; [सं०] घंघरी; हाथी बाँधनेका

रत्ना ।

चलनीस—पुं वह पदार्थ जो चलनेके बाद चलनीमें बच रहे, बौकर आदि ।

चलबाँक—वि० दे० 'चरबाँक'; तेज चलनेवाला ।

चलवत—पुं पैदल सैनिक ।

चलवाना—स० कि० चलाने या चालनेका काम कराना ।

चलवैया—पुं चलनेवाला ।

चल संपत्ति—स्त्री० [५०] ऐसी संपत्ति जो एक स्थानसे हटाकर अन्यत्र ले जायी जा सके ।

चला—स्त्री० [म०] बिजली; धूम्रः लक्ष्मी; पिप्पली ।

चलाऊ—वि० अधिक चिन्त चलनेवाला, ठिकाण ।

चलाक—वि० चालाक, चतुर; चंचल ।

चलाका—स्त्री० बिजली ।

चलाचल—वि० [म०] चल और अवल; अस्थिर। क्षण-स्मायी; चंचल । पुं कौश। * स्त्री० चलाचली; चाल ।

चलाचली—स्त्री० चलचलवा; बहुतांका एक साथ चलना । * वि० चलनेको उद्यम ।

चलातंक—पुं० [म०] एक वातरोग, आमवान ।

चलान—पुं० दे० 'चालान' । —द्वार—पुं० दे० 'चालान-द्वार' ।

चलाना—म० कि० चलनेको प्रेरित करना, चलनेको क्रिया कराना; हाँकना; हिलाना; हरकत देना; आचरण कराना; चलन कराना, चलनमार करना (रूपया, मित्र); आरम्भ करना; प्रचलन, प्रवर्तन करना (चर्चा, धर्म, वेश); कायम, जारी रखना; काममें लाना; छोड़ना, फेंकना (पार, गोली); निभाना; गुजर करना, बहाना, चमकाना (रोजगार, बकालन); परमना, दायर करना (मुकदमा इ०), बहाना ।

चलापन—पुं० चंचलता—'हैं धन जानत भीह-चलापन' ।
चलापमान—वि० [म०] विचलित; धाँधल, चंचल; ललचता हुआ ।

चलाव—पुं० प्रस्थान, स्थानगी; चलावा; गीना ।

चलावा—पुं० गीना, मुकलावा; चलन, विवाज; वहाँ बीमारीमें एक गाँवकी ओरमें दूसरे गाँवकी सीमामें किया जानेवाला उगारा ।

चलि—पुं० [म०] आवरण; अग्ररखा ।

चलित—वि० [स०] चलता हुआ; हिलना, कौपता हुआ; अस्थिर; गत; प्राप्त; क्षात; जटया हुआ । पुं० हिलना; गमना; मूल्यमें एक तरहकी चेष्टा । —ग्रह—पुं० वह ग्रह जिसका कुछ फल भोगा या चुका हो और कुछ शेष हो ।

चलिष्ठा—वि० [म०] गमनशील; जानकी तैयार ।

चलु—पुं० [स०] मुँहमें आनेभर पानी ।

चलुङ—पुं० [म०] बुलन्दभर पानी; एक छोटा पात्र ।

चलैया—पुं० चलनेवाला ।

चलौना—पुं० दूध आदि चलानेकी करछी; वह लकड़ीका टुकड़ा जिससे चरखा चलाया जाता है ।

चलौवा—पुं० एक तरहका उगारा जो दूसरे गाँवकी सीमामें फेंक दिया जाता है ।

चववा—अ० कि० चूना, टपकना । स० कि० चुभाना, स्रवित करना ।

चवची—स्त्री० चार जाने मूल्यका चौड़ी आदिका सिक्का,

रूपयेका चतुर्धांश ।

चवपैया—स्त्री० दे० 'चौपैया' ।

चवरा—पुं० लोविया ।

चवल—पुं० [स०] लोविया ।

चवा—स्त्री० एक साथ चारों दिशाओंसे बहती जान पड़ने-वाली हवा ।

चवाई—पुं० चुगलखोर, निरक, चवाव करनेवाला; मिथ्या भाषी—'सुनहु कान्ह बलमद्र चवाई जनमत ही को धूत'—सर ।

चवाउ—पुं० दे० 'चवाव' ।

चवाव—पुं० अफवाह; बुराईकी चर्चा; चुगलखोरी ।

चवि, चविका, चवी—स्त्री० [म०] दे० 'चविक' ।

चविक—पुं० [स०] वृक्षविशेष ।

चव्व—पुं० [म०] दे० 'चविक' । —जा—स्त्री०, —फल—पुं० गजपिपली ।

चव्या—स्त्री० [म०] वचा; कपाम ।

चसाक—पुं० यूरोपियनोके बाबर्नियोंकी विशेष अवमरोपर मिलनेवाला औन्न ।

चसम—स्त्री० दे० 'चसम' ।

चसमा—पुं० दे० 'चसमा' ।

चसम—स्त्री० [फ०] अस्त्र, नेत्र; नेत्राकार वस्तु । —क—स्त्री० छोटी आँख; आँखका इशारा; सैन; रजिश, मन-

मोटाव । —ऊन्न—पुं० आँख र दशारा करनेवाला ।

—ऊन्न—पुं० पलक अथकना; क्षण, निमेष । —द्वी—वि० अँखी देना; चिन्मने आँखों देखा हो, प्रस्थानदर्शी (गवाह) ।

—नुमाई—स्त्री० इरानेके लिपि आँख दिखाना, तबीह ।

—पोशी—स्त्री० किसीके दीप दुर्गुण देखकर डाल जाना, उपेक्षा करना । —व चरमा—पुं० आँख और उपेक्षा, बहुत चारा; (ला०) बेडा । —(मे)नम—स्त्री० गोली, आँखभरी आँख ।

—बद्—स्त्री० बुरा निगाह, डीठ । —द्व—बुरी नजर न लगे (किसीके रूप-गुणकी सराहना करते समय कहते हैं) ।

चसमा—पुं० [फ०] मोता, स्तोक; ऐनक; मुँईका छेद ।

—ए-लिन्न, —ए-हैवौ—पुं० अमृतका कुंड, स्तोक । —ए-

सार—पुं० वह स्थान जहाँ बहुत चसम हो ।

चव—पुं० दे० 'चवु' । —चोल—पुं० आँखकी पलक ।

चवक—पुं० [स०] शराव पीनेका प्याला, पानपात्र; एक तरहकी शराव; बहद ।

चवण—पुं० [म०] भक्षण; हनन ।

चवाल—पुं० [म०] बड़े खंभे पशु चोंधनेके लिए लगी हुई लकड़ी या लोहेकी फिरकी ।

चसक—स्त्री० मगजीके आगे लगायी जानेवाली पतली मोटा; हलकी पीटा, टीमा । * पुं० दे० 'चपक' ।

चसकना—अ० कि० कमकना, हलका दर्द होना; चमका लगना ।

चसका—पुं० किसी चीजका मजा मिलनेमें उने फिर करने, ओषनेकी इच्छा होना, चाट; इस तरह लगी हुई लत (पड़ना, लगना) ।

चसकी—स्त्री० दे० 'चसका' ।

चसना—अ० कि० भरना; चिपकना ।

वसन्त-चाँद-१०० दे० 'वसन्त' ।
 वसन्ता-१०० दे० 'वसन्त' ।
 वसन्ता-१०० दे० 'वसन्त' ।
 वसन्त-वि० [फा०] विपत्तिका दुःखा; उपयुक्त, मौजू (होना) ।
 वसन्त-१०० नदीमें बसे गावकर तथा तस्ते विछाकर बनाया हुआ अस्वायी पुल; [फा०] 'वाह'का समासगत रूप ।
 वसन्त-१०० गंगा पानी जमा होनेके लिए खोदा हुआ गढ़ा; रुपया-पैसा गाड़नेके लिए बनाया हुआ गढ़की शकलका तहखाना ।
 वसन्त-१०० चहकनेका भाव, चहचहा । † पु० पक ।
 वसन्त-अ० कि० विधियोंका चहचहाना, आनन्दमें भरकर कलरव करना; खुशीमें खिलकर बोलना; जलना । स० कि० जलाना, संतप्त करना- 'गात्र ऐसे अरगजा चौआ लागे चहकन'-देव० ।
 वसन्त-१०० इंटोंका फर्श; चौचक; † लका ।
 वसन्त-१०० चहक ।
 वसन्त-१०० चहकना ।
 वसन्त-१०० चहकनेवाला, कलरव करनेवाला ।
 वसन्त-१०० चहचहानेका भाव; विधियोंकी आनन्द-अरी बोली, कलरव; हँसी-खुशी; कई आदमियोंका एक साथ हँसना, मुद्रित होकर बोलना; हँसी-मजाक । वि० 'चहचह' शब्दमें भरा हुआ; आनन्द उत्पन्न करनेवाला; उछास-युक्त; ताजा ।
 वसन्त-१०० कि० विधियोंका उमगमें आकर लगातार बोलना, चहकना ।
 वसन्त-१०० चहल-पहल- 'भोर भयो लगै बोलन सुकसारी है चहचारी'-धन० ।
 वसन्त-१०० कि० रौंदना ।
 वसन्त-१०० कि० देखना; चाटना ।
 वसन्त-१०० दे० 'चाह' ।
 वसन्त-१०० चहल-पहल; आनन्दका कोलाहल, शोर; उपद्रव । वि० बटिया; तेज; बया विधिया (मोरा) ।
 -पहल-१०० दे० 'चहल-पहल' ।
 वसन्त-१०० कि० मुद्रित होना ।
 वसन्त-१०० कि० प्रसन्न होना; चराना; फटना ।
 वसन्त-१०० दे० 'चहल'; आनन्दोत्सव । -पहल-१०० किसी स्थानमें अधिक आदमियोंके इकट्ठे होने, आने-जानेमें बाधमंडलमें पैदा हुई सजीवता, धूम-धाम; प्रसन्नता; आवाही; रौनक ।
 वसन्त-वि० [फा०] दे० 'चेहल' । -ऊदमी-१०० दे० 'चेहलऊदमी' ।
 वसन्त-१०० चौचक- 'चहले परि निकसै नहीं मनो दूबगी गाय'-व्यामजी । - (ले)की अँस-मोटा, अँस, दीला-डाला आदमी ।
 वसन्त-१०० कुँमें पानी खींचनेकी गाराही ।
 वसन्त-१०० दे० 'चेहलुम' ।
 वसन्त-वि० [फा०] चार । पु० चारकी सख्या । -गोष्ठा-वि० चौकीना । -चंद-वि० चौगुना । -हह-वि०, पु० चौदह । -दीवारी-१०० किसी स्थानके चारों ओर, आठ-बासके लिए खींची हुई दीवार, परकोटा । -बाती-१००

मुसलमानोंका सुधी संप्रदाय । -हर्बा-पु० बुध ।
 वसन्त-वि० [फा०] चौथा । पु० चतुर्थांश, चौपाई ।
 वसन्त-वि० चार, चारों । -ओर, -बा, -दिस-अ० चारों ओर ।
 वसन्त-१०० दे० 'चिहुँक' ।
 वसन्त-१०० स० कि० चोट पहुँचाना ।
 वसन्त-१०० दे० 'चोहान' ।
 वसन्त-१०० दे० 'चुई' ।
 वसन्त-१०० स० कि० मटना ।
 वसन्त-१०० स० कि० दे० 'वपेटना'; निचोड़ना ।
 वसन्त-१०० व्याग, प्रेमपात्र । [खी० 'वहेती' ।]
 वसन्त-१०० दे० 'चोहान' । -स० कि० रोपना; संभालना ।
 वसन्त-१०० अगहनी धान ।
 वसन्त-१०० धूर्त, ठग ।
 वसन्त-१०० लचका, धूर्त, चालाक; गज्ज । प० ठग । खी० मिरका एक रोग जिसमें कुसिर्वां होती और बाल गिरते हैं ।
 वसन्त-१०० काठकी बापी जिसमें खलियानमें अन्नकी राशि गोठने है; अन्नकी राशि गोठनेका स्थल ।
 वसन्त-१०० कि० गोठना, रेखाओंमें धरना; अन्नकी राशि-को गोबर आदिमें गोंठना ।
 वसन्त-१०० दे० 'चौक' ।
 वसन्त-१०० [सं०] दे० 'चांगेरी'; दौनोंकी सफेदी ।
 वसन्त-१०० धूर्त, चालाक; छद्मपृष्ठ ।
 वसन्त-१०० [सं०] अन्वलीगिका शाक ।
 वसन्त-१०० खी० होलीके अवसरपर गाया जानेवाला एक राग, फाग; परती जमीन । † पु० मालधान नामक क्षुप ।
 वसन्त-१०० [सं०] चल्ता, चपलता ।
 वसन्त-१०० चोच ।
 वसन्त-१०० चपत, तमाना; * चंदा ।
 वसन्त-१०० कारीगरीपर लगनेवाला एक पुराना कर; तबलेके ऊपर किनारेपर लगायी जानेवाली मगजी; इस मगजीपर आधार होनेमें निकलनेवाला शब्द; * चौटी ।
 वसन्त-१०० [सं०] उपगता, प्रचंडता ।
 वसन्त-१०० भारी आवधिकता, गरज; बेकली, प्रबल इच्छा- 'तारे धनुष चौड नहि सरर'-रामा०; अधिकता; दबाव, धनी । वि० प्रबल; उग्र, प्रचंड; बढ-बढकर, श्रेष्ठ; तुम, अथावा हुआ । सु०-सरना-लालसा पूरी होना ।
 वसन्त-१०० कि० रौंदना; तीव्र फोड़कर नष्ट करना; खोद डालना ।
 वसन्त-१०० [सं०] अलख-वर्गमें सबसे नीची मानी गयी जाति, श्रेष्ठ; निषाद, क्रूर, नीच कर्म करनेवाला व्यक्ति ।
 वसन्त-१०० [सं०] चंडालबीजा; दुर्गा; एक पौधा ।
 वसन्त-१०० [सं०] एक तथोक्त देवी ।
 वसन्त-१०० [सं०] चाडाल खी; लिगिनी लता ।
 वसन्त-१०० चट-प्रचंड; प्रबल; उद्धत; बहुत बड़ा हुआ ।
 वसन्त-१०० चोंगी, क्षोप ।
 वसन्त-१०० दे० 'चंडे' ।
 वसन्त-१०० चंदमा; एक गहना जो दूजकी चोदकी शकलका

होता है; दालपर जवा हुआ पुष्पाकार कौटा; चौदमारीका निशान; कलाईपर गोदा जानेवाला एक तरहका गोदना।
खी० चौदियाँ, खोपड़ी। - **टीका**-पु० माथेपर पहननेका एक गहना। - **तारा**-पु० बारीक मलमल जिसपर चौद और तारेकी शकलकी नूटियाँ बनी होती हैं; एक तरहकी पतंग। - **वाला**-पु० अर्धचंद्राकार बाल। - **बीबी**-खी० आदिलशाहकी विधवा पत्नी जिसने अकबरकी मेनाके महमदनगर घेर लेनेपर असाधारण शौर्य और रणकौशलका परिचय दिया। - **मारी**-खी० बंदूकसे निशाने लगानेका अभ्यास, कपका मदे हुए चोखटे या दीवारपर बने हुए गोल, काले निशानपर निशाना लगाना। [-० **का मैदान**-बह मैदान जिसमें चौदमारी की जाय।] - **सूरज**-पु० एक गहना जो चौदीमें गुंथकर पहना जाता है; बाढलेके बने चौद और सूरज जो कामदार टोपियोंमें लगाये जाते हैं। - **का कुंडल**, **का मंडल**-हलकी बढीपर प्रकाश पड़नेमें चंद्रमाके चारों ओर बना हुआ घेरा।
मु०-**का डुकड़ा**-अति सुंदर। - **को गहज लगाना**-अच्छी, सुंदर वस्तुमें दोष होना। - **गंजी हो जाना**-इतने जूते लगना कि चौदपर बाल न रह जायें। - **चढ़ना**-नया महीना चढ़ना; कतुका बीन जाना; गर्भ रहना (मुलम० वि०)। - **पर झांक वा धूल उड़ाना**-निर्दोष व्यक्ति या वस्तुमें दोष निकालना; साधुचरित जनपर दोष लगाना। - **पर धूकना**-माधुचरित या महान् पुरुषपर लाछन लगाकर स्वयं काछित होना। - **सा मुल्का**-बहुत मुदर, प्यारा सुख।
चौदना-पु० उजाला, रोशनी; चौदनी। **मु०**-**हीना**-पी कटना, सवेरा होना।

चौदनीक-वि० [म०] चंदनका बना हुआ; चंदनमें प्राप्त; चंदनमें बाना हुआ।

चौदनी-खी० चौदकी गोशनी, ज्योत्स्ना; कंधपर बिछानेकी लकी-चौकी सफेद चादर; छनगीर; गुलचौदनी। - **का खेत**-चंद्रमाका चारो ओर फैला हुआ प्रकाश। **मु०**-**का खेत करना**-चौदनी फैलाना, छिड़कना। - **मारना**-चौदनीका बुरा अमर पड़ना; पोडोकी एक बीमारी।

चौदा-पु० दूरबीनका लक्ष्यस्थान; भूमिकी एक माप; चौदगी शकलका एक आला जिसमें कोण बनाते या नापते हैं।

चौदी-खी० सफेद रंगकी एक नरम चमकीली धातु जो गहने, सिक्के आदि बनानेके काममें आती है; आधिक लाभ; एक छोटी मछली; * दे० 'चंदिया'। **मु०**-**कटना**-गहरी आय होना, खूब रूपमें मिलना। - **कर देना**-जलाकर राख कर देना। - **का जूता**, **की जूती**-पुस, उखोच। - **का पहरा**-समृद्धिकार। - **हीना**-खूब लाभ होना, माल मिलना।

चांद्र-वि० [स०] चंद्र-संबंधी। पु० चांद्र मास; शुद्ध पक्ष; चंद्रकांत मणि; चांद्रायण व्रत; मृगशिरा नक्षत्र; अदरक। - **भास**-पु० चंद्रमाकी गतिके अनुसार होनेवाला महीना। - **बासर**-पु० चंद्रमाकी गतिके अनुसार होनेवाला वर्ष। - **व्रतिक**-वि० चांद्रायण व्रत करनेवाला।
चौद्रक-पु० [स०] सोठ। वि० चंद्र-संबंधी।

चौद्रमागा-खी० [स०] दे० 'चंद्रमागा'।

चौद्रमस-वि० [स०] चंद्रमाने संबंध रखनेवाला। पु० मृगशिरा नक्षत्र।

चौद्रमसायन, **चौद्रमसायनि**-पु० [स०] बुध ग्रह।

चौद्रमसी-खी० [स०] हृष्टपतिकी पत्नी।

चौद्राख्य-पु० [स०] अदरक।

चौद्रायण-पु० [स०] एक माममें पूरा होनेवाला एक कृच्छ्र व्रत (इसमें कृष्ण पक्षमें आहार प्रतिदिन एक घ्रास घटाना और शुद्ध पक्षमें बढ़ाना होता है)।

चौद्रावणिक-वि० [स०] चांद्रायण व्रत करनेवाला।

चौद्रि-पु० [स०] बुध ग्रह।

चौद्री-खी० [स०] चंद्रमाकी पत्नी, चौदनी; सफेद अटकड़ा।

चौष-पु० दे० 'चाप'; बंदूकका एक पुरजा; * चंपाका फूल। खी० दे० 'चाप'।

चौपना-स० कि० दवाना।

चौपिला-खी० [स०] चंपा नदी, चंबल नदी (?)।

चौपिय-पु० [स०] चंपक; नागकेसर; किन्नक; सुवर्ण; धनुरा।

चौपियक-पु० [स०] किन्नक, केसर।

चौर्ध्व, **चौर्ध्व**, **चौर्ध्व**, **चौर्ध्व**-खी० बकबक।

चौवर-पु० चावल।

चांसलर-पु० [अ०] विश्वविद्यालयका सर्वोच्च अधिकारी।

चाव, **चाउ**-पु० दे० 'चाव'।

चाई-वि० दे० 'चौई'।

चाउरी-पु० दे० 'चावर'।

चाक-पु० चकाकार पत्थर जिसे फिराकर कुम्हार बरतन बनाता है; पहिया; चरखी; मिली जमानेकी धरिया; [का०] चौर; दरार; आलीन या दामनका मुला हुआ भाग। वि० फटा हुआ। - **कि, गरीबाँ**-पु० गरीबानका मुला हुआ हिस्सा।

चाक-वि० [त०] चुस्त, स्वस्थ; हट-पुष्ट; मले जानेके लिए तैयार (पोड़ा)। - **चौबंद**-वि० चुस्त, कुरतीला; हट-पुष्ट।

चाकचक-वि० सुध्द, सुरक्षित।

चाकचक-पु० [स०] उज्ज्वलता; चमक-दमक; शोभा।

चाकचिक्च-पु० [स०] चमक; चकाचौंध।

चाकचिक्का-खी० [स०] श्वेतवृक्षा, वनतित्ता नामक पौधा।

चाकना-म० कि० रेखाएं खींचकर किसी चीजको हट बनाना, रेखाओंमें घेरना; अनाजकी राशिपर मिट्टी या गोबरसे छापा लगाना; पहचानके लिए चिह्न बनाना।

चाकर-पु० [फा०] नौकर, सेवक।

चाकरनी, **चाकरानी**-खी० नौकरानी।

चाकरी-खी० [फा०] नौकरी, सेवा।

चाकसू-पु० बनकुल्की।

चाका-पु० गादी आदिका पहिया, चक्र।

चाही-खी० चक्की; चिन्नी; सिरपर की जानेवाली पट्टेकी चोट; † चक्कीके आकारका जमाया हुआ गुड़।

चाकू-पु० [त०] छोटी छुरी, कलम बनाने, फल-तरकारी काटनेका छोटा औजार, कलमतरास।

चाक्र-वि० [सं०] चक्रसंबंधी; चक्राकार; चक्रसे किया जानेवाला (युद्ध) ।

चाक्रिक-वि० [सं०] चक्र या मंडलसे संबंध रखनेवाला; चक्राकार । पु० मंडलाकार रखे होकर स्तुति गानेवाले बंदीजन; कुम्हार; तेली; गांधीवान ।

चाक्रिण-पु० [सं०] तेली वा कुम्हारका लबका ।

चाक्रेय-वि० [सं०] चक्रसंबंधी ।

चाक्षुष-वि० [सं०] चक्षु-संबंधी; चक्षुसे प्राप्त (ज्ञान); चक्षु-प्राप्त । [स्त्री० 'चाक्षुषी'] पु० चक्षुसे प्राप्त ज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाणका एक भेद; छोटे मनु; छोटा मन्वंतर ।

चाख-पु० दे० 'चाप' ।

चाखना*—सं० कि० चखना, खाद लेना ।

चाखपुट-पु० [सं०] तालका एक भेद (संगीत) ।

चाचर, चाचरि-स्त्री० दे० 'चौचर'; होलीका स्वांग, हुरदंग ।

चाचरी-स्त्री० योगकी एक मुद्रा ।

चाचा-पु० बापका भाई, चचा ।

चाची-स्त्री० चाचाकी स्त्री, चची ।

चाट-स्त्री० चसका, लपका, लन; मिर्च, मसाला देकर तैयार किया हुआ तीव्र स्वादवाला खाद्य (रही-बड़ा, गुलफपा आदि), चक्कण; गजक (पकना, लगना) । पु० [सं०] ठग विश्राम उत्पन्न कर धन हरण करनेवाला ।

चाटकैर-पु० [सं०] चटका नर बच्चा ।

चाटना-सं० कि० चटनी जैसी चीजकी जीममे उठाकर या पीछकर खाना; किसी चीजपर जीम फिराना; स्वाद लेना (होठ, हाथ चाटना); (गाय, कुत्ते आदिका प्यारमे) जीमसे सज्जाना, जीम फेरना; कौशिका किसी वस्तुको खाना ।
चु० चाट जाना-खा डालना, साफ कर देना ।
चाट-पीछकर खा जाना-सब खा जाना, कुछ न छोड़ना ।

चाटु-पु० [सं०] प्रियवचन, मीठी बात; झूठी प्रिय बात; झूठी प्रशंसा, चापलूसी ।—**कार-पु०** चापलूसी करनेवाला; एक तरहका मुक्ताहार ।—**कारी-स्त्री०** [वि०] चापलूसी ।
—**पटु-वि०** चापलूसीमें कुशल । पु० मीठ ।—**बटु-पु०** विद्वक; मीठ ।—**लोख-वि०** चापलूस; सुदरतापूर्वक हिलनेवाला ।

चाटुक-पु० [सं०] प्रिय वचन ।

चाटुकि-स्त्री० [सं०] चापलूसी ।

चाटुलोख-वि० [सं०] चाटुकार ।

चाब*—स्त्री० दे० 'चौब' ।

चाबिला-वि० दे० 'चौबिला' ।

चाबी†—स्त्री० चुगली ।

चाढ़ा*—पु० प्रेमपात्र; प्यारा; प्रेमी । वि० आमलक, मुग्ध ।

चाणक्य-पु० [सं०] (चणक मुनिके वंशमें उत्पन्न) चंद्रगुप्त मौर्यके प्रधान मंत्री, अर्थशास्त्रके रचयिता विष्णुगुप्त, नीतित्य ।—**नीति-स्त्री०** चाणक्यरचित नीतिग्रंथ ।

चाणाक्ष-वि० चौंछियाँ, धूर्त, चालाक (निषधमाला) ।

चाणूर-पु० [सं०] कृष्णके हाथों मारा गया कंसका एक मल ।—**मर्दन-पु०** कृष्ण ।

चातक-पु० [सं०] पपीहा, सारंग । (कवि-संप्रदायके अनुसार यह पक्षी केवल वर्षा, बलि खाती नक्षत्रमें

होनेवाली वर्षाका जल पीता है, फलतः सदा बादलोंकी ओर टकटकी लगाये रहता है) ।

चातकनी*—स्त्री० मादा चातक, चातकी ।

चातकामंदन-पु० [सं०] बादल; वर्षाकाल ।

चातर-पु० महाजाल; साक्षि ।

चातुर-वि० [सं०] चारसे संबद्ध; चतुर; चापलूस; चारमे खींचा जानेवाला (रथ); शासन करनेवाला; द्रव्य, गोचर । पु० चार पक्षियोंकी गारी; छोटा गोल तकिया ।

चातुरही†—दे० 'चातुरी' ।

चातुरक-वि० [सं०] चापलूस; द्रव्य, गोचर; शासन करनेवाला । पु० छोटा गोल तकिया ।

चातुरक्ष-पु० [सं०] चार पानोंका खेल; छोटा गोल तकिया ।

चातुरिक-पु० [सं०] सारथि, गांधीवान ।

चातुरी-स्त्री० [सं०] चतुराई ।

चातुर्जात, चातुर्जातक-पु० [सं०] चार द्रव्योंका समाहार ।

चातुर्थक, चातुर्थिक-वि० [सं०] चौथे दिन होनेवाला, चौथिया । पु० चौथिया ज्वर ।

चातुर्वक्ष-वि० [सं०] चतुर्दशीकी होने, पैदा होनेवाला । पु० राक्षस ।

चातुर्वक्षिक-वि०, पु० [सं०] चतुर्दशीके दिन पड़नेवाला ।
चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक-पु० [सं०] नागरमोथा, अतिविषा, सुस्ता और गुच्छी-इन चार औषधियोंका समाहार ।

चातुर्भाराजिक-पु० [सं०] विष्णु; बुद्ध ।

चातुर्मास-वि० [सं०] चार महीनेमें होनेवाला ।

चातुर्मासिक-वि० [सं०] चार महीनेमें होनेवाला (यज्ञ, कर्म) ।

चातुर्मासी-स्त्री० [सं०] एक यज्ञ; वह पूर्णिमा जिस दिन वह यज्ञ किया जाता है ।

चातुर्मास्य-पु० [सं०] चार मासमे होनेवाला एक वैदिक यज्ञ; चौमासा, आपादकी पूर्णिमा या शुक्ला द्वादशीसे कार्तिककी पूर्णिमा या शुक्ला द्वादशीतकका समय; इस कालम किया जानेवाला एक पौराणिक व्रत ।

चातुर्व-पु० [सं०] चातुरी ।

चातुर्वर्ण्य-पु० [सं०] चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र; चारों वर्णोंके धर्म, कर्तव्य । वि० चारों वर्णोंसे संवर्ध रखनेवाला ।

चातुर्विध-पु० [सं०] चारों वेदोंका ज्ञात; चारों वेद ।

चातुर्द्वौष-वि० [सं०] चार होताओं द्वारा किया जानेवाला । पु० चार होताओं द्वारा किया जानेवाला यज्ञ ।

चात्र-पु० [सं०] अग्निमंथनमें व्यवहृत सैरकी १२ अंगुल लंबी लकड़ी ।

चात्रिक, चात्रिग*—पु० चातक ।

चावर-स्त्री० सारीके ऊपर ओढ़ा जानेवाला अधिक लंबा-चोड़ा दुपट्टा; बिस्तरके ऊपर बिछाया जानेवाला दुपट्टा; ओढ़े-पीतल आदिका लंबा-चौड़ा पतला खंड, पत्तर; ऊँचे स्थानसे गिरनेवाली पानीकी चौड़ी धारा; चादरके रूपमें उंचे हुए फूल जो कम या मजदरपर बढ़ाये जाते हैं, एक आतिथ्याजी जिससे आगकी चादर निकलती है ।
चु०—**उतारना-वेपर, वैष्णव करना** ।—**ओढ़ाना,—ढालना**

-विषवाको बरये डाल केना, विषवासे ब्याह करना ।
-देखकर पाँव फैलाना-विच, विसात देखकर खर्च करना । -हिलाना-धुममें आत्मसमर्पण वा लफाई बंद करनेके लिए कपडा हिलाना ।

आवरा-पु० मरदानी चादर ।

आन०-पु० चंद्रमा (विषा०) ।

आनक०-अ० दे० 'अचानक' ।

आनन०-पु० चंद्रन (विषा०) ।

आनस-पु० ताशका एक खेल (अंग्रेजीमें इसे 'नांस' कहते हैं) ।

आप-पु० [सं०] धनुष; इंद्रधनुष; धनु राशि; कृत्तिके परिधिका कोई अंश, 'आर्क' । खी० [हिं०] दबाव; बक्का; पोंबोंकी आइट । -अरीब-पु० लनाईकी नाप ।

आपट-खी० चोकर । वि० चपटा, समतल; चोपट ।

आपड-वि० जो दाब चबनेसे चपटा हो गया हो; समतल; बराबर, मटियामेट । खी० चोकर ।

आपना-सं० कि० दबाना, दाब पहुँचाना ।

आपर-खी० आपक, वाकर ।

आपल-पु० [सं०] चपलता, चंचलता; अस्थिरता; उतावली; शोखी; शोभ । * वि० चपल ।

आपलता०-खी० दे० 'चपलता' ।

आपल्लव-वि० [फा०] सुखामयी, चाडुकार ।

आपल्लसी-खी० [फा०] सुखामर, झूठी प्रशंसा ।

आपल्लव-पु० [सं०] दे० 'आपल' ।

आपी (पिन्)-वि० [सं०] धनुर्धर । पु० शिव; धनु राशि ।

आफंद-पु० एक तरहका जाल ।

आब-खी० एक पौधा जिसकी जड़ और लकड़ी दवाके काम आती है; इस पौधेका फल, डांड । पु० एक तरहका बंस ।

आबना-न० कि० चबाना; लूब खाना ।

आबी-खी० कुंजी; पक्कड़ । मु० -देना-कुंजी घुमाकर धड़ी आदिकी कमानीकी कस देना ।

आबुक-वि० [फा०] फुरतीला, चुस्त, तेज । पु० कोश ।

-दस्त-वि० शिथिलकुशल; दल । -दस्ती-खी० शिथिलकुशलता; दक्षता । -सबार-पु० घोड़ेकी सधाने, चाल सिखानेवाला । -सबारी-खी० घोड़े सधानेका काम, पेशा ।

आबुका-खी० [सं० (?)] छोटा तकिया ।

आबुकी-खी० [फा०] चुल्हा, फुरती, तेजी ।

आम-खी० दे० 'चाब' ।

आभना-सं० कि० खाना; तर माल खाना; † चूसना ।

आमा-पु० बैलौका एक रोग ।

आमी-खी० दे० 'चाबी' ।

आम-पु० चमका, खाल । -चोर-पु० गुप्त रूपसे परखीके पास जानेवाला । मु० -के दाम-चमके सिके; निजाम भित्तीका चलाया हुआ सिका जिसे दुमायूँको दूधनेसे बचानेके बदले आधे दिनकी बादशाही मिली थी; व्यभिचारकी कमाई । -अचलाना-अधर करना ।

आमर-पु० [सं०] चैबर; मोरछल; एक वर्णवृक्ष । -प्राह, -प्राधिक-प्राणी (हिन्दु)-पु० चैबर डुलनेवाला ।

[खी० 'आमर-प्राणिणी'] -पुष्प-पु० कास; आम; सुपारीका पेड़; केनकी । -अमजन-पु० चैबर ।

आमरिक-पु० [सं०] चैबर डुलनेवाला ।

आमरी (हिन्दु)-पु० [सं०] बीड़ा ।

आमीकर-पु० [सं०] तोना; चट्टा । -प्रख्य-वि० तोने जैसा ।

आमीकराचक, आमीकराद्रि-पु० [सं०] मेरु पर्वत ।

आमुंडा-खी० [सं०] दुर्गाका एक रूप ।

आम्य-पु० [सं०] मोहन, खाद्य पदार्थ ।

आय०-पु० दे० 'चाब' । खी० एक पौधा जिसकी पत्तियोंका काड़ा दूध-शकर मिलाकर पिया जाता है; उक्त पौधेकी सुखायी हुई पत्तियाँ, आयकी पत्तियोंकी उबालकर बनाया हुआ पेय । -दाय-पु०, -दानी-खी० वह वस्तु जिसमें चाय बनायी या बनाकर रखी जाय । -पानी-पु० सवरेका जलपान ।

आयक०-पु० चाहनेवाला ।

आर-वि० तीन और एक; कुछ; कई । पु० चारकी संख्या, ४ । -अबक-पु० सिर; भँरे, दाढ़ी और मूँछ; एक तरहके मुसलमान फकीर जो सिर, भँरे, दाढ़ी, मूँछ चारोंका सफाया करावे रहते हैं । -आईना-पु० एक प्रकारका कवच जिसमें छाती, पीठ और दोनों भुजाओंपर बाँधनेके लिए छोड़ेकी चार पटरियाँ होती हैं । -काने-पु० पासेका एक दाँव, पासेका इस तरह पकना कि एकका दो बिचियी-वाला और दोके एक-एक बिचियी-वाला चित हो ।

-खाना-पु० वह कपडा जिसमें रंगीन धारियोंके चौथूँटे खाने बने हों । -गुदूँवाला-वि० बहादुर, जोशवाला । -चंद-वि० चौयुना । -ताल-पु० चौताला ।

-दिन-पु० थोड़े दिन, अवध काळ ।

-दीबारी-खी० दीवारोंका घेरा, प्रान्ती, परकोटा ।

-पाई-खी० खाट, छोटा पलंग । [मु०-०पर पड़ना-लेटना; बीमार होना । -०से पीठ लगना-सस्त बीमार होना, उठने-बैठनेकी शक्ति न रह जाना ।]

-पावा-पु० चौपावा, पशु । -बाता-पु० चौकोर बाग; वह शाल का बराल जो रंगके जरिये चार हिस्सोंमें बँटा हो ।

-बालिका-पु० राड़ी; ममनद । -बीसी-वि० अस्ती । -मग्न-पु० अखरोट; बड़ोके सेलनेकी मिट्टीकी गोली; खरबूज, खीरे, ककड़ी और कद्दूके बीजोंकी गिरी ।

-मेख-खी० अपराधीकी छिटाकर उसके हाँथ-पाँव चार धुँठोंसे बाँध देनेकी सजा । -धारी-पु० सुखी संप्रदाय; चार मित्रोंकी गोष्ठी; चौदीका चौबेरा सिका जिसपर कलमा या मुहम्मदके चारों साधियोंके नाम खुदे होते हैं और जिसे मुसलमान ताबीजके नौरपर काममें लाते हैं ।

-[रँ] और-अ० सब ओर, हर तरफ । -धाम-पु० चारों दिशाओंमें स्थित हिंदुओंके चार प्रधान तीर्थ-पुरी, बरिकाश्रम, द्वारका और रामेश्वर । -पक्षार्थ-पु० मनुष्य जीवनके चार पुरुषार्थ-अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।

मु० -आँखें करना-देखा-देखी; साक्षात्कार करना; निगाह मिलाना । -आँखें होना-आँखें चार होना, देखा-देखी होना । -आइसी-दो-चार भले आदमी ।

-कदम-योषा फासला । -के कंधे था कंधे चबना-था चबना-मर जाना, अरथी उठना । -के कान पड़ना चचा होना, बातका फैलना । -चौद लगना-शोभा,

सुंदरता बढ़ना। -**दिनकी-चाँदनी**-दो-चार ही दिन रहने, ठिकनेवाली बात, चंदरोजी चीज। -**पाँच करना**-होला-हवाला करना; डुबत करना। -**मेझा करना**-छिटाकर हाथ-पाँव खेंटेसे बाँध देना। -**(रैं)झाने चित गिरना**-दे० 'चारी' झाने चित गिरना'। -**फूटना**-दो स्थूल ओखें और दो हृदयकी, सबका फूट जाना, निपट अंश होना। -**झाने चित गिरना** या **होना**-(कुत्तीमें) इस तरह चित होना कि पूरी पीठ और हाथ-पाँव जमीनमें लय जायें; पूरी तरह पगल हो जाना; (कोई शोक-सवाद सुनकर) स्तब्ध, बदहवास हो जाना; हिम्मत हार जाना। **चार**-पु० आचार, रीति (द्वार-चार); * सेवक, टहलू; [सं०] गति; गुप्तचर, जासूस; कारागार; प्रियाल; कुत्रिम विष। -**चंचु**, **चण**-वि० सुंदर चाल। -**चक्षु(स्)**-पु० (जासूस जिसको आँख है) राजा। -**सूल**-पु० चेंबरी। -**पथ**-पु० राजमार्ग। -**पाल**-पु० गुप्तचर। -**पुरुष**-पु० भेदिया। -**प्रचार**-पु० जासूस लगाना। -**भट**-पु० बोर सैनिक। -**बाबू**-**खी** लू, गरमीकी हवा। **चार**-**'चारा'** (उपाय)का लघु रूप। -**नाचार**-अ० मज-बूतन, निरुपाय होकर। **चार सौ बीस**-पु० पुलिस अधिनियमको वह धारा जिनमें भोलादेही, चालबाजी, छल छद्मादिका सहारा लेनेवालेको दंड देनेका विधान है। वि० भूय, भोसबाज। **चार सौ बीसी**-**खी**० पोलेबाजी, छलप्रपंच, धूर्तता। **चारक**-पु० [सं०] चरबाहा; चालक; अश्वारीही सैनिक; नायक; गुप्तचर; साथी; कारागार; हवालात; बधन; हथ-कड़ी; प्रियाल; अमणकारी मजदूरी। **चारक**-पु० दे० 'चारक'। **चारजामा**-पु० [फा०] कपड़ेका जीन जिनमें काठ नहीं लगा होता। **चारटिका**-**खी**० [मं०] नली नामक गंधद्रव्य, मालकगनी; नीलका पौधा। **चारटी**-**खी**० [सं०] भूत्यामलकी; पक्षचारिणी वृक्ष। **चारण**-पु० [मं०] तीर्थयात्री; भट, बंदिजन; गुप्तचर; राजपूतानाकी एक जाति; चरानेका कार्य। **चारन**-पु० दे० 'चारण'। **चारना**-सं० क्रि० दे० 'चगना'। **चारोंतरित**-पु० [सं०] गुप्तचर। **चार**-पु० चौपायोंके खानेकी चीज-घास, चरी आदि; चिकियों, मछलियों आदिकी खिलायी जानेवाली चीज-सत्तू, आटेकी गोली आदि; मछलियों फसानेके लिये कैंटियाँमें रगयाया जानेवाला गोला आटा आदि; [फा०] उपाय, इलाज। -**जोई**-**खी**० (अदालतमें) अन्यायके प्रतिकारकी प्रार्थना, नालिश, फरियाद। -**सान्न**-वि० काम बनानेवाला; सहायक। -**सात्री**-**खी**० सहायता, मदद। **चारपण**-पु० [सं०] कामशूल्के एक प्राचीन आचार्य। **चारि**-वि० चलनेवाला, आचरण करनेवाला; चार। पु० संदेश। **खी**० टील; नुगली। **चारिका**-**खी**० [सं०] सेविका, टहलूई; शिक्षाके लिए जाना; पदक्षेप-'उनके कुंड नृत्यकी प्रत्येक चारिका'-हजारीप्र०।

चारिटी-**खी**० [सं०] दे० 'चारदे'। **चारिणी**-**खी**० [सं०] करुणी नामक पौधा। वि० **खी**० आचरण करनेवाली। **चारित**-वि० [सं०] जो चलाया गया हो; भक्तेसे **खी**चा हुआ। पु० आरा; * पशुजैका चारा, चरी। **चारितार्थ**-पु० [सं०] अभीष्ट-सिद्धि; सफलता। **चारित्र**-पु० [सं०] चरित्र, चाल-चलन; स्वभाव, शील; कुलकमागत आचार, सदाचार; साधुता; सतीत्व; एक महत्। -**कवच**-वि० सदाचार ही जिसका कवच हो। **चारित्रवती**-**खी**० [सं०] एक विशेष समाधि। **चारित्रा**-**खी**० [सं०] इमली। **चारित्री(त्रिन्)**-वि० [मं०] चरित्रवात्, सदाचारी। **चारित्र्य**-पु० [सं०] दे० 'चारित्र'। **चारिवाक्** (**च्**)-**खी**० [सं०] काकमांसिनी। **चारी**-**खी**० [मं०] मूलका अंगविशेष, नृत्यके अतर्गत शृंगारादि रमोंका उदोपन करनेवाली कुछ चेष्टाएँ; फंदा, जाल; टील; जाम्सी; * नुगली। **चारी(रिन्)**-वि० [मं०] चलनेवाला, जानेवाला (ब्योम-चारी); आचरण करनेवाला। पु० पैदल सिपाही। **चारु**-वि० [सं०] प्रिय; सुंदर, मनोहर। पु० इहस्पति; केसर। -**केसरा**-**खी**० नागरमोषा; मेवती। -**गुच्छा**-**खी**० अंगूर। -**घोण**-वि० सुंदर नाकवाला। -**दर्शना**-वि० **खी**० रूपवती (**खी**)। -**धामा**, **धारा**, **रावा**-**खी**० शची, द्रष्टाणी। -**नालक**-पु० रक्त पक्ष। -**नेत्र**-वि० सुंदर नेत्रवाला। पु० हिरन। -**नेत्रा**-वि० **खी**० दे० 'चारुलोचना'। -**पर्णी**-**खी**० प्रसारिणी नामक लता। -**पुट**-पु० तालका एक भेद। -**फला**-**खी**० अंगूर, द्राक्षा लता। -**लोचन**-वि० सुंदर नेत्रवाला। पु० हिरन। -**लोचना**-वि० **खी**० सुंदर नेत्रवाली। -**वर्धना**-**खी**० **खी**। -**बेना**, **बेच**-वि० अच्छी पोशाकवाला। -**व्रता**-वि० **खी**० मङ्गलमकरा व्रत करनेवाली (**खी**)। -**शिला**-**खी**० एक रत्न। -**शील**-वि० सुंदर शीलवाला। [**खी**० 'चारु-शील'।] -**सार**-पु० मोवा। -**हासिनी**-वि० **खी**० मनोहर हँसी, मुसकानवाली (**खी**)। **खी**० एक वृत्त। **चारुक**-पु० [मं०] मरपतका बीज। **चारेक्षण**-पु० [सं०] राजा। **चारिच**-वि० [सं०] वेदपाठमें कुशल। **चारिचक**-पु० [सं०] अगरतका लेपन; अगरम। **चार**-पु० [अ०] देख-रेख, सुपुर्दगी; कार्यभार; दाम; उजरत; खर्च; अभियोग; जौरका हमला; दूट पड़ना। -**घाटी**-पु० अभियोगपत्र, फर्द-जुर्मा। **चार्म**-वि० [सं०] चमड़ेका बना हुआ; अमड़ा मदा हुआ (रधादि)। **चार्मण**-वि० [सं०] चामसे ढँका हुआ। पु० खालों या ढालोंका समूह। **चार्मिक**-वि० [सं०] चर्मनिर्मित। **चार्मिण**-पु० [सं०] ढालवालोंका समूह। **चार्म**-पु० [सं०] दौम्य; जाम्सी; एक वर्णमकर जाति। **चारोंक**-पु० [सं०] चाबक-दर्शनके रचयिता एक मुनि

जो नास्तिक मतके प्रवर्तक और बृहस्पतिके शिष्य बताये जाते हैं; महाभारतमें वर्णित एक राक्षस जो दुर्बोधनका मित्र था। -**दर्शन**-पु० चार्वाकवित नास्तिकदर्शन, ईश्वर, वेद, पुनर्जन्म, परलोक आदिको न माननेवाला दर्शन। -**मत्त**-पु० चार्वाकदर्शन।

चार्बी-खी० [सं०] चास्तायुक्त, सुदरी खी; बुद्धि; दीप्ति; चाँदनी; कुबेरकी पत्नी।

चाल-पु० [सं०] छपर, फूँस आदिकी छाजन; स्वर्ण-चूड़ पक्षी, नीलकंठ; गतिशीलता। **खी०** [हि०] चलनेकी क्रिया, गति; हिलना, घूमना, हरकत (पक्षीही चाल); चलनेका ढंग; चलनेकी सायत; चलन, आवरण; रीति-रिवाज; डब, बनावट; ढग, प्रकार; छल, धोखा देनेवाली बात; कूटयुक्ति; ताश, झतरज आदिमें पत्ते या मुहरके चलना; आइट; * हलचल; इस ढगमे बनावी हुआ भारी मकान जिसमें पचासों किरायेदार कुटुंब रह सकें (बंबई)। -**चलन**-पु० आच्छरण, चरित, नीति-सम्बन्धी आवरण। -**डाल**-**खी०** तौर-तरीका, रहन-सहनका ढग। -**बाज़**-वि० चालें चलनेवाला, छलिया, धूर्त। -**बाज़ी**-**खी०** छल, धूर्तता, धोखा देना। **मु०**-**चलना**-धोखा देने, ठगनेका उपाय करना; चालका सफल होना। -**चूकना**-गलत, अपनी ही हानि करनेवाली चाल चलना। -**फँसना**-(झतरज आदिमें) ऐसी चाल चलना कि अपना ही मुहरा फँस जाय; अपनी चालमें खुद फँस, बंध जाना।

चालक-वि० [सं०] चलनेवाला; * छली, चालबाज। पु० अकुश न माननेवाला हाथी; नृत्यकी एक मुद्रा।

चालकूंड-पु० [सं०] उड़ीसाकी विलका झील।

चालन-पु० चलनीय; [सं०] चलाना; प्रचार करना; हिलाना; हिलना; गति; छानना; छलनी।

चालनहार-पु० चलने, चलानेवाला।

चालना-म० क्रि० छानना; * चलाना; हिलाना; * प्रसंग छेड़ना। अ० क्रि० दुर्गहिनका पहली बार सुस्तराल आना; * चलना।

चालनी-**खी०** [मं०] छलनी।

चालनीय-वि० [सं०] चलाये, हिलाये जाने योग्य।

चाला-पु० रवन्गरी; प्रम्थानका मुहूर्त; दुर्गहिनका पहली बार सुस्तराल आना, रीना; श्रुत व्यक्तिकी आगे कीन योनि मिलेगी हमका पना लगानेके लिए थोडशीकी रातकी की जानेवाली राख या बालू चालनेकी क्रिया।

चालाक-वि० [फा०] चुस्त, फुरतीला; चतुर; धूर्त।

चालाकी-**खी०** [फा०] चतुराई, धूर्तता।

चालान-पु० भेजे हुए मालकी सूची, विवरण, बीजक; रक्ता; मालका एक जगहसे दूसरी जगह भेजा जाना; बाहर भेजा हुआ या वहाँसे आया हुआ माल; जमियुक्तका विचारके लिए मजिस्ट्रेटके पास भेजा जाना। -**द्वार**-पु० मालकी हिजाजतके लिए उसके साथ जानेवाला व्यक्ति; वह व्यक्ति जिसके पास चालानका कामज हो। -**बही**-**खी०** वह बही जिसमें चालान किये जानेवाले मालका विवरण लिखा जाय।

चालिया-वि० चालबाज।

चाली-वि० चालबाज, छली; * नटखट। * **खी०** चाल,

चलनेका तरीका।

चाळीस-वि० तीस और दस। पु० चाळीसकी संख्या, ४०। -**बी**-वि० जो क्रममें २९के बाद आये। पु० श्रुत व्यक्तिके चाळीसवें दिनका कर्म, चेहलूम; चेहलूमकी कतिहा।

चाळीसा-पु० चान्नीस वस्तुओंका समाहार; चालीस दिनका काल, चिहा; वह पुस्तक या काव्य जिसमें ४० पद्य हों (हनुमान्चाळीसा)।

चाळुख-पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्रमुख राजवंश जिसने छठीसे तेरहवीं शती(वैक्रम)तक राज्य किया।

चाख-वि० [सं०] दे० 'चालनीय'।

चाख; **चाख्हा**-**खी०** चेख्हा मछली।

चाख्ही-**खी०** नावके सिरेके पासका पटा हुआ स्थान जहाँ महाह खेनेके लिए बैठना है।

चाव-पु० तीज इच्छा, चाह; शौक; प्रेम, अनुराग; उमग; उत्साह; * निंदा, बदनामी। -**खोचला**-पु० लाङ्ग-प्यार; नाज-नखरा।

चावड़ी-**खी०** चट्टी, पहाड़।

चावण-पु० [सं०] गुजरातका एक प्राचीन राजपूत वंश।

चावना-**सं०** क्रि० चाहना।

चावरा-पु० दे० 'चावल'।

चावल-पु० धान, सॉर्वा, कोदी आदिका सार भग्न जो बीजने भूमी अलग कर देनेपर बच रहता है, तंडुल; पकाया हुआ चावल, भान; रसोका आठवाँ भाग।

चाशनी-**खी०** [फा०] चलनेकी चीज; खाद्य वस्तुका नमूना जो चलनेके लिए थिया जाय; चीनी-गुड आदिका शीरा; स्वाद, मजा; नमूनेका सीना जो गाइक अपने पास रखना है। -**शीर**-पु० राजाओं आदिके यहाँ भोज्य पदार्थोंकी चलनेके लिए नियुक्त कर्मचारी।

चाष-पु० [सं०] नीलकंठ पक्षी; चाहा; * चूड़, ऑँख।

चास-पु० [सं०] दे० 'चाष'। † **खी०** जोत, मैती।

चामा-पु० किमान; हलवाहा।

चाह-**खी०** इच्छा, लालसा; प्रेम; जरूरत, गरज; पूछ, आदर; * खबर; भेद। पु० [फा०] कुआँ। -**कन**-पु० कुआँ खोदनेवाला। वि० भत्याचार, दूसरेकी बुराई करनेवाला। -**(ह)** **रुस्तम**-पु० वह कुआँ जिसमें तीर-गलवारों गाइकर रुस्तम गिराया गया था।

चाहक-पु० चाहनेवाला, प्रेमी।

चाहत-**खी०** चाह, प्रेम।

चाहना-सं० क्रि० इच्छा करना, इरादा करना; माँगना; प्रेम करना; पसंद करना; यत्न करना; * चाहमरी दृष्टिसे देखना, निहारना-'सीय चकित चित रामहिं चाहा'-रामा०; हूँदना। * **खी०** चाह।

चाहर-पु० बगलेकी तरहका एक छोटा पक्षी।

चाहि-**अ०** 'से' बढकर, अधिक।

चाहिसे-अ० उचित है, बाजिव है; अपेक्षित है, दरकार है।

चाही-वि० **खी०** चहेती (क०); [फा०] रूप संबंधी; कुर्से से सींची जानेवाली (जमीन)।

चाहे-अ० वी चाहे, परजीमें आये (तो), क्वाहा; या तो।

मु०-**जो हो**-जो होना हो वह हो।

विर्वा-पु० इमलीका बीज ।
विर्वा-पु० दे० 'वीटा' ।
विर्वा-खी० दे० 'वीटा' । **विर्वा** रँगान-खी० बहुत धीमी चाल ।
विर्वा-पु० [सं०] हाँगा मछली ।
विर्वा-पु० हाँगा मछली ।
विर्वा-पु० मुरलीका छोटा बच्चा, चूआ; छोटा बच्चा ।
विर्वा-खी० दे० 'विनगरी' ।
विर्वा-अ० कि० देरतक एक स्थितिमें रहनेसे अंग-विशेषका, उसकी नसोंका न फैलना; सिकुटना ।
विर्वा-खी० हाथीके चिहानेका शब्द; चीकार, गर्जन ।
विर्वा-अ० कि० हाथीका जोरसे बोलना; चीखना, चीकार करना; गरजना ।
विर्वा-खी० [सं०] इमली; इमलीका बिजा; गुंजा ।
विर्वा-पु० दे० 'विचाम्ल' ।
विर्वा-पु० [सं०] बैच नामका साग ।
विर्वा-पु० [सं०] चूका नामका साग ।
विर्वा-खी० [सं०] दे० 'विची' ।
विर्वा-खी० [सं०] इमली ।
विर्वा-खी० [सं०] गुंजा ।
विर्वा-पु० [सं०] कौचादन नामक पौधा ।
विर्वा-पु० दे० ।
विर्वा-खी० बेंटी ।
विर्वा-पु० नृत्यका एक ढंग ।
विर्वा-खी० चिता; खयाल, याद ।
विर्वा-वि० [सं०] चितन करनेवाला; ध्यान करनेवाला (प्रायः समासांतमें प्रयुक्त) । पु० निरीक्षक; मनन करनेवाला ।
विर्वा-पु० [सं०] किसी वस्तु, व्यक्तिकी बार-बार सोचना, याद करना। सोचना-विचारना, मनन ।
विर्वा-खी० [सं०] चितन । * सं० कि० चितन करना; चिन्तन करना; सोचना-समझना ।
विर्वा-वि० [सं०] चिता करने योग्य, विचारणीय; सोचनीय ।
विर्वा-पु० दे० 'चितन' ।
विर्वा-खी० [सं०] चितन; सोच, चिन्तन; ध्यान; परवाह; एक सचारी भाव । -**अनक**-वि० चितनाके कारणरूप, चितित कर देनेवाला । -**पर**, -**अन**-वि० चिता, सोचमें हुआ हुआ । -**पल**-वि० दे० 'चितापर' । -**मणि**-पु० एक कल्पित रत्न जिसमें जो मंगी वह देनेकी सामर्थ्य मानी जाती है; सब कामनाएँ पूरी करनेमें समर्थ, परमेश्वर; यात्राका एक योग; घोड़ेकी एक शुभ मंत्रा; उस मंत्रासे युक्त घोड़ा; सरस्वतीका बीजमंत्र जो नवजात शिशुकी ओम्पर विद्याप्राप्तिके लिए बिछा जाता है । -**वेस**(जू)-पु० मंत्रणागृह । -**शील**-वि० जिसे सोच-विचारकी आदत हो, मननशील, मनीषी ।
विर्वा-वि० [सं०] चितासे व्याकुल, उद्विग्न ।
विर्वा-वि० [सं०] चितासे उद्विग्न ।
विर्वा-खी० [सं०] इमली ।
विर्वा-वि० [सं०] चितायुक्त, सोचमें पड़ा हुआ ।

विर्वा, **चितिया**-खी० [सं०] चिता ।
विर्वा-वि० [सं०] चिता करने योग्य, चितनीय, विचारणीय ।
विर्वा-खी० छोटा डुकड़ा, पञ्जी ।
विर्वा-खी० अलीकामें पाया जानेवाला एक वनमानुस जिसकी शकल आदमीसे बहुत मिलती है ।
विर्वा-पु० दे० 'विर्वा' ।
विर्वा-पु० दे० 'वीटा' ।
विर्वा-खी० दे० 'वीटा' । **मु०** -**की** चाल-बहुत धीमी चाल । -**के** पर निकलना-मरनेका समय आना; श्वाभत आना । (वीटाके पर निकलनेपर वह उठती और गिरकर मर जाती वा चिड़ियोंका भक्ष्य बनती है ।) -**(टिर्वा)**से भरा कबाब-झगड़े-झंझटकी चीज, मुसीबतका घर ।
विर्वा-पु० दे० 'विर्वा' ।
विर्वा-पु० दे० 'चिक्का' ।
विर्वा-खी० एक तरहका रेशमी कपड़ा; एक जंगली पेड़; चिकनी सुपारी ।
विर्वा-पु० बकरामास, मांस-विक्रेता । † खी० चिलक ।
विर्वा-खी० [सं०] बाँसकी तीलीयोंका बना हुआ क्षीना पर्दा जिसे सिङ्की-दरवाजोंपर डालते हैं ।
विर्वा-वि० दे० 'वीकट' । पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा ।
विर्वा-अ० कि० मैलने उककर चिपचिपा हो जाना ।
विर्वा-वि० दे० 'वीकट' ।
विर्वा-पु० वृत्ती कपड़ेपर झूँसे बेल-बूटे बनानेका काम; ऐसे कामवाला कपड़ा । -**कार**, -**गर**, -**दोज**-पु० चिकन बनानेवाला । -**कारी**, -**दोजी**-खी० चिकन बनानेका काम ।
विर्वा-वि० जिसकी सतह बराबर रंगकी, रदा की हुई हो, जो खुरदरा न हो; जिसपर हाथ-पाँव फिमले; साफ और चमकीला; तेल, घी लगा हुआ; लिग्घ; * स्नेही ।
विर्वा-खी० चिकनापन, लिग्घता; धी, मैल आदि स्नेह ।
विर्वा-**हट**-खी० चिकनाई । **मु०** -**घड़ा**-जिसपर कढ़ने-सुननेका असर न हो, बेहवा ।
विर्वा-सं० कि० चिकना करना, रूखापन, सुरदरापन मिटाना; तेल आदि लगाना । अ० कि० चिकना होना; मोटा होना, चरबी बढ़ना; चिकनी-चुपकी बातें करना; * स्नेहसे युक्त, अनुरक्त होना ।
विर्वा-वि० जो बना-ठना रहे, छेला ।
विर्वा-वि० खी० दे० 'चिकना' । -**चुपरी** बातें-खी० किसीकी ठगने-कुसलानेके लिए कही जानेवाली मीठी बातें, चापकूसीकी बातें । -**डली**, -**सुपारी**-खी० उबाली हुई चिपटी सुपारी । -**मिट्टी**-खी० काली लसदार मिट्टी ।
विर्वा-अ० कि० बिछाड़ना ।
विर्वा-पु० बूचड़, चिका; * एक रेशमी कपड़ा ।
विर्वा-पु० चीकार, चीख ।
विर्वा-अ० कि० चीकार करना ।
विर्वा-पु० एक तरहकी सारंगी; एक तरहका हिरन ।
विर्वा-खी० छोटा चिकारा; मच्छर जैसा एक छोटा कीड़ा ।

चिकित-वि० [सं०] श्रात । पु० एक ऋषि ।
 चिकितान-पु० [सं०] एक ऋषि । वि० अभिष्ट ।
 चिकित्सक-पु० [सं०] चिकित्सा करनेवाला, वैद्य ।
 चिकित्सन-पु० [सं०] चिकित्सा करना ।
 चिकित्सा-स्त्री० [सं०] रोग-निवारणका उपाय, इलाज;
 औषधोपचार । -व्यवसाय-पु० वैद्य, डाक्टरका पेशा,
 -व्यवसायी (विद्यु) -पु० वैद्य, डाक्टरका पेशा करने-
 वाला ।
 चिकित्सालय-पु० [सं०] अस्पताल, रुफाखाना ।
 चिकित्सित-वि० [सं०] जिसकी चिकित्सा, इलाज किया
 गया हो ।
 चिकित्सु-वि० [सं०] चिकित्सा, उपचार करनेवाला ।
 चिकित्स्य-वि० [सं०] चिकित्साके योग्य ।
 चिकित्-वि० [सं०] चिपटी नाकवाला ।
 चिकित्-पु० [सं०] कीचक ।
 चिकीर्षक-वि० [सं०] चिकीर्षावाला, करनेकी इच्छा
 रखनेवाला ।
 चिकीर्षा-स्त्री० [सं०] करनेकी इच्छा ।
 चिकीर्षित-वि० [सं०] जिसे करनेकी इच्छा की गयी हो ।
 पु० इच्छा, अभिप्राय, प्रयोजन ।
 चिकीर्षु-वि० [सं०] करनेकी इच्छा रखनेवाला ।
 चिकुटी-स्त्री० चिकोटी, चुटकी ।
 चिकुर-पु० [सं०] केश, सिरके बाल; रंगनेवाला जीव;
 पहाड़; गिलहरी; छछुदर । -कलाप, -निकर, -पक्ष, -
 पाश, -आर, -हस्त-पु० केशकलाप, जुल्फ, लट ।
 चिकुर-पु० [सं०] बाल ।
 चिकोटी-स्त्री० दे० 'चुटकी' ।
 चिक-पु० [सं०] छछुदर । वि० चिपटी नाकवाला ।
 चिकट-वि० बहुत मिला, मदा । पु० जमा हुआ मेल ।
 चिकण-वि० [सं०] चिचना । पु० सुपारीका पेश; उसका
 फल; हड्डी ।
 चिकणा-स्त्री० [सं०] बढ़िया गाय; सुपारी ।
 चिकणी-स्त्री० [सं०] सुपारी; चिकनी सुपारी ।
 चिकुरना-अ० कि० चोत्कार करना, चिपाइना ।
 चिकस-पु० [सं०] जौया आटा; तेल और हल्दी मिला
 हुआ जौका आटा जो बर और कन्माकी उबटनकी तरह
 मला जाता है ।
 चिक्रा-स्त्री० [सं०] सुपारी; चुड़िया । † पु० चक्का, कंकड़,
 डेला; एक खेल ।
 चिकार-पु० चिकार ।
 चिकारा-पु० एक तरहका हिरन ।
 चिकण-वि० [सं०] चिकण ।
 चिकिर-पु० [सं०] एक तरहका चूहा; गिलहरी ।
 चिकिद्-पु० [सं०] नमी, आर्द्रता; चद्रमा ।
 चिकनार्-पु० मधुपानके समय स्त्री जानेवाली चटपटी
 वस्तु, चाट ।
 चिकल-पु० [सं०] पंक, कीचक ।
 चिकुदना-स्त्री० जोतने या निरानेसे निकली हुई घास ।
 चिकुदना-स० कि० जोतनेके बाद या निराकर घास
 निकालना ।

चिकुरा-पु० गिलहरी ।
 चिकुराई-स्त्री० चिकुरनेकी किया या मजदूरी ।
 चिकुरी-स्त्री० मादा गिलहरी ।
 चिकवा-स्त्री० दे० 'चिवाक' ।
 चिकवा-पु० एक पौधा जिसकी जड़-पत्तियाँ आदि दवाके
 काम आती हैं, अपामार्ग; किलनी ।
 चिकड़ी-स्त्री० किलनी; † अपामार्ग ।
 चिकान-पु० बाज ।
 चिकाना-अ० कि० चिलाना ।
 चिकाना-अ० कि० दे० 'चिचियाना' - 'काक चिवावत
 है खड़ा, जायु पियारे मित' - साखी ।
 चिचिना-पु० दे० 'चिचिडा' ।
 चिचि-पु० [सं०] चिचिडा ।
 चिचिडा-पु० एक पेड़ जिसमें गोल लंबीसे फल लगते
 और तरकारीके काम आते हैं; उसका फल ।
 चिचियानार्-अ० कि० चोखना, चिलाना ।
 चिकुना-अ० कि० दे० 'चुकुना' ।
 चिकोबना-स० कि० दे० 'चकोबना' ।
 चिचिटिंग-पु० [सं०] एक विषैला कीड़ा ।
 चिच्छकि-स्त्री० [सं०] चैतन्य, चेतनाशक्ति ।
 चिच्छक-पु० [सं०] महाभारतमें बर्णित एक वैद्य; उस
 देशका निवासी ।
 चिञ्जारा-पु० राज, मेमार ।
 चिट-स्त्री० कागजका छोटा टुकड़ा, पुरजा; कपड़ेकी धब्बी ।
 -नवीस-पु० छेल्क, मुहरिर ।
 चिटकना-अ० कि० मुक्कर फटना, तड़कना; लकड़ीका
 जलते समय 'चिट-चिट' आवाज करना; चिदना, लीखना ।
 चिटकाना-स० कि० चिटकनेका कारण होना; लिखाना,
 चिदना ।
 चिट्ट-स्त्री० दे० 'चिट' ।
 चिट्टा-वि० मोरा, मफेद (मोरा-चिट्टा) । † पु० हानिकर
 कार्यके लिए दिया जानेवाला चक्रमा, बढ़ावा (दिना,
 लड़ाना) ।
 चिट्टा-पु० खाता; आय-व्यय आदिका वार्षिक विवरण;
 दैनिक, साप्ताहिक या मासिक मजदूरी, वेतनका हिसाब;
 उमे चुकानेके लिए बाँटा जानेवाला रुपया; फेहरिस्त,
 सूची; विवरण ।
 चिट्टी-स्त्री० पत्र, खत; पुरजा; आशापत्र; निमंत्रणपत्र;
 पुरजे डालकर विशेष वस्तुके अधिकारीका नाम निश्चित
 करना, 'लाटरी' । -पत्री-स्त्री० पत्र; पत्रव्यवहार ।
 -रसा-पु० चिट्टियाँ बाँटनेवाला, डाकिया । सु०-
 डालना-लाटरी डालना ।
 चिट्ट-स्त्री० दे० 'चिट'; जलनेकी आवाज (?) ।
 चिचिचि-वि० जो जरासी बातपर चिद जाय, झुंझला
 उठे, तुलक-मिजाज । पु० एक छोटा पक्षी । -पत्र-पु०
 चिचिचि स्त्रमाव; तुलक-मिजाजी ।
 चिचिचिना-अ० कि० चिटकना, जलनेमें चिचिचि
 आवाज होना; चिदना, झुंझलाना ।
 चिचिवा-पु० हरे या मिंगीये हुए धानकी भून और कूटकर
 चिपटा किया हुआ एक खाद्य पदार्थ ।

विद्या-पु० गौरवा, चतक ।

विद्याना-स० कि० दे० 'विदाना' ।

विधिवा-खी० उक्तेवाला, पंखलुक्त प्राणी, पक्षी, पक्षेक; चौबलवा; अंगिवाकी कटोरियोंके बीचकी सिलाई; पायवाये या लहेगेका नेपा; ताशका एक रंग, चिबी; बैसाखी आदिके सिरपर लगायी जानेवाली चिहियाकी शकलकी लकड़ी; एक प्रकारकी मिलाई । -ज्ञाना, -घर-पु० पशु-पक्षियोंको रखनेका स्थान, जंतुशाला । -जुनमुन-पु० पक्षी, पक्षेक । -बाळा-वि० मूल, उत्पत्ति । सु०-का वृष-अलभ्य वस्तु, अनहोनी बात । -कैसाना-शिकार कैसाना; किसी शूंदरी युवती या मालदार असामीकी फुलकर हाथमें कर लेना ।

विधिहार-पु० दे० 'विधीमार' ।

विधी-खी० ताशका एक रंग; चिहिया (केवल समासमें व्यवहृत) । -मार-पु० चिहिया पकड़नेवाला, बहेलिया ।

विह-खी० चिहनेका भाव, खीझ; नाराजगी; नकरत । सु०-निकाखना-चिदाना ।

विहना-अ० कि० खका, नाराज होना; किसी तात्कालिक बातपर क्रुद्ध हो जाना, बुरा मानना ।

विहाना-स० कि० नाराज करना; कुपित करनेवाली बात कहना, खिझाना, मुँह बनाना; छेड़ना; उपहास करना ।

चित-वि० [मं०] चुनकर इकट्ठा किया हुआ, जिसका चयन किया गया हो; मचित, आच्छादित । पु० मकान, इमारत; * चितवन; दे० 'चित' । -चीता-वि० मनचाहा, चाहा हुआ । -चौर-वि० चित्त चुरानेवाला, मनोहर । -अंग-पु० उचाट, जीन लगना; बुद्धि ठिकाने न रहना ।

चित-वि० जिसका ड्रैफ्टेड ऊपरकी ओर हो, उत्तान, पटका उल्टा, जिसकी पूरी पीठ जमीनमें लगी हो । अ० पीठके बल । -पट-पु० एक खेल; कुवती । सु०-करना-कुपनीमें प्रतिपक्षीकी पछाड़ना, उसकी पीठ लगा देना । -पट करना-इधर या उधर कुछ निर्णय करना, कुछ तै कर डालना । -पट होना-कुछ तै होना, कोई निर्णय होना । -होना-कुश्तीमें हार खाना, पछाड़ा जाना; बदहाल, हक्का-बक्का हो जाना ।

चितउर-पु० चितौर ।

चितकबारा-वि० जिसमें एक रंगकी जमीनपर दूसरे रंगके धब्बे हों, चितला; रंग-बिरंगा ।

चितकूट-पु० चित्रकूट ।

चितगुपित-पु० दे० 'चित्रगुप्त' ।

चितबाहु-पु० तलवारका एक हाथ ।

चितरनहार-पु० चित्रण करनेवाला ।

चितरना-स० कि० चित्र, बैल-बूटे बनाना, उरेहना ।

चितरवा, -चितरोख-पु० एक चिहिया ।

चितला-वि० चितकबारा । पु० चितोदार खरबूजा; एक बड़ी मछली ।

चितवज-खी० किमीकी ओर देखनेका ढंग, रुष्टि; कटाक्ष ।

चितवना-स० कि० देखना, निरखना ।

चितवनि-खी० दे० 'चितवन' ।

चितवाना-स० कि० दिखाना ।

चिता-खी० [सं०] मुरदेकी जलानेके लिए चुनकर रखी हुई लकड़ियों; ढेर, समूह; * इमशान । -पिंड-पु० इमशानमें शवदाहके पूर्व किया जानेवाला पिंडदान । -प्रसाप-पु० जीते की चितापर मशम कर देनेका ढंङ (को०) । -भूमि-खी० इमशान । -साधन-पु० इमशानमें बैठकर बैठका अनुष्ठान करना ।

चिसाना-स० कि० चेत कराना, वाद दिलाना; किसी खतरे-बुराईके बारेमें सावधान करना; शानोपदेश करना ।

चितारना-स० कि० ध्यानमें लाना, वाद करना-रि पपइया प्यारे कबको बैर चितारयो'-मीरा ।

चितारी-पु० दे० 'चितेरा' ।

चितारोहण-पु० [सं०] (विषवाका) सती होनेके लिए चिता-पर जाना, आसीन होना ।

चितावनी-खी० चितानेकी क्रिया; चितानेके लिए कही गयी बात, आगाही, तथैह (देना) ।

चिति-खी० [सं०] चयन, चुनाव; ढेर; चिता; चेतना; ईदोंको जोड़ाई; अंगिका एक संस्कार; समस्त; दुर्गा; * चित्ती कौबी । -व्यवहार-पु० वह गणित जिससे किसी दीवार-में लयनेवाली ईदों, ढोंकोंकी गिनती मालूम की जाय ।

चितिका-खी० [मं०] ढेर; चिता; करपनी ।

चितेरा-पु० चित्रकार ।

चितेरिन, चितेरी-खी० खी चित्रकार; चित्रकारकी पत्नी ।

चितैना-स० कि० दे० 'चिनवना' ।

चितौन, -चितौनि-खी० दे० 'चिनवन' ।

चितौना-स० कि० दे० 'चिनवना' ।

चितौनी-खी० दे० 'चिनवनी' ।

चित्-खी० [मं०] चेतना; ज्ञान; आत्मा; मग्न; चित्त; अग्नि । पु० चयनकर्ता, चुननेवाला; रामानुजके मतमें जीव-पदवाच्य पदार्थ । -पर, -खरूप-पु० परमात्मा ।

चित्कार-पु० दे० 'चोम्कार' ।

चित्त-पु० [मं०] अतिरिद्रिय, अंतःकरण, मन; अतःकरणकी चिंतना, अनुमथानकारिणी इत्ति (४०) । वि० विचारित; अनुभूत; इच्छित; गोचर । -कलित-वि० त्रिमकी आशा की गयी हो । -चारी(रिन्)-वि० दूसरीकी इच्छामें चलनेवाला । -चौर-पु० प्रेमी । -ज, -जन्मा(म्भन्)-पु० कामदेव । -ज्ञ-वि० दूसरीका, इच्छा जाननेवाला । -जारा-खी० विचारधारा । -नाथ-पु० प्रेमी । -निवृत्ति-खी० संतोष, सुख । -प्रसादन-पु० योग-दर्शनमें वर्णित चित्तका एक संस्कार जिसमें चित्तकी प्रसन्नता प्राप्त होती है । -अंग-पु० बदरिकाधम-स्वित एक पर्वत । -भूमि-खी० चित्तकी अवस्था; इन पाँचमेंसे चित्तकी कोई अवस्था-क्षित, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध (यो०); समाधिही इन चार भूमियोंमें कोई न-मनुष्यती, मनुष्यप्रतीका, विशेषा और क्रान्तरा । -जेद्-पु० मनवेद; मनकी अवस्था । -अम-पु०, -आति-खी० जरके कारण होनेवाला प्रलाय; धबडाहट । -योनि-पु० कामदेव । -छ-पु० दे० 'शीतल' । -विक्षेप-पु० चित्तकी अस्थिरता, अनेक विषयोंमें मटकते रहना । -विद्-पु० चित्तकी बात जाननेवाला । -विह्व-पु० उन्माद । -विज्ज, -विज्म-पु० भाति; उन्माद । -विह्वेच-

पु० मैत्री-भंग । -**वृत्ति**-**स्त्री**० चित्रकी अवस्था; मनका माय; चित्तका विषयकार परिणाम । -**०** **विरोध**-**पु०** चित्तकी बाधा विषयोले हटाकर अंतर्मुख करना । -**वृद्धि**-**स्त्री**० चित्तका निर्मल, निर्विकार, कुवासनाओंसे रहित होना । -**हारी**(**रिन्**)-**वि०** मनकी हरण करनेवाला । **पु०**-**उच्छेदना**-**जी** न लगाना, मन उड़ास होना । -**चढ़ना**-**दे०** 'चित्तर चढ़ना' । -**चिह्न**-**पु०** चित्रमें पीछा उत्पन्न करना । -**चुराना**-**मन** मोह लेना । -**देना**-**मन** लगाना; ध्यान देना । -**पर चढ़ना**-**बराबर** याद रहना या बराबर याद आना । -**बैठना**-**मनका** किसी एक विषयमें न लग सकना, चित्तमें बहुमयी चिन्ताएँ होना । -**से** उत्तरना-अग्रिम हो जाना; याद न रहना ।

चित्ररत्नमहास-**पु०** (दिशम्भु), श्रीगोलाक नेहरूकी ही तरह आपने भी बिना पैरुक्त संपत्ति पाये बकालतमें लाखों रुपया कमाया । अगहयोगी आंदोलनके समय आपने भी बकालत छोड़ दी और साठा जीवन बिताने लगे । १९२२ में आप कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए । मृत्यु १९२५ ।

चित्ररमारी-**स्त्री**० चित्रशाला ।
चित्राकर्षक-**वि०** [म०] मनकी अपनी ओर खींचने, मुमानेवाला ।

चित्राप्रहार-**वि०** [म०] सुंदर ।

चित्राभोग-**पु०** [म०] पूर्ण चैननाना; किसी विषयके प्रति मनकी आसक्ति ।

चित्रासंग-**पु०** [म०] प्रेम ।

चित्ति-**स्त्री**० [म०] प्रज्ञा, बुद्धि; चिंतन; म्याति; कर्म; भक्ति; प्रयोजन ।

चिस्ती-**स्त्री**० छोटा धम्मा; रोटीमें जल जानेका भाग; विपटी कौड़ी चिमने जुआ खेलते हैं; कुम्हारके चाकके किनारेका गदा; इमलीका चिआँ जिनका एक ओरका छिलका राखकर दूर कर दिया गया हो, मुनिया चिबिया । **पु०** नीतल या जित्तीनार मौप ।

चिस्तीप्रेक-**पु०** [म०] गर्व, घमंड ।

चित्तीर-**पु०** मेवाड़के महाराणाओंकी पुरानी राजधानी ।

चित्र-**वि०** [म०] चुनने योग्य, चयनीय; चितासर्वधी । **पु०** हमशान; ममाधि ।

चित्रा-**स्त्री**० [म०] चिता; चुनना; एकत्र करना; बनाना (वेदी आदि) ।

चित्र-**पु०** [म०] कागज, कपड़े आदिपर बनायी हुई किसी चीजकी प्रतिमूर्ति, ममबीर; आलेख्य; चित्रक; शब्दचित्र; चित्रकाव्य; निम्न भेषीका काव्य; एक यम; चित्रग्रुप; चित्रक; अशोक; परंत; आकाश; भेत कुष्ठ; कई बणोंका समूह; चमकदार वस्तु । **वि०** रंग-विरंग; चित्रकवरा; चमकीला; कई बणोंवाला; हृदय, गोचर; विचित्र, * ठीक, दुस्त । -**कंठ**-**पु०** कन्तर । -**कबल**-**पु०** कालीन; बरी; हाथीकी मूल । -**कर**-**पु०** चित्रकार; अभिनेता; एक वर्णमकर जाति; निमिशका पेड़ । -**कर्म**(**न**)-**पु०** चित्र बनाना; आलेखन; बाजीगरी; विचित्र कार्य; अलंकरण । -**कर्म**(**मं**)-**पु०** विचित्र कार्य करनेवाला; बाजीगर; चित्रकार; तिमिष्ठ वृक्ष । -**कला**-**स्त्री**० चित्रविद्या, चित्र बनानेकी कला । -**काव**-**पु०** चीता ।

-**कार**-**पु०** चित्र बनानेवाला, चित्रेता । -**कारी**-**स्त्री**० [हिं०] चित्रकारका काम, धंधा; चित्रकला । -**काव्य**-**पु०** चित्र(छत्र, चमर आदि)के आकारमें लिखित काव्य । -**कुष्ठ**-**पु०** इरेत कुष्ठ । -**कूट**-**पु०** बाँदा जिलेका एक पर्वत जिसपर बनबासकालमें राम-सीता कई बरस रहे । -**कुत्र**-**वि०** अद्भुत । **पु०** चित्रकार । -**केतु**-**पु०** लक्ष्मणका एक पुत्र । -**कोल**-**पु०** छिपकली । -**गंध**-**पु०** इरताल । -**गुप्त**-**पु०** १८ वर्षोंमेंमे एक; यमके दरबारके लेखक जो सब मनुष्योंका पाप-पुण्य लिखा करते हैं और जो कायस्थ जातिके आदिपुरुष माने जाते हैं । -**घंटा**-**स्त्री**० काशीमें स्थित एक देवी । -**अव्य**-**पु०** नाक्यका एक प्रकार; अनाप-सनाप इधर-उधरकी बात । -**संहुल**-**पु०** नायविद्या । -**ताल**-**पु०** चीताला तालका एक भेद । -**त्वक्**(**व**)-**पु०** भोजपत्रका पेड़ । -**दंड**-**पु०** घूरन; कपास । -**देवी**-**स्त्री**० महेंद्रवाणी; देवीका एक भेद । -**धाम**(**न**)-**पु०** यक्षमें देखाओंसे बनाया जानेवाला एक चौथड़ा चक्र, सर्वतोभद्र-मंडल । -**नेत्रा**-**स्त्री**० मैना । -**पक्ष**-**पु०** तीतर । -**पट**-**पु०** चित्र; वह कपड़ा, चमड़ा, या कागज जिसपर चित्र बनाया जाय, चित्राधार; सिनेमाकी फिल्म । -**पटी**-**स्त्री**० छोटा चित्रपट । -**पत्रिका**-**स्त्री**० कपित्थपर्णी; द्रोणपुष्पी । -**पत्री**-**स्त्री**० जलपिप्पली । -**पथा**-**स्त्री**० प्रमास तीर्थके अन्तर्गत एक छोटी नदी । -**पदा**-**स्त्री**० लज्जानु; मैना; एक छद । -**पर्णी**-**स्त्री**० मजीठ; जलपिप्पली; कर्मस्कीटा; द्रोणपुष्पी । -**पादा**-**स्त्री**० मैना । -**पिच्छक**-**पु०** मोर । -**पुंख**-**पु०** बाण । -**पुष्पी**-**स्त्री**० अगड़ा । -**पूह**-**पु०** गौरवा । -**फल**-**पु०** चितल मछली; तरबूज । -**फलक**-**पु०** काठ, हाथीदंत आदिकी पटिया जिसपर चित्र बनाया जाय या बनाया गया हो । -**फला**-**स्त्री**० छिगिनी; कंटकारी; भैयन; ककथे; महेंद्रवाणी; एक मछली । -**बह**-**पु०** मोर । -**भानु**-**पु०** सूर्य; अग्नि; सैरव; शिव; चित्रक; मदार । -**भेषजा**-**स्त्री**० काकोदुवरिका, कठ-गुहर । -**भोग**-**पु०** राजका वह सहायक जो समयपर अनेक प्रकारसे सहायता करे । -**भंच**-**पु०** एक ताल । -**भंडप**-**पु०** अर्जुनकी पत्नी चित्रांगदाके पिता; अधिनी-कुमार । -**भंडल**-**पु०** एक तरहका सर्प । -**भति**-**वि०** विचित्र बुद्धिवाला । -**भुग**-**पु०** नीतल हिरन । -**भेखल**-**पु०** मयूर । -**भुज**-**पु०** नकली लड़ाई । -**योग**-**पु०** बूढ़ेकी जवान, जवानकी बूढ़ा बना देनेकी विद्या; ६४ कलाओंमेंमे एक । -**बोधी**(**जिन्**)-**वि०** अद्भुत (असाधारण) बौद्ध । **पु०** अर्जुन । -**रथ**-**पु०** सूर्य; कुबेरका सखा एक गंधर्व । -**रथा**-**स्त्री**० महाभारतमें वर्णित एक नदी । -**रस्मि**-**पु०** ४९ मत्तोंमेंमे एक । -**रेखा**-**स्त्री**० बाणासुरकी कन्या उषाकी एक सहेली । -**रेफ**-**पु०** एक बर्ष या भुसंड । -**ल**-**वि०** चित्रकवरा । -**लला**-**स्त्री**० मजीठ । -**लिखित**-**वि०** (चित्रित; गतिहीन; मूक । -**लिपि**-**स्त्री**० वह लिपि जिसमें अक्षरोंकी जगह सांकेतिक चित्र काममें लाये जायें । -**लेखक**-**पु०** चित्रकार । -**लेखिका**-**स्त्री**० तुलिका । -**लेखा**-**स्त्री**० चित्र; बाणासुरके मंत्रीकी कन्या जो उषाकी एक सखी थी; एक

अमरा; तसवीर बनानेकी हूँची। -**छोचना**-**छी०** मैना। -**चन**-**पु०** एक पुष्पावर्णित वन। -**विचित्र**-**वि०** रंग-विरंगा; बेल-बूटेतर। -**विद्या**-**छी०** चित्र बनानेकी विद्या, चित्रकला। -**विन्यास**-**पु०** चित्र बनाना, आलेखन। -**शावुल**-**पु०** चीता (जतु)। -**शास्त्रा**-**छी०** वह भवन, मंत्र आदि जिसमें बहुतसे चित्र लगा रखे गये हों, जहाँ चित्रकलाका प्रदर्शन किया जाय, 'पिनवर-नैलरी'; वह स्थान जहाँ चित्र बनाये जायें, 'स्टुडियो'; मिति-चित्रों में भरा भवन, मठ। -**सिखिजि**-**पु०** हृत्स्पति। -**सिखंडी (हिन्)**-**पु०** समर्पि। -**सिख्यी (सिख)**-**पु०** चित्रकार। -**सर्प**-**पु०** चीतल सर्प। -**सारी**-**छी०** [हि०] चित्रशाला। -**हस्त**-**पु०** मुद्रमें हाथोंकी एक विशेष स्थिति।
चित्रक-**पु०** [स०] चीता, बाघ; चीना नामका छुप; परब; तिलक; चित्रकार; मुद्रका एक ढग; एक विशेष वन।
चित्रना-**स०** कि० चित्र बनाना, उरहना; रंग भरना।
चित्रमय-**वि०** [स०] चित्रोंमें भरा हुआ, सचित्र।
चित्रवद्-**वि०** [स०] चित्र जैसा; (ला०) स्मर, गतिरहित; स्वस्थ।
चित्रवती-**छी०** [स०] गांधार ग्रामकी एक मूर्च्छना।
चित्रवाह-**पु०** [स०] पाठान्तर मत्स्य।
चित्रांग-**वि०** [स०] जिसका शरीर चित्तोदार हो। **पु०** एक तरहका साँप; अर्जुन; मिर्द; इरताल, चित्रक।
चित्रांगद-**पु०** [स०] शान्तुका एक पुत्र, विचित्रवीर्यका भाई; एक यक्षराज।
चित्रांगदा-**छी०** [स०] अर्जुनकी एक पत्नी जो मणिपुरके राजाकी बेटी थी।
चित्रांगी-**छी०** [स०] मजीठ; कनखनरा।
चित्रा-**छी०** [म०] २७ नक्षत्रोंमें एक; चितकबरी गाय; ककरी; खीरा; मजीठ; बायविडग; मृषिकपर्णा; एक अमरा; एक रागिनी; एक मूर्च्छना, एक सर्प; सुभद्रा। -**क्षुप**-**पु०** द्रोणपुष्पी।
चित्राक्ष-**वि०** [स०] सुंदर नेत्रोंवाला।
चित्राक्षी-**छी०** [स०] मैना, सारिका।
चित्राक्षी-**पु०** [म०] चंद्रमा; धंशकर्ण; बलि चढ़ाये हुए बकुरेके रक्ते रंजित ललाट।
चित्राचार-**पु०** [स०] चित्रपट; चित्र रखनेका स्थान।
चित्राचू-**पु०** [स०] एक प्रकारका पूजा।
चित्रावस-**पु०** [स०] इरापत।
चित्रायुध-**पु०** [स०] विचित्र अस्त्र। **वि०** विचित्र अस्त्र-वाला।
चित्रालय-**पु०** [स०] चित्रसंग्रहालय, चित्रशाला।
चित्रावसु-**वि०** [स०] नक्षत्रमंडित (रात्रि)।
चित्राव-**पु०** [स०] सत्यवात्।
चित्रिक-**पु०** [स०] चैतका महीना।
चित्रिणी-**छी०** [स०] कामशास्त्रमें माने हुए स्त्रियोंके पवित्रा आदि चार भेदोंमेंसे एक (वह कलानिपुण और बनाव-सिंघारकी शौकीन होनी है)।
चित्रित-**वि०** [स०] जिसका चित्र खींचा गया हो, उरहा हुआ; चित्रयुक्त; चित्रकबरा।

चित्री (त्रिन्)-**वि०** [स०] चित्रयुक्त; चितकबरा; उजले-काले रंगोंवाला।
चित्रीकरण-**पु०** [स०] विभिन्न वर्णोंसे रंगना; चित्रित करना; मजाना; आश्चर्य।
चित्रीकार-**पु०** [स०] दे० 'चित्रीकरण'।
चित्रोत्स-**पु०** [स०] चंद्रमा (चित्रा नक्षत्रके पति)।
चित्रोद्-**छी०** [स०] अदभुत या आकाशवाणी; ओजस्वी भाषण; आश्चर्यजनक कहानी।
चित्रोत्तर-**पु०** [स०] एक शब्दालंकार जिसमें प्रदर्शने सन्धियोंमें ही उमका उलार होता है।
चित्रोपला-**छी०** [स०] गोदावरी नदी।
चिन्ध-**वि०** [स०] पुत्र्य।
चिन्हा-**पु०** कटा-पुराना कपड़ा, गूढ़; कपड़ेकी धड्डी।
मु०-(**इ**)चिन्हे ही जाना-बुरी तरह पट जाना, धजियाँ उड़ जाना। -**लगाना**-गरीबीके कारण फटे-चिन्हे कपड़े पहनने, चिन्हे लपेटनेको लाचार होना; बहुत गरीबी आना।
चिन्हाइना-**म०** कि० फाड़ना, चिन्हा कर देना; (किन्हींके पक्षका) हर पहलू से खटन करना; लथेड़ना, नलीक करना; धजियाँ उड़ाना।
चिन्-**वि०** चिन्हा का सामान्य रूप। -**आकाश**-**पु०** शुद्ध ज्ञानस्वरूप ब्रह्म। -**आभास**-**पु०** चित्रस्वरूप परब्रह्मका अन्तर्करणसे प्रतिबिंबित आभास, जीव। -**चन**-**वि०** ज्ञान-मय; ज्ञानरूप। ब्रह्म, परमात्मा। -**रूप**-**वि०** शुद्ध चैतन्य-रूप, चिन्मय; शान्ति। **पु०** परब्रह्म। -**विलास**-**पु०** चित्रस्वरूप परमेश्वरकी माया; आराम या ब्रह्मस्वरूपमें रमण।
चिन-**पु०** हिमालयपर होनेवाला एक, मडापहार पेड़।
चिनक-**छी०** जलनके साथ होनेवाली पीड़ा; सूजाके रोगमें सूत्रनालीमें होनेवाली जलन और पीड़ा।
चिनरा-**छी०** दे० 'चिनक'।
चिनराडा-**पु०** चिन्हा।
चिनगारी-**छी०** जलते हुए कोयले आदिका बहुत छोटा टुकड़ा, अश्लिष, शुक्लिग। **मु०**-छोड़ना-दगमग लगानेवाली बात कहना। -**डालना**-आग लगाना; दगमग लगाना।
चिनगी-**छी०** दे० 'चिनगारी'।
चिनना-**म०** कि० बीबाग उठाना; चुनना।
चिनाना-**म०** कि० चुनवाना; दीवार उठवाना।
चिना-**छी०** पञ्जाबकी पाँच प्रधान नदियोंमेंसे एक, चंद्रमाया।
चिनिचा-**वि०** चीनीके रंगका, मफेद; चीनी जैसे खदका मीठा; चीनी देशका। -**केला**-**पु०** बगालमें होनेवाला एक तरहका केला जो अधिक मीठा होता है। -**पोत**-**पु०** एक तरहका कपड़ा। -**बादाम**-**पु०** मूंगफली।
चिनीसी-**छी०** चुनीसी, ललकार (सुगन्ध)।
चिन्मय-**वि०** [स०] शुद्ध ज्ञानमय, ज्ञानस्वरूप। **पु०** परब्रह्म।
चिन्मात्र-**पु०** [स०] शुद्ध चैतन्य। **वि०** शुद्ध ज्ञानस्वरूप।
चिन्ह-**पु०** दे० 'चिह्न'।
चिन्हवाना-**स०** कि० पहचान कराना।

चिन्हाना—स० कि० पहचान कराना । अ० कि० पहचाना जाना ।

चिन्हानी—खी० चिह्न, पहचान; यादगार ।

चिन्हारी—वि० परिचित ।

चिन्हारी—खी० जान-पहचान ।

चिह्नित—वि० दे० 'चिह्नित' ।

चिपकना—अ० कि० किसी लसदार चीजके योगसे एक चीजका दूसरीसे जुड़ना, मटना; लिपटना; किसी काममें लगना; खी-पुष्पका परम्पर आमक्त होना ।

चिपकाना—अ० कि० किसी लसदार चीजके योगसे एक चीजको दूसरीमें जोड़ना, माटना; लिपटाना ।

चिपचिप—खी० किसी लसदार वस्तुको छूनेसे होनेवाला शब्द या अनुभव ।

चिपचिपा—वि० लसदार, चिपकनेवाला । —**हट**—खी० चिपचिपा होनेका भाव, छस ।

चिपचिपाना—अ० कि० लसदार होना; लगना ।

चिपट—वि० [मं०] चिपटी नाकवाला । पु० चिपटा ।

चिपटना—अ० कि० दे० 'चिपटना' ।

चिपटा—वि० जो उमरा हुआ न हो, ढेठा या चँसा हुआ ।

चिपटी—वि० खी० दे० 'चिपटी' । खी० एक तरहकी बाली; योनि । **मु०**—खेलना—परस्पर योनिस्पर्धण ।

चिपटा—वि० जिसकी आलमें धूल मेल (कीचड़) भरा हो ।

चिपटी, **चिपरी**—खी० उपली ।

चिपिट—वि०, पु० [सं०] दे० 'चिपट' ।—**प्रीव**—वि० छोटी गरदनवाला ।—**नास**, **नासिक**—वि० चिपटी नाकवाला । पु० तानार या मंगोल देश; तानार या मंगोल ।

चिपिटक—पु० [सं०] चिपटा ।

चिपुट—पु० [मं०] चिपटा ।

चिप, **चिप्य**—पु० [सं०] एक नखरोग, नखके नीचेके माममें जलन और पीड़ा होना ।

चिपड़—पु० लकड़ीकी छाल आदिका टुकड़ा ।

चिपड़का—खी० [मं०] एक रात्रिचर जंतु; एक चिड़िया ।

चिपरी—खी० लकड़ी, वातु आदिका छोटा चिपटा टुकड़ा; उपली; भीषा नीलनेका बटखरा; कागजका छोटा टुकड़ा जो कहां चिपका दिया जाय ।

चिबि—खी० [सं०] दे० 'चिबि' ।

चिबिल्ला—वि० दे० 'चिल्लिका' ।

चिबु, **चिबुक**—पु० [मं०] टुट्टी ।

चिमटना—अ० कि० चिपकना; लिपटना; गले या छातीसे लगना, गुथना; पिड़ न छोड़ना ।

चिमटा—पु० जलता कौयला आदि पकड़नेका आला, दस्तपनाइ ।

चिमटाना—स० कि० चिपकाना; लिपटाना ।

चिमटी—खी० छोटा चिमटा; वह आला जिसमें छोटी चीज पकड़ने, उठाने, तार मीढ़ने आदिका काम लेते हैं; चुटकी, चिकोटी ।

चिमड़ा—वि० दे० 'चिमड़' ।

चिमनी—खी० [अ०] इजन आदिका धुआँ या भाप निकालनेके लिए बनी हुई नली बैसी वस्तु; धुआँ निकालनेके लिए घरकी छतमें छेद करके बनायी हुई लोह, सीमेंट

आदिकी नली; लंपके ऊपर लगी हुई शीशेकी नली जिससे लंपकी लौको हवा मिलती और उसका धुआँ बाहर निकलता है ।

चिमि, **चिमिक**—पु० [मं०] तोता ।

चिमोटा—पु० दे० 'चमोटा' ।

चिमोटी—खी० दे० 'चमोटी' ।

चिर्वा—पु० दे० 'चिर्वा' ।

चिर्जीव—अ० [मं०] चिरजीवी हो, बहुत दिन जियो (आशीर्वाद) । पु० कामदेव; [हिं०] ढेठा, पुत्र । वि० दे० 'चिरजीवी' ।

चिर्जीवी (चिन्)—वि० [सं०] चिरजीवी ।

चिर्डी—खी० [मं०] सयानी हो जानेपर भी पिताके ही घर रहनेवाली लक्ष्मी; युवती ।

चिर्तन—वि० [मं०] बहुत दिनोंका, पुरातन ।

चिर्भ, **चिर्भण**—पु० [मं०] चील ।

चिर—वि० [सं०] जो बहुत दिनोंमें हो, दीर्घकालीन, पुराना, दिनी, जो बहुत दिन बना रहे, दीर्घकालस्थायी । अ० बहुत दिन, बहुत दिनोंतक, मदा । पु० तीन मात्राओंका गण जिसका पहला वर्ण लघु हो । —**काक्षित**—वि० जिसकी चाह, कामना बहुत दिनोंमें रही हो । —**कार**, —**कारिक**, **कारी (चिन्)**—वि० काममें देर लगानेवाला, दीर्घमूर्ख । —**काल**—पु० दीर्घकाल । अ० बहुत दिनोंमें; बहुत दिनोंतक । —**कालाजित**—वि० बहुत दिनोंमें कमाया, बटोरा हुआ । —**कालिक**, **कालीन**—वि० बहुत दिनका, पुराना; दीर्घ (रोग) । —**कुमार**—वि० आजीवन कौरा रहनेवाला । [खी० 'चिरकुमारी'] । —**किश**—वि० दीर्घ-सूत्री । —**जीवक**—वि० चिरजीवी । पु० जीवक नामका पेड़ । —**जीवी (चिन्)**—वि० बहुत दिन जीनेवाला, जिसकी आयु लंबी हो; अमर । पु० विष्णु, कौवा, हनुमान्, मार्क-टेल कृषि आदि, जीवक वृक्ष; संभर । —**तिक**—पु० चिरायना । —**नुपार-रेखा**—खी० पर्वत आदिकी वह रेखा जहाँ बरफ कभी गलती नहीं, 'खो-लाइन' । —**नवीन**—वि० दे० 'चिरनूतन' । —**निद्रा**—खी० महानिद्रा, मृत्यु ।

—**नूतन**—वि० जो मदा नया बना रहे । —**परिचित**—वि० जिसे बहुत दिनोंमें जानते-पहचानते हों । —**पाकी (चिन्)**—वि० देरसे पकनेवाला । पु० कैथ । —**पुष्प**—पु० मीलमिरी । —**पोषित**—वि० जिसका बहुत दिनोंतक धारण, पोषण किया गया हो, चिरकाशित । —**प्रचलित**—वि० जो बहुत दिनोंमें चला आ रहा हो, पुराना । —**प्रतीक्षित**—वि० जिसकी बहुत दिनोंसे आस लगी हो, प्रतीक्षा की जा रही हो । —**प्रहृत**—वि० बहुत दिनोंतक या बराबर टिकनेवाला । —**प्रसिद्ध**—वि० जो बहुत दिनोंसे प्रसिद्ध हो । —**प्रसूता**—खी० वह गाय जिसे बच्चा दिये बहुत दिन हो गये हों । —**चिद्व**—पु० भरत वृक्ष । —**मिश्र**—वि० बहुत दिनोंका मिश्र, पुराना दोस्त । —**मेही (चिन्)**—पु० दिरतक पेशाब करनेवाला) गधा । —**रोगी (चिन्)**—वि० जो बहुत दिनोंसे बीमार हो; जो सदा रोगी रहे । [खी० 'चिररोगिणी'] । —**लक्ष्य**—वि० जो बहुत दिनोंकी चेष्टा, बहुत दिनोंतक आस लगाये रहनेके बाद मिला हो । —**विधोग**, **चिरह**—पु० चिरकाख्यपा विधोग, लम्बी

जुदाई।-विस्मृत-वि० जो बहुत दिनों में भूल गया हो या भुला दिया गया हो।-बीचै-पु० एक दरवाजा।-बैर-पु० पुरानी अदावत, चिरसजुता।-शत्रु-वि० पुराना दुश्मन, जिसके साथ बहुत दिनों का या सरका बैर हो।-शत्रुता-श्री० पुरानी अदावत।-शांति-श्री० दीर्घ-कालव्यापी शांति; स्थायी शांति-मुक्ति।-संगी(गिन) वि० सदा का साथी, जन्मसंगी। [श्री० 'चिरसंगिनी']।-सूता-सूतिका-श्री० दे० 'चिरसूता'।-सेवक-पु० पुराना नौकर।-स्थ-वि० चिरस्थायी।-स्थायी(यिन्)-वि० बहुत दिनों तक बना रहनेवाला, टिकाऊ।-स्मरणीय-वि० बहुत दिनों तक याद रखने लायक।

चिरई-श्री० चिड़िया।

चिरकदरिस-श्री० किसी-किसी रोगका हमेशा बना रहना; रगड़ा।

चिरकना-अ० कि० थोड़ासा खाखाना करना; कई बार थोड़ा-थोड़ा खाखाना करना।

चिरकीन-वि० [फा०] मिला, गंदा; मैलेमें लिपटा हुआ। पु० भीमसेन रसके एक उर्दू कवि का उपनाम।

चिरकुट-पु० बहुत फटा हुआ कपड़ा, चिचड़ा।

चिरकवा-अ० कि० कुछ होना, चिड़चिड़ाना।

चिरचिटा-पु० चिचका।

चिरचिरा-वि० दे० 'चिचिड़ा'। पु० चिचड़ा।

चिरक-वि० [स०] पुराना।

चिरना-अ० कि० फटना; सीधा फट जाना। पु० चोरने का औजार।

चिरबत्ती-वि० टुकड़ा-टुकड़ा।

चिरम, चिरमि, चिरमिटी-श्री० बुँचची।

चिरबल-पु० एक पोधा जिससे रंग निकलता है।

चिरबाई-श्री० चिरबाने का काम या उजरत; पानी बरसने के बाद की पहली जोती।

चिरबाना-स० कि० चोरने का काम कराना।

चिरहँटा-पु० चिड़ीमार।

चिराई-श्री० चमड़े, मास, चरबी आदिके जलने से निकलनेवाली दुर्गंध, (ला०) बदनामी। वि० चिड़चिड़ा।

चिराईता-पु० दे० 'चिरायता'।

चिराईना-श्री० दे० 'चिराई'।

चिराई-श्री० चोरने की क्रिया; चोरने की मजदूरी।

चिराक-पु०, श्री० दे० 'चिराग'-जंती और राजनिके राजनिमें सपति है, तेती रोज रातके चिराकें जोति जागती'-ललित०।

चिराग-पु० [फा०] दिया, दीपक, लूप; (ला०) वेता।

-जले-अ० दिया जलने के समय, ओंघरा होने पर।

-दान-पु० दीवत, दीपाधार।-(इं)सहरी-सुबह-पु० (भोरका दिया) बुझता हुआ दिया; वह जिसके मरने के दिन भरी हो, कुछ दिनों का मेहमान। मु०-उक़र करना

-चिराग बुझाना।-का हँसना-चिराग से फूल शङ्खना।

-गुल करना-दिया बुझाना।-गुल, पगड़ी गायब-निगाह झपटे ही मालका मावब कर दिया जाना।-गुल होना-दिया बुझना।-डंढा करना-दिया बुझाना।

-सले अँधेरा-रखवाले के सामने चोरी; धानी, पड़ते

घरमें चोर सूँतता का या अशक्वीय आचरण होना।-

दिलाना-रास्ते में या सामने रोशनी करना।-पा होना

-घोबेका अलफ होना।-बढ़ाना-दिया बुझाना।-

बत्ती करना-दिया जलाना, लूप आदि ठीक करना।

-बत्तीका बत्त-दिया जलाने का बत्त, झुटपटा।-छेकर

हँदना-बहुत कोशिश में हँदना, तलाश करना।-से

चिरागा जलता है-एकके गुग आदिने दूसरे को लाभ पहुँचता है।-से फूल झड़ना-जल्दी हुई बत्ती से फुलके झड़ना।

चिरागी-श्री० दिया-बत्तीका खर्च; मजारपर दी जानेवाली मेट जो प्रायः चिरागके नीचे रख दी जाती है; किसी मजारपर दिया-बत्ती करने का खर्च; जुएके अड्डेपर दिया जलानेवाले को दिया जानेवाला पैसा।

चिराटिका-श्री० [म०] सफेद मरहपुरना; चिरायता।

चिरातन-वि० पुराना; फटा-पुराना।

चिरासिक-पु० दे० 'चिरितिक'।

चिरा-पु० [म०] गहक; बलखी जातिका एक पक्षी।

चिराना-वि० दे० 'चिराना' (प्रायः 'पुरान'के साथ व्यवहृत)।

चिराना-स० कि० दे० 'चिरवाना'। अ० कि० बीच में चिर जाना-'मकु गोहँकर दिया चिराना'-प०। * वि० पुराना, बहुत दिनों का।

चिराई-श्री० दे० 'चिराई'।

चिरायता-पु० कड़वे स्वाद का एक छोटा पौधा जो दवाके काम आता है।

चिरावु(स्)-वि० [स०] बहुत दिन जीनेवाला, चिरजीवी। पु० देवता; कोवा।

चिरारी-श्री० चिराई।

चिराव-पु० चोरने का भाव, चोरने का धाव, चोरा।

चिरिटी-श्री० [स०] दे० 'चिरटी'।

चिरि-पु० [म०] तोता।

चिरिका-श्री० [म०] एक अश्व।

चिरिया-श्री० दे० 'चिड़िया'।

चिरिहार-पु० चिड़ीमार, बहेलिया।

चिरी-श्री० 'चिड़िया'।-खाना-पु० चिड़ियाघर।

चिरु-पु० [म०] कपे और शहका जोड़, मोटा।

चिरैता, चिरैता-पु० दे० 'चिरायता'।

चिरैया-श्री० चिड़िया; † पुष्प नक्षत्र; परिहृता सिरा।

चिरिटा-पु० गौरवा पक्षी।

चिरिजी-श्री० पिवाले के बीमकी गिरी जो मेवों में गिनी जाती है।

चिरौरी-श्री० दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना।

चिरौल-पु० एक पेड़-रेंवने, चिरौल इत्यादिके पेड़ इधर-उधर उगे थे'-अमर०।

चिरकै-पु० [फा०] मंदरी; गु; पीव।

चिरई-श्री० [स०] ककरी।

चिलक-श्री० चमक, शलक; हिलने आदिसे एकजगती होनेवाली तीव्र पीड़ा; टीस, रूक-रूककर होनेवाला पीड़ा।

चिलकना-अ० कि० चमकना; चिलक मारना; टीसना, चिलना।

चिकका-पु० बौदीका वनचमता सिद्धा । स्त्री० उषेसकी एक झील ।

चिककाना†-स० क्रि० चमकाना; उल्लस्य करना ।

चिकनोजा-पु० [फा०] एक मेवा जिसकी गिरी खावी जाती है ।

चिकविल-स्त्री० अन्नक ।

चिकचिलाना-अ० क्रि० चमकना ।

चिलका†-पु० एक पक्षमान, उकटा, चीला ।

चिलता-पु० [फा०] एक तरहका कवच ।

चिलविल-पु० एक रंगली देह । † वि० दे० 'चिलविका' ।

चिलविला, चिलविला-वि० चंचल, झरझरी, नटखट ।

चिलम-स्त्री० [फा०] मिट्टी या बातुका कटोरीनुमा पात्र जिसपर तंबाकू-नाँवा आदि रखकर पीते हैं ।-**गव्वा**-स्त्री० हुकमें लगी हुई वह नली जिसपर चिलम रखी जाती है ।

-**चट**-वि० (चिलम चट जानेवाला) बहुत तबाकू पीनेवाला ।-**पोषा**-पु० चिलमका उकन; सरपोष ।

-**बरदार**-पु० हुका पिलाने या लेजर साथ चलनेवाला नौकर । **मु०**-**चड़ाना**, **भरना**-चिलमपर तबाकू और आग रखना; खिदमतगारी करना ।-**पीना**-हुका, तबाकू पीना ।

चिलमची-स्त्री० एक बरतन जिसका किनारा थाल जैसा और बीचका भाग देगनी जैसा होता है और जो हाथ-मुँह धोने, कुत्ती आदि करनेके काम आता है; हुकका वह भाग जिसपर चिलम रखी जाय ।

चिलमन-पु० [फा०] बौसकी तिलियोंका बना हुआ पर्दा, चिक ।

चिलमिका, चिलमिका-स्त्री० [सं०] जुगनु; बिजली; एक तरहका कठोर ।

चिलवाँस*-पु० चीलका माम (जिमके खानेसे विक्षित हो जानेकी बात कही जाती है); विक्षिया फँसानेका एक तरहका फँदा (?) ।

चिलहुल, चिलिया-स्त्री० एक तरहकी मछली ।

चिलुआ-स्त्री० चेलवा मछली ।

चिलु-पु० [सं०] चील । वि० कीचड़भरी आँखेंवाला ।

-**अड्या**-स्त्री० नली नामक गंधद्रव्य ।

चिलुका-स्त्री० [सं०] झींगुर ।

चिलुङ-पु० जूँ जैसा कीड़ा जो पसीना मरनेवाले गंदे कपड़ोंमें पड़ा करता है ।

चिलु-पौ-स्त्री० चील-पुकार, शोर-गुल ।

चिलवाँस-पु० अजवात शिशुका रोगके कारण पिलाना ।

चिलवाना-स० क्रि० चिलानेकी प्रेरित, बिबश करना ।

चिल्ला-पु० धनुषकी टोरी, कमानकी तौत; चीला; पगड़ीका छोर (जिसमें कलावचूका काम रहता है); [फा०] चालीस दिनोंका काल; चालीस दिनोंका व्रत, अनुष्ठान; प्रसूताका चालीसवें दिनका स्नान (मुसल) । **मु०**-**चींचना**-चालीस दिनोंका अनुष्ठान करना (मुसल) ।-**(छे)का जाया**-कड़ी सरदी, धनु (पूरे)के १५ और मकर (माघ)के २५ दिनोंका जाड़ा ।

चिल्लाना-अ० क्रि० जोरसे बोलना, चीखना, शोर करना ।

चिल्लाम-पु० [सं०] छोटी-छोटी चोरियाँ करनेवाला;

गिरहकट ।

चिल्लाहट-स्त्री० चिलानेकी क्रिया, शोर, हवा ।

चिल्लिका-स्त्री० [सं०] अ. कुटी; झींगुर; बधुआ ।-**छता**-स्त्री० भौ; * वज्र, बिजली ।

चिल्ली-स्त्री० [सं०] झींगुर; एक शाक, बधुआ; * बिजली ।

चिल्ली*-स्त्री० चील ।

चिलि-स्त्री० [सं०] टुट्टी ।

चिलिट-पु० [सं०] चिबड़ा ।

चिलिलिका-स्त्री० [सं०] एक छुप ।

चिलुक-पु० [सं०] टुट्टी ।

चिल्लक-स्त्री० दे० 'चहक' ।

चिल्लकर*-स्त्री० चहचही ।

चिल्लका-स्त्री० खटका, हर ।

चिल्लकना†-अ० क्रि० चौकना ।

चिल्लना*-स० क्रि० चुटकी काटना; छिपटना ।

चिल्लनी, चिल्लनी*-स्त्री० घुँघनी ।

चिल्लनी*-स्त्री० चुटकी ।

चिल्लना†-स० क्रि० चुम लेना (?) ।

चिलुर-पु० [सं०] दे० 'चिकुर' ।

चिलुरार-पु० चिकुरभार, केशराशि ।

चिल्ल-पु० [सं०] लक्षण, पदचान, निशान, छाप (पदचिह्न);

लकीर; पर आदिकी सूचक वस्तु; च्चन; लक्ष्य; निशानी,

यादगार ।-**कारी (चिन्)**-वि० निशान बनानेवाला;

घाव, जखम करनेवाला; बंध करनेवाला; भयानक ।

-**धर**-वि० चिह्न धारण करनेवाला ।-**धारिणी**-स्त्री०

इयामा लता ।

चिह्नित-वि० [सं०] चिह्नयुक्त, जिसपर चिह्न, निशान हो, अंकित; लक्षित ।

ची-स्त्री० छोटी चिथियों या चिथियोंके बच्चोंकी बारीक

आवाज; [फा०] शिकन, झुरी, बल ।-**चपड़**, **चप्पड़**-

स्त्री० कार्य या शब्द द्वारा विरोधका प्रदर्शन ।-**ची**-स्त्री०

चीन्वीकी आवाज; चीन्वी करना; छोटी चिथियों या

चिथियोंके बच्चोंका बारीक आवाजमें बोलना । **मु०**-

बोलना-हार मान लेना, असमर्थता स्वीकार कर लेना ।

चीटवा*-पु० दे० 'चीटा' ।

चीटा-पु० चिउँटीमें मिलता-जुलता, पर उससे बड़े आकारका कीड़ा, चिउँटा ।

चीटी-स्त्री० एक छोटी कीड़ा जो मोठेकी गंधसे उसके पास पहुँच जाता है, पिपीलिका ।

चीटना*-स० क्रि० चिन्नित करना; लिखना ।

चीधना-स० क्रि० दे० 'चीधना' ।

चीर्वा-पु० दे० 'चिर्वा' ।

चीर-स्त्री० दे० 'चील'; कीचड़ । † पु० फसारी ।

चीकट-पु० तेलका मेल, चिकट; लसार मिट्टी; † एक तरहका रेशमी कपड़ा; भाँवे या मांजीकी शादीमें बहनकी दिवे जानेवाले कपड़े-गहने आदि । वि० जिसपर चिकनाईके साथ मेल जमा हो, बहुत मेल ।

चीकना-अ० क्रि० चीखना-'चौक' चौकी चौकी अति रोई नाँहि सोई रच'-रामरसायन । * वि० चिकना ।

चीज़-स्त्री० चिलानेकी आवाज, चिल्लाहट ।-**पुकार**-

की० शोरगुल; शोर मचाकर की जानेवाली परियाह ।
सु० -भारत-विज्ञान; बोरने कराहना ।
वीरना-स० कि० स्नाद जाननेके लिए किसी चीजकी थोड़ी मात्रामें खाना ।
वीरना-अ० कि० चिहाना, शोर मचाना ।
वीरक, **वीरक**-पु० कीचड़ ।
वीरुर-पु० गिरहरी ।
वीर-खी० [फा०] वस्तु, पदार्थ, सौ; बहुमुख, अनूठी वस्तु; महत्वकी वस्तु; वात, काम; साहित्य या कलाकी वस्तु (गीत, रचना इ०) । -**वस्तु**-खी० सामान; गहना-कपड़ा ।
वीर-खी० मेल ।
वीर-पु० दे० 'विद्वत्' ।
वीर-खी० दे० 'विद्वत्' ।
वीर-पु० एक सुंदर सरावहार पेड़ जो गंधद्रव्य माना जाता है और जिसका तना बहुत लंबा होता और एकरी संतुक आदि बनानेके काम आती है; एक तरहका देशी कोहरा ।
वीर-पु० दे० 'वीर' ।
वीर-पु० दे० 'विपत्'; विना नक्षत्र ।
वीरकार-पु० दे० 'वीरकार'; दे० 'विचकार' ।
वीरना-स० कि० मोचना; चेत करना; चाहना; याद करना; विश्व ब्रह्मा ।
वीरता-पु० दे० 'वीरता' ।
वीरक-पु० हिरनका एक भेद जिसकी खालपर सफेद चित्तियाँ होती हैं, चित्रमृग; चित्तीदार अजगर; एक सिका ।
वीरार-पु० विचार; विचित्र ब्रह्माला ।
वीर-पु० एक तरहका बाघ जिसकी खालपर लंबी काली-पीछी धारियाँ होती हैं (यह बहुत तेजोश क्षपटकर हिरनों, को पकड़ लेता है); एक क्षुप जिसकी छाल और जब दवाके काम आती है; * **विपत्** । * **खी०** विता-'मदोदरी इत्य-करि वीता'-रामा० । * **वि०** चाह डुआ ।
वीरकार-पु० [सं०] वीर, विलाहट; वीर; विपाद ।
वीरवा-पु० दे० 'विपत्' ।
वीरना-स० कि० फाड़ना, बज्जी-भज्जी करना; दाँतोंसे फाड़ना, क्षत-विक्षत कर देना (हिल अलुका) ।
वीरवा-पु० दे० 'विपत्' ।
वीर-वि० [फा०] चुना हुआ; अच्छा, बढ़िया । -**वीर**-वि० चुने हुए (व्यक्ति, वस्तु); अच्छे-अच्छे ।
वीर-पु० [सं०] दक्षिण-पूर्व एशियाका एक प्रसिद्ध महा-देश; उस देशका निवासी, चीनी; एक तरहका हिरन; चीनका बना देशी कपड़ा; एक तरहका सोबा; चना; सीसा; पताका; सत । -**कपूर**-पु० चीनी कपूर । -**ज**-वि० चीनमें उत्पन्न । पु० चीनसे आनेवाला फोलाद । -**पिछ**-पु० सिद्ध; सीसा । -**बाँस**-पु० सीसा । -**बाँस**-**(सु)**-पु० चीनमें बनने या चीनसे आनेवाला देशी कपड़ा; देशी कपड़ा । -**की दीवार**-उत्तरी जातियोंके आक्रमणसे बचनेके लिए बनवायी हुई लगभग १५ सौ मील लंबी दीवार जो सप्ताश्वोंमें गिनी जाती है ।
वीरक-पु० [सं०] चीनी कपूर; चना; कंगनी ।

वीरना-स० कि० चीनना, पहचानना ।
वीरना-पु० [सं०] चीनमें बनने या चीनसे आनेवाला देशी कपड़ा; देशी कपड़ा ।
वीर-वि० चीन देशका; चीनमें उत्पन्न, उपलब्ध । पु० चीन देशवासी, चीनी; चीनी कपूर-'चीनेसि भीमसेन औ चीन'-प०; चिह्न; † चना ।
वीरक-पु० [सं०] चीनी कपूर ।
वीरना-वि० चीनी, चीनका । -**केला**-पु० दे० 'विमिया केला' । -**बादाम**-पु० सुगन्धली ।
वीर-खी० ईस. खनूर आदिके रससे बना हुआ सफेद दानेदार चूर्ण जो कुछ खोबरे जगह काममें लाया जाता है, शकर । वि० चीन-संबंधी; चीनका; चीनमें उत्पन्न, उपलब्ध । पु० चीन देशवासी । -**कपूर**-पु० एक तरहका कपूर । -**चंपा**-पु० एक तरहका बढ़िया बैला । -**मिट्टी**-खी० पकायी हुई सफेद मिट्टी जिसके बरतन, किलोने आदि बनते हैं । -**मोर**-पु० एक चिड़िया ।
वीरना-स० कि० पहचानना ।
वीर-पु० चिह्न ।
वीर-खी० एक बार कुदाल चलानेसे निकलनेवाला मिट्टीका खड ।
वीर-पु० आँसुका कीचड़ ।
वीर-वि० [अ०] मुख्य, प्रधान । पु० मुखिया; जाति या कबीलेका नेता, सरदार; राजा । -**एकिट**-पु० प्रधान संपादक । -**कमिश्नर**-पु० किसी छोटे स्वेका प्रधान शासक जो गवर्नरसे छोटा होता है । -**कोर्ट**-पु० किसी छोटे स्वेका हाईकोर्ट या प्रधान न्यायालय । -**जज**-पु० हाईकोर्टका प्रधान जज । -**जस्टिस**-पु० हाईकोर्टका प्रधान न्यायाधीश ।
वीर-वि० जो जल्दी फटे, टूटे नहीं । पु० एक पौधा जिसके बीज दवाके काम आते हैं, चाकम् ।
वीर-वि०, पु० दे० 'वीर' ।
वीर-पु० दे० 'वि०' ।
वीर-पु० [सं०] बखसड; कम लवा बखसड, पट्टी, धब्बी; कपड़ा, बख; बीड़ भिक्षुओंका पहनावा; पेड़की छाल; रेखा, लकीर; चौटी; सीमा; गायका धन; चार लक्षियोंकी मोतीकी माला । -**बदर**-पु० बाघ-बुर; सुगन्धाल । -**पत्रिका**-खी० पत्र नामका साग । -**परिग्रह**, -**बासा**(सस्)-वि० जो छाल पहने हो, बल्कलपारी । पु० शिव । -**पर्ण**-पु० सालका पेड़ । -**हरण**-पु० कृष्णकी बालकीलाने अंतर्गत गोपियोंके बख चुनुरा लेनेकी लीला ।
वीर-खी० चीनमेंकी किया या भाव; फटनेकी किया या भाव; कुस्तीका एक पंच । पु० दे० 'वीर' । -**फाड़**-खी० चीनमें-फाड़नेका काम; फोड़े आदिमें चीरा लगाना, जराही, क्षय-क्रिया ।
वीरक-पु० [सं०] लिखित प्रमाणका एक भेद, विकृत लेख ।
वीरना-स० कि० (कामज, कपड़े आदिमें) फाड़ना; दुकने करना; बिभक, विदीर्ण करना; राह भिकालना (नीर, पानी) ।
वीर-पु० चीनका घाव, कोबेका शिगाफ; पगड़ी बसानेके काम आनेवाला लहरियादार कपड़ा; गाँवकी सीमापर

याभा हुआ पत्थर; कोमल्य (उतारना, तोड़ना) । -बँदू-
पु० बीरा बँधनेका काम करनेवाला । -बँदी-खी० ताशके
कपड़ेपर पगड़ी बनानेके लिए की जानेवाली बुनावट ।
बीरि-खी० [सं०] ओखपर बँधनेकी पट्टी; बीती आदिकी
कॉम; झींगुर ।
बीरिका, बीरुका-खी० [सं०] झींगुर ।
बीरित-वि० [सं०] फटा हुआ (केवल समासमें) ।
बीरी*-खी० 'चिबिया'; † एक तरहकी छोटी मछली;
[सं०] झींगुर ।
बीरी(रिज्)-वि० [सं०] बल्लकधारी; बिम्बे लपेटनेवाला ।
बीरीबाक-पु० [सं०] झींगुर ।
बीर्य-वि० [सं०] बीराफाड़ा हुआ; कृत, संपारित ।
-वर्ण-पु० खजूर; नीम ।
बील-खी० बाजकी जातिकी प्रमिद्ध मांसाशी चिबिया जो
अकसर झपट्टा मारकर लोगोंके हाथमे खानेकी चीजें छीन
ले जाती है । -झपट्टा-पु० किमी चीजकी चीलकी तरह
झपट्टा मारकर छीन, उचक लेना; बचोंका एक खेल ।
बीलड़, बीलर-पु० दे० 'चिलर' ।
बीला-पु० उलटा नामका पकवान, चिला ।
बीलिका-खी० [सं०] झींगुर, झिल्ली ।
बीलुङ-पु०, -बीलुका-खी० [सं०] झींगुर ।
बीलड़-खी० चील ।
बीलड़, बीलर-पु० चीलड़ ।
बीलडी*-खी० एक तश्चोपचार ।
बीवर-पु० [सं०] बल, पहनावा; साधु-मन्यामियोंका पह-
नावा; बौद्ध भिक्षुओंका ऊपरी पहनावा; कंथा ।
बीवरी(रिज्)-पु० [सं०] बौद्ध या जैन सन्यासी, भिक्षु;
मन्यामी ।
बीय-खी० रोम ।
बुंगना-म० कि० दे० 'बुगना' ।
बुंगव-पु० पशु-पक्षियोंका, खासकर शिकारी चिबियों,
जानवरोंका पंजा, चंगुल; बुकटा; पकड़ । -अर-वि०
चंगुलमें आनेभर, थोड़ासा, खुदकोभर ।
बुंगाना-म० कि० दे० 'बुगाना' ।
बुगी-खी० बुंगलभर चीज; अनाइ आदि बेचनेवालोंसे
हम रूपमें लिया जानेवाला महमूल; मालके म्युनिसिपल
मीममें आनेपर लिया जानेवाला महमूल । -कचहरी-
खी० म्युनिसिपलिटिकी दफ्तर । -घर-पु० बुगीका
दफ्तर । -बँठ-खी० वह बाजार जिसमें जमींदारकी
दुकानदारोंने कररूपमें बुगल-बुंगलभर चीज मिलती है ।
बुंगाना-सं० कि० बुसाना ।
बुउ-पु० [सं०] छल्लर; माझण पुरष और वैदेह स्त्रीसे
उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति ।
बुबुरी-खी० [सं०] पामेकी बदले हमलके बीजोंसे ढेला
जानेवाला एक बुआ ।
बुंडा, बुंडा-खी० [सं०] छोटा कुआँ; कुँदके पामका बीज ।
बुडित*-वि० जिसके सिरमें चुटिया हो ।
बुडी-खी० दे० 'बुदी' ।
बुद्री-खी० दे० 'बुनरी' ।
बुदी-खी० बुटिया; [सं०] कुटनी ।

बुँकलाना-अ० कि० चकाचीब होना, चौपना ।
बुँबा-वि० छोटी ओखीवाला; जिसकी दृष्टि क्षीण हो ।
बुँबियाना-अ० कि० चौपना ।
बुँब-पु० [सं०] चुबन ।
बुँबक-पु० [सं०] चुबन करनेवाला; कामुक; वह जो
बहुतसे प्रयोंकी जहाँ-तहाँमें पदकर, लउट-मुलटकर छोड़ दे,
किस्तीकी पूरी तरह पड़े-समझे नहीं; भूत; पहलेके सुँहपर
लगाया जानेवाला फंदा; तराजूका ऊपरी या मध्य भाग;
एक तरहका (प्राकृतिक या कृत्रिम) पत्थर जो लोहेकी
अपनी ओर खींचता है । -कुचि-खी० प्रयोंकी इधर-
उधर पदकर छोड़ देनेकी आदत ।
बुँबकव-पु० [सं०] चुबकता गुण, आकर्षण ।
बुँबकीब-वि० [सं०] जिसमें चुबक या उसका गुण हो ।
बुँबन-पु० [सं०] चुबनेकी किया, बीसा; (ला०) छूना,
मर्श ।
बुँबना*-सं० कि० चुबना ।
बुँबा-खी० [सं०] चुबन ।
बुँबित-वि० [सं०] चूमा हुआ; छूआ हुआ, मूँह ।
बुँबी(बिज्)-वि० [सं०] चुबन करनेवाला; छूनेवाला
(गगन-चुंबी) ।
बुँमना*-अ० कि० दे० 'बुमना'; † (कपर रखी हुई
चीजतक) खबे आदमीके हाथका पहुँचना (?) ।
बुँहटना*-सं० कि० चिकोटी काटना -'बुँहुटि जगाईं अफ-
राति औटपाईं आति'-घन० ।
बुभना*-अ० कि० दे० 'बुना' ।
बुभा-पु० दे० 'बोभा' ।
बुआई-खी० चुआनेका काम; चुआनेकी मजदूरी ।
बुभाना-खी० नहर; नीला ।
बुभाना-सं० कि० टपकाना; अचक्रेसे अर्क खींचना;
* चुपड़ना ।
बुभाव-पु० चुआनेकी किया या माव ।
बुहंदर-पु० [का०] गाजर या शलजमकी शकलका एक
मूल जो साग-भाजीके रूपमें खाया जाता है और जिसके
रसमें चीनी भी बनती है ।
बुक-पु० नीचके रसमे बनाया हुआ एक लहटा पदार्थ;
चूक । * वि० किंचित् ।
बुकबुकाना-अ० कि० रिसकर बाहर आना, पसीजना ।
बुकबुहिया-खी० एक छोटी चिबिया ।
बुकट*-पु० दे० 'बुकटा' ।
बुकटा-पु० बुटकी; बुटकीभर वस्तु ।
बुकटी-खी० दे० 'बुटकी' ।
बुकता-वि० जो चुका दिया गया हो, अदा, बेबाक ।
बुकती-वि०, खी० दे० 'बुकता' ।
बुकना-अ० कि० समाप्त होना, बाकी न रहना; निबटना,
तै होना; अदा, बेबाक होना; * चुकना, खाली जाना ।
† वि० चुकनेवाला, मुक्त ।
बुकरंड-पु० शेरूँहा साँप ।
बुकवाना-सं० कि० अदा कराना; दिलवाना ।
बुकाई-खी० बुकता होनेका माव ।
बुकाना-सं० कि० अदा करना, बुकता करना; निबटना,

तै करना । अ० कि० चुकना, मलती करना-‘सिंह न पाइ अस समय चुकाई’ । देखु पिचारि मातु मन माहीं’-रामा० ।

सुविधा-ली० कुहिया ।

सुझा-पु० कर्जहा साफ, बेवाक हो जाना ।

सुझ-पु० पुरवा, कुहय ।

सुझार-पु० [सं०] गजन, सिहनाद ।

सुह-पु० [सं०] चूक; चूका साग; अमलबेत; कौजी । -

फल-पु० इमली । -**बास्तुक**-पु० अमलीनी नामका

साग । -**बेचक**-पु० एक तरहकी कौजी ।

सुहक-पु० [सं०] चूका नामका साग ।

सुहा, सुही-ली० [सं०] इमली; अमलीनीका साग ।

सुहाम्ब-पु० [सं०] चूक; चूका नामका साग ।

सुकिफा-ली० [सं०] नीमिया साग; इमली ।

सुकिमा(मन्)-ली० [सं०] खट्टापन ।

सुक्षा-ली० [सं०] वष; प्रक्षालन ।

सुखाना-स० कि० चखाना; गायके पेनहानेके लिए दुहते समय बछेके दूध पिलाना ।

सुहाद-पु० [सं०] उखली एक छोटी किल; मूखं ध्यात् ।

सुगना-स० कि० चिड़ियोंका चोंचमें चुनचुनकर दाना खाना ।

सुगल-पु० दे० ‘सुगल’ । -**खोर**-पु० दे० ‘सुगलखोर’ ।

-**खोरी**-ली० दे० ‘सुगलखोरी’ ।

सुगला-पु० दे० ‘सुगलखोर’ ।

सुगली-ली० पराक्रम की दुर्ग निदा, डुराई । **सु०**-**खाना** -पीठ पीछे निदा, डुराई करना ।

सुगा-पु० चिड़ियोंके चुगनेके लिए डाली गयी चीज; वह चारा जो चिड़िया चोंचमें उठाकर बच्चेके मुँहमें दे; दे० ‘चोपा’ ।

सुगाई-ली० चुगनेकी क्रिया या भाव; चुगानेकी क्रिया ।

सुगाना-स० कि० चिड़ियोंकी दाना खिलाना ।

सुगल-पु० चिलमकी गिट्टी; [सं०] पीठ पीछे निदा-डुराई करनेवाला, सुगली खानेवाला; मुखविर । -**खोर**-पु०

सुगली खानेवाला, पीठ पीछे निदा, डुराई करनेवाला, डुरा । -**झोरी**-ली० सुगली खाना ।

सुगुली-ली० दे० ‘सुगली’ ।

सुभा-पु० दे० ‘सुगा’ ।

सुचकारना-स० कि० दे० ‘सुमकारना’ ।

सुचकारी-ली० दे० ‘सुमकारी’ ।

सुखाना-स० कि० धूना, रिसना ।

सुधि-ली० [सं०] तन ।

सुसुभाना-अ० कि० सुवाना ।

सुसुक-पु० [सं०] दे० ‘सुसुक’ ।

सुसुकर्मा-अ० कि० सुखकर सिद्धि ।

सुसुकारना-स० कि० दे० ‘सुमकारना’ ।

सुसु-पु० [सं०] पालककी जातिका एक साग ।

सुटक-पु० एक तरहका मर्वाका ।

सुटकना-स० कि० चाटुक मारना; सुटकीसे तोड़ना ।

सुटकला-पु० दे० ‘सुटकुला’ ।

सुटका-पु० बही सुटकी; सुटकीपर चीज ।

सुटकी-ली० किसी चीजकी पकड़ने, उठाने आदिके लिए खंगूटे और तर्जनी या बीचकी उँगलीको परस्पर सटाना; बीचकी उँगलीपर खंगूटेको दबाने और छटकानेसे होनेवाली आवाज; शिशुकको दिया जानेवाला चुंगलभर आटा आदि, मीख; खंगूटे और तर्जनीमें चमड़ेकी पकड़कर दबाना या नाखून गड़ाना (काटना); कपड़ेमें रंग न चढ़ने देनेके लिए दी गयी गोंठ; पेचकश; कागज आदिकी पकड़ रखनेका आला, ‘विरुप’; पाँचकी उँगलियोंमें पहननेका एक गडना; ठरीके तानेका सूत । -**बजाते**-अ० दमभरमें, बातकी बातमें । -**भर**-वि० चुंगलभर, थोड़ासा । **सु०**-**देना**-सुटकी बजाना; मीख देना । -**बजाना**-बीचकी उँगलीपर खंगूटेकी दवा और छटकाकर आवाज निकालना । -**भरना**-सुटकी काटना; सुटकी लेना । -**मार्गना**-मीख मार्गना । -**खगाना**-सुटकीसे पकड़ना; मसलना; कपड़ेकी दो उँगलियोंमें कँसाकर फाड़ना; (रुपय-पैसा चुगानेके लिए) उँगलियोंसे जेब फाड़ना । -**खेना**-धँपी उड़ाना, ध्वंग्य, नानासनी करना । **सुटकीमें**-सुटकी बजाते, दमभरमें । - **उठाना**-बातकी बातमें कर डालना; खेल समझना ।

सुटकुला-पु० छोटीसी पर मनोरंजक उक्ति, लतीफा, अनूठी बात; छोटामा, सस्ता पर काम करनेवाला दुस्खा, दवा । **सु०**-**छोड़ना**-मनोरंजक, कृत्रिमजनक बात कहना ।

सुटसर्मा-पु० चोटीपरका एक गडना; बेणी । वि० नुटली ।

सुटिया-ली० मिरके कीचोबीच छोड़ रखे हुए लबे बाण, चोटी, शिखा । **सु०**(**किसीकी**)-**हाथमें** होना-अपने वशमें, अपने कर्तबमें होना ।

सुटियाना-स० कि० नुटली करना ।

सुटीलना-स० कि० चोट पहुँचाना, असमी करना ।

सुटीला-वि० जो चोट खाये हो, धायल, जल्मी; चोट करनेवाला-“‘‘‘बाके नयन सुटीले भारी’-चाचा हित-वृदावन; चोटीका, मचने बढ़िया । पु० छोटी चोटी ।

सुटकी-ली० दे० ‘सुटकी’ ।

सुटसर्मा-पु० गुत्तीकी सकलके काटके दो छोटे टुकड़ोंसे बना हुआ एक बाजा जिसे छोड़ेके करतालकी तरह उगलियोंसे दबाकर बजाते हैं ।

सुटल-वि० चोट खाया हुआ, जल्मी; चोट करनेवाला ।

सुटिहारा-पु० चिड़िया बनाने, बेचने, पहनानेवाला । [ली० ‘सुटिहारिन’] ।

सुडुका-पु० लाहसे मिलती-जुलती एक छोटी चिड़िया ।

सुडुल-ली० सूतनी, डायन; काली, कुरूप ली; कृत् स्वभाववाली ली ।

सुत-पु० [सं०] गुदहार । * वि० च्युत ।

सुखल-वि० मसखरा, ठट्टेबाज । -**पना**-पु० ठट्टेबाजी ।

सुधा-वि० (वह बटेर) जिसे दूसरे बटेरने धायल किया हो । -**बटेर**-पु० (का०) वह आदमी जिसे जिसके जो दिलमें आवे; कह ले ।

सुदक-पु० दे० ‘चोदक’ ।

सुदना-अ० कि० पुरुष द्वारा संयोग किया जाना; पुरुषसे मयुक्त होना ।

नुदवाई-**खी०** खी-प्रसंग, संयोग की क्रिया; संयोग करने या कराने के बदले मिलनेवाला धन ।

नुदवाना-**स०** कि० पुरुषसे संयोग कराना, मैथुन कराना (अक्रमकके समान प्रयुक्त); किन्ती खीकी पुरुषसे संयुक्त कराना ।

नुदवास-**खी०** संयोग करानेकी इच्छा ।

नुदवासी-**खी०** वह खी जो संयोग करानेको आहुर हो ।

नुदवैया-**पु०** मैथुन करनेवाला ।

नुदाई-**खी०** दे० 'नुदवाई' ।

नुदाना-**स०** कि० दे० 'नुदवाना' ।

नुदास-**खी०** संयोग करानेकी प्रवृत्ति इच्छा ।

नुदासा-**वि०** दे० 'बोदासा' ।

नुदैया-**पु०** दे० 'नुदवैया' ।

नुदीबल-**खी०** प्रसंग करानेकी क्रिया या भाव ।

नुन-**पु०** चूर, चूर्ण (लोहनुन); आटा; नुननेकी चीज ।

नुननुना-**वि०** नुननुनाइट पैदा करनेवाला, लगनेवाला; चिन्तित, चिन्तनेवाला । पु० मन्त्राशयमें पैदा होनेवाला सफेद, सत जैमा कौड़ा जो मलके साथ निकलता है, नुना ।

नुननुनाना-**अ०** कि० जलनके साथ खुजली पैदा होना या नुमना, लगना; (रन्ध्रोंका) ठिनकना ।

नुननुनाइट-**खी०** नुननुनानेका अनुभव, जलनके साथ होनेवाली खुजली ।

नुनट, **नुनत**-**खी०** कपड़े, कागज आदिमें दाबसे पड़नेवाली या दाबकर डाली गयी शिकन, मिलवट ।

नुनन-**खी०** दे० 'नुनट' । -**हार**-**वि०** जिसमें नुनट डाली गयी हो ।

नुनना-**स०** कि० छोटी चीजोंको एक-एक करके इकट्ठा करना; बीनना; चिड़ियोंका बीबने डाना आदि उठाना, चुगना, तोड़ना, मोटना (फूल, कली); बहनोंमेंसे किसी खास चीजको, कार्यविशेषके लिए उपयुक्त या श्रेष्ठ मानकर अलग करना; छँटना; पसंद करना; बीटके द्वारा दो या अधिक उम्मीदवारोंमेंसे पद या कार्यविशेषके लिए एकको पसंद करना; सजाना; तारीफते लगाना; जोड़ना (हँटें-); नुनट डालना ।

नुनरी-**खी०** लाल जमीनका कपड़ा जिसपर सफेद या दूसरे रंगकी बुटियाँ बनी हों; चुन्नी ।

नुनवाई-**वि०** नुना हुआ, बढिया ।

नुनवाना-**स०** कि० नुननेका काम कराना ।

नुनी-**वि०** [का०] येमा, हम तरङ्गका (हिन्दी-उर्दूमें अकेले भ्यवहृत नहीं होता) । -**नुनी**-**वि०** ऐसा-वैसा । खी० इधर-उधरकी बात; टाल-मटोल; बहाना, विबाद (करना) ।

-**(ना)चे**-**अ०** हम प्रकार; अतः, निश्चय ।

नुनाई-**खी०** नुननेकी क्रिया या भाव; दीवारकी जोड़ारी नुननेकी उजरत ।

नुनाखा-**पु०** प्रकार, कंपास ।

नुनाया-**स०** कि० दे० 'नुनवाना' ।

नुनार-**पु०** बनारसके पासका एक स्वास्थ्यप्रद पहाड़ी स्थान, कर्णाग्रि ।

नुनाब-**पु०** नुननेकी क्रिया या भाव; (बीटके द्वारा) किसीका पर या कार्यविशेषके लिए पसंद किया जाना ।

मु०-**रुबना**-**नुनाबके** लिए उम्मीदवार होना, नुनानमें दूसरे उम्मीदवारोंमें प्रतियोगिता करना ।

नुनाइट-**खी०** नुनट ।

नुनिदा-**वि०** नुना हुआ, छँटा हुआ; बढिया, श्रेष्ठ [का० 'नुनीना'] ।

नुनिदा-**खी०** दे० 'नुनी' ।

नुनिदागोंद-**पु०** दाकका गोंद ।

नुनी-**खी०** दे० 'नुनी' ।

नुनीटिया-**पु०** एक तरहका कपड़ा या काकरेजी रंग ।

वि० उक्त रंगका-'परिदे नीर नुनीटिया शटक नौमुनी शेत'-विहारी ।

नुनीटी-**खी०** पान या तंबाकूके लिए चूना रखनेकी विधिया, छुटिया ।

नुनीसी-**खी०** पदावार; बुद्ध, शास्त्रार्थ आदिके लिए आह्वान, उलकार (रिना); नुनीटी ।

नुबट, **नुबत**-**खी०** दे० 'नुनट' ।

नुबन-**खी०** दे० 'नुनन' ।

नुबा-**पु०** दे० 'नुननुना' ।

नुबी-**खी०** माणिक या लालका छोटा टुकड़ा; छोटा नग; चमकी; कलहर या और किसी टालके टुकड़े जिनमें भूरी मिट्टी हो, कुनार; बीटनी ।

नुप-**वि०** जो बोलता न हो, मौन, सामोश । खी० नुप्पी, मौन । -**चाप**-**अ०** बिना बोले, नुपकेसे; बिना हिंसे-डुले; गुप-चुप । -**नुप**-**नुप**-**अ०** नुपचाप ।

नुपका-**वि०** नुप, मौन; धुन्ना । **मु०**-**करना**-**मौना**-**बल्लन** करना; मौनाबल्लन कराना । -**साधना**-**नुप** हो रहना, मौनाबल्लन करना । -**(के)से**-**नुपचाप** ।

नुपकी-**खी०** मौन, नुप्पी ।

नुपबना-**स०** कि० तेल, बी या दूसरी तरह, चिकनी चीज लगाना, पीतना (रोटीमें बी नुपबना); चापलूरी करना; ढकना, छिपाना ।

नुपबा-**पु०** वह जिसकी आँखें कीचड़से भरी हों । वि० नुपबा या पीता हुआ; चिकनी-नुपबी बात करनेवाला ।

नुपबी-**वि०** खी० तेल, बी पीती हुई (चीज) । खी० बी पीती हुई रोटी (एक नुपबी और दो) ।

नुपरना-**स०** कि० दे० 'नुपबना' ।

नुपाबा-**अ०** कि० नुप हो रहना ।

नुप्पा-**खी०** नुप रहनेवाला, जो बहुत कम बोलता हो, धुन्ना । [खी० 'नुप्पी']

नुप्पी-**खी०** मौन, सामोशी । **मु०**-**साधना**-**मौन** हो रहना, नुप लगा लेना ।

नुपबाना, **नुमबाना**-**स०** कि० किसी चीजको मुँहमें रखकर जीभसे बोका हिलाते-तुकारते हुए स्वाद लेना ।

नुब-**पु०** [सं०] चेहरा, मुखका, मुँह ।

नुबकना-**अ०** कि० बार-बार गोता खाना, हूबना-उतराना ।

नुबकाना-**स०** कि० बार-बार गोता देना ।

नुबकी-**खी०** गोता, नुपकी ।

नुबन-**खी०** नुमनेका भाव; दर्द, खटक ।

नुबना-**अ०** कि० पँसना, तुकीली चीजका भीतर घुसना; मनमें पँसना, बसना; खटकना, सालना; * तन्मय,

कीन होना ।

पुनर-पुनर-पु० बच्चोंके दूध पीनेकी आवाज । अ० यह आवाज करते हुए दूध पीना ।

पुनराभा-स० कि० 'पुनराभा' का प्रे० ।

पुनराभा-स० कि० पेंसाना, गढ़ाना ।

पुनरीक्षा-वि० पुनर्नेवाला; मनमें पर कर लेनेवाला, मोक्षक ।

पुनरीना-स० कि० दे० 'पुनराभा' ।

पुनकार-स्त्री० पुनकारनेकी आवाज, पुनकार ।

पुनकारना-स० कि० बच्चोंको प्यार करने, पशुओंकी बुलानेके लिए मुँहसे चूमने जैसी आवाज निकालना, पुनकारना ।

पुनकारी-स्त्री० दे० 'पुनकार' ।

पुनवाणा-स० कि० चूमनेका काम कराना ।

पुनाना-स० कि० चूमनेके लिए (दूसरेके) सामने करना, बैठाना ।

पुन्या-पु० चुनन ।

पुर-वि० [स०] चोरी करनेवाला; * अधिक, बहुत । पु० [हिं०] हिंस्र जंतुकी मॉद; बैठक; मूले पते या कागज आदिके टूटने, फटनेका शब्द । -**पुर**-पु० खले पतेके टूटनेकी आवाज । -**पुरा**-वि० जो जरासा दवानेसे 'पुर-पुर' शब्दके साथ टूट जाय [खुला पत्ता, पापड़] । -**पुर**-पु० खरी, करारी चीजके टूटनेकी आवाज । * वि० कुर-कुरा । -**पुरा**-वि० जो दवानेसे 'पुरपुर' करके टूट जाय, करारा । पु० मुने हुए चिड़ड़े और चनेकी धीमे तक्कर, नमक-नियरे लगाकर बनाया हुआ चरेना या फुरनीदानी । **मु**-**पुर** होना-'पुरपुर'की आवाजके साथ टूटना, चूर होना ।

पुरकबा-अ० कि० चहकना; चूर होना ।

पुरकी-स्त्री० चुटिया ।

पुरकट, **पुरकस**-वि० चकनाचूर, चूर्णित ।

पुरगना-अ० कि० दे० 'चुरकना' ।

पुरचुराना-अ० कि० 'चुरचुर' शब्द करते हुए टूटना ।

पुरट-पु० दे० 'चुरट' ।

पुरना-अ० कि० पानीमें पकना, सीसना; गुप्त मंत्रणा होना पु० दे० 'चुनचुना' ।

पुरमुनाना-स० कि० 'चुरमुन' शब्दके साथ तोड़ना । अ० कि० 'चुरमुन' शब्दके साथ टूटना ।

पुरवाना-म० कि० पकानेका काम कराना; चोरी कराना ।

पुरस-स्त्री० कपड़े आदिकी गिनक ।

पुरा-स्त्री० [सं०] चोरी । * पु० दे० 'चूरा' ।

पुराई-स्त्री० चुनने या पकानेकी क्रिया ।

पुराना-स० कि० दूसरेकी चीजको उसकी जानकारी वा अनुमतिके बिना ले लेना; छिपाना, बचाना (अँस, मुँह); काने, देनेमें कमर रखना, उचितसे केम करना, देना (गायका दूध चुराना); पानीमें पकाना ।

पुरि, **पुरी**-स्त्री० [मं०] छोटा कुँआँ ।

पुरिका-पु० कौचका डकड़ जिससे लकड़े पटिया रग-स्ते हैं ।

पुरिहारा-पु० दे० 'चुबिहारा' ।

पुरी-स्त्री० चूरी ।

पुरट-पु० सिंगरेट, सिंगार ।

पुरू-पु० चल्ह ।

पुरद, **पुरद**-पु० दे० 'चुरद' ।

चुर-स्त्री० चुनली; तीव्र इच्छा; कामोद्भग (उठना, मिटना) ।

चुरचुराना-अ० कि० चुर, चुनली उठना; (बच्चोंका) नटखटी करना ।

चुरचुराइट, **चुरचुरी**-स्त्री० चुर, चुनली ।

चुरचुर-स्त्री० चुरचुरापन, चंचलता । † वि० चुरचुरा ।

चुरचुरा-वि० चंचल, नटखट, जो स्थिर न रह सके । -पन-पु० चंचलपन, नटखटी; सोझी ।

चुरचुराना-अ० कि० बार-बार हिलना, झेलना; स्थिर न रह सकना, चंचलता दिखाना ।

चुरचुरिया-वि० दे० 'चुरचुरा' ।

चुराना-म० कि० दे० 'चुराना' ।

चुराच-पु० बिना मासका पुलाव; चुआनेकी क्रिया ।

चुरियाला-पु० एक मासिक छत्र ।

चुरूप-पु० [सं०] बच्चोंका छाह-प्यार, लालन ।

चुरुक-पु० [सं०] चुनल; नापनेके काम आनेवाला एक बरतन; गहारा कीचड़; एक गौश्रमवर्तक ऋषि; उग्र-का धोवन ।

चुरुका-स्त्री० [सं०] महाभारतमें वर्णित एक नदी ।

चुरुकी(किन्)-पु० [सं०] मूसके आकारका एक मत्स्य ।

चुरुपा-स्त्री० [सं०] बकरी ।

चुरुक-पु० चुरल ।

चुल-वि० [सं०] गिनकी आँखोंमें कीचड़ भरा हो । पु० कीचड़मयी आँख ।

चुलक-पु० [सं०] चुल्ह ।

चुलकी-स्त्री० [सं०] एक तरहका जलपात्र; सेंस ।

चुहारा-वि० नटखट ।

चुछि-स्त्री० [मं०] चुल्हा; चिता ।

चुछी-वि० चिविहा, नटखट । स्त्री० [सं०] दे० 'चुछि' ।

चुल्ल-पु० उँगलियोंकी थोड़ा मोड़कर गहरी की हुई इच्छा, आधी अन्नकी । -भर-वि० जितना चुल्लमें भाये; थोड़ा-सा । **मु**-**भर पानीमें दूध सरना**-लज्जते मुँह न दिख सकना । -भर लहू पीना-दुश्मनकी कतल कर चुल्लसर खून पीना (पुराने ब्रह्मानेकी एक चाल) ।

-**में उल्ल बचना**-बोधीसी आँग-शराब पीकर बरमस्त हो जाना । **चुल्लुआँ** रोना-बहुत रोना । -लहू पीना-बहुत खाना ।

चुल्लौना-पु० चूला ।

चुलबा-अ० कि० चूना, टपकना । म० कि० चुनना; टपकना । वि० चूनेवाला ।

चुबा-पु० चोषावा, पशु-बाह चुबा चढ़ी ओर चले लपटे झपटे सी तमीचर लौकी-कवितावली; † मच्चा ।

चुसना-स० कि० दे० 'चुसाना' ।

चुसकी-स्त्री० तरह परांपकी होंठोंसे हुकने कसकी तरह खींचकर पीना; हुकनेका कष्ट; घूँट ।

चुसना-अ० कि० होंठोंसे पिया जाना; चूसा जाना;

मिनुइना; खोलका; ससहीन हो जाना; पासमें पीसा न रह जाना ।

सुसमी-खी० एक खिलौना जिसे बच्चे सुँहमें डालकर चूतते हैं; बच्चोंको दूध पिलानेकी चीनी ।

सुसबाना-स० कि० दे० 'सुसाना' ।

सुसाई-खी० चूसनेकी क्रिया या भाव ।

सुसाना-स० कि० चूसनेका काम कराना ।

सुसीबल, सुसीबल-पु० बहुतसे व्यक्तियोंका एक साथ चूसना; अधिक चूसना ।

सुस-पु० [स०] भूने हुए मांसका कपरी हिस्सा; सूना हुआ मांस; भूसी; छाल, छिलका । वि० [फा०] तेज, पुरतीला; तंग, कसा हुआ; दृढ, मजबूत; बालका; ठीक, उपयुक्त; कथता हुआ । - (इ) बालक-वि० तेज, पुरतीला और चतुर ।

सुसा-पु० [फा०] बकरी या भेड़के बच्चेका आमाशय; सिलवट, सिकुड़न; बड़ी आंतका अंतिम भाग, मलाशय ।

सुसी-खी० [फा०] तेजी, पुरती; तंग होना, कसाना; मजबूती; बालाकी ।

सुईटी, चुइटी-खी० चुटकी ।

सुइसुहा-वि० दे० 'चुइसुहाता' ।

सुइसुहाता-वि० रम्यता, मजेदार; कड़कता हुआ ।

सुइसुहाना-अ० कि० विधियोंका बोलना, बहचहाना; रम उपकना; भड़कीला लगना ।

सुइसुही-खी० एक छोटी चंचल विधिया जिसकी बोली बनी प्यारी होती है ।

सुइड-खी० कमफ-तेरे नैन-सुमट सुइड-चोट लगे बौर-धन० ।

सुइडना-स० कि० रौंदना, कुचलना ।

सुइडा-पु० दे० 'चुइडा' ।

सुइल-खी० हमी, ठिठोली, मजाक, विनोद । - **बाज़ा-वि०** हँसी-ठिठोली करनेवाला, विनोदी । - **बाज़ी-खी०** हसी, ठिठोली, ममलगापन ।

सुइबा-खी० मादा चूहा ('चूहा'का अल्प०) ।

सुइडना-अ० कि० चिमटना । वि० चिमटनेवाला ।

सुइडनी-वि० खी० चिमटनेवाली । खी० धुँवकी ।

सूँ-पु० छोटी चिड़िया या चिड़ियाके बच्चेकी बोली; 'बूँकी' आवाज । - **सूँ-पु०** चिड़ियोंकी बोली, आवाज; 'बो-बो', 'बूँ-बूँ'की आवाज; एक खिलौना जिसे बच्चोंने 'बूँ-बूँ'की आवाज निकालती है । **सु०-सूँका मुरब्बा-तरह-तरह-की बेमेल चीयोंका बीज । - न करना-तनिक भी उज, एतराज न करना ।**

सूँ-अ० [फा०] नौ, अगर; सपना; बयों, कितलिय । - **कि-अ०** हसलिय, कि, बस; बयोंकि । - (इ) चरा-पु० उज, एतराज; बिवाद ।

सूँच-खी० चींच ।

सूँटना-अ० कि० चींटीकी तरह चिपक जाना ।

सूँदरी-खी० दे० 'सुन्दरी' ।

सूक-खी० भूल, गलती, खता; अपराध; छल, धोखा । **पु०** नोचका छुआया हुआ रस जो बहुत सड़ा होता है; दे० 'चूका' । वि० बहुत सड़ा ।

सूकना-अ० कि० भूल, गलती करना; खोना, गँवाना (अनसर); लक्ष्मपर न लगना, खता होना (निशाना); कोई बात करने, कहनेका अनसर आनेपर उसे न करना, न कहना; करने, कहनेसे बाज रहना (बह कब चूकनेवाला है) ।

सूका-पु० एक सड़ा साग ।

सूची-खी० स्तनका अग्रभाग, चुचुक; स्तन ।

सूचक, सूचक-पु० [स०] स्तनका अग्रभाग ।

सूता-पु० [फा०] मुरगीका बच्चा ।

सूचक-पु० [मं०] कुम्भी ।

सूरात-पु० [मं०] चरममीमा । अ० बहुत ज्यादा । वि० चरम सीमापर पहुँचा हुआ ।

सूडा-खी० [सं०] बोटी, शिक्षा; मोर या मुरगेके सिरपरकी बोटी; पहाड़की बोटी; मस्तक; कलाईपर पहननेका एक गहना, बड़ी, बकग; कुम्भी; चूडाकरग संस्कार; छतपरका कमरा । - **करण-कर्म(इ)-पु०** हिंदू बच्चेका पहली बार सिर मुँहाकर बोटी रखनेका संस्कार, मुडन । - **सणि-पु०** सीमफूल; धुँवकी । वि० सर्वमैत्र, लग्नगण्य । - **रस-पु०** सीसफूल ।

सूडा-पु० चिडवा ।

सूडाल-पु० [सं०] हमली ।

सूदार-वि० [मं०] कलगीदार, चूहायुक्त ।

सूडाक-पु० [सं०] सिर । वि० चूहायुक्त ।

सूडाला-खी० [सं०] सफेद धुँवकी; नागरलोथा; उच्छटा नामक तुण ।

सूडिया-पु० एक बाग़ीदार कपड़ा ।

सूरी-खी० कौंच, लास, मोने, हाथीरात आदिका घना बृचाकार आभूषण जिसे विधायी कलाईपर पहनती है; चुड़ीकी शकलकी चीज; छत्र आदिके सिरपर बनायी जानेवाली चुड़ीकी शकलकी गहरी रेखाएँ; पुरजा; ग्रामोफोनका रेकर्ड; ऐनकका हलका; रेशम साफ करनेवालोंका एक औजार; चुड़ीकी शकलका गोदना । - **दूर-वि०** जिसमें चूँचियों हों; जिसमें पास-पास कई लकीरें हों । **पु०** तंग और लकी मोहरीका पात्रमा जिसे पहननेपर चूँचियों जैसी सिलवटें पड़ जाती हैं । **सु०** चूँचियाँ ठंडी करना या सोदना-खी०के विषया होनेपर चूँचियाँ तोड़ देना । - **पहनना-जवाना** भेस बनाना; खी बनना (व्य०); विषयाका फिरसे ब्याह करना या किसीके घर बैठ जाना । - **पहनाना-विषयासे ब्याह करना ।**

सूत-खी० अग, मोनि । **पु०** [सं०] आमका पेड़; गुदा ।

सूतक-पु० [सं०] आमका पेड़; छोटा कुम्भी ।

सूतब-पु० कमरके नीचे और जोंबोंके ऊपर पीठकी ओरका मांसक, गुलगुला भाग, निनव । **सु०-दिखाना-भाग जाना । - पीटना, बसाना-बहुत खुश होना ।**

सूति-खी० [सं०] गुदा ।

सूतिया-वि० मूल, पुडू । - **खाता, चकर-पु०** चूतिया, मूल व्यक्ति । - **पंथी-खी०** बेममशी, मूलता, दुड्डन ।

सून-पु० आटा; चुगने या खानेकी वस्तु-“...बोच दई जिन चूनि बि दई”-सूर; एक तरहका यूह; दे० 'चूना' ।

सूनर, चुनरी-खी० दे० 'सुनरी' ।

सूना-अ० कि० उपकना, बूँद-बूँद करके नीचे गिरना; फेंके

मा सुखे फलका मर चकना; * गर्भपात होना । † बि० चूनेवाला । पु० पत्थर, कंकड़, सीप आदिकी फूँकर भरतुत किया जानेवाला तीक्ष्ण क्षार जो पानमें खाने और पल-स्तर, सफेदी करने आदिके काम आता है । -चूनी-खी० चुनौटी । सु० -फेरना-सफेदी करना । -छायावा-वेबकूप बनाना; सीपा दिखाना; हानि पहुँचाना ।

चूनी-खी० अन्न, खासकर चने आदिकी शालके छोटे-छोटे टुकड़े, चुन्नी, अन्नकण । -भूसी-खी० चुन्नी और भूसी या चोकरा मोटा-छोटा अन्न ।

चूपरी-खी० खी० लगी हुई रोटी-देखि विरानी चूपरी मत लखचाये जीव ।

चूमना-स० कि० स्नेहप्रकाशके लिए होंठोंसे किसी (भिय-जन)के होठों, गालों आदिका स्पर्श करना, दबाना; सम्मान-प्रकाशके लिए किसी (पुरुषजन)के हाथ वा पाँवको होंठोंसे छूना; चुंबन करना, बोसा लेना; विवाह या उपनयनमें कुड़कनी छिवी, लकड़ियोंका वर वा मन्त्राचारिके कंधे, माथे आदिकी दूध, चाबलसे छूना ।

चूमा-पु० चूमनेकी क्रिया, चुंबन । -चाटी-खी० चूमना चाटना, चुंबन-आलिंगन ।

चूर-पु० किसी ठोस वस्तुका कूटने-पीसने वा रेतनेसे बहुत बारीक टुकड़ोंमें हुआ रूपान्तर, चूर्ण, धूल; चूरा । वि० दूबा हुआ, निमग्न; बेसुध, बरदमस्त (नशेमें चूर); शिथिल, पस्त (भककर चूर होना) । सु० -चूर करना-तोड़-फोड़कर रेजा-रेजा वा टुकड़े-टुकड़े कर देना; नष्ट कर देना ।

चूर्ण-पु० दे० चूर्ण ।

चूरम-पु० दे० 'चूर्ण'; धीमें भूना हुआ आटा जिसमें चीनी मिली हो; पाचक दवाओंका चूर्ण ।

चूरमहार-पु० एक तरहकी जंगली बेल जो दवाके काम आती है ।

चूरमा-स० कि० चूर करना, तोड़ना-‘बादशाह गद चूरा, चितवर आ इसलाम’-प० ।

चूरमा-पु० बाटी, बाजरेकी मोठी रोटी आदिकी मसलकर और चीशकर मिलाकर बनाया हुआ साध ।

चूरा-पु० किसी वस्तुका चूर्ण रूप, नुरादा, धूल; चिक्का; * कच्चा, बेरवा-‘तन हिंगली सिर लाल चोतनी कर चूरा तुहें पाइ’-ख० । * खी० चोटी, शिक्षा, मस्तक । -अणि-पु० दे० ‘चूदामणि’ ।

चूर्ण-पु० [सं०] चूर, धूल; चूरन; गंधद्रव्योंका चूर्ण; जबीर; खडिया; चूना । -कार-पु० पीसनेवाला; चूना फूँकने-वाला, एक वर्णसंकर जाति । -कुँसल-पु० अलक, जुल्फ । -खंड-पु० ककड़ । -पारद-पु० फिगरफ; सिंदूर । -मुष्टि-खी० मुष्टीभर स्रग्धित चूर्ण । -योग-पु० गंध-द्रव्योंका चूर्ण । -शाकफाक-पु० गौरवपूर्ण नामक शाक ।

चूर्णक-पु० [सं०] सपू; स्रग्धित चूर्ण; बड़े गंध जो सरक, कर्णकटु बगोले रहित तथा अल्पसमाप्त हो; एक वृक्ष; एक तरहका शाकिधान्य ।

चूर्णन-पु० [सं०] चूर्ण करना ।

चूर्णहार-पु० एक तरहकी बेल, चूरनहार ।

चूर्णा-खी० [सं०] आया छंदका एक मंत्र ।

चूर्णि-खी० [सं०] चूर्णन; १०० औंसियोंका समूह; काचों-

पण; पाणितिके चूर्णोंका पतञ्जलिकृत महाभाष्य । -कुत्त-पु० पतञ्जलि, आभ्यकार । -दासी-खी० पीसनेवाली, पिसनहारी ।

चूर्णिका-खी० [सं०] सपू; एक गंध-रोली ।

चूर्णित-वि० [सं०] चूर किया हुआ; नष्ट, ध्वस्त ।

चूर्णी-खी० [सं०] दे० ‘चूर्ण’ ।

चूर्णी(मिचू)-वि० [सं०] चूर्णसे बना हुआ वा चूर्ण मिलाया हुआ ।

चूर्ति-खी० [सं०] गमन ।

चूर्मा-पु० दे० ‘चूरमा’ ।

चूल-पु० [सं०] बाल; चोटी । खी० [हिं०] लकड़ी, बाँस आदिका पतला सिरा जो दूसरी लकड़ी, बाँस आदिके छेदमें ठोका जाय; पुराने ढंगके किनाइका नीचे-ऊपरका गोल लंबोत्तरा भाग जिसपर बड़े धूमा करता है । सु० -(छँ) ढीली होना-बहुत थक जाना, पस्त हो जाना ।

चूला-खी० [सं०] चोटी, शिक्षा; बालखानेका कमरा, चूलाशाला ।

चूलिक-पु० [सं०] झुन्नी, सूजी ।

चूलिका-खी० [सं०] मुर्गेकी चोटी, हाथीकी कनपटी; नेपथ्यमें किसी घटनाके होनेकी सूचना (ना०) ।

चूल्हा-पु० मिट्टी, ईंटों आदिकी बनी हुई तीन बाजुओं-वाली जंगीठी जिसपर खाना पकाते हैं । सु० -जलना-खाना पकना, पकाया जाना । -न्यूतीलना-सारे घरको भोजनका निमंत्रण देना । -फूँकना-खाना पकाना । -(खे)में जाय, -में पड़े-नष्ट हो जाय, मार्गमें जाय (साय) । -से निकलकर अहींमें पचना-छोटी सुतोचित-से निकलकर बहींमें फँसना ।

चूल्हा-पु० [सं०] चूसना ।

चूसा-खी० [सं०] चूसना; हाथीका दौड़ा कमनेका तस्मा, तंग; पेटी, कमरबंद ।

चूख-वि० [सं०] जो चूसा जा सके । पु० चूसनेकी चीज ।

चूसना-स० कि० होंठों और जीभके योगमें रसपान करना; रस, सार निचोरे लेना, खोखला कर देना; बनका हरण करना, शोषण करना ।

चूह-पु० दे० ‘चूहा’ ।

चूहा-पु० भंगी; बीम । [खी० ‘चूहरी’]]

चूहर-पु० दे० ‘चूहा’ ।

चूहरा-पु० दे० ‘चूहा’ ।

चूहा-पु० बरों, खेतोंमें बिल बनाकर रहनेवाला एक चतु-ष्पद वंतु जिसके तीन बहुत नेत्र होते हैं, मूषक । -दूली-खी० एक तरहकी पहुँची । -दान-पु० चूहे फँसनेका लटकेदार पिंजरा । -(हे)दानी-खी० दे० ‘चूहादान’ ।

चूँ-खी० चिड़ियोंकी बोली । -चूँ-खी० चूँ-चूँ; बक-बक । -चूँ-खी० चूँ-चपक; बकनाद । सु० -चूलवाना-हार मनवाना; हलाना हाराना करना कि कोई हार मान ले । -बोखाना-हैरान हो जाना; हार मान लेना ।

चूँ-पु० बरसातमें उगनेवाला एक साग ।

चूँदना-पु० चिड़ियाका बच्चा ।

चेंबर-पु० [अ०] कमरा; जजका कमरा जिसमें वह ऐसे मुकदमे सुनता है जिन्हें अराजकतमें सुननेकी जरूरत न

हो; समागृह; परिषद्।—आय् कामर्स—पु० नगर, प्रदेश-विशेषके व्यापारिवर्गकी हितरक्षाके लिये संघटित मंडल, व्यापार-मंडल।

चेक—पु० [अं०] किसी बँकके नाम किसीको रुपये देनेका लिखित आदेश; चारखाना।—**चुक**—खी० चेक-बही।

मु०—काटना—चेक लिखकर देना।

चेकितान—पु० [सं०] शिव; महाभारतमें पांडवोंकी ओरसे लड़नेवाला एक यादव नरेश। वि० बहुत ज्ञानवान्।

चेचक—खी० एक छुनवा रोग जिसमें ज्वरके साथ सारी देहमें दागे निकल आते हैं, होतला।—**रू**—वि० जिसके मुँहपर चेचकके दाग हैं।

चेका—पु० छेद, मूराख।

चेजारा—पु० चुनारका काम करनेवाला, राज—‘कोई चेजारा चिणि गया मिल्वा न दूजी बार’—साखी।

चेद—पु० [सं०] दास, सेवक; पति; नायक और नायिकाको मिलानेवाला; भक्ति; एक मछली।

चेदक—पु० इंद्रजाल, बाजीमरी; तमाशा; जादू; [सं०] दास, सेवक; उपपति; नायकको नायिकाने मिलानेवाला चतुर सेवक; जमका; शोषता।

चेदकनी—खी० चेटिका।

चेदका—खी० इमशाना चिता।

चेदकी—पु० इंद्रजाल करनेवाला, बाजीमर।

चेदि छा—खी० [सं०] दासी, लौंडी।

चेदिकी—खी० चेटिका।

चेदिया—पु० छात्र।

चेटी—खी० [सं०] दाम्नी।

चेटुवा—पु० चिकियाका बच्चा।

चेड—पु० [सं०] दे० ‘चेट’।

चेडक—पु० [सं०] दे० ‘चेटक’।

चेडिका, चेडी—खी० [सं०] दे० ‘चेटिका’, ‘चेटी’।

चेतःपीडा—खी० [सं०] दुःख, शोक।

चेत(स्)—पु० [सं०] होश, मग़ा; याद; ज्ञान; चित्त; मन; इच्छा; भावधानी।

चेतक—वि० [सं०] चेत करनेवाला; चेतन। * जादूभरा—‘याग के अनूठी भरं चेतक चितौन-यूठी’—घन०। पु० महाराणा प्रतापके घोड़ेका नाम।

चेतकी—खी० [सं०] हड, हरीतकी; चमेली; एक रागिनी।

चेतन—पु० [सं०] आत्मा, जीव; परमेश्वर; मनुष्य; प्राणी; मन। वि० प्राणयुक्त, चैतन्य-विशिष्ट।

चेतनकी—खी० [सं०] हड।

चेतना—अ० क्रि० होशमें आना; बुद्धि-विवेकसे काम लेना, सावधान होना। सं० क्रि० सोचना, विचारना (मरु चेतना, आगम चेतना)। खी० [सं०] चैतन्य; ज्ञान; होश; याद; बुद्धि; चेत; जीवनी शक्ति, जीवन।

चेतनीय—वि० [सं०] जानने योग्य, रोच।

चेतनीया—खी० [सं०] कृत्रिम नामकी लता।

चेतवनि—खी० चितवन; चित्तवनी।

चेतव्य—वि० [सं०] चयन करने योग्य।

चेता—पु० चेत; होश, याद।

चेतावनी—खी० सावधान करने, किसी जानिकर कार्यसे

रोकनेके लिये कही गयी बात, तंगीह, खतरेकी पूर्व सूचना।

चेतिका—खी० चिता।

चेतो—‘चेतस्’का समासगत रूप।—**अम्प्रा(म्प्राह)**—

—अव;—भू—पु० प्रणय; कामदेव।—**विकार**—पु० मान-

सिक विकार।—**हृद**—वि० चित्त हरण करनेवाला।

चेत्—अ० [सं०] यदि, अगर; कराचिद।

चेत्थ—वि० [सं०] क्षातव्य।

चेदि—पु० [सं०] एक प्राचीन जमपद; बर्होंके निवासी;

बर्होंका राजा।—**पति**,—**राज**—पु० उपरिचर वस्तु;

शिथुपाल।

चेन—खी० [अं०] जमीर, सिकरी।

चेना—पु० कपनी या सोंबोंकी जातिका एक मोटा अनाज।

चेप—पु० गाढ़ा, लसदार रस; लासा; * उत्साह।—**द्वार**—

वि० चेपवाला, लसदार।

चेबुला—पु० एक पेड़।

चेव—वि० [सं०] चयन करने योग्य, चयनीय।

चेवर—खी० [अं०] कुरसी; समापतिका पद, आसन; (ला०)

समापति, अध्यक्ष; विद्यापीठमें विषय-विशेषके अध्यापक-

(प्रोफेसर)का पद।—**मैन**—पु० कमेटी, म्युनिसिपल बोर्ड

आदिका स्थायी मभापति, अध्यक्ष।

चेर—पु० दास, सेवक।

चेरा—पु० दास, सेवक; चेला, शिष्य।

चेराई—खी० गुलामी, चाकरी; श्रागिरी।

चेरि, चेरी—खी० सेविका, दासी।

चेरू—पु० एक पुतली जालि जिसका पहले बिहार आदि कई प्रदेशोंमें राज्य था।

चेल्—पु० [सं०] कपडा, वस्त्र। वि० अधम (समास्तातमें)।

—**गंगा**—खी० महाभारतमें वर्णित दक्षिण भारतकी एक नदी।—**प्रक्षालक**—पु० बोरी।

चेल्काई—खी० दे० ‘चेल्हाई’।

चेल्वा—खी० दे० ‘चेल्हवा’।

चेल्हाई—खी० चेल्का समूह; चेला बनानेका व्यवसाय;

चेल्के वहाँ घूमकर भेंट, पूजा लेना।

चेला—पु० शिष्य, छागिरी; दीक्षा, गुरुमंत्र लेनेवाला। खी०

चेल्हवा मछली। **मु०**—**चैलना**—चेला बनाना।

चेलान, चेलाक—पु० [सं०] तरबूजका पौधा।

चेलासक—पु० [सं०] कपड़े आदि धोनेवाला कीड़ा।

चेलिका—खी० [सं०] वस्त्र-विशेष; अंगिया, चोली।

चेलिन, चेली—खी० गुरुदीक्षा या उपदेश प्राप्त करने-

वाली स्त्री।

चेलुक—पु० [सं०] बौद्ध भिक्षुका चेला।

चेल्हवा—खी० एक छोटी मछली।

चेवी—खी० [सं०] एक रागिनी।

चेडक—पु० [सं०] चेष्टा करनेवाला; एक रतिबंध।

चेडव—पु० [सं०] चेष्टा करना।

चेष्टा—खी० [सं०] वृत्ति, हरकत; क्रियासाधक काविक

व्यापार; मनका भाव बतानेवाली अंगोंकी वृत्ति, भावभंगी;

प्रत्यक्ष, कोशिश।—**बास**—पु० प्रत्यक्ष; गतिहीन होना।—

विरूपण—पु० किसी व्यक्तिकी गति-विधि देखना।—**बक**

पु० झटका (चित्ति-विशेषमें अधिक बलवान् हो जाना)।

वेदित-वि० [सं०] वेदायुक्त । पु० वेदा ।

वेस-पु० [अ०] शतरंज; वह लोहेका फेम जिसमें कंपीज फिरे हुए टावर छापनेके लिए कसते हैं ।

वेहराई-खी० चित्रमें चेहरेकी रंगत; वह छड़ी जिसपर चेहरा बना हो । पु० हलका गुलाबी रंग ।

वेहरा-पु० [फा०] शिरका सामनेका, माथेसे लगाकर ठुठोतिका भाग, मुखमेंढल; सामनेका रुख, आगा; किसी देवदानवकी धातु, मिट्टी आदिकी मुलाकूती; रजिस्टर आदिमें लिखा जानेवाला हुकिया । -**ए-साही-वि०** (वह सिका) जिसपर साही चेहरा बना हो । पु० ऐसी मुद्रा । -**कुशा-पु०** चित्रकार । -**कुशाई-खी०** चित्रकारी । -**हार-वि०**, पु० दे० 'चेहरा-ए-साही' । -**नवीस-पु०** हुकिया लिखनेवाला । -**बंदी-खी०** हुकिया । -**मुहरा-पु०** खरत-मकल । **मु०-उतरना-वेहरने** सुस्ती, उदासी, गहरी बिना आदि प्रकट होना, चेहरेपर तेज, प्रफुल्लता न रहना । -**पीला हो जाना-रोग**, भय आदिके कारण चेहरेपर पीलेपनकी झलक आ जाना । -**बिगाड़ना-रतना** मारना कि चेहरेका हुकिया बरल जाय । -**लिखाना-सिनामे** नौहरी करना । -**सफेद हो जाना-रोग** या भयके कारण चेहरेपर सफेदी आ जाना, उसकी चमक, मुखांका गायब हो जाना । -**(रे)पर हवाइयाँ उड़ना-भय**, बराहटमें चेहरेका रंग उड़ जाना ।

वेहल-वि० [फा०] चालीस । -**झुझी-खी०** धीरे-धीरे धोका-सा टहलना; मुमलमानोंकी अवैष्टिकी एक रस्म ।

वेहलुम-वि० [फा०] चालीसवाँ । पु० मुमलमानोंमें ख्युके आलासमें दिनका फातिहा और भोज; मुहरमेंके चालीसमें दिन होनेवाला करबलाके शहीदोंका फातिहा ।

वे-पु० दे० 'वच' ।

वैकितान-वि० [सं०] वैकिमान ब्रह्ममें उत्पन्न ।

वैत-पु० वैत्र मास, फाल्गुनके बादका महीना ।

वैतन्व-पु० [सं०] चेतना, हान, सचिन्; आराम; विस्वरूप परमात्मा; प्रकृति; वैष्णवोंके एक संप्रदायके प्रवर्तक कृष्ण चैतन्य गोस्वामी, गौरांग महाप्रभु । -**वरितामृत-पु०** कृष्णदास कविराज-रचित चैतन्य देवका जीवनचरित । -**अरबी-खी०** तात्रिकोंकी एक अरबी । -**बाहिनी**

बाही-खी० शंखियोंमें प्राप्त ज्ञानकी मस्तिकामें ले जाने वाली नाडी । -**संवादाय-पु०** चैतन्य देव द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय ।

वैता-पु० एक पक्षी; चैती ।

वैती-वि० चैतमें होनेवाला (चैती गुलाब) । खी० चैतमें पकनेवाली फलल; रबी; एक तरहका चल्ना गाना ।

वैत, वैतिक-वि० [सं०] चित्त-संबंधी, मानसिक ।

वैत्य-वि० [सं०] चिता संबंधी । पु० बरा देवालय; समाधि-मंदिर; यक्षशाला; गव्वकी सीमापरका वृक्षसमूह; बुद्धमूर्ति; बौद्ध भिक्षु; बौद्ध विहार; पीपल; वेल्का पेड़ । -**तक-हुम**, -**बूझ-पु०** पीपल । -**पाळ-पु०** वैत्यका रक्षक । -**मुल-पु०** कमंडलु । -**यझ-पु०** एक वैदिक यज्ञ । -**बंदु-पु०** बीसी वा जैनियोंकी मूर्ति; विहार; देव मंदिरके धनका रक्षण । -**विहार-पु०** बौद्ध वा जैन मठ । -**स्थान-पु०** वह स्थान जहाँ बुद्धदेवकी मूर्ति हो;

पवित्र स्थान ।

वैयक-पु० [सं०] पीपल; राजगृहके पासका एक पर्वत ।

वैत्र-पु० [सं०] वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा चित्रा नक्षत्रमें पड़ती है, चैत; सात वर्ष-पर्वतोंमेंसे एक; देवालय, चैत्य; बौद्ध भिक्षु; चित्रा नक्षत्रके गर्भसे उत्पन्न भुषका एक चैता । -**गौड़ी-खी०** एक राशिनो । -**मख-पु०** वैत्र मासमें मदनचंद्रवीर आदिकी होनेवाला बसंतोत्सव ।

-**सख-पु०** कामदेव ।

वैत्रक-पु० [सं०] वैत्र मास ।

वैत्ररथ, वैत्ररथ-पु० [सं०] चित्ररथ गंधर्वाका बनाया हुआ कुनेरका उद्यान ।

चैत्रावली-खी० [सं०] चैत्रकी पूर्णिमा; चैत्र-शुक्ल त्रयोदशी ।

चैत्रि, चैत्रिक-पु० [सं०] चैत्र मास ।

चैत्री-खी० [सं०] चैत्रकी पूर्णिमा ।

चैत्री (चित्र)-पु० [म०] चैत्र मास ।

चैदिक-वि० [सं०] चैदि देशका; चैदि देशमें उत्पन्न । [खी०, 'चैदिक', 'चैदिकी' ।]

चैद्य-पु० [सं०] शिशुपाल ।

चैन-पु० सुख, आराम; कल, शांति । **मु०-की बंसी बजाना-बड़े आनन्दमें दिन बिताना । -पड़ना-कल** मिलना । -**से कटना**, -**से गुजरना-आराममें बिदगी बसर होना ।**

चैपला-पु० एक विशिष्ट ।

चैयाँ-पु० बाँह ।

चैल-पु० [सं०] कपड़ा, बन्ध, पहनावा; महीना । वि० बल-निमित्त । -**चाव-पु०** धोबी ।

चैलक-पु० [सं०] बौद्ध भिक्षु; एक वर्णमकर जाति ।

चैला-पु० जलानेके लिए चिरी हुई लकड़ी, फट्टा ।

चैलिक-पु० [मं०] बन्धबंद ।

चैली-खी० छोटा चैला, गरमीके कारण नाकमें निकलनेवाला जमा हुआ मूत्र ।

चौक-खी० चुननका जिह ।

चौका-पु० चुनने, होठोंमें रसपान करनेकी क्रिया ।

मु०-पीना-बच्चोंका मौका स्नान-पान करना ।

चौगा-पु० बॉमकी खोखली नली जिसका एक सिरा बंद और दूसरा खुला हो; कामज आदिकी बनी हुई वैसी नली ।

चौगी-खी० भाषीकी नली जिसमें होवर उसकी हवा निकलती है; छोटा चौगा ।

चौचबा-सं० कि० चुगना ।

चौच-खी० विशिष्टोंके मुँहका झगला, नोकदार भाग, ठोकर, टोंट; मुँह (मं०) । **मु०-बंद करना-मुँह** बंद करना, चुप हो जाना । **हो-हो-(चै)** होना-कहा सुनी होना ।

चौचल-पु० दे० 'चौचल' ।

चौटबा-सं० कि० खोटना; चौथना, नोचना ।

चौटली-खी० सफेद चुंबकी ।

चौका-पु० सिंघाईके लिए खोदा गया छोटा कबा कुर्मी; † सिर; झोटा ।

चौकी-खी० साड़ी ।

चौब-० गाय-बैल आदिका उतना गोबर जितना बघ

एक बारमें करे ।

चौथना—स० क्रि० सौटना; चोचना; चौथना ।

चौधर—वि० बहुत छोटी ओखोला; मूर्ख ।

चौप—पु० चिपकनेवाली वस्तु, लासा; दे० 'चोप' ।

चोथा—पु० कई गंधद्रव्योंको मिलाकर बनाया जानेवाला एक सुगंधित द्रव्य; किन्ती चीजको कमी पूरी करनेके लिए उसके साथ रखी जानेवाली चीज; बाटझी कमी पूरी करनेके लिए पल्लेपर रखा जानेवाला कंकड़ आदि; दे० 'चोटा' ।

चोहूँ—खी० मछलीके शरीरके छुरंड जैसे छोटे-छोटे गोल टुकड़े ।

चोहूँ—खी० भिगोर मलनेसे निकलनेवाला दाहका छिलका ।

चोहूँ—पु० [सं०] भइमोहकी जड़ जो दवाके काम आती है ।

चोकर—पु० गेहूँ, जौ आदिका छिलका जो आटेको छाननेसे छलनीमें रह जाता है ।

चोख—वि० [सं०] झुझ, स्वच्छ; सच्चा; दख, चतुरा खरा; तीखा; तेज ।

चोख—खी० तेजी, फुरती । वि० दे० 'चोखा' ।

चोखना—स० क्रि० धनमें मुँह लगाकर दूध पीना, चूमना ।

चोखनि—खी० चोखनेकी क्रिया ।

चोखा—वि० खालिम, बेमेल; सच्चा, खरा; चतुरा; तीखी धारवाला । पु० भालू, बैगन आदिका भरता ।

चोखाई—खी० चोखापन; चूमनेकी क्रिया ।

चोगद—पु० दे० 'चुगद' ।

चोगर—पु० उल्लूकीनी ओखोला चोड़ा ।

चोगा—पु० चुगा, चिपियोंका वारा ।

चोगा—प० [फा०] लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आग लुका होता है, 'गाउन' ।

चोच—पु० [मं०] छाल; खाल; नारियल; फलका वह अंश जो खाने योग्य न हो; तेजपात; तालफन; केला ।

चोचक—पु० [मं०] बलक, छाल ।

चोचला—पु० नलगा, हाव-भाव । —(छे)बाज्ज—वि० नखरेबाज । —बाज्जी—खी० चोचला करना, नखरेवाजी ।

चोज—पु० चमत्कारपूर्ण उक्ति; ब्यंग्यमयी हँसी ।

चोट—खी० आघात, प्रहार; बार; पाव; हिंस्र पशुका आक्रमण; फ्लेश, ब्याधा; सताप; ब्यंग्य, कटाक्ष; दफा; हानि पहुँचानेके लिए बली हुई चाल । —चपेट—खी० बाध, ठेस ।

मु०—उभरना—चोट खावे हुए अंगका ठंड लगने आदिने फिर सूज आना, दर्द करना । —करना—वार, झमला करना; (हिंस्र जंतुका) कटना, डंसना । —खाना—घायल होना; आघात सहना । —पर चोट पड़ना—समयपर सत्रमा बैठना; हानिपर हानि होना । —(ट्टी)कलना—दो आदमियोंका एक-दूसरेपर (शब्द या शस्त्रमें) बार करना ।

चोटना-चोटना—म० क्रि० मनाना, फुसलाना ।

चोटहा—वि० जिसपर चोटका चिह्न हो । [खी० 'चोटही']

चोटा—पु० राबके ऊपर उठ आनेवाला धोतरा, जूती ।

चोटा—वि० चोट करनेवाला; चोट खाया हुआ ।

चोटारना—स० क्रि० चोट करना ।

चोटिका—खी० [सं०] साधा, लहंगा ।

चोटिया—खी० चोटी, बालोंकी लट । पु० पाठशालामें पढ़नेवाला छात्र ।

चोटियावा—स० क्रि० चोट पहुँचाना; चोटी पकवाना; चोटी गूँथना ।

चोटी—खी० [सं०] लहंगा, साधा आदि; [हिं०] (हिंदुओंके) सिरके नीचोबीच छोड़ रखे हुए लंबे बाल, शिखा; जोके सिरके गुँथे हुए और पीठकी ओर या अगल-बगल लटकनेवाले बाल; वह रंगीन डोरा जो चोटी बाँधनेके काम आता है; चिवियोंके सिरपरकी कलगी; एक गहना जो जूड़ेमें बाँधकर पहना जाता है; पहाड़का सबसे ऊँचा भाग, शिखर (ला०) उत्कर्षकी सीमा । —दार—वि० चोटीवाला । —बाखा—वि० जिसके चोटी हो । पु० भूत-प्रेत । **मु०** —कटाना—बसमें होना, गुलाम बनना । —कहरना—बसमें करना, अभोग करना । —करना—सिरके बाल संवारकर गूँथना । —का—औवल दरजेका, सर्वोत्कृष्ट । —दबावा,—हाथमें होना—दबावमें होना, काबूमें होना ।

चोटी-चोटी—वि० बिकनी-चुपकी, बनावटी (शाय) ।

चोटा—पु० चोर ।

चोड़—पु० [सं०] दुपट्टा, उपरना; कुरती; चोल वेश ।

चोड़क—पु० [सं०] कुरता; अँगिया ।

चोड़ा—खी० [सं०] बड़ी गोरखमुंठी ।

चोड़ी—खी० [सं०] साफ़, कुरसी ।

चोड़—पु० चाव, उमग ।

चोथ—पु० दे० 'चोथ' ।

चोथ—वि० [मं०] प्रेक्त । पु० चाबुक, सौटी ।

चोदक—पु० [सं०] कर्ममें प्रवृत्त करनेवाला विधिवाचक ।

वि० प्रेक्त ।

चोदक—पु० अत्यधिक संयोग करनेवाला ।

चोदना—पु० [सं०] प्रेरणा; प्रवर्तन; विधि; उकसाना ।

चोदना—स० क्रि० मैसुन करना, संयोग करना । खी० [मं०] प्रेरणा; प्रवर्तन; विधि; शास्त्रादेश ।

चोदवैवा—वि० संयोग करनेवाला ।

चोदवाई—खी० संयोगकी क्रिया या भाव ।

चोदास—खी० संयोगकी प्रबल कामना ।

चोदासा—वि० जो संयोगकी प्रबल कामनासे अभिभूत हो ।

[खी० 'चोदासी']

चोदित—वि० [सं०] प्रेरित; प्रेषित; आदिष्ट; तर्करूपमें पेश किया हुआ ।

चोद—पु० संयोग करनेवाला ।

चोद्य—वि० [सं०] प्रेरणा करने योग्य; प्रेषणीय । पु० प्रश्न, पूर्व-पक्ष ।

चोप—पु० आसकी डेपनी तोड़नेसे निकलनेवाला तेजारी रस । खी० दे० 'चोप'; * चाह; चाव; उमग; बढ़ावा ।

—दार—पु० दे० 'चोपदार' ।

चोप—पु० [सं०] हिलना-डुलना; मंद गतिमें जाना ।

चोपना—अ० क्रि० मोहित होना; आसक्त होना ।

चोपी—वि० चाव, चाह, उप्साह रखनेवाला । † खी० आसकी डेपनीपरसे निकलनेवाला तेजारी रस ।

चोब—खी० [फा०] लकड़ी; डंडा, सौटा; लोहेका डंडा; डोल, नपाका आदि बचानेकी लकड़ी; सीना या चौदी मढ़ा

—**दुआ** उंदा, असा । —**दस्ता**—**दस्ता**—**की**० लाठी । —**दर**
—**पु**० असावरदार ।

बोधा—**पु**० उंदा, लाठी; छोड़ेकी भूँदी। मोठे चावल जिनमें
मेवे आदि पड़े हों ।

बोधी—**वि**० [फा०] लकड़ीका बना हुआ ।

बोधा—**पु**० दवाओंकी पीठली जिससे आँख या और कोई
पीठल अथ संका जाय; कौचनी । **मु**०—**देना**—**दवाओंकी**
पीठलीमें संकना ।

बोधाना—**स**० कि० चुभाना ।

बोम—**पु**० जेम, पमंद ।

बोवा—**पु**० दे० 'बोआ' ।

बोर—**पु**० [सं०] चोरी करनेवाला, छिपकर दूसरेकी चीज
हथिया लेनेवाला, तस्कर। उचितसे कम काम करने, कम
माल देनेवाला, बेईमान; छिपकर काम करनेवाला; जो
मनका भाव प्रकट न होने दे; मनमें छिपी बुराई, दुर्भाव;
बाब आदिके भीतर छिपी विकृति, लराही; लेलमें हारने-
वाला लूचका जिसमें और लूचके बाँध लें; ताश, मंजीफका
पूजा जिनमें कोई खिलायी दबाये बैठे हो; एक गंध-द्रव्य,
चोरक । **वि**० [हिं०] छिपा हुआ, गुप्त; जिसका वास्तव्य
भीखा देनेवाला हो । (चोर दरवाजा, चोर महल इत्यादि) ।

—**कंडक**—**पु**० चोरक नामका गंधद्रव्य । —**कट**—**पु**० [हिं०]

चोर, चोड़ा । —**कर्म**—**पु**० चोरी । —**खाना**—**पु**० [हिं०]

संदूक, आलमारीका छिपा खाना । —**खिचकी**—**की**०

[हिं०] छोटा चोर दरवाजा । —**गद्दा**—**पु**० [हिं०] छिपा

हुआ गया । —**गली**—**की**० [हिं०] संकरी गली जिसका

पता कुछ ही लोगोंकी हो; गलीके भीतर गली; पाजामेकी

गियाने । —**खकार**—**पु**० [हिं०] चोर, उन्का । —**छिद्र**—

पु० संधि, दरार । —**जमीन**—**की**० [हिं०] वह दलदल जो

ऊपरसे देखनेमें सूखा, कभी जमीनसा जान पड़े । —**ताला**

—**पु**० [हिं०] किवाड़के अंदर लगा हुआ गुप्त ताका जिसका

पता ऊपरसे न लगे; बह ताला जो अनेक, रहस्यमय ढंगसे

छोला जाय । —**धन**—**वि**० **की**० [हिं०] दूधते समय दूध

चुरा रखनेवाली । —**दस्त**—**पु**० दे० 'चोरता' । —**दस्ता**—

दस्त—**पु**० [हिं०] बत्तीस दाँतोंके जतिरिक्त दाँत जिसके

निकलनेमें बहुत कष्ट होता है । —**दस्तावा**—**पु**० [हिं०]

मकानके पिछवाड़ेका छोटा दरवाजा जिसका पता कुछ

खास लोगोंकी ही हो । —**द्वार**—**पु**० चोर दरवाजा । —

धज—**पु**० [हिं०] तलवारसे लड़नेका एक ढंग । —**पहरा**

—**पु**० [हिं०] गुप्त पहरा । —**पुष्पिका**—**पुष्पी**—**की**०

शंखाडुकी । —**पेट**—**पु**० [हिं०] ऐसा पेट जिसमें गर्भका

पता अस्सेक न लगे । —**बजारिया**—**पु**० चोरबाजरी

द्वारा रुपया कमानेवाला । —**बदन**—**पु**० [हिं०] वह मनुष्य

जो ऊपरसे कमजोर मालूम हो, पर वस्तुतः बलवान् हो ।

—**बाजार**—**पु**० [हिं०] वह दुकान, स्थान जहाँ चोरीसे,

नाजायज तरीकेसे माल बेचा, खरीदा जाय । —**बाख**—**की**०,

पु० [हिं०] वह रेशा जिसके नीचे दलदल हो । —**महक**—

पु० [हिं०] वह महक जिसमें किसी राजा, रईसकी रस्मियाँ

रहें । —**मिहीचकी**—**की**० आँख-मिचीनी । —**मुँदा**—**पु**०

[हिं०] मूँगा; वह कदा दाना जो न चलनेसे दफा बाब

और न पकानेसे गले । —**रस्ता**—**पु**० [हिं०] चोरगली ।

—**रूप**—**पु**० चतुर चोर । —**सरी**—**की**० [हिं०] छिपी
सोयी । —**सटिया**—**पु**० चोरीसे माल खरीदनेवाला
दुकानदार ।

चोरक—**पु**० [सं०] असबरगा; एक तरहका गठियन ।

चोरटा—**पु**० चोर । [की० 'चोरटी']

चोरना—**स**० कि० चोरी करना ।

चोरपुली—**की**० चोरपुष्पी ।

चोरा—**की**० [सं०] शंखाडुकी, शंखपुष्पी ।

चोरसव्य—**पु**० [सं०] चोरपुष्पी ।

चोरा-चोरी—**अ**० दे० 'चोरी-चोरी' ।

चोराना—**स**० कि० दे० 'चुराना' ।

चोरिका—**की**० [सं०] चोरी ।

चोरित—**वि**० [सं०] चुराया हुआ ।

चोरितक—**पु**० [सं०] छोटी-मोटी चीजोंकी चोरी; चुरापी
हुई चीज ।

चोरी—**की**० चोरका काम, चुरानेकी क्रिया; छिपाव, दुराव;
ठगी, धोखाबी । —**चोरी**—**अ**० छिपे-छिपे; छिपाकर ।

—**छिनाला**—**पु**० चोरी और व्यवहार; दूषित कर्म ।

—**का काम**—**की बात**—**छिपाकर** करनेका काम, बात ।

—**से**—**छिपाकर** ।

चोल्हुक, **चोल्हुक**—**पु**० [सं०] पगकी ।

चोल्—**पु**० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्राचीन जनपद,
आधुनिक तम्रोर; उक्त जनपदका निवासी; चोला; मजीठ;
बल्कल; कवच । **की**० चोली—'पास तक डाँकें नहीं क्या
करे बपुरी चोल्'—साखी । —**खंड**—**पु**० एक चोल्के अर्धत
भरका जखरीजीके कामका कपड़ा । —**रंग**—**पु**० मजीठका
रंग । —**सुपारी**—**की**० [हिं०] चिकनी सुपारी ।

चोल्क—**पु**० [सं०] चोली; कवच; छाल ।

चोल्की—**कि**०—**पु**० [सं०] कवचधारी सैनिक; बालका
कला; नारंगीका रंग; कलाई ।

चोलना—**पु**० साधुओंका उंबा कुरता ।

चोला—**पु**० मुल्लाओं, फकीरों आदिके पहननेका लबा,
ढीला-ढाला कुरता; शिशुकी पहली बार पहनाया जाने-
वाला कपड़ा; अंगरदेका कपड़ा भाग; देह, शरीर । **मु**०
—**बदलना**—**एक** शरीर त्यागकर दूसरा धारण करना;
रूप बदलना । —**(ले)** **दामनका साथ**—**कभी** न छूटने-
वाला साथ ।

चोली—**की**० [सं०] वह अंगिया जिसमें पीछेकी ओर बंद न
हो; चोला । —**मात**—**पु**० बाममांगका एक भेद । **मु**०—
दामनका साथ—**कभी** न छूटनेवाला साथ ।

चोल्हा—**पु**० दे० 'चोका' ।

चोवा—**पु**० दे० 'चोका' ।

चोच—**पु**० [सं०] चोचण; एक रोग जिसमें रोगीकी कण्ठमें
बहुत तेज जलन होती है; सूखना ।

चोचक—**पु**० [सं०] सूखनेवाला ।

चोचण—**पु**० [सं०] सूखना ।

चोचना—**स**० कि० दे० 'चोखना' ।

चोच्य—**वि**० [सं०] सूखने योग्य । **पु**० सूखकर खाली
जानेवाली चीज ।

चोचक—**पु**० [सं०] बहुत बहिया चोका ।

चौक-श्री चौकनेका भाव ।

चौकना-अ० कि० भय, विषय या पीड़ाकी अचानक अनुभूतिसे चंचल हो जाना, हिल, काँप उठना; सोतेमे सकायक जाग उठना; चौकना होना; क्षिप्तकना, भङ्गना; चकित होना ।

चौकना-स० कि० दूसरेके चौकनेका कारण होना ।

चौटना-स० कि० चुटकीसे तोड़ना (कुल आदि) - 'मनु छुटि गो लोटनु चटत, चौटत ऊँचे फूल'-वि० ।

चौटकी-श्री० सफेद चुपची ।

चौटेल-पु० वह ठोका जिसपर पर्दा पड़ा हो ।

चौतिस-वि० पु० दे० 'चौतीस' ।

चौतीस-वि० तीस और चार । पु० तीस और चारकी संख्या, ३४ ।

चौच-श्री० चकाचौच ।

चौचन-अ० कि० (विजलीका) चमकना, कौपना ।

चौचियाना-अ० कि० चकाचौच होना ।

चौची-श्री० चकाचौच ।

चौच-श्री० इच्छा-कथीर सोया क्या करै जागनकी कह चौ प'-साखी ।

चौर-पु० चेंबर; झालर; फुंदना; भञ्जभौंडकी जड़ । -**माघ-श्री०** सुरा गाथ । **सु०** -**बलना**, -**दुरना**-सिरपर चेंबर झलना आना ।

चौरा-प० अन्न रखनेका गड्ढा; सफेद पूछवाला बैल ।

चौराना-स० कि० चेंबर डुलाना; बुझाना ।

चौरी-श्री० धेनुकी पूँछके बालोंका गुच्छा जिससे घुड़-मवार मखिया उड़ानेका काम लेने हैं; चौड़ी बाँधनेकी डोरी; सफेद पूछवाली गाथ ।

चौमठ-वि० माठ और चार । पु० चौमठकी संख्या, ६४ ।

चौ-प० मोती आदि तोलनेका वाट । वि० चार (केवल ममासमे व्यवहृत) । -**आई**, -**बाई**, -**बाई**-**श्री०** चारों दिशाओंमे, कभी इत और कभी उस दिशासे बहनेवाली हवा; अफवाह । -**कठ**-**श्री०** दे० 'चौखट' । -**कडा**-पु० दे० 'चौखटा' । -**कड़**-वि० बड़िया । -**कड़ा**-पु० दो-नो मोतियोंवाली बाली, बेंटाईकी एक रीति जिसमें जमीनके मालिककी चतुर्थांश मिलता है । -**कड़ी**-**श्री०** चार बीजोंका समूह; चार आदमियोंकी मजली; चार घोड़ोंकी गाड़ी; चौपायोंकी वह दौड़ या छल्ला जिसमें चारों पंथ एक साथ फेंके जायें; हिरन आदिकी कुल्लेच (मरना); चार मुँगोंका समूह; चारपाईकी वह बुनावट जिसमे झूलती या बानकी चार-चार लड़ियाँ एक साथ हो । (**सु०** - **भूल जाना**-अकलका काम न करना; राह न भूलना; धरना जाना ।) -**कच्चा**-वि० चारों ओर ध्यान रखनेवाला; समग्र, सावधान, दोषधार । -**करी**-**श्री०** दे० 'चौकरी' । -**कल**-पु० चार मात्राओंका समूह । -**कल**-वि० चौकना; सावधान; ठीक; दुरुस्त । [-**कलसाई**, -**कली**-**श्री०** सावधानी; निगरानी ।] -**कोन**-वि० दे० 'चौकोना' । -**कोना**-वि० चौकोर, चतुष्कोण । -**कोर**-वि० 'चौकोना, चौखेड़ा' । -**खंड**-वि० चार खंडोंवाला (मकान); चौमजला । -**खट**-**श्री०** लकड़ीका चौकोर ढाँचा जिसमें निम्नार्धके पट्टे जड़े जाते हैं; देहली । (**सु०**

-**न खौकना**-(किसीके घर) कमी न आना ।) -**खटा**-पु० लकड़ीका ढाँचा जिसमें तसमोरा या आरना जड़ा जाय; चौखटा; 'देहखटि, शरीरका ढाँचा'-'आपने भी क्या दिहकश चौखटा पाया है !' -**खना**-वि० चार खंडोंवाला (मकान) । -**खाना**-पु० चौखेड़े खानोंवाला कपड़ा ।

-**खानि**-**श्री०** चार प्रकारकी सृष्टि, भवज, पिंडज, कम्पज और उद्भिज-ये चार प्रकारके जीव । -**खंड**-पु० चारों दिशाएँ । अ० चारों ओर । -**खंडा**-वि० चौकोना, चौकोर । -**गढ़ा**-पु० दे० 'चौगढ़ा'; खर-गोश । -**गढ़ा**-पु० चार चौकोंका समूह; वह स्थान जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ या चार रास्ते मिलते हों ।

-**गढ़ी**-**श्री०** जानवर फँसानेके लिए बनावा हुआ बाँसकी फट्टियोंका ढाँचा । -**गिर्दा**-अ० चारों ओर । -**गुन**-वि० दे० 'चौगुना' । -**गुना**-वि० किन्ती वस्तुका चार गुना, चार बार उसके बराबर, चतुर्गुण । -**गुन**-वि० दे० 'चौगुना' । -**गोड़ा**-वि० चार पैरोंवाला । पु० पशु; खरवा । -**गोबिन्दा**-**श्री०** चार पायोंकी कंबी डंडेदार तिपाई जिसपर चढ़कर ऊँचे स्थानोंकी सफाई, सफेदो आदि की जाती है; बौनकी तोलियोंका चिबिवा फँसानेका फंदा । -**गोसा**-वि० चार कोनोंवाला, चतुष्कोण । पु० चौखेड़ी किसी या तथन । -**गोशिया**-वि० 'चौगोश' ।

श्री० चार तिकोने टुकड़ोंकी बनी हुई टोपी । पु० तुर्की घोंटा । -**चपा**-पु० चार खानोंवाला डिब्बा जिसमें लौंग, इलायची आदि रखते हैं; मसला रखनेका चार खानोंका बरतन; मिट्टीका बना खिलौना जिसमें एक-दूसरीमे जुड़ी चार कुंभियाँ होती हैं; चार शीशे पानकी खोंगी; एक बाजा, चौदोल । -**चबिवा**-वि० चार धक्कोंका । **श्री०** चार पायोंकी कंबी तिपाई, चौगोशिया ।

-**मुहूर्त**-पु० जन्मके कामोंके लिए शोभा जानेवाला दो-चार घण्टीका कामचलाक मुहूर्त । -**चर**-वि० सरपट (चाल) । -**चरा**-पु० पीतलकी दीपक; दे० 'चौघरा' ।

-**घोड़ी**-**श्री०** चार घोड़ोंकी गाड़ी; चौकरी । -**घुरी**-**श्री०** चतुर्भुजी । -**खोल**, -**खोका**-पु० एक बाजा, चौघरा ।

-**तगी**-वि० चार सूत मिलाकर बड़ा हुआ (ढोरा) । -**तनियाँ**-**श्री०** दे० 'चौतनी'; मँगिया, चोली । -**तनी**-**श्री०** बचोंकी चौगोशी टोपी । -**तरफा**-अ० चारों ओर, चौगिर्द । -**तरा**-पु० चार नारोंवाला एक बाजा; दे० क्रममें । -**तरा**-वि० चार तर्कोंवाला । -**तरी**-**श्री०** एक लहरियादार कपड़ा जो चार तह करके बिछाया जाता है ।

-**ताल**-पु० सूदयका एक ताल; ढोलमे गाया जानेवाला एक गीत । -**ताला**-वि० जिसमें चार ताल हों । -**तुका**-वि० चार तुकोंवाला । पु० वह छंद जिसके चारों चरणोंमें अन्त्यानुप्रास हो । -**दस्त**-वि० चार दस्तोंवाला; मखर । पु० चार दस्तोंवाला हाथी । -**दंसी**-**श्री०** अश्वकपन । -**दस**-**श्री०** किसी पक्षकी चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी । -**दह**-वि० दस और चार । पु० चौदहकी संख्या, २४ । -**द्वैत**-पु० दो हाथियोंकी लड़ाई ।

-**दौधा**-वि० (लिक) जिसमें चार दाँव हों या लंग सके । -**हाथिया**-**श्री०** दे० 'चौदानी' । -**हानी**-**श्री०** वह बाली जिसमें चार मोती या जकाक टिकियाँ लगी हों ।

-**चारी**-**खी** चारखाना । -**चई**-**खी** एक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें १५ मात्राएँ होती हैं । -**चट**-**विं** चारों ओरसे लुका हुआ तह, तबाह । -**चरख**-**विं** जिसके कहीं पहुँचते ही तबाही, बरबादी आ जाय, सत्त्वानासी । -**चटहारी**-**विं** दे० 'चौपडा' । -**पडा**-**विं** चौपट करनेवाला, बिगाड़ । -**पड़**-**पुं** चौसर । -**पस**-**खी** कपड़ेको तह । **पुं** दे० क्रममें । -**पसिया**-**खी** एक साग; एक बास; चार पसोंकी पोथी, पुष्पिका; कशीदेको चार पसियोंवाली बूटी । -**पष**-**पुं** चौराहा, चतुष्पथ; दे० 'चौपत' । -**पड़**-**पुं** चौपाया, चतुष्पद । -**परा**-**पुं** चार चरणोंवाला एक विशेष छद । -**पख**-**पुं** दे० 'चौपत' । -**पहरा**-**विं** चार पहरका; चार पहरके अंतरसे होनेवाला । -**पहल**-**विं** चार पहलों या पहलुओंवाला । -**पहला**-**विं** दे० 'चौपहल' । **पुं** एक तरहकी हलकी, लुली पालकी, चौपाल । -**पहलू**, -**पहिलू**-**विं** दे० 'चौपहल' । -**पहिवा**-**विं** चार पहियोंवाला । **खी** चार पहियोंवाली गाड़ी । -**पाई**-**खी** १६-१६ मात्राओंके चार चरणोंका एक प्रसिद्ध छंद । -**पाइ**-**पुं** दे० 'चौपाल' । -**पाया**-**पुं** चार पैरोंवाला पशु, जानवर, ढोर, गाय-भैस आदि । -**पार**-**पुं** दे० 'चौपाल' । -**पाख**-**पुं** लुली या छापी हुई मंडपाकार बैठक जहाँ गाँवके लोग बैठकर पचायत आदि करते हैं; एक तरहकी पालकी । -**पुरा**-**पुं** वह कुर्मी जिसपर चार पुर एक साथ चल सकें । -**पैया**-**पुं** एक मात्रिक छंद । -**फला**-**विं** चार फलोंवाला (चाकू) । -**फेर**-**अं** चारों ओर । -**बंदी**-**खी** नुस्ला, कम लबा अंगरखा जिसके नीचे ऊपरके दोनों पहलोंमें चार-चार बंद होते हैं; (गेदरे) चारों छुमोंकी मालबंदी । -**बंसा**-**पुं** एक छंद । -**बगला**-**पुं** कुत्ते, अंगरखे आदिकी बगलके नीचे और कल्लेके ऊपरका भाग । **विं** चोतरका । -**बगली**-**खी** चौबंदी । -**बरवी**-**खी** चार बैलोंकी गाड़ी । -**बरसी**-**खी** चौधे बरस होनेवाला उत्सव या श्राद्ध । -**बाछा**-**पुं** मुगल शासनमें प्रचलित एक प्रकारका कर । -**बारा**-**पुं** बालाखानेका कमरा जिसमें चारों ओर लिफ्टियाँ या दरवाजे हैं; चौपाल । -**बीस**-**विं** बीस और चार । **पुं** चौबीसकी संख्या, २४ । -**बोला**-**पुं** ८+७ (या १६+१४) मात्राओंका एक छंद । -**मंजिला**-**विं** चार मंजिलों या लट्टीवाला (मकान) । -**माझा**-**पुं** अखरोट । -**मसिया**-**विं** चौमामेंमें होनेवाला । **पुं** चौमामेबर काम करनेके लिए रखा गया हलबाह । -**महला**-**विं** चौमंजिला । -**मारी**-**पुं** चौराहा । -**मास**-**पुं** दे० 'चौमासा' । -**मासा**-**पुं** बरसातके चार महीने, असाढ़से कुआरतकका काल; वह खेत जो चौमामेंमें केवल जोतकर छेड़ दिया जाय, बीया न जाय; वर्षाकालसुखी कविता । -**मासी**-**खी** चौमामेंमें गाया जानेवाला एक गाना । -**मुख**-**अं** चारों ओर । -**मुखा**-**विं** चार मुँहोंवाला; जिसके मुँह चारों ओर हों । -**दिका**, -**दुकी**-**पुं** वह दिया जिसमें चारों ओर चार बत्तियाँ लगायी जायें । -**मुखी**-**विं** चारों ओर होनेवाला, जानेवाला (-प्रतिभा, -विकास) । -**मुहानी**-**खी** चौराहा, चतुष्पथ । -

मैंबा-**पुं** वह जगह जहाँ चार ढोंके या सरहदें मिलती हों । -**मेला**-**पुं** पुराने समयका एक दंड जिसमें ईशनीय व्यक्तिके हाथ-पाँव पीठ या पेटके बल लिटाकर चार कूटियोंसे बाँध दिये जाते थे (करना) । **विं** चार मेलोंवाला । -**रंग**-**विं** तलवारके आधातसे कई डकड़ोंमें कटा हुआ । **पुं** तलवारका एक हाथ । (**मुं**-**०** **डगना**, -**०** **करना**, -**०** **काटना** -**किनी** चीजपर तलवारका एक बार ऊपरसे नीचे और दूसरा दायेंसे बायें इस तेजीसे करना कि वह चार डकड़ें होकर गिर जाय, वही सफाईने काटना । -**०** **हवाई** -**करना** -**किनी** चीजको हवामें उछालकर गिरनेमें पड़ने हो चार डकड़ें कर देना । -**रंगा**-**विं** चार रंगोंवाला । -**रंगिवा**-**पुं** मालखमकी एक कसरत । -**रस**-**विं** समतल, चौपहल । **पुं** ठठेरोंका एक ओजार; एक बण-हत्त । -**रसा**-**विं** जिसमें चार रस, स्वाद हों । **पुं** चार रूपयेभरका बाट । [-**रसाई**-**खी** चौरस करनेका काम या उजरत । -**रसी**-**खी** चौरस करनेका औजार; बोंहका एक गहना ।] -**रस्ता**-**पुं** चौराहा । -**राहा**-**पुं** वह जगह जहाँ चार रास्ते मिलें या दो सड़कें एक दूसरीकी कटें, चौडहानी । -**लका**-**विं** चार लकड़ियोंवाला (हार इ०) । -**सर**-**पुं** गोटीं और पासोंके सहारे बिसातपर सेला जानेवाला एक खेल, चौपड़; इस खेलकी बिसात; * चार लकड़ियोंका हार । * **विं** चार लकड़ियोंवाला, चौलका । -**सिवा**-**विं** चार सींगोंवाला । **पुं** दे० 'चौमिहा' । -**सिहा**-**पुं** वह जगह जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ मिलती हों । -**हट**, -**हट्ट**-**पुं** दे० 'चौहट्टा' । -**हट्ट**-**पुं** चौक; चौमुहानी । -**हटा**-**पुं** वह स्थान जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ मिलती हों । -**हरी**-**खी** किसी स्थान या मकान आदिकी चारो सीमाएँ; एक अवस्थे । -**हलका**-**पुं** कालीनकी एक तरहकी नुनाबत ।

चौआ-**पुं** चार अंगुलकी माप; चार उँगलियोंका समूह; ताशका चार बूटियोंवाला पत्ता, चौका; चौपाया ।

चौआना-**अं** **क्रि०** चकित होना । † **सं** **क्रि०** तानेकी हाथकी चार उँगलियोंपर छपेटना (जनेक चौआना) ।

चौक-**पुं** चौखंडा सहन, आँगन; चौमुहानी; नगरका मुख्य बाजार; चौखंडा वस्तुतः पूजन आदिमें आटे आदिकी रेखाओंसे बनाया जानेवाला क्षेत्र; चरका समूह; चौमरकी बिसात; चार दाँतोंकी पक्ति; चार बन्दुएँ । -**चौदनी**-**खी** आदपदके कृष्ण पक्षमें पड़नेवाला एक त्योहार । -**निकाम**-**पुं** चौकमें बैठनेवाले दुकानदारोंमें किया जानेवाला कर ।

चौका-**पुं** पत्थरकी चौकोर मिल्ग; भूमिका चौखंडा डकड़ा; रोटी बेलनेका चक्का; चार चीजोंका समूह; आगेके चार दाँतोंकी पक्ति; हिंदूके खाना पकाने या खानेका, साधारणतः मेहोंसे घिरा हुआ, चौकोर स्थान; मिट्टी या गोबरका लेप; आटे आदिकी लकीरों-न बना हुआ चौकोर चित्र; चौकोर ईंट; सीमफूल; ताशका वह पत्ता जिसपर चार बूटियाँ हों; चार सींगोंवाला एक बंगली बकरा; फर्शपर बिछानेके काम आनेवाला एक तरहका कपड़ा । -**बरतन**-**पुं** गरीबोंमें चौका लगायेका और बरतन माँजनेका काम

(करना, होना) । **सु०-झगाना**-किमी स्थानको गोशर या मिछीमे छीपना; चौपट, समानास करना ।

चौकिया सुहागा-पु० चौकीर दुकानोंमें कड़ा हुआ सुहागा जो दवाके रूपमें खारा जाता है ।

चौकी-छो० लकड़ी या पथरका चार पायोंवाला, चौकीर आसन, छोटा तख्त; चार बूटियोंवाला ताशका पत्ता; वह स्थान जहाँ पुलिस या सेनाके चौकीमें सिपाही रखा, निगरानी आदिके लिए रखे जायें; चुंगी बमूल करनेवालोंके रहनेका स्थान; पहरा (बिडाना, बैठना), रखवाली; पचाव, टिकाना; गलेमें पहननेकी चौकीर पट्टी; चकला; मंदिरमें मंडपके खंभोंके बीचका स्थान; किमी देवी-देवताको चढावी जानेवाली भेट; जादू; तेलके कोल्लूमें लगनेवाली एक लकड़ी । -**हार**-पु० पहरा देनेवाला; गाँवमें पहरा देनेके लिए नियुक्त पुलिस कार्यचारी, गोश्त । [-**हारी**-छो० चौकीदारका काम, रखवाली; चौकीदार रखनेके लिए लिया जानेवाला कर ।] **मु०-भरना**-पहरोको लय टो पूरी करना; किमी देवी-देवता, पार-पैगंबर आदिकी मंड-पूजाकी मनौनी पूरी करना ।

चौझ-वि० [सं०] शुद्ध, माफ; मनोहा; दक्ष; तीक्ष्ण ।

चौरान-पु० [का०] गेंद-बल्लेका खेल जो पोलोमे मिलता-जुलता है; चौरान खेलनेका कला जो आगेकी ओर कुछ झुका हुआ होता है; नगाडा बजानेकी लकड़ी; * चौरान खेलनेका मैदान । -**गाह**-पु० चौरान खेलनेका मैदान । -**बाज**-पु० चौरान खेलनेवाला ।

चौरानी-छो० दुक्केकी निगाही ।

चौघर-पु० दे० 'चौभर' ।

चौचंद-पु० बदनामी, अपवाद, झगडा-कमाल-‘बलि बलि बानन-धीर बहत चौचंद मचावत’-रत्नाकर; रसकेलि, कोडा, कौतुक-‘कै रस चौचर चौचंदमें छलियापर छैल नलच्छन छाय’-बन० ।

चौचंदहाई-वि० छो० जो दूसरोंकी निंदा, बदनामी करती फिरे ।

चौज-पु० दे० 'चोत्र' ।

चौह-वि० [सं०] कलगीदार; चूडा-संघी । पु० चूडाकर्म । -**कर्म(र)**-पु० चूडाकर्म, मुहन ।

चौहा-वि० लंबाईके दोनों छोरोंके बीच विस्तृत, चकला, फास । [छो० 'चौडी']-**हूँ**-छो० चौहापन, लंबाईके दोनों छोरोंके बीचका विस्तार, पाट । -**चकला**-वि० फैला हुआ, विस्तृत । पु० अनाज रखनेका गड्ढा ।

चौघान-छो० दे० 'चौडाई' ।

चौघाना-सं० कि० चौहा करना ।

चौडोल-पु० पालकी । दे० 'चौके साह' ।

चौतरा-पु० चतुरा-‘आई मुलाय कै चौतरा ऊपर छोटो मई सुख सौरम सानी’-रघुनाथ ।

चौथ-छो० पक्षकी चौथी तिथि, चतुर्थी; चौथाई; राजस्वका चतुर्थांश जो मराठे दूसरे रान्योंमें करके रूपमें लिया करते थे । * वि० चौथा । -**पच**-पु० दे० 'चौथापन' । -**का चौथ**-माह-छुट्टा चतुर्थांश चंद्रमा जिसके देखनेसे मूठा कलंक लगना माना जाता है ।

चौथा-वि० जो क्रममें तीसके बाद, चारके स्थानपर हो ।

पु० ग्राहकमें करनेवाले वा कृत व्यक्तिकी विषयकी वषये-कपड़े आदि देनेकी रस्म । -**पच**-पु० बुढ़ापा, जीपनकी चौथी अवस्था ।

चौथाई-छो० चौथा नाम, चतुर्थांश ।

चौथि-छो० दे० 'चौथ' ।

चौथिया-पु० चौथे दिन जानेवाला वनर; वह जो चौथाईका हकारार हो; अनाजकी एक नाप ।

चौथी-वि० छो० दे० 'चौथा' । छो० बिवाहके चौथे दिन दूधे-दुलहिनके कंनन खोलनेकी रीति; बिवाहके चौथे दिन (या कुछ अधिक दिन बाद भी) कन्याके घरसे मिठाइयाँ, कपड़े आदि भेजे जानेकी रस्म; बंटाईकी वह रीति जिसमें जमींदार चौथाई और असामी तीन चौथाई फसल देता है । **मु०-खेलना**-ब्याहके चौथे दिन दूधे-दुलहिनका एक-दूसरेपर वा दूधे और उसके छोटे भाईयाँका समुदाय जाकर सालियों आदिपर भेजे आदि फैकना । -**छुटना**-दूधे-दुलहिनके कंनन खुलना ।

चौथराई-छो० चौथरीका पद वा काम ।

चौथरात-छो० दे० 'चौथराना' ।

चौथराना-पु० चौथाई; चौथरीका पुरस्कार ।

चौथरानी-छो० चौथरीकी पत्नी ।

चौथरी-पु० किसी जाति वा समाजका मुखिया सरदार; जाटों, कुर्मियों आदिकी पदवी ।

चौप-पु० दे० 'चौपे' ।

चौपट-पु० वह पथर जिसमें लगी कीलपर कुम्हारका चाक टिका रहता है ।

चौपतना; चौपरतना-सं० कि० तह लगाना ।

चौबचा-पु० दे० 'चवबचा' ।

चौबा-पु० दे० 'चौबे' ।

चौबाहन-छो० चौबेकी स्त्री ।

चौबे-पु० माझणोंकी एक उपजाति, चतुर्थेदी ।

चौभर-पु० चौहा, चपडा दाँत जो आहारकी कुचलनेका काम करता है ।

चौर-पु० [सं०] चोर; एक प्राचीन कवि । -**कर्म(र)**-पु० चोरी ।

चौरड, चौरठा-पु० दे० 'चौरेठा' ।

चौरसाना-सं० कि० चौरम करना ।

चौरा-पु० चतुरा; चौघाव; वह चतुरा वा बेदी जिसपर किमी देवी, सती वा त्रेन आदिकी स्थापना हुई हो; कोथिया; मफेद पूछवाला बैल ।

चौराई-छो० भोजके नियंत्रणकी एक रीति जिसमें नार्ई न्योते जानेवाले कुटुंबके द्वारपर हन्दीमें रंगे चाबल रख-आता है; दे० 'चौकाई'; एक चिडिया ।

चौरानवे, **चौरानवे**-वि० नब्बे और चार । पु० चौरानवेकी संख्या, ९५ ।

चौराचक-पु० [सं०] एक संकर राग ।

चौरासी-वि० अस्सी और चार । पु० चौरासीकी संख्या, ८४; चौरासी लाख योगि; एक तरहकी टॉप; पुँदुराओंका गुच्छा ।

चौरी-छो० छोटा चौरा; एक पेड़ जिसकी छालसे रंग बनाया जाता है; छोटी कंकरी; [सं०] चौर स्त्री ।

चोरैरा-पु० चावलका आटा; पानी मिलाकर पीसा हुआ चावल ।

चौरै-पु० [सं०] चोरी; चोरका काम; छलछद्म; छिपाव ।
-रत-पु० गुप्त मैथुन । -कृति-छी० चोरीकी भावतः; चोरीसे जीविका चलाना ।

चौरैक-पु० [सं०] चोरी ।

चौर-वि० [सं०] चूल-चूषा-संबंधी । पु० मुंडन, चूडाकर्म ।
चौराई-छी० एक पत्रशाक ।

चौलुबन-पु० [सं०] चुलुक ऋषिका वंशज ।

चौवन-वि० पचास और चार । पु० चौवनकी संख्या, ५४ ।

चौवा-पु० दे० 'चौआ' ।

चौवालीस-वि० चालीस और चार । पु० चौवालीसकी संख्या, ५४ ।

चौस-पु० चार बार जोता हुआ खेत ।

चौहण-पु० दे० 'चौमण' ।

चौहरा-वि० जिसमें चार तैं हो; चौगुना ।

चौहतर-वि० सत्तर और चार । पु० ७४की संख्या ।

चौहान-पु० अमृतकुलवाले क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

चौहूँ-अ० चारों ओर ।

च्यवन-पु० [सं०] चूना, टपकना, सरण; च्युति; एक ऋषि जिनके विषयमें प्रसिद्ध है कि अभिनीकुमारोंने उन्हें च्यवनप्राश खिलाकर बूढ़ेसे बचाना बना दिया । -प्राश-पु० आयुर्वेदका एक अवलेह जो श्वास-कास, क्षय आदि

रोगोंकी प्रसिद्ध औषध है और अभिनीकुमारोंका वतावा, बनाया माना जाता है ।

च्यारु काई बोक-पु० कारमोसाकी श्रीनी राष्ट्रीय सरकार के अधिपति (जन्म १८८७) । पहले वे चीनकी पूर्वकर्ता राष्ट्रीय सरकारके राष्ट्रपति थे ।

च्यारन-पु० [सं०] चुआना, टपकाना; निकाल देना ।

च्युत-वि० [सं०] चुआ, हटा हुआ, करित; गिरा हुआ; अपनी जगहमें हटा वा हटावा हुआ, स्थानभ्रष्ट; चूका हुआ (कर्तव्यच्युत) । -मध्यम-पु० एक विकृत स्वर ।

-बद्ध-पु० एक विकृत स्वर । -संस्कारिता, -संस्कृति-छी० कान्यका एक दीप, व्याकरण-विकृत पद-योजना ।

च्युताभा (खड्ग)-वि० [सं०] बुरे विचारोंवाला, कुटिल ।

च्युताधिकार-वि० [मं०] वरसे हटाया हुआ ।

च्युति-छी० [सं०] च्युत होना, चूना, हटना; अपने स्थानसे भ्रष्ट होना, स्थलिन होना; चूका; छोप (वर्णच्युति); भग; गुदा ।

च्युप-पु० [सं०] झुल, चेहरा ।

च्युटा-पु० दे० 'चौटा' ।

च्युटी-छी० दे० 'चौटी' ।

च्युवा-पु० चिबवा ।

च्युत-पु० [सं०] आमका पेड़ ।

च्योस-पु० [सं०] चुआ, टपकना, गिरना ।

च्योना-पु० घरिया ।

छ

छ-देवनगरी वर्णमालामें चवर्गका दूसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान तानु ।

छंग-पु० मोर, अंक ।

छंगा, छंग-वि० जिनके किसी पजेमें छ उँगलियाँ हों ।

छंगुनिया-छी० दे० 'छगुनी' ।

छंगुलिया, छंगुली-छी० दे० 'छगुनी' ।

छंडीरी-छी० एक पकवान जो छँछमें बनाया जाता है ।

छंडना-अ० कि० छँटा जाना; चुना जाना; कटना; दूर होना; अलग होना; विखरना; छीन होना; साफ किया जाना । मु० -(टा) हुआ-बालाक, भूत । -(टे) छँटे किरना-दूर-दूर रहना ।

छंडनी-छी० छँटनेकी क्रिया; (कर्मचारी आदिको) हटानेका काम ।

छंडबाना-स० कि० छँटनेका काम करना ।

छँटा-वि० जिनके पिछले पैर छाने गये हों (बोझ) ।

छँटाई-छी० छँटनेका काम; छँटनेकी उन्नत; (कर्मचारी आदिको) अलग करनेका काम ।

छँटाना-स० कि० दे० 'छँटवाना' ।

छँटाव-पु० छँटाई ।

छँटख-वि० छँटा हुआ, भूत; छँटकर अलग किया हुआ ।

छँटमा-स० कि० छीटना, त्यागना; छँटना । अ० कि० के करना ।

छँटाना-स० कि० छीटना, दूसरेके हाथसे बलपूर्वक ले लेना ।

छँ, हुआ-वि० छोटा हुआ । पु० देवता आदिके नामपर छोटा हुआ पशु; सरकी छूट ।

छंद:-'छंद'का समासगत रूप । -प्रबंध-पु० छंद-रचना । -शास्त्र-पु० छंद-रचना-संबंधी शास्त्र । -स्तुभ-पु० अरुण; वे देवता जिनकी वेदोंमें स्तुति की गयी है; स्तुति करनेवाला ।

छंद-पु० [सं०] अभिलाष; नियंत्रण, वरयना; रुचि; अभिप्राय; विश; शकल-सुरत; प्रमत्ता । वि० मनोरम; गुप्त । -ज-पु० वैदिक देवता । -पातन-पु० ठग, धोँग करनेवाला ।

छंद-पु० कलापर पहननेका एक गहना; दे० 'छंद (मु)' । -प्रबंध-पु० छंद-रचना । -बंद-पु० छल-कपट, धोखा ।

छंद-पु० उपाय-'छंदकी मृगाली छुटिकेकी नंकी नाहि'-वन० ।

छंद (स्)-पु० [सं०] इच्छा; अभिप्राय; स्पेच्छाचार; धोखा, छल; वेद; मात्रा, कण, गति आदिके नियमोंसे युक्त वाक्य; छंदःशास्त्र ।

छंदक-वि० छली । पु० [सं०] रक्षक; वायुदेव; गौतम बुद्धका सारथि । -पासन-पु० ठग, धोँग करनेवाला ।

छंदन-पु० [सं०] प्रमत्त करना, रिसाना ।

छंदकृत-पु० [सं०] वेद; वेदमंत्र ।

छंदानुवृत्ति-छी० [सं०] रिसाना, प्रसन्न करना ।

छंदित-वि० [सं०] प्रसन्न; संतुष्ट ।

छंदी-छी० कलापर पहननेका एक गहना । वि० छलिया ।

छंदो—‘छंदस्’का समासगत रूप । —**ग**—पु० सामगायक ।
छोच—पु० छंदमें वर्ण, मात्राके घट बढ़ जाने, यति आदि-
 के बहर-उपर हो जानेका दोष—अधिकांश, म्यूनाका,
 यतिभंग और मात्राच्युतिमें कोई एक । —**बहु**—वि० पक्-
 रूपमें रचित, श्लोकबहु । —**अंश**—पु० छंदमें वर्ण, मात्रा
 आदिके नियमका पूर्ण पालन न होना ।

छंदोम—पु० [सं०] दादशाह यागके अर्गत एक कृत्य ।

छः—वि० पाँच और एक । पु० छकी संख्या, ६ ।

छ—पु० [सं०] काटना; खंड; पर । वि० निर्मल; अस्थिर ।

छ—वि० पाँच और एक । पु० छकी संख्या, ६ । —**कदिया**—

छी—यह पालकी जिसके दोनोंमें छ कदर लगे; वह
 अद्वयान जो छ जगह फँसे और छ जगह कसी जाय ।

—**कड़ी**—छी० छका समूह; छकड़िया पालकी; चारपाईकी
 वह बुनावट जिसमें छतलीके छ केरे एक साथ जुने जायें;

एक तरफका चोसर जिसमें पासेका केवल छका बाँव गृहीत
 होता है । वि० छ अवयवोंवाला । —**कुर**—पु० फलका

वह धँवारा जिसमें जमींदारकी छडा भाग मिले । —**बढ़**—

पु० अमर, घटपड़, महरा । —**बुँदा**—पु० एक जहरीला
 कीका जिसकी पीठपर छ बुँदे होते हैं । —**माथी**—छी० छ

माथेका बाट । —**मासी**—छी० मृत्पुके छ महीने बाद
 होनेवाला आढ़ । —**माही**—वि० छ महीनेपर होनेवाला

(इन्तहान आदि) । —**मुख**—पु० कार्तिकेय ।

छरै—छी० क्षयरोग । वि० क्षय होनेवाला; क्षय रोगवाला ।

छक—छी० नशा; तृप्ति; लालमा—‘मेरे छक है गुननकी
 सुनौ खोलिके कान’—चाचा हितदेशाबन ।

छकड़ा—पु० संगड़, बैलगाड़ी । वि० ढीले ढाँचेवाला । **मु०**

—**छदाना**—इतना देना कि गाथीका बोझ हो जाय, बहुत
 अधिक सामान दे देना ।

छकना—अ० कि० अवाना, तृप्त होना; नशेमें चूर, बरमस्त
 होना; हंरान होना; चकड़ना ।

छकाछक—वि० तृप्त, परिपूर्ण; नशेमें चूर ।

छकाना—म० कि० भगैट खिलाना, तृप्त करना; खुद नशा
 पिलाकर बरमस्त कर देना; हंरान करना, चकड़में
 डालना ।

छकिहारी—छी० छक ले जानेवाली ।

छकीला—वि० छका हुआ, मस्त ।

छकौंहीं—वि०, छी० छका देनेवाली; सतुष्ट; मस्त कर देने-
 वाली—‘प्यार सी छकौं हीं दरकीं हीं मृदुबानि-बस’—पन० ।

छका—पु० छ अवयवोंवाली वस्तु; छका समूह; जुएके चार
 दाँवोंमेंसे एक; ताशका पत्ता जिसपर छ बुटियाँ हों; पासेका

वह बल जिसमें छ बिंदियाँ हों; उस बलके चित्त पड़नेसे
 पड़नेवाला दाँव; जुआ; दोश । —**पंजा**—पु० दाँव-पेच, छल-
 कपट । **मु०**—**छटना**—हिम्मत हारना, हँरान हो जाना ।

—**पंजा भूल जाना**—उपाय न चलना, अकल्पा काम न
 करना । —**(के)छुवाना**—हौसला पस्त कर देना, परेशान

कर देना ।

छग—पु० [सं०] छाग, बकरा [छी० ‘छगी’] ।

छगबा—पु० बकरा ।

छगण—पु० [सं०] कंश ।

छगन—पु० छोटे बच्चोंके लिए प्यारका शब्द; नन्हा प्यारा

बच्चा । —**मगन**—पु० हँसते-खेलते बच्चे, छोटे-छोटे बच्चे ।

छगल—पु० [सं०] बकरा; वह देश जहाँ बकरे अधिक हों;
 बिधारा; अवि कवि; नीला कपड़ा ।

छगलक—पु० [सं०] बकरा ।

छगलानिका—छी० [सं०] वृक्षविशेष, अनाजी ।

छगलानी (विष्)—पु० [सं०] भंडिया ।

छगली—छी० [सं०] बकरी ।

छगुभी—छी० कानी उंगली ।

छगार—पु० संगड़, शकट ।

छछिया, छछिया—छी० छछ नापने या रखनेका बरतन;
 छछ ।

छछुंदर—पु० चूँके जातिका एक वंतु जिसकी बोलीमें ‘छू-
 छू’की ध्वनि रहती है और देखते तीव्र गंध निकलती है;
 एक आतिशबाजी; (छा०) निष्प्रयोजन इश्वर उधर चलता-
 फिरता, करता-धरता रहनेवाला व्यक्ति । **मु०**—**छोड़ना**
 —क्षणका लगाना, सुराकात करना ।

छजना—अ० कि० सजना; घोसा देना, पड़ना; ठीक मान
 पड़ना ।

छजा—पु० छतका दीवारके बाहर निकला हुआ भाग;
 बारजा; दीवारके बाहर निकली हुई पथरकी पट्टी; बैठका,

पूँपमें बचानेके लिए, आगे निकला हुआ भाग । —**(छे)-**
वार—वि० जिसका किनारा आगे निकला हो ।

छटकी—छी० छटकीका बाट । वि० छोटा, छटपट (बालक
 —बो०); ‘छटकी’मरका, दुबला-पतला (व्यक्ति) ।

छटकना—अ० कि० तेजोंके साथ पकड़ते निकल जाना,
 हाथसे सरक जाना; काबूमें निकल जाना; दूर-दूर, फटा-

फटा रहना ।

छटका—पु० सछलियाँ पकड़नेके लिए दो खेतोंके बीचकी
 मेंदपर बनाया हुआ गड्ढा ।

छटकाना—स० कि० झटका देकर बचन या पकड़ने छुड़ा
 लेना, सरकाना ।

छटना—अ० कि० दे० ‘छटना’ ।

छटपट—वि० तेज, फुरतीला; बचल । छी० छटपटानेकी
 क्रिया ।

छटपटाना—अ० कि० व्याकुल होना, तड़पना; (किसी
 वस्तुके लिए) आतुर होना ।

छटपटी—छी० आकुलता, बेचैनी; छटपटानेका भाव ।

छटाँक, छटाक—छी० एक सेरका सोलहवाँ भाग ।

छटा—छी० [सं०] शोभा, छवि; दीप्ति, शलक; विजली;
 परंपरा, अविच्छिन्न श्रृंखला; लड़ी—‘मौलिनकी बिपुरी छुन

छटे’—राय०; समूह, ढेर । —**फल**—पु० सुपारीका पेट
 और फल । —**भा**—छी० विजली; विजलीकी चमक;

मुखकी कांति ।

छटेक—वि० छटा हुआ; चालाक ।

छट्टी—छी० दे० ‘छट्टी’ ।

छड—छी० पक्षी छड़ी तिथि; पक्षी; णं कार्तिक शुद्ध पक्षीको
 होनेवाला एक व्रत ।

छडवाँ—वि० दे० ‘छडा’ ।

छडाँ, छडा—वि० जो क्रममें पाँचके बाद, छके स्थानपर हो ।

मु० छडेछमासे—कभी-कभी, बहुत अरतेके बाद ।

छडी-वि० स्त्री० 'छडा'का स्त्री० रूप (जैसे छडी चीज, छडी ओत इ०)। स्त्री० जन्मके छठे दिनका आन, पूजन, उत्सव; छडीके दिन पूजा जानेवाली एक देवी।
-बराही-स्त्री० छडी और बराहीके उत्सव, जन्मोत्सव।
झुं-का वृक्ष निकलना-करी मेहनत पचना; बचपनका खायो-पिया निकलना। -**का वृक्ष वाद आना**-काठिन मेहनत पचना; इतना कष्ट मिलना कि बचपनका सुख याद आ जाय। -**का राजा-पुत्र** तैनी अमीर; (व्यं०) जन्मका दरिद्र। -**में न पचना-प्रकृतिमें न होना**; भावमें न होना।

छब-पु०, स्त्री० लोहे, पीतल बॉस आदिका पतला डंडा जो खिचकी-जंगले आदिमें लगाया जाता है।

छबना-स० कि० (चावल आदि) छोटना; * छोड़ना।

छबा-पु० चोरीके तारका बना चूड़ी जैसा गहना जो पॉसमें पहना जाया है; मोतिपोंकी लक्ष्मियोंका पुच्छा। वि० अकेला, तनहा।

छबिया-पु० दरवाना, छडीबरदार-**'दूर** खड़े प्रभुके छडिया'-**सुदामाचरित्र**।

छबियाल-पु० एक तरहका भाला।

छबी-स्त्री० बॉस, बैत, लकड़ी आदिका बना पतला, छोटा डंडा; पीरीके मजारपर चढानेकी डंडी; गोखरू, चुटकी आदिकी लोधी टेंकाई। वि० स्त्री० अकेला, एकाकिनी।

-छटोइ-अ० अकेले, तनहा। -**द्वार-वि०** जो छबी लिये हो; लोधी धारियोंवाला (कपडा)। पु० छडीबरदार। -**बरद्वार-पु०** चौबदार, भुसवरदार।

छत-स्त्री० मकानकी पक्की पाटन या बालाखानेका पक्का, लुला फर्श; वह चादर जो छतके नीचे बाँधी जाय, छतगीर। * पु० क्षत, घाव। * अ० अछत, (किस्की) होने, रहते हुए। -**चीर-पु०** छतके नीचे बाँधनेकी चादर या चाँनी। -**गीरी-स्त्री०** छतगीर। -**खोटेन-पु०** एक तरहकी कमरत। -**बंत्त-वि०** घायल, क्षतवाला।

छतना-पु० पत्ते जोड़कर बनाया हुआ छाता; मधु-मक्खलीका छाता। अ० कि० रहना।

छतनार, छतनारा†-वि० (पेड़-पौधा) जिसकी डालियाँ, टहनियाँ दूरतक फैली हों; फैला हुआ।

छतविया विच-पु० एक तरहकी जहरीली लुमी।

छतरी-स्त्री० कोहेकी तौलियोंपर कपडा चढाकर वर्षा या धूपमें बचनेके लिए बनाया हुआ आच्छादन जो फैलानेपर गोल चेंदोवामा बन जाता है, छाता; पत्तोंका छाता; छोटा छाता; चंदीवा; ईंके पत्तों, सरपन आदिकी बनी हुई छत्राकार मेंबरे; किमीकी समाधि या चिताके स्थानपर बना हुआ मंडप; कदूरतोंके बैठनेका ठहर; कोलीके ऊपरका ठहर; बगली आदिके कमानीदार ढाँचेके ऊपरका आच्छादन; कुकुरमुत्ता, छत्रक। -**द्वार-वि०** जिसपर छतरी हो।

छता-पु० छाता।

छत-स्त्री० दे० 'छति'।

छतिया-स्त्री० दे० 'छाती'।

छतियाना-स० कि० छातीमें लगाना, सटाना (बोझ, बंदूकका कुदा इ०)।

छतिवन-पु० एक पेड़।

छतीसा-वि० चारका, मकार।

छतीसी-वि०, स्त्री० ढोंग, नखरे करनेमें चतुर, छल-छंदमें पट (स्त्री); छिनाल।

छतुरी-स्त्री० दे० 'छतरी'।

छतोना-पु० छतरी; कुकुरमुत्ता।

छत्ता-पु० मधुमक्षियों, भिंकों आदिका घर; चकत्ता; छतरी; छाया हुई गली या बाजार; कमलका बीज-कोष; छत्रसाल।

छत्तीस-वि० तीस और छ। पु० ३६ की संख्या।

छत्तीसा-पु० नारै। वि० दे० 'छत्तीसा'।

छत्तीसी-वि० स्त्री० दे० 'छत्तीसी'।

छत्र-पु० [स०] छतरी; राजाओंके ऊपर लगायी जानेवाली राजचिह्नरूप छतरी; छत्रक, कुकुरमुत्ता; छतरिया विष; गुरुका दोष गोपन। -**चक्र-पु०** उद्योतिषका एक चक्र जिसमें शुभ-अशुभ फल जाने जा सकते हैं। -**च्छात्रा-स्त्री०** छात्रकी छाया, आश्रय। -**धर, धार-पु०** छत्रधारी, राजा; राजाके ऊपर छत्र लगा रखनेवाला सेवक। -**धारी (रिन्)-पु०** दे० 'छत्रधर'। वि० छत्र धारण करनेवाला। -**पति-पु०** राजा; महाराज शिवाजीकी पत्नी। -**पत्र-पु०** स्थलपत्र; भोजपत्रका पत्र; छतिवन; मानकच्चा। -**बंत्त-पु०** [ह०] नीच कुलोत्पन्न क्षत्रिय। -**भंग-पु०** राज्यका नाश; मृत्यु; स्वाधीनताका नाश; वैधर्म्य; उद्योतिषका एक योग जिसका फल राजनाश माना जाता है।

छत्रक-पु० [स०] छतरी; कुकुरमुत्ता; लुमी; शहदका छाता, शिवमंदिर; मछरन नामकी विधि।

छत्रवती-स्त्री० [म०] अहिच्छत्रा।

छत्रा-पु० [स०] गेदनी हतराल।

छत्रा-स्त्री० [स०] कुकुरमुत्ता; धनिया; लोया।

छत्राक-पु० [स०] कुकुरमुत्ता, छत्रक।

छत्राकी-स्त्री० [म०] कुकुरमुत्ता।

छत्रिक-पु० [स०] दे० 'छत्रधर'।

छत्रिका-स्त्री० [स०] छत्रक।

छत्री-स्त्री० महलकी बुजों (राम०)।

छत्री (रिन्)-वि० [स०] छत्रयुक्त, जो छाता लगाये हो। पु० नारै; * दे० 'क्षत्रिय'।

छत्र-पु० [स०] घर; कुज।

छत्रक, छत्रम-पु० छत्र, बहाना।

छद्र, छद्रन-पु० [स०] आवरण, ढकनेवाली चीज; खाल; छाल; गिलाफ, खोल; पत्ता; पख। -**पत्र-पु०** भोजपत्र; तेजपत्ता।

छदाम-पु० दुकड़ा, पैसेका चौथा भाग।

छद्रि-स्त्री० [स०] छत; गादीका आच्छादन।

छद्र (द्र)-पु० [स०] छल, कपट; अपना असली रूप छिपाना; बदला हुआ भेस; भ्रमनाली छाजन, छत। -**तापस-पु०** बना हुआ तपस्वी, कपटी साधु। -**बैसा-पु०** बनावदी भेस। -**बैसी (रिन्)-वि०** जो भेस बढे हो।

छद्रिका-स्त्री० [स०] रुड़की।

छद्मी (रिन्)-वि० [स०] छत्रवैश्वधारी; कपटी।

छद्र-पु० क्षण, पक्ष; पुण्यकाल; मानद। -**छद्रि-स्त्री०**

विजली, क्षणप्रमा । -**दा-खी** रात्रि; विजली । -**जंगु-**वि० क्षणमगुर । -**अर-**अ० एक क्षण, जरा देर ।

छन-खी जलते हुए तवे आदिपर पानी, कचकड़ाते धी-तेल आदिमें आटेकी कोई आदिके पड़नेसे निकलनेवाली आवाज; बुँधक आदिके बजनेकी आवाज, झनकार । -**छम-खी** 'छन-छन'की आवाज ।

छनक-पु० एक क्षण । अ० क्षणभर । खी० 'छन-छन'की आवाज; झनकार; मरक; कुर्ती । -**मनक-**खी० गहनीकी झनकार; सजधज ।

छनकना-अ० कि० 'छन-छन' करना; 'छन-छन' करने उब जाना (जलते तवे आदिपर पानीकी बुँदका); झनकार होना; भड़कना ।

छनकाना-स० कि० पानीको औंचपर रखकर उसका कुछ अंश जलाना; गरम किये हुए बरतनमें पानी डालना; भड़काना ।

छनछनाना-अ० कि० 'छन-छन'की आवाज होना; झनकार होना; † लगना, जलन मालूम होना, छरछराना । स० कि० 'छन-छन' शब्द उत्पन्न करना ।

छनन-मनन-पु० कचकड़ाते धी-तेल आदिमें किसी गीली चीजके पड़नेसे होनेवाली आवाज । **सु०-होना-पूरी**, पकवान बनना ।

छनना-अ० कि० छाना जाना, छाननेकी क्रिया होना; छेदे-छेदे छिद्रोंमें होकर निकलना; छिद जाना; मादक पदार्थका मेहन किया जाना; कड़ाहीके खोलने धी, तेल आदिमें मिला होकर पूरी आदिका निकलना । पु० छाननेका माधन, महीन कपड़ेका डुकड़ा जिससे दूध, पानी आदि छाने जायँ ।

छनवाना-म० कि० छाननेका काम करना ।

छनाका-पु० 'छन'की आवाज; झनकार ।

छनाना-स० कि० छनवाना; पिलाना (आँग, शराब इ०) ।

छनिक-वि० दे० 'क्षणिक' । अ० छनभर । पु० एक क्षण ।

छन्न-पु० दे० 'छन' -खी० । वि० [स०] छिपा हुआ; उका हुआ; छुप । -**मति-**वि० जटमति, अहमक ।

छन्ना-पु० दे० 'छनना' ।

छप-खी पानीमें किसी चीजके जोरसे गिरने या किसी गाढ़ी चीज (कीचड़, दही इ०)के किसी चीजपर गिरनेसे होनेवाली आवाज । -**छप-खी** 'छप'की आवाज बार-बार होना । अ० 'छप-छप' आवाजके साथ ।

छपक-खी० तलवार आदिमें कटनेकी आवाज । -**छपक-**खी० 'छपक-छपक'की आवाज । अ० 'छपक-छपक'की आवाजके साथ ।

छपकना-अ० कि० थोड़े पानीमें हाथ पैर मारना ।

छपका-पु० मिरमें पड़नेका एक गहना; खुर-पका रोग; पतली छड़ी; कबूतर फँसनेका जाल; पानीका छीटा; पानीमें हाथ-पैर मारना; † ठप्पेका छापा हुआ बड़ा फूल आदि; बकासा धब्बा; दे० 'छपाका' ।

छपछपाना-अ० कि० पानीपर हाथ-पैर मारना । स० कि० पानीपर छड़ी आदि मारकर 'छप-छप'की आवाज निकालना ।

छपन-पु० नाश, संहार । -**हार-**वि० नाश करनेवाला ।

छपना-अ० कि० छापा जाना, छपनेका काम होना; टीका लगना ।

छपर-'छप्पर'का सामान्यत रूप । -**खट-**खोट-खी० वह परतग त्रिमप मसहरी लगानेके लिए डंडे लगे हों । -**बंद-**पु० दे० 'छप्परबंद' । -**बंदी-खी** छप्पर छानेका काम या उजरत ।

छपरछपर-वि० तरावर ।

छपरिया-खी० छोटा छप्पर, छपरी ।

छपरी-खी० होपड़ी ।

छपवाना-स० कि० 'छपाना' ।

छपवैया-पु० छापनेवाला; छपानेवाला ।

छपा-खी० रात; हल्दी । -**कर-**नाथ-पु० चंद्रमा; कपूर ।

छपाई-खी० छापनेका काम या उसकी उजरत ।

छपाका-पु० पानीपर किसी चीजके गिरनेकी आवाज; पानी, दही, कीचड़ आदिके किसी चीजपर पड़नेकी आवाज ।

छिपाना-स० कि० छापनेका काम करना; छापाने- (रेस)में पुस्तक आदि सुदृढित कराना; टीका लगवाना; * छिपाना । *अ० कि० लगा रहना ।

छिपाव-पु० छिपाव, दुराव ।

छप्पन-वि० पचास और छ । पु० छप्पनकी संख्या, ५६ ।

छप्पब-खी छ चरपोखला एक माविक छद ।

छप्पर-पु० कूस, पताई आदिकी छाजन; तलेया । -**बंद-**पु० छप्पर छानेवाला । वि० जो (गाँवमें) बस गया हो, आबाद (पाहीका उलटा-'छप्परबंद अमासी') । -**बंदी-खी** छप्पर छानेका काम या उजरत । **सु०-पर कूस न होना-बहुत** निर्धन होता । -**फाड़कर देना-बिना** कुछ श्रम किये, धर बैठे देना ।

छब-खी दे० 'छवि' । -**बहली-खी** देखकी सुदूर गठन, गाथ और बड़ा-खलकी सुदरता ।

छबबा-पु० टोकरा, हाबा ।

छबि-खी० शोभा, सुदरता । -**घर-**भार, -**बंस्त-**वि० सुंदर ।

छबीला-वि० छबिला, सुंदर, मजौला ।

छबीस-वि० बीस और छ । पु० छबीसकी संख्या, २६ ।

छबीसी-खी फलोंकी गिनतीका सैकड़ा जो छबीस गाढ़ी या १३० का होता है ।

छम-पु० [म०] बिना मॉ-नापका बच्चा, अनाथ ।

छम-खी बुँधक बजने या मेह पड़नेकी आवाज । † वि० योग्य, समर्थ । † पु० सामर्थ्य, शक्ति । -**छम-खी** बुँधक, पायल आदिकी बार-बार होनेवाली आवाज; जोरका मेह पड़नेकी आवाज, छमाछम । अ० 'छमछम' शब्दके साथ ।

छमक-खी० ठसक, चालू-डालकी बनावट (खियोंकी) ।

छमकना-अ० गहने बजाना; बुँधक आदि बजाकर आवाज करना; ठप्क दिखाना ।

छमछमाना-अ० कि० 'छम-छम' शब्द करना या 'छम-छम' करते हुए चलना ।

छमना-स० कि० क्षमा करना ।

उमवाता, उमाना*-स० कि० क्षमा करना ।

उमा*-खी० दे० 'क्षमा' । -एव-पु० क्षमा करनेकी क्रिया । -वान-वि० सहनशील, क्षमा करनेवाला ।

उमाई*-खी० उमा ।

उमाछम-खी० 'छम-छम'की आवाज । अ० 'छम-छम' शब्दके साथ ।

छप*-पु० दे० 'क्षप' ।

छपना*-अ० कि० क्षप, नास होना; छा जाना ।

छर-खी० छरी या कंकड़ियोंके गिरनेकी आवाज । * वि० नाशवान् । * पु० दे० 'छल' । -छंई*-पु० दे० 'छलछद' । -छंई*-वि० धूर्त, कपटी । -छर-खी० छरी या कंकड़ियोंके लगातार गिरनेकी आवाज । अ० 'सट-सट', 'छर-छर' आवाजके साथ ।

छरकना-अ० कि० बिलरना, छिटकना; दे० 'छलकना' ।

छरकीला*-वि० लंघा और सुडौल, छहरीला ।

छरछराना-अ० कि० धावपर नमक या खार लगनेसे पीड़ा होना; कणों आदिका 'छर-छर' करते हुए गिरना ।

छरछराहट-खी० धावपर नमक या खार लगनेसे होनेवाली पीड़ा; कणोंके एक साथ 'छर-छर' करते हुए गिरनेकी क्रिया ।

छरद*-खी० छरिं, बमन-'जबमें अक्रूर ले गये मधुपुरी भई विरह तन बाय छरद'-सूर ।

छरना-अ० कि० चूना, क्षण; नुचुवाना; नष्ट होना; क्षीण होना; छटना, अलग होना; * छला जाना; भूत-प्रेतकी देखकर मोहित, पीड़ित होना । * स० कि० छलना, ठगना; मोहना; भूत-प्रेतका बनावटी रूप दिखाकर मोहना, आलस्य करना ।

छरपुरी-खी० दे० 'छरीला'; वह पुडिया जिसमें विवाहमें काम आनेवाले सुगंधित द्रव्य रले जाते हैं ।

छरभार*-पु० प्रथमभार, कामका बोझ, संसट ।

छरहरा-वि० हकहरे बदनका, जो मोटा न हो; नुस्त, फुरतीला ।

छरा*-पु० छबा; लकी; रस्सी; नीची, हज़ारबद ।

छराब*-पु० दे० 'छावा' ।

छरिदा-वि० दे० 'छरीदा' ।

छरिया*-पु० दे० 'छडिया' ।

छरिला-पु० दे० 'छरीला' ।

छरी*-खी० दे० 'छडी' । वि० दे० 'छली' । -दार-वि०, पु० दे० 'छरीदार' ।

छरीदा-वि० अकेला, तनहा; जिसके पास कोई गठरी-मुठरी न हो ।

छरीला-पु० एक परीपत्रीकी पैया जो मसालेमें पकता और दवाके भी काम आता है, शैलेय, शिलागुष्प ।

छरीरा†-पु० खरोच ।

छर†-पु० [सं०] कै, बमन ।

छरं-पु० [सं०] कै करना, बमन; अस्वस्थता; नीमका पेड़; मैनफल ।

छरिं(स)-खी० [सं०] कै, बमन; मतली; बेरा; मकान ।

छरिका-खी० [सं०] बमन; विष्णुक्रांता लता । -घ-पु० नशानिध, बकाहन । वि० छरिनाशक । -रिपु-पु० छोटी

इलायची ।

छरी-पु० कंकरी; धुँधधुँध, गहनोंमें भरी जानेवाली कंकड़ियाँ; मोटे, छोटेके टुकड़े जो बंदूकमें बारूदके साथ भरे जाते हैं । मु० -पिलाणा-बंदूकमें छरी भरना ।

छरीं-खी० छोटा छरी ।

छरु-पु० [सं०] अपने असली रूपकी छिपाना, यथार्थका गोपन; दूसरेकी ठगने, धोखा देनेवाली बात; ब्याज, बहाना; कपट, सठता, धूर्तता; दुश्मनपर युद्ध-नियमके विरुद्ध बार करना; शास्त्रार्थमें प्रतिपक्षीके शब्दों, वाक्योंका उनके अभिप्रायमें मित्र अर्थ करना । -कपट-पु० मकर-फरेब, धोखेबाजी । -छंद-पु० छल-कपट । -छरी(विद्)-वि० छल-कपट करनेवाला, धोखेबाज । -छात-पु० [हि०] छलछिद्र । -छाया-खी० कपटजाल, माया । -छिद्र-पु० दे० 'छल-कपट' । -छेव*-पु० दे० 'छल-छिद्र' ।

छल-पु० पानीके छलककर गिरनेकी आवाज । मु० -पिलाणा-राह-चलतेकी जल पिलाणा ।

छलक-खी० छलकनेका भाव । वि०, पु० [सं०] छल करनेवाला ।

छलकन*-खी० छलनेका भाव ।

छलकना-अ० कि० मुँहकत भरे हुए जल या दूधसे तरल पदार्थका बिलनेके कारण बरतनके बाहर गिरना; उछलना; उमड़ना ।

छलकाना-अ० कि० बरतनमें भरे हुए जल आदिकी बिलाकर गिराना ।

छलछलाना-अ० कि० औँलोंका भर आना, जादू हो जाना ।

छलन-पु० [सं०] छलना, ठगना, कपट ।

छलना-अ० कि० धोखा देना, ठगना । खी० [सं०] छल, धोखा, बचन ।

छलनी-खी० छाननेका आला, शीना कपडा या चमड़े, लोहे, पीतल आदिकी जाली मदी हुई खंजरीकी शकलकी चीज जिससे आटा चालने हैं । मु० -कर देना-छेदोंमें भर देना, जर्जर कर देना । -में डालकर छाजमें उबाना-(किमीके) थोड़ेसे दोषकी लेकर बहुत ब्यादा बढनाम करना, तिलका ताड़ बनाना । -हो जाना-छेदोंमें भर जाना, फट, बिथकर बेकार हो जाना, जर्जर हो जाना ।

छलमलना*-अ० कि० छलकना-'बंसीधुनि धनपोर रूप-जल छलमल'-धन० ।

छलहावा*-वि० छली । [खी० 'छलहाई']

छलहा-खी० चौकरी, कुदान, उछाल ।

छला*-पु० दे० 'छला'; † काति, दीप्ति ।

छलाई*-खी० कपटभाव, धूर्तता ।

छलाना-स० कि० ठगवाना, धोखा दिवाना ।

छलछा-पु० भूत-प्रेतकी छाया जो हट अदृश्य हो जाय; भूत-प्रेत; दलदल, दमशान आदिमें रातको दिखाई देनेवाली रौशनी जो कुछ-कुछ क्षणपर दृश्य-अदृश्य होती रहती है, अगिवा-बैताल; धोखा, जादू । मु० -खेलना-छलावे या अगिवा बैतालका यहाँसे वहाँ दौड़ते दिखाई देना । -हो जाना-अदृश्य हो जाना ।

छत्तक-पु० [सं०] नायक या नृत्यका एक भेद ।

छत्तक-वि० [सं०] छत्ता, ठगा हुआ ।

छत्तक-पु० [सं०] दे० 'छत्तक' ।

छत्तिया-वि० छत्ती ।

छत्ती (छिद्)-वि० [सं०] छल करनेवाला, धोखेबाज ।

छत्तीरी-छी० नावूनोके भीतर छत्ता पकने या पक जानेकी बीमारी ।

छत्ता-पु० बिना नगनकाशीकी, चौंटी-सोने आदिका तार मोझकर बनायी हुई अँगूठी, कुंडली, हलका; जैनेमें देशम या कलावत्तुके तारसे बनाया हुआ गोल बेरा। कच्ची दीवार-की हल्लाके लिए उमसे सटकर बनायी हुई पक्की दीवार; कोई मंजलाकार वस्तु; कच्ची । - (छे)दार-वि० जिसमें छत्ते हों, गिरहदार, हलकेदार, बूँधवाले (वाल) । - कल गूल-छत्तेका दाग जो प्रेमी प्रेयसीके छत्तेको गरम करके लगा लेता है ।

छत्ति-छी० [सं०] छाल; लता; संगति ।

छत्ती-छी० कच्ची दीवारके छप्पार खड़ी की हुई पक्की दीवार; [सं०] दे० 'छत्तक' ।

छक्का-पु० दे० 'छोना' ।

छक्का-पु० छोना, शावक; एबी-छूटे छवानि लौ केस विराजत तार बडे तमतार इने-से-रसविलास ।

छक्काई-छी० छानेका काम; छानेकी उन्नत ।

छक्काना-म० कि० छानेका काम करना ।

छक्कि-छी० [सं०] चर्म; चर्मका वर्ण; शोभा, सुन्दरता; चमक, काति; प्रकाशकी किरण ।

छक्किया-पु० छानेका काम करनेवाला ।

छहदू-छी० बिन्दनेकी क्रिया ।

छहरना-ज० कि० बिलरना ।

छहराना-ज० कि० छहरना । सं० कि० बिलरना, छिटकाना; छार करना, भस्म करना ।

छहरीला-वि० छितरानेवाला; लम्बा और सुझोल, चुस्त, छहरा ।

छहरील-छी० छाया ।

छही-छी० वह चिथिया, कासकर कत्तर, जो दूसरी चिथियोंकी बहकाकर अपने अङ्गुपर लाये ।

छी-छी० छाया ।

छींगना-सं० कि० काटना, छंटना (हाल इ०) ।

छींगुरा-वि० (बह आदमी) जिसके किसी पजेमें छ अंगुलियाँ हों ।

छीङ-छी० मट्टा, मही ।

छीट-छी० छोटनेकी क्रिया वा ढंग; कतरनेकी क्रिया वा ढंग; कतरन; मांसके छिछरे; छोटकर अल्ला की हुई बेकार चीज; अनाज छोटनेसे निकलनेवाला कना या भूसी; कै, वमन ।

छोटन-छी० छोटनेसे निकली हुई बेकार चीज; कतरन ।

छोटना-सं० कि० काटना, कतरना; चुनना, बिछाना; अनाजको शाक करनेके लिए कूटना, फटकना; कसकर छोटा करना; निकालना, दूर करना (साधनका मैल, दवाका कक छोटना); किसी चीजके झान, पाँखिलका मयचन करना (झान, कानून, बंथितारें छोटना) ।

छोबिहीटी-छी० रिहाईका परवाना ।

छोबना-सं० कि० दे० 'छोबना' ।

छोद्-छी० छाननेकी रस्ती; छाना; नोई ।

छोदना-सं० कि० बोधना, कमना; (चरनेके छिछे) जान-बरोके अगले या पिछले पैर एक साथ बोधना; हाथोंसे पैर पकड़कर बैठ जाना ।

छोवस-वि० [सं०] छंद-संबंधी; वेद-संबंधी, वैदिक; वेदक्ष, वेदपाठी । पु० वेदपाठी, ब्राह्मण, श्रोत्रिय ।

छोवसीध-वि० [सं०] छंदःशास्त्रका शास्त्र ।

छोव्वा-पु० एकवान; हिम्मा; परीसा ।

छोवोव-पु० [सं०] सामवेदका एक ब्राह्मण; उक्त ब्राह्मणकी उपनिषद् जो मुख्य तम उपनिषदोंमेंसे है ।

छोव्व-छी० दे० 'छाव' ।

छोववा-पु० छोना, पशुशावक; छोटा बालक ।

छोव-छी० छोटनेसे निकाला हुआ कन भादि; निकम्मी चीज; कूबा-करकाट ।

छोव्व-छी० छाया; आशय-स्थान-देखि दुपहरी जैठकी छोई बाहल छोव्व-वि० छाया हुई अगष्ट; प्रतिबिम्ब, पर-छाई ।-गीर-पु० छत्र; आवरना । पु० -न छूने देना-पाय न आने देना । -बखाना-पास न जाना ।

छोही-छी० दे० 'छाँह' ।

छा-छी० [सं०] बँकना, छिपाना । पु० शिष्ट; पशुशावक; प्रारा; बिह ।

छाहीं-छी० राख; साह ।

छक-छी० छकनेका भाव, तृप्ति; नशा, मस्ती; वह खाना जो हलवाई, चरवाहों आदिके खानेके छिप दीपहरमें भेजा जाता है; माठ ।

छकना-ज० कि० दे० 'छकना' ।

छाग-पु० [सं०] बकरा; बकरीका दूध; पुरोडास; मेघराशि । वि० बकरा सपथी । -ओजी (छिद्)-वि० बकरेका मांस खानेवाला । पु० भेजिया । -मुख-पु० कार्तिकेय; कार्तिकेयका एक अनुचर । -दूध-बाहल-पु० अक्षि ।

छागण-पु० [सं०] कडेकी आग ।

छागमच-पु० [सं०] कार्तिकेयका छठा मुख ।

छागल-छी० पाँचमें पहननेका एक गहना; चमड़ेकी छोटी मसक । पु० [सं०] बकरा; एक मछली । वि० छाग-सपथी ।

छागिक, छागी-छी० [सं०] बकरी ।

छाङ-छी० मट्टा, मही ।

छाङट-वि०, पु० दे० 'छासठ' ।

छाङ-पु० साँक या बॉलके छिलकोंका बना पात्र जिससे अनाज फटकते हैं, सूप; छानना; बम्बीके आगेका छन्ने जैसा माग । -खी दाढ़ी-खूब लंबी-चौड़ी दाढ़ी । पु० - (जौ)मेह बरसना-मूतछपार बर्षा होना ।

छावन-छी० आच्छादन, कपडा-छावन भोजन प्रीतियों दीने साधु बुद्धि-कवीर; छप्पर छानेका काम या ढग; एक तरहका कीड़, अवरस ।

छावना-ज० कि० फवना, शोभा देना; सुशोभित होना ।

छावना-पु० छावना; † छावन ।

छावित-वि० शोभित ।

छाव-वि० [सं०] छिछ, कटा हुआ; दुबला । * पु० छत्र,

छात्री-आश्रय ।

छात्रा-पुं० छात्री; बही छात्री; ताबके पत्नी या बॉलके छिल्लोकी बनी बही छात्री; छात्रा; चौकी छात्री ।

छात्री-स्त्री० बच्चा पेटके ऊपरका, पेट और गरदनके बीचका भाग, बन्धस्थल, सीना; सन्त; हिम्मत, बौद्धिक । सु०

-का काँटा-पुं० हमेशा खटकने या दुःख देनेवाली चीज ।

-कूटना-दे० 'छाती पीटना' । -के किबाब खुलना-

छाती फटना; गहरी चीख निकलना । -छलनी होना-

हेश, आघात सहते-सहते ऊब जाना, कलेजा पक जाना ।

-जलना-दुःखते मनका स्थिति, संतप्त होना; बाह्यते मनमें जलन होना । -जुबाना-दे० 'छाती ठंडी करना' ;

'छाती ठंडी होना' । -ठंडी करना-किसी वस्तुमें कर रखनेवाली कायना, बदलेकी भावना आदिको तुमकर क्षांतिलाय करना, जोषी जलन मिटाना । -ठंडी होना-जोषी जलन मिटना । -टीककर कड़वा-कोई कठिन कार्य करनेकी प्रविष्टा करना, विश्वास टिकाना । -देना-बच्चेके मुँहमें खन देना, बच्चेको दूध पिलाना । -घड़कना-किसी मय, आशंकासे हृदयका जोरसे छल्लना । -निकाळकर फलना-सीना तानकर, अकबकर चलना । -पकना-

अजिज आना, परेशान हो जाना; सन्तोंमें बाध हो जाना । -पत्थरकी करना-कोई भारी दुःख, आघात सहनेके लिए टिक कड़ा करना । -परका जम-हर बही साब लगा रहने या घेरे रहनेवाला आदमी । -परका पथर-बह चीज जिसकी चिंता सदा सिरपर सवार रहे ।

-पर कोटो या मूँग हलना-किसीकी विला-विलाकर उसे जलाने-कुटानेवाली बात करना; लौत लाना । -पर पथर का काटकर ले जाना-मरनेपर साथ ले जाना ।

-पर परथर या सिल जर लेना-दे० 'छाती पत्थरकी करना' । -पर बाल होना-जँवे होसलेवाला, भरोसा करने लायक होना । -पर सौंप कोटना-हृदयकी गहरी मैदना होना; ईर्ष्यासे हृदय जल उठना । -पीटना-शोकसे म्याकुल होकर या ईर्ष्याके अतिरेकमें छातीपर बार-बार हाथ पटकना; मातम मनाना । -फटना-दुःखका असर हो जाना, हृदय विदीर्ण होना; डहने जलना । -फुलाना-

गर्व करना, इतराना । -से लगाना-आश्रयन करना, गले लगाना । -से लगा रखना-पामने हटने न देना ।

छात्र-पुं० [सं०] शिष्य, विद्यार्थी; अनेवासी; एक तरहकी मधुमक्खी, सरपा; उस मक्खी द्वारा संचित मधु । -गंध-

पुं० बह विद्यार्थी जिते इलोकका पहला चरणभर याद हो, मंदबुद्धि शिष्य । -गुर्वान-पुं० ताजा मक्खन । -कुपि-

स्त्री० विद्यार्थीकी विद्याभ्यासमें सहायताय मिलनेवाला जन, वजीफा । -व्यसक-पुं० दुष्ट या मंदबुद्धि छात्र ।

छात्रक-पुं० [सं०] छात्र; छात्र नामकी मक्खी द्वारा संचित मधु ।

छात्रालय, छात्रावास-पुं० [सं०] किसी स्कूल, कालेजके अंतर्गत बह इमारत जिसमें विद्यार्थी रहे जायें, 'होस्टेल' ।

छात्र-पुं० [सं०] छात्र; छात्र ।

छात्रक-वि०, पुं० [सं०] छात्रेवाला, आच्छादन करनेवाला ।

छात्र-पुं० [सं०] छात्रा; आच्छादन करना; आच्छादन; छिपाना; पर्या; नीठा कोरीया ।

छात्रित-वि० [सं०] छिपा, ढका हुआ; आच्छादित ।

छात्रिणी-स्त्री० [सं०] चम्पा; खाल ।

छात्री (वि०)-वि० [सं०] डकनेवाला; आच्छादन करनेवाला ।

छात्रिक-वि० [सं०] छात्रेसाथी, कपटी । पुं० ठग ।

छात्र-स्त्री० छात्रेकी क्रिया या भाव (रस अर्थमें केवल छात्र-विनाशन, छात्र-वीन जैसे कुछ समस्त पर्यायों ही व्यक्त होता है); वह रस्मी जिसने किसी जानकरकी छात्रे, छात्रे; † छात्र । -कटक-विनाशन, बीन-स्त्री० लोभ,

जॉच-पकाल; तहकीक ।

छात्रा-सं० कि० आटे आदिका मोटा बंश छलनीसे निकालना; दूध, पानी आदिको साफ करनेके लिए बारीक कपड़ेके पार निकालना; मिली-जुली चीजोंको अलग करना,

बिलगाना; रूँदना, खोजना; जॉच-पकाल करना; मसा पीना; धीमें तलना; दे० 'छाँदना'; * भेदना, पार करना ।

छात्र-वि० नब्बे और छ । पुं० छात्रेकी संख्या, ९६ ।

छात्रा-जं० कि० ऊपर फैलना, पसरना; घसना, टिकना ।

सं० कि० डकना, आच्छादित करना; मकानपर छात्र वा खपरछ डालना; आच्छादन करनेवाली चीजकी फैलाना;

* बिछाना; छाया करना; आश्रय देना ।

छात्रि-स्त्री० छात्र ।

छात्री-स्त्री० दे० 'छात्र'; गौनकी कटिघों आदिका डकन (जिससे ईंखे रस्मी नौद ढँकने हैं) । * वि० छात्र, छिपी हुई-

'छात्री बात उवाचै छै'-घन० ।

छात्रे-छात्रे-जं० चुपकेसे, छिपे-छिपे ।

छात्र-स्त्री० किसी वस्तुका चिह्न, निशान; सुहरका निशान; सुहरवाली अंगूठी; शल, चक्र आदिके चिह्न जो कैमल अपने अंगोंको दगवाकर लगवाते हैं; विभिन्न कारखानोंमें बनी वस्तुओंपर पहचानके लिए छपा हुआ शब्द या चित्र, मार्का; अक्षर, प्रभाव (रङ्गना, डालना) ।

छात्रा-सं० कि० ठप्पा, सुहर, अक्षर आदिका चिह्न स्याही या रागके योगमें कागज आदिपर उतारना; जोड़े हुए अक्षरों, चक्र आदिकी प्रतिकृति कागज आदिपर उतारना, पुस्तक आदि मुद्रित करना; छापरकर प्रकाशित करना; टीका लगाना ।

छात्रा-पुं० सौचा, ठप्पा; सुहर; छपा हुआ चिह्न या अक्षर; शंख, चक्र आदिके दागे हुए चिह्न, मुद्रा; छाप, मार्का; हल्दी या रेपनसे दीवार आदिपर लगाया जानेवाला पत्रिका चिह्न, छापेकी कल; वह हमला जो दुश्मनपर अज्ञानक, बहुत तेजीसे किया जाय, यकायक दूट पड़ना; धावा (मारना) । -छात्रा-पुं० वह जगह जहाँ छापेका काम हो, प्रेस । -आर-वि० छाया मारनेवाला, छाया आरकर दुश्मनोंको परेशान करनेवाला (सैनिक, दस्ता) ।

- (रे)की कल-छपाईकी मशीन, प्रेस ।

छात्र-वि० छात्र, दुबला-पतला, क्षीण ।

छात्रोदरी-वि० स्त्री० छोटे पेड़ाकी, कुशोदरी ।

छात्रक-पुं० जिनोंका एक पहनावा ।

छात्रा-पुं० [सं०] चंद्रमा ।

छात्रा-स्त्री० [सं०] प्रकाशके अवरोधसे उत्पन्न हल्का अंधारा, छाँव, साया; प्रकाशका अवरोध करनेवाली वस्तुकी

परछाई: वह स्थान जहाँ किसी चीजकी छाया पड़ती हो; वह स्थान जहाँ घुंघु न पहुँचती हो; प्रतिविम्ब, अन्तः; तम्रप वस्तु, अनुकूलि; साधय; अंधेरा, कृति; वेदनेका रंग; तीरथ; रक्षा, आश्रय; चित्रका अपेक्षाकृत कम प्रकाशवाला भाग; मृत-मेलका प्रभाव, छाया (परीकी छाया); एक रागिनी। दुर्गाई दुर्गकी पत्नी, संज्ञा। -कर-पुं० किसीके पीछे छतरी लेकर चलनेवाला। -गणित-पुं० गणितकी वह क्रिया जिसमें छायाके सहारे ग्रहोंकी गति आदि जानी जा सकती है। -ग्रह-पुं० आईना। -ग्राहिणी-स्त्री० छायाके जरिये ग्रहण करनेवाली एक राक्षसी जिसने इन्द्र-मातृकी पकड़ लिया था। -विच-पुं० अन्तरी तसवीर, फोटो। -चित्रण-पुं० छाया चित्र उतारनेका काम। -समय-पुं० क्षण। -सह-पुं० वह वस्तु जिसकी छाया दूरतक फैले और बनी हो; छविबन। -दान-पुं० ग्रहबलित अरिष्टकी क्षांतिके लिए किया जानेवाला एक विशेष दान जिसमें कौंसकी कटोरीमें धी धा तेल भरकर और उसमें अपनी छाया देखकर सखिण दान करते हैं। -देह-स्त्री० अशरीरी मूर्ति। -ह्रस्व-पुं० दे० 'छाया तर्'। -इट-पुं० एक राग। -एष-पुं० आकाश-गगा। -पात्र-पुं० धी धा तेलमें भरी हुई वह कटोरी आदि जिसमें अपने शरीरकी छाया देखी जाती है (अरिष्टनिवारणाधी)। -पुरुष-पुं० हठयोग तंत्रके अनुसार आकाशीमें (साधना-विशेषमें) विद्यमान पदनेवाली इन्द्राकी छायारूप आकृति। -मान-पुं० चंद्रमा। -मित्र-पुं० छगरी। -मूर्ति-स्त्री० छायावत् मूर्ति-आकृति। -सूरावर-पुं० चंद्रमा। -यंत्र-पुं० छायाके द्वारा कालका ध्यान करानेवाला यंत्र; धूपकी। -होकर-पुं० अद्वय जगत्, श्वप्नलोक। -बाद-पुं० एक काम्यगर्ग सौली जिसमें अक्षयके प्रति प्रीतिमाना और प्राकृतिक विषयोंमें नरकाद भाषना स्पष्ट की जाती है। -सुत-पुं० शनि।

छायावचन-वि० [सं०] छाया-युक्त, मायादार।

छायावान-पुं० सायमान (अधिव्या०)।

छार-पुं० छार; छार पदार्थ; खारी नमक; राख; धूल।

छायीला-पुं० दे० 'छोटी'। सु०-सार करना-आकामियाह कर देना; नष्ट-अष्ट करना।

छाल-स्त्री० [सं०] बेकड़े धातु, शाला आदिपरका कड़ा छिलका, बल्कल; बल्कलवत्; * एक मिठाई।

छाकरी-स्त्री० एक कपड़ा जो सन धा पटसनके रेवेसे ब्रूता है।

छालना-सं० कि० छानना, साफ करना; छेद करना; घेना।

छाला-पुं० फफोला, आबला; छाल, चर्म (शृंगछाला); शरीर आदिपर उमड़ा हुआ दाग; * पत्र-तब उर्ध्व छाछा छिन्न रीन्हा-पद्यावत।

छालित-वि० भुजा हुआ, प्रकाशित।

छालिया-पुं० छायादात कनेकी कटोरी। स्त्री० दे० 'छाली'।

छाली-स्त्री० सुपारी; कड़ी हुई सुपारी।

छाई-स्त्री० छाया, परछाई; शरण, आश्रय।

छावना-सं० कि० दे० 'छाना'।

छावनी-स्त्री० छप्पर; छप्परपौष्ट मकान; वह स्थान जहाँ

सेना रखी जाय, पक्का, शिविर; वह मकान जिसमें जमींदार तहसील-बन्धुके लिए आकर ठहरे या उसके कारिंदे आदि रहें।

छावर-स्त्री० छुंडमें तैरनेवाले मछलियोंके छोटे बच्चे।

छावरा-पुं० छीना; शाबक।

छावा-पुं० बच्चा; बेटा; हाथीका पट्टा।

छासठ-वि० साठ और छ। पुं० छानठकी संख्या, ९६।

छाव-स्त्री० दे० 'छाछ'।

छिकाना-सं० कि० छीकनेमें प्रयुक्त करना।

छिगुनिया, छिमुनी-स्त्री० कानी उँगली।

छिगुलिया, छिगुली-स्त्री० दे० 'छिगुली'।

छिंक, छिंकि-स्त्री० छींटा-सोनित छिछ उछरि आका-सहिं, गज बाजिन सिर लागी-धूर, कुहारा; धार। वि० छूँछ।

छिंदुआ, छिंदुवा-पुं० छींठकर चीज बोलनेका एक तरीका।

छिंवावा-सं० कि० छीन लेना।

छिं, छि-ज० बूणा, तिरस्कार या विकारवत्त्व शब्द, छी।

छिउँका-पुं० सूरे रगका, साधारण चंदिते कुछ छोटा बीटा।

छिउँकी-स्त्री० छिउँकेकी माटा; एक उड़नेवाला कीड़ा; एक बीजार जो लकड़ी उठानेके काम आता है।

छिकना-अ० कि० रुकना, छेका जाना-रूप अलबेकी नबेली एरी तेरी आँखें ताफि छाकि भारे हुरिहाई न कहीं छिके-बन०।

छिकनी-स्त्री० एक बूटी जिसे सँसेनेसे बहुत छींके आती है, नकछिकनी।

छिकरा-पुं० एक तरहका हिरन।

छिकनी-स्त्री० [सं०] नकछिकनी बूटी।

छिकर-ए० [मं०] दे० 'छिक्कर'।

छिक्का-स्त्री० [सं०] छींक; छीका।

छिक्कर-पुं० [सं०] एक तरहका हिरन, छिकरा।

छिक्कि-स्त्री० [सं०] नकछिकनी।

छिगुनी-स्त्री० कानी उँगली, कानिक्का।

छिच्छ-स्त्री० बूँद; छींटा।

छिछवा-पुं० मासका बेकार उकड़ा जो कुत्तों-बिलियोंके खानेके लिए फेंक दिया जाता है, जानवरोंका भोजन।

छिछवा-सं० कि० घृणा करना; निंदा करना।

छिछला-वि० उथला। [स्त्री० 'छिछली']।

छिछोरपन-पुं० छिछोरेका काम, जोछापन, छुद्रता।

छिछोरा-वि० ओछा, छुद्र; कमीना। -पन-पुं० दे० 'छिछोरपन'।

छिजाना-सं० कि० छीजनेका कारण होना; छीजने देना।

छिडकना-अ० कि० बिखरना, फैलना; किसी चीजकी न्योति, खासकर चंदनीका फैलना।

छिडकाना-सं० कि० बिखेरना, फैलाना।

छिडकी-स्त्री० छींटा।

छिडनी-स्त्री० दे० 'छितनी'।

छिडवा-पुं० टोकरा, हावा।

छिड़कना-सं० कि० जल वा दूसरे द्रव द्रव्यके छंदे फैलना; बुरकना; न्योछावर करना (स्त्री०)।

छिड़कवाना-सं० कि० छिड़कनेका काम कराना।

छिद्रकाई—**खी०** छिद्रकव; छिद्रकनेकी उन्नत ।
छिद्रकाव—**पु०** छिद्रकनेकी किया; छींसे से तर करना ।
छिद्रना—**अ०** कि० छेदा जाना, आरंभ होना; थक पड़ना; झगडा, लड़ाई शुरू होना ।
छित—**वि०** [सं०] 'छात' । * सित, ह्वेत ।
छितनी—**खी०** 'सक्री फाट्टियों वा तीछियोंसे बनी छोटी टोकरी ।
छितराना—**अ०** कि० बिखरना । **सं०** कि० बिखराना, फैलाना; अलग-अलग करना ।
छिति—**खी०** दे० 'क्षिति' । —**कंठ**, —**नाथ**, —**पाल**—**पु०** राजा । —**रुह**—**पु०** रुह ।
छिलीस—**पु०** राजा ।
छिपि—**खी०** [सं०] छेदना, काटना ।
छिप्पर—**पु०** [सं०] छेदकता; शत्रु; भूत ।
छिद्रक—**पु०** [सं०] वज्र; हीरा ।
छिद्रना—**अ०** कि० छेदा जाना, छेद होना; धावक होना; कांसेने भर जाना छलनी होना (कलेजा छिद्र गया) ।
छिद्रा—**वि०** छेदीवाला; जो घना न हो; फटा हुआ ।
छिद्रवाना—**सं०** कि० दे० 'छिद्राना' ।
छिद्राना—**सं०** कि० छेदनेका काम कराना ।
छिद्रि—**खी०** [सं०] कुल्हाड़ी; कन्न; काटना ।
छिद्रि—**पु०** [सं०] कुल्हाड़ी; तलवार; अधि; रस्ती ।
छिद्र—**पु०** [सं०] छेद, सुराखा; अवकाश; गहवा; दोष, पेघ, दुषण; दुर्बलताजनक; बाधक बात; दुर्बल पक्ष (शत्रुके छिद्र) ।
—करी—**वि०** जिसके कान छिदे हों । —**दर्शी**—**वि०** दूसरेके दोष, पेघ ढूँढनेवाला । —**पिप्पली**, —**बैचेही**—**खी०** गजपिप्पली ।
छिद्रांतर—**पु०** [सं०] सरकडा; नरकुल ।
छिद्रांत—**पु०** [सं०] सरकडा ।
छिद्रात्मा—**वि०** [सं०] अपने दोष प्रकट करनेवाला ।
छिद्रानुजीवी—**वि०** [सं०] दे० 'छिद्रान्नेषी' ।
छिद्रानुसंधानी—**वि०** [सं०] दे० 'छिद्रान्नेषी' ।
छिद्रानुसारी—**वि०** [सं०] दे० 'छिद्रान्नेषी' ।
छिद्रान्नेषण—**पु०** [सं०] दूसरेके दोष, पेघ ढूँढना, सुचक्र निकालना ।
छिद्रान्नेषी—**वि०** [सं०] छिद्रान्नेषण करनेवाला ।
छिद्राफल—**पु०** [सं०] मातुफल ।
छिद्रित—**वि०** [सं०] जिसमें छेद हो, सुराखदार ।
छिद्रोदर—**पु०** [सं०] उदरका एक रोग, क्षतौदर ।
छिन—**पु०** दे० 'छन' । —**छबि**—**खी०** बिजली । —**दा**—**खी०** क्षणदा, रात । —**मंग**—**वि०** क्षणभंगुर ।
छिद्रक—**पु०** एक क्षण । **अ०** क्षणभर ।
छिनकना—**सं०** कि० साँसेके साथ नाकका मल बाहर निकालना, नाक साफ करना । † **अ०** कि० छनकना, मक्कना ।
छिनना—**अ०** कि० छोना जाना; सिल आदिका कुटना; पत्थरका छेनी आदिसे कटना ।
छिनरा—**वि०** पु० परलोपायी, लंपट; [खी० 'छिनरी']
छिनवाना—**सं०** कि० छिननेका काम कराना; पत्थर कटवाना; सिल कुटना ।

छिनावा—**सं०** कि० दे० 'छिनवाना'; * छिनना ।
छिनार, **छिनाक**—**वि०** खी० मुँहली, बदकार, कुलटा (खी०) ।
छिनाला—**पु०** छिनालपन, भ्रमिचार, बदकारी ।
छिनीछवि—**खी०** दे० 'छिनछवि' ।
छिन्न—**वि०** [सं०] कटा हुआ; काटकर अलग किया हुआ, खंडित; नष्ट किया हुआ; क्षीण; क्षांत । —**केस**—**वि०** जिसके बाल काट, मूँद दिये गये हों । —**द्वैध**—**वि०** जिसकी दुविधा, संशय मिट गया हो । —**नास**, —**नासिक**—**वि०** नकटा, जिसकी नाक कट गयी हो । —**पत्नी**—**खी०** पाठा । —**पुष्प**, —**रुह**—**पु०** निकट रुह । —**बंधन**—**वि०** जिसके बंधन टूट गये हों, मुक्त । —**भिन्न**—**वि०** कटा-फटा; नष्ट-भ्रष्ट; जो तितर-बितर हो गया हो । —**ग्रस्त**, —**ग्रस्तक**—**वि०** जिसका सिर कट गया हो । —**ग्रस्तक**, —**ग्रस्तक**—**खी०** दस महाविद्याओंके अंतर्गत एक देवी जो अपना सिर हथेलीपर धरे गलेमें निकलती रत्नाभारा पीठी हुई मानी जाती है । —**मूल**—**वि०** जबसे कटा हुआ । —**रुहा**—**खी०** गुडुची । —**वैशिका**—**खी०** पाठा । —**प्राण**—**पु०** किसी शस्त्रमें काटनेका वाह । —**क्षाम**—**पु०** एक तरहका भास-रोग । —**संशय**—**वि०** जिसका संशय मिट गया हो, निश्चितसंशय ।
छिद्रक—**वि०** [सं०] जिसका कुछ अंश कटा हो ।
छिद्रात्र—**पु०** [सं०] एक उदररोग ।
छिद्रा—**खी०** [सं०] गुडुची; भ्रमिचारिणी खी ।
छिद्रान्ना—**खी०** [सं०] गुडुची ।
छिद्रकली—**खी०** एक दैत्यनेवाला जंतु जो अमर धरती दोनोंपंर दिखाई देता और कोई-मकोड़े खाता है, रुद्र-गोषिका कानका एक गहना; (ला०) दुबली-पनली खी ।
छिपना—**अ०** कि० आध या परदेमें होना, ऐसी जगह होना जहाँ कोई देख न सके; दृश्य न होना; डूबना, अस्त होना ।
छिपारुसम—**वि०** पु० अनाधारण, किंतु अप्रसिद्ध गुणी, पंडित; वह बदमाश जो देखनेमें भला आदमी लगे ।
छिपे-छिपे—**अ०** छिपकर, गुप्त रूपमें ।
छिपाना—**सं०** कि० आधमें करना, ऐसी जगह या स्थितिमें रखना जहाँ कोई देख न सके; ढकना; प्रकट न करना ।
छिपाव—**पु०** छिपानेकी किया या भाव, गोपन ।
छिपी—**पु०** दे० 'छिपी'; दर्जी (बुदेज) ।
छिप्र—**वि०**, **अ०** दे० 'क्षिप्र' ।
छिबड़ा—**पु०** झाडा, बिपटे पैदेका टोकरा ।
छिबरी—**खी०** छोटा टोकरा; एक तरहकी ढोली जो रेतके मैदानोंमें काममें लायी जाती है ।
छिमा—**खी०** दे० 'क्षमा' ।
छिद्रना—**सं०** कि० छूना—'देखि जिवी, न छिद्यो घन-आनंद' ।
छिपा—**वि०** मैला, गंदा; छुलित; तुच्छ—'काम सव और छितपाळ छिनिमें छिपा'—भूषण । † **पु०** मैला, गू (बच्चोंकी बोली) । **खी०** मर्दा, विनीती चीज; लक्ष्मी ।
—उरद करना—**खी०** करना ।
छियानवे—**वि०**, **पु०** दे० 'छानवे' ।
छियालीस—**वि०** चालीस और छ । **पु०** ४६की संख्या ।
छियासी—**वि०** अस्ती और छ । **पु०** ८६की संख्या ।

छिरकना—स० कि० दे० 'छिरकना' ।

छिरना—अ० कि० दे० 'छिरकना' ।

छिरइय—पु० दे० 'छिरेडा' ।

छिरेडा—पु० एक लता जिसके पत्ते और फल दवाके काम आते हैं ।

छिलकना—स० कि० दे० 'छिष्कना' ।

छिलका—पु० फल, मूल, अंडे आदि का ऊपरी आवरण ।

छिलछिला—वि० छिलछल ।

छिलका—अ० कि० चमड़े या छिलके का कटकर अलग हो जाना या टाकसे उखल जाना ।

छिलवा—पु० (ऊखी पत्तियाँ) छीलनेवाला ।

छिलवाई—झी० छिलवानेकी मजदूरी ।

छिलवाना—स० कि० छीलनेका काम कराना ।

छिलहिंद—पु० [सं०] दे० 'छिरेडा' ।

छिलाई—झी० छीलनेका काम; छीलनेकी मजदूरी ।

छिलाना—स० कि० दे० 'छिलवाना' ।

छिलाव—पु०, **छिलावट**—झी० छीलनेकी क्रिया ।

छिलोरी—झी० छोटा छाला ।

छिहत्तर—वि० सत्तर और छ। पु० छिहत्तरकी संख्या, ७९ ।

छिहरना—अ० कि० फैलना, विखरना ।

छिहानी—झी० भरपट, ममान ।

छींक—झी० छींकनेकी क्रिया या आवाज । **मु०**—होना—अपशकुन होना ।

छींकना—अ० कि० नधुनोंमें खुजली, नूननुनाइट पैदा करनेवाली या आसक्तियामें बापक वस्तुको निकालनेके लिए भीतरकी वायुका वेग और आवाजके साथ बाहर आना ।

मु० छींकने या छींकेपर नाक कटना—छोटेसे अपराधका बहुत बड़ा दंड मिलना ।

छींका—पु० दे० 'छोका' ।

छींट—झी० बह कपड़ा जिसपर रंग बिरंगी बुटियाँ छपी हों; दे० 'छीटा'—आसन रहती ललित पय-छींट छाजत छवि नून नोरे—सूट ।

छींटना—स० कि० छिनराना, बिखेरना ।

छींटा—पु० पानी या दूसरे द्रव द्रव्यकी बुँदें जो फँकने, उछालनेमें किसी चीजपर पड़ें; छींटेका दाग; नन्हासा दाग; हलकी बर्षा; मोशर; हलका आक्षेप, व्यंग्योक्ति; हाथमें बलेकर बोये हुए बीज; इस तरहकी बोआई; मदक आदिकी एक मात्रा; दे० 'छीटा' । **मु०**—छोबना,—फँकना—आक्षेप करना; व्यंग्य करना ।—देना—भङ्ग काना, उकसाना ।

छींथा—पु० छीमी, फली ।

छींथी—झी० मटरकी छीमी ।

छी—अ० दृष्टा, तिरस्कार या धिक्कारका भाव प्रकट करता है, यू, धिक्कार । **झी०** गू, मैला (बबोंकी बोली) । **मु०**—छी करवा—दृष्टा प्रकट करना ।

छीका—पु० रस्सी, तार आदिकी बनी, होली जैसी चीज जिसमें छत आदिसे लटकाकर उसपर खाने-पीनेकी चीजें रखते हैं, सीका, सिकहरा जाया, मोहरा; झूलेका पुछ; छितनी । **मु०**—दूटना—संवोगसे विना प्रयत्न किने कोई काम हो जाना ।

छीकवा—पु० दे० 'छिछका' ।

छीकाखेद—झी० दुर्दशा, कमीशत ।

छीज—झी० छीजनेका भाव, क्षय, घटाव, हास; * काटा ।

छीजन—झी० छीजने, खराब होने इत्यादिके कारण होनेवाली कमी; दे० 'छीज' ।

छीजना—अ० कि० क्षीण होना, घटना; नष्ट होना; खराब होना; हानि होना । * स० कि० छूना—'जामंद घन रसामि पायकै बवौ जग-छीजर छीजै' ।

छीट—झी० दे० 'छींट' ।

छीटना—स० कि० दे० 'छींटना' ।

छीटा—पु० बाँसकी तीलियोंका बना टोकरा, बड़ी छितनी ।

छीतना—स० कि० बिच्छू, भिड़ आदिका डंक मारना; चोट पहुँचाना ।

छीतम्बामी—पु० एक कृष्णमत्त कवि जो बहमाचार्यके शिष्य और अष्टछापके अंगरंग माने जाते हैं ।

छीति—झी० हानि, बर्दी ।

छीतीछावा—वि० छिन्न-भिन्न ।

छीदा—वि० बहुतसे छेदोंवाला; विरल ।

छीन—वि० दे० 'छीन' । **झी०** छीननेकी क्रिया या भाव (केवल 'छीन-झपट'में व्यवहृत) ।—**झपट**—झी० दे० 'छोना झपटी' ।

छीनना—स० कि० दूसरेसे जबरदस्ती ले लेना, उचक लेना, छेद लेना; † छिन्न करना, काट देना; सिख आदि कटना ।

छीमा—स० कि० छूना, स्पर्श करना—'स्वान प्रसादहिं छी गयो कौश गयो विटारि'—व्यासजी ।

छीना-खसोट्टी, छीना-छीनी, छीना-झपटी—झी० एक-दूसरेके हाथमें छीन लेनेकी कोशिश; दूसरेके हाथसे चीज झपटकर ले लेना, लेकर चंपत होना ।

छीप—झी० छाप, दाग; मेढ़ुआँ; बह छकी जिसमें मछली फँसानेकी कंठिया बाँधी जाती है । * वि० तेज बेगवाला ।

छीपना—स० कि० कंठियामें मछलीके फँसनेपर छीपकी हाटका देकर उसे (मछलीकी) बाहर निकालना ।

छीपा—पु० एक तरहका दूधका भाँडा; थाली; छीपी ।

छीपी—पु० छींटें छापनेवाला । **झी०** धातुकी तस्ती; कपूर उजानेका लम्बा ।

छीबर—झी० छींटकी साड़ी; बेल-बूटेदार कपड़ा ।

छीमरी—झी० फली; मटरकी फली; † गाव-भंस आदिकी चूची ।

छीर—पु० दे० 'छीर' ।—**ज**—पु० दही; चंद्रमा ।—**वि**—पु० छीरसागर ।—**प**—पु० दूध पीनेवाला बच्चा ।—**फेज**—पु० दूधकी मलाई ।—**समुद्र**—सागर;—**सिंधु**—पु० दे० 'छीरसागर' ।

छीर—पु० कपड़ेका छोर; कपड़ेका फटना ।

छीकक—पु० छिलका ।

छीकवा—स० कि० उतारना; खरोचना; खुरचकर अलग करना (बास, अक्षर इ०); गले आदिमें चुननुनाइट पैदा करना ।

छीकर—पु० मोटका पानी उकेरनेके लिए कुँदके पास बना हुना बग्घा; छिछका गद्दा, तलेपा । **वि०** छिछला ।

छीव—वि० दे० 'छीव' ।
छुआली—छी० पुँचलदार अँगूठी ।
छुआना—स० कि० स्पर्श करना; सपेदी करना ।
छुआई—छी० लेवा; चर्चा; लगावा; † सपेदी करनेकी क्रिया या उसकी अवस्था ।
छुआकृत—छी० छुटछातका कथाल; अस्पष्टकी कृता ।
छुआना—स० कि० दे० 'छुटना'; सपेदी करना ।
छुईछुई—छी० कम्पावती; लज्जन्तु; बहुत ही नाजुक या नाजुकमिजाज या विचित्र आदमी; बहुत कमबोर चीज ।
छुगनू—पु० पुँचक ।
छुछा—वि० दे० 'छुछा' ।
छुछी—वि० छी० दे० 'छुछी' । छी० पतली, छोटी नली; जुलाहोंकी नरी; नाकमें पहननेका एक गहना; कीप ।
छुछई—छी० छुछी हॉरी ।
छुछुवर—पु०, छी० [सं०] दे० 'छुँवर' ।
छुछुआना—अ० कि० छुँवरकी तरह 'छु-छु' करते फिरना; बेकार भटकना ।
छुट—अ० छोड़कर, सिबाय । वि० 'छोटा'का लघु और केवल समासमें व्यवहृत रूप । —एन—पु० छोटावन, छुटाई; बचपन । —औषा—पु० छोटे दरजे, हैसियतका आदमी ।
छुटकावा—स० कि० स्वागता, छोड़ना; अलग करना; छुड़ाना ।
छुटकारा—पु० बंधनमें छूटना, रिहाई; निस्तार; छुट्टी; पुरस्त ।
छुटना—अ० कि० दे० 'छूटना' ।
छुटाई—छी० दे० 'छोटाई' ।
छुटाना—स० कि० दे० 'छुड़ाना' । अ० कि० गाय-भैसका दूध देना बंद करना; † पकड़से निकल जाना ।
छुटीली—छी० सूद या लगान जो छोड़ दिया जाय; छुड़ाने, रिहा करानेका कार्य या उसके बदले लिया जानेवाला धन; —तब छोड़ा जब घरसे छुटीलीके पैसे मंगाकर उन्हें दिये—आश्चर्या ।
छुट्टा—वि० जो बँधा न हो; अकेला, विना बाल-बच्चेका ।
छुपाना—पु० वह पान जिसका बीड़ा न लगा हो ।
छुडी—छी० छुटकारा; अवकाशकाल, पुरस्त; काम बंद रहनेका दिन, तात्काल; आवे हुएकी जानेकी अनुमति; मौजूकी । **छुड**—अमाना—अकाशका आनंद लेना ।
छुडवाना—स० कि० छोड़नेका काम कराना ।
छुडाई—छी० छोड़ने या छुड़ानेकी क्रिया; छोड़नेके बदलेमें दिया जानेवाला धन; पतनकी कुछ दूर ले जाकर ऊपर उठावना (हस्तसे उठानेवालेकी उसे उठानेमें आसानी होती है) ।
छुडाना—न० कि० पकड़ रखी हुई वस्तु, व्यक्ति को छूटनेका उपाय करना; छुटकारा दिखाना; रिहा कराना; बंधनसे निकालना; दूसरेके कब्जेसे निकालना (रेहन, लेट इ०); देवदे, हाकले आदी हुई चीजको मजबूत आदि चुकाकर ले लेना; दूर करना (दाग, मैल इ०); नौकरीसे अलग करना; दे० 'छोड़वाना' । † अ० कि० दे० 'छुटना' ।
छुडैया—पु० छुड़ानेवाला; बचानेवाला; † पतनकी कुछ दूर

ले जाकर ऊपर उठालनेका काम जिससे उठानेवाला आसानीसे उठा सके ।
छुडीली—छी० बंधन मुक्त करने, छोड़नेके लिए दिया जानेवाला धन; छुटीली ।
छुटहा; छुटिहा—वि० छुटवाला; जिसे छूत लगी हो । पु० शोरिका नमक । —अस्पताल—पु० वह अस्पताल जहाँ संक्रामक रोगोंसे पीकित रोगियोंका इलाज किया जाता है ।
छुटिहरा—पु० वह वक्ता जो अशुद्ध हो गया हो; घुरा ग्यक्ति ।
छुट—छी० दे० 'छुट' ।
छुट्ट—वि० दे० 'छुट' । —वट—पु०, —चटिका—छी० दे० 'छुट्टचटिका' ।
छुट्टावली—छी० दे० 'छुट्टचटिका' ।
छुथा—छी० मूल, छुथा ।
छुथित—वि० मूला, छुथित ।
छुनछुनाना—अ० कि० 'छुन-छुन' आवाज पैदा करना ।
छुननमुनन; छुनमुन—पु० बच्चोंकी पैजिबियाँ, कंठों आदिकी आवाज ।
छुप—पु० [सं०] छुप; स्पर्श; युद्ध; वायु । वि० चक्कर, तेज ।
छुपना—अ० कि० दे० 'छिपना' ।
छुपाना—स० कि० दे० 'छिपाना' ।
छुडक—पु० [सं०] चिपक, छुड्डी (बै०) ।
छुमित—वि० दे० 'छुमित' ।
छुमिराना—अ० कि० छुम्ब होना ।
छुरण—पु० [सं०] लेप करना, पोतना ।
छुरघार—छी० छुरेकी धार ।
छुरा—छी० [सं०] चूना । पु० [हिं०] वक्ता वाक् जो बंद नहीं किया जा सकता और मांस काटने, आक्रमण करने आदिके काम आता है; बाल-मूँहनेका औजार, उतरा । —(रे)बाड़ी—छी० छुरेकी लबाई; (रंगे आदिमें) छुरा भोंकनेकी घटनाएँ होना ।
छुरिका—छी० [सं०] छुरी ।
छुरित—वि० [सं०] लेप किया हुआ, पुता हुआ, खचित; कटा हुआ । पु० वास्तव नृत्यका एक भेद ।
छुरी—छी० [सं०] छोटा छुरा, कलमतारास बाकू । —धार—छी० हाथीदाँतका बना एक औजार । **मु०**—कटारी रहना—बैर होना, लड़ाई-झगड़ा होते रहना । —कटारी किये रहना—लड़नेको तैयार रहना । —कटारी होना—दे० 'छुरी-कटारी रहना' । —चलावना—बहुत सताना, कष्ट देना; भारी हानि करना । —तले दम लेना—अति बलेश, विपक्षिमें धैर्य धारण करना । —तेज़ करना—अपकार, उपयोजनकी तैयारी करना । —फेरना—दे० 'छुरी चलावना' ।
छुलकना—अ० कि० घोषा-घोषा करके पेशाव करना ।
छुलछुल—पु० घोषा-घोषा करके पेशाव करनेकी आवाज ।
छुलछुलाना—अ० कि० घोषा-घोषा करके पेशाव करना । स० कि० घोषा-घोषा करके पानी गिराना ।
छुलाना—स० कि० दूसरी चीजसे सताना, स्पर्श कराना ।
छुआकृत—छी० दे० 'छुआकृत' ।
छुआना—स० कि० दे० 'छुआना' ।

सुहृन्—स० कि० चुनेसे पोतना, सफेदी करना; रँगना, पोतना । अ० कि० रँगा, पोता होना ।

सुहृन्—अ० कि० छोड़ उपर्युक्त होना, स्नेहयुक्त होना; दया, अनुग्रह करना; रँगा, पोता जाना, सफेदी होना ।

स० कि० रँगवाना, पोतवाना, सफेदी कराना ।

सुहृन्—पु० कर्त्तृका एक भेद जो देवस्तानी प्रदेशोंमें होता है, विषयस्वर, सुहृन् उसका (सुहृन्) फल ।

सुहृन्—स्त्री० छोटा सुहृन् ।

सुहृन्—स्त्री० सफेद मिट्टी ।

सुहृन्—पु० बाहर निकला हुआ दरी आदिका लंबा रेखा, फुल्ला ।

सुहृन्—वि० साफी, रीता; साररहित, सोखला; जिनके पास कुछ न हो, निर्धन । **सु०**—पक्षणा—व्यर्थ जाना, निष्कल होना ।

सुहृन्—वि० स्त्री० दे० 'सुहृन्' । स्त्री० दे० 'सुहृन्' ।

सु०—पु० सूँकने, धासकर मंत्र पदकर सूँकनेकी आवाज ।

—अंतर—पु० मंत्र पदकर सूँकना; मंत्र, जादू । **सु०**

—करना—मंत्र पदकर सूँकना ।—बनना—चलता बनना, गायब होना ।—अंतर होना—तुरत दूर होना, उब जाना (पीका आदिका) ।—होना—दे० 'सु बनना' ।

सुहृन्—वि० दे० 'सुहृन्' । [स्त्री० 'सुहृन्' ।]

सुहृन्—वि० बुद्ध, अहमक (बनना, बनाना) । स्त्री० धाय ।

सुहृन्—स्त्री० छूटनेका भाव, सुटकारा; अवकाश; (कुछ करनेकी) आजादी, रोक न होना; लगान, माधुगजरी या कणकी (अंदास) माफी; बने, पड़े आदिकी वह लड़ाई जिसमें चाहे जहाँ बार किया जा सके (लड़ना); सुला, अश्लि परिहास; कर्त्तव्य कर्मके करनेमें चूक, नागा; फलङ्गवाजी; तलाक ।

—छुटाव—पु० नातागीत, विच्छेद ।

सुहृन्—अ० कि० बंधन दूर होना, सुटकारा होना; बड़ी हुई चीजका खल जाना; सदी, विपकी हुई चीजका अलग होना, निकलना; सुलना, रवाना होना (रेल आदिका); चलना; बेगमें फेंका, मारा जाना (तौर, बंदूक इ०); विमुहना, (दे) जुरा; विमुक्त होना (धर, देह इ०); दूर होना; जाता रहना (रोग, ज्वर, आदत); धारास्वमें बेगमें निकलना (पिचकारी, फुहार, आतिशबाजी); रसना, विमुहना (पानी छू); बचना, बाकी रहना; बंधे हुए पशुका निकल भागना; बंधकमें निकलना; किसी काम या चीजकी भूल जाना, चूक, प्रमाद होना; नोकरी आदिसे अलग किया जाना; चलना सकना, बंद होना (नाली, साँसे); भिट्ठा, उड़ना (राम, रंग) । **सुहृन्**—अ० आजारीके साथ, बिना किसी रोक या बंधनके ।

सुहृन्—स्त्री० छूने, छू जानेका भाव, स्पर्श; स्पर्शजनित अनुचित, स्पर्शदोष; स्पर्शसे पकता रोग दूसरेकी होना, लगना; स्पर्शसे होनेवाले रोगका विष; विगाह, जुराईकी ओर छे जानेवाला उदाहरण, प्रभाव; मजहूस आदमी या भूल-भ्रमकी छाया ।—का रोग,—की बीमारी—बह रोग जो रोगी या उसके मल-मूत्र आदिके स्पर्शसे दूसरेकी ही जाय । **सु०**—उत्तराना,—छावना—मजहूस आदमी या भूल-भ्रमकी छायाकी छाव-सूँकने दूर करना ।

सुहृन्—स० कि० किसी चीजसे सट लग जाना, किसी

चीजका हाथ या शरीरके किसी अंगसे स्पर्श करना; किसीके पास पहुँचना; दौध आदिमें (किसीकी) पकव लेना; दानके लिए स्पर्श करना (खिचड़ी, सोधा छूना); हाथ लगाकर छींच देना, थोका ही कावमें लाना; बहुत बलकी चपल लगाना; पोतना, रंग करना । अ० कि० दी वस्तुओंके बीच व्यवधानका अभाव होना, एकका दूसरीसे सट जाना ।

सुहृन्—पु० उत्तरा; बड़ा वादू, सुरा ।

सुहृन्—स्त्री० छेकनेकी क्रिया; रोक—'सुना साहि नह छेक' आदि—प० ।

सुहृन्—स० कि० घेरना; रोकना; अगह लेना; अक्षर आदि काटना, मिटाना ।

सुहृन्—पु० [सं०] पाल्क पशु; अनुप्रास अलंकारका एक भेद; मधुमक्खी, * छेद कटाव । वि० पाल्क; विदग्ध, चतुरा; नागर ।

सुहृन्—स० कि० दे० 'छेकना' ।

सुहृन्—पु० [सं०] अनुप्रास अलंकारका वह भेद जिसमें एक या अधिक वर्णोंकी आशुति एक ही बार होती है ।

सुहृन्—स्त्री० [सं०] अपहृति अलंकारका एक भेद—दूसरेकी अनुमितिका अवधार्य उक्ति द्वारा संबन्ध ।

सुहृन्, **सुहृन्**—वि० [सं०] दे० 'छेक' ।

सुहृन्—स्त्री० [सं०] अन्धार-नाशित लोकोक्ति ।

सुहृन्—स्त्री० रुकावट ।

सुहृन्—स्त्री० छेकनेकी क्रिया या भाव; उँगलीसे छू, कौंचकर या ध्वंग्य, चुटकी द्वारा किसीकी चिटावने, छिमानेकी कोशिश; चिटावने, छिमानेवाली बात; नोक-होंक; एक दूसरेपर चोटें करना; सूर निकालनेके लिए बाजे (स्वरबाज)की छूने, दबानेकी क्रिया ।—खानी,—छाव—स्त्री० छेकनेवाली बात, काम, हँसी-ठिठोली, नोक-होंक ।

सुहृन्—स० कि० हँसाने, चिटावनेके लिए उँगली आदिसे छूना, कौंचना, ध्वंग्य करना, चुटकी लेना; किसीकी छेक-जित करनेके लिए कुछ करना, कहना, छेकना करना; आरम्भ करना (काम, चर्चा); स्वर निकालनेके लिए बाजे-की छूना, दबाना ।

सुहृन्—स० कि० छेकनेकी क्रिया कराना ।

सुहृन्—वि० [सं०] छेदनकर्ता; नष्ट करनेवाला; निवारण करनेवाला (अम आदि) । पु० लकड़ी काटनेवाला ।

सुहृन्—पु० दे० 'क्षेत्र' ।

सुहृन्—पु० छोटे सुँधवाला गहरा गड्ढा, जिल, सुँधास; वह छिद जो किसी चीजके अत-पार हो गया हो; [सं०] छेदन; खंडन; नाश; कटनेका भाव; परिचायक विद्वा; अभाव; असफलता; भाजक (ग०) ।—कर—पु० लकड़ी काटनेवाला ।

सुहृन्—पु० [सं०] छेदनकर्ता; भाजक, हर (ग०) । वि० काटनेवाला ।

सुहृन्—पु० [सं०] काटना, दो टुकड़े करना; दूर, निराकरण करना, नाश करना; काटने, छटनेका अर्थ, औगार; कफ निकालनेवाली दवा; खंड; विभाजन । वि० छेदक, छेकनेवाला ।

सुहृन्—वि० काटनेवाला; नाश करनेवाला ।

छेका-स० कि० छेद, स्रस्त्र करना, बेचना; धाव करना ।
छेद-पु० छेद करनेका औजार, सूत्रा आदि ।
छेदनीय-वि० [सं०] छेदन करने योग्य ।
छेदा-पु० धुन; धुन छगनेके कारण अनाजका खोखला होना; छेद ।
छेदि-वि० [सं०] छेदनकर्ता । पु० बर्द्ध, वज्र ।
छेदित-वि० [सं०] कटा हुआ, छिन्न ।
छेदी (विद्य)-वि० [सं०] काटने वा फावनेवाला; विधा-जन करनेवाला; नष्ट करनेवाला; दूर करनेवाला ।
छेक-वि० [सं०] काटने लायक, छेदनीय ।
छेना-पु० कटे हुए दूधका पानी निचोड़ देनेपर बच रहने-वाला दोस अंश, पनीर । स० कि० ताड़, कबूतरे तने आदिकी इस निकालनेके छिद्र छिछना; काटना । * अ० कि० क्षीण होना ।
छेनी-को० पत्थर या कोई धातु काटने वा उसपर सुवाई करनेका औजार, दौकी; वह नक्षत्री जिससे अक्षम पाछी जाती है ।
छेनद-पु० [सं०] विना माँ-बापका बच्चा, अनाथ ।
छेम-पु० दे० 'छेम' । -करी-को० सफेद चीक ।
छेरा-पु० बकरा ।
छेरी-को० बकरी ।
छेक-पु० [सं०] बकरा ।
छेकी-को० दे० 'छेरी' ।
छेव-पु० बार, चोटा घाव-‘अरिनेके उर माहिं कीन्हो’
 हमि छेव है’-भूषण; काटने वा छीलनेका वाक; छेद; अतः ।
छेवच-पु० चाकपरका बरतन काटकर अलग करनेका तागा ।
छेवर्ता-स० कि० काटना; विहित करना; * फैकना; मिथाना । पु० ताकी ।
छेवनी-को० छेनी ।
छेवर, छेवर्ता-पु० छिलका, त्वचा ।
छेवर्ता-पु० पलाशका पेड़, जिसके बत्तीसे पत्तल और दोने बनाये जाते हैं ।
छेवा-पु० दे० 'छेव' ।
छेव-पु० छेव; राख; धूल; नाश, अंत; मृत्युका एक भेद । वि० संकृत; मृत्यु ।
छेवरा-पु० विरह-‘कसौ न परत कछु रसौ न परत है सखी न परत छिन छेवरा’-वन० ।
छे-वि०, पु० दे० 'छे' । * पु० क्षय, नाश ।
छेदिक-पु० [सं०] वेत ।
छेना-अ० कि० छीजना, क्षय होना ।
छेना-पु० क्षयकारी, नाश करनेवाला; छोटा बच्चा (प्यारमें) ।
छेक-पु० दे० 'छेका' । -बिकनिवाँ, -छबीछा-वि० बनाव-सिगारका शौकीन ।
छेका-पु० वह जी खूब बना-ठना रहे; बौका, रंगीला पृथ ।
छोकर, छोकरा-पु० सफेद कीकट, शमी ।
छोबा-पु० मथानी; लकड़ा ।
छोबि-को० मथानी; बड़ा बरतन; * लकड़ी ।
छोबी-को० लकड़ी ।

छो-पु० छोड़; देना; देना; गुस्ता ।
छोका-पु० जूती, चोटा ।
छोई-को० देसकी सूखी पत्ती, पतार्, छोई; निस्सार वस्तु ।
छोकवा-पु० दे० 'छोकरा' ।
छोकरी-को० दे० 'छोकरा' ।
छोकरा-पु० कबी तम्र और अलुका लकड़ा, कौड़ा; दे० 'छोकरा' । -पन-पु० बालकपन; नासमझी ।
छोकरा-को० कबी उम्र और अलुकी लकड़ी, लौबिया ।
छोटा-वि० ऊँचाई, लंबाई, चौड़ाई, उम्रमें कम, लघु; पद, प्रतिष्ठा, योग्यतामें कम; महत्त्वहीन; तुच्छ; ओछा, कमीना, छुद्र । -आदमी-पु० छोटी दैस्यतका आदमी, साधारण जन । -ई-को० छोटापन; छुद्रता ।
कचूर-पु० कपूरकचरी । -कचरा-पु० अंगिया, चोली, टोपी, कमाल, गजी जैमा कपड़ा; बलौका कपड़ा । -कुँआर, -कुँआर-पु० पीकुआरका एक भेद । -बाँव-पु० एक लता जिसकी जड़ सर्पविषकी दवा मानी जाती है । -बिछा-पु० प्रसूताका प्रसवके दसवें, बीसवें वा तीसवें दिनका स्नान (मुसल०) । -पन-पु० छोटाई; बचपन । -पाद-पु० रेशमके कीचैका एक भेद । -बका-वि० अमीर-गरीब । पु० बन्ना-बूढ़ा; बड़ा आदमी और साधारण जन । -मोटा-वि० छोटापन, साधारण । -**(रे)मियाँ** पु० अमार, बड़े आदमीका बेटा, छोटे बान् (नौकर) ।
सु-**सुँह बड़ी बात**-अपनी ईमियतमें बड़ी बात कहना । छोटे आदमीका बड़ेके दोष निकालना, निंदा करना ।
छोटिका-को० [सं०] चुटकी (ब्रजना) ।
छोटी-वि० को० 'छोटा'का को० । -**इलायची**-को० हरापन लिये सफेद और पतले छिलकेका इलायची, गुजराती इलायची । -**जाति**-को० वह जाति जिसका दरजा समाजमें नीचा माना जाता हो, नीच जाति । -**बात**-को० मामूली बात; ओटपन, छुद्रताका काम । -**माई**-को० एक ओषधि । -**सहेली**-को० एक छोटी सुंदर चिरिया । -**हाजिरी**-को० हिंदुस्तानमें रहनेवाले यूरोपियनोंका सरेरेका नाश्ता (विरा, खानसामाँ) । **सु**-**लँटीका**-छोटे करका, ठिंमना ।
छोटी (रिज)-पु० [सं०] मधुवा ।
छोफिन्दी-को० कण वा बधनमें मुक्तिकी चिट्ठी; तलक-नामा; फारिगखती ।
छोबछुटी-को० सवयत्न्या ।
छोबना-स० कि० पकड़ने निकाल देना, बधन खोखला, छुटकारा देना; न लेना; मुआफ करना; धावनेमें छूट देना; त्यागना, अलग होना; (घर, देशसे) प्रस्थान करना, विदा होना; पड़ा रहने देना; माय न लाना, न लेना; (किसी कामके छिद्र) रवाना करना, भेजना, दीक्षाना, चलाना, (किसीके) पीछे लगाना; वेगसे दौटना, निकलनेवाली चीजके फैकना, मारना, चलाना (पिचकारी, आतिशबाजी इ०); दूरगामी मशॉको चलाना (तीर, तोप, बंदूक आदि); उप-योगसे बचा रहने देना, बन्नी रखना (जुद्धन, काम, मरनेके बाद संतान, संपत्ति इ०); नीचे गिराना, कलना; न करना, करने, कहने, छिछनेमें मूखसे वा जानकर छूट

जाने देना (अक्षर, उल्लेख); करनेसे विरत होना, न करना (नौकरी, भावत); फुलझरी, पटाखा छोड़ना। **छुं छोड़-छाड़कर-छोड़कर**। (किसीपर) छोड़ना-किसीके भरोसे छोड़ना, किसीको सोपना।

छोड़वाना-सं कि० छोड़नेका काम कराना।

छोड़ना-सं कि०, अ० कि० दे० 'छुड़ाना'।

छोत-सं की० दे० 'छूत'।

छोति-सं की० स्पर्श।

छोविप-सं पु० क्षोणिप, राजा।

छोनी-सं की० क्षोणी, भूमि।

छोप-सं पु० छोपनेकी क्रिया; मोटा लेप; छोपनेके काम आनेवाली गीली मिट्टी आदि; छिपाव; आधात। -छाप-सं पु० दीवारकी मरम्मत, टूट-कूट भरना।

छोपना-सं कि० किसी चीजकी छुगरीका लेप करना; दीवारपर पलस्तर करने, उसका गदा आदि भरनेके लिए गिलावा लगाना; दमोचना, भर दवाना; ढकना; मत्थे मड़ना।

छोपा-सं पु० पालके कौनोंपर बैधी हुई रस्तिवों जिनसे वह ऊपर चढ़ाया जाता है।

छोपाई-सं की० छोपनेकी क्रिया, भाव या वज्रत।

छोम-सं पु० दे० 'क्षोम'; नदी आदिका उमड़ना।

छोमना-सं अ० कि० धुम्भ होना; चंचल, उडिझ होना।

छोमित-सं वि० दे० 'क्षोमित'।

छोम-सं वि० चिकना; मुलायम।

छोर-सं पु० मिरा, नोक; कौना; सीमा।

छोरटी-सं की० लकड़ी, छेकरी।

छोरण-सं पु० [सं०] छोड़ना, परित्याग।

छोरना-सं म० कि० अपहरण करना, छीनना-'चोर सके नहीं चोरक, छोरि मके नहीं भूप'-दीनदयाल, † दे० 'छोड़ना'। छोर-छोरी-सं की० छीना-झपटी; बलेवा।

छोरा-सं पु० लकड़ा, छेकरा। [की० 'छोरी'।]

छोड़ग-सं पु० [सं०] नीव।

छोड़-सं की० छिड़ने या खरोंचका चिह्न; दाँत लगनेका चिह्न।

छोड़वारी-सं की० छोटा तंबू।

छोड़ना-सं म० कि० छीलना, खुरचना; फैलाना; दिखाना।

पु० हथियारोंका मुरचा खुजानेका एक औजार।

छोड़नी-सं की० छीलनेका औजार, खुरचनी।

छोड़ा-सं पु० चना; ऊस काटने और छीलनेवाला।

छोड़ना-सं पु० वह भागा जिसने कुम्हार चाकपर चढ़े भरतनको काटकर अलग करना है।

छोह-सं पु० स्नेह, ममता; कृपा, दया। -गरा-वि० प्रेमी, छोह करनेवाला।

छोहना-सं अ० कि० दे० 'छोमना'; दया या प्रेम करना।

छोहरा-सं पु० लकड़ा, छेकरा।

छोहरिया-सं की० दे० 'छोहरी'।

छोहरी-सं की० लकड़ी, छेकरी।

छोहाना-सं अ० कि० छोह करना, स्नेहयुक्त होना; दया, कृपा करना।

छोहरा-सं पु० दे० 'छुहारा'।

छोहिनी-सं की० अक्षोहिणी।

छोही-वि० छोह करनेवाला, स्नेही। की० गेंदेरीकी सीढ़ी।

छोड़-सं की० छोड़नेकी क्रिया, वचन; वह चीज जिससे छोका जाय।

छोड़ना-सं कि० बघारना, नष्टका देना।

छोड़ा-सं पु० लकड़ा, छेकरा; गाढ़, खरा।

छोड़ी-सं की० लकड़ी।

छोना-सं पु० जानवरका छोटा (ब्यारा) बच्चा, शाबक।

छोर-सं पु० दे० 'क्षोर'; दे० 'छोरा'।

छोरा-सं पु० ज्वार, बाजरेका चारेके काम आनेवाला डठल; छेकरा।

छुना-सं पु० कि० छुलाना।

ज

ज-देवनागरी वर्णमालामें चवर्गका तीसरा अक्षर। उच्चारण-स्थान तालु; अल्पप्राण।

जंकवान-सं पु० [अ०] दो सबकों, रास्तेके मिलनेका स्थान; वह स्टेशन जहाँ दो या अधिक रेललाइनें मिलें।

जंग-सं की० [फा०] लड़ाई, युद्ध। -आवर, -खू-वि० योद्धा। -(गो) जंगराही-सं की० दिखाना, मूठमूठकी लड़ाई।

-(गो) जव्दल, -जिदाल-सं पु० युद्ध, लड़ाई।

जंग-सं पु० [फा०] मोरचा, बातुका मील; हवशियोंका देश, अकोका; बटी।

जंगम-वि० [सं०] चलनेवाला, चल; जिसे एकसे दूसरी जगह ले जा सकें, स्थावरका उलटा (जंगम संपत्ति); प्राणिजन्म; लिगावत संप्रदायके गुरुओंकी उपाधि। पु० चल वस्तु। -कुडी-सं की० छतरी। -गुस्म-सं पु० पैदल सिपाहियोंका दस्ता। -विच-सं पु० चर प्राणियों (सर्पादि) का जहर।

जंगरैस-वि० जंगरवाला, परिश्रमी।

जंगल-सं पु० [सं०] वन; रेगिस्तान; एकांत स्थान; उजाड़ स्थान, बंजर; मांस। -जलेबी-सं की० [हिं०] जलेबीकी शकलवाला गू। -में जंगल-उजाड़; अनशून्य स्थानमें राग रग (मनाना, होना)।

जंगल-सं पु० छत, बरामदे आदिके आगे लगी हुई बाड़ जिसमें लोढ़े या लकड़ीके छड़ या जाली जड़ी हो; छड़ या जाली लगी हुई सिंघकी; दुपट्टे आदिके किनारेपर कढ़े हुए बेल-बूटे; एक राग; अनाजके डंठल जिनसे अनाज हटा लिया गया हो।

जंगली-वि० जंगलमें मिलने या पैदा होनेवाला, वन्य; बिना बोये उगनेवाला, खुदरो; जो पालतू न हो, बनेला; असभ्य, उजड़। पु० जंगलमें रहनेवाला, बनवासी। -जानवर-सं पु० वन्य पशु। -कादाम-सं पु० कतौलेकी जातिका एक पेड़; पूर वृक्ष; हकी जातिका एक पेड़।

जंगा-सं पु० घुँघरुका दाना।

जंगार, जंगाल-सं पु० [फा०] ताँबेका कसाव, दूधिया;

एक रंग ।

जंगारी-वि० [फा०] जंगारके रंगका; नीला ।

जंगाल-पु० [सं०] बौध; सेब ।

जंगली-पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा । वि० दे० 'झांगी' ।

जंगी-वि० [फा०] युद्ध-संबंधी; सेना-संबंधी, कौजी; युद्धोचित (जंगी कारवारही); युद्धोपयोगी (जंगी जहाज); विशालकाय, बड़े डील-डौलका; लष्काका, शगबाज ।

-जवान-पु० लंबा-चौड़ा, बड़े डील-डौलका जवान ।

-जहाज-पु० लड़ाईमें काम आनेवाला जहाज, युद्धपोत ।

-बेड़ा-पु० जंगी जहाजोंका बेड़ा ।-खाट-पु० भारतका प्रधान सेनापति, 'कमांडर-इन-चीफ' (ब्रिटिश शासन) ।

जंगी-पु० [फा०] हथड़ी -हड़-खी० काठी और छोटी हड़ ।

जंगुल-पु० [सं०] विष ।

जंघा-पु० [सं०] जाँघ; पिंडली; कैंचीका दस्ता । -कर-कार-पु० धावक, हरकारा ।-जाण-पु० जाँघपर बाँधनेका कवच ।

जंघार-पु० जाँघमें होनेवाला फोका ।

जंघारा-पु० राजपूतोंकी एक उपजाति ।

जंघाल-पु० [सं०] धावक, दूत; हिरन । वि० तेज चलनेवाला ।

जंघिल-वि० [सं०] तेज दौड़नेवाला; फुर्तीला ।

जंघना-अ० कि० जाँघमें ठोक आना; अच्छा मान्य होना, ठोक लगना; पसंद आना; जोचा जाना ।

जंघा-वि० जाँचा हुआ; सटीक, अच्छा ।

जंघा-वि० जाँचा हुआ; सटीक, अच्छा ।

जंघपूक-पु० [सं०] मंद स्वरमें बज करनेवाला अक्ष ।

जंघबील-खी० [अ०] लोठ ।

जंघर, जंघल-वि० दूटा-फूटा, जोरों; निरुद्धा ।

जंघार, * जंघाल-पु० शकट बनेका; फेंसाव, झमेला; लंबी नलीकी भारी बद्ध (फा०); बड़े मुँहकी तोप (फा०) ।

जंघालिया-वि० दे० 'जंघाली' ।

जंघाली-वि० बलेझिवा, फमादी । खी० बह रस्ती और फिरती जिनसे पाल बढ़ाने-उतारनेका काम लेते हैं ।

जंघीर-खी० [फा०] लौकल, श्रृंखला; लंबी; बेड़ी; किवाड़की कुञ्जी ।-झाना-पु० कैदखाना ।

जंघीरा-पु० जंघीरकी शकलमें बड़ा हुआ डोरा; कशीदेकी सिलाई जिससे जंघीरसी बनती जाती है, लहरिया ।

• -(रं)दार-वि० लहरियादार (सिलाई) ।

जंघीरी-वि० [फा०] जंघीरमें बँधा हुआ, बन्दी; जंघीरदार ।

-गोछा-पु० जंघीरमें बंधे हुए गोले जो तोपमें एक साथ रखकर छोड़े जायें ।

जंघ-पु० जंघु, जीव, व्यक्ति ।

जंघर-पु० वंश, ताबीज; तबिये-चौदी आदिखी ताबीज जिसमें वंश भरकर पहनाया जाय; गलेमें पहननेका एक गहना; बेधशाला; बीणा । -जंघर-पु० वंश-भन्ना; जादू-शीना; बेधशाला ।

जंघरी-खी० पचांग, पन्ना; छोटा जंघर । पु० जंघर-मंघर करनेवाला; दे० 'जंघी' ।

जंघ-जंघा का समासगत लघु रूप । -सर-पु०, -सारी-खी० वह गीत जो चक्की पीसते बक जियाँ गाती है ।

-सार-खी० वह घर, स्थान जहाँ जंघा गबा हो ।

जंघा-पु० वंश; तार खींचनेका औजार । * वि० वंशणा देनेवाला; नियमन करनेवाला; दवा रखनेवाला, 'पंता' ।

जंघाना-अ० कि० जंघी आदिसे दबकर पिस जाना; कुचल जाना ।

जंघी-खी० छोटा जंघा ।

जंघु-पु० [सं०] प्राणी, जीव; पशु; कीड़ा-मकोड़ा; जीवात्मा ।

-कडु-पु० शंखका कीड़ा; शख । -घन-पु० विडंग, हाँग, बिजौरा नीबू आदि कुमिनाशक औषध । वि० कुमिनाशक, जंतुओंका नाश करनेवाला । -घनी-खी० बाय-विडंग । -नाशन-पु० हीम । -पाक्ष-पु० कोषाज वृक्ष ।

-फल-पु० गूलर । -झरी-खी० नीबू । -ला-खी० कायवृण, कंस । -शाखा-खी० वह स्थान जहाँ प्रदर्शन या अभ्ययनके लिए जीवित जंतु रखे जायें, विडियाघर ।

-हंघी-खी० बायविडंग ।

जंघुका-खी० [सं०] लाख ।

जंघुमरी-खी० [सं०] धरती ।

जंघ-पु० वंश, ताबीज; ताला । -जंघ-पु० दे० 'जंघर-मंघर' ।

जंघना*-सं० कि० ताला लगाना-'भरत भगति सबकै भति जंघी'-रामा० । खी० दे० 'यंघना' ।

जंघित*-वि० वंशित, जकड़ा हुआ; बंद ।

जंघी-पु० बीणा-'बिना गार तबी बीन जंघीनी वज्रन है'-रसविलाम । वि० बीणा-वादक; ऋषभद करनेवाला ।

खी० तिथिपत्र ।

जंघ-खी० आयोकी ईरानी शाखाकी प्राचीन भाषा जो वैदिक संस्कृतमें बहुत मिलता है । पु० जतुस्ती धारमियोका प्रथम धर्मग्रंथ, जद अवैस्ता । -अबेस्ता-पु० पारसियोंका जतुस्तर-विन धर्मग्रंथ ।

जंघरा-पु० जाला; कल ।

जंघती-पु० [सं०] दे० 'दपती' ।

जंघना*-सं० कि० कहना ।

जंघ-पु० [सं०] पंका, कीचड़ ।

जंघाल-पु० [सं०] कीचड़; काई; सेवार; केवड़ा ।

जंघालिनी-खी० [सं०] नदी ।

जंघीर-पु० [सं०] जंघीरी नीबू; मक्का; वनतुलसी ।

जंघीरी नीबू-पु० नीबूका एक नैद जो कागजीमें आकारमें बड़ा और अधिक लड़ा होता है ।

जंघु, जंघ-पु० [सं०] जामुनका पेड़ और फल । -खंघ-पु० दे० 'जंघुपी' । -हीर-पु० पुराणानुसार धरतीके सात महादीपों या प्रधान विभागोंमेंसे एक जिसके नौ खंडोंमेंसे एक भारतवर्ष भी है । -मद्री-खी० पुराणानुसार एक नदी जो जमुदीपके नामकरणके हेतु जामुनके पड़ेसे चूनेवाले जामुनोंके रस्से निकलती है; महालीकमें निकली हुई सात नदियोंमेंसे एक । -प्रस्थ-पु० बाक्यकीय रामायणमें वर्णित एक नगर जो ननिहाळसं छौंठे समय भरतके रास्तेमें पड़ा था । -बनज-पु० सफेद जड़क । -ल-पु० जामुन; केवड़ा; केतकी; बरकम्पा-

पक्षबालोंकी ओरसे एक-दूसरेके प्रति: कहा जानेवाला परिहास-वचन ।

अंशुक-अंशुक-पु० [सं०] जामुन: स्यार, मृगाल; केवडा; वरग; नीच, घृत् आदमी । [स्त्री०] 'अंशुकी', 'अंशुकी' ।

अंशुमात्र-अंशु, अंशुमात्र-अंशु-पु० [सं०] पहाड़ ।

अंशुका-स्त्री० [सं०] किशमिस ।

अंशुनद-पु० दे० 'अंशुनद' (नीना) ।

अंशुर-पु० [अ०] अश्वर: भिड़; शहदकी मक्खी; पुराने समयकी एक छोटी नाव । -झरना-पु० भिड़ या शहद-की मक्खियोंका छरा । -स्त्री-पु० तोपची ।

अंशुर-पु० दे० 'अश्वर'; तोपची चत्त: भेंजरकली ।

अंशुरा-पु० दे० 'अंशुरक'; एक बीमार, बॉक ।

अंशु-पु० [सं०] बाद; ठुठ्ठी; चवाना, भक्षण; अश; जम्हाई; तर्कश; महिषासुरका बाप जो इहके हाथों मारा गया; जैशरी नीच । -हिंदू(श्), -जैशरी(विन्), -रिपु-पु० इह ।

अंशुक-वि० [म०] जम्हाई लेनेवाला; भक्षण करनेवाला; शिक्क । पु० शिव; जैशरी नीच ।

अंशुका-स्त्री० [सं०] जम्हाई ।

अंशुन-पु० [म०] जम्हाभा; भक्षण; मैथुन ।

अंशु-स्त्री० [सं०] जम्हाई ।

अंशु-स्त्री० दे० 'जम्हाई' ।

अंशुना-अ० कि० दे० 'जम्हाना' ।

अंशुनाति-पु० [सं०] दे० 'अंशुनाति' ।

अंशुति-पु० [म०] इह; वज्र; अश्वि ।

अंशुका-स्त्री० [म०] दे० 'अंशु' ।

अंशु(विन्), अंशु-पु० [सं०] जैशरी नीच ।

अंशु-पु० दे० 'अंशुनी नीच' ।

अ-पु० [सं०] दुष्पुत्रय, जन्म; पिता; विष्णु; शिव; विष; भुक्ति; नेत्र; पिशाच; वेग; विजना; पिगलका एक गण जिसका आदि-अन वर्ण लघु और बीचका गुरु होता है ।

वि० वेगवान्; विजयी; समामानमें 'मि या मे उत्पन्न'का अर्थ पैदा करता है । (जैते-जलत्र, बातत्र, अडज इ०) ।

अई-स्त्री० तौकी त्रातिका एक अनाज जो प्रायः घोड़ोंको खिलाया जाता है, ओट; जोका अंशुआ; खीरे, कुम्हरे आदिकी बनिया । सु० -हालना-किसी अन्नको अंशुए निकलनेके लिए भिगोना ।

अई-वि० [अ०] बूढ़ा; दुर्बल ।

अईका-वि० स्त्री० [अ०] बूढ़ा, बूढ़ा ।

अई-स्त्री० बूढ़ाया; दुर्बलता ।

अऊ-अ० यद्यपि ।

अऊ-स्त्री० [फा०] छर्छांय, चौकड़ी ।

अऊना-अ० कि० छछोड़ मारना; झपटना ।

अऊना-स्त्री० दीक्षुप; उलझन ।

अऊ-स्त्री० हडा धुन, रदन । पु० यक्ष; कंजस आदमी ।

सु० -अँधना-रद लगना ।

अऊ-स्त्री० [अ०] हार, पराजय; नीचा देखना; हानि ।

अऊ-स्त्री० अऊने, कसकर बाँधनेकी क्रिया या भाव ।

-अँध-वि० कसकर बाँधा हुआ । पु० कषा बंधन, एकड़ ।

अऊना-स० कि० कसकर बाँधना । अ० कि० (किसी अंगका) अऊना ।

अऊना-अ० कि० भीचका होना, स्तंभित होना ।

अऊ-पु० [अ०] लिग, पूर्णप्रेमिय; नर; फौलाड़ ।

अऊना-अ० म० कि० दे० 'अऊना' ।

अऊना-स्त्री० देसावरसे आनेवाले मालपर लगनेवाला कर, आयातकर ।

अऊना-स्त्री० [अ०] दान, खैरात; वचनका चालीसवाँ भाग जिसे दान करना हर मुसलमानका कर्तव्य है ।

अऊनी-पु० जकात बमूल करनेवाला ।

अऊनी-वि० चकित, मोचका ।

अऊ-पु० [सं०] मलयाचल; बैगनका फूल; कुपा; जोडा, युग्म ।

अऊ-स्त्री० एक तरबूजी बुलबुल । वि० हाकी ।

अऊ-पु० जगत्, ससार ।

अऊ-पु० यक्ष ।

अऊ-पु० [सं०] भक्षण, खाना ।

अऊ-पु० दे० 'यक्ष' ।

अऊनी-स्त्री० दे० 'यक्षिणी' ।

अऊ-पु० दे० 'जसम्' ।

अऊनी-वि० दे० 'तलम्' ।

अऊनी-पु० [अ०] खजाना; भंडार; ढेर; बीजका काम देनेवाले पौधोंकी क्यारी या खेत; पेड़-पौधे या बीज मिलनेका स्थान ।

अऊ-पु० [फा०] पाव, चोट; हानि । -अऊ-वि० जो जसम् खाये हो, घायल । - (से)अऊ-पु० दिखपर लगी हुई चोट, दुस्ख, मनोरथना । सु० -हरा होना-बीते हुए कष्टका फिर लौट आना ।

अऊ-वि० [फा०] घायल, जिसे जसम् लगा हो ।

अऊ-स्त्री० [फा०] दे० 'तलम्' ।

अऊ-पु० जगत्, दुनिया । -अऊ-पु० मद्धा । -कारन-पु० जगत्के कारणरूप, जगत्कर्ता, परमेश्वर । -अऊनी-स्त्री० दे० 'जगज्जननी' । -आमिनि-स्त्री० सत्ताररूपी

रामि । -आहिर-वि० जगत्प्रसिद्ध, सर्वविदित । -जीवन-पु० जगत्के जीवनरूप परमेश्वर । -जोनि-पु० दे० 'जगधोनि' । -तारन-पु० जगत्को तारनेवाला, परमेश्वर ।

-निवास-पु० दे० 'जगन्निवास' । -प्राण-पु० दे० 'जगत्प्राण' । -कोक कीकनद भे दुखी, अहित भये जगत्प्राण । -दीनद । -अँध-वि० दे० 'जगदँध' । -अँध-वि० जगदँध, सबके लिए पुरुष । -बीती-स्त्री० लोकदृष्ट, फिस्ता कहानी । -ओहनी-वि० स्त्री० दुनियाको मोहने-वाली, सुदरी । -सूर-पु० राजा । -हँसा-स्त्री० बदनामी, लोकमिद ।

अऊ-पु० जगत्, दुनिया । -अऊ-पु० मद्धा । -कारन-पु० जगत्के कारणरूप, जगत्कर्ता, परमेश्वर । -अऊनी-स्त्री० दे० 'जगज्जननी' । -आमिनि-स्त्री० सत्ताररूपी

रामि । -आहिर-वि० जगत्प्रसिद्ध, सर्वविदित । -जीवन-पु० जगत्के जीवनरूप परमेश्वर । -जोनि-पु० दे० 'जगधोनि' । -तारन-पु० जगत्को तारनेवाला, परमेश्वर ।

-निवास-पु० दे० 'जगन्निवास' । -प्राण-पु० दे० 'जगत्प्राण' । -कोक कीकनद भे दुखी, अहित भये जगत्प्राण । -दीनद । -अँध-वि० दे० 'जगदँध' । -अँध-वि० जगदँध, सबके लिए पुरुष । -बीती-स्त्री० लोकदृष्ट, फिस्ता कहानी । -ओहनी-वि० स्त्री० दुनियाको मोहने-वाली, सुदरी । -सूर-पु० राजा । -हँसा-स्त्री० बदनामी, लोकमिद ।

अऊ-पु० जगत्, दुनिया । -अऊ-पु० मद्धा । -कारन-पु० जगत्के कारणरूप, जगत्कर्ता, परमेश्वर । -अऊनी-स्त्री० दे० 'जगज्जननी' । -आमिनि-स्त्री० सत्ताररूपी

रामि । -आहिर-वि० जगत्प्रसिद्ध, सर्वविदित । -जीवन-पु० जगत्के जीवनरूप परमेश्वर । -जोनि-पु० दे० 'जगधोनि' । -तारन-पु० जगत्को तारनेवाला, परमेश्वर ।

-निवास-पु० दे० 'जगन्निवास' । -प्राण-पु० दे० 'जगत्प्राण' । -कोक कीकनद भे दुखी, अहित भये जगत्प्राण । -दीनद । -अँध-वि० दे० 'जगदँध' । -अँध-वि० जगदँध, सबके लिए पुरुष । -बीती-स्त्री० लोकदृष्ट, फिस्ता कहानी । -ओहनी-वि० स्त्री० दुनियाको मोहने-वाली, सुदरी । -सूर-पु० राजा । -हँसा-स्त्री० बदनामी, लोकमिद ।

अऊ-पु० जगत्, दुनिया । -अऊ-पु० मद्धा । -कारन-पु० जगत्के कारणरूप, जगत्कर्ता, परमेश्वर । -अऊनी-स्त्री० दे० 'जगज्जननी' । -आमिनि-स्त्री० सत्ताररूपी

रामि । -आहिर-वि० जगत्प्रसिद्ध, सर्वविदित । -जीवन-पु० जगत्के जीवनरूप परमेश्वर । -जोनि-पु० दे० 'जगधोनि' । -तारन-पु० जगत्को तारनेवाला, परमेश्वर ।

-निवास-पु० दे० 'जगन्निवास' । -प्राण-पु० दे० 'जगत्प्राण' । -कोक कीकनद भे दुखी, अहित भये जगत्प्राण । -दीनद । -अँध-वि० दे० 'जगदँध' । -अँध-वि० जगदँध, सबके लिए पुरुष । -बीती-स्त्री० लोकदृष्ट, फिस्ता कहानी । -ओहनी-वि० स्त्री० दुनियाको मोहने-वाली, सुदरी । -सूर-पु० राजा । -हँसा-स्त्री० बदनामी, लोकमिद ।

पु० दे० 'जगद्गुरु' । -जगजि-स्त्री० दे० 'जगज्जनी' ।
-एति-पु० दे० 'जगत्पति' । -सिद्ध-पु० राज्य-विशेषका
समये बड़ा महाजन, वह महाजन जिसकी साख सर्वत्र
मानी जाय । सु० -सैठका साख-वह आदमी जिसका
धन, बड़प्पन दूसरेको कृपाका फल हो ।

जगती-स्त्री० [सं०] धरती; दुनिया, जगत्; मानवजाति;
गाय; मकानकी जगह; अनुवृत्तवृत्त स्थान; एक वैदिक
छंद । -चर-पु० मनुष्य । -जगति-पु० राजा । -तल-
पु० धरती; दुनिया । -चर-पु० पर्वत । -पति-भर्ता-
(हं)-पु० राजा । -रह-पु० ब्रह्म ।

जगत्-पु० [मं०] दुनिया, संसार; बाहु । वि० जंगम,
चल । -कर्ता(हं)-पु० परमेश्वर; ब्रह्मा । -कारण-पु०
सृष्टिके कारणरूप परमेश्वर । -तारज-पु० परमेश्वर,
जगत्की तारनेवाला । -पति-पिता(हं)-पु० परमेश्वर ।
-पराधन-पु० विष्णु । -प्रभु-पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव ।
-प्रसिद्ध-वि० विश्वविख्यात । -प्राण-पु० बाहु ।
-साक्षी(अिन्)-पु० स्वर्ग । -सेनु-पु० परमेश्वर ।
-सहा(ह्)-पु० दे० 'जगत्कर्ता' ।

जगदीशचंद्र बसु-पु० सुप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक
(१८५८-१९३७) । इन्होंने वैज्ञानिक ढंगसे प्रमाणित कर
दिया कि पेरू-पौधोंमें भी चेतनत्व होता है ।

जगद्-जगत्का समामगत रूप । -अंतक-पु० काल ।
-अंता-अंतिका-स्त्री० दुर्गा, जगज्जनी । -आत्मा-
(ह्यन्)-पु० परमेश्वर; बाहु । -आदि-पु० परमेश्वर;
ब्रह्मा । -आचार-पु० परमेश्वर; बाहु; काल । -आनंद-
पु० परमेश्वर । वि० संसारको आनंद देनेवाला । -आयु-
(ह्)-पु० बाहु । -ईश-पु० जगत्पति, परमेश्वर; विष्णु ।
-ईश्वर-पु० परमेश्वर; शिव; ईश; राजा । -गुरु-पु०
परमेश्वर; शिदेव; नादर; शक्राचार्यकी गद्दीपर बैठनेवाली-
की धरती । -गौरी-स्त्री० दुर्गा, मनमादेवी । -क्षीप-
पु० परमेश्वर; सूर्य । -ज्ञाता(ह्)-वि० जगत्को धारण
करनेवाला । पु० परमेश्वर; ब्रह्मा । -जात्री-स्त्री० दुर्गा;
सत्सती । -बल-पु० बाहु । -बीज-पु० शिव ।
-बीजि-पु० परमेश्वर; शिदेव । -बंश-वि० सबका
पुत्र्य । -बहा-स्त्री० पृथ्वी । -विलयात-वि० जिनकी
प्रतिष्ठि सर्वत्र हो, विश्वविश्रुत । -विनाश-पु० प्रलय ।
जगन्ना-अ० कि० जगन्ना, नींदमें उठना; सत्रय, सचेत
होना; उभरना; चलना, प्रतीत होना (आग, खोती);
शक्ति, तेजका अधिक परिचय देना (देवी, देवता, प्रेत
आदिका); नंवाकू, गाँजा आदिका सुलगना, पूरा बुझा
देने लगना ।

जगन्नु, जगह-पु० [सं०] अग्नि; कीड़ा; जंतु ।

जगन्-जगत्का समामगत रूप । -नाथ-पु० परमेश्वर;
विष्णु; पुरोमें स्थापित विष्णुमूर्ति । -अक्षेत्र-अक्षेत्र-
पु० पुरी, जगन्नाथपुरी, जगन्नाथबाम, जगन्नाथतीर्थ ।
[सु०] -अक्षेत्र-जगन्नाथजीका महाप्रसाद; वह वस्तु
जो किसीके छूनेसे अपवित्र न हो, जिसे मनी प्रार्थन कर
सकें । -निर्वाता(ह्)-पु० जगत्का नियमन करनेवाला,
परमेश्वर । -निवास-पु० परमेश्वर; विष्णु । -अंगल-
पु० काष्ठीका एक कवच । -माता(ह्)-स्त्री० दुर्गा;

लक्ष्मी । -मोहिनी-स्त्री० [सं०] महाभावा; दुर्गा ।

जगन्नाथदास 'दत्तात्रेय'-पु० (जन्म सं० १९२३; मृत्यु
सं० १९८९)-ब्रजभाषाके अंतिम महाकवि । काव्यग्रंथ-
पनाछरी-निबन्ध रत्नकर, गंगावतरण, उद्धवशतक, भृगु-
लहरी, रत्नाष्टक, गीताष्टक आदि ।

जगन्मय-पु० [मं०] विष्णु ।

जगन्मयी-स्त्री० [मं०] लक्ष्मी ।

जगन्मय-वि० चमकीला, जगन्मगता हुआ, प्रकाशित ।
स्त्री० जगन्मगाहट ।

जगन्मया-वि० दे० 'जगन्मय' ।

जगन्मगना-अ० कि० अपनी या दूसरेकी रीशनीमें चम-
कना, प्रकाशके कानने श्रवकना, दमकना, चमकमाना ।

जगन्मगाहट-स्त्री० जगन्मगनाका भाव, चमक, दमक ।

जगर-पु० [सं०] कवच, जिरह ।

जगरन-पु० दे० 'जागरण' ।

जगर-भगर-वि० दे० 'जगन्मय' ।

जगड-वि० [मं०] बूत, चालबाज । पु० गोबर; पीठीकी
शराब; शराबी पीठी, कवच ।

जगद्गना-म० कि० जगानेका काम कराना ।

जगह-स्त्री० अवकाशका अंश-विशेष; अवकाशका वह अंश
जिसमें किसी वस्तु या व्यक्तिकी स्थिति हो, स्थान; वस्तु
या व्यक्ति-विशेषका नियत स्थान; ममाई, पुंजाइश; पद,
तह्दा; नौकरी; अवसर, मौका । -जगह-अ० हर जगह,
मनत्र ।

जगाओति-स्त्री० जगन्मगाहट ।

जगात-स्त्री० दे० 'जगान' ।

जगाती-पु० जगाना वस्तु करनेवाला ।

जगाना-म० कि० मोतेने उठाना, जगानेकी प्रेरित करना;
मजब, सावधान करना; सुखाना; प्रदीप्त करना (अयोति
जगाना); यज्ञ-मन्त्र सँक करना या उनका प्रभाव बनाने
रखनेके लिए प्रार्थना आदिपर उनका अर्थ आदि करना;
तबाकू, गाँजा आदि सुलगाना ।

जगार-स्त्री० जागरण, जागति ।

जगी-स्त्री० मोरकी जातिका एक पक्षी ।

जगीर-स्त्री० दे० 'जागीर' ।

जगीला-वि० उनींदा ।

जग-वि० [सं०] खाना हुआ, भुक्त । पु० भोजन, आहार;
वह स्थान जहाँ किसीने भोजन किया है ।

जग-पु० यज्ञ ।

जगि-स्त्री० [मं०] भोजन, आहार; सहभोजन ।

जगि-वि० [सं०] चलना दुःखा, चगम । पु० बाहु ।

जगन-पु० [मं०] स्त्रियोंका पेड़, ओगि; नितम्ब; सेनाका
पिछला भाग । -कूप-कूप-पु० चूतके ऊपरका
गड्ढा । -गौरव-पु० नितम्ब-भाग । -चपला-स्त्री०
कालुका, न्यमि वारिणी स्त्री; तेजीसे नाचनेवाली स्त्री; एक
मात्राहृत ।

जगनी(निम्न)-वि० [सं०] बड़े चूनीवाला ।

जगन्ना-वि० [मं०] अंतिम, सबसे पीछेका; सबसे उरा;
अधम, नीच; निर्दित; हेय; नीच जातिका । पु० शूद्र;
किंगेद्रिय । -ज-पु० शूद्र; छीटा माई ।

अग्नि-पु० [सं०] हननका साधन, अक्ष ।
 अक्षु-वि० [सं०] हननकर्ता, वास्तक ।
 अजि-पु० [सं०] ईशनेवाला ।
 अक्षरि-श्री० [फा०] प्रमथ, प्रवृत्तावस्था ।
 अचना-अ० कि० दे० 'अचना' ।
 अक्ष, अक्षा-श्री० [फा०] सप्तःप्रवृत्ता; वह श्री जिसे प्रसव किये ४० दिन न हुए हों । -अज्ञाना-पु० प्रसवगृह, सौरी । -गिरी-श्री० सौरीका गीत, सोहर ।
 अक्ष-पु० दे० 'यक्ष' ।
 अज-पु० [अं०] वह अधिकारी जिसे मुकरने सुनकर उनका फैसला करनेका अधिकार हो, विचारक; जिल्ला प्रधान न्यायाधीश, जिला जज; निर्णायक । -मैद-पु० फैसला, तज्जीन ।
 अजना-पु०-सं० कि० आदर करना, पूजना-कलि पूजै पासबको अजे न क्षुति आचार'-दीनद० ।
 अजमान-पु० दे० 'यजमान' ।
 अजमानी-श्री० दे० 'यजमानी' ।
 अज्ञा-श्री० [अ०] बदला, फल; परलोकमें मिलनेवाला पुण्यफल ।
 अजिवा-पु० दे० 'जिजिवा' ।
 अजी-श्री० अजका पद; अजकी कचहरी ।
 अजीरा-पु० [अ०] टाप्, दीप । -जुमा-पु० प्रायदीप ।
 अज-पु० दे० 'यक्ष' ।
 अज-पु० [अ०] मोखना; सिंवाव, आकर्षण ।
 अज्वा-पु० [अ०] भाव, मनोविकार; जोश; रोप ।
 अज्वाली-वि० भाव-संबंधी, भावात्मक ।
 अज-पु० एक तरहका गोदना; दे० 'जाट' ।
 अजना-सं० कि० ठगना; * अजना; अजकना-दिन दिन होन छीन भई काया दुख जंजाळ जटी'-मर; जुड़ जाना- 'करीसु ज्यौ चित चरन जै'-घन० ।
 अजल-श्री० बकरास, बैतुकी बात; गप । -अक्रिया-पु० बैतुकी बात; गप । -बाझ-वि० बकवासी; गप हाँकिनेवाला ।
 अजली-वि० अजलबाज ।
 अजा-श्री० [सं०] उलझे और आपसमें चिपके हुए लगे वाला; मझाचारी आदिके खे बाल जो बरगदका दूध लगाकर चिपका दिये गये हों; पेश-गीतकी जड़; शास्ता; उलझे हुए देखो; अजामासी, बालछब; बेदपाठकी एक प्रणाली (समै 'नमः रुद्रेभ्यः' का पाठ इस तरह किया जायगा- 'नमो रुद्रेभ्यो, रुद्रेभ्यो नमो नमो रुद्रेभ्यः'); सतावर केनाँच । -खीर-पु० शिव । -जुट-पु० जूरेके रूपमें बँधी हुई अजा; शिवकी अजा । -अजाळ-पु० चिराग, लैंप । -टंक-पु० शिव । -अर-वि० अजाधारी । पु० शिव; एक मुद्र । -चारी (रिबु)-वि० जिसके सिरपर अजा हो । पु० साधु-सन्मयासी । -पटल-पु० बेदपाठका एक जटिल क्रम । -मंडल-पु० जूरा । -मासी-श्री० बालछब । -माळी (किर)-पु० महादेव । -मासी-श्री० [हि०] दे० 'अजामासी' । -बल्ली-श्री० रुद्रअजा; गंधमासी ।
 अजामिनी (किर)-वि० [सं०] अजा और अजिम (वृगधर्म)

धारण करनेवाला ।
 अजादीर-पु० [सं०] शिव ।
 अजाना-अ० कि० अजा जाना, ठगना । सं० कि० अजनेके लिए प्रेरित करना ।
 अजसु-पु० [सं०] रामायणमें वर्णित एक गिद्ध जिसने सीताकी हरकत के जाते हुए रावणसे सीताकी छुटानेके लिए बुद्ध किया था ।
 अजल-वि० [सं०] अजाधारी, जटिल । पु० बरगद; कचूर; मोक्ष; गुग्गुलु ।
 अजला-श्री० [सं०] अजामासी ।
 अजबकी-श्री० [सं०] अजामासी ।
 अजासुर-पु० [सं०] एक राक्षस जो भीमके हाथों मारा गया ।
 अजि-श्री० [सं०] अजा; समूह; अजामासी; बरगद; पाकड़ ।
 अजित-वि० अजा हुआ ।
 अजिठ-वि० [सं०] अजाधारी; उलझा हुआ, पेचीदा; कठिन, दुर्बोध । पु० मझाचारी; साधु-सन्मयासी; सिंहा; बकरा; शिव ।
 अजिल्ला-श्री० [सं०] पेचीदगी; उलझन; कठिनाई ।
 अजिळा-श्री० [सं०] अजामासी; पिप्पली; बच; दीना; मझाचारीणी (१) ।
 अजी-श्री० [अं०] दे० 'जटि' ।
 अजी (टिबु)-वि० [सं०] अजाधारी । पु० शिव; बरगद ।
 अजुल, अजुल-पु० [सं०] ल्वाचापर पड़ा हुआ पैदाइशी दाग, लच्छन ।
 अजु-वि० अजने, ठगनेवाला, उचितसे अधिक मूल्य ले लेनेवाला ।
 अजर-पु० [सं०] पेड़; कुक्षि, जरासु; एक पुराणोक्त पर्वत; महाभारत आदिमें वर्णित एक देश । वि० कड़ा, कठिन; बड़; बड़ा । -गर्-पु० अंतका विकार । -अजाळा-श्री० उदरज्वाला, भूखका कष्ट; शूल । -जुट (रु)-पु० असलताम । -बंधवा-वातना-श्री० गर्भवासका कष्ट ।
 अजरागि-श्री० दे० 'अजरागि' ।
 अजरागि-श्री० [सं०] उदरस्थित अग्नि जो आयुर्वेदके मतसे आहारकी पचानेका काम करती है; आमाशयकी गिल्लियोंमें निकलनेवाला पाचक रस, 'गैस्ट्रिक जूस' ।
 अजराग-पु० [सं०] दे० 'अजरागि' ।
 अजराग-पु० [सं०] अतामार; जलोदर रोग ।
 अजल-पु० [सं०] उदरके आकारका एक जलपात्र (बै०) ।
 अजेरा-वि० जेठा, बड़ा । पु० लफका- 'छल सीं कछु कतु फिरतु महरिकी जेठो'-सर ।
 अज-वि० [सं०] अचेतन, चेतनाहित; निरुद्धि, मूल्य; वेद पढ़नेमें असमर्थ (दायभाग); सर्वसिं ठिडुरा, अकड़ा हुआ; निश्चेष्ट, गति-विशारहित; बहुरा; गूँगा । पु० अज, अचेतन पदार्थ; जल; सीसा । -क्रिय-वि० दीर्घवृत्ती, ढीला । -अजग-पु० अजप्रकृति, पांचमौतिक पदार्थकी समष्टि । -अजार्थ-पु० अचेतन पदार्थ, भौतिक जगत्का उपादानरूप इत्यर्थ । -अप्रकृति-श्री० अजजगत्, पंचभूत या पांचमौतिक पदार्थकी समष्टि । -अरत-पु० भागवतमें वर्णित एक योगी जो संसारकी आसक्तिके बचनेके लिए

जड़वत् व्यवहार करते थे। - **बाढ़**-पु० नेतन आत्माका अस्तित्व न माननेवाला दार्शनिक मत। - **बाढ़ी**(वि०)-वि०, पु० जड़वादका अनुयायी। - **विज्ञान**-पु० परार्थ-विज्ञान, प्रकृतिविज्ञान।

जड़-**खी०** पेड़-पौधोंका वह भाग जो जमीनके अंदर रहता और जिसके द्वारा वे धरतीसे पोषण प्राप्त करते हैं, मूल; नींव, आधार, मूल कारण। **मु०**-**उत्पादना**-समूल नाश करना। - **काटना**-**खोदना**-तपाह करनेकी कोशिश करना, भारी हानि पहुँचाना। - **जमना**-**पकड़ना**-पैषिका अच्छी तरह जम जाना; रद्द होना, जमना। - **पुनिर्वास**-**मूल**से-समूल, जड़से। - **में** धरती देना-जड़ खोदना।

जड़ता-**खी०**, **जड़त्व**-पु० [सं०] जड़ होनेका नाव; अचेतनता; अज्ञान, मूर्खता; एक संचारी नाव-वह उस स्थित्या या चेष्टाहीनताका धोतक है जो प्रिय व्यक्तित्वे नियोग होने या बराबर आदिकी स्थितिमें नायक या नायिकाके परिलक्षित होती है।

जड़ताई-**खी०** दे० 'जड़ता'।

जड़ना-सं० क्रि० एक वस्तुको दूसरीमें बैठाना, जमाना, पसी करना; ठोकना (कील, नाल); मारना, लगाता (पौल, चैंड); किन्तीकी चुगली खाना या किसीके खिलाफ किसीके कान भरना, शिकायत करना।

जड़वाना-सं० क्रि० दे० 'जड़ाना'।

जड़हन-पु० अगहनी धान।

जड़ा-**खी०** [सं०] भुर्रआमला; केबोंव।

जड़ाई-**खी०** जड़नेका काम; जड़नेकी उजरत।

जड़ाव-वि० जिसपर नग वा रत्न जड़ा हो, जड़ाववाला।

जड़ावा-सं० क्रि० जड़नेका काम करना। † अ० क्रि० जाका लगना, जाका खाना।

जड़ाव-पु० जड़नेका काम, पसीकारी।

जड़ावट-**खी०** दे० 'जड़ाव'।

जड़ावर-पु० जाकेमें पहनने-ओढ़नेके गरम कपड़े।

जड़ावली-पु० दे० 'जड़ावर'।

जड़ित-वि० जड़ा हुआ; जड़ाक।

जड़िमा(मनु)-**खी०** [सं०] जड़ता, स्तम्भता; संघाहीनता; मूर्खता।

जड़िया-पु० नग जड़नेका काम करनेवाला।

जड़ी-**खी०** बनीपथि, दूरी; वह बनीपथि जिसकी जड़ दवा-के काममें लायी जाय। - **बूटी**-**खी०** बनीपथि।

जड़ीभूत-वि० [सं०] जड़भावकी प्राप्त, जो चिह्निता-जुलता न हो, निरूपद।

जड़ीला-पु० वह पौधा जिसकी जड़ खायी जाय, मूलशक।

जड़ीपा-**खी०** नाका देकर आनेवाला ज्वर, जूड़ी।

जड़ा-वि० दे० 'जड़'।

जड़-वि०, अ० जितना।

जड़-पु० दे० 'यड़'।

जड़नी-वि० यत्न करनेवाला; चालाक, चतुर।

जड़ताना-सं० क्रि० दे० 'जताना'।

जड़सर-पु० दे० 'जैतसर'।

जड़ाना-सं० क्रि० बताना, अवगत कराना; आगाह करना।

जड़ि-पु० दे० 'वति'।

जड़ी-पु० दे० 'वति'।

जड़-पु० [सं०] गोंद; लास; शिलाजतु। **खी०** चमगादड़।

-**कारी**-**खी०** पर्यंटी नामक लता। -**कुल**-**खी०**

-**खी०** पपड़ी नामकी लता। -**गुह**-पु० लाखका बना घर (जैसा दुर्घोषनने पांडवीकी जलवानेके लिए बनवाया था)। -**पुत्रक**-पु० लाखकी बनी पुतली; शतरंजका मुहरा; चौसरकी गोदी। -**मणि**-पु० दे० 'जड़क'। -**रस**-पु० लास; मन्दावर।

जड़क-पु० [सं०] हाँस; लास; दे० 'जड़क'।

जड़का-**खी०** [सं०] लास; चमगादड़; पर्यंटी लता।

जड़की-**खी०** [सं०] चमगादड़।

जड़-**खी०** [सं०] चमगादड़। -**कर्म**-पु० एक मन्थिका नाम।

जड़का-**खी०** [सं०] चमगादड़; रजनी नामक गंधद्रव्य।

जड़क-वि०, अ० जितना।

जड़-पु० कार्य-विशेषके लिए संचयित छोटा दल, दूध।

-**(त्ये)द्वार**-पु० जड़केका नायक, ठकनायक। -**बंदी**-

-**खी०** जड़का बनाना, दलबंदी।

जड़, **जड़क**-पु० [सं०] कंधेके नीचेकी कमानी जैसी डब्बी,

हँसली।

जड़क-पु० [सं०] शिलाजतु।

जड़ा-अ० दे० 'यथा'। **खी०** धन, पूँजी। पु० दे० 'जड़ता'।

जड़ार्थ-वि० दे० 'यथार्थ'।

जड़ा-अ० जब; यदि।

जड़-**खी०** [फा०] चोट; आपात; निशाना, मार।

जड़नी-वि० [फा०] मारनेके काबिल, बन्ध (गरदन-जड़नी)।

जड़पि-अ० दे० 'यवपि'।

जड़ल-पु० [अ०] युद्ध, लड़ाई।

जड़वार-पु० [अ०] एक विपनाशक ओपधि, निर्विष।

जड़ा-वि० [फा०] मारा हुआ, पीठिन (मुनीश्वर नदी-विपतका मारा)।

जड़ीव-वि० [अ०] नया; हालका।

जड़-पु० दे० 'यड़'। -**कुल**-पु० दे० 'यड़कुल'।

-**नाथ**, **पति**-पु० दे० 'यदनाथ'। -**पुर**-पु० मधुर।

-**बंसी**-वि०, पु० दे० 'यदुबंसी'। -**राह**, **राय**-पु०

यदुराज, कृष्ण। -**वर**, **वीर**-पु० कृष्ण।

जड़-वि० प्रबल; अधिक। पु० [अ०] दादा, बापका बाप; हकनाल; दीलत। **खी०** कोशिश। -**(रो)जड़**-**खी०**

प्रयत्न, दौड़-धूप; आदोलन।

जड़पि-अ० यद्यपि।

जड़व-पु० खराब बात, न कहने योग्य बात।

जड़ी-वि० नाथ-दादाकी, मौरसी (नाथदाद)। **खी०** कोशिश, दौड़-धूप, प्रयत्न।

जड़गम-पु० [सं०] चाँडाल।

जड़-पु० [सं०] मनुष्य; व्यक्ति; मनुष्य-समूह, लोक; जाति; जनलोक; सात महाभ्याहृतियोंमें से एक; एक असुर; सेवक, दाम। -**खोखोलन**-पु० किसी उद्देश्यकी सिद्धिके लिए

जनता द्वारा चलाया गया आंदोलन । -कारी-**खी०**,
-कारी(रिद्ध)-**पु०** अलक्षक । -क्षय-**पु०** लोकनाश;
महामारी । -गणना-**खी०** मनुष्यसूचारी, देशविशेषके
सम मनुष्योंकी गणना । -बसु(सु)-**पु०** वर्ष । -बर्बा-
-**खी०** लोकवाद । -जगमरण-**पु०** जनसाधारण, समस्त
जनतामें अपने अधिकार, हितारहितका हान होना ।
-जीवन-**पु०** जनताका जीवन, सर्वसाधारणके रहन-सहन-
का ढंग । -तंत्र-**पु०** लोकतंत्र, प्रजातंत्र । -आ-**खी०**
छतरी, छाता । -हैब-**पु०** राजा । -घन-**पु०** आदमी और
पैसा (जन-धनने सहायता) । -पद्-**पु०** देश, राज्य;
राज्य-विशेषका ग्राम-भाग; लोक, प्रजा । -कलशणी-
-**खी०** वेदया । -धर्म-**पु०** लोकाचार । -पत्नी(दिह)-
-**पु०** शामक । -पाल-**पु०** मनुष्यों या सेवकोंका पालन
करनेवाला । -पचाद्-**पु०** अकबाह, आम चर्चा;
लोकापवाद । -प्रिय-**वि०** लोकप्रिय । **पु०** धनिया; सहि-
जन; शिव । -मत्त-**पु०** लोकमत, जनसाधारणकी राय ।
-मरक-**पु०** महामारी । -रंजन-**वि०** लोककी सुख,
आनंद देनेवाला । **पु०** लोकरंजन । -रव-**पु०** अकबाह,
जनशक्ति; लोकापवाद । -लोक-**पु०** ऊपरके माता लोकों-
मेंने पांचवाँ, महल्लोकके ऊपर स्थित लोक । -बल्लभ-**पु०**
मेत रोहित वृक्ष । -बाद्-**पु०** दे० 'जनरव' । -बास-
-**पु०** सर्वसाधारणके ठहरनेका स्थान; बरातियोंके ठहरने-
की जगह, मभा, समाज । -बासा-**पु०** [हि०] बरातियोंके
ठहरनेकी जगह । -भ्रम-**वि०** आदमियोंने खाली,
सुनमान । -अस्त-**वि०** प्रसिद्ध, जिसे बहुत लोग जानते
हैं । -भ्रुति-**खी०** जनरव । -संस्था-**खी०** स्थान-
विशेषमें बसनेवालोंकी मस्था, आगारी । -संश्राम-**पु०**
वह युद्ध जिसमें मारी जनता शामिल हो । -संवाच-
-**वि०** घना बसा हुआ । -समाज-**पु०** समाज; जन-
साधारण । -समुदाय-**पु०** भीड़, मजमा । -समुद्र-
-**पु०** समुद्रवत् विशाल जनसमूह, भारी भीड़ । -समूह-
-**पु०** भीड़, मजमा । -साधारण-**पु०** साधारण जन;
जनसमाज; जनता । -सेवा-आयोग-**पु०** (पब्लिक
सर्विस कमिशन) दे० 'लोकसेवा-आयोग' । -स्थान-**पु०**
दडकारण्याका वह भाग जहाँ सीताका हरण हुआ था ।
-हरण-**पु०** एक दडक दृष्ट । -हित-**पु०** लोकहित,
जनताके लाभका काम । -हीन-**वि०** जनशून्य, विजन ।
जन-**खी०** [फा०] स्त्री, नारी; पत्नी । -सुरीद्-**वि०** पत्नी-
के बसमें रहनेवाला, जोरुका गुलाम । -ब करतद्-**पु०**
बीबी-बच्चे, पुत्र कलत्र । -ब बर्द्-**पु०** स्त्री-पुरुष, पति-
पत्नी ।
जनक-**वि०** [सं०] जन्म देनेवाला, उत्पादक । **पु०** पिता;
मिथिलाका रामायणकालीन राजवंश जिसमें कई बड़े
महामानी हुए; उक्त वंशके राजा सीरध्वज जो सीताके पिता
थे । -तनया-**खी०** सीता । -हुलारी-**खी०** [हि०]
सीता । -नंदिनी-**खी०** सीता । -पुर-**पु०** मिथिलाकी
पुरानी-जनकवंशकी-राजधानी । -सुता-**खी०** सीता ।
जनकमज्जा-**खी०** [सं०] सीता ।
जनकौद-**पु०** जनकपुर; जनकवंश ।
जनस्रा-**पु०** औरतोंकी तरह रोने और चेहरे करने-

वाला, जौन; बिजवा ।
जनता-**खी०** [सं०] जनसमूह, लोक; जनन । -जनाई-**व-**
-**पु०** जनारूप जनार्दन, भगवान् ।
जनव-**पु०** [सं०] उत्पत्ति; जन्म; आधिभाव, प्रकट होना;
जनना, उत्पादन; बस; जीवन; परमेश्वर; मंत्रके दस
संस्कारोंमेंने पहला (न०), दे० 'मंत्रसंस्कार'; ब्रह्ममें होनेवाली
दीक्षित व्यक्तिकी एक दीक्षा; पिता ।
जनना-**सं०** कि० बच्चेकी जन्म देना, प्रसव करना; *
जानना-**वि०** 'जो यह पौर जनै'-स्वामी हरिदास ।
जननाक्षौच-**पु०** [सं०] प्रसवका अशौच, मौराका दूधक ।
जननि-**खी०** [सं०] माता; जन्म; जनि नामक गंधद्रव्य ।
जननी-**खी०** [सं०] जन्म देनेवाली, माता; दया; चम-
गादक; लास; जूही; मनीष; कुटवी; जटाभासी; पर्वटी;
जनी ।
जननेंद्रिह-**खी०** [सं०] वह इन्द्रिय जिससे संतानकी
उत्पत्ति होती है, उपस्थ ।
जनम-**पु०** जन्म; जीवन, जिंदगी । -वूँटी-**खी०** नवजात
बच्चेकी पिलायी जानेवाली वूँटी । -दिन-**पु०** दे०
'जन्मदिन' । -घरती-**खी०** जन्मभूमि । -पत्नी-**खी०**
दे० 'जन्मपत्नी' । -मंगी-**वि०** जिसका साथ जन्मसे ही
या त्रिदयीमर रहे (पति या पत्नी) । -संचाली-**वि०**
जनमसगी । सु०-वूँटीमें पड़ना-जन्ममें ही लगना ।
जनमना-**अ०** कि० जन्म लेना, पैदा होना; सं० कि०
उत्पन्न करना-सुंदर सुत जनमत भई ओज'-रामा० ।
जनमाना-**सं०** कि० जन्म देना; जनना ।
जनमारो-**पु०** जन्म; जीवन ।
जनमेजय-**पु०** [सं०] परीक्षितका पुत्र जिसने उनके सर्प-
दंशमें मरनेके बाद सर्पोंके नाशके लिए सर्पसत्र किया;
कुरुका एक पत्न ।
जनयिता(तु)-**वि०** [सं०] जन्म देनेवाला, उत्पादक ।
पु० पिता ।
जनयित्री-**खी०** [सं०] जननी, माता । **वि०** **खी०** जन्म
देनेवाली, उत्पादिका ।
जनयिष्णु-**वि०** [सं०] जनन करनेवाला; उत्पादक ।
जनवरी-**खी०** ईसवी सालका पहला महीना ।
जनावई-**खी०** जनवरीकी उन्नत या नेग ।
जनावाना-**सं०** कि० बच्चा जनाना, जननेमें मदद करना;
† मृत्यु कराना ।
जनांत-**पु०** [सं०] प्रवेश, प्रिला; जनहीन स्थान; घम ।
वि० मनुष्योंका अंत करनेवाला ।
जनांतिक-**पु०** [सं०] अभिनयमें एक अभिनेताका दूसरेके
कानमें सटकर कुछ कहना; मनुष्यका मामोथ्य ।
जना-**वि०** उत्पन्न किया हुआ । **खी०** [सं०] उत्पत्ति ।
जना-**पु०** [अ०] दे० 'जिना' ।
जनाई-**खी०** जनानेकी उन्नत या नेग; जनानेवाली स्त्री,
दाई ।
जनाड-**पु०** दे० 'जनाव' ।
जनाकीर्ण-**वि०** [सं०] आदमियोंसे भरा हुआ; बहुत
बनी आगयीवाला ।
जनावार-**पु०** [सं०] लोकाचार ।

जनाङ्ग-पु० [अ०] कला; सरणी, तावत् (उठना; निक-
लना) । -(३)की जमाङ्ग-मुसलमानकी अन्वेषिकी-
भवसरपर रास्तेमें या क्रमिस्तानमें पड़ी जानेवाली नमाज ।
जनातिग-वि० [सं०] असाधारण, लोकोत्तर ।
जनाधिनाथ-पु० [सं०] राजा; विष्णु ।
जनाधिप-पु० [सं०] राजा; विष्णु ।
जनाज्जाना-पु० [फा०] घरका वह भाग या खंड जिसमें
खियाँ रहें, अतःपुर ।
जनाना-स० कि० जताना; दे० 'जनवाना' ।
जनाना-वि० [फा०] कौ-संबंधी (स्कूल, अस्पताल आदि);
कौकी तरह (चाल, सूरत) । पु० जनानखाना; पक्षी, कौ;
हिजबा; बरपोक आदमी ।-पन्-पु० हिजबापन, नामर्दा;
कौसुलम् हाव-भाव ।
जनानी-वि० कौ० दे० 'जनाना' ।
जनाच-पु० [अ०] डेबदी, चौखटा; सम्मानित जनका
संबोधन-श्रीमन्, महोदय, हुजूर । -आफी-श्रीमन्
(संबोधन) ।
जनाबा-कौ० [अ०] श्रीमति (संबोधन) ।
जनाद्व-पु० [मं०] विष्णु; परमेश्वर । वि० जनपीठक ।
जनाव-पु० जनानेका काम; * जतानेका भाव, सूचना ।
जनावर-पु० जानवर, पशु ।
जनाशन-पु० [सं०] मेथिया; मनुष्यका मक्षण करनेवाला;
मनुष्यका मक्षण ।
जनाधम-पु० [सं०] धर्मशास्त्रा, सराय ।
जनाधय-पु० [सं०] शामियाना, मंडप; मकान; धर्म-
शाला, सराय ।
जनि-अ० नहीं, मत (निषेधाधिक) । कौ० [सं०] जन्म;
कौ; माता; पत्नी; पुत्रवधू; दासी; एक गणद्वय; पर्वटी
कला । -बीलिका-कौ० सहानीली ।
जनिक्-वि० [सं०] जन्म देनेवाला, उत्पादक ।
जनिक्-कौ० [सं०] दे० 'जनि' ।
जनिक्-वि० [सं०] उत्पन्न, पैदा हुआ ।
जनिक्(२)-पु० [सं०] पिता ।
जनित्र-पु० [सं०] जन्मस्थान; ज्ञात ।
जनित्री-कौ० [मं०] माता, जननी ।
जनित्र-पु० [सं०] पिता ।
जनित्रा-कौ० [सं०] माता ।
जनिमा(मन्)-कौ० [सं०] जन्म; सत्ति ।
जनिर्वा-कौ० दे० 'जानी' ।
जनी-वि० कौ० पैदा की हुई । कौ० [सं०] कन्या; माया;
दे० 'जनि' ।
जनु-कौ० [सं०] जन्म । * अ० मानो, जैने ।
जन्-कौ० [सं०] जन्म ।
जन्-पु० [अ०] पागलपन, उन्माद; (ला०) लुप्त ।
जन्नी-वि० पागल ।
जन्व-पु० [अ०] दक्षिण ।
जन्वी-वि० दक्षिणी ।
जन्व-पु० [सं०] राजा ।
जनेऊ-पु० यद्योपवीत; यद्योपवीत संस्कार । मु० -का
हाथ-तलवारका पैसा हाथ या बार जिससे विपक्षीका

जनेवा कट जाय, अवार्त तलवार नायें किये ते तिरछे काटती
हुई निकल जाय ।
जनेत-कौ० बरात ।
जनेरा-पु० मक़ा, जेम्हरी ।
जनेवा-पु० दे० 'जनेऊ'; 'जनेवा' ।
जनेवा-पु० बहका वह भाग जिसपर जनेऊ रहता है;
लकड़ी आदिमें पड़ी हुई भारी; एक घास ।
जनेश-पु० [मं०] राजा ।
जनेष्ट-वि० [सं०] लोकप्रिय । पु० एक पुष्प; सुहर इक्षु ।
जनेष्टा-कौ० [सं०] जतुका; इडि नामक ओषधि; चमेली;
इन्दी ।
जनेवा-पु० जाननेवाला ।
जनोपयोगी(मिन्)-वि० [सं०] लोकोपयोगी, जनसाधा-
रणके लिए हितकर ।
जनी-अ० मानो, जानो ।
जनीच-पु० [सं०] मनुष्योका मजमा, जीव ।
जन्-पु० [अ०] धारणा, सुमान, खयाल
जन्त-पु० [अ०] उद्यान, बाग; स्वर्ग, वैकुण्ठ, भिहित ।
-से) अद्भ-पु० वह बाग जिसमें आदम रोहूँ या सेव
खानेमें पहले रले गये थे ।
जन्ती-वि० जन्तमें रहनेवाला, स्वर्गवासी; (ला०) सीधा,
भोछा ।
जन्म(२)-पु० [सं०] गर्भसे बाहर आना; उत्पत्ति, पैदा-
इश; जीवन; जन्मस्थ । -कौल-पु० विष्णु । -कुंइली-
कौ० वह चक्र जिसमें जन्मकालके प्रहोंकी भित्ति बतानी
गयी हो । -कुन्-पु० पिता । -क्षेत्र-पु० जन्मस्थान ।
-गत-वि० जन्मसे प्राप्त, पैदाइशी । -ग्रहण-पु० उत्पत्ति,
जन्म लेना । -तिथि-कौ० जन्मकी तिथि; बरनगाँठ ।
-द, -दाता(२)-वि० जन्म देनेवाला । पु० पिता ।
-दात्री-कौ० माता । -दिन, -दिवस-पु० किमीके
जन्म या पैदाइशका दिन, जन्मतिथि । -नक्षत्र-पु० वह
नक्षत्र जिसमें किसीका जन्म हुआ हो । -नाम(२)-
पु० वह नाम जो जन्मके समय या जन्मके बारडब दिन
रखा जाय । -प, -पति-पु० जन्मस्थ या जन्मराशिका
स्वामी । -पत्र-पु०, -पत्रिका-कौ० वह पत्र या कागज
जिसमें किसीके जन्मकालके ग्रह-नक्षत्रोंकी स्थिति, उनकी
दशा, अतर्दशा और उनके शुभाशुभ फल बताये गये
हो, बताना । -पादप-पु० वज्रहृत् । -प्रतिष्ठा-कौ०
जन्मस्थान; माता । -भाषा-कौ० मातृभाषा । -श्रुति-
कौ० वह जगह-ग्राम, नगर, देश-जहाँ किसीका
जन्म हुआ हो; जन्मस्थान । -श्रु-पु० प्राणी, जीव ।
-योग-पु० जन्मपत्रिका । -राशि-कौ० वह राशि
जिसमें किसीका जन्म हुआ हो । -रोगी(मिन्)-
वि० जन्मका रोगी, जिसे जन्मकालमें ही रोग लगा हो ।
-खरन-पु० जन्मराशि । -वर्त्म(२)-पु० यौनि ।
-वृत्त-पु० जीवन-वृत्तांत, जीवनचरित । -शोधन-
पु० जन्मसे प्राप्त ऋणोंका परिशोधन । -सिद्ध-वि०
जन्मसे प्राप्त, पैदाइशी । -स्थान-पु० जन्मभूमि । मु०
-गैबावा-जीवनका सदुपयोग न करना । -विगवना-
धर्म नष्ट होना । -हारना-दास होकर रहना ।

जन्मना-अ० कि० दे० 'जनमना'। अ० [सं०] जन्मते,
जन्मतः (जन्मना माद्यते)।

जन्मांतर-पु० [सं०] दूसरा जन्म; पिछला जन्म; अगला
जन्म; परलोक। -बाह्-पु० पुनर्जन्मबाह्।

जन्माधि-वि० [सं०] जन्मका, पैदाइशी अंधा।

जन्माधिप-पु० [सं०] जन्मराशिका स्वामी; शिव।

जन्माद्यमी-स्त्री० [सं०] बाद्र कुण्ठाद्यमी, कुण्ठाकी जन्म-
तिथि।

जन्मास्पद्-पु० [सं०] जन्मस्थान।

जन्मी (मिन्)-पु० [सं०] प्राणी।

जन्मेजय-पु० [सं०] दे० 'जनमेजय'।

जन्मेस-पु० [सं०] दे० 'जन्माधिप'।

जन्मोत्सव-पु० [सं०] वर्षोंकी बरही-छट्टीका उत्सव;
जन्मदिनका उत्सव, बरस-गाँठ।

जन्म-वि० [सं०] जन्म लेनेवाला, जायमान; जात, उत्पन्न;
(समासांतमें) 'से उत्पन्न; जन-संबन्धी; किसी जाति या
वंशसे संबंध रखनेवाला; सामान्य; असंभ्य। पु० जन्म;
जनक, पिता; बरका सखा या सवधी; बराती; साधारण
जन; जो उत्पन्न हुआ हो वह, उत्पादित वस्तु; देह; जाति;
लोक; अकबाह; निदा, लोकापवाद; महादेव; हाट; युद्ध;
पुत्र; जामाता।

जन्मा-स्त्री० [सं०] माताकी सखी; बधूकी सहेली; प्रीति;
सुख, आनन्द।

जन्मु-पु० [सं०] जन्म; प्राणी; जन्मा; अग्नि।

जप-पु० [म०] किमी मंत्र, स्तोत्र, ईश्वरके नाम आदिकी
धोमे श्रवने बार-बार दुहराना; किमी शब्द, नाम आदिकी
बार-बार मुँहसे कहना। -सप-पु० पूजा-पाठ, जप-
उपवास। -माला-स्त्री० जप करनेकी माला। -बद्ध-
पु० जपरूप वस्त्र। -होम-पु० यहके रूपमें मन्त्रादिका
पाठ।

जपजी-पु० सिसोंका एक धर्मग्रंथ।

जपतप-वि० [सं०] दे० 'जपनीय'।

जपन-पु० [म०] जप करनेकी क्रिया, जप।

जपना-स० कि० जप करना; यज्ञ करना।

जपनी-स्त्री० माला; गोमुखी।

जपनीय-वि० [म०] जप करने योग्य।

जपा-वि० जप करनेवाला। स्त्री० [सं०] अक्षुल। -

कुसुम-पु० अक्षुलका फूल।

जपिवा-वि०, पु० दे० 'जपी'।

जपी (विन)-वि०, पु० [सं०] जप करनेवाला।

जप्ता-पु० दे० 'जन्म'।

जप्ती-स्त्री० दे० 'जन्ती'।

जप-वि० [सं०] जपने योग्य। पु० जपा जानेवाला मंत्र।

जक्र-पु० [सं०] परोक्ष बातें जानने, बतानेकी विद्या।

जक्र-स्त्री० [अ०] विजय; सफलता। -बाह्-वि० विजय
पानेवाला।

जक्रा-पु० [अ०] जुलूम, अत्याचार, सख्ती। -कहा-वि०
कह सहनेवाला; कड़ी मेहनत करनेवाला, परिश्रमी; जुलूम
सहनेवाला। -कक्षी-स्त्री० सदिष्णु, परिश्रमी होना।

-कार,-शिभार-वि० अन्धाव, अत्याचार करनेवाला;

निर्दय।

जक्रीर, जक्रील-स्त्री० [अ०] सीटी; मुँहसे निकाली जाने-
वाली मीठीकी आवाज।

जक्ररी-स्त्री० [अ०] सीटी; मिलमें पैदा होनेवाली एक
तरहकी कपास।

जब-अ० जिस समय, यदा। -कभी-अ० चाहे जब,
किमी समय। -कि-अ० जब। -जब-अ० जिस-जिस
समय। -तब-अ० कभी-कभी, यदा-कदा।

जबका-पु० मुँहमें नीचे-ऊपरकी इन्ही जिपमें रँग जड़े होते
हैं, कल्ला। -तोड़-वि० जो मुँह तोड़ सके, बलवान्;
(सम्भ्र) त्रिमका उच्चारण कठिन हो।

जबर-वि० [फा०] करवाका; बलवान्; बलमें अधिक।
पु० अरबी-कागसी लिखावटमें हल्क आकारका चिह्न। अ०
ऊपर। -बुल्ल-वि० बलवान्; प्रबल पढ़नेवाला; विजयी;
भारी; विशाल। -बुल्ल-स्त्री० जुलूम; अत्याचारी; बीगा-
धीमी।

जबरजब्-पु० [अ०] एक तरहका पन्ना, पुस्तक।

जबरन्-अ० दे० 'जबन्'।

जबरा-वि० जबरदस्त, बलवान्।

जबराहल-पु० दे० 'जिब्रील'।

जबर्दस्त-वि० दे० 'जबरदस्त'।

जबर्दस्ती-स्त्री० दे० 'जबरदस्ती'।

जबल-पु० [अ०] पहाड़।

जबह-पु० दे० 'जम्ह'।

जबहा-पु० हिम्मत, जीवत; [अ०] भाषा, पेशानी। -साह
-स्त्री० भाषा विद्वाना।

ज्ञान-स्त्री० [फा०] जीव, रसना; बणी, बोली; भाषा;
वचन, बात। -वीर-वि० जासूस, भेदिता। -ज्ञ-वि०
प्रसिद्ध, जो लोगोंकी ब्रह्मचर रहे। -द्वारा-वि० बहुत
बोलनेवाला; बोलनेमें धृष्ट, मुद्दफट; बदब्रह्म। -द्वारा-
स्त्री० बाललता, धृष्टता; बदब्रह्म। -द्व-वि० भाषा-
(विशेष)का पठन। -द्वानी-स्त्री० भाषा (विशेष)का पूर्ण
ज्ञान, पंक्ति। -बंद्-पु० यज्ञ, तबीज; इश्मनकी
जवान बंद करनेवाला यंत्र। -बंद्-स्त्री० किमी मुकदमे-
के गवाहोंका ब्रह्मचर लिखा जाना; खामोशी। मु०
-खीबना-बुरी बातें कहनेके कारण कष्ट दंड देना।
-खुलना-बोलनेमें समर्थ होना, मुँहसे बात निकालना;
बच्चेका बोलने लगना। -खुलवाना-बोलने, जबाब
देने या कोई अप्रिय बात कहनेकी विवदा करना, मुँह
खुलवाना। -झरक होना-बहुत प्यास। होना; बहुत
बातें करना। -खीलना-कुछ कहना, बोलना; उज
वा शिकायत करना। -खलना-मुँहसे शब्दोंका जल्दी-
जल्दी निकलना, तेजीसे बोलना। -खलाना-तेजीसे
बोलना; बदब्रह्मानी करना। -खलानेकी रोटी खाना
-चापलूसीसे पेट पालना। -चाटना-ओठ चाटना।
-टूटना-(बच्चेका) छिंट शब्दोंका शुद्ध, स्पष्ट उच्चारण
करने लगना। -धामना-दे० 'जवान पकड़ना'। -वेना-
बचन देना, राक करना। -पकड़ना-किमीकी अपनी
बात कहनेसे ठीकना, बोलने न देना; बचनमें दोष, गलती
निकालना; ठीकना। -पर जाना-किसी बातका मुँहसे

निकालना; कहा जाना । -पर ताखा लगना-दे० 'जवान में ताखा लगना' । -पर मुहर होना-जवान बंद होना, बोल न सकना । -पर खाना-कहना, बवान करना । -पर होना-हर वक्त याद रहना, कंठल होना; चचाका विषय होना (यह बात आज बहुतोंकी जवानपर है) । -पलटना-शात कवक मुकरना, बचन भंग करना । -बंद होना-बोल न सकना, चुप रहनेकी विवश होना; बहसमें हार जाना । -बदलना-दे० 'जवान पलटना' । -बिगड़ना-अपशब्द कहने, गालियाँ बकनेकी आवत पड़ना; चटोरपनकी आवत लगना । -में कौं दे पचना-जवानका सुलकर सुरदरी हो जाना । -में खुजली होना-सूदने, छलसनेकी ची चाहना । -में ताखा लगना-चुप रहना, मौनावलन करना । -में लगाना न होना-बोलनेमें उचित-अनुचितका विचार न होना; मुंहफट हो जाना । (मुँहमें)-रखना-बोलने, उत्तर देनेमें समर्थ होना । -रहना-बोलनेमें अटकना, चुप होना । -रोकना-बोलना बंद करना, चुप हो रहना; जवान पकड़ना । -सँभालना-बोलनेमें उचित-अनुचितका विचार रखना, अनुचित शब्द मुँहने न निकालना । -से निकलना-उच्चारित होना; कहा जाना । -हारावा-बचनबद होना, प्रतिष्ठा करना । -दिलाना-बोलनेकी कोशिश करना; बोलना । -(ने)हालसे कहना-बिना कहे; स्थितिमें, प्रकट होना ।

जुबानी-वि० [फा०] जो केवल जवानमें कहा गया हो, मौखिक; अलिखित (इजहार, सवाक, मेंमेमा इ०); ऊपरी, दिखाऊ । -जमाज्रचै-पु० वह बात जो कही जाय, पर की न जाय, दिखाऊ, मौखिक कारवायें ।

जुबून-वि० [फा०] खराब, निरुद्ध; निर्बल ।

जुबूर-स्त्री० [अ०] इल्लामी किताब जो मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार दाऊदपर उतरी थी ।

जुहत्त-पु० [अ०] प्रवध; निगमनी; सहन; धैर्य-धारण; राज्य द्वारा किसी वस्तु, संपत्तिका हरण (करना, होना) ।

-जुद्दा-वि० जन्म किया हुआ ।

जुह्दी-स्त्री० किसी चीजका जन्म किया जाना, कुर्की ।

जुह्दीबा-स्त्री० [अ०] छिन ।

जुम-पु० [अ०] दबाव, मजबूरी; जबरदस्ती; सक्ती, जुमन । -जु मु जाबिला-पु० बीजगणित ।

जुमरू-अ० [अ०] जबरदस्ती, दबाव देकर, बलात् । -जु कदरू-अ० विवश होकर, मजबूर ।

जुमी-वि० बलपूर्वक कराया जानेवाला, अनिवार्य (-अरती) ।

जुमीया-अ० [अ०] मजबूर करके, जबरदस्ती । पु० मुसलमानोंका एक फिर्का जो मानता है कि मनुष्य अपने कर्मोंमें सर्वथा नियति या ईश्वरेच्छाके अधीन है ।

जुमील-पु० [अ०] दे० 'जुमील' ।

जुम्ह पु० [अ०] गला काटकर जान लेनेका कार्य । जु० -करना-बहुत तकलीफ देना ।

जुम-पु० दे० 'यम' । -कास्त, -कास्त-स्त्री० एक तरहका खोँसा, यमका खोँसा । -पु० संहर । -घंड-पु० दे० 'यमपट' । -ज-वि० जुदवाँ (बच्चे) । -झड़-स्त्री०

एक झुकी नोकवाली कटार । -विता-स्त्री० दक्षिण दिशा । -कूत-पु० दे० 'यमदूत' । -घर-पु० दे० 'जम-डाढ़' । -बार-पु० दे० 'यमद्वार' । -राज-पु० दे० 'यमराज' । जु०-हो जाना-न टलना, पीछा न छोड़ना । जमई-वि० [अ०] जो जमाके रूपमें हो, (भूमि) जिसका लगान नगदी हो ।

जमक-पु० दे० 'यमक' ।

जमघट, -जमघटा-पु० आदिमियोंकी भीड़; जमाव, मजमा (लगाना, होना) ।

जमघह-पु० दे० 'जमघट' ।

जमजम-अ० सदा, हमेशा । -नित-नित-अ० सदा (स्थिर) ।

जमजम-पु० [अ०] कानाके पासका एक कुर्मी ।

जमजमा-पु० [फा०] गाना; राग; गीत । -इश्वान, -संज-पु० गायक, गवैया ।

जमदग्नि-पु० [स०] एक वैदिक ऋषि जो सप्तर्षियोंमें गिने और परशुरामके पिता माने जाते हैं ।

जमन-पु० [स०] भोजन; आहार; * दे० 'यवन' ।

जमन-पु० [अ०] जमाना, काल ।

जमना-स्त्री० दे० 'यमुना' । पु० पहली वर्षाके बाद पैदा होनेवाली धाम । अ० कि० पतनी चीजका गाड़ी या ठोस होना (दही, पानी); किमी जगह देरतक बैठना; अपनी जगहपर पड़ा, बना रहना, टिकना, खटाना-स्थिर होना; जब मजबूत होना, ठीक गौरमें चलने लगना; नीचे बैठना (तलछट); जमा, इकट्ठा होना (भीड़); दिलमें बैठना (तलछट); जमा, इकट्ठा होना (भीड़); दिलमें बैठना, सुदर, भफल, यथेष्ट रमोत्पादक होना (माना, खेल, व्याख्यान); चल निकलना (दुकान इ०); ठीक आना, बैठना (टोपी पगड़ी इ०); (घोड़ेका) ठुसककर चलना, अदना; उगना (बीज, बाल) । जमकर-अ० हटनापूर्वक ।

जमनिका-स्त्री० दे० 'जवनिका'; * कर्ष ।

जमनोत्तरी-स्त्री० हिमालयकी बड़ चोटी जिनमें यमुना निकलती है ।

जमनीता-पु० जमानत करनेवालेको उनके बदलेमें दी जानेवाली रकम ।

जमवट-स्त्री० लकड़ीका गोला चक्कर जिसके ऊपर पक्षे कुर्दकी जोड़ाई होती है ।

जमघोड़-पु० ईरानका एक प्राचीन बादशाह जिसके पाम, कहते हैं, एक ऐसा प्याला था जिसमें सारी दुनियामें होनेवाली बातें दिखाई देती थी ।

जमहर-पु० [अ०] दे० 'जुमहर' ।

जमहूरी-वि० दे० 'जुमहूरी' ।

जमा-स्त्री० [अ०] समूह, जमात; जोड़ (गं०); बहुवचन (व्या०); पूँजी, धन; बड़ी-स्थानका वह भाग या मद जिसमें प्राप्ति या आमदनी लिखी जाय; लगान । -जुवचै-पु० आमदनी और खर्च; आमदनी-खर्चका हिस्सा, ख्योरा । -जुवचीस-पु० कचहरीका एक अहलकार । -जुवा-स्त्री० पूँजी, धन संपत्ति । -द्वार-पु० सिपाहियों आदिका मुखिया; पुलिसका डेस्टास्टेबल; भगियोंके कामकी नियरानी करनेवाला कर्मचारी । -दूँजी-स्त्री० दे० 'जमा-जवा' । -बंदी-स्त्री० लगानका हिसाब; पदवारीकी वह

वही जिसमें गाँवके हर कावतकारके जवानका हिमाव और भोरा लिखा होता है; गाँव, महाक या हिस्सेका कुल जमाना। -**भार**-वि० दूसरेका पावना हजम कर जाने-वाला, बेईमान। **मु०**-**खर्च करना**-बिसाव बराबर करनेके लिए किसी रकमको जमाने लिखकर फिर खर्चमें लिखना। -**भारना**-जमान, कण या अमानतके रूपमें दूसरेका पावना हजम कर जाना; दूसरेका पैसा मार लेना।

जमावत-**खी** [अ०] समुदाय, जाँथा; भीड़, मजमा; दल; कक्षा, भेगी; नमाजियोंकी पंक्ति।

जमावतनी-वि० सामुदायिक।

जमाई-पु० दामाद, जामाता। **खी०** जमानेकी क्रिया या मजदूरी।

जमावत-**खी०** 'जमावत'।

जमानत-**खी०** [अ०] जिम्मेदारी; किसीके कोई काम करने- (समयपर हाजिर होने, कण चुकाने, प्रतिष्ठाका पालन करने आदि)की जिम्मेदारी जो दूसरा आदमी अपने कपरे छे; किसी बातके किये जानेके हतमीनानके लिए जमा की हुई रकम, जायदाद; हम मरहका हतमीनान दिलानेवाली चीज, मारदी। -**हार**-पु० जमानत करनेवाला, जामिन। -**नामा**-पु० जामिन होनेकी लिखित स्वीकृति।

जमानतली-वि० जिम्मे या जिम्मेकी जमानत हो सके, जमानतके काबिल (-**भार**)।

जमाना-म० कि० पतली चीजको गाढ़ी या ठोस बनाना (दही, बरफ आदि); मजबूतीसे बैठाना; दिलमें बैठाना; मजाकर रखना; चुनाई करना; जमानेका कारण, हेतु होना; जब मजबूत करना; ठीक तौरसे चलने लायक बनाना (कारबार, स्कूल आदि); बैठाना, स्थापित करना (अमर, धाक, रोब आदि); जमा; इकट्ठा करना; मुँहमें रखना (पान, जर्दी इ०); खाना, उदरस्थ करना (भौंका गोला); लगाना, रचना (मिस्सी); मारना, रसीद करना (धप्पक, घुँमा, लाठी आदि); मरक करना, बैठाना (हाथ); डालना, उगाना, उपजाना।

जमाना-पु० [अ०] काल, युग; अरसा; अवधि, बहुत समय; राज्यकाल; कार्यकाल; दुनिया, ममार; क्रियाका काल (भूत, भविष्य, वर्तमान); चटतीके दिन, मौभाग्यकाल।

-**साज़**-वि० बनावटी प्रेम, आदर दिखानेवाला, ठकुरसुहाती करनेवाला, चालाक। -**साज़ी**-**खी०** बनावट, चापलूमी। **मु०**-**उलटना**-समयका बकबारीगी बटल जाना, मया युग उपस्थित हो जाना। -**छानना**-बहुत तलाश करना। -**देखना**-अनुभव प्राप्त करना। -**देखे होना**-अनुभवी होना। -**पलटना**, -**बदलना**-अच्छे दिनसे बुरे या बुरेसे अच्छे दिन आना। -**(ने)**की गढ़िया-समयका उलट-फेर, दिनका फेर।

जमार*-पु० यमद्वार।

जमाल-पु० [अ०] सुंदरता, शोभा, हुस्न; ईश्वरका माधुर्य, ऐश्वर्य।

जमाखतोदा-पु० एक फलका बीज जो तीव्र विरेचक होता है।

जमाखी-वि० प्रिय, रमणीय; जिसमें ईश्वरकी शान पायी जाय।

जमाव-पु० जमनेका भाव; भीड़, मजमा।

जमावट-**खी०** जमनेका भाव।

जमाववा-पु० जमाव।

जमाही-**खी०** दे० 'जम्हाई'।

जमी, **जमीन**-**खी०** [फा०] पृथ्वी (ग्रह); धरती, भूमि; धरतीका स्थलभाग; जमीनका टुकड़ा, खेत; वह लोक; मिट्टी; कागज, कपड़े आदिकी सादी या स्तर की हुई सतह जिसपर चित्रकारी, नक्काशी या छपाई की जाय; वह तेल जिनपर कोई इत तैयार किया जाय, इतका माह; गजलकी रटीक, काफिया और छंद; नदी, तालाब आदिका तल-भाग। -**कंद**-पु० पूरन। -**हार**-पु० जमीनका मालिक; कावतकार, फिमान। -**हारी**-**खी०** जमींदारका हक; वह जमीन जिनपर किसी खास आदमीकी जमींदारका हक हासिल हो; जमींदारका काम, पेशा। -**होज**-वि० जमीनमें पेशा हुआ, इस तरह बना हुआ कि जमीनके ऊपर न उभरा हो (किला, मकान); जो जमीनके बराबर कर दिया गया हो, पटपर। -**बोस**-पु० जमीन चुमना। -**बोसी**-**खी०** जमीन चुमना। **मु०**-**आसमान एक करना**-अवधिक प्रयास या उद्योग करना; हलचल मचाना; दुनिया छान मारना। -**आसमानका फल**-बहुत अधिक अंतर, आकाश-पातालका अंतर। -**आसमानके कुलाबे मिलाना**-बहुत डँग मारना, अत्युक्ति करना, झूठका पुल बौधना; किसी कामके लिए बहुत प्रयत्न करना। -**का पाँव तलेसे खिसक या निकल जाना**-भय या बराहटसे सड़ा न रह सकना, बरहवास हो जाना। -**का पैरबंद होना**-दफन होना; मरना। -**चूमना**-इस तरह गिरना कि मुँह नाक जमीनसे लग जायें; जमीनसे माथा टेककर (राजा, बादशाह आदिकी) प्रणाम करना, जमीनोमी। -**दिखाना**-पटकना, गिराना। -**देखना**-पटका जाना; नीचा देखना। -**नापना**-अधिक यात्रा करना, देकार फिरो रहना। -**पकड़ना**-जमकर बैठ जाना; (कुदरीमें) चिप न होना। -**पर आना**-गिरना, (कुदरीमें) नीचे आना। -**पर पाँव न पड़ना या न देखना**-बहुत गर्ब होना, बहुत हतना।

-**बाँवना**-अस्तर लगाकर चित्रकी जमीन तैयार करना; भूमिका बाँधना, पेशबंदी करना। -**में गड़ जाना**-अत्यंत लज्जित होना, लज्जामें मिर न उठा सकना।

जमी*-वि० मंथमी, इदरियोंका निग्रह करनेवाला।

जमीनी-वि० [फा०] जमीनका; जमीनने मरक (-फदी)।

जमीमा-पु० [अ०] परिशिष्ट; पूरक; कोडपत्र।

जमीर-पु० [अ०] हृदय; भले-बुरेका विचार करनेवाली अतःकरणकी वृत्ति, सत्-असत्-विशेष; सर्वनाम (व्या०)।

-**दूँ**-वि० मनकी बात जाननेवाला। -**फ़रोस**-वि० स्थायिके लिए दुरेकी मला मानने, कहनेवाला, ईमान-फरोश।

जमील-वि० [अ०] सुंदर, जमालवाला।

जमील-वि० **खी०** [अ०] सुंदरी।

जमुना, **जम्मुना***-पु० एक घातक बालरोग।

जमुफना*-अ० कि० पास आना, होना।

जमुना-**खी०** उत्तर भारतकी एक प्रधान नदी जो जमनो-

सरोमे निकलकर प्रयागमें गंगामें मिलती है, यमुना ।
जमुनिर्वा-वि० जामुनके रंगका, काला । पु० जामुनका रंग ।

जमुरी-खी० नालबंदीका एक औजार ।

जमुरद-पु० [फा०] पत्ता ।

जमुरदी-वि० दे० 'जमुरदीन' ।

जमुरदीन-वि० [फा०] जमुरदेके रंगका, हरा । पु० ऐसा रंग ।

जमुहाना-अ० कि० जम्हाई लेना ।

जमूरक-पु० पुराने समयकी एक तोप जो घोड़े या ऊँटपर चलती थी ।

जमुरा-पु० दे० 'जमूरक' ।

जमैयत-खी० [अ०] इकट्ठा होना; गजमा, सजुदाय; समा, परिषद् ।

जमैयतुल उलेमा-खी० [अ०] मुसलमान आलिमोंकी समा या परिषद् ।

जमोगा-पु० जमोगनेकी क्रिया । -वार-पु० जमोगने तरीकेमें जमींदारका रुपया देनेवाला ।

जमोगाना-स० कि० हिसाबकी जाँच कराना; मूल धनमें सूद जोड़ना; अपनी कोई ज़िम्मेदारी दूसरेकी सौंपना और उसमें अपनी हामी मरा लेना; किसीकी बातकी पुष्टि या तसदीक करना ।

जमोगवाना-स० कि० जमोगनेका काम कराना ।

जमोगा-पु० जमोगनेकी क्रिया ।

जमोझा-वि० जमाकर बनाया हुआ ।

जम्बू-पु० कश्मीरका एक प्रांत और एक नगर; दे० 'जंबू' ।
जम्हाई-खी० ऊँच, ऊँच, आलस्य आदिसे होनेवाली शरीरकी एक सहाज क्रिया जिसमें मुँह पूरा खुल जाता और साँस जोरसे अवर खिंचकर फिर धीरे धीरे बाहर निकलती है, उवासी ।

जम्हाना-अ० कि० जम्हाई लेना ।

जयस-पु० [सं०] इद्रका पुत्र; शिव; विष्णु; चंद्रमा; क्रांति-केय; एक रुद्र; एक ताल; विराट् नगरमें अज्ञातवासके समय भीमसेनका नाम; यात्राका एक योग । वि० विजयी; बहुश्रुति ।

जयंतिका-खी० [सं०] हल्दी; दे० 'जयंती' ।

जयंती-खी० [सं०] पताका; इंद्रकी कन्या, जयंतकी बहिन; दुर्गा; पार्वती; भाद्र-कृष्ण अष्टमीकी आधी रातकी रोहिणी नक्षत्र होनेसे पड़नेवाला एक योग (कृष्णका जन्म इसी योगमें हुआ था); किमीकी जन्मतिथि, बरसाणोंका उत्सव; जौकी जरई; हल्दी; बैजंती; वृक्षविशेष । वि० खी० जय करनेवाली, विजयिनी ।

जय-खी० [सं०] शत्रु या विपक्षीको हराना, पछाड़ना, जीत; बशमें करना, निग्रह (रंक्षियजय); सुकायले, प्रति-योगितामें जीतना, दूसरोंमें बढ़ जाना । पु० विष्णुके दो द्वारपालों (जय, विजय)मेंसे एक; परमेश्वर; इद्रका पुत्र जयंत; बुधेश्वरका विराट् नगरमें अज्ञातवासके समयका नाम; सूर्य; महामारत; अजुनका एक नाम; अधिराज्य; साठ संवत्सरोके अंतर्गत एक संवत्सर । वि० जीतनेवाला (समासमें) । -कार-पु० जयफल । -कोलाहल-पु०

पानेका एक तरहका (प्राचीन) लेख । -गोपाल-पु०

हिंदुधर्म प्रचलित एक प्रकारका अभिवादन । -बीब-पु० जयध्वनि । -जयकार-पु० जयघोष; जयप्राप्तिका आशीर्वाद । -अचर्बती-खी० [हिं०] एक रागिनी । -जीब-पु० एक तरहका प्राचीन अभिवादन । -बहल-खी० जीतका डंका । -ताल-पु० एक मुख्य ताल । -हुंहुंभी-खी० जयमेरी, जीतका डंका । -दुर्गा-खी०

तंत्रके अनुसार दुर्गाकी एक मूर्ति । -द्वैच-पु० गीतगीतविद-के रचयिता प्रसिद्ध वगीय कवि जो महाराज लक्ष्मणसेनके समर्पित थे । -ध्वज-पु० विजयपताका; अवतराज कांतवीर्यजुनका पुत्र । -ध्वनि-खी० जयघोष । -पस्त-पु० दे० 'जयपत्र' । -पत्र-पु० पराजित राजा आदि-

का बह लेख जिसमें वह अपनी पराजय स्वीकार करे; मुकु-रथमें जीतनेवाले एकको मिलनेवाला जयसूचक पत्र, झिगा । -पत्री-खी० जाविनी । -पराजय-खी० जीत-हार । -पाल-पु० जमालगोटा; विष्णु; ब्रह्मा; राजा ।

-पुत्रक-पु० पुराने समयका एक तरहका पाना । -प्रिय-पु० राजा विराट्का भाई; तालकी मुख्य मेढोंमेंसे एक । -मेरी-खी० जीतका डंका । -मंगल-पु० राजाकी लवारीका हाथी; एक ताल; जयकार; एक वृक्ष ।

-रस-पु० आयुर्वेदोंका एक ज्वरनाशक रस । -मङ्गल-पु० एक राग । -माल-खी० [हिं०] दे० 'जयमाला' । -माला-खी० विजेताकी पहिनायी जाने-

वाली जयमूलक माला; वह माला जो स्वयंवर कन्या स्वयंवर-विजयी या मनोनीत वरके गर्भमें डाले (हिं०) । -मास्य-पु० जयमाल । -यज्ञ-पु० अश्वमेध यज्ञ । -लक्ष्मी-खी० जयश्री । -लेख-पु० जयपत्र । -बाहिनी-खी० इद्राणी; विजयिनी सेना । -श्री-पु०

जयघोषणाके लिए बनाया जानेवाला मिया । -श्री-खी० विजयी अधिष्ठात्री देवी; विजय; एक रागिनी । -स्वर्ध-पु० देसविजयके स्मारकरूपमें स्थापित स्तम्भ ।

-स्वामी(गिनु)-पु० काल्याण-कल्पवृक्षके एक व्याख्याता । -सु-सनावा-(किमीकी) विजय या कल्याणकी कामना करना ।

जयक-वि०, पु० [सं०] जयकर्ता, जीतनेवाला ।

जयवंच-पु० पृथ्वीराजका एक रिश्तेदार जो कश्मीरका राजा था (कहा जाता है कि पृथ्वीराजवर आक्रमण करने-

के लिए हमीने शहाबुद्दीन गौरीकी आमंत्रित किया था); (ला०) देश-द्रोह करनेवाला व्यक्ति ।

जयति-पु० एक स्वर राग । -श्री-खी० एक रागिनी ।

जयली-खी० श्री रागकी एक रागिनी ।

जयल-अ० [सं०] जय हो, आशीर्वाद ।

जयनकरवाण-पु० [सं०] एक स्वर राग ।

जयसेव-पु० [म०] विराट् नगरमें अज्ञातवासके समयका नकुलका नाम ।

जयदल-पु० [सं०] विराट् नगरमें अज्ञातवासके समयका सहदेवका नाम ।

जयव्रध-पु० [सं०] मिथु-सौवीरका राजा जो दुष्योधनका बहनोई था और जिनने चक्रव्यूहमें पंडे अभिमन्युका वध किया । -वध-पु० अभिमन्युके वधके बाद अजुनका

अगले दिन सुबोस्तके पहले जयद्वयके वधकी प्रतिष्ठा करना और कृष्णकी सहायतामे उसका पाठन ।

जयन-प० [सं०] जीतना, जय करना; चौड़े आदिपर बांधनेका जिरह । शि० विजयी ।

जयनाभ-म० कि० विजय प्राप्त करना ।

जयनी-स्त्री० [सं०] बंदकी कन्या ।

जयशंकर 'प्रसाद'-पु० हिंदीके वर्तमान युगके प्रथम छायावादी कवि, जो नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार भी थे । 'कामायनी' नामक महाकाव्य उनकी परम उत्कृष्ट रचना है । 'तितली' और 'कंकाल' नामक उपन्यास तथा 'चंद्रगुप्त' आदि नाटक इनकी अन्य रचनाएँ हैं । (संवत् १९४६-१९९४) ।

जया-स्त्री० [सं०] दुर्गा; दुर्गाकी एक सहचरी; पताका; हरी दूध; शमी; जैत; हड़; भाँग; अद्वलका फूल; दोनों पक्षोंकी तुलीया, अष्टमी और अयोदशी; एक प्राचीन बाजा ।

* वि० स्त्री० जय दिलानेवाली ।

जयापीड-पु० [सं०] कश्मीरका एक प्रतापी राजा जो आठवीं शती^१ हुआ था ।

जयावली-स्त्री० [सं०] एक संकर रागिनी; कापिकेयकी एक मातृका ।

जयावह-वि० [सं०] जय दिलानेवाला ।

जयावहा-स्त्री० [सं०] भद्ररत्नी वृक्ष ।

जयाधया-स्त्री० [सं०] जयवी नामक वृक्ष ।

जयाह्वा-स्त्री० [सं०] भद्ररत्नी वृक्ष ।

जयिष्णु-वि० [सं०] जयशील, सदा जीतनेवाला ।

जयी (पिद्) -वि० [सं०] जीतनेवाला, जयशील ।

जयेनी-स्त्री० [सं०] एक मकर रागिनी ।

जयेन्-प० [सं०] एक राग ।

जयेतुरी-स्त्री० [सं०] एक मकर रागिनी ।

जयोह्वास्य-पु० [सं०] विजयका उल्लास, जीतकी खुशी ।

जय्य-वि० [सं०] जीतने योग्य ।

जर्द-वि० [सं०] क्षीण; वृद्ध ।

जर्त-पु० [सं०] वृद्ध मनुष्य; भेसा ।

जर-पु० [सं०] जरा; विनाश; * जल; ज्वर; दे० 'जर्' ।

वि० वृद्ध; क्षीण; क्षय या वृद्ध होने या करनेवाला । * स्त्री०

जड, हैमियत, ओकात । -कस, -कसी-वि० दे०

'जरकश' । -बारा-वि० देनेवाला, धनी ।

जर-पु० [फा०] मोना; धन, नौलत । -अस्त्र-पु० मूल धन । -कश-पु० कलावत्तुके तार खींचनेवाला । वि०

(कपडा) जिमपर जरी या कलावत्तुका काम हो । -कार-

वि० जिमपर सोनेका मुकुम्मा या काम हुआ हो । पु०

सुनार । -खरीद-वि० रुपया देकर खरीद हुआ, क्रीत

(गुलाम, जमीन); जिमपर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त हो । -ज्जेज-

वि० उपजाऊ (-जमोन) । -ज्जेज्जी-स्त्री० उपजाऊपन ।

-गर-पु० सुनार । -डिगरी-पु० डिगरीका रुपया;

वह रकम जिमको डिगरी मिले । -हार-वि० जिसपर

जरीका काम हो । पु० जरी । -हारी-वि० दे० 'ज-

तार' । स्त्री० जरीका काम । -हार-वि० धनी, माऊ-

दार । -होत्र-वि० जिसपर जरीका काम हो । पु०

जरी, कलावत्तुका काम करनेवाला । -होत्री-स्त्री० कला-

वत्त या सलमे-सितारेका काम । -महद्-पु० नगद

रुपया, रोहड़ । -निगार-वि० सुनहरे कामका, सुन-

हरा । -निगारी-स्त्री० मोनेका काम; सोनेका मुकुम्मा ।

-निशर्-पु० कोठेपर सुनहरे ढेड़-ढूटे बनानेका काम ।

-शर-पु० जरनिशर् बनानेवाला । -नीलाम-पु०

वह रुपया जो किसी चीजकी नीलाम करनेमे मिले ।

-परस-वि० (पैसे) पूजा करनेवाला) लोभी; कंजुस ।

-पेशवरी-स्त्री० बवाना । -बस्त-पु० कलावत्त और

रेशमके तार मिलाकर बुना हुआ कपडा । -बाफ-पु०

जरवत्त; जरवत्त बुननेवाला । -बाफ़ी-वि० कलावत्तु-

के कामका । स्त्री० जरदोजी । -बास्तनी-पु० प्राप्य

धन, पावना । -र) ब्राकिस-पु० खरा सोना ।

जरहूँ-स्त्री० धान, जो आदिका भिगीकर या मिट्टीमे गाड़-

कर उगाया हुआ अंसुआ; धानके अंसुआये हुए बीज ।

जरकटी-पु० एक शिकारी पक्षी ।

जरगा-पु० एक तरहकी घास ।

जरछार-वि० जो जलकर राख हो गया हो ।

जरजर-वि० दे० 'जरर' ।

जरठ-वि० [सं०] कठोर, कर्कश; बुरा; जीर्ण; झुका हुआ;

जर्दी लिये हुए मफेद रंगका । पु० बुढ़ापा ।

जरठहूँ-स्त्री० बुढ़ापा ।

जरडी-स्त्री० [सं०] वृणविशेष, गर्मोटिका, जयाधया ।

जरण-पु० [सं०] बुढ़ापा; जीरा; स्याह जीरा; हाँग;

कसीसा; काला नमक; एक प्रकारका ग्रहण । वि० जीर्ण;

बुढ़ा; पाचक । -हुम-पु० मासू; मायौन ।

जरणा-स्त्री० [सं०] बुढ़ापा; स्याह जीरा; प्रसंसा ।

जरतिका, जरती-स्त्री० [सं०] बूढ़ी स्त्री ।

जरनुस्त-पु० [फा०] प्राचीन पारसीधर्मके प्रवर्तक और

जह-अवेस्ताके रचयिता ।

जरनुस्ती-वि० जरनुस्तका; जरनुस्त-प्रवर्तित ।

जरत्-वि० [सं०] बुढ़ा; जीर्ण । पु० बुढ़ा आदमी । -काह-

पु० एक मुनि जिन्होंने वास्तुकि नायकी बहन मनसा देवीसे

स्याह किया था ।

जरद्-वि० दे० 'जर्द' ।

जरवृक-पु० [फा०] पीत पक्षी ।

जरदा-पु० [फा०] केसर देकर पकाये हुए मीठे चावल;

पानके साथ खानेके लिए विशेष विधिसे बनायी हुई सुगं-

धित सुरती; पीले रंगका घोड़ा; पीले अँखोंवाला कबूतर ।

-प्ररोश-पु० जरा बेचनेवाला ।

जरदाख-पु० [फा०] मूखानी ।

जरद्वी-स्त्री० दे० 'जर्दी' ।

जरदुस्त-पु० दे० 'जरदुस्त' ।

जरन-स्त्री० दे० 'जलन' ।

जरना-अ० कि० दे० 'जलना' । सं० कि० दे० 'जड़ना' ।

जरनि-स्त्री० दे० 'जलन' ।

जरनैल-पु० दे० 'जेनल' ।

जरब-स्त्री० [अ०] चोट; मार, आघात; धाप; ठप्पा; गुणा

(गं०); तोपका दगना, बाढ़ । -खाना-पु० टकसाल ।

-सक्रसीम-पु० गुणा-भाग । -र) ब्राक्री-स्त्री०

हल्की चोट । -शदीद-स्त्री० गहरी चोट ।

जरीझा*-वि० भटकीला, चमक-दमकवाला ।
जरबुचमयक-स्त्री० [अ०] कहावत, लोकोक्ति ।
जरमन-वि० [अ०] जरमनीका; जरमनी, जरमन जाति या जरमन भाषा के संबंध । पु० जरमनीका निवासी । स्त्री० जरमनीकी भाषा ।-**सिलखर**-पु० जस्ते, तंघे और निकलकी मिलावटसे बनी एक धातु जो बरतन आदि बनानेके काम आती है ।

जरमनी-पु० [अ०] मध्य यूरोपका एक प्रमुख देश ।
जरर-पु० [अ०] हानि; हिसा, पीडा ।-**रिसा**-वि० नुकसान पहुँचानेवाला, हानिकार ।

जरस-पु० [अ०] घंटा, घड़ियाल ।
जरा-स्त्री० [सं०] बुढ़ापा; बुढ़ापेने पैदा हुई कमजोरी; एक राखसी जिसने, कहते हैं, जरासंधकी देहके दो टुकड़ोंको जोड़कर एक कर दिया । पु० वह निषाद जिसका बाण तलवेमें लगनेसे कृष्णकी मृत्यु हुई; अग्नि (वै०) ।-**कुमार**-पु० जरासंध ।-**प्रस्त**-वि० बूढ़ा ।-**जीर्ण**-वि० बुढ़ापेने जिसके अंग और शरीर शिथिल हो गयी हो, जरासे जर्जर ।-**पुष्ट**-पु० जरामध ।-**बोध**-पु० स्तुति करने जवाबी हुई अग्नि ।-**भीत**,-**भीरु**-पु० कामदेव ।-**शोष**-पु० शोष रोगका वह भेद जो बुढ़ापेके कारण होता है ।-**संक्ष**,-**सुप्त**-पु० मगधका राजा जो कसका सधरा था और सुषिखरके राजसूय यज्ञके समय भीमके हाथों मारा गया (पौराणिक कथाके अनुसार वह अपनी मौके पेटसे दो आगोमें विभक्त उत्पन्न हुआ था और जरा नामकी एक राखसीने दोनों टुकड़ोंको जोड़ दिया । इसीने उसका जरासंध नाम पड़ा) ।-**जिह्व**-पु० भीम ।

जरा-वि० [अ०] थोडा, तनिक । अ० तनिक, थोडी देरके लिए ।-**जरा**-अ० थोडा-थोडा ।-**मना**-अ० थोडा-बहुत ।-**सा**-थोडासा ।

जराभ्रत-स्त्री० [अ०] दे० 'जिराभ्रत' ।
जराड-वि० दे० 'जड' ।-**गोरे** माल बिंद सेंदु'पर टीका धरबी जराड'-मूढ ।

जरातुर-वि० [म०] जराघस्त, बूढ़ा ।
जराना*-म० क्रि० जकाना; ईर्ष्यी उत्पन्न करना ।
जराफत-स्त्री० [अ०] हँनोइपन, हँनी-मजाक ।-**पसंद**-वि० परिहास-प्रिय, हँनोइ ।-**की पोड**-हँनोइ, मसखरा ।

जराफा-पु० [अ०] दे० 'फिराफा' ।
जराद, **जराव***-वि० जड' । पु० पक्कीकारी ।
जरायमि-पु० [सं०] जरामध ।

जरायम-पेशा-वि० अपराध करनेवाला, जुर्म करनेवाला ।
जरायु-पु० [सं०] वह सिली जिसमें लिपटा हुआ बच्चा मौके गर्भमें बाहर आता है; केकी; गर्मोसय; केजुली; समुद्र-फल; जटायु ।-**ज**-पु० वह प्राणी जो स्त्रीमें लिपटा हुआ पैदा हो या जिसका जन्म गर्भाशयमें हो, पिंडज ।
जराह-पु० दे० 'जराह' ।

जरिगी-वि० स्त्री० [सं०] बुढ़िया ।
जरित-वि० [सं०] जरायुक, बूढ़ा ।
जरिया-वि० जलाकर तैयार किया हुआ । * पु० दे० 'जदिया' ।
जरीया-पु० दे० 'जरीया' ।

जरिङ-पु० [फा०] एक पौधा जो दवाके काम आता है, दाखहत्ती ।

जरी-वि० [फा०] सोनेका बना हुआ, सुनहरा ।
जरी*-स्त्री० दे० 'जड़ी' ।

जरी-वि० [फा०] सुनहरे तारोंका बना हुआ । स्त्री० चाँदीका तार जिसपर सोनेका पानी चढ़ाया गया हो; ताश नामका कपडा ।-**का काम**-कलाबत् या सल्ले-सितारेका काम ।

जरी(रिन्)-वि० [सं०] बूढ़ा ।
जरीदा-पु० [अ०] बही, पुस्तक; सरकारी गजट । वि० अकेला, तनहा ।

जरीक-वि० [अ०] हँनोइ, विनोदशील, परिहास-प्रिय ।
जरीब-स्त्री० [अ०] लाठी, डडा; जमीन नापनेकी जबर जो ५५ या ६० गजकी होती है; देशमकी छोटी जिसमें शाही जुलूसोंके साथ रास्तेकी छ्वाइ नापा करते थे ।

-**कश**-पु० जमीनकी पैमाइशमें जरीब खींचनेका काम करनेवाला ।-**कशी**-स्त्री० जरीब खींचनेका काम; जमीनकी नाप ।
मु० -**झाजना**-जमीनकी जरीबने नापना ।
जरीबी-वि० जरीब । नापा हुआ (-बीचा) ।

जरीया-पु० [अ०] लगाव, बसीला; माधन[के जरीये = (किमी) के द्वारा] ।

जरुब-पु० [सं०] मास । वि० कटुभाषी ।
जरूर-वि० [अ०] आवश्यक, अवश्य-करणीय, जरूरी । अ० अवश्य, देशक ।-**जरूर**-अ० अवश्यमेव ।

जरूरत-स्त्री० [अ०] आवश्यकता, हाजल ।
जरूरतन्-अ० [अ०] आवश्यकतावश ।

जरूरियात-स्त्री० [अ०] (किसी वस्तु या कार्यके लिए) आवश्यक वस्तुएं, क्रियाएँ ।-**जिदगी**-स्त्री० जीवनके लिए आवश्यक वस्तुएँ ।
मु० -**से फारिसा होना**-शौचादिन निवृत्त होना ।

जरूरी-वि० [अ०] आवश्यक, वाजिब, जिसके बिना काम न चले ।

जरूला*-वि० गसुआरे केशवाला, जडलुक्त, लच्छनवाला ।
जरीट-वि० जटाक ।

जर्क-बर्क-वि० [अ०] चमक-मकवाला, मडकार । स्त्री० चमक-दमक, ठाट-बाट ।

जर्जर-वि० [सं०] जीर्ण, टूटा-फूटा; क्षय; पीड़ित । पु० इदरी भवत्रा; छीला ।

जर्जरित-वि० [म०] जो जीर्ण, ज्वर हो गया हो, अभिभूत ।
जर्जरीक-वि० [म०] क्षीण, पुराना, छेड़ोमें भरा हुआ ।
जर्ण-वि० [म०] क्षीण; जीर्ण । पु० वृक्ष; (घटता हुआ) चंद्रमा ।

जर्तिल-पु० [म०] जंगली तिल ।
जर्तु-पु० [म०] हादी; थोनि ।

जर्द-वि० [फा०] पीला ।-**जोब**-स्त्री० हल्दी ।
मु० -**पटना**-पीला हो जाना ।

जर्दा-पु० दे० 'जर्दा' ।
जर्दाख-पु० दे० 'जर्दाख' ।

जर्दा-स्त्री० [फा०] पीलापन; पीला रंग ।
जर्द-पु० [अ०] पात्र, बरतन; पात्रता, योग्यता ।

ज्ञात्रीयत-स्त्री० [का०] पायना ।

ज्ञारी-पु० [अ०] जगु, वह कण जो सूर्य-प्रकाशमें उद्यता दिखाई देता है, अमरेणु; जोका सौर्वा भाग; रेतका कण ।

—ज्ञारी-अ० तिल-तिल; कण-कण । —भर-वि० तिल-भर, तनिकसा ।

जहरी-वि० [अ०] वीर, बलिष्ठ; भारी, प्रबल (सेना) ।

जहरी-पु० [अ०] वीर-काव, श्रव्यक्रिया करनेवाला ।

जहरी-स्त्री० वीर-पाइका काम ।

जहिल-पु० [स०] दे० 'जमिल' ।

जलम-पु० [स०] एक विरेचक पौधा, महाकाल । वि० जलीय ।

जलम-पु० [स०] चांडाल ।

जलधर-पु० [स०] एक असुरा एक कपि; हठयोगके जन्म-गत एक बन्धन दे० 'जलोदर' ।

जलबल-पु० [स०] नदी, अजन ।

जल-पु० [स०] पानी; खम; पूर्वाषाढा नक्षत्र, सूर्यवहाला । वि० दे० 'जल' । —अलि-पु० जलका भीरा । —कंटक-पु० मिवाहा; धविवाल । —कंडू-पु० बराबर भीगा रहनेके कारण पौधमें होनेवाली खुजली । —कपि-पु० सैन्य, शिशुमार । —कपोत-पु० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया, जलपारावत । —करक-पु० नारियल, कमल; जलमत्ता; बादल; दंष्ट्र । —कर-पु० पानीका कर, महसूल; जलमें मिलनेवाले पदार्थोंपर लगनेवाला महसूल ।

—कल-स्त्री० [हि०] पानीका नल, पाइप । —विभाग-पु० म्युनिमिपलिटीका वह विभाग जो नगरका जलप्रबंध करे, 'वाटरवर्क' । —कलक-पु० कौचक; सेवा । —कलस-पु० समुद्रमथनेमें प्राप्त बिज । —कट-पु० पानीको कमी, जलमाव । —कांक्ष, कांक्षी (अन) —पु० हाथी । —कांत-पु० पाय । —काता-पु० वरुण । —काक-पु० जलकौआ । —कामुक-पु० कुडुविनी नामक वृक्ष । —काय-पु० जलीय शरीरवाला जीव । —किनार-पु० [हि०] एक तरहका रेशमी कपड़ा । —किराट-पु० प्राह, धविवाल । —कुंतल-पु० मिवार । —कुंभी-स्त्री० पानीपर होने और फैलनेवाला एक पौधा, कुभी । —कुक्कुट-पु० सुरगवी । —कुक्कुभ-पु० एक जलपक्षी । —कुञ्जक-पु० मिवार; काई । कूपी-स्त्री० तालाब; मंवर । —कूर्म-पु० सैम । —केतु-पु० एक तलहा पुच्छलतारा । —केलि-स्त्री० जलमत्ता । —केस-पु० मिवार । —कीआ-पु० [हि०] एक जलपक्षी जिसको मारी देह काली और गरदन सफेद होती है । —किपा-स्त्री० तर्पण । —कीडा-स्त्री० नदी, तालाब आदिमें बियाँका परम्पर या नायक-नायिकाका एक-दूसरेपर पानीके छाने केकना, जलकेलि; कीडाके लिए पानीमें तैरना आदि । —खरा-पु० जलपक्षी । —खरी-पु० गौबिके जमीनका जलभाग, ताल-तालाब आदि । —खई-पु० पानीमें रहनेवाला सोंप, डेहड़ा । —गुल्ल-पु० मंवर; कछुआ; आगनाकार, चौकीर तालाब । —घड़ी-स्त्री० [हि०] कालहानका एक मापन, पानीपर तैरता हुआ कटोरा जिसके पेंदमें छेद होता है और जो ठीक एक घड़ीपर पानीके बौझमें डूब जाता है । —खर-पु० चौकीर तालाब । —खर-पु० जलमें रहने-

वाला प्राणी, जलजंतु । वि० जलमें रहनेवाला । —खरी-स्त्री० मछली । —खर-स्त्री० [हि०] पानीकी चारद, ऊँचाईमें गिरनेवाली पानीकी काफी चौड़ी धार । —खारी-वि० [हि०] जलधर; मछली । वि० जलमें रहनेवाला ।

—जंतु-पु० जलमें रहनेवाला जीव, जलधर । —जंतुका-स्त्री० जंक । —जंतुका, —जंतुका-स्त्री० जलजानुन । —ज-पु० कमल; दंष्ट्र; मोती; चोलाई; मछली; तिसार; जलवेत, समुद्रलवण; चंद्रमा; कुचला । वि० जलमें उपज । —जन्म-पु० [हि०] —जात-वि० जलमें उपज । पु० कमल । —जानुन-पु० [हि०] एक तरहका जगली जानुन । —जिह्व-पु० धविवाल । —जीवी (विच) —पु० मछुआ । —डमरुमध्य-पु० दो समुद्रों, खादियों आदि-को जोड़नेवाली जल-प्रणाली । —डिह-पु० घोंघा । —डर-पु० एक बाडा जिसमें पानीमें डरी कटोरियोंपर छड़ीमें आपात कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है । स्त्री० पानीकी लहर । —ताडन-पु० पानी पीटना; (ला०) बेकार काम । —तापिक, —तापी (पिच) —पु० हिलमा मछली । —तिकिका-स्त्री० सरईका पेड़ । —त्रा-स्त्री० छगरी, छाता । —त्रास-पु० जलतक रोम । —थभ-पु० [हि०] जलतमन । —थल-पु० [हि०] जल और स्थल । —द-पु० बादल; कपूर; मोथा । वि० जल देनेवाला । —दाल-पु० बर्षाकाल । —दक्ष-पु० धरती । —दलाला-पु० [हि०] निताला तालका एक मेद । —दुंदु-पु० एक बाघ । —दस्तु-पु० समुद्री बाङ्ग । —दाता-पु० पानी देनेवाला । —दान-पु० धैत-कर्मके अंतर्गत श्रुत व्यक्तिको तिलाजलि देना, तर्पण । —दिप-पु० जलहस्ती । —दुर-पु० नदी, झील आदिसे घिरा हुआ किला, जलवेष्टित दुर्ग । —देव-पु० पूर्वाषाढा नक्षत्र; वरुण । —देवता-पु० वरुण । —द्वय-पु० पानीमें पैदा होनेवाली चीजें (मोती, शूल आदि) । —द्रोणी-स्त्री० नावका पानी उलाचनेका हथवा दीन । —धर-पु० बादल; समुद्र; मोथा; तनिश वृक्ष । —केदारा-पु० [हि०] एक सकर राम । —माळा-स्त्री० मेघपर्णिक; एक छद । —धरी-स्त्री० जलहरी । —धार-पु० शाकदीपका एक पर्वत । * स्त्री० जलधारा । —धारा-स्त्री० जलका प्रवाह । —धारी-पु० बादल । —धि-पु० समुद्र; चारकी सख्या । —धा-स्त्री० नदी । —धज-पु० चंद्रमा । —धा-स्त्री० लंछा । —धेनु-स्त्री० दानके लिए पानीके धरेमें कल्पित गाय । —नकुल-पु० ऊदबिलाब । —नाडी, —नाली-स्त्री० पानी निकलनेका रास्ता, नाला । —निधि-पु० समुद्र; चारकी सख्या । —निर्मम-पु० पानीका निकाम, जलपथ । —निलिका, —नीली-स्त्री० सिंघार । —पक्षी (क्षि) —पु० पानीके किनारे रहनेवाला, मछलियाँ आदि खानेवाला पक्षी । —पटल-पु० बादल । —पति-पु० समुद्र; वरुण; पूर्वाषाढा नक्षत्र । —पथ-पु० जलमार्ग; नहर आदि, पानीका रास्ता । —पठति-स्त्री० नाला । —पाटल-पु० काजल । —पात्र-पु० पानी पीनेका बरतन; पानीका बरतन । —पान-पु० कलेवा, नाश्ता । —गृह-पु० वह स्थान जहाँ जलपानका सामान (चाय, मिठाई आदि) मिले; जहाँ जलपान

किया जा सके, 'रिस्तार'। -पाराबल-पुं जलकपीत।
 -पिल-पुं अक्षि। -पिप्पल्ली-स्त्री जलपीपल।
 -पीपल-पुं [हिं०] पीपल(ओषधि)का एक पेड़।
 -पुष्प-पुं पानीमें होनेवाला फूल (कमल, कुई इ०)।
 -पुष्पजा-स्त्री सिसावा। -प्रदाव-पुं प्रेतदिके लिए
 जलदान, तर्पण। -प्रदाविक-पुं महाभारतमें श्रीपर्वके
 अंतर्गत एक अवांतर पर्व। -प्रपा-स्त्री पौसरा, प्याऊ।
 -प्रपात-पुं झरना; किसी नदी-नालिका पहाड़के ऊपरसे
 सीधे नीचे गिरना। -प्रखर-पुं संपूर्ण सृष्टिका जलमय
 हो जाना। -प्रवाह-पुं पानीका बहाव; पानीकी धारा;
 शबकी नदी आदिमें बहा देना। -प्राल-पुं नदी; झील
 आदिके पत्थरी जमीन। -प्राय-पुं जलबहुल प्रदेश।
 वि० जहाँ जल अधिक हो। -प्रिय-पुं चातक; मछली।
 -प्रिया-स्त्री चातकी; पार्वती। -प्रेत-पुं वह द्यूत-
 भ्यक्ति जो जलमें डूबकर मरनेके कारण प्रेतवैजि-
 की प्राप्त करे। -प्रव-पुं उदविलाव। -प्रवचन-पुं
 जलप्रलय; बाढ़। -फल-पुं सिंचाई। -बंध, बंधक-
 पुं पानीका बंध; बंधका काम देनेवाली चट्टान आदि।
 -बंध-पुं मछली। -बालक-पुं विध्य पर्वत।
 -बालिका-स्त्री विजली। -बिह-पुं तुलुआ।
 -बिहाल-पुं उदविलाव। -बिष्य-पुं तालाव;
 झील; केकड़ा; मूस। -बुद्ध-पुं तुलुआ। -बेत-
 पं [हिं०] लना जैसा एक प्रकारका बेंत जो नदी
 आदिके किनारे पैदा होता है। -ब्रह्मी-स्त्री डुरडुरका
 साग, चिल्लीबी। -भैंसरा-पुं [हिं०] पानीपर
 तैरनेवाला एक कीड़ा। -भाजन-पुं जलपात्र।
 -भाख-पुं [हिं०] सीलकी जातिका एक वृत्त। -भीति-
 स्त्री जलातक रोग। -भू-वि० जलीय। पुं बादल;
 एक तरहका कपूर। स्त्री पानी जमा कर रखनेका स्थान।
 -भूषण-पुं बाघ। -भूव-पुं बादल; पानी रखनेका
 बरतन, बड़ा आदि; एक तरहका कपूर। -मंहुक-पुं
 पुराने समयका एक बाजा, जलदंड। -मक्षिका-स्त्री
 पानीमें रहनेवाला एक कीड़ा। -मघ-वि० पानीमें डूबा
 हुआ। -मद्यु-पुं एक जलपक्षी; कौड़िया। -मधूक-
 पुं जलमधुआ। -मर्कट-पुं दे० 'जलकपि'। -मल-
 पुं फेन। -मसि-पुं बादल; एक तरहका कपूर।
 -महुआ-पुं [हिं०] महुएका एक पेड़ जो पानीके
 किनारे होता है। -मार्तण्ड-पुं जलहस्ती। -मातृका-
 स्त्री एक जलदेवी। -मानुष-पुं एक कल्पित (?)
 प्राणी जिसकी नाभिमें नीचेकी देह मछलीकी और ऊपर-
 की मनुष्यकी मानी जाती है, 'परीरू'। -मार्ग-पुं
 जलमार्ग, जलप्रणाली। -माजौर-पुं उदविलाव।
 -मुह(बू)-पुं बादल; एक प्रकारका कपूर। -मूर्ति-
 पुं शिव। -मूर्तिका-स्त्री ओला। -मोद-पुं खस।
 -यंत्र-पुं कुहारा; कुएँ आदिने पानी निकालनेका यंत्र
 (रूट आदि); जलपक्षी। -० गृह, ० मंदिर-पुं वह
 मकान जिसमें या जिसके आस-पास कुहारे हों; वह मकान
 जिसके चारों ओर पानी हो। -बात्रा-स्त्री जलमार्गसे
 नाव आदिके द्वारा यात्रा; तीर्थजल जानेके लिए यजमान-
 की सविधि यात्रा; कापिक-शुद्धा चंद्रशेखरी होनेवाला

राजपूतानाका एक उत्सव; ज्येष्ठ-शुद्धा पृथिवीकी होनेवाला
 वैष्णवोंका एक उत्सव जिसमें जगन्नाथ ठंडे जलमें स्नान
 नहलावे जाते हैं। -बान-पुं पानीकी मवारी-जहाज,
 नाव। -बुद्ध-पुं पानीके ऊपर होनेवाला बुद्ध, जहाजी
 लकड़ी। -रंक, रंज-पुं बाला। -रंज-पुं सुर-
 गांधी। -रंज-पुं खैर; जलकण; तीर्थ। -रस-पुं
 नमक; सौंभर नमक या समुद्री लोण। -राक्षसी-स्त्री
 लवण-समुद्रमें रहनेवाली मिष्टिका नामकी राक्षसी जो
 ऊपर उड़नेवाले पक्षियोंकी छाया पकड़कर उन्हें खींच लेती
 थी और हनूमान्के लंका जाते समय उनके साथ भी बड़ी
 करनेपर उन्हींके हाथों मारी गयी। -राशि-स्त्री पानी-
 का बहुत बड़ा ढेर; स्थानविशेषपर संचित अत्यधिक जल।
 पुं समुद्र। -रंज-पुं खैर; जलकण; तीर्थ। -रंज-
 पुं कमल। -रूप-पुं मगर; मकर राशि। -रुता-
 स्त्री लहर, तरंग। -वरंट-पुं एक प्रकारका ऋण।
 -वर्तिका-स्त्री एक जलपक्षी। -वस्त्रक-पुं जल-
 कुमी। -बल्ली-स्त्री मिठाईका पोषा। -बाघ-पुं
 एक बाघ। -बास-पुं कौड़िया नामकी चिरिया।
 -बासु-पुं आवहवा। -बालुक-पुं विध्य-श्रेणी।
 -बास-पुं खम; विष्णुकुंद। -बाह-पुं बादल; जल-
 बाहक। -बाहक-पुं पानी होनेवाला। -बिंदुजा-
 स्त्री यावनाली शर्करा, जुआरी की चीनी। -बिंदुव-
 पुं तुलाकी संक्रांति। -बुद्धिक-पुं हाँगा मछली।
 -बेत(स्)-पुं दे० जलवेंत। -बैकुण्ठ-पुं नदी आदिमें
 जलमें अंबानक अशुभ-भूचक विकार हो जाना।
 -ब्यध, -व्यध-पुं एक मछली, ककरोट। -ब्यात्र-
 पुं मीलकी जातिका एक हिंसक जलजंतु। -ब्याल-पुं
 पानीमें रहनेवाला मीप, टेंड्रा। -बाय, -शायन, -शायी-
 (विन्)-पुं विष्णु, नारायण। वि० पानीपर सोने-
 का। -सर्करा-स्त्री ओला। -मुक्ति-स्त्री धोधा।
 -मुनक-पुं जल-नकुल। -शूक-पुं मेवारा। -शूकर
 पुं पक्षियाल। -शोष-पुं नुस्ला। -संस्कार-पुं
 कान; शवका जलप्रवाह। -समाधि-स्त्री जलमें
 डूबकर प्राणत्याग; नदी, समुद्र आदिमें किसी चीजका
 डूबना या डूबाया जाना। -समुद्र-पुं पुराणोंमें माने
 हुए मात समुद्रोपमेने अनिम, भाँटे पानीका समुद्र।
 -सर्पिणी-स्त्री जोंक। -सिंह-पुं मीलकी जातिका
 एक हिंस जलजंतु जिसकी गर्दनपर मिहकी तरह अयाल
 होता है। -सिक-वि० जलने मींचा हुआ, तर। -सीप-
 स्त्री [हिं०] वह सीप जिसमें मोती पैदा हो। -सुत-
 पुं कमल; मोती। -सुखि-स्त्री मूस; कौवा; ककरोट
 नामक मछली; कछुआ; मिठाई; जोंक। -सूर्य, सूर्यक-
 पुं जलपर बड़ा हुआ सूर्य-दिव। -सेक, -सेवन-पुं
 पानी छिड़कना; सींचना, तर करना। -सेना-स्त्री जंगी
 जहाजोंका बेशा; जंगी जहाजोंपरसे जलमें लड़नेवाली सेना,
 नौसेना। -०दशि-पुं जलसेनाका सबसे बड़ा अफसर,
 नौसेनाध्यक्ष, 'एडमिरल'। -०सचिव-पुं मंत्रिमंडलका
 वह सदस्य जो जलसेनाका नियंत्रण करे। -स्तंभ-पुं
 जलस्तंभ; जलस्तंभन करनेवाला मय; समुद्र, झील
 आदिमें बादलोंका खम्भेका आकारमें धुक् जाना। -स्तंभन

—पु० मंत्रबलने पानीकी बौध देना, उसकी गति अवबद्ध कर देना (कहा जाता है कि दुर्गोन्धन इव विद्याकी जानता था । महाभारतके अंतमें वह इनीके बलसे व्यास सरोवरमें लीपा था जहाँ भीम आदिने जाकर उसे ललकारा ।)
—स्वच्छ—पु० जल और स्वच्छ, तरी और सुखकी ।—स्वा०—स्त्री० गंडद्वार ।—स्वाध्व—स्वाध्व—पु० तालाव, जलाशय ।
—स्वाध्व—पु० आँखका एक रोग । —स्त्रोत्—पु० पानीका सोता; जलप्रवाह । —हर—वि० जलमय । पु० जलाशय ।
—वे जलहर हम भीम बापुरी—मूर । —हरण—पु० पानी डोना; एक मात्रावृत्त । —हरी—स्त्री० [हि०] शिव-लिंग स्थापित करनेका अर्चा; गर्मीके दिनोंमें शिवलिंगके ऊपर लटकाया जानेवाला (जलपूर्ण) घड़ा जिसके वैदेमें एक छेद होता है । —हस्ती(स्तित्र)—पु० सीलकी जातिका एक सतनपायी जलजंतु जिसकी शकल हाथीमें बौद्ध-बहुत मिलनी है; मिथुघोटक । —हार, हारक—पु० पानी डोने, भरनेवाला, पनिहारा । —हारिणी—स्त्री० पानी डोने-वाली, पनिहारिन; नाली । —हारी(रिक्)—पु० पानी डोने, भरनेवाला, पनिहारा । —हास—पु० फेन; समुद्र-फेन । —होम—पु० एक प्रकारका होम । सु०—बल एक होना—बारों और पानी ही पानी दिखाई देना, घोर दृष्टि होना ।

जलक—पु० [मं०] शंख; कौड़ी ।
जलखरी—स्त्री० रस्सी या तागेकी जालीदार झोली ।
जलधरा—पु० पानीके धड़े रखनेका स्थान ।
जलजल—वि० कोषा, विगडैल, विचविडा ।
जलजला—पु० [अ०] भूकंप, भूदोल ।
जलजलाना—अ० वि० नाराज होना ।
जलनरीही, जलनरीही—स्त्री० मछली (मापुओंकी भाषा) ।
जलताल—पु० [मं०] मलईका पेड़ ।
जलवागम—पु० [सं०] वर्षाकाल ।
जलदाभ—वि० [मं०] बादलके रंगका, काला ।
जलदाशन—पु० [सं०] शाल वृक्ष ।
जलन—स्त्री० जलनेको पीडा, दाह; डाह; देष; मनस्ताप, मनोद्वेष ।

जलना—अ० कि० किसी चीजका आग पकड़ना, अग्नियोग-से व्योति या ब्याजका रूप प्राप्त करना, बलना; धकना; भस्म होना; दग्ध होना, झुलमना; सूखना; ईर्ष्या-द्वेष आदिने कुदना; सप्त होना । जलकर—कुदकर, मंतत होकर । सु० जलकर, जल-धुनकर कबाब, कोयला, छाक या राख होना—बहुत कुद होना, गुस्सेमें पैठना, उबलना, आग-बदला होना । जल बलना—जलना । जल धुनना—जलना, कुदना । जल भरना—बाहरे डूरी तरह कुदना, जलकर मर जाना, आत्मघात करना । जलती आगमें कुदना—जात-बूझकर विपतमें फँसानेवाला काम करना । जलती आगमें घी या तेल हाकना—झगड़ा बढ़ाना, ऐसी बात करना जिससे झूझका मोष और बढ़ जाय । जला-बला, जला-धुना—कोयले उबलता हुआ, बहुत कुद । जली-कटी—गुस्से या जलनसे भरी हुई बातें, तीखे ब्यंग्य (सुनाना) । जलपर मरक छिड़कना—जलेकी जलना, दुखियाकी और दुःख

देना । जले पाँवकी चिल्ली—वह ली जो यहाँसे वहाँ फिरती रहे, कहीं स्थिर होकर बैठे नहीं । जले कफोले फोड़ना—अठम निकालना ।

जलपना—अ० कि० डींग मारना । सं० कि० डींग मारते हुए कहना। पुनः-पुनः कहना । स्त्री० डींग; व्यर्थकी बात । जलबम—पु० (डेफ्लवाज) दे० 'जलप्रम्फोट' । जलप्रय—वि० [सं०] पानीमें भरा हुआ, जलप्लावित; जल-निर्मित । पु० चंद्रमा; जीवका जलीय स्त्रीर (पितृधान) । जलबाधु—पु० [सं०] (क्लाइमेट) किसी स्थानकी गरमी, जावा, वर्षा आदि सूचित करनेवाली वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्रभाव वहाँकी आबादी तथा वनस्पति आदिपर पड़ता है, आबवाह ।

जलसा—पु० [अ०] बैठक; अधिवेशन; मभा; पाने-बजाने, नाच-रंगकी यहफिल, गोष्ठी; नमाजमें सिजदा करने पड़ने की बार बैठना । —गाह—पु० वह जगह जहाँ जलसा हो ।

जलौल—पु० [सं०] पानीका सोता; सिंघार । जलौल्लि—स्त्री० [सं०] अजलीमर पानी; प्रेत या पितरोंकी नृत्तिके लिए किया जानेवाला जलदान, तर्पण ।

जलौलक—पु० [मं०] मगर, नकराज ।

जलौलक—पु० [सं०] जलसमुद्र; सत्यभामाके गर्भमें उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र ।

जलौलिक—स्त्री० [सं०] कुर्मी ।

जलक—स्त्री० लू; पेटकी ज्वाला ।

जलकर—पु० [सं०] समुद्र; जलराशि; झरना; कुर्मी ।

जलकांक्ष, जलकांक्षी(स्त्रि)—पु० [मं०] हाथी ।

जलका—स्त्री० [सं०] जोंक; * दे० 'जलार्क' ।

जलकाश—पु० [सं०] जलमें प्रतिबिंबित, जलसे अवच्छिन्न आकाश ।

जलक्षी—स्त्री० [सं०] जलपिप्पली ।

जलालु—पु० [सं०] कदविलाव ।

जलालक—पु० गोट आदिकी झालर । वि० जलमय ।

जलालन—पु० [सं०] कक पक्षी ।

जलालनी—स्त्री० [सं०] जोंक ।

जलालक—पु० [सं०] पागल कुत्ते, पागल स्वार आदिके काटे हुएकी होनेवाला एक तरहका उम्मार रोग जिसमें वह पानी देखकर डरता है ।

जलालिक—स्त्री० [सं०] जोंक ।

जलालय—पु० [सं०] शरत् ऋतु ।

जलालार—पु० [सं०] जलाशय ।

जलालिद्वैत—पु० [सं०] वरुण; पूर्वाषाढा नक्षत्र ।

जलालिप—पु० [मं०] वरुण; वह ग्रह जो संवत्सरविशेषमें जलका स्वामी हो ।

जलाना—सं० कि० जलनेका कारण होना, किसी चीजकी आग पकड़ाना, बालना; आग लगाना; गरमी या ज्वर पहुँचाकर सुखाना; झुलमाना; सताना, व्यथित, संतप्त करना । सु० जलालालाकर मारना—बहुत सताना, धुला-धुलाकर मारना ।

जलाला—पु० बाइकी जलन ।

जलालुका—स्त्री० [सं०] जोंक ।

जलार्क—पु० [सं०] जलमें प्रतिबिंबित सूर्य ।

अकार्णव-पु० [सं०] अलममुद्रः वर्षाकाल ।
 अकार्ण-वि० [सं०] पानी ने सीगा हुआ, गीला ।
 अकार्ण-श्री० [सं०] गीला बन्हा ।
 अकार्ण-पु० [अ०] तेज; मरहात, गौरव; रोष; ताकत; अस्तिवार ।
 अकार्ण-वि० [अ०] जिसमें जलक हो; जलक या जलाशयिका चलाया हुआ । पु० सुखलमान फकीरोंका एक सम्प्रदाय; जलशयनका चलाया हुआ सन् ।
 अकार्ण-पु० [सं०] कमलकी जड़, पक्कड़ ।
 अकार्णक, अकार्णका-श्री० [सं०] जोक ।
 अकार्ण-पु० खमीर; खमीरका उठना ।
 अकार्णव-पु० [अ०] निर्वासन, दैसनिकाल । वि० निर्वासित, स्वदेशसे निष्कासित ।
 अकार्णवनी-श्री० निर्वासन, दैसनिकाल ।
 अकार्णवतण-पु० [सं०] (लाचिग) दे० 'पोतसंतरण' ।
 अकार्णवतार-पु० [सं०] नाव आदिपरसे उतरनेका वाट ।
 अकार्णव-पु० जलनेके काममें आनेवाली चीजें, ईंधन ।
 अकार्णव-पु० [सं०] जैव ।
 अकार्णव-पु० [सं०] शूल, तालाव, जलाधार; मछली; समुद्र; सत; सिंघास । वि० जलमें रहनेवाला; मूख ।
 अकार्णव-श्री० [सं०] नागरसीधा ।
 अकार्णवोत्सव-पु० [सं०] कुर्य, तालाव आदिकी प्रतिष्ठा-रूप पूजा ।
 अकार्णव-पु० [सं०] जलाशय; वृत्तगुंडी चुण; बलाक ।
 अकार्णव-श्री० [सं०] शूली चुण ।
 अकार्णव-श्री० [म०] वडा चौकोर तालाव ।
 अकार्णव-श्री० [म०] जोक ।
 अकार्णव-वि० जलमय ।
 अकार्णव-पु० [सं०] कमल ।
 अकार्ण-श्री० [सं०] जोक ।
 अकार्ण-वि० [अ०] अपमानित, शर्मित; जिसकी बेकदरी की गयी हो ।
 अकार्ण, अकार्ण-श्री० [सं०] दे० 'जलौका' ।
 अकार्ण-पु० दे० 'जुलुस' ।
 अकार्ण-पु० [सं०] वरग; शिव; ममुद्र ।
 अकार्ण-पु० [सं०] बडबानल; सूर्य ।
 अकार्ण-वि०, पु० [सं०] दे० 'जलचर' ।
 अकार्ण-श्री० [म०] हस्तिशुङ्ग नामक पौधा ।
 अकार्ण, अकार्ण-वि०, पु० [सं०] दे० 'जलव' ।
 अकार्ण-वि० क्रोधी, जरासी बातपर आगवन्हा हो जानेवाला ।
 अकार्ण-पु० रदी जलेबी ।
 अकार्ण-श्री० कुंडली; कुंडलीके आकारकी एक मिठाई; एक पौधा; एक आनिशबाजी ।
 अकार्ण-पु० [सं०] जलहस्ती ।
 अकार्ण-श्री० [सं०] कुटुंबिनी; सर्वमुखी ।
 अकार्ण-पु० [सं०] गीताखोर, पनडुब्बा, मरजिया ।
 अकार्ण-पु० [सं०] वरुण; ममुद्र ।
 अकार्ण-पु० [सं०] जलशायी, विष्णु; मत्स्य ।
 अकार्ण-पु० [सं०] वरुण; समुद्र ।

अकार्ण-श्री० [सं०] दे० 'जलौका' ।
 अकार्ण-पु० [सं०] (नदी आदिके) जलका कितारेसे ऊपर उठकर, छलककर बहना; अतिरिक्त जलका निकास ।
 अकार्ण-पु० [सं०] एक रोग जिसमें पेटकी लवचाके नीचे पानी एकट्ठा हो जाता है ।
 अकार्ण-श्री० [सं०] छोटी ब्राह्मी; गुंरला ।
 अकार्ण-श्री० [सं०] जोक ।
 अकार्ण-पु० [सं०] जोक ।
 अकार्ण(कस्)-श्री० [सं०] जोक ।
 अकार्ण-वि० [अ०] नेत्र, कुरलीला; चालाक । अ० झटपट, शीघ्र । -बाज़-वि० उतावला, जल्दी मवानेवाला ।
 अकार्ण-श्री० उतावलापन ।
 अकार्ण-श्री० तेजी, शीघ्रता, उतावलापन । अ० जल्द ।
 अकार्ण-पु० [मं०] कथन; बकवाद; तर्क; बहस ।
 अकार्ण, अकार्ण-वि० [सं०] बालूनी, बालाक ।
 अकार्ण-पु० [सं०] कथन; बकवास, बकवाद करना । वि० जल्पक ।
 अकार्ण-म० कि०, अ० कि० दे० 'जलपना' । श्री० [सं०] दे० 'जल्पन' ।
 अकार्ण-वि० [मं०] कथन; टींग या बकवादके रूपमें कहा हुआ ।
 अकार्ण-पु० [अ०] राजशासने दक्षित जनकी गरदन मारनेवाला या छेदे फाँसी चढ़ानेवाला, बरिह । वि० निर्दय, बेरहम (जल्द-कोड़े मारता) ।
 अकार्ण-पु० [मं०] वेग; त जो । वि० बगवान् ।
 अकार्ण-पु० [मं०] वेग; शीघ्र, दे० 'यवन' । वि० वेगवृत्त, तेज ।
 अकार्ण-श्री० [मं०] पर्दा; कनान; पाल ।
 अकार्ण(मन्)-श्री० [मं०] वंग ।
 अकार्ण-श्री० [मं०] अत्रवापन; दे० 'यवनो'; दे० 'जवनिका' ।
 अकार्ण-पु० [मं०] घाम ।
 अकार्ण-पु० 'जवान'का समासगत रूप । -मर्द-पु० बहादुर, वीर, मर्दाना । -मर्द-श्री० बहादुरी, मर्दानगी ।
 अकार्ण-पु० लहसुनका एक दाना; एक तरहकी मिलाई । श्री० [सं०] अड़दुल, जपा । -कुसुम-पु० अड़दुलका फूल ।
 अकार्ण-श्री० दे० 'अत्रवापन' ।
 अकार्ण-श्री० ज्ञानेकी क्रिया या भाव, गमन ।
 अकार्ण-पु० जीके पोषको जलकर निकाला जानेवाला सार ।
 अकार्ण-पु० [मं०] एक सुगंधित द्रव्य, सुगंधमय ।
 अकार्ण-वि० [मं०] बहुत वेगवान् । पु० तेज घोड़ा ।
 अकार्ण-वि० [फा०] युवा, तरुण; वीर; बलवान् । पु० युवा पुरुष; सिपाही; योद्धा । -बाज़-वि० लौभायशाली । -माल-वि० नीजवान, नवयुवक ।
 अकार्ण-पु० [मं०] आँधी ।
 अकार्ण-श्री० अत्रवापन; [फा०] युवावस्था, यौवन; जवानिका जोश, मस्ती; सुंदरता । सु० -की नींद-गहरी; बेफिक्रीकी नींद । -चढ़ना-जवानी आना; मस्ती-

पर होना । -डलना-जवानोने मुदपेकी ओर बदना, वसवौबन होना । -दीवानो है-जवानोके जोशमे आदमी बहुतसे भूलें करता है । -कटी बचना-बौबनका पूर्ण विकास होना, जवानोका खिच उठना । -में मॉशा बीछा-मरी जवानोमें अशक्तता दिखना । -से कल पावे-जवानोके सुख भोगे (आशीर्षा) ।

जवाब-पु० [फा०] प्रश्नका उत्तर; सवालका हल; पत्र लिखनेवालेकी लिखा गया पत्र; प्रत्यभिवादन; दावे वा अभिवोगके उत्तररूपमें कही गयी बात, प्रतिवाद; बचाव; बदलेमें किया हुआ काम; जीज, बराबरी करनेवाली चीज; नौकरीसे अलग किये जानेकी सूचना; इनकार, नाहीं । -**तलब**-वि० पूछने, जवाब माँगने कायक । -**तलबी**-स्त्री० जवाब माँगा जाना । -**दावा**-पु० दावेका जवाब, प्रतिवादीका उत्तर । -**देह**-वि० (बह आदमी) जिसमें किसी शानका जवाब माँगा जा सके; उत्तरदायी, जिम्मेदार । -**देही**-स्त्री० (दावेका) जवाब देना, लगाना; उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी । -**सवाल**-पु० प्रश्नोत्तर; बहस । **मु०** -**तलब करना**-(किसी बातका) कारण पूछना कैफियत तलब करना । -**देना**-नौकरीसे अलग करना; इनकार करना; छोड़ना, अलग होना; बेकार होना ।

जवाबी-वि० [फा०] उत्तररूपमें, बदलेमें किया हुआ; जिसका जवाब तुरत माँगा गया हो । -**काई**-पु० जुटे हुए दो काँडे जिनमेसे एक जवाबके लिए भेजा जाता है । -**तार**-पु० वह तार जिसके जवाबका खर्च भेजनेवाला पहले ही जमा कर दे ।

जवाब-पु० [अ०] पक्षोक्त; * दे० 'जवाल' । † स्त्री० दे० 'जवा' ।

जवारा-पु० ग्रीक अकुर जिन्हे लड़कियाँ कजली(भाइ-कृष्णा स्त्रीया)के दिन अपने भाइयोंके और ब्राह्मण दत्त-हरेके दिन वजमानोंके कानपर रखते हैं, जरहें ।

जवारिख-स्त्री० [अ०] अश्वलेहके रूपमें बनायी हुई पाचक औषध ।

जवारी-स्त्री० जौ, छुहारे बारिकी एकमें गूँथकर बनाया हुआ हार; नारवाले बाजोका एक पुरजा, धोबी । वि० पक्षोक्ती ।

जवाल-पु० शंसद, जनाल ।

जवाल-पु० [अ०] हाम, घटाव, अवमति ।

जवाकीर-पु० एक तरहका गधा-बिरीज ।

जवास-पु० दे० 'जवासा' ।

जवासा-पु० एक कंठिया क्षुद्र जो बरसातमें पत्रहीन हो जाता और शरद् ऋतुमें फिर पत्रपता है, यवासक ।

जवाह-पु० आँखका एक रोग ।

जवाहर-पु० दे० 'जवाहिर' । -**खाल**-पु० स्वतंत्र भारतके प्रथम प्रधान मंत्री । जन्म १४ नवंबर, १८८५; इंग्लैण्डसे बैरिस्ट्री पास कर इलाहाबाद उच्च न्यायालयमें बैरिस्ट्री शुरू की, १९१२; होमरूल लीगके मंत्री बने, १९१८; कांग्रेसके महासमित्री १९२३ में तथा लाहौरमें राष्ट्रपति चुने गये (१९०९); १९३०, १९३६ में भी कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचित; सन् १९४७ से भारतके प्रधान मंत्री तथा पर-राष्ट्रमंत्री हैं ।

जवाहिर-पु० [अ०] रत्न, मणि ('जौहर'का बहु०, पर प्रायः एकवचनमें प्रयुक्त) । -**झाना**-पु० रत्नभूषण रखनेका स्थान, तोषास्थान । -**जिगार**-वि० रक्तजडित, जवाक ।

जवाहिरात-पु० [अ०] कई प्रकारके रत्नमणि ('जौहर'का बहु०) ।

जबिज-वि० [सं०] दे० 'जबी'

जबी(विन्)-वि० [सं०] वेगवान् ।

जबैयाँ-पु० जानेवाला ।

जहान-पु० दे० 'जश' ।

जहम-पु० [फा०] उत्सव, खुशीका जलसा; गाना-बजाना (मनाना) ।

जसई-पु० दे० 'यश' । * अ० जैसा ।

जसब-पु० [सं०] जस्ता, यशद ।

जमागत-स्त्री० [अ०] मोठाई, शरीरकी स्थूलता ।

जमीम-वि० [अ०] मोटा, स्थूलकाय ।

जसु-पु० [सं०] आयुध, हथियार; अशक्तता, धकावट । * स्त्री० यशोरा ।

जसुरि-पु० [मं०] वज्र ।

जसो*-स्त्री० यशोदा ।

जसोदा*-स्त्री० दे० 'यशोदा' ।

जमोमति, **जमोवै***-स्त्री० दे० 'यशोदा' ।

जस्टिफाई-म० कि० [अ०] बरगोज किये हुए मैटरकी पक्ति बराबर करना ।

जस्टिस-पु० [अ०] हार्डकोर्टका जज, विचारपति । स्त्री० न्याय, ईसाक । -**आब् दू पीस**-पु० शांतिरक्षा और छोटे मामलोंके विचारके लिए नियुक्त स्थानीय मजिस्ट्रेट । **जस्त**-पु० दे० 'जस्ता' । स्त्री० [फा०] छत्राव, चौकरी, कुर्चाव ।

जस्ताई-वि० जस्तेके रंगका, खाकी । पु० जस्तेका रंग ।

जस्ता-पु० खाकी रंगकी एक धातु जिसे ताँबेके साथ मिलानेने पीतल बनता है; दे० 'दस्ता' ।

जहूँ*-अ० दे० 'जहू' ।

जहूँबाना*-अ० कि० दे० 'जहूँबाना' ।

जहूँबाना*-अ० कि० ठगाना, गँवाना; हानि उठाना ।

जहक-वि० [म०] त्याग करनेवाला । पु० समर्थ; शिशु; कैनुली ।

जहकना*-अ० कि० बहकना, विगडकर अड-बंङ बहना ।

जहका-स्त्री० [सं०] नेत्रलेकी जानिका एक जंतु, कटाप ।

जहतिया*-पु० जकान-कर, लगान-बधुन करनेवाला ।

जहस्वाबो-स्त्री० [सं०] लक्षणाका एक भेद जिसमें पद वा वाक्य वाच्यार्थका त्याग कर उसने सबक दूसरा अर्थ प्रकट करता है ।

जहजहलझझा-स्त्री० [सं०] लक्षणाका एक भेद जिसमें कुछ अर्थों वा विषयोंका त्याग कर किसी एककी प्रधान किया जाता है ।

जह्वा-अ० कि० कीचड़ होना; कूट हो जाना, धक जाना ।

जह्वा-पु० दलदल ।

जहदम-पु० दे० 'जहनुम' ।

जहना-स० कि० छोनाई नाश करवा ।

जहन्नुम-पु० [अ०] दे० 'जहन्नुम' ।

जहन्नुम-पु० [अ०] गहरा कुओं; नरक; पहला नरक (मुसल०) ।-रसीद-वि० जहन्नुममें पहुँचा हुआ, नार-कीब । मु०-में जाना, -रसीद होना-नष्ट होना, बरबाद होना ।

जहन्नुमी-वि० नरकमें जानेवाला, नारकीब ।

जहमत-की० [अ०] कष्ट, तकलीफ; संघट ।

जहर-पु० [फा०] वह चीज जो देहमें पहुँचकर मृत्युका कारण हो या स्वास्थ्यकी हानि करे, विष; स्वादमें अति कड़ु वस्तु; अति अभिय, असह्य बात । वि० अति हानिकर, घातक; अति कड़ु; अभिय ।-दूर-वि० जहरीला, विषयुक्त ।-बाद-पु० एक तरहका जहरीला और कष्ट-साध्य फोका ।-मोहरा-पु० एक तरहका पत्थर जिसमें लोपके और कुछ दूसरे विषोंकी भी लोख छेनेका गुण होता है ।-मस्तार्ह-पु० झुतना देशके खता मगरसे जाने-वाला जहरमोहरा जो बहुत अधिक गुणकारी माना जाता है । मु०-उगलना-लगनेवाली बात कहना, जली-कटी कहना ।-कर देना-(खानेकी चीजको) इतना कच्चा, पीता कर देना कि निगला न जा सके; ऐसी कड़ु, कठोर या दुःखद बात कह देना कि भोजनका स्वाद-सुख जाता रहे ।-का चूँट-अति अभिय अम्ल्य बात ।-पीकर रह जाना,-पीना-विषशक्के कारण गुस्तेकी अदर हो दबा रखना, असह्यको सह्य लेना ।-की पुष्टिया-नारी उपहसी, फसादी । (किसी बातपर)-बाना-किसी बातसे खिन्न, दुःखी होकर आत्महत्याका यत्न करना ।-आर करना-अच्छा न लगते हुए भी खाना, जबरदस्ती पेटमें डाल देना ।-आरना-जहरका असर दूर करना ।-में बुझाना-तीर-तलवार आदिकी भागमें लाक करके विषमिश्रित जलमें बुझाना जिसमें उनसे घायल होनेवालेके शरीरमें विष प्रवेश कर जाय; बातकी समझेंदी, अम्ल्य बना देना ।-होना-किसी विशेष खास पदार्थ या भोजनका (नमक-मिर्च आदिकी अधिकता वा भोजनके समय कोई अति दुःखद बात सुननेसे) अस्वास्थ्य हो जाना, घोंटा, निगला न जा सकना ।

जहरी, जहरीला-वि० जिसमें जहर हो, विषयुक्त ।

जहल-की० गरमी, ताप ।

जहल्लुगना-की० [स०] दे० 'जहल्लुग' ।

जहर्वा-अ० दे० 'जहाँ' ।

जहर्-अ० जिस जगह, जिस स्थानपर ।-तहाँ-अ० जहाँ-उपर; अनेक स्थानीपर ।-का तहाँ-जहाँ या वहाँ, अपनी जगहपर ।

जहाँ-जहाँका समासमें व्यञ्जित रूप ।-गर्ह-वि० कुमकक, विषयवर्धक ।-गर्ही-की० विषयग्रण ।-गीर-वि० दुनियापर राज्य करनेवाला, विषयविजयी । पु० भारतका चौथा मुगल सम्राट्, अकबरका पुत्र ।-गीरी-की० विश्वविजय, भूमण्डलका राजत्व; कलाईपर पहननेका एक जवाक गहना । वि० जहाँगीरका, जहाँगीरसे संबंध ।-दीवा-वि० जो दुनिया देखे हो, अनुभवी ।-जुमा-वि० जिसमें दुनिया दिखाई दे या जिसपरसे सब कुछ

देखा जा सके (जहाँना, कँची मीनार) ।-पनाह-वि० दुनियाकी रक्षा करनेवाला, जगत्का आभयरूप । पु० बादशाह, सम्राट् (हिंदुस्तानके मुसलमान बादशाहोंका संशोधन) ।

जहाज-पु० [अ०] बड़ी और समुद्रमें चलने या चल सकनेवाली नाव, जलयान, पोत; (छा०) बहुत लंबी-चौड़ी चीज; बहुत भारी बोझ ।-राज-पु० जहाज चलानेवाला ।-रानी-की० जहाज चलाना; जहाज चलानेका काम । मु०-का कौआ-समुद्रमें चलनेवाले जहाजपरका कौआ जो कहीं जमीन न देख बार-बार हिरफिरकर उसीपर आकर बैठता है; वह आदमी जिसके लिए एक ही ठिकाना हो ।

जहाजी-वि० जहाजका; जहाजसे होनेवाला (कारबार) । पु० जहाजसे यात्रा करनेवाला; जहाजका खलासी ।-डाकू-पु० जहाजोपर डाके डालनेवाला, जलदस्त्र, समुद्री डाकू ।

जहाज-पु० [फा०] दुनिया, जगत्, लोक ।-भारा- (नारा)-वि० दुनियाकी सजानेवाला, सृष्टिकी शोभा, शृंगार ।-बेगम-की० शाहजहाँकी बड़ी बेटी जो उसकी मृत्युतक उसके साथ कैदखानेमें रही । मु०-आँखोंमें स्वाह हो जाना-सब ओर अंधेरा हो अंधेरा दिखाई देना ।

जहानक-पु० [स०] प्रलय ।

जहालत-की० [अ०] अज्ञान, मूर्खता, जाहिलपन ।

जहिया-अ० जब ।

जहाँ-अ० ज्योंही; जिस स्थानपर, जहाँ हो ।

जहाँ-वि० [अ०] जिसका जेहन तेज हो, तीक्ष्णबुद्धि, मेधावी ।

जहर-पु० दे० 'जहर'

जह्ज-पु० [अ०] वह धन जो कन्या (या बर)को विवाहके समय उसके (कन्याके) माँ-बापसे मिले, दहेज; अत्येष्टिका सामान, कफन-काठी ।

जह्ज-पु० [स०] विष्णु; एक राजपि त्रिन्होंने भगीरथके गंगा लाते समय उमे पी लिया और उनकी विनतीपर फिर कानकी राह निकाल दिया था (पु०) ।-कन्या, -तनया-की० गंगा ।-ससमी-की० वैशाख-शुद्धा सप्तमी, गंगामयमी (जह्जके गंगापान और उद्धारणकी तिथि) ।-सुता-की० गंगा ।

जह-पु० [फा०] जहर, विष ।-(हे) क्रांतिल-पु० घातक विष ।

जौ-की० [फा०] दे० 'जा'; दे० 'जान' । वि० दे० 'जा' ।

-निसार-वि० दे० 'जाननिमार' ।-निसारी-की० दे० 'जाननिसारी' ।-फिजानी-की० दे० 'जानफिजानी' ।

-बल्ली-की० दे० 'जानबल्ली' ।-बाज-वि० दे० 'जानबाज' ।-बाजी-की० दे० 'जानबाजी' ।

जौउनि-की० जामुन ।

जौग-पु० घोड़ोंकी एक जाति ।

जौगर-पु० अमराक, अमरशोला; पौरव; † मट, उरद आदिका वह डठल जिससे दाना निकाल लिया गया हो ।

-कोर-वि०, पु० मेहनत न करनेवाला । मु०-थकना

—शरीरका धकना, शिथिल होना; पीरपका जवाब देना ।
ऑगरा—पु० माद, बंदी ।
ऑगल—वि० [सं०] अंगलका, अंगली । पु० वह प्रदेश जहाँ पानी कम बरसे, धूप-गरमी अधिक करी हो, एक-पौधे कम हो; मांस; हिरन आदिका मांस; तीतर ।
ऑगलि, **ऑगलिक**—पु० [सं०] सैंपरा, मदारि; विषवैष ।
ऑगली—खी० [सं०] शुकुशिमी, केवॉच ।
ऑगलू—वि० असम्भ, उज्जु, जगली ।
ऑगुल—पु० [सं०] विष; तीरई ।
ऑगुलि, **ऑगुलिक**—पु० [सं०] सैंपरा ।
ऑगुली—खी० [सं०] दुर्गा; विषविषा ।
ऑष—खी० पौषका कमर और पुटनेके बीचका भाग, ऊर ।
ऑषा—पु० गङ्गाका धुरा ।
ऑषिक—पु० [सं०] हरकारा, धावन; ऊँट; एक शृंग । वि० शीतनेवाला ।
ऑषिया—पु० एक तरहका लँगोटा पुटनोंतकका पाजामा, हुटबा; मालसंबंधी एक कसरत ।
ऑषिक—पु० एक जलपक्षी; पिछले पैरका लंगड़ा बैल ।
ऑष—खी० ऑषनेकी क्रिया, परख, परीक्षा, छान-बीन, तहकीकात ।—**पक्षताल**—खी० छान बीन, तहकीकात, तफतीश ।
ऑषक—पु० दे० 'याचक' ।
ऑषकता—खी० ऑषनेका काम ।
ऑषना—म० कि० किसी बातके सही-गलत, खरी-खोटी होनेका पना लगाना, परख करना; * दे० 'आचना' ।
ऑषरा—वि० जीर्ण, जर्जर ।
ऑष, **ऑषा**—पु० जोरकी हवाके साथ होनेवाली वर्षा, तूफानी वर्षा ।
ऑष, **ऑषा**—पु० अष्टा पीननेकी चक्की ।
ऑषव—वि० [म०] जतुम्बर्षी; जतुम्भे प्राप्त, उत्पन्न ।
ऑषना—म० कि० दबना, चोंपना ।
ऑष—पु० जामुनका फल ।
ऑषवत—पु० दे० 'जाववान्' ।
ऑषव—पु० [सं०] जामुनका फल; सोना ।
जाबबती—खी० [सं०] जाबबामुकी कच्चा जिसका बिबाह कृष्णमे हुआ था; नागदमनी लता ।
जाबवान् (वत्)—पु० [सं०] सुधीवका मंत्री जिससे कंका-विजयमे रामचन्द्रकी बहुत सहायता मिली । कहा जाता है कि वह कृष्णके समयतक जीवित रहा ।
जाबबी—खी० [म०] नागदमनी ।
जाबबोट, **जाबबीट**—पु० [सं०] सुअतमें बणित एक औजार जिसने कोड़े आदि जलपे जाते थे ।
जाबीर—पु० [सं०] जैबीरी नीरु ।
जांभीर—पु० [सं०] पुटनेके जोड़परकी गोल बिपटी इट्टी; जैबीरी नीरु ।
जांभुल—वि० [सं०] शृंगल-संबंधी । *
जांभुलाकी (किन्)—पु० [सं०] कंकाका एक राक्षस जो अशोकवाटिका उगारने समय इन्सुमान्के हाथों-भारा गया ।
जांभुल (वत्)—पु० [सं०] दे० 'जाववान्' ।
जांभू—पु० दे० 'जम्' ।

जांभुल—पु० [सं०] सोना; धतूरा ।
जांभीर—पु० [सं०] दे० 'जावबीर' ।
जांभुल—वि०, अ० दे० 'यावित' ।
जांभूर—पु० गमन, जाना ।
जा—खी० [सं०] जाति; देवराजी; माता । वि० खी० उत्पन्न करनेवाली; * * * * * से जो उत्पन्न हुई हो (समा-संतमें—गिरिजा, आर्यजा) । * सर्व० जिस । खी० [फा०] जगह, स्थान; मौका । वि० उचित, मुनासिब ।—**जुकर**—पु० पाखाना, शौचालय ।—**नमाज**—खी० वह कपड़ा जिसे बिछाकर नमाज पढ़ते हैं, मुमहा ।—**नसीब**—पु० किसीके अ्यान, पदका अधिकारी; उत्तराधिकारी ।—**नसीबी**—खी० जानशीन होना ।—**नजा**—अ० जगह जगह, जहाँ-तहाँ ।—**बेजा**—वि० उचित-अनुचित, बुरा-भला । अ० मौके-बेमौके, ठिकाने-बैठिकाने । (—सार बैठना, हाथ छोड़ देना ।)
जाहू—वि० दूधा, बेकार ।
जाहू—खी० कच्चा; चमेले ।
जाहूवा—वि० [फा०] जवा हुआ, जात (नौकराई—नक-जात) ।
जाहुरा—खी० खीर ।
जाक—पु० बल ।
जाकह—पु० नापसंद होनेपर छोड़ा देनेकी शर्तपर खरादा हुआ सीरा (दिना, लेना) ।—**बहरी**—खी० वह बही जिसमें जाकह बिक्रीका स्थोरा या बाददाहत मिली जाय ।
जाकित—खी० एक तरहकी कुर्ती, 'जैकेट' ।
जाखिनी—खी० दे० 'यक्षिणी' ।
जाग—खी० जागनेका भाव, जागरण; * जगह, स्थान । * पु० यक्ष ।
जागत—पु० [सं०] जगती नामक हस्त ।
जागता—वि० जागता हुआ; अपनी शक्तिका परिचय देने-वाला, तेजस्वी, प्रकट, प्रत्यक्ष ।
जागति—वि० [म०] जगता, सचची, सासारिक ।
जागती—वि० खी० दे० 'जागता' ।—**कला**,—**जोस**—खी० जलता पीपका; जागनी हुई देवा ।
जागना—अ० कि० नींदका त्याग करना; जग हुआ होना; फलदायक होना (भाव्य, नसीब); सजग होना; चेतना; सक्रिय, प्रयत्न होना, उठना; बढ़ना; चमकना; प्रदीप्त होना * उभरना, प्रसिद्ध होना ।
जागहलिक—पु० दे० 'याचवल्थ' ।
जागर—पु० [सं०] जागरण; अंतःकरणकी वह अवस्था जिसमें सब वृत्तिर्वा जाग्रत हों; कदच । वि० जागता हुआ, जाग्रत ।
जागरक—वि० [सं०] जागता हुआ, असुप्त ।
जागरण—पु० [सं०] जगना; जग; जगा हुआ होना; बचन-कीर्तन आदि करते हुए रात बिताना, रतजग ।
जागरन—पु० दे० 'जागरण' ।
जागरा—खी० [सं०] जागरण ।
जागरित—वि० [सं०] जागता हुआ, जाग्रत ।
जागरिता (तु)—वि० [सं०] जागता हुआ; सचेत, सावधान ।
जागरी (विन्)—वि० [सं०] दे० 'जागरिता' ।

जागरूक-वि० [सं०] जागता हुआ; जागरणशील; स्व-
कर्तव्यके विषयमें सावधान ।

आगरूपः - वि० जागता दुर्गा (देवता, तेज); प्रत्यक्ष, स्पष्ट ।

आगर्ति-स्त्री० [सं०] जागरण ।

आमर्षी-सी० [सं०] जागरण

जागा-खी० दे० 'जगह'

आगीत - पृ० बंजी, भाट ।

जागीर-खो० [फा०] वह जमीन जो राज्यकी ओरसे किसीको किसी विशेष सेवाके पुरस्कारमें दी गयी हो; वह जमीन जो गाँवके नार्ह, कहार, कुम्हार आदिको उनकी सेवाके बदलमें दिना कमान जेतनेकी दी गयी हो।
-खिखार-खो० सेवा-विशेषके क्वि (कहार, कुम्हार आदिको) दी हुई जागीर।-दार-पु० बिने जागीर मिली हो; खरदार; सामत।-दारी-खो० जमीनदारका पद वा जागीरदार होनेका भाव; रहसी।-अंसली-खो० वह जागीर जो किसी परदेसे साथ मक्द हो।

जागीरी*—खी० दे० 'जागीरदारी' ।

जागुड-बु० [स०] केसर; एक प्राचीन जनपद; वहाँका निवासी ।

जाग्रति-स्त्री० जागरण ।

जागृवि-पु० [सं०] राजाः अग्निः । वि० जाग्रत् ।

जाग्रति-सो० जागरण, जाग्रत् होनेका भाव ।

आग्रह-वि० [स०] जागृता इत्यादि; सग्रह, सावधान-
प्रकाशमान । पु० वह अवस्था जिसमें जीव शब्द, स्पर्श
आदि विषयोंको ग्रहण करे । -स्वप्न-पु० जागृतका सपना,
कल्पनासृष्टि ।

जायत्री-खी० [सं०] जौव; पूछ ।

जायकः—पु० द्वे० 'यानक' ।

जाचकृता* - श्री० याचकवृत्ति, मिश्रमंगी ।

जायमाना-स० क्रि० माँगना; भीख माँगना ।

जाजम-स्त्री० दे० 'जातिम' ।

जाज मलार-पु० एक राग ।

जाजर-वि० जीर्ण, जर्जर टूटा-फूटा-‘जैसे भेंबर जाजरी
नेया’-घन० ।

जाजल-पु० [स०] अथर्ववेदकी एक शाखा ।

आजलि-पु० [सं०] एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि ।

जाज़िम-खी० [तु०] दरीके ऊपर बिछानेकी छपी चादर ।

जाजी(जिन्) - ५० [स०] योद्धा ।

जाडवरूपमान-वि० [स०] प्रज्वलित; तेजोमंडित ।

आठ-पु० पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, पंजाब, राजपूताना आदिमें बसनेवाली एक हिंदू जाति; उस जातिका जन ।

जादलि-पु०, स्त्री० [सं०] पलाशकी जातिका एक वृक्ष ।

जादू-स्त्री० जाटोंकी बोली, बाँगड़ ।

जाठ-पु० कोल्हूकी ईँसीमें रहनेवाला लकड़ीका गोठ, चिकना बड़ा जिसके धूमनेसे पेटनेकी क्रिया होती है; तालाबके बीचमें गड़ा हुआ बड़ा।

जाठर-वि० [सं०] जठर-पेट-संबन्धी; जठरते उत्पन्न; जठरमें स्थित । पु० जठराग्नि; वक्त्र ।

जठराग्नि-खी० [स०] जठराग्नि ।

जाठरानक-पु० [सं०] दे० 'जठराग्नि' ।

आद्यः-पुं लैः 'आद्य' ।

जाड़ा-पुं शीतकाल-हेमन्त और शिशिर ऋतुएँ, (मौदे हिसाब) आधे कार्तिकमें आधे फागुनतकका समय; सरदी, ठंड (बबना, बगना)। सुं-खाना-जाड़ेका कष्ट सहन करना। -(हे)की साँवनी-बेकार पीज।

आह्व-पु० [सं०] जडता; निश्चेष्टता; मूर्खता; स्वाद न
मात्र हीना ।

आचार्य-पु० [सं०] जैशरी नीव ।

जाल-वि० [सं०] जन्मा हुआ, जना हुआ; उत्पन्न; प्रकट, व्यक्त; घटित; संगृहीत। पु० जन्म; वेदा; बन्धा; वर्ग; समूह; प्राणी। -कर्म(ज)-पु०,-किष्ठा-ली० पुन-जन्मके अवसरपर किया जानेवाला एक संस्कार, हिंदुओंके मौल्य-संस्कारोंमेंसे चौथा। -कलाप-वि० पृथक्का- (होने) मोर। -काम,-प्रत्यय-वि० जिसके मनमें काम जग गया हो, आसक्त। -दूत-वि० जिसके दाँग निकल आये हों (बन्धा)। -दोष-वि० दोषी। -पक्ष-वि० जिसके डैने निकल आये हों। -पाश-वि० बंधनयुक्त; जो डेढाकसी पहनायी चुकी हो। -पुत्रा-ली० वह लीं जो बेटा या बेटे जग गयी हो। -प्रत्यय-वि० जिसके मनमें विधास, प्रीति उत्पन्न हो चुकी हो। -मात्र-वि० तुरतका जन्मा हुआ, मधोत्रात। -सूत-वि० जो जन्मते ही मर जाय। -रूप-वि० सुंदर। पु० सौभाग्य; धनरा। -विश्रम-वि० धरवाड़ा हुआ। -वेदसा-ली० दुर्गा। -वेदा(इस)-पु० अग्नि; मूल्य; विनय; परमेश्वर। -वेद्य(ज)-पु० मीरी, धनिकाग्रह।

जात-स्त्री० दे० 'जानि' । -पाँत-स्त्री० विरादरी ।

ज्ञात-जी० [अ०] वस्तुतत्त्व, स्वरूप; निरूप; स्वभाव;
देह; व्यक्ति, व्यक्तित्व, प्रकार । -शरीर-वि० दुष्ट,
खोटा ।

जातक-पुं० [मं०] नवजात शिशु, बच्चा; भिद्यु; फलित ज्योतिषका वह अंग जिसमें नवजात शिशुका शुभाशुभ फल कहा जाता है; जातकर्म; एक जैसी वस्तुओंका मण्डल; वह बौद्ध ग्रन्थ जिसमें बुद्धके पूर्व जन्मोंकी कथाएँ लिखी हैं। वि० जात, उत्पन्न। -ध्वनि-श्री० जोंक।

जातना, जातनाई*—स्त्री० द्वे० 'यातना' ।

आता-म्ही० [स०] लढकी

आति-बो० [सं०] जन्म, उत्पत्ति; वंश; 'गोत्र'; जीवभेदोः; कुल, वर्ण या योनिका भेदं सूचित करनेवाला वर्ग; वर्ण; वंश, माषा, देश. इतिहास, सस्कृति आदिकी ममानता रखनेवाला मानव-समुदाय, 'नेशन'; 'हिंदुओंके विभिन्न वर्णोंके अंतर्गत परस्पर रीढ़ी-पेंढीका समूह' रखनेवाला और सामान्यतः एक ही पंथा करनेवाला नमकून जनसमुदाय; वर्ग विशेषके विभिन्न व्यक्तियोंमें पाया जानेवाला समान बर्ग (स्वा०); विद्या; ज्ञान; चमेली; जवारी; जायफल; स्वरामक; एक शब्दालंकार, भाषामक (?) ; भाषिक छंद; अश्विकुड-कोश-कोष-पु० जायफल । -कोषी, -कोषी-भी० जाति । -ध्रुत्व-वि० स्वनातिसे अलग किया हुआ । -तत्त्व-पु० मानव-जातिके मूल विभागों की उनके परस्पर संबंधकी विधियाना करनेवाला शास्त्र, 'एथनोलॉजी' । -धर्म-पु० जाति या वर्णविधि

का विशेष धर्म, आचार। -पत्र, -पर्ण-पुं, -पर्णी-
स्त्री० जातिनी। -पत्ति-स्त्री० [वि०] जाति-उपजाति,
जाति-वर्ण। -फल-पुं० जायफल। -ब्राह्मण-पुं० वह
ब्राह्मण जो केवल जन्मसे ब्राह्मण हो, शुभ-कर्मसे न हो,
तप-स्वाध्यायरहित ब्राह्मण। -जंश-पुं० जातिभ्रष्टता,
जातिच्युति। -कर-वि० जातिभ्रष्ट कर देनेवाला (पाप)।
-अह-वि० जातिच्युत। -लक्षण-पुं० जातिसूचक
विशेषताएँ। -शाब्क-वि० जाति बतानेवाला (संज्ञा)।
-विह्वेष्ट-पुं० जातिगत द्वेष; अन्य जातिके प्रति शत्रुभाव।
-वैर-पुं० महज वैर, स्वाभाविक शत्रुता। -व्यवसाय-
पुं० जातिविशेषका सामान्य भंषा, पेशा। -स्वय-पुं०
जायफल। -संकर-पुं० दो जातियोंका मिश्रण, दोगला-
पद। -सार-पुं० जायफल। -स्वर-वि० जिसे अपने
पूर्वजन्मका कृपांत याद हो। -स्वभाव-पुं० जातिप्राप्त
स्वभावा; एक अर्थलकार जिसमें किसीकी आकृति तथा
शुणों आदिका चित्रण किया जाय। -हीन-वि० नीच
जातिका; जातिच्युत।

जातिमात्र (मन्त्र) -वि० [सं०] कुलीन, सत्कुलमें उत्पन्न।
जाती-स्त्री० [३०] बमेली; मालनी; छोटा आँवला;
जायफल। -कोश, -कोष, -फल-पुं० जायफल। -कृषी-
स्त्री० जातित्री। -रस-पुं० एक संघट्टय।

जाली-वि० व्यक्तिगत, निजी, अपना; बस्तुगत, असली।
जातीश-वि० [मं०] जाति-मन्त्रधी; जातिका।
जातीश-स्त्री० [मं०] जातिविशेषसे सबक होनेका भाव,
कौमोयन; अपनी जातिका अभिमान; राष्ट्रीयता।
जानु-अ० [सं०] सायद, करावित्त; कमी।
जानु-पुं० हांग।
जानु-पुं० यातुधान, राक्षस।
जानु-वि० [सं०] जतु-काखका बना हुआ; चिपकनेवाला,
कमरार।

जातु-पुं० [सं०] वज्र। -कर्ण-पुं० एक ऋषि।
जातेहि-स्त्री० [सं०] जातकर्म।
जातोक्ष-पुं० [सं०] कमउत्त वैल।
जात्वंच-वि० [सं०] जन्माध।
जात्य-वि० [सं०] कुलीन; सुदर; श्रेष्ठ; समकीण (मं०)।

-जिभुज-पुं० ममकोण जिभुज।
जात्रा-स्त्री० दे० 'यात्रा'।
जात्री-पुं० दे० 'यात्री'।

जायका-स्त्री० ढेर, राशि।
जाद्व-पुं० दे० 'याद्व'। -पति-पुं० कृष्ण।
जाद्वपति, जाद्वसपती-पुं० वरुण।
जाद्व-वि० दे० 'जाद्व'।

जाद्व-पुं० [फा०] देता, जन्म-मंतर; बशीकरण; मोहनी;
इद्रवाल, नजरबंदी; हाथकी सफाईका काम, बाजीमरी।
-शर-पुं० जाद्व करनेवाला। [स्त्री० 'जाद्वरानी']।
-शरी-स्त्री० जाद्वका काम; जाद्व करनेकी विद्या।
-नज़र-निगाह-वि० जिसकी दृष्टिमें मोहनी हो।
-बयान-वि० जिसकी वाणीमें जाद्वका असर, मनकी मोह
लेनेकी शक्ति हो। सु०-उत्तमा-जाद्वका असर दूर
होना। -खलना-ज १ असर होना; बातका असर

होना। -हलना-आमना-जाद्व करना। -बह जो
सिरपर चढ़कर कोछे-उपराय बड़ी अच्छा है जो सफल
हो और बिरोधीकी भी मानना पड़े।

जाद्वी-पुं० दे० 'याद्व'। -राय-पुं० कृष्ण।
जान-पुं०, स्त्री० जाननेका भाव, ज्ञान, जानकारी; ममज्ञ,
खयाल। (इस शब्दका प्रयोग '...की जानमें' जैसे अव्यय-
पदमें वा सगुणोंमें ही होता है। प्राचीन कविता और
बोलचालमें प्रायः पुलिगमें ही प्रयोग मिलता है।) वि०
ज्ञानवान्, सुज्ञान। -कार-वि० जाननेवाला, अभिज्ञ,
विश्व। -कारी-स्त्री० परिवय; अभिज्ञता, विद्वता। -
पना-पुं०, -पनी-स्त्री० जानकारी; चतुराई। -पह-
ज्ञान-स्त्री० परिचय, ज्ञानासाई। -मनि, -राय-वि०
ज्ञानियोंमें अधिक, ज्ञानिश्रेष्ठ, ज्ञानिराज।

जान-स्त्री० जाद्व-होना-भेरे जान जानकी तू जानति है
जान कछु-कविप्रिया। पुं० जान, बाहान दे० 'जानु'।

जान-स्त्री० [फा०] प्राण, जीव; जीवन; बल, दम; सार,
सत्त्व; किसी चीजमें जान डालनेवाली चीज; रस; शोभा
आदिका आधारभूत गुण, तत्त्व (यही वाक्य सारे निबंधकी
जान है); अति प्यारी वस्तु; प्रियजनका संवोधन; (ममास-
में प्रायः 'जो' के रूपमें भी प्रयुक्त होना है)। -जोखिम
-स्त्री० दे० 'जानखोली'। -जोखी-स्त्री० जान जानेका
उर, गिरगीका खनरा। -द्वार-वि० जिसमें जान हो,
संजोव; किम्मतवाला; जिसमें बल वा जोज हो। पुं०

प्राणी। -निवार-वि० जान देनेवाला; जो किसीके लिए
मरनेकी तैयार हो; स्वाभिमन। -निवारी-स्त्री० बफा-
दारी, स्वाभिमन। -किशानी-स्त्री० जोनीव कोशिश,
अति कम। -बड़ही-स्त्री० प्राणवान; प्राणदंडके अप-
राधीकी खमदान। -बर-वि० सुरक्षित, मही-भयानत।

-बल्ल-वि० जिसकी जान ओठोंपर आ गयी हो,
आसन्नमरण। -बाज़-वि० जानपर खेलनेवाला, बीर,
साहसी। -बाज़ी-स्त्री० साहस, बीरता, जानकी खनरेमें
डालनेका भाव। -बीसा-पुं० गिरगीका बीसा। -छेवा

-वि० जान लेनेपर तुला हुआ, जानी दुदमन। -ब माछ
-पुं० प्राण और धन, धन-जन। -बर-पुं० प्राणी; पशु,
हैवान। वि० मूर्ख; उग्र। -मे)जो-वि० प्राणोका
प्राण, अति प्रिय; प्रियतमा। -मन-वि० प्रियजनका
संवोधन, मेरी जान, प्राणप्यारे (स्थारी)। सु०-जोखीमें
आ जावा-आसन्नमरण होना। -आना-मन स्थिर

होना। -का अज्ञाब-जीका बजाल, झटट, बलेश।
-का माहक-जो जान लेनेपर आमादा हो, जानका
बेरी। -का लुकासाव-प्राणहानि, किसी दुर्घटनामें
मनुष्योंका मरना या मारा जाना। -का रोग-कट
देनेवाली वस्तु, व्यक्ति जिससे जल्दी पीछा न छूटे, भारी
जंजाल। -का लारू-जानका दुश्मन। -की अमान-
प्राणरक्षा, प्राणदान (दाना, मीनता)। -की झैर-प्राण-
रक्षा; कुशल। -मनाना-प्राणरक्षा का उपाय करना;
जान बच जाय हमकी गनीमत मानना। -की सरह
रखना-तनिक की कट न पहुँचने देना, सुल-सुपासका
विशेष ध्यान रखना; बहुत संभाल कर रखना। -की
पड़ना-जान बचानेकी चिंता होना, प्राणभय होना।

—के काले पचना—जान रचना कठिन हो जाना, उबरने की आशा न रहना । —को आज न समझना—कष्ट, तत्कालीनकी परबाह न करना, निजमें होकर काम लेना । (किसीकी)—को रोना—किन्तीसे, किन्तीके कारण पहुँचे हुए कष्ट, हानिकी याद करके दुःखना । —खपाणा—(किसी काममें) बहुत श्रम करना, कष्ट उठाना । —खाना—किसी बातके लिए बार-बार कहकर, किसी बातकी याचना या तकाजेसे परेशान कर देना । —खोना—जान देना; किसी दुःखमें डुबना । —खुराना—दे० 'जी खुराना' । —खुशना—खुष्टकारका उपाय करना—करना, पीछा छुड़ाना । —खुदना—खुष्टकारा मिलना । —बैना—मरना; मरनेकी तैयार होना । (किसी चीजके लिए)—बैना—दाँतसे पकने रहना, व्यर्थ या हानि सह न सकना । (किसीपर)—बैना—किसीके काबेले खिन्न, रुष्ट होकर प्राणत्याग, आत्महत्या करना; किसीपर बहुत अनुरक्त, आसक्त होना । —बिकलना—अति कष्ट होना; जान खूखना । —जिसार करना—दूरेके लिए मरना, प्राणोत्सर्ग करना । —पचना—प्राणसंचार होना; शक्ति आना; हरा-भरा होना । —पर आ बनना—जान जानेका डर होना, भारी संकटमें पचना । —पर खेकना—जानमोखीका काम करना; साहस, वीरताका काम करना जिसमें जान जानेका डर हो । —पर नौबत आना—दे० 'जानपर आ बनना' । —बचाणा—किसी अभिय या कष्टसाध्य काममें कतराना, भागना, पीछा छुड़ाना । —बची छाती पावे—मरनेसे बचे बड़ी परम काम है । —जारी होना—जीना बूझ हो जाना, जिंदगीसे ऊब जाना । —मारना—दे० 'जान लेना' । —मैं जान आना—डाढ़स बंधना, इतमीनान होना । —मैं जान होना—जिंदा होना (जबतक जानमें जान है) । —छडाना—जी-जानसे, जीतीक कोशिश करना । —छडीपर आना—दे० 'जान हो तो पर आना' । —छेना—बध करना; बहुत कष्ट देना; बहुत कभी मेहनत लेना । —खूखना—खरत होश गुम हो जाना, झुझ हो जाना । —खूलीपर होना—जान छूटनेका होना; भारी परेशानीमें होना । —सं गुझर जाना, —सं जाना—मर जाना । —सं तंग आना, —सं बेजगार होना—जीना बसख हो जाना, जानसे ऊब जाना । —सं मारना—मार डालना, कत्तल कर देना । —सं हाथ खोना—जान गँवाना, मरना । —है तो जहान है—दुनियाका सब सुख जिंदगीके साथ है । —हूँतोपर आना—आत्मश्रमण होना, अवसर होना; प्राणतक कष्ट, वदना होना । जानकी—क्री० [सं०] जनककी पुत्री, सीता । —जानि—पु० (नानकी है याया निनकी) रामचंद्र । —जीवन, —नाथ—पु० रामचंद्र । —मंगल—पु० गोस्वामी तुलसीदासकी एक रचना जिसमें राम-सीताके विवाहका वर्णन है । —रमज—पु० रामचंद्र । —रबन—पु० दे० 'जानकीरमण' । —बल्लभ—पु० रामचंद्र । जाननहार—पु० जाननेवाला । जानना—सं० कि० किसी वस्तु, व्यक्ति, घटनाका अभिज्ञ, जानकार होना, झाला होना, पहचानना, नाम-धामसे परिचित होना, अवगत होना । जानकर—जानते हुए, जान-बूझकर । झु० जानकर अनजान होना—किसी

बातकी जानते हुए न जाननेका ढोंग करना, अनभिज्ञता दिखाना । जानना बूझना—जानना, समझना; अभिज्ञ होना । जान पचना—माहूम होना, दिखाई देना । जान-बूझकर—जानते समझते हुए, सोच-समझकर । जाने-अनजाने—जानकर या बिना जाने । जानपद—पु० [सं०] जनपदवासी, ग्रामवासी; जन, लोक; देश; जनपदसे प्राप्त कर आदि । वि० जनपद-संबन्धी । जानपदी—क्री० [सं०] हृत्ति; एक अक्षरा । जामहार—वि० जानेवाला; नष्ट होनेवाला । जान हूँ—ज० मानो, जानो । जानौं—क्री० [फा०] ('जान'का बहु०) प्रेमपान्न, प्रेयसी । जाना—अ० कि० एकसे दूसरे स्थानपर पहुँचनेके लिए हरकत करना, गमन करना, रवाना होना; दूर होना; बिदा होना; नष्ट होना; शीतना, गुजरना, खोना, नुकसान होना; विगडना (हमांग क्या जाता है ?), हाथसे निकल जाना; बहना, जारी होना; मरना; (किसी बात, छन्दों आदिपर) विश्राम करना, ठीक मान लेना; * वैरा होना । * सं० कि० अनजान, अज्ञ देना । झु० जा बसकना—एकाएक पहुँच जाना । जा निहङ्गना—अज्ञानक पहुँच जाना । जाने देना—छोड़ देना; माफ कर देना । जा पचना—अज्ञानक जा पहुँचना । जा रहना—कहाँ पहुँचकर ठिकना, ठहरना । जा केना—अज्ञे जानेवालेके बराबर हो जाना; भागनेवालेकी पकड़ लेना । जानि—क्री० [सं०] पत्नी, भार्या (केवल ममाममें व्यवहृत—'जानकीशामि' । * वि० हानी । जानिब—क्री० [अ०] तरफ, दिशा । —हार—वि० पक्षपाती, तरफदार । —दारी—क्री० पक्षपात, तरफदारी । जानी—वि० [फा०] जानका; जानमें सन्ध रखनेवाला । वि० क्री० प्राणपिया, प्यारी । —दुस्मन—पु० कट्टर शत्रु, जान लेनेकी तैयार रहनेवाला शत्रु । जानु—* अ० दे० 'जानो' । पु० [सं०] घुटना । —दज्ञ—वि० घुटनेक ऊँचा या गहरा । —पाणि—अ० घुटनों और हाथके पञ्चोक्त बल, पुट्टकहाँ । —पानि—अ० दे० 'जानु-पाणि' । —फचक, —मंडल—पु० घुटनेके नौदन्ते ऊपरकी हड्डी । —विजानु—पु० तलवारका एक हाथ । जानू—पु० [फा०] घुटना; जोष । —पोख—पु० बह कपडा (जिन सुसलमान) खाते समय जोषपर रख लेते हैं । झु० —तह करना, —तोड़ना—अवधने, दो-जानू होकर बैठ रहना । जानो—अ० मानो, जैते । जाप—पु० [सं०] जप; * जपमाला । जापक—वि० [सं०] जप करनेवाला । जापन—पु० [सं०] निरसन, निर्वर्तन । जापा—पु० सीरी । जापान—पु० पूर्वी एशियाका एक प्रमुख देश । जापानी—वि० जापानका । पु० जापानवासी । क्री० जापानकी भाषा । जापी (पिन्) —वि० [सं०] जप करनेवाला । जाप्य—वि० [सं०] जप करने योग्य । ज्ञाकृत—क्री० दे० 'विद्याकृत' ।

ज्ञाकरान-पु० [अ०] केसर ।

ज्ञाकरानी-वि० केसरिया, केसरके रंगका ।

जाबता-पु० दे० 'जाबिता' ।

जाबा-पु० सीके जैनी बनी हुई रस्मीकी जाड़ी जिते बैल आदिके मुँहपर पहनते हैं, सुमका ।

जाबाक-पु० [सं०] एक ऋषि जिसकी माताका नाम जाबला था और जिनका आसुवान छांदोग्य उपनिषद्में वर्णित है ।

जाबाकि-पु० [सं०] एक उप-व्युत्पत्तिकार मुनि; दशरथके एक पुरोहित जिन्होंने रामचंद्रकी बनसे लौट जानेके लिए समझाया था ।

जाबित-वि० [अ०] जम्भ करने, रखनेवाला, सहनशील; नियामक; रक्षक । पु० पुलिस अफसर (अरब देश) ।

जाबिता-पु० [अ०] नियम, कायदा; दस्तूर, व्यवहार, विधि, पद्धति । -(मरु) अंदाखल-पु० अदालती कार्य-विधि । -दीवानी-पु० दीवानी अदालतोंकी कार्यविधि (कोड आन् विविल प्रीमिस्कोर) । -क्रौजदारी-पु० कौजदारी अदालतोंकी कार्यविधि (कोड आन् क्रिमिनल प्रीमिस्कोर) । -माल-पु० मालकी अदालतों, अफसरोंकी कार्यविधि ।

जाबितो-पु० पुलिस कर्मचारी, कांस्टेबल (अरब देश) ।

जाबिर-पु० [अ०] जम्भ करनेवाला, अल्पाचारी, जालिम ।

जाबी-खी० छोटा जाबा ।

जाबता-पु० दे० 'जाबिता' ।

जाम-वि० [अ०] अवकाश (मार्ग आदि) । पु० [हिं०] पहर, याम; जामुन; [फा०] प्याला; शराबका प्याला; खुरामानका एक नगर । -(मे) जम, -जमशेद-पु० ईरानके बागशाह जमशेदके लिए वैज्ञानिकोंका बनाया हुआ प्याला (कहते हैं कि इममें देखनेसे भविष्यमें होनेवाली बातों या सारी दुनियामें होनेवाली बातोंका ज्ञान हो जाता था) । -जहाँनुमा-पु० दे० 'जामे-जम' । -सिहल-पु० किमीकी स्वास्थ्य-कामनामें पिया जानेवाला शराबका प्याला । सु० -चकना-शराबका दौर चलना, प्यालेपर प्याला पीने जाना ।

जामनी-खी० [फा०] तोपमें आग देनेका फणीता; बंदूकका तोफा ।

जामवन्ध-पु० [सं०] जमदग्निके पुत्र, परशुराम ।

जामदानी-खी० [फा०] कपडा रखनेका संदूक (जामा-दानी); चमड़ेका संदूक; शीसे या अवरककी बनी संदूकची; एक महीन कपडा, बूटीदार अड्डी ।

जामन-पु० दूधकी जमामेके लिए डाला जानेवाला दूध या और कोई खट्टी चीज; जामुन; आलू नुसारेकी जातिका एक वृक्ष ।

जामना०-अ० कि० दे० 'जमना' ।

जामनी-खी० दे० 'शामनी' ।

जामल-पु० [सं०] एक प्रकारका संघ ।

जामबल-पु० दे० 'जाबवान्' ।

जामा-खी० [सं०] बैटी; पुत्रवधू । पु० [फा०] कपडा, पहनावा; दूधको पहनावा जानेवाला अंगरखा जिसका जीचेका वेरा पेशाबान नैसा होता है । -ज़ेब-वि० जिसकी

देहपर कपड़े लिये । -द्वार-पु० वह कर्मचारी जिसका काम कपड़ोंकी संधाल हो । -पोश-वि० जो कपड़े पहने हो । -(मे)बार-पु० वह ऊनी शाल जिनकी सारी जमीनपर बूटे हों; एक तरहकी छोट जिसके बूटे दुशालेके बूटोंमें मिलते हैं । सु०-(मे) में फूला न समाना-बहुत खुश होना, इतराना । -से बाहर होना-आपमें न रहना, अति कुछ या प्रसन्न होना ।

जामाता(तु)-पु० [सं०] वामाद, कन्याका पति; स्वामी; पति; दुरदुर ।

जामातु०-पु० दे० 'जामाता' ।

जामातुक-पु० [सं०] हामात ।

जामि-खी० [सं०] बहिन; वैठी; पतोहू; निकट संबंधवाली सपिंड स्त्री; कुलजी ।

जामिक-पु० दे० 'वामिक' ।

जामित्र-पु० [सं०] कुंठणमें लभने सातवाँ स्थान । -बेध-पु० एक अशुभ योग ।

जामिन-पु० [फा०] जमात करनेवाला; जिम्मा लेनेवाला; नैचेकी दोहों नलियोंको अलग रखनेके लिए बाँधी जानेवाली एक लकड़ी; जामन; वह चीज जो दूसरी चीजकी उड़नेसे बचानेके लिए साथ रखी जाय (जैसे कपूरके साथ मिर्च) । -द्वार-पु० जामिन (असाधु) ।

जामिनी-खी० दे० 'वामिनी' ।

जामिनी-खी० [फा०] जामिन होनेका भाव, जमागत ।

जामी-खी० [सं०] दे० 'जामि'; * जमीन ।

जामुन-पु० एक खटमिष्टा फल और उसका पेड़, जंजू ।

जामुनी-वि० जामुनके रंगका, स्याह ।

जामेब-पु० [सं०] मानना, बहिनका बेटा ।

जार्जी-वि० मुनामिष ।

जाय०-अ०, वि० व्यर्थ, बेकार । खी० [फा०] जगह, स्थान; मौका । -पनाह-खी० पनाहकी जगह, आश्रय-स्थान । -रहाइश-खी० रहनेकी जगह, वास्तवान ।

जायक-पु० [मं०] पीला चंदन ।

जायका-पु० [अ०] स्वाद, मज्जा; रममाणकी शक्ति; रस-द्रव्य । -शिवास-वि० जायका पहचाननेवाला, मिते स्वादका अच्छा ज्ञान हो । -(के)द्वार-वि० स्वादिष्ट, मजेदार ।

जायका-पु० [फा०] जन्मपत्री; रमलमें बनायी जानेवाली कुंडली ।

जायज़-वि० [अ०] उचित; विहित; मानने योग्य ।

जायज़ा-पु० [अ०] परल; जीव-पश्चात् (देना, लेना) ।

जायब-वि० [अ०] ज्यादा, अधिक; अतिरिक्त, फाजिल ।

जायदाद-खी० [फा०] माल-असबाब, संपत्ति, जगह-जमीन । -जाबाई-खी० पैरुक्त संपत्ति । -तौरमनकूला-खी० अचल संपत्ति । -जौजीबत-खी० कौषन । -मज़-कूला-खी० देहन या बंधक रखी हुई संपत्ति । -मनकूला-खी० चल संपत्ति । -सौहरी-खी० स्त्रीको पतिसे प्राप्त संपत्ति ।

जायकल-पु० एक सुगन्धित फल जो मसाले और दवाके रूपमें काममें लाया जाता है, जातीफल ।

जायक-वि० [अ०] मिटनेवाला; नष्ट, क्षुप्त ।

आवस-पु० रायबरेली जिलेका एक कसबा, मलिक मुहम्मद जायसीका वास्तव्यन ।

आवसी-पु० आवस (रायबरेली)का रहनेवाला; अवसीके सुप्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी । वि० जायसका ।

आया-वि० उत्पन्न किया हुआ । खी० [सं०] विधिवत् भयाही दुर्गं खी, पक्षी । -जीब-वि० पक्षीको कमाई खानेवाला । पु० मट; नर्तक; वेदयाका पति । -ध्व-वि० पक्षीहंता । पु० जन्मकुंडलीमें सातवें स्थानपर मंगल या राहुके होनेने पकनेवाला एक योग जिसका फल पक्षीका घात मरना गया है; ऐमे योगवाला पुरुष; करीरका तिल ।

आया-वि० [अ०] नष्ट, बरबाद, व्यर्थ (करना, जाना, होना) ।

आयाजीवी (विन्) -वि०, पु० [सं०] दे० 'आयाजीव' । जायी (यिन्) -वि० [सं०] जयशील, जीतनेवाला । पु० भुवदकी जातिका एक ताल । [खी० 'आयिनी' ।]

आयु-वि० [सं०] जयशील । पु० औषध; वैद्य ।

आर-वि० नाशक पु० आर-“सुन्दर सकल यह विष्णु अमजार है”-सुन्दरदत्तः [सं०] परकीसे प्रेम करनेवाला; उपपति, आशना । -कर्म(न्) -पु० व्यभिचार । -ज, जम्मा(न्मन्), -जात-वि० जारसे उत्पन्न । पु० उपपत्तिमे उत्पन्न सत्तान । -ज योग-पु० फलित ज्योतिषका एक योग जिसमें उत्पन्न मतानके जारज होनेका संदेह किया जाता है । -अरा-खी० जारमे प्रेम करनेवाली खी, कुलटा ।

आर-वि० [सं०] क्षय करनेवाला; पाचन बढ़ानेवाला ।

आरण-पु० [सं०] गलना; पचना; जीर्ण करना; किसी धातुका शोषन, मारण; पारेका एक संस्कार ।

आरणी-खी० [सं०] सफेद जीरा ।

आरना-सं० कि० दे० 'जलना' ।

आरिणी-खी० [सं०] जारसे प्रेम करनेवाली खी, कुलटा ।

आरित-वि० [सं०] गलाया, पचाया हुआ; शोधित, मारित (धातु) ।

आरी-खी० आरकर्म । वि० [अ०] बहता हुआ; चलता हुआ, प्रचलित; बना हुआ । सु०-करना-निकालना, चलावा, आरम्भ करना ।

आरुच्य-पु० [सं०] अधमेय वस्तुका एक भेद ।

आरुच-खी० [का०] हाव । -कक्ष-पु० हाव देनेवाला, भंगी ।

आरुच-पु० [म०] दे० 'आरुच' ।

आरुच-पु० [सं०] एक कृषि; जालघर दैत्य; एक योग-मुद्रा; विगर्न देश (शालघर और भोगड़ा जिले); विगर्नगामी ।

आरुचरी विद्या-खी० इन्द्रजाल ।

आर-पु० [सं०] स्नान, स्नान आदिकी जालीदार बुनी हुई चीज जिसमे मछलियाँ, चिड़ियाँ आदि फँसाते हैं; जाली; रेश लालनौ, नहरों आदिका विस्तार; ठगने, फँसानेकी युक्ति; फँदा; मकरीका जाला; समूह; शरीरका; हार; इन्द्र-जाल; कृष्ण आदि शुद्ध फल; अविकसित पुष्प; कली; नारकी जालियोका बना शिरकाण; कटव; घमट, एक

नेवरीम । -कर्म(न्) -पु० मछुपका पैसा । -कारक-पु० जाल बनायेवाला; मकड़ा । -कठि-पु० मकड़ा; मकरीके जालमे फँसा हुआ कीड़ा । -गर्भ-पु० एक तरहका फोड़ा । -गोपिका-खी० दही मथनेकी हॉबी, दहीकी । -ग्रथित-वि० जाल वा जालेमें फँसा हुआ वा

जालके द्वारा संकट । -जीवी(विन्)-पु० मछुवा ।

-हार-वि० [हिं०] जालीदार; कदेदार । -पाद-पु०

हस्त; जालक कृषिका एक शिष्य । -प्राया-खी० कवच,

निरावृत्तर । -बन्ध-पु० [हिं०] वह कालीन जिसमें जाल

जैसी बेल बनी हो । -इन्द्र-पु० शरीरकी जालीका छेद

जिससे भीतर प्रकाश आवे । -वर्तुलक-पु० एक तरहका

बगल । सु०-ढालना, -कँकना-पानीमें जाल फँकना,

फेंकना । -कैलाना, -बिछाना-फँमानेकी युक्ति रचना ।

-में फँसना-भीखा खाना, किसीके फरेमें आना ।

जाल-पु० [अ०] किसी चीजकी नकल जो भोग्य देनेके

लिए की जाय; दूसरेकी लिखावट वा दस्ताखतकी नकल

(करना, बनाना) । -साज-पु० जाल करनेवाला ।

-साजी-खी० जाल करना, नकली दस्तावेज, दस्ताखत

आदि बनाना ।

जालक-पु० [सं०] बेल; धोसल; सिरका एक गहना;

भोखा; दे० 'जाल' [सं०] ।

जालकि-पु० [म०] शकमे जीविका चलानेवाला ।

जालकिनी-खी० [म०] भेद, मेची ।

जालकी (किन्)-पु० [मं०] शाल ।

जालना-म० कि० जलना ।

जाला-पु० मकरीका बुना हुआ जाल; धास, भूसा आदि

बोंधनेका जाल; अन्धोका एक रोग जिसमें पुतलीपर सिङ्गी

धी चढ़ जाती है; एक तरहका सरपट ।

जालाक्ष-पु० [सं०] शरीरवा ।

जालिक-पु० [मं०] मछुआ, बहेलिया; मकड़ा; मरारी;

ठग; प्रदेश-विशेषका प्रधान शासक । वि० 'जालजीवी' ।

जालिका-खी० [सं०] जाल, मिथीका मुलावरण, गेहरेपर

ढालनेकी जाली; जोक, विधवा, जालीवा बना कवच;

मकधी; लोहा; बेल; बरु-विशेष; * ममूह; जाल ।

जालिनी-खी० [मं०] चित्रशाला; तोरई; प्रमेहमें होनेवाला

फोड़ा ।

जालिम-वि० [अ०] जुल्म करनेवाला, अत्याचारी; क्रूर ।

जालिमाना-वि० अत्याचारपूर्ण ।

जालिषा-वि० जालसाज ।

जाली-वि० नकली, झूठा (दस्तावेज, नोट आदि) । खी०

वह चीज जिसमें जाल जैसे छोटे छोटे छेद बने हों; ऐसी

बनावटकी लकड़ी वा पत्थर जो खिफ्तियों आदिमें जबा

जाता है; ऐसी बुनावटका कपड़ा जो मसहरी आदिके काम

आता है; वह कसीदा जिसमे बेल बूटके बीचमें छोटे-छोटे छेद हों; आम आदिकी गुठलीपरके रेखे । -हार-

वि० जिसमे जाली हो । -छेद, -छोट-पु० एक कपड़ा

जिसकी बुनावट जालकीसी होती है ।

जाली (किन्)-वि० [सं०] जिसके पास जाल हो; जिसमें

जालदार गवाक्ष हो (मकान); भीखा देनेवाला ।

आवस-वि० [सं०] निष्ठर, कठोर; विचारहीन । पु०

हुट व्यक्ति; नीच आदमी; बुरा पाठ करनेवाला ।
आव्यय-वि० [सं०] देव; कमीना ।
आव्य-पु० [सं०] शिव । वि० जालमें फँसाये जाने योग्य ।
आवक-पु० महावर, अलकक ।
आवस-वि०, अ० दे० 'यावत्' ।
आवन-पु० दे० 'जामन' ।
आव्यय-पु० [सं०] देव, तैजी; श्रीपति ।
आवा-पु० पूर्वी एशियाका एक बड़ा द्वीप, बबरीप; शराब बनानेका मसाला ।
जावित्री-खी० आयफलका छिलका जो मसाले और दवा-के रूपमें काममें लाया जाता है ।
जावनी-खी० दे० 'यक्षिणी' ।
जाबु-सर्व० जिसका ।
जासूस-पु० छिपकर भेद लेनेवाला, अपराध आदिका पता लगानेवाला, मुखबिर ।
जासूफी-खी० जाम्नाका काम, मुखबिरी ।
जास्पति-पु० [सं०] रामाद (दे०) ।
जाह-पु० [फा०] पद; प्रतिष्ठा; गौरव । -**ज जलाल**, -**ज इबादत** -पु० शान-शौकत ।
जाहक-पु० [सं०] गौक; खाद; ऊदबिलबकी जातिका एक जलु, लेखर ।
जाहर-वि० दे० 'जाहिर' ।
जाहिर-वि० [अ०] प्रकट, खुला हुआ । पु० बाह्य रूप ।
-जाहूर-वि० प्रकट, जाहिर । -**दारी-खी०** दिखावा, बनावट । -**परस्व-वि०** ऊपरी बातोंपर रहित रखनेवाला, उन्नीको महत्त्व देनेवाला, दुनियादार । -**परस्ती-खी०** जाहिरपरत होना, दुनियादारी । -**पीर-पु०** भगियोंमें पूजित एक पीर । -**बी-वि०** ऊपरी बातोंको ही देखने, महत्त्व देनेवाला । -**बीनी-खी०** जाहिरबी होना । -**ज बातिन-बाहर** भीतर, ऊपर और मनमें ।
जाहिरा-अ० ऊपरमें, देखनेमें, प्रकटतः ।
जाहिरा-वि० ऊपरी, बाह्य, दिखाऊ ।
जाहिल-वि० [अ०] अज्ञ; अपढ़; गँवार ।
जाहिली-खी० अज्ञा, मूर्खता ।
जाहिलीयत-खी० जाहिल होना, अज्ञता; अरबमें इस्लाम-को स्थापनाके पहलेका काल ।
जाही-खी० एक तरहकी चमेले; एक आतिशबाजी ।
जाहूनी-वि० [सं०] गंगा (जहूमे जनमी हुई) ।
जिंगिनी-खी० [सं०] प्रमोदिनी, झिंगी ।
जिंगी-खी० [सं०] मंजिष्ठा ।
जिद्-खी० जिङ्गी - 'जिद् अनाडी ज्वारी है' -घन० ।
जिद्गानी-खी० [फा०] जिद्गी ।
जिद्गी-खी० [फा०] जीवन्, जीवित होना; आयु; सजीवता । -**बड़झा-वि०** जीवनप्रद; स्फूर्तिदायक । -**अर-अ०** आजीवन । **मु०** -**बसूर करना** -जीवन बिताना, जीवनयापन करना । -**में मौत का अज़ा कलना** -बहुत कष्ट भोगना । -**से बेजार होना** -जीनेसे ऊब जाना, जीवनने श्रमको अधिक पसंद करना ।
जिद्दा-वि० [फा०] जीता हुआ, जीवित; सजीव; प्रकृत, हरा-भरा; बलती, सुलगती हुई (आग) । -**आबेद्-वि०**

अमर । -**दुरखोर-वि०** जीवन्मुक्त, जो जीते हुए भी मृत-बन् हो । -**दार-वि०** जीता रहनेवाला; आगनेवाला ।
-दिल-वि० हँसोह; प्रसन्नचित्त; उत्साही । -**दिरी-खी०** जिदादिल होना । -**पीर-पु०** वह पुरुष जो जीवनमें ही पुना-सम्मानका अधिकारी हो । -**बाद्-जीता** रहे ।
-बाश्-जीते रहो !

जिबाना-सं० कि० दे० 'जिमाना' ।

जिस-खी० [अ०] वस्तु; व्यापारकी चीजें; मत्ता; असबाब; आभरण; बर्तन, किस; लिंग; जाति; परिवार; व्यवहार-गणित (अक-गणित) । -**जाना-पु०** मरारपर । -**बार-वि०** बर्तके अनुसार । पु० पत्रवारियोंका एक कागज जिसमें फसलका विवरण रहता है । -**बारी-खी०** बर्गीकरण ।

जिजाना-सं० कि० जिजाना; पालना ।

जिड-पु० दे० 'जीव' । **मु०** -**सपना-दे०** 'जी जलना' ।

जिडकिया-पु० शीतल वन-पर्वतोंपर प्राप्य वस्तुएँ (कस्तूरी, शिलावस्तु इ०) लाकर बेचनेवाला; रोजगारी ।

जिडसिचा-खी० आश्विन-कृष्ण अष्टमीको होनेवाला एक ज्ञान जिसे केवल पुत्रवती स्त्रियाँ रखती हैं, जीवभूमिका मत; उस ज्ञानमें पहना जानेवाला लाल-पीले धागेका गंधा । **जिह-पु०** [अ०] चर्चा; वर्णन; स्मरण; ईश्वरका नाम लेते हुए स्मरण । -**अज़कूर-पु०** चर्चा । -**(के) झुदा-पु०** अंगवत्स्मरण । -**ज़िर-पु०** किसीके बारेमें अच्छी बात कहना ।

जिगसु-पु० [सं०] प्राणवायु ।

जिगमिचा-खी० [सं०] जानेकी इच्छा ।

जिगमिडु-वि० [सं०] जानेकी इच्छा करनेवाला ।

जिगर-पु० [फा०] यकृत, कलेजा; जीवट, हिम्मत; सार-भाग । -**झरारा-वि०** जिगरकी छीलनेवाला, अति दुःखद । -**गोशा-बंद-पु०** बेठा (ला०) । -**सोज-वि०** दिल जलानेवाला; दिलजला । **मु०** -**कबाब होना** -कनेजा पकना, बुरी तरह कुदना । -**के दुकने होना** -ठिकपर आरी मरमा होना, दुःख होना । -**थामकर बैठ जाना** -अमर्या मायात, पीडासे व्याकुल होना ।

जिगरा-पु० जीवट, माँहस ।

जिगरी-वि० [फा०] जिगरका, दिली अंतरंग (-दीप्त) ।

जिगीचा-खी० [सं०] जीतनेकी इच्छा, जयकी अभिलाषा; प्रकर्ष; उद्यम ।

जिगीधु-वि० [सं०] जयकी इच्छा रखनेवाला ।

जिघ-पु० [सं०] बषका इच्छुक, शत्रु ।

जिघत्सा-खी० [सं०] भोजनकी इच्छा, भूख ।

जिघ-सु-वि० [सं०] भोजनकी इच्छा करनेवाला, भूखा ।

जिघासक-वि० [सं०] बषका इच्छुक, शत्रु ।

जिघासा-खी० [सं०] मार डालनेकी इच्छा; प्रतिहिंसा ।

जिघासु-वि० [सं०] मार डालनेकी इच्छा रखनेवाला, बैरी; घातक ।

जिघृहा-खी० [सं०] पकड़नेकी इच्छा ।

जिघृक्षु-वि० [सं०] पकड़नेका इच्छुक ।

जिघ्र-वि० [सं०] सँपनेवाला; सदेह करनेवाला; देखने-समझनेवाला ।

जिञ्च-झी० मजदूरी, बिक्रयता; क्लृप्तजन्म बादशाहकी बालके लिए घर और हर्ष देतेके लिए कोर्ष मुहरा न रह जाना या कोर्ष मोहरा चलनेकी जगह न रह जाना; बिताई मामलमें आगे बढ़नेका रास्ता बंद हो जाना, गतिरोध ।

जिञ्चिया-झी० बकी बहन ।

जिञ्चिया-पु० [अ०] बह कर जो मुसलमान शासक गैर-मुसलमान प्रजापर लगाते थे और उसके बदले उसके जान-मालकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेते और उसे सेनामें भरती होनेके कर्तव्यसे मुक्त कर देते थे ।

जिञ्चीबिया-झी० [सं०] जीनेकी इच्छा ।

जिञ्चीबिजु-वि० [सं०] जीनेकी इच्छा करनेवाला ।

जिज्ञापयिषा-झी० [सं०] जतानेकी इच्छा ।

जिज्ञापयिषु-वि० [सं०] जतानेका इच्छुक ।

जिज्ञासा-झी० [सं०] जाननेकी इच्छा, हानकी चाह; ज्ञानप्राप्तिके लिए विचार, पूछ-ताछ, खोज ।

जिज्ञासित-वि० [सं०] पूछा हुआ, जिसकी जिज्ञासा की गयी हो ।

जिज्ञासु-वि० [सं०] जाननेका इच्छुक, ज्ञानार्थी; खोजी; मुद्दख ।

जिज्ञास्य-वि० [सं०] जिज्ञासा करने योग्य ।

जिठानी-झी० दे० 'जैठानी' ।

जित०-अ० विजय, जिस ओर । वि० [सं०] जीता हुआ, पराजित; वशमें किया हुआ । -कोप, -कोष-वि० जिसने कोषकी जीत लिया हो, कोषरहित । -नेमि-पु० पीपलका डंडा । -अन्धु-वि० दे० 'जिनकोप' । पु० विष्णु । -खोह-वि० जिसने दुनियाको जीत लिया हो; जो पुण्यबलसे स्वर्गादिका अधिकारी हो गया हो । -बाबु-वि० जिसने शत्रुको जीत लिया हो, विजयी । -धम्म-वि० जो थके नहीं । -सर्ग-वि० जिसने मोह-भावापर विजय पा ली हो । -स्वर्ग-वि० पुण्यबलसे स्वर्ग प्राप्त करनेवाला ।

जितना-वि० जिस मात्राका, जिस कदर । अ० जिस मात्रामें ।

जितबाना-अ०-सं० कि० जताना; जिताना ।

जितबाना-सं० कि० दे० 'जिताना' ।

जितबार०-वि० जीतनेवाला ।

जितबैया-पु० जीतनेवाला ।

जितास-वि० [सं०] जितने ।

जितास्य-वि० [सं०] अच्छा पढ़ने-लिखनेवाला ।

जितास्य-वि० [सं०] अच्छा पढ़ने-लिखनेवाला ।

जितास्य-वि० [सं०] जिसने अपने मन, अपनी इन्द्रियोंको वशमें कर लिया हो ।

जिताना-सं० कि० जीतनेका कारण होना, जीतनेमें समर्थ करना ।

जितारि-वि० [सं०] जिसने अपने शत्रुओं या काम, कोष आदि-पक्षिदुओं-को जीत लिया । पु० बुद्ध ।

जिताहमी-झी० [सं०] जीवपुत्रिका व्रत ।

जिताहार-वि० [सं०] जिसने भोवनेकी इच्छापर विजय पा ली हो ।

जिति-झी० [सं०] जीत, जय; प्राप्ति ।

जिह्म-पु० [सं०] मिथुन राशि ।

जितेंद्रि-वि० [सं०] जिसने अपनी इन्द्रियोंकी वशमें कर लिया हो ।

जिते०-वि० जितने ।

जिते०-अ० जिस ओर ।

जितेवा०-पु० जीतनेवाला ।

जितो०-वि० जितना ।

जित्-वि० [सं०] जीतनेवाला (समासार्तमें व्यवहृत-जैने इन्द्रजित् इ०) ।

जित्तम, जिन्स-पु० [सं०] मिथुन राशि ।

जित्व-वि० [सं०] जेय, जीतने योग्य । पु० बहा हल ।

जित्वा-झी० [सं०] काल; सिरावन, पाटा ।

जित्वा, जित्वा (जित्वा)-वि० [सं०] जीतनेवाला, जयशील ।

जित्-वि० [अ०] उलटा । पु० विपरीत गुणधर्मवाली वस्तु । झी० हठ, दुराग्रह । मु० -चढ़ना, -पद आना -हठ पकटना ।

जित्-अ० [अ०] हठवश ।

जिरी-वि० हठी, जिद करनेवाला ।

जिदर-अ० जिन ओर; जहाँ । -जिदर-अ० जहाँ-तहाँ ।

जिन-मर्ब० 'जिन'का बहु० । पु० [सं०] बुद्ध; जैन तीर्थ-कर; विष्णु; अति बुद्ध भ्याति । वि० जयशील; राम-देशादि-को जीतनेवाला; अति बुद्ध । -सख (ख)-पु० जैनमंदिर-विहार ।

जिन, जिन्न-पु० [अ०] मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार एक तैजम योनि; भूत, प्रेत; आसुरी बल-पीरबाला आदमी; हठी आदमी । पु० -का साबा-जिनका सिरपर सवार होना । -चढ़ना, -सवार होना-गुस्सेमें पागल हो जाना ।

जिना-पु० [अ०] परलोकमन या परपुरुषमन, व्यवहार, बदकारी । -कार-वि० व्यवहारी । -कारी-झी० जिना, व्यवहार । -बिज्ज-पु० बलाकार, झीकी रजामरीके बिना किया हुआ सन्तोष ।

जिना (मुहम्मदअली)-पु० प्रसिद्ध भारतीय मुसलिम नेता (१८७९-१९४८), लगातार कई वर्षोंतक मुसलिम लीगके अध्यक्ष । पाकिस्तानकी स्थापनाका मुख्य भेष आपकी ही है । १९४७ में पाकिस्तानके प्रथम गवर्नर जनरल बने ।

जिनि०-अ० दे० 'जनि' ।

जिनिस-झी० दे० 'जिस' ।

जिने०-पु० [सं०] एक बुद्ध; एक जैन संत ।

जिजास-पु० [अ०] 'जिन'का बहु० ।

जिजासी-वि० जिन या जिजासका । -खस्त-पु० बह लिखावट जो मुश्किलमें पढ़ी जाय ।

जिजी-पु० निनकी साधना करनेवाला, जिनको वशमें करनेवाला । वि० जितने सपद्ध ।

जिबड़-पु० गला काटना, हलाल करना ।

जिबील-पु० खुराका एक करिबना (मुसल०) ।

जिब्हा०-झी० दे० 'जिहा' ।

जिभ्ज-वि० चटोर, जिह्वाकोटप ।

जिभ्ज-झी० दे० 'जिहा' ।

जिम्मा-सं किं जाना जिलाना ।

जिमि-अ० जैसे, जिम प्रकार ।

जिमित-पु० [सं०] भोजन ।

जिम्मीदार-पु० दे० 'जमीनदार' ।

जिम्मा-पु० [अ०] प्रतिष्ठा; किसी वानके करने, किये जाने का भार; जमानत; निपुणता । - (स्मे) दार-वि० जबाब देह । - दारी-खी० जबाबदेही । - बार-वि० जिम्मेदार । - दारी-खी० जिम्मेदारी । मु०-जेमा- (फिरी कामका) भार उठाना, धामी भरना । (किसीके जिम्मे-किसीके ऊपर, नाम, इवाले-करना, लहाना, निकालना ।)

जिम्मी-पु० [अ०] हमलायी राज्यका गैरमुसलिम (अहले-किताब) प्रजाजन जो जियाया कर अदा करे ।

जिय-पु० जी, जीव । - बाघ-पु० अहाद ।

जियन-पु० जीवन ।

जियरा-पु० जीव; हृदय ।

जिर्वाकार-वि० [फा०] हानि करने या पहुँचानेवाला ।

जिया-खी० [अ०] मृत्युका प्रकाश, प्रभा; रक्षकी कांति ।

जियादत-खी० [अ०] अधिकता; जुलूम, जबरदस्ती ।

जियादती-खी० दे० 'जियादत' ।

जियाद-वि० [अ०] अधिक, बहुत, फाजिल । - गो-वि० बहुत बोलनेवाला, बकवासी । - तर-वि० अधिकतर । - लख-वि० अधिक चाहने, माँगनेवाला, लोभी ।

जियान-पु० [फा०] हानि, नुकसान, डोटा ।

जियाना-सं० किं० दे० 'जिलाना' ।

जियापोता-पु० एक पेश, पतजिव ।

जियारक्त-खी० [अ०] राधन, जीवनने सफ्फार, आतिथ्य ।

जियारस-खी० [अ०] साधु-संत, देवमूर्ति आदिके दर्शन करना या दर्शनार्थ जाना; तीर्थयात्रा । - गाह-पु० दर्शनयी स्थान, दरगाह ।

जिभारसी-वि० दर्शनार्थी, जियारन करनेवाला ।

जिबारी-खी० जीवन; जीवट; जीविका ।

जिरगा-पु० [फा०] मडल, जमात; झुंड; सरहद्दी पठानों की वचापत ।

जिरण-पु० [सं०] जीरा ।

जिरह-खी० [अ० 'जरह'] चौरा, घाव; वे प्रश्न जो प्रति-पक्षी या उसका बसोल् बयानकी सवाहें नौजनेके लिए करे ।

जिरह-खी० [फा०] फौलादकी कश्शियोंका बना हुआ कवच । - पोश-वि० कवचधारी ।

जिरही-वि० कवचधारी । पु० कवचधारी सैनिक ।

जिराअत-खी० [अ०] खेती, किसानी । - पेसा-वि० कृषिजीवी, खेतिहर ।

जिरात-खी० दे० 'जिराअत' ।

जिराफा-पु० [अ० 'जराफा'] अफ्रीकाके जंगलमें पाया जानेवाला एक जानवर जिमकी गरदन और अगली टाँग ऊँटकीसी और खालपर बड़े-बड़े लाल-पीले या भूरे धब्बे होते हैं (चौपायोंमें यह सबसे ऊँचा होता है। नरकी ऊँचाई तो कमी कमी १८ फुट से भी अधिक होती है) ।

जिरिया-पु० एक बहिषा धान ।

जिझा-खी० [अ०] चमक, ओप, पाकिझ; रगड़-थँजकर चमकानेका काम । - कार-साज़-पु० जिझा करने-

वाला, चिकलीगर ।

जिझा-पु० [अ०] पड़ख, पाख; देशका विभाग, प्रदेश; प्रांत या सूबेका वह भाग जो डिप्टी कमिश्नर या कलेक्टर के मातहत हो, 'डिस्ट्रिक्ट'; दूरवर्क बात, ब्यंग्योफि, जुगत । - अदकत-खी० जिझा अकसरका इजलास, कचहरी । - अफसर-पु० कलेक्टर । - कचहरी-खी० दे० 'जिझा-अदकत' । - जज-पु० जिलेका प्रधान म्याया-धिकारी, 'डिस्ट्रिक्ट जज' । - जेख-खी०, पु० जिलेका जेखाना । - बोर्ड-पु० जिलेके प्रतिनिधियोंका मंडळ जिमका काम जिलेकी सबकों, शिक्षा, स्वास्थ्य आदिका प्रबंध करना होता है । - अडिस्ट्रेट-पु० जिलेका प्रधान प्रबंधाधिकारी । - (जे) दार-पु० जमींदारका करिदा जो गाँवका लगान वसूल करे; नहर-मरहमेका एक कर्मचारी । - दारी-खी० जिलेदारका पद; काम । मु० - बोखाना - दूरवर्क बात कहना, ब्यंग्योफि करना ।

जिझाट-पु० [सं०] प्राचीन कालका एक बाजा ।

जिझाबीस-पु० दे० 'जिझा मजिस्ट्रेट' ।

जिलाना-सं० किं० मरे हुएकी जिंदा करना; पाकना-पोसना; मरनेसे बचाना, जीवन देना ।

जिलापाकिना-खी० (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) दे० 'जिझा बोर्ड' ।

जिलाह, जिलाहा-पु० जालिम, अत्याचार करनेवाला ।

जिल्द-खी० [अ०] खाल, त्वचा; पुस्तककी रक्षाके लिए लगायी, चिपकायी हुई दस्तो आदि। पुस्तकका अलग सिला, बैचा हुआ खंड; पुस्तककी प्रति । - गर-पु० दे० 'जिल्दबद' । - दार-वि० जिसकी जिल्द गँधी हो ।

- बंद-पु० जिल्द बाँधनेवाला । - बंदी-खी० जिल्द बाँधने, बनानेका काम । - साज़-पु० दे० 'जिल्दबद' । - साज़ी-खी० दे० 'जिल्दबंदी' ।

जिल्दी-वि० जिल्दका, त्वचा या खालका (रोग आदि) ।

जिल्लत-खी० [अ०] वैश्वजनी; होनता, दुर्गति । मु० - उठाना-लज्जन, अपमानित होना ।

जिल्होरा-पु० एक अच्छा अगहनो धान ।

जिबा-पु० दे० 'जीब' ।

जिबबा-पु० हृदय (मीरा) ।

जिबाना-सं० किं० दे० 'जिम्माना' ।

जिबाजिब-पु० [सं०] चक्कर पक्षी ।

जिबाना-सं० किं० जिलाना ।

जिबारा-वि०, खी० जिलानेवाला - 'आहं है दिबारी चोते काजनि जिबारी प्यारी' - वन० ।

जिबाबन-वि० जिलानेवाला ।

जिष्णु-वि० [सं०] जीतनेवाला, जयशील । पु० जिष्णु; सूर्य; इन्द्र; अर्जुन ।

जिस-सर्व० 'जो'का विभक्ति लगनेसे बननेवाला रूप (जिसने, जिसकी) ।

जिसिम-पु० दे० 'जिस' ।

जिस्सा-पु० दे० 'दस्ता' ।

जिस्स-पु० [अ०] शरीर, बदन; ठोस चीज; वह चीज

जिसमें छाँह, चोशः और ऊँचा या मोटाई हो (ग०) ।

जिस्मानी-वि० [अ०] शारीरिक, देहबद्ध (तकलीफ, सजा) ।

जिस्सी-वि० शारीरिक ।

विह-जी० जेह, ज्या, पिहा।

विहन-पु० दे० 'विह'। -वार-वि० समझदार, जो बातकी जल्दी समझ ले।

विहाद-पु० [अ०] (मुसलमानोंका) काफिरोंने लहना; वह युद्ध जो धर्मकी रक्षाके लिए किया जाय। - (दे०) अकबर पु० इंदियोंका निग्रह, नफसकुशी (स्फूर्ति)।

विहायी-वि० विहाद करनेवाला।

विहान-पु० [सं०] गमन; प्राप्ति।

विहानक-पु० [सं०] प्रलय।

विहालत-जी० दे० 'जहालत'।

विहासा-जी० [मं०] त्यागने, छोड़नेकी इच्छा।

विहास-वि० [मं०] त्याग करनेका इच्छुक।

विहीर्षा-जी० [सं०] हरण करने, छीन लेनेकी इच्छा।

विहीर्षु-वि० [सं०] हरणका इच्छुक।

विहैत्र-पु० [अ०] दे० 'जैत्रे'।

विह-वि० [सं०] टेढ़ा, कुटिल; दुष्ट; मंद। पु० कपट; तगरका फूल। -वा, -वसि-वि० धोमा या टेढ़ा-मेढ़ा चलनेवाला। पु० सोप। -प्रेक्षी (क्षिप्) -वि० ऐना-ताना। -मेहन-पु० मेशक। -बोधी (विन्) -वि० कपट-युद्ध करनेवाला। पु० भीम। -सख्य-पु० खदिर वृक्ष।

विहाह-वि० [सं०] ऐचाताना।

विह्व-पु० [सं०] तगरमूला दे० 'जिह्वा'।

विह्व-पु० [सं०] वह सन्निपात जिनमें जीममें कोई पत्र जाय और शोकनेमें लफ्फबाइट हो।

विह्व-वि० [सं०] जिमला, चटोरा।

विह्व-जी० [सं०] जीम, रसना; आगकी लपट। -अप-पु० वह जय जिसमें केवल जीम हिले। -निर्लेखन, -निर्लेखनिक-पु० जीमी। -प-पु० जीम; पानी पीने-वाला पशु-कुत्ता, बाघ, बिही, भालू इत्यादि। -मूल-पु० जीमपर बैठा हुआ मूल। -मूल-पु० जीमकी जड़। -मूलीय-पु० जिह्वामूल उच्चारित वर्ण (व्या०)। -रद-पु० पक्षी। -रोग-पु० जीमका रोग। -रिद (ह) -पु० कुत्ता। -खोलुप-वि० चटोरा, जिमला। -खोख्य-पु० चटोरपन। -शख्य-पु० खैरका पेड़। -स्वाव-पु० जीमसे चाटना।

विह्व-जी० [सं०] जीम (अल्प०)।

विह्वलेखनी-जी० [सं०] जीमी।

जीमग-पु० जुगन्।

जी-अ० नाम, अल या पदवीके साथ जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द (पूजजी, ठाकुरजी); बहोके प्रति स्तुति, समर्पण, प्रश्न आदिमें प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द।

-हुजरी-जी० 'जी-हुजरी, जी-हजरी' कहते रहनेका भाव, सुशामद। पु० जान, जीव, मन, चित्त, तबीयत; जीवत।

सु० (किसीपर) -आना-किसीपर आसक्त होना, आशिक होना। -उच्छादना-किसी काममें, किसी खानपर दिल न लगना। -उड़ा जाना-चित्तका अविशय चलक, उद्विग्न हो जाना, बहुत धक्कापट्ट होना। -उलझना-दिल धक्कना। -करना-बच्छा होना, दिल चाहना; हिम्मत करना। -का बुखार निकालना-दिलका गुब्बार निकालना।

-का बोझ हलका हो जाना-चिता या आशंका दूर हो जाना। -की अमान माँगना-मागपरक्षाकी प्राप्तिमान करना। -की जीमें रहना-चाही, सोची हुई बातका न होना, हौसला या अरमानका न निकलना। -की पड़ना-दे० 'जानकी पड़ना'। -की लगी-मनमें बसी हुई बात; मनोव्यथा। -को रोग लगना-किसी बातकी किक करना। -को लगना-दिलपर असर होना, चोट पहुँचना। -खड़ा करना-किन्हीं दिलमें घृणा या विरक्ति का भाव भर देना। -खड़ा होना-मनमें घृणा उत्पन्न हो जाना। -खोना-जान देना; दिलका हाथमें न रहना। -खोकर-जी भरकर, यथेष्ट। -चाहना-बच्छा होना। -चाहे-बच्छा हो, जीमें आवे (तो)। -चुराना-किसी कामसे भागना, जान चुराना। -छटना-हिम्मत टूटना, हताश होना। -छोटा करना-उत्साह कम करना; दिल छोटा करना। -छोड़कर भागना-बदहवास होकर भागना, सौम लेनेकी भी न वकना। -छोड़ना-हिम्मत हारना। -जलना-हृदयमें भारी दुःख, सताप होना, कुदना। -जलाना-सजाना; कुदाना। -जानता है (होगा)-अपना ही दिल जानता-ममज्ञता है, बतातेसे दूसरा जान-समझ न मकेगा। -जान लहाना-दत्त-चित्त होकर प्रयत्न करना; खूब मेहनत करना। -जान-से-पूरे दिलमें; पूरी शक्तिके। -जिह्वा-पूरे दिलमें आशिक होना, तन-भन बार देना। -टूँगा रहना या होना-किसी बातकी चिता लगी रहना, खटका बना रहना। -टूट जाना-हिम्मत या उत्साह न रह जाना। -ठंडा होना-दे० 'कनेज' ठंडा होना। -टूबना-बेहोशी भी होना, दिल-दिमागका बहुत मुस्त हो जाना। -तरसना-किसी चीजकी पाने, भीगनेके लिए दिलका बेचैन होना। -दहलना-दे० 'दिल दहलना'। -दुखाना-चित्तकी क्लेश पहुँचाना, दिल दुखाना। -देना-स्वीछाकर होना, प्राण दे देना; बहुत क्यासा प्यार करना। -देना जाना-दे० 'जी बैठा जाना'। -धक्क-धक्क करना-भयान घबराना, दिल धक्कना। -निदाह होना-चित्तका व्याकुल होना। -पक जाना-किसी कष्टकार बात ने जी ऊब जाना, किसी कष्टका असह्य हो जाना। -पर आ बनना-प्राणोंकी रक्षा करना भी कठिन हो जाना। -पर खेलना-दे० 'जानपर खेलना'। -पानी होना-चित्तका दयामें डूबित हो जाना। -फट जाना-दे० 'दिल फट जाना'। -बैटना-दिलका (किसी चिता, सोचकी भूलकर) दूसरी बातमें लग जाना, ध्यानका दूसरी ओर चला जाना। -बढ़ना-दे० 'दिल बढ़ना'। -बढ़ाना-दे० 'दिल बढ़ाना'। -बढ़लना-चित्तका किसी बातमें लगाकर दुःख भूल जाना, प्रमत्तता अनुभव करना। -बहलना-चित्तकी किसी प्रिय, प्रसन्नताजनक कार्यमें लगाना। -बिगड़ना-जी मगलाना; विन लगना। -बैठ जाना-दिल डूबना; चित्तका अति खिन्न होना। -बैठा जाना-दिल बेचैन होता जाना, मनका स्थैर्य नष्ट होता जाना। -भर जाना-दे० 'दिल भर जाना'। -भरहर-जितना जी चाहे; यथेष्ट। -भरना-रुचि होना, अगाना; विन न लगना; दिल जमई करना। -आरी

होना-अनमना होना, तबीयत सुस्त होना। -**भिड-कना**-घिन लगना। -**मसकाना**-मसकी होना, बमन-का उमवास होना। -**मैं आना**-बच्छा होना; विचार उठना। -**मैं खूबना**, -**मैं गबना**-मनमें बस जाना। -**मैं जलना**-मनमें कुपना; जलना। -**मैं बरना**-दे० 'मैं रखना'। -**मैं बखना**-दिलमें घर कर लेना, सत्ता याद रखना। -**मैं बैठना**-इदपर अंकित हो जाना; ठीक लगना। -**मैं रखना**-याद रखना; खयाल करना; दुरा मानना। -**छगना**-दिल लगना। -**छगाना**-दिल लगाना। -**छगा होना**-ध्यान बना रहना, चिंता लगी रहना। -**छरजना**-कलेजा कौपना। -**छलछाना**-किसी चीजको पाने, भोगनेकी प्रवृत्ति इच्छा होना; मनमें लीभ या लालच पैदा करना। -**छेना**-मन टटोलना; हल जाननेका यत्न करना; प्राण लेना। -**छोट जाना**, -**छोटना**-किसी चीजके लिए दिल्का बेचन हो जाना। -**सख होना**-चित्त सत्त्व हो जाना, होश उग्र जाना। -**से जाना**-मर जाना।

श्री-वि० [अ०] भालिक, रखनेवाला। -**झरूर**-वि० समझदार, साजगर। -**शान**-वि० शानवाला।

जीअ, **जीउ***-पु० दे० 'जी', 'जीव'।

जीअ*-पु० दे० 'जीवन'।

जीआर*-पु० [अ०] हिजरी सन्का ग्यारहवाँ महीना।

जीअर*-पु० दे० 'जी'गन'।

जीगा-पु० [फा०] कलगी, मिरचेच।

जीजा-पु० बड़ी बहनका पति।

जीजी-स्त्री० बड़ी बहन।

जीट-स्त्री० डोंग।

जीत-स्त्री० बुद्ध, बाजीके खेल, मुकदमे, प्रतियोगिता आदिके मिलनेवाली सफलता, जय, फतह; लाभ। -**हार**-स्त्री० दे० 'हार-जीत'।

जीतना-म० कि० बुद्ध, मुकदमा, खेल, प्रतियोगिता आदिमें शत्रु या विपक्षीको हराना, जयलभ करना; दमन करना, बशमें लाना (मन, इन्द्रिय आदिको)।

जीता-वि० जीता हुआ; जिता; तौल या नापने योका अधिक (नीलना)। [स्त्री० 'जीती']-**जागता**-वि० भला-बुरा, सशक्त, सतेज। -**जाखुन**-पु० मांसमें लगा हुआ नाखुन। -**कहू**-पु० ताजा लहू। -**कोहू**-पु० चुंबक। **सु० जीती मक्खी निगलना**-जान बूझकर कोई दोष करना, न करने लायक बात करना। **जीते जी**-जिंदा रहते हुए, मौजूदगीमें; जिंदगीभर। -**भर जाना**-जीवमृत हो जाना, किमी भारी शोक, आघात मनका मर जाना, निराश, निरुत्साह हो जाना। **जीते-भरते**-किसी तरह; बड़ी कठिनाईसे। **जीते रहो**-बहुत दिन जियो (आशीर्वाद)।

जीसाखू-पु० आरापेट।

जीति-स्त्री० [स०] विजय; क्षति, क्षय।

जीन-वि० [स०] जीर्ण, क्षीण; बूढ़। पु० चमड़ेका पैला।

जीन-पु० [फा०] चारजामा, काशी पलान; एक मोटा, कसा सूनी कपड़ा। -**पोछा**-पु० जीनके ऊपर डालनेका शाकरदार कपड़ा; सूख। -**सचारी**-स्त्री० थोड़ेको सचारी

के काममें लाना। -**साङ्ग**-पु० जीन बनानेवाला।

जीनस-स्त्री० [अ०] सजावट, शृंगार; शोभा। -**महल**-वि० महलकी शोभा, शृंगार-स्वरूप। **सु०** -**देना**, -**बखाना**-शृंगाररूप होना, शोभा बढ़ाना।

जीना-अ० कि० जीवनकी अवस्थामें होना, देहमें प्राण वा जीवका बना रहना, जिंदा होना; जीवनयात्रा करना (किसी चीजपर जीना-किसी चीजके सहारे जीना); प्रसन्न होना। **सु०** जी उठना-मरे हुएका जी जाना; सुले हुएका बरा हो जाना। **जीना दूभर वा भारी हो जाना**-जीवनका भाररूप या कठिन हो जाना। **जीनेका भङ्गा**-जीवनका सुख।

जीना-पु० [फा०] सीढ़ी, सोपान।

जीम-स्त्री० मुँहके भीतर स्थित चपटा मांसक अंग जो रस-ज्ञान और मनुष्योंमें बोलनेकी क्रियाका साधन है, जिह्वा; रसना, जबान; कलमकी नोक जिससे लिखा जाता है। **सु०**-**छलना**-तरह-तरहके ब्याद लेनेकी इच्छा होना। -**निकाछना**-जबान बाहर करना; अशान्ति होना। -**हिलाना**-बोलना, मुँह खोलना।

जीमा*-पु० जीम जैसी कोई वस्तु; चौपायोंकी जीममें होनेवाला एक रोग; बैलोंको आँखमें होनेवाला एक रोग।

जीभी-स्त्री० तोंदे, पीतल आदिके पत्तरकी बनी चीज जिसमें जीभका मेल साफ करते हैं; जीभ साफ करनेकी क्रिया; छोटी जीभ; चौपायोंका एक रोग; निब; लगामका एक भाग। -**चाभा**-पु० चौपायोंका एक रोग।

जीमट-पु० पेह-पीछोंकी शाखा, टहनी आदिके अंदरका गुदा।

जीमना-स० कि० भोजन करना।

जीमूत-पु० [स०] बादल; पर्वत; हद्द; सूर्य; नागरभीषा; देवता; वृक्ष; पोषण करनेवाला; एक ऋषि। -**कूट**-पु० पर्वत। -**केतु**-पु० शिव। -**सुख**-स्त्री० बादलसे पैदा होनेवाला मोती (संस्कृतके रत्न शिरोधार्यविषयक प्रयोगे इसका वर्णनमात्र मिलता है)। -**सूख**-पु० शरीर, वधमूली। -**बाहान**-पु० इह (मेघ है बाहान जिसका); शालिवाहन-का पुत्र। -**बाही(हिन्)**-पु० धुआँ।

जीव*-पु० दे० 'जी', 'जीव'। -**दान**-पु० प्राणदान।

जीवट*-पु० दे० 'जीवट'।

जीवति*-स्त्री० जीवन।

जीर-पु० [स०] जीरा; फूलका जीरा; खट्टा; अणु; * जिरह, कवच। वि० क्षिप; * जीर्ण, जर्जर।

जीरक, **जीरण**-पु० [स०] जीरा।

जीरण, **जीरन**-वि० दे० 'जीर्ण'।

जीरना*-अ० कि० जीर्ण होना; कुंभलाना; फटना।

जीरा-पु० एक सुगन्धित बीज जो मसाले और दवाके रूपमें भी काममें लाया जाता है (यह सफेद और स्याह दो तरहका होता है); इसका रोगा; जीरेकी शक्लका बीज; फूलका केसर।

जीरिका-स्त्री० [म०] एक घास, बंशपत्री।

जीर्ण-वि० [स०] बूढ़ा, जरायुक्त; पुराना, दिनी; फटा पुराना; दहता हुआ, जर्जर, खूबप्राप्त; पचा हुआ। पु० बूढ़ व्यक्ति; वृद्ध; जीरा; शिलाजतु; बुढ़ापा; क्षीणत.

—अर-पु० पुराना कुल, कविक दिनसे रहनेवाला मंदबुद्धि; बाद दिनेसे अधिकतर अर (आ०वे०) ।—आर-पु० विभार ।—अर-पु० पठानी कोष ।—अरिका-को० बंधपकी सुन ।—अर-पु० कर्ष; पुराना पान ।—अर-को० विभार ।—अर-पु० जीर्णपत्र ।—अर-पु० वैकाल मणि ।—अर-पु० कटा-पुराना कपडा । वि० जो फटे-पुराने कपडे पहने हो ।—आदिका-को० लंबहर । जीर्णक-वि० [सं०] करीब करीब सखा या मुरझाया हुआ । जीर्ण-वि० को० [सं०] वह जो जो हड, जर्जर हो गयी हो । को० मोटा जीरा, स्याह जीरा (?) । जीर्ण-को० [सं०] जीर्णता; पाचन । जीर्णोद्धार-पु० [सं०] पुरानी, टूटी-फूटी चीजकी मरम्मत; पुराने मंदिर, कुर्द, ताकब आदिकी मरम्मत । जीर्णोद्धार-पु० [सं०] वह बगीचा जो पुराना हो जाने या सिंचाई आदि न होनेके कारण सूख, वज्र रहा हो । जीर्ण-पु० [सं०] कुठारा पशु; शरीर शकट । जीर्ण-को० शीम अवाज; तबले या ढोलका बाधों । जीर्ण-वि० [सं०] क्षीना, शरीर । जीर्णानी-वि० [का०] जीर्णन (शीर्णन)का । पु० एक तरहका लाक रंग । जीर्णजीव-पु० [सं०] चकोर; एक हड । जीर्णत-वि० [सं०] जीवित, जीता हुआ; दीर्घायु । पु० प्राण; जीवन; औषध; जीवशास्त्र, राजनि । जीर्णत-पु० [सं०] जीवशास्त्र । जीर्णत-पु० [सं०] दे० 'जीवातक' । जीर्णतिका-को० [सं०] एक लता, बाँदा; युद्ध; जीवनी; जीवशास्त्र; पीली हड; शमी । जीर्णती-वि० को० [सं०] जीती हुई, जिदा । को० दे० 'जीवतिका' । जीव-पु० [सं०] देहस्थित या देहावच्छिन्न चेतन्य, जीवात्मा; प्राण, ज्ञान; जीवन; प्राणी; क्षिप्रदेह; जीविक; विष्णु; कर्ण; एक मरुत; हृदयपति; अद्वैत और पुण्य नक्षत्र, कलायन; जीवशास्त्र ।—गृह-पु० शरीर ।—जन-पु० हिरण्यवर्ण ।—घाती (तिन्नु)-वि० हिंसा करनेवाला (पशु) ।—अनु-पु० प्राणी; छोटे प्राणी, कीड़ा-मकोड़ा ।—अग-पु० प्राणिसमिति ।—जीव-पु० चकोर ।—तोका-को० जीवपुत्रिका ।—द-वि० जीवनदाता ।—बैव-पु० वैद्य; शत्रु; जीवती ।—दान-पु० प्राणदान ।—वज्र-पु० पशुपन, नाय-बैल, कोड़ा-हाथी आदि; प्रिय व्यक्ति ।—घानी-को० भरती ।—घारी (तिन्नु)-पु० प्राणी, जंतु ।—नेत्री-को० सिंहली ।—अवस-पु० मंत्र द्वारा (मूर्ति आदिमें) प्राणप्रतिष्ठा ।—पति-पक्षी-को० वह की जिसका पति जीता हो ।—पत्र-पु० नया पत्र ।—पिच्छ-वि० जिसका नाप जीता हो ।—पुत्रक-पु० इष्टुदी ।—पुत्रा-वि० वही जीवती ।—प्रभा-को० आत्मा, रूढ़ (किशवर्दास) ।—प्रिया-को० हड ।—बंघ-पु० दे० 'जीवबंध' ।—बंध-पु० 'पुच्छपहरिया' ।—बलि-को० पशु आदिकी बलि ।—अमा-को० जीवन्ती कता ।—अविर-पु० शरीर ।—आवृत्ता-को० साठ

देवियों जो माताके समान प्राणियोंका पालन-पोषण करनेवाली मानी जाती हैं (कुमारी, धनदा, नंदा, विष्का, ममला, बला और पद्मा) ।—आर-पु० वह पशु जिनमें पशुपुत्रिका विधान हो ।—अरि-को० जीवधारियोंकी योनि, अंगम योनि (पशुपुत्र, पशुपक्षी आदि) ।—अर-पु० कोका रक, आतंब ।—आ-को० सिंहपिच्छकी ।—आ-पु० संसार, सर्वलोक, प्राणिजगत् ।—बह-को० क्षीरकाकोली ।—विज्ञान-पु० जीव-जंतुओंकी शरीररचना, वर्गीकरण, जीनेके ढंग आदिका विज्ञान, 'जूलॉजी' ।—विषय-पु० जीवन-विस्तार ।—वृत्ति-को० पशुपालन, नाय-बैल आदि पालनेका रोजगार; जीवके सहज गुण (रक्षा, देह, प्रयत्न आदि) ।—आ-पु० एक शाक जो मालव देशमें विशेष रूपसे होता है, सुसना ।—आ-को० क्षीरकाकोली ।—अ-वि० जिसकी जानमर बची हो; जो सब कुछ छोड़कर केवल जान लेकर भाग आया हो ।—आश्रित-पु० खस रक्त ।—अ-को० जीवमहा ।—अ-कमण-पु० जीवका एक देह त्याग कर दूसरीमें जाना ।—अ-पु० कामवृत्ति हड ।—आ-पु० पान्य, अनाज ।—आ-को० जीवपुत्रिका ।—अ-को० वह की जिसकी सतति जीती हो ।—आ-पु० मर्मस्थान, हृदय ।—आ-को० जीवपत्र, जीवहिंसा ।—हिंसा-को० प्राणिक ।—हीन-वि० जीवरहित, मर्दा; जहाँ कोई जीव न हो, प्राणित्य । जीवक-पु० [सं०] प्राणधारक; अष्टवर्गके अतर्गत एक औषधि, क्षणिक; नेवका खरखो; सेंपरा । जीवद-पु० विमान, साहस; बहादुरी । जीवित-को० जीविका । जीव-वि० [सं०] दे० 'जीवन्' ।—तोका-को० जीवपुत्रिका ।—पति-पक्षी-को० वह की जिसका पति जीवित हो ।—पिच्छ-पु० वह त्रिमका पिता अभी जीवित हो ।—पुत्रिका-को० वह की जिसका पुत्र जीता हो; आश्विन कुण्याष्टमीका जन । जीव-पु० [मं०] प्राण; कछुआ; मोर; मेव; पुण्य, धार्मिकता । वि० धार्मिक; लकी श्राद्धाला । जीव-पु० 'जीवन्'का समागत रूप ।—अ-को० दे० 'जीवपक्षी' ।—आ-वि० को० जिसका पुत्र जीवित हो । जीव-पु० [मं०] जीता रहना, प्राणधारण; जीवित दशा, जिंदगी; जीवनका आधाररूप वस्तु; प्राणी; जीविका; जल; बाहु; पुत्र; परमात्मा; ताजा दूध; मक्खन; मखा; क्षुद्रफल्ग नामक पौधा; जीवक । वि० जीवनदाता, प्राणप्रद ।—अ-पु० जीवनयात्रा, रहन-सहनका ढंग ।—अ-वि० जीवनपुत्रान; वह पुस्तक जिसमें किमीका जीवनवृत्त लिखा हो ।—अ-को० रहन-सहनका तरीका ।—अ-वि० जीवनदाता ।—आ-पु० शत्रु या अपराधी आदिको प्राण न लेनेका वचन देना वेश या समाजकी मेधाके लिए जीवन अर्पित करना, लगाना ।—अ-वि० जीवनका आधारभूत, सर्वलोक (पति)का सप धन, पति) ।—अ-वि० जीवनरक्षक, जीवनदाता ।—अ-को० [हिं०] सजीवनी बूट ।—अ-पु० जीना-मरना, जिंदगी-मौत ।—अ-वि० [हिं०] सजीवनी

बूढ़ी; अति प्रिय वस्तु, वन। -**बृक्ष**-**बृक्ष**-**पु०** जीवन-
चरित। -**बृक्षि**-**बृक्षि** जीविका। -**संघर्ष**-**पु०** कठिन
परिस्थितिमें अतिरिक्त बनावे रखनेका भारी प्रयत्न। -**हर**
-**वि०** जीवनका हरण करनेवाला। -**हेतु**-**पु०** जीविका,
रोजी।

जीवनक-**पु०** [सं०] अन्न; आहार।

जीवनीय-**पु०** [सं०] जीवनका अन्न, मृत्यु।

जीवना-**बृक्ष** [सं०] मेधा नामकी जड़ी। * ज० कि०
जीना।

जीवनाघात-**पु०** [सं०] हिंसा।

जीवनाह-**पु०** [सं०] दूध, अन्न।

जीवनाहार्य-**पु०** [सं०] वरुण; खरीर।

जीवनि-**बृक्ष** संजीवनी वृक्ष; जिलानेवाली चीज; अति
प्रिय वस्तु।

जीविका-**बृक्ष** [सं०] हरीतकी।

जीवनी-**बृक्ष** जीवनचरित; [सं०] मेधा; महामेधा; काकोली;
बोडी; जीवती।

जीवनीय-**वि०** [सं०] जीवनका आधाररूप। पु० जल;
ताजा दूध। -**राज्य**-**पु०** पुष्टिकर औषधियोंका एक वर्ग
(जीवती, काकोली, मेधा, मुद्रपर्णी, माधपर्णी, रूपभक्त,
जीवक और मधुक)।

जीवनीय-**बृक्ष** [सं०] जीवनी लता।

जीवनोपाय-**पु०** [सं०] जीविका।

जीवनोपध-**बृक्ष** [सं०] वह द्रव्य जो मरतेकी जिला दे।

जीवन्(**न**)-**वि०** [सं०] जीना हुआ, जिना। -**मुक्त**-
वि० जो जीवित दशामें हा आत्महान प्राप्त कर सत्ता-
वर्धनमें छूट गया हो। -**मुक्ति**-**बृक्ष** जीवनमुक्तकी
अवस्था, जीवित दशामें ही वध-निवृत्ति। -**मृत**-**वि०**
जो जीना हुआ भी मुरें जैसा हो, विशादरोगी।

जीवरा-**पु०** जीव।

जीवरि-**बृक्ष** जीवन धारण करनेकी शक्ति।

जीवोत्पन्न-**पु०** [सं०] बहेलिया। वि० जीवोंका वध करने-
वाला।

जीवा-**बृक्ष** [सं०] भनुषकी डोरी; चापके दो तिरोंकी
मिलानेवाली देखा; जल; पृथ्वी; जीविका; वचा; जीवती;
गहनेकी हनकार; जीवन।

जीवाञ्जु-**पु०** जीव-जंघु।

जीवाणु-**पु०** [सं०] छुद्रतम जीव, 'मिक्स्म'।

जीवानु-**पु०** [सं०] आहार; जीवन, अस्तित्व; पुनर्जीवन;
जीवनदायक औषध।

जीवा-मा(**मन्**)-**पु०** [सं०] जीव, देहस्व, चैतन्य, व्यति
आत्मा।

जीवादान-**पु०** [सं०] मूर्च्छा, बेहोशी।

जीवाधार-**पु०** [सं०] जीवका अधिष्ठान, हृदय।

जीवानुज-**पु०** [सं०] गर्माचार्य।

जीवाश्म-**पु०** [सं०] जीव या आत्माका एक प्रकार
(जै०)।

जीविका-**बृक्ष** [सं०] जीवनयात्राका साधन, रोजी, वृत्ति।

जीवित-**वि०** [सं०] जीना हुआ, जीवंत, जीवन्मुक्त; जिने
पुनः जीवन मिला हो। पु० जीवन; जीवक-काल; जीविका;

माणी। -**काल**-**पु०** मातु। -**ज्वा**-**बृक्ष** धमनी। -

नाथ-**पु०** पति। -**भव**-**पु०** जीवनकी भावुति। -

संशय-**पु०** जीवनका क्षतर।

जीवितव्य-**वि०** [सं०] जीवित रखने योग्य। पु० जीवित
रहनेकी संभावना; जीवन।

जीवितलक-**पु०** [सं०] शिव।

जीवितेक्ष-**पु०** [सं०] प्राणाधार; चंद्र; सूर्य; वय; एक जीवन-
दायक जीवन।

जीवितेश्वर-**पु०** [सं०] शिव।

जीवी(**विन्**)-**वि०** [सं०] जीनेवाला (-से जीनेवाला।

केवल समासमें व्यवहृत-जैसे निरजीवी, दीपजीवी, अम
जीवी ह०)। पु० जीवधारी।

जीवेंचन-**पु०** [सं०] जलती हुई लकड़ी।

जीवेश-**पु०** [सं०] परमेश्वर।

जीवोपाधि-**बृक्ष** [सं०] जागति, स्वप्न और सुषुप्तिकी
अवस्थाएँ।

जीव-**बृक्ष** [सं०] जीवन, जिंदगी।

जीह, **जीहा**-**बृक्ष** दे० 'जीम'-'जीम' उपपठें तब
दम जीहा'-रामा०।

जीहि, **जीही**-**बृक्ष** दे० 'जीम'।

जुई-**बृक्ष** दे० 'जुर'।

जुंग-**पु०** [सं०] हृद्दत्तक वृक्ष।

जुंगित-**वि०** [सं०] परित्यक्त। पु० चांडाल।

जुर्बा-**वि०** [सं०] जुविष करनेवाला, हिलता हुआ।

जुविष-**बृक्ष** [सं०] गति, हरकत, हिलना।

जु-**ज०**, सर्व० दे० 'जो'।

जुअती-**बृक्ष** दे० 'जुवती'।

जुअ-**पु०** दे० 'जु'।

जुआ-**पु०** हल, बैलगाड़ी आदिमें जोते जानेवाले बैल या
बैलोंके ऊपर रखी जानेवाली लकड़ी, जौंतीकी मूठ; बाजी
लगाकर खेला जानेवाला (ताश आदिकी) खेल, धूस, सोलह
चिन्ती कीपियों से खेला जानेवाला इस तरहका खेल; दे०
'जु'। -**खाना**-**पु०** जुआ खेलनेका अड्डा। -**खोर**-
पु० जीनकर भाग जानेवाला जुआधी; धोलेबाज। -**खोरी**
-**बृक्ष** जोमेवाजी।

जुआठना-**सं०** कि० बैल श्वादिको जुएमें जोतना,
बोचना।

जुआड़ी-**पु०** जुआ खेलनेवाला।

जुआर-**बृक्ष** दे० 'ज्वार'। * पु० दे० 'जुआड़ी'। -**भाटा**-
पु० दे० 'ज्वारभाटा'।

जुआरी-**पु०** जुआ खेलनेवाला।

जुई-**बृक्ष** छोटी जूँ; मटर आदिमें लगनेवाला एक छोटा
कीड़ा।

जुई-**बृक्ष** मूषा।

जुकाम-**पु०** [अ०] एक रोग जिसमें नाक बहती, कुछ
अर हो आता और फिर भारी हो जाता है। **जु०**-
विगड़ना-**जुकायका** दृष्टि जाना।

जुकुट-**पु०** [सं०] कुसा; मलय पर्वत।

जुग-**पु०** जुग; पीढ़ी; जोड़ा; युग्म; युद्ध; चौसरकी गोदियों-
का जोड़ा, एक परमें बैठी हुई दो गोदियाँ। -**जुग**-**अ०**

सदा, सुगौतक। सु०-सुग विद्यो-सुगौतक जोने रबो, लंबी आबु भोगी। -दूटना, -दूटना-दो शकड़ी गोदियों का अलग हो जाना; एका न रह जाना; फूट पड़ना।
 सुगसुगना-अ० कि० शिकमिलाना, टिमटिमाना; बदना, सपकताकी ओर अग्रसर होना।
 सुगसुगी-की० एक विविधा; शकरकोरा।
 सुगस-की० सुक्ति, जगधर; चतुराई इत्यर्थक वाग, अर्थ-विनोदमयी सुक्ति। * वि० युक्त; संभव। -बाक-वि० जुगत बोलनेवाला। सु०-कगाना-जोड़-तोड़ मिथाना, सुक्ति करना।
 सुगती-वि० जोड़-तोड़ लगानेवाला, चतुर।
 सुगनी-की० दे० 'जुगनू', * हार आदिमें लगा हुआ नग।
 सुगनू-पु० एक कोड़ा, खद्योत (रातमें उड़नेपर हनकी दुम-से रोसनी निकलती है); गलेमें पहननेका एक गहना।
 सुगम-वि० दे० 'युग्म'।
 सुगल-वि० दे० 'युगल'।
 सुगबना-स० कि० जोड़ना, इकट्ठा करना; सँभालकर रखना।
 सुगादरी-वि० बहुत पुराना, अति प्राचीन।
 सुगाना-स० कि० दे० 'जुगवना'।
 सुगार-की० दे० 'जुगाली'।
 सुगालना-अ० कि० जुगाली करना।
 सुगाली-की० ताव-बैल आदिका निगड़े हुए चारेकी थोडा-थोडा पेटने शुरूमें लाकर चराना, नैसर्ग, चरित-चर्चण (धर्म)।
 सुगुत, सुगुति-की० दे० 'युक्ति'।
 सुगुप्पक-पु० [स०] निंदा करनेवाला, निन्दक।
 सुगुप्पव-पु० [स०] निंदा करना; धृवा करना।
 सुगुप्पा-की० [स०] निंदा; धृवा; बीमारस रसका खावी भाव।
 सुगुप्पित-वि० [स०] निन्दित; धृवित।
 सुगुप्पु-वि० [स०] निंदा, धृवा करनेवाला।
 सुगिनी-की० योगिनीपरी, दिव्य।
 सुगुल-वि० दे० 'युगल'।
 सुज-अ० [फा०] *के सिवा, वगैर, बिना। पु० [अ०] अवा, डकड़; बहुत छोडा खड; पुस्तकके अलग भाँजे और स्थले हुए पत्रे, फार्म। -दान-पु० वह पैसा जिसमें लखके किताब बाँधकर मटारने के जाते हैं। -बंदी-की० किताबके जुनोंकी जिम्मेदारीके लिए सोना; किताबकी सिल्लाई जिसमें एक-एक जुज या फार्म अलग-अलग सिल्ला जाय। -रस-वि० मूकदर्शी, गौक्षसुखि; कज्ज; मित-व्ययी। -रसी-की० सहस्रदशिता; कज्जुनी; किफायत-शिवारी। -व कुल-पु० अश और सपूर्ण; सब, कुल।
 सुजवा-वि० [अ०] बहुत थोडा; छोटा; आशिक (-इकि-काफ-आशिक मतभेद)।
 सुजो-पु० [अ०] दे० 'जुज'। -बद्व-वि० जो पक्कर रस, रक्त जीदि बन गया हो (-हीना)।
 सुज्ज-पु० युद्ध।
 सुज्जवाना-स० कि० दे० 'जुझाना'।
 सुज्जा-वि० युद्ध-संबंधी; जूझनेकी अस्ताहित करनेवाला,

माह (-नामा)।
 सुझाना-स० कि० जूझनेकी प्रेरित, अस्ताहित करना।
 सुझार-वि० रणधिव, वीर। पु० युद्ध।
 सुझ-की० जोड़ा, युग्म; दो अतिश मित्र; गुड; थोक।
 सुडक-पु० [स०] अटा; कबरी, जूरा।
 सुटना-अ० कि० जुबना, संयुक्त होना; सटना, चिमटना, गुथना; जमा, इकट्ठा होना; एकुचना; (किन्ही काममें) मुस्वैदीने लगना; समीग करना; अभिसंधि करना।
 सुटली-वि० बालोंकी लंबी लटोवाला।
 सुटाना-स० कि० जोड़ना; पास पहुँचाना; इकट्ठा करना।
 सुटाव-पु० जमाव।
 सुटिका-की० [स०] नुटिया; जूड़ा; एक तरहका कपूर।
 सुही-की० पूजा; गधु; जूरा; सूरन आदिका नया कल्ला।
 सुठारना, सुठालना-म० कि० जूठा कर देना; जूठा करने छोड़ देना।
 सुठिहाना-पु० जूठा खानेवाला।
 सुठना-अ० कि० जोड़ा जाना, संयुक्त होना; इकट्ठा होना; जुगना; उपलब्ध होना।
 सुठिक्की-की० एक रोग जिसमें बदनमें खुजली होनी और बड़े-बड़े दूदोरे निकल आते हैं, पिच्छी।
 सुठवा-वि० जुड़े हुए, वमल। पु० एक साथ पैदा हुए दो बच्चे।
 सुठवाई-की० दे० 'जोड़वाई'।
 सुठवाना-म० कि० ठंडा करना; नृत्य करना; दे० 'जोड़वाना'।
 सुठाना-अ० कि० ठंडा होना। स० कि० ठंडा करना।
 सुठाना-स० कि० ठंडा करना।
 सुत-वि० दे० 'युक्त'।
 सुतना-अ० कि० जोता जाना; लगना; जुटना।
 सुतवाना-स० कि० जोतनेका काम कराना; पोड़े, बैल आदिको नथवाना।
 सुताई-की० जोतनेकी किया या भाव; जोतनेकी उन्नत।
 सुताना-स० कि० दे० 'जोताना'।
 सुतिऔवल-की० आपसमें जूतोंमें मारपीट करना।
 सुतिवाना-स० कि० जूते लगावाना; पुरी तरह अपमानित करना; जलील करना।
 सुथ-पु० दे० 'नृथ'।
 सुवा-वि० [फा०] अलग; भिन्न; निराळा। -ई-की० विरोध, विरुद्धाव। -शाना-अ० अलग-अलग।
 सुवी-वि० की० दे० 'जुदा'।
 सुद्ध-पु० दे० 'युद्ध'।
 सुद्ध-पु० [अ०] दे० 'जून'।
 सुद्ध-पु० [अ०] दे० 'जून'।
 सुद्धरी-की० न्धार।
 सुद्धाई-की० चौदनी, चंद्रिका।
 सुद्धैया-की० दे० 'सुद्धाई'। पु० चंद्रमा-‘...देया मैया शीत सुद्धैयाकी लछावै री’-दीनदयाल।
 सुद्ध-पु० [फा०] जोड़ा, री, समसंख्या।
 सुद्धराव-पु० दे० 'सुद्धराव'।
 सुद्धरी-की० [अ० 'जुकि'] उत्सव; जयंती, (२५ की,

५० बी०, ६० बी०) बरगौठा उत्पन्न (२५ बी०-सिल्वर जुबली, रत्न-जयंती; ५० बी०-गोल्डेन जुबली, स्वर्ण-जयंती; ६० बी०-शायमंड जुबली, हीरक-जयंती) ।

सुषाब्-पु० एक तरहकी कलरी ।

सुषान-खी० दे० 'सवान' ।

सुषानी-वि० दे० 'जवानी' ।

सुमका-वि० [अ०] कुल, तमाम, सब । पु० जोड़ा वाक्य ।

सुमहूर-पु० [अ०] जनसमुदाय, जनता, लोक ।

सुमहुरी-वि० लोक-संचालित, लोकसत्तात्मक ।-सस्तवत-खी० लोकतंत्र, प्रजातंत्र राज्य ।

सुमा-पु० [अ०] शुक्रवार ।-मस्जिद्-खी० वह मस्जिद जिनमें शुक्रवारकी दोषहरमें सामूहिक नमाज पढ़ी जाय ।- (जे)रात-खी० गुरुवार ।-राती-वि० जुमेरातकी जनमा हुआ (सुनलमानोंमें प्रचलित नाम) । सु०-जुमा आठ दिन-सोने दिन, चंद रोज ।

सुम्मा-पु० दे० 'जुमा' ।

सुशौग-पु० उबीसाकी एक जंगली जाति ।

सुर०-पु० स्वर ।

सुरभन-खी० [अ०] बहादुरी, मरानगी; साहस (करना, खिलाना) ।

सुरवा०-अ० कि० दे० 'जुना'; भिड़ना- 'लवसों न जुरो लवणासुर मोरें'-रामचंद्रिका ।

सुरमाना-पु० दे० 'जुमाना' ।

सुरा०-खी० बुढ़ापा; मृत्तु ।

सुराता०-अ० कि० ठंडा होना । स० कि० एकत्र करना । सुराका-पु० दे० 'त्रिका' (इनका जोड़ा विद्युत्ते ही नर-मादा दोनोंकी मृत्यु हो जाती है) ।

सुराबना०-स० कि० दे० 'जुराना' ।

सुरी-खी० हारत ।

सुर्मे-पु० [अ०] अरारण, वह काम जो कानूनमें दंडनीय माना गया हो ।-ख़कीक-पु० छोटा, साधारण अपराध ।-शाहीद-पु० भारी अपराध ।

सुर्मा०-पु० वह रकम जो किसी अपराधके दंडरूपमें देनी पड़े, अर्पण ।

सुरत-खी० दे० 'सुरत' ।

सुरी-पु० [फा०] नर बाज ।

सुराब-खी० [तु०] मीठा ।

सुल-पु० शांति, चकमा ।-बाज़-वि० सुल देनेवाला ।

सुलभन०-पु० [अ०] 'जुलकरनेन' भिन्नर (रूमी)की छपाई ।

सुलना-अ० कि० मिलना (केवल मिलनके साथ प्रयुक्त) । सुलपिती-खी० एक रीति जिनमें शरीरपर लाल-लाल चकचे निकल आते हैं, दे० 'जुलपिती' ।

सुलक, सुलुफ-खी० दे० 'जुल्फ' ।

सुलाई-खी० [अ०] ईसवी सन्का सातवाँ महीना जो असाढ़-सावनमें पड़ता है ।

सुलाब-पु० दस्त कानेवाली दवा, बिरेचन ।

सुलहा-पु० कपडा बुननेवाला, तंदुबाय; पानीपर तैरनेवाला एक कीड़ा; एक बरतानी कीड़ा । [खी० 'जुलाहिन'] सु०-(दे) का हीर-झूठी बात ।-कीसी

बाड़ी-छोटी, नोकदार बाड़ी ।

सुलुम्-पु० [अ०] बैठना; सक्तनशीली, रायपारोक्षण (करना, फरमाना); राजा, बादशाहकी सवारी; बहुते लोगोका हफ्ता होकर समारोहके साथ कहीं जाना या नगरभ्रमण (निकलना, निकालना) ।

सुलोक०-पु० बुनोका, सुरलोक, वैकुण्ठ ।

सुल्फ-खी० [फा०] पट्टा, काकूच, गेस ।-गिरहगिर-खी० धंधवाली बाळ ।-परीशर्-खी० मिछे हुए बाळ ।

सुल्फी-खी० दे० 'जुल्फ' ।

सुल्फ-पु० [अ०] अन्धाय; जबरदस्ती; अत्याचार, अपहर; आफत ।-होस्त,-पसंद-वि० अत्याचारप्रिय, अत्याचारी ।-इसीदा-वि० अत्याचार-प्रीति ।-ब(स्ते)-सितम-पु० अत्याचार । सु०-बाबा,-सोचना-अत्याचार करना ।

सुल्मत-खी० [अ०] अंधेरा; अंधकारकी कालिमा ।

सुल्मात-पु० [अ०] अंधकार ('जुल्मत'का बहु०); वह अंधकारपूर्ण स्थान जहाँ अदृष्ट रहता है (मुसल०) ।

सुल्मी-वि० आलस, अत्याचारी ।

सुल्पाब-पु० [अ०] जुबाब, विरेचन ।

सुबराज०-पु० दे० 'सुबराज' ।

सुबा-पु० दे० 'जुबा' ।

सुवार-खी० दे० 'ज्वार' । * पु० दे० 'जुआरी' ।-भाटा-पु० दे० 'ज्वार-भाटा' ।

सुवारी-पु० दे० 'जुआरी' ।

सुव्वब०-पु० यौवन- 'दिन-दिन अबधि सुव्वन घाय, कंग-वमंत न गम करहु'-रासी ।

जुह-वि० [सं०] मेवित; जुका; जूठा; प्रिय । पु० जूठन, उच्छिष्ट ।

जुष-वि० [सं०] पूरव, नेव्य ।

जुसौदा०-पु० दे० 'जोसौदा' (काद) ।

जुसब्-खी० [फा०] खीज, तलाछ ।

जुहाना०-स० कि० इकट्ठा करना । अ० कि० एकत्र होना ।-महाभीर भूपतिके द्वारे लाइन विप्र जुहाने'-रघु-राज सिंह ।

जुहार-खी० अमिवादनाका एक प्रकार, प्रणाम ।

जुहारवा-स० कि० अमिवादन करना ।

जुहाबना०-स० कि० दे० एकत्र करना ।

जुही-खी० दे० 'जूही' ।

जुहुराण-पु० [सं०] चंद्रमा । वि० कुटिलता करनेवाला ।

जुहुवाब-पु० [सं०] अग्नि; वृक्ष; निजुर व्यक्ति ।

जुहु-खी० [सं०] पलामकी लकड़ीका बना हुआ यद्यथाय; पूर्वदिशा ।-राण,-बाण-पु० अग्नि; ज्वलंत; चंद्रमा ।

जुहूर-पु० [अ०] प्रकट होना; जुमाश्श ।

जुहुवान्(बप)-पु० [सं०] अग्नि ।

जू-खी० मैल और पत्थीला मरनेसे सिरके बालोंमें पैदा हो जानेवाला एक नन्हा कीड़ा, ढील । सु०-(कानौपर)-न ईशना-स्निग्ध ध्यान न जाना, होश न होना ।

जूँठ, जूँझ-वि० उच्छिष्ट । पु० उच्छिष्ट पदार्थ ।

जूँठन-खी० दे० 'जूँठन' ।

जूँरा०-खी० जरा ।

जू-खी—[सं०] वातावरण; राक्षसी; सरस्वती; बाबु; बैल या घोड़े के माथेपरका छीका; तीव्र गमन; वेग। *अ० नाम-के साथ लगाया जानेवाला अतिरस्यक शब्द; 'जी'का व्रज, बुंदेलखंडी आदि भाषाओंमें प्रचलित रूप।

जूआ-पु० दे० 'जुआ'।

जूय-पु० बर्षाको बरानेके लिए कृत्रिम जीव, रीमा।

जूझ-पु० युद्ध।

जूझना-अ० कि० लड़ना; लड़ते हुए मर जाना।

जूट-पु० [सं०] जूना, जटा; [सं०] पटसन; पटसनका बना कपड़ा।—**मिछ-खी०** दे० 'चटकल'।

जूटना-स० कि० जोड़ना, मिलाना। अ० कि एकज होना, प्रवृत्त होना; लगना।

जूटि-खी० संधि, मेक; जोड़ी।

जूटन-खी० खाकर छोड़ा हुआ भोजन, उच्छिष्ट; हस्तेभाल की हुई चीज।

जूटा-वि० खाकर छोड़ा हुआ, जूटारा हुआ, उच्छिष्ट; जिसमें खाया-पिया गया हो (बरतन, चौकी); जिसमें जूटा लगा हो (हाथ, मुँह); * छूटा। पु० जूटन। **मु०—(ठे)** हाथसे कुत्ता न मारना—पक्षा मक्लीचुस होना।

जूब-वि० शीतल; प्रमत्त। पु० दे० 'जूबा'।

जूबा-पु० मिरके बाल जो लपेटकर बाँध दिये गये हों, अट; चौड़ी; मैदुरी; बच्चोंका एक रोग, हलका।

जूबी-खी० जाड़े और कंफके साथ आनेवाला ज्वर, जड़ेया बुखार।

जूना-पु० चमड़े, किरमिच, रबर आदिका बना हुआ पाद-प्राण, उपानह, पाथीश।—**झोर-वि०** पीटे आनेका आशी, कतलोर, बेहवा। **मु०—उछलना-मार-पीट** होना, जूती पैजार होना।—**उठाना-जूता** मारनेको तैयार होना। (किम्पीका)—**उठाना-नीच** मेवा करना।—(से) **खाना-जूते**में पीटा जाना; जलील होना।—**गाँठना-जूतोंकी** मरम्मत करना; नीच काम करना।—**चलना-दे०** 'जूता चलना'।—**काटना-जूतोंकी** खिदमत करना; चापलूसी करना।—**पड़ना-बरसना-जूतोंकी** मार पड़ना।—**मारना-जूते** लगाना; जलील करना, मुँहतोड़ जवाब देना।—**लगाना-जूते** पड़ना; नुकसान होना, पाटा पड़ना; अपमानित होना।—**लगाना-जूते** मारना; अपमानित करना, लथेड़ना।—(ने, -लौ)से **खबर लेना-जूते**में पीटना।—**से बात करना-जूते** लगाना।

जुति-खी० [मं०] वेग; तेजी; उत्तेजन, प्रोत्साहन; प्रवृत्ति।

जुतिका-खी० [सं०] एक तरहका कपूर।

जूती-खी० जनाना जूता; जूता।—**कारी-खी०** जूतोंकी मार।—**झोर, झोरा-वि०** जूते खानेका आवा; लात-जूतोंकी परवाह न करनेवाला, निर्लज्ज।—**छिपाई, छुपाई-खी०** ब्याहमें, कोहबरमें या दुल्हिनकी विदाईके समय साखियोंका बरके जूते छिपा देना और नेग लेकर देना; जूते छिपाने और लौटानेका नेग।—**पैजार-खी०** जूता चलना, मार-पीट, गरी लकाई। **मु०—की बोकबर मारना-ऊछ** न समझना।—**की बोकसे—(मेरी)** बलासे, कुछ परवाह नहीं (बह नहीं आते तो मेरी जूतोंकी नोक-से-खि०)।—**के बराबर न समझना-तुच्छ**, हेव वा

कुछ न समझना।—(तिथी) **उठाना-नीच** सेवा करना।

—**गाँठना-पटी-पुरानी जूतियोंकी** मरम्मत करना; हीन कार्य करना।—**चटलाते फिरना-मारा-मारा फिरना**।

—**बगलमें दबाना-धोरेसे** खिसक देना।—**मारना-दे०** 'जूते मारना'।—**लगाना-दे०** 'जूते लगाना'।—**सिरे-पर रखना-चापलूसी करना**।—**सीधी करना-नीच** सेवा करना।—(किसीकी)—(तिथी)का **सहका-**

(किमीके) चरणोंका प्रमाद (कृतज्ञता-भावनका अति विनीत प्रकार)।—**दाढ़ बँटना-लगाई-हागवा** होना, आपसमें जूती-पैजार होना।

जूय-पु० दे० 'जूय'।

जूयका, जूयिका-खी० दे० 'जूयिका'।

जूय-वि० [फा०] तेज, द्रुत। अ० जल्दी, झट।—**क्रहम-वि०** बातकी झट समझ लेनेवाला, तीक्ष्णबुद्धि।

जून-पु० वेला, वक्त; दिनका अर्द्ध भाग; पुण्य; [अ०] इतनी सन्का छटा महीना। * वि० जीर्ण, पुराना।

जून-पु० तिनके बटकर बनायी हुई रस्सी; उबसन।

जूप-पु० जुआ, बत्त; बिवाहमें बर-बच्चे जुआ खेलनेकी एक रीति; दे० 'जूप'।

जूपी-पु० वहस्तम (यूप)ने रेंबा हुआ पशु, बलिपशु।

जूमना-अ० कि० जुटना, इकट्ठा होना।

जूर-पु० जोश; डेर।

जूरना-स० कि० जोड़ना, इकट्ठा करना। अ० कि० इकट्ठा होना; जुटना, उपलब्ध होना।

जूर-पु० [अ०] ज़रीका सदस्य, पंच।

जूरा-पु० दे० 'जूरा'।

जूरी-खी० पूला, जुद्धी; एक तरहकी पकोड़ी, [अ०] पंचोंका मटल जो चौजगरी मुकदमोंमें अभियुक्तोंके अपराधी होने या न होनेके संबंधमें जजकी अपनी राय देता है। पु० इसके सदस्य।

जूरीख-पु० [सं०] एक तुण, द्रव्य।

जूपाङ्कय-पु० [मं०] देवधान्य।

जूषि-खी० [सं०] वेग; क्रोध; क्षियोंका एक रोग। पु० ब्रह्म; आदित्य। वि० बगवान्; तपानेवाला, स्तुति-कुशल (वै०)।

जुसि-खी० [सं०] ज्वर।

जुलाई-खी० दे० 'जुलाई'।

जूष-पु० [मं०] जूष।

जूषण-पु० [मं०] एक पुष्पवृक्ष, धाय।

जूस-पु० दालका पानी; रोगीको दिया जानेवाला पष्य (देना; लेना); रसा; † दे० 'जूफ्त'।—**ताक-पु०** लकड़ोंका एक खेल।

जूसी-खी० राखे ऊपर छुटने या शकर बनानेमें उसके मेल और नमीके रूपमें निकलनेवाला शीरा, चोटा।

जूह-पु० दे० 'जूय'।

जूहर-पु० दे० 'जूहर'।

जूही-खी० एक झाड़ जिम्मेके फूल बहुत छोटे, सुकुमार और बड़ी मयुर गंधवाले होते हैं; एक आतिशयाजी; मंदर आदिमें लगानेवाला एक कीड़ा।

जूभ-पु० [सं०] जम्बाई; कैलाश; सिलना।

शुभक-वि० [सं०] अर्थात् लेनेवाला; सुस्त करनेवाला ।
पु० एक अक्षः एक रक्षण ।

शुभकाक्ष-पु० [सं०] शुभक नामक अक्ष जिसका प्रयोग करनेसे शत्रुको जैसाई आने लगती है, वह शिथिल पड़ जाता है ।

शुभज-पु० [सं०] अम्हारै लेना; फैलना; खिलना ।

शुभा-स्त्री० [सं०] दे० 'जु' अ' ।

शुभिका-स्त्री० [सं०] अम्हारै; आलस्य ।

शुभिणी-स्त्री० [सं०] एलापर्णी जता ।

शुभित-वि० [सं०] जिसने अम्हारै ली हो; फैला हुआ; फैलाया हुआ; वेष्टित; खिला हुआ ।

शुभी(मिन्)-वि० [सं०] अम्हारै लेनेवाला; विकसित होनेवाला ।

शुंगना-पु० जुगन्- 'शुंगनाकी जोति कहा रजनी बिलत है'-सुन्दरदास ।

शुटिलमैन-पु० [अ०] कुलीन, शरीफ, नेक आदमी, सज्जन; श्रेष्ठतमने रहनेवाला; सम्बन्ध हैश-शूचावाला आठमी, अष्ट पुरुष ।

शुताक-पु० [म०] गरम कमरा या इस प्रकारका अन्य माधन जिसमें गरमी पहुँचाकर पत्नीया निकाला जाय ।

शुना-म० कि० दे० 'जीमना' ।

शुवन-पु० खानेकी चीज या कार्य ।

शुबना-म० कि० दे० 'जीमना' । † पु० भोजन ।

शुवनार-स्त्री० दे० 'शुवनार' ।

शुधाना-म० कि० भोजन कराना ।

शु-म० 'शु'का बहु० ।

शुह, जेह, जेहू-सर्व० दे० 'जो' ।

शुह-स्त्री० देह; गोद ।

शुही-स्त्री० पानीके ऊपर बना हुआ लकड़ी आदिका चबूतरा जिसपरने जहाजपर माल चढ़ाया-उतारा जाता है ।

शुहस-पु०, शुहसी-स्त्री० बड़े भारीका हिस्सा; बड़े भारीका बचोतीमें बड़ा हिस्सा पानेका हक, ज्येष्ठाक्ष ।

शुह-वि० ज्येष्ठ, उन्नतमें बड़ा । पु० पनिका बड़ा भारी; बैसाख और अमावसके बीच पड़नेवाला चांद्र मास ।

शुहा-वि० बड़ा, ज्येष्ठ; श्रेष्ठ । -हूँ-स्त्री० शुहा होना, जेठापन ।

शुहानी-स्त्री० पतिके बड़े भारीकी स्त्री ।

शुही-वि० जेठका; जेठमें होनेवाला (-धान, कपास इ०) । स्त्री० एक तरहकी कपास; * जेठानी ।

शुहीमपु-पु० मुलेठी ।

शुहीत, जेहीता-पु० पतिके बड़े भारी, जेठका लकड़ा ।

शुहवध-वि० [सं०] जीतने योग्य, जेय ।

शुहा-वि० जितना ।

शुहा(तु)-वि० [सं०] जीतनेवाला, विजयी । पु० विष्णु ।

शुहिक-अ० जितना ।

शुहे-वि० जितने ।

शुही-अ० जितना ।

शुहरक-वि० [अ०] आम, सामान्य; बड़ा, प्रधान (-पोस्ट आफिस, -हॉस्पिटल इ०) । पु० सेनानायक; फौजका एक अफसर जिसका हद प्रधान सेनापतिके नीचे होता

है । -इलेक्शन-पु० आम चुनाव । -मरचेट-पु० बहुत गरहाक, विसातवानेका सामान देवनेवाला ।

-सेक्रेटरी-पु० प्रधान सचिव । -स्टाक-पु० प्रधान सेनापतिका सहाकारी मदल ।

जोना-सं० कि० दे० 'जीमना' ।

जेझिन-पु० [अ०] विशाल, युद्धोपयोगी हवाई जहाज जिसे पहले पहले जर्मनीके काउंट जेझिने बनाया ।

जेब-पु० [अ०] गरेबान; कुरते, कमीज आदिमें रुपये-पैने, धरी-कमाल आदि रखनेके लिए लगी हुई थैली, खीसा, पाकिट (हिंदीमें यह शब्द प्रायः स्त्रीरूपमें बोला जाता है); दे० 'जेब' । -कट, -कतरा-पु० जेब कतरनेवाला, पाकिटमार । -खर्च-पु० निजी खर्च; निजी खर्चके लिए मिलनेवाली रकम । -खास-पु० राजा, बादशाहके निजी खर्चके लिए राज्यकोषमें दिया जानेवाला धन । -खर्ची-स्त्री० जेबमें रखनेकी (छोटी) धरी । सु० -कल-रना-जेब काटकर रुपया-पैसा निकाल लेना, गाँठ काटना । -खाली होना-पाममें कुछ न होना, हाथ खाली होना । -अरी होना-हाथमें काफी पैसा होना ।

जेब-स्त्री० [का०] सुन्दरता, शोभा; शृंगार । वि० (समास-में) 'की शोभा देनेवाला, फवनेवाला (तनपेव, जामा-जेब) । -बार-वि० सुंदर, सजनेवाला । -ब झीलस-स्त्री० बनाव-मिगार, मंत्रावट । सु० -सन, बदन करना-धारण करना, पहनना । -देना-फवना, शोभा देना ।

जेबरा-पु० [अ०] एक बंगली जानवर जिसके बदनपर भारियाँ होती और शङ्ख घोड़े या खबूतरे मिलती है ।

जेबा-वि० [का०] मजदे, फवनेवाला, शोभाजनक ।

जेबाइस, जेबाई-स्त्री० [का०] शोभा; सुंदरता; सजावट ।

जेबी-वि० [अ०] जेबमें रखने लायक; छोटा । -कमाल-पु० वह कमाल जो हाथ-मुँह पोंछनेके लिए जेबमें रखा जाय ।

जेबुलिसा(बेगम)-स्त्री० [अ०] औरंगजेबकी बेटी जो फारसीकी अच्छी कवयित्री (उपनाम 'मेलफी') थी और आजीवन अविवारित रही ।

जेमन-पु० [सं०] भोजन करना, जीमना; भोजन, आहार ।

जेय-वि० [सं०] जीतने योग्य, जेतम्ब ।

जेर-स्त्री० आँवक ।

जेर-अ० [फा० नीचे, तले । वि० कमशोर, दबा हुआ । स्त्री० अरबीफारसी लिखावटमें 'इ', 'ई' और 'ए'की मात्रा । -जामा-पु० वह कपड़ा जिसे धोखेकी पीठपर डालकर ऊपर जीन कम्पते हैं । -तजवीज़-वि० विचारा-धीन, विसपर विचार हो रहा हो, अनिर्णित (मुकदमा) । -दुस्त-वि० कमशोर, दबनेवाला; अधीन । -पाई-स्त्री० जनाना जूती; जूता । -पेच-पु० पगथीके नीचे बाँधी जानेवाली छोटी पगड़ी । -बंदू-पु० वह तस्पा जिसका एक मिरा धोखेकी मोहरीमें और दूसरा नंगमें बाँधा जाता है । -बार-वि० शोझके नीचे दबा हुआ; कणप्रसू; भारी खर्च, अधिक हानि उठानेवाला । -बारी-स्त्री० जेरबार होना; नुस्तान; परेशानी । -ब ज़बर-अ० नीचे-ऊपर । वि० उलट पुलट, अस्त-व्यस्त, तर्होना । -साबा-वि० किसीकी छाया,

आश्रयमें रहनेवाला । -हिरासत-वि० जो हिरासतमें ले लिया गया हो, गिरफ्तार । -बुद्धमत्त-वि० अभीन, शासनाधीन । -(रे)झाक-अ० कर्ममें । वि० जो कर्ममें हो । -(से)जब-अ० दे० 'जैर व जवर' । सु०-करना-हराना, पछानना; अभीन करना ।

जेरना*-स० कि० उत्प्रेषित करना, परेशान करना । जेरिया, जेरी-स्त्री० चरवाहेका डंडा; खेतीका एक औजार । जेरु-पु० [अ०] कैलासा, बंदीगृह (जब वह शम्भू प्रायः क्रीडामें शोका-लिखा जाता है); * जंजाल, बंधन । -झावा-पु० कैदखाना, कारागार । सु०-काटना-कैदी सजा भुगतना ।

जेकर-पु० [अ०] जेलकी देखभाल करनेवाला अफसर । जेली-स्त्री० भूमा इकट्ठा करनेका एक औजार । जेवर्गी-स्त्री० दे० 'जेवरी' ।

जेवना-स० कि० दे० 'जीमना' । जेवकर-स्त्री० भोज, दावत । जेवर-पु० एक चिह्निया; दे० 'जेवर' । जौ० रस्ती । जेवर-पु० [फा०] गहना, आभूषण; शोभाकर वस्तु, मंगल । जेवरा-पु० फंजा, रस्ती । जेवरान-पु० [फा०] 'जेवर'का बहु० । जेवरी-स्त्री० रस्ती । जेह-वि०, पु० दे० 'जेह' । जेहा-स्त्री० दे० 'जेहा' ।

जेह-स्त्री० [फा०] कमलका चिह्न, कैस; फीता; दीवारमें लीचेकी ओर किया हुआ कुछ अधिक मोटा पल्लर । अ० शाबाश ।

जेहन-पु० दे० 'जेह' । -बार-वि० पढ़ने-लिखनेमें तेज, तीक्ष्णबुद्धि ।

जेहर-पु० पाजेव । जेहरि, जेहरी-स्त्री० दे० 'जेहर' । जेहि*-सर्व० 'जिमे; जिससे । जेह-पु० [अ०] धारणाशक्ति; बुद्धि, समझ । सु०-खुलना-बुद्धिका तीक्ष्ण होना । -जहान होना-समझमें आना; याद होना । -में बैठना-समझमें आना, मनमें बैठना । -लखाना-सीचना ।

जैत-पु० जयंती वृक्ष । जौ-वि० जितने । * स्त्री० दे० 'जय' । -कार-पु० दे० 'जयकार' । -कारा-पु० जयकार, जयघोष । -जैवती-स्त्री० दे० 'जयजयवती' । -इक-पु० एक बड़ा ढोल । -मंगल-पु० दे० 'जयमंगल' । -माल, -माछा-स्त्री० दे० 'जयमाला' ।

जैगीषव्य-पु० [सं०] एक योगवेत्ता मुनि । जैत-पु० एक पेड़ । * स्त्री० जीत, जय । -पत्र-पु० जयपत्र । -बार-वि० जीतनेवाला, विजेता । -श्री-स्त्री० एक रागिनी ।

जैती-स्त्री० एक घास । जैद-पु० [अ०] जैतूनका तेल । जैदून-पु० [अ०] एक सदाबहार पेड़ जिसका फल खाया और शीशोंका तेल खाने और दवाके काममें लाया जाता है । जैव-वि० [सं०] जयशील, विजयी; श्रेष्ठ । पु० पार;

औषध; विजय; श्रेष्ठता । -रथ-पु० विजेता ।

जैत्री-स्त्री० [सं०] जयंती वृक्ष । जैव-पु० [सं०] जिनकी उपासना करनेवाला धर्म, भारत-वर्षका एक भिरीधरवादी धर्म-संप्रदाय जो अहिंसाकी परम धर्म मानता है; जैनधर्मावलंबी । जैवी-पु० जैन धर्मकी आननेवाला ।

जैनु-पु० भोजन । जैव्य-वि० [सं०] जैन-संघर्ष । जैमिनी-पु० [सं०] पूर्वमीमांसा दर्शनके प्रवर्तक एक मुनि जो वेदव्यासके शिष्य थे । -वर्षान-पु० पूर्वमीमांसा । जैमिनीय-वि० [सं०] जैमिनिवृत्त; जैमिनिका ।

जैवद-वि० [अ०] मारी, जवरदस्त (-आक्रम) । जैल-पु० [अ०] दामन; नीचेका अंग; समुद्राश; पंक्ति; हल्का । अ० नीचे । -द्वार-पु० वह कर्मचारी जिसके जिम्मे कई गाँवोंकी तहसील आदि हो । जैव-वि० [सं०] जीव-संघर्ष, बृहस्पति-संघर्ष । पु० पुण्य नक्षत्र ।

जैवावृत्त-वि० [सं०] दीर्घायु; दुबला-पतला । पु० चंद्रमा; कपूर; पुष्प; औषध; कृपक ।

जैव्य-पु० [सं०] बृहस्पतिके पुत्र कव । जैस-वि० जैसा ।

जैसवार-पु० कुरमियों और कलवारोंका एक भेद । जैसा-वि० जिस तरहका, यादृश; जितना; सरीखा, सदृश ।

सु० -(से)का तैसा-ज्योंका त्यों । -को तैसा-जो जैसा है उसके साथ वैसा (सबहार), तदनुकूल ।

जैसे-अ० जिस तरह, जिस रीतिसे, ज्यों । -जैसे-अ० ज्यों-ज्यों । -ही-अ० उन्हीं । सु०-बने-जिस तरह हो सके ।

जैसी-वि० दे० 'जैसा' । जौ-अ० दे० 'ज्यों' । -जौ-अ० दे० 'ज्यों-ज्यों' । -तौ-अ० दे० 'ज्यों-ज्यों' ।

जौक-स्त्री० पानीका एक कीड़ा जो प्राणियोंकी देहमें चिपककर उनका रक्त पीता है, जलीका, जलमर्षिणी ।

जौकी-स्त्री० पानीके साथ जौक पी जानेसे गाय-बैल आदिके पेटमें होनेवाली जलन; पानीका एक कीड़ा, जौक ।

जौग, जौगक-पु० [सं०] अगुरु ।

जौगट-पु० [सं०] धर्मिणीकी इच्छा, दोहद ।

जौताला-स्त्री० [सं०] देवधान्य ।

जौदरी, जौदरी-स्त्री० मक्का; छोटे दानेकी अवार ।

जौवेया-स्त्री० चंदनी ।

जो-मर्ग० संवत्साचक सर्वनाम । अ० यदि, अगर । -वै-अ० अगर, यद्यपि ।

जोअना-स० कि० दे० 'जोहना' ।

जोह-स्त्री० दे० 'जोव' । सर्व० दे० 'जो' ।

जोहसी-पु० दे० 'ज्योतिषी' ।

जोड-सर्व० दे० 'जो' ।

जोख-स्त्री० जोखनेकी क्रिया या भाव; लौ ।

जोखना-स० कि० लौखना; * सीचना, बिचारना ।

जोखन-स्त्री० दे० 'जोखिम' ।

जोखा-पु० हिंसा (प्रायः 'खेला'के साथ प्रयुक्त) ।

जोखिउँ-खी० दे० 'जोखिन' ।

जोखिसां-खी० दे० 'जोखेसा' ।

जोखिम-खी० हानि, अनिष्ट, बाटेकी संभावना; खतरा; ऐसी चीज जो विपत्तिका कारण हो । -का काम-खतराका काम । झु०-उठाना; -लेना-जोखिमवाला काम करना; हानि वा अनिष्टका खतरा लेनेको तैयार होना ।

जोखिमी-वि० जिसमें जोखिम हो ।

जोखीं-खी० जोखिम, खतरा ।

जोर्नवर-पु० झट्टने अर्थात् बचावको एक युक्ति ।

जोग०-पु० दे० 'योग' । वि० दे० 'योग्य' । ज०...की, के लिए ('...जोग लिखी...से...') । -सा-खी० दे० 'योग्यता' । -साधा-खी० दे० 'योग्यता' । -साधन-पु० तपस्वचार्य ।

जोगडा-पु० नकली योगी ।

जोगन-खी० दे० 'जोगिन' ।

जोगवना-स० कि० हिकाजतमे रखना; झकड़ा करना; ध्यान न देना; पूरा करना; आदर करना ।

जोगानल०-पु० योगने उत्पन्न अग्नि ।

जोगीद्व०-पु० दे० 'योगीन्द्र' ।

जोशिक-खी० दे० 'जोगिन' ।

जोशिन-खी० जोती खी वा जोगीकी खी; पिशाचिनी; एक रणदेवी ।

जोशिनी-खी० दे० 'योगिनी' दे० 'जोगिन' । † सहाय लेनेकी लकरी, ठकोरी ।

जोशिया-वि० जोगका; जोगीका; नेरुके रंगका, भगवा । पु० जोगिया रंग; जोगीडा; जोगी ।

जोगीद्व०-पु० दे० 'योगीन्द्र' ।

जोगी०-पु० दे० 'योगी'; भिक्षाजीवी गृहस्थ साधुओंका एक सम्प्रदाय ।

जोगीका-पु० वर्तमान गाथा जानेवाला एक तरहका चलता गाना; इस प्रकारका गाना गानेवालोंका समाज ।

जोगीद्वर, जोगीद्वर-पु० दे० 'योगीश्वर' ।

जोग्य०-वि० दे० 'योग्य' । -ता०-खी० दे० 'योग्यता' ।

जोजन०-पु० दे० 'योगिन' । -शंघा-खी० दे० 'योगिन-गंगा' ।

जोटा०-पु० जोडा; साथी; झुंड । वि० बराबरका ।

जोटा०-पु० जोडा; गोनी ।

जोटिंग०-पु० [स०] मराठे; महाप्रती, कठिन तप करने-वाला ।

जोटी०-खी० जोशी; जोष्का साथी ।

जोड-पु० [स०] बंधन ।

जोड-पु० जोडनेकी क्रिया; कई संख्याएँ जोडनेमे आनेवाली संख्या, योगफल, मीजान; वह जगह जहाँ दो चीजें या दो डुकड़े जुड़ें, संघिखाना; गोंड जातिवाला डुकड़ा, पैरद; एकही वा एक साथ काममें लायी जानेवाली दो चीजें; जोडा; मेल; बराबरी करनेवाला, प्रतिपद; एक घरमें बैठे हुए दो गोठें; पूरा पड़नावा, सिरसे पाँच तकके कपड़े; दो पहलवान जिनकी कुश्ती हो । -जोड-पु० गोंडगोंड, हर अंग । -सोड-पु० दाब-बैच (भिक्षा, लहाना) । -दार-वि० जोषवाला । झु०-खर-बरा-

बरीका, प्रतिपद । -का सोड-बराबरीका, बराब । -कुटना-पहलवानोंके एक जोष्का कुश्तीके स्थि अङ्गणमें उतारा जाना । -बड़ना-दो पहलवानोंकी कुश्ती बड़ी जाना । -मिलना-बराबरका होना; तुक मिलना ।

जोडना-पु० जामन ।

जोडना-स० कि० दो चीजों, डुकड़ोंको एक-दूसरेके साथ थिपकाना, सीना, मिलाना आदि; दूटो हुई चीजके डुकड़ोंको मिलाना, बैठाना; तरतीबने खगाना, बैठाना (ईदें, व्यञ्जरे); संस्थाओंको जमा करना; गिनतीमें शामिल करना; बढोरना, संचय करना; गढ़ना, मनमे उपजाना (शत); जलाना; पछरवाना करना; व्यापित करना (मित्रता, नाता); जोतना । झु० जोड-जोडकर धरना -पैसा-पैसा करके धन बढोरना । जोड-बढोरकर-कुल मिलाकर ।

जोडवाँ-वि०, पु० दे० 'जुडवाँ' ।

जोडवाई-खी० जोडवानेकी क्रिया वा उमरत ।

जोडवाना-स० कि० जोडनेका काम कराना ।

जोडा-पु० एक-सी या एक साथ काममें लायी जानेवाली दो चीजें; साथ पढ़ने जानेवाले दो कपड़े (कुरता-पाजामा, लहंगा-दुपट्टा); पूरा पड़नावा; दोनों पोंकोंके जुते; नर और मादा, खी और पुरुष; बर-कन्या; व्याहमें दुलहिनके लिए मेजा जानेवाला कपडा-लहंगा, साड़ी आदि; जोड़ । झु०-खाना-(पशु-पक्षीका) मैथुन करना ।

जोडाई-खी० जोडनेका काम वा उमरत ।

जोड़ी-खी० जोडा; एक साथ-जुते जानेवाले दो पैर वा घोड़े; दो घोड़ोंकी गाड़ी, बच्ची; मुगदरका जोडा; मैत्री; जोड़ । -दार-वि० बराबरीका, जोष्का । -बाख-पु० गायकदलके साथ मैत्री बजानेवाला । झु०-खी बैठक -मुगदरकी जोड़ीपर हाथ टेककर खी जानेवाली बैठक ।

जोडू-खी० दे० 'जोल्' ।

जोत-खी० जोतनेकी क्रिया; कावत; उतनी जमीन जितनी एक कावतकर जोतता हो; वह रस्सी वा तस्मा जिससे बैल हलके और घोड़े गाड़ीके साथ जोते जायें; तराजूके पलकोंकी बाँधीसे बाँधनेवाली रस्सी । -दार-पु० कावतकार । जोतना-स० कि० जोतें; बैलों आदिकी गाड़ी, हल आदिके इस तरह बाँधना कि वे उसे खींच सकें, नाँधना; गाड़ी आदिकी घोड़े आदि जोतकर चलनेके लिए तैयार करना; हलते जमीनकी खीरना, बोने लायक बनाना; किसीको उसकी हथ्थाके बिहद काममें लगाना ।

जोता-पु० जुआठेमें बँधी हुई रस्सी जिसमें हल वा गाड़ीमें जोते जानेवाले बैलकी गरदन फँसायी जाती है; हथ्थाहा ।

जोताई-खी० जोतनेकी क्रिया वा माव; जोतनेकी मजदूरी ।

जोताना-स० कि० जोतनेका काम कराना ।

जोति०-खी० जोतने लायक जमीन; दे० 'ज्योति'; देवताके शीर्षार्थ जलाया जानेवाला दीपक । -बंत०-वि० ज्योतिर्भव ।

जोतिक, जोतिखी०-पु० दे० 'ज्योतिष' ।

जोसिस०-पु० दे० 'ज्योतिष' ।

जोसिसी०-पु० दे० 'ज्योतिष' ।

जोती०-खी० दे० 'जोति'; चक्षुकी कीली और दृश्यमें

बैंसी रखनेवाली रस्ती। लवाय।

जोरतना-श्री० दे० 'ज्योतना'।

जोच, जोचा-पु० दे० 'जोडा'।

जोन-श्री० दे० 'जोनि'।

जोना-स० कि० देखना।

जोनि-श्री० दे० 'जोनि'।

जोन्हा, जोन्हाई-श्री० बौंदनी।

जोन्हरी-श्री० छोटे दानेकी आर; मक्का।

जोन्हि-श्री० जुन्हाई, बौंदनी।

जोष-पु० दे० 'जुष'।

जोक्र-पु० [अ०] कमजोरी, निर्बलता। -(के)जिवर-पु० जिवरकी कमजोरी। बहुतका अपना काम ठीक तौरसे न कर सकना। -दिमारा-पु० दिमालकी कमजोरी। -मेदा-पु० पाचनशक्तिकी दुर्बलता, अधिमांस।

जोबन-पु० जवानी, यौवन; उमरती, खिलती हुई जवानी; यौवनजनित सुंदरता; बहार, शोभा; सन, छाती। * वि० युवा-सूर स्वाम करिकारि भूली जोबन भये मुरारी-सूर। मु०-पर आना-सुंदरताका खिल उठना, बहारपर होना। -खटना-(किसी लोकी) जवानीका सुख खटना। जोम-पु० [अ०] गर्व, घमंड; धारणा, खवाल; उत्साह, उमंग-करिबीं महि विन बानरी बाढ़ी मन बह जोम'-रघु०; प्रबलता; समूह।

जोष-श्री० पत्नी, जोर। सर्व० जो।

जोबना-स० कि० जलना; दे० 'जोहना'।

जोबली-पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोर-पु० [का०] बल, शक्ति, प्रबलता; वेग, तेजी; बरा, हस्तिवार; सहारा, अरोमा; शतरंजके एक मुहरेकी दूसरेसे मिलनेवाला बल, सहारा; बलप्रयोग, जबरदस्ती; मेहनत, श्रम। -आजमाई-श्री० बलपरीक्षा। -जुस्म-पु० अभ्यास-अभ्यावार। -द्वार-वि० जोरवाला, प्रबल; आग्रह-युक्त (निकाश)। -शोर-पु० तेजी, उग्रता; प्रबलता; जोश। -(रे)कलम-पु० कलमका जोर, लेखन-शक्ति। -तबीयत-पु० कल्पनाशक्ति। -बाज-पु० बाहुबल, बुजबल मु०-आजमाना-बलपरीक्षा करना, भिड़ना, मुकाबला करना। -करना-बल लगाना; कोशिश करना; बढ़ना। -का-प्रबल, जोरदार। -चलना-बल चलना। -हालना-दबाव हालना, आग्रह करना। -दिखाना-शक्ति, अधिकारका परिचय देना। -देकर-आग्रहपूर्वक, बढ़ताके साथ। -देना-शतरंजके मुहरेकी दूसरे मुहरेका सहारा देना; आग्रह करना; बोझ हालना। -पकड़ना-बल प्राप्त करना; बढ़ना। -पर होना-बादपर, बढ़ा हुआ, प्रबल होना। -बांधना-प्रबल होना, बल प्राप्त करना। -मारना-बहुत जोर लगाना; बहुत कोशिश करना। -(रं)से-जोर देकर, बहुत आग्रहके साथ।

जोरना-पु० दे० 'जोबन'।

जोरना-स० कि० दे० 'जोबना'।

जोराजोरी-अ० बलपूर्वक, जबरदस्ती। श्री० जबरदस्ती।

जोरावर-वि० [का०] बलवान्; जबरदस्त।

जोरी-श्री० दे० 'जोरी'; जबरदस्ती।

जोर्क-श्री० पत्नी, भार्या। -जोर्क-पु० बर-बार।

जोख-पु० ममूह, झुंड, -'विषके बर्द जोख'-सूर।

जोखारा-पु० दे० 'जुलाहा'।

जोखाहल-श्री० ज्वाला।

जोखाहा-पु० दे० 'जुलाहा'।

जोखी-श्री० बराबरी; जोषी, बराबरीका मादनी।

जोखो-पु० अंतर।

जोबना-स० कि० दे० 'जोहना'।

जोष-पु० [का०] लफान, उवाह; गरमी, उत्तजना, उत्साह; आग्रह। -ब खरीश-पु० धूम, झोरमुल; उत्साह; आवेश। -(शे)जवानी-पु० जवानीका जोश।

-जुनून-पु० उन्मादका जोर, सनक। मु०-खाना-उबलना। -हैना-उबालना। -मारना-उबलना; उम-बना; मथना। -मैं आना-कूक होना; उत्तेजित होना।

जोशन-पु० [का०] बौहपर पहननेका एक गहना; जिरह-बस्तर, कनक।

जोशदा-पु० [का०] काठा, काब।

जोशिश-श्री० [का०] जोश।

जोशी, जोषी-पु० ज्योतिषी; गुजराती ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; महाराष्ट्र ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; कमावू-गढ़-बालमें बसनेवाले ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

जोशीला-वि० जोशमें भरा हुआ, ओजपूर्ण।

जोष-पु० [स०] सुख; आराम; सतुष्टि; मौन; सेवा।

*श्री० जोख, लौल, ली।

जोषण-पु०, जोषणा-श्री० [मं०] दे० 'जोष' (पु०)।

जोषा-श्री० [मं०] ली।

जोषिका-श्री० [स०] ली; कलियोंका समूह।

जोषिता, जोषित्-श्री० [स०] ली।

जोह-श्री० खोज; प्रतीक्षा; रटि।

जोहन-श्री० देखनेकी क्रिया; खोज; प्रतीक्षा।

जोहना-स० कि० देखना; गह देखना, प्रतीक्षा करना; खोजना।

जोहार-श्री० दे० 'जुहार'। पु० जोहर।

जोहारना-स० कि० दे० 'जुहारना'।

जौ-अ० जो, यदि, यों।

जौरा-श्री० जरा।

जौरा-जौरा-पु० खजाना रखनेका गहखाना।

जौरि-अ० निकट, आम-पास।

जौ-पु० रवीकी फसलका एक जनाज जिसका स्थान छोटेके रूपमें व्यवहृत अनाजोंमें गेहूँके बाद ही है और जिसकी गिनती हविष्माओंमें है, यव; हस्तका पौधा; एक पौधा जिसकी टहनियोंके टोकरे आदि बनते हैं; एक जो या इराईकी मात्रा। -कुट-वि० इस तरह कुटा हुआ कि छोटे-छोटे जोके बराबर टुकड़े हो जायें। -केराह-श्री० मटर या कलाय मिला हुआ जौ। -कोष-वि० जीकुट।

जौ-अ० जो, यदि, अगर; जब। -वै-अ० अगर, यदि।

जौक, जौक-पु० समूह, झुंड; सेना।

जौका-श्री० [का०] पत्नी, भार्या।

जौजीबस-श्री० [का०] पत्नीत्व।

जौतुक-पु० दे० 'यौतुक'।

जौधिक-पु० [सं०] तलवार या खन्त्रका एक हथ।

जौन*-सर्व० दे० 'जो'। पु० दे० 'यवन'।

जौन्*-खी० दे० 'जौन्'।

जौबति*-खी० दे० 'जुबती'।

जौवन, **जौवन***-पु० दे० 'जौवन'।

जौशन-पु० [का०] दे० 'जौशन'।

जौहर-पु० युद्धमें शत्रुकी विजय निश्चित हो जानेपर राज-पूत कियोंका दण्डकती हुई विशाल धितामें एक साथ प्रवेश कर जल मरना; इस कार्यके लिए बनायी गयी धिता; [अ०] रत्न; मार, मरवा; गुण, स्त्री (खुलना, विखाना); तलवारपरकी भारीक धारियाँ जिनमे लोहेकी अच्छाईका पता चलता है; आईनेकी चमक। -**दार**-वि० जिसमें जौहर हो।

जौहरी-पु० [अ०] जवाहरानका रोजगार करनेवाला, रत्न व्यवसायी। वि० पारखी; गुण-दोष पहचाननेवाला, कदरवाँ। -**बाज़ार**-पु० वह बाजार जहाँ जवाहरात बिकें, रत्नघाट।

ज-'ज' और 'ज'के संयोगमे बना हुआ संयुक्त अक्षर। वि० [सं०] (महा आदिके अंतमें लगनेसे) जाननेवाला, हाता (गुणज्ञ, बहुत इ०)। पु० हानी, पड़िन; जीवात्मा; ज्ञान; बुध ग्रह; मंत्र्य ग्रह।

जापिन, **जप्त**-वि० [म०] जनाया हुआ; हापिन।

जसि-खी० [म०] हान; बुद्धि; तेज करना; नौषण; स्तुति; मारण।

ज्ञात-वि० [म०] जाना हुआ, विदित। -**बौबना**-खी० वह मृग्या नायिका जिने यौगमगमका ज्ञान हो। -**सिद्धांत**-वि० शास्त्रविशेषका पंडित।

ज्ञातव्य-वि० [म०] जानने योग्य, हेय।

ज्ञाता(न)-वि० [म०] जाननेवाला। पु० चतुर आदमी; परिचित व्यक्ति; ज्ञानान्तर।

ज्ञाति-पु० [म०] धिता; पित्रुवशमें उत्पन्न व्यक्ति, गोनिया। -**कर्म**(न), -**कार्य**-पु० भारी बंदका कर्मव्य। -**पुत्र**-पु० गोत्रजका पुत्र; जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी।

ज्ञातृत्व-पु० [म०] हाता होना; जानकारी।

ज्ञानेय-पु० [म०] हातित्व; कुल, वंशका होना।

ज्ञान-पु० [म०] जानना, बोध, जानकारी; सभी जानकारी, सम्मत् बोध; पदार्थका ग्रहण करनेवाली मनकी वृत्ति; शास्त्रानुशीलन आदिमे आत्मतत्त्वका अरगम, आत्ममाहात्कार; बुद्धिवृत्ति, वेद; परमज्ञ। -**कांड**-पु० वेदका वह विभाग जिनमें ब्रह्मपर विचार किया गया है।

-**कृत**-वि० जानकर किया हुआ। -**कोश**-पु० वह कोश जिनमें ज्ञातव्य विषयोंका विवरण दिया गया हो। -**गम्य**-वि० जो जाना, समझा जा सके; जो केवल हानका विषय हो सके, जानाभर जा सके (परमेश्वर)।

-**गर्म**-वि० हानमे भरा हुआ। -**गोचर**-वि० हान-गम्य। -**चन्द्र**(न)-पु० हानकी जीव, अंशद्वि। वि० हानदृष्टि रखनेवाला, विद्वान्। -**ज्येष्ठ**-वि० जो हानमें बड़ा, श्रेष्ठ हो। -**ह**-पु० गुरु। -**द्वयदेह**-पु० चतुर्थाश्रमी, सन्यासी। -**दा**-खी० मरस्वती।

-**दास**(न)-वि० हान देनेवाला। पु० गुरु। -**दात्री**-
३३-क

वि० खी० हान देनेवाली। खी० सरस्वती। -**निष्ठ**-वि० हानसाधन-श्रवण, मनन आदिमे युक्त तत्त्वविद्। -**पति** पु० गुरु; परमेश्वर। -**विपासा**-खी० हानप्राप्तिकी तीव्र आकांक्षा। -**विपासु**-वि० हानार्थी, शिशासु। -**प्रभ**-पु० एक तथामत। -**सुप्र**-वि० हानवान्, चतुर। -**सुप्र**-खी० तंत्रसारमें कथित एक विशेष सुप्र। -**बद्ध**-पु० अग्रदत्तान। -**बोश**-पु० गुरु हानकी प्राप्ति। -**लक्षण**-पु०, -**लक्षणा**-खी० विशेषण द्वारा विशेष्यका हान। -**बापी**-खी० काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थ। -**बृद्ध**-वि० हानमें बड़ा। -**साधन**-पु० हानका साधनरूप इन्द्रिय; मरस्वतत्वका साधन श्रवण, मनन आदि।

ज्ञानतः(तस्)-अ० [सं०] जानते हुए, हानपूर्वक। **ज्ञानमय**-वि० [म०] हानमे भरा हुआ; हानरूप; चिन्मय। पु० परब्रह्म; शिव।

ज्ञानांजन-पु० [म०] ज्ञानज्ञान।

ज्ञानाकार-पु० [सं०] बुद्ध।

ज्ञानापोह-पु० [म०] विसरणशीलता।

ज्ञानावरण-पु० [म०] हानप्राप्तिमें बाधक पापकर्म।

ज्ञानात्मन-पु० [सं०] योगका एक आसन।

ज्ञानी(निन्)-वि० [म०] हानवान्, जिसने आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है। पु० दैवज्ञ; कवि।

ज्ञानेन्द्रिय-खी० [सं०] विषयबोधका साधन, इन्द्रियाँ-अंश, कान, नाक, जीभ और त्वचा।

ज्ञानोद्भव-पु० [म०] हानका उद्भव, उत्पत्ति।

ज्ञापक-वि० [सं०] जतानेवाला, सूचक, बोधक। पु० गुरु; स्वामी।

ज्ञापन-पु० [म०] जनाना, बताना; प्रकट करना।

ज्ञापयिता(न)-वि० [म०] ज्ञापक।

ज्ञापित-वि० [म०] जनया हुआ, सूचित; प्रकाशित।

ज्ञाप्य-वि० [म०] जताने योग्य।

ज्ञेय-वि० [म०] जानने योग्य; जो जाना जा सके।

ज्या-खी० [म०] धनुषकी डोरी; बापके मित्रोंकी मिलाने-वाली मीधी रेखा; पृथ्वी, माता। -**मिति**-खी० रेखा-गणित, क्षेत्रगणित।

ज्यादती-खी० अधिकता; जूझ; जवरदस्ती।

ज्यादा-वि० अधिक; फाजिल।

ज्यान*-पु० दे० 'जियान'।

ज्याना*-सं० कि० दे० 'जिज्ञान'।

ज्यानि-खी० [सं०] बुद्धापा; क्षय; परित्याग; नदी; उत्प्रेरक; हानि।

ज्याकृत-खी० दे० 'जियाकृत'।

ज्यारना*-सं० कि० जिलाना।

ज्यारा*-वि० जलानेवाला। [खी० 'ज्यारी']-'मानकी दुलारी धन आनंद जीवन-ज्यारी'-वन०।

ज्यावना*-सं० कि० जिलाना।

ज्युति-खी० [म०] दे० 'ज्योति'।

ज्यू-अ० दे० 'ज्यो'।

ज्येष्ठ-वि० [सं०] सबसे बड़ा (भारी) श्रेष्ठ। पु० बड़ा भारी; जेठका महीना; परमेश्वर; सामगानका एक भेद; प्राण; दीन। -**छात**-पु० बापका बड़ा भारी। -**बळ**-खी०

सहदेव द्यौः । -वर्ण-पु० ब्राह्मण । -खजू-खी० बरी साली ।

ज्योतिष-पु० [सं०] चावलका योवन; मर्ष ।

ज्योतिष-पु० [सं०] बरे भाईका हिस्सा; बरे भाईका बपौती-में बड़ा भाग पानेका हक, जेठई ।

ज्योतिष-खी० [सं०] बरी बहिन; १८ बॉ नक्षत्र; बहू खी जो पतिको औरोंसे अधिक प्यारी हो (सा०); लक्ष्मीकी बरी बहिन, नलक्ष्मी, दरिद्रा; गंगा; विचली जंगली; छिपकली ।

ज्योतिष-पु० [सं०] गृहस्थाश्रम; गृहस्थ ।

ज्योतिष-मिन्-पु० [सं०] गृहस्थ ।

ज्योतिष-खी० [सं०] छिपकली ।

ज्योतिष-अ० जैने, जिस तरह; जिस क्षण । -ज्योतिष-अ० जैने-जैने, जिस क्रमसे । -ज्योतिष-अ० जैने-जैने, किसी तरह; कठिनाईसे । [-ज्योतिष-अ० जैने-जैने] -ही-अ० जैने ही, जिस क्षण । मु० -का ज्योतिष-जैना था बैसा ही ।

ज्योतिष-पु० [सं०] ज्योतिषिदा ।

ज्योतिष-खी० [सं०] प्रकाश, रोशनी; लौ; सूर्य; नक्षत्र; अग्नि; आँखकी पुतलीका मध्यविंदु; दृष्टि; आत्मा, चैतन्य; ज्योतिषशास्त्र; मेधा; विद्युत् ।

ज्योतिष-पु० ज्योतिषी ।

ज्योतिष-वि० [सं०] ज्योतिष, प्रकाशित ।

ज्योतिष-वि० दे० 'ज्योतिषमा' ।

ज्योतिष-ज्योतिषका समासगत रूप । -ज्योतिष-ज्योतिष-पु० जुगन् । -राज-पु० नक्षत्रमंडल, तारागण । -बीज-बीज-पु० जुगन् । -मंडल-पु० नक्षत्रमंडल ।

-क्षिण-पु० शिव; शिवके मुख्य-सौमनाथ, महाकाक, विश्वेश्वर, महिकाजुन, ओंकार, केदार, भीमशंकर, ज्यमक, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, धृगेश्वर-इन १२ किमोंमेंसे कोई । -लोक-पु० भ्रूलोका परमेश्वर । -विन्-पु० [सं०] ज्योतिषशास्त्र ज्ञाननेवाला, ज्योतिषी । -विद्या-खी० ज्योतिषशास्त्र । -दृष्टा-खी० दुर्गा ।

ज्योतिष-वि० [सं०] ज्योतिषी भरा हुआ, क्षुत्तिम ।

ज्योतिष-पु० [सं०] नक्षत्रोंमें युक्त राशिचक्र ।

ज्योतिष-पु० [सं०] ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति आदिका विचार करनेवाला शास्त्र (गणित ज्योतिष); ग्रह-नक्षत्रों आदिके शुभाशुभ फल बतानेवाला शास्त्र (फलित ज्योतिष) ।

ज्योतिष-पु० [सं०] ज्योतिष ज्ञाननेवाला; ज्योतिष पढ़नेवाला । वि० ज्योतिष-संबंधी ।

ज्योतिष-खी० [सं०] ग्रह, नक्षत्र, तारा ।

ज्योतिष-वि० [सं०] ज्योतिषशास्त्र ज्ञाननेवाला, दैवज्ञ ।

ज्योतिष-पु० [सं०] ग्रह, नक्षत्रादि; चित्रक; मेरुकी एक चोटी; मेधा; देवताओंका वह वर्ग जिसमें ग्रह-नक्षत्र, सूर्य-चंद्र आदि आते हैं ।

ज्योतिष-खी० [सं०] ज्योतिष्यती लता, मालकंगनी ।

ज्योतिष-पु० [सं०] अग्निष्टोमका संस्कार एक पक्ष ।

ज्योतिष-खी० ज्योतिष्यती ।

ज्योतिष-पु० [सं०] आकाश, अंतरिक्ष ।

ज्योतिष-वि० खी० [सं०] ज्योतिष्यती । खी० राशि;

मालकंगनी; एक नदी ।

ज्योतिष-वि० [सं०] ज्योतिष्यती, आलोक-युक्त । पु० सूर्य; ब्रह्मदीपका एक पर्वत; ब्रह्माका तृतीय चरण; प्रलयके समय उदित होनेवाले सात सूर्योंमेंसे एक ।

ज्योतिष-ज्योतिषका समासगत रूप । -रथ-पु० भ्रुव नक्षत्र एक सर्व । -रथ-पु० एक रथ ।

ज्योतिष-खी० [सं०] चौदनी; चौदनी राग; दुर्गा; सौक । -मिष-पु० चकीर । -दृष्ट-पु० दीपद ।

ज्योतिष-खी० [सं०] चौदनी रात ।

ज्योतिष-पु० [सं०] चंद्रमा ।

ज्योतिष-खी० रसोई; भोज ।

ज्योतिष-पु० आत्महत्या ।

ज्योतिष-पु० दे० 'जोहर' ।

ज्योतिष-अ० यदि, अगर । पु० जी, जान-बूझत ज्योतिष न जानकर मोचि-घन ।

ज्योतिष-वि० [सं०] ज्योतिष संबंधी ।

ज्योतिष-पु० [सं०] ज्योतिषी ।

ज्योतिष-वि० [सं०] चंद्रिकायुक्त । पु० शुद्ध पक्ष ।

ज्योतिष-खी० [सं०] पूर्णिमाकी रात ।

ज्योतिष-खी० दे० 'जैवना' ।

ज्योतिष-पु० [सं०] एक साधारण रोग जिसका मुख्य लक्षण शरीरकी गरमीका स्वाभाविकसे अधिक हो जाना है, ताप, दुखार; मानसिक कष्ट; उत्तेजना (कामज्वर) । -कुटुंब-पु० ज्वरके साथ होनेवाले उपद्रव । -ज्वर-वि० ज्वर-नाशक । पु० युद्ध; बधुआ । -विच्छिन्ना-खी० ज्वर-रोगका इलाज । -ज्वरी-खी० मंजिडा; ज्वरघ्नी ।

ज्वराकुल-पु० [सं०] एक तृण जो कुश जैसा होता है; एक औषध ।

ज्वरांगी-खी० [सं०] भद्रदतिका ।

ज्वरांतक-पु० [सं०] एक तरहका नीम; आरक्षक । वि० ज्वरनाशक ।

ज्वरा-खी० [सं०] ज्वर; * मृत्यु ।

ज्वरातिसार-पु० [सं०] ज्वरयुक्त ज्वरातिसार रोग ।

ज्वरापहा-खी० [सं०] विल्वपत्री ।

ज्वरित, ज्वरी(रिन्)-वि० [सं०] ज्वरयुक्त ।

ज्वरी-पु० दे० 'ज्वरी' ।

ज्वरलंत-वि० ज्वरता हुआ, प्रकाशमान; स्पष्ट ।

ज्वर-वि० [सं०] ज्वरता हुआ । पु० ज्वराल ।

ज्वरका-खी० [सं०] आगकी लपट ।

ज्वरलन्त-पु० [सं०] ज्वरता; चमकना, अग्नि; चित्रक; तीन-की संख्या । वि० ज्वरता हुआ; चमकता हुआ । -कण-पु० चिनगारी, स्फुलिंग ।

ज्वरनाहमा(श्मन्)-पु० [सं०] सूर्यकांत मणि ।

ज्वरित-वि० [सं०] ज्वरता हुआ; ज्वरता-ज्वरता हुआ, दीप्त ।

ज्वरिणी-खी० [सं०] सूर्य लता, मरोरफली ।

ज्वराना-वि० [सं०] ज्वर, पु० दे० 'ज्वरान' ।

ज्वरानी-खी० दे० 'ज्वरानी' ।

ज्वर-खी० खरीफकी फसलमें होनेवाला एक मोटा अनाज; चंद्रमाके आकर्षणके कारण समुद्रके जलका ऊपर

उठना, भाटाका उलटा । —भाटा-पु० समुद्रके जलका कपर उठना और फिर नीचे आना, चढ़ान-उतार ।
उच्चारि†-पु० दे० 'उच्चारि' ।
ज्वाला-पु० [सं०] ज्वाला; मशाल । वि० जलता हुआ ।
-भाळी(किन्)-पु० शब्द ।
ज्वाला-स्त्री० [सं०] आगकी लपट, अग्निसिखा; ताप, दाह; हुआ हुआ चावल (अन्न ?) । —**जिह्वा**, —**ज्वज**-पु० अग्नि ।

झ

झ-देवनागरी वर्णमालामें चव्वगका चौथा वर्ण । उच्चारण-स्थान ताडु ।
झंकना-अ० कि० दे० 'झोंखना' ।
झंकार-स्त्री० [सं०] झनझनाहट; झोंख, पायल आदिके बजनेमें होनेवाली ध्वनि; बीणा, सितार आदिकी ध्वनि; झनकार ।
झंकारना-स० कि० 'झन-झन' आवाज करना । अ० कि० 'झन-झन' आवाज होना ।
झंकारित-वि० [सं०] झंकारयुक्त । पु० झंकार ।
झंकारिणी-स्त्री० [सं०] गंगा ।
झंकारी(विन्)-वि० [सं०] झंकार या गुंजन करनेवाला; झंकारयुक्त ।
झंकुन-वि० [सं०] झंकारयुक्त, झंकार करता हुआ ।
झंकुना-स्त्री० [सं०] तारा देवी ।
झंकुति-स्त्री० [सं०] झंकार ।
झंखना-अ० कि० दे० 'झोंखना' ।
झंखाव-पु० कंठिदार झाड़ी या पौधा; ऐसी झाड़ियों या पौधोंकः मनुष्य; रबी चीजोंका डेर ।
झंगा-पु० दे० 'झगा' ।
झंगुला, **झंगुला***-पु० ढीला कुरता; बच्चोंका ढीला कुरता ।
झंगुलिया, **झंगुली**, **झंगुली***-स्त्री० दे० 'झगा' ।
झंझ-पु० दे० 'झाँझ' ।
झंझट-पु०, स्त्री० हमेला; झगडा-बलेवा; कठिनाई; परेशानी ।
झंझटी-वि० झंझटवाला (काम); झगडावू, बलेडिया ।
झंझन-पु० [सं०] झनकार ।
झंझनाना-स० कि०, अ० कि० दे० 'झंकारना' ।
झंझर-पु० दे० 'झंझर' ।
झंझरा-वि० खलरा, शीना ।
झंझरी-स्त्री० जाली; जालीदार सिक्की; जालीदार चादर; चलनी । —**झर**-वि० जालीदार, सरासदार ।
झंझा-स्त्री० [सं०] तेज हवा, अंधक; औंधी-पानी; बड़ी-बड़ी दूँरीकी वर्षा; अंधक या अंधकके साथ होनेवाली वर्षाकी आवाज; झंकार; जोड़ी हुई वस्तु । * वि० तेज, प्रबल ।
-अरुव, —**आरुत**, —**वात**-पु० अंधक; वर्षाके साथ बहनेवाली बहुत तेज हवा ।
झंझाविन्-पु० [सं०] दे० 'झंझावात' ।
झंझार*-पु० आगकी लपट, ज्वाला —“उचटि अंगार झंझार छाये”-सू ।

-झुल्ली-स्त्री० एक पीठस्थान; अग्नि, लावा आदि; लावा निकलनेका स्थान; * सुरांगना । पु० [हिं०] वह पहाड़ जिसकी चोटीके पास स्थित गर्भके कोयला, राख, अम्ला हुआ तरह पदार्थ, जलती हुई गैस आदि बाहर निकले ।
-ज्वज-पु० शिव ।
ज्वाली(किन्)-वि० [सं०] ज्वालयुक्त । पु० शिव ।
ज्वना*-स० कि० दे० 'जोहना' ।

झंझी-स्त्री० फटी कौड़ी ।
झंझोटी-स्त्री० दे० 'झिंझोटी' ।
झंझोचना-स० कि० एकद्वार झटके देना, झकझोरना; बिज्जी आदिका शिकारकी दाँतोंमें एकद्वार झटके देना, नोचना ।
झंझ*-पु० ('ज्वनेके) मुँहसे पहलेके, पैदाइशी बाल ।
झंझा-पु० बाँस या लकड़ीके डंठेके सिरपर पहनाया हुआ लिकोना या चौकोन कपड़ा जो रात्र आदिके प्रतीकके रूपमें या संकेत आदिके लिए काममें लाया जाना है, पताका, निशान । —**जहाज**-पु० वेहेके नायकका जहाज ।
-जरादार-पु० झडा के चलनेवाला । —**स्टेशन**-पु० छोटा स्टेशन जहाँ हंडी दिखानेपर ही टूटने लगे । **झुं**-**उड़ाना**-झंझा फहराना । (**किसी चीजका**)-**झपा करना**-किसी चीजके नामपर, किसी बातके लिए लोगोंकी झकड़ा करना; उनका आह्वान करना (बग़ावतका झडा लगा करना) । (**किसी जगह, दुर्ग आदिके**)-**झाड़ना** —“क”झा करना; अपने अधिकारकी घोषणा करना । —**झुकाना**-किसीकी वस्तुपर राज्य या किसी वल, संस्थाकी ओरसे शोषकपद्धति किया जाना । (**किसीके**)-(**उ**)के नीचे, —**तले आना या जमा होना**-किसीकी ओरसे लड़नेके लिए तैयार होना, एकज होना । —**तलेकी दोस्ती** —**राह चलतेकी मुलाकात** । —**पर खदाना**-बर्तनम करना ।
झंझी-स्त्री० छोटा झंडा । —**झर**-वि० जिसमें झंझी लगी हो ।
झंझू-वि० जिसके सिरपर गर्भके बाल हों, जिसका मुँह न हुआ हो; गर्भका; पनी पसियोंवाला । पु० वह बच्चा जिसके सिरपर गर्भके बाल हों; गर्भके बाल; पने पत्तोंवाला बच्चा ।
झंप-पु० [सं०] छलांग, कुदान; धोड़ोंके गलेमें पहनानेका एक गठना ।
झंपकना-अ० कि० दे० 'झंपकना' ।
झंपताल-पु० दे० 'झपताल' ।
झंपना-अ० कि० छलांग मारना, उछलना; झपटना; उठना; झेंपना; दे० 'झपना' ।
झंपरिया, **झंपरी***-स्त्री० पालकीका ओहरा ।
झंपाक-पु० [सं०] बंदर ।
झंपाकी-स्त्री० [सं०] वेदरिया ।
झंपान-पु० पहाड़की चढ़ाईमें काम आनेवाली एक तरहकी सुली डोली ।

शंषाह-पु० [सं०] बंदर ।

शंषित*-वि० ढका हुआ ।

शंषी (पितृ)-पु० [सं०] बंदर ।

शंषीला-पु० छोटा शंषी, पिटाटा ।

शंष*-पु० गुच्छा, ममूह ।

शंषकार, शंषकारा*-वि० स्वाह, दयाभरण ।

शंषराना-अ० कि० काळा पकना; मुरझाना ।

शंषा-पु० दे० 'शंषी' ।

शंषाना-अ० कि० कुछ स्वाही आ जाना; मुरझाना; आग-का जलकर नुझने लगना, कोयले, अगारेपर राख चढ़ जाना; घटना; शंषिने रगड़ा जाना । स० कि० स्वाही ला देना; आग ठंडी करना; घटना; शंषिने रगड़ना या रगड़वाना ।

शंषावना*-स० कि० दे० 'शंषाना' ।

शंषना-स० कि० ठगना, धोखा देकर, बेवकूफ बनाकर पैसों ले लेना; मिर आदिमें धोरे-धोरे तेल मलना ।

श-पु० [सं०] क्षमावात; अंधक; तेज हवाके साथ वृष्टि; बृहस्पति; दैत्यराज; 'शन-शन'की आवाज; ताल; नष्ट वस्तु ।

शह, शह*-खी० दे० 'शह' ।

शहआर-पु० मिठी डोनेका छिछला टोकरा ।

शह-खी० सनक, खप्त, पुन; बड़बड़ाहट; आँच, ताप; दे० 'शप' । वि० चमकता हुआ, शफाशफ । -केतु-पु० दे० 'शपकेतु' ।

शहशह-खी० बुझत, तकरार ।

शहशका-वि० चमकदार, चमकीला । -हट-खी० चमक ।

शहशेलना-स० कि० दे० 'शहशोरना' ।

शहशोर-पु० शहशोरनेका भाव, शहशोरा; शोंका । वि० शो केदार ।

शहशोरना-स० कि० पकड़कर जोरसे हिलाना, झटका देना ।

शहशोरा-पु० शहशोरनेका भाव, शोंका ।

शहशोरना-स० कि० दे० 'शहशोरना' ।

शहश-पु० दे० 'शहश' ।

शहना-अ० कि० बकवाद करना; बड़बड़ाना; मचलना; झगडा करना ।

शहा*-वि० दे० 'शह' ।

शहाशह-वि० खूब साफ और चमकता हुआ, चमाचम ।

शहुराना*-अ० कि० शहोरा खाना । स० कि० शहोरा । देना ।

शहुरा-पु० छोटी आंखी ।

शहोर-पु० दे० 'शहोरा' ।

शहोरना-अ० कि० हवाका शोंकेके साथ पेड़ोंकी शह-शोरते हुए बहना, शहोरा मारना ।

शहोर-पु० हवाका तेज शोंका, शटका; पेड़ोंका हवाके शोंकेसे हिलना, झुमना ।

शहोल-पु० दे० 'शहोर' ।

शह-खी०, वि० दे० 'शह' ।

शहश-पु० अंधक, तेज हवा । वि० दे० 'शह' ।

शहरी-वि० सनकी, खप्ती; बकी, बकवादी ।

शहखाना*-अ० कि० दे० 'शोखाना' ।

शह-पु० दे० 'शप' । खी० शो खनेकी किया । -केतु-पु० दे० 'शपकेतु' । -निकेत-पु० दे० 'शपनिकेत' ।

-राज-पु० दे० 'शहराज' । -खान-पु० दे० 'शहखाना' ।

शु०-मारना-बेकार काम करना, वक्त बरबाद करना; मजबूर होना ।

शहना*-अ० कि० दे० 'शोखाना' ।

शहरी*-खी० शप, मछली ।

शहगना-अ० कि० (दो आदमियोंका) झगडा करना, लडना ।

शहग-पु० दो आदमियोंका वाकलह, तकरार; बहस ।

शु०-मोल लेना-जान-बूझकर शहमें पकना; शहशा खड़ा करनेवाली बात करना ।

शहगल-वि० शहग करनेवाला, कलहप्रिय ।

शहरी-वि० खी० शहग करनेवाली ।

शहर-पु० एक गिरिया; * दे० 'शहग' ।

शहरना*-अ० कि० दे० 'शहगना' ।

शहरा*-पु० दे० 'शहग' ।

शहराऊ*-वि० दे० 'दुगडाऊ' ।

शहरी-खी० शहग, रार । वि० दे० 'शहरी' ।

शहाल*-पु० दे० 'शहा' ।

शहा-पु० (बच्चोंका) ढोला कुरता, अँगरवा ।

शहलिया, शहली-खी० शहा ।

शहर, शहर-पु० चौड़े मुँहका छोटा घना, शहर ।

शहरी-खी० फुटी बीबी ।

शहक-खी० शहकनेकी किया या भाव; दे० 'शिशक' ।

शहकन*-खी० दे० 'शहक' ।

शहकना-अ० कि० बकावक झूठ होकर बड़बड़ाने, जोर-जोरसे बोलने लगना; अडक उठना, दे० 'शिशकना' ।

शहकाना*-स० कि० किसीके शहकनेका कारण होना ।

शहकार-खी० शहकारनेकी किया या भाव ।

शहकारना-स० कि० दुनकारना; तुच्छ समझना ।

शहिया-खी० दे० 'शिशिया' ।

शह-अ० बहुत जल्द, तुरत । -पट-अ० बहुत जल्द, तुरत ।

शहका-स० कि० शटका देना; शटकारना; छीन लेना; हथियाना, घेंटना । † अ० कि० तेज चलना ।

शहका-पु० शोंकेके साथ दिया हुआ धक्का; (हवाका) शोंका; पशुधत्तिका वह प्रकार जिसमें पशुको गरदन तलवार आदिके एक ही हाथमें अलग हो जाय; आकस्मिक और चंदरोजा बीमारी, अचानक आयी हुई विपत्ति; हानि; कुदगीका एक पैच । -(के)का मांस-शहकेकी रीतिसे मारे हुए पशुका मांस ।

शहकारना-अ० कि० बीबीको हथ तरह हिलाना कि वह खल जाय और उसपर पड़ी हुई धूल आदि शह जाय, शटका देना ।

शह-खी० [सं०] गुर्रआँवला; शीघ्रता ।

शहका-अ० जल्दीसे, शटपट ।

शह-खी० [सं०] हाथी; शह ।

शब्दिका-श्री० [सं०] शशी; धुरैर्ज्योत्स्ना ।

शब्दिति-अ० [सं०] शब्दपट, दुरत ।

शब्-श्री० दे० 'शब्' ।

शब्दकना-स० कि० दे० 'शिक्षकना' ।

शब्दस्रजाना-स० कि० शब्दकना; हिलाना; फटकारना, विगडकर बोलना ।

शब्द-श्री० वह जो किसी चीज से शब्दकर गिरे; शब्दनेकी क्रिया; सुटवन; करी आधदनी । -शब्द-श्री० शब्द ।

शब्दना-अ० कि० टूटकर गिरना (पिसे पत्तों, सिरले बालों-का); बरमना; (शब्दनाईका) बजना (नौरत शब्दना); साफ किया जाना ।

शब्द-श्री० दो पक्षियों आदिकी अल्पकालिक भिक्त; शब्द-पनेका भाव, वायुद्वय; आदेश; लपट; शब्दका ।

शब्दपना-अ० कि० हमला करना, टूट पड़ना; उलझना । स० कि० शब्दकना, शब्दकेने छीन लेना ।

शब्दपा-शब्दपी-श्री० गुप्तधर्मरूपा ।

शब्दपाना-स० कि० पक्षियोंकी आपसमें लड़ाना ।

शब्दचरी-श्री० जगदी बर ।

शब्दवाना-स० कि० शब्दनेका काम कराना ।

शब्दाई-श्री० शब्दनेकी क्रिया या उन्नत ।

शब्दाका-पु० शब्द । अ० कीरन, तत्काल ।

शब्दाशब्द-अ० लगातार, शब्दीके रूपमें ।

शब्दी-श्री० लगातार शब्दना; हलकी किंतु लगातार वर्षा; शब्दीके रूपमें चलनेवाली बातें, अविनाशवाध्या (बैधना, लगना; बंधना, लगाना); तालके भीतरका खटका ।

शब्दशब्द-पु०, शब्दशब्दा-श्री० [सं०] 'शब्द-शब्द'की आवाज, शनकार ।

शब्दकार-पु० [सं०] शब्दकार ।

शब्द-श्री० धातुसदृश आधानमें उत्पन्न होनेवाली ध्वनि । -शब्द-श्री० 'शब्द'की लगातार होनेवाली ध्वनि ।

शब्दक-श्री० शब्दकार; शब्दशब्दाहट; पैरकी शब्दके साथ उठाने हुए चलना । -शब्दक-श्री० पायल आदिकी मंद, मधुर ध्वनि । -वात-पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें वे पैरकी शब्दके साथ उठाने हुए चलते हैं ।

शब्दकना-अ० कि० शब्दक होना; झुंझलाना, खीझना; पैरकी शब्दका देते हुए चलना ।

शब्दकार-श्री० 'शब्द-शब्द'की आवाज; शींगुरों आदिके बोलनेमें होनेवाली ध्वनि ।

शब्दकारना-अ० कि० 'शब्द-शब्द'की आवाज निकलना । स० कि० 'शब्द-शब्द'की आवाज पैदा करना ।

शब्दजना-वि० 'शब्द-शब्द' शब्द उत्पन्न करनेवाला ।

शब्दजनाना-अ० कि० 'शब्द-शब्द'की ध्वनि होना । स० कि० 'शब्द-शब्द' की ध्वनि निकालना, उत्पन्न करना ।

शब्दजनाहट-श्री० 'शब्द-शब्द'की आवाज; धुनधुनी ।

शब्दजन-श्री० शब्दजन । अ० 'शब्द-शब्द' ध्वनि सहित ।

शब्दिया-वि० होना ।

शब्दवाना-अ० कि० शब्दजनाना ।

शब्दाहट-श्री० शब्दजनाना ।

शब्द-अ० शब्द, दुरत ।

शब्दक-श्री० पलकोंका गिरना; पलक गिरनेमें लगनेवाला

समय, निमेष; शपकी ।

शपकना-अ० कि० पलक गिरना; शपकी लेना; शपटना; सेंपना ।

शपकाना-स० कि० बार-बार पलक गिराना ।

शपकी-श्री० हलकी, थोड़ी देरकी नींद, आँख लगना; * चकमा, थोखा ।

शपकीहूँ-वि० नींदसे शपकनेवाली (आँखें); नशेमें चूर ।

शपट-श्री० शपटनेकी क्रिया या भाव; टूट पड़ना ।

शपटना-अ० कि० किसी चीजको लेने, पकड़ने, किसी चीज-पर हमला करनेके लिए तेजी से उसकी ओर बढ़ना, टूटना, लपकना । म० कि० शपटकर छीन लेना, पकड़ लेना ।

शपटान-श्री० शपट ।

शपटाना-म० कि० शपटनेकी क्रिया कराना ।

शपट्टा-पु० शपटनेकी क्रिया । -आर-वि० शपटनेवाला, टूट पड़नेवाला (हवाई जहाज) । मु० -आरना-(बीछ आटिका) किसी चीजपर टूटना ।

शपटाल-पु० दस यात्राओंका एक ताल ।

शपना-अ० कि० दे० 'शपकना' ।

शपलैया-श्री० शैथिल्य ।

शपवाना-स० कि० 'शपाना'का प्रे० ।

शपयना-अ० कि० पेड़-पौधोंका पत्ते, टहनियाँ फेंककर बढ़ना, फैलना ।

शपाका-अ० शपट । पु० शीघ्रता ।

शपाटा-पु० शपट्टा; शपट ।

शपाना-म० कि० मँदना, (आँखें) बंद करना ।

शपित-वि० शपा हुआ, मुँदा हुआ; लुप्त ।

शपिधा-श्री० पिटाई; गलेमें पहननेका एक गहना ।

शपेट-श्री० दे० 'शपट' ।

शपेटना-स० कि० दबोचना ।

शपेटा-पु० हमला; धक्का; प्रेक्का ।

शपोला-पु० दे० 'शंपोला' ।

शप्प-पु० धप्प ।

शप्पर-पु० दे० 'शप्प' ।

शप्पान-पु० दे० 'शपान' ।

शप्पानी-पु० शपान होनेवाला ।

शबर-वि० लंबे और सख और बिखरे हुए बालोंवाला ।

शबरीला-वि० चारों ओर बिखरा हुआ (केश-समूह) ।

शबरैरा-वि० दे० 'शबरीला' ।

शबा-पु० दे० 'शब्बा' ।

शबार, शबारि-श्री० जंगल, झंझट ।

शबिधा-श्री० छोटा शब्बा; बाजूबद आदमें नीचे लटकने-वाली कटोरी ।

शब्दकना-अ० कि० चौकना ।

शब्बा-पु० शुद्धा, कुंदना ।

शमक-श्री० ठसककी चाल; 'शम-शम'की आवाज; चमक ।

शमकड़ा-पु० दे० 'शमक' ।

शमकना-अ० कि० पौधोंके गहनोंकी शनकार करते चलना; नाचना; 'शम-शम'की आवाज होना; 'शम-शम' करते हुए तेजीसे आना-जाना; सज्जा सामने आना-

‘पावक शरसी क्षमकि कै गयी शरीखे शोखि’-वि०;
चमकना; छाना; अकड़ दिखाना।

क्षमकाना-स० कि० चमकना; मटकाना; ‘क्षम-क्षम’की
आवाज करना; बुद्ध आदिमें इथिपार खटखटाना।

क्षमकरा-वि० ‘क्षम क्षम’ करके बरसनेवाला (बारक)।

क्षमक्षीका-वि० चंचल; चमकौला।

क्षम-क्षम-खी० बुँदबुँदोंके बजने या जोरने वषा होनेकी
आवाज, छम-छम। अ० ‘क्षम-क्षम’ करते हुए।

क्षमक्षमाणा-अ० कि० ‘क्षम-क्षम’ आवाज होना; चमकना।

स० कि० ‘क्षम-क्षम’ ध्वनि उत्पन्न करना; चमकाना।

क्षमना-अ० कि० झुकना, दबना।

क्षमाका-पु० ‘क्षम-क्षम’की आवाज; ठसक।

क्षमाक्षम-अ० ‘क्षम-क्षम’ करते हुए; चमकके साथ।

क्षमाट-पु० झुट्ट।

क्षमाना-अ० कि० छाना, घेरना; दे० ‘हँवाना’ (अ०
कि०, स० कि० दोनों)।

क्षमारना-स० कि० हॉवर कर देना; जलते भर देना-
‘आनंदकी घन रंग झलनि क्षमारई’-घन०।

क्षमेखा-पु० झगडा; बखेडा; संशय; भीड़।

क्षमेखिया-वि० क्षमेला करनेवाला, झगड़ा।

क्षर-पु० [सं०] क्षरना; सीता। * खी० क्षरी; क्षरी या
जलप्रवाहकी ध्वनि; ज्वाला; औंठ; तालेका कुत्ता; झुड।

क्षरक-खी० दे० ‘क्षरक’।

क्षरकना-अ० कि० झलकना। स० कि० डपटना।

क्षर-क्षर-खी० वर्षाकी क्षरी लगने, पानी या हवा बहनेकी
आवाज।

क्षरक्षराना-अ० कि० ‘क्षर-क्षर’ करते हुए बहना, गिरना,
जलना। स० कि० ‘क्षर-क्षर’की आवाजके साथ गिराना।

क्षरव-खी० दे० ‘क्षरव’।

क्षरना-पु० पड़ावसे नीचे गिरनेवाला सोना, निर्झर; छे-
दार पलटा जिनसे पुरियाँ आदि छानी जाती हैं; अनाज
छाननेकी बड़ी छलनी। † वि० झबनेवाला। * अ० कि०
जलधाराका पर्वत आदिसे नीचे गिरना; दे० ‘क्षपना’;
बजना-‘नौबत झरन चली नगमन मई रव करताछ
कपारे’-रघुराजसिंह। स० कि० बजाना।

क्षरनि-खी० दे० ‘क्षरन’।

क्षरनी-वि० खी० जिससे कुछ झड़े।

क्षरप-खी० क्षोका; वेग; चिक; म्हाारा; दे० ‘क्षप’।

क्षरपना-अ० कि० क्षोका देना; दे० ‘क्षपना’।

क्षरफ-खी० दे० ‘क्षरिफ’।

क्षरवेर, क्षरवेरी†-खी० दे० ‘क्षरवेरी’।

क्षरसना-अ० कि० दे० ‘झुलसना’। स० कि० दे०
‘झुलसाना’।

क्षरहरना†-अ० कि० ‘क्षर-क्षर’ ध्वनि करना।

क्षरहरा-वि० स्रावदार, जालीदार।

क्षरहराना-अ० कि० पत्तोंका आवाजके साथ नीचे आना,
खसकाना। स० कि० ढाल हिलाकर पत्तों आदिकी
गिराना।

क्षरहिल-खी० एक चिपिया।

क्षरी-पु० खी जाने, घुरा जानेकी क्रिया या भाव-‘सो

वन झरौं गवौ’-घन०।

क्षरा-खी० [सं०] झरना, मोता।

क्षराक्षर-अ० ‘क्षर-क्षर’ ध्वनि करते हुए; तेजीसे।

क्षरापना-अ० कि० क्षपना, हमका करना।

क्षराहृ-पु० ज्वालाधर; सूर्य।

क्षरि-खी० दे० ‘क्षरी’।

क्षरिफ-खी० चिक, परदा।

क्षरी-खी० [सं०] झरना, सीता; क्षरी; † वह कर जो
बाजारमें अपना माल ले जाकर बेचनेवालोंते बाजारके
मालिकों या ठेकेदारोंको मिले; संधि, दरार।

क्षरोखा-पु० छोटी खिबकी, गवाक्ष।

क्षरर-पु० [सं०] शोष; डिक्कि; कलियुग; एक नद;
झरना; झोखन।

क्षररक-पु० [सं०] कलियुग।

क्षरारा-खी० [सं०] बेधवा; तरा देवी।

क्षरारावती-खी० [सं०] गंगा; कटसरैया।

क्षररिका-खी० [सं०] दे० ‘क्षरारा’।

क्षररी-खी० [सं०] शोष।

क्षररी(रिख)-पु० [सं०] शिब।

क्षररीक-पु० [सं०] शरीर; देश; चित्र।

क्षरप-खी० दे० ‘क्षप’।

क्षरी-पु० एक छोटी विडिया, बया।

क्षल-पु० ज्वाला, जलन; क्षोभ; उत्कट कामना; काम-
वासना; समूह। -हावा-वि० ढाह करनेवाला,
जलनेवाला।

क्षलक-खी० चमक; आभास; क्षणिक, अथवा दर्शन
(दिखाना, मारना)। -दार-वि० चमकौला।

क्षलकना-अ० कि० चमकना; भीतरमें चमकना; दिखाई
देना; आभास होना।

क्षलकनि-खी० दे० ‘क्षलक’।

क्षलका-पु० छाल।

क्षलकाना-स० कि० चमकाना; झलकदार बनाना; *
दिखाना; आभास देना। * अ० कि० दे० ‘क्षलकना’।

क्षलज्जला-खी० [सं०] बूँदोंकी क्षरीकी आवाज; हाथीके
कान फटफटानेकी आवाज।

क्षल-क्षल-अ० साफ, पूरी झलकके साथ (-दिखाई देना)।
खी० चमक।

क्षलझलाना-अ० कि० चमकना, झलक मारना; झक
उठना, झलाना। स० कि० चमकाना।

क्षलझलइट-खी० चमक।

झलना-स० कि० (पंखा आदि) हिलाकर हवा करना;
हवा करनेके लिए हिलाना। अ० कि० हिलना।

झलमल-पु० झलमलानेकी भाव (-करना)। वि० अस्थिर
झलमलता हुआ (प्रकाश)।

झलमला-वि० झलकता हुआ, चमकौला।

झलमलाना-अ० कि० रहर-रहरकर, कमी तेज, कमी
बुँधली, हल्की रीझनी देना; रीझनीका रहर-उधर
हिलना।

झलराना-अ० कि० बटना, फैलना; † हिलना, लहराना।

झलरी-खी० [सं०] शोष।

शब्दबाना-स० कि० शब्दने वा शब्दकेना काम करना ।
 शब्द-श्री० [सं०] कन्या; वृषः कौटि, चमक । * पु०
 हल्की, थोड़ी देरकी बर्षा; शालरः पंखा ।
 शब्दाश्ल-वि० चमकता हुआ, चमाचम । अ० चमकके
 साथ ।
 शब्दाश्लक्ष-वि० चमकरार । श्री० शब्दाश्ल होनेका
 भाव ।
 शब्दाना-स० कि० दे० 'शब्दबाना' ।
 शब्दाश्ल-पु० सुनहले-रूपहले तारोंसे जुना हुआ सावनीका
 आँचल; कार-थोड़ी । वि० चमकता हुआ, चमाचम ।
 शब्दामछा-श्री० चमक-चमक ।
 शब्दि-श्री० [सं०] एक तरहकी सुपारी ।
 शब्द-पु० [म०] एक वर्णसंकर जाति; भाँस; हुडुका; ज्वाला ।
 -कंठ-पु० कन्तर ।
 शब्द-पु० [सं०] करताल; शॉस ।
 शब्दश्री-श्री० [सं०] दे० 'शब्द' ।
 शब्दरा, शब्दरी-श्री० [सं०] हुडुका; शॉस; पसीना; शुद्धता;
 सुपाराले बाल ।
 शब्दा-पु० बड़ा टोकरा; गौछार । वि० जो गाढा न हो ।
 शब्दाना-अ० कि० बहुत विग्रह जाना, झुंझला उठना ।
 स० कि० चिदानेवाला काम करना, झुंझला देना ।
 शब्दिश-श्री० [सं०] उबटनको शिल्ली; रंग, इत्र आदि
 लगानेमें व्यवहृत हुई या कपड़ेकी धञ्जी; बुति, चमक ।
 शब्दी-श्री० [सं०] एक बाजा, हुडुका ।
 शब्दर-श्री० शब्दरा ।
 शब्दारी-श्री० दे० 'शब्दर' ।
 शब्द-पु० [सं०] मछली; मगर; मीन राशि; मकर राशि;
 ताप; वन । -केतन, -केतु, -व्यज-पु० कामदेव ।
 -निकेत-पु० जलाशय । -राज-पु० मगर । -लग्न-
 पु० मीन लग्न ।
 शब्दना-अ० कि० शब्दना ।
 शब्द-पु० [सं०] कामदेव ।
 शब्द-श्री० [म०] नागबला ।
 शब्दाशन-पु० [म०] वैश ।
 शब्दोद्गी-श्री० [सं०] व्यासकी माता, मत्स्योदरी, सत्य-
 वती ।
 शब्दना-स० कि० दे० 'शब्दना' ।
 शब्दना-अ० कि० शब्दाना; सत्राटमें आना; रौमांच
 होना ।
 शब्दाना-स० कि० शब्दकार पैरा करना; बजाना । अ०
 कि० शब्दकार करना-“मनहुँ घंट शब्दानावै”-सूर ।
 शब्दरा-अ० कि० दे० 'शब्दरा' । स० कि० शिब-
 कना ।
 शब्दराणा-अ० कि० कमजोर होकर फिर पकना (पत्तों
 आदिका); शब्दाना; तिरस्कृत होना । स० कि० शब्द-
 शोना; लथेबना ।
 शब्द-श्री० छाया, परछाई; अंधेरा; प्रतिबिम्बि; थोला;
 रक्तविकारके कारण पड़ा हुआ काला धब्बा । -माई-
 श्री० बन्नीका एक खेल । -भाना-शॉलके सामने
 अंधेरा छा जाना । -बलाना-थोला देना ।

शॉस-श्री० शॉसनेकी किया (किन्तु 'ताक-शॉस' में
 व्यवहृत) ।
 शॉसना-अ० कि० आँसू, श्रोत्रो आदिसे बाहरकी वस्तु-
 को गैलना; श्वर-उत्तर देखना ।
 शॉसनी-श्री० शॉसी; कुर्मी ।
 शॉसर-पु० दे० 'शब्दाश्ल' ।
 शॉस-पु० जाळीदार खाँचा; शरीखा; अंतर-“परन न
 पायो शॉसी”-सूर ।
 शॉसी-श्री० (मजायी हुई देवमूर्तिक) दर्शन; कुछ दूरसे
 होनेवाला अपूर्ण दर्शन; ध्वस; शरीखा ।
 शॉकृत-पु० [सं०] पैरका एक पुंस्वरार गहना; झरने
 आदिके गिरनेका शब्द ।
 शॉस-पु० एक तरहका जगली हिरन; अरहर आदिका
 कठल ।
 शॉलना-अ० कि० दे० 'शॉलना'; शॉकना ।
 शॉसर-पु० शंखा; कौंटेदार श्वाभियोका समूह ।
 शॉगला-वि० डोला-डाला (बल इ०) ।
 शॉगा-पु० दे० 'शागा' ।
 शॉस-श्री० कौंटेके दो तल्लरी जैसे डुकणोंसे बना मँजीरे
 जैसा बाजा; शाल; शरारत; अभियलपन; शॉशन । -दार
 -वि० 'शन-शन' बजनेवाला ।
 शॉस-श्री० (भोंगका) नशा-‘यिसा न हो कि शॉस हो
 जाये जरा गहरी’-जिदगी० ।
 शॉसकी-श्री० दे० 'शॉस' ।
 शॉशन-श्री० पर्वमें पहननेका पोला कड़ा जो चलनेसे
 'शन-शन' बजे, शॉसदार कड़ा ।
 शॉसर-श्री० दे० 'शॉशन' । वि० जर्जर; छिद्रोंवाला ।
 शॉसरि-श्री० दे० 'शॉसर' ।
 शॉसरी-श्री० शॉस; शॉशन ।
 शॉसा-पु० फमलकी लगनेवाला एक कीड़ा; शॉस; शॉसद;
 † मेव छाननेका पौना ।
 शॉसिवा-पु० शॉस बजानेवाला ।
 शॉट-श्री० उपस्थके बाल, पशम ।
 शॉटि-श्री० दे० 'शॉट' ।
 शॉप-पु० ढकनेके काम आनेवाली चीज; बाँसका टोकरा;
 बाँसका बना खानपीश; शिबकी-धरवाजेके सामने, धूप-
 वर्षासे बचावके लिए लगाया जानेवाला दीन, लकड़ी आदि-
 का बना परदा; बन्नीका टप; बाँसकी तीलियोंका बना
 सुमियोंका दरवा; उछल झूड़ । * श्री० पर्दा, चिक;
 शपकी ।
 शॉपना-स० कि० ढकना, आवरण करना; छोप लेना ।
 अ० कि० शॉपना ।
 शॉपी-श्री० टोकरा; पिदारी; शपकी ।
 शॉविना-स० कि० शॉविसे रगड़ना (मेल छुटानेके लिए) ।
 शॉवर-श्री० नीची जमीन, ढाबर । † वि० जिसमें श्यामसा
 रंग; मुरझाया हुआ ।
 शॉवली-श्री० शल्लुक; शॉर; आँखका संकेत ।
 शॉव-पु० जली हुई ईंट जो मेल छुटानेके लिए देह रग-
 डनेके काम आती है ।
 शॉसवा-स० कि० शॉसा देना, ठगना; बहकाना ।

शॉमा-पु० पोसा, जल, दुसा । -वही-शॉ० दमराजी, दुसा ।

शॉसिवा, शॉसू-वि० शॉसा देनेवाका ।

शा-पु० मैथिल भाषाणोंकी एक उपाधि । शॉ० [सं०] जलप्रपात ।

शाई-शॉ० दे० 'शाई' ।

शाई-शॉ० दे० 'शाई' ।

शाक-पु० एक छोटा शाक जो रेतिले मैदानोंमें अधिक होता है ।

शावा-पु० फेन, गाज ।

शास-पु० जहाज-‘राम नामका शास चलायाँ अब-सागर तर आयाँ’-मीरा ।

शावाक-पु० दे० 'शगाक' ।

शाद-पु० [सं०] कुंज; शाही; पावकी पोना ।

शादल-पु० [मं०] एक तरहका लोष, घंटापादलि ।

शाटा-शॉ० [सं०] जूरी; भूव्यामलकी ।

शाटाक-पु० [सं०] गरुज ।

शाटिका, शाटी, शाटीका-शॉ० [मं०] दे० 'शाटा' ।

शाक-पु० छोटा पेड़ या पौधा जिसकी जड़में बालियों जैसे कई तने निकलकर शाकियोंकी शङ्खमें फैल जायें, छोटा, गुंजान, कैंटीला पेड़; शाककी शङ्खका फानूस जो छत या छामियानेसे लटककर जलाया जाता है और जिसमें बहुतसी मोमबत्तियाँ या बत्त एक साथ जलाये जा सकने हैं; एक आतिथ्याजी; ताँता । -खंड-पु० जगल; दे० 'हारखंड' । -शंखाक-पु० कैंटीले श्रेणी, शाकियोंका समूह; टूटी-फूटी, रही चीजें । -द्वार-वि० कैंटीला; घना । पु० एक तरहका कशीदा । -कानूस-पु० शीशेका बना रोशनी और सजावटका सामान ।

शाक-शॉ० शाकनेकी क्रिया (केवल ममासमें व्यवहृत); फटकार, भस्मना; मंत्रोपचार, मंत्र पढ़कर फूँकना । -पौंड-शॉ० सफाई । -फूँक-शॉ० शाकना-फूँकना, संतर-जंतर । -बाकी-शॉ० देनकी पूरी सफाई, देवाकी । -बुहार-शॉ० मफाई ।

शाकन-शॉ० शाकनेमें निकली हुई चीज; आकनेके काम जानेवाला कपडा ।

शाकना-सं० कि० शटकारना, धूल-गर्द साफ करना; बुहारना, शाक देना; मंत्र पढ़कर फूँकना; फटकारना, कंधी करना; (पेड़में फल) नीचे गिराना; (चिबियोंका पंख) छोड़ना; दूर करना, भगाना (शेखी, बदमाशी, घमंड) । मु० शाक-पखोड़कर देखना-जॉब-तौल करना; खर आजमाना । शाक-पौंडकर-कुल इकट्ठा करके, शाक-बुहारकर ।

शाका-पु० जामा-तलाशी; शाक-फूँक मैला, गू, शीव जानेकी इच्छा या क्रिया । मु०-किरना-मलखाग करना, शीव जाना ।

शाकी-शॉ० कैंटीने पौधों या शाकोंका समूह; एकमें मिले हुए कैंटीले पौधे ।

शाक-शॉ० सीकें, तीलियों आदिका पूला जिसमें धूल, गर्द आदिकी सफाई करते हैं, बुहारी, बढनी; पुच्छल चारा । -कडा-पु० शाक-देनका पेसा करनेवाला, बगी ।

-दुमा-पु० वह हाथी जिसकी दुम हाइकी तरह फैली हो । -बरदार-पु० दे० 'शाक कत' मु०-किरवार-कुछ बाकी न रहना, सब नष्ट हो जाना । -मारना-तिरस्कार करना, ठोकर मारना (शॉ०) ।

शापक-पु० भयक, बीरका तमाका ।

शाबर-पु० दलदल; * खोंवा ।

शाबा-पु० ठोकरा; कुप्पा; चमड़ेका गोल थाल जो पनावमें आटा छाननेके काम आता है; शाक; शम्भा ।

शाबी-शॉ० छोटा शाबा ।

शाम-पु० गहराईसे मिट्टी खोकर निकालनेवाला एक वंश; एक बरतन जो मोज आदिमें ढाल-तरकारी आदि परसनेके काम आता है; *गुच्छा; छल, धोखेवाजी; लट-बट ।

शामक-पु० [मं०] शॉर्बा ।

शामर-पु० पॉवीमें पड़नेवाला एक गहना; [सं०] टेकुआ तेज करनेकी मिट्टी । वि० दे० 'शॉवर' ।

शामी-वि० छलिया, धोखेबाज ।

शॉर्वा-शॉर्वा-शॉ० सुनसान जगहमें होनेवाली 'शन-शन' आवाज, हवाका शब्द । मु०-करना-दुना, डराना लगना ।

शार-शॉ० जलन, ज्वाला; शाल । पु० दे० 'शाक'; समूह; पोना । वि० निरा, निपटा; सब । -खंड-पु० एक पर्वतमाला जो वैष्णवधर्मे पुरीतक गयी है; छत्तीसगढ़; छोटा नागपुर । -शरस-शॉ० जलन, गरमी ।

शारना-शॉ० दे० 'शारन' ।

शारना-मं० कि० दे० 'शारना' ।

शारा-पु० शरना; सूप; पतली छनी हुई भंग; * तलाशी ।

शारि-शॉ०, वि० दे० 'शार' ।

शारी-शॉ० पानी परमने, हाथ मुंह धुलाने आदिके लिए काममें लाया जानेवाला टोटीदार बरतन, गड्ढा; * शाकी; एक खट्टा पौ ।

शार्कर-पु० [मं०] दुडुक या ढोल बजानेवाला ।

शाल-पु० शॉश; शालनेकी क्रिया । शॉ० चरपराहट, तीखापन; लहर; ज्वाला; सम्भोगकी इच्छा, वर्षाकी हावी जो कई दिन लगी रहे । वि० दे० 'शार' ।

शालक-शॉ० दे० 'शालर' ।

शालना-मं० कि० धातुकी बनी चीजकी टाँकेन जोकना; किनी चीजको ठंडा करनेके लिए बरफ या शीरेमें रखना ।

शालर-शॉ० लटकनेवाला हाथिया; किनारा; धब्बेवाला; * एक पकवान । -द्वार-वि० जिसमें शालर लगी हो ।

शालरना-मं० कि० दे० 'शालरना'; पुष्पादियुक्त होना ।

शाला-पु० राजपूतोंका एक भेद । * बकवाद-‘कादेकी

शाला लै मिलवत कौन चोर तुम छडि’-मूर ।

शालि-शॉ० [सं०] एक तरहकी खोंवी; * शरी; शाल ।

शॉर्वा-शॉर्वा-शॉ० दुज्जत, तकरार ।

शाबर-पु० दे० 'शाबर' ।

शाबु, शाबुक-पु० [सं०] शाक ।

शिंगन-पु० सारलस भाषाणोंमें एक उपाधि; एक पेड़ ।

शिंगवा-पु० दे० 'शॉगा' ।

शिंगा-पु० [सं०] तोरई ।

हिमिनी-स्त्री० [सं०] छुका एक जंगली पे।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] हिमिनी नामक वृक्ष।
 हिमिनी-स्त्री० दे० 'शगा'।
 हिमिनी-स्त्री० जालदार लिच्छी।
 हिमिनी-[सं०] जलवा हुआ बन।
 हिमिनी-स्त्री० वह वक्ता जिसके पंथमें बहुतसे छेद होते हैं और जिसमें दिया गलकर घुमाया जाता है।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] एक झाड़ी।
 हिमिनी-स्त्री० एक छुप, हिमिनी-स्त्री०।
 हिमिनी-[सं०] झींगुर, सिली।
 हिमिनी-स्त्री० एक रागिनी।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] कटहरा।
 हिमिनी-स्त्री० अ० कि० दे० 'शगना'।
 हिमिनी-स्त्री० बिचक, भटक, लज्जाजनित संकोच।
 हिमिनी-अ० कि० भय या लज्जाके कारण कोई बात कहने, करनेमें हिचकना, ठिठकना; भटकना।
 हिमिनी-स्त्री० हिमिनीके कीया या भाव।
 हिमिनी-अ० कि० दुतकारना; हिमिनी।
 हिमिनी-सं० कि० डिटना, फटकारना; तिरस्कारके साथ फेंक देना।
 हिमिनी-स्त्री० हिमिनीका भाव, डिट, फटकार।
 हिमिनी-स्त्री० दे० 'मुनमुनी'।
 हिमिनी-पुं० एक बारीक धान। वि० दे० 'हीना'।
 हिमिनी-स्त्री० शक्क, मनुष्य; दीर्घकोशिका।
 हिमिनी-अ० कि० दे० 'शेपना'; बद होना।
 हिमिनी-सं० कि० लजवाना, शर्मिदा करना।
 हिमिनी-स्त्री० दे० 'सिरे'।
 हिमिनी-सं० कि० दे० 'सिक्कना'।
 हिमिनी-अ० मंद गति में 'सिरे-सिरे' आवाजके साथ।
 हिमिनी-वि० हीना।
 हिमिनी-अ० कि० 'सर-सिरे' करते हुए बहना।
 हिमिनी-अ० कि० दे० 'सरका'। पु० छेद; दे० 'सरना'।
 हिमिनी-वि० हीना, घराबदार।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] झींगुर।
 हिमिनी-स्त्री० सधि, शरीर; वह गदा जिसमें पानी रिसकर एकट्ठा हो; पाला; [सं०] झींगुर।
 हिमिनी-पुं० पुरानी खाट जिसकी मुनाबट ढोली हो गयी या टूट गयी हो; ऐसी खाटका भाष। † वि० हीना, धोलाढाला।
 हिमिनी-अ० कि० घुपना; गुप्त होना; मगन होना; शेषा जाना। * सं० कि० हमला करना। पुं० झींगुर।
 हिमिनी-स्त्री० लोढ़का बना दोष या शिरकाण। -दोष-पुं० हिलम।
 हिमिनी-स्त्री० हिलती, रह-रहकर चमकती हुई रोशनी; हिलमिलानेका भाव। पुं० एक महीन वस्त्र। वि० हिल-मिलाना हुआ।
 हिमिनी-वि० हीना; जिसमें हिलमिलाती हुई रोशनी निकले।
 हिमिनी-अ० कि० रोशनीका हिलना, कमी चमकना, कमी न चमकना; दिमटिमाना।

हिमिनी-स्त्री० हिमिनीके कीया या भाव।
 हिमिनी-स्त्री० हिमिनी आदिमें जड़ा जानेवाला कपड़े परतरीका डींचा जो पीछे कमी हुई लकड़ीकी कीचनेसे जुलता या बंद होता है; बिक, बिलमन; एक तरहकी आली; कानमें पहननेका एक गहना।
 हिमिनी-सं० कि० शेलनेका काम करना, सहाना ('शेलना'का प्र०)।
 हिमिनी-स्त्री० झींगुर।
 हिमिनी-वि० जिसकी मुनाबट दूर-दूर हो, हीना।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] एक बाजा; झींगुर।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] झींगुर; झींगुरकी झनकार; सूर्य-प्रकाश; दीप्ति; शिखी, उबटनका मैल।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] झींगुर; सूर्यप्रकाश; दीप्ति; दीयेकी चली; रंग लगानेका कपड़ा; एक बाजा। -कंठ-पुं० पाऊरू कनूत।
 हिमिनी-स्त्री० चमके आदिनी पतली तह; बारीक छिलका; आँखका जाला; उबटन आदि लगानेमें शरीरमें छूटनेवाला मैल।
 हिमिनी-वि० जिसपर शिखी हो।
 हिमिनी-पुं० [सं०] झींगुर।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] झींगुर; सूर्यप्रकाश; उबटनका मैल।
 हिमिनी-पुं० दे० 'शोका'।
 हिमिनी-अ० कि० दे० 'शोखना'।
 हिमिनी-पुं० अन्नकी वह मात्रा जो पीसनेके लिए चक्कीमें एक बार डाली जाय; छीका।
 हिमिनी-स्त्री० 'शोखना'का भाव।
 हिमिनी-अ० कि० दुःखी होना; कुड़ना; दुःखी होना।
 हिमिनी-पुं० एक छोटी मछली जिसके मुँह और पृष्ठपर लंबे बाल होते हैं।
 हिमिनी-पुं० एक कीड़ा जिसकी आवाज बहुत तेज होती और बरसातकी रातमें अक्सर सुनाई देती है।
 हिमिनी-पुं० दे० 'शोर'।
 हिमिनी-स्त्री० नन्ही-नन्ही बूँदों में होनेवाली वर्षा, कुहार।
 हिमिनी-पुं० छीका।
 हिमिनी-अ० कि० दे० 'शोखना'।
 हिमिनी-वि० छूट, मिथ्या।
 हिमिनी-अ० कि० घुसना; घँसना-'मानहुँ सुधा सिधुमें शीत मकर पानके हेत'-छर।
 हिमिनी-वि० बहुत बारीक; दूर-दूर गुना गुना, शीशर; दुर्लभ।
 हिमिनी-पुं० एक तरहका चावल।
 हिमिनी-स्त्री० उनीचे व्यक्तिका नींदपर काबू पानेके प्रयत्नमें हुए जाना, ऊँच, लपकी, दे० 'शुम'।
 हिमिनी-अ० कि० दे० 'शुमना'।
 हिमिनी-पुं० बीब, मधुमा।
 हिमिनी-स्त्री० [सं०] झींगुर।
 हिमिनी-स्त्री० प्रकृति-निर्मित सरोवर; बहुत बड़ा ताल।
 हिमिनी-पुं० छोटी शील।
 हिमिनी-पुं० माछी, मधुमा।
 हिमिनी-पुं० जुगनू-'सूरजके आगे जै जै सुँघना दिख-हये'-सुदरदास।

ह्रस्वना-अ० कि० दे० 'ह्रीं' खाना ।

ह्रस्वक-खी० दे० कुंजलगावट ।

ह्रस्व-वि० झूठा । पु० पैग, वालोंका समूह, होंडा ।

ह्रस्वटी-खी० छोटी हाकी ।

ह्रस्वना-अ० कि० झुकी होना, संतप्त होना-अवधि गमत झक ठक मग जोवत तब एती नहिं झुकी-सुर । दे० 'ह्रस्वना' ।

ह्रस्व-पु० दे० 'युव' ।

ह्रस्वना-अ० कि० जूसना, युक्त करना ।

ह्रट-वि०, पु० दे० 'ह्रुट' ।

ह्रुट-वि० जी सच न हो, अवयार्थ, अनर्थ, मिथ्या । पु० झूठी बात, असत्य ।-ह्रुट-अ० यौही, अकारण, बेकार ।-सच-पु० कुछ झूठी और कुछ सच्ची बात, ह्रुट और सचकी खिचड़ी । मु०-का ह्रस्वतर-मनगदत बातें, ऐसा कथन जो आदिसे अंततक झूठ हो ।-का पुतला-बहुत झूठ बोलनेवाला, भारी झूठा ।-का पुक बाँधना-झूठकी झकी लगा देना, झूठपर झूठ बोलना ।-की पीठ-सरासर, आदिसे अंततक झूठी बात ।-को सच बनाना-झूठकी हम तरह कहना कि सच जान पड़े; झूठी बातको सच्ची साबित कर देना ।-सच जोड़ना या लगाना-सचमें झूठ मिलाकर कहना, झूठी शिकायतें करना ।

ह्रुठन-खी० दे० 'जुठन' ।

ह्रुडा-वि० जो सच न हो, असत्य, मिथ्या; झूठ बोलनेवाला, मिथ्याभाषी; नकली, बनाबटी; दिखाऊ (-कैर); जूठा । मु०-पड़ना-(किमी कल-पुरने या अंगका) काम देने लायक न रहना, बेकार हो जाना ।-(दे)का मुँह काळा-झूठा हर जगह जलील होता है ।-की कूज या घरतक पहुँचना या हो आना-झूठेका झूठ पक-कर, साबित करने उसे उचित करना ।-को बर पहुँचा देना-झूठेको कायल कर देना, उससे मनवा लेना कि उमने झूठी बात कही ।-पर झुंझाकी मार या कानत-झूठ बोलनेवालेका सत्यानाश हो ।-(झँ)का पीर या बाद्शाह-बहुत बड़ा झूठा ।

ह्रुटी-अ० झूठ-मूठ, यौही; दिखानेके लिए (-न पूछना) ।

ह्रुणि-खी० [सं०] एक तरहकी सुपारी; असुगुन; अमगल-सूचक आकाशवाणी ।

ह्रुना-वि० दे० 'ह्रीना' ।

ह्रम-खी० ह्रमनेकी क्रिया या भाव; ऊँच ।

ह्रमक-पु० ह्रमर; ह्रमके साथ होनेवाला नृत्य, गुच्छा; साक्षी-पुष्टके माथेपर रहनेवाले भागपर टँका मोतियों आदिका गुच्छा ।-साक्षी-खी० वह साक्षी जिसमें ह्रमक टँके हो ।

ह्रमका-पु० दे० 'ह्रमका'; दे० 'ह्रमक' ।

ह्रमव-पु० दे० 'ह्रमर' ।-ह्रमव-पु० अंबड, व्यर्थकी बात, उकोसला ।

ह्रमवा-पु० दे० 'ह्रमरा' ।

ह्रमना-अ० कि० ह्रम-वधर हिलना, होंके खाना; कहराना; (मस्ती, आनंदमें) सिर-धक्की आगे-पीछे या दाहने-बायें हिलाना; नदमें लकड़खाना । ह्रम-ह्रमकर-ह्रमते हुए, सिर-धक्की शिकाते हुए ।

ह्रमर-पु० होठोंमें जाचके साथ गाया जानेवाला एक गीत; उस गीतके साथ होनेवाला नाच; सिरमें पहननेका एक गहना, मंडकाकारमें खड़े की चुप, नावें, आदि; हलका; दे० 'ह्रमर' ।

ह्रमरा-पु० कंतीका एक टाक ।

ह्रमरी-खी० शालक रागका एक मेद ।

ह्ररना-अ० कि० सुखना ।

ह्ररा-वि० यक्षा, सुरक; खाली । * अवर्णन; कमी ।

ह्ररि-खी० जलन ।

ह्ररि-अ० व्यर्थ ही, बेकार । * वि० व्यर्थ; खाली; खाली ।

ह्ररु-खी० हाथी-घोड़े आदिकी पीठपर समाप्तके छिद्र डाला जानेवाला कपड़ा; डीला-डाछा, महा पहनावा । * पु० झुल्ला, झूलनेका साधन ।-ह्ररु-पु० दंडकी एक कसरत जो झुकते हुए की जाती है ।

ह्ररुव-पु० झूलनेका उत्सव; एक कस्ताना गाना ।

ह्ररुना-अ० कि० कटककर आगे-पीछे होना; पैग लेना; झुलेपर बैठकर वा लेटरक पैग लेना; किमी आशमें कटके रहना; समाप्त हो जाना-'मति बावरी है रही ह्ररुनै जू' वन० । पु० हिचोला; एक छंद । वि० झूलनेवाला ।

ह्ररुनी-वि० खी० झूलनेवाली ।-बराही-खी० सुपदर-की एक तरहकी कसरत ।-बैठइ-खी० एक तरहकी बैठक ।

ह्ररुरि-अ० खी० दे० 'ह्रमका' ।

ह्ररुका-पु० झूलनेका साधन, पैरकी बाक, छतकी कंधियों आदिमें बँधे हुए रस्तीके सहारे कटकता हुआ तस्का आदि, हिचोला; झटका; रस्ती, जड़ीरों आदिका बन्ना बिना खमेका पुक; एक तरहकी बिना बाँधी कुर्ती जिसे प्रायः देशातकी स्त्रियाँ पहनती हैं; झुल्ला; एक गहना ।

ह्ररुकी-खी० [सं०] दे० 'ह्रुणि' ।

ह्ररुकी-खी० वह कपड़ा जिससे, दबा बंद होनेपर, दबा करके अनाज ओपाते हैं ।

ह्ररुना-अ० कि० लजाना, शर्मिंदा होना ।

ह्ररु-वि० ह्रं पनेवाला, लज्जाशील ।

ह्ररुना-अ० कि० दे० 'ह्रं पना' ।

ह्ररु-वि० दे० 'ह्रं पू' ।

ह्ररु-खी० देर, विलंब; संशय, बहका ।

ह्ररुना-सं० कि० होलना; ठेकना ।

ह्ररुका-पु० सगडा; संशय; दे० 'ह्ररु' ।

ह्ररु-खी० होलनेकी क्रिया या भाव; हिलोरा; भक्ता; * देर, विलंब ।

ह्ररुना-सं० कि० सजना, बरदाश्त करना; ठेकना; पानी-को हाथ-पोंसे हटाना; हलकर पार करना; * मानना ।

ह्ररुनी-खी० चंदी या सोनेकी बनीर जो कानके गहनोंका गोला संभालनेके लिए बालोंमें अटकायी जाती है ।

ह्ररुकी-खी० पैग, होका; गोला; धुन, आदेश; * चोट, आपात; चाल, रंग । मु०-आरना-तौलनेमें तराजूकी ह्ररुकी दबाना, ह्ररुकी मारना ।

ह्ररुकिना-सं० कि० आगेकी ओर फेंकना; धकेलना; मट्टे, भासमें रंधन डालना, फेंकना; घुरी जगह डालना, ठेक देना; (‘‘‘में होका) उठाना, खर्च करना; (दीध) लगाना ।

ह्ररुकिना-अ० कि० दे० 'ह्रुकिना' ।

शौकिया—पु० भाव आदि शौकनेका काम करनेवाला ।
शौकियावार—स० कि० शौकनेका काम कराना ।
शौका—पु० तेज इषाका धक्का, झटका; शकोरा; तेजीमे जानेवाली चीजका धक्का; पानीका हिलोरा; * ठाढ़, चाल; मुट्टी ।
शौकाई—शौ० शौकनेकी क्रिया वा भाव; शौकनेकी उजरत ।
शौकाकार—स० कि० झुलस देना ।
शौकिया—पु० शौकनेका काम करनेवाला, शौकिया ।
शौकी—शौ० शौक, इबावटिही; जोखिम ।
शौका—पु० देक, गिह आदिके गलेसे बैलीकी शङ्कमें लटकता हुआ मास। पोसला ।
शौकल—पु० झुंझलावट ।
शौट—पु० हाकी; धुरमुट; जुट्टी; होंदा ।
शौटा—पु० लुने छे बाक; बिखरे हुए, कले, सेके, छे बाक, जटा; जुटा; * पैग । —**शौटी**—शौ० दो शिखीका परस्पर बाक खसीटने हुए लकना ।
शौटी—शौ० दे० 'शौटा' ।
शौपका—पु० पास-कूससे छावा हुआ छोटा कच्चा घर, कुटिया, मँकई ।
शौपकी—शौ० छोटा शौपका ।
शौपा—पु० क्षमा, गुच्छा ।
शौसर—पु० पेड़; आमाशय ।
शौटिव—वि०, पु० शौंटेवाला, जटाधारी ।
शौह—पु० [मं०] सुपारीका पेड़ ।
शौपका—पु० दे० 'शौपका' ।
शौपकी—शौ० दे० 'शौपकी' ।
शौर—पु० दे० 'शौक' । —**शूँ**—वि० रसेदार । शौ० रसेदार तरकारी ।
शौरना—स० कि० जोरमे हिलाना, झकझोरना; टाकली हल तरह हिलाना कि फल हल जायें; घटोरना; † छक्कर ओजन करना ।
शोरि—शौ० दे० 'शौकी' ।
शोरी—शौ० शौकी; पेड़; एक तरहकी रोटी ।

शोक—पु० रसा; कटी; कपड़ेके किसी अंशका डीठा वा नापते बहा होनेके कारण झूलना, लटकना; हल तरह लटकनेवाला अंश; मुलम्मा; * आँचल; झोट; वह शिष्टी जिसमें लिपटा हुआ बच्चा पैरा होता है, जरायु; गर्भ; राख—तेहिपर बिरह बराहके चहै उकावा शोक—पु०; जलन; † जाला । वि० डीला; निकम्मा । —**झाक**—वि० डीलाढाला । † पु० बहानेवाजी; अव्यवस्था । —**झार**—वि० जिसमें शोल हो, डीला; रसेदार ।
झोलना—स० कि० जलना ।
झोला—पु० कपड़े, किरमिच आदिका थैला; खोली, गिलाफ; चोला; लकवा, अंगविशेषपर गिरा हुआ कालिज; * शौका। झारा । **झु**—**झारना**—कालिज गिरना ।
झोली—शौ० चारों कोने बाँधकर कंधे आदिमे लटकाया हुआ कपड़ा जो झोके या बैठेका काम दे; सफरी बिस्तर; पुर, बरसा; धाँस बाँधनेका जाल; एक तरहका फँदा राख । **झु**—**झुझाना**—चीजके जल जानेके बाद उमकी राख झुझाना; करनेका समय बीत जानेके बाद कुछ करना ।
झोमट—पु०, शौ० दे० 'झमट' ।
झौं—पु० फेट ।
झौर—पु० झुंड, समूह; गुच्छा; कुंज, झुरमुट; एक गहना, झम्मा ।
झरना—अ० कि० गूँबना । स० कि० झपटकर पकड़ना ।
झरि—पु० दे० 'झौरे' ।
झोराना—अ० कि० झमना, झोके खाना; झौर होना; मरझाना ।
झोरिना—अ० कि०, स० कि० दे० 'झुलमना' ।
झोर—पु० झगड़ा, झुजल, तकरार; डोंट; अगडक; दे० 'झौरे' ।
झोरना—स० कि० झपटकर दबोच लेना ।
झोरा—पु० दे० 'झौरे' ।
झोरे—अ० पास, निकट; साथ ।
झोबा—पु० खँचिया ।
झोहाना—अ० कि० पुरतेमे आकर बोलना ।

ज

ज—देवनागरी वर्णमालामें चव्वीका पाँचवाँ वर्ण । उच्चारणस्वान तात्तु ।

ज—पु० [मं०] गायन; ध्वनि; हृष; झुक; वाममत ।

ट

ट—देवनागरी वर्णमालामें टक्कीका पहला वर्ण । उच्चारण-स्वान मूढ़ा ।
टंक—पु० [मं०] चार माथेकी एक तील; पत्थर काटने या गढ़नेकी छेनी; कुल्हाड़ी; तलवार; म्यान; पहाड़ीकी डाल; सोहागा; एक राग; क्रोध; दबी पैर; नील कपिल; भिक्का; बरार । —**टीक**—पु० सिब । —**पति**—पु० दे० 'टंकक-पति' । —**झाका**—शौ० दे० 'टंकक-झाल' ।
टंकक—पु० [सं०] चंदीका सिक्का । —**पति**—पु० टंककालका अण्डक । —**झाका**—शौ० सिबे डालनेकी जगह ।

टंकक—पु० [सं०] सोहागा; टंकी देना । —**झार**—पु० सोहागा ।
टंकक—पु० [सं०] सोहागा; टंकी देना ।
टंका—अ० कि० टंका जाना; मिल्ना; सिलाई द्वारा अटकाया जाना; लिखा जाना; सिल आदिका कुटना ।
टंकवाना—स० कि० 'टंका'का प्रे० ।
टंका—पु० चंदीकी एक पुरानी तील; तँबेका एक पुराना भिक्का । शौ० जंवा; एक रागिनी ।
टंकाई—शौ० टंकाके काम; टंकाकेकी उजरत ।

टंकानक-पु० [सं०] शङ्कृत ।
टंकाना-स० कि० भिक्षो की जाँच करना ।
टँकाना-स० कि० टोंके लगवाना; सिख आदि कुटवाना; याददातके लिए लिखवा देना ।
टंकार-झी० [सं०] भनुष्की चढ़ी हुई बोरीकी खीचकर छोड़नेसे उत्पन्न ध्वनि; धनुखँब आदिपर आपात होनेसे उत्पन्न ध्वनि; विहाइट; प्रसिद्धि; आश्चर्य; विस्मय ।
टंकारना-स० कि० भनुष्का रोदा तावकर आवाज पैदा करना ।
टंकारी-झी० [सं०] एक झाकी ।
टंकारी(रिन्)-वि० [सं०] टंकार करनेवाला ।
टंकिता-झी० [सं०] पथर काटनेकी छेनी, टोंकी ।
टंकी-झी० पानी; तेल आदि रखनेके लिए बनाया हुआ बक्सेके आकारका बड़ा पात्र; एक रागिनी ।
टंकोर-झी० दे० 'टंकार' ।
टंकोरना-स० कि० दे० 'टंकारना' ।
टंकोरी, **टँकोरी**-झी० सोना-चाँदी आदि तौलनेका छोटा तराजू ।
टंग-पु० [सं०] कुदाल, फरसा; बार माथेकी एक तौल; सोहागा; जधा ।
टंगड़ी-झी० टोंग, रैर ।
टंगग-पु० [सं०] मोहागा ।
टंगना-अ० कि० लटकना; लटकाया जाना; फाँसी चढ़ना । पु० अलगनी । **मु० टंग जाना**-फाँसीपर चढ़ना ।
टंगरी-झी० दे० 'टंगकी' ।
टगिनो-झी० [म०] पाठा ।
टंगिया-झी० छोटी कुल्हाड़ी ।
टंघ-वि० तैयार; हट-पुष्ट; कज्जु; कठोरहृदय; दुष्ट ।
टंट-वंट-पु० पूजा-पाठका आडंबर, ढोंग; (भोजनारिका) आयोजन ।
टंटा-पु० सगङ्गा, फगड, कण्ड ।
टंङक, **टंङेल**-पु० मजदूरीका मेट ।
टंङिया-झी० बाँहर पहननेका एक गहना, बहूँटा ।
ट-पु० [म०] टकार जैसा शब्द; बौना; चतुर्थांश; नारियलका खोपड़ा ।
टई*-झी० काम; काम निकालनेकी बुद्धि; ताक ।
टक-झी० एक ही ओर दैरनक लगी हुई दृष्टि; लकड़ी आदि तौलनेका चौखंटा पलका । **मु०**-**टँचना**-दृष्टि जमाकर दैरनक देखना । **-छगाना**-प्रतीक्षा करना; छाल्मापूर्ण दृष्टि देखना ।
टकटका*-पु० दे० 'टकटकी' । वि० एक जगह स्थित (दृष्टि) ।
टकटकाना*-म० कि० टकटकी लगाकर देखना । अ० कि० 'टक-टक' शब्द उत्पन्न करना ।
टकटकी-झी० निमित्तप दृष्टि ।
टकटोना*-स० कि० उंगलियोंमें छूकर किसी वस्तुका पता लगाना, टडोलना; हँदना, खोजना-'पावो नहि आनंद लेस मै सवै देश टकटोवे'-वागरीदास ।
टकटोरना*-स० कि० दे० 'टकटोखना' ।
टकटोखना-स० कि० स्पष्टते पता लगाना या जाँचना ।

टकटोइन*-पु० टडोलकर देखनेका काम ।
टकटोइन*-स० कि० दे० 'टकटोखना' । † वि० इधर-उधर टडोलता रहनेवाला (बोर, लालची) ।
टकसत्री-झी० सितार जैसा एक पुराना बाजा ।
टकराना-अ० कि० दो वस्तुओंका एक-दूसरेसे भिड़ जाना; ठोकर लग जाना; कार्यकी सिद्धिके लिए बार-बार जाना-जाना; * मारा फिरना; इधर-उधर घूमना । स० कि० दो वस्तुओंकी आपसमें लड़ा देना ।
टकसार-झी० दे० 'टकमाळ' ।
टकसाळ-झी० भिक्षोकी डळार्डका स्थान; * निर्दोष वस्तु । वि० चोखा, खरा । -**का खोटा**-नीन, कमीना ।
टकसाळी-वि० टकसाळका; प्रामाणिक; खरा; शिष्टों द्वारा अनुमोदित । पु० टकसाळका अभ्यस । -**बास**-झी० ठीक बात, पक्की बात । -**बोली**-झी० शिष्ट भाषा ।
टकहाई-वि० झी० दे० 'टकाही' ।
टका-पु० चाँदीका पुराना सिक्का; रुपया; दो पैसोंके बराबर त्रिविक्रिका सिक्का, अथवा; आधी छोटकी तौल; सबा सेरका गढ़वाली परिमाण । **मु०**-**पास न होना**-निर्धन होना । -**भर**-जरासा । -**सा जबाब देना**-साफ इनकार कर देना । -**सा मुँह छेकर रह जाना**-ऊना जाना ।
टकाटकी*-झी० दे० 'टकटकी' ।
टकाना-स० कि० दे० 'टंकाना' ।
टकासी-झी० रुपया-पीछे दो पैसोंके बिसाबने लिया गया खर्च; प्रति व्यक्त एक टकेके बिसाबने लगाया गया चढ़ावा कर ।
टकाही-वि० झी० एक-एक टकेपर अपना सतीत्व बेचनेवाली; निम्न श्रेणीकी (बेइया) । झी० दे० 'टकासी' ।
टकुआ-पु० सूत कातने और लपेटनेके काम आनेवाला सूया, तकला; मोटनीका एक पुराना; छोटे तराजूने पलड़ेमें लगा हुआ तागा ।
टकुली-झी० पथर काटनेकी छेनी; नक्काशीके काम आनेवाला एक औजार ।
टकैत-वि० टकेवाला, धनी, मालदार ।
टकोर-झी० टकोर; डंकेकी चोट या शब्द; हलकी चोट; चरपराहट; सेंक ।
टकोरना-स० कि० पीरेमें आघात करना; बजाना; डंके आदिपर चोट करना पोखनेसे सेंकना ।
टकोरा-पु० खडेकी चोट ।
टकोरी*-झी० टकरा; चोट, आघात ।
टकौरी-झी० छोटा तराजू; चाँदी-सोना तौलनेका कौंटा; टकासी ।
टक-पु० [सं०] बाहीक जातिका व्यक्ति; कंजुस आदमी ।
-देखीय-वि० बाहीकोंके देशका । पु० बधुआ नामक साग ।
टकर-झी० ठोकर, दो वस्तुओंका वेगके साथ आपसमें भिड़ जाना; मुकाबला; हानि । **मु०**-**का**-मुकाबलेका । -**खाना**-मारा-मारा फिरना; मुकाबलेका होना । -**सेलना**-बाटा सहना । -**मारना**-टैरान होना ।
टकर-पु० [सं०] शिव ।

दलना-पु० एहीके ऊपरकी हड्डीकी गाँठ ।
 टाक-झी० टकटकी-‘टग लाय रही एक पाँवके कै’-कन० ।
 टाग-पु० [सं०] छ माथाओंका एक गण ।
 टगर-पु० [सं०] सोहावा; तगरका वृद्ध; कीड़ा; मँक; टीला ।
 वि० टेंचा-ताना ।
 टहरना-अ० कि० टिथरना; दूरीमूल होना ।
 टच-टच-अ० ‘पाँव-पाँव’ करते हुए (भागका जलना) ।
 टचनी-झी० बरतनीपर नक्काशी करनेका एक औजार ।
 टटका-वि० ताजा; हालका; कीरा ।-हूँ-झी० ताजगी ।
 टटल-बटल-वि० बेसिर-पेरका; कटपटाग ।
 टटाना-अ० कि० सुल जाना; सुलकर अकनना ।
 टटाबली-झी० कुररी ।
 टटिया-झी० बॉस आदिकी टट्टी ।
 टटीबा-पु० थिरनी; चक्कर ।
 टटीरी-झी० कुररी ।
 टट्टा-पु० टट्ट ।
 टटोरना-स० कि० दे० ‘टडोरना’ ।
 टटोल-झी० टडोलनेकी क्रिया या भाव ।
 टडोलना-स० कि० डंगलियोंने छुकर पता लगाना, दवा-
 कर छूना; बागीचाप द्वारा विचारका पता लगाना;
 आजमाना ।
 टडनी-झी० [सं०] छिपकली ।
 टडुर-पु० रखा या पतरेके किप लगाया हुआ बॉस आदिकी
 फट्टियोंका पल्ला ।
 टडुरी-झी० [सं०] टड्डा; डींग; झूठी बात; एक राजा,
 डोल ।
 टड्डा-पु० बड़ी टट्टी ।
 टडी-झी० छोटा टट्टर या पल्ला; पतला शीशा; जोड़,
 पटना; पत्थरी दीवार; अंगूर चढ़ानेके काम आनेवाली
 बॉसकी फट्टियोंकी दीवार; शिकार खेलनेकी आड़; पाखाना;
 बारातमें निकाली जानेवाली हुलबारीका तख्ता । मु० -
 की आकसे शिकार खेलना-छिपाकर चाल चलना, गुप्त
 रीतिमें विरह कार्य करना । -की ओट बैठना-छिपे
 तीरपर कोई कार्य करना । -में छेद करना-सुलेआम
 कुकर्म करना, निर्लज्ज हो जाना ।
 टडुर-पु० [सं०] नगारेका शब्द ।
 टडू-पु० छोटे कदका पोका । मु० -पार होना-
 काम निकल जाना ।
 टडिया-झी० बाँहपर पहननेका एक गहना ।
 टन-पु० [अ०] लगभग २८ मनका एक अंगरेजी परिमाण ।
 झी० [हिं०] घटे, घातके बरतन या डुकड़ेमें उत्पन्न शब्द ।
 -टन-झी० घटा बजनेका शब्द । मु० -हो जाना-
 झटपट मर जाना ।
 टनकना-अ० कि० ‘टन टन’ बजाना; धूप लगने आदिके
 कारण सिरमें दर्द होना; रह-रहकर पीड़ा होना ।
 टनटनाना-स० कि० घंटा, घातके बरतन या डुकड़ेमें ‘टन-
 टन’की ध्वनि निकालना । अ० कि० घटे आदिका ‘टन-टन’
 बजना ।
 टनमन-पु० आदू-दोना । वि० दे० ‘टनमना’ ।
 टनमना-वि० स्वस्थ, चंगा; सतेज; प्रसन्नचित्त, हरी-परी

तबीबतका ।
 टनमनाना-अ० कि० मला-चंगा होना, स्वस्थ होना ।
 टना-पु० मग; मगका एक भाग ।
 टनाका-वि० तेज (धूप) । † पु० धंटेकी आवाज ।
 टनाटन-पु० लगातार घंटा बजनेकी आवाज । वि० ठीक
 हालमें, पुष्ट । अ० ‘टन-टन’ आवाजके साथ ।
 टनेक-पु० [अ०] पहाड़ या नदीके नीचेसे निकाली गयी
 सुरंग; जमीनके भीतर रहनेवाले जानवरों द्वारा खोदा हुआ
 मार्ग; चिमनीका बक्का चोंगा ।
 टनाना-अ० कि० ‘टनटन’ आवाज करना । दे० ‘टिन्नाना’ ।
 टप-झी० बूँद । फल इत्यादिके गिरनेका शब्द; टमटम
 आदिकी छतरी जो बच्चानुसार फैलायी या मोड़ी जा
 सकती है । -से-झटपट, बहुत जल्द ।
 टपक-झी० टपकनेकी क्रिया या भाव; बूँदोंके गिरनेका
 शब्द; रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा ।
 टपकन-झी० रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, डीम ।
 टपकना-अ० कि० बूँद-बूँद गिरना; एक फलका आपसे
 आप गिरना; किसी भावका आभासित होना, झलकना;
 मुग्ध होना; बाध आदिमें रह-रहकर पीड़ा होना । मु०
 टपक पड़ना-किसी वस्तुका सहसा ऊपरसे गिरना; दूट
 पड़ना; अकस्मात् आ जाना ।
 टपका-पु० बूँद-बूँद गिरना; टपका हुआ फल आदि; रह-
 रहकर होनेवाली पीड़ा; चौपायोंका एक रोग, सुरपका ।
 - (के)की पिघा-छीन-झपटकर कानेकी पिघा ।
 टपका-टपकी-झी० फलका एक-एककर गिरना; बूँदा-बाँदी;
 कुछ लोगोंका महामारी आदिसे रोज मरना । वि० कोई-
 कोई, एक-आप ।
 टपकाना-स० कि० बूँद-बूँद गिरना, चुलाना ।
 टपका-अ० कि० बिना खाये-पीये पका रहना; व्यर्थ किसी-
 के भरोसे बैठा रहना; कूदना । † म० कि० लपटना;
 डकना ।
 टपरा-पु० घास-फूस, धान आदिमें छाया छोटा घर,
 झोपड़ा-‘दीनबाले टपरीके सामने चौड़ा मैदान था’-
 अमर० ।
 टपरिया-झी० झोपड़ी, मँडैया-‘जित गयी प्रभु मोरी दूदी
 टपरिया हीरा मोनी लाल कन’-मोरा ।
 टपाटप-अ० ‘टप टप’की आवाजके साथ; लगातार; शीघ्रता
 से; एक-एक करके ।
 टपाना-म० कि० बिना खिलाये-पिलाये रखना; झूठ-मूठ
 हरान करना, व्यर्थ आसरेमें रखना; † कुदराना, खँवाना ।
 टप्परा-पु० छप्पर; छाया ।
 टप्पा-पु० उछलनी हुई वस्तुका बीच-बीचमें पृथ्वी छूना;
 बह फासला ब्रह्महत्तक कोई चीज पहुँचने; फलोंग; एक तरहका
 गाना जिसमें तानकी प्रधानता होती है; † अंतर; टिकान
 जहाँ पालकीके कटार बदलते हैं; भड़ी सिलाई । मु० -
 मारना-दूर-दूर सिलाई करना ।
 टब-पु० [अ०] खान आदिके कामका पानी रखनेका एक
 बड़ा बरतन, कड़ाह ।
 टमकी-झी० मुगदीकी डुब्बी ।
 टमटम-पु० [अ० ‘टैम’] दो पहियोंकी एक खुली गाड़ी

जिममें एक बोका बीटा जाता है।

दमटी—खी० एक बरतन।

दमस—खी० तमसा नदी।

दमादर—पु० [अ० 'दोमेटो'] विलायती बैंगन।

दमुकी—खी० दे० 'दमकी'।

दर—खी० कड़ु शब्द; मेड़की बोली; अकड़, बर्मड़; बर्मड़की बात; कड़ु बोधी बात; जोका शब्द; बकनाद; ईदके दूसरे दिनका मेला। **मु०**—**दर करना**,—**दर लगाना**—बक-बक करना, दिखाईसे बोलते हो जाना।

दरकना—अ० कि० खिन्नक जाना; * कर्कश स्वरसे बोलना।

दरकाना—स० कि० खिसका देना; टाल देना; चलता करना; बहाना करके लौटा देना।

दरकी—पु० [पु०] एक मुली जिसके गलेके नीचे मांसकी लाल झालर होती है; एक देश, तुर्की।

दरदराना—अ० कि० अह-वह बकना, लगातार बेमतलबकी बातें बकना।

दरना—अ० कि० दे० 'दलना'।

दराना—अ० कि० हटना, टलना।

दर्-दर्—खी० मेड़की आवाज।

दर्रा—वि० पेंडकर बातें करनेवाला; अविनयपूर्वक कठोर उत्तर देनेवाला; कड़ुभाषी; उद्दृष्टतासे बोलनेवाला; उग्रबुद्धि। **दर्रीना**—अ० कि० गर्वसे साथ बात करना; सीधे न बोलना; कड़ु बचन कहना।

दरू—पु० टरा आश्रम; मेड़क; कौआ।

दरु, दरुन—पु० [म०] पक्काघट, विहङ्गता।

टलना—अ० कि० विचलित होना; खिसकना; अलग होना; अपने-अपने हुटना, सरकना; मिटना; खलिन होना; अन्वधा होना; अपने-अपने समय आदि निश्चित होना, स्थगित होना; व्यथित होना।

टलमल—वि० हिलता हुआ।

टलाटली—खी० टालमटोल, बहानेबाजी।

टवाई—खी० व्यर्थ धूमना।

टस—खी० भारी वस्तुके हटनेकी आवाज; कपड़े आदिके फटनेकी आवाज। **मु०**—**से मस न होना**—बीड़ा-सा भी न किलना; कहने-सुननेसे बीड़ा-सा भी प्रभावित न होना।

टसक—खी० रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, टीस।

टसकना—अ० कि० किसी भारी चीजका अपनी जगहमें हटना; चले जाना, खिसक जाना; टोलना; प्रभावित होना।

टसकाना—स० कि० किसी चीजको अपनी जगहसे हटाना।

टसर—पु० एक तरहका कफा और मोटा रेशम।

टहका—खी० टीस, कसक।

टहकना—अ० कि० टिचलना; रह-रहकर दर्द करना।

टहना—पु० पेड़की डाली।

टहनी—खी० पतली और लचीली उपसाखा।

टहरना—अ० कि० दे० 'टहलना'।

टहल—खी० मेवा, शुभ्रभा; चाकरी।—**टहल**—खी० सेवा-शुभ्रभा। **मु०**—**बजाना**—मेवा करना।

टहलना—अ० कि० मनोविनोद या स्वास्थकी दृष्टिसे धीरे-धीरे चलना, धूमना, मंद गतिसे अग्रगण्य करना; मर जाना।

मु० **टहल जाना**—नुपचाप चला जाना।

टहलनी—खी० दासी, नौकरानी; विरागकी बत्ती लसकानेकी लकड़ी।

टहलाना—स० कि० डुबाना-फिराना, सैर कराना, हवा खिलाना; धीरे-धीरे चलाना; हटा देना।

टहलुभा, टहलुवा—पु० दे० 'टहल'।

टहलुई—खी० दे० 'टहलनी'।

टहल—पु० खिरमत करनेवाला, चाकर, सेवक।

टहका—पु० चुटकुला; पत्थरी।

टहोका—पु० हाथ या पैर न दिवा जानेवाला थका।

टोक—पु० [म०] एक तरहकी झराब।

टौक—खी० चार मांशेकी एक तौल; जौंच; हिस्सा; * लिखावट; लेखनीकी नौक; कटोरा—'ठहिने माछ रूपके टौका'—प०।

टौकना—स० कि० सिलाई द्वारा जोड़ना या अँटकाना; सिलाई करके एक वस्तुको दूसरीपर ढग करना; हलकी सिलाई करना; बहीपर चढ़ाना; सिल कूटना।

टौकर—पु० [सं०] लपट; कुटना।

टौका—पु० वह वस्तु जिसके द्वारा दो वस्तुमें जोड़ी जाय; धातुकी चर जोड़नेका काम आनेवाला कौंदा; नौबन; धाबकी सिलाई; विष्पी; डोम; जोड़ (धातुका); एक तरहकी कील; होत्र; कडाल। **मु०**—**भारना**—दूर-दूरपर सिलाई करना।

टौकर—पु० [सं०] टंकोर।

टौंभी—खी० पत्थर काटनेकी छेनी; तरबूज आदिपरका चौंशोर कटाव; काटकर बनाया हुआ छेद; आरीका दौंन; गाव; मूजाक आदिका धाव; होत्र; कडाल।—**बँड**—वि० (वह जोड़ाई) जिसमें कीली आदिके द्वारा पत्थर जोड़े गये हों।

टौंग—खी० जौंचे लेकर पड़ीतकका भाग, वह अंग जिसके सहारे प्राणी चलने-फिरते हैं; कुपतीका एक पैर। **मु०**—**अबाना**—बिना अधिकारके किसी काममें हस्तक्षेप करना, बाधा डालना, दखल देना।—**उठाना**—जल्दी-जल्दी चलना; प्रसंग करना।—**तलेसे निकलनी**—पराजय स्वीकार करना।—**पसारकर सोना**—पेखंडके सोना; निर्दंड होकर चैनसे दिन बिताना।

टौंगन—पु० छोटे करका बोझ।

टौंगना—स० कि० खँटी या अलगनी जैसे जौंचे आधारसे अटकाना, लटकाना; फाँसी देना।

टौंगा—पु० कुल्हाड़ा; दे० 'टौंगा'।

टौंगी—खी० कुल्हाड़ी।

टौंगन—खी० बाजरे जैसा छोटे दानेका एक अनाज जो भावन-भादोंमें तैयार होता है।

टौंगन—पु० दे० 'टौंगन'।

टौंच—खी० ऐसी बात जिसमें बनता हुआ काम बिगड़ जाय, आँबी; टौंका; सिलाई; पैरद; * काट-छाँट। **मु०**—**भारना**—कार्यनाशक बातें कहना।

टौंचना—स० कि० टौंकना; मिलाई करना; काट-छाँट करना।

टौंका—खी० फुला-फुला फिरना।

टौंची—खी० रुपये रखवात कमरमें बाँधनेकी पैली, बसनी;

भीजी।

टॉड-वि० कड़ा; दण्ड; बलवान्; † गाढ़ा।

टॉड-वि० कड़ा; दण्ड; पुष्ट।

टॉड-श्री० सामान रखनेके लिए बनी हुई लकड़ीकी पाटन या जलमारी जैसा ढाँचा; मचान; बाहुपर पहननेका एक गढ़ना। पु० समूह; राशि; टॉड; बरौकी कतार; † गुल्ली खेलनेका डबा; गुल्लीपर डडेकी चोट।

टॉड-पु० बैलौपर लदी हुई व्यापारकी वस्तुएँ; ऐसी वस्तुओंने लदे हुए बैलोंका झुंड; व्यापारियोंका समूह; परिवार; लकड़ीका एक कीड़ा; * लंदन एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जानेवाला माल।

टॉडी-श्री० टिडु।

टॉड-टॉड-श्री० 'टै-ड'का कर्कश शब्द; बकवाद। मु० - किस-कंभी बातें, पर परिणाम कुछ नहीं; भ्रम-वामसे काम शुरू करना, पर अंतमें कुछ न हो सकना।

टॉस-श्री० नसोंमें तनावके कारण होनेवाली क्षणिक पीड़ा।

टॉसना-स० कि० जोड़ना, टँकना; रंगेसे बरतनका छेद बंद करना।

टा-श्री० [सं०] पृथ्वी; शपथ।

टाइडल-श्री० [अ०] उपाधि (जैसे-बी० ए०, एम० ए० आदि); शीर्षक। -वेज-पु० पुस्तकका सबसे ऊपरका पृष्ठ।

टाइप-पु० [अ०] छपाईके काम आनेवाला मीनेका डल्ला अक्षर। -फांस्टिंग मशीन; -फाउंड्री-श्री० टाइप डालनेकी मशीन। -राइटर-पु० वह छोटी मशीन जिसके द्वारा कागजपर टाइप जैसे अक्षर छापे जाते हैं।

टाइपिस्ट-पु० [अ०] टाइपराइटर द्वारा छापनेवाला व्यक्ति।

टाइम-पु० [अ०] समय; काल। -टेबुल-पु० वह कागज जिसपर भिन्न-भिन्न कायोंके लिए नियत समय लिखा हो, समयपट्टी। -पीस-श्री० मेज आदिपर रखनेकी एक प्रकारकी थली जो बिना बने समय बताती है।

टाई-श्री० [अ०] अंगरेजी पहनावेमें गलेसे लटकाने जानेवाली कपड़ेकी पट्टी।

टाउन-पु० [अ०] कनवा। -हॉल-पु० शहरकी वह इमारत जिसमें सरकार या जनतासे संबंध रखनेवाली समारोह या बैठकें हों, नगरमन्चन।

टाकर-श्री० ताकना, टकटकी; जगना।

टाकू-पु० तक्का, टकुआ।

टाट-पु० विछाने या परदेके काम आनेवाला सन या पट-सनका मोटा कपड़ा; (ला०) मोटा कपड़ा; बिरादरी, महाजनकी राई। -बाऊ-पु० टाट बुननेवाला; कपड़ोंपर सोने-चाँदीके काम करनेवाला। -बाऊ-श्री० कलबत्तुका काम; टाट बुननेका काम। -भूता-पु० कामदार जूता। मु० -डलटना-दिवाला निकलना। -पर भूँजका बखिया-जैसी भरी चीज जैसी ही सजावट। -बाहर होना-बिरादरीने बहिष्कृत होना। -मैं पाटका बखिया-बेमेल सजावट।

टाटर-पु० दे० 'टटर' * ठठरी, खोपड़ी।

टाटा, सर जमशेदजी-पु० प्रसिद्ध व्यवसायी और उद्योग-पति। 'टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी लिमिटेड'के आग

ही वास्तविक प्रतिष्ठाता थे (१८१९-१९०४)।

टाटिका-श्री० टट्टी।

टाटी-श्री० छोटा टट्टर; टट्टी।

टाठी-श्री० थाली।

टाथ-पु० मुबापर पहननेका एक आभूषण।

टान-श्री० खिंचाव, तनाव; खींचनेकी क्रिया; सितार बजानेका एक तरीका। पु० मचान।

टानना-स० कि० खींचना।

टाप-श्री० घोड़ेके पाँवका सबसे नीचेका भाग, सुम; घोड़ेके पाँवके पृथ्वीपर पड़नेने उठी आवाज; चारपाईके पायेका नीचेका उमरा हुआ भाग; मछली पकड़ने, मुगियोंकी बंद करनेका टोकरा या खाँचा। मु० -देना-छलाँग मारना।

टाप-पु० ऊसर मैदान।

टापना-अ० कि० दे० 'टपना'; टाप मारना; ताकते रह जाना। † स० कि० कूद जाना, लौटना।

टापा-पु० मैदान; उछाल; झाबा; * टोका, तिलक-'राम नाम जाँगी नहीं आये टापा दीन'-साखी। मु० -देना-फलाँग मारना।

टापू-पु० पृथ्वीका वह भाग जो चारों ओरसे जलसे घिरा हो, द्वीप।

टाबरी-पु० लकड़ा।

टामक-पु० डुब्नी।

टामन-पु० देना, टोटका।

टार-पु० [म०] बोझ; लौढा; कुटना; † एक तरहका हल जिसमें बीज गिराते जानेके लिए चोभी लगी रहती है; † श्री० डेर, राशि।

टारना-स० कि० दे० 'टालना'।

टारपीडो-पु० [अ०] एक स्वतः चलनेवाला विध्वंसक पन-डुब्बी जहाज जो दूसरे जहाजन टकराने की फट जाता है और टकरानेवाले जहाजमें छेद कर देता है।

टाह-श्री० पुआल आदिका पुत्र, भटाला, लकड़ीकी दुकान; टाहनेकी क्रिया। पु० कुटना। -टूह, -मटाल, -मटूह, मटोह-श्री० बहाना; टरकानेकी क्रिया।

टाहना-स० कि० किसी वस्तुकी उसके स्थानमें हटाना, लिसकाना; टरकाना; व्यभिचर कर देना; * हटाना; व्यनीत करना; उम्मताना; उलंघन करना। मु० टाह देना-दूर कर देना; बहाना कर देना, टरकाना; (ला०) नाश करना; किसी कामको दूसरे समयके लिए रूख छोड़ना; समय निर्धारित करना। किसीपर टाह देना-समय बिताना; अपनी जान बचाते हुए दूसरेका निदेश कर देना।

टाली-श्री० बेल आदिके गलेकी घंटी; तीन वर्षसे कम उम्रकी बछिया जो बहुत उछलती-कूदती हो।

टास्टराह, कार्टड लिओ-पु० १८५८-१९१०, रूसी उप-न्याय-लेखक तथा समाज-सुधारक।

टाहली-पु० मेवक, नौकर।

टिचर-पु० [अ० 'टिचर'] घुरासार (अल्कोहल)की जमीन-पर तैयार की गयी औषधका सार, एक एलोपैथिक औषध।

टिटिनिगा-श्री० [सं०] अंधशिरोंषिका; जोक।

टिड, टिड-पु० एक फल जो तरकारीके काम आता है।

दिक्खि-पु० [सं०] टिडिंका फल ।

टिकट-पु० महसूल या कर चुकानेपर प्राप्त कागजका वह टुकड़ा जिससे विवेक, लाटरी, ट्रेन आदिमें प्रवेशका अधिकार प्राप्त होता है, प्रवेशपत्र; विशेष प्रकारका कर या फीस; स्ट्यां । -घर-पु० (पुर्बिम आफिस) रेलके स्टेशनका या सिनेमा, सर्कस आदिके अहातेका वह स्थान या कमरा जहाँ गानोंमें बैठने, सरकस आदिमें प्रवृत्त होनेका अनुमतिपत्र ऐसा देकर प्राप्त किया जा सकता है ।

टिक-टिक-खी० घड़ीकी आवाज; घोंघा हाँकनेका संकेत ।

टिकटिकी-खी० टकटकी; अपराधीको बाँधकर बेल लगानेके लिए बना हुआ डोंचा; फाँसी देनेका तरलता, टिकठी ।

टिकठी-खी० फाँसीका तरलता; तिपारी; * अरधी ।

टिकड़ा-पु० चिपटा, गोल टुकड़ा; धातु, पत्थर या लकड़े आदिका छोटा टुकड़ा; अर्धपर सैकी हुई बाटी ।

टिकड़ी-खी० छोटा टिकना ।

टिकना-अ० कि० उहरना; थोड़े समयके लिए बास करना; लहना; विशेष अवधितक काम देना; स्थित रहना; जमना; बुझने डटना ।

टिकरी-खी० एक नमकीन पकवान; टिकिया ।

टिकली-खी० छोटी बिंदी; टिकिया; तकली ।

टिकस-पु० कर ।

टिकाऊ-वि० टिकनेवाला, कुछ दिनोंतक बना रहनेवाला ।

टिकान-खी० टिकनेकी क्रिया; पकाव ।

टिकाना-स० कि० उहराना; बासके लिए स्थान देना; अहाना ।

टिकिया-खी० ठोम पदार्थका गोल, चिपटा टुकड़ा; एक मिठाई; नवाकू पीनेके लिए कीयलेन बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा; बिंदी ।

टिकुरी-खी० तकली ।

टिकली-खी० तकली; चमकी, बिंदी ।

टिकैन-पु० युवराज, राजकुमार जो राजके बाद तिलकका अधिकारी हो; सरदार ।

टिकोरां-पु० आमका कच्चा छोटा फल, अंबिया ।

टिकड़-पु० बाटी, भगाकरी; बड़ी टिकिया ।

टिकी-खी० टिकिया; बाटी; अँगूठे आदिका किसी रंगमें बना हुआ निशान, ताशकी बूटी ।

टिख-टिख-खी० दे० 'टिक-टिक' ।

टिखलना-अ० कि० पिघलना, ठोसने द्रवरूपमें परिवर्तित होना ।

टिखलाना-स० कि० पिघलाना ।

टिचन-वि० उबल, तैयार; दुस्त, ठीक ।

टिट-खी० हठ, टेक-‘टिट टारिके डारि गुपाल्लो हाय हवाल हमै कहनोई परयो’-रत्नाकर ।

टिटकारना-स० कि० ‘टिट-टिक’ शब्द करके थोड़े आदि-को चलनेके लिये प्रेरित करना ।

टिटिह-पु० दे० ‘टिट्टिम’ ।

टिटिहरी-खी० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया । (कहा जाता है कि वह आकाशके गिरनेके भयसे डरके ऊपर करके सोता है ।)

टिटिहा-पु० दे० ‘टिट्टिम’ । -रोर-पु० शोरगुल; रोना-

पीटना ।

टिट्टिम-पु० [सं०] नर टिटिहरी ।

टिट्टिमा-खी० [सं०] टिट्टिमकी मादा ।

टिट्टिमी-खी० [सं०] दे० ‘टिट्टिमा’ ।

टिट्टा-पु० एक पदार्थ कीड़ा ।

टिट्टी-खी० एक पत्तार लाल रंगका कीड़ा जो फसलको हानि पहुँचाता है । -बुल्ल-पु० बड़ा झुंड ।

टिट्टिगा-वि० बेदीली, टेढ़ा-मेढ़ा ।

टिब-पु० दे० ‘टीन’ ।

टिबाना-अ० कि० क्रुद्ध होना; (शिक्षक) उचैत्रित होना ।

टिब-खी० सर्पदंशका एक प्रकार ।

टिपका-पु० हट ।

टिपकारी-खी० रंटी आदिकी जोड़ाईके संस्थानपर सोमेट या बरीका समाला लगाना ।

टिपटाप-वि० जीवनके हर क्षेत्रमें-बेशर्मा, रहन-सहन आदिमें-नियम और व्यवस्थाका कड़ाईसे पालन करनेवाला (आदमी) ।

टिपटिप-खी० हँटनेके गिरनेका शब्द ।

टिपबाना-स० कि० दबवाना; प्रहार कराना; लिखवाना ।

टिपारा-पु० मुकुटके आकारकी एक टोपी ।

टिपूर-पु० डोंग; घमंड ।

टिप्पणी, टिप्पनी-खी० [सं०] संक्षिप्त टीका ।

टिप्पन-पु० जन्मकुडली; दे० ‘टिप्पणी’ ।

टिप्पन-खी० बुद्धि, उपाय; प्रयोजन-मिदिका डंग ।

टिप्पी-खी० अंगूठे आदिका किसी रंगमें बना हुआ निशान ।

टिमटिमाना-अ० कि० क्षीण प्रकाशके साथ जलना; मरनेके करीब होना ।

टिमाक-खी० बनाव, शृंगार ।

टिफिस-खी० विरोध; टिठार ।

टिरीना-अ० कि० दे० ‘टरीना’ ।

टिचवा-पु० टिगना या चापलूस अयमी; † दे० ‘टीला’ ।

टिछा-पु० पक्षा, ठोकर । -(हले) नबीमी-खी० निठलापन; बहाना ।

टिटुका-खी० चमक; चौकन; रुठनेकी क्रिया ।

टिटुडनार-अ० कि० चौकना; रुठना । * वि० रुठनेवाला ।

टिटुनी-खी० कुहनी; घुटना ।

टीहमी-खी० एक फल जिसकी तरकारी बनती है ।

टीकी-खी० टिट्टी ।

टी-खी० [सं०] चाय । -गार्डन-पु० चायका बगीचा । -पार्टी-खी० चायकी दावत ।

टीक-खी० गले या मिरका एक गहना ।

टीकन-पु० बूनी, चोंई ।

टीकना-स० कि० टीका या तिलक लगाना; उँगलीमें रंग लगाकर निशान बनाना ।

टीका-खी० [सं०] व्याख्या । -कार-पु० किसी ग्रंथकी व्याख्या करनेवाला ।

टीका-पु० तिलक, मस्तकपर चंदन या रीली आदिका उँगलीमें बनाया हुआ चिह्नविशेष; विवाहके पूर्वकी एक रस; कर्लक; युवराज; राजतिलक; मत्तमक रोगने बचनेके लिए खूँ द्वारा शरीरमें औषध प्रविष्ट करनेकी क्रिया;

सिरका एक आभूषण; * किसी कुल या समुदायका सर्वभेद पुरुष; भेद, नजदानी। **सु०** -**कपडा**-**मुंडन** या यही पवीतके अवसरपर सम्बन्ध किये जानेवाले लकड़की टीका करके द्रव्य देना; श्राव्यमें सिद्ध चरण करना। -**कलाक** -**ललाटपर चंदन** आदिते चिह्न करना; यहाँ द्वारा औषध प्रविष्ट करना।

टीकी-**खी०** टिकुली, चिदी -**काजल टीकी हथ सव** त्यागा, त्याग्यो छै भौषन जुधो -**मोरा**।

टीच-**पु०** [अ०] कलई की हुई लोकी चर; कनखर।

टीष-**खी०** ह्वाये दवानेका काम; हलका आघात; इतेंके जोशीपर लगाये गये मसालेकी लकड़ी; ऊँचा स्वर; तार-समकमेंसे किसी एकपर अल्पकालीन ठहराव; जन्मपत्री; हुँडी; गच्छी पिढाई; टोंक छेनेकी क्रिया। -**टाच**-**खी०** ठाढ़-बाढ़, मजावड; छत, दीवार आदिची छिद्रकुट सरम्मत।

टीपन-**पु०** जन्मपत्री। **खी०** पट्टा, गाँठ।

टीपना-**स०** कि० ह्वाये या उंगली-न दवाना; हलका आघात करना; तारखरमें गाना; टोंक छेना; टिपकारी करना। † **खी०** जन्मपत्री।

टीषा-**पु०** भीटा, टीला।

टीम-**खी०** [अ०] खेलाचियोंका दल।

टीम-दाम-**खी०** तबक-भरक।

टीला-**पु०** ऊँची जमीन, इह, मिट्टी या बावला ऊँचा डेर, छोटी पहाड़ी।

टीस-**खी०** रह-रहकर उठनेवाली जोरकी पीड़ा, कसक।

टीसना-**अ०** कि० रह-रहकर पीड़ा होना।

टुंग-**पु०** पहाड़की गोल चोटी -**मदनमहलकी छौहमें दो टुंगोंके बीच**। जमा गरी कई लाखकी दो सोनेकी ईंट।

टुंगना-**स०** कि० (चौपायोंका) दबनीके पत्तो, छोटे पीपी-की ऊपरसे काटना; थोका-थोका काटकर खाना।

टुंच-**वि०** कमीना, नीच; तुच्छ।

टुंटा-**वि०** सुड़ा, जिसके हाथ न हों; टूँटा।

टुंडक-**पु०** [स०] एक पक्षी; काला खैर, रसोणाक नामका वृक्ष। **वि०** क्रूर; अल्प।

टुइल-**खी०** एक सती कपडा।

टुक-**वि०** थोका, तनिक; अल्प। **अ०** थोका, जरा।

टुक-**वि०** 'टुक'का समासगत रूप। -**खोर**-**वि०** टुकका मोंगर जोनेवाला। -**गवा**-**वि०** घर-घर रोटीका टुकका मोंगनेवाला। **पु०** मंगता। -**गवाह**-**खी०** टुकका मोंगनेका काम। -**तोच**-**वि०** दूसरेके अरीसे जोनेवाला। **पु०** आश्रित व्यक्ति।

टुक-**पु०** किसी वस्तुका एक खंड; (ला०) अड़न। **सु०** -**सोच जवाब देना**-**साफ-साफ इनकार कर देना**, दो-टुक जवाब देना। -**तोड़ना**-**दूसरेके दिचे कुछ मोहनसे गुजर करना**। -**मोंगना**-**मोंख मोंगना**। -**सा जवाब देना**-**दो-टुक जवाब देना**।

टुकरी-**खी०** छोटा टुकड़ा; छोटा झुंड या समुदाय; सैनिकोंका छोटा दल, 'कंपनी'।

टुकरी-**खी०** दे० 'टीकनी'।

टुकर-टुकर-**अ०** टकटकी लगाकर।

टुका-**पु०** टुकड़ा; चतुर्धास।

टुकी-**खी०** छोटा टुकड़ा; चतुर्धास।

टुपला-**स०** कि० मुँहमें रखकर नुभलाना।

टुका-**वि०** मीच, कमीना; पुष्ट।

टुटका-**पु०** दे० 'टीटका'।

टुटनी-**खी०** शाश्वती टीट।

टुटुचिया-**वि०** कम पूँजीवाला; थोड़ी विधा, धन आदिवाला।

टुटई-**पु०** पेंडुकी नामक चिड़िया। -**हूँ**-**खी०** पेंडुकीकी बोली। **वि०** अकेला; अशक्त।

टुपी-**खी०** नाभि; ठोपी; टुकरी; छली।

टुनगी-**खी०** फुनगी।

टुनहा-**वि०**, **पु०** जादू देना करनेवाला। [**खी०** 'टुन-हाई', 'डुनिहाई'।]

टुनाका-**खी०** [सं०] तालमूली, मुमली।

टुना-**पु०** तरकारी आदिका वह छठल जिसमें फल लगकर लटकते हैं।

टुपकना-**स०** कि० धीरेसे काटना या डंक मारना; झगका लगानेवाली बान धीरेसे कह देना।

टुरी-**पु०** दाना; कण, टुकड़ा।

टुंगना-**स०** कि० दे० 'टुंगना'; कुतरना।

टूँच-**पु०** जौ, गेहूँ, चान आदिसे बालमें ऊपरकी ओर निकला हुआ चुकीला भाग; मच्छर आदि कीशोंके मुँहके आगे सूँझकी तरह निकली हुई पतली नली।

टूँकी-**खी०** गार मूली आदिकी नौन; लकी नौक; जौ आदिके डानेके ऊपरका चुकीला हिस्सा।

टूहर-**वि०** (बह बचा) जिसकी माँ मर गयी हो।

टूका-**पु०** टुकड़ा, खंड।

टूका-**पु०** दे० 'टुकड़ा'; चतुर्धास।

टूट-**वि०** टूटा हुआ, खंडित। **खी०** भूल, चूक, कुटि -**'टूट मैवारडु मेरवडु मजा'** -**प०**।

टूटार-**वि०** जिसके हिस्से अलग-अलगकर एकमें मिला देनेसे पुनः सम्यो वस्तु तैयार हो जाय, मोहरार, कोहिडम, सफ़ी (मेक, कुरल ४०)।

टूटना-**अ०** कि० भग्न होना, खंडित होना, दो टुकड़े हो जाना; हड्डियोंके जोड़का अलग हो जाना; गतिका एक जाना; वेगसे किसी ओर झपटना, सहना आक्रमण करना; च्युत होना; सवध न रहना; कम हो जाना; अंगकाईके साथ पीड़ाका उठना; फलीका तोड़ा जाना; अनायास कहींसे आ पड़ना; कुश होना; धनहीन होना। **सु०** **टूटकर बरसना**-**मूलधार वर्षा होना**। **टूट जाना**-**बंद हो जाना**; चलना रुक जाना; गदका कंधेमें आ जाना; दुर्बल या शक्तिहीन होना। **टूट पड़ना**-**अचानक आ जाना**; ऊपरसे नीचे गिरना।

टूटा-**वि०** खंडित। [**खी०** 'टूटी'।] -**फूटा**-**वि०** जर्ण-शीर्ण; (ला०) साधारण कोटिका; सजावटसे रहित।

-**(टी)फूटी**-**वि०** **खी०** जर्ण-शीर्ण; अस्पष्ट, असंबद्ध, (कात)।

टूटना-**अ०** कि० संतुष्ट होना; प्रसन्न होना।

टूटनि-**खी०** संतुष्टि; प्रसन्नता।

टूस-**खी०** जेवर, गहना। -**दाम**-**खी०** वस्त्राभूषण,

साज-नगर ।

दूरनाम-दे-पु० [अं०] लेखनी प्रतिनीतिता ।

दूर-पु० एक तरफका कनी कपडा ।

दूराना-पु० मुकीकी कली; डोंडा ।

दूरसी-ली० दे० 'दूरता' ।

दूर-ली० तोतेकी मोली । -दूर-ली० बकनाद, व्यर्थकी बात । सु०-बोछना-चटपट मर जाना ।

दूरिका-ली० [सं०] तालका एक मेढर ।

दूरकी-ली० [सं०] एक शुद्ध रंग; एक तस्विका नृत्य ।

दूराना-ली० एक मछली ।

दूरार, दूरार-ली० दे० 'दूराना' ।

दूर-ली० योगीकी मुरी; कपासका फल वा डोंडा; करीलका फल; पशुओंका एक घास; पु० दे० 'दूर' । सु० (कान्तीके)-पर सिद्ध की बिंदी (बुंदेल)-कुरूप लोका अपनी सुंदरता दूर करनेके प्रयत्नमें और अधिक अशुद्ध बन जाना; और भी मदी लगनेवाली चीज ।

दूरार-पु० बिकारके कारण आँखमें लमड़ा हुआ मांस ।

दूरदा-पु० एक पक्षी ।

दूरार-पु० दे० 'दूर' ।

दूरिहार-वि० झगड़ादू; दंड, बनेका लड़ा करनेवाला ।

दूरि-ली० करीलका फल । वि० झगड़ादू; बिकचिषा ।

दूरि-पु० लोनापाडा ।

दूरिपी-ली० एक बेल जिसके फल तरकारीके काम आते हैं ।

दूरकन-पु० दे० 'दूरकी' ।

दूरकी-ली० वह वस्तु जो किमी वस्तुकी छुड़कनेसे रोकनेके लिए उनके नीचे लगायी जाती है ।

दूर-ली० धूनी, महारा; चबूतरा; दीला; मंकल्प; हठ; आगन; गीतका स्थायी पद; * आश्रय, अवलंब । सु०-निबाहना-मकलकी पूरा करना । -पकड़ना-आग्रह करना, हठ पकड़ना ।

दूरकन-पु० अड़काव, टेकनी; धूनी ।

दूरकन-पु० कि० धर्म लेना; महारा लेना; महारेके लिए कोई वस्तु पकड़ना; * महन करना; हठ पकड़ना ।

दूरनी-ली० वह चीज जिसका सहारा दिया या किया जाय ।

दूरर, दूरार-पु० कंधी भूमि, बूझ; छोटी पहाड़ी ।

दूररी-ली० दे० 'दूरर' ।

दूरला-ली० धुन, रटन ।

दूरान-पु० दूर, धर्म, धूनी; वह ऊँचा चबूतरा जिसपर मोहा डीनेवाले अपना मोहा रखकर झुमताते हैं ।

दूराना-सं० कि० सहारा देना; हाथका सहारा देना, धामना ।

दूरानी-ली० घुरीकी कोल जो पहियेकी गिरनेसे रोकती है; बेलगाड़ीके पीछेकी जोर लटकनेवाली वह लंबीसी लकड़ी या धूनी जो गाड़ीकी उछल जलनेसे रोक, दूर ।

दूरि-वि० धर्मप्रतिष्ठ; हठ; आग्रही ।

दूरि-पु० तकला; सहारेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी, बादि ।

दूरि-ली० तकली; रेशम फँसानेकी फिरकी; बमारोंका

तागा खींचनेका धागा; मूर्तिका लक चिकना करनेका एक औजार ।

दूर-वि० दे० 'दूर' । ली० देडपन; उग्रपुन; दुष्टता ।

-बिईगा-वि० देडा-मेडा ।

देडा-वि० बक, झुका हुआ, कुटिल; बँका; कठिन, दुःसाध्य; पेचीदा; अलस, विमरहित, सर्वद, घरे स्वभावका । -दूर-ली० देडा होनेका भाव, देडपन । -पल-पु० दे० 'देडाई' । -मेडा-वि० जो सीधा न हो, बकता लिये हुए । सु०-पकना-कसाईने बात करना ।

देडी-वि०, ली० दे० 'देडी' । -लीर-ली० कठिन काम ।

सु०-सीधी सुनाना-बरा-मला कहना ।

देडे-अ० तिरछे । सु०-देडे आना-घमंड करना, हतराना ।

देना-सं० कि० पथर आदिपर बार तेज करना; मूँछके बालोंकी पेंटना ।

देखिल-पु० [अं०] रबके गैरकी जालीदार छंटेसे भारनेका एक अंगरेजी खेल ।

देवी-ली० छोटी डंगली । सु०-आरना-(तीरा) कम नदनेके लिए तराजूकी लकीकी डंगलीसे दबा देना; कम तोलना ।

देखिल, देखल-पु० [अं०] मेज; नकशा । -छाव-पु० मेजपोश ।

देम-ली० दीयेकी ली । पु० [अं०] 'दाश्न' ममय ।

देर-ली० पुकार, बाँका ऊँचा गायन; दूरसे पुकारनेका शब्द । वि० [सं०] बैचाताना ।

देरक-वि० [सं०] बैचाताना ।

देरना-सं० कि० तार खरमें गाना; पुकारना, दूरसे बुलावा; मददके लिए पुकारना; बिताना, काटना; पूरा करना ।

देरा-पु० अंकील; तर्ना, शाखा । वि० ली० [सं०] बैचाताना ।

देलीग्राम-पु० [अं०] बिष्टुदे शीघ्र समाचार भेजनेका एक साधन, तार ।

देलीग्राम-पु० [अं०] तार द्वारा भेजी गयी खबर ।

देलीपिथी-ली० [अं०] दूसरीकी भावनायें जाननेकी मानसिक क्रिया ।

देलीप्रिटर-पु० [अं०] वह पंच जिसमें तार द्वारा प्राप्त खबर सत्य दाख हो जाता है ।

देलीकोटोग्राफी-ली० [अं०] दूरबीन द्वारा चित्र लेना ।

देलीकोन-पु० [अं०] वह पंच जिसमें तारके संबंधसे दूरके शब्द व्योके त्यों सुनाई देते हैं ।

देलीविज्ञान-पु० [अं०] व्यवधान रहते हुए भी दूरकी वस्तुकी देखनेकी क्रिया ।

देलीस्कोप-पु० [अं०] दूरबीन ।

देब-ली० लत, आदल, स्वभाव । सु०-पकना-आदत पब जाना ।

देवना-सं० कि० दे० 'देना' ।

देवना-पु० पार तेज क नेवाला ।

देवुणा-पु० दे० 'देव' ।

देव-पु० पलाशका फूल; * लकड़ीका एक खेल ।

दोह-पु० [अ०] कपडोंमें काम जानेवाली मोटरकार जैसी गाड़ी जो तोप आदिते लैस और छोटेकी मोटी चरते दबले रहती है।

दोही-वि०, स्त्री० चंचल (स्त्री)-'नाक चढ़ाईरें चौकत दोही'-धन०।

दोहस-पु० [अ०] कर, महसूल, टिकन।

दोहसी-स्त्री० [अ०] किरानेपर चलनेवाली मोटर-कार।

दोहलेट-पु० [अ०] छोटी टिकिया।

दोँका-पु० छोर, नोक।

दोँकना-स० क्रि० गड़ना; गोदना। पु० उलाहना; ताना।

दोँट-स्त्री० चोंच।

दोँदनी-स्त्री० जलपात्रमें लगी हुई टोंटी।

दोँटा-पु० पानी गिरानेकी टोंटी; दे० 'टोंका'।

दोँटी-स्त्री० बरतन आदितें लगी हुई पानी गिरानेकी नली; ध्वन।

दोह-स्त्री० दोकनेकी क्रिया, रोक; पूछ-ताछ। -**टाक**-स्त्री० पूछ ताछ।

दोहना-स० क्रि० चलते समय यात्राके विषयमें पूछ-ताछ करना; किसी बातकी याद टिकाना; अशुद्धिपर बोल उठना; खतराज करना। पु० हडा; दोकरा।

दोहनी-स्त्री० दोकरी; देगनी; छोटा हंडा।

दोकरा-पु० बनी दोकरी; झावा, खौंचा।

दोकरी-स्त्री० घास, कल, लरकारी आदि रखनेका बाँस या झाड़ आदिका बना गोल, गहरा पात्र, खेचिया।

दोट-स्त्री० दोटा, कमी (हुटि)-'घासकी न दोट है'-धन०।

दोटक-पु० दे० 'दोटका'।

दोटका-पु० दोना। -(क)हाई-स्त्री० दोना करनेवाली।

दोटा-पु० कारतूस; बाँस आदिका टुकड़ा; घाटा, कमी।

दोहरमल-पु० अकबरके अर्थमन्त्री।

दोहा-पु० पुराने दमके मकानोंमें दीवारमें गाड़ा जानेवाला विशेष बनाबटका पथर या लकड़ीका टुकड़ा जो आगे बढ़ी हुई छाजनकी रोकके लिए लगाया जाता है।

दोही-स्त्री० एक रागिनी, शेरव रागकी स्त्री।

दोन-'दोना'का समासगत रूप। -**हा**-पु० दे० 'दोन-हावा'। -**हाई**-स्त्री० दोना, तत्र-भन करनेवाली स्त्री।

दोना-पु० दोना, जादू करनेवाला।

दोना-पु० जादू, दोटका; * एक शिकाई पक्षी। स० क्रि० डेगलियोसे दवाकर या छूकर मालूम करना, दबोचना।

दोप-पु० बही दोपी; शिरकाण, लोहेकी दोपी; † बूँद।

दोपना-पु० दोकरा।

दोपा-पु० बही दोपी; शिरकाण; † दोकरा।

दोपी-स्त्री० सिरका एक पहनावा; गोल और गहरा टकन; धातुका गहरा टकन जिसपर बड़के बोरेके गिरनेसे आग लगती है; शिकारी जानवरकी आँखपर लगानेकी पट्टी।

-**दार**-वि० दोपीवाली (बदूक); जिसमें दोपी लगाकर काम लिया जाय; जिसमें दोपी लगी हो। -**बाख**-वि०, पु० जिनके सिरपर दोपी हो; अगरेज; यूरोपियन।

दोस-पु० टोंका।

दोस-स्त्री० कदारी, कटार।

दोसका-स० क्रि० लौटना।

दोरा-पु० दूत तौलनेका तारा; दे० 'दोरा'।

दोरी-स्त्री० दे० 'दोबी'। पु० [अ०] नेम्स द्वितीयके निष्कासन तथा १८३२ के 'रिफार्म बिल'का विरोध करने-वाले उस (सुधार-विरोधी) दलका सदस्य जिसका स्थान बादकी कन्स्टिट्यूशनमें लिया।

दोह-स्त्री० दल, समुदाय, झुंड; टुकड़ा, रोड़ा; पाठशाळा।

पु० एक राग; [अ०] वादियों आदिपर लगनेवाला एक कर। -**कलेक्टर**-पु० वह कर बसूल करनेवाला व्यक्ति।

दोहा-पु० छोटी बस्ती; महल; एक पेशे या जातिवालों की बस्ती।

दोली-स्त्री० छोटा महल; मंडली; झुंड; सिल।

दोह-स्त्री० खोज, अनुसंधान; पता; देख भाल। **सु०**-में रहना-स्त्री०, किराकमें रहना। -**लगाना**, -**लेना**-पता लगाना।

दोहना-स० क्रि० खोजना, सुराग लगाना; दबोलना।

दोहाड़ा-स्त्री० खोज, छान-बीन; देख-भाल।

दोहिया-वि०, पु० पता लगानेवाला, दोह लगानेवाला; सुफिया।

दोही-वि०, पु० दे० 'दोहिया'।

दोहिक-वि० शरारती।

दोस-स्त्री० अयोध्याके पश्चिममें निकलकर बलियाके पास गंगामें गिरनेवाली एक नदी जिसका प्राचीन नाम तमसा है।

दोषिक-वि० पेदू।

दोनहाल-पु० दे० 'टाउनहाल'।

दोरिया-स्त्री० छोटी पहाड़ी, बने-बडे पथरोंवाला टीला।

अबूधेल-पु० [अ०] दे० 'अलकूप'।

दूक-पु० [अ०] लोहे या टीनका कपडे आदि रखनेका सटूक।

दूप-पु० [अ०] ताशके खेलमें नियत किया हुआ रंग जिससे बने पत्ते काटे जाते हैं।

दूक-स्त्री० [अ०] भारी माल ढोनेकी चार या छ पहियों-की गाड़ी।

दूस्ट-पु० [अ०] दूसरेके लाभार्थ सपत्तिका प्रबंध सौपना; ऐसी सपत्तिका काम उठानेका अधिकार।

दूस्टी-पु० [अ०] बह व्यक्ति जिन पक्षी लिखा-पढ़ी करके प्रबंधके लिए सपत्ति सौंपी जाय।

दामफर-पु० [अ०] बदली, तबादला।

दाउस्की-पु० रुसकी बोलचालीका फ्रांसीसी एक प्रमुख नेता जो बादमें रुससे निर्वासित कर दिये गये थे। मेक्सिकोमें उनकी हत्या कर डाली गयी (१८७७-१९३७)।

दाम-स्त्री० [अ०] बने-बडे शहरोंमें विजलीकी शक्तिसे चलनेवाली बड़ी गाड़ी। -**बे**-स्त्री० दामकी लाइन।

दूष-पु० [अ०] सेनिकोका दल; साठ पुस्तकारोंका दल जिसमें दो लेफ्टिनेंट और एक कप्तान हो।

दूष-स्त्री० [अ०] बुद्ध स्वर्णित करनेकी अस्पृश्यानी संधि; विराम-संधि।

दूह-वि० [अ०] कार्यविशेषके लिए शिक्षा पाया हुआ, प्रशिक्षित।

टुङ्गुर-पु० [अ०] खमापी, कीपाप्यङ्ग ।

टुङ्गुरी-खी० [अ०] खजाना । -अक्रसर-पु० खजानेका अक्षर ।

टुङ्गेडी-खी० [अ०] विषादांत नाटक ।

टुङ्गमार्क-पु० [अ०] किसी व्यापारा द्वारा अपने मालपर लगाया गया विशेष चिह्न ।

टुङ्गिख मशीन-खी० [अ०] छापनेकी छोटी मल जिसे एक स्थाति चलाता है ।

टुङ्ग-खी० [अ०] रेखवाड़ी ।

टुङ्गिग-खी० [अ०] कार्यविशेषकी शिक्षा, प्रशिक्षण । -काछेज-पु० कार्य विशेषकी शिक्षा देनेका कालेज । -स्कूळ-पु० वह शिक्षालय जिसमें टुङ्गिगकी पढ़ाई होती है ।

ठ

ठ-देवनागरी वर्गमाकारें टवर्गका दूसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान मूढा ।

ठंड-वि० बिनकी डालियाँ और पत्तियाँ मूख या कटक गिर गयी हों, टूटना ।

ठंडनाना-स० कि० 'ठ-ठ'की ध्वनि निकालना । अ० कि० 'ठ-ठ'की ध्वनि निकलना ।

ठंडार-वि० रिक्त, शून्य; छुँछा ।

ठंडी-खी० पीटनेके बाद बालमें लगा अन्न । वि० खी० ठंड, (गाय या मैम) जो बच्चा और दूध न दे ।

ठंड-खी० सरनी, जाड़ा ।

ठंडक-खी० दे० 'ठंड' ।

ठंडा-वि० सर्द, शीतल; सुखा हुआ; बेरौनक, भीहत । -ई-खी० दे० 'ठंडाई' ।

ठंड-खी० दे० 'ठंड' । -ई-खी० दे० 'ठंडाई' ।

ठंडक-खी० दे० 'ठंड'; (ला०) सुख, तृप्ति; सतोष, शांति ।

ठंडा-वि० दे० 'ठंडा' । -ई-खी० तरी पहुँचानेवाली औपचारिक; पेयविशेष । -मुलम्मा-पु० सोने-चाँदीका मुलम्मा जो बिना आँचके चढ़ाया जाय । - (दे)ठंडे-अ० आरामसे, धूप कड़ी होनेसे पहले; आनन्दपूर्वक; लुपचाप ।

मु०-करना-क्रोध शांत करना । -पबना-क्रोध शांत होना; आवेशरहित होना । -होना-मर जाना ।

ठंडी-वि० खी० दे० 'ठंडा' । -आग-खी० पाला । -साँस-खी० दुःखभरी साँस । मु०-साँस लेना-आह भरना ।

ठ-पु० [सं०] शिव; भारी शब्द; चंद्रमंडल; शून्यस्थान ।

ठक-खी० काठपर काठ बजानेका शब्द; * हठ । वि० भीचका, स्थब्ध । -ठक-खी० मनमुटाव, झगडा; 'ठक-ठक' शब्द । मु०-हो जाना-स्तब्ध हो जाना, भीचका हो जाना ।

ठकठकाना-स० कि० 'ठक-ठक'की ध्वनि उत्पन्न करना । † अ० कि० भीचका हो जाना ।

ठकठकिया-वि०, पु० ससट खड़ा करनेवाला, छोटीसी बातपर विवाद करनेवाला ।

ठकडीया-पु० कर्ताल; कर्ताल बजाकर भीख माँगनेवाला ।

ठकुरही-खी० दे० 'ठकुराई' ।

ठकुरसुहाती-खी० व्यक्तिविशेष या स्वामीकी प्रिय लगने-वाली बात, चापलूसी, चाडकारिता ।

ठकुराहूत-खी० दे० 'ठकुराहत' ।

ठकुराहूना-खी० स्वामिनी; ठाकुरकी स्त्री; * रानी; नारीकी पत्नी; क्षत्रियकी स्त्री ।

ठकुराई-खी० स्वामित्व, प्रभुता; शासनाधीन प्रदेश, राज्य;

मभमानीपन; उच्चता; ठाकुरपन; क्षत्रिय; स्वामी या जमींदार होनेका रोबदाव ।

ठकुरानी-खी० जमींदार, ठाकुर या सरदारकी स्त्री; रानी; क्षत्रियकी पत्नी ।

ठकुराव-पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।

ठकुरावत-खी० प्रभुता, स्वामित्व, अभीश्वरता; शासनाधीन प्रदेश ।

ठकोरी-खी० सवार लेनेकी एक विशेष लकड़ी ।

ठकर-खी० दे० 'ठकर' ।

ठकुर-पु० [सं०] देवता; देवप्रतिमा; मैथिल ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

ठग-पु० धोखा देकर लूटनेवाला; धोखेबाज आदमी; धूर्त, बचना करनेवाला । -हूँ-खी० धोखेबाजी; ठगनेकी क्रिया । -पना-पु० ठगवाई; ठगनेकी क्रिया; धूर्तता ।

-सूरी-खी० ठगनेकी गरजसे बेहोश करनेके लिए सुँघाई जानेवाली एक जड़ी । -भोवक-पु० नशीली वस्तुओंमें युक्त मोदक जिसे खिलाकर ठग पथिकोंको बेहोश करते थे ।

-काहू-पु० दे० 'ठगमोदक' । -बिद्या-खी० धोखा देनेका हुनर । -हारी-खी० ठगपना । मु० -

पना करना-धूर्तताकी चाल चलना ।

ठगण-पु० [मं०] पाँच मासिक गणोंमें से एक ।

ठगना-स० कि० धोखा देकर लूटना; दगाबाजी करना, बचना करना, धोखा देना, छलना; धाड़कोंमें अधिक दान लेना । * अ० कि० ठगा जाना; धाखा खाना; दग रह जाना ।

ठगनी-खी० ठगनेवाली स्त्री; ठगकी स्त्री; कुटनी ।

ठगबाजा-स० कि० दूसरे द्वारा धोखा छिलवाना ।

ठगहाई, ठगहारी-खी० दे० 'ठग'में ।

ठगाई-खी० ठगपना ।

ठगाढगी-खी० ठगपना, छल-कपट ।

ठगाना-अ० कि० धोखा खा जाना, मुलावेमें आकर किसी वस्तुका अधिक मूल्य दे देना । स० कि० दे० 'ठगवाना' ।

ठगाही-खी० ठगपना ।

ठगिन-खी० धोखा देनेवाला स्त्री, दगाबाज स्त्री; ठगकी पत्नी; कुटेरिन ।

ठगिनी-खी० दे० 'ठगिन' ।

ठगिवा-पु० ठग ।

ठगी-खी० ठगनेकी क्रिया; ठगका पेशा; ठगपना ।

ठगरी-खी० मोहित कर देनेवाली क्रिया, याद; वेग ।

ठट-पु० वस्तुओं अथवा लोगोंका अभाव; एकत्र हुए लोगों-

की वक्ति, समुदाय, जीव, डाढ़, सज्जत् । -कीका-वि० भवकरार, सजा हुआ ।

कटवा-अ० कि० कटना; अकना। पिरोपमें किल रहना; सज्ज होना । स० कि० सजाना; तैयार करना; निर्धारित करना। छेड़ना ।

कटनि-अ० सज्जज; तैयारी; बनान ।

कटरी-अ० ढाँचा; शरीरका ढाँचा, बूसा रखनेका जाल; करी । कु० -होना-अत्यंत कुर होना ।

कटवारी-अ० कट्टी-मुरली मधुर चैपकर कौपी मोरचंद्र कटवारी-छा ।

कट्ट-पु० दे० 'कट' ।

कट्टी-अ० कटरी ।

कट्टई-अ० ईंसी, परिहास ।

कट्टा-पु० शिलबाक; परिहास । -(कट्ट)बाज़-वि० रिछगी-बाज । कु० -आरना-छगाना-ठठारक हँसना ।

कट्ट-पु० दे० 'कट' ।

कट्टई-अ० दे० 'कट्टई' ।

कटकना-अ० कि० दे० 'कटकना' ।

कटनारी-अ० कि० (कॉटे, तीर आदिका) चुमकर रह जाना, गड़ जाना; दे० 'कटना' ।

कटरी-अ० दे० 'कटरी' ।

कटना-स० कि० आघात करना; जोरने पीटना । अ० कि० अट्टास करना, जोरने हँसना ।

कटिरि-अ० दे० 'कटिरि' ।

कट्टुआ-अ० कि० दे० 'कटकना' ।

कट्टे-पु० धातुके बरतन बनानेवाला। कटेरा । कु० -(रे) की चिकली-दोड़, पेना ब्यक्ति जिसपर किसी बातका प्रभाव न पड़े । -कट्टे कट्टाई-जोड़-तोड़का व्यवहार ।

कट्टे-अ० कट्टेकी की ।

कट्टे-अ० कट्टेका काम; कट्टेकी की । -बाज़ार-पु० वह बाजार जहाँ अधिकतर दुकानें कट्टेकी हों ।

कट्टे-वि० मसकरा, भविक परिहास करनेवाला । पु० परिहास करनेवाला; परिहास ।

कट्टेकी-अ० ईंसी, मजाक, परिहास ।

कट्टा, कट्टा-वि० खरा, पीषा स्थित ।

कट्टिया-पु० ऊँचा ओखल; † दोरीका एक रोग जिसमें वे दिनों-दिन मूलते जाते हैं; एक साग, मरसा ।

कट्ट-अ० धातुके टुकड़े, बरतन या रुपयेके बजनेकी आवाज ।

कट्ट-अ० तबला; बुरंग आदिकी ज्वनि; टिस ।

कट्टकना-अ० कि० 'कटन' करके बजना; संका उत्पन्न होना; बक बककर पीषा होना ।

कट्टक-पु० दे० 'कटक' ।

कट्टकना-स० कि० धातुखंड या तबला आदि बजाकर शब्द उत्पन्न करना । (रुपया कटका केना-रुपया बखल कर केना ।)

कट्टकार-पु० धातुखंड के उत्पन्न ज्वनि ।

कट्टगन-पु० नेत्र पानेके लिए बट करना; बट्ट, जिर ।

कट्टगन-अ० कि० कट्टगन करना ।

कट्ट-कट्ट-अ० धातुखंडक बजनेकी ज्वनि । -शोपाक-पु०

वह जिससे जगमोपाक-कोरे शिष्टाचार-के अतिरिक्त कुछ न मिले; निस्तार बस्तु ।

कट्टकना-स० कि० 'कटन'की ज्वनि उत्पन्न करना । अ० कि० 'कटन'करके बजना ।

कट्टना-अ० कि० निश्चित होना; दस्ताके साथ कार्यका आरंभ होना; प्रयुक्त होना; लगना; तैयार होना ।

कट्टमना-अ० कि० दे० 'कट्टमना' ।

कट्टाका-पु० 'कटन'की ज्वनि ।

कट्टाक-अ० 'कटन' आवाजके साथ ।

कट्ट-वि० बंद ।

कट्टका-पु० टकर, ठोकर, आघात ।

कट्टा-पु० मीचा बी छाप या विह्वविशेष लगानेके काम जाता है; घोंघेने उसकी हुई छाप ।

कट्टक-अ० सज्ज रह जानेका भाव; इतराते हुए चलनेका भाव; नजाकतमरी नाख ।

कट्टकना-अ० कि० भय, आश्चर्य आदिसे चलते-चलते रुक जाना; सज्ज जाना; इतराते हुए चलना, हाथ-भावके साथ चलना ।

कट्टकना-अ० कि० चलतेको सहसा रोक देना; * बजाना ।

कट्टकारना-स० कि० दे० 'कट्टकना' ।

कट्टना-अ० कि० कटनना; बड़ निश्चयके साथ आरंभ करना; तैयार करना; पूरा करना; स्थापित करना; लगाना । अ० कि० संकल्पपूर्वक आरंभ होना; कटनना; कटनना, जमना; प्रयुक्त होना ।

कट्टा-अ० कि० मरतीमें लगना, टिटुरना; अत्यंत अधिक नील पड़ना; * सत्त्व हो जाना ।

कट्टा-अ० कि० जिने पाला मार गया हो ।

कट्टी-पु० कड़ा बड़ा हुआ मोटा मृद; एक तरहकी देशी शराब ।

कट्टा-अ० कि० गिराना; निकलवाना ।

कट्ट-अ० अंग-संजालनका ढग; खड़े होने, बैठने आदिका ढंग; स्थिति; मुद्रा ।

कट्टना-अ० कि०, अ० कि० दे० 'कटन' ।

कट्टनि-अ० दे० 'कटन' ।

कट्ट-वि० आकृष्टी; कंजुस; जिसमें कुछ निकलना न हो; पनी बुनाबटका (कपडा), दबीज; (रुपया) जिसकी आवाज भारी हो; बटो; स्थिति; बट ।

कट्टक-अ० नखरा, चाल-शलका बनावदीपन जिससे रूप, धन आदिका गर्व सूचित होता हो, पैठ, शान । -हार-वि० कटकना ।

कट्टका-पु० खली खोनी; ठोकर, बका; फंदा ।

कट्टाक-अ० खचाखच; हुँम-हुँमकर (मरा) ।

कट्टा-पु० कटक, अभिमानमरी चाल; शान; नकाशी बनानेका एक औजार ।

कट्टा-अ० कि० कटनना; धिनधिनाना; † काम करनेमें जमना ।

कट्टना-अ० कि० 'बजना (घोड़ेका) धिनधिनाना; कार्यको सुचारु रूपसे संपन्न करनेके लिए सोचते-समझते हुए आगे बढ़ना; काम करनेमें जमना ।

कट्ट-पु० खान, जगह; बीका, लीपी हुई जगह ।

ठहरना—अ० कि० बनाना; ठिकना; बना रहना; अस्वाधी रूपसे रहना; पक्का होना; तय होना; बनना; प्रतीक्षा करना ।

ठहराई—औ० ठहरानेकी क्रिया या मजदूरी; कमा ।

ठहराऊ—वि० ठहरनेवाला; ठिकाण ।

ठहराना—स० कि० रोकना; स्थिर करना; ठिकाना; तय करना; पक्का करना । * अ० कि० ठहराना, ठिकना, रुकना ।

ठहराव—पु० ठहरनेका भाव; स्वर या तानका विराम (मंथीत); रुकाव; निर्णय; ठहरौनी; ममझौना ।

ठहरौनी—औ० दहेज आदिके लेन-देनका प्रतिष्ठा या निश्चय ।

ठहाका—पु० जोरकी हँसी । मु०—लुगाना—भट्टहास करना ।

ठहिरा—औ० स्थान, जगह ।

ठाँ, ठाँव—औ० दे० 'ठाँव' । अ० तई, प्रति; पास ।

ठाँड—पु० दे० 'ठाँव' । अ० निकट, पास ।

ठाँड—वि० रसहीन; (गाय आदि) जो दूब न देती हो ।

ठाँटर—पु० ठठरी ।

ठाँवे—पु० दे० 'ठाँव' । औ० बंदूक छूटनेकी आवाज ।

ठाँव—पु० स्थान, जगह; अवसर, मौका ।

ठाँवना—स० कि० ठूँपना या कसहर मरना । अ० कि० ठौंसना ।

ठाँही—औ० दे० 'ठाँव' ।

ठाकुर—पु० देवप्रतिमा (विशेषकर विष्णुजी); परमेश्वर; अमीश्वर, स्वामी; नायक; पूज्य व्यक्ति; क्षत्रियोंकी उपाधि; जमींदार; प्रदेशविशेष या गाँवका मालिक; नाई ।—हारा—पु० ठाकुरका मंदिर; पुरोहित जगन्नाथका मंदिर ।—बाकी—औ० देवस्थान ।—सेवा—औ० देवताका पूजन; देवोत्तर संपत्ति ।

ठाकुरी—औ० दे० 'ठाकुर' ।

ठाट—पु० रोक या रक्षाके काम आनेवाला बौलका दाँवा; मजबूत; शान; सितारका तार; डिङ्गा; * तैयारी; आयोजन; जनसमूह, मोर्चा; वेशभूषणा; झुंड; अधिकता ।—बाँटी—औ० छजे आदिके लिए दाँवा बनानेकी क्रिया ।

—बाट—पु० तक्क-भक्क । मु०—बढ़लना—जैय बढ़लना; बढ़पन नताना ।—झारना—चैन करना ।

ठाटना—स० कि० ठाट करना; सजाना; आयोजन करना; ठानना; सँभारना ।

ठाटर—पु० ठट्टा; ठठरी; बौलकी बनी कद्दरोंकी छतरी; * सजबज, सजबट ।

ठाठी—औ० दे० 'ठट्ट' ।

ठाठ—पु० दे० 'ठाट' ।

ठाटना—स० कि० दे० 'ठाटना' ।

ठाटर—पु० दे० 'ठाटर' ।

ठाढ़, ठाढ़ा—वि० खड़ा; उन्नत; पिना ठुकड़ा किया हुआ; रचित; उत्पन्न; प्रस्तुत; शक्तिशाली । मु०—(हा)देना—ठिकाना; ठहराना ।

ठाढ़ेचरी—पु० दिन-रात खड़े रहनेवाले साथी ।

ठाढ़र—पु० रात, स्रवण—दिव आपनो नहीं संभारत

करत ईह सी ठाढ़र—सूट ।

ठान—औ० ठाननेका भाव, करनेका इद निश्चय; हाथ-माथकी साथ संयत्तचालना; कार्यविशेषकी तैयारी; कार्यारंभ; शुरू किया हुआ कार्य ।

ठानना—स० कि० करनेका इद निश्चय करना; ठेकना; कार्यविशेषकी तत्परतासे प्रारंभ करना; (मनमें) निश्चित करना ।

ठाणा—स० कि० दे० 'ठानना'; दे० 'ठवना'; सत्य करके दिखाया देना ।

ठाम—पु० दे० 'ठाँवे'; शरीरकी सुझा, अंगविन्यास ।

ठावे—औ० दे० 'ठाँवे' । पु० दे० 'ठाँव' ।

ठार—पु० [सं०] पाला, अधिक सरदी ।

ठाका—औ० दे० 'ठाला'; फुरसत ।

ठाखा—पु० बेकारी; आवकी कमी; काम-धंधेका मंद पड़ जाना । वि० बेकार, निठला ।

ठाखिनी—औ० [सं०] कमरबंद, कपडनी ।

ठाखी—वि० बेकार, जिने कुछ काम-धंधा न हो, निठला ।

* औ० बीरज, डाहल—“...खाकी देत सब ठाकी हाथ, मेरे बनमालकी न काली तें झुझावही”—रसखान ।

ठावे—पु० दे० 'ठाँव' ।

ठावना—स० कि० दे० 'ठाना' ।

ठासा—पु० लोहारोंका एक औजार ।

ठाह—औ० गाने-बजानेकी विवक्षित गति ।—रूपरू—पु० मृदंगका एक ताल ।

ठाहर—पु० जगह; ठहरनेका स्थान; ठिकाना ।

ठिंगना—वि० कम ऊँचा, छोटे कदका, नाटा ।

ठिऊ—स्वैर्य—“जासीं नहीं ठहरै ठिक मानकी”—एल० ।

ठिऊनै—पु० व्यवस्था, प्रबंध ।

ठिङ्गा—पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठिङ्गा—अ० कि० दे० 'ठिकना' ।

ठिङ्गारा—पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठिङ्गोरा—वि० जिनमें ठीकरे अधिक हों (जमीन) । औ० ऐसी जमीन ।

ठिकाना—पु० स्थान, जगह; वास्तवस्थान; रहने या ठहरनेकी जगह, मुकाम; अवलंब; गुजर करनेका स्थान; निधत या धनसुल स्थान; उपाय, व्यवस्था; सीमा; भरोसा; विश्वास; जागीर ।

मु०—छगना—आभयस्थान या जीविकाका अवलंब प्राप्त होना ।—छगाना—नौकरी या रहनेका स्थान ठीक करना; प्रबंध करना ।—(मे) आना—ठीक रास्तेपर आना, अवधिपर पहुँचना ।—झी बात—वृत्तिसंगत बात, कामकी बात ।—ज रहना—चंचल बना रहना ।

—पहुँचाना—अभीष्ट स्थानतक पहुँचा देना ।—छगाना—उचित स्थानपर पहुँच जाना; काममें आना; मर जाना ।

—छगाना—मार ठाकना; क्षम कर देना ।

ठिकना—अ० कि० चलते-चलते सहसा रुक जाना; बिल्कुल स्थिर हो जाना; शरीर-संचालन न होना; स्तब्ध होना; ठक रह जाना ।

ठिङ्गना—अ० कि० सदाँयें सिद्ध जाना ।

ठिठोली—औ० दे० 'ठठोली' ।

ठिनकना—अ० कि० (बर्बाद) बनानेकी तीव्रता ।

ठिवा-पु० जंगली पशुओंके रहने, ठहरनेका स्थान (स्थ०) ।

ठिर-खी० कवाकेकी सर्दी, पाठा ।

ठिरवा-अ० कि० बहुत अधिक सर्दी पड़ना; ठिठुरना, सर्दीमें अटक जाना ।

ठिठिठिठाना-अ० कि० जोरमें हँसना ।

ठिठना-अ० कि० बलपूर्वक दकेला जाना; आगे खिसकाया या बढ़ाया जाना; तेजी से घुसना; बैठना ।

ठिठाठिठ-अ० कमसमाते हुए; थकमथकते साथ ।

ठिठिया-खी० मिट्टीका छोटा घड़ा, गगरी ।

ठिलुआ-वि० निठला, बेकार, जिसे कोई काम न हो ।

ठिल्ला-पु० मिट्टीका घड़ा ।

ठिल्ली-खी० दे० 'ठिलिया' ।

ठिहारी-वि० खी० पकी, स्थायी; न टूटनेवाली । खी० निश्चय, ठहराव ।

ठीक-वि० उपयुक्त; युक्तिसंगत; वधार्थ; अच्छा; मनोनु-
कूल; उचित; अभीष्ट; शुद्ध, मही; दुरुस्त; जैसा चाहिये
वैसा, न डोला, न कमा; न कम, न ज्यादा; न शर्त, न
छतर; नियत, बँधा हुआ; पूरा-पूरा । अ० सीधे; मुनासिब
धंगले, उचित रीतिमें; हूबहू । पु० निश्चय; व्यवस्था,
प्रबंध; जोड़, योग । -ठाक-पु० व्यवस्था, प्रबंध, बंदो-
बस्त । वि० नियत; दुरुस्त । मु०-देना-बद सकल्प
करना, पक्का विचार करना; जोड़ निकालना ।

ठीकड़ा-पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठीकमठीक-अ० थिलकुल ठीक; पूर्णरूपसे, एकदम,
थिलकुल ।

ठीकरा-पु० मिट्टीके बरतन या खबरेका ठकड़ा; पुराना
बरतन; मिश्रापात्र; (ला०) बघाया-वैसा; निकम्मी चीज ।
मु० (मिरवर)-फोड़ना-किनीके मिर दोष मढ़ना ।
-समझना-कुछ न समझना । -हीना-अधाधुंध खर्च
होना ।

ठीकरी-खी० छोटा ठोकरा; थिलमपर रखनेका मिट्टीका
तबा; निकम्मी चीज ।

ठीका-पु० नियत समय अथवा दूरपर कोई काम करने
या करनेका इकरार; कर आदि वसूल करनेका जिम्मा ।

-पत्र-पु० ठीकेका इकरारनामा । -(के)दार-पु०
ठीकेपर लेनेवाला व्यक्ति ।

ठीकुरी-खी० पत्थर; परदा ।

ठींथी-खी० हल्की आवाजवाली हँसी, बेहूदा हँसी । मु०
-करना-हम प्रकारकी हँसी हसना ।

ठील्ला-अ० स० कि० दे० 'ठिलना' ।

ठीबन-पु० थूक, खलार, दूधेभा ।

ठीहँ-खी० हिनहिनानेकी आवाज ।

ठीहा-पु० पृथ्वीमें गड़ा लकड़ीका ठकड़ा जिसपर रखकर
कोई चीज गड़ी या काटी जाती है; ऊँची जगह; बेदी;
गद्दी; हद ।

ठुँठ-पु० बिना झाल-पातका थूला पेड़ या उसका तना ।
वि० छूला ।

ठुँध-पु०, वि० दे० 'ठुँठ' ।

ठुफना-अ० कि० पीटा जाना; ठोका जाना; चोट खाकर

भीतर घँसना; दायर होना (शक्ता); हानि होना । मु०
ठुक जाना-ताकित होना, पीटा जाना; हानि होना; घँस
जाना ।

ठुकराना-स० कि० ठोकर मारना, पैरके अंग अंगसे
मारना; (ला०) पैरसे मारकर हड़ाना; तिरस्कार करना,
उपेक्षा करना; दुनकारना ।

ठुकराना-स० कि० पीटवाना, मार खिलाना; हानि
कराना ।

ठुड़ी-खी० ठोरी, हाँके नीचे निकली हुई हड्डी; भूना
हुआ दाना जो खिला न हो । मु० -पकड़ना-अनुनय-
विनय करना, खुशामद करना ।

ठुनकना-अ० कि० दे० 'ठिनकना' । स० कि० दे० 'ठुन-
काना' ।

ठुनकाना-स० कि० उँगली से धीरेसे आघात करना; हल्के
हाथमें ठोकना ।

ठुन-ठुन-पु० बरतनों या वातुके ठुकड़ोंकी आघातजन्य
ध्वनि; बलोंके रह-रहकर रौनेकी आवाज ।

ठुमक-वि० ठसक मरी हुई; (चाल) त्रिममें चलते समय
थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटका जाय । -ठुमक-अ० शीघ्रता
और उमंगके साथ थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटकते हुए (छोटे
बच्चोंका चलना); उछल-कूदके साथ (चलना) ।

ठुमकना-अ० कि० नाचते समय ताकके अनुसार रह-रह
कर पैर पटकना; थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटकते हुए चलना ।

ठुमका-वि० छोटे करका, नाटा ।

ठुमकारना-स० कि० पतंगकी डोरीको झटका देना ।

ठुमकी-वि० खी० छोटे कदकी, नाडी । खी० पतंगकी डोरी-
को उँगलीसे खींचकर दिया जानेवाला झटका; छोटी खरी
पूरी; ठिठक ।

ठुमरी-खी० एक तरहका छोटा मधुर गाना जिसे गाते
समय प्रायः कोई रागीका मिश्रण कर दिया जाता है ।

ठुरियाना-अ० कि० सर्पने ठिठुर जाना; ठुरी हो
जाना ।

ठुरी-खी० वह दाना जो भूजनेपर खिला न हो ।

ठुसना-अ० कि० तंग जगहमें भर जाना; दबाकर भरा
जाना ।

ठुसवाना-स० कि० तंग जगहमें कसकर भरवाना, घुस-
वाना ।

ठुपाना-स० कि० दे० 'ठुसवाना' ।

ठुंग-खी० चतुप्रहार; मुड़ी हुई उँगलीने ठोकर मारनेकी
क्रिया ।

ठुँठ-ठुँठा-पु० दे० 'ठुँठ' ।

ठुँठी-खी० ज्वार, बाजरे, अन्ध आदिके डंठलका नीचेका
भाग जो खेत काटते समय पृथ्वीमें गड़ा छूट जाता है,
लुँटी ।

ठुँसना-स० कि० दे० 'ठूसना' ।

ठुँसा-पु० ठेंगा ।

ठुसना-स० कि० दबा-दबाकर भरना, कसकर रखना;
जोरन घुसाना; (ला०) बहुत अधिक खाना ।

ठुंगाना-वि० दे० 'ठिंगना' ।

ठुँगा-पु० अँगठा; डबा; कट्टा । मु० -दिखावा-साफ

इनकार करना; निरास करना । -बजना-काठी चलना ।
(-ते)से-बलाने ।

हंगुरा-पु० शीघ्र और उछक-कूर मचानेवाले चौपायोंके गलेमें बांधी जानेवाली लकड़ी ।

हंवा-पु० घूनी, चोंड़ ।

हंडा-पु० दे० 'हंडा' ।

हंडी-झी० कानका मैल; कानका छेद बंद करनेके लिए लगी हुई आदि; काग, डाट ।

हंपी-झी० बोलल आदिका मुँह बंद करनेकी लकड़ी आदि; काग, डाट ।

हंक-पु० टेक, चोंड़; महारा; पैरा; पच्छ ।

हंकना-स० कि० सहारा लेना, टेकना ।

हंका-पु० अङ्गु; टेक; ठोकर; तबलेका बायाँ; तबला बजानेका एक प्रकार; दे० 'हंका' ।

हंकाई-झी० कपड़ेके किनारेकी छपाई ।

हंकाना-पु० स्थान; ठहरनेकी जगह; निवास-स्थान ।

हंकी-झी० दे० 'हंक' ।

हंकुआ-पु० दे० 'हंकवा' ।

हंकेदार-पु० दे० 'हंकेदार' ।

हंगना-स० कि० रोकना, मना करना; दे० 'टेकना' ।

हंगनी-झी० टेकनेकी लकड़ी; सहारा ।

हंगना-स० कि० ठहराना; रोकना । अ० कि० ठहरना; रुकना-'गगन साम भा धुआँ जो टेवा'-प० ।

हंगनी-झी० दे० 'हंगनी' ।

हंगा-पु० घूनी, स्तम्भ ।

हं-वि० एकदम, निरा; अमाहिलिक, साधारण बोलचालकी, त्रिममें दूसरी (भाषा)का मेल न हो; शुद्ध; निर्विकार ।

झी० मीथी-मादी बोली । -से-शुरूसे ।

हंपी-झी० बोलल, बरतन आदिका मुँह बंद करनेका काग आदि ।

हंलना-म० कि० दबेलकर आगे बढ़ाना या खसकाना; * उमकाना ।

हंलमहंल-अ० कममसके साथ ।

हंला-पु० हंलकर चलायी जानेवाली गाड़ी; बक्का, भीड़ ।
-हंल, -हंली-झी० धक्कमधक्का ।

हंलका-पु० दे० 'हंका' ।

हंलकी-झी० अटकाव ।

हंल-झी० हलकी चोट; चलते समय पत्थर आदिसे पैरमें लगी चोट ।

हंलमा-स० कि० दे० 'दूमना' ।

हंलरी-झी० किवाड़की चूल्के नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी ।

हंलुआ-पु० घुटना ।

हंल-झी० स्थान, जगह ।

हंल-झी० दे० 'हंल' ।

हंल पैल-झी० बक्कमधक्का, रेलपेल ।

हंल-झी० ठोकेका भाग या क्रिया; आघात ।

हंलना-म० कि० भारी वस्तुमें आघात काना; प्रहार द्वारा भीतर घुसाना; मारना; पीटना; साज्ज करना; (शुकरया) दायर करना; धार या तावसे धपपाना; मजबूतीमें जकना; 'खट-खट' शब्द उत्पन्न करते हुए आघात करना; बेबी आदिमें जकना । झु० ठीक-ठीककर लकना-बटकर या ललकारकर लकना । ठीकना-बजाना-अच्छी तरह परख लेना ।

हंल-झी० चोंच; चोंचकी मार; मुकी हुई उँगलीसे ठोकर मारना ।

हंलना-स० कि० चोंच मारना; मुकी हुई उँगलीसे ठोकर मारना ।

हंलना-पु० पैली जैसा कागजका पात्र जिसमें हुकानदार गाहकोंकी सामान देते हैं ।

हंल-अ० पूरी हिंदीमें संख्यावाचक शब्दोंके साथ लयनेवाला एक शब्द ।

हंकना-स० कि० दे० 'हंलना' ।

हंल-झी० चलते समय कंकड़-पत्थर आदिसे ठकरानेसे पैरमें लगी चोट; ऐसी वस्तु जिससे चोट लगनेकी संभावना हो; पैरसे किया गया आघात; बक्का; जूतेका अंगल हिस्सा । झु० -डठाना-बाटा सहना; तकलीफ उठाना ।

-खाले फिरना-उद्योगविशेषमें असफल होने रहना; मारा-मारा फिरना । -खाना-अस्ताधुनीका कुपरिणाम भोगना ।

-(हं)पर पड़ा रहना-अपमान सहकर रहना ।

हंकवा-पु० मीठा डालकर बनायी हुई भोदी पूरी ।

हंल-वि० तत्परीन; मूर्ख ।

हंल-वि० दूँठा; निराला ।

हंल-वि० पोपला, खाली ।

हंली, हंली-झी० दे० 'हुली' ।

हंल-पु० बूंद ।

हंल-पु० पूरी जैसा एक पग हुआ पकवान; * चोंच-'तेज ओहि मच्छ ठोर भरि लेंही'-प० ।

हंल-वि० जो पोला न हो, जो भीतर खाली न हो, ठस ।

पु० कुदन; दाह, ईर्ष्या ।

हंल-पु० दे० 'हंल' । झु०-दिलाना-साफ इनकार करना । -(से)से-बलात्, कुछ परवाह नहीं ।

हंलना-स० कि० स्थान छूटना, खोचना ।

हंल-पु० वह छोटा गड़वा जहाँ सिंचाईके लिए दोरी आदिसे पानी गिराते हैं ।

हंल-झी० दे० 'ठवन' ।

हंल-पु० स्थान, जगह; अवसर; मौका; उपयुक्त स्थान । झु०-ठिकाना-रहनेका स्थान । -कुठोर-अच्छी-पुरी जगह; पुरी जगह । -न जाना-पास न जाना । -रखना-मार डालना । -रहना-पक रहना; मर जाना ।

हं

हं-देवनागरी वर्णमालामें व्यंजनका तीसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान मूर्द्धा ।

हं-पु० बिच्छू, मधुपक्षी, भिड़ आदिका जहरीला काँटा जिसे व दूसरे प्राणियोंके शरीरमें चुभा देते हैं, दंश; हंक

द्वारा किया गया भेदन; कलमकी जीम, * डंका। -हार-
वि० डंकवाला।

डंकना-अ० कि० भारी शब्द करना; तोपका गरजना।

डंकारना-अ० कि० दे० 'डकारना'।

डंका-पु० नगाका, मौना। **मु०**-बजना-अधिकार होना;
चलनी होना। (लघाईका)। -बजना-युद्ध आरंभ होना।
-बजाना-घोषित करना, ओर जोरने कहकर सबको
सुनाना। - (के)की चोट कहना-निडर होकर सबके
मुँहपर कहना, घोषित करना।

डंकिनी-स्त्री० दे० 'डाकिनी'।

डंकी-स्त्री० एक कसरत। वि० डकनाला।

डंकीला-वि० डकवाला; डक मारनेवाला।

डंकुर-पु० एक पुराना बाजा।

डंकीरी-स्त्री० भिड़, हड्डा।

डंगर-पु० चोपवा, पशु (गाय, भैस आदि)। वि० डुक्का-
पतला; (ला०) जड़, मूर्त।

डंगरा-पु० खरबूजा (दूदेल०)।

डंगरी-स्त्री० बड़ी ककनी; डोहन।

डंगारा-पु० किसानोंकी बैल आदिकी आपसकी सहायता।

डंढवा-पु० डंढनेवाला; धमकी देनेवाला।

डंढल-पु० गेहूँ, जौ, ज्वार आदिका तना जिसपर बाल
लगी है, जड़ और बालके बीचका भाग।

डंढी-स्त्री० दे० 'डंढल'।

डंढ-पु० बाजू, बाँह; एक कसरत जो हाथ-पैरके पनोंके
सहारे पेटके बल की जाती है; सजा; जुरमाना; घाटा;
समयका एक परिमाण (२५ मिनट)। -पैल-पु० अधिक
डंढ करनेवाला, पहलवान।

डंढक-पु० दे० 'दंढक'।

डंढना-स० कि० डंढ देना।

डंढवत-पु०, स्त्री० दे० 'डंढव'।

डंढवारा-पु०, **डंढवारी**-स्त्री० रोक या घेरेके लिए बनी
हुई कम ऊँची दीवार; चहारदीवारी।

डंढवी-वि० कर देनेवाला।

डंढा-पु० बाँस आदिका लघा टुकड़ा, लाठी, मोटा; चहार-
दीवारी। -डोली-स्त्री० लडकौका एक खेल। -बेड़ी-
स्त्री० वह बेड़ी जिसमें छल लगे हों। **मु०**-खाना-डंढे-
से पिटना। -बजासे फिरना-मारा-मारा फिरना।

डंढा-पु० बाहु-‘नोरे डंढा पहुँचानि विलोकित’-धन०।

डंढाकरण-पु० दंडकारण्य।

डंढाल-पु० डका, नगाडा।

डंढिया-स्त्री० ऐसी साड़ी जिसपर पवी धारियोंके रूपमें
गोटे टंके हों; गेहूँके पौधेकी वह सीक जिसमें बाल लगी
हो। पु० महुल उगाहनेवाला।

डंढियाना-स० कि० दो कपड़ोंकी लंबाईकी ओरसे मिला
कर सीना।

डंढी-स्त्री० छोटी, सीधी और पतली लकड़ी; छाते आदिमें
लगी हाथमें पकड़नेकी लकड़ी जिसपर कमानी चढ़ायी
जाती है; तराजूकी लकड़ी जिसके दोनों ओर रस्मियाँ
पल्ले बाँधे जाते हैं; तनेका ऊपरी भाग जिसपर फूल या
फल स्थित रहते हैं, नाल; † शिक्ष। -मार-वि० जो

कम सीधा लीके। पु० बनिया। **मु०**-मारना-कम
सीधा लौटना।

डंढीर-स्त्री० सीधी रेखा।

डंढल-स्त्री० बाँधी-‘कर’ती माला अपै हिरदै बहै
डंढल’-साखी।

डंढीरना-स० कि० उलट-पुलटकर हँदना; हिलोरकर
हँदना।

डंढीत-पु०, स्त्री० दे० 'दंढव'।

डंढना-अ० कि० जोरने बिलाना या रोना।

डंढर-पु० [सं०] आठवर; चहल-पहल; समूह, राशि;
साधन्य; गर्व; आवीजन; भारी शब्द; सौंदर्य; विस्तार;
एक प्रकारका बना चंदोवा। वि० प्रसिद्ध।

डंढेल-पु० [अ०] लट्ठ जैसे गोल सिरोंवाला लोहे या
लकड़ीका उपकरण जिसे पंजरे पकड़कर कसरत करते हैं;
हने हाथमें लेकर की जानेवाली कसरत।

डंढका-पु० गठिया, एक बालव्याधि जिसमें शरीरकी
गोंठोंमें दर्द होता है।

डंढरू-पु० दे० 'टमरू'।

डंढाडोल-वि० अस्थिर, डगमगाता हुआ; बेचैन।

डंढ-पु० दे० 'डंढ'।

डंढना-स० कि० दे० 'डंढना'।

ड-पु० [सं०] शब्द; एक तरहका नगाडा; षटपाक्षि;
भय; शिव।

डड-वि० बड़े डीलका; अधिक बचवाला।

डक-पु० खेलनेका धान, [अ० 'टाक'] मृगी या मन
आदिका बना दबीज कपडा जिसमें छोटे बाल या अन्य
पहनावे (विशेषकर नाविकोंके) बने होते हैं; एक कपडा;
समुद्र या नदीमें बना पक्का घाट जहाँ माल लादने और
उतारनेके लिए जहाज ठहरते हैं, अडालग कठपर। जहाँ
अभियुक्त लखे किये जाते हैं।

डकडत-पु० दे० 'डकेन'।

डकरना-अ० कि० डकार लेना; स्वाकर नृत्य होना-‘डकरी
चमुडा गोलकुटाकी लघाईमें’-कालिदास त्रिभारी; † दे०
'डकारना'।

डकराना-अ० कि० मोड़, बँल या भेकेका जोरमें लेलना।

डकवाहारा-पु० डाक दोनेवाला, डाकिया।

डकार-स्त्री० आवाजके साथ सुँहन निकली हुई हवा,
ऊर्ध्ववासु, उडार; दहाड़। **मु०**-न लेना-नुप्यी साथ
लेना।

डकारना-अ० कि० डकार लेना; स्वाकर नृत्य होना-
‘...डकरी चमुडा, गोलकुटाकी लघाईमें’-कालिदास त्रिभारी;
किसीका माल पचा जाना; दहाड़ना।

डकैत-पु० डाकू, छुरेरा।

डकैती-स्त्री० डाका डालनेका काम, लूट, डाकाजनी।

डकैत, डकैतिया-पु० सामुद्रिक ज्योतिष आदिकी ज्ञान-
कारीका स्त्री रचनेवाला; यह कार्य करनेवाली एक ज्ञानि।

डकरी-स्त्री० [सं०] चाँडालवीया।

डग-पु० चलनेमें दोनों पाँवोंके बीचका अंतर, फास, करम।

मु०-देना-कदम रखना। -भरना-कदम बढ़ाना।

-मारना-लखे-लखे उग डालना।

डगडगाना-अ० कि० अस्थिर होना, कौपना; इधर-उधर घूमने फिरना; डगमग होना ।

डगडोलना-अ० कि० दे० 'डगमगाना' ।

डगडोर-वि० झंझावोल, अस्थिर ।

डगना-अ० कि० हिलना; विचलित होना; अपने स्थान-से हटना; खसकना; लफ़लफ़ाना; चूकना ।

डगमग-अ० हिलते-डुलते; लफ़लफ़ाहटके साथ ।

डगमगाना-अ० कि० दे० 'डगमगाना' ।

डगमगाना-अ० कि० इधर-उधर हिलना या झुकना; विचलित होना, झंझावोल होना; लफ़लफ़ाना । † स० कि० हिलाना-डुलाना; विचलित करना ।

डगर-खी० मार्ग, राह, रास्ता । **मु०**-बताना-उपाय बतलाना ।

डगरना-अ० कि० चलना, अंद गतिमें चलना; छुदकना; (ला०) काम आदिका किसी प्रकार चालू रहना ।

डगरा-प० मार्ग, रास्ता; † बॉम आदिका बना एक छिछला बरतन ।

डगा-प० चोर, डुगी आदि बजानेकी लकड़ी । **मु०**-बैना-नगाड़ा बजाना ।

डगाना-स० कि० विचलित करना; टसकाना; हिलाना ।

डगर-प० भेड़िये बैना एक मामाहारी जानवर जो रातमें शिकार करता है ।

डच-प० हालेडका निवासी । वि० हालेडका ।

डटना-अ० कि० अड़ना, एक स्थानपर जमा रहना, स्थिर रहना; जगह-न हटना; (कार्यमें) प्रवृत्त होना, लगना; * फटना । * म० कि० देखना ।

डटाई-खी० डटानेका काम; डटानेकी उजरत ।

डटाना-म० कि० मामने रखना; अड़ाना, जमाना; सटाना, भिडाना ।

डट्टा-प० काग; नैचा; ठप्पा ।

डट्टार-वि० लंबी दाढ़ीवाला; हिम्मती; मजबूत दिख-वाला ।

डट्टन-खी० सनाप; झुलमना ।

डट्टना-अ० कि० झलना; झुलसना ।

डट्टार, **डट्टारा**-वि० जिनके दाढ़ें हों; दाढ़ीवाला ।

डट्टियल-वि० लंबी दाढ़ीवाला ।

डट्टोरा-वि० दे० 'डट्टार' ।

डपट-खी० शिक्का, फटकार, धौंस, डाँट; धोरेकी सरपट चाल ।

डपटना-म० कि० शिक्कना; धुक्कना; डोटना । अ० कि० सरपट दौड़ना ।

डपोरखल, **डपोरखल**-प० डींग मारनेवाला, केवल बाँँ बनानेवाला; जड़ मनुष्य ।

डक-प० कौन्वाली आदि गानेवालोंका एक बाजा; चमड़ा मड़ा हुआ एक बड़ा बाजा जो लकड़ीसे बजाया जाता है ।

डकल-प० दे० 'डक' ।

डकड़ी-खी० छोटा डक, खंजरी ।

डकार-खी० गला फाड़कर रोनेकी आवाज; चिन्हाङ्ग ।

डकारना-अ० कि० चिन्हाङ्गना; डाढ़ मारना ।

डकाळी-प० दे० 'डकाळी' ।

डकाळी-प० डक बजानेवाला; डकपर कौन्वाली, लावनी आदि गानेवाला मुसलमानोंका एक वर्ग ।

डफोरमा-अ० कि० हाँकते माथ कहना, गरजना-
“...तुलसी किचूट चदि कहत डफोरिकै”-कविता० ।

डच-प० जेब; पैसा; चमड़ा जिससे कुपे आदि बनते हैं ।

डचकना-अ० कि० दीसना, दर्द करना; आँखोंका अधपूर्ण होना ।

डचकौहाँ-वि० अधपूर्ण, डचकवाया हुआ ।

डचकाना-अ० कि० आँखोंमें आँध आ जाना, अध-युक्त होना ।

डचरा-प० छिछला गड़हा, वह नीची जमीन जहाँ पानी लगता हो ।

डचरी-खी० छोटा गड़हा ।

डचल-प० एक तरहका तौरेका सिक्का, पैसा । वि० [अ०] दूना; दोहरा । -रोटी-खी० पाचरोटी ।

डचला-प० धातु या मिट्टीका चौड़े मुँहका छोटा बरतन ।

डधिपा-खी० छोटा डिब्बा ।

डची-खी० दे० 'डिब्बी' ।

डचीना-स० कि० दे० 'डुबाना' ।

डचवा-प० धातुका बना डकानदार छोटा पात्रविशेष। रेह-गायिका वह कौठरीनुमा हिस्सा जो अलग किया जा सके ।

डचू-प० कश्तुल जैसा एक पात्र जो परसनेके काम आता है ।

डभकना-अ० कि० (नेत्रोंमें) आँध भर आना; डूबना-उतराना ।

डभकारी-प० आधा भूना हुआ चना या मटर । वि० कुरें-से ताना निकला हुआ (पानी); तुरतका निकाला हुआ, ताजा ।

डभकाना-स० कि० 'डभ'की आवाजके साथ डुबीना ।

डभकोरि-अ० अघाकर ।

डभकौहाँ-वि० दे० 'डचकौहाँ' ।

डभकौरी-खी० उधरकी पीठकी बड़ी ।

डभ-प० [सं०] 'नेट' और चाँडाणीसे उत्पन्न एक नीच सकर जाति, डोम ।

डभर-प० [सं०] दगा; शोर मचाकर या डराकर शत्रुकी भगाना; भयसे भाग खड़ा होना, भगदड़ ।

डभर-प० [सं०] चमड़े; मड़ा जानेवाला एक छोटा बाजा जो बीचमें पतला होता है और बिलानेपर उसमें लगी पुट्टियोंसे बजता है । -**मध**-प० जल या स्थलके दो बड़े खड्डोंको मिलानेवाला जल या स्थलका सजीर्ण भाग ।

-**खंज**-प० अर्क खींचने तथा सिंगरफका पारा और कपूर उड़ानेका एक यंत्र ।

डभरुभा-प० दे० 'डंबरुभा' ।

डभरुका-खी० [सं०] हाथकी धक ताजिक मुद्रा ।

डभर-प० दे० 'डभर' । -**मध**-प० दे० 'डभर-मध' ।

डभय-प० [सं०] उधरनेकी क्रिया, उड़ान; पालकी ।

डर-प० भय, भीति, त्रास, खौफ; अदृश । -**पोक**-वि० कायर, डुबदिल, नीर ।

डरना-अ० कि० भय खाना, भीत होना, खौफ करना; सन्नत होना ।

हरपना-अ० कि० दे० 'हरना'।

हरपना-अ० कि० हराना, प्रस्त करना।

हरपाना-स० कि० दे० 'हराना'; † दे० 'हरपाना'।

हरा-पु० डला, डोका।

हराहू-वि० हरपोक।

हराहरी-अ०-खी० भय, डर।

हराना-स० कि० भय दिखाना, भीत करना; सशंक करना।

हरापना-वि० भयानक।

हरारी-वि०, खी० हराननी-'पापिनि हरारी भारी'-वन०।

हरावना-वि० जिसे देखकर डर लगे, भयानक, भयोत्पादक।

हरावा-पु० फलवाले पेड़ोंमें बंधी लकड़ी जिससे डराकर चिथियोंकी उड़ाते हैं; डरानेके लिए कड़ी जानेवाली बात।

हराहुका-वि० हरपोक।

हरिया-अ०-खी० दे० 'डाल'।

हरी-अ०-खी० डली, छोटा डुकड़ा।

हरीला-वि० शाखायुक्त।

हरेका, हरेका-वि० डरावना।

हल-पु० लह, डुकड़ा; शील; कश्मीरकी एक शील।

हलक, हलक-पु० [सं०] बस आदिका बना पात्र, डला।

हलना-अ० कि० डाला जाना, छोड़ा जाना, पचना।

हलवा-पु० एक तरहका भौंसाका बना गोला, गहरा बरतन, दौरा।

हलवाना-स० कि० डालनेका काम कराना; डालने देना।

हला-पु० डुकड़ा, खंड, (नमक, मिसरी आदिका) डेला; बॉम आदिका गोला, गहरा, बड़ा बरतन।

हलिया-खी० भौंसाका बना एक पात्र जो डलेसे छोटा होता है।

हली-खी० छोटा डुकड़ा; सुपारी; दे० 'हलिया'।

हल्लहा, हल्लहा-पु० दे० 'हल्लहा'।

हल्ल-पु० दे० 'हल्ल'।

हलरा-पु० एक तरहका बड़ा कटोरा।

हला-पु० पैला (कटोरा ?)-'विषकी हला है कै उदेगको भंवा है'-वन०।

हलित्य-पु० [सं०] काठका बना सृग।

हलन-खी० खननेकी क्रिया; खननेका ढग।

हलना-स० कि० सॉप आदि जहरीले जंतुओंका दाँतसे काटना; डक मारना।

हलवाना-स० कि० दे० 'डमाना'।

हलाना-स० कि० सॉप आदि द्वारा दाँतसे कटवाना; * बिछाना।

हलटर-पु० [अं०] झाड़न।

हलकना-स० कि० बचना करना, छलना; किन्हीं वस्तुका लालच देकर उने आत्ममात् करना। * अ० कि० धोखा खाना; फूट-फूटकर रीना; चिन्वावना; पैलना, छाना (चौंढी)।

हलकाना-अ० कि० खोना, गँवाना, बरबाद करना-

“...कतहूँ जाइ जम्म हलकौ”-सुरा बहुत सताना वा खलना। अ० कि० ठगा जाना; धोखा खाना।

हल्लहा-वि० लहलहाता हुआ; हरा-भरा; प्रफुल्ल; प्रसन्न; ताना।

हल्लहाद-अ०-खी० ताजगी।

हल्लहाना-अ० कि० हरा-भरा होना; प्रसन्न होना।

हल्लहाव-पु० हरा-भरा होनेका भाव, प्रफुल्लता।

हल्ल-पु० पर, पंख। खी० जलन, दाह, सताप।

हलना-पु० डैना। अ० कि० जलना; दग्ध होना; ईर्ष्या करना; बुरा मानना। स० कि० जलना; (ला०) कष्ट देना।

हल्ल-अ०-खी० दे० 'डगर'।

हल्लना-अ० कि० चलना, घूमना।

हल्लाना-स० कि० चलाना, घुमाना।

हल्लिया, हल्लरी-अ०-खी० अनाज रखनेका मिट्टीका बड़ा बरतन, कुठिया।

हल्ल-वि० कष्ट देनेवाला, तंग करनेवाला।

हॉड-खी० चौरा या तबिका अत्यंत पतला पत्थर की नगीनोंके तले बैठाने और टिकनी आदि बनानेके काम आता है; † उछाल, उलटी। * पु० डक; डंका।

हॉडमार्-अ० कि० कौटना, लौंघना; पुकारना। अ० कि० घमन करना।

हॉडिसि-खी० [सं०] घटिका आदिके बजनेकी आवाज।

हॉग-पु० डंका; घना जंगल; † लाठी, डंडा; फर्लांग।

हॉगर-पु०, वि० दे० 'डगर'।

हॉटि-खी० फटकार, भिन्नका; दवाव, शासन। सु०-मैं रखना-शासन द्वारा बशमें रखना।

हॉटना-स० कि० सिन्नका, फटकारना, भय दिखानेके लिए जोरमें बोलना।

हॉटि-पु० दे० 'डठल'।

हॉड-पु० डंडा; नाव खेनेका बॉम; बिना चमकेका गदका; खेतकी सीमा, मेंड; जैची गमीन; कमर; जुरमाना; खोथी या नष्ट हो गयी वस्तुका बदला।

हॉडना-अ० कि० जुरमाना करना, अर्थात् देना; हर-जाना लेना।

हॉड-पु० डंडा; खड्ड; नाव खेनेका डंडा; मेंड; सीमा। -मेंड-पु०, -मेंडि-खी० दो सीमाओंके बीचकी मेंड; (ला०) घनिष्ठता; यका; अनवन।

हॉडि-खी० लंबी, पतली लकड़ी; सीधी रेखा; तराजूकी डंडी; एक होली जैसी पहाड़ी समारी जिसमें दो ओर दो खंडे लगे रहते हैं; तनेका बह भाग जिसपर फूल या फल स्थित रहता है, टबनी; रस्मियों या लकड़ियों जिनसे हिंडोनेकी पट्टी लटकती रहती है; * रस्सी; पालकी। सु०-मारना-कम तौलना।

हॉडि-पु० डामर, अलकतरा।

हॉडरा-पु० दे० 'डावरा'।

हॉडरी-अ०-खी० दे० 'डावरी'।

हॉडर-पु० बाधका बधा।

हॉडिडोल-वि० चंचक, अस्थिर, हिलता हुआ।

हॉड-पु० एक तरहका बड़ा मच्छर; कुकुरोछी।

श-श्री-ली [सं०] शक्तिनी; सर्वज्ञेय लोयी जानेवाली लोकरी ।
शार्दूल-ली [सं०] नुईक; जादू करनेवाली ली; उरावनी आभूषितावाली ली ।

शार्दूलाभादूद-पु० [अ०] एक विस्फोटक पदार्थ ।

शार्दूल-ली [अ०] पत्ता; कागज, सिक्के, पत्रक आदिपर चिह्नविशेष बनानेका ठप्पा; रंग । -म्रेस-पु० ठप्पा उठानेकी कल ।

शक-ली पत्रादि पहुँचाने वा सवारीका पैदा प्रबंध जिसमें स्थान-स्थानपर थके हुए मनुष्यों तथा घोड़ोंके बचलनेकी व्यवस्था हो; चिट्ठियों आदिके जाने-जानेका सरकारी प्रबंध; कागज-पत्र जो डाकमें आवें, डाक द्वारा जानेवाली वस्तु; नीलाकमरी बोली; † बमन । -कृतवा-पु० पोस्ट-आफिस । -गहरी-ली० डाक देनेवाली गहरी । -घर-पु० पोस्ट-आफिस । -चौकी-ली० वह स्थान जहाँ सवारीके घोड़े आदि बद्ध हैं । -ईगछा-पु० अफसरों वा परदेशियोंके ठिकनेका सरकारी मकान । -मह-सुल-पु० डाक द्वारा भेजी, भेगायी जानेवाली वस्तुपर लगनेवाला खर्च । -मुंसी-पु० पोस्ट-मास्टर । -कबब पु० दे० 'डाक-महसूल' । -सुलक-पु० (पोस्टेज) चिट्ठी-पत्री आदिपर टिकटके रूपमें लगनेवाला महसूल । मु० -बैठाना-ली० पहुँचानेके लिए स्थान-स्थानपर सवारी बदलनेकी व्यवस्था करना ।

शॉक-पु० [अ०] दे० 'डक' (अ०) ।

शकना-स० कि० फौदना, लौधना । अ० कि० बमन करना ।

शका-पु० माल लटनेके लिए छुट्टों द्वारा किया गया धाबा, छापा । -जनी-ली० डाका मारनेकी क्रिया, लूट, डकैती ।

शकिन-ली० दे० 'डाकिनी' ।

शकिनी-ली [सं०] कालोकी एक अनुचरी; नुईक ।

शकिबा-पु० डाक देनेवाला ।

शकी-ली बमन । वि० पैट ।

शकू-पु० डाका डालनेवाला, छुटेरा ।

शकटर-पु० [अ०] आचार्य, पारगत विद्वान्, किमी विषयका सर्वोच्च उपाधिप्राप्त व्यक्ति; एलोपैथी वा होमियोपैथीके अनुसार चिकित्सा करनेवाला ।

शकटरी-ली एलोपैथी, होमियोपैथी आदि पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र । वि० डाक्टरका ।

शकर-पु० दे० 'डाक्टर' ।

शख-पु० पलाश, डाक ।

शखक-पु० ऊबड़-खाबड़ भूमि-‘डगल ऊपर दीर्घाँ सुल नीरध न सोश’-साखी ।

शग्रा-पु० दे० 'डगा' ।

शट-ली० टेक; अक्षय; काग; चूँक; फटकार ।

शटना-स० कि० किसी वस्तुको दूसरी वस्तु मिश्रकर भागे डकेलना; मोरसे मिश्राना; छेद आदि बंद करना; * हुँ-हुँसकर खाना; पहनना (व्य०) । (जॉलें) मिलाया ।

शह-ली० चवानेके दौल, चोमक; सुम्पका निकला हुआ दौल; ऋत आदि इहोकी शाखासे निकलकर नीचे लटकनेवाली जटा, रीह ।

शहना-स० कि० जलना, दग्ध करना-“...कव पाँव पखारहुँ भूमि र डई”-कविसावली ।

शहना-पु० बगछि, दावानल; ताप, जलन ।

शहा-वि० गहरा, बंद ।

शही-ली० डुब्नी; डुब्नीपरके बाक ।

शह-पु० दे० 'डाग' ।

शहक, शहनक-वि० ताजा (पानी) ।

शहर-पु० गहटा; गहरी; मैला पानी; चिलमन्नी । वि० गंदला, मिट्टी मिला ।

शहना-पु० डब्बा, ढकनदार गहरा बरतन ।

शह-पु० कुश जैसी एक वास; कुश; (आमकी) बीर-‘जह लहि जवाहि डाम न होई’-प०; हरा नारियल ।

शहमर-पु० [सं०] शिष द्वारा उपरिष्ठ तंत्रविशेष; बौद्धका; दंगा; हलचल; अद्भुत दृश्य, वनस्पति; एक संस्कार जाति; † साकला मोंद, राक; राक बनानेवाली एक मधुमक्खी; अलकतरा । वि० मयंक; अनुकूप; दंगा करनेवाला ।

शहमल-पु० आजीवन कारावासका दंड; देशनिर्वासन ।

शहम-ली० दे० 'शहन' ।

शहममो-पु० [अ०] विजयी पैदा करनेकी एक मशीन ।

शहरी-ली [अ०] वह पुस्तिका जिसमें दैनिक कामोंका विवरण हो, रोजनामका ।

शर-ली० डाल; फूल आदि रखनेकी डलिया; सप्प, झुंड ।

शरवा-स० कि० दे० 'जालना' ।

शरल-ली० शाखा; शीशेका फतसु लगानेके लिए शीशर-में लगी हुई सूंठी; विवाहकी एक रस्स जिसमें बरकी मोरसे बंधो कपड़े और धागे दिये जाते हैं; बॉमकी बनी वस्तु जिसमें ये चीजें रखी जाती हैं; डलिया; धाल वा डलियामें मशकार भेजी जानेवाली खाने-पीनेकी चीजें ।

शरला-स० कि० गिराना; ऊपरसे नीचे पहुँचाना; फैलाना; छोड़ना; मिलाना; घुसाना, प्रविष्ट करना; अकित करना; पहनाना; मस्ये मदना; उपयोगमें लाना; रखना । मु० **शरल देना**-त्याग करना; छोड़ना; बाद न रखना; रिखले उतारना; फैलाना; पहेंके रूपमें कोई वस्तु लटकाना; जोड़ना ।

शहर-पु० एक अमेरिकन सिक्का जो लगभग चार (चार-कल पाँच) रुपयेके बराबर होता है ।

शहिल-पु० [सं०] दे० 'दाडिम' ।

शहली-ली० भेटके रूपमें भेजे हुए फल, मिठाई आदि, नगर; पेड़की छोटी शाखा; दे० 'डलिया' । मु०-मेजना, -लगाना-मे० आदि भेंट करना ।

शहारा-पु० पुत्र, बेटा ।

शहरी-ली० पुत्री, बेटा ।

शहसन-पु० विद्यावन, विस्तार ।

शहसा-स० कि० विद्याना; (सर्पादिका) काटना ।

शहसनी-ली० खाद; विद्यावन ।

शह-ली० ईर्ष्या, जलन ।

शहना-स० कि० जलना; सतप्त करना; तंग करना ।

शहक-पु० [सं०] एक जलपक्षी; नीलकण्ठ; नातक ।

शहर-पु० रोक न माननेवाली गाय आदिके गलेमें बांधी

जानेवाली लकड़ी। [सं०] भूत। नीच व्यक्ति। सेवक। मोटा भावनी; कैनेकी क्रिया; अवसान।

हिमाल-ली० राजपूतानाके चारणों या भादोंकी काश्च-भाषा। हि० नीच, कमीना।

हिंस-पु०, हिंसरी-ली० एक सरकारीवाला कल।

हिंसि-पु० [सं०] जलसर्प, डोंग्रा।

हिंसिम-पु० [सं०] डुगडुगी, डुम्मी; कृष्णपाक कल।

—घोष-पु० डुम्मी पिडवाना, डुगडुगी पिडवाकर घोषित करना।

हिंसिमी-ली० डुगडुगी।

हिंसिरी, हिंसरी-पु० [सं०] समुद्रफेन; श्याम। —मोदक-पु० लहसुने।

हिंसिहा-पु० [सं०] हिंसरी।

हिंस-पु० [सं०] अय; कौकाहल; दंगा; अयकी ध्वनि; झीहा; कुसकुस; विप्रल; अंठा; गैद; आरंभिक अवस्थाका भ्रूण; गर्भाशय। —मुद-पु० दे० 'दिवाह'।

हिंसाह-पु० [सं०] मामूली लकड़, कदप; वह डुक जिसमें राजाके न रहनेसे अवध्वनि होती हो।

हिंसिका-ली० [सं०] कामुकी; डुलडुला; सोनापाठा।

हिंस-पु० [सं०] छोटा बच्चा; शावक; भूले; एक खदररोध; † दंभ; आठवर, पाखंड। —चक्र-पु० घुमाघुम-घोतक एक तांत्रिक चक्र।

हिंसक-पु० [सं०] छोटा बच्चा।

हिंसिया-वि० दंभी, पाखंडी।

हिंसरी-ली० [सं०] डुगरी।

हिंसनरी-ली० [अं०] शब्द-कोश।

हिंसवर-पु० दे० 'दिगवर'।

हिंसना-अ० कि० हटना; हिलाना; बचनभंग करना।

हिंसरी-ली० [अं०] अंश, कला; विषयविशयसे मिलनेवाली उपधि; † बादीकी संपत्ति आदिपर अधिकार दिवानेवाला फैसला, डिक्ती। —वार-वि० वह जिसके पक्षमें अदालतका हक हिलानेवाला फैसला हुआ हो।

हिंसलाना, हिंसलाना-अ० कि० हिलाना, डगमगाना।

हिंसाना-सं० कि० हटाना; सरकाना; हिलाना।

हिंसरी-ली० सालाब; बावली।

हिंसाल-ली० [अं०] बनावट, तर्ज।

हिंसार-वि० हटिनीला।

हिंसिआरा, हिंसिआरा-वि० दे० 'हिंसार'।

हिंसोहरी-ली० एक फलका बीज जो बच्चोंकी नजर लगनेसे बचानेके लिए पहनते हैं।

हिंसौना-पु० नजर लगनेसे बचानेके लिए लगाया जानेवाला काजलका टीका।

हिंसकार-ली० (मोड़ आदिने) डकड़ने, जोरसे बोलनेकी आवाज, दहाड़—'अरनेने जोरकी हिंसकार लगायी'—शृंग०।

हिंसारी-ली० दाख मारकर रोना।

हिंसिहा-ली० [सं०] जवानोंमें ही बाल पकनेका रोग।

हिंस-वि० दे० 'हट'।

हिंसना-सं० कि० हट, मजबूत करना; मनमें पक्का निश्चय करना। अ० कि० हट, मजबूत होना।

हिंस-पु० [सं०] काठका हाथी; योग्य और छुरर व्यक्ति।

हिंसि-पु० [अं० 'हिंसुदी' नामक। —कलहर-पु० कलहरका नावक (अफसर)।

हिंस-पु० [अं०] रक्षा, बचाव; किसी देशकी रक्षाकी व्यवस्था; सफाई (पक्ष)। —आर्-हिंसिहा देव-पु० भारतकाकानून।

हिंसिया-ली० छोटा हिंस।

हिंस-पु० दे० 'हंस'।

हिंस-ली० छोटा हंस।

हिंसना-सं० कि० छलना, प्रताड़ित करना।

हिंस-पु० [सं०] चार अंकीका एक रौद्र रस-प्रधान रूपक जिसमें भावा, हंजाल, लड़ाई तथा पिशाचमयी आदिका विषय रहता है। (इसमें हाँस, शृंगार और हास्य रस विलीन हैं)।

हिंसिनी-ली० हिंसिम, डुगडुगी।

हिंसरेख-पु० [अं०] जहाजकी समयपर न बोलने या खाली न करनेका हरजाना; स्टेशनपर मालके अधिक समयतक पड़े रहनेका हरजाना जो छुड़ानेवालेको देना पड़ता है।

हिंस-ली० [अं०] १८ X २८ इंचकी कागजकी नाप।

हिंस-पु० एक छंद; बेलके कंधेपरका कूबड़।

हिंसिभूट(करमा)-सं० कि० [अं०] छपाई हो जानेके बाद टाइपोंकी अलग-अलग उनके खानोंमें रखना।

हिंसिभूट-पु० [अं०] हिंसिभूट करनेवाला।

हिंसरी-ली० [अं०] खेराती दवाखाना; औषधालय।

हिंसरी-ली० अनाज रखनेका मिट्टीका बक्का बरतन, कुटिला।

हींग-ली० संवी-चौड़ी आत्मप्रशंसा; अभिमान घोतक कीरी गथा; शैली। सु०—हॉकना—लंबी-चौड़ी बातें कहना।

हीठ-ली० घटि, नजर; मुझ। —बंछ-पु० नजरबंदी।

सु०—चुराना, छिपाना—सामने न ताकना। —बॉवना—आदू द्वारा दहिमें अन्न उत्पन्न करना। —मारना—नजर डालना। —रखना—देखरेख करना। —लगावना—अच्छी वस्तुको हम प्रकार देखना कि उसपर बुरा प्रभाव पड़े, नजर लगाना।

हीठना-सं० कि० देखना। अ० कि० देख पड़ना।

हीठि-ली० दे० 'हीठ'। —मूठि-ली० आदू, देना।

हीन-पु० [सं०] उदान; पक्षियोंकी एक प्रकारकी गति; इसमें उत्पन्न शब्द। —हीनक-पु० शीघ्रमें बक-बककर उड़नेकी क्रिया।

हीनुआ-पु० पैसा।

हीमहास-पु० आठवर; आठप; धूमधाम; गर्व, ठमक।

हील-पु० कद, शरीरकी 'चार्-चोर्पाई' आदि; देह, शरीर; व्यक्ति। —हील-पु० लंबाई-चोर्पाई आदि, शरीरका विस्तार।

ही वेलरा-पु० (जन्म १८८२) (ईसन) आयरलैंडकी फिनेनफेन पार्टीका नेता; प्रधान मंत्री १९५१; परराष्ट्र-मंत्री १९३२ से १९४८; राष्ट्रपति १९५९।

हीह-पु० गाँव; गाँवका बक्का जैना टीका जो पक्षी वस्तीके उजड़ जानेसे बना होता है; धामदेवता। —दारी-ली० जमींदारी बेचनेवाले जमींदारका एक तरहका हक।

हूँग-पु० राशि, डेर; हूड़, टीका।

हुँगावा-पु० दे० 'हुँग' ।

हुँह-पु० दे० 'हुँह' ।

हुँह-पु० दे० 'हिहिम' ।

हुँहुम, हुँहुम-पु० [सं०] दे० 'हिहिम' ।

हुँहुल-पु० [सं०] छोटा उल्ल ।

हुँहुक-पु० [सं०] दे० 'बाहुक' ।

हुँब-पु० [सं०] डीम ।

हुँबर-पु० [सं०] दे० 'डंवर' ।

हुक-पु० हुँसा ।

हुकिया-खी० दे० 'कोकिया' ।

हुकियाना-सं० कि० हुँने जमाना ।

हुगहुगाना-सं० कि० हुग्गी आदिकी लकड़ीमे बजाना ।

हुगहुगी-खी० दे० 'हुग्गी' । मु० -पीटना-मुनारी करना ।

हुग्गी-खी० चमड़े मे मडा, चौड़े मुँहका एक छोटा शान ।

हुपटना-सं० कि० चुनियाना; तह लगाना ।

हुपट्टा-पु० दे० 'दुपट्टा' ।

हुबकी-खी० पानीमें डूबनेकी किशा, गोना; एक तरहकी बिना तली हुई बकी ।

हुबबाना-सं० कि० डुबानेका काम कराना ।

डुबाना-सं० कि० पानी या अन्य तरल पदार्थमें सतहने नीचे पहुँचाना, गोता देना, बोरना; कर्लकित करना, (कुल आदिपर) बप्पा लगाना; किसीकी प्रतिष्ठा नष्ट करना; बरबाद करना ।

डुबाव-पु० (किसीके) डूबनेभरकी गहराई ।

डुबोना-सं० कि० दे० 'डुबाना' ।

डुब्बा-पु० पानीमें डुबकी लगानेवाला, पनडुब्बा ।

डुब्बी-खी० गोता ।

डुभकौरी-खी० दे० 'डम्कौरी' ।

डुलना-सं० कि० दे० 'डोलना' ।

डुलाना-सं० कि० हिलाना, चालित करना; झलना, दूर भगाना, हटाना; डपर-डपर घुमाना-फिराना ।

डुलि-खी० [सं०] कलुरे ।

डुलिका-खी० [सं०] खजनके आकारकी एक विविधा ।

डुली-खी० [न०] चिल्ली नामक साग ।

हुँगर-पु० ऊँची जमीन, टीला, डूँह; छोटा पर्वत-फच्छ-पु० देवदालीका फल ।

हुँगरी-खी० छोटी पहाड़ी ।

हुँगा-पु० चम्मच; * दे० 'हुँगर' ।

हुँडा-वि० एक साँगवाळा (बैल) । पु० एक साँगवाळा बैल ।

हुबना-सं० कि० पानी या अन्य तरल पदार्थकी सतहके नीचे चला जाना, मग्न होना; गोता खाना; डीन होना; अलस होना; कर्लकित होना; किसी काम कायक न होना; विगडना; बरबाद होना; मारा जाना । मु० हुबतेकी तिनकेका सहारा होना-अवलंबनकी धोका सहारा मिलना । हुबना-उतराना-वितामें डीन होना, किसी उल्लानमें पडा रहना । हुब मरना-लज्जाके मारे मर जाना; लज्जाके मारे मुँह न दिखाना ।

हुँबसी-खी० पयोते बैसी एक तरकारी, हिडिच, तिडिच ।

डेक-पु० [अ०] लकड़ीके तल्लो या लकड़ीते ढके छोटेकी बनी बहानकी पाटन; † वकान ।

डेग-पु० दे० 'दिग'; † डग, करम । -खी०-खी० दे० 'दियची' ।

डेग-वि० एक और क्वा । पु० डेवकी संख्या, १॥ । मु०

-हुँटकी मस्जिद चुनना या बनाना; -चावलकी शिबकी अलस पकाना-समते अलस राय कायम करना या काम करना ।

डेडा-वि० डेदगुना । पु० डेडका पडाका ।

डेदिवा-पु० (अनाब) उधार देनेका वह प्रकार जिसमें फसलपर मूलका ख्योदा बल्ल किया जाता है ।

डेरी-खी० बीजके देन-लेनकी एक रीति जिसमें फसल काटनेपर लेनेवालेकी डेदा लीजाना पड़ता है ।

डेपुटेसन-पु० [अ०] किसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए उच्च अधिकारी ने मिलनेवाला शिष्टमण्डल, प्रतिनिधि-मण्डल ।

डेवरी†-खी० टीन या शीशे आदिकी डिब्बी जिससे दीपकका काम लेने है ।

डेरा-पु० टिकाव, पडाव; अव्यकालिक निवास; विस्तार, बरतन आदि ठहरनेकी सभ्यी; ठहरनेके लिए कैलाया हुआ सामान; टिकनेकी जगह; सेमा, राखो आदि जिसमें टिका जाव; रहनेकी जगह, घर, मकान । * वि० रावो । -डंडा-पु० डेरका सामान । -मु०-डालना-सामानके साथ टिकना ।

डेरी-खी० [अ०] वह स्थान जहाँ दूध देनेके लिए गाँव-सेंस रखी जाती हो और दही-मक्खन आदि तैयार किये जाते हों; दूध, मक्खन आदिकी दुकान । -फार्म-पु० कृषि-संघी विभाग जहाँ दूध आदिका कारबार होता हो ।

डेला†-खी० रबीकी फसलके लिये जोतकर छोकी हुई भूमि । * पु० उल्ल; डेला; निस्तार वस्तु; पिजड़ा; डलिया ।

डेलटा-पु० [अ०] बहावी हुई मिट्टी, बाढ़ आदिने नदियोंके मुहनेपर बनी निकोनी भूमि जो डपर-डपर बहनेवाली धाराओंने चिरी होती है ।

डेला-पु० रोषा, डेला; आँखका गोलक; डेगुर ।

डेली-खी० डलिया, साँपा ।

डेवद-पु० क्रय, सिलसिला । * वि० डेदगुना ।

डेवदना-सं० कि० (कपडा इ०) मोडना, तह लगाना । अ० कि० रोटीका फूलना ।

डेवडा-वि० डेदगुना । पु० एक पडाका जिसमें कमसे प्रत्येक अकरी डेदगुनी संख्या पटी जाती है । -वरजा-पु० डंटर ड्रास ।

डेवकी-खी० दे० 'ख्योदी' ।

डेस्क-पु० [अ०] लिखने-पढ़नेके काम आनेवाली डाडुओं मेज ।

डेखी†-खी० अन्न रखनेका कधी मिट्टीका बना बड़ा बरतन; दे० 'देहली' ।

देहछ-पु० दे० 'देहली' ।

देगाना†-पु० डेगुर ।

देन-पु० दे० 'डेना' ।

डेना-पु० पंख, पर ।

डेस-पु० [अ०] विरामच्युक्त आधी लकीर ।

हॉसर-पु० बूझ, देका, नीटा; पहाडी।

हॉगा-पु० बही नाव।

हॉगी-खी० छोटी नाव।

हॉका-पु० कारतूस; फल; बही हलायची।

हॉकी-खी० पोस्तेका फल; टेंटी; बोंगी; लोही, डुगडुगी।

हॉप-पु० [सं०] दे० 'होम'।

होई-खी० काठकी बोंगीवाली एक तरहकी कलछी जिससे दूध आदि चलाते हैं।

होकरा-पु० बड़ा आदमी।

होकरी-खी० बूढ़ी स्त्री।

होका-पु० काठका बरतन जो तेल आदि रखनेके काम आता है।

होकिवा; होकी-खी० छोटा होका।

होक्का-पु० जलसर्प।

होपी-खी० जीवंती।

होष; होषा-पु० गोता, डुक्की।

होषना-स० कि० गोता देना; डुक्कना।

होम-पु० [सं०] अत्यंतोष्ण एक जाति जो दौरी, सप आदि बेचती है; बाड़ी। -काक-काग-पु० दे० 'होमकोआ'।

-कोआ-पु० [हिंदी] बड़ा कोआ।

होमबा-पु० दे० 'होम'।

होमबा; होमिब-खी० होमकी या होम जातिकी स्त्री, दादीकी स्त्री।

होमिबिन-पु० [अ०] राभ्य; उपनिवेश। -स्टेड्स-पु० औपनिशिक स्वराज्यका दरजा।

होर-खी० [सं०] भागा, तागा, सत; (ल०) बंधन, लगाव। मु०-पर लगाना-रास्तेपर लाना।

होरक-पु० [सं०] होरा, सत, भागा।

होरा-पु० सत, तागा; भारी; आँखकी पतली लाल नसें, वह वस्तु जिसके सहारे किसीका अनुसंधान किया जा सके।

होरिवा-पु० भारीदार कपडा।

होरियाना-स० कि० घोड़ों आदिको रस्सी बाँधकर ले जाना।

होरिहारा-पु० पट्टा।

होरी-खी० रस्ती; (ल०) सत; बंधन; कौंस; लगन।

होरे-अ० साथ-साथ।

होख-पु० पानी भरनेका लोहेका गोल बरतन; * झुला, झुलनेका साधन; पालकी; हलचल। वि० होलनेवाला, हिलनेवाला; चपल -खी०-खी० छोटा होख; फल-फूल होनेका हाथमें लटकाने योग्य बंसका गोल, गहरा बरतन।

होख-पु० [सं०] एक प्राचीन बाजा।

होख-बाका-पु० चलना-फिरना; घासाने जाना।

होल्मा-अ० कि० हिलना, गतिमान होना; वीक्षित होना; हथ-उपर घूमना, चलना फिरना; अपनी जगहसे हटना; (मनका) अस्थिर होना, विचलित होना।

होल्मा-पु० खियोंकी एक सवारी जिसे कहार डोते हैं। एक तरहकी पालकी। मु०-देना-कड़की बरके घर के बाहर ब्याह देना; किसी राजाकी भेंटके रूपमें अपनी लड़की देना।

होलावा-स० कि० हिलाना, चलायमान करना; झलना (पसा, चँबर); दूर करना, हटाना।

होली-खी० एक तरहकी खियोंकी पालकी, शिपिका।

होली-खी०-खी० दे० 'होर्'।

होपी-खी० डुग्गी, मुनादी।

होर्-पु० दे० 'हमर'।

होआ-पु० काठकी बनी बही करछी।

होकी-खी० पैडुकी।

होर-पु० तागा, भागा।

होल्-पु० डॉचा; बनावटका तर्ज; धन; रुपैया; गठन; (ल०) स्वरूप; कार्य-साधनका उपाय; प्रबंध, युक्ति। -डाल-पु० उपाय; कोशिश। -द्वार-वि० सुडील; सुंदर। मु०-डालना-रुपैया तैयार करना। -पर लाना-कतर-स्थित कर दुबस्त करना; रास्तेपर लाना, अनुकूल बनाना।

होलना-स० कि० सुडील बनाना, सुधक बनाना।

होवा-पु० दे० 'होआ'।

होटी-खी० [अ०] कर्तव्य; कर्म; बँधा हुआ काम; जुंगी।

होटी-वि०, पु० दे० 'टोटा'।

होटी-खी० दहलीज; पोर। -द्वार-पु० पोरिया,

होटीपर रहनेवाला पहरेदार। -बान-पु० द्वारपाल।

होई-खी० [अ०] रेखाओं द्वारा चित्र बनानेकी कला। -रूम-पु० बैठका।

होईवर-पु० [अ०] गाड़ी चलानेवाला।

होम-पु० [अ०] तीन मासेका एक परिमाण जो पानी आदि नापनेके काम आता है।

होमा-पु० [अ०] नाटक।

होवर-पु० [अ०] कागज आदि रखनेका वह वस्तु जैसा डॉचा जो मेजसे लगा रहता है, दराज।

होख-खी० [अ०] कथायद।

होन्-खी० [अ०] गढ़े पानी, मल, मूत्र आदिके बहनेकी नाली। -होस्पेक्टर-पु० मगरकी गदगीके बहावकी व्यवस्थाका निरीक्षण करनेवाला अफसर।

होस-पु० [अ०] बस-भूषा, पोशाक।

ह

ड-देवनागरी वर्णमालामें वर्णका चौथा वर्ण। उच्चारणस्थान मूला।

डकना-पु० दे० 'डकन'।

डकना-पु०, स० कि०, अ० कि० दे० 'डकना'।

डक-पु० पलाश, दाक।

डंग-पु० रीति, शैली, तरीका; तर्ज; जलन; तरह, प्रकार; रूप, बनावट; उपाय; कुशलता; आचरण; पाखंड; लक्षण; स्थिति।

डंगी-वि० घूर्त, चालाक, कुशल; जिसे काम निकालनेका डंग हो।

हैदरबा-पु० दे० 'दंडस' ।
 दंडस-पु० दंड, पाखंड; बहाना ।
 दंडार-वि० बेवोळ ।
 हैदोर-पु० भाग्यी ऊँची लफट ।
 हैदोरची-पु० मुनादी करनेवाला ।
 हैदोरना-स० कि० हैदना, एक-एक वस्तुपर ध्यान देते हुए खोजना ।
 हैदोरा-पु० डुग्गी, मुनादी । सु०-पीठना-बोपित करना ।
 हैदोरिया-पु० हैदोरा पीठनेवाला ।
 हैपना-पु०, स० कि०, अ० कि० दे० 'दकना' ।
 ह-पु० [सं०] बड़ा ढोल; कुचा; कुचेकी पूछ; सर्प; अनु-करणका शब्द ।
 हई-खी० भरना । सु०-देना-जबतक काम न हो जाय तबतक किसीके यहाँ रुठा रहना, भरना देना ।
 हकना-पु० दकन । स० कि० छिपाना, आच्छादित करना । अ० कि० छिपना, आच्छादित होना ।
 हकनिया-खी० दौकनेकी वस्तु, दकन ।
 हकनी-खी० दौकनेकी वस्तु, कसोरा ।
 हका-पु० तीन सेरकी एक तौल, आदक * थका, प्रहार; बका ढोल ।
 हकिल-खी० आक्रमण, चढ़ाई ।
 हकेलना-स० कि० ठेलकर गिराना; थका देकर आगे बढाना ।
 हकोसना-स० कि० अवधिक मात्रामें पीना; जल्दी-जल्दी पीना ।
 हकोसला-पु० झूठा दिखावा; स्वार्थसाधनके लिए किया हुआ आह्वार, पाखंड ।
 हक-पु० [सं०] बड़ा मस्ति ।
 हकन-पु० हकना, दौकनेकी वस्तु; [सं०] (किवाह) बंद करना ।
 हका-खी० [सं०] बका ढोल; हका; छिपाव; छेप; * थका ।
 हकारी-खी० [सं०] तारा देखी ।
 हगण-पु० [सं०] तीन मात्राओंका एक मात्रिक गण ।
 हचर-पु० आयोजन; आह्वार; बखेड़ा, झगड़ ।
 हटीगढ़, हटीगढ़ा, हटीगढ़-पु० मोटा-ताजा आदमी ।
 हट्टी-खी० दाढ़ी बाँधनेकी पट्टी; काग ।
 हट्टा-वि० अनावश्यक विस्तारवाला; जिसमें दिखावा किया हो । पु० आह्वार, दिखावटी ठाटपाट ।
 हनमनाना-अ० कि० छुदकना; चकर खाकर गिरना ।
 हप, हफ-पु० दे० 'हफ' ।
 हपना-पु० दकन । अ० कि० छिपा होना । स० कि० दौकना, छिपाना ।
 हपका-पु० दे० 'दफका' ।
 हपली-खी० दे० 'दफली' ।
 हब-पु० दंग, सौर, तरीका; तरह; बनावट; आदत; युक्ति ।
 हबरा-वि० गंदा, मटमैला ।
 हबरी-खी० दे० 'डिबरी' ।
 हबीखा-वि० दबवाला, चालाक ।
 हबुआ-पु० पैसा ।

हबैला-वि० गंदरा, मिट्टी मिला हुआ ।
 हभ-हभ-पु० ढोल आदिकी ध्वनि ।
 हभकाना-स० कि० बजाना ।
 हभकाना-अ० कि० छुदकना । स० कि० छुदकाना ।
 हबना-अ० कि० मकान आदिका गिरना ।
 हरकना-अ० कि० नीचेकी ओर जाना; ढालकी ओर बहना; जल आदिका पात्रमें गिरना; ढलना ।
 हरका-पु० आँखोंसे बराबर पानी बहनेका रोग; सिरेपर कलमकी तरह कटा हुआ बाँसका चोंगा जिससे चौपायोंको दबा आदि पिछाते हैं; चौपायोंको डरकेसे दबा पिछानेकी क्रिया ।
 हरकाना-स० स० कि० जल आदिकी पात्रसे गिराना ।
 हरकी-खी० जुलाहीका एक औजार जिससे वे बानेका सूत फेंकते हैं, भरनी; † छोटा डरका ।
 हरकीला-वि० डरकने या छुदकनेवाला ।
 हरकीहॉ-वि० डरक जानेवाला, अनुकूल-‘डरकी’ है” देखि बिस्स बकि परो मौन’-धन० ।
 हरना-अ० कि० दे० 'दलना' ।
 हरनि-खी० गिरनेका भाव था किया, झुकाव; किसी ओर ढलना; हिलनेकी क्रिया; दीन दसा देखकर किसीकी ओर झुकनेकी क्रिया ।
 हरहरना-अ० कि० ढलना; खिचना, प्रसन्न होकर किसी ओर झुकना ।
 हरहरा-वि० दानुर्वा । * अनुकूल, द्रवीभूत-‘कहा कहाँ कृपाकी धरति दरहरे हौ’-धन० ।
 दरहरी-वि० खी० दानुर्वा । खी० पकोड़ी ।
 दराना-स० कि० दे० 'दलना' । अ० कि० आँव बहाना ।
 दरारा-वि० ढलनेवाला; द्रवित होनेवाला; ढाल ।
 दरैया-पु० ढालनेवाला ।
 दर्रा-पु० मार्ग, रास्ता; शैली; आदत; उपाय ।
 दलकना-अ० कि० दे० 'दलना' ।
 दलका-पु० आँखोंसे पानी गिरनेका रोग ।
 दलकाना-स० कि० (पानी आदि) छुदकाना ।
 दलकी-खी० दे० 'दरकी' ।
 दलना-अ० कि० डरकना; छुदकना; बीतना; नीचेकी ओर जाना; अस्ताचलकी ओर जाना; सोंचेमें डाला जाना; समाप्ति या अंतकी ओर जाना; चँवर आदिका विशेष दण-से श्वर-उपर हिलाना जाना; द्रवित होना; उबेला जाना ।
 दलमल-वि० स्थिर ।
 दलवा-वि० ढाला हुआ ।
 दलवाना-स० कि० ढालनेका काम कराना ।
 दलवाहि-खी० हँसी-ठट्टा ।
 दलाई-खी० ढालनेका क्रिया या उन्नत ।
 दलाना-स० कि० दे० 'दलवाना' ।
 दलुबाँ-वि० दे० 'दलबाँ' ।
 दल्ले-पु० ढाल धारण करनेवाला व्यक्ति, सैनिक ।
 दलरी-खी० लगन, पुन ।
 दलक-खी० सुखी खोँसी ।
 दइना-अ० कि० मकान आदिका गिरना, ध्वस्त होना ।
 दहरना-अ० कि० छुदकना, गिर पडना ।

उहराना—स० कि० उधकाना; गिराकर अलग करना ।
उहरी—खी० देहली; मटकी ।
उहवावा—स० कि० उहानेका काम करना ।
उहावा—स० कि० गिराना, ध्वस्त करना ।
उँक—पु० पलाश; कुश्तीका एक पैर ।
उँकना—स० कि० दे० 'ढकना' ।
उँक—पु० पलाश ।
उँका—पु० किसी वस्तुकी बनावटका आरंभिक या शुरु रूप; पंजर बनावट; तरह; तरीका ।
उँपना—स० कि० दे० 'ढकना' ।
उँम—खी० सूखी खोँसी खोँसनेकी आवाज ।
उँसना—अ० कि० सूखी खोँसी खोँसना ।
उँसी—खी० सूखी खोँसी ।
उई—वि० दो और आवा । पु० डारकी संख्या, २॥ ।
मु०—दिनकी बादशाहस—चंद्र दिनोंकी गौज; दूल्हा बनना ।
डाक—पु० पलाश; बड़ा ढोल । —के तीन पात—इमेशा तंत्रवस्त रहनेवाला ।
डाका—पु० मूर्ती कपड़ोंके लिए प्रसिद्ध बंगालका एक पुराना नगर; † खोँचा । —पाटन—पु० एक महीन कपड़ा जिस पर फूल कढ़े होते हैं ।
डाटा, डाख—पु० दादी बाँधनेकी कपड़ेकी पट्टी ।
डादी—खी० 'दट्टी' ।
डाफ, डाइ—खी० नीत्कार, नीला; निग्वाइ । **मु०**—मारना नीत्कार करते हुए रोना ।
डाइना—स० कि० दे० 'डादना' ।
डाइस—पु० धीरज, दिलास, सात्वना । **मु०**—बैधाना—सात्वना, दिलासा देना ।
डाइन—खी० डादी जातिकी खी ।
दाही—पु० घूम-घूम जम्होस्तबके गीत गानेवाली एक नीच जाति ।
दाइन—पु० जलसिरिस नामका पेड़ ।
दाना—स० कि० गिराना; मकान आदिकी गिराना, ध्वस्त करना ।
डापना—स० कि० दे० 'ढकना' ।
डाबर—वि० गैरला, गंदा, मटमेल ।
डादा—पु० युगियों आदिकी बंद करनेका टोकरा या खोँचा; जाल; जौलती; परछाई; रौंदकी दुकान ।
डामक—पु० नगाड़ा, ढोल; डंके; ढोल आदिका शब्द ।
डामरा—खी० [सं०] हसकी मादा, हसी ।
डार—पु० डाल्हाई जमीन; उत्तार; दौंचा; मार्ग । खी० कानका एक गहना; फलक ।
डारना—स० कि० दे० 'ढालना' ।
डारस—पु० दे० 'डादस' ।
डाल—खी० आगेकी ओर क्रमशः नीची होती गयी जमीन; उत्तार; ढंग, प्रकार; [सं०] तलवार, माले आदिके आधात-को रोकनेका लोहे या गैरेके चमड़ेका बना कछुएकी पीठ जैसा एक साधन ।
डालना—स० कि० पानी आदिकी गिराना, ढकेलना; सराब पीना। पिचली हुई धातु आदिकी सँचे द्वारा विशेष रूप

देना ढेलना; ढिलाना ।
डालवाँ—वि० जो आगेकी ओर क्रमशः नीचा होता गया हो, ढाल ।
डालिया—पु० बरतन ढालनेवाला; गहने बनानेवाला ।
डाली (खिन्)—पु० [सं०] डाल धारण करनेवाला, सैनिक ।
डालुवाँ—वि० दे० 'ढालवाँ' ।
डाल—वि० दे० 'ढालवाँ' ।
डस—पु० डाकु, छुटेरा ।
डसना—पु० टेक, आभारकी वस्तु, सहारा; तकिया ।
डाहना—स० कि० 'दाना' ।
डैंडोरना—स० कि० दे० 'डैंडोरना'
डैंडोरा—पु० मुनादी, डुग्गी; डुग्गी बजाकर की गयी घोषणा ।
डिग—अ० पास, समीप, नजदीक । * खी० तट; (कपड़ेका) किनारा ।
डिडाई—खी० धटना, बेमदबी; दुःसाहस ।
डिपुनी—खी० चूचुक ।
डिबरी—खी० दीपकके काम आनेवाली दीन, शीशे, मिट्टी आदिकी बनी डिबिया; बालूके ऊपर कसा जानेवाला लोहेका छेदा ।
डिमका, डिमाका—मर्व० अमुक, फर्मा ।
डिमरिवा—खी० कहाँरिन, पानी लानेवाली ।
डिलडिल, डिलडिला—वि० दीला-ढाला; गाढ़ा नहीं ।
डिलाई—खी० दीलापन; सुस्ती, शिथिलता ।
डिलाना—स० कि० दीला करना; बंधन छुड़ाना; *दीला करना; बंधनमें मुक्त करना ।
डिल्ल—वि० डिलाई करनेवाला; आलसी ।
डिल्ली—खी० दिल्ली नामकी प्राचीन नगरी । —बै—पु० दिल्लीपति ।
डिल्लेस—पु० दिल्लीश्वर, दिल्लीपति ।
डिसरना—अ० कि० फिलसफ करना, प्रवृत्त होना; झुकना ।
डिंगर—पु० अधिक लंबा-चौड़ा व्यक्ति; जार ।
डिई—पु० गर्भ; बड़ा पेट ।
डिईस—पु० दे० 'डिईश' ।
डिई—पु० दे० 'डिई' ।
डी—खी० (नदी, नालोंका) केंचा किनारा ।
डीच—खी० झूड़ ।
डीट—खी० रेखा, लकीर ।
डीठ—वि० धृष्ट, बेमरद; सकोचरहित; चपल; निडर; साहसी । —सा—खी० डिडाई ।
डीठा—वि० दे० 'डीठ' ।
डीछो, डीछो—पु० डिडाई ।
डीम—पु० दे० 'दीमा' ।
डीमरा—पु० धीरज; पानी भरनेवाली एक जाति ।
डीमा—पु० मिट्टीका ढोका; ईंट, पत्थर आदिका टुकड़ा ।
डील—खी० डिलाई, झुलस; शिथिलता, तनावका अभाव; व्यर्थकी देर; फुरसत, छुट्टी । † पु० बालोंमें पड़नेवाला एक छोटा कीड़ा, जूँ । † वि० दे० 'डीला' । **मु०**—देना—स्वच्छ होने देना; किसी वस्तुके तनावकी कम करना; बंधनमुक्त करना ।

हीलना-स० कि० टीका करना; बंधन-मुक्त करना; सरकने देना; पासी आदि देकर पतला करना।

हीला-वि० जिसमें तनाव, खिचाव न हो; जो कसा न हो; जो कसकर बैठा या रेंग न हो; जो पहननेमें अधिक लंबा-चोड़ा हो; ज्यादा गोल; काहिल, मुस्त; नामुस्तैर; शांत, मरम। [खी० 'दीली'।] -**(खी)आँख**-आँखें खुली आँखें; मरपूर्ण दृष्टि। **मु०**-**पड़ना**-हुला हो जाना, लापरवाही करना।

हीह-पु० टीला, हूह।

हुँह-पु० उक्का; उग, छेरा।

हुँहन-पु० [सं०] खोज, पता लगाना।

हुँहपाणि, हुँहपाणि-पु० दंडपाणि शेर।

हुँहबाना-स० कि० खोजबाना, पता लगवाना।

हुँहा-खी० [सं०] शिरण्यकशिपुकी बहिन जो प्रह्लादकी गोदमें लेकर आगमें बैठनेपर जल मरी।

हुँदि-पु० [सं०] काशील एक गणेश। -**शास्त्र**-पु० दे० 'हुँदि'।

हुँवित-वि० [सं०] जिसकी खोज की गयी हो, जो हुँदा गया हो।

हुँवी-खी० बौह, मुसुका; नामि।

हुकना-अ० कि० हुमना; ताकमें बैठना; छिपे तौरसे कुछ सुनने या देखनेके लिए आक्रमें बैठना; दूट पड़ना।

हुकास-खी० तेज प्यास।

हुका-पु० दे० 'हुँका'।

हुदीना-पु० डोटा, लड़का।

हुनमुनियाँ-खी० कजली गानेका एक ढंग जिसमें लियों गोलामें धूमती और बीच-बीचमें झुकती है; लुदकनेकी क्रिया।

हुदकना-अ० कि० लुदकना; नीचे सरकना; फिसलना; झुकना।

हुदना-अ० कि० डरना; डरकना; फिमलना; नीचेकी ओर बहना; डोलना; प्रसन्न होकर किसीकी ओर झुकना, प्रवृत्त होना।

हुददुरी-खी० ऊपर-नीचे होते हुए गिरनेकी क्रिया; तंग रास्ता।

हुदना, हुदबना-स० कि० डरकाना; डुलकाना; गिराना; डुलाना।

हुलकना-अ० कि० दे० 'डुलकना'।

हुरी-खी० पगडंडी।

हुलकना-अ० कि० उलटते-पुलटते गिरना।

हुलकाना-स० कि० लुदकाना।

हुलबुल-वि० लुदकनेवाला।

हुलना-अ० कि० दे० 'दुरना'; दोया जाना।

हुलमुल-वि० दे० 'दुलमुल'।

हुलवाई-खी० दोनेका काम या उजरत।

हुलबाना-स० कि० दोनेका काम कराना।

हुलाई-खी० दोनेकी क्रिया या उजरत।

हुलाना-स० कि० दे० 'दुराना'; दे० 'डुलबाना'; *पोतवा।

हुलुआ-खी० खजूरकी बीनी।

हुँकना-अ० कि० दे० 'डुकना'।

हुँका-पु० कुछ देखने-सुनने या किसीकी पकड़ने आदिके लिए चुपचाप आक्रमें छिपना।

हुँह-खी० खोज, तलाश। † वि० चोरीकी गरजसे चुपकेसे तलाश करनेवाला।

हुँहना-स० कि० खोजना, तलाश करना।

हुँहका-खी० हुंदा नामकी राखती।

हुँडी-खी० मूले हुए आटेका लहडू।

हुँकना-अ० कि० दे० 'हुँकना'।

हुका-पु० दे० 'हुँका'; † बंठल आदिके बोझका एक मान।

हुकिया-पु० शेतार जैनोंका एक भेद।

हुह-पु० डेर, अटाला; टीका।

हुहारा-पु० दे० 'हुह'।

हुँक-पु० [सं०] एक जलीय पक्षी जिसकी बाँच और गरदन लंबी होती है। † दे० 'सोँहा'।

हुँकली-खी० सिचाईके लिए पानी निकालनेका एक यंत्र; धान कूटनेका एक यंत्र, डेंकी; अर्ध निकालनेका एक यंत्र; निरके बल उलटनेकी क्रिया; सिलाईका एक प्रकार।

हुँका-पु० बगी डेंकी; कोष्ममें जाटके सिरसे लगाया जाने वाला बंस।

हुँकिया-खी० [सं०] एक ताल।

हुँकिया-खी० कपड़ेकी एक काट जिसमें लंबाई षट जाती और चौड़ाई बढ जाती है।

हुँकी-खी० [सं०] नुलका एक प्रकार।

हुँकी-खी० धान कूटनेका एक यंत्र।

हुँकरा-खी० दे० 'हुँकली'।

हुँकुडी-खी० दे० 'हुँकली'।

हुँटी-खी० धक्का पेड़।

हुँह-पु० फली; एक नीच जाति; मूल आदमी; कपास आदिका डोहा।

हुँदर-पु० दे० 'टेटर'।

हुँदवा-पु० लंगूर।

हुँहा-पु० दे० 'हुँह'।

हुँदी-खी० कपास, मेमर, पोस्ते इत्यादिका डोहा; † छीमी; कानका एक गहना।

हुँप-खी० फल या पत्तेके मुँहपरका वह पतला भाग जिसके बल वह पेड़की टहनियों लटकता रहता है।

हुँपी-खी० दे० 'हुँप'।

हुँदारा-पु० पैसा; (ला०) धन।

हुँदुआ-पु० दे० 'हुँकली'।

हुँदस-पु० दे० 'हुँदसी'।

हुँदनी-खी० दे० 'हुँप'।

हुँदरी-खी० दे० 'हुँदरी'।

हुँदारा-पु० दे० 'हुँदुका'।

हुँदुका-पु० ताँबेका एक सिक्का, पैसा।

हेर-पु० राशि, अटाला, टाल, पुन। † वि० बहुत, अधिक।

मु०-**करना**-मार डालना। -**हो जाना**-मर जाना।

हेरा-पु० झुलसी आदि बटनेका लकड़ीका एक औजार; एक वृक्ष, निकोचक।

हेरी-खी० दे० 'हेर'।

हेक-पु० दे० 'हेका'।

डेलबॉस-पु० डेला फंक्रमेकी रस्ती जिसमें उसे रखनेके लिए फंदा बना होता है, गोकना ।
डेला-पु० मिट्टी, पत्थर आदिका टुकड़ा; एक वृक्ष । -**बौब-खी०** भादों सुदी चौथ जब चंद्रमाकी देखनेपर लोग दूसरेके घरपर डेला फेंकते हैं ।
डेलेबाज-पु० डेला फेंककर मारनेवाला, डेलेसे निशाना मारनेवाला ।
डेलेबाजी-खी० डेला फेंककर बायल करनेकी क्रिया ।
डेल्मुका-खी० [सं०] एक सिक्का, पैसा ।
डेया-पु० डार्ले सेरका बटखरा; एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकोंकी दार्शुनी संख्या पढ़ी जाती है ।
डोआई-खी० दे० 'दुलाई' ।
डोंक-खी० डेर; एक मछली ।
डोंका-पु० पत्थर आदिका बड़ा टुकड़ा जो गढ़ा न गया हो; बड़ा डंका ।
डोंग-पु० आडंबर, पाखंड; छल । -**बाङ्ग-वि०** दे० 'दो गी' । -**बाङ्गी-खी०** पाखंड, आडंबर ।
डोंगी-वि० डोंग करनेवाला, पाखंडी ।
डोंदा-पु० दे० 'दोदा' ।
डोंद-पु० पोस्ती, कपान आदिका डोंका, डेंदी ।
डोंदी-खी० नामि; † दे० 'डेंदी'; एक तरहका सरकंटा ।
डोक-खी० दे० 'दोक' ।
डोका-पु० दे० 'दोंका' ।
डोटा-पु० पुत्र; बेटा; बालक ।
डोटी-खी० पुनी, वेदी; बालिका ।
डोटोना-पु० दे० 'दोटा' ।
डोना-स० कि० बौद्धकी एक स्थानमे दूसरेपर पहुँचाना; किनी वस्तुकी ले चलना, उठाकर वा लादकर ले जाना ।
डोर-पु० चौपाया, मरेडी; * छटा, अर्द्ध ।
डोरना-स० कि० दे० 'डरकाना'; डिलाना; झलना (पखा) ।
डोरा-पु० दे० 'दोर' ।
डोरी-खी० डरकनेकी क्रिया या मास; रटन, धुन, ली - 'हरिदरसनकी डोरी लागी'-सूर ।

डोल-पु० [सं०] हाथसे बजानेका एक भाजा जो दोनों ओर चमके उड़ा होता है; कानका भीतरका परदा, कर्ण-पट्ट । -**डमका-पु०** [हिं०] बहल-पहल, धूम-धाम; भाजा-भाजा । **डु०-पीटना-चारी** और कहते फिरना ।
डोलक-खी० छोटा डोल ।
डोलकिवा-पु० डोल बजानेवाला । **खी०** छोटा डोल, डोलकी ।
डोलकी-खी० छोटा डोल ।
डोलन-पु० दे० 'डोलना' ।
डोलना-पु० डोलकी शकलका गलेमें पहननेका अंतर; पाखाना; † बड़ा बेरन । * स० कि० डरकाना, गिराना ।
डोलनी-खी० छोटा पाखाना ।
डोला-पु० फल आदिमें पहननेवाला एक सफेद कीड़ा; मेहराबका छत्रा; शरीर; पति; एक तरहका गीन; मूर्ख व्यक्ति; सीमासूचक चिह्न ।
डोलिनी-खी० डोल बजानेवाली स्त्री ।
डोलिया-पु० दे० 'डोलकिया' ।
डोली-खी० दो सौ पानोंकी गड्डी; हँसी, परिहास, दिखगी ।
डोब-पु० मांगलिक अवसरपर राजा आदिको नजर की जानेवाली वस्तु, डाली, भेंट-लै लै होब प्रजा प्रसुदित चले आति-आति भरि भार'-गीतावली ।
डोबा-पु० दोये जानेकी क्रिया; लूट दे० 'डोब' ।
डोबाई-खी० दे० 'दुलाई' ।
डोहना-स० कि० डूँदना - 'सूर सुवैद बेगि दोहो किन, मये मरनेके जोग'-सूर; दोना ।
डोंखा-पु० एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकोंकी सादे चार-गुनी संख्या पढ़ी जाती है ।
डोंमना-स० कि० धूमधाम मवाना; हर्षध्वनि करना ।
डोरुव-पु० [म०] डाली, भेंट, उपहार, रिश्वन ।
डौकिस-वि० [सं०] पाम लाया हुआ ।
डौरी-खी० धुन, लगन; डग, दब - 'गौरी वाय दौरी सों बुलावे गौरी गायकी'-धन० ।
डौली-खी० दे० 'दौरी' ।

ण

ण-देवनागरी वर्णमालामें त्वर्गका पाँचवाँ वर्ण । उच्चारण-स्थान मूला ।
ण-पु० [सं०] विदुदेव-मुद्रका एक नाम; भूषण; निर्णय;

ज्ञान; शिव; अजीकृतिपूचक शब्द; भेंट; कुटिल व्यक्ति; जलीय भवन । वि० गुणहीन ।
णगण-पु० [सं०] दो मात्राओंका एक गण ।

त

त-देवनागरी वर्णमालामें त्वर्गका पहला वर्ण । उच्चारण-स्थान दंत ।
तंक-पु० [सं०] भय; कष्टमय जीवन; पहननेका कपड़ा; भ्रियके वियोगका दुःख; टॉकी, छेनी ।
तंजन-पु० [सं०] कष्टमय जीवन बिताना ।
तंग-पु० [फा०] जीन कसनेकी पेटी । वि० संकीर्ण, विस्तारमें कम; नुस्त, कसा हुआ; टिका; परेशान । -**दस्त-**

वि० जिसके पास पैसेकी कमी हो, अर्थकष्टमें पड़ा हुआ ।
-दस्ती-खी० पैसेकी कमी, अर्थकष्ट । -**हाल-वि०** तंगदस्त; विपद्ग्रस्त । **तु०-खाना-परेशान** होना ।
-करना-आजिन करना; दुःख पहुँचाना; हैरान करना ।
तंगिया-खी० तनी, बंद ।
तंगी-खी० तंग होना; संकीर्णता; नुस्ती; परेशानी; गरीबी ।
तंजेब-खी० दे० 'ननकेब' ।

संघ-पु० [सं०] एक कवि; * नाच ।
संघक-पु० [सं०] बाजीगर; संजन; केन; सजावट; वह नाच्य जिसमें अधिक समास हैं; पैका वग ।
संघक-पु० दे० 'तांघव' ।
संघा-खी० [सं०] वध ।
संज्ञि-पु० [सं०] एक प्राचीन कवि ।
संज्ञ-पु० [सं०] नदी ।
संज्ञरीय-पु० [सं०] चावलका धोवन; भौंघ; कीट-पतंग; वने ।
संज्ञक-पु० [सं०] भान्य; चावल; एक सरसोंकी तौल ।
संज्ञांशु-पु० [सं०] चावलका धोवन; भौंघ ।
संज्ञा-खी० [सं०] नायविडंग; चौलाईका साग ।
संज्ञली-खी० [सं०] यवतिका नामकी कृता; चौलाई; एक ककड़ी ।
संज्ञलीक-पु० [सं०] चौलाईका साग ।
संज्ञलीक, संज्ञलीक-पु० [सं०] नायविडंग; चौलाईका साग ।
संज्ञलीयिका-खी० [सं०] नायविडंग ।
संज्ञु-पु० [सं०] विडम ।
संज्ञेर, संज्ञेरक-पु० [सं०] दे० 'संज्ञलीक' ।
संज्ञोन्ध-पु० [सं०] भौंघ; चावलका धोवन ।
संज्ञोवक-पु० [सं०] चावलका धोवन; भौंघ ।
संज्ञोव-पु० [सं०] चावलका डेर; एक भैंस ।
संत-पु० तंत; तत्स; तारवाला बाजा; उपाय-आवनको तत तेरो भयो ना बन्त भौंघ-कलस; तनशाख; अमिलावा; अधीनता । **खी०** उतावली; जलदाजी । -**भंत** पु० दे० 'तन्-भंत' ।
संतरी-पु० तारवाला बाजा बजानेवाला । **खी०** तारवाला बाजा; बाजेका तार ।
संति-खी० [सं०] लंदी रस्ती (जिसमें कई बछड़े बंधे हों); गौ; कतार; फैलाव । पु० जुलाहा । -**पाल-पु०** गोरक्षक; विराट् नगरमें अज्ञातनासके समय सबदेवका नाम ।
संतु-पु० [सं०] मृत; तागा; रेशा; घ्राह; संतान; परमेश्वर; मकड़ीका जाल । -**काह-पु०** ताना साफ करनेका जुलाईका एक औजार । -**कीट-पु०** रेशमका कीड़ा; मकड़ी । -**नाग-पु०** बघा घड़ियाल । -**नाम-पु०** मकड़ी । -**निर्यास-पु०** ताड़का पत्र । -**पर्व(त्र)-पु०** भावणकी पूर्णिमा जिम दिन रक्षाबंधनका पर्व होता है । -**भ-पु०** सरसों; बछड़ा । -**बद्ध-वि०** सततकी वृद्धि करनेवाला । पु० विष्णु; शिव । -**बादक-पु०** तारवाला बाजा बजानेवाला । -**बाघ-पु०** तारवाला बाजा । -**बाप-बाघ-पु०** जुलाहा; ताँती; मकड़ा । -**रुंघ-पु०** कटाव । -**विग्रह-खी०** केला । -**शाखा खी०** नौतपर । -**संतत-वि०** बुना हुआ । -**सार-पु०** सुपारीका पेड़ ।
संतुक-पु० [सं०] सरसों; रस्ती; एक सर्प ।
संतुकी-खी० [सं०] नाही ।
संतुन, संतुन-पु० [सं०] एक मलजंतु, मगर ।
संतुमाद्(मव्)-पु० [सं०] अग्नि ।
संतुर, संतुल-पु० [सं०] मृणाल, कमलकी नाल ।

संघ-पु० [सं०] तंतु; तंतु; कौटुंबिक मृत्यु; सिद्धांत; ओषधि; प्रधान; जुलाहा; वस्त्र; वेदकी एक शाखा; हेतु; राष्ट्र; राज्य; सेना; प्रबंध; शासन-प्रबंध; समूह; सुख; शपथ; धन; युद्ध; व्यवहार; सजावट; नियम; कुल; परिवारका भरण-पोषण; नीतिका एक अंग; करवा; अधीनता; विज्ञान-संबंधी सिद्धांत, रचना या नियम; ऐसी रचनाका एक अध्याय; शिब-शक्तिकी पूजा और अभिचार आदिका विधान करनेवाला शाख; भागम; बीणा आदिका तार । -**काह-पु०** दे० 'तंतुकाह' । -**धारक-पु०** कर्मकांडमें वह व्यक्ति जो पद्धति-प्रयोगोंको लिये रहता है । -**भंत्र-पु०** जादू-येना; उपाय-युक्ति । -**युक्ति-खी०** अनुश्रितियोंको दूर करते हुए अर्थकी स्पष्ट करनेकी युक्ति (अधिकरण, योग, पदार्थ आदि) । -**बाघ-पु०** बीणा, सारंगी आदि तारवाले बाजे, तंतुवाध । -**बाप-बाघ-पु०** दे० 'तंतु-बाप' । -**संस्था-खी०** मशिमल, शासकसभा । -**स्कंद-पु०** गणित ज्योतिष । -**होम-पु०** तंत्रशास्त्रके अनुसार किया जानेवाला होम ।
संत्रक-पु० [सं०] कीरा, नया कपड़ा ।
संत्रण-पु० [सं०] शासन-प्रबंध ।
संत्रता-खी० [सं०] कोई ऐसा कार्य करना जिसने अनेक उद्देश्योंकी पूर्ति हो (जैसे तपण, पूजन आदिके निमित्त बार-बार स्नान न करके एक ही बार स्नान करना-धर्मशास्त्र); अधीनता ।
संत्रा-खी० [सं०] दे० 'तंद्रा' ।
संत्रायी(विन्)-पु० [सं०] धर्य ।
संत्रि-खी० [सं०] तंत; बीणा; बीणाका तार; नस; पूँछ; विविध गुणोंवाली खी । -**पाल-पु०** दे० 'सतिपाल' । -**पालक-पु०** जयद्रथ ।
संत्रिका-खी० [सं०] गुडुची; तंत ।
संत्री-खी० [सं०] बीणा आदिमें लगा तार; गुडुची; देहकी नस; एक नदी; रस्ती; नाडी; तारवाला बाजा; बीणा । -**भांड-पु०** एक तारवाला बाजा, बीणा । -**मुल-पु०** हाथकी एक मुद्रा ।
संत्री(त्रिन्)-वि० [सं०] तारोंवाला; तंत्रका अनुसरण करनेवाला । पु० यवैया; सैनिक ।
संद्रा-खी० दे० 'तंद्रा' ।
संदुरुल-वि० [फ्रा०] स्वस्थ, जिसका स्वास्थ्य ठीक हो ।
संदुरुली-खी० स्वस्थ, अरोग्य ।
संदुल-पु० दे० 'तंदुल' ।
संदुलीयक-पु० दे० 'तंदुलीयक' ।
संदूर-पु० एक तरहका चूल्हा जिसे गरम करके रोदियों पकाते हैं ।
संदूरी-पु० एक प्रकारका रेशम । वि० तंदूर-सर्वबी ।
संदेही-खी० दे० 'सनदिही' ।
संद-वि० [सं०] ज्ञान, शिथिल; आलसी ।
संद्राबाघ-पु० [सं०] दे० 'तंतुबाघ' ।
संद्रा-खी० [सं०] जंघ; छाति; बैधकमें शरीरके भारी और बढ़ियोंके शिथिल होनेकी दशा ।
संद्रालु-वि० [सं०] तंद्रायुक्त ।
संत्रि-खी० [सं०] तंद्रा ।

संज्ञिक-पु० [सं०] एक प्रकारका ज्वर ।
 संज्ञिका-की० [सं०] तन्त्रा ।
 संज्ञिक-वि० [सं०] तन्त्रावाक्या; तन्त्रावे संषद ।
 संज्ञी-की० [सं०] दे० 'तन्त्रि' ।
 संज्ञी(शिव)-वि० [सं०] क्रांत; काश्चि ।
 संज्ञा-की० [सं०] गाय ।
 संज्ञा-पु० एक तरहका चौड़ी मोहरीका पावजामा । की० [सं०] गाय ।
 संज्ञा-पु० सुरतीसे बनायी हुई एक नशीली चीज जिसे चिकम आदिपर रखकर पीते हैं; जर्दा । -क्रोह-पु० तंषाफू बेचनेवाला ।
 संज्ञिका-की० [सं०] गाय ।
 संज्ञिया-पु० तंषिका छोटा तसला ।
 संज्ञीर-पु० [सं०] ज्योतिषका एक योग ।
 संज्ञीह-की० [सं०] चेतावनी ।
 संज्ञ-पु० शामियाना, लेमा ।
 संज्ञर-पु० [सं०] एक तरहका ढोल । -ची-पु० तंज्ञर बजानेवाला ।
 संज्ञरा-पु० सितार जैसा एक बाजा जिसे सुर कायम रखने के लिए बजाते हैं; तानपूरा ।
 संज्ञक-पु० पान, ताबू ।
 संज्ञोक-पु० ताबू, पान ।
 संज्ञोक्चि-की० पान बेचनेवाली स्त्री, बरहन ।
 संज्ञोकी-पु० पान बेचनेवाला, बरई ।
 संभ-पु० एक सांख्यिक अनुभाव; स्तम्भ ।
 संभन-पु० दे० 'तम्भ'; स्तम्भन ।
 संभाबती-की० एक रागिनी ।
 संभार, संभारी-की० घुमटा, चकर ।
 संभारा-पु० दे० 'संवा, री' ।
 सं-पु० [सं०] चोर; अनृत; दूँछ (विशेषकर स्थारकी); गोद; स्नेह; गर्भ; शठ; रक्त; योद्धा; दुष्टदेव; (अवसागर तरनेकी) नौका-पुण्य; एक गण (पिंगल) । * अ० तो ।
 सभञ्जुष-पु० [अ०] आश्चर्य, अचम्भा ।
 सभञ्जुष-पु० [अ०] सोच-विचार; आगा-पीछा; देर, झटका ।
 सभञ्जुष-पु० [अ०] संबंध, लगाव ।
 सभञ्जुष-पु० [अ०] वडा इलाका । - (झे) दार-पु० तमलुकके मालिक । -दारी-की० तमलुककेदारका पद ।
 सभञ्जुष-पु० [अ०] पक्षपात; धर्म-संबंधी पक्षपात; कट्टरपन ।
 सभसा-वि० तैसा ।
 सभै-प्र० को, प्रति, से । अ० बाते ।
 सभै-की० जलेबी आदि बनानेकी छिछली कच्ची ।
 सड-अ० तर; स्थी ।
 सड-अ० तो भी, तथापि ।
 सड-अ० सीमा या अवधि संचित करनेवाला अव्यय, पर्यंत । * की० टक, निमित्तमे दहि; तराजू । * पु० तक, मही । वि० [सं०] निमित्त (दे०); सडनशील ।
 सडमा-पु० [अ०] अंदाजा, तखमीना; पेश करना;

फैनाला ।
 सडमीर-की० [अ०] भाग्य, किस्मत । -वर-वि० भाग्य-वाग् । सु०-आज्ञमाना-भाग्यके भरोसे कोई काम करना । -ऊँची जगह खूबना-अमीर घरमें झोदी होना । -का खेल-भाग्यके करिस्मे । -का धवी-भाग्यवान् । -आगना-भाग्यका उदय होना । -फूटना-किस्मत खराब होना ।
 सडमीरी-वि० भाग्य-संबंधी ।
 सडमा-सं० कि० देखना; ताकमें रहना; आश्रय लेना ।
 सडमीर-की० [अ०] अछाका नाम लेना या उसकी बर्दाई करना ।
 सडमुर-पु० [अ०] बर्मेक, गर्व ।
 सडमा-पु० तमगा; मुदी ।
 सडमीर-की० [अ०] पूरा होना; पूरण ।
 सडमार-की० [अ०] बार-बार कहना; दुब्बत, विवाद, झगडा ।
 सडमारी-वि० तडमार करनेवाला ।
 सडमीर-की० [अ०] समीप आना या जाने देना; बजहा विवाहादि-संबंधी जलसा, उत्सव । -में-उपलक्ष्यमें ।
 सडमीरन्-अ० [अ०] कगमग ।
 सडमीर-की० [अ०] बोलना, बातचीत, भाषण ।
 सडमा-पु० सूत कातने और लपेटनेके काम आनेवाली चखेने लगी लोईकी सलाई, डेकुआ ।
 सडमी-की० छोटा तकला; बिना चखेने सूत कातने और लपेटनेका एक आला ।
 सडमीर-की० [अ०] दुःख, कष्ट, बलेश ।
 सडमलु-पु० [अ०] तुकलीफ उठाना; शिष्टाचार, बनावट ।
 सडमाना-सं० कि० किसीकी नाकनेमें प्रवृत्त करना ।
 सडमीर-की० [अ०] ताकत पहुँचाना, तसही, आश्वासन, दाद ।
 सडमीर-की० [अ०] बंटना, बँटवारा; एक सख्यामे दूसरी संख्याको भाग देना (ग०) ।
 सडमीर-की० [अ०] कुपर, अपराध, गुनाह, दोष ।
 सडाई-की० ताकनेकी क्रिया ।
 सडाजा-पु० [अ०] तगादा, पावना मँगना; इच्छा; आश-इच्छा; आदेश, अनुरोध; कोई काम करनेके लिए किसी-से बार-बार कहना ।
 सडान-की० दे० 'थकान' ।
 सडाना-सं० कि० किसी ओर दृष्टि डलवाना, देखनेमें प्रवृत्त करना; दिखाना ।
 सडमी-की० [अ०] बीज, वैल आदि खरीदनेके लिए किसानोंकी सरकारकी ओरसे दिया जानेवाला ऋण ।
 सडिया-पु० [सं०] रुईसे भरी थैली जैसी चीज जो छेदे समय सिरके नीचे रख ली जाती है, उपधान, बालिश; भरोसा, सहारा-“...मोते दीन दूबरेकी तडिया तिहारियै”-कवितावली; आश्रयस्थान; छवने आदिपर टोकने के लिए लगायी जानेवाली पत्थरकी पटिया; फकीरोंके रहनेकी जगह । -कछाम-पु० सखुमनकिया । -शाह-की० फकीरके रहनेकी जगह । -दार-पु० तडियामें

रचनेवाला कवीर, तकियानछीन ।
 तकिक-वि० [सं०] धूर्त; बुद्ध ।
 तकिका-की० [सं०] औषध; एक जड़ी ।
 तकुधा-पु० दे० 'तकड़ा'; देखनेवाला ।
 तकुधे-पु० [सं०] एक वृक्ष ।
 तक-पु० [सं०] मट्ठा जिसमें एक चौपाई भाग जलका हो; छाछ । -कुर्रिका-की० मट्टेके बोगसे फावा हुआ दूध । -पिंङ्ग-पु० छेना । -मिक्-पु० कैयका फल, कपित्थ । -मसि-पु० मट्टेके बोगसे पका मांस । -धामज-पु० नागरंग । -संभान-पु० एक तरहकी कौजी । -सार-पु० मखन ।
 तकट-पु० [सं०] मथानी ।
 तकट्टा-की० [सं०] एक झाड़ी ।
 तकक (कन्)-पु० [सं०] चौर; शिकारी चिकिया ।
 तक-पु० [सं०] रामके आरंभरतका ज्येष्ठ पुत्र; एक नाव । वि० काटनेवाला (समासांतर्मे) । -शिक्ष-पु० तक्षशिलाका निवासी । वि० तक्षशिला-संबंधी । -शिक्षा-की० एक प्राचीन नगरी ।
 तकक-पु० [सं०] आठ नागोंमेंसे एक जिसने परीक्षितको काटा था (दे० 'नाग'); विश्वकर्मा; धृतराष्ट्र; एक जाति, बहरा; दम बायुओंमेंसे एक (दे० 'बायु'); एक वृक्ष; मागधतौक्त प्रमेजित्वाका पुत्र । वि० लकड़ी आदि काटने, छीलनेवाला ।
 तकन-पु० [सं०] लकड़ी आदि छीलना वा काटना; काटनेवाला ।
 तकणी-की० [सं०] लकड़ी तराशनेका औजार, बसुला ।
 तकश (कन्)-पु० [सं०] बहरा; विश्वकर्मा । वि० दे० 'तक्षक' ।
 तकरी, तकरीया-की० तराजू ।
 तकरीक-की० [अ०] कनी, न्यूनता । -(क)लगान-की० लगान कम करना ।
 तकमीनन्-अ० [अ०] अंदाजन्, अनुमानतः ।
 तकमीना-पु० [अ०] अंदाजा; आमद या खर्चका अंदाजा; अटकल ।
 तकलिया-पु० [अ०] निर्जन स्थान; तनहाई; खाली करना ।
 तकल्लुस-पु० [अ०] कवि या लेखकका उपनाम ।
 तकसीर-पु० [अ०] विजय ।
 तकसीस-पु० [अ०] विशेषता, खसियत ।
 तक-पु० [फा०] मिहामन; लकड़ीकी बड़ी चौकी । -गाइ-की० राजधानी । -नसीज-वि० सिंहासनाकृति । -पोस-पु० तख्तपर बिछानेकी चादर । -बंदी-की० तस्तीकी बनी हुई दीवार; ऐसी दीवार बनानेकी क्रिया । -ताऊस-पु० शाहजहाँका प्रसिद्ध सिंहासन जो मोरके आकारका था (इसे १७३९ में नादिरशाह छुटकर ले गया) । -(झे)रबा-पु० वह तख्त जिसपर बादशाहकी सबारी निकलती है; उड़नखटोला । -मुलेमान-पु० मुलेमानका तख्त जिसपर वह उठा करते है । पु० -का तख्ता हो जाना-बराबर हो जाना ।
 तकता-पु० [फा०] ऊँची चौकी; लकड़ीका छंदा और काम

मोटा चौकीर टुकड़ा, पक्का । -एलाकीम-पु० वह तख्ता जिसपर खड्गियासे हिलकर विधायियोंकी भावश्यक बातें समझायी जाती है । -ए-ए-पु० अभ्यास करनेका तख्ता; अभ्यासका साधन । मु० -उछट जाना-बराबर हो जाना, नष्ट-भट हो जाना, तबाह हो जाना । -(झे)के तख्ते हवाइ करना-बहुत छिन्नना ।
 तकती-की० लकड़ी, बाहु आदिका छोटा, चौकीर टुकड़ा; छोटा तख्त; पटिया ।
 तकवा-वि० बट्टा-कट्टा, मोटा-साजा; मजबूत ।
 तकव-पु० [सं०] तीन बणोंका एक मासिक गण ।
 तकवमा-पु० दे० 'तकदमा' ।
 तकना-अ० कि० तागा जाना ।
 तकमा-पु० दे० 'तमया' ।
 तकर-पु० [सं०] एक वृक्ष जो कौकण, अफगानिस्तान आदिमें होता है और जिसकी जड़ मंत्रद्रव्यके रूपमें काम देती है; मदन-वृक्ष; एक औषध ।
 तकला-पु० तकला; जुलाहोंका एक औजार ।
 तक-पु० तागा ।
 तकई-की० तगनेका काम वा उन्नत ।
 तकई-पु० जोषाईके लिए मसाला, गारा आदि तैयार करनेका हीजकी तरह बना हुआ घेरा; दाक, तरकारी आदि पकानेका पीतलका बर्तन ।
 तकदा-पु० दे० 'तकादा' ।
 तकाना-सं० कि० तगनेका काम कराना ।
 तकार-पु० दे० 'तगा' ।
 तगिगमा-सं० कि० दे० 'तागना' ।
 तगीर-पु० भिनि-परिवर्तन, तबदीली ।
 तगीरी-की० दे० 'तगीर' ।
 तकना-अ० कि० अत्यंत तप्त होना, तपन; दुःखी होना ।
 तक-की० त्वचा, चमड़ा ।
 तकाना-सं० कि० संतप्त करना, तपाना ।
 तकित-वि० तपा हुआ, सतप्त; दुःखी ।
 तक-पु० दे० 'तक्ष' ।
 तकक-पु० दे० 'तक्षक' ।
 तकन-अ० तत्क्षण, उसी समय ।
 तक-पु० दारचीनीकी जातिका एक वृक्ष जिसकी छाछ दवाके काम आती है (इसके पत्तेको 'तेजपत्ता' कहते हैं) ।
 तककिरा-पु० [अ०] जिंक, चर्चा; जीवन-चरित ।
 तकदीद-पु० [अ०] नया करना; (पट्टे आदि) बदलना ।
 तकन-पु० स्वाग; चाबुक ।
 तकना-सं० कि० छीपना, त्यागना ।
 तकरबा-पु० [अ०] अनुभव; किसी वस्तुके बारेमें ज्ञान प्राप्त करनेके लिए की गयी परीक्षा; आजमाइश । -कार-वि० अनुभव ।
 तकबा-पु० दे० 'तजरबा' (समाप्त भी) ।
 तकली-की० [अ०] प्रकट होना; दिव्य ज्योतिका दर्शन; शौकी ।
 तकवीज-की० [अ०] सलाह, राय; फैसला, निर्णय; निर्देश; विचार । -सानी-की० किसी फैसलेका उसी अदालतमें पुनर्विचार ।

सञ्ज-‘तद’का समासगत रूप । -अनित, -अन्य-वि०
उसमे उपपन्न । -आसीत-वि० उस जातिका । -अ-
वि० उमे आननेवाला ।

सञ्ज-वि० जानकार; तत्त्वविद् ।

सञ्जी-खी० [सं०] विपुषी ।

सर्दङ्क-पु० कानका एक गहना, कर्णफूल ।

सर्द-पु० [सं०] पहाडकी ढाल; क्षितिज; किनारा, कूल,
तीरा नदीके किनारेकी भूमि; प्रदेश; क्षेत्र; शिव । अ०
पास, समीप । -स्य-वि० जो समीप रहता हो, निकटस्थ;
जो मतलब न रखता हो, उदासीन; जो गुटबंदीसे दूषक
हो । पु० उदासीन व्यक्ति । -लक्षण-पु० वह लक्षण
जिसमे लक्ष्यके सम्बन्धी और परिवर्तनशील गुणोंका निरू-
पण हो । -स्थित-वि० दे० ‘तत्स्थ’ ।

सर्दङ्क-पु० [सं०] नदी आदिका किनारा ।

सर्दङ्क-वि० ताजा, दुरतका ।

सर्दङ्क-पु० [सं०] तडाग ।

सर्दङ्की-खी० दे० ‘तटिनी’ ।

सर्दङ्क-पु० [सं०] तडाग, ताल ।

सर्दङ्किनी-खी० [सं०] बड़ा तालाब ।

सर्दङ्कात-पु० [सं०] पशुओंकी सींगोंसे मिट्टी खोदकर
छछालनेकी क्रिया ।

सर्दङ्की-खी० [सं०] नदी । -पत्ति-पु० समुद्र ।

सर्दी-खी० [सं०] तीर, किनारा; * नदी; समाधि ।

सर्व-वि० [सं०] पर्वतकी ढालपर रहनेवाला । पु० शिव ।

सर्व-पु० जातिका उपविभाग, विरादरी; भण्ड मारने या
कहीं चीज तोड़नेकी आवाज । -बंदी-खी० जातीयताकी
दृष्टिसे गुट बनानेकी क्रिया; दलबंदी ।

सर्वङ्क-खी० तत्त्वकेकी क्रिया या भाव; तत्त्वकेका चिह्न;
अन्तर, चटनी आदि; चाल; छात्रनके नीचे दीवारसे
बँधेतरक लगायी जानेवाली एक लकड़ी । -अङ्क-पु०
ठाट-बाट ।

सर्वङ्कना-अ० कि० औंच पाकर ‘सर्व’की आवाजके साथ
फटना या टूटना; कर्कश स्वरमें बोलना; झुझमाना; उमंग-
के साथ जोरसे उछलना ।

सर्वङ्क-पु० प्रसात, सुरेरा; बहार ।

सर्वङ्काना-स० कि० ‘सर्व’ शब्दके साथ तौडना; विस्तीकी
खिजाना ।

सर्वङ्कीछाँ-वि० भस्कीला, चमकीला; तङ्कनेवाला ।

सर्वङ्का-अ० शीघ्र, झटपट ।

सर्वङ्क-पु० [सं०] दे० ‘तडाग’ ।

सर्वतङ्काना-अ० कि० ‘सर्व-तङ्क’ शब्द होना । स० कि०
‘सर्व-तङ्क’ शब्द उपपन्न करना ।

सर्वतङ्काइट-खी० तत्त्वतङ्कनेकी क्रिया या भाव ।

सर्वङ्क-खी० तत्त्वनेकी क्रिया या भाव; विजलीकी कड़क;
विजलीकी चमक । -द्वार-वि० भस्कीला, चमकीला ।

सर्वङ्कना-अ० कि० अत्यंत दुःखी होना, कलपना, छट-
पटाना; गरजना; क्रूरना-कौटना ।

सर्वङ्कवाना-स० कि० तङ्कवानेका काम कराना ।

सर्वङ्काना-स० कि० अत्यधिक कष्ट पहुँचाना, कलपाना,
सताना ।

सर्वङ्कवाना-अ० कि० बेचैन होना । स० कि० व्याकुल
करना, कष्ट पहुँचाना ।

सर्वङ्कना-अ० कि० दे० ‘तङ्कना’ ।

सर्वङ्क-पु० [सं०] दे० ‘तडाग’ ।

सर्वङ्क-खी० तङ्कनेका शब्द-कहीं चीजके जोरसे टूटनेका
शब्द । † अ० झटपट । -पङ्कङ्क-पङ्कङ्क-अ० चटपट,
फौरन । -से-‘तङ्कङ्क’ शब्दके साथ ।

सर्वङ्का-खी० [सं०] आवाज; कूल; कांति, चमक ।

सर्वङ्का-पु० ‘सर्व’की आवाज । अ० चटपट ।

सर्वङ्क-पु० [सं०] तालाब, सरोवर; हिरन फँसानेका फँदा ।

सर्वङ्काना-अ० कि० डोंग मारना-‘अब ही कहा
तङ्कानिये बेड़ी पायन बीच’-साखी; उछल-कूद मचाना;
कीशिश करना ।

सर्वङ्कात-पु० [सं०] दे० ‘तडाघात’ ।

सर्वतङ्क-अ० ‘सर्व-तङ्क’की ध्वनिके साथ । मु०-जवाब
देना-निःसंकोच होकर, बेधडक जवाब देना । -पङ्कना-
लगातार मार पङ्कना ।

सर्वङ्कना-स० कि० तङ्कनेका काम कराना ।

सर्वङ्का-पु० दिखानेकी तङ्क-भण्डक ।

सर्वि-खी० [सं०] आधात । वि० आधात करनेवाला ।

सर्वित, सर्विता-खी० दे० ‘तडिट’ ।

सर्वित्-खी० [सं०] विजली, बिजुर; हिंसा । -कुमार-
पु० जैनोंके एक देवता । -पत्ति-पु० मेघ, बादल ।
-प्रभा-खी० विजलीकी चमक; कापिकेयकी एक
मातृका ।

सर्वित्वात् (वत्)-पु० [सं०] मेघ; मोथा । वि० विजली-
वाला ।

सर्वित्-पु० [सं०] मेघ, बादल ।

सर्वित्मय-वि० [सं०] विजलीकी कौंधवाला ।

सर्विताना-अ० कि० दे० ‘तङ्कना’ ।

सर्वित्-‘सर्वित्’का समासगत रूप । -लता-खी०
विजलीकी वह कौंध जिसमें बहुतसी लहरे हों । -छेछा-
खी० विजलीकी लीक ।

सर्वी-खी० चपत, भण्डक; मारपीट; बंचना, छल, धोखा;
धमकी; धाटा । मु०-देना-धोखा देना; बेवकूफ बनाना;
हारकी ताली बजाना । -बताना-धोखा देना । -में
आना-धोखा खाना ।

सर्वित-खी० दे० ‘तडिट’ ।

सर्व-पु० [सं०] तारवाला बाजा-जैसे वीणा, सारंगी आदि;
वायु; एक वृत्त; संतान; * तत्त्व; सार वस्तु; तद् । वि०
विस्तारित; ढका हुआ; झुका हुआ; * तम; उतना ।
-पत्री-खी० केला । -बाड-पु० दे० ‘तलुवार’ ।
-सार-खी० लोहा आदि तपानेकी जगह ।

सर्वकार, सर्वकाल-अ० दे० ‘तत्काल’ ।

सर्वलक्ष-अ० दे० ‘तत्क्षण’ ।

सर्वलक्ष-अ० दे० ‘तत्क्षण’ ।

सर्वपर-वि० दे० ‘तत्पर’ ।

सर्ववीर-खी० दे० ‘तदवीर’ ।

सर्वार्ह-खी० गरमी-‘बरन बतार्ह छिति व्योमकी ततार्ह’
-सेनापति ।

तत्त्वज्ञान-तन्त्र-किं गमन कथमेव भोजन ।

तत्ति-खी- [सं०] भेगा, धंति; समूह; विस्तार ।

तत्तुवाङ्क-पु० दे० 'तनुवाय' ।

तत्तुरि-वि० [सं०] वित्तक; विजयी; तारनेवाला, पार करनेवाला । पु० अक्षि; दंड ।

तत्तुली-खी- वैरीमें तप्त भूमिके स्पर्श या गरम भूल लग जानेके कारण होने वाली तापकी अनुभूति 'मजदूर ख और तत्तुलीमें काम कर रहे थे'-कृ०ग० । (संस्कृत 'तत्तुरि' = अक्षि ।)

तत्तुवा-खी- बरें, भिन्न, हड्डा । वि० तेज; चालाक ।

तत्तोधिक-वि० [सं०] उस-अधिक ।

तत्तु-पु० [सं०] ब्रह्मा; वायु । सर्व० वह । -काल-अ० तत्क्षण, तुरत, उसी समय । -०खी-वि० प्रत्युत्पन्न-मति । -कालीय-वि० उस या उसी समयका । -क्षण-अ० दे० 'तत्काल' । -तत्त्व-वि० भिन्न-भिन्न । सर्व० वह-वह । -तद्देशीय-वि० उस-उस या भिन्न-भिन्न देशका । -पदार्थ-पु० जगत्का कारणभूत परमात्मा ।

-पर-वि० कार्य-विशेषमें लगा हुआ, तत्त्वहीन, सन्नद्ध ।

-परता-खी- तत्पर होनेकी क्रिया या भाव, सुस्तेरी।

सन्नद्धता; तत्त्वहीनता । -पराव्य-वि० जिसका मन

किसी एकमें ही लगा हो । -पञ्चाव-अ० उसके बाद,

पीछे । -पुरुष-पु० परम पुरुष; एक समास (व्या०) ।

-फल-पु० कूट नामकी टवा; नील कमल; चौर नाम-

का मण्डप । -सदृश-सम-वि० उनके समान,

उनके जैसा ।

तत्त-पु० दे० 'तत्त्व' ।

तत्ता-वि० गरम, उष्ण ।

तत्ताथेई-खी- नाचके शब्द या बोल ।

तत्तोर्यको-पु० बीचबचाव; दिलावा ।

तत्त्व-पु० [सं०] यथार्थता, वस्तुस्थिति, असलियत; सार;

स्वरूप; ब्रह्मा; मूल, गीत, वाक्का भेदविशेष जिसे विलिखित

कहते हैं; त्रिगुण; सांख्यशास्त्रीक प्रकृति आदि पचीस

पदार्थ; स्वभाव; वस्तु; मन; पंचभूत; मूल पदार्थ । -श-

वि० ब्रह्मकी जाननेवाला; जिसे सार वस्तुका ज्ञान हो;

अध्यात्मवेत्ता; दार्शनिक । -ज्ञान-पु० ब्रह्म, आत्मा

और जगद्विषयक यथार्थ ज्ञान, ब्रह्मज्ञान । -ज्ञानार्थ-

दर्शन-पु० तत्त्वज्ञानका आलोचन । -ज्ञानी(विन्)-

वि० जिसे ब्रह्म, आत्मा और जगत्के सर्वभेद यथार्थ ज्ञान

हो, ब्रह्मज्ञानी । -दर्श-वि० तत्त्वज्ञानी । पु० सावर्णि

मन्वतरमें हुए एक ऋषि । -दर्शी(विन्)-वि० दे०

'तत्त्वदर्श' । पु० देवत मनुके एक पुत्र । -दृष्टि-खी-

तत्त्वज्ञान प्राप्त करानेवाली दृष्टि । -निष्ठ-वि० मित्रांतका

पक्षा । -न्यास-पु० विष्णुकी तनोक पूजामें विहित

एक अंगन्यास । -भाव-पु० स्वभाव, प्रकृति । -भाषी-

(विन्)-वि० यथार्थवक्ता, जो राग-द्वेषके वशमें आकर

भी अन्यथा न कहे । -भूत-वि० साररूप । -बाह-

पु० दर्शनशास्त्र-संबंधी विचार । -विद्-वि० दे०

'तत्त्व' । पु० परमेश्वर । -विद्या-खी- दर्शनशास्त्र,

अध्यात्मविद्या । -वेत्ता(विन्)-वि० तत्त्वज्ञ; दार्शनिक ।

-ज्ञात्वा-पु० दर्शनशास्त्र ।

तत्त्वज्ञा(तत्त्व)-अ० [सं०] यथार्थ रूपमें, वास्तवमें ।

तत्त्वावधान-पु० [सं०] देखरेख ।

तत्त्वावधानक-पु० [सं०] निरीक्षक ।

तत्त्व-अ० [सं०] वहाँ, उस जगह ।

तत्त्वर्का-पु० एक पैर ।

तत्त्वत्व-वि० [सं०] वहाँ रहनेवाला ।

तत्त्वा-अ० [सं०] और, व; वैसा; वैसा ही । -कमिल-

वि० 'तथोक्त' । -गत-पु० मुद्रका एक नाम । -अह-

पु० नागाजुनेके एक शिष्यका नाम । -राज-पु० मुद्रका

एक नाम । -विद्य-वि० उम प्रकारका ।

तथापि-अ० [सं०] तो भी, तिसपर भी, वैसा होनेपर भी ।

तथास्तु-अ० [सं०] वैसा ही हो; एवमस्तु ।

तथैव-अ० [सं०] उनी प्रकार ।

तथोक्त-वि० [सं०] नाममात्रका ।

तथ्य-पु० [सं०] मूल, सच्चाई, सच्ची बात, यथार्थता;

सार । -भाषी(विन्), -वादी(विन्)-वि० सच्ची,

सारगर्भ बात कहनेवाला ।

तत्त्व-तत्त्वका न्यायमय रूप । -अनंतर-अ० उसके बाद ।

-अनुरूप-वि० उसीके रूपका, उसीके जैसा । -अनु-

सार-अ० उसके अनुसार । -अपि-अ० वह भी; *

तो भी, तथापि । -अर्थ-अ० उसके लिए । -आकार-

वि० उसके आकारका, उसकी तरहका । -०भूति-खी-

विषयकी वह दृष्टि जो उसके (विषय-विशेषके) आकारको

ही गयी हो । -उपरांत-अ० उसके बाद । -उपरि-

अ० उसके ऊपर या बाद । -गत-वि० उसमें स्थित;

तहीन; उसमें संबद्ध । -गुण-वि० जिसमें वे गुण हों;

जसके जैसे गुणोंवाला । पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें

किसी एक वस्तु द्वारा अपने गुणका परित्याग कर निकटकी

दूसरी वस्तुका गुण ग्रहण कर लिया जाना दिखाया जाता

है । -देशीय-वि० उस देशका । -धन-वि० कज्जल ।

-धर्मा(मन्त्र)-वि० त्रिमका धर्म बर्ण हो । -बल-पु०

एक प्रकारका बाण । -अव-वि० उससे उत्पन्न । पु०

किसी भाषाके वे शब्द जो देशी भाषामें कुछ विकृत रूपमें

प्रयोगमें आते हैं । -रूप-वि० उसी प्रकारका, वैसा

ही । -०रूपक-पु० रूपकालंकारका एक भेद जहाँ उप-

मेयको उपमानने भिन्न रखकर भी उसीका रूप या उसीका

कार्य करनेवाला कहा जाय । -रूपता-खी- साध्य,

समानता ।

तद्बीर-खी- [अ०] उद्योग, यत्न, प्रयास; उपाय; प्रबंध ।

- (ए) सन्तनत-खी- राज्यप्रबंध ।

तद्वा-अ० [सं०] उन समय, तब ।

तद्वाहक-पु० [अ०] प्रतिबन्ध; रोक-थाम; उपाय; दंड ।

तद्दीय-वि० [सं०] उसका ।

तद्विद्य-पु० [सं०] संज्ञा-शब्दोंमें लगनेवाला एक प्रकारका

प्रत्यय (व्या०) । वि० उसके लिए उपयुक्त ।

तद्यपि-अ० तथापि, तिसपर भी ।

तद्वत्-वि० [सं०] वैसा, उसके समान । अ० वैते ही, उसी

प्रकार ।

तन्-पु० शरीर; देह; योगि । * अ० और, तरफ । -ज्ञान,

-ज्ञान-पु० कवच । -पात-पु० दृश्य । -रह-पु०

दे० 'तन्मय'।-सुख-पु० तनयेव वैसा फूलदार कवचा ।
 भु०-मनसे-शी-आन लगाकर ।
 तन-पु० [क०] शरीर ।-ज्ञेय-पु० बढ़िया महीन
 मलमल ।-तनहा-अ० बिलकुल अकेले ।-विही-
 की० मुस्तीदा, तत्परता; मिहनत; कौशिल्य ।
 तनक-की० एक रागिनी । * वि० षोडा । * अ० जरा ।
 तनकवा-अ० कि० दे० 'तनकना' ।
 तनकी-की० [अ०] समीक्षा, आलोचना, मते-जुरेकी
 परख ।
 तनकी-की० [अ०] माफ करना, परिष्कृत करना; बाद
 या अमियोगमें विरोधके आधारभूत विषयोंका निर्धारण ।
 तनकाह-की० दे० 'तनस्वाह' ।-दार-पु० दे० 'तन-
 खाइदार' ।
 तनकवाह-की० [का०] बेतन, तलब ।-दार-पु० बेतन
 पानेवाला, जो शनैः लेकर काम करता हो ।
 तनगना-अ० कि० दे० 'तनकना' ।
 तनज-पु० [अ० 'तन'] ताना; मचाका ।
 तनजालि-की० [अ०] आनिध्य करना; उतारना ।
 तनजुल-पु० [अ०] नीचे उतरना; अवनति, ञस ।
 तनजुली-की० दे० 'तनजुल' ।
 तनजेव-पु० दे० 'तनैव' ।
 तनतनाना-अ० कि० झुंमगाना ।
 तनवा-अ० कि० खिचकर कड़ा होना; फैलना; खड़ा
 होना; खिचना, रह होना । पु० ताननेके लिए प्रयुक्त
 की जानेवाली रस्सा आदि ।
 तनमय-वि० दे० 'तन्मय' ।
 तनमात्रा-की० दे० 'तन्मात्र' ।
 तनय-पु० [तं०] पुत्र, बेटा; कुल ।
 तनया-की० [तं०] पुत्री, लवली ।
 तनवाना-अ० कि० 'तननेका' काम कराना, ननाना ।
 तनसीझ-की० [अ०] रद्द करना ।
 तनहा-वि० [का०] अकेला । अ० अकेले ।
 तनहाई-की० अकेलापन, ननहा होना; एकाग्र स्थान ।
 तना-पु० [का०] बड़ा । * अ० ओर, तरफ ।
 तनाव-पु० दे० 'तनाव' ।
 तनाक-अ० जरा-सा ।
 तनाका-पु० [अ०] झगड़ा, लड़ाई ।
 तनाना-स० कि० दे० 'तनवाना' ।
 तनाव-पु० दे० 'तनाव' ।
 तनाव-पु० तननेका भाव या क्रिया; रस्ती ।
 तनावुज-पु० [अ०] आवागमन ।
 तनि, तनिक-वि० षोडा, अल्प; छोटा-इहाँ हुनी मेरी
 तनिक मझैया को नृप आह छन्यो'-सूर । अ० जरा ।
 तनिका-की० [स०] कोई चीज बाँधनेकी रस्ती ।
 तनिका(मय)-की० [स०] दुबलापन; सुकुमारता;
 कृशता; यकृत ।
 तनिका, तनिका-की० कछनी; तनीदा कुत्ता ।
 तनी-की० बड़, बंधन । * वि०, अ० दे० 'तनि' ।
 तनु-पु० [स०] शरीर; काय; स्वभाव, प्रकृति; चर्म; लज्जा-
 स्थान । वि० बिरल; अल्प; सुकुमार, कृश; पुच्छ; छिछला ।

-कूप-पु० रोमकूप ।-केसी-की० सुंदर बालोंवाली
 की ।-कीर-पु० आमका ।-गुह-पु० अश्विनी नक्षत्र ।
 -च्छ-पु० कवच; बख ।-च्छाव-पु० बरुल । वि०
 कम छायावाला ।-ज-पु० पुत्र ।-जा-की० पुत्री ।
 -खाव-वि० कंजु । पु० शरीर-स्वाय ।-ज, ज्ञाव-
 पु० कवच, बर्म ।-खक(व)-पु० एक पेड़ । वि० पतले
 चमड़ेवाला; जिसकी छाल पतली हो ।-खारी(वि)-
 वि० देहधारी ।-पथ-पु० गोंदीका पेश, इंदुदी ।-पास-
 पु० सूर्य ।-प्रकाश-वि० सुँपले या मंद प्रकाशवाला ।
 -बीज-पु० राजदेर । वि० जिसके बीज छोटे हों ।-अव-
 पु० पुत्र, बेटा ।-अवा-की० पुत्री, बेटा ।-अवा-की०
 नासिका ।-भूमि-की० बौद्ध आचरके जीवनका एक
 विभाग ।-भूव-वि० शरीरधारी ।-अभ्य-पु० कमर ।
 वि० पतली कमरवाला ।-अभ्य-वि० की० पतली
 कमरवाली ।-अभ्या-की० एक वर्णभूत । वि० की०
 पतली कमरवाली ।-रस-पु० पमीना, स्वेद ।-राग-
 पु० एक मृगविन उड़न जिनमें केमर आदि छोड़ते हैं;
 हम उड़नमें कामके यथद्वय ।-रह-पु० रोम, त्रीर्ष ।
 -लता-की० लता जैसी लोचवाली सुकुमार देह ।
 -बात-पु० एक नरक । वि० वह स्थान जहाँ काम हवा
 हो ।-बार-पु० कवच ।-प्रण-पु० वस्मिक रोग,
 फोलेपथ ।-शिरा(रस्)-पु० उष्णिक् छत्रका एक सेद ।
 वि० छोटे सिरवाला ।-संचारिणी-की० बालिका ।
 -सर-पु० पमीना, स्वेद ।-स्वान-पु० दे० 'तनुगृह' ।
 -हृ-पु० गुदा ।
 तनु-वि० [स०] पतला; छोटा । * वि०, अ० दे०
 'तनिक' । पु० शरीर ।
 तनुना-की०, तनुव-पु० [स०] पतलापन, कृशता ।
 तनुल-वि० [स०] फैला हुआ ।
 तनु-पु० [स०] शरीर; पुत्र, प्रजापति; गौ ।-ज-पु०
 बेटा ।-जा-की० बेटा ।-तल-पु० लवाईका एक मान ।
 -ताप-पु० छाते, शारीरिक कष्ट ।-नपाव-पु० अग्नि;
 धी; निश्चक वृक्ष ।-नसा(पु)-पु० बायु ।-पा-पु०
 जठराग्नि ।-पृष्ठ-पु० मीमांसाका एक सेद ।-रह-
 पु० रोम, रोआ; पक्षा; पुत्र ।-हृ-पु० गुदा ।
 तनुतप-पु० [स०] धी ।
 तनूर-पु० तंदूर ।
 तनेना-वि० गिरछा, बक; खिंचा हुआ; रह ।
 तनेनी-वि० की० दे० 'तनेना' ।
 तनै-पु० दे० 'तनय' ।
 तनैषा-की० दे० 'तनया' ।
 तनोज-पु० रोम; पुत्र ।
 तनोरह-पु० दे० 'तनूरह' ।
 तन्ना-पु० तानेका सूत ।
 तन्नि-की० [स०] चक्रकुत्सा, निम्नपणी ।
 तन्नी-की० वह रस्ती जिसमें तराजूका पक्का बंधा होता है ।
 तन्-तन्का ममासगन रूप ।-मनस्क-वि० तन्मय,
 तहीन ।-मात्र-पु० पंचभूतोंके मूल सूक्ष्म रूप ।
 -मात्रा-की० दे० 'तन्मात्र' ।
 तन्मय-वि० [स०] दसचित्त, तहीन ।

तन्वत्-पु० [सं०] बायुः रात्रिः गर्जनः बज्र ।

तन्व्या-वि० [सं०] दुर्लभ, सुकुमार शरीरवाला ।

तन्व्यांगी-स्त्री० [सं०] साक्षिणी जता । वि० स्त्री० दुर्बली, नाजुक, सुकुमार अंगीवाली ।

तन्वी-वि० स्त्री० [सं०] कृशांगी, सूक्ष्मांगी । स्त्री० पतली, सुकुमार स्त्री ।

तपः-‘तपस्’का समासगत रूप । -कट्-पु० तप करने-वाला; एक मछली । -कृष्ण-वि० तपने क्षीण । -सूत-वि० जो तपस्या करके तन-मनसे पवित्र हो गया है ।

-प्रभाष-पु० तपने प्राप्त अलौकिक शक्ति । -साध्य-वि० तपसे सिद्ध होनेवाला । -सुत-पु० पुत्रिष्ठ ।

-व्यास-पु० तप करनेका स्थान । -व्यासी-स्त्री० काशी ।

तप-पु० [सं०] तपस्या; ताप, दाह; सूर्य; ग्रीष्म ऋतु; उमर; अग्नि; ह्रस्व । वि० जलानेवाला; तप्त करनेवाला; कष्टकर । -च्छद्-पु० मंदारका पेड़ । -भूमि-स्त्री० दे० ‘तपोभूमि’ । -रितु-स्त्री० ग्रीष्मकाल ।

तप(स)-पु० [सं०] ताप; सूर्य; अग्नि, कष्ट; विषयत्याग-पूर्वक कष्टदायक व्रत, नियम, उपासना आदिका आचरण; भूत-पद्मान, शीत-उष्ण आदि महानेकी क्रिया; मौन आदि व्रत; चांद्रायण, प्राजापत्य आदि प्रायश्चित्त; मन, इंद्रियोंकी एकाग्र रखनेकी क्रिया; एक लोभ; एक विशेष काल-मान, स्वरूप; लग्नने नवीं राशि, काश्यप मास; अग्नि; शिशिर; हेमंत; ग्रीष्म ।

तपकना-अ० क्ति० धककना; टपकना; चमकना ।

तपनी-स्त्री० [सं०] सूर्यकी एक कन्या; तामी नदी ।

तपन-वि० [सं०] तपाने, जलानेवाला; प्रचंड । स्त्री० तपनेकी क्रिया या भाव; प्रियके विरहसे उत्पन्न मत्ताप; ताप, गरमी । पु० कष्ट देना; सूर्य; महातप्त वृक्ष; एक नरक; ग्रीष्म; सूर्यकान्तमणि; मरार; अग्निका एक भेद शिव; अगस्त्य । -कट्, -दीक्षित-पु० सूर्य; सूर्यरश्मि । -च्छद्-पु० सूर्यमुखी फूल । -तनय-पु० वम; शनि; कर्ग; सुग्रीव; शमीवृक्ष । -तनया-स्त्री० यमुना । -मणि-पु० सूर्यकान्त मणि ।

तपनाशु-पु० [सं०] सूर्य; सूर्यरश्मि ।

तपना-अ० क्ति० धूप, अर्घ आदिमें गरम होना; तापमें पड़ा रहना, तप्त होना; किन्हीं वस्तुकी प्राप्तिके लिए कष्ट सहना; सूर्यका प्रखर होना; किन्हींका प्रमुख छाना या आर्तक फैलना; * तप करना । * सं० क्ति० पकाना-‘सूरज जेहिंके तपै रसोई’-प० ।

तपनि-स्त्री० स्त्री० ताप, जलन ।

तपनी-स्त्री० [सं०] गोदावरी नदी; ताप; † कौशा, जलाशय ।

तपनीय-पु० [सं०] सोना (विशेषकर तपाया हुआ) । वि० तप्त करने योग्य; सहन करने योग्य ।

तपनीयक-पु० [सं०] सोना ।

तपनेष्ट-पु० [सं०] नौका ।

तपनोपक-पु० [सं०] सूर्यकान्त मणि ।

तपवाना-सं० क्ति० तप्त कराना ।

तपव्-‘तपस्’का समासगत रूप । -वरण-पु०, -वर्षा-स्त्री० तपस्या ।

तपस-पु० [सं०] सूर्य; चंद्रमा; वक्षी ।

तपसा-स्त्री० तामी नदीका दूसरा नाम ।

तपसाक्षी-वि० तपसे क्षोभित होनेवाला; जिसने बहुत तपस्या की हो ।

तपसी-पु० दे० ‘तपस्वी’ । स्त्री० एक मछली ।

तपस्वीमूर्ति-पु० [सं०] बारहवें मन्वन्तरके एक ऋषि ।

तपस्व-पु० [सं०] दे० ‘तप(स्)’ । -संक, -सह-पु० ह्रस्व । -वसि-पु० विष्णु ।

तपश्च-पु० [सं०] काश्यप मास; जर्जुन; तपश्चर्मा; तापस मनुका एक पुत्र ।

तपस्या-स्त्री० [सं०] तप (छा०) किसी अभीष्टकी सिद्धिके लिए उठाया जानेवाला कष्ट ।

तपस्वी (स्विन्)-वि० [सं०] तपस्या करनेवाला; दीन; दुःखिया; बैरारा; कष्ट सहन करनेवाला । पु० नारद; सन्यासी; गौरवा; धीकुमार; तरिह मनुष्य; एक मत्स्य ।

-(स्वि)पत्र-पु० दोना; सूर्यमुखी ।

तपस्विनी-स्त्री० [सं०] तपस्या करनेवाली स्त्री; जटामाती ।

तपा-पु० तपस्वी । वि० तपश्चर्मा में संलग्न ।

तपाक-पु० [का०] प्रेम; उसाह ।

तपायव-पु० [सं०] वर्षा ऋतु ।

तपानल-पु० [सं०] तपसे उत्पन्न तेज ।

तपाना-सं० क्ति० गरम करना, तप्त करना; (छा०) कष्ट पहुँचाना ।

तपावस-पु० तपस्वी ।

तपाव-पु० तपनेकी क्रिया या भाव, गरम होना ।

तपित-वि० [सं०] गरम किया हुआ; शुष्क किया हुआ (सोना) ।

तपिया-पु० एक वृक्ष; * तप करनेवाला ।

तपिष्ठ-स्त्री० [का०] गरमी, तपन ।

तपी (पिठ्)-पु० [सं०] तपस्वी, साधु । वि० तप करने-वाला; गरम ।

तपु(स्)-पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; शत्रु । वि० तापयुक्त, उष्ण; तपानेवाला ।

तपुर्मा-स्त्री० [सं०] (जिसकी नोक तपती हो) भाला ।

तपेदिक-स्त्री० [का०] जोर्ण उमर, यक्ष्मा ।

तपेला-पु० भट्ठी ।

तपो-‘तपस्’का समासगत रूप । -व्रति-पु० बारहवें मन्वन्तरके एक ऋषि । -धन-वि० तप ही जिसका धन हो, तपस्वी । -धाम(ज्)-पु० एक तीर्थ । -निधि-वि० तपस्वी । पु० धर्मप्राण व्यक्ति । -निष्ठ-वि० तपमें जिसकी निष्ठा हो । -बल-पु० तप द्वारा प्राप्त शक्ति ।

-अंग-पु० विष्णु-वापके कारण तपश्चर्माक भग्न होना ।

-भूमि-स्त्री० तप करनेका स्थान । -भूति-पु० पर-मेस्वर; तपस्वी; ऋषियोंका एक भेद । -राज-पु० चंद्रमा । -कोक-पु० भूर, भूवर, स्वर्ग आदि ऊपरके सात लोकोंमेंसे छठा लोक । -बट-पु० ब्रह्मावर्त देश (मध्यभारत) । -वन-पु० तपस्वी लोगोंके रहनेका वन; तपस्या करने योग्य वन । -बुद्ध-वि० जिसने तपस्याके कारण श्रेष्ठता प्राप्त हुई हो । -व्रत-पु० तपस्या-सर्वधी व्रत ।

तत्त्वज्ञान-वि० [सं०] तत्त्वज्ञान; तत्त्वज्ञान करनेवाला ।
तत्त्वज्ञानी-ज्ञी० मुनाफिराईको छुट्ट करनेपर ठगोंका देवीको प्रमाद न्यायेका रिवाज ।

तत्त्व-वि० [सं०] तत्त्वज्ञान हुआ गरम; दुःखित; जिसने तत्त्वज्ञानी की है; पिच्छा हुआ; मुँह । पु० गरम पानी ।

—काण्व-पु० तत्त्वज्ञान हुआ सीना । —कुंभ-पु० एक नरक । —कूप-पु० एक नरक । —कूप-पु० प्रायः

अतिरूपमें किया जानेवाला एक जल । —पाषाणकुंड-पु० एक नरक । —माच-पु० किसीकी सचाई-मुठारिके निर्णयके लिए की जानेवाली एक प्राचीन कठोर परीक्षा ।

—मुद्रा-ज्ञी० धातुकी तत्त्वज्ञानी हुई मुद्राओं द्वारा रागकर अंगोंपर बनाये हुए विष्णुके चक्र, चक्र आदिके चिह्न ।

—रूप-रूप-पु० तत्त्वज्ञानी हुई शुद्ध चर्चा । —बाहुक-पु० एक नरक । —धर्म-पु० एक नरक । —सुराकुंड-पु० एक नरक । —द्वेष-पु० तत्त्वज्ञान हुआ सीना ।

तत्त्व-पु० [सं०] कथा ।

तत्त्व (तत्त्व) -वि०, पु० [सं०] गरमी पहुँचानेवाला; गरम करनेवाला ।

तत्त्वमरण-पु० [सं०] शुद्ध सोनेका आभूषण ।

तत्त्ववच-पु० [सं०] कठोरचित्तोंका निवासस्थान ।

तत्त्व-ज्ञी० [सं०] ताप, गरमी ।

तत्त्व-पु० तप ।

तत्त्व-पु० [सं०] शिव । वि० तपाने योग्य; छुट्ट करने योग्य ।

तत्त्वज्ञानी-ज्ञी० [अ०] छात्र-वीर्य; तत्त्वज्ञानका, जीव-पक्षपात ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] अंतर, भेदभाव, फूट । —अंधाज्ञ-वि० फूट डालनेवाला । —अंधाज्ञ-ज्ञी० फूट डालना ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] अलग करना, फर्क करना; धराना (गं०) ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] मनबहलाव; दिहणी, चुहल; सेर; साजगी ।

तत्त्वज्ञान-अ० मनबहलावके रूपमें; हँसीसे ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] व्याख्या या टीका करना; कुरानकी व्याख्या या भाष्य ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] अलग करना; ब्योरा ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] अंतर, फर्क; फासला ।

तत्त्व-अ० उस समय; बादमें; इस वजहसे । —झी-अ० फिर भी, तिसपर भी ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] तल, तह; परत; सोने-चंदी आदिका बरत; बरी रक्षावी; घोड़ोंकी एक बीमारो; वह फुल, दीप आदि जो मुमलमान किसी परियोंको समर्पित करती है ।

—गद-पु० सोने-चंदी आदिके पत्तर बनानेवाला ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] तलता; मंजिल; तह; खड; लोक; आध-मियोंका समूह; अमीनका छोटासा डुकहा; पद, दरवा ।

—(ए)बाका-पु० कपरीकी छत । मु०—डकड जाना—तथा ही जाना ।

तत्त्वज्ञान-पु० दे० 'तत्त्वज्ञान' । वि० जिसमें परत हो । —हरताक-पु० एक हरताक ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] बदलना, एक स्थानसे दूसरे स्थान

पर जाना । —झाकीहवा-ज्ञी० अलगायका परिवर्तन ।

—मजहब-ज्ञी० धर्म-परिवर्तन ।

तत्त्वज्ञानी-ज्ञी० कर्मचारीका एक जगहसे दूसरी जगह भेजा जाना; फेरफार, परिवर्तन ।

तत्त्वज्ञान-पु० [फा०] कुशाची; एक शक । —द्वार-वि० जिसके पास तत्त्व हो ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] किसीके प्रति इष्टा प्रकट करना; पिछा-रना; शिथीका अलीसे पहलेके तीन खलीफाओंको कोसना ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] आशीर्वादरूप वस्तु, प्रसाद ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] वषा वीर्य; गंगाका ।

तत्त्वज्ञान-पु० तत्त्वज्ञान करनेवाला ।

तत्त्वज्ञान-पु० तल देनेका चमकेते मंदा एक बाजा । —बादक-पु० तलवा बजानेकी कला जाननेवाला, तलवा, तलवा । —बादक-पु० तलवा बजानेका कार्य या कला ।

मु०—खानकाना, —डनकाना—तलवा बजाना; नाच-रंग, गाना-बजाना होना ।

तत्त्वज्ञान-पु० तलवा बजानेवाला, तलवा ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] धर्मप्रचार ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] मुस्कराहट ।

तत्त्वज्ञान-वि० [फा०] बराबर, नष्ट ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [फा०] नाश, बराबरी ।

तत्त्वज्ञान, तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] जी, मन, दिल; समझ ।

—द्वार-वि० आहुक, महदय । मु०—आना—आसक होना । —पर जोर डालना—आस तौरन ध्यान देना ।

—किरना—जी इटना ।

तत्त्वज्ञान-पु० [अ०] चिकित्सक, इकीम ।

तत्त्वज्ञान-पु० अस्तबल, पुष्टाल — 'राति-मी मची है त्रिपुरा-रातिके तलेलमें'—भूष । † एक पात्र, तमला ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० दे० 'तलेली' ।

तत्त्वज्ञान-पु० दे० 'तलेली'; पुत्र ।

तत्त्वज्ञान-अ० उता ममय; हसीलिय ।

तत्त्वज्ञान-पु० [सं०] मन; रम-मंच ।

तत्त्वज्ञान-पु० [सं०] छम या छाजनका बाहर निकला हुआ हिस्सा ।

तत्त्वज्ञान-पु० [फा०] विस्तार ।

तत्त्वज्ञान—'तमस'का समात्मन रूप । —प्रभ-पु०;—प्रभा—ज्ञी० एक नरक । —प्रवेश-पु० अंधेरेमें टटोलना; किंक-तन्वयविमूढ़ता ।

तत्त्वज्ञान-पु० [मं०] अंधकार; पैरका अगला भाग; तमोगुण; राहु; तमाल वृक्ष । —प्रभ-पु०;—प्रभा-ज्ञी० दे० 'तम-प्रभ', 'तम-प्रभा' ।

तत्त्वज्ञान (सं०)—पु० [मं०] अंधकार; राहु; अमः सखादि तीन गुणोंमेंसे एक; अधिकांश पाँच रूपोंमेंसे एक (सा०) ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] इच्छा; लालच ।

तत्त्वज्ञान-पु० आरंभ; उद्देश; रोष; हृत्सलाहट; जोश; [सं०] एक आसरेग, वमेका एक, भेद ।

तत्त्वज्ञान-अ० कि० आदेशमें आना; रह होना; कीधका आधिक्य दिखलाना ।

तत्त्वज्ञान-ज्ञी० [अ०] इज्जत, प्रतिष्ठा; गौरव ।

तत्त्वज्ञान-पु० [तु०] विधाधी, सिपाही आदिफो पुरस्कारके

रूपमें दिवा जानेवाला सोने, चाँदी आदिका खंड जो प्रायः सिक्केकी शकलका होता है, पत्रक।

तमचर-पु० निशाचर; उन्मू०।

तमचुर, तमचूर, तमचौर-पु० कुल्कुट, गुरगा।

तमत-वि० [सं०] इच्छुक।

तमतमाता-वि० चमकता हुआ; गरम।

तमतमाना-अ० कि० क्रोध या धृष्टके कारण चेहरेका लाल हो जाना।

तमन-पु० [सं०] दज घुट जाना, मरण।

तमन्ना-खी० [अ०] इच्छा, स्वादिष्ट।

तमयी-खी० रात।

तमरंगा-पु० एक प्रकारका नीबू।

तमर-पु० [सं०] टीन; रोग।

तमराज-पु० [सं०] दे० 'तवराज'।

तमलेट-पु० टीनका वरतन जिसपर चीनी मिट्टीकी कलई की गयी हो।

तमस-पु० [सं०] अंधकार; कुञ्जों। वि० काले रंगका।

* खी० तमसा नदी, टौस।

तमसा-खी० [सं०] एक नदी, टौस।

तमस्क-पु० [म०] अंधकार।

तमस्-पु० [म०] दे० 'तम (स्)'। -कांड-पु० घना अंधेरा। -तसि-खी० दे० 'तमस्कांड'।

तमस्वती-खी० [सं०] रात; हल्दी। वि० खी० अंधकार-मयी।

तमस्यान् (वन्)-वि० [म०] अंधकारमय।

तमस्विनी-स्वा० [म०] रात; हल्दी।

तमस्वी (विन्)-वि० [म०] तमोयुक्त, अंधकारपूर्ण।

तमस्मुक्-पु० [अ०] कृष्णपत्र।

तमहीद्-खी० [म०] भूमिका, प्रस्तावना।

तमा-खी० [सं०] रात्रि; * दे० 'तमय'। -चारी-पु० निशाचर।

तमा (मस्)-पु० [सं०] गड्ड।

तमाई-खी० फलके लिए खेत जोतनेके पहले उसमेंकी धान आदि निकालनेकी किया।

तमाकू-पु० दे० 'तमाकू'।

तमाप्ता-पु० धपड़, झापड़।

तमादी-खी० [म०] लेन-देन या मुकदमेकी सुनवाई आदिकी अवधिका बीत जाना।

तमाम-वि० [अ०] कुल, सारा; समाप्त, खतम।

तमामी-खी० समाप्ति; एक जरीदार कपड़ा।

तमारि-पु० [सं०] सूर्य। * खी० तंबार, घुमटा, चक्कर।

तमाळ-पु० [सं०] पहाड़ोंपर और यमुनाके किनारे होनेवाला एक सदाबहार पेड़; साम्प्रदायिक तिलक; एक प्रकारकी तलवार; वरुण वृक्ष; काला खैर; तेजपात; बॉसकी छाऊ; झुरती। -पत्र-पु० तमाळ वृक्षका पत्ता; सुरतीका पत्ता; साम्प्रदायिक चिह्न।

तमाळक-पु० [सं०] तमाळ; बॉसकी छाऊ; तेजपात; एक साग।

तमाळिका-खी० [सं०] ताम्रवल्ली लता; भूम्यामलकी।

तमाळिनी-खी० [सं०] वह भूमि जहाँ तमाळके वृक्षोंकी

अधिकता हो; मुईर्जबिला।

तमाळी-खी० [सं०] ताम्रवल्ली लता; वरुण वृक्ष।

तमाशबीन-पु० तमाशा देखनेवाला; देखाश।

तमाशबीनी-खी० देखाशी।

तमाशा-पु० [अ०] मनोरंजक ध्वज; अद्भुत बात।

तमाशाई-पु० दे० 'तमाशबीन'।

तमाझन-पु० [सं०] तालीझपत्र।

तमि, तमी-खी० [सं०] रात्रि; मोह, मूर्च्छा; हस्ती।

-**(मी)चर**-पु० राक्षस, निशाचर। -**नाथ**-पु० चंद्रमा। -**पति**-पु० चंद्रमा। -**पीचि**-खी० अप्सराओंका एक भेद।

तमिळ-खी० द्रविड़ भाषाकी एक प्राचीन और प्रभावशाली जो दक्षिणपूर्वी मद्रासमें बोली जाती है।

तमिळ-पु० [सं०] अंधकार; अज्ञान; मोह; क्रोध; अस्ति पक्ष; एक नरक। -**पक्ष**-पु० कृष्ण पक्ष।

तमिळा-खी० [सं०] अंधेरी रात; निविड़ अंधकार।

तमीझ-खी० [अ०] अच्छे-दुरेकी पहचान, विवेक; अदब।

तमीश-पु० [सं०] चंद्रमा।

तमूरा-पु० दे० 'तंदूर'।

तमो-'तमस्'का समासगत रूप। -**गुण**-पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक जो अज्ञान, आलस्य, क्रोध, भ्रम आदि, का कारण है। -**गुणी (गिन्)**-वि० तामस वृत्तिवाला।

-**ज्ञ**-पु० अंधकार या अज्ञानको इरनेवाला, सूर्य; अग्नि; चंद्रमा; विष्णु; शिव; एक बुद्ध; ज्ञान। वि० जिसमें अंधेरा दूर हो। -**ज्योति (स्)**-पु० जुगनू। -**दर्शन**-पु० पिच्छवर्कका एक भेद। -**नुद्**-पु० सूर्य; चंद्र; पस्मेवर।

-**नुद्**-पु० सूर्य; चंद्र; अग्नि; दीप। -**मिद्**-पु० जुगनू।

-**मणि**-पु० जुगनू; गोभेदक मणि। -**विकार**-पु० रोग। -**हर**-पु० सूर्य; चंद्र। -वि० अंधकार दूर करनेवाला।

तमोमब-वि० [सं०] तमोगुणसे भरा हुआ; ज्ञानहीन; अंधकारपूर्ण।

तमोर, तमोळ-पु० तांबूल, पान।

तमोळिन-खी० बरतन।

तमोळी-पु० बरतन, पान बेचनेवाला।

तब-वि० [अ०] पूरा किया हुआ, समाप्त; निश्चित, निर्णायक।

तपना-अ० कि० तपना, गरम होना; संतप्त होना, दुःखी होना; स० कि० तपाना, संतप्त करना-'आर्नेद घन जंग झुजस छाडके पतित पथीहै निपज न तैये'।

तपार-वि० दे० 'तैयार'।

तरंग-खी० [सं०] पानीकी लहर, मीज; उमंग; उछाल; हिलना-डोलना; श्वर-उपर घूमना; स्वरोंका आरोह-अवरोह। पु० वक्ता; ग्रंथका खंड। -**माळी (लिन्)**-पु० मसुद्र।

तरंगक-पु० [सं०] पानीकी लहर; स्वरलहरी।

तरंगवती-खी० [सं०] नदी।

तरंगवित-वि० [सं०] तरंगयुक्त।

तरंगिणी-खी० [सं०] नदी। वि० खी० तरंगोंवाली।

-**नाथ**-अर्वाँ (रूँ)-पु० समुद्र।

तरंगित-वि० [सं०] लहराता हुआ; ऊपरसे बहता हुआ;

कंपायमान ।

सर्वग्री(गिन्)-वि० [सं०] तरंगयुक्त; मौजी; अस्तिर ।

सर्वङ्-पु० [सं०] बंसीकी खोरीमें बाँधी जानेवाली छोटी लकड़ी जो ऊपर उतराती रहती है; डाँड़; नाव; बेड़ा ।
-पादा-स्त्री० एक तरङ्गकी नाव ।

सर्वङ्ग, सर्वङ्गी-स्त्री० [सं०] नाव; बेड़ा ।

सर्वत-पु० [सं०] समुद्र; मेढक; राक्षस; भक्त; मुसलवार वृद्धि ।

सर्वती-स्त्री० [सं०] नौका ।

सर्वबुज-पु० [सं०] तरबूज ।

सर-पु० [सं०] पार करनेकी क्रिया; बंद जाना; पराभूत करना; अग्नि; वृद्धि; गति; मार्ग; घाटवाली नाव; नावका भाषा; तक्षितका एक प्रत्यय जो युष्माधिक्य प्रकट करनेके लिए लगाया जाता है (जैसे-स्थूलतर, व्या०) । -पण्य-पु० नावका भाषा । -परिष्य-पु० नावका भाषा लेनेवाला । -स्थान-पु० नावमें उतरनेका घाट ।

सर*पु० तर; पेड़ । अ० नीचे, तले । -छटा-स्त्री० तलछट ।

सर-वि० [का०] आर्द्र; अत्यंत भिक्त; ठंडा; मालदार ।

•-सत्तर-वि० भीमा हुआ; सराबोर । -ब साझा-वि० सुरतका ।

सर(स्)-पु० [सं०] नल; वेग; बानार; तीर; रोग; तट; अभी पार करनेका घाट; नाव; बेड़ा ।

सरङ्ग*स्त्री० तारा, नक्षत्र ।

सरक*पु० सोच-विचार, कष्टापोह; चुटीली बात; चातुर्यपूर्ण उक्ति । स्त्री० दे० 'तक्क' ।

• सरकना*अ० कि० तर्क करना; अंदाजा लगाना; उछलना; झपटना; दे० 'तबकना' ।

सरकश-पु० [का०] तीर रखनेका चोंगा, तूणीर, निर्पंग ।

सरकस*पु० दे० 'तरकश' ।

सरकली*स्त्री० छोटा तरकश ।

सरका-पु० उत्तराधिकारीकी मिलनेवाली संपत्ति; † दे० 'तबका' ।

सरकारी-स्त्री० बड़ पोषा जिसके पत्ते, फूल, फल, कद आदि पकाकर भोज्य पदार्थके माष खानेके काम आते हैं, सज्जी, शाक; तबका देकर पकाया हुआ शाक, सज्जी आदि ।

सरकी-स्त्री० फूलकी तरङ्गका कानका एक गहना ।

सरकीब-स्त्री० [अ०] मिलाना; मिलावट; रचना; उपाय; ढंग, तरीका ।

सरकुला-पु० ताड़ ।

सरकुला-पु०, सरकुली*स्त्री० कानका एक गहना, तरकी ।

सरकी-स्त्री० [अ०] उन्नति, बढ़ती; पढ़-वृद्धि, नीचेके दरजे से ऊपरके दरजेमें जाना ।

सरक्ष, सरक्षु-पु० [म०] एक छोटी जातिका बाघ ।

सरखा-पु० पानीका तेज बहाव ।

सरखान-पु० बंदई ।

सरखाना*अ० कि० आँखमें दशाश करना ।

सरज-पु० दे० 'तर्ज' ।

सरजना-अ० कि० डाँटकर बोलना; बुझकना ।

सरजनी-स्त्री० अंगूठेके पासकी उँगली, तर्जनी; * भय, डर ।

सरजीला*वि० क्रोधयुक्त; उग्र ।

सरजीह-स्त्री० [अ०] प्रधानता; बंद-चढ़कर होना, महत्त्वमें अधिक होना ।

सरजुई*स्त्री० छोटा नराजू ।

सरजुमा-पु० [अ०] अनुवाद, उल्था ।

सरजुमभि-पु० [अ०] अनुवाद करनेवाला ।

सरजीहॉ*वि० क्रुद्ध; उग्र ।

तरण-पु० [सं०] नदी आदि पार करनेकी क्रिया, तरना; स्वर्ग; छोटी नाव; बेड़ा; ढोंक; पराभूत करना ।

तरणि-पु० [सं०] सूर्य; किरण; यथार; ताँबा । स्त्री० छोटी नौका । वि० शीघ्रगामी; तेज; उत्साही । -जा, -तनबा,

-तनुजा-स्त्री० यमुना; एक वर्णवृत्त । -तनब-पु० दे० 'तरणिसुत' । -खम्ब-पु० शिव । -पेटक-पु० नावका पानी उड़ीवनेका पात्र । -रत्न-पु० माणिक्य ।

-सुर-पु० यम, शनि, कर्ण, सुदीप आदि । -सुता-स्त्री० यमुना ।

तरणी-स्त्री० [सं०] बेड़ा; नौका; धीकुआर; पथचारिणी कला ।

तरतरता-वि० (पक्वान) जिसमें (पी) चूता हो ।

तरतराना*अ० कि० दे० 'तडनवाना' † बहना ।

तरतीब-स्त्री० [अ०] क्रम, सिलमिला ।

तरत्-स्त्री० [सं०] डुब, बेड़ा; कारबब पक्षी ।

तरदी-स्त्री० [सं०] एक कटीला पेड़ ।

तरदीव-स्त्री० [अ०] रद करना, खडन ।

तरदुद-पु० [अ०] झंझट; परेशानी; धिमा; सोच, फिक्र, अंदेश ।

तरदूदी-स्त्री० [सं०] एक पक्वान ।

तरन*पु० दे० 'तरण', तरीना । -तारन-पु० उद्धार करनेवाला; उद्धार ।

तरना-अ० कि० पार होना; तैरना; अवर्धनमें छुटकारा पाना । स० कि० पार करना; * दे० 'तलना' ।

तरनाग-पु० एक पक्षी ।

तरनि*पु० दे० 'तरणि' । स्त्री० दे० 'तरणी' । -जा, -तनुजा-स्त्री० दे० 'तरणिजा', 'तरणि-तनुजा' ।

तरशि*पु०, स्त्री० दे० 'तरणि' ।

तरन्नुम-पु० [अ०] आलाप ।

तरप*स्त्री० दे० 'तक्प' ।

तरपस*पु० सुमीना ।

तरपन*पु० दे० 'तर्पण' ।

तरपना*अ० कि० दे० 'तबपना' ।

तरपर-अ० नीचे-ऊपर ।

तरपरिचारी-वि० नीचे-ऊपरका; क्रममें पहले और पीछेका ।

तरपीला*वि० तबपदार, चमकीला ।

तरफ-स्त्री० [अ०] ओर; बगल । -द्वार-वि० पक्षपाती, सहायक । -द्वारी-स्त्री० पक्षपात ।

तरफाना*अ० कि० दे० 'तबफाना' ।

तरब-पु० सारणीके तार ।

तरबहना-पु० देवप्रतिमाको मङ्गलनेकी वाली ।

तरबिचल-खी० [अ०] घालन-घोषण करना, परवरिश करना; तालीम, शिक्षा ।

तरबूज-पु० [फा०] बहुरी जमीनपर फैलनेवाली एक बेल्का फल जो गोल आकारका, बड़ा, हरा और तासीरमें ठंडा होता है ।

तरबूजा-पु० ताजा फल; † तरबूज ।

तरबूजिया-वि० तरबूजेके रंगका, गहरा हरा ।

तरबोना-स० कि० तराबोर करना, बिगोना । अ० कि० तराबोर होना ।

तरभर-खी० 'तश्वातर्' की आवाज; सलबली- 'बजी बँदूखे तरभर मा-वी'-छत्रप्रकाश ।

तरभीम-खी० [अ०] दुबली; संशोधन, हेर-फेर ।

तरशाना-स० कि० पैटना ।

तरल-वि० [सं०] द्रव; हिलता-डुलता; चपल; तीव्रगामी; क्षणमंशुर; अस्थिर; चमकीला; पोका; लपट; विस्तृत ।

पु० हारके बीचका मणि; हार; हीरा; लोहा; धातु; सतह; तल; एक जनपद; उस जनपदके निवासी; बोझ ।

-नयन-पु० एक बर्णरूप । -नयना, -लोकना-वि० खी० चपल नेत्रोंवाली ।

तरला-खी० [सं०] यवायू; सुरा; मधुमक्खी ।

तरलाई-खी० तरलता, द्रवत्व ।

तरलाचित-वि० [सं०] कँपाया या हिलाया हुआ । पु० बही तरंग; अस्थिरता ।

तरलित-वि० [सं०] हिलता हुआ, अस्थिर; प्रवाहशील ।

तरवट-पु० [सं०] एक छप, आड्यु, दंतकाष्ठक ।

तरवन-पु० कानका एक आभूषण, तरकी ।

तरवर-पु० उत्तम हथ ।

तरवरिया-पु० तलवार चकानेवाला ।

तरवरिहा-पु० दे० 'तरवरिया' ।

तरवार-खी० दे० 'तलवार' ।

तरवारि-खी० [सं०] तलवार ।

तरम-पु० दया, रहम; [सं०] मांस । मु०-खाना-दया करना ।

तरसना-अ० कि० किसी वस्तुको पानेके लिए बेचैन रहना ।

* स० कि० तराशना, काटना ।

तरसान-पु० [सं०] नौका ।

तरसाना-स० कि० किसी वस्तुके लिए किसीको व्याकुल करना या ललचाना ।

तरसीहीन-वि० तरसनेवाला ।

तरस्वान्(बल)-वि० [सं०] तेज, वेगशील; शूर; बली ।

तरस्वी(विन्)-वि० [सं०] तेज; बली; साहसी । पु० दूत, धावन; बीरा; बाहु; मक्क; शिव ।

तरह-खी० [अ०] प्रकार, भौति, ढंग; बनावट; स्थिति ।

-कार-वि० अच्छे ढंग या तर्जका; सजीला । -दारी-खी० तरहदार होनेका भाव । मु०-वेना-बचा जाना; जान-भूलकर उपेक्षा करना ।

तरहटी-खी० दे० 'तलछटी' ।

तरहर, तरहारि, तरहुँव-अ० नीचे, तले ।

तरहेल-वि० पराजित, परास्त; बशीभूत ।

तराई-पु० [सं०] चौड़े पेंदेकी नाव ।

तराई-खी० पहाड़के आस-पासकी निम्न भूमि जहाँ सदा तराई बनी रहती है; * तारा ।

तराबू-पु० तोलनेका एक वंश जिसमें बाँझके दोनों सिरोंसे तथियों द्वारा दो फलके बँधे रहते हैं ।

तराटक-पु० दे० 'ब्राटक' ।

तराना-पु० [फा०] एक प्रकारका गाना । † अ० कि० दे० 'तरियाना' ।

तराप-खी० तोपकी आवाज ।

तरापा-पु० हाहाकार ।

तराबोर-वि० सराबोर, तर-बतर ।

तराभर-खी० 'तश्वातर्' की आवाज; तेजीसे कोई काम करना ।

तरामक-पु० छाजनके नीचे लगाये जानेवाले मूँजेके मुठे; जुनेके नीचेकी लकड़ी ।

तराबला-वि० चंचल; तेज ।

तरारा-पु० लगातार गिरनेवाली जलकी धारा; छल्लाँग ।

तरालु-पु० [सं०] दे० 'तरायु' ।

तराबट-खी० तराई; सरीरमें ठंडक लगनेवाली चीजें ।

तरावा-खी० [फा०] तराशनेकी क्रिया; काट, बनावट; तर्ज । -छरास-खी० तर्ज-बनावट, काट-छाँट ।

तराशना-स० कि० काटना; फाँक-फाँक करना ।

तरास-पु० भय, डर, आतंक ।

तरासना-स० कि० ब्रह्म करना ।

तराही-अ० नीचे ।

तरि-खी० [सं०] नौका; बल रखनेकी पैदारी; कपड़ेका छोर । -रथ-पु० बाँध ।

तरिक-पु० [सं०] बेडा, नौका; उतराई बटल करनेवाला (मोझी) ।

तरिका-खी० [सं०] नौका; भलाई ।

तरिकी(किन्)-पु० [सं०] मलाह, मोझी ।

तरिको-पु० तरकी ।

तरिणी-खी० [सं०] दे० 'तरणी' ।

तरिता-खी० [सं०] तर्जनी डंगली; गोंगा; एक दुर्गा; * दे० 'तबित' ।

तरित्र-पु०, तरित्री-खी० [सं०] नौका, पोत ।

तरियाना-स० कि० नीचे करना; डाँकना । अ० कि० तले बैठना, नीचे जमना ।

तरिवन-पु० कर्णकूल, तरकी ।

तरिवर-पु० दे० 'तरवर' ।

तरिहँस-अ० नीचे ।

तरी-खी० तराबट; गीलापन; कछार; तराई; * तरकी; जूतेका तल्ला; जूती; [सं०] नौका; गदा; धुँआ ।

तरीका-पु० [अ०] रीति, ढंग; उपाय ।

तरीच-पु० [सं०] सूखा गोबर, कबा; नाच; कुशल व्यक्ति; समुद्र; व्यवसाय; सजावट; स्वर्ग; सुंदर आकृति; एक विशेष प्रकारकी नौका ।

तरीपी-खी० [सं०] इद्रकी एक कन्या ।

तह-पु० [सं०] हथ, पैर । -कोटर-पु० हथका खोलका भाग । -खंड, -पंड-पु० इद्रकी समूह । -जीवन-पु०

पेवकी जड़ । -**तुलिका**-**खी**० नमगावड़ । -**नख**-**पु**० (पेवक) कैंदा । -**पतिका**-**खी**० लता । -**बाही**० ***खी**० शाखा, बाल । -**मुक्** (क्) -**पु**० एक लता, बंदाक (परगाछा) । -**खुर**-**पु**० बंदर । -**राग**-**पु**० नवपल्लव; कली । -**राज**-**पु**० पारिजात; कल्पवृक्ष ताक-वृक्ष । -**रहा**-**खी**० बंदाक । -**रोहिणी**-**खी**० बंदाक । -**बर**-**पु**० उत्तम वृक्ष । -**बल्ली**-**खी**० बंदाक । -**बिटप**-**पु**० शाखा । -**बिलासिनी**-**खी**० नव-मलिका । -**झापी**(**यिन्**) -**पु**० पक्षी । -**सार**-**पु**० कपूर । -**ख्या**-**खी**० बंदाक ।

तत्त्व-**वि**० [सं०] सोलह बंधे ऊपरकी अवस्थावाला, युवा; बढ़ती जवानीवाला; जो पूर्ण विकासको न प्राप्त हुआ हो । **पु**० युवा पुरुष; कुज नामक पुष्प; स्थूल औरक; परदर; अंकुर; कोमलारिक्त । -**उवर**-**पु**० वह ऊपर जो एक सप्ताहने कमका न हो । -**हथि**-**पु**० पाँच दिनका दही । -**पीतिका**-**खी**० मैनसिल ।

तत्त्वक-**पु**० [सं०] अंकुर ।

तत्त्वार्ह-**खी**० युवावस्था ।

तत्त्वस्थि-**खी**० [सं०] कोमलारिक्त, वह हड्डी जो कभी न हो ।

तत्त्वगमा(**मन्त्र**)-**खी**० [सं०] तत्त्व, जवानी ।

तत्त्वणी-**खी**० [सं०] युवती; दत्ती वृक्ष; एक पुष्प; चीड़ा नामका गंधद्रव्य; सेवती । -**कटाक्षमाल**-**पु**० तिलक वृक्ष ।

तत्त्व-**वि**० दे० 'तत्त्व' । -**ह**-**खी**० दे० 'तत्त्वार्ह' ।

तत्त्वार्ह-**खी**०, **तत्त्वपत्र**, **तत्त्वपात्र**-**पु**० तत्त्व ।

तत्त्व-**पु**० [मं०] कमलकी गठीली, गूदेदार जड़ ।

तत्त्व-**पु**० पानोमें डतरानेवाली वह वस्तु जिसके सहारे पार हुआ जा सके ।

तरे-**अ**० नीचे, तले ।

तरेद-**पु**० पेड़ ।

तरेदी-**खी**० तलहटी; पहाड़के नीचेकी भूमि ।

तरेक-**खी**० दरार-आत्मविश्वासमें संदेहकी तरेक डाल दो'-जिदगी० ।

तरेमा-**स**० कि० तिरछे देखना; बरजने वा बौट बताने-के लिय (नेत्र) तिरछे (कर) देखना; धेक्का देना-'उपाय-की नाब तरेरति तोरति'-घन० ।

तरेया-**पु**० तरेनेवाला; तारनेवाला । **खी**० तारा ।

तरेय-**खी**० दे० 'तरी'छ ।

तरोह-**खी**० दे० 'तुरह' ।

तरोता-**पु**० एक रुखा वृक्ष ।

तरोवर-**पु**० दे० 'तवर' ।

तरीछ-**खी**० तलछट ।

तरीछा-**पु**० चक्कीका निचला पत्थर ।

तरीस-**पु**० तट, किनारा ।

तरीना-**पु**० कानका एक गहना; तरकी ।

तर्क-**पु**० [सं०] कथा, जिसके द्वारा कारणका उपपादन करते हुए किसी वस्तुके अस्तित्व तर्ककी जाना जाय; न्याय-शास्त्र; युक्ति, दलील; विवेचन; वृत्त; छाती सत्या; कारण । -**ग्रंथ**-**पु**० तर्कशास्त्र-संबंधी ग्रंथ । -**मुद्रा**-

खी० तात्त्विक उपासनामें हाथकी एक मुद्रा । -**विसर्क**-**पु**० कथापोह । -**विद्या**-**खी**० न्यायशास्त्र । -**द्याल**-**पु**० वह शास्त्र जिसमें तर्कके नियम, सिद्धांत आदि निरूपित हों (नौतम और कणाद इसके प्रधान आचार्य माने जाते हैं) ।

तर्क-**पु**० [अ०] छूटना; परिचाय, किनाराकशी । **खी**० वह वाक्य आदि जो छूट जानेके कारण हाशियेपर लिखा गया हो । -**(कैं) अदब**-**पु**० गुस्ताखी । -**दुनिया**-**पु**० फत्तीर हो जाना । -**मबाकात**-**पु**० असहयोग । **तर्क**-**वि**०, **पु**० [सं०] तर्क करनेवाला, तर्कशास्त्री; बारी; पृष्ठताछ करनेवाला ।

तर्क-**पु**० [सं०] तर्क करनेकी क्रिया ।

तर्कना-**खी**० [सं०] तर्क करनेकी क्रिया, विचार ।

तर्कना-**खी**० विचार; युक्ति । * **अ**० कि० विचार या तर्क करना ।

तर्क-**पु**० दे० 'तर्क' ।

तर्कसी-**खी**० दे० 'तर्कसी' ।

तर्कभास-**पु**० [सं०] बलत तर्क, बलत परिणाम निकालना; ऐसा तर्क जो ऊपरसे सही जान पड़े, पर दरअसल बलत हो, हेत्वाभास ।

तर्कारी-**खी**० [सं०] जयती वृक्ष ।

तर्किण-**पु**० [मं०] चक्कै ।

तर्कित-**वि**० [सं०] अनुमित; जिसपर तर्क किया गया हो; प्रोक्षित ।

तर्किल-**पु**० [सं०] चक्कै ।

तर्क(**किन्**)-**वि**०, **पु**० [सं०] तर्क करनेवाला; मीमांसक ।

तर्क-**पु**० [सं०] तकला, टेकुआ । -**पिंड**-**पु**० तकलेकी फिरकी ।

तर्क-**पु**० [मं०] बारी, प्रार्थी ।

तर्कुटी-**खी**० [मं०] दे० 'तर्कु' ।

तर्क-**वि**० [सं०] तर्क करने योग्य, विचारने योग्य ।

तर्कु-**पु**० [मं०] नैदुआ ।

तर्क-**पु**० [मं०] जवाबदार ।

तर्क-**पु**० [अ०] रीति, शैली, ढंग; बनावट ।

तर्क-**पु**० [मं०] धमकाना; डौटना; डराना; क्रोध ।

तर्कना-**खी**० [सं०] दे० 'तर्क' । * **स**० कि० अटना, उघटना । * **अ**० कि० क्रोधमें तड़पना ।

तर्कनी-**खी**० [सं०] अंगुठके पासकी गेंगली । -**मुद्रा**-**खी**० तात्त्विक उपासनामें हाथकी एक मुद्रा ।

तर्कित-**वि**० [सं०] अपमानित; जो फटकारा गया हो ।

तर्कना-**पु**० [अ०] दे० 'तर्कुमा' ।

तर्क-**पु**० [मं०] बछ्छा ।

तर्क-**पु**० [सं०] हालका पैदा हुआ बछ्छा; बच्चा ।

तर्क-**पु**० [सं०] सूर्य; बेश ।

तर्करी-**पु**० [सं०] एक प्रकारकी नौका । **वि**० पार जानेवाला ।

तर्क-**खी**० [सं०] डोई ।

तर्क-**पु**० [सं०] दुष्ट करनेकी क्रिया; देवताओं, ऋषियों और पितरोंकी तिथि या तद्बलमिश्रित जल देनेकी क्रिया; यथाशिका ईषन; आहार; आँखोंमें तेक करना ।

तर्पणी-श्री० [सं०] एक वृक्ष; गंगा ।

तर्पणेच्छु-पु० [सं०] मीथ ।

तर्पित-वि० [सं०] दूध किया हुआ ।

तर्पी(पिन्)-वि०, पु० [सं०] रास करनेवाला; तर्पण करनेवाला ।

तर्बट-पु० [सं०] चकई; वर्ष ।

तर्बुज-पु० दे० 'तरबूज' ।

तर्बोना*-पु० दे० 'तरीना' ।

तर्प-पु० [सं०] अभिलाष; रुग्णा; समुद्र; नौका; सूर्य ।

तर्पण-पु० [सं०] विपासा, टूषा; इच्छा ।

तर्पित-वि० [सं०] व्यासा; इच्छुक ।

तर्बुल-वि० [म०] दे० 'तर्पित' ।

तल-पु० [सं०] निचला भाग; वह भाग जिसके ल कोई वस्तु स्थित हो; पैदा; पैदा; सतह; ऊची-चौड़ी, वस्तुका ऊपरी भाग; जंगल; प्रत्यक्षाके आपातमे बचनेके-लिए बायें हाथपर पहना जानेवाला चमड़ेका खोल; मकानकी छत; धूपघर; हथेली; तलबा; तलवार आदिकी मूठ; बायें हाथसे बीणा बजाना; निम्नता; गहटा, मॉड; ताड़; शिब; नरक-का एक भाग; एक अधोलोक; तालाब; कारण, हेतु ।

-कर-पु० तालाब आदिपर लगनेवाला कर । -कीट-पु० एक वृक्ष । -घर-पु० [हिं०] तहखाना । -घास-पु० चपट । -छट-श्री० [हिं०] पानी आदि द्रव पदार्थोंमें नीचे बैठनेवाला मेल । -ताल-पु० हाथमे बजाया जानेवाला एक बाजा; धोषी । -त्राण-पु० बुझमें हथेली-की हल्काके लिए पहना जानेवाला चमड़ेका दस्ता । -प्रहार-पु० चपट । -मल-पु० दे० 'तलछट' । -मीर-पु० मछली । -लोक-पु० पानाल । -बारण-पु० तलत्राण; तलवार । -सारक-पु० तोरका; तंग । -हृदय-पु० तलवेका केन्द्र ।

तलक-पु० [सं०] तालाब; मिट्टीका षरतन; एक तरहका नमक । * अ० तक ।

तलकनीन-श्री० [अ०] शिक्षा, तामील ।

तलक-वि० [फा०] कठका ।

तलकना-सं० कि० धी या तेरमें पकाना ।

तलक*-पु० दे० 'तलक' ।

तलकना*-अ० कि० दे० 'तलकना' ।

तलक-वि० [अ०] नष्ट, बरबाद, तबाह । * श्री० कष्ट ।

तलकना-अ० कि० पीड़ासे व्याकुल होना, छटपटाना ।

तलकरी-श्री० बरबारी, तबाही; हानि ।

तलकप्रकुञ्ज-पु० [अ०] उच्चारण ।

तलक-श्री० [अ०] इच्छा; इच्छा; आवश्यकता; चाह; गुलाब; वेतन । -गार-वि० मॉगने या चाहनेवाला ।

-हार-वि० दे० 'तलकवार' । -दास्त-पु० समन ।

-नामा-पु० समन, अदालतमें हाजिर होनेकी लिखित आज्ञा । मु० -करना-गुलाना ।

तलकाना-पु० [फा०] अदालतमें जमा किया जानेवाला गवाहीकी तलब करनेका खर्च; समथपर मालगुजारी जमा न करनेपर लगनेवाला दंड, तावान ।

तलबी-श्री० [फा०] गुलाबट; मॉग ।

तलबेची*-श्री० बेचनी-“तल परी तलबेची महा

१६-क

लायी मैं सर है'-सुखदेव; तीव्र लाच्छा ।

तलमलाना*-अ० कि० दे० 'तिलमिलाना' ।

तलमकाहट*-श्री० दे० 'तिलमिकाहट' ।

तलबकार-पु० [सं०] सामवेदकी एक शाखा; उससे संबद्ध एक उपनिषद् ।

तलबा-पु० खरे होने या चलनेमें धुंधीपर बहनेवाला पैर-का नीचेका भाग । मु०-(वे) खाटना-बहुत अधिक खुशामद करना ।-सहकाना-खुशामद करना ।-(वीं) से आग लगाना-बहुत अधिक क्रोध बढ़ना ।

तलवार-श्री० एक प्रसिद्ध हथियार, खल । मु०-का खेत-लफाईका मैदान । -की औंच-तलवारके वारका मुकाबला । -के घाट उतारना-तलवारसे मार डालना । -खींच लेना-लजनेके लिए म्यानसे तलवार बाहर निकाल लेना । -सीतना-बार करनेके लिए म्यानसे तलवार निकालना ।

तलहटी-श्री० पहाड़के नीचेकी भूमि ।

तलांगुलि-श्री० [सं०] पैरकी उँगली ।

तला-पु० पैदा । श्री० [सं०] तलत्राण ।

तलाई-श्री० छोटा ताल ।

तलाक-पु० [अ०] वैधानिक रीतिमे विवाह-संबंधका विच्छेद ।

तलाशी-श्री० चढाई ।

तलासल-पु० [सं०] सात अधोलोकोंमें एक ।

तलाफ्री-श्री० हानिका बदला, क्षतिपूर्ति ।

तलाबा-पु० दे० 'तालाब' ।

तलाबेली-श्री० दे० 'तलबेली' ।

तलामली*-श्री० दे० 'तलबेली' ।

तलाव*-पु० तालाब ।

तलाश-श्री० [पु०] खोज; चाह ।

तलाशना-सं० कि० खोजना, ढूँढना ।

तलाशी-श्री० छिपायी या गुप्त की हुई वस्तुकी ऐसी जगह खोजनेकी किया जहाँ उसके छिपाकर रखे होनेका संदेह हो । मु०-देना-तलाशी लेनेवालेकी घर-बार आदि ढूँढने देना । -लेना-जिसपर किसी वस्तुके गुप्त करने या छिपानेका संदेह हो उसके घर-बार आदिमें उसकी खोज करना ।

तलिका-श्री० [सं०] तोरका; तंग ।

तलित-वि० [सं०] तेल या धीमें भूना हुआ; पेंदेवाला; सिर बैठा हुआ । पु० भूना हुआ मांस ।

तलित्-श्री० [सं०] दे० 'तलित्' ।

तलिन-वि० [सं०] किरल; दुर्बल; थोड़ा; स्वच्छ; निम्नस्व; धृक् । पु० शय्या, परंग ।

तलिम-पु० [सं०] वह भूमि जिसपर पत्थरके टुकड़े बिछाये गये हों; शय्या; खल; बितान, चंदोवा ।

तली-श्री० पेंदी; तलछट; हथेली; तलबा ।

तलुन-पु० [सं०] बावु; युवा पुरुष ।

तलुनी-श्री० [सं०] युवती ।

तले-अ० नीचे । -ऊपर-अ० एकके ऊपर दूसरा । मु०

-की बुनिया ऊपर होना-महान् परिवर्तन होना ।

तल्लेखन-पु० [सं०] शहर ।

तल्लेदी-झी० पेंदी; तल्लेदी ।
 तल्लेबा-झी० छोटा ताल ।
 तल्लेदूर-वि० [सं०] तोंदवाला ।
 तल्लेदूरी-झी० [सं०] पक्षी, आर्वा ।
 तल्लेदुवा-झी० [सं०] नदी ।
 तल्लेड्ड-झी० दे० 'तल्लेड्ड' ।
 तल्लेवन-पु० [अ०] रस बदलना; छिछोरपन; एक बातपर कायम न रहना, मत-परिवर्तन ।
 तल्लक-पु० [सं०] वन, जंगल ।
 तल्लख-वि० [फा०] कटु, कड़वा ।
 तल्लखी-झी० कड़वापन, कटुता ।
 तल्लप-पु० [सं०] शय्या, सेज, पर्खण; अदारी; (का०) पक्षी ।
 -कटि-पु० खदमल । -ज-पु० निवोगसे उत्पन्न पुत्र ।
 तल्लपक-पु० [सं०] पर्खण विछानेवाला नौकर ।
 तल्लपन-पु० [सं०] हाथीकी पीठ या पीठका मांस ।
 तल्लपल-पु० [सं०] हाथीकी रीढ़ ।
 तल्ल-पु० [सं०] विला; तालाब ।
 तल्लज-पु० [सं०] श्रेष्ठता; सुख (समाप्तांतमें प्रयुक्त) ।
 तल्ला-पु० जूतेका वह भाग जो पैरके नीचे रहता है; (मकानकी) मजिल; * सामीप्य ।
 तल्लिका-झी० [सं०] ताकी, कुजी ।
 तल्ली-झी० नाककी झींग या करनफूलकी नीचेसे फँसये रखनेवाला एक पुरजा या पेंच; [सं०] तरणी; नौका; बरुणकी पत्नी ।
 तल्लीन-वि० [सं०] उसमें मग्न, लगा हुआ ।
 तल्लव-पु० [सं०] गंधद्रव्यकी रगड़नेसे निकलनेवाली धुगंध ।
 तल्लवकार-पु० [सं०] सामवेदकी एक शाखा ।
 तल्ल-सर्व० [सं०] तुम्हारा ।
 तल्लक्का-पु० [अ०] आशा, उम्मेद, भरोसा ।
 तल्लकुक्क-पु० [अ०] दौर; ढील ।
 तल्लखीर-पु० [सं०] तीखुर ।
 तल्लखुह-झी० [अ०] किसीकी ओर रुख करना, ध्यान देना ।
 तल्लना*-अ० कि० दे० 'तल्लना' ।
 तल्लनी-झी० छोटा ताल ।
 तल्लराज-पु० [सं०] ववासशर्करा ।
 तल्ल-पु० रीढ़ी तल्लेनेका एक गोल छिछला पात्र; चिलमपर रखकर तल्लकू पीनेका गोल ठीकरा; छातीके बचावका साधन जो तल्लेके आकारका होता है-'थोधा हिलमटोप तल्ले चदाये हुप थे'-दृष्ट० । सु० -सिरसे बाँधना-सिर-पर चोट सहनेके लिए प्रस्तुत होना ।-(बे) की बूँह-आवश्यकतासे बहुत कम; क्षणस्थायी ।
 तल्लखीर-पु० बंसकोचन ।
 तल्लाज्ञा-झी० [अ०] आदर, सम्मान; दावत ।
 तल्लाना-स० कि० गरम कराना; † कोशे चीज चिपकाकर किसी पात्रका ऊँह बंध करवाना । वि० [फा०] मोझा-ताजा ।
 तल्लायक-झी० [अ०] रंजी, बेइया (तायफका बडु०, पर हिंदीमें एकचनमें प्रयुक्त) ।
 तल्लारा-पु० जलन, ताप ।

तल्लारीझ-झी० [अ०] इतिहास ।
 तल्लारुस-झी० [अ०] कंबाई; विस्तार; अपिकता; क्षमेण ।
 तल्लिच-पु० [सं०] स्वर्ग; समुद्र; व्यवसाया शक्ति । वि० बलवान्, शक्तिशाली; उत्साही ।
 तल्लिची-झी० [सं०] शक्ति; धृष्टी; नदी; ईंद्रकी एक पुत्री ।
 तल्ली-झी० दे० 'तल्ले' ।
 तल्लीच-पु० [सं०] स्वर्ग; समुद्र; सीमा ।
 तल्लालीस-झी० [अ०] निश्चय; रोगका निदान; क्लाम निधारित करनेकी क्रिया ।
 तल्लवुडु-पु० [अ०] आक्रमण करना; सख्ती, व्यावृत्ती ।
 तल्लारीक-झी० [अ०] इज्जत करना; आदर, सम्मान; उजुगी । सु० -रखना-विराजना, आसनस्थ होना ।
 -खाना-पचाना । -खे जाना-चला जाना ।
 तल्लारीह-झी० [अ०] व्याख्या ।
 तल्ल-पु० [फा०] थाली, परत जैसा हलका, छिछला बरतन ।
 तल्लरी-झी० छोटी रकारी ।
 तल्ल-वि० [सं०] छीला हुआ; दखा हुआ ।
 तल्ला(ट)-पु० [मं०] बढरै, रबकार; विश्वकर्मा; एक आदित्य ।
 तल्ली*-झी० एक तरहकी रकारी ।
 तल्ल*-वि० वैसा । अ० वैसे ही ।
 तल्लकीन-झी० [अ०] सात्वना, तल्लही ।
 तल्लदीक-झी० [अ०] प्रमाणित करना, पुष्टि, समर्थन ।
 तल्लदीह*-झी० पीछा, कट ।
 तल्लदुडु-पु० [अ०] कुर्बानी; भक्ति; दान, खैरात ।
 तल्लनीक-झी० [अ०] ग्रंथरचना ।
 तल्लकीया-पु० [अ०] परिष्कार; समशीमा; फैसला ।
 तल्लबी-झी० दे० 'तल्लबीह' ।
 तल्लबीह-झी० [अ०] माला, सुमिरनी ।
 तल्लमा-पु० [फा०] चमड़े या घुत्की चौड़ी पट्टी जो किसी वस्तुको कसनेके काम आती है ।
 तल्लर-पु० [मं०] दे० 'दसर'; जुलाहोंकी दरकी ।
 तल्लरा-पु० कटोरेकी शक्लका कुछ बड़ा और गहरा बरतन ।
 तल्लरी-झी० छोटा तल्लका ।
 तल्लरीम-झी० [अ०] अभिवादन; अंगीकार करनेकी क्रिया ।
 तल्लही-झी० [अ०] दादस, रिवाजा, सात्वना ।
 तल्लबीर-झी० [अ०] चित्र ।
 तल्ल-पु० इमारती कामकी एक माप ।
 तल्लर-पु० [सं०] चोर; एक शाक; मदन वृक्ष; कान ।
 -बुत्ति-पु० पाकेटमार । -स्नापु-पु० काफनासा, कौवाठेंठा ।
 तल्लरी-झी० [सं०] चोरकी झी; चोरी करनेवाली की; उग्र स्वभावकी झी ।
 तल्लु-वि० [सं०] स्वावर, अचल ।
 तल्लरी-झी० दे० 'तल्लबीर' ।
 तल्ले, तल्लेवा*-अ० बहल ।
 तल्ल-झी० [फा०] परत; दे० 'तल्ल' । -झाक-पु०

ताड-पु० ताप, ताव; कोष; आवेश ।

ताड-पु० पिताका बड़ा भाई ।

ताडन-पु० [अ०] डेर ।

ताडस-पु० [अ०] मोर; कमानीमें बजाया जानेवाला सितार जैसा एक बाजा जिसपर मोरकी शृङ्खल बनी होती है। एक तरहका हस्तप्रय ।

ताडसी-वि० मोर जैसा; मोरके रंगका ।

ताड-क्री० ताकनेकी क्रिया; अच्छे दृष्टि; धातु; खोज, ढोह । -झाँक-क्री० किसीकी प्रतीक्षा वा खोजमें रहकर ताकने वा झाँकनेकी क्रिया । मु०-में रहना-मौका देखते रहना । -लगाता-मौका देखना, धातुमें रहना ।

ताड-पु० [अ०] ताखा, आला । वि० जो दोसे बिभाजित न हो सके-जैसे एक, तीन, पाँच आदि; अद्वितीय । -जुझत-पु० जुझका एक खेल जिसमें मुठ्ठीमें कोथियाँ आदि लेकर उनकी सम वा विषम संख्या पूछते हैं । मु०-पर धरना वा रखना-काममें न लाना । -भरना-देवस्थानपर मनौती चढ़ाना (मुसल०) ।

ताडत-क्री० [अ०] बल, शक्ति । -बर-वि० बलवान्, शक्तिशाली ।

ताडना-स० कि० देखना; स्थिर दृष्टिसे देखना; नजर रखना; बाहना; निश्चय करना; ताड लेना ।

ताडरी-क्री० नागरीसे मिलती-जुलती एक लिपि ।

ताका-वि० तिरछे ताकनेवाला ।

ताकि-अ० [फा०] समर्थ कि, जिसमें, जिसमें ।

ताकीद-क्री० [अ०] किसी कार्यके लिए बार-बार चेतानेकी क्रिया ।

ताडप्य, ताडण-पु० [सं०] बढाईका लड़का ।

ताड-पु० दे० 'ताक' ।

ताला-पु०, वि० आला, ताक ।

ताली-वि० जिसकी ओँसे एक जैनी न हो ।

ताग-पु० तागा । क्री० तागनेकी क्रिया । -पाट-पु० रेशमका एक विशेष धागा जिसे विवाहके समय बरका बड़ा भाई बधूकी पहनाना है । (कहीं-कहीं इसमें सोनेके जंठर भी पहिने जाते हैं) । मु०-पाट डालना-बरके बड़े भाईका बधूको तागपाट पहनाना ।

तागरी-क्री० कपडनी; छुदपटिका ।

तागना-स० कि० रजाई आदिमें दूर-दूरपर सिकाई करना ।

तागा-पु० घट, घोरा ।

ताज-पु० [फा०] राजका मुकुट; कलगी; शिखा; गंजीफेका एक रंग; चायका छन्ना; बुर्जी; ताजमहलका सक्षिप्त नाम । -झरझर-पु० सुर्गे के सिंहरकी कलगी । -हार-पु० बादशाह । वि० ताजके ढगका । -पोशी-क्री० राज्याभिषेक; सिंहासनाब्ध होने या ताज धारण करनेके समयका उत्सव । -बख्श-पु० वह सम्राट् जो बादशाह बनाये या हारे हुए बादशाहको फिर बादशाह बनाये । -बीबी-क्री० शाहजहाँकी प्रसिद्ध बेगम मुमताजमहल जिसके मकबरेके रूपमें ताजमहलका निर्माण हुआ । -बाइ-पु० शाहजहाँकी बेगम मुमताजमहलका आगरा-

स्थित प्रसिद्ध रौजा (इसकी गणना संसारके सप्ताक्षरोंमें है) ।

ताजक-पु० [फा०] एक ईरानी जाति ।

ताजगी-क्री० [फा०] ताजा होनेका भाव; नयापन; खूब-पन वा कुम्हारइत्यादि अभाव; जाति वा वैधर्म्यका उल्टा ।

ताजब, ताजना-पु० दे० 'ताजियाना'; उद्देवन देनेवाली वस्तु; दंड ।

ताजा-वि० [फा०] हरा-हरा; जो खूब या सुरक्षावा हुआ न हो; पौधे वा पेड़के तत्कालका तोड़ा हुआ (पुष्प, फलादि); तुरतका तैयार किया हुआ; तुरतका निकास हुआ; जो अधिक दिनोंका वा बासी न हो ।

ताजिया-पु० [अ०] बौद्धों तिथियों, रंगीन कागजों आदिका बना हुआ वह ढाँचा जो इमाम हसन और इमाम हुसैनके मकबरोंकी आकृतिका बनाया और नियत स्थानपर दफनाया जाता है । मु०-डंडा होना-ताजियेका दफनाया जाना; किसी बड़े आदमीका देहांत होना ।

ताजियाना-पु० [फा०] चादक, कोष ।

ताजी-वि० [फा०] अरबी, अरबका । पु० अरबी घोड़ा; शिकारी कुत्ता । क्री० अरबी भाषा ।

ताजीम-क्री० [अ०] दूसरेको बड़ा समझना; बशोंके प्रति आदर-भाव प्रदर्शित करना ।

ताजीमी सरदार-पु० [फा०] वह सरदार जिसकी ताजीम बाटशाह भी करे ।

ताजीर-क्री० [अ०] दृढ, मजबूत ।

ताजीरात-क्री० [अ०] 'ताजीर'का बहु० । -हिंदू-क्री० भारतमें प्रयोगमें आनेवाले कौजारी कानूनोंका संग्रह, भारतीय दंडविधान ।

ताजीरी-वि० उदारमय; दंडरूपमें तैयार या लगाया हुआ । (पुष्प, कर आदि) ।

ताज्जुब-पु० दे० 'तश्जुब' ।

ताटक-पु० [सं०] कानका एक अभूषण; एक छंद ।

ताटस्थ-पु० [सं०] सामीप्य; तटस्थता, निरपेक्षता, उदासीनता ।

ताटक-पु० [सं०] दे० 'ताटक' ।

ताड-पु० [सं०] ताडन, आपात; शब्द; पर्वत; तृणादिका पूल । -घा-घात-पु० हथौड़ा चलानेवाला, लोहार । -पत्र-पु० ताटक ।

ताड-पु० एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं, सिर्फं निरंतर पत्तियाँ होती हैं ।

ताडक-पु० [सं०] बघिफ, जल्साद ।

ताडका-क्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे रामने मारा था । -फल-पु० बड़ी हलायची ।

ताडकाथम-पु० [सं०] विशाखामें एक पुत्रका नाम ।

ताडकारि-पु० [सं०] रामचंद्र ।

ताडकेय-पु० [सं०] ताटकाका पुत्र, मारीच ।

ताडन-पु० [सं०] आपात; मार; फटकार; अनुशासन; दोषांके संग्रहका एक संस्कार; खंड ग्रहण; गुणन ।

ताडना-क्री० [सं०] मार; आपात; मारने-पीटनेकी क्रिया; दंड-दण्ड ।

ताडना-स० कि० भोंपना, जान लेना, ममस लेना; भागना; सजा देना; कष्ट देना; दुर्वचन कहना ।
ताडनी-स्त्री० [सं०] कोठा, चाबुक ।
ताडनीय-वि० [सं०] रंडनीय ।
ताडि, ताडी-स्त्री० [सं०] एक छोटी जातिका ताड़; एक आभूषण ।
ताडित-वि० [मं०] जिनपर मार पड़ी हो; जिसे रंड दिया गया हो ।
ताडी-स्त्री० ताड़के वृक्षसे निकलनेवाला सफेद मादक रस; ध्यान, ममाधि, तारी ।
ताडुल-वि० [सं०] मारने-पीटनेवाला ।
ताड़-वि० ताड़ जानेवाला ।
ताड्यमान-वि० [सं०] जिसपर मार पड़ती हो । पु० लकड़ीमे बजाया जानेवाला एक तरहका ढोल ।
तात्-पु० [सं०] पिता; आत्तरीय न्यक्त; एक संशोधन जो ब्राह्मणके लोगों या अपनेसे छोटीके लिए प्रयुक्त होता है ।
वि० पुत्र्य; प्रशस्त; * तप्त, गरम । -**शु**-पु० चाचा ।
वि० पिताके लिए उपयुक्त; पैतृक ।
तात्त-पु० [सं०] खंजन ।
तात्तल-पु० [सं०] रोग; लोहेकी गदा; ताप; पकाना ।
वि० पितृतुल्य; पैतृक; संबंधी; उष्ण ।
तात्ता-वि० तप्त, गरम ।
तानाथेई-स्त्री० नृत्यका एक गौल ।
तानार-पु० [का०] मध्य एशियाका एक देश ।
तातारी-पु० तातार देश-निवासी । **वि०** तातार देशका ।
ताति-पु० [सं०] पुत्र । स्त्री० वशपरंपरा ।
तात्तल-स्त्री० [अ०] अवकाश, छुट्टी ।
तात्कालिक-वि० [सं०] तत्कालका, उसी या उस समयका ।
तात्त्विक-वि० [सं०] तत्त्व-संबंधी; जिसमें तत्त्वपर विशेष ध्यान दिया गया हो; वास्तविक ।
तात्पर्य-पु० [सं०] आशय, अभिप्राय, मश्रा ।
तात्पर्यार्थ-पु० [सं०] वाक्यार्थमे मिश्र अर्थ जो वाक्य-विशेषमें बतलाका अभिप्राय समझा जाव ।
तात्स्न्य-पु० [सं०] एक वस्तुमें दूसरी वस्तुके स्मित रहनेका भाव ।
ताथेई-स्त्री० दे० 'ताताथेई' ।
तादर्थ्य-पु० [सं०] उद्देश्यकी एकरूपता; अर्थकी समानता; उद्देश्य ।
तादात्म्य-पु० [मं०] अभिन्नता, दो वस्तुओंके परस्पर अभिन्न होनेका भाव । -**संबंध**-पु० अमेद संबंध ।
तादात्मिक-वि० [सं०] (राजा) जिसका कोई रिक्त रहा करता हो ।
तादाद-स्त्री० [अ०] ससया ।
तादृश-वि० [सं०] वैसा, उसके समान ।
तादा-स्त्री० 'ताताथेई' वैसा नृत्यका एक गौल ।
तान-स्त्री० सगीतमें स्वरका विस्तार; ताननेकी क्रिया या भाव; खिंचाव । पु० [सं०] ध्वज; विस्तार; क्षानका विषय ।
-तार-स्त्री० [हिं०] तानकी लहर । -**धूर**-पु० [हिं०] सितारके आकारका एक बाजा जो गाते समय स्वर देनेके काम आता है ।

ताडना-स० कि० खींचकर कड़ा करना; फैलाना; खड़ा करना; समेटी हुई चीजको फैलाकर व्यवहारयोग्य स्थितिमें लाना; खींचकर कुछ अंतरपर स्थित दो आधारोंमें फैलाना; किसीको लक्ष्य करके मारनेके लिए हाथ या अस्त्र आदि उठाना । पु० **ताडकर सोना**-निश्चित होकर सोना ।
ताडना-पु०-पु० ताना-बाना ।
ताड-पु० [सं०] तनुता, कुशता ।
ताडसेन-पु० अकबरके दरबारका एक प्रसिद्ध गायक ।
ताना-पु० कतारोंमें लंबाईके बल फैलाया हुआ सूत; [अ०] व्यंग्यपूर्ण चुटकी बात । * स० कि० तपाना; परीक्षाके लिए तपाना; ठीकना, सुँद बंद करना । -**पाई**-स्त्री० घूम-फिरकर आते-जाते रहना । -**बाना**-पु० ताना और भरना । **सु०**-भारना-चुटकी बात कहना ।
तानारीरी-स्त्री० नौसिखिया गाना ।
तानासाह-पु० एक बादशाहका उपनाम; (का०) स्वेच्छा-चारी शासक ।
तानाशाही-स्त्री० अधिनायकत्व; स्वेच्छाचारिता ।
तानी-स्त्री० नुनापदमें लंबाईके बल रखा हुआ सूत; * बंध, तनी ।
तानूर-पु० [मं०] पानीका भंडार ।
ताम्ब-पु० [सं०] औरस पुत्र ।
ताप-पु० [सं०] उष्णता, गरमी; ज्वर; दुःख; मानसिक व्यथा, आधि । -**कम**-पु० शरीर या वायुमण्डलकी उष्णता का उतार-चढ़ाव । -**निक्षी**-स्त्री० [हिं०] ग्रीहा ।
-ग्रह-पु० आधिमौलिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक दुःख । -**वि**-वि० कष्टकारक । -**दुःख**-पु० दुःखका एक भेद (योगदर्शन) । -**मान**-पु० शरमातीटर द्वारा मापी गयी शरीर या वायुमण्डलके तापकी मात्रा । -**बंध**-पु० शरमातीटर । -**स्वेद**-पु० उष्णता पहुँचानेमे उत्पन्न पसीना । -**हर**-वि० तापनाशक । -**हरी**-स्त्री० एक व्यंजन ।
तापक-वि० [मं०] तापोत्पादक । पु० रजोगुण; ज्वर ।
तापती-स्त्री० [मं०] सूर्यकी कन्या; एक नदी ।
तापतोटी-नापकन्य भ्याकुक्ता-'परम मरम अपरस तापतोटीके'-यन ।
तापत्व-पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम । वि० तापती-संबंधी ।
तापव-पु० [सं०] सूर्य; ग्रीष्म ऋतु; कायदेवका एक बाण; सर्वकाल मणि; आकृता पेड़, भदार; एक नरक; सुवर्ण, जलानेवाला; कष्ट देनेवाला । वि० तापकारक; कष्टदायक ।
तापना-अ० कि० आँच वा तापसे शरीर गरमाना । स० कि० नष्ट करना, उगाना; * तपाना ।
तापनीय-पु० [सं०] एक उपनिषद्; एक निष्क वजनका सोना । वि० सुवर्णमय, सुनहला ।
तापक्षित-पु० [सं०] एक यज्ञ ।
तापस-पु० [सं०] तपस्वी; बगला; तेजपात; दौना । वि० तपसा वा तपस्वी-संबंधी; तपस्वी । -**ज**-पु० तेजपात । -**सरु**-**हुस**-पु० इंदुवी, हिंगोट । -**मिष**-पु० प्रियाल वृक्ष । वि० जो तपस्विधोंको प्रिय लगे; जिसे तपस्वी प्रिय हो । -**मिषा**-स्त्री० दास, मुनका । -**व्यंजन**-पु०

सायसेखु-वि० [सं०] वृक्षमेवाका पुत्रचर (को०) ।
 सायसेखु-पु० [सं०] एक प्रकारकी ईंध ।
 सायसेखा-को० [सं०] दाख, मुनका ।
 सायस्व-पु० [सं०] तापस धर्म ।
 सायिष्ठ-पु० [सं०] तमाल; माक्षिक पातु ।
 सायिष्ठ-पु० [सं०] दे० 'तापिष्ठ' ।
 सायिष्ठ-पु० [सं०] तमाल ।
 सायित-वि० [सं०] तपाया हुआ; पीवित ।
 सायी-को० [सं०] तासी नदी; यमुना नदी । -ज-पु०
 माक्षिक पातु ।
 सायी(विश्व)-वि० [सं०] आधिते पीवित; तप्त करनेवाला;
 गरम ।
 तासी-को० तपती नदी ।
 ताम्य-पु० [सं०] माक्षिक पातु ।
 ताम्रता-पु० [का०] धूपई देवामी कपडा ।
 ताम्र-को० [का०] ताम्र; हिममत; ताम्रवर्ण; मञ्जरा; पैर्य ।
 ताम्रवर्तक-अ० लगातार ।
 ताम्र-पु० [अ०] सुरदा के जेनेका संदूक ।
 ताम्र-वि० बहावती, जयीन । -द्वार-वि० आवाकाटी ।
 पु० नौकर । -द्वारी-को० सेवा; नौकरी ।
 ताम्र-पु० [सं०] मयका कारण, भीषण वस्तु; दीप, वृद्धि;
 चिन्ता; उद्वेग; यत्नानि; इच्छा; क्रांति; * अंधेरा; क्रोध-
 'कंसको निर्वन्ध है है करत इनपर ताम्र'-सूर । वि०
 मयानक; व्याकुल ।
 ताम्रजान, ताम्रहाम, ताम्रदान-पु० एक तरहकी सुली
 पालकी ।
 ताम्रबा-वि० तौबिके रंगका ।
 ताम्र-पु० [सं०] धी; पानी ।
 ताम्ररस-पु० [सं०] कमल; सुवर्ण; तौबा; धतूरा; एक छंद ।
 ताम्ररसी-को० [सं०] कमलोंवाला ताल या सरोवर ।
 ताम्रलकी-को० [सं०] भूम्यामलकी ।
 ताम्रलक-पु० बंगालके अंतर्गत एक भूखंड जिसका प्राचीन
 नाम ताम्रलिङ था ।
 ताम्रलेट, ताम्रकोट-पु० दीनका वह पात्र जिसपर चीनी
 मिठी आदिकी कलई हो ।
 ताम्रस-पु० [सं०] आततायी, खल; उल्लू; चतुर्थ मनुका
 नाम; राहुका एक पुत्र; सर्प; क्रोध; विद्रो; अज्ञान; अथ-
 कार । वि० जिसमें तमोगुणकी प्रधानता हो, तमोगुणसे
 युक्त; कामहीन; कुटिल; पापी; अंधेरा । -कीलक-पु०
 एक प्रकारके केतु जो राहुके पुत्र माने जाते हैं (इनकी
 संख्या तैत्तिरी है) ।
 ताम्रसिक-वि० [सं०] तमोगुण-संबंधी; अंधेरा ।
 ताम्रसी-को० [सं०] महाकाली; अंधेरी रात; नदामाती;
 नामाविषा जो मेघनादकी शिवसे प्राप्त हुई थी । वि० को०
 तमोगुणवाली ।
 ताम्रिणी-वि० तौबे जैसा, लाल, ताम्रभा ।
 ताम्रिक-को० दे० 'ताम्रिक' ।
 ताम्रिक-पु० [सं०] एक नरक; इषा; देव; क्रोध; असित
 पक्ष; एक राक्षस ।
 ताम्रिह-को० [अ०] मकान बनाना या मरम्मत करना;

मकान, इमारत; निर्माण ।
 ताम्रिक-को० [अ०] अमल करना; (दुष्कर्म) बजा लाना;
 तलब किये गये व्यक्तिका समनपर हस्ताक्षर करना या
 अंगठेका निशान लगाना ।
 ताम्रिक-पु० दे० 'ताम्रिक' ।
 ताम्रिक-पु० दे० 'ताम्रिक' ।
 ताम्र-पु० [सं०] तौबा; एक प्रकारका कोढ़ । वि० तौबिका
 बना हुआ; तौबिकी तरह लाल रंगका । -कर्णी-को०
 पश्चिमके दिग्मज अंजनकी पत्नी । -कार-कुह-पु०
 तमेरा, तौबिके भरतन आदि बनाकर जीविकोपाजन करने-
 वाला । -कुह-पु० तौबिका बना कुंड । -कूट-पु०
 एक क्षुप, संवाकूका पौधा । -कृमि-पु० गीर-
 बहूटी नामक कीड़ा । -गर्म-पु० तुष्य, तुषिया । -गृह-
 पु० मुर्गा; कुंकरौषा । -तुंड-पु० एक तरहका वन ।
 -तुण्ड-पु० पीतल । -दुग्धा-को० गोरखदुग्धी ।
 -दुग्ध-पु० लाल चंदन । -द्वीप-पु० सिंहल । -पट्ट-पु०
 दानपत्र आदि सुदवानेका तौबिका पत्र (प्राचीन कालमें
 इसका बहुत व्यवहार होता था); तौबिकी चदर । -पत्र-
 पु० वे वृक्ष जिनके पत्ते लाल हों; दे० 'ताम्र पट्ट' ।
 -पर्ण-पु० भारतका एक खंड । -पर्णी-को० दक्षिण
 भारतकी एक नदी । -पल्लव-पु० अशोक वृक्ष ।
 -पाकी(किन्)-पु० पाकका पेड़ । -पात्र-पु०
 तौबिका भरतन । -पादी-को० हस्तपी । -पुष्प-पु०
 कवनार । -पुष्पिका-को० निसोन । -पुष्पी-को०
 धातकी; धक्का पेड़; पाटल; पाटका पेड़ । -फल-पु०
 अकोठ । -फलक-पु० तौबिका पत्र, ताम्रपट्ट । -मुख-
 वि० जिसका मुख तौबिके रंगका हो । पु० यूरोपीय ।
 -मूला-को० छुरेसुरे । -मूला-पु० एक तरहका लाल
 हिन । -मुग-पु० इतिहासका वह आरंभिक काल जब
 लोग तौबिके औजार, पात्र आदि काममें लात थे ।
 -योग-पु० एक रासायनिक औषध । -सिख-पु०
 दे० 'ताम्रलक' । -लेख-पु० दे० 'ताम्रपत्र' । -वर्ण-
 वि० तौबिके रंगका, रक्तवर्ण । पु० सिंहल । -बलकी-
 को० मजीठ । -बीज-पु० कुलधी । -हूत-पु० कुलधी ।
 -हूत-पु० कुलधी; लाल चंदनका वृक्ष । -शासन-
 पु० ताम्रपट्टपर खुदा हुआ धर्मलेख आदि । -शिखी
 (विश्व)-पु० मुर्गा, कुकुर । -सार-पु० दे० 'ताम्र-
 वृक्ष' । -सारक-पु० रक्त चंदनका वृक्ष; खैर, काथा ।
 ताम्रक-पु० [सं०] तौबा ।
 ताम्रा-को० [सं०] प्रजापति कश्यपकी एक पत्नी; सिंहली ।
 ताम्राक्ष-पु० [सं०] कोकिल । वि० जिसकी आँखें लाल हों ।
 ताम्राक्ष-पु० [सं०] रक्त चंदन । वि० लाल धमकवाला ।
 ताम्राक्ष-पु० [सं०] काँसा ।
 ताम्राक्षमा(सम्र)-पु० [सं०] पश्चराम मणि ।
 ताम्रिक-पु० [सं०] दे० 'ताम्रिक' ।
 ताम्रिक-को० [सं०] पुंचवी, पुंजा ।
 ताम्रिक(मन्)-को० [सं०] छालिमा ।
 ताम्रि-को० [सं०] एक राजा; जलचरीका पात्र ।
 ताम्रेश्वर-पु० [सं०] तौबिका भस्म (आ० दे०) ।
 ताम्रपकीवी(विश्व)-पु० [सं०] दे० 'ताम्रिक' ।

तार्य-०-अ० से; तक ।

ताय-०-पु० ताय; अलन; धूप । सर्व० उसकी ।

तायवादी-०-खी० दे० 'तयदा' ।

तायना-०-स० कि० तयना; तयाप पहुँचाना ।

तायनि-०-खी० तयन, अलन; बीडा ।

तायनी-०-खी० [अ०] वेष्टा; वेष्टा और उसके समाजियों की संघली ।

ताया-०-पु० बापका बड़ा भाई ।

तार-०-पु० [सं०] अपने उपासकोंको तारनेवाला; अकार; महादेव एक बावर आश्वर मोती; मोतीकी स्वच्छता; नदीतट, तीर (विशाखाची शब्दके साथ समास होनेपर 'तीर'का 'तार' हो जाना है, जैसे-'दक्षिणतार')। विष्णु; चौंटी; रखण; आठ सिद्धियोंमेंसे एक (सां०); पार करना; नारा; आँखकी पुतली; उच्च स्वर; सबसे ऊँचे स्वरमें गाया जानेवाला सतक; एक वर्णवृत्त । वि० उच्च; स्वच्छ; निर्मल; जिसमें किरणें निकल रही हों । -कूट-० पु० पीतल-चौंटी मिली नकली धातु । -संज्ञक-० सफेद आर । -तार-० पु० एक गौण सिद्धि (मां०) । -पट्टक-० पु० एक तरङ्गकी तलवार । -पतन-० पु० उल्कापात । -पुष्प-० पु० कुंर पुष्प । -माक्षिक-० पु० चौंटीके योगसे बनी एक उपधातु ।

-बाहु-०-खी० वह बाहु जिसमें जेरकी आवाज उठती हो । -विमला-०-खी० दे० 'तारमाक्षिक' । -मुद्रिक-० पु० सीमा । -सार-० पु० एक उपनिषद् । -स्वर-० पु० उच्च स्वर । -हार-० पु० कुंर मोतियोंका हार । -होमाभ-० पु० एक धातु ।

तार-० पु० तागेकी तरह गोल या चौकोर, कम मोटी, लोचदार वस्तु जो तपायी धातुओंको पीटकर या खींचकर बनायी जाती है; वह तार जिसके द्वारा विजलीकी शक्तियों समन्वित भेजे जाते हैं; तार द्वारा भेजी हुई खबर; तारिता, अनवरत क्रम; नाप; युक्ति; सुनीता; ध्वज; ताल; करताल; तल; कानका एक गडना, ताटक; ताड़ । -कमानी-०-खी० नगीना काटनेका धनुष जैसा एक औजार जिसमें तारकी डोर लगी रहनी है । -कटा-० पु० तार खींचनेवाला । -कसी-०-खी० तार खींचनेका काम । -घर-० पु० तार भेजनेका सरकारी दफ्तर । -घाट-० पु० व्यवस्था, उपाय । -तोड़-० पु० कारचोपी । -बर्त्ती-०-खी० वह तार जिसके द्वारा विजलीकी शक्तियों समन्वित भेजे जाते हैं । सु०-तार करना-० धर्मियाँ उठाना । -हीमा-विषये-विषये हो जाना ।

तारक-०-पु० [सं०] तारनेवाला; नक्षत्र; आँखकी पुतली; इंद्रका शङ्ख एक दैत्य जिसे कापिकेयने मारा था; कान; नौका; महादेव; मिलनार्थ; तरनेका उपाय (इष्टयोग); कर्णधार, नाविक; रामका बख्शर मंत्र (ॐ रामाय नमः); एक उपनिषद्; एक वर्णवृत्त; छपाईमें तारे जैसा चिह्न (*) । -जिह्व-० पु० कापिकेय । -दोही-०-खी० [हिं०] एक राग । -तीर्थ-० पु० गया तीर्थ । -ब्रह्म-० पु० रामका बख्शर मंत्र ।

तारका-०-खी० [सं०] नक्षत्र; उल्का; आँखकी पुतली; दृष्ट्यपत्तिकी लोका नाम; एक छंद ।

तारका-०-पु० [सं०] तारकासुरका बड़ा लड़का ।

तारकामय-०-पु० [सं०] शिव ।

तारकामय-०-पु० [सं०] विश्वामित्रका एक पुत्र ।

तारकारि-०-पु० [सं०] कापिकेय ।

तारकासुर-०-पु० [सं०] तारक नामक असुर ।

तारकिणी-०-खी० [सं०] तारोंमें बृत्त राशि ।

तारकित-०-वि० [सं०] तारोंमें क्षयित ।

तारकी (किन्)-०-वि० [सं०] तारकोंमें बृत्त ।

तारकेचर-०-पु० [सं०] शिव; एक रसोप (आ० दे०) ।

तारकोछ-०-पु० अलकतरा ।

तारण-०-पु० [सं०] तारने या उद्धार करनेकी क्रिया; तारने वाला; विष्णु; शिव; नौका; पार करना; विजय । वि० उद्धार करनेवाला; पार करानेवाला ।

तारणी-०-खी० [सं०] नौका; कवचकी एक पत्ती ।

तारतम्य-०-पु० [सं०] तर और तमका भाव, दो वस्तुओंके परस्पर षट्-वदकर होनेका भाव; न्यूनाधिक्यके अनुसार क्रम ।

तारन-०-खी० छत या छज्जेकी ढाल; कवियोंके लीचे रहनेवाला वीर । * वि०, पु० तारनेवाला; उद्धार करनेवाला । तारना-स० कि० पार करना; उद्धार करना; भवर्षणमेंसे छुड़ाना; तैराना; ताडना; देखना ।

तारपीन-० पु० बारमिष्ठ, चित्रकार, औषध आदिके काम आनेवाला चौबड़े मेंसे तैयार किया हुआ तेल ।

तारयिता(तु)-०-वि०, पु० [सं०] तारक, तारनेवाला ।

तारक-०-वि० [सं०] अक्षिर, चक्कर; लपट । पु० विट ।

तारक्य-०-पु० [सं०] तरलता, तरक होनेका भाव; कामुकता, लपटता ।

तारा-०-पु० [सं०] रातको आकाशमें चमकनेवाला ज्योतिषिष्ठ, नक्षत्र, सितारा; भाग्य; आँखकी पुतली; मोती; * [हिं०] ताला-‘दरें दरें नहीं तारे कहीं सु लगे मनमोहन-मोहके तारे’-वन० । खी० तन्त्रोक्त दस महाविद्याओंमेंसे एक; दृष्ट्यपत्तिकी पत्नी जिसे चन्द्रमाने की कुछ दिनोंतक रस किया था; वाल्मिकी पत्नी जिसने पतिकी मृत्युके बाद सुधीवसे विवाह किया था । -कुमार-० पु० अंगद । -कूट-० पु० ज्योतिषमें विवाहके शुभाशुभ फलके ज्ञानके लिए विचार जानेवाला एक कूट । -गण-० पु० तारोंका समूह । -ग्रह-० पु० सूर्य और चंद्रमाके अतिरिक्त पाँच छोटे ग्रहोंमेंसे एक । -चक्र-० पु० तन्त्रमें एक चक्र जिससे दीक्षाके मंत्रके शुभाशुभ फलका निर्णय किया जाता है ।

-नाभ, -पति-० पु० चंद्रमा; दृष्ट्यपत्ति; बालि; सुग्रीव ।

-पथ-० पु० आकाश । -पीठ-० पु० चंद्रमा; कदमीरके एक प्राचीन राजा । -भूषा-०-खी० राशि । -मंडल-० पु० तारोंका समूह; एक कपर्क । -मंदूर-० पु० एक प्रकारका मंदूर । -खग-० पु० सुगंधित नक्षत्र । -वर्ष-० पु० टूटनेवाले तारे । सु० -(२)मिनन-तीर न आना,

रातभर जागते रहना । -सौष्ट काना-कोरें कठिन काम कर दिखाना । -विखाई दे जाना-तिलमिलाहट होना । -(१)की छाँह-तकने ।

ताराज-०-पु० [का०] विनाश, बरबादी, तबाही ।

ताराधिप-०-पु० [सं०] चंद्रमा; शिव; दृष्ट्यपत्ति; बालि;

सुधीव ।

सारांश—पु० [सं०] चंद्रमा ।

सारांश—पु० [सं०] पारद, पारा । वि० तारे जैसी चमक-
वाला ।

सारांश—पु० [सं०] कपूर ।

सारांश—पु० [सं०] आकाश; बटवृक्ष ।

सारांश—पु० [सं०] एक उपधातु ।

सारांश—खी० [सं०] एक दुर्गा ।

सारांश—खी० [सं०] तारोंकी पंक्ति, तारोंका समूह ।

सारांश—पु० [सं०] मल्लाह; नावका किराया ।

सारांश—खी० [सं०] ताड़ी; * नक्षत्र; सिनेमाकी अभिनेत्री
(आ०) ।

सारांश—वि० खी० [सं०] तारनेवाली, सज्जित देनेवाली ।

सारांश—वि० [सं०] पार कराया हुआ; जिसका उद्धार
किया गया हो ।

सारांश—खी० कर्तृत्ववर्तिन, ताली; कुंजी; समाधि, ध्यान
—‘सुनि समाधि लाति गई तारी’—पं०; टकटोरी ताड़ी ।

सारांश—वि० [सं०] तरने योग्य बनानेवाला; उद्धारक ।

सारांश—वि० [सं०] अंधेरा, अंधकारमय; काला ।

सारांश—खी० अंधेरापन, अंधकार; स्वाधी ।

सारांश—खी० [अ०] तिथि; मिथि; वह तिथि जिसमें कोई
ऐतिहासिक या महत्वपूर्ण घटना घटी हो; कार्यविशेषके
लिए नियत किया हुआ दिन; इतिहास । सु० —टकना—

नियत दिनका और आगे बढ़ जाना । —टकना—तारीख
निश्चित करना । —पड़ना—तारीख निश्चित होना ।

सारांश—खी० [अ०] परिचय; लक्षण, परिभाषा; प्रशंसा,
बहाना; विशेषता ।

सारांश—पु० दे० ‘ताड़’ ।

सारांश—वि० [सं०] जवान, युवा ।

सारांश—पु० [सं०] जबानी, यौवन ।

सारांश—पु० [सं०] ताराका पुत्र—अंगद; युव ।

सारांश—पु० [सं०] चंद्रमा ।

सारांश—वि० पु० [सं०] तर्कशास्त्रका भाता, तर्कवेत्ता,
नैयायिक ।

सारांश—पु० [सं०] कश्यप ऋषि ।

सारांश—खी० [सं०] पातालगहरी कला ।

सारांश—पु० [सं०] वृक्ष मुनिके गोत्रज; गवक्ष; गवक्षके भाई
अवण; अश्व; सर्प; रत्नांजन; सायूका पेड़; सुवर्ण; अश्व-
कर्ण वृक्ष; रथ; एक पर्वत; पक्षी; शिव । —ज—पु० रत्नांजन,
रत्नीत । —ध्वज—पु० विष्णु । —नायक—पु० गवक्ष ।

—प्रसव—पु० अश्वकर्ण वृक्ष । —शूद्र—पु० दे० ‘ताड़्य’ ।
—खाम(रू)—पु० सामवेद ।

सारांश—खी० [मं०] एक बनलता ।

सारांश—पु० [सं०] वैदिक कालका एक वंश जो तुपा नामकी
कलासे तैयार किया जाता था ।

सारांश—वि० [सं०] पार करने योग्य; विजित करने योग्य ।
पु० नाव आदिका किराया ।

सारांश—पु० [सं०] ताटक ।

सारांश—पु० [सं०] हाथका गरु, हथेली; हाथपर हाथ मारने-
से व्यर्थप शब्द; संगीतमें नियत मात्राओंपर ताली बजाना;

हाथीका कान फटफटाना; मँजौरा; हाथका पेड़ या फल;
बंवा या बाबुल इथेलीसे ठोंककर उत्पन्न किया हुआ शब्द;

हरताल; तालीउपन; दुर्गाका सिंहासन; नाकिस्त; लखार-
की मूठ; एक मूला; ताखा या मिटकीनी; पिथलमें एक गव;

[वि०] लंबा-चौड़ा प्राकृतिक गड्ढा जिसमें बरसाती पानी
जमा रहता है; चरमें इन्के शीशेका पहा । —कंडू—पु०

तालमूली । —कट—पु० दक्षिणमें एक प्राचीन देश ।
—केतु—पु० मीथम; बलराम । —क्षीर—पु० ताड़ी । —गर्भ—

—पु० ताड़ी । —घर—पु० एक देश; बर्होका निवासी;
बर्होका राजा । —अंध—पु० एक देश; बर्होका निवासी वा

राजा; एक प्रकारका ग्रह; महाभारतमें बर्णित एक वीर
जातिका पूर्वपुरुष । —अटा—खी० दे० ‘ताल-प्रलंब’ ।

—अ—पु० (संगीतमें) तालका जानकार । —आरक—पु०
नर्तक । —ध्वज—पु० बलराम । —नवमी—खी० माइ-

शुद्धा नवमी । —पत्र—पु० ताड़का पत्ता (यह पहले
कागजके स्थानपर लिखनेके काम आता था); कानका एक

गहना, ताटक । —पत्रिका—खी० तालमूली । —पत्री-
खी० मूषिकपर्णी । —पर्ण—पु० एक गंधद्रव्य । —पर्णी-

खी० बनसीक । —पुष्पक—पु० प्रपौढरीक, पुंकरिया ।
—प्रलंब—पु० ताड़की जटा । —बैताल—पु० [वि०] दो

मेत जिन्हें, कहते हैं, राजा विक्रमादित्यने सिद्ध किया था ।
—मखाना—पु० [वि०] एक पीथा; मखाना । —मर्क-

पु० एक बाघ (संगीत) । —मूली—खी० सुसली । —मेल-
पु० (संगीतमें) तालोंका मिलान । —मंत्र—पु० चौर-

काष्ठाका एक प्राचीन औजार (सूत्रन) । —रस—पु० ताड़ी ।
—रेखक—पु० नर्तक; अभिनेता । —लक्षण—पु०

बलराम । —खन—पु० ताड़के पेड़ोंका जंगल; यमुनाके
किनारेपर स्थित व्रजका ताड़ बन । —हुंत, हुंतक—पु०

ताड़का पंखा । —रूक—पु० एक प्राचीन अस्त्र ।
—सारांश—पु० [सं०] हरताल; ताड़का पेड़ या फल; ताड़

और
अरहर; * दे० ‘तअन्नुक’ ।
—सारांश—वि० [सं०] हरा । पु० हरा रंग ।

—सारांश—खी० [सं०] ताड़ी ।

—सारांश—पु० [सं०] एक औषध (आ० दे०) ।

—सारांश—वि० [सं०] नाट्य संबंधी; ताड़से उद्धारित होने-
वाला (वर्ण) ।

—सारांश—पु० [सं०] बलराम; लिखनेके काम आनेवाला
ताड़का पत्ता; पुस्तक; आरा; शिव; शुभ लक्षणोंवाला

मनुष्य ।
—सारांश—पु० [सं०] सैनसिंह ।

—सारांश—पु० किनास, संदूक आदिकी मजदूरीसे बंद रखनेका
लोहे-पीतल आदिका एक यंत्र जो खान कुंजीसे बंद होता

और खुलता है; * छातीपर पहननेका लोहेका तबल;
[अ०] नसीब, किस्मत, भाग्य । वि० चढ़नेवाला ।

—(के) मंद, —वर—वि० भाग्यवान्; धनी । —मंदी,-
वरी—खी० सुशक्तिमती, भाग्यशालिता । सु० —अकबना

—कसकर ताला बंद करना ।

—सारांश—खी० [सं०] एक गंधद्रव्य ।

—सारांश—पु० पोखरा, सरोवर ।

—सारांश—वि०, साक्षात्केषी—खी० व्याकुलता ।

तालाचर-पु० [सं०] नर्तक अभिनेता ।

तालिक-पु० [सं०] चपत, तमाका; प्रतल; ताली; कागज-का पुलिदा या हस्तलिखित प्रति सौधनेका बैठन या बंधन ।
तालिका-स्त्री० [सं०] स्त्री; कुंजी; तालमूली; मजदूर; दे० 'तालिक' ।

तासित-पु० [सं०] रंगीन कपड़ा; बाद्य (संगीत); रस्सी, डोरी ।

तासिब-पु० [अ०] चाहनेवाला; शिष्य । -इकम-पु० विचार्य ।

तासिह-पु० [सं०] पहाड़ ।

ताली-स्त्री० [सं०] ताता बंद करने और खोलनेका एक विशेष प्रकारका औजार; ताली; छोटा ताक; तालमूली; तालीशपत्र; एक छत्र; अरहर; हथेलियोंका परस्पर आघात; इससे उत्पन्न शब्द, करतलछन्नि; छोटा ताल, तलेया; एक मुद्रांकित मिट्टी । मु०-पीटना-उपहास करना ।
-बज जाना-उपहास होना ।

ताली(लिख्)-पु० [सं०] शिष्य ।

तालीजा-पु० [अ०] माल-अमवाबकी जम्मी; मकानकी कुंजी; परिशिष्ट; कुर्बं किये हुए मालकी सूची ।

तालीम-स्त्री० [अ०] शिक्षा ।

तालीशपत्र-पु०, तालीशपत्री-स्त्री० [म०] एक पहाड़ी बृक्ष जिसका पत्ता औषधके काम आता है; यूरैऔबला ।

तालु-पु० [सं०] ऊपरके दौनों और कौनोंके बीचका गड्ढा ।

-कंडक-पु० बच्चोंको होनेवाला तालुका एक रोग ।

-ज-वि० तालुवे उत्पन्न । -जिह्म-पु० घबियाल, मगर ।

-पाक-पु० एक रोग जिसमें तालु बहुत पक जाता है ।

-पुण्ड-पु० तालुका एक रोग जिसमें मांस बढ़ जाता है, पर पीड़ा नहीं होती । -शोष-पु० एक रोग जिसमें तालु सूखकर फटने लगता है ।

तालुक-पु० [सं०] तालु; तालुका एक रोग ।

ताल्-पु० दे० 'तालु'; दिमाग । -काब-पु० हाथियोंका एक रोग जिसमें तालुमें घाव हो जाता है । मु०-बटकना-ध्यामर्ष मुंह सूखना । -से जीभ न लगना-चुप न रहना; बोलते जाना ।

तालूर-पु० [सं०] पानीका भँवर ।

तालुषक-पु० [सं०] दे० 'तालु' ।

तालुङ्ग-पु० दे० 'तल्लुङ्ग' ।

ताल्बुद्-पु० [सं०] एक रोग जिसमें तालुमें कमलके आकारका गोला निकल आता है ।

ताब-पु० किसी बातकी तपाने या पकानेके लिए पहुँचायी जानेवाली गरमी, ताप, औँच; औँच द्वारा पहुँचायी हुई गरमीका मान; अहकारयुक्त रोषका आवेश; अहकारकी शोका; कागजका बहा, चौकोर, बिना कटाफटा डकका ।

-बंद-पु० वह औषध जिसके प्रयोगसे चोंदीका खोटापन उसके तपावे जानेपर भी जाहिर नहीं होता । मु०-जाना-सबेच्छ गरमी पहुँचाना । -खा जाना-पकायी जाती हुई वस्तुका अधिक गरम हो जाना या जल जाना; ख. लग जाना । -पर-औँकेपर । -बिगबना-कम या अधिक गरम होना ।

ताबद्-अ० [सं०] तब; उस अवधितक, तबतक; उतनी

मात्रामें, उस परिमाणतक ।

ताबना-सं० कि० तपाना, जलाना; संगत करना ।

ताबर-स्त्री० दे० 'ताबरी' । पु० [सं०] कमानका चिह्न ।

ताबरा-पु० ताप, गरमी; धाम ।

ताबरी-स्त्री० ताप; ज्वर; धूप; सूक्ष्म; सिर चकराना ।

ताबाब-पु० [फा०] हरजाना; जुरमाना, दंड ।

ताबिब-पु० [सं०] दे० 'तबिब' ।

ताबिबी, ताबीबी-स्त्री० [सं०] इंद्रकण्या; नदी; द्रविडी ।

ताबीज-पु० [अ०] कागज या भोजपत्र आदिपर अंकित संघ या चक्र आदि जिसे सोने-चाँदी आदिके संपुटमें बंद कर गले, बाँह, कमर आदिमें धारण करते हैं; सोने-चाँदी आदिका विशेष आकारका एक आभूषण ।

ताबीष-पु० [सं०] समुद्र; सीना; स्वर्ग ।

ताबुरि-पु० [सं०] बृष राशि ।

तास-पु० खेलनेके कामका मोटे कागजका चौकोर डुकका जिसपर पान, हँट आदि रंगोंके छापे हों; एक विशेष प्रकारका दफतीका डुकका जिसपर तागा लपेटा जाता है; ताशका खेल; एक प्रकारका जरदोजीका कपड़ा ।

ताशा-पु० चमड़ेमें मदा चौड़े छुँडका एक बाजा जो मल्लमें लटकाकर लकड़ीमें बजाया जाता है ।

तास-पु० एक तरहका कपड़ा, ताश ।

तासन, तासी-सर्व० उतसे ।

तासा-पु० दे० 'ताशा' ।

तासीर-स्त्री० [अ०] असर करना; प्रभाव, गुण, असर ।

तासु-सर्व० उसका ।

तास्कवै-पु० [सं०] चोरी ।

तास्सुब-पु० दे० 'तअस्सुब' ।

ताहम-अ० [फा०] तथापि ।

ताहि, ताही-सर्व० उसे, उसको ।

तिंतिह-पु० [सं०] हमलीका पेड़ या उसका फल; हमलीकी चटनी; एक दैव्य ।

तिंतिहिका, तिंतिही-स्त्री० [सं०] हमली । -(बी)पुल-पु० हमलीके बीज हाथमें लेकर खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ ।

तिंतिहिक-पु० [सं०] हमली ।

तिंतिलिका, तिंतिली, तिंतिलीका-स्त्री० [सं०] हमली ।

तिंतिहा-पु० [सं०] हिस्ती ।

तिंदु-पु० [सं०] तेंदुका पेड़ ।

तिंदुक-पु० [सं०] तेंदुका पेड़; तौल, कर्ष ।

तिंदुकी-स्त्री० [सं०] तेंदुका पेड़ ।

तिंदुख-पु० [सं०] तेंदुका पेड़ ।

ति-स्त्री० लीया । सर्व० वे, वह । वि० तीन (समासमें व्यवहृत) । -कोना । -वि० तिकोना । -कोना-वि० जिसमें तीन कोने हों, त्रिभुजाकार । पु० समोसा । -कोनिया-वि० दे० 'तिकोना' । -खटी-स्त्री० तिपार; तीव्र पैरों वाला काठका आसन । -खुँटा-वि० जिसमें तीन खूँट हों, तिकोना । -गुना-वि० तीन गुना, जो आकार या परिमाणमें दो बार और अधिक हो । -जरा-पु० एक दिन नागा बैकर आनेवाला ज्वर । -जारी-स्त्री० दे०

‘तित्रा’। -सारा-पु० तीन सारोंवाला एक भाषा।
-दूरी-खी० तीन दरवाजोंवाला कमरा। -झारा-पु० एक झरहा सेवृत्त। -पक्षा-वि० जिसमें तीन पक्षे हों।
-पाई-खी० चौकी जैसा लकड़ीका तीन पायोंका एक आधार। -पाच-वि० तीन पटोंका। -बहरी-वि० (चारपाईके एक पुनावट) जिसमें बाप तिरसुत करके लगाया गया हो। -बार-अ० तीसरी बार। पु० तीन बार उतारी हुई धरावा; तीन द्वारोंवाला कमरा। -माछी-खी० तीन माछोंका एक ताल। -मुहानी-खी० तीन नदियों, खकों, या गलियोंके एकमें मिलनेकी जगह।
-रंगा-वि० तीन रंगोंवाला। -राहा-पु० तीन रास्तोंके मिलनेकी जगह। -छवा-वि० तीन लकोंका। पु० पथ्य गढ़नेकी एक ऐसी। -छपी-खी० गलेमें पहननेकी तीन लकड़ियोंका एक साज। -छोक-पु० दे० ‘जिलोक’। -पति-पु० विष्णु। -छोचना-पु० दे० ‘जिलोचन’। -बास-पु० तीन दिन। -बासा, -बासी-वि० तीन दिनोंका।

सिखा-खी० तिया, खी।

सिखाहा-वि० जिसका तीसरा विवाह होनेकी हो; दस्युके ४५ वें दिन होनेवाला एक आह।

सिद्धार-पु० दे० ‘स्योहार’।

सिद्धम-पु० चतुर्ग, युक्ति।

सिद्धमी-वि० सिद्धम करनेवाला।

सिद्धी-खी० ताश या गंजीफेका वह पत्ता जिसपर किसी रंगकी तीन बूटियाँ हों।

सिद्ध-वि० तीक्ष्ण, तीखा; तेज, चालाक।

सिद्धा-वि० तिरछा।

सिद्धो-अ० तिरछे।

सिक्त-वि० [सं०] तीता, चरपरा, जो स्वादमें मिर्च आदिके समान हो; सुगंधयुक्त। पु० ६ रसोंमेंसे एक (वह स्वाद स्वयं अम्लिकर होता है, पर अन्य वस्तुओंमें अम्ल उत्पन्न करता है। इसमें गलेमें जलनभी पैदा होती और मुँह साफ होता है); सुगंध; पिचपापका; कुटज; वरुण वृक्ष।
-कंदिका-खी० गंधपत्ता; वनकवूर। -कंद-पु० चिरायता। -गंधा, -गंधिका-खी० बराही कंद, बराह-क्रांता; सरसो। -मुंजा-खी० करज। -घृत-पु० सिक्त ओषधोंके योगमें तैयार किया हुआ घन जो कुष्ठ, विषम-अर आदिमें दिया जाता है। -तंदुल-खी० पीप।

-तुंबी-खी० कुटुंबी कता। -तुंबी-खी० तितलौकी।

-तुंगवा-खी० सिरनी, सर्पक्षीरी। -घातु-खी० पिच धातु। -पत्र-पु० काकोल, सेखसा। -पर्णी-खी० पहेडा। -पर्वा-खी० दूब; बुरदुर; जेठीमधु, मुलहठी; सुबुच। -पुष्पा-खी० पाठा। वि० खी० जितके फूलका सार तिक्त हो। -फळ-पु० कतक वृक्ष; वनतिका कता।

-फळा-खी० वनतिका कता; बातौकी; खरबूजा।

-बीजा-खी० तितलौकी। -भद्रक-पु० परबल।

-भरिच-पु० कतक। -यबा-खी० शक्ती।

-रोहिणी-खी० कुटकी। -धल्ली-खी० मूपा कता।

-शाक-पु० वरुण वृक्ष; खैरका पेड़; पत्रसुंदर वृक्ष।

-सार-पु० खैरका पेड़; दीपरोहिण नामकी घास।

सिक्त-पु० [सं०] परबल; चिरायता; काका खैर; ईगुदी वृक्ष; तिक्त रस। वि० तीता।

सिक्का-खी० [सं०] दे० ‘तिका’।

सिक्ता-खी० [सं०] तिराह; तीतापन।

सिक्तागा-खी० [सं०] पातालमन्थी कता।

सिक्ता-खी० [सं०] कडरोहिणी; पाठा; वनतिका कता; नकछिकनी; खरबूजा।

सिक्तावा-खी० [सं०] दे० ‘तिका’।

सिक्तिका-खी० [सं०] तिलौकी; कुटकी।

सिक्ती-खी० [सं०] तुम्बी।

सिक्ता-वि० तीक्ष्ण, तेज, तीखा।

सिक्ता-खी० तेजी।

सिक्ता-खी० तीक्ष्णता, तेजी।

सिगलिया-पु० वह स्थान जहाँ तीन रास्ते या तीन गलियाँ आकर मिलती हों, तिराहा।

सिम्प-वि० [सं०] तीक्ष्ण; प्रखर, प्रचंड, तेज; तप्त करनेवाला। पु० ताप; तीखापन। -कर-पु० सूर्य। -केतु-पु० एक भुवर्गधीय राजा। -जंम-पु० अग्नि। -दीपिति-पु० सूर्य। -मन्थु-पु० सकर, रह। -मयूखमाली-

(किन्)-पु० सूर्य। -रश्मि-पु० सूर्य।

सिम्मांशु-पु० [सं०] सूर्य।

सिच्छ-वि० तीक्ष्ण।

सिच्छन-वि० तीक्ष्ण।

सिजहरिया, सिजहरी-खी० अपराध, दिनका तीसरा पहर।

सिजारस-खी० [अ०] न्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय, सौदा-गरी, रोजगार।

सिजिल-पु० [सं०] चंद्रमा; राक्षस।

सिजोरी-खी० लोहेकी अलमारी जिसमें रुपये, गहने आदि रखे जाते हैं।

सिबी-खी० दे० ‘सिबी’। सु० -करना-गायन करना।

सिबी-सिबी-वि० अस्त-व्यस्त, छिन्नाया हुआ।

सित-अ० बर्हा, तर्हा; उधर। वि० ‘तीता’का सामानगत रूप। -खौवा-पु० कष्ट या स्वादका कटु। -खौकी-खी० दे० ‘तितलौआ’।

सितड-पु० [सं०] चकनी; छाता।

सितना-वि० उतना। अ० उस मात्रामें।

सितर-सितर-वि० हथ-उधर फैला हुआ; बिखरा हुआ, विकीर्ण; विघटित।

सितरोखी-खी० एक छोटी विधि।

सितली-खी० सुंदर पखोंवाला एक प्रसिद्ध फतिगा; एक घास; (ला०) बहुत तबक-भरकले रहनेवाली खी।

सितिला-पु० दोंग, ढकोसला; परिशिष्ट।

सितिल-वि० [सं०] जो गरमी-सर्दी आदि ढोंकों सहै, सहिष्णु, सहनशील। पु० एक ऋषि।

सितिला-खी० [सं०] सर्दी-गरमी आदि ढोंकों सहनेकी किया या शक्ति; बिना प्रतीकार या विकलताके सभी दुःखोंको सहना, क्षमा।

सितिलु-वि० [सं०] तितिलायुक्त, सहनशील; क्षमावान्।

सितिम-पु० [सं०] नीरवहूटी; जुगन्।

तिसिम्मा-पु० [फा०] पूरक अंश; पुस्तकका परिशिष्ट ।
 तिसिर, तिसिरि-पु० [सं०] तीतर पक्षी ।
 तिसिह-पु० [सं०] तिहकी खली; नौद; बाल्टी; सात
 करणोंमेंसे एक (अंश) ।
 तिसीर्षा-क्षी० [सं०] तरने वा पार करनेकी इच्छा ।
 तिसीर्षु-वि० [सं०] तरने वा पार होनेका इच्छुक ।
 तित्ते-वि० उतने । अ० उस परिमाणमें ।
 तित्तेक-वि० उतना ।
 तित्तै-अ० तहाँ; उधर ।
 तित्तो-वि० उतना । अ० उस परिमाणमें ।
 तिसिरि-पु० [सं०] तीतर नामका पक्षी; महाभारतमें वर्णित
 एक जनपद ।
 तिसिरि-पु० [सं०] तीतर; नृत्यमें पाँव रखनेका एक ढंग;
 यजुर्वेदकी एक शाखा; इसके प्रवर्तक मुनि जिन्होंने तीतर
 धनकर वाद्यवस्त्र द्वारा उगले हुए यजुर्वेदकी चुगा बा ।
 तिथ-पु० [सं०] कामदेव; अग्नि; समय; वर्षाकाल; पतझड़ ।
 तिथि-क्षी० [सं०] वह कालविशेष जिसमें चंद्रमा एक कला
 बढ़ना या घटना है; १-२ आदि सख्याओं द्वारा निर्दिष्ट
 चांद्र मासका प्रत्येक दिन; मिथि, तारीख; स्युयुदिवस;
 पदहकी संख्या । -कृष्ण-पु० तिथिविशेषपर किया जाने-
 वाला धार्मिक कार्य । -क्षय-पु० तिथिकी हानि ।
 -देवता-पु० तिथिका अधिष्ठाता देवता । -पति-पु०
 वह देवता जिसके पूजनके लिए कोई एक तिथि प्रसन्न
 मानी गयी हो । -पञ्च-पु० पंचांग । -प्रणी-पु०
 चंद्रमा । -सुर्य-पु० दो विशेष तिथियोंका योग ।
 -वृद्धि-क्षी० जो तिथि दो स्वार्थोक्त चले । -संधि-
 क्षी० दो तिथियोंकी संधि ।
 तिथ्यर्थ-पु० [सं०] करण ।
 तिउर-अ० उधर, उस ओर ।
 तिन-सर्व० 'तिन'का बहु० । पु० तृण, तिनका ।
 तिनउर-पु० तृणराशि ।
 तिनऊना-अ० कि० झूलाना, बिगड़ना, रुठना ।
 तिनका-पु० तृण, घास-फूस । -तोड़-पु० नाला-तोड़ ।
 सु० -तोड़ना-बलैया लेना, अपनेकी न्यौछावर करना ।
 -दाँतोंमें पकड़ना-दयाकी भिक्षा माँगना । - (के) का
 सहारा-थोड़ीसी सहायता । -की ओट पहाड़-छोटी-
 सी वस्तुमें बहुत बड़े रहस्यका छिपा होना । -बुनना-
 बिक्षिप्त होना । -बुनवाना-बिक्षिप्त कर देना ।
 तिनगना-अ० कि० दे० 'तिनकना' ।
 तिनगरी-क्षी० एक पकवान ।
 तिनपहला-वि० तीन पहलोंवाला ।
 तिनस, तिनसुना-पु० दे० 'तिनिश' ।
 तिनाशक-पु० [सं०] तिनिश वृक्ष ।
 तिनास-पु० दे० 'तिनिश' ।
 तिनिश-पु० [सं०] शीशमकी जातिका एक वृक्ष ।
 तिवुका, तिवुका-पु० दे० 'तिनका' ।
 तिक्का-पु० तिक्की के धानका पौधा ।
 तिक्की-क्षी० स्वयं उत्पन्न होनेवाला एक धान जिसका
 चावल फलाहारके काम आता है, नीवार ।
 तिन्ह-सर्व० दे० 'तिन' ।

तिपति-क्षी० तृप्ति ।
 तिथ-क्षी० दे० 'तिथ' ।
 तिथ-क्षी० [अ०] विकिसाशास्त्र; यूनानी विकिसाशास्त्र,
 ब्रह्मीनी ।
 तिथ्यत-पु० हिमालय और चीनके बीचका एक देश ।
 तिथ्यती-वि० तिथ्यत-संबंधी; तिथ्यतका । पु० तिथ्यतका
 निवासी । क्षी० तिथ्यतकी आवा ।
 तिथिबधा-वि० [अ०] तिथ्यत-संबंधी । -कालेज-पु०
 यूनानी विकिसाशास्त्रकी शिक्षा देनेवाला विद्यालय ।
 तिथ्यी-वि० [अ०] तिथ्य-संबंधी ।
 तिमिगिह-पु० [सं०] एक समुद्री जंतु जो तिमिको निगल
 सकता है । -गिह-पु० तिमिगिहकी भी निगल जाने-
 वाला समुद्री जंतु ।
 तिमि-अ० उस प्रकार । पु० [सं०] समुद्र; बहुत बड़े
 आकारका एक समुद्री मत्स्य; मत्स्य । -कोष-पु० समुद्र ।
 -ज-पु० एक तरहका मोती । -भवज-पु० एक ईस
 जिनमें इंदने दशरथकी महायतसे आरा बा ।
 तिमिल-वि० [सं०] मीमा कुत्रा; गतिहीन, स्थिर, शांत ।
 तिमिर-पु० [सं०] अंधकार; आँखका एक रोग; तिमिरा;
 जोड़ेका मोरवा । -मुद्-वि० अंधकारनाशक । पु० सूर्य ।
 -भिद्-वि० अंधकारका भेदन करनेवाला । पु० सूर्य ।
 -रिपु-पु० अंधकारका शत्रु; सूर्य । -हर-पु० सूर्य;
 दीपक ।
 तिमिर-पु० तैमूर- 'तिमिर-बंस-वर' अरुनकर आबो
 सजनी मोर'-भू० ।
 तिमिरमय-पु० [सं०] प्रहय; राहु । वि० अंधकारसे
 भरा हुआ ।
 तिमिरारी-पु० [सं०] अंधकारका शत्रु, सूर्य ।
 तिमिरारी-क्षी० अंधकार-पुत्र; अंधेरा । पु० सूर्य ।
 तिमिला-क्षी० एक संगीत-बाध ।
 तिमि त-पु० [सं०] दे० 'तिनिश' ।
 तिमिथ-पु० [सं०] ककड़ी, फूट ।
 तिथ-क्षी० क्षी० पत्ती ।
 तिथळा-पु० खियोंका एक पकवान ।
 तिथा-क्षी० दे० 'तिकी'; * दे० 'तिय' ।
 तिथाय-पु० दे० 'त्याग' ।
 तिथारी-वि० त्थानी ।
 तिर- 'ति'का भिन्नका हुआ समासमें व्यवहृत रूप । -कूटा-
 पु० दे० 'त्रिकट' । -सूँटा-वि० जिसमें तीन भूँट हों ।
 -पाई-क्षी० दे० 'तिपाई' । -फळा-पु० दे०
 'त्रिफला' । -बेनी-क्षी० दे० 'त्रिेणी' । -मुहानी-
 क्षी० दे० 'तिमुहानी' । -छोका-पु० दे० 'त्रिलोक' ।
 -सठ-वि० साठ और तीन । पु० तिरसठकी संख्या,
 ६३ । -सुत-वि० तीन सूत एकमें मिलाकर बड़ा हुआ ।
 -सूख-पु० दे० 'त्रिशूल'; तापत्रय । -हुत-पु०
 भिक्षा-मुद्रकपुर और दरभंगा । -हुतिया-वि०
 तिरहुतका । पु० तिरहुतका निवासी, मैथिल । क्षी० तिर-
 हुतकी बोली ।
 तिरऊना-अ० कि० दे० 'तहकना' ।
 तिरक्का-क्षी० दे० 'तृषा' ।

विरचित-वि० दे० 'तुवित' ।

विरछ-वि० जो एक ओर कुछ झुका हुआ हो, बक, कज, बाँक, कुञ्ज । -ई-खी०, -पन-पु० विरछ होनेका भाव ।

विरछाना-अ० क्रि० विरछ होना ।

विरछे-अ० विरछेपनके साथ; विरछी गतिसे ।

विरछाई-वि० कुछ-कुछ विरछा ।

विरछाई-अ०-अ० दे० 'विरछे' ।

विरछा-अ० क्रि० दे० 'तरना'; चतराना ।

विरनी-खी० नौबी, कुर्चुनी ।

विरप-खी० नाचका एक ताल ।

विरपट्टा-वि० एक गणल कुछ झुका हुआ, कज, विरछा; कठिन ।

विरपच-वि० पचास और तीन । पु० विरपचकी संख्या, ५३ ।

विरपाख-पु० घासीसे बचावके कामका एक मोटा कपड़ा; छाजनके नीचे लगाया जानेवाला सरकड़ेका झुट्टा ।

विरपित-वि० दे० 'वृत्त' ।

विरमिरा-पु० आँखका एक रोग जिसमें देखनेकी शक्ति क्षीय हो जाती है, सामने धुंध छाया रहता है, प्रकाश असह्य हो जाता है और कुछका कुछ दिखाई देता है; बकाचौष ।

विरमिराना-अ० क्रि० दे० 'विलमिलाना' ।

विरभौव-वि० [म०] विरछा, बक ।

विरसू-अ० [सं०] एक शब्द जो अंतर्धान, विरछापन, विरस्कार आदि अर्थोंका बोध कराता है । -कर-पु० आच्छादक । वि० बड़ा-चढ़ा हुआ । -करिणी-खी० कपड़ेका बना आच्छादन, परदा, कनात; अवश्य होनेकी विधा । -करी(रिच)-पु० दे० 'विरस्कारिणी' । -कार-पु० अपमान, अन्याय, अवज्ञा । -कृत-वि० अपमानित, अन्याय, जिसकी अवहेलना की गयी हो; आच्छादित, परदेमें छिपाया हुआ । -क्रिबा-खी० आच्छादित करने की क्रिया; दे० 'विरस्कार' ।

विरानबे-वि० नब्बे और तीन । पु० विरानबेकी संख्या, ९३ ।

विराना-स० क्रि० पानीपर पैराना या ठहराना; पार करना; उद्धार करना ।

विरासी-वि० अस्सी और तीन । पु० विरासीकी संख्या, ८३ ।

विरिजिहिक-पु० [सं०] एक वृक्ष ।

विरिज-पु० दे० 'तृण' ।

विरिम-विरिष-पु० [सं०] एक भान ।

विरिषा-खी० खी, औरत । -वरिचर-पु० खीकी पुरुषकी ठगने या बेवकूफ बनानेकी चतुराई ।

विरिछा-वि० दे० 'विरछा' ।

विरिष्ट-पु० [सं०] लोपका पक्ष; फिटोट ।

विरिफल-पु० दंती वृक्ष ।

विरिदा-पु० समुद्रमें तैरता हुआ पीपा जो खतरेकी सूचनाके लिए लगाया जाता है; बंसीकी दोरीमें लगी हुई छोटी लकड़ी जो उत्तराती रहती है; उत्तरानेवाला काठ या हल तरबकी कोई चीज जिसके सहारे नदी आदि पार की जाय ।

तिरो-तिरसूँका समासगत रूप । -धान-पु० तिरोडिन या दहिसे ओझल होने या करनेकी क्रिया, अंतर्धान, लोप ।

-धावक-पु० अवश्य या ओझल करनेवाला, छिपानेवाला, छुप्त करनेवाला । -भाब-पु० दे० 'तिरोधान' । -भूत-वि० अंतर्हित, छुप्त; ओझल; गुप्त । -हित-वि० दे० 'तिरोभूत'; आच्छादित, ढका हुआ ।

तिरौछा-वि० विरछा ।

तिरौदा-पु० दे० 'तिरेदा' ।

तिरौची-खी० [सं०] पशु-पक्षीकी मादा ।

तिर्यक्(र्यच)-वि० [सं०] विरछा; आधा; बक । अ० बकता-पूर्वक; विरछे; आधे । पु० पशु; पक्षी । -पासी-

(सिच)-वि० बेंदे गिरनेवाला । -प्रमाण-पु० चौकाई ।

-प्रेक्षण-पु० विरछी चितवन । -कोता(तस्)-पु०

बह प्राणी जिसका आहार पेटमें विरछे पहुँचता हो-पशु, पक्षी ।

तिर्यका-खी० [सं०] पशु-पशुवृत्ति; चौकाई ।

तिर्यग्-'तिर्यक्'का समासगत रूप । -अयन-पु० सूर्यकी वार्षिक परिक्रमा । -ईक्ष-वि० विरछे देखनेवाला । -ईश-पु० कृष्ण । -गति-खी० विरछी चाल; पशुयोनिकी

प्राप्ति । -गामी(मिच)-पु० केकड़ा । वि० विरछे जाने,

चलनेवाला । -दिक्(श्)-खी० उत्तर दिशा । -वान-

पु० केकड़ा । -योनि-खी० पशु पक्षीकी योनि ।

तिरंगमा-पु० बलुनका एक नेर ।

तिरंगा-पु० अंगरेजी कीजका हिंदुस्तानी सिपाही ।

तिरंगाना-पु० तैयग देश ।

तिरंगी-खी० गुट्टी, पग । पु० तिरंगानाका निवासी ।

तिरंगुद-पु० [सं०] तेली ।

तिल-पु० [म०] काले या मफेद रंगका एक छोटे दानेका

तेलहन; इसका पीसा; तिलके आकारका काला दाग जो शरीरपर होता है; तिलके बराबर एक गोदना; किसी पदार्थका बहुत छोटा टुकड़ा या कण; आँखकी पुतलीके बीचका बिंदु (हिं०) * ध्रुव-मे ही पिरान अनुराग

बखानहत मिले मिले नूनन मोह'-विद्यापति । -कट-पु०

तिलका चूर्ण । -कण-पु० तिलका दाना । -

कलक-पु० तिलके चूर्णसे बननेवाली एक तरहकी

पीठी । -कार्षिक-पु० तिल बोनेवाला । -कालक-

पु० तिलके बराबर काला दाग जो शरीरपर होता है; एक

रोग । -किट-पु० तिलकी खली । -कुट-पु० [हिं०]

तिल और चीनी या गुड़के मेलने बननेवाली एक मिठाई ।

-खली-खी० तिलकी खली । -चटा-पु० [हिं०] एक

प्रकारका झींगुर । -चतुर्थी-खी० मापके कृष्ण पक्षकी

चतुर्थी । -चबरी-खी०-खी० दे० 'तिल-चाबली' । -चाबली

-खी० [हिं०] तिल और चाबली की चबरी । -चित्र-

पत्रक-पु० तैलकंद । -चूर्ण-पु० तिलका चूर्ण । -तंडुल

-पु० तिल और चाबल; (कां०) ऐसा संयोग जिसमें

मिलनेवालोंका अस्तित्व स्पष्टन दिखलाई दे । -तंडुल

-पु० मिलन, आलिंगन । -तैल-पु० तिलका तेल । -धेनु

-खी० तिलकी बनी गाय जो दानमें दी जाय । -पट्टी,

-पपरी-खी० [हिं०] खींच या पुड़की चासनीमें पने

तिलकी बनी रोटी जैसी वस्तु । -पर्ण-पु० चंदन; तिलका

पत्ता । -पर्णी-खी० रक्त चंदन; एक नदी । -पिच-

पु० तिलका बह पीपा जो न फूले, न फले । -पिचट-

पु० तिलकी पीठी; तिलकुट । -पीड-पु० तिल घेरनेवाला, तेली । -पुष्प-पु० तिलका फूल; नाक । -पुष्पक-पु० तिलका फूल; बड़ेका पेड़; नासिका । -पेज-पु० दे० 'तिलपिज' । -आविनी-खी० गहिका । -अह-वि० तिलके साथ भूना हुआ । -अह-पु० पीस्तेका दाना । -अमूर-पु० एक मोर जिसके पर तिलके फूलके-से होते हैं । -रस-पु० तिलका तेल । -शकरी-खी० [हि०] तिलमें चीनी मिलाकर बनायी हुई मिठाई । -शिखी (खिच)-पु० तिल-मटर । -सौक-पु० तिलकी पर्वताकार राशि जो दानमें दी जाय । -स्नेह-पु० तिलका तेल । मु० -का छाव करना-छोटी सी बातको बड़ा रूप देना । -की ओट पहाड़-छोटी बातके अंदर बहुत बड़ी बात होना । -तिल करके-धोखा-धोखा करके । -चटनेकी जगह न होना-धोखा-सा भी स्थान रिक्त न होना; ठसाठस मरा होना । -भर-धोखा-सा भी, रचना; धोखा देर । - (छीं) में लेक न होना-शील संकीच न होना, सुरीसत न होना । तिलक-पु० [सं०] धार्मिकता या धोमाकी छट्टिमें बिसे हुए चंदन, केसर या रोली आदिसे लकाटपर बनाया हुआ विशेष आकारका चिह्न, टीका; सिंहासनारूढ होते समय सुवराजके मस्तकपर लगाया जानेवाला टीका; वसंतमें फूलनेवाला एक वृक्ष; तिलका धोष; किसी कुल या समुदायका सर्वभेद पुरुष (समासांतर्ग); विवाह-सर्वधी एक रस जिसमें कन्यापक्षके लोग बरके मस्तकपर टीका लगाते और कुछ द्रव्य आदि चढ़ाते हैं; खियोंका एक शिरोभूषण; पेटके भीतरकी तिखी; कुपकुम; सोंबर नमक; एक प्रकारका धोष; एक रोग; मदन वृक्ष; मक्कका पीपलका एक भेद; शरीरपरका निल; धूबकका एक भेद जिसमें प्रत्येक चरणमें पचीस अक्षर होते हैं; किसी ग्रथपर लिखी गयी टीका; भाष्य-“स्वतंत्र ग्रंथ नहीं, टीकापर टीका, तिलक-पर तिलक, लिखे जा रहे थे”-हजारीप्र०; सूत्रके ऊपर पहननेका बिना आरतीनका टीला जनाना कुर्ता, लोक-मान्य बालगंगाधर तिलक, भारतीय स्वराज्यके अग्रगण्य नेता (जन्म १८५६, मृत्यु १९२०); सन् १८८९ में कांग्रेसके मंचमें धोषणा की-“स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।” केसरी द्वारा एक अंग्रेजकी हत्याके कृत्यका समर्थन करनेके कारण आपको कालेपानीकी सजा हुई। आप मांडवेलमें रखे गये जहाँ आपने ‘ऑफिशियल होम ऑफ हि वेदान्तकी रचना की। ‘गीतारहस्य’ आपकी एक और अमर कृति है । -कामोद-पु० एक रागिनी । -हर्षा-पु० दे० ‘तिलकहार’ । -हार-पु० तिलक चढ़ानेके लिए भेजा जानेवाला स्यापि ।

तिलकना-अ० कि० गौली मिट्टी या जमीनका सखर फटना ।

तिलका-खी० [सं०] हारका एक भेद ।

तिलकाबल-वि० [सं०] चिह्नीवाला ।

तिलकाभय-पु० [सं०] लकाट ।

तिलकित-वि० [सं०] चिह्नवाला ।

तिलकना-अ० कि० स्याकुल होना, छटपटाना ।

तिलद्वारी-खी० सूर्य, अंगुष्ठाना आदि रखनेकी दखिनी-की छोटी पैली ।

तिलमिह-खी० तिलमिहाहट; चकानौष ।

तिलमिहाना-अ० कि० बेचैन होना; चौधियाना ।

तिलमिहाहट-खी० तिलमिहानेकी क्रिया या भाव; बेचैनी ।

तिलमिहली-खी० दे० ‘तिलमिहाहट’ ।

तिलबट-पु० तिलपट्टी ।

तिलबा-पु० तिलका लहद ।

तिलस्म-पु० दे० ‘तिलिस्म’ ।

तिलस्मी-वि० दे० ‘तिलिस्मी’ ।

तिलहन-पु० फसलके रूपमें बोये जानेवाले तेलके पीषे ।

तिलांकितवृक्ष-पु० [सं०] तैलकंद ।

तिलांजलि-खी० [सं०] औद्भिर्देविक कृत्यका एक अंग जिसमें हिंदू मृतकके नाम तिलमिश्रित जलकी अंजलि देते हैं ।

तिलांबु-पु० [सं०] दे० ‘तिलांजलि’ ।

तिला-पु० नपुंसकता नष्ट करनेवाला एक तेल ।

तिलाङ्ग-पु० दे० ‘तलाङ्ग’ ।

तिलाङ्ग-पु० [सं०] तिलकी खिचड़ी ।

तिलापत्वा-खी० [सं०] काला जोरा ।

तिलिया-पु० [सं०] देश-विशेष ।

तिलिस्-पु० [सं०] अजर; गोनस सर्प ।

तिलिस्-पु० [अ०] जादू; इद्रनाल; वैद्विज्ञानिक रचना;

गारे हुए धन आदिपर बनायी हुई सर्प आदिकी अवावनी आकृति; जादूकी रेखा या चिह्न । मु० -तोड़ना-जादू या कुरामातका भेद खोल देना ।

तिलिखी-वि० जिसमें तिलिस्मके चमत्कारका वर्णन हो; तिलिस्म-संघी ।

तिली-खी० तिनली; † तिल; तिहरी ।

तिलेली-खी० तेलहन काट लेनेपर खेतमें बची हुई नूँदी ।

तिलोत्तमा-खी० [सं०] एक ज्योतिष जिते पानेके लिए सुद और उपसृंद आपसमें लड़ मे रहे ।

तिलोदक-पु० [सं०] दे० ‘तिलांजलि’ ।

तिलोनी*-वि०, खी० फुलेरुसे घुमपित-‘अंग अति लोनी

लहै ललित तिलोनी सारी’-वन० ।

तिलोरी*-खी० एक प्रकारकी मैना; तिलोरी ।

तिलौछना-स० कि० नेल लगाकर चिकना करना ।

तिलौछा-वि० तेलके-से स्वादवाला; चिकना ।

तिलौरी-खी० तिल मिलाकर बनायी हुई उर्द या मूँग-

की बरी । तिल्व-वि० [सं०] तिलकी खेतीके योग्य । पु० तिलका खेत ।

तिल्ला-पु० कलान्तु आदिका काम; दुपट्टा, पगरी आदिका बह भाग जिसपर कलान्तु आदिका काम हो ।

तिल्ली-खी० ड्रीहा; तिल ।

तिल्व-पु० [सं०] तिलका तेल; लोष ।

तिल्वक-पु० [सं०] तिलिया ।

तिषाड़ी, तिषारी-पु० आकण्ठीकी एक उपाधि, त्रिपाठी ।

तिषाना-पु० ताना, व्यर्थ । * खी० तुष्णा ।

तिह-वि० बनावटा हुआ, रचित ।

तिहद्वय-पु० [सं०] दोहनकाल; संख्या ।

तिष्ठना-अ० कि० टिकना; ठहरना ।

तिष्ठा-स्त्री० [सं०] एक नदी ।

तिष्ठ-पु० [सं०] पुष्प नक्षत्र; वीष मास; कण्डिवृगा सम्राट् अशोकके एक भाईका नाम । वि० शुभ; तिष्ठ नक्षत्रमें उत्पन्न; मायवाली । -केश-पु० शिव । -पुष्पा-फला-स्त्री० आमलकी । -रक्षिता-स्त्री० सम्राट् अशोकके पत्नीका नाम ।

तिष्ठक-पु० [सं०] वीष मास ।

तिष्ठ्या-स्त्री० [सं०] आमलकी ।

तिष्ठन-वि० तीक्ष्ण ।

तिस्ता-सर्व० 'ता'का एक रूप जो कई विनयियोंमें प्रयुक्त होता है । -पर-अ० उसके बाद; ऐसी स्थितिमें; तथापि, इतना होनेपर भी ।

तिस-स्त्री० दुग्णा, कालसा; प्रेम-तिस उपजावति व्यासहि नासि-वन० ।

तिसना-स्त्री० दे० 'दुग्णा' ।

तिसरायत्त-स्त्री० तीसरा होनेका भाव ।

तिसरैत-पु० बह्म्यक्ति जो दो पक्षोंमेंसे किसी एकका भी न हो; तीसरा व्यक्ति; मध्यस्थ, पंच; तीसरे भागका अधिकारी ।

तिसाभा-अ० कि० प्यासा होना, दूषित होना ।

तिष्ठा-स्त्री० [सं०] संक्षुब्धपुत्री ।

तिहत्तर-वि० सत्तर और तीन । पु० तिहत्तरकी संख्या, ७२ ।

तिहरा-वि० दे० 'तिहरा' ।

तिहराना-स० कि० दे० 'तिहराना' ।

तिहरी-स्त्री० तीन छकोंकी माला; दही जमानेका मिट्टीका छोटा बरतन ।

तिहवार-पु० दे० 'त्वोहार' ।

तिहवारी-स्त्री० दे० 'त्वोहारी' ।

तिहा(हृन्)-पु० [सं०] रोग, व्याधि; सज्जन; चावल; चटपु ।

तिहाई-स्त्री० तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा; फल ।

तिहाड-पु० दे० 'तिहाड' ।

तिहार, तिहारा, तिहारो-सर्व० तुम्हारा ।

तिहाय-पु० क्रोध, रोष; विगाह ।

तिहि-सर्व० दे० 'तिहि' ।

तिहूँ-वि० तीनों ।

तिहूँथा-पु० तीसरा भाग; सबकेकी एक विशेष भाग ।

ती-स्त्री० स्त्री; पत्नी ।

तीकुर-पु० तीन हिस्सोंमें फलका बँटवारा ।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण-वि० दे० 'तीक्ष्ण' ।

तीक्ष्ण-वि० [सं०] तेज जोक या तेज धारवाला; तीव्र, कुशाम्; प्रखर तेज; चोखा, चुगता हुआ; मर्मनेदी; छत्र, तीक्षा; तीक्ष्ण या चरपरे स्वादका; उत्कट यक्षवाला; कठोर; आत्मस्थानी; आत्मस्वरहित; तिष्ठ, अन्तः आपवाला । पु० विष, जहर; हृत्पात, कोह; बुद्ध; शरण; मरी; लक्ष; स्वरा; समुद्री मयक; जवाहारका कोषका एक भेद, मुष्कक; श्वेत कुश; कुंदरक; मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्रोंका गण । -कंदक-पु० चतुरेका पेश; इन्द्रोका पेश; बभ्रुका पेश; करीका पेश । -कंदका-स्त्री० कंधारी

का पेश । -कंद-पु० पहाड़, प्याज । -कमो(मन्)-वि०, पु० उत्साही । -कदक-पु० तुंडरुका पेश । -कौता-स्त्री० एक देवी, उग्रतारा । -शंख-पु० सहजनका पेश; काल कुलसी; कुंदरु नामक गंधद्रव्य । -शंखक-पु० सहजन । -शंखा-स्त्री० रत्न; राक्ष; कंधारीका पेश; जीवंती; छोटी इकायकी । -संक्षुब्ध-स्त्री० पिंपली, पीपल । -ताप-पु० शिव । -तैल-पु० सेंदुरका रत्न; मद्य; राक्ष । -बैङ्ग-पु० बाघ । वि० तेज दाँतीवाला । -दृष्टि-वि० जिसकी दृष्टि तीली हो; दृष्टमर्या । -धार-पु० क्लृप्त, तलवार । वि० तेज धारवाला । -पन्न-पु० तुंडरु बुद्ध । -पुष्प-पु० लौंग । -पुष्पा-स्त्री० केतकी । -प्रिय-पु० जो । -फल-पु० तुंडरुका पेश । वि० जिसका फल कड़वा हो । -बुद्धि-वि० जिसकी बुद्धि प्रखर हो । -अंजली-स्त्री० नागवल्ली, पानका पौधा । -मार्ग-पु० तलवार । -मूल-पु० सहजन; कुंजजन । वि० जिसकी जड़ उत्कट गंधवाली हो । -रश्मि-पु० सूर्य । वि० जिसकी किरणें प्रखर हों । -रस-पु० जवाहार; विष । वि० जिसका रस चरपरा हो । -कोह-पु० हृत्पात । -शुक्-पु० जो । वि० जिसका हँस चोखा हो । -शृंग-वि० जिसके शींग नुकीले हों । -सार-पु० कोह । -सारा-स्त्री० शीशमका पेश ।

तीक्ष्णक-पु० [सं०] पीली सरसों; मुष्कक ।

तीक्ष्णता-स्त्री० [सं०] तीक्ष्ण होनेका भाव; प्रखरता; चोखापन ।

तीक्ष्णांशु-पु० [सं०] सूर्य ।

तीक्ष्णा-स्त्री० [सं०] रत्न; केवाँच; सर्पकंठाक्षी; महाज्योतिष्मती; अश्वत्थपर्णी ।

तीक्ष्णामि-स्त्री० [सं०] अजीर्ण रोग; अधिरस ।

तीक्ष्णापस-पु० [सं०] हृत्पात ।

तीक्ष्ण-वि० तीक्षा ।

तीक्ष्ण-वि० तीक्ष्ण ।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण-पु० दे० 'तीक्ष्ण' ।

तीक्षा-वि० तीक्ष्ण । -पन-पु० तीक्ष्णता ।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण-पु० एक कद जिसका सप्त मिठाई, खीर आदि बनानेके काम आता है ।

तीक्ष्ण-वि० तीक्ष्ण ।

तीक्ष्णता-स्त्री० तीक्ष्णता ।

तीक्षा-वि० तीक्ष्ण ।

तीज-स्त्री० पक्षकी तीसरी तिथि; आर्द्र-शुक्ला पक्षीयाको होनेवाला एक जल, इरतालिका जल (यह विषाहिता क्षियोंका एक प्रधान जल है) ।

तीक्षा-पु० सुसलमानोंमें द्रव्यके बादका तीसरा दिन (इस दिन द्रव्यकी यादगारमें उसके संबंधी एकत्र होते और गरीबोंकी खाद्य प्रदान बँट जाते हैं) । वि० तीसरा ।

तीत-वि० दे० 'तीता' ।

तीतर-पु० एक प्रसिद्ध पक्षी जिसे लोग छड़ानेके लिए पाकते हैं, अर्धप्रायत ।

तीता-वि० तीक्ष्ण, चरपरे स्वादका, तिक्त; गोला ।

तीसुर, तीसुर-पु० दे० 'तीतर' ।

तीसुरी-स्त्री० दे० 'तितली' ।

तीर्थ-वि० दो और एक । पु० तीनकी संख्या, ३; सरस्वती प्राङ्मार्गमें तीन मोर्चों (तर्प, गौतम, शक्तिवत्)का एक समुदाय; † तिथीका चावल । -चार-वि० तीन वा चार; कुछ । -पाँच-की० शर-उपरकी बात; मकर, दया; हवा, तकरार । -छद्मी-की० फेरवट; तिथी । पु०-तेरह करना-अस्त-अस्त करना; तितर-वितर करना । -तेरह होना-तितर-वितर होना, छितरा जाना । -पाँच करना-फेरवटकी बात करना, टाकमटोक करना । (सं)-में, न तेरहमें-नगण्य, सर्वथा उपेक्षित, जिसकी कहीं पूछ न हो ।

तीर्थ-वि० तीन ।

तीर्थी-की० तिथीका चावल ।

तीर्थार-पु० [फा०] सेवा-शुभ्रा, दिवाजत । -दार-पु० रोगीकी सेवा करनेवाला । -दारी-की० रोगीकी सेवाका कार्य ।

तीर्थ, तीर्था-की० श्री, औरत ।

तीर्थदात्री-पु० [फा०] तीर चलानेवाला, अनुर्धर ।

तीर्थदात्री-की० [फा०] तीर चलानेकी किया या विधा ।

तीर-पु० [सं०] नदीका किनारा, तट, कूल; गंगा-तट; सीसा; रौगा; बाण । -ज-पु० तटवर्ती शृङ्ख । -सुक्ति-पु० तिरहुत, मिथिला । -बर्ती(सिंघ)-वि० तीरपर स्थित, जो किनारेपर रहता हो ।

तीर-पु० [फा०] बाण । -शर-पु० बाण बनानेवाला ।

तीरथ-पु० दे० 'तीर्थ' ।

तीरित-वि० [सं०] तै किया हुआ; जिसका फेसला हो गया हो । पु० कार्य-समाप्ति; रिशत आदिके जरिये बँडसे बचा रहना ।

तीर-पु० [सं०] शिव ।

तीर्थ-वि० [सं०] जो पार कर चुका हो; जो पार किया जा चुका हो । -पक्षी-की० तालमूली, मुसली । -प्रतिष्ठा-वि० जिसने अपनी प्रतिष्ठा पूरी कर ली हो ।

तीर्णा-की० [सं०] एक छंद ।

तीर्थकर-पु० [सं०] जिन; विष्णु; शास्त्रकार ।

तीर्थ-पु० [सं०] वह पुण्यस्थान जहाँ विशेष धर्मके अनुयायी पूजा, स्नान आदिके लिए जाते हैं-जैसे काशी, प्रयाग, मथुरा आदि (इसके तीन मेरु हैं-जंगम, मानस और स्वावर), पुण्य क्षेत्र; हाथमेंके कुछ खास स्थान जिनसे आचमन आदि करते हैं; मंत्री, पुरोहित, पुत्रराज, भूपति, द्रापण, अंतर्वेशिक, काराधिकारी, द्वयसंचयकृद्, कुल्या-कृत्य अर्थात् विनियोजक, प्रदेष्टा, नगराध्यक्ष, कार्यनिर्माण-कारक, धर्मोपदेश, समाप्यक्ष, दंडपाल, दुर्गपाल, राष्ट्र-पाल, अटवीपाल-राजकी ये अठारह संपत्तियाँ; शास्त्र; यक्ष; क्षेत्र; रोगका निदान; उपाय; मूल; उपयुक्त स्थान वा समय; वाट; घाटकी सीढ़ी; स्त्रीका रज; कपिवी द्वारा सेजित जल; उपाध्याय; गुरु; योगि; दर्शन; माहात्म्य; आगम; अग्नि; सन्यासियोंकी एक उपाधि । -कर्मवस्तु-पु० वह कर्मवस्तु जिसमें किसी तीर्थका जल हो । -कन्द-पु० जिन; विष्णु; शास्त्रकार । -काक-पु० तीर्थका कौमा; (ला०) छोड़प तीर्थीपत्नी । -कण्ड-पु० शास्त्रकार; जिन । -देव-पु० शिव । -पति-पु० दे० 'तीर्थराज' ।

-पुरोहित-पु० तीर्थका पंडा । -वात्रा-की० तीर्थ करनेके लिए की गयी वात्रा, तीर्थटन । -राज-पु० प्रयाग ('राजा' वा 'पति'का समानार्थक कोई भी शब्द 'तीर्थ' शब्दके बाद जुड़नेसे उस समस्त शब्दका अर्थ प्रयाग-बोधक हो जाता है) । -राखी-की० काशी । -बाक-पु० सिरके थाल । -व्यास-पु० दे० 'तीर्थकाक' । -सिद्धा-की० घटसक जानेवाली सीढ़ियाँ । -श्रीच-पु० तीर्थमें घाट आदिका परिष्कार करने या करनेकी किया । -सेवि-की० स्नंदकी एक मातृका । -सेवी(विष्)-वि० तीर्थमें धर्मभावनासे वास करनेवाला । पु० नक्, क्काल ।

तीर्थोदय-पु० [सं०] तीर्थत्रयमण, तीर्थयात्रा ।

तीर्थिक-पु० [सं०] तीर्थका माहात्म्य, पंडा; तीर्थकर; तीर्थयात्री ।

तीर्थोदक-पु० [सं०] तीर्थका जल ।

तीर्थ-पु० [सं०] एक श्रद्धा; सहपाठी, गुरुमाई । वि० तीर्थ-संबंधी ।

तीर्थ-वि० दे० 'तीर्थ' ।

तीर्थी-की० सहाई, मोटी सीक या खपची; रेशम कपड़े-का पटवोंका एक जोड़ार ।

तीर्थई-की० श्री, औरत-तीर्थ कर्मल क्षुण्ण शरीर-प० ।

तीर्थर-पु० [सं०] समुद्र; मछुआ; बहेलिया; एक वर्ण-संकर जाति ।

तीर्थ-वि० [सं०] तेज, तीक्ष्ण; अनुपुष्ण; कडु; असह्य; जोरका; नितांत; अव्यथिक; द्रुत; भयंकर; कुछ कंचा (स्वर) । पु० तीक्ष्णता; हस्सत; रौगा; होहा; शिव; तीर, कूल । -कंड-कंड-पु० खरन, ओल । -गंधा, -गंधिका-की० अजबायन । -गति-वि० जिसकी चाल तेज हो । पु० पवन, हवा । की० तेज चाल, द्रुत गति । -ज्वाला-की० धक्का फूल । -दाद-पु० हृक्ष-विशेष । -द्युति-पु० सूर्य । -बंध-पु० तमोगुण । -बेदना-की० घोर यातना । -संबेना-पु० तीर्थ वैराग्य । -सच-पु० एक दिनमें समाप्त होनेवाला एक वस्त्र, एकाह वस्त्र ।

तीर्था-की० [सं०] रात; तुलसी; गौबरदूध; कुटकी; महाज्योतिष्मती; तरदी शृङ्ख; पश्चात्ती नदी; एक मुक्ति (संगीत) ।

तीर्थावर्-पु० [सं०] शिव, महादेव ।

तीर्थावुराग-पु० [सं०] एक तरहका अतिचार (जै०); अलट प्रेम ।

तीस-वि० बीस और दस । पु० तीसकी संख्या, ३० । -मार खाँ-वि० बाँका वीर । -(सँ)वि०-अ० सरा, सर्वदा ।

तीसर-वि० तीसरा ।

तीसरा-वि० दूसरेके बादका, जो क्रममें दोके बाद पड़े, जो गिनतीमें तीनके स्थानपर हो; जो दोमेंसे किसी पक्षका न हो, गैर । पु० दे० 'तिसरै' । -पहर-पु० अपराह्न ।

तीसी-की० एक तेलहन, अलसी ।

तुष, भूसी; तृषिया; नीलका पौषा। -तृ-पु० परंका
 वृष। -धाम्यक-पु० तुष, भूसी।
 तुच्छक-वि० [सं०] खोखला, रिक्त, निःसार।
 तुच्छा-खी० [सं०] कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी; नीलका पौषा।
 तुच्छातिवृत्त-वि० [सं०] एकदम बया-गुजर, अत्यंत
 निकट।
 तुजर्न-सर्व० तुम्हको।
 तुजुक-पु० [तु०] वैमथ, शान-सौकन, ऐश्वर्य; विधान,
 व्यवस्था; आत्मचरित।
 तुम्ह-सर्व० 'तू'का वह रूप जो उमे कर्ता तथा संबंध
 कारकके अतिरिक्त अन्य कारकोंमें प्रयुक्त होनेके पहले प्राप्त
 होता है-जैसे तुमसे, तुमसे।
 तुम्ह-सर्व० 'तू'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप,
 तुमको।
 तुट-वि० अस्थिर, थोड़ा-सा।
 तुटि-खी० [सं०] छोटी इलायची।
 तुटितुट-पु० [सं०] शिव।
 तुट्टम-पु० [सं०] चूहा।
 तुट्टना-अ० कि० तुट होना, प्रसन्न होना। स० कि०
 तुट, प्रसन्न करना।
 तुडवाना-म० कि० दे० 'तौडवाना'।
 तुडार्ह-खी० दे० 'तौडार्ह'।
 तुडाना-स० कि० तोड़वाना; बंधन तोड़ना; संबंध-विच्छेद
 करना; बड़ा सिका भुनाना; मूल्य घटवाना।
 तुडी-खी० [म०] एक रागिनी।
 तुणि-पु० [सं०] तूनका पेड़।
 तुतरा-वि० दे० 'तौतला'।
 तुतराना-अ० कि० दे० 'तुतलाना'।
 तुतराहो-वि० दे० 'तौतला'।
 तुतलाना-अ० कि० बच्चोंका शब्दों तथा बर्णोंका अस्फुट
 और कुछका कुछ उच्चारण करते हुए बोलना।
 तुतली-वि० खी० दे० 'तौतली'।
 तुथ-पु० [सं०] अग्नि; पत्थर; तृषिया, नीला थोधा।
 तुथ्याजन-पु० [सं०] एक उपपातु, तुथ।
 तुथ्या-खी० [सं०] नीलका पौषा; छोटी इलायची।
 तुथुन-पु० [म०] पीबित करने या चुमानेकी क्रिया, पीबन;
 भेदन; कष्ट, पीड़ा; व्यवसाय।
 तुन-पु० वृक्ष-विशेष।
 तुनक-वि० [फा०] थोड़ा; छोटा; सूक्ष्म; दुर्बल; नाजुक।
 -मिज्ञाज-वि० जो छटपट या छोटी-छोटी बातोंपर
 नाराज हो जाय, चिड़चिड़ा; नाजुकमिजाज। -मिज्ञाजी-
 खी० चिड़चिड़ापन; नाजुकमिजाजी। -हवास-वि०
 तौलणधी।
 तुनतुनी-खी० 'तुन-तुन' बजनेवाला एक बाजा।
 तुनी-खी० दे० 'तुन'।
 तुनीर-पु० दे० 'तुनीर'।
 तुनुक-वि० दे० 'तुनक'।
 तुष-पु० [सं०] तुनका पेड़। वि० छिन्न, कटा हुआ; फटा
 हुआ। -बाथ-पु० दरजी, सौचिक।
 तुपक-खी० [तु०] छोटी तोप; बंदूक। -थी-पु० तुपक

बकानेवाला, मोलदाज।
 तुक्कन-खी० [फा०] एक प्रकारकी लंबी नली जिसके द्वारा
 फूँकके जोरसे कंकरी, तीर आदि छोड़े जाते हैं; हवाई
 बंदूक।
 तुक्काना-पु० दे० 'तूफान'।
 तुक्कल-पु० [अ०] जरिया, वतीला। -से-...के जरिये,
 '...की कृपासे।
 तुक्क-खी० दे० 'तूपक' (तोप)।
 तुम्हना-अ० कि० स्तम्भ हो जाना; थक जाना; मुग्ध
 होकर अचल हो जाना।
 तुम-सर्व० वह सर्वनाम जिसका प्रयोग उस पुरुषके लिए
 होता है जिसे संबोधित करनेके कुछ कहा जाता है; 'तू'का
 बहु०।
 तुमबी-खी० सखा कदरू; सखे कदरूका गुदा आदि
 निकालकर बनाया हुआ पाश; सखे कदरूसे बनाया जाने-
 वाला एक बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं।
 तुमरी-खी० दे० 'तुमरी'।
 तुमल-वि०, पु० दे० 'तुमुल'।
 तुमाना-स० कि० तुमनेका काम कराना, उँगलियोंसे
 नुचकाकर सबको साफ और पुष्टपुष्टी कराना।
 तुसुर-वि०, पु० [सं०] दे० 'तुसुल'।
 तुसुल-वि० [सं०] जिसमें शोरगुल हो; कई तरहकी
 ध्वनियोंके मेलसे उत्पन्न (ध्वनि); भयंकर; धुंध; धक्काया
 हुआ। पु० घोर बुद्ध, धमासान, भीषण बुद्ध, गहरी
 लड़ाई; बड़ेबड़ेका पैड़।
 तुम्ह-सर्व० दे० 'तुम'।
 तुम्हारा-सर्व० 'तुम'का संबंध कारकका रूप, उसका जिससे
 बात बोलता हो।
 तुम्ही-सर्व० 'तुम'का 'हो'के योगसे बना हुआ रूप।
 तुम्हें-सर्व० 'तुम'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप।
 तुर्ग-पु० [सं०] थोड़ा; मन, चित्त; सातकी सख्या।
 -गंधा-खी० अश्वगंधा, असगंध। -गौड-पु० एक
 राग। -दानव-पु० अश्वरूपधारी केही नामका दैत्य
 जिसे कसने कृष्णको मारनेके लिए भेजा था। -द्विषणी,
 -द्वेषणी-खी० वैश। -मिथ-पु० जौ। -ब्रह्मचर्य-
 पु० खी० न मिलनेसे धारित ब्रह्मचर्य व्रत। -सुख-पु०
 किन्नर। -मेघ-पु० अभ्येय। -घापी (विष्)-पु०
 अश्वारोही। -बद्ध-पु० सारस। -खीलक-पु० एक
 ताल। -बद्ध-बद्ध-पु० किन्नर। -शाखा-खी०,
 -स्थान-पु० पुष्पताल, अस्तबल। -सादी (विष्)-
 पु० अश्वारोही।
 तुर्गक-पु० [सं०] थोड़ा; बड़ी तोरई।
 तुर्गम-पु० [सं०] थोड़ा; एक हरा।
 तुर्गसी-खी० [सं०] थोड़ी; असगंध।
 तुर्गसी (विष्)-पु० [सं०] अश्वारोही, पुष्पसार।
 तुर्गसि-पु० [सं०] मेसा; कनेर।
 तुर्गारुड-पु० [सं०] अश्वारोही।
 तुर्गिका-खी० [सं०] देवताकी लता।
 तुर्गी-खी० [सं०] थोड़ी; असगंध।
 तुर्गी (विष्)-पु० [सं०] अश्वारोही, पुष्पसार।

तुरज-पु० चकोतरा नीबू; दुशलेके किनारों तथा कुरते आदिके मोटोंपर सूईसे काटकर बनाया हुआ बड़ा चूड़ा।
-चीन-खी० नीबूके रसका शर्बत; अटकदारके पीपोंपर जमनेवाली एक प्रकारकी चीनी।

तुरत-अ० दे० 'तुरत'।

तुरता-पु० गौजा (जिसका नशा पीते ही बढ़ जाता है)।

तुर-अ० [स०] शीघ्र, जल्द, वेगके साथ। वि० वेगवान्।

तुरई-खी० एक बेल जिसके फलोंकी तरकारी बनती है।

तुरक-पु० [फा०] दे० 'तुर्क'।

तुरकाना-वि० [फा०] तुर्क जैसा, तुर्कोंकी तरहका। पु० तुर्कोंका देश; तुर्कोंकी बस्ती।

तुरकानी-खी० [फा०] तुर्क औरतोंका एक ढीठा-ढाका पहनावा; तुर्कनी या तुर्क जातिकी खी। वि० खी० तुर्कोंकीसी।

तुरकिन-खी० तुर्ककी या तुर्क जातिकी खी।

तुरकिस्तान-पु० [फा०] दे० 'तुर्किस्तान'।

तुरकी-वि० [फा०] तुर्क देशका; तुर्क देश-संबंधी। खी० तुर्कोंके देशकी भाषा; † खरी बोली।

तुररा-पु० [स०] दे० 'तुरंग' (समास जी)।

तुरगारोह-पु० [स०] अश्वारोह।

तुरगी-खी० [स०] दे० 'तुरंगी'।

तुरगी (निग्र)-पु० [स०] अश्वारोह।

तुरगोपचारक-पु० [स०] सार्स।

तुरत-अ० शीघ्र, तत्काल, चटपट।

तुरपई-खी० दे० 'तुरपन'।

तुरपन-खी० तुरपनेकी क्रिया; एक तरहकी सिलाई।

तुरपना-स० कि० बखिया करनेके लिए लगाईके बल सीधे सीना।

तुरपचाना-स० कि० तुरपनेकी सिलाई कराना।

तुरपाना-स० कि० दे० 'तुरपवाना'।

तुरस-पु० तुरही।

तुरमली-खी० एक शिकारी चिकिया।

तुरच-पु० घोड़ा।

तुरसीला-वि० खट्टा; पैना; कसा, तीखा-'फूलछरी-सी नरम काम करथी शब्द है तुरसीले'-नारायण स्वामी।

तुरही-खी० फूँककर बजानेका एक पतले मुँहका बाजा जो दूसरे सिरेकी ओर बराबर बोज होता जाता है।

तुरा-खी० दे० 'त्तरा'। -ई-खी० उनावली, जल्दी; दे० क्रममें।

तुराह, **तुराच**-अ० आतुरताके साथ।

तुराई-खी० तोशक; दे० 'तुरा'यं। अ० तुरत।

तुराना-अ० कि० शीघ्रता या उतावली करना। स० कि० दे० 'तोशाना'।

तुरायण-पु० [स०] एक वृक्ष; अनासक्ति, असंग।

तुरावली-वि० खी० वेगवती, तीव्र गतिसे चलने या बहनेवाली।

तुरावान-वि० वेगयुक्त, त्वरायुक्त।

तुराबाद्(ह्)-पु० [स०] बह; विष्णु।

तुरास-अ० वेगसे। पु० वेग।

तुरिया-खी० जुलाहोंका एक औजार; बह गाव या मैस

जिसका बन्धा मर गया हो; * तुरियाबन्धा।

तुरी-पु० घोड़ा; सवार। खी० घोड़ी; लगाम; फूलोंका पुच्छा; मोतीकी लकड़ियोंका शृङ्खल; तुरही; * तुरीया-बन्धा। [स०] जुलाहोंका कपड़ा बुननेका काठका एक औजार जिससे धानेका सूत भरा जाता है; जुलाहोंकी कुची; चित्रकारकी कुची, तुलिका; वसुदेवकी एक पत्नीका नाम। -चंद्र-पु० सर्वकी गति जाननेका एक यंत्र।

तुरीय-वि० [स०] गतियुक्त; चतुर्थ; चार खंडोंवाला; श्रेष्ठ; शक्तिशाली। पु० वेदांतके अनुसार एक अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्ममें लीन हो जाती है। -वर्ण-पु० चतुर्थ वर्ण, शूद्र।

तुरुक-पु० दे० 'तुर्क'।

तुरुप-पु० ताशका एक खेल जिसमें प्रधान माने हुए रंगका छोटेसे छोटा पचा अन्य रंगोंके बड़ेमें बड़े पत्तोंके काट सकता है, 'ट्रप'।

तुरुपना-स० कि० दे० 'तुरपना'।

तुरुष्क-पु० [स०] तुर्क जाति; तुर्क जातिकी मनुष्य; तुर्किस्तानका निवासी; तुर्किस्तान; एक गंधद्रव्य, लोषान।

-गौर-पु० एक राग।

तुर्क-पु० [फा०] तुर्कोंका रहनेवाला। -चीन-पु० सूयं।

-मान-पु० तुर्कोंकी एक जाति; तुर्क। घोड़ा। -रोज़-पु० सूयं।

तुर्किन, **तुर्किनी**-खी० दे० 'तुर्किन'।

तुर्किस्तान-पु० [फा०] तुर्कोंका देश जो रूसके दक्षिण तथा एशियाके पश्चिममें पड़ता है।

तुर्की-वि०, खी० दे० 'तुर्की'। -टोपी-खी० एक शम्बेदार, गोल, ऊँची टोपी।

तुर्ब-वि० [स०] चौधा, तुरीय। पु० तुरीयाबन्धा।

-गोख-पु० एक काल्हापक यंत्र। -वाद्(ह्)-पु० चार वर्षका बछड़ा।

तुर्याश्रम-पु० [स०] चतुर्थ आश्रम, सन्न्यासाश्रम।

तुरी-पु० [अ०] तुरक; पगड़ी या टोपी आदिमें लगा हुआ फुँटना या पर, कलगी; पक्षियोंकी शिखा; मुगलेश नामका फूल, जटाघाँटी; कोड़ा, चाबूक; एक बुलबुल। वि० [फा०] अनोखा। **मु०**-बह कि० ऊपरमें इनती बात और कि०।

तुर्बसु-पु० [म०] राजा बयातिका एक पुत्र जिमने पिताको अपना यौवन देनेसे इनकार कर दिया था।

तुर्ब-वि० [फा०] खट्टा; कसा; कडा; अप्रसन्न, क्रुद्ध। -रू-वि० जो शीघ्र रुठ हो जाय, तुनकमिनात्र।

तुरांना-अ० कि० खट्टा हो जाना।

तुराी-खी० खटाई, खट्टापन; रुष्टता।

तुलक-पु० [स०] राजमन्त्री।

तुलन-पु० [स०] तोलना; तोल; तुलना, बराबरी करना।

तुलना-अ० कि० तोला जाना, मापित होना; तोल या मापमें समान होना; किसी आधारपर इस प्रकार स्थित या आसीन होना कि किसी और बोजा-सा भी झुकाव न हो, सफर स्थित होना (जैसे-तुलकर बैठना); सघना, ठीक अंदाजके अनुसार अव्यस्त होना; सज्जद, उतास होना;

धुरीका आगा जाना; * पहुँचना। **झी०** [सं०] न्यूना-विषयका विचार, समता, बराबरी; मिलान; उठाना; भंदाया लगाना; आँव करना।

तुलनात्मक-वि० [सं०] तुलनायुक्त; जिसमें किसीसे तुलना की जाय।

तुलनी-झी० तराजूकी बौलीका कौटके दोनों ओरका हिस्सा।

तुलवाई-झी० तौलनेकी मजदूरी।

तुलबाना-सं० कि० दे० 'तौलाना'।

तुलसारिणी-झी० [सं०] तुलार।

तुलसी-झी० [सं०] एक प्रसिद्ध पौधा (हिंदू, विशेषतः वैष्णव इसे बहुत पवित्र मानते हैं)। -**द्वल-पु०** तुलसीकी पत्ती। -**दाना-पु०** [हिं०] एक गहना। -**दास-पु०** उत्तरी भारतके एक सुप्रसिद्ध भक्त कवि (ये रामके अनन्य भक्त थे। इनके जन्मकालके सषषमें दो प्रसिद्ध मत हैं। मिरजापुरके प्रख्यात रामायणी १० रामगुलाम द्विवेदीके अनुसार इनका जन्म-संवत् १५८६ तथा शिव-सिंह-सरोजके अनुसार १५८३ ई। ये मर्यादापीठ ब्राह्मण थे। चित्रकूटके पास राजापुर ग्राम इनका जन्मस्थान ठहरता है। कहते हैं कि पत्नी द्वारा पिछाड़े जानेके कारण ये विरक्त हुए थे। इनकी प्रसिद्ध रचना रामचरितमानसका घर-घरमें प्रचार है। इसके अतिरिक्त इनके ११ ग्रंथ और हैं। इनका देहावसान काशीमें संवत् १६८० में असी-घाटपर हुआ)। -**द्वेषा-झी०** बन्धरी, बनतुलसी। -**पत्र-पु०** तुलसीकी पत्ती। -**बास-पु०** [हिं०] एक मक्कदार धान। -**बन-पु०** तुलसीके पौधोंका समूह। -**विवाह-पु०** तुलसीके पौधेके साथ विष्णुकी भूतिका विवाह। -**हुँदावन-पु०** तुलसीका पौधा लगानेका चतुरा।

तुला-झी० [सं०] तराजू, कौंठा; समानता; नाप, तौलमें बराबरी; तुलना; १०० पल-लगभग ५ सेरका एक प्राचीन परिमाण; भांड; सातवीं राशि (ज्योति०); एक प्रकारकी सहतीर; एक दिव्य परीक्षा। -**कूट-पु०** तौलमें की गयी कमी; कम तौलनेवाला। -**कोटि-झी०** तराजूकी डंडीके दोनों छोर; नूपुर। -**कोषा-कोष-पु०** तौल द्वारा दिव्य परीक्षा; तराजू रखनेकी जगह। -**दंड-पु०** तराजूकी डंडी। -**दान-पु०** एक दान जिसमें दाता द्वारा तौलके बराबर अन्न-द्रव्यादिका दान किया जाता है। -**घट-पु०** डोंक; तराजूका पलका। -**घर-पु०** तुला राशि; सौभाग्य। -**घार-पु०** तुला राशि; बणिक्; सौभाग्य तराजूकी तली; एक बणिक् जिसने जाजलिकी उपदेश दिया था। -**परीक्षा-झी०** एक दिव्य परीक्षा जिसमें मिट्टी आदिसे तौला हुआ व्यक्तियदि दूसरी बार तौलनेमें घट जाता था तो बोधी ठहराया जाता था। -**पुरुषकृष्ण-पु०** एक व्रत जिसमें पिण्याक्त (सिल्ली खली), मात, मट्ठा, जल और सत्तूमेंसे प्रत्येक तीन-तीन दिन साकर पंद्रह दिनोंतक रहना होता है। -**पुरुषदान-पु०** दे० 'तुलादान'। -**प्रग्रह-पु०** दे० 'तुलाग्र'। -**बीज-पु०** गुंजा, पुंघवी। -**भाज-पु०** तराजूकी डंडी, तुलार्दक; घाट, बटखरा। -**भाजार्तर-पु०** माइकोंकी ठगनेके लिए हल्के घाट

रखना (झी०)। -**बटि-झी०** तुलार्दक। -**खूज-पु०** तराजूकी डंडीमें लीचीवीच छेद करके लगाया हुआ मोटे खत या रस्तीका ड्रकन। -**हीन-पु०** टेनी भारना, कम तौलना।

तुलवाई-झी० दे० 'तौलवाई'; तुलवाई; ग्राहीकी धुरीमें तेल देनेकी क्रिया।

तुलाना-सं० कि० आ पहुँचना; बराबर होना। सं० कि० धुरीमें तेल दिलाना।

तुलि-झी० [सं०] जुलाहोंकी कूची; तुलिका। -**फलय-झी०** शास्मली।

तुलिका-झी० [सं०] एक तरहका खजन।

तुलित-वि० [सं०] किसीके साथ मापा हुआ; समान, सषष।

तुलिनी-झी० [सं०] शास्मली।

तुली-झी० [सं०] जुलाहोंकी कूची; तुलिका।

तुल्य-वि० [सं०] समान, सषष; बराबर; अनिष्ट। -**कक्ष-वि०** बराबर दर्जेका। -**कर्मक-वि०** (किमायें) जिनका कर्म एक हो। -**काळ-काळीय-वि०** समसामयिक, सम-कालीन। -**कुल्य-वि०** एक ही कुलका। पु० संबंधी। -**गुण-वि०** समान गुणोंसे युक्त। -**जातीय-वि०** एक ही जातिका; जो जातिकी दृष्टिसे समान हो। -**तर्क-पु०** तथ्यकी कीटिका तर्क, वह तर्क जो यथार्थसे मिलता-जुलता हो। -**दर्शन-वि०** जो सबको समान दृष्टिसे देखता हो, समदृष्टि, समदर्शी। -**नामा (मन्त्र)-वि०** एक ही नामका। -**पान-पु०** सजावियोंका एकत्र मय आदि पीना। -**योग-पु०**, -**योगिता-झी०** अर्थालंकारका एक भेद जहाँ कई उपमेयों या उपमानोंका एक ही समान भर्म कहा जाय अथवा जहाँ हित तथा अहितमें एक ही दृष्टि दिखायी जाय। -**रूप-वि०** एक जैसा, एक ही रूपका। -**लक्षण-वि०** समान लक्षणोंवाला। -**वृत्ति-वि०** वही पेशा करनेवाला।

तुल्य-वि० तुल्य, बराबर।

तुल्य-वि० [सं०] कसैला; बिना दादी या बिना मूँछका। पु० कषाय रस; अरहर।

तुलरिका-झी० [सं०] अरहर; फिटकरी; एक सुगंधित मिट्टी, गोपीचंदन।

तुलरी-झी० [सं०] दे० 'तुलरिका'। -**शिष-पु०** चक्र-मर्दक, चक्रवर्ग।

तुलि-झी० [सं०] तुंची।

तुल्य-पु० [सं०] अन्नके ऊपरका छिलका; भूत्ती; अडेके ऊपरका छिलका; बड़ेबैका पेड़। -**ग्रह-सार-पु०** अग्नि।

-**धान्य-पु०** छिलकेवाला अन्न।

तुलांड-पु० [सं०] बाबल या जौकी कौड़ी।

तुलाग्न-झी० [सं०] दे० 'तुलानल'।

तुलानल-पु० [सं०] भूत्तीकी आग; एक तरहका प्राण-दंड जिसमें बदनपर तिनके लपेटकर आग लगा दी जाती थी।

तुषार-पु० [सं०] हवामें मिथी भाप जो जमकर भेत कणोंके रूपमें पृथ्वीपर गिरती है, हिम, बरफ; चीनीया कपूर; बोझोंके लिए प्रसिद्ध हिमालयके उत्तरका एक प्राचीन देश।

तुम्हार-पु० [अ०] छोटी बातकी बेकार बहुत बढ़ा देना ।
 तुम्ह-खी० अरहर । वि० [स०] शीघ्रता करनेवाला । पु०
 हरकारा; एक तरहका बाजा; * तुम्हरी; ताना छपेदेकी
 जुलाहोंकी एक छकरी ।
 तुम्ह-पु० दे० 'तुम्ह' ।
 तुम्ह, तुम्ह-अ० दे० 'तुम्ह' ।
 तुम्हना-स० कि० दे० 'तुम्हना' । पु० तुम्हरी ।
 तुम्ह-खी० [स०] देव । * पु० तुम्हरी ।
 तुम्ह-पु० [का०] तातार देश ।
 तुम्हानी-वि० तुम्हानका; तुम्हान-सं०धी । पु० तुम्हानका
 निवासी ।
 तुम्हरी-खी० [स०] बट्ठा ।
 तुम्ह-वि० [स०] तेज । अ० तेजीसे, शीघ्र ।
 तुम्हक-पु० [स०] एक प्रकारका चावल ।
 तुम्ह-वि० [म०] तेज, कुतीला । अ० शीघ्र, तुरत ।
 तुम्ह-पु० [स०] तुम्हरी; सुरज, वृद्ध । -खंड-पु० एक
 तरहका ढोल ।
 तुम्ह-पु० [स०] आकाश; रूख; तुलका पेड़; तुम्हका सिरा;
 भट्ठा । -कार्मुक-चाप-चतुष्ट-पु० पुनकी ।
 -नालिका-नाली-खी० धूनी । -पिचु-पु० रूख ।
 -बुझ-पु० नेमरका पेड़, शास्मली । -शर्करा-खी०
 कपासका बीज, बिनील । -सेचन-पु० खत कातना ।
 तुम्ह-वि० समान, सख्त । पु० लाल रंगका कपड़ा; गाढ़ा
 लाल रंग; [अ०] लवाई, विस्तार; ढेर । -अर्ज-पु०
 लंबाई-चोड़ाई । -सबील-वि० बहुत लंबा । -तुफान-
 पु० हो-बहा, उखात । सु०-पकड़ना-किसी बातका
 बहुत अधिक बढ़ जाना या उग्र रूप धारण करना ।
 तुम्हक-पु० [स०] रूख ।
 तुम्हता-खी० समता, सादृश्य ।
 तुम्हना-अ० कि० समान होना, समता करना । स०
 कि० धुरीमें नेल देना या इस कार्यके लिए पहिलेकी
 छकरीके सहारे ठिकाना ।
 तुम्हमतुल-अ० आमने-सामने, समक्ष ।
 तुम्हा-खी० [म०] कपाम; दीपककी बत्ती ।
 तुम्हि-खी० [स०] निजकारकी कूची । -फला-खी०
 शास्मली वृक्ष ।
 तुम्हिका-खी० [स०] चित्रकारोंकी रंग भरनेकी कूची;
 लेखनी; रूख-भरा गढ़ा, तोड़क; नील; बरमा; सॉचा ।
 तुम्हिली-खी० [स०] शास्मली; लक्ष्मणा कंद ।
 तुम्ही-खी० [स०] रूख; चिरागी बत्ती; जुलाहेकी कूची;
 चित्रकारकी कूची; नीलका पोथा ।
 तुम्ह-पु० [स०] दे० 'तुम्ह' ।
 तुम्हक-पु० [स०] दे० 'तुम्हक' ।
 तुम्हिका, तुम्हरी-खी० [स०] दे० 'तुम्हिका' ।
 तुम्ह-पु० [स०] कपड़ेकी किनारी ।
 तुम्ही-वि० मोन, चुप, सामोझ । * खी० चुप्पी, सामोझी ।
 तुम्हीक-वि० [स०] मौन रहनेवाला ।
 तुम्हीम्ह-अ० [स०] चुप-चाप, बिना बोले । -[ज्मी]दंड-
 पु० गुप्त दंड । -साध-पु० मौलावलंबन । -बुझ-पु०
 वह बुझ जिसमें शयपक्षकी प्रमुख व्यक्ति कोड़ लिये जाय

(की०) । -खीक-वि० चुप रहनेवाला ।
 तुम्ह-पु० तुम्ह, भूसा; भूसा; एक प्रकारका उम्दा ऊन,
 पशमीना; गहरे लाल रंगका कपड़ा ।
 तुम्हान-पु० कारतुल ।
 तुम्हना-स० कि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना । अ० कि०
 प्रसन्न या संतुष्ट होना ।
 तुम्हा-पु० भूमी ।
 तुम्ही-वि० स्लेटके रंगका । पु० इस तरहका रंग ।
 तुम्ह-पु० [स०] धूल, गर्द; बालोंकी चोटी, जटा; पाष;
 अणु, सूक्ष्म कण । वि० सूक्ष्म ।
 तुम्हकी-खी० दे० 'चिक्की' ।
 तुम्ह-पु० [स०] कस्यप कवि ।
 तुम्ह-पु० [स०] जातीफल, जायफल ।
 तुम्हा-खी० दे० 'तुम्हा' ।
 तुम्हना-वि०, पु० दे० 'तिर्वक' ।
 तुम्ह-पु० [स०] तिनका; बास; खर-पात । -कांड-पु०
 तुम्हसुह । -कुंकुम-गौर-पु० एक गंधद्रव्य । -कुटी,
 -की०, -कुटीर-कुटीरक-पु० बास-फलकी बनी
 कुटिया । -कुट-पु० बासका ढेर । -कुटिका-खी०
 शाह । -केतु-केतुक-पु० बंस; ताड़ । -गोधा-
 खी० एक तरहका गिरगिट । -ग्रंथी-खी० स्वर्णजीवरी ।
 -ग्राही(हिन्)-पु० नील मणि । -खर-पु० गोमेद
 मणि; तुम्हमें रहनेवाला जंतु । -जलपुका-जलकी-
 खी० एक कीड़ा । -जलकी न्याय-पु० तुम्ह और
 जलकी-सं०धी न्याय (आत्माके दूसरे शरीरमें प्रविष्ट होने
 का द्वांत देते समय नैयायिक इसका प्रयोग करते हैं ।
 अर्थात् जिस प्रकार एक तिनकेकी सिरितक पहुँचकर यह
 कीड़ा दूसरे तिनकेकी सिरपर चढ़ जाता है और पहले
 तिनकेसे कोई बाधा नहीं रहता उसी प्रकार आत्मा
 एक शरीरकी छोड़कर दूसरे शरीरमें प्रविष्ट हो जाती
 है और पहलेसे उसे कुछ भी मतलब नहीं रहता) ।
 -ज्योति(स्)-खी० ज्योतिष्मती लला । -हुम,
 -बुझ-पु० नारियल; ताड़; सुपारीका पेड़; केतकीका पेड़;
 खजूरका पेड़; मुईआँवला । -धान्य-पु० तिन्नी नामक
 धान, नीवार; साबो । -ध्वज-पु० बंस; ताड़ । -निंब-
 पु० चिरायता । -पत्रिका, -पत्री-खी० हथुर्दमा ।
 -पीछ-पु० दस्त-ब-दस्त लकाई । -पुष्प-पु० एक
 गंधद्रव्य; सिद्ध-पुष्पी नामकी बास; गठिनन । -पुष्पी-
 खी० सिद्ध-पुष्पी । -पूछी-खी० नरककी चट्टाई ।
 -बीज-पु० साबो । -मणि-पु० दे० 'तुम्हग्राही' ।
 -मच्छुण-पु० जामिन, जमानत करनेवाला । -राज-
 पु० ताड़; नारियल; खजूर । -शब्दा-खी० बासका
 बिछौना; साधरी । -सीत-पु० एक सुगंधित बास ।
 -शीता-खी० जल-पिपली । -शून्य-वि० तुम्हरहित ।
 पु० (तुम्हकी तरह फलहीन) केतकी; मछिका । -शुली-
 खी० एक लता । -शोषक-पु० एक सर्प । -षट्पद्-
 पु० भिन्न, बरे । -सबाह-पु० बापु । -समान-वि०
 दे० 'तुम्हान' । -सारा-खी० कदली, केला । -सिंह-
 पु० कुठार । -हृन्-पु० शोषकी । सु०-गाढ़ना या
 पकड़ना-शरणमें जाना; दैन्य प्रकट करना । -गहना

वा एकद्वाना-द्वयान्मे मील मंगवाना; बलीभूत करना।
(किसी वस्तुपर)-दृढना-किसी वस्तुका इतना सुंहर
होना कि देखनेवाले उसपर अपनेकी न्योछाबर कर दें।
(किसीसे)-तोड़ना-संघर्षविच्छेद करना, नाता तोड़ना।
-तोड़ना-बलैया लेना; अपनेकी न्योछाबर करना।

तुलक-पु० [सं०] निकम्मा तुल।
तुलकीया-खी० [सं०] घासवाली जमीन।
तुलमय-वि० [सं०] तुलनिर्मित, घासका बना हुआ।
तुलवत्-वि० [सं०] तिनकेके बराबर, अर्थात् तुच्छ।
तुलाजन्म-पु० [सं०] एक तरहका गिरगिट।
तुलागिन-खी०, तुलानल-पु० [सं०] तिनकेकी आग।
तुलाघ-पु० [सं०] तिथी।
तुलाम्ल-पु० [सं०] एक घास जिसमें नमकका अंश होता
है; इससे निकाला हुआ नमक।
तुलाघर्ष-पु० [सं०] बालाघक, बवंडर; एक दैत्य जो
कंसकी आहासे बबबरका रूप धारण कर कृष्णकी मारने
गया था।
तुलैङ्ग-पु० [सं०] ताकका पैड़।
तुलीचम-पु० [सं०] खलवंल नामक तुल।
तुलीरुच-पु० [सं०] नीवार, तिन्नी।
तुलीरुका-खी० [सं०] तिनकेकी मशाल।
तुलीक(स्)-पु० [म०] तुलकुटीर।
तुलीरुच-पु० [सं०] खलालुक नामक गंधद्रव्य।
तुल्या-खी० [सं०] घास-पातका ढेर।
तुलीय-वि० [सं०] तीसरा। -प्रकृति-पु० नपुंसक,
हिजका। -खबन-पु० अग्निष्टोम आदि यागोंका तीसरा
खन, सायखन।
तुलीरुच-पु० [सं०] दे० 'तिजरा'।
तुलीमांश-पु० [सं०] तीसरा भाग।
तुलीया-वि० खी० [सं०] तीसरी। खी० पक्षकी तीसरी
तिथि, तीज; कारण कारककी विभक्ति। -तत्पुरुष-पु०
तत्पुरुष समासका वह भेद जिसके पूर्वपदमें कारण कारककी
विभक्ति लगी रही हो।
तुलीयाधम-पु० [सं०] तीसरा आश्रम, वानप्रस्थ।
तुलीयी(विद्)-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसे किसी सपत्ति-
का तुलीयाध मिले, किसी संपत्तिके तुलीयाधका अधि-
कारी। वि० तीसरे दरजेका।
तुलक-पु० दे० 'तुल'।
तुपति-खी० दे० 'तुपि'।
तुपत्-पु० [सं०] चद्रमा।
तुपल-पु० [सं०] उपल, पत्थर। वि० संतुष्ट; व्याकुल,
बैचैन।
तुपला-खी० [सं०] लता; त्रिफला।
तुपित-वि० दे० 'तुप'।
तुपिता-खी० 'तुपि'।
तुल-वि० [सं०] अभावा हुआ, संतुष्ट।
तुलाना-खी० कि० तुल होना।
तुसि-खी० [सं०] रुस होनेका भाव, भोजन आदिकी प्राप्ति-
से उत्पन्न संतोष या शांति; इच्छित वस्तुकी प्राप्तिसे जोका
भरना।

तुप-पु० [सं०] पुरोकाश; सर्पण करनेवाला; तुप करने-
वाला; दुःख; द्रुत।
तुपला-खी० [सं०] दे० 'त्रिफला'।
तुप-खी० [सं०] एक सर्प-जाति।
तुपा-खी० [सं०] व्यास; तीज इच्छा, अभिलाष; लोभ।
-भू-खी०, -स्थान-पु० लोभ। -ह-पु० जल।
-हा-खी० सीफ।
तुपालु-वि० [सं०] व्यासा, पिपासित, पिपासार्त।
तुपालवत्-वि० तुपालान्।
तुपालवत्(वत्)-वि० [सं०] तुपाल।
तुपित-वि० [सं०] व्यासा।
तुपितोत्तरा-खी० [सं०] अशनपर्णी।
तुप्या-खी० [सं०] व्यास; अमास वस्तुको पानेकी तीज
इच्छा; लोभ; भोगेच्छा। -क्षय-पु० संतोष, इच्छाका
अंत; शांति, विरक्ति।
तुप्यारि-पु० [सं०] पर्यट, पिपासपक।
तुप्यालु-वि० [सं०] तुप्यामे युक्त, तुप्यावान्, व्यासा;
लोभी।
तुप्य-वि० [सं०] इच्छा या लोभ करने योग्य। पु० लोभ;
व्यास।
तै-प्र० मे; द्वारा।
तैतालीस-वि० चालीस और तीन। पु० तेनालीसकी
सख्या, ४३।
तैतीस-वि० तीस और तीन। पु० तैतीसकी सख्या, ३३।
तैतुआ-पु० चीतेकी जातिका एक हिंस्र जंतु जो प्रायः
पीलापन लिये भूराभा होता है और इसकी देहपर काले-
काले गोल धब्बे या चित्तियाँ-सी होती हैं।
तैतुस-पु० डेंकनी।
तैद-पु० एक पेड़ जिसका छीर आबनूनके नामसे बिकता है।
तै-अ० से। सर्व० [सं०] द, दे, डाल।
तैह-सर्व० वे ही।
तैहस-वि० बीस और तीन। पु० तैहसकी संख्या, २३।
तैलना-अ० कि० रुष्ट, नाराज होना।
तैरा-खी० [फा०] बन्धी तलवार।
तैरा-पु० दे० 'तैग'; कुश्तीका एक दाँव। खी० [सं०]
एक देवी।
तैजःफल-पु० [सं०] बृहस्पतिदेव, तेजफल।
तैज-पु० [सं०] तीक्षापन; शस्त्रकी तीक्ष्णता; चमक;
उत्पाह। -पत्ता, -पात-पु० [हि०] मसालेके काम आने-
वाला एक प्रकारका पत्ता। -पत्र-पु० तेजपात।
तैज(स्)-पु० [म०] तीक्ष्णता; तीक्ष्ण धार; दिव्य ज्योति;
दीप्ति, प्रभा, चमक, जलाल; बल, पराक्रम; शौर्य; उग्रता;
अधीरता; प्रभाव; प्राणभय उत्पन्न होनेपर भी अपमान या
अविशेषकी न सहनेका गुण; उष्ण प्रकाश; ताप; नवनीत,
मक्खन; सीमा; अग्नि; पचमहाभूतोंमें तीसरा; पिप्प;
मज्जा; सार, ओज (सुभूत); मेजा; दूस्तीकी अभिभूत
करनेकी सामर्थ्य; सख गुणसे उत्पन्न किंग-शरीर; योत्रेका
वेग; रजोगुण; तेजमे युक्त व्यक्ति; आँखकी स्वच्छता।
तैज-वि० [फा०] जिसकी धार तीक्ष्ण हो, पैनी धारका;
द्रव्यामी, वेगवाण; फुर्तीका; तीक्ष्ण बुद्धिवाला; तीव्र स्वाद-

का; मन्द असर करनेवाला; महंगा; जिसका मूल्य बढ़ गया हो; प्रखर, प्रचंड; उग्र; चपल, चंचल।

तेजक-पु० [सं०] मूंज, सरपत।

तेजन-पु० [सं०] दीप्ति या तेज उत्पन्न करनेकी क्रिया या भाव; चाकू आदि तेज करना; बाणकी चौका; शस्त्रकी चार; बौंस; मूंज।

तेजनक-पु० [सं०] शर, सरपत।

तेजना-स० कि० तजना, छेड़ना।

तेजनी-स्त्री० [सं०] चटाई; गुच्छा; घोड़ेके सिरपरके बाल, अयाल; मूर्त्ति; ज्योतिष्मती।

तेजल-पु० [सं०] चातक, पपीहा।

तेजबल-स० वि० दे० 'तेजोबान्'।

तेजबान्-वि० तेजसे युक्त; पराक्रमी; बलिष्ठ; ओजस्वी; कांतिमान्।

तेजस्व-पु० [म०] तेज; शक्ति।

तेजसी-वि० तेजस्वी।

तेजस्-पु० [म०] दे० 'तेज(स्)'—केवल ममासमे व्यव-
हृत।—कर-वि० तेज बढ़ानेवाला, जिनके सेबनसे तेज बढ़े; कातिबद्धक।—काम-वि० शक्ति, प्रताप आदिका
व्यष्टिक।

तेजस्वान्(वत्)-वि० [म०] तेजसे युक्त, तेजवाला।

तेजस्विता-स्त्री० [सं०] तेजस्वी होनेका भाव।

तेजस्विनी-स्त्री० [सं०] तेजसे युक्त स्त्री; मालकँगनी, महाज्योतिष्मती। वि० स्त्री० तेजवाली।

तेजस्वी(विन्)-वि० [म०] तेजवाला; प्रतापी, शक्ति-
शाली; प्रभावशाली।

तेजा-पु० एक तरहका काला रंग। वि० तेजी, महँगी।

तेजाब-पु० [फा०] किसी क्षार पदार्थका अम्ल जिसमें दूसरी वस्तुओंकी गलनेकी शक्ति रहती है (यह प्रायः भातुओंकी गलने और डबाओंके काम आता है), 'एसिड'।

तेजाबी-वि० तेजाब-संबन्धी।—सोना-पु० तेजाबसे साफ किया हुआ सोना।

तेजिका-स्त्री० [म०] मालकँगनी।

तेजित-वि० [सं०] तेज किया हुआ; उत्तेजित।

तेजिनी-स्त्री० [सं०] दे० 'तेजनी'; 'तेजोवती'।

तेजी-स्त्री० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

तेजो-वि० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी; सस्तीका उलटा; मफरका महीना।

—का चौद-सफर महीनेका चौद।

निकलता हो, ज्योतिर्भव।

तेजोवती-स्त्री० [सं०] गजपिप्पली; चविका; महाज्यो-
तिष्मती। वि० स्त्री० दे० 'तेजोबान्'।

तेजोबान्(वत्)-वि० [सं०] तेजसे युक्त, तीक्षा; तेज;
उत्साही।

तेला-वि० उतना, जो परिमाणमें उसीके बराबर हो।

तेलाखीस-वि०, पु० दे० 'ते' 'नालीय'।

तेलिक-वि० उतना।

तेनी-वि० स्त्री० उतनी।

तेसीस-वि०, पु० दे० 'ते' 'तीस'।

तेतो-वि० उतना।

तेन-पु० [सं०] गानका आरम्भिक स्वर, तोम-नोम।

तेम-पु० [सं०] आर्द्र होना।

तेमन-पु० [सं०] व्यवहन; पका हुआ भोजन; आर्द्र करने-
की क्रिया।

तेमनी-स्त्री० [सं०] आग रखनेकी जगह; एक तरहका
चूल्हा।

तेरस-स्त्री० दे० 'त्रयोदशी'।

तेरह-वि० दस और तीन। पु० तेरहकी समस्या, १२।

तेरही-स्त्री० भरनेकी तिथिसे तेरहवीं तिथि जिस दिन
और्ध्वरेखिक क्रियाकी समाप्ति होती है और ब्राह्मणभोजनके
बाद भरणशौचका अंग होना है।

तेरा-सर्व० 'तू'का मवध कारकका रूप। [स्त्री० 'तेरी']।
मु० तेरी-स्त्री०—तेरे हितकी, तेरे अनुकूल बान।

तेरस-पु० पिछला या आगेका तीसरा साल (विशेषण-
रूपमें भी प्रयुक्त—तेरस माक)। स्त्री० तेरस।

तेर-प्र० से।

तेरौ-सर्व० दे० 'तेरा'।

तेल-पु० बीजों, वनस्पतियों आदिसे निकलने या विशेष
उपाय द्वारा निकाला जानेवाला स्निग्ध तरल पदार्थ; बर-
वधुको विवाहके पूर्व हल्दी मिला हुआ तेल लगानेकी एक
रीति।—हँदा-पु० तेल रखनेका मिट्टीका बर्तन।

—हँदी-स्त्री० छोटा तेलहँडा। **मु०**—चढ़ाना—विवाह-
संबन्धी तेलकी रस्म पूरी होना।—चढ़ाना—तेलकी रस्म
पूरी करना।

तेलग-स्त्री० तैलग या आंध्र देशकी भाषा।

तेलहन-पु० वे बीज जिनमें तेल निकाला जाता है।

तेलहारी-वि० तेलमें सपब; तेलका, तेलमें बना हुआ;
जिसमें तेल हो।

तेला-पु० तीन दिनतक का उपवास।

तेलिन-स्त्री० तेलकी स्त्री।

तेलिचा-वि० जो तेलकी तरह चिकना हो; जिसका रंग
तेलके रंग जैसा हो। पु० एक रंग; इस रंगका घोड़ा; एक
विष। स्त्री० एक मछली।—कंद-पु० एक प्रकारका
कंद।—करवा-पु० कथिना एक भेद।—काकरेजी-पु०

कालापन लिये हुए गहारा लाल रंग।—कुमैत-सुरंग-
पु० घोड़ेका कालिमा-मिश्रित लाल रंग; इस रंगका घोड़ा।

—पखाव-पु० एक तरहका काला, चिकना पत्थर।

—पानी-पु० बहुत खारा पानी।—मसान-पु० कजस

आदमी।—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

—सुहागा-पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा।

तेजी-पु० विंदुओंकी एक जाति जो तेज धरने और बेचने का पेशा करती है। **मु०-का बैल**—रात-दिन पिसनेवाला व्यक्ति।

तेजी०-खी० पेजसी (बुद्धेय)।

तेजदा, तेजरा-पु० एक तरहका ताल।

तेजव-पु० [सं०] क्रोध; क्रोधोद्योग।

तेजवर-पु० क्रोधस्वरूप भ्रमण, क्रोधमयी दृष्टि; कोप प्रकट करनेवाली तिरछी नजर; मोह। **मु०-कड़ना**—क्रोधके मारे मोहका तन जाना।—**बड़ना**—क्रोध होना।

तेजरी-खी० दे० 'लोरी'।

तेजहार-पु० दे० 'लोहार'।

तेजान-पु० सोच, चिन्ता।

तेजाना-अ० क्रि० सोचमें पड़ना; चिन्ता-मग्न होना।

तेज-पु० क्रोध, कोप; स्वाभिमान, घेँटा; ताब; प्रखरता, तिम्पता, तेजी।

तेजरा-वि० तीन परत किया हुआ, तीन तहोंका; जिसकी तीन प्रतियाँ एक साथ हों; तीसरी बार किया हुआ।

तेजराणा-स० क्रि० तीन परतों या तहोंका बनाना; तीसरी बार करना; तीसरी बार पढ़ना।

तेजा-पु० दे० 'तेज'।

तेजि-सर्व० उसको, उसे।

तेजी-वि० क्रोधी, गुस्सेल; अभिमानी। सर्व० दे० 'तेहि'।

तेज-सर्व० तू, प्र० से।

तेजा-सर्व० तेरा।

तेजाखीस-वि०, पु० दे० 'तेजाखीस'।

तेजिडीक-वि० [सं०] इमलीकी कांजीसे बनाया हुआ।

तेजिस-वि०, पु० दे० 'तेजिस'।

ते-वि० दे० 'तय'। † अ० उतने।

तैज-पु० [सं०] तित्त होनेका भाव, तित्कता, तिताई।

तैज्य-पु० [सं०] तीक्ष्ण होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीक्षा-पन; भयंकरता; उग्रता।

तैजाना-पु० तहखाना।

तैजस-वि० [सं०] चमकीला; तेजसे उज्ज्वल; जिसमें तेज हो; तेज-सम्बन्धी; रजोगुणसे उपपन्न, राजस; साहसी; उत्साही; शक्तिशाली। पु० तेजका विकार; धातु, मणि आदि तेजसे युक्त पदार्थ; धातु-द्रव्य; शक्ति, पराक्रम; धी; गंभीरता।

तैजसावर्तनी-खी० [सं०] सोना-चँदी आदि गलानेकी धरिया, मूषा।

तैजसी-खी० [सं०] गजपिप्पली।

तैजि-वि० [सं०] सहिष्णु, सहनशील।

तैजिर-पु० [सं०] तीतर पक्षी।

तैजिक-पु० [सं०] सब आदि करणोंमें नौधा करण (ज्यो०); देवता; गैका।

तैजिर-पु० [सं०] तीतरोंका समूह; तीतर; गैका।

तैजिरि-पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेदके प्रवर्तक एक ऋषि।

तैजिरिक-पु० [सं०] तीतर पक्षिनेवाला।

तैजिरीय, तैजिरीयक-पु० [सं०] यजुर्वेदकी एक शाखा; इस शाखाका अनुवायी या अभ्यस्य करनेवाला।

तैजिरीयारण्यक-पु० [सं०] तैजिरिय शाखा-संबन्धी

आरण्यक।

तैजाना-स० क्रि० तपाना, जलाना।

तैजान-वि० किसी कामके लिए निवृत्त या निवृत्त किया हुआ, मुकर्रर।

तैजानी-खी० निवृत्ति, मुकर्ररी।

तैजिर-पु० [सं०] आँखका एक रोग जिसमें पुँधलापन आ जाता है।

तैजार-वि० जो बनकर बिलकुल ठीक हो गया हो; जो पक्कर खाने योग्य हो गया हो; पूर्णतः व्यवहारके योग्य, हर प्रकारसे दुरुस्त; उन्नत, कटिबद्ध; मुस्तैय; प्रस्तुत, मौजूद; मोदा-ताजा, बूढ़-पुढ़; शिक्षा आदिके द्वारा कामके योग्य बनाया हुआ।

तैजारी-खी० तैयार होनेकी क्रिया या भाव; तत्परता, मुस्तैरी; सज-धज; शरीरकी पुष्टता; अभ्याससे प्राप्त कुशलता।

तैयो-अ० तो भी, फिर भी।

तैरना-अ० क्रि० किसी जीवका हाथ-पाँव आदि चलाते हुए पानीपर चलना; पानीके ऊपर-ऊपर फिरना; उतरना।

तैरनी-खी० [सं०] एक छुप।

तैराई-खी० तैरनेकी क्रिया या भाव; तैरने-तैरानेके बन्ने प्राप्त द्रव्य।

तैराक-वि० तैरनेमें कुशल। पु० वह व्यक्ति जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।

तैराना-स० क्रि० तैरनेका काम कराना; दूसरेकी तैरनेमें लगाना।

तैर्य-वि० [सं०] तीर्थ-संबन्धी। पु० तीर्थमें किया जाने-वाला कृत्य।

तैर्यिक-वि० [सं०] पवित्र; तीर्थ-संबन्धी; तीर्थदर्शन करने-वाला। पु० सम्प्रदासी; नया दार्शनिक या धार्मिक मत चलावेवाला, शास्त्रकार; तीर्थस्थानका जल।

तैर्यंग-पु० आग्र देश, तैर्यंग देशका रहनेवाला।

तैर्यंगी-वि० तैर्यंग देशका; तैर्यंग देश-संबन्धी। पु० तैर्यंग देशका निवासी। खी० तैर्यंग देशकी भाषा।

तैर-पु० [सं०] तिलको पेरकर निकाला हुआ तेल; कोई तेल; पत्थरफूल।—**कंद**-पु० तेलियाकंद।—**कलकज**-पु० खली।—**कार**-पु० गैला।—**किट्ट**-पु० तेलके बीचे बैठा हुआ मेल; खली।—**कीट**-पु० एक कीड़ा।—**चित्र**-पु० तेलके योगवाले रंगमें बना हुआ चित्र।—**चौरिका**-खी० तेलचट्टा।—**द्रोणी**-खी० काठका बना मनुष्यके बराबर एक पात्र जिसमें प्राचीन कालमें गेह भरकर रोमी छिटाये जाते थे तथा सबनेसे बचानेके लिए मुद्दे रखे जाते थे।—**घान्वा**-पु० उन धान्योंका एक वर्ग जिनसे तेल निकलता है (—तिल, अलसी, तोरी, तीनों प्रकारकी सरसों, खस और कुसुमके बीज)।—**पर्णक**-पु० गठितन।—**पणिंक**-पु० हरिचंदन; एक वृक्ष।—**पणिंका**,—**पर्णी**-खी० चंदन; धूप; तारपीन।—**पायिका**-खी० एक कीड़ा; मुखाविष्ट।—**पायी**(विज)-पु० हांगुर, चपका; तबवार।—**पिंज**-पु० सकेद तिल।—**पिपीलिका**-खी० एक तरहकी चीड़ी।—**पिटक**-पु० खली।—**कल**-पु० इंगुदी; बदेका; तिलका घीवा।—**भाबिनी**-खी०

चमेलीका पेड़। -माछी-खी० दीपककी बत्ती। -संज्ञ-
 पु० कोन्ह। -बछी-खी० छोटी सतावर। -झाका-
 पु० बड़ा स्थान जहाँ तेल पैरा जाता हो। -साबन-
 पु० कसोले नामक गंधद्रव्य। -स्फटिक-पु० तुलमणि।
 -स्वर्दा-खी० ध्वेत नौकरणी; काकोली।
 तैलक-पु० [सं०] धोखा तेल।
 तैलायुक्त-खी० [सं०] तैलायुक्तिका, तिलचटा।
 तैलाक-वि० [सं०] जिसमें तेल लगा हो; जिसने तेल
 सोखा हो।
 तैलाख्य-पु० [सं०] शिलारस नामक गंधद्रव्य।
 तैलायुक्त-पु० [सं०] अमरकी लकड़ी।
 तैलाभ्यंग-पु० [सं०] शरीरमें तेल मलनेकी क्रिया, तैलकी
 मालिश।
 तैलिक-पु० [सं०] तैली। वि० तेल-संबंधी। -संज्ञ-पु०
 कोन्ह।
 तैलिनी-खी० [सं०] बत्ती।
 तैली (किन्) -पु० [सं०] तैली। वि० तैल-संबंधी।
 - (कि) झाका-खी० तेल घेरनेका स्थान।
 तैलीय-पु० [सं०] तिलका सेत।
 तैल्यक-वि० [सं०] लोभका बना हुआ; लोभ-संबंधी।
 तैल्य-पु० [अ०] आवेगपूर्ण कोप, कोपकी शिस्त। सु०-
 मैं आना-बहुत क्रुद्ध होना।
 तैय-पु० [सं०] चांद्र पौष मास।
 तैयी-खी० [सं०] पुष्य नक्षत्रवाली पूर्णिमा, पूसकी पूर्णिमा।
 तैसा-वि० दे० 'वैसा'।
 तैसे-अ० दे० 'वैसे'।
 तौं-अ० त्यों, उस प्रकार; उस समय।
 तौंअर-पु० भाले जैसा एक अस्त्र, तोमर।
 तौंद-खी० पेटका आगेकी ओर बढ़ा हुआ भाग। सु०-
 पचकना-मोटाई दूर होना।
 तौंदल-वि० तौंदबाला, जिसका पेट निकला हुआ हो।
 तौंदी-खी० नाभि।
 तौंदीला-वि० तौंदबाला।
 तौं-अ० तब, उस स्थितिमें; एक अव्यय जिसका प्रयोग
 किसी शब्दपर जोर देनेके लिए अथवा यों ही किया जाता
 है; *था। *सर्व० तुझ, 'तू'का वह रूप जो उते विभक्ति
 लगानेके पहले प्राप्त होता है।
 तौह-पु० तौय, जल।
 तौई-खी० मगनी, गीत।
 तौक-पु० [सं०] कृष्णके एक सखा; अणल, शिशु।
 तौकक-पु० [सं०] चातक, पपीहा।
 तौकस-पु० [सं०] जो आदिकी हरी बाल; हरा रंग; मेघ;
 कानका मैल।
 तौक-पु० दे० 'तौय'।
 तौखना-सं० कि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।
 तौखार-पु० दे० 'तुखार'।
 तौटक-पु० [सं०] एक वर्णहृत् जिसके प्रत्येक ऋणमें चार
 सगुण होते हैं; आचार्य शंकरके एक पद्वि शिष्य।
 तौटका-पु० दे० 'टोका'।
 तौटना-अ० कि० टूटना।

तौह-पु० तौहनेकी क्रिया या भाव; नदी आदिके जलका
 मोरदार बहाव; कुशीमें एक बौके जगामें किया गया
 दूसरा दाँव; झोला; दशोका पानी। -ओह-पु० दाँव-पैव;
 उपाय, सुक्ति।
 तौहक-पु० तौहनेवाला।
 तौहव-पु० [सं०] भेदन; फाटना; चोट पहुँचाना।
 तौहवा-सं० कि० आवात, शटके या दावावसे किसी वस्तुके
 दो या अधिक टुकड़े करना; किसी वस्तुके अंगको या उसमें
 लगी हुई दूसरी वस्तुकी नोचकर या और तरहसे आधारसे
 पृथक् करना; किसी वस्तुका कोई अंग खंडित या बेकाम
 करना। बल, प्रभाव आदिको निःशेष या नष्ट करना;
 कुसला लेना, फोड़ना; किसी संस्था या कार-बार आदिकी
 सदाके लिए बंद कर देना; किसी नियमको रद्द करना या
 कायम न रखना; किसी आशुका उल्लंघन करना; संबंध
 या नातेकी आगेके लिए न निमाना; बातपर कायम न
 रखना; दूर करना।
 तौहर-पु० तौहा, पैरका एक महना।
 तौहवाना-सं० कि० तौहनेका कार्य कराना; तौहनेमें प्रवृत्त
 करना; तौहने देना।
 तौहा-पु० रुपये रखनेकी टाट आदिकी पैली जिसमें एक
 हजार रुपये गँट सके; पैर वा कलाहमें पहननेका एक
 घटना; टोटा; नाचका एक हिस्सा; हरिस; पल्लीता।
 - (वे) दार-वि० जिसमें नौधा लगा हो। -बंधक-
 खी० पल्लीता दागकर छोड़ी जानेवाली बंदक। सु०- (वे)
 उलटना या गिनना-किसीकी बहुत अधिक द्रव्य देना।
 तौहाई-खी० नौधानेकी क्रिया या भाव; तौहनेकी क्रिया
 या भाव; तौहनेकी उजरत।
 तौहाना-सं० कि० तौहनेका काम कराना; रस्तीके बंधनमें
 अपनेको झुक करना; किसी सिक्केकी मुनाना।
 तौण-पु० तरकश, तूणीर।
 तौत-पु० राशि, समूह।
 तौतई-वि० तौतेके रंगका। पु० तौतेका रंग।
 तौतक-पु० पपीहा।
 तौतरा-वि० दे० 'तौतल'।
 तौतरा-वि० दे० 'तौतल'।
 तौतराना-अ० कि० दे० 'तुतलाना'।
 तौतल-वि० जो तुतलाकर बोलता हो; तुतलानेका।
 तौतलाना-अ० कि० दे० 'तुतलाना'।
 तौता-पु० हरे रंगका एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी चोंच लाल
 होती है; बंदुका घोड़ा। -चस्म-वि० जो तौतेकी भाँति
 आँखें फेर ले, बे-बका; जिसमें थोड़ी-सी भी मुड़ीवत न
 हो। -चस्मी-खी० रेसुरीवात; बेवकाई। -परी-पु०
 एक प्रकारका आम। सु०-पाखना-किसी दुर्व्यसनका
 आदी होना; किसी बीमारी या उराईकी बढने देना।
 - (ते) की तरह आँखें फेरना-एकदम रेसुरीवत होना,
 पुराने संबंधकी एकदम मुला देना। -की तरह रटना-
 बिना अर्थ समझे कंड करना।
 तौल-पु० [सं०] जानबरोकी हॉकनेकी छड़ी, कोडा, अंकुश,
 चाबुक आदि। -बैत्र-पु० विष्णुके हाथका दंड।
 तौह-पु० [सं०] व्यथा, पीड़ा, कष्ट; सर्व; तीव्र वेदना,

दुकः होकरा, चकाना ।
 लोच-पु० [सं०] पीडन; दे० 'तौल'; दुःख; एक पैर;
 उत्तका फल ।
 लोचरी-की० [फा०] फारसका एक पैर जिसके बीच दवाके
 काम आते हैं; लतमीका बीज ।
 लोच-पु० तुण, एतार ।
 लोच-की० [तु०] बुद्धमें गोलबारी करनेका एक प्रसिद्ध
 अस्त्र जो अधिकतर दो या दोसे अधिक पहिलोंकी गाड़ीवर
 चलाता है और जिसमें अगोकी ओर बंदूककी नली जैसा
 नल लगा होता है । -खाना-पु० वह स्थान जहाँ तोपें
 और उनके आवश्यक उपकरण हैं; बुद्धके लिए सुसज्जित
 तोपोंका समूह । -ची-पु० लोच चकानेवाला, गोलदाज ।
 लोचना-स० कि० डँकना; छिपाना ।
 लोचरी-की० सूरी, अच्छापन ।
 लोच-वि० दे० 'तौलका' ।
 लोच-पु० बोकेकी दाना खिलानेका चमचे वा टाटका
 पैर । कु०-चकाना-चौलने न देना, सुँह बंद करना ।
 लोच-पु० [अ० 'तौल'] दण्डित या निष कर्म पुनः न
 करनेकी पथापाय या अपवर्णक की गयी ह्य प्रतिष्ठा
 (कमी-कमी किसी व्यक्ति वा पदार्थके प्रति दृष्टा प्रकट
 करनेके लिए श्लका प्रयोग होता है); अफसीस, पछतावा,
 पथापाय । कु०-तिला अचाना-चौलना, चिहाना;
 किसी नुकसानपर हाथ-हाथ करना । -लोचना-कीलमें
 फिर जाना, अपनी बातपर कायम न रहना; लोच किये
 हुए कामकी पुनः करना । -बुलबाना-किसीको शतना
 लंग करना कि वह पनाह माँगने लगे ।
 लोच-पु० समूह, राशि ।
 लोच-की० तूँची ।
 लोचनी-पु० गानका आरम्भिक स्वर, तेन ।
 लोच-पु० [सं०] भाषेकी तरबका एक प्रसिद्ध अस्त्र; बारह
 भाजाओंका एक छँद; एक छंद जिसका प्रत्येक पद नौ
 अक्षरोंका होता है; राजपूतोंका एक प्राचीन राजवंश
 (पृथ्वीराजके नाना अलगपाठ इसी वंशके थे) । -ग्रह-
 पु० लोचरारी सैनिक । -हर-पु० अग्नि; लोचरग्रह ।
 लोचरिका-की० [सं०] दे० 'तुवरिका' ।
 लोचरी-की० तुमरी; कनू आ कर्दू ।
 लोच-पु० [सं०] जल, पानी; पूर्वोपादा नक्षत्र । -कर्म-
 (चू)-पु० तर्पण । -काम-पु० जलमें होनेवाला वैत;
 बानीर । वि० जलका हस्त्युक्त, व्यासा । -कुंभ-पु०
 सेवार । -कुम्भ-पु० एक काठिन जल जिसमें महीनेपर
 केवल जल पीकर रहते हैं । -कीडा-की० जल-भीड़ा ।
 -गर्ज-पु० नारियल । -डिब-पु० ओला, वर्षापक,
 गरका । -इ-पु० मेघ, बादल; पी । -हर-पु०
 पु० मेघ, बादल; मोथा । -वि-पु० समार, समुद्र; चार-
 की संख्या । -विच-पु० जौग । -विचि-पु० दे०
 'तोपि' । -नीरी-की० प्रथिनी । -फणी-की०
 करेला । -पिप्ली-की० एक शाक, जंगली, जल-
 पिप्ली । -पुष्पी, प्रभा-की० पाटका वृक्ष । -प्रसादन-
 पु० निर्मली । -फली-की० ककड़ीकी बेल । -अल-
 पु० समुद्रका फेन । -मुक्क(चू)-पु० बादल; मोथा ।

-चँच-पु० जलबही; फौवारा । -राज-पु० समुद्र;
 वरुण । -राशि-पु० ताल; शीत; समुद्र । -वल्ली-
 की० करेला । -वृक्ष-पु० सेवार । -कुम्भिका-
 की० लोच । -सर्विका-की० मेढ़की । -लूचक-पु०,
 मेढका; ज्योतिषमें एक वर्षाचक्र योग ।
 लोचबान-पु० पु० [सं०] वर्षा ऋतु ।
 लोचबाना(स्वय)-पु० [सं०] परमेश्वर ।
 लोचबान-पु० [सं०] जलस्य ।
 लोचबानिवाहिनी-की० [सं०] पाटका वृक्ष ।
 लोचबान-पु० [सं०] समुद्र ।
 लोचबान-पु० [सं०] दे० 'लोचबान' ।
 लोच-पु० [सं०] वरुण; शतभिषा नक्षत्र; पूर्वोपादा
 नक्षत्र ।
 लोचोत्सर्ग-पु० [सं०] वर्षा ।
 लोच-पु० जरहर; * दे० 'तौल' । * सर्व० तेरा ।
 लोच-की० तूँची ।
 लोच-पु० [सं०] किसी घर या नगरका बाहरी दरवाजा,
 बहिर्द्वार; शीवारों, खंभों आदिकी सजावटके लिए लगायी
 जानेवाली माकाएँ आदि, बंदनवार (कहीं-कहीं रस्सीमें
 पतियाँ आदि बाँधकर भी दीवारों आदिपर लगाते हैं);
 शिरका; गन्ना । -माल-पु० अवतिकापुरी । -स्फटिक-
 की० दुर्घोषनका सभामन्त्रन ।
 लोच-पु० दे० 'तौल' ।
 लोच-स० कि० दे० 'तौलना'; दूर करना ।
 लोच-सर्व० तेरा; तुम्हारा । पु० तूरा, कलमी ।
 लोच-अ० वेगपूर्वक; शीघ्रतापूर्वक, तेजीसे ।
 लोच-स० कि० दे० 'तौलना' ।
 लोच-वि० वेगवान्, तेज । [की० 'लोचवती']
 लोच-की० काले रंगकी सरसों; तूँची ।
 लोच-पु० [सं०] अस्त्री रत्नियोंके बराबर एक तौल; तौल ।
 लोच-पु० [सं०] बारह माशेकी एक तौल ।
 लोच-की० चँच । पु० [सं०] तौलनेकी क्रिया; ठाना ।
 लोच-स० कि० पहिलेकी धुरीमें तेल देना; तौलना;
 अनुष् आदि संवाहना; ठाना ।
 लोचबाना-स० कि० 'लौलबाना' ।
 लोच-पु० बारह माशेकी एक तौल; इस तौलका बाट ।
 लोच-पु०, की० दे० 'तौलना' ।
 लोच-वि० [सं०] तौल जाने योग्य । पु० तौलनेकी क्रिया ।
 लोच-की० [तु०] कर्ं भरा विछानन, छोटा गाँवा ।
 -खाना-पु० अमीरोंके बक्सादि रखनेका स्थान ।
 लोचबान-पु० पायेय रखनेकी धैकी; कारतूस रखनेकी
 धैकी ।
 लोच-पु० [फा०] संवल, पायेय । -खाना-पु० दे०
 'लौलकजाना' । -[लो]आकबल-पु० झुलत, पुण्य
 (जिससे परलोक बने) ।
 लोच-पु० [सं०] मनकी वह वृत्ति जिसमें प्राप्त वस्तु, ह्मस
 आदिसे अधिककी चाहसा न हो। तुष्टि, किम्साका अभाव;
 प्रसन्नता, प्रसाद; कृष्णके एक सखा ।
 लोच-वि० [सं०] संतुष्ट या प्रम करनेवाला ।
 लोच-पु० [सं०] संतुष्ट करनेकी क्रिया या भाव; लोच ।

तौबनी-की० [सं०] हुनो ।
 तौबना-स० कि० संतुष्ट करना, दृष्ट करना; प्रसन्न करना ।
 अ० कि० संतुष्ट होना, दृष्ट होना ।
 तौबक-पु० [सं०] एक अन्न; नूतल; कंदका एक मल
 जिसे कृष्णने धनुर्वर्षमें मारा था ।
 तौबित-वि० [सं०] दृष्ट किया हुआ, प्रसादित ।
 तौबी(विन्)-वि० [सं०] (समासांतमें) ...से संतुष्ट वा
 प्रसन्न; प्रसन्न करनेवाला ।
 तौस*-पु० दे० 'तौष' ।
 तौसका-की० दे० 'तौषक' ।
 तौसक*-पु० दे० 'तौषक' ।
 तौसा*-पु० दे० 'तौषा' ।-स्वाभा-पु० दे० 'तौसाखाना' ।
 तौसाखाना-पु० दे० 'तौसाखाना' ।
 तौहकरी-की० भलाई; अच्छाई, खूबी ।
 तौहकरी-वि० [अ०] नावान; बढ़िया, अच्छा । पु० सौगात,
 नगर, सेंट; सुंदर वा बढ़िया चीज ।
 तौहमत-की० [अ०] मिथ्या आरोप, लांछन ।
 तौहमती-वि० मिथ्या आरोप करनेवाला, लांछन लगाने-
 वाला ।
 तौहरा-सर्व० दुःख; दुःखारा; दुःखें ।
 तौहरा-सर्व० दुःखारा ।
 तौहि*-सर्व० दुःख; दुःखें ।
 तौकना*-अ० कि० आँचने तपना ।
 तौस-की० धूप खानेसे लगी तेज प्यास; ताप, कमस ।
 तौसना*-अ० कि० तप जाना; घरमीसे छुलस जाना ।
 तौसा-पु० कभी गरमी, भीषण ताप ।
 तौ*-अ० तो । * अ० कि० था ।
 तौक-पु० [अ०] ईंसुली; मजबूत पूरी करनेके लिए बच्चोंको
 पहनायी हुई ईंसुली; कटुता आदि पक्षियोंके गलेका ईंसुली
 जैसा चिह्न । -(के)गुलामी-पु० ईंसुली जो गुलामोंके
 गलेमें पहनाते थे ।
 तौकी*-की० गलेका एक गहना ।
 तौकिक-पु० [सं०] धनु राशि ।
 तौतासिक-पु० [सं०] कुमारिक भट्कल मीमांसाशास्त्र ।
 तौतिक-पु० [सं०] मोती; मोतीका सौप ।
 तौनी-सर्व० बह, ली ।
 तौनी-की० छोटा तवा ।
 तौनीक-पु० [अ०] शक्ति, सामर्थ्य; हिम्मत, होसला;
 सुराका बंदेके श्रुम संकल्पकी पूर्तिके साधन जुटा देना;
 अनुग्रह; साधन ।
 तौबा-की० दे० 'तौबा' ।
 तौर-पु० [सं०] एक राग; [अ०] बाल, डंग; तरह, आँसि ।
 -तरीक-तरीक-पु० बाल-बलन, बाल-डाल, बात-
 व्यवहार ।
 तौरअबस-पु० [सं०] एक साम ।
 तौरि*-की० बुझा, चक्कर ।
 तौरित-पु० दे० 'तौरित' ।
 तौरित-पु० [अ०] यहूदियोंका प्रधान धर्मग्रंथ ।
 तौर्य-पु० [सं०] दूरग आदिकी ध्वनि ।
 तौर्यत्रिक-पु० [सं०] गीत, नादन, नृत्य आदि कार्य ।

तौक-की० तौकनेकी क्रिया वा भाव; माप, जोख, वजन,
 परिमाण-जैसे मन, सेर, छर्यक, तौका, माछा आदि ।
 पु० [सं०] तराजू; तुला राशि ।
 तौकना-स० कि० किसी पदार्थका परिमाण वा भारीपन
 जाननेके लिए उसे तराजू वा कौंटेपर रखना, तौकना;
 साधना; मापकी धुरीमें तेज लगाना ।
 तौकवाई-की० दे० 'तौकाई' ।
 तौकवाना-स० कि० तौकनेका काम करना ।
 तौका-पु० भटका; गल्ला तौकनेवाला; मझुपकी खराब ।
 तौकाई-की० तौकनेकी क्रिया वा भाव; तौकनेकी वज्रत ।
 तौकाना-स० कि० दूसरेकी तौकनेमें प्रवृत्त करना, तौकने-
 का काम करना ।
 तौकिक, तौकिकिक-पु० [सं०] चित्रकार ।
 तौलिबा-पु०, की० करीर पोंछनेका विशेष प्रकारका
 अंगोछा ।
 तौली(विन्)-पु० [सं०] तौकनेवाला; तुला राशि ।
 तौल्य-पु० [सं०] वजन, तौक; साम्य, समानता ।
 तौलार-पु० [सं०] शाला, ठंड । वि० बर्फीला, तुलारयुक्त ।
 तौसना*-अ० कि० दे० 'तौसना' । स० कि० ताप वा
 गरमी पहुँचाकर बेचैन करना ।
 तौहीन-की० [अ०] अनादर, अपमान, बेइज्जती ।
 तौहीनी-की० दे० 'तौहीन' ।
 त्वक-वि० [सं०] त्याग, छोड़ा हुआ, जिसका त्याग कर
 दिया गया हो । -जीवित, -प्राण-वि० जिसने जीवन्की
 आशा छोड़ दी हो; मरनेको प्रत्युत । -कृष्ण-वि० निर्लज्ज,
 बेइया । -विधि-वि० नियम रंग करनेवाला । -जी-
 वि० लक्ष्मी द्वारा परित्यक्त, भीहोन, भाग्यहीन ।
 त्वकज-वि० [सं०] छोड़ने, त्यागने योग्य ।
 त्वका (कु)-वि०, पु० [सं०] छोड़नेवाला, त्यागनेवाला ।
 त्वकासि-वि० [सं०] गृहाधिकी उपेक्षा करनेवाला
 (मादण) ।
 त्वकास्मा(स्मृ)-वि० [सं०] हताश, निराश ।
 त्वकासि(स्)-पु० [सं०] एक साम ।
 त्वजव-पु० [सं०] छोड़ने, त्यागनेकी क्रिया ।
 त्वजनीव-वि० [सं०] त्याग्य, जो छोड़ने योग्य हो ।
 त्वजित-वि० [सं०] दे० 'त्वक' ।
 त्वज्यमान-वि० [सं०] जो छोड़ा जा रहा हो ।
 त्वगा-पु० [सं०] किसी वस्तुपरसे अपना स्वत्व हटा लेने
 अथवा अपनेपनका भाव मिटाकर उसे छोड़ देनेकी क्रिया,
 उत्सर्ग; किसीसे नाता तोड़ देनेकी क्रिया; सांसारिक
 विषयों तथा योगोंमें लिप्त न रहनेकी क्रिया वा भाव;
 ममत्वका उच्छेद; परहितसाधन अथवा उच्च लक्ष्यकी
 प्राप्तिके लिए की गयी स्वार्थकी उपेक्षा, कुरबानी; किसी
 पद वा स्थानसे संबंध न रखना । -पञ्च-पु० इस्तीफा ।
 -दुस्त, -सीक-वि० उदार, त्यागी ।
 त्वगाना-स० कि० छोड़ना, त्याग करना ।
 त्वगी(विन्)-वि० [सं०] जो सांसारिक मुल्योंमें लिप्त
 न हो; जिसने स्वार्थ, भोगकी इच्छा आदिका त्याग कर
 लिया हो, विरक्त ।
 त्वजित-वि० [सं०] जिससे परित्याग कराया गया हो;

त्रि-वि० [सं०] तीन (वह यौगिक शब्दोंके आरंभमें जोड़ा जाता है, जैसे-त्रिकाक्ष, त्रिदश, त्रिलोक इ०) । -कंड-कंडक-पु० गोखरू; सेहुँवा; डेंगरा मछली । वि० जिसमें तीन कोंडे या नोकें हों । -ककुब्-पु० बिकूट पर्वत; विष्णु; दस दिनोंमें किया जानेवाला एक याग; प्रभान । वि० जिससे तीन शोक या सोंग हों । वि० तीन चोटियोंवाला । -ककुब्-पु० इंद्र; उदान बाहु; नौ दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ । -कट-पु० गोखरूका पेड़ । -कटु-कटुक-पु० तीन कष्ट पदार्थोंका समाहार-सोंठ, पीपर और मिर्च । -कर्मा(मंद्)-पु० दान, याग और अध्ययन-इन तीन कर्मोंकी करनेवाला, ब्राह्मण । -कल-पु० तीन मात्राओंका लब्ध; ९ गुण और १० रूप अक्षरोंका एक दोहा । वि० जिसमें तीन कलएँ हों, तीन कलाओंवाला । -काँच-पु० अमरकोश; निरुक्त (ये दोनों ग्रंथ तीन-तीन काँचोंमें विन्यक्त हैं) । वि० तीन काँचोंवाला । -० शेष-पु० तीन काँचोंके अतिरिक्त अमरकोशका शेषांश जो पुररोचमकृत है । -काँची(खिन्)-पु० तीन काँचोंका समाहार । वि० तीन काँचोंवाला । -काय-पु० पुत्र । -कार्षिक-पु० सोंठ, अनीस और मोथा-इन तीनोंका समाहार । -काळ-पु० तीनों काल-भूत, वर्तमान और भविष्य; तीनों समय-प्रातः, मध्याह्न और सायं । अ० प्रातः, मध्याह्न और सायं-तीनों समय । -० ख-वि०, ० पु० तीनों कालोंकी बातें जाननेवाला । -० वर्षाक-पु० ऋषि । वि० जिससे तीनों कालोंकी बातें ज्ञान हों । -० श्रुतिता-खी० त्रिकालदर्शी होनेकी शक्ति या भाव । -वर्षी(सिन्धु)-वि०, पु० दे० 'त्रिकालदर्शी' । -कुटा-खी० [हिं०] दे० 'बिकट' । -कुटी-खी० भीलोंके मध्यके कुछ रूपका स्थान जहाँ बिकूट-चक्रकी स्थिति मानी जाती है । -कुल-पु० तीनों कुल-पितृकुल, मातृकुल तथा श्वशुरकुल । -कुला-खी० यवतिका । -कूट-पु० वह पर्वत जिसपर लका बसी थी; तीन श्रृंगोंवाला पर्वत; एक पर्वत जो सुमेरूका पुत्र माना जाता है (बामन पु०); योगमें एक चक्र जिसकी स्थिति त्रिकुटीमें मानी जाती है; समुद्री लवण । -० लवण-पु० समुद्री नमक । -कूटा-खी० तंत्रके अनुसार एक भैरवी । -कूर्चक-पु० चौर-काज करनेका एक शस्त्र (वह विशेषकर बाण, बृह, नारी, भीर, राजा आदिकी चिकित्साके लिए विहित है-इत्युक्त) । -कोण-पु० तीन कोनोंका क्षेत्र, त्रिभुज Δ; कामरूपका एक सिद्ध पीडा; जन्मकुंडलीमें लक्ष्म्यान्तसे पूर्वार्ध और नवौं स्थान; मोक्ष; योगिनी । वि० जिसमें तीन कोने हों, त्रिकोना । -० कल-पु० सिंहाड़ा । -० मयन-पु० जन्मकुंडलीमें लक्ष्म्यान्तसे पूर्वार्ध और नवौं घर । -० मिति-खी० व्यामिति, रेखागणित । -कोणक-पु० त्रिभुज । -क्षार-पु० तीन क्षारोंका समाहार-जवाक्षार, सखी तथा सुहागा । -क्षुर-पु० तालमखाना । -ख-पु० खीर । -शंखक-पु० दे० 'त्रिजातक' । -शंभीर-पु० शंभीर खर, सख तथा नामिवाला व्यक्ति । -शय-पु० बर्मा, अर्ध और काम । -शर्त-पु० उत्तरभारतका वह प्राचीन प्रदेश जिसमें वर्तमान पंजाबके जालंधर और कांगड़ा आदि

जिले सम्मिलित हैं; इस प्रदेशका निवासी । -शर्ता-खी० स्वभिवारिणी; मोती; एक तरहका झोंपुर । -गुण-पु० सख, रज, तम-इन तीन गुणोंका समाहार । वि० तीन गुना, तिगुना; जिसमें सखादि तीनों गुण हों; तीन भागोंवाला । -गुणा-खी० माया; दुर्गा । -गुणासीत-वि० जो सखादि तीनों गुणोंसे परे हो । पु० परमात्मा । -गुणायक-वि० जिसमें सखादि तीनों गुण हों । -गुणित-वि० तिगुना किया हुआ । -गुणी-खी० बेलका पेड़ । -गुणी(मिन्)-वि० तीन गुणोंवाला । -गूह-गूहक-पु० खिलोंके वेशमें पुरुषोंका एक नाच । -गूह-पु० अधिनीकुमारोंका रथ । -चक्षु(स्)-पु० शिव । -क्षिप्त-पु० गार्हपत्य अग्नि । -जग-पु० तीनों लोक-स्वर्ग, पृथिवी और पाताल; दे० क्रममें । -जगती-खी०, -जगत्-पु० तीनों लोक । -जट-पु० शिव । -जटा-खी० अशोकवाटिकामें जानकीके साथ रहनेवाली एक राक्षसी (इसकी हृदयमें सीताके प्रति विशेष पक्षपात था) । -जात-जातक-पु० हलायची, दारचीनी और तेजपत्ता-इन तीनोंका समाहार (नागकेसर मिलाकर रत्ने चतुर्जातक कहते हैं) । -जाम्बा-खी० दे० 'त्रिवाम्बा' । -जीवा-जवा-खी० वृत्तके केंद्रसे परिचित खिंची हुई सीधी रेखा (वह लंघाईमें व्यसक्तकी आधी होती है) । -जस्ता-खी० (वह जो तीन अग्रह न हो) धनुस् । -जाचिकेत-पु० वह जिसने तीन बार नाचिकेत अग्निका आधान किया हो; कृष्ण यजुर्वेदकी काठक संहिताका अध्ययन या अनुगमन करनेवाला; नारायण । -जीता-खी० पत्नी । -संजिका-खी० तीन तारोंवाली एक बीणा । -ताप-पु० दे० 'तापत्रय' । -बृह-पु० वह ईश्वर जिसे कुटोचक और बह्मक सम्म्यासी धारण करते हैं (वह सौंसे तीन बाँमेंकी एकमें बाँधकर बनाया जाता है); बाणी, मन और शरीर-इन तीनोंका संयमन । -बृंही(हिन्)-पु० वह जिसने बाणी, मन और शरीर इन तीनोंको ब्रह्ममें कर लिया हो, सम्म्यासी, परित्यागक । -बृह-पु० बेलका पेड़ । -बृह-खी० गोधापरी लता । -बृहिका-खी० चर्मकथा नामक लता । -बृह-पु० देवता; जीव । -० गुरु-पु० देवगुरु, बृह-स्वति । -० शोष-पु० बोरबहुटी । -० दीर्घिका-खी० आकाश-यगा, मंदारिनी । -० श्रुति-पु० इंद्र । -० पुंगुव-पु० विष्णु । -० पुण्य-पु० औंठ । -० मंजरी-खी० तुलसी । -० बभ्रू-खी० अमरा । -दिनसूक्त(स्)-पु० वह तिथि जिसका योग तीन दिनोंमें समाप्त हो । -दिब-पु० स्वर्ग; आकाश; सुख । -हक(स्)-पु० शिव । -देव-पु० ब्रह्मा, विष्णु और महेश-ये तीनों देव । -होष-पु० तीनों दोष-वात, पित्त और कफ; इन तीनोंके प्रकोपसे उत्पन्न रोग, सन्निपात । -० ख-पु० सन्निपात । वि० तीनों दोषोंसे उत्पन्न । -चनी-खी० [हिं०] एक रागिनी । -धर्मा(मंद्)-पु० शिव । -धाता-पु० गणेश । खी० तीनों धातुएँ-सीता, चाँदी और ताँबा । -धामा(मन्)-पु० शिव; विष्णु; अग्नि; शस्य (?) । -धारक-पु० गुंजरण । -धारा-खी० गंगा; सेहुँवा । -धवन-पु० शिव ।

-नयना-**खी०** दुर्गा, पार्वती । -नाय-**पु०** विष्णु ।
-नेत्र-**पु०** शिव । -**नृदामि**-**पु०** चंद्रमा । -नेत्रा-
खी० बाराही कर । -**पट्ट**-**पु०** कौच, घोडा । -पताक-
पु० हाथकी वह मुद्रा जिसमें तीन उंगलियाँ फैली हों;
त्रिपुंड्र । -पत्र-**पु०** पेड़का पत्र । -पत्रक-**पु०** पत्रका-
का पत्र; तुलसी, कुंद और बेलके पत्तोंका समाहार ।
-पथ-**पु०** ज्ञान, कर्म और उपासना-ये तीनों मार्ग;
आकाश, पृथ्वी और पाताल; वह स्थान जहाँ तीन रास्ते
मिले हैं । -०शा, -० गामिनी-**खी०** (स्वर्ग, मत्स्य
और पाताल-तीनों लोकोंमें रहनेवाली) गंगा । -पथा-
खी० मयुरा । -पद्-**वि०** जिसमें तीन पाये हैं; जिसमें
तीन चरण या पद हैं; तीन पदोंका (सम्बन्ध) ।
-पद्मा-**खी०** गायत्री छंद; हंसपदी छंद । -परिका-
खी० तिहारें; तिपारोंकी तरहका एक भातु-निर्मित आधार
(तं०) । -पदी-**खी०** गायत्री छंद; हाथीका पैर या
पदान्धनका रस्ता; अर्धपात्र रखनेका तिपार जैसा
आधार (तं०); गोधापदी कला; एक छंद । -पद्म-**पु०**
चंद्रमाका एक चोका । -परिक्रान्त-**वि०** जिसने काम,
क्रोध और लोभ-तीनोंकी जीत लिया हो; (ब्राह्मण) जो
जीविकार्थ वह करावे, अष्ठापान करे और दान ले ।
-पर्ण-**पु०** पत्राशका पत्र । -पर्ण-**खी०** वनकपास ।
-पर्यिका-**खी०** कंठाक्ष । -पर्ण-**खी०** शालपर्णी;
वनकपास । -पाटी(टिक्)-**वि०** तीनों वेदोंका शाता ।
पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि-तिपारी, विवेकी । -पात्र-
पु० तीन बार मिगीया हुआ सुत; बल्कल । -पायिका-
खी० तिपारें; गोधापदी कला । -पाद्(र)-**पु०** पर-
नेमरा स्वर । -पितृ-**पु०** पिता, पितामह और प्रपिता-
महकी दिये गये तीन पित्र; पार्वण मास । -पितृक-**पु०**
गौरीका मूल ग्रंथ जो विनय, व्रत और कर्मिधर्म-तीन
पिटकों(भागों)में विभक्त है । -पित्र-**पु०** वह भूकरा
जिसकी दोनों कान पानी पीते समय पानीमें छू जाते हैं ।
-पितृप-**पु०** स्वर्ग; आकाश । -पुंड्र-**पु०** [हिं०] दे०
'त्रिपुंड्र' । -पुंड्र-**पु०** एक तिलक जिनमें छल्लाट आदि-
पर मक्ष अथवा चंद्रनकी तीन आड़ी या अर्धचंद्राकार
रेखाएँ बनाते हैं । -पुट-**पु०** सेतारी; ताल; तलेथी;
एक हाथकी छंवाई; किनारा; बाण; गोखरू; छोटी इला-
यनी; बड़ी इलायनी; मक्षिका; फोड़ेका एक आकार
(समुद्र) । -पुटक-**पु०** त्रिपुंड्र; सेतारी । वि० त्रिपुंड्रा-
कार (कोक) । -पुट्टा-**खी०** दुर्गा; इलायची; मोतिपान;
निसोथ । -पुटी-**खी०** छोटी इलायची; शाता, श्वेत और
शान्ता भ्याता, श्वेत और भ्याना; द्रष्टा, द्रव्य और दर्शन
आदि तीन-तीनका समाहार; रंज; सेतारी; * दे०
'त्रिकुटी' । -पुर-**पु०** मयनिमित्त स्वर्ग; अंतरिक्ष तथा
पृथ्वीपरके नगर जिन्हें संकलने जलाया था; बाणाक्षर ।
-० ज्ञ, -० दृष्ट, -० हर-**पु०** शिव । -० श्रैरबी-
खी० दे० 'त्रिपुरा' । -० मक्षिका-**खी०** मक्षिकाका एक
भेद । -० सुंदरी-**खी०** दुर्गा । -पुरा-**खी०** एक देवी
(तं०) । -पुरुष-**पु०** ०० तीन पुरुषोंका समाहार ।
-पिता, पितामह और प्रपितामह; वह संपत्ति जिसका योग
वितामह और पिताको वह पुत्र करे । वि० उत्तमा अंजा

वितान तीन पुरुषोंके मिलनेपर हो; जिसके तीन व्यक्ति
सहायक हो । -पुष्कर-**पु०** ज्योतिषमें एक योग ।
-पृष्ठ-**पु०** विष्णु; जैनोंके अनुसार प्रथम बाहुदेव ।
-पृथक्-**वि०** तीन पीठियोंतक चल्नेवाला; तीनको
अपिप्त; तीनसे उत्तराधिकारमें प्राप्त । -पौलिषा-**खी०**
[हिं०] हाथी, छेद आदिके जाने योग्य बराबरके तीन
फाटकोंसे युक्त स्थान । -प्रम-**पु०** दिशा, देश और
कारु-संभवी प्रभ (ज्यो०) । -प्रस्तुत-**वि०** जिस(हाथी)-
से मदका लाव हो रहा हो । -प्रुष्ट-**पु०** एक अत्यंत
प्राचीन देश । -प्रुष्टा-**खी०**, **पु०** अंबला, हड और
बहेडा । -प्रुष्टी-**खी०** पेटपर पड़नेवाले तीन बल ।
-प्रुष्टीक-**पु०** बातु; शूरा । -प्रुष्ट-**पु०** रुद्रका एक
अनुचर; एक प्रकारका अमिषुद । -प्रुष्ट-**पु०** सार्व ।
-प्रुष्टी-**खी०** दे० 'विदेपी' । -प्रुष्ट-**वि०** तीन
जगहोंसे झुका हुआ; जिसमें तीन जगह देवापन हो, जो
तीन जगह बल लाये हो । **पु०** छंदे होनेकी एक मुद्रा
जिसमें गरदन, कमर और दाहिने पाँवमें बल पड़ना है
(कृष्णके वंशी बजानेका वर्णन इसी रूपमें मिलता है) ।
-प्रुष्टी-**खी०** एक हृत् । -प्रुष्टी (मिर्)-**वि०** दे०
'त्रिमंग' । **पु०** तात्काल एक भेद । -प्रुष्टी-**खी०** निमोष ।
-प्रुष्ट-**वि०** तीन नक्षत्रोंवाला । -० जीषा, -० ज्या-**खी०**
दे० 'त्रिषा' । -प्रुष्ट-**पु०** क्षी-प्रसंग । -प्रुष्टी-**खी०** तिर-
हुत, मिथिला । -प्रुष्ट-**पु०** तीन मुजामोंसे घिरा क्षेत्र ।
-प्रुष्ट-**पु०** स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल-इन तीन भुवनोंका
समाहार । -प्रुष्ट-**पु०** शिव । -० सुंदरी-**खी०** दुर्गा,
पार्वती । -प्रुष्ट-**पु०** तिमजिला मकान । -प्रुष्ट-**खी०**
एक विप्रेली मकली । -प्रुष्ट-**पु०** मोवा, चीता और
बायविंग-इन तीनोंका समूह; विषा, धन और कुटुंब-
संभवी मर । -प्रुष्ट-**पु०** ०० सुंदरीका एक अक्ष;
दूध, चीनी और मधु-इन तीनोंका समाहार । -प्रुष्ट-**वि०**
दे० 'त्रिमात्र' । -प्रुष्ट-**मात्रिक-वि०** जिसमें
तीन मात्राएँ हों, छान । -प्रुष्ट-**मात्रिक-वि०** दे०
'त्रिपथगामिनी' । -प्रुष्ट-**मात्रा-खी०** गंगा । -प्रुष्ट-**पु०**
विशिष्टा राक्षस; ज्वर । -प्रुष्ट-**पु०** त्रिकूट पर्वत ।
-प्रुष्ट-**पु०** शाक्यमुनि; गायत्री जपनेकी एक मुद्रा ।
-प्रुष्ट-**पु०** सुखी-**खी०** पुष्कर की माता; मायादेवी ।
-प्रुष्ट-**पु०** पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि-ये तीनों
मुनि, मुनिव्रज । -प्रुष्टानी-**खी०** दे० 'त्रिमुद्रानी' ।
-प्रुष्ट-**पु०** वह जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और शिव-ये तीन
मूर्तियाँ हैं, परमेश्वर; सूर्य । तीन भद्राकी एक शक्ति;
गौरीकी एक देवी । -प्रुष्ट-**पु०** पितृपापका; तीन
लक्षियोंका हार । -प्रुष्ट-**पु०** बौद्धधर्मके अंतर्गत महा-
यान, वीजयान तथा मध्यमयान-ये तीन यान । -प्रुष्ट-**पु०**
यान । -प्रुष्ट-**खी०** रात्रि; इस्वी; यमुना; नील;
काळा निसोथ । -प्रुष्ट-**पु०** तीन पीठियों; तीनों कटुपे-
कसंत, बर्षा तथा छरद; तीनों युग-सत्य, त्रापर और त्रेता;
किणु । -प्रुष्ट-**पु०** कपिल कर्णका चोका । -प्रुष्ट-**वि०**
तीन कारणों (क्रोध, लोभ, मोह)से होनेवाला (मुद्राकार) ।
-प्रुष्ट-**पु०** (गौड धर्ममें) बुद्ध, गौड धर्म और संन्यास
समाहार । -प्रुष्ट-**पु०** एक तरहकी शराब । -प्रुष्ट-

—अथ—पु० विष्णुः, विमल और विमलका समूह—(१) जैविक, हृद और हृदयः, (२) बोधा, नीता और नाय-विमल तथा (३) सीत, मित्र और पालक ।—बेदना—
—श्री०—छात्र—पु० वातके प्रकोपसे झूलों और रोदकी
हृदिके संविधानमें होनेवाली पीडा ।
शिवः—श्री० [सं०] रस्तीके आने-जानेके लिए कुर्पूर
लगाया हुआ लकड़ी आदिका यंत्र; कुर्पूका दहन ।
शिवः—श्री० दे० 'तृषा' ।
त्रिजगत्—पु० दे० 'त्रिदंशः' दे० 'त्रि' में ।—ओवि—श्री०
दे० 'त्रिविन्दो' ।
त्रिज, त्रिज—पु० दे० 'तृण' ।
त्रित—पु० [सं०] गौतम, प्रजापति या ब्रह्माका एक पुत्र;
यतु बाहुयके १२ पुत्रोंमेंसे एक ।
त्रितय—वि० [सं०] तीन भागोंवाला । पु० त्रिगुट, तीनका
समूह ।
त्रिवर्षाकुल—पु० [सं०] वज्र ।
त्रिवर्षाचार्य—पु० [सं०] ब्रह्मपति ।
त्रिवर्षाधिप—पु० [सं०] इन्द्र ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] विष्णु ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] विष्णु ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] वज्र ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] अक्षर ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] सुमेरु स्वर्ग ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] अमृत ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] इन्द्र ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] दुर्गा ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] इन्द्र; देव ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] देवता; इन्द्र ।
त्रिवर्षाध्वज—श्री० [सं०] गंगा; वही शलाघची ।
त्रिवर्षाध्वज—पु० [सं०] देवता ।
त्रिवर्षाध्वज—अ० कि० तीनों दोहोंसे प्रसन्न होना; काम,
क्रोध और लोभके बसमें होना ।
त्रिषा—अ० [सं०] तीन तरहसे; तीन भागों में । वि० तीन
प्रकारका ।—सृष्टि—पु० परमेश्वर जिसकी ब्रह्मा, विष्णु
और महेश—तीन सृष्टियाँ हैं ।—सर्ग—पु० दैव, तैयक
और मानुष—ये तीन सर्ग (सा०) ।
त्रिपिताना—अ० कि० उत्पन्न होना । स० कि० उत्पन्न या
संतुष्ट करना ।
त्रिपुरातक, त्रिपुरारि—पु० [सं०] शिव ।
त्रिपुरासुर—पु० [सं०] बाणासुर ।
त्रिष, त्रिषा—श्री० श्री, नारी ।—(या) चरित्र—पु०
दे० 'तिरिचा-चरित्र' ।
त्रिकोकेवा—पु० [सं०] परमेश्वर; स्वर्ग ।
त्रिषद—पु० दे० 'त्रिषण' ।
त्रिषण—पु० [सं०] सपूर्ण जातिका एक राग ।
त्रिषणी—श्री० [सं०] एक रागिनी ।
त्रिषङ्ग—पु० [सं०] दे० 'त्रि' में ।
त्रिषा—श्री० दे० 'तृषा' ।
त्रिषित—वि० दे० 'तृषित' ।
त्रिषित—वि० दे० 'तृषित' ।

श्रीषक—पु० [सं०] एक प्रकारकी अग्नि ।
श्रुति—श्री० [सं०] दारण; कामी, कसर; भूक, चूक; छोटी
शलाघचीका पीपा; संशय; काष्ठाका एक वृक्ष विभाग जो
दो छण और किसी-किसीके मतसे छणके चतुर्भासके बरा-
बर होता है; अंगहीनता; प्रतिका-संग; स्फूर्तकी एक
वाटका ।—श्रीष—पु० अर्द्ध; धुईयाँ ।
श्रुति—वि० [सं०] दृढ़ हुआ; संवित ।
श्रुति—श्री० [सं०] दे० 'श्रुति' ।
श्रुति—पु० [सं०] चार युगोंमें दूसरा युग (इसकी अवधि
१२९६००० वर्ष मानी गयी है । परशुराम और दारारवि
राम इसी युगमें अवतीर्ण हुए थे) । श्री० दक्षिण, गार्हपत्य
और आहवनीय—ये तीन अधियाँ; पासेका एक दाँव ।
—युग—पु० श्रेता नामका युग ।
श्रेतादिन—श्री० [सं०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय—
ये तीन अधियाँ ।
श्रेतनी—श्री० [सं०] दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय—
इन तीनों अधियोंसे की जानेवाली क्रिया ।
श्रेता—अ० [सं०] तीन प्रकारसे; तीन भागों में ।
श्रेता—वि० तीन ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] त्रिकाल-संबन्धी; तीनों कालोंमें होने-
वाला; त्रिकालवर्ती ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] तीनों काल—भूत, भविष्यत् और वर्त-
मान; प्रातः मध्याह्न और स्यास्त; श्रुति, स्थिति और
क्षय ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] तीन कोणोंवाला; त्रिषद ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] त्रिगुण-संबन्धी; तीन बार किया हुआ ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] तीनों गुणोंका समाहार; तीनों गुणोंका
धर्म या भाव ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] दैविक 'दैवरीय' । पु० जंगलीका
अमला भाग जो पवित्र माना जाता है ।
श्रेता—वि० [सं०] त्रिषद । अ० तीन प्रकारसे ।
श्रेताल्य—वि०, पु० [सं०] दे० 'श्रेताल्य' ।
श्रेताल्य—वि० [सं०] तीन शिष्टियोंका चलनेवाला ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] लक्ष्मण ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] तीन महीनोंका; तीन महीनोंमें
होनेवाला, हर तीसरे महीने निकलनेवाला ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] तीन मासका समय ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] एक होम । वि० त्र्यम्बक-संबन्धी;
त्र्यम्बका ।
श्रेतालिक—पु० [सं०] तीन श्रात राशियोंके सहारे चौथी
अज्ञात राशि निकाल लेनेकी रीति (ग०) ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] इन्द्र ।
श्रेताल्य—पु० [सं०] दे० 'त्रिको' ।—कर्त्ता(तृ)—पु०
शिव ।—नाथ—पु० राम ।—बंशु—पु० स्वर्ग ।—विजया—
श्री० मंग ।
श्रेतालिक—पु० [सं०] धर्म, अर्थ और कामका साधक कर्म ।
श्रेतालिक—पु० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य—इन तीनों
वर्णोंका धर्म; ये तीनों वर्ण । वि० त्रिषण-संबन्धी ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] जो तीन वर्षोंमें हो (भविष्यत्) ।
श्रेतालिक—वि० [सं०] तीन वर्षोंका; तीन वर्षोंमें होनेवाला;

तीन वर्षोंके अंतरसे होनेवाला (अभविष्यत्) ।
श्रेयिक्रम-वि० [सं०] त्रिविक्रम-संबंधी; विष्णुका । पु० विष्णुके तीन ढग ।
श्रेयिष्य-पु० [सं०] तीनों वेदोंका ज्ञाता; तीनों वेद; तीनों वेद जाननेवाले ब्राह्मणोंकी मंडली; तीनों वेदोंका अध्ययन ।
श्रेयिष्ठ-पु० [सं०] देवता । वि० स्वर्गमें रहनेवाला ।
श्रेयंकव-पु० [सं०] हरिश्चंद्र ।
श्रेयस्य-पु० [सं०] तीनों स्वर-उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ।
श्रेहायण-वि० [सं०] दे० 'श्रेयार्थिक' ।
श्रोटक-पु० [सं०] एक शृंगारप्रधान नाटक; एक विपैला कीड़ा; एक राग; एक छंद ।
श्रोति, श्रोटी-खी० [म०] चोंच; कायफल ।-(**टि**)हस्त-पु० पक्षी ।
श्रोण-पु० [म०] तरकश ।
श्रोतक-वि० [सं०] नौका, तुलानेवाला ।
श्रोत्र-पु० [म०] पशुओंकी हॉकनेकी छड़ी; चातुक; एक अक्ष; एक व्याधि ।
श्रोत्र-पु० दे० 'श्रोत्र' ।
श्रृंगुल-वि० [म०] तीन अंगुलका ।
श्रृंजन-पु० [सं०] कार्वाजन, रसाजन और पुष्पाजन ।
श्रृंबक-पु० [म०] शिव ।-**स्वस्व-पु०** कुंवर ।
श्रृंबका-खी० [सं०] दुर्गा ।
श्रृंबुक-पु० [सं०] एक तरहकी मशिका ।
श्रृंक्ष-पु० [म०] शिव; एक दैत्य ।
श्रृंक्षक-पु० [सं०] शिव ।
श्रृंक्षर, श्रृंक्षरक-वि० [सं०] तीन अक्षरोंवाला ।
श्रृंषवगा-खी० [सं०] दे० 'त्रिपथगा' ।
श्रृंमृतयोग-पु० [सं०] ज्योतिषमें एक योग ।
श्रृंवरा-खी० [सं०] तीन सदरसोंकी शापन-परिषद् (मनु०) ।
श्रृंशीत-वि० [सं०] निरामीर्ष ।
श्रृंशीति-वि० [म०] निरासौकी सकृत्, ८३ । वि० अस्ती और तीन ।
श्रृंश्र, श्रृंश्र-पु० [सं०] त्रिकोण । वि० त्रिभुजाकार ।
श्रृंश्र-पु० [सं०] तीन दिनोंका समाहार ।-**स्पर्श-पु०** वह सावन दिन जिसमें तीन तिथियाँ पड़ती हों ।-**श्रृंश्र-पु०** दे० 'त्रिदिनश्रृंश्र' ।
श्रृंश्रिक-पु० [सं०] वह गृहस्थ जिसके वहाँ तीन दिनतक निबाँह करनेभरकी सामग्री हो (मनु०) ।
श्रृंश्रय-पु० [सं०] तीन प्रवरोंवाला गोत्र; अध, बधिर और मूक (यक्षमें इनका प्रवेश निषिद्ध है) ।
श्रृंश्रिक-पु० [सं०] तिजरा । वि० तीन दिनोंमें होनेवाला ।
श्रृंषण, श्रृंषण-पु० [सं०] सौँठ, पीपर और भिच-त्रिकुंड ।
श्रृंश्र-पु० दे० 'श्रृंश्र' ।
श्रृंश्र-पु० [सं०] छिलका; बज्जल; चर्म; दारचीनी; चर्ममें व्याप्त रहनेवाली एक बाह्य ज्ञानेन्द्रिय जो स्पर्श द्वारा अपने विषयका ज्ञान कराती है ।-**कंदूर-पु०** चाव ।

-**क्षीरा, क्षीरी-खी०** बंसलोचन ।-**क्षेद-पु०** खरोच, क्षत ।-**क्षेदन-पु०** चर्मकर्मन; सुन्नत ।-**क्षरगक-पु०** झुरी ।-**पंचक-पु०** बरगद, गूलर, पीपल, सिरिस और पाककी छाल ।-**पत्र-पु०** तेजपत्ता; दारचीनी ।
पत्री, पर्णी-खी० हिंदुपत्री ।-**पाक-पु०** एक व्याधि ।-**पारुष्य-पु०** चमकेका सूक्ष्मपन ।-**पुष्प-पु०** रोमांच; सेतुर्वा नामक रोग ।-**पुष्पिका, पुष्पी-खी०** दे० 'त्वक्पुष्प' ।-**सार-पु०** बॉस; दारचीनी ।-**भेदिनी-खी०** छद्मचंचु ।-**सारा-खी०** बंसलोचन ।-**सुगंध-पु०** नारंगी ।-**सुगंधा-खी०** फलवाले नामक गंधद्रव्य, मुसम्बर ।
त्वग्-त्वक् का समासगत रूप ।-**अंकुर-पु०** रोमांच ।-**आक्षीरी-खी०** दे० 'त्वक्क्षीरी' ।-**इन्द्रिय-खी०** स्पष्टेन्द्रिय ।-**गंध-पु०** नारंगी ।-**ज-पु०** बाल; रक्त ।-**जल-पु०** पानी ।-**दोष-पु०** एक प्रकारका चर्मरोग; कुष्ठ ।-**दोषापहा-खी०** बकुची ।-**दोषारि-पु०** इस्तिकंद ।-**भेदन-पु०** चर्मकर्मन ।
त्वक्काय-वि० [सं०] चमड़े या छालका बना हुआ ।
त्वच-पु० [सं०] छाल; दारचीनी; तेजपत्ता ।
त्वचकना-अ० कि० पचकना, भीतरकी ओर घँसना; पुराना पचना ।
त्वचा-खी० [सं०] चर्म, चमड़ा ।-**पत्र-पु०** दारचीनी ।
त्वक्षिसार-पु० [सं०] बॉस ।
त्वक्षिसुगंधा-खी० [सं०] छोटी श्लायची ।
त्वक्षीय-वि० [सं०] तुम्हारा ।
त्वम्-सर्व० [सं०] तुम ।-**पदचाप्य-पु०** जीव ।
त्वरण-पु० [सं०] शीघ्रतापूर्वक करना, तेजीमें करना ।
त्वरणीय-वि० [सं०] जिसे तेजीमें करना हो ।
त्वरा-खी० [सं०] शीघ्रता, जल्दी ।
त्वरारोह-पु० [म०] कद्दतर ।
त्वरान् (वद्)-वि० [सं०] शीघ्रता करनेवाला; द्रुत-गामी; तेज; प्रखर । [खी० 'त्वरान्वी']
त्वरि-खी० [सं०] शीघ्रता ।
त्वरित-वि० [सं०] तीव्र गतिवाला, तेज । अ० तेजीमें, शीघ्रतापूर्वक ।-**गति-पु०** एक वर्णवृत्त ।
त्वरिता-खी० [सं०] तन्ममें एक देवी ।
त्वरता-पु० [सं०] एक जलमर्प ।
त्वष्टा (वृ)-पु० [म०] देवशिल्पी, विश्वकर्मा; ग्यारहवें आदित्य; एक वैदिक देवता जो पशुओं और मनुष्योंके शरीरका निर्माण करते हैं; बर्हर् ।
त्वष्टि-खी० दारुकर्म । पु० एक संस्कार जानि ।
त्वचा-वि० [सं०] त्वचा-संबंधी ।
त्वष्टी-खी० [सं०] दुर्गा ।
त्वष्टा-पु० [सं०] वज्र; वृत्रासुर; विश्वरूप; एक छोटा रथ ।
त्वष्टी-खी० [सं०] विधा नक्षत्र; विश्वकर्माकी पुत्री सखा जो सूर्यको व्याहरी गयी ।
त्विद (वृ)-खी० [सं०] प्रमा; छवि; बुद्धि, दीप्ति; इच्छा; वजन; प्रचंडता; वाणी ।-**(इ)पति-पु०** सूर्य ।
त्विषापति-पु० [सं०] सूर्य ।
त्विषा-खी० [सं०] दे० 'त्विद' ।

विश्वामित्र-पु० [सं०] दूर्य ।

विश्वि-की० [सं०] किरण; दीप्ति; प्रभा; शक्ति ।

स्वेच(स्)-वि० [सं०] दीप्त; प्रकाशित ।

स्वेच्य-वि० [सं०] सर्वकर, बरानना ।

स्वरु-पु० [सं०] तलवारकी मूठ, खड्गमुष्टि; सरीसृप, रेंगने-
वाला कीड़ा । -सर्ग-पु० तलवार चलातेका अभ्यास ।
स्वरु-पु० [सं०] वह व्यक्ति जो तलवार चलानेमें
सिद्धहस्त हो ।

थ

थ-देवनगरी वर्णमालामें तर्कका दूसरा वर्ण । उच्चारण-
स्वान दंत ।

थंथिल-पु० पक्षवेदी ।

थंथ-पु० दे० 'थन' ।

थंथी-श्री० चोद, धृती ।

थंथ-पु० स्तंभ, संभा-‘अति अद्भुत थंथनकी दुर्गा’-
राम०; सहारा ।

थंथन-पु० वकावट; एक तांत्रिक प्रयोग; स्तंभन करनेवाली
ओषध ।

थंथना-अ० कि० सेंभलना; ठहरना, रुकना ।

थंथ-पु० दे० 'थन' ।

थंथित-वि० रुका हुआ, टिका हुआ; साध्य ।

थ-पु० [सं०] पहाड़; रक्षक; खतरका चिह्न; एक रोग;
मक्षण; रक्षा; भय; मंगल ।

थंथली-श्री० दे० 'थैली' ।

थक-पु० थका, समूह ।

थकन-श्री० दे० 'थकान' ।

थकना-अ० कि० थमके कारण थिथिल होना, आंत होना;
तंग जाना; झुघ-नुघ भूल जाना; सुभा जाना; छकना;
थोमा पड़ना । थका-मर्दा-वि० थका, हारा हुआ,
अमसे थिथिल । मु० थक जाना-तंग आ जाना,
परेशान हो जाना; हतावस्थाके कारण शक्तिहीन हो जाना;
असक्त हो जाना ।

थकरी-श्री० शिथिलके बाल झाड़नेकी खम आदिकी कूंची ।

थकान-श्री० थकनेका भाव, थकावट, आंति, शैथिल्य ।

थकाना-स० कि० आत करना; हराना; थिथिल बना
देना । मु० थका डालना, थका देना-थान कर देना,
अशक्त बना देना ।

थकावट, थकावट-श्री० दे० 'थकान' ।

थकित-वि० आत, थिथिल, थका हुआ; मुग्ध ।

थकिचा-श्री० थका ।

थकीर्ही-वि० कुछ थका हुआ, थोड़ा थिथिल ।

थका-पु० किसी चीजका जमा हुआ ढकन, लोड़ा ।

थगित-वि० रुका हुआ; थिथिल ।

थगुसुल-पु० शिवपुत्र-गणेश तथा कार्तिकेय ।

थति-श्री० धाती; रूनी ।

थपी-श्री० राशि, डेर ।

थन-पु० पाय-भैस आदिका स्तन, गाय-भैस आदिका थैली
जैसा अंग जिसमें दूध रहता है ।

थनी-श्री० दे० 'गलखन' ।

थनेका-पु० शिथिलके स्तनपर होनेवाला कोड़ा; गुरलेकी
जातिका एक कीड़ा ।

थनेली-श्री० शिथिलके स्तनपर होनेवाला कोड़ा ।

थनैत-पु० गाँवका मुखिया; जमींदारका कारिदा ।

थपकना-स० कि० ध्यार या लाइ-चावसे किसीकी पीठ
आदिपर हथेलीसे हलका आघात करना, थपकी देना,
हथेलीसे धीरे-धीरे ठोकना ।

थपका-पु० थका; थपकी ।

थपकी-श्री० हथेलीका हलका आघात । मु० -देना,-
छगाना-चावसे धीरे-धीरे ठोकना ।

थपकी-श्री० ताली, करतलबन्नि । मु० -पीटना,-
बजाना-हथेलीके परस्पर आघात द्वारा द्रव्य उत्पन्न करना;
उपहास करना ।

थपथपी-श्री० दे० 'थपकी' ।

थपन-पु० स्थापन, स्थापित करनेकी क्रिया । -हार-
पु० पुनः स्थापित करनेवाला, प्रतिष्ठापक ।

थपना-अ० कि० स्थापित होना, स्थापित किया जाना ।
स० कि० स्थापित करना, स्थिर करना, दृढ करना;
जमाना; ठोकना । पु० धापी; ठोकनेका साधन ।

थपाना-स० कि० स्थापित करना ।

थपुचा-पु० चौथा-चिपटा खपका जिसके ऊपर नरिया रखी
जाती है ।

थपेचना-स० कि० नपत जमाना; आघात करना, ठोकर
देना ।

थपेचा-पु० चपत, चपेटा; घात-प्रतिघात, धरना, थप्पा ।

थपेकी-श्री० दे० 'थपकी' ।

थपेरी-श्री० दे० 'थपकी' ।

थप्य-पु० नमाचा, हापड़, चपेटा । मु० -कसना वा
छगाना-तमाचा मारना ।

थम-पु० म्थभ; कैलेकी पेड़ी ।

थमकारी-वि० रोकनेवाला, थामनेवाला ।

थमना-अ० कि० रुकना, ठहरना, बाध न रहना; बंद
होना, होत न रहना, रुक जाना; प्रतीक्षा करना, ठहरा
रहना, धैर्य रखना ।

थमाना-स० कि० संभलाना, पक्काना; ठिकाना ।

थर-पु० राजपूतानाके उत्तरमें एक रेगिस्तान; * स्थल,
जमीन; जगह । श्री० तह; शेरकी मीढ़ ।

थरकना-अ० कि० भयने कंपित होना; धरना ।

थरकाना-स० कि० भयसे कंपना ।

थरकीर्ही-वि० कंपिता हुआ; चंचल; स्थिर ।

थरथर-अ० इस प्रकार कि सभी अंगोंमें कंपन हो जाय;
थरथराहटके साथ । -कंपनी-श्री० एक छोटी चिड़िया ।

थरथरावा-अ० कि० भयके मारे कंपना; कंपना ।

थरथराहट-श्री० कंपकंपी ।

थरथरी-श्री० भय आदिके कारण होनेवाली कंपकंपी ।

थरना-स० कि० दे० 'थुरना'; ठगना ।

अपने जिम्मे लेना, किसी कामका उत्तरदायित्व स्वीकार करना ।

शाम्भना-स० कि० दे० 'शामना' ।

शायी-वि० स्थायी । -आश-पु० स्थायी भाव ।

शार, शारा-पु० दे० 'शाल' ।

शारी-श्री० 'शाली' ।

शारू-पु० नेपालकी तराईमें बसनेवाली एक जंगली जाति ।

शाल-पु० कौने या पीतलका बालीकी शल्लुका बड़ा बरतन ।

शाखा-पु० पोथे या वृक्षकी जड़के चारों ओर बनाया गया ब्यारीकी तरहका घेरा, आलबाल; फोड़ेकी घुन ।

शाखिका-श्री० शाना, आलबाल ।

शाली-श्री० कौने, पीतल आदिका शोष्णकार छिल्ला पान जिसमें भोजन करते हैं, बड़ी तलतरी; नाचकी एक गा । मु०-का बँगन-बह ओ किसी एक मतका न हो, कभी इस पक्षमें, कभी उस पक्षमें हो जानेवाला ।

शाबर-वि० अचल, जंगमका उलटा, स्वावर ।

शावरा-पु० थाला ।

शाह-श्री० नदी, ताल, समुद्र आदिका तल या नीचेकी धरती; नदी आदिमें बह स्थान जहाँ बिना रुके पॉव टिक जाय या तल छूआ जा सके; गहराईकी सीमा, गाव; पार; मीमा; इतिहास; किसी वस्तुकी इयत्ताका अनुमान; छिपे तीरसे लगाया गया पता । वि० कम गहरा, उबला । मु०-लगना-गहराईका पार मिलना । -लेना-गहराईका अंदाज लगाना; किसी वस्तुकी परिमिति या रहस्यकी जाँच करना ।

शाहना-स० कि० शाह लेना, पार पानेका यत्न करना; गहराईका पता लगाना; अंदाज लेना ।

शाहना-वि० उबला, कम गहरा ।

शिपटर-पु० [अं०] वह भवन जहाँ नाटकका अभिनय किया जाता है, रंगशाला; अभिनय ।

शिपटिकल-वि० [अं०] शिपटर-सम्बन्धी ।

शिगली-श्री० पैदल, चकती ।

शित-वि० बैठा या ठहरा हुआ, स्थित ।

शिति-श्री० स्थिति, ठहराव; बने रहनेकी क्रिया या भाव; पालन; दशा, परिस्थिति; स्थिरता, शांति ।

-आश-पु० स्थायी भाव ।

शियोसाली-श्री० [अं०] ब्रह्मविद्या; एक सम्प्रदाय ।

शिर-वि० स्थिर, गतिहीन, एक ही जगह अथवा रुका हुआ; अचल, न डिगनेवाला; अवंचल; एक ही स्थितिमें रहनेवाला । -जीह-पु० मछली । -घानी-वि० एक स्थानमें स्थिर रहनेवाला ।

शिरक-श्री० नृत्यमें चंचलताके साथ पैरोंका उठना, गिरना तथा हिलना ।

शिरकना-अ० कि० चंचलताके साथ पैरोंको उठाते, गिराते या हिलाते हुए नाचना; नाचनेमें अगकी हाव-भावके साथ संवाचित करना; आगे-पीछे होना ।

शिरकीर्ही-वि० शिरकनेवाला; स्थिर ।

शिरता, शिरताई-श्री० स्थिरता, ठहराव; अवंचलता; स्थायित्व; शांति ।

शिरना-अ० कि० पानी आदि द्रव पदार्थोंका हिलना एक

जाना; धुम्ब या आलौहित जलका स्थिर होना; पानीमें मिली मिट्टी आदिका नीचे बैठना; मेल आदिके नीचे जमनेसे पानीका निर्मल होना; ठहरना ।

शिरा-श्री० धूवी ।

शिराना-स० कि० पानी आदि द्रव पदार्थोंका हिलना बंद करना; आलौहित या धुम्ब जलको स्थिर होने देना; यदि पानीको मेल छँटकर निर्मल होने देना । अ० कि० दे० 'शिरना' ।

शीता-पु० स्थिरता, शांति, चैन ।

शीतो-श्री० दे० 'शीता' ।

शीर-वि० स्थिर ।

शुकवाना-स० कि० दे० 'शुकाना' ।

शुकराई-वि० श्री० (ऐसी श्री) जिसे सभी पिकारें ।

शुकाई-श्री० शुकनेका काम ।

शुकाना-स० कि० शुकनेमें प्रवृत्त करना; शुकनेका काम करना; किसी वस्तुको उगलवाना; निद्रा करना ।

शुकाफजीहत-श्री० पिकार और तिरस्कार ।

शुकी-अ० पिकारमूचक शब्द, छिः । श्री० बेइज्जती, लानत । मु०-शुकी करना-पिकारना, शू-शू करना । -शुकी होना-सबकी दृष्टिमें गिर जाना ।

शुतकारना-म० कि० 'शू-शू' करना; किसी चीजपर बार-बार शुकना; घोर धृणा प्रकट करना ।

शुत्कार-पु० [सं०] शुकनेकी आवाज; शुकनेकी क्रिया ।

शुथना-पु० दे० 'शून' ।

शुथराई-श्री० थोड़ा होना, कम पड़ना-जान सहा-गहवै-गुन मैं घन आनंद हेरि रह्यो शुथराई-धन० ।

शुथराना-अ० कि० थोड़ा होना, कम पड़ना ।

शुनी-श्री० दे० 'शुनी' ।

शुनेर-पु० एक तरहका गठिवन ।

शुनी-श्री० खमा, शूनी ।

शुपशुपी-श्री० धरती; झोंका ।

शुरना-स० कि० कूटना; (ल०) पीटना ।

शुरहया-वि० छोटे हाथका; जिसकी हथेलीमें थोड़ी वस्तु अट सके; कमखर्च । [श्री० 'शुरहथी']-कन दैवो सौप्यो ससुर बहु पुरहथी जानि-दि० ।

शुलमा-पु० एक तरहका पहाड़ी कंदल जिसमें ऊपरसे बाल जमाये गये होते हैं ।

शुली-श्री० दलिया ।

शू-पु० शुकनेका शब्द, शुकनेमें मुँहमें निकलनेवाला शब्द । अ० धृणा और पिकार-सूचक शब्द, छिः । श्री० शुकी, लानत । मु०-शू करना-शुकी-शुकी करना, धृणा और तिरस्कार सूचित करना । -शू होना-चाराँ और निद्रा होना ।

शूक-पु० लारकी तरहका रस जो मुँहसे अपने आप छूटा करता है, डीवन । श्री० शुकनेकी क्रिया । मु०-लगाना-नीचा दिखाना । शूकीं सख्ख सागना-अर्थात् कृपणाते काम बलाना; थोड़ी सामग्रीसे बड़ा काम करने लगना ।

शूकना-अ० कि० मुँहसे शूक बाहर निकालना या फेंकना; पिकारना, छिः-छिः करना । स० कि० उगलना; निद्रा करना । मु० शूकर चाटना-त्यक्त वस्तुको प्रवृत्त

करना ।

धूकार, धूकृत-पु० [सं०] दे० 'धूकार' ।

धूधन-पु० लंबे मुँहका आगेकी ओर निकला हुआ भाग ।

धूधनी-स्त्री० धूधन ।

धूधुनी-पु० धूधन ।

धून*-पु० दे० 'धूनी' ।

धूनी-स्त्री० बोझकी रोकनेके लिए लगाया जानेवाला छोटा खंभा, स्तंभ, टेक ।

धूमा-पु० लकड़ीका अनगढ़ खंभा, टेक ।

धूरना*-स० कि० कूटना, पीटना; (ला०) तोड़ देना; चूर करना; टूट-टूटकर खाना ।

धूल*-वि० स्थूल ।

धूला*-वि० मोटा, घट-घुट । [स्त्री० 'धूली' ।]

धूली-स्त्री० हलिया ।

धूवा-पु० दूध, दूधला ।

धूहड़-पु० दे० 'धूहर' ।

धूहर-पु० मेहुँड़ ।

धूही-स्त्री० मिट्टीका दूध; गहारीकी लकड़ी रखनेके मिट्टीके खमे जो कुँपर बने होते हैं ।

धैर-वि० हैरान; थका हुआ; हेहर, बेहया ।

धैरू-धैरू-स्त्री० ताचका एक डँग और ताल ।

धेगली*-स्त्री० कंधा; दे० 'धिंगली' ।

धैथै-स्त्री० [सं०] बाघका अनुकरणरमक शब्द ।

धैला-पु० कपड़े, टाट आदिका बना बटुपके आकारका बड़ा वात्र जिन्में भीजे रली और बंद की जा सकें; रूपवोंका नोहा; जधाने घुटनेनकका पायजामेका भाग ।

धैली-स्त्री० छोटा धैला; रूपवोंकी धैली । -दार-पु० गेहड़ रखनेवाला; खजानेमें रुपये उठानेवाला । -बरदार

-पु० बैली होनेवाला । -बरदारी-स्त्री० बैली होनेका पेशा या मजदूरी । धु० -खोखना-तोड़े गिनना; बैलीके सब रुपये दे देना ।

धोक-पु० राशि, डेर; फुटकर या खुराका उलटा; एकत्र किया हुआ माल; मालकी बनी राशि । -दार,-फारीश-पु० धोक माल बेचनेवाला व्यापारी । धु० -करना*-बर्मा करना, एकत्र करना ।

धोडन-पु० [सं०] ढँकने या लपेटनेकी क्रिया ।

धोका-वि० न्यून मात्राका, जो परिमाणमें कम हो, जरा-सा, अल्प, कुछ, किंचिद् । अ० जरा-सा । -बहुत-अ० जरा-मना, कुछ-कुछ । -सा-तनिक, जरा-मा । - (दे)ही-एकदम नहीं (काकु) ।

धोब-स्त्री० निम्नारता; खोखलापन; तोड़ ।

धोथरा-वि० निम्नार; बेकाम ।

धोथा-वि० तत्पररहित, निम्नार; भीतरसे खाली, खोखला; निम्नार; धोथरा । पु० मिट्टीका सौना जिसमें बरतन डालते हैं ।

धोपड़ी, धोपी*-स्त्री० चपत ।

धोपना-स० कि० मिट्टी आदिके लेंदोंको किसी बस्तुपर इस प्रकार रखना कि वह उपपर चिपक जाय; आरोंपित करना; रोटी बनानेके लिए नीले आटेको तवेपर दौं ही केला देना; आक्रमण आदिसे रक्षा करना ।

धोबड़ा-पु० धूधन; तोषना ।

धोर, धोरा*-वि० दे० 'धोरा'; छोटा-'कछु बाग बनी न कहूँ मुख धोरे'-रामचंद्रिका ।

धोरिक*-वि० धोकासा ।

धौक*-स्त्री० दे० 'धौद' ।

ध्यावर्सा*-पु० स्थिरता, चैन, कल, धीरज ।

द

द-देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका तीसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान दंत ।

दंग-वि० [फा०] चकित, आश्चर्यमें पड़ा हुआ; हक्का-बक्का; बेवकूफ; लापरवाह । *पु० खीक, डर । धु० -रह जाना-चकित हो जाना ।

दंगई-वि०, पु० दंगा करनेवाला, फनादी, लकावा ।

दंगल-पु० [फा०] कुदती आदिकी प्रतिद्वंद्विता; अस्त्राका; मजमा, समूह; गदा । धु० -बाँचना-हलका बाँचना । -भारना-कुदती जीवना । -लडना-कुदती लडना ।

दंगली-वि० दंगल मारनेवाला; दंगलमें जाने या भेजनेके योग्य; लडने, युद्ध करनेवाला ।

दंगबारा-पु० किसानोंकी हल-बैल आदिके द्वारा पार-स्परिक सहायता ।

दंगह*-वि० दंग करनेवाला, अव्युत्त (रासो) ।

दंगा-पु० झगडा-फसाद, बलका, विद्रुव, उत्पात; हला, कोलाहल । -हूँ-पु० दंगा करनेवाला, बलबाई । - (मे)-बाज़-वि०, पु० दे० 'दंगई' ।

दंगैल-वि०, पु० दे० 'दंगई' ।

दंड-पु० [सं०] डडा, लजुड; अस्त्रचारियों, सन्ध्यासिंघोंके

धारण करनेका बाँस, पलाश आदिका डडा; राजाके हाथमें रहनेवाला खड्ग या डडा जो अधिकार और सजाका सूचक होता है; डडेकी तरह कड़ी और सीधी वस्तु; राजा बनानेकी कमाना या डडा; आक्रमण; दमन; भूमिकी एक माप, लड्डा; ब्यूहका एक भेद; शरणागत रक्षण आदि कर्म; शासन; सजा; जुर्माना, डंड; साठ पल (२५ मिनट)का कालका एक सूक्ष्म विभाग, धनी; राजाओंकी चार नीतियोंमेंसे एक; सूर्यका एक पार्थिवर; यम; अभिमान; अथ; कीण; मयानीका डडा; तराजूकी डडी; वह बाँस या डडा जिसमें पताका लगी रहती है; हलमें लगी लंबी लकड़ी, हरिस; दंडवत्; एक कसरत; पेशका पक्ष; कमल आदिकी नाल; हाथीकी सूँड़; जहाज या नावका मस्तूल; हड्वाकुका एक पुत्र; सूर्यकिर्णोंका सपात; मेना; शिष्य; विष्णु; नृप । -कंदक-पु० भूमिकद । -कर्म (रू.)-पु० सजा देनेका काम; सजा । -कल-पु० २० मात्राओंका एक छंद । -कलक-पु० डोमकीआ । -काह-पु० लकड़ीका डडा । -खेरी (विद्रु.)-पु० वह व्यक्ति जो कठोर दंड पानेके कारण दुःख शेल रहा हो । -गौरी-स्त्री० एक अस्त्र । -प्रहण-पु० सन्ध्यासम्रहण । -धन-वि०, पु०

दंडसे प्रहार करनेवाला; दंडसे भारकर जान लेनेवाला; दंडकी न माननेवाला।—**दंडक**-पु० सेनाका एक विभाग।
-बाही(सिन्)-पु० सेनापति।—**दंडक**-पु० वरतन रखनेका कर्मरा।—**दंडका**-**खी**० दमामा, नगाडा।—**ताडन**-पु० अभिप्रायीकी दंडसे पीटनेकी सजा, बेंतकी सजा।—**साध्वी**-**खी**० हाँवके पात्रोंवाला राजा (जलधर्य)।—**दास**-पु० वह व्यक्ति जो अर्धदंड न चुकानेके बदले दास बना लिया गया हो।—**दंडकुल**-पु० न्यायालय।—**दंड**-पु० वह व्यक्ति जो दंडा किये हो, दंडा धारण करनेवाला; यम; राजा; शासक; सन्त्यासी।—**धार**-पु० वह व्यक्ति जिसके हाथमें दंडा हो; यम; राजा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र।—**धारक**-पु० न्याय करनेवाला।—**धारणा**-**खी**० वह स्थान जहाँ शासनकी सुव्यवस्थाके लिए सेना रखनी पड़े।—**नायक**-पु० सेनापति, सेनानी; न्यायाधीश, दंडविधायक; राजा।—**नीति**-**खी**० शत्रुओं या अपराधियोंकी दंड देकर बर्धमें करनेकी नीति।—**नेता(रु)**-पु० राजा; यम; विचारपति।—**प**-पु० राजा।—**पांडुल**, **पासुल**-पु० द्वारपाल।—**पाणि**-पु० यम; काशील एक शैर-भूति; वह व्यक्ति जिसके हाथमें दंड हो।—**पात**-पु० आकाश एक भेद; नृत्यमें पैरकी एक मुद्रा।—**पाकम्ब**-कात-भूमे आदि-से आघात कर किसीके शरीरपर बूझ या दूसरी गंदी वस्तु फेंकनेका कुकूल (स्थिति); कड़ा दंड।—**पाक**, **पाकल**-पु० दंडनायक; द्वारपाल; एक मछली।—**पाशक**, **पाशिक**-पु० पुलिसका प्रधान कर्मचारी; जहाद।—**प्रणाम**-पु० साष्टांग प्रणाम, वह प्रणाम जो पृथ्वीपर दंडेकी भाँति पककर किया जाय।—**पालक**-पु० हाथी।—**अंग**-पु० दंडावाका बरता न जाना।—**भय**-पु० सजाका डर।—**भृत्**-पु० यम; वह व्यक्ति जो लाठी किये हो; कुम्हार।—**भस्त्र**-पु० एक मछली।—**माणव**, **मानव**-पु० बालक जिसे प्रायः दंड देना पड़ता है।—**माय**-पु० राज-मार्ग, मुख्य मार्ग।—**मुख**-पु० सेनानायक।—**मुद्रा**-**खी**० तंत्रके अनुसार एक मुद्रा जिसमें मुट्ठी बाँधकर बीच-की उँगली ऊपरकी ओर सीधी खड़ी करते हैं; साधुओंका दंड और मुद्रा।—**बात्रा**-**खी**० दिग्विजयके लिए प्रयाण; शत्रुपर की गयी चढ़ाई; बरबात।—**वास**-पु० यम; दिन; अगस्त्य मुनि।—**बध**-पु० फाँसी, प्राणदंड।—**बासी(सिन्)**-पु० द्वारपाल; वह व्यक्ति जिसे एक घासका दंड-संबंधी अधिकार प्राप्त हो।—**बाही(सिन्)**-पु० पुलिस कर्मचारी।—**विकल्प**-पु० दंड-संबंधी विकल्प (प्रायः कैद या जुरमानेकी सजा दी जाती है और अभिशुक्लकी दोनोंमेंसे चाहे जिसे चुन लेनेकी आजादी दी जाती है)।—**विधान**-पु० दंडकी व्यवस्था, जुर्म और सजाका कानून।—**विधि**-**खी**० दंड 'दंडविधान'।—**विष्कम्भ**-पु० मयानीकी रस्ती बंधनेका खंवा।—**दुख**-पु० सेहुँक।—**भ्यूह**-पु० एक प्रकारकी भूहरचना जिसमें सेनाके विविध अंग पास-पास कतारमें स्थित किये जाते थे।—**शास्त्र**-पु० जुर्म और सजाका कानून।—**संधि**-**खी**० सेना या कक्षाका सामान लेकर की जानेवाली संधि।—**स्वाय**-पु० शरीरके उदर, उपस्थ आदि दस स्थान जहाँ दंड देकर कष्ट पहुँचाया जा सकता है; वह स्थान या

प्रदेश जहाँ फौजी शासन हो (कौ०); सेनाका एक विभाग।—**दस्त**-पु० द्वारपाल; यम; तगरका फूल।
दंडक-पु० [सं०] डडा, सीटा; हरिस; हड्डिका डंडा; दंड देनेवाला, शासित करनेवाला; एक घोषा; कतार; इस्वाकु राजाका एक पुत्र; वह छंद जिसके प्रत्येक चरणमें २६ से अधिक अक्षर हों; दंडकारण्य।
दंडका-**खी**० [सं०] दंडकारण्य; दण्डकवनकी भूमि।
दंडकारण्य-पु० [सं०] विन्ध्यके दक्षिण एक प्राचीन वन जहाँ वनवासकाळमें रामने निवास किया था (सीताहरण यहाँ हुआ था); जनस्थान।
दंडन-पु० [सं०] दंड देनेकी क्रिया, सजा देना, निग्रह।
दंडना-सं० कि० दंडित करना, दंड देना।
दंडनीय-वि० [सं०] दंड देने योग्य, जिसे दंड देना न्यायसमर्थ हो।
दंडमान-वि० दंडनीय।
दंडरी-**खी**० [सं०] ककरीका एक भेद।
दंडवत्-पु०, **खी**० [सं०] डंडेकी तरह पृथ्वीपर पककर किया जानेवाला प्रणाम, साष्टांग प्रणाम।
दंडादंडि-**खी**० [सं०] लाठीधौकी मार-पीट, वह मार-पीट जिसमें दोनों ओरसे लाठी चल्ती हो।
दंडाधिप-पु० [सं०] स्थानविशेषका प्रधान शासक।
दंडानीक-पु० [सं०] सेनाका एक विभाग।
दंडापतानक, **दंडावतानक**-पु० [सं०] एक रोग जिसमें शरीर कसा हो जाता है।
दंडावृत्-पु० [सं०] दंडा और पूजा।—**न्याय**-पु० एक तर्क-प्रणाली जिसके अनुसार आधेयरूप बात उसी प्रकार स्वतः सिद्ध मानी जा सकती है जिस प्रकार किसी डंडेके गायन हो जानेपर उसमें बंधे हुए पूरका गायन होना।
दंडायमान-वि० [सं०] जो डंडेकी भाँति सीधा स्थित हो।
दंडार-पु० [सं०] रथ; नाव; कुम्हारका चाक; भजुप्; मर-नाथ करता हुआ हाथी।
दंडार्ह-वि० [सं०] दंड पाने योग्य।
दंडालय-पु० [सं०] अदालत, न्यायाधिकरण; दंडकका छंद।
दंडालसिका-**खी**० [सं०] हैजा।
दंडाश्रम-पु० [सं०] तीर्थयात्रीकी अवस्था।
दंडाश्रमी(सिन्)-पु० [सं०] सन्त्यासी।
दंडाहत-वि० [सं०] दंडसे पीटा हुआ। पु० छाछ, मट्ठा।
दंडिक-पु० [सं०] दंडधारक, छड़ीधरदार; एक तरहकी मछली; पुलिस कर्मचारी।
दंडिका-**खी**० [सं०] एक वर्णवृत्त; छड़ी; पत्ति; रस्ती; मोतियोंकी लड़ी।
दंडित-वि० [सं०] जिसे दंड दिया गया हो, सजावाफता।
दंडिनी-**खी**० [सं०] एक घोषा, दंडोत्पल।
दंडी(सिन्)-पु० [सं०] यम; राजा; द्वारपाल; पुलिस-कर्मचारी; नाविक; मृगका एक पार्श्वचर; एक जिन; शिव; दोनेका घोषा; दंडधारी सन्त्यासी; मंडुश्री; संस्कृतके एक विख्यात कवि जिनकी रचनाएँ दशकुमार-चरित और कान्यादहर्त हैं।—**(कि)मुंड**-पु० शिव।
दंडोत्पल-पु० [सं०] एक घोषा।

द्वंद्वोत्पत्त्य-औ० [सं०] एक पौधा; एक मछली ।

द्वंद्वोपनत-वि० [सं०] पराजित करने वशमें किया हुआ (राजा) ।

द्वंद्व-वि० [सं०] दे० 'द्वंद्वनीच' ।

द्वंद्व-पु० [सं०] दाँत; पठार; कुंज; ३२ की संख्या; पर्वतका शिखर; बाणकी नोक । -**कथा**-औ० किंवदंती, जनश्रुति ।

-**कर्षण**-पु० एक नौवू (जमीरी) । -**कार**-पु० हाथी-दाँतका काम करनेवाला । -**काष्ठ**-पु० दाँतौन । -**काष्ठक**-पु० आइस्य वृक्ष, तरबट । -**कूर**-पु० संघाम, लड़ाई, समर । -**क्षत**-पु० कविमित्रिके अनुसार कामकेलिमें

कुपलों, अथरीपर दाँत काटनेसे पड़नेवाला चिह्न । -**धर्ष**-पु० दाँतोंका किरकिराना; दाँत पीसना । -**धात**-पु० दाँतोंसे काटना । -**चिकित्सक**-पु० (डेंटिस्ट) दाँतोंकी चिकित्सा करनेवाला तथा चिकित्सा, दूटे दाँत ठखाने,

नकली दाँत लगानेवाला । -**चिकित्सा**-औ० (डेंटिस्ट्री) दाँतोंकी दवा करनेकी विधा या कला । -**छद्म**-पु० ओष्ठ, होंठ । -**छद्मपद्म**-औ० विवाफल; कुँदक ।

-**छत**-**छद्म**-पु० दे० 'दंत-क्षत' । -**जात**-पु० वह वक्ता जिसकी दाँत निकल आये हों; दाँत निकलनेका

मय । -**जाह**-पु० दाँतकी जड़ । -**ताल**-पु० ताल देनेका एक प्राचीन बाजा । -**दंष्ट्रा**-पु० दे० 'दंतद्वार' ।

-**द्वर्धन**-पु० लड़ाई-झगड़े आदिमें ओठ कड़कताते हुए दाँत पीसनेकी क्रिया । -**धावन**-पु० दाँत साफ करनेका काम, दंतमार्जन; दाँतौन; खैरका पेड़; करंजका पेड़;

नीलसिरीका पेड़ । -**धत्र**-पु० दाँतके बराबर पत्तोंवाला कानका एक आभूषण । -**धत्रक**-पु० कुंदका फूल ।

-**धवन**-**धावन**-पु० दाँत साफ करनेका काम; दाँतौन । -**धाविका**-औ० हाथीदाँतकी पुच्छिका । -**धात**-पु० दाँत गिरना । -**पाद**-पु० [हिं०] दंतपीडा, दाँतका दर्द । -**पाणि**-औ० हाथीदाँतकी (तलवारकी) मूठ ।

-**पासी**-औ० मसूड़ा । -**पुण्ड्र**-पु० एक रोग जिसमें मस्त्रोंमें ओथके कारण पीडा होती है । -**पुर**-कलिंग

राज्यकी राजधानी जहाँ मक्षदच नामके एक राजाने बुद्धदेवके एक दाँतकी स्थापना करके उसके ऊपर एक

विशाल मठिर् बनवाया था । -**पुष्प**-पु० निर्मली; कुंदका फूल । -**प्रक्षालन**-पु० दे० 'दंत-धवन' । -**फल**-पु० निर्मली; कैय । -**फला**-औ० पीपल । -**बीजक**-**बीज**-**बीजक**-पु० अनार । -**मध्य**-पु० हाथीके दाँतोंके बीचकी दूरी । -**मल**-पु०, -**रज**(स)-औ० दाँतकी पपड़ी । -**मांस**-पु० मसूड़ा । -**मूल**-पु० दाँतकी जड़; एक औषध; दाँतका एक रोग ।

-**मूषिका**-औ० दाँती वृक्ष । -**मूलीच**-वि० जिसका उच्चारण दंतमूलसे होता हो-जैसे तवर्ग । -**केलक**-पु० दाँतोंकी रंगाईसे जीविका चलानेवाला । -**बक**-पु० दाँतके ऊपरका इनामेल; मसूड़ा । -**बल**-पु० ओठ ।

-**बीजा**-औ० दाँत कटकटाना; एक प्रकारका बाजा । -**बेष्ट**-पु० दाँतका एक रोग; मसूड़ा; हाथीदाँतपर चढ़ाया जानेवाला छछा । -**बैद्वर्ध**-पु० दाँतका एक रोग; आधातसे दाँतका टूटना । -**व्यसन**-पु० दाँतका टूटना या क्षय । -**बहु**-पु० दाँत ठखानेका एक औजार ।

-**घाट**-पु० नौवू; कैय; कमरका; नारंगी; चुका; खटाई-

जिनके खानेसे दाँत गुठले हो जाते हैं । -**शार्करा**-औ० दाँतपर जमनेवाली पपड़ी । -**श्राण**-पु० दाँतोंपर लगाने-

का एक रंगीन मंत्रन, मिस्री । -**भूक**-पु० दाँतका दर्द । -**भोफ**-पु० मस्त्रोंकी वृजन । -**भिल्ल**-वि० दाँतोंमें

ओठका हुआ । -**हर्षक**-पु० जमीरी नौवू । -**हीन**-वि० बिना दाँतका, जिसके दाँत न हों ।

वंतक-पु० [सं०] दाँत; पर्वतका शिखर; पर्वतकी चोटीके पास आगेकी ओर निकला हुआ पथर; दीवारसे निकली

डुई खँटी ।

वृतांतर-पु० [सं०] दाँतोंके बीचका स्थान ।

वृताघात-पु० [सं०] दाँतों द्वारा किया गया आघात; नौवू ।

वृतावृत्ति-औ० [सं०] लड़ाई-झगड़ेमें एक-दूसरेकी दाँतसे काटना ।

वृतायुध-पु० [सं०] सूअर (जिसका एकमात्र आयुध उसका दाँत है) ।

वृतार-वि० बड़े दाँतोंवाला । पु० हाथी ।

वृतारा-वि० दे० 'वृतार' ।

वृतावृद्ध-पु० [सं०] मस्त्रोंमें होनेवाला फोड़ा ।

वृताल-पु० हाथी ।

वृतालय-पु० [सं०] मुख ।

वृतालि, **वृतावली**-औ० [सं०] दंतपिक ।

वृतालिका, **वृताली**-औ० [सं०] लगाम ।

वृतावल-पु० [सं०] हाथी ।

वृत्ति-पु० हाथी ।

वृत्तिका-औ० [सं०] जमालगोटा ।

वृत्तिवा-औ० छोटे-छोटे दाँत ।

वृत्ती-औ० [सं०] परंठकी जातिका एक वृक्ष ।

वृत्ती(तिन्)-वि० [सं०] दाँतवाला पु० हाथी; गणेश; पहाड़ । -**(ति)** जा-औ० दे० 'दंतिका' । -**मव**-पु० हाथीके मस्त्रकसे चूनेवाला मद । -**बक**-पु० गणेश ।

द्वंद्व-वि० [सं०] जिसके दाँत आगेकी ओर निकले हों; कण-खावक; टँका हुआ; कपर उठा हुआ; बदनुमा, भरा ।

-**छद्म**-पु० जमीरी नौवू ।

द्वंद्वरक-वि० [सं०] जिसके दाँत निकले हों ।

द्वंद्वरित-वि० [सं०] दे० 'द्वंद्वर'; लिप्त, ढका हुआ ।

द्वंद्वरिवा-औ० बच्चोंके जेजे-नथे दाँत ।

द्वंद्वल-वि० [सं०] दाँतोंवाला ।

द्वंद्वला-वि० जिसके दाँत बड़े या आगेकी ओर निकले हों ।

द्वंद्वल्लेख-पु० [सं०] दाँतोंका निकलना ।

द्वंद्वल्लेखिक, **द्वंद्वल्लेखी**(लिन्)-पु० [सं०] एक प्रकारके साधु जो धान आदिकी यों ही चपाकर खा जाते हैं ।

द्वंद्वल्लेख-वि० [सं०] दाँत और ओठसे उच्चारित होनेवाला (वर्ण-जैसे 'व') ।

द्वल्य-वि० [सं०] जिसका उच्चारणस्थान दंत हो-जैसे तवर्ग; दाँतोंके लिए शितकर ।

द्वल्य-पु० बंद, झगडा, उपद्रव । औ० गरमी ।

द्वल्य-वि० दमन करनेवाला । [औ० 'द्वंद्वनी' ।

द्वल्य-पु० [सं०] दाँत ।

वृद्धशब्द-पु० [सं०] सर्पः कीटाः एक राक्षसः सर्पैस्ते पूर्ण एक नरक । वि० काटनेवाला; विषैला; हानिकर ।

वृद्धाश्व-पु० [फा०] दाँत । -स्त्राज्ञ-पु० दाँत बनाने-वाला ।

वृद्धावार्ता-अ० कि० गरमी माहस होना; गरम चीजके पास रहनेसे गरम होना । पु० [फा०] आरा, कंभी आदिका दाँत । - (मे)हार-वि० जिसमें ददाने हो ।

वृद्धाक्ष-पु० छाला, फफोला ।

वृद्धी-वि० झगडाह, उपद्रवी ।

वृद्धति-पु० दे० 'दपती' ।

वृद्धती-पु० [न०] पति-पत्नी; स्त्री-पुरुष ।

वृद्धा-स्त्री-वि० विधु, विजली ।

वृद्ध-पु० [सं०] पाखंड, आडंबर; उकोसला; अभिमान; कपट; शाल्य; इद्रका बज; शिव ।

वृद्ध-वि०, पु० [सं०] पाखंडी; बंचक; कपटी ।

वृद्धन-पु० [सं०] डोंग करना, पाखंड करना ।

वृद्धान-पु० पाखंड; ममद-ही जो कहत है चलो जानकी छंकि सबै दमान'-सर ।

वृद्धी (विभू)-वि० [सं०] दम करनेवाला, पाखंडी; अभिमान ।

वृद्धोक्ति-पु० [सं०] इद्रका बज; हारा ।

वृद्धरी-स्त्री-अनाज निकालनेके लिए सुले डल्लोंको बैन्गोंसे रीजवाना ।

वृद्धारि-स्त्री-दवाधि ।

वृद्ध-पु० [सं०] दाँत काटने या डक मारनेकी क्रिया; दाँत काटनेका धाव; विषैले जलके काटने या डक मारनेका धाव; नुमनेवाली बात; एक प्रकारकी बड़ी मक्खी जो बहुत तेज काटती है, डॉस, बनमक्षिका; दाँत; कवच, बर्म; (रत्नका) दोष; तीक्षापन; खरीरकी सपि; देव; आक्षेप । -नाशिनी-स्त्री-एक तरहका कीड़ा । -भीरु-भीरु-पु० भैंसा । -मूक-पु० सखजनका पेड़ । -बध्व-पु० एक तरहका बगला, कंक ।

वृद्ध-वि० [सं०] काटनेवाला; डक मारनेवाला । पु० कुप्रा; डॉस; मच्छर; भिख ।

वृद्धन-पु० [सं०] काटने या डक मारनेकी क्रिया; कवच ।

वृद्धान-सं० कि० दाँतसे काटना या डक मारना ।

वृद्धिल-वि० [सं०] जो डँसा गया हो, जिने किसीने दाँतसे काट लिया हो; जिसने कवच धारण किया हो; सज्ज, बसित; रक्षित ।

वृद्धी-स्त्री-छोटा हॉम, छोटी बनमक्षिका ।

वृद्धी (विभू)-पु० [सं०] दे० 'दलक'; बैरी; लगनेवाली बात कहनेवाला ।

वृद्धक-वि० [सं०] जिसका डँसने या डक मारनेका स्वभाव हो ।

वृद्धेर-वि० [सं०] काटने या डक मारनेवाला; हानिकारक ।

वृद्ध-स्त्री [सं०] मोटा और बड़ा दाँत, दाढ़, चौमर ।

-कण्ठाक्ष-वि० भयंकर दाँतवाला । -वृद्ध-पु० सखरका दाँत । -नखशिख-पु० वह जंतु जिसके मखों और दाँतों में विष हो । -विष-पु० एक प्रकारका साँप । -विषा-स्त्री-एक प्रकारकी मक्खी ।

वृद्धाश्व-पु० [सं०] शूकर, बराह ।

वृद्धाक्ष-वि० [सं०] दाढ़ीवाला ।

वृद्धाश्व-पु० [सं०] शूकर, बराह ।

वृद्धि-वि० [सं०] दाढ़ीवाला ।

वृद्धि-स्त्री-स्त्री [सं०] दे० 'वृद्धा' ।

वृद्धी (विभू)-पु० [सं०] शूकर; एक प्रकारका साँप; बड़े दाँतवाला जंतु; एक हिल जंतु । वि० बड़े दाँतवाला; दाँतोंसे धाव करनेवाला; माँसाहारी ।

वृद्ध-पु० दे० 'वृद्ध' ।

वृ-वि० [सं०] (समासात्म्ये) देनेवाला; उत्पन्न करनेवाला । पु० दान; पर्वत; कलत्र; काटकर अलग करना ।

वृद्ध-पु० दे० 'दौल' ।

वृद्धारा-वि० दे० 'वृद्ध-वारा' ।

वृद्ध-पु० दैव, भाग्य, विधि, विपत्ता । -वृद्ध-वि० (दैव द्वारा जलाया हुआ), अवागा, चौतान (जिसे हारा; माछी-के रूपमें प्रयुक्त-‘मवेरे ही दईजारी मशीनोंको देखने निकली’-अमर०) । -वृद्ध-अ० हा दैव ! हा दैव !, ईश्वरकी दुहाई । -मारा-वि० दैवका मारा हुआ, हतभाग्य ।

वृद्ध-पु० [सं०] जल ।

वृद्धन-पु० दक्खिन; दक्षिणी भारत ।

वृद्धनी-वि० दक्कनका । स्त्री उर्दूका दक्षिण (हिंदराबाद)में प्रचलित रूप ।

वृद्धार्थ-पु० [सं०] दे० 'द्वार्थगल' ।

वृद्धिमान-पु० एक रोमन सम्राट जो १४० ई० में सिद्धा-सनाहट हुआ था ।

वृद्धिमान-स्त्री-वि० पुराना, कदोमी; पुराने व्यापारका; पुरानापथी ।

वृद्धिमान-पु० [अ०] सूक्ष्म वस्तु, बहुत छोटी चीज, युक्त; युक्ति, कमर, उपाय; क्षण । सु०-उठता न रखना, -बाकी न छोड़ना-कोई कमर न छोड़ना ।

वृद्धिमान-पु० [अ०] आटा पीसनेवाला; फटनेवाला ।

वृद्धिमान-पु० सूयेंकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर दाहिने हाथकी ओर पड़नेवाली दिशा; भारतवर्षका दक्षिणी भाग, दक्षिण देश । अ० दक्षिण दिशामें ।

वृद्धिमान-वि० दक्खिनकी ओर पड़नेवाला; दक्षिण दिशामें स्थित; दक्षिण देशका; जिसकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें हुई हो; दक्षिण देश-सम्बंधी । पु० दक्षिण देशका निवासी, दाक्षिणात्य । स्त्री-दक्षिण देशकी भावा ।

वृद्ध-वि० [सं०] जिसमें किसी विषयको तत्काल समझने तथा कोई कार्य शीघ्र करनेकी शक्ति हो; कुशल, विपुल, सिद्धहस्त, माहिर, जतु; ईमानदार; दाहिना, दक्षिण । [स्त्री 'दक्षा'] । पु० एक प्रजापति जो ब्रह्माके दाहिने अंगुष्ठसे उत्पन्न हुए थे; सुरमा; दक्षसंहिताके निर्माता मुनि; नंदी; अग्नि; शिव; वह नायक जिसके कई नायिकाएँ हों; उशीनरके एक पुत्र; विष्णु; बौद्ध; शक्ति, योग्यता; पुरा स्वभाव । -कम्पा-स्त्री-दक्ष प्रजापतिकी कन्या, सती; दुर्गा; अग्निनी आदि नक्षत्र । -कमुष्वसी (सिन्धु)-पु० शिव; शिवके अनुचर । -जा-स्त्री-दे० 'दक्षकन्या' । -पति-पु० शिव; चंद्रमा । -तनया-स्त्री-दे०

‘दक्ष-कन्या’ । -साधारण-पुं० नवें मनु । -सुत-पुं० देवता । -सुता-स्त्री० नखन; सती ।

दक्षार्ध-पुं० [सं०] मुनीका अर्ध ।

दक्षार-स्त्री० [सं०] ध्वजी ।

दक्षायव-पुं० [सं०] गवक; गृध्र ।

दक्षिण-पुं० [सं०] उत्तरके सामनेकी दिशा; दक्खिन; विष्णु; शिव; एक तंत्रोक्त आचार; नायकका एक भेद; दाहिना हाथ; दाहिना पार्श्व; रमका दाहिना घोडा; दकन । वि० दाहिना; दक्षिण दिशामें स्थित; दूसरेकी इच्छाके अनुसार कार्य करनेवाला; अनुकूल; ईमानदार; सच्चा; अपनी सभी नायिकाओंमें तुल्य अनुग्राह रखनेवाला (नायक); पट्ट । अ० दक्खिनकी ओर, दक्षिण दिशामें । -कालिका-स्त्री० वह काली जिनका दाहिना पैर शिवके वक्षस्थलपर रहता है; दुर्गाका वह रूप जिसे तांत्रिक पूजते हैं । -गोल-पुं० विपुल रंजनाके दक्षिणमें स्थित तुला आदि ६ राशियोंका समूह । -पवन-पुं० दक्षिण वा मलयगिरिकी ओरसे आनेवाली हवा । -प्रवण-वि० जो दक्षिणकी ओर ढाढ़ाओं हो । -मार्ग-पुं० एक तंत्रोक्त आचार; पितृयान । -रश्म-पुं० सारथि ।

दक्षिणा-स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा; यह, दानकर्म आदिके अन्तमें ब्राह्मणों और पुरोहितोंको दिया जानेवाला इन्ध । वि० स्त्री० (वह नायिका) जो दूसरे नायकमें अनुरक्त रहती हुई भी पूर्व नायकके प्रति प्रेम और सद्भाव रखती है । -काल-पुं० दक्षिणा पानेका समय । -पथ-पुं० भारतका दक्षिण भाग ।

दक्षिणानि-स्त्री० [सं०] गार्हपत्य अग्निके दक्षिण रखी जानेवाली अग्नि ।

दक्षिणाग्र-वि० [मं०] जिसका अग्रभाग दक्षिणकी ओर हो ।

दक्षिणाचल-पुं० [सं०] मलयगिरि ।

दक्षिणाचार-पुं० [सं०] शुद्ध आचरण; तन्में एक आचार जिनमें अपनेको शिव मानकर पंचतत्त्वों द्वारा शिवाके पूजनका विधान है ।

दक्षिणाचारी(रिन्)-वि०, पुं० [सं०] शुद्ध आचरणवाला; शक्तिपूजक ।

दक्षिणापरा-स्त्री० [सं०] नैर्ऋत्य कोण ।

दक्षिणाभिमुख-वि० [सं०] जिसका मुख दक्षिणकी ओर हो; दक्षिण दिशाकी ओर बहनेवाला ।

दक्षिणामूर्ति-पुं० [सं०] वह शिव जिनकी मूर्ति अनुकूल हो ।

दक्षिणायन-पुं० [सं०] सूर्यका विपुल रंजनाकी ओरसे मकर रेखाकी ओर गमन; ६ महीनोंका समय जिसमें सूर्य विपुल रेखासे दक्षिणकी ओर रहता है । वि० दक्षिणकी ओर गया हुआ ।

दक्षिणावर्त-पुं० [सं०] वह शंख जिसमें हवा निकलनेका मार्ग दाहिनी ओर हो । वि० दक्षिण दिशामें स्थित; जिसका घुमाव दाहिनी ओर हो ।

दक्षिणावह-पुं० [सं०] दे० ‘दक्षिणपवन’ ।

दक्षिणाशा-स्त्री० [सं०] दक्षिण दिशा । -पति-पुं० वध; मंगल ग्रह ।

दक्षिणी-पुं० दक्षिण देशका निवासी । वि० दक्षिण देशका; दक्षिण देश-संबंधी ।

दक्षिणीय-वि० [सं०] जो दक्षिणा पाने योग्य हो ।

दक्षिण्य-वि० [सं०] दे० ‘दक्षिणीय’ ।

दक्षिण्य-पुं० दे० ‘दक्षिण’ ।

दक्षिणी-वि० दे० ‘दक्षिणी’ ।

दक्षन-पुं० दे० ‘दकन’ ।

दक्षमा-पुं० वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुँहें पक्षियोंके खा जानेके लिए रख आते हैं ।

दक्षक-पुं० [अ०] प्रवेश, घुसना; कब्जा, अधिकार, अस्ति-यार । -दिहानी-स्त्री० कानूनी ढंगसे दखल दिखाना ।

-नामा-पुं० वह सरकारी आशापत्र जिसमें किसीको किसी वस्तुको खायच करनेकी आशा दी गयी हो, दखल पानेका परवाना । सु० -देना-बीचमें बोलना, हस्तक्षेप करना ।

दक्षिणहार्-वि० दक्षिणका, दक्षिणी ।

दक्षीर-वि० [अ०] दखल देनेवाला; काबिज, जिसके अधिकारमें हो । -कार-पुं० जमीनपर स्थायी कब्जेका अधिकारी कार्तकार; कारबारमें दखल देनेवाला; सहाय-कार । -कारी-स्त्री० दखीलकारका पद या हक; दखील-कारके अधिकारीकी जमीन; कब्जा ।

दगा-पुं० कड़ाईका कंका ।

दगादगा-वि० चमकता हुआ; आलोकमय । पुं० एक तरहकी छोटी कंबीज; [अ०] सौक, हर, भय; जदेश, सदेह ।

दगादगाना-अ० कि० चमकना; रौशन होना । स० कि० चमकना; रौशन करना ।

दगादगाइट-स्त्री० चमक-चमक; तमतमाइट ।

दगधना-अ० कि० जलना; पालित होना । स० कि० जलाना; कट देना; ठगना ।

दगना-अ० कि० (बंदूक, तोप आदिका) छूटना या चलाया जाना, दागा जाना; जलना; चिड़बुक होना; प्रसिद्ध होना । * स० कि० दे० ‘दागना’ ।

दगरा-पुं० देर, बिलंब; मार्ग, बगर ।

दगल-पुं० दे० ‘दगल’ ।

दगाळ-पुं० [अ०] सक्ना, घटना; मकर, फरेब ।

दगख-पुं० एक लंबा ढीला पहनावा, लबादा ।

दगखी-स्त्री० दे० ‘दगल’ ।

दगबाना-स० कि० दागनेका काम कराना, दूसरेको दागनेमें लगाना ।

दगहर-वि० दागा हुआ, दागदार । पुं० मृतक संस्कार करनेवाला ।

दगा-स्त्री० [फा०] घोसा, फरेब, छल । -बार-वि० फरेब करनेवाला, भोलेबाज, छलिया । -दारी-स्त्री० दगा करनेका काम, घोसा, छल । -बाज़-वि० घोसा देनेवाला, कपटी । -बाज़ी-स्त्री० भोलेबाजी, फरेब, छल ।

दगाती-वि० दगावाना-‘छल बल करि नहिं काहू पकरत दौरि दगाती’-मन० ।

दगावर्छ-पुं० [सं०] निर्जल भूमिके कपरी लक्ष्मणोंको देखकर दृष्टीके नीचर जलकी स्थिति आदिका पता लगानेकी विधा ।

दगी-वि० दागदार; जिसे दाग लगा हो; खोबा; दगाबान,

छली, कपटी ।

दग्ध-वि० [सं०] जला वा जलावा हुआ, मसीकृत; पीबित, संतप्त; दूर्त; अशुभ; नीरस; तुच्छ, निष्ठुर । पु० एक वास ।
—**काक-पु०** डोमकौआ ।—**जटर-पु०** खुलापेट ।—**बोमि-वि०** जिसका उद्गमस्थान नष्ट हो गया हो ।—**दग्ध-पु०** नित्रय गंधर्व ।—**रुह-पु०** सिलकका पेड़ ।—**रुहा-खी०** कुहल नामक वृक्ष ।—**वर्णक-पु०** एक वास ।—**व्रण-पु०** जलनेका घाव ।

दग्धव्य-वि० [सं०] जलाने योग्य ।

दग्धा-खी० [सं०] वह द्रव्य जिसमें सर्व बराबर सिरपर रहता है; कुछ विशेष स्थितियाँ जो अशुभ मानी जाती हैं; दग्धवहा वृक्ष ।

दग्धा(गृह)-वि०, पु० [सं०] जलानेवाला ।

दग्धाक्षर-पु० [सं०] कुछ अक्षर—झ, ङ, र, म और व—जिनका छंदके आरंभमें प्रयोग करना निषिद्ध है ।

दग्धिका-खी० [सं०] जला हुआ मात; जला हुआ अन्न ।

दग्धितम्-वि० दे० 'दग्ध' ।

दग्धैष्टका-खी० [सं०] क्षात्री ।

दघ्न-वि० [सं०] 'तक' पड़ूँचनेवाला (समासांतमें—जानुदघ्न) ।

दघ्नक-खी० दघ्नकनेकी क्रिया; दघ्नका; भक्षा; दघाव ।

दघ्नकना-अ० कि० दघना; नीचे-ऊपर होना; झटका खाना ।

स० कि० भक्षा लगाना; दघाना ।

दघ्नका-पु० सवारिके नीचे-ऊपर होनेसे लगनेवाला भक्षा; ठोकर ।

दघना-अ० कि० पघना, गिरना ।

दघ्न-पु० दे० 'दघ्न' ।—**कुमारी-सुता-खी०** दे० 'दघ्नकन्या' ।

दघ्नना, दघ्नितना-खी० दक्षिणा, ब्राह्मणोंको दिया जानेवाला दान; भेंट ।

दघ्नित-वि०, पु०, अ० दे० 'दक्षिण' ।

दघ्नितता-खी० दक्षिणता, अपनी सभी नायिकाओंसे समान प्रेम रखनेका गुण ।

दघ्नाळ-पु० [अ०] एक आँखका काना आदमी; दग्धावाज आदमी ।

दघ्नना-अ० कि० दग्ध होना ।

दघना-अ० कि० जलना ।

दग्धियल-वि० दादीवाला ।

दत्तवन-खी० दातन ।

दत्तारा-वि० बड़े दाँतोंवाला (हाथी) ।

दत्तिया-खी० दाँतका अल्प, छोटा दाँत; एक रिवाजतः एक पहाड़ी तीतर ।

दत्तजन, दत्तवन, दत्तन, दत्तौन-खी० दे० 'दातन' ।

दत्त-पु० [सं०] दत्तात्रेय; सातवें बासुदेव (जै०); बंगाली कायस्थोंका एक उपाधि; दत्तक (पुत्र); दान । वि० दिया हुआ; दान किया हुआ; सुरक्षित ।—**दत्त-वि०** जिसका मन किसी कार्यमें अच्छी तरह लगा हो, एकाग्र ।—**दधि-वि०** जिसकी घटि किसी एक वस्तुपर लगी हो, कुलक्षण ।—**मुक्क-खी०** वह कन्या जिसके छिपे मुक्क दिया गया हो ।—**हस्त-वि०** जिसे हाथका सहारा दिया गया हो ।

दत्तक-पु० [सं०] जो औरस पुत्र न होनेपर शास्त्र-विधिसे पुत्र बना लिया गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र, सुतबच्चा ।
दत्तात्मा(श्वश्रु)-पु० [सं०] वह जो माता-पिताके निधनके कारण अथवा उनके द्वारा त्यागे जानेपर स्वयं किसीके यहाँ जाकर उसका दत्तक पुत्र बने ।

दत्तात्रेय-पु० [सं०] अत्रि ऋषिके पुत्र जो विष्णुके चौबीस अवतारोंमेंसे एक अवतार माने जाते हैं ।

दत्ताग्रदामिक-पु० [सं०] दान की हुई वस्तुको वापस लेनेका यत्न ।

दत्तावधान-वि० [सं०] सावधान, सुसमाहित ।

दत्ति-खी० [सं०] दान ।

दत्तेश-पु० [सं०] इंद्र ।

दत्तोपनिषद्-खी० [सं०] एक उपनिषद् ।

दत्तोक्ति-पु० [सं०] पुलस्त्य ऋषि ।

दत्त्रिम-वि० [सं०] दानसे प्राप्त । पु० बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक, दत्तक पुत्र (या दास) ।

दघ्न-पु० [सं०] दान देना; दान ।

दघ्ना-पु० दे० 'दादा' ।

दधिऔरा-पु० दे० 'दधिहाल' ।

दधिता(सु)-वि०, पु० [सं०] देनेवाला ।

दधिहाल-पु० दे० 'दधिहाल' ।

दधिया ससुर-पु० ससुरका पिता ।

दधिया सास-खी० ससुरकी माता, दधिया ससुरकी पत्नी, सासकी सास ।

दधिहाल-पु० दादाका कुल या घर ।

दघोदा-पु० दे० 'दघोरा' ।

दघोरा-पु० चक्का जो मच्छर आदिके काटनेकी जगहकी खुजलानेसे अथवा जुधपिटी आदिके कारण शरीरपर पड़ जाता है ।

दधु-पु० [सं०] एक प्रकारका कुछ, दाद नामका रोग; कच्छप ।—**झ-पु०** चक्रमर्द, चक्रवर्ध ।

दधुक-पु० [सं०] दे० 'दधु' ।

दधुण, दध्ण-वि० [सं०] दधु रोगमें प्रसृत ।

दध्-खी० [सं०] दे० दधु ।

दध-वि० [सं०] देनेवाला; धारण करनेवाला । * पु० दे० 'दधि' ।—**सार-पु०** दे० 'दधिसार' ।

दधना-अ० कि० दे० 'दघना' ।

दधि-पु० [सं०] दही; घर; दल । वि० धारण करनेवाला ।

—**काँदो-पु०** [हि०] कृष्णजन्माष्टमीके बाद पवनेवाला एक उत्सव जिसमें लोग हल्दी मिला हुआ दही एक-दूसरेपर फेंकते हैं (कृष्णजन्मके उपचक्ष्यमें गोकुलमें यह उत्सव मनाया गया था और तभीमें चला आ रहा है) ।

—**कूचिका-खी०** दही और उबाले हुए दूधके योगसे बना हुआ एक पेय; छेना ।—**चार-पु०** मथानी ।

—**ज-जात-पु०** ममखन ।—**धानी-खी०** दधिपात्र ।

—**धेनु-खी०** गधकेमें भरे दहीपर गोत्वका आरोप करके विशेष प्रकारके दानके लिए कल्पित की गयी गौ (पु०) ।

—**नामा(मन्त्र)-पु०** कैयका पेड़ ।—**पुष्पिका-खी०** श्वेत अपराजिता ।—**पुष्पी-खी०** सेम ।—**पूष-पु०**

एक पकवान जो दहीमें फेंटे हुए शालिचूर्णकी भीमसे तलकर

बनाया जाता है। -फल-पुं कैष। -ईद, -स्नेह-पुं दहीसे हुआ हुआ पानी। -मंशोद-पुं दधि-समुद्र। -मेषन-पुं दही मबना। -मुख, -बक्त्र-पुं रामकी धानी सेनाका एक सेनापति; एक तरहका तीप; एक नाग। -हारि-पुं दहीका पानी। -सर-पुं दे० 'दधिमं'। -सोण-पुं नानर। -संभव-पुं नन् नीत। -सागर-पुं दहीका समुद्र (पुं)। -सार-पुं दहीसे निकाला हुआ मक्खन। -स्वेद-पुं छछ।
 दधि-पुं समुद्र। -अ, -जात-पुं चंद्रमा। -सुत-पुं कमल; चंद्रमा; मोती; विष; हलाहल; जलधर नामक देव। -सुत-पुं पंक्ति, विह (†)। -सुता-स्त्री तीप, श्रुति।
 दधित्थ-पुं [सं०] कथित्थ, कैष। -रस-पुं लोबान।
 दधित्थाव्य-पुं [सं०] लोबान।
 दधिधाव्य-पुं [सं०] धी।
 दधीच-पुं [सं०] एक प्रसिद्ध कवि जिनकी हड्डिसे ईंद्रका ब्रज बना था (एक पुराण हर्षे अथर्षे कवि तथा कर्म कविकी कन्या शांतिका पुत्र बतलाता है और दूसरा श्रुकाचार्यका)।
 दधीचरिध-स्त्री [सं०] दे० 'दधीचस्थि'।
 दधीधि-पुं [सं०] दे० 'दधीच'।
 दधीच्यरिध-स्त्री [सं०] ब्रज; होरा।
 दध्ज-पुं [सं०] चौदह यमोंमेंसे एक।
 दधानी-स्त्री [सं०] सुदर्शन, मदनमल्ल।
 दधुसर, दधुसरक, दधुसरग-पुं [सं०] दे० 'दधिमंड'।
 दनदना-सं क्रि० 'दन-दन' शब्द करना; सुशी मनाना।
 दनाद्व-अ० 'दन-दन'की आवाजके साथ; लगातार।
 दनु-स्त्री [सं०] कवचप शक्तिकी एक पत्नी जिसके पुत्र दानव कहलाये। -अ-पुं दानव, असुर। -दुक्की-स्त्री दुग्ग। -द्विद्व(ष)-पुं देवता। -शाय-पुं हिरण्यकशिपु। -पति-पुं रावण। -पुत्र, -संभव, -सुत-पुं दे० 'दनुज'।
 दनुजारि-पुं [सं०] देवता, सुर।
 दनुजैद-पुं [सं०] रावण; हिरण्यकशिपु।
 दनुजेश-पुं [सं०] दे० 'दनुजैद'।
 दनु-स्त्री-स्त्री दे० 'दनु'।
 दध-पुं 'दध'की आवाज जो तीप आदिके छूटनेसे होती है।
 दधट-स्त्री डोंटे-उपटनेकी क्रिया, पुक्की।
 दधटना-सं क्रि० पुक्कना, डोंटना।
 दधु-पुं दुर्प, अकार।
 दध्व-पुं दुर्प, घमंड।
 दध्नी-स्त्री दे० 'दध्नी'।
 दधन-पुं [अ०] गाढ़ना; किन्नी वस्तु या मुरदेकी जमीनमें गाढ़नेका काम।
 दधनाना-सं क्रि० मुरदेकी जमीनमें गाढ़ना।
 दधा-स्त्री बार, मर्तवा; किन्नी कानूनकी किताबका वह अंश जिसमें एक नियमका उल्लेख हो, कानूनका एक

नियम, धारा। -वार-पुं चौकीदारकी मुखिया। -वारी-स्त्री दफादारका काम या पद। मु०-छमाका-कानूनकी किसी खास दफाके अनुसार अभियुक्त ठहराया जाना।
 दध्ना-पुं [अ०] दूर करना, हटाना, दकेलना।
 दध्नीना-पुं [अ०] धूम्रमें गाढ़ा हुआ धन, दफन किया हुआ सजाना।
 दध्त्तर-पुं [अ०] हिसाब-किताबके कागज, बही, रजिस्टर; वह स्थान जहाँ किसी संस्था या कंपनी आदिके कर्मचारी लिखा-पढ़ी, लेन-देन आदिका कार्य करते हैं; किसी अधिकारीका निजी कमरा जहाँ वह अपने कार्यकी देखरेख करता हो; वह स्थान जहाँ किसी बड़े महकमेकी किसी शाखाका लिखा-पढ़ी आदिका कार्य होता हो, आफिस, कार्यालय; बड़ा विद्वान, लकी कहानी।
 दध्त्तरी-पुं वह जो दध्त्तरमें जिल्दबंदी, कल खींचने आदिका काम करता हो; जिल्दबंदी करनेवाला; दध्त्तर दुस्त करनेवाला। -ज्जाना-पुं दध्त्तरीके काम करनेका स्थान।
 दध्नी-स्त्री [फा०] कई कामोंकी आपसमें बिपकाकर बनाया हुआ मोटा कागज जो जिल्द बाँधनेके काम आता है, कुट।
 दध्नीव-स्त्री दे० 'दध्नी'।
 दध्ग-वि० जो किसीसे दधता न हो; जिसका दूसरोंपर प्रभाव हो, प्रभावशाली; रौशनी।
 दध-स्त्री दाब, दबाव, रोक, शासन-'कहा करी कछु बनि नहि आवै अति गुरुजनकी दध री'-धन०।
 दधक-स्त्री दधकनेकी क्रिया, सिमटना; धातुकी पीटकर लंबा करनेकी क्रिया। -शर-पुं धातुकी पीटकर लंबा करनेवाला।
 दधकना-अ० क्रि० मयके मारे सिमटकर लंब जगह या आशमें छिपना; दधका रह जाना। सं० क्रि० पीटकर लंबा करना; * डोंटना, दधटना।
 दधकनी-स्त्री आतीका वह हिस्सा जिससे दधा भीतर जाती है।
 दधकवाना-सं क्रि० दधकानेका काम कराना, दधकानेमें दूसरेकी प्रवृत्त करना।
 दधका-पुं धातुकी पीटकर लंबा किया तार।
 दधकाना-सं क्रि० छिपाना; ओठमें करना, डोंटना।
 दधकी-स्त्री दधकनेकी क्रिया।
 दधकैया-पुं दे० 'दधकनार'।
 दधद्धा-पुं आतक; रोष-दाव।
 दधवा-अ० क्रि० भार या दावके नीचे पड़ना; ऐसी स्थितिमें होना जिसमें किसी और विशेष भार पड़े; प्रबल शत्रु द्वारा आक्रांत होकर पीछे हटना; किसीसे प्रसन्न या अधिक प्रभावित होकर उसके अनुकूल आचरण करना, किसीसे बरकर उसका विरोध न करनेके लिए बाध्य होना; पीका पड़ना; किसी बात या मामलेका गुप्त रह जाना अथवा आगे न बढ़ना; जोर न पकड़ना, शांत रहना; ठंडा पड़ना; किसी वस्तुका दूसरेके हाथमें इस प्रकार पड़ जाना कि वह फिर मिल न सके; (किसी अभिप्रायके कारण) अधिक लाचार

हो जाना; सैप खाना; संकुचित होना ।
 द्वयचाना-सं कि० दवानेकी क्रियामें दूसरेको लगाना,
 दूसरेको दवानेमें प्रयुक्त करना ।
 दवा-वि० मारसे आक्रांत; किसी ओरको झुका हुआ ।
 [जी० 'दनी' ।] - (बी)आवाज-खी० भीमा स्वर ।
 मु०-(बी)आवाजसे कहना-उठते-उठते अस्पष्ट शब्दोंमें
 कहना । - (बी)दवावे रहवा-नुपचाप पका रहना ।
 -पर्व-इस प्रकार कि किसीकी पैरकी भाइट माथस न
 हो, आहिस्ते, चुपके ।
 द्वयचाना-सं कि० मार वा दवावके नीचे जाना; मार वा
 जोर पहुँचाना; थकान वा पीडा दूर करनेके लिए किसी
 अंगपर जोर पहुँचाना; दमन करना; सामने टिकने न
 देना, वलपूर्वक पीछे हटाना; किसीकी इतना प्रस वा
 प्रभावित करना कि वह विरुद्ध आचरण न कर सके, किसी-
 पर रोष जमाकर उसे स्वच्छंद आचरण न करने देना;
 निजी गुणों द्वारा किसीको मार करना; किसी बात वा
 मामलेकी आगे न बढ़ने देना, ज्योंका त्यों रहने देना;
 भक्कने न देना, शांत करना, जोर न पकड़ने देना; किसी-
 की कोई वस्तु हथपना; लजाव बना देना, विवश करना;
 दफन करना; छिपाना ।
 दवाच-पु० दवानेकी क्रिया वा भाव; चोंप, दाब । मु०-
 डाकना-प्रभावित करना ।
 दबीज-वि० [का०] मोटा, गफ; ठस, मजबूत ।
 दबीर-पु० [अ०] काश्चि, मुंशी, मुहूर्तर, डक ।
 दबीक-वि० जिसपर दबाव पड़ा हो; दम्ब, दबनेवाला ।
 दबीचाना-सं कि० झटकर दबा बैठना, धर दवाना;
 छिपाना ।
 दबीरना-सं कि० वलपूर्वक पीछे हटा देना; दवाना ।
 दबीनी-खी० बरतनीपर डूल-पत्ती आदि उभारनेका
 कस्तेरीका एक औजार ।
 दबा-वि० [सं०] स्वल्प, धीका; सूक्ष्म, कृश, तनु । पु०
 समुद्र ।
 दमकना-ज० कि० चमकना ।
 दम-पु० [सं०] दंड, दमन; बाँझियोंको उनके विषयोंसे
 निवृत्त करना, बाझ वृत्तियोंका निग्रह; कुकर्मोंसे मनको
 हटाना; कर्म, नीचता; दमयंत्रीका एक भार; विष्णु ।
 -कर्ता (दु०)-पु० स्वामी, शासक । -चोप-पु० शिष्ट-
 पात्रका पिता । -सारीरी (रिनु)-वि० शरीरकी अपने
 वशमें रखनेवाला । -खसा (स)-खी० दमयंत्री ।
 दम-पु० [का०] दबाव, सोंस; पक, लहजा, क्षण; जान,
 जिदगी; ताकत, जोर; हुक्मे आदिका कड़ा; धोखा, फरेब;
 पानीका घँट; तलवारकी भार; नेनेकी नोक; समय, वक्त;
 कुछ कभी साध वस्तुकी पकनेके लिए पात्रका मुँह बंद
 करके भीनी औचपर रखनेकी क्रिया । -आख-पु० आख-
 की मसालेदार तरकारी जिसमें आख खड़े रहते हैं । -कल
 -पु० यक वा अधिक नलोंवाला यंत्र-विशेष जिसमें मरा
 हुआ तरल पदार्थ विशेषतः पानी हवाके बलसे उक्त नलों
 द्वारा किसी ओर झोंकिते फँका जा सके; उक गंगाका आग
 हुआका प्रसिद्ध यंत्र । -कका-पु० दमकनेके नमूनेपर
 बना हुआ महफिल आदिमें गुलाबजल छिक्नेका

यक यंत्र; दमचूहा । -झम-पु० शक्ति और धृष्टता ।
 -चूहा-पु० मोहका एक प्रकारका चूहा जिसमें
 कोयला जलता है । -झनी-खी० चुप रहना । -कासा-
 पु० मिथ्या आभासन, झूठी सात्वता । -दर-वि० दह;
 जिसमें जीव शक्ति अधिक हो; तेज । -दिलासा-पु०
 कोरी आशा; फुसलावा । -पट्टी-खी०, -मुत्ता-पु०
 हाँसापट्टी । -पुल्ल-पु० मोक्ष वस्तुका भापसे पकना;
 पकनेमें थोड़ी-सी कसर रह जानेके कारण बरतनका मुँह
 बंदकर भीनी औचपर पकायी गयी भोज्य वस्तु । -बाझ-
 वि० दम देनेवाला, झूठा आभासन देनेवाला; फरेबी ।
 -बाझी-खी० दम वा झूठा आभासन देनेका काम;
 धोखा; फरेब । -साझ-पु० गाते समय गवैयके साथ
 घुम भरनेवाला । मु०-अटकना-बासका अवसर
 होना । -खीचना-मुत्ती माभना, कोई हरकत न
 करना; शासकी ऊपर चढ़ना । -घुटना-हवाकी कमीसे
 भास न ठिपा जाना, भास-प्रभास-क्रियाका बंद होना ।
 -घँटना-किसीकी शासक्रिया रोक देना, सोंस न लेने
 देना; गला दबाकर वा अन्य प्रकारमें किसीका सोंस लेना
 बंद करना । -झुरावा-शासकी इस प्रकार रोक लेना
 कि शरीर जटवट मालूम हो, सोंस रोककर अपनेकी मरा
 हुआसा जाहिर करना । -दूटना-सोंस रक जाना;
 दौड़ने आदिमें अधिक आत होकर हाँफने लगना ।
 -तोबना-आसक्तिवश किसीमें विवक्त होनेपर जान
 जानेका-सा अत्यधिक कह होना; मर जाना । -नाकमें
 (वा नाकमें दम) आना-बहुत परेशान होना ।
 -निकलना-प्राण निकलना, सूत होना । -पचना-
 किसी अमके कार्यमें इतना अभ्यस्त होना कि सोंस न
 झूले । -पर आ बनना-दे० 'जानपर आ बनना' ।
 -पर दम-दे० 'दम-ब-दम' । -फना होना-मर
 जाना; जी खूख जाना । -फूलना-अधिक होना होने
 पर दमेके कारण नौसाक मारोपन और वेगके साथ चलना ।
 -बंद होना-भय आदिके कारण थिक्कल चुप रह
 जाना । -ब-दम-प्रतिक्षण; बार-बार । -भरना-सोंस
 चढ़ना; हर वक्त किसीकी तारीफ करना; मुहम्मतका दावा
 करना; यरोसा करना; यकीन होना; -मारना-थका-
 बट दूर करनेके लिए थोड़ी देर रुक जाना, सुसाना ।
 -में दम रहना वा होना-जान रहना, प्राण रहना ।
 -लगावा-गँजा, चरस आदिका कड़ा लेना वा धुआँ
 खीचना । -लेना-दे० 'दम मारना' । -साधना-वास्त
 रोकनेका अभ्यास करना; भीन घ्राण करना, चुप लगाना;
 सोंस रोकना । -खूखना-जी सज होना, होश उठना;
 खीफ खाना । -सूलीपर होना-बहुत परेशान होना;
 जान खतरनेमें होना । -हॉटिपर आना-मरनेकी स्थिति-
 में होना; मरणासन्न होना ।
 दमक-खी० चमक, चाकचियप, प्रभा । पु० [सं०] दमन
 करनेवाला; दवानेवाला ।
 दमकना-ज० कि० चमकना, धोतित होना; सुख उठना ।
 दमकी-खी० पैसका भाठवाँ हिस्सा; एक पकी । मु०-
 के लीच-बहुत सस्ता ।
 दमय, दमय-पु० [सं०] आत्मनिर्वृत्त; दंड ।

दमदमा-पु० बैलोंमें बाळ आदि भरकर की गयी मोरचे-
बंदी; नमकारेकी आवाज; तोपोंकी आवाज; शोर-गुल;
दिखावा; शोहरत; धोखा; फरेब ।

दमन-पु० [सं०] दवाने या बलपूर्वक शांत करनेका काम;
आत्मनियंत्रण; दंड देना; बध; दंडियोंकी बाळ वृत्तियोंकी
निषेध; विष्णु; शिव; सारथि; सैनिक; योद्धा; दौना; कुंद;
चैत्र-शुक्ला द्वादशीकी मनाया जानेवाला एक उत्सव; एक
ऋषि जिनके आशीर्वादसे दमयंतीकी उत्पत्ति हुई थी । वि०
दमन करनेवाला; अनुशासित करनेवाला; पराजित करने-
वाला; शांत । -**हरील**-वि० जिसका स्वभाव दमन करने-
का हो, जो बराबर दमन किया करता हो ।

दमनक-पु० [सं०] एक छंद; दौना ।

दमना*-स० कि० दमन करना, दवाना; दूर करना ।
* पु० द्रोणलता, दौना ।

दमनी-**खी**० [सं०] अभिदमनी नामक ध्रुप; * सकोच;
लज्जा ।

दमनीय-वि० [सं०] दमन करने योग्य, जिसका दमन
किया जा सके; (ला०) तोड़ने योग्य ।

दमयंती-**खी**० [सं०] विदर्भ-नरेश भीमसेनकी कन्या और
राजा नलकी पत्नी ।

दमयिता(**ग**)-पु० [सं०] दमन करनेवाला; दंड देने-
वाला; विष्णु; शिव ।

दमरी*-**खी**० दे० 'दमरी' ।

दमा-पु० एक प्रसिद्ध श्वाभरी जिसमें साँस लेनेमें बहुत
कष्ट होता है और कफ रुक-रुककर बहुत जोर लगातेपर
निकलता है ।

दमाग-पु० [अ०] दे० 'दिमाग' ।

दमाद-पु० पुत्रीका पति, जामाता ।

दमादम-अ० 'दम-दम' शब्दके साथ; लगातार ।

दमानक*-**खी**० तोपोंकी बाँ ।

दमामा-पु० डका, नगाड़ा ।

दमारि*-**खी**० वनकी आग, दावानल ।

दमावती*-**खी**० दमयंती ।

दमाह-पु० बैलोंका एक रोग । † वि० जिसे दमा हुआ हो ।

दमित-वि० [सं०] जिसका दमन किया गया हो; विजित,
पराभूत ।

दमी-वि० दमवाला; दम लगानेवाला; गाँजा, चरम आदि-
का दम खींचनेवाला; दमा रोगसे ग्रस्त । **खी**० [फा०]
एक तरहका नैचा ।

दमी(**मिन्**)-वि० [सं०] दमनशील; जितेंद्रिय ।

दमुना(**नस**)-पु० [सं०] अधि ।

दमैश*-पु० दमन करनेवाला; मिटानेवाला; हरनेवाला ।

दमोदर-पु० दे० 'दामोदर' ।

दम्य-वि० [सं०] दे० 'दमनीय' । पु० वह बैल जो बोझ
लादने योग्य हो गया हो ।

दय-पु० [सं०] दया ।

दयनीय-वि० [सं०] दया करने योग्य ।

दया-**खी**० [सं०] किसी विपत्तिके प्रति हृदयमें उत्पन्न होने-
वाला सहानुभूतिका भाव जो उसका दुःख दूर करनेके
लिप प्रेरित करे, करुणा, अनुकंपा, रक्षय; दक्ष प्रजापतिकी

एक कन्या जिसका विवाह धर्मसे हुआ था । -**कर**-वि०
दयालु । पु० शिव । -**कूट**-**खी**० पु० कूटदेव । -**दृष्टि**-
खी० दयापूर्ण दृष्टि, करुणामयी दृष्टि । -**निधान**-पु०

दयाका भाँवर, वह व्यक्ति जिसमें कूट-कूटकर दया भरी
हो । -**निधि**-पु० परमेश्वर; दे० 'दयानिधान' । -**पात्र**-

वि० जो कृपा करनेके योग्य हो, जिसपर दया की जा
सके; जिसपर किसीकी दया हो । -**बीर**-पु० वह नायक

जिसके हृदयमें दया करनेका अधिक उत्साह हो; वह नायक
जिसके हृदयमें दया करते समय अधिक उत्साह भर आता

हो; बीर रसका एक भेद । -**शील**-वि० जिसका स्वभाव
दया करनेका हो, जो बहुत दया किया करता हो ।

-**सागर**-पु० दयालु व्यक्ति ।

दयार्जुन; **स्वामी**-पु० आर्यसमाजके संस्थापक । आपने
वैदिक धर्मका प्रचार किया और बतलाया कि आइ, मूर्ति-

पूजा आदि बातें बेविवेक हैं, आपने बालविवाहका विरोध
किया तथा बालविधवा-विवाहका समर्थन किया (सन्

१८२४-१८८३) ।

दयानत-**खी**० [अ०] ईमानदारी, सचाई । -**दर**-वि०
ईमानदार । -**दारी**-**खी**० दे० 'दयानत' ।

दयाना*-अ० कि० दयार्द्र होना, कृपायुक्त होना ।

दयामय-पु० [सं०] परमेश्वर । वि० दयासे पूर्ण, अस्पृष्ट
कृपालु ।

दयार-पु० देवदार । * वि० दयालु ।

दयात्र-वि० [सं०] जिसका हृदय दयासे प्रभित हो, दयालु ।

दयाल*-वि० दे० 'दयालु' ।

दयालु-वि० [सं०] कृपायुक्त ।

दयावंत*-वि० दयावान् ।

दयावना*-वि० दयनीय, दयाके योग्य ।

दयावान्(**नव**)-वि० [सं०] दयालु, कृपायुक्त । [**खी**०
'दयावती'] ।

दयित-वि० [सं०] प्रिय, मनचाहा । पु० प्रिय भक्ति; पति ।

दयिता-**खी**० [सं०] पत्नी, प्रेयसी ।

दयिलु-वि० [सं०] दयाशील ।

दर-पु० [सं०] भय; विदारण; गहदा; कंदरा, गुहा; शस्त्र;
छोट । -**कंडिका**-**खी**० सतावर । -**तिमिर**-पु० भय-
जन्य अंधकार । -**द**-वि० भयजनक । पु० सिंदूर; भय;

एक देश; एक स्नेच्छ जाति । -**वर**-पु० विष्णुका शंख,
पाचजन्य ।

दर*-पु० दल, सैनिकों या पार्श्वबलोंका समूह; ईश । **खी**०
भाव; गौरव, गरिमा, महत्ता । वि० अव्य, धोड़ा; दारण

करनेवाला (समासात्तमे) । -**कटी**, -**बंदी**-**खी**० -भाव
ठहराना ।

दर-पु० [फा०] द्वार, दरवाजा, फाटक, दहलीज । अ० में,
अंदर । -**असल**-अ० असलमें, वास्तवमें । -**कार**-वि०

आवश्यक, जरूरी । -**किनार**-वि० अलग, जुदा । अ०
बगलमें; एक तरफ । -**कूच**-अ० पकव बदलते हुए,

बराबर आगे बढ़ते हुए । -**खास्त**-**खी**० दे० 'दरखवास्त' ।

-**कबास्त**-**खी**० प्रार्थना; प्रार्थनापत्र, अर्ज । -**गाह***,
-**गाह**-**खी**० चौखट; (शाही) दरबार-घणी सहैगा

सासना जमकी दरगह और-**कबीर**; **मकरा**, **मजार**;

मरिन्द-।-गुज्जर-वि० अलना।-दर-अ० दरवाजे-दरवाजे, प्रतिगृह।-परदा-अ० परदेकी ओटमें, गुप्त रीतिसे।-पेश-अ० सामने, आगे।-बाज-पु० खोदीदार, फाटकपर रहनेवाला, चौकीदार।-बानी-खी० दरवानका काम या पद।-बार-पु० वह स्थान जहाँ बादशाह या सरदारकी कचहरी लगती हो, आस्थानमंडप, राजसभा; * द्वार, दरवाजा, खोदी।-०शरी-खी० किसीके पास जा-आकर देरतक बैठने और खुशामद करनेका काम।-०खिलासी-पु० द्वारपाल, खोदीदार।-बारी-वि० दरबार-संबंधी, दरबारका। पु० दरबारमें सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति, राजसभाका सदस्य।-०कान्हवा-पु० एक राग।-बारे आस-पु० बादशाह या राजाका वह दरवाजा जिसमें सर्वसाधारण सम्मिलित हो सकें।-बारे श्रास-पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें गिने-चुने लोग ही सम्मिलित हो।-भाहा-पु० मासिक वेतन, तनस्माह।-मिथान-पु० बीच, मध्य। अ० बीचमें, भीतर।-मिथानी-वि० नीतरी, आंतरिक।-हृषीकेश-अ० दे० 'दरभसल'।-हाल-अ० आजकल, वर्तमान समयमें। हु०-गुजरना-छोड़ देना; बाज आना; माफ कर देना।
दरक-खी० दरकनेकी क्रिया; दरार, चीर। वि०, पु० [सं०] दरनेवाला, कायर।
दरकचा-खी० कुचकनेकी चोट।
दरकचवा-सं० कि० कुचलना।
दरकना-अ० कि० खिनाय या दबावसे फटना, विदीर्ण होना, मसकना।
दरका-पु० चीर, दरार।
दरकाना-सं० कि० फाटना, विदीर्ण करना। * अ० कि० विदीर्ण होना, फटना।
दरकीछा-वि० आसानीसे टूट-फूट जानेवाला, भुरभुरा।
दरकत-पु० दे० 'दरकत'।
दरकत-पु० [फा०] पेड़, वृक्ष।
दरज-खी० दरार, चीर।
दरजन-वि०, पु० दे० 'दर्जन'।
दरजा-पु० दे० 'दर्जा'।
दरजिन-खी० दे० 'दर्जिन'।
दरजी-पु० दे० 'दर्जी'।
दरज-पु० [सं०] विदीर्ण करने या चीरनेकी क्रिया, विदारण।
दरजि, दरजी-खी० [सं०] जेवर; कहर; मवाह; दारण।
दरद(द)-खी० [सं०] हृदय; अय; पर्वत; बाँध; प्रपात; तीर; एक म्लेच्छ जाति।
दरद-पु० [सं०] गड्ढा; गुफा; पलायन; चारोंकी तलाशमें भ्रमण करना।
दरद-पु० दर्द, पीड़ा; कष्ट; तरस; [सं०] दे० 'दरद'। वि० दे० 'दरद'।-मंद-वि० दे० 'दर्दमंद'।-बंद-वि० कण्ठसुख, दवाह; दुःखित, पीडित।
दरदर-वि० जिसकी कण्ठ बारीक न हो; जो मोटा पीसा गया हो।
दरदरना-सं० कि० ऐसा पीसना कि बारीक न हो, मोटा

पीसना।
दरद-पु० दे० 'दर्द'।
दरन-पु० दे० 'दर्न'।
दरना-सं० कि० दलना; नष्ट करना; पीसना; मलना।
दरप-पु० दे० 'दर्प'।
दरपक-पु० दे० 'दर्पक'।
दरपव-पु० दे० 'दर्पण'।
दरपवा-अ० कि० घस होना, अभिमान करना, गर्वित होना।
दरपवी-खी० छोटा दर्पण।
दरव-पु० द्रव्य, धन; खरी धातु; किनारदार मोटी चादर।
दरवर-खी० उठावकी-अ० दूरि आये मह। हरवरमें, कहा बनि आवै तहल दरवरमें'-धन०।
दरवराना-अ० कि० छपटना-दिखनकी-इग दर-बरात'-धन०।
दरवा-पु० कचहरीके रहनेके कामका लकड़ीका खानेदार संदूक; पेड़ आदिका खोखला भाग जिसमें कोई पक्षी या अन्य जीव रहे।
दरवी-खी० करसुल, दर्वा।
दरव-पु० बंदर; दे० 'दर्भ'।
दरमन-पु० [फा०] इलाज; दवा, औषध।
दरवा-पु० [फा०] दे० 'दरिया'।
दरना-सं० कि० रगड़ना; थका देना; दलना; पीसना; नष्ट करना।
दरराना-अ० कि० वेगपूर्वक आना।
दरराजा-पु० [फा०] द्वार; कपाट, किबाड़।
दरवी-खी० दे० 'दर्वी'।
दरवेश-पु० [फा०] फकीर; भिखारी, मगन।
दरसन-पु० दे० 'दर्शन'।
दरशाना-सं० कि० दिखलाना; बतलाना, प्रमलाना। अ० कि० देख पड़ना।
दरस-पु० दर्शन, साक्षात्कार, रूप, सौंदर्य।
दरसन-पु० दे० 'दर्शन'।
दरसना-अ० कि० दिखाई देना, देख पड़ना, दृष्टिगत होना। सं० कि० देखना।
दरसनिवा-पु० मरीकी सातिके लिए पूजा करनेवाला।
दरसनी-खी० दर्पण, आईना।
दरसनीय-वि० दे० 'दर्शनीय'।
दरसनी हुंजी-खी० दे० 'दर्शनी हुंजी'।
दरसाना-सं० कि० दिखाना, दृष्टिगत करना; (ल०) बतलाना। अ० कि० दिखाई पड़ना, दृष्टिगत होना।
दराही-खी० दलनेकी क्रिया या उजरत।
दराज-खी० दरार; दे० 'ह्रावर'। वि० दे० 'दराज'।
दराज-वि० [फा०] लंबा, दीर्घ, विशाल। अ० बहुत, अधिक।
दराज-खी० रेखाकी तरहका लंबा छिद्र जो सखी भरती, दीवार या लकड़ी आदिमें फटनेके कारण पड़ जाता है।
दराना-अ० कि० फटना, विदीर्ण होना।
दरारा-पु० दर्रे, घाट-प्रतिघाट, थका। वि० दरारवाला, फटा हुआ।

दरिद्र, दरिद्रा-पुं० [फा०] फाड़ खानेवाला, बिल जंतु ।
दरि-क्री० [सं०] दे० 'दरो' ।
दरित-वि० [सं०] नीता; बरपोक; विदीर्ण ।
दरिद्र-वि० [सं०] निर्धन, कंगाल, गरीब । पुं० निर्धन मनुष्य; * दरिद्रता, निर्धनता । -**भाराघण**-पुं० कंगाल ।
दरिद्राण-पुं० [सं०] निर्धनता, गरीबी ।
दरिद्रायक-वि० [सं०] दरिद्र, निर्धन ।
दरिद्रित-वि० [सं०] दरिद्र, कंगाल; संकटापन्न ।
दरिद्रा-पुं० नदी; समुद्र । -**ई**-क्री०, वि० दे० क्रममें ।
दरासी-पुं० निर्गुणपंथियोंका एक संप्रदाय । -**दिल**-वि० उदार । -**दिली**-क्री० उदारता । -**बराभद**, -**बराह**-पुं० नदी द्वारा छोरी हुई अमीन । -**बाह**-वि० बहुत बरसनेवाला; (ला०) अत्यंत उदार । -**बुई**-पुं० नदी द्वारा काटकर बहायी हुई भूमि । **मु०**-क्री० **कूजेमें बंद करना**-धोरेमें बहुत कह जाना ।
दरिद्राई-क्री० [फा०] एक तरहका रेशमी कपड़ा । वि० नदीसंबंधी; जो नदीमें रहता हो; नदीके किनारेका; समुद्र-संबंधी । -**बोबा**-पुं० अमीरकाका एक मोटे चमड़े-वाला गंडे जैसा जानवर जो नदियोंके किनारे रहता है । -**नारिबल**-पुं० अमीर, अमेरिका आदिमें समुद्रके किनारे होनेवाला एक प्रकारका नारियल । (साधु-सन्त्यासियोंका कमलु इसीका बना होता है ।)
दरिद्राड*-पुं० दे० 'दरिया' ।
दरिद्राज-क्री० [फा०] झट करना, पता लगाना; जाँच, पकड़ना । वि० जिनकी जाँच की गयी हो, झट ।
दरिद्राच-पुं० दे० 'दरिया' ।
दरी-क्री० मोटे सूतोंका एक बिछावन, शतरंजी; [फा०] ईरानकी एक प्राचीन भाषा; [सं०] कदरा, युफा, खोह; सपोंका एक भेड़ । -**भूर**-पुं० पर्वत, पहाड़ । -**मुख**-पुं० युफाका द्वार ।
दरी(रिन्)-वि० [सं०] कायर, बरपोक; विदारणशील ।
दरीआना-पुं० वह घर जिसमें अनेक द्वार हों ।
दरीचा-पुं० [फा०] छोटा दरवाजा; खिचकी; मोसा ।
दरीची-क्री० छोटा दरीचा, खिचकी ।
दरीबा-पुं० पानका बाजार ।
दरैती-क्री० अनाज दलनेकी चक्की ।
दरैद्र-पुं० [सं०] विष्णुका शश ।
दरेक-पुं० वकाहन ।
दरेरा-पुं० [अ०] पछतावा, खेद; धृग; कोर-कसर, कीताही ।
दरेरना-सं० क्रि० रगड़के साथ धक्का देना, तीव्र आघात करना ।
दरेरा-पुं० रगड़, जोरका धक्का; धावा; बहावका तीव्र ।
दरेस-क्री० एक छोट ।
दरेसी-क्री० काट-छाँटकर दुरुस्त करना; समतल करना; सजाना, 'ब्रेसिंग' ।
दरीया*-पुं० दरनेवाला; दलन करनेवाला; नाशका; अपहर्ता ।
दरीया-पुं० [अ०] असत्य, मिथ्या, झूठ । -**हलकी**-क्री० झूठा हलक ।

दरीया-पुं० दे० 'दारीया' ।
दरीवर-पुं० [सं०] पासा; दाग; जुआ; जुआरी ।
दर्ज-क्री० दे० 'दरज' । वि० [अ०] लिखा हुआ, अंकित, उल्लिखित ।
दर्जन-वि० बारह । पुं० बारह (वस्तुओं)का समूह ।
दर्जी-पुं० [अ०] तारतम्यकी दृष्टिसे निर्धारित स्थान, भेणी, कोटि; योग्यताके अनुसार पढ़ाईके लिए निर्धारित किया गया विद्यार्थियोंका वर्ग, कक्षा; पद, ओहदा; खाना । अ० गुना ।
दर्जिन-क्री० दर्जी जातिकी स्त्री; दर्जीकी स्त्री ।
दर्जी-पुं० [फा०] कपड़ा सीनेवाला, वह व्यक्ति जिसका व्यवसाय कपड़ा सीना हो । **मु०**-**की सुई**-हर तरहका काम करनेवाला आदमी ।
दर्-पुं० [फा०] पीसा, व्यथा; कष्ट, दुःख, तकलीफ; तसें, रहम; सहाजमृति; शोक । -**अंगेज**-वि० दर्द उठाने-वाला, मनको व्यथित करनेवाला । -**आमेज**-वि० दे० 'दर्द-अंगेज' । -**नाक**-वि० दर्दमें भरा हुआ । -**मंद**-वि० पीकित, जिते पीडा हो; दूसरेकी व्यथाको समझने-वाला, कण्ठाशील, हृदयदर्द । -**(ईं) दिल**-पुं० मनो-व्यथा ।
दर्द-वि० [सं०] फटा हुआ । पुं० पहाड़; पीडा दूटा हुआ कलसा ।
दर्दराज, दर्दुराज-पुं० [सं०] एक मयजन; एक वृक्ष ।
दर्दरीक-पुं० [सं०] मेढक; बादल; एक तरहका वाद्य (संगीत) ।
दर्दुर-पुं० [सं०] मेढक; एक बाजा; मेघ; एक पर्वत जो मलय पर्वतके समीप है; उस पर्वतका निकटवर्ती प्रदेश; मगाकेकी आवाज; एक तरहका चावल; ग्रामसमूह, जिला; प्रांत; एक राक्षस । -**छद्मा**, -**पर्णी**-क्री० माछी बूढ़ी ।
पुट-पुं० सँसारी आदिका मुँह ।
दर्दुरक-पुं० [सं०] मेढक; एक वाद्य ।
दर्दुर-पुं० [सं०] दर्द, दाद । -**झ**-पुं० चक्कर । -**रोगी**-**(गिन्)**-पुं० दे० 'दर्दुर्ग' ।
दर्दुग, दर्दुण-पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिते दादका रोग हुआ हो ।
दर्द-क्री० [सं०] दे० 'दर्दु' ।
दर्प-पुं० [सं०] चित्ताका वह भाव जिसके कारण मनुष्य दूसरोंकी अवज्ञा करे और गुरु, स्वामी, राजा आदिकी भी कुछ न समझे, अहंकार; हर्षसे उत्पन्न गर्व; शृंगमद, कस्तूरी; कम्पा; उच्छ्वलता; उत्साह । -**कल**-वि० दर्प-भरी बातें बोलनेवाला । -**छिद्र**-वि० दर्प हरण करने-वाला । -**द**, -**हा(इन्)**-पुं० विष्णु । -**पत्रक**-पुं० एक घास । -**ह**, -**हूर**-वि० दर्प नष्ट करनेवाला ।
दर्पक-वि० [सं०] दर्प उत्पन्न करनेवाला । पुं० कामदेव; दर्प ।
दर्पण-पुं० [सं०] आकृति देखनेका शीशा, आईना, सुकुर, आरसी; नेत्र; एक पर्वत जो कुबेरका निवासस्थान था; प्रवर्णित करना; गर्वयुक्त करना ।
दर्पित, दर्पी(पिन्)-वि० [सं०] दर्पयुक्त, अहंकारी ।
दर्भ*-पुं० दम्ब, धन-हीनता; खरी धातु (सीना, चाँदी

आदि) ।
द्वयोन-पु० दे० 'द्वयोन' ।
द्वयोन-पु० दे० 'द्वयोन' ।
द्वयोन-पु० [सं०] कुश, वाम; कुशासन । -**कुशुम**-पु० एक कोश । -**केतु**-पु० राजा जनकके भाई कुशाश्वज ।
द्वयोन-पु० दर्वका बना हुआ वस्त्र । -**तल्लुण्ठ**-पु० दर्वका गोफा । -**पत्र**-पु० काश, काँस । -**पुष्प**-पु० एक सौं; दे० 'दर्वकुसुम' । -**बहु**-पु० दर्वका बना पुतला । -**लवण**-पु० दर्व या वास काटनेका औजार, हँसिया आदि । -**संस्तर**-पु० कुशका विस्तर । -**सूची**-
 क्षी० डामकी नोक ।
द्वयोन-पु० [सं०] भीतरका पंकांत कमरा ।
द्वयोन-पु० [सं०] कुशकी चटाई ।
द्वयोन-पु० [सं०] डामका नोकदार गोफा ।
द्वयोन-पु० [सं०] कुशका बना हुआ आसन, कुशासन ।
द्वयोन-पु० [सं०] मूँज ।
द्वयोन, **द्वयोन**(**मिन्**)-पु० [सं०] एक ऋषि ।
द्वयोन-क्षी० [सं०] कुशका डंठल ।
द्वयोन-पु०, अ० दे० 'द्वयोन' ।
द्वयोन-पु० दे० 'द्वयोन' ।
द्वयोन-पु० मोटा आटा; रविश आदिपर ढाली जानेवाली कंकरीली मिट्टी; [फा०] दो पहाड़ोंके बीचसे होकर जानेवाला तग रास्ता, घाटी; दरार, दरवाजा ।
द्वयोन-अ० कि० दे० 'द्वयोन' ।
द्वयोन-पु० [सं०] आततायी; राक्षस; हिंसा करनेवाला; हिंस्र जंतु; करछुल; सौंपका फन; क्षति, चोट; महाभारतमें वर्णित एक प्राचीन जंगली जाति ।
द्वयोन-पु० [सं०] गाँवका चौकीदार; पुलिस-कर्मचारी; द्वारपाल ।
द्वयोन-पु० [सं०] बंद; बाध; एक तरहका बाध (समीत) ।
द्वयोन-पु०, **द्वयोन**-क्षी० [सं०] करछुल ।
द्वयोन-क्षी० [सं०] कठकोष्ठके जातिकी एक चिड़िया ।
द्वयोन-क्षी० [सं०] बड़ी करछुल; सौंपका फन । -**कर**-
 पु० फनवाला सौंप ।
द्वयोन-पु० [सं०] अवलोकन, दर्शन; दृश्य; अमावास्या; अमावास्याके दिन किया जानेवाला एक वाग; चाक्षुष प्रमाण । -**प**-पु० एक देववर्ग । -**पौर्णमास**-पु० दश और पौर्णमास वाग । -**यामिनी**-क्षी० अमावास्याकी रात्रि; अंधेरी रात । -**विपत्** (**व**)-पु० चंद्रमा ।
द्वयोन-वि० [सं०] देखनेवाला, दर्शन करनेवाला, द्रष्टा; दिखा देनेवाला; निर्देश करनेवाला । पु० द्वारपाल; कुशल व्यक्ति ।
द्वयोन-पु० [सं०] चाक्षुष प्रत्यक्ष, साक्षात्कार; जानना; वह शास्त्र जिसमें आत्मा, अनात्मा, जीव, ब्रह्म, प्रकृति, पुरुष, जगत्, धर्म, मोक्ष, मानव-जीवनके उद्देश्य आदिका निरूपण हो, तत्त्वज्ञान करानेवाला शास्त्र [छ आस्तिक-सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा (पूर्व मीमांसा) और वेदांत (उत्तर मीमांसा) तथा छ नास्तिक-चार्वाक, जैन, माध्वमिक, योगाचार, सौत्रांतिक और वैश्वामिक-प्रधान माने जाते हैं]; नेत्रदृष्टि; बुद्धि; स्वप्न; प्रदर्शन;

परीक्षण; शास्त्र; दर्पण; धर्म; रूपरंग; राय; नीवत; यक्ष; उपस्थिति (न्यायालयमें) । -**गृह**-पु० समा-भवन । -**गोचर**, -**पत्र**-पु० दृष्टिपथ; क्षितिज । -**प्रतिभू**-पु० वह प्रतिभू जो महाजनकी इच्छाके अनुसार कर्णकी किसी भी समय वा किसी भी स्थानपर उपस्थित करनेका भार स्वीकार करे; जमानतदार । -**प्रतिभाष्य**-पु० दे० 'दर्शन-प्रतिभू' ।
द्वयोन-क्षी० [सं०] शरीरकी वह अग्नि जो नेत्रेंद्रियको कार्यमें प्रवृत्त करती है ।
द्वयोन-वि० [सं०] देखने, दर्शन करने योग्य; मनोहर; दिखा देने योग्य ।
द्वयोन **द्वयोन**-क्षी० दे० ऐसी दुर्ग जिसका भुगतान तत्काल करना पड़े; (का०) ऐसी वस्तु जिसके द्वारा कोई वस्तु तत्काल प्राप्त की जा सके ।
द्वयोन (**द्व**)-वि० [सं०] दिखा देनेवाला; मार्गप्रदर्शन करने वाला । पु० द्वारपाल ।
द्वयोन-सं० कि०, अ० कि० दे० 'द्वयोन' ।
द्वयोन-वि० [सं०] दिखाया हुआ; प्रकटित, प्रकाशित; प्रमाणित; प्रकट ।
द्वयोन (**मिन्**)-वि० [सं०] (समासात्में) साक्षात्कार करनेवाला; विवेचन करनेवाला; प्रदर्शित करनेवाला ।
द्वयोन-पु० [सं०] उन दो बराबर भागोंमें एक जिनमें अन्नके दाने या फल आदिके बीज दबाव पड़नेपर अपने आप विभक्त हो जायें; कटा हुआ डुकड़ा; अन्न; ध्यान; पत्ता, पत्र; तमालपत्र; फूलकी पंखुड़ी; एक विचारके या एक साध कार्य करनेवाले व्यक्तियोंका समूह, गुट, झुंड, गिरीह, टोली; हमराही; पाश्र्वचर; मैनिफेस्टा समूह, सेना, फौजका दस्ता; मिश्रण; आधारभूत परत । -**कपाट**-पु० कर्णके ऊपरकी पंखुड़िया । -**कोमल**-पु० कमल । -**कोस**-पु० कुदका पीथा । -**गंजन**-वि० भारी वीर । -**गंध**-पु० समर्पण द्रव्य । -**द्वार**-वि० [हिं०] मोटे दलवाला । -**निर्भर**-पु० भोगव्यवसाय वृक्ष । -**प**-पु० दलका नायक, हथियार; सेना; शास्त्र । -**पत्र**-पु० दलका मुखिया या सरदार । -**पुष्पा**-क्षी० केतकी । -**बल**-पु० लाव-लडकत, जगता । -**बादल**-पु० [हिं०] बादलोंका समूह; बहुत बड़ी सेना । -**बीटक**-पु० कानका एक गहना । -**सावसी**-क्षी० बसत तुलसी । -**सारिणी**-क्षी० बटा, कच्चा । -**सूची**-क्षी० कंठिदार पत्तोंवाला पीथा; कौंदा । -**स्नसा**-क्षी० पत्रशिरा, पत्तेकी नस ।
द्वयोन-क्षी० गुदकी; टीस, चमक; आधातमें उत्पन्न कप । पु० [सं०] दल, पत्ता; * दुःख, गूढ़ ।
द्वयोन-क्षी० दलकनेकी क्रिया; दलक, टीस ।
द्वयोन-अ० कि० इस तरह फटना कि दरार पड़ जाय, बिर जाना; कपित होना, काँपना; डगमगाना । सं० कि० अस्त कर देना; कँपा देना । पु० **द्वयोन** उठना-कपित हो उठना, झुंझ हो जाना ।
द्वयोन-पु०, क्षी० [अ०] कीचड़, पंक; दूरतक गीली जमीन जिसमें पौंज भँसता चला जाय । पु०-**मै** **कँसना**-ऐसी मुसीबतमें फँसना जिससे उबरना बहुत

मुक्तिक हो ।

दशदूला-वि० दशदूलाङ्क । [स्त्री० 'दशदूली']

दशक-पु० [सं०] चूर्ण करना, पीसना, कुचलना; नाश, संहार, उच्छेद; विदारण । वि० नाशकारक ।

दशका-स० कि० चक्षुमें दालकर दो वा अधिक ठुकड़े करना; कुचलना; मसलना; नष्ट करना, बरबाद करना; तोड़ना; चूर करना ।

दशनी-स्त्री० [सं०] डेला ।

दशमलना-स० कि० रौंद डालना, कुचल डालना; छिन्न-भिन्न करना; मसल डालना ।

दशबाना-स० कि० दलनेका काम करना, दलनेमें दूसरे को प्रवृत्त करना ।

दशबाळ-पु० मेनानी ।

दशवैया-पु० दलनेवाला; जीतनेवाला ।

दशइन-पु० वह अन्न जिससे दाढ़ तैयार की जाय ।

दशहरा-पु० दाढ़ बेचनेवाला ।

दशाढक-पु० [सं०] जंगली तिल; गेरू; नामकेसर; कुंद; शिरीष; फेन; झाड़; शूद्र; बन्कर; गाँवका मुखिया; हाथीका कान ।

दशाब्ध-पु० [सं०] पंक ।

दशादूकी-स्त्री० दलोंकी होड़ । अ० होड़ करके ।

दशाना-पु० दे० 'दालान' ।

दशाना-स० कि० दे० 'दलबाना' ।

दशामल-पु० [सं०] दौना, मरुआ; मैनफरका पेड़ ।

दशामल-पु० [सं०] लीनिया साग ।

दशाल-पु० सीढ़े आदिकी पदानेमें मध्यस्थता करनेवाला, विचर; कुटना; पारसियोंकी एक जाति ।

दशाली-स्त्री० दशालका काम; दशालका काम करनेके बरतमें ली जानेवाली रकम ।

दशालय-पु० [सं०] तेजपत्ता ।

दक्षि-स्त्री० [सं०] दे० 'दक्षिणी' ।

दक्षिक-पु० [सं०] काष्ठ ।

दक्षित-वि० [सं०] रौंदा, कुचला, दबाया हुआ, पदाक्रांत ।

-बर्ग-पु० हिंदुओंमें वे शूद्र जिन्हें अन्य जातियोंके समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं ।

दक्षिणा-पु० दक्षा हुआ अनाज जो दरदरा हो ।

दक्षी(किन्)-वि० [सं०] दक्षयुक्त; पत्तोवाला । पु० दक्ष ।

दक्षील-स्त्री० [अ०] युक्ति, तर्क; बहस ।

दक्षेर्गधि-पु० [सं०] सप्तर्षि, छतिवन ।

दक्षेक-पु० सिपाहियोंसे सजाके तौरपर करायी जानेवाली कमी कमाव । पु० -बोलना-सजाके लिए कमी कमावकी आशा देना ।

दक्षैया-पु० नाशक, निहता ।

दक्ष-पु० [सं०] चक्र, पहिया; घोडा; बैरमानी; पाप ।

दक्षि-पु० [सं०] शिवा; इद्रका वज्र ।

दक्षाल-पु० [अ०] दे० 'दालक' ।

दक्षैरी-स्त्री० दे० 'दक्षरी' ।

दक्ष-पु० [सं०] वन, जंगल; जंगलमें स्वतः लगनेवाली आग, दावानल; अग्नि; ज्वर; पीड़ा । -दक्षक-पु० एक दण । -दक्षन-पु० दे० 'दवाधि' । -दक्ष-पु०

जंगलमें आग लगाना ।

दक्ष-पु० [सं०] दाह, जलन; संताप ।

दक्षन-पु० दमन; दौना । वि० दमन या नाश करनेवाला ।

दक्षनपापका-पु० विषपापका ।

दक्षना-पु० दे० 'दौना' । स० कि० जलाना, झुलसना ।

दक्षनी-स्त्री० दे० 'दक्षरी' ।

दक्षरिया-स्त्री० दे० 'दवारि' ।

दक्षा-स्त्री० दावानल; [फा०] ओषध, इलाज; उपचार, चिकित्सा; समनका उपाय; ठीक करनेका तरीका, रास्तेपर लानेका उपाय । -झाणा-पु० वह स्थान जहाँ बैचनेके लिए दवा रखी हो, ओषधालय । -दक्षन-पु०, -दक्ष-स्त्री० इलाज, चिकित्सा, उपचार ।

दवाही-स्त्री० दे० 'दवा' । -खाना-पु० दे० 'दवाखाना' ।

दवाधि, दवागिन-स्त्री० दे० 'दवाधि' ।

दवागिन-स्त्री० [सं०] वनमें स्वतः लगनेवाली आग, वनाग्नि, दावानल ।

दवात-स्त्री० [अ०] खाड़ी रखनेका बरतन, मसिधान, मसिपात्र ।

दवान-पु० एक हथियार-'तौप बान अह रहकला चौकस करी दवान'-सुझान ।

दवानल-पु० [सं०] दे० 'दवाधि' ।

दवाम-अ० [अ०] हमेशा । पु० हमेशगी, सातत्य ।

दवामी-वि० स्थायी, कायमी । -बंदोबस्त-पु० जमीनका वह प्रबंध जिसमें मालपुनारी हमेशाके लिए निश्चित कर दी जाती है, उसमें कमी बढ़ि नहीं होती ।

दवार, दवारि-स्त्री० दे० 'दवाधि'; संताप ।

दस(र)-वि० [सं०] नौ और एक । पु० दसकी संख्या,

१० । -कंठ-पु० दशानन, रावण । -जहा-पु०

राम । -जित्-पु० राम । -कंधर-पु० दे० 'दशकंठ' । -कर्म(र)-पु० गर्मोधानसे लेकर (अत्यधिकिया

या) विवाहतकके दस कर्म-गर्मोधान, पुसवन, सीमंतोन्नयन,

जाठकरण, निष्कामण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूकाकरण,

उपनयन तथा विवाह । -कुलदक्ष-पु० तत्रमें गृहीत

दस दूध-लसोका, करज, बेल, पीपल, कदर, नीम, बरगद,

गूलर, आँवला और हमली । -कोपी-स्त्री० एक ताक

(संगीत) । -खीर-पु० दस जलों-गाय, मैस, मेर,

बकरी, ऊँटनी, घोड़ी, खी, हथिनी, हरिनी और गधिका

दूध । -गात्र-पु० दे० 'दशगात्र' । -गात्र-पु० खरीर-

के मुख्य दस अंग; श्रृंगके दसमें दिन पूरा होनेवाला एक

और्ध्वदैहिक कूल (रस कर्मके अंतर्गत प्रतिदिन दिये गये

पिंडसे क्रमशः दस गात्रों-अंगोंका निर्माण होता

है) । -ग्रामपति, -ग्रामिक, -ग्रामी(मिन्)-पु० वह

जिसे राजाकी ओरसे दस गाँवोंके शासनका भार सौंपा

गया हो । -ग्रीव-पु० रावण । -दिक्पाठ-पु० दे०

'दिक्पाठ' । -ह्वार-पु० दे० 'अंगहार' । -धर्म-पु०

मनु द्वारा सभी वर्णोंके लिए उपदिष्ट दशविध धर्म । -नामी

-पु० [हिं०] शंकराचार्यके दस प्रशिष्योंसे बना सन्यासियों-

का एक संप्रदाय (इसके अनुसार सन्यासियोंके दस

भेद-तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर,

सरस्वती, भारती और पुरी-किये गये हैं) । -**पंचतथा-**
(पत्न्य)-पु० दसों द्वितीयो वयसमें रहते हुए पंचाभि-
तप करनेवाला तपस्वी । -**प-पु०** दे० 'दशप्रायिक' ।
-**पारमिताधर-पु०** बुद्धदेव । -**पुर-पु०** एक तरहका
सुगंधित मेषा; मालवाका एक प्राचीन खर जिसमें दस
नगर सम्मिलित थे । -**पेष-पु०** एक वाय । -**पक्ष-पु०**
बुद्धदेव । -**पादु-पु०** शिव । -**भुजा-की०** दुर्गा ।
-**भूमिग, भूमीश-पु०** बुद्धदेव । -**महाविद्या-की०**
दे० 'महा-विद्या' । -**मास्य-वि०** जो दस महानौतक
गममें स्थित रहा हो । -**मुख-पु०** रावण । -**मूत्र-**
मूत्रक-पु० दस जीवों-हाथी, घोड़ा, ऊँट, गाय, भैंस,
भैंस, हकरा, गधा, पुरुष और स्त्री-का मूत्र । -**मूल-**
पु० दस पेड़ों-सरिवन, पिठवन, छोट्टी कटार, बड़ी कटार,
गोखरू, बेल, सोनापाठा, गंमारी, गनिवार और पाठा-
की जड़ या छाल । -**औसि-पु०** रावण । -**रथ-पु०**
अयोध्याके एक प्राचीन सूर्यवंशी सम्राट् जो रामके पिता
थे । -**सुत-पु०** राम । -**रश्मिशास्त्र-पु०** सूर्य । -**राज-**
पु० दस रातोंमें समाप्त होनेवाला एक वाग । -**रूपक-**
पु० एक ग्रंथ जिसमें दस प्रकारके रूपकोका निरूपण है ।
-**रूपसूत्र-प०** विष्णु । -**बद्ध, बद्धन-पु०** रावण ।
-**बाजी(विन्दु)-पु०** चंद्रमा (जिसके रथमें दस घोड़े
हैं) । -**बीर-पु०** एक वध । -**ब्रज-पु०** एक ऋषि ।
-**शिर, शीर्ष-पु०** रावण । -**शीत, सीस-पु०**
रावण । -**स्यंदन-पु०** राजा दशरथ । -**हरा-पु०**, **की०**
(दस पापोंका हरण करनेवाली) ज्येष्ठ-शुक्ल दशमी जिस
दिन गंगाका जन्म हुआ था और सेतुबंधमें रामने रामेश्वर-
की स्थापना की थी; विजयादशमी । **की०** गंगा ।

दशकद्वार-पु० [सं०] राम ।
दशक-पु० [सं०] दमका समाहार; दस वनोंका समाहार ।
दशति-की० [सं०] सौ, शत ।
दशधा-ज० [सं०] दस प्रकारसे; दस भागोंमें ।
दशव-पु० [सं०] दस; दससे काटनेकी क्रिया; कवच; शृंग,
चोटी । -**च्छद्व, बास(स्व)-पु०** ओष्ठ, होंठ । -**पद-**
पु० दंतवृत्तका स्थान और विहट्-**बीज-पु०** अनार ।
दशानांशु-पु० [सं०] दसोंकी चमक ।
दशनाम्ना-की० [सं०] लौनिया साग ।
दशनोच्छिष्ट-पु० [सं०] अन्ध आदिका जुनन; निःश्रास;
होठ ।
दशम-वि० [सं०] दसवाँ । पु० दशवाँ भाग । -**दशा-**
की० कामकी अंतिम दशा जिसमें वियोगी प्राण त्याग देता
है । -**भाष-पु०** फलित ज्योतिषके अनुसार जन्म-रुद्धसे
दसवाँ वर । -**रुद्ध-पु०** मित्रका एक मेद जिसमें हर दस
या उसका कोई घात होता है (ग०) ।
दशमोश-पु० [सं०] दसवाँ भाग ।
दशमिक-अग्न्याश-पु० [सं०] दशमलव ।
दशमी-की० [सं०] पौर्णिमा मासके प्रत्येक पक्षकी दसवीं
तिथि; नवौं वर्षसे जागेकी अवस्था, मरणान्तरा; सताब्दी-
का अंतिम दशक ।
दशमी(मिद्ध)-वि० [सं०] कमय सौकी अवस्थाका;
बहुत बुरा ।

दशमुक्तांतक-पु० [सं०] राम ।
दशारथ-पु० [सं०] दे० 'दश' में ।
दशार्थ-पु० [सं०] सुगुल, चंद्रन, जटामासी, शिखारस,
कोषाज, राख, खल, भीमसेनी कर्पूर तथा कस्तूर;
इन गंधद्रव्योंके योगसे संपन्न एक हवनीय धूप (यह अश्वमेध
तथा विश्वाय आदिका नाशक भी माना जाता है) ।
-**काथ-पु०** दस औषधियों-अहुसा, गुडुच, पित्तपापडा,
विराधता, जलमंगरा, नीमकी छाल, इह बहेडा, जौबला
और कुलथी-का काढ़ा ।
दशगुल-पु० [सं०] खरबूजा । वि० जो भागमें दस
अंगुलका हो ।
दशांत-पु० [सं०] इडावस्था, दुदापा; दीयेकी बचीका
छोर; पिछला भाग ।
दशांतर-पु० [सं०] जीवनकी विविध अवस्थाएँ ।
दशा-की० [सं०] अवस्था, स्थिति, हालत; जीवनकी कार-
कृत विशेष अवस्था-जैसे गर्भवास, जन्म, बाल्य, कीमर,
पौर्ण्य, बौवन, स्थाविर्य, जरा, प्राणरूप और नाश;
विरहियोंकी दस अवस्थाओंमेंसे कोई एक-असौडव, मंताप
आदि (दे० सरदशा) या अभिलाषा, विन्ता, सारण, गुण-
कथन, उद्देश, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण;
ज्योतिषके अनुसार प्रहविशेषका भोगकाल; दीयेकी बत्ती;
किसी वख या अंगरत्नेका छोर; चित्त । -**दक्षिण-पु०**
आकाशमें दिया जानेवाला बखलंड । -**धक्क, विपाक-**
पु० मांसफलका पूरा होना; जीवनकी परिवर्तित अवस्था ।
-**बिषयांस-पु०** दुर्गंध ।
दशाकर्ष-पु० [सं०] दीपक, चिराग, दीया; कपड़ेका छोर ।
दशाकर्षी(चिन्दु)-पु० [सं०] दे० 'दशाकर्ष' ।
दशाक्षर-पु० [सं०] एक छंद ।
दशाचिपति-पु० [सं०] विशिष्ट दशका स्वामी ग्रह
(ज्यो०); दस पैदल सिपाहियोंका नायक ।
दशानव-पु० [सं०] रावण ।
दशानिक-पु० [सं०] दसो बूझ, जमालगोटा ।
दशामय-पु० [सं०] बड़ ।
दशास्त्र-की० [सं०] एक कला जो कपड़ा रंगनेके काम
आती है ।
दशार्ण-पु० [सं०] एक प्राचीन देश जो मध्यदेशके दक्षिण-
पूर्वमें था; उस देशका राजा या निवासी ।
दशाई-वि० [सं०] दसका आधा, पाँच । पु० पाँचकी
संख्या; बुद्धदेव ।
दशाई-पु० [सं०] एक लड़ाकू जाति; राजा रुणिका पौत्र;
रुणिवंशका राजा; रुणिगवशियों द्वारा अधिकृत देश;
विष्णु; बुद्ध ।
दशावतार-पु० [सं०] विष्णुके दस अवतार-मत्स्य,
कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण,
बुद्ध और कल्कि ।
दशावरा-की० [सं०] दस सरस्वतीका शासन-सभा ।
दशाव-पु० [सं०] चंद्रमा ।
दशाव-पु० [सं०] रावण ।
दशाह-पु० [सं०] दस दिनोंका समाहार; औषधवैदिक
ग्रन्थका दसवाँ दिन ।

दशोपन-पु० [सं०] दीपक ।

दशैर-पु० [सं०] हिंस्र प्राणी ।

दशैरकः, दशैरक-पु० [सं०] मरुदेश या बर्बाद निवासी; कम अवस्थाका उर्ध्व गन्ध (१) ।

दशेष-पु० [सं०] दस भागोंका नायक ।

दश-वि० [सं०] काया वा रङ्ग मारा हुआ ।

दश-वि०, पु० दे० 'दश' । -माथ, -औष्ठिक-पु० राषण । -रंग-पु० भास्वरंभकी एक कस्तूर । -राज-पु० कुशतीका एक पंच । -हर्ष-वि० जो क्रममें नौके बाद

या दसके स्थानपर हो । पु० शत्रु तिथिसे दसवाँ दिन; उस दिन होनेवाला प्रेतकृत्य ।

दसस्ततां-पु० दे० 'दसस्तत' ।

दसव-पु० [सं०] क्षय, नाश; प्रक्षेपण; बर्बादगती; * दे० 'दशन' ।

दसना-अ० कि० विद्याना, विद्याया ज्ञाना, विस्तार आदिका फैलाया जाता । स० कि० विद्याना, विस्तार आदि फैलाना । पु० दे० 'दासन' ।

दसमी-स्त्री० दे० 'दशमी' ।

दसा-पु० अगरवाल वैद्योंका एक प्रधान वेद । * स्त्री० दे० 'दशा' ।

दसानाम-स० कि० विद्याना ।

दसारन-पु० दे० 'दशान' ।

दसी-स्त्री० कपड़ेका छोर वा अंचल; कपड़ेके सिरेपरका मृत; चमड़ा छीलनेका एक औजार; चिह्न ।

दसेरक, दसेरक-पु० [सं०] दे० 'दशैरक' ।

दसोतरा-वि० जिसमें दस और जुड़ा हो, दस अधिक । पु० सौ पीछे दसवीं रकम ।

दसौंथी-पु० चारणोंकी एक जाति, भाट ।

दस्तदाज्ञ-वि० [फा०] दखल देनेवाला, हस्तक्षेप करनेवाला ।

दस्तद जू-स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप, छेबछाह ।

दस्त-वि० [सं०] क्षीण, नष्ट; फेंका या उछाला हुआ; बर्बाद । पु० [फा०] हाथ; पन्ना; पतला पाम्बाना; एक हाथकी माप; मौका; तादाय; प्रिय मेहमानोंकी बैठानेकी जगह; प्रधान मंत्री; ताकत; खूबी; तौर-तरीका; पद्धति; हथ; काम । -कार-पु० हाथसे कारीगरीका काम करनेवाला व्यक्ति । -कारी-स्त्री० दस्तकारका काम; हाथकी कलापूर्ण कृति, हाथसे बनायी हुई कलापूर्ण वस्तु । -खस्त-पु० हस्ताक्षर । -खस्ती-वि० हस्ताक्षरयुक्त ।

-गीर-वि० हाथ पकड़नेवाला; सहाय देनेवाला, सहायक । -दराज्ञ-वि० दीडा; हथलुट; हथलपक; पराधीन जगह पर हाथ मारनेवाला; पराधीन बहू-बेटीपर हाथ डालनेवाला । -दराजी-स्त्री० हथलुटपन; हथलपनी; पराधीन बहू-बेटीपर हाथ डालना । -पनाह-पु० निमटा ।

-बंद-पु० क्षियोंका हाथमें पकड़नेका मोतियों और जवाहरातका लच्छा । -बधस्त-अ० हाथोंहाथ । -बरदार-वि० हाथ हटा छेड़नेवाला, नाज आनेवाला, जिसने किसी वस्तुपरसे अपना स्वत्व हटा लिया हो, जो बेचना हो गया हो । -बरदारी-स्त्री० दस्तबरदार होनेकी क्रिया, बेचना होना । -बुर्द-स्त्री० नोक-खसोट;

अपहरण । -बाब-वि० हस्तगत, लब्ध, प्राप्त ।

दस्तक-स्त्री० [फा०] ताकी; खटखटाना; माल आदिके आने-जानेकी लिखित आज्ञा वा स्वीकृति; राशदारीका फरमाना; मालगुजारी वसूल करनेके लिए निकाजा गया आज्ञापत्र; राजस्व, महसूल; समन तामोका करनेका द्युक्त । दस्तारछाबान-पु० [फा०] खाना रखनेका कर्त, चौकी आदिपर फैलाया जानेवाला कपड़ा ।

दस्ता-पु० [फा०] औजार आदिकी मूठ या बेंड; खरलका सुलक; गुच्छा; सैनिकोंकी टोली; जत्था; कामजके चौबीस तकतोंकी गद्दी; फूलोंका गुच्छा; चपरास; डंडा; कुमाल, तौलिया; एक कपड़ा जो पगड़ीके साथ बाँधा जाता है ।

दस्तावा-पु० [फा०] हाथमें पकड़नेका दस्त आदिका बन्ना हुआ थिछा; हाथपर पकड़नेकी छोटीकी जिराह; तलवारका कम्बा ।

दस्तावर-वि० [फा०] जिसके खानेसे दस्त आये, देचक ।

दस्तावेज-स्त्री० [फा०] वह पत्र जो दो या अधिक आदमियोंके बीच होनेवाले व्यवहारके संबंधमें लिखा गया हो; तमसुक; तहरीर; किताब; सनद ।

दस्तावेजी-वि० दस्तावेज-संबंधी; दस्तावेजका ।

दस्ती-वि० [फा०] हाथका; जो हाथसे ले जाया जाय । स्त्री० छोटा बेंड; छोटा कुमाल; कुशतीका एक दाँव; मशाल; छोटा कलमदान ।

दस्तूर-पु० [फा०] रीति, तौर, तरीका; प्रणाली; चाल; कायदा; नेग, पारसियोंका युरोहिस ।

दस्तूरी-स्त्री० वह रंगी हुई रकम जो अमीरोंके नौकर सौदा खरीदनेपर दूकानदारोंसे लेते हैं ।

दस्म-पु० [सं०] बजमान; चोर; खल; अग्नि ।

दस्तु-पु० [सं०] डाकू; छुटेरा; खल; चारों बणोंके अतिशय एक प्राचीन छोटी जाति (मनु); अनार्य जो प्राचीन कालमें यक्षविघ्नस आदि करते थे । -दुष्टि-स्त्री० डाकूका पेसा, छुटेरापन । -हा(हव)-पु० ईश ।

दख-पु० [सं०] अग्निनीकुमार; गर्दभ; दोकी संख्या, सुगल; अग्निनी नक्षत्र; शिशिर, दस्तु । वि० हिंस्र; संयकर; भयसक । -बैधता-पु० अग्निनी नक्षत्र । -ख-स्त्री० सूर्यपत्नी संज्ञा ।

दह-पु० नदीका वह भाग जहाँ पानी बहुत गहरा हो; होव; नदी किनारेका (मटमले पानीका) छिछला गड्ढा- 'छावर और अरने सेसे नदी किनारे किसी दहमें लोट रहे होंगे'-सुग० । स्त्री० अग्निशिखा, ज्वाला । वि० [फा०] दस ।

दहक-स्त्री० आगका दहकाना; लपट, ज्वाला ।

दहकन-स्त्री० दहकनेकी क्रिया ।

दहकना-अ० कि० लपट फेंकते हुए जलना, इस प्रकार जलना कि आँच या लपट बाहर निकले; तप्त होना ।

दहकान-पु० [फा०] देशात या गाँवका रहनेवाला, किसान, कारखाना । वि० गँवार, उन्नत, जाहिल ।

दहकाना-स० कि० इस रूपमें जलना कि आँच या लपट बाहर निकले; मरकाना, उन्नेजित करना; † स्थानीय मानके अनुसार अकोंकी पढ़ाना ।

दहकानिचल, दहकानिचल-स्त्री० [फा०] गँवारपन ।

सहजानी-पु० दे० 'दहलान' ।

सहज-सहज-अ० भयक-भयकर ।

सहज-पु० [सं०] जलना, दाह; आग, अग्नि; जलानेवाला; तप्त होइसे जलाना; कृत्तिका नक्षत्र; बुद्ध व्यक्ति; चित्रक, चीता; मित्राणां; एक तरहकी कौबी; कनूतर; तीनकी संख्या (त्रयो); एक रुद्र; ज्योतिषके अनुसार एक योग । वि० जलानेवाला, विनाशक । -केसव-पु० ब्रू, पुर्वा । -शर्मा-वि० औषधिते भरा हुआ । -मित्रा-स्त्री० अग्नि की पत्नी, स्वाहा । -शील-वि० जलानेवाला, दाहक । -सारथि-पु० बाघ ।

सहनशील-र० [सं०] कृत्तिका नक्षत्र ।

सहना-अ० कि० जलना, दग्ध होना, भस्म होना; भैंसना । स० कि० जलाना; भस्म करना; कष्ट देना, संतप्त या पीड़ित करना । वि० दाहिना ।

सहनागुरु-पु० [सं०] दाहागुरु, वृष ।

सहनारासि-पु० [सं०] प्राणी ।

सहनि-स्त्री० जलानेकी क्रिया, दग्ध होना ।

सहनीय-वि० [सं०] जलने योग्य; जलाये जाने योग्य ।

सहनोपक-पु० [सं०] सूर्यकांत मणि; मातङ्गी सीसा ।

सहनोष्का-स्त्री० [सं०] चुका, कुमाठा ।

सहपद-वि० दहाकर दूकमें मिलाया हुआ, भ्वस्त; कुचला हुआ; पादक्रांत ।

सहपदना-स० कि० दहाना, भ्वस्त करना; कुचक डालना; किसीका गर्व आदि चूर्ण करना ।

सहर-पु० [सं०] चूरा; भ्रंश; बालक, शिशु; नरक; वरणा; हृदयका स्नात; * दह; कुंड । * स्त्री० भयक । वि० स्वरूप, योग; अत्यन्त सूक्ष्म; जो कठिनाईसे समझमें आवे ।

सहर-सहर-अ० भयक होकर ।

सहलना-अ० कि० दे० 'दहलना' । स० कि० दे० 'दहलाना' ।

सहलकाश-पु० [सं०] ईश्वर; चिदाकाश, हृदयाकाश ।

सहरीरी-स्त्री० एक तरहका गुरुगुला ।

सहल-स्त्री० धरपराहट; डरसे कौप उठना ।

सहलना-अ० कि० डरके मारे कौपना, धरना ।

सहल-पु० ताशका वह पत्ता जिसपर किसी रंगके दस चिह्न बने हों; * बाला, आलवाक ।

सहलाना-स० कि० डराकर कैप देना, अत्यंत भीत करना ।

सहली-स्त्री० दे० 'देहरी' ।

सहलीझ-स्त्री० [फा०] चौखटकी नीचेवाली लकड़ी जो जमीनसे सटी रहती है, देहली । सु०-का कुत्ता-पालतु कुत्ता; शुभतल्लो । -की मिट्टी के जाना-बहुतसे फेरे करना, बार-बार जाना । -झोंकना-किसीके पास किसी कामके लिए जाना । -ज झोंकना-बहुत अधिक परदेमें रहना ।

सहसत-स्त्री० [फा०] भय, डर, आतंक ।

सहा-पु० ताजिवा; मुहरमका समय ।

सहाई-स्त्री० अंकोंकी गिनती करते समय दाहिनी ओरसे दूसरा स्थान ।

सहाब-पु० शेर वा बाघका घोर गर्जना; ओरकी बिछाहट; रोते समय ओरसे बिछानेकी आवाज । सु०-साहबा-

रोते समय ओर-ओरसे बिछलाना ।

सहाबना-अ० कि० शेर वा बाघका गरजना; बिछा-बिछाकर रोना ।

सहाना-पु० [फा०] मुँह; मशकका मुँह; नदीके दूसरी नदी या समुद्रमें गिरनेकी जगह; नाली; लगामका मुँहमें रहनेवाला हिस्सा; एक कीमती पत्थर । † स० कि० स्थानीय मानके अनुसार अंकोंकी पढ़ना ।

सहिंगक-पु० एक छोटा पक्षी ।

सहिलौरी-स्त्री० दही बालकर बनाया हुआ गुरुगुला ।

सहिली-वि० दे० 'दाहिना' ।

सहिली-अ० दे० 'दाहिने' ।

सही-पु० खट्टा या जामन डालकर बनाया हुआ दूध ।

-सही-स्त्री० दाहिगल नामक पक्षीकी बोली । सु० - दही करना-बेचनेके लिए किसी बस्तुका प्रचार करते फिरना । (दाह, मुँहमें), -जमा रहना-निष्क्रिय हो जाना या रहना; परस्पर बातचीत न होना- '७८ दिन-मक दोनोंके मुँहमें दही जमा रहा'-प्रेम० ।

सही-अ० कदाचित्, शायद; अथवा, या ।

सहीगर-पु० दहीका पात्र ।

सहीरी-स्त्री० दही रखनेका मिट्टीका पात्र ।

सहीज-पु० विवाहके अवसरपर कन्यापक्षी ओरसे वरपक्ष-को दिया जानेवाला धन और सामान, दावजा ।

सहीला-वि० दग्ध, जला हुआ; परितप्त, पीड़ित; दुःखी; आर्द्र । [स्त्री० 'दहीली' ।]

सहीतरसी-वि० एक ली दस्त । एक ली ठमकी सख्या, ११० ।

सही-पु० दही ।

सह-वि० [सं०] छोटा; बारीक । पु० हृदयका स्नात; हृदय; अग्नि; दावाधि ।

स-पु० बार, दफा । वि० [फा०] जानकार, विद्व, वेत्ता (समासांतमें) ।

स-स्त्री० किसी जंतुका भोजन गर्जन, घोर शब्द ।

स-अ० कि० गरजना, दहाहना ।

स-स्त्री० [फा०] छ रत्तीकी लौक; दिशा, ओर; किसी बस्तुका छटा भाग । * पु० टीका, छोटी पहाड़ी; ढंका ।

स-पु० दे० 'शमर' ।

स-स्त्री० समानता, तुलना, बराबरी ।

स-वि० [सं०] दंडसे संबन्ध रखनेवाला ।

स-पु० [सं०] छत्रीवरदार या पुलिसका काम या पद ।

स-स-स० कि० दंड देना ।

स-वि० [सं०] वह जिसने लोगोंको सरमाकर पैसा देठनेके लिए दंड और मृगचर्म धारण किया हो; कपटी साधु । वि० (दिखानेके लिए) दंडचर्म धारण करने-वाला; ढोंगी, कपटी ।

स-वि० [सं०] दंड देनेवाला ।

स-वि० [सं०] दंत-संबन्धी; जिसने बाणेंद्विपोंका दमन किया हो; दमित; शांत, धीर; खदार । पु० दाता; दमनक ।

स-पु० प्राणीके जबड़ोंमें स्थित वे छोटे-छोटे पक्षिद्व, अस्थिबंध जिनसे काटने, चबानेका काम लेते हैं, रदन,

दंत; आरी, कंभी आदिका दाँता । **मु०**—काटी रोटी—गहरी मित्रता । —**काइना**—गिबगिबाना । —**किरकिरे होना**—हार मानना । —**कुरेदनेकी तिमका न रहना**—पासमें कुछ न होना । —**खदे करना**—परास्त करना; नाकमें दम करना । —**गबना**—किसी वस्तुके लिए बहुत अधिक कालावधि होना । —**बबाना**—दे० 'दाँत पीसना' । —**तले डैंगली बबाना**—दे० 'दाँतों डैंगली काटना' । —**तोड़ना**—परास्त करना । —**दिखाना**—पुष्कना; अपना बक्ष्पन दिखलाना । —**निकालना**—निपोरना—गिबगिबाना; डै बोल देना; व्यर्थ हँसना । —**घर मैक न होना**—अकिचन होना, इतना दरिद्र होना कि खानेकी कुछ न मिले । —**पीसना**—बहुत अधिक कुछ होना । —**बजना**—ठंके मारे दाँतोंका किरकिरेना । —**बैठना**—बेहोशीके कारण कपर-नीचेके दाँतोंका इत प्रकार सह जाना कि मुँह न खुल सके । —**छगना**—दे० 'दाँत गबना'; दे० 'दाँत बैठना' । —**छगाना**—(किसी वस्तुको) हड़प जानेकी ताकमें रहना, आत्मसाद करनेकी प्रबल इच्छा रखना । —**(सँ) डैंगली काटना**—आश्चर्यमें पड़ जाना, दंग हो जाना । —**बड़ना**—आँखमें नुमने लगना (दि०) । —**बबाना**—बुरी दृष्टिसे देखना (शि०) । —**घरसी एकबक**—बकी कठिनाईसे, बकी दिक्कतमें । —**पसीना आना**—बहुत अधिक श्रम पबना । —**में जीम-सा होना**—प्रतिक्षण शत्रुओंके बीचमें रहना । —**से उठाना**—बकी कंजूसीसे (द्रव्य आदि) सचित करना ।

दांतक, दांतिक—वि० [मं०] हाथीदाँतका बना हुआ ।
दाँतना—अ० कि० (पशुओंका) जवान होना; (हथियारका) कुठित होना ।

दाँतली—स्त्री० काय, वाट ।

दाँता—पु० दे० 'दँदना' ।

दाँता किरकिरे, दाँता किरकिरे—स्त्री० तकरार, तू-तूमें ।

दाँति—स्त्री० [सं०] आत्मनिग्रह; अवनमन; तप; क्लेश-सहिष्णुता ।

दाँतिया—पु० रेहका नमक ।

दाँती—स्त्री० बास आदि काटनेका हँसिया; नाब बाँधनेका छँदा; दतपंक्ति; ठर्रा ।

दाँना—स० कि० डठलसे दाना अलग करनेके लिए फसल की बैलोंमें रौंदवाना ।

दाँपल्य—पु० [सं०] पति-पत्नीका संबंध, दंपती-संबंधी कृत्य । वि० दंपतीका; पतिपत्नी-संबंधी ।

दाँम—वि० [सं०] ढोंगी, कपटी ।

दाँमिक—वि० [सं०] दे० 'दाँम' । पु० ढोंग करनेवाला व्यक्ति ।

दाँई—स्त्री० दे० 'दँवरी' ।

दाँयाँ—वि० दे० 'दायिना' ।

दाँई—पु० दे० 'दायें' ।

दाँबना—स० कि० दे० 'दाँना' ।

दाँवनी—स्त्री० एक गहना ।

दाँवरी—स्त्री० रस्सी, डोरी ।

दा—पु० सितारका एक शौक । स्त्री० [सं०] ताप; पश्चात्ताप;

शौचन; दान; रक्षा । वि० स्त्री० देनेवाली (समासांतमें) ।

दा०—प्र० का—नंददा सोइना—मन० ।

दाइ—पु० दे० 'दाय' ।

दाइक, दाइका—पु० दे० 'दायक' ।

दाई—वि० स्त्री० दायिनी । स्त्री० बार, दफा ।

दाई—स्त्री० वह स्त्री जो अपना दूध पिलाकर दूसरेके बच्चेकी पाले, उपमाता, धाम; वधा जनानेवाली स्त्री; बच्चेकी देखरेख करनेवाली दासी । * वि० दे० 'दायी' । **मु०**—से पैट छिपाना—ऐसे व्यक्तिमें कोई बात छिपाना जिसे सारा जेद माव्य हो ।

दाई—पु० दे० 'दायें' ।

दाउ—स्त्री० दावानल ।

दाऊ—पु० बड़ा भाई; कृष्णके ज्येष्ठ भ्राता बलराम ।

दाऊव—पु० [अ०] ईसाई, मुसलमान और यहूदी धर्मके एक पैगंबर ।

दाऊदलानी—पु० [का०] एक तरहका चावल, एक तरहका गेहूँ ।

दाऊदिया—पु० लफेद छिलकेवाला एक उम्दा गेहूँ; एक फूल; एक तरहकी आतिशबाजी ।

दाऊदी—पु० एक तरहका गेहूँ ।

दाऊ—पु० [सं०] बजमान; दाता ।

दाख—वि० [सं०] दक्ष-संबंधी । पु० दक्षिण दिशा ।

दाक्षावण—पु० [सं०] एक वह जिसे दक्ष प्रजापतिने किया था; सुवर्ण; आभूषण; दक्ष गौत्रका पुत्र । वि० दक्ष गौत्रका; दक्ष गोत्रमें उत्पन्न ।

दाक्षावणी—स्त्री० [सं०] अद्विनी, रेवती आदि नक्षत्र; सती; दुर्गा; दंती वृक्ष; कश्यपकी पत्नी आदिति; कर्दु या विनता; दक्ष गोत्रकी कन्या । —**पति**—पु० शिव; चंद्र ।

दाक्षावणी (गिन्)—पु० [सं०] स्वर्णकुंडलधारी मन्त्रधारी ।

दाक्षावय्य—पु० [सं०] सदैव ।

दाक्षाव्य—पु० [सं०] गृध्र ।

दाक्षि—पु० [सं०] दक्षका पुत्र ।

दाक्षिण—पु० [सं०] एक होम; दक्षिणा-संग्रह । वि० दक्षिणा-संबंधी; दक्षिण दिशा-संबंधी ।

दाक्षिणक—पु० [सं०] वह बंधन जिसमें कामनावश इष्टा-पूर्त आदि कर्म करनेवाला पड़ता है । वि० इष्टापूर्त आदि-के द्वारा चंद्रलोककी प्राप्त करनेवाला ।

दाक्षिणात्य—पु० [सं०] दक्षिण देशका निवासी; नारियल । वि० दक्षिण देशका, दक्षिणी ।

दाक्षिणिक—वि० [सं०] दक्षिणा-संबंधी ।

दाक्षिण्य—पु० [सं०] अनुकूलता; निपुणता, पड़ता; उदा-रता; सरलता; नायक द्वारा नायिकाका अनुवर्तन (सा०) । वि० दक्षिणा-संबंधी ।

दाक्षी—स्त्री० [सं०] दक्षकी पुत्री; पाणिनिकी माता । —**पुत्र**—पु० पाणिनि ।

दाक्षेय—पु० [सं०] पाणिनि मुनि ।

दाक्ष—पु० [सं०] दक्षता, निपुणता, कार्यपटुता ।

दाख—स्त्री० अंगू; मुनका ।

दाखि—स्त्री० दे० 'दाख' ।

दाखिक—वि० [का०] नीतर पुसा हुआ, प्रविष्ट; शामिल ।

—आरिष-पु० किसी सरकारी कामपरसे एक व्यक्ति का नाम हटाकर उसके नाम लिखी जायदादपर दूसरेका नाम चढ़ानेकी कानूनी कार्रवाई।—दत्तार-वि० दत्तारमें बिना किसी निर्णयके अलग रख दिया हुआ (कामच)। सु०—करना—अर्थात् अर्थात् करना।—होना—अर्थात् अर्थात् करना किया जाना।

दाक्षिण-पु० [अ०] प्रवेश; अर्थात् करनेका कार्य, अर्थात्—बगी; वह रजिस्टर जिसमें किसी दाक्षिण या अर्थात् की जानेवाली वस्तुका लेखा हो।—महजूर वा चुगीकी रसीद। माहजुबारीकी रसीद।

दाक्षिणी-वि० आन्तरिक, भीतरी, अंदरूनी।
दाय-पु० दाय करनेकी क्रिया; दाह; दाहकर्म; दे० 'दाय'; अ० जलन।

दाय-पु० [फा०] किसी प्राणीके शरीरपरका जन्म-जात अर्थात् धातु या जलने आदिका चिह्न; रंग आदिके रंग जानेसे कपड़े आदिके पद जानेवाला चिह्न, धब्बा; कलंक।—दाय-वि० जिसपर दाग हो, धब्बेदार।—देह-की [हि०] सङ्क, लहर, नीचे आदि सुदवानेके स्थानपर फावनेसे खोदकर लगाया हुआ निशान। सु०—लगावना—कलंकित करना; कलुषित करना।

दायना-स० कि० जलाना; संतप्त करना; तपाये हुए लोहे या अन्य धातुकी सहायसे किसीके शरीरपर विशेष प्रकारका चिह्न अंकित करना; अधिक तेज दवा लगाकर फोड़े आदि-की अर्थात् अर्थात् देना; बंदूक आदि छोड़ना; धब्बा लगावना।

दायी-वि० [फा०] जिसपर दाग लगा हो, दागदार; कलंकित; कलुषित; चरित्रहीन; सजा जुगात हुआ।

दाह-पु० [सं०] पाप, दाह।
दाहक, दाहक-की० जलन; पीडा।

दाहना, दाहना-स० कि० दग्ध होना, जलना; संतप्त होना; ईर्ष्या करना। स० कि० जलाना; संतप्त करना।

दाहणा-पु० जलन, दाह—आठ पहरका दाहणा मोपे सप्ता न जाह—करीर।

दाहक-पु० [सं०] दाह; दाँत।

दाहस-पु० एक तरहका सौंप।

दाहिब-पु० [सं०] अनारका हड्ड।

दाहिम-पु० [सं०] अनार; इलायची।—पत्रक-पु० रोहितक हड्ड।—पुष्प-पु० रोहितक हड्ड; अनारका फूल।

—मिश्र-अक्षण-पु० शुक्र, तोता।

दाहिमीसार-पु० [सं०] दे० 'दाहिम'।

दाह-पु० जबके भीतरके दाँत जिनसे खाते समय अन्न आदि चबाते हैं, चोमक; सुगरका जागेकी ओर निकलता हुआ दाँत। की० घोर शब्द; गरज, दहाड़।

दाहना-स० कि० जलना; संतप्त होना; गरजना। स० कि० जलाना; संतप्त करना, कष्ट पहुँचाना।

दाहा-की० [सं०] दहा, बर्षा दाँत; समूह; हड्ड।

दाह्या-पु० वनाभि; दायाभि; अक्षि; जलन; डंभी दाढ़ी। वि० जलाया हुआ; संतप्त।

दाहिका-की० [सं०] दाढ़ी; दाँत।

दाही-की० दूध; दूधोपरके बाह, दाढ़ी।—आर-पु०

एक गाड़ी जो किसी पुरुषोंको देती है। वि० जिसकी दाढ़ी अन्न गयी हो।

दाह-पु० दाह; दाता। वि० [सं०] विभक्त, छिन्न; धुका हुआ, माँसित।

दाहन-की० दे० 'दातन'।

दाह्य-वि० [सं०] देने योग्य; दानसे चलेनेवाला; छोटाया जानेवाला; अर्थात् दानके रूपमें कोई चीज दी जाती हो। * पु० दानशीलता।

दाहा-पु० [सं०] देनेवाला, दान देनेवाला; महा-जन, उत्तमर्ग; शिक्षक; काटनेवाला।

दाहार-पु० देनेवाला; प्रदान करनेवाला।

दाहि-की० [सं०] देना; छिन्न-भिन्न करना; विनाश; विनाश, वितरण।

दाती-की० देनेवाली, दात्री।

दातन, दातन-की० दे० 'दातन'।

दातुरी-की० दानकी दृष्टि—'दातुरी बड़े पै न माँगे बिन करे दातुरी'—धन०।

दातुरा-की०, दातुर्य-पु० [सं०] दान देनेकी प्रवृत्ति, दान-शीलता, दान्यता।

दातन-की० नीम, बड़ आदिकी गोली टहनीका वह डकका जो दाँत साफ करनेके काममें लाया जाता है।

दातुर-पु० [सं०] नातक, पपीहा; जलकाक; मेघ, बादल।

दातुरी-की० दे० 'दातन'।

दातुरी-पु० [सं०] दे० 'दातुर'।

दातुर-पु० [सं०] ईसिया।

दात्री-वि० की० [सं०] देनेवाली; दान करनेवाली। की० ईसिया।

दाह-पु० [सं०] दाता; यष्टका अनुष्ठान; यष्ट।

दाह-पु० [सं०] दान।—दाह-वि०, पु० दान देनेवाला।

दाह-की० एक प्रसिद्ध चर्मरोग।—अर्द्ध-पु० चक्रवर्ण।

दाह-की० [फा०] हसाक, न्याय।—फवाह-वि० फरि-बादी, न्यायका मार्ग।—फवाही-की० फरियाद, न्याय-की प्रार्थना।—हकी-की० हसाक पाना, न्यायप्राप्ति।

सु०—देना—न्याय करना; न्यायोचित प्रस्ता करना।

दाहनी-की० [फा०] दी जानेवाली रकम या वस्तु; पेशगी दी जानेवाली रकम।

दाहरी-पु० एक चकत्ता गाना; एक ताक।

दाहरी-की० दक्षिा सास।

दादा-पु० पिताके पिता, पितामहके छिद प्रपुत्र आदर-सूचक शब्द; बर्षा भार; गुरुजन।

दादि-की० 'दाद'; फरियाद।

दाही-की० पिताकी माता, पितामही। पु० फरियाद करनेवाला।

दाहुर-पु० मेदक, ददुर।

दाहू-पु० 'दादा' शब्दका संशोधन कारकका एक रूप; एक पंथमयके साधु।—दाहल-पु० दाह।—पंथी-वि०, पु० दाहके मतको माननेवाला, दाहका अनुयायी।

दाह-की० जलन; ताप।

दाहना-स० कि० जलाना; तपाना; पीडा देना।

दाहिक-वि० [सं०] दाहसे बना हुआ वा जिसमें दाह

ढाला गया हो। पु० दही बेचनेवाला; दहीके साथ कोई चीज खानेवाला; एक तरहका तक।

दाचीक-पु० [सं०] दधीयिके गीयका व्यक्ति, दधीयिका वंशज।

दान-पु० [सं०] देनेकी क्रिया; धर्मकी दृष्टिसे या दयावश किसीकी कोई वस्तु देनेकी क्रिया; दी हुई वस्तु; शिक्षण; शत्रुपर विजय पानेके साम आदि चार उपायोंमेंसे एक, कुछ देकर शत्रुकी वशमें करनेकी नीति; उदारता; हाथीके गंडखलमें निकलनेवाला मदजल; पालन; छेदन; शुद्धि; चरागाह; जोष। -**काम-वि०** उदार, दानशील। -**कुर्या-खी०** हाथीका मद। -**तोष-पु०** दे० 'दान-वारि'। -**धर्म-पु०** दानरूप धर्म। -**पति-पु०** अकूर नामके एक यादव; बहुत दानी व्यक्ति। -**पत्र-पु०** वह लेख या पत्र जिसमें किसी वस्तुके दानरूपमें दिने जानेका उल्लेख हो। -**पात्र-पु०** दान देने योग्य व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसे दान दिया जा सके। -**प्रतिभाष्य-पु०** कण दिखानेकी जमानत। -**प्रतिभू-पु०** वह प्रतिभू जो कण बमूल करा देनेकी जमानत ले। -**मिह-वि०** रिशत देकर फोडा हुआ। -**योग्य-वि०** दानरूपमें देने योग्य। -**शीला-खी०** कृष्णकी एक लीला जिसमें उन्होंने म्हालि-नोंसे कररूपमें गोरस बमूल किया था। -**ब्रह्म-पु०** देव-ताओं और गंधर्वाँके एक प्रकारके घोड़े जो अत्यंत वेगवान् होते और मृदा प्करूप रहने हैं; वैश्य। -**वारि-पु०** हाथीका मदजल; दे० क्रममें। -**वीर-पु०** बहुत दानी व्यक्ति; वीर रसका एक भेद (सा०)। -**शील-खूर-वि०** जिसका स्वभाव दान देनेका हो, जो बराबर दान दिया करता हो। -**सौह-वि०** दे० 'दानशील'। -**सामर-पु०** मंगलमें प्रचलित एक महादान जिसमें भूमि, आसन आदि सोलह वस्तुओंमेंसे प्रत्येक वस्तु सोलह-सोलह की संख्यामें दी जाती है।

दान-पु० [का०] रखनेकी चीज या पात्र, आधार (समास-में-जैमे कलमदान, पानदान, पीकदान)।

दानक-पु० [सं०] कुत्तित दान, लुच्छ दान।

दानव-पु० [सं०] कश्यपके पुत्र जो दनुके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। -**गुरु-पु०** शुक्राचार्य।

दानवारि-पु० [म०] विष्णु; इंद्र; देवता; दे० 'दान'में।

दामरी-वि० दामव-सवरी; दानवोचित। खी० [सं०] दानवकी खी।

दानवेंद्र-पु० [सं०] बलि।

दामांतराव-पु० [सं०] दाममें विघ्न डालनेवाला पापकर्म।

दाना-पु० [का०] अनाजका एक कण; अन्न; भोजन; चबेना; अनार, पोस्ता आदिका एक-एक बीज; मनका, गुरिया; एकमें पिरोकर या एक साथ जोड़कर काममें लायी जाने-वाली गोल या पटलदार वस्तुओंमेंसे एक-एक; अरद, रवा; फुंसी। -**पानी-पु०** अन्न-जल; खाना-पीना। -**बंवी-खी०** खड़ी सेतीकी कूट। -**(ने)दार-वि०** जिसमें दाने या रें हों, रवादार। **मु०** -**पानी** उठना-जीविका न रहना, रोजी खान होना। -**(ने)दानेकी सरसबा-भूखी** मरना। -**दानेकी मुहसाज-जिसे** एक दाना भी भयस्सर न हो, अति निर्धन।

दाना-वि० [का०] बुद्धिमान्, समझदार। -**ई-खी०** बुद्धि-मत्ता, समझदारी। -**(ने)दार-वि०** बुद्धिमान् (हिंदीमें प्रयुक्त)।

दानाध्यक्ष-पु० [सं०] वह राजकर्मचारी जिसके हाथमें दानका प्रबंध हो।

दामि-वि०, पु० दे० 'दानी'।

दामिनी-खी० [सं०] दान करनेवाली खी।

दामिनी-वि० दे० 'दानी'।

दानिष-खी० [का०] अन्न, बुद्धि। -**मंद-वि०** बुद्धिमान्। **दानी(निष्)-वि०** [सं०] दान करनेवाला; दानशील, उदार। पु० दान करनेवाला पुत्र, दाता; कर उगाहने-वाला।

दाचीक-वि० [सं०] दान करने योग्य; दान पानेवाला। पु० दान।

दानु-वि० [सं०] वीर; विजयी। पु० दाता; अमृतदय; संतुष्टि; बापु; दानवा; दान; दूँद।

दानो-पु० दे० 'दानव'।

दाप-पु० दप, अर्धकार, धर्म; प्रताप; शक्ति; उत्साह; क्रोध; रोष; अलन; दुःख।

दापक-पु० दवानेवाला; दहन करनेवाला; दूर करनेवाला; मिटानेवाला, नाशक।

दापन-पु० [सं०] किसीको देनेके लिए प्रेरित करना।

दापना-सं० कि० दवाना; वंजित करना।

दापित-वि० [सं०] जो देनेके लिए बाध्य किया गया हो; जिसपर अर्धदंड लगाया गया हो; जिसका निर्णय या फैसला किया गया हो।

दाव-पु० दबने या दवानेका भाव, दबाव, चाँप, भार; शासन; नियंत्रण; रोष, अधिकार, प्रभुत्व। -**दार-वि०** प्रभावशाली; मस्त। **मु०** -**दिल्लाहा-रोष** जमाना, प्रभु-ताका भय दिखाना। -**मानना-प्रभुता** स्वीकार करना, किसीकी प्रबलतासे भय खाना; बशर्तों होकर रहना।

दावना-सं० कि० दे० 'दवाना'।

दावा-पु० कलम लगानेके लिए वृक्षकी टहनियों की मिट्टीमें गाड़ना या दवाना।

दाखिल-पु० एक विधिवा।

दाम-पु० दे० 'दर्म'।

दाम-पु० दमकक्षा लुटीवांश; समूह; माला; दूध, क्षीमत; द्रव्य, बपया-पैसा; सिक्का; शत्रुपर विजय पानेके चार उपायोंमेंसे एक।

दाम-पु० **पु०** [सं०] रज्जु, रस्ती; पशुओं आदिको बाँधने की रस्ती; ऊँची; माला; रेशा, लीक; फंद।

दामणी-खी० दामिनी, विजली-चंद्रद्विच चमकै दामणी गरनै फल भारी हो'-नीरा।

दामन-पु० [का०] अंगरखेका नीचे लटका हुआ भागा; पहाड़के नीचेकी जमीन; चाल। -**शीर-वि०** पल्ला पक-बनेवाला; दावेदार; मदद चाहनेवाला।

दामनी-खी० [सं०] वह लंबी रस्ती जिसमें छोटी-छोटी रस्तियाँ बाँधकर बहने या पशु बंधे जाते हैं। [का०] वह कपडा जो घोड़ेकी पीठपर पधा रहता है।

दामरि, दामरी-खी० रस्ती।

दाम्नायक, दाम्नायक-पु० [सं०] वह रस्ती जिसे चोनेके पिछले पैरोंमें फंसाकर खंडेमें बांधते हैं ।

दाम्ना-खी० [सं०] रस्ती; * दावाधि ।

दामाद्-पु० जामाता ।

दामासाह-पु० वह दिवाबिया जिसकी जायदाद महाजनोंमें बँट जाय ।

दामिनी-खी० [सं०] विधुद; विजली; बिजोंका एक सिरका गहना ।

दामी-वि० कीमती । खी० कर ।

दामोदर-पु० [सं०] कृष्ण; नारायण ।

दाव्य-पु० दे० 'दाव्य' । खी० दे० 'द्वैत' ।

दाव-पु० [सं०] देने योग्य धन; वह जिसे किसीको देना हो; विवाहके समय कन्या और जामातको दिया जानेवाला द्रव्य आदि, दावजा; वह पैतृक या संबंधीकी संपत्ति जो पानेवालोंमें बाँटी जा सके; दाग; खंडन; विभाग; क्षति; खान; * दे० 'दाव' । -**बंश-पु०** दायमें सभसाव हिस्सा बँटनेवाला, भाई । -**भारा-पु०** पैतृक या संबंधीकी संपत्तिका उत्तराधिकारियोंमें विभाजन, वरासतकी निरूपितता बँटवारा; इसकी व्यवस्था या कानून; दावाधिकार ।

दावक-पु० [सं०] देनेवाला, दाता; दायाद, उत्तराधिकारी । (खी० 'दायिका')

दावज, दावजा-पु० विवाहके समय वरपक्षको दिया जानेवाला धन आदि, पैतृक, देवज ।

दावबी-वि० दाव्य, अवसरकी खोजमें रहनेवाला - 'मन भसमें न रोके' रहै दावबी - वन० ।

दावस-अ० [अ०] सदा, हमेशा, उन्नत ।

दावसी-वि० [अ०] सदा रहनेवाला, सार्वकालिक; स्थायी ।

दावमुलहस-पु० [अ०] आजीवन कारावास (का दब), बामर ।

दावर-वि० [अ०] चलनेवाला, फिरनेवाला, जो निर्णयके लिए हाकिमके सामने पेश किया गया हो । **मु०-करना-** निर्णयके लिए मुकदमा अदालतमें पेश करना ।

दावरा-पु० [अ०] गोल घेरा, वृत्त; कार्य या अधिकारका क्षेत्र ।

दाव्य-वि० दाहिना ।

दावा-खी० दे० 'दाया'; [फा०] दे० 'दाव' । -**गरी-खी०** दावका काम ।

दावागत-वि० [सं०] जो मौकसी हिस्सेमें पड़ा हो । पु० दावके रूपमें प्राप्त दास ।

दावाद-पु० [सं०] दावका अधिकारी, हाति; संपिब संबंध; पुत्र ।

दावाद, दावादी-खी० [सं०] कन्या; दावकी अधिकारिणी ।

दावाध-पु० [सं०] वह संपत्ति जिसपर संपिब कुंडबिचोंका अधिकार पहुँचे, दाध ।

दावापवर्तन-पु० [सं०] उत्तराधिकारमें किसी हुई जायदादकी जम्ती ।

दायित-वि० [सं०] दे० 'दापित' ।

दायित्व-पु० [सं०] दायी वा जिम्मेदार होनेका भाव,

जिम्मेदारी ।

दायी (यिद्व)-वि० [सं०] देनेवाला; पहुँचानेवाला (इस अर्थमें इस शब्दका प्रयोग समासमें उत्तरपदके रूपमें होता है); उत्तरदायी ।

दाव्य-अ० दाहिनी तरफ ।

दार-पु० [सं०] चीरना, विदारण; दरार, छिद्र । खी० खी, पत्ती । -**कर्म (द्व)-पु०, -क्रिया-खी०** विवाह ।

-**ग्रहण-परिग्रह-पु०** विवाह । -**बलिमुद् (द्व)-पु०** बगला ।

दार-वि० [फा०] रखनेवाला;...से युक्त । * पु० दार, काष्ठ । † खी० दाल ।

दारक-पु० [सं०] बालका पुत्र; शायक; ग्राम-शुद्ध । वि० चीरनेवाला, विदीर्ण करनेवाला ।

दारखीनी-खी० एक प्रकारका तख जिसका छिद्रका दवा और मसालेके काम आता है ।

दारण-पु० [सं०] निर्मली; वह अन्न आदि जिससे कुछ चीरा जाय; चीरनेकी क्रिया, भेदन; औषधका एक भेद । वि० चीरने या विदीर्ण करनेवाला ।

दारणी-खी० [सं०] दुर्गा ।

दारद्-पु० [सं०] एक प्रकारका विष; पारा; हंसुर; सद्गद् ।

दारन-वि० दे० 'दाहन'; 'दारण' । पु० दे० 'दारण' ।

दारना-सं० क्रि० चीरना, फाटना; नष्ट कर देना, मिटा देना ।

दारमदार-पु० [फा०] किसी कार्यके होने या न होने अथवा बनने-बिगड़नेकी पूरी जिम्मेदारी; कार्यभार ।

दारव-वि० [सं०] दाह-संबंधी, लकड़ीका ।

दारा-खी० खी, पत्नी, आयी । पु० [फा०] मालिक; दाह ।

दाराई-खी० [फा०] एक तरहका लाल रेशमी कपड़ा; हुकूमत ।

दाराचार्य-पु० [सं०] अध्यापक ।

दारि-खी० [सं०] विदारण, छेदन; * दे० 'दाल' ।

दारिद्व-पु० दे० 'दाहिम' ।

दारिका-खी० [सं०] कन्या, पुत्री ।

दारित-वि० [सं०] चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ ।

दारिद्व-पु० दे० 'दारिद्व' ।

दारिद्व-पु० दे० 'दारिद्व' ।

दारिद्व-पु० [सं०] दरिद्रता, धनहीनता, निर्धनता, गरीबी ।

दारिम-पु० दे० 'दाहिम' ।

दारी-खी० [सं०] दरार; एक छद्म रोग जिसमें बाहुके प्रकोपसे तलबेका चमका फट जाता और दर्द करने लगता है, देहार्द्र; * (खियोंकी दी जानेवाली एक गांजी-मुदेक कुल्ला नारी-अपनो पति खँझि औरनिस्तो रति, उयो दारनिमें दारो-स्वामी हरितास ।

दारी (यिद्व)-पु० [सं०] पति; वह पुरुष जिसके कई पत्नियाँ हो ।

दाव-पु० [सं०] काष्ठ, काठ; पीतल; देवदार; शिली; कारीगर; उदार व्यक्ति । वि० दानशील; चरपट दूट या फूट जानेवाला; विदारण करनेवाला । -**कवली-खी०** कठकेला । -**कव-पु०** लकड़ीका काम । -**गंधा-खी०**

विरोज। -**पार्श्व-क्षी०** कठपुतली। -**खीली-क्षी०** [हि०] दे० 'दारचीनी'। -**ज-पु०** एक तरहका ढोल। **वि०** लकड़ीका बना हुआ। -**जोषित-क्षी०** दे० 'दास-योषित्'। -**नट्टी, नारी-क्षी०** कठपुतली। -**विष्ठा-क्षी०** दाहवल्ली। -**पत्री-क्षी०** हिंदुपत्री। -**पात्र-पु०** लकड़ीका बना हुआ पात्र, काठका बरतन। -**पीता-क्षी०** दाहवल्ली। -**पुत्रिका, पुत्री-क्षी०** कठपुतली। -**फल-पु०** पिस्ता। -**मदस्याह्वय, मुल्याह्वय-पु०** गोह। -**मुच-पु०** एक विष। -**मूषा-क्षी०** एक जोषण। -**यंत्र-पु०** काठका बना हुआ यंत्र; कठपुतली। -**योषा, योषित्, योषिता-क्षी०** कठपुतली। -**बध्-क्षी०** काठकी पुष्पिया। -**सार-पु०** चंदन। -**सिता-क्षी०** दारचीनी। -**क्षी-क्षी०** कठपुतली। -**हरिद्रा-क्षी०** दाहवल्ली। -**हृद्री-क्षी०** [हि०] एक पीली लकड़ी जो दवाके काम आती है। -**हस्त, हस्तक-पु०** काठकी कछड़ी।

दाहक-पु० [सं०] देवदाह; कृष्णका सारथि। **दाहका-क्षी०** [सं०] काठकी पुतली; काठकी मूर्ति। **दाहजान-पु०** भ्रमर, मौरा (मुर)। **दाहण-वि०** [सं०] कड़ा, कठोर; निर्दय; अयंकर; उग्र; घोर; तीव्र; कंषा देनेवाला। पु० मयानक रस; चिन्मक; विष्णु; एक नरक। **दाहणक-पु०** [सं०] बालोंकी जड़में होनेवाला एक रोग, रुसी। **दाहण्य-पु०** [सं०] कठोरता, निर्दयता। **दाहन-वि०** दे० 'दाहण'। **दाहमय-वि०** [सं०] काठका; काठका बना हुआ। **दाह-क्षी०** [फा०] दवा; वास्द; शराब। - **दरमन-पु०** उपचार, इलाज। **दाहबा-पु०, दाहबी-क्षी०** शराब। **दारो-पु०** अनारका दाना या बीज। **दारोगा-पु०** [फा०] हिफाजत करनेवाला; निगरानी करनेवाला; धानेका प्रधान अधिकारी, धानेदार। -**है, गरी-क्षी०** दारोगाका काम या ओहदा। **दाह्य-पु०** [सं०] हठ होनेका भाव, हदता। **दाहुर-वि०** [सं०] मेढक-संबंधी। पु० एक तरहका शस्त्र; पानी; लास। **दाहुरक-वि०** [सं०] मेढक-संबंधी। **दाहुरिक-पु०** [सं०] कुम्हार (?)। वि० मेढक-संबंधी। **दार्भ-वि०** [सं०] दम-सम्बंधी; कुशका। **दारथो-पु०** अनाद; अनारका दाना। **दार्बह-पु०** [सं०] मोर। **दार्भ-वि०** [सं०] काष्ठ-संबंधी; काठका बना हुआ। **दार्बट-पु०** [सं०] मन्त्रणा करनेका पुष्प स्नान; मन्त्रणाशुह। **दार्बाघाट, दार्बाघात-पु०** [सं०] कठकीकना नामक पक्षी। **दार्बिका-क्षी०** [सं०] दाहवल्लीसे तैयार किया हुआ तुलिया; गोजिहा। **दार्बिपत्रिका-क्षी०** [सं०] गोजिहा। **दार्बी-क्षी०** [सं०] दाहवल्ली; गोजिहा; देवदारु; हरिद्रा। -**फाभोजन-पु०** रसाजन।

दार्श-वि० [सं०] दर्श-अभावस्याके दिन होनेवाला। **दार्शनिक-पु०** [सं०] दर्शन शास्त्रका ज्ञानकार, तत्त्ववेत्ता। वि० दर्शनशास्त्र-संबंधी। **दार्षद-वि०** [सं०] पश्चरपर पीसा हुआ; प्रस्तरमय; खनिज। **दार्षहृत्-पु०** [सं०] एक यह जिसे खड्गती नदीके किनारे करनेका विधान है। **दाहार्त, दार्हातिक-वि०** [सं०] दहार्तवृत्त; दहार्त-संबंधी; दहार्त द्वारा जिसका स्पष्टीकरण किया गया हो। **दाह-क्षी०** दली हुई अरहर, मूँग आदि जिसे सिक्काकर मात-रोटी आदिके साथ खाते हैं; पकायी हुई दाह; सालन; खुरद। पु० [सं०] एक तरहका वन्य मनुष्य; कोदो। -**मोठ-क्षी०** [हि०] धी या तेजमें तली हुई दाह जिसमें नमक, मिर्च आदि मिलाते हैं। **मु०** -**गळना-युक्तिका** सफल होना। -**में काला होना-कोई** दीप छिपा होना। -**रोटी चलना-निर्वाह होना।** **दाहचीनी-क्षी०** दे० 'दारचीनी'। **दाहन-पु०** [सं०] दौतका एक रोग, दंतक्षय। **दाहना-म०** कि० दे० 'दहना'। -**पय पीवत** पूतना दाही। -**घूर**। **दाहल-पु०** [सं०] एक स्वार विष। **दाहा-क्षी०** [सं०] महाकाल नामक लता। **दाहान-पु०** बरामदा; ओमारा। **दाहिम-पु०** [सं०] अनारका पेड़। **दाही-क्षी०** [सं०] देवदाली नामक पौधा। **दाहिम-पु०** [सं०] इद्र। **दार्भ-पु०** बार, मर्तवा; कार्यसिद्धिका उपयुक्त अवसर, मौका, सुयोग; हठसाधनका उपाय, युक्ति; कुश्रीका पंच; कपट-पूर्ण युक्ति, छलनेकी चाल; जुए आदिके खेलमें जिताने-वाली चाल; खेलनेकी बारी; ङ जगह, रिक्त स्थान। **दार्भना-म०** कि० दे० 'दौना'। **दार्बरी-क्षी०** दे० 'दौबरी'। **दाब-पु०** [सं०] वन, जंगल; वनमें लगेनेवाली अग्नि; दाह; पीछा, नरेश; ङ एक हथियार; जगह, रिक्त स्थान। **दावत-क्षी०** [अ०] भोजका निमन्त्रण; कोई काम करनेका मुलाका। -**तवाजा-पु०** स्नान-पान, आदर-स्त्कार आदि। **मु०** -**देना-भोज** आदिके लिए निमंत्रित करना। **दावन-पु०** दमन; संहार; हँसिया; दमन। वि० नाश। करनेवाला। **दावना-म०** कि० दमन करना; नष्ट करना; मिटा देना; दौना। **दावनी-क्षी०** खियोंका एक शिरोभूषण। * वि० क्षी० नष्ट करनेवाली। **दावरी-क्षी०** दे० 'दौवरी'। **दावा-क्षी०** दे० 'दावाक्षि'। पु० [अ०] स्वस्वकी रक्षा या अन्यायके प्रतीकारके लिए न्यायालयमें दिया हुआ प्रार्थनापत्र; किसी वस्तुको अपना बताकर उसकी ओरदार माँग करना; अधिकार, हक; हँक; ओर; किसी बातकी यथार्थताके विषयमें हठ आत्मविश्वास; गर्वोक्ति। -**गरीर-पु०** दावा करनेवाला, अधिकारीकी माँग करनेवाला। -**(वे)वार-पु०** दे० 'दावागीर'।

दावागि-**झी०** [सं०] बनकी आग जो बाँस आदिके रगड़ खानेसे स्वतः उग जाती है।

दावात-**खी०** दे० 'दावत'।

दावाबल-**पु०** [सं०] दे० 'दावाबि'।

दावित-**वि०** [सं०] पोषित।

दास-**पु०** [सं०] धीवर, मल्लुआ, केवट; भूस्व, चाकर।

—**ग्राम**, —**पुर**—**पु०** वह पुर या गाँव जहाँ प्रधानतया धीवर बसते हैं।—**मंदिनी**—**झी०** व्यासकी माता सत्यवती।

दासरथ-**वि०** [सं०] दशरथका; दशरथ-संबंधी। पु० दशरथके पुत्र, राम आदि।

दासरथि-**पु०** [सं०] दशरथके पुत्र, राम, भरत आदि।

दासरथिक-**पु०** [सं०] दस दिनोंमें समाप्त होनेवाला बाग। वि० दशरथ-संबंधी।

दासोच-**पु०** [सं०] धीवरसे कथ्य संतान।

दासोची-**झी०** [सं०] सत्यवती।

दासोच-**पु०** [सं०] 'दासोच'।

दासोच-**पु०** [सं०] मालवदेश; मालवनरेश; मालव-निवासी।

दास्त-**झी०** [फा०] परवरिस, भरण-पोषण, खबरगोरी; कुम्हारका आर्वा।

दास्त-**वि०** [सं०] देनेवाला; उदार।

दास-**पु०** [सं०] वह जो दूसरेकी सेवाके लिए अपनेको समर्पित कर दे; भूस्व, किरात, नौकर; खरीदा हुआ नौकर, गुलाम (दास सात प्रकारके माने गये हैं—ज्वाजाह्न, भक्त, गृह्यज, क्षीत, दक्षिण, पैदल, दण्डदास); स्यूतीकी एक उपाधि; बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि; हस्त्य; वृत्रा-सुर; शातात्मा, आसहाजी; ब्राह्म; धीवर; प्रतिगृहीता, दानपात्र; * विछावन।—**जन**—**पु०** दास, सेवक।—**मंदिनी**—**झी०** व्यासकी माता, सत्यवती।—**भाव**—**पु०** दासता।

दासक-**पु०** [सं०] दास, सेवक; एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

दासता-**झी०** [सं०] दास होनेका भाव, दासभाव, गुलामी, परतन्त्रता; दासवृत्ति।

दासन-**पु०** दे० 'दासन'।

दासा-**पु०** दीवारसे सटाकर उठाया हुआ पुस्ता; दरवाजे या दीवारकी कुसीके ऊपर लगायी हुई लकड़ी या पत्थर; हँसिया।

दासानुदास-**पु०** [सं०] दासोंका दास; (छा०) अत्यंत विनम्र सेवक।

दासायन-**पु०** [सं०] दासी-पुत्र।

दासिका-**झी०** [सं०] दे० 'दासी'।

दासी-**झी०** [सं०] सेवा-टहल करनेवाली स्त्री, सेविका; धीवरकी स्त्री; काकबधा; नीलाम्बा, नीलकित्ति; वेदी।

दासेच-**पु०** [सं०] दासीका पुत्र; दास।

दासेर, दासेरक-**पु०** [सं०] दासीका पुत्र; ब्राह्म; धीवर; अँट।

दास्त, दास्तान-**झी०** [फा०] बृचांत; कहानी; विवरण।

दास्थ-**पु०** [सं०] मस्तिका एक भेद; दे० 'दासता'।

दाख-**वि०** [सं०] अधिनी नक्षत्र-संबंधी।

दाह-**पु०** [सं०] जलाना; जलन, ताप; चमकता हुआ लाल रंग (आकाशका); एक रोग जिसमें शरीरमें विशेष जलन

होता है; संताप; मुर्दा जलाना; शव जलानेका कृत्य।

—**कर्म(श्)**—**पु०** शवसंस्कार, शव जलानेका कृत्य।

—**काह**—**पु०** अगर।—**क्रिया**—**झी०** दे० 'दाहकर्म'।

—**ज्वर**—**पु०** एक ज्वर जिसमें शरीरमें बहुत जलन होता है।—**सर**—**स्थल**—**पु०** इमशान।—**हर**,—**हरण**—**पु०** खस।

दाहक-**पु०** [सं०] अग्नि; निष्पक हृष्ट, चीता; लाल चीता।

वि० जलानेवाला; तप्त करनेवाला। [झी० 'दाहिका'।]

दाहान-**पु०** [सं०] जलाने या जलवानेका काम; जलाना या जलवाना; तप्त कोहोसे जलाना।

दाहना-**सं०** कि० जलाना, भस्मात् करना; नष्ट करना; कष्ट पहुँचाना, संतप्त करना। वि० दाहिना।

दाहा-**पु०** दे० 'दाह'।

दाहागुरु-**पु०** [सं०] अगर।

दाहिन-**वि०** दाहिना; अनुकूल।

दाहिना-**वि०** शरीरके उस ओरका जो पूर्वकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर दक्षिण दिशाकी ओर पड़े, बायाँका उल्टा, दक्षिण; दाहिने हाथकी ओर पड़नेवाला; अनुकूल। [झी० 'दाहिनी'।] सु०—(नी) होना;—**लाना**—**प्रदक्षिणा**, परिक्रमा करना।

दाहिने-**अ०** दाहिने हाथकी ओर। सु०—**होना**—**अनु**—**कूल** होना।

दाही(हिन्)—**वि०**, **पु०** [सं०] जलानेवाला; कष्ट देनेवाला।

दाहुक-**वि०** [सं०] दे० 'दाहो'।

दाह-**वि०** [सं०] जलाने योग्य; जल उठनेवाला।

दिह-**पु०** [सं०] जूँ आदिका अंग।

दिहि-**पु०** [सं०] दे० दिहिर'; विपुलांतक।

दिहिर-**पु०** [सं०] एक प्राचीन बाजा।

दिहीर-**पु०** [सं०] समुद्रफेन; दे० 'दिहीर'।

दिजना-**पु०** दे० 'दीवा'।

दिजरी-**झी०** दे० 'दिजली'।

दिजली-**झी०** छोटा दीवा।

दिजा-**पु०** दे० 'दीवा'।—**बत्ती**—**दे०** 'दीवा-बत्ती'।—

—**सलाई**—**झी०** दे० 'दियासलाई'।

दिवछा-**पु०**, दिवछी-**झी०** सुले हुए चेचकके दानोंके ऊपरकी पपड़ी, खुरद; छोटा दीवा; मछलीकी चोई या सेहरा।

दिह-**पु०** [अ०] एक प्रकारका ज्वर जो यक्ष्माके रोगीको होता है, नपेदिक। वि० नंग आया हुआ, परेशान, आजिज।

दिहदाह-**पु०** दे० 'दिग्दाह'।

दिहली-**झी०** चनेकी दाल।

दिह(श्)—**झी०** [सं०] दिशा; आदेश, प्रश्न; दृष्टिकोण; दूरवर्ती क्षेत्र; स्थान; दंतस्थत; दसकी सख्या; संकेत; इवाला; उदाहरण; ओत्रकी अधिष्ठात्री देवी।—**कम्पा**—**झी०** दिशारूपिणी कन्या।—**कर**—**वि०** जवान। पु० जवान आदमी; शिव।—**करिका**—**करी**—**झी०** सुवती।

—**करी(रिन्)**—**पु०** दिग्गज।—**काला**—**कामिनी**—**झी०** दे० 'दिक्क्या'।—**कुंजर**—**पु०** दिग्गज।—**कुमार**—**पु०** एक देववर्ग।—**चक्र**—**पु०** दिग्मंडल; दिशाओंका समूह;

किति। -पति-पु० आठ ग्रह जो आठ दिशाओंके
सामी माने जाते हैं (ज्यो०); दिक्पाठ। -पति-पाठ
-पु० दस दिशाओंके रक्षक देवता-ईन्द्र (पूर्व), अग्नि
(अधिकांश), यम (दक्षिण), नैऋत (नैऋत कोण),
वरुण (पश्चिम), मरुत् (वायुकोण), कुबेर (उत्तर), ईश
(ईशानकोण), ब्रह्मा (अर्धदिशा) और अनंत (अधो-
दिशा); एक छंद। -प्रेक्षण-पु० (मयसे) चारों ओर
देखना। -शिखा-स्त्री० पूर्वदिशा। -शूळ-पु० वह
समय जब किसी विशेष दिशामें जाना बंथित हो। -
साधन-पु० वह उपाय जिससे दिशा जानी जाय। -
सिंधुर-पु० दिग्मज। -सुंदरी-स्त्री० दिशारूपी सुंदरी।
-सामी (मिन्)-पु० दे० 'दिक्पति'।

दिक्-पु० [सं०] करभ, हाथीका बन्ध।
दिक्कल-स्त्री० [अ०] मुष्टिकल, लंगी, परेशानी, कठिनाई।
-तख-वि० जिसमें दिक्कतें हैं, कठिनाईसे होनेवाला,
कठिन।

दिखना-अ० कि० दिखाई देना।
दिखराना-स० कि० दे० 'दिखाना'।
दिखरावना-स० कि० 'दिखलाना'।
दिखरावनी-स्त्री० दिखलानेका काम या भाव; (नवग्रह
आदिका) मुँह देखनेका नेत्र।

दिखलवाई-स्त्री० दिखलवानेकी किया या भाव; दिखल-
वानेकी उजरत।

दिखलवाना-स० कि० दिखलानेका काम कराना, दिख-
लानेमें दूसरेकी प्रवृत्त करना।

दिखलाई-स्त्री० दिखलानेका काम या भाव; दिखलानेकी
उजरत।

दिखलाना-स० कि० देखनेका काम करना, दूसरेकी
देखनेमें लगाना; किसी वस्तुका चाक्षुष प्रत्यक्ष कराना;
प्रदर्शित कराना; प्रकट करना, जाहिर करना।

दिखलावा-पु० दे० 'दिखावा'।

दिखलैया-पु० दिखलानेवाला; देखनेवाला।

दिखहार-पु० देखनेवाला।

दिखाई-स्त्री० दिखानेकी किया या भाव; दिखानेकी उज-
रत; देखनेकी किया या भाव; देखनेकी बटकेमें दिया जाने-
वाला धन।

दिखाड़-वि० देखने योग्य; दिखाने योग्य; जो केवल
देखनेभरको हो, दिखावा।

दिखाना-स० कि० दे० 'दिखलाना'।

दिखाव-पु० देखनेकी किया; दृश्य।

दिखावट-स्त्री० दिखानेका भाव या तर्ज; बाह्य आडंबर।

दिखावटी-वि० जो देखनेभरको अच्छा लगे, दिखावा,
जो केवल ऊपर-ऊपरसे देखनेमें सुंदर या अच्छा हो।

दिखावा-पु० आडंबर, ढोंग।

दिखौं-स्त्री० दे० देखनेवाला; दिखानेवाला।

दिखौआ, दिखौआ-वि० दिखावटी।

दिग्-दिक्का समासगत रूप। -अंशवा-स्त्री० दे०
'दिक्पति'। -अंश-पु० दिशाका अंश, छोर। -अंशर-
पु० दो दिशाओंके बीचकी जगह। -अंशर-पु० शिव,
शंकर; जैनियोंका एक संप्रदाय; बंधकार (जो दिशाओंके

लिए बन्ध-गुन्थ है)। वि० जिसके लिए दिशाएँ ही बन्ध-
रूप हों, नभ, नंगा। -अंशरी-स्त्री० दुर्गा। -अंश-
पु० कितिगुत्तका ३६० बीं अंश। -अधिप-पु० दिक्-
पति। -अध्वरथान-पु० वायु। -आगत-वि० दूरसे
आया हुआ। -इभ-पु० दिग्मज। -ईश-ईश्वर-पु०
दे० 'दिक्पति'। -गज-पु० वह हाथी जो पृथ्वीकी
सैनालयेके लिए किसी दिशामें स्थित माना जाता है।
(आठों दिशाओंमें आठ दिग्गजोंकी स्थिति मानी गयी है)।

-गर्भद्व-पु० दिग्मज। -जय-स्त्री० दे० 'दिग्बिजय'।
-ज्या-स्त्री० दे० 'दिग्गज'। -ईंसी (विन्)-पु०

दिग्मज। -दर्शकयंत्र-पु० दिशाका ज्ञान करानेवाला
एक यंत्र जिसकी सूईकी नोक सदा उत्तरकी ओर रहती है,
कुतुबनुमा, कंपस। -दर्शन-पु० सामान्य परिचय,
सामान्य ज्ञान; दिशाका ज्ञान कराना; कुतुबनुमा।

-दाह-पु० एक उपाय जिसमें असमयमें दिशाओंमें
लगाईं छा जाती हैं और ऐसा छात होता है जैसे मान

लगी हो। -देवता, देवत-पु० दे० 'दिक्पति'। -
द्योतकयंत्र-पु० दे० 'दिग्दर्शकयंत्र'। -बळ-पु० वह

बल जो ग्रहोंकी विशिष्ट दिशामें स्थित होनेसे मिलता है।
-बळी (विन्)-पु० दिग्बलसे युक्त ग्रह। -अम-पु०

दिशासंबंधी भ्रम, दिशाओंका न पकचाना जाना; दिशा भूल
जाना। -बसन, बख, बासा (सत्त)-पु०, वि० दे०

'दिग्बर'। -वारण-पु० दिग्मज। -विजय-स्त्री० किसी
राजाका दलबलके साथ भूमंडलके अन्य समस्त राजाओंकी

धूम-धूमकर परास्त करना; किसी विशिष्ट विद्वान्, मत-
प्रचारक या गुणीका सभी प्रतिद्वंद्वियोंकी हराकर संसारमें

अपनी भाव जमाना। -विजयी (विन्)-वि० दिग्बिजय
करनेवाला, जिसने दिग्बिजय की हो। [स्त्री०] 'दिग्बिज-
यिनी'। -विभाष-पु० दिशा। -विभाषित-वि०

जिसकी स्थाति सभी दिशाओंमें फैली हो। -व्याप्त-वि०
सभी दिशाओंमें व्याप्त। -व्रत-पु० किसी विशेषदिशामें

कोई सीमा पार न करनेका व्रत (जै०)।
दिग्दृति-पु० दे० 'दिग्मज'।

दिग्ध-वि० दे० 'दीर्घ'।

दिग्ध-वि० [सं०] विषाक्त, विषमें डुहाया हुआ; किंस;
गदा किया हुआ। पु० विषमें डुहाया पाण; तेल; आग;

आखुवाधिका।
दिक्-दिक्का समासगत रूप। -नक्षत्र-पु० वे सात-सात

विशिष्ट नक्षत्र जो चार प्रसिद्ध दिशाओंमेंसे एक-एकसे
संबद्ध माने जाते हैं। -जगर-पु० दिग्मज; ई० सन्

३४५-४२५ के आस-पासके एक प्रकांड नौड आचार्य।
-नाथ-पु० दे० 'दिक्पति'। -अंशर-पु० दिक्चक्र।

-मात्र-पु० संकेत मात्र। -मूढ-वि० जिसे दिग्भ्रम
हो गया हो। -मोह-पु० दिग्भ्रम।

विगर-वि० [फा०] दूसरा, अन्य।

विच्छा-स्त्री० दे० 'दीक्षा'।

विच्छित, विच्छित-वि० दे० 'दीक्षित'।

विजराज-पु० दे० 'दिग्मज'।

विजोत्तम-पु० दे० 'विजोत्तम'।

दिग्बन्ध-स्त्री० दे० 'दीनोत्पान' (एकादशी)।

दिखाविडी-०-०-० देखा-देखी, साक्षात्कार ।

विजोना-०-०-० वह चिह्न जो बच्चोंको कुदृष्टिसे बचानेके लिए काजलसे उनके गाल या भस्त्रकपर बना दिया जाता है ।

विद्व-०-०-० दे० 'वद' ।

विद्वता-०-०-० दे० 'वदता' ।

दिवाई-०-०-० दे० 'वदता' ।

दिवाना-०-०-० कि० वद करना, पका करना ।

दिवाब-०-०-० वद बनाना; समर्थन करना; वदता ।

दित-वि० [स०] कटा हुआ, खडित; विभक्त ।

दिति-०-० [स०] दैत्योंकी माता जो दक्ष प्रजापतिकी कन्या और कश्यपकी पत्नी थी; किसी वस्तुके दो या अधिक टुकड़े करनेकी क्रिया, खटन । पु० राजा । -ज, -तनय,

-पुत्र, -सुत-पु० असुर, दैत्य ।

दित्य-पु० [स०] असुर, दैत्य । वि० जो छेदने, काटने योग्य हो ।

दित्वा-०-० [स०] देने या दान करनेकी इच्छा ।

दित्यु-वि० [स०] जिसे देने या दान करनेकी इच्छा हो ।

दित्य-वि० [स०] जिस (वस्तु)को दान कर देनेकी इच्छा हो ।

दितक्षा-०-० [स०] देनेकी इच्छा ।

दित्यु-वि० [स०] देखनेका इच्छुक ।

दित्येय, दित्येय-वि० [स०] देखने योग्य, दर्शनीय ।

दिधु-पु० [स०] आकाश ।

दिधि-०-० [स०] वदता, स्थिरता ।

दिधिपु-पु० [स०] वह पुरुष जिसके साथ किसी स्त्रीका दूसरा विवाह हुआ हो; पति ।

दिधिपु, दिधिपु-०-० [स०] वह स्त्री जिसके दो विवाह हुए हों; वह कन्या जो अपनी बही बहनके पहले ही ब्याह हो गयी हो । -पति-पु० अपने साईंकी विधवा स्त्रोमे अनुचित संबंध रखनेवाला ब्याक्ति ।

दिन-पु० [स०] वह समय जिसका आरंभ सूर्योदय और अंत सूर्यास्तमे होता है; सूर्योदयमे सूर्योदयतकका चौबीस घंटेका समय; समय, काल; मिति, तिथि; तारीख; नियत समय; कालविशेष । * अ० सदा । -अर-०-०-० सूर्य;

आक, मदार । -कंत-०-०-० सूर्य । -कर, -कसां(रं),

-कृत्-पु० सूर्य; आक, मदार । -कन्या-०-०-० तनया-

-०-०-० यमुना; तापती । -०-०-० तनय, -०-०-० सुत-पु० शनि;

यम; कर्ण; सुग्रीव । -केशर-केशव-पु० अंधकार ।

-क्षय-पात-पु० तिथिस्थय; सायंकाल । -क्या-०-०-०

दिनमरका कार्य । -कारी(रिन्)-पु० सूर्य । -ज्योति-

(स्)-०-०-० दिनका उजाला, धूप । -हानी-०-०-०

वह जो प्रतिदिन दान करता हो । -दिन-अ० प्रति-

दिन; कालक्रमसे । -दीप-पु० सूर्य । -दुःखित-पु०

चक्रनाक, चक्रवा पक्षी । -माय, -नायक-पु० सूर्य ।

-नाह-०-०-० सूर्य । -य-पु० सूर्य; आक, मदार ।

-पति-पु० सूर्य; अर्क; बलवान् ग्रह; वारेण । -पात-

-पु० सूर्य । -प्रणी, -बंधु-पु० सूर्य; आक, मदार । -बल-

-पु० दिनमें सबल पक्षेवाली राशि । (वे छ है-सिंह,

कन्या, द्रुमा, वृश्चिक, कुम्भ, मीन ।) -भूति-पु० दैनिक

वेतनपर काम करनेवाला मजदूर । -मणि, -मयूख-

पु० सूर्य; आक, मदार । -मख-पु० मास, महीना ।

-मान-पु० सूर्योदयसे सूर्यास्ततकके समयका मान ।

-मुक्त-पु० प्रातःकाल, सबेरा । -मूर्धा(वंद)-पु०

उदयाचल । -बीजन-पु० मध्याह्न । -दख-पु० सूर्य;

आक, मदार । -राह, -राख-पु० सूर्य । -राज-पु०

सूर्य । -रात-[हि०], -रैन-अ० सूर्य । -सर्वदा ।

-शेष-पु० संध्या, सायंकाल, शाम । सु० -कटना-

किसी तरह समय बीतना । -काटना-किसी तरह निबोह

करना । -को तारे दिखाई देना-दुःखकी प्रवृत्तताके

कारण होश ठिकाने न रहना । -को तारे नज़र आना-

बहुत तेज नजर होना; घोर अंधकार होना । -को दिव,

रातको रात न समझना-काम करनेकी पुनर्में अपने

स्वार्थ आदिका खयाल न करना । -को रात कहना-

उल्टी बात कहना । -गिनना-प्रतीक्षा करना ।

-कटना-उदयके पश्चात् सूर्यका आकाशमें कुछ और

ऊपर आना; गर्भाधान होना । -कटना-सबेरका समय

बिताना । -कटे-सबेरा होनेके काफी देर बाद ।

-कटना-संध्या होना, सूर्यास्त होना । -कटना-सूर्य-

का अस्ताचलगामी होना । -कटना-दिनमें खुले तौर-

पर, खुले खजाने । -कटना, रात चौगुना होना या

कटना-शीघ्रतासे और बहुत अधिक उन्नति करना ।

-धरना-दिन नियत करना, तारीख सुकरं करना ।

-धरना-दिन नियत करना, तारीख सुकरं करना ।

-निकलना या होना-सूर्योदय होना, सबेरा होना ।

-किरना-मले दिन आना, सुखके दिन आना ।

-कटना-दे० 'दिन धरना' ।

दिनांड-पु० [स०] अंधकार ।

दिनांत-पु० [स०] संध्या, शाम ।

दिनांतक-पु० [स०] अंधकार ।

दिनांध-वि० [स०] जिसे दिनको दिखाई न देता हो,

दिवाध । पु० उल्टे पक्षी ।

दिनाइ-०-० दे० 'दिनाय' ।

दिनाई-०-० प्राणांत करनेवाली विषैली बीज-ऊधो,

दोनी प्रीति दिनाई-यूर ।

दिनागम-पु० [स०] प्रातःकाल, सबेरा ।

दिनाती-०-० मजदूरोंका एक दिनका काम या उजरत ।

दिनायय-पु० [स०] मर्यादा ।

दिनादि-पु० [स०] प्रातःकाल, सबेरा ।

दिनाधीन-पु० [स०] सूर्य ।

दिनाय-०-० एक चर्मरोग, दाद ।

दिनार-०-० दे० 'दीनार' ।

दिनार्थ-०-० [स०] मध्याह्न ।

दिनास्त-पु० [स०] सूर्यास्त ।

दिनिका-०-० [स०] एक दिनकी मजदूरी ।

दिनियर-०-० सूर्य ।

दिनी-वि० बहुत दिनोंका, पुराना, प्राचीन ।

दिनेर-०-० पु० सूर्य ।

दिनेश-पु० [स०] सूर्य; आक, मदार; दिनके स्वामी ग्रह ।

दिनेशामय-पु० [स०] दे० 'दिनकरतनय' ।

दिनेशास्त्रज्ञ-०-० [स०] यमुना; तापती ।

दिनेश्वर-पु० [सं०] दे० 'दिनेश'।

दिनेश्वर-पु० दे० 'दिनेश'।

दिनीची-खी० एक रोग जिसमें खरोंके प्रकाशमें बहुत कम दिनाई देता है।

दिपति*-खी० दे० 'दीपति'।

दिपना*-अ० क्रि० देदीप्यमान होना, चमकना।

दिपाना*-अ० क्रि० चमकना। स० क्रि० चमकना।

दिष*-पु० दिव्य परीक्षा।

दिमाक*-पु० दे० 'दिमाय'। -दार-वि० दे० 'दिमाय-दार'।

दिमाग-पु० [अ०] सिरके भीतरका गुदा या मग्न, मेजा, मस्तिष्क; बुद्धि, समझ; अभिमान। -बट-वि० बक-वादी; खोपरी चाट जानेवाला। -दार-वि० अच्छी समझवाला, बुद्धिमान; अभिमानी, मग्न। -दारी-खी० दिमागदार होनेका गुण। -दीवान-पु० सुपनी। सु० -आसमानपर होना-अत्यधिक अभिमान होना। -खाना-बहुत बकवाद करना। -झाड़ी करना-किसीको समझाते-समझाते थक जाना; दे० 'दिमाय खाना'। -बटना-अत्यधिक अभिमान होना। -घाटना-दे० 'दिमाय खाना'। -बौधे कलकपर होना-बहुत अधिक धमक होना। -में झकल होना-मस्तिष्कमें कोई विकार होना। -सातई आसमानपर होना-बहुत अधिक धमक होना।

दिमागी-वि० दिमागदार; दिमागका; दिमाग संबंधी।

दिमात*-वि० दो माताओंवाला; दो मात्राओंवाला।

दिमाना*-वि० दे० 'दीवाना'।

दियद-खी० दे० 'दीपद'।

दियरा*-पु० दीया; एक पकवान।

दिया-पु० दे० 'दीया'। -बत्ती-खी० दीया जलानेका कार्य। -सखाई-खी० एक सिरपर गंधक आदि मसाले लगाकर बनायी हुई छोटी, पनली सीधी जो रंगबिरंगे जल उठती है; लकड़ीका छोटा बक्स जिसमें ऐसी तीलियाँ रखी रहती हैं। सु० -सखाई लगाना-आग लगाना।

दियानत-खी० दे० 'दयानत'। -दार-वि० दे० 'दयानतदार'। -दारी-खी० दे० 'दयानतदारी'।

दियारा-पु० कछारा; प्रवेश; लुक।

दियासा*-पु० घृतगुणा।

दिरद*-पु० दे० 'द्विरद'।

दिरम-पु० [फा०] चाँदीका एक सिक्का जो मिस्रमें चलता है; एक तौल।

दिरमानी*-खी० चिकित्सा।

दिरमानी*-पु० चिकित्सक, वैद्य। खी० चिकित्साशास्त्र- 'जस आसय भेषज न कीज तस दीष कहा दिरमानी'-विनय०।

दिरहम-पु० दे० 'दिरम'।

दिरामी*-खी० देवता।

दिरिपङ्क-पु० [सं०] खेलनेका गैर।

दिरिष*-पु० दे० 'दृश्य'।

दिख-पु० [फा०] एक अवयव जिसके द्वारा मनुष्यके शरीरमें रुधिरका संचार होता रहता है; हृदय, मन,

जी; हिममत; होसका; इच्छा। -आज़ार-वि० दिल दुखानेवाला, खालिफ। -आज़ारी-खी० दिल दुखाना, जुल्म, अत्याचार। -आरा-वि० मायूक, प्रियतम। -आराई-खी० दिलको लुभाना। -आराम-वि० मायूक, प्रियतम। -आवेज़-वि० जो लुभानेवाला। -आवेज़ी-खी० जो लुभाना। -कश-वि० मनको खींचनेवाला, चित्ताकर्षक। -कुशा-वि० चित्तको प्रसन्न करनेवाला। -कुशाई-खी० चित्तको प्रसन्न करना। -कुशी-खी० जीको लुभाना, चित्तको अपनी ओर खींचना। -कुश-वि० मनको प्रसन्न करनेवाला। -कुवाह-वि० मनचाहा। -गीर-वि० शोकग्रस्त, उदास, रंजीत। -गीरी-खी० उदासी, रंज। -गुदा-पु० साहज, उत्साह, जीवद। -छका-वि० साहसी, उत्साही, बहादुर। -छस्व-वि० जिसमें मन रमे, रुचिकर। -छस्वी-खी० वाज, शोक। -खोर-वि० भीर, कायर; कामचोर। -जमई-खी० चित्ता समाधान, इतमीनान, तमही। -जख-वि० दुःखी। -कोई-खी० दादर, दिलासा, सांत्वना। -दरिया-वि० दे० 'दरियादिल'। -दार-वि० जिसमें प्रेम किया जाय, जो प्रेमपात्र हो; रसिक; उदार। -दारी-खी० प्रेमपात्रता; रसिकता; उदारता। -पज़ीर-, विज़ीर-वि० जिसे मन चाहे या स्वीकार करे, मनोवांछित। -पसंद-वि० जो जीको अच्छा लगे, जिसे मन चाहे। -फँक-वि० रूपथोड़ी। -बर-वि० दे० 'दिलरार'। -बस्त-वि० जिसका दिल कहीं लगा हुआ हो। -बस्तगी-खी० मनबहलाव। -रुबा-वि० मनको लुभानेवाला; प्यारा, जो प्रेमपात्र हो; पु० एक बाजा। -रुबाई-खी० मनको लुभाना। -सिकन-वि० दिल तोड़नेवाला, हिममत पस्त करनेवाला। -शिकस्त-वि० उदास, चिंतित। -सुदा-वि० आशिक, दीवाना। -सोझ-वि० परदुःखकार, हमदर्द। -सोझी-खी० हमदर्द, सहानुभूति। सु० -अटकना-किमीसे प्रेम हो जाना। -अटकाना-किसीसे प्रेम करना। -कबा करना-मनको धराने न देना, मनमें दृढ़ता लाना। -कबाह होना-मनका जल-गुन जाना। -का खोटा-कपटी, दगाबाज। -का गवाही देना-अंतरामाका कोई काम करना स्वीकार करना। -का गुहार निकालना-मनका मलाल दूर करना। -का बाव-शाह-अति उदार; मनमोही। -की आवा बुलबुल-जो ठंडा होना। इच्छा पूरी होना। -की कली खिलना-जो खुश होना, चित्त प्रसन्न होना। -की दिकमें रहना-मनोरथका पूर्ण न होना। -की फौस-आंतरिक वेदना। -के फफोले फूटना-मनका उद्वेग शांत होना। -के फफोले फोड़ना-किमीको खरी-खोटी सुनाकर मनका उद्वेग शांत करना। -की झरार होना-मनका आश्वस्त होना, मनमें चैन होना। -खड़ा होना-मन फिर जाना। -चुराना-काममें मन न लगाना। -जमना-दिल लगना। -जखना-रंज होना, गम होना। -जखाना-सताना; गम खाना। -दूबना-बेहोश होना; बेचैन होना। -सोबना-हिममत तोड़ना। -बूझना-कलेश काटना। -दुखाना-कष्ट पहुँचाना,

सताना । -देवा-प्रेमासक्त होना । -दौबना-प्रबल इच्छा होना । -दौबाना-मन चलाना; सोचना; विचारना । -धक्कना-दे० 'कलेजा धक्कना' । -पक जाना-दिग्गम सखत रंज होना; ताने सुन-सुनकर दिलको कट होना । -पर नक्क होना-किसी बातका मनमें बर कर लेना; अच्छी तरह बाद होना । -पर सॉप छोटना-दे० 'कलेजेपर सॉप छोटना' । -फटा जाना वा फटना-दे० 'दिल लुटा होना' । -फटा जाना-वेचैन होना; व्याकुल होना; करुणार्द्र होना । -बकना-उत्साहित होना, जोश आना । -बकाना-उत्साहित करना, जोश दिलाना । -बैठा जाना-व्याकुल होना; बेहोश होना । -भर जाना-कठना आदिसे विचलित होना । -मिलना-दे० 'मन मिलना' । -में जाना-इच्छा होना, विचारमें आना । -में गाँठ वा गिरह पड़ना-देष होना; फूट पैदा होना । -में बर करना-में जगह करना-किसी बातका हृदयमें अच्छी तरह जम जाना । -में फकोले पड़ना-बहुत अधिक मानसिक कष्ट होना । -में फूँट जाना-मनमोदाघ होना । -मैला करना-दे० 'मन मैला करना' । -छगना-दे० 'जी लगना' । -छगाना-दे० 'जी लगाना' । -से उतरना-स्नेह वा भ्रमका पात्र न रह जाना । -से बूर करना-भुका देना । -हट जाना-मन फिर जाना । -ही दिलमें-मन ही मन ।

विक्रान्त-स० कि० दे० 'दिकाना' ।

विक्रान्त-पु० दिकानेवाला ।

विक्रान्त-पु० दे० 'दिकाना' । - (दे०) दार-वि० दे० 'दिठे-दार' ।

विक्रान्त-स० कि० देनेका काम कराना, देनेमें दूसरेको प्रयत्न करना ।

विक्रान्त-वि० [फा०] साहसी, हिम्मती; बहादुर, दिलेर ।

विक्रान्त-खी० [फा०] दिकानेवालेका गुण, बहादुरी ।

विक्रान्त-पु० आत्मासन, साधना, धारज ।

विक्रान्त-वि० जिससे किसी प्रकारका भेदभाव न हो, अभिन्न; द्वैतिक ।

विक्रान्त-पु० [सं०] इस्लाम-धर्मका एक प्रसिद्ध राजा जिन्होंने नदियोंकी सेवा करके उसके आसीनरते पुत्र प्राप्त किया था ।

विक्रान्त-पु० [सं०] छत्रक ।

विक्रान्त-वि० [फा०] साहसी, जीवन्तवाला, जर्बामर्द ।

विक्रान्त-खी० हिम्मत; बहादुरी ।

विक्रान्त-खी० हँसी, परिहास, मजाक । -बाज-वि०, पु० हँसी-परिहास करनेवाला, मसखरा ।

विक्रान्त-पु० किनारोंकी ओर कुछ दालुओं वा गदा हुआ लकड़ीका चौकीर टुकड़ा जिसे किबाब या खिन्कीके पतेके ढाँचेमें शोभाके लिए जड़ देते हैं । - (दे०) दार-वि० जिसमें दिक्ता लया हो (किबाब) ।

विक्रान्त-खी० समुद्राके किनारे बसी हुई उत्तर भारतकी प्रसिद्ध नगरी जो आजकल वारतकी राजधानी है (यह हिंदू राजाओं तथा मुसलमान बादशाहोंके समयमें भी माछकी राजधानी रह चुकी है) । -बाज-वि० विक्रान्त

का; विक्रीका बना हुआ । पु० विक्रीका निवासी; एक विशेष प्रकारका जूता ।

विक्रान्त-वि० [सं०] स्वर्गत ।

विक्रान्त-वि० [सं०] स्वर्गात्मी ।

विक्रान्त-पु० [सं०] स्वर्ग; आकाश; दिन; वन; नीलकण्ठ पक्षी (?) । -राज-पु० ईंद्र ।

विक्रान्त-पु० [सं०] दिन, वार, रोज । -अंध-पु० दे० 'दिवांध' । -कर, -नाथ-पु० सूर्य; मदार । -क्षय-पु० सूर्यास्त । -अतो(तु), -अग्नि-पु० सूर्य । -मुख-पु० प्रभात, सुषुप्त । -सुप्ता-खी० दिनभरकी मजदूरी, एक दिनका पारिश्रमिक । -विगम-पु० सायंकाल । -संजात-पु० दिनभरका काम । -स्वप्न-पु० दे० 'दिवास्वप्न' ।

विक्रान्त-वि० [सं०] जो भिन्न एक दिनका हो ।

विक्रान्त, दिवसेधर-पु० [सं०] सूर्य ।

विक्रान्त-वि० [सं०] ईंद्र ।

विक्रान्त(स) -पु० [म०] वामन-रूपधारी विष्णु (जिन्होंने बलिको छलने समय एक पौवने स्वर्गको छू दिया था) ।

दिवांध-पु० [सं०] उल्लू । वि० जिसे दिनमें दिखाई न दे ।

दिवांधकी; दिवांधिका-खी० [सं०] छछूँदर ।

दिवा-पु० [सं०] दिन, वार; एक वर्षावृत्त; † दीया, चिराग ।

-कर-पु० सूर्य; मदार; बौद्ध; मर्यादही नामका फूल ।

-कीर्ति-पु० बाजाल; नाभ; उल । -चर-पु० बाजाल; एक पक्षी, इयामा ।

-चारी(रिज्)-वि०, पु० दिनमें सचरण करनेवाला । -पुष्ट-पु० सूर्य । -भीत, -भीति-पु० उल्लू; रातम खिन्नेवाला एक प्रकारका कमल; चोर । -अग्नि-पु० सूर्य । -अध्व-पु० मध्याह्न, दीपहर । -रात्र-अ० दिन-रात । -वसु-पु० सूर्य । -शाय-वि० दिनमें सोनेवाला । -स्वप्न-पु० दिनको सोना, दिवस-निद्रा; मनोराज्य, हवाई किता । [मु०] -स्वप्न देखना-हवाई किले बनाना । -स्वप्न-पु० दिवसनिद्रा; उल ।

विवाटन-पु० [सं०] कोला ।

विवाटन-वि० [सं०] दिन-संश्लेष ।

विवाटन-पु० दे० 'दीवान'; राजाका छोटा भाई; समूह ।

* खी० मर्यादा-दिक्ती दल टाँकै दिवान राखी हुनी-में-भू० ।

विवाटन-वि० दे० 'दीवाना' । स० कि० दे० 'दिलाना' ।

विवाटनी-खी० दे० 'दीवाना' ।

विवाटनसारिका-खी० [सं०] दिनमें अभिमार करनेवाली नायिका ।

विवाटनी-खी० दे० 'दीवार' ।

विवाटनी-खी० दे० 'दीवाली' ।

विवाटनी-खी० दे० 'दीवार' ।

विवाटनी-पु० अर्थहीनताकी वह दशा जिसमें कोई व्यक्ति अपना सत्ता अपना कृण न चुका सके; सर्वथा अभाव हो जाना । मु० -निकलना-दिवाला होना । -निकलना वा मारना-दिवालिवा होनेकी स्थाना देना ।

विवाटनी-वि० जिसके पास अपना कृण चुकानेके लिए कुछ न रह गया हो, जिसका दिवाला निकला हो ।

विवाटनी-खी० दे० 'दीवाली' ।

विधि-पु० [सं०] नीलकंठ पक्षी ।

विधिज-पु० [सं०] देवता ।

विधित्ता-स्त्री० [सं०] प्रमा, दोष ।

विधिचद्(स्)-पु० [सं०] देवता ।

विधिष्ठ-पु० [सं०] देवता ।

विधित्व-पु० देवता ।

विधेया-पु० देनेवाला ।

विधोवास्त-पु० [सं०] महाभारतमें उल्लिखित काशीके एक राजा जो धन्वतरिके अवतार माने जाते हैं ।

विधोज्जवा-स्त्री० [सं०] इलायची ।

विधोष्का-स्त्री० [सं०] दिनमें थिरनेवाली उल्का ।

विधीका(कस्)-पु० [सं०] स्वर्गमें निवास करनेवाला; देवता; चातक पक्षी; मधुमक्खी; हिरन; हाथी ।

विध्य-वि० [सं०] स्वयं-संबंधी; स्वर्गीय; आकाशीय; अलौकिक; लोकातीत; दैवोचित; चमकीला, दीप्तिमान्; अति-क्षुद्र, भय, बढ़िया । पु० आकाशमें होनेवाला उत्पात-विशेष; एक परीक्षा जिसमें प्राचीन कालमें अपराधीकी सदोषता वा निर्दोषताका निर्णय करने में (इसके दस भेद वर्णित हैं); नायकके तीन भेदोंमेंसे एक-लोकेश्वर नायक, जैसे-राम; यम; शाकतव्रत तीन प्रकारके भावोंमेंसे एक; यम; हरिचंदन; शपथ; लौग; जलका एक भेद; बृहत् रहते होनेवाली इष्टिसे जाना; तत्त्ववेद्या; महामेदा; गुरुल; औबला; ब्राह्मी; बडा जीरा; हड़; सफेद दूब । -कट-पु० महाभारतमें वर्णित एक प्राचीन देश । -कुंड-पु० काम-रूप पीठका एक कुंड । -क्रिया-स्त्री० दिव्य परीक्षा लेने का कार्य । -गंध-पु० लौग; गन्धक; बडी इलायची । -गंधा-स्त्री० बडी इलायची; बडी बीज । -शानन-पु० गंधर्भ । -चक्षु(स्)-वि० दिव्य नेत्रोंवाला; सुंदर आँखोंवाला; अंधा । पु० दिव्य दृष्टि; बंदर; चंदमा; एक गंधद्रव्य । -नेजा(जस्)-स्त्री० ब्राह्मी बूटी । -दर्शी(शिव)-वि० अलौकिक पदार्थोंका दृष्टा । -दृष्टि-स्त्री० मृक दृष्टि, आंतरिक दृष्टि । -दोहृद्-पु० अभीष्ट सिद्धिके लिए देवताको समर्पित की जानेवाली वस्तु । -नदी-स्त्री० मंदाकिनी । -नारी-स्त्री० अप्सरा; देववधू । -पंचाश्रुत-पु० पाँच पदार्थों-गोदूध, गोदधि, गोघृत, मधु एवं शर्कराके योगसे तैयार किया हुआ पंचाश्रुत । -पुष्प-पु० करवीर, कनेर । -पुष्पा-स्त्री० महाद्रोणा नामका पौधा । -पुष्पिका-स्त्री० लाल मदार । -यसुना-स्त्री० कामरूप देशकी एक पुराणोक्त नदी । -रक्ष-पु० चितामणि । -रच-पु० देवताओंका विमान । -रस-पु० पारा । -रुता-स्त्री० मूर्खलता । -वक्ष-पु० सूर्यका प्रकाश; एक तरहका फूल, सर्वमुखी । वि० जिसने सुंदर वस्त्र धारण किया हो । -बाक्च-पु० आकाशवाणी । -सरिप्-स्त्री० सदा-किनी । -सार-पु० साक्षुका पेड़ । -खी-अप्सरा; देववधू ।

विषक-पु० [सं०] सर्वविशेष; एक जंतु ।

विष्याराना-स्त्री० [सं०] अप्सरा; देववधू ।

विष्यांशु-पु० [सं०] सूर्य ।

विष्या-स्त्री० [सं०] लोकेश्वर-पुण्यसे युक्त नायिका; इरी-तकी; बंध्या कनोत्की; शतावरी; महामेदा; ब्राह्मी; देवत-

द्वी; स्थूलवीरक ।

विष्यादिव्य-पु० [सं०] तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक, वह नायक जिसमें लोकेश्वर गुण भी हों (जैसे-नल आदि) ।

विष्यादिव्या-स्त्री० [सं०] नायिकाओंका एक भेद, वह नायिका जिसमें लोकेश्वर गुण भी हों (जैसे-दम्बवती आदि) ।

विष्यासम-पु० [सं०] एक आसन (तं०) ।

विष्याच-पु० [सं०] देवताओं द्वारा प्रयुक्त होनेवाला अस्त्र; मंत्रशक्तिये चलाया जानेवाला अस्त्र ।

विष्येलक-पु० [सं०] सौंपका एक भेद ।

विष्योदक-पु० [सं०] वर्षाका जल ।

विष्योपपायुक-पु० [सं०] देवता ।

विष्योपधि-स्त्री० [सं०] नैनसिल ।

दिशा-स्त्री० [सं०] मोर, तरक; क्षितिज मंडलके चार-पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर-भागोंमेंसे कोई (विदिशाओं या कोणों और ऊर्ध्व-अधरको मिलाकर इनकी संख्या दस मानी गयी है); दसकी संख्या । -वाज-पु० दिग्गज । -चक्षु(स्)-पु० गरुड़के एक पुत्रका नाम (पु०) । -जय-स्त्री० दिग्विजय । -पाल-पु० दिग्पाल । -जम-पु० दिशा भूल जाना, दिग्भ्रम । -शूल-पु० दे० 'दिक्-शूल' । -शूलक-पु० दे० 'दिक्-शूल' ।

दिशावकास-पु० [सं०] दो दिशाओंके बीचका भाग ।

विशेष-पु० [सं०] दिग्गज ।

दिश्य-वि० [सं०] दिशा-संबंधी; दिशविशेषमें होनेवाला ।

दिष्ट-पु० [सं०] भाग्य; आदेश; उद्देश्य; दाहहत्या; काज, समय; वैकस्वत मनुका एक पुत्र । वि० दे० 'उपदिष्ट'; वर्णित; निवर्त, निश्चित ।

दिष्टांत-पु० [सं०] सृष्टि, मरण ।

दिष्टि-स्त्री० [सं०] भाग्य; सौभाग्य; हर्ष; ऊँचाईकी एक माप; आदेश; उत्सव; उपदेश ।

दिष्णु-वि० [सं०] देनेवाला, दाता ।

दिसंतर*-पु० देशांतर, विदेश । अ० बहुत दूरतक ।

दिसंबर*-पु० [अ०] अंग्रेजी सालका अंतिम मास ।

दिस*-स्त्री० दे० 'दिशा' ।

दिसना*-अ० कि० दे० 'दिसना' ।

दिसर्वा-स्त्री० दे० 'दिशा'; मकलगा । -दाह*-पु० दे० 'दिग्दाह' । -शूल-पु० दे० 'दिक्-शूल' ।

दिसावर-पु० परदेश, अन्य देश ।

दिसावरी-वि० बाहरसे लाया या आया हुआ, दूसरी जगहका; बाहरी ।

दिसि*-स्त्री० दे० 'दिशा' । -दुरद*-पु० दिग्मज ।

-नायक, -प, -राज*-पु० दिग्पाल ।

दिसिदि*-स्त्री० दे० 'दृष्टि' ।

दिसैबा*-पु० देखनेवाला; दिखानेवाला ।

दिस्टि*-स्त्री० दे० 'दृष्टि' । -बंध*-पु० दे० 'दृष्टिबंध' ।

दिस्सा-पु० कागजके चौबीस तखनोंकी गङ्गा ।

दिहंद, दिहंद-वि० [फा०] देनेवाला (इसका प्रयोग यौगिक शब्दोंमें प्रायः उत्तरपदके रूपमें होता है) ।

दिहकानियत-स्त्री० दे० 'दिहकानियत' ('दिह'के साथ) ।

विहवा-पु० देवसान, देवायतन ।
 विहवली-ली० दे० 'दहवोज' ।
 विहवास-ली० दे० 'दिहात' ।
 विहाती-वि० दे० 'दिहाती' ।-पद-पु० दे० 'दिहातीपन' ।
 वीअट-ली० दे० 'वीअट' ।
 वीबा-पु० दे० 'वीबा' ।
 वीक्षक-पु० [सं०] वीक्षा देनेवाला, गुरु, संशोधक ।
 वीक्ष्य-पु० [सं०] वीक्षा देनेकी क्रिया; वक्ष समाप्त होने-
 पर उसकी मुटियोंकी शक्ति के क्रिये किया जानेवाला बजन;
 उपनयन ।
 वीक्षात-पु० [सं०] पहले यज्ञमें हुए दोषोंके मार्जनके क्रिये
 किया जानेवाला पूरक-यज्ञ; 'वीक्षाका अत' ।-आचन-
 पु० उपाधि या प्रमाणपत्रादि देनेके समय समुचित
 स्नातकोंकी समीपन कर दिया गया किसी विद्वान् वा
 सम्मान्य नेताका आचन ।
 वीक्षा-ली० [सं०] याग; उपनयन सत्कार; तत्रके अनुसार
 किसी देवताके मंत्रका उपदेश। तमोक रीतिसे किसी
 देवताका मंत्र ग्रहण करनेको क्रिया; (कोई धार्मिक) कृत्य;
 निबन्ध ।-गुरु-पु० मन्त्र देनेवाला गुरु ।-पति-पु०
 (वीक्षा)-पक्षका रक्षक। सोम ।
 वीक्षित-वि० [सं०] जिसने वीक्षा दी गयी हो वा जिसने
 गुरुसे वीक्षा ली हो; जिसने सोम आदि याग किये हो ।
 पु० आक्षेपोंकी एक उपाधि ।
 वीक्षना-अ० क्रि० विचार देना, दृष्टिगत होना ।
 वीची-ली० दे० 'वीचिका' ।
 वीच्छा-ली० दे० 'वीक्षा' ।
 वीट-ली० दे० 'वटि'; दुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली निगाह
 जो किसी सुन्दर या बहुमूल्य वस्तुपर डाली जाय-‘दुनी
 है लागी लयन दिये दिठौना वीट’-विहारी ।-बंद-पु०,
 -बंदी-ली० नजर बाँधनेकी क्रिया ।-बंत्त-वि० वटि
 चुक; समझदार । पु०-खा जाना-ऐसे व्यक्तिके द्वारा
 देखा जाना जिसकी वटि अच्छी न हो ।-जलाना-दुरी
 वटिका प्रभाव दूर करना ।-पर चढ़ना-दे० 'नजरपर
 चढ़ना' ।-फिरना-वटिका दूसरी ओर प्रवृत्त होना। कृपा
 न बनी रहना ।-फेरना-दूसरी ओर नजर कर लेना;
 किसीपर कृपावटि न रहने देना ।-बचाना-देखा-देखीसे
 बचना ।-बाँधना-दे० 'नजर बाँधना' ।-बिछाना-
 आशुपूर्ण वटिसे किसीके आनेकी प्रतीक्षा करना; बड़ी अन्धा-
 से आश्रयगत करना ।-मारना-आँखमें संकेत करना ।
 -मारी जाना-देखनेकी शक्ति नष्ट होना ।-मै भगाना-
 -नेत्रोंकी सुखद होनेके कारण सदा ध्यानमें बना रहना ।
 -छगना-कुण्ठित पक्ष जाना ।-छगना-उकड़की लया-
 कर देखना, ध्यानपूर्वक देखना ।
 दीठना-स० क्रि० देखना-‘तो खुसरो मै आँखों दीठा’ ।
 दीठि-ली० दे० 'दीठ' ।
 दीव-वि० [फा०] देखा हुआ ।
 दीवा-पु० [फा०] आँख, वटि, निगाह; धृष्टता (अि०) ।
 पु०-छगना-काममें तबीयत लयना ।
 दीवार-पु० [फा०] मुँह, चेहरा; नजारा; दर्शन, साक्षा-
 त्कार ।

दीदी-ली० बड़ी बहनको संशोधित करनेका शब्द ।
 दीधिति-ली० [सं०] किरण; उँगली ।
 दीन-वि० [सं०] अर्थात् दीन, दरिद्र, निःस्व; विपन्न, दुर्दशा-
 ग्रस्त; दयनीय दशामें पड़ा हुआ; दुःखपूर्ण, कष्टमय; विक-
 लतामें मरा हुआ । पु० तगरपुष्प ।-दवाक-वि०, पु०
 [हि०] दे० 'दीनदवाक' ।-दवाक-वि० दीनोंपर दया
 करनेवाला । पु० परमेश्वर ।-बंदू-वि० दीनोंकी सहा-
 यता, रक्षा करनेवाला । पु० परमेश्वर ।-लोचन-पु०
 बिही ।-बल्लक-वि० दीनदवाक ।
 दीन-पु० [अ०] धर्म, मजहब, पक्ष ।-इकाई-पु० अन्ध-
 बरका चलाया हुआ एक मजहब जो कुछ ही समयतक
 चम्कर रहा गया ।-दाह-वि० अपने धर्ममें आस्था
 रखनेवाला, धर्मनिष्ठ ।-दुनिया-ली० इहलोक तथा
 परलोक ।-दुनी-ली० लोक-परलोक ।
 दीनक-वि० [सं०] दुःखित, दीन ।
 दीनता-ली० [सं०] अर्थात् दीनता, दरिद्रता; विपन्नता,
 दुर्बलता ।
 दीनताई-ली० दीनता ।
 दीना-ली० [सं०] भूषिका; चुड़िया ।
 दीनानाथ-पु० दीनोंके नाथ-स्नानी, रक्षक, महात्म्य,
 परमेश्वरका एक नाम ।
 दीनार-पु० [सं०] सोनेका भूषण; निष्का परिमाण;
 सोनेका एक सिक्का जो प्राचीन समयमें एशिया और
 यूरोपमें चलता था (देश और कालमेंसे इसकी तौल
 और मूल्यमें भिन्नता होती थी); मोनेकी मुद्रा, अक्षरकी ।
 दीर्घकर-पु० [सं०] बुद्धका एक अवतार ।
 दीप-पु० [सं०] दीवा, किराग; किसी कुल या समुदायका
 सत्पायक अष्ट पुरुष, शिरोमणि; ॥ दीप ।-कलिका,-
 कली-ली० दीपककी ली ।-काल-पु० दीपक जलाने-
 का समय ।-किह-पु० कज्जल, काजल ।-कूपी,-
 खोरी-ली० दीपककी बत्ती ।-दान-पु० आराध्य
 देवताके सामने दीप जलाना ।-डानी-ली० [हि०]
 धी, बधी आदि दीपका सामान रखनेको डिबिया ।
 -ज्वज-पु० कज्जल; दीपक ।-पादप-पु० दीपाधार,
 दीपक ।-पुष्प-पु० चंपाका वृक्ष ।-माका,-मालिका-
 ली० जलते हुए दीपककी पत्ति या श्रेणी ।-माली-
 ली० दीवान् ।-घटि-ली० दीपकी बत्ती ।-बुझ-
 पु० दे० 'दीपपादप' ।-झानु-पु० पत्रग, फनिगा ।
 -जलभ-पु० जुगत्-‘दीप-जलभने (जिमे मिवौनी खेल-
 खेलकर जुलसाया’-बीणा (पत) ।-शिक्षा-ली० दे०
 'दीपकलिका'; कज्जल, काजल ।-श्रृंखला-ली० दीपोंकी
 कतार ।-स्वयं-पु० दीपाधार, दीपक ।
 दीपक-पु० [सं०] दीवा; एक मात्रिक छद; अर्थात् कारका
 एक भेद जहाँ बन्ध-अवन्ध या उपमये और उपमानका
 एक ही धर्म कहा जाय अथवा जहाँ क्रियापदोंकी आशुति
 हो, या जहाँ एक ही कर्ताके साथ बहुतेरे क्रियापदोंकी
 आशुति हो (दे० कारकदीपक)। एक राग; एक ताल;
 अजवायन; अंकुश; बाज पक्षी; मोरकी शिक्षा । वि० दीप्त
 करनेवाला; आलोकित करनेवाला; अधिवर्धक; उत्तेजक ।
 -माका-ली० दीपकालंकारका एक भेद जिसमें एकावली

तथा दीपका मेल होता है; एक वर्णवृत्त । -सुप्त-पु० कण्ठ्य, काजल ।

दीपकावृत्ति-खी० [सं०] दीपक मलकारका एक भेद जिसमें एक ही क्रियापर भिन्न-भिन्न अर्थों में कई बार आवे या एक ही अर्थके विभिन्न क्रियापरोंका प्रयोग हो; पनसाखा ।

दीपतः, दीपति-खी० चमक; शोभा; प्रताप ।

दीपन-पु० [सं०] दीप्त करना, प्रज्वलित करना; आलोकित करना; अग्निवर्द्धन; उत्तेजित करना; तगरकी जड़; कुंकुम; मयूरशिखा नामकी ओषधि; काममर्द, कसीदा; प्याज; प्राङ्गमन्त्रका एक संस्कार । वि० उत्तेजित करनेवाला; अग्निवर्द्धक । -शय-पु० चीता, बनिवा आदि अग्निवर्द्धक ओषधियोंका समुदाय ।

दीपना-अ० क्रि० दीप्त होना; चमकना । म० क्रि० चमकाना; प्रदीप्त करना ।

दीपनी-खी० [सं०] मेथी; अजवायन; पाठा ।

दीपनीय-वि० [सं०] दीप्त करने योग्य; उत्तेजित करने योग्य । पु० अजवायन; एक ओषधिवर्ग जिसमें विष्णुकी, पिप्पलामूल, चव्य, चीता और नागर हैं ।

दीपाङ्कुर-पु० [सं०] दीपकी ली ।

दीपाग्नि-खी० [सं०] दीपकी आँच ।

दीपाधार-पु० [सं०] दीपट ।

दीपादिवा-खी० [सं०] कात्तिक मासकी अमावारया जिस दिन दीवाली पड़ती है ।

दीपाराधन-पु० [सं०] आरती उतारना ।

दीपाक्षि, दीपाक्षी-खी० [सं०] दीपमाला, दीवाली ।

दीपावली-खी० [सं०] एक रागिनी ।

दीपावलि, दीपावली-खी० [सं०] दे० 'दीवाली' ।

दीपिका-खी० [सं०] छोटा दीपक; एक रागिनी; चौदनी । वि० खी० (ममाभासमें) स्पष्ट करनेवाली ।

दीपित-वि० [सं०] दीप्त, प्रज्वालित, प्रभासित; उत्तेजित ।

दीपि (पिन्)-वि० [सं०] जलना हुआ, चमकना हुआ ।

दीपोत्सव-पु० [सं०] दीवाली ।

दीप्त-वि० [सं०] दे० 'दीपित' । पु० सुवर्ण, सोना; सिंह, हाँस; नीबू; नाकका एक रोग । -किरण-पु० सूर्य; मटार । -कीर्ति-पु० कात्तिकेय । वि० विमल यशवाला ।

-जिह्वा-खी० श्याली, मिषारिन; (हा०) झगझाहू, कर्कशाक्षी । -पिंगल-पु० सिंह । -सूरति-पु० विष्णु ।

वि० जिसका शरीर प्रभासुक्त हो । -रस-पु० केचुआ ।

-रोमा (मन्)-पु० एक विद्वदेव । -लोचन-पु० बिडाल, बिलाव ।

-लौह-पु० काँसा । -वर्ण, -शक्ति-पु० कात्तिकेय ।

वि० जिसके शरीरकी प्रभा तपाये हुए सुवर्णकीसी हो ।

दीप्तक-पु० [सं०] सुवर्ण, सोना; नाकका एक रोग ।

दीप्तांग-पु० [सं०] मोर । वि० प्रभासुक्त शरीरवाला ।

दीप्ताङ्ग-पु० [सं०] सूर्य; मटार ।

दीप्ता-खी० [सं०] जलपिप्पली । वि० खी० धुतिमती, प्रभासुक्ता ।

दीप्ताक्ष-पु० [सं०] बिडाल, बिलाव । वि० जिसकी आँखें चमकती हो ।

दीप्ताग्नि-पु० [सं०] अगस्त्य मुनि । खी० प्रज्वलित अग्नि । वि० जिसकी जठराग्नि प्रज्वलित हो ।

दीप्ति-खी० [सं०] प्रभा, धुति, चमक; कात्ति, छटा; बाण-का विषुद्व्यतिसे चलना; (ज्ञानकी) अभिव्यक्ति, ज्ञानका प्रकाश (वी०); लाक्षा; लाक्ष; काँसा । पु० एक विधेदेव ।

दीप्तिमान् (मन्)-वि० [सं०] धुतियुक्त, प्रभासुक्त, सप्रभा; कात्तिमान्, शोभन । पु० कृष्णके एक पुत्र ।

दीप्तोपल-पु० [सं०] सूर्यकांत मणि ।

दीप्य-वि० [सं०] जिते प्रज्वलित करना हो; प्रज्वलित करने योग्य; जो जठराग्निकी तीक्ष्ण करे, अग्निवर्द्धक । पु० अजमोटा; अजवायन; मयूरशिखा; रुद्रजटा ।

दीप्यक-पु० [सं०] दे० 'दीप्य' ।

दीप्यमान-वि० [सं०] प्रकाशमान, चमकता हुआ ।

दीप्या-खी० [सं०] पिंडखनूर ।

दीप्य-वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकता हुआ । पु० अग्नि ।

दीमक-खी० एक तरहकी सफेद चाँदी जो कागज, लकड़ी आदिके लिए बहुत हानिकार है । मु० -का खाया हुआ -जो गहदेदार होनेसे अमम्य दिखाई देता हो ।

दीपट-खी० दे० 'दीपट' ।

दीवा-पु० तेल या धीके योगसे जलनेवाली बत्तीका आधार; मिट्टीका छोटा छिछला पात्र जिसमें बत्ती जलाते हैं ।

-बत्ती-खी० दीवा जलानेका कार्य । -सलाह-खी० आग जलानेके कामकी लकड़ीकी छोटी सीक जिसके सिरेपर ऐसा मसाला लगा रहता है जो रगड़ खाने ही जल उठता है; यह बत्त जिसमें ये तीलीयाँ रखी रहती हैं । मु० -

जलनेके समय-समया समय । -ठंडा करना-दीपकी तुझा देना । -ठंडा होना-दीपकी तुझना । -दिखाना- (किस्तीके) सामने आलोक करना । -बत्तीका समय- दीवा जलानेका समय, सायकाल । -लेकर डूँढ़ना-यन्त्रे परिश्रमसे खोजना ।

दीरघ-वि० दे० 'दीर्घ' ।

दीर्घ-वि० [सं०] देश और काल दोनोंकी दृष्टिसे बड़ा; ऊँचा; आयत; गहवा (जैसे धाम); विस्मृत; लंबा; गुरु (मात्रा) । पु० ऊँट; गुरु मात्रा (आ, ई, ऊ आदि); पाँचवीं, छठी, सातवीं और नवीं राशियाँ; एक तरहका सरपत । -कंठक-पु० बटुलका पेड़ । -कंठ, -कंठक-पु०, वि० दे० 'दीर्घकण' । -कंठ-पु० मूली । -कंदिका-खी० मुसली, तालमूली । -कंधर-पु० बकपक्षी । वि० लंबी गरदनवाला । -कणा-खी० सफेद गीरा । -कांड-पु० पातालगहड़ी लना, तिप्तागा; गुडगृण । -कांडा-खी० पातालगहड़ी लता । -काय-वि० लंबा । -काट-पु० शहतीर । -कील, -कीलक-पु० अकोलका पेड़ । -कुलवा-खी० गजपिप्पली । -कूरक-पु० एक तरहका चावल, राजाज । -केश-पु० भाइ; एक देश जो पूर्व विभागके उत्तर-पश्चिममें है (हृ० स०) । वि० जिसके बाल लंबे हो । -कोशा, -कोशिका, -कोशी, -कोषिका-खी० सिनाथिका, घोंघा (?) । -गति-पु० ऊँट (जिसके बग बहुत लंबे होते हैं) । -ग्रंथि, ग्रंथिका-खी० गज-पिप्पली । -ग्रीव-पु० ऊँट; नीलकौब पक्षी, सारस । वि० लंबी गरदनवाला । -घाटिक-पु० ऊँट । वि० लंबी गर-

दलवाला। -**पछड़**-पु० ईस, गन्ना। वि० बने-बने पत्ती-
वाला। -**जंगल**-पु० एक तरहकी मछली। -**जंज**-
पु० बक, बयला; छँट। वि० लंबी आँखावाला। -**जिह्व**-
पु० सप; दानवाँका एक मेद; राक्षसोंका एक मेद। वि०
जिसकी जीम बनी हो। -**जिह्वा**-**खी** काष्ठिकेकी माल-
काओंमेंसे एक; एक राक्षसी जो विरोचनकी पुत्री थी और
जिसे ईंद्रने मारा था। -**जिह्वी**(**हिन्**)-पु० कुत्ता।
जीवी(**बिन्**)-वि० जो बहुत दिनोतक जीवे, चिरजीवी।
-**तवा**(**पस्**)-वि० जिसने दीर्घकालतक तपस्या की हो।
पु० हरिश्चंके अनुसार एक आनुवंशीय राजा; महत्वापति
गौतम। -**तमा**(**मस्**)-पु० उत्तम्यके पुत्र एक कवि जो
मुखके धापसे धँसे हो गये थे। -**तस्**-पु० ताकका पेड़;
लंबा पेड़। -**तिमिया**-**खी** ककरी। -**तुंका**-**तुंकी**-
खी छद्दर। -**दंड**-**दंडक**-पु० रेंग; ताड़। -**दंडी**-
खी मोरखी। -**दुर्मिता**-**खी** दूरतकी बात मोचने-
का गुण या शक्ति, दूरदक्षिता। -**दर्शी**(**हिन्**)-पु०
माछ; गीध। वि० जो बहुत दूरतकी बात सोचे या सोच
सके, दूरदर्शी। -**दृष्टि**-पु० गीध। वि० जो दूरकी चीज
भी देख सके, जिसकी दृष्टि दूरत जाय; दूरदर्शी। -**हु**-
पु० दे० 'दीर्घ-सर्'। -**हुस्**-पु० सेमलका पेड़। -**नाइ**-
पु० क्षस; मुगा; कुत्ता। वि० जिसकी आवाज दूरतक
फैल जाय वा गूँन उठे; जिससे जोरकी आवाज निकले।
-**नाइ**-पु० गुंवरण; वायनाल; दे० 'दीर्घोद्विषक'। -
निद्रा-**खी** चिरायन, दृष्ट्यु; बहुकालम्बायी निद्रा।
-**निग्नास्**-पु० शोक वा दुःखके कारण ली जानेवाली
लंबी साँस। -**पक्ष**-पु० कलिंग पक्षी। वि० बड़े परोवाला।
-**पक्ष**-पु० ताकका पेड़; कुत्ताका एक मेद; लाल प्याज;
बिम्बुदंड; कुचल; रेंग; लाल लहसुन; बैत; करीरका पेड़;
जलसुभा। -**पक्ष**-**खी** विनपणी; कठनामुन; केतकी;
गंधपत्रा। -**पत्रिका**-**खी** शेतबचा; शालपर्णी; धीकु-
आर। -**पत्री**-**खी** पलाशी लता। -**पर्ज**-वि० बड़े
पत्तीवाला। -**पर्णी**-**खी** धूम्रपर्णी। -**पर्वा**(**बिन्**)-
पु० ईस आदि। -**पल्लव**-पु० सनका पौधा। वि० बड़े
पत्तीवाला। -**पवन**-पु० हाथी। -**पाद**-**पाद**-पु०
कंक पक्षी, सारस। वि० जिसकी टाँगें बनी हों। -**पाइप**-
पु० ताकका पेड़; सुपारीका पेड़। -**पृष्ठ**-पु० सोंप।
-**पृष्ठी**-**खी** सपिणी। -**प्रक्ष**-वि० दूरदर्शी। -**फल**-
पु० आगरवध, अमलतास। -**फलक**-पु० अमत्यका पेड़।
-**फला**-**फलिका**-**खी** कपिलद्राक्षा, जतुका। -**फाला**-
खी चमरी, झुरही गाय। -**बाहु**-पु० शिवका एक
अनुचर; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। वि० जिम्मी भुजा लंबी
हो। -**मास्त**-पु० हाथी। -**मुख**-पु० हाथी; शिवका
एक अनुचर। वि० जिसका मुँह बड़ा हो। -**मुखी**-**खी**
छद्दर। -**मूल**-पु० मोरटलता; लामजक। -**मूली**-
खी दुरालभा। -**वक्ष**-वि० जिसने दीर्घकालतक वह
किया हो। -**रंगा**-**खी** हरिद्रा। -**रत**-पु० कुत्ता।
-**रद**-पु० शकर। वि० जिसके दाँत बड़े हों। -**रसव**-
पु० सोंप। -**रागा**-**खी** हल्दी। -**रोमा**(**मन्**)-पु०
शिकका एक अनुचर; माछ। -**रोहिषक**-पु० एक सुगन्धित
द्रव। -**रंभा**-पु० नरकट। -**वक्क**-पु० हाथी। वि०

जिसका मुँह लंबा हो। -**वर्षिका**-**खी** मगर। -**बल्ली**-
खी पलाशी लता; पातालगुहवी लता; महेंद्रवास्नी।
-**बुल**-**बुलक**-पु० स्वीनाक। -**बुला**-**खी** ईंद्रविमंटी
लता। -**बुलिका**-**खी** एलापर्णी। -**सर**-पु० बाव-
नाल। -**हास्**-पु० सनका पेड़; सावका पेड़। -
हासिका-**खी** नीलाभी नामकी एक साड़ी। -**शिषिक**-
पु० क्ष, राई। -**सत्र**-पु० बहुत दिनोतक चलनेवाला
यज्ञ; ऐसा यज्ञ करनेवाला व्यक्ति; जीवनपर्यंत किया जाने-
वाला अभिहोत्र; एक तीर्थ। -**सुरस**-पु० कुत्ता।
-**सूक्ष्म**-पु० एक प्रकारका प्राणायाम। -**सूत्र**-वि०
जिसमें लड़े-लड़े तंतु हों; दे० 'दीर्घसूत्री'। -**सूत्रता**-**खी**
प्रत्येक कार्यकी देरमें करनेकी आदत। -**सूत्री**(**बिन्**)-
वि० जो प्रत्येक कार्यकी देरमें करे, जो आरंभ किये हुए
कार्यमें उचितसे अधिक समय लगावे। -**रक्ष**-पु० ताड़-
का पेड़। -**स्वर**-पु० दो मंत्राभोवाला स्वर।
दीर्घा-**खी** [स०] धूम्रपर्णी, पिठनन; लंबा तालाब।
दीर्घाकार-वि० [स०] बड़े आकारका।
दीर्घाध्यग-पु० [स०] दूत, हरकारा।
दीर्घायु(**स्**)-पु० [स०] कौमा; सेमरका पेड़; मार्कंडेय
कवि। वि० दीर्घजीवी, लंबी आयुवाला।
दीर्घायुध-पु० [स०] माछा; सूअर; साही। वि० जिसके
पास बड़ा अस्त्र हो।
दीर्घायुध-पु०, वि० [स०] दे० 'दीर्घायु'।
दीर्घालं-पु० [स०] श्वेत मदारक।
दीर्घास्य-पु० [स०] हाथी; शिवका एक अनुचर। वि०
जिसका मुँह बड़ा हो।
दीर्घिका-**खी** [स०] एक तरहका जलाशय, बापी (जला-
शयोत्सर्गनस्वके अनुसार दीर्घिका ३०० अनुप लंबी होती
है); जलाशय; एक प्रकारकी बड़ी नाव।
दीर्घीर्वाह-पु० [स०] एक तरहकी ककरी।
दीर्घ-वि० [स०] विदारित, फाटा हुआ; फटा हुआ;
भराया हुआ; बड़ा हुआ।
दीर्घका-**खी** दे० 'दीर्घक'।
दीर्घट-**खी** दीपक रखनेका लकड़ी, लोहे पीतल आदिका
बना आधार।
दीर्घा-पु० दे० 'दीर्घा'।
दीर्घाव-पु० [फा०] शाही दरबार वा अदालत, आस्नान-
मंडप; राजा वा बादशाहकी बैठक; प्रधान मंत्री; वह
पुस्तक जिसमें गजलें संगृहित हों। -**जान**-**आलम**-
पु० बादशाह वा राजाका वह दरबार जिसमें सर्वसाधारण
प्रवेश था सके। -**झाना**-पु० बैठक; बाहरी लोगोसे
मुलाकात करनेकी जगह। -**झालासा**-पु० वह राज-
कर्मचारी जिसके पास बादशाह वा राजकी मुहर हो।
-**झास**-पु० बादशाह वा राजाका वह दरबार जिसमें
गिने-चुने लोग सम्मिलित हों।
दीर्घानगी-**खी** [फा०] दे० 'दीर्घानापन'।
दीर्घाना-वि० [फा०] पागल, विक्षिप्त, सनकी। -**पव**-
पु० दीर्घाना होनेका भाव, पागलपन, सनक।
दीर्घानी-**खी** [फा०] वह अदालत जिसमें रुपये और
जायदादके मुकदमोंकी मुनवाई होती है; दीर्घानाका पद।

वि० रुपये और आक्ट-संवर्षी (मुकदमा) ।
दीवार-**खी**० [फा०] मिट्टी, ईंट आदिका बनाया हुआ पक्का या बेरा, दीत । -**गिर**-**खी**० दीवारमें लगाया हुआ दिया रखनेका आधार; दीवारमें लगानेका लैप ।
-गोरी-**खी**० दीवारमें लगानेका एक तरहका छपा कपड़ा । -**खीन**-**खी**० दे० 'खीनकी दीवार' ।

दीवाल-**खी**० [फा०] दे० 'दीवार' ।

दीवाली-**खी**० कापिककी अमावास्याको पड़नेवाला हिंदुओंका एक त्योहार जिसमें दीपक जलाये जाते हैं और लक्ष्मीका पूजन होता है (यह त्योहार प्रचानतः वैद्योंका है) ।

दीवि-**पु**० [सं०] दे० 'दिवि' ।

दीसना-**अ**० कि० दिखाई देना, दृष्टिगत होना ।

दीह-**वि**० दीर्घ; छंदा; बड़ा ।

दुडुक-**वि**० [सं०] बेईमान; कुटिल; छद्म ।

दुडुम-**पु**० [सं०] एक तरहका निर्विष सर्प ।

दुद-**पु**० दो व्यक्तियोंका युद्ध या कलह; ऊबम, ऊपगत; युगल, जोड़ा; नगाबा, डंका । **अ**० ठक-ठक ।

दुदभ-**पु**० जन्म-मरणादिका क्लेश ।

दुदम-**पु**० [सं०] एक तरहका नगाका ।

दुदु-**पु**० [सं०] एक तरहका नगाका; कृष्णके पिता वसुदेव; * जन्म-मरण आदि कष्ट ।

दुदुवा-**पु**० [सं०] डंका, दुदुभि; पानोंमें रहनेवाला साँप, डोबहा; गिब ।

दुदुभि-**खी**० [सं०] डंका, नगाबा, धौमा । **पु**० वरुण; एक दैत्य; एक राक्षस; एक विष; पासा; विष्णु । -**स्वम**-**पु**० नगाबेकी आवाज; सुश्रुतके अनुसार एक तरहकी विष-चिकित्सा; श्रेयादिकी बापा दूर करनेका एक यंत्र ।

दुदुभिक-**पु**० [सं०] एक विषैला कीड़ा ।

दुदुभी-**खी**० नगाका; [सं०] एक गधबी; पामा फेंकनेका एक डग ।

दुदुम्भाघात-**पु**० [सं०] नगाबा बजानेवाला ।

दुदुमा-**खी**० [सं०] नगाबेकी ध्वनि ।

दुदुमार-**पु**० [सं०] दे० 'धुधुमार'; एक तरहका लाल कीड़ा; बिडाल; मकानसे निकलनेवाला धुआँ ।

दुदुर-**पु**० चूहा-'दुदुर राजा टीका बैठे'-कवीर ।

दुदुह-**पु**० दे० 'डुडुम' ।

दुबक-**पु**० [सं०] एक प्रकारका मेदा, दुबा ।

दुबा-**पु**० एक प्रकारका मेदा जिसकी पूँछ सिरपर गोल, मोटी और चौड़ी होती है ।

दुंबाल-**पु**० दुम, पूँछ; पतवार ।

दुडुर-**पु**० गूलरका पेड़ ।

दुःकृत-**पु**० दे० 'दुःश्रुत' ।

दुःख-**पु**० [सं०] कष्ट, क्लेश, तकलीफ । -**कर**-**वि**० दुःख पहुँचानेवाला, कष्टप्रद । -**ग्राम**-**पु**० संसार; दुःखोंका समूह, अनेक दुःख । -**छिन्न**-**छेद**-**वि**० जो कठिनातासे काटा जा सके; कठिनातासे काटा हुआ, कठिन; कष्टग्रस्त । सप्त । -**अथ**-**पु**० आधिमौक्तिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक-ये तीन प्रकारके दुःख । -**व**-**वि**० दुःख पहुँचानेवाला, डेयकर । -**द्वय**-**वि**० जो बहुत

दुःखमें हो, भीषण कष्टमें पड़ा हुआ । -**दाता**(**पु**) -**पु**० वह व्यक्ति जो कष्ट पहुँचावे । -**दात्री**-**खी**० कष्ट पहुँचानेवाली स्त्री । -**दायक**-**दायी**(**विभु**) -**वि**० दुःख देनेवाला; जिससे कष्ट पहुँचे । -**दोहा**-**खी**० गाय (जो बड़ी कठिनाईसे दुड़ी जा सके) । -**प्रद**-**वि**० दे० 'दुःखद' ।

-**प्राव**-**बहुल**-**वि**० जिसमें दुःखका आधिक्य हो, दुःखपूर्ण, कष्टमकुल । -**कम्ब**-**वि**० दुर्लभ; दुष्प्राप्य । -**कीक**-**पु**० संसार (जहाँ दुःखोंकी ही अधिकता है) । -**शील**-**वि**० जिसे दुःखके अनुभवका अभ्यास हो । -**सागर**-**पु**० दुःखका समुद्र, संसार । -**साध्य**-**वि**० दे० 'दुःसाध्य' ।

सु०-**डडाना**-**तकलीफ** सहना । -**देना**-**कष्ट** पहुँचाना । -**पहुँचना**-**कष्ट** होना । -**पामा**-**तकलीफ** सहना, शेरुना । -**बँडाना**-**विपत्ति**में साध देना, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार द्वारा दुःख हलका करना । -**मानना**-**स्मि**न होना, दुःखी होना ।

दुःखमय-**वि**० [सं०] दुःखोंसे भरा हुआ, दुःखपूर्ण ।

दुःखार्त-**वि**० [सं०] जिसका अंत दुःखमय हो; जिसका पर्यवसान दुःखमें हो । **पु**० वह नाटक जिसकी समाप्ति दुःखमयी घटनासे हो; दुःखका अंत या नाश ।

दुःखार्तीत-**वि**० [सं०] कष्टमें मुक्त ।

दुःखान्वित-**वि**० [सं०] दे० 'दुःखार्त' ।

दुःखावसन-**पु**० [सं०] संसार, जगत् ।

दुःखार्त-**वि**० [सं०] दुःखी, कष्टमें पड़ा हुआ ।

दुःखित-**वि**० [सं०] जिसे कष्ट हो, पीड़ित; जिसे दुःख पहुँचा हो, क्षिप्त ।

दुःखिनी-**वि**० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जिसपर विपत्ति पड़ी हो, दुःखमें पड़ी हुई ।

दुःखी(**खिणु**) -**वि**० [सं०] जिसे दुःख हो; जो कष्टमें हो, दुःखान्वित ।

दुःमाकुल-**पु**० [सं०] बुरा शकुन; अनिष्ट फलका सूचक लक्षण ।

दुःसका-**खी**० [सं०] दृतराष्ट्रकी एकमात्र पुत्री जो जय-द्रवकी ब्याही थी ।

दुःसासन-**पु**० [सं०] दुर्योधनका छोटा भाई जिसने भरी सभामें द्रौपदीका केशाकर्षण किया था । **वि**० जिसपर शासन करना कठिन हो ।

दुःशील-**वि**० [सं०] जो सुशील न हो, बुरे स्वभावका; दुर्विनीत, दंडत ।

दुःशोध-**वि**० [सं०] जिसका शोधन, प्रतीका सुगम न हो ।

दुःश्रव-**पु**० [सं०] काव्यमें एक दोष, भ्रुति-कट्ट दोष । **वि**० भ्रुतिकट्ट, कर्णकट्ट, सुननेमें अभ्रिय ।

दुःश्रम-**वि**० [सं०] निष ।

दुःशेष-**वि**० [सं०] जिसका निषेध करना कठिन हो, जिसका कठिनतासे निषेध किया जा सके ।

दुःसंग-**पु**० [सं०] बुरा साथ, कुसंगति ।

दुःसंभाल-**पु**० [सं०] आचार्य केशवके मतानुसार एक रस ।

दुःसह-**वि**० [सं०] जिसे सहना कठिन हो, जो सहनशक्ति से बाहर हो, असह्य ।

दुःसहा-**खी**० [सं०] नागदमनी ।

दुःसाध्य-**वि**० [सं०] दे० 'दुःसाध्य' ।

दुःसाधी(विन्)-पु० [सं०] द्वारवाह ।

दुःसाध्य-वि० [सं०] जो कठिनतासे सिद्ध किया जा सके; जिसका करना कठिन हो, दुष्कर; जिसका प्रतीकार कठिन हो, असाध्य ।

दुःसाहस-पु० [सं०] असंभव या दुष्कर कार्यकी सिद्धिके लिए किया गया साहस; ऐसा साहस जिससे कुछ भी काम न हो; हानिकर साहस; अनुचित साहस वृद्धता ।

दुःसाहसिक-वि० [सं०] जिसके लिए साहस करना ठीक न हो ।

दुःसाहसी(सिन्)-वि० [सं०] व्यर्थका साहस करनेवाला, अनुचित साहस करनेवाला ।

दुःस्थ-वि० [सं०] जिसकी अवस्था अच्छी न हो, दुर्गत; निर्धन; मूर्ख ।

दुःस्थ-पु० [सं०] करंज; केवौंच; दुरालम्बा । वि० जिस छूना कठिन हो ।

दुःस्थ-श्री-श्री० [सं०] केवौंच; आकाशवह्नी; कंटकारी; दुरालम्बा ।

दुःस्थकोट-पु० [सं०] एक तरहका सख ।

दुःस्वप्न-पु० [सं०] बुरा स्वप्न, बराबना स्वप्न; बुरे फल-वाला स्वप्न ।

दुःस्वभाव-वि० [सं०] बुरे स्वभावका, खोटे स्वभावका, दुष्ट, नीच, कुटिल । पु० बुरा स्वभाव, दुष्ट प्रकृति ।

दु-‘री’का संक्षिप्त रूप जो ममस्त पदोंमें पूर्वपदके रूपमें प्रयुक्त होता है । -अस्त्री-श्री० दो आनेका मित्र ।

-आश्व-आश्व-पु० दो नदियोंके मध्यका भूखण्ड ।

-ई-श्री० दे० क्रममें । -कृत्स्नी-श्री० जिसके दो किनारे हों, नदी । -खंडा-वि० दो खंडोंवाला (मकान) ।

-गना-वि० दे० ‘द्विगुण’ । -गात्रा-पु० दोनाली बंदूक । -गुण-वि०-गुण-गुणा-वि० दे० ‘द्विगुण’ ।

-वद्विषा-वि० दो घड़ीका; दो घड़ीके हिस्सामें निकाला हुआ । -मुहूर्त-पु० दो दो घड़ीके हिस्सामें निकाला हुआ मुहूर्त । -घरी-श्री०-का० द्वयविधा मुहूर्त । -चंद-वि० दुग्गा । -चित्त-वि० जिसका मन किसी एक बातपर जमा न हो, सशय या द्विविधमें पड़ा हुआ, अस्थिरचित्त; अनमना, वितापस्त, फिक्कमद । -चित्तई, -चित्ताई-श्री० एक बातपर मन न जमना, द्विविधा; संदेह; चिंता । -चिन्ता-वि० दे० ‘दुचित्त’ । -ख-पु० दे० ‘द्विज’ । -पति-पु० दे० ‘द्विजपति’ ।

-राज-पु० दे० ‘द्विजराज’ । -जन्मा-पु० दे० ‘द्विजन्मा’ । -जाति-पु०, श्री० दे० ‘द्विजाति’ ।

-जीह-पु० दे० ‘द्विजिह्व’ । -जम्ब-अ० दो घुटनोंके बल । -दूक-वि० दो डुकनों या खटोंमें विभक्त, जिसके दो डुकने कर दिये गये हों । -तरफा-तरफा-वि० दोनों ओरका; जो दोनों तरफ हो; दुरगा । -तारा-पु० सितारकी तरहका एक बाजा जिसमें दो तार लगे रहते हैं । -दल-पु० दे० ‘द्विदल’; एक पहाड़ी पौधा ।

-दामी-श्री० एक प्रकारका सूती कपड़ा जो पहले मालवामें बहुत अधिक बनता था । -दिल्ला-वि० दे० ‘दुजित’ । -धारा-वि० दोनों ओर धारवाला । पु० एक प्रकारकी तलवार जिसमें दोनों ओर धार रहती है । श्री०

‘दुवारी’ । -वाली-वि० श्री० जिसमें दो नल हों, दो नलोंवाली । -पट्टा-पु० दे० ‘दुपट्टा’ । -पटी-श्री० छोटा दुपट्टा । -पट्टा-पु० ओढ़नेकी चादर, लप-रीय । -पट्टी-श्री० छोटा दुपट्टा । -पट्ट-पु० दे० ‘द्विपट्ट’ । -पट्टी-श्री० एक तरहकी मिर्चें जिसमें दोनों ओर पट्टे लगे रहते हैं, बगलबंदी । -पल्लवा-वि० श्री० दो पल्लोंवाली । श्री० एक तरहकी टोपी । -पहर-श्री० दे० ‘दोपहर’ । -पहरिषा-श्री० एक छोटा पौधा जिसमें लाल-लाल फूल लगते हैं; † दोपहर, मध्याह्न ।

-पहरी-श्री० दे० ‘दोपहरी’ । -कसली-वि० रबी और खरीफ दोनोंमें पैदा होनेवाला; मंदिर । -बगली-श्री० मालखमकी एक कसरत । -बाधा-श्री० दे० ‘द्विधा’ । -बारा-अ० दे० ‘दोबारा’ । -बाल-वि० दे० ‘दोबाला’ । -विधा-श्री० चित्तकी किसी एक वान-पर न जमनेकी किया या साध, निश्चयका अभाव, दौध-भाष; भेदभाव-‘नो द्विधा पारस नहिं राखत कंचन करत खरो’-य०; मशय, मंदेह, अदेश; मंक्ष्य विकल्प, असमजस । -बीचा-पु० सदेह, खटका । -भाषी-भाषिचा-भाषी-पु० वह दो भाषाएँ जाननेवाला मध्यस्थ जो उन भाषाओंके बोलनेवाले दो व्यक्तियोंकी बातोंके अन्तरपर एककी दूसरेका अभिप्राय समझावे ।

-अंजिला-वि० जिसम दो मजिने हो । -झारी-वि० दो नहरोंपर होनेवाला । -झुंझा-वि० जिसके दो झुंझ हों, दो मुलोंसे युक्त । -रंग-रंग-वि० दो रंगोंवाला, जिसमें दो रंग हों, दो प्रकारका, जिसमें एकसंयता न हो, चालबाजीसे भरा हुआ, कपटपूर्ण । -रंघा-वि० जिसमें दो रंघ हों, जिसमें आपस पर छेद हो । -रट-रट-वि० दे० ‘द्विरट’ । -रस-पु० दे० क्रममें, † दे० ‘जोमट’ । वि० दे० ‘दोरस’ । -राज-पु० एक ही देशमें दो राजाओंका शासन, दो अमली शासन; बुरा शासन, दोषपूर्ण शासन ।

-राजी-वि० जिसमें दो राजा राज्य करते हों, जिसपर दो राजाओंका शासन या अधिकार हो । -रख्खा-वि० दो खलोंवाला; जिसमें दोनो ओर दो रंग हों । -रफ-पु० दे० ‘द्विरफ’ । -खड़ा-वि० दो खंडोंका, दो लड़ोंवाला । -लखी-वि० श्री० दे० ‘दुलखा’ । श्री० दो लखोंकी माला । -लत्ती-श्री० घोड़े आदि चौपायोंका पीछेके दोनों पैरोंमें मारना । -बाह-वि०, जिसका दूसरा विवाह हुआ या होनेवाला हो । -शाला-पु० एक तरहकी पशमीनेकी चादर जो दोहरा होती है और किनारेपर बेल-बुटे होते हैं । -पोष-वि० जो दुशाला ओढ़े हो ।

-क्रोश-पु० दुशाला बेचनेवाला । -साखा-वि० दो शाखाओंवाला । पु० दो शाखाओंवाला समुदाय । -सार-पु० एक ओरसे दूसरी ओरतक जानेवाला छेद । -साखा-पु० दे० ‘दुशाला’ । -सूरी-वि० जिसमें ताने और बाने दोनोंमें दोहरा खुल लगा रहे । श्री० इस प्रकारका मोटा कपड़ा । -सेजा-पु० पलंग । -हथ्या-वि० जिसमें दोनों हाथ काममें लाये जायें, दो मुठोंवाला । -हथ्थी-श्री० मालखमकी एक कसरत । वि०, श्री० दे० ‘दुहथ्या’ ।

दुःखन-पु० दे० ‘दुखन’ ।

दुःखरत्ना-पु० दे० 'द्वार'।

दुःखनिवा-ली० छोटा दरवाजा।

दुःख-ली० [अ०] ईश्वरसे माँगना; प्रार्थना, वचिना; आशीर्वाद।-दुःखी-ली० दुःखमाशीर्वाद।-ली०-वि० दुःख करनेवाला; आशीर्वाददाता; शुभचिन्तक।-गोई-ली० दुःखा देना। मु०-करना-दे० 'दुःखा माँगना'।-कहना-आशीर्वाद देना।-माँगना-ईश्वरसे किसीकी मलाईकी प्रार्थना करना।-लगाना-दुःखाका सफल होना।

दुःखादस-वि० दे० 'द्वार'।

दुःखार; दुःखारा-पु० दे० 'द्वार'।

दुःखारी-ली० छोटा द्वार।

दुःखाल-ली० [सं०] चमड़ेका तसमा; रिकारका तसमा।

दुःखाली-ली० चमड़ेकी बड़ी जिससे खराद, सान आदि धुमाये जाते हैं।

दुःख-वि० दे० 'दो'।

दुःखज-ली० दे० 'द्वज'। पु० द्वितीयाका चंद्रमा।

दुःख-ली० दो होना, दोकी मानना, देत, गैर, पराया ममज्ञान। मु०-का परदा-देतजमित अज्ञान या आवरण।

दुःखी-वि० दोनो।

दुःखहा-वि० जिनकी कोमल एक दुःखता हो; एक-एक दुःखके लिए मालावित रहनेवाला, अथम कोटिका, मुच्छ।

दुःख-पु० युग्म; जोड़ा; एक पैनेका चौथा हिस्सा। वि० जिनमें कोई चीज दो-दो करके लगी हो।

दुःखी-ली० ताशकी वह पत्ती जिसपर किसी रंगकी दो बुटियाँ छपी हों; वह बत्ती जिनमें दो घोड़े जुते हों।

दुःखना-अ० कि० छिपना, छुकना।

दुःखान-ली० [का०] वह स्थान जहाँ बेचनेकी चीजें मज्जा कर रखी हों, मोटा बेचने और खरीदनेकी जगह।-द्वार-पु० दुकानका स्वामी, दुकानवाला; वह व्यक्ति जिसने अधोपार्जनके लिए दकोसला रच रखा हो, पालकी, ठग।-द्वारी-स्त्री० दुकानदारका धधा; दुकानदारका पद; धन कमामेके लिए रचा गया दकोमला।

दुःखाल-पु० दे० 'अकाल' (हिं०)-'यदि निसिचर दुःखाल तम अहर्'।-रामा०।

दुःखल-पु० [म०] देशमी बख; चिकना और बारीक काच, कोम बख, पट्ट बख।-पट्ट-पु० अच्छे कपड़ेका साफा।

दुःखेला-वि० जिसके साथ कोई और भी हो।

दुःखेले-अ० किसी औरके साथ।

दुःख-पु० शब्दानाईके साथ बजाया जानेवाला तबले जैसा एक बाजा।

दुःख-पु० ताशका वह पत्ता जिसपर किसी रंगकी दो बुटियाँ छपी हों। वि० जो एक जोड़ेके रूपमें हो; दे० 'दुकेल'।-तिष्ठा-अ० दो या तीनकी सख्यामें; एक या दो औरके साथमें।

दुःखी-ली० दे० 'दुःख'।

दुःखत-पु० दे० 'दुःखत'।

दुःख-पु० दे० 'दुःख'।-द-वि० दे० 'दुःख'।

-दुःख-वि० दे० 'दुःखदात्री'।-दुःख-पु० दुःख तथा ईद-मुख-दुःख, राग-ईद, शीत उष्ण आदि परस्पर विरोधी भाव और अनुभूतियाँ।

दुःख-पु० दुःख; दुःखगाथा। मु०-रोना-दूसरेसे अपनी कष्ट गाथा कह सुनाना; दूसरेकी अपनी विपत्ता-बखाना वृत्तान्त सुनाना।

दुःखदागर-पु० दुःखका नाश करनेवाला-पाठामौ द्वारका सिपाही बिरहिनिके दुःखदागर-सर।

दुःखना-अ० कि० दर्द करना, पीका होना।

दुःख-पु० दे० 'दुःख'।

दुःखना-स० कि० दे० 'दुःखाना'-सुतहि दुःखत विधि न बरज्यो, कालके वर जात'-विनयपथिका।

दुःखहा-वि०, ली० दुःखकी भारी-न खुली मुँदी जानि परे कलु ये दुःखहार् जगेपर सोवति है'-धन०।

दुःखाना-स० कि० पीका पहुँचाना, कष्ट देना; स्पष्ट आदि-के द्वारा कुंसी, पाव आदियें स्थथा उत्पन्न करना।

दुःखार; दुःखारी-वि० दुःखी, व्यथित।

दुःखित-वि० दे० 'दुःखित'।

दुःखिया-वि० दुःखमें पड़ा हुआ, निपटप्रस्त।

दुःखियारा-वि० दुःखिया, सकटापन्न।

दुःखी-वि० जिसे मानसिक व्यथा हो; खिन्न; रुग्ण।

दुःखीला-वि० दुःखयुक्त, जिसे दुःखका अनुभव हो रहा हो।

दुःखीहो-वि० दुःखकर, कष्टप्रद।

दुःगई-ली० बरामदा-'अति अनुसृत धर्मनकी दुःगई'-रामचक्रिका।

दुःगदुगी-ली० सोनेपरका सात, धुकधुकी।

दुःगध-पु० दुग्ध, दूध।-नवीस-पु० दुग्धसमुद्र, क्षीरसागर-'इंद्रकी अनुज हैर दुःगध-नदीसको'-भू०।

दुःगना-अ० कि० छिपना।

दुःगालरा-पु० दुर्गके पासका गाँव; छिपनेका स्थान।

दुःगल-पु० [सं०] दे० 'दुःख'।

दुग्गा-पु० दे० 'दुग्'।

दुग्ध-पु० [सं०] दूध; पीछेका दूध जैसा रस; दुहना।

वि० दुहा हुआ; चूना हुआ; भरा हुआ, प्रपूर्ण।-कृषिका-ली० एक पकवान।-तालीब-पु० दूधका फेन; मलाई।

-दा-ली० दूध देनेवाली गाय। वि० ली० दूध देनेवाली।-पाचन-पु० दूध औद्योगिक पात्र।-पापाण-पु० एक वृक्ष।

-पुच्छी-ली० दुग्धविशेष।-पुष्पी-ली० दुग्धपेया नामक वृक्ष।-पेया-ली० एक वृक्ष।

-पोष्य-वि० माताका दूध पीकर रहनेवाला (बच्चा)।-फेन-पु० दूधका फेन, मलाई।-फेनी-ली० एक झाकीदार पीसा।

-बंदध-बंदधक-पु० वह लूटा जिसमें दुहनेके समय गाय बाँधी जाय।-बीजा-ली० ज्वार, जेन्हरी।-शाखा-ली० दे० 'डेटो'।-समुद्र-पु० पुराणोक्त सात समुद्रोंमेंसे एक, क्षीरसागर।

दुःगल-पु० [सं०] एक प्रकारका पत्थर जिसपर दूधके रंगके स्फेद छीटे होते हैं।

दुग्गल-पु० [सं०] दे० 'दुग्गल'।

दुग्गल-पु० [सं०] मलाई।

दुग्धादि-पु० [सं०] क्षीरसागर-।-सवसा-क्षी० लक्ष्मी।
दुग्धाह्मा-(हम्पु)-पु० [सं०] दे० 'दुग्धपाषाण'।
दुग्धिका-क्षी० [सं०] दुग्धी नामकी घास, दुग्धिया, क्षीरपी।
दुग्धिनिका-क्षी० [सं०] जाल विधिका।
दुग्धी-क्षी० [सं०] दे० 'दुग्धपाषाण'; दे० 'दुग्धिका'।
दुग्धी(विषय)-वि० [सं०] दूधवाला; जिसमें दूध हो, दुग्धयुक्त।
दुध-पु० [सं०] (प्रायः समासोत्तम) देनेवाला।
दुधा-क्षी० [सं०] वह गाव जो दूध दे रही हो।
दुधक-पु० [सं०] मुरा नामक एक गन्धद्रव्य; सनोर्जन-काष्ठ; गंधकृती।
दुध-पु० दे० 'द्विज'।
दुधेका-पु० दे० 'द्विजेस'।
दुधि-क्षी० [सं०] कच्छपी।
दुधी-क्षी० दे० 'दुधी'।
दुध-अ० दूधा या तिरस्कारवत् एक शब्द (बच्चोंकी ध्या करने समय भी कभी-कभी इसका प्रयोग करते हैं)।-
कार-पु० 'दुध-दुत' कहकर किया गया तिरस्कार; इस प्रकार प्रकट की गयी दूधा।
दुतकारना-स० कि० 'दुत-दुत' कहकर तिरस्कार करना, थिकारना।
दुति-क्षी० दे० 'दुति'।-मान-वि० दे० 'दुतिमान्'।
दुत-वि० प्रमायुक्त, कांतिमान्।
दुतिव-वि० दे० 'द्वितीय'।
दुतिवा-क्षी० दे० 'द्वितीया'।
दुतीय-क्षी० दे० 'द्वितीय'।
दुतीया-क्षी० दे० 'द्वितीया'।
दुत्कारना-स० कि० दे० 'दुतकारना'।
दुर्ध-क्षी० दे० 'दुर्ध'।
दुत्कारना-स० कि० दे० 'दुत्कारना'।
दुधी-क्षी० एक प्रकारकी घास जिसमें दूध होता है; खदिया मिट्टी।
दुध-पु० [सं०] प्याजका हरा पौधा।
दुध-'दूध'का समासगत रूप।-पिड्डी-क्षी०,-पिठवा-
 पु० एक प्रकारका पकवान जो गूँघे हुए मैदेके छोटे-छोटे और पतले-पतले टुकड़ोंकी दूध में पकानेसे तैयार होता है।
 -मुल-मुँहा-क्षी० दे० 'दूधमुँहा'।-ईई-क्षी० दूध गरम करनेका मिट्टीका पात्र।
दुधार-वि० जिसमें दूध हो; दूध देनेवाली; जिससे अधिक मात्रामें दूध निकलता हो; जो अधिक दूध देती हो।
दुधार-वि० दे० 'दुधार'।
दुधित-वि० [सं०] कटयुक्त, पीठित; व्याकुल, घबराया हुआ।
दुधिया-क्षी० दुग्धी नामकी घास; ज्वारकी एक किस्म; खदिया मिट्टी; एक विधिया; एक प्रकारका विष। वि० दूध मिठा हुआ; जिसका रंग दूधकी तरह सफेद हो।-कंज-
 -वि० नीलापन लिये हुए भूरे रंगका। पु० इस तरहका रंग।-**दधर**-पु० एक तरहका सफेद पत्थर।-**विष**-
 पु० पीधेसे निकलनेवाला एक विष।
दुधैक-वि० क्षी० जो बहुत दूध देती हो।

दुध-वि० [सं०] दुर्ध, दुर्धर्ष; हिंसक।
दुधना-अ० कि० किसी लोचदार चीजका इतना झुक जाना कि उसके दोनों सिरे मिल जायें। स० कि० किसी लोचदार चीजकी इतना झुका देना कि उसके दोनों सिरे आपसमें मिल जायें।
दुधिवी-वि० दुग्धियाका, संसार-संबंधी।
दुधिया-क्षी० [अ०] संसार, जगत्; संसारमें रहनेवाले लोग, लोक; संसारका प्रपंच, संसारका संघट।-ई-वि० सांसारिक। क्षी० संसार।-**दार**-वि० संसारके धर्मोंमें फँसा हुआ, संसारी; जो लोकम्यबहारमें कुशल हो, लोक-चतुर। पु० गृहस्थ।-**दारी**-क्षी० सांसारिक प्रपंच, संसारका जंजाल; दुग्धियादार होनेका गुण, व्यवहार-कुशलता, लोकचातुरी; बनावटी व्यवहार।-**परस**-वि० कज्जु।-**साज**-वि० दिखावटी व्यवहार करनेवाला; मकार, धूर्त।-**साजरी**-क्षी० बनावट, मकारी, धूर्तता, जाहिरदारी।**मु०**-**की** इवा लगना-सांसारिक बातोंकी जानकारी होना, संसारका अनुभव होना; दुग्धियाके तौर-तरीके अपना लेना, संसारके दूसरे लोगोंकी तरह आचरण करने लगना।-**के परदेपर**-संसारमें।-**भरका**-बहुत अधिक।-**से उठ जाना**-मर जाना।
दुधिवी-वि० दे० 'दुग्धिवी'।
दुनी-क्षी० दुग्धिया, संसार।
दुनीवा, **दुनीवा**-अ० कि०, स० कि० दे० 'दुग्धना'।
दुधकना-अ० कि० दे० 'दूधकना'।
दुधारा-वि० दुर्ध, कूड़ा, क्षीण क्षीरवाला, दुग्ध-पतला।
दुधारा-क्षी० दुर्धलता, क्षीणता, कृशता; शक्तिहीनता, कमजोरी।
दुधराना-अ० कि० दुर्ध होना, कूड़ा होना।
दुधका-वि० जिसका शरीर क्षीण हो, कूड़ा।
दुधान-क्षी० दुधेकी पत्ती।
दुधिव-पु० दे० 'द्विधिव'।
दुधिया-क्षी० दे० 'दुध'के माथ।
दुध-पु० माथणोंकी एक उपधि, द्विदेवी।
दुध-क्षी० [फा०] पूँछ, पुच्छ; टमकी तरह पीछेकी ओर जुड़ी हुई बस्तु, पिछला हिस्सा; वह जो बराबर पीछे लगा रहे, पिछलग्ग; डिग्री, उपधि (स्थं०)।-**ची**-क्षी० चोरीके साजमें दुधके नीचे रहनेवाला चमका; पुछ्छोंके पीचकी हड्डी।-**दार**-वि० जिसके पूँछ हो; जिसके पीछे पूँछकी तरह कोई बस्तु लगी या जुड़ी हो।**मु०**-**के पीछे फिरना**-पीछे-पीछे घूमा करना, साथ लगा रहना।-**दबाकर भागना**-मारे डरके इस तरह भागना जैसे कोई कुत्ता अपनेसे मजबूत कुत्ता देखकर भाग खड़ा होता है।-**दबा जाना**-डरकर भाग जाना; मारे डरके किसी कामसे पृथक् हो जाना।-**में घुसना**-उभ हो जाना।-**में घुसा रहना**-खुशामदमें सदा पीछे लगा रहना।
दुधन-वि० अनमना, उदास, विषण्ण।
दुमाता-क्षी० दे० 'दुमाता'।
दुमाता-क्षी० सराब माता; विमाता।
दुर्ध-वि० [सं०] जिसका परिणाम दुरा हो, जो उत्तर-कालमें दुःख पहुँचाये; जिसका पार पाना कठिन हो,

दुरतिक्रमः प्रबल, प्रबलः अति गंभीर, दुर्लभ ।

दुरतक-पु० [सं०] शिव ।

दुर-पु० दे० 'दुर' । अ० किसीको तिरस्कारपूर्वक बटानेके लिए प्रयत्नमें लाया जानेवाला शब्द । -दुर-अ० कुपेको तिरस्कारपूर्वक बटानेका शब्द ।

दुरक्ष-वि० [सं०] जिसकी आँखें कमजोर हो; दुरी निगाह-वाला । पु० जुएमें बेईमानी करनेके लिए खास तौरसे तैयार किया गया पासा; बेईमानीका जुआ ।

दुरजन-पु० दे० 'दुर्जन' ।

दुरजोधन-पु० दे० 'दुर्जोधन' ।

दुरनिकम-वि० [सं०] जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन बड़ी कठिनाईसे हो सके; जिसका उल्लंघन शक्तिसे बाहर हो, दुर्लभ ।

दुरव्यय-वि० [सं०] दुरतिक्रम, दुस्तर ।

दुरव्यक्त-पु० दुरा स्थान, कुठौट ।

दुरवास-वि० प्रबल; कठिन; निकट ।

दुरदुराना-स० कि० तिरस्कार करना; अनादरपूर्वक दूर भगाना या हटाना ।

दुरदृष्ट-पु० [सं०] दुर्भाग्य; पाप ।

दुरधिगम-वि० [मं०] जिसे प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य; जिसे समझना बहुत कठिन हो, दुर्लभ, दुर्बोध ।

दुरधिष्ठित-वि० [सं०] दुरे तौरसे किया गया; अव्यवस्थित ।

दुरधीत-पु० [सं०] अशुद्ध उच्चारण तथा स्वरके साथ किया गया (वेदका) अध्ययन ।

दुरध्व-पु० [सं०] कुमार्ग, उत्पथ ।

दुरना-अ० कि० दूर होना; आँखोंमें ओझल होना, छिपना ।

दुरव्यय-वि० [सं०] जिसका अनुसरण करना कठिन हो; दुष्प्राप्य; दुर्लभ । पु० अशुद्ध निष्कर्ष ।

दुरवदी-अ० दे० 'क्षीपरी' ।

दुरवबाध-पु० [सं०] निवा, कुत्सा ।

दुरवचा-पु० एक मोतीवाली बाली ।

दुरबल-वि० दे० 'दुर्बल' ।

दुरवार-वि० जिसका निवारण न किया जा सके ।

दुरवास-अ० दे० 'दुरी' गध, दुर्गंथ ।

दुरवास-पु० दे० 'दुर्वास' ।

दुरवीन-अ० दे० 'दुर्वीन' ।

दुरबैस-पु० डरबैस, फकीर ।

दुरभिग्रह-पु० [सं०] अपामार्ग, चिचड़ी । वि० जो बड़ी कठिनाईसे पकड़ा जा सके ।

दुरभिग्रहा-अ० [सं०] जवासा; केवौच ।

दुरभिर्संधि-अ० [सं०] उरे उद्वेगसे की गयी गुप्त मंत्रणा, कुचक्र ।

दुरनेषी-पु० दुर्भाव; खटका, आशंका ।

दुरमुख-पु० सबक आदिपर विछाया गया ककड़ पीटकर बरार करनेका एक बीजार ।

दुरकथा-वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुरबग्रह-वि० [सं०] जिने रोकना या काटने करना कठिन हो, जिसका नियंत्रण कष्टसाध्य हो ।

दुरवस्थ-वि० [मं०] जो दुरी दशमें हो, दुरी दशमें

पका हुआ ।

दुरवस्था-अ० [सं०] दुरी हालत, कष्टपूर्ण दशा; दारिद्र्य आदिकी दवनीय दशा, दुर्गति ।

दुरवाच-वि० [सं०] दे० 'दुष्प्राप्य' ।

दुरस-वि० दुरस्त, सही, ठीक; दे० 'दु' में । पु० दे० 'दु' में ।

दुराद-पु० दे० 'दुराव' ।

दुराक-पु० [सं०] स्लेच्छ-भेद; स्लेच्छोंका एक देश ।

दुराकृति-वि० [सं०] बद्रश्मल ।

दुराकंद-वि० [सं०] दाढ़ मारकर रीता हुआ ।

दुराकम-वि० [सं०] दुर्जय ।

दुराक्रम-पु० [सं०] कपटपूर्ण आक्रमण; वह स्थान जहाँ जाना कठिन हो ।

दुरागम-पु० [सं०] दुरे वा अवैध रूपसे प्राप्त होना ।

दुरागमन-पु० दे० 'द्विरागमन' ।

दुरागोच-पु० दे० 'द्विरागमन' ।

दुराग्रह-पु० [सं०] अनुचित रीतिसे किसी बातपर अड जाना, हठ, जिम ।

दुराग्रही(विच्)-वि० [मं०] जो दुराग्रह करे, हठी, जिदी ।

दुराचरण-पु० [सं०] दे० 'दुराचार' ।

दुराचार-पु० [सं०] निषि आचरण, कदाचार, कुकृत्य । वि० कुत्थित आचरणवाला ।

दुराचारी(विच्)-वि० [सं०] निषि कर्म करनेवाला, कुत्थित आचरणवाला, कुकर्मी ।

दुरात्मा(ध्मन्)-वि० [सं०] जिसका अतन्करण शुद्ध न हो, हठयका खोटा, नीच प्रकृतिका ।

दुरादुरी-अ० [सं०] छिपाव, दुराव । -करके-गुप्त रूपसे ।

दुराधन-पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

दुराधर-पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

दुराधर-पु० [सं०] पाली सरसों; विष्णु । वि० जिसका उद्देशमान भी परामर्श न हो सके; निकट, प्रबल, उग्र ।

दुराधर्षी-अ० [सं०] कुटुंबिनी नामकी लता ।

दुराधार-पु० [सं०] शिव ।

दुरागम-वि० [सं०] जिसे छुकारना बहुत कठिन हो, जो बड़ी मुश्किलसे छुकाया जा सके ।

दुराभा-स० कि० दूर करना; आँखोंसे ओझल करना, छिपाना । * अ० कि० दे० 'दुरना'-'नाम छेत निष-रात सुख दुख दूरत वरसात'-रसिकविहारी ।

दुराप-वि० [सं०] दे० 'दुरवाप' ।

दुरावाच-पु० [सं०] शिव ।

दुराराध्य-वि० [सं०] जिसे संतुष्ट या प्रसन्न करना बहुत कठिन हो; जिसका आराधन कष्टसाध्य हो ।

दुराख-पु० [सं०] बेल; खजूर नारियल । वि० जिसपर चढ़ना बहुत कठिन हो ।

दुराख्या-अ० [सं०] खजूरका पेड़ ।

दुराशी-पु० [सं०] ताकका पेड़ । वि० जिसपर चढ़ना कठिन हो ।

दुराशी-अ० [मं०] सेमरका पेड़; खजूरका पेड़ ।

दुरार्थक, दुराकम-वि० [सं०] जिसे छूना या पाना

बहुत कठिन हो ।

दुराक्षमा-क्षी० [सं०] जबासा; कपास ।

दुराक्षमा-क्षी० [सं०] दे० 'दुराक्षमा' ।

दुराक्षप-पु० [सं०] दुरी बातचीत, कुभाषी; दुर्बचन, गाली ।

दुराक्षोक्त-वि० [सं०] जो कठिनाईसे देखा जा सके; जिसकी ओर देखनेमें आँखें झँप जायें । पु० चकाचौध पैदा करनेवाली चमक ।

दुराक्ष-पु० दुराक्षेकी क्रिया, छिपाव, गोपन; भेदभाव; छल ।

दुराक्षार-वि० [सं०] जिसे ढकना या रोकना बहुत कठिन हो ।

दुराक्ष-वि० [सं०] जिने दुराक्षा हो, दुराक्षावाला ।

दुराक्षव-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसके विचार निम्न कीटिके हैं, कुत्सित विचारोंवाला व्यक्ति, दुष्टात्मा; दुरा विचार; दुरा स्थान । वि० जिसकी नीयत खराब हो, निष विचारका; नीच हृदयका; छोटा ।

दुराक्षा-क्षी० [सं०] ऐसी आशा जिसका पूरा होना कठिन हो, झूठी आशा; दुरी इच्छा ।

दुराक्षद-वि० [सं०] जिसके पास पहुँचना कठिन हो, दुर्गम; दुष्प्राप्य, दुर्लभ; दुर्जय; अद्वितीय । पु० शिव ।

दुराक्षा-क्षी० दे० 'दुराक्षा' ।

दुरित-पु० [सं०] पाप, दुष्कृत, क्लिबध; खतरा; संकट । वि० कठिन; पापी, पातकी । -**दुग्मनी-क्षी०** शमी वृक्ष । वि० क्षी० पापनाशिनी ।

दुरिधाना-सं० कि० दुरदुराना; दूर करना, हटाना ।

दुरिह-पु० [सं०] मार्ग, मोहन, उछाटन आदि अभि चारीके लिए किया जानेवाला यज्ञ; अभिशाप ।

दुरिहि-क्षी० [सं०] अशास्त्रीय याम ।

दुरीपणा, दुरेपणा-क्षी० [सं०] शाप ।

दुरक्ष-पु०, दुरक्षि-क्षी० [सं०] दुर्बचन ।

दुरक्षेद-वि० [सं०] जिसका उच्छेद कठिनतासे हो सके, दुर्हार ।

दुरक्षर-पु० [सं०] दुरा उत्तर । वि० जिसका उत्तर न दिया जा सके; दुस्तर ।

दुरक्षह-वि० [सं०] जिसका बहन या सहन न किया जा सके ।

दुरक्षयोग-पु० [सं०] अनुचित उपयोग, दुरा हस्तेमाल ।

दुरक्ष-पु० [सं०] नीलकंठ तांत्रिकके अनुसार ज्योतिषका एक योग ।

दुरक्ष-वि० [फ्रा०] जो अच्छी स्थितिमें हो, ठीक; जिसमें कोई खामी न हो, दोषरहित; उचित, यथाय, युक्तियुक्त । सु०-करना-दंड देकर ठीक रास्तेपर लाना, सुधारना; दंड देना ।

दुरक्ष्ती-क्षी० दुस्सह करनेकी क्रिया, सुधारना ।

दुरक्ष-वि० [सं०] बहुत मायापण्ठी करनेपर भी जल्द समझमें न आनेवाला, कठिनतासे समझमें आने योग्य, कठिन ।

दुरोत्तर-पु० [सं०] बतकार, जुभाषी; पासा; जुभा, बत; बाजी ।

दुरीक्षा-पु० भरेठा, दरवानेके ऊपर लगायी जानेवाली लकड़ी ।

दुर-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञापदों और क्रियापदोंके पहले इन अर्थोंमें जोड़ा जाता है-(१) सदोषता, (२) निंदा, (३) निषेध, (४) दुःख या संकट ।

दुरकुक्ष-पु० दे० 'दुष्कुक्ष' ।

दुर्गंध-क्षी० [सं०] दुरी गंध, बदन् । पु० काला नमक; प्याज; आन्न वृक्ष । वि० जिससे दुर्गंध निकलती हो, दुरी गन्धवाला ।

दुर्ग-पु० [सं०] गढ़, किला, कोट (मत्स्यपुराण तथा मनु-स्मृतिमें छ प्रकारके दुर्गोंका उल्लेख है)-(१) धन्वदुर्ग-जिसके हर्द-गिर्द पाँच योजनतक मरुभूमि हो, (२) मही-दुर्ग-जिसके चारों ओर ऊँची-नीची भूमि हो, (३) नर-दुर्ग-जो चारों ओरसे सेनाओंसे घिरा हो, (४) वृक्षदुर्ग-जिसके चारों ओर वृक्ष लगे हों, (५) अशुदुर्ग-जो चारों ओरसे जलसे वेष्टित हो, (६) गिरिदुर्ग-जो पर्वत या पहाड़ीपर बना हो; कठिन या तग रास्ता; कनक खावक जमीन; एक असुर जिसका बंध करनेके कारण आधा शक्तिका 'दुर्गा' नाम पड़ा; महाविज्ज; भवबधन; कुकर्म; शोक; दुःख; नरक; बमदह; जन्म, महाभय; अतिरोग; गुरुलक्ष; परमेश्वर । वि० दुर्गम; दुर्बोध । -**कर्म** (बु) पु० दुर्ग रचनारूप कार्य । -**कारक**-पु० दुर्ग बनाने-वाला, दुर्गकर्ता; एक वृक्ष । -**ज्नी-क्षी०** दुर्गा । -**तरणी-क्षी०** एक देवी, सावित्री । -**पति**-पु० दुर्गका स्वामी, दुर्गोन्मूलक । -**पाख**-पु० दुर्गकी रक्षा करनेवाला, दुर्गरक्षक । -**उप्यी-क्षी०** वृक्षविशेष । -**लंघन**-पु० कंठ (जो बीहड़ और रेतली भूमिकी झुगमतामें पार करत, है); आरोहण-स्वर्षी कठिनाई । -**संचर**, -**संचार**-पु० दुर्गम स्थानोंतक पहुंचनेका मार्ग (जैत-पुल आदि) । -**संस्कार**-पु० दुर्गकी मरम्मत ।

दुर्गत-वि० [सं०] दुरी दशामें पड़ा दुष्टा, विपन्न; दरिद्र ।

दुर्गति-क्षी० [मं०] दुष्टता; दरिद्रता; नरक ।

दुर्गम-पु० [सं०] परमेश्वर; एक असुर । वि० जहाँ पहुँचना कठिन हो, बीहड़; जो शीघ्र समझमें न आवे, दुर्बोध, झुगमका उलटा ।

दुर्गमनीय-वि० [सं०] दे० 'दुर्गम' ।

दुर्गल-पु० [सं०] दक्ष देश ।

दुर्गा-क्षी० [मं०] आधा शक्ति, भगवती, देवी, पार्वती; नीलका पीथा; अपराजिता लता; दयामा पक्षी, नववर्षाया कन्या । -**नवमी-क्षी०** कार्तिक-शुद्धा नवमी जो दुर्गा-पूजनके लिए प्रशस्त मानी गयी है; आश्विन-शुद्धा नवमी; वैश्व-शुद्धा नवमी ।

दुर्गांध, दुर्गांध, दुर्गांध-वि० [सं०] जिसकी बाह जल्दी न मिल सके, जिम थडाना कठिन हो, दुरतगाढ़ ।

दुर्गाधिकारी (रिद)-पु० [मं०] दे० 'दुर्गपति' ।

दुर्गाप्यक्ष-पु० [सं०] दे० 'दुर्गपति' ।

दुर्गाह-पु० [सं०] भूमिगुरु; दैत्यमेदज ।

दुर्गुण-पु० [सं०] दुरा गुण, दोष ।

दुर्गस-पु० [मं०] दे० 'दुर्गपति' ।

दुर्गोत्सव-पु० [मं०] दुर्गापूजा जो नवरात्रमें होती है ।

दुर्मह-वि० [सं०] जिसे पकड़ना कठिन हो; जो बड़ी कठिनाईसे प्राप्त किया जा सके, दुष्प्राप्य; जो शीघ्र समझमें न आवे; दुर्लभ; जिसे जीतना वा बहावर्ती बनाना कठिन हो।
पु० दुराग्रह; दुरा ग्रह।

दुर्मह-स्त्री० [सं०] अयामार्ग।

दुर्मह-वि० [सं०] जिसे पकड़ना वा धारण करना दुष्कर हो।

दुर्घट-वि० [सं०] जिसका होना कठिन हो; दुःसाध्य।

दुर्घटना-स्त्री० [सं०] अशुभ घटना; डेराकर घटना।

दुर्घोष-पु० [सं०] दुःमय शब्द; भाव। वि० जो कर्णकटु श्रमि उत्पन्न करे; जिससे कर्णकटु श्रमि उत्पन्न हो।

दुर्जन-पु० [सं०] दुष्ट मनुष्य, खल।

दुर्जय-पु० [सं०] परदेशर। वि० जो कठिनाईसे जीता जा सके, जिसपर विजय पाना कठिन हो।

दुर्जर-वि० [सं०] जो देरमें या कठिनतासे पचे।

दुर्जरा-स्त्री० [सं०] व्योतिष्मती ज्ञा, मालकंगनी।

दुर्जात-पु० [सं०] अनौचित्य; व्यसन; विपत्ति। वि० जिसका जन्म अकारण हो, जिसने व्यर्थ जन्म लिया हो; नीच; विपन्न।

दुर्जाति-स्त्री० [सं०] नीच जाति, दुष्कुल; दुर्भाग्य। वि० दुरी या नीच जातिका; दुरे स्वभावका।

दुर्जीव-पु० [सं०] निच जीवन, घणित जीवन। वि० पराज साकार निर्वाह करनेवाला, पराजभोजी।

दुर्जय-वि० [सं०] दे० 'दुर्जय'।

दुर्जय-वि० [सं०] जो कठिनाईसे जाना जा सके, दुर्लभ।
पु० शिव।

दुर्मह, दुर्मन, दुर्मनीष, दुर्मन्य-वि० [सं०] जिसे दमना या बधमे करना कठिन हो, जिसका दमन दुष्कर हो; प्रबल।

दुर्वर-वि० दे० 'दुर्वर'।

दुर्वर्ष-वि० [सं०] जिसे देखना कठिन हो; चकाचौध पैदा करनेवाला।

दुर्वर्शन-वि० [सं०] जो देखनेमें भड़ा हो, बदसूरत।

दुर्वशा-स्त्री० [सं०] दुरी हालत, दुरवस्था, दुर्गति।

दुर्वात-वि० [सं०] दे० 'दुर्मह'।

दुर्विन, दुर्विषय-पु० [सं०] दुरा दिन, मेवाच्छन्न दिन; घना अंधकार; वर्णन, दृष्टि; विपत्तिका।

दुर्दुष्ट-वि०, पु० [सं०] नास्तिक।

दुर्दृष्ट-वि० [सं०] जो देखनेमें अच्छा न लगे, अप्रिय-दर्शन।

दुर्दृष्ट-वि० [सं०] (व्यवहार-मुक्तदमा) जिसपर पक्षपातपूर्ण दृष्टिसे विचार किया गया हो, जिसका फैसला ठीक न हुआ हो।

दुर्दैव-पु० [सं०] फूटा हुआ भाग्य, दुर्भाग्य, बदकिस्मती।

दुर्धर-पु० [सं०] एक नरक; कथम नामक ओषधि; पारा, मल्लातक, मिलाबी; मणिबासुरका एक सेनापति; परमेश्वर; विष्णु। वि० दे० 'दुर्मह'।

दुर्धर्ष-पु० [सं०] दुराहक एक पुत्र; रावणकी सेनाका एक राक्षस। वि० जिसका परामन न किया जा सके, जिसे बहावर्ती बनाना कठिन हो; उग्र, प्रबल।

दुर्धर्षा-स्त्री० [सं०] कंठारी; नागदोना।

दुर्धर्षा-वि० [सं०] दे० 'दुर्दृष्टि'।

दुर्दुष्ट, दुर्दुष्ट-पु० [सं०] वह शिष्य जो गुरुकी बुद्धि-बुक्त बात भी अर्थ न माने।

दुर्दुर्म-पु० [सं०] प्याज।

दुर्दुर्म-पु० [सं०] दुरी नीति, कुनीति; अविश्वस, औदरस्य; अन्धत्व।

दुर्नाम(श्)-पु० [सं०] दुरा नाम; दुर्बचन; बोधा, सीप; बवासीर।

दुर्नामक-पु० [सं०] अर्ध रोग, बवासीर।

दुर्नामा(मन्)-पु० [सं०] बोधा; सीप; अर्ध, बवासीर। वि० दुरे नामवाला; बदनाम।

दुर्नामारि-पु० [सं०] ओष्ठ, शूरण।

दुर्नाम्नी-स्त्री० [सं०] बोधा; सीप।

दुर्निग्रह-वि० [सं०] जिसे बधमें जाना कठिन हो।

दुर्निश्चित-पु० [सं०] अपश्चक्रन; दुरा बहाना।

दुर्निरीक्ष्य-वि० [सं०] दे० 'दुराक्षेप'।

दुर्निवार, दुर्निवार्य-वि० [सं०] जिसका निवारण करना कठिन हो; जो सदा रोका न जा सके; जिसे दूर करना वा टाकना दुष्कर हो।

दुर्नीति-वि० [सं०] नीतिविरुद्ध आचरण करनेवाला। पु० दुष्कर्म; दुर्भाग्य।

दुर्नीति-स्त्री० [सं०] नीतिविरुद्ध आचरण, कुनीति।

दुर्बल-वि० [सं०] शक्तिहीन, कमजोर; क्षीणकाय, कुस; शिथिल।

दुर्बला-स्त्री० [सं०] अलसिरीसका पेड़।

दुर्बाल-वि० [सं०] जिसका सिर गंवा हो; कुटिल केयवाला।

दुर्बुद्धि-वि० [सं०] दुष्ट बुद्धिवाला, कुबुद्धि; हस्तबुद्धि; मूर्ख।

दुर्बोध-वि० [सं०] जो शीघ्र समझमें न आवे, गूढ़, छिद्र।

दुर्बन्ध-वि० [सं०] जिसे खाना कठिन हो; जिसका स्वाद अच्छा न हो। पु० अकाल।

दुर्मह-वि० [सं०] हतभाग्य, मंदभाग्य, अभाग्य, बदकिस्मत।

दुर्महा-स्त्री० [सं०] ऐसी स्त्री जिसे उसका पति न चाहता हो; कर्कशा स्त्री। वि० स्त्री मंदभाग्या, अभागिन।

दुर्मह-वि० [सं०] जिसे धारण करना, दोना या निभाना कठिन हो; भारी।

दुर्मांगी-वि० भाग्यहीन।

दुर्भाग्य-पु० [सं०] प्रतिकूल दैव, फूटी किस्मत, बद-किस्मती। वि० भाग्यहीन, अभाग्य।

दुर्भाव-पु० [सं०] दुरा भाव, कुभाव; दुष्कृति विचार।

दुर्भावना-स्त्री० [सं०] दुरी भावना, कुविचार।

दुर्भाव्य-वि० [सं०] जिसकी कल्पना करना कठिन हो।

दुर्मिष्ठ-पु० [सं०] अकाल, कष्ट।

दुर्मिच्छक-पु० दे० 'दुर्मिच्छ'।

दुर्मिद, दुर्मह, दुर्मह-वि० [सं०] जो कठिनाईसे भेदा या छेदा जा सके, अति दृढ़।

दुर्दृष्ट्य-पु० [सं०] ऐसा नौकर जो यथोचित रीतिसे आज्ञा-का पालन न करे, दुष्ट नौकर।

दुर्मह-पु०, दुर्महना-स्त्री० [सं०] दुरी राय।

दुर्मति-पु० [सं०] एक संस्तरका नाम। स्त्री० दे०

‘कुमति’-वि० दुष्ट; मंदबुद्धि; मूर्ख ।
 दुर्मद-वि० [सं०] प्रमत्त; मराध, मदीकृत, मर्बसे मरा हुआ ।
 दुर्मना(बल्)-वि० [सं०] दुष्ट हृदयवाला; उद्विग्न चित्त-वाला; जिसका मन मित्र ही, उदास ।
 दुर्मन्य-पु० [सं०] दुष्ट मनुष्य, खल ।
 दुर्मर-पु० [सं०] दुरी मीत; अवाकृतिक वस्तु । वि० जो बरी दुर्दशासे भरे ।
 दुर्मरा-कौ० [सं०] एक तरहकी दूब ।
 दुर्मलिकका, दुर्मलकी-कौ० [सं०] एक प्रकारका उपरूपक (एकमें चार अंक होते हैं और हस्त्यरसकी प्रधानता रहती है) ।
 दुर्मर्ष, दुर्मर्ष-वि० [सं०] दे० ‘दुःसह’ ।
 दुर्मित्र-पु० [सं०] दुरा मित्र, कुमित्र ।
 दुर्मिह-वि० [सं०] अनमेल; कठिनतासे मिलनेवाला । पु० एक नाविक छंभ; एक प्रकारका सबैया ।
 दुर्मुल-पु० [सं०] बौद्ध; मविषासुरकी सेनाका एक सेना-पति; राक्षसकी सेनाका एक भट; एक नाम; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक संवत्सर; एक राक्षस; एक यक्ष; रामका एक गुप्तचर; एक वृक्ष । वि० कटुभाषी, कटुभाषी लोभने-वाला; बहस्यार ।
 दुर्मुह, दुर्मुल-पु० दे० ‘दुरमुल’ ।
 दुर्मुहर्ष-पु० [सं०] दुरी सत्यत, अप्रशस्त मुहूर्त ।
 दुर्मुख-वि० [सं०] अधिक कामका, बहुमुख; मर्हणा ।
 दुर्मन्य(बल्)-वि० [सं०] मंदबुद्धि, मूर्ख । पु० मंदबुद्धि व्यक्ति ।
 दुर्मोह-पु० [सं०] काकतुर्ही, कौआढोडी ।
 दुर्मोहा-कौ० [सं०] कौआढोडी; सफेद बुँचवी ।
 दुर्बल(बल्)-पु० [सं०] कुलपाति, अपवश, वदनामी ।
 दुर्बला-पु० [सं०] दुर्बलमूलक ग्रहयोग, ग्रहोका दुरा कर ।
 दुर्बल-वि० [सं०] जो मीषण युद्धमें भी डटकर लड़ता रहे; अजय ।
 दुर्बल-पु० [सं०] धृतराष्ट्रका ज्येष्ठ पुत्र जिसके कारण कौरवी और पांडवोंके बीच हस्तिनासमसिद्ध महाभारत लुप्त हुआ । वि० दे० ‘दुर्बल’ ।
 दुर्बल-वि० [सं०] नीच जातिकी; अधम कुलका ।
 दुर्-पु० [अ०] मीती; कानमें पहननेका एक गहना ।
 दुर्-पु० [का०, अ०] चमकेका चावुक ।
 दुर्जी-पु० अकानाओंकी एक जाति जो मंधारके ममीप बसी है ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] जिसे लांघना या पार करना कठिन हो, जिसका उलंघन या अतिक्रमण दुष्कर हो ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] दुरा ज्येष्ठ, दुरा ज्येष्ठ । वि० जो कठिनाईसे देखा जा सके ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] कर्चुर; विष्णु । वि० जिसका मिथना कठिन हो, दुष्प्राप्य; अति प्रशस्त; प्रिय ।
 दुर्लभा-कौ० [सं०] नेतकंठकारी; दुराकाम ।
 दुर्लक्षित-वि० [सं०] अधिक प्यारसे भिगाया हुआ; दुष्ट चेष्टावाला; नटखट । पु० औखल ।

दुर्लभ-वि० [सं०] जिसकी लिखावट हतनी दुरी हो कि पढ़ी न जा सके । पु० जाकी कामज ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] कट्टक, कट्ट वचन; गाछी । वि० जो कठिनाईसे कहा जा सके, जिसे कहना क्लेशकर हो ।
 दुर्लभ(बल्)-पु० [सं०] कट्ट वचन ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] कट्टवचन; गाछी ।
 दुर्लभा(बल्)-वि० [सं०] कट्टभाषी ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] रजत, चाँदी; खराब अक्षर । वि० जिसे भेत कुछ हुआ हो; मित्र वर्णवाला ।
 दुर्लभा-कौ० [सं०] चाँदी; यक्ष्मा ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] जहाँ मुश्किलसे रहा जा सके ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] दुरा निवासस्थान ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] जिसे दोना कठिन हो; असह्य, दुःसह ।
 दुर्लभ(बल्)-कौ० [सं०] दे० ‘दुर्लभ’ । वि० कट्ट-भाषी ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] अपवाद, अपवश, कुलपाति, हस्तिकी रूपमें कहा गया दुर्लभन, निमित्त बावय ।
 दुर्लभा(विष्)-वि० [सं०] दुर्लभन सहनेवाला ।
 दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ-वि० [सं०] दे० ‘दुर्लभ’ ।
 दुर्लभना-कौ० [सं०] दुरी वासना, चित्तकी कुदृष्टि; ओशी कामना; विषयोंका चित्तपर पडा हुआ कुंमस्कार ।
 दुर्लभा(बल्)-पु० [सं०] एक महाक्रोधी मुनि (ये अग्नि-के पुत्र थे । वे जिसपर क्रोध करते थे उसे चटपट खाप दे दिया करते थे । एक बार इन्होंने विष्णुभक्त राजा अश्वीष-की भी शाप दे टाका जिसपर इन्होंने नीचा देलना पड़ा) । वि० जिसकी घोषणा दुरी हो; मंगा ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] भारी शोध ।
 दुर्लभा(बल्)-वि० [सं०] दे० ‘दुर्लभ’ ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] जो मरलतासे न जाना जा सके, जिसे जानना या समझना कठिन हो ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] जो बोके हानपर फूल बैठे हो; गवित ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] मूर्ख; खल; दरिद्र ।
 दुर्लभ-कौ० [सं०] अविनय, औद्धत्य, उदृष्टता ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] अविनीत, उदृष्ट ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] कुपरिणाम, दुष्परिणाम, कुफल ।
 दुर्लभा(बल्)-वि० [सं०] जिसकी कल्पनातक न हो सके ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] दुष्कृत्य, उजड़पन; नटखटी ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] किस्मत खराब होना ।
 दुर्लभा(बल्)-पु० [सं०] निमित्त विवाह ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] महादेव (जिनपर विषका कुछ भी असर नहीं हुआ) । वि० बुरे स्वभाववाला ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] शिव, धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० दुःसह ।
 दुर्लभ-पु० [सं०] निमित्त आचरण । वि० जिसका आचरण दुरा हो, दुराचारी ।
 दुर्लभ-कौ० [सं०] दुरी वृत्ति, खराब पेशा; दुरा काम; दुराचरण; धोखा, छल ।
 दुर्लभ-कौ० [सं०] अय्यास वृद्धि; अनावृद्धि, सूखा ।
 दुर्लभ-वि० [सं०] जिसे समझना कठिन हो; दुर्लभ; वेदा-

ध्वयन न करनेवाला (भाषण) ।

दुर्गवस्था-खी० [सं०] कुप्रबंध, बदरतयात्री ।

दुर्गवहार-पु० [सं०] बुरा ध्यवहार, बुरा बर्ताव; वह मुकदमा जिसका राग-देषादिके कारण उचित निर्णय न हुआ हो ।

दुर्गसन-पु० [सं०] किसी हानिकार वस्तुके सेवनका अभ्यास; दुरी लत, खराब आदत ।

दुर्गसनी(मिन्)-वि० [सं०] जिसे किसी वस्तुका दुर्ग्यसन हो, दुर्ग्यसनवाला ।

दुर्गत-वि० [सं०] नियम या आश्रयका धारण न करनेवाला ।

दुर्हृदय-वि० [सं०] बुरात्मा, कुटिल, दिलका खोटा ।

दुर्हृद(र)-पु० [सं०] अमित्र, शत्रु । वि० कुटिल हृदयवाला, दुष्टहृदय, दुरात्मा; तुच्छ विचारोंवाला, नीच ।

दुर्हृदिक-वि० [सं०] जिसकी हानिदिशों विकारग्रस्त हो । दुष्कनका, दुष्कनका-अ० कि० इनकार करना ।

दुष्की-खी० धोरेकी कुछ-कुछ जछलते हुए मध्य गतिसे दौड़नेकी एक चाल ।

दुष्कुल-पु० [अ०] वह लखर जिसे इत्कंदरिया(मिल)के हाकिमने मुहम्मदकी भेंटमें दिया था; मुहर्रमके अवसरपर निकाला जानेवाला धोरेके आकारका तण्डिया; बिना सवारका घोडा जो मुहर्रमके आठवें और नवें दिन अभ्यास और हुसेनके नामसे निकाला जाता है ।

दुष्कन†-पु० दे० 'दोलन' ।

दुष्कन*-अ० कि० दे० 'बोलना' ।

दुष्कभ*-वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुष्कर*-वि०, पु० दे० 'दुलारा' ।

दुष्कराना*-अ० कि० लाइले बच्चोंके समान कठना, मचलना आदि, दुलारे बच्चोंके समान आचरण करना । सं० कि० लाइ-चाव करना, प्यारकी चेष्टाओं द्वारा बच्चोंके बहलाना या प्रमत्त करना ।

दुष्करवा†-वि०, पु० दे० 'दुलारा' ।

दुष्कहन, दुष्कहिन-खी० नवोढा ली, नवी बह; भ्रातृवध, पुत्रवध आदिका संघोषण ।

दुष्कडा-पु० दे० 'दूहा' । -ई*-खी० विवाहका गीत ।

दुष्कहिया*-खी० दे० 'दुलहन' ।

दुष्कही†-खी० दे० 'दुलहन' ।

दुष्कहेटा-पु० लाइला बेटा, दुलारा लडका ।

दुकाई-खी० रई मरा हुआ हलका ओढना, हलकी रजाई ।

दुखाना*-सं० कि० दे० 'दुलाना' ।

दुकार-पु० दुकारनेकी किया या भाव, काइ-चाव, प्यार ।

दुकारना-सं० कि० अनेक प्रकारकी सेहसूचक चेष्टाएँ (शरीरपर हाथ फेरना, छातीसे लगाना, चूमना आदि) करते हुए बच्चों या प्रेमपात्रकी प्यार करना, काइ-चाव करना ।

दुकारा-वि० जिसका बहुत दुकार या काइ-चाव होता हो, काइला । पु० काइला पुत्र, प्यारा बेटा ।

दुकारी-खी० लाइली बेटी, प्यारी पुत्री; † 'दुलाई' । वि० खी० मिनका अधिक काइ-प्यार होता हो, काइली ।

दुकि-खी० [सं०] कष्टपी ।

दुकीचा*-पु० कालीन, गलीचा ।

दुलीचा†-पु० दे० 'दुलीचा' ।

दुल्लभ*-वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुलभ*-वि० दो ।

दुलब-पु० खोटे टिलका आदमी, दुर्जन, दुष्ट, लठ; शत्रु; राक्षस ।

दुलाब-पु० एक प्रकारका घोडा । वि० दे० 'दुलाई' ।

दुलादस*-वि० दे० 'द्रादस' । -वासी-वि० करा, खासि; कांसिबुल (रसका प्रयोग विशेषतः सीनेके लिए होता है) ।

दुलादसी*-खी० दे० 'द्रादसी' ।

दुलारा†-पु० दे० 'द्वार' ।

दुलारिका†-खी० दे० 'द्वारका' ।

दुलाळ-पु० [फा०] चमकेका तसमा; रिकाबका तसमा; कमरसे छपेटनेका चमकेका चौका पीता, चपरास ।

-बंद-पु० तसमा बंधनेवाला सिपाही ।

दुलाई-वि० दे० 'दु' में ।

दुविद*-पु० दे० 'द्विदि' ।

दुवो*-वि० दोनों ।

दुसमन-पु० दे० 'दुस्मन' ।

दुसवार-वि० [फा०] कठिन, मुश्किल ।

दुसवारी-खी० कठिनाता, मुश्किल ।

दुसासन*-पु० दे० 'दुसासन' ।

दुश्वर-वि० [सं०] जिनसे करना कठिन हो, जो कठिनाईसे किया जा सके, कठिन, कष्टसाध्य, दुष्कर ।

दुश्वरित-पु० [मं०] बुरा आचरण, कदाचार; दुष्कृत, पाप । वि० बुरे आचरणका, दुर्दृष्ट; कठिनाईसे या कष्ट सहकर किया हुआ ।

दुश्वरित-पु० [सं०] बुरा चालचलन । वि० जिसका चरित्र बुरा हो, चरित्रहीन, बदचलन ।

दुश्मा(मैन्)-पु० [सं०] वह पुरुष जिसके मेहनके अगले भागपर जन्मसे ही चमका न हो ।

दुश्मिक्त्वि-वि० [सं०] जिसकी चिकित्सा करना बहुत कठिन हो; जो अच्छा न किया जा सके, असाध्य ।

दुश्मिच-पु० [सं०] छलमे तीसरी राशि (वदी०) ।

दुश्मेष्टा-खी० [सं०] बुरी चेष्टा ।

दुश्मेष्ठित-पु० [सं०] कुत्त्व, मिथ कर्म, नीच काम ।

दुश्चयवन-पु० [सं०] हंदा । वि० जो जल्दी च्युत या विचलित न किया जा सके, अविचाल्य ।

दुश्चयाव-पु० [सं०] शिव । वि० दे० 'दुश्चयवन' ।

दुस्मन-पु० [फा०] शत्रु, वैरी, अहित चाहनेवाला, अपकारी ।

दुस्मनी-खी० शत्रुता, वैर ।

दुष्कर-पु० [सं०] कठिन कार्य; आकाश । वि० जिसे करना कठिन हो, कष्टसाध्य, सुकरका उल्टा ।

दुष्कर्त्त-पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

दुष्कर्त्त(न)-पु० [सं०] बुरा काम; पाप ।

दुष्कर्त्ता(मन)-वि० [सं०] कुकर्मी; पापी ।

दुष्कर्मी-वि० कुकर्मी, बुरा कार्य करनेवाला; पापी ।

दुष्काळ-पु० [सं०] बुरा समय, रेता समय जिसमें लोगों

को तरह-तरहके कष्ट हों; प्रकृष; दुर्मिष्ठ; शिव ।
मुक्तीर्ति-ली० [सं०] अपयश; बदनारी ।
मुक्कुल-पु० [सं०] नीच कुल, कुच्छ बराना । वि० नीच कुलमें उत्पन्न, नीच कुलका ।
मुक्कुलीत-वि० [सं०] नीच कुलमें उत्पन्न, नीच कुलका ।
मुक्कुलेय-वि० [सं०] दे० 'मुक्कुलीन' ।
मुक्कुल-पु० [सं०] नीच कर्म; पाप । वि० बुरे तरीकेसे किया हुआ; बप्पी ।
मुक्कुति-ली० [सं०] पाप । वि० नीचकर्म करनेवाला; पापी ।
मुक्कुती(तिन्)-वि० [सं०] कुकर्म; पापी ।
मुक्कीत-वि० [सं०] मोक्ष लेते समय जिसके रूप, संस्था आदिकी पूरी परीक्षा न की गयी हो; मर्यादा ।
मुक्कवि-पु० [सं०] लैका एक सेद ।
मुह-वि० [सं०] क्षतिग्रस्त; निकम्मा; दोषयुक्त, दूषित, सदीय; तर्कशास्त्रमें न्यभिचार आदि दोषोंसे युक्त (हित); विष आदिके प्रकीर्णसे विकारग्रस्त (नेत्र आदि); खल, पिछान, खोटा, नीच, बदमाश । पु० कुह, कोद; पाप; अपराध । -**बारी(विद्)-वि०** दे० 'दुराचारी' ।
-चेता(तन्), -धी,-बुद्धि-वि० खोटे हृदयका, दुष्ट स्वभावका । -**बुध-पु०** कामका कच्चा या सज्जत होते हुए ठीक काम न करनेवाला बैक । -**ग्रन्-पु०** वह पाप जो जल्द अच्छा न हो; नाशुर । -**साक्षी(किन्)-पु०** वह साक्षी जिसमें साक्षियोंमें न होने योग्य दोष वर्तमान हो, अयोग्य गवाह ।
मुह-वि० [सं०] दे० 'दुस्तर' ।
मुहा-ली० [सं०] बुरी, असती ली; बेव्या ।
मुहावार-पु० [सं०] दे० 'दुराचार' ।
मुहाबारी(विद्)-वि० [मं०] दे० 'दुराचारी' ।
मुहाव्या(तन्), मुहासय-वि० [सं०] दे० 'दुरात्मा' ।
मुहास-पु० [सं०] सजा हुआ अन्न; पापका अन्न ।
मुहि-ली० [सं०] दोष, विकार, खामी, पेव ।
मुष्य-वि० [सं०] जो शीघ्र न पचे, जो देरमें पके ।
मुष्य-पु० [सं०] और नामक गंधद्रव्य ।
मुष्य-वि० [सं०] दे० 'दुष्प्राप्य' ।
मुष्यराज्य-वि० [सं०] दे० 'दुर्जय' ।
मुष्यरिग्रह-वि० [सं०] जिसे पकड़ना, बशर्ता बनाना कठिन हो ।
मुष्यर्ष-वि० [सं०] जिसे छूना कठिन हो; जो छूना न जा सके ।
मुष्यर्षा-ली० [मं०] जवासा ।
मुष्यार-वि० [सं०] जिसे पार करना कठिन हो; दुष्कर; दुःसाध्य ।
मुष्य-वि० [सं०] जो शीघ्र पूर्ण न हो सके; जिसका धरना कठिन हो; जिसका निवारण न किया जा सके ।
मुष्यकृति-ली० [सं०] बुरा स्वभाव, खोटी आदत । वि० बुरे स्वभावका, नीच प्रकृतिका ।
मुष्यचर्ष, मुष्यचर्षण-वि० [सं०] दे० 'दुर्षर्ष' ।
मुष्यचर्षिणी, मुष्यचर्षिणी-ली० [सं०] कटकारी, भटकट्या ।
मुष्यचर्षा-ली० [सं०] जवासा; बन्सजुरी ।
मुष्यहृति-ली० [सं०] दुःखद समाचार; बुरी प्रवृत्ति ।

मुष्यबेसा-ली० [सं०] कंधारी वृक्ष ।
मुष्याप, मुष्यापन, मुष्याप्य-वि० [सं०] जिसका भिलना कठिन हो, जो कठिनतासे प्राप्त हो सके, जिसका भिलना सुगम न हो ।
मुष्येय-वि० [सं०] जिसे देखना कठिन हो, जिसकी ओर ताका न जा सके; जिसकी ओर देखनेका साहस न हो ।
मुष्यंत, मुष्यंत-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध पुरुवंशी राजा जिनके पुत्र भरतके नामपर आर्यावर्तका भारत नाम पड़ा (मन्होंने ही कण्व ऋषि द्वारा पाकी बुरे शकुंतला नामकी दिव्य-कन्यकासे गांधर्व विवाह किया था । इन्हीं दुष्यंत तथा शकुंतलाकी कथाको कालिदासने अपने प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतल'का उपजीव्य बनाया है) ।
मुष्योदर-पु० [सं०] एक खदरोग ।
मुसराणा-सं० कि० दुहराना ।
मुसरिहा-वि० साथ रहनेवाला; सहाय; बरानरीका दावा करनेवाला, प्रतिद्वंदी ।
मुसह-वि० दे० 'दुःसह' ।
मुसही-वि० कठिनाईसे सहनेवाला; विदेशी, डाह करनेवाला ।
मुसाध-पु० सूर्यमें एक जाति जो सूर्य पालती है ।
मुसासन-पु० दे० 'दुःआसन' ।
मुस्तर-वि० [सं०] जिसे पार करना कठिन हो, जो सर-कतासे पार न किया जा सके ।
मुस्सयज-वि० [सं०] जिसे छोड़ा न जा सके; जिसे छोड़ना कठिन हो ।
मुस्स, मुस्सित-वि० [सं०] शोचनीय दशामें पड़ा हुआ; दुष्ट; मुर्ख; लुमाया हुआ, उम्भ ।
मुस्सिति-ली० [मं०] दुर्दशा, दुर्वस्था ।
मुस्सर्ष-वि० [मं०] दे० 'दुष्पर्ष' ।
मुस्सर्षा-ली० [मं०] जवान, कंबाचि; भटकट्या ।
मुस्सृष्ट-पु० [मं०] जिहाका ईष्य स्पर्श जिसने य, र, ल, व् का उच्चारण होता है ।
मुस्सह-वि० [मं०] दे० 'दुःसह' ।
मुहसा-पु० नाती, दीहित्र ।
मुहना-सं० कि० स्नान और चुसुक्की उँगलियोंसे दवाकर दूध निकालना; निचोड़ना, सार भाग निकालना; (किस्तीका) धन अपहरण करना; (किस्तीकी) चूसना । सु०
मुह सेना-सर्वस्व अपहरण कर लेना; किस्तीसे अधिकसे अधिक लाभ उठाना ।
मुहनी-ली० दूध दुहनेका पात्र, दीहनी ।
मुहरना-अ० कि०, सं० कि० दे० 'दीहरना' ।
मुहरा-वि० दे० 'दीहरा' ।
मुहराना-सं० कि० दे० 'दीहराना' ।
मुहाई-ली० घोषणा, सुनाही; रक्षाके लिए की गयी पुकार; आपत्तिके समय रक्षाके लिए किसी समर्थ व्यक्ति या देवताको पुकारना; शपथ, कसम; दुहनेका काम; दुहनेकी उन्नत ।
मुहाग-पु० दुर्गोप्य; वैषम्य ।
मुहागिण-वि० ली० दुर्गोप्यवती, अमागिन, विधवा (ली) ।

दुहागिह—वि० अमागा, मायवहीन; शून्य, खाली।

दुहासी—वि० मायवहीन, अमागा।

दुहासा—स० कि० दुहनेमें दूसरेको प्रहृत करना, दुहनेका काम दूसरेसे कराना।

दुहाघनी—स्त्री० दूध दुहनेकी उजरत।

दुहिता(तु)—स्त्री० [स०] पुत्री, कन्या। —(तु) पति—पु० जामाता।

दुहिन—पु० दे० 'दुहिण'।

दुहेल—पु० क्लेश, संकट।

दुहेला—पु० विकट लेख; कठिन कार्य; क्लेशकर कर्म। वि० दुःखमें पड़ा हुआ, दुःखी; कठिन, कष्टसाध्य; दुःख-बहुल। [स्त्री० 'दुहेली'।]

दुहोहरा—पु० बेटाका बेटा, नाती। वि० दो और, दो अधिक।

दुख—वि० [स०] दुहने योग्य।

दुई—पु० दे० 'द्वंद्व'।

दुईना—अ० कि० द्वंद्व मचाना, हल्ला करना।

दुई—स्त्री० दे० 'द्वै'।

दुई—वि०, पु० दे० 'दो'। —**गुना**—वि० द्विगुण, दुगुना।

दुईहा—वि० दे० 'दुईहा'।

दुआ—पु० दे० 'दुआ'।

दुहा—वि० दे० 'दो'।

दुहजा—स्त्री० दे० 'दूज'।

दुहू—वि० दे० 'दो'।

दूक—वि० दो-एक, कुछ।

दुकान—स्त्री० दे० 'दुकान'। —**दार**—पु० दे० 'दुकान-दार'। —**दारी**—स्त्री० दे० 'दुकानदारी'।

दूखन—पु० दे० 'दूषण'।

दूखना—अ० कि० दे० 'दूखना'। स० कि० दोषारोपण करना; दोष लगाना।

दूखित—वि० दे० 'दुःखित'; 'दूषित'।

दूज—स्त्री० पक्षकी दूसरी तिथि, द्वितीया। **मु०**—का चौदह होना—बहुत कम दिखाई पड़ना।

दूजा—वि० दूसरा।

दूबाया—वि० [स०] जिसपर मुद्रिकलमें शासन किया जा सके, अधामिक।

दूत—पु० [स०] एक जगहसे दूसरी जगह बिछी-पथी, संदेश आदि पहुँचानेके लिए नियुक्त व्यक्ति, हरकारा; किसी राजा या राष्ट्रका वह प्रतिनिधि जो राजनीतिक कार्यमें अन्य राष्ट्रमें भेजा गया हो या स्थायी रूपसे रहता हो; राजदूत; प्रेमी-प्रेमिकाका संदेश एक-दूसरेके पास पहुँचानेवाला व्यक्ति। —**कर्म(तु)**—पु० दूतका कर्म। —**मुख**—वि० दूतके जरिये बोलनेवाला।

दूतक—पु० [स०] दे० 'दूत'।

दूतर—वि० दुस्तर, कठिन।

दूतावास—पु० [स०] राजदूतके रहनेका स्थान और उसका कार्यालय।

दूषिका, दूसी—स्त्री० [स०] वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिका-को मिलाने या एकका संदेश दूसरेके पास पहुँचाये।

दूष—पु० [स०] दूतका माय या कर्म।

दूध—पु० [का०] धुर्मा। —**कसा**—पु० धुर्मा निकलनेका घ्रास, चिमनी।

दूदुह—पु० दे० 'दुदुम'।

दूध—पु० स्त्री०, गाय, भैंस आदिके स्तनसे निकलनेवाला सफेद रंगका प्रसिद्ध तरल पदार्थ जिसपर उनके बच्चे अधिक दिनोत्तक रहते हैं; अन्नके कच्चे दानों तथा कुछ वीरोंके अंगोंमेंसे निकलनेवाला दूधके रंगका रस। —**खड़ी**—

वि० स्त्री० जिसका दूध बंद गया हो, जिसके स्तनमें अधिक दूध भर आया हो। —**पिलाई**—स्त्री० एक विवाह-

संबंधी रस जिसमें बरातके रवाना होनेके पहले बरके पालकी आदिपर चढ़ते समय उसकी माता उसे दूध पिलाने-कीसी मुद्रा करती है; इस कार्यके उपलक्ष्यमें माताको दिया जानेवाला नेग; दूध पिलानेवाली धाय। —**पूत**—पु०

धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि। —**केजी**—स्त्री० दूधके साथ खाया जानेवाला एक एकवान। —**बहुर**—स्त्री० एक ही स्त्रीका

दूध पीनेके नाते मानी जानेवाली बहन। —**आई**—पु० ऐसे दो बालकों या व्यक्तियोंमेंसे एक जो सहोदर न हो

पर एक ही स्त्रीका दूध पीकर पले हो। —**मुँहा**—वि० जो अभी माताके दूधपर रहता हो; जिसके दूधके दौत अभी न

टूटे हो, अल्पवयस्क। —**मुख**—वि० दे० 'दूधमुँहा'। —**बाका**—

पु० ग्वाला, दूध बेचनेवाला। **मु०**—**उछालना**—स्त्री०

दूधको ठंडा करनेके लिए छोटे बरतनमें बार-बार निकाल-

कर ऊँचेसे पतली धारमें कसाही आदिमें गिराना। —**उत्त-**

रना—स्तनोंमें दूध आना। —**का दूध और पानीका पानी**—ठीक-ठीक, सच्चा-सच्चा न्याय। —**का बच्चा**—

केवल दूधके आधारपर रहनेवाला बच्चा, जति शिशु। —**की मक्खी**—अर्थात् तुच्छ या हथित वस्तु। —**की मक्खीकी तरह निकालना या निकाल फेंकना**—

अर्थात् तुच्छ वस्तुकी तरह एकदम अलग कर देना। —**के दौत**—बीसवायस्यमें निकले दौत। —**के दौत न टूटना**

कमसिन या अनुभवहीन होना। —**बड़ना**—स्तनोंमें कम दूध उतरना; स्तनमें दूध अधिक उतर आना।

—**बड़ाना**—दुहनेके समय गाय आदिका अपने स्तनोंमें कुछ दूध जुरा रखना। —**छुड़ाना**—बच्चोंकी केवल दूधपर

न रहने देना। —**तोड़ना**—दूध देना बंद कर देना या कम दूध देने लगना। —**पड़ना**—कच्चे दानोंमें रस भर आना।

—**पीता बच्चा**—एक दम नन्हा बच्चा। —**फटना**—खड़ा पड़ने आदिसे दूधके सार-भाग तथा जल भागका अलग-

अलग हो जाना। —**काढ़ना**—किसी उपायसे दूधके सार और जलभागको अलग-अलग कर देना। **दुर्घा**—**बहाना**,

पूर्ती फलना—धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादिसे संपन्न होना।

दुर्घा—पु० दूधके रंगका रस जो अन्नके कच्चे दानोंमेंसे निकलता है।

दुर्घा-भाती—स्त्री० एक वैवाहिक प्रथा जिसमें वर-कन्या एक-दूसरेको अपने हाथों दूध-भात खिलाते हैं।

दूषिया—स्त्री० एक तरहका सफेद पत्थर; खरिया मिट्टी; एक सफेद घास। वि० दूध-संबंधी; दूध मिला हुआ; दूधके

रंगका, सफेद; कच्चा होनेके कारण जिसमें अभी दूध हो, बहुत कच्चा। —**खाकी**—पु० सफेद राख जैसा रंग।

दूध—स्त्री० दूधका माय; दो पहाड़ोंके बीचकी जगह, घाटी

दृषि, दृषिका, दृषीका-खी [सं०] आँखका मैल ।
दृषित-वि [सं०] दोषयुक्त, बुरा, गंदा; कलंकित ।
दृषी-खी [सं०] आँखका मैल । -**विष-पु**० स्थावर,
 जगम या कृत्रिम विषका वह अंश जो शरीरमें बच रहनेके
 कारण कार्णांतरमें जीर्ण होकर बाहुलीकी दृषित बना
 देता है ।

दृष्य-पु० [सं०] बला; क्षेमा; हाथी बाँधनेका रस्सा; पूव;
 विष । वि० दोष लगाने, दृषित बनाने योग्य; निष; राष्ट्र-
 का अहित करनेवाला । -**महामात्र-पु**० राजद्रोही
 मंत्री ।

दृसना -सं० कि० दोष लगाना ।

दृसर -वि० दे० 'दृसरा' ।

दृसरा-वि० जो गिनतीमें दोहरे स्थानपर हो, पहलेके बाद-
 का; भिन्न, दिग्ग; जिसका चर्चाके विषय या आदमीते कोई
 लगाव न हो ।

दृहना -सं० कि० 'दुहना' ।

दृहनी-खी दे० 'दोहनी' ।

दृहा -पु० दे० 'दोहा' ।

दृक-पु० [सं०] छेद; छिद्र ।

दृक(श्) -पु० [सं०] आँख, दृष्टि; दौकी मख्या; देखना;
 दृष्टा; गान । -**कर्ण-पु**० सर्प । -**क्षय-पु**० आँखीका
 कमजोर होना, देखनेकी शक्तिका हास । -**क्षेप-पु**०
 किमी और दृष्टि डालना, दृष्टिपात । -**पथ-पु**० दे०
 'दृष्टिपथ' । -**पात-पु**० दे० 'दृष्टिपथ' । -**प्रिया-खी**०
 सौंदर्य; कांति । -**शक्ति-खी**० प्रकाशरूप चैतन्य; मनुको
 प्रकाशित करनेवाला चैतन पक्ष । -**श्रुति-पु**० सर्प ।

दरा -पु० आँख, दृष्टि; देखनेकी शक्ति । -**सिचाव-पु**०
 आँखमिचीनी ।

दरा -'दश'का समागत रूप । -**अंचल-पु**० पलक ।
 -**अधक्ष-पु**० सूर्य । -**गति-खी**० दृष्टिकी गति या
 पंथ । -**गोचर-वि**० दे० 'दृष्टिगोचर' । -**विष-पु**० एक
 प्रकारका सौंप जिसकी आँखोंमें विष रहता है । -**बृत्त-पु**०
 क्षितिज ।

दृढ-वि० [सं०] जो विचलित न हो, जो दिग न सके,
 धीर, कड़े दिलका; कसकर बंधा हुआ; अक्षिपिल; गाढ़;
 मजबूत, सबल, बलिष्ठ; पुष्ट; जो हिल-डुल न सके;
 जिसमें कोई फेरफार न हो सके; पक्का, अटल; कठिन;
 स्थूल; स्थायी, टिकाऊ । पु० अधिकता; दर्श; विष्णु
 लोका; मगीतका एक रूपक । -**कंटक-पु**० छद्मफलक
 नामक वृक्ष । -**कर्मा(मन्)-वि**० दृष्टापूर्वक अपने
 काममें लगा रहनेवाला, अपने कामसे मुंह न मोड़ने-
 वाला । -**कांड-वि**० जिसकी गाँठें मजबूत हों । पु०
 शर्म; एक लुशब्दवार घास । -**कारी(तिन्)-वि**० दृढ-
 निश्चय, अध्यवसायी । -**गात्रिका-खी**० राव । -**ग्रंथि-वि**०,
 पु० दे० 'दृढकांड' । -**खेता(तस्)-वि**० कड़े
 दिल, पक्के इरादेवाला । -**ध्रुव-पु**० अमान्य मुनिका
 एक पुत्र । -**तरु-पु**० धवका पेड़ । -**त्वक्(श्)-पु**०
 ज्वाराका पेड़; एक तरहका मरकटा । वि० कभी छालवाला ।
 -**दृष्टक-पु**० एक किंश जलजंतु । -**धन-पु**० वृक्ष ।
 -**धन्वा(मन्), -धन्वी(मिन्)-वि**० जिसका धनुष

मजबूत हो; अच्छा कमनेत । -**निश्चय-वि**० संकल्पका
 पक्का । -**नीर-पु**० नारियल । -**नेमि-वि**० जिसकी
 धुरी दृढ़ हो । -**पथ-वि**०, पु० दे० 'दृढकांड' । -**पत्नी-खी**०
 बल्लजा तृण । -**पद्-पु**० एक मायिक छंद ।
 -**पाद्-पु**० ब्रह्मा । वि० दृढ़ निश्चयवाला । -**पादा-खी**०
 वषटिका । -**पादी-खी**० भूम्यामलकी । -**प्रतिह-वि**०
 जो प्रतिहासे न डिगे, सत्यसंध, सत्यप्रतिह ।
 -**प्ररोह-पु**० बरगदका पेड़ । -**फल-पु**० नारियल ।
 -**बंछिनी-खी**० श्यामा लता । -**बीज-पु**० चकनेक;
 बरगद; बबूल; चमरुद; बैर । वि० जिसके बीज कड़े हों ।
 -**भूमि-खी**० योगशास्त्रमें मनकी एकाम बनानेवाला
 एक प्रकारका अभ्यास । -**मुष्टि-वि**० जिसकी मुठ्ठी जल्दी
 न खुल सके; कृपण, कजूर । पु० तलवार । -**मूल-पु**०
 मूँच; नारियल । -**रंशा-खी**० फिटकरी । -**लता-खी**०
 पातालमन्थी लता । -**लोमा(मन्)-पु**० बनेला सूअर ।
 वि० जिसके रोवें कड़े हों । -**बल्लक-पु**० झुपारीका
 पेड़; लकड़का पेड़ । वि० कभी छालवाला । -**बल्का-खी**०
 अबड़ा । -**बीज-पु**० दे० 'दृढबीज' । -**व्रत-पु**०
 धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० संकल्पका पक्का, दृढनिश्चय, दृढ-
 प्रतिह । -**संध-वि**० दृढव्रत, दृढप्रतिह । -**संधि-वि**०
 जो जुड़कर या सटकर एक हो गया हो । -**सूत्रिका-का**०
 सूत्रा लता । -**स्केध-पु**० खिरनीका पेड़ । -**हस्त-वि**०
 जो मजबूतीसे तलवार आवि पकड़ सके ।

दृता-खी०, **दृदत्त्व-पु**० [सं०] दृढ़ होनेका भाव ।

दृढांग-पु० [सं०] हीरा । वि० बलिष्ठ अंगोंवाला, दृष्टा-
 कट्टा ।

दृढाई -खी० दृढ़ता, मजबूती ।

दृढाना -अ० कि० दृढ़ होना, पुष्ट होना; स्थिर होना ।
 सं० कि० दृढ़ बनाना, मजबूत करना, पक्का करना ।

दृढायुध-पु० [सं०] शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि०
 दृढतापूर्वक अख चलनेवाला ।

दृष्टेयुधि-वि० [सं०] जिसका तरकश मजबूत हो या कसकर
 बंधा हो ।

दृत-वि० [सं०] आदर, सम्मानित; विदोर्ण ।

दृता-खी० [सं०] जेरा ।

दृति-खी० [सं०] चमकेका पात्र, मशक; मछली; वह
 चमका जो गाय-बैल आदिके गलेके नीचे झूलता रहता
 है, गलकंड; मेघ । -**धारक-पु**० एक पौधा । -**हरि-वि**०
 गलकंडक या शोश्नवाला (पेड़) । पु० कुत्ता (जो
 चमकेकी चीजें चुराता है) । -**हार-पु**० मशकमें पानी
 डोनेवाला, मिश्री ।

दृम्बु-खी० [सं०] सर्प; वज्र; पक्षिया । पु० सड़े ।

दृम्बू-पु० [सं०] वज्र; सूर्य; यम; राजा ।

दृस-वि० [सं०] गमित; उन्मत्त; हर्षयुक्त; तेजोयुक्त; दीप्त ।
 पु० विष्णु ।

दृष-वि० [सं०] धर्मही; बलवान् ।

दृष-वि० [सं०] ग्रथित; भीत । पु० डर; पागा, डोरी ।

दृषाद्(त्)-खी० [सं०] दे० 'दृषद्' ।

दृषाद्वती-खी० [सं०] दे० 'दृषद्वती' ।

दृशा-खी० [सं०] आँख ।

दशाकांक्ष-पु० [सं०] कमल ।

दशान-पु० [सं०] आध्यात्मिक गुरु; माक्षण; लोकपाक; चमक, भाग ।

दशि-खी० [सं०] ओख, दष्टि; देखना; प्रकाश; शास्त्र ।

दशी-खी० [सं०] ओख, दष्टि; शास्त्र; प्रकाश ।

दशीक-वि० [सं०] ध्यान देने योग्य; सुदर । पु० प्रत्यक्ष होना ।

दशोपम-पु० [सं०] दशैत कमल ।

दक्ष-पु० [सं०] जो कुछ देखा जाय, वह सब कुछ जो दर्शकों को दृष्टि-गोचर हो, नजारा; तमाशा । वि० देखने योग्य, दर्शनीय; मनोरम, शोभन; जानने योग्य, ज्ञातव्य; जो दर्शकों को अभिनय द्वारा दिखाया जाय (काव्य) ।

दक्षमान-वि० [सं०] जो देखा जा रहा हो, देखा जाता हुआ ।

दक्ष(त्)-खी० [सं०] शिखा; सिल; चक्री ।

दक्षद्वी-खी० [सं०] एक नदी जिसका उल्लेख कथ्येदतकमें मिलता है । (मनुस्मृतिमें इसे ब्रह्मावर्तकी सीमापर स्थित बताया गया है); विश्वामित्रकी एक पत्नी ।

दृष्ट-पु० [सं०] अनुभूति; सीक्षास्कार, दर्शन; राजा को अपनी तथा शत्रुकी सेनासे होनेवाला भय; ठाकुओं आदि-का भय । वि० देखा हुआ; जाना हुआ; साक्षात् देखा या भोगा जानेवाला, ऐहिक (विषय); प्रत्यक्ष (सं०) ।

-कूट-पु० पहेली; एक प्रकारकी पहेली जैसी बुरुह कविता जिसका अर्थ बहुत सीच-नोचकर निकाला जाता है । **-बुद्ध-वि०** लफाईके मैदानसे भागनेवाला । **-रजा-(अस्)-खी०** वह कन्या जो रजस्वला हो गयी हो ।

-वर्-वि० प्रत्यक्षके समान, प्रत्यक्षस्तुत्य ।

दृष्टमान-वि० दे० 'दृश्यमान' ।

दृष्टोत्-पु० [सं०] प्रस्तुत विषयको समझानेके लिए समान अभिप्रायवाली किसी दूसरी बातका कथन, उदाहरण, मिसाल; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ उपमेय वाक्य और उपमान वाक्योंमें तथा उन दोनोंके धर्मोंमें विष-प्रतिविम्बाव दिखाया जाय; शास्त्र; मरण ।

दृष्टार्थ-वि० [सं०] जिसका अर्थ या विषय स्पष्ट हो; व्यावहारिक ।

दृष्टि-खी० [सं०] देखना, अवलोकन; देखनेकी शक्ति; दृढ, टक, नजर; प्रकाश; ज्ञान; मत, विचार, खयाल; उद्देश्य, अभिप्राय; सोचने-विचारनेका पहलू; आशासरी नजर । **-कूट-पु०** दे० 'दृष्टकूट' । **-कूट-पु०** खलपण । **-कोण-पु०** देखने-सोचने-विचारनेका पहलू ।

-क्रम-पु० विहित वस्तुओंमें बड़ी सापेक्ष्य छोड़ाई-बड़ाई, ऊँचाई-निचाई आदि दिखाई देना जो ध्यानविशेषमें प्रत्यक्ष दर्शनमें दिखाई देती है । **-क्षेप-पु०** दृष्टि डालनेकी क्रिया, नजर डालना, अवलोकन । **-रास-वि०** जो देखने में आया हो, जो देख पड़ा हो । **-गुण-पु०** निशाना, लक्ष्य । **-गोचर-वि०** जिसका आक्षेप प्रत्यक्ष हो सके, जो देखा जाय, भिगाइमें पड़नेवाला, दिखाई पड़नेवाला ।

-दोष-पु० नजरका कुरा असर; देखनेमें छुटि होना । **-निपात-पु०** दे० 'दृष्टिक्षेप' । **-पथ-पु०** नेत्रन्यापारका क्षेत्र । **-पात-पु०** दे० 'दृष्टिक्षेप' । **-पूत-वि०** जो

देखनेमें छुट्ट हो; मली भाँति देखा-भाखा हुआ । **-बँध-पु०** नजरबंदी । **-बँध-पु०** खपोत, जुगनू । **-माँध-खी०** देखनेसे कम दिखाई देना । **-रौध-पु०** देखनेकी क्रियाका रकना या रोक जाना; देखनेके काममें होनेवाली रुकावट । **-विश्लेष-पु०** तिरछी चितवन, कटाक्ष; दृष्टिगत । **-विद्या-खी०** आलोक-विद्या । **-विग्रह-पु०** प्रेममयी चितवन, नेत्रविहास । **-विष-पु०** एक प्रकारका रस । **मु०-किरना-दे०** 'आँखें फिर जाना' ।

-फेरना-दे० 'आँख फेरना' । **-बचाना-दे०** 'आँख बचाना' । **-बिछाना-दे०** 'आँख बिछाना' । **-भर देखना-पुतिपर्यंत देखना**, जो भरकर देखना । **-भारी जाना-अथा होना**, नेत्रहीन होना । **-मिछाना-देखा-देखी करना** । **-में समाना-दे०** 'आँखोंमें समाना' ।

(किसीपर)-रखना-निगरानी करना, देखरेखमें रखना, देख भाल करना । **-लगाना-पकटक देखना**, देरतक देखते रहना; नेह जोड़ना, प्रीति लगाना ।

दृष्टिवंत-वि० ज्ञानवान्, बुद्धिमान्; दीढवाला ।

दे-पु० बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि । * खी० देवीका लघु रूप ।

देई-खी० दे० 'देवी' ।

देउ-पु० दे० 'देव' ।

देउर-पु० दे० 'देवर' ।

देउरानी-खी० दे० 'देवरानी' ।

देख-खी० देखनेकी क्रिया या भाव । **-भाल-देख-खी०** निगरानी, निरीक्षण; संरक्षण ।

देखन-खी० देखनेकी क्रिया या भाव, चितवन, विलोकन । **-हारा-पु०** देखनेवाला, दर्शक ।

देखना-म० कि० जेठों द्वारा किमीका ज्ञान प्राप्त करना; तलाश करना, खोजना; परीक्षा करना, परखना; निगरानी करना या रखना; सम्हालना; प्रबंध करना; सोचना-भ्रमझना; निरीक्षण करना; अनुभव करना, भोगना; पढ़ना, बँचना; मनोभन करना; प्रतीकार करना; निश्चयना; किसी श्रेय दृष्टि फेरना, ध्यान देना ।

देखनि-खी० दे० 'देखन' ।

देखराना-स० कि० दे० 'दिखलाना' ।

देखरावना-म० कि० दे० 'दिखलाना' ।

देखाड-वि० जो केवल देखनेभरको हो, नकली, बनावटी, दिखावा ।

देखादेखी-खी० एक-दूसरेको देखनेकी क्रिया, साक्षात्कार । अ० (कितीकी) करते देखकर, अनुकरणके रूपमें ।

देखाना-स० कि० दे० 'दिखलाना' ।

देखाव-पु० दिखलानेका भाव या ढंग; सज-धज, सज्ज-सज्ज, बनाव-निगार ।

देखावट-खी० दे० 'देखाव' ।

देखावना-स० कि० दे० 'दिखलाना' ।

देखीआ-वि० दे० 'देखाव' ।

देरा-पु० [फा०] खाना पकानेका ताँबेका बड़ा बरतन । **-अंदाज-पु०** तावज । **-खा-पु०** छोटा देग । **-खी-खी०** छोटा देगवा ।

देवीप्यमान-वि० [सं०] स्त्रिय चमकता हुआ, जाज्वल्यमान ।

देव-खी—देनेकी किया या प्रायः दी हुई वस्तु; वह उपयोगी या अव्यय वस्तु जो किसीकी दी जाय वा दी गयी हो—‘जगतकी जो हम सबसे बड़ी देन दे सकते हैं, वह यही आदर्श है’—राजेंद्र प्र०। पु० [अ०] कर्ज।
-हार-वि० कर्नदार, कणी; आभारी। **-हारी-खी**—देनहार होनेकी शक्ति। **-लेख-पु०** सद्पर कथा देनेका व्यवहार, महाजनीका व्यवसाय। **-हार-हारा-वि०** देनेवाला।

देवा-स० कि० किसी वस्तुपरसे अपना स्वाभिव्यक्त्युत्पत्ति उत्सका स्वामी बनाना, प्रदान करना, समर्पित करना। सौपना; मिलाना, डालना; लगाना; रखना; मारना, रसीद करना; पैदा करना, जनना; हवाले करना, धमाना; अनुभव कराना; पहुँचाना। (बह किया अन्य कियाओंके साथ प्रायः सर्वोपेक्षा कियेके रूपमें प्रयुक्त होती है।) पु० कर्ज, कण।

देवान-पु० दे० ‘दीवान’।

देव-वि० [स०] देने योग्य, दातव्य। **-धर्म-पु०** दान-रूप धर्म।

देवासिनि-खी—साध-हूँक करनेवाली (विद्यापति)।

देर-खी—[फा०] उचितसे अधिक समय, विलंब, कालाति-पात; समय, बन्त।

देरानी-खी—देवरानी।

देरी-खी—दे० ‘देर’।

देवका-खी, देवका-पु० दीमक।

देव-पु० [फा०] दैत्य, दानव; भीमकाय मनुष्य; [स०] स्वर्गमें विचरण करनेवाला दिव्य शक्ति-संपन्न अमर प्राणी, देवता; परमात्मा; ईश्वर; भविष्यत् उत्सर्पिणीके २३वें अर्धत्; मेघ; राजा; भव्य शरीरवाला व्यक्ति; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; पूरुष व्यक्तियों तथा राजाओंके लिए आदरस्वच संशोधन; प्रेम करनेवाला; स्वर्ग; ऋषा; शार्ङ्गद्विज; मूर्ख; शिशु; पारा; देवदाक, ईश की सख्या; * देवर—‘तात मातु जन सोदर जानी’। देव जेठ सब संगिष्ठ मानो’—रामचंद्रिका। वि० स्वर्ग-संबंधी; देव-संबंधी; चमकदार; सम्मान्य, पूज्य। **-ऋण-पु०** एक प्रकारका शास्त्रोक्त ऋण जिससे मुक्त होनेके लिए देवताओंके निमित्त यज्ञ, उपवास, व्रत आदि करना विहित है। **-ऋषि-पु०** नारद आदि देवकवच ऋषि (इनमें कुच्छके नाम थे हैं—नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, ऋगु)। **-कन्यका-कन्या-खी**—देवताकी पुत्री; (ला०) अर्थात् रूपवती तृणी। **-कर्दम-पु०** चंदन, अगर, कपूर और केसरके मिश्रणसे तैयार किया जानेवाला एक गंधद्रव्य। **-कर्म(न),-कार्य-पु०** देवताओंकी तुष्टिके लिए किये जानेवाले हवन-पूजनादि कृत्य; देवाभिलषित कार्य। **-काहिर-खी**—[हि०] नदियोंके किनारे होनेवाला एक छोटा पीप। **-काह-पु०** देवदारु। **-कुंड-पु०** प्राकृतिक जलाशय; किसी देवताके नामसे प्रसिद्ध या सुदवाया हुआ जलाशय; देवस्थानके निकटका जलाशय। **-कुट-पु०** देवमंदिर। **-कुसंबा-खी**—महाश्रीणी। **-कुरु-पु०** जंबूद्वीपका एक खंड। **-कुल-पु०** एक प्रकारका मंदिर, देवकुल; देवताओंका ससुदाय; देव-वंश। **-कुलवा-खी**

आकाशगंगा। **-कुसुम-पु०** लीग; कवंग। **-खात,-खातक-पु०** गुफा; दे० ‘देवकुंड’। **-गंधर्व-पु०** नारद; मानेका एक विशेष ऽंग। **-गंधा-खी**—महामेदा। **-गण-पु०** देवताओंका समूह; आदित्य, विश्व, वसु आदि विशिष्ट देवता; देवताका अनुचर; अधिनी, रेवती, पुष्य आदि नक्षत्रोंका एक समूह। **-गणिका-खी**—अप्सरा। **-गति-खी**—ऐसी स्रष्टि जिसे प्राप्त कर श्रुत व्यक्ति देवरूप हो जाता है। **-गण-पु०** दे० ‘देवगण’। **-गर्ज-पु०** मेघका गर्जन। **-गर्म-पु०** देवताके वीर्यसे उत्पन्न मनुष्य। **-गांधार-पु०** एक राग। **-गांधारी-खी**—एक रागिनी। **-गायन-पु०** गणपति। **-गिरा-खी**—देवगणी, संस्कृत। **-गिरि-पु०** एक पर्वत; दक्षिण भारतका एक प्राचीन नगर जिसका आधुनिक नाम दोलताबाद है। **-गिरी-खी**—एक रागिनी। **-गुह-पु०** कव्यया; गृहस्वपति। **-गुही-खी**—सरस्वती। **-गुह-पु०** केवल देवताओंको ज्ञात रहस्य; श्रुत्यु। **-गुह-पु०** देवालय; राजप्रासाद। **-कष्या-खी**—देवताका पूजन-अर्चन। **-चिकित्सक-पु०** अधिनीकुमार; रोगी सख्या। **-चक्र-पु०** एक प्रकारका हार जिसमें १०० या १०८ अथवा किसी-किसीके मतसे ८१ रुकियाँ होती हैं। **-ज-पु०** सामका एक भेद। वि० देवतासे उत्पन्न। **-जम्बक-पु०** रोहिण तृण। **-खुष्ट-वि०** देवताको समर्पित किया हुआ। **-डान-पु०** [हि०] दे० ‘देवोत्थान’। **-खर-पु०** देवद्वय—इनके नाम हैं—खंवार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन; पीपल। **-सर्पण-पु०** देवताओंका जल देनेकी क्रिया। **-तात-साहब-पु०** वृक्षविशेष; एक लता; राहु; अक्षि। **-लाह-पु०** कव्यया; यज्ञ। **-सीर्य-पु०** देवाचंनके लिए अनुकूल समय; उग-लियोंकी नोक। **-तुसुल-पु०** मेघगर्जन। **-तुष्टिपति-पु०** पुजारी। **-त्रयी-खी**—तीन देवताओंका—महा, विष्णु और महेशका—समूह। **-दंडा-खी**—नागबला। **-दस-पु०** अर्जुनके शस्त्रका नाम; गौतम बुद्धका चचेरा भाई (यह उनका श्रेष्ठ भा और आजीवन विरोध करता रहा); बह शरीरसंचारी बायु जिससे जम्हार आती है; देवताको समर्पित की हुई संपत्ति। वि० देवताको दिया हुआ, देवताको समर्पित; देवताका दिया हुआ। **-दार्शन-पु०** देवताका दर्शन; नारद। वि० देवताओंके दर्शन करने-वाला। **-दार-पु०** [हि०] दे० ‘देवदार’। **-दाह-पु०** एक प्रसिद्ध पहाड़ी पेड़ जिसकी लकड़ी कषी, हल्की और पोले रंगकी होती है। **-हालिका-हाली-खी**—एक तरहका कवच, महाकायफल। **-दास-पु०** देवालयमें काम करनेवाली नर्तक। **-दासी-खी**—नाच-गाकर देवता या देवालयकी सेवा करनेवाली स्त्री, देवमंदिरकी नर्तकी; वेश्या; बिजौरा नीलू। **-दीप-पु०** देवताके निमित्त जलाया जानेवाला दीप; नेत्र, जीवन। **-दुंदुभि-खी**—छाछ तुच्छी; देवताओंका नगाडा। पु० ईश्वर। **-दूत-पु०** देवता या ईश्वरका दूत, पैगबर; परिष्ठा। **-दूती-खी**—अप्सरा। **-देव-पु०** देवोंके स्वामी—शिव; ब्रह्मा; विष्णु। **-दुम-पु०** दे० ‘देवतक’। **-द्रोणी-खी**—देवधाना; शिष्यकिंगका करपा। **-धव-पु०** देवताके नाम-

पर निकाहा हुआ धन । -**धानी-क्षी-इंद्रपुरी-** -**धाम्य-पु०** जार । -**धाम(न)-पु०** तीर्थस्थान । -**धुनी-क्षी०** गंगा की पवित्र नदी । -**धूप-पु०** गुग्गुलु । -**धेनु-क्षी०** कामधेनु । -**नंदी(विश्व)-पु०** इंद्रका द्वारपाल । -**नदी-क्षी०** गंगा; पुण्यतोषा नदी । -**नक्ष-पु०** एक सप्तका नरक, सुरनाल । -**नागरी-क्षी०** एक प्रसिद्ध लिपि जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी आदि भाषाएं लिखी जाती हैं । -**००** **वर्णमाला-क्षी०** क्रमबद्ध 'अ', 'आ' आदि स्वर वर्ण तथा 'क', 'ख', 'ग' आदि व्यंजन वर्ण जो देवनागरी लिपिके आधार हैं । -**नाथ-पु०** शिव । -**नायक-पु०** इन्द्र । -**नाल-पु०** दे० 'देवनल' । -**निंदक-वि०** पु० नास्तिक, देवताओंकी निंदा करनेवाला । -**निकाश-पु०** स्वर्ग; देवसमूह । -**निर्मित-वि०** देवता द्वारा रचित; प्राकृतिक । -**पति-पु०** इन्द्र । -**पक्षी-क्षी०** देवताओंकी स्त्री; एक कंद, मन्वा-ल्लुक । -**पथ-पु०** छायापथ, आकाश; देवस्थानकी ओर जानेवाला मार्ग । -**पक्षिनी-क्षी०** आकाशगंगा । -**पर-वि०** दुःखमें पुरुषार्थहीन होकर मगवान्के सरोसे बैठानेवाला । -**पद्म-पु०** देवताके नामपर स्वच्छंद छेड़ा हुआ पद्म । -**पात्र-पु०** अग्नि । -**पाव-पु०** राजाके लिए आदरसूचक संबोधन । -**पाक्षित-वि०** देवता द्वारा रक्षित; दे० 'देवमातृक' । -**पुत्र-पु०** देवताका पुत्र; शिव । -**पुत्रिका-क्षी०** पुष्पा । -**पुत्री-क्षी०** देवताकी पुत्री; रत्नावली, पुष्पा । -**पुत्र-पु०**, **पुत्री-क्षी०** इन्द्रकी नगरी, अमरावती । -**पुत्र-पु०** इन्द्रपति । -**प्रसिद्धि-प्रसिद्धि-क्षी०** देवताकी मूर्ति । -**प्रयाग-पु०** उत्तर भारतका एक तीर्थस्थान जो गंगा और अलकनन्दाके संगम पर है । -**प्रद्वन-पु०** प्रह्लादसम्पत्ति जिज्ञासा, भविष्य-सर्वज्ञ प्रद्वन; भविष्यकी बातें बतलाना । -**प्रिय-पु०** अगस्तका पेश; पीली मंगरैया; शिव । वि० जो देवताओंकी प्रिय लगे; जिसे देवता प्रिय हैं । -**बधू-क्षी०** देवताकी स्त्री; अप्सरा । -**बला-क्षी०** सहदेव नामकी बूढ़ी । -**ब्रह्मा(ब्रह्म)-पु०** नाग । -**ब्राह्मण-पु०** वह ब्राह्मण जिसकी जीवनवृत्ति देवपूजा हो । -**भव-पु०** देवस्थान; पीपलका पेश; स्वर्ग । -**भाग-पु०** वषादिमें देवविशेषको दिया जानेवाला भाग; संपत्तिका वह भाग जो देवतायेंके लिए अलग कर दिया गया हो । -**भाषा-क्षी०** संस्कृत । -**भविष्य(ज)-पु०** भविष्यकुमार । -**भू-क्षी०** स्वर्ग । पु० देवता । -**भूमि-क्षी०** आकाशगंगा; देवताओंका देश । -**भूमि-क्षी०** स्वर्ग । -**भृक्ष-पु०** इंद्र; विष्णु । -**भोज्य-पु०** अमृत । -**भणि-पु०** कौस्तुभ मणि; धूप; एक प्रकारकी बालोंकी मंजरी जो घोड़ोंकी गर्दनपर होती है; महामेधा । -**माता(न)-क्षी०** देवताओंकी माता, अदिति । -**मातृक-वि०** (वह देव) जिसे कृषिकार्यके लिए केवल वर्षाका जल लम्ब्य हो; जहाँ जेतोंकी सिंचाईके लिए वर्षाका ही जल पर्वत ही जाता हो । -**माधव-पु०** देवताओंकी भक्त करनेवाला, सोम । -**मान-पु०** काष्ठ गणनाका वह मान जो देवताओंके स्वयंमें काममें लाया जाता है-जैसे मनुष्यका एक सौर वर्ष देवताओंके एक दिनके बराबर होता है । -**मानक-पु०** कौस्तुभ

मणि । -**माया-क्षी०** देवताओंकी माया; परमेश्वरकी अविचारणीय माया जो जीवोंके बंधनका कारण है । -**मार्ग-पु०** दे० 'देवयान' । -**मास-पु०** वर्षमेंका आठवाँ महीना; देवताओंका महीना जो तीस सौर वर्षके बराबर होता है । -**मीड-पु०** राजा जनकके एक पूर्वज । -**मीड-पु०** वसुदेवके पितामह । -**मुष्ण-क्षी०** कस्तूरी । -**मुनि-पु०** देवर्षि नारद । -**मूर्ति-क्षी०** देवताकी मूर्ति । -**मज्जन-पु०** यज्ञ करनेका स्थान । -**मज्जी-क्षी०** पृथ्वी । -**मज्जि-पु०** देवपूजक । -**मज्ज-पु०** वह हवन जो गृहस्थोंके पाँच नैसर्गिक यक्षोंमेंसे एक है । -**मात्रा-क्षी०** किसी देवताकी सवारी निकालनेका उत्सव । -**मान-पु०** वह मार्ग जिसमें जीवात्मा शरीरसे निकलनेपर ब्रह्मलोककी जाता है; देवताओंका विमान । -**मानी-क्षी०** शुकाचार्यकी कन्या जो कचके शापवश ययातिकी ब्याही गयी थी । -**मुग-पु०** सतयुग । -**मोनि-क्षी०** देवता-नाति; देवताओंकी कोटिमें गिने जानेवाले विधापर, अप्सरा आदि दस उपदेव; अग जलानेके काममें लायी जानेवाली लकड़ी । -**मोषा-क्षी०** देवताकी स्त्री; अप्सरा । -**रथ-पु०** सूर्यका रथ; देवताओंका यान, विमान । -**राज-पु०** इन्द्र; राजा; युद्ध । -**रात-पु०** (विष्णु द्वारा रक्षित) राजा परीक्षित; याज्ञवल्क्यके पिता; सारस पक्षी । -**रानी-क्षी०** इन्द्राणी, शची; दे० 'क्रम-में' । -**राय-पु०** इन्द्र । -**रिपु-पु०** असुर । -**लता-क्षी०** नवमल्लिका, नेवारी । -**लंगुलिका-क्षी०** शुद्धिकाठी । -**लोक-पु०** देवताओंका लोक, स्वर्ग; भू; भुव आदि सात लोक । -**वक्त्र-पु०** अग्नि (जो देवताओंके लिए सुँहके तुरव है) । -**वधू-क्षी०** देवताकी स्त्री; देवी; अप्सरा । -**वर्म(न)-पु०** आकाश । -**वर्द्ध-पु०** विश्वकर्मा । -**वर्ष-पु०** एक दीप; दे० 'देववर्ष' । -**वल्लभ-पु०** सुरपुत्राग वृक्ष । वि० देवताओंकी प्रिय लगनेवाला । -**वाणी-क्षी०** संस्कृत भाषा; आकाशवाणी । -**वाहन-पु०** अग्नि (जो देवताओंके पास इन्धन पहुँचानी है) । -**विद्या-क्षी०** निरुक्त । -**विभाग-पु०** उत्तर दिशा । -**विहारा-पु०** एक राग; देवताओंका प्रिय भोजन । -**वृक्ष-पु०** गुग्गुलु; छतिवन; दे० 'देवनह' । -**वृक्ष-पु०** भीष्मपितामह; कर्पिकेश; कोई धार्मिक सकल्य । -**वृक्ष-पु०** असुर, दैत्य । -**शिल्पी(विप्लव)-पु०** विश्वकर्मा । -**क्षुनी-क्षी०** देवताके समान प्रभाववाली सरमा नामकी कुतिया । -**शेखर-पु०** दीनका पौधा । -**शेष-पु०** यक्षका बच्चा हुआ अश । -**श्री-पु०**, **वज्रा-क्षी०** लक्ष्मी । -**श्रुत-पु०** ईश्वर; नारद; शाक; एक जिन । -**श्रेष्ठ-वि०** देवताओंमें श्रेष्ठ । -**संघ-वि०** देवी । -**सदन-पु०** स्वर्ग; पीपलका पेश; मंदिर । -**सभा-क्षी०** देवताओंकी सभा, सुभर्मा; राजसभा । -**सम्भ-पु०** जुआ खेलने वा खेलनेवाला; देवमेवक । -**सरि-सरि-क्षी०** दे० 'देवनदी' । -**सर्पा-पु०** एक सरसों । -**सहा-क्षी०** दंडोपाय । -**साधुज्य-पु०** किसी देवतामें शिल्पकर एक हो जाना, देवत्व प्राप्ति । -**सारणी-पु०** भागवतके अनुसार तेरहवें मनु । -**सिंह-पु०** शिव । -**सुहा-क्षी०** मंदिर । -**सेना-क्षी०** देवताओंकी सेना;

देवतेनापति स्वर्गकी पत्नी ।—० पति, —० मित्र—पु० स्वर्ग; पीला सैमरा । —स्थान—पु० स्वर्ग; मंदिर । —स्व—पु० देवार्पित संपत्ति । —हवि(स्)—पु० बलिपशु । —हृत्ति—० देवताओंका आकाङ्क्षन; कर्दम ऋषिकी पत्नी जिससे सांख्यके आचार्य कपिल उत्पन्न हुए थे । —हेडन—पु० देवताओंके प्रति किया जानेवाला अपराध । —हेस्ति—० दिव्य अन्न । —हृत्—पु० महाभारतीय श्रीशैलपरका एक सरोवर ।

देवक—पु० [सं०] देवता; एक यदुवंशी राजा जिनकी पुत्री देवकीसे कृष्ण उत्पन्न हुए थे । वि० क्रीडाशील; देवता जेता; देवता संबंधी ।

देवकर्त—० देवक ।

देवकी—० [सं०] वसुदेवकी पत्नी और कृष्णकी माता । —नंदन, —पुत्र, —सूनु—पु० कृष्ण ।

देवकीय, देवकीय—वि० [सं०] देवताका; देवता-संबंधी ।

देवद—पु० [सं०] जिल्पी ।

देवद्वी—० [सं०] खोदी; शीखट ।

देवता—पु० [सं०] स्वर्गमें वास करनेवाला दिव्य शक्ति-संपन्न भगवत् प्राणी; देवप्रतिमा; शान्तिदेव । —गृह—पु० देवमंदिर । —प्रतिमा—० देवमूर्ति । —बेस्म(न्), —स्थान—पु० देवमंदिर । सु०—कूच कर आना—अत्यन्त भोग हो जाना, होश गायब हो जाना ।

देवतागार—पु० [सं०] दे० 'देवागार' ।

देवतात्मा(—मन्)—पु० [सं०] देवत्वरूप; पीपलका पेड़ ।

देवताधिप—पु० [सं०] दे० 'देवाधिप' ।

देवताध्याय—पु० [सं०] सामवेदका एक ब्राह्मण ।

देवन—पु० [सं०] पातका एक खेल, जुआ; जुआ खेलना, क्रीडा; सौंदर्य; कागि; प्रमोदोद्यान; कमल; स्पर्द्धा; व्यवहार, व्यापार; स्तुति; गमन, मति; शोक ।

देवना—० [सं०] जुआ; क्रीडा; शोक ।

देवयु—वि० [सं०] धार्मिक, धर्मात्मा । पु० देवता ।

देवर—पु० [सं०] पतिका अनुज; पतिका माई (जेठा या छोटा) ।

देवरा—पु० साधारण देवता ।

देवरानी—० देवरकी पत्नी; दे० 'देव' मं ।

देवरी—० छोटी-मोटी देवी ।

देवर्द्धि—पु० [सं०] जैनसिद्धांतकी लिपिबद्ध करनेवाले एक प्रसिद्ध जैन स्थविर ।

देवर्षि—पु० [सं०] दे० 'देवर्षि' ।

देवक—पु० देवालय; मंदिर; [सं०] देवपूजाकी आयत्ते जीविका चलावेवाला ब्राह्मण; देवर; धार्मिक व्यक्ति; नारद मुनि; एक स्मृतिकार; एक ऋषि ।

देवकक—पु० [सं०] देवताका पुजारी ।

देवहरा—पु० देवालय ।

देवांगना—० [सं०] अम्बरा; देवताकी स्त्री ।

देवांग(स्)—पु० [सं०] 'देवाङ्ग' ।

देवांग—पु० [सं०] देवताका अंग; परमेश्वरका अशावतार ।

देवा—० [सं०] पञ्चचारिणी कृता; पटसन ।

देवाकीड—पु० [सं०] देवोद्यान, नंदनवन ।

देवागार—पु० [सं०] मंदिर, देवस्थान; स्वर्ग ।

देवाजीव, देवाजीवी(विन्)—पु० [सं०] पुजारी ।

देवाट—पु० [सं०] हरिहर क्षेत्र ।

देवातिदेव—पु० [सं०] विष्णु; शिव ।

देवात्मा(स्मन्)—पु० [सं०] दे० 'देवतात्मा' ।

देवाधिदेव—पु० [सं०] विष्णु; शिव ।

देवाधिप—पु० [सं०] परमेश्वर; ईश; द्वापरयुगीन एक राजा जो त्रिकुंभासुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था ।

देवान—पु० दीवान, मंत्री; राजदरबार ।

देवानामित्र—पु० [सं०] अशोककी उपाधि; बकरा । वि० देवप्रिय; मूर्ख ।

देवाना—वि० पागल ।

देवानीक—पु० [सं०] देवमेना ।

देवानुग—पु० [सं०] देवताओंके पीछे-पीछे चलनेवाले विधाधर, वक्ष आदि दस उपदेव; देवताका सेवक ।

देवानुचर—पु० [सं०] 'देवानुग' ।

देवानुयासी(विन्)—पु० [सं०] दे० 'देवानुग' ।

देवाक्ष—पु० [सं०] अमृत; चर ।

देवायगा—० [सं०] सुरसरित्, गंगा ।

देवापि—पु० [सं०] एक राजा जो प्रतीपका पुत्र था ।

देवाभियोग—पु० [सं०] अनुचित कर्म करनेवाले देवताका शरीरमें प्रवेश (जै०) ।

देवाभीष्टा—० [सं०] तांछी ।

देवायतन—पु० [सं०] दे० 'देवागार' ।

देवायु(स्)—० [सं०] देवताकी आयु जो बहुत लंबी होती है ।

देवायुध—पु० [सं०] दिव्य अस्त्र; द्रवधनुष ।

देवारण्य—पु० [सं०] देवताओंका उपवन, नंदनवन ।

देवाराधन—पु० [सं०] देवताको प्रसन्न करनेके लिए किया जानेवाला पूजा-पाठ आदि ।

देवारि—पु० [सं०] असुर, दैत्य ।

देवारी, देवाली—० [सं०] दीपावली ।

देवार्चन—पु०, देवार्चना—० [सं०] देवताका पूजन ।

देवार्पण—पु० [सं०] देवताके निमित्त किसी वस्तुका उत्सर्ग; इस कर्मके फलका त्याग ।

देवाक्ष—पु० देनेवाला; (ला०) देचनेवाला । † ० [सं०] दीवार ।

देवाक्षय—पु० [सं०] 'देवागार' ।

देवाला—पु० दे० 'देवाला' ।

देवालेई—० [सं०] देव-लेन ।

देवाक्षय—पु० [सं०] दे० 'देवागार' ।

देवाक्षय—पु० [सं०] दे० 'देवागार' ।

देवाक्ष—पु० [सं०] द्रवका घोटा, उषैःअवा ।

देवाहार—पु० [सं०] अमृत; देवोंके योग्य आहार, चर ।

देविक, देविक—वि० [सं०] देव-संबंधी; स्वर्गीय; धर्मात्मा ।

देविका—० [सं०] देवियोंका एक गौणवर्ग; सुधिधिरकी पत्नी और यौधेयकी माता; एक नदी; चतुरा; एक देश ।

देविता(स्)—पु० [सं०] जुमारी ।

देवी—० [सं०] देवताकी पत्नी; आधा शक्ति, दुर्गा; सर-स्वती; सावित्री, उच्चवर्गकी विधाविता स्त्रियोंकी एक उपाधि; राममहिषी, पटाली; (ला०) सुशीलता, सदाचार आदिसे

युक्त स्त्री; सर्वसंक्रांति जो देवीस्वरूप मंगलमयी मानी जाती है; इवामा पक्षी; नागरमोषा; पाठा; हक; अलसी, तीसरी; शालग्रणी, सारिवन। -कोट-पु० बाणाक्षरकी नगरी, शोणितपुर। -युद्ध-पु० मगवतीका मंदिर; राज-महिषीका निजी कमरा। -पुराण-पु० एक पुराण जिसमें दुर्गाका माहात्म्य वर्णित है। -आयवत्त-पु० इस नामका एक पुराण जिसमें भगवती दुर्गाका माहात्म्य आदि वर्णित है (कुछ विद्वान् इसे महापुराण तथा कुछ उपपुराण मानते हैं)। -सूक्त-पु० ऋग्वेदमें एक देवी-विषयक सूक्त; दुर्गासप्तशतीके अंतर्गत एक देवीस्तोत्र।

देवी (विद्) -पु० [सं०] दे० 'देविता'। क्रीडा करनेवाला; जुआरी।

देवेंद्र-पु० [सं०] देवताओंके अधिपति इन्द्र।

देवेज्य-पु० [सं०] इन्द्ररूपित।

देवेश, देवेश्वर-पु० [सं०] इन्द्र।

देवेश्वर्य-पु० [सं०] परमेश्वर, विष्णु।

देवेशी-स्त्री [सं०] देवी; पार्वती।

देवेश-वि० [सं०] देवताकी श्रिय। पु० महाभेदा; गुग्गुलु।

देवेश-स्त्री [सं०] विजौरा जीवू।

देवै-स्त्री० देवकी।

देवैषा-पु० देनेवाला।

देवीक्षर-पु० [सं०] देवताके लिए अलग की हुई जावदाद।

देवीःश्वान-पु० [सं०] छ मासकी वीग-मिद्वीके बाद विष्णुका मासिक-छुट्टा एकादशीकी शेषकी श्रम्यासे उठना।

देवीधान-पु० [सं०] देवताओंके उधान-नंदन, चैत्ररथ, वैराज और सर्वतोभद्र (त्रिकादशेके मतसे इनके नाम हैं-वैराज, चैत्ररथ, मैत्रक और शिषकावण)।

देवीधाम्ना-पु० [सं०] देवताके कोपसे होनेवाला उन्माद।

देवीक(स्) -पु० [सं०] देवताओंका वासस्थान, सुमेरु।

देव-पु० [सं०] स्वान्; मुक्त; क्षेत्र; विभाग; एक राग।

-कली-स्त्री० एक रागिनी। -कार-पु० एक राग।

-कारी,-पाली-स्त्री० एक रागिनी। -गांधार-पु०

एक राग। -गारिज-पु० जैनमतके अनुसार गार्हस्थ्य-

धर्म जिसके बारह भेद हैं। -ज-वि० देशमें उत्पन्न; जो

बौद्धचालकी भाषामें त्वत् उत्पन्न हो गया हो (बह् शब्द)।

-धर्म-पु० देशके अनुरूप धर्म, देशविशेषके लिए उचित

धर्म; देशविशेषमें प्रचलित आचार-विचार। -निकाछा-

पु० [हिं०] निर्वासनका दंड। -अक-पु० देशका हित

एवं उचित चाहनेवाला, देशानुरागी व्यक्ति। -अक्ति-

स्त्री० देशहितकी कामना, देशप्रेम। -आषा-स्त्री०

देशविशेषकी भाषा, किसी देशकी प्रचलित भाषा। -मछार-

पु० एक राग। -रूप-पु० औचित्य, उपयुक्तता।

-व्यवहार-पु० स्वानविशेषकी प्रथा; देशका रिवाज।

-रूप-पु० महाराष्ट्र भाषणोंका एक भेद। वि० देशमें

स्निग्ध।

देशक-पु० [सं०] शासक; शिक्षक; मार्गप्रदर्शक।

देशमा-स्त्री० [सं०] शिक्षा, उपदेश।

देशांकी-स्त्री० एक रागिनी।

देशांतर-पु० [सं०] दूसरा देश, विदेश; उत्तर और दक्षिण

भूतकी मिथानेवाली रेखासे पूर्व या पश्चिमकी दूरी।

देशांतरी (रिद्) -वि० पु० [सं०] विदेशी।

देशाका-पु० [सं०] एक रागिनी।

देशाक्षर-पु० [सं०] देशविशेषमें प्रचलित रीति-रिवाज,

आचार-व्यवहार।

देशाद्वय-पु० [सं०] मित्र-मित्र देशोंमें भ्रमण, पर्यटन

करना।

देशास्तिवि-पु० [सं०] विदेशी, अन्य देशका निवासी।

देशिक-पु० [सं०] पथिक; उपदेशक; गुरु; स्वान्से परि-

चित व्यक्ति।

देशित-वि० [सं०] जिसे आदेश दिया गया हो; आदिष्ट;

जिसे आदेश दिया गया हो; जिसे बतलाया गया हो।

देशिनी-स्त्री० [सं०] तबली बैंगली।

देशी-वि० स्वदेशमें उत्पन्न या बना हुआ; अपने देशका;

स्वदेश-सम्बन्धी; देशका; देश-सम्बन्धी। स्त्री० [सं०] एक

रागिनी; स्वान या देशविशेषकी बोली।

देशीय-वि० [सं०] दे० 'देशी'।

देश्य-वि० [सं०] जिमें प्रमाणित करना हो; स्वानीय;

प्रातीय; से दूर नहीं; देशमें उत्पन्न। पु० प्रत्यक्षदर्शी,

चक्षुमदीद गवाह; देशका निवासी; प्रमाणित किया जाने-

वाला विषय, पूर्वस्थ।

देश्य-वि० [सं०] बहुत उदार; उद्द। पु० भोजी।

देश-पु० दे० 'देश'। -निकाछा-पु० दे० 'देशनिकाछा'।

-बाछ-वि० अपने देशका, स्वदेशी।

देशका, देशक-पु० दे० 'देश'।

देशावर-पु० विदेश, परदेश।

देशावरी-वि० देशावरका, विदेशी।

देशी-वि० दे० 'देशी'।

देशभर-वि०, पु० [सं०] शरीरमात्रका पोषण करने-

वाला; पेटू।

देह-स्त्री० [सं०] शरीर, तन; जीवन, जियगी। पु० लेपन।

-कर-पु० पिता। -कसां(रु)-पु० पचमहाभूत; सर्व;

भ्रम; पिता। -कृत्-पु० पचमहाभूत; परमेश्वर।

-कोष-पु० पक्ष, डैना, चर्म। -क्षय-पु० शरीरका

नाश; रोग। -ज-पु० पुत्र। -जा-स्त्री० पुत्री।

-व्याग-पु० शृङ्ख। -द-पु० पारा। -दीप-पु०

औंस। -धारक-पु० अस्त्र, हथौड़ी; शरीर, शरीर धारण

करनेवाला; आत्मा। -धारण-पु० शरीर धारण करना,

जन्म लेना; प्राणरक्षा। -धारी (रिद्)-पु० वह जिसने

शरीर धारण किया हो, शरीरी, प्राणी। -धि-पु० डैना,

पंख। -धृक्(रु)-पु० बाहु। -पात-पु० देशान्,

शृङ्ख। -बंध-पु० शरीरका ढाँचा। -बद्ध-वि०

जिसने शरीर धारण किया हो, बध्मान्; मृतिमान्।

-भाक्(ज)-पु० शरीर, विशेषतः मनुष्य। -भृक्

(ज)-पु० जीव; सर्व। -भृत्-पु० दे० 'दिहधारी'।

-वात्रा-स्त्री० जीवका शरीर छोड़कर दूसरे लोकमें जाना;

शरीरत्याग, मरण; शरीररक्षा; जीवन-यापन; भोजन।

-लक्षण-पु० शरीरपरका कान्ता दाग, तिल। -लंघा-

रिणी-स्त्री० पुत्री, कन्या। -सार-पु० मज्जा। -सु-

कूटना-शृङ्ख होना। -छोड़ना-मरना। -धरना-

शरीर धारण करना। -विसरना-सुषुप्त हो डैना,

अपनेकी भूल जाना ।

देह-पु० [अ०] गाँव । -काम-पु० ग्रामवासी; किसान ।
वि० गँवार, उग्रज । -कामिबल-श्री० गँवारपन; देहाती होनेका भाव । -कामी-वि० देहाती; गँवार ।

देहर-पु० नदीके पासकी नीची भूमि ।

देहरा-पु० देवाल्य, मंदिर-‘कबीर दुनिया देहरे सीत नवाचन जाय’-साखी; * मनुष्यशरीर ।

देहरि, देहरी-श्री० दे० ‘देहली’ ।

देहला-श्री० [सं०] मदिरा, शराब ।

देहलि, देहली-श्री० [सं०] दरबानेकी चौखटमेंकी नीचे वाली छकरी जिसे लॉफकर घरमें घुसते-निकलते हैं ।

-दीप-, दीपक-पु० देहलीपर रखा हुआ दीया (जो बाहर-भीतर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है); अर्थात्कारका एक भेद जहाँ बीचमें पकनेवाले शब्दका अर्थ दोनों ओर लगाया जाय । -०म्बाध-पु० एक तर्कप्रणाली जिसके अनुसार किसी वस्तुमें दो कार्य एक साथ उसी प्रकार सिद्ध हो सकते हैं जिस प्रकार देहलीपर रले दीपकसे बाहर-भीतर दोनों ओर उजाला हो जाता है ।

देहबंत-वि० शरीरवाला । पु० देहधारी ।

देहांत-पु० [सं०] मृत्यु, मरण ।

देहांतर-पु० [सं०] दूसरा शरीर । -प्राप्ति-श्री० जीवात्माका एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना ।

देहात-श्री० गाँव, गाँव ।

देहाती-वि० गाँवका; गाँव-संबंधी; गाँवमें होनेवाला; गँवार । -पन-पु० देहाती होनेका भाव; गँवारपन ।

देहासीत-वि० [सं०] जो देहमें परे हो; देहाभिमानसे रहित, विदेह ।

देहात्म-पु० [सं०] शरीर और आत्मा । -ज्ञान-, प्रत्यक्ष-पु० देह और आत्माके अन्तर्गत ज्ञान । -बाध-पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार देह ही आत्मा है, देह-भिन्न आत्मा नामका कोई पदार्थ नहीं । -बाध- (विद्)-पु० देहात्मवादकी माननेवाला, चार्वाकमतका पोषक ।

देहाध्यास-पु० [सं०] देहकी आत्मा या देहधर्म (मनुष्य, पशु, दुबला, मोटा आदि होना)की आत्माका धर्म समझनेका भ्रम ।

देहावरण-पु० [सं०] जिरह; वस्त्र ।

देहावसान-पु० [सं०] देहांत, मृत्यु ।

देही-श्री० शरीर ।

देही (विद्)-पु० [मं०] देहधारी जीव, शरीरी ।

देहेधर-पु० [सं०] देहका स्वामी, आत्मा ।

देहोद्भव, देहोद्भूत-वि० [सं०] सहज, जन्मजात ।

देह-पु० आकाश; दैव ।

देवा-पु० दे० ‘दायज’ ।

दैतेय-पु० [सं०] असुर; दैव । -गुरु-, पुरोचा(बस), -पूज्य-पु० शुक्राचार्य । -निबूध-पु० विष्णु ।

-माता(शु)-श्री० दिति । -मेदजा-श्री० पृथिवी ।

दैत्य-पु० [सं०] कश्यपके वे ऋकर्मा पुत्र जो उनकी पत्नी दितिके गर्भसे उत्पन्न हुए, दितिकी संतान (पुराणानुसार

वे देवताओंके शत्रु गिने जाते हैं); भीमकाय और अत्यंत बलशाली मनुष्य । -गुरु-पु० शुक्राचार्य । -दैव-पु०

वक्त्र; बाहु । -पृथिवी-श्री० तारा देवीके अर्चनमें एक कर्मसूत्र । -पति-पु० हिरण्यकशिपु । -पुरोचा(बस)

पूज्य-पु० शुक्राचार्य । -माता(शु)-श्री० दिति ।

-मेदज-पु० गुरुगुरु । -मेदजा-श्री० पृथिवी ।

-बुधा-पु० दैत्यका युग जो देवमानसे बारह हजार वर्षोंका होता है । -सेना-श्री० प्रजापतिकी कन्या ।

दैत्या-श्री० [सं०] दैत्यजातिकी स्त्री; मदिरा; सुरा नामक गंधद्रव्य; चटोपधि ।

दैत्यारि-पु० [सं०] विष्णु; देवता ।

दैत्यैश्व-पु० [सं०] दैत्योंका राजा ।

दैत्येय-पु० [सं०] शुक्राचार्य ।

दैर्घ्यदिन-अ० [सं०] दिनोद्दिन; प्रतिदिन । वि० प्रतिदिन होनेवाला, नित्यका ।

दैर्घ्यिनी-वि० श्री० [सं०] दे० ‘दैर्घ्यदिन’ । श्री० राज-नामचा, बावरी ।

दैर्घ्य-पु० [सं०] दीनता; शोक; निर्बलता; नीचता । वि० दिन-संबंधी, देनेवाला । * श्री० देनेकी क्रिया; दी हुई वस्तु ।

दैर्घ्य-वि० [सं०] प्रतिदिनका; प्रतिदिन होने या निकलनेवाला; दिनसंबंधी ।

दैर्घ्य-पु० [सं०] दीनता, दरिद्रता; कातरता; एक सचारी भाव ।

दैवत-पु० दे० ‘दैत्य’-हैराकत दससीसकी दैवत बाहु हजार’-रामचंद्रिका ।

दैवा-पु० दैव, दई । श्री० दार्ई । अ० एक आश्चर्य या शोकवृत्तक शब्द ।

दैर्घ्य, दैर्घ्य-पु० [सं०] दीर्घता, लंबाई, बर्बाद ।

दैव-पु० [सं०] पूर्व जन्ममें उपाजित कर्म जिसका शुभाशुभ फल वर्तमान जन्ममें योगते है, भाग्य, नियति, अष्ट, होनहार; देवता; ईश्वर; विधाता; आकाश; आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक; एक प्रकारका आद्य; तर्पणके लिए विहित तीन प्रकारके तीर्थोंमेंसे एक, देवतीर्थ । वि० देवता-संबंधी; देवताका; देवता द्वारा प्रेरित । -कृत-वि० होनहार; प्राकृतिक । -कोविद्-पु० ज्योतिषी । -गति-श्री०

ईशरीय प्रेरणा; भाग्यका फेर । -वित्तक-पु० ज्योतिषी । -ज-पु० ज्योतिषी । -संज्ञ-वि० भाग्याधीन । -तीर्थ-पु० दे० ‘देवतीर्थ’ । -दीप-पु० आँल । -दुर्विपाक-पु० विषिकी प्रतिकूलता, भाग्यका घुरा फेर, दुर्भाग्य ।

-दोष-पु० भाग्यकी खोटाई । -पर-वि० जो भाग्यकी दुहाई दे; जो भाग्यके भरोसे बैठे रहे, नियतिवादी ।

-प्रमाण-वि० भाग्यके भरोसे रहनेवाला । -प्रश्न-पु० भावी शुभाशुभ संबंधी जिज्ञासा; ज्योतिष; भावी शुभाशुभकी सूचिका एक प्रकारकी आकाशवाणी; भविष्यकथन ।

-बुधा-पु० देवताओंका युग जो देवमानसे बारह हजार वर्षोंका होता है । -योग-पु० समीप, बलिष्ठाक । -

-लेखक-पु० ज्योतिषी । -वर्ष-पु० देवताओंका वर्ष जो ३३१५२१ सौर दिनोंका होता है । -वसतः, वसतः-अ० संयोगसे, अकसात् । -बाणी-श्री० आकाशवाणी;

संस्कृत भाषा । -बासी(विच)-वि० दे० 'दैवत' । -विद्-पु० ज्योतिषी । -विवाह-पु० वह विवाह जिसमें कन्या यज्ञ करानेवाले कथिक्को ब्याह दी जाय । -आह-पु० देवनिमित्तक आह । -सर्ग-पु० देवताओं की सृष्टि जिसके आठ भेद होते हैं-आकाश, प्राजापत्य, ऐन्द्र, ऐन, गार्ग्य, राक्ष, राक्षस और वैशाच । -हीन-वि० अभागा, मंदभाग्य । दैवत-पु० [सं०] देवता; देवताओंका समूह; देवप्रतिमा; निरुक्तका तीसरा कांड । वि० देवता-संबंधी । -पति-पु० ईश्वर ।

दैवत्व-पु० [सं०] देवता । दैवक, दैवक-पु० [सं०] प्रेतपूजक । दैवाकरि-पु० [सं०] शक्ति, यम । दैवाकरी-स्त्री० [सं०] यमुना । दैवागत-वि० [सं०] आकस्मिक, जो दैवयोगसे हुआ हो । दैवात्-अ० [सं०] संयोगवश; दैवयोगसे । दैवात्म्य-पु० [सं०] दैवी उपास, आकस्मिक अनर्थ । दैवावीन, दैवायत्त-वि० [सं०] दे० 'दैवत' । दैवारिच-पु० [सं०] शस्त्र । दैवासुत-पु० [सं०] देवताओं और असुरोंका बेटा । दैविक-वि० [सं०] देवता-संबंधी; देवताके निमित्त किया हुआ; देवकृत ।

दैवी-वि० देव-सम्बन्धी; ईश्वरीय, आकस्मिक । स्त्री० [सं०] दैवविवाहकी विधिसे विवाहित स्त्री । वि० स्त्री० दे० 'दैव' । दैवी(विच)-पु० [सं०] ज्योतिषी । दैवोपहत-वि० [सं०] अभागा, मंदभाग्य । दैव्य-वि० [सं०] देवता-संबंधी । पु० भाग्य; दैवी शक्ति । दैविक-वि० [सं०] देश-सम्बन्धी; देशजनित; स्थान-विशेषसे परिचित; बतलाने या दिखानेवाला । पु० शिक्षक, युक्त मार्गदर्शक ।

दैष्टिक-वि० [सं०] बदा हुआ । पु० भाग्यवादी । दैष्टिक-वि० [सं०] देव-सम्बन्धी, शारीरिक; देहजनित । दैष्ट-वि० [सं०] शारीरिक । पु० आत्मा । दौंचना-सं० क्रि० दवाना; दवानमें डालना । दौः(दौस्)-पु० [सं०] बाहु, भुजा । शिखर-पु० कथा । -सहस्रशत-पु० कांस्योपायुज ।

दो-वि० एक और एक, एकमें एक अधिक; कुछ । पु० दोकी संख्या, २ । -अमली-स्त्री० एक स्थानपर दो राजाओंका शासन, द्वैध शासन । -आसना-वि० दुबारा सीना या चलाया हुआ । -आष, -आषा-पु० दो नदियोंके बीचका भूखंड । -पृष्ठ-वि० कुछ, थोड़े, सख्यामें कम । -शला-वि० वर्णमकर । -युग्मा-वि० दे० 'द्विगुण' । -चंद्र-वि० दुपुग । -चार-अ० दे० 'दो-एक' । -चिन्ता-वि० जिसका ध्यान हृन्-उपर बैठा हो । -चिन्ता-स्त्री० चिन्ता एकाम न रहना, व्यग्रता । -जर्षी-स्त्री० दोनली बंदूक । -ज्वात्-अ० घुटनीके बल । -जीवा-स्त्री० गमिणी । -टूक-वि० खरा, साफ-साफ । -तरफा-वि० दोनों ओरका; दोनों पक्षोंके अनुकूल । -तला, -तल्ला-वि० दो तलोंवाला, दो-मजिहा । -तही-स्त्री० दुबारा मोटा कपडा जो दरी और चादरके

बीचमें बिछाया जाता है । -तारा-पु० एक तरहका दुश्मल; दो तारोंवाला एक बाजा । -दरी-स्त्री० दुनिया जिसके दो द्वार हैं-जन्म और मरण । -दृक्-पु० दे० 'द्विदृक्' । -दृस्ती-स्त्री० तुलवारका दोहन्था वार; कुशतीका एक पैच । वि० दोनों हाथोंका; दोनों हाथोंसे किया हुआ (वार) । -दामी-पु० दे० 'दुदामी' । -दिला-वि० दे० 'दोचिन्ता' । -दिली-स्त्री० दे० 'दोचिन्ती' । -घारा-वि० जिसमें दोनों ओर धार हो । स्त्री० एक पौषा । -गली वि० स्त्री० जिसमें दो नाछें हों । -पल्ला-वि० दो पतों वाला (नगीमा) । -पलिया, -पल्ली-वि० स्त्री० जिसमें दो पछे हों । -पहर-स्त्री० दिनका वह समय जब सूर्य सिरपर आ जाता है, मध्याह्न । -पहरी-स्त्री० दे० 'दोपहर' । -पीछ-पु० कागज आदिका एक ओर छपनेके बाद दूसरी ओर छपना । -पौषा-पु० आधी ठोली पान । -फसली-वि० जिसमें दो फसलें उपजायी जावें । -बारा-अ० एक बार और । -बाखा-वि० दुगना । -भाषिया-पु० दे० 'दुभाषिया' । -मंजिला-वि० दो तलोंवाला । -मट-स्त्री० बाख मिली हुई मिट्टी । -महल्ला-वि० दो मंजिलोंवाला, दोतला । -मुंरा-वि० जिसमें दो मुंछ हो । -सौंघ-पु० एक सौंघ जिसकी दुम मोटी होनेके कारण दूसरे मुंछकीसी जान पड़ती है; वह मनुष्य जो दो तरहकी शान्तें करे, कपटी मनुष्य । -रंगा-वि० दे० 'दुर्गा' । -रसा-वि० जिसमें दो प्रकारके स्वाद या रस हों । -रखा-वि० कभी एक तरहका, कभी दूसरी तरहका (व्यवहारादि); दोनों तरह समान रंग या बेल-दूदेवाला । -लबा-वि० दो लहोंवाला । -शगवा-पु० दो डालोंवाला शमादान । -खाला-वि० दो वर्षका; दो वर्षका पुतला । -सूती-स्त्री० दे० 'दुदूती' । -हथक-पु० दोनों हाथोंमें मारा हुआ थपक । -हथ्या-वि० जिसमें दोनों हाथोंमें काम लिया जाय; जिसमें दोनों हाथोंका उपयोग हो । -हरक-पु० पिंकार, लानत । मु० -औंलौं देखना-समान शक्ति न देखना । -दिनका-हालका; बहुत कम उम्रका । -मावोंपर चढ़ना या पैर रखना-दो पक्षोंका अवलंब करना; दो वस्तुओंका सहारा लेना । -सिर होना-मरनेको तैयार होना, मौतको न्यौता देना ।

दोहा-वि०, पु० दे० 'दो' । दोड, दोड-वि० दोनों । दोकड़ा-पु० दुकड़ा । दोख-पु० दे० 'दोष' । दोखना-सं० क्रि० दोषारोपण करना, दोषी ठहराना, येव लगाना । दोखी-वि० दे० 'दोषी' । दोगा-पु० एक तरहका छपा हुआ लिहाफ; पानीमें धोला हुआ चूना । दोग्घा(गुह)-पु० [सं०] ग्वाला; दुहनेवाला; बछड़ा; चारण; स्वार्थवश कोई कार्य करनेवाला व्यक्ति । दोग्घी-स्त्री० [मं०] दूध देनेवाली गाय या धाया । दोष-पु० [सं०] दुहनेवाला । दोष-स्त्री० संकट, क्लेश; द्वैष्य, असमंजस, पक्षोपेक्ष;

दबाव ।

दोषन*-श्री० दोषः दबाव डालनाः दबावमें पड़ना ।

दोषना-स० कि० दबाव डालना ।

दोष*-श्री० दूज, द्वितीया तिथि ।

दोषल्ल-पु० [का०] हल्लाय चर्मेके अनुसार बह स्थान जहाँ कयामनके बाद पापी जायेंगे, जहन्नुम, नरक ।

दोषल्लरी-वि० दोषल्ल संर्षणीः दोषल्लका, नारकीयः दोषल्ल-में मेजने योग्य (पापी)ः बहुत बुरा पापी ।

दोषल्लग*-पु० दे० 'दोषल्ल' ।

दोषना-स० कि० किसीके सामने कहीं हुई बातसे मुकरना ।

दोषना-स० कि० दोहनेका काम किसी दूसरेसे कराना ।

दोष-पु० [सं०] बछड़ा ।

दोषक-पु० [सं०] एक वर्णवृत्त ।

दोषन-पु० दोषावः दो पहाड़ोंके बीचका भूभाग; दो नदियोंका समुद्र; दो बस्तुओंका मेल; काठका लोखणा किया हुआ वह लंबा डुन्डू जिससे धानके खेतमें पानी पहुँचाते हैं; अनाजकी एक माप, ढोण ।

दोना-पु० पत्तोंका बना हुआ कटोरेकी शक्तीका पात्र; दौना ।

दोनिधा, दोनी-श्री० छोटा दोना ।

दोनी-वि० पूर्वकथित या ऐने दो जिनमेंसे एक भी छोड़ा न जाय, उभय ।

दोषल्ल*-पु० दोष, लाक्षण-'दोषल्ल देत सबै मोहोको उन पठयो मै आयो'-सूट ।

दोषा-पु० दुविधा; दो स्थितियोंके बीचकी अवस्था ।

दोष*-वि० दोनों ।

दोषम-वि० [फा०] दूसरे दृष्टका, दूसरे नंबरका ।

दोर-पु० [सं०] रज्ज, डोर । । श्री० दूसरी बार जोती हुई जमीन ।

दोरल्ल-पु० [सं०] बीणाके तारोंको बाँधनेका तौल; डोरी ।

दोर-'दोम्'का समासगत रूप । -ब्रह्म-वि० बलवान् । पु० बाहुस्तम्भ रोग । -द्वंद्व-पु० भुजद्वंद्व; लंबी, मजबूत बाँह । -मूल-पु० भुजमूल, कक्ष । -खुद-पु० बाहु-युद्ध, कुश्ती ।

दोल-पु० [सं०] झूला; झूलना; दोलोलसव; चंदोल, डोली ।

दोलन-पु० [सं०] झूलना ।

दोला-श्री० [सं०] झूला, हिंदोला; अनिश्चय; बड़ी डोली; भीलका पैधा; अर्ध खींचनेका अवका । -द्वंद्व-पु० झूला; अर्ध उतारनेका अवका । -खुद-पु० वह युद्ध जिसमें आत-बार अनिश्चित हो ।

दोलाधिकद्व-वि० [सं०] झूलपर चढ़ा हुआ; (ला०) जिसका निश्चय न हो ।

दोलायमान-वि० [सं०] झूलता हुआ; अस्थिर, दुर्लभ; संभाव्य-श्रुत ।

दोलायित-वि० [सं०] दे० 'दोलित' ।

दोलिका-श्री० [सं०] झूला; डोली ।

दोलित-वि० [सं०] झूलता हुआ; अस्थिर ।

दोली-श्री० [सं०] डोली; पालना, झूला ।

दोलीस्व-पु० [सं०] फाल्गुनकी पृथिमाकी पड़नेवाला वैष्णवोंका एक उत्सव जिसमें हिंदोलेपर कृष्णकी प्रतिमाकी

झुलाने है ।

दोलीझरी-श्री० [फा०] कौमाराल्ला, कौमार्य ।

दोलीझा-श्री० [फा०] कुमारी कन्या ।

दोष-पु० [सं०] अपराध, कट्टर; अवयुग, ऐव; विकार, खराबी; लाँछन, कलंक; पाप, कट्टव; दुष्टि; अशुद्धि; बछड़ा; गोबुद्धि; किसी बातका खंडन; रसकी अपकृष्ट बनानेवाली काम्यगत दुष्टि; विधिके अतिक्रमणसे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकारका अष्ट (सी०); अमध्य-अक्षण आदिसे उत्पन्न होनेवाला पाप; शरीरमें रहनेवाले दात, पित्त और कफ जिनके कोषसे शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है; इन दोषोंसे उत्पन्न विकार; राग-द्वेषादि जो मनुष्यकी सुकर्म या दुष्कर्ममें प्रवृत्त करते हैं । -कर, कारी(रिज्), -कृष्ट-वि० दुराई करनेवाला, अनिष्टकर । -प्राही(हिज्)-वि० खल, दुष्ट । -ज्ज-वि० दात, पित्त और कफके दोषोंका क्षात करनेवाला । पु० ऐसी दवा आदि । -ज्ज-वि० विद्वान्, मनीषी । -ज्ज-पु० दात, पित्त और कफ-ये तीन दोष । -द्वि-वि० ऐव हूँदनेवाला । -पत्र-पु० वह कागज जिसपर अपराधीके अपराधोंका खोरा लिखा हो । -भाक्(ज्) -वि० दोषी, अपराधी ।

दोष-पु० [सं०] दोष; बछड़ा ।

दोषण-पु० [सं०] दोषारोप ।

दोषन*-पु० दोष, अपराध, दूषण ।

दोषना*-स० कि० दोष लगाना, ऐव लगाना ।

दोषल्ल-वि० [सं०] सदीप, दोषयुक्त ।

दोषा-श्री० [सं०] रात्रि; भुजा । -कर-पु० चंद्रमा ।

-बलेशी-श्री० वनवर्षिका, वनतुलसी । -सिद्धक-पु० प्रदीप, दीपक ।

दोषाकर-पु० [सं०] दे० दोष, समूह । वि० जिसमें अनेक दोष हों ।

दोषारोपण-पु० [सं०] दोष लगाना ।

दोषावह-वि० [सं०] दोषपूर्ण, दोषोंसे भरा हुआ ।

दोषास्य-पु० [सं०] प्रदीप, दीपक ।

दोषिक-पु० [सं०] रोग । वि० दोषयुक्त ।

दोषित*-वि० दोषयुक्त ।

दोषी(चिन्)-वि०, पु० [सं०] अपराधी, अभियुक्त; ऐसी; पापी ।

दोषैकद्व(श्)-वि० [सं०] छिद्रान्वेशी, ऐव हूँदनेवाला ।

दोस*-पु० दोषा † मित्र । -दारी†-मित्रता, दोस्ती ।

दोसत*-पु० दोस्त, मित्र (साक्षी) ।

दोसा*-श्री० दे० 'दोषा' ।

दोस्त-पु० [फा०] मित्र, सुहृद् । -द्वार-पु० दोस्त ।

-द्वारी-श्री० दोस्ती । -नवाझ-पु०, वि० मित्रोंके

प्रति सहायुपेति रखनेवाला ।

दोस्ताना-पु० [फा०] मित्रता; मित्रताका व्यवहार । वि० दोस्तीका, मित्रोचित ।

दोस्ती-श्री० मित्रता, सौहार्द । † दो दोहर्था एक साथ बेलकर बनायी हुई रोटी ।

दोस्व-पु० [सं०] सेवक; सेना; क्रीडा; क्रीडक ।

दोह*-पु० दे० 'दोह' । [सं०] दुधनेकी क्रिया, दोहन; दूध, दुधपात्र; किसी बीजसे लाभ उठाना । -ज-

पुं दूष ।

दोहना-श्री० दुर्भाग वह विधवा जिसे किसी दूसरे ने रख लिया हो, उपपत्ती ।

दोहना-पुं लक्ष्मीका लक्ष्मा, नाती ।

दोहना-पुं [सं०] गर्भ; आकृति; गर्भिणीकी इच्छा; ज्योतिष-के अनुसार कुछ विशिष्ट पदार्थ जिनका सेवन विश्वास, वात ताप तिथि-संबंधी बाह्यिक दोषोंको शांत करता है; कवि-समयके अनुसार रमणियोंके रथवां, पदाघात, हृष्टिपात आदि जिनसे प्रियंगु, अशोक, तिळक आदि वृक्षोंमें फूल लगते हैं । -लक्षण-पुं गर्भ-संबंधी लक्षण; भ्रूण; जीवन-की एक अवस्थासे दूसरीमें प्रवेश ।

दोहदवती-श्री० [सं०] वह गर्भिणी जिसे किसी वस्तुकी इच्छा हो ।

दोहदाम्बिता-श्री० [सं०] दे० 'दोहदवती' ।

दोहवी (विष्)-वि० [सं०] जिसे प्रबल इच्छा हो ।

दोहना-पुं [सं०] दुहनेका काम; दुग्धपात्र; (श्री०) घृतना ।

दोहनी-श्री० [सं०] दूध दुहनेका पात्र; दुहनेकी क्रिया ।

दोहरा-श्री० एक तरहकी दोहरा चादर जिसमें मगजी लगायी जाती है ।

दोहरना-अ० क्रि० दो परत होना, दोहरा होना; दुबारा होना । सं० क्रि० दोहरा करना ।

दोहरा-वि० दो परतोंका; दुबना । पुं० दोहा ।

दोहरना-स० क्रि० किसी बातको बार-बार कहना; पुनरावृत्ति करना; अशुक्ति दूर करनेके लिए एक बार और देख जाना; * दोहरा करना ।

दोहरी-वि० श्री० दो तरह की दुर्ग; दो परतोंकी; दुगुनी ।

-बास-श्री० दो तरहकी बात ।

दोहल-पुं [सं०] इच्छा; गर्भिणीकी इच्छा; दोहद; अशोक वृक्ष ।

दोहलवती-श्री० [सं०] दे० 'दोहदवती' ।

दोहली-श्री० [सं०] अशोक; आक ।

दोहा-पुं [सं०] एक छंद जिसके प्रथम और छतरीय चरण-में ११-१२ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमें ११-११ मात्रार्थ होती है; एक संकीर्ण राग ।

दोहाई-श्री० दुहाई, गुहार, पुकार; * कविता ।

दोहाग-पुं० दुर्भाग, बदकिस्मती ।

दोहापनय-पुं० [सं०] दूध ।

दोहिल-पुं० दोहिल, लक्ष्मीका लक्ष्मा । वि० [सं०] जिसे दुहा गया हो ।

दोही-श्री० एक छंद; * दुहाई-किरी धग राखे रूपकी दोही-वन० ।

दोह-वि० [सं०] दुहने योग्य । पुं० दूध ।

दोहा-श्री० [सं०] गाव ।

दोह-अ० दे० 'दो' । श्री० दे० 'दो' ।

दोहना-अ० क्रि० दे० 'दमकना' ।

दोहना, दोहरा-पुं० तपी हुई भरसीपर होनेवाली शीघ्र क्षतुकी अल्प वृद्धि, तेजीसे आकर निकल जानेवाली बर्षा, तेज गीछार-आते ही उन्होंने गालियों और धमकियोंका दौघना-सा पिताजीपर बरसा दिया-विद्वान्नी; शीरगुल ।

दोहना-स० क्रि० दवान डालकर लेना । अ० क्रि० हट पकड़कर लेना ।

दोही-श्री० ठोकर लगनेसे धातुके बरतनमें पकी हुई पचकन, चिपटापन ।

दोही-श्री० दौघ, दौघ ।

दोहील-पुं० [सं०] दुरा स्वभाव; दुष्टता ।

दोहनाधिक-पुं० [सं०] द्वारपात्र; ग्राम-निरीक्षक ।

दोह-श्री० दध, ननाभि; आग; सताप ।

दोहल, दोहल-वि० [सं०] दुकूल-संबंधी; दुकूलका । पुं० बारीक रेशमी कपड़ा; रेशमी कपड़ेसे बका हुआ रथ ।

दोह-श्री० दोहनेकी क्रिया या भाव; दूतगमन; उठाना; गति, पहुँच; बुद्धिकी पहुँच; सवेग आक्रमण, जोरदार हमला; किसी कार्यकी सिद्धिके लिए बहुत अधिक चक्कर लगानेकी क्रिया; दोहनेकी प्रतियोगिता । -धूप-श्री० बार-बार इधरने उधर आना-जाना; जोरदार कोशिश, भरपूर उद्योग । सु०-मारना, लगाना-दूरतक जाना या पहुँचना; दूरतककी यात्रा करना; उद्योगमें कहीं बार-बार आना-जाना; दोहना ।

दोहना-अ० क्रि० अति वेगमें चलना, ऐसी द्रुत गतिसे गमन करना कि पाँव पृथ्वीपर पूरा न जमे; बहुत तेजीमें चलना; किसी कामके लिए बार-बार इधर-उधर आना जाना, हँसाना होना; कैलना; जाना ।

दोहादोही-श्री० स्वरा, जलवाजी; दौघधूप ।

दोहान-श्री० दोहनेकी क्रिया । दोह; दोहनेका क्रम; दोहनेका फेरा; आक्रमण; वेग; सिलसिला ।

दोहाना-स० क्रि० दोहनेके काममें लगाना; केरना (जैसे-दीवारपर कूँची दोहाना) ।

दोह-पुं० [सं०] दूतत्व, दूतका कार्य; संदेश ।

दोह-पुं० दमन । वि० दमन करनेवाला ।

दोना-पुं० एक पौधा जिसकी पत्तियोंमें विशेष प्रकारकी तीक्ष्ण सुगंध होती है; * दोना; द्रोणगिरि । * सं० क्रि० दमन करना, दवाना; तपाना ।

दोनागिरि-पुं० दे० 'द्रोणगिरि' ।

दोनाचल-पुं० दे० 'द्रोणगिरि' ।

दोह-पुं० [अ०] फेरा, चक्कर, घुमाव; समयका फेर, जमानेकी गरिष्ठ; चढ़ाई, आक्रमण; समय, युग; उन्नतिकाल; हाँक; धाक; प्रभाव; पारी । * श्री० दोह; आक्रमण; छापा-मार पुलिस । -दोहरा-पुं० बोलबाला, चलती । सु०-चलना-शराबके प्यालेका शरीर-पारीसे घनीबालीके पाम पहुँचाया जाना ।

दोहना-अ० क्रि० दे० 'दोहना' ।

दोहरा-पुं० बॉस, वेग आदिका टोकरा; [अ० 'दोह'] चारों ओर घूमना, चक्कर इधर-उधर आना-जाना; गश्त, जाँच-पकड़ या निरीक्षणके लिए अफसरका अपने इलाकेमें घूमना; समय-समयपर होने या उभरनेवाली बीमारीका आक्रमण, जब-तब आना-जाना; हमला । -जब-पुं० सत्र-न्यायालयका मुख्य न्यायाधीश । सु०-करना-जाँच-पकड़ या निरीक्षणके लिए अफसरका अपने इलाकेमें घूमना । -सिपुई करना-विचार या निर्णयके लिए अभिवृत्त या मुकदमेकी सेशन जबकी यहाँ भेजना । -

सिपुर्हो होना - विचार या निर्णयके लिए अभियुक्तका चेदन जयके यहाँ भेजा जाना। - (२) पर रहना या होना - अपने हलकेके निरीक्षण आदिके लिए अफसरका सरसे बाहर रहना या होना।

दौरात्म्य - पु० [सं०] दुरात्मा होनेका भाव, दुर्जनता; अंतःकरण, बुद्धि, स्वभाव आदिकी सदोपता।

दौरादौरी - श्लो० दे० 'दौडादौरी'।

दौरान - पु० [अ०] चकर, दौरा, जमाना; हेरफेर भाग्य; उन्न।

दौराना - स० कि० दे० 'दौराना'।

दौरित - पु० [सं०] दुराई; हानि, क्षति।

दौरी - श्लो० छोटा दौरा, छोटी टोकरी, चेंगेरी।

दौराज्य - पु० [सं०] दुरी गंध, बढबू।

दौरा - वि० [सं०] दुर्गका; दुर्ग संभवी।

दौराज्य - पु० [म०] निर्जनता; कष्ट; दुर्गति।

दौरा - पु० [सं०] कठिनता।

दौरा - पु० [सं०] अश्वमेध यज्ञ।

दौराज्य - पु० [सं०] दुर्जनता, दुष्टता।

दौराज्य - पु० [सं०] कष्टमय जीवन।

दौराज्य - पु० [सं०] दुर्बलता।

दौराज्य - पु० [सं०] ऐमी स्त्रीका पुत्र जिसका पति उसे चाहता न हो।

दौराज्य - पु० [सं०] भाग्यकी छोटाई, दुर्भाग्य।

दौराज्य - पु० [सं०] भाग्यका आपसका कलह।

दौराज्य - पु० [सं०] दुर्मेना होनेका भाव; दुरा व्यवहार; मानसिक कष्ट; शोक; नैराश्रय।

दौरा - पु० [सं०] दूर होनेका भाव, दूरत्व।

दौरा - पु० [सं०] दुराचारिता।

दौरा - पु० [म०] दुर्दृष्ट होनेका भाव, शत्रुता।

दौरा - पु० [सं०] दुर्दृष्ट होनेका भाव, कुदिलता, दुष्टता; शत्रुता; दोहद।

दौरा - पु० [सं०] मनकी छोटाई; लज्जता।

दौरा - पु० [सं०] गर्भवती स्त्री।

दौरा - श्लो० [अ०] धन, संपत्ति। - झाना - पु० वास-स्थान, घर (इसका प्रयोग वार्तालापमें किसीका घर पूछते समय करते हैं। उत्तरदाता 'गरीबखाना' शब्दका प्रयोग करता है)। - मंद - वि० धनाढ्य, मालदार। - मंदी - श्लो० धनाढ्यता, मालदारी।

दौरा - श्लो० दौलत।

दौरा - पु० [सं०] कच्छप, कछुआ।

दौरा - पु० [म०] इद्र।

दौरा - पु० [सं०] प्रतिहार, द्वारपाल।

दौरा - पु० [सं०] प्रतिहारिणी, द्वारपालिका।

दौरा - पु० [सं०] दुराचरण; दुष्कर्म; दुष्टता।

दौरा - वि० [सं०] होनवशमें उपपन्न।

दौरा - पु० [सं०] दुष्टता।

दौरा - पु० [सं०] दुष्टता; दुष्टता; दुष्टता।

दौरा - पु० [सं०] दुष्टताके पुत्र, मरत।

दौरा - पु० [सं०] वेदीका पेदा, नाती; कपिला गौका दूत; तिल; सद्ग, लकवार।

दौरा - पु० [सं०] दौहित्रका पुत्र।

दौरा - श्लो० [सं०] वेदीकी पेदा, नातिनी।

दौरा - श्लो० [सं०] दे० 'दिलाना'।

दौरा - पु० [सं०] दिन; स्वर्ग; आकाश; अग्नि; तीक्ष्णता।

दौरा - पु० [सं०] पक्षी। - वि० आकाशमें गमन करनेवाला।

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

दौरा - पु० [सं०] दे० 'अवर्ग'। - चर - पु० ग्रह; पक्षी। -

घोस, घोस-पु० दिन, दिवस।

घोहरा-पु० देवालय।

घौ (विह)-खी० [सं०] स्वर्ग; आकाश; दिन; प्रकाश; अग्नि; चमक।

घंक्षण-पु० [सं०] एक मान जो तौलके बराबर होता था।

घंग-पु० [सं०] नगरका एक भेद, घुरी।

घंकट, घाङ्क-पु० [सं०] एक बाजा, डुम्गी।

घरा-पु० दग, नेत्र।

घडिमा (मन्)-खी० [सं०] हडता।

घप्यन-पु० घर्षण-घर्षनसम आकास सवत जल अमृत हिमकर-रासी।

घस्त-पु० [सं०] पतला दही; रस; शुक्र; बूँद; चिनगी। वि० चूनेवाला।

घप्य-पु० [सं०] दे० 'द्रप्य'।

घम्भ-पु० [सं०] एक प्राचीन सिंहा।

घर्वती-खी० [सं०] मूसाकानी; नदी।

घर-पु० [सं०] तरल होना, पिघलना; तरल पदार्थ; तरल होकर बहनेकी क्रिया; क्षरण; किसी पदार्थका तरल रूपांतर; रस; आसब; भागना, पलायन; द्रव्य नामक गुण; परिहास; बेग; गति; क्रोधा। वि० तरल, पिघला हुआ; दोषता हुआ; चूता हुआ; बहता हुआ। -ज-पु० गुक।

-रसा-खी० लास; मोद। -शीर-वि० पिघलनेवाला।

घरक-वि० [सं०] बहनेवाला; क्षरण-शील; पलायनशील।

घरण-पु० [सं०] पिघलनेकी क्रिया, तरल होना; बहना; क्षरण; रिसना; भागना; दयाई होना। वि० दे० 'घरक'।

घरबा-अ० कि० तरल होना; पिघलना; पसीना; दयाई होना।

घराचार-पु० [सं०] छोटा पात्र; अजलि, चुल्ह।

घरिह-पु० [सं०] भारतका एक दक्षिणी प्रदेश; इस देशका निवासी; आसानीका एक वर्ग। -प्राणाशाम-पु० दे० 'प्राक्लि-प्राणाशाम'।

घरिण-पु० [सं०] धन; सोना; वल, पराक्रम; पदार्थ; वह जिसमें कोई वस्तु बनायी जाय; इच्छा। -जाशन-पु० सविजन। -प्रद-पु० विष्णु।

घरिणाधिपति-पु० [सं०] कुंजर।

घरिणोहा (वस्)-पु० [सं०] अग्नि। वि० धन देनेवाला।

घरीभूत-वि० [सं०] पिघला हुआ; जो द्रव हो गया हो, तरलित; दयाई।

घरौतर-वि० [सं०] ठोस, कठिन।

घरौकर-वि० [सं०] बहुत तरल।

घम्भ-पु० [सं०] पदार्थ, वस्तु; वह वस्तु जो गुण और क्रिया या केवल गुणका आश्रय हो (वैशेषिक दर्शनके अनुसार नौ द्रव्य होते हैं-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, अन्तमा और मन); वह मूल वस्तु, जिससे दूसरी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं, उपादान; सामान, उपकरण; धन-दौलत; पीतल; ओषध; लाल; गोद; मद्य; लेप; विनम्रता; पण। वि० वृक्ष-सम्बन्धी; वृक्षसे उत्पन्न; वृक्ष जैसा। -कृष्ण-वि० संपत्तिहीन। -गण-पु० सुभूतके अनुसार सीतल विशिष्ट औषधियोंका एक समूह। -पति-पु० राशियाँ जिनमेंसे प्रत्येक कुछ विशिष्ट

द्रव्योंकी महार्थताका कारण होनेसे उनकी स्वामिनी मानी जाती है-जैसे बँबल, मसर, जौ आदिकी स्वामिनी मेघ राशि; धनी, पैंनीपति (१)। -परिग्रह-पु० धनका संचय। -वाचक-वि० जिससे किसी द्रव्यका बोध हो। -शुद्धि-खी० द्रव्य या वस्तुकी सफाई। -संस्कार-पु० बह-सामग्रीकी शुद्धि।

घम्भक-पु० [सं०] द्रव्य वा वस्तुका वाहक।

घम्भमय-वि० [सं०] किसी द्रव्यका बना हुआ; धन-संपत्तिसे परिपूर्ण।

घम्भवान् (वत्)-वि० [सं०] द्रव्यवाला, धनी।

घम्भांतर-पु० [सं०] दूसरा द्रव्य।

घम्भाज्वन-पु० [सं०] धन, कामाना, धनोपाजन।

घम्भाश्रित-वि० [सं०] द्रव्यमें निहित।

घट्टव्य-वि० [सं०] देखने या दिखाने योग्य; दर्शनीय; साक्षात्कार करने योग्य; विचारणीय; जो देखनेमें अच्छा लगे, नेत्रसुखद, नयनाभिराम।

घटा (ट्ट)-पु० [सं०] देखनेवाला, दर्शक; साक्षात्कार करनेवाला; प्रकाशक।

घटार-पु० [सं०] विचार करनेवाला; निर्णायक, विचारपति।

घट-पु० [सं०] बहुत गहरी झील, दह।

घाक्षा-खी० [सं०] गाल, अंगूर; मुनका।

घाचिमा (मन्)-खी० [सं०] दीर्घता, लंबाई।

घाण-पु० [सं०] निद्रा; पलायन, भागना। वि० सोया हुआ; भाया हुआ।

घाप-पु० [सं०] कीचड़; आकाश; मूल व्यक्ति; शिब, कौश।

घामिल-पु० [सं०] वाणक्य।

घाव-पु० [सं०] तरल होनेकी क्रिया, पिघलने, पसीनेकी क्रिया; गल या पिघलकर बहनेकी क्रिया; क्षरण, यथा वा कर्णामें आई होनेकी क्रिया, अनुगाप; ताप; पलायन, गति, वेग। -कर-पु० सुहावा।

घावक-वि० [सं०] तरल बनानेवाला, द्रवीभूत करनेवाला; गलाने, पिघलानेवाला; दया, कर्णामें आघात उत्पन्न करनेवाला। पु० चंद्रकांत मणि; मृदागा; चार; मोषक; भगानेवाला; भोग। -कंद-पु० तैलकंद।

घावण-पु० [सं०] द्रव बनानेकी क्रिया या भाव, गलाना, पिघलाना; भगानेका कार्य; निमनी।

घाविका-खी० [सं०] लार।

घाविह-पु० [सं०] द्रविड देश; इस देशका वासी। वि० द्रविडका, द्रविड-सम्बन्धी। -प्राणाशाम-पु० आसानी और मोधे नरीकेम किये जानेवाले कामकी टेढा बनाकर करना।

घाविडक-पु० [सं०] काला नमक; कचूर।

घाविडी-खी० [सं०] द्राविड देश या जातिकी स्त्री; छोटी इलायची।

घावित-वि० [सं०] द्रव किया हुआ; गलाया, पिघलाया हुआ; भगाया हुआ।

घाव्य-वि० [सं०] भगाये जाने योग्य; गलाये जाने योग्य।

घावावण-पु० [सं०] सामयंदके वस्त्र, ओत तथा गृह्य-सूत्रके रचयिता एक ऋषि।

हु-पु० [सं०] वृक्ष; शाखा; लकड़ी; काष्ठनिर्मित यंत्र।

-किलिम-पु० देवदार। -घण-पु० कौवेका मुग्गर;

मुन्दरके आकारका एक अन्न; कुठार, फरसा; दूधपा ।
 -धनी-खी० कुल्हाड़ी । -धस-वि० लकी नाकवाला ।
 -नख-पु० काँटा । -सखड़-पु० पियाल ।

दुग्ध-वि० [सं०] क्षतिप्रस्तुत जिसके विरुद्ध दुरभिसंधि की गयी हो । पु० अपराध; दुर्गहका काम ।

दुग्ध-पु० [सं०] धनुष; खड्ग; धनुष; विच्छू; दुष्ट व्यक्ति ।
 -ह-पु० म्यान ।

दुग्धा-खी० [सं०] धनुषकी डोरी ।

दुग्धि, दुग्धी-खी० [सं०] एक प्रकारका काठका पात्र; कच्छपी; कनखनुरा ।

दुत-वि० [सं०] जो द्रव हो गया हो, द्रवीभूत, गला या पिघला हुआ; शीघ्रगतिवृत्त; भागा हुआ; तीव्र गतिवाला; तेज; अस्पष्ट; बिलंबा हुआ । पु० तालकी एक मात्राका आवा; मध्यममे कुछ तेज लय; विच्छू; दृष्ट; बिछी ।
 -गति-वि० तीव्र गतिवाला । खी० तीव्र गति, तेज चाल । -गामी(मिन्)-वि० तीव्र गतिसे चलनेवाला ।

-ध्व-पु० एक वर्णिक वृत्त । वि० तेज चलनेवाला ।
 -मध्या-खी० एक अर्द्धसम वर्णवृत्त । -विलंबित-पु० एक वर्णवृत्त ।

दुति-खी० [सं०] द्रव होना; भागना; जाना ।
 दुनै-त्र० शीघ्रगामे ।

दुपद-पु० [सं०] पाँचवें की पत्नी द्रौपदीके पिता जो पांचाल देशके राजा थे (इनका दूसरा नाम यज्ञमेन था) ।

दुपदामज-पु० [सं०] शिल्पी; धृष्टपुत्र ।
 दुम-पु० [सं०] दुश्म, पेश; पारिजात, कुशेर । -कंटिका-खी० मेमर । -नख, -मर-पु० काँटा । -व्याधि-खी०

पेशमें लगनेवाला रोग; गौर; लाख । -क्षीर्ष-पु० पेड़का मिरा, वृक्षका अग्रभाग । -श्रेष्ठ-पु० प्रधान वृक्ष; ताड़का पेश । -पंड-पु० वृक्षमूत्र, पेड़का छूट । -सार-पु० टाटिम, अनार ।

दुमामय-पु० [सं०] दे० 'दुम-व्याधि' ।
 दुमारि-पु० [सं०] हाथी ।

दुमालय-पु० [सं०] जंगल ।
 दुमाध्व-पु० [सं०] गिरगिट ।

दुमिणी-खी० [सं०] जंगल ।
 दुमिन्ना-खी० [सं०] एक मात्रिक छंद ।

दुमेश्वर-पु० [सं०] पारिजान; ताड़; चंद्रमा ।
 दुमोष्ण-पु० [सं०] कणिकाकर वृक्ष ।

दुवय-पु० [सं०] एक माप ।
 दुह-पु० [सं०] पुत्र; झोल ।

दुहण, दुहिण-पु० [सं०] ब्रह्मा ।
 दुही-खी० [सं०] पुत्री ।

दुहा-पु० [सं०] शमिष्ठाके गर्भमे उत्पन्न ययातिका एक पुत्र ।

दू-पु० [सं०] सोना ।
 दूधन-पु० [सं०] हथौड़ा ।

दूध-पु० [सं०] विच्छू; धनुष ।
 दूधन-पु० [सं०] द्रोणाचार्य; वत्सीस मेरुकी एक प्राचीन माप; लकड़ीका एक पात्र; चार सौ धनुष लंबा-चौड़ा जलाशय; डोमकीआ; लकड़ीका रथ; माष; विच्छू; दीना;

एक पुष्पवृक्ष; पेश; एक पर्वत; मेवोंका एक नायक ।
 -कलस-पु० एक यक्षपात्र जो लकड़ीका होता है ।

-काक-पु० काला कौआ, डोमकौआ । -गंधिका-खी० राजा । -गिरि-पु० एक वर्ष-पर्वत (रामायणके अनुसार हनुमान् इसी पर्वतपर संजीवनी वृक्ष लायके लिए भेजे गये थे) । -बा, -दुग्धा, -दुग्धा, -दुग्धा-वि० खी० द्रोणभर दुध देनेवाली (गाय) । -वर्दी-खी० कुमपदी । -पुष्पी-खी० गुमा । -माना-वि० खी० दे० 'द्रोणमुखा' ।

-मुख-पु० चार सौ ग्रामोंके बीचका प्रधान ग्राम । -मेघ-पु० बहुत अधिक पानी बरसानेवाला बादल ।

द्रोणाचार्य-पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्रसिद्ध ब्राह्मण योगी जिन्होंने कौरवों और पांडवोंकी धनुर्विद्याकी शिक्षा दी थी ।

द्रोणि, द्रोणी-खी० [सं०] बौंगी; पानी रखनेका कैलेकी छाल आदिका बना एक प्रकारका पात्र; कठवत; टब; पर्वतोंके बीचकी भूमि; द्रोणाचार्यकी पत्नी; दौ दुर्ग-१२८

सेरका एक प्राचीन परिमाण; एक प्रकारका नमक; कैलेका पेश; नीलका पोषा । -दुल-पु० कैलेकीका पोषा । -मुख-पु० दे० 'द्रोणमुख' । -खवण-पु० कर्नाटकके आस-पास होनेवाला एक प्रकारका नमक ।

द्रोणिका-खी० [सं०] नीलका पोषा; कठवत; कंडाल ।
 द्रोन-पु० द्रोण ।

द्रोह-पु० [सं०] दूसरेका अनिष्ट चाहना; हिंसा; अपराध; वैर; विद्रोह । -चित्तन-पु० अनिष्ट करनेका विचार या प्रयत्न करना । -बुद्धि-वि० दुराई करनेपर तुला हुआ । खी० दुराई करनेकी नीयत ।

द्रोहट-वि० [सं०] जो ऊपरसे सीधा जान पड़े पर भीतरका क्रूर हो, वैधालव्रतिक । पु० शृंगकुम्भक, शिकारी; बौंगी आदमी; नकली आदमी ।

द्रोही(हिन्)-वि० [सं०] द्रोह करनेवाला, अहितचिंतन करनेवाला; विद्रोह करनेवाला । पु० वह व्यक्ति जो द्रोह करे ।

द्रौणावन, द्रौणावनि-पु० [सं०] द्रोणाचार्यका पुत्र, अश्वत्थामा ।

द्रौणि-पु० [सं०] अश्वत्थामा ।
 द्रौणिक-वि० [सं०] जिसमें एक द्रोण बीज बोया जा सके; द्रोण-संबन्धी ।

द्रौणिकी-खी० [सं०] एक द्रोण मापका पात्र ।
 द्रौणी-खी० [सं०] कठवत; कंडाल ।

द्रौपद-पु० [सं०] द्रुपका पुत्र ।
 द्रौपदी-खी० [सं०] द्रुपकी पुत्री, पाण्डव-पत्नी ।

द्रौपदेय-पु० [सं०] द्रौपदीका पुत्र ।
 दूह-पु० [सं०] घंटा बजानेका ध्वनिवा; दुग्ध, जोड़ा; दे० 'ह्रद' । * खी० दुंडुभी ।

ह्रद-वि० झणका करनेवाला; उलझनेवाला । पु० संसार ।
 ह्रद-पु० [सं०] युगल, युग्म, जोड़ा; दो व्यक्तियोंका परस्पर युद्ध; कलह, संघर्ष, झगडा; खी-पुरुषका, नर-मादाका जोड़ा, मिथुन; दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं या भावोंका जोड़ा-जैसे शोक-भोग, शीत-उष्ण आदि; संदेह, अनिश्चय; दुर्ग; रहस्य; एक रोग; मिथुन राशि; समासका एक भेद

(व्या०) १-**चर**,-**चारी**(**रिज**)-पु० चक्का । वि० युग्म-
रूपमें चकनेवाला; जो सदा अपनी मादाके साथ रहे ।
-**ज**-वि० वास, विष, ककमसे किन्हीं दोके विकारसे
उत्पन्न; कलहजन्य; राग-द्वेष आदि परस्पर विरोधी भावोंसे
उत्पन्न । -**ओह**-पु० संदेहजन्य कष्ट । -**बुज**-पु० दो
व्यक्तियोंका परस्परिक युद्ध ।

हंदी (हिन्दु) - वि० [सं०] युग्म बनानेवाला; परस्पर
विरोधी (सुख-दुःख); झगडावा ।

द्वय-वि० [सं०] दो । पु० युग्म, जोड़ा (समासांतमें) ।
-**बाही**(**विन्द**)-वि० दुरगी बात कहनेवाला । -**हीन**-
वि० नपुंसक (शब्द) ।

हास्थ, **हास्थित**-पु० [सं०] द्वारपाल ।

हा-**ति**का समासगत रूप । -**ज**-पु० जारज पुत्र ।
-**दश**-वि० बारह; बारहवाँ । -**कर**-पु० कार्तिकेय;
कार्तिकेयका एक अनुचर । -**पत्र**-पु० विष्णुका द्वाद-
शक्षर मंत्र-ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । -**भाष**-
पु० तनु, धन आदि बारह भाग जिनपर जन्मकुंडली
देखनेमें विचार करते हैं (ज्यो०) । -**शत्रु**-पु० बारह
दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक मद्य । -**कोचन**-पु०
कार्तिकेय । -**बर्षा**-**क्षी**० नीलकण्ठ तांत्रिकके अनुसार
क्षेत्र, धौप आदि बारह बाणोंका समूह जिसके आधारपर
ग्रहोंका बलाबल जाना जाता है । -**शार्ङ्ग**-पु० ब्रह्म-
हत्यासे मुक्त होनेके लिए बारह वर्षतक वनमें रहकर किया
जानेवाला एक व्रत । -**दशरी**-**क्षी**० पक्षकी बारहवीं
तिथि । -**दश**-वि० [हि०] दे० 'द्वारदश' । -**बानी**-
वि० दे० 'बारहबानी' । -**पर**-पु० संदेह, सशय; तीसरा
पुत्र जो भ्रातृका बाद आता है; दो विधियोंवाला पासेका
पट्टक ।

द्वयसांग-पु० [सं०] युग्म, चक्र, तेजपात आदि बारह
वस्तुओंके योगसे बना हुआ एक हवनीय द्रव्य । वि० बारह
अंगोंवाला ।

द्वयसांगुल-पु० [सं०] बारह अंगुली माप, विज्ञा,
कालिमत ।

द्वयशास्त्र-पु० [सं०] कार्तिकेय; युद्ध ।

द्वयशास्त्र-पु० [सं०] विष्णुका बारह अक्षरोंका मंत्र-ॐ
नमो भगवते वासुदेवाय ।

द्वयशास्त्र-पु० [सं०] दुःखदेव ।

द्वयशास्त्रा(**स्वय**)-पु० [सं०] स्वयं; मदार ।

द्वयशायतन-पु० [सं०] रौद्र दर्शनके अनुसार मनु, बुद्धि
आदि पूजास्थान ।

द्वयसाह-पु० [सं०] बारह दिनोंका समुदाय; बारह
दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ; मरण-तिथिसे बारहवें
दिन किया जानेवाला आद ।

द्वयमा-**क्षी**० सदरे या संघ्याके समयका वह मंद प्रकाश
जब सूर्य क्षितिज रेखाके नीचे हो (द्वयशायतन) ।

द्वयसाधन-पु० [सं०] वह जो एक व्यक्तिका औरस और
दूसरेका दत्तक पुत्र हो (यैसा व्यक्ति शास्त्रानुसार दोनों
पिताओंकी सपत्ति पाने तथा उन्हें पित्रदान करनेका
अधिकारी होता है); गौतम मुनि ।

द्वार-पु० [सं०] मकान, कमरे, आदिकी दीवारमें बनाया

हुआ भीतर-बाहर आने-जानेका विशेष प्रकारका छिद्र,
दरवाजा; वह मार्ग जिसके द्वारा इंदियों अपने विषयोंका
ग्रहण करती हैं; माध्यम, साधन । -**कंदक**-पु० दरवाजे-
की किछी, सिटकिनी । -**कपाट**-पु० दरवाजेका पट्टा ।
-**गोप**-पु० दे० 'द्वारपाल' । -**चर**-पु० [हि०] विवाह
के अवसरपर लक्ष्मीवालेके दरवाजेपर होनेवाली एक रस्म ।
-**छंकाई**-**क्षी**० [हि०] एक वैवाहिक रीति जिसमें बहन
कोहवरके द्वारपर विवाहोपरांत बंधू सहित घर लौटे हुए
भाईका मार्ग रोकती है; इस रीतिके उपलक्ष्यमें बहनकी
मिलनेवाला नेम । -**दशरी**(**सिन्धु**)-पु० द्वारपाल ।
-**द्वार**-पु० सागवानकी लकड़ी । -**नाथक**, -**ए**-पु०
द्वारपाल । -**पंडित**-पु० राजाका प्रधान पंडित । -**पटी**-
क्षी० दरवाजेपर लगा हुआ परदा; चिक । -**पट्ट**-पु०
दरवाजेका परदा; पट्टा । -**पाल**, -**पालक**-पु० व्यूहोपर
नियुक्त सिपाही या पहरदार, द्वाररक्षक, खोदीदार ।
-**पिंडी**-**क्षी**० देखली, दहलीज । -**पिधान**-पु० किछी,
अरगल । -**पूजा**-**क्षी**० विवाहके पहले दिनकी एक रीति
जिसमें कन्यादान करनेवाला व्यक्ति बदातेके साथ द्वारपर
आये हुए वरकी पूजा करता है । -**बकिमुद्ग**(**ज**)-पु०
कोआ; गौरैया । -**बंश**-पु० ताला; अरगल । -**समुद्र**-
पु० दक्षिणका एक प्राचीन नगर जो कभी कर्णाटकके
राजाओंकी राजधानी रहा । -**स्व**-पु० द्वारपाल । **मु०**-
-**सुलना**-किसी बातके जारी रहनेका रास्ता निकल
जाना । -**सुलना होना**-प्रवेश आदिमें कोई हिचक या
बाधा न होना ।

द्वारका, **द्वारिका**-**क्षी**० [सं०] काठियावाड़की एक प्राचीन
नगरी जिसे कृष्णने बसाया था । (इसकी गणना चारों
धर्मोंमें है) । -**नाथ**, -**पति**-पु० कृष्ण; द्वारिकामें स्थित
उनकी मूर्ति ।

द्वारकाधीश-पु० [सं०] दे० 'द्वारकानाथ' ।

द्वारकेश-पु० [सं०] कृष्ण ।

द्वारवती, **द्वारवती**-**क्षी**० [सं०] दे० 'द्वारका' ।

द्वारा-अ० [सं०] साधक होनेसे या साधक बनानेमें,
कर्तृ-वत्से, जरिये, मारफत । * पु० दे० 'द्वार' ।

द्वाराचार-पु० [सं०] दे० 'द्वारचार' ।

द्वाराधिप-पु० [सं०] द्वारपाल ।

द्वाराध्यक्ष-पु० [सं०] द्वारपाल ।

द्वारिक-पु० [सं०] द्वारपाल ।

द्वारी-**क्षी**० छोटा द्वार ।

द्वारी(**रिज**)-पु० [सं०] द्वारपाल ।

द्वार-पु० दे० 'द्वारपाल' ।

द्वि(**हिर**)-अ० [सं०] दो बार ।

द्वि-वि० [सं०] दो । -**ककार**-पु० काक (कोआ); कोक
(चक्का) । -**ककुद**-पु० ऊँट । -**कर्मक**-वि० दो
कर्मोंसे युक्त (क्रिया) । -**कल**-पु० पिंगलमें दो मात्राओं-
का समाहार । -**क्षार**-पु० सोरा और मज्जी, ये दो
क्षार । -**शु**-पु० समास्ता एक उपमेद (व्या०) । वि०
दो गायोंवाला । -**गुण**-वि० दुगना, द्वा । -**गुणित**-
वि० दुगना किया हुआ । -**गूढ**-पु० एक तरहका घाना ।
-**व्यव**-पु० मनुष्य आदि दो पैरोंवाले जीव । -**अ**-

पु० दे० 'क्रममें' । -जम्मा(भ्रमन्)-पु० दे० 'दिज' ।
 -जा-की० ब्राह्मण या दिवकी पत्नी । -जाति-पु०,
 की० दे० 'दिज' । -जाति-पु० वह पुरुष जिसके दो
 कियौं हों । -जिह्व-पु० सर्प; खनक, सुखखोर; खल,
 दुष्ट । -दल-वि० दो दलोंवाला; दो वर्गोंवाला; दो दलों
 द्वारा संवाहित । पु० दो दलोंवाला अनाज-जैसे अरहर,
 मटर, चना आदि; दाल । -हास्य-प्रणाली-की०
 वह शासनप्रणाली जिसमें दो दल मिलकर शासन करते
 हों । -हाथी-की० दो रस्सियोंसे बाँधने योग्य दुष्ट
 गाय । -देवत-वि० (चर आदि) जो दो देवताओंके
 लिए हो । पु० विशाखा नक्षत्र । -देह-पु० गणेश
 (जिनका शरीर मनुष्य और हाथी दोनोंसे मिलकर बना
 है) । -धातु-वि० जो दो धातुओंसे मिलकर बना हो ।
 पु० गणेश । की० कौसा, पीतल आदि जिनमें दो धातुओं-
 का मिश्रण रहता है । -मग्नक-पु० वह मनुष्य जिसकी
 सुप्त हुई हो; दुधमी । -नेत्रमेयी(विन्)-पु० वह
 व्यक्ति जिसने दोनों आँखें कोड़ दी हों । -चंचुली-
 की० दशमूली । -च-पु० हाथी; नागकेसर । -पक्ष-
 वि० जिसके दो पैर हों; जिसमें दो पक्ष हों । पु० पक्षी;
 महीना । -पघ-पु० दो रास्कोंके मिलनेका स्थान ।
 -पद्-वि० दो पैरोंवाला; जिसमें दो चरण या पद हों ।
 पु० दो पैरोंवाला जीव, मनुष्य आदि । वास्तुमण्डलका एक
 कोष्ठ । -पद्म-की० दो चरणोंवाली कला । -पद्मी-
 की० एक प्रकारकी गीति जिसमें दो चरण होते हैं; एक
 मात्रिक दृष्ट । -पाद्-वि० दे० 'दिपद्' । -पाद्य-पु०
 (माछीके ढङ्गमें) दुग्गल दे० । -पायी(विन्)-पु०
 हाथी । -बिंदु-पु० निमग्न (?) । -भाव-पु० दुराव ।
 वि० कपटी । -भापी(विन्)-पु० दुमापिया । वि० दो
 भाषाएँ बोलनेवाला । -भुज-वि० दो भुजाओंवाला,
 जिनके दो हाथ हों । पु० कील । -भूम-वि० दे०
 'दोतला' । -भागु, भातुज-पु० गणेश; जरासंध ।
 -भाज-वि० जिसमें दो मात्राएँ हों, दीर्घ । -भाज्य-
 वि० जो परिमाणमें दो भांशका हो । -मुख-वि० जिसे
 दो मुँह हों । पु० एक सर्प जिसे दो मुँह होते हैं; एक
 प्रकारका कृमिरोग । -मुखा-की० जोक । -मुखी-
 की० वह गाय जो बचा दे रही हो और जिसके बच्चेका
 मुँह और दो पैर ही पेटसे बाहर निकल पावे हों । -र-
 पु० दे० 'द्विरेफ' । -रद्-वि० जिसके दो दाँत हों । पु०
 हाथी । -रस्य-पु० सर्प । वि० दो जीमोंवाला ।
 -राज-पु० दो दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ । -रूप-
 वि० जिसके दो रूप हों; जो दो प्रकारसे लिखा जाय ।
 -रैता(सच्)-पु० दोगला जानवर-जैसे खच्चर ।
 -रेफ-पु० अमर ('अमर' शब्दमें रकार दो बार आया
 है) । -वचन-वि०, पु० दे० 'द्विमुख' । -वचन-पु०
 व्याकरणमें दोका बीच कानेवाला वचन । -वज्रक-पु०
 वह धर जिसमें सोलह कोने हों । -बाहिका-की०
 दोला, झुला । -बिंदु-पु० विसर्ग । -विच-वि० दो
 प्रकारका । -विधा-की० [हिं] दुविधा । -वेद्-
 वि० दो वेदोंकी जानने या पढ़नेवाला । -वेदी(विन्)-
 पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, दुपे । -वैद्यरा-की० एक

तरकी छोटी नाड़ी जिसमें खच्चर जोते जाते हैं । -व्रण-
 पु० शारीरिक और आंगतुल्य वे दो प्रकारके घाव । -वस्त-
 वि० दो सी । -वस्त-वि० जो दो सी देकर खरीदा
 गया हो । -वस्त-पु० दो सुतोंवाला पशु । -शिर-
 वि० [हिं] दो सिरोंवाला । -शीर्ष-वि० जिसके दो
 सिर हों । पु० अक्षि । -व-वि० जो दोनों स्थित या
 शामिल हो । -समन्निभुज-पु० वह विभुज जिसकी
 दो भुजाएँ बराबर हों । -सहस्र-वि० दो हजार; जो
 दो हजारमें खरीदा गया हो । -साहस्र-वि० दे०
 'द्विसहस्र' । -सीन्ध-हृन्ध-वि० दो बार जोता हुआ
 खेत । -हा(हृन्)-पु० हाथी । -हायन-वि०
 जिसकी उम्र दो वर्षकी हो; दो वर्षका । पु० दो वर्ष ।
 -हायनी-की० दो वर्षकी गाय । -हृदया-की०
 गर्मिणी की ।

हिक्-वि० [सं०] दुगुना; दुगुन बनानेवाला; जिसमें दो
 हों; द्वितीय; दूसरी बार होनेवाला; दो प्रतिघत बढ़ा हुआ ।
 पु० दे० 'द्विकार' ।

हिज-पु० [सं०] संस्कृत ब्राह्मण; ब्राह्मण, क्षत्रिय और
 वैश्य जिनका यज्ञोपवीत संस्कार दूसरे जन्मके समान
 माना जाता है; पक्षी आदि अंडज जीव; दाँत; चंद्रमा ।
 वि० जिसमें दो बार जन्म लिया हो । -दास्य-पु० शूद्र ।
 -पति-पु० ब्राह्मण; गरुड; चंद्रमा; कर्पूर । -प्रपा-
 की० आल-बाल; पक्षियों आदिकी पानी पिलानेके लिए
 बना हुआ गड़ड़ा आदि । -मिया-की० सोमलता ।
 -बंधु, बंध-पु० कर्महीन द्विज, जो कहनेमरको द्विज
 हों । -राज-पु० ब्राह्मण; श्रेष्ठ ब्राह्मण; चंद्रमा; गरुड;
 कर्पूर । -किंगी(विन्)-पु० किसी अन्य वर्णका व्यक्ति
 जिसने ब्राह्मणका वेष बना लिया हो । -बाह्यन-पु०
 विष्णु । -व्रण-पु० दाँतका एक रोग । -सेवक-पु०
 शूद्र ।

द्विजांगिका, द्विजांगी-की० [सं०] कुटुंबी ।

द्विजाग्रज, द्विजाग्रज्य-पु० [मं०] ब्राह्मण ।

द्विजाग्रनी-की० [मं०] यज्ञोपवीत ।

द्विजालच-पु० [सं०] द्विजका पर; वींस्तला ।

द्विजेंद्र, द्विजेस-पु० [मं०] दे० 'द्विजराज' ।

द्विजेंद्रकालराय-पु० बंगलाके प्रसिद्ध कवि और नाट्यकार;
 रचनाएँ-शाहजहाँ, चंद्रयुत, उसपार आदि-(१८२३-
 १९१३) ।

द्विजोत्तम-पु० [मं०] द्विजोंमें श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।

द्विद् (च्)-वि० [सं०] शत्रु-भाव रखनेवाला । पु० शत्रु,
 दुश्मन । -सेवा-की० द्रोह, विमार्शधात ।

द्विद-पु० [मं०] विसर्ग; स्वाहा ।

द्विसय-वि० [सं०] दो अवयवोंवाला; जो दोसे मिलकर
 बना हो । सर्व० दोनों ।

द्वितीय-वि० [सं०] दूसरा । पु० पुत्र (जिसके रूपमें आत्मा
 ही दूसरी बार जन्म लेती है); मित्र; सहाय; सहायक
 (जैसे चाप-द्वितीय); जोर, मुकाबिला करनेवाला, वर्णका
 दूसरा वर्ण; उत्तरार्द्ध ।

द्वितीयक-वि० [सं०] दूसरा; दूसरी बार होनेवाला ।

द्वितीय-की० [सं०] पक्षकी दूसरी तिथि; पक्षी ।

हिंदीवाक्य-वि० [सं०] दो बार जोता हुआ (कृत) ।
 हिंदीवाक्य-क्री० [सं०] दाखवना ।
 हिंदीवाक्य-पु० [सं०] गृहस्थान ।
 हिंद्व-पु० [सं०] दो अथवा दोहरा होनेका भाव-जैसे
 'सर्व' में 'य'का दोहरा होना; व्युत्पत्ति; दोकी संख्या ।
 हिं-वि० [सं०] दो खोंमें विभक्त ।
 हिं-अ० [सं०] दो प्रकारसे; दो भागोंमें । -कण-
 पु० दो भागोंमें विभाजन । -गति-पु० केकड़ा; मगर;
 उभयचर जंतु ।
 हिंभासक-पु० [सं०] जातीकोष, जायकल ।
 हिंभास्य-पु० [सं०] गणेश ।
 हिंदीतक-पु० [सं०] सिंह ।
 हिंदीसन-पु० [सं०] सिंह ।
 हिं-अ० [सं०] दे० 'हिं' । -आगमन-पु० पुनरागमन;
 विवाहके बाद वधूका पतिके घर आना, गौना । -आप-
 पु० हाथी । -उक्त-वि० जो दो बार कहा या लिखा गया
 हो, दो बार कथित; जो दो प्रकारसे कहा गया हो; अना-
 वश्यक । पु० पुनः कथन । -उक्ति-क्री० दो बार कहने
 या उक्तेकर करनेकी क्रिया, दो बार कहना; आवश्यक न
 होना । -कहा-क्री० वह क्री जिसने पूर्व पतिके मरने
 आदिपर दूसरेकी अपना पति स्वीकार कर लिया हो ।
 हिंदि-पु० [सं०] सुमीषका एक मंत्री ।
 हिंरुतप-वि० [सं०] शत्रुओंको ताप पहुँचानेवाला, परतप ।
 हिं, हिंरु-पु० [सं०] देश रखनेवाला; शत्रु, वैरी ।
 हिं-वि० [सं०] जिसमें देश हो । पु० तर्का ।
 हिंरुत-पु० [सं०] शेष, अनंत ।
 हिंरु-पु० [सं०] दो हिंदीवाला जीव ।
 हिं-पु० [सं०] खलका वह भाग जिसके चारों ओर पानी
 हो; पुराणोंके अनुसार अंध आदि बड़े भूभागोंमेंसे हर एक;
 व्याघ्रचर्म; आश्रय, अकल, सहारा; व्याघ्र । -कपूर-
 पु० चीनी कपूर । -कुमार-पु० एक प्रकारका देवता
 (जै०) । -सर्ज-पु० महापारवत । -शत्रु-पु० सतावर ।
 हिंरुत-क्री० [सं०] नदी; मृत्ति ।
 हिंरुत-वि० [सं०] द्वीपोंमें पूर्ण । पु० नद;
 समुद्र ।
 हिंरुत-क्री० [सं०] सतावर ।
 हिंरुत-वि० [सं०] भाव; चीता । - (वि)नक्ष-
 पु० व्याघ्रनखा; एक गधद्रव्य । -शत्रु-पु० शत्रुमूली ।
 हिंरुत-वि० [सं०] दीपमें उत्पन्न । पु० द्वीपनिवासी; व्यास;
 एक तरहका कौमा; रुद्र ।
 हिं-पु० [सं०] विपत्तिका वह भाव जो अश्रिय वस्तु या
 व्यक्तिका नाश करनेकी प्रेरणा करता है, रागका विरोधी
 भाव; शत्रुता, वैर; रूप, रस आदि चौबीस गुणोंमेंसे एक
 जो आत्माकी वृत्ति माना जाता है, दुःखकर वस्तुको नष्ट
 करनेकी इच्छा (न्या०); अविद्या आदि पाँच क्षेत्रोंमेंसे एक
 (योग); दुःखिका एक भर्म; वह क्षीम या अमर्षको दूर करने
 की इच्छा जो दुःख तथा उसके कारणके प्रति हो (सां०) ।
 -पक्ष-पु० मोक्ष, ईर्ष्या आदि देशके अवातर भेद ।
 हिंरुत-पु० [सं०] देश करनेकी क्रिया, घणा; शत्रुता, वैर;
 शत्रु । वि० घणा करनेवाला ।

हिंरुत-वि० [सं०] देश-भाव रखनेवाला । पु० शत्रु,
 विरोधी ।
 हिंरुत-पु० [सं०] देश करनेवाला; वैरी ।
 हिंरुत-वि० [सं०] देश करने योग्य । पु० देशका पात्र; शत्रु ।
 हिं-वि० दो; दोनों ।
 हिंरुत-वि० दो-एक ।
 हिंरुत-वि० [सं०] जो दूना व्याज ले । पु० शत-प्रति-
 शत खुद लेनेवाला महाजन ।
 हिंरुत-पु० [सं०] दूनी रकम या परिमाण; द्वैत; तीनों
 गुणों-सत्त्व, रज और तममेंसे किन्हीं दोमें युक्त होना ।
 हिंरुत-क्री० द्वितीया, दूज ।
 हिंरुत-पु० [सं०] दो होनेका भाव; जोड़ा, युगल; भेरण्डि,
 भेदभावना; द्वैतवाद; अद्यान, मोह । -वन-पु० एक वन
 जिसमें पाँचवेंमें कुछ समयतक निवास किया था । -बाद-
 पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जो जीव और ब्रह्म तथा भूत
 और चिच्छक्तिमें भेद मानता है (वेदांतकी छोड़कर दोष
 पाँचों आस्तिक दर्शन इसी सिद्धांतके पोषक हैं) । -बादी-
 (दिन) -वि०, पु० द्वैतवादकी माननेवाला ।
 द्वैती (सिद्ध) -वि०, पु० [सं०] दे० 'द्वैतवादी' ।
 द्वैतीय-वि० [सं०] दूसरा ।
 द्वैत-पु० [सं०] दो प्रकारका होनेका भाव; भिन्नता; परस्पर
 विरुद्ध होनेका भाव; राजनीतिमें दुरंगी नीति बरतनेका
 गुण (इसकी गणना सवि आदि छ गुणोंमें है); सदेह,
 अनिश्चय । -शासनप्रणाली-क्री० वह शासन-पद्धति
 जिसमें सत्ता दो वर्गोंमें विभक्त हो ।
 द्वैतीकरण-पु० [सं०] दो भागोंमें बँटना ।
 द्वैतीभाव-पु० [सं०] दे० 'द्वैत'; निश्चयका अभाव, दुविधा ।
 द्वैत-वि० [सं०] दार्ष्टान्तीय; व्याघ्र सन्धी; बाधका । पु०
 व्याघ्रचर्म; व्याघ्रचर्मसे आवृत रथ ।
 द्वैतचन-पु० [सं०] महाभारत, पुराणों आदिके रचयिता
 वेदव्यास (इसका जन्म एक दीपमें हुआ था इन्हीं इनका
 यह नाम पड़ा) ।
 द्वैत-वि० [सं०] दार्ष्टान्तिक ।
 द्वैतानु-पु० [सं०] गणेश; जरासंध । वि० जिसके दो
 मातार्य हैं ।
 द्वैतानु-वि० [सं०] (वह देश) जो द्वैतानुकी भी हो और
 नदीमानुकी भी, जहाँ नदी तथा वर्षा दोनोंका जल खेतीके
 काम आता हो ।
 द्वैतानु-वि० [सं०] जो दो दिनोंमें हो; जिसमें दो दिन
 लगे ।
 द्वैतानु-पु० [सं०] दराज, दो-अमली; दो राजाओंमें
 विभक्त देश ।
 द्वैतानु-पु० [सं०] दो तरहका होनेका भाव; भिन्नता;
 दुविधा ।
 द्वैतानु-क्री० [सं०] नागवलीका एक भेद ।
 द्वैतानु-वि० [सं०] दो वर्षोंका ।
 द्वैतानु-पु० [सं०] दो वर्षका समय ।
 द्वैत-वि० दोनों ।
 द्वैतानु-वि० [सं०] दो नेत्रोंवाला, द्विनेत्र ।
 द्वैतानु-पु० [सं०] दो अणुओंके योगसे बना हुआ द्रव्य ।

हृथर्थ, हृथर्थक-वि० [स०] जिसके दो अर्थ हों, जिससे दोहरा अर्थ निकले।

हृथष्ट-पु० [स०] तौता।

हृथामि-पु० [स०] एक वृक्ष, लाल चीता।

हृथालिग-वि० [स०] रजोगुण-तमोगुणसे रहित, सत्य-गुणयुक्त।

घ

घ-देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान दंत।

घंका-पु० घक्का; आघात, चोट।

घंघ-पु० खंख, झंझट, झमेला।

घंघक-पु० जंजाल, झंझट।

घंघरक-पु० दे० 'घक्क'। -घोरी-पु० दुनियाके जंजालमें लगा रहनेवाला।

घंघका-पु० छल-कपट; ढोंग।

घंघलाना-अ० कि० ढोंग करना; छल करना।

घंघा-पु० काम-काज; पेसा, रोजगार, व्यवसाय।

घंघार-खी० ज्वाला। † पु० भारी पत्थर आदि उठाने-का एक औजार।

घंघारि-खी० दे० 'घंघारी'।

घंघारी-खी० गोरखपंथा।

घंघाला-खी० कुटनी।

घंघोर-खी० ज्वाला, आगकी लपट; होली।

घंघना-स० कि० पौकना-विरहा पूत लोहारका पंवे हमारी देह-साखी।

घंंसन-खी० घंंसनेकी क्रिया वा ढग।

घंंसना-अ० कि० किसी कड़ी या नुकीली वस्तुका दबाव पाकर भीतर घुसना, गड़ना; बैठना, प्रवेश करना, भीतर घुसना; नीचेकी ओर दब जाना या बैठ जाना; उतरना; नीचे खसकना; नष्ट होना; तबाह होना।

घंंसनि-खी० दे० 'घंंसन'।

घंंसान-खी० घंंसनेकी क्रिया या ढंग; ऐसी भरती जिसमें पाँव घंंसते, दलदल; ढाऊ जमीन।

घंंसाना-स० कि० किसी कड़ी या नुकीली वस्तुकी ओर देख कर भीतर घुसाना, गड़ना; प्रविष्ट करना, बैठाना; नीचेकी ओर उतारना।

घंंसान-पु० दे० 'घंंसन'।

घ-पु० [स०] धर्म; कुदरे; ब्रह्मा; धन; धैर्य स्वरका संकेत (संगीत)।

घडरहरा-पु० दे० 'घरहरा'।

घक-खी० हृदयका संवेग स्पंदन, दिलकी जोरकी धक्कन; * उमंग, उल्लास। * अ० धक्क-धक्क, सहसा। -घक-खी० दे० 'धक्ककी'; भय। अ० डरते हुए।

धक्ककना-अ० कि० दे० 'धक्ककाना'।

धक्कधक्काना-अ० कि० भय, धराराहट आदिके कारण कलेजेका तेजीसे धक्कना; * धक्कना; चमकना।

धक्कधक्काहट-खी० धक्ककानेकी क्रिया, धक्कन।

धक्कधक्की-खी० धक्कना; धुकधुकी; खटका, अड़िया। मु०

हृथालिग-पु० [स०] द्विविध प्रकृतिवादा, दो प्रकारके स्वभावसे युक्त।

हृथामुष्मावण-पु० [स०] वह व्यक्ति जो एक आदमीका दत्तक होते हुए भी दूसरेका औरसे पुत्र हो, वह दत्तक जिसके विषयमें उसके पिता और प्रतिगृहीताने आपसमें तय कर लिया हो कि वह हम दोनोंका पुत्र रहेगा।

-धक्कना-खी० धक्कना, सहसा आसका उत्पन्न होना।

धक्कना-अ० कि० तप्त होना, धिकना-जरीन मुहूर्त

धक्क-जाल धक्की-धन०।

धक्ककाना-अ० कि० भय खाना, आतंकित होना।

धक्कपेल-खी० धक्कधक्का, रेलपेल।

धक्का-पु० धक्का, होंका; आघात। -धूस-खी० रेलपेल; चढ़ाकपरी। -पेल-खी० दे० 'धक्कपेल'।

धक्काधक्की-खी० धक्कधक्का।

धक्काना-स० कि० जलना, दहकाना।

धक्कारा-पु० धक्कधक्की; खटका, अड़िया।

धक्कियाना-स० कि० धक्का देना, दकेलना।

धक्केलना-स० कि० दकेलना, धक्का देना।

धक्केल-वि० धक्का देनेवाला।

धक्की-खी० दे० 'धक्क'। -धक्की-खी०, अ० दे० 'धक्कपेल'।

धक्कधक्का-पु० भारी भीड़में मनुष्योंका परस्पर बहुत अधिक धक्का देना; कसमसाती हुई भीड़, ठेकाठेल, रेलपेल।

धक्का-पु० वह दबाव जो किसी वस्तु या व्यक्तिकी किसी स्थानसे दूसरी ओर हटानेके लिए उत्पन्न ढाला जाय; दो वस्तुओं या व्यक्तियोंमें एकके दूसरेसे या दोनोंके परस्पर वेगपूर्वक गमनक्रियामें छु जाने या टकरा जानसे एक या दोनोंके प्रति होनेवाला आघात, टक्कर; हानि, घाटा; विपत्ति; कष्टका आघात, मार्मिक पीड़ा। -धुक्की-खी० वह लड़ाई जिसमें दो व्यक्ति एक-दूसरेकी धक्का दें और धुँनोंसे मारें। मु० -खाना-धक्का सहना; ठीकर खाना, अपमानित होना; अटकते रहना।

धक्का-वि० जिसकी धक्का खूब जमी हो।

धक्काना-अ० कि० जलना-जियरा उठवीं सो डोके हियरा धक्कीर करे-धन०।

धक्क-पु० उत्पत्ति, जार। -धाङ-वि० खी० कुलटा।

धक्का-पु० उत्पत्ति, जार।

धक्का-खी० व्यवहारिणी खी।

धक्काधक्का-अ० कि० (दिल) धक्कना।

धक्कानि-खी० बच्चोंका नाक काटनेवाली खी; चमाइन जो बच्चोंका नाक काटती है।

धक्करी-खी० व्यवहारिणी या धक्की मुँहकगी खी।

धक्का-पु० धागा, बोर, सूत।

धक्का-पु० धक्का, खोंका।

धक्क-खी० वनाव-सिंगार; तक्क-धक्क; बैठने-उठने आदि-का ढंग; अंतित गमन; शकल-रूप-धक्का धक्क बना रखी है-कर्मभूमि। [हसका प्रयोग प्रायः 'सज' शब्दके साथ होता है-(सजधक्क)]।

पञ्चा-खी० दे० 'पञ्चा'; कपड़ेकी पञ्ची; पञ्च ।

पञ्जी०-खी० पञ्जी, टुकड़ा ।

पञ्जीका-वि० पञ्चबाका; सजीला ।

पञ्जी-खी० कपड़े, कागज आदिका छंदा पतका टुकड़ा ।

मु० पञ्चिर्वा उचकना-कट या फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाना । -उचकना-चौर या फाटकर टुकड़े-टुकड़े कर देना ।

पट-पु० [सं०] तराजू; तुला राशि; तुलापरीक्षा ।

पटक-पु० [सं०] ब्यालीस रपियोंकी एक पुरानी तौल ।

पटिका-खी० [सं०] पाँच सेरका एक परिमाण, पंसेरी; कीपान, लँगोटी; चौर, चीवर ।

पटी-खी० [सं०] लँगोटी; चौर; गर्भाधानके उपरांत शिबों-को पहननेके लिए दिया जानेवाला बन्ध ।

पटी(दिक्)-पु० [सं०] शिव; तुला राशि; व्यापारी ।

पटंग-वि० नंगा (प्रायः 'मंग'के साथ इसका प्रयोग होता है) ।

पट्ट-पु० शरीरका कमरसे गलेतकका सुभारहित भाग; सिर, हाथ, पैर, पूँछ और पंखकी छोड़कर पशु-पक्षियोंके शरीरका शेष भाग; बूझका जमीनके ऊपरसे बहोतकका भाग जहाँसे शास्त्रार्थ फूटती है, तना; 'पट्ट'की आवाज (इसका प्रयोग प्रायः 'से'के साथ होता है) । -टूटा-वि० किसीकी कमर खुक गयी हो । -पट्ट-खी० किसी भारी बस्तुके गिरने, छूटने आदिसे लगातार उत्पन्न होनेवाली ध्वनि । अ० 'पट्ट-पट्ट' ध्वनि उत्पन्न करते हुए; बिना रके, बेरोक । -से-पट्ट' शब्दके साथ; बेसुटके; बिना रके, अस्तीति ।

पट्टक-खी० हृदयका स्पंदन; खटका, बिचक, रकावट ।

पट्टकन-खी० हृदयका स्पंदन, कलेजेकी धक्कन ।

पट्टकना-अ० कि० हृदयका स्पंदन करना; जीका 'पट्ट-पट्ट' करना; 'पट्ट-पट्ट' शब्द उत्पन्न करना ।

पट्टका-पु० हृदयकी धक्कन; खटका, आशका; गिरने आदिका शब्द; चिबियोंकी बराबर भगानेका पुतळा ।

पट्टकाना-सं० कि० पट्टक पैदा करना; मनमें खटका या आशका उत्पन्न करना; किसी भारी बस्तुकी फेंक या गिराकर अथवा छोड़कर शब्द उत्पन्न करना ।

पट्टपट्टाना-अ० कि० 'पट्ट-पट्ट' शब्द उत्पन्न करना या होना ।

पट्टा-पु० पट्टाका, वेगने गिरने आदिकी आवाज ।

-(छे)से-बेसुटके, बेपटक ।

पट्टवाई-पु० पट्टा करनेवाला, तौलनेवाला ।

पट्टा-पु० नाट; वजन; चार या पाँच सेरकी एक तौल; तराजू; पर्सगा; दल । -बट्टी-खी० पट्टा करना या रॉपना; दलमेंदी; युद्धके लिए प्रस्तुत दो दलोंका अपना सम्यक् बराबर करना । मु० -ठडाना-तौलना ।

-करना-किसी वस्तुकी बरतन सवित तौलनेके पूर्व तराजूके एक पल्लेपर बरतन और दूसरेपर नाट आदि रखकर पल्लोंकी बराबर करना ।

पट्टाका-पु० किसी चीजके जोरने गिरने, फटने आदिसे उत्पन्न होनेवाला शोर शब्द । - (के)से-फुर्त्तसे, चटपट ।

पट्टापट्ट-अ० लगातार 'पट्ट-पट्ट' शब्द करते हुए; जल्दी-

जल्दी, बिना रके ।

पट्टाम-पु० जमीन, पानी आदिपर जोरसे गिरने, फूटने आदिकी आवाज । -से-पटकारी ।

पट्टी-खी० एक वजन जो पाँच सेर और कहीं-कहीं दस सेरका होता है; पाँच सेर रूपयेकी रकम; लकीर; होठोंपर पहनेवाली मिस्ती या पानकी लकीर; कपड़ेका किनारा या हाथर । मु०-जमाना, -छगाना-होठोंपर मिस्ती की तरह जमाना । -पट्टी (करके) छूटना-सब कुछ छूटना । (पक्षियों-बहुतावसे) ।

पट्ट-खी० नुरी आदव, छत ।

पट्टकारना-सं० कि० दुतकारना; धिक्कारना ।

पट्टा-वि० गया हुआ, हटा हुआ । मु०-करना-हटाना, भगाना । -पट्टाना-चलता करना; दाल देना ।

पट्टीगड, पट्टीगड्ढा-पु० भीमकाय मनुष्य; बेडेल आदमी; दोगला ।

पट्टर-पु० तुरहीकी तरह फूँककर बजाया जानेवाला एक पेदा बाजा, सिगा; † दे० 'पट्टरा' ।

पट्टरा-पु० एक प्रसिद्ध विषैला बीषा या उसका फल ।

मु०-खावे फिरना-पागल बना घूमना ।

पट्टरिया-पु० पथिकोंपर पट्टरोंका प्रयोग करनेवाला ठगोंका ढल ।

पट्ट-अ० दुतकारने, धिक्कारनेका शब्द ।

पट्टा-पु० एक छंद । -मंद-पु० एक छंद ।

पट्टर, पट्टरक-पु०, पट्टरका-खी० [मं०] पट्टरा ।

पट्टक-खी० पट्टकनेकी क्रिया या भाव; लपट, ली ।

पट्टकना-अ० कि० आगका इस प्रकार जलना कि उसमेंसे ज्वाली लपटें उठें, धाँपे-धाँपे जलना ।

पट्टकाना-सं० कि० आगमें लपट पैदा करना; दहकाना ।

पट्टकाना-अ० कि० दे० 'पट्टकना'; इतराना ।

पट्टनजय-पु० [सं०] अजुन; विष्णु; शरीरमें रहनेवाली पाँच बाजुओंमेंसे एक; अग्नि; अजुन नामक वृक्ष; चीतेका वेग; एक नाग ।

पट्टन-वि० जिनमें (कुछ) जोषा जाय; (असुक्त संस्थासे) युक्त; दे० 'पट्टन' । खी० खी; नायिका; युवती । पु० [सं०] ऐहिक सुखके माधनभूत द्रव्य, भूमि आदि; वित्त, संपत्ति; पूँजी; गोधन; खटका मांस; पुरस्कार; मुकाबला, प्रतिद्विंदा; आवाज, शब्द; विष व्यक्ति, स्नेहभाजन; धनिष्ठा नक्षत्र; गणितमें योगका चिह्न; कुडलीमें लग्नसे दूरता स्थान । -काय, -काय्य-वि० लोभी । -कुबेर-पु० वह व्यक्ति जो कुबेरके समान धनी हो, जिस व्यक्ति के पास प्रभु धन हो । -केलि-पु० कुबेर । -तेरस-खी० [हिं०] कासिक-कृष्णा त्रयोदशी (इस दिन लग्नमेंकी पूजा की जाती है और प्रायः लोग नये बरतन खरीदते हैं) । -बूँड-पु० जुमाना, अर्धदंड । -दू-वि० उदार ।

पु० उदार व्यक्ति; कुबेर; अग्नि; धनंजय नामकी शरीरस्थ बाजु; चीतेका वृक्ष । -विशा-खी० उत्तर विशा ।

-दा-वि० जी० धन देनेवाली । खी० आधि-कृष्णा एकादशी । -दायी(दिक्)-पु० अग्नि । -देव-पु० कुबेर । -धानी-खी० खजाना । -धाम्य-पु० हपया-पैसा, अन्न आदि । -धाम(रु)-पु० हपया-पैसा और

धर-वार। -धारी(रिन्)-पु० कुबेर। बहुत बड़ा धनी।
 -माध-पु० कुबेर। -पति-पु० कुबेर; खजाची।
 -पश-पु० बही-खता। -पाख-पु० धनी मनुष्य,
 धनाढ्य व्यक्ति। -पाख-पु० धनका रखक; खजांची;
 कुबेर। -पिशाच-पु० दे० 'अर्धपिशाच'। -पिशा-
 चिका-पिशाची-की० धनसंचयकी प्रवृत्ति तुष्णा।
 -प्रयोग-पु० लाभकी इच्छासे किसी व्यापारमें
 धन लगाना; सदपर बचवा देना। -मृद्-पु० धनका
 गर्व। -मूल-पु० मूल धन, पूँजी। -बाव-पु०
 (मनीसूत्र) वह मुकदमा जिसमें धनके लिए दाना किना
 गया हो। -साखी-(किन्)-वि० धनवाला, जिसके
 पास धन हो, धनी। -स्वान-पु० कुठलोमे लग्नसे
 दूसरा स्थान जिसमें पत्ने ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार किसीका
 धनवान् या निर्धन होना जाना जाता है; खजाना।
 -स्वामी(मिन्)-पु० कुबेर। -हर-वि० धन हरण
 करनेवाला। पु० चोर; उत्तराधिकारी; एक गंधद्रव्य।
 -हार्थ-वि० जो धन देकर वशमें किया जा सके। -
 ह्रीन-वि० निर्धन, दरिद्र।

धन-धानका समासगत रूप। -कटी-की० धानकी
 कटाई; एक तरहका कपड़ा। -कर-पु० वह खेत या
 भूमि जिसमें धान बोया जाता है; धानके खेतकी कड़ी
 मिट्टी। -कुटी-की० धान कूटनेका औजार; लाल रंगका
 एक कीड़ा। -सार-की० धान्य रखनेका स्थान।

धनक-पु० [सं०] धनकी इच्छा, धनकी कामना।

धनदात्री-की० [सं०] दे० एक लता।

धनमान-वि० धनवान्।

धनवर्त*-वि० धनवान्।

धनवती-वि० की० [सं०] धनवाली। की० धनिष्ठा नक्षत्र।

धनवान्(धन्)-वि० [सं०] धनवाला, धनी।

धनसह-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसे धनकी कालसा हो;
 मोलक।

धना*-की० युवती; बच्चा।

धनाश्व-वि० [सं०] धनवान्, दौलतमंद।

धनाधिप-पु० [सं०] कुबेर।

धनाधपक्ष-पु० [सं०] कुबेर; खजाची।

धनाना'-अ० कि० गायका गाभिन होना।

धनापहार-पु० [सं०] अर्धदक; छट।

धनार्चित-वि० [सं०] भेंट द्वारा सम्मानित या संतुष्ट
 किया हुआ।

धनार्थी(यिन्)-वि०, पु० [सं०] धन चाहनेवाला।

धनाशा-की० [सं०] धनकी आशा, अर्थप्राप्तिकी आशा।

धनाश्री-की० [सं०] एक रागिनी।

धनि*-की० युवती; बच्चा। *वि० धन्य। -धनि*-अ०
 धन्य-धन्य।

धनिक-वि० [सं०] धनवान्; धनी। पु० धनाढ्य मनुष्य;
 कणदाता, उत्तमर्ष; स्वामी, पति; ईमानदार वणिक्;
 व्यापारी; प्रियंगु वृक्ष; धनिया।

धनिका-की० [सं०] वणिक्की की; बच्चा; युवती; प्रियंगु
 वृक्ष।

धनिषा-की० एक प्रसिद्ध मसाला; युवती; बच्चा, की।

धर-क

धनिषामाक-पु० गलेका एक गहना।

धनिष्ठा-की० [सं०] एक नक्षत्र।

धनी, धनीका-की० [सं०] युवती की।

धनी(मिन्)-वि० [सं०] धनवाला, दौलतमंद; कुसल,
 सिद्धिदाता-जैसे 'कलमका धनी'। पु० धनवान् मनुष्य;
 उत्तमर्ष; किसी वस्तुका स्वामी। -मानी-वि० [हिं०]
 धनवान् और प्रतिष्ठित। - (बातका)-दे० 'बातका धनी'।

धनीयक-पु० [सं०] धनिया।

धनुः-धनुस्का समासगत रूप। -पट-पु० पिवाल
 वृक्ष। -शाखा-की० मूवां लता। -श्रेणी-की० मूवां;
 अर्द्धवक्रणी।

धनु-पु० [सं०] धनुष; धनुर्धरा; मेघ आदि बारह राशियोंमें-
 से एका; एक लग्न; प्रियंगु वृक्ष; चार हाथकी एक माप;
 रेतोका तट। -कार*-पु० धनुर्धर।

धनुषा-पु० वह धुननेका औजार; धनुष।

धनुर्ही-की० दे० 'धनुर्ही'।

धनुक-पु० धनुष; श्वधनुष।

धनुर्-धनुस्का समासमें प्रयुक्त रूप। -गुण-पु०
 प्रत्यंवा, धनुषकी छेरी। -गुणा-की० मूवां लता। -

ग्रह-पु० धनुर्धर; धनुर्विद्या; धुराद्राका एक पुत्र। -ग्राह
 -पु० धनुर्धर। -उवा-की० प्रत्यंवा। -हुन-पु०

बौस। -धर-पु० धनुष धारण करनेवाला; वह व्यक्ति जो
 धनुर्विद्या जानता हो, तीरदाजी। -धारी(रिन्)-वि०

जो धनुष धारण करे। पु० दे० 'धनुर्धर'। -मृद्-
 पु० दे० 'धनुर्धर'। -मल्ल-पु० दे० 'धनुर्वेध'। -मध्य

-पु० धनुषका वह भाग जो तीर चलाने समय बायें हाथ-
 की मुठ्ठीमें पकड़ा जाता है। -मार्ग-पु० धनुषकी तरह

वक्र रेखा। -माखा-की० मरोरफली, मूवां। -यज्ञ-
 पु० एक वह जिसे सीताके लिए वर धुननेके निमित्त

जनकने किया था; एक वह जिसे कृष्णकी धोखा देनेके
 लिए कसने किया था। -धास-पु० जवासा। -धास-

-पु० एक वातरोग। -विद्या-की० तीर चलानेकी विद्या,
 बाणविद्या, तीरदाजी। -वृक्ष-पु० बौस; पीपलका पेड़;

मिलावीं। -वेध-पु० धनुर्वेधका उपवेद जिसमें मुख्यतः
 धनुर्विद्याका और अंशतः अन्य शास्त्रोंका वर्णन है।

धनुष-पु० [सं०] दे० 'धनुस्'। -आकार-वि० धनुषके
 आकारका, आकारमें धनुष जैसा। -कर-पु० धनुष

बनानेवाला; धनुर्धर। -कार-पु० धनुष बनानेवाला।
 -कोटि-पु० धनुषका छोर; एक तीर्थ जो बदरिकाश्रमके

मार्गमें पड़ता है; एक तीर्थ जो रामेश्वरके दक्षिण-पूर्वमें
 स्थित है। -पट-पु० पिवाल वृक्ष। -पाणि-वि० जिसके

हाथमें धनुष हो।

धनुष्मान्(मन्)-पु० [सं०] धनुर्धर; उत्तर दिशाका एक

पर्वत।

धनुस्-पु० [सं०] तीर चलानेका एक प्रसिद्ध साधन।

धनुर्ही-पु० धनुष।

धनुर्हाई*-की० धनुषकी लड़ाई; बाणयुद्ध।

धनुर्विद्या-की० दे० 'धनुर्ही'।

धनुर्ही*-की० छोटा धनुष जिससे लकड़े लेलेते हैं।

धन्-की० [सं०] धनुष। पु० अन्नका भवार।

धनेचक—पु० [सं०] धनिया ।
धनेश, **धनेश्वर**—पु० [सं०] कुबेर; खजानी; विष्णु; लक्ष्मण दूसरा स्थान ।
धनेस—पु० बगला जैसा एक पक्षी; * धनेश, कुबेर ।
धनेश्वरा—स्त्री० [सं०] धनकी इच्छा ।
धनेयी (विष्णु)—वि० [सं०] धन चाहनेवाला; अपना रुपया सौंतेला (महाजन) ।
धनोष्मा (मनु)—स्त्री० [सं०] धनकी गरमी ।
धन्या—पु० धरना, किसी बात के लिए अथवा प्रार्थना ।
धन्यासेठ—पु० बहुत धनी मनुष्य ।
धनी—स्त्री० पत्राचम पायी जानेवाली गायों-बैलोंकी एक जाति; घोड़ेकी एक जाति ।
धन्य—वि० [सं०] कृतार्थ; प्रशंसीय; पुण्यात्मा, सुकृति; भाग्यशाली; धन देनेवाला; धनी । अ० साधुबाद देनेके लिए बोला जानेवाला एक शब्द । पु० भाग्यवान् व्यक्ति; नास्तिक; विष्णु; अश्वकर्ण वृक्ष; धन; धनिया । —बाद्—पु० 'धन्य-धन्य' कहना, साधुबाद; बाद्बाही; कृतज्ञताप्रकाश । अ० कृतज्ञता प्रकट करनेका एक शब्द ।
धन्यस्मय—वि० [सं०] अपनेकी धन्य; भाग्यशाली माननेवाला ।
धन्या—स्त्री० [सं०] उपमाता, धात्री; छोटा आँवला; धनिया ।
वि० स्त्री० प्रशंसनीय; भाग्यशालिनी; पुण्यवती (स्त्री) ।
धन्याक—पु० [सं०] धनिया ।
धन्या—पु० [सं०] दे० 'धनुर्दक्ष' ।
धन्यतर—पु० [सं०] चार हाथकी एक माप ।
धन्यतरि—पु० [सं०] देवदेव जिनकी गणना चौदह रक्षोंमें है; त्रिकुमारित्येकी सभाके नौ रक्षोंमेंसे एक । —प्रस्ता—स्त्री० कटुकी ।
धन्य—पु० [सं०] धनुष । —धि—पु० धनुषकी खोली ।
धन्य (धु)—पु० [सं०] मरुपल; तट; आकाश । —ज—वि० मरु देशमें उत्पन्न । —दुर्ग—पु० वह दुर्ग जिसके चारों ओर पाँच बोजनकी दूरीमें मरुभि हो । —धवास, —धवासक, —धास—पु० दुरालभ ।
धन्यन—पु० [सं०] वृक्ष-विशेष, धनुर्दक्ष ।
धन्या (न्यन)—पु० [सं०] दे० 'धन्य (धु)'; वाप ।
धन्याकार—वि० [सं०] धनुषके आकारका ।
धन्यन—पु० [सं०] सुख ।
धन्यी (न्यन)—वि० [सं०] जिसने धनुष धारण किया हो; धन्य; विदग्ध । पु० धनुर्धर; अर्जुन; विष्णु; शिव; अर्जुन वृक्ष; बकुल, मौलसिरी; दुरालभ; धनु राशि ।
धप—स्त्री० 'धप'की आवाज, किसी भारी चीजके गिरनेकी आवाज; चपल ।
धपना—अ० कि० वेगसे आगे बढ़ना, क्षपटना; † अ० कि० मारना, पीटना ।
धप्या—पु० धप्य, तमाचा; टोटा, नुकसान ।
धप-धप—स्त्री० किसी मोटी और नरम चीजके गिरने या उसपर आघात करनेसे होनेवाला शब्द । अ० 'धप-धप'की आवाजके साथ ।
धप्या—पु० किसी वस्तुपर पड़ा हुआ मड़ा और बेमेल चिह्न, दाग; कलंक; ऐव, दोष । **धु**—छाया—कलंकित करना,

बदनाम करना ।
धम—पु० [सं०] चंद्रमा; कुम्भ; वम; मद्धा । स्त्री० [हिं०] किसी भारी वस्तुके गिरने या पड़ने, छत आदिपर दबाव डालते हुए चलनेसे होनेवाला शब्द । —गजर—पु० उत्पात; लड़ाई । —धम—स्त्री० दैरतक होती रहनेवाली 'धम'की आवाज । अ० 'धम-धम' शब्दके साथ । —से—दे० 'पञ्चमसे' ।
धमक—स्त्री० दे० 'धम'; भारी वस्तुके आघात या चलने, दौड़नेसे उत्पन्न कंप । पु० [सं०] (धौकनेवाला) कोशर ।
धमकना—अ० कि० 'धम' शब्द उत्पन्न करते हुए गिरना; रुक-रुककर पीड़ा देना, प्रहार करना; क्षपटना । † स० कि० हथिया लेना; जक देना, लगा देना (वैसा, मुर्माणा) ।
धु—धमक पड़ना (या आ धमकना)—वेगसे आ पहुँचना, चटपट आ जाना ।
धमकना—स० कि० धमकी देना, छराना, अहितकी चेतावनी देना ।
धमकी—स्त्री० धमकानेकी क्रिया; धुक्की ।
धमधमाना—अ० कि० 'धम-धम' शब्द करना ।
धमधूसर—वि० मोटा और बेढील (आदमी) ।
धमव—पु० [सं०] हवा फूँकनेका काम; भाषी चलनेवाला मनुष्य; नरकट । वि० फूँकनेवाला; निष्ठुर ।
धमना—स० कि० धौकना; हवा भरना ।
धमभि, **धमवी**—स्त्री० [सं०] नाड़ी, मिरा; गरदन, एक गंधर्व्य; हल्दी; फूँकनी ।
धमिका—स्त्री० [सं०] तुरही ।
धमसा—पु० दे० 'धौसा' ।
धमाका—पु० भारी वस्तुके गिरनेका गमोर शब्द ।
धमाचौकरी—स्त्री० उछल-कूद, कूद-फौद ।
धमाधम—अ० लगातार 'धम-धम' शब्दके साथ ।
धमार, **धमाल**—पु० फागका एक भेद (संगीत); धक ताल । स्त्री० उपद्रव; उछल-कूद; कलावाजी ।
धमारिया—वि० उपद्रव, उछल-कूद मचानेवाला; कलावाज । पु० धमार गानेवाला ।
धमारी—वि० धमाचौकरी मचानेवाला । * स्त्री० हीलीकी कोश ।
धमासा—पु० जवासा ।
धमि—स्त्री० [सं०] फूँकनेकी क्रिया ।
धमिका—स्त्री० [सं०] लोहारकी स्त्री ।
धमूका—पु० आघात; धुँसा ।
धमेश—पु० एक रूप जो काशीमें उत्तर सारनाथमें उस स्थानपर बनाया गया है जहाँ बुद्धने 'धर्म-चक्रप्रवर्तन' आरंभ किया था ।
धम्मक, **धम्मिक**—पु० [सं०] जूड़ा, केशकलाप; फूलों, मीठियों आदिसे सजाया हुआ जूड़ा ।
धववा—अ० कि० दौड़ना, धावा मारना—वि० सुजानके संग धवे धरि धीर है—सुजानच० ।
धरता—वि०, पु० धारण करनेवाला ।
धर—वि० [सं०] धारण करनेवाला, ग्रहण करनेवाला (इस अर्थमें इत शब्दका प्रयोग केवल समासमें होता है) । पु० पर्वत, कपासकी रूई; कुमराज, कच्छपरूपधारी विष्णु;

एक बस्तु; विद। खी० [हिं०] भरने, पकड़नेकी क्रिया;
* पृथिवी-‘भर अंबर दिसि विविसि बदे अति सायक
किन समान’-सर। -पकड़-खी० गिरफ्तारी।

धरक*-खी० दे० ‘धक्का’।

धरकना*-अ० कि० दे० ‘धक्कना’।

धरका*-पु० दे० ‘धक्का’।

धरकार-पु० एक नीच जाति जो बौंसकी डलिया आदि
वनानेका काम करती है, बंसोर।

धरण-पु० [सं०] धारण करनेकी क्रिया; एक प्राचीन तौल;
पुल; सेतु; सहारा; पहाडका किनारा; लोक; स्तन; सूर्य;
धान; विनायक।

धरणि, धरणी-खी० [सं०] पृथ्वी; सेमरका पेड़; शहतीर;
नस, नाडी।-कंड-पु० एक कंद।-कीलक-पु० पर्वत।
-ज-पुत्र-सुत-पु० मंगल ग्रह; नरकासुर।-जा-
पुत्री-सुता-खी० जनककी पुत्री सीता।-जर-पु०
महाकच्छप; शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा; एक हस्ती जो
पृथ्वीका धारण करनेवाला माना जाता है।-खल-पु०
शेषनाग; पर्वत; विष्णु।-पति-पु० राजा।-र-
प्लव-पु० ससुर।-भुल-पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु;
राजा।-मंडल-पु० भूमंडल।-रुह-पु० रुख।

धरणीय-वि० [सं०] धारण करने योग्य; सहारा देने
योग्य।

धरणीभर-पु० [सं०] शिव; विष्णु; राजा; भूपति।

धरता-पु० धारण करनेवाला; कृणी, कर्जदार।

धरती-खी० पृथ्वी, भूमंडल, संसार।-का फूल-कुंज-
मुक्ता; मेढक; नया अमीर।

धरहर*-पु० दे० ‘धराधर’। खी०, अ० दे० ‘धक्क’।

धरहरा*-पु० धक्ककी, धक्कन।

धरहरावा-अ० कि० दे० ‘धक्कवाना’।

धरन-खी० भरनेकी क्रिया या दम गर्भासय या उत्तका
आधार; हड; शहतीर; † जमीन। पु० दे० ‘भरना’।

धरना-सं० कि० पकड़ना, धामना; रखना, स्थापन करना;
धारण करना, पहनना; पास रखना, (किसीको) देखरेखमें
रखना; ग्रहण करना; सहायक बनाना, (किसीका) पछा
पकड़ना; रखेलीकी भीति रख लेना, पत्नी बना लेना;
गिरवी या बंधक रखना; पक्का करना, ठहराना। पु०
माथेना या माँग पूरी न होनेतक किसीके यहाँ अक्कर
बैठना या खड़े रहना। मु० धरा-डका-अवसर विशेषके
लिए सचित वस्तु। धरा रह जाना-प्रयोगमें न आना।

धरनि-खी० दे० ‘धरणी’; * टेक-‘ज्यो अहि डसत उदर
नहि पूरत ऐसी धरनि पती’-सर। † शहतीर।

धरनी-खी० दे० ‘धरणी’; शहतीर; * टेक-‘धिये धर
चातकी धरनी’-कवितावली।

धरमेत-पु० धरना देनेवाला।

धरम*-पु० दे० ‘धर्म’।-सार-पु०, खी० धर्मशास्त्र;
सदावर्त।

धरवावा-सं० कि० ‘धरना’का प्रे०।

धरवना*-सं० कि० धर्पण करना, दबाना, दमन करना,
पराभव करना; डराना; धूर्ण करना; फाड़ना।

धरसवा-अ० कि० दब जाना, आक्रांत हो जाना; डरना,

सहम जाना। सं० कि० दबाना, सँटना।

धरसनी*-खी० दे० ‘धरणी’।

धरहर*-खी० बीचमें पक्कर लकने-लगवनेवालोंको लकई-
से विरत करना; बचाव; रक्षा; धैर्य; धीरज।

धरहरना*-अ० कि० ‘धक्क’ शब्द करना, धक्काना।

धरहरा-पु० सीनार, बौरर।

धरहरिया-पु० वह जो बीचमें पक्कर लकने-लगवनेवालों-
को लकईसे विरत करे, बीच-बचाव करनेवाला; रक्षक;
† बीच-बचाव; * हृद विश्वास, निश्चित मति।

धरा-खी० पका; चार सेरकी एक तौल; तौलकी बराबरी;
बाट; [सं०] पृथ्वी, धरती, जमीन; गर्भाशय; मच्चा;

माखी; भैंसरूप माइणोंको दी जानेवाली स्वर्णराशि
आदि; एक वर्णवृत्त।-कडब-पु० कर्जवाका एक भेद।

-सल-पु० पृथ्वीका सतह; पृथ्वी; क्षेत्रफल।-देव-
पु० ब्राह्मण।-धर-पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा।

-धरन*-पु० दे० ‘धराधर’।-धार-पु० शेषनाग।

-पति-पु० राजा; विष्णु।-पुत्र-पु० मंगल ग्रह;
नरकासुर।-भुक्(ज्)-पु० राजा।-भुल-पु०

पहाड़।-भायी(विन्)-वि० धरतीपर सोया, गिरा
हुआ; मुझमें निहत।-सुर-पु० ब्राह्मण।-सुलु-पु०

मंगल ग्रह; नरकासुर।
धराड-वि० जो सुरक्षित रखा रहे और विशेष अवसरोंपर
ही काममें लाया जाय।

धराक, धराका*-पु० पकड़नेकी आवाज।

धरात्मज-पु० [सं०] मंगल ग्रह; नरकासुर।

धरात्मजा-खी० [सं०] सीता।

धराधिप, धराधिपति-पु० [सं०] राजा, भूपति।

धराधीश-पु० [सं०] राजा, भूपति।

धराना-सं० कि० पकड़ना, धामना, निश्चित कराना।

धरामर-पु० [सं०] ब्राह्मण।

धराख-पु० [सं०] एक अक्ष।

धराहर-पु० दे० ‘धरहरा’।

धरित्री-खी० [सं०] पृथ्वी।

धरिमा(मन्)-खी० [सं०] तराजू; रूप; शकल।

धरी-खी० चार सेरकी एक तौल; उपपत्नी।

धरुण-पु० [सं०] ब्रह्मा; स्वर्ग; पानी; मत; राय; वह स्थान
जहाँ कोई वस्तु सुरक्षित रखी जाय; अग्नि; दूध पीनेवाला
बछड़ा; टेक; सहारा; धर्म; हृद भरती।

धरेका, धरेका-पु० उपपति, बिना स्वाह किये पतिरूपमें
स्वीकार किया हुआ पुरुष।

धरेजा-पु० खी० रखेली बनाकर रखना। खी० रखेली,
उपपत्नी।

धरेखी, धरेखी-खी० रखेली, उपपत्नी।

धरेस-पु० [सं०] राजा, भूपति।

धरेस*-पु० दे० ‘धरेस’।

धरेवा†-पु० धरनेवाला, पकड़नेवाला।

धरोहर-खी० वह वस्तु या द्रव्य जो कुछ समयके लिए
किसी दूसरेके पास रख विश्वाससे रखा गया हो कि माँगने-
पर पुनः उसी रूपमें मिल जायगा, शादी, अमानत।

धरौकी†-खी० एक छोटा पेड़।

धर्मशास्त्र-धर्म उपपत्ती रखनेकी चाल ।

धर्मा (रु) - पु० [सं०] धारण करनेवाला, टेकनेवाला ।

धर्मर - पु० [सं०] धर्म ।

धर्म - पु० [सं०] धर्म, धर्म; सहाय, टेक; यज्ञ; पुण्य; नैतिकता ।

धर्म - पु० [सं०] अन्वयधर्म और निःश्रेयसका साधनमूल वेद-धर्मित कर्म (जैसे यज्ञ); एक प्रकारका अष्ट धर्मसे स्वर्गकी प्राप्ति होती है (मी०); लौकिक, सामाजिक कर्तव्य; वह कर्म जिससे वर्ण, आश्रम, जाति आदिकी दृष्टिसे करना आवश्यक हो (इसके पाँच भेद हैं—(१) वर्णधर्म, (२) आश्रमधर्म, (३) वर्णाश्रमधर्म, (४) गौणधर्म तथा (५) नैमित्तिक धर्म); मनुने धर्मके दस लक्षण माने हैं—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध; उपमेय और उपमान दोनोंमें रहनेवाला साधारण धर्म; क्षत्रि, मुनि या आचार्य द्वारा निर्दिष्ट वह कृत्य जिससे पारलौकिक सुख प्राप्त हो; किसी वस्तु या व्यक्तिके द्वारा बनी रहनेवाली सहज दृष्टि, सम्भाव, प्रकृति; ईश्वर या सत्त्विकी प्राप्तिसे लिए किसी महात्म्या या पैगंबर द्वारा प्रवर्तित मतविशेष; आम, आचार्य, राजा या सरकार द्वारा निर्दिष्ट लोकव्यवहार-संबंधी नियम; यम; पुण्य; निष्पक्षता; औचित्य; सत्संग; तरीका, ढंग; बुधिभिर; आचार; शान; अहिंसा; उपनिषद्; न्याय; अनुष्ठ; सीमापत्ती; आत्मा; कुडलीमें लक्ष्मसे नवीं स्थान; [हिं०] ईमान । -कथक - पु० विधान, नियमकी व्याख्या करनेवाला । -कर्मन् - पु० धार्मिक कृत्य । -काम - वि० जो कर्तव्यव्युक्तिसे धार्मिक कृत्य को । -काच - पु० बुद्ध । -काच - पु० धार्मिक कृत्य । -कील - पु० राजशासन । -कृच्छ्र - पु० धर्मकी दृष्टिसे किसी कार्यके उचित तथा अनुचित दोनों प्रतीत होनेसे उत्पन्न दीर्घमान, ऐसी स्थिति जिसमें धर्मपालन करना बहुत कठिन हो । -केतु - पु० बुद्ध । -कोष - पु० धर्मकी कोष; विधानकोष । -क्रिया - लो० धार्मिक कृत्य । -क्षेत्र - पु० भारतवर्ष जो धर्मोपासनोंकी कर्मभूमि माना गया है; कुरुक्षेत्र । -गुप्त - पु० विष्णु । -ग्रंथ - पु० धर्मविशेषका आधारभूत ग्रंथ, वह ग्रंथ जिसमें किसी धर्मसे संबद्ध शिक्षाएँ दी गयी हैं । -घट - पु० छुगधित जलसे भरा हुआ घड़ा जिसे कुछ मोक्ष्य वस्तुओंके साथ वैशाखमर दान करना पुण्यकर कहा गया है । -धर्मी - लो० [हिं०] ऐसी जगह ईंगी बड़ी जिते सभी लोग देख सकें । -धर्म - वि० अनैतिक, अविविहित । -धर्म - पु० धर्मग्रन्थ; बुद्धदेव; बुद्धकी शिक्षा; एक अन्न जो प्राचीन कालमें प्रयुक्त होता था । -धर्म - पु०, -धर्म - लो० धर्मका पालन या आचरण । -धर्म (रिन्) - पु० तपस्वी; सम्प्रदायी । वि० जो धर्मानुसृत आचरण को । -धर्म - पु०, -धर्म - लो० धार्मिक विषयोंका समन । -धर्म - वि० धर्मसे अष्ट, पतित । -ज - पु० प्रथम और प्रथम; बुधिभिर; एक बुद्ध । वि० धर्मसे उत्पन्न । -जन्मा (जन्म) - पु० बुधिभिर । -जन्म - वि० जिसकी उत्पत्ति धर्माचरणसे हो । -जिज्ञासा - लो० धार्मिक विषयोंकी जाननेकी इच्छा; धर्मके साधनमूल कर्मोंकी जिज्ञासा । -जीवन - पु० वह ज्ञात जिसकी जीविका

धार्मिक कृत्य करने और दान लेने आदिसे चलती हो । वि० धर्मानुसार कार्य करनेवाला । -ज्ञ - पु० बुद्धदेव । वि० जिसे धर्मके स्वरूपका ज्ञान हो । -न्याय - पु० धर्मकी ओर देना, धर्मविशेषके ऊपरमे विभास ददा देना । -श्राता (शु) - पु० धर्मकी रक्षा करनेवाला । -द - वि० जो अपने धर्मका फल दूसरोंको दे दे । पु० कार्तिकेयका एक अनुचर । -दान - पु० साधक दान, निष्काम दान । -दार - लो० धर्मपत्नी । -दुष्ठा - लो० वह गाय जिसका दूध केवल धार्मिक कृत्योंके लिए दुहा जाता हो । -देशक - पु० धर्मोपदेशक । -धर्म - लो० गंगा । -धर्मोद्दी (हिन्) - पु० दैत्य । वि० अवर्मा । -धर्म - पु० [हिं०] धर्मके लिए उठाया जानेवाला कष्ट; धर्मकी परेशानी । -धर्म - पु० बुद्धदेव । -धर्म - वि० जो धर्मपालनमें बद्धचक्र हो । -धर्म - धर्म (विन्) - पु० वह जिसने धार्मिकताका ढोंग रचा हो, पाखंडी । -मन्द - पु० बुधिभिर । -माय - पु० जैनोंके पंद्रहवें तीर्थंकर । -जाम - पु० विष्णु । -निवेश - पु० धर्ममें भक्ति । -निष्ठ - वि० जो धर्ममें आस्था रखता हो, धर्मपरायण; जो धर्मानुसृत आचरण करता हो । -निष्ठा - लो० धर्ममें आस्था, विश्वास, अटका - निष्पत्ति - लो० धर्म या कर्तव्यका पालन । -पट - पु० राजा या अधिकारीकी ओरमे दिया गया व्यवस्थापक । -पति - पु० वरण । -पत्तन - पु० श्रावस्ती नगरी; गोल मिरव । -पत्नी - लो० धर्मशास्त्रके नियमोंके अनुसार आही हुई स्त्री । -पत्र - पु० गूलर । -पथ - पु० धर्मका मार्ग । -पर - वि० धर्मपरायण । -परायण - वि० धर्ममें निष्ठा रखनेवाला । -परिणाम - पु० एक धर्मके अनन्तर दूसरे धर्ममें प्रवेश (सी०) । -पाठक - पु० धर्मशास्त्र पढ़ने या पढ़ानेवाला । -पाल - पु० धर्मकी रक्षा करनेवाला; दंड (जिनके डरसे लोग धर्मविरुद्ध आचरण नहीं करते); राजा दशरथके एक भती । -पीठ - पु० धर्मका मुख्य स्थान; वह स्थान जहाँ धर्मकी व्यवस्था दी जाय; काशी । -पीठा - लो० धर्म या न्यायका उल्लेख । -पुत्र - पु० बुधिभिर; धार्मिक नाबालकों उत्पन्न किया हुआ पुत्र । -पुरी - लो० वसपुरी; न्यायालय । -पुस्तक - लो० दे० 'धर्मग्रंथ' । -प्रतिरूपक - पु० किसी संपन्न मनुष्य द्वारा दुःख भोगोंसे हुए स्वजनोंकी उपेक्षा करनेके केवल यशसे लिए दूसरोंको दिया गया दान (स्मृ०) (ऐसा दान धर्मका आवश्यकता है) । -प्रभास - पु० बुद्धदेव । -प्रवक्त (कु) - पु० धर्मनिर्णायक राजकर्मचारी । -प्रवचन - पु० बुद्धदेव; कर्तव्यशास्त्र । -बल - पु० धर्माचरणका बल । -बाह्य - वि० धर्मविरुद्ध । -बुद्धि - लो० धर्मकी ओर प्रवृत्त बुद्धि; धर्म-अधर्मका विश्लेषण करनेवाली बुद्धि । वि० जिसकी बुद्धि धर्मकी ओर प्रवृत्त हो; जो धर्म-अधर्मका विचार करे । -भगिनी - वि० वह स्त्री जो धर्मके जाते रहिन लगे; गुरुकन्या । -भगिनी - लो० धर्मपरायणा पत्नी । -भगण - पु० कथावाचक । -भिक्षुक - पु० धर्मार्थ भिक्षा माँगनेवाला । (मनुस्मृतिके अनुसार नौ प्रकारके भिक्षुक माने गये हैं) । -भीह - वि० जिससे धर्म छुटनेका भय बना हो; जो अधर्मसे डरता हो । -भृष्ट - पु० राजा; धर्मपरायण व्यक्ति । -भृष्ट - वि० धर्मसे गिरा

हुआ, पतित । -**आता(त्)**-पु० वह मनुष्य जो धर्मके नाते भाई रूगे; पु० पुत्र । -**मति**-स्त्री०, वि० दे० 'धर्म-नुदि' । -**महामात्र**-पु० धर्मविभागका मंत्री । -**मूल**-पु० धर्मका प्रामाणिक आधार -(१) वेद, (२) धर्मश्रीका आचार, (३) आत्मतुष्टि । -**मेघ**-पु० योगमें एक समाधि जिसमें विष्ट वृत्तियोंसे मुक्त हो जाता है । -**बद्ध**-पु० वह यह जिसमें किसीकी वक्ति न हो । -**बुध**-पु० सत्ययुग । -**बुद्ध**-पु० वह बुद्ध जिसमें किसी प्रकारका अन्याय या छल-कपट न हो, न्यायपूर्ण बुद्ध । -**बृष**, -**शौनि**-पु० विष्णु । -**रक्षक**-पु० दे० 'धर्मराजा' । -**रक्षित**-पु० एक शब्द उपदेशक जिसे अशोकने धर्मोपदेश करनेके लिए बलुविस्तार भेजा था । -**रत्न**-वि० धर्मपरायण । -**रति**-वि० धर्मरत । स्त्री० धर्मानुराग । -**राहु**, -**राक्ष**-पु० दे० 'धर्मराज' । -**राज**-पु० बुधिर; समराज; बुद्धदेव; राजा । -**रोषी(चिन्)**-वि० धर्म विरुद्ध, अन्याय । -**लक्षण**-पु० वेद । -**लुप्तोपमा**-स्त्री० उपमालंकारका एक भेद, जिसमें धर्मका (उपमेय-उपमानमें समान रूपसे पायी जानेवाली बातको) कथन किया गया हो । -**बल्ल**-वि० जिसे धर्म प्यारा हो । -**वर्ती(तिन्)**-वि० जो धर्मानुसृत आचरण करे । -**वर्धन**-पु० शिव । -**वर्मा(र्मन्)**-पु० धर्मरक्षक । -**वाद**-पु० धार्मिक नियमपर वाद-विवाद । -**वासर**-पु० पूर्णिमा । -**वाहन**-पु० शिव । धर्मराजका वाहन-मैसा । -**विन्द(द्)**-वि० धर्मह । -**विद्या**-स्त्री० धर्मका ज्ञान करानेवाली विद्या-जैसे मीमांसा । -**विश्व**-पु० धर्मका न्यातिक्रम । -**वीर**-पु० वह जिने धर्मपालनके प्रति इतना अटल उत्साह हो कि किसी भी स्थितिमें अपने धर्ममें न डिगे; वीर रसका एक भेद । -**बुद्ध**-वि० जो धर्माचरणकी दृष्टिमें श्रेष्ठ हो । -**वैतसिद्ध**-पु० वह जो तुरे मार्गमें पैसा कमाकर अपने-को धार्मिक मित्र करनेके लिए बहुत दान-पुण्य करता हो । -**व्याध**-पु० मिथिलावासी एक व्याध जिम्ने कौशिक नामके तपस्वीको धर्मका तत्त्व समझाया था । -**व्रत**-वि० धर्मपरायण । -**व्रत**-स्त्री० मरीचि कृषिकी पत्नी जो परम साजी थी । -**शाला**-स्त्री० वह स्थान जहाँ धर्मार्थ भ्रष्टाचि रेंडता हो, धर्मसत्र; न्यायालय; वाजियोंके निःशुल्क ठहरनेके लिए बनवाया हुआ स्थान । -**शास्त्र**-पु० वह आज ग्रंथ जिसमें मनुष्यके कर्तव्यकर्मव्य, दायविधान आदिकी व्यवस्था हो (मानु, याज्ञवल्क्य आदिकी स्तुतियाँ) । -**शास्त्री(चिन्)**-पु० धर्मशास्त्रका पंडित । -**शील**-वि० जो धर्मके अनुसार आचरण करे; जो धर्मानुष्ठानमें बराबर लगा रहे । -**संकट**-पु० दे० 'धर्मकृच्छ्र' । -**सर्ग**-पु० धर्ममें लगन; दोग । -**संगति**-स्त्री० धर्म-संबंधी वाद-विवाद; बौद्धोंका धर्मसम्मेलन जो बुद्धकी स्तुतिके बाद धार्मिक विषयोंपर विचारके लिए छ बार हुआ था । -**संघ**-पु० किसी धर्मके अनुयायियोंका संघ । -**संहिता**-स्त्री० वह ग्रंथ जिसमें धार्मिक विषयोंका प्रतिपादन हो । -**समा**-स्त्री० न्यायालय, कचहरी । -**साहाय**-पु० धार्मिक कृत्योंमें साध देनेवाला, जैसे कृषिक् आदि । -**सार**-पु० उत्तम, पुण्य कर्म । -**सारी**-स्त्री० धर्म-

शास्त्र । -**सावर्णि**-पु० न्यायमें मनु । -**सुत**-पु० बुधिर । -**सु**-स्त्री० न्याय पक्षी । -**सूत्र**-पु० जैमिनि-रचित धर्ममीमांसा-विषयक एक ग्रंथ । -**सुत**-पु० धर्मकी रक्षा करनेवाला; शिव । -**स्व**-पु० विचारपति । -**स्वामी(चिन्)**-पु० बुद्धदेव । **मु**-**विद्या**-पु० किसीका धर्म नष्ट करना, किसीको धर्मच्युत करना; स्त्रीका सतीत्व नष्ट करना । -**रक्षणा**-धर्मच्युत होनेसे बचना या बचा लेना । **धर्म(श्)**-पु० [सं०] दे० 'धर्म' ।

धर्मण-पु० [सं०] धामिन सौध; धामिन बुद्ध; धामिनपक्षी । **धर्मतः(त्स)**-अ० [सं०] धर्मके अनुसार; धर्मको साक्षी देकर ।

धर्माव(वत्)-वि० [सं०] धर्मात्मा, धर्मनिष्ठ ।

धर्मस्वीय-पु० [सं०] न्यायालय ।

धर्माग-पु० [सं०] वक्, बगल ।

धर्मातर-पु० [सं०] अन्य धर्म ।

धर्माध-वि० [सं०] स्वधर्ममें अंधश्रद्धा और दूसरे धर्मोंके प्रति तिरस्कार या द्वेषका भाव रखनेवाला; धर्मके नामपर लक्ष्मणवाला ।

धर्मागम-पु० [सं०] धर्मग्रंथ ।

धर्माचरण-पु० [सं०] धार्मिक या पुण्य कार्य करना; धर्मके अनुसार आचरण करना ।

धर्माचार्य-पु० [सं०] धर्मकी शिक्षा देनेवाला गुरु ।

धर्मातिक्रमण-पु० [सं०] धर्म या न्यायका उल्लंघन ।

धर्मागम-पु० [सं०] बुधिर ।

धर्मात्मा(स्मन्)-वि० [सं०] धर्मनिष्ठ, धर्मशील, धार्मिक ।

धर्मादा-पु० धर्मार्थ निकास हुआ धन ।

धर्माधर्म-पु० [सं०] धर्म और अधर्म । -**विन्द(द्)**-पु० मीमांसक ।

धर्माधिकरण-पु० [सं०] न्यायालय; न्यायाधीश ।

धर्माधिकरणिक-पु० [सं०] धर्म-अधर्मका निर्णय करने-वाला राजकर्मचारी, न्यायाधीश, विचारक ।

धर्माधिकरणी(चिन्)-पु० [सं०] न्यायाधीश ।

धर्माधिकार-पु० [सं०] धार्मिक कृत्योंका निरीक्षण; न्याय-व्यवस्था; न्यायाधीशका पद ।

धर्माधिकारी(चिन्)-पु० [सं०] दे० 'धर्माधिकरणिक' ।

धर्माधिकृत-पु० [सं०] दे० 'धर्माध्यक्ष' ।

धर्माधिष्ठान-पु० [सं०] न्यायालय ।

धर्माध्यक्ष-पु० [सं०] न्यायाधीश; विष्णु ।

धर्मानुष्ठान-पु० [सं०] दे० 'धर्माचरण' ।

धर्मानुसृष्टि-स्त्री० [सं०] धर्मका अनुचिन्तन ।

धर्मापेत-वि० [सं०] जो धर्मसंगत न हो, अधार्मिक; अन्याय । पु० पाप; अन्याय ।

धर्माभास-पु० [सं०] भ्रुति-स्थितिमें भ्रिष्ट शास्त्रों द्वारा उक्त असत्यम् ।

धर्माध्व-पु० [सं०] तपोवन; गयाके अंतर्गत एक तीर्थ; कूर्मविभागके मध्यका एक देश ।

धर्माध-अ० [सं०] धर्मके लिए, धर्म या परोपकारके निमित्त ।

धर्मावतार-पु० [सं०] एक आदरघूचक सरोवन; परम धर्मात्मा व्यक्ति; बुधिर ।

धर्मावसथि, धर्मावस्थावी(चिन्)-पु० [सं०] धर्म-

विभागका अधिकारी ।
धर्माश्रित-वि० [सं०] धर्मसम्पत्तः न्याय्य ।
धर्मासन-पु० [सं०] वह आसन जिसपर बैठकर धर्म-
 कर्मका निर्णय किया जाय, न्यायाधीशका आसन ।
धर्माशिक्षा-पु० [सं०] जोब आदि बहुप्रदेश-न्यायी
 पदाधर्मिते एक पदार्थ (ज्ञे०) ।
धर्मिणी-स्त्री० [सं०] पत्नी, जाया । वि० स्त्री० धर्म करने-
 वाली ।
धर्मिष्ठ-वि० [सं०] अत्यंत धार्मिक, अत्यंत पुण्यात्मा ।
धर्मी(मिन्)-वि० [सं०] धर्म करनेवाला, पुण्यात्मा;
 जिसमें कोई विशिष्ट धर्म वा वृत्ति हो, धर्मविशेषसे युक्त;
 (किस्ती) मत यह धर्मका अनुयायी । पु० वह जिसमें कोई
 धर्म वा वृत्ति रहे, धर्मका आश्रय वा आधार; धार्मिक
 मनुष्य; विष्णु ।
धर्मीपुत्र-पु० [सं०] अमित्रेता ।
धर्मज्ञ-पु० [सं०] यमराज; सुप्रिष्ठिर ।
धर्म्यु-पु० [सं०] एक पुरुवंशी राजा ।
धर्मेश, धर्मेश्वर-पु० [सं०] यमराज ।
धर्मोत्तर-वि० [सं०] जो धर्ममें बड़-बड़कर हो; जो धर्म-
 कर्मका बहुत ध्यान रहे, अति धार्मिक; परम न्यायी ।
धर्मोपदेश-पु० [सं०] धर्मका उपदेश, वह प्रवचन जिसमें
 धर्मकी शिक्षा दी गयी हो, धर्मकी शिक्षा; धर्मशास्त्र ।
धर्मोपदेशक-पु० [सं०] धर्मकी शिक्षा देनेवाला धर्म-
 शिक्षक ।
धर्मोपाध्याय-पु० [सं०] पुरोहित ।
धर्म्य-वि० [सं०] धर्मसंगत; पुण्यकर; न्याय्य; जो धर्म
 करनेसे प्राप्त हो । -विवाह-पु० स्मृतिमें उल्लिखित
 मास आदि विवाह ।
धर्म्य-पु० [सं०] डिठार, संकीचका अमान, अविनय; धर्मद्व;
 असहिष्णुता; हिंसा; अपमान; परामर्श; सतीत्वहरण;
 नपुंसक; हिंसा । -कारिणी-वि० स्त्री० असती, व्यभि-
 चारिणी (स्त्री) । -कारी(रिन्)-वि०, पु० डिठार करने-
 वाली; अपमान करनेवाला ।
धर्म्य-वि० [सं०] डिठार करनेवाला; अपमान करनेवाला;
 व्यभिचारी । पु० नष्ट, अमित्रेता ।
धर्म्य-पु० [सं०] परामर्श; अन्याय; असहिष्णुता; औदत्य,
 धृष्टता; सतीत्वहरण; रति; हिंसा; शिव ।
धर्म्यि, धर्म्यी-स्त्री० [सं०] असती, कुलटा स्त्री ।
धर्म्यीय-वि० [सं०] धर्म्य करने योग्य ।
धर्मित-वि० [सं०] अपमानित; परामृत । पु० रति; अवि-
 मान; असहिष्णुता ।
धर्मिता-स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी स्त्री; मेरवा । वि० स्त्री०
 जिसका सतीत्वहरण किया गया हो ।
धर्मि(चिन्)-वि० [सं०] धर्मद्वी; असहिष्णु, आक्रमण
 करनेवाला; दवानेवाला; अपमान करनेवाला; धृष्ट; मैथुन
 करनेवाला ।
धर्म्य-पु० [सं०] दृढकंठ वृक्ष, अंकोल ।
धर्म्य-पु० [सं०] एक नन्द वृक्ष जिसकी जड़, पत्ती, फूल
 आदि दवाके काम आते हैं; पत्ति, स्वामी; पुरुष; द्रुत
 मनुष्य; हिलना-डोलना, कंपन ।

धर्म्य-स्त्री० एक वृक्ष जिसके फूल काल होते हैं ।
धर्म्यी-स्त्री० मापी, चौकनी ।
धर्म्य-पु० एक पक्षी । * वि० दे० 'धर्म्य' ।
धर्म्येश्वर, धर्मेश्वर-पु० दे० 'धर्मेश्वर' ।
धर्मरा-वि० दे० 'धर्म्य' ।
धर्मरी-स्त्री० सफेद रंगकी गाय; धर्म्य पक्षीकी मादा ।
 वि० स्त्री० सफेद रंगकी ।
धर्म्य-वि० [सं०] दवेत, सफेद; स्वच्छ, निर्मल; सुंदर ।
 पु० सफेद रंग; धर्मका पेश; बसा नैल, महीश; एक पक्षी;
 चीनिया कपूर; सफेद मिर्च; एक राग; एक छंद । -गिरि-
 पु० हिमालयकी एक चोटी । -गृह-पु० चूना पुता
 हुआ मकान; प्रासाद । -पक्ष-पु० शुद्ध पक्ष; हंस ।
 -सुप्तिका-स्त्री० खरिया मिट्टी, दुधिया । -श्री-स्त्री०
 एक रागिनी ।
धर्म्य-सं० कि० उन्मूलन करना; विनाश बनाना ।
धर्म्य-वि० उजला, सफेद । † पु० सफेद नैल । स्त्री०
 [सं०] उजली गाय; गौर वर्णकी स्त्री । वि० स्त्री० सफेद
 रंगकी, उजली ।
धर्म्य-स्त्री० सफेदी ।
धर्म्यगिरि-पु० दे० 'धर्म्यगिरि' ।
धर्म्य-वि० [सं०] सफेद किया हुआ; सफेद बनाया
 हुआ ।
धर्म्यमा(मन्)-स्त्री० [सं०] दवेतता, सफेदी ।
धर्म्यी-स्त्री० [सं०] सफेद गाय; बालोंका एक रोग;
 सफेद मिर्च ।
धर्म्योपल-पु० [सं०] कुसुद ।
धर्म्य-पु० दे० 'धर्म्य' ।
धर्म्य-पु० [सं०] बायु ।
धर्म्य-सं० कि० दौडाना-'यदि विधि देखत कहत
 चार ते जात तुरा धर्म्ये'-रघुराज सिंह ।
धर्म्य-पु० [सं०] मृगचर्मका पखा ।
धर्म्य-पु० जल आदिमें पैठना; गोना, डुबकी ।
धर्म्य-स्त्री० सूखी खोसी; दहलनेकी क्रिया; डर; ईर्ष्या ।
धर्म्य-स्त्री० दहलने, डरनेकी क्रिया; दबना वा धमना;
 जलन; ईर्ष्या ।
धर्म्य-अ० कि० नीचेकी ओर बैठना, दब जाना; डार
 करना, ईर्ष्या करना ।
धर्म्य-पु० चौपायीका एक रोग ।
धर्म्य-अ० कि० ध्वस्त होना, नष्ट होना; † नीचेको
 खमना; घुसना, प्रवेश करना ।
धर्म्यसना-अ० कि० धंसना, नीचेकी ओर बैठना;
 धरतीमें समाना ।
धर्म्य-स्त्री० दे० 'धंसना' ।
धर्म्य-सं० कि० दे० 'धंसना' ।
धर्म्य-पु० दे० 'धंसना' ।
धर्म्य-पु० एक जगली जाति ।
धर्म्य, धर्म्य-पु० एक अनार्य जाति; इस जातिका
 आदमी; कुर्बानादि खोदनेका काम करनेवाली एक जाति;
 इस जातिका आदमी ।
धर्म्य-सं० कि० कुचलना, रौंदना ।

बाँधना-स० कि० बंध करना; हँस-हँसकर खा केना ।

बाँधल-खी० ऊधम, शैतानी; धूर्तता, दगा, छल; खरा, जल्दबाजी ।

बाँधली-वि० ऊधमी, उपद्रवी; दगाबाज, धूर्त । खी० मन-माना व्यवहार; अनैति, अत्याचार; धोखा; जल्दबाजी ।

बाँधा-खी० [सं०] हलायची ।

बाँध-खी० दे० 'बाँधे' ।

बाँस-खी० तंबाकू आदिकी गंधसे ठठनेवाली खोसी; खोसी ठानेवाली तेज गंध ।

बाँसना-अ० कि० बोधे आदिका बाँसना ।

बाँसी-खी० कुत्ते आदिकी खोसी ।

धा-पु० धैर्य स्वरका संकेत (संमति); तबलेका एक बोल; [सं०] ज्ञप्ता; हुंकारपति; धारण करनेवाला । प्र० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक विशेषणोंके पीछे प्रकार, खंड, बारके अर्थमें जोड़ा जाता है-जैसे बहुधा, शतधा आदि ।

धाह्-खी० दे० 'धाय' ।

धाह्-खी० दे० 'धाय' ।

धाड-पु० एक प्रकारका नाच ।

धाऊ-पु० धव वृक्ष; * हरकारा ।

धाक-खी० दबदबा, आतंक; स्याति, सोहरत । पु० ढाक, पलाश; [सं०] बैल; होज; पान; आहार, भात; खाना; सहाय, अवलंब; जप्ता । मु०-जमना, बाँधना-रीज जमना ।

धाकना-अ० कि० धाक जमाना ।

धाकर-पु० अनुलीन माछण; राजपूतोंकी एक जाति; पत्रावका एक गेहूँ जो बिना पानीके पैदा होता है ।

धागा-पु० डोरा, तागा ।

धाटी-खी० [सं०] आक्रमण, हमला ।

धाघ-खी० चिलाकर रौनेका शब्द, विलाप; दहाघ; दाढ़; मुद्र; जथा; डाकुओंका छापा या धावा । मु०-भारना-चिला-चिलाकर रौना ।

धाड़ना-अ० कि० दूधडना ।

धाड़स-पु० दाढ़स, तसली, सांत्वना ।

धाड़ी-पु० दे० 'दाढ़ी' ।

धाणक-पु० [सं०] एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा, दीनारका अंश ।

धात-खी० दे० 'धातु' ।

धातकी-खी० [सं०] धक्का फूल ।

धातविक-वि० [सं०] धातुमें बना हुआ; धातु-संबंधी ।

धाता(ह्)-पु० [सं०] जप्ता; विष्णु; शिव; सप्तर्षि; आत्मा; बायुके ५९ भेदोंमेंसे एका; सूर्यके १२ भेदोंमेंसे एक; ऋषु ऋषिके एक पुत्र; ब्रह्माके एक पुत्र; व्यवस्था करनेवाला; रक्षक; उपपति । वि० धारण करनेवाला; पोषण करनेवाला । -(ह्)पुत्र-पु० सप्तकुमार । -पुष्पिका, -पुष्पी-खी० धातकी ।

धातु-खी० [सं०] सोना, चाँदी आदि अपार-बड़ोंक खनिज पदार्थ; रस, रक्त, मांस, मेरु, अरिच, मज्जा और शुक्र-ये सात शरीरस्थ पदार्थ; वात, पित्त और कफ; वीर्य; शब्द आदि जो आकाशके गुण हैं; पंचमहाभूत; पदोंकी प्रकृति, शब्दोंका मूल रूप-जैसे 'माव'की शू, 'कता'की क(व्या०);

परमात्मा; अस्मि रंद्रिय; माग, खंड । -कासीस, -कासीस-पु० कसीस । -कुसल-वि० धातुके काममें निपुण । -क्षय-पु० शरीरके तत्त्वोंका क्षय; क्षयरोग ।

-गर्भ, -गोप-पु० बुद्ध आदि महासत्त्वोंकी अस्थि रखनेका विष्बा (बी०) । -ज-वि० जो धातुओंका मारक हो । पु० कौजी । -ज-पु० खनिज या शैलज तेल ।

-जावक-पु० सुहागा । -नासक-वि०, पु० दे० 'धातु-घ्न' । -घ-पु० शरीरमें क्षाघ पदार्थसे बननेवाला पदार्थ ।

-पुष्टि-खी० धातुओंका पोषण । -पुष्पिका, -पुष्पी-खी० धक्का फूल । -मृत्-पु० पवंत । -मर्म-पु० दे० 'धातुवाद' । -मल-पु० केश, नख आदि जो शरीरस्थ धातुओंके मलके रूपांतर हैं; सीसा । -माक्षिक

-पु० एक उपधातु, सोनामक्खी । -मारीणी-खी० सुहागा । -मारी(रिन्)-पु० गंधक । -रग-पु० धातु-भोंसे निकला हुआ रंग जैसे-गेरू । -राजक-पु० (शरीरस्थ) धातुओंका राजा, वीर्य । -रेचक-वि० जो वीर्यका रेचन करे । -वर्द्धक-वि० वीर्यको बढ़ानेवाला ।

-बल्लभ-पु० सुहागा । -बाह-पु० रासायनिक क्रिया द्वारा सोना-चाँदी आदि बनानेकी विधा, कीमियागरी ।

-बाही(विन्)-पु० धातुवादका ज्ञाता, कारपमी । -बैरी(रिन्)-पु० गंधक । -शेखर-पु० कसीस; सीसा । -शोचक, -संभव-पु० सीसा । -संश-पु० सीमा ।

-साम्य-पु० वात, पित्त, कफकी समावस्था; अच्छा स्वास्थ्य । -स्त्वमक-वि० जो वीर्यका स्तंभन करे । -हा(इक्)-पु० गंधक ।

धातुमत्ता-खी० [सं०] धातुमान् होनेका भाव । धातुमय-वि० [सं०] जिसमें खनिज पदार्थोंका प्राचुर्य हो; खनिज पदार्थोंसे भरा हुआ ।

धातुमान्(सत्)-वि० [सं०] जिसमें वा जिसके पास धातुएं हो ।

धातु-खी० दे० 'धातु' । धातूपक-पु० [सं०] खनिया मिट्टी, दुधिया ।

धात्र-पु० [सं०] पात्र । धात्रिका-खी० [सं०] आमलकी ।

धात्री-खी० [सं०] धाय, उपमाता; धृष्टी; माता; आँवला । -कर्म(व्)-पु० धायका काम । -पत्र-पु० तालीशपत्र; आँवलेका पत्ता । -पुत्र-पु० धायका बेटा; नंद । -कल-पु० आँवला । -विधा-खी० प्रसव करानेकी विधा ।

धात्रेयिका, धात्रेयी-खी० [सं०] धायकी बेटी; धाय । धात्र्यर्थ-पु० [सं०] धातु(पद या शब्दके प्रकृति)से निकलनेवाला अर्थ ।

धात्रीव-वि० [सं०] धातुका बना हुआ; धातु-संबंधी । धान-पु० [सं०] आभार; पोषण; [वि०] एक प्रसिद्ध अन्न जिसका चावल प्रधान खाद्योंमें गिना जाता है; तुपवुल चावल, शालि; हस्तका पोषा । -जई-खी० [वि०] धानका एक भेद । -पान-पु० [वि०] विवाहके पहलेकी एक रस जिसमें वरपक्षकी ओरसे कन्याके घर धान और हस्ती भेजते हैं ।

धानक-पु० [सं०] धनिया; एक प्राचीन परिमाण; * घनु-ईर, धातुष्क; दुनिया ।

धावा-खी० [सं०] भूना हुआ जो या चावल; सत्त; धनिया; अनाज, अंडुर । -वर्ण-पु० सत् । -मर्जन-पु० अनाज भूना ।

धाना-अ० कि० दौटना; (हा०) वेगसे चलना; दौड़पूष करना ।

धानाक-खी० [सं०] दे० 'धाना' ।

धानी-वि० धानकी हरी पत्तीके रंगका, जो रंगमें धानकी हरी पत्ती जैसा हो, हल्के हरे रंगका । पु० धानकी हरी पत्तीके रंगका एक रंग, तोतई । खी० एक रागिनी; *धान्य; भूना हुआ जो; [सं०] आधार, पाश; अधिष्ठान, स्थान (जैसे राजधानी, बसधानी); पीछका पेश; धनिया ।

धानुक-पु० धनुर्धर, कमनेत; एक छोटी जाति; इस जाति-का आदमी ।

धानुर्दधिक-पु० [सं०] दे० 'धानुष्क' ।

धानुष्क-पु० [सं०] धनुर्धर, धन्वी, तोरंदाज ।

धानुष्का-खी० [सं०] अपामार्ग, चिचका ।

धानुष्य-पु० [सं०] बौल ।

धान्य, धान्यक-पु० [सं०] धनिया ।

धान्य-पु० [सं०] अन्न, अनाज; सत्तुप अन्न; धान; धनिया; चार तिलका एक प्राचीन परिमाण; नागरमेथिका एक भेद ।

-कटक-पु० अन्नके दानेका छिलका । -कूट, -कोस, -कोटक-पु० बहार । -क्षेत्र-पु० धान्यका क्षेत्र ।

-कमल-पु० नूधा, चिपिटक । -क्षारी(रिज्), -क्षीरी(विज्)-पु० पक्षी । -तुपोद्-पु० कौजी । -त्वह(व्)-पु० अनाज या धानका छिलका ।

-धेनु-खी० अन्नकी राशि जिसे धेनु मानकर दान करते हैं । -ध्वजक-पु० अन्नके पाँच भेद (शाकि, मोहि, घृक, शिरी, क्षुद्र); आम, बेर, नागमीषा और धान्यपचककी एक साथ उबालकर तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका पाचक पानी जो अतिसारमें दिया जाता है (आ०वे०) । -धति-पु० चावल; जौ । -धानक-पु० धनियाका पत्रा । -धीज-पु० धनिया । -भोग-पु० बहुत उपजाऊ भूमि या जमीर (कौ०) । -मन्य-पु० अन्न तोलनेवाला; अनाजका व्यापारी । -माघ-पु० एक प्राचीन परिमाण । -मुख-पु० चौर-काष्ठके कामका एक पुराना औजार (सुश्रुत) ।

-मुख, -दूध-पु०, -धोमि-खी० कौजी । -राज-पु० पक्ष, जौ । -वनि-खी० अन्नकी राशि । -वर्ग-पु० दे० 'धान्यपंचक' ।

-वर्धन-पु० अन्न उधार देनेका व्यवहार जिसमें धिये हुएका सवाया वा खोदवा लेते हैं ।

-वाप-पु० अम्यंत उर्वरा भूमि (कौ०) । -वीर-पु० उरद । -सर्करा-खी० चीनी मिलाकर तैयार किया हुआ धनियाका पानी । -सर्षक-पु० अनाजके पौधेकी मजरी ।

-शूक-पु० दूँह । -शैल-पु० अनाजकी बहुत बड़ी राशि जिसे अन्नके पर्वतकी भावनासे दान करते हैं ।

-संग्रह-पु० अन्नका भण्डार । -सार-पु० कृया हुआ अनाज, चावल ।

धान्या-खी०, धान्याक-पु० [सं०] धनिया ।

धान्याचल-पु० [सं०] दे० 'धान्य-शैल' ।

धान्याम्ल-पु० [सं०] कौजी ।

धान्यारि-पु० [सं०] चूरा ।

धान्यार्ष-पु० [सं०] धानके रूपमें संपत्ति ।

धान्यास्थि-खी० [सं०] भूरी, तुष ।

धान्योपम-पु० [सं०] शमलि, धान ।

धान्योत्तर्ष-वि० [सं०] धन्यतरि देवताके निमित्त दिया या किया जानेवाला ।

धान्य-वि० [सं०] धन्य देशका; धन्य देश-संबंधी ।

धान्यन-वि० [सं०] मरुदेशस्थ; मरुदेश-संबंधी ।

धाप-पु० कोसका आधा, एक मील; वह कासका जो एक साँसमें दौड़कर पार किया जा सके । खी० रुषि, संतोष ।

धापना-अ० कि० तेज चलना; दौड़ना; दृष्ट होना, अथवा- 'बातोंके एकवाकसे धापा नाहीं कीय'-साखी ।

सं० कि० दृष्ट करना, सत्तुष्ट करना ।

धाबा-पु० मकानकी हमवार छत; ऐसी छतवाला मकान; बासा, होटल ।

धाभाई-पु० दूध-भाई ।

धाम-पु० [सं०] एक देववर्ग ।

धाम(ज्)-पु० [सं०] गृह, घर; वासस्थान, अधिष्ठान; किरण, तेज, प्रभा; प्रताप, प्रभाव; वह स्थान या लोक जहाँ किसी देवताका निवास हो; देवस्थान; पारिवारिक सदस्य; सेना; समूह; अवस्था; वर्ग; शरीर, तन; जन्म; परमेश्वर; फाल्गुनी जातिका एक वृक्ष । -केशी(शिज्)-पु० सूर्य । -च्छद-पु० अग्नि । -निधि-पु० मूर्त्य ।

-भाक(ज्)-पु० यक्षस्थानमें आग लेनेवाला देवता ।

-श्री-खी० एक रागिनी ।

धामक-पु० [सं०] एक गौल, माशा ।

धामक-धूमक-खी० धूम-धाम, ठाट-बाट ।

धामन-पु० एक पेश; एक प्रकारका बेंस ।

धामनिका, धामनी-खी० [सं०] दे० 'धमनी' ।

धामम-धूमस-खी० धूम-धाम; जलजल ।

धामार्गव-पु० [म०] चिचका; पीयातुरी ।

धामिन-पु० एक नरहका सौंर जिसकी दृष्टिमें विप रहता है ।

धामिया-पु० एक पक्ष; इस पंथका आदमी ।

धार्थ-खी० गोला-गोली दगनेका शस्त्र (इसका प्रयोग प्रायः 'से'के साथ होता है) । -धार्थ-अ० कृपातार 'धार्थ'की आवाजके साथ; इस प्रकार (चलना) कि लपटें ऊपर उठें (जैसे-चित्ता 'धार्थ-धार्थ' जल उछो दें) ।

धाध-खी० बच्चेकी दूध पिलाने और उसकी देख-भाल करनेके लिए नियुक्त स्त्री, उपमाता, धात्री । पु० धव वृक्ष ।

वि० [सं०] दे० 'धायक' ।

धाधक-वि० [सं०] धारण करनेवाला ।

धाधी-खी० दे० 'धाय' ।

धाध्व-पु० [सं०] पुरोहित ।

धार-पु० [सं०] जमा किया हुआ वर्षाका जल जो बहा गुणकारी होता है; धारके रूपमें जलका बरसना, जोरकी वर्षा; ऋण; विष्णु; ओला; सीमा; एक तरहका पत्थर; गहरा स्थान । वि० धारण करनेवाला; सहाय-देनेवाला; बहनेवाला । खी० [हि०] तलवार आदिको वह तेज किनारा जिसमें कुछ काटते हैं, बाढ़; किसी द्रव पदार्थके गिरने या बहनेकी परंपरा, प्रवाह, स्रोत; आक्रमण, छापा,

ढाका; सेना, सौज; देवी या पवित्र नदी आदिकी शिवा जानेवाला अर्थ; इस अर्थकी सामग्री। * अ० बोर, तरफ—महरी पैठर सदन भीतर छोकर बाहर—घर।
-घार-वि० [हि०] धारवाला, जिसमें धार हो। झुं०
-बैचवा—इस प्रकार गिरना कि धार बन जाय; मंत्र आदिके प्रयोगवश किसी हथियारकी काटनेकी शक्तिका कुंठित हो जाना। -बाँचवा—इस प्रकार गिरना कि धार बंध जाय; मंत्र आदिकी शक्तिके किसी हथियारकी काटनेकी शक्तिकी कुंठित कर देना।

धारक-वि० [सं०] धारण करनेवाला। पु० वह जो धारण करे; ऋण लेनेवाला, कर्जदार; वह वस्तु जिसमें कोई वस्तु रखी जाय, पात्र; कलश, चक्र; संदूक आदि।

धारका-क्री० [सं०] योनि, भय।

धारण-पु० [सं०] किसी वस्तुको ग्रहण करना या उसका आधार बनना, पकड़ना, धामना या लेना, आधान; पकड़ना; ऋण या उधार लेना; अवलंबन, ग्रहण या स्वीकार करना; खाना या पीना; सुरक्षित रखना, बनाये रखना, रक्षण, पालन; स्मरण रखना, मस्तिष्कमें सुरक्षित रखना; मनका निरोध; शिक, स्नान।

धारणक-पु० [सं०] ऋणी, कर्जदार।

धारणा-क्री० [म०] ग्रहण, रक्षण, पालन आदि करनेकी क्रिया; मस्तिष्कमें कोई वस्तु धारण करनेकी शक्ति; यम, नियम आदि योगके आठ अंगोंमेंसे एक; पूरक, देवक और कुम्भक प्राणायामों द्वारा प्राणका निरोध; न्यायपक्षमें स्थित रहना, मर्यादा, स्थिति; विचार, निश्चित मति; एक वृद्धि-व्ययक योग (६० सं०)। -योग-पु० प्रगाढ समाधि।

-शक्ति-क्री० मस्तिष्कमें ग्रहण करनेकी शक्ति।

धारणावान्(वत्)-वि० [सं०] मेधावी।

धारणिक-पु० [सं०] ऋण, कर्जदार; धन जमा करनेकी कोठी।

धारणी-क्री० [सं०] स्थिरता; सिरा; धमनी; श्रेणी, पंक्ति; बुझौका एक मंत्र।

धारणीय-वि० [सं०] धारण करने योग्य। पु० धरणीकंद।

धारण-वि०, पु० धारण करनेवाला, धारक।

धारमा-सं० कि० धारण करना; ऋण लेना।

धारयिता(त)-वि०, पु० [सं०] धारणकर्ता, धारण करनेवाला, धारक।

धारयित्री-वि० क्री० [सं०] धारण करनेवाली। क्री० पृथ्वी।

धारयिष्णु-वि० [सं०] धारण करनेमें समर्थ।

धारसा-पु० दे० 'दास'।

धारिकुर-पु० [सं०] जलका ऋण; ओला; बढकर सैन्य-दलके आगे जाना।

धारिग-पु० [सं०] तलवार।

धारा-क्री० [सं०] किसी द्रव पदार्थके बहने या गिरनेकी परंपरा, प्रवाह, धार; वर्णन; तलवार आदिका तेज किलारा; चक्केमें बना हुआ छेद; बोरेकी चाल; सेनाका अग्रभाग; अति वृद्धि; पहाड़का किलारा; स्थानका वेरा; स्थाति; राशि; हरिद्रा; कानका सिरा; वाणी; ऋण; एक प्रकारका पत्थर; समूह; रथका पहिया; ऊपर; माऊन-

नरेश सोमकी राजधानी; जनप्रवाद, अन्तराष्ट्र। -कर्द-पु० कर्दवाका एक भेद। -शुद्ध-पु० खानापान; वह घर जिसमें कीबारा लगा हो। -खर-पु० बादल; तलवार।

-विपास, -धार-पु० जलधारका गिरना; भारी वृद्धि।

-प्रवाह-वि० धारास्वरूपमें अविराम गतिसे बहने या चलनेवाला (भाषण ६०)। अ० अविराम गतिसे; अविच्छिन्न रूपमें। -फल-पु० मदन नामका वृक्ष। -बंध-पु० कीबारा। -बर्ष, -वर्षण-पु० अविरल वर्षा, महा-वृष्टि। -वाहिक, -वाही(हिन्)-वि० अविच्छिन्न गति-वाला; लगातार होने या जारी रहनेवाला। -विच-पु० तलवार। -संपास-पु० अविरल वर्षा, महावृष्टि। -स्तुरी-क्री० तिघारा दूर (सैंडें)।

धारा-क्री० दफा। -सभा-क्री० व्यवस्थापिका सभा, कीसिल।

धाराप-पु० [सं०] वाणका चौड़ा सिरा।

धाराट-पु० [सं०] चातक पक्षी; घोड़ा; बादल; मतवाला हाथी।

धारापुष्प-पु० [सं०] एक प्रकारका पुष्प।

धाराक-वि० [सं०] जिसमें धार हो; धारदार (तलवार आदि)।

धाराचनि-क्री० [सं०] बाहु।

धारासार-पु० [सं०] महावृष्टि।

धारि-क्री० धार; समुदाय, झुंड; सेना।

धारिणी-क्री० [सं०] पृथ्वी; नेमरका पेड़। वि० क्री० धारण करनेवाली; जिसपर किसीका ऋण हो, कर्जदार (क्री०)।

धारित-वि० [सं०] धारण किया हुआ; नैमाका हुआ।

धारी-पु० एक वर्णवृत्त। क्री० कपड़े आदिपरकी लकीर; * समूह; नेमा। -धार-वि० जिसमें धारियाँ हो।

धारी(रिन्)-वि० [सं०] धारण करनेवाला (इसका प्रयोग किसी अन्य शब्दके साथ ही होता है—जैसे जीवधारी, देहधारी); जिसमें पढ़ी हुई बातोंको धारण करनेकी शक्ति हो, धारणावान्; जिसमें धार या किलारा हो। पु० ऋणी, कर्जदार; पीछका पेड़।

धारोण-वि० [सं०] तुरंतका दुहा हुआ, ताजा और गरम (दूध)।

धार्तराह-पु० [सं०] धृतराष्ट्रका पुत्र; धृतराष्ट्र-योद्धव नाग; काली चोच और काले पैरोंवाला हंस। -पदी-क्री० हंसपदी लता।

धार्म-वि० [सं०] धर्म-विषयक, धर्म-संबंधी।

धार्मपव-वि० [सं०] धर्मपति-संबंधी।

धार्मिक-वि० [सं०] धर्म-संबंधी; धर्म करनेवाला; क्षमा, दया आदिसे युक्त, पुण्यात्मा, धर्मात्मा, धर्मशील। [क्री० 'धार्मिकी']।

धार्मिण-पु० [सं०] धार्मिक व्यक्तियोंकी संख्या।

धार्मिणेश-पु० [सं०] धर्मवती कीका पुत्र।

धार्मिणेशी-क्री० [सं०] धर्मवती कीकी पुत्री।

धार्म-वि० [सं०] धारण करने योग्य; सदा; स्मरण रखने योग्य। पु० घोसाक, बक।

धार्य-पु० [सं०] वृद्धता; डिठार, लड़कता, अविनय।

धातु-पु० [सं०] धीनी; दूत, इकरा; हर्षके समथके एक संस्कृत कवि । वि० धीनेवाला; बहनेवाला; दौड़ने-वाला; तेज चलनेवाला ।

धातव-पु० [सं०] धीनता; बहना; हमला करना; धीना; शुद्ध करना; साफ करना; बह वस्तु जिससे कोई चीज साफ की जाय; दूत, इकरा ।

धातना-अ० कि० तेजीसे चलना, दौड़ना ।

धातनि-खी० [सं०] ध्वनिपणी, पिठवन; कंटकारी, मट-फटेया; * तेजीसे चलने या दौड़नेकी क्रिया अपना ढंग; आक्रमण, धावा ।

धातनिका-खी० [सं०] कंटकारी ।

धातनी-खी० [सं०] पिठवन; कंटकारी; घातकी ।

धावर-वि० धवल, सफेद ।

धावरी-खी० धौरी, ह्वेत वर्णकी गाय । वि० खी० उजले रंगकी ।

धावय-पु० [सं०] ह्वेतता, सफेदी ।

धावा-पु० किसीको जीतने, छुटने आदिके लिए बहुतसे लौगीका एक साथ दौड़ पकना, चढ़ाई, हमला; दौड़कर जाना । **धु०-करना-आक्रमण करना, चढ़ाई करना ।**
-**ढोखना-अफसरका चौकको हमला करनेका हुक्म देना; हमला करना ।**
-**भारना-दूरतक चढ़ाई करना; दूरतक तेज चलकर जाना ।**

धावित-वि० [सं०] धोया हुआ, मांजित; गत; दौड़ा हुआ; दौड़ता हुआ ।

धाव-खी० धाव, चलाकर रौना, विषाप । † आगकी गरमी; छाया । -**देना-दे० 'धाव मारना' ।**

धावी-खी० धाव; † आगकी गरमी; छाया ।

धिग-खी० धीगाधीगी, उपद्रव, शरारत ।

धिगरा-पु० दे० 'धी' गरा ।

धिगाई-खी० ऊधम, उपद्रव, धैतानी; कुटिलता, खोटाई ।

धिगाधिगी-खी० दे० 'धी' गा-धीगी ।

धिगाना-अ० कि० धीगाधीगी करना, उपद्रव करना ।

धिगी-खी० ऊधम मचानेवाली खी ।

धि-पु० [सं०] आधार, आँख (देखल समासांतमें प्रयुक्त-जैसे जलधि) ।

धिया-खी० धैटी, पुत्री; बालिका ।

धियाव-पु० दे० 'ध्यान' ।

धियावा-अ० कि० दे० 'ध्यान' ।

धिक-अ० दे० 'धिक' ।

धिकना-अ० कि० तपना, गरम होना; तपकर लाल होना ।

धिकाना-अ० कि० गरम करना, तपाना ।

धिक्-अ० [सं०] भर्त्सना, निंदा और घृणाके अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द । -**कार-पु० 'धिक्' कबकर की गयी भर्त्सना, निंदा या घृणा ।** -**कृत-वि०** जिसकी भर्त्सना, लानत-मकामत की गयी हो । -**क्रिया-खी०** दे० 'धिकार' । -**पारुष्य-पु०** निंदा, भर्त्सना ।

धिकारना-अ० कि० अनुचित बातके लिए किसीके प्रति निंदा और घृणास्वक शब्दोंका प्रयोग करना, लानत-मकामत करना ।

धिग-अ० दे० 'धिक्' ।

धिर्वद-पु० [सं०] दंतकल्पमें की गयी भर्त्सना ।

धिगवण-पु० [सं०] एक संकर जाति, ब्राह्मण पिता और आर्यकी मातासे उत्पन्न मनुष्य, चमार ।

धिप्सु-वि० [सं०] छल करनेकी इच्छा करनेवाला ।

धिव-खी० धैटी, पुत्री; बालिका ।

धियापति-पु० [सं०] बृहस्पति ।

धिया-खी० पुत्री, कन्या ।

धिरकार-पु० दे० 'धिकार' ।

धिरवना-अ० कि० दे० 'धिरवना' - 'सूर नंद बलरामहि धिरयो, सुनि मन हरष कन्हैया' - खर ।

धिरवना-अ० कि० धमकी देना, धमकाना; डराना ।

धिराना-अ० कि० धमकाना, डराना । अ० कि० धीमा होना; कम होना, घटना; धैर्य धारण करना ।

धिषण-पु० [सं०] बृहस्पति, वासस्मान ।

धिषणा-खी० [सं०] बुद्धि, प्रज्ञा; स्तुति; बाणी; धृष्यी; ध्याली, कटोरी ।

धिषणाधिप-पु० [सं०] बृहस्पति ।

धिष्य-पु० [सं०] दे० 'धिष्य' ।

धिष्य-पु० [मं०] स्नान; गृह; अधि, मन्त्रण; शक्ति; शुक ग्रह; शुकाचार्य; प्राणाभिमानि देवता (दे०); उल्काका एक भेद ।

धीग-पु० दे० 'धी' गरा ।

धीगवा-पु० दे० 'धी' गरा ।

धीगरा-पु० छट-पुट मनुष्य; गुंडा । वि० दुष्ट, खल, पाजी ।

धीग-वि० दुष्ट, पाजी । -**धीगी, -मुन्नी-खी०** शरारत, दुष्टता ।

धीधिय-खी० [सं०] दे० 'शान्ति' ।

धीवर-पु० दे० 'धीवर' ।

धी-खी० धैटी, लक्ष्मी; [सं०] बुद्धि, प्रज्ञा; समझ; ज्ञान; कल्पना; विचार; अभिप्राय; भक्ति; यज्ञ; मनोवृत्ति (दे०); न्यायमार्गमें प्रवृत्ति, कर्म; मन (दे०) । -**गुण-पु०** शुश्रूषा, श्रवण आदि बुद्धिके आठ धर्म । -**द्वा-खी०** मनोधा, पुत्री, कन्या । वि० बुद्धि देनेवाली । -**पति-पु०** बृहस्पति । -**संकी (त्रिजु)-पु०** राव देनेवाला मंत्री, सलाहकार । -**साकि-खी०** दे० 'धीगुण' । -**सख, -सखि-पु०** चतुर मंत्री ।

धीमा-खी० धैटी, लक्ष्मी ।

धीजवा-अ० कि० विश्वास करना - 'उज्जल देखि न धीजिये बग ज्यों मरि ध्यान' - साखी; स्वीकार करना । अ० कि० धैर्य धरना; सतुष्ट होना; ठहरना - 'चाव बळी चित चाक चळी सो फिरि नित ही शत नेकु न धीजे' - धन० ।

धीत-वि० [सं०] जो पिया गया हो; जिसपर विचार किया गया हो; जो सतुष्ट किया गया हो ।

धीति-खी० [सं०] धीना, धान; व्यास ।

धीम-अ० दे० 'धीमा' ।

धीमर-पु० दे० 'धीमर' ।

धीमा-वि० कम वेगवाला, कम गतिवाला, जिसकी चाल

तेज न हो; बेगरहित, मंद, मंयर; प्रखरता या तीव्रतामे रहित, प्रबंझका छलदा; (स्वर) जो उच्च या तीव्र न हो, दबा हुआ; जिसका वेग या तेजी कम हो गयी हो; जो बदलीपर न हो, कुछ शांत या उतरा हुआ। [स्त्री 'धीमी']

धीमाव् (मत्) - वि० [सं०] दुर्ध्रिमान्, प्रभावान् ।

धीयां - स्त्री० दे० 'धीया' ।

धीया - स्त्री० वेटी, लकड़ी ।

धीर - वि० [सं०] जिसका चित्त विकारजनक कारणोंके रहते हुए भी विचलित न हो, जो जस्टी विचलित न हो सक, धैर्ययुक्त, स्थिरचित्त; दृढ़; गंभीर; मंद; सबल; उस्ताही; नम्र, विनीत; मनोह; सुंदर । पु० समुद्र; केसर; कुंकुम; पंडित; राजा बलि; कचम नामकी ओषधि; चिदात्मा; बुद्ध; * धैर्य, धीरज, चिपकी धृष्टता; संतोष, सम । - **चेता (तत्) - वि०** दृढ़, स्थिरचित्त । - **पद्मी - स्त्री०** जमीकद, धरणिकद । - **प्रज्ञांत, - शांत - पु०** बह नायक जो वीर और शांत हो । - **कलित - पु०** बह नायक जो धीर और वीर होनेके साथ ही मोक्षप्रिय और चिंतारहित हो ।

धीरक - पु० धीरज, धैर्य ।

धीरज - पु० दे० धैर्य । - **मान - वि०** धैर्यवान् ।

धीरता - स्त्री०, **धीरत्व - पु०** [सं०] धीर होनेका भाव या गुण, चित्तकी अविचलता, धैर्य; गंभीरता; संतोष, सम; पण्डित्य; नातुर्य ।

धीरा - स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ द्वारा कोप प्रकट करनेवाली नायिका (सा०); काकोली; मालकंगनी ।

धीराधीरा - स्त्री० [सं०] रुदन और मुखकी मुद्रा द्वारा कोप प्रकट करनेवाली नायिका (सा०) ।

धीराधी - स्त्री० [सं०] शीशमका पेड़ ।

धीरे - अ० मंद गतिमे; मंद स्वरमे; नुपके ।

धीरोदात्त - पु० [सं०] आत्मशक्त्यामे रहित, क्षमाशील, धीर, विनम्र और दृढ़तम नायक - जैसे रामचंद्र, युधिष्ठिर आदि (सा०) ।

धीरोद्धत - पु० [सं०] क्रोधी, चपल, अहंकारी और विकल्थन नायक (सा०) ।

धीरोष्णी (पिण्) - पु० [सं०] एक विश्वदेव ।

धीर्य - वि० [सं०] कातर (वे०) । * पु० दे० 'धैर्य' ।

धीलटि, धीलटी - स्त्री० [सं०] पुत्री, कन्या ।

धीवर - पु० [सं०] मछुआ, महाह; लोहा ।

धीवरक - पु० [सं०] महाह ।

धीवरी - स्त्री० [सं०] धीवरकी स्त्री; बड़ी मछली मारनेका एक तरहका बर्तन; मछलीकी टोकरी ।

धुञ्जी - पु० दे० 'धुञ्ज' ।

धुञ्जारा - वि० धूमिल, जो धुपमे मैला हो गया हो ।

धुङ्गा - स्त्री० दे० 'धुङ्गा' ।

धुङ्कार - स्त्री० दे० 'धुङ्कार' ।

धुङ्गार - स्त्री० बवार, छौक ।

धुङ्गारना - स० कि० बवारना, छौकना ।

धुङ्ग - वि० अस्पष्ट, धुंधला; मंद उद्योतवाला ।

धुं - स्त्री० दे० 'धुं' ।

धुं - स्त्री० आकाशमे बहुत अधिक गर्द छा जानेसे होनेवाला अंधेरा; आँखका एक रोग जिसमे ज्योति मंद पड़ जानेसे चारों ओर धुंध जैसा दिखाई देता है ।

धुंका - पु० धुञ्जी निकलनेका छिद्र ।

धुंङ्कार - पु० अंधकार; गर्जन ।

धुंङ्मार, धुंङ्माळ - पु० दे० 'धुंङ्मार' ।

धुंङ्गर, धुंङ्गरि - स्त्री० गर्द; धुं, धूल आदिके कारण होनेवाला अंधकार ।

धुंङ्गराना, धुंङ्गळाना - अ० कि० धुंङ्गला पड़ना; काला या अंधकारयुक्त होना ।

धुंङ्गला - वि० धुंके रागा, हलका स्थाह; अस्पष्ट, अंधेरा ।

- ई - स्त्री०, - पन - पु० धुंङ्गला होनेका भाव ।

धुंङ्गली - स्त्री० अंधेरा; नजरकी कमजोरी ।

धुंङ्गलाना - अ० कि० धुंङ्गा देना ।

धुंङ्गार - वि० धूमिल; धुआधार ।

धुंङ्गि - स्त्री० दे० 'धुंङ्ग' ।

धुंङ्गिधारा - वि० दे० 'धुंङ्गला' ।

धुंङ्ग - पु० [सं०] एक राक्षस जिते कुवलवाश नामके राजाने मारा था (हरिवंश) । - **मार - पु०** राजा बृहदश्वके पुत्र कुवलवाश जिन्होंने धुंङ्ग राक्षसका वध किया था; इंद्रगीप; मकानमे निकलनेवाला धुंङ्गा ।

धुंङ्गकार - पु० धुङ्कार; अंधेरा, धुंङ्गलापन ।

धुंङ्गुरि - स्त्री० धुं, धूल आदिके कारण छाया हुआ अंधकार ।

धुंङ्गुरित - वि० धुंङ्गला बनाया हुआ; जिसकी नेत्रज्योति कम हो गयी हो, मंददृष्टि ।

धुंङ्गुरी - स्त्री० धुंङ्ग; धुंङ्गलापन; आँखका एक रोग ।

धुंङ्गवाना - अ० कि० धुंङ्गा देना; धोखा-धोखा करके जलना ।

धुंङ्गेरी - स्त्री० दे० 'धुंङ्गुरि' ।

धुंङ्गा - पु० दे० 'धुंङ्गा' । - **कश - पु०** दे० 'धुंङ्गाकश' ।

- दान - पु० धुंङ्गा । - **धार - वि०**, अ० दे० 'धुंङ्गाधार' ।

धु - स्त्री० [सं०] कपन ।

धुञ्ज - पु० दे० 'धुं' ।

धुञ्जी - पु० सुलगती या जलती हुई लकड़ी आदिते निकलनेवाला माप जैसा हलका काला पदार्थ, धूम; * विनाश - 'धुञ्जी देखि खरदूखन केरा' - रामा० । - **कश - पु०** दे० 'स्टीमर'; धुञ्जी निकलनेके लिए छतमे बनाया गया छेद, निमनी । - **धार - वि०** जोरदार, धीर, ओषण; धुंङ्गते भरा हुआ; काला । अ० लगातार और बड़े वेगसे, बड़े जोरसे । **धुञ्ज - देना - पु०** छोड़ना या निकालना; धुञ्जी पहुँचाना । - **निकालना या काढ़ना - लंबी-चौड़ी** बातें करना । - **सा मुँह होना - विवर्ण होना, चेहराका रंग उतर जाना; अर्थात् लज्जित होना । - होना (किसी वस्तुका) - एकदम काला हो जाना । - (धुं)का धीरहर - क्षणभंगुरी वस्तु । - के बादल उड़ाना - लंबी-चौड़ी बातें करना ।**

धुञ्जाना - अ० कि० धुंङ्गते बस जाना, अधिक धुंङ्गाली आँचमे पकनेके कारण धुंङ्गी गंधमे व्याप्त हो जाना ।

धुञ्जीव - वि० जिसमें धुंङ्गी-सी गंध हो ।

पुर्वात-पु० दे० 'पुर्वकथा'।
 पुर्वात-ली० दे० 'पुर्वत'।
 पुर्वासा-पु० पुर्वकी कालिख, पुर्वा लगनेसे पकनेवाल; कालिख। वि० पुर्वाया हुआ।
 पुक्क पुक्क-पु० भय, शंका आदिसे मनका डबाबोल होना, भक्भकी।
 पुक्कपुकी-ली० छाती और पेटके बीचका कुछ गहरा स्थान जहाँ भक्भन होती रहती है, कलेजा-‘भिलिनि विठोकि भरत रघुवरकी। सुर मन समय पुक्कपुकी भरकी’-रामा०; भक्भन; गलेका एक गहना, पटिक।
 पुक्कना-अ० कि० पुक्कना, लत होना; कौपना; टूट पडना झपटना, † शुका जाना।
 पुक्कनी-ली० दे० 'पूनी'; पुक्कनेकी क्रिया।
 पुक्कान-ली० दे० 'पुक्कार'।
 पुक्काना-स० कि० गिराना; नवाना, झुकाना; पुर्वा देकर गरमी पहुँचाना। अ० कि० कौपना, डरना।
 पुक्कार-ली० नगाड़ेकी आवाज; गङ्गाघाट।
 पुकारी-ली० दे० 'पुकार'।
 पुक्कना-अ० कि० पुक्कना; झपटना।
 पुक्कारना-स० कि० गिराना; झुकाना।
 पुगपुगी-ली० दे० 'पुक्कपुकी'।
 पुज-पु० दे० 'ध्वज'।
 पुजा-ली० दे० 'ध्वजा'।
 पुजिनी-ली० ध्वजिनी, सेना, फौज।
 पुर्वासी-वि० नंगा (ध्वज); जिसके शरीरमें धूल पुती हो; धूलिधूसर और नया (ध्वज)।
 पुत-वि० [सं०] ढिलाया हुआ, कपित; लत। अ० [हि०] दे० 'दुत'। -कार-पु० [हि०] दे० 'दुतकार'।
 पुतकारना-स० कि० दे० 'दुतकारना'।
 पुताई-ली० पुता।
 पुतारा-वि० दे० 'पूत'।
 पुद-पु० दे० 'पूर'।
 पुदरा-पु० दे० 'पदरा'।
 पुता-वि० निश्चेष्ट, पुत-‘पियेँ और पुत पड़े रहे’-मिदगी।
 पुधुका-पु० सिगा।
 पुधुकार-ली० 'धू-धू'की आवाज; धोर शब्द।
 पुधुकारी-ली० दे० 'पुधुकार'।
 पुधुकी-ली० दे० 'पुधुकार'।
 पुन-ली० किसी कार्यमें बराबर लगे रहनेकी प्रवृत्ति, लगन; मनकी लहर; मीज; विचार, चिंतन; स्वरके आरोह-अवरोहकी दृष्टिसे गानेका विशेष ढंग, स्वरगंगी; एक राग; दे० 'ध्वनि'। सु० -का पक्का-आरंभ किये हुए कामको पूरा करके छोड़नेवाला, फलौदयतक कर्म करनेवाला।
 पुनक-पु० धनुष; धनुर्धर।
 पुनकना-स० कि० दे० 'धुनना'।
 पुनकी-ली० धुनियोंका रई धुननेका धनुषके आकारका मौबार, फटका; लकड़ीके लैलने या थोड़ी-बहुत रई धुननेके कामका छोटा धनुष।
 पुनना-स० कि० रईकी धुनकीसे रस प्रकार फटकारना

कि गंधगी निकल जाय और रेशोंके फैलनेसे वह फुलफुली हो जाय; बेतरह पीटना; बिना रुके कहना; बिना रुके कोई काम करते जाना।
 पुनवाना-स० कि० 'धुनना'का प्रे०।
 पुनाई-ली० पिटाई, मरम्मत।
 पुनि-ली० 'ध्वनि'; [सं०] नदी। पु० एक असुर; सात भरतोमेंसे एक, दे० 'मरुद'।
 पुनिर्वा, पुनिवा-पु० रई धुननेका काम करनेवाला। † ली० धुनकी-‘सोनेकी धुनिवा रेसमकी है ताँत’-ग्रामगीत।
 पुनी-वि० जिसे किसी बातकी धुन हो, जो किसी धुनमें हो। * ली० दे० 'ध्वनि'; रई 'धूनी'; [सं०] नदी।
 -नाथ-पु० समुद्र।
 पुपधूप-वि० ढगढगा, माफ, बोझा-‘मेरो मन, मेरो अलि, लीचन है जो गये पुपधूप’-सूर।
 पुपना-अ० कि० पुलना।
 पुपाना-स० कि० धूप दिखाना, सुलने आदिके लिए धूपमें रखना; धूपके धुपमें सुवासित करना।
 पुपेखी-ली० पसीनेसे होनेवाली फुसी।
 पुप्पस-ली० डराने या धोखेमें डालनेके लिए किया गया काम, हाँसा-पट्टी।
 पुमिलना-स० कि० भूमिल बनाना।
 पुमिला-वि० धुपके रंगका; धुपला।
 पुमैला-वि० भूमिल, धुपके रंगका।
 पुर्धर-वि० [सं०] भार बहन करनेवाला; जोते जाने योग्य; जिसके ऊपर किसी कार्यका भार हो; किसी कामके होनेमें जिसका सबसे अधिक हाथ हो; उत्तम गुणोंमें युक्त; श्रेष्ठ; अग्रगण्य; प्रधान। पु० बैल आदि जो गाड़ीमें जोते जाते हैं; नेता, अग्रणी; शिव; धक्का वृक्ष।
 पुर्-पु० [सं०] धुरा; गाड़ीका नृश; भार, बोझ; धुरेके छोरपर लगनेवाली कील, जमीनकी एक नाप, विस्वासी; * ऊँचा स्थान; किला-‘धीर धरती न फौज कुतुबके धुरकी’-भूषण; मूल, आरम्भ। वि० [हि०] पक्का। अ० एकदम, (किनीकी) चरम सीमापर। -ऊपर-अ० एकदम ऊपर। -किल्ली-ली० धुरीमें लगायी जानेवाली एक कील।
 पुर्जटी-पु० दे० 'पुर्जति'।
 पुर्जी-ली० दे० 'धुरेडी'।
 पुर्ना-स० कि० पीटना; नवाना; भूसा बनानेके लिए पयालको फिरसे दौना।
 पुर्पद्-पु० दे० 'ध्रुवपद्'।
 पुर्वा-पु० वादल।
 पुरा-पु० [सं०] लकड़ी या लोहेका वह ढंडा जिसके सहारे पहिया घूमा जाता है, अक्ष; भार, बोझ।
 पुराधुर-पु० आधार-‘प्रान पपीहानिके धन आर्नद होत आप है धुराधुर’।
 पुर्वावा-स० कि० धूलमें ढँकना।
 पुर्वायामल्लार-पु० महाका एक भेद।
 पुरी-ली० छोटा धुरा।
 पुरीण-वि० [सं०] अग्रगण्य, श्रेष्ठ, प्रमुख; धुरा धारण

करनेवाला; जोते जाने योग्य; (किसी काममें) आगे रहने-वाला; जिसपर किसी कार्यका भार हो। पु० घोड़े आदि जो रथ आदिमें जोते जाते हैं; जिस व्यक्तिपर कार्यका भार हो; अग्रणी, प्रधान पुरुष।

पुत्री-वि०, पु० दे० 'पुत्रीण'।

पुत्री-वि०, पु० [सं०] दे० 'पुत्रीण'।

पुर्वाः पुर्वाः-खी० होलिका जलनेके बाद होनेवाले वसंतोत्सवका एक अंग, पूजिबंदन, मदनोत्सव।

पुर्देना-स० कि० छगाना, पोतना; धूलसे ढकना।

पुर्-खी० [सं०] नैलों आदिके कंधेपर रखा जानेवाला जूआ; भार, बोझ; रथ आदिका अग्रभाग; चौड़ी, शीर्ष-स्थान, अग्रभाग।

पुर्व-वि० [सं०] दे० 'पुत्रीण'। पु० विष्णु; बैल; कृष्ण नामकी ओषधि; दे० 'पुत्रीण'।

पुर्वा-पु० किमी वस्तुका चुर; कण। मु० -(रें) उबा देना-धुँकी उबाना, सर्वथा नष्ट कर देना, मटियामेट कर देना।

पुलना-अ० कि० पानी आदिके योगसे स्वच्छ किया जाना, धोया जाना; पानी पड़नेसे कटकर बह जाना।

पुलवाना-स० कि० दे० 'पुलाना'।

पुलाई-खी० धोनेकी क्रिया, धोनेकी उजरत।

पुलाना-स० कि० धोनेका काम करना।

पुष-वि०, पु० दे० 'पुष'।

पुषका-खी० [म०] गीतका पहला पद, टेक, स्थायी।

पुवन-पु० [सं०] अधि। वि० कवित करनेवाला।

पुर्वा-पु० दे० 'पुर्वा'। -कक्ष-पु० दे० 'पुर्वाकक्ष'। -धार-वि०, अ० दे० 'पुर्वाधार'।

पुर्वारा-पु० छनमें बना हुआ पुर्वा निकलनेका छेद।

पुर्वाल-खी० उरदका पिसान।

पुवाना-स० कि० दे० 'पुलाना'।

पुवित्र-पु० [म०] वाशिकोंका अधि दहकानेका मृगनर्म आदिका पंखा; ताड़का पंखा।

पुस्तर-पु० [सं०] भट्ठा।

पुस्स-पु० ढोड़ मकानकी मिट्टी-रैट आदिका ढेर; टीला; नदी आदिके किनारेका बाँध।

पुस्सा-पु० ऊनका भारी कवक।

पुष-खी० दे० 'पुष'।

पुषरा, पुषरा-वि० पुषला। पु० ओषरा; उकती हुई धूल-राशि।

पु-वि० स्थिर। पु० ध्रुव; भुवतारा।

पुर्वा-पु० दे० 'पुर्वा'।

पुर्वा-खी० दे० 'पुर्वा'।

पुष्क-पु० कलावत् बटनेकी सलाई; [सं०] वायु; अधि; धूर्न मनुष्य; काल, समय।

पुष्करा-अ० कि० वेगमें आगे बढ़ना। स० कि० पुर्वा देना; पुर्वा पहुँचाकर केने आदिकी पकाना।

पुष्कट-पु० दे० 'पुष्कट'।

पुष्करा-अ० कि० हिलना, कपित।

पुष्क-वि० धूर्न, छड़ी, पारखी, बंचक। [सं०] हिलाया हुआ; छोड़ा हुआ; दूर किया हुआ, त्यक्त; बाँटा हुआ, ध्रु

शिवका हुआ, धमकाया हुआ, मस्तिष्क; विचारित।

-कक्ष-वि० पापरहित, निष्पाप। -पापा-खी० काशीखडीक एक नदी।

पुर्वा-स० कि० धूर्ता करना, दगा करना, छलना, बंचना करना।

पुर्वा-खी० [सं०] पक्षी।

पुर्वा-खी०-खी० धूर्ता, चालाकी-सौजी कहड़ देड़ खब-ननि सुख, छाँड़ देड़ जिया कुटिल पुर्वा-सूर।

पुर्वि-खी० [सं०] हिलना, कपन; हवा करना; हठयोगमें शरीरशुद्धिकी एक क्रिया।

पुर्वी-खी० एक चित्रिया।

पुर्वक, पुर्व-पु० तुरही; नरसिंग।

पुर्व-पु० आगके नीरते जलनेका द्रव्य।

पुर्व-वि० [सं०] हिलाया हुआ, कँपाया हुआ; ध्यास या तापमें द्रष्ट।

पुर्वक-पु० [सं०] हिलानेवाला, कपित करनेवाला; राल।

पुर्वक-पु० [सं०] हवा; कपन; क्षोभ।

पुर्वक-स० कि० खई साफ और फुलफुली करना, धुनना; * देवता आदिके निमित्त धूप आदिकी आगमें जलाना, धूनी आदि।

पुर्वा-पु० एक पेड़ या उसका गोंद जो धूनी देने तथा बार-बार तैयार करनेके काम आता है।

पुर्वि-खी० [सं०] कँपाने, हिलानेकी क्रिया।

पुर्वी-खी० किसी देवताके आग्रापणके निमित्त आगमें डाले गये गुग्गुलु आदिका धुँआँ; ठंडसे बचने या शरीरकी तपानेके लिए माधुओं द्वारा अपने पास जलायी जानेवाली आग।

मु० -अगाना, -रमाना-साधुओंका तपके लिए आगकी अपने पास जलाये रखना; योगी होना, विरक्त होना।

पुर्व-पु० [म०] देवताके आग्रापणके लिए या मुग्धपणके निमित्त जलाये गये गुग्गुलु आदिका धुँआँ; गुग्गुलु आदि गंधद्रव्य (इसके पाँच भेद हैं-(१) निर्वास, (२) चूर्ण, (३) गंध, (४) काष्ठ और (५) कृत्रिम)। -दान-पु० [हि०] धूप रखने या देनेका वरतन। -शानी-खी० [हि०] दे० 'धूपदान'। -पात्र-पु० दे० 'धूपदान'।

-बत्ती-खी० [हि०] मुग्धपणके लिए जलायी जानेवाली एक प्रकारकी मसाला लगी हुई लौक। -वास-पु० गंध-द्रव्यके धूपमें वासन। -बुझ-पु० एक पेड़ जिससे गुग्गुलु निकलता है, सरल बुझ।

पुर्व-खी० आतप, धाम, सूर्यका प्रकाश, सूर्यकी गरमी; दीप (दीपके साथ प्रयुक्त)। -बत्ती-खी० एक यंत्र जिसमें धूपके सहारे समयका ज्ञान होता है। -छाँड़-खी० एक तरहका कपडा जिसमें कई रंग दिखाई देते हैं। मु० -खाना-धूपमें सुखना अथवा सुखाया या फैलाया जाना; धूप लगनेके लिए बाहर बैठना आदि। -खिलाना, -खिलाना-धूप लगनेके लिए बाहर रखना। -निकलना-सूर्यका प्रकाश फैलना।

पुर्वक, पुर्वि-पु० [सं०] धूप बेचनेवाला; गंधी।

पुर्वक-पु० [सं०] धूप देनेका कार्य; गंधद्रव्य।

पुर्वक-अ० कि० दीहना (समाप्तमें प्रयुक्त)। * स० कि० धूप देना, गंधद्रव्य जलाना; धूपसे वासना।

धूर्वाग-पु० [सं०] सरल वृक्ष ।

धूर्वावित-वि० [सं०] दे० 'धूर्वित' ।

धूर्वित-वि० [सं०] धूर्वसे बासा हुआ; तप्त; बका हुआ ।

धूम-पु० [सं०] धुआँ; कुहरा; धूमकेतु; उल्कापात; बादल; अपवक्त्र के कारण आनेवाली डकार; मकान बनानेके लिए तैयार किया गया स्थान; एक कवि । -केतन-पु० अग्नि (जिसके अस्तित्वके अनुमानका चिह्न धुआँ है); धूमकेतु । -केतु-पु० अग्नि; पुच्छल तारा; केतु ग्रह; राक्षसी सेनाका एक भद्र । -गंधिक-पु० रोहिण तृण । -ग्रह-पु० राहु । -ज-पु० बादल; मोथा । -दर्शी- (शिव)-पु० वह मनुष्य जिसे चारों ओर धुंधला दिखाई देता हो । -ध्वज-पु० अग्नि । -प-वि० केवल होमका धुआँ पीकर रहनेवाला (तपस्वी) । -पथ-पु० धुआँ निकलनेका झरोखा; पितृयान । -घान-पु० दंतरोम; नेत्ररोम; जग आदिमें विशिष्ट वस्तुओं, जोषधियोंको विलमपर चढ़ाकर गाँजे आदिकी तरह पीना; तमाकू; गाँजा आदि पीना । -पोत-पु० जहाज, अगिनवोट ।

-प्रभा-की० एक नक्ष । -प्राह-वि० दे० 'धूमप' ।

-महिषी-की० कुहरा, कुच्छाटिका । -घान-पु० रेल-गाड़ी । -बोमि-पु० बादल । -ऊ-वि० धुएँके रंगका, मटमैला । पु० एक तरहका वायव्य । -ऊता-की० कुंचित धूमराशि । -संहति-की० धूमराशि । -सार-पु० मकानका धुआँ ।

धूम-की० तैयारीके साथ किये जानेवाले किसी बड़े काम या उत्सवका शोर; इल्काधुलका, उपद्रव; शुद्धरत, प्रसिद्धि; चर्चा; ठाट; तैयारी, समारोह । * अ० तेजीसे । -चक्षु-पु०, -घाम-की० ठाट-बाट, चहल-पहल, समारोह ।

धूमजगज-पु० [सं०] बज्रधार, नौसादर ।

धूमर-वि० दे० 'धूमल' ।

धूमका-वि० दे० 'धूमल' ।

धूमशब्द (वर्ष)-वि० [सं०] जिससे धुआँ उठता या निकलता हो ।

धूमसी-की० [सं०] उरदका बका; उरदका पिसान ।

धूमांग-पु० [सं०] शीशमका पेड़ । वि० जिसका अंगधुई-के रंगका हो ।

धूमाक्ष-वि० [सं०] जिसकी आँखें धुएँके रंगकी हों । [की० 'धूमाक्षी' ।]

धूमारिण-की० [सं०] वह आग जिसमें धुआँ ही धुआँ हो, ज्वाला न हो ।

धूमात्र-वि० [सं०] धुएँके रंगका ।

धूमावन-पु० [सं०] धुआँ देना, वाष्प निकलना; ताप ।

धूमावमान-वि० [सं०] धूमसे पूर्ण ।

धूमावती-की० [सं०] दस महाविद्याओंमेंसे एक ।

धूमिका-की० [सं०] कुहरा ।

धूमित-वि० [सं०] जिसमें धुआँ लगा हो; जो धुआँ लगने-से धुंधला हो गया हो । पु० साढ़े बारह अक्षरोंका एक मन्त्र (यह दोषयुक्त माना गया है-तं०) ।

धूमिता-की० [सं०] वह रिखा बिधर सूर्य पहले झुट्टा है ।

धूमिनी-की० [सं०] अग्निकी एक जिह्वा, अजमीठकी

पत्ती (हरिवंश) ।

धूमिल-वि० [सं०] दे० 'धूमल' ।

धूमी (मित्र)-वि० [सं०] जिससे बहुत अधिक धुआँ उठता या निकलता हो । [की० 'धूमिनी' ।]

धूमोरथ-वि० [सं०] धुएँसे उत्पन्न । पु० नौसादर ।

धूमोद्धार-पु० [सं०] अपवक्त्र आनेवाली डकार; धुएँका उठना ।

धूमोपहत-पु० [सं०] एक रोग ।

धूमोर्णा-की० [सं०] यमकी पत्नी ।

धूम्या-की० [सं०] धूमपुत्र ।

धूम्याट-पु० [सं०] एक पक्षी; कलिंग, मृग ।

धूम-पु० [सं०] ल्हाईं किये काला रंग, कृष्ण-लोहित वर्ण; सिद्धका; लोथान; शिव; एक असुर; कार्तिकेयका एक अनुचर; एक योग (ज्यो०); पाप; दुष्टता । वि० ल्हाईं किये काले रंगका; धुंधला । -कोत-पु० एक रत्न ।

-केश-पु० राजा श्रुका एक पुत्र । वि० जिसके बाल धुएँके रंगके हों । -पन्ना-की० एक क्षुप, रूमपना ।

-पान-पु० [हिं०] दे० 'धूमपान' (अस्ताधु) । -मूक्षिका-की० शूली नामक मृग । -कृक्ष (वृ)-वि० कृष्ण-लोहित वर्णका । -कोचन-पु० कभूत; शुभ नामक असुरका एक मेनापति । वि० जिसकी आँखें धूमवर्णकी हों । [की० 'धूमलोचना' ।] -लोहित-पु० शिव । वि० गाढा लाल । -वर्ण-वि० धुएँके रंगका । पु० लोथान; ल्हाईं किये काला रंग । -वर्णक-पु० मंदमें रहनेवाला एक जानवर, लोमकी । -वर्णा-की० अग्नि की मान जिह्वाओंमेंसे एक । -शूक-पु० ऊँट ।

धूमक-पु० [सं०] ऊँट ।

धूमा-की० [सं०] सूर्यकी बारह कलाओंमेंसे एक; दुर्गा; एक तरहकी ककरी ।

धूमाक्ष-वि० [सं०] जिसके नेत्र धूमवर्णके हों । [की० 'धूमाक्षी' ।] पु० रावणकी सेनाका एक राक्षस ।

धूमाक्षि-पु० [सं०] वह मोती जिसका रंग मद्दा हो ।

धूमाट-पु० [सं०] एक शिकारी विधिया ।

धूमात्र-पु० [सं०] वायु; वानावरण ।

धूमारि-की० [सं०] अग्नि की (रूम्मा, ज्वलिनी आदि) दस कलाओंमेंसे एक ।

धूमात्र-पु० [सं०] इक्ष्वाकु वंशका एक राजा ।

धूमिका-की० [सं०] शीशमका पेड़ ।

धूर-की० दे० 'धूल' । अ० दे० 'धूर' । -धान-पु०, -धानी-की० धूलका ढेर ।

धूरजटी-पु० दे० 'धूर्जटि' ।

धूरत-वि० दे० 'धूर्त' ।

धूरा-पु० धूल; चूर्ण ।

धूरि-की० दे० 'धूल' ।

धूरे-अ० निकट, पास ।

धूर्जटि-पु० [सं०] शिव ।

धूर्त-वि० [सं०] चंचक, दगावान, छल करनेवाला, ठाका, मायावी; ऊँपट; क्षतिग्रस्त । पु० जुआरी; शठ नायक; खारी नमक; कर्तार; लोहकट; क्षति पहुँचाना । -किसल-पु० जुआरी । -कृत्-पु० धूर । वि० मकार, दे-

ईमान । -**चरित**-पु० धूर्तका चरित; एक प्रकारका नाटक जिसमें शठ नायकके चरितका वर्णन रहता है, संकीर्ण नाटक । -**जंतु**-पु० मनुष्य । -**आनुषा**-खी० रास्ना लता । -**रचना**-खी० छल-कपट, दुष्टता ।

धूर्तक-पु० [सं०] गौरव; जुबारी; एक नाव ।

धूर्तता-खी० [सं०] धूर्तका गुण, बंचना, प्रतारणा, छल, दगाबाजी ।

धूर्वर-वि०, पु० [सं०] दे० 'धुरंवर' ।

धूर्वह-वि०, पु० [सं०] मार बहन करनेवाला; कार्यभार संभालनेवाला । पु० बौद्ध होनेवाला पशु ।

धूर्वी-खी० [सं०] रथका अग्रभाग ।

धूल-खी० मिट्टी आदिका चूर, रज, रेणु; (ल०) अति तुच्छ वस्तु । -**धानी**-खी० धूलका ढेर । **मु०** (**कद्वी**)-

-**उबना**-तवाह या बरबाद होना; उजड़ जाना, सर्वनाश होना; सुनसान हो जाना । -**उडाते फिरना**-मारा-मारा फिरना; जीविकाकी तलाशमें घूमना । -**की रस्सी बटना**-असमर्थ बातके लिए श्रम करना । -**चाटना**-

बहुत दीनता प्रकट करना । -**झाबना**-बारकी लाज छोड़ देना । -**फाँकना**-जीविकाके अभावमें दीनावस्थामें श्वर-उपर धूमते फिरना । -**में मिकला**-सर्वथा नष्ट होना; बरबाद होना । -**में मिकला**-नष्ट करना, मटि-यामेट करना, बरबाद करना ।

धूलक-पु० [सं०] विष, जहर ।

धूलि-खी० [सं०] धूल, गर्द, रज । -**कद्व**-पु० कदमका एक भेद, नीप । -**कुटिम**, **केदार**-पु० जोता हुआ खेत (जिसमें धूलकी प्रधानता रहती है); पुस्त । -**गुच्छक**-

-पु० अक्षर । -**धूसर**, **धूसरित**-वि० जो धूल लगनेसे भूरे रंगका हो गया हो । -**ध्वज**-पु० बाजु । -**पटल**-पु० धूलका बादल । -**पुण्डिका**, **पुष्पी**-खी० जेतकी ।

धूलिका-खी० [सं०] कुहरा, कुञ्चिका ।

धूर्वा-पु० दे० 'धुआँ' ।

धूसर-वि० [सं०] भूरे रंगका, मौलसिरीके रंगका; मट-मैला; धूलमें सना हुआ । पु० भूरा रंग; गथा; ऊँट; कबूतर; तली; भूरे रंगकी कोई वस्तु । -**छट्ठा**-खी० दवेत जुड़ा ।

-**पत्रिका**-खी० हस्तिशुली नामक क्षुप ।

धूसरा-वि० धूलके रंगका; धूलसे सना हुआ । खी० [सं०] पांडुरफली नामक क्षुप ।

धूसरित-वि० [सं०] धूसर किया हुआ, धूलमें लिपटा हुआ; भूरे रंगका ।

धूपरी-खी० [सं०] किन्नरीका एक भेद ।

धूसला-वि० दे० 'धूसरा' ।

धूसुर, **धूसुर**-पु० [सं०] धूसुर ।

धूरा-पु० दे० 'दूध', वह पुतला जो चित्रियों आदिको डरानेके लिए बनाया जाता है ।

धुक, **धुग**-अ० दे० 'धिक्' ।

धुत-वि० [सं०] धारण या ग्रहण किया हुआ; पकड़ा हुआ; रखा हुआ; गिरा हुआ; पतित; स्थित; तोड़ा हुआ; तैयार किया हुआ । पु० गिरना; स्थिति; ग्रहण; धारण; लकनेका एक ढंग । -**धूँध**-वि० ढँध देनेवाला; दबित । -**धींचित**-

-पु० अग्नि । -**राष्ट्र**-पु० दुर्वाधनके पिता; वह देश

जहाँका राजा या शासक अच्छा हो; एक नाग; काले पैरों और जोंचवाला हस्त । -**राष्ट्री**-खी० कश्यपकी एक पुत्री जिससे ईश आदि पक्षी उत्पन्न हुए । -**लक्ष्य**-वि० अपना लक्ष्य प्राप्त करनेके प्रयत्नमें लगा हुआ । -**बर्मा** (**मैन्**)-

-वि० जिसने कबच धारण किया हो । पु० त्रिगर्तनरेश केन्द्र-बर्माका अनुज जिसने अर्जुनसे युद्ध किया था । -**ब्रत**-

-वि० जिसने कोई व्रत धारण किया हो । पु० द्रव्य; वस्त्र; अग्नि ।

दस्ताख्ता (**खन्**)-वि० [सं०] द्य चित्तवाला, धीर । पु० विष्णु ।

दृष्टि-खी० [सं०] धारण; ग्रहण; पकड़ना; ठहराव; स्थैर्य; धैर्य; तुष्टि; दृष्टि; एक योग (व्यो०); गौरी आदि सोलह मातृकाओंमेंसे एक; मनकी धारणा (इसके तीन भेद हैं-

(१) सात्त्विकी, (२) राजसी, (३) तामसी); एक आध्यात्मिकी भाव (सा०); दक्षकी एक कन्या जो धर्मकी पत्नी है; चंद्रमा-की एक कला ।

दृष्टिमान् (**मत्**)-वि० [सं०] धैर्यवाला, धीर; संतुष्ट । [खी० 'दृष्टिमती' ।]

धृक्वरी-खी० [सं०] पृथ्वी ।

धृक्वा (**खन्**)-पु० [सं०] विष्णु; मज्जा; धर्म; आकाश; समुद्र; चतुर आदमी ।

धृषित-वि० [सं०] धीर, बहादुर, निर्भीक ।

धृवु-वि० [सं०] धीर, बहादुर; दक्ष, चतुर । पु० राक्षि, समूह ।

धृष्ट-वि० [सं०] साहसी; लज्जारहित; डीठ, उर्ध्व; निर्दय; जो अपराध करके भी निःशंक बना रहे, शिक्केपर भी लज्जित न हो और दोष प्रकट होनेपर भी बातें बनाता जाय । पु० अपराध करके निःशंक बना रहनेवाला नायक ।

-**धम्न**-पु० राजा दुपदका पुत्र जिसने कुक्षेत्रमें अश्व-त्थामाके शोकमें मग्न होणाचार्यका वध किया था । -**धी**-वि० डीठ, निर्लज्ज । -**झानी** (**निज्**)-वि० अपनेकी बहुत बड़ा समझनेवाला; डीठ ।

धृष्टता-खी० [सं०] डिठारै, उर्ध्वता; निर्लज्जता; निर्दयता ।

धृष्टा-वि० खी० [सं०] असती (खी) ।

धृष्टि-पु० [सं०] हिरण्यशका एक पुत्र; दशरथके एक भ्राता; एक वनपात्र ।

धृष्णक (**ज्**)-वि० [सं०] दे० 'धृष्ट' ।

धृष्णि-खी० [सं०] किरण ।

धृष्णु-वि० [सं०] दे० 'धृष्ट' ।

धृष्व-वि० [सं०] बर्षण करने योग्य; आक्रमण करने योग्य, जीतने योग्य ।

धेन-पु० [सं०] समुद्र; नद । * खी० दे० 'धेनु' ।

धेना-खी० [सं०] नदी; वाणी ।

धेनिका-खी० [सं०] धनिया ।

धेनु-खी० [सं०] हालकी प्यायी हुई गौ, सध; प्रसूता गौ; दूध देनेवाली गाय; पृथ्वी; भेट । -**दुग्ध**-पु० गोक्षीर; चिमिट । -**दुग्धकर**-पु० गाजर । -**मक्षिका**-खी० दंश, बाँस । -**मुख**-पु० गोमुख नामक बाज ।

धेनुक-पु० [सं०] एक अक्षर जिने बलरामने मारा था ।

-**धृक्व**-पु० बलराम ।

बैलुका-ली० [सं०] बैलु; वस्तिनी; भेद, उपहार; यात्रा पशु; पनिया ।

बैलुमती-ली० [सं०] गोमती नदी ।

बैलुव्या-ली० [सं०] कणके बदलेमें बंधक रखी हुई गाय ।

बैष-वि० [सं०] धारण करने योग्य, धारणीय; शोषण करने योग्य, शोष्य; पीने योग्य । पु० ग्रहण; पान; शोषण ।

बैवना-स० कि० ध्यान करना ।

बेरिया-ली० लकड़ी, पेटी-‘बड़े बेरिया नामकी बेरिया बड़े गोल गोल’-ग्राम्यगीत ।

बेलचा-पु० दे० ‘अपेला’ ।

बेला-पु० दे० ‘अपेला’ ।

बेली-ली० अठ्ठी ।

बैल-ली० बैल ।

बैलव-पु० [सं०] बछड़ा । वि० गावसे उत्पन्न ।

बैला-ली० भषा; आदत, टेव ।

बैलुक-पु० [सं०] गोमयूह; एक रतिबंध ।

बैर-पु० [सं०] धीर होनेका भाव, धीरता; विकारोंके कारणोंके रहते हुए भी चित्तके विकृत न होनेका भाव, चित्तकी दृढ़ता, स्थिरता, धीरज; साहस; भृष्टता ।

बैवत-पु० [सं०] सप्तक छठा स्वर (संगीत) ।

बैवत्य-पु० [सं०] चातुर्य ।

बैकना-स० कि० कौपना-‘...सिद्धि कौपी ब्रह्मनायक धौकी’-सुदामाचरित्र । सं० कि० दे० ‘बौकना’ ।

बौहा-वि० देहोंमें भरी (जमीन) ।

बौधा-पु० मिट्टीका कौदा; बड़ौल शरीर ।

बौह-ली० लज्ज या शर्मकी दाह जिम्मा छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो । * पु० राजगीर ।

बौका-वि० मोटा-ताजा ।

बौका-पु० दे० ‘बोका’ ।

बौका-पु० दे० ‘बोका’ ।

बौका-पु० वस्तुस्थितिकी छिपाकर दूसरोंकी भ्रममें डालनेका व्यापार, वचना; वचन, आशामन देकर भी अन्यथा आचरण करनेकी क्रिया, विश्वासघात, दगा; छुठी बात या नकली चीजमें विश्वास करनेसे होनेवाला भ्रम, भुलावा; कुछकी कुछ समझ लेनेका भाव, मिथ्या प्रतीति; भ्रममें डालनेवाली वस्तु; भूल; गैरज्ञानकारी; खतरा, जोखिम; खटका, भेदसा, संशय; कसर, बुद्धि; चिक्चिकी छरावेके लिए लेंतोंमें खड़ा किया जानेवाला मनुष्यके आकारका लकड़ी, पयाल आदिका पुतला । - (ले) बाज़ ।

बौका-वि० बोका देनेवाला, दगा करनेवाला, छलिया, बचक ।

बाज़ी-ली० बोका देनेका काम या वृत्ति, छलनेकी चाल; छल, प्रतारणा । मु० - छाया-छला जाना, भुलावेमें पड़ना, प्रतारित होना; कुछकी कुछ समझ लेना; हानि सहना, नुकसान उठाना । - देना-छलना, भुलावेमें डालना; विश्वासघात करना; (ला०) असमय सरकार या नष्ट होकर आशाओंपर पानी फेर देना या वनवी बात बिगाड़ देना । - पड़ना-छोने हुएका उलटा होना, कुछका कुछ होना । - छलना-बुद्धि या कसर होना । - छाया या छाया-बुद्धि या कसर करना । - (ले) की दही-बह परदा जिसकी आशमें शिकारी किमी जान-

बरकी मारता है; झूठ-झूठमें कैसा रखनेवाली चीज, भावा-जाल । - में जाना-दे० ‘बोका खाना’ ।

बोटा-पु० दे० ‘बोटा’ ।

बोड-पु० [सं०] एक तरहका लौप, डड्डम ।

बोतर-पु० एक तरहका मोटा कपड़ा । † ली० धोती ।

बोती-ली० एक प्रसिद्ध अपोवह; दे० ‘धोती’ । मु० -

डीली होना-हिम्मत छूटना; भयभीत होना, डर जाना ।

बोना-स० कि० पानीके योगसे किसी वस्तुपरका मैल दूर करना, जलसे स्वच्छ करना; अलग करना, दूर हटाना, छेक देना । मु० धो बहाना-दूर करना, हटाना ।

बोप-ली० तलवार ।

बोब-पु० धोये जानेकी क्रिया, धुलाई ।

बोबनी-ली० दे० ‘धोविन’ ।

बोबिचटा-पु० धोविनीका कपड़ा होनेका घाट ।

बोबिन-ली० धोबीकी स्त्री; धोबी जातिकी स्त्री; एक चिट्ठिया ।

बोबी-पु० कपड़ा होनेका पेशा करनेवाला, रजक । - बास

-ली० बरी दूध । - पछाड़-पाट-पु० कुश्तीका एक

पेच । मु० - का कुत्ता-उठव् आदमी । - का छेला-

परायी वस्तुपर एवं करनेवाला आदमी ।

बोम-पु० घूम, घूर्ण ।

बोर-पु० नेकल, किनारा ।

बोरण-पु० [म०] सवारी, यान, वाहन; तीव्र गमन;

गोरेकी एक चाल ।

बोरणि, बोरणी-ली० [सं०] अविच्छिन्न क्रम, परंपरा ।

बोरित-पु० [सं०] गोरेकी दुलकी चाल; क्षति पहुँचाना;

गमन ।

बोरी-पु० धुरा धारण करनेवाला, धुरधर, गाड़ी आदिमें

जोते जानेवाले बैल आदि, धुर्य, अग्रणी, वरीण ।

बोरे-स० समीप, निकट, किनारा ।

बोवत-पु० धोबी ।

बोवती-ली० धोती ।

बोवन-पु० धोनेकी क्रिया या भाव; वह पानी जिसमें या

जिससे कोई वस्तु धोयी गयी हो ।

बोवा-पु० यौवन; जल ।

बोवाना-स० कि० धुलाना । अ० कि० धुलना ।

बौ-स० एक शब्द जो सशय, विकल्प, आदेश आदिमें प्रयुक्त होता है, न मालूम, न जाने, पता नहीं, कुछ ठीक नहीं, क्या मालूम; या, अथवा, कि, भला, तो ।

बौक-ली० धौकनेकी क्रिया; गरम हवा ।

बौकना-स० कि० आगकी तेज करनेके लिए उमपर भाथी,

पत्ते आदिके द्वारा हवाका बौका पहुँचाना; मार डालना ।

बौकनी-ली० सोनारोंकी आग दहकानेकी लोहे या बौस-

की नली; भाथी ।

बौका-पु० लु; गरम हवा ।

बौकिया-पु० भाथी चलानेवाला; भाथी आदि लेकर घूम-

घूमकर बरतनोंकी मरम्मत करनेवाला कारीगर ।

बौकी-ली० दे० ‘बौकनी’ ।

बौज-ली० दौधपू; बेकली, परेशानी, उद्विग्नता ।

बौजना-स० कि० रौदना, रौसे कुचलना । अ० कि०

रौध-वृष करना ।

शैल-श्री० बॉट-बपट, बुद्धकी, धमकी; शैला-पट्टी; थाक; दे० 'पुर्वास' । -पट्टी-श्री० बुलावा, शैला-पट्टी ।

शैलना-स० कि० बॉटना-रुपटना; धमकाना; बुद्धकाना; दंड देना; दवाना; पीटना ।

शैलस-पु० बवा नगावा-‘प्रकट बुद्धके पौसा बाजे’-छत्र-प्रकाश; वृत्ता, सामर्थ्य ।

शैलिया-पु० पौसा बजानेवाला; धोखेवाजी करनेवाला; भौस जमानेवाला ।

शैल-वि० [स०] बोया हुआ, प्रशालित; धवल; दीप्त । पु० चाँदी; प्रशालन । -कट-पु० थैला; वृत्तका बना थैला ।

-कोषज, -कोसेव-पु० भुला या साफ किया हुआ रेशम । -खंडी-श्री० मिश्री । -शिल-पु० स्फटिक ।

शैल्य, शौलेव-पु० [स०] सेवा नमक ।

शैलाक्ष-वि० शारती-‘होरीके दिन चारिकते तुम अये हो निपट भौगल हो’-धन० ।

शैली, शौली-श्री० [स०] ब्रह्मयोगकी एक क्रिया जिसमें कपड़ेकी चार अंगुल चौड़ी और पंद्रह हाथ लंबी गौली पट्टीको निमलते और फिर बाहर निकालते हैं; इस क्रियामें काम आनेवाली कपड़ेकी पट्टी ।

शैल्य-पु० [स०] एक ऋषि जो पांडवोंके पुरोहित थे; आयोद कषि जिनके शिष्य उपमन्यु, आरुणि और वेद थे; एक ऋषि जो पश्चिम दिशामें ताराक्षममें स्थित हैं ।

शैल्य-वि० [स०] ध्वजवर्णवाला, धुंरेंके रंगका । पु० ध्वज वर्ण ।

शैर-वि० धवल, सफेद । पु० एक पक्षी; सफेद कबूतर ।

शैरहर-पु० दे० ‘धरहरा’ ।

शौर-वि० धवल, श्वेत, सफेद । पु० सफेद बैल, धव वृक्ष; एक पक्षी ।

शौराहर-पु० दे० ‘धरहरा’ ।

शौरितक-पु० [स०] घोड़ेकी दुलकी चाल ।

शौरिय-पु० गाड़ीमें जोता जानेवाला बैल, धुर्य ।

शौरी-श्री० उजली गाय; शौरा पक्षीकी मादा । वि० श्री० उजली, सफेद ।

शौरे-अ० दे० ‘शौरे’ ।

शौरेय-वि० [स०] जो धुरा धारण करने योग्य हो, शोभ होने योग्य । पु० गाड़ी खींचनेवाला बैल; घोड़ा; प्रधान, नायक ।

शौर्तक, शौर्तिक, शौर्त्य-पु० [स०] दे० ‘धूर्तता’ ।

शौर्य-पु० [स०] घोड़ेकी दुलकी चाल ।

शौल-श्री० मित्र, कृपे या पीठपर किया जानेवाला घुँसेकी तरहका भारी आघात; चपल; हानि । पु० धक्का पेंक; * शौराहर । * वि० धवल । -धल्ल-पु० उपद्रव, डंगा । -धल्ला-पु० आघात, दबाव, चोट । -धल्लव, -धल्ला-पु० मारपीट; उपद्रव । -धुत-वि० धवल धूर्त, पक्का धूर्त ।

शौलहर, शौलहरा-पु० धरहरा ।

शौला-वि० दे० ‘धवल’ । पु० धव वृक्ष; सफेद बैल । -ई-श्री० धवलता, उजलापन । -शैर-पु० बल्लूकी जातिका एक सफेद छिलकेवाला पेड़ । -मिरि-पु० दे० ‘धवलमिरि’ ।

शौली-श्री० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी खिलौना आदि

३३-क

बनानेके काम आती है ।

शौल-पु० [स०] कौआ; बगुला; बड़ई; भिड्डक; निर्लज्ज व्यक्ति । -बंछा-श्री० काकनंवा, कौआठोड़ी । -जंजु-पु० काकनंतु । -तुंडी-श्री० काकनासा लता । -हंसी, -नखी-श्री० काकतुंडी । -माशिनी-श्री० धुपुषा, शारकर । -नासा-श्री० काकनासा । -पुष्ट-पु० कोकिल ।

-माफी-श्री० काकमाफी । -बल्ली-श्री० काकनासा ।

शौलावनी-श्री० [स०] काकतुंडी ।

शौलाराति-पु० [स०] उल्लूक ।

शौली-श्री० [स०] कौएकी मादा; शीतलचूनी ।

शौली-श्री० [स०] काकोली ।

शौलार-पु० [स०] लोहार ।

शौल-वि० [स०] (कूँककर) बजाया हुआ; फुलाया हुआ; धुम्य किया हुआ ।

शौल-पु० [स०] कूँककर फुलाना ।

शौलपित-वि० [स०] जलाकर राख किया हुआ ।

शौल-वि० [स०] ध्यान किया हुआ, सीखा हुआ ।

शौलव्य-वि० [स०] दे० ‘ध्येय’ ।

शौला(तु)-वि०, पु० [स०] ध्यान करनेवाला ।

शौल-पु० [स०] किसीके स्वरूपका चिंतन; विषय-विशेषमें चिंतकी एकाग्रता, गौर; सोच, विचार, चिंतन; बुद्धि, समझ; स्थिति, बाद, कथाल; किसी एक विषयपर मनकी स्थिर करनेकी क्रिया; चिंतन या धारण करनेकी वृत्ति; चिंत, मन; ध्येय विषयके साथ चिंतके प्रत्ययकी एक-तानता (योग) । -गम्य-वि० केवल ध्यानसे प्राप्त होनेवाला । -तत्पर, -निष्ठ, -पर, -भग्न, -रत-वि० ध्यानमें लीन, ध्यानमें लगा हुआ । -योग-पु० ध्यान-रूपी योग; वह योग जिसमें ध्यानकी प्रधानता हो । -साध्य-वि० ध्यानसे सिद्ध होनेवाला । -स्व-वि० ध्यानमग्न, ध्यान करता हुआ । सु० -आना-सरण होना । -छटना-ध्यान भंग होना, चिंतकी एकाग्रता नष्ट होना । -देना-चिंतको किसी ओर प्रवृत्त करना; लक्ष्यल करना । -धरना-किसीके स्वरूपका चिंतन करना; एकाग्रभावसे ईश्वर आदिका चिंतन करना । -पर-कटना-सरण होना; बाद होना । -बैधना-किसी ओर चिंतका लगा रहना, किसीके चिंतनमें चिंतका धकाप्र होना । -में न लाना-चिन्ता न करना; न विचारना । -लगाना-दे० ‘ध्यान धरना’ । -से उत्तरना-भूलना, विस्मृत होना ।

शौलना, शौलना-स० कि० ध्यान करना, बराबर सरण करना ।

शौलान्यास-पु० [स०] ध्यानका अभ्यास, समाधि ।

शौलान्यस्थित-वि० [स०] ध्यानमें लगा हुआ, ध्यानमग्न ।

शौलिक-वि० [स०] ध्यान द्वारा सिद्ध होने योग्य, ध्यान-साध्य ।

शौली(निष्ठ)-वि० [स०] ध्यान करनेवाला; जो बराबर परमात्मनितन किया करता हो, ध्यानशील ।

शौल-वि० [स०] गंदा, मैला; काळा । पु० एक तरहका गंधपुष्प; दमनक ।

ध्वज-ध्वज—पु० [सं०] रोहिण्य दृष्ट ।

ध्वज-वि० [सं०] ध्वज करने योग्य; (वह विषय) जिसका ध्वज किया जाय । पु० ध्वजका विषय; उद्देश्य, लक्ष्य ।

ध्वज-पु० दे० 'ध्वज' ।

ध्वज-पु० दे० 'ध्वज' ।

ध्वज-वि० [सं०] स्थिर, अचल; निश्चित; अलक्ष्य, पक्का; सदा एकरूप रहनेवाला, नित्य, शाश्वत । पु० एक प्रसिद्ध माल-तपस्वी जो विष्णुके वरसे उत्तर दिशामें अचल ताराके रूपमें मेरुके ऊपर प्रतिष्ठित है; ध्रुवतारा जो सदा उत्तर दिशामें एक स्थानपर स्थित रहता है; पृथ्वीके उत्तरी और दक्षिणी भिरे; आकाश; विष्णु; शिव; ब्रह्मा; नववृक्ष; आठ बल्लभोंमेंसे एक; शरारि नामक पक्षी; स्थाणु, ठूँठ रोमा-वर्त, मेंवरी; बारहवों भोग (ज्योतिः); उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपदा और रोहिणी नक्षत्र; नासिकाका अग्रभाग; एक यक्षपात्र; गीतका आरम्भिक अक्ष ।—**केतु** पु० केतु ताराका एक भेद ।—**चरण**—पु० चर तालका एक भेद ।—**तारक**—**तारा**—पु० उत्तर दिशामें मेरुके ऊपर सदा एक स्थानपर स्थित रहनेवाला एक तारा ।—**दर्शक**—पु० एक दिशास्वच यत्र जिसकी सुई बराबर उत्तर दिशाकी ओर रहती है, कुतुबनुमा ।—**दर्शन**—पु० एक वैवाहिक प्रथा जिसमें विवाहके बाद वर ध्रुवकी ओर संकेत करते हुए कुछ मंत्र पढ़ता है जिनका अभिप्राय बच्चे पक्षमें यह होना है कि तुम ध्रुवकी ओरि अचल रूपसे मेरे गृहमें सुल भोगी ।—**ध्वज-खी०** दोहनकालमें नुपचाप खड़ी रहनेवाली गाय ।—**चट**—पु० एक तरहका गीत ।—**अस्थ**—पु० ध्रुवदर्शक ।—**रक्षा**—खी० एक मातृका ।—**लोक**—पु० ध्रुवका लोक, वह लोक जहाँ ध्रुवका निवास है ।

ध्रुव-पु० [सं०] गीतका वह आरम्भिक अक्ष जो बराबर घुमराया जाता है, टेक; स्थाणु, ठूँठ ।

ध्रुवता—खी०, **ध्रुवत्व**—पु० [सं०] ध्रुव होनेका भाव, अचलता, स्थिरता; निश्चय ।

ध्रुवा—खी० [सं०] एक यक्षपात्र; सरिवन, मूर्वा, मरोडफली; साष्ठी खी । वि० खी० दे० 'ध्रुव' ।

ध्रुवाक्षर—पु० [सं०] विष्णु ।

ध्रुवार्त—पु० [सं०] घोड़ेके शरीरपरकी मालोंकी मेंवरी ।

ध्रुव्य—पु० [सं०] दे० 'ध्रुवता' ।

ध्रुव—पु० [सं०] नाश; नश्वर; काल या इमारतका टूटना; अभावका एक भेद (न्या०) ।

ध्रुवक—वि० [सं०] नाश करनेवाला, टूटनेवाला ।

ध्रुवजन—पु० [सं०] ध्रुव करनेकी क्रिया; ध्रुव होने या ध्रुव जानेकी क्रिया या भाव; नाश; क्षय; गमन ।

ध्रुवविशेष—पु० [सं०] खंडहर ।

ध्रुवसित—वि० [सं०] नष्ट किया हुआ; हटया हुआ ।

ध्रुवसी—वि० [सं०] नाश करनेवाला, नाशक; नष्ट होनेवाला, नश्वर । पु० पीछे दृष्ट ।

ध्रुव—पु० [सं०] सेना, रथ, देवता आदिका चिह्नभूत पताका-युक्त या पताका-रहित बीस, पलाश आदिका लंबा डंडा; झंडा, पताका; निशान, चिह्न; व्यापारिक चिह्न; एक खंडांग; योगियोंका वह डंडा जिसके ऊपर वे खीचें

औषधे रहते हैं; डोंग; दर्प, धर्मद; पूरवकी ओरका वर; मध्व्यवसायी, कलाल; पुनर्देविय; सीमास्वच चिह्न; श्रेष्ठ व्यक्ति आदि (समासांतमें) ।—**गृह**—पु० शब्दे रखनेका कर्म ।—**ग्रीव**—पु० एक राक्षस ।—**ध्रुम**—पु० तापका पेय ।—**चट**—पु० झंडा ।—**पात**—पु० नपुंसकता, छोड़ना ।

—**प्रहरण**—पु० बाहु ।—**भंग**—पु० दे० 'ध्वजपात' ।—**सूच**—पु० सुगीवरकी सीमा (की०) ।—**यहि**—खी० वह डंडा जिसमें पताका लगी रहती है ।

ध्वजवाक्—वि० [सं०] चिह्नविशेषने युक्त, जिसका कोई विशेष चिह्न हो; जिसके पास या हाथमें ध्वज हो, ध्वजवाला । [खी० 'ध्वजवती'] पु० ध्वज लेकर चलनेवाला, ध्वजवाहक; वह आश्रण जो ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्तके रूपमें मारे गये व्यक्तिकी खोपकी लेकर तीर्थमें भिक्षाटन करता फिरे (स्मृ०); मध्व्यवसायी; शौचिक ।

ध्वजोद्युक्त—पु० [सं०] दे० 'ध्वज-पट' ।

ध्वजा—खी० पताका, झंडा ।

ध्वजारीपण—पु० [सं०] झंडा बाधना या लगाना ।

ध्वजाहृत—पु० [सं०] विजित राजाके वहाँसे जीतकर लाया गया दास; विजयके बाद शत्रुके यहाँने लाया गया धन ।

ध्वजिक—पु० [सं०] दामिक, पालवी ।

ध्वजिनी—खी० [सं०] येना । वि० खी० ध्वजवाली, जिस (की)के पास ध्वज हो ।

ध्वजी—वि० [सं०] ध्वजवाला, जिसके पास या हाथमें ध्वज हो, जिसका कोई विशेष चिह्न हो; सुरापात्रके चिह्नवाला । पु० ध्वजा धारण करनेवाला; ब्राह्मण; पर्वत; रथ; घोडा; मर्प; मोर; मध्व्यवसायी, कलाल ।

ध्वजोत्थान—पु० [सं०] झंडा फहरानेकी क्रिया ।

ध्वजोत्थान—पु० [सं०] इद्रध्वज मंडोत्थान ।

ध्वन—पु० [सं०] शब्द; गुजार ।—**मोही**—वि० भ्रमर ।

ध्वनन—पु० [सं०] शब्द करना, शब्दका वह व्यापार जिससे व्यर्थार्थकी प्रतीति होती है, व्यजन, प्रत्ययन; अस्पष्ट शब्द; सुनाना ।

ध्वनि—खी० [सं०] शब्द, आवाज; ऐसा शब्द जिसका वर्णोत्पन्न रूपमें ग्रहण न हो, श्रुत आदिसे उत्पन्न शब्द (न्या०); शब्दका स्फोट (व्या०); गीतका लय; वह काव्य जिसमें व्यर्थार्थ वाच्यार्थ अर्थिक चमत्कारवाला हो (सा०); वह अर्थ जो स्तंभ शब्दोंसे न निकलता हो, व्यर्थार्थ; गूढ़ आशय; स्वर ।—**काव्य**—पु० व्यर्थप्रधान काव्य, वह काव्य जिसमें व्यर्थार्थ प्रधान हो ।—**कृत्**—पु० 'ध्वन्यलोक' अर्थक रचयिता आनंदवर्धनाचार्य ।

—**ग्रह**—पु० कान (जिससे ध्वनिका ग्रहण होता है) ।

—**ध्वनत्व**—पु० (ध्वनोत्पत्ति) प्रति संकटमें उत्पन्न की जानेवाली ध्वनिकी आवर्तनीके अनुसार मानी जानेवाली ध्वनिकी ध्वनना ।—**नाला**—खी० वशी; वीणा ।—**विकार**—पु०

व्यादिजन्य स्वरपरिवर्तन; काकु ।

ध्वनित—वि० [सं०] जो ध्वनिके रूपमें व्यक्त हुआ हो, जिसकी ध्वनि हुई हो, व्यजित; शब्दित । पु० शब्द; मध्वजन ।

ध्वन्य—वि० [सं०] ध्वनित होने योग्य; ध्वनित होनेवाला; व्यन्य ।

ध्वन्यात्मक-वि० [सं०] ध्वनिरूप, ध्वनियवः (काव्य)
जिसमें ध्वन्य प्रधान हो ।

ध्वन्यार्थ-पु० [सं०] वह अर्थ जिसका शेष ध्वननादृष्टिसे
होता हो ।

ध्वस्त-वि० [सं०] डहा हुआ, नष्ट; गिरा हुआ, पतित;
खसका हुआ, सस्ता, गलित; घात ।

ध्वस्ति-स्त्री० [सं०] ध्वंस, नाश ।

ध्वंक्ष-पु० [सं०] दे० 'ध्वांक्ष' ।

न

न-देवनागरी वर्णमालामें तत्पर्यका चौबसौं वर्ण । उच्चा-
रणस्थान दंत और नासिका ।

नंगा-पु० [सं०] जार, उपपत्ति; [हिं०] नंगापन, नम्रता ।
वि० नंगा; पाजी । -धर्षण-वि० जो सिरने पैरतक बल-
रहित हो, एकदम नंगा ।

नंगा-पु० [सं०] शर्म, हवा, लम्बा । -ए-ज्ञानज्ञान-पु०
कुलकल । -ब नामस-पु० इज्जत, मर्यादा ।

नंगा-वि० जिसकी देहपर कोई कपडा न हो, जो कोई
बख न धारण किये हो, विवस्त्र; पाजी; निर्लज्ज, बेहया;
जिसपर कोई आच्छादन न हो, निरावरण, जो किसी
द्रव्य या छिपानेवाली चीजसे ढका या छिपा न हो । पु०
शिव, महादेव । -सोरी, -सोली-स्त्री० छिपायी हुई
चीजका पता लगानेके लिए किसीके कपड़ों आदिकी टटोल-
कर या और तरहसे भली भौंति देखना, कपड़ोंकी सलाशी ।
-मुंगा-वि० दे० 'नग-धर्षण' । -बुछा, -बूछा-वि०
अकिंचन । -भूछा-वि० जख-बलके कटते पीठित ।
-मादरजाब-वि० जन्मके समय जैसा नगा । -मुंगा,
-सुमंगा-वि० बिलकुल नंगा । -छुछा-वि० नंगा और
लुछा, पाजी, बरमाज ।

नैगियाना-स० कि० नंगा करना; सब कुछ ले लेना ।

नैगयाना, नैग्याबाना-स० कि० दे० 'नैगियाना' ।

नंदत-वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला । पु० पुत्र; मित्र;
राजा ।

नंदंती-स्त्री० [सं०] पुत्री ।

नंद-स्त्री० पतिकी बहन, ननद । पु० [सं०] इर्ष; परमेश्वर,
विष्णु; गोकुलके प्रमुख गोप जिनके यहाँ कृष्णका पालन
हुआ था; मगधके एक प्राचीन राजा जिनसे नंदवंश चला;
मेढक; नौकी सस्त्रा; एक तरहकी बौंदरी; कुबेरकी एक
निधि; एक प्रकारका नृदण; मदिरा नामकी पत्थरीसे उत्पन्न
बसुदेवका एक पुत्र; एक प्रकारका बौम; एक राग । -
किशोर-पु० कृष्ण । -कुँवर-पु० [हिं०] कृष्ण । -
कुमार-पु० कृष्ण । -गोपिता-स्त्री० रागना । -द-
वि० आनंद-दायक, हर्षप्रद । पु० आनंद देनेवाला; पुत्र ।
-नंद, -नंदन-पु० कृष्ण । -नंदिनी-स्त्री० योगमाया,
दुर्गा । -पाल-पु० वरुण । -पुत्री-स्त्री० योगमाया,
दुर्गा । -प्रयाग-पु० बदरिकाश्रमके मार्गमें एक तीर्थ ।
-रानी-स्त्री० [हिं०] नंदकी पत्नी, यशोदा । -रुख-
पु० [हिं०] एक पेड़ जिसकी पत्तियों रेशमके कीड़ोंकी
खिलायी जाती है । -काल-पु० [हिं०] कृष्ण । -बंश-

ज्योत-पु० [सं०] अंधकार; एक नरक जहाँ सदा अँधेरा
छाया रहता है, एक मरुत । -खर-पु० राक्षस । -बिच-
पु० खबोत, जुगनू । -क्षान्त्र-पु० सूर्य; चंद्रमा; अग्नि;
इनेत वर्ण ।

ज्योतारगति-पु० [सं०] सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; इनेत वर्ण ।

ज्योतोन्मेष-पु० [सं०] खबोत, जुगनू ।

ज्यान-पु० [सं०] सम्प्रद, आवाज, गान; गुंजन; गुन-
भुनाहट ।

पु० मगधका एक प्रसिद्ध राज-कुल जिसका विनाश चाणक्य-
ने किया ।

नंदक-वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला, हर्षप्रद; संतोषप्रद ।
पु० विष्णुका स्वरूप; नंद नामक गोप जिनके यहाँ कृष्णका
पालन हुआ था; एक नाम; कात्तिकेयका एक अनुचर;
मेढक; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; प्रसन्नता ।

नंदकि-स्त्री० [सं०] विष्णुकी ।

नंदकी(किन्)-पु० [सं०] विष्णु ।

नंदधु-पु० [सं०] आनंद, प्रसन्नता ।

नंदन-वि० [सं०] आनंद देनेवाला, हर्षप्रद । पु० इंद्रका
उषान; कात्तिकेयका एक अनुचर; शिव; विष्णु; आनंदित
होना; आनंद; हर्ष; पुत्र; कामाख्याका एक पर्वत; २६ बौं
संवत्सर; मेघ; एक छंद; मेढक; एक अक्ष । -कानन-
पु० नंदन नामका इंद्रका उषान । -ज-पु० हरिचंदन ।
-प्रधान-पु० इंद्र । -माला-स्त्री० एक प्रकारकी माला
जिसे कृष्ण पहना करते थे । -बन-पु० दे० 'नंदनकानन' ।

नंदनक-पु० [सं०] पुत्र ।

नंदना-स्त्री० [सं०] पुत्री । * अ० कि० आनंदित होना ।

नंदलाल बहु-पु० प्रसिद्ध चित्रकार जो श्री अमर्नादनाथ
ठाकुरके शिष्य है, १९२४ में कलामवन, शांतिनिकेतनके
आचार्य नियुक्त हुए (जन्म १८८३) ।

नंदा-स्त्री० [सं०] आनंद; दुर्गाका एक विग्रह; ननद; किसी
पक्षकी प्रतिपदा, षष्ठी या एकादशी तिथि; एक प्रकारकी
संक्रांति (ज्यो०); मूर्च्छनाका एक भेद (समीत); सपत्ति;
मिट्टीकी नौद । -देवी-स्त्री० हिमालयकी एक २५०००
फुटसे भी अधिक ऊँची चोटी । -पुराण-पु० एक उपपुराण
जिसमें नंदाका माहात्म्य बर्णित है ।

नंदाग्रज-पु० [सं०] कृष्ण ।

नंदाग्रज-स्त्री० [सं०] योगमाया ।

नंदि-पु० [सं०] आनंद; परमानंद-स्वरूप विष्णु; शिव;
एक यथर्व; शिवका बाहन, नदिकेभर; नाटकमें नादीपाठ
करनेवाला व्यक्ति; बूत । स्त्री० आनंद । -ग्राम-पु० वह
गाँव जहाँ मरनेसे रामके बनेसे लौटनेतक निवास किया
था । -क्षोष-पु० अर्जुनका रथ; हर्षध्वनि; मगलगीत;
बंदिजनका शेष । वि० जिसकी ध्वनि हर्षप्रद हो; जिसकी
ध्वनि सुनकर प्रसन्नता हो । -तह-पु० धक्का पैड़ ।
-तूर्य-पु० एक प्राचीन बाजा । -पुराण-पु० नदि द्वारा
उक्त एक उपपुराण । -सुख-पु० एक पक्षी शिव । -रुद्र-
पु० शिव । -बर्चन-पु० शिव; मित्र; पुत्र; पक्षांत । वि०

आनंद बढानेवाला । -**बुद्ध**-पु० दे० 'नंदीबुद्ध' ।
नंदिक-पु० [सं०] आनंद; तुलका पेश; नंदनकानन; छोटा कलश; शिवका एक अनुचर ।
नंदिका-स्त्री० [सं०] मिट्टीकी नौद या जलपात्र; नदन-कानन; किसी पक्षीकी प्रतिपदा, यही या एकादशी तिथि ।
नंदिकावर्त-प० [सं०] एक मणि ।
नंदिकेश, **नंदिकेश्वर**-पु० [सं०] शिवका बाहन, नंदी; नंदी द्वारा उक्त एक उपपुराण; शिव ।
नंदित-वि० [सं०] आनंदयुक्त, हृष्ट, प्रसन्न; * वज्रता हुआ ।
नंदिन-स्त्री० पुत्री ।
नंदिनी-स्त्री० [सं०] दुर्गा; पुत्री, बेटी; गंगा; तुलसीका पौधा; रेणुका नामक गन्धर्व्य; कामधेनुकी पुत्री जिसके प्रसादमे दिलीपके यहाँ रघुका जन्म हुआ; नन्द; एक वर्षहृत्; व्याधि मुनिकी माता । -**तनय**, -**सुत**-पु० व्याधि मुनि ।
नंदिवेध-पु० [सं०] काष्ठिकेयका एक अनुचर ।
नंदी (विन्)-पु० [सं०] पुनः; नाटकमें नागोपाठ करने-वाला व्यक्ति; शिवका बाहन; शिवका गणविशेष; विष्णु; वरगडका पेश; धक्का पेश; दागकर छोड़ा हुआ सौंभ; बंगाली कायस्थों और लेखिकोंकी एक उपाधि । -**(दि)राज**-पु० शिवके द्वारपाल, बैल; सौंभ । -**पति**-पु० शिव, संकर । -**मुखी**-स्त्री० तंद्रा । -**बुद्ध**-पु० तुलका पेश ।
नंदीमुख-पु० दे० 'नंदीमुख' ।
नंदीश, **नंदीश्वर**-पु० [सं०] शिव; शिवके पार्श्वचरोंका अधिपति; तालका एक भेद (संगीत) ।
नंदेक्ष-प० दे० 'नंदेक्ष' ।
नंदोई, **नंदोसी**-पु० ननवका पति, पतिका बहनेई ।
नंदीचवर्त-पु० [सं०] एक प्रकारका मकान जिसमें पश्चिम ओर दरवाजा बनाना बर्जित है ।
नंदर-पु० [सं०] संख्या, गिनती; अक्ष; २६ हथकी एक माप । -**दार**-पु० एक तरहका अमीर । -**वार**-अ० क्रमानुसार; सिलसिलेवार ।
नंदरी-वि० नंबरवाला; मशहूर; कुख्यात । -**गज**-पु० कपडा नापनेकी एक माप जो २६ हथकी होती है । -**सेर**-पु० तौलका एक मान जो ८० रूपयेवर होता है ।
नंदुछ-वि० [सं०] नाश करनेवाला, हानिकारक; भटकने-वाला; खो जानेवाला; बहुत छोटा, सूक्ष्म ।
नंद-वि० नट ।
न-अ० [सं०] निषेध, विनर्क आदिका सूचक एक शब्द, नहीं, मत; कि नहीं, या नहीं । वि० पतला; रिक्त; बही, अनुरूप; अछात; अविभक्त; प्रशंसित । पु० मोती; गणेश; ऋषि; ऐश्वर्य; बंध, गँठ; युद्ध; दान; साधव्य ।
नहहरा-पु० शिखोंका पिरुद्ध, मायका ।
नह-वि० स्त्री० नयाका स्त्री० । * वि० नीतिश; नीतिपालक; नीतिवात् । * स्त्री० नदी ।
नहँजी-स्त्री० लीची ।
नह-वि० नया; नी ।
नहडा-पु० नाक ।
नहका-स्त्री० दे० 'नौका' ।
नहजा-पु० दे० 'नौज' ।

नहस-वि० झुका हुआ, नत ।
नहछि-वि० नया, ताजा ।
नहोक्ष-स्त्री० दे० 'नवोदा' ।
नक-नाकका समासमें व्यवहृत रूप । -**कटा**-वि० जिसकी नाक कट गयी हो; (ला०) जिमका बहुत अपमान हुआ हो; निर्लज्ज; वैशर्म्य । [स्त्री० 'नककटी' ।] -**जिसनी**-स्त्री० जमीनपर नाक रगड़ना; बहुत अधिक दीनता प्रकट करना । -**बड़ा**-वि० बिड़बिड़ा, तुलुकमिजाज । -**छिकनी**-स्त्री० एक घास जिसके फूलोंकी मूँचनेसे छीर्क आने लगती है । -**तोष**-पु० कुदनीका एक पेंच । -**तोषा**-पु० नखरा करना । -**फूळ**-पु० नाकमें पहननेका फूलके आकारका गहना । -**बानी**-स्त्री० दे० 'नकबानी' । -**बेसर**-स्त्री० दे० 'बेसर' । -**मोती**-पु० नाकमें पहननेका मोती । -**बानी**-स्त्री० नाकमें दम-तिस रंजकी नाक संवारन हौ आयो नकबानी'-विनयपत्रिका । -**सर**-स्त्री० नाकमें खून निकलनेका रोग ।
नकटा-वि० दे० 'नकट्टा' । पु० एक प्रकारका गीत; इस गीतके गानेका उत्तम ।
नकटी-वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी नाक कटी हो या जो ब्रेहया हो । * स्त्री० नाकका मैल ।
नकड़ा-पु० बैलेंका एक रोग; नाकका एक रोग ।
नकट-पु०, वि० दे० 'नकट' ।
नकदी-स्त्री० दे० 'नकदी' ।
नकना-अ० क्रि० दे० 'नकाना'; नौचा जाना। स० क्रि० लांघना, कौदना; छोड़ना; नाकमे दम करना ।
नकब-स्त्री० [अ०] सेंच । -**जून**-पु० सेंच मारनेवाला ।
नकबी-स्त्री० सेंच लगाना, सेंच मारकर चोरी करना ।
नकल-स्त्री० [अ०] एक जगहमे दूसरी जगह ले जाना, कृच, रवानगी; वह जो किसीके रूप, बनावट आदिमें बृहद् मिलता-जुलता हो। प्रतिकृति, अनुकृति; ऐख आदिकी प्रतिकृति, कापी; किसीके वेश, बाणी आदिका यथावत् अनुकरण, साँग । -**बी**-पु० नकल करनेवाला । -**नवीस**-पु० कागजातकी नकल करनेवाला कर्मचारी । -**नवीसी**-स्त्री० नकलनवीसका कार्य या पद । -**बही**-स्त्री० वह बही जिसपर हुटियों आदिकी नकल की जाय ।
नकली-वि० जो किसीका अनुकरणमात्र हो, अवास्तव, असलीका उलटा; खोटा, जाड़ी; जिसमे किसीका साँग बना लिया हो; झूठा, बना हुआ ।
नकश-पु० दे० 'नक्श' । -**मार**-पु० दे० 'नक्शमार' ।
नकसा-पु० दे० 'नक्शा' । -**नवीस**-पु० दे० 'नक्शवद' ।
नकशी-वि० दे० 'नक्शी' ।
नकस-पु० दे० 'नक्श' । -**मार**-पु० दे० 'नक्शमार' ।
नकसा-पु० दे० 'नक्शा' ।
नकावा-अ० क्रि० आजिज आना, राय आना । स० क्रि० आजिज करना, परेशान करना, नाकमें दम करना; लांघनेमें प्रवृत्त करना ।
नकाब-स्त्री०, पु० [सं०] मुँह ढकनेका सिरसे गलेतकका रंगीन या जालीदार कपडा; चूँच । -**पोश**-वि० जिसने नकाब धारण किया हो, जिसका चेहरा नकाबसे ढका हो ।
नकार-पु० [सं०] 'न' अक्षर; निषेध या अस्वीकृति-सूचक

शब्द; अस्तीकृति, बनकार ।
नकाराक्षी-पु० दे० 'नक्काराक्षी' ।
नकारना-अ० कि० अस्तीकृत करना, बनकार करना ।
नकारा-पु० नगाड़ी । वि० विक्रमा ।
नकाश-पु० दे० 'नक्काश' ।
नकाशना-स० कि० नक्काशी करना ।
नकाशी-खी० दे० 'नक्काशी' । -**द्वार-वि०** 'नक्काशी-द्वार' ।
नकासा-पु० दे० 'नक्काश' ।
नकासना-स० कि० दे० 'नकाशना' ।
नकासी-खी० दे० 'नक्काशी' । -**द्वार-वि०** दे० 'नक्काशी-द्वार' ।
नकिंचन-वि० [सं०] दे० 'अकिंचन' ।
नकिथाना-अ० कि० नाकमें शूलना; नाकोंदम होना ।
 स० कि० आंजिन कर देना; बहुत तंग करना ।
नकुली-पु० [अ०] वह व्यक्ति जो रामाओं आदिकी सवारी-के आगे-आगे उनके वंशका यश गाता चलता है, बंदी, चरण ।
नकुच-पु० [सं०] मदारका पेड़ ।
नकुट-पु० [सं०] नाक ।
नकुर्वा-पु० नाक; नथना ।
नकुरा-पु० नाक ।
नकुल-पु० [सं०] नेबला; सुषिष्ठिरके एक छोटे भाई; शिव; पुत्र । वि० कुलरहित । -**कंद-पु०** राक्षा ।
नकुलक-पु० [सं०] एक प्राचीन आभरण; रुपया रखनेकी एक तरहकी थैली ।
नकुलीधत्ता-खी० [सं०] एक नेत्ररोग ।
नकुला-खी० [सं०] पार्वती ।
नकुलाब्जा-खी० [सं०] गंधनाकुली ।
नकुली-खी० [] नेबलेकी मादा, नेबली; केसर; जटामासी ।
नकुलीध, नकुलेश-पु० [सं०] भैरवका एक विग्रह (त०) ।
नकुलेष्टा-खी० [सं०] रामा ।
नकेल-खी० उँट, माल आदिकी नाकमें पड़नायी जानेवाली रस्ती जिसके सहारे उन्हें दधरसे उधर ले जाते हैं । **मु०** -**हाथमें होना** -किसीका पूर्णतया बशमें होना ।
नका-पु० सुईका छेद; ताशका एका; कीड़ी । -**दूखा-पु०** कौथियोंसे खेला जानेवाला एक जुमा ।
नक्कारखाना-पु० [फा०] नगाड़ा रखने और बजानेकी जगह, नौधतखाना । **मु०** -**(वे)में तूतीकी आवाज़-दे०** 'तूती' में ।
नक्काराक्षी-पु० [फा०] नगाड़ा बजानेवाला ।
नक्कारा-पु० [अ०] नगाड़ा, ड्रमडुंगी । **मु०** -**बजाके-सुलमसुल** । -**बजाते फिरवा** -मशहूर करते फिरना । -**(रे)की खोट-सुलमसुल** ।
नक्काश-पु० [अ०] नकल करनेवाला; स्वर्ण बनावेवाला, भोंड़ ।
नक्काली-खी० नक्कालका काम ।
नक्काश-पु० [अ०] लकड़ी आदिपर बेल-बूटे बनावेवाला; चित्रकार; रंगसाज ।

नक्काशी-खी० बेल-बूटे खोदने, चित्र बनाने आदिका काम; चित्रकारी; रंगसाजी । -**द्वार-वि०** जिसपर बेल-बूटे खुदे या चित्र बने हों ।
नक्की-खी० एकका चिह्न; एकके चिह्नमें जीता जानेवाला दाँव । -**द्वार-पु०**, -**भूट-खी०** कौथियोंसे खेला जानेवाला एक जुमा ।
नक्कू-वि० जिसकी नाक बड़ी हो, बड़ी नाकवाला; जिसकी ओंठ सघी उँगली उठायें, दोषभाजन, दोषी ठहराया जानेवाला, बदनाम; सबके विपरीत आचरण करनेवाला ।
नक्कूर-वि० [सं०] रातकी विचरनेवाला, रातकी निकलनेवाला । पु० राक्षस; चोर; उखड़; युगगुल ।
नक्कूचरी-वि० [सं०] राक्षसी ।
नक्कूचारी(रिद्ध)-वि०, पु० [सं०] दे० 'नक्कूचारी' ।
नक्कूचिन, नक्कूचि-अ० [सं०] रात-दिन ।
नक्क-पु० [सं०] वह समय जब संध्या होनेमें केवल एक क्षणकी देर हो; रात; एक व्रत जिसमें केवल रातकी तारे देखकर भोजन करते हैं । वि० लब्धित । -**चर्चा-खी०** रात्रिकारुमें भ्रमण करना । -**चारी(रिद्ध)-वि०** रातमें विचरण करनेवाला; रातकी निकलनेवाला । पु० चोर; चिह्नी; उखड़; राक्षस; शिव । -**भोजन-पु०** ब्याह, रातका भोजन । -**खोजी(रिद्ध)-वि०** रातकी भोजन करनेवाला; नक्त व्रत करनेवाला । -**ब्याह-पु०** करंज । -**मुखा-खी०** रात । -**व्रत-पु०** एक व्रत जिसमें केवल रातकी तारे देखकर भोजन करते हैं; रात्रिकारुमें किया जानेवाला कोई व्रत ।
नक्क-पु० [सं०] गंधा कपड़ा; कटा-पुराना कपड़ा ।
नक्का-वि० [सं०] जिसे रातकी दिखाने न दे ।
नक्का-पु० [सं०] रातमें न दिखाई देनेका रोग, रतौधी ।
नक्का-खी० [सं०] कलिकारी ।
नक्क-पु० [अ०] वह धन जो निम्नोके रूपमें हो; वह रकम जो कीरन अदा की जाय । वि० प्रस्तुत; अच्छा । अ० तुरंत रुपये देकर । -**ए-जो-खी०** जान, कूह । -**ब** जिस-खी० रुपया और माल या सामान ।
नक्की-खी० [अ०] रोकड़ । -**विष्टा-पु०** रोकड़बंदी ।
नक्क-पु० [सं०] नाक; पक्षिवाल, मगर; नासिका; भरेट, पटाव । -**राज-द्वारक-पु०** नाक या कोई बहुत बड़ा जड़जतु ।
नक्का-खी० [सं०] नाका; मधुमक्खियों या मिशोंका झुंड ।
नक्का-पु० [अ०] तसवीर बनाना; तसवीर, चित्र, फूल-पत्ती या बेल-बूटे आदिका काम; सुहर या ठपेका निशान; सिका; जुल्फा खेल जो ताशसे खेला जाता है; ताबीज; जादू; एक तरहका राग; असर; पदचिह्न । वि० अकित; चित्रित; लिखा हुआ । -**द्वार-वि०** जिसपर नक्का हो । -**बंद-पु०** नक्का, चित्र बनानेवाला । -**बंदी-खी०** नक्का या चित्र बनानेका काम । -**मार-पु०** ताशके पत्तोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ । -**(से) पा-पु०** पदचिह्न, झुरग । -**(सो)निगार-पु०** फूल-पत्ती, बेल-बूटा, नक्काशी । **मु०** -**होना** -अंकित हो जाना ।
नक्का-पु० [अ०] तसवीर, चित्र; प्राकृतिक या किसी और

तरहकी स्थिति स्थित करनेवाला पृथ्वीके किसी भाग या खगोलका चित्र; चेहरा-मोहरा, आकृति; मकान, सक्क आदिका चित्र; ढंग, तर्ज; स्थिति, दशा, अवस्था; रूपरंग, बनावट, शङ्ख ।-नवीस-पु० दे० 'नक्षत्र' ।-नवीसी-खी० दे० 'नक्षत्र' ।-बंद-पु० सावियों आदिके नेल-बूटेके नक्षत्रे बनानेवाला ।

नक्षत्री-जिसपर नेल-बूटे बने हैं ।

नक्षत्र-पु० [सं०] तारा; अग्नि, अग्नी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, अवध, बनिष्ठा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती-ये सत्ताईस तारे; मोती; २७ मोतियोंका हार ।-कक्ष-पु० अवध-वेदका एक कर्ष जिसमें कृत्तिका आदि नक्षत्रोंकी पूजाका वर्णन है ।-कांतिविस्तार-पु० ध्वेत वाचनाल, तफेद ज्वार ।-राज-पु० नक्षत्रोंके कुछ निमित्त समूह जिनके अन्तर्गत अलग नाम कोर है ।-चक्र-पु० राशिचक्र; एक प्रकारका पूजन करनेका चक्र ।-क्षितामणि-पु० एक कवित रत्न ।-वर्षा-पु० दैवध, ज्योतिषी ।-हान-पु० एक प्रकारका दान जिसमें भिन्न-भिन्न नक्षत्रोंमें भिन्न भिन्न पदार्थोंके दानका विधान है ।-नाथ-पु० चंद्रमा ।-नेत्रि-पु० भुव तारा; चंद्रमा; विष्णु । खी० रेवती ।-प, पति-पु० चंद्रमा ।-पथ-पु० नक्षत्रोंके प्रमण-का मार्ग ।-पदयोग-पु० एक योग जिसमें मुख्यके लिए प्रत्यक्ष करनेपर राजा विजयी होता है ।-पाठक-पु० ज्योतिषी ।-पुत्र-पु० एक व्रत; मनुष्यकी आकृति जिसके अंगोंपर विभिन्न नक्षत्र अंकित रहते हैं (ज्यो०) ।-भोग-पु० नक्षत्रविशेषके रहनेका समय ।-माला-खी० वह माला जिसमें मोतीके सत्ताईस राने हों; तारा-समूह; हाथीके गलेका एक गहना ।-धाजक-पु० नक्षत्र-संबंधी दोनोंके शयनके लिए पूजन, हवन आदि करानेवाला अपम माक्षण (मं० भा०) ।-योग-पु० नक्षत्रविशेषके क्रूर ग्रहोंका योग ।-योन-पु० विवाहके लिए निषिद्ध नक्षत्र ।-राज-पु० चंद्रमा ।-खो-पु० वह लोक जिसमें नक्षत्र स्थित हैं, नक्षत्रोंका लोक; आकाश ।-वर्षा-पु० आकाश ।-विद्या-खी० ज्योतिषविद्या ।-बीषि-खी० तीन-तीन नक्षत्रोंके बीचका रिक्त स्थान जो बीषि वैसे प्रतीत होता है (रेती नी बीषिया है-ज्यो०) ।-क्षु-खी० तारा टूटना, उल्कापात ।-ब्रह्म-पु० पदार्थ आदिके स्वामी नक्षत्रोंका स्वयं चक्र (ज्यो०) ।-ब्रह्म-पु० नक्षत्र-विशेषके निमित्त किया जानेवाला व्रत ।-छू-पु० विशिष्ट दिशामें विशिष्ट नक्षत्रोंके रहनेका दुष्काल जिसमें धाना करना निषिद्ध है ।-संधि-खी० चंद्रमा आदि ग्रहोंका पूर्व नक्षत्रसे उत्तर नक्षत्रपर जाना ।-सत्र-पु० नक्षत्रोंके निमित्त किया जानेवाला यज्ञविशेष ।-साधक-पु० शिव, शंकर ।-साधन-पु० विशिष्ट नक्षत्रपर विशिष्ट ग्रहका स्थितिकाल जाननेकी गणना ।-सूचक-खी० (विद्युत्) ।-पु० वह व्यक्ति जो बिना शास्त्र पढ़े ही ज्योतिषी बन बैठा हो, अयोग्य ज्योतिषी ।

नक्षत्राक्षत-पु० [सं०] किसी विशिष्ट दिनको कुछ विशिष्ट

नक्षत्रोंके पढ़नेका योग जो यात्राके लिए प्रशस्त माना जाता है (ज्यो०) ।

नक्षत्रिच-वि० [सं०] नक्षत्र-संबंधी; सत्ताईस; क्षत्रिच नहीं ।

नक्षत्री-वि० जो किसी अच्छे नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ हो, मायवशात् ।

नक्षत्री (त्रिच)-पु० [सं०] चंद्रमा; विष्णु ।

नक्षत्रेश-पु० [सं०] चंद्रमा; कर्पूर ।

नक्षत्रेश्वर-पु० [सं०] चंद्रमा; शिवका एक लिंग ।

नक्षत्रेष्टि-खी० [सं०] नक्षत्रोंके निमित्त किया जानेवाला यज्ञ ।

नक्ष-पु० [सं०] नाखून; एक गंधद्रव्य; २० की संख्या; खट, टुकड़ा ।-कुह-पु० नापित, नार्ह, हज्जाम ।-क्षत-पु० नाखूनके गहनेसे पड़नेवाला चिह्न; पुनः द्वारा किये गये मर्दन, स्पर्श आदिते खींके स्तन आदिपर पड़नेवाला नखका चिह्न (सा०) ।-खारी (विद्युत्)-पु० दातोंमें नख कुनरनेवाला ।-खारी (रिज)-पु० पजेके बल चलनेवाला प्राणी ।-छक्ष, खोलिया-पु० दे० 'नख' ।-जाह-पु० नखकी जड़ ।-दारण-पु० नहरनी; बाज पक्षी ।-मिर्कतन-पु०, -रंजनी-खी० नहरनी ।-निष्पाव-पु० सेम ।-पह-पु० नाखून गहनेका चिह्न ।-पर्णी-खी० बुधिका नामक क्षुप ।-पुष्पी-खी० पृष्ठा ।-फकिनी-खी० सेम ।-विदु-पु० मेहरी या महावर लगाकर नाखूनोंपर बनाया गया मोल या चंद्राकार चिह्न ।-मुच-पु० धनुष ।-रेख-खी० दे० 'नख' ।-लेखक-पु० नख रंगनेवाला ।-लेखा-खी० नखचिह्न; नखरी रंगी ।-विष-पु० वह जीव जिसके नाखूनोंमें विष हो-जैसे मनुष्य, कुत्ता, बरर, बिल्ली आदि ।-विश्वर-पु० अपने शिखरकी नाखूनमें फाड़कर खानेवाला पक्षी आदि ।-बुध-पु० नौकाका पौधा ।-ब्रण-पु० नाखूनकी खरोंच ।-क्ष-पु० छोटा भक्ष ।-क्ष-पु० नहरनी ।-शिव-पु० पैरके नाखूनमें नेकर सिर-तकके अंग; इन अंगोंका वर्णन (मा०) ।-शूल-पु० नाखूनमें होनेवाली पीड़ा ।

नक्ष-खी० [फा०] रेशमका बड़ा हुआ तामा; पतंगकी डोर ।

नक्ष-पु० दे० 'नक्षत्र' ।-राज, राख-पु० चंद्रमा ।

नक्षर-पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नक्षर-पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नक्षर-पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नखना-मं० किं नष्ट करना; पार करना । अं० किं धँका जाना, पार किया जाना ।

नखन-पु० दे० 'नख' ।

नखर-पु० दे० 'नख' ।

नखर-पु० दे० 'नख' ।

नखर-पु० [फा०] बिलसचेष्टा, हाव-भाव; नात्र-अदा; दिखावटी इनकार; बनना ।-तिष्ठा-पु० दे० 'नात्र-नखर' ।-रे)नात्र-वि० नखर करनेवाला ।-नात्र-खी० नखरा करनेकी क्रिया ।

नखरापु-पु० [सं०] दे० 'नखापु' ।

नखराह-पु० [सं०] करवीर, कनेर ।

नखरीट-खी० नखक्षत्र ।

नखाक-पु० [मं०] नाखून गहनेका चिह्न; व्याघ्रनखी ।

नखांग-पु० [सं०] नख नामका गंधद्रव्य ।
 नखापात-पु० [सं०] दे० 'नखक्षत'; लङ्काईमें नख द्वारा किया गया आघात ।
 नखामखि-खी० [सं०] वह लङ्काई जिसमें लङ्कनेवाले एक दूसरेपर नखसे आघात करें ।
 नखापुध-पु० [सं०] सिंध; बाघ; सुर्ग ।
 नखारि-पु० [सं०] शिवका एक अनुचर ।
 नखाखि-पु० [सं०] छोटा शंख ।
 नखाखु-पु० [सं०] नीलका पौधा ।
 नखासी (खिन्)-पु० [सं०] उखल पक्षी ।
 नखास-पु० पशुओंका बाजार; घोड़ोंका बाजार; बाजार ।
 नखिवाना-सं० कि० नाखूनसे खरीचना; (विस्तीर्ण) नाखून धँसाना ।
 नखी-खी० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य ।
 नखी (खिन्)-वि० [सं०] जिसके नाखून बड़े-बड़े हों; कटीला । पु० सिंध; बाघ ।
 नखेद-पु० दे० 'निपेध' ।
 नखोटना-सं० कि० नाखूनसे खरीचना वा नोचना ।
 नखोरा-पु० निमीना ।
 नग-पु० अँगूठी आदिमें जड़ा जानेवाला बहुमूल्य पत्थर, नगीना; कौंचका टुकड़ा; सस्या, धान; [सं०] पर्वत; वृक्ष; सर्प; सर्प; मातृकी सस्या । वि० जो गमन न करता हो, न चलने-फिरनेवाला, अचल, स्थिर । -ज-वि० पर्वतसे उत्पन्न । पु० हाथी । -जा-खी० पार्वती; क्षुद्र पाषाण-भेदा नामक लता । -हंसी-खी० विभीषणकी पत्नी । -धर-पु० कृष्ण जिन्होंने गोवर्धन पर्वतकी धारण किया था । -धरन-पु० कृष्ण । -नंदिनी-खी० पार्वती । -नदी-खी० पहाड़ने निकलनेवाली नदी । -पति-पु० हिमालय; चन्द्रमा (जो ओषधियोंका अधिपति है); शिव; सुमेरु । -भिद्र-पु० पत्थर तोड़नेका एक प्राचीन अस्त्र; कुठार; इद्र; कोमा । -भू-वि० पहाड़पर या पहाड़से उत्पन्न । पु० क्षुद्र पाषाणभेदा । -मूर्धो (धंन्)-पु० पहाड़की चोटी । -रंध्रकर-पु० कांतिकेय । -वाहन-पु० शिव ।
 नग-पु० 'नाग'का समागत लघु रूप । -फनी-खी० दे० 'नागफनी' । -फॉस-बासी-खी० दे० 'नगवास' । -बास-पु० नागपाश ।
 नगविद्या-खी० एक तरहका छोटा-सा नगाडा, डुमरी ।
 नगण-पु० [सं०] एक गण जिसमें तीनों अक्षर लघु होते हैं (॥) ।
 नगणा-खी० [सं०] ज्योतिष्मती, मालकंगनी ।
 नगण्ड-वि० [सं०] जो गणनामें न आ सके, तुच्छ, निरुद्ध ।
 नगद-वि०, पु० दे० 'नकद' । पु० नागदमनी ।
 नगदी-खी० दे० 'नकदी' ।
 नगन-वि० नग्न, निरावरण ।
 नगनिहा-खी० एक छंद जिसके प्रत्येक पादमें चार अक्षर होते हैं; एक संकीर्ण राग ।
 नगनी-खी० वह कन्या जो रजोधर्मकी अवस्थाकी न पहुँची हो; वह कम अवस्थाकी कन्या जो बिना ऊपरका

शरीर ढके भी रह सकती हो; वस्त्रहीन स्त्री ।
 नगर्कगाँ-वि० ऊबसी, लपटवही, नटखट ।
 नगामा-पु० [अ०] सुग्रीवी आवाज; गान; राग । -संज-वि० गवैया । -संजी-खी० गीत, गाना ।
 नगर-पु० [सं०] कस्बेसे बड़ी और समृद्ध बस्ती जिसमें अनेक जातियों और पेशोंके लोग बसते हों, शहर । -काक-पु० तुच्छ व्यक्ति । -कीर्तन-पु० नगरमें घूम-घूमकर किया जानेवाला कीर्तन; गाये-बाजेके साथ किया जानेवाला धर्मप्रचार । -घात-पु० हाथी; नगरवासियोंका बध । -जन-पु० नगरमें रहनेवाले लोग, नागरिक । -तीर्थ-पु० गुरुवातका एक प्राचीन तीर्थ । -नायिका, -नारी, -मंडना-खी० वारांगना, वेदया । -पाछ-पु० वह जिसका काम सभी बाधाओंसे नगरकी रक्षा करना हो । -प्रदक्षिणा-खी० जुलूसके साथ मृनि आदिको नगरमें घुमाना । -प्रांत-पु० उपनगर । -मर्दी (दिन्)-पु० (नगरको क्षति पहुँचानेवाला) मतवाला हाथी । -मार्ग-पु० राजमार्ग, चौड़ी सड़क । -मुस्ता-खी० नगरमोथा । -रक्षा-खी० नगरकी देखभाल या शासन प्रबंध । -रक्षी (खिन्)-पु० नगरका निरीक्षक या शासक; नगरका पहरदार । -बासी (खिन्)-पु० नगरमें रहनेवाला, नागर, पुरवासी । -विवाह-पु० ससारके पक्के । -रथ-पु० नगरवासी । -हार-पु० भारतका एक प्राचीन नगर (वह वर्तमान जलालाबादके आसपास बसा था) ।
 नगरहा-पु० नगरवासी ।
 नगराह-खी० नागरिकता; चतुरता, चालाकी ।
 नगरादिसिद्धिबेश-पु० [सं०] नगर आदिका स्थापन, नगर आदि बसाना ।
 नगराधिकृत-पु० [सं०] दे० 'नगराधिप' ।
 नगराधिप-पु० [सं०] वह कर्मचारी जिसके ऊपर नगरकी रक्षा आदिका दायित्व हो ।
 नगराधिपति-पु० [सं०] दे० 'नगराधिप' ।
 नगराध्यास-पु० [सं०] दे० 'नगराधिप' ।
 नगराध्यास, नगराध्यास-पु० [सं०] नगरका पड़ोस ।
 नगरी-खी० [सं०] नगर । -काक-पु० बगुला । -बक-पु० कौआ ।
 नगरीय-वि० [सं०] नगर-संबंधी, नागरिक ।
 नगरीत्या-खी० [सं०] नागरमोथा ।
 नगरोपांत-पु० [सं०] उपनगर ।
 नगरीका (कस्)-पु० [सं०] नागरिक, नगरवासी ।
 नगरीपति-खी० [सं०] कैला ।
 नगाटन-पु० [सं०] बंदर ।
 नगावा-पु० डुमडुगीकी शकलका एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध बाजा ।
 नगाधिप, नगाधिपति-पु० [सं०] हिमालय; सुमेरु ।
 नगाधिराज-पु० [सं०] हिमालय; सुमेरु ।
 नगारा-पु० दे० 'नगाड़ा' ।
 नगारि-पु० [सं०] इद्र ।
 नगावास-पु० [सं०] गौर ।
 नगाजब-वि० [सं०] पर्वतपर रहनेवाला । पु० इतिवृत्त ।

नगिचाना-अ० कि० पास जाना ।

नगी-औ० रत्न; छोटा रत्न; गर्वती; पहाड़ी ली ।

नगिचक-अ० दे० 'नगदीक' ।

नगीना-पु० [का०] शोभाशुद्धि के लिए अंगूठी आदिमें

जवा जानेवाला पथर या शीशोका रंगीन टुकड़ा । -गरु-

साज-पु० नगीना बनाने या अकनेवाला ।

नगैर-पु० [सं०] हिमालय; सुमेरु ।

नगेसा-पु० [सं०] दे० 'नगैर' ।

नगोसरि-पु० नागकेसर ।

नगोच्छाव-पु० [सं०] पहाड़की ऊँचाई ।

नगोका(कस्)-पु० [सं०] सिद्ध; पक्षी; चिड़िया; कौआ;

शरभ । वि० वृक्ष या पर्वतपर रहनेवाला, जिसका बास-

स्थान वृक्ष या पर्वत हो ।

नग्वंकरण-पु० [सं०] गंगा करना ।

नग्व-वि० [सं०] जिसके शरीरपर एक भी वस्त्र न हो,

विचल, नगा, दिगंबर; जिसपर कोई आभरण न हो, निरा-

वरण; जो जीतमें न आता हो; जो आबाद न हो । पु०

दिगंबर जैन; क्षपणक; शैव करनेवाला; वह जिसके कुलमें

किसीने वेद-शास्त्रका अध्ययन न किया हो (ऐसे व्यक्तिका

धान्य ग्राह्य नहीं है); वह जिसने गृहस्थाश्रमके बाद तीर्थ

सन्त्यास ग्रहण कर लिया हो; सेनाके साथ रहनेवाला या

अग्रण करनेवाला चारण; शिव । -क्षपणक-पु० एक

प्रकारका बौद्ध भिक्षु । -जिह्व-पु० गंधारका एक प्राचीन

राजा; कोशलका एक प्राचीन राजा । -मुचित-वि० जो

इस प्रकार छुट गया हो कि उसके पास शरीर ढकनेभरको

वस्त्र भी न रह गया हो ।

नगनक-वि० [सं०] गंगा, विचल, निरावरण । पु० दिगंबर

जैन या बौद्ध; गंगा सन्त्यासी; चारण ।

नगनका, नगिनका-औ० [सं०] नगी, निर्लज्ज स्त्री; वह

लड़की जो रजमल्ला न बुझे हो ।

नगना-औ० [सं०] वह कन्या जो रजोभर्मको प्राप्त न हुई

हो; उस या बारह वर्षसे कम अवस्थाकी कन्या जो बिना

ऊपरके शरीरकी ढके भी घूम-फिर सकती हो; नगी या

बेइया ली ।

नगनाट, नगनाटक-पु० [सं०] वह जो बराबर नगा घूमा

करे, बराबर गंगा रहनेवाला; दिगंबर संप्रदायका जैन

या बौद्ध ।

नगमा-पु० दे० 'नयमा' ।

नग्न-पु० दे० 'नग' ।

नगोच-पु० दे० 'नटुच' ।

नघना-स० कि० लोचना, पार करना ।

नघाना-स० कि० पार कराना, लोचनेका काम कराना ।

नघना-अ० कि० नाचना, नृत्य करना; श्वर-उपर अट-

कना । वि० नाचनेवाला, नौ नाचे; जो बराबर श्वर-उपर

घुमा करे; जो किसी एक स्थानपर न रहे ।

नघति-औ० नाचनेकी क्रिया या ढंग; नाच ।

नघतिचा-पु० नाचनेका पेशा करनेवाला; नाचनेवाला ।

नघनी-वि० औ० नचानेवाली; किसी एक स्थानपर न

रहनेवाली (स्त्री) ।

नघचैवा-पु० नाचनेवाला ।

नघाना-स० कि० नाचनेमें प्रवृत्त करना; हैरान करना,
परोशन करना; किसी तरह-तरहके काम कराना, किसीसे
जो काम चाहे वह काम कराना; गोलाईमें घुमाना; श्वरसे
उपर घुमाना या केरना ।

नघिकेना(तस्)-पु० [सं०] उदात्त कफिका पुत्र जिसने
नृत्यमें ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था; अग्नि ।

नघिर-वि० [सं०] क्षणस्वयी ।

नघीला-वि० नाचना हुआ, चंचल । [औ० 'नचौली' ।]

नघीहा-वि० जो श्वरसे उपर घूमा करे, चंचल, चंचल,
विलोल -'विहँसोह मे बदनमें लसत नचौदे नैन'-
मतिराम ।

नक्षत्र-पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नक्षत्री-वि० जिसने किसी अच्छे नक्षत्रमें जन्म लिया हो,
भाग्यशाली ।

नक्षत्रीक-अ० [का०] समीप, पास ।

नक्षत्रीकी-वि० [का०] निकटका । पु० निकटका संबंधी ।
औ० समीप होने या रहनेका भाव, समीपता ।

नक्षत्र-औ० दे० 'नक्षत्र' ।

नज़र-औ० [अ०] दृष्टि, निगाह; कृपा, दया; निगरानी,

देखभाल; कुदृष्टि, डोना; परल; ध्यान; उपहार, उपामन;

भेंट; वह रूपवा, अशरफी आदि जिनमें अधीनस्थ राजा या

प्रजावर्गके लोग राजाओं या बड़े उमीदवारोंके दरबार,

होहार या किसी अन्य विशिष्ट अवसरपर भेंट करते हैं;

नडावा, फानेहा । -अँदाजी-औ० जोंब, परल । -बँद

वि० जो किसी स्थानमें कहीं निगरानीमें रखा गया हो

और जिसे निश्चिन सीमाके बाहर जानेकी आका न हो,

जिसे नजरबंदीकी सजा दी गयी हो । पु० नजरबंदीका

खेल दिखातेवाला जादूगर । -बँदी-औ० वह सजा

जिसके अनुसार किसीको किसी स्थानमें कहीं निगरानीमें

रखा जाता है और निश्चिन सीमाके बाहर नहीं जाने

दिया जाता; नजरबंद होनेकी स्थिति; जादूका एक खेल

जिसे जादूगर दसोंकी नजर बंधकर किया करना है ।

-बासा-पु० परसे भिगा हुआ बाग । -बाज़-वि० नेक-

बद परखनेवाला; गुराधारी करनेवाला । -ब निवाज़-

पु० भेंट-उपहार । -सानी-औ० सुधार या सशोधनके

लिए किसी कार्य या खेलको देखना । -हाया-वि० नजर

लगातेवाला । सु०-अँदाज़ करना-नजरमें छोड़ना, दृष्टि

न डालना; नापसंद करना । -आना-दिखाई देना ।

-करना-देखना; भेंट, उपहार देना । -पर चढ़ना-

(किसीका) कोपमाजान होना, पसंद आ जाना । -

फिसलना-किसी चीजके बहुत सुंदर होनेके कारण

उत्सपर निगाह न टिकना । -बदलना-बद होना; श्रद्धा

बदलना । -बाँधना-नजरबंदी करना, जादूमें ऐसी

चीजें दिखाना जिनका अस्तित्व न हो । -लगना-जुड़ी

दृष्टिका असर होना । -लगाना-देना करना ।

नजरना-अ० कि० देखना । स० कि० नजर लगाना ।

नजराना-स० कि० नजर करना, भेंटमें देना, उपायन-

के रूपमें देना; नजर लगाना ।

नज़राना-पु० नजरके तौरपर भेंटमें दी जानेवाली वस्तु

या द्रव्य, उपायन, उपहार । अ० कि० नजर लग जाना ।

स० कि० नजर रुग्णात् ।
नजरि*-**खी०** दे० 'नजर' ।
नज़ाज़ा-**पु०** [अ०] जुकाम, प्रतिश्याय, सरदी ।
नज़ाक़त-**खी०** [फा०] सुकुमारता ।
नज़ात-**खी०** [अ०] मुक्ति, छुटकारा ।
नज़ामत-**खी०** नाजिमका पद; नाजिमका महकमा या दफ़तर; प्रबंध, इंतजाम ।
नज़ारत-**खी०** नाज़िरका पद; नाज़िरका महकमा या दफ़तर ।
नज़ारा; **नज़ारा**-**पु०** [अ०] ध्वज; नजर; देखना ।
 -**नाज़ा**-**वि०** दे० 'नजरबाज' ।
नज़िकाना*-**अ०** कि० पास पहुँचना; निकट पहुँचना ।
नज़ीक*-**अ०** समीप, पास ।
नज़ीर-**खी०** [अ०] उदाहरण, दृष्टांत, मिसाल; किसी मुकदमेका वह फैसला जो उसी ढंगके दूसरे मुकदमेमें मिसालके तौरपर पेश किया जाय ।
नज़्म-**पु०** [अ०] ज्योतिष ।
नज़्मी-**पु०** ज्योतिषी ।
नज़ूल-**पु०** [अ०] सरकारी ज़मीन ।
नज़्म-**पु०** [अ०] तारा, सितारा (समासमें) ।
नट-**पु०** [मं०] नाट्य करनेवाला, नाटक खेलनेवाला व्यक्ति, अभिनेता; गा-नजाकर या तरह-तरहकी कमरते या खेल-तमाशे आदि दिखाकर जीवनयापन करनेवाली एक जाति; एक क्षत्रिय जाति जिसकी उत्पत्ति ब्राह्म्य क्षत्रियोंने है (स्मृ०); एक संकर जाति; एक राग; नतक; अशोक वृक्ष; श्वेताशक वृक्ष; एक तरहका नरकुल । -**चर्चा**-**खी०** अभिनय । -**नारायण**-**पु०** एक राग । -**पत्रिका**-**खी०** बैंगन । -**भूषण**, -**भंडन**-**पु०** हरताल । -**मल**-**पु०** एक राग । -**मल्लार**-**पु०** एक राग । -**रंग**-**पु०** रंगमंच । -**राज**-**पु०** कृष्ण; शिव; कुशल नट । -**बर**-**पु०** प्रधान नट, घुमधार; अति कुशल नट; कृष्ण जो नाट्यके आचार्य माने जाते हैं । वि० चतुर, चाणक्य । -**संशु**-**पु०** गोरंती हरताल; अभिनेता । -**सार**, -**सारा***-**खी०** दे० 'नाट्यशाला' । -**सारी***-**खी०** बाजीगरी । -**सूत्र**-**पु०** शिलाही द्वारा रचित नाट्यग्रन्थ ।
नटहीं*-**खी०** गला; गलेकी घटी ।
नटक-**पु०** [सं०] अभिनेता ।
नटखट-**वि०** उपद्रवी, शरीर, पात्र ।
नटखटी-**खी०** पात्रोपन, शरारत ।
नटता-**खी०** [सं०] नटका भाव या कार्य ।
नटन-**पु०** [सं०] नाचना; अभिनय करना ।
नटना*-**अ०** कि० अभिनय करना; नाचना; एक बार कष्टकर फिर इनकार कर देना; मुकरना; नष्ट होना । स० कि० विगाड़ना, नष्ट करना ।
नटनि*-**खी०** नर्तन, नृत्य; इनकार, मुकरना ।
नटनी-**खी०** दे० 'नटिन' ।
नटसाक*-**पु०** नुबे हुए काँटेका वह हिस्सा जो निकल न सका हो; नष्ट शस्य, बावकी गाँसी जो शरीरमें ही रह गयी हो; किसी-किसी समय उठनेवाली पीड़ा, टीस, कसक-
 'बैठे सारा नटसाक लौ सौतिनके उर साकि'-वि० ।

नटोतिका-**खी०** [सं०] लज्जा; नम्रता ।
नटित-**पु०** [सं०] अभिनय ।
नटिन, **नटिनी**-**खी०** नटकी स्त्री; नट जातिकी स्त्री ।
नटी-**खी०** [सं०] नाट्य करनेवाली स्त्री, अभिनेत्री; प्रधान अभिनेत्री, घुमधारकी स्त्री; नट, अभिनेताकी स्त्री; वेदया; नट जानिकी स्त्री; एक रागिनी; नली नामक गंधद्रव्य ।
नटेश, **नटेश्वर**-**पु०** [सं०] शिव ।
नटवा*-**खी०** गज्जा, गरदन ।
नट्या-**खी०** [सं०] नटोंकी मंडली ।
नटना*-**अ०** कि० नष्ट होना ।
नट-**पु०** [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि; नरकट; वृषी बनानेका पेशा करनेवाली जाति । -**प्राय**-**वि०** (वह स्थान) जहाँ नरकटकी बहुतायत हो । -**भक्त**-**पु०** नरकटसे पूर्ण स्थान । -**मनि**-**पु०** शींगा मछली । -**बन**-**पु०** नरकटकी झाड़ी । -**संहति**-**खी०** नरकटकी राशि ।
नटक-**पु०** [मं०] हड्डिके अंदरका छेद; कंधोंके बीचकी हड्डी ।
नटकीय-**वि०** [सं०] दे० 'नटब' ।
नटश-**वि०** [सं०] नरकटसे ढका हुआ; जहाँ नरकट ज्यादा हो ।
नटह-**वि०** [मं०] सुरर, ललित, कात ।
नटिनी-**खी०** [सं०] वह नदी जिसमें नरकटकी अधिकता हो; नरकटका देर ।
नटिल-**वि०** [सं०] दे० 'नटप्राय' ।
नट्या-**खी०** [सं०] नरकटका देर ।
नटवत, **नटवल**-**वि०** [सं०] दे० 'नटप्राय' ।
नटवला-**खी०** [सं०] वैराज मनुकी पत्नी; नरकटका देर ।
नटना*-**सं०** कि० गूँथना, पिरोना; कलना ।
नत-**वि०** [सं०] नवीभूत, झुका हुआ; टेढ़ा, कुटिल । पु० मध्यदिन रेखासे किसी ग्रहकी दूरी; तमरमूल । -**हुम**-**पु०** लताशाल नामक वृक्ष । -**नादिका**, -**नाही**-**खी०** मध्याह्न और अर्द्ध रात्रिके बीचका कोई जन्मकाळ । -**नासिक**-**वि०** चिपटी नाकवाला । -**पाल**-**पु०** शरणगतका पालन करनेवाला, प्रणतपाल । -**भू**-**वि०** स्त्री सिरछी मोहोवाली । -**मस्तक**-**वि०** जिसका सिर झुका हुआ हो ।
नत*-**अ०** दे० 'न तु' ।
नतइतरी-**पु०** दे० 'नतैत' ।
नतकुरी-**पु०** लक्ष्मीका लड़का, नाती, दौहित्र ।
नतर, **नतरक***-**अ०** दे० 'नतब' ।
नतक*-**अ०** नहीं तो, अन्यथा ।
नतांग-**वि०** [सं०] जिसका बदन झुका हो ।
नतांगी-**खी०** [सं०] स्त्री, नारी ।
नति-**खी०** [सं०] नम्र होना, झुकना; नमन, नमस्कार; विनय; टेढ़ापन; झुकाव ।
नतिनी-**खी०** बेटीकी बेटी ।
नतीजा-**पु०** [फा०] फल, परिणाम, परीक्षाफल ।
न लु*-**अ०** नहीं तो, अन्यथा ।
नतैत-**पु०** रिश्तेदार, नातेदार, वह व्यक्ति जो नातेमें कुछ लगता हो ।

नैनी*—खी० नाता, संभ, रिता ।

नन्दी*—खी० कागज या कपड़े के बसुते डकनोंको एकमें गुँथना; एकमें गुँथे हुए कागज या कपड़े के डकने; मिसिल ।

नन्दी*—पु० [सं०] कठकोषवा पक्षी ।

नन्दी*—खी० नाकमें पहननेका बालीकी शङ्का एक प्रसिद्ध गहना ।

नन्दी*—अ० कि० नन्दी होना, नाथा जाना; छोटा जाना । पु० नाकके छेदोंका आगेकी ओरका कपरी पर्दा जो सँस खींचने और छोड़नेमें पक्कता और फूलता रहता है; बैल आदिकी नाक ।

नन्दी*—खी० छोटी नदी; बैल, भैसकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी; तलवारकी मुँठपरका छल्ला; नन्धे आकारकी वस्तु ।

नन्दी*—खी० दे० 'नय' ।

नन्दी*—पु० दे० 'नयना' ।

नन्दी*—खी० छोटी नदी ।

नन्दी*—पु० [सं०] बड़ी नदी—जैसे सोन, ब्रह्मपुत्र, सिंधु; समुद्र; एक ऋषि ।—पति;—राज—पु० समुद्र ।

नन्दी*—पु० [सं०] शीत, चिह्नाहट; साँझका डँकरना ।

नन्दी*—पु० [सं०] शब्द करना; गंभीर शब्द करना; जोरकी आवाज करना ।

नन्दी*—अ० कि० पशुओंका बोलना; आवाज करना; बजना ।

नन्दी*—पु० [सं०] सिद्ध; आवाज; गर्जन; युद्ध; बादल ।

नन्दी*—वि० [सं०] (वह देश) जो नदीके पास हो; निर्भय, निरुद्ध ।

नन्दी*—वि० नादान, बेसमझ, अशेष ।

नन्दी*—वि० [फा०] खाली; गैरमौजूद; गायब, छुप्त ।

नन्दी*—वि० [सं०] आग्यवान् ।

नन्दी*—खी० [सं०] छोटी नदी ।

नन्दी*—पु० बंगालका एक प्रसिद्ध नगर । * खी० नदी; † पत्तीकी आकारका एक छोटा मिट्टीका पात्र ।

नन्दी*—खी० [सं०] जलकी वह बड़ी प्राकृतिक धारा जो किसी पहाड़, झील आदिमें निकलकर विशिष्ट मार्गसे बहती हुई दूसरी नदी, झील या समुद्रमें जा मिली हो; किसी तरल पदार्थकी बड़ी धारा ।—कर्तृक—पु० महाभाविका, बड़ी गौरवशाली; नदियोंका समूह ।—काल—पु० समुद्र; इजल, सिंधुवार वृक्ष; समुद्रफल ।—काला—खी० जामुनका पेड़; काकजंघा लता ।—कूल—पु० नदीका किनारा, तट ।—प्रिय—पु० जलवेत ।—शर्म—पु० नदीके तटोंके बीचका स्थान ।—ज—वि० नदीमें उपपन्न । पु० समुद्रफल; पत्त; अर्जुन वृक्ष; गोधूम; काला सुरमा ।—जा—खी० अभिमर्ष ।—जामुन—पु० [हिं०] छोटा जामुन ।—सरस्वती—पु० घाट ।—दुर्ग—पु० नदी या द्वीपमें बना हुआ दुर्ग ।—दोह—पु० पार उत्तरनेका क्रिया ।—खर—पु० शिव (जिनके सिरपर गया है) ।—निष्पाव—पु० धानका एक मेल, बीरी ।—पति—पु० समुद्र; वरुण ।—अश्व—वि० जो नदीमें उपपन्न हुआ हो । पु० सेंधा नमक ।—आयुक्त—वि० (वह देश) जहाँ केवल नदीके जलसे सिंचाई होती हो ।—मुख—पु० मुहाना ।

—रथ—पु० नदीका प्रवाह ।—बंक—पु० नदीका मोड़ ।

—बट—पु० नदीके किनारेका वटवृक्ष; बड़ी वृक्ष ।—सर्व—पु० अर्जुनका वृक्ष ।—सु०—नाथ संयोग—संयोगसे योही देरके लिए होनेवाली सुधी या साध ।

नन्दी*—पु० [सं०] समुद्र; वरुण ।

नन्दी*—पु० [सं०] समुद्र; वरुण ।—नन्दिनी—खी० लक्ष्मी ।

नन्दी*—वि० [सं०] जो नदीकी स्थितिसे परिचित हो, जिसे नदीके भीतरके सुगम या दुर्गम स्थलोंका ज्ञान हो ।

नन्दी*—खी० [सं०] भूमिजनु ।

नन्दी*—वि० [सं०] बैधा हुआ; उका हुआ; मिलाया हुआ । पु० बंधन; गिरह, गाँठ ।

नन्दी*—खी० [सं०] बाँधनेकी क्रिया ।

नन्दी*—खी० [सं०] तौत, चमड़ेकी धोरी; चमड़ेकी पट्टी ।

नन्दी*—वि० [सं०] नदी-सर्वधी ।

नन्दी*—पु० [सं०] समष्टि ।

नन्दी*—पु० [सं०] एक वाक्-योग (ज्यो०) ।

नन्दी*—पु० [सं०] नदी द्वारा छोड़ी हुई भूमि, दरिया-बराद, गंगबराद ।

नन्दी*—अ० कि० नाथा जाना, जोता जाना; किसी कार्यका आरंभ होना; किसी काममें लगना या जुटना ।

नन्दी*—खी० दे० 'नन्दा' ।

नन्दी*—(र), नन्दी*—(र)—खी० [सं०] नन्द, पतिकी बहन ।

नन्दी*—अ० कि० अस्वीकार करना, इनकार करना ।

नन्दी*—अ० मत—'नन करहु गवन नन नवन तजि, वृत्तह दाखन सरद'—रासी ।

नन्दी*—खी० दे० 'नन्दा' ।

नन्दी*—खी० नन्द ।

नन्दी*—पु० नन्दका पति ।

नन्दी*—खी० दे० 'ननिहाल' ।

नन्दी*—(र), नन्दी*—(र)—पु० दे० 'ननिहाल' ।

नन्दी*—पु० पति या पत्नीका नाना ।

नन्दी*—खी० पति या पत्नीकी नानी, ननिथाससुरकी पत्नी ।

नन्दी*—पु० नानाका घर ।

नन्दी*—वि० छोटा ।—ई—खी० छोटापन ।

नन्दी*—वि० दे० 'नन्दा' ।

नन्दी*—पु० [सं०] शिव ।

नन्दी*—खी० नापनेकी क्रिया या भाव; नापनेकी उजरत ।

नन्दी*—वि० दे० 'नापाक' ।

नन्दी*—पु० [सं०] देववानमार्ग ।

नन्दी*—पु० [सं०] क्षीर, दिव्य ।

नन्दी*—पु० [सं०] वह पुरुष जिसमें कामशक्ति न हो, हिजबा । वि० (शब्द) जो न खीरिंगा हो, न पुर्लिंगा; कायर ।—मंत्र—पु० वह मंत्र जिसकी अंतमें 'नमः' शब्द हो (जै०) ।

नन्दी*—खी०, नन्दी*—पु० [सं०] नपुंसक होनेका भाव; नपुंसक होनेका रोग, नामर्दा ।

नन्दी*—पु० नापनेके काम आनेवाला बरतन, मापदंड । नपुत्री*—वि० दे० 'नपुत्री' ।

महा(पु) - पु० [सं०] माता; पीता ।
नम्युका - स्त्री० [सं०] एक पक्षी ।
नम्यी - स्त्री० [सं०] पुत्र या पुत्रीकी लक्ष्मी ।
नमर - पु० [अ०] मजदूर; नौकर; सेवक; भ्यक्ति ।
नमरत - स्त्री० [अ०] किसी चीजसे भागना; घृणा ।
 -**अंगेज** - वि० घृणा करने योग्य; घृणीपादक ।
नमरी - पु० [फा०] कानत, धिक्कार ।
नमरी - स्त्री० मजदूरी दिनभरकी कमाई या काम ।
नमस - पु० [अ०] सौत, दम ।
नम्रा - पु० [अ०] फायदा, लाभ, हासिल ।
नम्रासत - स्त्री० नफीस - उम्दा होनेका भाव, बढ़ियापन, सुंदरता ।
नमरी - स्त्री० [फा०] शहनाई ।
नमरी - वि० [अ०] उम्दा, बढ़िया, सुंदर ।
नमस - पु० [अ०] ज्ञान; आस्था; भ्यक्ति; कामना; वासना; भोगेच्छा; शिश्न; स्वाधी । -**कुशा** - वि० कामनाओंका दमन करनेवाला । -**कुशी** - स्त्री० वासनाओंका दमन ।
 -**परम** - वि० विश्वी, देवाश; स्वार्थी । -**परली** - स्त्री० विलासिता, देवासी; स्वाधीपरता । -**नममूल** - पु० मज-
 मूल - लेखका अभिप्राय ।
नम्रसानमरी - स्त्री० आपाभाषी ।
नम्रसानिबत - स्त्री० स्वाधीपरता; अपनेको बहुत लगाना; विषयासक्ति, विलासिता, देवासी ।
नम्रसानी - वि० स्वाधीमय; स्वाधीरेतित; भोगेच्छा-संबंधी, भोग विलास-संबंधी ।
नमी - पु० [अ०] ईश्वरका दूत, पैगंबर ।
नमी - वि० नवीन ।
नमेचना - म० क्रि० दे० 'नियेचना' ।
नमेका - पु० दे० 'नियेका' ।
नमेरना - म० क्रि० दे० 'नियेचना' ।
नमेरा - पु० दे० 'नियेका' ।
नमेला - वि० दे० 'नमेला' ।
नमन - स्त्री० [अ०] माफी; हाथकी बहुर गिसपर उँगली रखकर वैध रोगकी हालत समझते हैं । **मु०** - छूटना; -
 न रहना - नाबीकी गति रुक जाना ।
नम्बे - वि० अस्ती और दस । पु० नम्बेकी संख्या, ९० ।
नम - 'नमस्'का समासगत रूप । -**केतन** - पु० सूर्य ।
 -**क्रांत**, -**क्रांती** (तिव्) - वि० -**पाथ** - पु० सूर्य ।
 -**प्राण**, -**वास** - पु० वायु । -**सद्** - पु० पक्षी; देवता, प्रभु आदि जो आकाशमें विचरते हैं । -**सरित्** - स्त्री० आकाशगंगा । -**सुस** - पु० बायु । -**खल** - पु० आकाश-
 रूपी स्थान; शिव । -**स्थित** - वि० आकाशमें स्थित ।
 पु० एक तरफ । -**स्पृक्** (ष्) - वि० दे० 'नमोक्ति' ।
नम - वि० [सं०] हिसक । पु० सावनका महीना; आकाश ।
 -**ग** - पु० वैश्वत मनुका पुत्र; पक्षी इत्यादि । वि० गगनगामी । -**माध** - पु० गरुड । -**गामी** - वि०, पु० दे० 'नमोगामी' । -**खर** - वि० पु० दे० 'नमखर' । -**पुज** -
 पु० दे० 'नमोपज' । -**ध्वज** - पु० दे० 'नमोध्वज' ।
 -**नीरप** - पु० दे० 'नमोनुप' ।
नम(स्) - पु० [सं०] आकाश, आसमान; पृथ्वी आदि

पॉथ तरलीमेंसे एक; सावनका महीना; मेघ; जल; कुंडली-
 में लभने दमर्वा स्थान; बाष्प मन्वतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक
 कवि; वर्षा; विषदृश; आश्रय; पास (नंदादास) ।
नमग - वि० [सं०] वायवहीन; दे० 'नम' ।
नमगेष्ट - पु० [सं०] गवड ।
नमस् - 'नमस्'का समासगत रूप । -**बसु(स्)** - पु०
 सूर्य । -**बमस** - पु० चंद्रमा; विषाणु; इंद्रजाल । -**खर** -
 वि० आकाशमें विचरनेवाला । पु० पक्षी; देवता, गंधर्व
 आदि जो आकाशमें विचरते हैं; बादल; वायु ।
नमसंगम - पु० [सं०] पक्षी ।
नमस - पु० [सं०] दसवें मन्वतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ।
नमखल - पु० [मं०] वायुमंडल; आकाशका निम्न भाग ।
नमस्य - वि० [सं०] बाष्पपूर्ण; कुहरते भरा हुआ । १०
 भाद्रपद, भाद्रिका महीना ।
नमस्वात्(बत्) - वि० [सं०] बादल या कुहरते भरा
 हुआ । पु० वायु ।
नमा - स्त्री० [सं०] पीकदान ।
नमाक - पु० [सं०] भयकार ।
नमोनुप - पु० [सं०] वातक ।
नमो - 'नमस्'का समासगत रूप । -**ग** - वि० जो आकाशमें
 विचरण करता हो; जो कुंडलीमें लभस्थानसे दसवें स्थानमें
 हो । पु० पक्षी; देवता, गंधर्वादि; दसवें मन्वतरके सप्तर्षियों-
 मेंसे एक । -**गज** - पु० बादल । -**गति** - स्त्री० आकाशमें
 विचरना, उड़ना । वि० दे० 'नमोग' । -**गामी** (मिन्) -
 वि०, पु० दे० 'नमखर' । -**द** - पु० एक विश्वदेव ।
 -**दुह** - पु० मेघ, बादल । -**दधि** - वि० जिसकी दधि
 आकाशकी ओर हो; अंधा । -**दीप**, -**धूम**, -**ध्वज** -
 पु० बादल । -**नदी** - स्त्री० आकाशगंगा । -**मंडल** -
 पु० मंडलाकार आकाश । -**मणि** - पु० सूर्य । -**मोनि** -
 पु० शिव । -**रज(स्)** - पु० अंधकार । -**रूप** - वि०
 आकाशके रंगका, नीला । -**रेणु** - पु० कुहरा । -**लघ** -
 वि० आकाशमें लीन हो जानेवाला । पु० बुझी । -**किद्** -
 (ह्) - वि० आकाशकी छूनेवाला, बहुत ऊँचा, गगनचुंबी ।
 -**भीषी** - स्त्री० दे० 'छायापथ' ।
नमोनंदिनी - स्त्री० प्रतिध्वनि (विरहिणीत्राज०) ।
नमोका(कस्) - पु० [सं०] पक्षी; देवता, प्रभु आदि जो
 आकाशमें विचरते हैं ।
नम्य - वि० [सं०] पक्षिकी नाभिके लिए आवश्यक । पु०
 पुरा; पुरेमें लगाया जानेवाला तेल ।
नम्राट्(ज्) - पु० [सं०] काला बादल ।
नमः(मस्) - अ० [सं०] प्रणाम, समर्पण आदिके अवसरपर
 भ्यवहृत किया जानेवाला एक शब्द । पु० नमन; वज्र;
 त्याग; भेंट (संस्कृतमें ये अर्थ जो अन्ययमें ही होते हैं) ।
नम - वि० [फा०] तर, सीला, आदि ।
नमक - पु० [फा०] विशेष प्रकारके स्वादके लिए मोक्ष
 वस्तुओंमें छोड़ा जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण;
 लावण्य, सखोनापन । -**कवार** - वि० नमक खानेवाला ।
 -**दान** - पु० नमक रखनेका पात्र । -**सार** - स्त्री० नमक
 निकलने या बननेकी जगह । -**हराम** - वि० स्वामी या
 पाकउसे छल या झोह करनेवाला, कृतघ्न । -**हरामी** -

की० स्वामी या पाकसे छत्र या शीह करनेकी किया या दुग्गुण, कृतमता । -**हृत्काल**-**वि०** स्वामी या पाककी यथोचित सेवा करनेवाला । -**हृत्काली**-**की०** नमस्कृत्य होनेका भाव या गुण । **मु०**-**अक्ष कर्त्तव्य**-स्वामी या पाककी यथोचित सेवा करना, उसने प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करना । (**किंसीका**)-**स्वामी**-(**किंसीकी**) कृपासे निर्बाह करना, (**किंसीकी**) सेवा करके जीविका चलाना । (**कपट**)-**किङ्ककर्ता**-**दुःखीकी** और **दुःख** देना । -**कूटकर** **निकलना**-नमस्कृत्यगोका कुफल मिटना । -**मिर्षा** **मिलाना**-किसी बातकी आवश्यक या प्रभावोत्पादक बनानेके लिए उसमें अपनी ओरसे कुछ और जोड़ देना । **नमस्कार**-**वि०** [फा०] जिसमें नमक छोड़ा गया हो; जिसमें नमकका स्वाद हो; लघुव्युत्पन्न, सलोना, सुंदर । **पु०** नमक डालकर तैयार किया गया व्यंजन या पकवान । **नमत**-**वि०** [सं०] नत, झुका हुआ; वक्र । **पु०** अभिनेता; भुज्ज; स्वामी; बादल; ऊनी वस्तु । **नमदा**-**पु०** [फा०] जमाया हुआ ऊनी कपड़ा । **नमन**-**पु०** [सं०] नमस्कार करना; नमस्कार, प्रणाम; झुकनेकी क्रिया । **वि०** दूसरेकी झुकानेवाला । **नमना**-**अ०** कि० नत होना; प्रणाम करना । **नमनि**-**की०** दे० 'नमन' । **नमनीय**-**वि०** [सं०] नमस्कार या प्रणाम करने योग्य, पूज्य । **नमना**-**की०** [फा०] दूधका थोड़ा जमा हुआ फेन जो जाड़ेके दिनोंमें विकृता है, गूथी । **नमस**-**वि०** [सं०] अनुकूल, प्रसन्न । **नमसकारना**-**स०** कि० नमस्कार करना । **नमसित**, **नमस्थित**-**वि०** [सं०] जिसे नमस्कार किया गया हो, पूजित । **नमस्**-**अ०** [सं०] दे० 'नमः' । -**करण**-**पु०** नमस्क्रिया । -**कार**-**पु०** किसीके प्रति विनय व्यक्ति करनेके लिए सिर नताना, हाथ जोड़ना आदि । -**कारी**-**की०** लगापुर्, काजवंती । -**कावै**-**वि०** नमस्कार करने योग्य, बंदनीय, पूज्य । -**क्रिया**-**की०** दे० 'नमस्कार' । -**ते**-**एक** वाक्य जिसका अर्थ है-'आपको नमस्कार है ।' **नमस्य**-**वि०** [सं०] पूज्य, सम्मान्य; नम्र, विनयी । **नमस्या**-**की०** [सं०] पूजा, भर्त्ता । **नमाज**-**की०** [फा०] सुलमानोंकी उपासनापद्धति । -**गाह**-**पु०**, **की०** मस्जिदमें नमाज पढ़नेकी जगह । -**बंद**-**पु०** कुदतीका एक पैर । **मु०**-**ऊजा होना**-नमाजका ठीक समयपर न पढ़ा जा सकना । **नमाज्जी**-**वि०** [फा०] नमाज पढ़नेवाला; नियमित रूपसे नमाज पढ़नेवाला । -**कपड़ा**-**पु०** वह झुक्र वस्त्र जिसे केवल नमाज पढ़नेके समय पहनें । **नमाना**-**स०** कि० झुकाना; बशमें लाना, काबुमें करना । **नमित**-**वि०** [सं०] झुका हुआ; झुकाया हुआ । **नमी**-**की०** [फा०] तरा, सीलन । **नमुनि**-**पु०** [सं०] कामदेव; एक दानव जिसे इंद्रने मारा था । -**हिंद**(**प**), -**तिपु**, -**सूदन**-**पु०** इंद्र । **नमूदार**-**वि०** [फा०] प्रकट, जाहिर ।

नमूदारी-**की०** प्रकट होना, जाहिर होना । **नमूना**-**पु०** [फा०] किसी वस्तुका वह छोटा या थोड़ा अंश जिससे अंशोका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय, दानगी; वह वस्तु जिससे उस दंग या जातिकी अन्य वस्तुओंका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय; वह जिसका अनुकरण करके उसी दंगकी कोई चीज तैयार की जाय; खाका । **नमक**-**पु०** [सं०] सुरपुत्राग वृक्ष; ब्राह्मणका पेड़ । **नमोगुह**-**पु०** [सं०] आध्यात्मिक गुरु; ब्राह्मण । **नम्य**-**वि०** [सं०] दे० 'नमस्य' । **नम्र**-**वि०** [सं०] झुका हुआ, नत; विनीत; वक्र । -**मूर्ति**-**वि०** झुका हुआ । **नम्रक**-**पु०** [सं०] बेंत । **वि०** झुका हुआ । **नम्राग**-**वि०** [सं०] झुका हुआ । **नमित**-**वि०** [सं०] दे० 'नमित' । **नम**-**पु०** [सं०] ले जाने या नेतृत्व करनेकी क्रिया; नीति; राजनीति; नम्रता; व्यवहार, बरताव; निष्ठा; मत; दूरदर्शिता; नैतिकता; योजना; विधि; दंग; एक प्रकारका जुआ; विष्णु । **वि०** नेतृत्व करनेवाला; उपयुक्त, उचित । * **की०** नदी । -**कोविद**, -**ज्ञ**-**वि०** नीति जाननेवाला, नीतिनिपुण । -**चक्र**(**स्**)-**वि०** दूरदर्शी, नीतिज्ञ । -**नागर**-**वि०** नीतिनिपुण । -**नेता**(**तु**)-**पु०** बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ । -**पीठी**-**की०** शास्त्रज्ञकी विमान । -**प्रयोग**-**पु०** नीतिकौशल । -**बारी**(**दि**)-**वि०**, **पु०** राजनीतिका शास्त्र । -**विदु**, -**विशारद**-**वि०**, **पु०** राजनीतिको ज्ञान । -**शास्त्र**-**पु०** राजनीतिशास्त्र । -**शास्त्री**(**कि**)-**वि०** विनयी, सदाचारी । -**शील**-**वि०** विनयी; नीतिज्ञ । **नमक**-**पु०** [सं०] कुशल व्यवस्थापक; राजनीतिनिपुण व्यक्ति । **नयकारी**-**पु०** नर्वकोंका मुखिया । * **नयन**-**पु०** [सं०] ले जाना या नेतृत्व करना; शासन करना; विज्ञान; वापन; आँख, दृष्टि । -**गोचर**-**वि०** दे० 'दृष्टि-गोचर' । -**छन्द**-**पु०** पलक । -**जल**-**पु०** आँसू । -**पट**-**पु०** पलक । -**पथ**-**पु०** दे० 'दृष्टिपथ' । -**पुट**-**पु०** नेत्र-फोटर । -**बारि**, -**सलिल**-**पु०** आँसू । -**विषय**-**पु०** दृढ वस्तु; क्षितिज; दृष्टिपथ । **नयना**-**की०** [सं०] आँखोंके पुतल, कर्त्तविक । * **अ०** कि० झुकना, नम्र होना; नमस्कार करना । **पु०** दे० 'नयन' । **नयनाभिघात**-**पु०** [सं०] नेत्रका एक रोग । **नयनाभिराम**-**वि०** [सं०] जो देखनेमें सुंदर हो, नेत्रप्रिय, प्रियदर्शन । **नयनामोची**(**वि**)-**वि०**[सं०]नेत्रकी दृष्टिहीन करनेवाला । **नयनी**-**की०** [सं०] दे० 'नयना' । **नयन**-**पु०** नवनीत, मखनन; एक तरहकी बूटीदार मलमल । **नयनोत्सव**-**पु०** [सं०] दीपक; प्रियदर्शन वस्तु । **नयनोपांत**-**पु०** [सं०] आँखकी कोर, अपाग । **नयनोपच**-**पु०** [सं०] पुष्पकासीत । **नयन**-**पु०** नगर ।

नवा-वि० जिसका उत्पादन, निर्माण, प्रकाशन, बचन, प्रवर्तन, ज्ञान या आविष्कार कुछ ही समय पूर्व हुआ हो, नवीन, नूतन, ताजा, पुरानाका उल्टा; कम उम्रका; जिससे पहले-पहल साक्षात्कार या परिचय हुआ हो; जो कुछ ही समय पहले प्रकट हुआ, देखा गया, मिला या पाया गया हो; हालका बना या बसा हुआ; पहलेवालेका स्थानापन्न; जिसका उपयोग पहले-पहल किया जा रहा हो; जिससे किसी दूसरेने कभी काम न लिया हो; जिसका आरंभ या पुनराारंभ अभी हालमें हुआ हो। [खी० 'नयी'।]
-एन-पु० नया होनेका भाव, नवीनता। - (ये) सिरसे - फिरसे और आरंभसे।

नयाम-पु० [का०] तलवारका स्थान।

नरंग-पु० [सं०] पुरुषेन्द्रिय; गुंहाला।

नरधि-पु० [म०] सप्ताह; भौतिक जीवन। -प, -ब-पु० विष्णु।

नर-पु० [सं०] पुरुष, मर्द; नरसिंहके शरीरके नरभागमें उत्पन्न एक दिव्य महर्षि; स्वायम्भुव मन्वन्तरमें धर्म और दक्ष प्रजापतिकी कन्या सुतीसे उत्पन्न एक कृषि जो ईश्वरके अशासनार माने जाते थे; नरदेव; नरदेवके अवतार अर्जुन; विष्णु; घोडा; शतरजका मोहरा; एक प्रकारका क्षुप; छाया-व्यवहारमें छाया द्वारा समय जाननेके लिए सीधी गायी जानेवाली लकड़ी, शकु; मेवका; टोरेका एक भेड़; एक प्रकारका छपय; * पानी बहनेका नल। वि० पुरुष जातिका (मर्द)। -कंत*-पु० राजा, नृप।

-कपाल-पु० मनुष्यकी खोपड़ी। -कीलक-पु० धर्म-गुरुकी हत्या करनेवाला। -केशरी (रिन्), -केसरी (रिन्)-पु० विष्णुके अवतार नृसिंह; सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य। -केहरी*-पु० दे० 'नरकेशरी'। -कौमुद-पु० मदारीका छल। -गण-पु० नक्षत्रसमूह विशेष; इन गणमें जन्म लेनेवाला व्यक्ति। -सात-पु० राजा।

-त्राण-पु० राजा, कृष्ण। -द्वारा*-पु० जनखा, नपु-मक। -देव-पु० राजा; ब्राह्मण। -द्वि(ब्.)-पु०

राक्षस। -धि-पु० मसार। -नाथ, -नाथक-पु० राजा। -नारायण-पु० नर और नारायण-अर्जुन और

कृष्ण त्रिन्हे एक ही मन्वन्ते दो रूप मानते हैं। -नारी-खी० अर्जुनकी खी द्रौपदी; पुरुष-खी। -नाह*-पु०

राजा। -नाहर-पु० [हि०] दे० 'नरकेशरी'। -पति-पु० राजा। -पद्-पु० दे० 'जनपद'। -पक्षु-पु० पशु-

तुल्य मनुष्य। -पाल-पु० राजा। -पिशाच-पु० पिशाचकी तरह क्रूर स्वभाववाला मनुष्य, बहुत बड़ा

नीच मनुष्य। -पुंगव-पु० श्रेष्ठ मनुष्य। -पुर-पु० मर्त्यलोक। -प्रिय-पु० नील वृक्ष। -बलि-खी०

मनुष्योंकी बलि। -भक्षी (खिन्), -भुक् (ब्.)-पु० मनुष्योंकी खानेवाला, राक्षस। -भू, -भूमि-खी०

भारतवर्ष। -मानिका, -मानिनी-खी० (पुरुषकी अति) दासी-सूँझवाली खी। -माका-खी० मनुष्योंकी

खोपड़ियोंकी माका। -माखिनी-खी० दे० 'नरमातिका'; नरमाका भारण करनेवाली खी। -मेघ-पु० मनुष्योंकी

बलि। -यंत्र-पु० समय जाननेका एक प्रकारका प्राचीन यंत्र, धूपघड़ी। -थान, -रथ-पु० मनुष्य द्वारा

खींची या डोबी जानेवाली सवारी (डोही, पालकी, रिक्शा इ०)। -लोक-पु० मर्त्यलोक; मनुष्यजाति। -बध-पु०

नरहत्या। -बर-पु० श्रेष्ठ मनुष्य। -बाहन-पु० कुत्ते; दे० 'नरयान'। वि० नरयानपर चलनेवाला। -विष्णव-

पु० राक्षस। -वीर-पु० वीर पुरुष, योद्धा। -व्याघ्र-पु०

श्रेष्ठ पुरुष; एक जलजंतु जिसका ऊर्ध्वभाग बाध जैसा और अधोभाग मनुष्य जैसा होता है। -शक-पु०

राजा। -शार्दूल-पु० दे० 'नरव्याघ्र'। -श्रृंग-पु० एक वलीक कथन (मनुष्यका सींग जिसका होना असंभव है)। -संसर्ग-पु० मानवसमाज। -सख-

पु० नारायण। -सार-पु० नौमादर। -सिंघ*-पु० दे० 'नरसिंह'। -सिंह-पु० विष्णुका वह विग्रह जिसे उन्होंने चौथे अवतारमें धारण किया था, विष्णुका चौथा

अवतार (इस अवतारमें विष्णुके शरीरका आधा भाग सिंह जैसा था और आधा मनुष्य जैसा)। -उज्जर-पु०

एक प्रकारका ज्वर जो तीन दिनतक बना रहता और चौथे दिन उतर जाता है। -पुराण-पु० एक पुराण जिसमें नरसिंहका माहात्म्य वर्णित है। -एकंध-

पु० जनसमूह। -हत्या-खी० मनुष्यको मार डालना, नरबध। -हृष-पु० घोड़े और मनुष्यमें होनेवाली छद्माँ

या शत्रुता। -हरि-पु० दे० 'नरसिंह'। -हरी-पु० [हि०] एक छद्म। -हीरा-पु० [हि०] बड़ा हीरा।

नरई-खी० भैंस, घोड़े आदिको खिलातेके कामकी तालमें होनेवाली एक बास; बास आदिका पोला डंठल।

नरक-पु० [सं०] धर्मशास्त्रके अनुसार वह स्थान जहाँ पापियोंकी आत्माओंको अपने कुकृत्योंका फल भोगनेके लिए जाना पड़ता है; बहुत गंदी जगह; वह स्थान जहाँ बहुत कष्ट हो; कलिका एक पौध; एक अमर। -कुंड-पु०

नरकमें स्थित एक कुंड जिसमें यातनाके लिए आत्माएँ छेड़ दी जाती हैं। -गति-खी० वह कर्म जिसके कारण नरक भोगना पड़े (जै०)। -गामी (मिन्)-वि० नरकमें जानेवाला। -चतुर्दशी खी० दिवालीके ठीक पहले

पड़नेवाली चतुर्दशी। -जित्-पु० दे० 'नरकांतक'। -देवता-पु० निंकाति। -भूमि-खी० यमपुरीकी भूमि। -भूमिका-खी० नरकलोक (जै०)। -स्था-खी०

वैतरणी नदी।

नरकचूर-पु० कचूर।

नरकट-पु० पतली लंबी पत्तियों तथा पतले गाँठदार डंठल-वाला एक पौधा जो कलम, चटारें आदि बनानेके काम आता है।

नरकल, नरकुल-पु० नरकट।

नरकस-पु० नरकट।

नरकासुर-पु० [सं०] (नरकासुरका नाश करनेवाले) कृष्ण।

नरकामय-पु० [सं०] प्रेत; नरकरूपी रोग।

नरकारि-पु० [सं०] कृष्ण।

नरकावास-पु० [सं०] नरकमें बास; नरकमें बसनेवाला।

नरकासुर-पु० [सं०] दृष्टीके गर्भमें उत्पन्न एक असुर जिसका बध कृष्णने किया था।

नरकी-वि० दे० 'नारकी'।

नरगिख-पु० [फा०] हलके पीले रंगका एक प्रसिद्ध फूल
 ओ ऊर्ध्व-फारसी साहित्यमें आँखका उपमान है ।
 नरगिखी-पु० एक प्रकारका कपड़ा जिसपर नरगिख जैसे
 फूल बने रहते हैं । वि० नरगिखके आकार वा रंगका ।
 नरतक-पु० दे० 'नर्तक' ।
 नरद-खी० दे० 'नर्द' ।
 नरदन-पु० दे० 'नर्दन' ।
 नरद्वी-पु० नावदान ।
 नरदा-पु० नावदान ।
 नरदवा-खी० दे० 'नर्मदा' ।
 नरम-वि० दे० नर्म । * पु० नर्म, परिहास ।
 नरमद-खी० मुलायम मिट्टीवाली जमीन ।
 नरमदा-खी० दे० 'नर्मदा' ।
 नरमा-खी० एक प्रकारकी कपास; सेमरकी रुई; एक तरह-
 का मुलायम कपड़ा ।
 नरमाई-खी० दे० 'नर्मा' ।
 नरमाना-अ० कि० नरम होना, मुलायम होना; कम
 होना; शांत होना । स० कि० नरम करना; कम करना;
 शांत करना ।
 नरमी-खी० दे० 'नर्मा' ।
 नरर्षभ-पु० [सं०] राजा ।
 नरबाई-खी० दे० 'नर्ष' ।
 नरबै-पु० नरपति, राजा (राष्ट्र) ।
 नरसिंगा, नरसिंघा-पु० टेढ़े आकारका एक बाजा जो
 फूँकर बनाया जाता है ।
 नरसौं-अ० भीते हुए परसोंके पहले या आनेवालेके पीछे ।
 पु० भीते हुए परसोंके पहले या जानेवालेके पीछेका दिन ।
 नरहृद, नरहर-खी० पिंढलीके ऊपरी भागकी लकी छड़ी ।
 नरांग-पु० [सं०] युवप्रेमिय; मुँहासा ।
 नरासक-पु० [सं०] रावणका एक पुत्र ।
 नराच-पु० बाण, तीर; [सं०] एक वर्णवृत्त ।
 नराख-वि० दे० 'नाराख' ।
 नराजना-स० कि० नाराज करना, क्रुद्ध करना, अप्रसन्न
 करना । अ० कि० नाराज होना, अप्रसन्न होना ।
 नराट-पु० राजा ।
 नराधम-पु० [म०] नीच मनुष्य ।
 नराधार-पु० [सं०] शिव ।
 नराधिप, नराधिपति-पु० [सं०] राजा ।
 नरायण-पु० [सं०] विष्णु ।
 नरायणी-पु० दे० 'नारायण' ।
 नराधन, नराधन-पु० [सं०] राक्षस ।
 नरिद-पु० नरेंद्र, राजा ।
 नरिभर, नरिभर-पु० दे० 'नारियल' ।
 नरिभरी-खी० दे० 'नरेली' ।
 नरियार-खी० एक तरहका अर्द्धपाकार लंबा खपड़ा ।
 नरियाना-अ० कि० चिहाना ।
 नरी-खी० [सं०] खी; [फा०] बन्दी या बन्देका रंगा
 हुआ चमड़ा; नरघं घास; नली, खुच्छी; छुनारोंकी बाँस-
 की बनी फुंकनी ।
 नरबा-पु० अनाजवाले पीपोंका (पीला) ढंठल ।

नरेंद्र-पु० [सं०] राजा; विषय । -नरार्थ-पु० राजमार्ग ।
 नरेतर-पु० [सं०] मनुष्यसे भिन्न श्रेणीका प्राणी; जानवर ।
 नरेली-खी० छोटा नारियल; नारियलकी खीपकी या
 उसका बना हुआ ।
 नरेस, नरेसर-पु० [सं०] राजा ।
 नरेस-पु० राजा ।
 नरौं-अ०, पु० दे० 'नरसों' ।
 नरोत्तम-पु० [सं०] श्रेष्ठ मनुष्य; विष्णु ।
 नरक-पु० [सं०] नाक; * दे० 'नरक' ।
 नरकट-पु० दे० 'नरकट' ।
 नरुट, नरुटक-पु० [सं०] नाक ।
 नरगिख-पु० दे० 'नरगिख' ।
 नरस-वि० [सं०] नाचनेवाला । पु० नाच, नर्तन ।
 नरसक-पु० [सं०] नाचने या नृत्य करनेका पेशा करनेवाला;
 अभिनेता; शिव; राजा; एक सप्तर जाति (स्थू०); चारण,
 भाद; हाथी; मोर ।
 नरसकी-खी० [सं०] नाचने या नृत्य करनेका पेशा करने-
 वाली खी; अभिनेत्री; हथिनी; मोरनी; नलिका नामका
 गंधद्रव्य ।
 नरसन-पु० [सं०] नाचनेवाला; नाच, नृत्य; नाचना या
 नृत्य करना । -नरुह-पु०, -शाखा-खी० नाचनेके लिए
 बनाया गया या केवल नाचके काममें आनेवाला घर,
 नाचघर । -प्रिब-वि० जिसे नाच अच्छा लगे । पु०
 शिव; मोर ।
 नरसना-अ० कि० नाचना, नृत्य करना ।
 नरसिंघा(रु)-वि०, पु० [म०] नचानेवाला; नाचना
 सिखानेवाला ।
 नरसित-वि० [म०] नचाया हुआ; नाचना हुआ; जो नाच
 चुका हो ।
 नरु-पु० [सं०] तलवारकी धारपर नाचनेवाला ।
 नरु-खी० [म०] नर्तकी; अभिनेत्री ।
 नरु-वि० [सं०] ढँकरने या गरजनेवाला । खी० [फा०]
 चौसरकी गोदी ।
 नरुम-पु० [म०] गर्वन; ऊँचे स्वरमें गुण-गान करना ।
 नरु-पु० दे० 'नरदा' ।
 नरुित-वि० [सं०] गरजा हुआ । पु० एक तरहका पास
 या पासका हाथ ।
 नरुि(रुि) -वि० [सं०] गरजनेवाला ।
 नरुि-खी० दे० 'नर्मदा' ।
 नरु(रु)-पु० [म०] हँसी, परिहास, विनोद । -कील-
 पु० पति । -नरु-वि० परिहासपूर्ण, विनोदयुक्त । पु०
 गुप्त प्रेमी । -द-वि० हँसानेवाला, परिहासजनक, विनोद-
 क, आहादकारी । पु० नर्मसत्त्व, विद्रुषक । -दा-खी०
 मध्य प्रदेशकी एक नदी जो अमरकंटकसे निकलकर खमात-
 की साकीमें गिरती है; दृक्षा नामक गंधद्रव्य । -धुति-
 खी० किसी परिहासमें उत्पन्न आनंद या दोषको छिपानेके
 लिए किया गया परिहास (ना०) । -सचिव, -सुहृद्-
 पु० राजाकी हँसाने, प्रमत्त रखनेके लिए उसके साथ रहने-
 वाला व्यक्ति, राजाका हँसी-परिहासका सहा, विद्रुषक ।
 नरु-वि० [फा०] गुदगुदा, मुलायम, कीमत्, आसान,

सहज; सस्ता; जो तेज न हो, धीम; विनम्र, विनयबुद्धि; खोटा, नाकाम; महा-। -नर्म-वि० सस्ता-मर्हण; गुरा-महा। -विक-वि० कोमल हृदयवाला।

नर्मद-पु० [सं०] स्वयं मिट्टीका एक पात्र, लप्पर।

नर्मद-पु० [सं०] परिहास-कुशल मनुष्य, मसखरा; जादू, उपपत्ति; डुड्डी; स्तनका अग्रभाग।

नर्मदा-श्री० [सं०] दे० 'नर्म' [सं०] में।

नर्मदेखर-पु० [सं०] नर्मदा नदीमें पाया जानेवाला एक शिवलिंग।

नर्म-श्री० नर्म होनेका भाव।

नर्स-श्री० [अ०] धात्री, भाय; वह स्त्री जिसने रोमियोकी परिचयोंकी शिक्षा प्राप्त की हो या जो इस कार्यके लिए नियुक्त की गयी हो।

नल-पु० पानी; बाप आदिको एक स्थानमें दूसरे स्थानतक ले जानेके लिए धातु, काठ आदिका बना डटेके आकारका पोला लवोतरा टुकड़ा; एकमें जोड़े हुए ऐसे बहुतसे टुकड़े; चीनी मिट्टी या ईंटों आदिसे गोल बनी वह नाली जिसके द्वारा घरीका गंधा पानी आदि बहाया जाता है; पेशाबकी नली; * आदमी; [सं०] निषध देशके एक प्राचीन और प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा जिनका विवाह विदर्भनरेश भीमकी कन्या दमयंतीमें हुआ था; रामकी सेनाका एक भट जिसने भीलके सहयोगसे समुद्रपार पथरका पुल बौंथा था; विप्रचित्ति दानवका चौथा पुत्र; एक नद; नरकट; कमल; एक प्रकारके पिट्टेव; गंध। -कील-पु० घुटना। -कूबर, -कूबर-पु० कुबेरका पुत्र। -कूप-पु० [हिं०] जमीनमें बँसाया हुआ कौनेका नल (पाहण) जो पानी प्राप्त करनेके लिए कुएँकी तरह काम दे। -ह-पु० खस; पुष्पमधु, मकरंद; जटामासी; एक तृण। -पट्टिका-श्री० नरकटकी बनी थोड़ी। -बॉस-पु० [हिं०] हिमालयकी तराईमें पाया जानेवाला एक प्रकारका बोंस। -मीन-पु० सिंगा मछली। -सेनु-पु० रामकी सेनाके पार उतरनेके लिए नलका बनाया हुआ पुल।

नलक-पु० [सं०] नलके आकारकी शरीरकी हड्डी।

नलकिनी-श्री० [सं०] पैर; जवा।

नलद्व-पु० [मं०] नीमका पेड़।

नलनी* -श्री० दे० 'नलिनी'।

नलबा-पु० बैलोंकी धी आदि पिलानेका बॉसका चौंगा।

नला-पु० पेशाबकी नली; मूत्रनलिका; हाथ या पैरकी छंदी हड्डी।

नलिका-श्री० [सं०] नली नामका गंधद्रव्य; जुलाहोंका कपडा डुननेका एक औजार; एक प्राचीन अस्त्र; छोटा और पतला शिव (आ०)।

नलित-पु० [सं०] एक साग।

नलिन-पु० [सं०] कमल; कुमुद; सारस; नील; जल; कृष्णपाक फल, पनियाला।

नलिनी-श्री० [सं०] कमलिनी; वह जलाशय जिसमें कमलकी प्रभुतरा हो; कमलोंका समूह; नली नामका गंधद्रव्य; नदी; नारियल; एक छंद; देवर्गा। -लंड, -लंड-पु० कमलिनीयोंका समूह। -नर्ज-पु० एक देवोबान। -रह-पु० कमलकी नाल, मृणाल; मल्ला।

नलिवेवाच-पु० [सं०] विष्णु।

नली-श्री० छोटा और पतला नल; बंदूकमें वह लंबा छेद जिसमेंसे होकर गोली बाहर आती है; नलके आकारकी पतली हड्डी; [सं०] नैनसिल; नलिका नामक गंधद्रव्य।

नलुआ-पु० पशुओंका एक रोग; छोटा नल; बौंसकी पोर।

नलीचम-पु० [सं०] देवना, बका नरकट।

नलीपाखान-पु० [सं०] राजा नलकी कथा; महाभारतके वनपर्वका एक अवांतर पर्व।

नल-पु० [सं०] चार सौ हाथकी या किसी-किसीके मतसे एक सौ हाथकी एक प्राचीन माप। -बर्मेगा-श्री० काकाक्षी लता।

नल-पु० [अं०] ईसवी सालका ग्यारहवाँ महीना।

नल-वि० [सं०] नया, नूतन, जीर्णका लट्ठा। पु० काक; लवण, खुट्टि; रक्त पुनर्नवा। -कारिका, -कालिका-श्री० नवोडा स्त्री; वह स्त्री जिसका रजोधर्म हालमें ही शुरू हुआ हो। -च्छात्र-पु० वह विद्यार्थी जिसने हालमें ही पदना आरंभ किया हो। -जात-वि० तुरतका पैदा हुआ, नया। -ज्वर-पु० वह ज्वर जो अभी हालमें आरंभ हुआ हो, तरुण ज्वर। -ईश्वर-पु० एक प्रकारका राज-च्छत्र। -दूक-पु० नया पत्ता; कमलकी केशरके पासकी पेंसली। -नी-श्री० ताजा मक्खन। -नील-पु० दे० 'नवनी'। -०धेनु-श्री० धेनुरूप मानकर दान की जानेवाली मक्खनकी राशि जिसके दानसे शिवसायुष्य और विष्णुलोककी प्राप्ति होती है (पु०)। -नीलक-पु० ताजा मक्खन; स्त्री। -पाठक-पु० नौमिलुआ अध्यापक। -प्रसूता-श्री० वह स्त्री जिने हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो। -प्राशन-पु० नये अन्नको पहले-पहल खाना, नवास्त्रमीजन। -फलिका-श्री० वह स्त्री जिसे पहले-पहल रजोदर्शन हुआ हो। -मल्लिका-श्री० नेवारी नामका फूल; इसका शाक। -मालिका-श्री० एक छंद; दे० 'नल-मल्लिका'। -युवक-पु० नौजवान। [श्री० 'नवयुवती'] -युवा-पु० नौजवान। -योनिन्यास-पु० तंत्रमें एक प्रकारका न्यास। -यौवन-पु० नयी जवानी, चंदती जवानी। -यौवना-श्री० वह स्त्री जिसकी चंदती जवानी हो, तरुणी। -रंश-वि० [हिं०] सिलटे हुए सौंदर्यवाला, अभिनव छविते युक्त; नवीन रूप या शोभासे युक्त। -रंगी-वि० [हिं०] नित्य नये रंगमें रंगा रहनेवाला, रंगीला। -रजा(जस्)-श्री० दे० 'नलकारिका'। -राहू-पु० एक प्राचीन देश। -बचू-श्री० नवविवाहिता स्त्री, नयी दुल्हन। -वरिका-श्री० नवोडा। -बल्लभ-पु० अगरका एक मेद। -क्षसिधृत्-पु० शिव। -शशी(शिशु)-पु० द्वितीयाका चंद्रमा। -शिक्षित-वि० जिसने अभी हालमें कोई कला या विद्या सीखी हो, जो अभी हालमें कोई कला या विद्या सीखकर आया हो, जिसने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की हो। -शोभ-वि० नयी छविवाला; तरुण। -संगम-पु० पति और पत्नीका प्रथम मिलन, प्रथम समागम। -सल्लि* -पु० द्वितीयाका चंद्रमा। -सिल्ला-वि० [हिं०] दे० 'नौसिखुआ'। -सुप्ति, -सुप्तिका-श्री० दूध देनेवाली गाय; वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो।

नव(नू)-वि० [स०] नौ । पु० नौकी संख्या, ९।-कुमारी-
-खी० नवरात्रमें पूजी जानेवाली नौ कुमारियाँ-कुमारिका,
विभूति, कल्याणी, रोषिणी, काली, चंडिका, सार्वभौ,
दुर्गा और सुमित्रा।-खंड-पु० पृथ्वीके नौ विभाग-
भारत, इलाहूत, विपुल्ल, भद्र, केतुमाळ, हरि, विरप्य,
रम्य और कुश।-ग्रह-पु० नौ ग्रह-सूर्य, चंद्र, मीन,
पुष, शुक, शुक्र, शनि, राहु और केतु।-मिह्र-पु० दे०
'नवद्वार'।-दीप्ति-पु० मंगल ग्रह।-दुर्गा-खी०
दुर्गाके नौ विग्रह-शैलपुत्री, महाचारिणी, चंद्रपदा, कूभांडा,
स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धि-
दात्री।-ह्वर-पु० शरीरके नौ छिद्र जो प्राणके निकलनेके
नौ मार्ग हैं-दो नेत्र, नाकके दोनों छिद्र, मुख, दो कान
और दो पुमैथियाँ।-द्वीप-पु० बंगलाका एक प्राचीन
विभाजन, नदियाँ।-धातु-खी० नौ प्रकारकी धातुएँ-
सुवर्ण, रजत, अशोषित लोहा, सीसा, ताँबा, रौंदा, तीक्ष्णक
(पारा ?), कौसा, कांतलोह-शब्दवितामणि।-निधि-
खी० कुदरेकी नौ निधियाँ-पद्म, महापद्म, शंख, मकर,
कच्छप, मुकुंद, कुंड, नील और खर्व।-धक्का-
खी० बैल, अशोक, केला, अनार, धान्य (शालि ?), हलदी
मानक, अरुई, जर्बनी, इन नौ धुँहोंकी पत्तियाँ जिनका
उपयोग दुर्गापूजनमें करते हैं।-भक्ति-खी० दे० 'नवधा-
भक्ति'।-भाग-पु० राशिका नवों भाग।-रत्न-पु०
नौ प्रकारके रत्न-मोती, मानिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा,
मूँगा, पश्चांग, पद्मा और नीलम; राजा विक्रमादित्यकी
सभाके प्रख्यात नौ विद्वान्-धन्वतरि, क्षणिक, अमरसिंह,
शंकु, वेतालमट्ट, घटखर, कालिदास, ब्राह्मिचरि और
बरहति; नौ प्रकारके रत्नोंवाला हार।-रस-पु० साहित्य-
में प्रसिद्ध नौ प्रकारके रस-शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र,
वीर, भयानक, नीमस्त, अबहुत और शांत।-रात्र-पु०
नौ दिनोंमें समाप्त होनेवाला वर्ष, व्रत, अनुष्ठान आदि;
चैत्र और आश्विनमें शुद्धा प्रतिपदसे नवमीतकके नौ
दिन जिनमें दुर्गाकी विशिष्ट पूजा की जाती है।-वासु-
देव-पु० जैनोके नौ बासुदेव।-विष-वि० नौ प्रकार-
का।-विष-पु० नौ प्रकारके विष-बन्धनाम, हारिद्रक,
सक्तक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, इलाहल
और महापुत्र।-व्यूह-९० विष्णु।-शक्ति-खी० शक्ति-
के नौ विग्रह-प्रभा, माया, नया, सूरमा, विभुद्रा, नदिनी,
सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा।-सायक-पु० नौ
निम्न जानियाँ-श्याला, सेली, माली, जुलाहा, हलवाई,
बरई, कुम्हार, कमकर और नारई।-आह-पु० प्रेतके
निमित्त मृत्युके दिन तथा उससे तीसरे, पौर्व, सातवें,
नवें और द्वादशवें दिन किया जानेवाला आह।-सत-
वि०, पु० दे० 'नवसत'।-सस-वि० सोलह।-
पु० सोलह शृंगार।-सर-पु० [हि०] नौ लकींका हार।
* वि० नयी उम्रका। सु०-सत सजना या साजना-
सोल्हों शृंगार करना।

नवक-वि० [स०] जिसमें नौ हों। पु० नौ सजातीय
वस्तुओंका समाहार-जैसे (नौ) रत्नोंका नवक, (नौ)
कोशोंका नवक।

नवका-खी० नौका।

नवस-पु० [स०] कंचल; हाथीकी झुल; आवरण।

नवसत-वि० नूतन, नया।

नवता-खी०, नवस्थ-पु० [स०] नया होनेका भाव,
नवापन।

नवति-वि० [स०] अस्सी और दस। खी० नव्वेकी
संख्या, ९०।

नवतिका-खी० [स०] तूलिका; दे० 'नवति'।

नवधा-अ० [स०] नौ प्रकारसे; नौ भागोंमें, नौ ढ़ककों
या खंडोंमें।-भक्ति-खी० नौ प्रकारकी या नौ प्रकार-
से की जानेवाली भक्ति-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-
सेवन, अर्चन, वंदन, हास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।

नवध-पु० [स०] प्रशंसा करना; * झुकना, नमन।

नधना-अ० [स०] झुकना; सन्न होना।

नवनि-खी० झुकनेकी क्रिया या भाव; झुकना, नमन;
विनयभाव, नम्रता।

नवम-वि० [स०] नवौ।

नवमी-खी० [स०] पक्षकी नवा तिथि।

नवक-वि० नवीन, नया; रंगीला, सुंदर; नयी उम्रका,
सुधा; शुद्ध, स्फूर्त, विमल।-अनंगा-खी० एक प्रकारकी
सुगंधानायिका।-किशोर-पु० कृष्ण।-वधू-खी० दे०
'नवक-अनगा'।

नवहर, **नवहरि**-खी० दे० निहावर।

नवसर-वि० नयी उम्रका।

नवौ-वि० नवम, आठवेंके ठीक बादका।

नवांग-पु० [म०] सोंठ, पीपल, मिर्च, हड़, बहेड़ा, भोंवला,
चाब, चीता और बायबिटंग, ये नौ पदार्थ।

नवांग-खी० [स०] काकडासिंघी।

नवा-वि० नया।

नवाई-वि० नया। खी० नम्रना।

नवागत-वि० [स०] नया नया या हालका आया हुआ।

-सैन्य-पु० रणकलोंकी सेना (कौ०)।

नवाङ्ग-वि० [फा०] कृपा करनेवाला, कृपात, दयावान्।

नवाजना-अ० [फा०] कृपा दिखाना, रहम करना।

नवाजिश्-खी० [फा०] कृपा, मेहरबानी।

नवाबा-पु० एक तरहकी नाब।

नवाना-स० [फा०] झुकाना, नम्र होनेके लिए प्रेरित करना।

नवाब-पु० [स०] घरमें आया हुआ नया अन्न; हालमें
तैयार हुआ अन्न; नये अन्नके आगमके निमित्त किया
जानेवाला कृत्यविशेष।

नवाब-पु० [अ० 'नवाब'] मुसलमानोंके राजत्व-कालमें
किसी बड़े प्रदेश या खूबेके शासनके लिए नियुक्त किया
जानेवाला राजकीयारी; मध्यम श्रेणीके वर्तमान मुसलमान
अधीनस्थोंकी एक उपाधि; मुसलमान रईसोंकी अग्रेजी सर-
कार द्वारा दी जानेवाली एक उपाधि। वि० बड़े ठाट-बाटसे
रहनेवाला; कज्जुखर्च, अवश्यवी।-ज्जादा-पु० नवाब-
का पुत्र; बेहद शौकीन आदमी।-पर्सद-पु० एक पान।

नवाबी-खी० नवाबका पद; नवाबका काम; नवाब होनेकी
स्थिति; नवाबीका शासनकाल, नवाबीकाशा शासन या
ठाट-बाट; नवाबीकाशा रहन-सहन, बहुत अधिक अमीरी।
मु०-करना-नवाबीकी तरह शान-शौकतसे रहना।

नक्षत्रा-पुं० एक प्रकारकी नवी नाव ।

नक्षत्री-स्त्री० दे० 'नक्षत्री' ।

नक्षत्रि(स्)-पुं० [सं०] मंगल ग्रह ।

नखासा-पुं० [फा०] ऊषकीका ऊषका, दौहित्र; मामाके न रहनेपर नानाकी जायदाद पानेका नातीका अधिकार ।

नखासी-वि० अस्ती और नौ । पु० नखासीकी संख्या, ८९ ।

नखाह-पुं० [सं०] नौ दिन; नखाँ दिन; नौ दिनोंमें समाप्त किया जानेवाला (रामायण आदिका) अनुष्ठानरूप पाठ; किसी समाह, पक्ष आदिका प्रथम दिन ।

नवीन-वि० [सं०] जो कभी पहले देखा, सुना या किया न गया हो, अपूर्व; नया; मौलिक । [स्त्री० 'नवीना' ।]

नवीस-पुं० [फा०] लिखनेवाला, लेखक (हस शब्दका प्रयोग योगिकोंमें ही उत्तरपदके रूपमें होता है) ।

नवीसी-स्त्री० नवीसका काम, लिखाई ।

नवेद-पुं० निर्मग्न; निर्मग्न-पत्र ।

नवेला-वि० नवीन, नया; नयी उन्नता, युवा । [स्त्री० 'नवेला' ।]

नवेयत-स्त्री० (टेन्यूर) भूमि या संपत्ति रखनेकी अवधि और शर्तें ।

नबोडा-स्त्री० [सं०] नवविवाहिता स्त्री; युवती; रुज्जा और भयके मारे नायकके पाम जानेमें मकुवानेवाली नायिका ।

नबोदक-पुं० [म०] पहली वर्षाका पानी; खोरेते समय धरतीके भीतरमें पहले-पहल निकलनेवाला पानी ।

नबोदुध-पुं० [सं०] ताजा मधुसूत ।

नब्य-वि० [सं०] नया, नवीन; स्तुति करने योग्य, स्तुत्य । पुं० रक्त पुनर्नवा ।

नव्याच-पुं० [अ०] दे० 'नवाच' ।

नव्याली-स्त्री० दे० 'नवाली' ।

नवान-पुं० [मं०] नष्ट होना, नाश ।

नवाना-अ० कि० नष्ट होना, बरबाद होना ।

नशा-पुं० [अ०] मॉग, अफीम, शराब आदि मादक द्रव्योंके सेवनमें उत्पन्न दशा जिसमें कभी-कभी इंद्रियाँ और बुद्धि काबूके बाहर हो जाती हैं; मादक द्रव्य, नशीली चीज; मद, गर्व । -छोर-वि० किसी मादक द्रव्यका बराबर सेवन करनेवाला । -पानी-पुं० नशीली चीजें खाना या पीना (माधुराणलः अंगके लिए प्रयुक्त) । - (शे)-बाज़-वि० नशाखोर । सु०-उत्तरना-नशा दूर होना; गर्व नष्ट होना । -किरकिरा होना-किसी कारणवश नसेका मजा जाता रहना । -चढ़ना-नशा होना, नशीली चीजका असर होना । -छाना-दे० 'नशा चढ़ना' । -टूटना-दे० 'नशा उत्तरना' ।

नशाना-अ० न० कि०, अ० कि० दे० 'नसाना' ।

नशावन-पुं० नष्ट करना, नाशना । वि० नष्ट करनेवाला, नाशक (केवल समासमें प्रयुक्त) ।

नशी, नशीम-वि० [फा०] बैठनेवाला (केवल समासमें प्रयुक्त जैसे तस्नशी, परदानशी) ।

नशीनी-स्त्री० बैठनेकी किया या भाव (केवल समासमें प्रयुक्त जैसे-तस्नशीनी, परदानशीनी) ।

नशीका-वि० नशा करनेवाला, जिसके सेवनसे नशा छा

जाय, मादक; जिसमें नशा छाया हो, मदभरा । [स्त्री० 'नशीली' ।]

नशीवी-वि० नशेबाज ।

नशीहर-वि० नाशक ।

नश्वर-पुं० [फा०] छुरे जैसा चीर-काष्ठ करनेका आला ।

सु०-देना-नश्वरसे फोड़ा या भाव चीरना । -छगाना-नश्वरसे फोड़े या धावका चीरा जाना । -छगाना-दे० 'नश्वर देना' ।

नक्षत्रसूक्तिका-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका वधा भर गया हो, श्रुतवत्सा ।

नक्षर-वि० [सं०] नष्ट हो जानेवाला, नाशशील, नाश-धर्मी, क्षण-भंगुर; हानिकारक; नाश करनेवाला ।

नष-पुं० नाशक, नष्ट । -सिष, -सिष-पुं० दे० 'मक्ष-शिष' ।

नषत-पुं० दे० 'नक्षत्र' ।

नष्ट-वि० [सं०] जिसका अदर्शन या तिरोभाव हो गया हो, तिरोहित; जिसकी सत्ता समाप्त हो चुकी हो, जिसकी स्थिति अन्त हो, नाशप्राप्त; पक्षाधित; नीच, अधम; बरबाद, तबाह; खराब, चौपट; * व्यर्थ । पुं० नाश, क्षय (समासमें यह शब्द पूर्व-पद होकर आता है) । [स्त्री० 'नष्टा' ।] -चँड़-पुं० मादकपदके ठोनों पक्षोंकी (अथ केवल शुद्ध पक्षकी) चौधका चौद जिसका दर्शन निषिद्ध है । -क्षिप्त-वि० उन्मत्त, पागल । -चेतन, -चेष्ट-वि० मूर्च्छित, बेहोश । -चेष्टता-स्त्री० मूर्च्छा, बेखबरी; प्रलया; मूर्च्छा नामक सारिषक भाव । -जन्म(न्), -जातक-पुं० जानकारी न रहनेपर प्रयत्नके लक्ष आदिके अनुसार किसी ब्यक्तिके जन्मका समय जाननेकी एक क्रिया (ज्यो०) । -दृष्टि-वि० जिसको दृष्टि सारी गयी हो, अंधा । -जन-वि० जो धनहीन हो गया हो । -प्रभ-वि० आभारहित, तेजोरहित, कांतिहीन । -बीज-वि० कलरहित (शस्य) । -बुद्धि-वि० बुद्धिहीन, प्रसारित ।

-अष्ट-वि० बरबाद, चौपट । -शस्त्र-पुं० एक प्राचीन देश । -रूपा-स्त्री० अनुष्टुप् छंदका एक भेद । -विष-वि० (वह जानवर) जिसके शरीरमें विष न रह गया हो । -शस्त्र-पुं० बाणकी गोंसी जो शरीरमें ही रह गयी हो । -सुक्त-वि० जिनका वीर्य नष्ट हो चुका हो ।

-संज्ञ-वि० दे० 'नष्टचेतन' । -स्मृति-वि० जिसकी स्मरणशक्ति नष्ट या क्षीण हो गयी हो ।

नष्टता-स्त्री० [सं०] नष्ट होनेका भाव ।

नष्टा-स्त्री० [मं०] वेश्या; व्यभिचारिणी ।

नष्टाभि-पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जिसके वहाँकी श्रौत विधिसे स्थापित अग्नि छप्त हो गयी हो ।

नष्टाय्या(य्यव)-वि० [सं०] अधम, नीच ।

नष्टासिद्ध-पुं० [सं०] ऐसा चिह्न जिससे चुरावो हुई चीजका पता लगा जाय; छुटका बाल ।

नष्टार्थ-वि० [सं०] दे० 'नष्टधन' ।

नष्टार्थक-वि० [सं०] अवरहित; निरापद ।

नष्टावर्णनप्रथमः-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध दृष्टांत जिसका तात्पर्य है-(१) दो ब्यक्तियोंका अपनी वस्तुओंका विनिमय करने का पारस्परिक सहयोग द्वारा कोई कार्य

सिद्ध कर लेना; (२) विविधावयव तथा अर्थवाचकका और प्रधान वाक्य तथा अर्थवाचकका एकदूसरेकी आकांक्षा होनेसे एकवाक्यता प्राप्त कर प्रवृत्त होना (मी०) ।

नहि-**ली०** [सं०] नाश ।

नहेंबुकला-**ली०** [सं०] प्रतिपदा; कुहू ।

नहेंमिब-**वि०** [सं०] संवादीन ।

नसक-**वि०** निःशंक, निर्मय, निजर ।

नस-**ली०** रग, ऐश्वर्यकी बाँधनेवाला तंतु; शरिरवाहिनी नलिका; † सुँवनी, नस । -कटा-**पु०** हिजवा, नाश्वर । -तरंग-**पु०** शहरनाईके ढगका बाजा । -काब-**पु०** हाथियोंका पोंब फूलनेका एक रोग । **मु०**-**चढ़ाना**-अपने स्वामने हटनेके कारण नमका तन जाना । -**नस** कबक उठना-सारी देहमें प्रसक्तताका संचार होना, बहुत अधिक रप होना । -**भबकना**-दे० 'नस चढ़ना' । -**(रँ)** डीली करना-होसला पस्त करना, बल तोफ देना । -**डीली होना**-होसला पस्त होना, बल टूट जाना ।

नसतालीक-**पु०** [अ०] फारसी, अरबीकी ऐसी लिखावट जिसमें प्रत्येक अक्षर आवश्यक मात्राओं आदिके साथ साफ-साफ और सुंदर ढंगसे लिखा गया हो, 'शिकस्त'का उलटा; बालबोध लिपि; शिष्ट पुरुष, पाकसाफ आदमी । **नसबा**-**अ०** कि० नष्ट होना; खराब होना, चौपट होना; भागना, पराना ।

नसबनामा-**पु०** [फा०] बंशवृक्ष, फुरसीनामा, खजरा ।

नसर-**ली०** [अ०] गध (नसम-पथका उलटा) ।

नसल-**ली०** दे० 'नसल' ।

नसवार-**ली०** नास, सुँवनी ।

नसवा-**वि०** नसोंवाला; त्रिसमें नसें अधिक हों ।

नसा-**ली०** [सं०] नासिका, नाक । † **पु०** दे० 'नशा' ।

नसाना-**स०** कि० नष्ट करना । **अ०** कि० दे० 'नसना' ।

नसी-**ली०** हलके फालकी नोक । -**पूजा**-**ली०** हलकी पूजा जिसे कमल बो जानेके बाद करते हैं ।

नसील-**ली०** दे० 'नसील' ।

नसीली-**ली०** सीढ़ी, जीना; दे० 'नशीली' ।

नसीब-**पु०** [अ०] हिस्सा; किस्मत, भाग्य, दैव, अष्ट ।

-**जला**-**वि०** जिसका भाग्य फूट गया हो, अमागा, भाग्यहीन । -**बर**-**वि०** भाग्यशाली, भाग्यवान् ।

मु०-**आजमाना**-भाग्यके भरोसे कोई काम करना ।

-**खुक जाना**, -**कमकना**, -**जागना**, -**सीधा होना**-भाग्यका उदय होना । -**टेढ़ा होना**-डूरे दिन आना, किस्मतका साथ न देना । -**पकटना**-अच्छेसे बुरा या बुरेसे अच्छा दिन आना । -**कूट जाना**, -**सो जाना**-किस्मत बिगड़ना । -**मैं लिखा होना**-किस्मतमें बदा होना । -**खबना**-भाग्यका साथ देना । -**होना**-मिलना, प्राप्त होना ।

नसीबा-**पु०** दे० 'नसीर' । **मु०**-**उकटना**-भाग्यका पकटा खाना । -**खुक जाना**, -**कमकना**, -**जागना**, -**फिरना**-भाग्योदय होना । -**सो जाना**-दुर्भाग्यग्रस्त होना । -**(हे)**का फेर-भाग्यका फेर ।

नसीम-**ली०** [अ०] ठंडी, धीमी और स्वच्छ हवा, शीतल-

मंद समीर । -**(मे)**बहुर-**ली०** समुद्रकी हलकी और ठंडी हवा । -**सह**-**ली०** सवरेकी ठंडी, धीमी और स्वच्छ हवा ।

नसीका-**वि०** नसोंवाला; नशीला ।

नसीहत-**ली०** [अ०] शिक्षा, उपदेश; लाभप्रद सम्मति, अच्छी राय ।

नसुबिवा-**वि०** मनहूस ।

नसूर-**पु०** दे० 'नासूर' ।

नसेनी-**ली०** सीढ़ी, जीना ।

नस-**पु०** [सं०] नाक; सुँवनी ।

नसक-**पु०** [सं०] पशुओंकी नाकमें किया हुआ छेद ।

नसा-**ली०** [सं०] नाकका छेद ।

नसित-**वि०** [सं०] (बहू बैल) जिसकी नाकमें नाथ पड़-नाया गया हो । **पु०** ऐसा बैल ।

नस-**पु०** [सं०] नास, सुँवनी; सुँवनेकी एक विशेष प्रकार-की ओषध या विशिष्ट ओषधके योगसे तैयार किया हुआ तेल आदि; नाकके बाल । **वि०** नाकन निकलनवाला; नाक-संघी ।

नसा-**ली०** [सं०] नासिका, नाक; बैल आदिमें नाकमें पहनायी जानेवाली रस्ती ।

नसाधार-**पु०** [सं०] नासदानी ।

नस्योत-**वि०** [सं०] दे० 'नसित' । **पु०** नाथके जरिये चलाया जानेवाला बैल वा पशु ।

नसल-**ली०** [अ०] बंध, कुल; जाति ।

नसर-**वि०** दे० 'नसर' ।

नहीं-**पु०** नख ।

नहीं-**पु०** नख, नाखून । -**खू**-**पु०** तेल-हलकीके बादकी विवाहकी एक रस्स जिसमें बरकी हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और महाबुर आदि लगाने हैं (पुरानी प्रथा माननेवालोंमें इसी अवसरपर पहले पहल फेंके नाखून काटे जाते हैं); द्वारपूजाके बादकी एक रस्स जिसमें कन्याके नाखून काटे जाते हैं और खान कराया जाता है । -**सुत**-**पु०** नखचिह्न, † फरहदका पेड़ । -**सुरा**-**पु०** नाखूनके ऊपरी किनारेके पासका चमड़ा उधड़ जाना ।

नहहा-**पु०** नखखन ।

नहन, नहनि-**ली०** मोट खोचनेकी मोटी रस्ती ।

नहना-**स०** कि० नाथना, काममें लगाना ।

नहणी-**ली०** दे० 'नहरनी' ।

नहर-**ली०** यातायात या सिंचाईके लिए किसी नदी या जलाशयमें निकाला गया जलमार्ग ।

नहरनी-**ली०** हजामोंका नाखून काटनेका प्रसिद्ध आला; इसीके ढगका एक आला जिसमें पोस्तेका दौड़ चौरते हैं ।

नहरी-**ली०** नहरके पानीसे सींची जानेवाली जमीन ।

नहखा, नहखा, नहर-**पु०** दे० 'नारू' ।

नहला-**पु०** नौ बुद्धिवाला ताशका पत्ता; नकाशी आदि बनानेकी राजगीरीकी छोटी कर्तनी ।

नहलाई-**ली०** नहलानेकी क्रिया या भाव; नहलानेकी मजदूरी ।

नहकाना, नहवाना-**स०** कि० खान कराना ।

महर्षी-पु० पवित्रिका वह छेद जिसमें धुरी पहनाते हैं; नहला ।

महाव-पु० नहानेकी क्रिया; जानका पर्व ।

महाना-अ० कि० सिरपरसे पानी डँडेलकर, नदी आदिमें गोता लगाकर या ऊपरसे गिरती हुई पारके नीचे बैठकर मैल या थकान दूर करनेके लिए शरीरको मलकर धोना; सिरसे पैरतक किसी तरह पदार्थसे सराबोर हो जाना; रजोधर्मके पश्चात् स्नाना स्नान करना ।

महार-वि० जो बासी मुँह हो; जो सबेरेसे बिना कुछ खाये ही हो । -मुँह-अ० बासी मुँह । मु०-तोड़ना-जल-पान करना । -रहना-विना कुछ खाये रहना, निराहार रहना ।

महारी-की० सबेरेका हलका भोजन, जलपान, नाश्ता; शोरबेदार सालन जिससे सुसज्जमान सबेरे खमीरी रोटी खाते हैं ।

महि, महिष-अ० दे० 'नह' ।

महिजन, महिसर्प-पु० पैरकी छोटी उँदलीमें पहना जानेवाला बिछिया जैसा एक गहना ।

महियौ-खी० दे० 'नहियन' ।

महौ-अ० निषेध, अस्वीकृति या अभाव सूचित करनेवाला एक शब्द । -सौ-अ० यदि ऐसा न हुआ तो, ऐसा न होनेकी स्थितिमें, अन्यथा ।

महुष-पु० [सं०] एक प्राचीन चंद्रवंशी राजा जिसे अंगवत्के शापवश सर्पयोगिनिमें प्रविष्ट होना पड़ा था; एक वैदिक ऋषि; एक नाग; एक कुशिकवंशी ब्राह्मण राजा; एक वेदोक्त राजपुत्र; एक मरुत्; विष्णु ।

महुषाक्ष-पु० [सं०] मगरुपुष्प ।

महुषात्मज-पु० [सं०] यवाति ।

महुसत-खी० [अ०] मनहूरी ।

मौर्द्ध-पु० नाम । -मौर्द्ध-पु० नाम और पता ।

मौगा-वि० दे० 'मंगा' । पु० नागा साधु ।

मौघना-अ० कि० लँघना ।

मौठना-अ० कि० नष्ट होना, खराब होना, बरबाद होना; विपरीत होना ।

मौद्-खी० एक प्रकारका पशुओंको चारा-पानी देनेका मिट्टीका गोल, गहरा और चौड़े मुँहका बर्तन; इस प्रकारका पीतल आदिका पात्र ।

मौदना-अ० कि० शब्द करना; गंभीर शब्द करना; छीकना; झूठ होना, प्रसन्न होना ।

मौदिकर-पु० [सं०] दे० 'नादीकर' ।

मौदी-खी० [सं०] सद्दृष्टि, धन-संपत्ति; अम्बुदय; वह भंगलात्मक स्त्री जिसका पाठ सूत्रधार नाटकके आरम्भमें करता है । -कर-पु० नांदीका पाठ करनेवाला; नाटकके आरम्भमें मंगलके रूपमें भेरी आदि बजानेवाला । -छोच-पु० भेरी आदिका शब्द । -नाद्-निनाद्-पु० हर्षति-रकेसे चिन्तामा । -पट-पु० कुपेका उकना । -सुख-पु० जन्म, उपनयन, विवाह आदि मांगलिक अवसरोंपर किया जानेवाला एक आभ्युदयिक आश्चर्य; कुपेका उकना । वि० (वे पितर) जिनके निमित्त नांदीमुख आश किया जाय । -आद्-पु० नांदीमुख नामक आश्चर्य । -सुखी-

खी० एक वर्षावृत्त; नांदीमुख आश्चर्यमें भाग पानेवाली पुरखिन । -रब-पु० दे० 'नांदी-नाद' । -बादी(विन्)-पु० नांदीका पाठ करनेवाला; नाटकके आरम्भमें मंगलके रूपमें भेरी आदि बजानेवाला । -आद्-पु० दे० 'नांदीमुख' ।

नासी(विन्)-पु० [सं०] दे० 'नांदीकर' ।

नांदीक-पु० [सं०] नांदीमुख आशक तोरणस्तम्भ ।

नाँब-पु० [सं०] स्वतः उत्पन्न धान्य ।

नाँव-पु० नाम । अ० नहीं ।

नाँवी-पु० नाम ।

नाँबरा-पु० नाम ।

नाँसी-खी० मारनेका स्वभाव-‘जा मुख हाँसी लसी बन जानद कैसें सुहाति बसी तहाँ नाँसी’-वन० ।

नाँह-पु० दे० 'नाह' ।

ना-अ० [सं०] एक निषेधवृत्त शब्द, [फा०] एक निषेध, अस्वीकृति या अभाव सूचित करनेवाला शब्द, न, नहीं ।

-आगाह-वि० जिते जानकारी न हो । -आजमूदा-वि० अनुसन्धान, अन्वयी । -इतिहासी-खी० मन मुदाब, विरोध, विगाह । -इन्साफ़-वि० जो न्याय न करे, अन्यायी । -इन्साफ़ी-खी० अन्याय, अत्याचार ।

-इम्मेद्-वि० निराशा । -इम्मेदी-खी० निराशा होनेका भाव, निराशा । -कंद्-वि० (बछड़ा) जिसके दूधके दाँत अभी हैं; अशिक्षित; मूर्ख । -कद्दर-कद्दर-वि० कदर वा गुण न समझनेवाला, नाकायक । -काबिल-वि० अयोग्य । -काम-वि० जो काम लायक न हो, खराब ।

-कारा-वि० जो कामका न हो, निकम्मा । -किल-वि० नीब, डुरा; निकम्मा, नाकायक । -खुश-वि० अप्रसन्न, रुष्ट । -खुशी-खी० अप्रसन्नता, नाराजगी ।

-खुदा-वि० अनपढ़ । -गवार-वि० जो गवारा न किया जा सके, असछा; अप्रिय । -गहौ-अ० सहसा, अकस्मात् । -गहानी-खी० वह जो अचानक पठित हो ।

-चाक-वि० दुर्बल; अस्वस्थ । -चार-वि० निवृत्त, देवस; गरीब; निराश; अपाहिज । अ० लाचार होकर ।

-चीज़-वि० नगण्य, तुच्छ । -जायज़-वि० अनुचित, जिते करना, लेना, कहना आदि उचित न हो । -तज्जब-कार-वि० दे० 'ना-आजमूदा' । -तमाम-वि० अधूरा ।

-तराश-वि० उजड़, गँवार । -तर्ज-वि० क्षीण; शक्तिहीन । -तबानी-खी० कमजोरी, दुर्बलता । -तज्जब-वि० शक्तिहीन, अशक्त । -ताज्जती-खी० शक्तिहीनता, कमजोरी । -दाव-वि० नासमझ, अवोध, मूर्ख । -दानी-खी० नासमझी, मूर्खता ।

-दार-वि० जिसके पास कुछ न हो, अकिंचन, मुफ़ल्लिम । -दारी-खी० नाशर होनेका भाव, मुफ़ल्लिमी । -दिहँद्-वि० लेकर अदा न करनेवाला, जो ली हुई रकम न दे । -दुरुस्त-वि० जो ठीक न हो । -देहँद्-वि० दे० 'नादिहँद्' । -नुकर-नुक-खी० अस्वीकृति, इनकार । -पर्सद्-वि० जो परसद न हो, जिते जी न चाहे, अप्रिय । -पाक-वि० अप्रिय, अनुचित; मैला, गरा, बाकका उलटा । -पाकी-खी० नापाक होनेका भाव, अप्रियता; मैलापन । -पायदाद-वि० जो टिकाक न हो, अस्थिर, क्षणस्थायी; कमजोर, पाय-

पात्रका उलटा। -**बाधबाही**-**श्री०**। नापायदार होनेका भाव, अक्षरता, क्षणव्यापिब। -**पुरस्सी**-**वि०**। कापरबाह, प्रभादी। -**पुरसानी**-**श्री०**। कापसानी, प्रभाद। -**वैदू**-**वि०**। जो पैदा न होता हो; अभाष्य। -**हरमर्ही**-**वि०**। जो दुष्कर्म न माने, सरलक। -**हरमानी**-**श्री०**। नाकरमा होनेका भाव। -**बाकिना**-**वि०**। जिसने होख न सँभाला हो, अव्यक्त (प्रायः १८ वर्षकी अवस्थामें आत्रयी बाकिना होता है), बाकिनाका उलटा। -**बाकिनी**-**श्री०**। नाबाकिम होनेकी अवस्था या स्थिति। -**बूढ़**-**वि०**। जिसकी सत्ता न हो, नष्ट। -**मंजूर**-**वि०**। जो मंजूर न हो, मंजूरका उलटा, अस्वीकृत। -**मर्द**-**वि०**। नपुंसक; बरपोक, कावर। -**मर्दी**-**श्री०**। नपुंसकता; कावरता, भीरुता। -**माफ़ू**-**वि०**। अनुपयुक्त; अनुचित; अव्यय। -**माखम**-**वि०**। जो माखम न हो, अजात। -**मुआफ़िक**-**वि०**। प्रतिकूल, खिलाफ, विरुद्ध; मुआफ़िकका उलटा। -**मुनासिब**-**वि०**। अनुचित, अनुक्त। -**मुसकिम**-**वि०**। असमय। -**मुराद**-**वि०**। जिसकी कामना पूर्ण न हुई हो। -**मुखाबम**-**वि०**। जो नर्म न हो, कठिन, कठोर। -**सेहर**-**भाव**-**वि०**। अकृपाशु। -**औरू**-**वि०**। वेनेक। -**बाब**-**वि०**। जो मिलता न हो, अभाष्य। -**रबा**-**वि०**। अनुचित। -**रसाई**-**श्री०**। पड़कना न होना। -**राज**-**वि०**। क्रुद्ध, अप्रसन्न, रुष्ट। -**राजनी**-**श्री०**। दे० 'नाराजी'। -**राजरी**-**श्री०**। नाराज होनेका भाव, अप्रसन्नता। -**खाबक**-**वि०**। अव्यय; मोक्ष, अथम (वि०)। -**बाकि प्रीति**-**श्री०**। अनभिज्ञता। -**बाफ़िक**-**वि०**। अनभिज्ञ, बाफ़िकका उलटा। -**बाजिब**-**वि०**। अनुचित, गैरवाजिब। -**शाहूका**-**वि०**। नाजायक, नामीज़, अशिष्ट। -**शाहू**-**वि०**। अमरुत, रंजीरा; विसित। -**समझ**-**वि०**। जिसे समझ न हो, प्रभावहित, दुकिहीन, मूर्ख। -**समझी**-**श्री०**। नासमझ होनेका भाव वा दुर्गुण, दुकिहीनता, मूर्खता। -**साझ**-**वि०**। अस्वस्थ। -**साज़ी**-**श्री०**। अस्वस्थता। -**हूक**-**अ०**। अकारण, बेसबब; व्यर्थ, बेमतलब। -**हमवार**-**वि०**। अँधा-नीचा, विषम, कमज-सावक।

नाहक-**पु०**। दे० 'नायक'।

नाहूअन-**पु०** [अ०]। रण, स्वाद तथा गंधसे रहित एक गैस जो वायुमण्डलका ४/५ भाग है।

नाहन-**श्री०**। नार्थकी श्री; नाहू जातिकी श्री।

नाहक-**वि०**, **पु०**। दे० 'नायक'।

नाहू-**अ०**। मँसित, तरह, प्रकार (से)।

नाहू-**पु०**। एक जाति जिसका व्यवसाय हजामत बनाना है।
* **श्री०**। नाव।

नाहू-**पु०**। नाम।

नाहू-**श्री०**। नाव।

नाहूत-**पु०**। भूत, प्रेत आदि शाकनेवाला, ओहा; सीखा।

नाहूत-**श्री०**। दे० 'मान'।

नाहूत-**पु०**। दे० 'नाह'।

नाह-**पु०** [स०]। स्वर्ग; अंतरिक्ष। **वि०**। क्रुद्ध; कहरहित।

नाह-**पु०**। देवता। -**नदी**-**श्री०**। अम्परा। -**नाथ**-**भावक**-**पति**-**पु०**। रंज। -**हूक**-**पु०**। स्वर्ग। -**बमिता**-**श्री०**। अम्परा। -**बास**-**पु०**। स्वर्गमें निवास। -**सहू**-

पु०। देवता।

नाक-**पु०**। मगर जैसा एक जलजंतु। **श्री०**। वह दो छेदों-वाला प्रसिद्ध अवयव जिससे साँस लेते और बाहर निकालते हैं; चरसेमेंकी वह लकड़ी जिसे पकककर उते चलाते हैं; वह जिससे किसीकी प्रतिष्ठा बनी रहे, इज्जत रखनेवाला; वह जो किसी समुदायमें प्रधान या सभसे बढकर हो; मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्जत। -**बिसली**-**श्री०**। गिबमिहाइट। -**बुद्धि**-**वि०**। जो पशुओंकी तरह चँसकर ही मर्यादाय पचचान सके; महामूर्ख, तुच्छबुद्धि।
मु०-**हूकर** कि नाक उधर-हर तरहसे एक ही बात। -**ऊँची होना**-इज्जत बढ़ना। -**कटना**-लाज या प्रतिष्ठा जाती रहना, बेइज्जती होना, मान-मर्यादा भट्ट होना। -**काटना**-इज्जत उतार लेना, प्रतिष्ठा नष्ट करना, बेइज्जती करना। -**का बाल**-अत्यंत अंतरंग या प्रिय। -**की सीधमें**-ठीक सामने। -**बिसलना**-दे० 'नाक रगड़ना'। -**चढ़ना**-क्रोधवश मथनोंका ऊपरकी ओर खिच जाना। -**चढ़ना**-क्रोधमें नयनोंकी ऊपरकी ओर खींचना; घृणा प्रकट करना। -**छेड़ना**-हैरान करना, चेंडुलवाना। -**तक खाना**-ढूँ-ढूँकर खाना। -**तक भरना**-**(रतन आदिकी)** ऊपरतक भरना; ढूँ-ढूँसकर खाना। -**न दी जाना**-अन्य दुर्गुण वाला होना; तीव्र दुर्गुण आना। -**पककते दम निकलना**-अभि शक्तिहीन होना। (**चाहे हबसे**)-**पककी चाहे उधरसे**-हर पक्षसे, हर तरहसे। -**पर मुसमा होना**-बहुत जल्द क्रोध आना। -**पर दीया डालकर आना**-जीतकर या मफ़क होकर आना। -**पर पड़िया फिर आना**-नाक चिपदी होना। -**पर मक्खी न बैठने देना**-बहुत सतर्क रहना; किसीका धोखा-ना भी क्लृप्त न होना; बहुत पाक-माफ़ रहना। -**पर रख देना**-मँगनेके साथ ही दे देना या अरा कर देना। (**किसीकी**)-**पर सुपारी तोड़ना**-बहुत परेशान करना। -**कटने लगना**-दे० 'नाक न दी जाना'। -**बहना**-नाकमेंसे श्लेष्मा निकलना। -**बैठना**-नाक चिपदी होना। -**भी चढ़ना या सिक्को**-**बना**-क्रोध प्रकट करना, नाराज होना; घृणा प्रकट करना। -**मैं तीर करना या डालना**-बहुत हैरान करना। -**मैं दम करना**-स्व परेशान करना। -**मैं बोलना**-नकियाना। -**रख लेना**-इज्जत बचाना। -**रगड़ना**-हीनता प्रकट करना, गिबमिहायना, आरजू मिन्नत करना। -**लगानकर बैठना**-बहुत इज्जतदार बनकर बैठना। -**सिक्कोबना**-घृणा प्रकट करना। -**(की) खाना**-आविज आना, परेशान हो जाना। -**कने चबवाना**-परेशान करना, तंग कर मारना। -**दम करना**-दे० 'नाकमें दम करना'।

नाकवा-**पु०**। नाकका एक रंग।

नाकना-**स०**। कि० लीपना, डॉकना; प्रतियोगितामें हार जाना, बढकर होना; चारों ओरसे बेरना।

नाका-**पु०**। किसी नगर, बस्ती आदिमें पैठेनका प्रमुख स्थान, प्रवेशद्वार; रास्ते आदिका वह मोड़ जहाँसे दूसरी ओर मुड़े, निकले या घुसे; दुर्ग आदिमें घुसने और बाहर निकलनेका मार्ग या द्वार; वह प्रमुख स्थान जहाँ पहरा

देने या किसी तरहका भयपूर्ण करनेके लिए सिपाही नियुक्त हों; मुलाहोका तानेका तागा बाँधनेका एक औजार; (मुल्का) छेद; नाक नामका जलजंतु । -बंदी-खी० नाकेपर सिपाहियोंकी तैनाती, नाकेपर पहरा बैठाना; अवरोध । -के) बार-पु० नाकेपर तैनात किया जानेवाला सिपाही । वि० छेदवाला ।

नाकिह-पु० [अ०] निकाह करनेवाला, ब्याह करनेवाला । नाकी(किन्)-पु० [सं०] देवता (जिसका निवासस्थान स्वर्ग है) ।

नाकु-पु० [सं०] विमोह, बलीका; पर्वत; एक मुनि ।

नाकुल-वि० [सं०] नेवले जैसा; नकुल-संबंधी । पु० नकुलकी संज्ञा ।

नाकुलक-वि० [सं०] नकुलकी पूजा करनेवाला ।

नाकुलि-पु० [सं०] नकुलका पुत्र; नकुल गोत्रका मनुष्य ।

नाकुली-खी० [सं०] राक्षा; चविका; यवतिका; भेग कंठकारि; एक बंद जो संपर्दशका विष दूर करता है ।

नाहू-पु० दे० 'नाक' ।

नाकेश-पु० [सं०] इंद्र ।

नाक्षत्र-वि० [सं०] नक्षत्र-संबंधी; जिसका काल नक्षत्रचक्रके परिवर्तनके अनुसार निर्धारित हो । पु० चांद्र मास । -दिन-पु० नाक्षत्र मासका एक दिन, चंद्रमाके एक नक्षत्रपरसे दूसरे नक्षत्रपर जानेका काल । -मास-पु० उतना काल जितनेमें चंद्रमा २७ नक्षत्रोंपर एक बार घूम जाता है ।

नाक्षत्रिक-वि० [सं०] दे० 'नाक्षत्र' । पु० नाक्षत्र मास । नाक्षत्रिकी-खी० [सं०] नक्षत्रसे प्रभावित मनुष्यकी दशा । वि० खी० नक्षत्र-संबंधिनी ।

नाख-खी० एक तरहकी नासपाती ।

नाखना-स० क्रि० नष्ट करना; फेंकना; डालना-‘तुन ऊपर धृतिका नाखी, तब ऊपर धिनी राखी’-सुंदरदास गिराना; लौटना; डकना ।

नाखुदा-पु० [फा०] अज्ञातका कप्तान । वि० खुदाको न माननेवाला ।

नाखून-पु० [फा०] दे० 'नाखन' ।

नाखूना-पु० [फा०] दे० 'नाखन' ।

नाखून-पु० [फा०] अंगुलियोंके ऊपरी तिरिपरका कठिन और चिपटा आवरण; चौपायोंकी दाप या खुरकी बंदी हुई कोर । -हराखा-पु० नाखून काटनेका आला, नहरनी । -खु-खेना-नाखून तराशना; वीरेका ठोकर खाना ।

नाखूना-पु० [फा०] एक नेत्ररोग जिसमें आँखोंमें सफेद झिल्ली पड़ जाती है और जो धीरे-धीरे पुतलियोंतककी दौक लेती है; लाल डोरे जो धोखोंकी आँखोंमें पड़ जाते हैं; एक प्रकारका कपड़ा जो रई और रेशमके योगसे बनता है ।

नाग-पु० [सं०] मनुष्यके आकारके पातालवासी सर्प जिसकी गणना देवयोगिनिमें है (स्वर्गमें मुख्य ये हैं-अनंत, वासुकि, पद्म, महापद्म, तक्षक, कुलीर, कर्कोटक और शंख); साँप; एक प्रकारका काया साँप जिसके तिरिपर दो चरण-चिह्न होते हैं; पर्वत; हाथी; बाघ; नागकेशर; पुष्पाग; शरीरमेंका एक प्रकारका पवन; एक देश; उस देशमें बसनेवाली एक जाति; रौंसा; सीसा; नागरमोहा;

नागवह्नी; (ला०) कूर् मनुष्य; अश्वेवा नक्षत्र; बौद्ध; आठकी संख्या । -कंड-पु० दक्षिणद । -कण्ठका, -कण्ठा-खी० नागजातिकी कण्ठा (पुराणोंमें नागकण्ठाओंके सौर्यकी बड़ी प्रशंसा की गयी है) । -कर्ण-पु० हाथीका कान; रेंड (जिसका पत्ता हाथीके कानकी तरह होता है) । -किंजल्क-पु० नागकेशर । -कुमारिका-खी० गुडुच; प्रवीट । -केसर-खी० सफेद, मईकटार फूलोंवाला एक सदाबहार पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है, नागचंपा, पत्रकाठ । -कंड-पु० भारतके नौ खोंमेंसे एक । -गंधा-खी० नाकुलीकंद । -गति-खी० अग्नि, भरीणी या कृत्तिका नक्षत्रपर रहनेके समयकी किसी ग्रहकी गति । -गर्ज-पु० सिद्ध । -गंधा-खी० नागकेशर । -गु-पु० शिव । -च्छत्रा-खी० नागदंतीका पेड़ । -ज-पु० सिद्ध; रौंसा । -जिह्वा-खी० अनंतमूल; सारिवा । -जिह्विका-खी० मेनसिल । -जीवन-पु० रौंसा । -ज्ञाग-पु० अहिफेन, अफीम । -वंस, -वंसक-पु० हाथीदंता; दीवारकी छेदी । -वंसिका-खी० बुझिकाकी । -वंती-खी० दक्षिणुवी, कुंभा नामक बोधि । -वमन-पु० नागदंतीका पीषा । -वमनी-खी० दे० 'नागदमन' । -वृका-खी० एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है । -वृक्षोपम-पु० फालसा । -वृमा-वि० [हिं०] (बह देवी हाथी) जिसकी पूँछका सिरा साँपके फनके आकारका हो । -वीम-पु० [हिं०] एक छोटा पहाड़ी पेड़ । -वीना-पु० [हिं०] एक पीषा जिसमें टखनियोंकी जगह जबके ऊपरसे केवल बड़ी-बड़ी पत्तियाँ लगती हैं; एक तरहका कन्या और काँटेदार बीना । -हु-हुम-पु० सेतुंफ; नागफनी । -हृष-पु० भारतवर्षका एक खंड (पु०) । -धर-पु० शिव । -धनि-खी० एक रागिनी । -नक्षत्र-पु० अश्वेवा नक्षत्र । -मग-पु० गजमुक्ता । -नामक-पु० टोन, रौंसा । -नामा(मन्)-पु० तुलनी । -नायक-पु० अश्वेवा नक्षत्र अनंत आदि आठ प्रमुख नाग । -निर्बुह-पु० दीवारकी बड़ी छेदी । -पंचमी-खी० भावण-शुद्ध पंचमी जिस दिन सनातनी हिंदू नाग देवताकी पूजा करते हैं । -पति-पु० संप्रदाय वासुकि; इस्तिराज येरावत । -पद्मा-खी० नागदमनी । -पद्मी-खी० लक्ष्मणा । -पद्-पु० एक रतिबंध । -पास-पु० बषका अक्षभूत पास; ढाई फेरेका फंदा; साँपका फंदा । -पासक-पु० एक रतिबंध । -पु-पु० पाताल; इस्तिना नामका पुर जहाँ पर्वतके रूपमें लकील दानवने गमका मार्ग रोका था; मध्यप्रदेशकी राजधानी । -पुष्प-पु० चंपक, नागकेशर; पुष्पाग वृक्ष । -पुष्का-खी० पेठा । -पुष्पिका-खी० पीली जूही; नागदीना । -पुष्पी-खी० नागदमनी; मेढासीगी । -पुत-पु० [हिं०] एक लता । -फनी-खी० [हिं०] घूरकी जातिका एक पीषा जिसमें टखनियोंकी जगह केवल साँपके फनके आकारके काँटेदार दंत होते हैं । -फळ-पु० परवल । -फाँस-खी० [हिं०] दे० 'नागपाश' । -फेज-पु० अफीम । -बचक-पु० हाथी फँसानेवाला । -बंघु-पु० पीपलका पेड़ । -बळ-पु० भीम (जिन्हें दस हजार हाथियोंका बल था) । वि० जो हाथीकी तरह बलवान् हो । -बला-

की० गागेवकी, गंगेरज । -बेक-की० [हि०] पत्नी
बेल । -अगिनी-की० बासुकि नागकी बहन, मनसा ।
-बिह-पु० एक तरहका भारी सोंप । -बृषभ-पु०
शिव । -अंबछिक-पु० संपेरा । -मरोच-पु० [हि०]
कुशकी एक पेच । -भल्ल-पु० रेखावत । -आता(पु०)-
की० नागोंकी माता कष्ट, सुरसा; यैनसिख; आसीककी
माता मनसा देवी । -भार-पु० काला भंगरा । -मुल-
पु० भणेश । -बल्ल-पु० एक बल जिसमें परीक्षितके पुत्र
जनमेजयने नागोंका विनाश किया था । -बहि-की०
पोखरे या तडागमें बीचोबीच बंसाया जानेवाला पुत्राग,
बहुल आदिका लक्ष संज्ञा । -रंश-पु० नारंगी । -रक-
-पु० संतुर; हाथी या सोंपका रक्त । -राज-पु०
शेषनाग; बहुत बड़ा सोंप; रेखावत; भीमकाय हाथी;
छंदःशास्त्रके प्रवर्तक पिंगल । -रक्त-पु० नारंगीका पेच ।
-रेणु-पु० संतुर । -कता-की० पानकी बेल; मेहन,
किम । -कोक-पु० पाताल । -बंश-पु० नागोंका
वंश; शक जातिकी एक शाखा । वि० नागवंशका; नाग-
वंशमें उत्पन्न । -बल्लरी, -बल्ली-की० पानीकी बेल ।
-भारिक-पु० राजकुंजर, कीलपान, महावत; गरुड;
हाथियोंका दूधप; मडलीका प्रधान व्यक्ति । -बीबी-
की० चंद्रमाका वह मार्ग जिसमें अश्विनी, भरणी और
कृत्तिका नक्षत्र पड़ते हैं; कश्यपकी एक पुत्री । -बुल-
पु० नागकेशरका पेच । -हुंसी-की० डंगरी फल ।
-संनका, -संनृत-पु० संतुर । -साक्ष्य-पु० हस्तिना-
पुर । -सुरवंश-की० बुजगाशी, एक प्रकारकी राक्षा ।
-स्तोकक-पु० बसन्तमा विष । -स्कीता-की० नाग-
दंती; दंती । -हंजी-की० भौंस ककोडा, बंध्या ककोटकी ।
-हनु-पु० नल नामका गंधद्रव्य ।

नागमसी-की० [सं०] एक छता ।

नागर-वि० [सं०] नगर-संरंधी; नगरमें रहनेवाला; चतुर,
बालक उरा, जिसमें नगर-संरंधी दोष हो; नगरमें बोला
जानेवाला; नन्न; नामहीन । पु० नगरवासी, पौर; चतुर,
सम्य पुरुष; देवद; जानकारिते इनकार करना; सोंठ;
नारंगी; नागरमोथा; व्याख्याता; छाति, कष्ट; मोक्षकी
इच्छा; एक रतिबंध; गुजराती भाषाणोंकी एक उपाधि;
नागरी लिपिके अक्षर; एक प्रकारका गृहयुद्ध; [हि०]
दीपाका देोपान । -बन-पु० नागरमोथा । -मुखा-
की० नागरमोथा । -मोथा-पु० [हि०] एक प्रकारका सुग-
ंधित तृण जिसकी जड़ मसाले और दवाके काम आती है ।
नागरक-पु० [सं०] शिल्पी; कारीगर; चोर; नगरका शासन
चलानेवाला राजकर्मचारी; एक रतिबंध; सोंठ । वि० दे०
‘नागर’ ।

नागरता-की० [सं०] नागरिकता, शहरासीपन; शिष्टता,
सभ्यता; बालकी, चतुरता ।

नागरिक-वि० [सं०] नगर-संरंधी; नगरका; जो नगरमें
रहे, शहरासी । पु० नगरवासी, पौर; नगरपर लगनेवाला
कर ।

नागरिकता-की० [सं०] नागरिक होनेका भाव; नागरी
चित्त्व सत्य, आचार या शिष्टता; नागरिक जीवन ।

नामद्वेल-की० नागवल्ली, पान ।

नागराह-पु० [सं०] सोंठ ।

नागरी-की० [सं०] नगरमें रहनेवाली की, शहरकी औरत,
नगरवासीनी; चतुर की; सेहूँच; संस्कृत और हिंदी भाषा-
की लिपि, पत्थरकी मोहरांकी एक बड़ी भाष; पत्थरकी भारी
पटिया ।

नागरीट, नागरीट-पु० [सं०] जार, उपपति; व्यवचारी,
छंफट; विवाह करानेवाला, धृक् ।

नागरेवक-वि० [सं०] नगरमें उत्पन्न ।

नागरोत्थ-पु० [सं०] नागरमोथा ।

नागरी-पु० [सं०] नागर होनेका भाव, नागरता;
निदग्धता ।

नागरी-पु० इल; बैलोंकी नुपमें जोड़नेकी रस्ती ।

नागांग-पु० [सं०] हस्तिनापुर ।

नागांगना-की० [सं०] हथिनी ।

नागांछा-की० [सं०] नागघटि ।

नागांजना-की० [सं०] नागघटि; हथिनी ।

नगांतक-पु० [सं०] गरुड; मोर; सिंह ।

नागा-पु० एक शैव सम्प्रदाय जिसमें साधु लोग नगे रहते
हैं; इस सम्प्रदायका साधु; आत्मामें बसनेवाली एक लंगकी
जाति; आत्माका एक पड़ाव; बराबर चलनेवाले काममें
पड़नेवाला अंतर, बीच । * वि० खाकी; नगा ।

नागाक्य-पु० [सं०] नागकेशर ।

नागानंद-पु० [सं०] इष्वर्द्धनका एक संस्कृत नाटक ।

नागानन-पु० [सं०] गणेश ।

नागामिनु-पु० [सं०] एक युद्ध ।

नागाराति, नागारि-पु० [सं०] दे० ‘नागांतक’ ।

नागार्जुन-पु० [सं०] शून्यवाद या माध्यमिक सिद्धान्तके
प्रवर्तक एक बौद्ध आचार्य (इसकी प्रधान रचना ‘माध्य-
मिक शास्त्र’ या ‘माध्यमिक कारिका’ है) ।

नागार्जुनी-की० [सं०] दुषिया धान ।

नागाकाहु-पु० [सं०] गोल कद्दू ।

नागाशय-पु० [सं०] गरुड; मोर; सिंह ।

नागाधय-पु० [सं०] हसिकंद ।

नागाह-पु० [सं०] नागकेशर ।

नागाह-की० [सं०] छद्मना नामक कंद ।

नागिन-की० सोंपकी मादा, सपिणी; नाग नामक सोंपकी
मादा जो बहुत विषैली होती है, क्रूर वा दुष्ट स्वभाववाली
की; पीठ या गरदनपरकी लंबी रोमावली; बैलौकी पीठपर
होनेवाली सोंपके आकारकी लंबी रोमावति जिसकी गणना
देवोंमें है ।

नागिनी-की० दे० ‘नागिन’ ।

नागी-की० [सं०] ‘हस्तिनी’ ।

नागी(मिन्)-पु० [मं०] शिव ।

नागुला-पु० नेवला; नाकुली ओषधि ।

नार्गद-पु० [सं०] बड़ा सोंप; शेष आदि प्रमुख नाग;
महाकाय हाथी, गजराज; रेखावत ।

नागेश-पु० [सं०] शेष नाग, संस्कृतके एक प्रसिद्ध वैवा-
करण, नामेश्वर भट्ट; पतञ्जलि ।

नागेश्वर-पु० [सं०] शेष नाग; रेखावत; नागकेशर ।

नागेश्वर-पु० दे० ‘नागेश्वर’ । वि० नागकेशरके रंगका,

पीला ।

नागोद, नागोदर-पु० [सं०] शशापातसे बचनेके लिए उदर या सीनेपर धारण किया जानेवाला छोटेका तबाना, उदरत्राण या उरक्षाण ।

नागोदरिका-स्त्री० [सं०] एक प्रकारका दस्ताना जिसे मुद्रमें हाथकी रक्षाके लिए पहनते हैं ।

नागोदसेव-पु० [सं०] मेरुगिरिपर एक स्थान जहाँ सरस्वतीकी पुत्र धारा ऊपर देख पड़ती है ।

नागौर-पु० मारवाड़में एक नगर जहाँके नाथ-बैठ बहुत प्रसिद्ध हैं ।

नागौरा-वि० नागौरका; अच्छी जातिका; मजबूत ।

नागौरी-वि० दे० 'नागौरा' । वि० स्त्री० नागौरकी (माय) ।

नाच-पु० ताल और रूपपर आश्रित अंगविशेष; आनन्द-तिरेकेमें मचायी जानेवाली उछल-कूद; खेल, झोका; काम-धंधा । -कूद-स्त्री० उछल-कूद; नाच-तमाशा । -घर-महल-पु० दे० 'नर्तनशाला' । -रंग-पु० आमोद-प्रमोद । -सु०-काछना-नाचनेको उषत होना । -दिखावा-किसीके सामने उछल-कूद मचाना । -जवाना-परेशान करना; किसीसे इच्छानुसार काम कराना ।

नाचना-अ० कि० ताल और रूपके अनुसार मात्रविशेष करना, नृत्य करना; आनन्दतिरेकेमें उछलना-कूदना; प्रत्यक्षता प्रतीत होना; इधरसे उधर आना-जाना, दौड़-धूप मचाना; कौपना, धराना; क्रोधावेशमें उछलना-कूदना ।

नाचकैत-पु० [सं०] एक ऋषि; अग्नि ।

नाचीन-पु० [सं०] दक्षिणका एक प्राचीन देश; इस देशका राज्य (म० मा०) ।

नाज-पु० अनाज, अन्न; साथ वस्तु, साथ पदार्थ ।

नाज-पु० [फा०] हाव-भाव, विलास-चेष्टा; गर्व, कमंड । -नखरा-पु० हाव-भाव, मोहक चेष्टा । -नी-स्त्री० रूपवती स्त्री; नाजुकबदन औरत, कोमलगी । -बरदारी-वि० नाज बर्दाश्त करनेवाला, आशिक । -बरदारी-स्त्री० नाज बर्दाश्त करना । -बू-पु० मरकेका पोषा । -ब (झो)अद्वा-नखरा-पु० दे० 'नाज-नखरा' ।

नाज्जी-वि० [फा०] अभिमानयुक्त, गर्वित, गर्वीला ।

नाजिम-वि० [अ०] प्रथम करनेवाला, प्रथमकर्ता । पु० मुसलमानोंके समयका एक राजकर्मचारी जिसके ऊपर किसी देश या राज्यके सब प्रकारके प्रथमका पूर्ण टाविल रहता था ।

नाज़िर-वि० [अ०] देखनेवाला, दर्शक । पु० वह जो देख-माल करे, निरीक्षक । * स्त्री० अंतःपुरकी मुख्य परिचारिका ।

नाज़िक-वि० [अ०] उतरनेवाला, नीचे आनेवाला; गुजरनेवाला । सु०-होना-नीचे आना, अवतरित होना ।

ना, नुऊ-वि० [फा०] कोमल, सुकुमार, घृष्ट; महीन, बारीक; जो बन्दी टूट जाय, फूट जाय या नष्ट हो जाय; सूक्ष्म, गंभीर; संकटपूर्ण, खतरका; मामिक । -खवाह-वि० अच्छे विचारोंवाला । -दिमाग-वि० दे० 'नाजुक-मिथाव' । -बद्व-वि० कोमल शरीरवाला, कोमलंग,

सुकुमार । पु० एक तरहका बारीक कपड़ा । -मिज़ाब-वि० जो किसी बातसे बहुत जल्द प्रभावित हो जाय, जिसे कोई बात बहुत जल्दी लग जाय; चिक्किबा, सुनुकमिनाज; धमकी ।

नाजो, नाजो-स्त्री० नाजनी; प्रियतमा ।

नाट-पु० [सं०] नृत्य; नाटक, अभिनय; एक राग; कर्नाटक देश । -बसंत-पु० एक राग ।

नाटक-पु० [सं०] दृश्य काव्य या रूपकके दस भेदोंमेंसे एक जो प्रथम और सर्वप्रधान है (साहित्यदर्पणके अनुसार इसमें प्रायः ५ से १० अंकतक होते हैं) । इसका आधार कोई प्रसिद्ध घटना या आख्यान होता है और नायक कोई प्रतापी पुरुष, अच्छे प्रसिद्ध कुलमें उत्पन्न व्यक्ति या राजर्षि आदि होता है । शृंगार या वीर रस ही इसमें प्रायः प्रधान होते हैं; रूपक; अभिनय; दृश्य काव्य; अभिनेता; नर्तक । -कार-पु० नाटक बनाने, लिखनेवाला । -शाखा-स्त्री० वह स्थान या गृह जहाँ नाटक खेला जाता हो ।

नाटकावतार-पु० [सं०] एक नाटकके अतर्गत दूसरा नाटक ।

नाटकिया-पु० अभिनेता; बहुरूपिया ।

नाटकी-स्त्री० इद्रकी सभा । पु० नाटक खेलनेवाला अभिनेता ।

नाटकीय-वि० [सं०] नाटक-संबंधी; नाटक जैसा ।

नाटना-अ० कि० दे० 'नटना' । स० कि० अलंकार करना, इनकार करना ।

नाटा-वि० छोटे कदका । पु० छोटे कदका बैल । -कर्ज-पु० करंजका एक भेद ।

नाटान्न-पु० [सं०] तरबूज ।

नाटार-पु० [सं०] अभिनेत्रीका पुत्र ।

नाटिका-स्त्री० [सं०] उपरूपकका एक भेद (इसमें बार अंक होते हैं और कथा कल्पित होती है) ।

नाटित-वि० [सं०] जिसका अभिनय किया गया हो, अभिनीत । पु० अभिनय ।

नाटितक-पु० [सं०] अनुकृति, किसीकी चेष्टादिका अनुकरण, साँग ।

नाट्य-पु० [सं०] नृत्य; नाटकादिका अभिनय; नृत्यकला; अभिनयकला; अभिनेताकी वेशभूषा; अभिनेता । -कार-पु० नाटक करनेवाला, नट । -घर-वि० अभिनेताकी पौशाक पहननेवाला । -धर्मिका-स्त्री० अभिनय-संबंधी निबन्धवाली । -मिथ-पु० शिव । -संहिर-पु० दे० 'नाट्यशाला' । -रासक-पु० उपरूपकका एक भेद (वह प्रायः एक ही अंकका होता है और इसमें गानों तथा नृत्यकी प्रधानता होती है) । -बेद-पु० अभिनय आदि-संबंधी विद्या । -शाखा-स्त्री० नाटक खेलनेका घर या स्थान । -शास्त्र-पु० दे० 'नाट्यवेद' ।

नाट्यागार-पु० [सं०] नाट्यशाला ।

नाट्याचार्य-पु० [सं०] अभिनय, नृत्तादिकी शिक्षा देनेवाला ।

नाट्याङ्ककार-पु० [सं०] नाटककी शोभावृद्धि करनेवाला विशेष प्रकारका अङ्ककार ।

नामकावली-पु० [सं०] एक तरहका कदू ।
 नाउकीहि-खी० [सं०] नाउकीय वाक्य-विन्यास ।
 नाउकीय-वि० [सं०] अभिनय करने योग्य ।
 नाउ-पु० नाथ; सप्ताका अमास; ऊबारिस जाबदाद ।
 नाउना-सं० कि० नउ, ध्वस्त करना । अ० कि० नउ, ध्वस्त होना; इटना; भाग जाना ।
 नाउ-पु० वह जिनके अंगे-पीछे कोई न हो ।
 नाउ-पु० नाक, पोका डंठल ।
 नाउ-खी० गर्दन ।
 नाका-पु० खियोंका बाँधरा या धोती बाँधनेकी सुतकी मोटी छोरी, नीची; देवताओंको चढ़ाया जानेवाला लाल या पीले रंगका गंधेदार वस्त्र ।
 नाकिधम-वि० [सं०] मलीकी फूँकनेवाला; नाकियोंमें गति जपथ करनेवाला (अथ आदि) । पु० सोनार ।
 नाकिधम-वि० [सं०] नाहोके जरिये पाम करनेवाला ।
 नाकि-खी० [सं०] नाकी; नली; पोका डंठल । -खीर-पु० डरकी । -पुत्र-पु० एक शाक ।
 नाकि-खी० [सं०] नाकी; नली; एक कालमान, घटिका; पोका डंठल; नासुर; सूर्य-रश्मि; पश्चिमाल (जिसपर आघात कर समय सूचित किया जाता है) ।
 नाकिरेक-पु० [सं०] नारियल ।
 नाकिपा-पु० (नाकी पकड़नेवाला) बैध ।
 नाकी-खी० [सं०] नली; शरीरकी रक्तवाहिनी शिरार्ये; वे नलियाँ जिनके द्वारा हृदयका शुद्ध रक्त शरीरके सब अंगोंमें पहुँचता है, धमनी; शरीरकी ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और आस-प्रवासवाहिनी नलियाँ (इठयोग); कोबेका छेद; किसी द्रव या पीपेका पोका डंठल; पथरदंड; ६ छणोंका एक कालमान; घड़ी; फूँकर बजाया जानेवाला बाध (बाँसुरी आदि); हाथ या पैरकी नब्ज; बंधपत्नी; गंडबूझी; छल, छप; कल्पित चकोमें पड़नेवाले नक्षत्र जिनके अनुसार बर-बपूकी गणना बैठते हैं (ज्योति०) । -कलापक-पु० एक वास, सर्पाक्षी । -कूट-पु० नाकी-नक्षत्र । -चक्र-पु० नामिप्रदेशमें स्थित मुर्गके अडेके आकारका चक्र-विशेष जिसमेंसे सभी नाकियाँ निकली हैं (इठयोग) । -कवर-पु० पक्षी । -जँस-पु० कौआ; एक मुनि; एक चिरजीवी गुरुका जो इद्रमुन्न नामके जलाशयमें रहता है (म० भा०); कश्यपका पुत्र राजधर्म नामका गुरुका (म० भा०) । -तरंग-पु० कानोली; हिंदक; ज्योतिषी; लंपट । -ठिक-पु० नेपाली नीम । -देह-पु० शिवका हारपाक मुंगी जो अथत कृशकाय है । -नक्षत्र-पु० जन्म-नक्षत्र । -परीक्षा-खी० (वैष्णव) नब्ज देखना । -पात्र-पु० एक तरहकी जल घड़ी । -संडल-पु० आकाशय विपुल देहा, कांतिवृत्त । -बंज-पु० शरीरमें लुमी या बँसी हुई बस्तुको निकालनेका एक प्राचीन यंत्र (समुद्र) । -बलच-पु० क्रांतिवृत्त; समय जाननेका एक प्राचीन यंत्र । -विग्रह-पु० दे० 'नाडीदेह' । -जल-पु० वह पुराना धाव जिसमें भीतर ही भीतर छेद हो जाता और मवाद निकला करता है, नासुर । -शाक-पु० पड़भा नामका साग । -संस्थान-पु० नाडियोंका जाक । -स्नेह-पु० दे० 'नाडीदेह' । -हिंयु-पु० एक

शुभ जिससे एक तरहकी हीय प्राप्त होती है ।
 नाडीक-पु० [सं०] एक प्रकारका साग, कालशाक ।
 नाडीका-खी० [सं०] वासनलिका ।
 नाडीकेल-पु० [सं०] नारियल ।
 नाडीच-पु० [सं०] पड़भा नामका साग ।
 नागक-पु० [सं०] सिक्का; एक प्राचीन सिक्का (बृच्छ-कटिक) ।
 नास-पु० संबंधी, रिश्तेदार; संबंध, नाता; प्रशंसा; स्तुति-गीत (नमस्त) ।
 नासर, नासरि, नातरह-अ० दे० 'नतर' ।
 नासा-पु० संबंध, रिश्ता । -ते)द्वार-पु० रिश्तेदार । वि० सगा, संबंधी ।
 नासिन-खी० लकड़ीकी लकड़ी; लकड़ीकी लकड़ी ।
 नासी-पु० लकड़ीका लकड़ा; लकड़ीका लकड़ा; * नातेदार, संबंध (मीरा) ।
 नाते-अ० संबंधने, रिश्ता होनेवे; लिप, नास्ते ।
 नात्र-पु० [म०] शिव; कफि; स्तुति, प्रशंसा, आश्रय ।
 नासी-पु० [अ०] जर्मनीका एक राजनीतिक दल जो द्वितीय विश्वयुद्धके पहले बहुत प्रबल हो गया था ।
 नाथ-पु० [म०] प्रभु, अधीश्वर, स्वामी; पति; ब्रह्म आदिकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी; [हि०] गोरक्षपथी साधुओंकी एक उपाधि; संघेरा । * खी० दे० 'नथ' ।
 -ह्वारा-पु० [हि०] उदयपुर राज्यमें बलभमतानुयायी वैष्णवोंका एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथकी मूर्ति है ।
 -हरि-पु० पशु ।
 नाथता-खी० [सं०] नाथ या म्यामी होनेका भाव, प्रभुता ।
 नाथच-पु० [म०] दे० 'नाथना' ।
 नाथना-सं० कि० ब्रह्म आदिकी नाकको छेदकर उममें नाथ पहनाना; कई बस्तुओंकी एक साथ छेदकर उनमें रस्मी या ताना पहनाना, नस्ती करना; एक सूत्रमें बद्ध करना; (ला०) बलवर्ती बनाये रखना ।
 नाथबान्(बन्)-वि० [सं०] पराधीन; सनाथ ।
 नाद-पु० [सं०] शब्द, ध्वनि; अव्यक्त शब्द; वर्णोंके उच्चारणमें एक प्रकारका वाद्य प्रयत्न, अनुनामिक वर्ण, भारी शब्द, गर्जन; स्तुति करनेवाला । -सुद्रा-खी० एक तांत्रिक सुद्रा जिसमें दाहिनी सुद्रा बंधी रहती है पर बाँयेंठकी अलग रहते हैं ।
 नादना-सं० कि० बजाना । अ० कि० बजना; गरजना ।
 नादली-खी० दे० 'नादेखली' ।
 नादि-वि० [सं०] शब्द करनेवाला; गरजनेवाला ।
 नादित-वि० [सं०] बजाना हुआ ।
 नादिस-वि० [अ०] लज्जित, शर्मिंदा ।
 नादिवा-पु० नदी; वह ब्रह्म जिसे सायमें पुमा-पुमाकर योगी मील जाँगते हैं ।
 नादिर-वि० [अ०] अद्भुत, असाधारण । -शाह-पु० फारसका एक नृपश शासक जिसने सन् १७१८ में दिल्लीके पत्ताकीन बादशाह मुहम्मद शाहकी बराबर नगरमें कतलेआम कराया था । -शाही-वि० नादिरशाह संबंधी; नादिरशाहके अत्याचार जैसा । खी० निरंकुश शासन;

प्राथमिक अल्पाचार ।

माहिरी-खी—[अ०] मुगलकालका सदरी जैसा एक पक्ष-नावा जिसके फिनारोंपर कुछ काम किया रहता था; गंजीकेका वह पसा जिसे खेल्के समय निकालकर अलग रख देते हैं ।

माही(विन्)—वि० [सं०] नाद करनेवाला; बजनेवाला; गजनेवाला । [खी० 'नादिनी' ।]

मादेखी-खी—[अ०] रोगवाधासे बचनेके लिए यंत्रकी तरह गलेमें पहनी जानेवाली सम्यक्ष नामक पत्थरकी चौकीर टिकिया जिसपर कुरानकी एक विशिष्ट आवत, जो 'नाद अकियन' इन शब्दोंसे आरम्भ होती है, खुदी रहती है ।

मादेय-वि० [सं०] नदी-संबंधी; नदीका; नदीमें उत्पन्न; ग्रहण न करने योग्य, अग्रह; जो अदेय न हो, देय, देने योग्य । पु० सेंधा नमक; कासा; बानीका पेश ।

मादेयी-खी—[सं०] जलधंस; सुईजामुन, नारली; वैजयंती; अभिसंध हथ, अनेक ।

माधन-खी—खी० सुतकी रीकके लिए तकलेमें लगायी जाने वाली गोल टिकिया ।

माधना-स० कि० बैल, घोड़े आदिकी रस्ती या तस्मेके द्वारा सवारी, हल आदिमें जोड़ना या बाँधना, जोतना; जोड़ना; लगाना; आरम्भ करना; ठानना; रूँधना, पिराना; नाथना ।

माधा-पु० हल, कोलू आदिकी हरिसमे जुएके बाँधने वा फँसानेकी रस्ती या चमकेकी पट्टी ।

मान-खी० [फा०] रोटी, चपानी; तंदूरमें पकायी जानेवाली एक प्रकारकी मोटी खमीरी रोटी ।—**जुलाई-खी०** एक प्रकारकी टिकियाकी शक्की मिठाई ।—**छवाह-पु०** अजवायन ।—**पज-पु०** नानबाई ।—**पज्जी-खी०** नान-बाईका पेशा ।—**पाव-पु०** एक प्रकारकी खमीरी रोटी ।—**फरोश-पु०** नानबाई ।—**बाई-पु०** रोटी और खोरबा बेचनेका पेशा करनेवाला ।

मानक-पु० मिश्रकोंके आदि गुरु जिनका जन्म कार्तिक-शुक्ला पूर्णिमा, मबद्द १५२६ को और परलोकवास आधिन-कृष्णा दशमी, मबद्द १५९७ को हुआ (ये मूतिपूजा तथा बहुदेवोपासनाके विरोधी और एकेश्वरवादके प्रतिपादक थे) ।—**पंथ-पु०** नानक द्वारा खलासा हुआ संप्रदाय ।—**पंथी-पु०** नानक मतका अनुयायी ।—**शाह-पु०** गुरु नानक ।—**शाही-वि०** गुरु नानकसे संबद्ध, जिसका लगाव गुरु नानकमें हो; नानकके मतकी माननेवाला ।

नानकार-पु० वह माफी जिनके अनुमार अभींदार कुछ जमीनके लगानसे बरी रहते हैं ।—**हस्मी-खी०** वह नानकार जो किसी एक आदमीके नाममें हो ।—**देही-खी०** किसी गाँव या तासुकेमें सदासे चली आती हुई वह माफी जिसमें सभी हिस्सेदारोंकी हक हो ।

नानकीय-पु० एक प्रकारका मटमैले रंगका सूती कपड़ा जो पहले चीनमें बनता था पर अब अन्य देशोंमें भी बनने लगा है ।

नानसी-खी० ननिया सास ।

नानसरानी-पु० ननिया समुद्र, पति या पत्नीका नाना ।

नाना-पु० माताका पिता. मातामह; [अ०] पुदीना । * स० कि० डाकना; बुसाना; झुकाना । वि० [सं०] अनेक प्रकारके, कई तरहके. विविध; अनेक, बहुत । अ० विना ।—**कंद-पु०** पिंदाळ । वि० जिसमेंसे बहुत जड़ें निकली हैं ।—**छानि-पु०** अनेक स्वर उत्पन्न करनेवाला बाध-यंत्र (बीणा आदि) ।—**रस-वि०** विभिन्न स्वादोंका ।—**रूप-पु०** अनेक प्रकारके रूप । वि० जिसके अनेक रूप हैं; बहुविध ।—**वर्ण-पु०** ब्राह्मण आदि चार वर्ण । वि० अनेक रंगोंके ।—**विष-वि०** अनेक प्रकारके ।

नानाम्बवादी(विन्)—वि० [सं०] सांख्यमत माननेवाला । **नामार्थ-वि०** [सं०] अनेक अर्थोंवाला; जो कई तरहके कामोंमें आ सके, जिससे अनेक प्रयोजन सिद्ध हो सकें । **नानिहाल-पु०** नानीका घर । **नानी-खी०** नानाकी पत्नी, माताकी माता, मातामही । **सु०-मर जाना-होश उठ जाना**, होसला पस्त हो जाना ।

नान्द-वि० नन्हा, छोटा; नीच, अधम; बारीक, महीन । **सु०-कस्तना-दुःसाध्य कार्य करना** ।

नान्दहरीया-वि० छोटा, नन्हा । **नान्दा-वि०** दे० 'नान्द' । पु० नन्हा बच्चा ।

नाप-खी० किसी मानदण्डके अनुसार स्थिर की गयी किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई, गहराई, ऊँचाई, मात्रा आदि, परिमाण, माप; किसी मानदण्डके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई आदिका निर्धारण करनेकी क्रिया; लंबाईका मानदंड, वह स्थिर किया हुआ पैमाना जिसके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई निर्धारित की जाय ।—**जोख-सौख-खी०** नापने और तोलनेकी क्रिया; नापकर या तोलकर निर्धारित की गयी मात्रा या परिमाण । **नापदानी-पु०** दे० 'नाबदान' ।

नापना-स० कि० किसी मानदण्डके अनुसार किसी वस्तुके विस्तार, परिमाण, मात्रा आदिका निर्धारण करना ।

नापित-पु० [सं०] नार्ह, हजाम ।—**खात्ता-शाखिका-खी०** हजामकी दुकान ।

नापितायनि-पु० [सं०] हजामका लड़का ।

नापित्य-पु० [सं०] हजामका पेशा; हजामका लड़का । **नार-खी०** [फा०] नाभि; मध्यस्थान, केंद्रस्थान, मध्य-भाग ।

नार्रा-पु० [फा०] कस्तूरी मृगकी नाभिके भीतरकी कस्तूरीकी थैली ।

नाबदान-पु० घरके गलीज, गंदे पानी आदिके बजनेकी नाली । **सु०-में खूँह मारना-एगित कार्य करना** ।

नायक-पु० [सं०] हरीतकी ।

नामस-वि० [म०] नम-संबंधी. आकाशीय ।

नामाय-पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशीय राजा अजके पिता, दशरथके पितामह; अंबरीषके पिता; कश्यप वंशके एक राजा ।

नामागारिह-पु० [सं०] वैवस्वत मनुके एक पुत्र ।

नामादास-पु० एक प्रसिद्ध वैष्णव साधु जिन्होंने 'भक्त-माल' लिखा है ।

नाभि-खी० [सं०] पक्षियोंके बीचोबीच बेलनके आकारका

वह छिद्र जिसमें घुरी पधनायी जाती है, चक्रमध्य, पिकिका; जरायुज अंतुओंके पेटके भीनोरीच अंतरीकी तरहका गड्ढा, बोदी, तुंरूपी; कस्तूरी। पु० मुख्य राजा; प्रधान, नायक; क्षत्रिया; माओप्र राजाके पुत्र और कन्यसदेवके पिता (पु०); राजराजेवर। -कंडक, -गुडक, -शोकरक-पु० उमरी हुई छोटी। -च्छेदन-पु० नाक काटनेकी क्रिया। -ज, -जम्मा (स्मृ) -पु० मझा जिसकी ऊपरी विष्णुकी नाभिसे है। -नाडी-खी० दे० 'नाभिनाडा'। -नाखा-खी० नाभिकी नाखी। -पाक-पु० एक रोग जिसमें बच्चोंकी नाभि पक आती है। -भू-पु० मझा। -भूख-पु० शरीरका वह भाग जो नाभिके बाद ठीक उसके नीचे हो। -बर्चन-पु० नाक काटनेकी क्रिया; मोटापा। -बर्च-पु० अंधापुके जो बर्चोंमेंसे एक। -संबंध-पु० एक ही उद्देश्य या एक ही गौरवमें उपज होनेका नाता।

नामिका-खी० [सं०] कटनीका पेश; नाभि जैसा खात।

नामिक-वि० [सं०] नाभि-संबंधी; जिसकी नाभि उमरी हुई हो।

नामिक-पु० [सं०] नाभिका गड्ढा; (खीके शरीरमें) नाभि और जंघाके बीचका खात; कट; पीका; उमरी हुई नाभि।

नाम्न-पु० [सं०] शिव। वि० नाभि-संबंधी।

नाम-पु० [सा०] दे० 'नाम' (सं०); प्रसिद्धि; धाक; इज्जत; नस्ल; कुल; लंछन; सारगार। -ज्ञ-वि० जिसका नाम किसी बातके लिए विशेष रूपसे अंकित किया गया हो; प्रसिद्ध। -ज्ञात्री-खी० किसी कामके लिए चुनने या निश्चित करनेकी क्रिया। -द्वार-वि० नामवर, प्रसिद्ध। -निशान, -ब निशान-पु० चिह्न, पता। -वर-वि० नामी, प्रसिद्ध, विख्यात। -वरी-खी० ख्याति, प्रसिद्धि। पु० -आसमानवर होना-प्रसिद्धि होना। -उछलना-अपयश फैलना, बदनामी होना। -उछालना-अपयश फैलाना, बदनाम करना। -उठ जाना-अस्तित्व न रह जाना, स्मृतिकत बनी न रहना। -कमाना-दे० 'नाम करना'। -करना-प्रसिद्धि पाना, ख्याति प्राप्त करना।

(किसी दूसरेका)-करना-किमीकी दोषी ठहराना, किसीके मध्ये दोष मढ़ना। (किसी बातका)-करना-नाममात्रके लिए करना, कहनेभरके लिए करना; जितना या जिस तरह चाहिये उतना या उस तरह न करना। -का-नामवाला; नाममात्रके लिए, कहनेभरकी। (किसीके)-का कुप्ता वालना-किसीका अव्ययिक अवमान करना, किसीको अव्यंत नीच समझना। (किसीके)-किसीके पक्षमें; किसीके पास, किसीके प्रति; सरकारी या अन्य प्रामाणिक कार्याजमें किसीके नामके सामने (दर्ज); कानूनी, प्रामाणिक लेख द्वारा किसीके पक्षमें। -के लिए-केवल देखने या कहने चुननेके लिए, कहनेभरकी; जरा-सा; किमी काम या उपयोगके लिए, नहीं। -को-कहनेभरकी; केवल काम चलानेभरकी, अपयश, अव्यय; स्थानिके लिए। -को नहीं-कहनेभरकी भी नहीं, थोड़ा-सा भी नहीं, एक भी नहीं। -चलना-लोकमें स्मृति बनी रहना। -चारकी-कहनेभरकी, नाममात्रकी। (किसीके)-ढालना-(किसीके) नामके सामने दर्ज करना। -ढुबाना-मान-भयौटा मिटाना,

कलंक लगाना। -ढुबाना-मान-भयौटा नष्ट होना, कलंक लगना। (किसीका)-घरना-नामकरण करना; थोड़ा-थोड़ा करना, थोड़ी ठहराना; बदनामी करना। -घराना-'नाम घरना'का प्रे०। -न खेना-स्मरणक न करना, भय, डगा, खिजा आदिदेके कारण प्रसंगिक न खेना; दूर भागना, बहुत अधिक बचना। (''भी मेरा)-नहीं-तो मुझे गया-गुजरा समझना। -निकलना-किसी बातके लिए नाम प्रसिद्ध होना। तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चौरका नाम प्रकट होना। -निकलवाना-अपकीर्ति फैलाना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चौरका नाम प्रकट कराना। -निकाळना-सुख्याति या कुख्याति फैलाना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चौरका नाम प्रकट करना। (किसीके)-पधना-(किमीके) नामके सामने लिखा जाना या लिखा रहना। (किसीके)-पर-(किमीके) निमित्त, (किसीकी) स्मृतिमें; (किमीके) अरीमें। -पैदा करना-ख्याति प्राप्त करना। -बिकना-प्रसिद्धिके कारण लोकमें बहुत अधिक सम्मान होना, इतनी ख्याति होना कि नाम सुननेभरसे लोगोंके हृदयमें आदरका भाव जाग उठे। -बेचना-किसीका नाम लेकर दूसरोंकी सहायभूति, आदर या कुपाका प्राप्त करना। -मिट जाना-दे० 'नाम उठ जाना'। -मिटना-अस्तित्वका एक भी चिह्न न रहना, नामतक न बच रहना। -रखना-प्रतिष्ठाकी रक्षा करना। -खगना-दोषी ठहराया जाना। -खगाना-दोषी ठहराना। -खिलना-भरती करना। -खिलाना-भरती होना। (किसीका)-छेकर-(किमीके) नामके प्रभावमें; (किसीका) कहनाकर; (किमीका) स्मरण करके। -खेना-नाम पुकारना; याद करना; आदर, कृतज्ञताके भावसे स्मरण करना, तारीफ करना; वचन चलाना, विचार करना। (किसीके)-से-(किसीका) नाम लेकर; नाम कहनेभरसे, नाम चुनते ही। -हीना-ख्याति या यश फैलना; नाम लिया जाना। -(मो) निशान बाकी न रहना या मिट जाना-एकदम बरबाद हो जाना, इस प्रकार नष्ट होना कि अस्तित्वका कोई चिह्न ही न रह जाय।

नाम(व)-पु० [सं०] वह शब्द जिसमें किसी व्यक्ति, वस्तु या समूहका रोष हो, वाचक शब्द, सहा शब्द, आख्या, अभिधान, आह्ला। -करण-पु० नाम रखनेका संस्कार। -कर्म(व)-पु० नामकरण संस्कार। -कीर्तन-पु० गाने-बजानेके साथ या यों ही देशरका नाम पढ़ना। -कृत-पु० किसी वस्तुका असली नाम छिपाकर दूसरा नाम बतलाना (की०)। -ग्रह-ग्रहण-पु० नामके साथ संशोधन या उल्लेख करना। -ग्राम-पु० नाम और ठिकाना, नाम और पता। -देव-पु० एक प्रसिद्ध कृष्णोपासक। -द्वावशी-खी० अगहन सुदी तीजकी होनेवाला एक व्रत जिसमें गौरी, काली आदि बारह देवियोंकी पूजा होती है। -धन-पु० एक राग। -धरता-पु० [हिं०] नामकरण करनेवाला, पिता। -धराई-खी० [हिं०] अपयश, कुख्याति। -धानु-खी० संसापटसे बनायी हुई धातु (व्या०)। -धारक-वि० कहनेभरकी कोई नाम धारण करनेवाला, जिसका कोई विशिष्ट नाम लेनेभरके लिए हो,

जो अपने नामके अनुरूप कार्य न करता हो; विहित कर्म न करनेवाला (भाषण)। -**चारी (विन्)**-वि० नामका, नामक; नामचारक, तथाकथित। -**घेब-पु०** नाम, आस्था, संज्ञा; नामकरण। -**नामिक-पु०** विष्णु। -**निक्षेप-पु०** नामस्मरण (ज्ञे०)। -**निर्वैक-पु०** नामका उल्लेख करना। -**बोका-वि०** [हि०] नाम जपनेवाला। -**भाब-वि०**, अ० कहनेभरसो, अत्यथ। -**जाका-खी०**, -**संमह-पु०** संज्ञाशब्दोंका कोश। -**मुद्गर-खी०** वह मुद्रा या मुद्रिका जिसपर नाम खुदा हो। -**बश्-पु०** दिखावटी वस्त्र। -**रासी-वि०** [हि०] समान नामवाला, हमनाम। -**रूप-पु०** नाम और रूप। -**लेबा-पु०** [हि०] नाम लेनेवाला; उत्तराधिकारी। -**वर्जित-वि०** नामहीन; मूर्ख। -**बाचक-वि०** नाम बतलानेवाला। पु० व्यक्तिवाचक संज्ञा। -**सोब-वि०** जिसका केवल नाम रह गया हो; गत, मृत। पु० वस्तु। -**सख-पु०** गुण न होने हुए भी गुणवत्तक नामका कथन।

नामक-वि० [सं०] नामका, नामवाला (समासांतमें)। **नामकः (सस्)**-अ० [सं०] नामसे, नामके द्वारा। **नामांक-वि०** [सं०] दे० 'नामांकित'। **नामांकित-वि०** [सं०] जिसपर नाम लिखा या खुदा हो। **नामांतर-पु०** [सं०] दूसरा नाम, उपनाम। **नामा-पु०** नामदेव।

नामा (मन्त्र)-वि० [सं०] नामवाला, नामक (केवल बहु-श्रीहि ममात्मने और उत्तरपदके रूपमें प्रयुक्त)।

नामानुशासन-पु० [सं०] कोश।

नामापराध-पु० [सं०] किसी सम्मानित व्यक्तिका नामो-ल्लेख कर अशिष्ट शब्दोंका प्रयोग करना।

नामाभिधान-पु० [सं०] कोश।

नामावली-खी० [सं०] नामोंकी सूची; † वह कपड़ा जिसपर किसी देवताका नाम मंत्रों अंकित हो, रामनामी।

नामि-पु० [सं०] विष्णु।

नामिक-वि० [सं०] नाम-संबंधी।

नामित-वि० [सं०] झुकाया हुआ।

नामी-वि० नामवाला, नामक; प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर, जिसका वृत्त नाम हो। -**गिरामी-वि०** प्रसिद्ध, मशहूर, नामवर।

नाम्न-वि० [सं०] झुकावे योग्य; लचीला।

नायँ-पु० दे० 'नाम'। अ० नहीं।

नाय-पु० [सं०] नेता; नेतृत्व; नय, नीति; उपाय, युक्ति।

नायक-पु० [सं०] ले जाने या पहुँचानेवाला; राह दिखाने-वाला; किसी समुदाय या जनताके विशिष्ट उद्देश्यकी पूर्तिका मार्ग निर्देश करनेवाला प्रभावशाली व्यक्ति या अधिकारी, अग्रेसर; वह सेनापति जिसके अधीन दस और सेनापति हों; बीस हाथियों और घोड़ोंके दलका अग्राग्रा; प्रभु, अधीश्वर; हारका प्रधान मणि; श्रेष्ठ पुरुष, किसी समुदायका अग्रगण्य व्यक्ति; शृंगारका आलंबन रूप-धीरेण आदिते संज्ञक पुरुष (नायकके बार भेद थे हैं-धीरोदाय, धीरोदत, धीरललित, धीरप्रशान्त। इनमेंसे प्रत्येकके चार-चार भेद थे हैं-दक्षिण, घट, अनुकूल, शठ-इस तरहसे १६ भेद हुए। इनके तीन भेद और हैं-उत्तम,

मध्य, अधम); वह पुरुष जिसके चरितकी लेकर किसी काव्य या नाटक आदिकी रचना की गयी हो; एक वर्णवृत्त; एक राग; शब्द सुति।

नायका-खी० नायिका; वैधवाकी माता; कुटनी।

नायकाधिप-पु० [सं०] राजा।

नायकी-पु० एक राग। -**कान्हवा-पु०** एक राग।

-**महार-पु०** एक राग।

नायन-खी० दे० 'नाहन'।

नायब-वि० [अ०] प्रतिनिधित्व करनेवाला, स्थानापन्न, सहायक। पु० सहायक; मुनीम।

नायबी-खी० नायबका काम; नायबका पद।

नायिका-खी० [सं०] ले जाने या पहुँचानेवाली, राह दिखानेवाली; धीरेण तथा रूप-गुणसंपन्न स्त्री; नायककी पत्नी; वह स्त्री जिसका चरित किसी काव्यमें वर्णित हो; एक तरहकी कस्तूरी; दुर्गाकी कोई शक्ति, दे० 'अष्टनायिका'। **नारंग-पु०** [सं०] नारंगीका पेड़ या फल; विट; वमन; प्राणी; गाजर; पिप्पली-रस।

नारंगी-खी० एक तरहका मीठा नींबू, संतरा। वि० नारंगीके रंगका।

नार-वि० [सं०] नर-संबंधी, मनुष्य-संबंधी; आभ्यासिक। पु० नरसमुदाय; जल; हालका पैदा हुआ बछड़ा; सोंठ। -**कौट-पु०** अश्वकौट; छल करनेवाला; आशा दिखाकर उल्लेख करनेवाला। -**जीवन-पु०** सीना।

नार-खी० गर्दन; स्त्री; जुलाहोंकी डरकी। † पु० नाला; धौवर आदि नौपनेकी धतकी बोरी; मोटा रस्सा; औषध। -**बेबार-पु०** नाल, खेरी आदि, नारा-पीदी। **सु०**-नवाना; -नीची करना-ऊज्जा, संकीच आदिके कारण सिर नीचा कर लेना।

नारक-वि० [सं०] नरक-संबंधी। पु० नरक; नरकमें पड़ा हुआ जीव।

नारिक-वि०, पु० [सं०] दे० 'नारकी'।

नारकी (किन्)-वि० [सं०] नरकभोगी; नरकमें जाने योग्य। पु० नरकमें रहनेवाला।

नारकीय-वि० [सं०] नरक-संबंधी; नरक-भोगीकी तरहका, ऐसा जैसा नरक भोगीका हो; अति निकट, अति अधम।

नारद-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्माके मानस पुत्र माने जाते हैं (पुराणोंका कथन है कि ये बीणा बजाते और हरिका गुणगान करने हुए एक लोकसे दूसरे लोकमें घूमा करते हैं। ये बड़े कलहप्रेमी भी हैं और हसिलिष्ट ब्रह्मज्ञा लगानेवालोंके लोग 'नारद' कहा करते हैं। इनका एक नाम 'कलहदिय' भी है); विद्यामित्रके एक पुत्र; एक प्रजापति; एक पंचवर्षी-पुराण-पु० एक महापुराण जिसमें सनकादिकने नारदको संवोधित करके कथा कही है और उन्हें उपदेश दिया है।

नारदीय-वि० [सं०] नारद-संबंधी; नारदका।

नारना-अ० कि० ताड़ना, समझना, भँपना।

नारसिंह-वि० [सं०] जिसमें नरसिंहका वर्णन हो; नर-सिंह-संबंधी; नरसिंहका। पु० विष्णु।

नारा-पु० पूजा या कथा आदिमें प्रयुक्त लाल रंगका बीरा, रक्षावृत्त; चौदीर्घन, हजारपर्व; नवजात शिशुका नाक;

पेटकी लैनी; बरसाती पानीकी मोटी धारा वा उससे बना हुआ गढ़ड़ा, नाला—बहुविध फिरेड पतुष त्रिभि नारा—रामा०; किसी मँग या शिकायतकी ओर ध्यान दिखानेके लिए नार-नार छुल्ले की जानेवाली सामूहिक आवाज। खी० [सं०] जल (स्व०)।

नारायण-पु० नारायण, विष्णु।

नाराच-पु० [सं०] लोहेका पाण; पाण; एक वर्षावृत्त; २४ मात्राओंका एक छंद; जलहस्ती।

नाराचिका-खी० [सं०] सुनारों आदिका कौटा; छोटा नाराच।

नाराची-खी० [सं०] दे० 'नाराचिका'।

नारायण-पु० [सं०] विष्णु, भगवान्, परमात्मा; अजामिलका पुत्र; नारायणकी सेना; एक लक्ष; धर्मराज और दश प्रजापतिकी एक कन्यासे उत्पन्न एक पौराणिक ऋषि जो ईश्वरके अंशवतार और 'नर'के भाई माने जाते हैं; एक उपनिषद्।—क्षेत्र-पु० गंगाके किनारेकी चार हाथतककी भूमि।—श्रिष-पु० शिष; पीत चवन।—बलि-खी० आत्मघात आदिसे मरे हुए प्राणीकी और्ध्वदेहिक क्रिया करनेके पूर्व प्रायश्चित्तके रूपमें गङ्गा, विष्णु, शिव; वम और प्रेतके निमित्त दी जानेवाली बलि।

नारायणी-खी० [सं०] लक्ष्मी; दुर्गा; सतावर; सुदृढ़ मुनिकी पत्नी; कृष्णकी मेना जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्रमें दुर्वा-धनकी सहायताके लिए दिया था।

नारायणीय-वि० [सं०] नारायण-संबंधी; नारायणका। पु० नारद और नारायण ऋषिका सबादकूप उपाख्यान (म० भा०)।

नारायस-पु० [सं०] ऊम, और्व और आम्य-ये तीन पित्राण; वह चमस (चमचा) जिसमें इन पितरोंकी सोमरस दिया जाता है; पितरोंके निमित्त चमचमें रखा हुआ सोमरस; रुद्र-दैवत्व मंत्र जिनमें मनुष्योंकी प्रशंसा है (वै०)।

नारायसी-खी० [सं०] मनुष्योंकी प्रशंसा।

नारि-खी० दे० 'नारी'; गरदन।

नारिक-वि० [सं०] जलका, जलीय; आध्यात्मिक।

नारिकेल, नारिकेल-पु० [सं०] नारियल।—क्षीरी-खी० एक प्रकारकी मिरिची खीर।

नारिकेली, नारिकेली-खी० [सं०] नारियल; नारियलके पानीके खमीरसे बननेवाला एक मद्य।

नारिदान-पु० पनाहा।

नारियल-पु० छंबोतर और तिपहले फलोंवाला एक तावकी तरहका पेड़ जो गरम देशोंमें समुद्रका किनारा लिये हुए होता है; इस पेड़में लगनेवाला फल।—वर्णिमा-खी० बंई प्रांतका एक स्वीहार जिसमें लोग समुद्रमें नारियल फेंकते हैं।

नारियली-खी० नारियलका खोपड़ा; नारियलकी ताड़ी; नारियलका डुक्का।

नारी-खी० हरिसमें जूना बौधेकी रस्ती या लम्बा; * 'नाली'; दे० 'नाली'; † एक पक्षी; [सं०] खी, औरत।

नारय-पु० एक सूर्यवंशी राजा।—तर्ग-पु० खियोंकी फैलानेवाला पुष्प, बार, व्यभिचारी।—सीर्थ-पु० एक तीर्थ जहाँ विप्रशापसे ग्राह बनी हुई पंच अप्सरा-

ओंका अर्जुनने उद्धार किया था (म० भा०)।—दूषण-सुराषाण, दुर्जन-सप्तर्ग आदि जो खियोंके लिए दुर्गुणरूप हैं।—मुख-पु० एक प्राचीन देश (ह० सं०)।—रख-पु० नारीरूप रख, अति गुणवती खी।

नारीकेल-पु०, नारीकेली-खी० [सं०] नारियल।

नारीच-पु० [सं०] नाहिका नामक शाक।

नारीछा-खी० [सं०] चमेली।

नारु-पु० जूँ; अधिकतर गरम देशके लोगोंकी होनेवाला एक रोग जिसमें विशेषकर शरीरके निचले भागमें फुंसियाँ हो जाती हैं और उनमेंसे खीरेकी तरहकी पतली पतली सफेद चीज निकलती है, नहरूवा।

नार्षत्य-वि० [सं०] नृपति संबंधी।

नार्मद-वि० [सं०] नर्मदा-संबंधी; नर्मदाका। पु० नर्मदामें पाया जानेवाला शिवलिंग।

नार्मल स्कूल-पु० [अ०] वह स्कूल जहाँ अध्यापन-कलाकी शिक्षा दी जाय।

नार्पंग-पु० [सं०] नारंगीका पेड़।

नार्पतिक-पु० [सं०] विरायता।

नार्लदा-पु० एक प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय जो मगधमें था।

नार्लकी-खी० [सं०] शिवकी पोषा।

नाल-वि० [सं०] नरकुल सबधी था उससे बना हुआ।

खी० कमल आदिकी डडी; पोषिका पोला तना, काठ; नली; नाबी; बटूकी नली। पु० अविल; हरताल; मूठ; नाला; [हिं०] कसरत करनेके लिए बना हुआ भारी गोल पत्थर; नमबट; जुएका अयुध; जुआ मेलानेवालेकी दी जानेवाली रकम; एक जलीय पौधा।—काटार्ह-खी० [हिं०] नाल काटनेका काम; नाल काटनेकी उन्नत।—बॉस-पु० [हिं०] एक प्रकारका वंस।—बंश-पु० नरकंड, नरसल।

मु० (बया किसीका)—काटार्ह है?—बया किसीकी बकी-बूढ़ा है (खी०)। (कहाँपर)—गया होना—किमी स्थानका जन्मभूमिकी भाँति प्रिय होना, किमी स्थानमें बहुत अधिक प्रेम होना; किमी स्थानपर मत्त्व होना।

नाल-पु० [अ०] रागधर्म बचानेके लिए पोषेकी टाप और जूतेकी एड़ीके नीचे लगाया जानेवाला लोहेका अर्धचंद्राकार टुकड़ा।—बंद-पु० वह जो पोषेकी टाप या जूतेकी एड़ीमें नाल जड़नेका काम करे।—बंदी-खी० नाल जड़नेका काम, नालबंदका पेशा।—शालीरी-पु० एक प्रकारकी लकड़ीकी मेहराब जिसमें कई छोटी मेहराबें कटी होती हैं।

नालकी-खी० एक तरहकी सुनरी पालकी।

नाला-पु० दूरतक गया हुआ लंबा-चौड़ा गढ़ड़ा जिसमें होकर बरसातका पानी किसी नदी आदिमें पहुँचता है; उससे होकर बहनेवाली जलकी धार; रगीन गढ़ेदार सत, नारा। खी० [सं०] कमलदंड; पोषिका पोला तना।

नालि-खी० [म०] कमल आदिकी डडी; पद्मपुष्प; एक प्रकारका शाक; नाडी, सिरा; घटिका, २४ मिनट; हाथीका कान छेदनेका आवाज; पानी बहनेका नाला; घटा बजानेका धक्का।—जंघ-पु० डोककीजा।

नालि-खी० चिता—'बिरहिणि धी तो क्यू रघी, जली न पिबके नालि'—साखी।

मासिक-पु० [सं०] कमल; मैसा; एक तरहकी गोंदुरी ।
मासिका-झी० [सं०] पक्षरक्ष; माली; हाथीका कान छेदने-
 का औजार; घटिका; चमकेका चातुक; लुकाहोंकी सत
 छेदनेकी लकी; मासिका नामका शाक, पड़भा लाग; एक
 गंधद्रव्य ।

मासिकेर-पु०, **मासिकेकी**-झी० [सं०] दे० 'मारिकेर' ।
मासिता-झी० [सं०] एक प्रकारका पड़भा जिसके पत्ते
 सागके काम आते हैं ।

मासिवा-झी० [फा०] किसी प्रकारकी क्षति या कष्ट पहुँ-
 चानेवालेके विरुद्ध ऐसे व्यक्ति या अधिकारीके निकट किया
 गया आवेदन जो दोषोंकी उचित दंड दे सके, फरियाद,
 अभियोग । **मु०**-द्वारा-मासिवा करना ।

मासी-झी० [सं०] करेयुका साग; कमल; कमलकी डंढी;
 रक्तवाहिनी शिरा, धमनी; दंडमरका समय, च्छ्दी; हाथी
 का कान छेदनेका आला; एक बाघ; [हिं०] भोरी ।
 -क्षण-पु० नाश्वर ।

मासीक-पु० [सं०] पोला बाण जिसमें केवल मुँहपर कोहा-
 लगा रहता है; आला; कमलोंका समूह; कमलदंड; कमलछुल्ल ।

मासीकिनी-झी० [सं०] पक्षसमूह; कमलोंसे पूर्ण जालाशय ।

मासीप-पु० [सं०] करंज ।

मासुक-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य ।

मासीर-वि० कष्टकर बदल जानेवाला, सुकर जानेवाला ।

मासी-पु० नाम ।

मास-झी० जलके ऊपर तैरनेवाला काठ या टिनका लंबो-
 त्तरा लुला यान जो नदी, नाला आदि पार करने, मछली
 मारने, जलयाना करने आदिके काम आता है, तरंगि,
 वहिन, नौका । -छाट-पु० वह घाट जहाँ नावें लगे या
 ठहरें । **मु०** (सूलेमें)-बलाना-असभव कार्य करने
 चलना । -में धूल उड़ाना-एकदम झूठी बातें कहना,
 सफेद छूट बोलना ।

मासक-पु० [फा०] एक प्रकारका छोटा तीर; मधुमक्खीका
 डंका; * महाह, केवट ।

मासना-सं० कि० झुकाना, नवाना; ढालना; घुसाना ।

मासनीत-वि० [सं०] मुलायम, मृदुल ।

मासर, **मासरि**-झी० नाव, नौका; नावकी क्रीडा-
 'जनु मासरि खेलहि सर माही'-रामा० ।

मासिक-पु० [सं०] कर्णधार, माँझी, महाह; पोतारोही,
 नावपर यात्रा करनेवाला ।

मासी (विन्)-पु० [मं०] केवट, महाह ।

मासेक-पु० [अ०] उपन्यास ।

मास्य-वि० [सं०] माससे पार करने योग्य; प्रशंसनीय ।
 पु० माससे पार करने योग्य जल; नवापन, नवीनता ।

मास-पु० [सं०] अस्तित्व न रहना, सत्ता न रहना;
 प्रवृत्त, लय, संहार, बरबादी; त्याग; अदशम, लोप;
 पलायन; संकट । -कारी (विन्)-वि० नाश करनेवाला ।

मासक-वि० [सं०] नष्ट करनेवाला, मिटा देनेवाला;

मारनेवाला, संहार करनेवाला; दूर करनेवाला ।

मास्य-पु० [सं०] नष्ट करना; हटाना; मृत्यु; विसरण ।

वि० नष्ट करने या करानेवाला ।

मासना-सं० कि० दे० 'नासना' ।

५५

मासपासी-झी० एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़ ।

मासबाव (वर)-वि० [मं०] जो नष्ट हो जाय, भंगुर,
 नश्वर, अशाश्वत ।

मासित-वि० [सं०] जो नष्ट किया गया हो ।

मासी (विन्)-वि० [सं०] नाशशील, नश्वर; नाशक ।

मास्ता-पु० [फा०] जलपान, कलेवा ।

मास्य-वि० [सं०] नाश-योग्य ।

मासिक-वि० [सं०] जिसकी कोई वस्तु खी गयी हो (मृत्यु);
 खोयी हुई वस्तु-संबंधी । पु० खोयी हुई वस्तुका मासिक ।

-धन-पु० खोया हुआ धन ।

नास-पु० दे० 'नाश' । झी० नाकने टूटकी या सूँधी
 जानेवाली औषध; सुँवनी । -दान-पु० सुँवनी रखनेका
 पात्र ।

नासत्य-पु० [मं०] अधिनीकुमार ।

नासना-सं० कि० नष्ट करना, बरबाद करना, मिटा
 देना; मार डालना ।

नासपाक-पु० [फा०] कच्चे अवजारका छिलका; एक तरह-
 की आतिशबाजी ।

नासपासी-वि० [फा०] नासपाकके रंगका ।

नासा-झी० [सं०] नाक; प्राग्निद्विष; दरवाजेके ऊपर लगायी
 जानेवाली आधी लकड़ी, भरेटा; अङ्गुला; हाथीकी सूँघ;
 स्वर । -छिद्र-पु० नाकका छेद । -उधर-पु० नाकमें

फोफा निकलनेसे होनेवाला श्वर । -बाह-पु० भरेटा ।

-नाह-पु० एक रोग जिसमें नाकके छेद कफने रुँधे
 जाते हैं । -परिनाह-पु० सर्वासे नाकका बहना । -

पाक-पु० नाक पक जानेका रोग । -पुट-पु० नथना ।

-बेध-पु० नाकका बह छेद जिसमें कील या नथ पहनी
 जाती है । -ईश-पु० नाकका छेद । -रोग-पु० नाक-

का रोग । -वंश-पु० नाककी हड्डी । -विबर-पु०

नाकका छेद । -शोष-पु० नाकका कफ सूखनेका एक

रोग । -झाव-पु० सर्वासे नाकका बहना ।

नासाग्र-पु० [सं०] नाकका अग्र भाग, नाककी नोक ।

नासासु-पु० [सं०] कायफल ।

नासिकध्वज-वि० [सं०] नाकसे पूँकने या स्वर करने-
 वाला ।

नासिकध्वज-वि० [सं०] नाकसे पीनेवाला ।

नासिक-पु० महाराष्ट्रमें गोदावरीके ब्रह्मस्थानके समीपका
 एक तीर्थ । * झी० नासिका, नाक ।

नासिका-झी० [सं०] नाक; प्राग्निद्विष; नाककी शङ्करी
 कोई चीज; हाथीकी सूँघ; भरेटा । -ग्रन्थ-पु० नाकसे

निकलनेवाला श्लेष्मा ।

नासिक्य-वि० [सं०] नासिकासे उत्पन्न । पु० नाक;
 अधिनीकुमार; नासिक; अनुनासिक स्वर ।

नासिक्यक-पु० [सं०] नाक ।

नासिर-पु० [अ०] नल (गंध) लिखनेवाला; सहायक;
 विवेता ।

नासी-वि० दे० 'नाशी' ।

नासीर-वि० [सं०] आगे जानेवाला अग्रेसर; आगे बढ़कर
 चलनेवाला । पु० सेनाका अग्र, ह्वाकल ।

नाश्वर-पु० [अ०] पुराना बाघ जिसमें लंबा छेद हो

गया हो और जिससेसे प्रायः मवाद बहा करता हो, नाडीमण । *

नास्तिक-पु० [सं०] वह जिसे ईश्वर, परलोक आदिमें विश्वास न हो, वेद-निन्दक, नास्तिकका उल्टा (नास्तिकों के अपने छ दशन हैं । चाबोंक, बौद्ध और जैन नास्तिक माने जाते हैं । इनमें चाबोंक धोर नास्तिक है ।) वि० ईश्वरादिमें विश्वास न करनेवाला । -दर्शन-पु० छ नास्तिक दर्शन-चाबोंक, वेलाचार, माध्यमिक, सौत्रांतिक, वैभाषिक और जैन ।

नास्तिकता-खी०, **नास्तिकत्व-पु०** [सं०] नास्तिक होनेका भाव, ईश्वर, परलोक आदिमें अविश्वासबुद्धि ।

नास्तिक्य-पु० [सं०] दे० 'नास्तिकता' ।

नास्तिहृद्-पु० [सं०] आमका पेड़ ।

नास्तिवाद-पु० [सं०] नास्तिकता ।

नास्व-वि० [सं०] नाकका; नासिकासे संबद्ध; नासिकासे उत्पन्न । पु० (बैल आदिका) नाथ, ननैल ।

नाह-पु० पहियेकी नाभि; * नाथ, अधीश्वर; पति; [सं०] बंधन; फंदा, पाश; कोष्ठबद्धता ।

नाहटी-वि० नटखट ।

नाहट्टा-खी० इनकार ।

नाहर-पु० शेर, सिंह । -सॉस-पु० घोड़ोंका दम फूलनेका रोग ।

नाहक-पु० नहववा, नाक रोग; * सिद्ध-‘मारसि गार नाहक लागी’-रामा० ।

नाहिन-अ० नहीं ।

नाहिनै-अ० नाह नहीं है ।

नाही-अ० दे० ‘नहीं’ ।

नाहुच, नाहुचि-पु० [सं०] नहुचके पुत्र, गवाति ।

निहिका-खी० [सं०] मटर, कलाय ।

नित-अ० नित्य, हमेशा ।

निव-वि० दे० ‘निव’ ।

निदक-वि० [सं०] निंदा, बरगोई करनेवाला ।

निदन-पु० [सं०] निंदा करना, निंदा करनेकी क्रिया, गर्हण ।

निदना-अ० स० कि० निंदा करना, शिकायत करना ।

निदनीय-वि० [सं०] निंदा करने योग्य, वर्हणीय ।

निद्वना-वि० निंदा करना; निरादर करना ।

निद्वरिया-खी० निद्रा, नींद ।

निंदा-खी० [सं०] किसीके दोषका वर्णन; झूठमूठ किसीमें दोष निकालना, किसीमें ऐसा दोष बताना जो वास्तवमें न हो (सू०) अपवाद, शिकायत, बदनामी । -स्तुति-निंदा और प्रशंसा; व्याजस्तुति, निंदाके व्याजसे की गयी प्रशंसा ।

निंदाई-खी० निंदाके काम; निंदाके उजरत ।

निंदाना-अ० कि० दे० ‘निंदा’ ।

निंदारा-वि० जिमें नींद लग रही हो; नलसाया हुआ ।

निंदित-वि० [सं०] जिसकी निंदा की गयी हो या की जाती हो, गर्हित, दुषित ।

निंदिया-खी० नींद, निद्रा ।

निंदु-खी० [सं०] नृतवत्सा; मरा बच्चा जननेवाली खी ।

निंघ-वि० [सं०] निंदा करने योग्य, जिसकी निंदा की जाय, निंदनीय ।

निंघ-पु० [सं०] नीमका पेड़ । -सह-पु० नीमका पेड़; मदारका पेड़; बकायनका पेड़ । -बीज-पु० राजादन, पिनाक, चित्तौजी ।

निंघकौरी, निंघकौरी-खी० नीमका फल ।

निंघरिया-खी० नीमके पेड़ोंका बाग ।

निंघादित्य-पु० [सं०] निंघाके संप्रदायके आदि आचार्य जो राषिकाके ककणके अवतार माने जाते हैं ।

निंघार्क-पु० [सं०] निंघादित्य; एक वैष्णव संप्रदाय जिसका प्रवर्तन निंघादित्यने किया था ।

निंघू, निंघूक-पु० [सं०] कागजी नीबू ।

निंघपट-वि० [सं०] दे० ‘निंघपट’ ।

निंघासित-वि० [सं०] दे० ‘निंघासित’ ।

निंघामित-वि० [सं०] दे० ‘निंघामित’ ।

निंघम-वि० [सं०] छत्रिरीने रहित ।

निंघेप-पु० [सं०] दे० ‘निंघेप’ ।

निंघम-वि० [सं०] दे० ‘निंघम’ ।

निंघाक-वि० [सं०] जिसे किसी प्रकारका खटका न हो, निरुद्ध । अ० बिना किसी खटके था उरके ।

निंघाहु-वि० [सं०] शत्रुरहित ।

निंघाहृद्-वि० [सं०] शत्रुरहित, जहाँ किसी प्रकारका शत्रु न होता हो, जो किसी प्रकारका शत्रु न करे ।

निंघाम-पु० [सं०] क्रोध; बेनेनी; अशानि ।

निंघारण-वि० [सं०] अरक्षित ।

निंघालाक-वि० [सं०] पकात, निरजन ।

निंघास्व-वि० [सं०] शस्त्ररहित; कटगरहित, प्रतिबंधसे रहित ।

निंघाव्या-खी० [सं०] दती वृक्ष ।

निंघास्व-वि० [सं०] शाखाहीन ।

निंघाशीक-वि० [सं०] दे० ‘निंघाशीक’ ।

निंघाक-वि० [सं०] शक्तिहीन; निरस्तराह ।

निंघाक-पु० [सं०] एक प्रकारका बिना टूटका धान ।

निंघाव्या-वि० [सं०] बिलकुल खाली ।

निंघोष-वि० [सं०] जिसमें कुछ बच न जाय, सारा, समूचा; जिसमें कुछ करनेको न रह गया हो; पूर्ण, समाप्त ।

निंघोष-वि० [सं०] शोक या चिंतासे रहित ।

निंघोष-वि० [सं०] जिसका परिमार्जन करना आवश्यक न हो; माफ, स्वच्छ ।

निंघाव्या, निंघाव्याणी-खी० [सं०] काठकी सीढ़ी; सीढ़ी ।

निंघाव्या-वि० [सं०] कानिहीन, शोभाशून्य ।

निंघाव्याणी-खी० [सं०] काठकी सीढ़ी, सीढ़ी; खजूरका पेड़; एक नरहकी वास ।

निंघाव्या-पु० [सं०] मोक्ष, कल्याण, मंगल; विद्या, विज्ञान; भक्ति; प्रभाव; विशेष असर; शिव । वि० सर्वोत्तम ।

निंघाव्या-पु० [सं०] सॉस बाहर फेंकना ।

निंघाव्या-पु० [सं०] प्राणवायुके नासिका द्वारा बाहर निकलनेका व्यापार, नासिका बाहर निकलना; खंखी सॉस ।

निंघाव्या-अ०, वि० [सं०] दे० ‘निंघाव्या’ ।

निंघाव्या-वि० [सं०] अनगिनत, बेगुमार ।

होना; फटकर अलग होना; पका जाना, बराबर होना, पाया जाना; समाप्त होना, बीतना, गुजरना; सवारी होने या जोतारैके लिए शिक्षित होना । **मु० निकल जाय**—चला जाना; पहुँच जाना; कम हो जाना, घट जाना; जाता रहना, छो जाना; उपबोधमें न आना जाना; छिन जाना; माय जाना, पकड़में न आना; (खोका) अपना घर छोड़कर किसी प्रेमीके साथ चला जाना ।

निकलवाना—स० क्रि० निकालनेका काम करना ।

निकष—पु० [सं०] कमीदी; कमीदीपर कसनेकी क्रिया; सान जिसपर बड़ाकर इधियाए तेज करते हैं; (का०) कमीदीका काम करनेवाला; कसीदीपर सोना राखनेसे बनी हुई रेखा ।

निकषण—पु० [सं०] कसीदी; सानपर बढ़ानेकी क्रिया; चिसना, राखना ।

निकषा—स्त्री० [सं०] राखण आदिकी माता या राक्षसोंकी माता । अ० निकट ।

निकषात्मज—पु० [सं०] राक्षस ।

निकषोपक—पु० [सं०] सोना कसने या सान चढ़ानेका पथर ।

निकस—पु० [सं०] दे० 'निकष' ।

निकसना—अ० क्रि० दे० 'निकलना' ।

निकाई—पु० दे० 'निकाव' । स्त्री० भलाई; अच्छापन, बढ़ियापन; सुदरता ।

निकाज—वि० निकम्मा, बेकार ।

निकाना—स० क्रि० दे० 'निराना' ।

निकाम—वि० बेकाम, निकम्मा; खराब [सं०]; पर्याप्त, काफी; अभीष्ट; इच्छुक । अ० अत्यंत, भुरि, बहुत ज़र । पु० अभिलाषा; आविषय ।

निकासन—पु० [सं०] इच्छा, अभिलाषा ।

निकाश—पु० [सं०] समूह, समुदाय; सजातीय प्राणियोंका समूह; वास्तुस्थान; परमात्मा; शरीर; लक्ष्य, निशाना ।

निकाश्व—पु० [सं०] घर, गृह ।

निकार—पु० निकालनेका काम, बहिष्कार, निष्कासन; निकलनेका द्वार या मार्ग, निकास; [सं०] अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार; परामर्श; अनाज ओसना या फटकना; उठाना; मारण, बध; दुष्टता; द्वेष; विरोध ।

निकारण—पु० [सं०] मारण, बध ।

निकारमा—स० क्रि० दे० 'निकाठना' ।

निकाठ—पु० निकलने, निकालनेकी क्रिया या भाव; कुश्तीका एक पैंच; पैंचका काट ।

निकाठना—स० क्रि० बाहर करना या खाना; प्रकट करना; प्रवाहित करना, गिराना, बहाना; ब्यास या अन्य वस्तुओंके साथ मिश्री हुई वस्तुकी धुंधल करना; जमाना, उगाना; गली या सटी हुई वस्तुकी जाधारसे धुंधल करना; हल-बल या गाजे-बाजेके साथ एक स्थानसे चढ़ाकर दूसरे स्थानतक ले जाना; किसी ओरको बढ़ा हुआ करना; उत्पन्न करना, पैदा करना; बीचमें ले जाकर बाहर ले जाना या पहुँचाना, पार करना; शरीरपर उत्पन्न करना, उभारना; पास करना, शिक्षा समाप्त करके धुंधल करना; स्थिर करना, सीचाना, ठहराना; दूर करना;

नष्ट करना; प्राप्त करना; श्वाक करना, खोजना; संपन्न करना, पूर्ण करना; चलाना, आरंभ करना; छेड़ना; अलग करना, धुंधल करना; हल करना; निर्माण करना, तैयार करना; (नदी आदिकी) उद्गत करना, बहाना आरंभ करना; खोजना, आविष्कार करना, ईजाद करना; फैला, बँधा, या जुड़ा न रहने देना; प्रचलित करना, जारी करना, प्रवर्तित करना; प्रकाशित करना; बँचना, खपत करना; मिश्र करना, साधित करना; दंड पानेसे बचाना, मुक्त करना; पकड़, बंधन आदिमें मुक्त करना; रकम जिम्मे ठहराना; फाड़कर अलग करना; बराबर करना; विताना, गुजारना; सवारी होने या जोतारैकी शिक्षा देना ।

निकाठना—पु० निकालनेकी क्रिया; बहिष्कार; निर्वासन ।

निकाश—पु० [सं०] क्षितिज; सामीप्य; साध्य (समासांत में); इष्टय ।

निकाष—पु० [सं०] खुरचना; रगड़ना ।

निकास—पु० निकलने, निकालनेकी क्रिया या भाव; द्वार, दरवाजा, निकलनेका मार्ग या स्थान; बाहर या सामनेकी खुली जगह, बर्द-गिरका मैदान, सहन; उद्गम, मूलस्थान; गुजारेका रास्ता, निर्बाहका उपाय, सिलसिला; वशका मूल स्थान; बाणका उपाय, बचावका रास्ता, रक्षाकी युक्ति; आगका रास्ता; आय, आमदनी; [सं०] दे० 'निकाश' ।
—पत्र—पु० [हिं०] जमा-खर्च और वचनके हिनाबकी वही ।

निकासना—स० क्रि० दे० 'निकालना' ।

निकासी—स्त्री० निकालनेकी क्रिया या भाव; प्रधान; आय, प्रामि; बह रकम जो मालगुजारी आदि बेवकाल करनेके बाद जमींदारके पास बचे, मुनाफा; मालकी गलानगी या कदाई; रवबा; चुगी; खपत ।

निकाह—पु० [अ०] सुमलगाओंकी विवाहपद्धति; उस पद्धतिके अनुसार किया गया विवाह । —नामा—पु० वह कागज जिसमें निकाहकी शर्तें लिखी जाती हैं । —(दे०) **बेवर्गा**—पु० विधवा-विवाह । —शानी—पु० गवना, दिरागमन ।

निकाही—वि० स्त्री० निकाह करके लादी हुई, (वह स्त्री) जिसने स्वेच्छासे किसीने विवाह कर लिया हो ।

निकियाई—स्त्री० निकियानेकी क्रिया; उसकी उजरत ।

निकियाना—स० क्रि० नोचकर धजियाँ अलग करना; नोचकर साफ करना; बाल या पसलकी नोचकर अलग करना ।

निकिह—वि० दे० 'निकुह' ।

निकुंज—पु० [सं०] ताली, कुजी ।

निकुंजक—पु० [सं०] एक प्राचीन परिमाण; जलवैत ।

निकुंजन—पु० [सं०] सकुन्तल; दे० 'निकुंजक' ।

निकुंजित—वि० [सं०] सकुचित ।

निकुंज—पु० [सं०] सपन वृक्षों और लताओंसे आवृत स्थान, छायावट ।

निकुंजिकात्रा, निकुंजिकात्रा—स्त्री० [सं०] एक लता ।

निकुंज—पु० [सं०] एक असुर जिसे कृष्णने मारा था; कुंभकर्णका एक पुत्र; प्रजापति का एक पुत्र, एक विश्वदेव एक

और-सेनापति: कुमारका एक ज्युवर शिवका एक ज्यु-
वर: दंती वृक्ष ।

निर्कुभाख्यवीज-पु० [सं०] जमालमोटा ।

निर्कुमिस्त-पु० [सं०] नृपकी एक क्रिया ।

निर्कुमिका-स्त्री० [सं०] छकाके पथिमी द्वारके पास स्थित
एक गुफा: इस गुफामें बास करनेवाली देवी: तर्पण आदि
करनेका स्थान ।

निर्कुमी-स्त्री० [सं०] दंती वृक्ष ।

निर्कुम्ब, निर्कुम्ब-पु० [सं०] समूह ।

निर्कुलीनिका-स्त्री० [सं०] वंशपरंपरागत कला: जाति-
विशेषकी कला ।

निर्कुल-पु० [सं०] काटनेकी क्रिया, छेदन: विदारण:
काटनेका वंश । वि० काटनेवाला, छिन्न करनेवाला ।

निर्कुल-वि० [सं०] बहिष्कृत: तिरस्कृत: पराभूत: पतित,
नीच: शठ: बंचित, प्रतारित ।-प्रशु,-प्रसि-वि० कुश्चेला,
कमीना ।

निर्कुली-स्त्री० [सं०] बहिष्कार: तिरस्कार: परामर्श: दीनता,
दैव्य: नीचता: पृथ्वी: एक वस्तु: प्रतारणा, वंचना । वि०
नीच, कमीना ।

निर्कुली(तिव)-वि० [सं०] नीच, अधम ।

निर्कुल-वि० [सं०] काटा हुआ, छिन्न: विदोर्ण ।

निर्कुल-वि० [सं०] जाति, आचार आदिसे हीन, नीच,
अधम: तुच्छ । पु० नैकतथ, सामीप्य ।

निकेचाय-पु० [सं०] डेर लगाया ।

निकेत, निकेतक-पु० [सं०] घर, बासस्थान, निवास:
चिह्न ।

निकेतन-पु० [सं०] घर, बासस्थान: ध्यान ।

निकोचक, निकोचक-पु० [सं०] अकोलका पेठ ।

निकोचन-पु० [सं०] मकुचन ।

निकोसना-सं० कि० दाँत निकालना: दाँत पीसना ।

निकोमी-स्त्री० दे० 'निराई' ।

निक्रीड-पु० [सं०] क्रीडा, खेल ।

निकण, निकण-पु० [सं०] बीणा आदिका शब्द: स्वर ।

निकण-पु० [सं०] जुंचन ।

निक्सा-[सं०] लिखा, लीखा ।

निक्शित-वि० [सं०] फैला हुआ: रखा हुआ: ढाला हुआ:
धरोहर रखा हुआ: भेजा हुआ: परित्यक्त ।

निक्षुमा-स्त्री० [सं०] सूर्यकी पत्नी: आक्षणी ।

निक्षेप-पु० [सं०] फेंकने, ढालने, रखने, भेजने, चलाने,
त्यागने या अर्पण करनेकी क्रिया या भाव: धरोहर, अमा-
नत: धरोहर रखना: मरम्मत या सफाई करनेके लिए
किसी कारीगरको कोई वस्तु देना ।

निक्षेपक-पु० [सं०] निक्षेपकर्ता: धरोहर रखनेवाला ।

निक्षेपण-पु० [सं०] फेंकना: ढालना: रखना: त्यागना:
चलाना: अर्पण करना: धरोहर रखना ।

निक्षेपित-वि० [सं०] छिन्नबाया हुआ: बंधक या धरोहर
रखवाया हुआ ।

निक्षेपी(विद्यु)-वि० [सं०] निक्षेप करनेवाला: धरोहर
रखनेवाला ।

निक्षेष्टा(पु)-पु० [सं०] दे० 'निक्षेपक' ।

विक्षेप्य-वि० [सं०] निक्षेप करते योग्य ।

निर्लंग-पु० दे० 'निर्गण' ।

निर्लंगी-वि० दे० 'निर्गण' ।

निर्लङ्घ-वि० मध्य: धर-उपर नहीं, विकुल ठीक ।

निर्लङ्घरी-वि० कठोरहृदय, निन्दुर, निर्दय ।

निर्लङ्घ-वि० जो कहीं न टिके, जो धर-उपर मारा फिरे:
सब जगह सगका-कसाद करनेवाला: जो मन लगाकर
कोई काम न करे: जिससे कुछ करते-धरते न बने,
निकम्मा ।

निर्लङ्घ-पु० [सं०] कोदना: गाफना ।

निर्लङ्घक-अ० बेखटक-वि० निर्लङ्घ जाना अलबेले निरलङ्घ
और-वन० ।

निर्लङ्घा-अ० कि० निर्मल होना, साफ होना: (किसी
वस्तुपर) और अधिक रंग बदना: परिमार्जित होना ।

निर्लङ्घाना-सं० कि० स्पष्ट करना, साफ करना ।

निर्लङ्घर, निर्लङ्घर-वि० विछोनेसे रहित ।

निर्लङ्घरी-स्त्री० पक्षी रसोई, 'सखी'का उलटा ।

निर्लङ्घ-वि० [सं०] दस हजार करोड़: ठिगना, छोटे
कदका । पु० दस हजार करोड़की संख्या ।

निर्लङ्घक-अ० विकुल: नैकल ।

निर्लङ्घ-वि० [सं०] खोटा हुआ: जमाया हुआ: गाफा
हुआ ।

निर्लङ्घ-पु० दे० 'निर्लङ्घ' ।

निर्लङ्घ-पु० सफाई: सजावट

निर्लङ्घाना-सं० कि० स्पष्ट करना, साफ करना, निर्मल
बनाना: पवित्र करना, शुद्ध करना: पापसे रहित करना ।

निर्लङ्घा-पु० शकर तैयार करनेका कमाइ ।

निर्लङ्घिनी-वि० बिना लिकावटका, निशुद्ध, पवित्र ।

निर्लङ्घि-वि० [सं०] सारा, संपूर्ण, सब ।

निर्लङ्घना, निर्लङ्घना-अ० कि० बट जाना: समाप्त हो
जाना-बाती खली तेल निरुद्धा-कबीर ।

निर्लङ्घ-पु० दे० 'निर्लङ्घ' ।

निर्लङ्घना-सं० कि० निश्च करना, मना करना ।

निर्लङ्घ-वि० जिसमें किसी प्रकारका खोटापन न हो,
दोषरहित, निष्कलक, निशुद्ध: स्पष्ट, साफ । अ० निर्लङ्घ
होकर, बेखटके: सुलभसुहा ।

निर्लङ्घनी-सं० कि० नाशुनसे नोचना ।

निर्लङ्घा-वि० कठोर हृदयवाला, निन्दुर ।

निर्लङ्घ-पु० एक दूई ओ दबाके काम आती है ।

निर्लङ्घा-सं० कि० रजाई आदि सागना ।

निर्लङ्घ-वि० जिसमें गंध न हो, गंध-रहित ।

निर्लङ्घ-स्त्री० [सं०] बेसी, शूलका: हाथी बाँधनेकी जंजीर ।

वि० बेसीमें जकड़ा हुआ ।-हस्त-वि० (हैदकाण्ड) जिसके
हाथमें हथकड़ी पड़ी हो ।

निर्लङ्घ-पु० [सं०] बेड़ी ढालना: जंजीरसे बाँधना ।

निर्लङ्घि-वि० [सं०] बेड़ी या जंजीरसे बाँधा या जकड़ा
हुआ ।

निर्लङ्घ-पु० [सं०] यथाशक्ति पुर्ण ।

निर्लङ्घ-पु० [सं०] आरण, कवन: गोल-गोलकर किया
हुआ जप: इस प्रकार जपा जानेवाला मंत्र: उल्लेख

करना; मापण; बिना अर्थ समझे बाद करना ।
निगद्य-पु० [सं०] बाद की हुई चीजका पाठ करना; कथन ।
निगदित-वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त ।
निगम-पु० [सं०] वेद; वेदका कोई अंश; पथ, मार्ग; बलिपथ, हाट, बाजार; मेला; कारवाँ; बनजारा; निश्चय; अनुमानके पाँच अवयवोंमेंसे एक, निगमन (न्या०); न्याय-शास्त्र; वेदमन्त्र ग्रन्थ; वेदके अर्थका बोध करानेवाला ग्रन्थ । -**निवासी (सिद्)**-पु० विष्णु, नारायण ।
निगमन-पु० [सं०] हेतु, उदाहरण और उपनयनके उप-रान्त सिद्ध की गयी प्रतिज्ञाका पुनः कथन (न्या०); वेदके शब्दोंका उद्धारण; अन्तर जाना ।
निगमगम-पु० [सं०] वेद और शास्त्र ।
निगमी (सिद्)-वि० [सं०] वेदक ।
निगर-पु० [सं०] निगलना, भक्षण, भोजन; होमका पुर्वा; * समूह । * वि० सब, समस्त ।
निगरण-पु० [सं०] निगलना, भक्षण; गला; (छा०) पूरा-पूरा ग्रहण कर लेना; होमका पुर्वा ।
निगरी-वि० [फा०] देखरेख करनेवाला, निगरानी रखने-वाला, निरीक्षक, रखवाला ।
निगरा-वि० (बह रस) जिसमें जल न मिलाया गया हो, खासित । पु० मोतीके ५५ दाँते जो तोलमें ३२ रत्ती हों ।
निगराना-सं० कि० निर्णय करना; छोटकर अलग करना; स्पष्ट करना । अ० कि० पृथक् होना; स्पष्ट होना ।
निगरानी-खी० [फा०] देख-रख, निरीक्षण ।
निगह-वि० जो गुरु अर्थात् भारी न हो, हल्का ।
निगड़-पु० [सं०] दे० 'निगाह' ।
निगड़न-पु० [सं०] दे० 'निगरण' ।
निगलना-सं० कि० गलेमें नीचे उतार देना, घोंट जाना; खा जाना; वपया या धन हथप लेना या दवा बैठना ।
निगह-खी० [फा०] निगाह; दृष्टि । -**बान-वि०** देख-रेख करनेवाला, रखवाला, रक्षक । -**बानी-खी०** देख-रेख, रखवाली ।
निगद-पु० [सं०] दे० 'निगद' ।
निगर-पु० [सं०] निगलना, भक्षण; [फा०] नकाशी, बैल्-बूटा; एक फारसी राग ।
निगारक, निगाळक-वि० [सं०] निगलने, भक्षण करने-वाला ।
निगाळ-पु० [सं०] दे० 'निगार'; बोरेकी गरदन; हिमालयपर पाया जलनेवाला एक प्रकारका बीस ।
निगाळवान् (बत्)-पु० [सं०] धोखा ।
निगाळिका-खी० [सं०] एक वर्णशृङ्खला ।
निगाली-खी० जैविका वह भाग जो मुँहमें रहता है ।
निगाह-खी० [फा०] दृष्टि, नजर; दयादृष्टि, कृपा, मेहर-बानी; विचार, समझ; चिंतन, अवलोकन; ध्यान; परख; निरीक्षण । -**बान-वि०** दे० 'निगहबान' । -**बानी-खी०** दे० 'निगहबानी' । **खु०** -**रखना-देखरेख** रखना, रखवाली करना; ख्याल रखना । -**रुबरू-नकी** योंकी एक प्रकार जिते वे बादशाहके सामने किसीकी देश करते बक्त किया करते थे । इसका अर्थ है-सरकार, श्वर ध्यान दें ।

निगिध-वि० बहुत प्यारा, परम प्रिय; अत्यंत गोप्य ।
निगीर्ण-वि० [सं०] निगला हुआ; जिसका अंतर्भाव हो गया हो या किया गया हो ।
निगुंक-पु० [सं०] बनी गुधारी; नुस्त रचना ।
निगु-वि० [सं०] मनोह। पु० मन; मल; मूल; निष्पण ।
निगुषवा-वि० दे० 'निगोड़ा' ।
निगुण, निगुन, निगुना-वि० दे० 'निगुण' ।
निगुनी-वि० जो गुणी न हो, गुणीका उल्टा, गुणहीन ।
निगुरा-वि० जिसने गुरुत दीक्षा न ली हो, अदीक्षित; अधिक्षित ।
निगूह-वि० [सं०] अति गुप्त; रहस्यपूर्ण, जो जस्टी समझ-में न आये । पु० वनसुष्ट ।
निगूदार्थ-वि० [सं०] जिसका अर्थ स्पष्ट न हो, जिसका अर्थ छिपा हो ।
निगूहन-पु० [सं०] छिपाना, गोपन ।
निगूरीन-वि० [सं०] पकड़ा हुआ, गिरफ्तार किया हुआ; बन्धमें लाया गया; दबाया हुआ, जिसका दमन किया गया हो; विवादमें पराजित; जो बात न पकड़ गया हो; आक्रान्त; पीड़ित ।
निगूहीति-खी० [सं०] रोक; परामव ।
निगोटिब-पु० [अ०] बह प्लेट जिसपर प्रकाश और छायाका अनस उल्टा पड़ा हो अर्थात् जिसमें खुन और मफेटकी जगह काला और गहरा हो और काले-गहरेकी जगह खुलता और सफेद हो, 'पाजिटिव'का उल्टा । वि० कणतमक, कणरूप; नकारात्मक, जो निरव या अलोकिति सूचित करे ।
निगोबा-वि० अभागा, निराश्रय; जिसने कोई न हो, जो एकदम अकेला हो; निरुम्मा; * दुष्ट, नीच ।
निगोरा-वि० दे० 'निगोड़ा' ।
निग्रह-पु० [सं०] रोक, अवरोध; बन्धन; दंड देना, दबाना, दमन; बाँधना, बधन, अनुग्रहका अभाव; प्रवृत्तिमें निवारित करना; अभ्यास और वैराग्य द्वारा विनशुक्ति निरोध; मीमांसा, मत्संन्यास, परमात्मा । -**स्थान-पु०** बाद-विवादमें वह स्थल जहाँ अमंगल या अज्ञानकी बातें करनेसे वादीको सुख कहकर चुप कर दिया जाय (स्थान) ।
निग्रहण-पु० [सं०] रोक-बाम करनेकी क्रिया; बधन; दबाने, दंड देनेका काम, परामव । वि० रोकने या दमन करनेवाला ।
निग्रहना-सं० कि० पकड़ना; रोकना; दंड देना, दमन करना ।
निग्रही (हिन्)-वि० [सं०] निग्रह करनेवाला, दमन करने वाला, दंड देनेवाला ।
निग्राह-पु० [सं०] शाप; दंड ।
निग्राहक-वि० [सं०] जो अपराधियोंको अनुचित या न्यायविरुद्ध दंड दे ।
निर्बटिका-खी० [सं०] एक प्रकारका कट ।
निर्बटु-पु० [सं०] वह ग्रन्थ जिसमें शब्दोंके पर्यायोंका संग्रह हो (जैसे अमरकोश, हल्लायुध, वैजयंती इ०); वैदिक शब्द-कोश जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्तमें की है ।
निच-वि० [सं०] जिसकी लबाई और चौड़ाई वा मोटाई

दोनों बराबर हों, जो जितना लंबा हो उतना ही चौड़ा या गीठा हो। पु० पाप; मंद।

निघटना—अ० कि० घटना, क्रम होना—‘निघटत नीर मीनान जेतै’—रामा०; रीतना। स० कि० मिटाना, नष्ट करना।

निघरघट—वि० बिना घर-घाटका, बिना घर-बारका; जो धूम-फिरकर एक ही जगहपर रहे और हटानेसे भी न हटे; वेगमं, निर्लज्ज। **मु०**—देना—लजित किये जानेपर सफाई देनेके लिए बाँटे बनाना।

निघरा—वि० बिना घर-बारका; निगोड़ा, कमीना, नीच।

निघर्ष, **निघर्षण**—पु० [स०] रगक, घिसावट; पीसना।

निघस—पु० [स०] जोउन, आहार।

निघान—पु० [स०] आघात, प्रहार; अनुदात्त स्वर।

निघाति—स्त्री० [स०] निहारि; हथौड़ा।

निघानी(तिव)—वि० [स०] प्रहार करनेवाला, आघात करनेवाला; मारनेवाला, बध करनेवाला। [स्त्री० निघा-निनी^१]।

निघुह—पु० [स०] शब्द, आवाज; खोरगुल।

निघुह—वि० [स०] रगड़ा हुआ; रगक खाया हुआ; पराभूत।

निघुह—पु० [स०] खुर; खुरका चिह्न; हवा; गंध या खबर; शूकर; लकड़। वि० रगड़ा हुआ; छोटा, तुच्छ।

निघ्न—वि० [म०] अधीन, बन्धवर्ती, आयुध; युगित, गुणा किया हुआ।

निघ—पु० [स०] समूह; मंजय; निश्चय।

निचल—वि० अचल, अटल।

निचला—वि० नीचेका, नीचेवाला; अचल, स्थिर, स्थात।

निचाई—स्त्री० नीचा होनेका भाव, नीचापन, ऊँचाईका उलटा; नीचेकी ओरका विस्तार; नीचाता, खोटाई।

निचान—स्त्री० नीचापन; दातुर्आपन।

निचाप—पु० [म०] ढेर, राशि।

निचिन—वि० दे० ‘निश्चित’।

निचिही—स्त्री० [म०] अच्छी गाय।

निचित—वि० [स०] ढका हुआ; ब्याम; पूरित; सकीर्ण; संचिन; ऊपर उठाया हुआ; ढेर लगाया हुआ।

निचीता—वि० निश्चित।

निचुड़ना—अ० कि० निचोड़ना जाना, करना; सारहीन होना, बल या शक्ति निकल जानेसे क्षीण होना।

निचुल—पु० [स०] बँत; हिजलका वृक्ष; ऊपरका बल, निचोल।

निचुल—पु० [स०] उरखान; निचोल।

निचै—पु० दे० ‘निचव’।

निचोड़—पु० निचोड़नेपर निकली हुई वस्तु, निचोड़ा हुआ जल, रस आदि; सारांश, निष्कर्ष; तत्त्व, सार।

निचोड़ना—स० कि० दबाकर या पेंडकर किसी गोली या रसवाली वस्तुमेंसे पानी या रस निकालना, गारना; किसी वस्तुमेंका तत्त्व निकाल लेना; किसीकी सारी पूँजी हर लेना, किसीका सब कुछ छे लेना।

निचोना—स० कि० निचोड़ना।

निचोर—पु० दे० ‘निचोड़’।

निचोरना—स० कि० दे० ‘निचोड़ना’।

निचोल—पु० [स०] वह कपड़ा जिससे कोई वस्तु ढकी जाय, आच्छादन-बख, ढकनेका कपड़ा; चदरा; पिछावन-की चादर; जोहार; उत्तरीय; शिथीकी ओढ़नी।

निचोळक—पु० [स०] सदरी; चोली; कवच, उरखान।

निचोड़ना—स० कि० दे० ‘निचोड़ना’।

निचोई—वि० नीचेकी ओर किया हुआ, नीचेकी ओर झुका या झुकाया हुआ; नीचा।

निचोई—अ० नीचेकी ओर।

निच्छवि—पु० [स०] एक प्राचीन जिला, आधुनिक तिरहुत।

निच्छवि—पु० [म०] एक वर्णसंकर जाति।

निच्छर—पु० निर्जन स्थान, निर्मलिक, एकांत स्थान। † वि० निरा।

निछत्र—वि० जिसके निपर छत्र न हो, जो छत्रचारी न हो, निरछत्र, बिना छत्रका, छत्ररहित; राजभिह्वरहित; राज्यहीन; जिसमें क्षत्रिय न हों, क्षत्रियहीन, निम्नक्षत्रिय।

निछरमा—पु० एकान्त स्थान।

निछरिया—अ० दे० ‘निछान’।

निछर—वि० निरछत्र, कपटरहित।

निछराना—वि० जिसमें मिलावट न हो, एकमात्र, केवल।

निछराना—वि० जिसमें मिलावट न हो, विशुद्ध, खालिस, केवल, एकमात्र। अ० एकदम, बिल्कुल।

निछावर—स्त्री० किसी वस्तुकी किसीके स्तिर या शरीरके ऊपरसे घुमाकर दान कर देने या कहीं रखने, छोड़ने आदिका एक ढोढका (वह हस्त भाषनासे किया जाता है कि शरीरकी बाधा उस वस्तुमें चली जाय या कष्टकारक अथवा उस वस्तुकी पाकर ही ठग ही जाय); निछावर की जानेवाली वस्तु; नेगा; बलि; उरसंग; श्वाभ। **मु०**—करना—समर्पण करना; त्यागना।—**होना**—ममर्पित किया जाना; त्याग दिया जाना। (**किसीका किसीपर**)—होना—किसीके लिए जान देना।

निछावरी—स्त्री० दे० ‘निछावर’।

निछोड़—वि० जिसमें प्रेम, दवा न हो, निर्मम, निष्ठुर।

निछोड़ी—वि० दे० ‘निछोड़’।

निज—वि० [स०] अपना, स्वकीय, जो पराया न हो (इन शब्दके साथ प्रायः ‘का’ विभक्तिका प्रयोग करते हैं); खान, प्रधान; पक्का; सच्चा। अ० निरंकुश, प्रधानन, अधिकारतः यथार्थमें, निश्चयपूर्वक।—**स्व**—पु० अपना भाग।—**करके**—निश्चित रूपसे, अवश्य।—**कार**—खात अपना, व्यक्तिगत।

निजकाना—अ० कि० पास पहुँचाना; नजदीक आना या जाना।

निजकारी—स्त्री० बँटाईकी फसल; वह जमीन जिसके लगान-के बदले उसमें उपजती हुई चीज हो ली जाय।

निजव—वि० जनरहित, निर्जन, सुनसान।

निजात—स्त्री० दे० ‘नजात’।

निजाम—पु० [अ०] सिलमिला, तरतौब; बंदोबस्त; हैदराबादके नवाबकी उपाधि; प्रबंधक; कान्यारचना।

निजि—वि० [स०] शुद्ध।

निजी—वि० निजका।

विशु-वि०, अ० दे० 'मित' ।

मिह्रा-वि० मित्रका ।

मिहोर-वि० बलहीन, कमजोर ।

मिह्रनक-वि० निर्बल, नीरव ।

मिह्रना-अ० कि० पकड़न झूठ जाना, क्क्या न रहना; कभी हुई वस्तुने रिक हो जाना, खाकी हो जाना-‘मुबपर एक फुर नहिं पहुँची मिहरी गये सब मेह’-सुह; सार-हीन हो जाना; अपनेको निर्दोष बताना, सफाई देना ।

मिह्रादवारा-स० कि० झपटकर ले लेना ।

मिह्रावारा-अ० कि० झुक-छिपकर देखना, छिपे तीरसे देखना; † (भागका) गुप्तता । † स० कि० आग गुप्तता ।

मिटक, मिटिक-पु० [सं०] मसक, लज्जा ।

मिटकाइ, मिटिकाइ-पु० [सं०] संकर, महादेव ।

मिटकेक्षण, मिटकेक्षण-पु० [सं०] दे० ‘मिटकाइ’ ।

मिटोइ-पु० टोका, मुहता ।

मिटि-अ० दे० ‘नीति’ ।

मिटका, मिटका-वि० विना काम-धंधेका, खाकी बैठा गुमा, बेकार; जो बेकार बैठा रहे, अकर्मण्य ।

मिटका-पु० बेकारीका समय; जाग वा जीविकाका अभाव ।

मिहुर-वि० दे० ‘मिहुर’ । -ई, -ता-खी० मिहुरता, निर्दयता ।

मिहुराई-खी० क्रूरता, दयाहीनता, मिहुरता ।

मिहुराई-पु० मिहुरता ।

मिहुर-पु० दुरा स्थान, कुठंबा; कुर्बान, शोचनीय अवस्था, दुर्दशा-‘जिनकी पिय परदेन सिधारी तो सिय परी मिहुर’-सुह । सु०-पकना-विषय स्थितिमें पकना, दुर्दशा-ग्रस्त होना ।

मिहुर-वि० निर्मय, निर्मीक; साहसी, हिम्मती; ठीठ । -पन, -पना-पु० मिहुर होनेका भाव, निर्मयता ।

मिहाना-स० कि० दे० ‘मिहाना’ ।

मिहान-पु० [सं०] पक्षी या विमानका (पीरे-पीरे या तेजीसे) ऊपरसे नाचेकी ओर जाना ।

मिह-अ० निकट, पास-‘कविता चंदनके मिहै नाँव मि चंदन होह’-कबीर ।

मिहाल-वि० थककर चूर, शिथिल, आँत; पछा, विना छस्ताहका ।

मिहंत-अ० दे० ‘मितात’ ।

मिहंत-पु० [सं०] खियोंके शरीरका कमरसे नीचेका भाग, कटिका अथवा माग, घूतक; कमर; पहलकी दाह; मदीका दाहवाँ किनारा; कंधा । -बिह-पु० मज्जकाकार मिहंत ।

मिहंविनी-वि० खी० [सं०] झुरर और भारी मिहंतवाली खी ।

मिह-अ० मिला, प्रतिदिन, सदा । -मिह-अ० हर रोज, अनुदिन ।

मिहारा-अ० [सं०] बहुत अधिक, अत्यंत, अतिशय रूपमें; एकदम; पूर्णतः मिहंत; हमेशा; हर हालतमें; निश्चय पूर्वक ।

मिहक-पु० [सं०] सात अथोलोकोसे एक ।

मिहात-अ० [सं०] अत्यंत, बहुत अधिक; एकदम, निश्चयपूर्वक ।

मिहिक-अ० दे० ‘मित’ ।

मिह-वि० [सं०] सदा बना रहनेवाला, जो कभी नष्ट न हो, अक्षर, अविनाशी, अनवर, शाश्वत; जगति और विनाशसे रहित; प्रतिदिन किया जानेवाला या होनेवाला, प्रतिदिनका; (वह विहित कर्म) जो नियम किया जाय । पु० समुद्र; अनिवार्य कर्म । अ० प्रतिदिन, हर रोज; सदा, हमेशा । -कर्म(इ), -कृत्य-पु० प्रतिदिन किया जानेवाला कार्य; प्रतिदिन किया जानेवाला विहित कर्म जिसके न करनेसे पाप होता है (जैसे-संबा, पंचयज्ञ, शौच, स्नान आदि) । -क्रिया-खी० दे० ‘नित्यकर्म’ । -गति-पु० बाध, हवा । -जात-वि० मिला उत्पन्न होनेवाला (गी०) ।

-दान-पु० प्रतिदिन दान देनेका कर्म । -मर्त्य-पु० शकर, महादेव । -नियम-पु० कभी भंग न होनेवाला नियम । -नैमित्तिक-वि० (वह कर्म) जो नियम की ही और नैमित्तिक भी-जैसे पार्वण आदि । -प्रति-अ० प्रति-दिन, हर रोज । -प्रमुद्रित-वि० सदा प्रसन्न रहनेवाला । -प्रलय-पु० मिला होनेवाला प्रलय, सुप्तुति (वे०) । -बुद्धि-खी० किसी वस्तुको नित्य समझना । -भाव-पु० नित्यत्व । -मित्र-पु० प्रीति या संबंधकी निस्वार्थ भावसे रखा करनेवाला मित्र । -भुक्त-पु० परमात्मा (जो तीनों कालोंमें बंधनसे रहित रहता है) । वि० जो सदाके क्षिप मुक्त ही गया हो । -यज्ञ-पु० प्रतिदिन किया जानेवाला यज्ञ-जैसे अग्निहोत्र । -भुक्त-वि० बराबर तत्पर रहनेवाला । -यौवना-वि० खी० जिसका यौवन स्थायी हो । खी० द्रौपदी । -बैकुण्ठ-पु० सबलोकके अंतर्गत विष्णुका निवासस्थान । -व्रत-पु० वह व्रत जिसका सदा पालन किया जाय । -शक्ति-वि० जो सदा सत्य रहे, जिनसे सदा शका लगी रहे । -श्री-खी० स्थायी काति । -स्वस्थ-वि० जो कभी धैर्य न छोड़े; सदा सत्त्वगुणसे युक्त रहनेवाला, जो रमणीय और तमोगुणकी छोककर सदा सत्त्वगुणका अवलंबन करे ।

-सम-पु० जातिके २४ भेदोंमें एक (न्या०) ।

-समाप्त-पु० वह समाप्त जिसका विग्रह कर देनेपर उसके पदोंसे अजीब अर्थ न निकाला जा सके (जैसे-जमदग्नि, जमदग्नि) । -सिद्ध-पु० आत्मा । -सेवक-वि० जो सदा दूसरोंकी सेवा करे । -स्नानी(विन्)-वि० प्रतिदिन नियमपूर्वक स्नान करनेवाला । -स्वाध्यायी(विन्)-वि० निरंतर नियमपूर्वक वेदाध्ययन करनेवाला ।

-होता(तु)-वि० जो नित्य हवन करे । -होम-पु० सदा किया जानेवाला होम ।

मिहता-खी०, मिहत्त्व-पु० [सं०] नित्य होनेका भाव, अविनाशिता, अक्षरता ।

मिहता-अ० [सं०] सर्वदा ।

मिहत्तु-वि० [सं०] प्रत्येक क्रतुमें यथासमय होने या आनेवाला ।

मिहत्ता(हात्)-अ० [सं०] हर रोज, प्रतिदिन; सदा, हमेशा ।

मिहत्ता-खी० [सं०] दुर्गाकी एक शक्ति; मनसादेवी ।

मिहत्ता-पु० [सं०] बराबर बना रहनेवाला सदाचार, ऐसा सदाचार जिसके आचरणमें कभी छुटि न हुई हो ।

नित्यान्वय-पु० [सं०] वह आनंद जो सदा बना रहे । वि० वह जो सदा आनंदसे रहे ।

नित्यानध्याय-पु० [सं०] ऐसा अक्सर जब वेदका अध्ययन-अध्यापन सर्वथा त्याग दिया जाय ।

नित्यानित्य-वि० [सं०] नित्य और अनित्य, नश्वर और अनश्वर । -वस्तुविषयक-पु० मक्ष सत्य है और जगत् मिथ्या-यह विवेचन या शिक्षा ।

नित्याभिरुचि-वि० [सं०] प्राणरक्षा मात्रके किए कुछ खाकर और शेष सभी वस्तुओंको त्यागकर सदा योग-साधनमें लगा रहनेवाला (योगी) ।

नित्याभिप्राय-वि० [सं०] ऐसी भूमि जहाँके रहने-वाले सदा शत्रुता रखें या जिसमें प्रबल शत्रु बसें ।

नित्यादि-वि० [सं०] (वीतादि) जो स्वतः चले ।

नित्योदित-वि० [सं०] सदा उदित होनेवाला; जिसका उदय अपने आप हुआ हो ।

नित्योद्युक्त-पु० [सं०] एक बोधिसत्व ।

निर्धन-पु० हस्त, खंभा ।

निधरना-अ० कि० पानी या किसी अन्य तरल पदार्थका हल प्रकार स्थिर होना कि उसमें घुला हुआ मेल आदि नीचे बैठ जाय, घुले हुए मेल आदिके नीचे बैठ जानेसे जल आदिका स्वच्छ हो जाना ।

निधार-पु० वह जल जो निधर गया हो; निधरे हुए पानीमें नीचे बैठे हुए वस्तु ।

निधारना-स० कि० पानी या किसी अन्य तरल पदार्थको हल रूपमें लाना कि उसमें घुला हुआ मेल आदि नीचे बैठ जाय ।

निधारणा-स० कि० दे० 'निधारना' ।

निद-पु० [सं०] विष । वि० निदा करनेवाला ।

निर्दय-वि० दे० 'निर्दय' ।

निद्रु-पु० [सं०] मनुष्य । वि० जिसे दाहका रोग न हो ।

निर्वरणा-स० कि० अपमान करना, अन्याय करना; तिरस्कार करना, त्यागना; डेठा करना, मात करना, गुच्छ बनाना, नीचा दिखाना ।

निर्वर्णक-वि० [सं०] विखलाने-बनानेवाला ।

निर्वर्णन-पु० [सं०] प्रदर्शन; उदाहरण, दृष्टान्त ।

निर्वर्णना-खी० [सं०] अर्थालंकारका एक भेद जहाँ दो पदार्थोंमें मिश्रता होती हुए भी उपमा द्वारा उनके संबंधकी कल्पना की जाय ।

निर्वलन-पु० दे० 'निर्वलन' ।

निर्वहना-स० कि० अलाना ।

निर्वाच-पु० [सं०] गरमी; बाम; ग्रीष्म ऋतु; पसीना, स्वेद; पुरुषस्य ऋषिका एक पुत्र (विष्णुपु०) । -कह-पु० सर्व । -काक-पु० ग्रीष्म ऋतु । -सिद्धि-खी० गरमीके महीनोंकी सङ्कीर्ण नदी ।

निर्वान-पु० [सं०] आदि कारण; कारण; रोगका कारण; रोगका निर्णय; कृष्णों द्वारा वह निर्णय करना कि कौन रोग हुआ है; ब्रह्म; बौद्धोंकी रस्मी; अंतःशुद्धि । अ० अंतमें, आखिर । वि० निकट, दृष्ट, गया-मुजरा ।

निर्वाहक-वि० [सं०] कठिन; निर्दय; असह्य ।

निर्वाह-पु० दे० 'निर्वाह' ।

निर्विष-वि० [सं०] जिसपर लेप किया गया हो; प्रबलित ।

निर्विषा, निर्विषिका-खी० [सं०] इन्धायकी ।

निर्विष्यास, निर्विष्यासन-पु० [सं०] अनवरत धितन,

बार-बार स्मरण करना ।

निर्विष्ट-वि० [सं०] निराश्रित; आदिष्ट ।

निर्वेक्ष-पु० [सं०] आशा; शासन; कथन; समीपता,

निकटता; वात्र, बरतान ।

निर्वेक्षिनी-खी० [सं०] दिक्षा । वि० खी० आशा देनेवाली ।

निर्वेक्षी (निश्च)-वि० [सं०] आशा देनेवाला ।

निर्वेष्ट (ष्ट)-वि० [सं०] निर्वेक्ष करनेवाला ।

निर्वेक्ष-पु० दे० 'निर्वेक्ष' ।

निर्वोच-वि० दे० 'निर्वोच' ।

निर्वि-खी० दे० 'निर्वि' ।

निद्र-पु० एक अक्ष ।

निद्रा-खी० [सं०] प्राणियोंकी वह अवस्था जिसमें संज्ञा-ब्रह्मा नाडियोंका काम रुक जाता, अँसे बंद हो जाती, शरीर शिथिल पड़ जाता और चेतना जाती-सी रहती है; आलस्य; नीलन । -अर्थ-पु० जागरण । -बोध-पु० ध्यानकी वह अवस्था जो निद्रा-सी हो । -बुद्ध-पु० अंधकार । -संज्ञक-पु० कफ, श्लेष्मा ।

निद्राण-वि० [सं०] सोता हुआ; मोहित ।

निद्रावमण-वि० [सं०] जो सी रहा हो; जिसे नींद आ रही हो ।

निद्रावस-वि० [सं०] तद्रात्रि; सोया हुआ ।

निद्रालु-वि० [सं०] सोनेवाला; निद्राशील । पु० विष्णु; अंदा; बनतुलसी; नली नामक गंधद्रव्य ।

निद्रित-वि० [सं०] सोया हुआ, सुप्त ।

निधश्च-अ० वेष्टके, निःशंक होकर; विना रुके, बैरोक; विना हिचकके ।

निधन-पु० [सं०] नाश, मरण; अंत, समाप्ति; कुंडलीमें आठवाँ स्थान; जन्म-मरणसे सानर्थी, लोकहर्ता और तैरे-सर्वों नक्षत्र; पाँच या सात अवयवोंवाले सामका अंतिम अवयव जिसे उग्रता, प्रसन्नता और प्रतिहर्ता मिलकर गाते हैं; गीतका अंतिम भाग; परिवार, कुल; परिवारका मुखिया । वि० विनाहीन, गरीब, दरिद्र । -कारी (विष्)-वि० बातक, नाशक । -क्रिया-खी० अंत्येष्टिक्रिया । -पति-पु० शिव ।

निधनी-वि० धनहीन, दरिद्र ।

निधर्का-अ० दे० 'निधर्क' ।

निधातव्य-वि० [सं०] रखने योग्य, निधान करने योग्य ।

निधान-पु० [सं०] रखना, स्थापन; आधार, आश्रय; आकर, खजाना; संपत्ति; घर; किसी वस्तुको लीन होनेका स्थान, व्यवस्थान ।

निधि-खी० [सं०] किसी वस्तुका आधार; खजाना; वह गन्ना हुआ धन जिसके स्वामीका पता न हो; कुंदरेके नौ रत्न (पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुट, कुंद, नौल और खरै); समुद्र; विष्णु; शिव; नीकी संस्था; जीवक नामकी ओषधि; जलिका नामका गंधद्रव्य; बहुगुण-संपन्न व्यक्ति । -गोच-पु० वह जिसने छद्म अंगोंके साथ वेदका अध्ययन किया हो, अनुमान । -माध, -प-पति,

-वाक-पु० कुनेर ।

विचीनः, विचीनर-पु० [सं०] कुनेर ।

विचुवन-पु० [सं०] मैथुनः कैल, कीचः आम्बोद प्रयोदः कंपन ।

विचैय-वि० [सं०] रत्नने योग्य, स्थापन करने योग्य ।

विध्यात-वि० [सं०] विचारित, विसपर मनन किया गया हो ।

विध्यात-पु० [सं०] देखना, दर्शन ।

विभूय-पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।

विध्यान-पु० [सं०] शब्द ।

निर्नक्षु-वि० [सं०] जो मरना या भागना चाहता हो ।

निनद-पु० [सं०] दे० 'निनाद' ।

निनदित, निनादित-वि० [सं०] ध्वनित, शब्दित । पु० शब्द ।

निनदी(दिन्), निनादी(दिन्)-वि० [सं०] शब्द करने-वाला ।

निनवन-पु० [सं०] निष्पादनः छिन्नकना, परिवेक करना ।

निनरा-वि० न्यारा, जुदा ।

निनई-पु० [सं०] वेदके शब्दोंका विशेष प्रकारका उच्चारण ।

निनाद-पु० [सं०] गन्धः, गुंजारः रत्नके पहिचोंकी आवाज ।

निनादना-अ० क्रि० निनाद करना ।

निनान-पु० अंतः क्लृप्त । अ० अतमें, आखिर । वि० आखिरी दर्जेका, चौरा, बुरा, तुच्छ ।

निनारा-पु० खटमल ।

निनार, निनारा-वि० न्यारा, जुदा-वि० हरि जल हम मीन बापुटी कैसे विचहिं निनारै-सूरः दूरः चोखा, नुकीला ।

निनारी-पु० कुमीकी तरबके लाल दाने जो बीभ, मसूरे तथा गुँठके भीतरी भागों आदिमें निकल आते हैं ।

निनीना-अ० क्रि० नवाना, छुकाना ।

निनीरा-पु० ननिहाल ।

निनानवे-वि०, पु० दे० 'निन्यानवे' ।

निन्यानवे-वि० नन्वे और नी । पु० निन्यानवेकी सख्या, ९९ । मु० -का चकर या फेर-चन बढानेकी धुन ।

निन्यारा-वि० दे० 'निनारा' ।

निर्पंग-वि० पंगु, अपाहिज ।

निष-पु० [सं०] कलमः कदमका पेड़ ।

निषजना-अ० क्रि० उपजना, उत्पन्न होना, जमना; पुष्ट होना, परिपक्व होना; निकलना; बनना ।

निषजी-स्त्री० उपजः कायदा, मुनाफा ।

निषट-अ० एकदम, बिलकुल, नितांत, निरा ।

निषटना-अ० क्रि० दे० 'निषटना' ।

निषटना-सं० क्रि० दे० 'निषटना' ।

निषटारा-पु० दे० 'निषटारा' ।

निषटारा-पु० दे० 'निषटारा' ।

निषट, निषाठ-पु० [सं०] पाठ, अभ्यसन ।

निषतन-पु० [सं०] नीचे आना उतरना; गिरना, पतन ।

निषतित-वि० [सं०] नीचे उतरा हुआ; गिरा हुआ ।

निषरवा-स्त्री० [सं०] पिच्छल भूमि; बुद्धभूमि ।

निषत्र-वि० जिसमें या जिसपर पत्ते न हों, पत्रहीन ।

निषकाश-पु० [सं०] वह हवा जिसके पत्ते हल गये हों ।

निर्पाक्ष-वि० पंखसे होना; सहायकसे रहित (ला०)-'निर्पाक्ष करि छोड़ि देहु'-धन० ।

निर्पागुर-वि० पंगु, जिसके हाथ-पाँव बेकाम हो गये हों, अपाहिज ।

निपाक-पु० [सं०] बहुत अधिक पक्व जाना, अत्यधिक पक्व ।

निपात-वि० दे० 'निपत्र' । पु० [सं०] गिरना, पतन, अभःपतन; आक्रमण; चलाना, फेंकना; मृत्तु; विनाश; दूसरा सिरा; वह शब्द जो वर्णगम आदिके द्वारा किसी प्रकार बन जाता हो और व्याकरणके नियम (सूत्र)से निष्पन्न न होता हो (व्या०) ।

निपातक-पु० [सं०] पात्र, दुष्कर्म ।

निपातन-पु० [सं०] गिरानेका काम, मारना, पीटना; नाश करना, विनाशन; नीचे गिरना या उबकर नीचे आना; शब्दका अनिवारित रूपमें नि-पत्र होना ।

निपातना-अ० क्रि० गिराना; नाश करना; बध करना, मार डालना; काटकर गिराना; काट डालना ।

निपातित-वि० [सं०] गिराया हुआ; हत या नष्ट किया हुआ; अनिवारित रूपमें बना हुआ ।

निपाती-वि० दे० 'निपत्र' ।

निपाती(तिन्)-वि० [सं०] गिरानेवाला; फेंकनेवाला मारनेवाला, नाशक ।

निपान-पु० [सं०] कृप, पशुओंके पाना पीनेके लिए कुएँके पान बनाया जानेवाला हॉम; दूध दुहनेका बरतन, गड्ढा; खप्ता; इस प्रकार पीना कि कुछ बच न रह, नि-शेष पान ।

निपीडक-वि० [सं०] बहुत अधिक पाक; पट्टुचानेवाला; निचोड़ने, पेरनेवाला; मलने या दबानेवाला ।

निपीडन-पु० [सं०] वहन अधिक पीडा; पट्टुचाना; निचोड़ना, गारना; पेरना, दबाना या मलना ।

निपीडना-स्त्री० [सं०] दे० 'निपीडन' । * म० क्रि० पीडा पट्टुचाना; दबाना, मलना; गारना; पेरना ।

निपीडित-वि० [सं०] बहुत अधिक पीडित; दबाया हुआ; निचोड़ा हुआ, गारा हुआ; पेटा हुआ ।

निपीत-वि० [सं०] पान किया हुआ; शोषित ।

निपीति-स्त्री० [सं०] पीनेकी क्रिया ।

निपुषना-अ० क्रि० (दाँत) उबरना या दिखाना ।

निपुण-वि० [सं०] चतुर, प्रवीण, कुशल; ठीक; पूर्ण ।

निपुणता-स्त्री० [सं०] निपुण होनेका भाव या क्रिया ।

निपुणाई-स्त्री० चतुरता, प्रवीणता, कुशलता ।

निपुत्री-वि० जिससे पुत्र न हो; स्तान्नरहित ।

निपुन-वि० दे० 'निपुण' ।-ई, -ता-स्त्री० निपुणता, कुशलता, प्रवीणता ।

निपुनाई-स्त्री० दे० 'निपुणाई' ।

निपूत-वि० जिसे पुत्र न हो, पुत्रहीन ।

निपूता-वि० दे० 'निपूत' । [स्त्री० 'निपूती']

निपेटी-वि०, स्त्री० सुख-अपाति न आँखि निपेटी-धन० ।

निपोबना-अ० क्रि० (दाँत) उबारना या दिखाना ।

निकन-वि० मपूर्ण, पूरा । अ० पूर्ण रूपमें, पूरे तौरसे ।

निफरना—अ० कि० अँसकर आर-पार होना; स्पष्ट होना, साफ होना ।

निफल—वि० दे० 'निफल' ।

निफला—खी० [सं०] ज्योतिष्मती कृता ।

निफला—पु० [अ०] अनयन, झगडा ।

निफारना—स० कि० आर-पार छेद करना, अँसकर आर-पार करना; स्पष्ट करना, साफ करना ।

निफालन—पु० [सं०] देखना, अवलोकन ।

निफोट—वि० स्पष्ट, व्यक्त ।

निबंध—पु० [सं०] बंधन; सलस्रता; संग्रह-ग्रथ; लेख; गीत; देशाभ्युदयके बीमारी; प्रतिबंध; हथकड़ी; कारण; नीय; वह वस्तु जिसे देनेकी प्रसिद्धा की गयी हो; बाँधने या जोड़नेकी क्रिया; मरकारी आशा (कौ०) ।

निबंधन—पु० [सं०] बाँधनेकी क्रिया; बंधन; बाँधा या सितारकी धुँटी; रचना; रोकना, अवरोध करना; बंधन या लगावका आश्रय, आधार; संबंध, जुड़ाव; हेतु, कारण; सामन्यतः आदि ।

निबंधनी—खी० [सं०] बंधनका साधन ।

निबंधी (ध)—पु० [सं०] बाँधनेवाला; लेखक, रचयिता ।

निबंधी (धिव)—वि० [सं०] बाँधनेवाला; जुडा हुआ, संबद्ध; कारणस्वरूप; उत्पन्न करनेवाला ।

निब—खी० [अ०] अंग्रेजी फलमोंके होल्डरोमें खोसी जानेवाली लोहे आदिकी नुपौली वस्तु जिससे लिखा जाता है, जौमी ।

निबडोरी, निबडोरी—खी० नीमका फल या बीज ।

निबटना—अ० कि० निवृत्त होना, छुटकारा पाना, फुरसत पाना, करावन होना; करनेकी बाकी न रह जाना, समाप्त होना, खत्म होना, निःशेष होना; निबटाया जाना, फैसला होना, तय होना; समाप्त होना, शौचक्रियासे निवृत्त होना ।

निबटना—स० कि० समाप्त करना, खत्म करना; पूरा भद्रा कर देना, लुका देना; तय करना, फैसला करना, निर्णय करना ।

निबटारा, निबटाव—पु० दे० 'निबेटारा' ।

निबेटारा—पु० निबटनेका भाव या कार्य, फुरसत, अवकाश, छुट्टी; समाप्ति, खातमा; निर्णय, फैसला ।

निबड—वि० दे० 'निबिड' ।

निबडना—अ० कि० दे० 'निबटना' ।

निबड—वि० [सं०] बँधा हुआ; गुंथा हुआ, ग्रथित; लिखा हुआ, लिखित, प्रणीत, रचित; जुडा हुआ, संबद्ध; जुडा हुआ, खचित, जटित; रोका हुआ, अवरोध; आवृत ।

निबर—वि० दे० 'निबल' ।

निबरना—अ० कि० बँधा, फँसा या लगा न रहना, बंधन या लगावसे मुक्त होना; छुटकारा पाना, मुक्त होना, प्राण पाना; बचा रह सकना; निवृत्त होना, फरागत होना, फुरसत पाना; पूरा होना, निभना; निबटना, तय होना; पृथक् होना, उल्लक्षण न रहना, सुलक्षणा; बना न रहना, खत्म होना, भिद जाना—'जुशि कुंजर सव निबरे, गोरा रहा अकेल'—पं० ।

निबड्ढण—पु० [सं०] मारने या नाश करनेकी क्रिया ।

मारण । वि० नाश करनेवाला ।

निबल—वि० दे० 'निबल' ।

निबलाई—खी० निबलता, क्षीणता ।

निबह—पु० दे० 'निबह' ।

निबडना—अ० कि० बच निकलना, प्राण पाना, पार पाना; छुट्टी पाना; निबाह होना; ज्योंका त्यों बना रहना, कभी मग न होना, किसी स्थिति, संबंध आदिमें फर्क न पड़ना; किया जा सकना; पूरा होता रहना; बाध रह सकना, निभना; पूरा होना, पालन होना ।

निबडुर—वि० (बह स्थान) जहाँ पहुँचकर कोई लौट न सके (यमद्वारा) ।

निबडुरा—वि० जो सत्राके लिए चला जाय (गाली) ।

निबाह—पु० निबाहनेका काम या भाव; निबोह, खपत, गुजारा; किसी स्थिति, संबंध आदिकी बनाये या जारी रखनेका काम, रक्षा, पालन; पूर्ति; छुटकाराका उपाय, प्राणका मार्ग, बचनेका रास्ता, बचाव ।

निबाहक—वि० निबाह करनेवाला ।

निबाहना—स० कि० निबोह करना, ज्योंका त्यों बनाये रखना, कभी मग न होने देना, किसी स्थिति, संबंध आदिकी रक्षा किये जाना; किये जाना, पूरा करते रहना, बाध रहना, निभाना; पूरा करना, पालन करना; निकालना, साधना ।

निबिड—वि० [सं०] घना, गहरा; कठिन ।

निबुका—पु० दे० 'नीबु' ।

निबुकना—अ० कि० बच निकलना, मुक्त होना, छुटकारा पाना, बंधनसे मुक्त होना; बंधनका ढोला होना, खिल-कना; सपष्ट होना ।

निबेडना—स० कि० बंधनहित करना, मुक्त करना, छुड़ाना; एकमें मिली हुई वस्तुओंकी पृथक्-पृथक् करना, छँटना; सुलक्षणा, उल्लक्षण न रहने देना; निबडाना, फैसला करना; दूर करना, पृथक् करना; पूरा करना, समाप्त करना ।

निबेडा—पु० छुटकारा; प्राण, बचाव; एकमें मिली वस्तुओंके पृथक् होने या किये जानेका काम या भाव; सुलहाव; निबटारा, निर्णय; दूरीकरण, हटाव; पूर्ति, पूरा करना ।

निबेरना—स० कि० दे० 'निबेडना'; छँडना, त्यागना; वसूल करना—'सूर मूर अकूर गये लै ब्याज निबेरत कपो'—सूर ।

निबेरा—पु० दे० 'निबेरा' ।

निबेसित—वि० निबंशित ।

निबेडना—स० कि० दे० 'निबेरना' ।

निबोव—पु० [सं०] समझना; सीखना; बतलाना, समझाना ।

निबोचन—पु० [सं०] समझने या समझानेकी क्रिया ।

निबोरी—खी० दे० 'निमकौरी' ।

निबोरी—खी० दे० 'निमकौरी' ।

निभ—वि० [सं०] बहुत चमकदार, प्रखर प्रकाशवाला; समान, स्रष्टा (समासांतमें) । पु० प्रकाश; व्याज; छल-कपट; प्रकट होना ।

निभना—अ० कि० दे० 'निबडना' ।

विभक्त्य-वि० जिते वा जिसमें किसी प्रकारका खटका न हो, अनरहित । अ० बेलटके, निरंशक ।

विभक्त्य-वि० जिसका भरण या विभाष कठ नया हो; जिसकी पोष झुक गयी हो ।

विभक्त्य-वि० जिसे अरोसा न हो; बिना सहायके, निराधार ।

विभक्त्य-वि० जिसे कोई सहाय न रह गया हो, असहाय, आश्रयहीन ।

विभाक्त्य-वि० दे० 'निबाह' । वि० भावरहित ।

विभाक्त्य-वि० मायवीन, अभावा ।

विभाक्त्य-स० क्रि० दे० 'निबाहना' ।

विभाक्त्य-पु० [सं०] देखना, दर्शन; माखन करना ।

विभक्त्य-वि० [सं०] बीता हुआ, मृत जो बहुत उर गया हो, अति मीत ।

विभक्त्य-वि० [सं०] रखा या बरा हुआ; छिपा हुआ, गुप्त, अरहित; जो अस्त होने या रहा हो; नष्ट, विनीत; अचल, स्थिर; पूर्ण, भरा हुआ; निर्बल, सदा; नुप, साँत जो जोरदार न हो, भीसा; बंद बंद किया हुआ; आहत; पीर, पैरबाद । पु० नमता ।

विभक्त्य-वि० [सं०] जीर, हट ।

विभक्त्य-वि० दे० 'निर्भात' ।

विभक्त्य-पु० [सं०] किसी कार्य, उत्सव आदिमें या आश्र, मीत्र आदिमें सम्मिलित होनेका निवेदन, हुजुबा, दावत, न्योता (निमंत्रण वह है जिसका पालन न करनेपर मनुष्य दोषका भागी होता है-सिद्धांतकोमुदी) । -पञ्च-पु० वह पञ्च जिसमें किसी कार्य, उत्सव आदिमें सम्मिलित होनेका निवेदन किया गया हो, निमंत्रणका पत्र ।

विभक्त्य-स० क्रि० निमंत्रण देना, न्योता देना ।

विभक्त्य-वि० [सं०] जो आमंत्रित किया गया हो, आहूत ।

विभक्त्य-पु० [सं०] कील, खँटी; शङ्का ।

विभक्त्य-पु० दे० 'नमक' ।

विभक्त्य-वि० नौका अवार; नयकीन टिकिया ।

विभक्त्य-वि० नौका फल या उसका बीज ।

विभक्त्य-वि० [सं०] दूषा हुआ, तल्लीन, गर्क ।

विभक्त्य-पु० [सं०] डुबकी लगाना; दायन करना ।

विभक्त्य-पु० [सं०] डुबकी लगाना; डुबकी लगाकर स्नान करना, अवगाहन करना ।

विभक्त्य-स० क्रि० डुबकी लगाना, अवगाहन ।

विभक्त्य-वि० [सं०] दूषा हुआ ।

विभक्त्य-स० क्रि० दे० 'निबटना' ।

विभक्त्य-स० क्रि० दे० 'निबटना' ।

विभक्त्य-पु० दे० 'निबटना' ।

विभक्त्य-वि० जो माता हुआ या मत्त न हो; शांत ।

विभक्त्य-पु० [सं०] स्पष्ट, पर मंद स्वरमें किया जानेवाला उच्चारण ।

विभक्त्य-पु० [सं०] विनिमय ।

विभक्त्य-वि० दे० 'नयाव' ।

विभक्त्य-पु० [सं०] भाष; मृत्यु; नौकी जगह, ढाल, खाल; जलाशय ।

निभावा-वि० नीचा, निम्न, डाकुआँ; मज, विनयशील ।

निमि-पु० [सं०] एक ऋषि जो दक्षविषके पुत्र थे; इक्ष्वाकु-वंशके एक राजा जो मिथिलाके विदेहवंशके प्रवर्तक थे; पल्लवोंका गिरना, निमेष । -राक्ष-पु० राजा जनक ।

निमिष-पु० दे० 'निमिष' ।

निमिष-पु० [सं०] कारण; साधनमूल कारण; चिह्न, लक्षण; लक्ष्य, लक्ष्य, फल; शत्रुता; दिखानेवाला कारण, गहना । -कारण-हेतु-पु० समवायी और असमवायी कारणसे मित्र कारण-जैसे घटनिर्माणमें कुम्हार, चाक, दंड आदि (व्या०) । -कृष्-पु० कौआ । -बध-पु० बंधने आदि-के कारण होनेवाली (वायकी) मृत्यु । -वि-वि० शत्रुता जाननेवाला । पु० ज्योतिषी ।

निमिषक-वि० [सं०] (किस्तीके) निमिष होने या किया जानेवाला; उत्पन्न, जन्मित ।

निमिष-पु० [सं०] अँस बढ़ करना, पलक मारना; पलकोंका गिरना; उठना समय जितना एक बार पलक गिरनेमें लगे, क्षण; कलका सञ्चयन; पलकोंका एक रोग; परमेश्वर । -क्षेत्र-पु० नैमिषारण्य ।

निमिषांतर-पु० [सं०] पलकाका अंतर ।

निमिषित-वि० [सं०] निमीलित । पु० पलक गिराना, निमिष ।

निमीलन-पु० [सं०] अँसे मँदना या झपकाना; मरण; छायात ग्रहण (व्यो०) ।

निमीलन, निमीलन-वि० [सं०] निमीलन; देखते हुए न देखना; छल ।

निमीलित-वि० [सं०] मँदा हुआ, बंद (निमिष); जो जड़ या सुप्त हो गया हो; अकारणच्छन्न; झुग ।

निमृष्ट-वि० जिसे शोकनेका साहस न हो, जो धृष्टतापूर्वक कुछ शोक न सके, नुप रहनेवाला ।

निमृष्ट-वि० बंद ।

निमृष्ट-वि० दे० 'निमृष्ट' ।

निमेष-पु० दे० 'निमेष' ।

निमेष-वि० जो मिट न सके, अनिष्ट, जो बना रहे ।

निमेष-पु० [सं०] दे० 'निमेष' ।

निमेष-वि० पलक । पु० [सं०] दे० 'निमिष'; अँलोंके फटनेका रोग; एक वक्ष (य० भा०) । -कृष्-वि० विजली । -कृष्-पु० जुगम् ।

निमेषक-पु० [सं०] पलक; जुगम् ।

निमेषण-पु० [सं०] पलक मारना ।

निमोना-पु० चने या मटरके पिते हुए कच्चे दानोंसे तैयार की हुई मसालेदार दाढ़ ।

निमोनी-वि० शैल कटनेका पहला दिन ।

निमि-वि० [सं०] गहरा; नीचा । पु० गहराई; नीची जमीन; ढाल; दरार । -य-वि० नीचेकी ओर जाने-वाला । -गत-पु० नीची जमीन । वि० नीचे गया हुआ । -गा-वि० नदी; पहाड़ी श्रृंग । वि० नीचे जानेवाली । -शोषी(विह्व)-वि० जो किलेके नीचेसे या नीची जमीनपरसे लड़े । -किञ्चित-वि० नीचे लिखा हुआ ।

निमिषित-वि० [सं०] नीचे लिखा हुआ ।

नियन्त्रण-पु० [सं०] बाटी ।

निष्कोच-वि० [सं०] विषय, नीचा-ऊँचा, ऊबड़-खाबड़ ।

निष्पुक्ति-खी० [सं०] सूर्यस्त ।

निष्कोच-पु० [सं०] सूर्यका अस्त होना ।

निष्कोचिनी-खी० [सं०] वह पुरी जहाँ सूर्य अस्त होता है ।

नियन्त्रण-वि० [सं०] नियमन करने योग्य ।

नियन्त्रण-वि० [सं०] नियमन करनेवाला, नियन्त्रण में रखनेवाला; शासनकर्ता; दंड देनेवाला; विशिष्ट नियमके अनुसार संचालन करनेवाला, संचालक; चलाने-वाला, हॉकनेवाला । पु० सारथि; परमेश्वर । [खी० 'नियन्त्री' ।]

नियन्त्रण-पु० [सं०] नियमों में बाँधकर रखना, वश में रखना, स्वच्छंद न रहने देना, प्रतिबंधन ।

नियन्त्रित-वि० [सं०] नियन्त्रण में रखा हुआ, प्रसिद्ध; प्रतिबंध द्वारा जिसका व्यापार या कार्य सीमित कर दिया गया हो ।

निय-वि० निज ।

नियत-खी० दे० 'नियत' । वि० [म०] नियमबद्ध, बँधा हुआ; नियुक्त, तैनात; स्थिर किया हुआ, पक्का किया हुआ; तय किया हुआ, निश्चित, मुकर्रर, सयत । -व्यावहारिक काल-पु० अत, यात्रा, आद, विवाह आदिके लिए नियत काल (ज्यो०) ।

नियताम्ना (स्मृ)-वि०, पु० [सं०] अपने ऊपर नियन्त्रण रखनेवाला, संयमी, बगी ।

नियतासि-खी० [सं०] नाटककी पौंच अवस्थाओंमेंसे एक अंश में फलप्राप्तिका निश्चय होता है ।

नियति-खी० [सं०] नियत होनेकी क्रिया या भाव; नियम; अष्ट, मास्य, भवितव्यता; आत्ममयम; प्रकृति (ज्यो०) । -वाद-पु० दे० 'मास्यवाद' । -वादी (विज्ञ)-वि० दे० 'मास्यवादी' ।

नियती-खी० [सं०] दुर्गा ।

नियतैश्वर्य-वि० [सं०] इन्द्रियोंकी वश में रखनेवाला, जितेंद्रिय ।

नियम-पु० [सं०] विधान या निश्चयके अनुकूल नियन्त्रण; स्थायी कार्यक्रम, दस्तुर; निश्चित व्यवस्था; रीति, पद्धति, कायदा; अनुशासन, नियन्त्रण; वह संकल्प जिसका तत्ता निर्बाह किया जाय, प्रतिष्ठा; कार्यविशेषके संपादन या संचालनके लिए निश्चित सिद्धांत या आधार, विधि; विधान; योगके आठ अंगोंमेंसे एक जिसके अंतर्गत शौच, संतोष, तप आदि हैं; कवियोंकी एक वर्णन-पद्धति; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें किसी बातका एक ही स्थान पर होना वर्णित किया जाय; वह विधि जो अप्राप्त अज्ञात पूर्ण करे (मी०); शर्त; परमेश्वर; परिमाणा, लक्षण । -वर्ण-वि० नियमबद्ध, नियमाधीन । -निष्ठा-खी० नियमोका कर्त्तव्यके साथ पालन । -पत्र-पु० प्रतिष्ठापत्र, शर्तनामा । -पर-वि० नियमका पालन करनेवाला; नियमके अधीन । -बद्ध-वि० नियमोंसे जकड़ा हुआ; नियमोंके अनुसार चलने या होनेवाला, नियमोंके अनु-

कूल । -विधि-खी० दैनिक धार्मिक कूल । -सेवा-

खी० आशिन-शुद्धा एकादशीसे आरंभ कर कार्तिकमास की जानेवाली विष्णुकी उपासना । -विश्वसि-खी० तपस्वा ।

नियमन-पु० [सं०] नियम में बाँधनेका कार्य, अनुशासन या वश में रखना, नियन्त्रण, शासन; निग्रह, दमन; ऐसा विधान जिससे दूसरेका निवारण हो ।

नियमवती-खी० [सं०] वह खी जिसका मासिक साथ नियमित रूपसे होता हो ।

नियमावली-खी० [सं०] किसी संस्थाके संचालन, प्रवेश आदि संबंधी नियमोंका संग्रह; सदस्यों या कार्यकर्त्ताओंके अनुशासन आदि संबंधी नियम ।

नियमित-वि० [सं०] बँधा हुआ, निश्चित; नियमोंसे जकड़ा हुआ, नियमबद्ध; नियमके अनुसार, बाकायदा ।

नियमी (मिन्)-वि० [सं०] नियमके अनुसार चलने-वाला, नियमोंका पालन करनेवाला ।

नियन्त्र-वि० [सं०] नियमन करने योग्य, शासन या निग्रह करने योग्य; नियमबद्ध होने योग्य ।

नियर्-अ० निष्कट, पास ।

नियराई-खी० समीपता, निकटता ।

नियराना-अ० कि० पास आना । सं० कि० पास पहुँचना ।

नियरे-अ० दे० 'नियर' ।

नियोज-पु० [फा०] इच्छा; आवश्यकता; प्रार्थना; भेंट, दर्शन । खी० चढ़ावा; कतिहा; प्रसाद । -नामा-पु० पत्र (विनम्रता प्रदर्शित करनेके लिए अपने पत्रके लिए प्रयुक्त) । -भंद-वि० कुछ चाहनेवाला; प्रार्थी; विनोत (वक्ता विनय-प्रकाशनार्थ, विनयवश अपनेको कहता है) ।

मु० -हासिक करना- (बदेते) मिला, दर्शन या परिचय होना ।

नियतन-पु० [सं०] दे० 'नियतन' ।

नियान-पु० [सं०] घोड़ा, गोठ (वै०); * परिणाम । * अ० दे० 'निदान' ।

नियाम-पु० [सं०] नियम ।

नियामक-पु० [सं०] नियम करने या बनानेवाला; व्यवस्था करनेवाला, विधायक; नियमन करनेवाला, नियन्त्रा, अनुशासक; दूर करनेवाला, नाशक; सारथि; माली, महाह । [खी० 'नियामिका' ।] वि० नियन्त्रण करनेवाला; दमन करनेवाला; शासन करनेवाला । -गण-पु० पारेकी मारनेवाली ओषधियोंका समुदाय (आ०वे०) ।

नियामत-खी० दे० 'नियम' ।

नियार-पु० जोहरी या मुनारकी दुकानका कूज-कतवार; † नैकेसे बंधूकी रहस्योक्तीके लिए उसकी ससुराहसे तिथि नियत करनेके लिए भेजा जानेवाला पत्र ।

नियारना-सं० कि० अलग करना, दूर करना- 'युग प्रीति परगट करी कुलकी कान नियारि री'-सूर ।

नियारा-वि० धृष्ट, जुग ।

नियारिया-पु० एकमें मिली हुई वस्तुओंकी छाँटनेवाला; नियारमेंसे माल निकालनेवाला; चतुर व्यक्त ।

नियारे-अ० दे० 'न्यारे' ।

नियार-पु० दे० 'न्याय' ।

निभुक्-वि० [सं०] कृपाया इत्या; जोता इत्या, निवोजित; जिससे प्रेरणा दी गयी हो, प्रेरित; जो नियोग करे या जिससे नियोग कराया जाय; तैनात किया हुआ, जो किसी पदपर रखा गया हो, अधिष्ठापित, अधिकृत।

निभुक्ति-क्री० [सं०] निभुक् होने या करनेकी क्रिया, तैनाती, मुकररी।

निभुल-वि० [सं०] एक कास; दस कास। पु० एक या दस कासकी संख्या।

निभुद्ध-पु० [सं०] हाथा-बौंदा, बाधुद्ध, कुश्ती।

निभोक्क-वि० [मं०] नियोजित करने योग्य।

निभोक्का(क)-वि०, पु० [मं०] कृपाने या जोतनेवाला, नियोजित करनेवाला, निभुक् करनेवाला; नियोग करनेवाला।

निभोग-पु० [सं०] कृपाना या जोतना; निभुक् करनेकी क्रिया; प्रेरणा करना, प्रेरण; प्रवृत्त करना, प्रवर्तन; आस्था; उद्योग; एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार निम्नतान जी पतिका रोगी, नर्युक्त या मृत होनेकी वृत्तमें देवर या किसी अन्य गोत्रके द्वारा संतान उत्पन्न करा सकती थी (मनु०); वह उपाय जिससे बचनेके लिए एक ही उपायका निश्चय हो सके, दूसरेका नहीं (कौ०)।

निभोगी(गिन्धु)-वि० [सं०] जो निभुक् किया गया हो; जिसके कोई पद या अधिकार दिया गया हो; नियोग करनेवाला। पु० कर्मसचिव; बंगालियोंकी एक उपाधि।

निभोक्क-वि० [सं०] नियोग करने योग्य। पु० मालिक, प्रभु।

निभोजक-पु० [सं०] नियोजित करनेवाला, प्रवृत्त करनेवाला; तैनात करनेवाला।

निभोजन-पु० [सं०] निभुक् करनेकी क्रिया; किसी कार्यमें प्रवृत्त करना, प्रेरण; तैनात या मुकररी करना।

निभोजित-वि० [सं०] निभुक् किया हुआ; प्रवृत्त किया हुआ, व्यावृत्त; तैनात।

निभोज्य-वि० [मं०] नियोजित करने योग्य; जो निभुक् किया जाय। पु० नौकर, मेवक; कर्मचारी।

निभोद्धा(द्ध)-पु० [सं०] मल, पहलवान; मुर्गा।

निभोच्च-पु० [सं०] मल, पहलवान।

निरक्ष भवादेश-पु० [सं०] वह भवादेश जिसपर रकमका अंक न दिया गया हो, उसका स्थान इस उद्देश्यसे छोड़ दिया गया हो कि पानेवाला आवश्यकताके अनुसार रकम स्वयं भर ले।

निरक्षर-वि०, पु० दे० 'निराक्षर'।

निरक्षर-वि० [सं०] जिसपर किसी तरहका दबाव न हो, मनमाना करनेवाला, रक्छाचारी।

निरंग-वि० वदरंग, फीका; [सं०] बिना अंगका, अगहीन; साधनहीन; निरा, विभुद्ध, खालिस। -रूपक-पु० रूपक अलंकारका एक भेद जहाँ उपमेयमें उपमानका इस तरह आरोप हो कि उपमानके और सब अंगोंकी चर्चा न आवे।

निरञ्जन-वि० [सं०] जिसमें अञ्जन न हो, बिना अञ्जनका, अञ्जनरहित; निर्दोष; अज्ञानसे रहित; सादा। पु० परमात्मा; शिव।

निरञ्जना-क्री० [सं०] पृथ्वाया दुर्गा।

निरञ्जनी(निज्)-वि० [सं०] निरञ्जनी संप्रदायका (साधु)। पु० साधुओंका एक संप्रदाय।

निरक्षर-वि० [सं०] जिसके शीर्षमें कोई व्यवधान न हो, अव्यवहित, बिना अंतर या फासलेका; देश-कालकी दृष्टिसे अविच्छिन्न, बिमका क्रम टूटा न हो, अखंड, लगातार होनेवाला; सदा बना रहनेवाला, अक्षय; मेरुद्वारित, अभिन्न; सदा जोखोंके सामने रहनेवाला, कभी अतर्हित न होनेवाला। अ० लगातार, बराबर, सदैव।

निरक्षराभ्यास-पु० [सं०] सदा की जानेवाली (पाठकी) आवृत्ति, बराबर किया जानेवाला अभ्यास; स्वाध्याय।

निरक्षरा-वि० [सं०] जिसमें अवकाश न हो, बना; तंग।

निरक्ष-वि० [सं०] सारी अथा; निपट मूल, महामूल;

बहुत अथेरा।

निरक्षर-वि० [सं०] नगा, विगबर।

निरक्षु-वि० [सं०] 'निर्जल'।

निरक्ष-वि० [सं०] निर्जल; जो पानीतक न पिये।

निरक्ष-वि० [सं०] जिसे अपना अंश प्राप्त न हुआ हो, जो अपने भागसे वंचित रह गया हो।

निराकार-वि०, पु० दे० 'निराकार'।

निरक्षेच्छा-वि० बिना मिलावटका; खालिस; स्वच्छ, शुद्ध।

निरक्ष-वि० [मं०] बिना पायका; जो पृथ्वीके मध्य भागमें हो। -देश-पु० विपुल देशपरके देश। -रेखा-क्री० कांतिचक्र, नाडीमल्ल।

निरक्षण-पु० दे० 'नरीक्षण'।

निरक्षर-वि० [सं०] अपद; गँवार, मूर्ख।

निरक्षना-वि०-सं० कि० देखना; निरीक्षण करना।

निरा-पु० दे० 'नृग'।

निरगुण-वि० दे० 'निरगुण'। पु० एक पक्ष।

निरगुनिया-वि०, पु० 'निरगुण' पक्षकी माननेवाला।

निरगुनी-वि० दे० 'निरगुण'।

निरगिन-वि० [मं०] जिसने अग्निहोत्र त्याग दिया हो; जो अग्निहोत्र न करता हो।

निरक्ष-वि० [सं०] निर्दोष, पापराहित, निष्कलुष।

निरक्ष-वि० सावकाश; निश्चित; खाली।

निरक्ष-वि० नेत्रहीन, अंध।

निरक्ष-वि० रजोहीन, निर्मल।

निरक्षर-पु० देवता। वि० जो कभी जर्ण न हो।

निरक्षर-वि० दे० 'निर्जल'।

निरक्षी-क्री० सगममरपर काम बनानेकी संगतराशोंकी एक प्रकारकी महोदय टोकी।

निराक्षर-पु० दे० 'निराक्षर'। -लक्ष्मी परम रसकी निराक्षर। श्री ब्रह्मा विपिन विलास'-धन०।

निराक्षर-पु० निष्कर्ष, सारांश; निर्णय।

निराक्षरी-वि०, पु० निष्कर्ष निकालनेवाला; निर्णय करनेवाला।

निरक्षर-पु० दे० 'निरक्षर'।

निरक्षर-क्री० दे० 'निरक्षरिणी'।

निरक्षरी-क्री० दे० 'निरक्षरी'।

निरस्त-वि० [सं०] कृपा हुआ, तत्पर, क्षीन; प्रसन्न; विश्रान्त । * पु० नृत्य । * अ० निरंतर, लगातार ।

निरस्तना*-अ० कि० नृत्य करना, नाचना ।

निरस्ति-क्षी० [सं०] विशेष रति या अनुराग; आसक्ति ।

निरस्तिष्ठाय-वि० [सं०] जिससे बचा या बदकर दूसरा न हो, अद्वितीय । पु० परमेश्वर ।

निरस्त्यय-वि० [सं०] बाधारेहित, सुरक्षित, निरापद; निर्दोष, जिसमें कोई वृद्धि न हो; पूर्णतः सफल । पु० बाधाका अभाव ।

निरद्वर्ह, **निरद्वय**, **निरद्वयी***-वि० दे० 'निर्द्वय' ।

निरदोषी*-वि० दे० 'निर्दोष' ।

निरधन*-वि० दे० 'निर्धन' ।

निरधातु-वि० दे० 'निर्धातु' ।

निरधार*-पु० निश्चय करने या ठहरानेकी क्रिया, निर्धारण । वि० आधाररहित । अ० निश्चयपूर्वक-‘दे रखा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार’-छत्रप्रकाश ।

निरधारना-स० कि० निश्चय करना, तय करना; सोचना, समझना ।

निरधिष्ठान-वि० [सं०] आश्रयहीन; विना आधारका ।

निरध्व-वि० [सं०] जो रास्ता धूल गया हो ।

निरनड, **निरनय***-पु० दे० 'निर्णय' ।

निरना-वि० दे० 'निरन्ना' ।

निरनुकोश-वि० [सं०] निर्दय, निष्ठुर । पु० निर्दयता ।

निरनुग-वि० [सं०] जिसका कोई अनुयायी न हो ।

निरनुनासिक-वि० [सं०] अनुनासिकसे भिन्न, जिसके उच्चारणमें नासिका योग न हो (व्या०) ।

निरनुरोध-वि० [सं०] सद्भावशून्य, अमैत्रीपूर्ण ।

निरनै*-पु० दे० 'निर्णय' ।

निरन्ध-वि० [सं०] विना अन्नका; जिसमें अन्नका सेवन न हो; जिनमें अन्न न खाया हो, निराहार ।

निरन्ना-वि० जिसने अन्न न खाया हो, निराहार ।

निरन्वय-वि० [सं०] निःसंतान; असंबद्ध; (बह चोरी) जिसमें म्यामीकी अनुपस्थितिमें माल चुराया गया हो; अस्मगत; वृद्धिमें परे ।

निरपत्रप-वि० [सं०] निर्लेख, धृष्ट ।

निरपना*-वि० जो अपना न हो, परकीय ।

निरपराध-वि० [सं०] जिसने अपराध न किया हो, बेकसूर । अ० विना अपराध किये, विना किसी कसूरके ।

निरपराधी*-वि० दे० 'निरपराध' ।

निरपवर्त, **निरपवर्तन**-वि० [सं०] जिसका अपवर्तन न हो सके ।

निरपवाद-वि० [सं०] निर्दोष, अपकीर्तिते रहित; कभी अन्यथा न होनेवाला, जो ऐसा न हो कि कहीं कगे और कहीं न कगे, सर्वत्र एकसा लयनेवाला-जैसे निरपवाद नियम ।

निरपाय-वि० [सं०] जो सदा बना रहे, जिसका कभी नाश न हो, चिरस्थायी ।

निरपेक्ष-वि० [सं०] किसी औरकी अपेक्षा न रखनेवाला; जिसे अपने अर्थका बोध करानेके लिए किसी दूसरे पद, वाक्य आदिकी आवश्यकता न हो, जो स्वतः अपने अर्थ-

का सम्यक् बोध करा छे; जो अपने ही कपर अवलंबित हो, केवल अपना भरोसा करनेवाला; आशा, टुष्णाने मुक्त, विरक्त; जो किसी बातकी परवा न करे, उदासीन ।

निरपेक्षा-क्षी० [सं०] अपेक्षा; उदासीनता ।

निरपेक्षित-वि० [सं०] जिसकी अपेक्षा न की गयी हो ।

निरपेक्षी(क्षिन्)-वि० [सं०] अपेक्षा करनेवाला; उदासीन ।

निरपक्व*-वि० दे० 'निष्पक्व' ।

निरबंध*-वि० बधनरहित । पु० परमात्मा-‘कर सेवा निरबंधकी, पलमें छेत छुआय’-साक्षी ।

निरबंधी-वि० जिससे कोई संतान न हो, कायवृद्ध ।

निरबन्सी*-वि०, पु० विरागी, त्यागी ।

निरबल*-वि० दे० 'निर्वल' ।

निरबाहना-अ० कि० निवाह होना, निवाहना ।

निरवान*-पु० दे० 'निवाण' ।

निरबाहना-स० कि० दे० 'निवाहना' ।

निरबिंदी*-क्षी० दे० 'निर्विंदी' ।

निरबेता-पु० दे० 'निर्वेता' ।

निरभय*-वि० दे० 'निर्मय' ।

निरभर*-वि० दे० 'निर्भर' ।

निरभिमान-वि० [सं०] जिसमें अहंभाव न हो, गर्वरहित ।

निरभिकाष-वि० [सं०] जिसे किसी वस्तुकी चाह न हो, निराह ।

निरन्न-वि० [सं०] जिसमें भोजन न हो, भेषरहित ।

निरमना*-स० कि० निर्माण करना, बनाना, रचना करना-‘रामायन बेहि निरमयेड’-(रामा०)

निरमर, **निरमल**-वि० दे० 'निर्मल' ।

निरमली-क्षा० दे० 'निर्मली' ।

निरमान*-पु० दे० 'निर्माण' ।

निरमावा*-स० कि० निर्माण करना, बनाना ।

निरमाश्ल*-पु० दे० 'निर्माश्ल' ।

निरामित्र-वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो । पु० नकुलका पुत्र (म० भा०) ।

निरमूल*-वि० दे० 'निर्मूल' ।

निरमूलना*-स० कि० जड़से उखाड़ना, उन्मूलन करना; समूल नष्ट करना ।

निरमोल-वि० दे० 'अनभोल' ।

निरमोलिक, **निरमोलिका***-वि० अनमोल, बहुमूल्य ।

निरमोही*-वि० दे० 'निर्मोह' ।

निरय-पु० [सं०] नरक ।

निरयण-पु० [सं०] ज्योतिषमें एक तरहकी गणना ।

निरर्वाह-वि० [सं०] अगंजारहित; जिसपर कोई रोक न हो, प्रतिबंधरहित; जिसकी गति, प्रवाह अवरोध न हो, स्वच्छंद, अवध; निर्विघ्न ।

निरर्थ-वि० [सं०] दे० 'निरर्थक' ।

निरर्थक-वि० [सं०] जिसका कुछ अर्थ न हो, बेमतलब; जिससे कोई प्रयोजन न मिले हो, निष्प्रयोजन, निष्फल, व्यर्थ, बेकार । पु० एक काव्यदीप जहाँ छंदकी पूर्तिके लिए अनावश्यक शब्द रख दिया गया हो (सा०); एक निग्राहस्थान (न्या०) ।

निरुद्ध-पु० [सं०] एक नरक ।

निरुक्त-वि० [सं०] आह्वयहीन ।

निरुक्तकक्ष-वि० [सं०] जिससे या जिसमें अवकाश न हो, अवकाशरहित ।

निरुक्तग्रह-वि० [सं०] दे० 'निरुक्त' ।

निरुक्तपिच्छ-वि० [सं०] जिसका सिलसिला न दूटे, निरंतर ।

निरुक्त-वि० [सं०] दोषरहित, विद्युत्, उत्कृष्ट; अहानसे रहित । पु० राग आदिसे रहित परमात्मा; तीन योग-शक्तियोंमेंसे एक (शेष दो सावध और सूक्ष्म हैं) ।

निरुक्थि-वि० [सं०] जिसकी कोई सीमा न हो, अपार, निःसीम ।

निरुक्तवच-वि० [सं०] अंगरहित, पूर्ण; निराकार; जिसका विभाग न हो सके ।

निरुक्तवर्ण-वि० [सं०] जिसे कोई सहारा न हो, असहाय, आश्रयहीन ।

निरुक्तवेष-वि० [सं०] संपूर्ण, समग्र ।

निरुक्तव्याद्-वि० [सं०] प्रसक्त, छूट ।

निरुक्तसित-वि० [सं०] जिसके भोजन किये हुए पात्र फिर छुट न हो सकें (निष्काल आदि) ।

निरुक्तानिका, निरुक्तानिका-खी० [सं०] बाणा; चहार-दीवारी, प्राचीर ।

निरुक्ताना-सं० कि० निरानेका काम कराना ।

निरुक्तार-पु० ठाकने या दूर करनेकी क्रिया, निस्तार, प्राण, वचाव; निवृत्तार; सुल्लाव ।

निरुक्तारना-सं० कि० निवारण करना, हटाना; प्रति-बन्धन वस्तुको दूर करना; मुक्त करना, छुटाना; खोलना, उलझी हुई वस्तुको सुलझाना; छितराना; अलग करना, तजना, त्यागना; तय करना, फैलाना करना ।

निरुक्ताह-पु० दे० 'निरुक्ताह' ।

निरुक्ताहना-सं० कि० दे० 'निरुक्ताहना' ।

निरुक्तेद्-पु० दे० 'निरुक्ते' ।

निरुक्त्य-वि० [सं०] शाश्वत, अनन्तर ।

निरुक्तन-वि० [सं०] जिसने कुछ खाया-पिया न हो । पु० भोजनका अभाव, उपवास ।

निरुक्तक-वि० दे० 'निरुक्तक' ।

निरुक्त-वि० [सं०] जिसमें रस न हो, रससे रिक्त; विना स्वादका, स्वादहीन, फीका, वैमत्ता; सारहीन; जो आनन्द न दे; रुखा-सुखा, सरसका उल्टा; रागहीन ।

निरुक्तन-पु० [सं०] सँकना, दूर हटाना, अपसारण; निवारण; खटन, प्रत्याख्यान; बर्जन करना; भूकना; दूर करना, निराकरण; नाश करना, नाशन ।

निरुक्त-वि० [सं०] दूर हटाया हुआ, जिसका निवारण किया गया हो, निवारित; बर्जन किया हुआ; भूका हुआ; फँका हुआ; अलग किया हुआ, रचक; संक्षिप्त; जिसका नाश किया गया हो; जिसका उच्चारण शीघ्रताके साथ किया गया हो । पु० फँका या छोड़ा हुआ बाण; अली-कार; परित्याग; स्वरायुक्त उच्चारण; फँकना । -येद्-वि० जिसका अंतर दूर कर दिया गया हो, अनुपस्थित । -राग-वि० निरुक्त ।

निरुक्त-वि० [सं०] जिसके पास इधिवार न हो, विना

इधिवारका, निरुक्ता ।

निरुक्थि-वि० [सं०] जिसमेंसे बहुतो निकाल दी गयी हो; विना बहुतोका ।

निरुक्ता, निरुक्ता, निरुक्ता-वि० [सं०] जिसमें अभिमान न हो; जिसमें शरीर, इन्द्रिय आदिके प्रति 'यह मेरा है' यह भावना न हो ।

निरुक्त्य-वि० [सं०] अहंकाररहित ।

निरुक्ते-वि० दे० 'निरुक्ते' ।

निरुक्ते-वि० जिसकी अवहेलना हो, जिसका आदर न हो, दुच्छ, निरुद्ध ।

निरा-वि० विना मिलावटका, विद्युत्, जिसमें किसी दूसरी वस्तुका संसर्ग या पुट न हो; एकमात्र; एकदम, कीरा, निपट । [खी० निरी ।]

निराई-खी० निरानेकी क्रिया; निरानेकी उन्नत ।

निराक-पु० [सं०] पाचन-क्रिया; पसीना; सुरे कर्मका विपाक ।

निराकरण-पु० [सं०] दूर हटाना, निवारण; दूर करना, परिहार; खटन, निरसन ।

निराकांक्ष-वि० [सं०] जिसे किसीकी अपेक्षा, इच्छा न हो, इच्छारहित, निरपेक्ष ।

निराकार-वि० [सं०] जिसका कोई आकार या रूप न हो, साकारका उल्टा; भद्र; कुरूप; विनम्र । पु० परमात्मा; शिव; विष्णु ।

निराकाश-वि० [सं०] जिसमें बोझ-भीषी जगह खाली न हो, एकदम भरा हुआ ।

निराकुल-वि० [सं०] व्याप्त, भरा हुआ; जो घबराया न हो, धीरा; शांत; * बहुत घबराया हुआ-‘व्याकुल बाहु, निराकुल बुद्धि, धन्यो वह विक्रम लक्ष्मणकी’-रामचरित ।

निराकृत-वि० [सं०] जिसका निराकरण किया गया हो ।

निराकृति-खी० [सं०] निराकरण । वि० विना आकारका, निराकार; कुरूप; जो पचमहायज्ञ न करे (सृष्ट) ।

निराकृती(तिष्ठ)-वि० [सं०] जो निराकरण करे ।

निराकृद्-वि० [सं०] जो चिह्नाये या शिकायत न करे; जिसकी पुकार न सुनी जाय; जो पुकार न सुने । पु० वह स्थान जहाँ कोई अन्ध न सुना जा सके ।

निराखर-वि० दे० 'निराखर' ।

निराग-वि० [सं०] रागहीन, निरक्त ।

निराग(स्)-वि० [सं०] निरापाप; निरपराध ।

निराचार-वि० [सं०] आचारहीन ।

निराजी-खी० जुलाहोंके कारपेकी एक लकड़ी ।

निराड-वि० निरा, कीरा; एकमात्र; बिलकुल-‘कोउक होत निराड हियवर’-सुंद० ।

निराखर-वि० [सं०] जिसमें ढोंग न हो; विना नयायेका ।

निरासक-वि० [सं०] भयारहित, निडर; नीरोग, स्वस्थ; अनियमित । पु० शिव ।

निरासप-वि० [सं०] जिसमें धूप या गरमी न हो; छायादार ।

निरासपा-खी० [सं०] रात ।

निरादर-वि० [सं०] अपमानजनक; आदररहित । पु० आदरका अभाव; अपमान ।

निरादान-पु० [सं०] उद्धव ।

निरादिष्ट-वि० [सं०] जो पूरा-पूरा अदा कर दिया गया हो (कमी) ।

निरादेश-पु० [सं०] प्रण-परिशील ।

निराधार-वि० [सं०] बिना आश्रयका, जो किसीपर आश्रित न हो; जिसके कोई महारा न प्राप्त हो, असहाय; जो किसी प्रमाणपर आश्रित न हो, बेनुनियाज, अर्थार्थ, अमूल; † बिना अन्नलका, निराहार ।

निराधि-वि० [सं०] मनोव्यथाने रहित; नीरोम ।

निरानन्द-वि० [सं०] आनन्दरहित । पु० आनन्दका अभाव; दुःख ।

निराना-स० कि० घोषोंकी बदतीकी रोकनेवाली अना-वश्यक बाम, दण आदिको छुरपीसे खीदकर दूर करना । * अ० कि० दे० 'नियराना' ।

निरापद-वि० [सं०] आपत्तिसे रहित, निर्विक्र, सुगृहित ।

निरापन, **निरापुन***-वि० जो अपना न हो, परकीय ।

निरापाय-वि० [सं०] जिसके साथ छेड़छाड़ न हो; वाधा-रहित ।

निरामय-वि० [सं०] जिसके कोई रोग न हो, नीरोम; निर्दोष; निर्मल । पु० जगन्नी बकरा; सूअर; रोगराहित्य ।

निरामालु-पु० [सं०] कैयका पेज ।

निरामिष-वि० [सं०] मांसरहित; वासनारहित; पारि-श्रमिक आदि न पानेवाला; * मांस न खानेवाला । -ओजी (जिन्)-वि० मांस न खानेवाला ।

निरामिषाक्षी (शिन्)-वि० [सं०] जो मांस न खाए, शाकाहारी ।

निराय-वि० [सं०] जिससे या जिसे कुछ आय न हो ।

निरायत्त-वि० [सं०] जो फैलाया या बढ़ाया न हो, शिक्कीड़ा हुआ ।

निरायास-वि० [सं०] जिसमें परिश्रम न लगे, सुकर, आसान ।

निरायुध-वि० [सं०] जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था ।

निरार, **निरारा***-वि० अलग, जुदा ।

निरालम्ब-वि० [सं०] दे० 'निरालम्ब' । पु० ब्रह्म ।

निरालम्ब नारीसदन-पु० [१०] (टेस्टिफ़्यून्स-चैम्बेस होम) अमहाय नारियोंकी सहायताके लिए स्थापित मस्था ।

निरालम्बा-स्त्री० [सं०] छोटी जटामाती ।

निरालम्ब-पु० [सं०] एक समुद्री मछली ।

निरालस-वि० दे० 'निरालस्य' ।

निरालस्य-वि० [सं०] जिसमें आलस्य न हो, आलस्य-रहित । पु० आलस्यका न होना ।

निराला-पु० निर्जन स्थान, पक्षांत स्थान । वि० जहाँ कोई बस्ती या मनुष्य न हो, विजन, पक्षांत; जो अपने दंगका अकेला हो, विलक्षण, अजीब; जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेजोड़, अनुपम, अद्वितीय ।

निरालोक-वि० [सं०] प्रकाशरहित, अंधेरा; अन्ध; दृष्टि-हीन । पु० शिव ।

निरावरण-वि० [सं०] आवरण-रहित, खुला हुआ ।

निरावना*-स० कि० दे० 'निराना' ।

निराहृत-वि० [सं०] जो ढका न हो, खुल्य हुआ ।

निराश-वि० [सं०] जिसमें आशा न हो, आशाश्रित, हताश ।

निराशक, **निरासी** (शिन्)-वि० [सं०] दे० 'निराश' ।

निराशा-स्त्री० [सं०] आशाका अभाव, नाउम्मेदी । -बाद्-पु० (पैमिभिन्) संसारकी दुःखमय मानने तथा प्रत्येक वस्तुको निराशामय दृष्टिसे देखनेका सिद्धांत । -बादी (विन्)-वि० (पैमिभिन्) जीवनके दुःखमय पहलुपर जोर देनेवाला, ममारकी निराशाकी दृष्टिसे देखनेवाला ।

निराशिष-वि० [सं०] आर्शावांसे रहित; उदासीन ।

निराश्रय-वि० [सं०] दे० 'निरवल्ल' ।

निरास-पु० [सं०] दूर करना; प्रत्याख्यान, खंडन; बमन; विरोध । * वि० दे० 'निराश' ।

निरासन-पु० [सं०] दे० 'निरसन' । वि० आसनरहित ।

निरासा*-स्त्री० दे० 'निराश' ।

निरासी*-वि० हताश, नाउम्मेद, विरक्त; उदास, कांति-हीन; जहाँ या जिनमें उदासी छावी हो ।

निरास्वाद-वि० [सं०] बिना स्वादका, अस्वादिष्ठ, बेमजा ।

निराहार-वि० [सं०] जिसमें कुछ खाया-पिया न हो, उपोषित; जिसे करनेमें कुछ खाया न जाय (जैसे-निराहार व्रत) । पु० उपवास ।

निरिग-वि० [सं०] अवल, स्थिर ।

निरिगिणी, **निरिगिनी**-स्त्री० [सं०] परदा ।

निरिग्रिय-वि० [सं०] जो किसी द्रव्यमें रहित हो, जिसकी कोई द्रव्य ब्रह्म हो, कमजोर ।

निरिच्छ-वि० [सं०] जिसमें कोई चाह न हो, निरीह ।

निरिच्छन*-पु० दे० 'निरिक्षण' ।

निरिच्छना*-स० कि० निरीक्षण करना, ध्यानपूर्वक देखना ।

निरिनि*-अ० निकट-'निरिनि रहत ब्रजमहान जिनके । हरि-हित-महि-मनोरथ इनके'-घन० ।

निरिक्षक-पु० [सं०] निरीक्षण करनेवाला, ध्यानमें देखने, वाला; परीक्षा-भवनमें परीक्षाधियोंकी निगरानी करने-वाला । [स्त्री० 'निरिक्षिका' ।]

निरिक्षण-पु० [सं०] गौरसे देखना; देखरेख करना; मुआयना करना, जाँच करना; चिनचन; आक्षा ।

निरिक्षा-स्त्री० [सं०] दे० 'निरिक्षण' ।

निरिक्षित-वि० [सं०] गौरमें देखा हुआ; देखा-माला हुआ; जिसकी जाँच की गयी हो, मुआयना किया हुआ ।

निरिक्ष्य-वि० [सं०] निरीक्षण करने योग्य, देखरेख करने योग्य ।

निरिक्ष्यमाण-वि० [सं०] जिसका निरीक्षण किया जा रहा हो, जिसकी निगरानी की जा रही हो ।

निरिस्ति-वि० [सं०] अतिदृष्टि, अनादृष्टि आदि इतियोंसे रहित ।

निरिश्-वि० [सं०] दे० 'निरिश्' । पु० दे० 'निरिष' ।

निरिश्वर-वि० [सं०] जिसमें ईश्वरके अस्तित्वका खंडन हो, जिसमें ईश्वरके अभावका प्रतिपादन हो; ईश्वरको न माननेवाला, नास्तिक । -बाद्-पु० ईश्वरके अस्तित्वका

खंडन करनेवाला सिद्धांत।—**बाकी(विच्छेद)**—पुं० निरीच-
श्रवादाको माननेवाला।

निरीच—पुं० [म०] हल्का फाल।

निरीह—वि० [म०] जिसे किसी वस्तुकी इच्छा न हो,
इच्छा, लुपणासे रहित, उदासीन, विरक्त; जो क्रियाशील न
हो, चेष्टारहित, शांत; उद्यमहीन।

निरीहता—स्त्री० **निरीहत्व**—पुं० [सं०] निरीह होनेका
भाव, चेष्टाहीनता।

निरीहा—स्त्री० [सं०] दे० 'निरीहता'।

निरुआरा—पुं० दे० 'निरवार'।

निरुआरना—सं० कि० दे० 'निरवारना'।

निरुक्त—वि० [म०] जिसका निर्वचन किया गया हो;
निर्बोध करानेवाला; निर्वोधमें प्रवृत्त किया हुआ। पुं०
वेदके छ अंगोंमेंसे एक; यास्क मुनि-रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ
जिसमें वैदिक शब्दोंकी विवाद व्याख्या की गयी है।—
कार—पुं० निरुक्तके रचयिता यास्क मुनि।—**ज**—पुं०
पुनर्के ग्राह्य वेदोंमेंसे एक।

निरुक्ति—स्त्री० [म०] ऐसी व्याख्या जिसमें प्रकृति-प्रत्यय
आदि अवयवोंका अर्थ समझाते हुए शब्दोंका अर्थ स्पष्ट
किया गया हो; एक काव्यालंकार जहाँ किसीके नामका
प्रसिद्ध अर्थ छोड़कर युक्तिपूर्वक कोई समझाना अर्थ किया
जाय।

निरुक्ता—वि० [सं०] जो श्वास न लेता हो, जिसकी
श्वास-प्रश्वास-क्रिया बंद हो; जहाँ साँस लेनेतक की जगह न
हो, तग, सँकटा।

निरुज—वि० दे० 'नीरुज'।

निरुत्तर—वि० [सं०] जो कोई उत्तर न दे सके, जिसके
पास कोई उत्तर न हो; जिसकी जवान बंद हो गयी हो,
चुप; जिसमें बका कोई और न हो।

निरुत्सव—वि० [म०] बिना उत्सवका।

निरुत्साह—वि० [सं०] जिसमें उत्साह न हो, उत्साहरहित।
पुं० उत्साहका अभाव।

निरुत्सुक—वि० [म०] अत्यंत उत्सुक; उत्सुकतारहित।

निरुदक—वि० [सं०] जिसमें या जहाँ जल न हो, जल-
रहित।

निरुद्वेग्य—वि० [सं०] उद्वेगरहित। अ० बिना किसी
उद्वेगके।

निरुद्ध—वि० [सं०] जिसका निरोध किया गया हो, विशेष
रूपसे रोका हुआ; विशेष रूपसे रुका हुआ, प्रतिबद्ध, रूपा
हुआ; चित्तको पाँच भूमियोंमेंसे एक (योग)।—**कंड**—वि०
जिसका गला रूंध गया हो।—**शुद्ध**—पुं० एक रोग जिसमें
मलद्वार बंद-सा हो जाता है।—**प्रकृष**—**प्रकृष**—पुं० मूत्र-
द्वार बंद-सा हो जाने और फलतः मूत्रके रुक-रुकते
निकलनेका रोग।

निरुधम—वि० [सं०] जो उद्यम न करे, लुपचाप बैठा
रहनेवाला, आलसी, बेकार, निष्क्रिया।

निरुधोग—वि० [म०] दे० 'निरुधम'।

निरुह—वि० [सं०] उद्वेगरहित, शांत।

निरुपजीव्य—वि० [सं०] जिससे गुजर न हो सके।

निरुपद्रव—वि० [सं०] जिसमें या जहाँ कोई उत्पत्त न

हो, शांतिमय, विघ्नरहित, सुश्रुति; जो किसी प्रकारकी
बाधा या कष्ट न पहुँचाये; शुभ, मंगलकारी।

निरुपधि—वि० [म०] विशुद्ध, पवित्र; सच्चा, निश्छल,
निष्कपट।

निरुपपत्ति—वि० [म०] उपपत्तिरहित।

निरुपच्छन्न—वि० [म०] दे० 'निरुपद्रव'।

निरुपम—वि० [म०] बेजोड़, अतुलनीय।

निरुपमा—स्त्री० [म०] गायत्री।

निरुपयोग—वि० [सं०] जिसका कोई उपयोग न हो, जो
किसी काम न आवे।

निरुपयोगी—वि० बेकार, निरर्थक।

निरुपसर्ग—वि० [सं०] उपद्रवसे रहित।

निरुपस्कृत—वि० [सं०] विशुद्ध, पवित्र, शुचि।

निरुह—वि० [सं०] जिसे क्षति न पहुँची हो, अनाहत;
शुभ, मंगलकारी।

निरुपाख्य—वि० [म०] जिसकी मत्ता न हो, असमय
(जैसे—वध्यापुत्र, गगनारविंद); बिना स्वकृपाक, नीरुप;
जो मन और वचनके बरे हो (जैसे—ब्रह्म)।

निरुपाधि—वि० दे० 'निरुपधि'।

निरुपाध—वि० [म०] जिसके पाम कोई उपाय न हो, जो
कोई उपाय करनेमें असमर्थ हो; जिसका कोई उपाय न हो,
जिसका कोई प्रतिकार न किया जा सके।

निरुपेक्ष—वि० [म०] उपेक्षामें रहित, जो उपेक्षा न करे;
छल हीन।

निरुवरना—अ० कि० कठिनार्थ दूर होना, सुलझना।

निरुवारा—पुं० दे० 'निरवार'।

निरुवारना—सं० कि० दे० 'निरवारना'।

निरुद्ध—वि० [म०] अत्यंत रुद्ध, अधिक प्रसिद्ध; जिसका
अधिक व्यवहार होता हो, अविवाहित; साफ किया हुआ।
पुं० एक पशुभाग।—**लक्षणा**—स्त्री० वह लक्षणा जिसमें
शब्दका प्रसिद्ध अर्थ रूढ़ हो गया हो।

निरुद्धा—स्त्री० [म०] निरुद्ध-लक्षणा।

निरुद्धि—स्त्री० [म०] प्रसिद्धि, उन्नति; निरुद्ध-लक्षणा।

निरुप—वि० बिना रूपका, रूपरहित; दुर्ग शङ्का, कुसूप।
पुं० वायु; आकाश; देवता।

निरुपक—वि०, पुं० [म०] निरुपण करनेवाला। [स्त्री०
'निरुपिका']।

निरुपण—पुं० [म०] हड़ना, जोंचना, अन्वेषण; किसी
विषयको इस रूपमें रखना कि वह साफ-साफ समझमें आ
जाय, मौखिक रूपसे या लेख द्वारा किसी विषयको ठीक-
ठीक समझा देना, आलोचन; रूप; दृष्टि।

निरुपणा—स्त्री० [म०] दे० 'निरुपण'।

निरुपना—सं० कि० निरुपण करना, स्पष्ट शब्दोंमें
समझा देना; प्रतिपादन करना, वर्णन करना।

निरुपित—वि० [म०] जिसका निरुपण किया गया हो।

निरुपिति—स्त्री० [म०] व्याख्या, परीक्षण।

निरूप्य—वि० [म०] निरुपण करने योग्य।

निरुह—पुं० [म०] वस्तिका एक भेद; तर्क; निश्चय; पूर्ण
वाक्य।

निरुहण—पुं० [म०] वस्तिका प्रयोग; तर्क करना; निश्चय

करना ।

निरखना-स० क्रि० देखना, निरखना ।

निरक्ष-वि० [सं०] शब्दहीन ।

निरै-पु० निरक्ष, नरक ।

निरैडी-वि० स्त्री० मस्त-‘लाइन निरैडी मति बोलनि है हरी’-धन० ।

निरोग, निरोगी†-वि० जिसे कोई रोग न हो, स्वस्थ ।

निरौद्धव्य-वि० [सं०] निरोध करने योग्य, धरने या आहुत करने योग्य ।

निरोध-पु० [सं०] रोक, रुकावट, प्रतिबंध; वशमें लाना, निग्रह; छेकना, धरना; नाश; अरुचि; नैराश्य; चित्तकी वह अवस्था जिसमें सभी वृत्तियों और संस्कारोंका लज हो जाता है । -**परिणाम**-पु० चित्तवृत्तिकी एक विशेष अवस्था (बी०) ।

निरोधक-वि० [सं०] निरोध करनेवाला, रोकनेवाला । [स्त्री० ‘निरोधिका’] ।

निरोधन-पु० [सं०] दे० ‘निरोध’; धरना छठा सरकार (आ० दे०) ।

निरौधी (विन्)-वि० [सं०] निरोध करनेवाला, रोकनेवाला । [स्त्री० ‘निरौधिनी’] ।

निर-उप० [सं०] दे० ‘निम्’ ।

निर्जल-वि० [सं०] क्षीण; क्षीर; निर्बल ।

निर्जति-स्त्री० [सं०] दे० ‘निकृति’ ।

निर्जल-पु० [फा०] दर, भाव । -**द्वारोद्गा**-पु० मुसलमानों के शासनकालमें बाजारमें चीजोंके भावोंमें देखरेख करते रहनेके लिए नियुक्त किया जानेवाला एक प्रकारका दारोगा । -**नामा**-पु० मुसलमानोंके शासनकालकी एक प्रकारकी सूची जिसमें प्रत्येक विक्रेय वस्तुका भाव लिखा रहता था । -**बंदी**-स्त्री० किसी चीजको दर ठहरानेका कार्य ।

निर्जघ-वि० [सं०] जिसमें गध न हो, गंधरहित । -**पुष्पी**-स्त्री० नेमरका पेड़ ।

निर्गंधन-पु० [सं०] मारना, बध करना ।

निर्ग-पु० [सं०] देश; भूभाग; स्थान ।

निर्गत-वि० [सं०] जो बाहर आया हो, निकला हुआ, निःस्वय, निष्कांत । पु० दे० ‘निर्यात’ ।

निर्गम-पु० [सं०] बाहर जाना, निकलना; निकाम, निकलनेका मार्ग, द्वार । -**निर्घेधाज्ञा**-स्त्री० (वर्षपूर्वार्द्ध) दगा-फमाद या उपद्रववादिके समय आरक्षाधिकारियों द्वारा घरने बाहर निकलनेकी मनाही करनेवाली आज्ञा ।

निर्गमन-पु० [सं०] बाहर जाना, निकलना, निःसरण; बाहर जाने या निकलनेका रास्ता, दरवाजा; प्रतिहारी । -**मार्ग**-पु० बाहर निकलनेका मार्ग ।

निर्गमना-अ० क्रि० निकलना, बाहर आना ।

निर्गमि-वि० [सं०] अभिमानरहित ।

निर्गमाक्ष-वि० [सं०] जिसमें शिबकी न हो ।

निर्गुडी, निर्गुडी-स्त्री० [सं०] सिंदुवार ।

निर्गुण-वि० [सं०] जो सत्त्व, रज, तम-इन तीनों गुणोंसे परे हो, त्रिगुणातीत; जो गुणवान् न हो, गुणरहित; जिसमें घेरी न हो (धनुष) । पु० त्रिगुणातीत परमात्मा ।

निर्गुणिता, निर्गुनिता-वि० निर्गुण ब्रह्मकी उपासना करनेवाला ।

निर्गूह-वि० [सं०] अत्यंत गूढ़, बहुत गुप्त । पु० कोटर ।

निर्ग्रथ-वि० [सं०] मूर्ख; असहाय; विरक्त; बधनशुक्त; निर्धन; वलहीन; निष्कल । पु० बौद्ध या दिगंबर जैन साधु, क्षपणक; जुआरी; एक क्रांति; बुद्धिहीन व्यक्ति; बध ।

निर्ग्रथक-वि० [सं०] चतुर, दक्ष; एकाकी; परित्यक्त; फलहीन । पु० क्षपणक; दिगंबर सन्यासी; जुआरी ।

निर्ग्रथन-पु० [सं०] मारण, बध ।

निर्ग्रथिक-वि० [सं०] विना गोंठका; कुशल, दक्ष । पु० क्षपणक ।

निर्ग्रथिका-स्त्री० [सं०] बौद्ध सन्यायिनी ।

निर्ग्राह-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; अनुभव करने योग्य; साक्षात्कार करने योग्य ।

निर्घट-पु० [सं०] अर्थोंका सूचीपत्र; निघड ।

निर्घट-पु० [सं०] वह बाजार जहाँ दुकानदारोंसे कौकी न ली जाती हो; बका बाजार या मेला ।

निर्घात-पु० [सं०] ध्वंस, नाश; तूफान; हवाके झोंकोंके दकानेसे उत्पन्न शब्द; वजाघात; आघात, प्रहार; भूस्त्रं ।

निर्घातन-पु० [सं०] बाहर निकालना; अस्वचिन्तिताकी एक क्रिया ।

निर्घुण-वि० [सं०] घृणारहित; निर्दय, निष्ठुर; निर्लज्ज, बेहया ।

निर्घुणा-स्त्री० [सं०] निष्ठुरता; भृष्टता ।

निर्घोष-पु० [सं०] शब्द, निवाद । वि० शब्दरहित ।

निर्छल-वि० छल या कपटसे रहित ।

निर्जन-वि० [सं०] जहाँ कोई न हो, ध्वांत, सुनसान । पु० मरुभूमि; उमकी धुई या गैर-आबाद जमीन ।

निर्जय, निर्जिति-स्त्री० [सं०] पूर्ण विजय ।

निर्जर-वि० [सं०] जो कभी बुद्धा न हो, सदा धुवा बना रहनेवाला । पु० देवता; अमृत । -**सर्वप**-पु० देवसर्वप नामका पौधा ।

निर्जला-स्त्री० [सं०] गडुच; नालकणी ।

निर्जल-वि० [सं०] जलरहित, जहाँ पानी न हो; जिसमें जलतक न ग्रहण किया जाय, जिसमें जल पीनेका निषेध हो । पु० मरुभूमि । [स्त्री० ‘निर्जला’] -**(छा) एकादशी**-स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ल एकादशी त्रिम दिन त्रयी जलतक ग्रहण नहीं करते ।

निर्जात-वि० [सं०] आविर्भूत, प्रकट ।

निर्जित-वि० [सं०] जो अच्छी तरह जीत लिया गया हो, जो पूर्ण रूपसे वशमें कर लिया गया हो ।

निर्जितेन्द्रियग्राम-पु० [सं०] यति ।

निर्जिह्व-पु० [सं०] मेढक । वि० जिह्वाहीन ।

निर्जीव-वि० [सं०] जिसमें जान न हो, गतप्राण; शक्ति या उत्साहसे रहित, मुर्दादिल ।

निर्झर-पु० [सं०] झरना, प्रपात; सर्वका एक बोझ, भूमीकी आग; हाथी ।

निर्झर लेखनी-स्त्री० [सं०] दे० ‘फाउटेनपेन’ ।

निर्झरिणी निर्झरी-स्त्री० [सं०] झरनेसे निकलनेवाली गद्दी ।

निर्झरी (रिक्)-पु० [सं०] पहाड़ । वि० जिससे झरने

झरते हैं।

निर्णय-पु० [सं०] इतना; किसी विषयपर अच्छी तरह विचार करके उसके दो पक्षोंमेंसे किसी एकको उचित ठहराना; किसी विषयके पूर्वपक्ष और उत्तरपक्षका विमर्श करके ठीक मत स्थिर करना; विचारपतिका किसी विवादके विषयमें अपना मत स्थिर करना, किसी विचारपति द्वारा किसी विवादके विषयमें स्थिर किया गया मत, फैसला, निवटारा।—**पाठ**-पु० व्यवहारके चार पादोंमेंसे एक; विचार-निष्पत्ति।

निर्णयक-पु० [सं०] निश्चय या निपटारा करना।

निर्णयोपमा-स्त्री० [म०] अर्थालंकारका एक भेद जिसमें उपमेय तथा उपमानके गुणों तथा दोषोंका विवेचन किया जाय।

निर्णय-पु० [सं०] सूर्यवा एक अश्व।

निर्णायक-वि०, पु० [सं०] निर्णय करनेवाला।

निर्णायक-पु० [सं०] निश्चय करनेकी किया; हाथीकी आँखके बाहरी कोणके पासका हिस्सा जहाँसे मूत्र बहता है।

निर्मिक्त-वि० [सं०] मुला हुआ, शोधित; जिसके लिए प्रायश्चित्त किया गया हो।

निर्मिक्ति-स्त्री० [सं०] धोना, शोधन; प्रायश्चित्त।

निर्णीत-वि० [सं०] जिसका निर्णय किया गया हो, फैसला।

निर्णय, **निर्णयन**-पु० [सं०] धोना, साफ करना; स्नान; प्रायश्चित्त।

निर्णयक-पु० [म०] धोवी, रजक।

निर्णयता(तु)-वि० [सं०] निर्णायक। [स्त्री० 'निर्णयता'] पु० विचारपति; सत्त्वो; मार्गप्रदर्शक।

निर्णय-पु० [म०] निष्कासन।

निर्णय-पु० मूत्र, नाच।

निर्णय-पु० नर्तन, नट; भाँव।

निर्णय-अ० [सं०] नाचना।

निर्णय-वि० [सं०] जिसे सभी तरहके ठह दिये जा सकें, दंड देने योग्य। पु० शूद्र।

निर्णय-वि० [सं०] जिसे दाँत न हों, बिना दाँतका।

निर्णय-वि० [सं०] अश्वरहित।

निर्णय, **निर्णय**-वि० [सं०] दे० 'निर्णय'।

निर्णय-वि० [सं०] जला हुआ; जो न जला हो।

निर्णय, **निर्णय**-वि० [सं०] निष्ठुर; ईर्ष्यालु; निकम्मा; उदर, प्रसक्त।

निर्णय-वि० [सं०] दयारहित, कठोर हृदयवाला, निष्ठुर, प्रसक्त; उदर।

निर्णय-स्त्री० [सं०] निर्णय होनेका भाव, कठोरहृदयता, निष्ठुरता।

निर्णय-पु० [सं०] निर्णय; मार; युष्मा। वि० कठिन; निर्णय।

निर्णय-वि० [सं०] पक्षहीन; दलहीन; दलबंदीसे अलग।

निर्णय सम्मेलन-पु० [म०] ऐसे नेताओं, कार्यकर्ताओं आदिका सम्मेलन जिनका संघर्ष किसी दल-विरोधसे न हो।

निर्णय-पु० [सं०] नाश करना, अंग करना। वि० दहन करनेवाला।

निर्णय-वि० [सं०] जिसको हुए दस दिन हो चुके हैं।

निर्णय-वि० [सं०] दे० 'निर्णय'।

निर्णय-पु० [सं०] भिलावेंका पेश; जलानेकी किया।

वि० अक्षिमे रहित; जिसमें दाह न हो, दाहसूत्र; जलानेवाला।

निर्णय-सं० [सं०] जला देना, दग्ध करना।

निर्णय-स्त्री० [सं०] मूर्खता नामकी लता।

निर्णय(तु)-पु० [म०] दाता; निरानेवाला; किसान; काटनेवाला।

निर्णय-वि० [सं०] दे० 'विदारित'।

निर्णय-वि० [सं०] दृष्ट-पट, मोघ-तात्वा; लिप्त; निर्लिप्त।

निर्णय-वि० [सं०] जिसका निर्देश किया गया हो, बतलाया हुआ; वर्णित; निर्णीत।

निर्णय-वि० [सं०] दे० 'निर्णय'।

निर्णय-पु० [सं०] बतलाना, दिखाना, संकेत करना, जताना; नियत करना; आदेश, हुक्म, आदेश, हिदायत; कथन; उल्लेख; सामीप्य।

निर्णय-वि० [सं०] जो निर्देश करे।

निर्णय(दृ)-वि०, पु० [म०] निर्देश करनेवाला। [स्त्री० 'निर्णय'।]

निर्णय-वि० [म०] मुझी।

निर्णय-वि० [म०] जिसमें कोई दोष न हो, निष्कलंक, दोषरहित, निरपराध।

निर्णय-स्त्री० [सं०] निर्दोष होनेका भाव, दोषरहित्य, निष्कलंकता।

निर्णय-वि० [सं०] दे० 'निर्णय'।

निर्णय-वि० [सं०] दे० 'निर्णय'।

निर्णय-वि० [सं०] सर्व विषय आदि दृष्टोंमें रहित, जिसका कोई विरोधी न हो, स्वच्छ।

निर्णय-वि० [सं०] अनदीन, अरिद्र।

निर्णय-वि० [म०] गर्म; रहित, जो धर्मका पालन न करे।

निर्णय-वि० [सं०] जिसमें धातु शीघ्र हो गयी हो, वीर्यहीन, शक्तिहीन।

निर्णय, **निर्णय**-पु० [सं०] समान जाति, गुण, किया आदि शब्द बहुवचनमें एकको छोड़ना, चुनना या अलग करना; नियत करना, निर्णय या निश्चय करना; निर्णय, निश्चय।

निर्णय-ग० [सं०] निर्णय करना।

निर्णय-वि० [सं०] जिसका निर्धारण किया गया हो।

निर्णय-वि० [सं०] निर्धारण करने योग्य; दृढ़; उत्साही; निर्भीक।

निर्णय-वि० [सं०] हिलाया हुआ; फेंका हुआ, दूर किया हुआ; लागा हुआ, परित्यक्त; नष्ट किया हुआ, नाशित।

पु० अविविधी आदि द्वारा परित्यक्त व्यक्ति।

निर्णय-वि० [सं०] धुँसे रहित।

निर्णय-वि० [सं०] जो धुल गया हो; चमकाया हुआ।

निर्णय-वि० [सं०] मनुष्यों द्वारा परित्यक्त।

निर्णय-वि० [सं०] जिसका कोई अभिप्रायक या स्वामी न हो।

निर्णय-स्त्री० [सं०] रक्षाका अभाव; वैधव्य; अनाथ

होनेकी अवस्था ।

निर्मिषिच, निर्मिषिचक-वि० [सं०] बिना कारणका, अकारण ।

निर्मिषेच-वि० [सं०] जिसमें पलक न मारी जाय । अ० बिना पलक गिराये, टकटकी लगाकर ।

निर्वक्ष-वि० दे० 'निष्पक्ष' ।

निर्वक्ष-वि० दे० 'निष्पक्ष' ।

निर्वच-पु० [सं०] आग्रह, इष्ट; अभिनिवेश; क्लृप्त; होइ (?) । वि० बंधनरहित ।

निर्वरा-वि० पुंल्लिङ्ग, अपठ-एक आकार दिखलाई पढ़ा माफ नहीं, निर्वरा-दृग् ।

निर्वहण-पु० [सं०] दे० 'निर्वहण' ।

निर्वह-वि० [सं०] शक्तिहीन, कमजोर ।

निर्वहना-अ० कि० पार पाना; त्राण पाना; निवहना, निवना ।

निर्बाध-वि० [सं०] बिना बाधा या रोकका, प्रतिबधरहित; जहाँ या जिसमें कोई उपद्रव न हो, निरुपद्रव; एकांत, निर्जन ।

निर्बाधित-वि० बाधारहित ।

निर्वृद्धि-वि० [सं०] बुद्धिहीन, मूर्ख, बेबकूक ।

निर्बोध-वि० [सं०] जिनमें बोधा-सा भी ज्ञान न हो, अज्ञान, नासमझ ।

निर्मग्न-वि० [सं०] खटित, जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; झुकाया हुआ ।

निर्मट-वि० [सं०] दृढ़, कठिन ।

निर्मय-वि० [सं०] जो किसीमें भय न स्थाय, निरुदर; निरापद्रु ।

निर्मर-वि० [सं०] अत्यंत, बहुत अधिक; तीव्र, गाढ़; भरा हुआ; अवलंबित । पु० वेगारमें काम करनेवाला आठमी; अनिश्चयता ।

निर्मरसन-पु०, **निर्मरसना**-स्त्री० [सं०] अनिष्ट करनेकी धमकी देना; डाँट-इपट, श्लिष्क; तिरस्कार, अपिशेष; बुरा-भला कहना ।

निर्माग्य-वि० [सं०] अमागा ।

निर्मास-पु० [सं०] प्रकट होना; चमकना ।

निर्मिष-वि० [सं०] छिद्रा हुआ; फाटा हुआ, जो प्रकट हो गया हो, उद्घाटित ।

निर्मोक्ष-वि० [सं०] दे० 'निर्मय' ।

निर्वृत्ति-वि० [सं०] वेगारमें काम करनेवाला ।

निर्मैव-पु० [सं०] फाटना; छेदना, बंधना; प्रकट करना, उद्घाटन; स्पष्ट कथन या उल्लेख ।

निर्मम-वि० [सं०] अमरहित, जिसमें या जिसमें कोई अम न हो । * अ० बेखटके, स्वच्छंद होकर ।

निर्मात-वि० [सं०] दे० 'निर्मम' ।

निर्मम्य-पु० [सं०] अरणिकी लकड़ी जिसे रंगकर आग पैदा करते हैं ।

निर्मोक्ष-वि० [सं०] जहाँ कोई (एक मयस्वीकृत) न हो, निर्जन, एकांत ।

निर्मज-वि० [सं०] दुबला-पतला ।

निर्मय-पु० [सं०] अरणि जिसके मंथनसे बहने लिये अग्नि

उत्पन्न की जाती है ।

निर्मय-वि० [सं०] अविमानरहित; इर्षरहित; (बह इ०) जिसके गंडस्थलमें मद्य न बहता हो, मद्यजलमें रहित ।

निर्मय्या-स्त्री० [सं०] नली नामक गणद्वय ।

निर्मना-स० कि० बनाना, उत्पन्न करना ।

निर्मनुज, निर्मनुष्य, निर्मानुष-वि० [सं०] मनुष्योंसे रहित; गैर-आवाह; मनुष्यों द्वारा परित्यक्त ।

निर्मम-वि० [सं०] ममत्तारहित, निष्ठुर ।

निर्मोक्ष-वि० [सं०] जिसने मर्यादाका अतिक्रमण कर दिया है; उरुद, अशिष्ट ।

निर्मल-वि० [सं०] जिसमें मल न हो, स्वच्छ; शुद्ध, पवित्र; रागादि दोषोंमें रहित; अक्लृष । पु० अन्नक; निर्माल्य ।

निर्मोक्षी-स्त्री० एक वृक्ष या उसका फल जो पानी साफ करने और दवाके काम आता है ।

निर्मोक्षपल-पु० [सं०] स्फटिक ।

निर्मास-वि० [सं०] मात्सरहित; जो पर्याप्त भोजन न करने या न मिछनेमें क्षीण हो गया हो ।

निर्माण-पु० [सं०] बनाने या रचनेकी क्रिया, रचना; साधन; रूप; मयन; अंश; मार, मज्जा । -विद्या-स्त्री० मकान आदि बनानेकी विद्या; वास्तुविद्या ।

निर्माता(तु)-वि०, पु० [सं०] बानेनाला, रचना करनेवाला, स्रष्टा ।

निर्मात्रिक-वि० [सं०] मात्रारहित ।

निर्मान-वि० [सं०] अघार, असीम; अविमानरहित ।

निर्माना-स० कि० बनाना; रचना करना; पैदा करना ।

निर्मायल-पु० दे० 'निर्मोक्ष' ।

निर्माजन-पु० [सं०] धोना, माफ करना ।

निर्मास्य-पु० [सं०] किसी देवताको समर्पित किया हुआ पदार्थ (विसर्जनके बाद देवाधिप वस्तुको 'निर्मास्य' कहते हैं) ।

निर्मास्या-स्त्री० [सं०] असर्वग ।

निर्मित-वि० [सं०] बनाया हुआ, रचा हुआ, रचित ।

निर्मिति-स्त्री० [सं०] दे० 'निर्माण' ।

निर्मुक्त-वि० [सं०] विशेष रूपसे मुक्त, जो पूरे तौरसे छुटकारा पा चुका हो, बंधनोंसे रहित । पु० वह साँप जो केतुव छोड़ चुका हो ।

निर्मुक्ति-स्त्री० [सं०] मुक्ति, छुटकारा ।

निर्मूल-वि० [सं०] मूलरहित, बिना जड़का; जो मूल सहित उखाड़ दिया गया हो, जो मूल सहित नष्ट कर दिया गया हो, सर्वथा नष्ट ।

निर्मूलन-पु० [सं०] मूलरहित होना या करना; विनाश ।

निर्मूल-वि० [सं०] धुला या साफ किया हुआ; मिटाया हुआ ।

निर्मय-वि० [सं०] बादलोंमें रहित, निरभ्र ।

निर्मय-वि० [सं०] मूर्ख, बुद्धिहीन ।

निर्मोक्ष-पु० [सं०] साँपकी केंचुल; छोड़ना, त्यागना, मोचन; शरीरके ऊपरका चमड़ा, खाल; कवच; आकाश; सावणि मनुके एक पुत्र ।

निर्मोक्ष-पु० [सं०] पूर्ण मोक्ष ।

निर्माचन-पु० [सं०] मुक्ति, छुटकारा ।

निर्मोक्ष-वि० अलमोक्ष, बहुभूत्य ।

निर्मोह-वि० [सं०] मोह या अज्ञानसे रहित; ममता, दयासे शून्य, निष्ठुर, वेदरहित । पु० रैवत मनुके एक पुत्र; शिव ।

निर्मोहिता-वि० दे० 'निर्मोह' ।

निर्मोही-वि० दे० 'निर्मोह' ।

निर्मोघन-वि० [सं०] अविर्यभित, बनावित ।

निर्माण-पु० [सं०] निकलना, बाहर जाना, कूच, प्रस्थान (विशेषतः सेनाका); प्राणका निकलना; पशुओंकी नौबते या छाननेकी रस्ती; हाथीकी आँखके कोनेके पासका हिस्सा जहाँमे मद्य निकलता है; मोक्ष; लोहा ।

निर्मात-वि० [सं०] जो बाहर गया हो, जिसने प्रस्थान किया हो । पु० बैचनेके लिए बाहर भेजा जानेवाला माल; बाहर जाना या भेजना । -कर-पु० निर्वातपर लगाया जानेवाला कर ।

निर्मातव्य-पु० [सं०] बदला लेना, प्रतिशोध; प्रतीकार; विनिमय; किसीकी धरोहर उले जौदा देना, प्रतिदान; कण आदि चुकाना; मारण; स्वीकृति, कष्ट देना -'यह निर्मातन अब और न सहेंगे'-'पथके दावेदार' ।

निर्मासि-खी० [सं०] प्रस्थान, गमन; मृत्यु; मोक्ष ।

निर्वास-पु० [सं०] पीतवाह, नास्तिक ।

निर्वास-पु० [सं०] स्वतः या काटनेपर कृष्टों आदिमेंसे निकलनेवाला रस; गौरव; किसी वस्तुमेंसे निकलनेवाला पानी, रस आदि; कादा, काय; अर्क ।

निर्वच-वि० [सं०] जो अपने दलसे विमुख गया हो ।

निर्वच-पु० [सं०] दे० 'निर्वास' ।

निर्वच-पु० [सं०] सिरपर भूषणकी तरह धारण की जानेवाली वस्तु, शिरोभूषण; कादा; खूँटी, द्वार, दरवाजा ।

निर्वच-वि० [सं०] लज्जारहित, बेधर्म, बेहया ।

निर्वच-वि० [सं०] जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो ।

निर्वच-वि० [सं०] दे० 'निर्वच' ।

निर्वच-पु० [सं०] छिलका या भूसी अलग करना ।

निर्वच-पु० [सं०] कूट लेना; फाड़कर अलग करना ।

निर्वच-पु० [सं०] किसी चीजपरका मेल आदि सुरचना; वह वस्तु जिससे किसी चीजपरका मेल सुरचा जाय ।

निर्वच-वि० [सं०] जिनपर कलश न की गयी हो; जो किसी वस्तु या विषयमें आसक्त न रहे, आसक्तिरहित; जो किसीसे कुछ संबंध न रखे, उदासीन, निःसंग; निष्पाप । पु० संत, कवि ।

निर्वच-वि० [सं०] लोमरहित, संतोषी ।

निर्वच-वि० दे० 'निर्वोमा' ।

निर्वोमा(मनु)-वि० [सं०] जिसे रोयें न हों । [खी० 'निर्वोम्नी' ।

निर्वच-वि० [सं०] जिसकी वंशपरंपरा उसीके शरीरसे समाप्त हो जाय, जिसका वंश उच्छिन्न हो गया हो, निःसंतान ।

निर्वच-वि० [सं०] दे० 'निर्वचनीय' ।

निर्वच-वि० [सं०] मौन, चुप; आपत्तिरहित; निर्दोष । पु० निरक्षि; उच्चारण; उत्ति, कदाचित्; शब्द-सूची ।

निर्वचनीय-वि० [सं०] निर्वचन करने योग्य, जिसका निर्वचन किया जा सके, जो लक्षण आदिके द्वारा ममशाया जा सके ।

निर्वच, निर्वच-वि० [सं०] बनसे रहित; बनसे बाहर; सुखा हुआ ।

निर्वचनीकरण-पु० [सं०] (दीकारेच्छेक्षण) दे० 'वन-नाशन' ।

निर्वच-पु० [सं०] पितृतर्पण; देना, दान; बौटना, अब आदिका वितरण ।

निर्वचनी-खी० [सं०] सौंपकी कँसुली ।

निर्वच-वि० [सं०] निर्लज्ज, बेहया; निष्ठुर ।

निर्वच-पु० [सं०] देखना, दर्शन; ध्यानसे देखना ।

निर्वच-पु० [सं०] दे० 'निष्पत्ति' ।

निर्वच-वि० [सं०] दे० 'निष्पन्न' ।

निर्वच-पु० [सं०] दे० 'निर्वचण' ।

निर्वच-वि० [सं०] बलहीन ।

निर्वच-वि० [सं०] दरिद्र ।

निर्वच-पु० [सं०] समाप्ति; निबाहना, निबाह; मादककी प्रस्तुत कषाकी समाप्ति । -संघि-खी० नाटकमे प्रयुक्त होनेवाली पाँच संधियोंमें एक ।

निर्वच(च)-वि० [सं०] मौन, चुप ।

निर्वच-पु० [सं०] निर्वाचन करनेवाला, वह जो निर्वाचन करे, वह जिने मताधिकार प्राप्त हो । -संघ, -समूह पु० निर्वाचकोका समुदाय, 'प्लेक्टरेट' ।

निर्वच-पु० [सं०] 'बोट' द्वारा चुनना, चुनाव । -क्षेत्र -पु० चुनावका हलका ।

निर्वच-वि० [सं०] जिसका निर्वाचन किया गया हो, 'बोट' द्वारा चुना हुआ ।

निर्वच-वि० [सं०] न करने योग्य; निर्दोष; जिनपर आपत्ति न की जा सके ।

निर्वाण-वि० [सं०] हुआ हुआ (दीपक आदि); मृत; जो अस्त हो गया हो, अस्तगन; मुक्त; शांत; अचल, स्थिर । पु० बुद्धना; अस्त होना, अस्तमन; (हाथीकी) नहलाना, धोना, गमज्जन, मोक्ष, परम गति, शांति; विनाश; संगम; सुख, निवृत्ति; एक मात्रागण (छत्र); परम आनंद । (वह शब्द बौद्धदर्शनमे मुक्तिके अर्थमे पारिभाषिक रूपमें प्रयुक्त होता है ।) -प्रिया-खी० एक गधवाँ । -सूचि-वि० छुप्त । -मस्तक-पु० मोक्ष । -रुचि-वि० मुमुक्षु, मोक्षप्राप्तनमें रत ।

निर्वात-वि० [सं०] जहाँ हवा न चक्की हो, वायुसे रहित; शांत ।

निर्वात-पु० [सं०] लोकापवाद, लोकनिर्वात; अफवाह; वाद-ग्रस्त विषयका निपटारा; वादभाव ।

निर्वात-पु० [सं०] दान; पितरीके निमित्त किया जानेवाला दान; बुझाना (आग आदि) ।

निर्वात-पु० [सं०] दान; मारण; वध; बुझाना; उठेलना; शांत करना ।

निर्वात-वि० [सं०] जो निःशंक होकर परिममपूर्वक कर्म करे; जिसका निवारण न हो सके ।

निर्वात, निर्वासन-पु० [सं०] देशनिकास; मारण, हिंसन; विसर्जन; प्रणाम ।

छिपना ।

निलयन-पु० [मं०] वास करना, बसेरा लेना; वासस्थान, आश्रयस्थान, घर; बाहर जाना; उतरना, नीचे आना ।

निलहा-वि० जिसका संबंध नीलसे हो, नीलवाला; नीलका कारोबार करनेवाला (जैसे-निलहा साहब) ।

निलाम-पु० दे० 'नीलाम' ।

निलिप-पु० [सं०] देवता । -**निर्झरी**-की० स्वर्गगा ।

निलिपा, **निलिपिका**-की० [सं०] गाय ।

निलीन-वि० [मं०] पिघला हुआ; छिपा हुआ; विशेष रूप-मे या बहुत अधिक लीन; नष्ट; परिवर्तित ।

निवचन-पु० [सं०] बराबर कहते जाना; बचनाभाव ।

निवछावर।-की० दे० 'निछावर' ।

निबद्धिवा।-की० एक प्रकारकी नाव ।

निवना-अ० कि० नवना, झुकना ।

निवपन-पु० [सं०] पितरों आदिके निमित्त किया जाने-वाला दान; धिक्करना; बोना ।

निवर-वि० [सं०] निवारण करनेवाला । पु० रोकनेवाला; रक्षण; आवरण ।

निवरा-की० [मं०] कुमारी ।

निवर्तक-वि० [सं०] लौटनेवाला; रुकनेवाला; दूर करने-वाला; लौटानेवाला ।

निवर्तन-पु० [सं०] रोकना, निवारण; जमीनकी एक पुरानी नाप; बोधा; पीछे हटना या हटाना; लौटना या लौटाना ।

निवर्ती (सिन्धु)-वि० [सं०] लौटनेवाला; आग ब्रानेवाला; परदेज करनेवाला; लौटने देनेवाला ।

निवर्ण-वि०, पु० [सं०] दे० 'निवर्ण' ।

निवसति-की० [सं०] वासस्थान, घर ।

निवसथ-पु० [मं०] गाँव, ग्राम ।

निवसन-पु० [सं०] गृह, वासस्थान; वस् ।

निवसना-अ० कि० वास करना, रहना ।

निवह-पु० [सं०] समझ, समुदाय; सात बायुओंमेंमे एक; दे० 'अनिल'; अग्निकी सात शिवाओंमेंमे एक; वध ।

निवाह-वि० नवीन; अद्भुत ।

निवाकु-वि० [मं०] मौन, चुप ।

निवाज-वि० दया करनेवाला, रहम करनेवाला (समासमे उत्तरपदके रूपमें प्रयुक्त) ।

निवाजना-सं० कि० कृपा करना; कृपापात्र बनाना ।

निवाजिहा-की० दे० 'नवाजिहा' ।

निवाह-पु०, की० दे० 'निवार' ।

निवाहा।-पु० एक प्रकारकी छोटी नाव; नावमें बैठकर की जानेवाली एक प्रकारकी जलक्रीडा जिसमें नावकी बीच-धारामें छे जाकर नचाते हैं ।

निवाही-की० दे० 'निवारी' ।

निवात-वि० [सं०] जहाँ हवा न चलती हो; जहाँ हवाकी पहुँच न हो; शक्नोंसे सुसज्जित सुरक्षित । पु० वह कवच जो शक्नों द्वारा भेदा न जा सके; आश्रय-स्थान; घर, बायुमें रक्षित स्थान; बायुका अभाव; शांति; सुरक्षित स्थान । -**कवच**-पु० हिरण्यकशिपुके पुत्र सकृत्पदा पुत्र; एक प्रकारके दानव ।

निवान-पु० पानी या कीचड़से भरी रहनेवाली नीची जमीन; जलाशय ।

निवाना-सं० कि० दे० 'नवाना' ।

निवाग्धा-की० [मं०] वह मृतवत्सा गौ जो दूसरी गायके बछड़ेकी लगाकर दुही जाय ।

निवाप-पु० [मं०] दान; पितरोंके उद्देश्यसे किया जाने-वाला दान ।

निवार-पु० [सं०] एक प्रकारका धान जिसका चावल मृत आदिमें खाया जाता है, तिन्नी, पसही; निवारण; † एक तरहकी मोटी मूली । की० [हिं०] कुएँकी नीचेमें दिया जानेवाला लकड़ी आदिका चक्का जिसके ऊपरसे कोठीकी जोफाई की जाती है, जमवट; पल्लु धुनने आदिके काम आनेवाली मोटे सूतकी बनी हुई चौड़ी पट्टी । -**बाक**-पु० निवार धुननेवाला ।

निवारक-वि० [सं०] निवारण करनेवाला, रोकनेवाला; दूर करनेवाला ।

निवारण-पु० [सं०] रोकना; हटाना; दूर करना, मिटाना ।

निवारन-पु० दे० 'निवारण' ।

निवारना-सं० कि० रोकना; हटाना; बरजना; बचाना; दूर करना; नुकसान-पिछली टेढ़ा निवारि आज मब पुनि दीजो जब जानो कालि'-सर ।

निवारी-की० जूहीकी जानिका एक पौधा; इस पौधेका फूल ।

निवाला-पु० [फा०] कबल, ग्राम, झुकमा ।

निवास-पु० [सं०] रहनेका भाव या कार्य, रहना; रहनेका स्थान, घर, आश्रय; रात्रि व्यतीत करना; पोशक ।

निवासन-पु० [सं०] घर, गृह; कुछ कालके लिए ठहरना; काल-चापन ।

निवासी (सिन्धु)-वि० [मं०] निवास करनेवाला, रहने-वाला; वस् धारण करनेवाला । पु० रहने, बसनेवाला ।

निविड-वि० [मं०] घना, कमा हुआ; घोर, भेद आकारका; स्थूल; भरा; चपटी या टेढ़ी नादवाला ।

निविहीरा, **निविहीरा**-वि० [सं०] दे० 'निविरीरा' ।

निविहान-पु० [सं०] एक ही दिनमें समाप्त होनेवाला यज्ञ आदि ।

निविरीरा, **निविरीर**-वि० [सं०] घना, गहरा; भरा ।

निविरीरा-की० [सं०] चपटी या टेढ़ी नाक ।

निविशमान-पु० [मं०] उपनिवेश बसानेके काम आनेवाले लोग (की०) ।

निविशेष-वि० [सं०] भेदरहित, समान । पु० भेदराहित्य; एकरूपता ।

निविष।-वि० दे० 'निविष' ।

निविष्ट-वि० [सं०] स्थित; एकाग्र; धृष्ट हुआ; व्यवस्थित । -**पण्य**-पु० बोरीमें कसा हुआ माल ।

निवीत-पु० [सं०] यक्षोपवीत; ओढ़नेका वस्त्र, ओढ़नी, प्रावरण ।

निवीती (सिन्धु)-वि० [सं०] जो यक्षोपवीत धारण किये हो ।

निवीर्य-वि० [सं०] दे० 'निवीर्य' ।

निवृत्त-पु० [सं०] ओढ़नी, उत्तरीय । वि० विरा हुआ; अहित ।

निभूति-खी० [स०] बेरा; आवरण ।

निभूत-वि० [स०] लौटा हुआ; जो माग माया ही; पूरा या समाप्त किया हुआ; हटाया हुआ; विरत; जो अवकाश या छुटकारा पा चुका हो, मुक्त । पु० प्रत्यागमन; राग-रहित मन । -कारण-वि० जिनका और कोई कारण न हो । -बौद्ध-वि० जिसकी जबानी लौट आयी हो । -राश-वि० विरक्त । -हृत्ति-वि० अपना पेशा छोड़ने-वाला । -हृत्तिक आधि-खी० किसीके वहाँ जमा किया हुआ वह धन जिसपर व्याज न लिया जाय ।

निभूतात्मा(रम्य)-वि० [स०] विषयोंसे विरत । पु० विष्णु ।

निभूति-खी० [स०] निभूत होनेकी क्रिया; प्रशंसिका अभाव; छुटकारा; मुक्ति; लौटना; समाप्ति; विरत होना; हटना; विश्राम ।

निवेद्य-पु० दे० 'नैवेद्य' ।

निवेदक-वि०, पु० [स०] निवेदन करनेवाला ।

निवेदन-पु० [स०] किसीके कुछ कहना; प्रार्थना; समर्पित करना, समर्पण; शिव ।

निवेदना-स० कि० निवेदन करना; प्रार्थना करना; समर्पित करना ।

निवेदित-वि० [स०] निवेदन किया हुआ; प्रार्थनारूपमें कहा हुआ; अर्पण किया हुआ, समर्पित ।

निवेद्य-पु० [स०] दे० 'नैवेद्य' ।

निवेदना-स० कि० दे० 'निवेदना' ।

निवेश-वि० चुना हुआ; नूतन; अदभुत । [खी० 'निवेशी' ।]

निवेश-पु० [स०] प्रवेश; आगमन, स्थापन; पड़ाव डालना; मैन्य-विन्यास; पड़ाव डालनेकी जगह; शिबिर, खेमा; वासस्थान, गृह; विवाह; मन्नावट ।

निवेशन-पु० [स०] निविष्ट करनेकी क्रिया; स्थापन; गृह; नगर; पड़ाव, खेमा; घोंसला ।

निवेशनी-खी० [स०] पृथ्वी ।

निवेष्ट-पु० [स०] आवरण; ढकनेका कपड़ा ।

निवेष्टन-पु० [स०] ढकना ।

निवेद्य-पु० [स०] व्यास; भँवर; ओस (बै०); रुद्र (बै०) । वि० चक्रर खाता हुआ ।

निव्याधी(चिन्)-पु० [स०] एक रुद्र ।

निव्यूह-पु० [स०] उत्साह; अथर्वसाय ।

निशंक-वि० दे० 'निशङ्क' ।

निशा-खी० रात । -चर-पु० दे० 'निशाचर' ।

निशाठ-वि० [स०] सच्चा, ईमानदार । पु० नरदेवके एक पुत्र ।

निशाब्द-वि० [स०] चुप, मौन ।

निशमन-पु० [स०] देखना, अवलोकन, दर्शन; सुनना, भवण; परिचय प्राप्त करना, अवगत होना ।

निशरण-पु० [स०] शरण, बच ।

निशस्था-खी० [स०] दंती बूझ ।

निशांत-पु० [स०] भवन; प्रातःकाल । वि० बहुत शांत ।

निशांध-वि० [स०] जिसे रातकी दिखाई न दे, रातोंकी रोगवाला ।

निशांधा-खी० [स०] अतृकालता ।

निशा-खी० [स०] रात, रात्रि; हल्दी; दाबहल्दी; स्वप्न; दे० 'निशाबल' । -कर-पु० चंद्रमा; एककी संख्या;

सुरगा; कपूर । -कलामौलिक-पु० शिव । -कांत-पु० चंद्रमा । -केतु-पु० चंद्रमा । -क्षव-पु० रात्रिका

अंत । -गृह-पु० शयनागार । -चर-वि० रातमें निकलने या घूमने-फिनेवाला । पु० राक्षस; गौडक;

उल्लू; सोंप; चौर; भूत; पिशाच; शिव; चक्रवाक; एक गंधद्रव्य । -पति-पु० रावण; शिव । -चरी-खी०

राक्षसी; कुलटा, पुंश्वली; अभिसारिका । -चर्म(न)-पु० अंधकार । -चारी-पु० दे० 'निशाचर' । -जल-पु०

ओस । -दशी(शिर)-पु० छल्लू (जो रातकी देखता है) । -नाथ, -पति-पु० चंद्रमा; कपूर । -पुत्र-पु०

नक्षत्र आदि खेचर; एक दानववर्ग । -पुष्प-पु० कुसुम । -बल-पु० मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर

राशियों जो रातकी विशेष सबल मानी जाती हैं । -अंगा-खी० दुग्धपुष्पी । -मणि-पु० चंद्रमा । -मुच-पु०

मंध्याकाल । -सूय-पु० श्रुगाक, गौडक । -रज-पु० चंद्रमा । -बन-पु० सन । -विहार-पु० राक्षस ।

-बेदी(दिव)-पु० सुरगा । -इक्ष-पु० कुसुम ।

निशाखातिरि-खी० दिक्जमई, तसली ।

निशाख्या-खी० [स०] हल्दी ।

निशाठ, निशाठन-पु० [स०] उल्लू; राक्षस । वि० दे० 'निशाचर' ।

निशाटक-पु० [स०] गुग्गुलु । वि० दे० 'निशाचर' ।

निशात-वि० [स०] मानपर चढ़ाया हुआ, तेज किया हुआ; चमकाया हुआ ।

निशातिक्रम, निशात्यच-पु० [स०] रातका भीतना; प्रातःकाल ।

निशाद-पु० [स०] रातकी खानेवाला; नीच जातिकी व्यक्ति, निषाद ।

निशादि-पु० [स०] साय, भंध्या ।

निशाधीश-पु० [स०] दे० 'निशानाथ' ।

निशान-पु० [स०] मानपर चढ़ाना, तेज करना; [फा०] वह लक्षण जिसमें किसीकी पहचान की जा सके,

परिचायक लक्षण, चिह्न; किसी पदार्थकी सूचन करने-वाला उसका स्थानापन्न चिह्नविशेष; हस्ताक्षरके स्थानपर

कागज आदिपर बनाया जानेवाला चिह्न; किसी प्राचीन या पूर्ववर्ती पदार्थ या घटनाका परिचायक चिह्न; किसी

विशेष कार्य या पहचानके लिए नियत किया जानेवाला चिह्न; बादगार; लक्ष्य; झंडा; पता, ठिकाना । -ची-पु० दे० 'निशान-चरदार' । -दिही, -देही-खी० किसी

व्यक्ति या उसकी किसी वस्तुकी पहचान करानेका काम । -पट्टी-खी० दुलिया । -बरदार-पु० किसी राजा,

सेना या दलके आगे उसका झंडा लेकर चलनेवाला व्यक्ति । मु० (किसी बातका)-उठाना या खड़ा

करना-किसी आदमीका नेतृत्व करना । -देना-पता बताना; सम्मन तामील कराने आदिके लिए पहचान

कराना । निशाना-पु० [फा०] वह जिसको दृष्टिमें रखकर कोई

अथ चलाया जाय, कथय; निशाना साधनेके कामका मिट्टीका ढेर या कोई अन्य वस्तु; वह जिसके प्रति कोई चुटकुली बात कही जाय। **मु०-बाँचना-अथ** आधिको इस तरह साधना कि वह चलानेपर ठीक कथ्यपर बार करे। -**आदना** **बा** **कमाना**-कथ्यको घट्टीमें रखकर अथ आदिका बार करना। -**साधना**-दे० 'निशाना बाँचना'; निशाना मारनेका अभ्यास करना।

निशानी-खी० किसीकी याद करानेवाला चिह्न; यादगार; वह चिह्न जिससे किसी वस्तुको पहचान हो सके।

निशारण-पु० [सं०] दे० 'निशरण'।

निशायसान-पु० [सं०] दे० 'निशातिक्रम'।

निशारक-पु० [सं०] एक प्रकारका रूपक ताक जिसमें दो खुद और दो गुरु मात्राएँ होती हैं। नृत्यके साथ कथा जानेवाला शोक। **वि०** बहुत हिंसा करनेवाला।

निशास्ता-वि० [फा०] जमाया हुआ; बैठा हुआ। **पु०** गेहूँका गूदा; मोँही।

निशाङ्ग-खी० [सं०] हल्दी।

निशि-खी० रात। -**कर-पु०** दे० 'निशाकर'। -**चर-पु०** दे० 'निशाचर'। -**राज-पु०** विभीषण। -**दिन-अ०** रात-दिन, सदैव। -**नाथ-नाथक-पति-पु०** दे० 'निशानाथ'। -**बास-अ०** रात-दिन, सदैव।

निशि-अ० [सं०] रातमें। -**पाल-पालक-पु०** एक छंद; प्रहरी (जो रातमें पहरा देता है)। -**पुण्या-पुण्यिका-पुण्यी-खी०** सिंदुवार, निर्गुंडी।

निशित-वि० [सं०] सानपर चढ़ाया हुआ, तेज किया हुआ; तेज, तीक्ष्ण। **पु०** छोड़ा।

निशिता-खी० [सं०] रात्रि।

निशीथ-पु० [सं०] शयन-काल; आधी रात; रात; रात्रिका एक कथित पुत्र।

निशीथिनी-खी० [सं०] रात्रि, रात। -**पति-पु०** चंद्रमा।

निशीथिनीश-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

निशीथ्या-खी० [सं०] रात्रि।

निशुभ-पु० [सं०] भय; हिंसा करना, हिंसन; तीव्रता छुकाना; एक असुर जो शुक्रमा माई था और जिसका वध बुगाने किया था। -**मयनी-मदिनी-खी०** भगवती, दुर्गा।

निशुभन-पु० [सं०] मारण, वध करना।

निशुभी(निम्)-पु० [सं०] एक युद्ध।

निशेष-पु० [सं०] दे० 'निशानाथ'।

निशैत-पु० [सं०] बगला।

निशोत्सर्ग-पु० [सं०] प्रभात, सबेरा।

निश्चंद्र-वि० [सं०] चंद्रमासे रहित।

निश्चक्रिक-वि० [सं०] छल-छथसे रहित; सचा; ईमानदार।

निश्चक्रु(स्)-वि० [सं०] नेत्रहीन।

निश्चय-पु० [सं०] संदेहरहित ज्ञान; दृढ विचार; विद्यास; निबटारा, निर्णय, फैसला; जाँच; अर्थालंकारका एक वेद जिसमें अन्य विषयका निषेध होकर यथार्थ विषयका स्थापन हो।

निश्चयात्मक-वि० [सं०] संदेहरहित, निश्चय किसी प्रकार-

का सशय न हो।

निश्चक-वि० [सं०] जो चल न हो, थोड़ा-सा भी न हिलने-डुलनेवाला; अचल; स्थिर।

निश्चकार्य-पु० [सं०] बगला; परंत आदि जो सदा अचल बने रहते हैं। **वि०** जिसके अंग हिल-डुल न सकें।

निश्चक्र-खी० [सं०] शालग्राम; पृथ्वी।

निश्चायक-वि० [सं०] निश्चय करनेवाला, निर्णायक।

निश्चारक-पु० [सं०] वायु; पृथिवी-स्वाभाव स्वच्छंदता।

निश्चित-वि० [सं०] जिसे किसी प्रकारकी चिन्ता न हो, चिन्तारहित, बेफिक्र।

निश्चितई-खी० निश्चित होनेका भाव, बेफिक्री।

निश्चिति-वि० [सं०] जिसके बारेमें निश्चय किया जा चुका हो; निश्चय किया हुआ जो इधर-उधर न हो सके; जिसमें किसी प्रकारका ढेर-फेर न हो सके; पक्का।

निश्चिति-खी० [सं०] निश्चय या निर्णय करनेकी क्रिया; सकल्प।

निश्चित-पु० [सं०] एक प्रकारकी समाधि (शो०)।

निश्चुक्षण-पु० [सं०] मिश्री; दंतमजन।

निश्चेतन-वि० [सं०] संज्ञाहीन, बेहोश, मूर्च्छित।

निश्चेष्ट-वि० [सं०] चेष्टारहित; अचेत, मूर्च्छित; अचल, स्थिर।

निश्चेष्टाकरण-पु० [सं०] कामदेवका एक बाण।

निश्चै-पु० [सं०] दे० 'निश्चय'।

निश्चयबन-पु० [सं०] एक प्रकारकी अग्नि (म० भा०); वैश्वत मन्त्रनरके समर्पणोंमेंसे एक।

निश्चंदा(वस्)-वि० [सं०] जिसने वेदका अध्ययन न किया हो।

निश्चल-वि० [सं०] छलरहित; शुद्ध हृदयवाला; सचा; निष्कपट।

निश्चाय-वि० [सं०] छायारहित।

निश्छेद-पु० [मं०] अविभाव्य राशि (ग०)।

निश्चम-पु० [सं०] विशेष भ्रम, अध्ययमाय।

निश्चयणी, निश्चैथि, निश्चैणी-खी० [मं०] सीढ़ी।

निश्चास-पु० [सं०] बहिर्मुख श्वास, प्राणवायुके नाकसे बाहर आनेकी क्रिया; लयी नाँस।

निश्चोक-वि० [सं०] दे० 'निःशोक'।

निश्चली-वि० [सं०] शीलरहित, दुष्ट स्वभावका।

निश्चैष-वि० [सं०] दे० 'निःशेष'।

निर्षंग-पु० [सं०] तरकज, तृणीर; तलवार; सुँघसे फूँककर बजाया जानेवाला प्राचीन कालका एक राजा; विशेष आसक्ति। -**धि-पु०** तलवारका स्थान।

निर्षंगधि-पु० [सं०] आत्मगन; धनुर्धर; सारथि; रथ; कंधा, घास।

निर्षंगी(गिच्)-वि० [सं०] जिसके पास तरकज हो; जिसने धनुष् धारण किया हो; खड्ग धारण करनेवाला; अत्यंत आसक्तिवाला। **पु०** धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

विषक-वि० [सं०] विशेष रूपसे आसक्त।

विषक्या-वि० [सं०] बैठा हुआ, स्थित, उपविष्ट; सत्कार दिया हुआ; विषण्ण।

विषक्याक-पु० [सं०] आमन।

निषद्-पु० [सं०] संगीतका एक स्वर, निषाद ।

निषदन-पु० [सं०] बैठना; निवास करना; आसन; वर ।

निषद्-श्री० [सं०] यह करनेके लिए की जानेवाली दौड़ा । -**वर-पु०** पंक, कौचक; कामदेव । -**वरी-श्री०** रात्रि ।

निषद्या-श्री० [सं०] बाजार, हाट, छोटी ख़ाट ।

निषक-पु० [सं०] एक पर्वत (पु०); लवके भाई कुशके पौत्र; जनमेजयके पुत्र; एक प्राचीन देश जहाँके राजा नल थे (पु०); कुरुका एक पुत्र; निषाद स्वर (संगीत) ।

निषाद्-पु० [सं०] एक पुरानी अनाई जाति (मनुके अनुसार इसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और शूद्रा मातासे है); एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख रामायण आदिमें मिलता है; संगीतके सप्तका अंतिम स्वर जिसका मंक्षित रूप 'नि' है । -**कूर्च-पु०** एक प्राचीन देश ।

निषादित-वि० [सं०] बैठाया हुआ; पीछित ।

निषादी (विद्)-पु० [सं०] पौलवान, महावत । वि० बैठने या आराम करनेवाला ।

निषिक्त-वि० [सं०] अति सित्त; भीतर पहुँचाया हुआ । पु० वीर्यसे जलित गर्भ ।

निषिद्ध-वि० [सं०] निषेध किया हुआ, जिसपर रोक लगायी गयी हो, जिसे करना अति मना हो; उच्छ्रित कोटिका; दूषित; बुरा; छोटा ।

निषिद्धि-श्री० [सं०] मनाही, रोक; बचाव ।

निषूदन-वि० [सं०] मारनेवाला, बध करनेवाला; नाशक (प्रायः समाप्तमें व्यवहृत) । पु० मारण, बध; मारनेवाला ।

निषेक-पु० [सं०] विशेष रूपसे सींचना; गर्भ रहना, गर्भाधान; चुना, टपकना; गर्भाधानके अवसरपर होनेवाला एक मंस्कार; धौनेका पानी, धौवन; गंदा पानी; वीर्यकी अनुकूलता ।

निषेचन-पु० [सं०] छिड़कना; सींचना ।

निषेध-पु० [सं०] निषिद्ध करनेका कार्य, मनाही, रोक लगाना, बरजना; रोक, बाधा, प्रतिबंध; विधिका बिलोम; इनकार; वह आज्ञा या नियम जिसके द्वारा किसी बातकी मनाही की गयी हो । -**पत्र-पु०** वह लिखित आदेश जिनमें किसी बातकी मनाही हो । -**विधि-श्री०** विधिरूप निषेध-जैसे 'एकादशीको भोजन न करे' । यहाँ भोजनके निषेधका तात्पर्य वह है कि भोजनके अभावमें हटका साधन होता है ।

निषेचक-वि० [सं०] निषेध करनेवाला, रोकनेवाला ।

निषेचन-पु० [सं०] निषेध करनेकी क्रिया, मनाही, बर्जन ।

निषेध-पु० [सं०] विशेष रूपसे किया गया सेवन; विशेष प्रकारकी मेवा; पूजा; अनुष्ठान; लगाव, लगन; रहना, बसना ।

निषेधा-श्री० [सं०] दे० 'निषेध' ।

निषेधित-वि० [सं०] पूजित; सेवित; अनुष्ठित ।

निषेधी (विद्)-पु० [सं०] विशेष रूपसे सेवन करनेवाला ।

निषेध-वि० [सं०] विशेष रूपसे सेवन करने योग्य ।

निष्कंदक-वि० [सं०] बाधा, आपत्ति आदिसे रहित, जिसमें किसी प्रकारका खटका या बल्लेबा न हो, निर्दंड, निर्विघ्न ।

निष्कंद-वि० [सं०] बिना कंदका, कंठहीन । पु० वरुण वृक्ष ।

निष्कंप-वि० [सं०] जिसमें कंपन न हो, जो हिलता डुलता न हो, जो चंचल न हो, अवल, स्थिर ।

निष्क-पु० [सं०] सोनेका एक प्राचीन सिक्का जो प्रायः सोलह माथेका होता था; १०८ या १५० सुवर्णोंकी एक प्राचीन तोल; गलेका एक प्रकारका सोनेका आभूषण; सोना; सोनेका पात्र; चार सुवर्णोंके बराबर एक प्राचीन तोल; दीनार; चाँदाल ।

निष्कपट-वि० [सं०] छल-छद्मसे रहित, सच्चा, शुद्ध हृदयवाला ।

निष्कर-वि० [सं०] जिसपर कर न लगा हो ।

निष्करण-वि० [सं०] दयारहित, कठोर हृदयवाला, निष्ठुर, निर्दय ।

निष्कर्तव्य-पु० [सं०] फाड़कर या काटकर अलग करना ।

निष्कर्मे-वि० दे० 'निष्कर्मा' ।

निष्कर्मण्य-वि० [सं०] निष्कर्मा; कर्म न करनेवाला ।

निष्कर्मा (मनु)-वि० [सं०] जो क्लिप्त होकर कर्म न करे, आसक्तिरहित होकर कर्म करनेवाला; निष्कर्मा ।

निष्कर्ष-पु० [सं०] तथ्य, सारभूत अर्थ, निष्कर्ष; निष्कर्ष; किसी वस्तुके विषयमें वह कैसा है और कितना है, इस प्रकारका विचार; नतीजा; बाहर करना, निष्मारण, निकालना; मारण ।

निष्कर्षण-पु० [सं०] बाहर करना; दूर करना; मिटाना; घटाना ।

निष्कलंक-वि० [सं०] जिसमें कोई कलंक न हो, दोष, पाप आदिसे रहित, वेदांग, विमल, विद्युद्ध, बिना पैरका ।

निष्कल-वि० [सं०] कलारहित; निरवयव, संपूर्ण; लक्ष्मीयः क्षीण । पु० ब्रह्मा; आधार ।

निष्कला, निष्कली-श्री० [सं०] वह बृद्धा श्री जिसका रजोधर्म होना बंद हो गया हो, गतरजस्का ।

निष्कषाय-वि० [सं०] विद्युद्ध चित्तवाला । पु० एक जिन ।

निष्काम-वि० [सं०] मग्न प्रकारकी कामना या आसक्तिसे रहित, जिसे किसी प्रकारकी कामना न हो, निरीह ।

-कर्म (वृ)-पु० फलप्राप्तिकी इच्छा त्यागकर किया जानेवाला कर्म ।

निष्कामी-वि० दे० 'निष्काम' ।

निष्कारण-वि० [सं०] कारणरहित, बिना किसी कारणका; बिना किसी कारणके होनेवाला, अहेतुक । पु० हडाना, ले जाना; मारण । अ० बिना किसी कारणके, अकारण ।

-बंधु-पु० वह जो बिना किसी प्रकारके स्वाधिके बंधुता रहे, स्वार्थरहित बंधु । -**वैरी (रिद्व)-पु०** वह जो अकारण वैरभाव रहे, वह जो बिना किसी कारणके शत्रु बन बैठे ।

निष्कालक-पु० [सं०] वह जिसके बाल, रीवे आदि मूँध दिये गये हों ।

निष्कालन-पु० [सं०] चलावना; भगाना (पशु); मार डालना, बध करना ।

निष्काशिक-वि० [सं०] जो कुछ हो दिन और जो सने, जिसका अंत निकट हो; अनेक ।

निष्काश, निष्काश-पु० [सं०] बाहर करना, निकालना; प्रसाद आदिका बाहरकी ओर निकाला हुआ हिस्सा; प्रभास; लोप ।

निष्काच-पु० [सं०] दूधका वह भाग जो उसके अधिक लीटे जानेके कारण बरतनमें ही सत्कर रह गया हो, दूधकी सुरचन (बै०) ।

निष्कासन-पु० [सं०] बाहर करना, निकालना, निःसारण ।

निष्कासित-वि० [सं०] बाहर किया हुआ, निकाला हुआ, निःसारित; रखा हुआ; निरुक्त; विकसित; जिसकी भर्त्सना की गयी हो ।

निष्कासिनी-स्त्री० [सं०] वह दासी जिसपर स्वामिनीने कोई प्रतिबंध न लगाया हो ।

निष्कचन-वि० [सं०] दे० 'अकिंचन' ।

निष्कचिबध-वि० [सं०] पापरहित, निर्दोष ।

निष्कुंभ-पु० [सं०] दंती कुम्भ । वि० कुंभरहित ।

निष्कुट-पु० [सं०] बरसे रूगा हुआ बगीचा, नजरबाग; क्यारी; राजाओंका भंतापुर, रनिवास; एक पर्वत; काटक; दरवाजा; कोटर ।

निष्कुटि, निष्कुटी-स्त्री० [सं०] बड़ी इलायची ।

निष्कुल-वि० [सं०] जिसके कुलमें कोई न रह गया हो ।

निष्कुलीकरण-पु० [सं०] किसीके कुलका नाश करना; छिलका अलग करना ।

निष्कुलीन-वि० [सं०] नीच कुलका ।

निष्कुपित-वि० [सं०] निष्कासित; छोला हुआ; जिसकी खाल अलग कर दी गयी हो; जहाँ-तहाँ काटा या खाया हुआ (जैसे-कीटनिष्कुपित); सुरेदकर निकला हुआ ।

निष्कुह-पु० [सं०] पेक्का खोंडर, कोटर ।

निष्कुत्र-वि० [सं०] सम्प्ररहित, शात ।

निष्कुट-वि० [सं०] छलरहित, निष्कपट ।

निष्कुत-वि० [सं०] निकाला हुआ; मुक्त; हटाया हुआ; उपेक्षित; क्षुभित । पु० प्रायश्चित्त; मिलनस्थान ।

निष्कुति-स्त्री० [सं०] निस्तार, पाप आदिसे मुक्ति, छुटकारा; उद्धार; प्रायश्चित्त; उपेक्षा; दुराचरण ।

निष्कृप-वि० [सं०] जिसमें दया न हो, निर्दय, निष्पूर; बेज ।

निष्कृष्ट-वि० [सं०] निर्वोक्कर निकाला हुआ, सारभूत ।

निष्कृष्य-वि० [सं०] विमुक्त; पूर्ण; मोक्षरहित ।

निष्कोष, निष्कोषण-पु० [सं०] छीलना; भूसी निकालना, काँचकर, सुरेदकर या खींचकर बाहर निकालना ।

निष्क्रम-वि० [सं०] बिना क्रमका, अक्रम । पु० बाहर निकलना; चार मासके बच्चेको पहले-पहले बरसे बाहर निकलनेके निमित्त किया जानेवाला एक संस्कार; जाति-च्युति ।-स्मार्त-पु० बाहर निकलने या जानेका रास्ता ।

निष्क्रमण-पु० [सं०] दे० 'निष्क्रम' ।

निष्क्रम्य-पु० [सं०] खरीद, क्रय; वेतन, मृति; भाका; पुरस्कार; किसी वस्तुके बदलेमें दी जानेवाली रकम या वस्तु, बदला, प्रतिफल; विमो; सामर्थ्य; प्रत्युपकार; छुटकारेके लिए दिया जानेवाला द्रव्य (की०) ।

निष्क्रमण्य-पु० [सं०] छुटकारेके लिए दी जानेवाली रकम ।

निष्क्रांत-वि० [सं०] जिसका निष्क्रमण हो चुका हो; निरांत ।

निष्क्रामित-वि० [सं०] निकाला हुआ; हटाया हुआ; भगाया हुआ, दबाया हुआ ।

निष्क्राम्य-पु० [सं०] निकाला निरांत (की०) ।-श्रुत्क-पु० निरांतकर (की०) ।

निष्क्रिय-वि० [सं०] कोई काम-धाम न करनेवाला, जो कुछ भी न करे-बरे; निश्चित कर्मोंको न करनेवाला; जिसमें या जिससे कार्य या व्यापार न हो, क्रियारहित ।-प्रति-रोध-पु० शासककी ओरसे होनेवाले दमनका प्रतिकार न कर उमकी अनुचित आज्ञा या कानूनका उत्त्थेधन, 'पेसिव रेसिस्टेंस' ।

निष्क्रियता-स्त्री० [सं०] निष्क्रिय होनेकी दशा या भाव ।

निष्कलेश-वि० [सं०] क्लेशरहित, जो सभ प्रकारके कष्टोंसे छुटकारा पा चुका हो ।

निष्काय-पु० [सं०] मांस आदिका रसा, होल, शीरवा ।

निष्टपन-पु० [सं०] पकाना; जलाना; झुलसना ।

निष्टस-वि० [सं०] झुलसा हुआ; अच्छी तरह पकाया हुआ ।

निष्टानक-पु० [सं०] गर्जन; कलरव ।

निष्टाप-पु० [सं०] जलाना, बीबा तप्त करना ।

निष्टि-स्त्री० [सं०] द्रिष्टि ।

निष्ट-वि० [सं०] (प्रायः समासात्तमे) सस्थित; निर्भर; मल्लय; अनुरक्त; तत्पर; 'मैं विश्वास करनेवाला; दक्ष ।

निष्टांत-वि० [सं०] बिनाशशील, नश्वर ।

निष्ठा-स्त्री० [सं०] स्थिति; आधार, एकाम्रता, तत्परता; दृढ़ता; अनुराग; भ्रष्टा; विश्वास; पूरा होना; निष्पत्ति; नाश; क्लेश; निर्वाह; याचना; जल, विष्णु; निश्चय; अवधारण; कौशल ।

निष्ठान-पु० [सं०] दाल, शाक, अचार आदि भोजनके उपकरण ।

निष्ठानक-पु० [सं०] एक नाग ।

निष्ठायान्(वत्)-वि० [सं०] निष्ठावाला ।

निष्ठित-वि० [सं०] भली भाँति स्थित, दृढ़; निष्ठावृत्त; कुशल, दक्ष ।

निष्ठिव, निष्ठिवन-पु० [सं०] खसारा आदिको मुँहमें बाहर निकालना; शूकना; शूक ।

निष्ठुर-वि० [सं०] कथा, कठोर; पक्ष; कष्टे दिलका; निर्दय, बेरहम । पु० परपु वचन, नीच वचन, कभी नाग ।

निष्ठेव, निष्ठेवन-पु० [सं०] दे० 'निष्ठेव' ।

निष्ठ्युत-वि० [सं०] शूका हुआ, उगला हुआ; बाहर निकाला हुआ; कहा हुआ, उक्त ।

निष्ठ्युति-स्त्री० [सं०] शूकनेकी क्रिया ।

निष्ण, निष्णान्त-वि० [सं०] कुशल, प्रवीण, निपुण; '(किसी विषयका) पूर्ण ज्ञान रखनेवाला; पूरा किया हुआ, निष्पक्ष ।

निष्पक्क-वि० [सं०] जिसमें पक न हो या न लगा हो, पकरहित ।

निष्पद्-वि० [सं०] गतिहीन, स्थिर ।

निष्पक्ष-वि० [सं०] अच्छी तरह पकाया हुआ ।

निष्पक्ष-वि० [सं०] जो किसी पक्षका न हो, जिसमें पक्ष-

निसर्वादि*-वि० दे० 'निसर्वादि'।

निसर्ग*-वि० जिसकी श्वासक्रिया बंद हो गयी हो; मूर्च्छा, अचेत।

निसर्गाय*-वि० दे० 'निसर्गाय'।

निसर्ग*-वि० दे० 'निसर्ग'। अ० वेस्तर्क- 'मनो अजी चपक कली, बसि रस लैत निसर्ग'-वि०।

निसर्ग*-स्त्री० लम्बो सँस, निःश्वास। वि० बेहोश, मृतप्राय।

निसर्ग*-वि० जिसकी श्वास-प्रश्वास-क्रिया बन्द हो गयी हो, बेदम, मृतप्राय।

निसर्ग*-पुं० दे० 'निसर्ग'। *स्त्री० तुमि, संतोष; इच्छा- 'निसा उयो होइ थौही तोष कोबै'-सुजान०; दे० 'निसा'। -कर-पुं० दे० 'निसार'। -चर-पुं० दे० 'निसाचर'। -नाथ, -पति-पुं० दे० 'निसानाथ'। -भर-अ० यथेष्ट; भली भाँति।

निसाद*-पुं० दे० 'निसाद'; भंगी।

निसान*-पुं० दे० 'निसान'; उका, नगाडा।

निसान*-पुं० रजनीमुख, प्रदोष।

निसाना*-पुं० दे० 'निसाना'।

नि नानी*-स्त्री० दे० 'निसानी'।

निसाक*-पुं० इलाक, न्याय।

निसार*-पुं० [म०] समुद्राय, समूह; [अ०] निष्कार; मुगलशासका एक निका जो चार आनेके बराबर होता था; निवलनेका माप। *वि० सारहीन, निःसार।

निसारना*-स० कि० बाहर करना, बाहर लाना, निकालना।

निसारा*-पुं० [अ०] ईसाई।

निसास*-पुं० दे० 'निःश्वास'।

निसासी*-वि० दे० 'निसासी'।

निसिधु*-पुं० [म०] सिधुशर, सम्राज्ञका पेश।

निसि*-स्त्री० एक वृषा; * रात। -कर-पुं० दे० 'निसाकर'। -चर-पुं० दे० 'निसाचर'। -चारी-वि० रात में निकलने या घूमने-फिरनेवाला। पुं० राक्षस। -दिन-अ० रात-दिन, सर्वा, हमेशा। -नाथ, -नाह-पुं० चन्द्रमा। -निसि-स्त्री० आधी रात, मध्य रात्रि। -पति, -पाल, -मनि-पुं० चन्द्रमा। -मुख-पुं० दे० 'निसा-मुख'। -थर-पुं० चन्द्रमा। -बासर-आ० रात-दिन, सदा हर समय।

निसीसी*-वि० मारहीन, निस्तर्क।

निसीथ*-पुं० दे० 'निसीथ'।

निसुभ*-पुं० दे० 'निसुभ'।

निसु*-स्त्री० रात।

निसुका*-वि० धनहीन, दरिद्र, निर्वक।

निसुदक*-वि० [म०] हिंसा करनेवाला, बध करनेवाला।

निसुद्व*-पुं० [म०] मारना, बध करना। वि० मारने-वाला, बध करनेवाला।

निसुत*-वि० [म०] विशेष रूपसे निकला या गया हुआ।

निसुता*-स्त्री० [म०] निमोष।

निसुट*-वि० [म०] त्यागा हुआ, छोटा हुआ, न्यस्त; दिया हुआ, प्रदत्त; बीचमें पड़ा हुआ, मध्यस्थ। पुं० एक टिनकी

मजदूरी, दैनिक श्रुति (कौ०)।

निसुटार्थ*-पुं० [म०] तीन प्रकारके दूतोंमेंसे वह दूत जो उभय पक्षकी बातोंको समझकर स्वयं उत्तर दे ले और कार्य निष्पन्न कर ले; धनके आर्थ-व्यय तथा कृषि और वाणिज्य-की निगरानीके लिए नियुक्त किया जानेवाला कर्मचारी; स्वामीके कार्योंको लगानसे करने तथा अपने पौरषको प्रवृत्त करनेवाला धीर और धृढमति पुरुष। -दूतिका, -दूती-स्त्री० वह दूती जो नायक और नायिकाके मनोरथको समझाकर अपनी बुद्धिमें कार्य सिद्ध करे।

निसैनी, **निसैनी***-स्त्री० सीढ़ी, सोपान।

निसैष*-वि० दे० 'निसैष'।

निसैस*-पुं० निशेध, चद्रमा।

निसोम*-वि० निःशोक; निश्चिन्त, बेफिक्र।

निसोच*-वि० निश्चिन्त, बेफिक्र।

निसोत*-वि० शुद्ध, खालिस-रीक्षत रामसनेह निसोते'-रामा०। † स्त्री० दे० 'निमोष'।

निसोथ*-स्त्री० एक लता जिसकी जड़ और डंठल दवाके काम आते हैं।

निसोथु*-स्त्री० सुध, खबर; मबाद, संदेश।

निस*-उप० [म०] इनका प्रयोग विधौ (निःमग), अव्यय (निर्मेय), आदेश (निर्देश), अतिक्रम (निष्काल), भोग (निर्वेश), निश्चय (निश्चित), निषेध (निर्मक्षिक) और साफल्य (निर्गन्त) का चोतन करनेके लिए होता है। (तथैके नियमोंके अनुसार 'नि' 'स' 'म्' विमर्ग, 'र' 'क्ष' और 'ध' में बदल जाता है।)

निस्केवल*-वि० बिना मिलावट, निरा, विशुद्ध।

निस्तंतु*-वि० [म०] तन्तुरहित; जिसे कोई सम्पत्ति न हो, सन्तानहीन।

निस्तर्द, **निस्तर्दि***-वि० [म०] तन्त्रारहित, जागरूक; आलस्यरहित।

निस्तर्क*-वि० [म०] विमर्ग कुछ तर्क न हो, मारहीन।

निन्नी*-स्त्री० [म०] औषधकी बटिका, गोली।

निस्तर्क*-वि० [म०] विशेष रूपसे स्तब्ध।

निस्तमस्क*-वि० [म०] अधकार रहित; जो अंधेरा न हो।

निस्तार*-पुं० दे० 'निस्तार'।

निस्तरण*-पुं० [म०] पार जाना; निस्तार, उद्धार; उपाय।

निस्तरना*-अ० कि० निस्तार पाना, छुटकारा पाना, पार पाना, उतरना।

निसर्क*-वि० [म०] दे० 'अतर्क'।

निसाहण*-पुं० [म०] मारण, बध।

निसल*-वि० [म०] तलरहित, अतल; चबल, चल; गोला।

निसला*-स्त्री० [म०] बटिका, गोली।

निसार*-पुं० [म०] पार जाना, पार पाना; छुटकारा, मुक्ति, उद्धार; अभीष्टकी प्राप्ति; *सुविधा, निर्वाह, काम - 'यस्यशालये कुटीरं साधुजन निस्तारको'-पूर्ण कवि; † पेशावके लिए या शौचके लिए जाना-दिन चढ़े निस्तारके उपरान्त दोनों दाखानमें आ बैठें-सूरा०। -बीज-पुं० व्यवधानसे मुक्त करनेवाले कार्य या उपाय।

निसारक*-वि०, पुं० [म०] निस्तार करनेवाला; मुक्त करनेवाला। [स्त्री० 'निसारिका']।

निस्तारण-पु० [सं०] पार करना; मुक्त करना; उद्धार करना; विजय पाना, जीतना ।

निस्तारण*-वि० जो निस्तार करे; जो उद्धार करे । पु० दे० 'निस्तारण' ।

निस्तारणा*-सं० क्रि० पार करना; मुक्त करना; बचाना, उद्धार करना ।

निस्तारा*-पु० दे० 'निस्तार' ।

निस्तारि*-वि० [सं०] दे० 'निस्तारक' ।

निस्तोष*-वि० [म०] जो पार जा चुका हो; जिसका उद्धार हो गया हो, जो मुक्त हो गया हो, जिसे छुटकारा मिल गया हो ।

निस्तुष-वि० [मं०] तुषरहित, जिसकी भूमी अलग कर दी गयी हो; विशुद्ध, निर्मल । -क्षीर-पु० गेहूँ । -हृ-पु० स्फटिक मणि ।

निस्तुषित-वि० [मं०] जिसका छिलका अलग कर दिया गया हो, छीला हुआ; रसागा हुआ, त्यक्त; पतला बनाया हुआ; छोटा किया हुआ ।

निस्तोज-वि० दे० 'निस्तोजा' ।

निस्तोजा(जय)-वि० [मं०] तेजोहीन, जिसमें तेजका अभाव हो; कांतिहीन, निष्प्रभ ।

निस्तौल-वि० [म०] बिना तेलका, जिसमें तेल न हो ।

निस्तोद-पु० [मं०] चुभनेकी-सी तीव्र व्यथा, बहुत अधिक व्यथा ।

निष्प-वि० [मं०] दे० 'निर्लम्ब' ।

निष्पिडा-वि० [म०] निर्दय, निष्ठुर । पु० खड्ग; एक प्रकार का मृग (न०) । -पत्रिका-कौ० धूर । -शृङ्ग-पु० खड्गधारी ।

निष्ठुटी-कौ० [मं०] इलायची ।

निष्ठगुण्य-वि० [म०] जो सस्त्र, रज और नम-इन तीनों गुणों से परे हो, त्रिगुणातीत ।

निस्पन्द-वि० [म०] स्पर्शरहित, जिसमें कोई हरकत न हो । पु० स्थान ।

निस्पृह-वि० [म०] निर्लभ, वामनारहित ।

निस्पृहा-कौ० [म०] अभिनशिखा नामक वृक्ष ।

निस्प्रेही*-वि० दे० 'निस्पृह' ।

निस्फ-वि० [फा०] आधा । (स्फा)निस्फ-अ० आधे-आध । - (स्फा)बैटार्ह-कौ० वह बैटार्ह जिसमें आधी उपज जमींदार ले और आधी असामी, अधिया ।

निस्फल*-वि० दे० 'निष्फल'; अलक्षणीय ।

निस्वत-कौ०, अ० दे० 'निस्वत' ।

निस्पन्द-पु० [सं०] क्षरण, चूना, रिमना; परिणाम; बाहिर जाना ।

निस्पंदी (द्रिच)-वि० [म०] वहनेवाला, रिमनेवाला ।

निस्पर्णा*-अ० क्रि० निश्चिन होना-अनंगके रंग निस्पर्णा करि-घन० ।

निस्व, **निस्वा**-पु० [सं०] भातका मोंक; चूना, बठना, अपक्षरण ।

निस्वन, **निस्वान**-पु० [सं०] शब्द, आवाज; वाणीकी सर-सराहट ।

निस्कोच-वि० [सं०] संकोचरहित । अ० बिना संकोचके,

संकोचरहित होकर ।

निस्संग-वि० [सं०] संगरहित, विषयानुरागशून्य; पक्का; निर्लिप्त; निष्काम ।

निस्स्तान-वि० [सं०] जिसे कोई सतान न हो, सतान-हीन ।

निस्संदेह-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकारका संदेह न हो, संदेहरहित, असंदिग्ध । अ० बिना किसी संदेहके, बेझक । **निस्संख**-वि० [मं०] सस्त्ररहित, असार; शक्तिहीन, कम-जोर; तुच्छ; प्राणियोंसे रहित ।

निस्सरण-पु० [सं०] निकलनेकी क्रिया; निकलनेका मार्ग ।

निस्सहाय-वि० [सं०] सहायरहित ।

निस्सार-वि० [सं०] असार, जिसमें कोई तत्त्व न हो ।

निस्सीम-वि० [सं०] जिसकी सीमा न हो, अपार ।

निस्सनेह-वि० [म०] स्नेहरहित । पु० एक प्रकारका मृग (न०) । -फल-कौ० सफेद भटवड़ेया ।

निस्स्पन्द-वि० [मं०] दे० 'निस्पन्द' ।

निस्पृह-वि० [मं०] दे० 'निस्पृह' ।

निस्व, **निस्वक**-वि० [सं०] दरिद्र, धनहीन ।

निस्स्वानु-वि० [सं०] स्वादरहित, बिना स्वादका, अस्वादित, बरमजा ।

निस्स्वार्थ-वि० [मं०] बिना स्वार्थका, स्वार्थरहित, जिसमें स्वार्थकी भावना न हो ।

निर्हृता-वि० निर्मत्तग, पकायी; (वह साधु) जिसने विवाह न किया हो, जो स्त्री आदिसे मयम न रहे; मगा; निर्लज्ज । पु० वैष्णव साधुओंका एक वर्ग; वह साधु जो किसीसे कुछ मनलभ न रखे और पददम अकेले रहे । -लाडला-वि० जो अधिक लाड-प्यारके कारण विगत गया हो ।

निर्हंगम-वि० दे० 'निर्हंग' ।

निर्हता(नृ)-वि० [सं०] हलन करनेवाला, मारनेवाला, नाशक; प्राण हर लेनेवाला ।

निहृ*-उप० 'निर्म'का एक विकृत रूप ।

निहृकर्मा, **निहृकर्मी***-वि० दे० 'निष्कर्मा' ।

निहृकलंक*-वि० दे० 'निष्कलंक' ।

निहृकाम, **निहृकामी***-वि० दे० 'निष्काम' ।

निहृचय, **निहृचै***-पु० दे० 'निश्चय' ।

निहृचल*-वि० दे० 'निश्चल' ।

निहृषित*-वि० दे० 'निश्चित' ।

निहृठा-पु० वह लकड़ी जिसपर रस्सकर बट्टे कोई चीज गड़ते हैं, ठोहा । * कौ० दे० 'निष्ठा' ।

निहृत-वि० [मं०] मारा हुआ; नष्ट किया हुआ, जडा हुआ; मलिन ।

निहृतार्थ-पु० [मं०] साहित्यमें एक दोष-किसी द्रव्यक शब्दको उसके अप्रसिद्ध अर्थमें प्रयुक्त करना ।

निहृथा-वि० जिसके हाथमें कोई हथियार न हो, बिना हथियारका, निःशस्त्र, निरक्ष ।

निहृनव-पु० [सं०] वध, मारण ।

निहृनवा*-सं० क्रि० मारना, वध करना ।

निहृपाय*-वि० दे० 'निष्पाप' ।

निहृफल*-वि० दे० 'निष्फल' ।

निहृल-पु० गगनवार ।

निहच-पु० [सं०] आह्वान, बुलाना ।

निहार्ह-खी० एक विशेष आकारका लोहेका दोस टुकड़ा जिसपर लोहा आदि धातुओंको रखकर पीतो है । -की धात्री-निहारपर रखकर नकाशी गयी धात्री ।

निहाउ* -पु० दे० 'निहार' ।

निहाका-खी० [सं०] जल-गोषिका; तूफान ।

निहानी-खी० खुदार्हका महीन काम करनेकी एक तरहकी रस्सानी; ठपेकी लकीरोंके भीतरका जमा हुआ रंग सूरचनेका एक आला ।

निहाय, निहाय* -पु० दे० 'निहार' ।

निहायत-अ० [अ०] अवधिक, बहुत ज्यादा ।

निहार* -वि० निहाल, लट्टू । पु० [मं०] कुहरा; शाला; ओल । -जल-पु० ओल ।

निहारना* -म० कि० गौरसे देखना, निरखना ।

निहारिका-खी० [सं०] दे० 'निहारिका' ।

निहारार्था* -पु० दे० 'नार' ।

निहाल-वि० हर तरहसे लुप्त, जिसके सभी मनोरथ निर हो चुके हों, सकल मनोरथ; प्रमत्त । पु० [फा०] पोथा; छोटा पोथा; तोड़क, गद्दा । -चा-पु० वच्चोंको सुलानेकी छोटी गद्दी । -लोचन-पु० वह बोधा जिसका आधा अयाल गरदनकी दाहिनी ओर हो और आधा धार्या ओर ।

निहाली-खी० [फा०] तोगक, गद्दा, रजार्ह-जैसे नर शीतकाल मोचत निहाली ओढ़-मुद्रा; निहार ।

निहिसन-पु० [मं०] मार टारना, बर्ष करना ।

निहि-उप० 'निर्' वा एक विकृत रूप ।

निहिचय* -पु० दे० 'निश्चय' ।

निहिचित* -वि० दे० 'निश्चित' ।

निहित-वि० [मं०] रखा हुआ, धरा हुआ, स्थापित, सांपा हुआ; गभीर स्वरसे उच्चरित ।

निहीन-वि० [मं०] अधम, नीच । पु० नीच आदमी ।

निहुँकना* -अ० कि० झुकना ।

निहुङ्गना* -अ० कि० दे० 'निहुरना' ।

निहुङ्गना* -अ० कि० दे० 'निहुराना' ।

निहुरना* -अ० कि० झुकना, नत होना ।

निहुराई* -खी० दे० 'निहुराई' ।

निहुराना* -म० कि० झुकाना, नत करना ।

निहोर* -पु० दे० 'निहोरा' ।

निहोरना* -म० कि० निहोरा करना, प्रार्थना करना; आराधना करना; मनाना; आभार स्वीकार करना ।

निहोरा* -पु० प्रार्थना, निवेदन कृपा, उपकार, पट्टसान; अवलंब, आसरा ।

निहोरे* -अ० कारणसे, वजहसे; वास्ते ।

निह्व-पु० [मं०] हनकार; वस्तुस्थितिको छिपाना, अपकाप, दुराश; शठता; वहाना, अविश्वास, प्रायश्चित्त । -वादी (विद्)-पु० वह जो टारमटोलवाला उत्तर दे ।

निह्वन-पु० [मं०] हनकार; वहाना ।

निह्वोत्तर-पु० [सं०] टारमटोलवाला उत्तर ।

निह्वत-वि० [मं०] छिपाया हुआ, गोपित ।

निह्वति-वि० [मं०] छिपानेकी क्रिया; गोपन ।

निहाद्-पु० [मं०] स्वर, बाजाज ।

नीद-खी० निद्रा ।

नीदकी-खी० निद्रा ।

नीदना* -सं० कि० निद्रा करना; निराना ।

नीदर, नीदरी* -खी० निद्रा, नीद ।

नीदार्-खी० नाम ।

नीव-खी० दे० 'नीव' ।

नीअर्-अ० निद्रा ।

नीक-पु० [सं०] एक वृद्ध; * मलाई, अच्छापन । * वि० उत्तम, अच्छा, भला । सु० -लगना-अच्छा लगना, प्रिय लगना; रुचना; फटना, सुहाना ।

नीका* -वि० दे० 'नीक' । सु०-लगना-दे० 'नीक लगना' ।

नीकार-पु० [मं०] दे० 'निकार' ।

नीकाश-वि० [मं०] सरा, समान, सुल्य ।

नीके* -अ० अच्छा तरह, भली भाँति; मकुशल ।

नीगने* -वि० अगलिन, बेधुमार-बृहत् राजा ज्यों बनराजसे गजराज भारत नीगने-रामचंद्रिका ।

नीच-वि० [मं०] (उच्चा उलटा) जो जाति, गुण, कर्म आदिमें पट्टर हो, अधम, निहट्ट; खल, दुष्ट, खोटा; पैना । पु० नीच मनुष्य, नीच नामका गंधद्रव्य; कुहलीमें किसी ग्रहका अपने उच्च स्थानसे मातर्बो स्थान (ज्यो०) ।

-ऊँच-वि० [मं०] छोटा-बड़ा; छोटे या बड़े कुलका; भला-बुरा, उचित-अनुचित । पु० सुफल-कुफल, भला या बुरा पाँगनाम, त्यागोत्पन्न, सुख-दुःख । -कदंब-पु० भुई । -कमाई-खी० [मं०] बुरा पैशा; दुष्ट अथवायमें उपाजित धन । -ना-वि० नीचेकी ओर आनेवाला, निम्न-गर्भा नीचा ओटा; (वह ग्रह) जो अपने उच्च स्थानमें थातवे स्थानमें पड़ा हो (ज्यो०) । [खी० 'नीचगा'] पु० जल । -गा-खी० मदी, नीच कुलवालेके मातृ व्यभिचार करनेवाली स्त्री । -गर्मा (मिन्)-वि० दे० 'नीचय' ।

[खी० 'नीचगामिनी'] -गृह-पु० कृष्णीम किसी ग्रह-या अपने उच्च स्थानमें मानवा स्थान (ज्यो०) । -भोज्य-पु० न्याय । -बोचि-वि० नीच जाति या कुलका । -बज्र-पु० वैकांत मणि । -स्थान-पु० दे० 'नीचगृह' ।

नीचक-वि० [मं०] कमीना, ठगना, भद्दा ।

नीचका, नीचिका-[खी० [मं०] दक्षिण गाय ।

नीचका (किन्)-वि० [मं०] उच्च, ऊँचा । पु० किसी वस्तुका सिरा, बल्का सिर, अच्छी गाय रखनेवाला ।

नीचट-वि० पका, हट, मजबूत ।

नीचता-खी०, नीचत्व-पु० [मं०] नीच होनेका भाव, ओछापन, खोटाई ।

नीचा-वि० [मं०] सतह ऊँचाईमें आयपामकी सतहसे वट्टर हो, जो ऊँचा न हो, निम्न, कम ऊँचाईवाला, जो काफ़ी ऊँचा न हो, नीचेकी ओर लटका हुआ, जो जमीनके अधिक समीप आ गया हो, जो ऊँचाईपर न हो, झुका हुआ; जिसमें तीव्रता न हो, मंद, धीमा; जो ऊँचे दर्जेका न हो, जो जाति, गुण, कर्म आदिको दृष्टिमें न्यून हो (ऊँचा उलटा) । [खी० 'नीची'] -ऊँचा-वि० दे० 'नीच ऊँच' । - (की) दृष्टि-निगाह-खी० लज्जासे झुकी हुई दृष्टि । सु०-खाना-अपमानित होना; पराजित

होना, शिकस्त खाना; उछित होना। - **दिखाना**-अपमानित करना; पराजित करना, शिकस्त देना; बमंड दूर करना, शेखी उतारना; लजबाना। - **देखना**-दे० 'नीचा खाना'। - **(बी) रहि या निगाहसे देखना**-दृष्टि या तुच्छ समझना, छोटा समझना।

नीचासथ-वि० [सं०] तुच्छ विचारवाला।

नीचा-वि० जो चूता न हो; दे० 'नीचा'।

नीचे-अ० नीचेकी तरफ, अधोभागमें, तलमें; पटकर; अधीनतामें। - **ऊपर**-अ० ऐसे क्रममें जिसमें एक दूसरेके ऊपर हो; ऐसी वशामें जिसमें नीचेका ऊपर और ऊपरका नीचे हो, व्यतिक्रान्त रूपमें। - **मु०-गिराना**-पनन होना, अधोगतिकी प्राप्त होना; पछाड़ा जाना। - **गिराना**-पतित बनाना, अधोगतिकी प्राप्त कराना; कुश्तीमें पछाड़ना, पटकना। - **छाना**-कुश्तीमें पटकना। - **से ऊपरतक**-सिरेसे पाँवतक; सभी अंगों या भागोंमें; एक सिरेसे दूसरे सिरेतक।

नीजन-वि० दे० 'निर्जन'। पु० एकांत स्थान।

नीजर-पु० दे० 'निर्जर'।

नीठ-अ० दे० 'नीति'। वि० दे० 'नीठा'।

नीठा-वि० जो अच्छा न लगे, अग्रिय, अशुचिकर।

नीठि-स्त्री० अशुचि। अ० किसी तरह, कठिनाईसे।

-**नीठि करके**-किनी-किनी तरह, कठिनाईसे।

नीड-पु० [सं०] रहने या ठहरनेकी जगह, आश्रय; बोंसला; भोंद; रथक एक अंग; किनी सवारोंमें बैठनेकी जगह; पलाय। - **ज**-पु० पक्षी।

नीडक-पु० [सं०] पक्षी; घोंसला।

नीडोड्ड-पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया।

नीत-वि० [सं०] ले जाया, पहुँचाया हुआ; बिताया हुआ; ग्रहण किया हुआ। पु० धन, संपत्ति; गहा।

नीति-स्त्री० [सं०] ले जानेकी क्रिया; व्यवहारका ढंग, बर्तावका तरीका; वह आधारभूत सिद्धांत जिसके अनुसार कोई कार्य संचालित किया जाय; लोकव्यवहारके निर्वाहके लिए नियत किया गया आचार; लोकाचारकी वह पद्धति जिससे अपना कल्याण हो और दूसरेकी हानि न पहुँचे; किसी राज्य, राष्ट्र, संस्था या सरकार द्वारा अपने कार्यके संचालनके लिए नियत की गयी कार्य-पद्धति; कार्यविशेषकी सिद्धिके लिए काममें लायी जानेवाली युक्ति; चतुराईभरी चाल; राजनीति; औचित्य; योजना; प्राप्ति; भेंट देना; संबंध; सहारा। - **कुशल**-वि० दे० 'नीतिशु'। - **बोच**-पु० बृहस्पतिकारण। - **ह**-**निपुण**, **विष्ण**-वि० नीति जाननेवाला। - **नीज**-पु० दुरविसर्पिका जारम या मूल। - **विज्ञान**-पु० दे० 'नीतिशास्त्र'। - **बिदु**-वि० दे० 'नीतिशु'। - **विद्या**-स्त्री० राजनीतिशास्त्र; कर्तव्यशास्त्र। - **शास्त्र**-पु० राजनीतिसंबंधी शास्त्र; वह शास्त्र जिसमें आचार-संबंधी नियमोंका विधान हो।

नीतिमात्र(अर्थ)-वि० [सं०] नीतिके अनुसार आचरण करनेवाला; राजनीतिमें दक्ष; चतुर, बुद्धिमान्; सदाचारी।

नीदना-स० कि० निद्रा करना।

नीधना-वि० निर्धन, दरिद्र।

नीध-पु० [सं०] ओलसी; धन; चंद्रमा; पक्षिकेका वेरा;

रेवती नक्षत्र।

नीध-पु० [सं०] कद्रमका पेड़ वा फूल; शृंगु कृश; नील अशोक; एक प्राचीन देश; पर्वतका निम्नभाग। वि० निम्नभागमें स्थित।

नीपजना-अ० कि० उत्पन्न होना; बढ़ना, उन्नति करना।

नीपना-स० कि० लीपना।

नीबरा-वि० दे० 'निर्बल'।

नीबी-स्त्री० दे० 'नीबी'।

नीब-पु० खट्टे रसवाला एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़।

-**निबोह**-वि० योद्धा देकर बहुत लेनेवाला। पु० नीबूको दबाकर रस निकालनेका यंत्र। **मु०-नमक खाटना**-ठंगा दिखाना, कुछ भी न देना, निराश करना, कोरा जवाब देना। - **नमक खाटना**-निराश होना, प्रायः कुछ भी न पाना।

नीम-पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके सब अंग कड़वे होते हैं। **मु०-की टहन**नी हिलाना-उपद्रवसे पीड़ित होकर बैठना।

नीम-वि० [फा०] आधा। - **आस्तीन**-स्त्री० आधी बाँहकी कुर्ती। - **आ**-पु० छोटी तलवार, खोड़ा। - **जौ**-वि० अथमरा। - **टर**-वि० कम पढ़ा-लिखा, अर्धशिक्षित। - **पुल्ल**, **पुल्लत**-वि० आधा पका हुआ, अर्धपक। - **रत्ना**, **राज्ञी**-वि० आधा राजमार्द। - **राच**-स्त्री० आधी रात। - **इकीम**-पु० अथकचरा इकीम, आधुनिकानकी बहुत कम जानकारी रखनेवाला चिकित्सक। **मु०-इकीम खतरे** जान-अथकचरे वैद्यकी दवा करनेमें जान जानेका डर रहता है।

नीमगिद्दी-पु० [फा०] बदरबोंका एक औजार।

नीमना-वि० उन्मा, बहिया; स्वस्थ, नीरोग; जो खराब न हुआ हो, ठीक, काम देने लायक।

नीमबर-पु० [फा०] कुश्तीका एक पैच।

नीमरा-वि० निर्बल, अशक्त, क्षीण।

नीमचारण्य, **नीमचारना**-पु० दे० 'नैमिचारण्य'।

नीमस्तीन, **नीमास्तीन**-स्त्री० दे० 'नीम-आस्तीन'।

नीमा-पु० [फा०] जामेकी नीचे पहननेका एक पहनावा।

नीमावत-पु० निबार्क संप्रदाय।

नीमत-स्त्री० [अ०] हराट्ट, इच्छा, मंशा। **मु०-डिगना**, **-बद होना**, **-बिगड़ना**, **-बुरी होना**-विचार द्रुवित होना, मनमें बुरी बात पैदा होना, मनमें वैश्यानीकी बात आना।

नीर-पु० [सं०] जल, पानी; फफोले आदिके अंदरका पानी; रस; नीमके पेड़से निकलनेवाला रस। - **ज**-वि० जलीय, जलसे उत्पन्न होनेवाला। पु० कदबिलाव; उशीर; कमल; मोती; कुट। - **द**, **-घर**-पु० बादल। - **धि**, **-निधि**-पु० समुद्र। - **पति**-पु० वरुण। - **प्रिय**-वि० जिसे जल प्रिय हो। पु० जलभैंत। - **रुह**-पु० कमल।

नीरज-वि० [सं०] दे० 'नीरजा'। पु० शिव।

नीरजा(जस्)-वि० [सं०] धूम्ररहित। पु० शिव। वि० स्त्री० अरजस्वला।

नीरत-वि० [सं०] विरत।

नीरद-वि० [सं०] विना दाँतका, जिसे दाँत न हों। पु०

बाहर निकला हुआ दाँत; दे० 'नीर'में।

नीरवा-स० क्रि० विकिरण।

नीरव-वि० [सं०] शम्बरहित, जिसमें ध्वनि न हो; जो शब्द न करे।

नीरस-वि० [सं०] रसहीन; सूखा; बेस्वादक। पु० अनास, दाडिम।

नीराज-पु० [सं०] ऊदभिलाष।

नीराजन-पु० [सं०] देवताकी दीप आदि विस्मयनेकी पूजन-विधि, आरती; विजययात्राके पहले हथियारोंकी सफाई करनेका राजाओंका एक कृत्य जो आश्विन मासमें हुआ करता था।

नीराजना-स्त्री० [सं०] दे० 'नीराजन'। * स० क्रि० आरती करना; हथियारोंकी सफाई करना।

नीरिंदु-पु० [सं०] सिंघौरका पेड़।

नीरङ्ग(ज), नीरोरा-वि० [सं०] रोगरहित, स्वस्थ।

नीरज-पु० [सं०] कुञ्जोपनि, कुंड। वि० रोगरहित।

नीरे-अ० दे० 'नियर'।

नीरेयुक्त-वि० [सं०] पूरित।

नीरङ्गु-पु० [सं०] कीड़ा; एक तरहका छोटा कीड़ा; एक तरहकी मक्खनी; गोदक; भेंवर; फूल।

नील-वि० [सं०] नीले रंगका, आसमानके रंगका काला (?) ; लो खरब। पु० नीला रंग; एक तरहका पौधा जिससे नीला रंग तैयार किया जाता है; एक पर्वत; रामकी सेनाका एक बानर जिससे नलके साथ समुद्रमें पुल बँधा था; कुजेरकी एक निधि; कलंक; बच्चा; पेड़; हदनील मणि; यम-राजका एक विग्रह; एक तरहका पक्षी, मैना; काले-नीले रंगका बैल; काच-लवण; तुलिया; सुरमा; एक विष; तावीस-पत्र; चिह्न; नूरबके १०८ करोंमेंसे एक; एक मासिक हृत्पत्र; एक दिग्गज; लो खरबकी संख्या; १,००,००,००,००,०००। -कंड-वि० जिसका गला नीले रंगका हो, नीले कंडवाला। [स्त्री० 'नीलकंडी']। पु० मोर; शिव; नीले कंड और कैनीवाला एक पक्षी जिसका विजयादशमीके दिन दर्शन करते हैं; गौरी नामका पक्षी; खंजन; गौरिया; भ्रमर; मूली; राक्षसोंका एक भेद। -कंड-पु० अंसा कंद; विष-कंद। -कमल-पु० नीले रंगका कमल। -कांत-पु० एक पहाड़ी पक्षी; विष्णु; नीलम मणि। -कुंतला-स्त्री० दुर्गाकी एक सखी। -कुरंदक-पु० नील हिंदी। -केरी-स्त्री० नीलका पौधा। -कांता-स्त्री० कुष्माण्डी।

-कौच-पु० काला बगल। -गंगा-स्त्री० एक नदी। -गाय-स्त्री० [हिं०] एक बनेला जानवर जिसकी शब्द गाय जैसी होती है। -गिरि-पु० दक्षिणका एक पर्वत। -ग्रीव-पु० शिव। -चक्र-पु० एक चक्र जिसकी स्थिति जगन्नाथके मंदिरके शिखरपर मानी जाती है; दृक्क वृत्तका एक भेद। -चर्म(न)-पु० नीले रंगका चमड़ा। -चर्मा(मंथ)-वि० जिसका चमड़ा नीले रंगका हो। -च्छद-पु० गरुड़; सनूरका पेड़। -पु० एक तरहका लोहा, बर्तलोह। -हिंदी-स्त्री० नीली कटछरैया। -लह-पु० नारियलका पेड़। -लाह-पु० हिताक; तमाक हल। -दुम-पु० असन हल। -ध्वज-पु० तमाक हल; एक राजा। -निर्धुवी-स्त्री० नीला सिंदुवार। -निवा-

सक-पु० पियासालका पेड़। -निखव-पु० आकाश। -पंक-पु० भ्रंशकार; भेंवर। -पटल-पु० घना काला आवरण; अधिक आंसुमेंकी काली शिंघी। -पत्र-पु० अनार; नील कमल। -पत्रिका-पत्री-स्त्री० नील। -पषा-पु० दे० 'नीलकमल'। -पर्ण-पु० ह्वार हल। -पिच्छ-पु० राज। -पुष्प-पु० नीला भेंगरा। -पुष्पा, -पुष्पिका-स्त्री० अलसी, तीसी; नीलका पौधा। -कला-स्त्री० जामुन। -बरी-स्त्री० [हिं०] कच्चे नीलकी बट्टी। -बिरह-स्त्री० [हिं०] सनायका पौधा। -बीज-पु० दे० 'नीलबीज'। -भ-पु० चंद्रमा; बादल; भ्रमर। -मणि-पु० नीलम। -मल्लिका-स्त्री० गेल। -माष-पु० काला उड़द। -मीलिका-स्त्री० जुगनू। -मृत्तिका-स्त्री० काली मिट्टी। -मोर-पु० [हिं०] हिमालयपर पाया जानेवाला कुरही नामका पक्षी। -रत्न-पु० नीलम। -राजि-स्त्री० घना भ्रंशकार। -लोह-पु० दे० 'बर्तलोह'। -लोहित-वि० लालाई लिये नीला; बैंगनी। पु० शिव। -लोहिता-स्त्री० जामुनकी एक जाति; पार्वती। -वर्ण-वि० नीले रंगका। पु० मूली। -वर्षा-स्त्री० नील पुनर्नवा। -बल्ली-स्त्री० परगछ। -बसन-वि० जो नीले रंगका वस्त्र पहने या पहने हो। पु० नीले रंगका वस्त्र; बलराम; ज्ञानेश्वर। -बासा- (सस्)-वि० दे० 'नीलबसन'। पु० शनिग्रह। -बीज-पु० पियासाल। -हुंतक-पु० रई। -वृष-पु० एक प्रकारका वृष (सौँह) जिसका उत्सर्ग प्रशस्त माना जाता है (इसके मुँह, सिर, पूँछ और खुरका रंग द्रव्य होता है और शेष शरीरका लाल)। -बृषा-स्त्री० बैंगन। -शिखंड-पु० हदका एक भेद। -सिंधु-पु० सहजनाका पेड़। -संध्या-स्त्री० कुष्माण्डी। -खार-पु० तेंदुका पेड़। -सिंदुवार-पु० काले रंगका सिंदुवार। -सिर-पु० [हिं०] नीले मिरवाली एक प्रकारकी बतख। -स्वरूप-स्वरूपक-पु० एक वर्णवृत्त।

नीलकंडाक्ष-पु० [सं०] रुद्राक्ष।

नीलकंडाक्षी-वि० स्त्री० [सं०] खजनकी-सी आँखोंवाली।

नीलक-पु० [सं०] भ्रमर; भेंवर; काच-लवण; बर्तलोह; काले रंगका पौधा; तीमरी अथवा राशि (गं०)।

नीलकांटा-पु० एक झाड़।

नीलम-पु० [फा०] नीले रंगका एक प्रसिद्ध रत्न, हदनील।

नीलांग-वि० [मं०] त्रिमंथे अंग नीले रंगके हो। पु० मारस।

नीलांगु-पु० [सं०] दे० 'नीलगु'।

नीलांजना-पु० [सं०] तुलिया; नीला सुरमा।

नीलांजनी-स्त्री० [सं०] विजली।

नीलांजनी-स्त्री० [सं०] एक क्षुप, कालांजनी।

नीलांजसा-स्त्री० [सं०] एक अमरुता; एक नदी; विजली।

नीलांबर-वि० [सं०] जिसका वस्त्र नीला हो, जो नीले रंगका वस्त्र पहने या पहने हो। पु० नीला कपड़ा; तावीस पत्र; बलराम; ज्ञानि ग्रह; राक्षस।

नीलांबरी-स्त्री० [सं०] एक राशिनी।

नीलांजुज, नीलांजुजम्(न)-पु० [सं०] नील कमल।

नीला-स्त्री० [सं०] काँचीकी एक शक्ति (काँचीकनच);

नीलका पौधा: एक रागिनी; नीली पुनर्नवा; एक तरहकी काही मक्खी। वि० [हि०] नीलनेसे रंगका आसमानी रंगका। पु० नीलम; एक तरहका कनूर। -बोधा-पु० [हि०] दुसिया। -पन्न-हट-पु० [हि०] नीला होनेका मान, नीलवर्णता। मु० -करना-इतना मारना कि धीरेपर काले दाम पड़ जायें, बहुत अधिक मारना। -पचना-मारके दाम पचना। -पीला होना-मोष करना।

नीलाक्ष-वि० [सं०] नीली आँखोंवाला। पु० राजहट।

नीलाचक्र-पु० [सं०] नील गिरि।

नीलाम-पु० विश्वकी एक रीति जिसमें सबसे अधिक दाम मोलनेवालेके हाथ माछ बेचा जाता है; बोली मोलकर बेचना। -घर-पु० वह घर या जगह जहाँ बस्तुएँ नीलाम की जायें। मु० -घर बचना-नीलाम किया जाना।

नीलामी-वि० नीलाममें खरीदा हुआ; जो नीलाम किया जाय।

नीलाशुभा-श्री० [सं०] दे० 'नीलसिंदी'।

नीलाश्वान-पु० [सं०] एक पुष्प।

नीलाश्वी-श्री० [सं०] शीर्षशाखिका नामक क्षुप।

नीलाश्व-पु० [सं०] ऊषा, प्रसूष।

नीलास्तु-पु० [सं०] एक तरहका कद।

नीलावती-श्री० चावलका एक भेद।

नीलाश्री-श्री० [सं०] नीला सिंदुरार।

नीलाश्मा(श्मत्)-पु० [सं०] नीलम।

नीलाश्व-पु० [सं०] एक देश।

नीलासन-पु० [सं०] पिवासाका पेड़।

नीलि-पु० [सं०] एक जलजंतु।

नीलिका-श्री० [सं०] नीलका पौधा; नीला सिंदुवार; एक नेत्ररोग; बायु और पित्तके प्रकोपने होनेवाला एक क्षुद्र रोग जिसमें मुँहपर और अन्य अंगोंमें छोटे-छोटे काले दाने निकल आते हैं।

नीलिनी-श्री० [सं०] नील; नीलका पौधा।

नीलिमा(मन्)-श्री० [सं०] नीलापन।

नीली-श्री० [सं०] नीलका पौधा; नील नामका रंग; एक प्रकारकी मक्खी; एक रोग। -राग-पु० प्रगाढ़ और हृद प्रेम; स्थायी मित्र। -संधान-पु० नीलका खमौर।

नीली-वि० श्री० दे० 'नीला'। -बोधी-श्री० नीले रंगकी बोधी; आंमके साथ सिली हुई कागजकी बोधी जिसके कारण उम्र आंमकी पहननेवाला बोधीपर चढ़ा हुआ-स जान पड़ता है। -चकरी-श्री० एक पौधा। -चाय-श्री० अंगिया घास, वनकुश।

नीलू-श्री० एक प्रकारकी घास।

नीलोत्पल-पु० [सं०] नील कमल।

नीलोत्पली-श्री० [सं०] नीलकमलोंके पूर्ण सरोवर।

नीलोत्पली(लिङ्)-पु० [सं०] शिवके अंशभूत मंजुषोष।

नीलोत्पल-पु० [सं०] नीला परवर; नीलम।

नीलोत्तर-पु० [सं०] नील कमल; कुई।

नीर्वै-श्री० नालीके आकारका गहरा गड्ढा जिसमेंसे दीवार उठावी जाती है; इसमें की जानेवाली हट-परवरकी

नुनाई या जमावट जिसके ऊपरसे दीवारकी जोहारें होती हैं, मूल मिथि, मूल आधार। मु० -जमाना-जड़ मज-नृत करना, आधार हट करना। -झाकना, -देना-दीवार उठानेके लिए नीर्वै तैयार करना; कीर्ण कार्य आरंभ करना। -पचना-आरंभ होना, शुरू होना।

नीव-श्री० दे० 'नीवे'।

नीवर-पु० [सं०] सन्यासी, परित्रानक; गणिक, व्यापारी; गणिज्ज, व्यवसाय; रहनेकी जगह, वास्तव्य; कौचक; जल।

नीवाक-पु० [सं०] दुमिह; दुमिहकालमें जलकी बढ़ी हुई माँग।

नीवानास-पु० समूलनाश, सर्वनाश, सत्तानाश, सत्यानास। वि० जो समूल नष्ट हो गया हो।

नीवार-पु० [सं०] तिथी धान। -कता-श्री० तिथी धानका पौधा।

नीवि-श्री० [सं०] दे० 'नीवी'।

नीर्वै-श्री० नीर्वै।

नीवी-श्री० [सं०] थोटीकी वह गाँठ जिसे खियाँ नाभिके नीचे या बगलमें हजारबंदसे या बोधी बाँधती हैं; इसे बाँधनेकी मृतकी डोरी, हजारबंद; नारा; पूँजी, मूल धन; वल (वै०); वह जमा की हुई रकम जिसका ब्याज आदि दूसरे कामोंमें लगाया जाता हो, स्थायी कोश (कौ०); खरबनेके बाद बची हुई पूँजी (कौ०)। -ग्राहक-पु० वह व्यक्ति जिसके पास चंदा या किसीकी कुछ रकम जमा हो और जो उसके व्यय आदिकी देख-रेख करता हो (कौ०)।

नीत्र-पु० [सं०] दे० 'नीत्र'।

नीशार-पु० [सं०] ओदनेका गरम कपड़ा, आवरण (जैसे -कवल आदि); कनात; मसहरी।

नीसा-पु० सकेद धूरा।

नीसक-वि० अशक्त, असमर्थ।

नीसान-पु० दे० 'निशान'।

नीसानवी-श्री० एक छद्म।

नीसार-पु० (संस्कृत 'नीशार') आवरण, पर्दा (रास्ते)।

नीसू-पु० चारा या गन्ना काटनेके लिए जमीनमें गाड़ा जानेवाला काटका डुकड़ा, टीहा।

नीह्रा-श्री० दे० 'नीर्वै'।

नीहार-पु० [सं०] कुहरा; हिम, बरफ; खाली करना, निष्कासन। -जल-पु० ओस।

नीहारिका-श्री० [सं०] कुहरे या धुँएँकी तरह आकाशमें छाया रहनेवाला प्रकाशपुत्र जो ग्रह-लक्ष्मीका उपादान माना जाता है।

नुकता-पु० [अ०] पतेकी बात, वारीक बात, दूरकी बात; ऐश, नुस्त, दोष, छिद्र; बोधके मुँहपर लगाया जानेवाला चमड़ा, सरबंद। -ची-वि० नुस्त या ऐश निकालने-वाला, छिद्रान्वेषी। -खीनी-श्री० दोष या ऐश निकालने-का काम, छिद्रान्वेषण।

नुकता-पु० [अ०] बच्चा, दाग; विंदु; छिद्रावटमें अहरीपर लगायी जानेवाली विंशी; सिकर, सुधा।

नुकली-श्री० एक तरहकी मिठाई।

मुक्ता-अ० कि० छिपना ।
मुक्ता-पु० [अ०] चोरी; चोरीका सफेद रंग । वि० सफेद रंगका (चोरा) ।
मुक्ती-की० जलाशयोंके किनारे पायी जानेवाली एक छोटी चिड़िया ।
मुक्ता-पु० [अ०] कमी, मूल्यता; हावि, क्षति; ऐश, दोष । मु०-उठाना-क्षतिग्रस्त होना । -**पहुँचना**-हावि होना । -**पहुँचना**-हावि करना ।
मुक्ता-स० कि० छिपना ।
मुक्ती-वि० नोकवाला, नोकदार; सजीला, सुंदर ।
मुक्ता-पु० नोक; नाका, मोड़; छोर; निकला हुआ कोना ।
मुक्ता-पु० नोक । -**टोपी**-की० पतली दुपकिया टोपी जिसका प्रचार लखनऊमें है ।
मुक्ता-पु० [अ०] ऐश, दोष; खामी, दुष्टि ।
मुगदी-की० दे० 'मुक्ती' ।
मुक्ता-अ० कि० नोचा जाना ।
मुक्ता-स० कि० नोचनेका काम कराना ।
मुक्ता-वि० [सं०] जिसे प्रणाम किया गया हो, वंदित, नमस्कृत; जिसकी स्तुति की गयी हो, स्तुत ।
मुक्ती-की० [सं०] प्रणाम; स्तुति ।
मुक्ता-वि० [सं०] फेंका या चलाया हुआ, क्षिप्त; प्रेरित ।
मुक्ता-पु० [अ०] वीर्य, शुक; संतान । -**(रुके) इराम**-वि० वीरगा, जारज; नोच, कमीना (गाली) । मु०-**उड़ना**-गर्भोधान होना ।
मुनखात, मुनखारा-वि० नमककेसे स्वादवाला, नमकीन ।
मुनना-स० कि० तैयार फलकी काटना ।
मुनाई-की० लावण्य, शोभा, सौंदर्य ।
मुनेरा-पु० नौना मिट्टी आदिसे नमक तैयार करनेका पेशा करनेवाला; नोनिवा ।
मुना-वि० [फा०] जाहिर करनेवाला; दिखानेवाला; बतातेवाला; सरश; मानिद (केवल समाप्तमें व्यवहृत-जैसे सुखमुना, रश्मुना) ।
मुनाईदगी-की० [फा०] प्रतिनिधित्व ।
मुनाईदा-पु० [फा०] दिखानेवाला; प्रकट करनेवाला; प्रतिनिधि ।
मुनाइया-की० [फा०] दिखावा, जहर, प्रदर्शन; रूप, सूरत, शक्त; अनेक प्रकारकी अद्भुत वस्तुओंका प्रदर्शन; वह मेला जहाँ भिन्न-भिन्न स्थानोंकी अनेक प्रकारकी कुतूहलवर्द्धक, अद्भुत तथा सुंदर वस्तुओंका प्रदर्शन किया जाता है, प्रदर्शनी । -**गाह**-पु०, की० वह स्थान जहाँ मुनाइया हो ।
मुनाइशी-वि० [फा०] दिखावटी; तबक-भक्कवाला ।
मुनाई-की० [फा०] दिखावा, प्रदर्शन (समाप्तमें व्यवहृत-जैसे सुखमुनाई) ।
मुनाई-वि० [फा०] जाहिर, प्रकट; प्रचान, बहा ।
मुसल्ला-पु० [अ०] किला हुआ कागज; नकल, क़ापी; वह कागज जिसपर हकीम, डाक्टर या वैद्य दवा, उसके प्रयोगकी विधि आदि लिखते हैं; किसी हकीम, डाक्टर या वैद्यके द्वारा रोगविशेषके लिए निकाली गयी औषध, योग ।
मु०-बर्बना-मुसल्लेमें लिखी हुई दवायें देना ।

-**किलना**-रोगीको उसके अनुकूल मुसल्ला लिखकर देना ।
मुहरना-अ० कि० दे० 'मिहना' ।
मूल-वि० [सं०] दे० 'मूल'; * नया, नवीन ।
मूलन-वि० [सं०] नया, नवीन, अभिनव; अपूर्व, अद्भुत; हास्य; ताजा ।
मूलनता-की०, -**मूलनत्व**-पु० [सं०] मूलन होनेका भाव, नयापन, नवीनता ।
मूल-वि० [सं०] दे० 'मूलन' ।
मूल-पु० [सं०] शब्दतुल्य, मूलतः वृक्ष ।
मूल-पु० नमक; एक लता । * वि० दे० 'मूलन' ।
मूल-पु० गृहस्थीकी सामग्री ।
मूलताई-की० मूल्यता, कमी ।
मूल-वि० की० मित्रोपेक्ष (विशेषकर बन्धोंकी) ।
मूल-पु० [सं०] पैरका एक गहना, चुंकर ।
मूल-पु० [अ०] ज्योति, प्रकाश; वृत्ति, कान्ति, छवि; ईश्वरका एक नाम (सं०) । -**चक्षु**-पु० प्यारा पुत्र ।
मूल-की० प्यारी पुत्री । -**बाप**-पु० जुलाहा ।
मूल-पु० मिलकर लकी जानेवाली कुश्ती । वि० मूलसे युक्त, धुनिमान्, तेजस्वी ।
मूल-पु० [अ०] शामी या श्वरानी मतोंके अनुसार आदमसे दसवीं पीढ़ीमें उत्पन्न एक पैगंबर (जिनके समयमें एक ऐसा तुफान आया था कि सारी सृष्टि जलमग्न हो गयी थी । उस समय अपने परिवार तथा सभी जानवरोंके एक-एक जोड़ेके साथ एक स्वनिर्मित नौकामें बैठकर इन्होंने प्रकण्वचाये थे । कहा जाता है कि उन्होंने पुनः सृष्टि चली) ।
मूल-पु० [सं०] (समस्त पदोंमें प्रयुक्त) नर, मनुष्य; शतरंजका मोहरा । -**कपाल**-पु० मनुष्यकी खोपड़ी । -**केशरी**-**(विष्णु)**-पु० नरसिंह अवतार; सिंहकेसे पराक्रमवाला मनुष्य । -**धन**-वि० मनुष्यकी मारनेवाला, मनुष्यघातक ।
मूल-पु० आदमीका पेशाव । -**दुर्ग**-पु० वह दुर्ग जिनके चारों ओर मेना हो । -**देव**-पु० आश्रय; राजा ।
मूल-पु० कुंभ । -**प**-पु० दे० क्रममें । -**पति**, -**पाल**-पु० राजा । -**पशु**-पु० मनुष्यरूपी पशु, पशुतुल्य मनुष्य; महामूर्ख मनुष्य । -**मिथुन**-पु० की० पुरुषका जोड़ा; मिथुन राशि । -**मेघ**-पु० नरमेघ बह । -**शस्त्र**-पु० गृहस्थके कर्तव्यरूप पंचयज्ञोंमें एक, अतिथिपूजन, अतिथि-सत्कार । -**लोक**-पु० मर्यादालोक । -**वराह**-पु० वराह-रूपधारी विष्णु । -**वाहन**-पु० कुंभ । -**वेष्टन**-पु० शिव । -**दांस**-वि० मनुष्योंकी सत्तानेवाला, क्रूर, अत्याचारी । -**श्रृंग**-पु० मनुष्योंके सींग जैसी अंसमय वस्तु या बात । -**सिंह**-पु० सिंहकेपधारी विष्णु, विष्णुका चतुर्थ अवतार (इसी अवतारमें विष्णुने हिरण्यकशिपुका नाश किया था); सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य । -**चतुर्विंशी**-की० वैशाख-शुक्ल चतुर्विंशी जिस दिन वृद्धिका अवतार हुआ था । -**पुराण**-पु० एक उपपुराण । -**पुरी**-की० एक तीर्थ । -**बन**-पु० एक प्राचीन देस । -**सोम**-पु० वह मनुष्य जो चंद्रमाके समान हो; बहा आदमी । -**हरि**-पु० वृद्धि ।
मूल-पु० [सं०] एक महादानी पौराणिक राजा जिन्हें एक

प्राक्पणके शापसे गिरगिटका शरीर धारण करना पड़ा था ।

मुत्तक-पु० दे० 'नर्तक' ।

मुत्तवा, मुत्तवा-अ० कि० नाचना ।

मुत्ति-खी० [सं०] नाच, नर्तन ।

मुत्त-पु० [सं०] नाचनेवाला, नर्तक ।

मुत्त-पु० [सं०] नर्तक; भूमि; क्रिया । वि० हिंसा करने-वाला, हिंसक; दीर्घ ।

मुत्त-पु० [सं०] वह नाच जिसमें केवल जंगोंका विशेष किया जाय ।

मुत्त-पु० [सं०] ताल, छव और रसके अनुसार विलास-पूर्णक जंगोंका विशेष करनेका एक व्यापार, ताल, छव तथा रसके अनुसार किया जानेवाला नाच (रसके दो प्रधान मेद हैं—(१) तांबव और (२) छाव्य) । -मिश्र-पु० मिश्र; मोर । -शास्त्र-खी० नाचपर । -स्थान-पु० रंगशाळा ।

मूर्त्यज-पु० [सं०] एक पुष्पवंशी नरेश ।

मृप-पु० [सं०] (मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला) राजा । -कंद-पु० काल व्याज । -गृह-पु० राजमवन, राज-महल । -चिह्न-पु० इतै छत्र । -कुम्भ-पु० क्षितीका पेश; अमलताप । -नीति-खी० राजनीति । -पथ-पु० मुख्य मार्ग, राजमार्ग । -मिश्र-वि० राजाका मिश्र, जो राजाकी मिय हो । पु० एक प्रकारका रस; काल व्याज; आम; जवहन धान । -मिया-खी० केतकी । -बद्ध-पु० बड़ा बेर । -मोक्षक-पु० जाडुव्यका पेश । -माय-पु० एक राजा जो राजाओंके जीवनके समय बजाया जाता था । -लक्ष्म-पु०, -लिंग-पु० राजचिह्न । -वधु-पु० आम; राजाका मिश्र या मिय व्यक्ति । -वधुमा-खी० रानी; केतकी । -वृक्ष-पु० एक पेश । -शासन-पु० राजाका । -सभ-पु० वह सभा जिसमें बहुतसे राजे सम्मिलित हुए हों, राजाओंकी सभा (संस्कृतमें प्रयुक्त) । -सभा-खी० राजाकी सभा । -सुत-पु० राजकुमार । -सुता-खी० राजकुमारी ।

मृपास-पु० [सं०] राज-कर, उपजका छठा या आठवाँ भाग ।

मृपात्मज-पु० [सं०] राजकुमार ।

मृपात्मजा-खी० [सं०] राजकुमारी ।

मृपाध्वर-पु० [सं०] राजद्वार वह ।

मृपाध-पु० [सं०] राजाका अन्न, एक धान, राजाका ।

मृपाभीर-पु० [सं०] दे० 'मृपमान' ।

मृपामय-पु० [सं०] राजरोम, यक्ष्मा ।

मृपावर्त्त-पु० [सं०] एक रत्न, राजवर्त्त ।

मृपासन-पु० [सं०] सिंहासन, तख्त ।

मृपाह-पु० [सं०] काल व्याज ।

मृपेक्षि-वि० [सं०] जो राजाके योग्य या अनुरूप हो । पु० राजमात्र, काला उद्गद ।

मृमणा-खी० [सं०] प्लक्ष द्वीपकी एक बड़ी नदी (पु०) ।

मृम्य-पु० [सं०] धन (दे०); कद, वीषध; कृष्ण ।

मे-प्र० भूतकालिक सत्त्वके क्रियाके कर्ताके भागे छाने-वाला एक कारकविह ।

मेजवत्त-खी० [अ०] दे० 'मेजत' ।

७३-क

मेह, मेह-खी० दे० 'मेह' ।

मेहछावरि-खी० दे० 'निछावर' ।

मेहसर्ग-स० कि० दे० 'मेहतन' ।

मेहसहरी, मेहसहरी-पु० निर्मलित व्यक्ति ।

मेहसा-पु० दे० 'मेसा' ।

मेहसा-पु० दे० 'मेवका' ।

मेक-अ० जरा, बोधा । वि० जरा, बोधा-सा [फा०]

अच्छा, मला, उम्दा । -अज्ञान-वि० जिसका परिणाम मला हो । -अवेद-वि० भलाई चाहनेवाला, वितैरी ।

-अवाह-वि० स्वामिक, कफार । -अच्छ-वि०

अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी । -अच्छी-खी०

अच्छी चाल-चलन, सदाचारिता । -आस-वि० अच्छी

जाति या नस्लका । -सर-सरीस-वि० बहुत अच्छा,

अति उत्तम । -दिह-वि० अच्छी नीयतवाला । -नाम

-वि० जो अच्छे कामके लिए प्रसिद्ध हो, जिसकी अच्छी

ख्याति हो, सुख्यात, बशली । -बामी-खी० नेकनाम

होनेका भाव वा सद्गुण, सुख्याति, छप्रसिद्धि, सुकीर्ति ।

-मीयत-वि० अच्छी नीयतवाला, किसीकी दुराई न

चाहनेवाला । -मीयती-खी० नेकनीयत होनेका भाव,

मकमलसाहस; ईमानदारी । -बद्ध-वि० अच्छे भाव्य-

वाला, भाव्यशाली । -बद्ध-खी० सौभाग्य, सुख-

किस्मती ।

मेकी-खी० [फा०] भलाई, उपकार, अच्छा काम, दित ।

-बही-खी० भलाई-दुराई । -मु०-और पूछ-पूछ ?

कहाँ मेकी भी पूछ-पूछकर की जाती है ? जिसकी भलाई

करनी हो उससे पूछनेकी जरूरत नहीं, किसीकी भलाई

बिना उससे पूछे करनी चाहिये ।

मेकु-वि० बोधा, जरा-सा । अ० जरा, बोधा ।

मेग-पु० विवाहादि मांगलिक अवसरोंपर सगे-संबंधियों

तथा पौनियोंकी बुझ करनेके लिए द्रव्य-वस्त्र आदि देनेकी

रस्म; इस रस्मके निमित्त दिया जानेवाला द्रव्य-वस्त्र

आदि । -चार-जोग-पु० दे० 'मेव' ।

मेगटी-पु० मेग वा रीतिका अनुसरण करनेवाला, प्रथाका

पाठन करनेवाला ।

मेगी-पु० मेग पानेवाला; वह जिसे मेग पानेका हक हो;

* संपत्ति आदिका प्रबंधक । -जोगी-पु० दे० 'मेगो' ।

मेहछावरि-खी० दे० 'निछावर' ।

मेहक-पु० [सं०] बोरी ।

मेजव-पु० [सं०] बोधा, सफाई करना ।

मेजा-पु० [फा०] माला; राजाओंका निशान; चिह्नमोत्रा ।

-बरदार-पु० मेजा लेकर चलनेवाला ।

मेजाक-पु० माला ।

मेठा-पु० नाकके रास्ते निकलनेवाला कद या मल ।

मु०-बहना-मेठा-कुचैका रहना ।

मेठना-अ० कि० दे० 'नाठना' ।

मेह-अ० निकट, समीप ।

मेस-पु० किसी बातका निश्चित होना, निर्धारण; पक्का

हरादा; निश्चय; आयोजन, प्रबंध; मथानमें उगानी

जानेवाली रस्ती; एक गृहना । खी० दे० 'नेती'; दे०

'नीयत'; एक प्रकारकी रेशमी बायर ।

नेता-पु० मथानीकी रस्ती ।

नेता(रु)-पु० [सं०] दलविशेष वा जनताकी किसी ओर से चलनेवाला, नामक; अगुआ; सरदार; पहुँचानेवाला; सामी, मालिक; कामकी निभानेवाला; प्रवर्तन करनेवाला; प्रवर्तक; किसी कामका चरितनामक; नीमका पेड़; विष्णु; दोकी संस्था ।

नेताजी-पु० दे० 'सुभाषचंद्र बसु' ।

नेति-[सं०] ब्रह्म या ईश्वरकी अनंतता सूचित करनेवाला एक औपनिषद् वाक्य जिसका अर्थ है 'अंत नहीं है' अर्थात् ब्रह्म या ईश्वरकी महिमा अपार है । * खी० नीयत, इरादा ।

नेती-खी० मथानीकी रस्ती जिते खींचनेसे बह बूमती है; हठयोगकी एक क्रिया; दे० 'नेती-थीती' । -घौसी-खी० पेठमें कपड़ेकी लमी पतली पट्टी डालकर अँतें साफ करनेकी एक क्रिया ।

नेत्र-पु० [सं०] आँख; मथानीमें लगायी जानेवाली रस्ती; देखकी जग; जडा; नाडी; एक तरहका रेशमी कपड़ा; रथ; दोकी संस्था (खी०); नेता । -कमीनिका-खी० आँखके काले भागके बीचका बिंदु । -कोच-पु० नेत्रपटल । -च्छत्र-पु० पलक । -ज-जल-पु० आँसु । -बर्षत-पु० आँसुका कोना । -पिंड-पु० आँसुका गोलक; विकास । -तिवी-खी० चित्ती । -पुष्करा-खी० रुद्रजटा कृता । -बंघ-पु० आँखनिचौनी । -बाळा-खी० सुगंधवाला । -भाब-पु० नृत्यमें केवल आँखोंकी क्रिया द्वारा सुख-दुःख आदि अभिव्यक्त करनेका भाव । -मंडल-पु० आँसुका डेला । -मल-पु० आँसुका कीचड़ । -मीका-खी० बसतिष्ठा कृता । -मुद्(ए)-वि० आँखोंकी लपनी ओर आकृष्ट करनेवाला । -बोधि-पु० इंद्र; चंद्रमा । -रंजन-पु० काजल । -रोम-पु० आँखोंका रोम । -रहा(इन्)-पु० पृथिवीकी दृष्टि । -रोम(र)-पु० बरोनी । -बख-पु० पलक । -बारि-पु० आँसु । -विद्(ए)-खी० आँसुका कीचड़ । -विच-पु० एक दिव्य सपने जिसकी आँखोंमें विष होता है । -स्वप्न-पु० आँखोंका सुंदना तथा झुलना बंद होनेका एक उपद्रव (समुत्त) ।

नेत्राल-पु० [सं०] आँसुका बाहरी कोना ।

नेत्रांशु, नेत्रांशु(र)-पु० [सं०] आँसु ।

नेत्राभिर्षद्, नेत्राभिर्षद्-पु० [सं०] आँख आनेका रोम ।

नेत्रासय-पु० [सं०] आँसुका रोम ।

नेत्रारि-पु० [सं०] सुई ।

नेत्रिक-पु० [सं०] एक तरहकी छोटी पिचकारी (समुत्त); करछुक ।

नेत्री-खी० [सं०] दलविशेष वा जनताको किसी ओर से चलनेवाली, रथनुमाई करनेवाली; नाडी; नदी; लक्ष्मी ।

नेत्रोत्सव-पु० [सं०] आँखोंकी उत्स करनेवाली वस्तु ।

नेत्रोपम-पु० [सं०] बाढाम ।

नेत्रौपच-खी० [सं०] नेत्ररोगकी दवा; पुष्पकासीस ।

नेत्रौपच, नेत्रौपची-खी० [सं०] नेत्रासिंही, जत्रसंगी ।

नेत्र-वि० [सं०] नेत्रसंबंधी; आँखोंके लिए चितकर ।

-गण-पु० रसीत, फिक्का आदि आँखोंके लिए चितकर

औपचिनीका समाहार ।

नेदिह-वि० [सं०] अधिकतम; निकटतम; निपुण । पु० अंकोट वृक्ष ।

नेदिही(हिन्)-पु० [सं०] सहोदर भाई । वि० निकटतम संबंधवाला ।

नेनुआ, नेनुआ-पु० एक तरकारी, पिकरा ।

नेप-पु० [सं०] पुरोहित; जल ।

नेपचून-पु० [अं०] लीर मंडलका एक ग्रह जो अन्य ग्रहोंकी अपेक्षा बहुत अधिक दूरीपर है । इसका व्यास ३७०० मील है । इसका पता १८४६ ई० में लगा था ।

नेपच्य-पु० [सं०] देश-भूषा; नटोंकी देश-भूषा; भूषण; रंगमंचके परदेके पीछेकी जगह जहाँ नटोंकी देशरचना की जाती है ।

नेपाछ-पु० [सं०] भारतके उत्तरमें स्थित एक देश; ताँबा ।

-कंबल-पु० एक तरहका रंग-बिरंगा कंबल । -जा, -जाता-खी० मैनसिल । -निच-पु० विरामतेका एक भेद । -मूलक-पु० इतिहास जैसा एक मूल, नेवार ।

नेपालक-पु० [सं०] ताँबा ।

नेपालिका-खी० [सं०] मैनसिल ।

नेपाली-वि० नेपाल-संबंधी; नेपालका । पु० नेपालका निवासी । खी० [सं०] मैनसिल; नेवारी; एक जगकी खजूर ।

नेपुर-पु० दे० 'नूपुर' ।

नेफ्रा-पु० [फा०] पायजामे, लहंगे आदिका वह ऊपरी भाग जिसमें इशारबंद पीरोया जाता है ।

नेक*-पु० सद्योपम करनेवाला, सहकारी; मंत्री ।

नेनुआ-पु० दे० 'नीबू' ।

नेनू-पु० दे० 'नीबू' ।

नेम-वि० [सं०] आधा । पु० काल; अवधि; खंड; प्राकार; छल; कैतव; अर्ध भाग; ऊपरका हिस्सा; सायकाल; मूल; नींबू; गड़ड़ा; नृत्य; अन्न; ि वेधा हुआ क्रम, नियम, पारंदी; धर्मकी भावनासे किये जानेवाले व्रत, उपवास आदि; आचारका नियम; * प्रतिष्ठा । -धरम-पु० सध्या-वंदन, पूजन आदि ।

नेमत-खी० [अ०] ईश्वरकी देन; धन; स्वादिष्ठ भोजन; सुख । -छाना-पु० भोग्य पदार्थ रखनेका कमरा या अलमारी, भोजनगृह ।

नेमि-खी० [सं०] पहियेका बाँचा या घेरा; घेरा; कुर्येकी जगत; जवजव; चरखी; कीर; किनारा; वज्र; पृथ्वी । पु० तिनिश वृक्ष; एक जिन । -घोच-पु०, -ध्वनि-खी०, -निनाद-पु० पहियेकी 'घर-घर' आवाज । -चक्र-पु० परीक्षितका एक वंशज । -वृत्ति-वि० पहियेकी चालका अनुकरण करनेवाला । -हाव-वि० -स्वव-पु० दे० 'नेमिघोष' ।

नेमी-खी० [सं०] दे० 'नेमि' (खी०) । वि० [हिं०] नेमसे रहनेवाला, नेमका पालन करनेवाला । -धरमी-वि० नेम-धरमसे रहनेवाला ।

नेमी(मिन्)-पु० [सं०] तिनिश वृक्ष ।

नेमाथीता-खी० [सं०] एक काष्ण्यदोष । जहाँ रुढ़ि का प्रयोजनके बिना लक्षणाका प्रयोग किया जाय वहाँ यह दोष होता है ।

मेरा०-अ० पास, नजदीक ।
 मेराना०-अ० कि०, स० कि० दे० 'निवराना' ।
 मेरी०-अ० बोझा श्री-...वत्पाति न मेरी' वन० ।
 मेरुवा०-पु० की०दूके नीचेकी तेल बहनेकी वाली ।
 मेरे, मेरे०-अ० समीप, नजदीक ।
 मेव०-पु० दे० 'नेव' । श्री० दे० 'नीवें' ।
 नेवग०-पु० नेग, दस्तूर ।
 नेवगी०-पु० दे० 'नेगी' ।
 नेवछावर०-श्री० दे० 'निछावर' ।
 नेवज०-पु० देवताको अर्पित की जानेवाली भोज्य वस्तु, नैवेद्य ।
 नेवजा-पु० [फा०] चिखगोत्रा ।
 नेवजी-श्री० एक पुष्प ।
 नेवता०-पु० दे० 'न्योता' ।
 नेवतना०-स० कि० निर्मश्रित करना ।
 नेवतहरी०-पु० दे० 'न्योतहरी' ।
 नेवता०-पु० दे० 'न्योता' ।
 नेवना०-अ० कि० झुकना ।
 नेवर-पु० नूपुर, पुष्कर । श्री० दी पैरोंके आपसमें ठोकर या रगड़ खानेमें बोहेके पैरोंमें होनेवाला भाव; बोहेके दी पैरोंकी आपसकी रगड़ । † वि० नुरा; श्री घटकर हो, न्यून ।
 नेवदना०-अ० कि० निवारित होना, दूर होना ।
 नेवक०-पु० दे० 'नेवर' ।
 नेवला-पु० गिलहरीकी शकुका लगभग डेढ़ हाथ लंबा भूरे रंगका एक जंतु जो साँपको मारनेके लिए बहुत प्रसिद्ध है ।
 नेवा-पु० रीति, प्रथा, दस्तूर; कहावत । वि० तुल्य, समान; चुप, खामोश ।
 नेवाज-वि० दे० 'निवाज' ।
 नेवाजना०-स० कि० दे० 'निवाजना' ।
 नेवाडा-पु० दे० 'निवाडा' ।
 नेवाधी-श्री० नेवारी ।
 नेवाना०-स० कि० झुकाना ।
 नेवार-पु०, श्री० दे० 'निवार' ।
 नेवारना०-स० कि० निवारण करना, दूर करना, इटाना ।
 नेवारी-श्री० जूहीकी आतिका एक पीथा जिसमें छोटे और सफेद फूल लगते हैं ।
 नेदर-पु० [फा०] दे० 'नदर' ।
 नेदा(ष्ट)-पु० [सं०] क्रत्विक् ।
 नेट्ट-पु० [सं०] मिट्टीका डेला ।
 नेस-पु० जंगली जंतुओंके नुकीले दाँत ।
 नेसुक०-वि० बोझा-सा, अवय, रंभवाय । अ० जरा, बोझ ।
 नेसुगारा०-पु० गन्ना या चारा काटनेके कामका जमीनमें गाथा जानेवाला लकड़ीका डुकगा, ठोड़ा ।
 नेस-वि० [फा०] जिसका अस्तित्व न हो, जो न हो ।
 -नाचद्-वि० जड़-मूलते लड़ ।
 नेसी-श्री० [फा०] अस्तित्वका अभाव, न होनेका भाव; विनाश; आकस्म्य ।
 नेह०-पु० स्नेह, प्रेम, प्यार; तेल या घी ।
 नेहक०-पु० दे० 'जवाहरलाल' तथा 'नीतीलाल नेहरू' ।

नेही०-वि० स्नेही, प्रीति रखनेवाला, प्रेमी ।
 नेःनेचस-वि० [सं०] कल्याणकारक; मोक्षदायक ।
 नेःन्य-पु० [सं०] अकिंचनता, निर्बनता ।
 ने-पु० दे० 'नय' । * श्री० नदी; [फा०] बाँसकी नली; निगाली; बाँझुरी ।
 नेःनर, नेःनर्य-वि० निर्मति-संबंधी, नैर्ऋत्य । पु० गुरु नक्षत्र; निशाचर; पश्चिम-वक्षिणा कोण ।
 नेक-अ० दे० 'नेकु' । वि० दे० 'नेकु'; [सं०] एकमे अधिक, बहुत, बहुसंख्यक । पु० विष्णु । -न्य-वि० झुंड या जमातमें चलनेवाला, जो एकले न चले, समूहचारी (जैसे -हाथी, हिरन, मेढ आदि) । -भावाच्य-वि० अतिथर, चंचल; परिवर्तनशील । -नेद्-वि० विभिन्न प्रकारका । -न्य-पु० विष्णु ।
 नेकटिक-वि० [सं०] पार्श्ववर्ती; भिक्षा आदिके लिए प्राप्त आदिके समीप रहनेवाला । पु० सन्न्यासी, भिक्षु ।
 नेकत्व-पु० [सं०] निकट होनेका भाव, निकटता, सामीप्य ।
 नेकधा-अ० [सं०] कई तरहसे ।
 नेकचेष्ट-पु० [सं०] राक्षस (जिनकी उत्पत्ति निकृष्टासे है) ।
 नेकु-अ० जरा, बोझ । वि० बोझा-सा, लम्प ।
 नेकुतिक-वि० [सं०] दूसरेका अपकार करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला; दूसरेको हानि पहुँचाकर अपनी जीविका चलावेवाला; वैदमान, दुष्ट; कमीना ।
 नेगम-वि० [म०] निगम-संबंधी, निगमका । पु० वेदका वह भाग जिसमें ब्रह्म आदिका प्रतिपादन है, उपनिषद्; नीति; साधन; नागरिक; व्यापारी, बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार ।
 नेगमिक-वि० [सं०] वेद-संबंधी; वेदोंसे निकला हुआ ।
 नेगमेच, नेगमेच-पु० [सं०] कापिकेयका एक अनुचर; एक बालग्रह (सुश्रुत) ।
 नेर्ऋक-पु० [सं०] वैदिक शम्भोंका संग्रहग्रंथ जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्तमें की ।
 नेवा-पु० [फा०] एकमें रँधी हुई बुक्केकी दोनों नलियाँ; बहुत दुबला-पतला आदमी (म्य०) । -नद्-पु० नेचा बनाने या बाँधनेवाला । -नद्दी-श्री० नैचारंदका काम ।
 नैधिक-पु० [सं०] गाय या बैलका सिर ।
 नैधिकी-श्री० [सं०] अच्छी गाय ।
 नैधी-श्री० मोट खींचते समय बैलोंके बाढ़-बार जाने और लोडनेके लिए कुर्के पास बनी हुई डाल ।
 नैज-वि० [सं०] निजी, निजका ।
 नैत०-पु० सुजस्तर ।
 नैतल-पु० [सं०] नीचेका लोक । -नद्या(घन)-पु० यम ।
 नैतिक-वि० [सं०] नीति-संबंधी; नीतिका ।
 नैत्य-वि० [सं०] नित्य होने या किया जानेवाला; नित्य दिया जानेवाला । पु० नित्य कर्म ।
 नैत्यक, नैस्थिक-वि० [सं०] नियमित रूपसे होने या किया जानेवाला; अनिवार्य ।
 नैस्थिक-वि० [सं०] नेत्र-संबंधी, आँखोंका ।
 नैद्याच-वि० [सं०] निदाय-संबंधी; निदायका, ग्रीष्मका । पु० ग्रीष्म ऋतु ।
 नैदाधिक, नैदासीव-वि० [सं०] दे० 'नैदाय' ।
 नैदाविक-वि० [सं०] जो रोगोंका निदान जानता हो;

निरान-संबंधी प्रश्नको पढ़नेवाला। पु० रोगका निवारण करनेवाला।

नैदेशिक-पु० [सं०] विदेशका पालन करनेवाला; नौकर।

नैबब-पु० [सं०] भरण, वस्तु; कबनसे आठवें स्थान (ज्यो०)। वि० मरणशील, नश्वर।

नैबानी स्त्री-खी० [सं०] भूमी, कोयले आदिसे पूर्ण पका गादकर स्थिर की जानेवाली सीमा (स्मृ०)।

नैबैष-वि० [सं०] निधि-संबंधी; निधिका।

नैज-पु० दे० 'नयन'। -**सुख**-पु० एक तरहका चिकना घुनी कपड़ा।

नैजा-पु० नेत्र। अ० कि० नयना, झुकना।

नैवी-खी० नेत्र, नवनीत-'किरीली नैनी के भागे तो किसीकी छाछ फैला दी'-मेघदूत प्र०।

नैव-पु० एक तरहका बूटवार घुनी कपड़ा; * मक्खन।

नैपाक-वि० [सं०] नेपाल-संबंधी; नेपालका। पु० नेपाल-निवा; ईशका एक भेद; † नेपाल देश।

नैपाछिक-पु० [सं०] ताँबा। वि० नेपालमें उत्पन्न।

नैपाछी-वि० नेपाल-संबंधी; नेपाल देशका; जो नेपालमें रहता हो, नेपालमें रहनेवाला। पु० नेपाल देशका निवासी। खी० [सं०] नेवारी नामका फूल; नैनसिंह; नीलका नीला; निर्गुबीका एक भेद; नेपालकी भाषा।

नैपुण्य, **नैपुण्य**-पु० [सं०] निपुण होनेका भाव; निपुणता, पढ़ता, चापुती, कौशल; बह वस्तु जिसके लिए कौशल आवश्यक हो; समग्रता, पूर्णता।

नैपोछिचन, बोनापाट-पु० कांसीसी सैनिक नीर तथा सेनापति जो १८०४ में कांसका सम्राट् बन गया। १८१५ में बाटरफ़ोर्ड लड़ाईमें पराजित होनेपर सेंटहेलीनामें निर्वासित कर दिया गया (१७९९-१८२१)।

नैपुच-पु० [सं०] नम्रता, विनय; छिपाव; स्थिरता।

नैमजणक-पु० [सं०] सीज, तबाबा।

नैमच-पु० [सं०] व्यापारी, सौदागर।

नैमिष-वि० [सं०] निमित्त-संबंधी; निमित्तसे उत्पन्न; चिह्न-संबंधी।

नैमिषिक-वि० [सं०] निमित्त या शकुन जानेवाला; निमित्त या शकुन संबंधी शास्त्र पढ़नेवाला; किसी निमित्तसे किना जानेवाला, जो किसी निमित्तसे या कोई विशेष प्रयोजन दष्टिमें रखकर किया जाय (जैसे-प्रायश्चित्तके रूपमें किया जानेवाला कर्म या पुत्रेष्टि यज्ञ); आकस्मिक; विशेष कारणसे उत्पन्न। पु० ज्योतिषी; फल, परिणाम। -**छत्र**-पु० एक प्रकारका प्रशस्त जिसमें क्रमशः सी बनीतक छवि नहीं होती, बारहों खंई तीनों ओरकी दग्ध करते हैं और अंतमें पुष्करावर्तक आदि मेघ अनवरत ही बनीतक बरसकर विश्वको जलमयन कर देते हैं।

नैमिष-पु० [सं०] दे० 'नैमिष'।

नैमिष-पु० [सं०] नैमिषारण्य नामक तीर्थ। वि० पक्षधर टिकनेवाला, क्षणिक।

नैमिषारण्य-पु० [सं०] अवधका एक प्राचीन वन जिसे हिंदू अपना तीर्थस्थान मानते हैं (कहा जाता है कि वृत्त दुर्जिने यदी क्षत्रियोंकी महाभारतकी कथा सुनायी थी)।

नैमिषै-वि० [सं०] नैमिष-संबंधी। पु० नैमिषारण्यका

निवासी।

नैमेय-पु० [सं०] विनिमय, बदला-बदल।

नैषधोच-पु० [सं०] वरगदका फल।

नैषव्य-पु० [सं०] नियत होनेका भाव, नियतत्व; आत्म-निर्बंधन।

नैषमिक-वि० [सं०] नियमके अनुसार होने या किया जानेवाला।

नैषा-खी० नाव।

नैषाचिक-पु० [सं०] न्यायशास्त्रका विद्वान्।

नैरंतर्ष-पु० [सं०] निरंतर होनेका भाव, निरंतरत्व, अविच्छिन्नता।

नैर-पु० नगर; देश।

नैरपेक्ष-पु० [सं०] निरपेक्ष होनेका भाव, अपेक्षा, तटस्थता।

नैरविक-पु० [सं०] नरकमें रहनेवाला, नरक भोगनेवाला।

नैरध्व-वि० [सं०] निरध्व होनेका भाव, निरध्वता।

नैराश्य-पु० [सं०] निराश होनेका भाव, नाशम्भेदी; आशा या इच्छाका अभाव।

नैरुक्त, **नैरुक्तिक**-पु० [सं०] निरुक्ति जाननेवाला।

नैरुज्य-पु० [सं०] आरोप्य, स्वस्थता।

नैरुहिक-पु० [सं०] एक प्रकारकी वस्ति (छत्रवृत्त)।

नैरुत-वि० [सं०] निर्मोक्ष-संबंधी। पु० राक्षस; दक्षिण-पश्चिम कोणका स्वामी; मूल नक्षत्र।

नैरुती-खी० [सं०] दक्षिण-पश्चिमका कोना; दुर्गा।

नैरुत्व-वि० [सं०] निर्मोक्षि देवता-संबंधी।

नैरुण्य-पु० [सं०] निर्गुण होनेका भाव, सत्त्व आदि गुणोंमें रहित होनेका भाव, निर्गुणत्व; गुणराहित्य।

नैरुण्य-पु० [सं०] निर्दयता, निष्ठुरता।

नैरुशिक-पु० [सं०] भृत्य, नौकर।

नैरुम्य-पु० [सं०] निर्मल होनेका भाव, निर्मलता, स्वच्छता।

नैरुज्य-पु० [सं०] निर्लज्ज होनेका भाव, लज्जाहीनता, बेहयाई।

नैरुच-पु० [सं०] लोकापन।

नैवासिक-वि० [सं०] निवासके अनुकूल।

नैविज्य-पु० [सं०] निविज होनेका भाव, घनापन।

नैवेष-पु० [सं०] देवताको समर्पित की जानेवाली भोज्य वस्तु।

नैवेशिक-पु० [सं०] गृहस्थीका सामान; ब्राह्मणकी दी जानेवाली भेंट।

नैश, **नैशिक**-वि० [सं०] निशा-संबंधी; निशाका।

नैश्वर्य-पु० [सं०] निश्चय होनेका भाव, स्थिरता।

नैश्वर्य-पु० [सं०] निश्चित होनेका भाव; निश्चित संस्कार।

नैश्वर्यस्य, **नैश्वर्यसिक**-वि० [सं०] दे० 'नैश्वर्य'।

नैषध-पु० [सं०] निषध देशका राजा; निषध देशका राज नरक; वहाँका निवासी; श्रीहर्ष कविका एक महाकाव्य जिसमें नरकी कथा वर्णित है। वि० निषध-संबंधी; निषधका।

नैषधी-वि० [सं०] नरक नरेश-संबंधी; राजा नरकका।

नैषध-पु० [सं०] निषध-नरेशका पुत्र; राजा नरकका पुत्र।

[श्री०] 'नैषध' ।

नैषाध, नैषादि-पु० [सं०] विषादका पुत्र ।

नैषेधनिक-पु० [सं०] राज्याभिषेकके समय दिया जाने-
वाला उपहार (श्री०) ।

नैषिकन्यै-पु० [सं०] निष्कियता; आरुह्य, कर्म न करनेका
भाव; सभी कर्मोंका त्याग, आसक्ति और फलकी कामना
त्यागकर किये जानेवाले कर्मका अनुष्ठान (श्री०)।-सिद्धि-
श्री० सब प्रकारके कर्मोंसे निष्पत्ति (श्री०) ।

नैषिकचम्य-पु० [सं०] अकिंचनता, दरिद्रता ।

नैषिक-वि० [सं०] एक निष्कमें खरीदा हुआ । पु० टक-
सात्का प्रथम अधिकारी ।

नैषकमज-पु० [सं०] नवजात शिशुको पहले-पहल करने
बाहर ले जानेके समय किया जानेवाला कृत्य ।

नैषिक-वि० [सं०] निष्ठावाला; उपनयनसे लेकर श्रुत्युक्त
ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए गुरुकुलमें निवास करनेवाला
(ब्रह्मचारी); किसी व्रतके अनुष्ठानमें लगा हुआ; निश्चया-
त्मक; स्थिर; पारंगत ।

नैषुयै-पु० [सं०] निदुराई, निर्दयता ।

नैषज्य-पु० [सं०] निवम शिष्टा; इदना ।

नैसर्गिक-वि० [सं०] निसर्ग-संबंधी; स्वाभाविक, सहज,
प्राकृतिक ।

नैसा-वि० अनिष्ट, दुरा ।

नैसिक-वि०, अ० दे० 'नैसुक' (जरा, योद्धा)।-नैसिक
तेरिये मेरिये लीं'-विन० ।

नैसुक-वि०, अ० दे० 'नैसुक' ।

नैसिकिक-पु० [सं०] तलवार लेकर युद्ध करनेवाला योद्धा,
लह्वारी ।

नहर-पु० श्लोक पिताका घर, मायका ।

नोभना, नोना-सं० कि० दूधनेके समय गायके पिछले
पैरोंमें रस्सी बाँधना-कपट हेतुकी प्रीति निरतर नोह
चोखाई गाय'-सर ।

नोभा-पु० दे० 'नोह' ।

नोहनी, नोह-श्री० वह रस्सी जिससे दूध दुहनेके समय
गायकी पिछली टाँगें बाँधी जाती हैं ।

नोक-श्री० [फा०] किसी वस्तुका उस ओरका अग्रभाग
जिस ओर वह पतली होती वही गयी हो। किसी चीजका
निकला हुआ शरीर सिरा; किसी ओर निकला हुआ
कोना ।-झोंक-श्री० सजबज, सजाबट, अर्न्तकरण; ताव;
अभिमान; ताना, छोटाकशी, चुटोली बात; छेकसाना;
संघर्ष; विवाद ।-द्वार-वि० नोकवाला, चुटोला; चुटोला,
चुमनेवाला; सजबजका, ठाटका ।-पलक-श्री० चेहरे
की गठन ।-पाख-पु० जलेकी बनावट, सुंदरता आदि ।

नु०-श्री लेना-बद-बदकर बाँटे करना ।-दुम भागना-
बड़े जोरसे भागना, बेतहाशा भागना ।-बनावा-बनाव-
स्तिगार करना ।-रह जाना-मान-मर्वादाकी रक्षा होना,
इज्जत बच जाना ।

नोकना-अ० कि० लजचना; आकृष्ट होना ।

नोकाझीकी-श्री० छोटाकशी, तानाबनी, एक-दूसरेको
चुटोली बाँटे कहना; झगडा, विवाद ।

नोकीका-वि० दे० 'नुकीला' ।

नोका-वि० बनीका, अदभुत, अर्पू ।

नोच-श्री० नोचनेका काम या भाव; छीनने या बलपूर्वक
छेनेका कार्य; किसीकी परेशान या बेचस करके उससे बार-
बार कुछ लेना; बहुतसे व्यक्तियोंका कई ओरसे एक साथ
मँगना ।-नखसोट-श्री० खटपाट, छीनाछपाटी ।

नोचवा-सं० कि० छगी या जमी हुई वस्तुको झटकेसे साथ
इस प्रकार झींचना कि वह अपने स्थानसे अलग हो जाव,
झटकेसे उखाड़ना या तोड़ना; नख, दाँत आदिसे किसी
वस्तुके कुछ अंशोंको खींचकर अलग करना; शरीरपर नख
या पंजेसे इस प्रकार आघात करना कि खरौच पक भाव;
किसीको बेचस करके बार-बार उससे कुछ लेना, किसीकी
फेरमें डालकर बार-बार उससे कुछ न कुछ बसूक करना;
हतना मँगना कि जी ऊब जाव ।

नोचवाची-श्री० दे० 'नोचखसोट' ।

नोचू-वि० नोचनेवाला; नोचखसोट करनेवाला ।

नोट-पु० [अ०] स्मरणके लिए लिखा लेना, टँकना; संक्षेप;
छोटा पत्र वा लिखा हुआ परचा; निश्चित समयपर हयवा
चुकातेकी प्रतिज्ञा; सरकार द्वारा हयनेकी जगह चलाया
गया वह कागज जिसपर उतने हयनोंकी संख्या लिखी
रहती है जितनेका वह होता है ।-वेपर-पु० पत्र
लिखनेका कागज ।-बुछ-श्री० वह पुस्तिका जिसमें
आवश्यक बातें स्मरणार्थ लिख ली जाती हैं ।

नोटिस-श्री० [अ०] सूचना; इश्तहार, विज्ञापन ।

नोव-पु० [सं०] कार्यविशेषमें प्रवृत्त करना, प्रेरण; खंडित
करना, खंडन; बैलेंकी हॉकेका पैना ।

नोवना-श्री० [सं०] प्रेरणा ।

नोवविता (शु)-वि० [सं०] आगे बढ़ानेवाला, प्रेरित
करनेवाला ।

नोना-पु० नमक ।-चा-पु० नमकीन अचार, आमका
एक प्रकारका अचार जो उसकी फाँकोंमें केवल नमक लगा-
कर तैयार किया जाता है; कोनी जमीन ।-छी-श्री०
कोनी मिट्टी ।-ह्रामी-वि० नमकहरीमी ।
नोना-पु० लौके कारण दीवार या जमीनमें लगनेवाला
नमकका अक्ष; कोनी मिट्टी; नाथ, जहाज आदिके पेंदेमें
लगनेवाला एक प्रकारका कीड़ा । वि० जिसमें नमकका
अंश हो, खारा; अच्छा; सुंदर ।

नोनाचमारी-श्री० एक मशहूर जादूगरनी ।

नोनिवा-पु० एक जाति जो कोनी मिट्टीसे नमक तैयार
करती है । श्री० एक भाजी जो स्वादमें नमकीन होती है ।

नोनी-श्री० कोनी मिट्टी; नोनिया नामकी भाजी । वि०
श्री० अच्छी; सुंदर ।

नोर-वि० नया, नूतन । पु० आँसू ।

नोख-वि० दे० 'नवल' । † श्री० चिबियाकी चोंच ।

नोवना-सं० कि० दुहनेके समय गायकी पिछली टाँगोंकी
पकमें बाँधना ।

नोहूर-वि० जिसका मिलना कठिन हो, जो बड़ी कठि-
नाईसे मिले, दुष्प्राप्य; अर्पू, अद्भुत ।

नौ-श्री० [सं०] नाव; जहाज ।-कर्ण-पु० जहाजकी
पतवार ।-चार-पु० पोतचालक ।-कर्णी-श्री०
कापिकेवकी एक मारुका ।-कर्ण(शु)-पु० महाहकी

दृष्टि, मॉशीका पेशा । -कन्य-पु० नापोंका पुछ ।
-कन्य-वि० जो जहाजसे जाय । पु० मॉशी ।
-कौबिक-पु० मॉशी । -कौब-वि० जो नावसे पार
किया जाय । -कूँच-पु० बॉच । -नेता(पु)-पु० वह
जो जहाजकी पतवार धारण करे, कर्णधार, नाविक ।
-कौचन-पु० हिमाच्छन्नी वह चोटी जिससे मनुने प्रक्षय-
कालमें अपनी नाव बौंभी की (म० भा०) । -बाबी(विज्)
-वि० नाव या जहाजसे जानेवाला (माल या मुसाफिर) ।
-काह-पु० दे० 'नौनेता' । -व्यसन-पु० पोतमंग ।
-साधन-पु० वेका । -सेना-खी० समुद्री कर्षाङ्कने-
वाली सेना, जंगी जहाजोंपरसे कब्जेवाली सेना, जलसेना ।
-० एसि-पु० नौसेनाका अध्यक्ष ।

नौ-वि० आठ जोर एक, आठसे एक अधिक । पु० नौकी
संस्था । -कच्चा-पु० प्रतियुक्ति तीन-तीन कौबियों केकर
तीन व्यक्तियों द्वारा खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ ।
-बार्द, -गिरिही०-खी० दे० 'नौगाही' । -गही, -प्रही-
खी० हाथका एक गहना । -तेरही-खी० एक प्रकारकी
पुरानी रईस; पातोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ ।
-कसी-खी० किसानोंकी जमीनधारोंसे रफया लेनेकी
एक रीति जिससे अनुसार वे सालभरमें ९) के बदले १०)
देते हैं । -बा-वि० नौ प्रकारका (नौपामकि) । अ० दे०
'नवधा' । -नगा-पु० नौ भगौवाला हाथमें पहननेका
एक गहना । -मासा-पु० गर्माधानसे नवौं मास इस
मासमें की जानेवाली एक रश्म जिसमें मिठाई आदि बँटती
है । -रसन-पु० दे० 'नवरस'; नौगना । खी० खटाई,
गुश्, मिर्च, केसर आदि नौ चीजोंसे तैयार की जानेवाली
एक प्रकारकी चटनी । -रातरा-पु० दे० 'नवरात्र' ।
-कखाला-वि० दे० 'नौलखा' । -कखाला-वि०
जिसकी कीमत नौ लाख हो, नौ लाखका । -सतन-पु०
सोखनी श्रंगार-नौसत सजे चली गोपिका गिरिवर पूजा
हेतु । -सरा-पु० चालवाजी, करव । -सरा-
पु० नौ छवियोंवाली माला । -सरिया-वि० चालबाज,
करवी; जाहिया । शु०-तेरह बाईस बनाना-टाल-
मटूल करना । -दो श्वारह होना-चपत होना, भाग
जाना ।

नौ-वि० नव, नया । -सोच-वि० पहली बार जोता
हुआ (खेत) । -बद-वि० जो हालमें बुरी दशासे अच्छी
दशाको प्राप्त हुआ हो । -बदिया-बहु आ-वि० दे०
'नौबद' । -रस-पु० एक पक्षी; * जोरग-जोरगजेव
शब्दका एक भिन्न रूप । -रस-वि० ताजा पका हुआ
(फल); नौगवान । -रूप-पु० नौलकी पहली कटार ।
-सिख-सिखिया-सिखिया-वि० जिसने अभी
सोखना आरम्भ किया हो; जिसने अभी हालमें ही सीखा
हो । -ईश-पु० कोरी हाँसी; वह जो दूसरी जातिकी
बनयी हुई कच्ची रसोई न खाता हो । -ईश-पु०
पितृपक्ष ।

नौ-वि० [फा०] नया, हालका, ताजा । -आबाद-वि०
हालका बसा हुआ, जहाँ जोग हालमें बसे हों । -आबादी
-खी० नया बसा हुआ स्थान या देश, उपनिवेश ।
-आयुज-वि० नौसिखिया । -अस्ता-वि० नयी उम्र

का, नौगवान । -खेज-वि० दे० 'नौलखा' । -खेजी
-खी० नौगवानी । -चढ़ा-पु० चढ़ाते दूसरा दिन ।
-चढ़ी-खी० चढ़ाने शुरू होनेवाले महीनेकी पहली जुमे
रात । -जवान-वि० चढ़ती जवानीवाला । पु० नवयुवक ।
-जवानी-खी० उठती जवानी, चढ़ती युवानस्था । -
कौकन-वि० जो हालमें मालवर हो गया हो, नया माल-
दार । -निहाल-पु० नौगवान, नवयुवक । -बहार-
पु० वह जमीन जिसपर पहली बार मालगुजारी कमी हो ।
-बाहा-खी० वह लक्ष्मी जो हालमें बालिग हुई हो ।
-होज-पु० (पारसियोंका) वर्षका पहला दिन; त्योहार
या खुशीका दिन । -शाहाना-वि० इन्हें जैसा, इन्हें
समान । -शाह-पु० नौगवान शाह; दुल्हा, बर ।
-शी-खी० दुल्हिन, नवयव ।

नौकर-पु० [फा०] वह कर्मचारी जो वेतन लेकर किसीका
काम करे; छोटे-मोटे कार्योंकरनेके लिए नियुक्त किया
गया वैतनिक सेवक, मृत्य, खिदमतगार । -शाही-खी०
कर्मचारियों द्वारा संचालित शासन-संबंध, दफ्तरी दुकूमत,
'ब्यूरोक्रेसी' ।

नौकराना-पु० दस्तरी; वेतन या इनामके रूपमें नौकरकी
ही जानेवाली रकम; नौकर-खर्च ।

नौकरानी-खी० टहल करनेवाली स्त्री, दासी, धृत्या ।

नौकरी-खी० नौकरका काम या पेशा, मेधा, मुकाजमत;

वह काम जिसे करनेवालेकी नियत वेतन दिया जाय । -
पेशा-वि०, पु० नौकरी करके जीवन-निर्वाह करनेवाला ।

नौका-खी० [स०] नाव; पोत । -ईश-पु० डोंडा ।

नौकी-खी० नवयुवती; वह अपनी या पराधी लक्ष्मी जिसे
वेश्या अपना पेशा मिलाती है ।

नौकावर्ग-खी० दे० 'निहावर' ।

नौज-अ० ऐसी नौसत न आये, भगवान् न करे; कुछ पर-
वाह नहीं, बरसे (ली०) । [अ० 'नकज'-हम पनाह
मँगते हैं]; * पु० दे० 'नौजा' ।

नौजा-पु० बादाम; चिलगोवा ।

नौजी-खी० लीची । † अ० दे० 'नौज' ।

नौतन-वि० दे० 'नूतन' ।

नौतन-वि० बिल्कुल नया-पुम्ह सतगुरु म नौतन
बेला-कबीर; ताजा । पु० नम्रता ।

नौतन-वि० नया । पु० दे० 'नौता' ।

नौधारी-पु० निर्ममित व्यक्ति ।

नौबारा-पु० वर्षारमये बोधी हुई नौलकी फसल; नया बाग ।

* वि० दे० 'संस्थावाचक 'नौ'में' ।

नौन-पु० नमक ।

नौना-अ० कि० नत होना, झुकना; नम्र होना । * वि०
सुदर ।

नौनिहाल-दे० 'नौके साथ' ।

नौबल-खी० [फा०] बारी; गत, दुर्दशा; स्थिति, योग;
हालत, दशा; उत्पन्न, मंगल आदि स्थित करनेवाला
बाजा; समय-समयपर बजनेवाला बाजा; बीसा, नगाका ।

-झावा-पु० नौबत बजानेका फाटके ऊपरका कमरा
या स्थान । -नवाज-पु० नकारवी । -निशान-पु०

नगाका और झंडा । -बनौबल-अ० बारी-बारीसे, क्रमशः ।

नु०—की टकोर—पैसेकी भाषाज। —**नुज्ररका**—नौका जात रचना; दुर्दशा होना। —**नुबना**—नौस्त बनना। —**नुबना**—आमोद-प्रमोद होना, खुशी मनायी जाना। —**नुबान**—संज्ञा, या-बजाकर। —**नुबाना**—आमोद-प्रमोद करना, खुशी मनाना।
नौबती—पु० [फा०] नौबत बजानेवाला; नौकीदार, पहरेदार; सजा हुआ, पर बिना सवारका घोडा, कीतल घोडा; भारी लेमा या तंबू। वि० भारीसे होनेवाला (जैसे—नौबती दुखार)। —**नार**—पु० खेमेका चौकीदार; प्रहरी, दारपाक।
नौमि—[सं०] प्रणाम करता हूँ।
नौमी—खी० दे० 'नवमी'।
नौमुलकमि—वि० [अ०] जो हालमें ही मुसलमान हुआ हो।
नौरंगी—खी० दे० 'नारंगी'।
नौल—वि० दे० 'नवल'।
नौला—पु० दे० 'नैला'।
नौलासी—वि० मुलायम।
नौलाब—पु० दे० 'नवाब'।
नौलाबी—खी० दे० 'नवाबी'।
नौशेरवा—पु० [फा०] ईमाकी छोटी सर्दका फारसका एक अति न्यायप्रिय प्रभावी बादशाह।
नौसादर—पु० एक प्रकारका क्षार जो प्रायः जानवरोंके मलमूत्रने तैयार किया जाता है।
न्यंक—पु० [सं०] रथका एक विशेष अंग।
न्यंकु—पु० [सं०] बारहमिंगा; एक मुनि। वि० बहुत चलनेवाला, अति भ्रमनशील। —**न्यूह**—पु० सोनापाठा। —**सारिणी**—खी० एक वैदिक छंद।
न्यंग—पु० [सं०] निह्म; भेद, प्रकार।
न्यंचन—पु० [सं०] मोक्ष; छिपनेका स्थान; विवर।
न्यंचनी—खी० [सं०] गोट।
न्यंचित—वि० [सं०] नीचे पैसा हुआ, अवक्षिप्त; झुकाया हुआ।
न्यंचलिका—खी० [सं०] नीचे झुकायी अञ्जली।
न्यंत—पु० [सं०] अंतिम भाग; सामीप्य।
न्यक्त—वि० [सं०] निम्न। —**करण**—कार—पु० मीना दिखाना; तिरस्कार।
न्यक्ष—पु० [सं०] सैना; परशुराम; एक तरहकी पात। वि० निकट, अपम; ममत्र।
न्यग—'न्यक्त'का समासगत रूप। —**भाब**—पु० घटकर होना, अपकर्ष; तिरस्कार। —**भावित**—वि० तिरस्कृत।
रोष—पु० बह, बरगद; अमीका पेश; बाहु; लंबाईका परिमाण जो ऊपर हाथ किये हुए मनुष्यके करावर होता है, पुरसा; विष्णु; शिव; राजा उग्रमेनका एक पुत्र (पु०); मुसाकानी; मोहनौषधि। —**परिमंडल**—पु० एक पुरसा घेरेका आदमी। —**परिमंडला**—खी० कठिन स्तन, भारी निम्नों तथा पतली कमरवाली स्त्री; सुंदर स्त्री। —**रोषिका**—रोषी—खी० विषयणी।
न्यग्रोधाविमण—पु० [सं०] बरगद, बीपल आदि २३ वृक्षोंका एक गण (आ० दे०)।

न्यग्रोधाधिक—वि० [सं०] जहाँ वा जिसमें वक्री प्रचुरता हो।
न्यचक्ष—पु० [सं०] तिल; एक क्षुद्र रोग जिसमें कांठे वा सफेद रंगके छोटे-बड़े दाग देहपर पड़ जाते हैं (सुश्रुत)। वि० बहुत अच्छा।
न्यच—पु० [सं०] हय, नाश।
न्यचुद—वि० [सं०] दस भरपूर। पु० दस भरपूरकी संख्या।
न्यचुदि—पु० [सं०] एक रुद्र।
न्यचसच—पु० [सं०] किसीके पास जमन करना; रखना; देना; छोड़ देना।
न्यस्त—वि० [सं०] रखा या ढाला हुआ; निहित; छोड़ा हुआ, त्यक्त। —**रुद**—वि० सजा न देनेवाला। —**रुद**—वि० मरा हुआ, मृत। —**रुद**—वि० जिनने हथियार ढाल दिये हैं; निहत्था, अरक्षित।
न्यस्य—वि० [सं०] रखने, निहित करने तथा छोड़ने योग्य।
न्यह—पु० [सं०] अमाका संख्याका।
न्याकच—पु० [सं०] बारहमिंगका चमड़ा।
न्याह, **न्याडा**—पु० दे० 'न्याय'।
न्याकच—पु० [सं०] भूना हुआ चाबक, फरही।
न्याति—खी० जाति।
न्याद—पु० [सं०] आहार; खाना।
न्याना—वि० अनजान; अज्ञेय; कम उन्नता।
न्याच—पु० [सं०] उचित-अनुचितका विवेक, नीतिसंगत बात, हंसाफ; विवाद या मामलेमें दोनों पक्षोंकी सच्चाई; झुठई आदिके अनुसार किया गया निबटारा, फैसला; विष्णु; साधव्य; ६ आस्तिक दर्शनोंमेंसे एक जिसके प्रवर्तक गौतम ऋषि माने जाते हैं; प्रतिष्ठा; हेतु; उदाहरण आदि ६ अंगोंवाला वाक्य जिससे पदार्थानुमान संपन्न होता है (न्या०); लोक, शास्त्रमें विशिष्ट प्रस्तावमें प्रयुक्त होनेवाला कथावतकी तरहका दृष्टांत-वाक्य (जैसे—देहलोरीयन्याय)। * वि० ठीक, उचित; जैसा, समान। —**कता**—(तुं)—वि० पु० न्याय करनेवाला, फैसला करनेवाला, विचारपति, निर्णायक। —**पथ**—पु० न्यायका मार्ग, न्यायोचित मार्ग; भीमांसादर्शन। —**पर**—वि० न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, न्यायी। —**परता**—खी० न्यायपर या न्यायी होनेका भाव। —**पराधन**—वि० दे० 'न्यायपर'। —**पराधनता**—खी० दे० 'न्यायपरता'। —**प्रिच**—वि० जिसे न्याय प्रिय हो, न्यायशील। —**घर्सी**—(तिन्)—वि० न्यायानुसार आचरण करनेवाला। —**बादी**—(विन्)—वि० उचित बात कहनेवाला। —**हुच**—पु० शास्त्रविहित आचार। —**ह्रील**—वि० दे० 'न्यायपर'। —**संगल**—वि० न्यायोचित। —**समा**—खी० अदालत, कचहरी, न्यायालय। —**सारिणी**—खी० युक्तिसंगत कार्य।
न्यायस—(तत्)—अ० [सं०] न्यायके अनुसार, न्यायकी दृष्टिमें रखते हुए, न्यायसे।
न्यायाधीश—पु० [सं०] विवाद या मामलेका निबटारा करनेवाला अधिकारी, न्यायकर्ता, विचारपति, 'जज'।
न्यायालय—पु० [सं०] वह स्थान जहाँ न्यायाधीश विवाद या मामलेका निर्णय करता है, अदालत, कचहरी।
न्यायी—(विन्)—वि० [सं०] न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, न्यायके पथपर चलनेवाला।

म्यावोचित-वि० [सं०] जो स्वाभावतः ठीक वा उचित हो, जो व्यापक विवेक न हो।
म्याव्यव-वि० [सं०] व्यावसंगत, व्यावोचित।
म्यार-वि० दे० 'म्यार'। पु० तिथी चान; निवार।
म्यारा-वि० जो दूर हो, दूरका, दूरका, जो अलग हो; दूरे प्रकारका, निक, दौगर; अग्र्युत, विचित्र, अपूर्व।
म्यारिवा-पु० वह जो सुनारोंकी दुकानकी राख आदिमेंसे सोना-चाँदी निकालता है।
म्यारे-अ० अलग; दूर।
म्याव-पु० उचित-अनुचितका विवेक; ईसाफ; विबाह या मामलेका निर्णय, फैसला; आचारकी रीति। छु०-
मुकाना-विर्णय करना, फैसला करना।
म्यास-पु० [सं०] रसना, स्वासन; उचित खानपर रसना; थरोहर, निक्षेप, अमानत; अर्पण; छोड़ना, त्याग; विश्व, निशाना; भंडन; लर भंड करना। -**चारी**(रिक्)-वि०, पु० थरोहर रखनेवाला। -**स्वर**-पु० वह स्वर जिसपर राग समाप्त हो।
म्यासापह्व-पु० [सं०] किसीकी थरोहर हथप जाना।
म्यासिक-पु० [सं०] वह जो अपने पास किसीकी थरोहर रखे।
म्यासी(सिक्)-पु० [सं०] सम्पत्ती। वि० त्यागी।
म्युज-वि० [सं०] जिसका मुँह नीचेकी ओर हो, औषा, अनौसुख; कुबडा। पु० परगद; कुसकी सुबा; कमरख; आरुमें काम आनेवाला पात्र। -**खल्ल**-पु० डेढ़ी तलवार।
म्युज-पु० [अ०] समाचार, संवाद। -**प्रिड**-पु० अख-

बारी कामगार।

म्युज-वि० [सं०] जो बन्दर हो; कम, बोझ; विकारयुक्त, विकृत; हीन; नीच; निहड। -**धी**-वि० कमअध, मूर्ख।
म्युक्त-खी० [सं०] म्यून होनेका भाव, कमी; हीनता; नीचता; सदोषता।
म्युनांग-वि० [सं०] जिसका कोई अंग विकृत हो।
म्युनाधिक-वि० [सं०] कम-बेश; असम।
म्योचनी-खी० [सं०] दासी, परिचारिका।
म्योछावर-खी० दे० 'निछावर'।
म्योची-खी० लीची; चिकगोत्र।
म्योतना-सं० कि० उत्सव, मोह आदिके लिए निर्मजित करना।
म्योतनी-खी० विवाहादि अवसरपर होनेवाला भोज।
म्योतहरी-पु० निर्मजित व्यक्ति।
म्योता-पु० निर्मजित; मोह आदिका निर्मजित, दावता वह रकम या वस्तु जो म्योतहरी म्योता देनेवालेकी देता या उसके यहाँ भेजता है।
म्योत्र-पु० दे० 'निवज'।
म्योरा-पु० दे० 'निवज'; बड़े दानोंका कुँवर।
म्यप-पु० मृप, राजा।
म्येनी-खी० दे० 'नोई'।
म्यवाना-सं० कि० नष्टकाना, स्नान कराना।
म्यवान-पु० स्नान।
म्यवाना-अ० कि० नहाना।

प

प-देवनागरी वर्णमालामें पवर्णका प्रथम वर्ण। उच्चारण-
 खान भोज।
पंक-पु० [सं०] कीचक; दलदल; घनी बड़ी राखि; पाय; पोतने योग्य गीला पदार्थ; लेप। -**कर्ट**-पु० जल-
 युक्त पंक। -**कीर**-पु० टिटिहरी नामक चिरिया।
कीड, -**कीडन**, -**कीडनक**-पु० छल। -**गडक**-
 पु० एक प्रकारकी मछली। -**प्राह**-पु० मगर। -**पिड**-
 पु० निर्मली। -**ज**-वि० जो कीचकसे उपज हो। पु०
 कमल; सारस पक्षी। -**जम्मा**(म्यम्)-पु० मझा।
जाम-पु० विष्णु। -**पराग**-पु० पधराय मणि।
जामटिका-खी० एक वर्णवृत्त। -**जम्म**(ज्)-पु०
 कमल। -**जम्मा**(म्यम्)-पु० सारस पक्षी। वि० पंकसे
 उत्पन्न होनेवाला। -**जास**-पु० कमल। -**जिक्**-पु०
 मक्कका एक पुत्र। -**जिरज**-वि० कीचक पुता हुआ,
 जिसमें कीचक लगा हो। -**जारी**-पु० एक दानव।
जिन्वांग-वि० जिसके अंगोंमें कीचक लगा हो। पु०
 कापिकेयका एक अनुवर। -**पूर**-पु० एक नरक (जै०)।
परदी-खी० गोपीचंदन। -**पमा**-खी० एक नरक
 जहाँ कीचक ही कीचक है। -**आक**(ज्)-वि० कीचक-
 में निमग्न। -**आरक**-वि० पंक्ति। -**अंक**-पु०
 पौधा। -**ख**-पु० कमल। -**वास**-पु० केकड़ा।
पुकि-खी० छतरी; पौधा। -**पूरण**, -**पूरण**-पु०
 कमल या कुमुदकी जड़।

पंकजामन-पु० [सं०] मझा।
पंकजिनी-खी० [सं०] कमलका पौधा; पद्म-राशि; कमल-
 पूर्ण खान; कुमुद-जड़।
पंकण-पु० [सं०] चोंचालकी झोपडी या निवासस्थान।
पंकार-पु० [सं०] सेवार; सेतु; बाँध; सीढ़ी, सीपान; जल-
 कुत्रक; मिषाण।
पंकि-वि० [सं०] पंकयुक्त, जिसमें कीचक मिला हो,
 कीचवाला।
पंकिलता-खी० [सं०] कलुष; कालिमा; गंदगी।
पंकिज-पु० [सं०] कमल।
पंकेह-पु० [सं०] कमल, सारस।
पंकेषय-वि० [सं०] कीचकमें रहनेवाला।
पंकेसया-खी० [सं०] जोंक।
पंक्चर-पु० [अ०] डूब, ब्लैडर आदिमें किसी नुकीली
 चीजके चुभने या कटनेसे होनेवाला छेद।
पंकि-खी० [सं०] वह समूह जिसमें प्रायः सजातीय पदार्थ
 या व्यक्ति एक-दूसरेके पीछे या बगलमें क्रमके अनुसार
 स्थित हों, श्रेणी, कतार; एक वर्गिक छंद; एक वैदिक
 छंद; पंचिका समाचार; दसकी संख्या; कुलीन ब्राह्मणोंकी
 श्रेणी; मीरमें एक साथ जानेवालोंकी पंक्ति, पंगत; वर्तमान
 पीढ़ी; पाक; पम्बी; गोरव। -**कंडक**, -**वृष**, -**वृषक**-पु०
 वह पतित ब्राह्मण जो अच्छे ब्राह्मणोंके साथ भोजन करनेके
 योग्य न हो। (ऐसे ब्राह्मणको आरुमें डिलाना तथा दान

देना नमित है—स्व०)। —**ग्रीव**—पु० रावन। —**चर**—पु० कुरर पक्षी। —**पावच**—पु० विधा, तप आदिने विशिष्ट आश्रम जिसने आदमें निमजित आश्रमोंकी पंक्ति पवित्र हो जाती है; वह आश्रम जो पंक्ति-दूषक द्वारा अपवित्र की गयी पंक्तिकी पवित्र बना देता है (स्व०), पंक्ति-दूषकका उल्टा। —**बद्ध**—वि० श्रेणीबद्ध। —**दृष**—पु० दृशरथ। —**बाह्य**—वि० पंक्ति या जातिने बाहर किया हुआ। —**बीज**—पु० बद्ध।

पंक्ति-बीज—वि० [सं०] कनार, पंक्ति।

पंच—पु० पर, देना। **मु**—जमना—भागने, सिलकने, कुमार्गपर चलने या प्राण गैबानेका लक्षण प्रकट होना। —**परेरा बना डालना**—बातका बतंगर बना देना, छोटी-सी चीजको तृल दे देना, मामूली-सी बातको बहुत बड़ा देना (अमर०)। —**खगाना**—पक्षीकी-सी गतिसे मुक्त होना; उड़ान भरना।

पंचवी—वि० फूलका वह पत्तेके समान अवयव जिसके संकोचसे वह मुकुलित रहता है और फैलावसे खिलता है, फूलकी पत्ती, पुष्पदल।

पंखा—पु० वह वस्तु जिसने हवा को जाती है; † दे० 'पलुता'। —**कुम्भी**—पु० पंखा खींचनेवाला नौकर।

—**पोखा**—पु० पंखेका खोल। **मु**—करना—पंखा डुका-कर किसी ओर हवाका झोंका या वायुका संचार करना।

पंखाज—पु० पखानज।

पंखिया—वि० भूरीके महीन डुकड़े; पंखी।

पंखी—पु० पक्षी; पंखी; सालके फलके ऊपरकी छोटी हलकी पत्ती। **की** छोटा पंखा।

पंखुवा, **पंखुरा**—पु० दे० 'पलुता'।

पंखुवी, **पंखुरी**—वि० दे० 'पंखुवा'।

पंखेरा—पु० दे० 'पनेर'।

पंग—वि० लंगबा; कुठित; बेकाम; अवरुद्ध; लम्ब। पु० कन्नौज नरेश जयचन्द्र (रासी)। —**जा**—वि० सवोगिता।

पंगत, **पंगति**—वि० पक्ति, कतार; भोजमें एक साथ खाने-वालोंकी पंगत; समाज; भोज।

पंगला—वि० दे० 'पंग'।

पंगा—वि० दे० 'पंग'।

पंगु—वि० [सं०] जो पाँवके बेकाम होनेसे चल-फिर न सकता हो; जो चल न सके; गतिहीन। पु० शनि ग्रह; लंगड़ा आदमी। —**गति**—वि० वणिक छत्रोंका एक दोष। —**ग्राह**—पु० मगर; मकर राशि। —**पीठ**—पु० लंगनेकी बिठाकर कहीं ले जानेकी गाड़ी, पर्ष।

पंगुल—वि० [सं०] दे० 'पंगु'।

पंगुता—वि० [सं०] दे० 'पंगुल'।

पंगुल—पु० [सं०] लंगापन। —**हारिणी**—वि० शिमरी नामक क्षुप।

पंगुल—वि० [सं०] पंगु। पु० लंगापन; कौंच जैसा सफेद घोडा।

पंगुला—वि० दे० 'पंगु'।

पंच—वि० [सं०] विस्तृत। —**पान्न**—पु० पूजनके कामका गिलासके आकारका एक चौड़े मुँहका पात्र (दे० 'पंच(रु)' में भी)। —**मुखा**, **वचन**—वि० चौड़े या विस्तृत मुख-

वाला। पु० सिंह। (दे० 'पंच (रु)' में भी)।

पंच(रु)—वि० [सं०] पाँच। पु० पाँचकी संख्या। —**कन्या**

—**खी**—अहत्या, श्रौघपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी—ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या रहीं। —**कपाळ**—पु० वह

पुरोडाश जिसका संस्कार पाँच कपाळों(कसोरी)में किया गया हो। वि० पाँच कसोरीमें तैयार किया हुआ। —**कपट**

—पु० महाभारतमें वर्णित एक देश। —**कर्म(रु)**—पु०

पाँच प्रकारके कर्म—उत्प्रेषण, अपक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन (न्या०); वैधकमें चिकित्साके अंतर्गत पाँच

क्रियाएँ—हमन, विरेचन, नस्य, निरुह और अनुवासन। —**कर्म**

—**खी**—उपचारके पाँच अंग, पंचकर्म। —**कल्याण**, —**कल्याणक**—पु० वह घोडा जिसके पैर और मुँह सफेद

रंगके हों (ऐसा घोडा बहुत मांगलिक माना जाता है)। —**कवच**—पु० भोजनके पहले पक्षियों आदिके छिप निकाला

जानेवाला पाँच प्रातः अन्न। —**कषाय**—पु० जामुन, सेमर, बेर, मौलसिरी और बरियारा—इन पाँच वृक्षोंकी छालका

रस। —**काश**—पु० पाँच प्रकारके कामदेव। जिनके नाम हैं—काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु।

—**कारण**—पु० कार्यावृत्तिके पाँच कारण—काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म (जै०)। —**कृत्स्न**—पु० ईश्वरके

सृष्टि, भ्रंश, संहार, तिरोभाव और अन्तर्ग्रहण—ये पाँच कर्म। —**कृष्ण**—पु० एक कोडा। —**कोज**—पु० पाँच

मुजाओंवाला क्षेत्र (ज्या०)। वि० पाँच कीनोंवाला। —**कोल**—पु० पीपर, पिपरामूल, चम्ब, चिकमूल और

सोंठ—इन पाँच औषधियोंका समाहार। —**कोश**, **कोश**—पु० वेदात्के अनुसार आत्माके आवरणरूप पाँच कोश जो

हस्त प्रकार हैं—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश। —**कोस**—पु० [हिं०] काशीपुरी। —**कोसी**—वि० [हिं०] काशीकी

परिक्रमा। —**कोसी**—वि० पाँच कोसका फासला; काशी पुरी जो पाँच कोसमें बसी हुई है। —**कलेश**—पु० अविद्या,

असिद्धा, राग, द्वेष और अभिनिवेश—ये पाँच क्लेश (योग)। —**क्षारगण**—पु० पाँच प्रकारके लवण—काच, सैधव,

सामुद्र, विट् और सोवचल (आ० वे०)। —**खट्व**—पु० पाँच खटियोंका ममाहार। —**खट्वी**—वि० दे० 'पंच-खट्व'।

—**शंग**—पु० गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और भूतपापा—इन पाँच नदियोंका समाहार। —**शंगा**—

(घाट)—पु० [हिं०] काशीका एक प्रसिद्ध स्थान जो कई नदियोंका संगमस्थान माना जाता है। —**गणयोग**—पु०

विदारीगंधा, ब्रह्मती, वृश्चिपणी, निदिग्धिका और भूकुम्पाङ्कका योग (आ० वे०)। —**गत**—वि० (वह राशि)

जो अपनेमें पाँच बार गुणित हो; जैसे ५/४ (की० ग०)। —**गव**—पु० पाँच गायों या बैलोंका समाहार। —**गव्य**—

पु० गायके दूध, दही, घी, गोबर और मूत्रकी एकमें मिलाकर तैयार किया जानेवाला एक पदार्थ जो बहुत पवित्र माना जाता है। —**गु**—वि० पाँच गायें देकर

खरीदा हुआ। —**गुण**—पु० शब्द, स्पर्श, रस और गंध—ये पाँच गुण। वि० पंचगुना। —**गुणी**—वि० पृथ्वी।

—**गुल**—पु० कलुषा; चावोंक दर्शन। —**गुहिरसा**—वि० लक्ष्मी। —**ग्रीव**—पु० उत्तरी भारतके पाँच प्रकारके

ब्राह्मण-सारस्वत, काम्यकुम्भ, गौड, मैत्रिक और मौलिक (उत्कल) । -**ब्राह्मी-क्षी०** पाँच गौनोंका समूह । -**बाह्य-पु०** संगीतका एक ताल । -**बाह्य-पु०** पाँच चक्रों-राजचक्र, महाचक्र, देशचक्र, वीरचक्र और दशचक्र-का समाहार [तं०] । -**बाहु(स्)-पु०** बुद्ध । -**बामर-पु०** एक छंद । -**बीर-पु०** एक बुद्ध, मंजुश्री । -**बृह-वि०** पाँच कलमियों या केशमुच्छोबाला । -**बृह-क्षी०** एक अम्तरा । -**बौल-पु०** हिमालय मेणीका एक भाग । -**जन्-पु०** आत्मा; मनुष्य; निषाद सहित ब्राह्मण आदि चार वर्ण; देव; मनुष्य, नाग, गंधर्व और पितर-ये पाँच प्रकारके प्राणी; एक अम्तरा जिसे कृष्णने मारा था और जिसकी हड्डीने उनकी पाँचजन्म नामक संज्ञा बना था; एक प्रजापति; संजयका एक पुत्र । -**जनी-क्षी०** पाँच व्यक्तियोंका समुदाय । -**जनीव-पु०** अभिनेता, विद्वत् । -**वि०** पंचजन-संघर्षी । -**ज्ञान-पु०** बुद्ध; पाशुपत दर्शनका शाखा । -**ज्ञं-पु०** सत्कृतकी एक प्रसिद्ध पुस्तक जिसमें मित्रलाभ, सुहृदेद आदि पाँच प्रकरणोंके अंतर्गत अनेक नीतिविवेक कथार दी हुई हैं । -**ज्ञत्री-क्षी०** पाँच तारोंवाली बीणा । -**तत्त्व-पु०** पंचभूत; पंचमकार । -**तन्मात्र-पु०** रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द-ये पाँच सूक्ष्म और अतीन्द्रिय तत्त्व जिनसे पंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति होती है । -**तपा(पस्)-वि०, पु०** पंचाधिका ताप देनेवाला । -**तह-पु०** मंशर, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदनका समाहार । -**तिष्ठ-पु०** पाँच कवची ओषधियों-गुडुक्ष, मट्कटेया, सेंठ, कुट और किरायना-का समाहार । -**तीर्थी-क्षी०** पाँच तीर्थों-विमालि, कौकर, नैमिष, प्रयाग और मुष्कर (बराह पु०)-का समाहार (इस प्रकारके अन्य समाहार भी मिलते हैं) । -**तृण-पु०** कुश, कास, सरकंठा, राम और बैस-इन पाँच तृणोंका समाहार । -**वृक्ष(श्)-वि०, पु०** दे० 'पंद्रह' । -**वृक्षी-क्षी०** पूर्णिमा; अमावस्या; वेदातका एक प्रसिद्ध ग्रंथ । -**वृषी-पु०** शरीरके ये पाँच दीर्घ अंग-बाहु, नेत्र, कुक्षि, नासिका और सलनोके बीचका भाग । -**वि०** जिस पुरुषके ये अंग दीर्घ हों । -**वैश्व-पु०** विष्णु, शिव, ब्रह्मा, गणेश और दुर्गा-ये देवता जिनकी उपासना स्मार्त हिंदू करते हैं । -**व्रविष्ट-पु०** दक्षिण भारतके पाँच प्रकारके ब्राह्मण-महाराष्ट्र, तैलंग, कर्नाट, गुर्जर और द्रविड़ । -**वस-वि०** पाँच नखोंवाला (जानवर) । -**वा०** श्वी; कछुआ; गाय या भेड़ । -**वह-पु०** पाँच नदियोंवाला देश; पंजाब; दे० 'पंचगंग' । -**वाध-पु०** बदनाय, द्वारकानाय, जगन्नाथ, रमनाथ और श्रीनाथ । -**विश्व-पु०** नीमके पाँच अंग । -**वीराजन्-पु०** दीपक, कमल, आम, वस्त्र और पान-इन पाँच वस्तुओं द्वारा की गयी आरती । -**पक्षी(क्षिन्)-पु०** एक तरहका सज्जनशाक । -**पत्र-पु०** एक वृक्ष । -**पद्मी-क्षी०** एक प्रकारकी कृपा; पाँच डग; पाँच पद; (व्या०); वह संवत् जिसमें मेषीका माघ न हो । -**पर्णिक, -पर्णी-क्षी०** गोक्षुर नामक क्षुप । -**पर्व(न्)-पु०** अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या और रविसंक्रान्ति । -**पल्लव-पु०** गंध कर्ममें-आम, जायम, कैय, वेल् और बिजौरा-

इन पाँच वृक्षोंके पल्लव; वैदिक कर्ममें-पीपल, गूलर, पाकड़, आम और बड़-इन पाँच वृक्षोंके पल्लव; तांत्रिक कर्ममें-कटहल, आम, पीपल, बड़ और मौलसिरी-इन पाँच वृक्षोंके पल्लव । -**पात-पु०** [हिं०] प्रचोली नामक पीपा । -**पात्र-पु०** पाँच पात्रोंका समाहार; एक तरहका आद्य जिसमें पाँच पात्र रखे जाते हैं (दे० 'पंचभंभी') । -**पाव-वि०** पाँच चरणोंवाला । -**पु०** संवत्सर । -**पिता(ह्)-पु०** पाँच प्रकारके पिता-पिता, उपनेता, शत्रु, अश्वदाता और भयत्राता । -**पित्त-पु०** खरार, ककरा, भैंसा, मछली और मोर-इन पाँच जानवरोंका पित्त । -**पुष्प-पु०** चंपा, आम, शमी, कमल और कनेरके फूलोंका समाहार । -**प्राण-पु०** शरीरमें संचरण करनेवाली वायुके पाँच भेदों-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान-का समाहार । -**प्रासाद-पु०** वह मंदिर जिसमें चार शृंग और बीचमें गुंबद हो । -**बंध-पु०** वह अमरद जो नष्ट वस्तुओंके मूल्यका पंचमांश हो । -**बदी-क्षी०** [हिं०] दे० 'पंचवटी' । -**बला-क्षी०** बला, अतिबला, नागबला, राजबला और महाबला-ये पाँच औषधियाँ । -**बाण, -सार-पु०** काम-देव; कामदेवके पाँच प्रकारके बाण-स्मोहन, उन्मादन, स्तभन, शोषण और तापन । -**बाहु-पु०** शिव । -**बीज-पु०** अनार, ककड़ी, खीरा आदि । -**भद्र-पु०** एक प्रकारका सुलक्षण घोड़ा जिसके मुँह, पीठ, छाती दोनों बगलोंपर एक धम्मा होता है । -**वि०** पाँच गुणोंवाला (व्यंजन आदि); दुरा । -**भर्तारी-क्षी०** [हिं०] द्रोपदी । -**भर्त्री-क्षी०** द्रोपदी । -**भुज-वि०** पाँच भुजाओंवाला । -**पु०** पाँच भुजाओंवाला क्षेत्र । -**भूत-पु०** पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश-ये पाँच तत्त्व । -**भकार-पु०** कामाचारके अंतर्गत वे पाँच वस्तुएँ जिनके नामका प्रथम अक्षर 'म' है-मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन । -**महापातक-पु०** पाँच प्रकारके महापातक-ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय, गुरुन्यय-गमन और उक्त चार महापातकोंकी करनेवालेका समर्ग (स्थ०) । -**महायज्ञ-पु०** गृहस्थोंके लिए विहित वे पाँच कृत्य जिन्हें करनेमें पंचमना-संघर्षी हिंसाके दोषसे छुटकारा मिलता है-ये कृत्य निम्नलिखित हैं-स्वाध्याय-ब्रह्मयज्ञ, होम-देवयज्ञ, बलिवैदवदेव-भूतयज्ञ, पिंड-क्रिया-पितृयज्ञ और अतिथिपूजन-नृयज्ञ । -**महाध्याधि-क्षी०** अर्थ, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद-ये पाँच दुःसाध्य व्याधियाँ । -**महाव्रत-पु०** अहिंसा, व्रता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (योग) । -**महिवि०** मैसका दूध, दही, घी, गोबर और मूत्र । -**मास्थ-वि०** पाँच महीनोंमें या हर पाँचवें महीनेमें होनेवाला; पाँच महीनेका । -**पु०** कोकिल । -**मुष्ट-पु०** शिव; पाँच मुठोंवाला रुद्राक्ष; पाँच नोकोंवाला बाण । -**वि०** जिसके पाँच मुँह हो (दे० 'पंचभंभी') । -**मुद्रा-क्षी०** पूजनविधिके अंतर्गत पाँच प्रकारकी मुद्राएँ-आवाहनी, स्वापनी, सप्रियापनी, संवोधिनी और सम्मुखोपनी । -**मूत्र-पु०** नाथ, ककरी, मूँक, भैंस और गधी-इन पाँच जानवरोंका मूत्र । -**मूल-पु०** पाच-पाँच वनस्पतियोंकी जड़से तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी दवा । -**मूली-क्षी०** पाँच

प्रकारके मूलोंका समाहार । - **बह**-पुं गृहस्थोंके पाँच महायज्ञ । - **बाम**-पुं दिन । - **रक्षक**-पुं पक्षीय, पक्षीका वृक्ष । - **रत्न**-पुं पाँच रत्न; पाँच प्रकारके रत्न-नीलम, हीरा, पद्मराग मणि, मोती और यूँगा; महाभारतके पाँच प्रसिद्ध आख्यान; पाँच नीतिपूर्ण पद्योंका समूह । - **रविम**-पुं वर्ष । - **रसा**-स्त्री-औं भौंवा । - **रात्र**-पुं पाँच रात्रियोंका समाहार; पाँच रातोंका समय । - **राक्षिक**-पुं गणितकी एक क्रिया जिसमें चार ज्ञान राक्षियोंके द्वारा पंचम राक्ष निकाली जाती है । - **रक्षण**-पुं पुराण । - **रक्षण**-पुं दे० 'पंचधारण' । - **रक्षा**-पुं पाँच हलोंसे जोती जा सकनेवाली भूमिका दान । - **रौह**, **कोहक**, **कोह**-पुं सीना, चोटी, तोंबा, रोंगा और सीसा-ये पाँच धातुरे; इन पाँचोंके योगसे बनी धातु । - **बचन**-पुं, वि० दे० 'पंचमुख' । - **बचन**-स्त्री-दुर्गा । - **बद**-पुं यक्षोपवीत । - **बटी**-स्त्री-पीपल, बेल, बड़, हड़ और अजोड़-इन पाँच वृक्षोंका समाहार (आस-पास लगे हुए इन पाँच वृक्षोंके नीचे तप करना प्रशस्त माना गया है); दंडकारण्यमें वह स्थान जहाँ बनबानी रामने सीता और लक्ष्मणके साथ निवास किया था । - **बर्ग**-पुं पाँच पदार्थोंका समूह; पाँच प्रकारके गुणचरोंका समूह; पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ; शरीरकी संचालित करनेवाले पाँच तत्त्व; पाँच महायज्ञ । - **बर्ग**-पुं अकार, उकार, मकार, नाद और बिंदुने संयुक्त ओंकार । - **बलक**-पुं बड़, पीपल, पाकड़, गूलर और बैत-इन पाँच वृक्षोंकी छाल । - **बाण**-पुं दे० 'पंचबाण' । - **बासीय**-पुं राजमृगके अंतर्गत एक प्रकारका होम । - **बिसति**-वि० पक्षीम । - **बुद्ध**-पुं पाँच देवबुद्ध-मदार, पारिनात, संतान, कश्चुल और हरिचंदन । - **बाह**-पुं पंच मंगलबाध; शास्त्रजि आदि पाँच प्रकारकी ध्वनियाँ; सूत्र, वार्तिक, भाष्य, शेष और कवियोंका प्रयोग (व्या०) । - **बाह**-पुं धान, सूँग, तिल, उबड़ और जौ-ये पाँच प्रकारके अन्न । - **शाख**-पुं पाँच शाखाओंका समाहार; ऋषि; हाथी । [स्त्री 'पंचशाखी'] । - **शाखा**-पुं [वि०] दे० 'पंचशाखा' । - **शाखीय**-पुं एक वृक्ष । - **शाख**-पुं सांख्य दर्शनके एक प्रसिद्ध आचार्य; सिंह । - **शीर्ष**-पुं एक प्रकारका सर्प । - **शील**-पुं अंतरराष्ट्रीय शांतिरक्षार्थके वे पाँच सिद्धांत या शील जिनकी घोषणा पहले-पहल जवाहरलाल नेहरू तथा वाङ्मन-कार्बेके संयुक्त वक्तव्यमें की गयी थी । पाँचों शील ये हैं-(१) राज्यकी अविच्छिन्नता और प्रभुत्वके लिए परस्पर समार; (२) परस्पर अनाक्रमणका आधासन; भीतरी बातोंमें अहंसाध; (३) समता और पारस्परिक लाभ; (४) शांतिमय सह-अस्तित्व । - **शुद्ध**-पुं एक जहरीला कीड़ा । - **शूरण**-पुं अयस्कपर्णी, मालकंद, सुरन, सफेद धूरन और कांभीर-ये पाँच प्रकारके मुरन । - **शूल**-पुं एक पर्वत (पु०) । - **संधि**-स्त्री-पाँच प्रकारकी संधियाँ-स्तरसंधि, ब्रंजनसंधि, विसर्गसंधि, स्वादिसंधि और प्रकृतिमात्र (व्या०) । - **सरा**-पुं कामदेव । - **सिद्धांती**-स्त्री-महा, सूर्य, सोम आदि द्वारा उक्त व्योतिषके पाँच सिकांतोंका समाहार । - **सुर्यचक्र**-पुं कपूर, शीतल

नीली, लौह, सुधापी और वायकल-ये पाँच सुर्य पदार्थ (आ० दे०) । - **सूना**-स्त्री-गृहस्थके घरमें निम्नलिखित पाँच वस्तुएँ जिनके द्वारा छोटे-छोटे कीर्तियोंका हिंसा हो जाता करता है-चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, हाथू, ओखली और पानीका घड़ा । - **स्व**-पुं रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान-ये पाँच वस्तुएँ (सौ०) । - **स्नेह**-पुं वी, तेल, चरबी, मज्जा और मोम-ये पाँच चिकने पदार्थ । - **स्रोत**(स्त्री)-पुं एक तीर्थ; एक प्रकारका योग । - **हजारी**-पुं [वि०] दे० 'पंचहजारी' ।

पंच-पुं पाँच या अधिक मनुष्योंका समूह; सर्वसाधारण; न्याय करनेवाली सभा; पंचायतका सदस्य; मन्थव्य; जूरीका सदस्य । - **नामा**-पुं वह काम जिसके द्वारा बादी और प्रतिवादी किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूहको अपने मामलेका फैसला करनेका अधिकार देते हैं; वह काम जिसपर पंचोंने अपनी तजवीज लिखी हो । **सु**-स्त्री-सहायताकी पुकार । - **की**-स्त्री-सर्वसाधारणकी कृपा, लोक-अनुग्रह । - **परमेधर**-पंचोंका कहना ईश्वरीय वाक्यके समान है । - **बदना**, **मानना**-समयके कामका करनेके लिए मन्थरव बनाना ।

पंच-पाँचका समासमें व्यवहृत रूप । - **तोरीबा**-पुं एक तरहका बटिया कपड़ा । - **तोलीया**-पुं पाँच तोलेका बाट; एक तरहका बटिया कपड़ा । - **पीरिया**-पुं पाँच पीरोंका पूजक । - **मेल्**-वि० जिसमें पाँच प्रकारकी वस्तुओंका मेल हो; जिसमें कई तरहकी चीजें मिली हों । - **रंग**, **रंगा**-वि० पाँच रंगोंवाला; कई रंगोंवाला; रंग-भिरगा । - **लगा**-वि० पाँच लड़कोंका (हार) । - **लगी**-स्त्री-पाँच लड़कोंवाला माछा । - **लरी**-स्त्री-दे० 'पंचलकी' । - **बाँसा**-पुं गर्भरक्षाके निमित्त प्रथम गर्भाधानके पाँचवें महीने किया जानेवाला एक कृत्य । - **बाना**-पुं राजपूतोंकी एक उपजाति ।

पंचक-वि० [सं०] पाँच अंगोंवाला; पाँचसंधी; पाँचमे खरीदा हुआ; पाँच प्रतिशत म्यान लेनेवाला । पुं पाँचका समूह (समासमें); बनिष्ठाले देवतातकके पाँच मन्त्र; इन मन्त्रोंका योगकाल जिसमें प्रेतद्वार, दक्षिणकी यात्रा आदि निषिद्ध है, पचसा; बुद्धक्षेप ।

पंचतप-वि० [सं०] पंचयुगा ।

पंचसा-स्त्री, **पंचस**-पुं [सं०] शरीरके उपादानरूप पाँच महाभूतोंका अपने-अपने रूपको प्राप्त हो जाना, मृत्यु ।

पंचमी-स्त्री [सं०] पिसात (सुतरंज) ।

पंचस-वि० [सं०] पाँचवें; दक्ष, चतुर्द, सुंदर, कांतिमान् । पुं समीपके सप्तका पाँचवें स्वर जो कोयलकी झूकका स्वर माना जाता है; एक राग; मैयुज; वर्गका पाँचवाँ वर्ण । **पंचमी**-स्त्री [सं०] चंद्रमाकी पाँचवीं कला; पक्षकी पाँचवीं तिथि; द्विपदी; अपादान कारक; पिसात ।

पंचांग-वि० [सं०] पाँच अंगोंवाला । पुं पाँचका समाहार; पाँच अंग किसी वृक्ष या पौधेके ये पाँच अंग-जड़, छाल, पत्ता, फूल और फल; घुटना, सिर, हाथ तथा छातीकी घृष्ठीसे सटाकर और ओंलोंको देवताके चरणोंकी ओर करके किया जानेवाला एक प्रकारका प्रणाम (तं०); तांत्रिक

उपासनको ये पाँच अंग—कमच, स्तोत्र, प्रकृति, पटल और सल्लनाम; जप, होम, तर्पण, अभिषेक और विप्रमोक्षण—इन पाँच अंगोंसे युक्त पुरश्चरण; महापुरश्चरण (सं०); तिथि; वार, योग, नक्षत्र और करण—इन पाँच अंगोंसे युक्त तिथिपत्र, पत्रा (अंग०); राजनीतिको ये पाँच अंग—सहाय, साधन, उपाय, देशकाल-भेद और विपक्ष-प्रतीकार; पंचभद्र घोषा; कलुषा। —छुनि—स्त्री० तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण इन पाँचको निर्दिष्टता।

पंचांगिक—वि० [सं०] पाँच अंगोंवाला।

पंचांगुल—वि० [सं०] जो नापमें पाँच अंगुलका हो; जिसमें पाँच उँगलियाँ हों। पु० रंज; तेजपत्ता; पनेके आकारकी रवीं।

पंचांगुलि—वि० [सं०] जिते पाँच अंगुलियों हों।

पंचांगुली—स्त्री० [सं०] तक्राहा नामक क्षुप।

पंचांशरीय—पु० [सं०] पाँच प्रकारके पातक—माता, पिता, माँद और दुइका घात और पाजकोंसे विवाद (री०)।

पंचांश—पु० [सं०] पाँचवाँ भाग।

पंचाहूता—स्त्री० दे० 'पंचायत'।

पंचाहूती—वि० दे० 'पंचायती'।

पंचाक्षर—वि० [सं०] पाँच अक्षरीवाला। पु० एक छंद; शिषका पाँच अक्षरीवाला मंत्र, 'ॐ नमः शिवाय'।

पंचाक्षि—स्त्री० [सं०] पाँच प्रकारकी निम्नलिखित अग्नि—शरिरेमें मानी जानेवाली पाँच अग्नियाँ—कृत्वाहार्य-पचन, मार्दव्य, आहवनीय, सव्य और आश्रम्य; उपनिषद्के अनुसार—स्वर्ग, परंजय, पृथ्वी, पुष्य और योषित्; चारों ओर जलती हुई चार अग्नियों तथा ऊपरसे सूर्यके तापका सेवन करनेका प्रारम्भ कट्टेमें किया जानेवाला एक तप; नीता, चिचवी, भिलाषाँ, गंधक और मदार—ये पाँच बहुत गरम तासीरवाली औषधियाँ (आ० वे०)। वि० आहवनीय आदि पाँच अग्नियोंका आधान करनेवाला।

पंचाज—पु० [सं०] बकरीका दूध, दही, घी, पुरीष और मूत्र।

पंचातप—वि० [सं०] जो पंचाक्षि-तप करे।

पंचात्मक—वि० [सं०] पाँच तत्त्वोंवाला (शरीर)।

पंचात्मा (सम्बु)—स्त्री० [सं०] पंचप्राण।

पंचानन—वि० [सं०] पाँच मुखोंवाला; चौड़े मुँहवाला।

पु० शिव; सिंह; पंचमुखी रुद्राक्ष; सिंह राक्ष।

पंचामनी—स्त्री० [सं०] दुर्गा; सिंहनी।

पंचानवे—वि० नम्बेसे पाँच अधिक, जो सौसे पाँच कम हो। पु० पंचानवेकी संख्या, ९५।

पंचाप्सर (स्)—पु० [सं०] वह सरोवर जहाँ शातकणि मुनिकी तपस्या भंग करनेवाली अप्सराएँ रहती थी।

पंचामरा—स्त्री० [सं०] दूध, बिजबा, विल्वपत्र, निर्गुडी और काली तुलसी।

पंचाशुत—वि० [सं०] पाँच द्रव्योंके मेलसे बना हुआ। पु० पाँच द्रव्योंका समाहार; देवताओंके स्नान कराने और चढ़ानेके कामका एक पेश पदार्थ जो गायके दूध, दही, घी, मधु और चीनीके योगसे बनाया जाता है; शुक्ल, गोखर, मुसली, मुंडी और सतावर—इन पाँच औषधियोंका योग (आ० वे०)।

पंचाशुत—पु० [सं०] बेर, अनार, अमलबेत, चूक और चिजौरा नीबू—ये पाँच खट्टे पदार्थ (आ० वे०)।

पंचायत—स्त्री० पंचोंकी मंडली वा सभा; किसी मामले वा समझके संबंधसे पंचों द्वारा किया जानेवाला विचार वा निवेदारा; कई आदमियोंका एकत्र होकर शहर-उपरकी बातें करना, गणना करना (व्यं०); जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियोंका मंडल।

पंचायतन—पु० [सं०] पाँच देवताओंकी प्रतिमाओंका समुदाय।

पंचायती—वि० पंचायतका; जिसपर बहुतोंका अधिकार हो; अनेक मनुष्योंका; जनताका; जनताके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित, जिसका संचालन जनता द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधिमंडल करे।—राज्य—पु० जनताके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित राज्य, गणतंत्र।

पंचारी—स्त्री० [सं०] शतरंज आदिकी विज्ञात।

पंचार्थि (स्)—पु० [सं०] दूध मूत्र।

पंचाल—पु० [सं०] हिमालय तथा चंबलसे सीमित एक प्राचीन देश जो गंगाके दोनों ओर स्थित था (द्विपद बर्णनके राजा थे—मन्म०); इस देशका निवासी; बर्हका राजा; एक ऋषि; महादेव।

पंचालिका—स्त्री० [सं०] कपड़े आदिकी पुतली।

पंचालिखत—वि०, पु० दे० 'पैतालीखत'।

पंचाली—स्त्री० पंचाली, द्वीपद्वी; [सं०] कपड़े आदिकी पुतली; एक प्रकारका गीत; शतरंज आदिकी विज्ञात।

पंचाक्षय—वि० [सं०] पाँच अवयवों या अंगोंवाला।

पंचाक्षय—पु० [सं०] शिव, सुरा।

पंचाविक—पु० [सं०] भैंसका दूध, दही, घी, पुरीष और मूत्र।

पंचाश—वि० [सं०] पचासवाँ।

पंचाशत—वि० [सं०] चालीस और दस। पु० पचासकी संख्या, ५०।

पंचासिका—स्त्री० [सं०] पचास वस्तुओं, व्यक्तियों या पशुओंका समूह।

पंचास्थ—वि०, पु० [सं०] दे० 'पंचानन'।

पंचाह—पु० [सं०] पाँच दिनोंका समूह।

पंचिका—स्त्री० [सं०] पाँच अध्यायोंवाली पुस्तक; पाँच गोटियोंसे खेला जानेवाला जुआ।

पंचीकरण—पु० [सं०] दो समान भागोंमें बाँटे गये आकाश आदि पाँच तत्त्वोंमें प्रत्येकके प्रथमादर्शको पुनः चार भागोंमें बाँटकर उन्हें अन्य तत्त्वके द्वितीयार्द्धमें मिलानेकी क्रिया (दे०)।

पंचीकृत—वि० [सं०] जिसका पंचीकरण हुआ हो (दे०)।

पंचरा—पु० लकड़ोंका एक मिट्टीका लिलौना जिसके पैदेमें बहुतसे छेद होते हैं।

पंचोद्विध—स्त्री० [सं०] पाँच ज्ञानेद्रियों अथवा कर्मेन्द्रियों।

पंचोषु—पु० [सं०] कामदेव।

पंचोपचार—पु० [सं०] पूजनके साधनमूल पाँच द्रव्य—गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य; इन पाँच द्रव्योंसे किया गया पूजन।

पंचोपविष—पु० [सं०] पाँच प्रकारके उपविष—हृष,

मवार, कनेर, जवारीपल और कुत्राज ।

पंचोष्मा (पञ्च) - पु० [सं०] आहारकी पचानेवाली पाँच वस्तुएँ ।

पंचौली - स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियों और बंठलोंसे एक प्रकारका सुशब्दर तेल निकाला जाता है ।

पंचा - पु० प्राणियोंके शरीर या पेश-पीयोंमें कटने, छिलने-आदिकी जगहसे निकलनेवाला एक प्रकारका पसेव; फफोले, चेचकके दाने आदिमें भरा हुआ पानी ।

पंचाखा - पु० फफोला; फफोलेके भीतरका पानी ।

पंछी - पु० पक्षी, चिड़िया ।

पंज - वि० [फा०] पाँच । - **अंगुष्ठ** - पु० हाथकी पाँच उँगलियाँ । - **आयत** - स्त्री० गली और फातेहाके अवसरपर पड़ी जानेवाली कुरानकी पाँच सतरी । - **कन्दान** - पु० दे० 'पंचकल्याण' । - **गान**, - **बधुरी** - पु० पाँचों बन्धकी नमाज । - **गोवा** - वि० पाँच कोनोंवाला, पंचकोण ।

रोज़ा - वि० पाँच दिनोंका; कुछ ही दिनोंतक रहनेवाला, अस्थायी, ठी डिकाक न हो । - **शाफ़ा** - पु० एक तरहकी मशाल, पनसाखा । - **हज़ारी** - पु० पाँच हजार सैनिकोंका नायक; मुगलकालमें बादशाहकी ओरने अमीरोंकी दिया जानेवाला एक पद (हस्त पदवाले पाँच हजार सेना रख सकते थे या उतनी सेनाके नायक बनाये जाते थे) ।

पंजर - पु० [सं०] हथियोंका ढाँचा, ठठरी, ककाल; पसली; पिंजरा; शरीर; कलियुग; गायका एक संस्कार । - **छुक** - पु० पिंजरेमें बंद किया हुआ तोता, पालतू तोता ।

पंजरक - पु० [सं०] पिंजरा ।

पंजरना - अ० कि० दे० 'पंजरना' ।

पंजराखेद - पु० [सं०] मछली पकड़नेका एक तरहका जाल या सावा ।

पंजरी - स्त्री० अरबी; † पसली ।

पंजा - पु० [फा०] पाँच सजानीय वस्तुओंका समाहार; गाड़ी; पाँचों उँगलियोंके सहित हथेली या पैरका अगला भाग; अथल्लुकी मुट्ठी जिसमें बैंगठा और उँगलियाँ हस्त स्थितिमें हों कि किसी वस्तुकी पकड़ा या बकोटा जा सके; उँगलियोंके सहित हथेलीका अर्धसमुद्र; जूतेका वह भाग जो पंजेकी बंदी रहता है; पीठ झुजानेका पंजेकी जाकृतिका बना एक आला; पंजा लकानेकी क्रिया या प्रतियोगिता; पाँच वृत्तियोंवाला ताश्तका पचा; आदमीके पंजेके आकारका दिन आदिका वह ढुक्का जिस छे बँस आदिमें लगाकर झंडेके रूपमें ताश्तियेके साथ छे चलते हैं । - **तोड़ बैठक** - पु० कुहतीका एक पंच । **मु०** - **फेरना**, - **मोड़ना** - पंजेकी लकानेमें प्रसिद्धीकी हराना । - **कैलास**, - **बहाना** - छेने या अधिकारमें करनेकी चेष्टा करना । - **मारना** - झपट्टा मारना । - **लकाना**, - **छेना** - कसरत या बलपरीक्षाके लिए उँगलियोंकी फैलाकर जोर लगाना । - **छे जाना** - पंजेकी प्रतियोगितामें हरा देना । - **(छे)में** - **कानूँ**, अधिकारमें । - **(औँ)पर चकना** - हस्ताना ।

पंजाब - पु० [फा०] उत्तरी भारतका एक प्रांत ।

पंजाबी - वि० [फा०] पंजाब; पंजाब-संबंधी । पु० पंजाब प्रांतका निवासी । [स्त्री० 'पंजाबिन'] स्त्री० पंजाबकी भाषा ।

पंजारा - पु० सुत कातनेवाला; पुनिया ।

पंजाह - वि० [फा०] पचास । - **साखा** - वि० पचास बर्षोंका ।

पंजाहम - वि० [फा०] पचासवाँ ।

पंजि, **पंजी** - स्त्री० [सं०] पूनी; बही, रजिस्टर; पंचांग ।

- **कार**, - **कारक** - पु० लेखक, बही लिखनेवाला, हकी;

पंचांग बनानेवाला । - **बद्ध** - वि० मुद्रिस्ट्रीशुदा, रजिस्टर्ड ।

पंजिका - स्त्री० [सं०] ऐसी टीका जिष्ठमें प्रत्येक शब्दका अर्थ समझाया गया हो, विशद टीका; पंचांग, तिथिपत्र; आयम्यव स्थितनेकी बही; रजिस्टर; यमकी बही जिसमें जीवोंके कर्म लिखे जाते हैं । - **कार**, - **कारक** - पु० लेखक, बही लिखनेवाला, हकी; कायस्थ ।

पंजीरी - स्त्री० पुनिया, सोंठ आदिका चीनी 'मिला हुआ चूर्ण और भीमें युना माटा जिसका प्रयोग प्रायः नैवेद्यके लिए करते हैं (कहीं-कहीं केवल पुनिया, चीनी और सोंठसे पंजीरी तैयार की जाती है, उसमें आटेका योग नहीं रहता) ।

पंजुम - वि० [फा०] पाँचवाँ ।

पंजेरा - पु० बरतन आदि साहनेका पेशा करनेवाला ।

पंढ - पु० [सं०] नरुपस, विजय । वि० फलपति; निष्फल ।

पँहरा, **पँहरा** - पु० दे० 'पँहरा' ।

पँहल - वि० पीका । पु० पिङ्ग; शरीर ।

पँहवा - पु० मेसका बच्चा ।

पंढा - पु० तीर्थ, मंदिर या घाटपर धर्मकृत्य करानेवाला ब्राह्मण; तीर्थका पुजारी, यादिका, यगपुत्र; रसोई बनानेका काम करनेवाला ब्राह्मण, रसोइया । [स्त्री० 'पंढाइन'] स्त्री० [सं०] सत्-असत्का विवेक करनेवाली बुद्धि; निष्वायमिका बुद्धि; हान; विधा ।

पँहाइन - स्त्री० पंङ्गेकी स्त्री; पंङ्गे जानिकी स्त्री ।

पंहापूर्व - पु० [सं०] वह अष्ट जो अपना फल न दे सके, फलरहित अष्ट (मी०) ।

पंहाळ - पु० किसी संस्थाके अधिवेशन आदिके लिए बना हुआ बड़ा मंडप ।

पंढित - पु० [सं०] शास्त्रके तात्पर्यको जाननेवाला विद्वान् ; वह जिसमें सत्-असत्का विवेक करनेकी शक्ति हो; शास्त्र विद्वान् ; ब्राह्मण (स्त्री०) संस्कृतका विद्वान् ; एक पंथाग्रव्य, सिद्धक । वि० विद्वान् ; कुशल । - **जातीय** - वि० कुछ चतुर । - **मंडक** - पु०, - **सभा** - स्त्री० विद्वानोंकी मंडली । - **मायिक**, - **मायी (सिन्धु)** - वि० दे० 'पंढितमन्त्र' । - **राज** - पु० बहुत बड़ा विद्वान् ; संस्कृतके प्रसिद्ध विद्वान् जगन्नाथकी उपाधि । - **बादी (विन्)** - वि० जो पंडित होनेका दावा करे ।

पंढितक - वि० [सं०] विद्वान् ; चतुर । पु० विद्वान् व्यक्ति ।

पंढितमन्त्र - वि० [सं०] जो अपनेकी बहुत बड़ा विद्वान् समझे ।

पंढिताइयाँ - स्त्री० दे० 'पंढितानी' ।

पंढिताई - स्त्री० पंडित होनेका भाव या गुण, विद्वत्ता, पंडित्य ।

पंढिताळ - वि० पंडितोंके ढंगका, पंडित जैसा ।

पंढितानी - स्त्री० पंडितकी स्त्री; ब्राह्मणी ।

पंढितिना (मन्त्र) - स्त्री० [सं०] पंडित्य, पंढिताई, विद्वत्ता ।

पंहुक-पु० कनूतरकी जासिका एक हलके कलर रंगका पक्षी ।

पंहुक*-पु० जलसर्प ।

पंकोही*-पु० जावदान, पनाला ।

पंङ्, **पंङ्क**-पु० [सं०] पंयु मनुष्य; हिजड़ा ।

पंतीजना-स० कि० रुई ओटना ।

पंतीजी*-झी० खई पुननेका औजार, पुनकी ।

पंत्तारी*-झी० पकि, कतार ।

पंथ-पु० मार्ग, रास्ता; रीति; धर्म, संप्रदाय; पन्थ, रोगीका उपवासके बादका हलका भोजन । **मु०** -गहना* - रास्ता एकटना । -**दिखाना**-रास्ता दिखाना; शिक्षा देना । -**देखना**, -**निहारना**, -**सेना**-बाट जोहना, प्रतीक्षा करना । -**पर बा में पंथ देना**-मार्ग ग्रहण करना । -**पर खाना**, -**छगाना**-सुमार्गपर चलना । (किसीके) -**छगाना**-अनुकरण करना; परेशान करना ।

पंथक-वि० [सं०] मार्गमें उपपन्न ।

पंथकी*-पु० यात्री, मुसाफिर ।

पंथान*-पु० रास्ता, मार्ग ।

पंथिक*-पु० पथिक ।

पंथी-पु० कटोही, यात्री; किसी मतका माननेवाला ।

पंथ-पु० [फा०] शिक्षा, नसीहत; सलाह ।

पंथर, **पंथर**-वि० दस-और पाँच । पु० १५ की संख्या ।

पंथरोही*-पु० दे० 'पंथर' ।

पंथार-पु० सलाह या शिक्षा लेनेवाला ।

पंथ-पु० [अ०] पानी आदि तरल पदार्थोंको ऊपर खींचने या पहुँचाने तथा इधर-उधर ले जानेकी एक कल; जूबन आदिमें हवा भरनेकी एक कल; पिचकारी; एक प्रकारका जूता ।

पंथा-झी० [सं०] दक्षिणकी एक नदी जो कश्मिरक पर्वतके समीप थी; इस नदीके पासका एक पुराना नगर; इस नगरके पासकी एक झील । -**खर**-पु० पथा नामकी झील ।

पंथाल*-वि० पापी ।

पंथा-पु० ऊन रंगनेके कामका एक पीला रंग ।

पंथर*-झी० खोटी; सम्मान ।

पंथरना*-अ० कि० तैरना; आह लेना, पता लगाना ।

पंथरि*-झी० खोटी; द्वार ।

पंथरिआ*-पु० दे० 'पंथरिया' ।

पंथरिया-पु० पौरिया, द्वारपाल; पुत्रजन्मके अवसरपर भगलगीत गानेका पेशा करनेवाला एक विशेष वर्ग, दाढ़ी ।

पंथरी*-झी० खोटी; * खपाकें ।

पंथाका, **पंथारा**-पु० विस्तृत कथा; वीरगाथा, कीर्तिकथा ।

पंथार-पु० परमार, राजपूतोंका एक खेद; * मूँगा ।

पंथारना*-स० कि० फेंकना; दूर करना, हथाना ।

पंथाखा, **पंथाखा**-पु० दे० 'पंथखा' ।

पंथरहटा-पु० वह वाजार जिसमें पंथारियोंकी दुकानें हों ।

पंथारी-पु० नमक, मसाले आदि प्रतिदिनके व्यवहारकी वस्तुएँ, औषधियाँ आदि देवनेवाला नवियाँ ।

पंथासार*-पु० पानेका लेख ।

पंथुरी, **पंथुरी**-झी० दे० 'पंथरी' ।

पंथरी-झी० पाँच सेरकी लौ या उसका बाट ।

प-वि० [सं०] पीनेवाला; रक्षक (समासांतमें) । पु० हवा; पत्ता; अंठा; पंचम खरका संज्ञेत (संगीत) ।

पहगा*-पु० दे० 'पैग' ।

पहजा*-झी० दे० 'पैज' ।

पहठा*-झी० दे० 'पैठ' ।

पहठना*-अ० कि० दे० 'पैठना' ।

पहता-पु० एक छंद ।

पहसना*-अ० कि० दे० 'पैठना' ।

पहसार*-पु० प्रवेश ।

पडेरि*-झी० खोटी ।

पडनारा*-पु० पथनाल, कमलदंड ।

पडनी*-झी० दे० 'पौनी' ।

पडलार*-पु० वह खराकें जिसमें खँटीकी जगह रस्सी लगी रहती है ।

पकड़-झी० पकड़नेका काम या भाव, ग्रहण; पकड़नेका तर्ज; कुस्तीमें एक बारकी जिब्त; भूल, अशुद्धि आदि खोज निकालनेकी क्रिया या भाव; समझ; वह स्वर-समूह जो किसी रागमें विशेष रूपसे आवा करता और उस रागका परिचायक होता है । -**पकड़**-झी० धर-पकड़ । **मु०** -**जाना**-बंदी बनाया जाना, गिरफ्तार होना; दीधी ठहराया जाना । -**में जाना**-पकड़ा जाना; काबू में किया जाना; बशवर्ती होना ।

पकड़ना-स० कि० किसी वस्तुको इस ढंगसे हाथमें लेना या दबाना कि वह इधर-उधर न हट सके; ग्रहण करना; धरना; गति या व्यापारमें निहृष्ट करना; खोज निकालना; पता लगाना; गलती करने या बहकनेमें रोकना; किसी काममें आगे बढ़े हुएकी बराबरीमें आ जाना; किसी वस्तुकी अपनेमें व्याप्त होने देना; किसी वस्तुमें व्याप्त होना; अपनाना; आक्रान्त या बशीभूत करना; ग्रसना; बंदी बनाना, गिरफ्तार करना; किसी वस्तुसे चिपकना; समझना ।

पकड़वाना-स० कि० पकड़नेमें प्रवृत्त करना या सहायता देना ।

पकड़ाना-स० कि० पकड़नेमें प्रवृत्त करना ।

पकना-अ० कि० अनाज, फल आदिका परिपक्व होना या उस अवस्थाकी पहुँचना जिसके बाद वे झड़ने लगते हैं, परिणतावस्थाकी प्राप्ति होना; कच्चा न रहना; आँच खाकर कड़ा और लाज होना; आँच या गरमी खाकर गलना या नरम होना, सीझना; नुरना; (वालकों) सफेद होना; पक्का होना; कोषा-फुल्ल, धावका मवाद भर जानेकी अवस्थाकी पहुँचना; गोदियोंका सब खानोंको पार करके अपने खानेमें पहुँचना (चोसर) ।

पकरना*-स० कि० दे० 'पकड़ना' ।

पकलार*-पु० फोड़ा ।

पकवान-पु० पी वा तेलमें तली हुई मोय्य वस्तु ।

पकवाना-स० कि० पकानेमें प्रवृत्त करना ।

पकाई-झी० पकने, पकानेकी क्रिया या भाव; पकानेकी उजलत ।

पकावा-स० कि० अनाज, फल आदिकी पकनेकी अवस्थाकी पहुँचना; आँच पहुँचाकर कड़ा और लाज करना;

आँच या गरमी पहुँचाकर गलाना या नरम करना, सिझाना, चुराना; उबालना; सफेद करना या बनाना; पीका, फुंसी या बावकी मवाद भर आनेकी अवस्थाको पहुँचाना।

पकाय-पु० पकनेका भाव; मवाद।

पकायन*-पु० पकाना।

पकाया-पु० वही पकायी।

पकायी-झी० भी या तेजमें तली हुई केसन या पीठीकी बरी।

पकण-पु० [सं०] चाँदालका पर; चाँदालोंकी बस्ती।

पक्का-वि० पका हुआ, कच्चाका उलटा; जिसमें कोई कमी न रहे गया हो; पूर्णताको प्राप्त, पूरा; जिसमें हीर पड़ गया हो; सँजा हुआ; सिद्ध; सुगौल और एक जैसा जिसमें कहीं विषमता न हो; निपुण, निष्णात; आँचपर गलाना या नरम किया हुआ, जो सीस चुका हो, रौचा हुआ; पूर्णरूपसे पकाया और साफ किया हुआ; ठहराक, अचल, सुदृढ़; ईंट या पत्थरका बना हुआ; जिसमें सुरक्षी-चूना आदिका उपयोग हुआ हो; जिसपर कंक-पत्थर बिछाया गया हो; भीमें पका हुआ, दृढपक (पक्षी रसोई); उबाला हुआ, ओटा हुआ; स्वास्थ्यवर्क (पक्का पानी); जिसमें खालिस सोने चाँदीके तार लगे हों, जो नकली न हो (पक्का काम); निश्चित; जो प्रमाणरूप माना जाय, टकरा-सालो; जिसमें देर-फेर न किया जा सके; जो हर तरहने ठीक हो; जिसपर किसी हुई बात कानूनके विरुद्ध न हो; जो कमी छूट न सके (पक्का राग); अच्छी तरह जाँचा हुआ; जिसमें अच्छी तरह जाँचा हुआ हिसाब दर्ज किया गया हो (पक्षी बही)। -**गाना-पु०** शालीय संगीत। -**पानी-पु०** रोड्डुमें रंग।

पक्खर*-झी० दे० 'पाखर'। वि० पक्का, बड़; प्रखर, तीक्ष्ण; प्रचंड; तेज।

पकपौड-पु० [सं०] पखौडा नामक वृक्ष।

पकभ्य-वि० [सं०] पकाने योग्य; पचाने योग्य।

पक्क (क)-वि० [सं०] पकाने या पचानेवाला। पु० उठराभि; रसोइया।

पक्ति-झी० [सं०] (भोजन) पकाना, पाचन; (फल आदि-का) पकना; प्रसिद्धि, वृद्ध; पाचन-सत्त्वान। -**माखन-वि०** पाचन खराब करनेवाला। -**झूल-पु०** अजीर्णके कारण होनेवाला दर्द। -**खान-पु०** पाचन-संस्थान, वे अंग जो पचानेकी क्रिया करते हैं।

पक्विन्न-वि० [सं०] पका हुआ; पकाया हुआ; पकानेसे प्राप्त (नमक)।

पक्क-वि० [सं०] पका हुआ; पकाया हुआ; पक्का, अनुभवी; दृढ़, पुष्ट; सफेद (वाल); पूर्णतः विकसित। पु० पकाया हुआ भोजन। -**कूत-पु०** नीम; पकानेवाला, पाककर्ता। -**केश-वि०** जिसके बाल पक गये हों। -**रस-पु०** मद्य, शराब। -**वारि-पु०** कौडी।

पकता-झी०, **पक्कर-पु०** [सं०] पक होनेका भाव।

पकडा-पु० [सं०] एक नीच जाति, चाँदाल।

पकासिसार, पकासीसार-पु० [सं०] अतिसारके रॉच नेदोंमेंसे एक।

पकाय-पु० [सं०] पाचन-संस्थानका वह भाग जहाँ आहार पचता है, आमाशय, जठर।

पकाय-पु० [सं०] पकाया हुआ अन्न; पकायी हुई भोज्य वस्तु; पकवान।

पकाय-पु० [सं०] दे० 'पकायान'।

पक्क-पु० [सं०] किसी वस्तुका बायाँ या बायाँ भाग; सेना, मकान आदिका अगेकी ओर बढ़ा हुआ दायाँ या बायाँ भाग; पार्श्व, बगल; हाथी या घोड़ेका दाहिना या बायाँ पार्श्व; ओर, तरफ; किसी विषयका कोई अंग; किसी विषयके दो पक्षोंमेंसे कोई एक जिसका खरब या मंडन किया जाय, विचारणीय विषयकी कोई कोटि; किसी वस्तु-के प्रति किसीकी अनुकूलता या समर्थनकी स्थिति; बादी या प्रतिवादीके संबंधमें अनुकूलताकी स्थिति; चांद्र मासके दो भागोंमेंसे एक; वह वस्तु जिसमें साध्यकी स्थिति सदिग्ध हो (न्या०); समूह (केवल समासमें-केशपक्क); बर्गविशेष, दलविशेष; अनुवाची; सहायक; अनुवाचियों या सहायकोंका दल; किसी विषयके संबंधमें विभिन्न मत रखने-वालोंका विशिष्ट वर्ग या दल; बादियों या प्रतिवादियोंका दल; पक्ष, पर; भागमें लगा हुआ पर; शरीरका अर्द्धभाग; दोकी संख्या; सेना; सत्ता; चूल्हेका मुँह; शरीर; संबंध; एक; पक्षी; हाथका कड़ा। -**गम-वि०** उड़नेवाला।

प्रग्रहण-पु० दो पक्षोंमेंसे किसी एककी अंगीकार करना।

पात-पु० दे० 'पक्षापात'। -**चर-पु०** चंद्रमा; सूर्यसे

बहका हुआ हाथी; सेवक। -**चिह्न-पु०** इंद्र। -**ज-**

जम्मा (जम्मा)-पु० चंद्रमा। -**द्वय-पु०** विवादके दोनों

पक्ष; महीना। -**द्वार-पु०** चोर दरवाजा। -**धर-पु०**

वह जो किसीका पक्ष ले; पक्षी; चंद्रमा; दूधभट्ट हाथी।

धर्म-पु० पक्षमें हेतुके होनेका अनुमान। -**नाबी-झी०**

पक्षीका मोटा पर (ऐसा ही पर कलमके तौरपर हस्तमाल किया जाता है)। -**पात-पु०** न्याय-अभ्यास-

का विचार त्यागकर किसीका पक्ष ग्रहण करना, तरफ-

दारी, अधिक चाह; पक्ष या परका सत्वालन। -**पातिसा**

झी०, **पातिसिख-पु०** पक्षपाती होनेका भाव, तरफ-

दारी, पक्षग्रहण। -**पाती (तिर)-वि०** पक्षपात करने-

वाला, तरफदार। -**पाकि-झी०** चोर दरवाजा। -**पुट**

-पु० पक्ष, बैना। -**पोषण-वि०** फूट डालनेवाला।

प्रक्षोभ-पु० नृत्यमें हाथकी एक मुद्रा। -**विंदु-विंदु**

-पु० कंक पक्षी। -**भाग-पु०** हाथीका पार्श्व। -**भुक्ति**

-झी० उसकी दूरी जितनी सूर्य एक पक्षवारमें तै करता

है। -**भूल-पु०** पक्षकी जड़; परिवा। -**रक्खा-झी०**

दलबंदी, गुट बनाना। -**बच-पु०** दे० 'पक्षापात'।

बाह-पु० एकतरफा बहान। -**बाहान-पु०** पक्षी।

भुंहर-पु० कोष। -**हस्त-वि०** जिसका एक पार्श्व

अकनेसे बेकाम हो गया हो। -**हर-पु०** पक्षी; विधास-

वाही। -**होम-पु०** एक पक्ष चलनेवाला वृक्ष।

पक्ष (स)-पु० [सं०] पक्ष; रथादिका पार्श्व; दरवाजेका

पक्का; सेनाका पार्श्व; अर्द्धभाग; माताई; नदीका किनारा;

बगल।

पक्क-पु० [सं०] सिद्धी, पक्षदार, चोर दरवाजा; पक्ष;

सहाय।

पक्षि-**की०** [सं०] पक्षी अर्थात् शुक्ल पक्षी वह जो गिरि।
पक्षित-**पु०** [सं०] अमावस्या; पूर्णिमा।
पक्षीतर-**पु०** [सं०] हस्तरा पक्ष।
पक्षाचल-**पु०** [सं०] एक वातरोग जिसमें शरीरका बायाँ या दाहिना भाग केका भ्रम हो जाता है, लक्ष्मी।
पक्षाभास-**पु०** [सं०] हेलाभासे हुए तर्क।
पक्षाहिका-**की०** [सं०] काष्ठिकेयकी एक मातृका।
पक्षाहु-**पु०** [सं०] पक्षी।
पक्षावसर-**पु०** [सं०] दे० 'पक्षांत'।
पक्षाहार-**पु०** [सं०] पक्षमें केवल एक बार भोजन करना।
पक्षिणी-**की०** [सं०] मादा पक्षी; दो दिनोंके बीचकी रात, वर्तमान तथा आगामी दिनोंके बीचकी रात; पूर्णिमा। वि० की० पक्षमाली।
पक्षिक-**पु०** [सं०] वात्स्यायन मुनि जिन्होंने गौतमके न्याय-सूत्रपर भाष्य लिखा है।
पक्षी(**क्षि**)-**पु०** [सं०] चिरिया; बाण; क्षिब। वि० पंख-बाण; पक्ष ग्रहण करनेवाला, तरफदार। -(**क्षि**)कीट-**पु०** छोटी चिरिया। -**पक्षि**-**पु०** संपाति, जटायुका मार्ग। -**पक्षीवशाक्तिका**-**की०** पक्षियोंके पानी पीनेका होज या पात्र। -**पुंगव**-**पु०** जटायु। -**प्रवर**, -**राज**, -**सिंह**, -**स्वामी**(**मि**)-**पु०** गरुड। -**बालक**, -**शावक**-**पु०** चिरियाका बच्चा। -**शाळा**-**की०** चिरियाखाना; बौलखा; पिंजरा।
पक्षीय-**वि०** [सं०] पक्ष-संबंधी; पक्षका (समासांतमें)।
पक्ष(**ञ**)-**पु०** [सं०] बरौनी; (कृष्ण) केसर पर, पंख। -**कोप**, -**प्रकोप**-**पु०** आँख गवनेका एक रोग जो दोष-विशेषके कारण बरौनीके बालोंके आँखमें चुंसे रहनेसे होता है।
पक्षक-**वि०** [सं०] लंबी, सुंदर बरौनीवाला; बाणदार।
पक्ष-**वि०** [सं०] पक्षमें होनेवाला; तरफदार; हर पक्षमें बलकनेवाला। पु० पक्ष ग्रहण करनेवाला।
पक्षी-**पु०** दे० 'पक्ष'।
पक्षी-**वि०** दे० 'पक्ष'। * पु० कठपुतली नचाने-वाला।
पक्ष-**की०** दे० 'पक्ष'। पु० पक्ष।
पक्ष-**की०** [फा०] प्रतिबंध; शत; श्रमका; ऐव, शुक्ल; फसाद; रोक; अर्थात्; बकवास। **पु०** -**लक्षणा**-**वार्त** या कैद लक्षणा; प्रतिपक्ष या रोक लक्षणा; रोक अटकना; अर्थात् लक्षणा। -**मिकाळना**-**दोष** दिखाना, शुक्ल निकाळना।
पक्षी-**की०** दे० 'पक्ष'।
पक्षपान-**पु०** पक्षका एक मद्य।
पक्षराना-**सं०** कि० पक्षराना, धोना।
पक्षराना-**सं०** कि० पक्षरानेमें प्रयुक्त करना।
पक्षराना-**सं०** कि० पक्षराना, धुलवाना।
पक्षरी-**की०** दे० 'पक्षर'; दे० 'पक्ष'।
पक्षरैत-**पु०** वह बोका, हाथी या बैक जिसपर पक्षर बाली गयी हो।
पक्षरीदा-**पु०** वह पानका बीजा जिसपर सोने या चाँदी का वर्क छेपेया गया हो।

पक्षवादा-**पु०** दे० 'पक्षवारा'।
पक्षवारा-**पु०** महीनेका आधा भाग, पंद्रह दिनोंका समय।
पक्ष-**पु०** दाही।
पक्षावज-**पु०** दे० 'पक्षावज'।
पक्षान-**पु०** दे० 'पाषाण'। -**भेद**-**पु०** दे० 'पाषाण-भेद'।
पक्षाना-**पु०** कथा, उपाख्यान; † दे० 'पाखाना'।
पक्षारना-**सं०** कि० पानीसे धोना; धोकर साफ करना।
पक्षाळ-**पु०** मशक; चौकनी; मुँह धोनेका पात्र।
पक्षाळी-**पु०** मिश्री।
पक्षावज-**पु०** सूर्य।
पक्षावजी-**पु०** पक्षावज बजानेवाला।
पक्षिया-**पु०** श्रमका लड़ा करनेवाला। वि० व्यर्थका, फजूल।
पक्षी-**पु०** 'पक्षी'।
पक्षीरी-**पु०** दे० 'पक्षी'।
पक्षुरी, **पक्षुरी**-**की०** दे० 'पंख'।
पक्षुरा, **पक्षुरा**-**पु०** मनुष्यके शरीरमें कपे और बाँहके जोड़के पासका भाग, भुजमूलके पासका भाग।
पक्षरु-**पु०** पक्षी, चिरिया।
पक्षर-**पु०** उक्कड़, सोंठ, गुब्ब आदिका घोल जिसे व्याधी हुनं गाय मैसकी कुछ दिनोंतक खिलाते हैं।
पक्षी-**पु०** पंख।
पक्षी-**पु०** पर, पंख; मछलीका पर।
पक्षी-**पु०** एक वृक्ष दे० 'पक्षुरा'।
पक्षी-**पु०** दे० 'पक्षुरा'।
पक्ष-**पु०** पैर; उग। -**डंडी**-**की०** मनुष्योंके चलनेमें जंगल, खेत या मैदानमें बना हुआ पतला रास्ता। -**सरी**-**की०** जूता। -**दासी**-**की०** जूता, खड़ाई। -**पान**-**पु०** पैरके पजेपर पहना जानेवाला एक गहना, पलानी।
पक्षी-**की०** मिरपर लपेटे जानेवाली कपड़ेकी लंबी पट्टी, पाग, उष्णीष; दुकान आदि किरायेपर देनेके पूर्व भावी किरायेदारसे नगवानेके रूपमें ली जानेवाली रकम।
पु० (किसीसे)-**अटकना**-**किसीसे** श्रमका लगना।
उच्छलना-**बेहजती** होना; दुर्दशा होना। -**उच्छलना**-**बेहजत** करना; दुर्गत करना। -**उत्तरना**-**प्रतिष्ठा** नष्ट होना, अपमान होना। -**उत्तरना**-**अपमानित** करना, बेहजत करना; छुटना; धनका अपहरण करना।
(किसीको)-**बैजना**-**मालिकाना** मिलना; उत्तराधिकार प्राप्त होना; उच्च अधिकार मिलना। **(किसीको)**-**बैजना** मालिक या सरदार बनाना; उत्तराधिकारी बनाना; उच्च अधिकार देना। -**बैजना**-**मित्रता** करना। -**रक्षना**-**मान-भरपाई**की रक्षा करना, रक्षत बनाना, प्रतिष्ठाकी रक्षा करना। **(किसीके आगे या पैरोंपर)**-**रक्षना**-**सहायता**की गुहार करना; मिश्रत करना, दयाकी भीख माँगना।
पक्षरै-**अ०** प्रयातमें-'सपली रैन आनंदधन बरखा पगई म्हा पर छाया' (पगड़ा, पगरा=सवेरा)।
पक्षर-**अ०** कि० किसी वस्तुका शरीर आदिमें हल प्रकार हुआ रहना कि वह उसमें अच्छी तरह मिल जाय; किसी

तरल पदार्थके साथ इस प्रकार मिलना कि वह जल्य हो जाय; रस आदिमें सन जाना; झराबोर होना; निमग्न होना; क्षिप्त होना ।

पगमिर्वा—**खी०** जूती ।

पगरा—**पु०** डग, कदम; प्रमात; सफर शुरू करनेका समय ।

पगरी—**खी०** दे० 'पगड़ी' ।

पगला—**वि०** पागल; नासमझ । [**खी०**] 'पगली' ।

पगहारा—**पु०** दे० 'पचा' ।

पगा—**पु०** पगड़ी; डुपट्टा; पचा; दे० 'पगरा' ।

पगाना—**स०** कि० पागनेका काम कराना; शराबोर कराना; निमग्न कराना; अनुरक्त कराना ।

पगार—**पु०** गारा, गिलावा; हलकर पार करने योग्य नदी आदि; † वेतन; * दे० 'प्राकार' ।

पगराना—**स०** कि० फैलाना ।

पगिभाना, पगिचाना—**स०** कि० दे० 'पगाना' ।

पगिवा—**खी०** दे० 'पगड़ी' ।

पगुराना—**अ०** कि० जुगाली करना, पागुर करना । **स०** कि० (का०) पचा जाना, डहप जाना ।

पगोडा—**पु०** [ब०] बौद्धमंदिर ।

पघा—**पु०** डोर बाँधनेकी रस्ती ।

पघिलना—**अ०** कि० दे० 'पिघलना' ।

पघिलाना—**स०** कि० दे० 'पिघलाना' ।

पच—'पाँच'का समासगत रूप । —**कल्याण**—**पु०** दे० 'पंच-कल्याण' । —**कल्याणी**—**वि०** पूर्ण, चाबर्वा; लपट ।

—**खना**—**वि०** पाँच खडोवाला । —**गुना**—**वि०** जिसमें कोई राशि या माप पाँच बार शामिल हो, पाँच गुना ।

—**ग्रह**—**पु०** मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि—ये पाँच ग्रह । —**तूरा**—**पु०** एक राता । —**तोरिया**—**पु०** एक तरहका कपड़ा । —**तोखिया**—**पु०** एक तरहका कपड़ा; पाँच तोलेका बाट । —**पल्लव**—**पु०** दे० 'पंचपल्लव' । —**मेक**

—**वि०** जिसमें कई या पाँच प्रकारकी वस्तुएँ मिली हों ।

—**रंग**—**पु०** चोख पूरनेके कामकी अबीर-गुला आदि पाँच वस्तुओंका समूह । **वि०** दे० 'पंचरंगा' । —**रंगा**—**वि०**

पाँच रंगोंवाला; पाँच रंगोंमें रंगा हुआ या पाँच रंगोंके रंगोंमें गुना हुआ (कपड़ा); जो कई रंगोंका हो । —**काड़ी**—**खी०**

पाँच खडियोंवाला माला जैसा एक गहना । —**छोना**—**वि०** जिसमें पाँच प्रकारके नमक मिले हों । **पु०** ऐसा मिश्रण, पंचजण । —**बहारा**—**खी०** दे० 'पंचवारा' ।

—**वारा**—**खी०** एक प्रकारकी देशी शराब ।

पचक—**पु०** [स०] पकानेवाला रसोईवा ।

पचकना—**अ०** कि० दे० 'पिचकना' ।

पचकाना—**स०** कि० दे० 'पिचकाना' ।

पचलना—**अ०** कि० दे० 'पिचलना' । **वि०** दे० 'पच'में ।

पचलारा—**पु०** दे० 'पंचक' ।

पचड़ा—**पु०** बलेका, संसद; एक तरहका गीत जिसे प्रायः ओझा देवी आदिकी स्तुतिमें गाता है; लाबनीकी तरहका गीत जिसमें पाँच पाँच चरणोंके छंद होते हैं ।

पचन—**पु०** [स०] पकने या पकानेका कार्य; अग्नि; पकाने-वाला; पापकर्ता; पकानेका साधन ।

पचना—**खी०** [स०] पकानेकी क्रिया । **अ०** कि० पचना जाना; हजम होना; खपना, अन्ध बन्धुमें मिल जाना; अधिक परिश्रमसे क्षीण होना; परेशान होना—'हुवा रवि बीच पच्योपरि नयों' ?—**वन०** । **पु०** पच मरवा—जी-तोड़ मेहनत करना ।

पचनागार—**पु०** [स०] रसोईघर ।

पचनाग्नि—**खी०** [म०] जठराग्नि ।

पचनिका—**खी०** [स०] कढ़ाही ।

पचनी—**खी०** [स०] (अंगकी) विजैरा नीच ।

पचनीच—**वि०** [स०] पकाने योग्य ।

पचपच—**खी०** बार-बार उत्पन्न किया हुआ 'पच' शब्द; 'पच-पच' शब्द होने या करनेकी क्रिया या भाव; क्षीय । **पु०** [म०] शिव ।

पचपचा—**वि०** अचूरा पका हुआ (भोजन); जिसका पानी जव्व न हुआ हो ।

पचपचाना—**अ०** कि० किसी वस्तुका बहुत गीला होना ।

पचपन—**वि०** पचास और पाँच । **पु०** पचपनकी संख्या, ५५ ।

पचवना—**स०** कि० दे० 'पचना' ।

पचहत्तर—**वि०** सत्तरसे पाँच अधिक । **पु०** सत्तरसे पाँच अधिककी संख्या, ७५ ।

पचहरा—**वि०** पाँच स्तरों—परतोंवाला; पाँच गुना ।

पचा—**खी०** [स०] पकने या पकानेकी क्रिया ।

पचाना—**स०** कि० पकाना; जठराग्निकी क्रिया द्वारा कच्चे हुए पदार्थको रस आदिका रूप ग्रहण करनेकी स्थितिकी पहुँचाना; पक बनाना; नष्ट कर देना; बना न रहने देना; खत्म कर देना; पराये मालको अनुचित रीतिसे आत्मसात् कर लेना, हजम करना; परावी चीजकी इस प्रकार अपना लेना कि वह वास्तविक अधिकारीको पुनः मिल न सके; किसी बात या मामलेकी इस प्रकार दबा देना कि दूसरे उसे जान न सकें या उसका भेद न सुल्ल सके; बहुत अधिक काम लेकर या कष्ट पहुँचाकर झर्रा आदिकी क्षीण बनाना; किसी वस्तुकी पूर्णतया क्षीन कर लेना; किसी वस्तुकी अपनेमें एकदम छिपा लेना ।

पचारना—**स०** कि० ललकारना ।

पचावा—**पु०** पचनेका कार्य या भाव ।

पचास—**वि०** दसका पाँच गुना, चालीसे दस अधिक । **पु०** पचासकी संख्या, ५० ।

पचासा—**पु०** पचास सजातीय वस्तुओंका समाहार; किसी के जीवनके प्रथम पचास वर्ष; पचास वर्षोंका समाहार; संकटके समय सब सिपाहियोंकी धानेमें जुलानेके लिए बजनेवाला धंदा ।

पचासी—**वि०** अस्सीसे पाँच अधिक । **पु०** पचासीकी संख्या, ८५ ।

पचि—**पु०** [स०] अग्नि; पकना ।

पचित—**वि०** पचा हुआ; * जड़ा हुआ, खचित ।

पचीस—**वि०** बीससे पाँच अधिक । **पु०** पचीसकी संख्या, २५ ।

पचीसी—**खी०** पचीस सजातीय वस्तुओंका समाहार; किसीके जीवनके प्रारंभिक पचीस वर्ष; पचीस वर्षोंका

‘समाहारः’ एक तरहकी वृत्तमिश्रः इसकी विसात ।

पञ्चका-पु० पिचकारी ।

पञ्चकिम- वि० [सं०] जो अपने आप पक जाय; जो शीघ्र पक जाय । पु० अग्नि, सूर्य ।

पञ्चेलुक-पु० [सं०] रतोहवा ।

पञ्चोत्तर-वि० जिसमें ऊपरसे पाँच और मिलाया गया हो, पाँच अधिक । -सौ-वि० एक सौ पाँच । पु० एक सौ पाँचकी संख्या, १०५ ।

पञ्चोत्तरा-पु० वरपक्षकी ओरसे कन्धापक्षके पुरोहितको दिया जानेवाला एक नेत्र जिसमें उसे तिलकके रूपमेंसे सौ पीछे पाँच रूपये मिलते हैं ।

पञ्चौनी-स्त्री० आमास्य, मेदा ।

पञ्चौर-पु० दे० ‘पञ्चौली’-पु० ।

पञ्चौली-पु० गुर्विका मुखिया । स्त्री० एक पौधा ।

पञ्चोवर-वि० पंचहरा ।

पञ्चव-पु० दे० ‘पञ्चर’ ।

पञ्चर-पु० बंस अथवा लकड़ीकी वह फटी या गुल्ली जिसे लकड़ीकी बनी चीजोंमें सफ़ीकी दरार भरनेके लिए ठोकते वा बैठते हैं । मु० -अङ्गना-बाधा बालना, रूकावट पैदा करना, रोके अटकाना । -डौंकना-येसा कार्य करना जिसमें किसीको भारी कष्ट पहुँचे या उसे बहुत हैरान होना पड़े । -झारना-होते हुए काममें बाधा बालना; बने हुए खेलको बिगाड़ देना ।

पञ्ची-स्त्री० एक वस्तुको दूसरी वस्तुमें इन प्रकार खोरकर जोड़ना कि दोनोंकी सतहें एक मेलमें आ जायें और वे परस्पर अंग और अंगी जान पड़ें; एक रंगके पत्थरपर दूसरे रंगके पत्थरका अङ्ग । -कार-पु० पञ्ची करनेवाला । -कारी-स्त्री० पञ्ची करनेका काम । मु० (किसीमें)-हो जाना-मिलकर एक रूप हो जाना, लीन हो जाना ।

पञ्च-पु० दे० ‘पञ्च’ ।

पञ्चताई-स्त्री० दे० ‘पञ्चपात’ ।

पञ्चव-पु० [सं०] दे० ‘पञ्चवन्द’ ।

पञ्चमार्ग-पु० दे० ‘पश्चिम’ ।

पञ्चपाता-पु० दे० ‘पञ्चपात’ ।

पञ्छि-पु० दे० ‘पञ्ची’ । -राज-पु० गणक ।

पञ्छिर्ह, पञ्छिर्ह-पु० दे० ‘पश्चिम’ ।

पञ्छिनी-स्त्री० चिन्धिया ।

पञ्छिम-पु० दे० ‘पश्चिम’ ।

पञ्चो-पु० चिन्धिया; पक्ष ग्रहण करनेवाला ।

पञ्चोष-पु० [सं०] पैकी शुद्धि, पैर धोकर साफ करना ।

पञ्च-‘पीछा’का समासमें व्यवहृत विकृत रूप । -लगा-पु० दे० ‘पिछलगा’ । -लस-पु०, -लसी-स्त्री० पिछली दौर्गों द्वारा प्रहार । -लगा-पु० दे० ‘पिछलगा’ ।

पञ्चना-अ० कि० पञ्चना जाना; दे० ‘पिछना’ ।

पञ्चताना-अ० कि० कोई अनुचित कार्य करके बादमें उसके लिए दुःखी होना, पश्चात्ताप करना ।

पञ्चतानि-स्त्री० पञ्चताना ।

पञ्चता-पु० दे० ‘पञ्चताप’ ।

पञ्चतथना-अ० कि० पञ्चताना ।

पञ्चतावा-पु० वह दुःख जो किसीके मनमें कोई अनुचित कार्य कर चुकनेपर होता है, किसी कार्यके अनौचित्यके बोधसे होनेवाली आत्मग्लानि, पश्चात्ताप ।

पञ्चना-अ० कि० पाछा जाना । पु० पाछनेका औजार ।

पञ्चमन-अ० पीछे ।

पञ्चरना-अ० कि० पञ्चरना; लौटना ।

पञ्चरा-पु० दे० ‘पञ्चाङ्ग’ ।

पञ्चवत्-स्त्री० फमल कट चुकनेपर बची जानेवाली चीज ।

पञ्चवर्-वि० पश्चिमीय, पश्चिमका । स्त्री० पश्चिमकी ओरसे चलनेवाली हवा, पश्चिमी हवा; अंगियाका मोठेकी पीछेकी ओर पड़नेवाला भाग ।

पञ्चाह-पु० पश्चिमीय प्रदेश; पश्चिम दिशा ।

पञ्चाहिया-वि० दे० ‘पञ्चाही’ ।

पञ्चाही-वि० पञ्चाहका ।

पञ्चाव-स्त्री० शोकसे मूर्च्छित होकर पीठके बल गिर पड़ना; शोकसे बिह्व होकर खड़े-खड़े गिर पड़ना । पु० कुदृष्टीका एक दौब । मु० -खाना-शोकसे मूर्च्छित होकर पीठके बल या खड़े-खड़े गिर पड़ना ।

पञ्चावना-स० कि० कुदृष्टी या लड़ाईमें पटकना या परास्त करना; धोते समय कपड़ेको पटकना ।

पञ्चादी-स्त्री० दे० ‘पिछादी’ ।

पञ्चानवा-स० कि० दे० ‘पञ्चानना’ ।

पञ्चापा-पु० किसी वस्तुका पिछला भाग ।

पञ्चारा-स्त्री० दे० ‘पञ्चाव’ ।

पञ्चारना-स० कि० दे० ‘पञ्चावना’ ।

पञ्चावर, पञ्चावरि-स्त्री० छाछ आदिका बना हुआ एक पेय ।

पञ्चाह-पु० दे० ‘पञ्चाह’ ।

पञ्चाहिया, पञ्चाही-वि० दे० ‘पञ्चाही’ ।

पञ्चिमाना-स० कि० अनुगमन करना; पीछा करना ।

पञ्चिर्ह-पु० दे० ‘पश्चिम’ ।

पञ्चिताना-अ० कि० ‘पञ्चताना’ ।

पञ्चितानि-स्त्री०, पञ्चितान-पु० दे० ‘पञ्चतावा’ ।

पञ्चियावर, पञ्चियावर-स्त्री० दे० ‘पञ्चावर’ ।

पञ्चियाना-स० कि० पीछे-पीछे चलना; पीछा करना ।

पञ्चियाव-पु० पश्चिमी हवा ।

पञ्चिलगा-पु० दे० ‘पिछलगा’ ।

पञ्चिलगा-अ० कि० दे० ‘पिछना’; दे० ‘पिछलगा’ ।

पञ्चिला-वि० दे० ‘पिछला’ ।

पञ्चिर्ह, पञ्चिर्ह-वि० स्त्री० पश्चिम । स्त्री० पश्चिमी हवा ।

पञ्चिस-स्त्री० मकानका पिछलाभाग; मकानके पीछेकी दीवार ।

पञ्चुवा-पु० कबे जैसा हाथमें पहननेका एक गहना ।

पञ्चुवार्-स० कि० पीछे छोड़ना या हटना ।

पञ्चुला-पु० हाथमें पीछे पहननेका एक गहना । वि० पिछला ।

पञ्चुली-स्त्री० छोटा पटेल ।

पञ्चवर्-पु० पिछोरा, चर ।

पञ्चकव्या—स० कि० व्यपत्ते फटकना ।
पञ्चकना—स० कि० दे० 'पञ्चकना' ।
पञ्चक—पु० दे० 'पिछेरा' ।
पञ्चवावर—खी० दे० 'पञ्चावर' ।
पञ्चसुर्वशी—खी० [फा०] कुम्हलाहट ।
पञ्चसुर्व—वि० [फा०] कुम्हलाया हुआ, मुरहाया हुआ ।
पञ्चमा—अ० कि० जलना; सुलगना ।
पञ्चमा—पु० पावनामा ।
पञ्चरना—स० कि० जलना ।
पञ्चावा—पु० [फा०] ईंटका भट्ठा ।
पञ्चरूप—पु० जैनोंका एक व्रत ।
पञ्जीला—पु० सामपुरती ।
पञ्ज—पु० [सं०] युद्ध ।
पञ्चदिका—खी० [सं०] एक यात्रिक छत्र; छोटी घंटी ।
पटबर—पु० दे० 'पाटबर' ।
पट—पु० [सं०] बल; कपड़ा; शरीक कपड़ा; चित्र खींचने का काम या कपड़ेका टुकड़ा; पर्दा; रंगमंचका पर्दा; छाजन; छत; चित्रीका पेड़ । —**कर्म**(पु०)—पु० कपड़ा बुनना, बवम, जुलाहेका धंधा । —**कार**—पु० जुलाहा; चित्रकार । —**कुटी**—खी० सेमा, तंबू । —**द**—पु० कपास । —**धारी**(रिज्)—वि० जो बल पहने हो । * पु० तोश-छानेका प्रधान अधिकारी । —**मंडप**—बाप—**बेहम**(पु०)—पु० सेमा, तंबू । —**बाघ**—पु० खौंख जैसा एक राजा (सगीत) । —**बाम**—पु० रावटी, सेमा; धोती या सांछीके नीचे पहननेका चिप्योका एक प्रकारका चोहरा, साधा; कपड़ा बाननेका सुगन्धित द्रव्य । —**बासक**—पु० कपड़ा बाननेका सुगन्धित द्रव्य या धूर्ण ।
पट—पु० जगन्नाथ, बदरीनाथ आदिका चित्र जिसे यात्री अपने माथ लगे हैं; किनाब; पालकीका दरवाजा; सिंहासन; कुदतीका एक पैच; तस्ता; किसी वस्तुकी चिपटी और चौरस सतह; किसी छोटी वस्तुके गिरने, फटने आदिसे होनेवाला शब्द; दे० 'पट्ट' (हिंदीमें समासमें आनेवाला विकृत रूप) । अ० अति शीघ्र, तत्काल । वि० जो पेटके बल स्थिर हो, औषा, चितका लट्ठा । —**ताल**—पु० मृदंगका एक ताल । —**पट**—खी० अनेक बार और निरंतर उत्पन्न 'पट' शब्द । अ० 'पट-पट' आवाजके साथ । —**रानी**—खी० बह रानी जिसके साथ राजा सिंहासनारुढ़ हुआ हो या हो, राजाकी सक्ते बही रानी, पट्टमहिषी । —**साखी**—पु० धारवाही जुलाहोंकी एक जाति । **मु०**—**उचकना**—दे० 'पट सुकना' । —**सुकना**—मंदिरका द्वार सुकना । —**पङ्कना**—औषध पङ्कना; मंद होना । —**बंद होना**—मंदिरका द्वार बंद होना । —**लेना**—कुत्तोंमें पट नामके पैन्ते अपने प्रतिद्वंद्वीको पञ्चाङ्गनेके छिप उसकी टाँग लपनी और खींचना ।
पट्टन—खी० पट्टा आतकी खी ।
पटक—पु० [सं०] सती कपड़ा; शिविर सेमा; अर्द्धप्राय ।
पटक—पु० पटकनेकी क्रिया; तमाचा; छड़ी ।
पटकना—स० कि० किसी वस्तु या व्यक्तिको ठठाकर ढोंकेके साथ धूँधी आदिपर गिराना; ठठावी या हाथमें ली हुई वस्तुको धूँधी आदिपर जोरसे गिराना; कुत्तोंमें पञ्चाङ्गना

या दे मारना । † अ० कि० 'पट'की आवाज करते हुए टरकना या फटना; पचकना; सीलने वा भीमनेसे फूटने-टूटने, चने आदिका सूखकर पचकना । * भरेखान होना—'पिंसी कीन बाबरी खान लैन पटकी'—वन० । (कु० किसीके ऊपर, किसीपर वा किसीके लिए पटकना—किसीको इच्छाके विरुद्ध कोई काम उसे सौंपना ।)
पटकनिर्वा—खी० पटकने वा पटके जानेकी क्रिया; पछाड़ ।
पटकनी—खी० दे० 'पटकनिवा' ।
पटका—पु० कमरबंद । **मु०**—**पकवना**—किसीको किसी बातका उत्तरदायी ठहराते हुए रोक रखना । —**बाँचना**—उभट होना, सन्नद्ध होना ।
पटकाव—पु० पटकने वा पटके जानेकी क्रिया; पछाड़ ।
पटकर—पु० [सं०] चोर; फटा-भुराना कपड़ा ।
पटवारी—पु० पटवा ।
पटवारी—खी० छोटा पटवा ।
पटवर—पु० कराची, तुलना, उपमा । † वि० हमबार, चौरस ।
पटतरना—स० कि० तुलना करना, समान ठहराना, समता रखना ।
पटसारना—स० कि० ऊँची-नीची जमीनको हमबार बनाना, चौरस करना; * तलवार आदिकी प्रहार करनेकी मुद्रामें हाथमें लेना, शस्त्र संभालना ।
पटक—पु० [सं०] चोर ।
पटन—पु० दे० 'पटन' ।
पटना—अ० कि० पादा जाना; सर जाना; मेल खाना; बनना; तै होना; (कण) पूरा-पूरा अंदा किया जाना; † सींचा जाना । पु० बिहारीकी आधुनिक राजधानी पाटलिपुत्र; * धन—'कोशिका रानी पटना लुटावई'—ग्राम० ।
पटनिचा, **पटनिहा**—वि० पटनाका; पटना-संबंधी; पटनामें बना हुआ ।
पटनी—खी० कोठेवाले घरमें नीचेका कमरा; वह जमीन जिसका किसीके साथ स्थायी बंदोबस्त कर दिया गया हो; जमीनका स्थायी बंदोबस्त करनेकी रीति; कुछ रखनेके लिए खूंटियोंके सहारे वा दराज बनाकर दीवारमें लगायी जानेवाली पटरी ।
पटपटाना—अ० कि० मूल या गरमीमें तड़पना; 'पट-पट' छप्प निकलना । स० कि० 'पट-पट' शब्द उत्पन्न करते हुए किसी चीजको बजाना वा पीटना; † चने वा मटरको इस प्रकार भूलना कि 'पट-पट' शब्द हो ।
पटपर—वि० चौरस, समतल । पु० समतल मैदान; उजाड़ जगह; बरसातमें नदीके पानीमें दूबी रहनेवाली जमीन ।
पटपरा—पु० पहाड़के ऊपरकी समतल भूमि ।
पटबंबक—पु० एक तरहका रेहन जिसमें रेहन रखी हुई वस्तुके लामसे खूबके सखित मूल धन अंदा हो जानेपर रेहनदार उस वस्तुको छोड़ा देता है ।
पटबीकना—पु० जुगनू ।
पटबाछ—पु० [सं०] एक प्रकारका प्रकाश संबंधी यंत्र ।
पटनबरी—खी० [सं०] एक रागिनी ।
पटन—पु० छल-छद्म—'काहेकी पटौ पटन रचत है मन रुखे गुँह चिकने नैन'—वन० ।

पदार्थ-वि० [सं०] अक्षयिनिष्ठ । पु० सेना ।

पदार्थ-पु० [सं०] शुद्ध नामक वृक्ष, पट्टे ।

पदस-पु० संज्ञा, चौकीर और कम मोटा बीरा हुआ ककरीका समतल टुकड़ा; हँगा; घोषिका वाद । पु० -कद देव-अथर्वर वा काटकर गिरा देना। अथर्वर कर देना । -केरना-पट्टेसे जमीन बराम करना; अस्त करना । -कीना-मरकर वा कटकर गिर जाना ।

पदरी-खी० काठका लंबा, चौकीर और बहुत कम मोटा तख्ता, छोटा पकरा; वह तख्ती जिसपर बच्चे छिछला सीकते हैं; पटिया; थपुला; सबके किनारेकी वैद्यक चकने-की घोषी ऊँची और पतली जगह; नहरके किनारेका रास्ता; रविश; साक्षी-छहने आदिकी कोरपर टोंकनेका सोने वा चाँदिके तारोंका पीता; एक प्रकारकी नकाशी की हुई चौड़ी चूनी; जतर, चौकी; सोहेके छे बड़े जिनसे बनी काश्मिर देवनागी चलती है; मेरु । पु० -जसना-पुस्तकारोंमें रान अमाना; मेरु बैठाना; -बैठना-मन मिलना; मेरु खाना ।

पदरीक-पु० पट्टक, देवानी बख ।

पटक-पु० [सं०] छत, छाजन; आवरणरूप वस्तु; तह, परत; अस्त्रका एक रोग; समूह, राशि; छरीरके किसी अंगपरका चिह्न (जैसे-तिल); दलबल, कवाचमा; टोकरी; हथ; डठल; पृष्ठभाग; अभ्यास । -प्राप्त-पु० जोलती ।

पटक-पु० [सं०] आवरण, पर्दा; सफुकी; टोकरी; राशि ।

पटकी-खी० [सं०] छाजन, छप्पर; बुझ; डठल; * चौकी; पंक्ति ।

पटवा-पु० गहना गूँथनेका पेशा करनेवाला; गहना गूँथनेका पेशा करनेवाली जाति; एक तरहका वैद्य; पटसन-की तरहका एक घोषा ।

पटवाना-सं० कि० पाटनेका काम कराना; भरवाकर बराबर कराना; छत तैयार कराना; † सिंचना; अर्थात् करवाना; छाँत कराना ।

पटवारगिरी-खी० पटवारीका काम वा पद ।

पटवारी-पु० गाँवकी जमीन और उसकी मालगुजारीका लेखा रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी । * खी० बख पहनानेवाली दासी ।

पटसन-पु० एक प्रसिद्ध घोषा जिसकी छालके रेखे रस्ती, बौरा आदि बनानेके काम आते हैं; इसकी छालके रेखे ।

पटईसिका-खी० [सं०] एक रातिनी ।

पटह-पु० [सं०] नगाड़ा, ढका; ढोल; जुगी; किसी काममें हाथ लगाया; क्षति पहुँचाना, बिंसा । -बोचक-पु० जुगी पीटनेवाला । -जसम-पु० जुगी पीटते हुए घुमना ।

पटहार-पु० पटवा ।

पटहारिन-पु० पटवारीकी या पटहार जातिकी खी ।

पटा-पु० तलवारके भाकारका एक कोहेका हथियार जिसे खेल बगैरहमें आँजते हैं; * पीड़ा; अधिकारपत्र, पट्टा, स्तम्भ; खरीद-बिक्री; सौदा; चौकी धारी; जगामकी मुहरी । - (दे) बाज़-पु० पटा आँजनेवाला, पटैता । पु० -बाँचवाना-उच्च पदपर अभिषिक्त करना ।

पटाई-खी० पाटनेका कार्य वा भाग; पाटनेकी मजदूरी; † सींचनेका कार्य; सींचनेकी जगरत ।

पटाक-पु० 'पट'की आवाज; [सं०] पक्षिविशेष ।

पटाका-पु० 'पट'की आवाज; पटाकेकी आवाज, दे० 'पटाका'; तमाचा, बप्पक । खी० [सं०] संज्ञा, ध्वजा ।

पटाखेच-पु० [सं०] पर्दा गिरना वा गिराना ।

पटाखा-पु० पटाका, एक तरहकी आतिशबाजी ।

पटाखा-सं० कि० पाटनेका काम कराना; कोठेकी छत तैयार कराना; ऋण चुकाना; मोक्ष-प्राप्त करके सौदा तै कराना; † सींचना । † अ० कि० नुप मारना, खाँत हो जाना ।

पटापट-खी० 'पट-पट'की आवाज । अ० 'पटा-पट' आवाज-के साथ; तेजीसे ।

पटापटी-खी० वह चीज जिसमें रंग-विरंगे फूल-पते कहे हो; रंग-विरंगी वस्तु ।

पटार-खी० पेटी, पिढारी; पिंजरा; देवमकी डोरी ।

पटालुका-खी० [सं०] जोंक ।

पटाव-पु० पाटनेका कार्य; पाटी हुई जगह; पाटकर बनायी हुई छत; मरेडा ।

पटि-खी० [सं०] रगीन बख; रंगमंचका पर्दा; बगनिका; कनात । -खेच-पु० पर्दा गिराना ।

पटिका-खी० [सं०] बख ।

पटिमा(मन्)-खी० [सं०] पडता, दक्षता; कर्मक्षता; रक्षापन; उग्रता; अम्लता ।

पटिया-खी० चौकीर और समतल कटा हुआ अथर्वरका कबोतरा टुकड़ा; काठकी तख्ती; खाटकी पाटी; छोटा देगा; लंबा और कम चौड़ा खेत; * सिरके संवारे हुए शाल ।

पटी-खी० [सं०] दे० 'पटि'; * कपड़ेकी पट्टी; कमरबंद ।

पटीमा-पु० वह तख्ता जिसपर कपड़ेकी कैलाकर छीपी उसे छापते हैं ।

पटीर-वि० [सं०] सुंदर; ऊँचा । पु० लेकनेका रेंद; चदन; कामदेव; कल्पा; मैदान, क्षेत्र; उदर; मूली; क्वारी; वात-रोग; प्रतिस्वाय; जुकाम; चरणी; बाहल; ऊँचाई; * बड़का पैर । -जम्मा(मन्)-पु० चदनका पैर । -मास्त-पु० चंदनके वृक्षसे आनेवाली हवा; चदन-निर्मित वस्तुसे झककर उत्पन्न की हुई हवा ।

पटील्ला-सं० कि० समझा-पुझाकर किसीकी अपनी रायमें कराना; मारना, पीटना; कमाना; पराजित करना; कोई काम पूरा करना ।

पट्ट-वि० [सं०] कुशल, निपुण, प्रवीण, चतुर, चालाक; नीरोग; उम; तीक्षा; तिष्ठुर; पूर्त; स्थुल, स्पष्ट; कर्मक्ष (स्वर); निरक्षित । पु० नमक पाँना (समुदी) नमक । परबल; करेण; छत्रक । -कक्ष-वि० जो कुछ काम पट्ट हो । -तुणक-पु० लवणतुण । -म्रय-पु० तीन प्रकार-के नमकोंका समाहार (आ० दे०) । -पत्रिका-खी० छोटे नेत्रका छुप । -पर्णिका, -पर्णी-खी० मकोय । -रुच-वि० अत्यंत कुशल ।

पट्टा-पु० पटसन करेय; वह डंडा जिसमें गुलका अगला सिर बँधा रहता है और उसे पकड़े हुए माथी उसे खींचते हैं ।

यहुक-पु० [सं०] परवक ।

यहुता-की०, यहुत-पु० [सं०] दक्षता, कुशलता ।

यहुती-की० छलकी तस्वीर-की ।

यहुता-पु० दे० 'यहुता' ।

यहुका-पु० दे० 'यहुता' ।

यहरे-की० सरकनेकी आसिकी एक पानीकी वास ।

यहेरा-पु० दे० 'यहेला'; दे० 'यहेला' ।

यहेल-पु० गौबका मुखिया; गौबका मंत्रदार; गुजराती कुमियोंकी एक कपाड़ि ।

यहेल, सरदार बहामाई-पु० स्वतंत्र भारतके प्रथम गृहमंत्री; जन्म ३१-१०-१८७५; बारहोली सलाग्रहके सफल संचालनके बादसे 'सरदार' कहे जाने लगे; १९३१ में कांग्रेसके अध्यक्ष बने; गृहमंत्री बननेपर देशी राज्योंके विभयनका गुस्तेर कार्य किया; मृत्यु १५-१२-१९५० ।

यहेलना-सं० कि० दे० 'यहेलना' ।

यहेला-पु० वह नाम जिसका बीचका भाग पटा हो; एक प्रकारकी वास; हँसा; जमीन चौरस करनेका गोल; आरी पत्थर; कुदनीका एक पैर; चूरीका काम देनेवाला (चंदीका) चिपटा कपाड़ ।

यहेली-की० छोटा पटेला ।

यहेत-पु० पटेवाज ।

यहेला-पु० पटेला; अर्गला, थोंका ।

यहोदज-पु० [सं०] लेम; कुकुरमुषा, छत्रक ।

यहोर-पु० एक प्रकारका कपड़ा; रेशमी कपड़ा ।

यहोरी-की० रेशमी चादर या साड़ी; रेशमी किनारेकी धोती ।

यहोल-पु० [सं०] एक प्रकारका कपड़ा; परवक ।

यहोलक-पु० [सं०] सीपी ।

यहोलिका-की० [सं०] एक तरहकी तरीई, लगभगति ।

यहोली-की० चादर, यहोरी; [सं०] दे० 'यहोलिका' ।

यहोरी-पु० पट्टी दुर्ग जगह; पटावके नीचेकी जगह या कमरा; पटबंधक ।

यह-पु० [सं०] पटिया, तल्ली, छेट; पीठ; पीड़ा; राजाका, दानपत्र आदि सुदवानेकी तर्बि आदिकी पट्टी; बालिककी ओरसे अमासी आदिकी दिया जानेवाला भूमि आदिके उपयोगका अधिकारपत्र; वायपर बंधनेकी पट्टी; कपड़े आदिका लंबा पतला टुकड़ा; पगड़ी; चक्की; चौराहा; नगर; किसी चौरस चीजकी सतह; रेशम; दुपट्टा; राजसिंहासन; सिल; एक पद्मनाभा; बारीक या रंगीन कपड़ा; दाढ़; पटसन; [हिं०] 'पट'की आवाज । वि० मुख्य; औषा ।

-कीट-पु० रेशमका कीड़ा । -ज-पु० रेशमी कपड़ा ।

-देवी,-महिषी,-राज्ञी-की० पट्टानी । -रंग,-

रंजन-पु० रक्ता । -वस्त्र,-वासा(सस्त्र)-वि० रेशमी या रंगीन वस्त्र धारण करनेवाला । -शाक-पु० पट्टा ।

यहक-पु० [सं०] तल्ली; राजाका सुदवानेका तामादिका पट्ट; वायपर बंधनेकी पट्टी; रखावेज ।

यहज-पु० [सं०] शहर ।

यहनी-की० [सं०] नगरी ।

यहना-की० [सं०] जिजा; समुदाय ।

यहोशुक-पु० [सं०] रेशमी वस्त्र ।

यह-पु० किसी खाबर संपत्तिके उपयोगका अधिकारपत्र, सवदा पाठ्य कुत्ते, बिछी आदिके गलेमें लगायी जानेवाली पट्टी; पीड़ा; चपरास; गुलबंदीके सिरके पीछेकी ओरके बराबर कटे बाण; चमड़ेका कमरबंद; वंशज । - (हे)यहज-पु० कुस्तिका एक पैर । -बैठक-की० कुस्तिका एक पैर ।

यहज-पु० [सं०] एक प्राचीन देश ।

यहज-की० [सं०] पट्टानी ।

यहिका-की० [सं०] पटिया, तल्ली, छेट; कपड़ेका या रेशमी कपड़ेका टुकड़ा; वायपर बंधनेकी पट्टी; पटानी लोभ; दस्तावेज । -कीज-पु० पटानी लोभ । -बायक-पु० रेशमी कपड़ा नुननेवाला, कुत्ता ।

यहिकाव्य-पु० [सं०] रत्नकोष, पटानी लोभ ।

यहिल-पु० [सं०] प्रतिकरज ।

यहिलोत्र, यहिलोत्रक-पु० [सं०] दे० 'यहिका-लीज' ।

यहिया, यहिस, यहिसा, यहिस-पु० [सं०] एक प्राचीन शहर, पटा ।

यह्री-की० [सं०] पटानी लोभ; लकाटका एक गहना; नगर; घोड़ेकी पेटो; तोपका; [हिं०] लिखना सीखनेकी लकड़ीकी लंबीतरी और चौरस पट्टी, पटिया; तल्ली; सवक, सीख; शिक्षा; हानिकार शिक्षा (ला०); बहकानेवाली सीख; खाटकी पाटी; कपड़ा; कागज या बाहुका पतला और लंबा टुकड़ा; वाय आदिपर बंधनेका कपड़ेका लंबा और पतला टुकड़ा; पत्थरका लंबा, पतला और कम मोटा टुकड़ा; छाजनके ठाटमें लगायी जानेवाली लकड़ीकी लंबी बल्ली; कपड़ेकी किनारी; उन कई धवियोंमेंसे एक जिन्हें एकमें मिलातेसे टाट वा कोरें (ऊनी) कपड़ा (कांबल आदि) बनता है; नायके बीचोबीचका तस्ता; चने, तिल आदिकी चाशनीमें मिलाकर बनायी जानेवाली एक प्रकारकी पपड़ी; घुटनेके नीचेसे लेकर टखनेतक पाँवमें छपेटी जानेवाली सूती या ऊनी कपड़ेकी धब्बी; माँगके दोनों ओर कंधीसे जमायी जानेवाली बालोंकी तह; पाँत; घोड़ेकी लंबी और सीधी दौड़; छाजनकी कवियोंकी पाँत; संपत्ति या मिलकियतका एक भाग, पटो; किसी एक पट्टीदारके हिस्सेकी जमींदारी; वह कर जिसे जमींदार किसी कार्यके लिए द्रव्य एकत्र करनेके निमित्त अनामियोंपर लगाता है । -द्वार-पु० वह जो किसी संयुक्त संपत्तिके किसी भागका स्वामी हो; किसी बातमें किसीके बराबर अधिकार रखनेवाला व्यक्ति, बराबरका अधिकारी या हकदार । -द्वारी-की० पट्टी, होनेका भाव; पट्टीदार होनेका भाव; समान अधिकार रखनेका भाव; संपत्ति या अधिकारमें बराबरका अधिकारी होनेका दावा; किसी विषयमें दूसरेके बराबर अधिकार रखनेका दावा; कई पट्टीदारोंकी संयुक्त संपत्ति । -मामु-कम्मल-की० वह पट्टीदारी जिसका कुछ भाग हिस्सेदारोंमें बँट गया हो और कुछ संयुक्त अधिकारमें हो । -मुकम्मल-की० वह पट्टीदारी जिसकी जमीन आदिका पूरा-पूरा बँटवारा हो गया हो । -बार-अ० पट्टियों को एक-दूसरीसे इस प्रकार धुक्क करते हुए कि एक पट्टीका हिसाब दूसरीके हिसाबसे धुक्क रहे, सभी पट्टियोंका

विस्थापन अलग-अलग रखते हुए । वि० (वह वही) मिलने
कभी पट्टियोंका विस्थापन अलग-अलग रहे । -का गाँव-
वह गाँव जिसमें बहुतसे हिस्सेदार हों । मु० -जमाना-
माँके दोनो ओरके वालोंको इस प्रकार संभारना कि
उनकी तर्प वैद्य-जाय । -हारी अटकना-पट्टीहारीकी
लेकर समझ या विरोध होना । -हारी करना-समान
अधिकार रखनेका दावा करना; पट्टीहारीका प्रश्न खड़ा
करके किसीके काममें बाधा पहुँचाना; बराबरी करना ।
-पढ़ाना-बच्चावेवाली शिक्षा देना । -में आना-
किसीकी पूर्वापूर्य बातोंमें फँस जाना ।

मदद-पु० एक प्रकारका उनी कपड़ा; एक प्रकारका भारी-
दार चारखाना ।

पहेल-पु० पहेल; मूल्य मनुष्य ।

पट्टीछिका-खी० [सं०] पट्टा, अधिकारपत्र ।

पट्टमान-वि० पट्टने योग्य ।

पट्टा-पु० युवा, तरुण, चन्दती जवानोवाला मनुष्य, पट्ट
आदि कुश्तीबाज जवान; लड़ा और मोटे दलका पत्ता;
मांसपेशियोंको एक-दूसरीसे और हड्डियोंमें जुड़ी रहनेवाली
मोटी तन्तु; एक तरहका मोटा मोटा जो कुछ सुनहला और
कुछ बगला होता है । -पछाड़-वि० खी० (वह खी)
जो पट्टेको पछाड़ दे, बहुत बलवती (दो) । मु० -पछाड़ना
-कोई नस तन जाना । -[हँ] में खुसना-अभिन्न
बनना, बहुत अधिक मेल-जोल बढ़ाना ।

पट्टी-खी० दे० 'पट्टिया' ।

पठक-पु० [सं०] पढ़नेवाला ।

पठन-पु० [सं०] पढ़नेकी क्रिया, पढ़ना; वर्णन करना ।

-शील-वि० जो बहुत पढ़े ।

पठनीय-वि० [सं०] पढ़ने योग्य ।

पठनेडा-पु० पठानका डेडा ।

पठमंजरी-खी० [सं०] दे० 'पटमंजरी' ।

पठनना-सं० कि० मेजना ।

पठनाना-सं० कि० मेजवाना ।

पठान-पु० मुसलमानोंकी एक प्रसिद्ध उपजाति ।

पठाना-सं० कि० मेजना ।

पठानिन-खी० पठानकी या पठान जातिकी स्त्री ।

पठानी-खी० पठानकी या पठानजातिकी स्त्री; पठानका

स्वभाव, पठानपन । वि० पठानका; पठान-सम्बन्धी ।

-छोड़-पु० एक जगहो पैड़ जिसकी छार और पत्तियों
रगके तथा लकड़ी और कूट दवाके काम आते हैं ।

पठार-पु० दूरतक फैली हुई चौरस और ऊँची जमीन ।

पठारना-पु० दूता; बसीठी ।

पठारविन-खी० दे० 'पठवनी' ।

पठारवनी-खी० किसी कार्यके लिए किसीकी कहीं भेजना;
किसीके भेजनेपर कहीं जाना; किसीकी कहीं भेजने या
पहुँचानेकी उजबत ।

पठि-खी० [सं०] पढ़नेकी क्रिया, अध्ययन ।

पठित-वि० [सं०] पढ़ा हुआ ।

पठिया-खी० जवान और हट-पुष्ट औरत ।

पठेरी-खी० जवान और विना ब्यापी हुई बकरी या भुव्वा ।

पठौचा-सं० कि० पठाना, मेजना ।

पठौची-खी० दे० 'पठवनी' ।

पठमान-वि० पढ़ने योग्य ।

पठरुली, पठरुली-खी० पानकी शीखारसे बचानेके
लिए कच्ची दीवारपर रखी या लगायी जानेवाली छाजन
या टट्टी ।

पठता-खी० दे० 'पठता' ।

पठता-पु० किसी आत्मीक खरीद या तैयारीका खर्च; विक्री-
के दायमेंसे कागत छोटकर होनेवाली वचता; औसत; दर;
लगानकी दर । मु० -निकालना; -फैलाना; -बैठाना-
छातका विचारकर भाव निश्चित करना ।

पठताल-खी० पठतालनेका काम या भाव; निरीक्षण, जाँच
(भाव: 'जाँच' शब्दके साथ प्रयुक्त); पठवारी या कानूनगी
द्वारा की जानेवाली सेतोंकी एक विशेष प्रकारकी जाँच
जिसमें बोयी हुई फसल, बोनेवालेका नाम, सिंचाई आदि-
का खेरा लिखा जाता है ।

पठतालना-सं० कि० जाँच करना, छानबीन करना ।

पठती-खी० दे० 'पठती' ।

पढ़ना-अ० कि० गिरना; कहीं कदायक जा पहुँचना; नसर
होना; खाली न जाना; आना; बाका या पहुँचाया जाना;
विछाया, रखा जाना; घटनाका रूप प्राप्त करना; घटित
होना; ब्याहा जाना; स्थित होना; दखल देना; शरीक
होना; टिकना, ठहरना, सुकाम करना; लेटना; बीमार
होना; मिलना; पकता खाना; आमदनी, लाभ आदिका
पकता होना; प्रसंग प्राप्त होना; उपस्थित होना; राहमें
मिलना; निकल आना, पैदा होना; होना; हो जाना;
तौफ इच्छा होना; धुन सवार होना; नियत किया जाना,
सुकरंर होना; बन जाना । (किसीपर पढ़ना-आफत
आना, विपत्ति आना । क्या पढ़ी है-क्या मतलब है ?)

पढ़-पढ़-खी० अनेक बार और निरन्तर उपपन्न 'पढ़'
शब्द ।

पढ़पढ़ाना-अ० कि० 'पढ़-पढ़' शब्द होना; 'पढ़-पढ़'
शब्द करना; सिर्फ आँटि तीखी बस्तुओंके रूपसेही जीमका
जलने-सा लगना ।

पढ़पढ़ाइट-खी० पढ़पढ़ानेकी क्रिया या भाव ।

पढ़पोता-पु० दे० 'परपोता' ।

पढ़रु-पु० 'पँडवा' ।

पढ़वारी-खी० दे० 'परिवा' । पु० दे० 'पँडवा' ।

पढ़वाना-सं० कि० पढ़नेका काम कराना ।

पढ़वी-खी० वैशाख या अजेमें बोयी जानेवाली एक
प्रकारकी ईल ।

पढ़ा-पु० भेलका बच्चा, पँडवा ।

पढ़ाका-पु० दे० 'पढ़ाका' ।

पढ़ाना-सं० कि० गिराना; छिडाना; छुटाना; पढ़नेमें
प्रवृत्त करना ।

पढ़ापढ़-खी० 'पढ़-पढ़'की आवाज । अ० 'पढ़-पढ़'की
आवाजके साथ ।

पढ़ाव-पु० मेना, काफिले या पथिकोंका रातभर या कुछ
समयके लिए मार्गमें कहीं ठहरना; यात्रियोंके ठहरनेकी
जगह, ठिकान । मु० -भारना-पढ़ाव डाले हुए काफिले
या यात्री-दलको छटना; कोई भारी साहजनका काम करना ।

पवित्रा-श्री० मैसका मादा बच्चा ।

पवित्राना-श्री० कि० मैसका मैससे संयोग होना । सं० कि० मैसका मैससे संयोग करना; ऐसा संयोग कराना ।

पवित्रा-श्री० दे० 'परिवा' ।

पवोरा-श्री० पवक ।

पवोस-पु० किसीके घरके पासके घर, प्रतिवेश; किसीके घरके आसपासकी जगह । सु०-कहरना-पवोसमें रहना ।

पवोसी, पवोसी-पु० पवोसमें रहनेवाला ।

पदंत-श्री० निरंतर पढ़ना; जादू ।

पदंता-वि०, पु० पढ़नेवाला ।

पदत-श्री० पढ़नेकी क्रिया, पाठ ।

पढ़ना-स० कि० क्लिष्टे हुए अक्षरों या शब्दोंका क्रमसे उच्चारण करना; पुस्तक या लेख आदिको हम प्रकार देखना कि उसमें क्लिष्टे शब्दसमूहका अर्थ या भाव समझमें आ जाय; शोलकर जपना; मन-ही-मन जपना; शोल शोलकर याद करना, रटना, घोलना; जादू करना; तोता-मैना आदिका सिखावे हुए शब्दोंका उच्चारण करना; नया सबक सीखना । सु०-लिखना-शिक्षा प्राप्त करना ।

पढ़नी-डकी-श्री० टेके, आदमी आदिको उछलकर ऊँचने की एक कसरत ।

पढ़वाना-स० कि० किसीको पढ़ने या पढ़ानेमें प्रवृत्त करना ।

पढ़वैया-पु० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पढ़ाई-श्री० पढ़नेका काम, पठन; विद्योपार्जन, शिक्षा; पढ़ानेका काम, पाठन; पढ़ानेका तर्ज; अध्ययनका ढंग; पढ़ानेके बदले दिया जानेवाला धन, पढ़ानेकी उजरत ।

पढ़ाना-स० कि० शिक्षा देना, शिक्षित बनाना, कोई विषय या बात सिखाना; तोता-मैना आदिको किसी शब्द या शब्द-समूहका उच्चारण करना सिखाना ।

पढ़िना-पु० एक प्रकारकी मछली ।

पढ़ैया-पु० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पण-पु० [म०] ११ या २० मासेके बराबर एक पुराना मिक्का, ताँबेका एक पुराना मिक्का जो अस्सी कौन्सियोंके बराबर होता था; जुआ; बाजी; बाजी लगायी हुई चीज; प्रतिष्ठा; इकरार; मजदूरी, पारिश्रमिक; वेतन; मूल्य; धन; बेचनेकी चीज, विक्रय वस्तु; व्यवहार; कलाल; विक्रेता; घर; झुंडीघर कोई वस्तु; स्तुति; विष्णु । -प्रंथि-श्री० बाजार । -छेद्वन-पु० अँगूठा काटनेका दंड (को०) । -खिल-वि० जुपमें जीता हुआ । -दास-पु० वह जो जुपमें अपनेको बारकर विजेताका दास बन गया हो । -फर-पु० छत्रसे दूसरा, पाँचवाँ, जाठवाँ और ग्यारहवाँ स्थान (स्वी०) । -बंघ-पु० बाजी लगाना, किसीसे इस प्रकारकी प्रतिष्ठा करना कि यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं यह दूँगा या ऐसा करेंगा; इकरार; सधि । -श्री०-सुंदरी-श्री० वेध्या ।

पणता-श्री०, पणत्व-पु० [स०] मूल्य ।

पणव-पु० [स०] खरीदने-बेचनेकी क्रिया; बाजी लगाना, शर्त लगाना; प्रतिष्ठा करना, इकरार करना, कौड़ करना ।

पणवीध-वि० [स०] खरीदने-बेचने योग्य ।

पणव-पु० [स०] छोटा ढोल ।

पणवा-श्री० [स०] पणव; एक वृक्ष ।

पणवानक-पु० [स०] नगाड़ा ।

पणवी(विष्णु)-पु० [स०] शिव ।

पणव-पु० [स०] विक्रय वस्तु ।

पणागना-श्री० [स०] वेध्या ।

पणावा-श्री० [म०] क्रय-विक्रयका व्यवहार; बाजार; व्यापारमें होनेवाला लाभ; स्तुति; जुआ, शर्त ।

पणायित-वि० [स०] खरीदा या बेचा हुआ; स्तुत ।

पणार्पण-पु० [स०] इकरार, शर्त ।

पणासी-वि० विनाशक-‘ही जब ही जब पूजन जात पितापद पावन पाव पणासी’-रामचंद्रिका ।

पणास्थि-श्री० [स०] कोकी ।

पणि-श्री० [स०] बाजार; दुकानोंकी पाँत । पु० कंजूम; पापी ।

पणित-वि० [स०] खरीदा या बेचा हुआ; जिम्मेदार बाजी लगायी गयी हो; स्तुत । पु० बाजी ।

पणितव्य-वि० [स०] खरीदने या बेचने योग्य; बाजी लगाने योग्य ।

पणिता(वृ)-पु० [स०] सौदागर, व्यापारी ।

पणी(विष्णु)-वि० [स०] क्रय-विक्रम आदि करनेवाला । पु० एक ऋषि ।

पण्य-वि० [स०] क्रय-विक्रयके योग्य; व्यवहार या व्यापारके योग्य । पु० विक्रय वस्तु, सौदा; रोजगार, व्यापार; मूल्य; दाम; दुकान । -दासी-श्री० लौंडी । -निचब-पु० विक्रीका माल एकत्र करना । -निवाहण-पु० चुन्नी या मछल दिये विना ही माल निकाल के जाना (को०) ।

-पसि-पु० बहुत बड़ा व्यापारी, भारी व्यवसायी ।

-पत्तन-पु० मंडी । -चारित्र-पु० मंडीका नियम ।

-परिणीता-श्री० रखेली । -फलव्य-पु० व्यापारमें उन्नति या लाभ । -भूमि-श्री० गोदाम । -धोवित्त, -विलासिनी-श्री० वेध्या । -बीधि; -विधिका, -बीधी, -साळा-श्री० बाजार; दुकान । -समबाध-पु० थोक विक्रीका माल । -संस्था-श्री० गोदाम (को०) ।

पण्यागना-श्री० [स०] वेध्या ।

पण्याजीव-पु० [स०] बणिक्, व्यापारी ।

पण्याजीवक-पु० [स०] व्यापारी; बाजार ।

पण्योपघात-पु० [स०] बेचे जानेवाले मालकी हानि ।

पतंक्षा-पु० एक प्रकारका बगला ।

पतंग-पु० [स०] सूर्य, पक्षी, चिड़िया; शलभ, दिव्डी; एक फीका एक प्रकारका धान; जलमडुआ; पारा; देखनेका गेंद; एक प्रकारका चंदन; चिनगारी; विष्णु; [हि०] एक वृक्ष जिसकी लकड़ीसे एक बहिया काष्ठ रंग तैयार किया जाता है, बकम । श्री० बॉसको कमालियोंके ऊँचेपर कागज मढ़कर बनाया जानेवाला खिलौना जिसे तागेसे बाँधकर हवा चलते समय आसमानमें उड़ाते हैं, गुड्डी, कनकौवा । -बाङ्ग-पु० पतंग उड़ाने, लगानेवाला, वह जो बहुत अधिक गुड्डी उड़ाये । -बाङ्गी-श्री० पतंगबाज होनेकी क्रिया या भाव; पतंग उड़ानेका हुनर । सु०-कादना-अपनी पतंगकी मोरीकी रंग दूसरीकी पतंगकी मोरीपर डाककर उसे काट देना । -छुरी-युपकी

करनेवाला, कगाने-बकानेवाला, चुपकुली। - बकाना-
- होर डोली करके पतंगकी ओर ऊपर या आगे पहुँचाना।
पतंग-पुं० [सं०] पक्षी; झलन, पतंगा।
पतंगा-पुं० एक प्रकारका उड़नेवाला छोटा, फंतिगा;
दीपेका फूल, चिरागका युक्त; चिनगारी।
पतंगिका-स्त्री० [सं०] एक तरहकी मधुमक्खी; छोटी
चिरिया।
पतंगी(मिन्)-पुं० [सं०] पक्षी।
पतंगी-वि० स्त्री० रंग-विरंगी-‘होरे तन पहिरि पतंगी
सारी, हामकि हामकि गावे गरी’-वन०।
पतंगे-पुं० [सं०] गवक।
पतंग-पुं० [सं०] एक गोव-प्रवर्तक ऋषि।
पतंगिका-स्त्री० [सं०] धनुषकी चोरी।
पतंगिक-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योगदर्शन-
की रचना की है और जो योग-दर्शनके आदि आचार्य
माने जाते हैं; एक ऋषि जिन्होंने पाणिनिके व्याकरण-
सूत्रोंपर महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याख्यान रचा है
(कुछ लोगोंने योगदर्शनकार पतंगिकी महाभाष्यकार
पतंगलिके अर्थ माना है)।
पत-पुं० पति; माहिक, अधीश्वर, प्रभु। स्त्री० काज;
प्रतिष्ठा; इज्जत। - स्त्री-पुं० अपनी प्रतिष्ठाका नाश
करनेवाला। - पात्री-पुं० प्रतिष्ठा, इज्जत; काज। मु०
- उदारना-किसीकी प्रतिष्ठा भंग करना, अपमान करना।
- रक्षना-प्रतिष्ठाकी रक्षा करना, इज्जत बचाना।
पत-‘पता’का समासमें व्यवहृत रूप। - पत-स्त्री०-
शिशिर ऋतु जिसमें पेड़ोंकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं। - पत-
- स्त्री०-स्त्री० दे० ‘पतझड़’। - पत-पुं०-पत-स्त्री० दे०
‘पतझड़’।
पत-स्त्री०-स्त्री० पत्नी।
पतंग-पुं० [सं०] पक्षी।
पतंगे-पुं० [सं०] गवक।
पतंगिक-पुं० दे० ‘पुन-जीव’।
पत-वि० [सं०] विरता हुआ; नीचे आता हुआ। पुं०
पक्षी। - प्रकर्ष-पुं० एक काव्यदोष जहाँ किसी अलंकार
या किसी रचनाकी उल्लेखताका निर्वाह न हो सके।
पत-पुं० [सं०] बाहन, सवारी; डैना, घर।
पत-पुं० [सं०] पक्षी, चिरिया।
पतंगी(मिन्)-पुं० [सं०] पक्षी; बाण; घोड़ा। - (मिन्)-
केलन-पुं० विष्णु। - रात्र-पुं० गवक।
पत-‘पत’का समासगत रूप। - पत-पुं० पीकदान;
संरक्षित सेना। - जीव-पुं० बाज।
पत-पुं० [सं०] ऊपरसे नीचे आना; गिरना; च्युत होना;
अधोगति; संहार; नाश; मरण; बैठना; हूचना (जैसे सूर्य-
को; नीचे लटक जाना (जैसे छातीका); जातिसे च्युत
होना; गर्भपात; पतित होना; पातित्य; किसी प्रवृत्ति
अज्ञात; उदना; कटाव। - पत-स्त्री०(मिन्)-वि० जिसका
पतन हो; नश्वर। - पत-वि० पतन जिसका समाव
हो। जिसका पतन होता रहे; जो सदा पतनोन्मुख रहे।
पतन-वि० [सं०] पतनके योग्य; पतित होनेके योग्य;
पतित करने या बनानेवाला। पुं० पतित या च्युत करने-

वाला पाप (स्व०)।
पतनोन्मुख-वि० [सं०] पतनकी ओर जानेवाला; पतनकी
ओर प्रवृत्त, जो पतनकी राहपर हो; जो पतनके निकट हो।
पतन-पुं० [सं०] चंद्रमा; पक्षी; दिव्य।
पतचातु, पतचिष्णु-वि० [सं०] पतनशील।
पत-वि० पतल। पुं० पता; पनबारा।
पतरा-वि० पतला; शीना; निरलक। - ई-स्त्री० पतल-
पन।
पतरिया-पुं० पतली चोंचवाला एक हरे रंगका पक्षी।
पतरा-स्त्री० पतल।
पतरिया-पुं० पतरिया नामका पक्षी।
पतरा-पुं० गदत कमानेवाला व्यक्ति (अंग्रेजी पैट्रोल)।
पत-वि० जिसका कैलाश या बेरा कम हो; जो मोटा न
हो, जिसका शरीर मोटा न हो; कुरा; संतारा; शरीर; जो
गाढ़ा न हो; जिसमें जलवायकी अधिकता हो; शक्तिहीन;
अवल। - ई-स्त्री० दे० ‘पतलापन’। - पन-पुं०
पतला होनेका भाव। मु०-पन-दीन-दीन हो जाना;
आपदग्रस्त होना।
पतल-पुं० [अं०] ‘पेटल’ अंग्रेजी डंगका पायजामा।
- पुन-वि० पतलके डंगका। पुं० पतलके डंगका
पायजामा।
पतली-स्त्री० सरपत या उमकी पत्नी।
पत-अ० अलग-अलग पाँतोंमें; पतित रूपमें।
पत-पुं० एक तरहका भ्रमान जिसपरसे बाप आदिक
शिकार करते हैं।
पत-स्त्री० नावमें पीछेकी ओर लगी हुई वह तिकोनी
लकड़ी जिसके द्वारा नावकी शर-उपर घुमाते या मोड़ते
हैं, कर्ण।
पत-स्त्री०-स्त्री० ईशका सेत; पतवार।
पत-स्त्री०-स्त्री० पक्षियोंका अङ्ग।
पत-पुं० [सं०] चंद्रमा; पक्षी; कर्मिणा।
पता-पुं० किसी वस्तु, स्थान या व्यक्तिका ऐसा परिचय
जो उसे पाने, ईदने या उसमें पासतक समाचार पहुँचाने-
में सहायक हो; चिट्ठी आदिकी पीठपर लिखा जानेवाला
पानेवालेका नाम आदि जिसके सहारे वह उसके पास
पहुँच जाती है; ठिकाना, जानकारी, स्थितिवृत्त चिह्न
या लक्षण; खोज, खबर; भेद, तत्त्व, रहस्य। - (ते)की,
- की बात-भेदभरी बात, तत्त्वकी बात।
पता-स्त्री०-स्त्री० सूखी हुई पत्तियों या उनका पुंज। मु०-
शोकना, - कगना-भालाको तेज करनेके लिए उसमें पतार
शोकना या डालना। (किसीके मुँहमें)-कगना-
(किसीके मुँहमें) आग लगाना (खियाँ गाँठके रूपमें
कहती हैं)।
पताका-पुं०-पुं० [सं०] शंका, पताका।
पताका-स्त्री० [सं०] ध्वजके ऊपर पढ़ाना जाने-
वाला वह तिकोना या चौकोना कपड़ा जिसपर प्रायः
किसी राजा, राष्ट्र या संघ आदिकी निजी चिह्न बना रहता
है; शंका, पताका पहचानेका डंडा, ध्वज; चिह्न, निशान;
प्रतीक; सौभाग्य; नाटकमें एक विशिष्ट स्वर, दे० ‘पताका-
स्थानक’; तीर चढ़ानेमें डंगलियोंकी एक विशेष प्रकारकी

मुद्रा; प्रासंगिक कथावस्तुका एक नेत्र (ना०)। -इँह-
-पु० पताका कण्ठाग्रेका डंढा। -स्थापक-पु० नाटकमे
बहू स्वक अहाँ किसी सोचे हुए विषय वा प्रस्तुत प्रसंगसे
नेत्र खानेवाला दूसरा विषय वा प्रसंग उपस्थित हो जाय।
मु० (किसीकी) -उच्चना वा कहरना-एकाधिकार होना;
सबसे बढकर होना; मूर्खत्व होना; बेजोड़ होना।
(किसीकी) विद्या गुण आदिकी-उच्चना वा कहरना-
स्थापित होना। -उच्चाना वा कहराना-आधिपत्य
स्थापित करना; विजय प्राप्त करना। -गिरना-पराजय
होना; हार होना।

पताकिङ्क-पु० [सं०] पताका चारज करनेवाला, डंढा-
बरदार।

पताकिनी-की० [सं०] सेना।

पताकी (किच)-वि० [सं०] पताकावाला; पताका ले
खनेवाला। पु० डंढा ले चलनेवाला, डंढाबरदार; डंढा;
रथ; राक्षियोंका एक श्रेष्ठ (ज्यो०)।

पतापत्त-वि० [सं०] अतिशय पतनयुक्त।

पतामीर-की० एक तरहकी नाव।

पतार-पु० दे० 'पाताल'; जगल।

पताख-पताखका समासगत विकृत रूप। -आँवला-
पु० एक प्रकारका बड़ा पीथा जो औषधके काम आता
है। -कुम्हार-पु० एक जंगली पीथा। -वृत्ती-पु० वह
हाथी जिसका दाँत सीधे सीधे नीचेकी ओर बढ़ा हो।

पताबर-पु० खड़े पत्ते।

पतासीर-की० बढावोंकी छोटी रुखाना।

पतिंग-पु० पतिगा।

पतिहरा-की० [सं०] स्वेच्छासे बर चुननेवाली कन्या;
वह कन्या जो अपना बर चुननेके लिए स्वयंवर-भूमिमें
उतरी हो।

पति-की० दे० 'पत'; माख। पु० [सं०] किसी वस्तुका
स्वामी, वह जिसका किसी वस्तुपर अधिकार हो; किसी
प्याही हुई औरतका शीहर, अर्थात्, कांत; शासन; अपरि-
मित ज्ञानशक्ति तथा प्रभुशक्तिके युक्त भद्रेश्वर जो जगत्-
की सृष्टि और संभारके कारण है (पञ्चपत दर्शन); मूल,
जड़; गति। -कामा-की० पति चाहनेवाली स्त्री; पतिसे
मिलनेकी इच्छा रखनेवाली स्त्री। -खेचर-पु० शिव।
-प्राणिनी-प्राणी-की० पतिको मार डालनेवाली स्त्री;
वह स्त्री जिनमें व्योतिष वा सामुद्रिकके अनुसार ऐसे
कष्टपूर्ण हो जो पतिकी मृत्युके कारण हों, वैषम्य योगवाली
स्त्री; एक हस्तरेखा जो यह सूचित करती है कि अशुभ
स्त्री पतिपातिनी होगी। -देवता-देवा-की० वह स्त्री
जो अपने पतिकी देवताकी तरह माने, पतिव्रता स्त्री।

-धर्म-पु० पतिके प्रति स्त्रीका कर्तव्य। -प्राणा-की०
पतिव्रता स्त्री। -भक्ति-की० पतिकी तनमनसे सेवा
करना। -छंघन-पु० पहले पतिके रहते दूसरेसे विवाह
कर लेनेका अपराध। -छोक-पु० वह उत्तम परछोक
जिसमें पतिकी आत्माका निवास हो (मृत्युके उपरांत
पतिव्रता स्त्री उसी लोकमें पहुँचती है जिसमें उसका पति
निवास करता है)। -वर्त-पु० दे० 'पतिव्रत'।
-वर्त-की० दे० 'पतिव्रता'। -वैद्य-पु० शिव।

-व्रत-पु० पतिके प्रति पकांत प्रेम, अनुसंग, भक्ति।

-व्रता-की० पतिसे अनन्य अर्थात्, अनुराग, रखनेवाली
स्त्री, साध्वी नारी। -सेवा-की० पतिभक्ति।

पतिआना-सं० कि० दे० 'पतिवाना'।

पतिआर-पु० विश्वास, प्रतीति। वि० विश्वसनीय।

पतिआरा-पु० दे० 'पतिवारा'-'कहा परदेसीकी पति-
आरी'-सुर।

पतिक-पु० एक पुराना सिक्का; कार्ष्णपण।

पतिजिया-की० अशोककी जातिकका एक पेड़।

पतित-वि० [सं०] गिरा हुआ; आदि, धर्म आदिसे प्लुत;

आचारभ्रष्ट; महापातकी, बहुत नीच; अत्यंत अपावन;
पराजित। पु० उटना। -उच्चारन-वि० पतितोंकी
तारनेवाला; जो पतित जनोंकी छुगाति दे। पु० ईश्वर;
सगुण ब्रह्म जो पतित जनोंकी तारनेके लिए अवतीर्ण होता
है। -साधन-वि० पतितोंकी पवित्र करनेवाला, जो
पतितोंका उद्धार करे। पु० ईश्वर; सगुण ब्रह्म। -बुद्ध-
वि० ब्रह्म आचरणवाला; जो पतित होकर जीवन बिताये।

-सावित्री-पु० वह दिव्य जिसका उपनयन संस्कार
या तो हुआ हो न हो वा हुआ हो तो विधिपूर्वक न
हुआ हो।

पतितव्य-वि० [सं०] पतनके योग्य, गिरने योग्य।

पतिनी-की० दे० 'पत्नी'।

पतिमती-वि० की० [सं०] (भूमि आदि) जिसका कोई
स्वामी हो।

पतिवा-की० पत्नी, चिट्ठी।

पतिवाणा-सं० कि० विश्वास करना; विश्वसनीय समझना
सच्चा वा ठीक मानना।

पतिवारा-पु० विश्वास, पतवार। वि० विश्वसनीय।

पतिवारा-पु० विश्वास, पतवार।

पतिलीन-वि० प्रतिष्ठाहीन-'पतिहीनकी पतिलीनकी
रति'।-घन०।

पतिवंती-वि० की० सधवा, (वह स्त्री) जिसका पति
जीवित हो।

पतिवती-वि० की० दे० 'पतिवती'।

पतिवन्ती-वि० की० [सं०] सधवा।

पतीर-पु० दे० 'पति'।

पतीजना, पतीजना-सं० कि० विश्वास करना, पतिवाना।

पतीर-की० पंक्ति, पंक्ति।

पतीरी-पु० की० एक तरहकी चटारें।

पतीर, पतीर-वि० पतला।

पतीरकी-की० एक प्रकारकी पीतल आदिकी चौड़े मुँह और
पेठेकी चिपटी बटलें। † वि० की० दे० 'पतीर'।

पतुकी-की० पतीर; बंदी।

पतुकिरा-की० बेधवा, रंजी; कुख्यात।

पतुही-की० छोटे वा अपुष्ट दानोंवाली मटर आदिकी
फली।

पतुकी, पतुकी-की० दे० 'पतोकी'।

पतोख, पतोख-की० किसी दूध, पीधे वा घास
आदिके फूल, यन्ते आदिसे बनी दवा, सरिरीर।

पतोला-पु० पत्तेका बना दाना; पत्तेसे बनी छतरी।

पत्ती-पत्ती-की० छोटा पत्तीका; रातमें बोलनेवाली एक ध्वनियाँ दे० 'पत्तीकी'।

पत्तीरा-पु० दे० 'पत्तीरा'।

पत्तीही-की० दे० 'पत्तीही'।

पत्तीहू-की० पुत्रवधू, पुत्रकी की।

पत्तीभा, पत्तीबा-पु० पत्ता।

पत्तीखी-की० कत्था, चूना और कटी सुपारीका मिश्रण जिसे मुखझुङ्कि के लिए खाते हैं।

पत्तंग-पु० [सं०] फल चंदन।

पत्ता-पु० दे० 'पत्र'।

पत्तन-पु० [सं०] नगर, शहर; वृद्ध। -बणिक्(ब्)-पु० नगर-बणिक्।

पत्तर-पु० पीटकर पतला बनाया हुआ धातुका टुकड़ा जो कामजकी तरह किसी चीजपर चढ़ाया जाय; पत्तल।

पत्तल-की० बालीकी जगह उपयोगमें लानेके लिए बनाया गया पत्तीका पात्र; पत्तलकर-खाद्य सामग्री, परीसा; पत्तल में रखा हुआ खाद्य सामग्री। मु० (पुष्क)-के खानेवाले-बहुत नरदीकी। -पत्तला-खानेवालोंके सामने पत्तीका रखा जाना। -पत्तला-पत्तलपर साधनामाग्री रखकर खानेवालेके सामने रखना। -पत्तला-कोई पहेली पृष्ठ-कर उसे हल करनेके पहले योजना न करनेकी कसम देना। (किसीकी)-में खाना-किसीके साथ खान-पानका नाता जोड़ना या रखना। (जिल)-में खाना इसीमें छेड़ करना-उपकारके बदले अपकार करना, उपकार करनेवालेका अपकार करना, कृतघ्न होना।

पत्ता-पु० काँच अथवा टहनोसे निकलनेवाला पेड़-पौधेका वह हरा अवयव जिससे छाया होती है और जो सूर्य जानेपर झुक जाता है; पत्र; कानमें पहननेका एक गहना; मोटे कामजका-गोख या चौकीर टुकड़ा; पत्तर। वि० बहुत हलका (छा०)। मु० -खबकना-किसीकी आहत करना, कोई खटका होना। -सौबकर भागना-बेतहासा भागना। -न हिलना-जरा भी हवा न चलना। -हो जाना-चटपट गायब हो जाना।

पत्ति-पु० [सं०] पैदल चलनेवाला यानी; पैदल सिपाही, पदाति; योद्धा, वीर। की० सेनाका वह सबसे छोटा विभाग जिसमें १ राय, १ हाथी, १ घोड़े और ५ पैदल सिपाही होते थे; पैदल चलना। -काब-पु० पैदल सेना। -गणक-पु० पैदल सिपाहियोंकी एकत्र करने तथा उनकी गणना करनेवाला सेनाधिकारी। -पाछ-पु० पाँच या छः सिपाहियोंका सरगना या नायक। -ब्यूह-पु० वह ब्यूह जिसमें आगे कन्धवारी सैनिक हों और पीछे धनुर्धर (की०)। -संहति-की०, सैन्य-पु० पैदल सेना।

पत्तिक-वि० [सं०] पैदल चलनेवाला।

पत्ती-की० छोटा पत्ता; सादेका हिस्सा, भाग; साझा; पंखड़ी; भाग; पत्तीके आकारका कटा हुआ लकड़ी, धातु आदिका टुकड़ा जो कहीं जवा, लगाया या लटकता जाय; दे० 'झेड़'। पु० राजपूतोंकी एक जाति। -सर-पु० वह व्यक्ति जिसका किसी संपर्क या व्यवसायमें साझा हो, हिस्सेदार।

पत्ती(चिन्)-पु० [सं०] पैदल सिपाही, यवा; पैदल चलने या जाना करनेवाला।

पत्तूर-पु० [सं०] एक प्रकारका शाक; छात्र चंदन; पत्तंग नामका पेड़।

पत्थर-पु० दे० 'पथ्र'।

पत्थर-पु० पृथ्वीका कड़ा सार, वह द्रव्य जिससे पृथ्वीका कड़ा सार बना होता है; इसका कोई टुकड़ा; मीलकी संख्या सूचित करनेके लिए सबके किनारे गाढ़ा जानेवाला पत्थरका टुकड़ा; सीमा या हद्द निर्धारित करनेके लिए गाढ़ा जानेवाला पत्थरका टुकड़ा, डेला; मोला; हीरा, जवाहर आदि; पत्थरकेसे स्वभाव या गुणसे युक्त वस्तु; वह वस्तु जो कठोरता, भारीपन आदिमें पत्थरके समान हो; कुछ नहीं, साक (छा०)। -कड़ा-की० एक प्रकारकी पुराने डगकी बंदूक, तोड़ेदार बंदूक। -छटा-पु० एक प्रकारकी घास; पत्थर चाटनेवाला एक प्रकारका सौंप; एक तरहकी मछली; कज्जु आदमी। वि० जो अपना वातसान छोड़कर किसी और जगह न गया हो, रूप-बंदूक। -चूर-पु० एक तरहका पीसा। -पानी-पु० औंधी-पानी; वीर दुर्मिष। -कूल्-पु० छरी। -फोड़-पु० दुर्दुर्द चिड़िया; एक तरहका छोटा पौधा जो अधिकतर बरमातमें दीवारोंकी कोबकर निकलता है। -फोड़ा-पु० पत्थर तोड़नेका काम करनेवाला, संगतराश। -बाज़-वि० जो किसीपर पत्थर फेंके, पत्थर चलाकर मारनेवाला; जिसे पत्थर या डेला चलानेका अभ्यास हो। -बाज़ी-की० पत्थर चलाकर मारनेकी क्रिया, डेलाबाजी। मु० -का कलेजा, दिल या हृदय-अति कठोर हृदय, बहुत कड़ा दिल, ऐसा हृदय जिसमें करुणा, दया आदि कोमल भावोंका उदय न हो। -का छाप-औंधी की छपार। -की छाती-वीर कट या विषम परिस्थितिमें भी न डगमगनेवाला चित्त, मजबूत दिल। -की लकीर-न भिदनेवाली वस्तु, सदा बनी रहनेवाली वस्तु। -को जौक लगाया-असंभव या दुःसाध्य कार्य करना। -छटा-पु० पत्थरपर रगड़कर धार तेज करना। -तलेसे हाथ निकलना-भारी कहने छुटकारा मिलना। -तले हाथ जाना या दबना-ऐसे संकटमें पड़ जाना जिससे शीघ्र छुटकारा न मिल सके, भारी विपत्तिमें पड़ जाना। -निचोड़ना-किसी ऐसे व्यक्तिसे कुछ प्राप्त करना या बचल करना जिससे उम्तका मिलना असंभव हो; किसीसे ऐसा कोई काम निकालना जो उसके स्वभावके विरुद्ध हो; असंभव कार्य करना। -पड़े-भिट जाय, जाता रहे (गाली)। -पर बूझ जमना-अनहोनी बात होना। -पसीजना या पिछलना-निष्ठुर हृदयमें दयाका संचार होना। -भारे भी न मरना-दुःसुका कारण रहते हुए भी न मरना; जल्दी न मरना। -सा खींच मारना या कैंक मारना-बहुत कभी बात कहना, दो-टुक जवाब देना।

पत्थर-पु० दे० 'पथ्र'।

पत्ती-की० [सं०] किसी पुरुषसे संबंध वह की जिसके साथ उसका ब्याह हुआ हो, परिणीता की, भार्या, वीरू।

पत्त-पु० विवाहिता जोके अलग और किसी कीसे

संभव न रखनेका अतः।-**झाखा-खी०** पत्तीके रहनेका वर वा कमरा।-**संघाज**,-**संघाजन**-पु० एक वैदिक कृत्य।

पल्पाट-पु० [सं०] पत्तीगृह, अंतःपुर।

पत्थाना—सं० कि० दे० 'पत्तियाना'।

पत्थानि—**खी०** विधास-**भूटी** बतियानिकी पत्थानिते उदास है कै-**पन०**

पत्थारा—पु० दे० 'पत्तियारा'।

पत्थारी—**खी०** पौत, कतार।

पत्थोरा—पु० कच्चीके पत्तीकी रिकवेंड।

पत्र-पु० [सं०] पत्ता; चिट्ठी; कागज; वह कागज जिसपर कोई बात लिखी वा छपी हो; वह कागज वा धातुकी पट्टी जिसपर किसी व्यवहारके विषयमें कोई प्रामाणिक लेख लिखा वा खुदबाया गया हो (दानपत्र, ताम्रपत्र); किसी व्यवहार या घटनाके विषयका प्रमाणरूप लेख (पट्टा, दस्तावेज); समाचारपत्र, अखबार; पुस्तक; कापी आदिका कोई पन्ना, बर्त; किसी धातुकी पट्टी या पत्तर पत्र; तंज-पत्ता; बाणका परकी तरह निकला हुआ हिस्सा; वान, बाहान, सवारी; चंदन, कस्तूरी आदि गंधद्रव्योंसे कपोल, कुच आदिपर बनाये जानेवाले विशेष प्रकारके चिह्न वा बूटे आदि; कटार, तलवार आदिका फल; छुरा, कटार।

—**कार**-पु० समाचारपत्रका संपादक वा लेखक।
—**कारी**—**खी०** [हिं०] पत्रकारका पेशा। —**काहला**—**खी०** पत्र फलकमाने या पत्ता खसकनेसे होनेवाला शब्द।

—**कूच्छ**-पु० पत्तीके रसपर रहनेका एक अतः।-**गुप्त**-पु० प्रिकट, धूँर।-**घना**-**खी०** सागला नामक पौधा।

—**ज**-पु० तेजपात।-**झंकार**-पु० नदीका प्रवाह।

—**तंहुकी**-**खी०** यवतिका।-**तर**-पु० दुग्धदिर।

—**तारक**-पु० आरा।-**नादिका**-**खी०** पत्तीकी नस, पत्तेका रेशा।-**परशु**-पु० सोनायकी छेनी।-**पाल**-पु० बगी छुरी।-**पाली**-**खी०** बाणका पंख; कैची।

—**पाश्या**-**खी०** ललाटका एक (सोनेका) आभूषण।

—**पिशाधिका**-**खी०** पत्तियोंकी बनी छतरी।-**पुट**-पु० पत्तीका पान्न, रोना।-**पुरा**-**खी०** एक प्रकारकी नाव जिसकी लंबाई १६ हाथ और चौड़ाई और ऊँचाई दोनों ४८ हाथ होती है।-**पुष्प**-पु० रक्त तुलसी; फूल-पत्ता, मामूली मेट, लत्तायकी मामूली चीजें।-**पुष्पक**-पु० मोजक।-**पुष्पा**-**खी०** काल तुलसी; तुलसी।-**बंध**-पु० फूलोंसे किया जानेवाला विशेष प्रकारका शृंगार।

—**बाह**-पु० डोंडा।-**भंग**-पु० चंदन, कस्तूरी, केसर आदिसे कपोल, स्तन आदिपर बनाये जानेवाले विशेष प्रकारके चिह्न, बूटे आदि।-**भंगि**,-**भंगी**-**खी०** दे० 'पत्रभंग'।-**माल**-पु० वेत।-**बीबन**-पु० नया पत्ता, किशलय।-**रचना**,-**रेखा**,-**लेखा**-**खी०** पत्रभंग।

—**रथ**-पु० पक्षी।-**लता**-**खी०** वह लता जिसमें पत्ते ही पत्ते हों लंबी छुरी।-**बहरी**,-**बहि**,-**बह्नी**-**खी०** पत्रभंग।-**बाज**-पु० चितिया; पंखवाला बाण।-**बाह**-पु० दे० 'पत्रवाल'।-**बाह**,-**बाहक**-पु० पक्षी; चिट्ठी के जानेवाला; बाण।-**विशेषक**-पु० पत्रभंग।-**विष**-पु० पत्तीसे प्राप्त विष।-**वेह**-पु० कानका एक गहना,

ताटक।-**व्यवहार**-पु० खल-किताबत, लिखा-पढ़ी।

—**झवर**-पु० एक प्राचीन अनार्य जाति जो पत्तोंसे अपनी देह सजाती थी।-**झाक**-पु० पत्रबहुल झाक, ऐसी तर-

कारी जिसमें पत्तीका बाहुल्य हो।-**झिरा**-**खी०** पत्तेकी नस; पत्रभंग।-**श्रींगी**-**खी०** एक लता, मूलकानी।

—**शेणी**-**खी०** मूलकानी; पत्तीकी पंक्ति।-**शेह**-पु० वेल्का पेड़।-**सुचि**-**खी०** काँटा।-**हिम**-पु० ऐसा मोसम जिसमें पाखा पड़े या अधिक ठंडक रहे, हिमवर्धन।

पत्रक-पु० [सं०] पत्ता; तेजपत्ता; पत्रभंग; पत्तीकी श्रेणी।

पत्रचाप-पु० (पेपरबेट) लकड़ी, शीशे, पत्थर आदिका वह छोटा टुकड़ा जिसका प्रयोग कागजपत्रोंकी दबावे रखने, हवामें उड़ जानेसे रोकनेके लिए किया जाता है, पत्रभारक।

पत्रचा-**खी०** [सं०] पत्ररचना; बाणमें पंख लगाना।

पत्रभारक-पु० (पेपरबेट) दे० 'पत्रचाप'।

पत्रोग-पु० [सं०] बकम, पतंग; मोजपत्र नामका बृक्ष; कमलघट्टा।

पत्रांगुलि-**खी०** [सं०] पत्रभंग।

पत्रांजन-पु० [सं०] स्वाही।

पत्रा-पु० पंचांग; पन्ना।

पत्राख्य-पु० [सं०] तालीसपत्र; तेजपात।

पत्रासार-पु० लिखा-पढ़ी, खल-किताबत।

पत्राख्य-पु० [सं०] पिपरामूल; पर्वतराज; तालीसपत्र।

पत्राख्य-पु० [सं०] पतंग, बकम।

पत्राख्य-पु० [सं०] बृहदनी; कासाह।

पत्रावलि-**खी०** [सं०] गेरू; पत्तीकी पंक्ति या श्रेणी; पत्रभंग।

पत्रावली-**खी०** [सं०] दे० 'पत्रावलि'; पीपलकी कोंपलोंके साथ जो और मधुका मिश्रण।

पत्राहार-पु० [सं०] सिर्फ पत्तियों काकर रचना।

पत्रिका-**खी०** [मं०] चिट्ठी; कागजका कोई टुकड़ा या पन्ना; एक तरहका कर्पूर; पत्ती; पाक्षिक, मासिक आदि पत्र (आ०)।

पत्रिकाख्य-पु० [सं०] एक तरहका कर्पूर।

पत्रिणी-**खी०** [सं०] अंबुवा, कोंपल।

पत्री-**खी०** [सं०] चिट्ठी; अंबुवा।

पत्री (विन्)-**वि०** [सं०] पत्रदार; पत्तियों या पत्रोंवाला; रथवाला। पु० बाण; पक्षी; बाज; वृक्ष; पर्वत; रथ; ताड़।

पत्रोपहृर-पु० [सं०] कासमर्द; कसीदी।

पत्रोर्ण-पु० [सं०] रेशमी वस्त्र; सेनापाठा।

पत्रोत्तास-पु० [सं०] अंबुवा।

पत्सल-पु० [सं०] मार्ग, सड़क।

पत्र-पु० [सं०] मार्ग, रास्ता; कार्य या व्यवहारकी पद्धति; † दे० 'पथ'।-**कल्पना**-**खी०** राजमरी।-**गामी**-(**मिन्**),-**कारी**-(**मिन्**)-पु० पथिक, राही।-**वर्षक**,-**प्रवर्षक**-पु० राह दिखानेवाला, रहनुमा।-**सुंदर**-पु० एक पौधा।-**स्व**-**वि०** जो मार्गमें हो, मार्गल।

पत्रक-पु० [सं०] रास्तेका ज्ञानकार; मार्गदर्शक, 'गाइड'।

पत्रनार-**खी०** उपले पायना; मारने-पीटनेकी क्रिया।

पत्र(२)-पु० [सं०] सड़क; मार्ग; गमन-कला।

पथर-‘पथर’का समासगत-विकृत रूप । —कला-‘की’
दे० ‘पथरकला’ । —कटा-‘पु०’ दे० ‘पथरकटा’ ।

पथरबारा-स० क्रि० (जीवार आदि) पथरपर रगड़कर
सेज करना; ठगना ।

पथरबाना-अ० क्रि० सूझकर पथर जैसा कड़ा हो जाना;
रसहीन और कठोर हो जाना; झुझ हो जाना; चेतना-
शून्य हो जाना, जड़ हो जाना, निर्जीव हो जाना ।

पथरी-‘की०’ पथरकी कुंभी, पथरकी मछिया; उत्तरे
आदिकी बार तेज करनेका पथरका टुकड़ा, सिन्धी: चक-
मक पथर; पक्षियोंके पेटका वह भाग जहाँ पहुँचकर उनकी
साथी हुई कमी चीबोंमें पचती है; एक तरहकी मछली; जाय-
कलमी जातिका एक ऐक जिसके कलोंसे तेज निकाला
जाता है; एक रोग जिसमें श्वकी आदिमें पथरके छोटे टुकड़े
जैसे पिंड बन जाते हैं, अमरी ।

पथरीका-वि० जिसमें पथरके टुकड़े मिले हों, पथरके
टुकड़ोंसे युक्त ।

पथरीटा-पु० पथरका कटोरा जैसा पात्र ।

पथरीटी-‘की०’ पथरकी हूँसी, पथरी ।

पथरीबारा-पु० गोबर पाथनेकी जगह ।

पथिक-पु० [सं०] रास्ता चलनेवाला, राही, बटोही,
यात्री । —संतति:—संहति-‘की०’ साथ ।

पथिका-‘की०’ [सं०] मुनका; एक तरहकी अगूरी शराब ।

पथिकाग्र-पु० [सं०] पथिकोंके ठहरनेकी जगह, बस-
झाका, सराय ।

पथि-पु० [सं०] मार्ग, रास्ता; कार्य या व्यवहारकी
पद्धति; यात्रा; संप्रदाय, मत; एक नरक (समासमें ‘नृ’का
लोप हो जाता है । इसका प्रथमात्म रूप ‘पंथा’ होता है ।
समासमें उत्तरपदके रूपमें प्रयुक्त होनेपर इसका रूप ‘पथ’
ही जाता है, जैसे—एतिपथ, सत्यवा; हिंदीमें यही रूप
प्रयुक्त होता है) । —(वि)कार-पु० रास्ता बनानेवाला ।
—कृत-पु० मार्गदर्शक (वै०); अग्नि । —देव-पु० सार्व-
जनिक मार्गपर लगनेवाला कर, ‘रोडसेस’ । —ह्रस्व-पु०
खरिद वृक्ष । —प्रज्ञ-वि० मार्गसे परिचित । —प्रिच-
पु० मिलनसार हमराही । —बाहक-वि० लिप्टुर, निर्दय ।
पु० शिकारी, बहेलिया; शोख होनेवाला, मोटिया । —ख
वि० जाता हुआ, चलनेमें प्रवृत्त ।

पथिक-पु० [सं०] पथिक, यात्री ।

पथी(थि)र-पु० [सं०] पथिक ।

पथीय-वि० [सं०] पथ-संबंधी; पथका ।

पथेय-पु० दे० ‘पाथेय’ ।

पथेरा-पु० ईंट, खपड़ा पाथनेवाला, कुम्हार ।

पथीरा-पु० गोबर पाथनेकी जगह ।

पथ्यार-पु० प्रस्तार, विस्तार (रास्ते) ।

पथ्य-वि० [सं०] कामका, चिपकत (आहार, जीव्य आदि);
उज्जिता; अनुकूल । पु० रोगीकी दिवा जानेवाला, रोगकी
क्षितिके अनुकूल और हितकर आहार; रोगीके लिए हित-
कर वस्तु; कल्याण; दृष्टका देव; सेवा भक्त । —प्राक-
पु० चौकाईका शाक । पु०—से रहना—कुपथ्य न
करना, बर्जित वस्तुओंसे परहेज करना, परहेजसे रहना ।
पथ्या-‘की०’ [सं०] ‘पथ’ एक मात्रिक छंद; चिमिट्या; नन-

कोका; सक्क, रास्ता ।

पथ्यापथ्य-वि० [सं०] रोगकी अवस्थामें हितकर और
अहितकर ।

पथ्याधान, पथ्योदन-पु० [सं०] पाथेय, संवत् ।

पथ्यासी(थि)र-वि० [सं०] पथ्य खानेवाला ।

पथ-पु० [सं०] पैर; डग, कदम; पैरका निशान, चरण-
चिह्न; चिह्न, निशान; खान; आहार; योग्यता या कार्यके
अनुसार नियत स्थान, ओहदा, दर्जा; विषय; पात्र;
किसी छंद या पथका चरण या चौथा भाग; विमर्श,
प्रत्यय युक्त शब्द; मंत्रमें प्रयुक्त शब्दोंकी अलग-अलग
करना, मंत्रगत शब्दोंका पृथक्करण (वै०); वाक्य आदिका
कोई अंश; विसातका कोष्ठ या खाना; किरण; प्रवेश; दान-
की ये वस्तुएँ—जूता, छाता, कपड़ा, भंगूटी, कर्मबद्ध,
आसन, बरतन और भोग्य वस्तु (पु०); वस्तु; व्यवसाय;
नाण, रक्षा; बहाना; कर्ममूल (ग०); [हिं०] ईश प्रार्थना-
संबंधी गीत; भक्तिपरक गीत, भजन । —कंज—कमल-
पु० कमलवत् चरण । —कार—कृत-पु० पद-पाठका
रचयिता (वै०) । —कर्म-पु० चलना, डग भरना; वेद-
मंत्रोंके पदोंकी एक-दूसरेमें अलग करनेका क्रम । —ग-
पु० पैरक सिपाही । —गति-‘की०’ चलनेकी धज । —जर-
पु० प्यादा । —चारण-पु० पैरक चलना । —कारी-
(थि)र-वि० पैरक चलनेवाला । —चिह्न-पु० पैरका
निशान । —चछेद-पु० किसी वाक्य या वाक्यांशके
पदोंकी एक-दूसरेसे अलग करना; किसी वाक्यके सहित
और समासगत पदोंकी विभक्त करना । —च्युति-वि०
जो अपने पद या दर्जेसे हटा दिया गया हो, जिसका पद
छीन लिया गया हो । —च्युति-‘की०’ पदच्युत होनेकी
क्रिया या दशा । —ज-वि० परसे उत्पन्न । पु० पैरकी
उपक्रिया; शूद्र । —जात-पु० परस्पर सबक पदों और
वाक्योंका समूह । —तल-पु० तलवा । —थ्याग-पु० अपना
पद या ओहदा छोड़ देना, अपने पद, ओहदेसे अलग हो
जाना । —प्राण-पु० जूता, खड़ाई आदि । —प्राण-
वि० दे० ‘पदप्राण’ । —थ्वरा-‘की०’ जूता । —वृक्षित-
वि० पैरों तक कुचला हुआ । —वारिका-‘की०’ विवाह ।
—व्यारस-पु० पैर रखना, डग भरना; पैरकी एक शूद्रा;
पदचिह्न; गोखरू; किसी रचनामें पदों या शब्दोंकी चुन-
चुनकर रखना, किसी रचनाके अंतर्गत पदों या शब्दोंका
निवेश । —पंकज—पद्म-पु० दे० ‘पदकमल’ । —पद्धति-
‘की०’ पदचिह्नोंकी कतार । —पछटी-‘की०’ [हिं०] एक
तरहका नाच । —पाठ-पु० वेदमंत्रोंका वह क्रम जिसमें
उनमें प्रयुक्त सभी पद विभक्त करके अपने मूल रूपमें अलग-
अलग रखे गये हों; वह ग्रंथ जिसमें वेदमंत्रोंका ऐसा संपा-
दन किया गया हो (संहिता-पाठका उलटा) । —पात-पु०
पैर रखना, डग भरना । —पूरण-पु० किसी छंदकी पूर्ति
करना । —बंध-पु० पग, डग । —बंधन-पु० शब्दोंका
विक्षेपण, शब्दोंकी निराधि । —बंधिका-‘की०’ टिप्पणी ।
—अंश-पु० पदच्युति । —माळा-‘की०’ मोहन-विद्या ।
—मूल-पु० तलवा; शरण, आश्रय (ग०) । —मैत्री-‘की०’
किसी छंद या पद्यमें एक ही शब्द या वर्णकी चमत्कारपूर्ण
आवृत्ति; दोस्ते भक्ति पदोंकी एक-दूसरेके अनुकूल स्थिति,

अनुप्रास । -बोजवा-झी० पदों या शब्दोंको जोड़ना, पदों वा शब्दोंको चुन-चुनकर रखना । -रिपु-पु० कौटा । -बाधा-पु० एक तरहका बोल । -विशेष-पु० दे० 'पदपाठ' । -विग्रहः-विच्छेद-पु० दे० 'पदच्छेद' । -विराम-पु० पद्यमें चरणके बादका विराम । -विहंगम-पु० उग, करम रखना; चरणविहंगम । -वेदी(विन्)-वि०, पु० शब्दशास्त्र या भाषा-विज्ञानका शास्त्र । -शब्द-पु० आहट, पैरकी धमक । -संघात-पु० संहितामें विभक्त पदोंकी एकमें मिलाना; संकलनकर्ता । -समय-पु० दे० 'पदपाठ' । -स्थ-वि० पैरल चलने-वाला; जो किसी बड़े दूत या ओहदेपर हो । -स्थान-पु० पैरका चिह्न ।

पदक-पु० पूजनके लिए बनायी हुई किसी देवताके चरणकी प्रतिमूर्ति; बालकोंको पहनाया जानेवाला एक प्रकारका गहना जिसपर किसी देवताका चरण बना रहता है; कोई बहुत अच्छा या कमालका काम करनेपर किसीको उपहार-रूपमें दिया जानेवाला मोने-बौंदी आदिका सिक्के जैसा गोल या अन्य आकारका टुकड़ा जिसपर प्रायः देनेवालेका नाम अंकित रहता है, तमगा; [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि; पग; स्थान; ओहदा; गल्लेका एक गहना; पटपाठका शास्त्र ।

पदम-पु० बादामकी जातिका एक पेड़ जिसका फल खाने और माला बनानेके काम आता है; * दे० 'पद्म' । -काष्ठ-पु० पद्मकाष्ठ ।

पदमाकर*-पु० दे० 'पद्माकर' ।

पदवाना-सं० क्रि० पदानेमें प्रवृत्त करना ।

पद्वि, पदवी-झी० [सं०] मार्ग, रास्ता; चलन, प्रणाली, पद्धति; स्थान; राज, संस्था आदिकी ओरने किसीकी दी जानेवाली आदर या योग्यतापूचक उपाधि, खिताब; दरजा, ओहदा ।

पदवीदान-सम्यारोह-पु० [सं०] दे० 'समावर्तन-संस्कार' ।

पदांक-पु० [सं०] पैरका निशान, पदचिह्न ।

पदांगी-झी० [सं०] हंसपदी नामकी लता ।

पदाति-पु० [सं०] पदका अंतिम भाग; किसी श्लोक वा पद्यके चरणका अंतिम भाग ।

पदांतर-पु० [सं०] दूसरा ढग या कदम; एक ढगी दूरी; दूसरा पद; दूसरा स्थान ।

पदाव्य-वि० [सं०] पदके अंतमें स्थित, अंतिम ।

पदाभोज-पु० [सं०] दे० 'पदकंज' ।

पदाकांत-वि० [सं०] पौनोंसे कुचला हुआ, पामाल ।

पदाघात-पु० [सं०] पैरका प्रहार ।

पदाज्ञि-पु० [सं०] पैरक सिपाही ।

पदास-पु० [सं०] दे० 'पदाति' ।

पदाति-पु० [सं०] पैरल चलनेवाला; प्यादा, पैरल सिपाही; पैरल यानी ।

पदासिक, पदासीव-पु० [सं०] दे० 'पदाति' ।

पदासिका*-झी० पैरक सेना ।

पदासी(विन्)-पु० [सं०] पैरक सिपाही । वि० (बह सेना) जिसमें पैरल सिपाही हों; पैरल चलनेवाला ।

पदादि-पु० [सं०] छंदके चरणका आरंभ; शब्दका पहला

वर्ण ।

पदाधिकारी(विन्)-पु० [सं०] वह जो किसी पदपर नियुक्त हो, ओहदेदार ।

पदाध्यक्ष-पु० [सं०] पदपाठके अनुसार वेद पढ़ना वा उसका पाठ करना ।

पदाना-सं० क्रि० पदानेमें प्रवृत्त करना; (शुद्धी-बड़े आदि-के सेलमें) बार-बार हराना और दोहराना; हरान करना, परेशान करना ।

पदानुवा-वि० [सं०] जो पीछे-पीछे चले; अनुकूल । पु० पीछे चलनेवाला, अनुयायी; साथी ।

पदानुराग-पु० [सं०] नौकर; सेना ।

पदानुशासन-पु० [सं०] श्वाकरण ।

पदानुस्मार-पु० [सं०] एक प्रकारका साम ।

पदाब्ज-पु० [सं०] दे० 'पदकंज' ।

पदायता-झी० [सं०] जूता ।

पद्वार-पु० [सं०] पैरकी बूल, चरणरज; पैरका ऊपरी भाग ।

पद्वारव-पु० दे० 'पदार्थ' ।

पद्वारविह-पु० [सं०] दे० 'पदकंज' ।

पदार्थ-पु० [सं०] अतिथिकी पैर बोनैके लिए दिया जाने वाला जल ।

पदार्थ-पु० [सं०] पद वा शब्दका अर्थ; वह वस्तु जिसका किसी शब्दमें बोध हो; उन विषयोंमेंसे कोई एक जिनके नाम, रूप आदिका कथन न्याय, वैशेषिक आदि दर्शनोंमें किया गया है; कोई अभिप्रेत वस्तु । (म्यायमें १६, वैशेषिकमें ६ वा ७, सांख्यमें २५, योगमें २६ और वेदांत में २ पदार्थ माने गये हैं ।) -विद्या-झी० वह विद्या जिसमें पदाधीका निरूपण किया गया हो ।

पदार्पण-पु० [सं०] पैर रखना; आगमन (आदरस्वच) ।

पदाक्षि-पु० [सं०] पैरका ऊपरी भाग ।

पदावनत-वि० [सं०] पैरोंपर झुका हुआ, नीला ।

पदावनति-झी० [सं०] (हीमरेडेशन) ऊँचे पदसे हटाकर नीचे पदपर कर दिया जाना, तनजुली ।

पदावली-झी० [सं०] पदों वा शब्दोंकी परंपरा; किसी रचनामें निबद्ध अनेक पद वा शब्द; शब्दोंकी लड़ी; किसी कवि वा लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्द-समूह; [वि०] भजनों आदिका संग्रह ।

पदाश्रित-वि० [सं०] आश्रयमें रहनेवाला, झरानमें आया हुआ ।

पदास-झी० पादनेका भाव; पादनेका शारीरिक वेग ।

पदासन-पु० [सं०] पादपीठ, पैर रखनेकी छोटी चौकी ।

पदासा-वि० जिसे-पदास लगी हो ।

पदासीन-वि० [सं०] (किसी विशेष) पदपर आकृष्ट ।

पदाहत-वि० [सं०] पैरसे टुकड़ाया हुआ ।

पदिक-वि० [सं०] पैरल; एक ढग जितना लंबा; जिसमें एक ही विभाग हो । पु० प्यादा; पैरका अग्रभाग; * गल्लेका एक आभूषण जिसपर किसी देवताका चरण बना रहता है; गल्लेका एक गहना, जुगनु; रत्न; तमगा । -हार-पु० रत्नोंकी माला ।

पदी-झी० [सं०] पदोंका समूह (समासांतमें) । * पु० प्यादा, पदाति ।

पदु-पु० दे० 'पद'; बदला ।

पदुम-पु० कोनेके शरीरपर होनेवाला एक प्रकारका चिह्न;
* दे० 'पद्म' । वि० दे० 'पद्म' ।

पदुमिनी-०-ली० दे० 'पद्मिनी' ।

पदेक-पु० [सं०] नाज ।

पदेन-अ० [सं०] पदकी हैसियतसे ('पद'का करण कारकका रूप) ।

पदोद्या-वि० जो बहुत पादे; कायर ।

पदोदक-पु० [सं०] वह जल जिससे पैर धोया गया हो,
चरणामृत ।

पदोदति-ली० [सं०] कर्मचारीके पदकी वृद्धि, तरकी ।

पद्-पु० [सं०] पैर; चतुर्ध भाग । -ग-पु० पैदल
सिपाही । -रथ-पु० ध्याता, पैदल सिपाही ।

पद्-वि० पदोका ।

पदटिका-ली० [सं०] एक मानिक छद्म ।

पदवी-ली० दे० 'पदटिका' ।

पदरति, पदरती-ली० [सं०] पद्म, मार्ग, रास्ता; प्रथा,
रीति, परिपाटी, प्रणाली; पक्षि, पौंस; वह ग्रंथ जिसमें
किसी ग्रंथका सारासं समझाया गया हो; जाति आदि
सूचित करनेके लिए जोड़ा गया उपनाम जिसे नामके
आगे या पीछे लगाते हैं (जैसे-मिह, लाल, बन्ध, घोष
आदि); वह पुस्तक जिसमें कर्मकांडकी कोई विधि लिखी
गयी हो ।

पदरि, पदरी-ली० दे० 'पदटिका' ।

पद्विम-पु० [सं०] पैरका ठंडापन, पथशैल ।

पद्म-पु० [सं०] कमल; वे विदियाँ जो हाथीकी सूँघ आदि-
पर होती हैं; एक प्रकारकी मोर्चाबंदी, पद्मचूड़; कुबेरकी
नौ निधियोंमेंसे एक; १०० नीलकी सख्या; ६ चक्रोंमेंसे
कोई एक (तं०); पद्मकाष्ठ; सीसा; एक रतिवध; पुष्कर-
मूल; एक पुराण; एक कल्प (पु०); हाथ, धम्मा, चिह्न;
मनुष्यके शरीरपरका कोई दाग, तिल आदि; पैरमें होने-
वाला एक आम्पव्यक्त चिह्न (सामुद्रिक); खानोंका एक
भाग (मातृविभा); एक प्रकारका मंदिर; एक आसन;
एक नक्षत्र; एक गंधद्रव्य; कमलकी जड़; एक प्रकारका
सौंप; एक नरक; एक बर्णवृत्त; राम; कात्तिकेवका एक
अनुचर; भारतके नवें चक्रवर्ती, कश्मीरका एक प्राचीन
राजा जिसने पद्मपुर बसाया था । वि० सी नील । -कंद-
पु० कमलकी जड़ । -कर-पु० विष्णु; सूर्य; कमल जैसा
हाथ । वि० जिसके हाथमें कमलका फूल हो । -करा-
ली० लक्ष्मी । -कर्णिका-ली० पद्माका बीजकोश; पद्म
नामक मूहमें ध्युत सेनाका केंद्रभाग । -काष्ठ-पु० एक
वृक्ष जिसकी लकड़ी दवाके काममें आती है, पद्मकाष्ठ ।
-किञ्जलक-पु० कमलका नेसर । -कीट-पु० एक
बैसाँ कीड़ा । -केतन-पु० गवईका एक पुत्र । -केतु-
पु० एक प्रकारका पुच्छर तारा । -केशर-पु० कमल-
पुष्पका सूत्र । -कोश-पु० कमलका संपुट; कमलके
भीतरका छया जिसमें उसके बीज उगते हैं; संपुटित
कमलके आकारकी रंगलियोंकी एक मुद्रा । -क्षेत्र-पु०
उड़ीसा प्रांतके अंतर्गत एक तीर्थ । -खंड-पु० पदराशि ।
-गंध-गंधि-वि० कमलकी-सी गंधवाला । पु० पद्म-

काष्ठ । -गर्भ-पु० पद्मकीलका भीतरी भाग; ब्रह्मा; शिव;
विष्णु; सूर्य । -गुप्ता-गुप्ता-ली० लक्ष्मी; खनग ।
-हारिणी-ली० नैदा; शमी; हल्दी । -ज-जात-
पु० ब्रह्मा । -तंतु-पु० कमलकी नाल, मृणाल ।
-द्वय-पु० लोहान । -नाभ-पु० विष्णु; अक्ष
चक्रानेके समय पदा जानेवाला एक मंत्र; एक नाग ।
-नाभि-पु० विष्णु । -नाल-ली० कमलकी डंठी ।
-निधि-ली० कुबेरकी एक निधि । -निमीलन-पु०
कमलका संपुटित होना । -नेत्र-वि० जिसके नेत्र कमल-
के समान हों । पु० एक भावी बुद्ध; एक पक्षी । -पद्म-
पूर्ण-पु० पुष्करमूल; कमलका पत्ता, पुरबन; कमलकी
पंखड़ी । -पाणि-वि० जिसके हाथमें कमलका फूल हो ।
पु० ब्रह्मा; विष्णु; एक बुद्ध; सूर्य । -पुष्प-पु० कनेरका
पेड़; एक पक्षी । -पुराण-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक ।
-प्रभ-पु० एक भावी बुद्ध (बौ०); वर्तमान अवसर्पणके
छठे अर्धवृ (जै०) । -प्रिया-ली० जस्ताकार मुनिकी पत्नी
मनसा देवी । -बंध-पु० एक प्रकारका विप्रशाम्य या
विमालकार जिसमें अक्षर इस ढंगमें लिखे जाते हैं कि
उनमें कमलका फूल बन जाता है । -बंधु-पु० सूर्य;
अमर । -बीज-पु० कमलमुद्रा । -भय-भू-पु०
ब्रह्मा । -भास-पु० विष्णु; शिव (?) । -माकिनी-
ली० लक्ष्मी । -माकी(किं)-पु० एक राक्षस ।
-मुक्ती-ली० द्व । -मुद्रा-ली० हाथकी रंगलियोंकी
एक मुद्रा (तं०) । -धोवि-पु० ब्रह्मा । -शग-पु०
एक प्रसिद्ध रत्न, लाल, मानिक । -रेखा-ली० कमलके
आकारकी इस्तरखा जो अति धनवात् होनेका लक्षण
माना जाती है । -लांछन-पु० ब्रह्मा; सूर्य, कुबेर;
राजा । वि० जिनके हाथमें पथरेखा हो । -लांछन-
ली० लक्ष्मी; सरस्वती; तारा देवी । -लांछन-वि० कमल
जैसे नेत्रोंवाला । -वर्ण, वर्णक-पु० पुष्करमूल ।
-वासा-ली० लक्ष्मी । -विभूषण-पु० किसी
असामान्य या विशिष्ट सेवाके लिए स्वतंत्र भारत सरकार
द्वारा दिया जानेवाला एक सम्मान । -वीर-पु० दे०
'पद्मवीर' । -वीर्याम-पु० यक्षाना । -वृक्ष-पु०
पद्मकाष्ठ । -वैश-पु० विधाधरोंका एक राजा ।
-व्याकोश-पु० संपुटित कमलके आकारकी तैल ।
-व्यूह-पु० प्राचीन कालकी एक प्रकारकी मोर्चाबंदी
जिसमें सैनिकोंको इस ढंगमें खड़ा करते थे कि कमलपुष्प-
का आकार बन जाता था । -व्री-पु० अवलोकितेश्वर;
एक बोधिसत्व । -बंध-पु० दे० 'पद्मबंध' । -संकाशा-
वि० कमल जैसा । -संभव-पु० ब्रह्मा । -सद्मा-
(ध्व)-समासव-पु० ब्रह्मा । -स्व-पु० कमल-
पुष्पोंकी माला । -स्वभा-ली० गंगा; दुर्गा । -हस्त-
वि०, पु० दे० 'पद्मकर' । -हस्ता-ली० लक्ष्मी ।
-हास-पु० विष्णु ।

पद्मक-पु० [सं०] पद्मचूड़; हाथीकी सूँघपरके दाग; पद्म
लकड़ी लकड़ी; जुद्ध नामक जीववि; पद्मासन ।

पद्मकी(किं)-पु० [सं०] हाथी; जुद्धवृक्ष ।

पद्मांतर-पु० [सं०] पद्मक-वृक्ष ।

पद्मा-ली० [सं०] लक्ष्मी राजा वृद्धवृक्षो पुत्री; मनसा

देवी; कर्मांग; कुसुमका फूल; गेंदा ।

पञ्चाकर-पु० [सं०] जलाशय; वह बड़ा तालाब जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं; कमल-राशि; बिंदीके एक प्रसिद्ध कवि ।

पञ्चाक्ष-पु० [सं०] कमलनट्टा; सूर्य; विष्णु । वि० जिसके जेज कमलके समान हैं ।

पञ्चाख-पु० दे० 'पञ्चाक' ।

पञ्चाट-पु० [सं०] चक्रवर्त्त ।

पञ्चाधीश-पु० [सं०] विष्णु ।

पञ्चाक्षय-पु० [सं०] ब्रह्मा ।

पञ्चालवा-की० [सं०] लक्ष्मी; लौह ।

पञ्चावली-की० [सं०] मनसा देवी। एक प्राचीन नदी। एक झरांगना; पटनाका एक पुराना नाम; उज्जयिनीका एक पुराना नाम; लोककथाके अनुसार सिद्धलकी एक राजकुमारी जो चितौरके राजा रत्नेसकेनो प्याही थी ।

पञ्चासन-पु० [सं०] एक प्रकारका योगासन जिसमें पारुषी मारकर तनकर बैठते हैं; ब्रह्मा; शिव; सूर्य ।

पञ्चाङ्गा-की० [सं०] गेंदा; लौह ।

पद्मिनी-की० [सं०] कमलका पौधा; कमलकी नाल; कमलकी समूह; कमलसे युक्त जलाशय; इक्षिणी; चार प्रकारकी जियोमेंसे प्रथम भेगीकी ली (कौकशाक); चितौरकी एक प्रसिद्ध रानी । -**कंडक-पु०** एक प्रकारका छुड़ (कुड़) रोग । -**काल-पु०** सूर्य । -**कांड-पु०** कमलोंका समूह; वह स्थान जहाँ कमलोंकी प्रचुरता हो । -**बल्लभ-पु०** सूर्य । -**बंड-पु०** दे० 'पञ्चाखंड' ।

पद्मी(शिव)-वि० [सं०] कमलसे युक्त, कमलवाला; दामदार । पु० विष्णु; शायी ।

पद्मेराय-पु० [सं०] विष्णु ।

पद्मोत्तम-पु० [सं०] एक समाधि; एक लोक; एक बुद्ध ।

पद्मीसर-पु० [सं०] कुसुम; एक बुद्ध ।

पद्मोज्ज्व-पु० [सं०] ब्रह्मा ।

पद्मोज्जवा-की० [सं०] मनसा देवी ।

पद्म-वि० [सं०] पद-संबंधी; पदोंवाला; शब्द-संबंधी; अंतिम । पु० चार चरणोंवाला छंद, छंदोबद्ध रचना, गद्यका जलटा; शब्दखंड; शब्द; वह कीचड़ जो पूरा-पूरा न सखा हो; प्रसास, स्तुति ।

पद्मग्र-वि० [सं०] पद्मक, छंदोबद्ध ।

पद्मा-की० [सं०] पद्मलक्ष्मी; सड़कके किनारेकी पैदल चलनेकी पटरी; शर्करा ।

पद्मात्मक-वि० [सं०] दे० 'पद्ममय' ।

पद्म-र० [सं०] आम्र, गेंद ।

पद्म-पु० [सं०] भूलेका; सड़क; रथ ।

पद्मा(हृन्)-पु० [सं०] मार्ग ।

पद्मरत्ना-अ० कि० पद्मरत्ना, जाना ।

पद्मरत्ना-सं० कि० आदरके साथ लिखा जाना; आदरपूर्वक बैठाना; स्थापित करना ।

पद्मरावनी-की० पद्मरत्नेकी क्रिया ।

पद्मरत्ना-अ० कि० पदार्पण करना; चला जाना । सं० कि० पद्मरत्ना ।

पद्म-प्र० एक प्रत्यय जो माववाचक संज्ञा बनानेके लिए

जातिवाचक तथा गुणवाचक संज्ञाओंसे जोड़ा जाता है (जैसे-गंगावरपन आदि) । पु० पण, प्रतिष्ठा; आयुके चार भागोंमेंसे कोई एक; पत्ता; 'पानी', 'पान' और 'पौंच'का समासगत विकृत रूप) । -**कटा-पु०** लेतोंमें इपरसे उपर पानी ले जानेवाला आदमी । -**कपवा-पु०** शरीरमें कटने, छिन्ने आदिकी जगहपर बौधा जानेवाला गीला कपड़ा । -**काक-पु०** अतिदृष्टिजनित अकाश । -**कुट्टी-की०** वह छोटा खरक जिसमें दूध या बिना दाँतके लोग खानेके लिए पान कूटते हैं । -**कोबा-पु०** एक जलीय पक्षी, जल-कौवा । -**गान्धा-पु०** वह लेत जिसमें पानी भरा हो; लीचा हुआ लेत । -**गोटी-की०** मोसिवा शीतला । -**घट-पु०** पानी भरनेका घाट । -**घाही-की०** पानीकी शक्तिसे चलनेवाली चक्की । -**खोरा-पु०** छोटे मुँह और पेटका जलपात्र । -**खट्वा-पु०** दे० 'पानदान' । -**कुट्टा-पु०** गोताखोर; एक जलपक्षी जो पानीमें दूध-दूधकर मछलियाँ पकड़ता है; एक प्रकारका पानीमें रहनेवाला सूत (जनश्रुति) । -**कुट्टी-की०** एक जलपक्षी जो पानीमें दूध-दूधकर मछलियाँ पकड़ता है; पानीके भीतर-भीतर चलनेवाला एक प्रकारका जहाज, 'सर्वमेटीन' । -**पद्मी-की०** पानी लगाकर हाथसे कैलाशी जानेवाली रीढ़ी । -**बट्टा-पु०** पानके बोरे रखनेका एक प्रकारका डिब्बा । -**बिडिया, -बिडली-की०** पानीमें रहनेवाला एक प्रकारका एक मारनेवाला कीड़ा । -**भला-पु०** केवल पानीमें पकाया हुआ भात । -**भरा-पु०** पानी भरनेवाला नौकर । [की० 'पनभरिन'] -**छगा-पु०** दे० 'पनघटा' । -**बाही-की०** पानका लेत, बरेजा । पु० तमोली । -**बार-पु०** पत्तल । -**बारा-पु०** पत्तल; पत्तलभर भोजन; एक प्रकारका सोंप । -**बारी-की०**, पु० दे० 'पनवासी' । -**सखिया-की०** एक प्रकारका फूल; इस फूलका पौधा । -**सखार्रा-पु०** व्याक, पौमरा । -**साखा-पु०** पौंच बलियोंवाली महाल । -**सार्रा-पु०** किसी स्थानकी पानीसे एकदम तर कर देनेकी क्रिया; बहुत अधिक सिकाई । -**साल, -साखा-की०** पौतरा । -**सुइया-की०** छोटी डोंगी जिसमें खेनेवाला दोनों ओरके ढाँड़े चला सकता है । -**सेरी-की०** दे० 'पसेरी' । -**सोह्रा-की०** दे० 'पन-सुरवा' । -**इवा-पु०** पान या हाथ पीनेके लिए पानी रखनेकी तमोक्तियोंकी इर्षी । -**इरा, -हारा-पु०** पानी भरनेवाला नौकर, पनभरा । [की० 'पनहारन, पन-हारिन']

पनग-पु० दे० 'पन्नग' ।

पनगमि-की० पनगी, सपिणी ।

पनच-की० अनुष्ठी कीर्ति; † बौमका छिलका ।

पनपना-अ० कि० पनवित होना; बराबरा होना; फूलना-फूलना; फिरसे स्वस्थ होना ।

पनपाना-सं० कि० किसीके पनपेका कारण होना ।

पनच-पु० दे० 'प्रणव'; एक बाजा ।

पनचौ-पु० इमेक आदिमें बीचोबीच लगायी जानेवाली पानके आकारकी चौकी ।

पनस-पु० [सं०] कटखल; काँटा; एक तरहका सोंप; विनी-बणका एक मंत्री; रामकी सेनाका एक बानर । -**साक्षिका,**

—वालिका—खी० कटहल ।

पनसिका—खी० [सं०] एक क्षुद्र रोग जिसमें कान और गर्दनपर नोकदार कुसियाँ निकल आती हैं ।

पनसी—खी० [सं०] दे० 'पनसिका' ।

पनह—खी० पनाह ।

पनहा—पु० कपड़े आदिकी चौलाई; भेद; चोरी गये मालका पता लगानेवाला या इसके लिए दिया जानेवाला पुरस्कार ।

पनहिया—खी० दे० 'पनही' ।

पनही—खी० जूता ।

पना—पु० अपनेने पके या आगमें पकाये हुए आम, इमली आदिके रस या घूरेसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका पेय पदार्थ, पानक, पन्ना ।

पनारी—पु० मातीका ढेरा ।

पनार—पु० दे० 'पनारा' ।

पनारा, पनाला—पु० नावदान; नाला; प्रवाह ।

पनारी—खी० नाली, मोरी; * धारा, बहाव; एक भोज्य वस्तु । —दार चादर—खी० लोहेकी कलईदार चादर जिसमें नालियाँ ली बनी होती हैं, कोरीलेटेडरिन ।

पनाली—खी० मोरी, नाली ।

पनासना—सं० कि० पालना-पोसना ।

पनाह—खी० [फा०] शत्रु आदिसे बचाव, परित्राण; शरण; आश्रय; शरण लेनेकी जगह, शरणस्थ । मु० (किसीसे)—आगना—किसी कष्टग्रस्त वस्तु वा हानि पहुँचानेवाले व्यक्ति-के ससर्गसे बचना । —छेना—शरणके लिए कहाँ जाना ।

पनि—'पानी'का ममासमें प्रयुक्त विकृत रूप । —गर—वि० पानीदार । —घट—पु० दे० 'पनघट' । —हार—पु० दे० 'पनहरा' । —हारी—खी० पनहारिन ।

पनिच—खी० दे० 'पनच' ।

पनिचा—वि० पानीका; पानीमें उत्पन्न । पु० पानी । —स्रोत—वि० बहुत गहरा ।

पनिपाना—सं० कि० पानीसे सरोवर करना । ज० कि० पानीसे चपचपाना ।

पनिपारा—पु० बाढ़ ।

पनिपाला—पु० एक तरहका फल ।

पनिहा—वि० जो पानीमें रहे; पानीका; जिसमें पानीका मेल हो, जलयुक्त । पु० दे० 'पनहा' ।

पनी—पु० प्रण करनेवाला, कौल करनेवाला । † खी० पत्नी, झुनहला-बपहला कामज ।

पनीर—पु० [फा०] फाड़े दूधका थका, छेना; इससे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी टिकिया जो खानेके काममें आती है; पानी निचोड़े हुए दहीसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका खाद्य पदार्थ । मु० —बढाना—कोई काम निकालनेके लिए किसीकी चापखूरी करना । —जमावा—कोई ऐसा काम करना जिससे और भी कार्य सिद्ध हो सकें ।

पनीरी—खी० और जगह लगानेके लिए उगाये हुए छोटे पौधे; पनीर उगानेकी न्यारी ।

पनीला—वि० जिसमें पानी मिला हो, जलसे युक्त । पु० दे० 'पनैला' ।

पनुआ—पु० गुरुके ककारेका धोवन जिसे सारवतकी तरह पीते हैं । वि० जिसमें आनन्दयकतासे अधिक पानी पक

गया हो, पीका ।

पनेयी—खी० वह रोये जिसमें पलेथनकी जगह पानी लगाया गया हो ।

पनेरी—खी० दे० 'पनीरी' । पु० तंबोली ।

पनेवा—पु० एक पक्षी ।

पनेहरी—खी० पनहरा ।

पनेहा—पु० पनहरा ।

पनैला—पु० एक तरहका गाढ़ा, चिकना और चमकदार कपड़ा जो अधिकतर अस्तरके काम आता है ।

पनीआ—पु० पानके पत्तेकी पकौड़ी ।

पनीटी—खी० पान रखनेकी पिटारी, बौसका पानदान ।

पन्न—वि० [सं०] गिरा हुआ, नीचे खसका हुआ; गया हुआ, गत । पु० नीचेकी ओर जाना, अभोगमन; रेंगना ।

—ग—पु० दे० क्रममें ।

पन्नई—वि० पन्नेके रंगका ।

पन्नग—पु० [सं०] सोंप (जो रंगकर चल्ता है); सीसा; पदमकाष्ठ; * पन्ना । —केसर—पु० नागकेसर । —नाशन—पु० गरुड़ । —पति—पु० जेपनाग ।

पन्नगारि, पन्नगान—पु० [सं०] गहड़ ।

पन्नगिनि—खी० दे० 'पन्नगी' ।

पन्नगी—खी० [सं०] सपिणी, सपिन; एक बूटी ।

पन्नदा, पन्नाही—खी० [सं०] जूता ।

पन्ना—पु० हरे रंगका एक प्रसिद्ध रत्न, जसुरद; पुस्तक आदिके दो पृष्ठ, बर्क; जूतका पान; मेथेके कानका वह चौड़ा हिस्सा जहाँसे ऊन काटते हैं, आम आदिका पना ।

पन्नी—खी० रंगे आदिका इलका पत्तर जिसके टुकड़ोंकी दूसरी चीजोंपर सुदृढताके लिए चिपकाते हैं; वह कागज या चमड़ा जिसपर सोने-चाँदीका पानी चढ़ाया गया हो; एक भोज्य वस्तु; * नाइकी एक आष सेरकी लौल ।

—साज—पु० पन्नी बनानेका पेशा करनेवाला । —साज्जी—खी० पन्नीसाजका काम, पन्नीसाजका पेशा ।

पन्नी—पु० [फा०] पन्नाओंकी एक जाति ।

पपका—पु० लकड़ी आदिका सूखा छिलका; रोटीका छिलका ।

पपकिया, पपरिया—वि० जिसमें पपकी हो, पपकीदार ।

—कथा—पु० सफेद कथा ।

पपकियाना—अ० कि० किसी चीजपर पपकी पड़ना; इतना सूख जाना कि ऊपर पपकी पड़ जाय, बहुत अधिक सूख जाना ।

पपकी—खी० छोटा पपका; किसी वस्तुकी वह ऊपरी परत जो उसके बहुत अधिक सूख जानेसे चिटककर अलग-थकी हो गयी हो, सूखकर पेंटी हुई ऊपरी परत; धावका खुरदरा पत्तरके रूपमें जमायी हुई मिठाई; इक्षुकी सूखकर चिटकी हुई छाल ।

पपकीला—वि० पपकीवाला, जिसमें पपकी हो ।

पपनी—खी० बतौनी ।

पपरी—खी० दे० 'पपरी'; एक पोषा जिसकी जड़ दवाके काम आती है ।

पपि—पु० [सं०] चंद्रमा । वि० पीनेवाला ।

पपिहा—पु० दे० 'पपीहा' ।

पपी—पु० [सं०] खैर; चंद्रमा ।

परीक्षा-पु० एक फलदाय वृक्ष, परंज मेवा ।

परीक्षि-खी० दे० 'परीक्षिका' ।

परीक्षरा-पु० दे० 'परीक्षा' ।

परीक्षा-पु० वृक्षके काष्ठे रंगका एक प्रसिद्ध पत्थी जो वसंत और वायसमें मीठे बोल बोला करता है, चातक (वह 'पी कहां' 'पी कहां' की रट लगाया करता है और कहा जाता है कि केवल स्वातीकी बूँदसे प्यास बुझाता है); सितारका पक्षा तार; परैया ।

परु-वि० [सं०] रक्षक, पालन करनेवाला । खी० धाव ।

परैया-पु० सीढ़ी; अमोलिकी जड़में लगी हुई गुठलीकी घिसकर बनायी जानेवाली एक प्रकारकी सीढ़ी, अमोला ।

परोटनी-खी० एक पौधा जिसके पत्ते धाव बकानेके लिए बंधे जाते हैं ।

परोटा-पु० पलक ।

पपोरना-स० कि० बाहोंकी धँठकर उनकी पुष्टता देखना (बलाभिमामका सूचन) - 'जंस काज भय गर्ब युत वप्यो पपोरत बाँह'-सूर ।

पपोलना-अ० कि० रंतहीनका मुँह खुलना ।

पवाई-खी० मैनाकी जानिकी एक चिबिया ।

पबना-स० कि० पाना ।

पबारना-स० कि० दे० 'पंबारना' ।

पवि, पवित्र-पु० दे० 'पवि' ।

पव्वय-पु० पर्वत, पहाड़; पथर ।

पविक-खी० [अं०] जनता, जनसाधारण, सर्वसाधारण । वि० सार्वजनिक, आम । -प्रासिक्कयूर-पु० सरकारी बकौल । -वक्क-पु० नहर, पुल आदि लोकोपयोगी चीजें बनानेका सरकारी काम, तामीरात । -० विपार्ट-मेंट-पु० तामीरातका मुख्यकाम, सार्वजनिक निर्माण-विभाग ।

पमरा-खी० [सं०] एक गंधद्रव्य, शक्लकी ।

पमाना-अ० कि० डींग मारना ।

पमार-पु० राजपूतोंका एक भेद; चकनड़ ।

पम्मन-पु० एक प्रकारका बड़े दानेका और उम्दा गेहूँ ।

पय- 'पयस्'का समासगत रूप । -कंदा-खी० क्षीर-विदार । -पयोष्णी-खी० एक नदी । -वान-पु० दूध पीना । -वर-पु० जलाशय, झील । -फेनी-खी० दुग्धफेनी नामक छुप ।

पय(स्)-पु० [सं०] दूध; जल; झुक, वीर्य; अन्न, आहार; ओज, शक्ति । -दृ-पु० दे० 'पयोद' । -धि, -निधि-पु० पयोधि, पयोनिधि । -हारी-वि० [हिं०] केवल दूध पीकर रहनेवाला ।

पय-पु० पद; चरण - 'पयलग्नि प्रानपति वीनबों नाह नेव मुझ जित परदु'-रासो ।

पयर्ना-पु० दे० 'पैना' ।

पयव्य-पु० [सं०] जलाशय, झील ।

पयव्य-वि० [सं०] दूधका बना हुआ; दूधका; जलका । पु० दूधका विकार-दही, मट्ठा आदि; दिखल ।

पयव्या-खी० [सं०] दही; दुधिया; क्षीरकाकोठी; सर्प-क्षीर ।

पयव्य-वि० [सं०] दूध वा जलसे युक्त । पु० बकरा ।

पयव्य-खी०-खी० [सं०] बकरी ।

पयव्यान्(वत्)-वि० [सं०] पानीसे युक्त; पानीवाला; दूधसे युक्त ।

पयव्यिनी-खी० [सं०] नदी; दूध देनेवाली गाय, भेनु; रात; बकरी; दूधफेनी; दूधविदार; जीवनी ।

पयव्यी(विन्)-वि० [सं०] दूध वा जलसे युक्त ।

पयर्-पु० दस सेर अनाजकी तोलवाला बरतन (अमर०) ।

पयव्या-वि० पैदल । पु० दे० 'प्यादा' ।

पयाव-पु० प्रस्थान, गमन, रवानगी ।

पयाव-पु० [का०] पैगाम, संदेश ।

पयाव-पु० दे० 'पवाल' । मु० -शाहना-दे० पयाल, झाड़ना ।

पयाव-पु० पके हुए धान, कोरी आदिके बड़े ढंठल जिनसे दाने अलग कर लिये गये हों । मु० -शाहना-स्यर्थ अम करना; ऐसे व्यक्ति की सेवा करना जिससे कुछ प्राप्त न हो ।

पयो- 'पयस्'का समासगत रूप । -वह-गल-पु० ओला; क्षीर । -ग्रह-पु० एक बह-संभवी पान । -बन-पु० ओला । -जम्भा(स्मन्)-पु० बादल । -द-पु० बादल । -० सुहृद्-पु० मीर । -घर-पु० बादल; सन; मोथा; नारियल; रीढ़ । -बा(बस्)-पु० समुद्र; बादल; जलाशय । -पारागृह-पु० वह स्नानागार जिसमें जल धारके रूपमें गिरता हो । -धि-पु० समुद्र । -० क-पु० समुद्रफेन । -निधि-पु० समुद्र । -मुक्(ष्)-पु० बादल; मोथा । -राशि-पु० समुद्र । -बाह-पु० बादल; मोथा । -बल-पु० केवल दूध पीकर रहनेका व्रत ।

पयोष्णिजाता-खी० [सं०] सरस्वती नदी ।

पयोष्णी-खी० [सं०] विंध्याचलसे निकलनेवाली एक पुरानी नदी ।

परंच-अ० [सं०] और भी; पर, लेकिन, तो भी ।

परंज-पु० [सं०] तेल घेरनेका कौहू; छुरीका फल; फेन; इद्रका लज्ज ।

परंजन-पु० [सं०] वरण ।

परंजय-वि० [सं०] शत्रुको जीतनेवाला । पु० वरण ।

परंजा-खी० [सं०] उत्सव आदिमें होनेवाली औजारोंकी भव्ति ।

परंतप-वि० [सं०] शत्रुओंको संतप्त करनेवाला, शत्रुतापक ।

परंतु-अ० [सं०] पूर्वकथित स्थितिसे वैपरीत्य या अंतर दिखानेके लिए प्रयुक्त किया जानेवाला एक शब्द-भ्रमर, लेकिन, किंतु ।

परंद, परंदा-पु० दे० 'परिंदा' ।

परंपर-पु० [सं०] वैकुण्ठ; मोक्ष; उच्च पद ।

परंपर-पु० [सं०] पौत्र, प्रपौत्र आदि; एक प्रकारका वृष । वि० क्रमागत, सिलसिलेवार ।

परंपरवा-अ० [सं०] परंपराके अनुसार; परंपरासे ।

परंपरा-खी० [सं०] अविच्छिन्न क्रम, चला आता हुआ अद्वैत सिलसिला, अनुक्रम; क्रमबद्ध समूह या पक्ति; प्रथा, प्रणाली; पुत्र-पौत्र आदि, वंश, सत्ता; वध ।

परंपराक-पु० [सं०] बहपशुका वध ।

परंपरागत-वि० [सं०] सदासे चला आता हुआ; क्रमान्त ।
परंपरित-वि० [सं०] परंपरायुक्त; परंपरापर अवलंबित ।

—रूपक—पु० रूपक अलंकारका एक भेद जिसमें एकका आरोप किसी दूसरेके आरोपका हेतु होता है।

परंपरीज-वि० [स०] वंशक्रमसे प्राप्त; परंपरागत ।

पर:- 'परस' का समासगत रूप । -कृष्ण-विं बहुत काल । -पुंसा-खीं वह खी जो अपने पक्षिसे असंतुष्ट होनेके कारण परपुरुषसे प्रेम करना चाहती हो । -पुष्क-विं मनुष्यसे उच्छत । -शत-विं सौसे अधिक, सत्ताधिक । -श्व(स) -अं कालके बाद आनेवाले दिन, परसों ।

पर-अ० किंतु, तो जी, लेकिन; पीछे; * पात । प्र० अवि-
करण कारकका विद्म जिससे जाधार और आविधका संबंध
दयित होता है । वि० [सं०] अचसे भिन्न, अन्य, दूसरा,
गैर; दूसरेका; गैरका; पराया; आगेका; बादका; जो खुदा
या अलग हो; अतिरिक्त। जो दूर या परे हो; जो किसी
दृष्टके बाहर हो; जो सबसे आगे या ऊपर स्थित हो; सबसे
ऊपर; प्रेक्ष; सर्वांतरी। शत्रुतापूर्ण, विरोधी। कृपा हुआ; क्षीण;
निरात । सर्व० दूसरा व्यक्ति । पु० अजनबी। चरम सिद्ध;
वीर्य अर्थ; शत्रु; क्षेत्रक; शिवा; प्रज्ञा; मोक्ष। सामान्य

नामक पदार्थाका एक भेद (ग्यां०) । -कालत्र-पु० दूस्रेकी
जी० । -काञ्च-पु० [हि०] दूस्रेका काम । -काजी-वि०
[हि०] दूस्रेका काम करनेवाला, परोपकारी । -काब
पु० दूस्रेका जरी । -क० प्रवेश-पु० योगिका अपनी
आत्माकी किसी क्षणमें पहुँचाना । -कृति-वि० दूस्रे-
की कृति; दूस्रेकी कृतिका बर्णन । -क्षेत्र-पु० दूस्रेका;
शरीर; दूस्रेका क्षेत्र; दूस्रेकी जी० । -ग्राह्य-पु० [हि०]
दूस्रे पेशीपर लगानेवाला वीधा, बंदक । -ग्राही-जी०
[हि०] अमरवैह । -शास्त्री (मिस्त्र)-वि० दूस्रेके साथ
आनेवाला; दूस्रेके संबंध; दूस्रेके किय कामवादी ।
-गुण-वि० दूस्रेके किय हितकर । -प्रंथि-जी०
(डेंगकी आदिकी) पीर । -झानि-जी० शत्रुकी बहामें
करना; शत्रुका दमन । -झण्ड-पु० शत्रुका राढ़ भाँसि;
शत्रुकी सेना; शत्रुका आक्रमण जिसकी गणना ६ हँथियोंमें
है । -कलंड-वि० पटापीन । ४० दूस्रेकी ब्रह्मा वा

प्रतिष्ठा की गयी हो। -**देवता**-पुं परमेश्वर -**देव**-
-पुं अपने देवसे मित्र देव, दूसरा देव। -**देवापवाहन**-
-पुं दूसरे देशके लोगोंकी बुलाकर उनसे उपविशेष
नसाना (की०)। -**देवाधीन**-वि० [हिं०] दूसरे देवका। पुं
दूसरे देशमें रहनेवाला; ब्रजाली। -**द्वेष्टी**(वि०)-**द्वेष्टि**-
-वि० दूसरेसे द्वेष या शत्रुता करनेवाला। -**धन**-
-पुं दूसरेका धन, पतापी संपत्ति। -**धर्म**-पुं दूसरेका
या दूसरा धर्म, अपने धर्मसे मित्र धर्म। -**धाम**(श)-पुं
बैकुंठ; परमेश्वर; विष्णु। -**ध्यान**-पुं वह ध्यान जिस
ध्वजके अतिरिक्त कोई और वस्तु न रहे। -**विपात**-पुं
साधर्ममें पड़के आने योग्य शत्रुका धावमें रहा जाना
जैसे-भूतपूर्व। -**पक्ष**-पुं शत्रुका पक्ष; विरोधीका मत;
विरोधीको दलील। -**पद**-पुं दे० 'परमपद'। -**पाक**-
-पुं दूसरेके उद्देश्यसे अपना पंचयक्षके छिद्र भोजन तैयार
करना (स्तु०)। -**पिच्छ**-वि० जो पंचयज्ञ न करे
(स्तु०)। -**रत्न**-वि० जो स्वयं पंचयज्ञ करे पर दूसरेका
धान्य खाकर निर्वाह करे। -**पार**-पुं दूसरा किनारा,
दूसरा छोर। -**पिंड**-पुं दूसरेका अन्न, दूसरेका दिया
हुआ भोजन। -**पिंडाह**-वि० जो दूसरेका अन्न खाकर
निर्वाह करे। पुं भूय, नौकर। -**पीडक**-वि० दूसरीको
पीटा पड़वानेवाला, दूसरीको सजानेवाला। -**पीरक**-
-वि० दूसरीके दुःखसे दुःखी होनेवाला। -**पुर्नजय**-पुं
विराट; वीर। -**पुत्र**-पुं पुत्रसे मित्र पुत्र; अजनबी;
पुरुषोत्तम; विष्णु। -**पुत्र**-वि० जिसका पावन-पोषण
दूसरेने किया हो। पुं कौशल। -**महोत्सव**-पुं
आम। -**पुत्र**-की० वैद्या, रबी; वंदा। -**पूर्वा**-की०
वह की जिसने पहले पतिको छोड़कर दूसरा पति कर
लिया हो। -**प्रपौत्र**-पुं प्रपौत्रका पुत्र। -**प्रेम्ण**-पुं
दास। -**प्रेम्णा**-की० दासी। -**वत्स**-वि० [हिं०] दे०
'परम'। -**वत्सताई**-की० परवशता। -**व्रज**(ज)-
-पुं निर्गुण और अपारिवर्तित ब्रज। -**अव**-पुं दूसरा
जन्म। -**भाग**-पुं दूसरेका अथवा हिस्सा; अंतिम
भाग; गुणका लक्ष्य; सत्य; सुखदेव; मनुता; वल्कलता।
-**भास्वोपजीवी**(विज्)-वि० दूसरेकी कमाई या दूसरे-
का अन्न खाकर निर्वाह करनेवाला। -**भावा**-की०
क्षुल्लसे मित्र भावा; दूसरी भाषा। -**भुक्त**-वि० दूसरे-
के द्वारा भोगा हुआ। -**भुक्ता**-वि० की० (वह की)
जिसका किसी दूसरेके साथ समगण हो चुका हो। -**भूत**-
-वि० जिसका पावन दूसरेने किया हो। पुं कौशलम्
= बहानन। -**भूत्**-पुं कौश। -**भूत**-पुं दूसरेका मत;
विरोधीका मत; अपनेसे मित्र मत। -**भद**-पुं बहुत
अधिक नष्ट, भयावय। -**भर्मज्ञ**-पुं दूसरेका भेद
जाननेवाला। -**क्षुध**-पुं कौश। -**धुप**-पुं उत्तर-
वर्ती धूप, भादक धूप। -**रसग**-पुं व्याधी हुई कीका
जार या वार। -**कोक**-पुं रसग आदि कोक जहाँ सत्य-
के पक्षार्थ प्रालीक्षी आता आता है। -**गन**, -**गमन**-
-पुं, -**गति**-की०, -**गान**, -**गात**-पुं गत्य
(आदाव)। -**हासी**(खिज)-वि० दल। (स्तु०)
-**कोक** वचना-श्रुत्यके पक्षार्थ सद्रति भास होना। -**कोक**
विषयवा-श्रुत्यके पक्षार्थ अत्यन्त मलिकी से होना

—लोक विचारना—भरना। —बस—बहन—वि० जो दूसरेके बचमें हो, पराधीन। —बसना—बसना—लोक परबस होनेका भाव, पराधीनता। —बाद—पु० अन्तर्गत दूसरेकी निरा; प्रयुक्त, प्रयोग पर। —बाही (वि०)—पु० वह जो किसीके विरोधमें कुछ करे, प्रयुक्त देनेका प्रतीकादि। —बैद्य (व०)—पु० परमात्माका वास्तविक; वैद्य। —बल—पु० श्रुतार्थ। —बाका—पु० [हि०] परगाछा। —संभल—वि० दूसरेका साथ करनेवाला; दूसरेके कष्टनेवाला। —संभल—पु० आत्मा। —सर्व—पु० सबके अंतर्गत होनेवाला अत्यंत (व्या०)। —सर्व—वि० जगत् मानेवाले वर्णके समान (व्या०)। —साक—अ० [हि०] पिछले या अगले साक। —सी—लोक पराधीन। —स्य—पु० दूसरेका धन, दूसरेकी संपत्ति। —हरण—पु० दूसरेका धन हर लेना। —हित—पु० दूसरेका कल्याण। वि० दूसरेका कल्याण करनेवाला। पर—पु० [का०] पंख, डेना। —कट, कटा—वि० जिसके पर या पंख कटे हों। मु०—कट जाना—अशक्त हो जाना। —काट देना—अशक्त बना देना। —कट कराना—कट कर आदिके पंख काट देना। —कटाना—पक्ष पतना; धरातल छूटना। (आते हुए) —कटाना—टूटना—गति या जानेका साधन न होना। —न आरना—जा न सकना। —निकलना—न आर निकलना—नया पर निकलना; होशियार होना। —नहीं देना—वेरस करना। परही—लोक मित्रका रक्ता कसोरा। परकना—अ० कि० परचना; किसी विषयमें डोढ़ बनना। परकसना—अ० कि० प्रकाशित होना; प्रकट होना। परकाना—स० कि० परचाना; किसीकी किसी बातका चमत्का लगाना। परकार—पु० [फा०] इतकी परिधि बनानेका एक आकार; * दे० 'प्रकार'। परकाक—पु० 'परकार'। परकाका—पु० सीढ़ी; देखली; [फा०] डकका। शीसेका डकका; चिनगारी। [आफतका परकाका—गजन दानेवाला]। परकास—पु० दे० 'प्रकाश'। परकासना—स० कि० प्रकाशित करना; प्रकट करना। अ० कि० प्रकाशित होना। परकित, परकीति, परकीती—लोक दे० 'प्रकृति'। परकी—वि० [स०] दूसरेका। परकीया—लोक [स०] नायिकाका एक वेद, वह नायिका जो गुप्त रूपसे परपुरुषसे प्रेम करे। परकीरति—लोक दे० 'प्रकृति'। परकीर—पु० गड़ आदिकी रक्षाके लिए बारों ओर उठावी गयी दीवार; पानी आदि रोकनेका बाँध। परक—लोक गुणदोषके निर्णयकी दृष्टिसे किसी वस्तुको देखनेके क्रिया; परीक्षा। किसीके गुणदोषका पता लगानेकी शक्ति। परकना—पु० डकका, खंख। मु०—(खंख) उठाना—खंख कर देना, ध्वनिवाँ उठाना। परकना—स० कि० गुणदोषके निर्धारणके लिए किसी

व्यक्ति का वस्तुको अन्वीक्षा देकना; अन्वीक्षा देकना गुणदोष, कथन लेना; किसीकी राह देखना। परकाना—स० कि० दे० 'परकाना'। परकनीया, परकनीया—पु० परकनेवाला। परकाई—लोक परकनेका काम; परकनेकी व्यवस्था। परकाना—स० कि० किसीसे परकनेका काम कराना; संवेष्टन। परकी—लोक लोहेका पतला, लंबा आकार जिससे गेहूँ, चन्दा आदिके बीरोंमें पुस्तापर परकनेके लिए नमूना निकाला जाता है। परक—पु० डग, कदम। परकट—वि० प्रकट, स्पष्ट। परकटना—अ० कि० प्रकट होना। स० कि० प्रकट करना। परकन—पु० दे० 'परगना'। परकना—पु० [का०] एक भूभाग जिसके अंतर्गत बहुतसे गाँव होते हैं। —कार—पु० परगनेका अन्तर्गत। परगनाबीस—पु० दे० 'परगना-बाकिम'। परगना-बाकिम—पु० [अ०] परगनेकी देखरेख करनेवाला प्रधान अधिकारी, परगनाधीश। परगनी—लोक दे० 'परगहन'। परगसना—अ० कि० प्रकाशित होना; प्रकट होना। परगहनी—लोक चाँदी, सोनेकी सुनियौं ठाकनेका एक नलीके आकारका आकार। परगाइ—वि० दे० 'प्रगाढ़'। परगाइ—पु० [फा०] इतकी परिधि बनानेका एक आकार। परगास—पु० दे० 'प्रकाश'। परगासना—स० कि० प्रकाशित करना। अ० कि० प्रकाशित होना। परगट—वि० दे० 'प्रकट'। परगनी—लोक दे० 'परगहन'। परगह—वि० दे० 'प्रचंड'। परगह—पु० दे० 'परिचय'। परगह—लोक जान-पहचान। परगना—अ० कि० किसीसे इतनी जान-पहचान हो जाना कि उससे कोई खटका न रह जाय, हिस-मिसल जाना; नसका लगना; * पहचाना जाना; सुलगना। मु० परग पहचाना—पहचानमें जाना। परगरी—पु० बैलोंकी एक जाति। परग—पु० [फा०] कागजका डकका; कागजका वह डकका जिसपर परीक्षार्थियोंके हल करनेके प्रश्न छिड़े रहते हैं, प्रश्नपत्र; पुराना, रक्का; * परिचय—'कह करीर परका भया गुरु दिखाई बाट'—करीर; परख, जाँच; समुत्त। मु०—देना—किसीको पूर्ण परिचय देना। —प्रगना—समस्त देनेकी कहना; किसी देशी-देशतासे अपनी शक्ति दिखानेकी प्रार्थना करना (भीष्म)। परगना—स० कि० परचने देना; दिखाना-मिथाना; नसका लगाना; * सुलगना—'विरही रहन काम भवैका परचाये हैं'—सेनापति। परगरी—पु० दे० 'प्रकार'। परगरीना—स० कि० दे० 'प्रचाना'।

परचून्-पु० आटा-चाक आदि औजकी सावनी ।
 परचूनी-पु० परचून् बेचनेवाला जौ० परचूनीका काम ।
 परचे, परचै-पु० दे० 'परिचय' ।
 परछती-झी० कमरेके भीतर बनी हुई सामान रखनेकी पाटन; हल्की छाजन, हल्का छप्पर ।
 परछव-पु० एक वैयक्तिक औकाचार जिसमें किर्यां बरको दही-अन्नका टीका लगाती और दूधक तथा बट्ठा उसपरसे पुमाना है; बरको भारती उतारनेकी रीति ।
 परछवा-स० कि० परछन करना ।
 परछा-पु० कोष्णके पैरकी आँखोंपर ओंभीदी बॉबनेका कपड़ा; जुलाहीकी सूत कपेटनेकी नली; बड़ी बटकीई; कबाड़ी; मिट्टीका मशाले आकारका बरतन; पीपके छँदेने "या छसाठस बरी हुई बीजोंमेंसे कुछके निकलनेसे भिन्नने या पकनेवाला अन्वकाय; निबटारा ।
 परछाई-झी० किसीकी वह छाया जो उतनी दूर और उत दिशामें पड़ती है जितनी दूर और दिशामें उसके नीचेमें आ जानेसे प्रकाश फैल नहीं पाता, प्रतिच्छाया; जल, वर्षण आदिमें पकनेवाली किसीकी छायाकृति । झु० -से उबरा-भामूनी बातसे भी डरना, बहुत अधिक डरना ।
 परछाकला-स० कि० प्रखालन करना, साफ करना, धोना ।
 परचक-पु० दे० 'पर्यक' ।
 परचन्व-पु० दे० 'पर्यन्व' ।
 परचरना-अ० कि० अलना; कुद होना, खीन उठाना; ईर्ष्या करना, द्वेष करना ।
 परचवट-पु० दे० 'परचौट' ।
 परचा-झी० प्रजा, असादी, रैयत; नाई-बारी आदि आश्रित जन ।
 परचाता-पु० एक प्रसिद्ध फूक, हरतिगार; इसका पीषा ।
 परचाप-पु० दे० 'पर्याप' ।
 परचौट-पु० सालाना खिराशपर मकान ठठाने, जमीन लेने-देनेकी रीति; मकान बनानेकी जमीनका सालाना खिराज ।
 परचकला-स० कि० प्रखलित करना । अ० कि० प्रखलित होना ।
 परणना-स० कि० ब्याहना ।
 परतका, परतिचा-झी० दे० 'प्रत्यचा' ।
 परत(तत्)-अ० [सं०] दूसरे; शत्रुसे; बादमें, पीछे परे, आगे । -प्रमाण-वि० जो किसी दूसरे प्रमाणसे सिद्ध हो, जिसके लिए दूसरा प्रमाण अपेक्षित हो, 'स्वतः प्रमाण'का उलटा ।
 परत-झी० तह, सार, पुट ।
 परतच्छ, परतच्छ-वि०, अ० दे० 'प्रत्यच्छ' ।
 परतक-पु० लुटवा पीपेकी पीठपर रखनेका पीरा वा गोनी-का टट्ट-लुटवा पीषा ।
 परतका-पु०, परतकी-झी० तलवार आदि रखनेकी कमरेकी वह पट्टी जो कपेट लटकवायी जाती है ।
 परता-पु० दे० 'पक्ता' ।
 परताजना-पु० गहनोपर मछलीके चेहरका आकार

बनानेका लोमारीका एक भाग ।
 परतप-पु० दे० 'प्रतप' ।
 परतक-झी० दे० 'पक्ताक' ।
 परतिष्ठा, परतिष्ठा-झी० दे० 'प्रतिष्ठा' ।
 परती-झी० वह जमीन जो जोड़ी-बोयी न जाती हो वह चहर जिससे दवा करके अनाज बीसता है । झु० -छेरा-बीसना ।
 परतीत, परतीति-झी० दे० 'प्रतीति' ।
 परतेजना-स० कि० त्यागना, छोड़ना ।
 परत्र-अ० [सं०] दूसरे स्थानमें; परलोकमें; उत्तरार्धकर्म ।
 पु० परलोक । -भीह-वि० जिते परलोकके विगमनेका मय हो, धार्मिक ।
 परधना-पु० दे० 'पलेधन' ।
 परध-पु० दे० 'परदा' ।
 परदछिना, परदछिना-झी० दे० 'प्रदक्षिणा' ।
 परद्विचा-झी० बोती ।
 परदनी-झी० बोती; दक्षिणा; दक्षिण ।
 परदा-पु० [का०] किसी वस्तु, व्यक्ति आदिकी दृष्टिसे ओहल करनेके कामका कपड़ा, टाट आदि; ओट करनेवाली वस्तु; आव, ओटा, बूँट; लोभीकी दृष्टिसे अपनेकी बचनेकी स्थिति; विभाग या भाग करनेके लिए बनायी जानेवाली दीवार; सलह, मँडक (हुमियाका परदा); राग-मंचपर लगाया जानेवाला वह भाग करनेका कपड़ा जो समय-समयपर उठावा और गिराया जाता है; चमड़ेकी वह शिन्नी जो काम आदिमें आवरणका काम देती है; अंगरसेका वह हिस्सा जो छातीके ऊपर पड़ता है; अनाज-खाना; भेद; रखल; गिरिदार मेवेके ऊपरका छिन्का; सितार, हारमोनियम आदिमें स्वर निकलनेका स्थान; फासीके बारह रागोंमेंसे हर एक; नायका पात्र ।
 -प्राक-पु० जमीन । -दूर-वि० दोष प्रकट करनेवाला; भेद खोलनेवाला । -दूरी-झी० दोष प्रकट करना; भेद खोलना । -दूर-वि० परदा करनेवाला, छिपनेवाला । -दूरी-झी० देव छिपाना; भेद छिपाना । -गहरी-वि० जो परदेमें रहे । -पोषा-वि० देव छिपानेवाला । -पोषी-झी० देव छिपाना । झु० -उठाना वा खोलना-रक्ष्यकी बात प्रकट करना; भेदकी बात जाहिर करना । -छाकना-छिपाना, प्रकट होनेसे रोकना । (आँखपर)-पकना-दिखाई न देना । (बुद्धिपर)-पकना-समझ; जाती रहना, अङ्ग खपत होना । -कटका-इज्जत-आवरण वचना-लेखककी परदा फटे तू समझ लीले-विनय । -प्राप्य करना-दोष प्रकट करना; भेद खोलना । -प्राप्य होना-दोष प्रकट होना; भेद खुलना । (किसीका)-रखना-किसी द्वाराकी जाहिर न होने देना; प्रतिष्ठाकी रक्षा करना । -रखना-अपनेकी किसीकी दृष्टिसे बचना, सामने न होना; दुराव-छिपाव रखना । (किसीको)-छगना-परदेमें रहनेका नियम होना । -होना-परदा रखने या परदेमें रहनेका नियम होना; दुराव-छिपाव होना । (दे)के पीछे-छिपे-छिपे । -परदे-शुप्त रीतिसे, छिपे-छिपे । -में छेद होना-परदेके पीछे व्यवहार होना । -में

सकें । -बम-पुं० [वि०] अस्मिन्मये सैवार विम्व
जानेवाळा एक यमार्थान्वयक बम विसरता जाविष्कर
क्षेत्रीय म्हाविद्यालये सभासिकाभये हुमा (हरी बमके म्हावि
मोपामने मित्र-सेनाभयेके सामने बुटने टेक दिवें)
-बाव्-पुं० न्याय और वैयर्थिक दर्शनका वह यथे कि
संसारकी दृष्टि परमाणुभयेके दुर्ग दे । -बावी(विष्)-
पुं० परमाणुबावकी माननेवाळा ।
परमाणु म्हाविद्यालय-पुं० (म्हाविद्यालय रोडकेर) दे०
'परमाणु म्हा' ।
परमाणु म्हा-की० (म्हाविद्यालय रोडकेर) वह म्हा
जिसमें भारी पाणुभयेके डुकडे हलसेसे दे रेखियो-सक्तिव बी
जाते है ।
परमा-भा(लम्ब)-पुं० [सं०] बरमेथर ।
परमाद्वित-पुं० [सं०] समी म्हावेसे दहित परमात्मा; विष्णु ।
परमान्वय-पुं० [सं०] उत्तम अनन्द; उत्तम आनन्दक
परमात्मा ।
परमाव-पुं० प्रमाण; विचार; परिमाण; सत्य बात;
अवधि ।
परमानव-सं० कि० प्रमाणरूपमें ग्रहण करना, प्रमाण
मानना; अंगीकार करना; मानना, विचार करना ।
परमाव-पुं० [सं०] वाक्छकी ओर, पावस ।
परमा मुद्रा-की० [सं०] विप्राकी, पूजाके अंतर्गत एक
मुद्रा ।
परमाव(स्)-की० [सं०] सर्वाधिक आलु ।
परमाव-पुं० [सं०] असन, विजयसाक नामका पेठ ।
परमाव-पुं० राजपूतोंका एक वंश जिसकी उत्पत्ति अधि-
कृष्णसे यानी जाती है ।
परमाव-पुं० दे० 'परमाव' ।
परमाव-पुं० [सं०] उत्कृष्ट वस्तु; मित्र और अवाधित
पदार्थ; पदार्थ सत्य; सत्य; मोक्ष; ब्रह्म । -बावी(विष्)-
पुं० वैदांती, तत्त्वज्ञ । -विष्-वि०, पुं० ब्रह्मज्ञानी,
दार्शनिक ।
परमार्थी(विष्)-वि० [सं०] परमार्थकी जानने वा
प्राप्त करनेका इच्छुक ।
परमाव-पुं० [सं०] शुच दिन; पुण्यदिवस ।
परमार्थ-की० परम सीमा; मर्यादा ।
परमाव-वि० जिसने किसी ओरसे मुँह मोड़ लिया हो,
परावृत्त ।
परमावपेक्षित-की० [सं०] दूसरेका मुँह जोहने, दूसरे-
पर निर्भर रहनेकी प्रवृत्ति-भगुण्यकी परमावपेक्षितसे
विकलका 'साधित्यका कथ्य'-ब्रह्मारीप्र० ।
परमावपेक्षी(विष्)-वि० [सं०] दूसरेका मुँह जेहने-
वाला ।
परमाव-पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और ब्रह्म-इन तीन
रूपोंवाला, सगुण ब्रह्म विष्णु; चक्रवर्ती राजा ।
परमेथर-पुं० [सं०] दे० 'परमेथर'; ब्रह्म ।
परमेथरी-की० [सं०] दुर्गा ।
परमेथ-पुं० [सं०] ब्रह्मा देवता ।
परमेथी-की० [सं०] ब्रह्मा देवी ।
परमेथी(विष्)-पुं० [सं०] ब्रह्मा; ब्रह्मज्ञानका एक

विशेष; विष्णु; पदार्थ; अर्थात्, विष्णु; ब्रह्मा ।
परमेथर, परमेथर-पुं० दे० 'परमेथर' ।
परमेथरी-की० दे० 'परमेथरी' ।
परमाव-पुं० दे० 'प्रमोव' ।
परमाव-सं० कि० दे० 'परमावना'-'वात कम्पाई
जय उम, मन परमाव नाहि'-साक्षा ।
परमाव-पुं० दे० 'परमाव' ।
परमाव-पुं० [सं०] अपने देशकी ओरकर कथ्य राजा ।
-अंकी(विष्)-पुं० विदेशी मामलोंकी देखरेख करने-
वाला मंत्री, विदेश मंत्री ।
परमा-पुं० [सं०] नीकी मंगरेवा ।
परमा-पुं० दे० 'परमाव' ।
परमाव-पुं०, की० दे० 'परमाव' ।
परमा-वि० वस ओरका, दूसरी ओरका, उरकाका उरका ।
[की० 'परमाव'] पुं० -[की०]परमाव-सिरेका-परमा
कोटिका, हव दरजेका, अत्यधिक । -पार होना-हवतक
पहुँचना, अंतिम सीमातक पहुँचना; बहुत दूरतक पहुँचना;
समाप्त होना, पूरा होना ।
परमाव-पुं० दे० 'परमाव'; दे० 'परमाव'; आँखका एक रोग ।
वि० दे० 'परमाव'; [फा०] पाठन-पोषण करनेवाळा, (समाप्त-
में प्रयुक्त) । -विशार-पुं० पाठन-पोषण करनेवाळा,
पाठक; ईश्वर, ब्रह्मा ।
परमाव-की० [फा०] पाठन-पोषण; मेहरबानी ।
परमाव-पुं० एक प्रसिद्ध कला; इस कलाका कल जो तर-
कारीके काम आता है; चित्रका जिसका फल तरकारीके
काम आता है ।
परमाव-की० परमाव, पाठन-पोषण ।
परमा-पुं० मिथुकी बना एक तरहका कटोरे जैसा बरतन,
कोसा । की० पक्षी पहली तिथि, परिवा; पुं० एक भास;
किसी बातकी ओर मन लगाना, ध्यान, अवधान; अवलंब;
सहाय, अरोसा; [फा०] बाह्य, आदिश; फिज, विज्ञा,
सोच; छटका; गरज ।
परमाव-की० दे० 'परमाव' ।
परमाव-की० [फा०] उठना, उठाना; नाज; वमण्ड । वि०
(समाप्तमें) उठनेवाळा; बीज मारनेवाळा ।
परमाव-की० [फा०] उठान (समाप्तमें) ।
परमाव-पुं० [सं०] बर्माध्यक्ष; बस्तर; कार्तिकेयका
बाहन, मयूर ।
परमाव-पुं० प्रमाण; अवधि, सीमा; अज्ञानका मयूर ।
परमावना-सं० कि० प्रमाणरूप मानना, ठीक समझना ।
परमावगी-की० [फा०] इमानत, आस्था, परमाव ।
परमाव-पुं० बरी, चूना आदि नापनेका एक वषा पैमाना
जो प्रायः लकड़ीका बना होता था ।
परमाव-पुं० [फा०] किस्मि आवाज, आवापत्र, अनुमति-
पत्र, हुक्मनामा; करमाना; आभीरका हुक्म; काहलेंस;
नौकरका आवापत्र, भित्तिपत्र; नायकके आवापत्र जेवा
जानेवाळा आवापत्र; डेरके जाये चकनेवाळा आवापत्र
पतिया, पंखी । -गिरफ्तारी-पुं० बंदी बननेका आवाप-
त्र । -टाकापी-पुं० आवापत्राधीन आवापत्र ।
-अबीस-पुं० परमाव किस्मनेवाळा कर्मचारी, वह कर्म

जो परबाना किये । -राबदायी-पुं दूतरे देखमें जाने-का सरकारको ओरसे मिलनेवाला स्वीकृतिपत्र, 'पासपोर्ट' । मुं० (किसीपर)-होना-किसीके लिए आत्मोत्सर्ग करना, अपनी जान दे देना ।

परबान्द(बन्ध)-वि० [सं०] पराभयी, पराधीन; असहाय । परबाना-पुं चारपाईके पायोंके नीचे रखी जानेवाली वस्तु ।

परबाळ-पुं दे० 'प्रबाळ' ।

परबास-पुं आच्छादन; प्रवास ।

परबाह-स्त्री दे० 'परबा' । † पुं प्रबाह, श्वको विना जलाये नदीमें बहा देना ।

परबी†-स्त्री पर्वकाल ।

परबीन-वि० दे० 'प्रबीन' ।

परबेख-पुं यदा-कदा बंदमाके चारों ओर बन जाने-वाला शदलके डुकनेकी तरहका वेरा; दे० 'परिवेध' ।

परबेश-पुं दे० 'प्रवेश' ।

परबा-पुं [सं०] पास पत्थर ।

परबु-पुं [सं०] कुल्हाडीकी तरहका एक प्रसिद्ध शस्त्र, फरसा (यही परछुरामका प्रधान शस्त्र था); शस्त्र । -चर-पुं परबु चारण करनेवाला; परछुराम; गणेश । -पलाश-पुं फरसेका फल । -मुद्रा-स्त्री जंगलियोंकी एक प्रकारकी मुद्रा । -राम-पुं जमरात्रि क्षत्रिके एक पुत्र जो विष्णुके छठे अवतार माने जाते हैं (इन्होंने ११ बार पृथ्वीको क्षत्रियोंसे रहित कर दिया था) । -बल-पुं एक नरक ।

परबध-पुं [सं०] परबु, कुठार ।

परसंग-पुं दे० 'प्रसंग' ।

परसंसा-स्त्री दे० 'प्रसंसा' ।

परस-पुं स्वर्ण, छूना । -पखान-पुं चारस पत्थर । परसन†-पुं स्वर्ण । * वि० प्रसन्न, खुश- "दिव परसन भये करो काजा"-चर ।

परसना-सं० कि० खानेवालोंके सामने जोख्य वस्तुएं रखना; छूना, स्पर्श करना ।

परसन्न-वि० दे० 'प्रसन्न' ।

परसन्नता-स्त्री दे० 'प्रसन्नता' ।

परसर्ग-पुं [सं०] शब्दके आगे जोडा जानेवाला प्रत्यय ।

परसा-पुं फरसा, कुठार । पत्तल आदिमें रखा हुआ एक श्वत्रिके खानेमरका योजन ।

परसाद्-पुं दे० 'प्रसाद' ।

परसाही†-स्त्री दे० 'प्रसाद' ।

परसाना-सं० कि० जोख्य वस्तु सामने रखवाना; स्पर्श कराना, छुलाना; फैलाना- "मनहु पगगिन छतारि गगन ते डलपर फन परसावति"-चर ।

परसिद्ध-वि० दे० 'प्रसिद्ध' ।

परसिवा-स्त्री हँसिया ।

परसीध-पुं एक वैद्य जिसकी ककड़ी बेज, कुर्छा आदि बनानेके काम आती है ।

परसु-पुं दे० 'परसु' ।

परसुत-वि० दे० 'प्रसुत' ।

परसेव-पुं दे० 'प्रसेव' ।

परसौ-अ० पिछले दिनसे एक दिन पहले; अगले दिनसे एक दिन आगे ।

परसौलम-पुं दे० 'पुर्वसौलम' ।

परसौह†-वि० स्पर्श करनेवाला, छुनेवाला ।

परस-अ० [सं०] दूर, परे । -पर-अ० एक दूसरेके साथ, आपसमें । -० छ-पुं मित्र ।

परस्परोपमा-स्त्री [सं०] उपमालंकारका एक भेद, उपमे-चोपमा ।

परस्वध-पुं [सं०] दे० 'परस्वध' ।

परहरना-सं० कि० आगना, छोचना ।

परहेज-पुं [फा०] निषिद्ध वस्तुओंसे बचना; बीमारका हाजिर पदार्थ न खाना, कुपस्थसे बचना; खानेपीने आदिका संयम; दोष-पापसे बचना । -गार-वि० परहेज करनेवाला; पापसे बचनेवाला । -शारी-स्त्री परहेज करनेका कार्य, संयम; पापसे बचनेका कार्य ।

परहेजना-सं० कि० अवहेलना करना, अन्याय करना, तुच्छ समझना ।

परांग-पुं [सं०] दूसरेका अंग; अंग अंग ।

परंगद-पुं [सं०] शिव ।

परंगव-पुं [सं०] तपस्व ।

परां-वि० [सं०] दे० 'परां' ।

पराज, पराजन्-पुं [सं०] तेज परनेका कौन्ट; फेन; छुरी आदिका फल ।

परांठ-पुं भी कपाकर तवेपर सेकी जानेवाली एक प्रकारकी चपाती ।

परांत-पुं [सं०] वस्तु । -काळ-पुं वस्तुकाळ; मुमुक्षुओंका सारी छोड़नेका समय ।

परांतक-पुं [सं०] शिव ।

परा-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो अर्थमें प्रातिशेन्य (परा-हस्य), प्राधान्य (परागत), वर्धन (पराष्ट), आभिमन्य (पराक्रांत), विक्रम (पराजित) आदिके शीतलके लिए प्रयुक्त होता है । स्त्री० मूलाधारमें स्त्रित रहनेवाली नाद-रूपिणी बाणी; महाविद्या; गंगा; बौद्ध ककोश; [हिं०] पंक्ति । वि० स्त्री० अंग । -काछा-स्त्री अतिम सीमा, चरम कोटि या सीमा, हद; महाकी आधी आयु । -कोटि-स्त्री दे० 'पराकाश' । -गति-स्त्री गायत्री । -विद्या-स्त्री अन्त्यासविद्या ।

पराह-वि० स्त्री० दूसरेकी ।

पराह-पुं [सं०] बारह दिनोंतक योजन न करनेका प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला एक कृच्छ्र व्रत; बलिदान करनेका कृच्छ्र; एक रोग । वि० छोटा ।

पराकष-पुं [सं०] दूर करना, हटाना; अस्वीकार करना; उपेक्षा करना ।

पराकाश-पुं [सं०] दूरता आकाश ।

पराक(ष्)-वि० [सं०] पराङ्मुख; ऊपरकी ओर जाने-वाला, ऊर्ध्वगामी; उलटा जानेवाला, प्रतिरोधगामी; प्रति-कूल; दूरवर्ती । -पुष्पी-स्त्री चिचकी ।

पराक्रम-पुं [सं०] सामर्थ्य, बल; शौर्य; विक्रम, उद्योग; पुरुषार्थ; अभियान, आक्रमण; विष्णु । मुं० -कल्ला-उद्योग किया जा सकना; शक्तिता साथ देना ।

पराक्रमी (मित्र) - वि० [सं०] पराक्रमवाला, शूर; पुश्ताधी।
पराक्रांत - वि० [सं०] शक्तिशाली; उत्साही; वीर; आक्रांत;
जिसका शूर मोह दिया गया हो।

पराग - पु० [सं०] कूलके भीतरकी धूल, पुष्परजः धूल;
केसरका चूर्ण आदि जितने नहानेके बाद लगाते हैं; उपराल;
चंदन; कपूरका चूर्ण; चंद्र वा सूर्यका प्रकाश; ख्याति; एक
पर्वत; स्वच्छंद गति। - **केसर** - पु० कूलके भीतरके वे
पतले छेदे जोरे जिनपर केसर लगा रहता है।

परागत - वि० [सं०] सुत; आश्रित, वेष्टित; कैला हुआ।
परागता - अ० कि० प्रेमासक्त होना; प्रेयमें पड़ना।
पराक्रम्य - वि० [सं०] जिसने किसी ओरसे शूर मोह
लिया हो, विमुख; प्रतिकूल।

पराधीन - वि० [सं०] विमुख, पराक्रम्य; बादमें होनेवाला;
उत्तरकार्यमें होनेवाला; जो दूसरी ओर, परे हो।

पराजय - जी० [सं०] हार, विजयका उलटा।
पराजिका - जी० एक रागिनी।

पराजित - वि० [सं०] जिसने हार खायी हो, हारा हुआ,
हराया हुआ।

पराजसा, पराजसा - जी० [सं०] चिकित्सा, औषधोपचार।
परात - जी० धाकीकी शङ्कना पीतल आदिका एक बड़ा
बरतन, बड़ा घाल।

परात्पर - वि० [सं०] जो सबसे परे हो। पु० परमात्मा।
पराप्रिय - पु० [सं०] तुल्यविशेष।

परात्मा (स्मर) - पु० [सं०] दे० 'परमात्मा'।
पराध्व - पु० [सं०] अरबी वीणा।

पराधि - जी० [सं०] बहुत तीव्र मानसिक व्यव्था।
पराधीन - वि० [सं०] जो दूसरेके अधीन हो, परबश।

पराधीनता - जी० [सं०] पराधीन होनेका भाव; पराधीन
होनेकी दशा।

परान - पु० दे० 'प्राण'।
पराना - अ० कि० पलायन करना; भागना।

पराध - पु० [सं०] दूसरेका अन्न, दूसरेका धान्य; दूसरेका
दिया हुआ भोजन। - **ओजी (जिन्)** - वि० दूसरेका
दिया जाकर निर्वाह करनेवाला।

परापर - वि० [सं०] पर और अपर; परत्व और अपरत्व
दोनों गुणोंसे युक्त (वैरोधिक)।

परामध - पु० [सं०] तिरस्कार, अन्याय; हार, पराजय;
विनाश।

परामिन्न - पु० [सं०] एक प्रकारका वानप्रस्थ जो थोड़ी-सी
मिश्रासे निर्वाह करता है।

परामृत - वि० [सं०] जिसका परामध हुआ हो; तिरस्कृत;
हारा हुआ; परास्त; नष्ट।

परामृति - जी० [सं०] दे० 'परामभ'।
परामभ - पु० [सं०] पकड़ना; खींचना; आक्रमण; बाधा;
स्पर्श करना; रोगाक्रांत होना; विवेचन; स्मरण करना;
याद करना (वे०); व्याप्य हेतुका पक्षधर्म होना, पक्षमें
हेतुके होनेकी अनुमिति (न्या०); युक्ति; सहाय।

परामर्शन - पु० [सं०] पकड़ना; खींचना; स्मरण करना;
विवेचन करना; सहाय करना।

परामृत - वि० [सं०] जिसने मृत्युकी नीति लीना हो।

पु० वर्ष।

पराभूत - वि० [सं०] पकड़कर खींचा हुआ; सहा; विचारा
हुआ; संबद्ध; जिसके विषयमें सहाह की या दी गयी हो।
परावस्था - पु० वह जो कृत्तरीसे तोषियाँ आदि तैयार कर
देवे; सिले हुए कपड़े-बेचनेवाला।

परावच - वि० [सं०] अति आसक्त, निरत; अवलंबित। पु०
अति आसक्ति; उत्तम आश्रय; विष्णु; अंतिम लक्ष्य; सार।

परावच - वि० [सं०] पराधीन।
पराधा - वि० दूसरेका, विराना; अपनेसे भिन्न। [जी०
'पराधी'।]

पराधु (स्) - पु० [सं०] गन्ना।
पराध - वि० दूसरेका, पराधा। पु० पमार।

पराध - पु० दे० 'पराध'।
पराध्व, पराध्व - पु० दे० 'पराध्व'।

परारि - अ० [सं०] पूर्वतन वर्षमें, परिवार साल।
पराह - पु० [सं०] कनेला।

पराह - पु० [सं०] चट्टान, पत्थर।
परार्थ - पु० [सं०] दूसरेका प्रयोजन, दूसरेका कार्य; सबसे
बड़ा लाभ। वि० जो दूसरेके निमित्त हो।

पराह, **परार्थ** - पु० [सं०] गणितमें सबसे बड़ी संख्या; शून्य;
गण्यकी आयुका आधा भाग।

पराध्व - वि० [सं०] श्रेष्ठ; उत्तम। पु० असीम संख्या;
सबसे बड़ी वस्तु आदि।

पराध, पराधा - वि० पराधा, दूसरेका।
पराध - पु० [सं०] फालसा।

पराध - पु० बहुतेका एक साथ भागना, सामूहिक पला-
यन, भगदड़; पर्वकार - 'पूरे पूरा पुन्यसे परधो परा-
धन आज' - मतिराम।

पराध - वि० [सं०] पहलका और पीछका; निकटका और
दूरका; सर्वश्रेष्ठ; परंपरागत। पु० कारण और कार्य; विश्व;
अखिलता।

पराधरा - जी० [सं०] एक प्रकारकी विधा (उपनि०)।
परावर्त, परावर्तन - पु० [सं०] अदला-बदला, विनिमय;
लौटना, प्रत्यावृत्ति; फैसला उलटना; धर्मोकी दोहराना,
उद्वरण (जै०)।

परावर्तित - वि० [सं०] लौटया हुआ।
परावर्त्य - वि० [सं०] जो बदला, लौटया या उलटा जा
सके। - **व्यवहार** - पु० कैमका किये हुए मुकदमेपर फिर
विचार करना, कैमलेका पुनर्विचार, अपील।

पराध - पु० [सं०] अक्षरोंका एक होता; एक गंधर्ब।
पराध - पु० [सं०] वायुके सात भेदोंमेंसे एक (अंतिम)।

पराध - पु० [सं०] कुनेर।
पराध - वि० [सं०] लौटा हुआ; लौटया हुआ; बदला
हुआ।

पराध - जी० [सं०] लौटना, पलटना; लौटया जाना,
पलटा जाना, फैसला किये हुए मुकदमेपर फिरसे विचार
करना।

पराध - जी० [सं०] बहती, भटकनेवा।
पराध - पु० [सं०] हाथसे पत्थर फेंकनेपर जहाँतक आग
वह फैसला।

परास्तर-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध योग-प्रवर्तक जपि जो बसिष्ठके बीच थे (कृष्णदेवायन व्यास इन्होंने पुत्र थे); आयुर्वेदके एक आचार्य; एक नाग ।

परासरी (रिन्)—पु० [सं०] मिथुनक; सम्बासी ।

पराशय-पु० [सं०] दूसरेका सहारा या अवलंब । वि० दूसरेपर आश्रित ।

पराशया-झी० [सं०] परगछा ।

परासंग-पु० [सं०] पु० दे० 'पराशय' ।

परास-पु० [सं०] दे० 'पराम्याध'; टीन; † दे० 'पलाश' ।

परासन-पु० [सं०] बप, मारण ।

परासपीपल-पु० दे० 'पारितपीपल' ।

परासी-झी० एक रागिनी ।

परासु-वि० [सं०] मरा हुआ, मृत ।

परास्कंदी (विन्)—पु० [सं०] चौर ।

परास्त-वि० [सं०] हराया हुआ; जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो; दबा हुआ; फँका हुआ; अस्वीकृत ।

पराह-पु० [सं०] दूसरा दिन ।

पराहत-वि० [सं०] आक्रांत; खदेड़ा हुआ, हटाया हुआ; जोता हुआ; खंडित । पु० आघात ।

पराहति-झी० [सं०] खंडन, विरोध ।

पराहृत-वि० [सं०] हटाया हुआ ।

पराहृ-पु० [सं०] दोपहरके आगेका समय, दिनका तीसरा घंटा ।

परिंश-पु० [का०] पक्षी, चिड़िया ।

परि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो समन्ततोभाव (परिक्रमण), व्याप्ति (परिणत), दोषकथन (परिवाद), भूषण (परिष्कार), आश्लेष (परिष्मय), पूजन (परिचर्या), आच्छादन (परिच्छद) आदि अर्थोंके धोतनके लिए शब्दोंके पूर्व आता है ।

परिकंप-पु० [सं०] कंपकंपी; अत्यधिक भय ।

परिकथा-झी० [सं०] अनुकथा, वह छोटी कथा जो बड़ी कथाके अंदर आती हो ।

परिकर-पु० [सं०] परिवार; अनुचरवर्ग; कमरबंद; समारंभ, तैयारी; परलग; समूह; विवेक; सहायक; सहाकर्मी; एक अर्थालंकार जहाँ विशेष अभिप्रायसे युक्त विशेषणका प्रयोग हो; बीज, भावी घटनाओंका संकेतरूपमें ध्वन (ना०); निर्णय, फैसला ।

परिकरमा-झी० दे० 'परिक्रमा' ।

परिकरांकुर-पु० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ विशेष अभिप्रायसे युक्त किसी विशेषार्थका प्रयोग हो ।

परिकर्तन-पु० [सं०] काटना; गोलाकार काटना; शूल ।

परिकर्तिका-झी० [सं०] शूल ।

परिकर्म(न्)-पु० [सं०] शरीरमें केसर आदि रंगाना; पैर रंगाना या उसमें सहावर आदि रंगाना; अंकीका परस्पर योग, गुणन, माग आदि (मा०); पूजन; समारंभ; परिष्कार ।

परिकर्मा(संन्)-पु० [सं०] सेवक, अनुचर, परिचायक ।

परिकर्मी(सिन्)-पु० [सं०] सहायक सेवक, दास । वि० अंककृत करतेवाला ।

परिकर्ष, परिकर्षण-पु० [सं०] बाहर खींच लाना या

निकालना ।

परिकर्षित-वि० [सं०] बाहर खींचा हुआ; उत्प्रेषित ।

परिकर्षित-पु० [सं०] आकर्षण, अनुमान ।

परिकर्षक-पु० [सं०] बोझा, दगाबाजी ।

परिकर्षण-पु०, परिकर्षण-झी० [सं०] मनमें गढ़ना; रचना, बनाना; आविष्कार करना; निर्णय, निश्चय करना; बर्तन; प्रस्तुत करना ।

परिकर्षित-वि० [सं०] मनमें गढ़ा हुआ; रचा हुआ; आविष्कृत; निर्णीत; विभक्त; मुख्या किया हुआ ।

परिकर्षित-पु० [सं०] अक्त; तपस्वी ।

परिकीर्ण-वि० [सं०] चारों ओर फैला हुआ, व्याप्त; मरा हुआ, परिवेष्टित ।

परिकीर्तन-पु० [सं०] घोषित करना; गुणोंका अधिक वर्णन; किसीकी बहुत अधिक प्रशंसा करना ।

परिकीर्तित-वि० [सं०] जिसका परिकीर्तन किया गया हो ।

परिकूट-पु० [सं०] नगरके द्वारपरकी खाई; एक नाग ।

परिकूल-पु० [सं०] तटवर्ती भूमि ।

परिकूल-वि० [सं०] बहुत पतला; क्षीण ।

परिकोप-पु० [सं०] अत्यधिक क्रोध, प्रवंच कोप ।

परिक्रम-पु० [सं०] चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा करना; टहलना; क्रम; प्रवेश ।—सह-पु० बकरा ।

परिक्रमण-पु० [सं०] दे० 'परिक्रम' ।

परिक्रमा-झी० फेरी, प्रदक्षिणा; किसी मंदिर या तीर्थमें प्रदक्षिणा करनेके लिए बनवायी हुई जगह, फेरी देनेका मार्ग ।

परिक्रय-पु० [सं०] मजदूरी; भाड़ा; खरीद; कुछ मजदूरी तै करके जितव कालतक सेवामें रखना; ऐसी खरीद जिसमें आलके बदले माल दिया जाय, विनिमयरूप क्रय; इन्ध देकर खरीदा हुआ माल ।

परिक्रांत-वि० [सं०] जिसपर गमन किया गया हो, रौंदा हुआ । पु० वह स्थान जिसपर गमन किया गया हो; रुग; पदचिह्न ।

परिक्रिया-झी० [सं०] वेरना; खारें आदिमें वेरना; एक दिनमें होनेवाला एक तरहका याग; ध्यान, मनोयोग ।

परिक्रांत-वि० [सं०] बहुत अधिक थका हुआ ।

परिक्रिष्ट-वि० [सं०] जिसे बहुत अधिक क्लेश पहुँचा हो; थका हुआ । पु० तकलीफ, क्लेश, परेशानी ।

परिक्लेश-पु० [सं०] आर्द्रता, नमी, गीलापन ।

परिकणन-वि० [सं०] उच्च स्वरयुक्त ।

परिकृत-वि० [सं०] बहुत अधिक क्षतिग्रस्त; नष्ट ।

परिक्षय-पु० [सं०] बर्बादी, नाश, कोप ।

परिक्षा-झी० [सं०] कीचड़; गीली मिट्टी; † दे० 'परीक्षा' ।

परिक्षाम-वि० [सं०] अति क्षीण; बहुत दुर्बल ।

परिक्षालन-पु० [सं०] अच्छी तरह धोना; धोनेके कामका यानी ।

परिक्षिप्त-वि० [सं०] इधर-उधर फेंका या फैलाया हुआ, प्रकीर्ण; बिरा हुआ; खारेंसे बिरा हुआ; त्यागा हुआ, त्यक्त; चारों ओरसे बिरी हुई (सेना) ।

परिक्षीण-वि० [सं०] क्षुब्ध; नष्ट, तबाह; अति क्षीण; जिसका दिवाला निकल गया हो; शक्तिहीन (सेना) ।

परिशील-वि० [सं०] प्रमत्त, बहुत मतवाला ।

परिषेप-पु० [सं०] बर-उपर सूचना, दहकना; फैलाना, विकीर्ण करना; परित्याग; चारों ओरसे घेरना, आवेष्टित करना; आवेष्टित करनेवाली वस्तु; हानेद्वय ।

परिखन-पु० देखभाल करनेवाला ।

परिखना-सं० कि० प्रतीक्षा करना; जाँच करना; गणना करना ।

परिखा-औ० [सं०] नगर या दुर्गको दुर्गम बनानेके लिए उसके चारों ओर खोदी जानेवाली खाई ।

परिखात-पु० [सं०] परिखा; चारों ओर खार् खोदनेकी क्रिया; हराई, राह ।

परिखान-औ० गाड़ीकी लीक ।

परिखिन्न-वि० [सं०] कष्टग्रस्त, पीडित, परेशान ।

परिखेद-पु० [सं०] बहुत अधिक बकायद; दुर्दनी ।

परिख्यात-वि० [सं०] बहुत अधिक प्रसिद्ध ।

परिख्याति-औ० [सं०] विशेष प्रसिद्धि ।

परिवर्तय-वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य; जानने योग्य ।

परिवर्गण-पु०, परिवर्गणा-औ० [सं०] पूरी गणना करना; विधि तथा निषेध-शास्त्रका विशेष रूपसे कथन ।

परिवर्गणीय-वि० [सं०] परिवर्गणके योग्य ।

परिगणित-वि० [सं०] जिसका परिवर्गण किया गया हो ।

परिगण्य-वि० [सं०] दे० 'परिवर्गणीय' ।

परिगत-वि० [सं०] घिरा हुआ, आवेष्टित; पूर्णतः व्याप्त; जाना हुआ; शास्य; प्राप्त किया हुआ; मरा हुआ, मृत; विस्मृत; अभिभूत;...से पीडित; बाधित ।

परिगम, परिगमन-पु० [सं०] घेरना, आवेष्टित करना; व्याप्त करना या होना; प्राप्त करना; जानना ।

परिगमिक-पु० [सं०] गर्भवतीका दूध पीनेसे होनेवाला एक बाल रोग ।

परिगर्भित-वि० [सं०] जिसे बहुत अधिक गर्भ हो, बहुत गर्बी ।

परिगर्हण-पु० [सं०] अति निन्दा ।

परिगच्छित-वि० [सं०] गिरा हुआ, व्युत्तः उन्नत; गला हुआ; तरल, पिघला हुआ ।

परिगृह-पु० आश्रित जन; संबंधी ।

परिगहन-वि० [सं०] अति गहन ।

परिगहना-सं० कि० ग्रहण करना, भंगीकार करना ।

परिगीत-वि० [सं०] जिसका बहुत अधिक वर्णन या कीर्तन किया गया हो ।

परिगीत-औ० [सं०] वृत्तविशेष ।

परिगुणित-वि० [सं०] छिपाया हुआ, ढका हुआ ।

परिगुणित-वि० [सं०] भूलसे ढका हुआ ।

परिगृह-वि० [सं०] बहुत अधिक गुरु, अव्यंत गुण ।

परिगृह-वि० [सं०] जिसे बहुत अधिक कालच हो ।

परिगृहीत-वि० [सं०] स्वीकृत; चारों ओरसे घेरा हुआ; पकड़ा हुआ; धारण किया हुआ; ग्रहण किया हुआ; संरक्षित; प्राप्त किया हुआ; अनुसृत ।

परिगृहीता-वि० औ० [सं०] विवाहिता ।

परिगृहीता(तु)-पु० [सं०] पति; सहायक; गोद लेनेवाला व्यक्ति ।

परिगृहा-औ० [सं०] विवाहिता औ० ।

परिग्रह-पु० [सं०] लेना, स्वीकार करना; ग्रहण करना; चारों ओरसे घेरना, आवेष्टित करना; धारण करना; धन आदिका संचय; किसी ती दुई वस्तुको ग्रहण करना; किसी औकी भार्यारूपमें ग्रहण करना; पत्नी; औ; पति; घर; परिवार; अनुचर; सेनाका पिछला भाग; राहु द्वारा सूर्य या चंद्रमाका ग्रसा जाना; शपथ, कसम; मूल, आधार; विष्णु; आवदात; स्वीकृति, संजूरी; दावा; स्वागत-सत्कार; आतिथ्यसत्कार करनेवाला; आदर; सहायता; दमन; दंड; राज्य; संबंध; योग, संकलन; शाप ।

परिग्रहण-पु० [सं०] अच्छी तरह ग्रहण करना; पहनना, धारण करना ।

परिग्राम-पु० [सं०] गाँवके सामनेका भाग ।

परिग्राह-पु० [सं०] बहकी बेदीके चारों ओर तीन देखाई खींचना ।

परिग्राह्य-वि० [सं०] परिग्रहके योग्य; सम्भवहारके योग्य ।

परिग्र-पु० [सं०] अर्गला; छत्र; ढंका; रोक; बछी; भाला; लौहग्रहा; पत्ता; शीशेकी सुराही; मकान; बध, नाश करना; आघात करना; फाटक; सायं या प्रातःकाल सूर्यके सामने जानेवाले वादक; बह शिशु जिसकी जन्मके समय स्थिति बदल गयी हो; योगका एक मेद ।

परिग्रहन-पु० [सं०] चारों ओरसे रगड़ना; कलछी आठि-से चारों ओरसे मथना या चलना ।

परिग्रहित-वि० [सं०] जिसका परिग्रहन किया गया हो ।

परिग्रह-पु० [सं०] एक विशेष प्रकारका यज्ञाग्न ।

परिघात-पु० [सं०] मार डालना; नष्ट करना; मार डालनेका अन्ध; मदा; उल्लंघन करना ।

परिघातन-पु० [सं०] मार डालना; नष्ट कर देना; मार डालनेका अन्ध ।

परिघाती(सिन्धु)-वि० [सं०] मार डालनेवाला; नष्ट करनेवाला; उल्लंघन करनेवाला (आधा आदिक) ।

परिघृष्ट-वि० [सं०] अच्छी तरह घिसा हुआ ।

परिघृष्टिक-पु० [सं०] एक प्रकारका वानप्रस्थ ।

परिघोष-पु० [सं०] जोरकी आवाज; अनुचित बात; कड़ शब्द; बादलका गर्जन ।

परिचर-अं० कि० दे० 'परचना' । सं० कि० परीक्षा लेना ।

परिचपक-वि० [सं०] अति चंचल, जो कभी स्थिर न रहे ।

परिचय-पु० [सं०] पकड़ करना; ढेर लगाना; चारों ओरसे बहका करना; चारों ओर जमा करना; अच्छी तरह जानना, पूरी जानकारी, जान-पहचान; अभ्यास ।

-कक्षा-औ० बदता हुआ प्रेम या कषणा । -पत्र-पु० किसी व्यक्ति या अधिकारीका दिया हुआ वह पत्र जिसे कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या अधिकारीको अपना परिचय देनेके लिए दिखाता है ।

परिचर-पु० [सं०] भूख, सेवक, सिद्धमतपार; रक्षकी रक्षाके लिए नियुक्त सैनिक, रथरक्षक; अंगरक्षक; दबनायक; आदर-सत्कार । वि० भ्रमणशील; चल; महनशील ।

परिचरजा-औ० दे० 'परिचर्या' ।

परिचरण-पु० [सं०] सेवा, खिरमत; परिभ्रमण ।
परिचरणीय, **परिचरितव्य**-वि० [सं०] परिचरण करने योग्य ।
परिचरिता(तृ)-पु० [सं०] परिचर्या करनेवाला, सेवक, नौकर ।
परिचरी-औ० [सं०] सेविका, दासी ।
परिचर्मण्य-पु० [सं०] चमड़ेका पोता ।
परिचर्या-औ० [सं०] सेवा, खिदमत; रोगीकी सेवा, तीमारदारी ।
परिचायक-पु० [सं०] परिचय करानेवाला; जतानेवाला ।
परिचाय्य-पु० [सं०] यथाधि; लगानमें हकि करना, हजाना लगाना ।
परिचारण-पु० [सं०] सेवा, खिदमत; टहलने, घूमनेकी जगह; सेवक ।
परिचारक, परिचारिक, परिचारी(रिन्)-पु० [सं०] सेवक, खिदमतगार; रोगीकी सेवा करनेवाला, तीमारदार; त्रेवन्धिर आदिके कार्यकी देखभाल करनेवाला ।
परिचारण-पु० [सं०] सेवा ।
परिचारना*-स० क्रि० सेवा करना ।
परिचारिका-औ० [सं०] सेविका, टहल करनेवाली ।
परिचारित-पु० [सं०] लेख, कौफा, मनोविनोद ।
परिचार्य-वि० [सं०] सेवा करने योग्य, परिचर्याके योग्य ।
परिचालक-वि०, पु० [सं०] चारों ओर घुमानेवाला; चकानेवाला; हिलानेवाला ।
परिचालन-पु० [सं०] चारों ओरसे चलाना; हिलाना-डुलाना; चारों ओर घुमाना ।
परिचालित-वि० [सं०] जिसका परिचालन किया गया हो ।
परिचितन-पु० [सं०] स्मरण करना; सोचना ।
परिचित-वि० [सं०] जिसमें जान-पहचान हो, जिसका परिचय प्राप्त हो; एकत्र किया हुआ; ढेर लगाया हुआ; अभ्यस्त ।
परिचिति-औ० [सं०] परिचय, जान-पहचान ।
परिचिह्नित-वि० [सं०] जिसपर हस्ताक्षर किया गया हो (स्म०) ।
परिचीर्ण-वि० [सं०] जिसकी सेवा की गयी हो, सेवित ।
परिचुंबन-पु० [सं०] अतिशय प्रेमसे चूमना ।
परिचुम्बित-वि० [सं०] अत्यंत प्रेमसे चूमा हुआ ।
परिचय-वि० [सं०] जान-पहचानके योग्य, जानने योग्य; एकत्र करने योग्य; खोज करने योग्य ।
परिचो*-पु० परिचय, जानकार ।
परिच्छंद-पु० [सं०] सामर्थ्य चलनेवाले अनुचर आदि ।
परिच्छद-पु० [सं०] ढाँकेकी वस्तु; ढाँकेका कपड़ा आदि; आच्छादन; बस, पहनावा; राजाके साथ चलनेवाले अनुचर, सैनिक आदि; राजाके शस्त्र उपकरण (छत्र, चमर आदि); यात्राके लिए आवश्यक सामान; माल, असबाब ।
परिच्छद-वि० [सं०] ढका हुआ, आवृत; परिच्छद जहाँत अनुचर आदिसे युक्त; छिपाया हुआ ।
परिच्छा*-औ० दे० 'परीक्षा' ।
परिच्छिन्त-औ० [सं०] अवधि या व्याप्तिका निर्धारण,

सीमा, अवधि; अवधारण; विभाजन; परिमित; सटीक परिभाषा ।
परिच्छिन्न-वि० [सं०] जिसकी सीमा या व्याप्ति निर्धारित की गयी हो; जिसका चारों ओरका कुछ अंश छँट दिया गया हो; अलग किया हुआ, विभक्त; परिमित; उपचारित ।
परिच्छेद-पु० [सं०] काट-छँटकर अलग करना; अवधि, सीमा; अवधारण; सिर्णय, विश्व (जैसे सत्य और असत्यका); विभाजन; परिभाषा; सटीक परिभाषा; उन कई विभागोंमेंसे कोई एक जिनमें कोई ग्रंथ विषयके अनुसार विभक्त रहता है; किसी ग्रंथ या पुस्तकका वह भाग जिसमें किसी एक विषयकी चर्चा हो; उपचार; माप ।
परिच्छेदक-पु० [सं०] अवधि या सीमा निर्धारित करनेवाला; काट छँटकर अलग करनेवाला; अवधारण करनेवाला; विभाजन करनेवाला; परिभाषा बनानेवाला; परिच्छेदकर्ता; सीमा, अवधि ।
परिच्छेदक-पु० [सं०] अवधारण, विवेक करना; विभाजन; पुस्तकका अध्याय या विभाग ।
परिच्छेदासीन-वि० [सं०] जो सभी परिभाषाओंके परे हो; जिनकी सीमा, इबादा आदिका निर्धारण न हो सके ।
परिच्छेद्य-वि० [सं०] परिच्छेदके योग्य; परिमेय; अवधार्य ।
परिच्युत-वि० [सं०] गिरा हुआ, पतित; भ्रष्ट ।
परिच्युति-औ० [सं०] पतन; भ्रष्ट ।
परिछन-पु० दे० 'परछन' ।
परिछाई-औ० दे० 'परछाई' ।
परिर्जक-पु० दे० 'पर्यक' ।
परिर्जटन-पु० दे० 'पर्यटन' ।
परिजन-पु० [सं०] भरण-पोषणके लिए आश्रित लोग, जी, पुत्र, वास आदि; वे लोग जिनका कोई प्रतिपादन करे; राजा आदिके साथ-साथ चलनेवाले लोग, अनुचरण ।
परिजनता-औ० [सं०] परिजन होनेका भाव; सेवकत्व; अधीनता ।
परिजम्भा(स्मन्)-पु० [सं०] चंद्रमा; अंधि ।
परिजपित, परिजप्त-वि० [सं०] मंद स्वरमें उच्चरित (प्रार्थना आदि) ।
परिजय-वि० [सं०] जो चारों ओरसे जीता जा सके, जो हर तरहसे जीता जा सके ।
परिजयित-पु० [सं०] सेवकका अपने स्वामीकी निर्दयता, शठता आदिके बर्णन द्वारा अप्रत्यक्ष रूपसे अपना कौशल, उत्कर्ष आदि जताना; उपेक्षित या अवमानित नायिकाका व्यत्यपूर्ण शब्दोंमें नायककी निर्दयता, शठता आदिका बर्णन करना ।
परिज्ञात-वि० [सं०] ...से वत्पन्न; पूर्णतः विकसित ।
परिज्ञप्ति-औ० [सं०] अच्छी तरह जानना; पहचानना; शातचीत, कपोपकवन ।
परिज्ञा-औ० [सं०] दे० 'परिज्ञान' ।
परिज्ञात-वि० [सं०] भली भाँति जाना हुआ; पहचाना हुआ ।
परिज्ञासा(तृ)-वि०, पु० [सं०] अच्छी तरह जाननेवाला;

पहचाननेवाला ।
परिज्ञान-पु० [सं०] पूरी जानकारी, पूरा ज्ञान; खरूम ज्ञान; पहचान ।
परिज्वा (ज्वल) -पु० [सं०] चंद्रमा; अग्नि; सेवक ।
परिहीन-पु० [सं०] पक्षीका मोलार्थमें उबना ।
परिणत-वि० [सं०] चारों ओरसे झुका हुआ; बहुत झुका हुआ, अत्यंत नत; परिणाम या रूपांतरको प्राप्त; पका हुआ; पका; जिसको पूरी वृद्धि हो चुकी हो; म्रौढ़; पुष्ट, परिपक्व; पचा हुआ; ढलता हुआ (वय); समाप्त । पु० बह हाथी जो दंत प्रहारके क्षिप एक ओर झुका हो ।
परिणति-क्री० [सं०] चारों ओरसे झुका होना; पूरा झुकाव; अत्यंत नति; रूपांतरको प्राप्त होना; पकना; पक होना; पूर्ण वृद्धि; म्रौढ़ होना; परिणाम; परिपाक, पचना; अंत, अवसान ।
परिणद्ध-वि० [सं०] बंधा हुआ, मंदा हुआ; चौड़ा, विशाल ।
परिणमन-पु० [सं०] रूपांतर होना; परिणत होनेकी क्रिया; परिणामको प्राप्त होना ।
परिणमविता (तु) -पु० [सं०] परिणत करनेवाला, परिणामको प्राप्त करानेवाला ।
परिणय-पु० [सं०] चारों ओर (विशेषकर विवाहमण्डपमें स्थापित अधिक चारों ओर) ले जाना; विवाह ।
परिणयन-पु० [सं०] व्याह्वान, विवाहकी क्रिया ।
परिणहन-पु० [सं०] कसना, लपेटना ।
परिणाम-पु० [सं०] एक अवस्थासे दूसरी अवस्थाको प्राप्त होना, रूपांतर होना, बदलकर दूसरे रूप, आकार, गुण आदिको प्राप्त होना; प्रकृतिका रूपमा माव (सा०); चित्त, दंष्ट्रिय आदिका किसी धर्म या संस्कारको प्राप्त होना (बी०); पचना, परिपाक; पूर्ण वृद्धि, पूरा विकास; पकाव, पका होना; आयुका ढलना, वृद्ध होना; समय या अवधि-का समाप्त होना; फल, नतीजा; एक अर्थालंकार जहाँ उपमान उपमेयके साथ मिलकर कोई क्रिया करे ।
-वर्षा (क्षिन्) -वि० किसी कार्यके अले या दुरे फलको जाननेवाला, दूरदर्शी । -**दष्टि-क्री०** किसी कार्यके अले या दुरे परिणामको जान लेनेकी शक्ति या वृद्धि, दूर-दक्षिता । वि० दूरदर्शी । -**पथ्य-वि०** जिसका परिणाम अच्छा हो, अच्छा फल देनेवाला । -**बाध-पु०** यह सिद्धांत कि कारणमें कार्य अव्यक्त कारण विघटन रहता है और इस प्रकार अव्यक्त कार्य ही कारण है तथा व्यक्त कारण ही कार्य । -**बाधी (चिन्)** -पु० परिणामवादको माननेवाला । -**शूल-पु०** भोजनको पचते समय पेटमें ठठनेवाला शूल ।
परिणामक-वि० [सं०] परिणाम या रूपांतर कानेवाला ।
परिणामन-पु० [सं०] परिणामको प्राप्त कराना; परिणत करना; वदित करना; सबकी वस्तुओंको अपने काममें खाना (बी०) ।
परिणामिक-वि० [सं०] जो शीघ्र या आसानीसे पच जाय, सुपाच्य ।
परिणामी (चिन्) -वि० [सं०] जो परिणामको प्राप्त होता रहे, परिणामको प्राप्त होते रहना जिसका स्वभाव हो ।

परिणाव-पु० [सं०] चारों ओर या श्वर-उपर ले जाना; सतरंज, चौतर आदिकी गोठोंको चारों ओर चखाना; विवाह ।
परिणावक-पु० [सं०] नेता; पति, मर्ता । -**रख-पु०** दे० 'परिणीत रख' ।
परिणाह-पु० [सं०] कैलाश, विस्तार; आभोग; विशालता; पनहा ।
परिणाहवान् (वल्) -वि०, पु० [सं०] विस्तारवाला, विस्तृत ।
परिणाही (चिन्) -वि० [सं०] दे० 'परिणाहवान्' ।
परिणिसक-पु० [सं०] चूमनेवाला; खानेवाला ।
परिणिसा-क्री० [सं०] चूमना; खाना ।
परिणीत-वि० [सं०] विवाहिता; पूरा किया हुआ, समाप्त । -**रख-पु०** चक्रवर्ती राजाओंके सात प्रकारके कीर्तियोंसे एक (बी०) ।
परिणीता-वि०, क्री० [सं०] विवाहिता (क्री०) ।
परिणेतव्या, परिणेत्या-वि० क्री० [सं०] व्याह्वाने योग्य (लक्ष्मी) ।
परिणेत्या-पु० [सं०] पति, स्वामी ।
परिणेत्य-वि० [सं०] जो चारों ओर घुमाया जाय ।
परिणेत्या-वि०, क्री० [सं०] जो चारों ओर घुमायी जाय (वल्) ।
परितः (तल्) -अ० [सं०] चारों ओर; चारों ओरसे ।
परितच्छ-वि० दे० 'प्रत्यक्ष' । अ० देखते-देखने; आँखोंके सामने ।
परितस-वि० [सं०] बहुत तपा हुआ, बहुत गरम; बहुत अधिक दुःखित, संतप्त ।
परितसि-क्री० [सं०] परितप्त होनेकी क्रिया या भाव; अत्यंत ताप; अत्यधिक दुःख, मत्ताप ।
परितर्कण-पु० [सं०] विशेष रूपसे विचार करना ।
परितर्पण-पु० [सं०] तटुष्ट करना; खुश करना ।
परिताप-पु० [सं०] अत्यधिक ताप, बहुत गरमी, अति उष्णता; अत्यधिक दुःख; सताप, शोक, भय; क्षप, वैपक्षी; एक नरक ।
परितापी (चिन्) -वि० [सं०] अति उष्ण, बहुत गरम, जलता हुआ-सा; जिसे परिताप हो; सतापयुक्त; बहुत अधिक क्लेश पहुँचानेवाला, अति दुःखकर । पु० सताने-वाला, दुःख देनेवाला ।
परितिक-वि० [सं०] अति तिक, बहुत तीता ।
परितुष्ट-वि० [सं०] जिते पूरा संतोष हो, अच्छी तरह तुष्ट, संतुष्ट ।
परितुष्टि-क्री० [सं०] परितुष्ट होनेका भाव, परितोष, संतोष; प्रसन्नता ।
परितुष्ट-वि० [सं०] पूरी तरह अवाया हुआ; संतुष्ट ।
परितुष्टि-क्री० [सं०] परितुष्ट होनेका भाव, पूर्ण तुष्टि ।
परितोष-पु० [सं०] संतोष; दृष्टि; किसी ब्रह्माकी पूजित होनेवाली प्रसन्नता ।
परितोषक-पु० परितुष्ट करनेवाला ।
परितोषण-पु० [सं०] परितुष्ट करनेका कार्य ।
परितोषी (चिन्) -वि० [सं०] परितोषवाला, परितोषयुक्त,

संतोषी ।

परितोस*-पु० दे० 'परितोष' ।

परित्यक्त-वि० [सं०] पूरे तौरसे त्यागा हुआ, एकदम छोड़ा हुआ; छोड़ा, चलाया हुआ (जैसे बाण) । [स्त्री० परित्यक्ता] ।

परित्यक्ता(क्त)-वि०, पु० [सं०] परित्याग करनेवाला ।

परित्यजन-पु० [सं०] परित्याग करनेकी क्रिया, त्यागना ।

परित्याग-पु० [सं०] पूरी तरह त्याग देना, एकदम छोड़ देना, पूर्ण त्याग; वञ्च; जुदाई; उदारता ।

परित्यागना*-सं० क्रि० परित्याग करना ।

परित्यागी(गिन्)-वि० [सं०] जो परित्याग करे, पूरी तरह छोड़ देनेवाला ।

परित्यागजन-पु० [सं०] परित्याग कराना, छोड़ाना ।

परित्याग्य-वि० [सं०] परित्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य ।

परित्रस्त-वि० [सं०] अति त्रस्त, बहुत डरा हुआ ।

परित्राण-पु० [सं०] पूर्ण रक्षा, पूरा बचाव; अनिष्टमें प्रवृत्त व्यक्ति का निवारण; आत्मरक्षा; आश्रय, पनाह; बाल; मुँह ।

परित्रात-वि० [सं०] जिसका परित्राण किया गया हो ।

परित्रातम्ब-वि० [सं०] परित्राण करने योग्य ।

परित्राता(त्र)-वि०, पु० [सं०] परित्राण करनेवाला ।

परित्रास-पु० [सं०] अत्यधिक त्रास, भारी भय ।

परित्राशित-वि० [सं०] जिसने क्वच धारण किया हो, क्वचावृत ।

परिवृग्ध-वि० [सं०] जला, झुलमा हुआ ।

परिवर्-पु० [सं०] मसूँगेका एक रोग जिसमें मसूँगे दाँतोंसे अलग हो जाते और खून निकलता है ।

परिवर्शन-पु० [सं०] सम्म्यक् दर्शन, सब ओरमें, अच्छी तरह देखना ।

परिवृष्ट-वि० [सं०] उरी तरह काट खाया हुआ; टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।

परिवृद्धन-पु० [सं०] जलाना, झुलसाना ।

परिदान-पु० [सं०] अदला-बदला, विनिमय; धरोहर लोड़ाना ।

परिदाय-पु० [सं०] दुःखधि, सुखदुःख ।

परिदायी(यिन्)-पु० [सं०] वह जो अपनी लज्जकीका विवाह ऐसे व्यक्तिसे करे जिसका बच्चा भाई ब्याह न हो ।

परिदाह-पु० [सं०] अति दाह या ताप, बहुत अधिक जलन; अत्यधिक मानसिक दुःख, तीव्र मनस्ताप ।

परिविग्ध-वि० [सं०] (किसी वस्तुमें) बहुत अधिक डका हुआ, जिसपर कोई वस्तु बहुत अधिक मात्रामें लगी या पुती हुई हो । पु० वह मांसखंड जिसपर अन्नकी तह चढ़ायी गयी हो ।

परिदीन-वि० [सं०] जिसे बहुत अधिक मानसिक दुःख हो, तीव्र आंतरिक दुःखसे पीड़ित । -मानसः-सख-वि० जिसे तीव्र मनोव्यथा हो, अति खिन्न ।

परिद्व-वि० [सं०] अति द्व ।

परिदेव, **परिदेवक**-पु०, **परिदेवना**-स्त्री० [सं०] बहुत अधिक रोना-धोना, विरुधना, विचार करना ।

परिवृष्टा(वृ)-पु० [सं०] परिवर्शन करनेवाला ।

परिवृष-पु० [सं०] वर्षाका एक पुत्र ।

परिच-पु० दे० 'परिचि' ।

परिचन*-पु० दे० 'परिचान' ।

परिचर्च-पु० [सं०] आकमण; हानि पहुँचाना ।

परिचान-पु० [सं०] चारों ओरसे घेरना या आवृत करना; नाभिमें नीचेका पहनावा; वस्त्र; पहननेका कपड़ा; वस्त्र आदि धारण करना ।

परिचामीय-वि० [सं०] पहनने योग्य ।

परिचापन-पु० [सं०] पहनाना ।

परिचाप-पु० [सं०] अनुचरण; दल-बल; निर्वचन; मध्य-

भाग; पानी जमा करने या होनेकी जगह, जलस्थान ।

परिचायक-पु० [सं०] चारों ओरसे घेरने या आवृत करने वाला; वेरा; देहा; लकड़ी आदिका बाड़ा ।

परिचार्ज-पु० [सं०] महन करना ।

परिचाचन-पु० [सं०] दौड़ना, मागना; किसीके चारों ओर या पीछे-पीछे दौड़ना ।

परिचाची(चिन्)-वि० [सं०] दौड़नेवाला, मागनेवाला; किसीके चारों ओर या पीछे-पीछे दौड़नेवाला; चारों ओर बहनेवाला । पु० छियालीसवाँ सप्ताह ।

परिचि-स्त्री० [सं०] लकड़ी आदिका वेरा या बाड़ा; मेथकी समीपताके कारण सूर्य या चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला मण्डल, परिवेध; प्रकाशमंडल; वृत्त बनानेवाली रेखा; पक्षिवेका वेरा; होमाश्रिके तीन ओर रखी जानेवाली तीन लकड़ियाँ; क्षितिज; आवरण; पहनावा; उस वृक्षकी कोई शाखा जिसमें बलिपशु बाँधा जाता है; परिक्रमा करनेका निवृत्त मार्ग । पु० समुद्र (जो पृथ्वीकी वेरे हुए है) । -परितोष-पु० शिव । -रथ-पु० परिचारक; रथकी रक्षाके लिए रथके चारों ओर नियुक्त सैनिक ।

परिधीर-वि० [सं०] अति गम्भीर (स्वर, शब्द) ।

परिधूपित-वि० [सं०] धूप रूपसे बासित ।

परिधूमन-पु० [सं०] डकार; एक रोग जिसमें मसूँगी होती है ।

परिधूसर-वि० [सं०] धूसरे भरा हुआ, जिसमें खून धूसर लगी हो ।

परिधेय-वि० [सं०] पहनने योग्य । पु० नीचे या भीतर पहननेका एक कपड़ा ।

परिध्वंस-पु० [सं०] बर्बादी, विनाश; जातिच्युति; विफलता ।

परिर्नंदन-वि० [सं०] संतोषप्रद । पु० संतोष देना, संतुष्ट करना ।

परिणय*-पु० दे० 'परिणय' ।

परिणाम*-पु० दे० 'परिणाम' ।

परिनिर्षण-पु० [सं०] बंटना, देना ।

परिनिर्माण-पु० [सं०] पूर्ण निर्माण, मोक्ष ।

परिनिष्ठि-स्त्री० [सं०] दुःखि, मोक्ष ।

परिनिष्ठा-स्त्री० [सं०] चरम सीमा; धानकी पूर्णता; पर्य-वसान ।

परिनिष्ठित-वि० [सं०] पूर्णतया निपुण ।

परिमैहिक-वि० [सं०] सर्वोच्च, चोटीका ।

परिभाषा-पु० [सं०] किसी वाक्यका अर्थ पूरा करना; कथानककी मूलभूत घटना (बीज)का संकेत द्वारा लक्षण (ना०) ।

परिपंच-पु० दे० 'प्रपंच' ।

परिपंच, परिपंचक-पु० [सं०] मार्ग रोकनेवाला, बाध ।

परिपंची (पिच)-वि० [सं०] मार्ग रोकनेवाला । पु० बाध; छुट्टा, बाध ।

परिपक्व-वि० [सं०] पूर्णतया पका, अच्छी तरह पका हुआ; अच्छी तरह पका हुआ; सम्यक् ज्ञान; जिसका पूरा विकास हो चुका हो, प्रौढ़, जिसमें कच्चापन न हो (बुद्धि, ज्ञान); पूर्णतया कुशल; परिपक्वता प्राप्त (रस) ।

परिपक्वता-स्त्री० [सं०] परिपक्व होनेका भाव ।

परिपक्वावस्था-स्त्री० [सं०] परिपक्व होनेकी दशा ।

परिपचित-वि० [सं०] पकाया हुआ ।

परिपण, परिपन-पु० [सं०] मूल धन, पूँजी ।

परिपणन-पु० [सं०] बाजी लगाना; बाधा करना ।

परिपणित-वि० [सं०] बाधा किया हुआ; जिसके लिए शर्त की गयी हो, जिसकी बाजी लगायी गयी हो ।—**काक-संधि-स्त्री०** वह संधि जिसमें यह प्रतिष्ठा की गयी हो कि कौन कितने समयतक लड़ेगा ।—**देशसंधि-स्त्री०** वह संधि जिसमें यह नियत किया गया हो कि कौन पक्ष किस देशपर चढ़ाई करेगा ।—**संधि-स्त्री०** वह संधि जिसमें कुछ शर्तें लोकार की गयी हैं ।

परिपणितार्थसंधि-स्त्री० [सं०] वह संधि जिसमें यह तै थाया हो कि कौन कितना कार्य करे ।

परिपसन-पु० [सं०] चारों ओर उड़ना ।

परिपर-पु० [सं०] चक्करदार रास्ता ।

परिपचन-पु० [सं०] ओसना; ओसनेका मृष ।

परिपाहिमा (मृ)-स्त्री० [सं०] बहुत अधिक सफेदी या पीलापन ।

परिपांडु-वि० [सं०] बहुत अधिक सफेद या पीला ।

परिपांडुर-वि० [सं०] बहुत सफेद, आस्वर शुद्ध ।

परिपाक-पु० [सं०] सम्यक् पाक; अच्छी तरह पकना या पकाया जाना; अच्छी तरह पचना या पचाया जाना; पूर्ण विकास, प्रौढताकी प्राप्त होना; परिणति; परिणाम; पका होना (बुद्धि, अनुभव, ज्ञान आदि); कुशलता, निपुणता ।

परिपाकिनी-स्त्री० [सं०] निलोच ।

परिपाचन-वि० [सं०] पकानेवाला । पु० परिपक बनाना ।

परिपाचित-वि० [सं०] अच्छी तरह पकाया हुआ, भूना हुआ ।

परिपाटल-वि० [सं०] पीलापन लिये काळ रंगका ।

परिपाटलित-वि० [सं०] जो काळ-पीला रंगका गया हो, जो रंगकर पीलापन लिये काळ रंगका बना दिया गया हो ।

परिपाटि, परिपाटी-स्त्री० [मं०] चला आता हुआ क्रम, अनुक्रम, आनुपूर्वी, क्रमसिद्धि; रीति, ढंग; अंशगणित; प्रथा, चाल (हि०) ।

परिपाठ-पु० [सं०] विस्तारके साथ उल्लेख या पाठ करना ।

परिपाठ्य-पु० [सं०] बगल । वि० पासका, निकटवर्ती ।

—**चर-वि०** बगलमें या पास-पास चलनेवाला । —**वर्ती-**

(वि०) बगलमें या समीप रहनेवाला ।

परिपाठक-पु० [सं०] परिपाठन करनेवाला ।

परिपाठन-पु० [सं०] रखा करना, रखण; पाठन-पोषण करना, पोषण ।

परिपाठना-स्त्री० [सं०] रखण, बचाव ।

परिपाठनीय-वि० [सं०] परिपाठन करने योग्य ।

परिपाठयिता (तु)-पु० [सं०] परिपाठन करनेवाला ।

परिपाठयिषा-स्त्री० [सं०] परिपाठन करनेकी इच्छा ।

परिपाठ्य-वि० [सं०] परिपाठनके योग्य ।

परिपिंग-वि० [सं०] अति पिंग, ललाई लिये भूरा ।

परिपिङ्गर-वि० [सं०] हल्के काळ-भूरे रंगका ।

परिपिच्छ-पु० [सं०] मोरकी पूँछसे तैयार किया जाने वाला एक प्राचीन आभूषण ।

परिपिच्छक-पु० [सं०] सोता ।

परिपीडन-पु० [सं०] बहुत पीड़ा देना; परना, बहुत

दबाना; अनिष्ट करना ।

परिपीडित-वि० [सं०] अति पीडित ।

परिपीवर-वि० [सं०] अति पीवर, बहुत मोटा ।

परिपुटन-पु० [सं०] सपुटित करना; छिड़का या चमका अलग करना या होना ।

परिपुष्ट-वि० [सं०] जिसका पोषण अच्छी तरह किया गया हो, सम्यक् पोषित; अति पुष्ट, पूर्ण रूपसे पुष्ट ।

परिपूजन-पु० [सं०] सम्यक् पूजन ।

परिपूजा-स्त्री० [सं०] सम्यक् पूजा ।

परिपूजित-वि० [सं०] अच्छी तरह पूजित, जिसका सम्यक् पूजन किया गया हो ।

परिपूत-वि० [सं०] पूर्णतया शुद्ध किया हुआ; अति पवित्र; स्रष्ट आरितसे अच्छी तरह माफ किया हुआ (जैसे परिपूत धान्य) ।

परिपूरक-वि० [सं०] परिपूर्ण करनेवाला; सशुद्ध या पूर्ण-तया संपन्न बनानेवाला ।

परिपूरण-पु० [सं०] परिपूर्ण करना; भर देना ।

परिपूरणीय-वि० [सं०] परिपूर्ण करने योग्य ।

परिपूरण-वि० दे० 'परिपूर्ण' ।

परिपूरित-वि० [सं०] परिपूर्ण किया हुआ ।

परिपूर्ण-वि० [सं०] अच्छी तरह भरा हुआ, तृप्त भरा हुआ; पूरा किया हुआ; सतुष्ट । —**चंद्रविमलप्रभ-पु०** एक तरहकी समाधि ।

परिपूर्णोदु-पु० [सं०] पूरा चाँद, सोलहों कलाओंसे युक्त चंद्रमा ।

परिपूर्ति-स्त्री० [सं०] सम्यक् पूर्ति ।

परिपूच्छ-पु० [सं०] प्रदन ।

परिपूच्छक-वि० पु० [सं०] प्रदन करनेवाला; पूछनेवाला; जिहास ।

परिपूच्छनिका-स्त्री० [सं०] वाद-विवादका विषय ।

परिपूच्छा-स्त्री० [सं०] प्रदन; जिहासा; पूछना ।

परिपूष-वि० [सं०] अर्थात् कोमल । पु० एक सुगंधित घास ।

परिपोट, परिपोटक-पु० [सं०] कानका एक रोग ।

परिपोदन-पु० [सं०] छिड़का या चमका अलग होना ।

परिपोष-पु० [सं०] सम्यक् पुष्टि; सम्यक् पोषण ।
परिपोषण-पु० [सं०] परिपुष्ट करना; पुष्टि करना ।
परिमल-पु० [सं०] प्रमल; जिह्वासा; चुकावुक्तताका प्रमल ।
परिप्राप्ति-झी० [सं०] मिलना, प्राप्त होना ।
परिप्रेषण-पु० [सं०] भेजना; त्यागना; निकाट वाहर करना ।
परिप्रेषित-वि० [सं०] भेजा हुआ; त्यागा हुआ; निर्वासित ।
परिप्रेष्य-वि० [सं०] भेजने योग्य । पु० भुज्य, नौकर ।
परिप्लव-पु० [सं०] तेरना; नौका, पोत; बाढ़; आप्लावित होना; पीड़न । वि० छिछला हुआ, चंचल, अस्थिर; तिरता हुआ ।
परिप्लावित-वि० [सं०] दे० 'परिप्लव' ।
परिप्लुत-वि० [सं०] जल आदिसे आर्द्र या सिक, सरा-बोर; जलसे आप्लावित, बाढ़के पानीसे व्याप्त; अभिभूत । पु० छल्लाँ ।
परिप्लुता-झी० [सं०] मदिरा; मैथुन-वेदनावती योनि ।
परिप्लुष्ट-वि० [सं०] जला हुआ; जलाया हुआ ।
परिप्लोष-पु० [सं०] जलना; जलाना; आंतरिक ताप ।
परिफुल्ल-वि० [सं०] दे० 'प्रफुल्ल' ।
परिवर्चन-पु० [सं०] जकड़कर बोधना ।
परिवर्ह-पु० [सं०] दे० 'परिवर्ह' ।
परिवर्हण-पु० [सं०] दे० 'परिवर्ण' ।
परिवाचा-झी० [सं०] कट, तकलीफ; श्रम, आयास ।
परिवृण्डण-पु० [सं०] अभ्युदय; वर्धन, बढ़ाना; पूरक ग्रंथ ।
परिवृष्टित-वि० [सं०] बढ़ाया हुआ, वर्धित; वृद्धिशील; "से युक्त । पु० हाथीकी चिम्बाइ ।
परिवोध-पु० [सं०] ज्ञान ।
परिवोधन-पु०, परिबोधना-झी० [सं०] चेतावनी ।
परिमंग-पु० [सं०] डकड़-डकड़े होना ।
परिमंक्षण-पु० [सं०] चट कर जाना ।
परिमर्त्स्य-पु० [सं०] डौटना-फटकाना, धमकाना ।
परिभव-पु० [सं०] अनादर, तिरस्कार; पराजय । -वद्-पु० हेय वस्तु । -विधि-झी० बेकदरी, तिरस्कार ।
परिभवन-पु० [सं०] अनादर करना, तिरस्कार करना ।
परिभवनीय-वि० [सं०] अनादर करने योग्य ।
परिमवी (विन्) -वि० [सं०] अनादर या तिरस्कार करनेवाला ।
परिभाव-पु० [सं०] अनादर, तिरस्कार ।
परिभावन-पु० [सं०] संयोग, मिलन; विचार करना, मनन करना ।
परिभावना-झी० [सं०] विचार करना, विचारना ।
परिमावित-वि० [सं०] सम्युक्त; व्याप्त; विचारित ।
परिमावी (विन्) -वि० [सं०] अनादर या तिरस्कार करनेवाला ।
परिमावुक-वि० [सं०] अवज्ञा करनेवाला ।
परिमाषण-पु० [सं०] बातचीत, वार्तालाप; निरापूर्वक बुर्बचन कबना, फटकार; नियम ।
परिमाषा-झी० [सं०] किसीका ऐसा नपा-पुला पतिव्य जिससे उसके स्वरूप, गुण, वैशिष्ट्य आदिका यथाथं ज्ञान हो जाय, कृष्ण; किसी शास्त्र, कला या विधाके क्षेत्रमें

विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला शब्द या संज्ञा; अपने प्रयोगके लिए शास्त्रकारों द्वारा रची हुई विशिष्ट संज्ञा; परिमाषाका शाब्दिक रूप, परिमाषाकी शब्दावली; बात-चीत, आलाप; व्याख्या; निंदा ।
परिमावित-वि० [सं०] स्पष्ट रूपसे कथित, समझाकर कहा हुआ, व्याख्या ।
परिमावी (विन्) -वि० [सं०] बोलनेवाला, कहनेवाला ।
परिमाष्य-वि० [सं०] कथनके योग्य ।
परिमिष्ट-वि० [सं०] विद्वीर्ण; क्षत; जिसका आकार विकृत हो गया हो ।
परिभुक्त-वि० [सं०] जो भोगा ना चुका हो, जो काममें लाया जा चुका हो; खाया हुआ; अधिकारमें किया हुआ ।
परिभुवन-वि० [सं०] झुका हुआ, टेढ़ा ।
परिभू-वि० [सं०] चारों ओरसे घेरने या आच्छादित करनेवाला; आवेष्टित करनेवाला; व्याप्त करनेवाला (हमका प्रयोग ईश्वरके लिए होता है) ।
परिभूत-वि० [म०] निम्नका अनादर या तिरस्कार किया गया हो, अनादर, तिरस्कृत ।
परिभूति-झी० [सं०] अनादर, तिरस्कार ।
परिभूषण-पु० [सं०] सजाना, बनाव-सिंघार करना, सँभारना, किसी प्रदेशकी पूरी मालगुजारी विपक्षीको देकर की जानेवाली संधि ।
परिभूषित-वि० [सं०] सजाया हुआ, सँभारा हुआ ।
परिभेद-पु० [सं०] शस्त्र आदिका आघात; क्षत, बाढ़ ।
परिभेदक-पु० [सं०] काबने या छेदनेवाला अस्त्रादि । वि० काबनेवाला; परिमित करनेवाला ।
परिभोका (कृ) -वि०, पु० [सं०] बिना अधिकारके परायी वस्तु काममें लानेवाला ।
परिभोग-पु० [सं०] भोजन, उपभोग; स्त्री-प्रसंग; बिना अधिकारके परायी वस्तुमें काममें लाना ।
परिभंश-पु० [सं०] गिरना, पतन, च्युत होना; भाग निकलना, पलायन ।
परिभ्रम-पु० [सं०] इश्वर-उपर धूमना; चारों ओर घूमना; कोई बात धुमा-फिराकर कहना; भ्रम, भ्रांति, भूल ।
परिभ्रमण-पु० [सं०] चारों ओर घूमना; इश्वर-उपर धूमना, पर्यटन; पक्षि आदिका चक्कर खाना; परिधि ।
परिभ्रष्ट-वि० [सं०] गिरा हुआ, पतित; खोया हुआ, जो लापता हो गया हो; भागा हुआ; बहका हुआ, जिसका साथ छूट गया हो; (किसी वस्तुमें) रहित किया हुआ ।
परिभ्रामण-पु० [सं०] इश्वर-उपर धुमाना; चक्कर देना, (पक्षि आदिकी) घुमाना ।
परिभ्रामी (मिन्) -वि० [सं०] परिभ्रमण करनेवाला ।
परिमंजल-वि० [सं०] बटुलाकार, मोक्ष; जो परिमाणमें एक परमाणुके बराबर हो । पु० बूट, बेरा, दापरा; पिंड, गोष्क; परिधि । -कुष्ठ-पु० एक प्रकारका कोद ।
परिमंजलता-झी० [सं०] मोक्षाई ।
परिमंजलित-वि० [सं०] गोलाकृति बनाया हुआ ।
परिमंथर-वि० [सं०] बहुत थीमा, बहुत मंद ।
परिमंथ-वि० [सं०] बहुत मंद, बहुत धुँधला; बहुत क्षीण; बहुत थोड़ा, अल्पव्यय; बहुत मुस्त ।

परिमन्थु-वि० [सं०] बहुत कुञ्ज ।

परिमर-पु० [सं०] विनाश; बाध; शत्रुओं के नाशका एक तांत्रिक प्रयोग ।

परिमर्-पु० [सं०] धर्षण, रगटना; नष्ट करना, विनाश; हिसन; मसलना; मोजना ।

परिमर्ष-पु० [सं०] छु जाना, स्पर्श; विचार करना, विचारण ।

परिमर्ष-पु० [सं०] रंभ्या; क्रोध ।

परिमल-पु० [सं०] कुमकुम, चंदन आदिके रगटना या घिसना; कुमकुम, चंदन आदिके मर्दनसे उत्पन्न सुगंध; सुगंध, सुवास; क्षी-प्रसंग; पक्षितोंकी मडली; धम्मा, दाग ।

परिमलित-वि० [सं०] नासा हुआ, सुवासित; गदा किया हुआ ।

परिमाण-पु० [सं०] माप; तौल; मात्रा; आकार ।

परिमाणक-पु० [सं०] तौल; मात्रा ।

परिमाता(तु)-पु० [सं०] मापनेवाला; तौलनेवाला ।

परिमापी(विन्)-वि० [सं०] कट देनेवाला ।

परिमान*-पु० दे० 'परिमाण' ।

परिमार्ग, परिमार्गण-पु० [सं०] खोजना, हँदना, अन्वेषण; साफ करना; सफाई, स्पर्श ।

परिमाजक-वि०, पु० [सं०] धोनेवाला; स्वच्छ करनेवाला ।

परिमाजन-पु० [सं०] धोना; साफ करना, स्वच्छ करना; शहद और तेलमें पगी हुई एक मिठाई; छुटियाँ या दोष दूर करना, सुधारना ।

परिमाजनीय-वि० [सं०] जिसकी छुटियाँ दूर करना आवश्यक हो, सशोध्य ।

परिमाजित-वि० [सं०] धोया हुआ; साफ किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ ।

परिमित-वि० [सं०] मापा हुआ; तौला हुआ; जो परिमाणमें आवश्यकतासे न अधिक हो, न कम; जिसकी मात्रा कम-वेश न हो; धोखा; मामूली, सामान्य; सीमित । * अ० पर्यंत । -कथ-वि० अल्पभाषी । -मुक्(ञ्), -भोजन-वि० अल्पाहारी ।

परिमितायु(स्)-वि० [सं०] अल्पायु ।

परिमिताहार-वि० [सं०] अल्पाहारी ।

परिमिति-क्षी० [सं०] परिमाण; अवधि; सीमा; *मर्यादा ।

परिमिलन-पु० [सं०] संयोग, मिलन; स्पर्श ।

परिमिलित-वि० [सं०] मिला हुआ, मिश्रित; भरा हुआ, व्याप्त ।

परिमीढ-वि० [सं०] मुक्तसे सिकत ।

परिमुक्त-वि० [सं०] जिसे छुटकारा मिला हो, मुक्त किया हुआ ।

परिमुक्ति-क्षी० [सं०] छुटकारा ।

परिमुग्ध-वि० [सं०] आकर्षक, मुंदर ।

परिमुढ-वि० [सं०] धराया हुआ, परेशान, व्याकुल ।

परिमुदित-वि० [सं०] कुचला हुआ; रगता या पीसा हुआ; आलिंगित ।

परिमुष्ट-वि० [सं०] परिमाजित; छुआ हुआ, स्पर्श; व्याप्त ।

परिमेध-वि० [सं०] मापने योग्य; तौलने योग्य; कुल्ल सीमित ।

परिमोक्ष-पु० [सं०] सम्यक् मुक्ति, निर्वाण; मुक्त करना, छोड़ना, मोचन; मरुत्वाया; विभु; बच निकलना ।

परिमोक्षण-पु० [सं०] मुक्त करना, छोड़ना; मुक्ति, छुटकारा; प्रतिक्रिया ।

परिमोष, परिमोषण-पु० [सं०] चुराना, चोरी; डाका ।

परिमोषक, परिमोषी(विन्)-वि०, पु० [सं०] चोरी करनेवाला; डाका डालनेवाला ।

परिमोहन-पु० [सं०] पूरी तरह मग्न कर देना; किसीकी मति हर लेना ।

परिम्लान-वि० [सं०] मुरझाया हुआ, कुम्हालाया हुआ; ज्विपर धम्मा लगा हो; छात; क्षीण । पु० भय या दुःखसे चेहरेकी रंग बदलना; धम्मा, दाग ।

परिम्लायी(विन्)-पु० [सं०] आँसूकी कनीनिकाका एक रोग । वि० मुरझाया हुआ; क्षिण ।

परिर्मंक*-पु० दे० 'पर्यंक' ।

परिर्मंत*-अ० दे० 'पर्यंत' ।

परियज्ञ-पु० ['०] बृहस्पतिसत्र आदि गौण याग ।

परियत्त-वि० [सं०] चारों ओरसे घिरा हुआ ।

परिवष्टा(वृ)-पु० [सं०] वह जो अपने वस्त्रोंमें से पहले सोमयाग करे ।

परिया-पु० दक्षिण भारतकी एक प्राचीन जाति ।

परियाण-पु० [सं०] परिभ्रमण, पर्यटन ।

परियाणिक-पु० [सं०] घूमने-फिरने या पर्यटन करनेकी गाड़ी ।

परियात-वि० [सं०] घुमा-फिरा हुआ; आया हुआ ।

परिरक्षित-वि० [सं०] क्षत या नष्ट किया हुआ ।

परिरंभ, परिरंभण-पु० [मं०] गर्भे लगना, आलिंगन करना ।

परिरंभवा*-स० क्रि० आलिंगन करना ।

परिरंभक-पु० [सं०] रक्षण करनेवाला, अभिभावक ।

परिरक्षण-पु० [सं०] हर तरहसे रक्षा करना, पूरी तरह रक्षण करना; देखभाल; बचाव; पालन, निर्याता ।

परिरक्षणीय, परिरक्ष्य-वि० [मं०] पूरी तरह रक्षा करने योग्य ।

परिरक्षित-वि० [मं०] जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गयी हो; अली अँति निभाया हुआ, जिसका पूरी तरह पालन किया गया हो ।

परिरक्षिता(तु), परिरक्षी(क्षिन्)-वि०, पु० [सं०] पूरी तरह रक्षा करनेवाला ।

परिरथ्या-क्षी० [सं०] सड़क ।

परिरथ्य-वि० [सं०] जिसने आलिंगन किया हो ।

परिरमित-वि० [सं०] (कायक्रोधा आदिते) प्रसन्न किया हुआ ।

परिराटी(टिन्)-वि० [सं०] चीखने-चिलानेवाला; रट लगानेवाला ।

परिरीध-पु० [सं०] रोक, बकावट ।

परिलंघन-पु० [सं०] उछलना, लँघन ।

परिलुप्त-वि० [सं०] बहुत छोटा; बहुत हल्का; जो बहुत जल्द पच जाय ।

परिलिखन-पु० [सं०] रगड़कर चिकना करना ।

परिचिन्तित-वि० [सं०] जिसके चारों ओर रेखाएँ आदि बनायी गयी हों, वृत्त आदिसे बना हुआ।

परिच्छिन्न-वि० [सं०] अच्छी तरह काटा हुआ।

परिच्छिन्न-वि० [सं०] क्षतिग्रस्त; छुट; नष्ट। —संज्ञ-वि० वेदोद्य, सहाईन।

परिच्छिन्न-वि० [सं०] काटा हुआ; काटकर अलग किया हुआ।

परिच्छिन्न-पु० वर्णन; [सं०] रेखा-चित्र, साक्षा; रेखाएँ वा चित्र खींचनेका आला, झुँबी, कलम आदि।

परिच्छिन्न-पु० [सं०] वेदोके चारों ओर रेखाएँ बनाना।

परिच्छिन्न-पु० [सं०] कि० जानना, समझना।

परिच्छिन्नी (विभु)-पु० [सं०] कानका एक रोग।

परिच्छिन्न-पु० [सं०] कोष; नास; क्षति; उपेक्षा।

परिवचन-पु०, परिवचन-औ० [सं०] बोझा देना, छलना।

परिवक्त-औ० [सं०] गौल गब्दा।

परिवत्सर-पु० [सं०] पूरा वर्ष।

परिवत्सरीय, परिवत्सरीय-वि० [सं०] जिसका संबंध पूरे वर्षने हो; पूरे वर्षभर रहनेवाला।

परिवचन-पु० [सं०] निंदा करना; किसीके दोष दिखाना; शोर मचाना।

परिवचन-पु० [सं०] कतरना; झूठना (बाह)।

परिवर्जन-पु० [सं०] त्यागना, त्याग; मारण।

परिवर्जनीय-वि० [सं०] त्यागने योग्य।

परिवर्जित-वि० [सं०] त्यागा हुआ, त्यक्त।

परिवर्त-पु० [सं०] चक्कर, परिभ्रमण; किसी काल या युग की समाप्ति, युगका अंत; (धनका) परिच्छेद, अधीय आदि; विनिमय, बदल-बदल; महाकण्ठप; आश्रुति; पुनर्जन्म; राशिक्रमका फेरा; पलायन; निवासस्थान। शृत्पु-का एक पौत्र।

परिवर्तक-वि० [सं०] हुमानेवाला, चक्कर देनेवाला; चक्कर खानेवाला; विनिमयकारी। पु० शृत्पुका एक पौत्र।

परिवर्तन-पु० [सं०] फेरा, चक्कर; चक्कर देना, परिभ्रमण; उलटना; पलटना; करवट लेना; अदल-बदल, विनिमय;

हेर-फेर होना; बदलना, एक स्थिति, रूप आदिसे दूसरी स्थिति, रूप आदिकी प्राप्त होना; किसी काल या युगका अंत।

परिवर्तनीय-वि० [सं०] परिवर्तनके योग्य।

परिवर्तिका-औ० [सं०] किर्गद्वियका एक छद्म रोग।

परिवर्तित-वि० [सं०] जिसने चक्कर दिया हो; जिसे चक्कर दिया गया हो; उलटा-पलटा हुआ; जिसका विनिमय किया गया हो; जिसमें हेर-फेर हुआ हो या किया गया हो; बदला हुआ; छोटा हुआ।

परिवर्ती (सिन्)-वि० [सं०] जो बदलता रहे, जिसमें परिवर्तन होता रहे; विनिमय करनेवाला; जो धूमता या चक्कर देता रहे; भागनेवाला।

परिवर्तुल-वि० [सं०] एकदम मोड़।

परिवर्चन-पु० [सं०] अच्छी तरह बढना वा बढ़ावा जाना, सम्यक् वृद्धि।

परिवर्धित-वि० [सं०] जो अच्छी तरह बढ़ा हो वा बढ़ावा

गया हो; जिसमें पूर्ण वृद्धि की गयी हो; जिसमें ऊपरसे कुछ और जोड़ दिया गया हो।

परिवर्मा (मैन्)-वि० [सं०] जो कबचसे ढका हो, कबचा-वृत्त।

परिवर्ध-पु० [सं०] छत्र, चंवर आदि रात्रिबद्ध; रात्राभ्यंके अनुचर आदि, दल-बल; कम्परे वा बरका राज-सामान; जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुएँ संपत्ति।

परिवर्धन-पु० [सं०] अनुकरणीय; वेश-भूषा, पोशाक; वृद्धि, बाढ़; पूजा।

परिवसथ-पु० [सं०] गाँव।

परिवह-पु० [सं०] सात प्रकारकी वायुओंमेंसे एक; अधिको सात जिह्वाओंमेंसे एक।

परिवा-औ० पक्षकी पहली तिथि।

परिवाद-पु० [सं०] निंदा, शिकायत; किसीमें दोष दिखाना जिनका अस्तित्व न हो, झूठी निंदा; कुपवाति अपवाद; आरोपित दोष, जुर्म; मित्रवाद।

परिवाद-पु० [सं०] बादी, मुद्दे; निंदा करनेवाला; शोणा बजानेवाला।

परिवादिनी-औ० [सं०] सात चारोंबाही शोणा; निंदा करनेवाली स्त्री।

परिवादी (विभु)-वि० [सं०] निंदा करनेवाला, अपवाद करनेवाला; आरोप करनेवाला; शोर मचानेवाला।

परिवाप-पु० [सं०] बपन, शोना; मुंडन, झूँझना; जलशाय, ताकन; बरका उपयोगी सामान; अनुचरवर्ग; भूना हुआ चाबक, लावा, कलही; छेना।

परिवापण-पु० [सं०] मुंडन।

परिवापित-वि० [सं०] झूँझा हुआ, मुंडित।

परिवार-पु० [सं०] कुटुंब आदि; आश्रितजन, परिवजन; अनुचरोंका समूह, दल-बल; ढकनेवाली वस्तु, आवरण; भ्रान्त; सजातीय व्यक्ति; * वस्तुओंका समुदाय, समूह।

परिवारण-पु० [सं०] ढकनेकी क्रिया; आवरण; भ्रान्त।

परिवारित-वि० [सं०] घिरा हुआ, आवेष्टित।

परिवारी-पु० परिवारमें रहनेवाला, कुटुंबी।

परिवास-पु० [सं०] डहरना, टिकना; दुराग, सुवास।

परिवाह-पु० [सं०] पानीका उमककर या फूटकर चारों ओर बहना; बड़े हुए पानीके बहनेका मार्ग; फालतू पानीका निकास।

परिवाही (विभु)-वि० [सं०] उमककर वा छलककर बहनेवाला।

परिविद्वक, परिविद्वक्(त्)-पु० [सं०] दे० 'परिवित्त'।

परिविण्ण, परिविच-पु० [सं०] दे० 'परिवित्त'।

परिवित्त, परिविचि-पु० [सं०] वह जिसका छोटा भाई उससे पहले ही विवाह या अग्निका आधान कर ले।

परिविद्ध-वि० [सं०] चारों ओरसे बिधा हुआ। पु० कुनेर।

परिविद्वाह-पु० [सं०] हस्ततः धूमना, चहलकदमी।

परिवीक्षित-वि० [सं०] जिसे पंखा झलका गया हो।

परिवीक्ष-वि० [सं०] परिवेष्टित; आवृत; भ्रान्त। पु० मझाका वज्रवृत्त।

परिवृद्ध-वि० [सं०] बढ़, मजबूत। पु० स्वामी; सरदार।

परिवृत्त-वि० [सं०] घिरा हुआ, आवेष्टित; भ्रान्त; शक्त;

प्राप्त ।

परिवृत्ति-औ० [सं०] वेरना, आवेष्टित करना ।

परिवृत्त-वि० [सं०] दुमाया हुआ; जैदाया हुआ; बदला हुआ; समाप्त; वेरा हुआ; आवेष्टित । पु० आत्मिगन, कुदकना ।

परिवृत्ति-औ० [सं०] दुमाय; वेरना; आवेष्टित करना; समाप्ति; विनिमय, बदला-बदला; एक शब्दके स्थानपर दूसरे शब्दको इस प्रकार रखना कि अर्थमें अंतर न पड़े, अर्थको रखा करते हुए किसी शब्दके स्थानपर उसका पर्यायवाची शब्द रखना (जैसे—'चरण-कमल'के स्थानपर 'पाद-पद्म' रखना); एक अर्थालंकार जहाँ सम या असम पदाओंका विनिमय हो अर्थात् कुछ देकर कुछ लेनेका वर्णन हो (हा०) ।

परिवृद्ध-वि० [सं०] अच्छी तरह बड़ा हुआ ।

परिवृद्धि-औ० [सं०] पूर्ण वृद्धि, सम्पन्न वृद्धि ।

परिवेत्ता-(त) , **परिवेदक-पु०** [सं०] दे० 'परिवित्त' ।

परिवेत्-पु० [सं०] व्यर्थ हान ।

परिवेदक-पु० [सं०] छोटे भांशका बड़े भांशसे पहले ही विवाह करना वा अधिशेष ले लेना; विवाह; व्यापक ज्ञान, पूरी जानकारी; सर्वत्र स्थिति; कष्ट; सर्व ।

परिवेदना-औ० [सं०] बुद्धिमत्ता, चातुरी; दूरदर्शिता ।

परिवेदनीय, परिवेदिनी-औ० [सं०] परिवेत्ताकी पत्नी ।

परिवेत्, परिवेष-पु० [सं०] वेरना, घेठन; हलके बादलों-की विशेष स्थितिसे कारण सूर्य वा चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला एक प्रकारका मंडल, किरणोंका वह मंडल जो कभी-कभी सूर्य वा चन्द्रमाके चारों ओर बन जाता है; परिधि; आवेष्टित करनेवाली वस्तु; भोजन परसना ।

परिवेषक-पु० [सं०] आना परोसनेवाला ।

परिवेषण-पु० [सं०] भोजन परमना—'परिवेषणतक सुबुल करीसे तुम्हें न करने दूँगी मैं'—एंचबंदी; वेरनेकी क्रिया; सूर्य वा चंद्रके चारों ओरका मंडल; परिधि ।

परिवेष्टन-पु० [सं०] चारों ओरमें वेरना; आवृत्त करने-वाली वस्तु, आवरण, आच्छादन; वेरा, परिधि; पट्टी ।

परिवेष्टा(ष्ट)-पु० [सं०] भोजन परसनेवाला ।

परिवेष्टित-वि० [सं०] चारों ओरमें घिरा हुआ; आवृत्त, आच्छादित ।

परिवेष्य-वि० [सं०] परमने योग्य ।

परिवेष्यक-वि० [सं०] अति स्पष्ट ।

परिवेष्य-पु० [सं०] व्यय, खर्च, लागत; मसाले ।

परिवेष्याच-पु० [सं०] चारों ओरसे बेधनेवाला; जलबैत; कनेर ।

परिवन्ध्या-औ० [सं०] चारों ओर घूमना (विशेषतः मिश्र-का); तपस्या; सम्प्राप्ति ।

परिव्राज, परिव्राजक-पु० [सं०] वह जो घर-बार छोड़कर चतुर्थ आश्रममें प्रविष्ट हो गया हो, सम्प्राप्ति ।

परिव्राज(ञ्)-पु० [सं०] परिव्राजक ।

परिवर्त्ता(क्ति)-वि० [सं०] भय, आशंका करनेवाला ।

परिव्राज्यत-वि० [सं०] हमेशा उसी रूपमें बना रहने-वाला ।

परिविह्व-वि० [सं०] जो छूट गया हो, बचा हुआ समाप्त ।

पु० किसी पुस्तक वा लेखका पूरक अंश ।

परिशीकन-पु० [सं०] स्वर्ण; कभाव; किसी विषयपर पूरी तरह विचार करते हुए उसे पढ़ना, सम्पन्न अध्ययन ।

परिशीक्षित-वि० [सं०] जिसका परिशीकन किया गया हो ।

परिशुद्ध-वि० [सं०] पूर्णतया शुद्ध; चुकाया हुआ; जो बरी कर दिया गया हो ।

परिशुद्धि-औ० [सं०] पूर्ण शुद्धि; रिहाई ।

परिशुद्ध-वि० [सं०] अति शुष्क, एकदम सूखा हुआ; सुरक्षाया हुआ; पिचका हुआ (कपोल आदि); नीरस । पु० पकाया हुआ मांस ।

परिशुम्ब-वि० [सं०] पूर्णतः रिक्त; ...से पूर्णतः वंचित ।

परिश्रुत-पु० [सं०] उत्साह, उर्मग, जोश, क्रान्त ।

परिशेष-पु० [सं०] अवशेष, वह जो बच गया हो; समाप्ति ।

परिशेष-पु० [सं०] सम्पन्न वृद्धि, पूरी सफाई; कण आदिका भुगतान, चुकता ।

परिशोधन-पु० [सं०] पूर्णतया शुद्ध करनेकी क्रिया; भुगतान, चुकता करना; संशोधन ।

परिशोध-पु० [सं०] बहुत अधिक संज्ञ ज्ञाना, शुष्क हो जाना ।

परिश्रम-पु० [सं०] क्रांति; क्लेशकर आयास, मेहनत ।

परिश्रमी(मिन्)-वि० [सं०] परिश्रम करनेवाला, जो परिश्रम करे ।

परिश्रय-पु० [सं०] आश्रय; सभा ।

परिश्रयण-पु० [सं०] वेरना, आवेष्टित करना ।

परिश्रांत-वि० [सं०] विशेष रूपसे थका हुआ ।

परिश्रांति-औ० [सं०] अधिक थकावट; परिश्रम ।

परिश्रित-वि० [सं०] आश्रित; चारों ओरसे वेरा हुआ ।

पु० आश्रय; चारों ओरमें वेरना ।

परिश्रुत-वि० [सं०] विस्मृत, प्रसिद्ध ।

परिश्रिष्ट-वि० [सं०] आत्मिगत ।

परिशेष-पु० [सं०] आत्मिगत ।

परिषद्, परिषद्य, परिषद्वल-पु० [सं०] समासद् ।

परिषद्-औ० [सं०] सभा; वेद-वेदांग, धर्मशास्त्र आदिमें पारंगत ब्राह्मणोंकी वह सभा जिसे प्राचीन कालके राजा धर्म आदिके मामलोंका निर्णय करनेके लिए यदा-कदा बुलाया करते थे; समूह, मंडली ।

परिषिक-वि० [सं०] सींचा हुआ, जिसपर जल आदि छिंका गया हो ।

परिषीकण-पु० [सं०] गाँठ देना ।

परिषेक-पु० [सं०] सींचना, छिंकाव; ज्ञान ।

परिषेक-वि० [सं०] सींचनेवाला, छिंकावनेवाला ।

परिषेकन-पु० [सं०] सींचना, छिंकाव ।

परिषेक-पु० [सं०] वह जिसका पालन-पोषण उसके माता-पिताने नहीं प्रत्युन दूसरेने किया हो; नौकर (विशेषतः वह जो खारीके साथ-साथ चले) ।

परिषेकण, परिषेक-वि० [सं०] जिसका पालन अन्यके द्वारा हुआ हो । पु० ऐसा बच्चा ।

परिषेक-पु० [सं०] सजावट ।

परिष्करण-पु० [सं०] बुराईयों या दोष दूरकर ठीक करने का कार्य, संशोधन ।

परिष्कार-पु० [सं०] सजावट, सिंगार; पाक द्वारा सुखाबु बनाना; संस्कार; भूषण, गहना; मार्जन आदि संस्कार, सफाई; घरका उपयोगी सामान ।

परिष्कृत-वि० [सं०] जिसका परिष्कार किया गया हो; सजाया हुआ, सँवारा हुआ; पाक द्वारा सुखाबु बनाया हुआ; साफ किया हुआ; चमकाया हुआ; शुद्ध किया हुआ ।

परिष्कृता-स्त्री० [सं०] बच्चे निमित्त शुद्ध की हुई मूँषि ।

परिष्कृति-स्त्री० [सं०] शुद्ध करना, साफ करना; चमकाना; सँवारना ।

परिष्कृता-स्त्री० [सं०] सजाना, अलंकृत करना; शोधन ।

परिष्ठयन-पु० [सं०] स्तुति, प्रशंसा ।

परिष्टोम-पु० [सं०] इषीकी मूल; आवरण, आच्छादन; गदा ।

परिष्ठुल-पु० [सं०] चारों ओरकी, आसपासकी भूमि ।

परिष्वङ्-पु० [सं०] सजावट, सिंगार; फूल आदिसे बालों को सजाना; परिष्कार; निर्वाहका साधन; परिवार, परिजन; अनुचर वर्ग; स्वदन, हरकत; कुचलना ।

परिष्वङ्-पु० [सं०] प्रवाह, बहाव; नदी; आर्द्रता; क्षीय (वे०) ।

परिष्वंदी(विन्)-वि० [सं०] बहनेवाला, प्रवाहशील ।

परिष्वंग, **परिष्वंजन**, **परिष्वजन**-पु० [सं०] आलिंगन ।

परिष्वक्त-वि० [सं०] जिसका आलिंगन किया गया हो, आलिंगित; आवेष्टित ।

परिस्वया-स्त्री० [सं०] गिनती, गणना; एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तुका एक स्थानसे निषेध करके उसका दूसरे स्थानमें स्थापन हो; ऐसा विधान जिससे विहित वस्तुसे निषेध सभी वस्तुओंका निषेध हो जाय (मी०) ।

परिस्वयात-वि० [सं०] जिसकी परिस्वया हुई हो, परिगणित; जिसका स्थास तीरसे उल्लेख किया गया हो ।

परिस्वयाम-पु० [सं०] गणना; सही अनुमान; विशेष वस्तुका निर्देश ।

परिस्वर्-पु० [सं०] प्रलय-काल ।

परिस्वित-वि० [सं०] जिसका संवय किया गया हो, संचित ।

परिस्तान-पु० [सं०] तार, तौल; तंत्री ।

परिसभ्य-पु० [सं०] समाका सदस्य ।

परिसमापन-पु० [सं०] समाप्त करना, पूरा करना ।

परिसमाप्त-वि० [सं०] पूरी तरह समाप्त ।

परिसमाप्ति-स्त्री० [सं०] पूर्ण समाप्ति ।

परिसमाहन-पु० [सं०] एकत्र करना; बहागिमें समिधा बाँटना; वक्षमें अधिके चारों ओर गिरे हुए तुण आदिको आगमें बाँटना; बहागिके चारों ओर जलसे मार्जन करना ।

परिसर-पु० [सं०] नदी, नगर, पर्वत आदिके आस-पासकी भूमि; विधान, नियम; स्थिति; मौका; शृंगार; एक देवता; श्वरसे उबर जाना, छिलना-डोलना ।

परिसरण-पु० [सं०] चारों ओर घूमना, घबँटना; श्वर-उबर दौड़ना ।

परिसर्प-पु० [सं०] चारों ओर जाना या घूमना-फिरना, घबँटना; जल आदिसे घेरना; किसीको खोजते हुए उससे पीछे जाना, किसीका पीछा करना; एक सारस्वत वाद्य; घेरना, आवेष्टन; एक प्रकारका सोंपा; एक प्रकारका छुद्र कुष्ठ, विसर्प ।

परिसर्पज-पु० [सं०] श्वर-उबर जाना या घूमना-फिरना; गमन; रेंगना ।

परिसर्चा-स्त्री० [सं०] चारों ओर या श्वर-उबर जाना; टहलना, घूमना, घबँटना; एक प्रकारका रोग ।

परिसहाय-पु० (एडेकांग) मगरनर आदिके साथ चकने-वाला अंगरक्षक, सैनिक अधिकारी ।

परिसाँखन-पु० [सं०] साँखना देना, दादस मँधाना ।

परिसार-पु० [सं०] चारों ओर जाना या घूमना ।

परिसारक-वि०, पु० [सं०] चारों ओर जाने या घूमने-वाला ।

परिसारी(विन्)-वि० [सं०] चारों ओर जानेवाला; श्वर-उबर घूमनेवाला ।

परिसिद्धिका-स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी चावलकी कण्ठी ।

परिसीमा-स्त्री० [सं०] चौइड़ी; अवधि; हद, अंतिम सीमा ।

परिसूय-पु० [सं०] बह पशु जिसका बध बचवानेके बाहर किया गया हो (कौ०) ।

परिसेवना-स्त्री० [सं०] विशेष सेवा ।

परिस्कंद-पु० [सं०] दे० 'परिष्कंद' ।

परिस्कन्ध-वि०, पु० [सं०] दे० 'परिष्कन्ध' ।

परिस्तर-पु० [सं०] फैलाना, व्यास करना, छिलराना; जमा करना; आवरण ।

परिस्तरण-पु० [सं०] छिलराना, फैलाना; आवरण ।

परिस्तान-पु० [सं०] परिचोका देश, परिचोका लोक ।

परिस्तीर्ण, **परिस्तृप्त**-वि० [सं०] फैलाया हुआ; आच्छादित ।

परिस्तोम-पु० [सं०] दे० 'परिष्टोम' ।

परिस्थान-पु० [सं०] बासस्थान; हदता, ठोसपन ।

परिस्थिति-स्त्री० [सं०] आसपास, चारों ओरकी स्थिति, अवस्था ।

परिस्वंद-पु० [सं०] दे० 'परिष्वंद' ।

परिस्वंदन-पु० [सं०] बहुत अधिक कंपित होना ।

परिस्पर्द्धा, **परिस्पर्धा**-स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिस्पर्द्धा' ।

परिस्पर्द्धी(हिंन्), **परिस्पर्द्धी**(हिंन्)-वि० [सं०] दे० 'प्रतिस्पर्द्धी' ।

परिस्तुट-वि० [सं०] सुस्पष्ट; अच्छी तरह विकसित, सम्यक् रीतिसे विकसित ।

परिस्तुण-पु० [सं०] कंपन; कलियुक्त होना, कलकीका निकलना ।

परिस्मापन-पु० [सं०] चकित करना, अचंभेमें बाँटना ।

परिस्वङ्-पु० [सं०] चूना, रिसना; दे० 'परिष्वंद' ।

परिस्त्राव-पु० [सं०] चारों ओरसे चूना, टपकना या रिसना; बहना, प्रवाहित होना; नीचे छुटकना; बचेका जन्म लेना ।

परिस्त्राव-पु० [सं०] चारों ओरसे चूना, टपकना या रिसना; एक रोग जिसमें मलने साथ-साथ पित और कफ

गिरता है (आ० दे०); बन्धका जन्म लेना ।
परिक्षावन-पु० [सं०] वह वरतन जिसमेंसे साफ किया जानेवाला पानी टपकाते हैं ।
परिक्षावी (विच्)-वि० [सं०] बूने, टपकने या रिसने-वाला; बहनेवाला । पु० एक प्रकारका भगदर ।
परिक्षुत-वि० [सं०] लवचुक; रसा हुआ । -**वधि-पु०** वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो ।
परिक्षुता-झी० [सं०] सराब; भंगूरी सराब ।
परिक्षुत्-झी० [सं०] मदिरा; चूसा, क्षरण । वि० चूनेवाला ।
परिस्वजन-पु० [सं०] दे० 'परिस्वज' ।
परिहंस-पु० दे० 'हंसा', हाह ।
परिहस-झी० हलमें पीछेकी ओर लगी हुई नह लफकी जिसे हल चलाते समय हाथसे पकड़े रहते हैं । वि० [सं०] ढीला किया हुआ; मारा हुआ ।
परिहरण-पु० [सं०] त्यागना, तजना; दूर करना, निवारण; छीन लेना, अपहरण करना ।
परिहरणीय-वि० [सं०] परिहरणके योग्य ।
परिहरना-स० कि० छीकना, त्यागना ।
परिहस-पु० दे० 'परिहास'; दुःख ।
परिहसित-वि० [सं०] जो हँसा गया हो ।
परिहस्त-पु० [सं०] हाथका छछा, मुद्रिका ।
परिहा-पु० एक छंद ।
परिहाज-पु० [सं०] नुकसान उठाना, हानि उठाना; हानि, बाटा, कमी ।
परिहाजि, परिहाजि-झी० [सं०] नुकसान, पाटा; हास; त्यागना, छोड़ना; उपेक्षा करना ।
परिहार-पु० [सं०] त्यागना, छोड़ना; दोष आदिको दूर करना, दोषका निराकरण; गौबके चारों ओर जनताकी ओरसे परती छोड़ी हुई जमीन (स्थ०); पराजित शत्रुने छीनी हुई वस्तुएँ; कर या लगानकी नाकी (स्थ०); अनादर, अमहान; खंडन; किसी कुकृत्यका प्रायश्चित्त करना; राजपूतोंका एक बंध जो अभिषेकके अंतर्गत माना जाता है ।
परिहारक-वि०, पु० [सं०] परिहार करनेवाला । -**प्राप्त-पु०** वह गाँव जिसकी मालगुजारी माफ हो (को०) ।
परिहारना-स० कि० दूर करना; हटार करना, मारना ।
परिहासी (विच्)-वि० [सं०] त्याग वा निवारण करनेवाला ।
परिहार्य-वि० [सं०] परिहार करने योग्य, त्यागने वा निवारण करने योग्य ।
परिहास-पु० [सं०] हँसी, मजाक । -**बेदी (विच्)-पु०** मसकरा ।
परिहास्य-वि० [सं०] परिहासके योग्य ।
परिहित-वि० [सं०] आधृत, आच्छादित पड़ना हुआ, धारण किया हुआ ।
परिहीन-वि० [सं०] जिसका हास हो गया हो; रहित; त्यागा हुआ; अपेक्षित ।
परिहृत-वि० [सं०] त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ; दूर किया हुआ; नष्ट किया हुआ; जिसका खंडन किया गया हो; छिपाया हुआ; छीना हुआ ।

परिहृषि-झी० [सं०] त्यागना, छोड़ना ।
परिद्वन-पु० [सं०] टुट करना; भेंट देना ।
परी-झी० भी, तोह आदि निकाछनेकी एक तरहकी कलछी, पक्षी ।
परी-झी० [फा०] पुरानी कथानोंके अनुसार अथर्व होने तथा जहाँ चाहें बहों जा सकने आदिकी शक्तिते युक्त उड़नेवाली परम सुंदर शिवाँ जिनका निवासस्थान कोह-काफ पहाड़ माना जाता है (फारसी-उर्दूकी कवितामें इन्हें सुंदर शिवाँका उपमान बनाया गया है); अति रूपवती झी (ला०) । -**झाना-पु०** परियों वा हस्तीनोंके रहनेका स्थान । -**झबाज-पु०** जंत्र-मंत्र करनेवाला । -**झबानी-झी०** जंत्र-मंत्र करनेका काम वा पेशा । -**झबा-वि०** जिसपर परीका लाया हो । -**झमाछ-वि०** हसीन, खूबसूरत । -**झाव-पु०** परीका बहा । वि० हसीन, सुंदर, खूबसूरत । -**झार-वि०** दे० 'परी-छा' । -**झव-पु०** बाजुओंपर पहननेका एक गहना । -**रू-वि०** अव्यंत सुंदर । -**का साबा-परीका** भसर ।
परीक्षक-पु० [सं०] परीक्षा करने वा लेनेवाला, परखनेवाला, जाँचनेवाला ।
परीक्षण-पु० [सं०] परीक्षा करने वा लेनेकी क्रिया, जाँच, परख; राजाके मंत्री, घर आदिके दोषादोषकी जाँच करना ।
परीक्षना-स० कि० परीक्षा लेना ।
परीक्षा-झी० [सं०] किसीके गुण दोष, योग्यता, शक्ति आदिकी सच्ची जानकारीके लिए उसे अच्छी तरह देखना-मालूमना, किसीके गुण, दोष, योग्यता आदिका पता लगानेके लिए किया जानेवाला काम, इन्तजान; तर्क, प्रमाण आदिके द्वारा किसी वस्तुके तत्त्वका निश्चय करना; किसी वस्तुका सैसा प्रयोग जो उसके बारेमें कोई विशेष बात निश्चित करनेके लिए किया जाय; विचारधियों वा उम्मीदवारोंकी योग्यताकी वह विशेष प्रकारकी जाँच जिसमें उनसे मौखिक वा लिखित रूपमें प्रश्न पूछे जाते हैं; अभियुक्तकी सरोपता वा निरोपता अथवा साक्ष्योंकी सचाई वा झुठाईका निर्णय करनेकी एक प्राचीन रीति । -**काछ-पु०** परीक्षाका समय । -**अबज-पु०** वह कमरा वा घर जिसमें परीक्षार्थी परीक्षा देने समय बैठते हैं, परीक्षा देनेका स्थान । -**झुल्ल-पु०** परीक्षाके निमित्त लिया जानेवाला द्रव्य ।
परीक्षार्थ-अ० [सं०] परीक्षाके लिए ।
परीक्षार्थी (यिन्)-पु० [सं०] परीक्षा देनेवाला ।
परीक्षित-वि० [सं०] जिसकी परीक्षा हो गयी हो, जाँचा हुआ, आजमाया हुआ ।
परीक्षित-पु० [सं०] पांडुजलके एक प्रसिद्ध राजा जो अभिमन्युके पुत्र और अर्जुनके पौत्र थे (रत्नकी कृत्य तक्षक सर्वके काटनेमें हुई और इन्हींके राजत्वकालमें कछि-बुगका पदार्पण हुआ) ।
परीक्ष्य-वि० [सं०] परीक्षा लेने योग्य, जिसकी परीक्षा हो जाय ।
परीक्षना-स० कि० परखना; जाँचना ।
परीक्षित-वि० दे० 'परीक्षित' । पु० दे० 'परीक्षित' ।

अ० अवश्य ही।
परीक्षत—पु० दे० 'परीक्षित'।
परीक्षणा—स० कि० परीक्षा लेना (गुणां)।
परीक्षम—पु० पर्येक्षे पदमनेका एक चाँदीका गहना।
परीक्षा—स्त्री० दे० 'परीक्षा'।
परीक्षित—वि० दे० 'परीक्षित'। पु० राजा परीक्षित।
परीणाम—पु० [सं०] दे० 'परिणाम'।
परीणाह—पु० [सं०] गाँवके चारों ओर छोटी दुरी सार्व-जनिक भूमि (स्तृ०); शिव; दे० 'परिणाह'।
परीत—वि० [सं०] चकर देनेवाला; घेरनेवाला; बीता हुआ, गत; गृहीत। * पु० दे० 'प्रेत'।
परीताप—पु० [सं०] दे० 'परिताप'।
परीति—स्त्री० [सं०] पुष्पाञ्जन।
परीतोष—पु० [सं०] दे० 'परितोष'।
परीत—वि० [सं०] दिया हुआ; चारों ओरसे कटा हुआ; सीमित।
परीवाह—पु० [सं०] दे० 'परिवाह'।
परीधान—पु० [सं०] दे० 'परिधान'।
परीप्सा—स्त्री० [सं०] प्राप्त करनेकी इच्छा; श्रापता; जल्द-बाजी।
परिभष—पु० [सं०] दे० 'परिभष'।
परीभाव—पु० [सं०] अनादर; तिरस्कार।
परिमाण—पु० [सं०] दे० 'परिमाण'।
परिरंभ—पु० [सं०] आलिंगन।
परिर—पु० [सं०] फल।
परिण—पु० [सं०] कछुवा; बंदा, दंड; वस्त्र।
परीवाद—पु० [सं०] दे० 'परिवाद'।
परीवाप—पु० [सं०] दे० 'परिवाप'।
परीवार—पु० [सं०] दे० 'परिवार'।
परीबाह—पु० [सं०] दे० 'परिवाह'।
परीधान—वि० दे० 'परिधान'।
परीशेष—पु० [सं०] दे० 'परिशेष'।
परीष्टि—स्त्री० [सं०] अन्वेषण, खोज; पूछताछ, जाँच; सेवा; सम्मान; स्वादिशर्मणी।
परीसना—स० कि० परीसना—'आनंद वन पिय न्यूति पयोनि न्यास परीसत हौ'—धन०; स्पर्श करना—'मयुर विमंगी जो छौ कृपान परीसर्'—धन०।
परीसर्वा—स्त्री० [सं०] दे० 'परिसर्वा'।
परीसार—पु० [सं०] दे० 'परिसार'।
परीहार—पु० [सं०] दे० 'परिहार'।
परीहास—पु० [सं०] दे० 'परिहास'।
प—पु० [सं०] समुद्र; स्वर्ग; प्रथि, गाँठ; पहाड़। † अ० गत या आगामी वर्ष (सं०)।
प(स्)—पु० प्रथि, गाँठ; शरीरका कोई अंग।
पस्ना—स्त्री० एक प्रकारकी जमीन; अपमानका बदला।
 वि० कामचोर, जो काम लेते समय बैठ जाय या पक रहे (बैठ आदि) रास्ते आदिमें; पका हुआ (मांस)।
पर्वा—स्त्री० भद्रद्वैतीकी अनाज मूलनेकी नाँद।
परुक्ष—वि० दे० 'परुष'।
परुक्षाई—स्त्री० परवृत्ता, कठोरता।

परुक्ष—अ० [सं०] गत वर्ष।
परुक्षार—पु० [सं०] बीबा।
परुष—वि० [सं०] कठोर, कसा; रुखा; कर्षा; दुरा लगने-वाला; तीव्र, उग्र (वायु आदि); कठोर हृदयवाला, दया-हीन; नीरस, रसहीन; गंदा; चितकवटा। पु० कभी बात, दुर्बचन; नीली कटसरैया; फाकटा। —**प**रुष—पु० कठोर बचन, कभी बात, अप्रिय बात, लगनेवाली बात।
परुषा—वि० स्त्री० [सं०] 'प'रुष'का स्त्रीलिंग रूप।—**प**रुषि—स्त्री० काम्यकी तीन वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें ठ, ड, ङ, उ बणौं, छने समासों और ऐसे सद्युक्त बणोंकी योजना होती है जो कठोर होते हैं।
परुषाक्षर—वि० [सं०] जिसमें रुखे शब्दोंका प्रयोग हो, कहे शब्दोंमें कहा हुआ; कहे शब्द प्रयोगमें ढानेवाला।
परुषेतर—वि० [सं०] कोमल, न्युत।
परुषोक्ति—स्त्री० [सं०] मिष्टुर बचन, कभी या लगनेवाली बात।
परुषोक्ति—वि० [सं०] कभी बात कहनेवाला।
परुसना—स० कि० दे० 'परसन'।
परूंगा—पु० शाहवस्तुकी एक जाति।
परुष, **प**रुषक—पु० [सं०] फाकटा।
परे—अ० उस ओर; और आगे; बहुत दूर; ऊपर; बाद; बाहर। **पु०**—**प**रे कहना—'दूर हटो', 'दूर हटो' कहना। —**बिडाना**—परास्त करना, मात करना।
परेई—स्त्री० मादा परेबा, कदतरी, पडुकी।
परेखना—स० कि० अच्छी तरह देखना-भाटना, परीक्षा करना, जाचना; * प्रतीक्षा करना।
परेखा—पु० परीक्षा, जाँच; पश्चात्ताप; निश्वास।
परेग—पु० कोहकी कोक।
परेड—पु०, स्त्री० दे० 'परेड'।
परेड—पु०, स्त्री० [अ०] सैनिकोंकी कमावद; उन्हें बुझकला-की शिक्षा देनेका मैदान।
परेस—वि०, पु० [सं०] दे० 'प्रेत'। —**अर्वा(र्)**—पु० यमराज। —**भूमि**—स्त्री० हमशान। —**राइ(ज्)**—पु० यमराज। —**बास**—पु० हमशान।
परेता—पु० सूत छपेटनेके कामका जुकाहोंका एक भाग; बाँस्की पतली चपटी तीलियोंसे तैयार किया जानेवाला वह वेहन जिसपर पतंगकी डोर लपेटी जाती है।
परेषवि, **प**रेसु(स्)—अ० [सं०] दूसरे दिन।
परेर—पु० आकाश।
परेखी—पु० तांडव नृत्यका एक भेद जिसमें अश्विनयकी न्यूनता और गात्रविशेषकी अधिकता रहती है।
परेषा—पु० कदत; पंडुर्क; कोई तेज उड़नेवाला पक्षी; शीघ्रगामी पत्रवाहक, तेज चढ़नेवाला हस्तरा।
परेस—पु० [सं०] परमात्म, परमेश्वर।
परेसान—वि० [फा०] उद्विग्न, व्याकुल; हैरान।
परेशानी—स्त्री० [फा०] उद्विग्नता, व्याकुलता।
परेष्टि—पु० [सं०] ग़ल।
परेष्टु, **प**रेष्टुका—स्त्री० [सं०] वह गाय जो कई बार बच्चा दे चुकी हो।
परेस—पु० दे० 'परेश'।

परेह-पु० बी या तेरुमें छौककर पकाया जानेवाला बेसन या पीठीका घोल जिसमें पकोड़ी, बड़े आदिको डुबाये रकते हैं, बेसनको पतली कढ़ी।

परेहारा-पु० वह जमीन जो ओतनेके बाद सींची गयी हो।

परैचित-वि० [सं०] अन्य द्वारा पाठित। पु० कोकिल; सेवक।

परैना-पु० पशुओंको हॉकनेका एक इशियार।

परै०-अ० दे० 'परसो'।

परो-परसुका समागत रूप। -रखा(अस्)-वि० जो राग आदि भावोंसे परे या अस्पृष्ट हो; विरक्त, विमुक्त, विमुक्त। -छक्ष-पु० एक लाखसे अधिककी संख्या। वि० एक लाखसे अधिक।

परोक्षदोष-पु० [सं०] न्यायालयमें छपटांग बयान देनेका अपराध।

परोक्ष-वि० [सं०] जो आँखोंके सामने न हो; जो नेत्रका विषय न हो, अस्पृश्य; अनुपस्थित; छिपा हुआ, अलक्षित, गुप्त; अज्ञात। पु० वर्तमान न होने की स्थिति, अनुपस्थिति; पूर्ण भूतकाल (संस्कृत व्या०)। -भोग-पु० किसी वस्तुका ऐसा भोग जो उसके स्वामीकी अनुपस्थितिमें किया जाय। -हृषि-श्री० अज्ञात जीवन। वि० अज्ञात रूपसे रहनेवाला।

परोक्षार्थ-वि० [सं०] जिसका अग्निप्राय या अर्थ रहस्यपूर्ण हो।

परोक्षार्थ-पु० दे० 'प्रयोजन'; विवाह आदि उत्सव।

परोक्षा-श्री० [सं०] दूसरेकी स्त्री।

परोक्षार्थ-पु० [सं०] दूसरेका अभ्युदय।

परोक्ष-वि० [सं०] अन्य द्वारा पाठित। पु० कोकिल।

परोक्षा-सं० कि० दे० 'परोना'।

परोपकार-पु० [सं०] दूसरेकी भलाई।

परोपकारी(वि०)-वि० [सं०] दूसरेकी भलाई करनेवाला।

परोपकृत-वि० [सं०] जिसकी दूसरेने भलाई की हो।

परोपदेश-पु० [सं०] दूसरेकी उपदेश देना।

परोपसर्पण-पु० [सं०] मोक्ष माँगना।

परोपना-सं० कि० अभिमनित करना।

परोषा-पु० परलक्ष।

परोक्ष-पु० दे० 'पैरोक्ष'।

परोक्ष, परोष्णी-श्री० [सं०] लेख होनेवाला एक कीड़ा, लेखवा।

परोक्ष-पु० दे० 'परोक्ष'।

परोक्षार्थ-सं० कि० दे० 'परसना'।

परोषा-पु० परलक्ष या बालीमें रखा हुआ एक व्यक्तिके खानेभरका भोजन जो भोजनमें सम्मिलित न होनेवालेके यहाँ भेजा जाता है।

परोषी-पु० दे० 'परोक्ष'।

परोषीया-पु० भोजन भरसनेवाला।

परोक्ष-पु० सवारी या बोझ लादनेके काम जानेवाला पशु।

परोषा-पु० मोटा, पुर।

परै०-अ० दे० 'परसो'।

परोक्षा-पु० दे० 'परोक्षा'।

परोक्षा-पु० [सं०] बगला; पक्षाघात, प्लानि।

परोक्षा, परोक्षा-श्री० [सं०] पाकरका पैर; नयी सीपारी।

परोक्षा-पु० दे० 'परका'।

परोक्षा-सं० कि० दे० 'परवाना'।

परोक्ष-पु० दे० 'पर्यक'।

परोक्षी-श्री० [सं०] दासहस्ती।

परोक्ष-पु० [सं०] मेघ, बादल; बरसनेवाला बादल; वर्षा; बादलोंका गर्जन; हवा; विष्णु। -परोक्षी-श्री० वर्षा; हवा की पत्ती शब्दी।

परोक्ष-श्री० [सं०] दासहस्ती।

परोक्षा-पु० [सं०] पचा; पर; बाणका पंख; पान; पलाशका पैर। -कार-पु० बरछे, पनेरी। -कुटिका, कुटी-श्री० पत्तीकी बनी कुटिया। -कूर्च-पु० एक कृच्छ्र अथ जिसमें तीन दिन उपवास करनेके बाद पलाश, गूलर, कमल तथा बेलके पत्तों और कुछका काटा पीते हैं।

-कृच्छ्र-पु० पाँच दिनोंका एक अथ जिसमें क्रमसे एक-एक दिन केवल पलाश, गूलर, कमल तथा बेलके पत्तोंका और कुछका काटा पीकर रहते हैं। -खंड-पु० वह वनस्पति जिसमें कमी फूल न लगे; पत्तीका समूह। -खीर-पट-पु० शिव। -खीरक-पु० एक गंधद्रव्य। -नर-पु० पलाशके पत्तों या सरपतका वह पुतला जिसे किसीकी लाश न मिलनेकी स्थितिमें उसके स्थानपर जलाते हैं। -मेदिनी-श्री० प्रियंगु नामकी लता। -भोजन-वि० पचा खाकर रहनेवाला। पु० बकरी। -भोजनी-श्री० बकरी। -अग्नि-पु० पचा (अथर्ववेद); एक तरहका अन्न। -आवाल-पु० कर्मरंग वृक्ष, कमरख।

-भुक्(व्)-पु० शिशिर ऋतु, पतझड़। -सूरा-पु० वृक्षोंपर रहने और दौड़नेवाला जानवर (जैत-बंदर, गिलहरी आदि)। -हृद्(ह्)-पु० वसन ऋतु। -लता-श्री० पानकी लता। -बलक-पु० एक कवि। -बल्ली-श्री० पलाशी नामकी लता। -बाख-पु० पत्तेके बने बालेकी बजानेसे होनेवाला शब्द। -बीटिका-श्री० पानका बीजा। -बाख-पु० पत्तोंके खरकने आदिका शब्द। -बाख्या-श्री० पत्तीका विस्तार, पत्तीका बिछावन। -बाखर-पु० एक प्राचीन देश। -शाखा-श्री० पंजकुटी। -भुद्(व्)-पु० शीतकाल। -संस्तर-वि० पत्तीके बिछोनेपर सीनेवाला। पु० पत्तीके विस्तारपर सीना।

परोक्ष-वि० [सं०] पत्तीसे भरा हुआ। परोक्षि-पु० [सं०] जलाशयमें बना हुआ घर; कमल; बनाव-सिंघार; तरकारी, साग। परोक्ष-पु० [सं०] पत्ते खाकर रहनेवाला जली; एक कवि। परोक्ष-पु० [सं०] वह जो पत्ते खाकर रहे; मेघ, बादल। परोक्ष-पु० [सं०] तुलसी।

परोक्ष-पु० [सं०] दे० 'परोक्ष'।

परोक्ष-पु० [सं०] पत्ते बेचनेवाला।

परोक्ष-श्री० [सं०] शालपर्णी; पिठवन; अरणी।

परोक्षी-श्री० [सं०] माषपर्णी; एक अमर।

परोक्ष-वि० [सं०] दे० 'परोक्ष'।

पर्णी (विश्व) - पु० [सं०] वृक्ष, पेड़; झालफली; पिठबन; सेबपत्ता ।

पर्णीर - पु० [सं०] सुगंधवाला ।

पर्णोद्व - पु० [सं०] पर्णकुटी; पर्णशाखा ।

पर्ण - ली० दे० 'पर्ण' ।

पर्ण - पु० [सं०] बाणिका समूह; अपान वायुका स्वाग ।

पर्ण - पु० [सं०] अपान वायुका स्वाग, पादना ।

पर्णनी - ली० भीती ।

पर्ण - पु० दे० 'परदा' ।

पर्णसाहिका - ली० कुटिया ।

पर्ण - पु० [सं०] गृह, घर; हरी और नवी घास; पंशुओंको एक खाससे दूसरे स्थानतक ले जानेके कामकी पहियेदार गाड़ी, पंशुपीठ ।

पर्णद - पु० [सं०] पिचपापड़ा; पापक; एक ओषधि । - **हुम - पु०** कुंभी वृक्ष ।

पर्णटी - ली० [सं०] गोपीचंदन; पापक; एक गंधद्रव्य; एक रत्नोषधि ।

पर्णरी - ली० पापकी; [सं०] कनरी, जूड़ा ।

पर्णरीक - पु० [सं०] दूर्य; अभि; जलाशय ।

पर्णरीण - पु० [सं०] पथेकी नल ।

पर्णिक - पु० [सं०] कुर्सी आदिपर डोवा जानेवाला पंशु ।

पर्णरीक - पु० [सं०] नया पछन, किसलय ।

पर्ण - पु० दे० 'पर्ण' ।

पर्णत - पु० दे० 'पर्णत' ।

पर्णसी - वि० पर्णत-संबंधी, पहाड़ी ।

पर्णक - पु० [सं०] पलंग; एक आसन, बीरासन (यो०); दे० 'अवसविधका'; पालकी । - **पारिका - ली०** काकी सेम । - **बंध - पु०** बीरासन । - **बंधन - पु०** कपड़ेसे पीठ और घुटने बांधकर बैठना । - **भोगी (विश्व) - पु०** एक प्रकारका लीप ।

पर्यंत - अ० [सं०] तक । वि० सीमित । पु० अंतिम सीमा, किनारा; अंत, समाप्तिस्थान । - **देख - पु०** दे० 'पर्यंतभू' ।

- **भू - भूमि - ली०** नदी, नगर आदिके पासका भूभाग ।

पर्यंतिका - ली० [सं०] गुणैका नाभ; नैतिक वतन ।

पर्यंतक - पु० [सं०] भ्रमण करनेवाला ।

पर्यंतन - पु० [सं०] नारों ओर घूमना, इधर-उधर घूमना, भ्रमण ।

पर्यंतयोग - पु० [सं०] किसी उक्ति वा बयानको सिद्धा सिद्ध करनेके लिए की जानेवाली पृच्छाछ; पृच्छाछ; निद्रा ।

पर्यन्त - पु० [सं०] दे० 'पर्यन्त' ।

पर्यंत - पु० [सं०] ऐसा आचार जिसमें शास्त्रीय और लौकिक व्यवहारका अतिक्रमण हो; नीतना (जैसे 'काल-पर्यंत'); परिवर्तन; अव्यवस्था ।

पर्येषण - पु० [सं०] बोझका जीन, काठी ।

पर्येषात - वि० [सं०] पूर्णतः शुद्ध, अति स्वच्छ ।

पर्येषरोध - पु० [सं०] रोक, बाधा ।

पर्येषदंडन - पु० [सं०] घेरा डालना, अवरोध ।

पर्येषसान - पु० [सं०] अंत, समाप्ति; अवधारण, निष्कर्ष ।

पर्येषसित - वि० [सं०] समाप्त; विसर्गा निश्चय हुआ हो,

निविद्यत; नष्ट ।

पर्येषव्या - ली० [सं०] विरोध; विरोधमें कही गयी बात, प्रतिपक्षवाद ।

पर्येषव्याता (पु) - पु० [सं०] विरोध करनेवाला; प्रतिपक्षी ।

पर्येषव्यान - पु० [सं०] विरोध करना; प्रतिवाद करना ।

पर्येष - वि० [सं०] जो आँखोंसे भीग-सा बचा हो; जिसकी आँखोंसे बहुत अधिक आँसू बह रहे हों ।

पर्येषन - पु० [सं०] फेंकना; दूर करना; बाहर करना, निकालना, हटाना ।

पर्येष - वि० [सं०] फेंका हुआ; दूर किया हुआ; बाहर किया हुआ, निकाला हुआ ।

पर्येषतापह्वुति - ली० [सं०] अपह्वुति अर्थात्कारका एक भेद जहाँ किसी वस्तु (उपमान)का गुण छिपाकर किसी दूसरी वस्तु (उपमेय)में उसकी स्थापना की जाय ।

पर्येषि - ली० [सं०] दूर करना; बीरासन लगाकर बैठना ।

पर्येषिका - ली० [सं०] बीरासन; पलंग ।

पर्याकुल - वि० [सं०] गंदला; व्याकुल, बचराया हुआ; क्षुब्ध, उतेजित; पूर्ण, भरा हुआ (क्रोधपर्याकुल) ।

पर्यागत - वि० [सं०] जो अपना चक्र पूरा कर चुका हो, परिक्रमा किया हुआ (वर्षादि); जो अपना सांसारिक जीवन समाप्त कर चुका हो; वशीकृत ।

पर्याचोत - पु० [सं०] वह भोजन जो एक साथ खानेवालोंमें से किसी एकके बीचमें ही आचमन कर लेनेके बाद औरोंके आगे बच रहा हो । वि० समवसे पहले ही आचमन किया हुआ ।

पर्याष - पु० [सं०] बोझका जीन, काठी ।

पर्याप्त - वि० [सं०] पाया हुआ, प्राप्त; जो जितना चाहिये उतना हो, पूरा, काफी; समग्र; योग्य; समर्थ; बड़ा; विस्तृत; समाप्त ।

पर्याप्ति - ली० [सं०] मिलना, प्राप्ति; बंधन या काफ़ी होनेका माय; अंत, समाप्ति; योग्यता; तुप्ति; संतोष; सामर्थ्य; निवारण; रक्षण; वस्तुओंका गुणगत भेद ।

पर्याप्ता - पु० [सं०] चक्र, फेरा; घेरा ।

पर्याप्तुत - वि० [सं०] घेरा हुआ ।

पर्याष - पु० [सं०] अनुक्रम, सिलसिला; व्यतीत होना (समय); सयानार्थक शब्द; प्रकार, ढंग; अवसर, मौका; बनाना, निर्माण; द्रव्यका धर्म वा सङ्गण गुण; एक अर्थात्कार जहाँ एक वस्तुका क्रमसे अनेक आशय लेना दिखाया जाय वा अनेक वस्तुओंका एकके ही आशित होना वर्णित हो । - **प्युत - वि०** स्थानप्युत; जिसका स्थान दूसरेको प्राप्त हुआ हो । - **बचन - शब्द - पु०** समानार्थक शब्द । - **बाचक - बाची (विश्व) - वि०** समानार्थक । - **बचन - पु०** पहरेदारोंका बारी-बारीसे सोना । - **सेवा - ली०** बारी-बारीसे सेवा करना ।

पर्याषोक्त - पु०, पर्याषोक्ति - ली० [सं०] एक अर्थात्कार जहाँ कोई बात बुझा-फिराकर कही जाय वा किसी सम-णीय व्याजसे कार्यसाधन किये जानेका वर्णन हो ।

पर्याषिणी - ली० [सं०] व्यापिप्रसन्न गौ ।

पर्याषोचन - पु०, पर्याषोचना - ली० [सं०] सम्यक निवेचन, समीक्षण ।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] हापस जाना; लौटना; सर्वका ऐसा परिभ्रमण जिसमें उसकी पश्चिम पक्षनेवाली छाया पूर्वकी ओर पड़े।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] एक नरक; दे० 'पर्ववर्त्तन'।

पर्ववर्त्तन—वि० [सं०] बहुत वैदका।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] चक्कर बैना; चारों ओर घूमना; परिभ्रमण; पतन; हनन; बध; छलटा क्रम; समाप्ति।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] चक्कर; फेरा।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] जूना; डोना; ले जाना; रोसा; बसा; भस्म जमा करना।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] हवन-पूजन आदि धार्मिक कृत्य करते समय अपने चारों ओर बिना कोई संघ पड़े जल छिड़कना।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] पर्ववर्त्तन-संघर्षी जल रखनेका पात्र।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] उठ खड़ा होना।

पर्ववर्त्तन—वि० [सं०] बहुत उत्सुक; उदास, खिन्न, रंजीत; व्याकुल, धुब्ध।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] कण; उडार।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] आसन्न स्वयंवरका।

पर्ववर्त्तन—वि० [सं०] मना किया हुआ, निषिद्ध; अलग या अपवाद किया हुआ।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] निषेध; अपवाद, मुस्ततसना।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] सेवा, दंड।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] उपासना करनेवाला।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] उपासना, सेवा, पूजा; मंत्री, सद्मा-बना; आप-पास बैठना।

पर्ववर्त्तन(र), पर्ववर्त्तन(सिन्)—पु० [सं०] उपासना करनेवाला।

पर्ववर्त्तन—वि० [सं०] बोया हुआ।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] बोनेकी क्रिया; बोआई।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] पूजन, उपासना।

पर्ववर्त्तन—वि० [सं०] ताजा नहीं, बासी; कुरस; मूख; धर्मही।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] अधिक चारों ओर जलसे मार्जन करना।

पर्ववर्त्तन—पु०, पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] तर्क आदिके द्वारा की गयी छानबीन; खोज, अन्वेषण; पूजा; आदर-सत्कार।

पर्ववर्त्तन—पु० [सं०] अन्वेषण, खोज; पृच्छा।

पर्व(र)—पु० [सं०] उत्सव, त्योहार; कोई उत्सव या त्योहार मनाने या कोई विशिष्ट धार्मिक कृत्य (जान आदि) करनेका समय या दिन; चतुर्वर्षी, जष्टमी, अमावस्या तथा पूर्णिमा—ये चार तिथियाँ और रविवार; परियासे लेकर पूर्णिमा या अमावस्यातकका समय; सर्वप्रधान; चंद्रप्रधान; अवसर, मौका; संधिभाव, गाँठ, जोड़; पोर; शरीरके अवयवोंका कोई जोड़; अंश; भाग; पुस्तकका कोई भाग (जैसे महाभारतका); निश्चित कार्य; चातुर्मास्यमें होनेवाले दस। —कार—कारती(विन्)—पु० वह ब्राह्मण जो वनके लोमसे पर्वके दिनका कृत्य उस दिन भी करे जिस दिन कोई पर्व न हो। —काक—पु० पर्वका समय। —गाम्भी(विन्)—वि०, पु० पर्वके दिन की-प्रसंग करनेवाला। —वि—पु० चंद्रमा। —पुष्पिका—पुष्पी—

पु० रामवृत्ती; नामवृत्ती। —पर्वीला—पु० किसी उत्सव या त्योहारके लिए की जानेवाली तैयारी; किसी उत्सव या त्योहारका संपन्न होना। —भाण—पु० कलार। —बूक—पु० चतुर्वर्षी और पूर्णिमा या अमावस्याका संपन्न। —सूखा—पु० इवेता; सफेद दूध। —शोभि—पु० वह पौधा या वनस्पति जिसमें गाँठें हों (झूठ, बेंत आदि)। —हृद(हृद)—पु० अनारका पेड़। —बल्ली—पु० एक प्रकारकी दूध, माकादूध। —संघि—पु० प्रतिपदा और पूर्णिमाके आदि और अंतके चार दंड; प्रतिपदा तथा पूर्णिमा या अमावस्याका संपन्न।

पर्वक—पु० [सं०] घुटनेका जोड़।

पर्वक—पु० [सं०] पूरा करनेकी क्रिया, पूर्तिकरण; एक राक्षस।

पर्वकिका—पु० [सं०] आँखके जोड़का एक रोग (आंवे)।

पर्वकी—पु० [सं०] पूर्णिमा; प्रतिपदा; उत्सव, त्योहार; आँखके जोड़में होनेवाला एक रोग (आंवे); पर्वकाका पूरा करना।

पर्वक—पु० [सं०] पहाड़; चट्टान; बनावटी पहाड़; किसी वस्तुका पहाड़ जैसा ऊँचा ढेर; एक देवर्षि; एक प्रकारकी मछली; सातकी सख्या (पर्वत सात है—निषध, हेमकूट, नील, श्वेत, शृंगी, मात्स्यवान्, रंघमावन); वृद्ध; एक प्रकारका शाक; एक रंघर्ष; दशनामी सन्ध्यासिंधिका एक भेद। —काक—पु० डोमकीआ। —कीला—पु० पृष्ठी। —ज—वि० पर्वतसे उत्पन्न। —जा—पु० नदी; पार्वती। —जाक—पु० पर्वतश्रेणी। —मृण—पु० एक प्रकारका गुण। —दुर्ग—पु० दुर्गारोह पर्वत; पहाड़ी किला। —मंदिनी—पु० पार्वती। —पति—पु० हिमालय। —आका—पु० पहाड़ी की श्रेणी। —श्रीका—पु० पहाड़ी किला। —राज—पु० बड़ा पहाड़; हिमालय। —वासिनी—पु० दुर्गा; गायत्री। —वासी(विन्)—वि०, पु० पहाड़पर रहनेवाला; पहाड़ी। —स्व—वि० पर्वतपर स्थित।

पर्वक—पु० [सं०] पहाड़।

पर्वतास्मज—पु० [सं०] मैनाक।

पर्वतास्मज—पु० [सं०] पार्वती।

पर्वताचारा—पु० [सं०] पृष्ठी।

पर्वतारि—पु० [सं०] दंड।

पर्वतारोही दल—पु० पहाड़की ऊँचाई आदिका पता लगाने के लिए अभियान करनेवाला दल।

पर्वताशय—पु० [सं०] भेष, बादल।

पर्वताशय—पु० [सं०] शरभ; पहाड़पर रहनेवाला। वि० पहाड़ी।

पर्वताशयी(विन्)—वि०, पु० [सं०] पहाड़पर रहनेवाला।

पर्वताशय—पु० [सं०] एक आसन।

पर्वताशय—पु० [सं०] एक तरहका अन्न जिसका प्रयोग करनेपर पत्थरीकी बर्षा होने लगती थी।

पर्वताशय—पु० नेपालकी एक जाति; एक प्रकारका कद्दू; एक प्रकारका तिल।

पर्वती—वि० दे० 'पर्वती'।

पर्वती—वि० [सं०] पर्वत-संघर्षी; पर्वतका; पहाड़पर

रहने या पैदा होनेवाला, पहाड़ी। पु० पहाड़ी ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

पर्वतेश्वर-पु० [सं०] हिमालय।

पर्वतोद्भव-पु० [सं०] पारा; क्षिप्ररथ। वि० पर्वतपर उत्पन्न।

पर्वतोद्भूत-पु० [सं०] अवतरक। वि० पर्वतपर उत्पन्न।

पर्वतोर्मि-पु० [सं०] एक प्रकारकी मछली।

पर्वतरिख-खी० दे० 'परवरिख'।

पर्वरीण-पु० [सं०] बाहु; पर्व; श्रुतक; गर्व; पतेका रस, पतेकी नस।

पर्वी-खी० दे० 'परवा'।

पर्वानगरी-खी० दे० 'परवानगरी'।

पर्वाना-पु० दे० 'परवाना'।

पर्वोद्यधि-खी० [सं०] गाँठ, जोड़; पर्वकाल या उसका अंत।

पर्वोत्कोट-पु० [सं०] उँगलियोंकी चटकानेकी क्रिया।

पर्वोद्-खी० दे० 'परवाह'। पु० [सं०] पर्वका दिन।

पर्विणी-खी० [सं०] स्त्रोधारका दिन।

पर्वित-पु० [सं०] एक प्रकारकी मछली।

पर्वेश-पु० [सं०] मझा, इद्र, चद्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम जो छ-छ महीनेके ग्रहणके अधिपति हुआ करते हैं; ग्रहणका अधिपति देवता।

पर्वु-पु० [सं०] आयुष; अश्व; परशु, फरसा; पसली।
-पाणि-पु० गणेश; परशुराम।

पर्वुका-खी० [सं०] बगलकी डबड़ी, पसली।

पर्वध-पु० [सं०] फरसा, कुठार।

पर्वद-खी० [सं०] सभा; धर्मोपदेशक पंडितोंका समाज।

पर्वद्वल-पु० [सं०] समासद।

पर्वेज-पु० दे० 'पररोज'।

पर्वकट-वि० [सं०] मीर; डरपोक।

पर्वकर-पु० [सं०] पित नामक बाहु।

पर्वकच-पु० [सं०] दानव; सिंह; समुद्र, गुग्गुलु; पलाश।

पर्वकवा-खी० [सं०] गुग्गुलु; मन्त्री; पलाश; लाल।

पर्वका-खी० दूरवर्ती स्थान।

पर्वग-पु० बड़ी और बढिया चारपाई, अधिक लंबी-चोड़ी और सुन्दर चारपाई। -सोच-वि० जो बिना कुछ काम किये यों ही पड़ा रहे, निकम्मा, आलसी। -पौष-पु० पर्वगकी चादर। **मु०**-को छात मारकर खड़ा होना-मल्ली-चंगी होकर सीरीसे बाहर आना; किसी मारी बीमारीसे छुटकारा पाकर स्वस्थ होना। -शोबना-कोई काम न करते हुए पड़े या लीये रहना; बेकार रहकर दिन बिताना। -छगाना-पर्वगपर ठीक तरहसे बिछावन बिछाना।

पर्वगारी-खी० छोटा पर्वग, चारपाई।

पर्वगिया-खी० छोटा पर्वग या साट।

पल-पु० [सं०] मांस; समयका एक लघु विभाग जो ६० विषय अथवा २४ सेकेंडके बराबर होता है; ४ कर्षकी एक प्राचीन तोल; पयाल; * पलक। -छार-पु० खून।

-गर्ह-पु० दीवारपर पलस्तर करनेवाला मिट्टी, राज।

-खर*-पु० एक उपदेवता। -दू-वि० जिसके तेजस्से

मांस बड़े। -प्रिय-पु० राजस; कौआ। वि० जिसे मांस प्यारा हो, मांसप्रिय। -आ-खी० विषुवद रेखापर चलनेके रहते समय धूपपत्तीके संकुकी मन्थाहकी छाया।

पलही-खी० पैका सिरा; पैकी पतली और नरम टहनी।

पलक-खी० आँखको ढकनेवाला चमकेका वह परदा जिसके गिरने और नउठनेसे आँख कमसे बंद होती और छुलती है; * हण, निमिष। * ज० कृणमर। -दरिया, -दरियावाह, -नेवाजा-वि० अति उदार। -पीटा-पु० आँखका एक रोग जिसमें बरौनियाँ करीब-करीब हज़ जाती हैं, आँखें झपका करती हैं और रोगी धूप या रोशनीकी ओर देख नहीं सकता; वह जिसे वह रोग हुआ हो, इस रोगका रोगी। **मु०**-झपकते वा गिरते-देखते-देखते कृणमर-में। -पसीजना-आँखोंमें आँसू आना; दयार्द्र होना।

-बिछाना-किसीका बही अइसे स्वागत करना। -अँजना-आँखका इशारा होना। -अँजना-आँखसे इशारा करना। -मारना-आँखसे इशारा करना; झपकी लेना; पलक गिराना। -छगाना-आँख बंद होना, नींद आना। -छगाना-आँख बंद करना; सोनेके छिद आँख बंद करना। -से पलक न छगाना-टकटकी लगी रहना, नींद न आना। -(कौं) से ज़मीन झाड़ना या तिनके चुनना-बकी अइसे किसीकी सेवा करना।

पलका-पु० पलंग, शय्या।

पलकवा-खी० [सं०] पालकका साग।

पलखन-पु० पाकरका पैर।

पलखन-खी० [ज० 'प्रेतून'] पैदल सैनिकोंका वह विभाग जिसमें २०० सैनिक हों; सैनिकों या लोगोंका दल जो समान उद्देश्यसे कहीं एकत्र हुए हों, पौज।

पलटना-अ० कि० उलट जाना; एकदम बदल जाना, पूर्णतया परिवर्तित हो जाना ('जाना' क्रियाके साथ); अच्छी दशाकी प्राप्त होना; पीछेकी ओर लख करना, मुड़ना; वापस आना, लौटना। स० कि० उलटना, ऐसी स्थितिको पहुँचाना कि नीचेका भाग ऊपर हो जाय और ऊपरका नीचे; एकदम बदल देना, पूर्णतया परिवर्तित कर देना ('देना' या 'ढालना'के साथ); बार-बार उलटना; एक वस्तुके खापर दूसरी वस्तु घ्राण करना; किसी वस्तुके बदले दूसरी वस्तु लेना या बदलना; वात उलट देना, मुकरना; * वापस करना, लौटना।

पलटनिया-वि० पलटनका। पु० पलटनमें काम करनेवाला सैनिक।

पलटा-पु० पलटनेका कार्य या भाव; प्रतिकूल; नावमें लगी हुई वह पट्टी जिसपर खेयैया बैठता है; गवैयाका ऊँचे स्वरोक्त पहुँचकर बारीकीके साथ पुनः नीचेके स्वरोँकी ओर लौटना, अवरोह; लोहे, पीतल या काठकी चपटी कलछी; कुश्तीका एक पैच। **मु०**-खाना-स्थितिका पूर्णतः परिवर्तित हो जाना।

पलटाना-स० कि० वापस करना; लौटाना; बदलना।

पलटाव-पु० पलटे जानेकी क्रिया।

पलटावना-स० कि० दे० 'पलटाना', * दबवाना।

पलटरी-खी० पलटा जाना; बदली।

पल्लव-सं बदलेमें, प्रतिफलके रूपमें ।

पल्लवः पल्लवः-पुं तराजूका पल्ला ।

पल्लवः-पुं कलैमा मारनेकी क्रिया ।

पल्लवी-स्त्री दाहिने और बायें पैरोंके पंजोंको क्रमसे बांधी और दाहिनी जाँघोंके नीचे दबाकर बैठनेका एक आसन ।

पल्लवा-अं किं पाकित होना, धावा-पोसा जाना; हड़-पुट होना; तैयार होना । पुं दे० 'पल्लवा' ।

पल्लवाना-सं किं जोत वा कसकर तैयार करना (रथ, घोड़ा) ।

पल्लवः-पुं [सं०] मांस; कीचक; तिलकुट; राक्षस ।-अव-पुं पित्त नामक धातु ।-प्रिय-पुं राक्षस; डोमकौमा ।

पल्लवाशयः-पुं [सं०] गलगांध, वेधा ।

पल्लवः-पुं [सं०] मछलियाँ फँसानेका एक तरहका जाल या शँसका झाना ।

पल्लवः-पुं [सं०] 'परवत्' ।

पल्लवा-पुं ऊँकड़ा ऊपरी भाग जो नीरस होता है; एक भास; * अंजलि ।

पल्लवाना-सं किं किमीसे पालन कराना ।

पल्लवः-पुं ईसकी खेती करनेका एक तरीका जिसमें जलधुप निकलनेके बाद लेतकी तर बनाये रखनेके लिए उसे सूखे पत्तों आदिसे ढक देते हैं; माछ लादनेकी एक प्रकारकी बड़ी नाव ।

पल्लवः-पुं नाव खेनेवाला, मसाह ।

पल्लवः-पुं पालन-पोषण करनेवाला ।

पल्लवः-पुं [सं०] दे० 'पनस' ।

पल्लवः-पुं [अं०] 'पल्लवः' चूना, कंकड़, सुखी आदि मसालोंसे तैयार किया हुआ एक तरहका लेप जो दीवार आदिपर चढ़ाया जाता है । मुं (किसीका)-ढीला करना-पल्ला करना ।-ढीला होना-शिथिल होना; पल्ला होना । (किसीका)-बिगाड़ना वा बिगड़ जाना-दे० 'पल्लवः' गीला होना । (किसीका)-बिगाड़ना वा बिगाड़ देना-दे० 'पल्लवः' ढीला करना ।

पल्लवः-अं किं दे० 'पल्लवः' ।

पल्लवः-पुं जन्म-मृत्युकी चरना; * पल्लव ।

पल्लवः-पुं [सं०] कलुषा; बँस ।

पल्लवः-पुं [सं०] प्लाज ।

पल्ला-पुं ६० विपल, पल्ल; बड़ी पल्ली; * तराजूका पल्ला; ऑँचक, पल्ला; किनारा; किन्हींके दो भागोंमेंसे कोई एक ।

पल्लवि-स्त्री [सं०] पित्त नामक धातु ।

पल्लवः, पल्लवः, पल्लवान-पुं [सं०] राक्षस । विं मांस खानेवाला, मांसाहारी ।

पल्लवः-पुं बोहे आदिकी पीठपर कत्ता जानेवाला जीन या चारजामा ।

पल्लवाना-सं किं (बोहे आदिपर) पल्लव कसना; आक्रमण करनेकी तैयारी करना ।

पल्लवा-अं किं भागना; तेजीसे जाना; गाय हलाइका पिन्धाना । सं किं मगाना ।

पल्लवि-स्त्री जीन-परे पल्लवि सुरंगम पीठिहि'-पं ।

पल्लवी-स्त्री छप्पर; पंजके ऊपर पहननेका लिबाँका एक पहना; जीन ।

पल्लवः-पुं [सं०] पुकाव ।

पल्लवः-पुं [सं०] हाथीका कपोल; पगहा ।

पल्लवः, पल्लवी (विन्)-विं, पुं [सं०] भागनेवाला, भगीवा ।

पल्लवान-पुं [सं०] (जरकर) दूसरी जगह चले जाना, भागना ।-बाह-पुं (एकैपिम्भ) वह मतवाद जिसमें जीवनकी वास्तविकता और कठिनाइयोंसे भागनेकी प्रवृत्तिकी प्रशंसा दिया जाता है ।-बाही (विन्)-विं, पुं पलायनवादका सहारा लेनेवाला (कवि, लेखक इ०) ।

पल्लवमान-विं [सं०] भागता हुआ ।

पल्लवित-विं [सं०] भागा हुआ ।

पल्लवः-पुं [सं०] पलाय; भूसी ।-दीहव-पुं आमका पेड़ ।

पल्लवि, पल्लवी-स्त्री [सं०] मांसका ढेर ।

पल्लवः-पुं [सं०] मछली फँसानेका कौटा, मंसी ।

पल्लवः-पुं [सं०] पत्ता; पलास, टेढ़; पलासकी फूल; राक्षस; मगध देश; हरा रंग; किसी तेज बयिचारका फल ।

विं हरा; निष्ठुर, कठोरहृदय; मांसाहारी ।-पर्णी-स्त्री असमय ।-पुट-पुं पलासके पत्तेका दोना ।

पल्लवः-पुं [सं०] पलासका पेड़ ।

पल्लवाना-स्त्री [सं०] कपूरकचरी, गणपत्ता ।

पल्लवाना-पुं [सं०] नाकीहीन ।

पल्लवित-स्त्री [सं०] वृक्षपर चढ़नेवाली एक लता ।

पल्लवी-स्त्री [सं०] वृक्षपर चढ़नेवाली एक लता; काल ।

पल्लवी (विन्)-विं [सं०] पत्तीवाला; मांस खानेवाला ।

पुं क्षीरवृक्ष; राक्षस ।

पल्लवीय-विं [सं०] पत्तीवाला, पत्रयुक्त ।

पल्लास-पुं मसाले आकारका एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फूल बहुत काल होता है, किशुक (हिंदू इस वृक्षकी पवित्र मानते हैं और जलचारी इसका दंत धारण करते हैं); गीबकी जातिका एक मांसाहारी पक्षी ।-पापवा-पुं, -पापवी-स्त्री पलासकी कली ।

पल्लवः-विं [सं०] एक पल्ल वनका ।

पल्लवः-पुं दे० 'पल्ला' । स्त्री [सं०] तेल निकालनेकी पल्ली ।

पल्लवी-स्त्री [सं०] वह बुढ़ई स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों; वह गाय जो पहले पहल गामिन हुई हो; बालमणिणी गौ ।

पल्लवः-पुं [सं०] काँचका घना; प्राकार, चहारदीवारी; फाटक; मोशाला; परिच, लोहगदा ।

पल्लवः-विं [सं०] पल्लित या सफेद बनानेवाला ।

पल्लवः-विं [सं०] बूढ़, बुढ़दा; पका हुआ या सफेद (बाल) । पुं बूढ़ावस्थाके कारण बालोंका पकना या सफेद होना; साप, गरमी; कीचक; छरीला; लोहा ।

पल्लवी (विन्)-विं [सं०] जिसके बाल सफेद हो गये हों ।

पल्लवः-पुं पशुओंका एक रोग जिसमें उनका गला सूज जाता है ।

पल्लवः-पुं चैती फसल होनेके लिए छोड़ा जानेवाला खेत जिसमें मईई न बोयी जाय पर जोताई होती रहे ।

पक्षी-क्षी- बड़े बरतनोंमेंसे थी, तेज आदि तरह पक्षी
निकासनेका लोहेका एक आला जो एक डंडीके सिरेपर
छोटी-सी कटोरी जोड़कर बनाया जाता है। **मु०**—**पक्षी**
जोषना—थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना; कौरी-कौरी
जोड़कर बन बटोरना।

पक्षी-वि० दुष्ट; घृण्य; गंदा। **पु०** भूत-प्रेत।

पक्षीता—**पु०** बज लिखा हुआ कागज जिसे बत्तीकी तरह
बनाकर जलाते हैं; तोपके रंजकमें आग लगानेकी बरोह
आदिकी मोटी बत्ती; पनसालेपर रखकर जलानेकी कपड़े-
की विशेष प्रकारकी बत्ती। **वि०** अति क्रुद्ध, मोषते तम-
तमाया हुआ; तेज चलने या दौड़नेवाला, तीव्रगामी।

पक्षीती—**क्षी०** छोटा पक्षीता।

पक्षी-वि० [फा०] अशुद्ध, अपवित्र, नापाक; दुष्ट; खोटा,
खराब। **पु०** भूत-प्रेत।

पक्षी-पु० सनकी जातिका एक पौधा। **वि०** पाला
हुआ, पालदू।

पक्षी-वि० पालदू।

पक्षी-अ० कि० हरा-भरा होना, पक्षित होना।

पक्षी-स० कि० हरा-भरा करना, पक्षित करना
—'जरी जो रेल सींचि पक्षी-पं०'।

पक्षी-क्षी० [अ० 'प्रेट'] पट्टी; कमीज, कुरते आदिमें
भीतरकी ओर लगायी जानेवाली पट्टी।

पक्षी-पु० [अ० 'प्रेट'] मुद्रणपत्रका वह भाग जिसके
दबावमें अक्षर छपते हैं।

पक्षी-स० कि० धक्का देना।

पक्षी-पु० वह चूखा आटा जिसे लोईपर लगाकर रोटी
देते हैं। **मु०**—**निकलना**—खूब पीटा जाना, गहरी
मार पड़ना।—**निकालना**—खूब पीटना; परेशान करना।

पक्षी-पु० [अ० 'ड्रेनर'] (छपाईमें) कस्ते हुए फरमेंमें
सराहसे ऊपर उठे हुए टांघोंकी बराबर करनेके लिए काठ-
का बना चिपटा टुकड़ा।

पक्षी-पु० दे० 'पलेन'।

पक्षी-स० कि० (पैर) दबाना। **अ०** कि० लोट-पोट
करना; भारी शारीरिक कष्टसे तबकनाना-छटपटाना।

पक्षी-पु० दे० 'पलेन'।

पक्षी-स० कि० (पैर) दबाना; सेवा-शुश्रूषा करना।

पक्षी-स० कि० साफ करना, धोना।

पक्षी-पु० दे० 'पलेन'।

पक्षी-पु० [सं०] पलंग, शय्या।

पक्षी-पु० [सं०] वीरेंका जिन; बागडोर।

पक्षी-पु० [सं०] अन्नका बखार।

पक्षी-पु० [सं०] नया और कीमल पत्ता; वासकी पत्ती;
कली; कंकण, बलय; अलक्तक; बल; चंचलता; विस्तार;
विदग्ध; वृद्ध; रस्सी या बखका छोर; लपट; श्रृंगार; काम-
कीड़ा; नृत्यमें हाथकी एक मुद्रा; दक्षिणका एक प्राचीन
राजवंश।—**प्राहिता**—**क्षी०** अधूरा, अपूर्ण ज्ञान; भाग्यही
जीवोंमें लगा रहना।—**प्राहिता**—**पु०** किसी
विषयका अपूर्ण ज्ञान या अचुरी जानकारी।—**प्राहि**—**वि०**
जिसमें पलंग लगे हों या लग रहे हों; अपूर्ण,
अधूरा (ज्ञान); अचुरी जानकारीवाला; अदनी बातोंमें

व्यस्त रहनेवाला।—**पु०** अधोक्तका पैर।

पक्षी-पु० [सं०] लपट; बैद्यका वार; अशोक वृक्ष;
एक तरहकी मछली; अँलुवा, कोंपल।

पक्षी-अ० कि० पक्षित होना।

पक्षी-पु० पक्षीवाधर—**पु०** [सं०] शाखा।

पक्षी-पु० [सं०] हिरन।

पक्षी-वि० [सं०] कलियोंसे लदा हुआ।

पक्षी-पु० [सं०] कामदेव।

पक्षी-पु० [सं०] कामुक।

पक्षी-वि० [सं०] जिसमें पलंग लगे हों; विस्तृत;
बढ़ाया हुआ; लासमें रंगा हुआ; रोमांचयुक्त। **पु०** लास-
का रंग।

पक्षी-वि० [सं०] जिसमें नये पत्ते निकले हों
पु० वृक्ष।

पक्षी-पु० कपड़ेका छोर, दामन; दूरी; दुपट्टियां दोपीका
आधा हिस्सा; अन्न बाँधकर ले जानेका टाट या गोनी;
रजाई, चबूते, किराण, तराजू, कैची आदिके दो हिस्सोंमेंसे
कोई एक तीन सनका बोझ। † **वि०** दे० 'परल'।—
(**कले**) **पक्षी-पु०** गल्ला दोने या तौलनेवाला।—**पक्षी**—
क्षी० पल्लेदारका काम। **मु०**—**छटना**—छुटकारा मिलना,
पिंड छटना।—**छुटाना**—छुटी या लेना, पिंड छुटाना।
—**छुटना**—किसी पक्षका अधिक बलवान् होना।—**पक्ष**
बना—सहारा लेना।—**पक्षारना**—किसीके सामने दामन
फैलाना, किसीसे कुछ मोक्ष माँगना।—**पक्षी** **होना**—
दे० 'पक्षा छुटना'।—(**हो**) **पक्षी**—हाथ लगना,
मिलना। (**किसीके**)—**पक्षी**—विवाहित होना, ब्याही
जाना; सोपा जाना। (**किसीके**)—**पक्षी**—ब्याहना;
जिम्मे करना या लेना।—**से बाँधना**—जिम्मे करना;
ब्याह देना।

पक्षी, पक्षी-क्षी० [सं०] छोटा गाँव, पुरा, टोला; कुटी;
घर; छिपकली; जमीनपर फैलनेवाली लता।

पक्षी-क्षी० [सं०] छोटा गाँव, छोटी बस्ती, टोला;
छिपकली।

पक्षी-पु० 'पक्ष'; अनाज बाँधनेका टाट आदि।

पक्षी-पु० [सं०] छोटा जलाशय, छोटा तालाब।

पक्षी-पु० [सं०] कछुआ।

पक्षी-क्षी० लण्ठोड़ी।

पक्षी-पु० दे० 'पँवरिया'।

पक्षी-क्षी० दे० 'पौ'। **पु०** [सं०] बाहु, हवा; स्रष्ट आदिसे
अनाजकी भूसी आदि निकालना; छुट्टीकरण।

पक्षी-क्षी० एक चिरिया।

पक्षी-पु० [सं०] हवा; बायुके अधिष्ठातृदेव; अनाज आदि
साफ करना; छलनी; कुम्हारका आर्वा; पानी; विष्णु;
गुहाधि; पाँचकी सख्या। **वि०** शुद्ध, निर्मल।—**कुम्हार**
—**पु०** हनुमान्; भीमसेन।—**पक्षी-पु०** बवंडर।—**पक्षी**
—**क्षी०** [हिं०] हवाकी शक्तिसे चढ़नेवाली चक्की।—**ज,**
—**सव,**—**बं,**—**बं,**—**पुत्र**—**पु०** दे० 'पवनकुमार'।
—**पति**—**पु०** बायुके अधिष्ठातृदेव।—**परीक्षा**—**क्षी०**
आपाद-शुद्धा पूर्णिमाको बायुकी दिशा देखनेकी एक क्रिया
जिसके अनुसार ज्योतिषी फलतुका अविष्य बतलाते हैं।

-पूत-वि० बाहुसे पवित्र किया हुआ । * पु० दे० 'पवनपुत्र' । -बाण-पु० दे० 'पवनाक्ष' । -शुक(ञ्) -पु० सौप्त । -बाह्वन-पु० अक्षि । -व्याधि-क्षी० वातरोग । पु० उद्धर । -संघात-पु० हवाका झोंका । -श्रुत-पु० दे० 'पवनकुमार' ।

पवना-पु० क्षरना, पैना ।

पवनालम्ब-पु० [सं०] हनुमान् ; भीमसेन ।

पवनाक्ष-पु० [सं०] धान्यविशेष ।

पवनाक्ष, पवनाक्षन-पु० [सं०] सौप्त । वि० हवा पीकर रहनेवाला ।

पवनाक्षनाश-पु० [सं०] गरुड; मोर ।

पवनाशी(शिशु)-वि० [सं०] हवा पीकर रहनेवाला । पु० सौप्त ।

पवनाक्ष-पु० [सं०] एक प्रकारका अक्ष जिसका प्रयोग करनेपर बहुत तेज हवा या औंधी चलने लगती थी, पवन-बाण (पु०) ।

पवनाहत-वि० [सं०] बातग्रस्त ।

पवनी-क्षी० [सं०] झाड़ू ; † दे० पौनी ।

पवनेष्ट-पु० [सं०] वकायन ।

पवमान-पु० [सं०] बायु, हवा; गार्हपत्य अक्षि; सोम-देवता (दे०) ।

पवर*-वि० प्रवर । क्षी० ज्योती ।

पवरिया*-पु० ज्योतीवार, पौरिया ।

पवरी†-क्षी० दे० 'पौरी' ।

पवर्न*-पु० [सं०] देवनागरी वर्णमालाके अंतर्गत 'प' से 'न' तक पाँच अक्षरोंका समूह, पाँचवर्ण वर्ग ।

पवाँका-पु० जी उषा देनेवाला लघा आख्यान; बहुत बढ़ा-कर कही हुई बात; एक तरहका गीत ।

पवाँर-पु० क्षत्रियोंकी एक उपजाति; † चकवैङ्ग ।

पवाँरना, पवारना*-सं० कि० फेंकना; छीटना, छितराना, फैलाना ।

पवाँरी†-क्षी० लोहा छेदनेका लोहारोंका एक भाग ।

पवाई-क्षी० किसी एक पैरका जूता या खड़ाके; चक्कीके दो पाटोंमेंसे कोई एक ।

पवाका-क्षी० [सं०] बवंडर ।

पवाङ्ग†-पु० चकवैङ्ग ।

पवाना*-सं० कि० खिलाना; † प्राप्त कराना ।

पवि-पु० [सं०] वज्र; बाणी; बाण या मालेकी नोक; बाण; अग्नि । -धर-पु० वंज ।

पवित-वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ, साफ किया हुआ । पु० मित्र ।

पविता(तु)-वि० [सं०] पवित्र करनेवाला ।

पविताई*-क्षी० पवित्रता, शुद्धता ।

पविस्तर†-वि० दे० 'पवित्र' ।

पवित्र-वि० [सं०] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, पुनीन; व्रत, शौच आदिसे शुद्ध । पु० शुद्ध करनेवाली वस्तु, शुद्धताकी साधनरूप वस्तु (छकनी आदि); कुश; कुशके दो दल जिनसे यज्ञमें भीका संस्कार करते हैं; कुशकी बनी हुई पवित्री जिसे धार्मिक कृत्य करते समय अनामिकामें पहनते हैं; यज्ञोपवीत; तर्पण; वर्षा; जल; अर्घ्यका उपकरण; द्रव्य;

मधु; तिलका पौधा; वर्षण । -घाम्प-पु० जौ । -पाणि -वि० जिसके हाथमें कुश हो ।

पवित्रक-पु० [सं०] पीपलका पेड़; गूलरका पेड़; क्षत्रियका जनेक; कुश; दौना; छकनी; जाड़ ।

पवित्रता-क्षी० [सं०] पवित्र होनेका भाव ।

पवित्रा-क्षी० [सं०] तुलसी; हल्दी; एक प्राचीन नदी; भावण-शुद्धा दादशी ।

पवित्रात्मा(श्मद्)-वि० [सं०] जिसकी आत्मा पवित्र हो, जिसका अंतःकरण शुद्ध हो ।

पवित्रारोपण, पवित्रारोहण-पु० [सं०] यज्ञोपवीत धारण करना; भक्तों द्वारा विष्णु आदि देवताओंकी यज्ञोपवीत पहनाया जाना (विष्णु भावण-शुद्धा दादशीकी विष्णु-मूर्तिको यज्ञोपवीत पहनाते हैं) ।

पवित्राश-पु० [सं०] सनका बना हुआ मोरा जो पहले बहुत शुद्ध माना जाता था ।

पवित्रित-वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ ।

पवित्री-क्षी० [सं०] कुशकी बनी हुई अंगूठी जैसी वस्तु जिसे धार्मिक कृत्य करते समय अनामिकामें पहनते हैं, पैती ।

पवित्री(विन्द)-वि० [सं०] शुद्ध करनेवाला; शुद्ध ।

पवित्रीकरण-पु० [सं०] पवित्र या शुद्ध करना ।

पवेरना†-सं० कि० बीजोंकी छोटते हुए बीना ।

पवेरा†-पु० बीजोंकी फैलाते या छिराते हुए बीनेकी किया ।

पशम-पु० [फा० 'पदम'] नरम बाल; बहुत उबल और 'नरम ऊन' ज्ये अधिकतर एतज, कश्मीर और तिब्बतकी बकरियोंसे प्राप्त होता है; पुरुष या स्त्रीकी जननेंद्रियपरसे बाल; बहुत मुच्छ वस्तु । मु०-उल्लावना-विना कुछ करे-भरे समय बिताना, व्यर्थ समय बिताना; थोड़ा भी नुकसान न पहुँचा सकना । -न उल्लवना- कुछ भी करते-भरते न बनना, कुछ भी काम न किया जा सकना; थोड़ा भी नुकसान न पहुँचना । -न समझना-पशमसे भी गया-मुजरा समझना, कुछ भी न सुनना । -पर मारना-अति मुच्छ समझना, नाचील समझना ।

पशमीना-पु० कश्मीरमें बनेवाला एक तरहका बहुत मुलायम कनका कपड़ा ।

पशम्प-वि० [सं०] पशुके लिए उपयुक्त; पशु-संबंधी; पशुतापूर्ण । पु० पशुओंका झुंड; गोष्ठ ।

पशु-पु० [सं०] चार पैरों और छँहमे युक्त जानवर, चौपाया (जैसे-सिंह, बाघ, बैल, ऊँट, बकरा आदि); जंतु, प्राणी; वह जंतु जिसकी बहमें बलि दी जाय, बलिपशु; शिवका एक पारिषद, प्रमथ; सुख, विवेकहीन मनुष्य; वह यज्ञ जिसमें पशुकी बलि दी जाय; बकरा; देवता; अक्षि; जीवात्मा (पाशुपत दर्शन) । -कर्म(न)-पु०, -किया-क्षी० पशुका बलिदान; मैथुन । -वायव्यी-क्षी० एक यज्ञ जिसे बलि-पशुके कानमें कहते हैं- 'पशु-पाशाय विधादे विश्वकर्मणे भीमवि । तस्यो जीवः प्रचोद-वात्' । -घात-पु० बलिपशुका बध । -चर्वा-क्षी० पशु जैसा लज्जारहित आचार; मैथुन । -जीवी(विन्द)-वि० पशुका नाँस खाकर जीनेवाला । -दा-क्षी०

कार्तिकेयकी एक मातृका ।—**वेचता**-पु० वह देवता जिसके निमित्त किसी पञ्चुका बंध किया जाय ।—**धर्म**-पु० पञ्चुवत् आचरण या व्यवहार; विवाह-विवाह; मैथुन ।—**बाध**-पु० शिव ।—**घ**—**पाळ**—**पाळक**-पु० पञ्चु पाळनेवाला, वह जो जीविकाके लिए मेक-बकरी आदि पाले ।—**पति**-पु० पञ्चु पाळनेका व्यवसाय करनेवाला; शिव ।—**बखल**-पु० केवटी मोथा ।—**पाळन**-पु० जीविकाके निमित्त मेक-बकरी आदि पाळनेका काम ।—**पाषा**-पु० बलि-पञ्चुको बांधनेको रस्ती; पञ्चुरूपी जीवोंका बधन (पाण्डुपत दर्शन) ।—**पासाक**-पु० एक रतिबंध ।—**प्रेरण**-पु० पञ्चुओंको हकना ।—**भाव**-पु० पञ्चुता, पञ्चुत्व ।—**मैथुन**-पु० पञ्चुओंका संयोग; मनुष्यका बकरी आदि पञ्चुके साथ संयोग; पञ्चुओं जैसा निर्लज्ज संयोग ।—**बह**—**बाघ**-पु० वह बघ जिसमें किसी पञ्चुकी बलि दी जाय ।—**रक्षण**-पु० दे० 'पञ्चु-पाळन' ।—**रञ्जु**-झी० बलि पञ्चुको बांधनेकी रस्ती ।—**राज**-पु० सिंह ।—**बंदीगृह**-पु० दे० 'फांजी-हाउस' ।—**हरीतकी**-झी० आमटका फल ।

पञ्चुता-झी०, **पञ्चुत्व**-पु० [सं०] पञ्चुका भाव, जान-बरपन ।

पक्ष-वि० [सं०] बायका; पश्चिमी ।

पक्षात्-अ० [सं०] पीछेसे, बादमें, पीछे, अनन्तर; अंतमें; पश्चिम दिशासे; पश्चिम दिशाकी ओर ।—**कुल**-वि० जो पीछे छोड़ दिया गया हो, मात किया हुआ ।—**ताप**-कोई अनुचित कार्य करके बादमें उसके लिए दुःखी होना, पछतावा, अनुशय ।—**तापी**(पिन्)-वि० पक्षात्पाप करनेवाला ।

पक्षाद्—'पक्षात्'का समागत रूप ।—**उफि**-झी० पुनः कहना ।—**घाट**-पु० गढ़न ।—**बाहुबद्ध**-वि० जिनकी मुट्ठों पीछेकी ओर बांध दी गयी हों ।—**भाव**-पु० पीछेका हिस्सा; पश्चिमी भाग ।—**वर्ती**(तिन्)-वि० पीछे रहनेवाला; अनुसरण करनेवाला ।—**वात**-पु० पछाँ हवा ।

पक्षानुताप-पु० [सं०] पछतावा ।

पक्षापी(पिन्)-पु० [सं०] नौकर, सेवक ।

पक्षार्थ, **पक्षार्थ**-पु० [सं०] पीछेवाला भाषा भाग; अप-रार्थ; क्षेपाङ्ग; पश्चिमी भाग ।

पश्चिम-वि० [सं०] सबमें पीछेका; अंतिम; पच्छिमका । पु० उदय होते हुए सूर्यकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर पीछेकी ओर पड़नेवाली दिशा, पश्चिम ।—**क्रिया**-झी० अंशेष्टि क्रिया ।—**घाट**-पु० [हिं०] पश्चिमी घाट, बंबईके पासकी एक पर्वतमाला ।—**झूब**-वि० पश्चिमकी ओर झुकी हुई (भूमि) ।—**राज**-पु० रातका पिछला भाग ।—**बाहिनी**-वि० झी० पच्छिम दिशाकी ओर बहनेवाली ।

पश्चिमा-झी० [सं०] सूर्यके अस्त होनेकी दिशा, पच्छिम । **पश्चिमाचक**-पु० [सं०] वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य छिपता है, अस्ताचल ।

पश्चिमार्ध, **पश्चिमार्ध**-पु० [सं०] पीछेवाला भाषा भाग; अपरार्ध ।

पश्चिमी-वि० पश्चिम दिशाका, पछाँही ।—**घाट**-पु०

बंबईके पासकी एक पर्वतमाला ।

पश्चिमोत्तर-वि० [सं०] जो पश्चिम और उत्तरमें स्थित हो, उत्तरी-पश्चिमी । पु० बायुकीय ।

पश्चिमोत्तरा-झी० [सं०] उत्तर और पश्चिमके बीचकी विदिशा, बायव्य कोण ।

पश्मी-झी० एक प्राचीन आर्यभाषा जो भारतकी पश्चिमोत्तर सीमाने लेकर अफगानिस्तानतक बोली जाती है । पु० एक ताल ।

पश्म-पु० [का०] दे० 'पश्चम' ।

पश्मीना-पु० [का०] दे० 'पश्मीना' ।

पश्च्यंती-झी० [सं०] वेदवा; वह शब्द जो मूलाधारमें उत्पन्न होनेवाले सूक्ष्म शब्दकी उत्पत्तिके अनन्तर बाहुके सयोगसे नामिदेषमें उत्पन्न होता है, परा बाहुकी उत्पन्न करनेवाली बाहुके मूलाधारमें बढकर नामिदेषमें पहुँचने-पर उत्पन्न होनेवाला शब्द-विशेष (परा बाहु और पश्च्यंती बाहु केवल ईश्वर और योगियोंके लिए ही गोचर है । वस्तुतः एक ही शब्द मूलाधार, नामि, हृदय तथा कंठके संयोगमें क्रमशः परा, पश्च्यंती, मध्यमा तथा वैखरी-इन ४ संज्ञाओंमें अभिविभक्त होता है) ।

पश्चतोद्गर-वि० [सं०] जो देखते देखते कोई चीज नुरा ले । पु० झनार ।

पश्चवक्षः-पु० [सं०] बलि पञ्चुके अंगविशेषका छेदन ।

पश्चात्तर-पु० [सं०] कामना और सकलपक्षों साथ किया जानेवाला देवीका पूजन (त०) ।

पश्-पु० पक्ष; पाक्ष; पंक्ष, पैना; तरफ, ओर ।

पक्षा-पु० दाहि ।

पषाण, **पषाण**-पु० पाषाण, पत्थर ।

पषारना, **पषाळना**-स० कि० पसारना, धोना ।

पष्यान-पु० दे० 'पाषाण' ।

पसंग-पु० दे० 'पासंग' ।

पसंगा-पु० दे० 'पासंग' । वि० बहुत थोड़ा । **सु**-झी न होना-अति तुच्छ होना ।

पसंचा-पु० दे० 'पासंग' ।

पसंती-झी० दे० 'पश्च्यंती' ।

पसंद-झी० [का०] इच्छा; स्वीकृति, कर्तृकृत्यतः तरजीह । वि० इच्छिके अनुकूल; जो मनकी उँचे, मनोनीत ।

पसंदा-पु० [का०] मांसके कुचले हुए टुकड़ोंसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका कषात ।

पसंदीदा-वि० [का०] पसंद किया हुआ; जो पसंद हो ।

पस-पु० [अ०] अबाद । अ० [का०] बादमें, पीछे; आस्तिकार; अतमें; इसलिये, अतः; तिसरे, वैशक ।

पसंदा-वि० बचा हुआ, अवशिष्ट, जमा किया हुआ, संचित धन । पु० बचाया हुआ धन; वृद्धावस्था आदिके लिए संचित धन ।—**सुरदा**-पु० जूठन ।—**दावत**-अ० अनुपस्थितिमें, परोक्षमें ।—**दा**-वि० पीछे हटा हुआ; शिकस्त खाया हुआ ।—**पाई**-झी० शिकस्त खाना, पराजय ।—**मर्ग**—**सुर्वन**-अ० मरनेके बाद ।—**रू**-पु० नौकर, चाकर ।—**(सो)पैसा**-पु० आगा-पीछा; बहाना, दाखलदूख ।

पसकी-झी० अग्रप्राशन, चढ़ावन ।

पसल-पु० दे० 'पसल'।

पसलीना-पु० दे० 'पसलीना'।

पसर-पु० आभी अंजलि। * जो० प्रसार, फैलाना; आक्रमण। -कटाखी-जो० अटकना। मु० -खराबा-पशुओंकी रातमें नुपनेसे थोड़ी देरके लिए किसीके छेतमें बराना।

पसरहा-पु० दे० 'पसरहा'।

पसरन, पसारिनी-जो० प्रसारणी कता।

पसरना-अ० कि० और अधिक दूरीमें व्याप्त होना, फैलना; आगे बढ़ना; बढ़ना; हाथ-पाँव फैलाकर सोना।

पसरहहा-पु० दे० 'पसरहहा'।

पसरना-स० कि० फैलवाना, किसीको पसारनेके काममें प्रवृत्त करना।

पसरीहाँ-वि० फैलनेवाला, जो फैले।

पसली-जो० पौजारकी इधियोंमेंसे कोई एक पार्श्वस्थि।

मु० -फक्क ठटना या फक्कना-मनमें उत्साह, पैदा होना, जोमें उमंग होना। - (कियाँ) खीली करना या खोचना-देतार पीटना।

पसरी-जो० तिथीका चापक।

पसारी-पु० अंजलि।

पसाउ-पु० प्रसाद, कृपा।

पसारना-स० कि० पके हुए चावलमेंसे माँक निकालना; जलजुक्त पदार्थमेंसे जलके अंशको बहा देना। * अ० कि० प्रसन्न होना।

पसार-पु० पसरनेकी क्रिया या भाव, फैलाव, विस्तार; * मायाजाक, प्रपञ्च।

पसारना-स० कि० फैलाना, छितराना; आगेकी ओर करना या बढ़ाना।

पसारा-पु० दे० 'पसार'।

पसारी-पु० तिथीपाल; पंसार।

पसाव-पु० दे० 'पसावन'; * प्रसार, अनुग्रह।

पसावन-पु० पसानेपर निकलनेवाला पदार्थ, माँक आदि।

पसाहनि-जो० अग्राग (विधा)।

पसिजर-पु० दे० 'पैतेजर'।

पसिस-वि० बँधा हुआ, पाशबद्ध।

पसिजना-अ० कि० ताप या गरमीके कारण किसी ठोस चीजका पेसी (स्थितिकी) प्राप्त होना कि उसका जलाञ्च रसरसरकर बाहर निकले या उसमेंसे पानी छूटे; खिल होना; दबाने आदि होना।

पसीना-पु० वह पानी जो श्रम करने या गरमी लगनेसे शरीरमेंसे निकलता है, रोंद; अमजक। मु० (गहरे)-(ने)की कमाई-बकी मेहनत और सचाईमें कमाया हुआ धन। -पसीने होना-पसीनेसे तर-नतर होना।

पसु-पु० दे० 'पशु'।

पसुरी, पसुली-जो० दे० 'पसली'।

पसुजा-जो० एक तरहकी सिलाई जिसमें सीधे टाँके दिये जाते हैं।

पसुजना-स० कि० सीना।

पसुता-जो० दे० 'प्रसुता'।

पसेव-पु० प्रसेद, पसीना।

पसेरी-जो० पाँच सेरकी एक तौल।

पसेव-पु० वह पानी जो किसी वस्तुके पसीजनेसे उसमेंसे निकलता है; किसी वस्तुमेंसे रसरसरकर निकलनेवाला तरक पदार्थ जलाञ्च; सुखाते समय कच्ची अफीममेंसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ; पसीना।

पसोपेक्षा-पु० दे० 'पस'के साथ।

पस-वि० [फा०] नीच, कमीना; छोटा, तुच्छ; हारा हुआ; शिथिल (नो०)। -ऊब-पु० छोटा कद। वि० छोटे कदका, नाटा, रोना। -हिम्मत-वि० भाग्यहीन। -खयाल-पु० छोटा खयाल, तुच्छ विचार। वि० छोटे खयालवाला। -हिम्मत-वि० किसी हिम्मत दूट गयी हो, हतोत्साह। मु० -करना-देना देना, हारा देना (हिम्मत) तोड़ देना। -होना-हारा जाना; पराजित होना (हिम्मत) दूट जाना।

पसी-जो० [फा०] नीचता, कमीनापन; निचाई; कमी; झुटि।

पसव-पु० [स०] गृह, निवास-स्थान; परिवार, कुल।

पहँ-अ० पास; मे।

पहँसुल-पु० तरकारी काटनेका हँसियाकी तरहका एक औजार।

पह-जो० दे० 'पै'। मु० -फटना-दे० 'पै फटना'।

पहचानना-स० कि० किसीको पहचाननेमें प्रवृत्त करना; किसीसे पहचाननेका काम कराना।

पहचान-जो० पहचाननेकी क्रिया या भाव, कमीके देने या जाने हुए व्यक्ति या पदार्थकी दुबारा देखनेपर उभे उसी रूपमें जान लेनेकी क्रिया या भाव, पूर्व-परिचित व्यक्ति या वस्तुकी देखनेसे होनेवाला यह ज्ञान कि यह अमुक है; किसी पदार्थकी वस्तुस्थिति जाननेकी क्रिया या भाव, परख; वह वस्तु या बात जिससे यह जाना जाय कि यही अमुक पदार्थ है; निशान, चिह्न; परखनेकी शक्ति; परिचय (क०); विवेक।

पहचानना-स० कि० किसी पूर्वपरिचित व्यक्ति या वस्तुको देखकर यह जान लेना कि वह अमुक है; किसी व्यक्ति या पदार्थको इस प्रकार जानना कि जब कभी देखे तब यह ज्ञान हो जाय कि यह अमुक है अथवा नहीं; विवेक करना; किसीका गुण-दोष जानना, किसीके गुण दोषमें अच्छी तरह परिचित होना।

पहचाना-स० कि० भगाने या पकड़नेके लिए दौड़ना; पत्थर आदिपर रगड़कर धार तेज करना।

पहन-पु० [फा०] बन्धेकी देखकर ध्यारकी अधिकतासे माता-के स्तनमें उतर आनेवाला दूध; * पत्थर, पाषाण।

पहनना-स० कि० (कपड़े, गहने आदि) शरीर या अंग-विशेषपर धारण करना।

पहनवाना-स० कि० किसीके द्वारा किसीको कपड़े, गहने आदि धारण कराना; किसीको पहनने या पहनानेमें प्रवृत्त करना।

पहना-पु० दे० पहन (फा०)।

पहनाई-जो० पहननेकी क्रिया या भाव; पहननेकी उबरत।

पहनाना-स० कि० किसीको कपड़े, गहने आदि धारण कराना।

पहनावा—पु० दे० 'पहनावा' ।

पहनावा—पु० पहननेके कपड़े, पोशाक, नीचेले ऊपरतक पहने जानेवाले कपड़े; वेश; विशेष प्रकारका वेश; किसी तरहका खास पहननेका वस्त्र; कपड़े पहननेका तर्ज या दम ।

पहपट—पु० एक प्रकारका शियोंका शीत; हल्का, शीत; बदनामीका हल्का; छिपे तौरसे की जानेवाली बदनामी; धोखा, दगाबाजी । **पहपट**—वि० हल्का मचानेवाला; कबजी, कसादी; धोखा देनेवाला, दगाबाज । **पहपट**—की० हल्का मचानेका काम; कसावट करानेका काम; धोखा देना, दगा करना, छलना ।

पहर—पु० तीन घंटेका समय; समय, काल, जमाना ।

पहरना—स० कि० पहनना ।

पहरा—पु० किसी व्यक्ति या वस्तुको उसी रूप या स्थितिमें बनाये रखनेके लिए एक या अनेक व्यक्तियोंका नियुक्त होना, चौकी, निगरानी, देखरेख; रखकदलके तैनात रहनेका समय; रखकरख; रखकदलका केरा; वस्तुके समयकी चौकी; हिरासत; * युग, जमाना । —(र) **दार**—पु० पहरा देनेवाला, रखक । **मु०**—देना—रखवाली करना, निगरानी करना, किसीकी रखाके लिए तैनात रहना । **पहरा**—पहरा दिया जाना, रखाके लिए चौकी-दार तैनात रहना । **बदलना**—एक रखक या रखकदलके स्थानपर दूसरा नियुक्त होना । **बैठाना**—किसीकी निगहबानीके लिए उसके आस-पास पहरदार नियुक्त करना । —(र) **में देना**—निगहबानीके लिए पहरदारों या सिपाहियोंके तैयार करना, हिरासतमें करना । —**में रखना**—हिरासतमें रखना । —**में होना**—हिरासतमें रखा जाना ।

पहराहत—पु० पहरा देनेवाला—पहराहत घर मुसो सावकी, रच्छा करने लागी चोर—सुन्दरदास ।

पहराना—स० कि० पहनाना ।

पहरावनी—की० दान या खिलअतके रूपमें दी जानेवाली पोशाक ।

पहरावा—पु० दे० 'पहनावा' ।

पहरी—पु० पहरदार ।

पहर, **पहर**—पु० पहरदार ।

पहरा—पु० पहरदार ।

पहर—पु० किसी ठीस या पोली चीजके तीन या अधिक कोरी या कोनोंके बीचकी चौरस सतह; पुनी हुई रस्सी या ऊनकी मोटी और जमी हुई तह या परत; रजार्ह, तोशक आदिके नीपरकी रस्सी परत; पुरानी रस्सी बह जमी हुई तह जो रजार्ह; तोशक आदिमेंसे निकाली गयी हो; किसी ऐसे कार्यका आरंभ जिसमें प्रतिकारस्वरूप दूसरे की कुछ करें, छेड़; बगल; * पटल, परत । —**दार**—वि० जिसमें पहर हों, पहलीबाज । **मु०**—निकासना—किसी चीजमें पहर बनाना ।

पहलनी—की० कोड़ेकी गोल करनेका छनारोंका एक औजार ।

पहलवान—पु० [फा०] कुश्ती लकनेवाला मजबूत और कसरती आदमी, मल्ल, कुश्तीबाज; हट-पुट और बलवान्

आदमी ।

पहलवानी—की० [फा०] कुश्ती लकनेका काम या पेशा, मल्लभुषि; पहलवान होनेका भाव ।

पहलवी—की० [फा०] ईरानकी एक पुरानी भाषा ।

पहला—वि० जो गणना या क्रमके अनुसार एकके स्थानपर पड़े, आदिमें पहलेवाला, आब, प्रथम । † पु० पुरानी रस्सी की जमी हुई तह ।

पहल—पु० [फा०] बगल, पोंजर; किसी पदार्थका दाहिना या बायां भाग; बाजू, पार्श्व; सेना या मकानका दाहिना या बायां भाग; किनारा; कल, करबद; दिशा; किसी ठीस चीज या नगीने आदिके कोरी या कोनोंके बीचकी चौरस सतह; पहल; किसी विषयका कोई अंग जिसपर विचार किया जाव, पक्ष; पक्षीस; गूढ़ अर्थ, अर्थार्थ; कक्ष; तरकीब, बहाना । —**दार**—वि० जिसके कई पहल हों ।

मु०—**आबाद होना**—प्रेयसीका प्रेमीके पास बैठना, माथकका आधिक्यके पास बैठना । (**किसीका**)—**गरम कराना**—किसीका, विशेषकर प्रेयसीका प्रेमीसे सटकर बैठना, बहुत नजदीक बैठना । (**किसीसे**)—**गरम करना**—प्रेयसीको अपने शरीरसे सटकर बैठाना । —**दबाना**—शत्रुकी सेना या नगरके बाये या बायें भागको आक्राम कर देना; अपनी सेनाके दोनों पक्षोंमेंसे किसी एकको दूसरेके पीछे रखते हुए आक्रमणमें आगे बढ़ना । —**बचाना**—मुठभेड़का अवसर न आने देते हुए आगे बढ़ जाना, निश्चित बचाते हुए बगलसे निकल जाना । —**बसाना**—पक्षीसमें आ बसना । —**में बैठना**—किसीसे सटकर या लगकर बैठना । —**में रहना**—किसीसे सटकर, किसीके बहुत समीप बैठ रहना ।

पहले—अ० आदिमें, शुरूमें; देश, स्थिति या कालके अनुसार प्रथम, पूर्वमें, पेशतर, आगे; पुराने जमानेमें, प्रचीन कालमें, अतीत कालमें । —**पहल**—अ० सर्वप्रथम, सबसे पहले; पहली बार ।

पहलेजी—पु० एक प्रकारका लघोतरा खरबूजा ।

पहलीठा, **पहलीठा**—वि० प्रथम गर्भमें उत्पन्न (पुत्र), जो और सभी लड़कोंमें पहले पैदा हुआ हो, प्रथमजात ।

पहलीठी, **पहलीठी**—की० बच्चा जननेकी पहली क्रिया, प्रथम प्रसव, आध गर्भमोचन । वि० की० दे० 'पहलीठा' ।

पहाड़—पु० पत्थर, कंकड़, चूने; मिट्टी आदिकी बड़ानोंका वह प्राकृतिक पुंज जो जमीनकी सतहसे बहुत ऊंचा होता है और बहुत बरफसे ढका रहना है; किसी पदार्थका बहुत ऊंचा ढेर; कोई बहुत भारी वस्तु, वह जिससे जल्दी छुटकारा न मिल सके; बहुत कठिन कार्य, दुष्कर कार्य । **मु०**—**उठाना**—भारी काम हाथमें लेना । —**कटना**—भारी कामका पूरा हो जाना । —**टूटना**, —**टूट पड़ना**—भारी सफ़ट आ पड़ना । —**से टकर लेना**—बहुत बड़े बलवान्से भिड़ना ।

पहाड़ा—पु० किसी अंककी गुणन-सूची जिसे बच्चे याद करते हैं ।

पहाड़िया—वि० दे० 'पहाड़ी' ।

पहाड़ी—वि० पहाड़-संबंधी; पहाड़का; पहाड़पर या उससे आसपास रहनेवाला; पहाड़पर होनेवाला; जो पहाड़से

निकले (सब अर्थमें कीलिय विरोधके लिए जी 'पहाकी' का ही प्रयोग होता है)। जी० छोटा पहाक; पहाकी लोगोंके गानेकी एक तरहकी धुन; एक रागिनी; एक औषधि, जनी।
—इंद्राध्व-पु० एक प्रकारका खोरा।

पहारा—पु० दे० 'पहाक'।

पहारी—वि०, जी० दे० 'पहाकी'।

पहाराक—पु० पहरदार।

पहिलाना—जी० दे० 'पहचान'।

पहिलाना—स० कि० दे० 'पहचानना'।

पहिल, पहिली—जी० पकायी हुई दाढ़।

पहिलाना—स० कि० दे० 'पहनना'।

पहिला—जी० एक मछली, बढाळ, पाठान।

पहिलाना—स० कि० दे० 'पहनना'।

पहिलाना—पु० दे० 'पहनना'।

पहिली—अ० पास।

पहिला—पु० गाड़ी, कल आदिका वह मोलाकार ज्वनव जिसेके धुरीपर घूमनेसे वह कल या गाड़ी चल्ती है, चक्र, चक्का।

पहिरना—स० कि० दे० 'पहनना'।

पहिराना—स० कि० दे० 'पहनना'।

पहिरावना—स० कि० दे० 'पहनना'।

पहिरावनि, पहिरावनी—जी० दे० 'पहनना'।

पहिल—वि० दे० 'पहला'। अ० पहले।

पहिला—वि० दे० 'पहला'। वि० जी० जो पहले-पहल आया हो।

पहिली—अ० दे० 'पहले'।

पहिलीठा, पहिलीठा—वि० दे० 'पहलोठा'।

पहिलीठी—जी० दे० 'पहलोठी'।

पहीति—जी० दाढ़।

पहुँच—जी० पहुँचनेकी क्रिया या भाव; पहुँचनेकी शक्ति; प्राप्तक गमन; गति, पैठ, प्रवेश (शास्त्र, विद्या आदिमें); पहुँच जानेकी खबर या सूचना (जैसे पत्रकी पहुँच); समझनेकी सामर्थ्य; प्रवृत्ति या धारणकी शक्ति; जानकारी।

पहुँचना—अ० कि० एक स्थानसे चलकर दूसरे स्थानको प्राप्त होना; आगे बढ़कर या फैलकर विशिष्ट स्थानको प्राप्त होना; किसी स्थान या पर आदिकी प्राप्त होना; व्याप्त होना; समाना; किसी गुरु या मार्मिक बातको जान लेना; समझना; किसी विषयकी दूरकी बातें समझनेकी शक्ति रखना; गति या जानकारी रखना; फलके रूपमें मिलना या प्राप्त होना; प्राप्त या अनुभूत होना; बराबरीमें आना; समान होना, समता करना।
मु० पहुँचा हुआ—सिद्ध।

पहुँचा—पु० कलारोंके ऊपर और कुहनोंके नीचेका भाग; † काम करनेकी शक्ति। मु०—एकबना—किसी कार्यके निमित्त मूलपूर्वक किसीका हाथ पकड़ना और उसे रोक रखना।

पहुँचाना—स० कि० किसी व्यक्ति या पदार्थकी एक स्थानसे जगह या इलाक़ा दूसरे स्थानको प्राप्त कराना, ले जाना; आगे बढ़ाकर या फैलाकर किसी विशिष्ट स्थानको प्राप्त कराना; कोई स्थान या पर आदि प्राप्त कराना; फैलाना; समझाना; फलके रूपमें प्राप्त कराना; अनुभव कराना;

समझ बनाना, बराबरीमें आना; मुच्य बनाना।

पहुँची—जी० हाथमें पकड़नेका बियोंका एक प्रसिद्ध गहन; कलारोंकी रक्षाके लिए पहना जानेवाला आभरण।

पहुँची—जी० दे० 'पहुँचा'।

पहुँचा—पु० दे० 'पाहुना'।

पहुँचाई—जी० पाहुना होनेका भाव; पाहुना बनकर कहीं जाना या आना; † किसी नातेदारका घर जहाँ पाहुना बनकर आया जाय; पाहुनेका सम्कार, अतिथि-सम्कार।

मु०—करना—पाहुनेके रूपमें जहाँ-तहाँ जाकर खाना; पाहुनेके रूपमें नातेदारके यहाँ जाना।

पहुँच—पु० फूल, पुष्प।

पहुँच, पहुँचि, पहुँची—जी० घूमनी।

पहुँचा—जी० कुरै, कुमुदिनी।

पहरी—जी० दे० 'पहेली'।

पहेली—जी० किसीकी बुद्धि या समझकी परीक्षा लेनेके कामका एक प्रकारका प्रश्न, वाक्य या वर्णन जिसमें किसी वस्तुका ज्ञामक या टेढ़ा-भेड़ा क्लृप्त देकर उसे बूझने या अभिप्रेत वस्तुका नाम बतानेको कहते हैं; दुष्प्रश्न; कोई ऐसी बात या ऐसा विषय जो जल्दी समझमें न आवे; ऐसी समस्या जो जल्दी हल न की जा सके। मु०—बुझाना—अपनी बातको ऐसे शब्दोंमें कहना कि वह जल्द सुननेवालेकी समझमें न आवे।

पहल—पु० [स०] एक प्राचीन जाति, ईरानी (?)।

पहली—जी० ईरानकी एक प्राचीन भाषा।

पहिका—जी० [स०] बारिघुनी, जलकुंभी।

पॉ, पॉइ—पु० पैर, पाँव।

पॉहता—पु० चारपाईका पैर रखनेकी ओरका हिस्सा, पावताना।

पॉइबाग—पु० दे० 'पॉइ बाग'।

पॉइ—पु० पैर, पाँव।

पॉइक—पु० पक, शीघ्र।

पॉका—पु० दे० 'पॉक'।

पॉक—वि० [स०] पक्ति-संबंधी; पक्तिक।

पॉकेय, पॉक्य—वि० [स०] जो पंगतमें औरोंके साथ बैठने योग्य हो, पंगतमें सम्मिलित होने योग्य।

पॉल—पु० पल, पर, डेना।

पॉलवा—पु० पंख, पर।

पॉलवी—जी० दे० 'पेंखी'।

पॉली—जी० दोषकर जल मरनेवाली पॉलवाही कीड़ी, फलिया; पक्षी, चिबिया।

पॉलुदी—जी० दे० 'पेंखी'।

पॉग—पु० गंगारार, कछार।

पॉगानो—पु० रेहसे तैयार किया जानेवाला नमक।

पॉगुर—वि० पय, लेंग। पु० लेंगका मनुष्य; पैरकी लेंगकी (विषाण)।

पॉगुय—पु० [म०] पंगुल होनेका भाव, लंगकापन।

पॉष—वि० चारसे एक अधिक; दसका भाषा। पु० पॉन्की संख्या, ५; * पॉष व्यक्ति; बहुतसे छोश, जनता; जाति-बिरादरीके नेता या सरदार।—वॉ—वि० गिनती या क्रममें पॉन्के स्थानपर पढ़नेवाला। मु० पॉवॉ वा

पाँचौँ ठँनकिचौँ कीमें होना-बूब फायदा उठाना ।
-सवारौँमें नाम लिखाना-पावता न होते हुए भी
अपनेको बड़ीमें सम्मिलित करना ।

पाँचक-पु० दे० 'पंचक' ।

पाँचकपाल-वि० [सं०] पंचकपाल-संबंधी ।

पाँचकश्य-वि० [सं०] कृष्णका शंख; अग्नि; एक प्रकारकी
मछली; अणुदोषके आठ उपद्रोषोंमेंसे एक । -धर-पु०
कृष्ण ।

पाँचदश-वि० [सं०] महीनेके पंद्रहवें दिनसे संबद्ध ।

पाँचदश-पु० [सं०] पंद्रहका समाहार ।

पाँचनद-वि० [सं०] पंचनद-संबंधी; पञ्जाबका, पंजाबी ।

पु० पंचनद अथवा पञ्जाबका राजा या बर्होका निवासी ।

पाँचमौसिक-वि० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज आदि पाँच
भूतों या तत्त्वोंका बना हुआ ।

पाँचपक्षिक-वि० [सं०] पंचपक्ष-संबंधी । पु० पाँच महा-
पक्षोंमेंसे कोई ।

पाँच-पु० कोरहूके मुँहपर, जहाँ आठ लपटा है, जहाँ
जानेवाला लकड़ीका टुकड़ा ।

पाँचरात्र-पु० [सं०] एक वैष्णव संप्रदाय ।

पाँचलिका-खी० [सं०] दे० 'पांचालिका' ।

पाँचवर्षिक-वि० [सं०] पाँच वर्षका । [खी० 'पांचवर्षिकी' ।]

पाँचस्राविक-पु० [सं०] एक प्रकारका बाना जिसमें पाँच
प्रकारके स्त्र मिले रहते हैं; सगीतवाद्य, पाँच प्रकारका
संगीत ।

पाँचा-पु० भूमा बटोरनेके कामका किसानोंका एक बैठ-
दार आला जिसमें पाँच दाँते होते हैं ।

पाँचार्यिक-पु० [सं०] शैव ।

पाँचाल-वि० [सं०] पंचाल देश-संबंधी; पंचाल देशका;
पंचाल देशपर शासन करनेवाला । पु० पंचाल नामक
देश; पंचाल देशका राजा; पंचाल देशके निवासी; बटई,
जुलहा, नाई, पोथी और मोची-इन पाँचोंका समाहार ।

पाँचालक-पु० [सं०] पंचाल देशका राजा । वि० पंचाल-
वासियोंके संबंधका ।

पाँचालिका-खी० [सं०] कपड़े आदिकी बनी हुईं बुनिया,
पुतली ।

पाँचाली-खी० [सं०] पंचाल देशकी स्त्री या रानी; पांडवों-
की प्रती प्रीति जो पंचाल देशकी राजकुमारी थी पुतली,
बुनिया; काव्यकी एक प्रसिद्ध रचनाशैली । जिसमें बड़े-बड़े
समासोंसे युक्त काव्यपूर्ण पदावलीका समावेश होता है;
स्वरसाधनकी एक रीति ।

पाँचौँ-खी० किसी पक्षकी पाँचवीं तिथि, पंचमी ।

पाँचजा-सं० कि० जोड़े, पीनल आदिकी वस्तुओंको टोंका
देकर जोड़ना, शल्लाना ।

पाँचर-पु० शरीरका कौल और कमरके बीचका पसलियों-
वाला भाग, पाखर ।

पाँची-खी० नदीमें पानीकी शतनी कमी होना कि जोग
उठे हल्कर पार कर सकें ।

पाँह-वि० हल्कर पार करने योग्य (नदी) ।

पाँह-वि० [सं०] दे० 'पंड' ।

पाँहक-पु० पंडक ।

पाँह-पु० [सं०] सफेद रंग; दौना; जुंदका फूल; मेक ।
वि० सफेद रंगका । -पुष्पिका-खी० शीरला वृक्ष ।

-बायस-पु० सफेद कौमा (असंभव बात) । -बासा-
(यस्), -बासी(सिन्)-वि० दूधेत बल्लभारी ।

पाँहारा-पु० एक तरहकी ईंस ।

पाँहोर-वि० [सं०] दूधेतसे मित्र, काका इ० ।

पाँहव-पु० [सं०] पांडुके पुत्र, सुषिष्ठिर, भीम, अर्जुन,
नकुल और सहदेव; इन पाँचोंमेंसे कोई एक; पञ्जाबका एक
प्राचीन प्रदेश; उक्त प्रदेशका निवासी । -ओष्ठ-पु०
सुषिष्ठिर ।

पाँहवामीक, पाँहवावन-पु० [सं०] कृष्ण ।

पाँहविक-पु० [सं०] एक तरहका गीरा ।

पाँहवीथ-पु० [सं०] पाँहव-संबंधी; पाँहवोंका ।

पाँहवेव-पु० [सं०] पांडुका पुत्र, पांडव ।

पाँहिव-पु० [सं०] पंडितार्थ, विद्वत्ता ।

पांडु-पु० [सं०] सफेद-पीला रंग; सफेद रंग; पीछिया रोग;
सफेद हाथी; पाँहवोंके पिता; पांडुकल, परबल; मध्यदेशका
एक प्राचीन प्रदेश । वि० पीलापन किये हुए सफेद रंगका,
सफेद-पीले रंगका; सफेद रंगका । -कंदक-पु० चिचका ।

-कंदक-पु० सफेद रंगका कंबल; हाथीकी झूल; एक
प्रकारका सफेद पत्थर । -कंदली(किन्)-वि० सफेद
कबलसे ढका हुआ (रथादि) । -करण-कर्म(रु)-पु०

कोशेका दाग मिटानेका एक उपचार । -क्षमा-खी०
हस्तिनापुर । -सर-पु० भक्ता पेड़ । -नाग-पु०

सफेद हाथी; सफेद साँप; पुत्रागका पेड़ । -पत्नी-खी०
एक गंधद्रव्य, रेणुका । -पुष्ट-पु० पांडुका पुत्र, सुषि-
ष्ठिरादिमेंसे कोई पांडव । -पुष्ट-वि० जिसकी पीठ सफेद

हो (यह एक दुर्लक्षण माना जाता है) । -कल-पु०
परबल । -कली-खी० चिमई । -भूय-वि० जहाँकी
धरती सफेद रंगकी हो । -सूत्र(रु)-सूत्रिका-खी०

सफेद या पीले रंगकी मिट्टी, खनिया । -रंग-पु०
एक तरकारी । -राग-पु० सफेद रंग, सफेदी । -रोग

-पु० एक प्रसिद्ध रोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़
जाता है, पीछिया । -लिपि-खी० दे० 'पांडुलेख';

पुस्तककी हस्तलिखित प्रति । -लेख-लेख्य-पु० पट्टी,
कागज आदिपर अंकित वह लेख या रेखाचित्र जिसे पुनः

काट-छाँटकर ठीक किया जाय, मसविदा । -लेखक-पु०
(लेख्य आदिकी) पांडुलिपि तैयार करनेवाला । -लोमसा,

-लोसा-खी० माषपर्णी । -लोह-पु० चाँदी । -शकरी

-खी० प्रमेहका एक भेद । -शर्मिला-खी० द्वीपदी ।

-सोपाक,-सौपाक-पु० एक सकर जाति ।

पांडुक-पु० [सं०] सफेद-पीला रंग; पीछिया रोग; राजा
पांडु; पंडक; एक तरहका बान ।

पांडुकी(किन्)-वि० [सं०] जिसे पीछिया रोग हुआ हो ।

पाँहुर-पु० [सं०] पीलापन किये हुए सफेद रंग, सफेद-
पीला रंग; सफेद रंग; पांडु रोग; सफेद कीड़ । वि० पीला-
पन किये हुए सफेद रंगका; सफेद रंगका । -दुग्ध-पु०

जुटव वृक्ष, कुरैया । -दुष्ट-वि० दे० 'पांडुदुष्ट' । -कली

-खी० एक छुप ।

पाँहुरक-वि० [सं०] सफेद या पीले-सफेद रंगका ।

पांडुरा-श्री० [सं०] माधवपणीः एक बौद्ध देवी ।
 पांडुरित-वि० [सं०] जो पीला बना दिया गया हो-
 'बदनचंद्रके ओभरेयुसे गंगाका जल पांडुरित हो जाता था'-इजारीप्र० ।
 पांडुरिमा(मन्त्र)-श्री० [सं०] सफेदी मिठा हुआ पीलापन;
 सफेदी ।
 पांडुरेख-पु० [सं०] एक प्रकारकी रैख, सफेद रैख ।
 पाँदे-पु० माछणोंकी एक उपाधि; * मध्यापक; रतोद्वा ।
 पाँदेच-पु० माछणोंकी एक उपाधि ।
 पाँद्व-पु० [सं०] पांडु देशका निवासी; पांडु देशका
 राजा; दक्षिणका एक प्राचीन प्रदेश; इस प्रदेशका निवासी
 या राजा ।
 पाँत-श्री० पंक्ति, कतार; संगत; समूह ।
 पाँति-श्री० कतार; एक साथ खानेवालोंका समूह, तब;
 स्वजनवर्ग ।
 पाँच-पु० [सं०] पथिक, राही; प्रवासी; विरही; स्वयं ।
 -निवास-पु०, -शाखा-श्री० धर्मशाखा, सराय,
 चट्टी ।
 पाँच-पु० पैर, चरण । -चा-पु० दे० 'पाँच' । -खा-
 पु० दे० 'पाँच' ।
 पाँच-पु० वह अंग जिसके जल प्राणी चलते हैं, पैर ।
 -जघ्नी-श्री० पैर दबानेकी क्रिया । -पाँच-अ० पैठल ।
 मु०-अक्षाना-किसी बानमें बेकार देखल देना । -
 उलझ या उठ जाना-लक्ष्मीमें ठहर न मकना । -उठा
 कर चलना-तेज चलना । -कट जाना-माने-जानेकी
 शक्ति नष्ट हो जाना; चल बसना । -का खटका-पैरकी
 आघट । -की जूती-तुच्छ सेवक । -सिरको लगना-
 छोटका बनेमें बराबरीका दावा करना । -की बेड़ी-
 जंजाल, झंझट । -गाबना-जमकर खड़ा रहना; लक्ष्मीमें
 डबा रहना । -बिसना-चलते-चलते थक जाना । -
 जमना-धृतापूर्वक स्थित होना; स्थिति दृढ़ होना, ऐसी
 स्थितिमें होना कि डटने या विचलित होनेकी नौबत न
 आये । -जमाना-धृतापूर्वक स्थित होना, अपनी स्थिति
 दृढ़ करना । -बिगना-स्थिर न रहना । -सलेकी धरती
 खसकना-बहुत अधिक घबरा जाना, होश उड़ जाना ।
 -सलेकी धरती सरक जाना या मिट्टी निकल जाना-
 स्तब्ध रह जाना । -तोड़कर बैठना-कहीं जाना-जाना
 बंद कर देना । -तोड़ना-बहुत अधिक चलकर पैरोंको
 थका देना । -धरतीपर न पड़ना या न रखना-
 धर्ममें चूर रहना । -धरना-पधारना । -धारना-
 दे० 'पाँच धरना' । -धोकर पीना-बहुत आनंदमग्न
 करना; चरणाभूत लेना । (किसीके)-अ होना-ठहरने-
 की शक्ति या दम न होना, धृताका अभाव होना ।
 -निकलना-बदनामी फैलना । -निकाळना-अपनी
 स्थितिसे बढ़कर काम करना; मनमानी करना; दुष्कर्ममें
 प्रवृत्त होना । (किसी कामसे)-निकाळना-पृच्छ हो
 जाना । -पकड़ना-पैर छूना, बहुत अधिक दीनता
 और विनय प्रकट करना । -पड़ना-चरणोंपर गिरना;
 दैव्यभावसे विनय करना । -पर पाँच रखकर बैठना-
 नेखर होना; कुछ काम न करना । (किसीके)-पर

पाँच रखना-किंतीका पूरी तरह अनुगमन करना ।
 -पकोटना*-पाँच-कम्पी करना, पैर दबाना । -पसा-
 रना-कम्पा करना; ठाट-भाट करना । -पाँच चलना-
 पैदल चलना । -पीटना-छटपटाना; परेशान होना ।
 -पूजना-बहुत अधिक आनंदमग्न करना; विवाहमें कन्या-
 दान करनेवालेका वरका पूजन करके उसे कन्या समर्पित
 करना । -फूलना-मय आदिके कारण ठिठक जाना ।
 -फेरने जाना-दुर्लभता पहले पहले समुद्राल जाना;
 दुर्लभता समुद्रालसे पहले-पहल अपने माथके या किसी
 और रिश्तेदारके यहाँ जाना; प्रसूताका कुछ समयके लिए
 अपने माथके या किसी और रिश्तेदारके यहाँ जाना ।
 -कैलाना-अधिक पानेके लिए प्रयत्न करना; अधिक
 पानेका लोभ करना । -बढ़ाना-और अधिक वेगसे
 चलना; कम्पा करना । -बाहर निकलना-दे० 'पाँच
 निकलना' । -भारी होना-गमंभी होना । (किसीसे)-
 -भी न धुलवाना-अति तुच्छ समझना । -में बेड़ी
 पड़ना-जंजालमें फँसना । -में मेंहरी लगना-कोई
 काम करनेके लिए बाहर न जाना । -रीपना*-प्रण
 करना; बाजी लगाना । -लगना-चरण छूकर प्रणाम
 करना । -समेटना-पैर सिकोड़ना; पृथक् रहना । -से
 पाँच बाँधकर रखना-सदा अपने पास या देखरेखमें
 रखना, कमा पामने या आँखोंके सामनेसे हटने न देना ।
 पाँच-पु० वह कपड़ा जो किसी आदरणीय व्यक्तिके पाँच
 रखकर चलनेके लिए उसके मार्गमें बिछाया जाता है ।
 पाँच-श्री० खड़ाई; * जूता; गोटा-पट्टा बुननेका काठका
 एक आला ।
 पाँच-वि० नीच; तुच्छ; क्षुद्र; मूर्ख । पु० दे० 'पाँच' ।
 पाँचरी*-श्री० दे० 'पाँचरी'; सौदा; खोदी; बैठक ।
 पाँस, पाँस-वि० [सं०] कलकित करनेवाला, अप-
 मानित करनेवाला; भ्रष्ट करनेवाला, दुष्ट; हेय । (प्रायः
 समासमें व्यवहृत-पोलस्व-कुल-पासां) पु० तिरंकार,
 धृष्ट ।
 पाँस, पाँस-वि० [सं०] पाशसे उत्पन्न, भूलिमय ।
 पु० मोना मिट्टीसे निकाला हुआ नमक ।
 पाँस, पाँस-श्री० [सं०] धूल, धूलिका; गोबरकी खाद;
 मोना मिट्टीसे निकाला हुआ नमक; एक प्रकारका कपूर;
 पिचपापण; भूस्पर्श । -कासीस-पु० कसीस ।
 -कुली-श्री० राजमार्ग, चौड़ी सड़क । -कूल-पु०
 धूलका ढेर, धूलपटल; वह दस्तावेज या कागज जो किसी
 विशिष्ट व्यक्तिके नाम में लिखा गया हो, निरूपद शासन
 (स्पृष्ट); पुरही (बी०) । -कृत-वि० धूलमें ढका हुआ ।
 -झार-पु० पाँगा नमक । -गुंडिल-वि० धूलसे ढका
 हुआ । -चंदन-पु० शिवा । -खरब-पु० ओला ।
 -खामर-पु० तबू, लेमा; धूलिका; ऐसा किनारा
 जिसपर दूब जमी हो; प्रसांसा । -ज-अव-पु० पाँगा
 नमक । -जालिक-पु० विष्णु । -खान-पु० धूलिका ।
 -पटल-पु० धूलिका या धूलकी परत । -पद्म-पु०
 धुलका साग । -मदन-पु० थाला, क्यारी । -रागिणी
 -श्री० महामोदा ।
 पाँसुर, पाँसुर-पु० [सं०] जँस; खंज, पंगु व्यक्ति ।

पांशुक, पांशुक-वि० [सं०] जिसमें पूँख कमी हो; कलंकित करनेवाला (कुलपांशुक); अपवित्र; सदीप; लपट, व्यभिचारी। पु० व्यभिचारी पुत्र; शिवका एक अन्ध; पतितकर्म।

पांशुका, पांशुका-की० [सं०] पुंल्लि, व्यभिचारिणी; रजस्वला; पृथ्वी।

पाँस-की० राक्ष, योगर आदिकी खाद; खमीर; शराब निकाला हुआ मछुआ।

पाँसना-स० कि० खेतमें खाद देना।

पाँसा-पु० दे० 'पास'।

पाँसी-की० रस्तीकी बनी हुई पास-भूसा रखनेकी जाती।

पाँशु, पाँशुकी-की० पसली-“मस्तकी पाँशुरी पयोधि पाटियतु है”-कवितावली।

पाँही-अ० पास, निकट।

पा-पु० [का०] पैर, पाँव; कदम; वृक्षकी जड़। -**अंदाज-पु०** नारियलके छिल्लके, मँज, ऊन आदिसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी चटाई जो पैर पोंछनेके काममें आती है। -**कार-पु०** तबसीलका व्यास; व्यास; छिदमतनार।

-**कूब-वि०** पाँव मारनेवाला, नाचनेवाला। -**खाना-पु०** मल, गू; मलत्यागके निमित्त बनाया हुआ विशेष प्रकारका भ्रान या कमरा। (**मु०** -० खता होना-बहुत अधिक डर जाना। -० फिर देना-डरकर घबरा जाना, अस्थिर प्रवृत्ति हो जाना। -० फिरना-मलत्याग करना।)

-**खिरावा-अ०** एक पाँवपर। -**जामा-पु०** कमरसे लेकर टलनेतकका दो पायचोवाला एक प्रसिद्ध पहनावा।

(**मु०** -० (मे)में हग देना-डर या खौफसे बहबहास होना। -से बाहर होना या निकल पड़ना-बहुत अधिक क्रोध होना, क्रोधमें आपसे बाहर होना।)

-**जोब-पु०** पाँवमें पहननेका एक घुँघरुआर गहना। -**तराब-पु०** प्रस्थान। -**ताबा-पु०** मोजा; तल्लेके आकारका चमड़ेका वह लंबा टुकड़ा जिसे जूतोंको चुस्त करनेके लिए उसमें डालते हैं। -**नाम-वि०** नामजद, मशहूर, प्रसिद्ध।

-**पौस-पु०** जूता। (**मु०** -० घर मारना-कुछ भी परना न करना; अति तुच्छ समझना।)

-**प्यादा-अ०** बिना सवारिके, पैदल। -**बंदा-वि०** बँधा हुआ; गिरफ्तार, कैद; जो किसी नियम, वचन आदिका पूरी तरह पाठन करे; जो किसी नियम, वचन आदिसे पूर्णरूपसे बंद हो; जो किसी नियम, वचन आदिका पाठन करनेके लिए विवश हो; मजबूर, लाचार; कायम रहनेवाला (रहना, होनाके साथ)। पु० बेड़ी; घोड़ेके पिछले पैरोंकी बाँधनेके कामकी रस्ती, पिछाई। -**बंदी-की०** पारबंद होनेकी क्रिया या भाव; नियम, वचन आदिका अनिवार्य पाठन, मानियत; मजबूरी। -**बोस-वि०** पाँव चूमनेवाला, प्रणाम करनेवाला, आदाब बजानेवाला। पु० दे० 'पावोसी'। -**बोसी-की०** पाँव चूमना या छूना, प्रणमन; खातिर, तामीन। -**झर्झ-वि०** स्थिर बिचवाला, धीरे; धादुर, हिम्मती। -**मर्ही-की०** धीरता, स्थिरचितता; बहादुरी, हिम्मत। -**साछ-वि०** पैरों तकें रौदा हुआ, पयदक्षित; तबाह; बरबाद (करना, होनाके साथ)।

-**झाकी-की०** पैरोंके नीचे रौदाना या रौदवाना; तबाही, बरबादी। -**झोड़-पु०** एक प्रकारका कन्तर जिसके पंजोंपर पर होते हैं। एक तरहकी झुग्गी जिसके पंजोंपर पर होते हैं। -**बाब-वि०** जो हलकर पार किया जा सके, कम गहरा। -**बाबी-की०** पायाब होना, उथलापन।

-**छागना-की०** नमस्कार, प्रणाम। -**छागी-की०** दे० 'पाछागन'।

पाइ-पु० पैर, पंज। -**सरी-की०** पलंगका पैरकी ओरका भाग, पैताना। -**माछ-वि०** दे० 'पामाछ'।

पाइक-पु० दे० 'पायक'।

पाइका-पु० [अ०] एक प्रकारका छापेका टाप जो १/६ इंच चौड़ा होता है।

पाइद-की० बाँस आदिका बना हुआ वह ढाँचा जिसपर चढ़कर दीवार चुनी जाती है।

पाइप-पु० [अ०] नल; नली; पानीकी कल; बाँसुरी जैसा एक बाजा; हुन्केकी निगाही।

पाइरा-पु० रकाव।

पाइल-पु० पायल, पावेब।

पाई-अ० [का०] सिरहाने; सामने; नीचे। -**बापा-पु०** परके साथ लगा हुआ बाग, नजरबाग।

पाई-की० पैरा बनाते हुए नाचने या घूमनेकी क्रिया; बाँसकी तीलियों या बेंतका एक प्रकारका ढाँचा जिसपर तानेके छतकी फैलकर जुलाई उसे मोँचते हैं, टिकड़ी; घोड़ेकी पैर सजनेकी एक बीमारी; इकाईका व्युत्प्राश सूचित करनेवाली छोटी खड़ी रेखा, इकाईके चौथे भागके रूपमें किसी संख्याके आगे लगायी जानेवाली छोटी आधी लकीर; आकारकी मात्रा; पूर्ण विराम सूचित करनेके लिए वाक्यके अन्तमें लगायी जानेवाली आधी लकीर; गहने आदि रखनेकी कियोंकी पिठारी; चिता हुआ टाप; एक कोड़ा; एक छोटा सिका जो एक पैसके १/३ के बराबर होता है, एक आनेका बारहवाँ या एक पैसका तीसरा भाग।

पाई-पु० पाँव, पैर।

पाईद-पु० [अ०] सोनेका एक अंग्रेजी सिक्का जो २० शिल्लिंगके बराबर होता है; एक अंग्रेजी वजन जो आठ छटॉकसे कुछ कम होता है।

पाइ-पु० पाँव; चतुर्पाश।

पाइवर-पु० [अ०] चुरा, चुकनी; झुंदरता बढ़ाने या अच्छी रगत कानेके लिए चेहरे आदिपर लगाया जानेवाला एक प्रकारका चुरा; चुरी की हुई दवा (जैसे-टूथपाइवर)।

पाक-पु० [सं०] पकने या पकानेकी क्रिया या भाव; पकाया हुआ अन्न; रसोई; सिंघानके निमित्त दूधमें पकाया हुआ चावल; पकवान; भोजनका पचना, सोखे, कल आदिका पकना; ज्रण, फोड़ा; बूझताके कारण बालोंका सकेद होना; बुझिका परिपक्व होना; परिणाम; शिशु; एक दैत्य जिसे ब्रह्मे मारा था; उल्लू; समाप्ति; अन्न, भनाज; गृह्णाग्नि; भोजन बनानेका वरतन; आतक (विद्रोहादिका); उच्छेद, उच्छट-फेर (विशका)। वि० पका हुआ; अन्न; प्रशस्त; परिपक्व बुझावा। -**कर्म(रू)-पु०**, -**क्रिया-की०** पकानेकी क्रिया, पकाना। -**कृष्ण, -कल-पु०**

पानी नमका; संगी कोरीदा । -ज-वि० पाकसे ज्वष ।
 पु० कविना नमका; परिणामशुल । -हि० (५)-पु०
 इन्द्र । -पक्षित-पु० वह जो रसोई बनानेमें सिद्धहस्त
 हो । -पाक, -आँध-पु० योजन पकानेका पात्र, बटखोई
 आदि । -पुटी-खी० कुम्हारका आर्वा । -बख-पु०
 बुधोत्सव आदिके अक्षरपर किया जानेवाला होम जिसमें
 चरका हवन होता है । -ईंखन-पु० तेजघटा । -रिपु-
 पु० इन्द्र । -ल-पु० अक्षि; बायु; हाथियोंको होनेवाला एक
 ज्वर, कुंजरज्वर; कूट मायको ओषधि । -खी-खी०
 कर्कटी, काकवासीगी । -शाखा-खी० रसोईघर ।
 -शासन-पु० इन्द्र । -शासनि-पु० इन्द्रका पुत्र जयंत;
 वालि; अर्जुन । -कुछ्छा-खी० खनिया मिट्टी । -स्थली
 -खी० पकाशय । -स्थान-पु० रसोईघर; आर्वा ।
 -ईंसा(रु)-पु० दे० 'पाकशासन' ।

पाक-वि० [फा०] शुद्ध, पवित्र; निर्दोष, निष्कलंक; साफ-
 सुथरा; विना मिलावटका; खालिस; बरी; बेबाक; पाप वा
 भुराईमें बचनेवाला, परहेजगार । -ज्ञाद्-वि० जो दोगला
 न हो, जातिका शुद्ध । -ज्ञाद्वा-पु० घोषी । -दामन,
 -दाम्य-वि० शुद्ध; पवित्र आचरणवाला, निष्पाप । वि०
 खी० सती (खी) । -दामनी-दामनी-खी० शुद्धता;
 आचरणकी शुद्धता; निष्पापता; सतीत्व । -दिह-वि०
 शुद्ध अंतःकरणवाला, पवित्र विचारवाला । -नज्ञर,
 -निगह-खी० पवित्र दृष्टि, कामवासनासे रहित दृष्टि ।
 वि० मिलकी दृष्टि कामवासनासे रहित हो, पवित्र दृष्टि-
 वाला । -नीयत-खी० मण्डी नीयत, सद्विचार, शुद्ध
 विचार । -परवरदिवार-पु० परमेस्वर । -काङ्ग-वि०
 शुद्ध इरयवाला, निष्पाप, सच्चा, नेकनीयत । पु० अंग
 छाननेकी साफी । -बाङ्गो-खी० पकावाज होनेका माव
 या गुण, शुद्धहृदयता, सचाई, निष्पापता । -बी-वि०
 पवित्र दृष्टिमें देखनेवाला । -मुहब्बत-खी० स्वाध आदि-
 की भावनासे रहित प्रेम, विशुद्ध प्रेम । -ईकी-खी०
 आचारकी शुद्धता, नेकचरणी । -रु-वि० शुद्ध आचरण-
 वाला, नेकचरणी । -साङ्ग-वि० साफ सुथरा, निर्मल;
 निर्दोष, निष्कलंक, निष्पाप; विशुद्ध ।

पाकट-पु० दे० 'पाकेट' ।

पाकड़ा-वि० पका हुआ; परिपक्व बुद्धिवाला, अनुभवी;
 सबल, मजबूत ।

पाकड़, पाकर-पु० बरगदकी जातिका एक प्रसिद्ध पेड़ ।

पाकना-अ० क्रि० पकना ।

पाकरी-खी० दे० 'पाकड़' ।

पाकड़ा-वि० पका हुआ । पु० [सं०] दे० 'पाकड़' ।

पाकलि-खी० [सं०] दृष्टिविधेय; दौहिणी ।

पाका-पु० कोषा । वि० पका हुआ ।

पाकागार-पु० [सं०] रसोईघर ।

पाकातिसार-पु० [सं०] जीर्ण आम्रातिसार ।

पाकारवय-पु० [सं०] आँखका एक रोग ।

पाकाभिमुख-वि० [सं०] जो पकनेपर हो; विकासोन्मुख ।

पाकारी-पु० [सं०] इन्द्र ।

पाकिट-पु० दे० 'पाकेट' ।

पाकिम-वि० [सं०] पका हुआ; पकाया हुआ; पाक द्वारा

प्रप्त (छपन आदि) ।

पाकिस्तान-पु० [फा०] हिंदुस्तानके मुसलिम-प्रधान प्रदेशों-
 (सिंध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रांत, पच्छिमी पंजाब और
 पूर्वी बंगाल)का संघ जो १५ अगस्त, १९४७ ई०से स्वतंत्र
 राज्य है ।

पाकिस्तानी-वि० [फा०] पाकिस्तानका । पु० पाकिस्तान-
 का रहनेवाला ।

पाकी-खी० [फा०] शुद्धता; पवित्रता; निर्दोषता; निष्कलं-
 कता; सफाई ।

पाकी(किन्)-वि० [सं०] जो पक रहा हो (समाप्तांतमें) ।

पाकीजगी-खी० [फा०] सफाई; शुद्धता; निर्दोषता;
 सुधरता ।

पाकीजा-वि० [फा०] साफ-सुथरा; परिमार्जित; निर्दोष,
 निष्कलंक; सुधर, हरीन; उम्दा ।

पाकु, पाकुल-वि०, पु० [सं०] खाना पकानेवाला,
 पाचक ।

पाकेट-पु० [अ०] बैली, जेब । -झर-पु० वह जो चौरा-
 से जेबमेंसे बघाया-पैसा आदि निकालने या जेब काटनेका
 काम करे । -झारी-खी० पाकेटमारका पेशा । मु०-
 गरम करना-बूस देना, बूस लेना ।

पाक्य-वि० [सं०] पाकके योग्य; पक्कय । पु० जवाहरार;
 नौमादर; खारी नमक; शोरा ।

पाक्ष-वि० [म०] पक्षमें संबंध रखनेवाला, पाक्षिक; किसी
 दलमें संबंध रखनेवाला ।

पाक्षपातिक-वि० [सं०] पक्षपात करनेवाला, फूट डालने-
 वाला ।

पाक्षिक-वि० [सं०] पक्ष-संबंधी; पक्षका; पाक्षकमें होने-
 वाला; प्रत्येक पक्षमें होनेवाला; हर पक्षमें दिन होनेवाला;
 विधियां संबंध रखनेवाला; पक्षपात करनेवाला; वैक
 ल्यिक । [खी० 'पाक्षिकी'] पु० बहेलिया, बिजनीमार;
 विकल्प ।

पाखंड-पु० [सं०] वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला;
 दिखावटी उपासना या अर्पित, पूजा-पाठ आदिका आडंबर;
 ढकोलता, ढोंग; बंचना, छल । वि० जो वेदके विरुद्ध
 आचरण करे । -फंडी-वि० [हि०] वेद-विरुद्ध आचरण
 करनेवाला; अर्पित या उपासनाका ढोंग रचनेवाला; जो
 केवल दूसरोंको ठगने या धोखा देनेके लिए पूजा-पाठ
 आदि करे; छलिया, ठग; धूर्त । मु० -फैलाना-दूसरों-
 को ठगनेके लिए विशेष प्रकारका खोंग बनाना; दूसरोंको
 धोखा देनेके लिए अनेक प्रकारके आयोजन करना; ढको-
 सलेवाजी करना ।

पाखंडी(विद्)-वि० [म०] दे० 'पाखंड' ।

पाख-पु० आधा महीना; पंद्रह दिनका पक्ष, पखवाडा;
 कमरेकी चौमाईकी दीवारका वह तिकोना ऊपरी भाग
 जिसपर 'बंदर' रहते हैं; पाखवाली दीवार ।

पाखर-खी० रुखाईके हाथी या घोड़ेको रखाने के लिए पहा-
 नापी जानेवाली छोटेकी झूल । पु० दे० 'पाकड़' ।

पाखरी-खी० अनाज लादनेके लिए गाड़ीपर बिछाया
 जानेवाला टाट ।

पाखा-पु० पक्ष; पंख; * कोना ।

पाञ्चन-सु० पाञ्चन, पञ्चन ।

पाञ्च-खी० पगली । पु० बह शीरा वा किवाम जिसमें मिठाई आदिको जुगाते हैं, चाचनी; चाचनीमें जुगायी हुई पेठे आदिको मिठाई; गड्ड, चीनी वा मिसरीके शीरोंमें सनी हुई विशेष प्रकारकी औषध; अवलह ।

पाञ्चन-स० कि० पाञ्च या शीरोंमें जुगाना, चाचनीमें जुगाना । * अ० कि० मय्य होना, शराबोर होना ।

पाञ्चन-पु० नाचमें बाँधा जानेवाला बह रस्ता जिसके सहारे हमे किनारेकी ओर खींचते हैं ।

पाञ्च-वि० [सं०] जिसका रिमाग खराब हो गया हो, विक्षिप्त, सनकी; जो प्रेम, क्रोध आदिमें आपसे बाहर हो गया हो; अति मूर्ख, बहुत नासमझ; अवृत्त । -खाना-पु० [वि०] बह जगह जहाँ पागलोंको देखरेख और उपचार किया जाता है; पागलोंके रहनेकी जगह ।

पाञ्चन-पु० पाञ्चन होनेका भाव या रोग; एक प्रकारकी मानसिक व्याधि जिसमें विवेक नष्ट हो जाता है और रोगी नासमझीके काम करता है, उन्माद; मूर्खता, नासमझी ।

पाञ्चिनी-खी० पगली, विक्षिप्त खी ।

पाञ्च-पु० जुगाही ।

पाञ्च-वि० [सं०] पकानेवाला; पचानेवाला । पु० रनोंमें बनानेका पेशा करनेवाला, रसोइया, स्पकार; अग्नि; पित्तके पाँच भेदोंमेंसे एक; भोजनको पचानेवाली औषध । -खी-खी० रसोईदारिन ।

पाञ्च-पु० [सं०] पकाने या पचानेकी क्रिया; अग्नि; अम्लरस; छटाई; (पापका नाश करनेवाला) प्रायश्चित्त; भोजन पचानेवाली विशेष प्रकारकी औषध; जठराश्रि द्वारा भोजनका पचाया जाना; लाल रेंव; पावकी मरनेकी क्रिया; पावमेंसे मवाद आदि निकालनेकी क्रिया । वि० पकाने या पचानेवाला । -शक्ति-खी० भोजनको पचानेकी शक्ति ।

पाञ्चन-पु० [सं०] सोहागा; एक पेय आहार; औषधादि द्वारा पाव भरना; दे० 'पाचन' ।

पाञ्चना-स० कि० पकाना । अ० कि० भरना, गठना ।

पाञ्चनिका-खी० [सं०] पकाना; पचाना ।

पाञ्चनी-खी० [सं०] हड ।

पाञ्चनीय-वि० [सं०] पकाने योग्य; पचाने योग्य ।

पाञ्चिता(तृ)-वि०, पु० [सं०] पकानेवाला; पचानेवाला ।

पाञ्चन-पु० दे० 'पञ्चन' ।

पाञ्च-वि० [सं०] पकानेवाला; पचानेवाला । पु० रसोइया; अग्नि; बासु; पचानेवाली वस्तु; रंभनद्रव्य ।

पाञ्च, पाञ्चि-खी० [सं०] (भोजन) पकाना ।

पाञ्ची-खी० [सं०] एक लता, मरकतपत्री ।

पाञ्च-वि० [सं०] जो अवश्य पक या पच जाय; पचाने या पकाने योग्य ।

पाञ्च-खी० पाञ्चनेकी क्रिया या भाव; पाञ्चनेसे पकने वा लगनेवाला चीरा; बह चीरा जो अग्नीम निकालनेके लिए पीसतेके डोंडेपर नहरनीसे लगाया जाता है; बह चीरा जो किसी वृक्षका रस वा दूध निकालनेके लिए उसपर लगाया

जाता है । † पु० पिछला भाग, पीछा-आधा छक्क न तेजय रे रूपनक पाछु मिछारी-विभा० । * अ० पीछे । पाञ्चना-स० कि० स्नान, पंछा वा रस अथवा दूध निकालनेके लिए छुरे आदिके हलके आघातसे प्राणीके शरीरपर वा पेश-पीथपर चीरा लगाना; छुरे आदिके हलके आघातसे शरीरपर या पेश-पीथपर जहाँ-तहाँ चीरा लगाना ।

पाञ्च, पाञ्चि, पाञ्चिला-वि० पिछला ।

पाञ्चा-पु० पीछा ।

पाञ्ची, पाञ्च, पाञ्चि, पाञ्चि-अ० पीछेकी ओर, पीछे ।

पाञ्च-पु० पॉत्रर, पावर्त; बंभन, बाँध-ब्रजलिय-वि०-सरवर रस भरे । काञ्च-पाञ्च तनि उमगनि डरो-धन० ।

पाञ्चन-पु० एक वनस्पति जिससे रंग निकालते हैं ।

पाञ्चन-पु० [सं०] पॉत्रर; काञ्च (वि०) ।

पाञ्ची-वि० दुष्ट, बदमाश । * पु० पैदल सिपाही, व्यादा; पहरेदार, रखक-सहस्रसहस्र तहई बरहे पाजी-प० ।

-धन-पु० दुष्टता, बदमाशी ।

पाटंवर-पु० रेशमी कपड़ा ।

पाट-पु० [सं०] विस्तार, फैलाव; चौड़ाई; [वि०] रेशम; बन्ध; बड़ा हुआ रेशम; एक तरहका रेशमका कौड़ा; पटसन; सिंहासन, राजगद्दी; पीढ़ा; पम्बरकी पटिया; धोबीका कपड़े धोनेके कामका पम्बर या काठका बन्ध डुकन्धा; चक्कीके दो भागोंमेंसे कोई एक; हाँकनेवालेके बैठनेके लिए कील्लुमें लगाया जानेवाला तख्ता; कुर्पेपर रखी जानेवाली बह नपटी लकड़ी जिमपर एक पाँच रखकर पानी खींचते हैं; बैलौका एक रोग; * बालोंकी पटिया । -महादेई, -महिषी, -रानी-खी० पटरानी ।

पाटक-पु० [सं०] चौरनेवाला, फाकनेवाला; विभाग करनेवाला; गोंबका एक भाग; गोंबका आधा; एक प्रकारका भाग; किनारा, तट; घाटपरकी सीढ़ियाँ; सीढ़ियोंकी बह पररार जिससे उतरकर पानीमें पैठते हैं; मूलधन वा पूँजीकी हानि; पासा बालना या फेंकना; जुएमें दाँब रखना ।

पाटकर-पु० [सं०] चौरा; डाकू ।

पाटन-पु० पतन, नगर ।

पाटन-खी० पाटनेकी क्रिया या भाव; पटाव; छत; मकानकी पहिली मंजिलसे ऊपरकी मंजिलें; सौंपका विध उतारनेका एक प्रकारका मंत्र; नगर, पतन (जैसे-देवीपाटन) । पु० [सं०] चौरना, फाकना, छेदन । -क्रिया-खी० पाव चौरना, शस्त्रक्रिया ।

पाटना-स० कि० किसी गह्वरेको या नीची भूमिको भरकर आस-पासकी जमीनके बराबर कर देना; भर देना; पूर्ण कर देना; ढकना; किसी वस्तुको भरमार कर देना, ढेर लगा देना ।

पाटनीय-वि० [सं०] चौरने या फाकने योग्य ।

पाटल-पु० [सं०] ललाई मिठा हुआ उजला रंग; गुलाबी रंग; पाटलका पेश; हलका फूल; एक प्रकारका बरसाती धान; लाल लोथ; केसर; गुलाब (आ०) । वि० ललाई लिये हुए उजले रंगका; गुलाबी । -कीट-पु० एक तरहका कीड़ा । -चुडु(सु)-वि० किसी आँखोंमें मोतियाबिंद हो । -मन्त्र-पु० पुत्राग ।

पाटलक-वि० [सं०] लाल-पीले रंगका ।

पाठका-पु० एक तरहका सीना; * पटल, पल्ला । **सी०** [सं०] दुर्गा; पावर ।

पाठकाबली-सी० [सं०] दुर्गा; एक पुरानी मंदी ।

पाठकि-सी० [सं०] पाठका पेज; पांडुफली । -**पुत्र**, -**पुत्रक**-**पु०** अज्ञातशत्रुका बसावा हुआ मगधका एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर जिसका आधुनिक नाम पटना है (रहे पुपपुर वा कुसुमपुर भी कहते थे) ।

पाठकि-पु० [सं०] विद्यार्थी; शिष्य; पाठलिपुत्र । **वि०** दूसरेका मेव जाननेवाला; देश-कालका ज्ञान रखनेवाला । ***पाठकित-वि०** [सं०] लाल रंगा हुआ ।

पाठकिमा(मन्त्र)-सी० [सं०] शुक्लाबी रंग ।

पाठकी-सी० लकड़ीकी एक बहुतसे छेदोंवाली बल्ली जिसके एक-एक छेदमेंसे मस्तूलकी एक-एक रस्ती निकाली जाती है; [सं०] पावर; पांडुफली, विश्वामित्रकी बहन जिसके अनुरोधसे कौशिक्य मुनिने पाठलिपुत्र बसावा था (मविष्य-पुराण) । -**पुत्र**-**पु०** दे० 'पाठलिपुत्र' ।

पाठकोपल-पु० [सं०] लाल नामक रत्न ।

पाठक्या-सी० [सं०] पाठक-पुण्योंका समूह ।

पाठक-पु० [सं०] पड़ता, वक्षता, कौशल; आरोग्य; ब्रह्माह्। तीक्ष्णता; दीव्रता ।

पाठविक-वि० [सं०] दक्ष, कुशल, पड्ड; धूर्त ।

पाठवीर-वि० पटरानीसे जनमा हुआ (राजकुमार); रेशम-का बना हुआ, रेशमी ।

पाठविक-पु० [सं०] मगधा बजानेवाला ।

पाठविक-सी० [सं०] गुंजा, धूपवी ।

पाठा-सी० [सं०] परंपरा; सिलसिला । **पु०** [हिं०] पीढ़ा; पन्थर वा काठका वह बड़ा टुकड़ा जिसपर बोरी कपड़े बोता है; आड़के छिप चौकेके पास उठावी जानेवाली दीवार; दो दीवारोंके बीच कड़ी, बॉस, पटरा आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजें रखते हैं; * पट्टा । **मु०** -**फेरना-विबाहमें** बर-कन्याकी एक-दूसरे-के पीढ़ेपर बैठाना ।

पाटिका-सी० [सं०] एक दिनकी मजदूरी; एक पोषा ।

पाटिस-वि० [सं०] फाड़ा हुआ, विदारित ।

पाटी-सी० [सं०] परिपाटी, प्रणाली; रीति; अंकाणित; बला, खरेदी । -**गणित**-**पु०** गणितशास्त्र; गणित ।

पाटी-सी० विशेष प्रकारका लकड़ीका वह लंबोतरा टुकड़ा जिसपर बच्चोंकी अक्षर लिखना सिखाया जाता है, तस्वी; पाठ, सचक; तेल, गोंद आदिकी सहायतासे भोगके दोनों ओर सत्राकर बैठायें जानेवाले बाल; खाटके ढाँचेके दाहिने-बायें छगया जानेवाली वे छकड़ियाँ जिनके मेखसे रस्तीकी डुनाई होती है; चटारें; पन्थरकी पटिया । **मु०** -**पढ़ना** -**पाठ** पढ़ना; सचक सीखना; शिक्षा प्राप्त करना । -**पढ़ाना** -**पाठ** पढ़ाना; शिक्षा देना ।

पाटीर-पु० [सं०] चंदन; खेत, मैदान; टीस; बादल; छलनी; एक तीक्ष्ण मूल; जुकाम; प्रतिद्वन्द्व; बेगुसार ।

पाठ-पु० [सं०] पढ़नेकी क्रिया या भाव; कोई धार्मिक या वैष्णवक ग्रंथ नियमित रूपसे पढ़ना; वेदपाठ, महाभारत; पढ़ा या पढ़ाया जानेवाला विषय; किसी पाठ्य-पुस्तकका वह अंश जो किसी एक विषयसे संबंध हो, परिच्छेद; किसी

विषयका उतना अंश जितना एक बारमें पढ़ाया जाय, सचक; बाक्य, पद्य आदिका लिखित रूप । -**पठेह-पु०** पाठ्य विषयके बीचमें होनेवाला विराम; यति । -**दोष-पु०** पाठ-संबंधी दोष (अठारह प्रकारके पाठ-दोष गिनाये गये हैं, जैसे-विसर, विरस, विरिष्ट, काकसर आदि) ।

-**विश्व-पु०** शुद्ध पाठका निश्चय करना । -**भू-सी०** वह स्थान जहाँ वेदोंका अध्ययन किया जाय । -**भेद-पु०** दे० 'पाठान्तर' । -**मंजरी-शास्त्रिनी-सी०** मैना, सारिका । -**शास्त्र-सी०** वह स्थान या संस्था जहाँ विद्यार्थियोंको, विशेषकर छोटी कक्षाओंके विद्यार्थियोंको एक या अधिक विषयोंकी शिक्षा दी जाय, विद्यालय, स्कूल; वह विद्यालय जिसमें संस्कृत पढ़ावी जाय, संस्कृत पढ़ानेका विद्यालय । -**शास्त्री(सिन्)-पु०** विद्यार्थी, छात्र । -**शास्त्रीय-वि०** पाठशाला संबंधी; पाठशालाका ।

पाठक-पु० [सं०] अध्यापक; कथावाचक; गुरु; छात्र; पढ़ने वाला; ब्राह्मणोंका एक जल ।

पाठन-पु० [सं०] पढ़ानेकी क्रिया, अध्यापन । -**शैली-सी०** पढ़ानेका ढंग ।

पाठान्तर-पु० [सं०] दूसरा पाठ, भिन्न प्रकारका पाठ; किसी पुस्तक या ग्रंथके किसी अंशको उसकी दूसरी प्रति या प्रतियोंमें दूसरा रूप होना, पाठमें भिन्नता होना ।

पाठा-पु० जवान और मोटा-ताजा आदमी; जवान बैल, हाथी, भैंसा, बकरा आदि । **सी०** [सं०] पाढ़ा नामकी लता ।

पाठाबली-सी० [सं०] पाठोंका समूह; वह पुस्तक जिसमें किसी विषयके पाठोंका संग्रह हो ।

पाठिक-वि० [सं०] जो मूल पाठसे मिलता हो ।

पाठिक-सी० [सं०] पढ़नेवाली; पढ़ानेवाली; पाढ़ा ।

पाठित-वि० [सं०] पढ़ाया हुआ ।

पाठी(सिन्)-पु० [सं०] वह जो अध्ययन समाप्त कर चुका हो; पाठ करनेवाला; पढ़नेवाला; चीतका पेड़ । **सी०** 'पाठिनी' । -**(रि)कुट-पु०** चीतका पेड़ ।

पाठीय-पु० [सं०] एक प्रकारकी मछली; गूलका पेड़; पढ़ने-पढ़ानेवाला; पुराण आदिका वाचक ।

पाठ्य-वि० [सं०] पढ़ने योग्य; पढ़ाने योग्य । -**क्रम-पु०**-**पुस्तक-सी०** किसी संस्था या परीक्षा-समितिकी ओरसे किसी कक्षाके विद्यार्थियोंके पढ़नेके लिए निर्धारित पुस्तक, कौंसर्क किताब ।

पाठ-पु० बोली या साक्षीका किनारा; कोर; मचान; कुपोंकी ढकनेके लिए लकड़ी अथवा फट्टियोंका बना विशेष प्रकारका ढाँचा; बाँध; दो दीवारोंके बीच कड़ी, बॉस, पटरा आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजें रखते हैं; वह संस्था जिसपर कृत्रुण्य पानेवाले अपराधीको फाँसी देनेके लिए खड़ा करते हैं ।

पाठक-सी० पाठक नामका वृक्ष ।

पाठशाली-पु० दाक्षिणात्य जुकाँहोंकी एक जाति ।

पाढ़ा-पु० टोला; महलका; † एक समुद्री मछली; भैंसका नर बघा ।

पाठिनी-सी० [सं०] मिट्टीका बरतन, हाँपी ।

पाठ-पु० पीढ़ा; वह पीढ़ा जिसपर डुनार, जोहार आदि

काम करते समय बैठते हैं। रखवालेके बैठने-सोनेके लिए लेतमें बनायी जानेवाली मचाना; कुर्दपर रखा जानेवाला उकनकी तरहका लकड़ीका ढाँचा; सुनारोंका नक्काशी करनेके कामका एक भाग; किनारा (हस्त अर्थमें श्री० भी)। श्री० पादा कता।

पादत—श्री० पदी जानेवाली वस्तु; मत्त; जादू।

पादर, **पादर**—पु० एक पेश जिसके पंरौ बेलके पत्तोंके समान होते हैं और जिसमें लाख या सफेद कूळ लगते हैं, पाटल। * वि० किनारदार।

पादा—श्री० पाठा नामकी कता। * पु० हिरनका एक भेद।

पाण—पु० [सं०] व्यापार, व्यवसाय; व्यापारी, व्यवसायी; शूत; दाँव; बाजी; प्रतिका, कौल, हकदार; प्रशंसा; हाथ।

पाणि—पु० [सं०] हाथ; खुर (वै०)। श्री० बाजारं। —

कच्छपिका—श्री० उँगलियोंकी एक मुद्रा, कूर्ममुद्रा।

—**कर्ण**—पु० शिव। —**कर्मा**(मैनु)—पु० शिव। वि० जो हाथसे कोई बाजा बजाये, रुद्रग, ढोल आदि बजानेवाला।

—**गुह्यी**—श्री० पत्नी। —**ग्रह**,—**ग्रहण**—पु० विवाह।

—**ग्रहणिक**—वि० विवाह-सम्पत्ति, वैवाहिक। पु० दहेज, यौतुक। —**ग्रहणीय**—वि० हे० 'पाणि-ग्रहणिक'। —

ग्रहीता(तु)—**ग्राहक**—पु० पति। —**ग्राह**—पु० पति; विवाह। —**ग्रहीत**—वि० विवाहित। —**ग्रहीता**—वि०, श्री० विवाहिता। —**घ**—पु० रुद्रग, ढोल आदि (हाथसे बजाये जानेवाले बाजे) बजानेवाला, दस्तकार। —**घात**—पु० घँसा; घँसाजी; घँसेबाज। —**घ्न**—पु० दस्तकार; ताली बजानेवाला (वै०); उँगलियोंको झटकारना। —**ज**—पु० नख। —**तल**—पु० डबेली; दो तोलेका एक प्राचीन परिमाण। —**ताल**—पु० एक प्रकारका ताल (संगीत)।

—**धर्म**—पु० पाणिग्रहणरूप धर्म, विवाह-सत्कार। —

पल्लव—पु० पल्लवरूपी कर; अँगुलियाँ। —**पात्र**—वि० हाथमें लेकर पीनेवाला; जो हाथ या अञ्जलिसे पात्र या बरतनका काम ले। —**पाद**—पु० हाथ और पैर। —

पीडन—पु० पाणिग्रहण, विवाह; हाथ मलना। —**पुट**,—

पुटक—पु० नुल्ल। —**प्रणयिनी**—श्री० पत्नी। —**बन्ध**—पु० पाणिग्रहण, विवाह। —**मुक्**(ज)—पु० गूलका पेश।

—**मर्द**—पु० करीदा। —**मुख**—वि० हाथसे कैका जानेवाला (अक)। पु० भाग। —**मुख**—वि० हाथसे खानेवाला। —पु० पितर (इसका प्रयोग बहुवचनमें ही होता है)।

—**मुख**—पु० कलाई। —**रुद**(ह),—**रुह**—पु० नख, नाखून। —**रेखा**—श्री० हस्तरेखा। —**बाद**,—**बादक**—पु० ताली बजानेवाला; रुद्रग आदि (हाथसे बजाये जानेवाले बाजे) बजानेवाला। —**सम्या**—श्री० रस्ती (जो हाथसे बनायी जाती है)। —**स्वनिक**,—**स्वानक**—पु० हाथसे बाजा बजानेवाला। —**हस्ता**—श्री० एक ताकान जिस देवताओंने अपने हाथसे बुझके लिए तैयार किया था।

पाणिक—वि० [सं०] धृष्टसे प्राप्त; जो एक पणमें खरीदा गया हो। पु० व्यापारी; स्कंदका एक अनुचर।

पाणिका—श्री० [सं०] एक तरहका गीत; एक तरहकी कस्तुर।

पाणिनि—पु० [सं०] एक विख्यात शुनि जिन्होंने अष्टा-

ध्यायी नामका प्रसिद्ध सूत्रबद्ध व्याकरण-ग्रंथ बनाया (इसका समय ईसवी पूर्व चतुर्थ शतक माना जाता है और कहा जाता है कि शंकरके प्रसादसे इन्हें व्याकरणका अग्रगण्य ज्ञान प्राप्त हुआ था)।

पाणिनीय—वि० [सं०] पाणिनि-संबंधी; पाणिनी द्वारा रचित या उक्त। पु० पाणिनिके मतकी माननेवाला,

पाणिनिका अनुयायी; पाणिनिका व्याकरण।

पाणी—पु० दे० 'पाणि'।

पाणीकरण—पु० [सं०] विवाह।

पाण्य—वि० [सं०] प्रशंसाके योग्य, स्तुत्य; हाथ-संबंधी।

पाण्वास—वि० [सं०] हाथसे खानेवाला (पितर)।

पार्तग—वि० [सं०] कतिनोंके संबंधका; भूरा।

पार्तगि—पु० [सं०] शनैश्चर; धर्म; कर्ण; सुग्रीव।

पार्तजल—वि० [सं०] पतंजलि-संबंधी; पतंजलिका; पतंजलि द्वारा रचित या प्रवृत्ति। पु० योगशास्त्र जिसके भाष आचार्य पतंजलि माने जाते हैं।

पात—पु० कानका एक गहना; बटना; भूल; दोष; पत्ता; [सं०] गिरनेकी क्रिया या भाव; पतन; गिरनेकी क्रिया या भाव; उकना; उकान; उतरना; उतार; नाश; ध्वंस (शरीरपात); प्रहार (सहपात); झलना, ले जाना (रहि-पात); दृढ़कर गिरने या च्युत होनेकी क्रिया या भाव (उल्कापात); राहु; चालन (पक्षपात—पक्ष चलाना); अशुभ स्थिति। वि० रक्षित।

पातक—पु० [सं०] पाप, अव (महापातक पाँच हैं—ब्रह्म-हत्या, मुरापान, पुस्तकव्ययन, स्तेय और पातकीका संतपी)। वि० गिरानेवाला।

पातकी(किच्)—वि० [सं०] पापी, अधी; अपराधी।

पातन—पु० [सं०] गिरानेकी क्रिया; छुकाना; काटकर गिरा देना; कैलास; कलना; पारेका एक प्रकारका संस्कार। वि० गिरानेवाला।

पातनीय—वि० [सं०] गिराने योग्य; प्रहार करने योग्य ('पात'के अन्य अर्थोंमें भी)।

पातबंदी—श्री० वह नकशा जिसमें किसी जायदादकी कूती हुई मालियत और उत्तर चदा हुआ कर्म लिखा रहता है।

पातयिता(तु)—वि०, पु० [सं०] गिरानेवाला; कैकनेवाला।

पातरा—श्री० पतल; वेश्या। वि० पतल, वारीक; दुर्बल, क्षीणकाय; छुद्र, नीच—'जतिनाक पातरि'—धामगीत।

पातरि, **पातरी**—श्री० पतल।

पातल—श्री० दे० 'पातर'।

पातप्य—वि० [सं०] रक्षा करने योग्य; पीने योग्य।

पातसाह—पु० दे० 'पादसाह'।

पातसाही—श्री० दे० 'पादसाही'।

पाता—पु० पत्ता।

पाता(तु)—पु० [सं०] रक्षक; पीनेवाला।

पाताखत—पु० पत्र और अक्षत; पूजनकी साधारण सामग्री; मागूली नोट।

पातारा—पु० दे० 'पाताल'।

पाताल—पु० [सं०] सुवनका अधोभाग; पृथ्वीके नीचेके सात कोठोंमेंसे सबसे नीचेका कोक (पुराणोंमें सात प्रकारके अधोकोकोका वल्लेख मिलता है—अतल, वितल, सुतल,

रसातल, लतातल, महातल और पाताल)। गुफा; पारा आदि शीपनेका एक वंश; बहदा; बबनाल; जुंझीमें लत बरसे चौथा स्थान जिसमें दूर्य हो। छंदकी संस्था; मात्रा आदि निकालनेकी एक रीति (पिं०)। -**केतु**-पु० एक दानव। -**गंगा**-श्री० पाताल लोकमें बहनेवाली गंगा। -**गह्वरी**-श्री० एक लता; छिरछटा। -**तुंगी**-श्री० क्षेत्रों होनेवाली एक लता। -**लोक**-वि० [हिं०] बहुत गहरा (कुंआ)। -**निलय**,-**निवास**, **वासी**-(सिन्) -पु० दैत्य, दानव; नाग। -**बंज**-पु० पातु गलाने, अर्क, लेख आदि तैयार करनेका एक वंश।

पातालीक(कस्) -पु० [सं०] दे० 'पाताल-निलय'।

पाति-पु० [सं०] प्रदुः स्वामी; पति; पत्नी। † श्री० पत्नी; चिह्नी।

पातिक-पु० [सं०] दूँस।

पातिग-पु० पातक।

पातित-वि० [सं०] गिराया हुआ; फँका हुआ; छुकाया हुआ।

पातित्य-पु० [सं०] पतित होनेका भाव; जातिच्युति; पदच्युति।

पातिकी-श्री० [सं०] हिरन फँसानेका जाल; फँदा; एक प्रकारका मिट्टीका बरतन; विशेष वर्गकी श्री।

पातिव्रत-पु० दे० 'पातिव्रत्य'।

पातिव्रत्य-पु० [सं०] पतिव्रता होनेका भाव; पतिव्रताका धर्म।

पाती-श्री० चिट्ठी, पत्र; पत्ता; लब्धा; हवा; मर्यादा।

पाती-(तिन्) -वि० [सं०] गिरनेवाला; गिरानेवाला; फँकनेवाला।

पातुक-वि० [सं०] प्रायः गिरनेवाला, पतनशील; जातिसे च्युत होनेवाला; नरकगामी। पु० पड़ाका डाल; जल-हस्ती।

पातुर, **पातुरनी**, **पातुरि**-श्री० वेश्या; रंडी।

पात्य-वि० [सं०] गिराने योग्य; लगाने योग्य (जैसे दंड, जुर्माना); प्रहार करने योग्य।

पात्र-पु० [सं०] जल आदि पीनेका बरतन; बरतन, कुछ रखने या खाने-पीने आदिके कामका आधाररूप पदार्थ; खुवा आदि बहने कामका कोई पदार्थ; कोई वस्तु पानेका अधिकारी व्यक्ति; अभिनेता; उपन्यासमें वर्णित वह व्यक्ति जिसका कथावस्तुमें कोई स्थान हो (श्री० पात्रा); नदीका देठा या पाट; राजका मंत्री, अमात्य; ४ सेरका एक पुराना परिमाण, आठक; आवेश; योग्यता; पत्ता। -**टीर**-पु० योग्य अमात्य; चर्ची, पीतल या लोहेका कोई बरतन; अग्नि; कौशा; कंक नामक पक्षी; गोरवा, जंग; नाकमेंसे निकलनेवाला मल, नेत्रा। -**कुहर**-पु० एक तरहका काम्यदोष, परस्पर विरोधी बातें कहना (केशवदास)।

-**मिर्जैय**-पु० बरतन मँजनेवाला। -**पाळ**-पु० तराजू की शीर्ष; पतवार। -**पूत्र**-पु० नौकर, बाकर। -**बर्वा**-पु० अभिनेताओंका दल। -**छुडि**-श्री० बरतनोंकी सफाई। -**दीप**-पु० उच्छिष्ट, बूँठ। -**संस्कार**-पु० बरतनोंकी सफाई; नदीका प्रवाह।

पात्रक-पु० [सं०] बरतन; छोटा बरतन।

पात्रद-पु० [सं०] पात्र; व्याला; जीर्णवस्त्र, फटा-पुराना कपड़ा; कुमाह, तौकिया। वि० कुछ।

पात्रता-श्री०, **पात्रत्व**-पु० पात्र होनेका भाव या धर्म, योग्यता।

पात्रासादन-पु० [सं०] बह-संबंधी पात्रोंकी क्रमानुसार उचित स्थानपर रसना।

पात्रिक-वि० [सं०] जो किसी पात्रसे नापा गया हो; आठसे लोहा या मापा हुआ; उपयुक्त। पु० बरतन; छोटा बरतन, कटोरा आदि।

पात्रिका, **पात्रिकी**-श्री० [सं०] पात्र-कटोरा, घाड़ी आदि।

पात्रिय, **पात्र्य**-वि० [सं०] जिसके साथ एक पात्रमें भोजन किया जा सके।

पात्री-श्री० [सं०] बरतन-घाड़ी आदि; दुर्गा; छोटी मट्टी।

पात्री-(त्रिन्) -वि० [सं०] जिसके पास बरतन हो, पात्रसे युक्त; जिसके पास योग्य व्यक्ति हैं।

पात्रीण-वि० [सं०] पात्रसे नापकर बोया या पकाया हुआ।

पात्रीय-पु० [सं०] एक तरहका बहपात्र।

पात्रीर-पु० [सं०] यक्षमें समर्पित किया जानेवाला पदार्थ, यक्षद्वय।

पात्रेबहुल-पु० [सं०] वह जो खानेभरके लिए साथ रहे और किसी काम न आवे।

पात्रेसमित-पु० [सं०] दे० 'पात्रेबहुल'; वह पापात्मा जो अपने कुछ न करे और दूसरोंकी उपदेश दे, ढोंगी; छलिया।

पात्रोपकरण-पु० [सं०] अलकरणके कुछ साधन, गौण भेगीके अलंकार।

पाथ-पु० [सं०] अग्नि; दूर्य; जल * रास्ता, मार्ग। -**नाथ**,-**निधि**-पु० समुद्र।

पाथ-(स्) -पु० [सं०] जल; बावु; खाद्यपदार्थ; आकाश; हृदयाकाश (वे०)। -**(स्)पति**-पु० वरुण; समुद्र।

पाथना-सं० कि० सर्वेकी सहायतासे या यों ही हाथोंसे थोप-पीटकर किसी गीले उपादानसे बंधी टिकिया या पट्टी आदिकी तरहकी विशेष आकारकी कोई वस्तु तैयार करना; * गढ़ना, बनाना; मारना, पीटना।

पाथर-पु० दे० 'पाथर'।

पाथा-पु० अन्न नापनेकी एक लौह; अन्नकी राशि नापनेके कामका एक प्रकारका बड़ा डोकरा; उतनी जमीन जितनेमें एक पाथा अन्न बोया जाय; हलकी खोपी जिसमें फाल डोंका जाता है; कोकू; हँसनेवाला; अन्नमें लगनेवाला एक प्रकारका कीड़ा।

पाथि-(स्) -पु० [सं०] समुद्र; नेत्र; सुरंड।

पाथेय-पु० [सं०] वह भोज्य वस्तु जिसे पाथि राहमें खानेके लिए अपने साथ ले जाता है, संवर; राहस्वयं; कन्या राशि; एक देव।

पाथी-'पायस्'का समासपत रूप। -**ज**-पु० कमल; फूल। -**व**,-**धर**-पु० वादल। -**धि**,-**निधि**-पु० समुद्र।

पाथीय-पु० कन्याराशि।

पाद्-पुं अपान बाहुः [सं०] चरण, पैर; श्लोक, पथ या मंत्रका चौथा भाग; किसी वस्तुका चौथा भाग, चतुर्थांश; किसी पुस्तक या अभ्यासका चौथा भाग; चूड़ा या पीथेकी जड़; किसी वस्तुका निचला भाग; किसी वस्त्रे पर्वतके पासका छोटा पहाड़; किरण; भाग; हिस्सा; अंश; गमन; एक पैर या बाह्य अंगुलीका मांस; स्तन, खंसा; एक बधि । -कटक-पुं नूपुर । -कमल-पुं कमलस्तम्भ चरण । -कीलिका-कीं नूपुर । -कृष्ण-पुं चार दिनोंमें पूरा किया जानेवाला एक व्रत या प्रायश्चित्त । -क्षेप-पुं पैर रखना, चरणन्यास । -खंडीर-पुं पीलपाँव, श्लोपद । -ग्रंथि-कीं टखना । -ग्रहण-पुं ऐसा प्रणाम जिसमें चरणका स्पर्श किया जाय, पैर छूकर प्रणाम करना । -क्षुर-खवर-पुं निद्रा करनेवाला, निद्रक; बकरा; पीपलका पेड़; बालका शीर्ष; ओला । -खर-पुं पैदल चलना । -खारी (विभू)-विं पैदल चलनेवाला; पुं पैदल सिपाही । -ज-पुं झड़ । -जल-पुं वह जल जिसमें किसीका पैर पड़ा गया हो; वह मट्टा जिसमें चतुर्थांश जल मिलाया गया हो । -जाह-पुं दे० 'पादमूल' । -टीका-कीं पादटिप्पणी, 'फुटनोट' । -तल-पुं तलवा । -ज-क्षण-पुं खकाँके, जुता, चट्टी आदि । विं जिससे पैरकी रखा हो । -वृक्षित-विं पैरोंके नीचे कुचका हुआ, रौंदा हुआ; कुरी तरहसे दबाया हुआ (का) । -द्वारिका-द्वारी-कीं विवाई नामका रोग । -दाह-पुं एक वातरोग जिसमें पैरमें जलन होती है । -धावन-पुं पैर धोनेकी क्रिया । -धावनिका-कीं वह बाह्य या मिट्टी जिसे लगाकर पैर धोया जाय । -नख-पुं पैरकी अंगुलीका नख । -नख-विं किसीके पैरतक झुका हुआ । -नालिका-कीं नूपुर । -निकेत-पुं पैर रखनेकी छोटी चौकी, पादपीठ । -न्यास-पुं पैर रखना, कदम रखना । -पंकज, पद्म-पुं दे० 'पादकमल' । -प-पुं हथ, पैर; पादपीठ । -पक्ष-पुं कुक्षीका झुंड । -पथ-पुं पगडंडी । -पद्धति-कीं पगडंडी । -पा-कीं पादुका, पादत्राण । -पालिका-कीं नूपुर । -पास-पुं बोरेके पिछले पैर बाँधनेकी रस्ती, पिछाड़ी; वह रस्ती जिससे कोई चौपाया छाना जाय, छान; नूपुर; घुँघरू । -पाशी-कीं बैड़ी, जंजीर; बन्दा; एक कता । -पीठ-पुं ऊँचे आसनके पास रखी जानेवाली छोटी चौकी या आधार जिसपर पैर रखते हैं, पैर रखनेके कामकी चौकी । -पीठिका-कीं साधारण व्यवसाय, सामूली पेछा (जैसे नार्सका); सफेद पत्थर । -पूरण-पुं किसी श्लोक या पदके किसी चरणकी पूरा करना; वह अक्षर जिसके द्वारा कोई चरण पूरा किया जाय । -प्रक्षाल्य-पुं पैर धोनेकी क्रिया । -प्रणाम-पुं साष्टांग प्रणाम; पैर पड़ना । -प्रतिष्ठान-पुं दे० 'पादपीठ' । -प्रचारण-पुं जुता, खकाँके आदि । -प्रसारण-पुं पैर फैलाना । -प्रहार-पुं पैरसे किया गया आघात । -बंधन-पुं जानवरोंके पैर छाननेकी रस्ती; जानवरोंकी छाननेकी क्रिया; पशु-धन । -भाग-पुं पैरका निचला भाग; चतुर्थांश । -मुद्रा-कीं पैरका चिह्न । -मूल-पुं टखना; तलवा; पक्षी; वह स्थान जहाँसे पहाड़का आरंभ होता है; चरणका

साक्षिण्य (नम्रता सूचित करनेके लिए प्रयुक्त) । -रक्ष-रक्षक-पुं जुता, खकाँके आदि । -रक्षण-पुं पैरका आवरण; जुता, खकाँके आदि । -रज(स)-कीं पैरकी धूल । -रउ-कीं हाथीके पाँव बाँधनेकी रस्ती या जंजीर । -रथी-कीं जुता; खकाँके । -रोह-रोहण-पुं पड़का पेड़ । -रवण-विं शरणागत; आश्रित । -बंधन-पुं चरण छूकर प्रणाम करना । -वस्त्रीक-पुं पीलपाँव, श्लोपद । -विरजा (जस्)-कीं जुता; खकाँके । पुं देवता । -वेष्टनिक-पुं पाताला । -शब्द-पुं पैरकी धमक, आहट । -शाखा-कीं पैरकी अंगुली । -सैल-पुं किसी पहाड़के पासका छोटा पहाड़ । -शोच-पुं पैरका फूल जाना । -शीच-पुं पैर धोना । -सेवन-पुं, -सेवा-कीं पैर छूना; सेवा-शुभ्रता । -स्वर्भ-पुं खंसा, टेढ़ा । -स्फोट-पुं एक प्रकारका कुक, विपादिका । -स्वेदन-पुं पैरमें पसीना होना । -हृत्-विं जिसपर पाठप्रहार किया गया हो । -हृत्-पुं एक वातरोग जिसमें पैरमें छुनछुनी होती है । -हीन-विं जो अपने चतुर्थे भाग या चरणसे रहित हो; जिसके पैर न हों ।

पादक-पुं [सं०] पैर; चतुर्थांश । विं चलनेवाला । पादकमिष्ट-विं [सं०] पदक्रम जानने या पढ़नेवाला । पादना-अं किं अपान बाहुकी शुद्धामर्गसे बाहर निकालना, गोन करना । पादरी-पुं ईंसाई धर्मका पुरोहित या आचार्य । पादविक-पुं [सं०] वधिक । पादशाह-पुं [कां०] बादशाह, सम्राट् । -ज्ञाह-पुं राजकुमार । पादशाही-कीं बादशाही । पादक-पुं [सं०] पैरका निशान । पादांगद-पुं, पादांगदी-कीं [सं०] नूपुर । पादांगुलि, पादांगुली-कीं पैरकी उँगली । पादांगुह-पुं [सं०] पैरका अँगूठा । पादांत-पुं [सं०] पैरका अग्रभाग; श्लोक या पदके किसी पदका अंतिम भाग या अवसान । -स्व-विं पादांतमें स्थित, जो पद या चरणके अंतमें हो । पादांडु-पुं [सं०] पैर धोनेका पानी; चतुर्थांश जलवाला मट्टा । पादांभ(स्)-पुं [सं०] दे० 'पादांडु' । पादाकुलक-पुं [सं०] एक साम्राज्य । पादाक्रांत-विं [सं०] पैरों तले दबाया हुआ; रौंदा हुआ । पादप्र-पुं [सं०] पैरका अग्रभाग । पादाघात-पुं [सं०] पैरका प्रहार, कात मारना । पादांत-पुं पैदल सिपाही, पैदल सेना । पादाति, पादातिक-पुं [सं०] पैदल सिपाही । पादाभ्यास-पुं [सं०] रौंदना, कुचलना, पदाघात । पादानस-विं [सं०] पैरपर पड़ा हुआ । पादानुप्रास-पुं [सं०] एक शब्दांशकार, पदगत अनुप्रास । पादानोर्वा-पुं काळा नमक । पादाभ्यञ्जन-पुं [सं०] पैरमें लगाया जानेवाला वी था तेल ।

पादारक-पु० [सं०] नावकी पट्टी; मस्तूल ।

पादारक-पु० दे० 'पाषाण' ।

पादारविन्द-पु० [सं०] चरण-कमल ।

पादारण-पु० [सं०] दे० 'पदारण' ।

पादाङ्गि-पु०, पादाङ्गिदा, पादाङ्गिदी-स्त्री० [सं०] नाव ।

पादावर्त-पु० [सं०] रहट ।

पादावसेचन-पु० [सं०] पैर धोना; पैर धोनेका पानी ।

पादाधिक-पु० [सं०] पैरक सिपाही ।

पादाङ्गील-पु० [सं०] टखना ।

पादात्मन-पु० [सं०] पादपीठ ।

पादास्कासन-पु० [सं०] पैरोंकी कठिनाईसे आगे बढ़ना (जैसे कीचमें चलते समय) ।

पादाहृत-वि० [सं०] जिसपर पैरसे प्रहार किया गया हो ।

पादाहृति-स्त्री० [सं०] पैरका आघात, लात मारनेकी क्रिया ।

पादिक-वि० [सं०] जो किसीके चतुर्थांशके बराबर हो (जैसे पादिक शत-पन्नीस प्रतिशत) ।

पादी (पिंदु)-वि० [सं०] पैरवाला, जिसके पैर या पाँव हों; चार चरणवाला, चार आँगवाला; जिसे किसी वस्तुका चौथा भाग मिले या मिलता हो; जो किसी वस्तुके चतुर्थांशका अधिकारी हो । पु० पैरवाला, उमयचर ननु (मगर, बकियाल, कछुआ आदि); वह जो किसी सपत्ति या जायदादके चौथे भागका अधिकारी हो, चौथाईका हिस्सेदार ।

पादुक-वि० [सं०] पैरक चलेनेवाला ।

पादुका-स्त्री० [सं०] जूता; खड़ाई । -कार-पु० मोची, चमार; बढ़ई ।

पादु-स्त्री० [सं०] जूता । -हृत्-पु० मोची ।

पादोदक-पु० [सं०] पैर धोनेका जल; वह जल जिससे किमीका पाँव पखारा गया हो, चरणामृत ।

पादोदर-पु० [सं०] साँप ।

पाद्य-वि० [सं०] पाद-संबन्धी; चरणका, पैरका । पु० पैर धोनेका पानी ।

पाद्यार्ध, पाद्यार्ध-पु० [सं०] पाष और अर्ध, पैर धोनेका पानी और दूध, अक्षत, जल आदि पूजाके उपकरण (अर्धमें जल, दूध, दही, घी आदि आठ वस्तुएँ दी जाती हैं); भेंट, नजर (केशव) ।

पाषा-पु० आचार्य; पंडित ।

पाष-पु० [सं०] जल आदि पीनेकी क्रिया; पीनेका पाष; शराब पीना; पेय द्रव्य (शराबत, शराब); शराब बेचनेवाला, शौक्षिक, कलवार; रखा करनेकी क्रिया, रखण; निःशवास; वस्त्र, तलवार आदिपर सान बंदाना, हथियारोंकी भार तेज करना; नहर; जुंन (अभरण) ।

-गोष्ठिका, -गोष्ठी-स्त्री० मद्य आदि पीनेके लिए एकत्र हुए लोगोंकी संख्या, शराबियोंकी संख्या; शराबकी दुकान ।

-दोष-पु० शराब पीनेकी कुदृष्टि । -ध-वि० शराब पीनेवाला, मद्यप । -पर, -रत्न-वि० शराबी, जो शराब पीनेका आदी हो । -पात्र, -शोक, -आजन-पु० शराब आदि पीनेका बरतन । -बणिक, -बणिक(ज)-पु०

शराब बेचनेवाला, कलाल । -शू, -शुभि, -शूरी-स्त्री० शराब पीनेकी जगह, वह स्थान जहाँ शराबी इकट्ठे होकर शराब पियें । -भोजन-पु० खाना-पीना । -मंडक-पु० मद्यपोंकी संख्या । -मज-वि० नशेमें चूर । -मज-पु० शराबका नशा । -विषम-पु० अधिक शराब पीनेसे होनेवाला एक प्रकारका विकार जिसमें बमन, मूच्छा, सिरमें पीड़ा, ककुलवण आदि उपसर्ग होते हैं, पानाव्यय, मदाव्यय । -शौह-वि०, पु० अधिक मद्य पीनेवाला ।

पाष-पु० एक कला जिसके पैसे सुपारी, कथा आदिके साथ सुखशुद्धिके लिए खाये जाते हैं, इस कलाका पचा; * पचा; * पानी; वह चमक जो शक्तीपर उर्ध्व आगमें तपाकर पानी आदिमें बुझानेसे आती है; * प्राणवायु; पौसरा; हारमें गुंथा जानेवाला पानके आकारका लाबीज; जूतेमें एकीपर लगाया जानेवाला पानके आकारका चमड़ेका टुकड़ा; एक प्रकारका तासका पचा जिसपर पानकी लाल-लाल आकृतियाँ बनी रहती हैं; * पाणि, हाथ; सप्तकी माँझमें बंधीकर उसका ताना करना (जुलाहा) । -दान-पु० पानके पैसे और उसके मसाले रखनेके कामका डिब्बा; पानके बीजे रखनेका डिब्बा, पनडिब्बा । -पचा-पु० लगा हुआ पान; साधारण उपहार, तुच्छ भेंट । -फूल-पु० तुच्छ भेंट; बहुत कोमल वस्तु । -सुपारी-स्त्री० किमी शुभ अवसरपर किया जानेवाला वह समारोह जिसमें पान-सुपारीसे आगत व्यक्तियोंका सम्मान किया जाता है । मु० -उठाना-कोई काम करनेका जिम्मा लेना । -कमाना-पानके पत्तोंकी उलट-पुलटकर उनमेंसे सके अंशको निकाल देना । -खिलाना-बिवाहके विषयमें घर और कन्या-पक्षका परस्पर बचनबद्ध होना, सगाई करना । -चौरना-विना कामका काम करना, निरर्थक कार्य करना । -देना-किमीने कोई काम कर डालनेकी प्रतिज्ञा करना; किमीको कोई काम अपने जिम्मे लेनेके लिए प्रेरित करना । -फेरना-दे० 'पान कमाना' । -बनाना या कमाना-पानका बीजा तैयार करना; पान कमाना (?) । -लेना-कोई काम कर डालनेका जिम्मा लेना ।

पानक-पु० [सं०] पेय; एक प्रकारका पेय जो पकाये हुए आम, इमली, आदिके गुदेमें पानी, नमक, मिर्च आदि मिलाकर तैयार करते हैं, पना ।

पानबी-स्त्री० एक प्रकारकी पत्नी जो पेय पदार्थों और तेल-उबटन आदिमें सुगंधके लिए छोड़ी जाती है ।

पानन-पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत टिकाऊ होती है और सजावटके साधन तथा गाड़ी आदि बनावनेके काम आती है ।

पानरा-पु० पनारा ।

पानस-वि० [सं०] कटहलसे संबंध रखनेवाला । पु० कटहलसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी शराब ।

पानाही-स्त्री० जूता ।

पाना-सं० कि० प्राप्त करना; फल या परिणामके रूपमें कुछ प्राप्त करना; दूसरेके हाथमें गयी हुई या खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करना; समझ जाना, जान लेना;

देखना; अनुभव करना; भीगना; बेतन या सज्जरीके रूपमें कुछ प्राप्त करना; किसीका पासतक पहुँचाना; एकबना; बराबरी करना; बीचन करना। अ० कि० सक्ता (हस अर्थमें 'पाना'का प्रयोग संयोग्य क्रियाके रूपमें होता है)। पु० दे० 'पावना'।

पाषाण-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुतसे लोग एकत्र होकर मद्यपान करें, शराबखाना।

पाषाण-पु० [सं०] अधिक शराब पीनेसे होनेवाला एक प्रकारका विकार जिसमें कंथ, शिरोवेदना, दाह, सूँछाँ आदि उपसर्ग होते हैं।

पाणि०-पु० हाथ; पानी; आब, चपक। -**ग्रहण-पु०** दे० 'पाणिग्रहण'।

पाविक०-पु० [सं०] शराब बेचनेवाला, मद्य-व्यवसायी।

पाविष०-पु० कांति, आब, लावण्य; पानी।

पाविष०-पु० पानी। वि० रखा करने योग्य, रक्षणीय।

पाविक०-पु० [सं०] पानपात्र।

पानी-पु० नदी, कूप आदि जलाशयों और बाढ़लेंसे मिलनेवाला एक क्षीत स्पर्शवाला प्रसिद्ध तरल द्रव्य जो चराचर सृष्टिके लिए प्रसिद्ध होता है (आधुनिक विज्ञानके अनुसार यह अम्लजन और उदजन नामकी दो गैसोंसे बनता है तथा लाव, रंग और गंधसे रहित और पारदर्शक होता है); जीम, ऑल, घाव आदिके निकलनेवाला जलीय पदार्थ; वह पानी जिसमें उसमें उबाली या भिगोयी हुई वस्तुका सारभाग मिला हो (नीमका पानी); किसी बरे या सरस पदार्थके भीतरसे निकलनेवाला रस या पानी जैसा तरल पदार्थ-नारियल, तरबूज आदि फलोंका रस; आब, कांति; प्रसिद्धा, मानमयीदा, इज्जत; तलवार आदि सज्जोंकी धारका वह काळा हल्का रंग जिससे उनकी अच्छाई जानी जाती है; साल, वर्ष; कलई, मुकुम्मा; आत्माभिमान; दम्भ; जीवत्; घोड़े आदि जानवरोंकी जातिगत विशेषता; पानी जैसी ठंडी वस्तु; पानीकी तरह निःस्पर्श पदार्थ; कुश्तीमें एक बारकी भिड़त; जल-बाधु; सामाजिक स्थिति, शातावरण। -**दाह-वि०** जिसमें पानी, आब हो, आकदार, कांतिमान्; प्रतिष्ठावाला, इज्जतदार; स्वाभिमान। -**देवा-पु०** तर्पण करनेवाला, जलदाता, पुत्रादि। -**फल-पु०** सिंघाड़ा। -**बेख-खी०** एक प्रकारकी कृता। **मु०** -**आना-वर्षा** होना।

-**उठाना-पानी** खींचना, सोखना। -**उतारना-बेइज्जती** होना; अहंभुक्ति होना। -**उतारना-बेइज्जत** करना। -**करना-सल** बना देना; (किसीकी) कजबाना; कुदृष्टिकी शान्त करना। -**काटना-पानी**की रोकनेवाले बाँध या मेड़की काट देना, पानीकी एक नालीसे दूसरी नालीमें ले जाना। -**का बतारना-का बुकबुका-क्षण-मंगुर** पदार्थ। -**की चोट-वह पदार्थ** जिसमें जल अधिक हो। -**के मोल-बहुत सस्ता**। -**चलावा-चोपट** करना। -**छानना-बेचक**की बीमारीमें पानी छाननेका एक कृत्व। -**छूना-आबदस्त** लेना। -**जाना-बेइज्जत** होना। -**टूटना-कुप**, ताल आदिके पानीका बहुत कम हो जाना; बारिश बंद हो जाना। -**तोड़ना या काटना-तैरते या नाव खेत समय पानीकी हाथ या डौरेसे चौरना**। -

दिखाना-पशुओंके सामने पीनेके लिए पानी रखना, चौपायोंको पानी पिलाना। -**देना-तर्पण** करना; खींचना। -**न सँगा-तलका** भर जाना। -**न रह जाना-इज्जत** मिट्टीमें मिलना। -**निकलना-वर्षा** बंद होना। -**पड़ना-वर्षा** होना। -**पड़ा-जिसमें कसावट न हो, धीला-ढाका**। -**पड़ना-परीरना या चूँकना-जल्दी** अभि-मंथित करना। -**पर नीचे** डाकना-ऐसी वस्तुको आधार बनाना जो टिकाऊ न हो; किसी कामको हस प्रकार आरंभ करना कि वह बहुत जल्द विगड़ जाय। -**पर नीचे होना-किसी काम या आवोजनका टिकाऊ न होना**। -**पानी करना-बहुत अधिक कजबाना, किसीका क्रोध शांत करना**। -**पानी होना-बहुत अधिक छज्जित होना, झेंपना**। -**पीकर जाति पूछना-कीरे** काम कर चुकनेपर उसके औचित्यका निर्णय करना। -**पी-पीकर कोसना-इतनी** दैरतक कोमना कि गला सूख जानेके कारण बीच-बीचमें पानी पीना पड़े, बहुत अधिक और दैरतक कोसना। -**(किसीपर)-फिरना-बराब** होना, चोपट होना। -**फेर देना-बराब** कर देना, चोपट कर देना। -**बछाना-रखना-अर्थोंवाली** रक्षा करना। -**बराबा-सिंचाईमें एक क्यारी भर जानेपर दूसरी क्यारीमें पानी ले जाना**। -**बाँधना-बाँध** या मेड़ बनाकर पानीको रोक रखना; जादूके द्वारा पानीका बरसना रोक देना। -**बुझाना-तपे हुए लोहे आदिकी पानीमें बुझाना**। (किसीके सामने या आगे)-**भरना-अति** तुच्छ सिद्ध होना; फीका पड़ना। -**अरी खाल-क्षण-मंगुर** करीर। -**भरना-बेइज्जती** होना; पानी जम्ब होना। -**(किसीके सिर)-भारना-किसीकी दोषी ठहराना**। -**में आग लगाना-असंभव कार्य** कर कालना; जहाँ क्षणका होना संभव न हो वहाँ भी क्षणका लगा देना। -**में कँटना या बहाना-बराब** करना, नष्ट करना। -**लगाना-पानी जमा होना**। -**(कहाँका)** -**लगाना-जल-बाधुका अनुकूल न होना, स्थानविशेषके दुरे शातावरणका असर होना**। -**लेना-बेइज्जत** करना।

-**ले पल्ला-बहुत** तुच्छ; बदनाम; आसना। -**ले पहले पुल, पाव या बाँध बाँधना-किसी अनागत विपत्तिका पहलसे ही प्रतिकार करने लगना, किसी संकटके आनेके पहले ही उसके निवारणका उपाय करने लगना**। -**ले पहले सोजा उतारना-दे०** 'पानीसे पहले पुल बाँधना'।

-**होना-धातु आदिका तरल अवस्थामें परिणत होना**।

(किसीका)-होना-कोष शांत होना।

पानीपत-पु० दिल्लीके पासका एक मैदान जहाँ बहुत बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं।

पानीच-वि० [सं०] पीने योग्य; रखा करने योग्य। पु० जल; पेय, शराब (तं०)। -**काकिक-पु०, काकिका-खी०** एक पक्षी। -**चूर्णिका-खी०** बाढ़। -**मकुल-पु०** कदविलाव। -**पूछज-पु०** जलकुंभी। -**फल-पु०** मखाना। -**मूक-पु०** बकुली। -**वर्णिका-खी०** बाढ़। -**शाका, शाकिका-खी०** पौसर, धाऊ।

पानीपामलक-पु० [सं०] पानी-आँवला।

पानीपात्र-पु० [सं०] एक प्रकारका कंद।

ग्रहस्त रहे, जो सदा पापमें ग्रहस्त रहे, पापी ।
 पापाचम-पु० [सं०] महापापी ।
 पापानुबन्ध-पु० [सं०] पापका दुष्परिणाम ।
 पापानुबन्धित-वि० [सं०] पापी; पापपूर्ण ।
 पापापबुद्धि-स्त्री० [सं०] प्रावक्षित ।
 पापार्थ-वि० [सं०] दुष्कर्म करनेवाला, पापी ।
 पापार्थक्य-वि० [सं०] जो कुकर्म करना चाहता हो ।
 पापासाध-वि० [सं०] दे० 'पापचेता' ।
 पापाह-पु० [सं०] अशौचका दिन; अशुभ दिन ।
 पापाहि-पु० [सं०] सर्प ।
 पापिष्ठ-वि० [सं०] सबसे बड़ा पापी; अति पापी, अत्यंत पापमय ।
 पापी (पितृ)-वि० [सं०] पाप करनेवाला, अवी; निष्ठुर, निर्दय । पु० वह जो पाप करे, पाप करनेवाला मनुष्य ।
 पाप्मा (पन्न)-पु० [सं०] पाप, किरिय; दुष्टता; दुर्नाम्य । वि० पापी; हानिकारक ।
 पाम(श्)-पु० [सं०] एक चर्मरोग, विचर्षिका; छुरङ्ग । -ज्व-पु० गंधक । -घ्नी-स्त्री० कुटकी ।
 पामका, पामरा-पु० दे० 'पौंका' ।
 पामन-वि० [सं०] जिसे पाम नामक रोग हुआ हो ।
 पामर-वि० [सं०] नीच, दुष्ट; मूर्ख; निर्धन; असहाय; पामा रोगमें ग्रस्त । पु० मूर्ख या नीच व्यक्ति; वह जो पापकर्ममें संलग्न हो । -योरा-पु० एक तरहका निष्ठुर रोग ।
 पामरी-स्त्री० दुपट्टा, उपरना; पौंका ।
 पामा(मन्)-पु० [सं०] दे० 'पाम' ।
 पामारि-पु० [सं०] गंधक ।
 पार्थ-पु० पैर, पौं, -जा-पु० पाजामेके उन दो भागों-मेंसे कोई एक जो उसके पहने जानेपर टाँगोंकी ढके रहते हैं । -जेहरि-स्त्री० पावनेज । -ता-पु०, -ती-स्त्री० चांगपाई या पलंगका ऊपरका भाग जिपर सोनेवालेका पैर रहता है, पायताना; सोनेवालेके पैरकी ओरकी दिशा ।
 पार्थी-पु० वह बख आदि जो यात्राके समय स्त्रय जानेमें असमर्थ होनेपर यात्राके प्रतीकके रूपमें गतव्य दिशामें कहीं रख दिया जाता और यात्रा करते समय फिर उसे साथ ले लिया जाता है, प्रस्थान । स्त्री० दे० 'पार्थी' ।
 पायदाज-पु० दे० 'पा-अंदाज' ।
 पाय-पु० [सं०] जल; [फा०] 'पा'का समासमें, इजाफत लगातेसे मिलनेवाला रूप । -काह-पु० बनानेवालेसे साल खरीदकर दुकानदारोंके हाथ बेचनेवाला, एजेंट, खुदकरीश, हसीन । -झावा-पु० दे० 'पाखाना' । -गाह-पु० तनेला, अल्लाव; कचहरी । -जंजीर-वि० गिरफ्तार, कैद; दुनियाके बंधोंमें फँसा हुआ । -जामा-पु० दे० 'पाजामा' । -जोष-पु० दे० 'पाजेब' । -जेहरि-स्त्री० पाजेब । -तस्ल-पु० राजधानी । -तन-पु० दे० 'पावेता' । -तराब-पु० दे० 'पातराब' । -दान-पु० सवारि गाड़ीमें बाहरकी ओर लगाया हुआ तस्ता या छोड़का चौकीर टुकड़ा जिसपर पैर रखकर गाड़ीवान चढ़ते हैं । -दास-पु० जाऊ, फंदा । -दाह-वि० मजबूत, टिकाऊ । -दारी-स्त्री० मजबूती, टिकाऊपन । -दोहा-

पु० दे० 'पावोस' । -बंद्-वि० दे० 'पावन्द' । -बंदी-स्त्री० दे० 'पावनी' । -बसा-वि० जिसके पैर बंधे हों । -बोसी-स्त्री० दे० 'पावोसी' । -मरी-स्त्री० बहादुरी, जवांमदी । -माह-वि० दे० 'पामाल' ।
 पाबक-पु० दूता सेबक; पैदल सिपाही; * मल्ल; पटेबाज; पताका; [सं०] पीनेवाला, पानकर्ता ।
 पाबठ-स्त्री० दे० 'पाहट' ।
 पाबहा-पु० रकान-‘हर वोका, मझा कबी; गिन्नु पीठ-पलान । चंद सर दोह पायबा, चंदसी सन्त सुबान’ -साखी ।
 पायन-पु० [सं०] पिछाना ।
 पायथा-स्त्री० [सं०] सींचना; पिलानेकी क्रिया; गीला करना; सान भरना, पार तेज करना ।
 पायरा-पु० रकाना * एक तरहका कनूतर ।
 पायल-स्त्री० पैरमें पहननेका एक धूपकदार गहना, पाजेब; नूपुर; तेज चलनेवाली इमिनी; बौंसकी लोड़ी ।
 पायस-वि० [सं०] दूध या जलसे संतृप्त; दूधका या जलका; दूध या जलका बना हुआ । पु० दूधमें पकाया हुआ चावल, खीर; अमृत; सख्खेका गौद, तारपीन ।
 पायसा-पु० पकोस ।
 पायसिक-वि० [सं०] जिसे उबका हुआ या गरम दूध मिय लगे । [स्त्री० 'पायसिकी']
 पाया-पु० [फा०] चापाई, कुरसी, तख्ते आदिके उन खंडोंके आकारके निचले अंगोंमेंसे कोई एक जिनके बल पे स्थित रहते हैं, पाया, गोदा, खंभा, टेक, बुनियाद, नीचे; लोड़ी; दर्जा, पद; बोहोंके पैरका एक रोग । -बपाया-अ० एक-एक दर्जा करके, दर्जा-बदर्जा । सु०-बुलब्ब होना-दर्जा बढ़ना ।
 पायिक-पु० [सं०] पैदल सिपाही; दूत ।
 पायी(विन्)-वि०, पु० [सं०] पीनेवाला (प्रायः समा-सांतमें प्रयुक्त जैसे-‘स्तनपायी’) ।
 पायु-पु० [सं०] गुदा ।
 पाय्य-वि० [सं०] पीने योग्य; पिलाने योग्य; निन्दनीय; कमीना । पु० जल; परिमाण; रक्षण; पेशा ।
 पारगत-वि० [सं०] दे० 'पारगत' ।
 पारंपरीय-वि० [सं०] परंपरागत, क्रमागत ।
 पारंपरीय-वि० [सं०] परंपरागत ।
 पारंपरी-पु० [सं०] परंपराका भाव; कुल आदिकी परंपरा ।
 पारंपरीयपेश-पु० [सं०] परंपरागत उपदेश, दैतिका (जो एक तरहका प्रमाण माना जाता है) ।
 पार-पु० [सं०] नदी, समुद्र आदिका दूसरी ओरका किनारा; किसी वस्तुका दूसरा किनारा; किसी दूरतक फैली हुई वस्तुका अंतिम भाग, प्रांतभाग; किसी दूरतक फैली हुई वस्तुके दो किनारोंमेंसे कोई एक; अंत, हद्द; पारा । अ० पूरे, दूर । -कास-वि० दूसरे किनारे जानेका इच्छुक । -ग-वि० पार जानेवाला; पार पहुँचानेवाला; जिसने किसी वस्तुका पार पा लिया हो; जिसने किसी विषय या शास्त्रका पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; (समासमें प्रयुक्त, जैसे-‘वेदांतपारग’) । पु० पूरा करना (पारा इ०) । -गस-वि० पारतक पहुँचा हुआ; जिसने

पार पा लिया हो; जिसने किसी विषय या शास्त्रका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; पवित्र। पु० जिन (दे०)।
 -पति-खी० पदना, अध्वयन। -गामी (मिष्ट)-वि० पार जानेवाला। -पत्र-वि० दूसरे किनारे पहुँचा हुआ।
 -दर्शक-वि० पारको या दूसरे किनारेकी दिखानेवाला; जिसके आर-पार देखा जा सके। -दर्शी (सिञ्च)-वि० दूरदर्शी, परिणामदर्शी; बुद्धि, पंडित। -दृष्टा (बल)-वि० दूरदर्शी; जिसने किसी वस्तुका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; पारंगत। -नेता (पु)-वि० पार लेजानेवाला; किसी विषयका पूरा ज्ञान करानेवाला। -पार-पु० विष्णु। मु० -उत्तर जाना-दे० 'पार उत्तरना'; कोई प्रयोजन सिद्ध करके अलग हो जाना। -उत्तरना-तैर-कर या नाव आदिके द्वारा नदी आदिके उस पार जाना; किसी कार्यको समाप्त करके उससे छुट्टी पाना; किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करना; भवर्षनसे मुक्त होना, संसारसे छुटकारा पाना। -उत्तरना या करना-नदी, समुद्र आदिके दूसरे किनारे पहुँचाना; उद्धार करना। -पाना-किसी वस्तुके अंततक पहुँचना। (किसीसे)-पाना-परास्त करना। -बसाना-बसा चलना। -लगाना-किनारे पहुँचना। (किसीका बेड़ा)-लगाना-गुजारा होना, निर्वाह होना। (किसीसे बेड़ा)-लगाना-किया जा सकना; हो सकना। -लगाना-नदी आदिके दूसरे किनारे पहुँचाना; उद्धार करना। (किसीका बेड़ा)-लगाना-निर्वाह करना। -होना-दूसरे किनारे या उस पार पहुँचना; काम पूरा कर लेना।
 पारङ्ग-खी० नका कसोरा।
 पारक-वि० [सं०] पार करनेवाला; पार लगानेवाला; पूति करनेवाला; पालक; प्रिय; प्रीतिकर; तुष्ट करनेवाला।
 पारक (जु)-पु० [सं०] सोना।
 पारक्य-वि० [सं०] दूसरेका, पराया; जो दूसरेके लिये हो; जो परलोकके लिये हितकर हो; जो विशुद्ध हो। पु० शत्रु, विरोधी; पवित्र आचरण (जिसने परलोक बनाता है)।
 पारक्य-खी० दे० 'परक्य'। पु० दे० 'पारक्य'।
 पारक्य-पु० दे० 'पारक्य'।
 पारक्यी-पु० परखनेवाला, वह जिसमें परखनेकी शक्ति है।
 पारमार्थिक-वि० [सं०] पराया; वीर्यी।
 पारमा-पु० [फ्रा०] डूफना; बन्धी; कपका; एक तरफका रेशमी कपका; पोशाक, लिबास; कुर्पेकी श्रृंखला पर कुछ आगेकी ओर बढ़ाकर रखी जानेवाली वह चौड़ी और चिपटी लकड़ी जिसके ऊपरसे ही रस्ती लटकाकर पानी खींचते हैं।
 -क्रोश-पु० कपका बेचनेवाला, बजाज। -क्रोशी-खी० बजाजका काम, बजाजी। -बाक्र-पु० कपका बुननेवाला, जुलाहा।
 पारजम्भिक-वि० [सं०] दूसरे जन्मसे संबंध रखनेवाला।
 पारजास-पु० दे० 'पारिजात'।
 पारजायिक-पु० [सं०] परकीयामी, लंपट, न्यामिचारी।
 पारटीट, पारटीन-पु० [सं०] चट्टान, शिला।
 पारण-पु० [सं०] किसी व्रत या उपवासके बादका पहला भोजन (पारण उपवासका अर्थ माना जाता है); बारह; छत्ति, सत्तीय; पूरा करना; व्रत या उपवासके बाद भोजन

करनेकी क्रिया; पदना, अभ्ययन; पुस्तकका सारा विषय।
 वि० पार करनेवाला; उद्धार करनेवाला।
 पारणा-खी० [सं०] व्रतके बादका भोजन; भोजन।
 पारणीय-वि० [सं०] समाप्त; पूरा करने योग्य।
 पारसंध्य-पु० [सं०] पराधीनता।
 पारस-पु० [सं०] दे० 'पारा'।
 पारसस्मिक-पु० [सं०] परकीयामी, लंपट।
 पारसिक-वि० [सं०] परलोक-संबंधी; परलोकका; परलोक बनानेवाला।
 पारम्भ-पु० [सं०] परलोकमें मिलनेवाला फल।
 पारम्भ-पु० दे० 'पारम्भ'।
 पारम्यिक-पु० राजा; मिट्टीका शिवालिंग। वि० मिट्टी-संबंधी; मिट्टीका बना हुआ।
 पारम्भ-पु० [सं०] पारा; एक प्राचीन असम्भ जाति।
 पारम्भारिक-पु० [सं०] परकीयामी, लंपट।
 पारम्भार्य-पु० [सं०] परकीययन।
 पारमेशिक-वि० [सं०] दूसरे देशका, विदेशी। पु० दूसरे देशका निवासी; बाजी।
 पारमेश्व-वि०, पु० [सं०] दे० 'पारमेशिक'।
 पारम्यिक-पु० दे० 'पारम्य'। -पसि-पु० धन्यार्थमें श्रेष्ठ, कामदेव।
 पारपी-पु० बडेलिया, चिरीमार; शिकारी; कमनैत; हत्यारा। † खी० मोट, आक।
 पारम-पु० दे० 'पारण'।
 पारमा-सं० कि० जमीनपर ढाल देना; गिराना; नॉचेमें या और किसी चीजमें जमाकर कुछ तैयार करना; * मुलाना; पछाड़ना; रखना; मर्मिलित करती; पहनना; ढाना; ढालना; पालन करना। अ० कि० मकान; करनेमें समर्थ होना।
 पारमती-खी० दे० 'पारमती'।
 पारम्युत-पु० उपायन, मेट, नजर।
 पारमहंस, पारमहंस्य-वि० [सं०] परमहंस-संबंधी; परम-हंसका।
 पारमार्थिक-वि० [सं०] परमार्थ-संबंधी; अधिकारी और सत्य; स्वामयिक (जैसे-पारमार्थिक सत्ता); परमार्थका प्रेमी; परमार्थकी ओर रुष्ट रखनेवाला; अति उत्तम।
 पारमार्थ्य-पु० [सं०] परम सत्य।
 पारमिक-वि० [सं०] सबसे बड़ा, सर्वश्रेष्ठ; प्रधान।
 पारमित्त-वि० [सं०] पार गया हुआ।
 पारमिता-खी० [सं०] पूर्णता, उत्कृष्टता (बह ६ प्रकारकी मानी गयी है जो ये हैं-दान, शक्ति, सन्ति, कीर्त्य, ध्यान और प्रज्ञा। कुछ लोग सत्य, अधिष्ठान, मैत्र और उपेक्षा-की सम्मिलित कर इनकी संख्या दम भी मानते हैं- (सी०)।
 पारमेश्वर-वि० [सं०] परमेश्वर-संबंधी।
 पारमेश्वर-वि० [सं०] ब्रह्मासे संबंध रखनेवाला; ब्रह्माका। पु० प्रधानता; सर्वोच्च पद; सर्वेश्वरता; राजचिह्न।
 पारम-वि० [सं०] उपयुक्त; संतोषजनक।
 पारसिञ्च-वि० [सं०] उत्तिजनक; पार जाने या पूरा करनेमें समर्थ।

पारपुत्रीय-वि० [सं०] परगतीं युगम्; परगतीं युगमें होनेवाला ।

पारलोकिक-वि० [सं०] पारलोकसंबंधी; पारलोकिका ।

पारलौकिक-वि० [सं०] पारलोकसंबंधी; पारलोकिका ।

पु० अलंछि क्रिया ।

पारवत्-पु० [सं०] कनूत् ।

पारवर्ष-वि० [सं०] दूसरे वर्षका; विरोधी ।

पारवर्ष-पु० [सं०] पराधीनता, परबलता ।

पारविषयिक-वि० [सं०] दूसरे देश या राज्यका, विदेशी ।

पारश्व-वि० [सं०] परशु-संबंधी; परशुका; ओढ़ेका बना हुआ । पु० लोहा; ब्राह्मण और शूद्राते उत्पन्न एक संकर जाति; पराधी कीते उत्पन्न पुत्र; एक प्राचीन देश ।

पारश्व-वि० [सं०] परशु-संबंधी; परशुका; ओढ़ेका बना हुआ । पु० लोहा; ब्राह्मण और शूद्राते उत्पन्न एक संकर जाति; पराधी कीते उत्पन्न पुत्र; एक प्राचीन देश ।

पारश्व-पु० [सं०] परशु-संबंधी; परशुका; ओढ़ेका बना हुआ । पु० लोहा; ब्राह्मण और शूद्राते उत्पन्न एक संकर जाति; पराधी कीते उत्पन्न पुत्र; एक प्राचीन देश ।

पारस-वि० [सं०] पारस-संबंधी; पारसका । पारस-पु० एक प्रकारका पत्थर जिसके स्पर्शसे लोहा लोना हो जाता है, स्पर्शमणि; बहुत काम पहुँचानेवाला पदार्थ, पारस जैसा उत्तम पदार्थ; परसा हुआ भोजन; वह पत्थर जिसमें एक आरामीके खानेभरका भोजन रखा गया हो। एक मसौले आकारका पदार्थ एक हिंदुस्तानके पश्चिम-में स्थित एक प्रसिद्ध देश । वि० [सं०] फारस देश-संबंधी; फारसका; फारस देशमें पैदा ।

पारस-वि० [सं०] पारस-संबंधी; पारसका ।

पारस-पु० [सं०] पारस-संबंधी; पारसका । पारस-वि० [सं०] पारस-संबंधी; पारसका ।

पारसिक-पु० [सं०] पारस-संबंधी; पारसका ।

पारसी-पु० एक अतिपूजक जाति । ली० [सं०] फारस देशकी भाषा । -कोश, -प्रकाश-पु० एक ग्रंथ जिसमें फारसीके शब्दोंका अर्थ संस्कृतमें दिया हुआ है । -विनोद-पु० एक ग्रंथ जिसमें व्योमिष तथा खगोलविद्याते संबंध रखनेवाले फारसी और अरबी भाषाके शब्दोंकी व्याख्या संस्कृतमें की गयी है ।

पारसीक-पु० [सं०] फारस देश; फारस देशका बोका; -फारस देशका निवासी । -बसानी-ली० खुरासानी अन्नवाहन । -बसानी-ली० खुरासानी वन ।

पारसीक-वि० [सं०] फारस-संबंधी; फारसका ।

पारसिक-पु० [सं०] एक प्राचीन देश; एक गुह्यसूत्रकार मुनि ।

पारसिक-वि० [सं०] पराधी कीते उत्पन्न पुत्र ।

पारसिक-वि० [सं०] आपसका, आपसी ।

पारस-पु० [सं०] पारस या फारस देश ।

पारसिक-वि० [सं०] दूसरे कुलमें उत्पन्न ।

पारसिक-वि० [सं०] दे० 'पारसिक' ।

पारा-ली० [सं०] एक प्राचीन नदी । पु० [सं०] एक प्रसिद्ध भादु; बड़ी परत; दुकान; एक प्रकारकी छोटी दीवार जो बिना गारे या मसालेकी ही ईंटों या पत्थरके दुकानकी एक-दूसरेपर रखकर बनायी जाती है । झु० -पिकावा-किसी क्रिया द्वारा भारी बनाना ।

पारापत्त-पु० [सं०] कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] दोनों किनारे, उभय तट; समुद्र ।

पारापत्त-वि० [सं०] दे० 'पारापत्त' ।

पारापत्त-पु० [सं०] किसी ग्रंथका आरंभ पाठ; संपूर्णता; पार जाना ।

पारापत्त-वि० [सं०] पारापत्त करनेवाला; पुराणादिका पाठ करनेवाला; छात्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] सरस्वती, मनन, धितन; कर्म; प्रकाश ।

पारापत्त-पु० [सं०] पत्थर, शिला ।

पारापत्त-पु० [सं०] कनूत्; पंडित; वंद्य; पर्वत; एक तरहका सर्प । -ली०-ली० सरस्वती नदी । -पट्टी-ली० मार्कण्डी; काकजवा ।

पारापत्त-वि० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

पारापत्त-पु० [सं०] पट्टपुत्र ।

पारापत्त-ली० [सं०] ज्योतिष्मती नामकी कृत । -पिच्छ-पु० एक तरहका कनूत् ।

सपर मिठा हो; विवाह-संबंधका स्त्रि होना ।
पारिभाष्य-पु० [सं०] चारपाई, चौकी, बरतन आदि धरेख सामान ।
पारिषदा-की० [सं०] गण सुबनेके काम आनेवाली मोतियोंकी छकी; मोंगपर पहना जानेवाला शिबोंका एक प्रकारका गहना ।
पारितोषिक-वि० [सं०] स्तुत करनेवाला; प्रसन्न करने-वाला । पु० पुरस्कार, इनाम ।
पारिष्वधिक-पु० [सं०] झंडा लेकर चरनेवाला ।
पारिष्यधिक-पु० [सं०] छुटेरा; चोर ।
पारिषाब्ध-पु० [सं०] ढंग; परिपाटी; नियमितता ।
पारिस्तिकरथ-पु० [सं०] बह रथ जिसपर बड़ा खाने या घुमने-फिरनेके लिए निकला जाय ।
पारिपात्र-पु० [सं०] एक कुलपर्वत ।
पारिपात्रिक-पु० [सं०] पारिपात्र नामक पर्वत; उसपर बसनेवाला ।
पारिपार्थ-पु० [सं०] पार्थिवर, अनुचर ।
पारिपार्थक, पारिपार्थिक-पु० [सं०] अनुचर, सेवक; नाटकके स्थापकका सहायक नट ।
पारिद्रव्य-वि० [सं०] चंचल; क्षुब्ध, आकुल; सिरता हुआ । पु० नाव, जलयान; आकुलता ।
पारिच्छाद्य-पु० [सं०] हंस; आकुलता; कंपन; चंचलता ।
पारिभद्र-पु० [सं०] करबटका पेड़; दैवदारु; सलईका पेड़; नीमका पेड़ ।
पारिभद्रक-पु० [सं०] देवदारु; नीम; एक कुडौषक ।
पारिभाष्य-पु० [सं०] प्रतिभू या जामिन होनेका भाव; एक कुडौषक ।
पारिभाषिक-वि० [सं०] सर्वसामान्य; जिसका प्रयोग किसी विशिष्ट अर्थमें किया जाय, जो कोई विशिष्ट अर्थ सूचित करे, लाक्षणिक ।
पारिमाध्व-पु० [सं०] परमाणु; परमाणुका परिमाण ।
पारिमाग्य-पु० [सं०] परिधि, घेरा ।
पारिमिग्य-पु० [सं०] सीमा, हद ।
पारिमुखिक-वि० [सं०] जो सामने हो; जो समीप हो ।
पारिमुख-पु० [सं०] सामने या समीप होनेका भाव ।
पारिवात्र-पु० [सं०] पारिपात्र नामक कुलपर्वत ।
पारिवात्रिक-पु० [सं०] दे० 'पारिपात्रिक' ।
पारिवायिक-पु० [सं०] वह रथ जिसपर चढ़कर कहाँ यात्रा की जाय ।
पारिष्वक, पारिष्विक-पु० [सं०] तपस्वी, तापस ।
पारिष्विक, पारिष्विक-पु० [सं०] बने भारका अधिवाहित होना और छोटे भारका विवाहित ।
पारिष्वजक, पारिष्वज्य-पु० [सं०] सल्लास ।
पारिषा-पु० [सं०] एक वृक्ष, परासपीपल, गर्दभांड ।
पारिषील-पु० [सं०] एक तरहका पूजा ।
पारिषोष-पु० [सं०] बांधी, वह जो शेष रह गया हो ।
पारिभ्रमिक-पु० [सं०] किये गये परिभ्रमके नदकेमें मिलने वाला धन या मजूरी, मेहनताना ।
पारिषद्-वि० [सं०] परिषद्-संबंधी; परिषदका । पु० परिषद् या सभामें बैठनेवाला, समासद; राजाका मित्र या

अनुचर; किसी देवताका अनुचरवर्ग ।
पारिष्वक-पु० [सं०] दर्शक; सामाजिक ।
पारिष्वीक-पु० मित्रकी आतिका एक पेड़ ।
पारिसीक-वि० [सं०] जो बिना जीते-बोये उत्पन्न हो, अपने आप पैदा होनेवाला (अक) ।
पारिहारिक-पु० [सं०] हरण करनेवाला; हार या मारार्थ तैयार करनेवाला; आपृत करनेवाला, धरनेवाला । वि० हरण करनेवाला; धरनेवाला ।
पारिहारिकी-की० [सं०] एक तरहकी पहेली ।
पारिहार्य-पु० [सं०] हरण करनेकी क्रिया; वलय, कंकण ।
पारिहास्य-पु० [सं०] दिल्ली, हँसी-मजाक ।
पारिङ्ग-पु० [सं०] सिंहा; अजगर ।
पारी-की० बारी, ओमरी; † शुक्र आदिका जमाया हुआ बड़ा डोंक; [सं०] हाथीके पैर बाँधनेका रस्ता; अलराशि; प्याला; दोहन; पराग ।
पारीक्षित-पु० [सं०] राजा परोक्षिप; उनका वंशधर, जनमेजय ।
पारीक्षत-पु० दे० 'पारीक्षित' ।
पारीष-वि० [सं०] उस पारतक जानेवाला; पूरा करने-वाला; समाप्त करनेवाला; जो किसी विधा या शास्त्रमें पारगत हो (समासांतमें) ।
पारीणक्ष-पु० [सं०] दे० 'पारिणक्ष' ।
पारीय-वि० [सं०] (समासांतमें) किसी विषयमें दक्ष ।
पारीरग्य-पु० [सं०] कछुआ; बड़ा; एक पहनावा ।
पारीष-पु० [सं०] दे० 'पारिषपीपल' ।
पारु-पु० [सं०] सूर्य; अधि ।
पारुज्य-पु० [सं०] एक तरहका पक्षी ।
पारुष्य-पु० [सं०] पुरुष होनेका भाव (बात या व्यवहारमें); कठोरता; सख्त; दुर्बल; हलका बन; अगर; दृढ़रूप ।
पारेक-पु० [सं०] तलवार ।
पारेक्ष-पु० [सं०] एक तरहका खजूर ।
पारोक्ष-वि० [सं०] रहस्यमय; उप्त; अस्पष्ट ।
पारोक्ष्य-पु० [सं०] गहस्य ।
पारोष्य-पु० [सं०] परंपरा ।
पार्क-पु० [सं०] नगरके अंदरका वह सार्वजनिक उपवन जहाँ लोग दिलबहालाय या हवाखोरीके लिए जाया करते हैं ।
पार्कट-पु० [सं०] बूख या रास ।
पार्कन्य-वि० [सं०] मेघ-संबंधी ।
पार्टी-की० [सं०] दल, संछी; करीक, वादी या प्रतिवादी पक्ष; प्रीतिमोक्ष, दास्य ।
पार्ण-वि० [सं०] पत्तोंका या पत्तोंका बना हुआ; पत्तियोंसे प्राप्त होनेवाला (कर) ।
पार्थ-पु० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन या भीम (विशेषतः अर्जुन); अर्जुन नामका पेड़; राजा । -**सारथि**-पु० कृष्ण; भीमासके एक प्राचीन आचार्य ।
पार्थक्य-पु० [सं०] पृथक् होनेका भाव, पृथक्त्व, भेद, अंतर; अपाय, जुदाई, विस्वादा ।
पार्थव-पु० [सं०] पृथु होनेका भाव, स्थूला; विशालता । वि० पृथु-संबंधी; पृथुका ।

पार्थिव-वि० [सं०] पृथ्वी-संबंधी; पृथ्वीका; पृथ्वीसे उत्पन्न; पृथ्वीतत्त्वका विकाररूप; मिट्टीका बना हुआ; जो राजाके योग्य हो, राजोक्ति, राजसी; पृथ्वीका शासन करनेवाला; सांसारिक। पु० पृथ्वीपर रहनेवाला प्राणी; राजा; मिट्टीका वृत्तमान; एक संवत्सर; तमर; सांसारिक पदार्थ; खरीद; वृत्तिका-निमित्त शिबल्लिपि। -**आय**-**श्री**० मालगुजारी; लगान। -**कन्या**,-**नंदिनी**,-**सुता**-**श्री**० राजकुमारी। -**नंदन**,-**सुत**-**पु**० राजकुमार। -**छिग**-**पु**० राजविह। -**श्रेष्ठ**-**पु**० श्रेष्ठ राजा, उत्तम राजा।

पार्थिवाल्मज-**पु**० [सं०] राजकुमार।

पार्थिवाधम-**पु**० [सं०] नीच राजा।

पार्थिवी-**श्री**० [सं०] सीता; लक्ष्मी।

पार्थी-**पु**० मिट्टीका बनाया हुआ शिवल्लिपि।

पार्वर-**पु**० [सं०] झुंडीमर बाबल; क्षय रोग; राख, अस्म; यम; कंदका केसर।

पार्वसिक-वि० [सं०] अंतिम।

पार्व-वि० [सं०] जो दूसरे किनारे हो; अंतिम; प्रभावकर, सफल। पु० अंत, परिणाम।

पार्वसिक-वि० [सं०] सपूर्ण।

पार्लमेंट-**श्री**० [अंग०] राष्ट्री, विशेषतः ब्रिटेनकी, निर्वाचित विधान-सभा।

पार्वण-वि० [सं०] जो किसी पर्वपर या अमावस्याके दिन किया जाय। पु० किसी पर्वपर अमावस्याके दिन किया जानेवाला आद्य।

पार्वत-वि० [सं०] पर्वतपर होनेवाला; पर्वतपर रहनेवाला; जहाँ या जिसमें पहाड़ हो। पु० महानिब।

पार्वतायन-**पु**० [सं०] पर्वत कृषिका गोत्राप्त्य।

पार्वसिक-**पु**० [सं०] पर्वतमाला।

पार्वती-**श्री**० [सं०] शिवकी अर्द्धांगिनी गौरी जो हिमालय की पुत्री है, उमा, भवानी (ये दुर्गासे अभिन्न मानी जाती है और हिमालयके घर जन्म लेनेके पहिले सतीके रूपमें शिवकी अर्द्धांगिनी थी); गोपी; ब्यालिन; द्रौपदी; बकायन; सलह; गोपीचंद्रन; जीवती; भवा, धाय; पहाड़ी सरना।

-**कुमार**,-**नंदन**-**पु**० कार्तिकेय; गणेश। -**नेत्र**,-**लोचन**-**पु**० एक ताल (संगीत)। -**सख**-**पु**० शिव।

पार्वतीय-वि० [सं०] पर्वतपर रहनेवाला; पहाड़ी। पु० वह जो पर्वतपर रहे, पहाड़ी; पहाड़ियोंकी एक पुरानी जाति।

पार्वतेश-वि० [सं०] पर्वतसे उत्पन्न। पु० सुरमा; कुलकुल्का पोष।

पार्ष्व-**पु**० [सं०] पशु या फरसेसे युद्ध करनेवाला घोड़ा।

पार्श्व-**श्री**० [सं०] पक्षी।

पार्श्व-वि० [सं०] निकट, पासका। पु० कक्षके नीचेका या छातीके दाएँ-बाएँका भाग, पंजर; अगल-बगलकी जगह; सामोप्य; शरीके घुरेके छोर; पार्श्वनाथ; पक्षियोंका समूह, पक्षियाँ; कपट, धूर्तता, छल। -**कर**-**पु**० बकाया मालगुजारी। -**पा**,-**गम**-वि० साथ रहनेवाला। पु० परिचारक, सेवक; नौक। -**गत**-वि० जो साथ हो; रक्षित, आश्रित। -**वह**-वि० दे० 'पार्वण'। -**वह**-वि०

श्री० बगली शोभा, अप्रपान शोभा। -**द**-**पु**० परिचारक, सेवक। -**देहा**-**पु**० बगल। -**नाथ**-**पु**० जैनोंके तीर्थसे तीर्थकर। -**परिवर्तन**-**पु**० करवट बदलना। -**विषय**-**पु**० हक्का एक भेद। -**आय**-**पु**० बगल, बाजू। -**मंडली**(**लिन**)-**पु**० नृत्यमें एक मुद्रा। -**वक्त्र**-**पु**० शिव। -**वर्ती**(**सिख**)-वि० साथ रहनेवाला; बगलमें या आपसपर रहनेवाला। पु० परिचारक, सेवक; सहचर। -**शाय**-वि० बगलमें सोनेवाला; जो किसी करवट सोया करे। -**शुल**-**पु**० पंजरमें होनेवाला दर्द। -**संधान**-**पु**० इंटोंकी बगली जोड़ाई (शुभशाक)। -**सूत्रक**-**पु**० एक प्रकारका गहना। -**स्थ**-वि० जो बगलमें हो, समीपस्थ। पु० सहचर, साथी; पारिपार्श्वक।

पार्श्वक-**पु**० [सं०] छलपूर्ण उपाय; ढग; चोर; साथी; बाजीगर; कपट या धूर्ततासे धन कमानेवाला। वि० पार्श्वसंबंधी।

पार्श्ववीथ-वि० [सं०] जो पासमें हो, पार्श्ववर्ती।

पार्श्वानुचर-**पु**० [सं०] परिचारक, सेवक।

पार्श्वानास-वि० [सं०] जो पास आया हो।

पार्श्वसि-**श्री**० [सं०] पार्श्वस्थूल।

पार्श्ववमर्द-**पु**० [सं०] पार्श्वशूल।

पार्श्वसह, **पार्श्वसीन**-वि० [सं०] पास बैठा हुआ, उपस्थित।

पार्श्वस्थि-**श्री**० [सं०] पक्षी।

पार्श्व-वि० [सं०] पार्श्वसंबंधी; किसी एक पार्श्वमें होने या रहनेवाला। पु० पक्षपाती, तरफदार; सहचर, साथी; बाजीगर; धूर्त मनुष्य; कपट या छलसे पैसा कमानेवाला।

पार्श्वप्रिय-**पु**० [सं०] बैकजा।

पार्वत-वि० [सं०] पर्वत, चित्रसूत्र-संबंधी। पु० हुपद; धृष्टद्युम्न।

पार्वती-**श्री**० [सं०] द्रौपदी; दुर्गा।

पार्श्व-**पु**० [सं०] समसाद; परिचारक, सेवक; किसी देवता का अनुचर।

पार्श्व-**श्री**० [सं०] परिपद, समा।

पार्श्व-**पु**० [सं०] समसाद।

पार्श्व-**श्री**० [सं०] पक्षी; पृष्ठ, पिछला भाग; सेनाका पृष्ठ भाग; जीतनेकी इच्छा, जिगीषा; पड़ापात, ठोकर; जींच, तहकीकात। **श्री**० मदमत्त **श्री**; पक्षी; कुत्ता। -**क्षेम**-**पु**० एक विश्वदेव। -**ग्रह**-वि० पीछेमें पकड़नेवाला। पु० अनुयायी (अपने पक्षका या विपक्षका)। -**ग्रहण**-**पु**० शत्रुकी सेनापर पीछेकी ओरसे आक्रमण करना। -**ग्रह**-**पु**० सेनापर पीछेकी ओरने आक्रमण करनेवाला शत्रु; मेनाके पृष्ठभागका नायक; मित्र राजा। -**घात**-**पु**० पादप्रहार, ठोकर। -**ज**-**पु**० मेनाकी रक्षाके लिए उसके पीछे रखा जानेवाला सैनिकदल। -**प्रहार**-**पु**० दे० 'पार्श्वनाथ'।

पार्श्व-**पु**० [अंग०] डाक वा रेल द्वारा भेजे जानेवाले मालका पुछिदा वा पैकेट। -**हृत्**-**पु**० पार्श्वलकी व्यवस्था करनेवाला कर्मचारी। -**देव**-**श्री**० पार्श्व होनेवाली रेखाकी। -**बाह**-**पु**० दे० 'पार्श्वहृत्'।

पार्श्व-**पु**० [सं०] पार्श्व नामका साग; सलह; बाज पक्षी।

पाखंडी-खी—[सं०] पाखंड नामक साग; कुंडरु नामक मधुसूत ।

पाखंडप-पु—[सं०] पाखंड नामका साग ।

पाखंडप्या-खी—[सं०] कुंडरु ।

पाखंडा-पु—पलंग ।

पाख-पु—[सं०] रक्षा करना; रक्षा करनेवाला चरवाहा; राजा; पीकान । वि० रक्षक । -प्य-पु० कुकुरमुत्ता ।

पाख-पु० आम, केला आदि पकानेकी एक विधि जिसमें उन्हें पत्तोंपर रखकर पुनः पत्तोंसे ही ढक देते हैं; नाबके मस्तूलके सहारे ताना जानेवाला वह कपड़ा जिसमें हवाके भरनेसे नाव चलती है; बंगालियोंकी एक उपाधि; बंगालका एक प्रसिद्ध राजवंश; गांधी या पाखंडी आदिका बोहार, धूप आदिसे बचावके लिए चंदोदोकी तरह ढांगा जानेवाला ढाट, कपड़ा आदि; कपोत-नीचुना; * बाँध, मैत्र-दूट पाख तरवार वह लोहे-पं०; जैना किनारा, कगार । -बंध-पु० बंगालका एक प्रसिद्ध राजवंश जिसमें वंग और मगधपर ७७५ ई० से ११६१ ई० तक राज्य किया था ।

पाखड-पु० पलंग, पत्ता ।

पाखड-पु० एक प्रसिद्ध साग; [सं०] रक्षक, पाखन करनेवाला; राजा; सर्वस; बोधा; चिक्क बुद्ध; धितासे मित्र व्यक्ति जिसने किसीका पाखन-पोषण किया हो । वि० पाखन करनेवाला; निमानेवाला (जैसे प्रतिष्ठापाखंड); * पलंग-‘ता दिन पाखक ते न उठावे’-रामचंद्रिका ।

पाखकरी-खी० चारपाईके सिरहानेकी जैना करनेके लिए उभरके पावके नीचे रखा जानेवाला लकड़ीका ढुंका ।

पाखकाप्य, पाखकाप्य-पु—[सं०] एक मुनि जो अथ, गज आदिसे सबंध रखनेवाले शास्त्रके प्रथम आचार्य माने जाते हैं; अथ, गज आदिसे संबद्ध शास्त्र जिसमें हाथी-घोड़े आदिके लक्षण, गुण आदिका निरूपण है ।

पाखकी-खी० एक तरहकी सतारी जिसे आदमी कंधेपर टोते हैं, लक्ष्मणिया, शिविका; पाखका साग ।

पाखट-पु० गोद लिया हुआ लकड़ा । † खी० पटेवाजीका एक हाथ ।

पाखड़ा-पु० दे० ‘पलड़ा’ ।

पाखट्ट-वि० पाका हुआ; जो पाका जा सके ।

पाखडी-खी० बैठनेका एक आसन जिसमें दाहने और बायें पैरोंके पंजे क्रमसे बायाँ और दायाँ जाँघके नीचे दबे रहते हैं ।

पाखन-वि० [सं०] रक्षा करनेवाला । पु० रक्षा करना, रक्षण; निर्वाह करना, भरण-पोषण, परवरिश; निजाना, रंग न होने देना (जैसे प्रतिष्ठापाखन); तस्काळकी ब्यागी डुरई गायका दूध ।

पाखना-सं० कि० भोजन-वस्त्र आदि देकर बड़ा करना, भरण-पोषण करना, परवरिश करना; जीविका या मनोरंजनके निमित्त पशु-पक्षी आदिकी आहार आदि देकर अपने यहाँ रखना; उत्प्रेषण न करना, न डालना, निषाहना (आज्ञा, वचन) । पु० बच्चोंको शुरूनेके कामका एक प्रकारका छोटा छूला या हिरोला ।

पाखनीच-वि० [सं०] पाखन करने योग्य ।

पाखकिता(तु)-पु० [सं०] पाखन करनेवाला ।

पाखक-वि० [सं०] तिलचूर्णसे बना हुआ ।

पाखक-पु० पलंग, पत्ता; नया और कोमल पत्ता ।

पाका-पु० हवामें मिले हुए भापके सूक्ष्म कण जो अधिक ठंडक पकनेपर सफेद तहके रूपमें जमीनपर जम जाते हैं; धिम, गुबार, बर्फ; ठंडक, सरदी; किसी प्रकारके व्यवहारका अवसर, साधिका (‘पकना’के साथ); सदर मुकाम, सीमा-निर्देशके लिए बनाया जानेवाला मिट्टीका मैत्र या धुस; वह धुस जो कबड्डीके खेलमें हदके निशानका काम देता है; अनाज रखनेके कामका एक प्रकारका मिट्टीका गोला, कच्चा और बड़ा बरतन, डेहरी; अखाड़ा; वह स्थान जहाँ दस-पाँच आदमी ठहरे-बैठे । **मु० (किसीसे)-पकना-**साधिका होना, काम पकना ।

पाकागळ-पु० [सं०] दूत, संवादवाहक ।

पाकागळी-खी० [सं०] राजाकी चौकी और सबसे कम आदर पानेवाली मजिशी ।

पाकाज-पु० दे० ‘पकान’ ।

पाकाश-वि० [सं०] पलाश-संबंधी; पलाशका; पलाशका बना हुआ; हरा । पु० तेजपत्ता; हरा रंग । -खंड, -बंध-पु० मगध देश ।

पाकाशि-पु० [सं०] पलाश गोत्रके प्रवर्तक ऋषि ।

पाखिद-पु० [सं०] कुंडरु नामका मधुसूत ।

पाखिदी-खी० [सं०] श्यामा लता; जिह्वा ।

पाखिधी-खी० [सं०] कुण्ड जिह्वा ।

पाखिहिर-पु० [सं०] एक प्रकारका सोंप ।

पाखि-खी० [सं०] कानकी ली; किलारा; श्रेणी, पक्ति; सीमा; बाँध; पुल; प्रथम नामक परिमाण; गोद; परिधि; धम्बा; विह्व; लंबीतरा तालाब; वह नियत भोजन जो अनेवासी या छात्रकी गुरुकुलमें दिया जाता था; जूँ; वह खी जिसे पुरुषोंकी तरह दाढ़ी-मुँह आदि हो; प्रशंसा; चूतड़ । -उबर-पु० एक प्रकारका उबर । -अंग-पु० बाँधका दूटना ।

पाखिळ-पु० पाखंडी; पलंग ।

पाखिका-खी० [सं०] कानकी ली; नलवार आदिकी धार; मक्खन, पनीर आदि काटनेके कामकी छुरी; पाखन करनेवाली । वि० खी० रक्षिका ।

पाखिस्त-वि० [सं०] जिसका पाखन किया गया हो, पाका हुआ; रक्षित । पु० सिंहरका पेड़ ।

पाखिस्थ-पु० [सं०] पक्षित होनेका भाव; बालोंकी सफेदी ।

पाखिनी-वि० खी० [सं०] पाखन करनेवाली; रक्षा करनेवाली ।

पाखिहा-खी० [सं०] चिकनाई और रौनक जो एक वस्तुपर दूसरी वस्तुके रगड़नेसे पैदा होती है; वह मसाला जिसके लगानेसे किसी वस्तुपर चिकनाई और रौनक पैदा होती है । **मु०-करना-**विशेष प्रकारका मसाला लगाकर चिकना और रौनकदार बनाना ।

पाखिस्ती-खी० [सं०] मोति; बीमा-संबंधी वह प्रतिष्ठापत्र जो किसी कंपनीकी ओरसे बीमा करनेवालेको मिलता है ।

-होकर-पु० वह जिसके पास किसी बीमा कंपनीकी पाखिस्ती हो ।

पाखी-खी० तीतर, बटेर आदि ककानेकी जगह; मजदूरीके

काम करने या लेखाबिबोंके लेखनेकी शक्ति; परस वह प्रसिद्ध प्राचीन भाषा जिसमें बुद्धने अपने धर्मका उपदेश दिया था और जिसमें गौतमके धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं; [सं०] दे० 'पालि'; बटवोई।

पाकी (किन्) - वि० [सं०] पालन करनेवाला; रखा करनेवाला।

पाकीवल - पु० [सं०] एक पेड़।

पाकीवाल - पु० मारवाडी भाषणोंका एक उपाधि।

पाख - वि० पाख्द।

पाखे - ज० बचने, बचलमें। **मु० (किसीके) - पचना - चंगुलमें फँसना, काबमें आना।**

पाख - वि० [सं०] पालने योग्य।

पाखवा - खी० [सं०] टहनियोंसे लेखा जानेवाला एक खेल।

पाखविक - वि० [सं०] कैदनेवाला, प्रसरणशील।

पाखल - वि० [सं०] पखल या तलैयाका; पखल या तलियामें होनेवाला। **पु०** तलैयाका पानी।

पावे - पु० दे० 'पौव'।

पावेबा - पु० दे० 'पौवबा'।

पावेबी - खी० दे० 'पौवबी'।

पावेर - वि० दे० 'पौवर'।

पावेरी - खी० दे० 'पौवरी'।

पाव - पु० चौथा भाग; एक चौथाई; चार छट्टीकी एक तोल, एक सेरका चौथा भाग; † पैर। - **दान - पु०** दे० 'पायदान'। - **मुहर - खी०** शाहजहाँके समयका एक सिक्का जो एक अक्षरफोके चतुर्धाशके बराबर होता था।

पावक - पु० [सं०] अग्नि, आग; अग्निदेव; सूर्य; वरुण; वैष्णव अग्नि; सदाचार; भोगभूका पेड़; चीतेका पेड़; तपस्वी, तापस; भिलावों; बायविहग; कुसुम; लीनकी संख्या। **वि०** शुद्ध करनेवाला, पवित्र करनेवाला। - **अग्नि - पु०** सूर्यकांतमणि, आतशी शीशा।

पावकात्मज - पु० [सं०] कान्तिकेय; सुदर्शन नामक एक ऋषि।

पावकि - पु० [सं०] दे० 'पवकात्मज'।

पावकी - खी० [सं०] अग्निदेवकी पत्नी; सरस्वती (दे०)।

पावकुलक - पु० दे० 'पावाकुलक'।

पावती - खी० रसीद।

पावव - वि० [सं०] शुद्ध करनेवाला, पवित्र करनेवाला; शुद्ध; पवित्र। **पु०** अग्नि; वेदव्यास; विष्णु; सिद्ध पुरुष; प्रायश्चित्त; साम्प्रदायिक चिह्न; शुद्ध करनेवाली वस्तु; शुद्धि; जल; गोबर; रक्षाक्ष; कूट नामकी ओषधि; चीतेका पेड़; लोबान। - **धन्वि - पु०** शंख।

पाववा - सं० कि० प्राप्त करना; पाना; महत्त्व करना; समझना; जीमना, खाना। **पु०** दूसरेसे रुपया आदि पाने का अधिकार; वह रुपया वा द्रव्य जो दूसरेसे पाना हो।

पाववी - खी० [सं०] तुलसीका गाय गंगा; हव।

पावमान - वि० [सं०] (वह वस्तु) जिसमें वर्तमान अग्निकी स्तुति की गयी है (दे०)।

पावमानी - खी० [सं०] वर्तमान अग्नि-संर्षणी वस्तु।

पावर - पु० [सं०] वह शास या शासका पार्श्व जिसपर दो विदियों बनी हों; वह शास फँकनेका विशेष ढाँच;

[अ०] वह शक्ति जिसके बलसे मशीनें चलायी जाती हैं, बंधशक्ति (जैसे विद्युत्); अधिकार; शक्ति; सैन्यबल; शासन। - **लुप्त - पु०** बंधशक्तिसे चकमेवाका करना। - **स्टेशन - हाउस - पु०** वह स्थान जहाँ वितरणके लिए विजली तैयार की जाती है, विजलीघर।

पावली - खी० चन्वी।

पावस - पु० वर्षा ऋतु।

पावा - पु० दे० 'पवा'; गोरखपुरसे उत्तर-पश्चिममें स्थित एक प्राचीन गाँव जहाँ कुछ समयतक ठहरे थे।

पावी - खी० मैनाकी एक जाति।

पाव - पु० [सं०] सरकनेवाली गीठवाला रस्ती, तार आदि-का विशेष प्रकारका फंदा जिसमें फँसनेसे प्राणी बँध जाता है, फँस (प्राचीन कालमें बुद्धमें भी आनुपिके रूपमें पाशका प्रयोग किया जाता था); पशु-पक्षियोंकी फँसनेवाला जाल; पासा; किसी वृत्ती हुई चीजका छोर; फँसानेवाला पदार्थ, बंधन। (समाप्तमें पाश शब्द समूह, घोमा और अपकर्ष आदि युक्त करता है, जैसे-केशपाश, कर्णपाश, वैष्-पाश।) - **फंड - वि०** जिसके गलेमें फँस हो। - **कीड़ा - खी०** जुआ। - **जाल - पु०** सत्सारूपी जाल। - **बर - पाणि - पु०** वरुण। - **पीठ - पु०** पासे आदिकी बिसाल। - **बंध - पु०** फँस, फंदा। - **बंधक - पु०** चिड़ीमार। - **बंधन - पु०** जाल। - **बद्ध - वि०** पाशसे बाँधा हुआ; फँसमें फँसा हुआ। - **भृत् - पु०** पाश धारण करनेवाला, वरुण। - **मुद्रा - खी०** एक मुद्रा जो एकमें सटानी हुई दाहिं और बाँचे हाथकी तर्जनीयोंके सिरोपर एक-एक अँगूठे-की रखनेसे बनती है (त०)। - **रज्जु - खी०** शृङ्खला; रस्ती। - **हस्त - पु०** वरुण; यम। **वि०** जिसके हाथमें फंदा हो।

पाशक - पु० [सं०] पासा (समाप्तमें) फंदा, जाल। - **पीठ - पु०** पासा खेलेका स्थान वा बिसाल। **पाशव - पु०** [सं०] बंधन; रस्ती; जालमें फँसाना। **पाशव - वि०** [सं०] पशु-संर्षणी; पशुका। **पु०** पशुओंका समूह। - **पालन - पु०** चारा, शास। **पाशवासव - पु०** [सं०] एक आसन। **पाशाविक - वि०** दे० 'पाशव'। **पाशांत - पु०** [सं०] किसी पशवानेका पीठकी ओर का भाग। **पाशिक - पु०** [सं०] चिड़ीमार, बहेलिया। **पाशित - वि०** [सं०] फँसा हुआ; बद्ध।

पाशी (शिन्) - पु० [सं०] वरुण; यम; व्याध, बहेलिया। **वि०** फँदेवाला। **पाशुपत - वि०** [सं०] पशुपति-संर्षणी; शिव-संर्षणी या शिव-का; शिवका दिया हुआ, शिव-भद्रतः शिव द्वारा उक्त; जो पशुपति वा शिवके निमित्त हो। **पु०** पशुपति वा शिवका उपासक; एक प्रसिद्ध दार्शनिक मत; इस मतकी माननेवाला, इस मतका अनुयायी; बक-पुष्प। - **दर्शन - पु०** एक प्रसिद्ध दर्शन जिसमें जीवोंकी 'पशु' और शिवकी जनका अवीचर माना गया है। **पाशुपताक्ष - पु०** [सं०] एक शीघ्र अस्त्र जिसे गर्जुनने शिवसे प्राप्त किया था।

पाशुपाश - पु० [सं०] पशुपालन, पशुपालकता पैशा।

पाशुपत-पुं [सं०] यहाँ वह स्थान जहाँ बलिपशु
बोधा जाता था ।

पाशुपत-की० [सं०] बलिवेदी ।

पाश्चात्य-वि० [सं०] पश्चिमका, पच्छिमी; पच्छिमका
रहनेवाला; बायका, पिछला । पुं० पिछला हिस्सा ।

पाश्या-की० [सं०] जाल; पाशसमूह ।

पाश्व-वि०, [सं०] पुं० दे० 'पाश्वर' ।

पाश्वर, पाश्वरिक, पाश्वरी(विद्)-वि० [सं०] दे०
'पाश्वरी' ।

पाश्वर-पुं० [सं०] पैरका एक गहना ।

पाश्वर-की० दे० 'पाश्वर' ।

पाश्वर-पुं० [सं०] पत्थर, शिला । -गर्दभ-पुं० जबड़ेके
जोड़ेके पास होनेवाली कड़ी सृजन । -चतुर्वशी-की०

अमहन सुदी चोदम । -दारक, -दारण-पुं० पत्थर
काटनेकी छेनी । -भेदक, -भेदक, -भेदी(विद्)-पुं०

एक बीधा, पत्थानभेद, पत्थरचूर । वि० पत्थर तोड़ने या
काटनेवाला । -रोग-पुं० अमरी, पथरी । -संज्ञि-की०

चट्टानके भीतरकी गुफा या खाली जगह । -हृदय-वि०
जिसका दिल पत्थरकी तरह कड़ा हो, निष्ठुर, निर्दय ।

पाश्वणी-की० [सं०] पत्थरका बटखरा; माछा । वि० की०
कठोर, पत्थरका दिल रखनेवाली ।

पाश्वन-पुं० पाषाण ।

पाश्वर-पुं० [फा०] 'पासंग' तराजूकी डोंडी बराबर करने-
के लिए हलके पलकेकी ओर रखी जानेवाली वस्तु; डोंडी
का ऊपर-नीचे होना । मु० (किसीका)-भी न होना-
किसीके मुकाबलेमें कुछ भी न होना ।

पास-अ० समीप, नजदीक, दूरका उलटा; अधिकारमें;
पछे; * (किसीके) प्रति, निकट जाकर, से । * पुं० ओर,
तरफ; पासा; फौस; मेखके बाल कतरनेकी कैचीका दस्ता ।

-पास-अ० एक-दूसरेके करीब, एक-दूसरेके निकट ।

-बर्ह-पुं० हरी बुननेके कपड़े एक लकड़ी जो बुनारके
समय नीचे-ऊपर जाया करती है । -मान, -वान-पुं०

पास रहनेवाला, मेवक-जिनके धन दममान पैसियतु
पासवान'-भूषण । -वर्ती-वि०, पुं० दे० 'वार्यवर्ती' ।

-सार-पुं० दे० 'पासासार' । मु० (किसीके)-जाना-
समायम करना । -तक न फटकना-दूर हो रहना ।

-फटकना-समीप जाना । (किसीके)-बैठना-साथ
करना, सहवास करना । -बैठनेवाला-साथी, हेला-
मेली; सहवासी ।

पास-पुं० [फा०] खयाल, लिहाज; निगहबानी; रिजायत;
तौन घडेका काल, पहर । -दारी-की० तरफदारी, पक्ष-
पात । -हाँ, -वान-वि० रखवाली करनेवाला, चौकीदार,
दरवान । -बानी-की० रहण, निगहबानी ।

पास-पुं० [अ०] कहीं जानेकी लिखित आज्ञा या अनुमति;
वह टिकट या आज्ञापत्र जिसे दिखाकर रेल आदि द्वारा
बेरोक-दीक भ्रमण कर सकें । वि० जिसने पास किया हो;

जो किसी परीक्षामें सफल हो चुका हो, उत्तीर्ण, फेलका
उलटा; जो किसी कक्षा या भेगीकी पारकर जाये बड़ा हो;

स्वीकृत, मञ्जूर । -पोर्ट-पुं० विदेश जानेके लिए सरकार-
से लिया जानेवाला अनुमतिपत्र, राजदारीका परवाना ।

-डुक-की० बंक्ते मिलनेवाली वह किताब जिसमें रुपया
जमा करने आदिका हिसाब रहता है ।

पासवार्-अ० क्रि० पेन्हाना ।

पासनी-की० अन्वेषण, चढावन ।

पासा-पुं० चौसरके खेलमें फँका जानेवाला वह चौपहला
लवोतरा इड्डिका या लकड़ीका बना डुक्का जिसपर निर्धार्य

बनी होती है; पाससे खेल जानेवाला खेल, चौसर; गृही;
मुनारोंके कामका पीतल या काँसेका चौकोर लंबा ठप्पा

जिमपर गोल गड्ढे बने होते हैं । -सार-पुं० पासकी
गोदी; धामका खेल । मु० (किसीका)-पकना-पासेका

इस रूपमें गिरना जिससे किसीकी जीत हो; विरोधीको
हरानेवाला दौंव पकना; भाग्य खुलना । -पल्लवना-

चौसरमें जीत या हारका दौंव पकना; अच्छे या बुरे दिन
आना, भाग्यका अनुकूल या प्रतिकूल होना । -फँकना-

भाग्यकी परीक्षा करना, किस्मतकी आजमाइश करना ।

पासि-पुं० फँदा, बंधन ।

पासिक-पुं० फँदा; जाल ।

पासिका-की० फँदा, बंधन; जाल ।

पासी-पुं० बहेलिया; एक अस्त्रव्य जाति जिसका पेशा
सूअर पालना या ताड़ी उतारना है । की० फौस; वह

जाली जिसमें पास, भूसा आदि बाँधे होते हैं; पिछाबी ।

पासुरी-की० पसली ।

पाह-अ०-अ० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० एक सकारका पत्थर जिसपर लौंग, फिटकरी और
अफीम पिसकर औखण लगायनेका लेप तैयार किया

जाता है ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह-पुं० पास, समीप; प्रति, से ।

पिङ्गल-वि० [सं०] पिङ्ग वर्णका, लकारों लिये भूरे रंगका ।
 पु० पिङ्ग वर्ण, लकारों लिये भूरा रंग; एक प्रचीन मुनि जो छंदःशास्त्रके प्रथम आचार्य माने जाते हैं; उसका मुनि द्वारा प्रणीत छंदःशास्त्र (हि०); अग्नि; बंदरा; एक तरहका छोटा उल्लू; नेबला; रद्द; दूधका एक अनुचर; एक संवत्सर; कुबेरका एक मित्र; एक प्रकारका साँप; एक मछ; शिषका एक अनुचर; एक दानव; एक पर्वत; एक प्राचीन देश; एक प्रकारका स्थावर विष; पीतल; हरताल; एक राग; ० एक पक्षी; पपीहा-‘पिङ्गल’ पिट-पिट करे, ताकी काज न लावे-‘साखी’ -‘कौह’-पु० पीतल ।

पिङ्गला-खी० [सं०] शरीरके दक्षिण भागकी एक प्रसिद्ध नाडी; एक पक्षी; उल्लूकी एक जाति; पीतल; द्वांसमका पेश; गोरोचन; लक्ष्मी; कुट्टर नामक दिग्मन्त्री पत्नी; एक प्राचीन वेदया जो अपनी धर्मनिष्ठाके लिये प्रसिद्ध है ।

पिङ्गाक्ष-पु० [सं०] शिव । वि० दे० ‘पिङ्गाक्ष’ ।

पिङ्गलिका-खी० [सं०] बगलेकी एक जाति; उल्लूकी एक जाति; एक प्रकारकी मक्खी ।

पिङ्गलित-वि० [सं०] पिङ्गल वर्णका बनाया हुआ, पिङ्गलीकृत ।

पिङ्गा-पु० वह मनुष्य जिसके पैर डेटे हों । खी० [सं०] गोरोचन, बशरोचन; इन्दी; दुर्गा; प्रत्यक्षा ।

पिङ्गाक्ष-वि० [सं०] जिसकी आँखें लकड़ों लिये भूरे रंगकी हों । पु० शिव; हनुमान्; केकडा; नाक; बिहारी; बनमानुस ।

पिङ्गाक्ष-पु० [सं०] गौबका मालिका या मुखिया; एक प्रकारकी मछली; खरा सोना ।

पिङ्गाक्षी-खी० [सं०] नीलका पोधा ।

पिङ्गिमा(अश्व)-खी० [सं०] लकड़ों लिये भूरा रंग ।

पिङ्गी-खी० [सं०] शमीका पेश; नुहिया ।

पिङ्गोक्ष-पु० [सं०] शिव । वि० जिसके नेत्र पिङ्ग वर्णके हों ।

पिङ्गोक्ष-पु० [सं०] अग्नि ।

पिङ्ग-पु० [सं०] दे० ‘पिङ्ग’ ।

पिङ्ग-वि० [सं०] व्याकुल, बरबादया हुआ । पु० बल; बध; एक प्रकारका कपूर; चंद्रमा; समूह ।

पिङ्गट-पु० [सं०] आँखका मैल, कीचड़ ।

पिङ्गवा-पु० दे० ‘पिङ्गरा’ ।

पिङ्गल-पु० [सं०] वही धुननेकी क्रिया; धुनकी ।

पिङ्गर-वि० [सं०] लकड़ों लिये पीले रंगका; पीला । पु० लकड़ों लिये पीला रंग; सोना; हरताल; नागकेसर; पिङ्गरा; ठंडी; कंकाळ; एक प्रकारका धोखा; एक प्रकारका साँप ।

पिङ्गरक-पु० [सं०] हरताल ।

पिङ्गरा-पु० लोहे, बॉस आदिकी तीक्ष्णिका बना हुआ एक प्रकारका हथौड़ा जिसमें धारू पक्षी या पशु रखे जाते हैं; बहुत संकरी अगह; संकरी घर या कमरा (का) ।

-पीछ-पु० गोशाला ।

पिङ्गरिक-पु० [सं०] एक वाद्य (संगीत) ।

पिङ्गरित-वि० [सं०] पीले या लाल-पीले रंगमें रंगा हुआ ।

पिङ्गिमा(अश्व)-खी० [सं०] लकड़ों लिये भूरा वा पीला रंग ।

पिङ्गल-वि० [सं०] व्याकुल, बहुत बरबादया हुआ; आतं-कित । पु० हरताल; कुशका चषा ।

पिङ्गली-खी० [सं०] एकमें बंधे हुए दो गोकर्दार कुश जिन्हें बद्धमें विशेष अवसरोंपर हाथमें धारण करते हैं ।

पिङ्गा-खी० [सं०] हिंसा; बई; इन्दी; जाग्रदनी ।

पिङ्गान, पिङ्गाक्ष-पु० [सं०] सोना ।

पिङ्गिका-खी० [सं०] पूर्वी ।

पिङ्गिधारा-पु० वही ओटनेवाला ।

पिङ्गुल, पिङ्गल-पु० पिङ्गली-खी० [सं०] पत्तियोंका गुच्छ ।

पिङ्गु-पु० [सं०] कानका मैल, बूँट ।

पिङ्गेट-पु० [सं०] आँखका मैल, कीचड़ ।

पिङ्गोक्ष, पिङ्गोक्ष-खी० [सं०] पत्तोंकी सरसराहट ।

पिङ्ग-वि० [सं०] बना, ठोस । पु० गोलका; गोला; किसी द्रव्यका ठोस गोला (जैसे धृतिपिंड, अयःपिंड); देहा; मांस; पके हुए चावल, पायस आदिका गोला जिसे आद्यमें पितरोंकी अर्पित करते हैं; आहार; जीविका; दान, भिक्षा; मांस; धृति; शरीर, देहा; राशि; समूह; कोई वस्तु; मकान या घरका कोई खंभ; मकानके आगे निकला हुआ छप्पा, बरसाती; हाथीका कुंभखल; राशि, धन (अंकमं); वनव्य; (रेखागं); कोषान; बल; शक्ति; कोषा; सेना; ताजा मक्खन; पिङ्गली; जपाकुसुम । -कंठ-पु० पिङ्गाक्ष ।

-कंकटी-खी० एक तरहका पेड़ा । -कजूर-पु०,-

-खजूरिका-खजूर-खी० छोटाबेका पेश, छोटापा ।

-गोस-पु० गधरस; बोल । -ज-पु० पिङ्गके रूपमें पैदा होनेवाला जीव, जरायुज । -तैल-तैलक-पु०

कोषान । -ह-पु० पिङ्गा पारनेवाला; आहार देनेवाला ।

-हान-पु० पितरोंके निमित्त पिङ्गा पारनेका काम, पिंड देनेका काम । -निर्वपण-पु० पितरोंकी पिंडा देना ।

-पास-पु० भिक्षा देनेकी क्रिया; भिक्षादान । -पासिक

-वि०, पु० भिक्षासे जीविका चलावेनाला । -पाद,-

-पाथ-पु० हाथी । -पुष्प-पु० अशोकका पेश या फूल;

अनार; जपाकुसुम, अशुद्ध; तगरका फूल; कमल ।

-पुष्पक-पु० बघना । -फला-खी० तितलीकी ।

-बीजक-पु० कनेर । -भाक्(ज्)-पु० पिंडा पानेका

अधिकारी, पितर । -भुति-खी० जीविका । -मुस्ता-

खी० नागरमोथा । -मूल, -मूलक-पु० पात्र । -पथ-

पु० पिंडदानरूप कर्म, पिंडदान । -लेप-पु० पिंडेका

वह अंश जो पिंडदान करते समय हाथमें सटा रह जाता

है (इसके अधिकारी ब्रह्म प्रपितामह आदि तीन पितर

होते हैं) । -लोप-पु० पिंडदाताका अभाव; पिंडदानका

अभाव । -वेणु-पु० एक प्रकारका बंस । -शर्करा-

खी० ज्वारसे बनी शर्करा । -संबंध-पु० जन्म या जनक

होनेका संबंध; पिंडदाता और पिंडभोक्ता होनेका संबंध ।

-स्व-वि० एकमें मिलाया हुआ; मिश्रित । -स्वेद-पु०

गरम वस्तु । -सु-सूटना-सुटकारा मिलना । -

-पक्ष्मा-पीछे पड़ना ।

पिङ्गल-पु० [सं०] गोला; पिङ्गाक्ष नामका कंद; कोषान;

गोल नामक ग्रंथद्रव्य; गिलह; कवल; वाजर ।

पिङ्गल-पु० [सं०] पिंड बनाना; पिंडा बनाना; बाँध;

टोका ।

पिंडरक-पु० [सं०] पुनः शोध ।

पिंडरी-श्री० दे० 'पिंडली' ।

पिंडक-पु० [सं०] पुनः ।

पिंडली-श्री० टोंगका पीछेकी ओरका मांसक भाग ।

पिंडवाहीक-श्री० एक तरहका कपडा ।

पिंडस-पु० [सं०] मिट्टा द्वारा जीविका चलावेवाला, मिष्टक ।

पिंडा-श्री० [सं०] कौलादः एक प्रकारकी कस्तूरी; बंछ-पनी । पु० [हिं०] मोला; ठोस या गीले पदार्थका मोला; पके हुए चावल या पायसका वह भागसे गढा हुआ मोला जिसे पितरोंको आराममें अर्पित करते हैं; खरीर । -पानी-पु० आद आद तर्पण । मु० -पानी देना-आद और तर्पण करना ।

पिंडाकार-वि० [सं०] गोल ।

पिंडास-पु० [सं०] लोहान ।

पिंडावाहायक-पु० [सं०] पार्वण, आद ।

पिंडाव-पु० [सं०] लोहान ।

पिंडाव-पु० [सं०] लोहा ।

पिंडावस-पु० [सं०] कौलाद ।

पिंडार-पु० [सं०] क्षयणक; गोप, म्हाला; जैनोंका चरवाहा; विकसत वृक्ष; एक जुगुप्साव्यक्त शब्द; एक प्रकारका शाक; एक नाम ।

पिंडारा-पु० एक तरहका शाक ।

पिंडारी-पु० दक्षिणमें रहनेवाली एक जाति ।

पिंडावचक्र-पु० [सं०] महावर ।

पिंडाव-पु० [सं०] एक प्रकारका कंद, एक प्रकारका आद ।

पिंडाव-पु० एक प्रकारका कंद, जुयनी; एक तरहका रिताव ।

पिंडाव, पिंडावक, पिंडावण, पिंडावती(विष्) -पु० [सं०] मिष्टक ।

पिंडाव-श्री० [सं०] नाबीहोंग ।

पिंडि, पिंडी-श्री० [सं०] गोलक; गोला; पहिलेके बीचो-बीच वह बेलनके आकारका पीला अवयव जिसमें पुरी पहनायी जाती है, चक्रनाभि, चक्रमध्य; पिंडली; असोकका पेड़; करदू; छोहरा; घर, भूकान; पीठ, पीवा; वह पीठका जिसपर देवमूर्तिकी स्थापना की जाती है । -पुष्प-पु० असोकका पेड़ । -लेख-पु० एक प्रकारका लेख या चबदन । -खूर-वि० घर बैठे-बैठे नीरताका दम भरनेवाला, गेहेश्वर ।

पिंडिका-श्री० [सं०] दे० 'पिंकि'; गोलाकार शोध, गिल्ली ।

पिंडित-वि० [सं०] जिसे पिंडका रूप दिया गया हो, पिंडाकार बनाया हुआ; जो रूपेणकर पिंडाकार बनाया गया हो; गुप्ता किया हुआ, गुणित; गिना हुआ, गणित; मिश्रित । पु० लोहान । -ह्रस्व-वि० ह्रस्वसे पूर्ण । -स्नेह-वि० जिसमें गाढ़ी वस्त्र भरी हो (जैसे मेजरा) ।

पिंडितार्थ-पु० [सं०] सारांश, सविताथ ।

पिंडितार्थ-श्री० गाढा किन्ने हुए जखे रस या भाव, आँखें आदिसे गूदेका झुट्टीसे दबाकर बनाया हुआ छोटा पिक ।

पिंडित-वि० [सं०] जिसकी पिंडिकाएँ बनी हों; जो गणना करनेमें कुशल हो । पु० सेतु, पुल; बौध; दैवद, गणक ।

पिंडी(विष्)-वि० [सं०] पिंडेका भागी, पिंडा प्राप्त करने-वाला (पितर); खरीरखरी । पु० मिष्टक; पिंडधान करनेवाला ।

पिंडीकरण-पु० [सं०] पिंडाकार बनाना, पिंडका रूप देना ।

पिंडीतक-पु० [सं०] मैनकक; तगर ।

पिंडीभवण-पु० [सं०] पिंडाकार होना या बनाया जाना ।

पिंडीर-पु० [सं०] अनारका पेड़; समुद्रफेन । वि० शुष्क, नीरस ।

पिंडुरी, पिंडुली-श्री० दे० 'पिंडली' ।

पिंडुक-पु० पंडुक; लवङ्ग ।

पिंडोवकिया-श्री० [सं०] पिंडधान और तर्पण ।

पिंडोवरण-पु० [सं०] साथ-साथ पिंडधान करना, मिलकर पिंडा धारना ।

पिंडोपजीवी(विष्)-वि० [सं०] दूसरेके दिने हुए टुकड़ोंसे जीवननिर्वाह करनेवाला ।

पिंडोल-श्री० पीली मिट्टी ।

पिंडोलि, पिंडोलिका-श्री० [सं०] जूठन ।

पिंडक-पु० दे० 'पिंय' । वि० प्यारा; सुंदर ।

पिंडना-सं० कि० दे० 'पीना' ।

पिंडरी-वि० पीला ।

पिंडरवा-पु० बति, स्वामी । वि० प्यारा ।

पिंडराह-श्री० पीलापन ।

पिंडरी-श्री० हल्दी या पीले रंगमें रंगी हुई धोती; पीछिया रोग । * वि० श्री० पीली ।

पिंडाज-पु० दे० 'प्याज' ।

पिंडाना-सं० कि० दे० 'पिणाना' ।

पिंडार-पु० दे० 'प्यार' ।

पिंडारा-वि० दे० 'प्यारा' ।

पिंडासा-श्री० दे० 'प्यास' ।

पिंडासा-वि० दे० 'प्यास' ।

पिंड-पु० प्रियतम, कोत ।

पिंडनी-श्री० पुनी ।

पिक-पु० [सं०] कोकिल, कोयल । [श्री० 'पिकी']-प्रिया-श्री० मध्याह्न । -शु-पु० आमका पेड़ । -बांधव-पु० वसत कतु । -अज्ञा-श्री० भूमिजंद् । -शय, -मल्ल-पु० दे० 'पिकनपु' ।

पिकांग-पु० [सं०] चासक ।

पिकाव-वि० [म०] जिसकी आँखें कोयलकी आँखोंके समान हों । पु० टौचनी; ठाकमछाना ।

पिकानंद-पु० [सं०] वसंत कतु ।

पिकेक्षणा-श्री० [सं०] दे० 'कोकिलाक्ष' ।

पिक्क-पु० [सं०] हाथीका बन्हा; नीस नरसका हाथी; तेरह मोतियोंकी वह लकी जिसका वजन एक धरण हो ।

पिक्कना-अ० कि० दे० 'पिक्कना' ।

पिक्कना-अ० कि० किसी ठोस पदार्थका खरनी पाकर तरह होना, तापने इत्थीभूत होना; दयासे आर्द्र होना, पसीजना ।

पिचकाना-स० कि० गरमी पहुँचाकर किसी ठोस पदार्थ-की तरह बनाना; दयासे आर्द्र करना ।

पिचड़, पिचिड़-पु० [सं०] उदर, पेट; किसी जानवरका कोई अंग ।

पिचंडक, पिचिंडक-वि० [सं०] औसरीक, पेट ।

पिचंडिक, पिचिंडिल, पिचिंडी(विज्)-वि० [सं०] सुदिल, तोंदवाला ।

पिचंडिका-झी० [सं०] पिचडी ।

पिचर्-झी० दे० 'पीच' ।

पिचर्-झी० दे० 'पिचकारी' ।

पिचकना-अ० कि० दे० फूले या उमरे हुए तलका भीतर की ओर दबना, फुलाना या उमरसे रहित होना, बैठ जाना; सिङ्कना ।

पिचकवाना-स० कि० पिचकानेमें प्रवृत्त करना ।

पिचकर्-पु० बड़ी पिचकारी ।

पिचकाना-स० कि० फूले या उमरे हुए तलको नीचा करना ।

पिचकारी-झी० एक प्रसिद्ध पोला वंश जिसके निचले निचेपर एक या बनेक छोटे छेद होते हैं और जिसके द्वारा पानी या अन्य किसी तरह पदार्थको खींचकर बाहर फेंकते हैं । **झुं-झुटना**-किमी तरह पदार्थका किसी स्थानमें पिचकारी द्वारा फेंके जानेवाले जलकी तरह बाहर निकलना । -**छोड़ना**-किमी द्रव पदार्थको पिचकारीमें भरे पानीकी तरह बाहर निकालना ।

पिचकी-झी० पिचकारी ।

पिचपिचा-वि० विपचिपा; गुरुगुरु ।

पिचपिचाना-अ० कि० पाव आदिमें पंछा निकलना, धाव आदिका आर्द्र होना ।

पिचपिचाहट-झी० पिचपिचानेका भाव ।

पिचलनार्-स० कि० 'कुचलनार्' ।

पिचल्य-पु० [सं०] कपासका पोथा ।

पिचास-पु० दे० 'पिशाच'-हरि बिच डारे अंतरा माया बधे पिचास'-साजी ।

पिचु-पु० [सं०] कपासकी रई; दो तोलैका एक परिमाण, कथं; कोढ़का एक भेद; एक असुर; एक प्रकारका जनाव । -**तूल्**-पु० कपासकी रई । -**मंद**, -**मर्द**-पु० नीमका पेड़ ।

पिचुक-पु० [सं०] मैनफलका पेड़ ।

पिचुकिर्-झी० छोटी पिचकारी; एक प्रकारकी गुथिया जिसमें केवल गुड़ और सोंठ भरी जाती है ।

पिचुकर, पिचूकर-पु० पिचकारी; मोलापा ।

पिचुल-पु० [सं०] कपासकी रई; सामका पेड़; जलकौआ ।

पिचोतरसी-वि० सीसे पॉच अधिक । पु० सी और पॉचकी संख्या, १०५ ।

पिचट-वि० [सं०] दबाकर चिपटा किया हुआ; निचोड़ा हुआ । पु० सीसा; रौंगा; औंस आनेका रोग ।

पिचा-झी० [सं०] सोलह मोतियोंकी लकी जिसका बजन एक धरण हो (मोतियोंका एक परिमाण) ।

पिचिद-पु० [सं०] एक विषैका बीजा ।

पिचिद-वि० [सं०] दे० 'पिचट' ।

पिच्छ-पु० [सं०] रूख; कलाप, मरूचुच्छ; चूषा, कलमी; पंछ; रूखपरके पंछ; बाणमें लगा हुआ पंछ । -**पाव**-पु० पैरका एक रोग । -**बाण**-पु० बाणपट्टी । -**छतिका**-झी० रूखपरके पर ।

पिच्छक-पु० [सं०] रूख; रूखपरके पर (समासांतमें) ।

पिच्छक-वि० [सं०] फिसलानेवाला, चिकना; † पिच्छका । पु० वायुकिने वंशका एक नाम; शीशम; अकासवेष्ट; मोचरस ।

पिच्छा-झी० [सं०] मोचरस; कचब; कोष; आवरण, खोल; सुपारी; केला; माँष; राशि; पंक्ति; बोरेके पैरका एक रोग; कोकिला; फणिलाका; शीशमका पेड़; निर्मलीका पेड़; अकासवेष्ट; पिच्छी ।

पिच्छाचा-पु० [सं०] चिकनी लार ।

पिच्छिका-झी० [सं०] मोरपंछका गुच्छ ।

पिच्छितिका-झी० [सं०] शीशमका पेड़ ।

पिच्छिक-वि० [सं०] फिसलनवाला, चिकना; रूखवाला, दुमदार; चूषावृत्त, कलपीवाला । पु० माँष; दाह, कटी आदि स्निग्ध व्यंजन; लसीसेका पेड़ । -**च्छदा**, -**दछा**-झी० उपोदकी, पोय; रेर । -**खच्**(ख्)-पु० नारंगीका पेड़ या उसका छिलका; भवन वृक्ष । -**सार**-पु० मोचरस ।

पिच्छिक-पु० [सं०] भवन वृक्ष; मोचरस ।

पिच्छिका-झी० [सं०] शीशमका पेड़; सेमल; एक प्राचीन नदी; अलसी; तालमखाना; शूलोदुग्ध; पोय; दृक्षिकाणी; अरवी । वि० झी० दे० 'पिच्छिक' ।

पिछ-'पीछा'का समासमें प्रयुक्त लघुरूप । -**कना**-पु० पीछे-पीछे चलनेवाला; अनुगमन करनेवाला, अनुयायी; आभयमें रहनेवाला; सेवक, दास । -**कनी**-झी० पिछ-लगा होनेका भाव; अनुगमन; अनुयायिनी; सेविका । -**क्यू**, -**क्यू**-पु० दे० 'पिछलगा' । -**कची**-झी० बोरे, गधे आदिका पीछेकी ओर लात मारना । -**बाई**-झी० पीछेकी ओर लगाया जानेवाला परदा । -**बाबा**, -**बारा**-पु० मकानका पिछला भाग, घरका पीछेकी ओरका भाग; मकान या घरके पीछेकी जमीन ।

पिछनार्-अ० कि० पीछे रह जाना, बराबरीमें या आगे न रहना ।

पिछलनार्-अ० कि० पीछे हटना या मुड़ना (क०) ।

पिछलपाई-झी० जुबैल (जिसके पैरका पंजा पीछेकी ओर माना जाता है); जादूगरनी ।

पिछल-वि० पीछेकी ओर पड़नेवाला, जो पीछेकी ओर हो, 'अगला'का उलटा; जो क्रममें किसीके पीछे पड़े या हो; जिसके आगे और कोई हो; जो अतमें हो या पड़े; बादका, परवर्ती; बीता हुआ, न्यतीत; पुराना; जो किसी वस्तुके अंतिम भागसे सम्बद्ध हो; अंतिम भागका; ठीक पीछेका । पु० पिछले दिनका पाठ; पिछला पाठ; वह खाना जिसे रोजा रखनेवाले मुसलमान बहुत तश्किल खाते हैं ।

पिछाई-झी० पृष्ठभाग, पीछेका भाग; बोरेके पिछले पैरोंकी झुँटेसे बाँधनेकी रस्ती ।

पिछार्-झी० दे० 'पछाचा' ।

विद्यानाम-सं किं 'पदवानना'।

विद्यारी-सं दे० 'विद्यारी'।

विद्येकना-सं किं (पका देकर) पीछे कर देना।

विद्यी-वि० जिसने अपना मुँह पीछेकी ओर फेर लिया हो।

विद्यी-वि०-अ० पीछेकी ओर।

विद्यी-वि०-अ० पीछेकी ओर।

विद्यी-वि०-अ० दे० 'विद्योरी'।

विद्यी-वि०-अ० पीछेकी ओर; पीछेकी ओरसे।

विद्यी-वि०-अ० दुपट्टा, उसरीय।

विद्यी-वि०-अ० बिनोकी ओड़नी; ऊपरसे ओढ़ा जानेवाला कोई वस्त्र, ओड़नी।

विद्यी-वि०, विद्यी-वि०-अ० [सं०] इन्द्रवाणी।

विद्यी-वि०-अ० पीछेकी क्रिया; मार, पिटाई।

विद्यी-वि० [सं०] पिटाई; संतुका; मकान; छत; शोपरी।
अ० [हिं०] एक शब्द जो कभी और छोटी वस्तुके हलके आघातसे उत्पन्न होता है। -विद्यी-अ० दो या अधिक बार उत्पन्न किया हुआ 'पिट' शब्द।

विद्यी-वि० [सं०] पिटाई; वस्त्र; आभूषण आदि रखनेकी पिटाई, शोपी; बखारी; कुशिया; एक प्रकारका आभूषण जो इद्रकी ध्वजापर है; विशेष प्रकारकी रचनाओंका समूह (छपपिटक, बिनयपिटक)।

विद्यी-वि० [सं०] कुशिया; पिटाई।

विद्यी-अ० किं पीटा जाना; मार खाना; पछाड़ दिया जाना, हार, मात खाना-‘हस चुनाबमें कैथलिक लोग सुरी तरह पिटी’। बजाया जाना; बजना। † पु० पीटनेका औजार, धापी।

विद्यी-वि०-अ० किं लुत्कार होकर रह जाना।

विद्यी-वि०-अ० दे० 'पिटाई'।

विद्यी-वि०-सं किं किसीके पीटे जानेका कारण होना; बजाना; किसीकी पीटनेमें प्रवृत्त करना।

विद्यी-वि०-अ० पीटनेकी क्रिया; मारनेकी क्रिया; पीटनेकी वजहतर।

विद्यी-वि० [सं०] पिटाई; वस्त्र; एक मुनि।

विद्यी-वि०-अ० मारपीट।

विद्यी-वि०-अ० बॉस, बैत आदिकी तालियोंसे बना हुआ बिम्बेकी शक्का पात्र; † शुभ्वा।

विद्यी-वि०-अ० छोटा पिटाई; पानदान। सु०-का खर्च-बिनोका पानदानका खर्च, जेबखर्च; किसी स्त्रीकी व्यभिचारकी कमाई।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] पिटाईका समूह।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] दाँतकी पपड़ी, दंतकिट्ट।

विद्यी-वि०-अ० शोक-विह्वल होकर छाती पीटना। सु०-पक्का, मक्का-बहुतोंका या सारे कुटुंबका एक साथ छाती पीटना, कुहराम मचाना।

विद्यी-वि०-अ० जिसपर प्रायः मार पड़े, जो प्रायः मारा-पीटा जाय।

विद्यी-वि०-अ० दे० 'पीठी'।

विद्यी-वि०-अ० पीछे-पीछे चलेबाज, अनुगामी (निदा); सहायक, समर्थक; सुशामरी; साध-साध लेकनेवाला, लेक-

का साथी; किसी खिलाड़ीका बह कल्पित साथी जिसके स्थानपर वह अपनी बारी समाप्त कर फिर खुद ही खेलता है।

विद्यी-वि०-अ० गंगालेका पीठकी तरफका भाग।

विद्यी-वि० [सं०] एक प्रकारका घर या कमरा; मोथा; एक अग्नि; मधानी; बटलोई; एक दानव। -पाक-पु० पाकका एक प्रकार (नैयायिकोंका यह सिद्धांत है कि धनेके आगमें पकते समय उसके परमाणु अलग-अलग नहीं होते, प्रत्युत छिद्रोंमें होकर गरमी परमाणुओंके रंगको बदल देती है, अतः धनेका पाक होना है, परमाणुओंका नहीं)।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] कड़ाही; पात्र; एक नाम। -कपाक-पु० वरतनका टुकड़ा।

विद्यी-वि०, विद्यी-वि०-अ० [सं०] बटलोई; हाँकी।

विद्यी-वि०-अ० एक प्रसिद्ध जता जो दवाने काम आती है, प्रशिक्षण।

विद्यी-वि०-अ० दे० 'पिटवन'।

विद्यी-वि०-अ० पीठीसे तैयार की हुई कोई भीज्य वस्तु (पकोड़ी आदि)।

विद्यी-वि०, विद्यी-वि०-अ० [सं०] कुशिया, फुंसी।

विद्यी-वि०-अ० मुशिया नामक पकवान।

विद्यी-वि०-अ० कुशिया; † एक पक्षी, पट्टक।

विद्यी-वि०-अ० चावलके गुंथे हुए आटेका लंबोतरा टुकड़ा जिसे जलमें उबालकर खाते हैं।

विद्यी-वि०-अ० छोटा पीठा; पीठकी तरहका वह आधार जिसपर कोई छोटा यंत्र रखा जाय, बैलगाड़ीके ढाँचेमें पीछे और आगेकी ओर लगी हुई लकड़ीका ढाँचेके बाहर दोनों ओर निकला हुआ भाग।

विद्यी-वि०-अ० सधिया; दे० 'पीठी'।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] मालकैंगनी।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] खन्नी; हाँगा; लोबान; कंसर।

विद्यी-वि०-अ० दे० 'पीठावर'।

विद्यी-वि०-अ० एक झुप जो दवाने काम आता है।

विद्यी-वि०-अ० श्रुत पूर्वज; प्रेतत्वमें छूटे हुए पूर्वज जिन्हें पिता-पानी दिया जाता है। -पति-पु० धमराज।

विद्यी-वि०, विद्यी-वि०-अ० वह कसाव जो पीतलके बरतनमें खटाई रख देनेसे या अधिक देरतक अभ्यस्तु रख देनेसे उसमें उत्पन्न हो जाता है।

विद्यी-वि०-अ० पीतलका बना हुआ, पीतलका। पु० पीतलका वस्त्र।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] किसीके संबंधमें वह व्यक्ति जिसके वीर्यसे उसकी उत्पत्ति हुई हो, जनक, बाप; (समासके लिये दे० 'पितृ')। -पुत्र-पु० पिता और पुत्र, बाप और बेटा।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] दादा; जहाज; पितर।

विद्यी-वि०-अ० [सं०] दादी।

विद्यी-वि०-अ० शत्रुदोषी तरहका एक पेड़।

विद्यी-वि०-अ० चाचा। -ससुर-पु० ससुरका मार्ग, चंचिया ससुर। -सास-अ० ससुरके भाईकी स्त्री, चंचिया सास।

विद्यी-वि०-अ० चाची।

विद्यी-वि०-अ० पिता। -मातु-पु० पिता और माता।

पितृ-पुं [सं०] दे० 'पिता'; भरे हुए पुराने; वेतलते हुए पूर्व । -**कथ-पुं** एक प्रकारका शास्त्रोक्त मण जिसमें मनुष्य पुत्र उत्पन्न करनेपर झुक होता है । -**कर्म(श्च)**, -**कार्य**, -**कृत्य-पुं** आद्य, तर्पण आदि जो पितरोंके निमित्त किये जाते हैं । -**कृत्य-पुं** आद्यादि कृत्य । वि० जो पिताके समान हो; पितृगुण । -**कानन-पुं** इमशान । -**कुल-पुं** पिताके वंशके लोग । -**कुलवा-कीं** मलय पर्वतसे निकलनेवाली एक नदी । -**किवा-कीं** दे० 'पितृकर्म' । -**गण-पुं** पितरा मरीचि आदि कथियोंके पुत्र, अधिष्ठाता आदि । -**गणा-कीं** दुर्गा । -**गाथा-कीं** पितरों द्वारा पढ़ी गयी विशेष प्रकारकी गथा (पुराणभेदसे ये गाथाएँ भी भिन्न-भिन्न हैं) । -**गामी(मित्र)-वि०** पिता संबंधी । -**गृह-पुं** मायका, नैहर; इमशान । -**ग्रह-पुं** स्कंद आदि भी बालग्रहोंमेंसे एक (सूत्र) । -**घात-पुं** पिताकी हत्या करना । -**घातिक**, -**घाती(सिद्ध)-वि०**, पुं पिताका वध करनेवाला । -**तर्पण-पुं** पितरोंके निमित्त किया जानेवाला तर्पण; अंगुष्ठ और तर्जनीके बीचका स्थान जिसके द्वारा तर्पण समर्पित करनेका विधान है; तिल; आद्यके समय दान की जानेवाली वस्तुएँ । -**तिथि-कीं** अमावस्या । -**तीर्थ-पुं** गया आदि तीर्थ; अंगुष्ठ और तर्जनीके बीचका भाग जिसके द्वारा तर्पणका जल या पित्र समर्पित करना विहित है । -**दत्त-वि०** पिताका दिया हुआ । -**दान-पुं** पितरोंके निमित्त किया जानेवाला दान, निवाप । -**दाय**, -**द्वय-पुं** पितासे प्राप्त संपत्ति, मौकसी जायदाद । -**दिव-पुं** अमावस्या । -**दैव-पुं** अधिष्ठाता आदि पितर; पितारूपी देवता । वि० जो पिताकी देवगुण माने । -**दैवत-वि०** जिसके अधिष्ठाता पितर हैं; जिसका संबंध पितरोंकी पूजासे हो । पुं मया नक्षत्र । -**दैवत्य-वि०** पितरोंकी पूजासे संबंध रखने वाला । पुं अष्टका (विशेष मासोंकी अष्टमी)के दिन किया जानेवाला पितृहृत्य । -**माय**, -**पति-पुं** यमराज; अर्थात् नामक पितर । -**पक्ष-पुं** आधिनका कृष्ण पक्ष जिसमें पितृहृत्य करना प्रशस्त माना गया है; पिताका कुल, पितृकुल; पितृकुलका मनुष्य; पिता, पितामह और प्रपितामह । -**पद्-पुं** पितरोंका लोक; पिता या पितरका दर्जा । -**पिता(श्च)-पुं** पितामह । -**प्रसू-कीं** पितामही, दादी; सायकाल, संघ्या । -**प्रास-वि०** पितासे मिला हुआ । -**प्रिय-पुं** अंगरैवा । -**बंधु-पुं** वह जिससे पिताके संबंधसे रिश्ता हो (जैसे पिताके मामाका पुत्र) । -**भक्त-वि०** पिताका भक्त, पिताकी वयोवित सेवा करनेवाला । -**भक्ति-कीं** पिताके प्रति भावर और यथोचित सेवाका भाव । -**भोजन-पुं** पितरोंका भोजन; पितरोंका भोज्य पदार्थ, उखर । -**भ्राता(श्च)-पुं** नाचा । -**भंडिर-पुं** दे० 'पितृगृह' । -**मात्रार्थ-वि०** पिता-भ्राताके लिए सीधे भागनेवाला । -**मेघ-पुं** एक प्रकारका पितृकर्म । -**वक्ष-पुं** पितृतर्पण । -**बाण-पुं** वह मार्ग जिससे पितर चंद्रलोकको जाते हैं । -**राज-राष्ट्र(श्च)-पुं** यम । -**रूप-पुं** शिव । -**लोक-पुं** वह लोक जिसमें पितर निवास करते हैं, पितरोंका

लोक । -**ईश-पुं** पिताका कुल । -**वध**, -**सह(श्च)-पुं** इमशान । -**वसति-कीं** इमशान । -**विश्व-पुं** गाप-वादीकी संपत्ति, मौकसी जायदाद । -**वेदन(श्च)-पुं** पिताका घर, मायका । -**विस्मयन-पुं** आश्चर्यपूर्ण अभावस्थानके दिन पितरोंकी विचारका कृत्य । -**व्रत-पुं** पितृकर्म; पितरोंकी पूजा करनेवाला । -**व्याध-पुं** पितरोंके निमित्त किया जानेवाला आद्य । -**वदन-पुं** कुश । -**व्यसा**, -**स्वसा-कीं** बुना । -**व्यसीव**, -**स्वसीव-पुं** कुंभेरा भारी । -**सू-कीं** पितामही, दादी; सायकाल, संघ्या । -**स्वाप्त**, -**स्नानीय-पुं** वह जो पिताके स्नानपर हो, अधिष्ठाता, संरक्षक । -**हृत्वा-कीं** पिताकी हत्या । -**हा(हृत्)-वि०**, पुं पिताकी हत्या करनेवाला । -**हृ-पुं** दाहना कान ।

पितृक-वि० [सं०] पैतृक, पितासे प्राप्त ।

पितृता-कीं, **पितृत्व-पुं** [सं०] पिता होनेका भाव ।

पितृवनेश्वर-पुं [सं०] मृत-प्रेता शिव ।

पितृष्व-पुं [सं०] नाचा ।

पितृविद्या-पुं दे० 'पितृविद्या' ।

पितृ-पुं [सं०] शरीरके तीन प्रसिद्ध दोषोंमेंसे एक (वह नीलापन लिये पीले रंगका और कच्चा होता है) । -**कर-वि०** जो पितृ उत्पन्न करे, बढ़ावे । -**कास-पुं** पितृके प्रकोपसे होनेवाली खाँसी । -**कोष-पुं** पितृकी यैली, पिताशय । -**कोम-पुं** पितृका प्रकोप । -**गदी(हिन्)-वि०** जिसे पितृज रोग हुआ हो । -**गुह्य-पुं** पितृकी अधिकतासे उदरका फूलना । -**ग्र-वि०** पितृका नाश या शमन करनेवाला । -**ग्री-कीं** गुडुक । -**ज-वि०** जिसका कारण पितृ हो; पितृके प्रकोपसे होनेवाला । -**ज्वर**, -**दाह-पुं** पितृके प्रकोपसे होनेवाला ज्वर । -**द्राक्षी(विन्)-वि०** पितृकी पिघलनेवाला । पुं मीठा नीबू । -**नाडी-कीं** एक तरहका नाडी-ज्वर । -**मासक-वि०** पितृका नाश या शमन करनेवाला । -**निवर्हण-वि०** पितृनाशक । -**पथरी-कीं** [हिं०] पितृज्वरमें बननेवाली पथरी । -**पांडु-पुं** पितृविकारमें उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें नेत्र आदि पीले हो जाते हैं, पीलिया । -**पापदा-पुं** [हिं०] पितृपापका । -**प्रकृति-वि०** जिसके शरीरमें पितृकी प्रधानता हो । -**प्रकोप-पुं** पितृका बढ़ जाना या कुपित हो जाना । -**मेघज-पुं** मल्लकी दाह । -**रक्त-पुं** रक्तपित नामक रोग । -**बाधु-कीं** पितृके प्रकोपसे पैटमें बाधुका पैदा होना । -**विषरथ-वि०** पितृके प्रकोपसे आकांत । -**विषर्प-पुं** विषर्प रोगका एक भेद । -**व्यधि-कीं** पितृके प्रकोपसे उत्पन्न रोग । -**क्षमन**, -**हर-वि०** पितृके प्रकोपकी दूर करनेवाला । -**शूल-पुं** पितृके प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला शूल रोग । -**शोच-पुं** पितृज शोच । -**संसाधन-पुं** चंदन, लालचंदन, नेत्ररत्न आदि पितृनाशक औषधियोंका समूह । -**स्वाप्त-पुं** दे० 'पितृकोष' । -**स्वद्वज-पुं** एक पितृजन्य नेत्र-रोग । -**हा(हृत्)-वि०** पितृकी मारनेवाला । पुं पितृपापका । पुं -**उच्छ्रया** या **लौक्य** -बहुत अधिक क्रोध माना ।

विप्लवक-पु० [सं०] आलवीन, 'पिन', चूनुक; सोनेका तागा ।
 विप्लव-खी० [सं०] एक प्राचीन नदी ।
 विप्लवद-पु० [सं०] एक कवि । वि० गोदा खाकर रहनेवाला ।
 विप्लवसाधन-वि० [सं०] गोदा खाकर रहनेवाला ।
 विप्लवि-खी० [सं०] पीपल नामकी ओषधि ।
 विप्लवी-खी० [सं०] दे० 'विप्लवि' । -झूठ-पु० पीपर-
 की जड़, विपरामूल ।
 विप्लवीका-खी० [सं०] पीपलका छोटा पेड़ ।
 विप्लिका-खी० [सं०] दाँतिपर जमनेवाली पपड़ी ।
 विप्लीक-पु० [सं०] एक पक्षी ।
 विप्लीका-खी० [सं०] एक पक्षी ।
 विप्लु-पु० [सं०] ससा, तिल ।
 विष-पु० म्रियतम, कांत, पति ।
 विषर-वि० पीला । -ई-खी० दे० 'वियराई' ।
 विषराई-खी० पीलापन ।
 विषरवाँ-पु० म्रियतम, कांत ।
 विषराना-अ० कि० पीला होना, पीला पड़ना ।
 विषरी-वि० खी० पीली । खी० पीली धोती; पीलापन;
 एक तरहका पीला रंग; † पीछिया नामक रोग ।
 विषरीका-पु० मैनामें कुछ छोटे आकारकी पीले रंगकी
 एक चिड़िया ।
 विषरु-पु० * दुधमुँहों बच्चा; † विषरीका ।
 विषवास, विषावर्षा-पु० कटहरवा ।
 विषा-पु० दे० 'विष' ।
 विषाज-पु० दे० 'व्याज' ।
 विषाजी-वि० दे० 'व्याजी' ।
 विषावा-पु० दे० 'व्यावा' ।
 विषावा-सं० कि० पिलाना ।
 विषानो-पु० [अ०] मेनके आकारका एक मसिद्ध अंग्रेजी
 बाना ।
 विषामन-पु० राजबामन नामका इक्षु ।
 विषार-पु० दे० 'वियाल'; † दे० 'व्यार'; पयाल । वि०
 व्यारा ।
 विषारा-वि० व्यारा ।
 विषाल-पु० [सं०] जिर्राजीका पेड़ या उसका फल ।
 विषाला-पु० दे० 'व्याल' ।
 विषावबहा-पु० एक तरहकी मिठाई ।
 विषास-खी० व्यास ।
 विषासा-वि० दे० 'व्यासा' ।
 विषासाह-पु० बड़ेबड़ेकी आसिका एक जंगली पेड़ ।
 विषासी-खी० एक मछली ।
 विषूच, विषूच-पु० दे० 'पीषू' ।
 विषकी-खी० फुफिया, कुंती ।
 विषता-पु० काठ या लकड़का बड़ टुकड़ा जिसपर रखकर
 पानी ढकावी जाती है ।
 विषी-खी० दे० 'पृषी' । -माया-पु० दे०
 'पृषीनाय' ।
 विषाई-खी० पीलापन, जर्दी ।

विषाक-खी० गुप्तिना जैसा एक पकवान ।
 विषाका-अ० कि० दरई करना; दरईका अनुभव करना;
 किसीके दुःखसे दुःखी होना ।
 विषारा-पु० डाकू, लुटेरा ।
 विरीतम-पु० म्रियतम ।
 विरीता-वि० व्यारा ।
 विरीति-खी० प्रीति ।
 विरीजवा-पु० कनछेदन ।
 विरीजा-पु० बरापन किये नाने रंगका एक बहुमूल्य पत्थर,
 कीरोन्ना ।
 विरीवा-सं० कि० सूर्यके छेदमें भागा डालना; किसी
 बारीक छेदमें कोई चीज डालना; बोरमें मनका आदि
 पड़ना ।
 विरीका-पु० दे० 'विषरीका' ।
 विरीका-सं० कि० 'विरीना' ।
 विरई, विरही-खी० बरबड़ ।
 विरक-पु० एक पीले रंगका, मैनासे कुछ छोटा पक्षी,
 विषरीका; अलकक कन्तर ।
 विरकना-सं० कि० गिराना; ढकेलना । अ० कि० बिहना;
 बिहका भागना ।
 विरकिवा-खी० एक पीलीसी छोटी चिड़िया ।
 विरचना-अ० कि० पिल पड़ना; बिड़ जाना, बिपटना ।
 विरना-अ० कि० किसी ओर वेगसे प्रवृत्त होना; पुस
 पड़ना; झुक पड़ना; लपट होना; (किसी काममें) जी-
 जानसे लग जाना * किसी ओर वेगसे झपटना; पेरा
 जाना ।
 विरपिला-वि० दे० 'पिलपिला' ।
 विरपिला-वि० बहुत नरम, पिचपिच । -इट-खी०
 पिलपिला होनेका भाव ।
 विरपिलाना-सं० कि० बारों ओरसे इस प्रकार ढराना
 कि पिलपिला हो जाय वा भीतरका रस वा गूदा बाहर
 निकल पड़े ।
 विरवाना-सं० कि० किसीको पिलानेमें प्रवृत्त करना;
 पिलानेका काम कराना; पेरनेका काम कराना ।
 विरवाना-सं० कि० पीनेमें प्रवृत्त करना; पान कराना;
 पीनेको देना; किसी तरह पदार्थकी किसी छेदमें डालना;
 भीतर भरना । (कोई बात पिलाना-दिलमें बैठाना ।)
 विरुवा-पु० दे० 'पुकिदा' ।
 विरु-पु० [सं०] पीपलका पेड़ । -पर्णी-खी० सूती कता ।
 विरु-पु० [सं०] दे० 'विष्ठ' ।
 विरुनी-खी० [सं०] सूती कता ।
 विरु-वि० [सं०] जिसके नेत्र क्लेशयुक्त हों । पु० ऐसा
 नेत्र ।
 विरुका-खी० [सं०] इजिनो ।
 विरु-पु० कुत्तेका नर बच्चा; † कुत्ता । [खी० 'पिलो']
 विरु-पु० एक प्रकारका सफेद लंबा कीड़ा, डोला ।
 विष-पु० म्रियतम, कांत ।
 विषाना-सं० कि० दे० 'पिलाना' ।
 विर्णव-वि० [सं०] कलाई किये मुरे रंगका । पु० कलाई
 किये मुरा रंग ।

विश्वग-पु० [सं०] विष्णु का विष्णुका अनुचर ।
विश्वगिष्ठा-खी० [सं०] एक तरहकी मित्र बाहु, कौंसा ।
विश्वीसी (मित्र)-वि० [सं०] कर्माई किये भूरे रंगका ।
विश्व-वि० [सं०] पापसे मुक्त; अनेक रूपोंवाला, बहुरूप ।
विश्वक-पु० [सं०] दस प्रकारकी देवयोनियोंमेंसे एक,
 एक निम्न देवयोनि; प्रेत; दुष्ट मनुष्य (का०) ।—**शुद्धीतक-**
पु० वह जो विश्वकसे आविष्ट हो ।—**ज-वि०** विश्वकौका
 नाश करनेवाला । पु० पीली सरसों (इसका उपयोग प्रायः
 औषध करते हैं) ।—**चर्पा-खी०** इमशान-सेवक ।—**हु,**
हृक्ष-पु० तिहोरका पेड़ ।—**पति-पु०** शिव ।—**बाचा-**
खी० विश्वक द्वारा आविष्ट होना ।—**भाषा-खी०** वैशाखी
 प्राकृत जिसका प्रयोग संस्कृतके नाटकोंमें मिलता है ।
—मोचन-पु० एक तीर्थ (स्कंद पु०); काशीका एक
 तालाब जिसके किनारे गया करनेवाले हिंदू बानी पिंवा
 पारते हैं ।—**बद-वि०** जिसका मुँह विश्वककासा हो ।
—संसार-पु० विश्वकबाषा ।

विशाचक-पु० [सं०] विश्वाच ।
विशाचकी (किन्)-पु० [सं०] कुहेर ।
विशाचांगना-खी० [सं०] विशाखी ।
विशाचालय-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ कास्फोरसके
 कारण अँधेरेमें प्रकाश हुआ करे ।
विशाचिका-खी० [सं०] विश्वाच; विश्वाचकी खी; एक
 प्रकारकी अदमासी; वैशाचिका आसक्ति (समासमें) ।
विशाखी-खी० [सं०] दे० 'विशाचिका' ।
विशिक-पु० [सं०] एक प्राचीन देश ।
विशित-पु० [सं०] कच्चा मांस; छोटा डुकना, लठु अंश ।
—शुद्ध (ज)-पु० राक्षस; नरमच्छक; भेषिया ।
विशिता, विशिती-खी० [सं०] जदमासी ।
विशितावा, विशिताशन, विशिताशी (शिक)-पु० [सं०]
 राक्षस; नरमच्छक; भेषिया ।
विशी-खी० [सं०] जदमासी ।
विशुन-पु० [सं०] चुगली खानेवाला, चुगलखोर; केसर;
 कपास; मारद; कौआ; एक प्रेत जो गमिगियोंकी बाधा
 पहुँचाता है; विद्यासयात करना । वि० नीच; क्रूर; सूचक,
 चुगलखोर; छली; मूर्ख ।—**बचन, —बाच-पु०** चुगली ।
विशोन्माद-पु० [सं०] उन्मादका एक भेद ।
विष्ट-वि० [सं०] पिंसा हुआ, चूर्ण किया हुआ; निचोड़ा
 हुआ; गुँथा हुआ । पु० पिंसा हुआ पदार्थ, विशेषतः अन्न;
 आटा; पीठी; सीसा ।—**पचन-पु०** कफाही; तबा ।
—पच-पु० गुंथे हुए आटेका बनाया हुआ बलिपट्ट ।
—पाकपट्ट, —पाचक-पु० तबा; कफाही ।—**पिंड-पु०**
 बाटी ।—**पूर-पु०** दे० 'वृत्तपूर' ।—**पेसा, —वेकन-पु०**
 पिते हुएकी पीसना; निरर्थक कार्य करना; एक ही बातकी
 बार-बार कहना; निरर्थक अन्न ।—**प्याच-पु०** एक न्याय
 जो किये हुएकी स्मृति ही पुनः करनेपर प्रयुक्त किया जाता
 है ।—**प्रमेह, —मेह-पु०** प्रमेहका एक भेद ।—**बर्हि-**
खी० वेसन; धुआँस; जौके आटे, चावल और दालका बना
 हुआ पिंड ।—**सीरस-पु०** (पूर्ण) वंदन ।
विहक-पु० [सं०] किसी पिते हुए पदार्थ, आटे, पीठी
 आदिसे बनी चीज—रोटी, बाटी आदि; सिक्का चूर्ण;

औंसाका एक रोग ।
विहप-पु० [सं०] धुवन; ढोक ।
विह्रात, विह्रातक-पु० [सं०] अवीर; मुक्ता ।
विह्राद्-वि० [सं०] आटा खानेवाला ।
विह्राह-पु० [सं०] आटेसे बनी हुई चीज ।
विहि-खी० [सं०] आटा, चूर्ण ।
विहिक-पु० [सं०] चावलकी पीठी ।
विहोदक-पु० [सं०] वह जल जिसमें चावलका चूर्ण घोला
 गया हो ।
विप्यल-पु० [सं०] दे० 'विप्यल' ।
विसंग-वि०, पु० [सं०] दे० 'विशंग' ।
विसन-वि०, पु० विशुन ।
विसनहारी-खी० आटा पीसनेवाली, आटा पीसनेका पेशा
 करनेवाली खी ।
विसना-अ० कि० पीसा जाना, चूर्ण किया जाना; दबकर
 चिपटा हो जाना; बहुत अधिक कष्ट पाना; धीरे परिश्रम
 करना; धीरे परिश्रमसे धक्कर चूर होना ('जाना'के साथ) ।
विसवाज-खी० दे० 'पेशवाज' ।
विसवाना-स० कि० पीसनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे पीसने-
 का काम कराना ।
विसाई-खी० पीसनेकी क्रिया या भाव; आटा पीसनेका
 पेशा; पीसनेकी उन्नत; धीरे परिश्रम ।
विसाच-पु० दे० 'विशाच' ।
विसाना-पु० आटा ।
विसाना-स० कि० पीसनेका काम कराना । † अ० कि०
 पिंसा ।
विसिवा-पु० एक प्रकारका छोटे दानेका लाल गेहूँ ।
खी० आटा पीसनेका धवा ।
विसी, विसी-खी० सफेद गेहूँ ।
विसुन-पु० विशुन, चुगलखोर ।
विसुराई-खी० वही रूपरेखा पूर्वी बनानेके काम आनेवाला
 सरकारीका डुकना ।
विसीनी-खी० पीसनेका काम; आटा पीसनेका पेशा; धीरे
 परिश्रम ।
विसाई-वि० पीसनेके रंगका ।
विसाई-पु० [का०] औरतके सीनेका उभार ।
विसा-पु० एक प्रसिद्ध मेवा; इमका पेड़ ।
विसील-खी० बंदूकी तरह गोली दागनेका एक छोटा
 इमियार ।
विस्सू-पु० एक मच्छड़ जैसा उड़ने और काटनेवाला छोटा
 कीड़ा ।
विहकना-अ० कि० कोयल, पपीहे आदि मोटे गलेवाले
 पक्षियोंका चोखना ।
विहाना-पु० पिधान, ढकना, ढकन ।
विहानी-खी० ढकन; छिपानेवाली बात ।
विहित-वि० [सं०] ढका हुआ, आच्छादित, आवृत । पु०
 एक अर्थात्कार जहाँ किसीके मनका भाव जानकर किसी
 क्रिया द्वारा अपना भाव प्रदर्शित किये जानेका वर्णन हो ।
वीज-पु० पुनकी ।
वीजना-स० कि० (रुई) धुनना ।

पीछर—पु० पिञ्जरा; अस्मिन्तर ।

पीञ्जरा—पु० दे० 'पिञ्जरा' ।

पीङ्ग—पु० किसी गोली बल्लुका गोला; एक गहना;

* शरीर; पेङ्गका तना; पिङ्गलङ्ग ।

पीपी—खी० दे० 'पिपी'; † पीपा उछाड़ते समय बच्चे चारों ओरकी मिट्टीका पिङ्ग ।

पीङ्गरी—खी० दे० 'पिङ्गरी' ।

पी०—पु० प्रियतम, कांत । खी० पपीहेकी गोली ।—**कहाँ**—पु० पपीहेकी गोली ।—**खग**—पु० पीपी करनेवाला एक पक्षी, पपीहा ।

पीक—खी० पानका धूक; वह रंग जो कपड़ेपर पहली बार की रंगारंगीमें चढ़ता है (रंगरेज) ।—**दान**—पु० पानकी पीक धूकनेका एक विशेष प्रकारका पात्र, जगलदान ।

पीकना—अ० कि० पपीहे या कोयलका बोलना; पिहकना; † अंकुर निकलना ।

पीका—पु० नया; कोमल पत्ता । **मु०**—**कूटना**—पछन निकलना, पछवित होना ।

पीच—खी० मँझ; † दे० 'पीक' । पु० [सं०] ठुड्डी ।

पीछ—खी० मँझ; पछिबोकी पूँछ ।

पीछा—पु० किसी वस्तु या व्यक्तिका पिछला भाग, आगका उलटा; किसी घटनाके बादका समय; पीछे लगा रहना, पिछलगी । **मु०**—**करना**—किसीको पकड़ने, भगाने या मारनेके लिए उसके पीछे-पीछे जाना, लपेटना ।—**छुड़ाना**—किसी अभिय व्यक्त या वस्तुमें पिङ्ग छुड़ाना ।—**छूटना**—किसी अभिय व्यक्ति या वस्तुमें छुटकारा मिलना ।—**छोड़ना**—पीछा करनेके कार्यमें विरत होना, किसीके पीछे लगे रहनेका कार्य बंद करना; किसी प्रयोजनकी सिद्धिके लिए किसीके पीछे-पीछे फिरना बंद करना ।—**दिखाना**—भाग खड़ा होना ।—**देना**—साथ छोड़ देना ।—**पकड़ना**—किसी आशसे किसीका साथ करना ।

पीछू—अ० दे० 'पीछे' ।

पीछे—अ० पीठकी ओर, पृष्ठदेशमें, आगेका उलटा; देश-काछके अनुसार किसीके पश्चात्, अनंतर, बाद; अंतमें, बादमें; इस लोकेसे विदा होनेपर, मर जानेपर; लिप, वास्ते, खातिर; बज्रमें, बदोलेत । **मु०**—**(किसीके)**—**खलना**—किसी बातमें किसीका अनुगमन करना या अनुयायी होना । **(किसीके)**—**छूटना**—किसीकी स्थिति, कार्य आदिका पता देनेके निमित्त उसकी निगरानीके लिए नियुक्त किया जाना; किसीको पकड़नेके लिए तैनात किया जाना ।—**छूटना**—पिछड़ जाना (जानेके साथ) । **(किसीके)**—**छोड़ना**—किसीकी स्थिति, कार्य आदिका पता देनेके निमित्त उसकी निगरानीपर नियुक्त करना; किसीको पकड़नेके लिए नियुक्त करना । **(किसीके)**—**पकड़ना**—किसी वस्तुको मिटा देनेके लिए तुल जाना; किसी व्यक्तिको हारन करने या उसे हानि पहुँचानेके लिए निरंतर यत्न करना ।—**छगना**—किसी प्रयोजनकी सिद्धिके लिए किसीका आश्रय लेना; किसी कार्यकी सिद्धिके लिए किसीके पीछे-पीछे फिरना; किसी अभिय वा हानिकर वस्तुका पीछा न छोड़ना ।

पीठना—सं० कि० किसी वस्तुपर आघात करना, चोट

पहुँचाना; किसी प्राणीपर हाव, उर्ध्व आदिसे आघात करना; मारना; सोने-चाँदी आदिके टुकड़ोंके बढ़ाने या फैलानेके लिए उसपर हथौड़े आदिसे आघात करना; किसी तरह समाप्त करना, जैसे-तैसे पूरा करना; जैसे-तैसे कमा लेना, किसी भी तरह उपार्जित करना । पु० रौना, धोना, पिट्टस; विपत्ति, भारी संकट ।

पीठ—पु० [सं०] लकड़ी, पथर या धातुका आसन—पीढ़ा, चौकी आदि; प्रसिद्धोंके बैठनेका आसन (जैसे—कुशासन); वह आधार जिसपर किसी देव-प्रतिमाको स्थापना हो, सिंहासन; मूर्ति आदिका आधार; उन प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे कोई एक जो विष्णुके चक्रसे कटे हुए सतीके शवके अंगोंके गिरनेके कारण सिद्धिदायक माने जाते हैं; बैठनेका एक ढग; एक प्रकारका आसन; आन, आलस्य (जैसे—विद्या-पीठ); शांकरमत (जैसे—शारदापीठ); कंसका एक भंजी ।—**केछि**—पु० दे० 'पीठमरसखा' ।—**ग**—वि० पंगु ।—**गर्भ**—विषय—पु० मूर्तिके आधारमेंका वह गड्ढा जिसमें वह जमायी जाती है ।—**चक्र**—पु० राक्षी ।—**देवता**—पु० आदि देवता ।—**नायिका**—खी० वह कुमारी जो दुर्गापूजाके ममव दुर्गा मानकर पूजी जाती है ।—**खू**—खी० प्राचीनके आस-पासकी भूमि, वन ।—**मर्दसखा**—पु० नायकका विशेष प्रकारका सखा जो गुणोंमें उसके कुछ बढकर होता है (जैसे रामका सखा सुग्रीव); नायकका वह सखा जो नायिकके मानसीवनमें सहायता करता है (सा०); देवताका नृत्यगुरु ।—**मर्दिका**—खी० वह स्त्री जो नायकको रिश्वानेमें नायिकाकी सहायता करती है (सा०) ।—**सर्प**—**सर्प**—**(पिङ्ग)**—वि० पंगु ।

पीठ—खी० किसी प्राणीके शरीरका कमरसे लेकर गरदन-तकका पीछेका भाग जिसके बीचोबीच रीढ़ रहती है, पृष्ठ; किसी वस्तुका ऊपरी भाग, पृष्ठ-भाग ।—**पीछे**—अ० अनु-पश्चित्तमें, मौजूर न रहनेपर । **मु०**—**का**—**परका**—किसी सहोदरके पीछे जनमा हुआ ।—**का कछा**—(वह घोड़ा) जो एक आसनेसे मवारको रेतक न ले जा सके; (वह घोड़ा) जिसपर सवारी या लदाई करनेमें उसकी पीठ छिल जाय ।—**का मोजा**—कुश्तीका एक दाँव ।—**का सखा**—(वह घोड़ा) जो सवारी करनेपर अच्छी चाल चले और किसी तरहकी बदमाशी न करे ।—**चारपाईसे लगाना**—बीमारका अशक्तताके कारण उठने-बैठनेमें असमर्थ हो जाना ।—**ठीकना**—कोई अच्छा काम करनेपर शाबाशी देना; प्रशंसा करके कोई कार्य करनेके लिए उत्तेजित करना, बढावा देना ।—**दिखाना**—भाग खड़ा होना ।—**देना**—भाग खड़ा होना; साथ छोड़ देना; कटना ।—**पर हाव फेरना**—बढ़ावा देना, शाबाशी देना ।—**पर होना**—भयदगार होना ।—**फेरना**—दे० 'पीठ दिखाना' । **(किसीकी)**—**छगना**—कुश्तीमें चित किया जाना, पछाड़ जाना । **(घोड़े, बैल आदिकी)**—**छगना**—पीठपर जल्यमान होना, पीठका क्षत होना । **(किसीकी)**—**छगाना**—कुश्तीमें चित कर देना, पछाड़ देना ।

पीठक—पु० [सं०] आसन, चौकी, कुर्सी आदि; एक तरहकी पाककी ।

पीछ-पु० आटेकी लोईमें उर्द वा चनेकी पीठी नरकर बनायी जानेवाली विशेष प्रकारकी मोम्य वस्तु। * पीड़ा।

पीठि-* स्त्री० पीठा।

पीठिका-* स्त्री० [सं०] पातु, पत्थर वा काठका विशेष प्रकारका भासन (जैसे पीठा, चौकी); वह आधार जिसपर किसी देव-प्रतिमाकी स्थापना की गयी हो, देवमूर्तिका आधार; मूर्ति, खंभे आदिका आधार; पुस्तिकाका विशिष्ट अक्ष या विभाग; पृष्ठभूमि; ताम्रजान (की०)।

पीठी-* स्त्री० पानीमें भिगोकर पीसी हुई उबड़ आदिकी दाढ़ जिससे पकोड़ी आदि बनाते हैं।

पीब-* स्त्री० एक प्रकारका शिरोभूषण; पीषा।

पीबक-पु० [सं०] पीषा देनेवाला, पीछित करनेवाला, सतानेवाला; दबानेवाला, चौपनेवाला; परेनेवाला।

पीबन-पु० [सं०] दबाना, चौपना; मरना। पीषा पहुँचाना, दुःख देना, सताना; परना; निचोड़ने वा घेरनेका बीजार; अनाजके डठले अन्नको अन्न करनेके लिए रौदना वा रौदवाना; मीजना, मसलना; ग्रहण करना, हाथमें लेना, पकड़ना (जैसे-करपीबन); सूर्य या चंद्रका ग्रहण; नष्ट, बर्बाद करना; उच्चारणमें किसी स्वरको दबाना; पीब निकालनेके लिए फोड़नेको दबाना।

पीबनीब-वि० [सं०] पीबनके योग्य; दबानेके काम आनेवाला। पु० विना मन्त्री और सेनाका राजा; शत्रुका एक भेद या प्रकार।

पीषा-* स्त्री० [सं०] शारीरिक या मानसिक कष्ट, व्यथा, दर्द; पाषा; गववध (जैसे-आश्रमपीषा); सिरपर पड़नी जानेवाली माला; नाश; प्रतिषेध; कण्ठा; ग्रहण; टोकरि; क्षति, हानि; सख दुःख। -कष-वि० दुःख देनेवाला, कष्ट पहुँचानेवाला। -कषण-पु० पीबन, पीछित करना। -गृह-पु० बंशगा-गृह, सौसतपर। -स्वान-पु० कुहलीमें अमृत ग्रहोंके स्थान।

पीषिका-* स्त्री० [सं०] कुषिया, फुसी।

पीछित-वि० [सं०] जिसने पीषा पहुँचायी गयी हो, सपाया हुआ; दबाया हुआ, चौपा हुआ; घसा हुआ; अस्त्र; ध्वस्त; बँधा हुआ; मला हुआ, मसला हुआ; पेरा हुआ; पकड़ा हुआ। पु० क्षति; पीषा देनेकी क्रिया; एक रतिवध।

पीछी(हिन्)-वि० [सं०] कष्ट देनेवाला, पीछित करनेवाला।

पीछुरी-* स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पीषा-पु० काष्ठ, पत्थर वा धातुका वह चौकी जैसा भासन जो प्रायः भोजन करते समय बैठनेके काम आता है, पीठा।

पीषी-* स्त्री० किसी जाति, कुल वा व्यक्तिके किसी वंशधरकी गणना और पदके अनुसार विशिष्ट स्थान; किसी पीढ़ीके अंतर्गत आनेवाले व्यक्तियोंका समुदाय।

पीत-वि० [सं०] पीला; पिया हुआ; जिसने पिया हो; किसने सोखा हो; सीखा हुआ; (अंतिम तीन अर्थोंमें 'पीत' का प्रयोग हिंदीमें नहीं मिलता)। पु० पीला रंग; पुष्कराज; हराताल; गंधक; चंपक; कनेर; दीप; केसर; बक्ल; चक्रवा पक्षी; मेढक; हंड़; गवक्ष; वह उपधातु जिससे बड़े बनाये जाते हैं; गोमूत्र; सुवर्ण; मैनाकी चौंच। -कंद-पु० गाजर। -कंदली-* स्त्री० सर्पकंदली, मोनकेला। -कद-

बीरक-पु० पीला कनेर। -कावेर-पु० केसर; एक उपधातु जिसके बड़े बनते हैं। -काष्ठ-पु० पीला चंदन; पीला अमर। -कीछा-* स्त्री० आवर्तकी। -कुरवक-पु० पीली कटसरैया। -कुष्ठ-पु० पीले रंगका कोद।

-केदार-पु० एक तरहका धान। -कंध-पु० पीला चंदन। -कोषा-* स्त्री० एक कला जिसके फूल पीले होते हैं। -चंबु-पु० एक तरहका तोता। -चंबव-पु० पीला चंदन; केसर; हरी। -चंपक-पु० प्रदीप, दीपक।

-चौप-पु० [हिं०] पक्षाशुष्य। -क्षिटी-* स्त्री० पीले फूलोंवाली कटसरैया। -संभुल-पु० कंगनी। -तुंड-पु० कारंदव पक्षी। -तैला-* स्त्री० मालकंगनी; बड़ी मालकंगनी। -दाह-पु० देवदाह; सरलका पेड़; दाहहरीका पीषा। -दीप्ता-* स्त्री० बौद्धोंकी एक देवी। -दुग्धा-* स्त्री० दूध देनेवाली गाय; वह गाय जो सूदके पवजमें दूध पीनेके लिए कण्ठादाताकी दी गयी हो। -हु-पु० सरलका पेड़; दाहहरी। -जातु-* स्त्री० गोपीचंदन। -निद्र-वि० गहरी नींदमें सोया हुआ। -नील-पु० हरा रंग।

वि० हरे रंगका। -पर्णी-* स्त्री० बुधिकाली। -पाशा-* स्त्री० मैना। -पिष्ट-पु० सीसा। -पुष्प-वि० जिसमें पीले फूल लगने हों, पीले फूलोंवाला। पु० कनेर, चपा आदि। -पुष्पा-* स्त्री० ह्रस्वराणी; आदली। -पुष्पी-* स्त्री० शंखपुष्पी; सखदेई; ककरी; तोरई; नेत्रुआ। -पृष्ठा-* स्त्री० पीली पीठवाली कौडी। -प्रसव-पु० पीला कनेर।

-फल-* स्त्री० सिंहेरका पेड़; कमरख; धव। -केन-पु० रीठा। -बालुका-* स्त्री० हली। -बीजा-* स्त्री० मेथी। -मंगराज-पु० पीला अमर। -म्रवि-पु० पुष्कराज। -म्रघ-वि० जिनमें मसपान किया है।

-मस्तक-पु० एक पक्षी। -माक्षिक-पु० मोनामाखी। -मास्त-पु० एक तरहका माँप। -मुष्ट-पु० एक तरहका हिरन। -मुष्ट-पु० मूँगाका एक भेद। -मूलक-पु० गाजर। -सूयी-* स्त्री० सोनजुही। -रक्त-पु० ललाई मिला हुआ पीला रंग; पुष्कराज। वि० ललाई मिले हुए पीले रंगका। -रख-पु० गोमेद। -राग-पु० पीला रंग; पचकेसर; मोम। वि० पीले रंगका। -रोहिणी-* स्त्री० खंभारी। -खोह-पु० पीतल नामकी धातु।

-वर्ण-पु० पीला रंग; एक पक्षी; कंदव; मैनसिल; केसर; पीत चंदन। वि० पीले रंगका, पीला। -वासा(सस्)-वि० पीले वस्त्रवाला। पु० कृष्ण। -वृक्ष-पु० सोनापाठा। -शाख-* स्त्री० शाखक-पु० विजयसार। -शोच-पु० वह जो पीनेके बाद बचा हो। वि० पीनेके बाद बचा हुआ। -शोणित-वि० (खड़) जिसने रक्तपान किया हो, सूनी। -सार-पु० पीला चंदन; हरिचंदन; मोमेर; अंकोल; लोबान। -सारक-पु० नीमका पेड़। -सारि-* स्त्री० सुरमा। -साख-* स्त्री० शाखक-पु० विजयसार।

-स्कंध-पु० एक वृक्ष; श्वर। -स्फटिक-पुष्कराज। -स्फोट-पु० खनकी। -हरित-पु० पीलापन लिये हरा रंग। वि० पीलापन लिये हरे रंगका।

पीतक-पु० [सं०] हराताल; कुसुमका फूल; केसर; अमर; परमकाष्ठ; पीतल; सोनामाखी; एक उपधातु जिसके बड़े बनते हैं; पीत चंदन; तूनका पेड़; अशोकका पेड़; विजय-

सारः अन्यत् राशि (नी० ग०) : दाक्षवृत्तीका पौषा ।
 -द्रुम-३० दाक्षवृत्तीका पौषा ।
 पीतन-पु० [सं०] सरक वृक्षः इतराकः आमकाः केसरः पाकः ।
 पीतम-पु० प्रियतमः कांत ।
 पीतरा-पु० दे० 'पीतल' ।
 पीतल-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध उपधातु जो मुख्यतः लोहे और जस्तेके योगसे तैयार की जाती है; पीला रंग । वि० पीले रंगका ।
 पीतलक-पु० [सं०] पीतल ।
 पीतसरा-पु० चबिया ससुर ।
 पीताय-वि० [सं०] पीले अंगोंवाला । पु० सोनापाठा; एक तरहका मेढक ।
 पीतांबर-पु० [सं०] पीला वस्त्र; विशेष प्रकारकी रेशमी धोती जिसे हिंदू पूजा-यात्र तथा संस्कार आदिके समय धारण करते हैं; कृष्ण, विष्णु; नरक; अभिनेता; पीत वस्त्रधारी सन्त्यासी । वि० पीले वस्त्रवाला, जिसने पीला वस्त्र धारण किया हो ।
 पीता-स्त्री० [सं०] हल्दी; दाक्षवृत्ती; महान्योतिष्मती; कपिल शिक्षाया; मित्रंशु; गोरोचना; अतिविषा ।
 पीताक्षि-पु० [सं०] अगस्त्य मुनि (जिन्होंने समुद्र तोख लिया था) ।
 पीताम्ब-वि० [सं०] पीले रंगका ।
 पीताम्ब-पु० [सं०] ललाई लिये हुए पीला रंग; सूर्योदयका मध्यकाल । वि० ललाई लिये पीले रंगका ।
 पीताम्बोष-पु० [सं०] जो कुछ पीनेके बाद बचा हो ।
 पीताम्बा(स्मृत्)-पु० [सं०] पुष्कराज ।
 पीति-पु० [सं०] शोका । स्त्री० पीनेकी क्रिया; पान; वृक्ष; गवि, गमन; पाथशाला ।
 पीतिका-स्त्री० [सं०] केसर; दाक्षवृत्ती; सोनजुड़ी ।
 पीतिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] पीलापन ।
 पीती-स्त्री० दे० 'पीति' ।
 पीती(तिन्)-पु० [सं०] शोका ।
 पीतु-पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; हाथियोंके दलका नायक, हाथियोंका धूथप ।
 पीतोदक-पु० [सं०] नारियल (जिसके भीतर जल या रस रहता है) । वि० जिसने पानी पिया हो या जिसका पानी पिया गया हो ।
 पीथ-पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; जल; धी; काल, समय; रक्षा; पेय ।
 पीथि-पु० [सं०] शोका ।
 पीन-वि० [सं०] स्थूल, मोटा; परिपुष्ट; बृहत्; भारी; भार-पूरा । -बन्धा(क्षस्)-वि० चौड़ी छातीवाला, विशाल वक्षःस्थलवाला ।
 पीनक-स्त्री० पिनकनेकी क्रिया, अफीमके नशेमें ऊँचना; ऊँचना । मु० -में जाना-अफीमके नशेमें ऊँचने लगना ।
 पीनसा-स्त्री० [सं०] स्थूलता, मोटाई; परिपुष्टता; भारीपन ।
 पीनसा-पु० कि० दे० 'पीनसा' ।
 पीनस-स्त्री० पीनस, पालकी । पु० [सं०] नाकका जुकाम जिसमें गंधग्रहणकी शक्ति नष्ट हो जाती है ।

पीनसा-स्त्री० [सं०] ककरी ।
 पीनसिल, पीनसी(सिन्)-वि० [सं०] जिसे पीनस रोग हुआ हो, पीनस रोगसे ग्रस्त ।
 पीना-सं० कि० किमी द्रव पदार्थको घुँट-घुँट करके पेटमें पहुँचाना, पान करना; किसी वातकी लक्ष्णना; (क्षीयकी) भीतर ही भीतर दबा देना, उमकने न देना, प्रकट न होने देना; धराय पीना; ध्यानसे सुनना; हुक्मे, सिंगरेट आदि-का धुआँ खींचना; सोखना, जल करना ।
 पीनोष्मी-स्त्री० [सं०] भारी धनवाली बाय ।
 पीप-स्त्री० धाव या कोड़ेका सफेद मवाद ।
 पीपर-पु० दे० 'पीपल' । -परन-पु० पीपलका पत्ता; एक गहना ।
 पीपरामूल, पीपलामूल-पु० एक प्रसिद्ध औषधि, पिप्पलीमूल ।
 पीपरि-पु० [सं०] छोटा पाकः ।
 पीपल-पु० वरगदकी जातिका एक पेड़ जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं, अहवथ । स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जिनकी कली दबाके काम आती है; इस लताकी कली ।
 पीषा-पु० काठ या लोहेका ढोलके आकारका बना एक बड़ा पात्र जिसमें नेत्र आदि द्रव पदार्थ रखे या बंद करके बाहर भेजे जाते हैं (खाली पीपीसे अस्वायी चुल भी बनते हैं) ।
 पीष-स्त्री० दे० 'पीप' ।
 पीष-पु० स्वामी, पति ।
 पीषरा-वि० पीषा ।
 पीषा-पु० पति, स्वामी ।
 पीषु-पु० [सं०] काल, समय; कौआ; सूर्य; अग्नि; उल्लू; सोना ।
 पीषुसा-स्त्री० [सं०] पाकका एक भेद ।
 पीषुल-पु० दे० 'पीषु' ।
 पीषु-पु० [सं०] अमृत; दूध; मायका प्यानेके बाद पहला या सात दिनोंतकका दूध । -धुति, धामा(मन्), -भानु-पु० चंद्रमा । -भुक् (ञ्)-पु० देवता । -मयूख, -महा(हस्), -रुषि-पु० चंद्रमा; कपूर । -बर्ष-वि० दूध जैसा सफेद । पु० सफेद शोका । -बर्ष-पु० अमृतकी वर्षा; चंद्रमा; कपूर; एक वृष्टा; चंद्रालोकके रचविता जयदेवकी उपाधि ।
 पीर-स्त्री० पीडा, व्यथा; दुःख, दर्द; प्रसवपीडा (ठेठ) । वि० [फा०] बृद्ध, वृद्धा; बालक, पूर्त । पु० बृद्धा आदमी, बुजुर्ग; महात्मा, सिद्ध; धर्मगुरु; मुसलमानोंके धर्मगुरु; सोमवार । -ज्ञादा-पु० पीर या धर्मगुरुका पुत्र । -ज्ञाक-स्त्री० बहुत बूढ़ी स्त्री । -नाबालिगा-पु० वह बूढ़ा जो बच्चोंका-सा आचरण करे, दुर्बिहीन बुद्धा । -भाई-पु० वह जो एक ही धर्मगुरुका शिष्य होनेके नाते भाई लगता हो, एक ही धर्मगुरुका चेला । -मुर सिद्ध-पु० धर्मगुरु । -झीका-पु० फकीर । -साल-वि० बृद्ध, वृद्धा । -र(र)र-पु० बूढ़ा आदमी । -सरी-कृत-पु० सफियोंका पीर ।
 पीरक-वि० दे० 'पीरक' ।
 पीरना-पु० कि० घेरना-तेली हुई तन कोल्हू करिही

पाप पुक्ति दोउ पीरों-कबीर ।

पीरां-खी० दे० 'पीका' । वि० दे० 'पीका' ।

पीराई-पु० बह जाति जो बफवर पीरोंके गीत वाकर अपनी जीविका चलाती है, बफाली ।

पीरान-खी० [का०] किसी पीरकी सेवामें अर्पित की हुई भूमि; पीरकी सहायताके लिए किसी मकबरेके साथ बन्ध की हुई जमीन ।

पीरानी-खी० [का०] पीरकी पत्नी ।

पीरानेपीर-पु० [का०] पीरोंका पीर, सबसे बड़ा पीर ।

पीरी-खी० [का०] कुढ़ापा; चेला बूझनेका व्यवसाय, चेल्-बार; चालाकी, धूर्तता; इजारा, अधिकार; हुकूमत ।

पीरू-पु० एक तरहका मुंगे ।

पीरीजा-पु० दे० 'सोरीजा' ।

पील-पु० [का०] हाथी; शतरंजका एक मोहरा जो तिरछे चलता है और तिरछे ही मारता है (जैट) । पु० कोषा; पीलका पेड़ । -छाना-पु० इस्तिशाहा । -पाँच-पु० एक प्रसिद्ध रोग जिसमें प्रायः पीवका बुटनेमें नीचेकी ओरका मांस सूज जाता है (अधिक सूजनेपर पाँच हाथीके पीवकी तरह मोटा हो जाता है) । -बा-पु० दे० 'पील-पाँव' । -पाचा-पु० धुनी, टेक । -पाल-पु० महावत, हाथीवान । -बाय-पु० हाथी हाँकनेवाला, महावत, हाथीवान । -बान-पु० दे० 'पीलबान' ।

पीलक-पु० [सं०] काला बड़ा नीटा; † पीले रंगका एक पक्षी ।

पीलसोज-पु० दीबट ।

पीला-वि० हल्दीके रंगका, जर्द; तेज या आभासे रहित, निश्चय, सौका । [खी० 'पीली'] -कनेर-पु० कनेरका बह भेद जिसका फूल पीले रंगका और घट्टीके आकारका होता है । -बसुरा-पु० अमर्ष । -बरेला-पु० बन-मेथी । -होर-पु० अमीकामें होतेवाला एक तरहका घोर जिसका रंग कुछ पीला होता है । - (खी०) बमेखी-खी० एक प्रकारकी बमेखी जिसका फूल पीले रंगका होता है । -बिहरी-खी० बिबाहका निमज्जणपत्र । -खुही-खी० सोनखुही । -मिही-खी० एक तरहकी चिकनी, कड़ी और पीले रंगकी मिट्टी । सु० -पचना-तेज या आभासे रहित होना । - (खी०) कटना-पी कटना ।

पीलमा-खी० पीलापत्र ।

पीलिवा-पु० पांडु रोग ।

पीलु-पु० [सं०] एक वृक्ष, पीलू; हाथी; परमाणु; ताकका तना; ताकके हड्डीका समूह; कूल्हा; बाण; हड्डीका टुकड़ा; अस्थि-राशि; कुमि; पीलुका फल; हाथका मध्यभाग । -पन्न-पु० मूर्वा लता । -पर्णी-खी० मरोबककी नामकी लता; एक ओषधि । -पाक-पु० 'पाक'के दो भेदोंमेंसे एक (पदार्थविशेषकी पाकक्रियाके विषयमें वैज्ञानिकोंका मत है कि तेजके व्यापारसे उस पदार्थके परमाणु अलग-अलग होकर पकते हैं और बादमें उनके एकाकार होनेपर उस पदार्थकी पुनः उत्पत्ति होती है) । -बाद्-पु० वैज्ञानिकोंका पाकसंबंधी मत । -बादी (विद्)-पु० वैज्ञानिक । -मूल-पु० पीलुके पेड़की जड़ । -मूला-खी० असंगंध; सतावर । -मूली-खी० सतावर; साधुपणी ।

पीलुल-पु० [सं०] नीटा ।

पीलू-पु० कौकणमें होनेवाला एक वृक्ष, युष्कल; उसका फल जो दवाके काम आता है; एक राग; दे० 'पिस्स' । सु० -पचना-किसी वस्तुमें सजने आदिके कारण कीड़े उत्पन्न हो जाना ।

पीब-पु० भिवतम् । † खी० दे० 'पीप' ।

पीबना-सं० कि० दे० 'पीना' ।

पीबर-वि० [सं०] स्थूल; मोटा; मटा-पूरा । पु० कलुषा । -स्तनी-वि० खी० स्थूल या भरे-पूरे स्तनोंवाली (खी० या गाव) ।

पीबरा-खी० [सं०] असंगंध; सतावर ।

पीबरी-खी० [सं०] तरणी; मांस; योगमाता; शतमूली; शाळपर्णी ।

पीबा-खी० [सं०] जल ।

पीबा(बब)-पु० [सं०] वायु । वि० मोटा, स्थूल; बलवान् । पीसना-सं० कि० रगड़कर या दबाव पहुँचाकर किसी कड़ी वस्तुकी घुरीके रूपमें बदलना, चूर्ण करना; किसी वस्तुको जल या किसी अन्य तरल द्रव्यके योगसे रगड़कर बारीक बनाना; किसी सख्त वस्तुकी रगड़कर या दबाव पहुँचाकर बारीक बनाना; कुचल देना। तंग करना; दबाकर चिपटा कर देना; घोर परिश्रम करना; (दाँत) कटकटाना । पु० बह वस्तु जो किसीको पीसनेके लिए दी जाय ।

पीसू-पु० दे० 'पिस्स' ।

पीहर-पु० मायका ।

पीहू-पु० दे० 'पिस्स' ।

पुं, पुम्(पुंस्)-पु० [सं०] पुमान्, पुरुष; सेवक; पुंल्लिग शब्द; पुंल्लिग (व्या०); आत्मा । -अर्थ-पु० चार प्रकारके पुरुषार्थोंमें कोई एक । - (पुं) गव-पु० सौंझ; बैल; (ममासांगमें) किसी वर्ग या समुदायका श्रेष्ठ व्यक्ति (नर-पुंगव); कृषक नामकी ओषधि । -केनु-पु० शिव । -जन्म(ज)-पु० नर शिशुकी उत्पत्ति । -ध्वज-पु० कोई नर जानवर; चूहा । -घान-पु० पालकी । -घोग-पु० पुरुषका योग या संबंध । -रन्-पु० श्रेष्ठ पुरुष, पुरुषरत्न । -राशि-खी० नर राशि (त्रैते-मकर, कुम्भ) । -लिगा-पु० पुरुषका चिह्न, शिदन । वि० पुरुषवाचक (शब्द-व्या०) । -वस्स-पु० बछड़ा । -हृष-पु० छहूँदर । -बेध-वि० जो पुरुषवेशमें हो । -सखन-वि० जो पुत्रोत्पत्तिमें सहायक हो । पु० दिज्ञातिवोंका दूसरा संस्कार जो गमोधानके तीसरे मास होता है; दूध । -सू-खी० केवल पुत्र जननेवाली स्त्री ।

पुंल्ल-पु० [सं०] बाणका पिछला भाग जिसपर कभी-कभी पर लगाये जाते थे; बाज पक्षी ।

पुंल्लित-वि० [सं०] पंल्लयुक्त (बाण) ।

पुंग-पु० [सं०] समूह; राशि ।

पुंगल-पु० छुपारी ।

पुंगल-पु० [सं०] आत्मा ।

पुंगीफल-पु० छुपारी ।

पुंल्लहा-पु० दे० 'पुंल्लाहा' ।

पुंल्ला-पु० मोर ।

पुंल्ला-पु० पुछला; सूँछनी तरह लगी रहनेवाली वस्तु;

पिछला ।
पुंज-पुं [सं०] समूह; राशि; ढेर; अटाला ।
पुंजि-झीं [सं०] राशि, ढेर ।
पुंजिक-पुं [सं०] ओला ।
पुंजिस-विं [सं०] राशीकृत, ढेर लगाया हुआ; एक साथ रखा हुआ ।
पुंजिह-विं [सं०] ढेर किया हुआ, राशीकृत ।
पुंजी-झीं [सं०] 'पूँजी' ।
पुंज-पुं [सं०] तिलक, टीका ।
पुंजरिया-पुं एक पौधा जिसके पत्ते शाकपर्णोंके पड़ेके समान होते हैं ।
पुंजरी(रिज)-पुं [सं०] पुंजरिया नामका पौधा ।
पुंजरीक-पुं [सं०] श्वेत कमल; कमल; श्वेत छत्र; अग्नि-कोणका दिग्गज; बाघ; एक इन्धौषध; दीना; ईशका एक भेद; आमका एक भेद; हाथीका ज्वर; धक्का; कमंडलु; श्वेत वर्ण; एक प्रकारका कोढ़; एक प्रकारका सोंप; एक तरहका चावल; अग्नि; सांप्रदायिक चिह्न; एक कोषकार ।
पुंजोपम-विं कमलपत्र जैसा । -नयन, -लोचन-विं कमल-नयन । -पालाशाक्ष-विं कमल-नयन । -प्लव-पुं एक तरहका पक्षी । -मुख-विं कमल-वटन । -मुखी-झीं एक तरहकी जोक ।
पुंजरीकाक्ष-विं [सं०] जिसकी आँखें कमलके समान हों । पुं विष्णु ।
पुंजरीकेश्म-विं, पुं [सं०] दे० 'पुंजरीकाक्ष' ।
पुंजरीयक-पुं [सं०] पुंजरिया, खलकमल, एक विश्वदेव; एक औषध ।
पुंजय-पुं [सं०] पौधा; लता; एक विशेष पौधा जो नेत्र-रोगमें दवाके काम आता है; पुंजरिया ।
पुंज-पुं [सं०] एक तरहका ईश, पौधा; कमल; श्वेतकमल; एक दैत्य; एक प्राचीन देश; इस देशका निवासी; तिलक, टीका; कृमि, कीड़ा; तिलकका पेड़; पाकड़; तिनिकाका पेड़ । -केलि-पुं हाथी । -वर्द्धन-पुं कुदृशकी प्राचीन राजधानी ।
पुंजूक-पुं [सं०] ईशका एक भेद; पौधा; तिलक, टीका; रेशमके कीड़े पाछनेका काम करनेवाला; साधवी लता; तिलक वृक्ष ।
पुंजव, **पुंजव**-विं [सं०] पुरुष जैसा । अ० पुरुषकी तरह ।
पुंजकी, **पुंजख**-झीं [सं०] कुलटा, वेरवा ।
पुंजकीय-पुं [सं०] वेरवाका पुत्र ।
पुंजिह-पुं [सं०] क्षिप्र ।
पुंज-पुं [सं०] पुरुष ।
पुंजवान्(वत्)-विं [सं०] जिसे पुत्र हो ।
पुंजानुज-विं [सं०] जिसके बच्चा आई हो ।
पुंजी-झीं [सं०] बछ्मवाली गाय ।
पुंजव-पुं [सं०] पुरुषभाव, पुरुषत्व; पुरुषकी कामशक्ति; पुंलियाव (व्या०); शुक्र; सूर्य । -सौच-पुं नामदी । -विग्रह-पुं एक प्रकारका गुण ।
पुजा-पुं में दे या आटेके मोठे घोलसे तैयार किया जाने-वाला एक प्रसिद्ध पकवान जो बी वा तेलमें तजा जाता है ।

पुजाल-पुं दे० 'पयाल'; † एक जंगली पेड़ ।
पुकार-झीं किसीका नाम लेकर बुलानेकी क्रिया या आवाज या बचावके लिए किसीकी आर्त स्वरसे बुलाना, डेर, बुझावे; किसी कष्टके निवारणके लिए किसी अधिकारीके प्रति की गयी प्रार्थना, करिबाद; विस्फोट; आवाज; कचहरीके चपरासीका मुकदमा पेश होनेपर बादी और प्रतिवादीका नाम लेकर इजलासपर बुलाना ।
पुकारवा-सं किं किसीकी नाम लेकर बुलाना; नामका बार-बार उच्चारण करना; जोर-जोरसे कबना, चिल्लाना; रखा या बचावके लिए किसीकी आर्त स्वरसे बुलाना, बुझाई देना; किसी कष्टके निवारणके लिए किसी अधिकारीसे प्रार्थना करना, करिबाद करना; अमिहित करना; निदेश करना ।
पुच्छा, **पुच्छ**-पुं [सं०] चांदा; एक संकर जाति; अश्व या नीच व्यक्ति । विं नीच, कमीना ।
पुच्छाक-विं [सं०] नीच, कमीना । पुं पुच्छा जातिका व्यक्ति ।
पुच्छरी, **पुच्छरी**-झीं [सं०] कालापन; नीलका पौधा; कली; पुष्कश जातिकी झी ।
पुच्छ-पुं दे० 'पुष्प' ।
पुच्छा-विं दे० 'पुष्पा' ।
पुच्छर, **पुच्छरा**-पुं पोखरा, तालाब ।
पुच्छराज-पुं पीले रंगका एक प्रसिद्ध रत्न ।
पुच्छा-विं [का०] मजबूत; पक्का; सख्त; टिकाऊ; ईंटोंका बना हुआ; जानकार, अनुभवी; पूरी उम्रका; निश्चित । -मिज्ञाज-विं स्मरचित । -मरु-विं शीशियार ।
पुगाना-सं किं पूरा करना ।
पुष्कार-झीं वह चूमनेका-या शब्द जिसे किसीके प्रति लाज प्रकट करनेके लिए ओठोंमें उत्पन्न करते हैं, चुम्कार ।
पुष्कारना-सं किं ओठोंमें चूमनेका-या शब्द उत्पन्न करते हुए किसीके प्रति लाज-चाव प्रकट करना ।
पुष्कारी-झीं दे० 'पुष्कार' ।
पुष्कारना-सं किं पोतना; पुष्कार देना ।
पुष्कार-पुं किसी वस्तुपर गीला कपड़ा फेरनेकी क्रिया; चूने आदिका हलका लेप; पुष्कार देनेका कपड़ा; वह वस्तु जो किसी वस्तुपर पुष्कार देनेके लिए पानीमें धोयी गयी हो; दही हुई बँटू या तोपकी गरम नालोंके ठंडा करनेके लिए उसपर मीठा हुआ कपड़ा रखनेकी क्रिया; वे प्रिय वचन जो किसीकी मनानेके लिए उसके प्रति कहे जायें; खुशामद; उत्साहवर्धक वचन ।
पुष्क-पुं [सं०] एक तक्षकवंशीय नाग ।
पुच्छ-पुं [सं०] पूँछ; बाणोंसे युक्त पूँछ; पिछला भाग; मोरकी पूँछ, कलाव; समूह । -कँटक-पुं बिच्छू । -दा-झीं लक्ष्मणा नामक कंद । -जाह-पुं पूँछकी जड़ । -बंघ-पुं (घोड़ेकी) पूँछ बांधनेकी रस्ती । -मूक-पूँछकी जड़ ।
पुच्छि, **पुच्छी**-झीं [सं०] उँगली चढकाना ।
पुच्छक-विं पूँछवाला, दुमदार । -सारा-पुं यदा-कदा उगनेवाला एक विशेष प्रकारका तारा जिसके पीछे शास्त्र के आकारका आधका-सा पदार्थ जुड़ा दिखाई देता है ।

पुष्पाग्र-पुं० [सं०] पूँछका आगेका भाग ।

पुष्पी (पिछ्)-वि० [सं०] पूँछवाला । पुं० सुरमा; भाक (मशर)का पीछा ।

पुछ्छा-पुं० स्त्री पूँछ; पूँछकी तरह साथमें या पीछे जुड़ी वस्तु; वह जो सदा किसीके पीछे लगा रहे, पिछलग्वा; साथ-साथ लगी या जुड़ी हुई अनावश्यक वस्तु; साथमें लगी रहनेवाली अभिय या अनावश्यक व्यक्ति ।

पुछ्छैयाँ-पुं० दे० 'पुछैया' ।

पुछार-पुं० * पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला; मोर- 'जान पुछार जो भा बनवासी'-पं०; † मातमपुरसी ।

पुछिया-पुं० दुँडा मेदा ।

पुछैयाँ-पुं० पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला ।

पुजना-अ० कि० † पूजित होना, पूजा जाना; अत्यधिक सम्मानित होना; * पूरा होना ।

पुजबना*-सं० कि० पूरा करना; सफल करना ।

पुजबाना-सं० कि० किसीसे पूजनेका काम करवाना, पूजा कराना; अपनी पूजा, अपनी आवश्यक कराना; शिष्यों या भक्तोंसे अपनी सेवा-शुभ्रता कराना और भेंट चढवाना ।

पुजार्ह-स्त्री पूजनेकी किया या भाव; पूजनेकी उजरत पूरा करनेकी किया या भाव; पूरा करनेकी उजरत ।

पुजाना-सं० कि० दे० 'पुजवाना'; पूरा करना, कमीकी पूर्ति करना; सफल करना; वाश, गद्दे आदिको भरना ।

पुजाया-पुं० देवपूजनके उपकरण, पूजनकी सामग्री; वह स्त्रीकी या पात्र जिसमें पूजनकी सामग्री रखी जाती है, पुजाही । **मु० -कैलाना**-वस्तुओंकी बेतरतीब रखना; ढकोसला खड़ा करना, आडबर फैलाना ।

पुजारी-पुं० पूजा करनेवाला; किसी देवताकी निषसित रूपसे पूजा करनेवाला ।

पुजार्ह-स्त्री वह स्त्रीकी या पात्र जिसमें पूजनकी सामग्री रखते है ।

पुजेरी*-पुं० दे० 'पुजारी' ।

पुजेला*-पुं० पुजेरी ।

पुजेयाँ-पुं० पूजा करनेवाला; मरने या पूरा करनेवाला । स्त्री० दे० 'पुजार्ह' ।

पुजौरा-पुं० पूजन, पूजा; पूजनमें देवताकी अर्पित की जानेवाली सामग्री ।

पुजवाना*-अ० कि० पूजना, पूरा होना ।

पुट-पुं० किसी तरह पार्याका वह छोटा जो किसी वस्तुपर उसे आई करने या हलका मेल देनेके लिए ढाला जाय; किसी वस्तुकी हल्के मेळके लिए रंग या किसी तरह पदार्थमें डुबाना, मोर; हलका मेल, साधारण मिश्रण, थोड़ी-सी मिश्रण; [सं०] रिक खाने; बिबर (जैसे-कणपुट); ढकनेवाली वस्तु, आच्छादन; कौश; मज्जा; दोना; दोने या कटोरेकी तरहका कोई पात्र; एक-दूसरेपर ढकनकी तरह रखकर एकमें जोड़े हुए दोनोके आकारके दो पात्र या मिट्टी आदिके दो कपाळ; इस प्रकारका औषध पकानेके कामका पात्र-विशेष; बोहेकी टाप; आँखकी पलक; जायफल; एक वर्णहृत् । -**कंद**-पुं० बाराही कंद । -**मीढ**-पुं० कलछा, मगरा; तबिका कलछा । -**पाक**-

पुं० ओषधियोंको पकानेकी एक किया जिसमें उन्हें जामुन, बरगद आदिके पत्तोंसे लपेट और कपारसे गोली मिट्टी लगाकर आगमें पकाते है; कटोरेके आकारके दो बरतनोंसे पुटित की हुई दवाकी विशेष आकारके गड्ढेमें उपलेकी आँचमें पकानेकी एक किया । -**भेद**-पुं० नगर; जलकी भँबरी, जलावर्त; एक प्रकारका राजा । -**भेदन**-पुं० नगर ।

पुटक-पुं० [सं०] दे० 'पुट'; कमल ।

पुटकिनी-स्त्री० [सं०] कमकिनी; कमलोंका समूह; पशु-वृत्त स्थान ।

पुटकी-स्त्री० पीठकी; एकत्र एक होनेवाली मृत्यु, आकस्मिक मृत्यु; भारी आफत, बजपात; वह आटा या बेसन जो तरकारीकी रसेमें उसे गाढ़ा करनेके लिए मिलाया जाता है । **मु० (किसीपर)**-पकना-अचानक मृत्यु होना; भारी आफत पचना (कियाँ शाप देते समय कहती है) ।

पुटरिया, पुटरी*-स्त्री० पीठकी ।

पुटाछु-पुं० [सं०] बाराही कंद ।

पुटास-पुं० दे० 'पेटास' ।

पुटिका-स्त्री० [सं०] पुशिया; इलायची ।

पुटिल-वि० [सं०] रगका या पीसा हुआ; फाड़ा हुआ, विदारित; सिला हुआ; सिकुड़ा हुआ; (वह मंत्र) जिसके आदि या अंतमें कोई मन्त्रात्मक अक्षर या पद पड़ा या जपा जाय; बंद किया हुआ (आ०) । पुं० अजलि ।

पुटियाँ*-स्त्री० एक छोटी मछली ।

पुटियाना*-सं० कि० फुसलाना, समझा-पुझाकर राजी करना या अपने पक्षमें लाना ।

पुटी-स्त्री० [सं०] छोटा दोना; कौपीन; गद्दा; खात; रिक स्थान; आच्छादन; पुशिया ।

पुटीन-पुं० किवाड़ों, खिचकियों आदिमें शीशे जड़ने और लकड़ीकी चीजोंके छेद आदि भरनेके कामका तीसीके तेल और सरिया मिट्टीसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका मसाला ।

पुटोट-पुं० [सं०] सफेद छाता ।

पुटोवक-पुं० [सं०] नारियल ।

पुडा-पुं० चूल्हके ऊपरका मांसल भाग; चौपायोंका, विशेषकर घोड़ोंका घृतक; घोड़ोंकी अदद जतानेका शब्द; किताबकी जिल्दका उन ओरका भाग जिपर सिलाई की गयी रहती है ।

पुडी-स्त्री० लकड़ीके उन अर्धचंद्राकार टुकड़ोंमेंसे कोई एक जिन्हें एकमें मिलाकर बैलगाड़ीका पहिया तैयार किया जाता है ।

पुडवार*-अ० पृथमागमें, पीछे ।

पुडवाल-पुं० अले-बुरे काममें साथ देनेवाला, पृष्ठपाल; संपके मुँहपर पहरा देनेवाला ।

पुडा-पुं० बड़ी पुशिया; डोल मदनका चमका ।

पुशिया-स्त्री० वह कागज या पत्ता जिसमें कोई दवा या अन्य वस्तु लपेटकर रखी गयी हो; पुशियामें लपेटे हुए एक छुराक दवा; खाना, घर (जैसे-आफतकी पुशिया) ।

पुषी-स्त्री० डोल मदनका चमका; पूरा, छहारी; * पुशिया ।

पुष्प-वि० [सं०] पवित्र, सुन्द; सुभ; अच्छा; प्रिय; सुंदर,

सुप्रः अनुकूल मधुर (गंध) । पु० शुभ अष्टमहा कल, शुभ फल देनेवाला कार्य, सुकृतः सुकर्मने उत्पन्न शुभ अष्टः पशुओंकी पानी पिलानेका होय; पवित्रता; कुंडलीमें कर्मसे नवीं स्थान एक त्रय जिसे खिलौ पतिभ्रमकी अक्षयता तथा पुत्रप्राप्तिके लिए करती है । -कटां(४)-वि०, पु० पुण्य करनेवाला । -कर्म(५)-पु० वह कर्म जिसे करनेसे पुण्य प्राप्त हो । -कर्म(संज्ञ)-वि०, पु० शुभ-कर्म करनेवाला । -काळ-पु० ऐसा समय जिसमें स्नान, दान आदि करनेसे पुण्य हो । -कीर्ति-पु० विष्णु; पुराणोंका पाठ या वाचन । -कीर्ति-वि० जिसकी कीर्तिके वर्णनसे पुण्य हो । -की० ऐसी कीर्ति जिससे पुण्य हो । -कृत-वि० पुण्य करनेवाला । -कृत्य-पु० ऐसा कार्य जिसे करनेसे पुण्य हो । -क्षेत्र-पु० तीर्थ; आर्वावर्त । -गंध-पु० गंध । वि० सुगंधयुक्त । -गंधा-की० सोनबुटी । -गंधि-वि० अच्छी गंधवाला, सुगंधदार । -गृह-पु० वह स्थान जहाँ अन्न आदि बाँटा जाय; देवालय । -जन्म-पु० सन्तान; रास; बन्ध । -जित-वि० पुण्य द्वारा प्राप्त किया हुआ (जैसे-पुण्यजित लोक) । -कृष्ण-पु० द्रव्यतः कृष्ण । -दूर्वास-वि० जिसका दर्शन शुभ फल देनेवाला हो; सुंदर । पु० नीलकण्ठ पक्षी; पवित्र स्थानोंका दर्शन । -दुष्ट(४)-वि० पुण्यदायक । -दुरुष-पु० भर्मात्मा मनुष्य । -प्रताप-पु० पुण्यका प्रताप । -कल-पु० शुभ कर्मोंका फल; वह उपाय जहाँ लक्ष्मी निवास करती है । -आक(३)-वि० भर्मात्मा । -अ-अभि-की० आर्वावर्त; पुत्रवती स्त्री । -योग-पु० पूर्वजन्ममें किये हुए सुकृतका फल । -लोक-पु० स्वर्ग । -विविध-वि० पुण्य द्वारा प्राप्त किया हुआ । -शकुन-पु० शुभ शकुन; शुभसूचक पक्षी । -शीक-वि० पुण्य करना जिसका स्वभाव हो, धर्मपरायण । -श्लोक-वि० उत्तम यशस्वाला, जिसका चरित्र पावन हो । पु० विष्णु; अविष्टि; नल । -श्लोका-वि० की० उत्तम यशस्वाली, पावन चरित्रवाली । की० सीता; श्रौपदी; गंगा । -स्थान-पु० तीर्थ-स्थान; कुंडलीमें कर्मने नवीं स्थान ।

पुण्यक-पु० [सं०] उपवास आदि त्रय त्रिनसे पुण्य होता है; एक त्रय जिसे खिलौ पति भ्रमकी अक्षयता तथा पुत्रप्राप्तिके लिए करती है; विष्णु । -जन्म-पु० पुत्रप्राप्तिके लिए एक वर्ष किया जानेवाला विष्णु-पूजनका मत ।

पुण्यजन्मेश्वर-पु० [सं०] कुवेर ।

पुण्या-की० [सं०] तुलसी ।

पुण्याई-की० पुण्यका प्रताप ।

पुण्यात्मा(सम्भ)-वि० [सं०] पुण्य करना जिसका स्वभाव हो, पुण्यशील, भर्मात्मा ।

पुण्याह-पु० [सं०] शुभ दिन । -वाचन-पु० किसी धार्मिक कृत्यके आरंभमें प्राश्निका 'पुण्याह' शब्द तीन बार कहना ।

पुण्योदय-पु० [सं०] शुभ अष्टका उदय होना, सौभाग्यका उदय । वि० सौभाग्यशाली ।

पुतना-अ० कि० पीता जाना, चुपका जाना ।

पुतरा-पु० दे० 'पुतला' ।

पुतरि, पुतरिका-की० दे० 'पुतरिका' ।

पुतरिवा-की० दे० 'पुतली' ।

पुतली-की० दे० 'पुतली' ।

पुतला-पु० लकड़ी, धातु, कपड़े आदिकी बनी हुई पुरुषकी प्रतिमा जो विशेषकर खिलौनेके काम आती है; किसी व्यक्तिपर प्रपत, आटे आदिकी बनायी हुई वह प्रतिमा जो उसके लक्षके अभावमें अंशेष्टि करनेके लिए या उसका मरण मनानेके लिए जलायी जाय । मु० (किसीका) -बाँधना-किसीका अपवश कैदना, किसीकी बदनामी करना ।

पुतली-की० लकड़ी, धातु, कपड़े आदिकी बनी हुई लक्षकी प्रतिमा जो विशेषकर खिलौनेके काम आती है, पुत्रिया; लक्षके बीचका वह काला भाग जिसके मध्यमें रूप ग्रहण करनेवाली इंदिय होती है; कपडा पुननेका यंत्र; सुंदर और कोमलंगी स्त्री; दोहेकी टापके बीचोबीचका उभरा हुआ मांसक भाग । -बद-पु० कपड़ेकी मिक । मु० -फिर जाना-आँसें पहरा जाना; धर्मद होना ।

पुनर्ह-की० पीतनेकी क्रिया या भाव; छेप; दोवार आदिपर मिट्टी, गोबर, चूने आदिका छेप करना; इस कामकी उन्नत ।

पुतरा-पु० किसी बस्तुपर पानी, रंग आदिसे तर कपडा केनेका काम; पानी, रंग आदिसे तर कपडा जो किसी बस्तुपर फेरा जाय ।

पुत्र-पु० [सं०] एक नरक जिसने छुटकारा पानेका साधन पुत्र माना जाता है । -ज-पु० दे० 'पुत्र' ।

पुत्र-पु० दे० 'पुत्र' ।

पुत्ररी-की० दे० 'पुत्री'; दे० 'पुत्रली' ।

पुत्रल-पु० [सं०] पुतला । -बहन-पु० किसी वृत्तव्यक्तिके शब्दके अभावमें उपका पुतला जलानेका कर्म ।

-पुत्रा-की० मृतिपूजा । -विधि-की० दे० 'पुत्रल-बहन' ।

पुत्रलक-पु० [सं०] पुतला ।

पुत्रलिका, पुत्रली-की० [सं०] पुतली ।

पुत्रारी-पु० पुत्र, सुत ।

पुत्रि-की० पुत्री, लक्ष्मी ।

पुत्रिका-की० [सं०] एक प्रकारकी छोटी मधुमक्खी; दीमक ।

पुत्र-पु० [सं०] बेटा; प्यारा बच्चा; पशुशायक; (समासांतमें) अपने कर्मकी कोई छोटी वस्तु (जैसे अतिपुत्र-सुरा) ।

-कदा-की० एक पुत्रवा जड़ी, लक्ष्मणाकंदा । -कर्म(५)-पु० पुत्रोत्पत्ति-संबंधी संस्कार । -काम-वि० जिसे पुत्रकी कामना हो; * पुत्रकी कामनासे किया जानेवाला (बहादि) । -काम्या-की० पुत्रप्राप्तिकी इच्छा । -कार्य-पु० पुत्रसंबंधी संस्कारादि । -कृतक-पु० वह जो पुत्रकी तरह माना-जाना गया हो, गौद किया हुआ ।

-कृत्य-पु० दत्तक पुत्र । -क्षी-की० एक गर्भनाशक योनि-रोग । -जन्म-की० अपने पुत्रोंकी खा जानेवाली स्त्री; अपकृत माता । -जात-वि० जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो । -जीव-जीवक-पु० इंगुटीकी तरहका एक पेड़, जिवापोता । -दा-की० बंध्या कर्कटी; खेखली; लक्ष्मणा नामकी जड़ी; जीवन्ती; श्वेत कंदकारी । -दात्री-की०

मालबाकी एक प्रमिद लता; ज़मरी। - **पुनर्**-पु० पुनर्का पिताके प्रति अवेक्षित कर्तव्य। - **पुनर्जीव**-वि० पुनर्से पौनिकी प्राप्त होनेवाला, आनुवंशिक। - **प्रतिनिधि**-पु० पुनर्के स्थानपर अपनाया हुआ व्यक्ति, दूतक पुनर्। - **प्रवा**-कौ० क्षयिका; ध्वस्त कंठकारि। - **प्रवर**-पु० सबसे बड़ा पुनर्। - **प्रव**-वि० कौ० पुनर् उत्पन्न करनेवाली। - **प्रिच**-वि० पुनर्की प्यारा। पु० एक प्रकारका पत्नी। - **अप्रवा**-कौ० बही जीवनी। - **अप्रव**-पु० दे० 'पुनर्-प्रतिनिधि'। - **अप्रव**-पु० पुनर्का भाव, पुनर्ता; कुंठलीमें पुनस्थानकी प्रवस्थिति (ज्यो०)। - **आप्र**-पु० पुनर्की प्राप्ति, पुनर् उत्पन्न होना। - **वध**-कौ० पुनर्की पत्नी, पत्नी। - **मंगी**-कौ० अनमंगी। - **अंगी**-कौ० मृत्तिक-पत्नी। - **सक**-पु० बहोने प्रेम करनेवाला; बहोका प्रेमी। - **सहमी**-कौ० आश्विन शुद्ध सप्तमी। - **सहम**-पु० व्योतिषिक ५० सहमीमेंसे एक जिससे पुनर्लाम आदिका विचार जाता है। - **सु**-कौ० पुनर् उत्पन्न करनेवाली कौ०। - **हिन**-वि० जिसके पुनर् न हो। [कौ० 'पुनर्हीन']

पुनक-पु० [सं०] वेदाः शरभः टिट्ठाः भूर्तं मनुष्यः पुतला, पुद्गाः एक पर्यंत; एक कुल्लु शालः, केसाः दयनीय व्यक्ति।

पुनका-कौ० [सं०] दे० 'पुनिका'।

पुनवती-वि० कौ० [सं०] पुनर्वाली (कौ०)।

पुनवत्-वि० [सं०] पुनर्वाला।

पुनवाच्य-वि० [सं०] पुनर्से पढ़नेवाला।

पुन्यादिनी-कौ० [सं०] अपने बेटेको खा जानेवाली, न्यासी, मर्षिणी इ०; अमृत माता।

पुन्यादी (विद्)-वि० [सं०] अपने पुनर्को खा जानेवाला, पुनर्भक्षक।

पुन्यावा-पु० [सं०] वह जिसका भरण-पोषण उसका पुनर् करता हो, पुनर्की कमाई खानेवाला; यतिपौका एक भेद, कुटीनक।

पुन्यायी (विद्)-वि० [सं०] पुनर् चाहनेवाला, पुनर्प्राप्तिकी इच्छा रखनेवाला।

पुनिक-वि० [सं०] पुनर्वाला।

पुनिका-कौ० [सं०] बेटा; पुतली, पुत्रिया; पुनर्हीन व्यक्ति की वह कन्या जिसे उसने पुनरूप मान लिया। हो ऐसा करनेके लिए कन्याका पिता विवाहके समय बामतासे यह तै कर लेता है कि इस कन्याका पुनर् मेरा पिन्दान करेगा और उत्तराधिकारी होगा; किसी पदार्थके संबंधमें उससे छोटी सजातीय वस्तु (जैसे-असिपुनिका-असिकी पुनिका-छुरी); अक्षिकी पुतली। - **पुन**, -**सुत**-पु० बेटाका बेटा, दोहित्र; पुनर्के स्थानपर माना हुआ कन्याका पुनर्; पुतली; एक घोषा। - **अर्ता (र्)**-पु० दामाद।

पुनिकी-वि० कौ० [सं०] पुनर्वाली।

पुनिक-वि० [सं०] पुनर्संपत्ती; पुनर्का।

पुनी-कौ० [सं०] कन्या; बेटा; पुर्गा।

पुनी (विद्)-वि० [सं०] पुनर्वाला।

पुनीय, **पुन्य**-वि० [सं०] दे० 'पुनिक'।

पुनीया-कौ० [सं०] पुनर्लामकी इच्छा।

पुनेव-वि० [सं०] पुनर्का इच्छुक।

पुनेहि, **पुनेहिका**-कौ० [सं०] पुनर्लामकी इच्छासे किना जानेवाला बहविक्षेप।

पुनेष्वा-कौ० [सं०] पुनर्प्राप्तिकी कामना।

पुनीमा-पु० एक प्रसिद्ध छोटा घोषा जिसकी पत्तियों अच्छी गंधवाली होती है और चटनी आदिमें पीसकर खायी जाती है।

पुनक-पु० [सं०] परमाधुः भूत-सामान्य, वे इन्द्र्य जिनके संघातसे शरीर तथा मन, प्राण आदिका निर्माण होता है (जै०); आत्मा (बौ०); शिव। वि० सुंदर।

पुन्यप्रतिपाद्य-पु० [सं०] जैन-दर्शनके अनुसार पाँच प्रकारके द्रव्योंमेंसे एक।

पुनर्-'पुनर्'का समासगत रूप। - **करण**-पु० फिर करना। - **पाक**-पु० फिरसे पकाना या पकाया जाना।

- **पुन**-अ० बार-बार। - **पुना**-कौ० पुनर्पुन नामकी नदी। - **प्रतिनिवर्तन**-पु० पुनर् आना, वापस आना।

- **प्रमा**-पु० बार-बार गफलत करना। - **प्राप्ति**-कौ० कोई वस्तु फिरसे प्राप्त होना। - **प्राप्ति**-वि० पुनर् प्राप्त करने योग्य। - **संगम**-पु० फिरसे मिलना।

- **संवाच**-पु० हुआ हुई अधिहीनकी अधिकी फिरसे जहाना। - **संस्कार**-पु० दिनात्मिका वह उपनयन संस्कार जो गोमांसभक्षण, सूर्याशन आदिसे प्रायश्चित्तके रूपमें दुबारा हो। - **संस्कृत**-वि० फिर सुधारा हुआ; जिसकी मरम्मत की गयी हो। - **सिद्ध**-वि० फिरसे पकाया हुआ। - **स्तोम**-पु० एक वाग्य। - **स्थापन**-पु० फिरसे स्थापित करना।

पुन-वि० [सं०] शुद्ध, पवित्र करनेवाला (समासांतमें-जैसे कुलपुन)। † पु० पुन्य।

पुनपुन, **पुनपुना**-कौ० गवाके पामकी एक छोटी नदी जो पवित्र मानी जाती है।

पुनरवस, **पुनरवसु**-पु० दे० 'पुनर्वसु'।

पुनर्-अ० [सं०] एक बार और, फिर, दुबारा। - **अवा**-गस-पु० पुनर् जाना। - **अपि**-अ० फिर भी; बार-बार। - **अभिधान**-पु० फिरसे कहना। - **आगत**-वि० फिरसे आया हुआ, लौटा हुआ। - **आगत**, **आग**-अव-पु० फिरसे आना, लौटना। - **आगामी (सिद्ध)**-वि० फिरसे आनेवाला, लौटनेवाला। - **आजाति**-कौ० फिर जन्म लेना। - **आदि**-वि० फिरसे शुरू करनेवाला। - **आधान**-पु० श्रौत, स्मार्त अधिका पुनर् स्थापन। - **आवेश**-वि० फिरसे स्थापित की जानेवाली (अभि)। पु० दे० 'पुनराधान'; सोमयज्ञ। - **आनयन**-पु० लौटा लेना, पुनर् ले आना। - **आलम्भ**-पु० पुनर् ग्रहण करना। - **आवर्त**-पु० लौटना; फिरसे जन्म ग्रहण करना। - **आवर्तक**-वि० पुनर्-पुनर् आनेवाला (ज्वर)। - **आवर्ती (सिद्ध)**-वि० फिरसे या बार-बार जन्म ग्रहण करनेवाला। - **आवृत्त**-वि० दोहराया हुआ; संसारमें फिरसे आया हुआ; लौटा हुआ। - **आवृत्ति**-कौ० दोहराना; फिरसे आना, लौटना; संसारमें फिरसे आना, दुबारा जन्म लेना। - **आहार**-पु० दुबारा भोजन करना; दुबारा किया हुआ भोजन। - **उक्त**-वि० दुबारा या बार-बार कहा हुआ। पु० दुबारा कहना। - **उक्तवत्**-

भास-पु० एक शब्दार्थक जिसमें शब्द सुननेसे तो पुनरुक्तिही जान पड़े परंतु वास्तवमें पुनरुक्ति न हो।
 -उक्ति-की० किसी बातकी दुहराना वा एक ही बातको बार-बार कहना (साहित्यमें यह एक दोष माना जाता है)।
 -उत्थान-पु० पुनः उठना; पुनरुत्थिति।
 -उत्पत्ति-की० फिर उत्पन्न होना। -उत्पादन-पु० पुनः उत्पादन करना; पुनः निर्माण करना। -उत्सृज्य-वि० दुबारा सिका हुआ; जो फटनेपर सी दिया गया हो।
 -उद्धार-पु० फिरसे ठीक करना, बचाना, मरम्मत आदि करना। -उपगम, -उपगमन-पु० लौटना।
 -उपमनव-पु० दे० 'पुनः-संस्कार'। -उपशोष, -ऊष्ण-वि० की० जो फिरसे ब्याही गयी हो, जिसका दुबारा ब्याह हुआ हो। -गमन-पु० दुबारा जाना।
 -नेत्र-वि० जो फिर गाया जाय। -ग्रहण-पु० कलखुल आदिने बार-बार ग्रहण करना, निकालना; पुनरावृत्ति। -जन्म(न्)-पु० मरनेके बाद फिरसे उत्पन्न होना, दुबारा शरीर धारण करना। -जन्म(म्भ)-पु० प्राक्पण। -जात-वि० फिर जनमा हुआ। -जीन-पु० उबनेका एक प्रकार। -जब-पु० नाखून। वि० दे० 'पुनर्नव'। -क्षय-पु० पुनः दे देना, लौटा देना।
 -नव-वि० जो फिर-फिर नया हो जाता हो। पु० दे० 'पुनर्नव'। -नवा-की० शाककी जातिका एक बरसाती पोषा, गदहपुरना। -भव-पु० फिर शरीर धारण करना, दुबारा उत्पन्न होना; नाखून; एक तरहकी पुनर्नवा। वि० जो फिर उत्पन्न हुआ हो। -भास्व-पु० दूसरा जन्म।
 -भू-की० वह की जो पहले पतिके मरनेपर दूसरेसे ब्याही गयी हो। -भोग-पु० पूर्वकर्मके फलके रूपमें सुख या दुःखका पुनः भोग। -भार-पु०, -सृष्टि-की० बार-बार भरना। -लाभ-पु० फिर प्राप्त हो जाना। -बचन-पु० दुबारा कथन, पुनरुक्ति; शास्त्र द्वारा बार-बार निहित होना। -बसु-पु० सप्ताहस नक्षत्रोंमें सातवाँ नक्षत्र; विष्णु; शिव; कात्यायन मुनि; एक लोक; पुनः सृष्टि होना। -बाह्-पुनरुक्ति।
 -बार-ज० दुबारा। -विभाजन-पु० जिसका एक बार विभाजन हो चुका हो उसका फिरसे विभाजन करना। -विबाह-पु० दूसरा ब्याह।

पुनर्वासी-की० दे० 'पूर्वमासी'।

पुनरा-पुनर'का समासगत रूप। -पर्वण-पु० पावुर करना। -षष्ठि-की० ढेर लगाना।

पुनाराज-पु० [सं०] नया राजा।

पुनि-अ० पुनः, फिर। -पुनि-ज० बार-बार।

पुमि-की० पूर्णिमा।

पुनी-वि० पुण्य करनेवाला, पुण्यात्मा। की० पूर्णिमा। अ० पुनः, फिर।

पुनीत-वि० [सं०] पवित्र किया हुआ; शुद्ध, پاک।

पुन-पुन'का समासगत रूप। -नक्षत्र-पु० नर नक्षत्र; वह नक्षत्र जिसके क्षितिकाळमें नर संतान उत्पन्न हो।

-वाग-पु० एक वक्ता सदाबहार पेश; श्रेष्ठ वक्ता; सफेद हाथी; श्वेत कमल; नावफल। -नाट, -नाच-पु० चक्-चक्का पोषा।

पुन-पु० दे० 'पुण्य'।

पुमि-की० पूर्णिमा।

पुनामा(मन्)-पु० [सं०] पुनः नामका नरक; पुनाग वृक्ष।

पुण्य-पु० दे० 'पुण्य'। -ताप-की० दे० 'पुण्य'।

पुपकी-की० बौंसकी पतली पोली नली।

पुपू-की० [सं०] शुद्ध करनेकी इच्छा।

पुप्पुद-पु० [सं०] ताड़का एक रोग।

पुष्क-पु० पुष्प, फूल।

पुष्कुल-पु० [सं०] उदरवात।

पुष्कुल-पु० [सं०] कैफका; कमलका बीजकोष।

पुमान्(मस्)-पु० [सं०] पुरुष, नर, मादाका उलटा।

पुर्जय-पु० [सं०] आत्मा; वरण।

पुर्जनी-की० [सं०] बुद्धि, समझ; प्रज्ञा।

पुर्जय-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध रघुवंशी राजा; काकुत्स्थ। वि० पुरकी जीतनेवाला।

पुर्जर-पु० [सं०] कौल, बगल।

पुर्द्वर-पु० [सं०] ईश; शिव; विष्णु; अग्नि; ज्येष्ठा नक्षत्र; चोर।

पुर्द्वरा-की० [सं०] गंगा।

पुर्भि, पुर्धी-की० [सं०] पतिपुत्रवती की; (सम्मानित) की।

पुर-पुन'का समासमें प्रयुक्त रूप। -पाक-वि० जिसकी सिद्धि निकट हो। -प्रहर्ता(र्तु)-पु० अगली पौर्तमें लड़नेवाला सैनिक। -फल-वि० सद्यः फल देनेवाला। -स्व-वि०, पु० दे० 'पुरस्में'। -स्थ-वि० जो सामने हो, दृष्टिगोचर।

पुर-पु० [सं०] बाजार; सारंग; तोरण, प्रासाद आदिसे युक्त बनी बस्ती; नगर, शहर; कोट, किला; गुह, घर; पाटलि-पुत्र; शरीर; कोठा, जदारी; अतःपुर; अंबारघर; वैद्या-लय; नागरमोषा; कलौकी आवृत्त करनेवाले पत्ते; राशि, ढेर; गुग्गुलु; चमड़ा; विपुरासुर। वि० भरा हुआ, पूर्ण।

-कोह-पु० नगररक्षक दुर्ग। -ग-वि० नगरगामी; जिसकी मनोवृत्ति अनुकूल हो। -जग-पु० पुरवासी लोग। -जिह्व-पु० शिव। -तटी-की० छोटा बाजार।

-तोरण-पु० नगरका बाहरी दरवाजा या फाटक, नगरका बहिर्द्वार। -प्राण-पु० प्राचीन, शहरपनाह। -हार-पु० नगरका प्रवेशद्वार। -हिद्(्व)-पु० शिव।

-नारी-की० वैद्या। -निवेश-पु० नगर बसाना।

-पक्षी(क्षिन्)-पु० पालतू पक्षी। -पाल, -पाक-पु० नगरपाल; आत्मा। -भिद्, -भयन, -भयिता(र्तु)-पु० शिव। -मार्ग-पु० सबक। -रक्ष, -रक्षक, -रक्षी(क्षिन्)-पु० नगरकी रक्षाके लिए नियुक्त कर्मचारी।

-रोच-पु० नगरका घेरा बालना। -कोक-पु० पुरजन। -वद्-की० दे० 'पुरनारी'। -वर-पु० राजनगर। -वासी(सिन्)-पु० नगरमें रहनेवाला, पौर, नागरिक। -वास्तु-पु० नगर बसाने योग्य भूमि।

-वासन, -हा(हृद्)-पु० विष्णु; शिव।

पुरा-पु० मोट, चरसा। -बट-पु० मोट, चरसा। -हृ-पु० वह व्यक्ति जो मोट चक्ते समय उसका पानी टाकने

वा छीननेके लिए कुद्रेपर नियुक्त रहता है।

पुर-वि० [का०] भरा हुआ, पूर्ण । -अन्न-वि० शक्ति मय । -झार-वि० कहींसे भरा हुआ; संकटपूर्ण । -अन्न-वि० नष्टसे भरा हुआ । -गो-वि० बहुत बोलने-वाला । -गोहूँ-को० बकवास । -ज्ञानका-वि० मने-दार, सलाह । -जोर-वि० जोरदार; ओजपूर्ण । -जोश-वि० जोशसे भरा हुआ । -जूर-वि० रौखन, चमकदार, सुतिमान । -ज्व-वि० चपरा; चालाक । -साक्षा-वि० बड़ा । -हीछ-वि० डरावना ।

पुरद्व-वि०-को० कमलका पत्ता; कमल; जरायु, अपरा ।

पुरद्व-वि०-पु० तजुना; ताना ।

पुरद्व-वि०-पु० बापसे ऊपरकी किसी पीढ़ीमें उत्पन्न कोई पुरुष, पूर्वपुरुष (जैसे-दादा, परदादा); बन्ना-बूढ़ा (व्यं०) । [को० 'पुरखिन' ।]

पुरद्व-वि०-को० पुचकार; बढ़ावा; उभाङ्गनेकी क्रिया, उत्स-काना; पृष्ठपोषण ।

पुरद्व-वि०-पु० [का०] कागजात डकका; खंल, डकका; अवयव, अंग; निविद्याका शरीक पर; रक्षा । पु० -(ज्ञे) पुरज्ञे उबना या होना-डकने-डकने होना । -पुरज्ञे उबना या करना-डकने-डकने करना ।

पुरद्व-वि०-पु० [न०] खर्च, सोना ।

पुरद्व-वि०-पु० [सं०] सज्ज ।

पुरद्व-वि०-पु० [सं०] समझ, आगे ।

पुरद्वि-वि०-वि० बूढ़ा, बूढ़ ।

पुरद्वि-वि०-को० पैरके अँगुठेका एक गहना; सिंहा; बंदूकका गज ।

पुरद्वि-वि०-पु० [सं०] पहलेका; पूर्व जन्मका ।

पुरद्वि-वि०-को० दे० 'पुरवा' ।

पुरद्वि-वि०-पु० [सं०] पूरका । पु० पूरवा देश या प्रांतका निवासी ।

पुरद्वि-वि०-वि०, पु० दे० 'पुरविद्या' ।

पुरद्वि-वि०-वि०, को० दे० 'पूरवी' ।

पुरद्वि-वि०-को० [सं०] दुर्गा ।

पुरद्वि-वि०-को० पूरकी ओरसे बहनेवाली हवा, पुरवा ।

पुरद्वि-वि०-सं० कि० भरना, पुजाना; पूरा करना । अ० कि० पूरा होना; पर्याप्त होना ।

पुरद्वि-वि०-को० पूरकी ओरसे बहनेवाली हवा । पु० वैलंका एक रोग जो पुरवा हवा लगनेसे होता है; मिट्टीका प्याले जैसा बरतन, कुबहः * छोटा गोंब, टीका, लेका । * वि० पूर्ण करनेवाला-‘बलि राधे हृदावन निहरन औसर बन्यौ है मनोरथ-पुरवा’-वन० ।

पुरद्वि-वि०-को० पुरवा हवा ।

पुरद्वि-वि०-को० [सं०] एक रागिनी ।

पुरद्वि-वि०-को० दे० 'पुरवर्धवा' ।

पुरद्व-वि०-पु० [सं०] आरंभिक कृत्य; प्रथम करते हुए किसी देवताका नाम या संज्ञ जपना; पुरसे प्राप्त किये हुए भद्रका वह सविधि जप जो उसे सिद्ध करनेके लिए किया जाय । -पूरवा-वि०-को० दे० 'पुरावरण' । -कृ-पु० एक प्रकारकी भास; चूचुक, स्तनहृत ।

पुरद्व-वि०-पु० दे० 'पुरवा' ।

पुरद्वि-वि०-पु० खार ।

पुरद्वि-वि०-वि० [का०] पृष्ठने वा खोज-खार लेनेवाला ।

पुरद्वि-वि०-पु० जँचवा, गहराईकी एक माप जो मानमें हाथ उठाकर खड़े हुए मनुष्यके बराबर होती है ।

पुरद्वि-वि०-को० [का०] पृष्ठने वा खोज-खार लेनेकी क्रिया (समाप्तमें) ।

पुरद्वि-वि०-अ० [सं०] सामने, समझ; आगे, पहले । -कृ-पु० पुरस्कृत करनेकी क्रिया, आगे करना या रखना; पूरा करना; दे० 'पुरस्कार' । -का-पु० आगे करना या रखना; आदर, सम्मान; पूजन; स्वीकार; शत्रुपर आक्रमण करना; सिक्त करना, सेक; अभिशाप; उपहार, भेंट (दे०, हिं०); पारितोषिक, इनाम (दे०, हिं०); पारिभ्रमिक (हिं०) । -कृत-वि० आगे किया हुआ या रखा हुआ; आदर, सम्मानित; पूजित; स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत; सिक्त; शत्रु द्वारा आक्रांत; अभिशाप; जिसे पुरस्कार दिया गया हो या मिटा हो (दे०, हिं०) । -क्रिया-को० आरंभिक कृत्य; आदर करना, सम्मान करना । -स-वि० आगे चलनेवाला, अग्रगामी; सहित, उपेत (समाप्तमें) । पु० नेता, अग्रणी, अग्रज; अनुचर । -स्था-वि० (विन्) -वि० आगे खड़ा रहनेवाला ।

पुरद्वि-वि०-अ० [सं०] आगे, सामने; पहले, आरंभमें; प्रथममें; अतमें; पूर्वकालमें; बादमें ।

पुरद्वि-वि०-पु० बह अन्न और द्रव्य जो मांगलिक कृत्योंके आरंभमें लेगीकी दिया जाता है ।

पुरद्वि-वि०-को० एक हारी जिसकी पत्नियाँ और जड़ दवाके काम आती हैं, हरजेवकी ।

पुरद्वि-वि०-पु० पुनर्हृत, हँद ।

पुरद्वि-वि०-पु० [सं०] शिव ।

पुरा-वि०-पु० बली, गाँव । अ० [सं०] प्राचीन कालमें, पहले; अवतक; सिंहा; अन्य कालमें, थोड़े समयमें । (प्राचीन, अतीत आदि अर्थोंका जो इसमें बोधन होता है) । को० प्राची, पूर; एक सुगंधित द्रव्य; गंगा; किला । -कथा-को० प्राचीन कथा, इतिहास । -कृ-पु० प्राचीन युग; प्राचीन समय; प्राचीन वृत्त । -कृत-वि० पहलेका किया हुआ; पूर्वजन्ममें किया हुआ । पु० पूर्वजन्मका कर्म । -श-वि० पूर्वगामी । -स-पु० पुरानी बातोंके अनुसंधान तथा अध्ययनसे संबंध रखनेवाली विशेष प्रकारकी विद्या । -योगि-वि० प्राचीन कालमें उत्पन्न । पु० शिव । -लिपि-वि०-को० पुरातन कालमें प्रचलित लिपि । -लिपिशास्त्र-पु० प्राचीन लिपियोंका विवेचन करनेवाला शास्त्र । -ब-पु० भीष्मा । -वि-वि० पुरानी बातोंकी जाननेवाला; प्राचीन इतिहास जाननेवाला । -बृ-पु० प्राचीन वार्ता; इतिहास । वि० प्राचीन, पुराना ।

पुरा-वि०-वि० दे० 'प्राचीन' ।

पुरा-वि०-पु० [सं०] बुज ।

पुरा-वि०-वि० [सं०] प्राचीन, पुराना; जर्ण-शीर्ण । पु० प्राचीन वृत्तांत; संहिता, कथ, सर्वतर्क तथा प्राचीन कथियों, सुनियों और राजाओंके वंशों तथा चरितोंके वर्णनसे युक्त प्रसिद्धिर्द्ध भर्तृमय (जो अठारह है-विष्णु, पद्म, मत्स्य, शिव, मागधत, नारद, मार्कण्डेय, अत्रि, ब्रह्मवैवर्त, कलि,

बराह, स्कंद, वामन, कूर्म; मत्स्य, गरुड, ब्रह्मांड और भविष्य; एक पुराणा सिद्धा जो अस्सी कौवियोंके बराबर होता था; कार्याण; अठारहवीं संख्या; शिव । -कण्व-पु० दे० 'पुराण्य' । -व-पु० ब्रह्मा; पुराणवाचक । -हृद-वि० प्राचीन ऋषियोंका देखा या माना हुआ । -पञ्च-पु० पुराणा माल (की०) । -पुरुष-पु० बृह मन्त्र्या विष्णु । -अर्ध-पु० टूटा-फटा सामान (की०) । पुराणांत-पु० [सं०] यम; पुराणका शेष वा अंत भाग । पुरातन-वि० [सं०] प्राचीन, पुराणा; जो सबसे पहले हुआ हो, आद्य (जैसे-पुरातन पुरुष) । पु० विष्णु; प्राचीन कथा । -पुरुष-पु० विष्णु ।

पुराधिप, पुराध्वज-पु० [सं०] नगरके शासन, रक्षण आदिका प्रबंध करनेवाला प्रधान अधिकारी ।

पुराणा-वि० दे० 'पुराणा' । पु० दे० 'पुराण' ।

पुराणा-वि० जिसकी सत्ता बहुत पहलेसे हो, बहुत दिनों-का, नयाका उलटा; बीता हुआ; जो बहुत पहले बीत चुका हो; विगत कालका; बहुत पहले बीते हुए समयका; जो विनी होनेके कारण अच्छी दशामें न हो, जीर्ण; जिसे किसी बातका पूरा अनुभव हो, पूर्ण अनुभवी; परिणत-बुद्धि; पक्का; सधा हुआ, मैसा हुआ; सिद्ध (पुराणा हाथ); जिसका रिवाज उठ गया हो; जिसका समय अब न हो । सं० कि० किसीसे पूरनेका काम कराना; पूरा कराना; भरवाना; * पालन कराना; पूरा करना, भरना; * सिद्ध कराना, पूर्ण कराना; * आदे, अवीर आदिसे (चौक) बनवाना; इस प्रकार नौटना कि कोई बिना पाये न रहे, अटना ।

पुराराति, पुरारि-पु० [सं०] शिव ।

पुराख-पु० दे० 'पयाख' ।

पुरावती-खी० [सं०] एक पुरानी नदी ।

पुरासाद(ह्)-पु० [सं०] इंद्र ।

पुरासिनी-खी० [सं०] सहदेवे नामकी बूटी ।

पुरासुहृद्-पु० [सं०] शिव ।

पुरि-खी० [सं०] पुरी, नगरी; शरीर; नदी । पु० राजा ।

-ज्ञ-पु० जीव । -ज्ञ-वि० शरीरमें निवास करनेवाला ।

पुरिखा, पुरिषा-पु० पूर्वपुरुष, पुरखा ।

पुरिया-खी० बाना फैलानेकी नदी; ताना; † पुनिया ।

पुरिष-पु० दे० 'पुरीष' ।

पुरी-खी० [फा०] भरा होना (समासमें, जैसे-खाना-पुरी); [सं०] नगरी, शहर; नदी; शरीर; किला, दुर्ग; दशनामी सन्ध्यासियोंका एक भेद; उड़ीसाका एक प्रसिद्ध नगर । -मोह-पु० भय ।

पुरीत-खी० [सं०] आँध; हृदयके पासकी एक नाड़ी ।

पुरीष-पु० [सं०] विद्या, गु; कृपा; अक्ष (निषेद्ध) ।

-निप्रहण-पु० कीटबदला ।

पुरीषण-पु० [सं०] विद्या; मत्स्यग करना ।

पुरीषम-पु० [सं०] उग्र ।

पुरीषाधाम-पु० [सं०] मत्स्यग ।

पुरीषोत्सर्ग-पु० [सं०] मत्स्यग ।

पुरु-पु० [सं०] देवकी, स्वर्ग; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा

था; राजा बजातिका कनिष्ठ पुत्र जिसने अपने पिताकी अपना जीवन समर्पित कर दिया था; चंद्रवंशका छठा राजा; पराय । वि० प्रचुर । -कुत्स-पु० मांघाताका ज्येष्ठ पुत्र । -कुत्सच-पु० एक दैत्य । -चेतन-वि० प्रकट, जो बहुगोत्री प्रत्यक्ष हो । -विस्-पु० अर्जुनके मामा राजा कुंतिमोह; विष्णु । -वृषाक्ष-पु० हंस । -वृषा(क्षस्)-पु० इंद्र । -वृ-पु० सेना । -वृक्ष, -वृद्ध(ह्)-पु० इंद्र । -भोजा(अस्)-पु० बादल । -भीम-पु० अजमीदका छोटा भाई । -छंपट-वि० अति छंपट । -हृत-वि० जिसका आह्वान बहुगोत्रे किया हो, जिसकी बहुतसे लोगोंने स्तुति की हो । पु० इंद्र । -हृति-पु० विष्णु ।

पुरुख-पु० पुत्र ।

पुरुखा-पु० दे० 'पुरखा' ।

पुरुष-पु० [सं०] मर्द, नर, स्त्रीका उलटा; मानव जाति; सर्व; आत्मा; सांख्यके अनुसार वह मुख्य तत्त्व जिसके संयोगसे प्रकृति विश्वकी सृष्टि करती है (यह त्रिगुणातीत, चेतन, अविकारी, मित्र, सर्वव्यापक, निष्क्रिय तथा स्थिर मुक्त होता है); परमात्मा; विष्णु; संसारका आदि कारण-भूत परम पुरुष (पुरुषसूत्र); शिक्ष; जीव; विषम राशि-पहली, तीसरी, पाँचवीं, सातवीं, नवीं या व्यासर्षी राशि (ज्यो०); कर्मचारी (राजपुरुष); ऊँचाई या गहराईकी एक प्राचीन माप जो पुरुष या १२० अंगुलके बराबर होती थी; मेरु पर्वत; पुष्पाव दृष्ट; परा; पुष्पक; पति; * पूर्व-पुरुष, पुरखा । -कार-पु० पुरुषार्थ, पौरुष; उद्योग । -कुणप-पु० मनुष्यका शव । -केसरी(रिक्), -केसरी(रिक्)-पु० वह जो पुरुषोंमें सिंहके समान हो, सिंहके समान पराक्रमी पुरुष; विष्णुका नृसिंहावतार । -गति-पु० एक तरहका साग । -प्रह-पु० मगर, सर्व और गुरु (ज्यो०) । -भी-वि० खी० पतिकी हत्या करनेवाली । -ज्ञान-पु० मनुष्यबजातिका ज्ञान । -ईतिहा-खी० एक जमी जो अष्टवर्गके अंतर्गत है, मेवा । -वृक्ष-वि० जो ऊँचाईमें पुरुषके बराबर हो । -वृद्ध(ह्)-पु० विष्णुका विरोधी । -ह्वेविणी-वि० खी० अपने पतिसे वैर रखनेवाली (खी) । -ह्वेपी(विक्)-वि० मनुष्यसे द्वेष करनेवाला । -धर्म-पु० मनुष्यमात्रका धर्म । -जीरेषक-पु० श्रेष्ठ पुरुष । -वज्रप-पु० हस्त, मूल, अश्विन, पुनर्वसु, वृषाशिरा और पुष्य (ज्यो०) । -नाथ-पु० सेनापति; राजा । -पञ्च-पु० पशुपत्य मनुष्य, नरपशु । -पुंगव, -पुंडरीक-पु० श्रेष्ठ पुरुष । -पुर-पु० गांधारकी प्राचीन राजधानी, वर्तमान पेशावर । -प्रेक्षा-खी० नेत्र पुरुषोंके देखनेका लेख या मेला । -मात्र-वि० मनुष्यकी ऊँचाईका । -मानी(विक्)-वि० अपनेकी वीर समझनेवाला । -मुत्स-वि० पुरुषके समान सुखवाला । [खी० 'पुरुषमुखी'] । -शेष-पु० एक प्राचीन वैदिक यह जिसमें मनुष्यकी कछि दी जाती थी । -राशि-खी० मेघ, मिथुन, सिंह आदि विषम राशियोंमेंसे कोई एक (ज्यो०) । -वर्-पु० श्रेष्ठ पुरुष; विष्णु । -वर्जित-वि० वीरान । -वार-पु० रवि, मंगल, बुधरपति और शनिवार (ज्यो०) । -बाह-

पु० गरुडः कुबेर । -स्वाग्रः-सावृक्ष-पु० वह जो पुरुषोंमें सिंहके समान हो, सिंहके समान पराक्रमी पुरुष ।
-शरीर-पु० काठका बना हुआ मनुष्यका सिर जिससे शीर, सेंभमें यह देखनेके लिए झालते थे कि वह प्रवेशके योग्य है या नहीं (स्तंभशाक) । -समबाध-पु० मनुष्योंका समूह । -सिंह-पु० दे० 'पुरुषदेशरी' । -सूक्त-पु० ऋग्वेदका एक परम-पुरुष-विषयक प्रसिद्ध सूक्त जो 'सप्तसंशोर्ष'से आरम्भ होता है, ऋग्वेदके दशम मंडलका १० वाँ सूक्त ।

पुरुषक-पु० [सं०] पुरुष, नर; योगेका पिछले पैरोंके बल खड़ा होना, अलक्ष ।

पुरुषत्व-पु० [सं०] पुरुषका भाव ।

पुरुषांग-पु० [सं०] पुरुषकी क्लिमेंद्रिय ।

पुरुषांतर-पु० [सं०] दूसरा मनुष्य ।

पुरुषाद, पुरुषादक, पुरुषाद-पु० [सं०] नरभक्षक राक्षस ।

पुरुषास-पु० [सं०] विष्णु; दैत्य ।

पुरुषाधम-पु० [सं०] नीच मनुष्य ।

पुरुषाधिकार-पु० [सं०] पुरुषका कर्तव्य ।

पुरुषानुक्रम-पु० [सं०] ब्रह्मपदोंकी परंपरा ।

पुरुषचित्त-पु० [सं०] पुरुषत्व, आचरण; एक रतिबंध । वि० पुरुषकी तरह आचरण करनेवाला ।

पुरुषावुच-पु० [सं०] मनुष्यकी आयु । -जीवी(विन्)-वि० जो मनुष्यकी पूरी आयुभर जीवे । [कौ० 'पुरुषावुच-जीवीनी' १]

पुरुषारथ-पु० दे० 'पुरुषार्थ' ।

पुरुषार्थ-पु० [सं०] मनुष्यके जीवनका प्रधान उद्देश्य, वह वस्तु या प्रयोजन जिसको प्राप्ति या सिद्धिके लिए मनुष्यकी उन्नति करना चाहिये (पुरुषार्थ चार माने गये हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष); उत्तम, उत्तम ।

पुरुषाशी(विन्)-पु० [सं०] राक्षस ।

पुरुषास्थि-कौ० [सं०] मनुष्यकी हड्डी । -माछी(किन्)-पु० शिव ।

पुरुषी-कौ० [सं०] जी ।

पुरुषेष्ट-पु० [सं०] राजा; श्रेष्ठ पुरुष ।

पुरुषोत्तम-पु० [सं०] श्रेष्ठ पुरुष; विष्णु; कृष्ण; नारायण; ब्रह्माचार्य; अष्टासेक या कर्मचारी । -क्षेत्र-पु० उसीसाका वह पुण्यक्षेत्र जहाँ जगन्नाथ निवास करते हैं, जगन्नाथपुरी । -मास-पु० अधिक मास, मलमास ।

पुरुषूत-पु० [सं०] दे० 'पुरुष' साध ।

पुरुषवा(वस्)-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध सोमवंशी राजा जिसका विवाह उर्वशीसे हुआ था (पर अंतमें दोनों विभुद गये); एक विश्वदेव ।

पुरेवा-पु० हल्की मूठ ।

पुरैत, पुरैति-कौ० दे० 'पुरत' ।

पुरो-पु० 'पुरस्का' समासगत रूप । -गत्ता(ह), -गामी(मिन्)-वि० दे० 'पुरोग' । पु० नायक; अग्रदूत; कुसा । -न-वि० आगे-आगे चलनेवाला, अग्रगण्य; प्रधान । -वत्-वि० जो सामने हो । जो पहले गया हो । -गति-कौ० अग्रगमिता । पु० कुसा । वि० आगे-आगे चलनेवाला ।

-गम-वि० अग्रगामी, अग्रसर । -जम्मा(गमन्)-वि० जिसका जन्म पहले हुआ हो । पु० जेठा भाई । -क्षात्र-क्षात्र-पु० जी, बाबल आदिके आटेकी टिकियाजिसे कपालमें रखकर अधिमें हवन करते हैं; हवि; कुतश्चेष्टः पुरोक्षात्र वा हवि देते समय पढ़ा जानेवाला मंत्र; सोमरस । -मागी(मिन्)-वि० अग्रगम लेनेवाला; (किसीमें) दोष ही दोष देखनेवाला, छिद्रान्वेषी । -मास्त-बात-पु० पुरना हवा । -वाद्-पु० पूर्व कथन ।

पुरोदि-कौ० [सं०] नदीका प्रवाह; पत्रास्य ।

पुरोक्षाशीव-वि० [सं०] पुरोक्षाशके कामका (यव, तंडुल आदि) ।

पुरोत्सव-पु० [सं०] नगरभरमें मनाया जानेवाला उत्सव ।

पुरोचान-पु० [सं०] नगरके अंदरका उपान, 'पार्क' ।

पुरोधा-कौ० [सं०] पौरोहित ।

पुरोधा(वस्), पुरोधानीव-पु० [सं०] पुरोहित ।

पुरोधिका-कौ० [सं०] ज्योष्ठा, सबसे प्रिय पत्नी ।

पुरोहित-पु० [सं०] धार्मिक कृत्य करनेवाला ।

पुरोहिताई-कौ० पुरोहितका भाव; पुरोहितका पेशा ।

पुरोहितानी-कौ० पुरोहितकी पत्नी ।

पुरोहितिका-कौ० [सं०] पुरोहितानी ।

पुरोहिती-कौ० पुरोहिताई ।

पुरी-पु० पुरवट ।

पुरीका(वस्)-वि०, पु० [सं०] नगरवासी ।

पुरोती-कौ० कनी पूरा करना, पूर्ति ।

पुरोती-कौ० पूरा करना; समाप्ति ।

पुरा-पु० दे० 'पुरजा' ।

पुराग-पु० यूरोपके दक्षिण-पश्चिममें स्पेनसे लगा हुआ एक छोटा देश ।

पुरतगाली-वि० पुर्तगाल-संबंधी; पुर्तगालका । पु० पुर्तगालमें रहनेवाला, पुर्तगाल-निवासी । कौ० पुर्तगालकी भाषा ।

पुरतगीज-पु० [अ०] पुर्तगाल-निवासी । कौ० पुर्तगालकी भाषा । वि० पुर्तगाल संबंधी ।

पुरतला-वि० दे० 'पुरतला' ।

पुरसाँ-वि० दे० 'पुरसाँ' ।

पुरसाँ-कौ० दे० 'पुरसाँ' ।

पुल-वि० [सं०] बड़ा, भारी, महान् । पु० रोमहर्षण, रोमांच; [का०] नदी, सीता, खाई आदि पार करनेका वह साधन जो नाव पाठक अथवा खम्भोंपर पट्टियों आदि बिछाकर या पक्षी जोड़ाई करके बनाया जाता है, सेतु । -सरास-पु० दोखके ऊपरका वह बाल जैसा बारीक और तलवार जैसा तेज पुल जिसपरसे कयामतके बाद निकट सबी पुखरेमें (कहते हैं कि जेक तो उसे आसानीसे पार करके बहिर्गममें चले जायेंगे और वद लोग कटकर दोखमें गिर जायेंगे-इस्लाम) । पु० (किसी बालका)-बाँधना-अस्मार करना, हसी लगाना ।

पुलक-पु० [सं०] हर्ष, भय आदिके कारण रोंगटे खड़े होना, लोमहर्षण, रोमांच, लक्ष्मिपुण्य; एक प्रकारका रक्त; एक रत्नदोष; एक प्रकारका खनिज पदार्थ; बाथीका रातिव; मषपानका पात्र; इतराक; एक प्रकारकी सरसों; एक गंधर्व; एक प्रकारकी मिट्टी ।

पुष्कलनाभ-अ० कि० पुष्कलित होना, हर्षविह्वल होना ।
पुष्कलांग-पु० [सं०] वरुणा का पाश ।
पुष्कलाङ्ग-ली० पुष्कलित होनेका भाव, पुष्कल ।
पुष्कलाक्षय-पु० [सं०] कुंभ ।
पुष्कलाक्षि-ली० दे० 'पुष्कलाक्षि' ।
पुष्कलावलि-ली० [सं०] मेघ या हर्षजन्य रोमांच ।
पुष्कलित-वि० [सं०] जिसे रोमांच हुआ हो; छट, प्रसन्न हर्षविह्वल ।
पुष्कली(किन्)-वि० [सं०] पुष्कलवाला, रोमांचयुक्त । पु० कदंबका एक भेद ।
पुष्कलकर्म-पु० [सं०] हर्षोद्रेकसे कौपना ।
पुष्कलोद्गम, **पुष्कलोद्गम**-पु० [सं०] रौंगटे खड़े होना, लोमहर्षण ।
पुष्कटी-ली० पलटनेकी क्रिया ।
पुष्कटिस-ली० हलध्वेकी तरह पकायी हुई अलसी आदि जो धामपर उसे पकाने, फोड़नेके लिए बाँधते हैं ।
पुष्कपुष्पा-वि० दे० 'पुष्कपुष्पा' ।
पुष्कपुष्पा-वि० पिलपिला, जो भीतरसे नरम और ढीला हो ।
पुष्कपुष्पाना-स० कि० किसी पुष्कपुष्पी चीजकी दबाना; दबाकर चूसना ।
पुष्कस्त-पु० दे० 'पुष्कलि' ।
पुष्कस्ति, **पुष्कस्त्व**-पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्माके मानसपुत्रोंमें से थे और सप्तर्षियों तथा प्रजापतियोंमें गिने जाते हैं (वे रावणके पितामह तथा विम्बव्रजाके पिता थे); शिव ।
पुष्क-पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्माके मानसपुत्रोंमें से थे और सप्तर्षियोंमें गिने जाते हैं; शिव ।
पुष्कनाभ-अ० कि० दे० 'पुष्कना' ।
पुष्पा-ली० [सं०] धटिका, उपनिषिका ।
पुष्पाक-पु० [सं०] कदम्ब; पैया; भातका पिंड; भातका मोड़; संक्षेप; लघुत्व; त्वरा ।
पुष्पाकी(किन्)-पु० [सं०] वृक्ष ।
पुष्पामिका-ली० [सं०] त्वयाका कठिन पचना ।
पुष्पावित-पु० [सं०] घोड़ेका सरपट दौबना ।
पुष्पाव-पु० मांस और चावल एकमें पकाकर तैयार किया जानेवाला विशेष प्रकारका व्यंजन ।
पुष्पिद्-पु० [सं०] एक पुरानी अलस्य जाति; इस जातिके बसनेका देश; जहाजका मस्तूल ।
पुष्पिद्वा-पु० लपेटे हुए कागजका बंडल । ली० तासीकी एक सहायक नदी ।
पुष्पिन-पु० [सं०] नदीका किनारा; रेतीला किनारा; नदीमें पड़ी हुई रेत ।
पुष्पिनवती-ली० [सं०] नदी ।
पुष्पिरिक-पु० [सं०] सर ।
पुष्पिषा-पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो न्योतिष्के एक सिद्धांतप्रदक आचार्य थे (इनका सिद्धांत पौलिश सिद्धांत कहलाता है) ।
पुष्पिष, **पुष्पिष**-ली० [अ०] जनताके जान-भाल और शांतिकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला सरकारी महकमा, इस महकमेके कर्मचारी । -**काररवाह**-ली० किसी स्थानमें

शांति स्थापित करनेके लिए की गयी सख्त कार्रवाई । -
मैत्र-पु० पुष्पिष विभागका कर्मचारी । -**राज**-पु० पुष्पिषका शासन, दफ्तर या आतंक ।
पुष्पिहोरा-पु० एक पकवान ।
पुष्पी-ली० उत्तर भारतकी एक विधिया ।
पुष्पोमही-ली० [सं०] अफ़ीम ।
पुष्पोमा-ली० [सं०] मृदु तबिकी पत्नी और प्यवनकी माता ।
पुष्पोमा(मन्)-पु० [सं०] एक दैत्य जो इंद्रकी पत्नी शचीका पिता था; एक राक्षस । -**(म)जा**-ली० लची ।
-मिद्, **-मिद्**(स्), **-मिद्**पुद्ग, **-मिद्**-पु० इंद्र । -
पुष्पी-ली० लची ।
पुष्पोमारी-पु० [सं०] इंद्र ।
पुष्कक, **पुष्कस**-पु० [सं०] एक स्तंभ जैसी जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण और क्षत्राणीसे मानी जाती है ।
पुष्क-वि० [सं०] विकसित । पु० एक पुष्प ।
पुष्का-पु० नाफका एक गहना ।
पुष्पा-पु० दे० 'पुष्पा' ।
पुष्पार-पु० दे० 'पुष्पा' ।
पुस्त-ली० [फा०] पीठ; पीड़ी; सहारा; मददगार; दक्षक ।
-झम-वि० कुबड़ा । -**झार**-पु० पीठ छुजानेका एक आला जिसमें एक सिरेपर हाथीदंत या लोहेका पंजा लगा रहता है । -**दरपुस्त**, **-बपुस्त**-अ० कई पीढ़ियोंसे; पीढ़ी-दर-पीढ़ी । -**दस्त**-पु० इयेलीके ऊपरका हिस्सा । -**नामा**-पु० वह कागज जिसपर किसी बंध या कुलके लोगोंके नाम बधाक्रम लिखे हों, कुलसीनामा ।
-पनाह-पु० मददगार, सहायक । -**पानी**-ली० वह लकड़ी जो किनाब या तस्तेकी पीछे उसकी मजबूतीके लिए लगायी जाती है ।
पुस्ता-पु० [फा०] किसी दीवारकी मजबूतीके लिए उससे सटाकर बनवाया जानेवाला मिट्टी, ईंट, पत्थर आदिका घुस्स; बाँध; पानीकी रोकनेके लिए बाँधवाया जानेवाला बाँध; किताबकी जिल्दका पीछेकी ओरका चमड़ा या कपड़ा; पुट्टा; एक ताल । -**बंदी**-ली० पुस्ता बाँधनेका काम ।
पुस्तापुस्त-अ० [फा०] कई पीढ़ियोंसे ।
पुस्तारा-पु० [फा०] पीठपर लादनेभरका बोझ, गठरी, गड्ढा ।
पुस्ती-ली० [फा०] सहारा, टेक; मदद, सहायता; किताबकी जिल्दका पुट्टा; मावतकिया, मसनद । -**बान**-पु० मजबूतीके लिए किनाब या तस्तेमें पीछेकी ओर लगायी जानेवाली लकड़ी; धुनी ।
पुस्तेनी-वि० जो कई पीढ़ियोंसे चला आता हो; जो कई पीढ़ियोंतक चला आवे ।
पुष्-वि० [सं०] पोषण प्रदान करनेवाला ।
पुष्पा-ली० [सं०] लांगलिकी, कलियारी ।
पुष्पित-वि० [सं०] जिसका पोषण किया गया हो, पुष्ट ।
पुष्क-पु० [सं०] पोषण; पुष्टि ।
पुष्कर-पु० [सं०] जलाशय, सरोवर; जल; आकाश; हाथीकी सूँघका अग्रभाग; कमल; नील कमल; तलवारकी धार; दूध नामकी ओषधि; पुष्करमूल; एक तरहका दीख

तलवारका न्यान, बाण; एक तीर्थ जो जलसेरके पास है; डोह, सुदृग आदिका मुँह; बन्द आदि द्वीपोंमेंसे एक (पु०); एक रोग; एक नाग; सारस पक्षी; राजा नलका छोटा भाई जिसने नलकी पुष्पमें बराबर उनका राजपाट ले लिया था; पिङ्गवा; पुष्प; नगा; नृस्यकला; संयोग; अंश, भाग; सूर्य; सेविका एक अधिपति; एक अश्वारूढ विष्णु; शिव; वरुणका एक पुत्र; प्रहोका एक अशुभ योग (ज्यो०)। -**कर्णिका-क्षी०** स्तलपथिनी; संज्ञकी नोक। -**कूट-पु०** वह दिग्गज जो लोकालोक पर्वतपर स्थित है। -**जटा-क्षी०** दे० 'पुष्करमूल'। -**तीर्थ-पु०** पुष्कर नामक तीर्थ। -**नाडी-क्षी०** स्तलपथिनी। -**नाभ-पु०** विष्णु। -**पद्म-पर्ण-पलाश-पु०** कमलका दल या पाटल। -**प्रिय-पु०** मोम। -**बीज-पु०** कमलका बीज। -**मुख-पु०** सूर्यके मुखपरका छिद्र। वि० सूर्यके मुख जैसे मुखवाला (प्रा०)। -**मूल-पु०** कूट नामकी ओषधि; कमलकी जड़। -**पद्माग्र-पु०** पद्मिवाल। -**क्षायिका-क्षी०** एक जल-पक्षी। -**शिफा-क्षी०** पुष्कर-मूल। -**सद्व-पु०** एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि। -**सागर-पु०** पुष्करमूल। -**सारी-क्षी०** एक छिद्र। -**स्थपति-पु०** शिव। -**खड्ग(श्च)-क्षी०** कमलके फूलोंकी माला। पु० अश्विनीकुमार (संस्कृतमें दिवचन)।

पुष्कराक्ष-वि० [सं०] कमलके समान नेत्रोंवाला। पु० विष्णु।

पुष्कराक्ष-पु० [सं०] सारस पक्षी; कूट नामकी ओषधि।

पुष्कराक्ष-पु० [सं०] सूर्यका अग्रभाग।

पुष्कराक्षी-क्षी० [सं०] एक नदी।

पुष्कराक्षक-पु० [सं०] सेविका एक अधिपति।

पुष्कराक्ष-पु० [सं०] दे० 'पुष्कराक्ष'।

पुष्करिका-क्षी० [सं०] शिघनका एक रोग।

पुष्करिणी-क्षी० [सं०] इषियान; एक प्रकारका जलाशय; कमलोंका समूह; कमलका पौधा; कमलपुष्प जलाशय; एक प्राचीन नदी; चाक्षुष मनुकी पत्नी; भूमन्तुकी पत्नी और ऋचोक्तकी माता।

पुष्करी(विन्)-वि० [सं०] कमलपुष्प। पु० हाथी।

पुष्कल-वि० [सं०] श्रेष्ठ; अति शोभन; पूर्ण, भरपूर; प्रभूत, बहुल; पर्याप्त; शब्दपूर्ण; निकटवर्ती। पु० अनाज आदिका चौसठ मुट्टीका एक प्राचीन परिमाण; चार ग्राम सिक्काका एक प्राचीन परिमाण; दस परिमाणकी सिक्का; एक अश्वारूढ रामके भाई भरतका एक पुत्र; शिव; मेरु पर्वत; एक प्रकारका ढोल; एक प्रकारका तलपत्र बाध।

पुष्कलक-पु० [सं०] गंधद्वय, कस्तूरिद्वय; अर्वाला, सिद्धि-किनी; लूटी; कील; कणक, मौक्तिक।

पुष्कलावती-क्षी० [सं०] भरतके पुत्र पुष्कलकी राजधानी।

पुष्ट-वि० [सं०] जिसका पोषण किया गया हो, पोषित; मोटा-ताजा; तगका; पोदा; पूर्ण; पूरी आवाज करनेवाला। पु० विष्णु; पोषण।

पुष्टई-क्षी० मलबर्जक ओषध, ताकत बढ़ानेवाली दवा।

पुष्टता-क्षी० [सं०] पुष्ट होनेका भाव, पोदाई, बलिष्ठता, तगबापन।

पुष्टि-क्षी० [सं०] पोषण; वृद्धि; तगबापन; अभ्युदय।

सहारा; समर्थन; वृद्धीकरण; वैभव; एक मातृका; एक योगिनी; धर्मकी एक पक्षी; असंगण; लोभकी माता; चंद्रना-की एक कला। -**कर-कारक-वि०** पोषण करनेवाला, पुष्ट बनानेवाला, बलबर्जक। -**कर्म(श्च)-पु०** एक धार्मिक कृत्य जो अभ्युदयके लिए किया जाता है। -**कांत-पु०** गणेश। -**कास-वि०** अभ्युदय चाहनेवाला। -**इ-वि०** पुष्टिकर; वृद्धिकर। -**हा-क्षी०** असंगण। -**ग्रह-वि०** दे० 'पुष्टि'। -**मति-पु०** एक अग्नि। -**मार्ग-पु०** बल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय, बल्लभ-संप्रदाय। -**वर्धन-वि०** जिसमें अभ्युदयकी सिद्धि हो; सुख, विभवकी वृद्धि करनेवाला। पु० मुर्गा।

पुष्टिका-क्षी० [सं०] सुतही, सीपी।

पुष्पंघव-वि० [सं०] मकरंद पान करनेवाला। पु० अमर।

पुष्प-पु० [सं०] फूल, कुसुम; स्त्रीका रज; कुबेरका पुष्पक विमान; आँसुका एक रोग; पुष्कराज; विकसित होना, विकास, खिलना; धीरता, नम्रता आदि भावोंकी अभिव्यक्ति (ना०)। -**करंड-करंडक-पु०** उज्जयिनीका प्राचीन शिवोद्यान; फूल तोड़नेकी उडिया। -**करंडकिनी-करंडिका-करंडिनी-क्षी०** उज्जयिनी। -**कार-पु०** पुष्पसूत्रके रचयिता। -**काल-पु०** वसंत ऋतु; स्त्रियोंका ऋतुकाल। -**कासीस-पु०** एक प्रकारका कसीस, हीराकसीस। -**कौट-पु०** फूलका कौशा; अमर, भौरा। -**कृष्ण-पु०** एक व्रत जिसमें कुछ फूलोंके काटेपर महीनेभर रहने हैं। -**केसन-पु०** कामदेव।

केतु-पु० कामदेव; पुष्पांचन; वृद्ध। -**गंधिका-क्षी०** लास्यके दस भेदोंमेंसे एक। -**गंधा-क्षी०** जूही। -**गणेश-पुष्पा-क्षी०** नागवला। -**ग्रथन-पु०** माला गूँथना।

धातक-पु० रौन। -**चय-चयन-पु०** फूल लोदना।

चाप-चपु(स्)-पु० चण्वा(चपु)-पु० कामदेव।

चामर-पु० भदन नामका पेड़; बेंतकी लता। -**ज-वि०** फूलमें उत्पन्न होनेवाला। पु० फूलका रस, मकरंद।

जीवी(विन्)-पु० माली। -**दंत-पु०** शिवका एक अनुचर; विष्णुका एक अनुचर; एक गधर्व जिसने महिम्न-स्तोत्र रचा है, एक विद्याधर; एक नाग; वायव्य कोणका दिग्गज; सूर्य और चंद्रमा (संस्कृतमें दिवचन)। -**दंती-क्षी०** एक राक्षसी। -**ईह-पु०** एक नाग। -**इ-पु०** वृक्ष; पेड़। -**वाम(श्च)-पु०** फूलोंकी माला; एक छंद।

व्रह्म-पु० फूलका रस, मकरंद। -**द्रुम-पु०** पुष्पप्रधान वृक्ष; वह वृक्ष जो केवल फूलके लिए हो। -**च-पु०** एक अग्नि जिसकी उत्पत्ति आस्य बाष्पणसे मानी जाती है।

धारण-पु० विष्णु। -**धवज-पु०** कामदेव। -**निष्क-पु०** अमर, भौरा। -**निर्यास-पु०** दे० 'पुष्पद्रव'।

नेत्र-पु० एक तरहकी पिचकारी या सलाई (आ० बे०)।

पत्र-पु० फूलकी पंखड़ी; एक प्रकारका बाण। -**पक्षी(विन्)-पु०** कामदेव। -**पद्म-पु०** पद्मी-क्षी०

रज निकलनेका मार्ग, योनि। -**पांडु-पु०** एक प्रकारका साँप। -**पात्र-पु०** फूल रखनेका पात्र। -**पिंड-पु०** अशोक। -**पुष्ट-पु०** पुष्पदलावरण; फूलोंसे भरी हुई स्त्रीकी या पात्र (?)। -**पुष्ट-पु०** पटनेका एक प्राचीन नाम। -**पेशाक-वि०** फूलकी तरह नाजुक। -**प्रचय,**

—**प्रचाय**-पु० बायसे फूल लोहना । —**प्रचायिका**-श्री० फूल लोहना । —**प्रस्तार**-पु० फूलोंका विछोना, पुष्प-शय्या । —**प्रिचक**-पु० विजयसाह । —**कल**-पु० कपित्थ, कैषा; कुम्हवा । —**कलि**-श्री० फूलोंकी भेंट वा चढावा । —**बाण**-पु० कामदेव; कुशदीपका एक पर्वत; एक दैत्य । —**भद्र**-पु० ६२ खर्भोवाला एक प्रकारका मेष । —**भद्रक**-पु० एक विशेष वन । —**भय**-पु० फूलोंका रस; मकरंद । —**भाजन**-पु० दे० 'पुष्पवात्र' । —**भूषित**-वि० फूलोंसे सजाया हुआ । —**मंजरिका**-श्री० नील कमलका पौधा । —**मंजरी**-श्री० फूलकी मंजरी । —**भास**-पु० चैत्र मास; वसंतकाल । —**मित्र**-पु० दे० 'पुष्पमित्र' । —**भृकु**-पु० नरसलाका एक भेड़ । —**मेघ**-पु० फूल बरसानेवाला मेघ । —**यमक**-पु० यमकका एक भेड़ । —**रक्त**-पु० धर्मणि नामक फूल । —**रचन**-पु० फूलोंकी माला गुंथना । —**रज(स)**-श्री० पराग । —**रथ**-पु० यात्रा, हवाखोरीके काम आनेवाला रथ । —**रस**-पु० फूलका रस, मकरंद । —**रसाह्व**-पु० मधु । —**राग**, —**राज**-पु० पुष्कराज । —**रेणु**-पु० पराग । —**रोचन**-पु० नामकेसर । —**छाह**-पु० (फूल लोहनेवाला) माली । —**छाबी**-श्री० (फूल लोहनेवाली) मालिन । —**छिछ**, —**छिद्(ह)**-पु० झमर, भौरा । —**छिपि**-श्री० एक प्राचीन लिपि । —**वर्ष**-पु० कचनार, मेमल, जगत्स्य आदिके फूलोंका एक विशिष्ट ममाहार (आंवें) । —**वर्सा** (रमन)-पु० दुद्रव । —**वर्ष**-पु० फूलोंकी वर्षा; एक वर्ष-पर्वत । —**वर्षण**-पु० पुष्पवृष्टि । —**बादिका**, —**बाटी**-श्री० फुलवारी । —**बाण**, —**विशिस**-पु० दे० 'पुष्पबाण' । —**बाहिनी**-श्री० एक प्राचीन नदी । —**विचित्रा**-श्री० एक वृक्ष । —**वृष्टि**-श्री० फूलोंकी वर्षा । —**वेणी**-श्री० फूलोंकी माला । —**शकटिका**, —**शकटी**-श्री० आकाशवाणी, देववाणी । —**शकली(लिङ्ग)**-पु० एक प्रकारका विषहीन सर्प । —**शय्या**-श्री० फूलोंका विछोना । —**शर**, —**शरासन**, —**शिलीमुख**-पु० कामदेव । —**शाक**-पु० शाक्ये रूपमें खाने जानेवाले फूल । —**शून्य**-वि० फूलोंमें रहित, जिसमें फूल न लगे । पु० गूलरका पेड़ । —**शेखर**-पु० पुष्पमाला । —**श्रेणी**-श्री० मृत्पाकनी । —**समय**-पु० वसंत ऋतु । —**साधारण**-पु० वसंत । —**सायक**-पु० कामदेव । —**सार**, —**स्नेह**, —**स्वेद**-पु० मकरंद वा मधु । —**सारा**-श्री० तुलसी । —**सीता**-श्री० एक तरकीबी चीनी । —**सूत्र**-पु० गोमिलका एक मृत्तमेष । —**सौरभा**-श्री० कलियारीका पौधा । —**स्नान**-पु० दे० 'पुष्पस्नान' । —**स्वेद**-पु० दे० 'पुष्पद्रव' । —**हास**-पु० फूलोंका खिलना; विष्णु । —**हासा**-श्री० कलुमती । —**हीन**-वि० फूलोंसे रहित, (बह पौधा वा पेड़) जिसमें फूल न लगे । —**हीना**-श्री० गतार्तवा श्री; गूलरका पेड़ ।

पुष्पक-पु० [सं०] फूल; पीपल; कुबेरका विमान; एक नैऋत्य; कंकण; रत्नमय कंकण; एक प्रकारका अंजन; कसीना; मिट्टीका चूल्हा या अंगीठी लोहेका कटोरा; रसीता दाँतका मेल; एक तरबका सौंप; एक पर्वत ।

पुष्पक-पु० [सं०] दे० 'पुष्पक' ।

पुष्पवती-श्री० [सं०] रजसला श्री; मस्त (उड़ी हुई) गाव ।

पुष्पावन-पु० [सं०] पीतलके कलावने तैयार किया जाने-वाला एक अंजन ।

पुष्पावलि-श्री० [सं०] अंजलीभर फूल; अंजलीमें रखे हुए फूल ।

पुष्पाह, **पुष्पाहक**-पु० [सं०] धानका एक भेड़ ।

पुष्पावुज-पु० [सं०] मकरंद ।

पुष्पा-श्री० चंपापुरी, वर्तमान भागलपुर ।

पुष्पाकर, **पुष्पागम**-पु० [सं०] वसंत ऋतु ।

पुष्पात्र-पु० [सं०] गर्भकेसर, बीजकोष ।

पुष्पाजीव, **पुष्पाजीवी(विन्)**-पु० [सं०] माली ।

पुष्पानन-पु० [सं०] एक तरबकी धराव; एक वक्ष ।

पुष्पापत्र-पु० [सं०] फूलकी मंजी ।

पुष्पापीठ-पु० [सं०] सिरपर धारण की जानेवाली फूलकी माला आदि ।

पुष्पाभिषेक-पु० [सं०] पुष्पस्नान ।

पुष्पायुध-पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पाराम-पु० [सं०] फुलवारी ।

पुष्पावचथ-पु० [सं०] फूल लोहना; पुष्पवयन ।

पुष्पावचावी(विन्)-पु० [सं०] माली ।

पुष्पासव-पु० [सं०] मधु; फूलोंसे बनी हुई धराव ।

पुष्पासार-पु० [सं०] फूलोंकी वर्षा ।

पुष्पास्तरक, **पुष्पास्तरण**-पु० [सं०] पुष्प बिखेरने, पुष्प-शय्या आदि तैयार करनेकी कला ।

पुष्पाक्ष-पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पाह्व-श्री० [सं०] क्षनपुष्पी; सौँफ ।

पुष्पिका-श्री० [सं०] दंतकी पपड़ी; लिंगाका मंडल; किसी ग्रन्थके किसी अध्यायका वह समापक वाक्य जिसमें प्रतिपाद्यकी समाप्तिकी सूचना रहती है ।

पुष्पिणी-श्री० [सं०] रजसला श्री ।

पुष्पित-वि० [सं०] खिला हुआ, विकसित; जिसमें फूल लगे हों; रंग-विरंगा, चितकबरा; अलंकृत (भाषण आदि) ।

पुष्पिता-श्री० [सं०] रजसला श्री ।

पुष्पिताग्रा-श्री० [सं०] एक वृक्ष ।

पुष्पी(पिपह)-वि० [सं०] फूलोंमें युक्त, जिसमें फूल लगे हों ।

पुष्पेषु-पु० [सं०] कामदेव ।

पुष्पोद्गम-पु० [सं०] फूल उगना ।

पुष्पोद्यान-पु० [सं०] फुलवारी ।

पुष्पोपजीवी(विन्)-पु० [सं०] माली ।

पुष्प-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध नक्षत्र; पूसका महीना; कलिका; फूल (वै०) । —**मित्र**-पु० शुगवंशका पहला राजा जो अंतिम तीर्थ सभाट् ब्रह्मर्षिके मारकर ई० पू० १८५ में मगधके सिंहासनपर आकर हुआ था । —**योग**-पु० चंद्रमाके पुष्प नक्षत्रपर स्थिर रहनेका योग । —**रथ**-पु० दे० 'पुष्परथ' । —**स्नान**-पु० पुष्प-योगमें किया जाने-वाला अभिषेक ।

पुष्पक-पु० [सं०] दे० 'पुष्पक' ।

पुष्पा-श्री० [सं०] पुष्प नक्षत्र ।

पुष्पाभिषेक-पु० [सं०] दे० 'पुष्पस्नान' ।
पुष्पाक-पु० [सं०] एक योग जो सर्वके पुष्प नक्षत्रमें होने पर होता है (ज्यो०) ।
पुस-पु० विछोकी पुनकारनेका शब्द ।
पुसकर-पु० दे० 'पुष्कर' ।
पुसाता-अ० कि० पूरा पचना; उचित जान पचना ।
पुस्त-पु० [सं०] मिट्टी, लकड़ी, छोड़े आदिका शिल्प; शिल्पकारी; लकड़ी; भातु आदिकी बनी हुई वस्तु; हाथकी लिखी हुई पोथी; पोथी, किताब ।-**कर्म**(ज)-पु० लकड़ी, भातु आदिका शिल्प, कारीगरी ।-**कर्मा**(मंज)-पु० शिल्पी, कारीगर ।-**बार्**-पु० पुस्तकोंके सहारे जीविका चलानेवाला; पुस्तक बनानेवाला ।
पुस्तक-खी० [सं०] हाथकी लिखी हुई पोथी; ग्रंथ, किताब ।-**मुद्रा**-खी० हाथकी एक मुद्रा (सं०) ।
पुस्तकाकार-वि० [सं०] जो आकारमें पुस्तकके समान हो, पुस्तकके आकारका ।
पुस्तकागार, **पुस्तकालय**-पु० [सं०] वह मकान या कमरा जिसमें विभिन्न विषयोंकी पुस्तकें संगृहीत हों, लाइब्रेरी ।
पुस्तकास्तरण-पु० [सं०] किताब या पोथीका बैठन ।
पुस्तकी-खी० [सं०] छोटा ग्रंथ ।
पुस्तिका-खी० [सं०] छोटी पुस्तक ।
पुस्ती-खी० [सं०] हाथकी लिखी हुई पोथी; पोथी, किताब ।
पुहकर, **पुहुकर**-पु० दे० 'पुष्कर' ।
पुहना-अ० कि० पीना जाना, गूँथा जाना ।
पुहप-पु० पुष्प ।
पुहमी-खी० पृथ्वी ।
पुहवै-पु० प्रभु, स्वामी ।
पुहाना-स० कि० गूँथवाना; पिरोनेका काम कराना ।
पुहुपर-पु० फूल, पुष्प ।-**राग**-पु० पुष्पराग, पुष्पराज ।
रेनु-पु० पुष्परेणु, पराग ।
पुहुमी-खी० भूमि, पृथ्वी ।-**पति**-पु० राजा ।
पुहुधी-खी० भूमि, पृथ्वी ।
पूगा-खी० महुवर नामका बाज । पु० सीपका कोड़ा ।
पूगी-खी० एक तरहकी बौद्धरी ।
पूछ-खी० पछु-पछी आदिके शरीरका वह रीढ़से लगा अंग जो प्रायः शुद्धके ऊपर-ऊपर द्रुतक लंबा चला जाता है, दुम; किसी पदार्थका पिछला भाग; सदा पीछे लगा रहनेवाला; पुछला। पूछकी तरह जुड़ी हुई वस्तु । **मु०** (किसीकी)-**पकड़कर चकना**-आँख मूँदकर किसीका अनुमान करना; किसीकी सहायतासे कोई काम करना ।
पूछ-खी० दे० 'पूछ' ।-**ताछ**-**पाछ**-खी० दे० 'पूछ-ताछ' ।
पूछकी-खी० पूछ; नालमें चढ़ावके आगे-आगे बहनेवाला पानी ।
पूछना-स० कि० दे० 'पूछना' ।
पूछलतारा-पु० दे० 'पुच्छलतारा' ।
पूँजी-खी० किसी व्यवसायमें लगाया हुआ धन, वह धन जिससे कोई व्यवसाय आरंभ किया गया हो; मूल धन जोड़ा-पटोरा हुआ धन, संचित धन; रक्का-पैसा, इन्धन;

किसी विषयका ज्ञान, विद्या-बुद्धि; * समूह, ढेर ।-**द्वार**-पु० दे० 'पूँजीपति' ।-**वसि**-पु० वह धनी व्यक्ति जो उद्योग और व्यवसायमें पूँजी लगाकर अपनी जीविका चलाता हो, कारखानेदार; धनी व्यक्ति ।-**बाद**-पु० वह व्यवस्था जिसमें धनियोंका वर्ग उत्पादनके साधनोंपर अधिकार कर धर्मिकीका शोषण करता है ।-**बादी**-वि० पूँजीवादके सिद्धांतोंका प्रयोग करनेवाला ।
पूँठ-खी० पीठ ।
पू-वि० [सं०] शुद्ध करनेवाला (समासांतमें) ।
पूआ-पु० दे० 'पुआ' ।
पूखन-पु० पूषण, सूर्य ।
पूरा-पु० [सं०] सुपारीका पेड़ या उसका फल; कटहलका पेड़ या फल; संघ; समूह; राशि; स्वभाव, प्रकृति ।-**कृत**-वि० जमा किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ; राशीकृत ।-**पात्र**-पु० पीकराना; पानदान ।-**पीठ**-पु० पीक-दान ।-**पुष्पिका**-खी० विवाह-संस्कार पक्का होनेपर दिया जानेवाला पान-फूल ।-**पीठ**-पु० सुपारीका नया पेड़ ।-**फल**-पु० सुपारी ।-**रोट**-पु० हितालका पेड़ ।-**बैर**-पु० वह विरोध, झगडा जो बहुतने लोगोंसे हो ।
पूराना-अ० कि० पूरा होना-**सौर** संघ साथ नहीं पूर्ण'-कबीर ।
पूरी-खी० [सं०] सुपारीका पेड़; सुपारी ।-**फल**-पु० सुपारी ।-**कला**-खी० सुपारीका पेड़ ।
पूरय-वि० [सं०] समूह-संबंधी ।
पूछ-खी० पूछने, पूछे जानेका भाव या क्रिया; खोज; कद्र, आदर; मँग (वस्तुके लिए) ।-**गछ**-खी० दे० 'पूछ-ताछ' ।-**ताछ**-**पाछ**-खी० किसी बातकी पक्की जान-कारीके लिए उसके विषयमें अनेक व्यक्तियोंसे कई प्रकारके प्रश्न पूछना ।
पूछना-स० कि० किसी वस्तुके संबंधमें किसीसे कोई प्रश्न करना, किसी बातकी जिज्ञासासे कोई प्रश्न करना; किसीको कुछल आदिके विषयमें प्रश्न करना; खोज-खबर लेना; कद्र करना; टोकना; जवाब तलब करना ।
पूछरी-खी० पूँछ; पिछला भाग; मोचर्चन पहाड़का अंतिम भाग ।
पूछासाछी, **पूछापाछी**-खी० पूछताछ करनेकी क्रिया ।
पूछक-पु० [सं०] पूजा करनेवाला, उपासक ।
पूजन-पु० [सं०] पूजनकी क्रिया, अर्चन; सत्कार, आभंगत; आदरकी वस्तु ।
पूजना-स० कि० पन, पुष्प, गंध, फल, जल आदि समर्पित करके ईश्वर या किसी विशिष्ट देवताका ध्यान, स्मरण, स्तवन आदि करना; ईश्वर या किसी देवताका अर्चन, आराधन करना; सत्कार करना, आभंगत करना; पूस देना, जेब गरम करना (का०) । अ० कि० पूरा होना; घाव, गन्धेका भरकर बराबर होना; बराबर या समतुल्य होना-**सिरसाछि सरि पूजन केऊ**-पं०; बेबाक किया जाना, नुकता होना ।
पूजनी-खी० [सं०] माता गौरैया ।
पूजनीय-वि० [सं०] पूजा करने योग्य; आदरके योग्य ।
पूजमान-वि० पूजित होनेवाला, जिसकी पूजा की जाती

हो, पूज्य ।

पूजयाम—वि० [सं०] आदरसम्मान करनेवाला ।

पूजयितव्य—वि० [सं०] पूजा करने योग्य ।

पूजयिता(तु)—वि०, पु० [सं०] पूजा करनेवाला ।

पूजा—स्त्री० [सं०] पत्र, पुष्प, गंध आदिके समर्पणके साथ ईश्वर या विशिष्ट देवताका ध्यान, स्मरण आदि करनेका कृत्य, अर्चना; सत्कार, आचमन, संभावना; वृत्त देना, जेब गरम करना (का०); ताकन, पिटाई (का०) ।—**कर**—वि०, पु० पूजा करनेवाला ।—**गृह**—पु० मंदिर, देवालय; उपासना-मंदिर ।—**संसार**—पु० दे० 'पूजोपकरण' ।

पूजाधार—पु० [सं०] वह पदार्थ जिसको आधार मानकर किसीकी पूजा की जाय (जैसे—यंत्र, चक्र, प्रतिमा, शालग्राम आदि) ।

पूजाई—वि० [सं०] पूजाके योग्य, पूजनीय; सत्कारके योग्य, मान्य ।

पूजित—वि० [सं०] जिसकी पूजा की गयी हो, अर्चित; जिसका सत्कार किया गया हो, सत्कृत; माना हुआ, स्वीकृत; जिसकी सिफारिश की गयी हो; अप्रसूतित, आवाद ।—**पत्रफला**—स्त्री० एक पौधा ।—**पूजक**—वि० सम्मानित व्यक्तिका सम्मान करनेवाला ।

पूजितव्य—वि० [सं०] पूजाके योग्य, पूजनीय ।

पूजिल—वि० [सं०] पूजाके योग्य । पु० देवता ।

पूजोपकरण—पु० [सं०] देवताकी पूजाके लिए आवश्यक वस्तुएँ ।

पूज्य—वि० [सं०] पूजा करने योग्य; सत्कारके योग्य, मान्य, आदरणीय । पु० सम्मान्य व्यक्ति; शत्रु ।—**पाद**—वि० जिनके चरण पूजनीय हों, अति पूज्य । पु० देवदत्त ।—**पूजा**—स्त्री० पूजनीय व्यक्तिकी पूजा ।

पूज्यता—स्त्री० [सं०] पूज्य होनेका भाव ।

पूज्यमान—वि० [सं०] जो पूजित हो रहा हो, पूजा जाता हुआ ।

पूडि—स्त्री० पीठ ।

पूडार्—पु० पुआ ।

पूरी—स्त्री० तबले या हृदयके छंदपर मड़ा हुआ चमड़ा; दे० 'पूरी' ।

पूत—पु० पुत्र, वेदा; [सं०] सत्य; शत्रु; श्वेत कुश; विकृत वृक्ष । वि० पवित्र किया हुआ, शुद्ध; साफ किया हुआ (अन्न); प्रायश्चित्त किया हुआ; दुर्गंधवाला, बदबूदार; आविष्टत ।—**क्रतु**—पु० रई ।—**गंध**—पु० बरंर नामक पौधा ।—**तृण**—पु० श्वेत कुश ।—**त्रु**—पु० पलासका पेड़ ।—**घाम्य**—पु० तिल ।—**पत्नी**—स्त्री० तुलसी ।—**पाप**—**पाप्मा**(स्त्री)—वि० पापसे रहित, निष्पाप ।—**फल**—पु० कटहलका पेड़ ।—**असि**—वि० निष्पाप बुद्धिवाला । पु० शिव ।

पूतकलायी—स्त्री० [सं०] पूतकलुकी पत्नी, राची ।

पूतका—पु० छोटे बच्चेका छोटा किलर ।—(र्षि)के अमीर—पुरतैनी अमीर ।

पूतन—पु० [सं०] भूतयोनिकी एक नाति या भेद, वेताल ।

पूतना—स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसे कसने कुण्ठकी मारनेके लिए नंदके घर भेजा था, पर वह स्वयं मारी

गयी; राक्षसी; बाळकौका यक्ष क्षुद्र रोग; यक्ष प्रकारकी बड़; गंधवासी ।—**केस**—पु०, **केसरी**—स्त्री० एक पौधा ।—**पूषण**—**सुवन**—**हा**(हन्)—पु० कृष्ण ।

पूतनारि—पु० [सं०] कृष्ण ।

पूतनिका—स्त्री० [सं०] पूतना राक्षसी ।

पूतन—पु० [सं०] एक जलजंतु; पुच्छ व्यक्ति (का०) ।

पूतना—पु० दे० 'पूतना'; पुत्र, वेदा ।

पूता—स्त्री० [सं०] दुर्गा; एक वृक्ष । † पु० वेदा, पुत्र ।

पूतास्मा(स्त्री)—वि० [सं०] शुद्ध अंतःकरणवाला । पु० विष्णु; संत ।

पूति—स्त्री० [सं०] पवित्रता, शुद्धता; दुर्गंध, बदबू; रोषिष तृण; गंधमाजरी; गंधा पानी; पूष । वि० दुर्गंधवाला, बदबू करनेवाला ।—**कण्वा**—स्त्री० पुदीना ।—**करंज**—**करज**—पु० करंजका एक भेद ।—**कर्ण**—**कर्णक**—पु० एक रोग जिसमें कानसे मवाद निकलता है ।—**काष्ठ**—पु० देवदार ।—**काष्ठक**—पु० सरलका पेड़ ।—**कीट**—पु० एक तरहकी मधुमक्खी ।—**केदार**—पु० नागकेसर; गंधमाजरी ।—**गंध**—वि० जिसमेंसे दुर्गंध निकलती हो, दुर्गंधवाला । स्त्री० दुर्गंध, बदबू; गंधक । पु० इधुरीका पेड़ ।—**गंधा**—स्त्री० बकुची ।—**गंधि**—**गंधिक**—वि० दुर्गंधयुक्त, बदबू करनेवाला ।—**गंधिका**—स्त्री० बकुची; रोष ।—**घास**—पु० एक प्रकारका जंतु ।—**तैला**—स्त्री० ज्योतिष्मती ।—**जस्य**—पु० एक रोग जिसमें थालके साथ दुर्गंध निकलती है ।—**जासिक**—वि० जिसकी नाकसे दुर्गंध निकलती हो ।—**पत्र**—पु० एक तरहका हथौड़ा ।

—**पत्रिका**—स्त्री० प्रसारिणी कृता ।—**पर्ण**—**पर्णक**—पु० पुतिकरंज ।—**पल्लवा**—स्त्री० बड़ा करेला ।—**पुष्प**—पु० इधुरी ।—**पुष्पिका**—स्त्री० मातुलगा ।—**फल**—पु०, **फला**, **फली**—स्त्री० सीमराजी, बकुची ।—**भाष**—पु० सक्नेकी किवा ।—**मयूरिका**—स्त्री० अजमोदा ।—**मुद्रला**—स्त्री० रोषिष तृण ।—**मृषिका**—स्त्री० छहूँदर ।

—**मृषिक**—पु० एक नरक ।—**मेद**—पु० बिटखदिर ।—**मोनि**—पु० मोनिका एक रोग ।—**बक**—वि० जिसके मुँहसे दुर्गंध निकलती हो ।—**वात**—पु० गंदी हवा; अपान वायु; बेलाका पेड़ ।—**वृक्ष**—सोनापाठा ।—**व्रण**—पु० मवाद देनेवाला कोबा या धाव ।—**शाक**—पु० बकवृक्ष ।

—**शारिजा**—स्त्री० बनविलास, कटास ।

पूतिक—पु० [सं०] विद्या, मरु । वि० बदबूदार ।

पूतिका—स्त्री० [सं०] पोथका साग; माजरी; दौमक ।

—**मुल**—पु० संवृक, बोधा ।

पूतिकाङ्ग—पु० [सं०] पूतिकरंज ।

पूरी—स्त्री० गोंददार जड़; लहसुनकी गोंठ ।

पूरीक—पु० [सं०] पूतिकरंज; गंधमाजरी ।

पूरीकरंज—पु० [सं०] पूतिकरंज ।

पूरीका—स्त्री० [सं०] पोष ।

पूतवारु—पु० [सं०] दे० 'पूतद' ।

पूकारी—स्त्री० [सं०] सरस्वती; नागांकी राजधानी ।

पूषंघ—पु० [सं०] एक प्रकारका हिरन जिसकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है; एक बदबू करनेवाला कीड़ा ।

पुष्पिका—स्त्री० [सं०] पोष ।

पूरवा—पु० उत्तरी भारतका एक पक्षी ।

पूर-वि० [सं०] नष्टः * पूर्ण । † पु० जंगली बादामका पेड़; कलपुन नामका पेड़ ।

पूरव—स्त्री० दे० 'पूने' ।

पूरवलाई—स्त्री० वह पतली छोटी लकड़ी जिसपर धुनी हुई रखे लपेटकर धुनी बनता है ।

पूनेई—स्त्री० दे० 'पूने' ।

पूनी—स्त्री० धुनी हुई खंसी मोटी बची जो सूत कातनेके काममें आती है ।

पूनी—स्त्री० पूर्णिमा ।

पून्यो—स्त्री० दे० 'पूने' ।

पूर-पु० [सं०] पूजा । —**बाळा**—स्त्री० नानवाईकी दूकान (स्थ०) ।

पूरका, **पूरिका**, **पूरली**, **पूपाळी**, **पूपिका**—स्त्री० [सं०] एक तरबूकी सीटी पीर ।

पूर-पु० [सं०] पूरा, मवाद । —**कुंठ**—पु० एक नरक । —**प्रमेह**—पु० प्रमेहका एक मेद । —**मुक्क**(ज्) —वि० सडा मुदा खानेवाला । —**रक्त**—पु० एक रोग जिसमें नाकसे पीव मिला हुआ खून निकलता है; पीव मिला हुआ रक्त ।

—**बहिन**—वि० जिसके सेबनमे पीवकी श्रृंख हो । —**वह**—पु० एक नरक । —**होणित**—पु० दे० 'पूरक' । —**आव**—पु० पूरका बहना; आँकटा एक रोग ।

पूरन—पु० [सं०] मवाद; पीव ।

पूरारि—पु० [सं०] नीमका पेड़ ।

पूपाळस—पु० [सं०] आँकटा एक रोग जिसमें उसका संधि-स्थान सूजकर एक जाता है और उसमेंसे पीव निकलने लगती है ।

पूरौद—पु० [सं०] एक नरक ।

पूर—पु० किसी पक्रमानके भीतर भरा जानेवाला मसाला; [सं०] जलराशि; प्रवाह; बाढ़; जलाशय; घाबकी साफ करना या भरना, मण्डक; नीबू; विजौरा नीबू; बाघ-विशेष; श्वासकी नाकसे धीरे-धीरे भीतर ले जाना । * वि० पूर्ण, पूरा ।

पूरक—वि० [सं०] पूरा करनेवाला, पूर्ति करनेवाला; जुष्ट करनेवाला । पु० एक प्रकारका प्राणायाम जिसमें नाकके बाँधे छेदसे प्राणवायुकी धीरे-धीरे भीतर पहुँचाते हैं; विजौरा नीबू; गुणक अक (ग०), अक्षीकालमें पारे जानेवाले दस पिन्डोंसे प्रत्येक जिससे प्रेतके शरीरका एक-एक अंग बनता है (आतिवाहिक शरीरके नष्ट हो जानेपर इन्हीं पिन्डोंसे प्रेतका शरीर बनता है); किसी चीजकी कमी पूरी करनेके लिए ऊपरसे मिलाया जानेवाला अन्न ।

पूरण—पु० [सं०] पूर्ण या पूरा करनेकी क्रिया; भरने या भरे जानेकी क्रिया; एक प्रकारकी रोटी; श्रृंख; भरना; गुणन (ग०); मेट्ट; पुण; बाँध; समुद्र; सेमलका पेड़; विष्णु-तैल; किसी संस्थाकी पूर्ति; झुकावा, खींचना (बनुर्); मोड़; सजाना । वि० पूरा करनेवाला; (द्वितीयसे ऊपरका) संस्था-क्रम कृतकानेवाला (शब्द); जुष्ट करनेवाला; खींचने वाला (बनुर्) । * पूर्ण ।

पूरणी—स्त्री० [सं०] दुर्गा; सेमलका पेड़ ।

पूरणीय—वि० [सं०] पूर्ण करने योग्य ।

पूरन—पु० डबाले जानेके बाद सिलपर पिंसी हुई मटर, चनेकी दाह । * वि० दे० 'पूर्ण' । —**काम**—वि० दे० 'पूर्णकाम' । —**घरब**—पु० पूर्णिमा, पूनी । —**चूरी**—स्त्री० वह पूरी जिसमें पूरन भरा गया हो, पूरन भरी हुई पूरी । —**मासी**—स्त्री० दे० 'पूर्णमासी' ।

पूरना—सं० क्रि० पूरा करना, पूर्ति करना; सिद्ध करना; पूर्ण करना (मनोरथके साथ); * आच्छादित करना, ढक देना, ब्याप्त कर देना; त्योहारों, मांगलिक अवसरोंपर अवीर, चोरेटे आदिसे धृष्वीपर विशेष आकारके क्षेत्र बनाना (चौक पूरना); बटना; * बजाना । अ० क्रि० ब्याप्त होना; ओत-प्रोत होना; रमना; छाना ।

पूरनिमा—स्त्री० दे० 'पूर्णिमा' ।

पूरव—पु० सूरजके निकलनेकी दिशा, पश्चिमके सामनेकी दिशा । * वि० दे० 'पूर्व' । * अ० पहले, पूर्व ।

पूरवख—पु० प्राचीन काल, पुराना जमाना; पूर्वजन्म ।

पूरवला—वि० प्राचीन समयका, पुराना; पूर्वजन्मका ।

पूरवली—स्त्री० पूर्वजन्मका कर्म ।

पूरविधा—पु० पूरबी देशका निवासी; दे० 'पूरबी' ।

पूरबी—वि० पूर-संबंधी; पूरवका । स्त्री० एक राग ।

पूरपित्तव्य—वि० [सं०] पूरा करने योग्य ।

पूरयिता(त्) —पु० [सं०] पूर्ण करनेवाला, विष्णु । वि० पूरा करनेवाला; संतुष्ट करनेवाला ।

पूरा—वि० भरा हुआ, परिपूर्ण, खालीका उल्टा; जो अपने सभी अंगों, अंगोंसे युक्त हो, समृद्ध, अन्यून, सकल; जिसमें कोई कोष-कसर न हो, जिसमें किसी प्रकारकी न्यूनता न हो; बघेट, पर्याप्त, जितना चाहिये उतना; जो अधूरा न हो, समाप्त, पूर्ण; मिष्ट; मकल; पक्का; ठीक, सही । **सु०** (कोई काम)—उत्तरना—भली भाँति संपन्न होना । (किसीका)—पक्का—अट जाना; कमी न होना । (विन)—(रे) करना—किसी तरह समय बिताना । (विन)—होना—अंतिम समय निकट आना ।

पूरारु—पु० सं० इक्षामल ।

पूरिक—पु०, **पूरिका**—स्त्री० [सं०] कचोबी ।

पूरित—वि० [सं०] पूरा किया हुआ; भरा हुआ; गुणा किया हुआ; गुणित; वृत्त ।

पूरिवा—पु० एक राग । —**कल्याण**—पु० एक संकर राग ।

पूरी—स्त्री० आटेकी रोटीकी तरह बेलकर धी धी तेलमें छाना हुआ एक पकवान; तबले आदिके मुँहपरका चमका; * पास आदिका पूजा ।

पूरी(रिज्)—वि० [सं०] पूरा करनेवाला; भरनेवाला ।

पूर-पु० [सं०] मनुष्य (वै०); राजा बयातिका कनिष्ठ पुत्र जह्म कृपिका एक पुत्र; एक राक्षस । —**जित्**—पु० विष्णु ।

पूरव—पु० दे० 'पूरव' ।

पूरवा—पु० दे० 'पूरव' ।

पूरव—पु० [सं०] पूरव; आरमा ।

पूरवाच—पु० [सं०] एक नरभक्षी जाति ।

पूर्ण—वि० [सं०] भरा हुआ; समृद्ध, अखंड, समग्र; पूरा किया हुआ, सिद्ध; समाप्त, संपन्न; जिसे किसी बातकी अपेक्षा न हो, आसकाम; बघेट, पर्याप्त; बीता हुआ, अतीत; वृद्ध; शब्दकारी; समग्र; स्वामी; झुकाया हुआ

(बनु) । पु० जल (वि०); एक देवगर्भव; एक नाग; एक ताल (संगीत) । -ककुद्-वि० तरुण (वै०) । -काम-वि० जिसकी सभी इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों, जिसकी कोई इच्छा पूरी होनेकी बाकी न हो, परितुष्ट; निरीह । पु० परमेश्वर । -कालिक-वि० जो पूरे समय काम करे, जो पूरे समयके लिए नियुक्त किया गया हो; पूरे समयसे जिसका संबंध हो । -कारण-वि० पूरा करनेवाला; उत्पन्न करनेवाला । -काश्यप-पु० उन छ तीर्थिकोंमेंसे एक त्रिनेत्र भगवान् बुद्धने पराजित किया था । -कुम्भ-पु० जल आदिमें भरा हुआ कलसा; एक प्रकारका युद्ध; वर्षेके आकारका (रीवारका) छेद । -कोशा-स्त्री० एक ओषधि । -कोष्ठा-स्त्री० नागरमोथा । -गर्भा-वि० स्त्री० जिसका गर्भ पूरी तरह इष्टिकी प्राप्ति हो चुका हो, जो शीघ्र बच्चा जननेवाली हो । -चंद्र-पु० पूर्णिमाका चंद्रमा । -०निभानन-वि० जिसका मुखपूर्ण चंद्रमाके समान हो । -तृण-वि० जिसका तरकस बाणोंसे भरा हो । -पर्वेदु-स्त्री० पूर्णिमा, पूनी । -पात्र-पु० जलमें भरा हुआ पात्र; शरीर ही छापन मुद्रियोंका एक प्राचीन परिमाण; नावल्म; भरा हुआ घना जो होमके अंतर्गते दक्षिणाके रूपमें ब्रह्माकी दिया जाता है; पुत्रजन्मोत्सव आदिके समय स्वामीके शरीरपरसे सेवकों द्वारा लिये जानेवाले वस्त्र, भूषण आदि; सुसवाद लांछेवाले मेवकों या आत्मीय जनकों बौंदे जानेवाले वस्त्र, भूषण आदि । -प्रज्ञ-वि० परम ज्ञानी । पु० मध्याह्नार्चका एक नाम । -०वर्धन-पु० मध्याह्नार्च द्वारा प्रवर्तित दर्शन । -बीज, -बीज-पु० विजौरा नौक । -बीज-वि० दे० 'पूर्णग्रह' । -भद्र-पु० एक नाग (महाभारत); हरिकेश नामक यक्षका पिता (स्कंद पु०) । -मेदी (विजु)-पु० एक पौधा । -मा-स्त्री० पूनी । -मानस-वि० संतुष्ट । -मास-पु० पूर्णिमाको किया जानेवाला याग-विशेष; चंद्रमा । -मासी-स्त्री० शुक्लपक्षकी अंतिम तिथि जिसमें चंद्रमा अपनी सोलहवीं कलाओंमें युक्त हो जाता है, पूनी । -मुख-पु० एक नाग जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जला था; एक पक्षी । -योग-पु० एक प्रकारका बाहुयुद्ध । -यौवन-वि० पूरा जवान । -रथ-पु० पका योद्धा । -छद्मकी-वि० श्री या धनसे अच्छी तरह संपन्न । -वर्मा(मंत्र)-पु० एक भगवद्गुरु । -वर्च-वि० जिसकी अवस्था पूरे नीस साफकी हो । -विराम-पु० वाक्यकी समाप्तिका सूचक चिह्न । -विषम-पु० तालमें एक स्थान (संगीत) । -वैनाशिक-पु० सर्वशून्यत्ववाद माननेवाला बौद्ध । -श्री-वि० धनधान्यसे पूर्ण । -होम पु० दे० 'पूर्णहुति' ।

पूर्णक-पु० [सं०] चाब पक्षी; मुर्गा; एक वृक्ष ।

पूर्णत(सत्), पूर्णतया-अ० [सं०] अच्छी तरह, पूर्ण रूपसे ।

पूर्णाक-पु० [सं०] पूरे संख्या; अविभक्त संख्या (ग०); किसी प्रश्नपत्रके लिए निर्धारित अंक ।

पूर्णागद्-पु० [सं०] एक नाग ।

पूर्णा-स्त्री० [सं०] चंद्रमाकी पंद्रहवीं कला; चंचली, दक्षणी, पूर्णिमा और अमावस्या; दक्षिण भारतकी एक नदी ।

पूर्णाघात-पु० [सं०] तालमें एक विशेष स्थान (संगीत) ।

पूर्णान्व-पु० [सं०] परमेश्वर ।

पूर्णाजक-पु० [सं०] पट्ट; पट्टकी ध्वनि; पुत्रजन्मोत्सवके अन्तर्गत मित्रों आदिको दी जानेवाली भेंट ।

पूर्णामिलाप-वि० [सं०] संतुष्ट, परिशुद्ध ।

पूर्णभिषिक-पु० [सं०] शास्त्रीका एक भेद ।

पूर्णभिषेक-पु० [सं०] शास्त्रीका एक सरकार ।

पूर्णसुता-स्त्री० [सं०] चंद्रमाकी सोलहवीं कला ।

पूर्णसु(स्)-स्त्री० [सं०] सौ वर्षकी आयु (मनुष्यकी पूरी आयु सौ वर्षकी मानी गयी है) । वि० सौ वर्षकी आयु-वाला । पु० एक गर्भव ।

पूर्णलक-पु० [सं०] दे० 'पूर्णानक' ।

पूर्णवसार-पु० [सं०] वह अवतार जिसमें ईश्वर अपनी सभी कलाओंसे युक्त होकर अवतीर्ण हुआ हो, विष्णुका चौथा, सातवाँ और आठवाँ अवतार ।

पूर्णश-वि० [सं०] जिसकी आशा पूरी हो चुकी हो ।

पूर्णाहुति-स्त्री० [सं०] वह बाहुति जिससे होमकर्म समाप्त किया जाता है, होमकर्मकी अंतिम बाहुति; किसी कार्यका वह अंग जिससे वह पूर्णताकी प्राप्ति हो, किसी कार्यका पूरक अंग ।

पूर्णमा, पूर्णिमासी-स्त्री० [सं०] शुक्ल पक्षकी अंतिम तिथि, पूनी ।

पूर्णदु-पु० [सं०] सोलहवीं कलाओंसे युक्त चंद्रमा; पूर्णिमाका चंद्र ।

पूर्णलकट-पु० [सं०] एक पूर्वदेशीय पक्ष ।

पूर्णदारा-स्त्री० [सं०] एक देवी ।

पूर्णपमा-स्त्री० [सं०] उपमाकाकारका वह भेद जिसमें उपमेय, उपमान, वाचक और साधारण धर्म, ये चारों अंग उक्त हों ।

पूर्व-वि० [सं०] पूरा किया हुआ, पूरित; ढका हुआ, छत्र, व्यास; पालित; रक्षित । पु० पूरा करना; पालन; कुर्ज, तालाब खोदवाने, मंदिर बनवाने आदिका धार्मिक कृत्य; पुरस्कार । -विभागा-पु० वह सरकारी विभाग जिसके त्रिमे सबक, नहर, पुल आदि बनवानेका काम रहता है, तामीरातका मुखकमा, 'पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट' ।

पूर्ति-स्त्री० [सं०] पूरा करनेकी क्रिया, पूर्ण; संतुष्टि; तुष्टि; गुणा करना, गुणन; पुरस्कार देना; पुरस्कार ।

पूर्व(मिन्)-वि० [सं०] पूरा करनेवाला; उदाराशय; लोककल्याणके कार्य करनेवाला ।

पूर्व-वि०, पु०, अ० [सं०] दे० 'पूर्व' (समाप्त श्री) ।

पूर्व-वि० [सं०] पूरा करने योग्य, पूर्णतया; परिपाकनके योग्य ।

पूर्वगम-वि० [सं०] पूर्वगामी ।

पूर्व-वि० [सं०] पूर्वी; पहले, प्रथम, आद्य; पहलेका, आगेका; प्राचीन, पुराना; पिछला; पूर्वमें स्थित; पहले कहा हुआ; बहुत दिनोंसे चला आता हुआ (रिवाज आदि) । पु० पुराणा; सूरजके निकलनेकी दिशा, पूर्व; अग्रभाग । अ० पहले, वैतर । -कर्म(स्)-पु० पहलेका, प्रथम कार्य; पूर्वजन्मका कर्म; तैवारी । -कक्ष-पु० प्राचीनकाक । -काय-पु० जानवरोंके शरीरका

अगला भाग; मनुष्यके शरीरका ऊपरी भाग । -काक-
-पु० प्राचीन काक, पुराना समय; पहलेका समय, बीता
हुआ समय । वि० प्राचीन कालका । -कालिक; -
कालीन-वि० पूर्वकाल-संबंधी; पुराना, प्राचीन; पहलेका ।
-कालिक क्रिया-को० वह क्रिया जिसे पूरा कर कर्ता
दूसरा कार्य करे (जैसे वह 'लाकर' पढ़ने लगा) । -काष्ठा
-को० पूरव, प्राची । -कृत-वि० जो पहले किया गया
हो । पु० पहलेका कर्म; पूर्व जन्मका कर्म । -कृत-पु०
(पूर्व दिशाका सूचक) सूर्य; (पूर्व दिशाका अधिपति) इंद्र ।
-कोटि-को० बाढ़का पूर्वपक्ष । -शंगा-को० नर्मदा
नदी । -ग-वि० पहले जानेवाला; पहलेका, आगेका
पूर्ववर्ती । -गल-वि० पहले गया हुआ । -शामी(मिन्)
-वि० दे० 'पूर्वग' । -शित-को० एक अस्त्र । -
कोदित-वि० पहले कहा हुआ, पूर्वोक्त । -ज-वि०
जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जनमा हुआ । पु०
भापसे पहलेकी पीढ़ीमें उत्पन्न पुरुष, पुरखा; बड़ा भाई,
अग्रज; चन्द्रलोकमें रहनेवाले दिव्य पित्राण; मनुष्योंके
पूर्व पुरुष; बड़ी पहलीका जेठा लड़का; सबसे बड़ा लड़का ।
-जन्म(ब्)-पु० वर्तमान जन्मसे पहलेका जन्म,
पिछला जन्म । -जन्मा(न्मस्)-पु० जेठा भाई ।
-जा-को० बड़ी बहन । -जाति-को० पूर्व जन्म । -
जिन-पु० पुराने समयके जिन, मनुष्य आदि । -ज्ञान
-पु० पूर्व जन्मका ज्ञान; पूर्व जन्ममें उपार्जित ज्ञान ।
-दक्षिण-वि० अक्षिकोणमें स्थित, अक्षिकोणीय । पु०
अक्षिकोण । -दक्ष-वि० पहले दिया हुआ । -दिक्-
(स्)-को० पूरव, प्राची । -०पति-को० इंद्र ।
-दिगीश-पु० इंद्र । -दिन-पु० दिनका मध्याह्नसे
पहलेका भाग । -दिश्य-वि० पूरव; पूर्वी । -दिष्ट-पु०
प्राक्पक्षके अनुसार नियत सुख, दुःख आदि । वि० जिसका
विधान पहले किया जा चुका हो, पूर्वविविध । -दुष्कृत-
पु० पूर्व जन्मका कुकृत्य । -देव-पु० प्राचीन देवता;
अमर; नर और नारायण; पितर । -देवता-पु० पितर ।
-देस-पु० पूर्वी देश; भारतका पूर्वी भाग । -देह-
को० वह शरीर जिसे त्यागकर वर्तमान शरीर धारण किया
गया हो; पूर्व जन्मवाला शरीर; शरीरका अगला या ऊपरी
भाग । -देहिक; -दैहिक-वि० पूर्व जन्ममें किया हुआ ।
-मडक-पु० जाँघकी पोछी हड्डी । -निरूपण-पु०
अष्ट । -निश्चित-वि० जिसका पहलेसे निश्चय हो चुका
हो । -पक्ष-पु० अगला हिस्सा; शास्त्र-विचारमें किसी
संशयवाले सवालके संबंधमें उठाया गया प्रश्न; किसी विषय-
के विमर्शकी वह कोटि जिसमें सिद्धांतके विरुद्ध तर्क उप-
स्थित किये जाते हैं; विवाद या अभियोगमें वादीकी प्रतिष्ठा
या नातिष्ठा, मुद्देकी करियाद; कृष्ण पक्ष । -पक्षी-
(सिन्)-वि०, पु० पूर्व पक्ष उपस्थित करनेवाला । -पक्ष
-पु० पहलेका मार्ग; पुराना मार्ग । -पक्ष-पु० समासमें
पहला पद; पहला स्थान । -पर्वत-पु० उच्यान्तक ।
-पाक्षी(किम्)-पु० इंद्र । -पितामह-पु० पुरखा,
पूर्वज; प्रपितामह । -पीठिका-को० पहली पीठिका,
भूमिका । -पुष्प-पु० पुरखा, दादा-परदादा आदि ।
-प्रज्ञा-को० अतीतका ज्ञान, स्थिति । -कस्मूनी,

-कस्मूनी-को० दे० 'पूर्वाकस्मूनी' । -०अव-पु०
इहस्पति । -बंज-पु० पहले या सबसे अच्छा मित्र ।
-बाध-पु० पहले हुए निश्चय आदिको खणित या रर
करना । -आग-पु० अगला या ऊपरका भाग । -आग्-
पक्ष-को० दे० 'पूर्वाग्रपक्ष' । -आव-पु० पूर्वसप्ता;
प्राथमिकता; विचारकी अभिव्यक्ति, पूर्वराग (सा०) । -
आवी(सिन्)-पु० कारण । वि० पूर्ववर्ती । -आपी-
(सिन्)-वि० पहले बोलनेका इच्छुक; नम्र, विनयी ।
-भुक्ति-को० पहलेसे चला आता हुआ कर्मज्ञा । -भूत
-वि० जो पहले हुआ हो । -मारी(सिन्)-वि० पहले
मरनेवाला । -मीमांसा-को० मीमांसा दर्शनका वह
भाग जिसमें कर्मकांडका तात्त्विक विवेचन किया गया है ।
-मेघ-पु० मेघदूतका पूर्वाह्न । -वक्ष-पु० मणिमद्र
नामक जिन । -रंग-पु० विष्णुशास्त्रिके लिए अभिनयके
आरम्भमें किये जानेवाले कृष्ण-नांगी-पाठ आदि । -राग-
पु० नायक और नायिकामें श्रवण, दर्शन आदिके कारण
मिलनसे पहले उत्पन्न होनेवाला अनुराग । -राज-पु०
भूतपूर्व नरेश । -रात्र-पु० रात्रिका पूर्व भाग । -रूप-
पु० पहलेवाला रूप, वह रूप जो पहले रहा हो; ऐसा
लक्षण जिससे किसी भावी वस्तुके आगमकी सूचना मिले;
रोगका आरंभिक लक्षण; आसार; एक अश्लोकार जहाँ
किसीके विनष्ट गुण, रूप आदिके फिरसे आ जाने या उस
वस्तु अथवा व्यक्तिके पुनः अपने पूर्व रूपमें आ जानेका
वर्णन होता है । -वच(स्), -वचस-पु० वचपन ।
-वचा(वस्)-वि० वचपनकी अवस्थावाला । -वर्त्ती-
(सिन्)-वि० पहले होनेवाला, पहलेका । -वाद्-पु०
वादीका अभिव्यक्ति या दावा, मुद्देकी नातिष्ठा । -वादी-
(सिन्)-पु० सुदूर, वादी । -विद्-वि० जिसे पुरानी
बातें माळूम हों, पुराविद । -विदित-वि० पहले जमा
किया हुआ या गाढ़ा हुआ (घन) । -वृत्त-वि० पहले
चुना हुआ । -वृत्त-पु० पुराना रूपांतर; इतिहास; पहले-
का चरित्र या आचरण । -वैरी(सिन्)-पु० पहलेका
वैरी, पुराना शत्रु; शत्रुता आरम्भ करनेवाला । -वील-
पु० उदवाचक । -संक्षिप्त-वि० पहले एकत्र किया
हुआ । -संख्या-को० प्रातःकाल । -सख्य-पु० जपाका
ऊपरी भाग । -समिक-पु० शतगृहका प्रधान । -सर-
वि० आगे चलनेवाला, अग्रसर । -सागर-पु० पूर्वी
समुद्र । -सार-वि० पूरबकी ओर जानेवाला । -साहस
-पु० पहला या सबसे बड़ा दंड । -सुख-वि० पहलेसे
सोया हुआ । -स्थिति-को० पहलेकी दशा ।
पूर्वक-अ० [सं०] साथ, सहित (सम्माने साथ प्रयुक्त, जैसे
कृपापूर्वक) । वि० पहलेका; पहला । पु० पुरखा ।
पूर्वतः(तत्त्व)-अ० [सं०] पहले, प्रथमतः; सामने ।
पूर्वतन-वि० [सं०] पहला, पुराना ।
पूर्वत्र-अ० [सं०] पहले; पहले भाग या स्थानमें ।
पूर्ववत्-अ० [सं०] पहलेकी तरह । पु० कार्यका वह अनु-
मान जो उसके कारणकी देखकर किया जाय ।
पूर्वाहुवि-पु० [सं०] पूर्वी समुद्र ।
पूर्वा-को० [सं०] प्राची, पूरव । -कास्मूनी-को० सप्ताह
नक्षत्रोंमेंसे स्यारवर्षी नक्षत्र । -आग्रपक्ष-को० सप्ताह

नक्षत्रोंमेंसे पञ्चोत्तमों नक्षत्र ।
पूर्वाभि-**की०** [सं०] आपसम्ब अभि ।
पूर्वाचल, **पूर्वाभि**-**पु०** [सं०] उदयाचल ।
पूर्वाधिकारी(रिक्)-**पु०** [सं०] पहलेका अधिकारी ।
पूर्वाभिल-**पु०** [सं०] पूरवी बवा, पुरवा ।
पूर्वानुराग-**पु०** [सं०] दे० 'पूर्वराग' ।
पूर्वापर-**वि०** [सं०] अगला और पिछला; पूरव और पश्चिमका । पु० आता-पीछा; प्रमाण और प्रमेय ।
पूर्वापर्य-**पु०** [सं०] पूर्वापरका भाव ।
पूर्वाभिसुख-**वि०** [सं०] जिसका सुख पूरवकी ओर हो ।
 अ० पूरवकी ओर ।
पूर्वाभिषेक-**पु०** [सं०] पहलेका स्नान; एक मंत्र ।
पूर्वाभ्यास-**पु०** [सं०] पहले किया हुआ अभ्यास; पहलेका अभ्यास ।
पूर्वाराग-**पु०** [सं०] एक गौड मठ ।
पूर्वाधिक-**पु०** [सं०] सामवेदका पूर्वार्ध ।
पूर्वाजित-**वि०** [सं०] पहलेका उपायन किया हुआ; पहलेका कमाया हुआ । पु० पैतृक संपत्ति ।
पूर्वाह्न, **पूर्वाह्न**-**पु०** [सं०] दो बराबर भागोंमेंसे पहलेका भाग, उत्तरार्धका पहला ।
पूर्वाधिक-**वि०** [सं०] दे० 'पूर्वाध्व' ।
पूर्वाध्व-**वि०** [सं०] पूर्वाह्न-संबंधी; पूर्वाह्नका ।
पूर्वावेदक-**पु०** [सं०] बादी, मुखर् ।
पूर्वाशा-**की०** [सं०] पूर्व दिशा ।
पूर्वाभ्रम-**पु०** [सं०] मन्त्रचक्राभ्रम ।
पूर्वावाहा-**की०** [सं०] सत्ताष्टस नक्षत्रोंमेंसे बीसवों नक्षत्र ।
पूर्वाह-**पु०** [सं०] दे० 'पूर्वाह्न' ।
पूर्वाह्न-**पु०** [सं०] दिनका पहला भाग, दिनके पहले दो प्रहर ।
पूर्वाह्निक-**वि०** [सं०] पूर्वाह्न-संबंधी । पु० दिनके पहले भागमें किया जानेवाला कृत्य ।
पूर्वाह्न-**पु०** दे० 'पूर्वाह्न' ।
पूर्वी-**वि०** पूरवका, पूरवी । -**घाट**-**पु०** दक्षिण भारतके पूरवी तटपरकी शालासोरेसे कन्याकुमारीतककी पर्वतमाळा ।
 -**ग्रीपसमूह**-**पु०** भारतके पूरवमें स्थित जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि द्वीपोंका समूह ।
पूर्वीण-**वि०** [मं०] पुराना; पैतृक ।
पूर्वतर-**वि०** [सं०] पश्चिमी ।
पूर्वेषा(पूर्व)-**अ०** [सं०] पिछले दिन, पूर्व दिन । पु० प्रातःकाल; पिछला दिन; एक विशेष आह ।
पूर्वोक्त, **पूर्वोक्ति**-**वि०** [सं०] जिसका कथन पहले हो चुका हो, पहले कहा हुआ ।
पूर्वोत्तर-**वि०** [सं०] उत्तरी-पूरवी । पु० दे० 'पूर्वोत्तर' ।
पूर्वोत्तरा-**की०** [सं०] पूरव और उत्तरके बीचकी दिशा, ईशान कोण ।
पूक, **पूक**-**पु०** [सं०] तुण आदिका ढेर, पूजा ।
पूजा-**पु०** तुण आदिका ढेर हुआ मुद्गा; एक छोटा जंगली पेड़ जिसकी छालके रेशेसे रस्ते तैयार किये जाते हैं ।
पूकाक-**पु०** [सं०] दे० 'पूलाक' ।
पूषिका-**की०** [सं०] एक प्रकारकी मीठी फ़री ।

पूषी-**की०** छोटा पूजा ।
पूषव-**पु०** [सं०] खीसका दाना, पैसा ।
पूषा-**पु०** दे० 'पूजा' ।
पूष-**पु०** अगहनके बादका महीना, पौष; [सं०] श्राद्धतृत्तका पेड़ ।
पूषक-**पु०** [सं०] श्राद्धतृत्तका पेड़ ।
पूषव, **पूषव**-**पु०** सय ।
पूषा-**की०** [सं०] चंद्रमाकी तीसरी कक्षा ।
पूषा(पूष)-**पु०** [सं०] सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे एक ।
 -**(प)वृंतहर**-**पु०** वीरभद्र (जिसने सूर्यका दाँत तोका था) । -**भासा**-**की०** इंद्रकी पुत्री ।
पूषास्मज-**पु०** [सं०] इन्द्र; मेघ, बादल ।
पूषासुहृद्(र)-**पु०** [सं०] शिव ।
पूष-**पु०** पौष मास ।
पूषा-**की०** [सं०] एक ऋक, असवर्ग ।
पूक-**वि०** [सं०] मिला हुआ, मिश्रित; संवद्ध, युक्त, भरा हुआ, पूर्ण । पु० धन, संपत्ति ।
पूषिक-**की०** [सं०] मिश्रण, मिश्रण; संपर्क, संबंध, योग; स्पर्श ।
पूषय-**पु०** [सं०] धन, संपत्ति ।
पूषक-**पु०** [सं०] पूछनेवाला, जिज्ञासु ।
पूषकम-**पु०** [सं०] पूछनेकी क्रिया, पूछना ।
पूषा-**की०** [सं०] प्रश्न; मविष्य-संबंधी प्रश्न ।
पूषना-**की०** [सं०] सेना; बह सेना जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ अश्वारोही और १२१५ पैदल सिपाही हों; सभ्राम । -**वसि**-**पु०** सेनापति । -**चाद्**(ह)-**पु०** इन्द्र ।
पूषन्या-**की०** [सं०] सेना ।
पूषन्पु-**वि०** [सं०] शत्रुता करनेवाला, आक्रामक ।
पूषक्-**अ०** [सं०] अलग, जुदा, विना, मित्र । -**करण**-**पु०**, -**क्रिया**-**की०** अलग करनेका काम; विद्वेषण ।
 -**कुल**-**वि०** दूसरे कुलका, मित्र कुलका । -**क्षेत्र**-**पु०** एक पिता, पर मित्र मातासे जननी हुई संतति । -**चर**-**वि०** अलग या अकेले जानेवाला; अलग या अकेले विचरनेवाला । -**स्वच्छ**-**की०** सूर्यांता । -**पथी**-**की०** पृथिनपथी; पिठवन । -**पिंड**-**पु०** दूरवासी सवधी जो साम पिंड न देकर अकेले दे । -**शाय्या**-**की०** अलग सेना । -**ज्ञात्री**(विन्)-**वि०** अकेले या अलग सोचनेवाला ।
पूषका-**की०** -**पूषकरव**-**पु०** [सं०] पूषक् होनेका भाव, निम्नता, अलहदगी; चौबीस गुणोंमेंसे एक (न्या०) ।
पूषग-**पूषक**का समासगतकृप । -**आत्मसा**-**की०** मेद; विशेष, वैशिष्ट्य । -**आत्मा**(स्मृ)-**वि०** मित्र, विशिष्ट । -**आत्मिका**-**की०** वैशिष्ट्य, व्यक्तित्व । -**गोत्र**-**वि०** मित्र कुलका । -**जन**-**पु०** निम्न वर्गका व्यक्ति; नीच, कमीना । -**बीज**-**पु०** मिलाव । -**आव**-**पु०** मित्र अवस्था; अंतर, मिश्रता । -**स्वप**-**वि०** अनेक रूपोंवाला, नाना प्रकारका । -**विध**-**वि०** नाना प्रकारका ।
पूषवी-**की०** [सं०] दे० 'पूष्वी' ।

पृथा-को० [सं०] पांडुपत्नी कुंती । -**ज-पु०** कुंतीपुत्र, अर्जुन आदि; अर्जुन वृक्ष । -**तनव-पु०** सुषिष्ठिर, अर्जुन, यम (विशेषतः अर्जुन) । -**पति-पु०** राजा पांडु । -**सुतः-सुनु-पु०** दे० 'पृथातनय' ।

पृथिका-को० [सं०] कनकचूरा ।

पृथिवी-को० [सं०] दे० 'पृथ्वी' । -**कंप-पु०** भूकंप ।

-**क्षिप्**,-**नाथ-पु०** राजा । -**तल-पु०** पृथ्वीकी सतह, धरातल । -**पति-पु०** राजा; यम; कृपण नामकी ओषधि । -**परिपालकः-पाकः-मुक् (ञ्)** -**मुर्ख-पु०** राजा । -**हृव-पु०** समुद्र । -**भुव-पु०** पृथा ।

-**मंडल-पु०** दे० 'भूमंडल' । -**रुह-पु०** वृक्षा, वृक्ष ।

-**लोक-पु०** मर्त्यलोक । -**स्राव-पु०** राजा ।

पृथी-पु० [सं०] एक पौराणिक राजा । * **को०** दे० 'पृथ्वी' । -**नाथ-पु०** राजा ।

पृथु-वि० [सं०] विस्तीर्ण, चौड़ा; महात्मा, विशाल; मोटा; प्रभूत; बहुसंख्यका; चतुर; विशिष्ट । **पु०** अग्नि; शिव; एक विश्वदेव; विष्णु; एक दानव; इक्ष्वाकुवंशका एक राजा जिसका पुत्र विशंकु हुआ; वेणुके पुत्र जो प्रथम राजा माने जाते हैं (इन्होंने ही गोरूपधारिणी पृथ्वीसे ओषधियोंका दान किया था) । **को०** काका जीरा; अफीम; हिंगुपत्नी । -**कीर्ति-को०** बहुदेवकी एक बहन । **वि०** बड़ी कीर्तिवाला, महान् यशस्वी । -**कोरु-पु०** बड़ा बेर । -**ग्रीव-वि०** मोटी गर्दनवाला । -**च्छद्-पु०** हरे रंगका कुशा ।

-**दर्शी (सिंह)-वि०** दूरतक देखनेवाला, दूरदर्शी ।

-**पद्म-पु०** लाल लहसुन । -**पलाशिका-को०** शरी, कचूर । -**प्रथ-पृथा (सस्)** -**वि०** बहुत बिलखात ।

-**बीजक-पु०** मधूर । -**रोमा (मन्)-पु०** मछली ।

-**कोचल-वि०** बड़ी आँखोंवाला । -**सिंह-पु०** सीना-पाठा । -**श्रंग-पु०** मेघका एक भेद । -**होखर-पु०** पहाड़ । -**अवा (वस्)** -**वि०** बड़े कानोंवाला; बहुत प्रसिद्ध । **पु०** कार्तिकेयका एक अनुचर; रजुका एक पुत्र ।

नवें मनुका एक पुत्र; एक नाग । -**श्री-वि०** वैभवशाली ।

-**ओषि,** -**ओषी-वि०** **को०** जिसकी कटि चौड़ी हो ।

-**संपद्-वि०** धनी । -**स्कंध-पु०** स्रजर ।

पृथुक-पु० [सं०] शिशु; पिंडका ।

पृथुका-को० [सं०] हिंगुपत्नी; बालिका ।

पृथुल-वि० [सं०] स्थूल, मोटा; विस्तीर्ण, विशाल । -**कोचन-वि०** बड़ी आँखोंवाला । -**वज्रा (क्षस्)** -**वि०** जिसका सीना चौड़ा हो । -**विक्रम-वि०** बहुत बौर, पराक्रमी ।

पृथुला-को० [सं०] हिंगुपत्नी ।

पृथुलाक्ष-वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला ।

पृथुवक-पु० [सं०] सरस्वतीके किनारेका एक तीर्थ जिसका आधुनिक नाम पोहीला है ।

पृथुव-वि० [सं०] बड़े पैठवाला । **पु०** मेघा ।

पृथिवका-को० [सं०] दे० 'पृथ्वीका' ।

पृथ्वी-पु० [सं०] राजा ।

पृथ्वी-को० [सं०] मौर मंडलका बड़ प्रसिद्ध ग्रह जिसपर मर्त्यलोककी स्थिति है, यौन महाभूतोंमेंसे एक; पृथ्वीका तल, भूमि, धरती; बड़ी हलायवी; हिंगुपत्नी; गवहपुरनाम

काका जीरा; एक वणिक वृत्त । -**कुदबक-पु०** सफेद आक, मदार । -**क्षात-पु०** गुफा । -**शर्म-वि०** बड़े पैठवाला ।

पु० गणेश । -**गृह-पु०** गुफा । -**ज-पु०** मंगल ग्रह; पेड़; सौरम नमक । -**तनया-को०** सीता । -**धर-पु०** पर्वत । -**नाथः-पतिः-पाकः-पु०** राजा । -**पुत्र-पु०** मंगल ग्रह । -**मुक् (ञ्)** -**भुव-पु०** राजा ।

-**मंडल-पु०** दे० 'भूमंडल' ।

पृथ्वीका-को० [सं०] बड़ी हलायवी; हिंगुपत्नी; काका जीरा ।

पृथ्वी-पु० [सं०] राजा ।

पृथाकु-पु० [सं०] बाघ; चीता; हाथी; साँप; बिच्छू; पेड़, वृक्ष ।

पृथिन-वि० [सं०] छोटे कदका, बौना; दुबला-पतला; क्षीणकाय; नाजुक; चितकनरा । **को०** किरण; पृथ्वी; कृष्णकी माता देवकी । **पु०** बौना; एक कवि । -**गर्म,-धर-पु०** कृष्ण । -**पर्यिका,-पर्यी-को०** पिठवन । -**मन्-पु०** कृष्ण । -**श्रंग-पु०** गणेश; विष्णु ।

पृथिनका-को० [सं०] जलकुमी ।

पृथ्वी-को० [सं०] जलकुमी ।

पृथंति-पु० [सं०] जलकी बूंद ।

पृथल-वि० [सं०] चितकनरा । **पु०** एक प्रकारका हिरन जिसके शरीरपर सफेद धब्बे होते हैं; धम्बा, जलकी बूँद; बाघका बाहन; द्रुपके पिता ।

पृथलपति-पु० [सं०] बाघ ।

पृथलाव-पु० [सं०] बाघ ।

पृथल-पु० [सं०] जल विद्रु; चितकनरा हिरन । **वि०** सित करनेवाला; चितकनरा ।

पृथल-पु० [सं०] बाघ; गोल धम्बा ।

पृथल-पृथलका समागत रूप । -**अर्था-पु०** बाघ; शिव । -**अवध-पु०** बाघ; शिव । -**आज्य-पु०** दही मिला हुआ धो । -**बल-पु०** बाघका घोड़ा ।

पृथल-पु० [सं०] वैवस्वत मनुके एक पुत्र ।

पृथमावा-को० [सं०] इंद्रपुरी, अमरावती ।

पृथाकरा-को० [सं०] पथरका बटखरा ।

पृथातक-पु० [सं०] दही मिला हुआ धो ।

पृथोव-वि० [सं०] जिसके पैरपर नुदे हैं; छोटे पैठवाला । **पु०** बाघ ।

पृथोथान-पु० [सं०] छोटा उपवन ।

पृष्ठ-वि० [सं०] पृष्ठा हुआ; जिमसे पृष्ठा गया हो; सितक । **पु०** प्रदल । -**द्रावन-पु०** एक प्रकारका अनाज; हाथी ।

पृष्टि-को० [सं०] पृष्ठनेकी क्रिया; स्पर्श; किरण; पृष्ठ ।

पृष्ठ-पु० [सं०] पीठ; किसी वस्तुका पिछला भाग; किसी वस्तुका ऊपरी भाग, तल; पुस्तकके पन्नेका एक ओरका भाग, सफा; छत (मोपपृष्ठ) । -**श-वि०** (पीछे आदिपर) चढ़ा हुआ । -**शामी (मिन्)-वि०** पीछे चढ़नेवाला, अनुयायी । -**शोष-पु०** वह सैनिक जो छद्मनेवाले योद्धाके पीछे उसकी रक्षाके लिए नियुक्त रहता है । -**प्रथि-वि०** कुबका । **को०** कृषक, एक तरहका शोष । -**ग्रह-पु०** बौद्धोंका एक रोग । -**अक्षु (स्)** -**पु०** केकड़ा; गाढ़ । -**ज-वि०** जिसका उपरपि (फिलीकी) पीछे था

बादमें हुई ही। पु० स्वर्दाका एक रूप। -तस्वप-पु० हाथीकी पीठपरकी गहरी पैशियाँ। -ताप-पु० मध्याह्न। -हडि-पु० कैकया; माछ। -पैश-पु० पीछेका भाग। -पासी(सिद्ध)-वि० अनुगमन करनेवाला; निर्यवण करनेवाला। -पोषक-वि०, पु० [ई०, हिं०] सहायक। -पोषण-पु० [ई०, हिं०] सहायता करना। -अंश-पु० एक प्रकारका तुल्य। -आश-पु० पिछला भाग। -भूमि-खी० मकानकी ऊपरकी मंजिल या छत; पीछेकी भूमि या पीछेका दृश्य, पृष्ठिक; पहाड़ेकी बाँते। -अर्ध-पु० पीठपरका अर्धस्थान। -आंस-पु० पीठका मांस। -मांसाव-वि०, पु० पीठका मांस खानेवाला; जुगली करनेवाला, जुगलखोर। -मांसाव्य-पु० पीठका मांस खानेकी क्रिया; जुगली खाना। -घान-पु० सवारी करना (कोरे आदिकी)। -रक्ष-पु० दे० 'पृष्ठ-गोप'। -रक्षण-पु० पृष्ठभागकी रक्षा। -छत्र-वि० पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुयायी। -बंश-पु० रीढ़। -बार(ह्)-पु० दे० 'पृष्ठबाह'। -बारधु-पु० घरके ऊपर बना हुआ घर; मकानकी ऊपरी मंजिल। -बाह-पु० लुब्धा बैल। -शब्द-वि० पीठके बल सोनेवाला। -श्रंग-पु० जंगली बकरा। -श्रंगी(सिद्ध)-पु० मेढ़ा; भैंसा; बिजड़ा; अर्जुनके भाई भीम। -ह्वेत-पु० एक तरहका धान।

पृष्ठक-पु० [सं०] पृष्ठ, पीछेकी ओरका हिस्सा।
पृष्ठतः(तस्)-अ० [सं०] पीछे; पीछेसे, पीठकी ओरसे; चुपकेसे। -प्रथित-पु० तलवारका एक बाध।
पृष्ठानुग, पृष्ठानुगामी(सिद्ध)-वि० [सं०] अनुगमन करनेवाला।
पृष्ठस्थि-खी० [सं०] रीढ़।
पृष्ठिका-खी० [सं०] पीछेकी भूमि या पीछेका दृश्य; घरवाले पहाड़ेकी बाँते या परिस्थितियाँ, पृष्ठभूमि।
पृष्ठमुख-पु० [सं०] काफिकेयका एक अनुचर।
पृष्ठोदय-पु० [सं०] पीठकी ओरसे उदित होनेवाली राशि (जैसे-मेघ, वृष, कर्क, धन, मकर और मीन)।
पृष्ठ्य-वि० [सं०] पृष्ठ-सम्बन्धी; पीठका। पु० लुब्धा घोड़ा।
पृष्ठ्या-खी० [सं०] लड़कें घोड़ी; वेदीके पृष्ठभागका किनारा।
पृष्ठा-खी० [सं०] एकी; पिछला भाग; किरण।
पृष्ठाका-खी० [सं०] दे० 'पृष्ठा'।
पृष्ठी-खी० [सं०] दे० 'पृष्ठा'।
पृँ-खी० रोने, बाजा फूँकने आदिसे निकलनेवाला शब्द।
पृँग-खी० छलनेके समय झूठे या हिंदीलेका आगे-पीछे जाना। † पु० एक पक्षी। सु० -आरना-छलनेकी वेगसे और द्रुतक छलनेके लिए उसपर जोर पहुँचाना; जोरसे झुलाना या झुलाना।
पृँगिवा मैना-खी० मैना चिबियाकी एक जाति।
पृँद, पृँदारी-पु० एक तरहका पक्षी।
पृँव-पु० दे० 'पेच'।
पृँवक-खी० दे० 'पेचक' [फा०]।
पृँठ-खी० दे० 'पेठ'।
पृँठ-पु० [सं०] रास्ता, सड़क।

पृँठक-पु० [अ०] दीवारघड़ीका वह लटकनेवाला पुरजा जो बराबर हिलता रहता है।
पृँठकी-खी० पृँठक, काखता; सोनारोंकी फूँकनी; गुहिया नामका पकवान।
पृँठली-खी० दे० 'पिँडली'।
पृँहा-पु० किसी गहरी बस्तुका निचला भाग जिसको बरकर वह स्थित होती है; किसी गहरी बस्तुका तल।
पृँदी-खी० 'पिँदा'का अल्पां०; किसी गहरी बस्तुका तल; गुदा; गाजर या मूलीकी जड़। सु० (विना)-का छोटा-वह मनुष्य जो किसी निश्चित सिद्धांतका न हो; वह मनुष्य जिसकी मति बदल करे; वह मनुष्य जो कभी इस पक्षमें मिल जाय, कभी उस पक्षमें।
पृँशन-खी० [अ०] वह मानिक या बापिक हथि जो किसी व्यक्ति या उसके लच्छारिफारियोंको उसकी पूर्वसेवाओंके पुरस्कारके रूपमें नियोक्ता या स्वामीकी ओरसे मिलती है। -वाज्जता-वि० जिसे पृँशन मिलती हो।
पृँस-पु० [अ०] पेनीका बड़० दे० 'पेनी'।
पृँसिल-खी० [अ०] एक प्रकारकी लेखनी जो लकड़ी या किसी धातुके पोले लोहेसे टुकड़ोंमें विशेष प्रकारके मसालेकी सलाई बैठकर तैयार की जाती है।
पृँसल, पृँसली-खी० दे० 'पेउली'।
पृँसरी-खी० दे० 'पेउली'।
पृँसरी-खी० गाय या भैसका म्यानेके दिनसे सात दिनों-तकका दूध; इस दूधमें पकाया हुआ लौंड, शकर आदिका पाक, शकर।
पृँसक-पु० प्रेरक, देखनेवाला, दर्शक।
पृँसन-पु० प्रेक्षण; तमाशा, दृश्य।
पृँसना-स० क्रि० देखना।
पृँच-पु० [फा०] लपेट, चक्कर; झंझट, झमेला; मरोड़; कुश्तीका दौंव; पेठका दर्द; एक प्रकारकी कौल जिसमें चुबियाँ बनी रहती हैं, 'स्कु'; मुश्किल, कठिनाई; शोखा; करेव; चाल; पगड़ीकी लपेट-'रहे पेच करमें पड़े परे पेचमें स्वाम'-विहारी; एक आभूषण जो पगड़ीपर आगेकी ओर बाँधा जाता है, सिरपेच; एक प्रकारका आभूषण जो कानोंपर धारण किया जाता है; कल, मशीन; मशीनका कोई पुरजा; किसी यंत्रका वह अंग या पुरजा जिसे घुमाने, दवाने आदिसे उसमें हरकत पैदा होती है; लड़ाई जानेवाली पतंगोंकी कीरीका एक-दूसरेसे उलझना; जुक्ति, उपाय। -कस-पु० बदर्थी, लोहारोंका वह आठा जिससे वे पेचोंको घुमा-घुमाकर जड़ते या निकालते हैं; लोहेका वह चक्करदार आठा जिससे शैतलका काग निकाला जाता है। -हार-वि० लपेटवाला; चक्करदार; जिसमें कोई यंत्र लगा हो; जिसमें कोई उलझन या झमेला हो, उलझनवाला। -ब ताब, -(को)ताब-पु० पेचैनी; कुदन; फिका अदिशान गुस्ता; यम; कहर और गजब। -बान-पु० फरशीमें लगायी जानेवाली बड़ी सड़क; बड़ा कुत्ता।
पेचक-पु० [सं०] उल्टी पक्षी; परल; बादल; हाथीकी पूँछकी जड़; जूँ। खी० [फा०] बड़े हुए तागेकी मोड़ी, रीछ।
पेचकी-खी० [सं०] उल्टी माथा।

पेशकी (पिच) - पु० [सं०] बाजी ।

पेशना - सं० कि० दो वस्तुओंके बीच ऊन्हीं जैसी तीसरी वस्तु इस प्रकार मिश्रण या बाध देना कि जल्दी उसकी पहचान न हो सके ।

पेशिका - स्त्री० [सं०] एक तरहका अण्ड ।

पेशिक - पु० [सं०] बाजी ।

पेशिश - स्त्री० [फा०] आमाशयमें मरोड़की शीमारी जिसमें औंठ गिरता है ।

पेशीबनी - स्त्री० पेशीघात होनेका भाव ।

पेशीदा - वि० [फा०] पेश वा लपेटवाला; चक्रदार जिसमें उल्लान हो, उल्लानवाला, जो जल्दी हल न हो सके, कठिन, देठा ।

पेशीला - वि० दे० 'पेशीदा' ।

पेशु, पेशुक - पु० [सं०] एक तरहका शाक ।

पेशुकी - स्त्री० [सं०] दे० 'पेशु' ।

पेट - पु० [सं०] बैला; पिटारा; समूह; भण्ड, प्रहस्य;

[हि०] शरीरका वह प्रसिद्ध खाँसला अंग जिसमें भोजनका पाक होता है, उदर; पेटके भीतरकी वह पैली जिसमें खाद्यी हुई वस्तु जमा होती है; आमाशय; छातीके नीचेसे लेकर कमरतक फैला हुआ अंग; गर्भ, हमल; मन, दिल; किसी खोखली वस्तुका भीतरका भाग; बंदूक या तोपमें गोली या गोला भरनेकी जगह; जीवनयात्रा, जीविका; एकमें जुड़े हुए चक्कोके पादोंका भीतरी भाग; सिलका कपरी भाग जिसपर रलकर कोई वस्तु पीसी जाती है; रोटीका वह भाग जिससे वह पकने लगे जाती है । - चौड़ी - स्त्री० वह की जो गमिणी होते हुए भी बाहरी लक्ष्मणोंसे पैसी न जान पड़े । - भट्टा - पु० पेटके लिए नाचनेवाला ।

- पीछना - पु० अंतिम संतान । - पोसुबा - पु० वह जिसे केवल अपना पेट भरनेकी चिंता लगी रहे । - सरानी - स्त्री० पेटके लिए मेहनत या व्यभिचार करनेवाली स्त्री ।

- पैली - वि० स्त्री० गर्भवती । सु० - का गहरा - भेद प्रकट न करनेवाला । - काटना - पैसा बचानेके लिए कम खाना, प्रभ्य-संचय करनेके लिए खानेमें कंजूसी करना; कम खिलाना; कम पारिश्रमिक देना । - का खँचा - वह पेशा जिससे गुजारा हो, जीविका । - का पानी न पचना - कोई बात कहे, पूछे विना न रहा जाना । - का पानी न हिलना - योगसा भी अम न पचना । - का हलका - जो गंभीर न हो, गंभीरतासे रहित । - का हाथ - मनकी बात, तहेदिलकी बात । - की आग - मूल ।

-० बुझाना - कुछ खाकर या खिलकर मूल शांत करना, मूल मिटाना । - की बात - मनकी बात, रहस्यवरी बात ।

- की भार भारना - आहार न देना, भूखा रखना । - खाना - पेट पचकाकर भूखा होनेका संकेत करना; अवस्थिक दीनता प्रकट करना । - गहरा - गर्मका लक्षण प्रकट होना । - शिरना - गर्मपात होना । - गिरना - गर्मपात करना । - चकना - दस्त जारी होना ।

- उठना - पेटका मल-रहित होना । - छूटना - दस्त होना । - खलना - भरपेट भोजन न मिलना । - दिक्काना - पेट दिखाकर भूले होनेका संकेत करना । - देना - किसी-

को अपनी गुप्त बात बताना, किसीसे भेदकी बात कहना ।

- पानी होना - पतले दस्त आना । - फलना - किसी प्रकार निर्वाह करना, छत्रपूतिमात्र करते हुए निर्वाह करना । - पीठ एक हो जाना - बहुत दुर्बल हो जाना ।

- पीठसे छमना - दे० 'पेट पीठ एक हो जाना' । -

- फूटना - किसी बातको कहने, जानने आदिके लिए बेचैन हो उठना; गर्भ रहना । - असोसकर रह जाना -

- जुदकर रह जाना । - असोसना - भूखा रहना । - भारकर

मरना - आत्महत्या करना । - मैं भुसना - भेद जानने-

के लिए घनिष्ठ मित्र बनना । - मैं बूँह फूटना या

बौबना - जोरकी भूल छमना, भूखसे व्याकुल होना ।

- मैं झालना - खा जाना, हड़प जाना । - मैं वादी

होना - छोटी उमरमें ही बहुत अधिक बुद्धिमान् होना ।

- रखना - गर्भवती कर देना । - रहना - गर्भ रहना ।

- से पाँच मिलाकना - किसी मले आदमीका कुमार्गमें प्रवृत्त होना ।

पेटक - पु० [सं०] बैला; पिटारा; समूह ।

पेटकेपी - अ० पेटके बल ।

पेटरिबा - स्त्री० दे० 'पिटारी' ।

पेटल - वि० बड़े पेटवाला, तौड़ ।

पेटा - पु० किसी गहरी वस्तुका तलभाग; किसी वस्तुका भीतरी भाग, गर्भ; घेरा, चक्कर; नदीके भीतरकी जमीन जिसपरसे पानी बहता है; उत्तनी धरती भितनीसे होकर नदी बहती है; बहीका ध्यारे या तफनीलका खाना; उकते हुए कनकौएकी बोरका वह भाग जो डीला पककर नीचेकी ओर लटका रहता है; पशुओंकी अंतर्ग्री ।

पेटाक - पु० [सं०] टोकरा, पिटारा ।

पेटागि - स्त्री० पेटकी आग, भूख ।

पेटार - पु० दे० 'पिटारा' ।

पेटारा - पु० दे० 'पिटारा' ।

पेटारी - स्त्री० दे० 'पिटारी' ।

पेटारी, पेटार्य - वि० जो सदा खानेकी फिक्रमें रहे ।

पेटिका - स्त्री० [सं०] छोटा पिटारा, पिटारी ।

पेटी - स्त्री० तौड़की झील; वह तसमा जिससे पतलून, पैट

आदि पहननेपर कमरकी कसते हैं, बेल्ट; चपरास; नाहबों-

का लोहखर; वह तागा जो बुलबुलकी उँगलीपर बैठानेके लिए उसकी कमरसे बाँधते हैं; [सं०] छोटा पिटारा,

पिटारी; लघुसंज्ञा, छोटा संदूक ।

पेटीकोट - पु० [अ०] चौपरेकी तरहका एक हल्का पहनाना जिसे बिर्वा साँझीके नीचे और लकड़ियाँ कुर्ती, फाकके साथ पहनी है; साया ।

पेट - वि० जिसे सदा खानेकी चिंता लगी रहे; बहुत अधिक खानेवाला, दीर्घप्राणी ।

पेटेंड - पु० [अ०] वह मरकारी स्त्रीकृत या रजिस्टरी जिसके अनुसार किसीकी किसी नये आविष्कार या पदार्थके उत्पादन और विक्रयका एकाधिकार प्राप्त होता है । वि०

(वह वस्तु) जिसकी पेटी रजिस्ट्री हुई हो ।

पेट्रोल - पु० [अ०] एक प्रकारका खनिज तेल जिससे उत्पन्न शक्तिसे मोटर गाड़ियाँ, बसे आदि चलती हैं ।

पेडा - पु० सफेद कुम्हड़ा; रस कुम्हड़ेसे बनी मिठाई, कौहकापाग ।

पेड़-पु० वृक्ष, दरख्त ।

पेड़ल-पु० [अ०] साक्षिक आदिमें एक पुराना जिसे पैरसे चढ़ानेपर साक्षिक आदि चढ़ती है ।

पेड़ा-झी० [सं०] बड़ा बैला, पिटारा ।

पेड़ा-पु० चक्करोंके आकारकी एक प्रसिद्ध मिठाई जो खीर मिले हुए खोपेसे तैयार की जाती है; गुंथे हुए आटेकी छोई ।

पेड़ार-पु० एक वृक्ष ।

पेड़ी-झी० ऊपर-ऊपर काट लिये गये वृक्ष या पौधेके तनेका जड़मयित बना हुआ भाग; पेड़ या पौधेका तना-‘विरिछ उचारि पेडितो लेह’-ए०; ऊसका बड़ खेत जो ऊसके कट जानेके बाद रबीकी फसलके लिए जोता जाय; पानकी पुरानी बेस; पुरानी बेसके ज़तारा हुआ पान; फलवाले वृक्षोंपर लगाया जानेवाला कर ।

पेड़-पु० शरीरका नाभि और उपरके बीचका भाग ।

पेख-पु० [सं०] अमृत; घी; मेवा ।

पेवर-पु० दे० ‘पिटर’; † एक बड़ा जंगली पेड़ ।

पेन-झी० [अ०] कलम, लेखनी । † पु० लसोवेंकी जाति-का एक पेड़ ।

पेनी-झी० [अ०] एक अंग्रेजी सिका जो शिल्लिके बारहवें भागके बराबर होता है । -बैट-पु० एक अंग्रेजी तोल जो २४ ग्रेन (लगभग १० रसीके) बराबर होता है ।

पेन्हाणा-सं० कि० दे० ‘पहनाना’ । अ० कि० गाय-भैंस आदिके धनमें दूध उत्तर आना ।

पेपर-पु० [अ०] कागज; मसाचारपत्र; प्रघन-पत्र, परचा; निबंध, प्रबंध । -मिल-झी० यह मिल जिसमें कागज तैयार किया जाय । -बैट-पु० पपर, लकड़ी आदिका टुकड़ा जो कागजपर उठे उबनेसे रोकनेके लिए रखा जाता है ।

पेस-पु० दे० ‘ग्रैम’ ।

पेसका-पु० एक तरहका देशी कपड़ा ।

पेसा-झी० एक प्रकारकी मछली ।

पेय-वि० [सं०] पीने योग्य; जो पिया जाय । पु० पीने योग्य या पिया जानेवाला पदार्थ; जल; दूध; शरबत; एक प्रकारका व्यंजन ।

पेया-झी० [सं०] मॉक; एक प्रकारका मॉक सिका हुआ पेय पदार्थ; शर्बत; मदिरा ।

पेय-पु० [सं०] समुद्र; अग्नि; सूर्य ।

पेयूष-पु० [सं०] अमृत; ताजा घी; गायका भ्यानेके दिनसे सात दिनोंतकका दूध ।

पेरणी-झी० [सं०] ताड़ब नुथका एक भेद ।

पेरना-सं० कि० किसी धुमनेवाले पदार्थ या वंशके द्वारा किसी बन्धुपर पैसा दबाव पहुँचाना कि उसका रस या स्नेह निपुण जाय; बहुत अधिक क्लेश पहुँचाना, सताना; किसी कामकी बहुत दिनोंतक लगाये रहना, किसी कामकी करनेमें बहुत ढिलाई करना; * प्रेरित करना ।

पेरबा, पेरबाही-पु० पेरनेवाला ।

पेशा-पु० दे० ‘पेश’ । झी० एक प्रकारकी मिट्टी जो पोताई-के काम आती है, पोतनी मिट्टी; [अ०] एक प्रकारका बाजा ।

पेख-पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; मायरा; मेरुपर्वत ।

पेरीछ-पु० [सं०] एक उपरस, पीरीजा ।

पेख-पु० [सं०] जानेकी क्रिया; गमना; भंडकोष ।

पेख-पु० [सं०] भंडकोष ।

पेखना-सं० कि० दबाकर भीतर पहुँचाना, जोरसे भीतर बुसेटना; प्रेरित करना; पैसना; बलबोध करना, डाकना -‘आयउ तात नचन मम पेखी’-रामा०; डकेलना, ठेकना; बलप्रयोग करना; आक्रमण करनेके लिए प्रेरित करना; आगे बढ़ाना ।

पेख-वि० [सं०] कोमल; क्लृप्त, क्षीण; विरल ।

पेखवाणा-सं० कि० किसीकी पेखनेमें प्रवृत्त करना; किसी-से पेखनेका काम कराना ।

पेखा-पु० पेखनेकी क्रिया या भाव; * बहाना बताना; दुराव-छिपाव; नकल; आक्रमण, चढ़ाई; शगबा, तकरार; अपराध, कसूर ।

पेखी(किम्)-पु० [सं०] मोटा ।

पेख-पु० पेखनेवाला ।

पेखूष-पु० पीता ।

पेखें-पु० ग्रैम ।

पेखस, पेखसी-झी० दे० ‘पेखसी’ ।

पेश-पु० [सं०] रूप, आकृति; दे० ‘पेशल’ । अ० [फ्रा०] सामने, आगे, समक्ष; पहले, कण्ठ । -क़दर-झी० आगेकी ओर लगायी जानेवाली कटार; कुशतीका एक दौब । -क़द-झी० नजर, नैट । -कार-पु० पेश करनेवाला, आगे रखनेवाला; अदालतका वह कर्मचारी जो हाकिमके सामने मुकदमेकी मिसिल पेश करता है, मिसिलखवाह; किसी दफ्तर या दरबारका वह कर्मचारी जो हाकिम या मालिकके सामने कागजात पेश करके उनपर उसका आदेश लिखवाता है । -कारी-झी० पेशकारका काम या पद । -जिम्मा-पु० वह सेमा जो अगली मंजिलपर पहुँचे ही भेज दिया जाता है; सेमाका अगला भाग, हराबल । -गाह-पु०, झी० इजलास; दरबार, सदनमण्डल । -गी-झी० किसी बस्तुके मूल्य या किसी कार्यके पारिमयिक-का वह अंश जो करनेवालेको उसके पूरा होनेके पहले ही दे दिया जाता है; किसीके वेतन या पुरस्कारका वह भाग जो उसे नियत तिथिके पहले ही दे दिया जाता है, अग्रीफी, अधिम । -गोहूँ-झी० दे० ‘पेशनिगोहूँ’ । -तर-अ० पहले, पूर्व । -दख-पु० पेशकार । -दखी-झी० वह काररवाई जिससे कोई शगबा शुरू हो; पहल । -दामन-पु० छिदमतगार, नौकर । -बंद-पु० दे० ‘जेरबंद’ । -बंदी-झी० दूरदशिता, दूरदेशी; बचावकी सुक्ति जो पहले की जाय । -रबी-झी० आगे-आगे चलने या जाने-का काम । -राज-पु० वह मजदूर जो पथर डो-डोकर मेमारके पास लाता है; दीवार आदिकी चुनाई करनेवाला कारीगर, राज । -री-वि० आगे-आगे चलनेवाला । पु० सेमाका अगला भाग, हराबल; दूत । -ब पस, -(शे)-पस-पु० आगा-पीछा । सु० -आना-सदक करना, बताना करना । -करना-आगे रखना, सामने रखना; बाजिर करना । -खलना या खाला-दे० ‘बस चलना’ । (किसीसे)-पाना-मात करना, जीतना, विजय पाना । पेख(ख)-पु० [सं०] रूप, आकृति; सोना; चमक,

कांसि; सजावट; भाषण ।
 पेशक-वि० [सं०] कोमल, मृदु; शीघ्र, कृपा; सुंदर; दक्ष, कुशल; पूर्ण । पु० विष्णु; सुंदरता, काव्य ।
 पेशवा-पु० [फा०] नेता, सरदार, मुखिया; सराओंके प्रधान मंत्रियोंकी उपाधि । -ई-खी० पेशवाका काम या पद, व्यवसाय ।
 पेशवाज़-खी० [फा०] पेशवोंको, नर्तकियोंका वाक्पा जिसपर प्रायः जरीका काम रहता है ।
 पेशा-पु० [फा०] वह व्यवसाय या पंथा जिससे किसीकी जीविका चलती हो, पेटका पंथा । -बर-पु० कोई पेशा करनेवाला; दे० क्रममें । मु० -कमाना या करना-वेधवाका काम करना, वेधवा बनकर जीविका चलाना ।
 पेशानी-खी० [फा०] लकड़, माथा; किस्मत, भाग्य; कण्ठके ऊपरका खाली हिस्सा । मु० -का ज़लत-भाग्यरेखा । -पर बल आना या पड़ना-कोपसे लकड़परके चमकेका ऊपरकी ओर खिंच जाना, त्योरी चढ़ना ।
 पेशाब-पु० [फा०] मूत्र, मूत; शुरु; मीय । -खाना-पु० पेशाब करनेका स्थान, पेशाब करनेके लिए बनायी हुई जगह । मु० -करना-कुछ भी न गुनना, अत्यंत हेय समझना; लाजत भेजना । (किसीके)-का चिरता जल्दना-बहुत प्रतापी होना ।
 पेशाबर-पु० [फा०] सीमाप्रांतका एक प्रसिद्ध नगर; दे० 'पेशावर' ।
 पेशि-खी० [सं०] बज्र; अंदा; मांसपिंड; पुद्गा; जटामासी; वह कली जो छिछनेवाली हो हो; पकी हुई कली; तलवारका म्यान; एक प्रकारका बाजा; एक पुरानी नदी; एक पिछाची; एक राक्षसी; फलका छिलका; जूला; वह शिछी जिससे गर्भ आवृत रहता है । -कोषा-कोष-पु० अंदा ।
 पेशी-खी० [सं०] दे० 'पेशि'; [फा०] पेश होने या किये जानेकी क्रिया या भाव; न्यायाधीशके सामने मुकदमेका पेश होना; मुकदमेकी सुनवाई । -का सुहरिर-पेशकार ।
 पेशीमार्ग-खी० [फा०] होनेवाली रासको पहले ही बता देना, भविष्यवाणी ।
 पेशतर-अ० [फा०] दे० 'पेशतर' ।
 पेश-पु० [सं०] पीसनेकी क्रिया, पीसना ।
 पेशक-पु० [सं०] पीसनेवाला ।
 पेशण-पु० [सं०] पीसनेकी क्रिया, पिसाई; खरल ।
 पेशणि, पेशणी-खी० [सं०] सिल; चक्की; खरल ।
 पेशना-अ० [सं०] कि० देखना; पीसना ।
 पेशक-वि०, पु० [सं०] दे० 'पेशक' ।
 पेशक-पु० [सं०] दे० 'पेशणि' ।
 पेशि-पु० [सं०] बज्र ।
 पेशी-खी० [सं०] पिछाची ।
 पेशा(ब्)-पु० [सं०] पीसनेवाला ।
 पेशक-अ० दे० 'पेशा' । -कस-खी० दे० 'पेशकस' ।
 पेशक-वि०, पु० [सं०] दे० 'पेशक' ।
 पेशक-पु० [अ०] रंगकी बत्ती । -झाँगा-खी० रंगकी

बत्तीसे बना हुआ चित्र ।
 पेशकर-वि० [सं०] चलनेवाला, गतिशील; ध्वंसक, नाश करनेवाला ।
 पेश्टी-पु०, पेश्टी-खी० मक्के आदिके लेतोंमें होनेवाली एक प्रसिद्ध लता जिसका फल यों ही खाने तथा तरकारी और कचरी बनानेके काम आता है ।
 पेश्टुका-पु० दे० 'पेश्टा' ।
 पेशवा-पु० पैरका कड़ा; बेदी; ऊँटकी नकेल ।
 पैग-वि० [सं०] चूहा-संबंधी ।
 पैगि-पु० [सं०] वास्करा एक नाम ।
 पैब-खी० भनुपकी बीरी; मोरकी पूँछ ।
 पैबना-अ० कि० सुपसे अनाज साफ करना; फेरना ।
 पैचा-पु० डेर-फेर; हाव-उधार । [पैचा-पैचा-डेर-फेर] ।
 पैचर-अ० पीछे पीछे ।
 पैजना-पु० एक तरहका पैरका कड़ा ।
 पैजनिया-खी० दे० 'पैजनी' ।
 पैजनी-खी० दे० 'पैजनी' ।
 पैज-पु० [सं०] कान ।
 पैट-पु० [अ०] पायजामेकी तरहका एक अंग्रेजी पहनावा, पतलून ।
 पैट-खी० खोयो हुई हुडीके स्थानपर लिखी गयी दूसरी हुडी, ड्रिफ्ट हुडी; * बाजार, ढाट; दुकान; बाजार लगनेका दिन, बाजारका दिन ।
 पैटोर-पु० दुकान, ढाट ।
 पैब-पु० अंग; राह; रास्ता ।
 पैबपातिक-वि० [सं०] दानपर निर्बाह करनेवाला (शे०) ।
 पैबा-पु० राह, रास्ता, पथ; रीति, चलन, हुकसार ।
 मु० - (दे) पड़ना-पीछे पड़ना ।
 पैबिच, पैबिच-पु० [सं०] मिश्रवृत्ति ।
 पैत-खी० पासा; दाब; घात ।
 पैतरा-पु० दे० 'पैतरा' ।
 पैतरी-खी० जूती ।
 पैतालिस-वि०, पु० दे० 'पै'तालीस' ।
 पैतालीस-वि० चालीससे पाँच अधिक । पु० चालीससे पाँच अधिककी संख्या, ४५ ।
 पैती-खी० दे० 'पवित्री'; तंबे आदिकी बनी सुंदरी जिसे पवित्रताकी दृष्टिसे अनामिकामें पहनते हैं ।
 पैतीस-वि० तीससे पाँच अधिक । पु० तीससे पाँच अधिककी संख्या, ३५ ।
 पैय-खी० पैर, पाँव ।
 पैसठ-वि० साठसे पाँच अधिक । पु० साठसे पाँच अधिककी संख्या, ६५ ।
 पै-अ० परतु, लेकिन; अवध; पक्षाघात, बाद; पास; ओर, तरफ । प्र० ऊपर, पर; से । खी० देव, दीव । पु० दे० 'पय' । -हारी-वि० दे० 'पयहारी' ।
 पै-पाय [फा०] का समानसे व्यवहृत विकृत रूप । -करी-अ० पैरका एक गहना, पैरी । -खाना-पु० पाखाना । -खाना-पु० पाखाना । -खाना-पु० दे० 'पायता' । -आक-वि० दे० 'पामाक' । -करी-खी० पाखाना, चरणस्पर्शके साथ किया हुआ प्रणाम; प्रणाम ।

पैक-पु० [फा०] पैगाम जानेवाला, संदेशवाहक ।
 पैकर-पु० कपाससे बरें रकट्टी करनेवाला; [अं०] माक,
 चिट्ठी आदिको मोटे या पैले आदिमें बंद करनेवाला ।
 पैकरमा०-खी० दे० 'परिक्रमा' ।
 पैका-पु० [अं० 'पाका'] एक विशेष आकारका छापेका
 दाहप; * पैसा-पैका पैका जोबतों जुष्टी काय करीबि'-
 कबीर ।
 पैकार-पु० [फा०] कुंठकर माल बेचनेवाला व्यापारी ।
 पैकारी-पु० दे० 'पैकार' ।
 पैकी-पु० धूम-फिरकर, पैसा लेकर, हुका पिछनेवाला;
 बाजीगर; नट । खी० बाजीगर; नटोंका पेशा ।
 पैकेट-पु० [अं०] बिम्बे आदिमें बंद किया हुआ माल;
 किसी वस्तुका छोटा बंदल ।
 पैश्वर-पु० [फा०] 'पैगामबर'का अल्प०; मनुष्योंके पास
 ईश्वरका संदेशा पहुँचानेवाला, ईश्वरका दूत, नबी ।
 -सखाम-पु० सुहृद ।
 पैश्वरी-वि० पैगबरका । खी० पैगबरका काम या पद ।
 पैग०-पु० पग, डग-तौन पैग बनुया करी तऊ बावने
 नोम-रबीम ।
 पैगाम-पु० [फा०] संदेशा, संवाद । -बर-पु० संदेशा
 पहुँचानेवाला, एलकी, दूत ।
 पैगामी-पु० [फा०] दूत, संदेशवाहक ।
 पैगार-पु० [फा०] खंदक; गड्ढा; डलली लकीर, हराई ।
 पैज०-खी० टेक, पण; होठ ।
 पैजनिर्वा०-खी० दे० 'पैजनी' ।
 पैजनी-खी० पैरका पोला कड़ा जिसमें बजनेके लिए कुछ
 ककड़ियाँ रख दी गयी होती है ।
 पैज़ार-पु० [फा०] जूता ।
 पैठ-खी० पैठनेकी क्रिया या भाव, प्रवेश; पहुँच, गति ।
 पैठाना-अ० कि० प्रवेश करना, घुसना; चुपना ।
 पैठाना-स० कि० प्रवेश कराना, भीतर पहुँचाना, घुसाना ।
 पैठार०-पु० प्रवेश; प्रवेश करनेका मार्ग; द्वार ।
 पैठारी०-खी० प्रवेश, पैठ; पहुँच ।
 पैठीनमि-पु० [सं०] एक उपस्मृतिकार ।
 पैह-पु० [अ०] मोलते, पत्र लिखने आदिके काम आने-
 वाले कागजकी गरी ।
 पैहिक-वि० [सं०] पीठिका, कुप्पी-संबंधी ।
 पैशी-खी० सीधी; मोठ खींचते समय बैलोंके बार-बार कुपे-
 के पासतक आने और लौटनेके लिए बना हुआ डाकनो
 रास्ता; बह जगह जहाँ कुपे आदिसे निकाला हुआ
 सिँचाईका पानी ढाला जाता है ।
 पैतरा-पु० कुश्ती, पटेबाजी आदिमें प्रतिद्विर्द्धोंका भिड़ने
 या बार करनेके पहले एक-दूसरेमें बचते हुए कलापूर्ण
 उंगते धूम-फिरकर विभिन्न मुद्राओंमें स्थित होना; चरण-
 चिह्न । -(रे) बाज़-वि० चालबाज । -बाज़ी-खी०
 चालबाजी । सु०-बहलका-कुश्ती, पटेबाजी आदिमें
 धूम-फिरकर विविध मुद्राओंमें स्थित होना; नयी चाक
 चलना; नया हाथ दिखाना ।
 पैतका-वि० उथला ।
 पैतमह-वि० [सं०] पितामह-संबंधी; पितामहसे प्राप्त;

जका (विधाता)का; ब्रह्मासे प्राप्त ।
 पैतमहिक-वि० [सं०] पितामह संबंधी; पितामहसे प्राप्त ।
 पैतृक-वि० [सं०] पिताका; पितासे प्राप्त; पूर्वजोंका;
 से प्राप्त, मौखी । पु० पितरोंके निमित्त किया जानेवाला
 श्राद्ध ।
 पैतृमत्य-पु० [सं०] कुमारीसे उत्पन्न पुत्र; ख्यात व्यक्तिका
 पुत्र ।
 पैतृस्वसेव, पैतृस्वकीय-पु० [सं०] कुमारी भाई ।
 पैश, पैशिक-वि० [सं०] जो पित्तके प्रकोपसे हुआ हो,
 पित्तजनित ।
 पैशक-वि० [सं०] पीतलका बना हुआ ।
 पैश-वि० [सं०] पितृ-संबंधी (श्राद्ध आदि) । पु० पितृतीर्थ
 (इस अर्थमें 'पैश्व' भी होता है); पितरोंके किए पवित्र
 वर्ष, मास या दिन ।
 पैशका०-वि० दे० 'पैतका' ।
 पैशक-वि० पॉष-पॉष चलनेवाला, बिना सवारीके चलने-
 वाला । अ० पा-प्यादे, पॉष-पॉष । पु० पा-प्यादे चलना;
 पा-प्यादे चलनेवाला सिपाही; वह सिपाही जो किसी
 सवारीपर न हो; शतरंजका एक मुहरा जो सीधे चलता
 है और आगे मारता है ।
 पैश-वि० [फा०] उत्पन्न; जो खड़ा हुआ हो; पठित, प्रादु-
 र्भूत; कमाया हुआ, उपाजित । † खी० आमद, आय ।
 -बार-खी० सेतीकी उपज । -बारी०-खी० पैदावार ।
 पैशाह्श-खी० [फा०] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ।
 पैशाह्शी-वि० जन्मजात, सहज, कुदरती ।
 पैन-पु० नाली ।
 पैना-वि० जिसकी बार बहुत तेज हो, तीक्ष्ण; (का०)
 जिसका प्रवेश भीतरतक हो, भीतरतक जानेवाला; जो
 भीतरकी वस्तुको देख सके । [खी० 'पैनी'] पु० पैक
 ढाँकेकी छकी; अकुश ।
 पैनाक-वि० [सं०] पिनाक-संबंधी; पिनाकका ।
 पैनावा-स० कि० छुरी आदिकी बार तेज करना, टेना ।
 पैन्थ-पु० [सं०] घनता; मोटापा ।
 पैप्पल-वि० [सं०] पीपलकी लकड़ीका बना हुआ; पीपलसे
 तैयार किया हुआ ।
 पैप्पलाद्-पु० [सं०] पिप्पलाद् कृषिका ग्रंथ पढ़नेवाला ।
 पैमक-खी० कलावस्तुकी सुनहरी या रुपहली कोरी बा
 लेस ।
 पैमाह्स-खी० [फा०] जमीन आदि मापनेकी क्रिया ।
 पैमाना-पु० [फा०] वह साधन जिससे कोई वस्तु मापी
 जाय; नाप; व्यास, पानपात्र ।
 पैमौ०-खी० पैर, पाँव ।
 पैमा-पु० सारहीन अन्न, अनाजका वह दाना जिसमें बीज-
 भाग न हो; अर्धचित्र मनुष्य; * पशिया ।
 पैर-पु० शरीरका वह प्रसिद्ध अंग जिसके बलपर जंगम
 प्राणी स्थित होते और चलते हैं, चरण; पैरका निशान,
 चरणचिह्न; फसलका उतना भाग जितना एक बारमें मँडि
 जाय; कल्लिहान । -डडाम-पु० कुश्तीका एक दौब ।
 -गाफी-खी० पैरसे चलायी जानेवाली गाफी (साहकिक
 आदि) । सु०-डल्लू जाना-टिक न सकना; पराजित

हीना । -डखना-रवाना हीना; तेजीसे चलना । -का
नाखन न देखना-चरत न देखना । -छूना-पॉव
पचना; हीनता प्रकट करना । -जमना-खिर होना,
बंद होना । -डाखना-दखल देना । -तोषकर बैदना-
कहीं आना-जाना बंद करना । -तोषना-चलते-चलते
थक जाना; दौड़-भुप करना । -बरना, -रखना-करम
रखना, चलना । (बरतीपर) -न रखना-इतराना ।
-निकाखना-पीछा छुड़ाना । -पकचना-पैर छूना;
कहीं जानेतें रोकना । -पसारना, -फैलाना-भारमते
छेदना; आरंभ कर फैलाना । -फँसाना-अपने आपकी
संकटमें डालना । -बढ़ाना-चलना; सीमोस्वर्धन करना ।
-अर जाना-थक जाना । -भारी होना-घर्म रहना ।
-से पैर बाँचकर रखना-साव रखना, कहीं जाने न
देना । पैरों चलना-पैरक चलना ।

पैरना-अ० कि० तैरना ।

पैरवी-खी० [फा०] पीछे-पीछे जाना, अनुगमन; मुकदमे-
की देखरेख; कीशिश; खुशामद (हिं०) । -कार-पु०
पैरवी करनेवाला ।

पैरहना-पु० कश्मीरियोंका लबादा जैसा लंबा पहनना
(खेहर) ।

पैरा-पु० रले हुए चरण, कदम; आगमन; पैरमें पहननेका
एक प्रकारका कड़ा; लकड़ी आदिका बना हुआ आरोहण-
मार्ग; † दक्षिण भारतमें होनेवाली एक प्रकारकी कपास;
लकड़ीकी वह संदूकके आकारकी वस्तु जिसमें छनार
अपने काँटे, बाट रखते हैं; [अ०] दे० 'पैरामाक' ।

पैरामाक-पु० [अ०] छेस आदिका वह अश्व जिसमें कोई
एक रात कहीं गयी हो और जिसकी पहली पंक्ति आरंभमें
कुछ छोड़कर छिन्नी गयी हो ।

पैराई-खी० तैरनेकी क्रिया या भाव; तैरनेका हुनर ।

पैराड-पु० दे० 'पैराव' ।

पैराक-पु० तैरनेवाला, तैराक ।

पैराना-स० कि० किसीको तैरनेमें प्रवृत्त करना, किसीने
तैरनेका काम कराना, तैराना ।

पैराव-पु० नदी आदिमें वह स्थान जो केवल तैरकर पार
किया जा सके ।

पैराखट-पु० [अ०] एक प्रकारकी छतरी जिसके सहारे
ऊँचाईसे, विशेषतः उबते हुए बाधुपान या गुम्बारेसे उतर-
ते हैं ।

पैरी-खी० कंठ आदिका पैरका एक चौड़ा गठना जिसे
निम्न आसिकी क्रियायें पड़नती हैं; दानेके लिए फैलावे हुए
अनाजके पौषे; दानेकी क्रिया; * सीढ़ी; पीढ़ी, पुश्त ।

पैरेखना-स० कि० दे० 'परेखना' ।

पैरीकार-पु० दे० 'पैरीकार' ।

पैरीक-पु० [अ०] बधित कार्य न करने, नियत समयपर
फिर हाजिर होने आदिकी प्रतिज्ञा जिसके आधारपर बंदी
दंडकी अवधि पूरी होनेके पहले भी विशेष कारणवश कुछ
समयके लिए मुक्त कर दिया जाता है ।

पैरक-वि० [सं०] पीछे रहते संबद्ध; पीछली लकड़ीका
बना हुआ ।

पैरवा-पु० हथ-वही डॉकनेका गॉद जैसा मिछीका बरतन;

अनाज नापनेका एक चार सेरका बरतन । वि० * परका
दूसरा ।

पैकी-खी० अनाज, लेख आदि नापनेका एक बरतन ।

पैबंद-पु० [फा०] कपड़े आदिका वह टुकड़ा जिसे टाँकर
अंगरसे आदिका छेद बंद किया जाता है, चकती; किसी
पेन्के झलके आकारकी बढ़ाने या उसकी स्वादमें विशेषता
जानेके लिए उसकी टहनियों दूसरे सजातीय पेन्की टहनियों
काटकर बाँध देनेकी क्रिया; सगा-संबंधी, स्वजन । -कार-
पु० पैबंद लगानेवाला । -कारी-खी० पैबंद लगानेकी
क्रिया ।

पैबंदी-वि० पैबंद लगाकर तैयार किया हुआ, कलमी;
दोमला । पु० शकताह ।

पैबस्त-वि० [फा०] किसी वस्तुमें पूरी तरह व्याप्त या
भिँदा हुआ, जन्म ।

पैशक्य-पु० [सं०] पैशक्या भाव, कोमलता ।

पैशाच-वि० [सं०] पिशाच-संबंधी; पिशाचका; पिशाच-
कृत; पिशाचोचित । पु० एक प्रकारका हीन विवाह जिसमें
किसी सीसी हुई या प्रमत्त कन्याका कौमार हरण करने-
वाला उसके पतिव्रता अधिकारी हो जाता है (स्व०) ।

पैशाधिक-वि० [सं०] पिशाच-संबंधी; पिशाचका; क्रूरा-
पूर्ण, घोर (का०) ।

पैशाची-खी० [सं०] धार्मिक कृत्यके अवसरपर दी जाने-
वाली सेंट; राति; प्रकृत भाषाका एक मेद ।

पैशाच्य-पु० [सं०] पिशाचका स्वभाव, क्रूर स्वभाव ।

पैशुन, पैशुम्य-पु० [सं०] पिशुनता, चुगलखोरी; दुष्टता ।

पैह-वि० [सं०] आंठसे तैयार किया हुआ ।

पैहिक-पु० [सं०] आंठसे तैयार किया जानेवाला एक
प्रकारका मष । वि० आंठका बना हुआ ।

पैही-खी० [सं०] दे० 'पैहिक' ।

पैसंगी-खी० [सं०] पेशीनोर्षी, भविष्यवाणी ।

पैसना-अ० कि० घुमना, प्रविष्ट होना ।

पैसरा-पु० हमेका, सखट ।

पैसा-पु० ताँबेका वह सिक्का जो आनेके चौपे और रुपयेके
चौसठवें भागके बराबर होता है; द्रव्य, धन । - (से)-
वाला-वि० धनी, मालुवर, सरोफ ।

पैसारा-पु० प्रवेश, पैठ; घुसने-पैठनेका मार्ग ।

पैसँजर-पु० [अ०] धानी । -गाड़ी-खी० सवारी होने-
वाली रेलगाड़ी । -ट्रेन-खी० दे० 'पैसँजरागाड़ी' ।

पैहम-अ० [फा०] निरंतर, लगातार ।

पैहरा-पु० कपाससे खई शकटो करनेवाला ।

पौ-खी० मोपा; मोपेकी आवाज; अपानबाधु निकलनेका
शब्द ।

पौकना-अ० कि० पतला पालाना फिरना; बहुत अधिक
करना । पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें उन्हें पतले दस्त
आते हैं ।

पौका-पु० एक बड़ा फलिया ।

पौगारा-पु० शालक, बघा ।

पौगली-खी० गॉस, नरकट आदिकी चोंगी ।

पौगा-पु० गौसकी नली; दिन आदिका चोंगा । वि०
खोखला; अन्ध, मूर्ख । -पंथी-खी० मूर्खतापूर्ण कार्य,

दोंग । वि० मूलतापूर्ण; दोगी ।

पौंवी-खी—छोटी नली; जुलाहोंका नरसलका एक आला जिसपर सत लपेटकर वे ताना-पूरना करते हैं; बॉसकी वह छोटी नली जो वेनेकी बॉईमें उस ओर पहनायी रहती है जिससे एक-दूसरे उठे डुलते हैं; बॉस आदि पौंवी और गौठदार वस्तुओंका दो गौठोंके बीचका भाग; * तुमझी ।

पौंछ-खी—दे० 'पूँछ' ।

पौंछन-पु० किसी लगी, सड़े हुई वस्तुका पौंछनेसे निकला हुआ भाग ।

पौंछना-स० कि० किसी वस्तुपर हाथ, कपड़ा आदि फेरकर उसपर लगा हुआ तरल पदार्थ उठा लेना या बूँद आदि साफ कर देना । पु० पौंछनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पौंटा-पु० नाकका मल ।

पौंटी-खी—एक प्रकारकी मछली ।

पौ-वि० [सं०] पवित्र, शुद्ध, साफ; शुद्ध करनेवाला ।

पौआ-पु० साँपाका छोटा बच्चा, सँपोला ।

पौआना-स० कि० किसीने पौनेका काम कराना; रोटी गढ़-गढ़कर पकानेवालेकी देना ।

पौह्या-खी—पौघेकी सरपट चाल ।

पौहस-खी—सरपट ।

पौह-खी—एक लता जिसमें पानके आकारकी मोटे दलकी पत्तियाँ लगती हैं; अँलुआ; ईखका कल्ला, गेहूँ, ज्वार आदिका नरम पौधा ।

पौकना-अ० कि० दे० 'पौकना' ।

पौख-पु० पालन-पोषण करनेका मूलबंद ।

पौखनी-खी—उरकीके बीचकी खाली जगह ।

पौखना-स० कि० पालन-पोषण करना, पोसना । अ० कि० गाय-भैस आदिका भ्रानेका समय समीप आनेपर बदन ढीला पड़ना ।

पौखर-पु० तालाब; पटेवाजीका एक हाथ ।

पौखरा-पु० मालाब ।

पौखरी-खी—छोटा तालाब ।

पौगंड-पु० [सं०] पाँचसे दस (किसी-किसीके मतसे १६) बरसकी उम्रका लड़का; वह जिसका कोई अंग छोटा-बड़ा या न्यूनाधिक हो । वि० अल्पवयस्क, जो अभी जवान न हो ।

पौख-वि० नीच, अधम; तुच्छ, छुद्र । खी० खोटाई, नीचता; गुरी बात ।

पौचारा-पु० पुचारा ।

पौची-खी—खोटाई; नीचता ।

पौट-खी—गठरी, मोटरी; राशि, डेर, पुंज । पु० [सं०] बरकी नींव; एकमे मिलाना, संलेश । -गल्ल-पु० नर-सल्ल; काश, कौंस; एक प्रकारकी मछली ।

पौटक-पु० [सं०] सेवक, नौकर ।

पौटवा-स० कि० समेटना; अपने हाथमें करना ।

पौटरी-खी—दे० 'पौटली' ।

पौटल, पौटलक-पु०, पौटलिका-खी [सं०] पौटली ।

पौटला-पु० बड़ी गठरी ।

पौटकी-खी—छोटी गठरी; छोटेसे बलमें कसकर बाँधी हुई

बोरी-सी वस्तु ।

पौटा-पु० पेटकी बैली; आँखकी पलक; उँगलीका सिरा; हिम्रत, मजाल, कूबरा; विविधाका वह बच्चा जिसे अमी पर न निकले हो; नाकका मल । खी० [सं०] पुष्पके लक्ष्मणोंसे युक्त खी दासी; वह मनुष्य या जानवर जिसमें नर और मादा दोनोंके लक्षण हों ।

पौटास-पु० [अ०] एक क्षार जो खानसे निकलता है और लकड़ीकी राखसे भी तैयार किया जाता है ।

पौटिक-पु० [सं०] कोड़ा ।

पौटी-खी—पेटकी बैली; कलेजा; [सं०] गुदा; पवित्रालकी जातिका एक जलजंतु, नाक ।

पौटल-पु० [सं०] दे० 'पौटल' ।

पौटलिका, पौटली-खी [सं०] पौटली ।

पौट-खी [सं०] खोपड़ी, सिरसे ऊपरवाली हड्डी ।

पौव-वि० दे० 'पौदा' ।

पौड़ा-वि० बड़, मजबूत; कड़ा, कठिन ।

पौड़ावा-अ० कि० बड़ होना, मजबूत होना, पुष्ट होना । स० कि० बड़ बनाना, पुष्ट बनाना ।

पौस-पु० [सं०] जानवरका बच्चा, पशुशायक; दस वर्षकी अवस्थाका हाथी; नाब; जहाज; बल, कपड़ा; मकानकी नींव; कोपल; वह ऋण जिसपर अभी हिल्ली न पड़ी हो । -**धारी(वि०)**-पु० जहाजका मालिक । -**प्लख-पु०** हाँसी । -**अंग-पु०** जहाजका चट्टानसे टकराकर प्लस हो जाना । -**बणिक(अ०)**-पु० नाव या जहाजके द्वारा व्यापार करनेवाला व्यवसायी । -**बाह-पु०** नाव खेने-वाला ।

पौस-पु० कपड़ेकी दुनाबट; ढंग, तरीका; लगान; बारी, अवसर । खी० कौंचका छोटा दाना । -**वार-पु०** वह जिसके पास लगानका रुपया रखा जाता है, खजानची; खजानेमें रुपये परखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, पारखी । **मु०** -**पूरा करना-जैसे-तैसे** कोई काम पूरा करना ।

पौसक-पु० [सं०] पशु-शायक नया पौधा; मकान बनाने-की जगह ।

पौसकी-खी [सं०] पौरे नामकी लता ।

पौसवा-पु० छोटे बच्चोंके चूतकके नीचे बिछाया जानेवाला कपड़ा, गँवर । -**(बँ)** के अमीर या रईस-खान-दानी अमीर, रईस, ऐसा अमीर जिसका बाप भी अमीर रहा हो ।

पौसव-वि० [सं०] पवित्र, शुद्ध; पवित्र करनेवाला । † पु० दे० 'पौतना' ।

पौतनहरा-खी—चौका लगानेकी चोली हुई मिट्टी और पौतना रखनेके काम आनेवाला बरतन; घर पौतनेका काम करनेवाली खी; अँतड़ी ।

पौतना-स० कि० किसी तरह पदार्थको अन्य वस्तुपर फैलाकर लगाना, चुपड़ना; किसी वस्तुपर किसी गीले या सूखे पदार्थको इस प्रकार लगाना कि उसपर उसकी तरह जम जाय, लेप करना; मिट्टी, गोबर आदिसे जीपना । पु० पौतनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पौतला-पु० पराटा ।

पोसा-पु० बेटका बेटा, पौत्र; अंशकोष; कृतान्त; पोतनेका कपड़ा; पोतनेके लिए तैयार की गयी मिट्टी; चूना फेरनेके काम आनेवाली ईंधी; एक प्रकारकी मछली; * कलेजा, पूजा, सामर्थ्य । **मु०** - **फेरना**-दीवारपर चूने आदिकी पुताई करना; बरबाद कर देना, चौपट करना ।

पोसा(न)-पु० [सं०] लोख प्रकारके ऋषिकोंमेंसे एक; विष्णु ।

पोसाई-झी० दे० 'पुताई' ।

पोसाच्छादन-पु० [सं०] वस्त्रकुटीर, सेमा; राश्ट्री ।

पोसाधान-पु० [सं०] मछलियोंके बच्चोंका समूह ।

पोसारा-पु० दे० 'पुतारा' ।

पोसारी-झी० पोतनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोसास-पु० [सं०] एक प्रकारका कपूर ।

पोसिका-झी० पोई नामकी लता; वस्त्र ।

पोतिया-पु० तंबाकू, चूना आदि रखनेकी थैली जिसे इन वस्तुओंका सेवन करनेवाले साथमें छिपे रहते हैं; एक तरहका शिलौना, पलतकर नहानेका कपड़ेका टुकड़ा ।

पोती-झी० बेटेकी बेटे, पौत्री; हँसियाको कहीं आँचसे बचानेके लिए लम्बी पैदीपर किया जानेवाला मिट्टीका लेप; अर्क, मद्य भुजाते समय भबकेपर फेरा जानेवाला पानीका पुतारा; पुतारा फेरनेकी क्रिया; * गुरिया ।

पोथा-झी० [सं०] नाचों या जहाजोंका समूह ।

पोत्र-पु० [सं०] स्मरका खोंग नौका; जहाज; वज्र; हल्का काल; वस्त्र ।

पोत्रावृष-पु० [सं०] स्रजर ।

पोत्री (त्रिज)-पु० [सं०] स्रजर ।

पोथकी-झी० [सं०] पलकोंपर निकल आनेवाले सरसोंके बराबर लाल-लाल दाने जिनमें पीड़ा और सुखली होती है ।

पोथा-पु० कागजकी बरी गड्डी; बड़ी पोथी ।

पोथी-झी० पुस्तक, ग्रन्थ; लहसुनकी गाँठ ।

पोदना-पु० एक छोटी विधिया; छोटे कदका आदमी, नाया आदमी । -सा-बहुल छोटा ।

पोदीना-पु० दे० 'पुदीना' ।

पोद्दार-पु० मारवाडी वैश्योंकी एक उपपथि; पोतदार ।

पोना-सं० कि० लोईसे रोटी गढ़ना; (रोटी) पकाना; गूँथना परोना ।

पोप-पु० [अ०] ईसाइयोंके रोमन कैथोलिक संप्रदायका प्रधान धर्माचार्य । -**छीला**-झी० धर्मका आडंबर फैलाना ।

पोपला-वि० जिसमें पोल ही, जो भीतरसे खाली हो; बिना दाँतका (मुँह); जिसके मुँहमें दाँत न हो ।

पोपलाना-अ० कि० पोपला होना ।

पोपली-स्त्री० अमीलेकी जड़में लगी हुई आमकी गुठलीकी चिस्कर बनाया जानेवाला बाजा जिसे लड़के बजाते हैं ।

पोपा-स्त्री० दे० 'पोई' ।

पोपा-पु० कोपल; सेंपोला; नन्हा बच्चा ।

पोपाचोई-झी० छल-कपटकी बातें ।

पोर-झी० उँगलीकी गाँठ; उँगलीके दो गाँठोंके बीचका भाग; ईल, बाँस आदिमें दो गाँठोंके बीचका भाग; * पीठ ।

पोरा-पु० लकड़ीका गोला टुकड़ा या बुई; मोटा और

ठिगना आदमी ।

पोरिया-झी० छलकी तरहका एक गढ़ना जो हाथकी उँगलियोंकी पोरोंपर पहना जाता है ।

पोट्टर-पु० [अ०] रेखे-कुली; जहाजका कुली ।

पोछ-पु० [सं०] पुंज, डेर; [अ०] म्रुव (भूगोल); साढ़े पाँच गजका एक पैमाना, लट्ठा; लकड़ी, लोहे आदिका खंभा । झी० [हिं०] किसी वस्तुके भीतरकी खाली जगह, अवकाश; निस्तारता, खोखलापन (छा०); प्रवेशद्वार ।

-**द्वार**-वि० [हिं०] पोछा, खोखला । **मु० (किसीकी)** -**खुलना**-किसीका छिपा हुआ दोष प्रकट होना । **(किसीकी)** -**खोलना**-किसीके छिपे हुए दोषोंकी प्रकट करना ।

पोछक-पु० विंगड़े हाथोंकी बरानेका एक तरहका छक जो रूबे बाँसमें पयाल बोधकर बनाया जाता है ।

पोछा-वि० जो भीतरसे खाली हो, खोखला; निस्तार, निस्तार्य; जिसका भीतरी भाग कड़ा या ठोस न हो; जो दबाव पड़नेसे टब या पचक जाय, पुरुपुला । पु० परेतीपर सत लपेटनेसे तैयार होनेवाला लच्छा; 1 एक पेड़; एक लोहार जिसमें वैलोंकी पूजा होती है और उनकी दीव कपायी जाती है ।

पोछारी-झी० खोरिया, डुँवर आदिके खलनेके कामका सेनातोंका एक आला ।

पोछाव-पु० दे० 'पुलाव' ।

पोछि-पु० [सं०] जहाज या नावका मन्त्र ।

पोलिता, पोली-झी० [सं०] एक प्रकारकी पूर, पूजा ।

पोलिटिकल-वि० [अ०] राजनीति-सम्बंधी, राजनीतिक । -**एजेंट**, -**रेजिडेंट**-पु० वह अग्रेज अफसर जो अग्रेजी सरकारकी ओरसे भारतकी देशी रियासतोंमें शासन-कार्यमें राजाओंकी परामर्श देनेके लिए नियुक्त किया जाता था ।

पोलिवा-झी० औरतोंका पैरमें पहननेका एक पोछा गढ़ना । पु० पौरिया ।

पोलो-पु० [अ०] गेंदका एक खेल जो लोहेपर चढ़कर खेला जाता है, चोगना । -**स्टिक**-झी० वह टंडा जिससे पोली खेला जाता है ।

पोवना*-सं० कि० दे० 'पोना' ।

पोष-पु० [फा०] पहननेकी चीज, कपड़ा; पहननेवाला, ढकनेवाला (समासांतमें-नकापोष, पलंगपोष); लीनोंकी ढटानेके लिए पोषियों, भगियों आदि द्वारा प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द ।

पोशाक-झी० [फा०] पहनावा, लिबास । **मु०**-**बहाना**-कपड़े उतारना ।

पोशीदारी-झी० गुप्त होनेका भाव, छिपाव ।

पोशीदा-वि० [फा०] गुप्त, छिपा हुआ ।

पोष-पु० [सं०] पोसनेकी क्रिया, पालन; पुष्टि; वृद्धि; * संतोष ।

पोषक-वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला; बढ़ानेवाला, बढक; सहायक ।

पोषण-पु० [सं०] पोसनेकी क्रिया, पालन; बढ़ानेकी क्रिया, बढन; सहायता देना ।

पोष-पु० [सं०] उपवास या उपवास करनेका दिन, व्रत (सौ०) ।

पोषण*-स० किं० पोषण करना, पालना ।

पोषिता(तु)-वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला ।

पोषितु-पु० [सं०] कोकिल ।

पोषित-वि० [सं०] जिसका पोषण किया गया हो, पाला हुआ ।

पोषिता(तु)-वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला, पोषक ।

पोषी(विन्)-वि०, पु० [सं०] पोषण करनेवाला, पोषक ।

पोष्टा(ष्टु)-वि० [सं०] पोषक । पु० पोषण करनेवाला; एक तरहका कर ।

पोष्य-वि० [सं०] पोषणके योग्य, पालने योग्य, जिसका पोषण करना आवश्यक हो, जिसका पोषण करना कर्तव्य समझा जाय; अनुदय करनेवाला; प्रभूत । -**पुत्र**, -**सुत**-पु० वह जो पुत्रकी तरह पाला गया हो, दत्तक । -**वर्ग**-पु० माता, पिता, शुक्रआदि जिनका पोषण करना पुत्र आदिका कर्तव्य माना जाता है ।

पोस-पु० पोसनेकी क्रिया या भाव; पालनेका नाता; पालनेका उपकार ।

पोसती*-पु० अमीमची ।

पोसन*-पु० 'पोषण' ।

पोसना-म० किं० आहार आदि देकर बड़ा करना, पालन करना; (पशु-पक्षीको) आहार आदि देकर मनोरंजन या उपयोगके लिए अपने यहाँ रखना; डौकना, छिपाना - 'मोर मुझे करने कुच पोसे' -मुषानिधि; पोछना ।

पोस्ट-पु० [अ०] खंभा; डाक; स्थान, जगह; घर; नौसरी । -**आफिस**-पु० डाकघर, डाकखाना, पत्रालय ।

-**कार्ड**-पु० डाकखानेसे खरीदा जानेवाला वह मोटे कागजका टुकड़ा जो पत्र-व्यवहारके काम आता है ।

-**बाक्स**-पु० किसीकी डाक या चिट्ठियाँ सुरक्षित रखनेके लिए विशेष रूपसे रखी गयी पेटी । -**बैग**-पु० डाकका थैला । -**मार्क**-पु० डाकघरकी मुहर । -**मास्टर**-पु० डाकघरका प्रधान कर्मचारी, पत्रपाल । -**जेनरल**-पु० किसी प्रांतके डाक-विभागका सबसे बड़ा अधिकारी ।

-**मैन**-पु० डाकखानेका वह कर्मचारी जो लोगोंके यहाँ उनकी चिट्ठियाँ पहुँचाता है, डाकिया ।

पोस्टमार्टम-वि० [अ०] मृत्युके बादका । पु० शय्युका कारण जाननेके लिए किसी प्राणीके शवको चीर-काटकर देखना, शव-परीक्षा ।

पोस्टर-पु० [अ०] किसी कागजपर बड़े अक्षरोंमें छपी हुई वह नोटिस जो जनताकी जानकारीके लिए जगह-जगह दीवार आदिपर चपका दी जाती है ।

पोस्टल-वि० [अ०] डाकघर संबंधी; डाक-विभाग-संबंधी । -**आर्डर**-पु० डाकघरसे मिलनेवाली एक तरहकी डुब्बी जो मनीआर्डरकी जगह काममें लायी जाती है, डाकघर आदेश । -**ग्राइड**-पु० वह पुस्तक जिसमें डाक-तार आदिके नियम और डाकखानोंकी सूची दी हुई रहती है ।

पोस्-पु० [फा०] खाल, चमड़ा; छिलका; छाल; तह, परत; अमीमका पोषा; इस पोषिका बीड़ा ।

पोस्म-पु० एक पोषा जिसके बीचेसे अमीम निकलती है,

अमीमका पोषा ।

पोस्मी-वि० अमीमका सेवन करनेवाला, अमीमचि; पोस्तकी मिश्रकर उसका पानी पीनेवाला; काहिल । पु० एक खिलौना जो नीचेकी ओर भारी होता है और छिदानेपर फिर खड़ा हो जाता है ।

पोस्तीन-पु० [फा०] पामीर, तुर्किस्तान और मध्य एशिया-के लोगोंका एक प्रकारका पहनावा जो समूर आदि जान-बरीके बालदार चमड़ेसे बनाया जाता है; बालदार चमड़ेका कोट; पुस्तकमें जिल्दके साथ लगाया जानेवाला कपड़ा ।

पोइना*-स० किं० मूँधना, पिरोना; भेदना, छेदना; चढ़ाना, लगाना; जमाना, बैठाना । * वि० घुसनेवाला, घेंसनेवाला ।

पोइमी*-खी० पृथ्वी ।

पोहरा*-पु० चरागाह; पशुओंका चारा, चरी ।

पोहारा-पु० चौपाया ।

पोहिवा*-पु० चरवाहा ।

पौचा-पु० माटे पौंचका पहारा ।

पौह-पु० दे० 'पाउड' ।

पौहई-वि० पौहके रंगका । पु० एक रंग जो पौहके रंगका होता है ।

पौहरीड-वि० [सं०] कमल-संबंधी; कमलका; कमलका बना हुआ । पु० सलपक्का; एक प्रकारका कुष्ठ ।

पौहरीय, **पौहरीयक**-पु० [सं०] दे० 'पुड्य' ।

पौड्य-पु० [सं०] दे० 'पुड्य' ।

पौंका, **पौंका**-पु० मोटे छिलके और अधिक रसवाली एक प्रकारकी लकी और मोटी ईख ।

पौंकी*-खी० पौरी ।

पौंड-पु० [सं०] एक प्राचीन देश; इस देशका निवासी था राजा; एक प्रकारकी ईख, पौंका; भीमसेनका शंख; छत्र-दायिक चिह्न; एक सकीर्ण जाति (सू०) ।

पौंडक-पु० [सं०] पौंका ईख; एक सकर जाति ।

पौंडिक-पु० [मं०] पौंका ईख ।

पौंदना-अ० किं० दे० 'पौंदना' ।

पौनार-खी० दे० 'पौनार' ।

पौरवा*-अ० किं० तेरना ।

पौरि, **पौरी***-खी० पौरी ।

पौरिया*-पु० दे० 'पौरिया' ।

पौंखलीय-वि० [सं०] कुलटा-संबंधी; कुलटाका ।

पौंखलेय-पु० [सं०] कुलटाका पुत्र ।

पौंखल्य-पु० [सं०] व्यवसाय ।

पौंसरा-पु० दे० 'पौंसरा' ।

पौंसवन-पु० [सं०] 'पुमवन' ।

पौंसव-वि० [सं०] पुंसोपित । पु० पुंसत्व, पुंस्व ।

पौ-खी० प्रातःकालका प्रकाश; पौसल, प्याऊ; पौसेका एक दर्व । * पु० जड़; पौं । **पु**-**फटना**-तबका होना । -**बारह पड़ना**-पासेमें जीतका दर्व पड़ना; लामका मौका मिलना । -**बारह होना**-पासेमें जीतका दर्व पड़ना; विजय होना; लाम हो लाम होना; खूब बन जाना ।

पौआ-पु० तेरका चौपा हिस्सा; मिट्टी या भातुका वह

बरतन जिसमें पावसर दूध, पानी आदि होते ।
पौरव-पुं० [सं०] दे० 'पौरव' । वि० बाळोचित; नालको जैता ।
पौरवक-पुं० [सं०] दे० 'पौरव' ।
पौठ-खी० जमीनका एक तरहका बंदोबस्त जिसमें खेत हर साल नये काश्तकारको जोतनेके लिए दिया जाता है ।
पौवना-अ० क्रि० दे० 'पौवना' ।
पौवना-अ० क्रि० लेटना; झूलना ।
पौषावा-सं० क्रि० सुकाना, लेटना; झुलाना ।
पौष्य-वि० [सं०] खरा, सखा; धर्मात्मा ।
पौतव-पुं० [सं०] एक तौल ।
पौतवाध्य-पुं० [सं०] मालकी तौलकी देखरेख करने वाला अधिकारी (क्षी०) ।
पौतवापचार-पुं० [सं०] कम तौलना, बौंधी मारना (क्षी०) ।
पौतिक-वि० [सं०] दुर्गंधवाले द्रव्यका बना हुआ ।
पौलिनासिक्च-पुं० [सं०] नाकसे दुर्गंध आनेका रोग, पीनस ।
पौसिक-पुं० [सं०] एक प्रकारका मनु ।
पौत्र-वि० [सं०] पुत्र संबंधी; पुत्रका । पु० नेटका बैठा, पोता ।
पौत्रिक-वि० [सं०] पुत्र-संबंधी; पौत्र-संबंधी ।
पौत्रिकेय-पुं० [सं०] पुत्रके स्थानपर माना हुआ कन्याका पुत्र ।
पौत्री-खी० [सं०] पोती; दुर्गा ।
पौव-खी० छोटा पौधा; एक स्थानसे उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाने लायक छोटा पौधा; संतान; * पौवका । [नयी पौव-नयी पीढ़ी ।]
पौवन्ध-पुं० [सं०] राजा अहमकका नगर (म० भा०) ।
पौवर-खी० पैरका निशान, चरणचिह्न; लोगोके पैरल चलनेसे बनी हुई राह, पगबंदी; कोल्हूके चारों ओरका बर मार्ग जिससे होकर उसे खींचनेवाला बैल घूमा करता है। मोट खींचनेवाले बैलोंके कुपोंके पासतक बार-बार आने-जानेवाला डालवाँ रास्ता ।
पौवा-पुं० दे० 'पौधा'; डुलडुलकी कमरमें बाँधा जानेवाला ऊँदना । -गाह-पुं०, खी० वह जगह जहाँ छोटे पौधे लगे हों ।
पौवलिक-वि० [सं०] पुत्रल-संबंधी; पुत्रलका; भूत-संबंधी; स्वामी ।
पौव-खी० उपज, पैदाइश ।
पौवन-खी० खाना परसनेका मिट्टीका बरतन ।
पौवा-पुं० छोटा पेड़; नया पेड़ ।
पौवि-खी० दे० 'पौव' ।
पौनःपुनिक-वि० [सं०] बार-बार होनेवाला ।
पौनःपुन्य-पुं० [सं०] अनेकशः आवृत्ति, बार-बार होनेका भाव ।
पौन-पुं० हवा, वायु; जीव, प्राण; भूत, प्रेत; एक प्रकारका ढगण जिसमें गुरु पहले आता है और लघु पीछे । वि० तीन-चोथाई, पूर्णसे चतुर्थांश कम । **पुं०** -**बडाना** वा **मारना** -जादू-वीना करना ।
पौनस्क, पौनस्क्य-पुं० [सं०] दुबारा उक्त होनेका भाव, आवृत्ति ।

पौनर्वाच-वि० [सं०] पुनर्नवा-संबंधी ।
पौनर्वाच-वि० [सं०] पुनर्भू (पुनः विवाह करनेवाली विधवा)-संबंधी; पुनर्भूका; पुनर्भूति उत्पन्न । पु० पुनर्भूका पुनः जिसकी गणना बारह प्रकारके पुत्रोंमें है (स्मृ०); किन्ती विधवा वा परित्यक्ता स्त्रीका नया पति ।
पौनर्वाच-खी० [सं०] पुनर्भूकी पुत्री ।
पौवा-पुं० पौनका पहाड़ा; गोल और बिपटे सिरकी छेद-दार वा बिना छेदोंवाली लोहे आदिकी कलछी ।
पौवार-खी० कमलकी नाल ।
पौवारि-खी० दे० 'पौवार' ।
पौनी-खी० बदर्, नार्ड, पोवी आदि जिन्हें गाँवोंमें लोग कामके बदले उपजका कुछ अंश तथा मांगलिक अवसरोंपर इनाम देते हैं; छोटा पौना ।
पौने-वि० किसी सस्यका तीन-चोथाई (संख्यावाचक शब्दोंके साथ-जैसे पौने तीन, २३) । **पुं०** -**सोल्ह आना** -लगभग समूचा, लगभग पूरा । -**सोल्ह आने** -लगभग पूर्णरूपसे; प्रायः पूरी भाषामें ।
पौमान-पुं० दे० 'पवमान'; जलाशय ।
पौरद्व-वि० [सं०] द्व-संबंधी । पु० ज्येष्ठा नक्षत्र ।
पौरद्व-वि० [सं०] स्त्री-संबंधी ।
पौर-खी० ज्योती । वि० [सं०] पुर-संबंधी; नगरका; जो नगरमें पैदा हुआ हो; पैद, औरिक (वि०) । पु० पुरवासी, नागरिक; रोहिच नामकी धाम । -**कम्पा**-खी० नगरकी स्त्री, नागरी । -**कार्य**-पुं० नगर-संबंधी कार्य; जनताका कार्य । -**जन**-पुं० नागरिक । -**जनपद**-वि० नगर और जनपदका । पु० नगर और जनपदके निवासी । -**मुख्य**-पुं० नगरका प्रमुख व्यक्ति । -**वोपित**-**खी०** दे० 'पौरकन्या' । -**लोक**-पुं० नागरिक । -**बृह**-पुं० प्रमुख नागरिक । -**सक्य**-पुं० एक नगरका नागरिक होना, सहनागरिकता ।
पौरक-पुं० [सं०] नगर या घरके पानका बाग ।
पौरना-अ० क्रि० तैरना ।
पौरव-वि० [सं०] पुरु-संबंधी; पुरुका; पुरुके गोत्रमें उत्पन्न । पु० पुरुका गोत्रज; आर्यावर्तका एक प्राचीन देश (म० भा०); इस देशका राजा या निवासी ।
पौरवी-खी० [सं०] वसुदेवकी एक पत्नी; एक बृच्छना (संगीत) ।
पौरवीय-वि० [सं०] जिसकी व्यक्ति पौरव राजामें हो, जो पौरव राजामें अनुरक्त हो ।
पौरस्थ-वि० [सं०] पूरवका, पूरवी, प्राच्य; प्रथम, आद्य, अग्रज ।
पौरांगना-खी० [सं०] नगरकी स्त्री, नागरी ।
पौरा-पुं० रखे हुए चरण, कदम, जागमन ।
पौराण-वि० [सं०] प्राचीन कालका; पहलेका; पुराण-संबंधी; पुराणका; जिसका कथन या उल्लेख पुराणमें हो, पुराणोक्त ।
पौराणिक-वि० [सं०] दे० 'पौराण'; पुराणोंका जानकार । पु० पुराणका जानकार व्यक्ति; पुराणवाचक ।
पौरि-खी० दे० 'पौरी' ।
पौरिक-पुं० [सं०] नागरिक; नगरका शासक ।

पौरिषा-पु० ख्योदीदार, द्वारपाठ ।

पौरी-झी० मकानका वह छोटी या गलीकी तरहका भीतरी भाग जो प्रवेश करते ही पकता है, ख्योदी; कक्षाकें [सं०] अंतःपुरमें रहनेवाले सेवकोंकी भाषा ।

पौरमीद-पु० [सं०] एक प्रकारका साथ ।

पौरुष-वि० [सं०] पुरुष-संबंधी; पुरुषका । पु० पुरुषका भाव, पुरुषत्व; पुरुषार्थ; शुक्र; उषम; विप्रम; पराक्रम; ऊँचाई या गहराईकी एक माप, पुरसा; एक आदमीके ले जानेभरका बोझ; पुरुषकी किंमति ।

पौरुषिक-पु० [सं०] पुरुषकी पूजा करनेवाला ।

पौरुषी-झी० [सं०] स्त्री ।

पौरुषेय-वि० [सं०] पुरुष-संबंधी; पुरुषका; मानवीय, मनुष्यका बनाया हुआ, मनुष्यकृत; आध्यात्मिक । पु० मनुष्यवध; मनुष्योंका समूह; मनुष्यका कार्य; रोजीनेपर काम करनेवाला मजदूर ।

पौरुष्य-पु० [सं०] साहस, मरदानगी ।

पौरुषुत-वि० [सं०] ईंद्र-संबंधी; ईंद्रका ।

पौरुषी-झी० एक तरहकी जमीन ।

पौरुषेय-वि० [सं०] नगरके समीपका (स्थान, देश आदि); नागर ।

पौरोगव-पु० [सं०] (राजाकी) पाकशालाका अध्यक्ष ।

पौरोगाश-वि० [सं०] पुरोगाश-संबंधी; पुरोगाशका । पु० पुरोगाशके समर्पणके समय पडा जानेवाला मंत्र-विशेष ।

पौरोगाशिक-पु० [सं०] पौरोगाश नामक मंत्रका पाठ करनेवाला ।

पौरोगस-पु० [सं०] पुरोहितका पद; ऋत्विक्; पुरोहितका कर्म ।

पौरोगमाय-पु० [सं०] दोषदर्शन, छिद्रान्वेषण; डेव; दुष्कर्म ।

पौरोगित्व-पु० [सं०] पुरोहितका पद या कर्म ।

पौरोगमास-वि० [सं०] पूणिमा-संबंधी । पु० पूणिमाको किया जानेवाला यागविशेष; पूणिमा ।

पौरोगमासिक-वि० [सं०] पूणिमा-संबंधी; पूणिमाके दिन होनेवाला ।

पौरोगमासी-झी० [सं०] पूणिमा, पूनो; प्रतिपदा ।

पौरोगमास्य-पु० [सं०] पूणिमाको होनेवाला वह ।

पौरोगमी, **पौरोगिमा**-झी० [सं०] पूणिमा, पूनो ।

पौरोगिम-पु० [सं०] सन्यासी ।

पौरुसिक-वि० [सं०] पूर्त-संबंधी; पूर्तका साधनरूप (कर्म) ।

पौरु-वि० [सं०] पहलेका; पूर्वी । [झी० 'पौरु']

पौरुवेदिक, **पौरुवेदिक**-वि० [सं०] पूर्व जन्म-संबंधी; पूर्व जन्ममें किया हुआ ।

पौरुपदिक-वि० [सं०] पूर्वपद-संबंधी, जो समासके पूर्व-पदसे बंध हो ।

पौरुपार्वी-पु० [सं०] पूर्वापरका भाव, पूर्वापरत्व; अनुक्रम ।

पौरुपार्विक-वि० [सं०] पूर्वाह्न-संबंधी ।

पौरुपार्विक-वि० [सं०] पूर्वाह्न-संबंधी; पूर्वाह्नमें किया जानेवाला ।

पौरुपिक-वि० [सं०] पहलेका, प्राचीन; वैदिक ।

पौरु-झी० रास्ता; सिंहद्वार ।

पौरुमा-सं० कि० काटना ।

पौरुस्ती-झी० [सं०] धूर्पणसा ।

पौरुस्त्व-वि० [सं०] पुरुस्त्व-संबंधी; पुरुस्त्वके योगमें उत्पन्न । पु० रावण; कुबेर; विभीषण; नंदमा ।

पौरुसा-पु० एक प्रकारकी कक्षाकें जिसमें ख्योदी जगह रस्ती कमी रहती है ।

पौरुि-झी० दे० 'पौरी' । पु० [सं०] कम भूना हुआ भस्म; इस प्रकारके भस्मकी रोटी ।

पौरुिखा-पु० दे० 'पौरिषा' ।

पौरुी-झी० पौरी, ख्योदी; पैरका पड़ीसे धंनेतकका भाग; पैरका निशान, चरणचिह्न ।

पौरुोम-वि० [सं०] पुलोमा-संबंधी; पुलोमाका; पुलोमाके योगमें उत्पन्न । पु० ईंद्र (?) ।

पौरुोमी-झी० [सं०] ईंद्रकी पत्नी शची, इंद्राणी ।

-संमच-पु० जवंत ।

पौरा-पु० सरका चौथा भाग; पावभरका षट् एक पाव दूध, तेल आदि अँटनेभरका भरतन ।

पौर-पु० [सं०] पूसका महीना; एक लोहार; युद्ध ।

पौरि-झी० [सं०] पूसकी पूणिमा ।

पौरिक-वि० [सं०] जीलकमल संबंधी । पु० पुष्करमूल ।

-मूल-पु० पुष्करमूल ।

पौरिकिणी-झी० [सं०] पुष्करिणी ।

पौरिकल-पु० [सं०] एक प्रकारका अन्न ।

पौरिकत्व-पु० [सं०] प्रचुरता; परिपूर्णता; पूर्ण बुद्धि ।

पौरिक-वि० [सं०] पुष्ट बनानेवाला, पुष्टिकर, शक्तिवर्धक । पु० धन, जन आदिकी बुद्धि करनेवाला कर्म; एक वस्त्र जो मुंडन-संस्कारके समय धारण किया जाता है ।

पौर्य-पु० [सं०] रेवती नक्षत्र । वि० सूर्य-संबंधी ।

पौर्य-वि० [सं०] पुष्प-संबंधी; फूलोंका बना हुआ, फूलोंसे तैयार किया हुआ ।

पौर्यक-पु० [सं०] पुष्पांजन ।

पौर्यी-झी० [सं०] एक तरहकी शराब जो फूलोंसे तैयार की जाती है; पादलिपुत्र, पदमा ।

पौरसरा-पु० दे० 'पौसरा' ।

पौसला-पु० वह स्थान जहाँ प्यासीको धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है, सबील ।

पौसारा-झी० करघेमेंकी वह लकड़ी जिसे पैरसे दबानेपर राख ऊँचा-नीचा होता है ।

पौसेरा-पु० एक पावका षट् ।

पौहारी-वि० दे० 'पयहारी' ।

प्याऊ-पु० दे० 'पौसला' ।

प्याऊ-पु० [फा०] उत्कट गंधका एक प्रसिद्ध मूल जो तरकारी, मसाले और दवाके काम आता है ।

प्याऊरी-वि० [फा०] प्याऊके रंगका, हल्का गुलाबी ।

प्यादा-पु० [फा०] पैरक सिपाही; दूत; सतरंजका एक मोहरा जो सौधे चलता है और आगे मारता है, पैदल ।

-पा-अ० पॉव-पॉव, पैदल । -पाई-झी० पॉव-पॉव चलना, पैदल चलना ।

प्याम-वि० [सं०] मोटा, पीन ।

प्यामा-सं० कि० दे० 'पिलामा' ।

शब्दावली-पु० [सं०] बुद्धि, बर्तन । वि० शक्तिवर्धक ।
शब्दित-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि हुई हो; जिसकी शक्ति बढ़ गयी हो; जो मोटा हो गया हो; जो गूढ़ किया गया हो ।
शब्द-पु० प्रेम, प्रीति, मुहुरत; प्रेमस्वचक स्पर्श, सुख आदि; कालन, लाल-चाव; पिपार नामका वृक्ष (चिरीजी इसीका बीज है) ।
शब्द-वि० जिसे प्यार किया जाय, जो प्रेमका पात्र हो, प्रिय; जो प्रिय लगे, अच्छा लगनेवाला; जिसे त्यागनेका जी न चाहे; जिसके प्रति बहुत अधिक ममता हो; * मईना ।
शब्दा-पु० [फा०] पीनेका बरतन, पान-पात्र; जल, दूध, मद्य आदि पीनेका एक विना मलेका छोटा चिपटा बरतन जिसका ऊपरी भाग पँदेसे अधिक चौड़ा होता है, छोटा कदोरा, जाम; जुलाहोंका नरो भिगोनेका मिट्टीका बरतन; तोप या बंदूकमें रजक रखनेकी जगह; कम्पर जिसमें भिद्युत मौसम मँगते हैं । **शु०** - देना-शराव पिछाना ।
शरीना वा **सेना**-शराव पीना । -बहना-गर्भपात होना । -भरना-आगु पूरी होना ।
शब्दाना-सं० कि० दे० 'शिला' ।
शब्दा-खी० शरीरकी वह आवश्यकता जो पानी पीनेसे शांत होती है, पानी पीनेकी इच्छा, तृप्ति; किसी वस्तुकी प्रशंसा चाह, उत्कट इच्छा । **शु०** -कुसाना-पानी पीकर प्यास दूर करना; किसी उत्कट इच्छाकी पूर्ति करना ।
शब्दा-वि० जिसे प्यास लगी हो, पिपासापूँ ।
शब्द-पु० [अ०] चपरासी । -**शु०**-खी० वह रजिस्टर जिसमें उन कार्योंके नाम चढ़ाये जाते हैं जिन्हें किसी चपरासीके हाथ कहाँ भेजते हैं और जिसपर वह चपरासी पानेवालोंके हस्ताक्षर करा जाता है ।
शब्द-खी० दे० 'पूनी' ।
शब्द-पु० पति, स्वामी ।
शब्दसर-पु० हालकी म्वावी हुई गामका दूध ।
शब्दसर-पु० शीका पिटुगृह, मायका ।
शब्द-पु० पैद ।
शब्द-पु० श्रियतम, पति, कांत ।
शब्द-पु० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले लगकर आरंभ (प्रमाण), शक्ति (प्रभु), आधिक्य (प्रभाव, प्रच्छाद्य), उत्पत्ति (प्रवीण), वियोग (प्रोषित), उत्कर्ष (प्राचार्य), श्रुति (प्रसन्नजन), इच्छा (प्रार्थना), शांति (प्रसन्न), पूजा (प्रांशलि) आदिका बोधन करता है ।
शब्द-पु० [सं०] कैपकैपी, बरबराह ।
शब्द-वि० [सं०] कैपनेवाला; हिलानेवाला । पु० बाहु, तेज हवा; एक नरक; कैपकैपी; जोरसे हिलनेकी क्रिया ।
शब्द-वि० [सं०] काँपता हुआ; हिलका हुआ; काँपना वा हिलना हुआ ।
शब्द-वि० [सं०] हिलनेवाला; काँपनेवाला ।
शब्द-वि० [सं०] जिसके शब्द लगे हैं ।
शब्द-वि० [सं०] जो सामने हो, प्रमुख; आदि, स्पष्ट; जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो; जो पुन न हो, स्पष्ट । * ल० प्रकाश्य रूपमें, सबके सामने ।

शब्द-पु० [सं०] प्रकट करने या होनेकी क्रिया ।
शब्दना-अ० कि० प्रकट होना ।
शब्द-वि० [सं०] प्रकाशित, प्रकट किया हुआ ।
शब्द-पु० [सं०] प्रकट करनेकी क्रिया; प्रकट करना ।
शब्द-पु० [सं०] प्रकट होनेकी क्रिया, प्रकट होना ।
शब्द-पु० [सं०] कोषित करना ।
शब्द-पु० [सं०] समूह, राशि; अंग; सहायता, मदद; मैत्री; युद्धरत्ना; रिवान; सम्मान; उपादान । वि० कुशलतापूर्वक मैत्री करनेवाला ।
शब्द-पु० [सं०] निर्माण, रचना; वर्णन, प्रतिपादन; प्रसंग, संदर्भ; किसी ग्रंथ या पुस्तकका वह भाग जिसमें किसी एक विषयका प्रतिपादन हो, परिच्छेद; वह ग्रंथ जिसमें किसी शास्त्रके सिद्धांतका प्रतिपादन हो; कर्तव्यका विधान (मी०); अवसर एक प्रकारका सुगारप्रधान नाटक जिसका वृत्त लौकिक तथा कायपनिक होता है और नायक ब्राह्मण, अमात्य या बणिक् होता है । -**सम**-पु० संपन्न नामका देवनाभास (न्या०) ।
शब्द-पु० [सं०] वह नाटक जो प्रकरण जैसा हो हो, पर आकारमें उससे छोटा हो ।
शब्द-खी० [सं०] आगेकी छनानें स्पष्ट करनेके लिए बीचमें रखी जानेवाली छटना, प्रासंगिक कथावस्तु ।
शब्द-खी० [सं०] एक तरहका गान; अंगन; चौड़ाहा; एक तरहकी प्रासंगिक कथावस्तु (ना०) ।
शब्द-पु० [सं०] उत्कर्ष; उत्तमता; अतिरेक, अधिकता; खींचनेकी क्रिया; शक्ति; विस्तार; विरोधता ।
शब्द-पु० [सं०] खींचनेवाला; कामदेव ।
शब्द-पु० [सं०] शुद्ध, अज्ञात करना; खींचना; हल चलाना; लंबाई; लगाम; बाधक; उत्तमता; सुंदर अधिक रूपया वस्तु करना ।
शब्द-वि० [सं०] खींचा हुआ, ताना हुआ; सुंदर अतिरिक्त वस्तु किया हुआ ।
शब्द-वि० [सं०] प्रकर्षयुक्त, उत्कृष्ट, प्रेक्ष; चलाने-वाला, नेतृत्व करनेवाला ।
शब्द-खी० [सं०] कला (समय)का माटवों भाग । -
(ल)विद्-वि० अज्ञान । पु० व्यापारी ।
शब्द-पु० [सं०] नियत करना, स्थिर करना ।
शब्द-वि० [सं०] बनाया हुआ, निर्मित, रचित; नियत किया हुआ, स्थिर किया हुआ ।
शब्द-वि० [सं०] निश्चित या स्थिर किये जाने योग्य ।
शब्द-पु० [सं०] बाहुक; मृदालिका; थोटा पतंग; वध करना ।
शब्द-पु० [सं०] वृक्ष; वृक्षका तना; शाखा; बाहुका ऊपरका हिस्सा । वि० उत्तम, प्रशस्त; सर्वश्रेष्ठ; बहुत बड़ा ।
शब्द-पु० [सं०] दे० 'प्रकांड' ।
शब्द-पु० [सं०] वृक्ष ।
शब्द-वि० [सं०] यथेष्ट, काफी; जिसमें कामवासनाकी अधिकता हो । पु० एक देवता; इच्छा; तृप्ति । -**शुद्ध** (शु०)-वि० इच्छासर ज्ञानेवाला ।
शब्द-पु० [सं०] इच्छासर बात करना ।
शब्द-पु० [सं०] भेद, क्रिया; रीति, ढंग; साधन;

विशेषता; * प्रकाश, परकीटा ।

प्रकाशन-पु० [सं०] मारण; एक नाग; एक तरहका सौं ।
वि० जिसका पीछा करनेवाला ।

प्रकाश-पु० [सं०] ज्योतिष्मान् पदार्थोंसे उत्पन्न होनेवाली वह शक्ति जो दैर्घ या आकाशतत्त्वके द्वारा चारों ओर फैलती है, तेज, आलोक, बौत, उज्जला, अंधकारका उच्छाद; आतप, धूप; विकास, अभिव्यक्ति; स्पष्ट होना; प्रकट होना, आविर्भाव; किसी ग्रंथ या पुस्तकका कोई विभाग; प्रसिद्धि, ख्याति; अदृष्टास; पीतल । वि० प्रकाशयुक्त; स्फुट; स्पष्ट; प्रकट; दृष्टादिसे रहित; अति प्रसिद्ध । -**कर्ता**(सु०)-पु० सु० । -**काम**-वि० ख्यातिका इच्छुक । -**कम**-पु० सुलेख्य होनेवाली खरीद । -**नारी**-स्त्री० वेश्या । -**विद्योद्य**-पु० देसा विद्या जो सबपर प्रकट हो । -**संयोग**-पु० वह संयोग जो सबपर प्रकट हो । -**स्त्रम**-पु० मार्गप्रदर्शनके लिए बना हुआ ऊँचा स्तंभ जिसपर रोशनी जलायी जाती है; (का०) मार्गप्रदर्शक ।

प्रकाशक-वि० [सं०] चमकीला; प्रकाश करनेवाला; अभिव्यक्त करनेवाला; प्रकट करनेवाला; प्रसिद्ध । पु० पुस्तक आदिको छपवाकर प्रकट करनेवाला, 'पब्लिशर'; सर्व; आविष्कर्ता; व्याख्या करनेवाला । -**ज्ञाता**(सु०)-पु० सुगो ।

प्रकाशन-पु० [सं०] आलोकित करना; प्रकट करना; छपवाकर प्रकट करना या जनताके सामने रखना; प्रकाशित ग्रंथादि; सबको सूचित करना, विज्ञापन; विष्णु । वि० प्रकाशित करनेवाला ।

प्रकाशनाधिकार-पु० [सं०] (कापीराइट) दे० 'कृतिस्वाम्य' ।

प्रकाशमान-वि० [सं०] चमकता हुआ, चोतमान; प्रसिद्ध ।

प्रकाशवान्(बलु०)-वि० [सं०] प्रकाशयुक्त ।

प्रकाशात्मक-वि० [सं०] चमकीला, दीप्तिमान् ।

प्रकाशात्मा(स्वप्न)-वि० [सं०] चमकीला, सतेज । पु० विष्णु; शिव; सूर्य ।

प्रकाशित-वि० [सं०] प्रकाशयुक्त; प्रकट किया हुआ; आलोकित किया हुआ; छपवाकर प्रकट किया हुआ; विज्ञापित ।

प्रकाशी(शिशु०)-वि० [सं०] प्रकाशयुक्त, चमकीला ।

प्रकाश्य-वि० [सं०] प्रकाशित करने योग्य, प्रकाशनके योग्य; प्रकट । पु० प्रकाश ।

प्रकाश-पु० दे० 'प्रकाश' ।

प्रकाशना-अ० कि० प्रकाशित होना ।

प्रकिरण-पु० [सं०] फैलाना, बिखेरना; मिश्रण ।

प्रकीर्ण-वि० [सं०] फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ; मिश्रया हुआ, मिश्रित; अस्त-व्यस्त किया हुआ; धुन्ध; परिच्छिन्न; फुटका । पु० किसी पुस्तक या ग्रंथका कोई परिच्छेद; प्रकरण; अनेक प्रकारकी वस्तुओंका मिश्रण; बिखेरना; विशेष; विस्तार; चँवर; फुटका वस्तुओंका संग्रह; कौं देवार करंज । -**केश**-वि० जिसके शाल निकले हों । -**केशी**-स्त्री० दुर्गा ।

प्रकीर्णक-पु० [सं०] चँवर; घोड़ेके सिरपर लगायी जानेवाली कलगी; घोणा; फुटका वस्तुओंका संग्रह; वह परिच्छेद या प्रकरण जिसमें फुटका बातें दी गयी हों; वह पाप

जिसका प्रावधिच धर्मप्रयोगों में बताया गया हो; प्रकरण, अध्याय । वि० छितराया, फैलाया हुआ; फुटका ।

प्रकीर्तन-पु० [सं०] प्रशंसा, वक्ता गाया; घोषणा ।

प्रकीर्तना-स्त्री० [सं०] उल्लेख करना, नाम लेना ।

प्रकीर्ति-स्त्री० [सं०] ख्याति, वश; घोषणा ।

प्रकीर्तित-वि० प्रशंसित, जिसका वश गाया गया हो; जिसकी घोषणा की गयी हो ।

प्रकीर्ण-वि० [सं०] फैलाने योग्य; बिखेरने योग्य; मिश्रित करने योग्य । पु० रीठा करंज, कौं देवार करंज ।

प्रकुंभ-पु० [सं०] एक मान जो लगभग एक मुट्ठीके बराबर होता था, पल ।

प्रकुपित-वि० [सं०] दूषित; सड़ा हुआ ।

प्रकुपित-वि० [सं०] विशेष रूपसे कुपित, अति क्रुद्ध ।

प्रकुस-वि० [सं०] दे० 'प्रकुपित' ।

प्रकुल-पु० [सं०] सुंदर शरीर ।

प्रकृष्णांघ्री-स्त्री० [सं०] दुर्गा ।

प्रकृत-वि० [सं०] जिसका आरंभ हो चुका हो, आरम्भ; विमर्का प्रसंग छिड़ा हो, प्रकरणप्राप्त; पूरा किया हुआ; नियुक्त; शक्तिशाली; सुख; असक्त; अविकृत; महत्त्वका; हविकर ।

प्रकृतार्थ-पु० [सं०] स्वार्थ अभिप्राय । वि० असक्त ।

प्रकृति-स्त्री० [सं०] स्वभाव, मिश्रण; वह मूलतत्त्व जिसका परिणाम जगत् है, जगत्का उपादान कारणरूप मूलतत्त्व (सां०); माया; परमात्मा; पंच महाभूत; स्वामी, अमात्य, सुहृद् आदि राज्यांग; प्रजा; सदा बना रहनेवाला; मूल गुण या धर्म; योनि; लिंगा; स्त्री; माता; एक छंद; वह मूल शब्द जिसमें प्रत्यय लगाये जाते हैं (व्या०); आकार-प्रकार; गुणक (ग०); चराचर संसार । -**ज**-वि० सहज, स्वाभाविक । -**गुरु**-पु० राजमंत्री । -**भाष**-पु० मूल, अविकृत रूप । -**मंडल**-पु० स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और दल-ये सात राज्यांग; प्रजा-वर । -**कथ**-पु० संसारका प्रकृतिमें मिल जाना, प्रलय (सां०) । -**शास्त्र**-पु० प्रकृतिस्वर्णी शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें चराचर जगत्को उत्पत्ति, विकास आदिको मोमांसा की जाय । -**सिद्ध**-वि० सहज, स्वाभाविक । -**सुमग**-वि० स्वभावसे ही सुंदर, जिसमें सहज सौंदर्य हो । -**स्व**-वि० जो अपने स्वभाव या स्वरूपमें स्थित हो, क्षोभ, विकारसे रहित, स्वस्थ ।

प्रकृतीश-पु० [सं०] राजा, शोमक ।

प्रकृत्वा-अ० [सं०] स्वभावसे, स्वभावतः ।

प्रकृष्ट-वि० [सं०] खींचा हुआ; बढ़ाया हुआ; प्रकर्षयुक्त; उत्कृष्ट, उत्तम; प्रधान, मुख्य ।

प्रकृष्टा-स्त्री० [सं०] प्रकृष्टका भाव; उत्कृष्टता; दीर्घता; मुख्यता ।

प्रकीर्ण-पु० [सं०] सड़ना; दूषित होना; सूखना, शोष ।

प्रकोप-पु० [सं०] अत्यधिक कोप; उत्तेजना; विद्रोह; आक्रमण; किसी भीमारीका जोर; शरीरकी बातुओंका विषाघ आना ।

प्रकोपन-पु० [सं०] प्रकोपित करना । वि० प्रकुपित करनेवाला ।

प्रकीर्ण-वि० [सं०] जिसमें प्रकीर्ण उत्पन्न किया गया हो; क्रुद्ध किया हुआ।

प्रकीर्ण-पु० [सं०] शौहका कलाईसे लेकर कुहनीतकका भाग, पहुँचा; महल या भवनके सदर फाटकके पासका कमरा; इमारतके भीतरका आँगन; इमारतोंसे बिरा हुआ स्थान।

प्रकीर्णक-पु० [सं०] प्रासादके मुख्य द्वारके पासका कमरा।

प्रक्खर-वि० [सं०] अति तीक्ष्ण। पु० बोरे या हाथीका कवच, पाखर; कुशा; खखर।

प्रक्रम-पु० [सं०] क्रम; क्रम, तरतीब, सिखसिखा; आरंभ, उपाक्रम; अवसर, मौका। -अंग-पु० एक काव्यदोष, दे० 'अग्न प्रक्रम'। -विच्छ-वि० जो आरंभ करते ही रोका गया हो।

प्रक्रमण-पु० [सं०] आरंभ करना; क्रम बढ़ाना; अधिक प्रमण।

प्रक्रमणीय-वि० [सं०] आरंभ करने योग्य।

प्रक्रांत-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ, आरम्भ; जिसका प्रसंग छिपा हो या चर रहा हो, प्रकरणप्राप्त। पु० बाजाका आरंभ; बादका विषय।

प्रक्रिया-की० [सं०] प्रकरण; क्रिया, अमल; संस्कार; उद्योग; प्रत्येक अभ्यास; पुस्तकका आरम्भिक अध्याय; विशेषाधिकार; तरकीब; विधि; शब्द या प्रयोगका साधन; राजा-भोका छत्र आदि धारण करना।

प्रकीर्ण-पु० [सं०] खेल, क्रीडा।

प्रक्षिप्त-वि० [सं०] आर्द्र, तर, गीला; दबाई। -वर्ण-वि० पु० एककला एक रंग।

प्रक्षेप-पु० [सं०] आर्द्रता, तर, गीलापन, नमी।

प्रक्षेपन-वि० [सं०] आर्द्र बनानेवाला, तर करनेवाला। पु० आर्द्र करना।

प्रक्षेपी (वि०)-वि० [सं०] गीला करनेवाला; पिघलानेवाला।

प्रक्षय, प्रक्षय-पु० [सं०] बीणाकी ध्वनि या स्फार।

प्रक्षय-पु० [सं०] उबलना, उबाल।

प्रक्षयन-पु० [सं०] नष्ट करना।

प्रक्षय-पु० [सं०] अंत, विनाश।

प्रक्षयन-पु० [सं०] नष्ट करना।

प्रक्षर-वि०, पु० [सं०] दे० 'प्रमल्ल'।

प्रक्षरण-पु० [सं०] सरना, चूना।

प्रक्षाम-वि० [सं०] जला हुआ, झुलसा हुआ।

प्रक्षाल-पु० [सं०] प्रायश्चित्त। वि० धुंध करनेवाला।

प्रक्षालन-पु० [सं०] पानीसे साफ करना, धोना; साफ करना; बह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी जाय; धुंध करनेका साधन।

प्रक्षालयिता (शु)-पु० [सं०] (अतिथियोंके वरण) धोनेवाला।

प्रक्षालित-वि० [सं०] धोया हुआ; साफ किया हुआ; जिसका प्रायश्चित्त किया गया हो।

प्रक्षाल्य-वि० [सं०] धोने योग्य; धुंध करने योग्य।

प्रक्षिप्त-वि० [सं०] फेंका हुआ; डाला हुआ; क्षेपकके रूपमें निविष्ट किया हुआ, पीछेसे जोड़ा या मिलाया हुआ।

प्रक्षीय-वि० [सं०] विनष्ट; क्षुब्ध। पु० विनाश-खल।

प्रक्षीयित-वि० [सं०] जो नष्टमें ही, मत्तबाण।

प्रक्षुब्ध-वि० [सं०] क्रुद्ध हुआ; वर्ण किया हुआ; चोट पहुँचाया हुआ; रौद्रा हुआ (मार्गी)।

प्रक्षेप-पु० [सं०] फेंकना, डालना; ऊपरसे मिलाना; ऊपरसे मिलायी जानेवाली वस्तु; गान्धीका वस्त्र; पुस्तक या ग्रंथमें वह मूलसे भिन्न अंश जो शब्दमें जोड़ा या मिलाया गया हो, क्षेपक; किसी व्यापारके साझेदारोंकी अलग-अलग पूँजी। -छिपि-की० लिखनेका एक विशेष-दंड।

प्रक्षेपण-पु० [सं०] फेंकना, डालना; ऊपरसे मिलाना; नियत करना (मूल्य आदि)।

प्रक्षेपणीय-वि० [सं०] प्रक्षेपणके योग्य।

प्रक्षोभण-पु० [सं०] क्षुब्ध करना।

प्रक्षेपन-पु० [सं०] कोठेका नाग; शोर-शुद्ध।

प्रक्षर-वि० [सं०] तीक्ष्ण, तेज; प्रचंड, उग्र। पु० प्रक्षर।

प्रक्षरता-की० [सं०] प्रक्षरका भाव, तीक्ष्णता, तेजी; प्रचंडता; उग्रता।

प्रखल-वि० [सं०] भारी हुए।

प्रखाद्-वि० [सं०] निगलने, खानेवाला।

प्रख्य-वि० [सं०] स्पष्ट, स्वयं; सख्य (मनासांतमें)।

प्रख्या-की० [सं०] विशिष्ट स्वाति; सुप्रसिद्धि; उपमा, समता; इद्रिय-प्राप्ति।

प्रख्यात-वि० [सं०] विशेष रूपसे ख्यात, बहुत प्रसिद्ध; प्रसन्न, सुखी।

प्रख्याति-की० [सं०] ख्याति, अधिक प्रसिद्धि; प्रशंसा; इद्रिय-प्राप्ति।

प्रख्यान-पु० [सं०] खबर देना, सूचित करना; सूचना; अनुभव करना।

प्रख्यापन-पु० [सं०] प्रसिद्ध करना, प्रचार करना; सूचित करना।

प्रगंड-पु० [सं०] बाँह या कुहनीसे कंपितकका भाग।

प्रगंडी-की० [सं०] दुर्ग आदिके चारों ओरकी दीवार, प्राकार, परकोटा; परकोटेमें चौड़ाओंके बैठनेकी जगह।

प्रगंड-पु० [सं०] पर्यट, दबनपापका।

प्रगट-वि० दे० 'प्रकट'। अ० प्रकट रूपसे।

प्रगटन-पु० दे० 'प्रकटन'।

प्रगटना-अ० कि० प्रकट होना; जन्म लेना। स० कि० प्रकट करना।

प्रगटाना-अ० स० कि० प्रकट करना।

प्रगत-वि० [सं०] आगे गया या बढ़ा हुआ; जो अलग या अधिक दूरीपर हो। -जानु, -जानुक-वि० जिसके घुटने एक-दूसरेसे बहुत अलग हो (ऐसे प्राणीकी टाँगें प्रायः अनुपाकार होती हैं)।

प्रगति-की० [सं०] आगे बढ़ना, उन्नति। -शक्ति-वि० आगे बढ़नेवाला, उन्नतिशील।

प्रगम-पु० [सं०] प्रेमी और प्रेमिकामें अनुरागका उदय, पूर्वानुराग।

प्रगमन-पु० [सं०] आगे बढ़ना, उन्नति करना; पूर्वानुराग।

प्रगवण-पु० [सं०] जन्म जवाब।

प्रगर्जन-पु० [सं०] गरजनेकी क्रिया; विह्वलना ।

प्रगर्भ-वि० दे० 'प्रगल्भ'-'बोसो प्रगर्भ बानी कठोर'-
रघुराजसिंह ।

प्रगल्भ-वि० [सं०] प्रतिभावान् ; जिसकी बुद्धि अक्षरके
अनुसार काम कर आय, प्रत्युपपन्नमति; साहसी, हिम्मत-
वर; धृष्ट, दौड; बोलनेमें संकीर्ण न करनेवाला; प्रौढ;
कुशल; दक्ष; उर्ध्व, उद्धत; निर्लज्ज; अभिमानी; ख्यात ।
प्रगल्भता-स्त्री० [सं०] प्रगल्भ होनेका भाव; प्रतिभा-
शक्तिता; उत्साह; औद्धत्य; धृष्टता; कुशलता; दक्षता;
प्रौढता; निःशंकता; प्रसिद्धि; अत्यवसाय ।

प्रगल्भा-स्त्री० [सं०] नायिकाका एक भेद-दे० प्रौढा
नायिका; दुर्गा; धृष्ट स्त्री ।

प्रगल्भत-वि० [सं०] चम्पवी; प्रसिद्ध, ख्यात ।

प्रगल्भता-अ० कि० प्रकट होना, व्यक्त होना ।

प्रगल्भ-वि० [सं०] बुनाया हुआ, तर किया हुआ; अत्य-
धिक; दृढ़; महरा, घना; कठिन । पु० कष्ट; तपस्वर्षा ।

प्रगल्भा(तु)-पु०, वि० [सं०] अच्छा मानेवाला ।

प्रगामी(मिन्)-वि० [सं०] प्रत्यान करनेवाला; जो
प्रत्यान कर रहा हो ।

प्रगामी(मिन्)-वि० [सं०] गानेवाला; जो गाना आरंभ
कर रहा हो ।

प्रगल्भता-अ० कि० प्रकाशित करना; प्रचलित करना ।

प्रगति-वि० [सं०] गया हुआ । पु० गाना ।

प्रगति-स्त्री० [सं०] एक प्रकारका छंद ।

प्रगुण-वि० [सं०] प्रकट गुणवाला, उत्तम गुणवाला;
कुशल, दक्ष; मीठा; सरल स्वभावका, अकुटिल; अनुकूल ।

प्रगुणन-पु० [सं०] सीधा, चिकना करना; व्यवस्थित
करना ।

प्रगुणित-वि० [सं०] बराबर, चिकना या सीधा किया
हुआ; सुव्यवस्थित ।

प्रगुणी(मिन्)-वि० [सं०] चिकना; बराबर; मैत्रीपूर्ण ।

प्रगुण्य-वि० [सं०] अधिका; उत्तम ।

प्रगुणीत-वि० [सं०] अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ;
जिसका उच्चारण बिना संघिके निदमोंका ध्यान रखे किया
गया हो ।

प्रगुह-वि० [सं०] अच्छी तरह ग्रहण करने योग्य; (बह
पद) जिसमें स्वरसंधि न हो सके (व्या०) । पु० स्मृति;
बाक्य ।

प्रगे-अ० [सं०] प्रातःकाल, तत्के, सवेरे । -निहा, -शब्
-वि० जो सवेरा होनेपर भी सोता रहे, प्रातःस्नायी ।

प्रगेतन-वि० [सं०] प्रातःकाल किया जानेवाला ।

प्रग्रह-पु० [सं०] ग्रहण करना, पकड़ना; नियमन; स्वयं-
ग्रहण अथवा चंद्रग्रहणका आरंभ; बागबोर; तराजूमें लगी
हुई रस्सी; कीड़ा; किरण; मुजा; कनेरका पेड़; कैद; बंधन;
बंदी; कैदी; नेता, अगुआ; कर्णिकार वृद्ध; अनुग्रह; विष्णु;
घोड़े आदिकी साधना ।

प्रग्रहण-पु० [सं०] ग्रहण करने या पकड़नेकी क्रिया;
नियमन; स्वयं या चंद्रमाके ग्रहणका आरंभ बागबोर;
बंधन; घोड़े आदिकी साधना; नेतृत्व करना ।

प्रग्रहा-पु० [सं०] ग्रहण करने या पकड़नेकी क्रिया; बंधन;

तराजूकी रस्सी; बागबोर ।

प्रग्रह-पु० परिग्रह ।

प्रग्रह-पु० [सं०] रंगा हुआ मुर्त; घर या मकानकी चारों
ओरका छकरीका वेरा; बातावन; शरीरका; पेशका निरा;
अस्तबल; विलासगृह; रंगबधन ।

प्रघट-वि० दे० 'प्रकट' ।

प्रघटक-पु० [सं०] नियम; सिद्धांत; आदेश, विधिवाक्य ।

प्रघटना-अ० कि० प्रकट होना ।

प्रघटा-स्त्री० [सं०] किसी शास्त्रकी स्मृति और आरंभिक
भावे । -विद्-वि०, पु० किसी शास्त्रका मामूली ज्ञान-
कार ।

प्रघटक-पु० [सं०] दे० 'प्रघटक'; प्रकरण; अनुच्छेद, पैरा
-अतिप्र प्रघटकमें जो प्रकृतिका वर्णन है'-गद्यभाष्यी ।

● वि० प्रकट करनेवाला ।

प्रघण, प्रघाण, प्रघन, प्रघाण-पु० [सं०] मकानकी बाहरी
हरषाजेके सामनेका स्थान या छच्छा; ताम्रपत्र; लोहेकी
भटा या मुद्रा ।

प्रघस-पु० [सं०] अधिक मक्षण, पैदपन; राक्षस, दैत्य,
असुर । वि० अधिक खानेवाला, पैद ।

प्रघसा-स्त्री० [सं०] काष्ठिकेकी एक माटका ।

प्रघात-पु० [सं०] मारण, हनन; जुड़; पानी बहनेका
जल ।

प्रघुण-पु० [सं०] अतिथि, मेहमान ।

प्रघुण-वि० [सं०] घूमनेवाला; चकर खानेवाला । पु०
अतिथि, मेहमान ।

प्रघोर-वि० [सं०] अति घोर ।

प्रघोष-पु० [सं०] जैनी ध्वनि, प्रचंड शब्द ।

प्रघोष-वि० [सं०] अति तीव्र, प्रखर; बहुत क्रोधी; प्रबल;
घोर, भीषण; अति तेजस्वी; प्रतापी; अस्त्रा; बहा । पु०
सफेद कनेर । -घोष-वि० बड़ी नाकनाका । -मूर्ति-
पु० वरुण वृद्ध । स्त्री० भारी और बली शरीर । वि० भीम-
काय ।

प्रघोडा-स्त्री० [सं०] शंखपुष्पी; दुर्गाकी एक सखी ।

प्रघोष-स्त्री० परिचयपत्र; परिचयारमक वर्णन ।

प्रघक-पु० [सं०] प्रक्षिप्त सैन्य ।

प्रघहा(क्षस्)-पु० [सं०] बृहस्पति ।

प्रघय-पु० [सं०] फूल या फल तोड़ना; समूह, पुंज, डेर;
संयोगका एक भेद, शिथिल संयोग (व्या०); उपचय, वृद्धि;
एक प्रकारका वेदपाठ, एक श्रुति ।

प्रघर-पु० [सं०] मार्ग; राह; चलन, रीति ।

प्रघरण-पु० [सं०] घूमना-फिरना, विचरण; प्रचारित
होना; चलन होना; आरंभ ।

प्रघरणी-स्त्री० [सं०] सूता ।

प्रघरना-अ० कि० प्रचारित होना; फैलना; चलना ।

प्रघरित-वि० [सं०] जिसका प्रचार हो, प्रचलित; अभ्यस्त ।

प्रघक-वि० [सं०] चंचल; जिसका चलन हो ।

प्रघक-पु० [सं०] एक विषैला कीड़ा ।

प्रघलन-पु० [सं०] हिलना; खलना-फिरना; चलन,
प्रचार; बलावन ।

प्रघलाक-पु० [सं०] बाणका आघात; मोरकी कसमी बा

पूँछ लीप ।
 प्रचलाकी (किष्)-पु० [सं०] चोर ।
 प्रचलावन-पु० [सं०] निद्रा आदिसे सिरका झुकना ।
 प्रचलावित-पु० [सं०] लुप्तकता हुआ; निद्रा आदिके कारण कारण जिसका सिर झुक रहा हो ।
 प्रचलित-वि० [सं०] चिला हुआ; गतिशील; जिसका चयन हो; चलता हुआ, जारी; जो चल चुका हो ।
 प्रचाय-पु० [सं०] दे० 'प्रचय' ।
 प्रचायक-वि०, पु० [सं०] पुष्प आदिका चयन करनेवाला; डेर लगातेवाला ।
 प्रचायिका-स्त्री० [सं०] पुष्प आदिका चयन; पुष्प आदि-का चयन करनेवाली स्त्री ।
 प्रचार-पु० [सं०] धूमना-फिरना; प्रयोग; चलायना; प्रकट होना; किसी वस्तुका व्यापक व्यवहार; आचरण; चलन, रवाय; खेल-कूदका मैदान; चरागाह; गति; मार्ग; किसी वस्तुको प्रसिद्ध करने या फैलानेका कार्य (हि०) । -कार्य-पु० प्रचारका काम, 'प्रोपेक्का' ।
 प्रचारक-वि०, पु० [सं०] प्रचार करनेवाला; फैलाने-वाला ।
 प्रचारण-पु० [सं०] फैलाना; छिलराना ।
 प्रचारना* -सं० क्रि० प्रचार करना, फैलाना; ललकारना ।
 प्रचारित-वि० [सं०] चलाया हुआ; जिसका प्रचार किया गया हो; फैलाया हुआ ।
 प्रचारी (विष्)-वि० [सं०] धूमने-फिरनेवाला; प्रकट होने-वाला; बताने करनेवाला ।
 प्रचाख-पु० [सं०] बीणाकी गरदन ।
 प्रचाकन-पु० [सं०] चकानेकी क्रिया ।
 प्रचाकित-वि० [सं०] जो चकाना गया हो, प्रचलित किया हुआ ।
 प्रचिप्त-वि० [सं०] (पुष्प आदि) जिसका चयन हुआ हो, चुना हुआ; एकत्र किया हुआ; मरा हुआ; अनुदात्त; वृद्धि-की प्राप्त । पु० दंष्टक छंष्टका एक भेद ।
 प्रचुर-वि० [सं०] बहुत अधिक, प्रभूत; बहुत बड़ा; पूर्ण, मरा-परा (समासमें) । पु० चोर । -पुरुष-वि० बना बसा हुआ, अनाकीर्ण । पु० चोर ।
 प्रचुरता-स्त्री०, प्रचुरत्व-पु० [सं०] प्रचुर होनेका भाव, आधिक्य ।
 प्रचेत्सी-स्त्री० [म०] कायकल; प्रचेत्ताकी कन्या ।
 प्रचेत्ता (तल्)-पु० [सं०] बरहण; एक स्मृतिकार मुनि; प्राचीनवर्षिके दस पुत्र । वि० बुद्धिमान्, चतुर ।
 प्रचेत्ता (दृ)-पु० [सं०] चयन करनेवाला; सारवि ।
 प्रचेत्तित-वि० [सं०] देखा हुआ; निचारा हुआ ।
 प्रचेय-वि० [सं०] चयनके योग्य, चुनने योग्य; वृद्धिके योग्य ।
 प्रचेक-पु० [सं०] पीन चंदन ।
 प्रचेक-पु० [सं०] बोझ । वि० तीव्र गतिवाला ।
 प्रचोद-पु० [सं०] प्रेरणा करना; उत्तेजित करना ।
 प्रचोदक-वि०, पु० [सं०] प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक ।
 प्रचोद्व-पु० [सं०] प्रेरित करना; उत्तेजित करना; जाग्रत देना; आदिह ।

प्रचोदनी-स्त्री० [सं०] भटकदेवा; प्रेरण ।
 प्रचोदित-वि० [सं०] जिसे प्रेरणा की गयी हो, प्रेरित; उत्तेजित किया हुआ; आदिह; प्रेषित; धोषित ।
 प्रचोपी (विष्)-वि० [सं०] बढ़ाया देनेवाला; प्रेरित करने-वाला ।
 प्रच्छक-वि०, पु० [म०] पृष्ठनेवाला, प्रहनकर्ता ।
 प्रच्छक्-पु० [सं०] ढकनेवाला कपडा आदि, आच्छादन; विछावनकी चादर । -पट-पु० ढकने या ओढ़नेका कपडा (चादर, ओहार); नुरका; विछावन; विछावनकी चादर ।
 प्रच्छन-पु० [सं०] पृष्ठना, प्रहन करना ।
 प्रच्छना-स्त्री० [सं०] प्रहन; आमंत्रण ।
 प्रच्छन्न-वि० [सं०] ढका हुआ, आच्छन्न; छिपा हुआ, गुप्त । पु० चोर दरवाजा; शिक्की । -चारी (विष्)-वि० गुप्त रूपसे कार्य करनेवाला । -तस्कर-पु० गुप्त चोर ।
 प्रच्छर्द्व-पु० [सं०] प्राणवायुको नाकके द्वारा बाहर निकालनेकी क्रिया, रेचन; वमन, कै; करानेवाली दवा ।
 प्रच्छर्द्विका-स्त्री० [सं०] कै आनेका रोग, वमन ।
 प्रच्छादक-वि०, पु० [सं०] ढकनेवाला, आवृत करनेवाला; छिपानेवाला ।
 प्रच्छादन-पु० [म०] ढकने, आवृत करनेकी क्रिया; छिपानेकी क्रिया; उत्तरीय, ओढ़ना ।
 प्रच्छादित-वि० [सं०] ढका हुआ, आवृत; छिपाया हुआ ।
 प्रच्छान-पु० [सं०] घाव चोरना ।
 प्रच्छाय-पु० [सं०] घनी छाया; छायादार अगह ।
 प्रच्छालना* -सं० क्रि० धोना ।
 प्रच्छिल-वि० [सं०] जलहीन, सूखा हुआ ।
 प्रच्छेदक-पु० [म०] अविषमनीय पत्तिके प्रति पक्षों द्वारा गाथा जानेवाला गीत ।
 प्रच्छेदन-पु० [सं०] काटना; डकड़े-डुकड़े करना ।
 प्रच्यव-पु० [म०] पतन, अवन; क्षरण, पीछे हटना, प्रगति ।
 प्रच्यवन-पु० [सं०] पतन, क्षरण, चूना; हटना; हानि ।
 प्रच्यवन-पु० [सं०] हटनेके लिए प्रेरित करना; हटानेका साधन; श्रमन करनेवाला ।
 प्रच्युत-वि० [सं०] गिरा हुआ, पतित, भ्रष्ट; विचलित; क्षरित, झरा हुआ; निष्कासित; अगाथा हुआ ।
 प्रच्युति-स्त्री० [सं०] अपने स्थानसे भ्रष्ट होना, पतन; हानि ।
 प्रच्छालना* -सं० क्रि० धोना ।
 प्रच्छेद* -पु० प्रखेद, पनीना ।
 प्रजक* -पु० फल ।
 प्रजोद्य-पु० [मं०] एक राक्षस; एक बानर ।
 प्रजोधा-स्त्री० [मं०] अधिक निचला भाग ।
 प्रज्वल* -अ० दे० 'पर्यंत' ।
 प्रज-पु० [सं०] पति ।
 प्रजन-पु० [सं०] गर्भाधानके लिए नरपशुका मादासे संगम; संतान उत्पन्न करना; जन्म देनेवाला, जनक ।
 प्रजनन-पु० [सं०] संतान उत्पन्न करना; जन्म; शीर्ष; अग; पुरुषकी छिन्नैद्रिय; संतान; नरपशुका गर्भाधानके लिए मादामे संगम करना । वि० उत्पन्न करनेवाला ।
 प्रजनविता (दृ)-वि०, पु० [सं०] उत्पन्न करनेवाला ।

प्रकाशिका-क्री० [सं०] भाता ।
 प्रकल्पिष्णु-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला ।
 प्रकल्प-पु० [सं०] सृष्टि ।
 प्रकल्प-क्री० [सं०] बौमि, भय ।
 प्रकल्प-क्री० [सं०] विभव ।
 प्रकर्ष-वि० प्रवर्तित, अकता हुआ ।
 प्रकर्ष-क्री०-अ० कि० बहुत जलना ।
 प्रकल्प-पु० [सं०] इष्ट-व्यवस्था, वाप ।
 प्रकल्प-पु० [सं०] बात करना; गप करना ।
 प्रकल्पित-वि० [सं०] कहा हुआ । पु० जो बात कही गयी हो; वातालाप ।
 प्रकल्प-वि० [सं०] वेगवान्, तीव्र गतिवाला, तेज ।
 प्रकल्पित-वि० [सं०] बुद्ध्या हुआ; प्रेरित किया हुआ; चलाया हुआ ।
 प्रकवी(विन्)-वि० [सं०] अधिक वेगवाला, तेज । पु० दूत, हरकारा ।
 प्रजातक-पु० [सं०] यम ।
 प्रजा-क्री० [सं०] प्रजनन; संतति, औलाद; शुक्र, वीर्य; प्राणी; किसी राजा द्वारा शासित जनता; किसी राज्य या राष्ट्रकी जनता । -काम-वि० संतान चाहनेवाला, मत्तानेच्छु । पु० संतानकी कामना । -कार-पु० प्रजा उत्पन्न करनेवाला, सृष्टिकर्ता, मन्त्रा । -गुप्ति-क्री० प्रजा की रक्षा । -संतु-पु० बंशपरंपरा; वंश, संतान । -संज्ञ-पु० प्रजा या प्रजाके प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था । वि० प्रजा या प्रजाके प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित (शासन-व्यवस्था) । -तीर्थ-पु० जन्मका शुभ-काल । -द्व-वि० संतान देनेवाला, वंशपन दूर करने-वाला । -वा-क्री० वंशपन दूर करनेवाली एक ओषधि, गर्भराजी । -दान-पु० संतानोत्पत्ति; चौदी । -द्वार-पु० सूर्य । -वर्-पु० विष्णु । -नाथ-पु० मन्त्रा; मनु; दक्ष; राजा । -निषेक-पु० गर्भाधान । -प-पु० राजा । -पति-पु० सृष्टिका रचयिता, सृष्टिका अधिष्ठाता देवता, सृष्टिकर्ता, मन्त्रा; दक्ष आदि दस लोककर्ता जिन्हें मन्त्राने सृष्टिके आदिमें उत्पन्न किया था; विश्वकर्मा; सूर्य; अग्नि; विष्णु; यक्ष; राजा; जामाता; पिता, जनक; किर्नेद्रिय । -पाल-पालक-पु० राजा । -पालन-पु० प्रजाका पालन । -पालि-पु० शिव । -पाव-पु० राजाका पद । -बुद्धि-क्री० संतानकी बढ़ती, संतानकी बहुलता । -व्यापार-पु० प्रजाकी देख-भाल, प्रजाका हितचिन्तन । -सत्ता-क्री० दे० 'प्रजातंत्र' । -सत्ताक-सत्तात्मक-वि० (शासन-व्यवस्था) जिसमें शासन-सूत्र प्रजा या उसके प्रतिनिधियोंके हाथमें हो । -सूक्त(ञ्)-पु० मन्त्रा । -हित-पु० जल । वि० जो प्रजाके लिये हितकर हो । -हृदय-पु० एक प्रकारका साम ।
 प्रजापार-पु० [सं०] निद्राका अभाव, नींद न जाना, अनिद्रा; सतर्कता; रक्षक; बहुरा देनेवाला; विष्णु ।
 प्रजापारण-पु० [सं०] जागना ।
 प्रजापारक-वि० [सं०] अच्छी तरह जगा हुआ; सावधान ।
 प्रजास-वि० [सं०] उत्पन्न ।
 प्रजासा-क्री० [सं०] वह क्री जिससे संतान उत्पन्न हुई हो ।

प्रजासि-क्री० [सं०] प्रजा, संतान; संतान उत्पन्न करना, प्रजनन; प्रजनन-शक्ति; पौत्रकी क्षमति ।
 प्रजाप्यव-पु० [सं०] सूर्य; दक्ष ।
 प्रजावी(विन्)-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला (जैसे- 'वीरप्रजावी') । क्री० 'प्रजाविनी' ।
 प्रजावना-सं० कि० पूरी तरह जलाना; उग्रोत्त करना ।
 प्रजावती-क्री० [सं०] भार्गवी क्री । वि० क्री० गर्भवती; संतानवाली ।
 प्रजित-वि० [सं०] होँका हुआ, प्रेरित ।
 प्रजित्-वि० [सं०] विनयी ।
 प्रजित-पु० [सं०] बापु ।
 प्रजीवन-पु० [सं०] जीविका ।
 प्रजुरा-सं० कि० प्रवर्तित होना; प्रकाशित होना ।
 प्रजुरित, प्रजुलित-वि० दे० 'प्रवर्तित' ।
 प्रजेष्णु-वि० [सं०] संतानेच्छु ।
 प्रजेता, प्रजेध्वर-पु० [सं०] प्रजापति; राजा ।
 प्रजोग-पु० दे० 'प्रयोग' ।
 प्रजाटिका-क्री० [सं०] प्राकृतका एक छंद ।
 प्रज-वि० [सं०] प्रकृत बुद्धिवाला, बुद्धिमान्, सतिमान्; (किसी बातकी) जानकारी रखनेवाला (समासमें) । पु० बुद्धिमान् मनुष्य; पंडित, विद्वान् ।
 प्रज्ञा-क्री० [सं०] प्रज्ञ होनेका भाव, बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता ।
 प्रज्ञसि-क्री० [सं०] जमाने या हात करानेकी क्रिया या भाव; बुद्धि; संकेत, इशारा; प्रतीक्षा, कौशल; एक देवी; प्रशस्त बुद्धि ।
 प्रज्ञा-क्री० [सं०] बुद्धि, विवेक, मति; सरलता; विदुषी ।
 -काय-पु० एक पूर्वजिन, मंजुषी । -कूट-पु० एक बोधिसत्त्व । -गुप्त-वि० बुद्धि द्वारा रक्षित । पु० एक बौद्ध आचार्य । -चक्र(स्)-पु० धृतराष्ट्र; बुद्धिको नेत्र । वि० अंधा (जिसके लिये उसकी बुद्धि ही आँखका काम देती है); बुद्धिमान् । -पारमिता-क्री० दान, शील आदि छ पारमिताओंमेंसे एक, पूर्ण ज्ञान या सर्व-ज्ञता (बौ०) । -बाद-पु० विद्वत्तापूर्ण उक्ति । -बुद्ध-वि० जो बुद्धिमें बड़ा-चढ़ा हो; अधिक बुद्धिमान्; ज्ञान-बुद्ध । -सहाय-वि० बुद्धिमान्, सतिमान् । -हीन-वि० निर्वुद्धि, मूर्ख ।
 प्रज्ञात-वि० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ; स्पष्ट; विवे-चित; प्रसिद्ध, स्वानु, विभूत ।
 प्रज्ञाग्मा(अन्)-वि० [सं०] परम बुद्धिमान् ।
 प्रज्ञान-पु० [सं०] बुद्धि; चिह्न । वि० बुद्धिमान्, पंडित ।
 प्रज्ञापन-पु० [सं०] जताना, सूचित करना ।
 प्रज्ञाक-वि० [सं०] बुद्धिमान् ।
 प्रज्ञाबाह्(वत्)-वि० [सं०] चतुर, बुद्धिमान् ।
 प्रज्ञिक-वि० [सं०] बुद्धिमान् ।
 प्रज्ञी(विन्)-वि० [सं०] बुद्धिमान् ।
 प्रज्ञु-वि० [सं०] दे० 'प्रगतबालुक' ।
 प्रज्यलन-पु० [सं०] जलना, दहकना, जोरसे जलना, बलना ।
 प्रज्यलित-वि० [सं०] जलता हुआ, बलना हुआ; जला हुआ, दहका हुआ; चमकीला ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] उन्मत्त हाथ ।

प्रवीच-पु० [सं०] पक्षियोंकी एक प्रकारकी उड़ान, चारों ओर उड़ना । वि० जो उड़ गया हो ।

प्रव-पु० बड़ निश्चय, पण, प्रतिष्ठा । वि० [सं०] प्राचीन, पुराना ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] नाचनका अलका माग ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] विशेष रूपसे झुका हुआ; जो प्रणाम कर रहा हो, जो प्रणाम करनेके लिए झुका हो, झुलझुलाना; बका; विनीत, नम्र; शरणागत; चतुर; दक्ष । -काव-वि० जिसका शरीर झुका हो । -पाक-पाक-पु० शरणागतकी रक्षा करनेवाला । [जी० 'प्रणतपालिका' ।]

प्रवृत्त-जी० [सं०] झुकनेकी क्रिया या भाव; प्रणाम; विनय; नम्रता; शरणमें जाना, शरणागति ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] आवाज करना; जोरकी आवाज, चिन्ता-हटा; गरजना, गर्जन ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] झुंझ करता हुआ; गुंजार करता हुआ ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] झुकना; प्रणाम करना ।

प्रवृत्त-सं० क्रि० प्रणाम करना ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] प्रणाम करने योग्य, बंध ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] प्रेम, प्रीति; प्रीतिपुत्रक प्रार्थना; विश्वास; निर्वाण, मोक्ष; उधारना, हज्ज; अर्द्धा; नायक; नेतृत्व ।

-कण्ड-पु० नायक और नायिकाका आपसी संग या प्रीतिमग्न नायक-नायिकाका एक-दूसरेसे रूठ जाना ।

-कुपित-वि० जो प्रणय-कलहके कारण रूठ गया हो । [जी० 'प्रणयकुपित' ।]-कोच-पु० नायिकाका नायकसे रूठ जाना, मान । -प्रकर्ष-पु० प्रेमका अतिरेक ।

-अर्थ-पु० मैत्री न रहना; विश्वासघात । -बचव-पु० प्रेमपूर्ण बचन । -विद्यात, -विदित-पु० प्रीतिपुत्रक प्रार्थनाकी अस्वीकृति । -विमुख-वि० प्रेम या मैत्रीकी ओर जिसकी प्रवृत्ति न हो ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] जाना; ले जाना; करना; निषेध करना; चिन्तना; रचना; निर्वाण; वितरण (दंड) देना, लगाना; अक्षिका संस्कार करना ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] ले जाने योग्य; संस्कार करने योग्य (भक्ति) ।

प्रवृत्त-जी० [सं०] प्रणयपुत्र होनेका भाव, अनुरक्ति ।

प्रवृत्त-जी० [सं०] प्रेम करनेवाली, प्रेमिका; काता, पत्नी ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] प्रेम करनेवाला, अनुरागी, प्रणयपुत्र; चाहनेवाला, इच्छुक; वनिज (अर्थ) । पु० मित्र; प्रेमी; पति; प्रार्थी; सेवक; उपासक ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] ओंकार; परमेश्वर; लोक ।

प्रवृत्त-सं० क्रि० प्रणाम करना ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] जो छुट हो गया हो; विनष्ट; क्षुत् ।

प्रवृत्त-वि० [सं०] वही नाकाल ।

प्रवृत्त-जी० [सं०] दे० 'प्रणाजी'; श्वर ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] तारुमति, जोरकी आवाज; गर्जन; गुंजार; विनयिनीकी आवाज आदि; प्रसन्नताका झुलझुलानेवाला विशेष प्रकारका शब्द, शीत्कार आदि;

कर्मनाम नामका कानका रोग जिसमें यों ही सुर्ग आदिकी ध्वनि सुनाई देती है ।

प्रणाम-पु० [सं०] झुकना, नत होना; अपनी कण्ठ या विनय सूचित करनेके लिए किसीके सामने झुकने, हाथ जोड़ने आदिका व्यापार, नमस्कार, अभिवादन ।

प्रणामाञ्जलि-जी० [सं०] हाथ जोड़कर किया जानेवाला प्रणाम, करबड़ प्रणाम ।

प्रणामी (मित्र)-वि० [सं०] झुकनेवाला, प्रणाम करनेवाला ।

प्रणाम-पु० [सं०] नेता, पथप्रदर्शक सेनापति ।

प्रणाम-वि० [सं०] प्रीति करने योग्य; प्रिय; विरक्त; अभिलाषरहित; साधु । पु० चोर ।

प्रणाल-पु० [सं०] पानी बहनेका नाला ।

प्रणालिका-जी० [सं०] नाली; अविच्छिन्न क्रम ।

प्रणाली-जी० [सं०] पानी बहनेका कृत्रिम नाला, बरनाला; परपरा, प्रया; दो बड़े जलमार्गोंकी मिलानेवाला छोटा जलमार्ग; पद्धति; रीति, रंग (हिं०) ।

प्रणाल-पु० [सं०] विनाश, बरबादी; क्षुत् होना; गायब होना; मृत्यु ।

प्रणाल-पु० [सं०] नाश करनेकी क्रिया या भाव, नष्ट करना; विनाश ।

प्रणाली (विश्व)-वि० [सं०] नाश करनेवाला ।

प्रणालि-वि० [सं०] जिसका जुबन किया गया हो; चूसा हुआ ।

प्रणाल-पु० [सं०] रखना, रखा जाना; व्यवहार, उपयोग; प्रयत्न; अभिनिवेश, आग्रह; एक प्रकारकी समर्थि (बो०); भक्तिविशेष; अर्पण; कर्मके फलका स्वाग; चित्तकी एकाग्रता; प्रवेश; प्रार्थना ।

प्रणाली (विश्व)-वि० [सं०] (गुप्तचर) भेजने या नियुक्त करनेवाला ।

प्रणालि-पु० [सं०] भेज लेना; गुप्तचर भेजना; गुप्तचर; अनुचर; वाचन; अवधान; विशेष कार्यसे भेजा जानेवाला दूत; दूत या एजेंट (सीक्रेट एजेंट) ।

प्रणालि-पु० [सं०] गुप्तचर भेजना; नियुक्ति, प्रयोग ।

प्रणालि-पु० [सं०] भारी शब्द, बोर ध्वनि ।

प्रणालित, प्रणालित-पु० [सं०] प्रणाम करना; चरणोंपर गिरना ।

प्रणालि-वि० [सं०] रखा हुआ, स्थापित; प्राप्त; फैलाया हुआ; समाधिस्थ; कृतकल्प; सतक; गुप्त रूपसे पता लगाया हुआ मिश्रित ।

प्रणी-पु० [सं०] ईश्वर ।

प्रणीत-वि० [सं०] बनाया हुआ, निर्मित, रचा हुआ; निष्क; फैला हुआ; अलग किया हुआ; प्रिय; जिसका प्रवेश कराया गया हो; प्रवेशित; विहित; जिसका संस्कार किया गया हो; संस्कृत; (दंडके रूपमें) लगाया हुआ । पु० अंग द्वारा संस्कृत अग्नि; पकाया हुआ पदार्थ ।

प्रणीत-जी० [सं०] अंग-संस्कृत जल रखनेका एक पात्र ।

प्रणीत-वि० [सं०] दे० 'प्रणेव' ।

प्रणुत-वि० [सं०] स्तुत ।

प्रणुत-वि० [सं०] भगाया हुआ, निष्कासित ।

प्रभुत्व-वि० [सं०] प्रेरित; फेंका हुआ; भेजा हुआ, प्रेषित; भगाया हुआ; गतिभुक्त किया हुआ; कपित ।

प्रमेयत्व-पु० [सं०] धोना, प्रहालना; नहाना; बह पानी, जिससे कोई वस्तु धोयी जाय ।

प्रमेया(तु)-पु० [सं०] पथप्रदर्शन करनेवाला, नेता; बनाने-वाला, निर्माता; पुस्तक या ग्रंथका रचयिता, लेखक; किसी विज्ञात या सतका प्रसंगक ।

प्रमेय-वि० [सं०] ले जाने योग्य, प्रापणीय; पथप्रदर्शनके योग्य; जिसका नेतृत्व किया जाय; जो किसीके वशमें हो, अधीन; करने योग्य; निश्चय करने योग्य; जिसके औक्तिक संस्कार किये जा चुके हों ।

प्रमेय-पु० [सं०] प्रेरित करना; भेजना, प्रेषण ।

प्रमोदित-वि० [सं०] जिसे प्रेरणा की गयी हो, प्रेरित; भेजा हुआ, प्रेषित ।

प्रत्यूष-खी० रोदा, अनुष्ठी की रोटी ।

प्रत्यक्ष-वि० दे० 'प्रत्यक्ष' ।

प्रत्यक्षा-खी० प्रतिष्ठा ।

प्रत्यक्ष-वि० दे० 'प्रत्यक्ष' ।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] कैला हुआ या कैलाया हुआ; अशुद्ध; तना हुआ या ताना हुआ; विस्तीर्ण ।

प्रत्यक्ष-खी० [सं०] विस्तार; लता, वल्ली ।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] प्राचीन, पुराना ।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] अति क्षीण; अति सूक्ष्म; बहुत पतला; अत्यल्प, तुच्छ ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] तपाना, तप्त करना ।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] विशेष रूपसे तपाया हुआ; पीकित ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] एक प्रकारका दवा ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] पार करना ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] प्रकृत तर्क, वितर्क; कल्पना करना, समझना ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] वितर्क; संदेह, शंका; न्यायशास्त्र ।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] जिनके संबंधमें तर्क किया जा सके; कथ्ययोग्य ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] ताड़ना; ताड़ना करनेवाला; विष्णु; काशीके प्राचीन राजा दिवोदासका पुत्र ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] कैलायी दुर्गे पौर्वो जंगलियों सहित इत्येक; पञ्जा; सप्त अधोलोकोमेंसे एक ।

प्रत्यक्ष-वि० प्रत्यक्ष ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] फैलाव, विस्तार; लता; लतारतु; मिरगी रोग ।

प्रत्यक्ष-खी० [सं०] शाखाओं-प्रशाखाओंवाली दूरतक फैलेवाली लता ।

प्रत्यक्ष(निज्)-वि० [सं०] दूरतक फैला हुआ; जिसमें तंतु हों ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] राजाका कोश-रक्ष-अनित तेज; वीरता; प्रभुत्व, पराक्रम आदिका आत्माक फैलानेवाला प्रभाव, इकावत; प्रकृत ताप; मदराका पेय ।

प्रत्यक्ष-पु० [सं०] तप्त करना; दुःख देना, सताना; विष्णु; शिव; एक नरक । वि० तप्त करनेवाला; पीकक ।

प्रत्यक्ष(वत्)-वि० [सं०] प्रतापी । पु० विष्णु; शिव ।

प्रतापस-पु० [सं०] बहुत बड़ा तपस्वी; सकेर मूढ़ाद ।

प्रतापी(विज्)-वि० [सं०] प्रतापवाला; दुःख देनेवाला, सतानेवाला ।

प्रतारक-वि०, पु० [सं०] वचक; ठग; धूर्त ।

प्रतारण-पु० [सं०] वचना, ठगी ।

प्रतारणा-खी० [सं०] दे० 'प्रतारण' ।

प्रतारित-वि० [सं०] जो ठगा गया हो, वंचित ।

प्रतिष्ठा-खी० दे० 'प्रत्यक्षा' ।

प्रति-खी० नकल; बहुत-सी पुस्तकों आदिमेंसे एक अदद (जैसे-दस पुस्तककी सभी प्रतियाँ विक गयीं) । उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले आकर विरोध, विपरीतता (प्रतिकार, प्रतिबन्ध), बदला (प्रतिदान, प्रतिकल), शोषा (प्रतिदिन, प्रतिगृह), सम्प्रत्य (प्रतिदेवता, प्रतिद्वीप), सामना, सामुख्य (प्रत्यक्ष), खंडन (प्रतिवाद), मुकाबला, जोष (प्रतिघट) आदिका बोधन करता है । अ० ओर, तरफ; संबंधमें, विषयमें; मुकाबलेमें ।

प्रतिकर्तव्य-पु० [सं०] प्रतिपक्षी, शत्रु ।

प्रतिक-वि० [सं०] जो एक कार्यापनमें खरोदा गया हो ।

प्रतिकर-पु० [सं०] विस्तीर्ण होनेका भाव, विस्तीर्णता; विशेष; प्रतिशोध; क्षतिपूर्ति ।

प्रतिकरणीय-वि० [सं०] जो रोका जाय, जिसका प्रतिरोध किया जाय ।

प्रतिकर्तव्य-वि० [सं०] चुकाने या अदा करने योग्य (कण); प्रतिकार करने योग्य; जिसका प्रतिकार किया जाय; विकल्पा करने वा अच्छा करने योग्य (रोग) ।

प्रतिकर्ता(तु)-वि०, पु० [सं०] अपकारका बदला देनेवाला, प्रत्यपकारक; प्रतिकार करनेवाला ।

प्रतिकर्म(तु)-पु० [सं०] बदला; प्रतिकार; श्रृंगार, प्रसाधन ।

प्रतिकर्ष-पु० [सं०] पकन करना; संयोग ।

प्रतिकर्ष-पु० [सं०] मुकाबलेका हिसा ।

प्रतिकर्ष-वि० [सं०] चाबुकी परबाह न करनेवाला, सरकश (शोष) ।

प्रतिकर्ष-पु० [सं०] नेता; सहायक; दूत, वार्ताहर ।

प्रतिकामिनी-खी० [सं०] सपली, सौत ।

प्रतिकार-पु० [सं०] पुतला, प्रतिमूर्ति; शत्रु; बाणका लक्ष्य ।

प्रतिकार-पु० [सं०] बैर निकालना, बदला चुकाना; बह अपकार जो किसी अपकारके बदले किया जाय; विकल्पा, इलाज; किसी बातके जबाबमें किया जानेवाला कार्य; एक प्रकारकी संधि जिसमें उपकारके बदलेमें उपकार करनेकी प्रतिष्ठा की जाती है । -**कर्म**(तु)-पु०

प्रतिकार करनेका काम; विरोध । -**विधान**-पु० विकल्पा, इलाज ।

प्रतिकारक-वि०, पु० [सं०] प्रतिकार करनेवाला ।

प्रतिकारी(विज्)-वि०, पु० [सं०] प्रतिकार करनेवाला ।

प्रतिकार्य-वि० [सं०] दे० 'प्रतिकर्तव्य' ।

प्रतिकार्य-पु० [सं०] प्रतिकरूप; साध्य (प्रायः समाप्तमें) ।

प्रतिकर्ष-पु० [सं०] बह जिसके साथ कोई जुआरी खेलता हो, जुआ खेलनेवाला कोई ।

प्रतिबुद्धि-वि० [सं०] बुद्धा हुआ, देहा ।
 प्रतिबुद्ध-पु० [सं०] सार ।
 प्रतिकूल-वि० [सं०] विरुद्ध पक्षका अवलंबन करनेवाला;
 जो अनुकूल न हो, विपरीत, विरुद्ध, अनुकूलका उल्टा ।
 पु० विरोध, प्रतिरोध । -कारी (रिन्), -कृष्, -कारी-
 (रिन्)-वि० विरुद्ध आचरण करनेवाला, विरोधी ।
 -वर्षा-वि० जो देखनेमें अनुभू या अग्रिम लगे ।
 -प्रवर्त्ती (रिन्)-वि० गलत राह जानेवाला (रोत); जो
 अनुचित बात बोले (रसना) । -बाह-पु० विरोधमें कुछ
 कहना, खंडन । -वृत्ति-वि० 'प्रतिकूलकारी' ।
 प्रतिकूल-स्त्री० [सं०] सपत्नी ।
 प्रतिकूलिक-वि० [सं०] विरोधी, शत्रुता रखनेवाला ।
 प्रतिकूल-वि० [सं०] जिसका प्रतिकार या प्रतिशोध किया
 गया हो । पु० प्रतिहार, विरोध ।
 प्रतिकृति-स्त्री० [सं०] प्रतिकृप, प्रतिमा; बदला, प्रतिकार;
 साक्ष्य, प्रतिविम्ब; प्रतिनिधि ।
 प्रतिकूल-वि० [सं०] निष, गर्हित; दो बार जोता हुआ
 (लेत) ।
 प्रतिकोप-पु० [सं०] विरोधीके प्रति होनेवाला क्रोध ।
 प्रतिक्रम-पु० [सं०] उल्टा क्रम ।
 प्रतिक्रिया-स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिकार'; किसी कार्याके
 परिणामके रूपमें होनेवाला कार्य; मृगार, प्रसाधन ।
 प्रतिकुल-वि० [सं०] दीन, दुःखी ।
 प्रतिकूल-वि० [सं०] प्रतिकारस्वरूप क्रूरता करनेवाला ।
 प्रतिकोप-पु० [सं०] क्रोधके प्रति होनेवाला क्रोध ।
 प्रतिकूल-अ० [सं०] प्रत्येक क्षणमें, हरदम, निरंतर ।
 प्रतिकूल-पु० [सं०] अंगरक्षक; सेवक ।
 प्रतिक्रिस्त-वि० [सं०] मेजा हुआ, प्रेषित; जो हुलाक
 लौटा दिया गया हो; जो लौटा गया हो, बारित; जिसका
 निवारण किया गया हो; जिसका तिरस्कार किया गया
 हो; निरित; जिससे क्षति पहुँचायी गयी हो; जिसपर झूठा
 दोष लगाया गया हो । पु० दबा ।
 प्रतिकूल-पु० [सं०] छीक ।
 प्रतिक्रिस्त, प्रतिक्रिस्त-पु० [सं०] दूर करना; खंडन; तिर-
 स्कार; फेंकना; प्रतिवर्गिता, होब ।
 प्रतिकूल-पु० [सं०] जन्मके समय बच्चेकी एक विशेष
 स्थिति जिसमें योगिमार्गका अवरोध हो जाता है ।
 प्रतिक्रिया-वि० [सं०] बहुत अधिक प्रसिद्ध ।
 प्रतिक्रिया-स्त्री० [सं०] बहुत अधिक प्रसिद्ध ।
 प्रतिकूल-वि० [सं०] लौटा हुआ; आगे-पीछे उल्टा हुआ;
 विस्तृत । पु० लौटना; पक्षियोंकी एक प्रकारकी गति,
 पक्षियोंका आगे-पीछे जाते हुए उड़ना ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] लौटना ।
 प्रसिद्धान-स्त्री० [सं०] किसीके गर्वनके जवाबमें किया
 गया गर्वन ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] निरित ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] छोटा पहाड़, पहाड़ी; पहाड़के
 सामनेका पहाड़ ।
 प्रसिद्धान, प्रसिद्धान-अ० [सं०] घर-घर ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] ग्रहण किया हुआ; अंगीकार किया

हुआ; व्याप्य हुआ ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य ।
 प्रसिद्धान-स्त्री० दे० 'प्रतिष्ठा' ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] ग्रहण करना, स्वीकार करना; विधि-
 पूर्वक दान की जानेवाली वस्तु स्वीकार करना; दान
 लेना जो ब्राह्मणोंके ६ कर्मोंके अंतर्गत है; लेनेवाला; ग्रहण
 करनेवाला; अनुग्रह; उपहार; भेंट दान; पक्षीके रूपमें
 ग्रहण करना, व्याहना; सेनाका पिछला भाग; पीकदान;
 कानों द्वारा ग्रहण करना, सुनना; स्वीकार करना ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] स्वीकार करना; दान लेना; पक्षीके
 रूपमें ग्रहण करना, व्याहना; पात्र ।
 प्रसिद्धान (रिन्)-वि०, पु० [सं०] दान लेनेवाला ।
 प्रसिद्धान (रिन्)-पु० [सं०] दान लेनेवाला; पति ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] दान लेना; पीकदान; प्रसिद्धानकारक ।
 प्रसिद्धान, प्रसिद्धान (रिन्)-वि०, पु० [सं०] दान
 लेनेवाला ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; स्वीकार करने
 योग्य ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] रकाबट, बाधा; क्रोध; मूच्छा; विरोध;
 लड़ाई, मारपीट; शत्रु । वि० विरोध करनेवाला; शत्रुता
 करनेवाला ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] निवारण; आघातके बदले किया गया
 आघात; मारण, बध; रकाबट, बाधा ।
 प्रसिद्धान-वि०, पु० [सं०] प्रतिघात करनेवाला ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] मारण, बध; निवारण ।
 प्रसिद्धान (रिन्)-वि०, पु० [सं०] निवारण करनेवाला;
 बाधक; विरोध करनेवाला; विरोधी; क्षतिकारक । स्त्री०
 'प्रतिघातिनी' ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] शरीर ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] एक प्रकारका आकाशीय उत्पात
 जिसमें दो चंद्र दिखाई देते हैं ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] जवाबी चक्र; शत्रुमेना ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] जिसका प्रचार किया गया हो;
 घोषित ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] वनाच, मृगार, प्रसाधन ।
 प्रसिद्धान (रिन्)-वि० [सं०] जन्मास करनेवाला ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] बार-बार गौर करना, सोचना ।
 प्रसिद्धान-स्त्री० [सं०] प्रतिकार करनेकी इच्छा ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] किसीके विरुद्ध प्रेरित या उत्ते-
 जित किया हुआ ।
 प्रसिद्धान, प्रसिद्धान-पु० [सं०] प्रतिमा, प्रतिमूर्ति;
 चित्र ।
 प्रसिद्धान-पु० [सं०] डॉकनेवाली वस्तु, आच्छादन,
 आवरण ।
 प्रसिद्धान-वि० [सं०] आवृत; बसाच्छादित; छिपा हुआ,
 गुप्त ।
 प्रसिद्धान-स्त्री० दे० 'प्रतीक्षा' ।
 प्रसिद्धान-स्त्री० [सं०] प्रतिकृप; प्रतिमा; प्रतिविम्ब,
 परछाई ।
 प्रसिद्धान-स्त्री० [सं०] प्रतिमूर्ति; प्रतिमा ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] बाधा, विरोध; प्रतिरोध; खंडित करना ।

प्रतिष्ठाई, प्रतिष्ठाई, प्रतिष्ठाई - की० परछाई, प्रतिविम्ब ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] औपका अगला भाग ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] पुनर्जन्म ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] उत्तर ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] टाछल-पट्टेवाला उच्चर (जो नरमीयतके साथ दिया जाय) ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] निगरानी, देखरेख, पहरा ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] देखरेख या निगरानी करना, पहरा देना ।

प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा-की० [सं०] गन्धके भीतरकी धरी ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] फिरसे जो जाना, पुनर्जीवन ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] एक निग्रहस्थान (न्या०) ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] किसी कार्यकी करने-न करने आदिका वद संकल्प; बाधा; अनुमान-बाधक के पाँच अवयवोंमें पहरा जिसमें साम्यका निर्देश किया जाता है (जैसे - पर्वत बहिमान् है-न्या०); अभिरोध, दावा; स्वीकार, अंगीकार । -पत्र, -पत्रक-पु० वह पत्र या कामज जिसमें लेखकमें कोई प्रतिष्ठा की गयी हो, इकरारनामा, शर्तनामा । -पारुण-पु० प्रतिष्ठा पूरी करना, प्रतिष्ठाकी रक्षा, प्रतिष्ठाका निर्वाह । -संग-पु० प्रतिष्ठा तोड़ देना, प्रतिष्ठा न निभाना । -विरोध-पु० प्रतिष्ठा तोड़ देना; एक निग्रहस्थान (न्या०) । -विवादित-वि० जिसकी सगाई हो गयी हो । -सम्न्यास-पु० प्रतिष्ठासंग; एक निग्रहस्थान (न्या०) । -हानि-की० एक निग्रहस्थान ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] जिसकी या जिसके विषयमें प्रतिष्ठा की गयी हो, स्वीकार किया हुआ । पु० प्रतिष्ठा, वद संकल्प ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] वयान, वक्तव्य ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] प्रतिष्ठा; स्वीकार ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] जिसके विषयमें प्रतिष्ठा की जाय, प्रतिष्ठा करने योग्य । पु० स्तुति करनेवाला, बंदी, स्तुतिपाठक ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] प्रतिष्ठा शास्त्र । -सिद्धांत-पु० प्रतिष्ठा शास्त्रसे लिया हुआ सिद्धांत ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] बाधा; कर्णधार, महाह ।

प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा-पु० [सं०] एक प्रकारका ताल (संगीत) ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] कुजी, चाभी ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] एक प्रकारका वातरोग ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] आश्वासन पाठन न करनेवाला, धृष्ट ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] बढेमें दिया हुआ; बापस किया हुआ ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] किसी की हुई वस्तुके बढेमें दूसरी वस्तु देना, बदला, विनिमय; निक्षेप या धरोहर बापस करना ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] फाटना, चौरना, विदीर्ण करना; युक्त ।

प्रतिष्ठा-अ० [सं०] प्रत्येक दिन, हर रोज, नित्य ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] सूर्य ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] बदलेमें भेजा हुआ दूत ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] जो बदला या लौटाया जाय, बदलने वा लौटाने योग्य । पु० खरीदकर लौटावी हुई चीज ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] दो तुल्य वस्तुनामोंकी लक्षाई; प्रतिष्ठा, शत्रु ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] प्रतिष्ठा होनेका भाव; बराबर-बालोंकी लक्षाई ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] विपक्षी, विरोधी, शत्रु । वि० मुकाबला करनेवाला, प्रतिपक्षी ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] निराकरण ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] आक्रमण ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] दूसरे धोबेके साथ जुटा हुआ घोड़ा ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] किसी शब्दका वह प्रतिकृप जो उसके किसी बाधक पदार्थमें टकरानेपर उत्पन्न होता है और मूल शब्दके उपरांत सुनाई पड़ता है, किसी शब्दके उपरांत सुनाई पड़नेवाला उसीसे उत्पन्न तदनुकृप शब्द, गुंज ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] गुंजा हुआ ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] दे० 'प्रतिष्ठा' ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] गुंजाया हुआ ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] आशीर्वादके साथ अभिनंदन करना; धन्यवाद देना; बधाई देना; प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करना ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] प्रवीण ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] नमस्कारके जबाबमें किया गया नमस्कार, प्रत्यभिवादन ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] नूतन, नया ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] उपनामी ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] दे० 'प्रतिष्ठा' ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] जहाँ या जिसमें प्रतिष्ठा हुआ हो, जिससे प्रतिष्ठा उठा हो, प्रतिष्ठा-वि० ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] नायकका प्रतिष्ठा (सा०); प्रतिष्ठा ।

प्रतिष्ठा-की० [सं०] प्रतिष्ठा-वि० की ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] श्रद्धा, विश्वास ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] प्रतिकृप, प्रतिमा; वह व्यक्ति जो किसीके स्थानपर उसका कार्य करे, किसीका स्थानापन्न व्यक्ति; किसी वैदिक कृत्य या औषधके काम आनेवाले द्रव्यके अभावमें उसके स्थानपर प्रयुक्त होनेवाला द्रव्य; प्रतिभू, जामिन ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] प्रतिनिधिका भाव; प्रतिनिधिका कार्य ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] पहलेसे स्थिर, निर्धारित किया हुआ, पूर्वनिश्चित ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] सामान्य नियम या व्यवस्था ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] निश्चित, विजित; अपने काममें लाया हुआ ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] पुनः उल्लेख या कथन करना ।

प्रतिष्ठा-वि० [सं०] जिसका पुनः कथन किया जाय ।

प्रतिष्ठा-पु० [सं०] बदला लेना, प्रत्यपकार करना;

लौढात् ।

प्रतिनिवर्तन-पुं० [सं०] निवारण; लौढात् ।

प्रतिनिवर्तित-वि० [सं०] लौढात्प्राप्त हुआ ।

प्रतिनिवर्तन-पुं० [सं०] एक तरहकी विद्युत्की योधाक ।

प्रतिनिविष्ट-वि० [सं०] जो बद्ध हो गया हो । -मूर्ख-वि० जलमूर्ख ।

प्रतिनिवृत्त-पुं० [सं०] विरोधी मत ।

प्रतिनिवृत्त-पुं० [सं०] बदला, प्रतिकार ।

प्रतिनोद-पुं० [सं०] पीछे हटाना; दूर भगाना ।

प्रतिप-पुं० [सं०] राजा शांतनुके पिता ।

प्रतिपक्ष-पुं० [सं०] विरोधीका पक्ष, विरुद्ध पक्ष, विपक्ष ; शत्रु, विरोधी; प्रतिवादी, मुहाल्लेह । वि० सबन्ध, समान ।

प्रतिपक्षता-स्त्री० [सं०] प्रतिपक्षका भाव, विरोधिता; नावा ।

प्रतिपक्षित-वि० [सं०] (बह बैतु) जो सप्ततिपक्ष नामक दोषसे युक्त हो (न्या०) ।

प्रतिपक्षी(स्त्रिय)-पुं० [सं०] शत्रु, विरोधी ।

प्रतिपक्ष-पुं० दे० 'प्रतिपक्षी' ।

प्रतिपक्षी-पुं० दे० 'प्रतिपक्षी' ।

प्रतिपण-पुं० [सं०] समान मूल्य, एक-सा मूल्य ।

प्रतिपद्-स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिपद्' । -मूर्ख-पुं० एक पुराना राजा, दगका ।

प्रतिपत्ति-स्त्री० [सं०] प्राप्त करना, पाना, प्राप्ति; ज्ञान, बोध; बुद्धि, प्रज्ञा; स्वीकृति; कर्तव्यका ज्ञान; आदर, सम्मान; गौरव; उन्नति; बद्ध निश्चय, संकल्प; प्रसिद्धि; कार्यात्म; स्वाध्याय; परोक्षा, धर्म; प्रयोग; प्रतिपादन; प्रमाण । -कर्म(स्त्री)-पुं० वह कर्म जिसकी कोई विशेषता न हो, फलरहित कर्म (जैसे-पूजित प्रतिमाकी जलमें डुबाना-नीमांसा) । -हस्त-वि० कार्यकुशल । -पट्ट-पुं० नगाका । -जेव-पुं० मतमेव । -विचारद-वि० कार्य-कुशल ।

प्रतिपत्तिमाद्(मद्)-वि० [सं०] बुद्धिमान् ; प्रसिद्ध ; कार्यकुशल ।

प्रतिपत्ति-स्त्री० [सं०] करेही ।

प्रतिपद्-अ० [सं०] पग-पगपर ।

प्रतिपदा, प्रतिपदी-स्त्री० [सं०] पक्षकी पक्षकी तिथि, परिवा ।

प्रतिपद्-स्त्री० [सं०] प्रवेश; मार्ग; आरंभ, उपक्रम; आरंभिक शोक; शुक्ल या कृष्ण पक्षकी पहली तिथि, परिवा; बुद्धि, प्रज्ञा; एक पुराना राजा, दगका; बेगी, पंक्ति ।

प्रतिपक्ष-वि० [सं०] प्राप्त; आरंभ किया हुआ, उपकांत; स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत; किया हुआ; वादा किया हुआ; जिसका उत्तर दिया गया हो; पराभूत; जाना हुआ, अगत; सम्मानित, आदर; साधित किया हुआ, प्रमाणित ।

प्रतिपक्षी-स्त्री० [सं०] शत्रुता, शत्रुत्व ।

प्रतिपक्ष-पुं० [सं०] जुपर्य प्रतिपक्षीका लगावा हुआ दौड़ ।

प्रतिपक्ष-वि०, पुं० [सं०] देनेवाला; निरूपण करनेवाला; व्याख्यात करनेवाला; उत्पादक; उत्पादक; पूरा करनेवाला ।

प्रतिपादन-पुं० [सं०] ज्ञान कराना, बोधन; किसी विषय-का समग्र भाग कथन, निरूपण; किसी विषयका स्थापन; लौढात्, प्रत्यर्पण; दान; आरंभ करना, उपक्रम करना; पूरा करना; उत्पन्न करना ।

प्रतिपादयिता(यु)-वि०, पुं० [सं०] शिक्षा देनेवाला; व्याख्याकार; शिक्षण-समझानेवाला; देनेवाला ।

प्रतिपादित-वि० [सं०] प्रदर्शित; निरूपित, प्रमाणित; उत्पादित; धोषित, कथित ।

प्रतिपाद्य-वि० [सं०] जिसे प्रमाणित किया जाय; जिसका स्पष्टीकरण किया जाय; देय ।

प्रतिपाय-पुं० [सं०] पीना; पीनेका पानी ।

प्रतिपाय-वि० [सं०] अपकारके बदले अपकार करनेवाला; जो दुराईका बदला दुराईसे ले । पुं० दुराईके बदले दुराई करना ।

प्रतिपापी(पितृ)-वि० [सं०] दे० 'प्रतिपाप' ।

प्रतिपार-पुं० पाठन करनेवाला; रक्षण, पाठन-'तीन लोक जाके यहिभार । सो काहे न करै प्रतिपार'-कबीर ।

प्रतिपारना-सं० कि० पाठन करना; रक्षा करना ।

प्रतिपाठ-पुं० दे० 'प्रतिपाठक'; 'प्रतिपाठन' ।

प्रतिपाठक-पुं० [सं०] पाठन करनेवाला, पाठक; रक्षक ।

प्रतिपाठन-पुं० [सं०] पाठन करना; रक्षा करना; प्रतीक्षा करना ।

प्रतिपाठना-सं० कि० पाठन करना, पाठना; रक्षा करना ।

प्रतिपाठनीय-वि० [सं०] दे० 'प्रतिपात्य' ।

प्रतिपाठित-वि० [सं०] जिसका पाठन किया गया हो, पाठित; जिसकी रक्षा की गयी हो, रक्षित; जिसका अभ्यास या अनुगमन किया गया हो ।

प्रतिपात्य-वि० [सं०] पाठन करने योग्य; रक्षा करने योग्य ।

प्रतिपित्तु-वि० [सं०] प्राप्त करनेकी इच्छा करनेवाला ।

प्रतिपीडन-पुं० [सं०] कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना ।

प्रतिपुष्ट, प्रतिपुष्ट-पुं० [सं०] वह मनुष्य जो किसीका स्थानापन्न होकर काम करे, प्रतिनिधि; साथी; पुत्रला; आदमीका पुत्रला जिसे बोर धरमें स्वयं ब्रुसनेके पहले वह जाननेके लिए पैका करते थे कि कोई जगा तो नहीं है ।

प्रतिपुष्टक-स्त्री० [सं०] किसी पुस्तक या लेखकी हस्त-लिखित प्रतिका नकल ।

प्रतिपूजन-पुं० [मं०] अभिवादनके बदले अभिवादन करना; आवमगत करना ।

प्रतिपूजा-स्त्री० [सं०] दे० 'प्रतिपूजन' ।

प्रतिपूजित-वि० [सं०] जिसका प्रतिपूजन किया गया हो ।

प्रतिपूज्य-वि० [सं०] प्रतिपूजनके योग्य ।

प्रतिपूज्य-वि० [सं०] दे० 'प्रतिपूज्य' ।

प्रतिपौषक-पुं० [सं०] सहायक; समर्थक ।

प्रतिपौषिक-वि० [सं०] (पंडी-सेप्टिक) जो सड़न या मवाद न उत्पन्न होने दे ।

प्रतिप्रणाम-पुं० [सं०] प्रणामके उत्तरमें किया जानेवाला प्रणाम ।

प्रतिप्रस-वि० [सं०] बदलेमें दिया हुआ, प्रत्यर्पित ।

प्रतिप्रधान-पु० [सं०] प्रतिदान, प्रत्यर्पण ।
प्रतिप्रभा-खी० [सं०] परछाई ।
प्रतिप्रधाप्य-पु० [सं०] लौटना, बापसी ।
प्रतिप्रघन-पु० [सं०] प्रघनके बदलेमें पूछा जानेवाला प्रघन; उत्तर ।
प्रतिप्रसव-पु० [सं०] निषिद्धका पुनर्विधान; अपवादका अपवाद; प्रतिजन्म ।
प्रतिप्रसृत-वि० [सं०] विशेष अवसरपर निषिद्ध होते हुए भी स्वीकार किया हुआ ।
प्रतिप्रस्थाता(तृ)-पु० [सं०] लोह्व सीमवाणी कल्पिकों-मेंसे एक ।
प्रतिप्रस्थान-पु० [सं०] शत्रुके पक्षमें जाना, शत्रुसे मिल जाना ।
प्रतिप्रहार-पु० [सं०] प्रहारके जवाबमें किया जानेवाला प्रहार ।
प्रतिप्रकार-पु० [सं०] दुर्गका बाहरी परकोटा ।
प्रतिप्रिय-पु० [सं०] बदलेमें की जानेवाली कृपा या सेवा ।
प्रतिप्रयन-पु० [सं०] पीछेकी ओर कूटना ।
प्रतिफल-पु० [सं०] प्रतिविष, प्रतिच्छाया; किसीके किये हुएका अनुरूप प्रतिकार; परिणाम; नतीजा; पुरस्कार, वह जो बदलेमें दिया जाय ।
प्रतिफलक-पु० [सं०] अक्स टाकने, बस्तुको प्रतिफलित करनेका यन्त्र ।
प्रतिफलन-पु० [सं०] दे० 'प्रतिकल' ।
प्रतिफलित-वि० [सं०] प्रतिविधित; जिसका बदला किया गया हो; प्रतिकृत ।
प्रतिफलक-वि० [सं०] प्रकुल ।
प्रतिबंध-पु० [सं०] बाँधनेकी क्रिया या भाव, बंधन; रुकावट, बाधा, अवरोध; प्रतिरोध; सदा बना रहनेवाला संबंध; नैराश्य ।
प्रतिबंधक-पु० [सं०] बाँधनेवाला; रोकने या बाधा डालनेवाला, प्रतिरोधक; शास्त्रा, टखनी ।
प्रतिबंधवान्(वन्)-वि० [सं०] प्रतिबधने युक्त ।
प्रतिबंधि, प्रतिबंधी-खी० [सं०] आपत्ति; दोनों पक्षोंपर लागू होनेवाली दलील ।
प्रतिबंधी(धिन्)-वि० [सं०] बाँधनेवाला; बाधा पहुँचानेवाला; रोकनेवाला; जिसने बाधा पहुँची हो ।
प्रतिबंधु-पु० [सं०] वह जो बंधुके समान हो; वह जो पद आदिमें समान हो ।
प्रतिबद्ध-वि० [सं०] बँधा हुआ; रुकावा हुआ, अमाया हुआ; जका हुआ; जिसपर प्रतिबध हो, जो प्रतिबधका विषय हो; जिसमें कोई बाधा डाली गयी हो; फँसा हुआ, अटका हुआ; जो किसीसे इस प्रकार संबद्ध हो कि अलग न किया जा सके; हताश; अलग किया हुआ ।
प्रतिबल-वि० [सं०] समान बलवाला । पु० शत्रु; सामर्थ्य, शक्ति ।
प्रतिबाधक-वि०, पु० [सं०] रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला; कष्ट पहुँचानेवाला ।
प्रतिबाधन-पु० [सं०] रोकना, बाधा डालना; प्रत्यावृत्त करना; कष्ट पहुँचाना ।

प्रतिबाधित-वि० [सं०] निवारित, हटया हुआ; बाधित; पीकित ।
प्रतिबाधी(धिन्)-वि० [सं०] रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला; कष्ट पहुँचानेवाला । पु० शत्रु, विपक्षी ।
प्रतिबाहु-पु० [सं०] बाहुका अग्रभाग, अङ्गूरीका एक भाग ।
प्रतिबिम्ब, प्रतिबिम्ब-पु० [सं०] परछाई, प्रतिच्छाया; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र, तस्वीर । -वाह-पु० जीभको रेशरका प्रतिबिम्ब माननेका सिद्धांत ।
प्रतिबिम्बक, प्रतिबिम्बक-वि०, पु० [सं०] छायाकी तरह अनुगमन करनेवाला ।
प्रतिबिम्बन, प्रतिबिम्बन-पु० [सं०] प्रतिबिम्बित होना; अनुकरण; तुलना ।
प्रतिबिम्बनाक-क० कि० प्रतिबिम्बित होना ।
प्रतिबिम्बित, प्रतिबिम्बित-वि० [सं०] जिसका प्रतिबिम्ब पड़ा हो, दर्पण आदिमें प्रतिकलित ।
प्रतिबीज-पु० [सं०] वह बीज जिसका बीजत्व नष्ट हो गया हो, मरा हुआ बीज ।
प्रतिबुद्ध-वि० [सं०] जगा हुआ, जाग्रत; जाना हुआ, ज्ञात, अवगत; सिखा हुआ; प्रसिद्ध; मद्भात ।
प्रतिबुद्धि-खी० [सं०] जागरण; श्रुतता या विरोधका भाव ।
प्रतिबोध-पु० [सं०] जागरण, जागना; ज्ञान; स्मृति; होशमें आना ।
प्रतिबोधक-वि० [सं०] जगानेवाला; ज्ञान करानेवाला ।
प्रतिबोधन-पु० [सं०] जगानेकी क्रिया; ज्ञान कराना ।
प्रतिबोधित-वि० [सं०] जगया हुआ; जिसने किसी बातका ज्ञान कराया गया हो ।
प्रतिबोधी(धिन्)-वि० [सं०] जागता हुआ; जो शीघ्र ही जागने या ज्ञान प्राप्त करनेवाला हो ।
प्रतिभट-पु० [सं०] विरोधी, शत्रु; शत्रु पक्षका चौड़ा; प्रतिद्वंद्वी ।
प्रतिभय-पु० [सं०] भय, डर, खतरा । वि० भयंकर ।
प्रतिभा-खी० [सं०] दीप्ति, प्रभा, चमक; बुद्धि, समझ; विलक्षण बौद्धिक शक्ति; उपयुक्तता । -कूट-पु० एक बोधिसत्त्व । -क्षय-पु०, -हानि-खी० शक्तिका ह्रास; प्रकाशका नाश, अंधकार होना । -मुख-वि० कुशाग्र-बुद्धि; प्रगल्भ । -झाली(किन्)-वि० जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभायुक्त । [खी० 'प्रतिभाशालिनी'] । -संपन्न-वि० दे० 'प्रतिभाशाली' ।
प्रतिभास-वि० [सं०] प्रभायुक्त, चमकदार; ज्ञात, अवगत ।
प्रतिभास-पु० [सं०] प्रभा, चमक; बुद्धि, समझ; प्रगल्भता; ज्ञान पड़ना, मासुस होना ।
प्रतिभासित-वि० [सं०] प्रतिभासे युक्त, जिसमें प्रतिभा हो; प्रगल्भ ।
प्रतिभासान्(वन्)-वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभायुक्त; प्रगल्भ; दीप्तियुक्त । पु० सूर्य; अग्नि; चंद्रमा ।
प्रतिभाषा-खी० [सं०] उत्तर, जवाब ।
प्रतिभास-वि० [सं०] प्रकाश; आभास; भ्रम; मिथ्याज्ञान ।
प्रतिभासन-पु० [सं०] चमकना; दीप्त पड़ना, दिखाई देना ।
प्रतिभिन्न-वि० [सं०] जिसका भेदन किया गया हो;

कल्या किंवा दुःखा; विनाशित ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] जमानत करनेवाला, जामिन ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] विभाग करना, विभाजन; रहस्य प्रकट करना, भेद खोलना ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] विदीर्ण करना, चीरना-फाटना; (जाल आदि) निकाल लेना; विभाग करना ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] उपभोग ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] सूर्य आदिके चारों ओरका घेरा, परिवेष्ट ।

प्रतिबन्धित-वि० [सं०] अलंकृत; सजाया हुआ ।

प्रतिबन्धित-पुं० [सं०] उत्तर, जवाब ।

प्रतिबन्धित-वि० [सं०] अभिमन्त्रित, मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] नासकी तरह काममें लाया जानेवाला एक चूर्ण ।

प्रतिबन्ध-पुं० [सं०] कुदस्ताका जोड़; वह जो मुकाबलेमें लड़े, प्रतिबोद्धा ।

प्रतिमा-स्त्री० [सं०] मिट्टी आदिकी बनायी हुई देवता आदिकी मूर्ति; पत्थर आदिकी बनाई हुई देवताकी मूर्ति; जिसकी पूजा की जाती है, अनुकृति; चित्र, तस्वीर; प्रति-विम्ब, परछाई; साध्य (समाप्तमें प्रतिम-सम्बन्धके अर्थमें); परिमाण, माप; चिह्न; हाथीके सिरका, दाँतोंके बीचका एक भाग । -गल-वि० जो प्रतिमा या चित्रमें स्थित हो । -चन्द्र-पुं० चन्द्रमाका प्रतिविम्ब । -परिक्लृप्त-पुं० देखल, पुजारी, पूजक । -पूजा-स्त्री० मूर्तिपूजा ।

प्रतिमा-पुं० [सं०] परछाई; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र; नमूना; हाथीके कुंभलकका निचला भाग, हाथीके दोनों दाँतोंके बीचका भाग; बाट, बटखरा; विरोधी, प्रतिबद्ध; साध्य, समता ।

प्रतिमा-स्त्री० [सं०] जबाबी जादू ।

प्रतिमा-स्त्री० [सं०] स्मरणशक्तिकी जाँचके लिए दो आधमियोंका बारी-बारी इकोक-पाठ करना ।

प्रतिमा-स्त्री० [सं०] हर महीने ।

प्रतिमित-वि० [सं०] जिसका प्रतिविम्ब पका हो, प्रति-विम्बित; अनुकृत; जिसकी तुलना की गयी हो ।

प्रतिमुक्त-वि० [सं०] पचना हुआ, धारण किया हुआ (सक आदि); बँधा हुआ; लाया हुआ, परित्यक्त; छोड़ा हुआ, रिहा किया हुआ; कैला हुआ, प्रक्षिप्त ।

प्रतिमुक्त-पुं० [सं०] नाटककी पाँच संविधोंमेंसे एक; मुक्त-का प्रतिविम्ब; उत्तर, जवाब । वि० जो सामने मौजूद हो, उपस्थित; निकटल ।

प्रतिमुद्रा-स्त्री० [सं०] मुद्राकी छाप ।

प्रतिमूर्ति-स्त्री० [सं०] पत्थर, धातु आदिकी बनायी हुई देवता आदिकी मूर्ति; अनुकृति, चित्र, प्रतिमा ।

प्रतिमूर्ति-स्त्री० [सं०] एक तरफकी जुड़िया ।

प्रतिमोक्ष-पुं० [सं०] मोक्ष, मुक्ति ।

प्रतिमोक्षण-पुं० [सं०] मोक्ष करने में मुक्ति ।

प्रतिमोचन-पुं० [सं०] बंधनसे मुक्त करना; रिहाई; बरखा लेना, प्रतिकार ।

प्रतिमोक्षित-वि० [सं०] मुक्त किया हुआ; शोधित ।

प्रतिषेध-पुं० [सं०] इच्छा, चाह; प्रयत्न, उद्योग; किंतु कार्यको पूरा करना; अनुग्रह; मंदा बमाना; कैद करना; प्रतिकार; निग्रह; रोकथाम ।

प्रतिषाद्य-पुं० [सं०] विशेष उद्देश्यसे किया जानेवाला बन्ध ।

प्रतिषाद्य-पुं० [सं०] प्रतिकार, प्रतिशोध ।

प्रतिषाद्य-स्त्री० [सं०] प्रतिमा; समान यातना ।

प्रतिषाद्य-पुं० [सं०] जौटना, बापस आना ।

प्रतिषुद्ध-वि० [सं०] बँधा हुआ ।

प्रतिषुद्ध, प्रतिबोधन-पुं० [सं०] किसीके मुकाबलेमें लड़ना, किसीके विरुद्ध युद्ध करना ।

प्रतिषुद्ध-पुं० [सं०] शत्रु हाथियोंके मुँहका नायक ।

प्रतिषोघ-पुं० [सं०] विरोध; विरुद्ध संबंध; परस्पर विरोधी पक्षोंका संबंध; वह जो किसीके प्रभावकी गड़ करे, मारके; सहयोग ।

प्रतिषोघिता-स्त्री० [सं०] प्रतिद्वंद्वी होनेका भाव, विरोध, प्रतिद्वंद्विता, द्वेष; शत्रुता । -परीक्षा-स्त्री० किसी काम या पदके उम्मेदवारोंकी वह परीक्षा जो उनकी योग्यताकी जाँचके लिए ली जाती है और जिसमें उत्तीर्ण होनेवाले उसके लिए चुने जाते हैं ।

प्रतिषोघी (गिन्) -पुं० [सं०] विरोधी, शत्रु; प्रतिद्वंद्वी, जोड़; बाधक; वह जिसका अभाव हो; वह जिसका किसीने प्रतिशूल मन्वष हो (जैसे-घट पड़ामात्रका प्रतिषोघी है, म्या०); हिस्सेदार; वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तुपर आश्रित हो । वि० विरोधी; बराबरीका ।

प्रतिषोघ, प्रतिषोघी (गिन्), प्रतिषोद्धा (बृह) -पुं० [सं०] मुकाबलेमें लड़नेवाला, प्रतिद्वंद्वी ।

प्रतिरंभ-पुं० [सं०] क्रोध ।

प्रतिरक्षण-पुं०, प्रतिरक्षा-स्त्री० [सं०] रक्षा, हिफाजत । प्रतिरथ-पुं० [सं०] मुकाबलेमें लड़नेवाला, प्रतियोद्धा (रथी) ।

प्रतिरथ-पुं० [सं०] विवाद, शगबग; प्रतिध्वनि ।

प्रतिराज-पुं० [सं०] विपक्षी नरेश ।

प्रतिराज-ज० [सं०] हर रात ।

प्रतिरुद्ध-वि० [सं०] रोकना हुआ, अवरुद्ध; जिस या जिसमें बाधा पहुँचायी गयी हो; (नगर, दुर्ग आदि) जो घेर लिया गया हो ।

प्रतिरूप-पुं० [सं०] वह जो रूप या आकृतिमें किसीके समान हो; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र, अनुकृति; प्रतिनिधि; एक दानव । वि० एक ही जैसे रूपवाला; छुरर; उपयुक्त । प्रतिरूपक-पुं० [सं०] प्रतिविम्ब; मूर्ति; चित्र; जाली पत्रादि । वि० एक ही जैसा (समामर्थ) ।

प्रतिरोद्धा (बृह) -पुं० [सं०] दे० 'प्रतिरोधक' ।

प्रतिरोध-पुं० [सं०] रोक, रुकावट, बाधा; प्रतिबंध; तिर-स्कार; डाका; चोरी; घेरा डालना; विरोध ।

प्रतिरोधक, प्रतिरोधी (गिन्) -पुं० [सं०] प्रतिरोध करनेवाला; रोकनेवाला; डाकू; चोर; घेरा डालनेवाला; विरोधी; बाधा पहुँचानेवाला । वि० बाधा डालनेवाला; अवरोध करनेवाला ।

प्रतिरोधन-पुं० [सं०] प्रतिरोध करनेकी क्रिया ।

प्रतिरोधित-वि० [सं०] जिसका प्रतिरोध किया गया हो ।

प्रतिरोपित-वि० [सं०] जो (पैदा) पुनः रोवा गया हो।
प्रतिर्जन-पु० [सं०] लाभ, प्राप्ति; निदा, इन्धन; जानना-समझना।

प्रतिकक्षण-पु० [सं०] चिह्न।
प्रतिष्ठापन-पु० [सं०] प्राप्ति; पुनः प्राप्त करना।
प्रतिस्थिति-की० [सं०] किसी स्थिति में वापस आना।
प्रतिष्ठापन-वि० [सं०] विपरीत, उल्टा; अनुलोमका उल्टा; नीच, अधः; अभिप्राय; प्रतिफल; बापों। पु० अभिप्राय या हानिकर कार्य। -अ-वि० जिसकी उत्पत्ति उच्च वर्णकी ओर और हीनतर वर्णके पुरुषसे हुई हो। -विवाह-पु० ऐसा विवाह जिसमें बर नीच वर्णका हो और कन्या उच्च वर्णकी।

प्रतिष्ठापक-पु० [सं०] उल्टा क्रम।
प्रतिवक्ता (वक्त्र)-वि० पु० [सं०] उत्तर देनेवाला; (कानूनकी) व्याख्या करनेवाला।
प्रतिवच (वच)-पु० [सं०] दे० 'प्रतिवचन'।
प्रतिवचन-पु० [सं०] उत्तर; जवाब; प्रतिज्वनि।
प्रतिवस्तर, प्रतिवर्ष-अ० [सं०] हर साल।
प्रतिवर्षिता-की० [सं०] सौत, सपत्नी।
प्रतिवर्षिक-वि० [सं०] एक ही जैसे रंगवाला, समान, सम्यक्।

प्रतिवर्तन-पु० [सं०] लौटना, वापस आना।
प्रतिवर्ती (विन्)-वि० [सं०] जो मुकाबला कर सके।
प्रतिवस्य-पु० [सं०] गोंब।
प्रतिवस्तु-की० [सं०] वह वस्तु जो रूप आदिमें किसी वस्तुके समान हो, परन्तु वस्तु; किसी वस्तुके बदलेमें दी जानेवाली वस्तु; उपमान।
प्रतिवस्तुपत्ता-की० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ उपमेय और उपमान-वाक्यमें एक ही साधारण धर्म, शब्दभेदसे, कहा जाय।

प्रतिवहन-पु० [सं०] पीछे से जाना, लौटना; निवारण करना।

प्रतिवाक्य (वच)-की० [सं०] उत्तर, जवाब।
प्रतिवाक्य-पु० [सं०] उत्तर, जवाब। वि० उत्तर देने योग्य।

प्रतिवाणी-की० [सं०] दे० 'प्रतिवाक्य'; प्रतिवाद।
प्रतिवात-पु० [सं०] वह प्रदेश जिनसे हवा चल रही हो।
प्रतिवाद-पु० [सं०] वादीकी बातके विरोधमें कही जानेवाली बात, वादीकी बातका उत्तर; विरोध, खंडन।
प्रतिवादिता-की० [सं०] प्रतिवादीका भाव; प्रतिवादीका कार्य।

प्रतिवादी (विन्)-पु० [सं०] प्रतिवाद करनेवाला; वादीकी बातका उत्तर देनेवाला; खंडन करनेवाला, विरोध करनेवाला; वह जिसपर दावा किया गया हो, मुद्देखंड; विरोधी, खलु।

प्रतिवाप-पु० [सं०] काबू नन्ते समय वा बन् जानेपर उसमें दबाव मिलाना।

प्रतिवार-पु० [सं०] निवारण, हटाना, दूर करना। अ० प्रतिदिन; हर बार।

प्रतिवारण-पु० [सं०] निवारण; विरोधी हाथी।

प्रतिवारित-वि० [सं०] विचारित, रौका हुआ।

प्रतिवासी-की० [सं०] जवाब या उत्तरमें भेजा गया संवाद, संस्वरूप हवात।

प्रतिवासा-वि० [सं०] खंडन करने योग्य।
प्रतिवास-पु० [सं०] पकोस; सुख।

प्रतिवासर-अ० [सं०] प्रति दिन, हर रोज, नियत।
प्रतिवासरिक-वि० [सं०] नियत, दैनिक।

प्रतिवास्तित-वि० [सं०] आवाद किया हुआ, बसाया हुआ।
प्रतिवासी (विन्)-पु० [सं०] पकोसमें रहनेवाला, पकोसी।

[की० 'प्रतिवासीनी']।
प्रतिवासुदेव-पु० [सं०] अश्वघोष, तारक आदि विष्णुके नौ मनु।

प्रतिवाह-पु० [सं०] अक्षरका एक भाई।
प्रतिविध-पु० [सं०] सुविधिका एक पुत्र।

प्रतिविधात-पु० [सं०] निवारण; रक्षण।
प्रतिविधाव-पु० [सं०] प्रतिकार; पक्षविधात।

प्रतिविधि-की० [सं०] प्रतिकार।
प्रतिविधिस्ता-की० [सं०] प्रतिकार करनेकी इच्छा।

प्रतिविधित्तु-पु० [सं०] प्रतिकार करनेकी इच्छा करनेवाला।

प्रतिविधु-वि० [सं०] विद्रोही।
प्रतिविधि-वि० [सं०] बहुत प्रतिभा।

प्रतिविध-पु० [सं०] विषया प्रभाव नष्ट करनेवाला पदार्थ।
प्रतिविधा-की० [सं०] अतीत।

प्रतिविधु-पु० [सं०] राजा मुचकुंद; मुचकुंदका पैर।
प्रतिविधित-वि० [सं०] निवारित।

प्रतिधीत-वि० [सं०] डका हुआ; दबाया हुआ।
प्रतिधी-पु० [सं०] विरोधी; प्रतिभट, प्रतिद्वंदी।

प्रतिधी-वि० [सं०] किसीकी भी सामना करनेमें समर्थ; अतीत, बेजोड़।

प्रतिधीत-वि० [सं०] आगाह किया हुआ, अताया हुआ।
प्रतिधी-वि० [सं०] अनुभव करनेवाला, जानने-समझनेवाला।

प्रतिधी-अ० [सं०] हर समय।
प्रतिधी-पु० [सं०] पकोस; पकोसी।

प्रतिधी-पु० [सं०] पकोसी।
प्रतिधी-पु० [सं०] पकोसीका घर। अ० घर-घर।

प्रतिधी-पु० [सं०] पकोसी।
प्रतिधी-पु० [सं०] पैरका प्रतिकार, शत्रुताका बदला।

प्रतिधी-वि० [सं०] व्यूहबद्ध।
प्रतिधी-पु० [सं०] व्यूहचरणा, मोर्चाबंदी; समूह।

प्रतिधी-की० [सं०] संदेह; बराबर बना रहनेवाला अर्थ।
प्रतिधी-पु० [सं०] प्रतिध्वनि, गूँज। अ० शब्द-शब्दमें वा पर।

प्रतिधाम-पु० [सं०] निवृत्ति, छुटकारा।
प्रतिधाम-पु० [सं०] किसी अमीरकी सिद्धिके लिए दाना-पानी छोड़कर किसी देवताके सामने पड़े रहना।

प्रतिधामित-वि० [सं०] प्रतिधाम करनेवाला।
प्रतिधामित-पु० [सं०] दे० 'प्रतिधाम'।

व्याहके पहले घर तथा कन्दोकी कलाईपर बौपा जाता है; कंठेण नामका आभूषण; एक प्रकारका मश; राखी माला; पावका भरना, प्रणम्युद्धि; सेबक, दहख; रसक, रखवाला; प्रभात । वि० अश्वीन, परतत्र ।

प्रतिसरण-पु० [स०] कितीके सहारे उठेघनेकी क्रिया ।

प्रतिसरा-खी० [स०] सेविका, दासी; पट्टी, तस्मा ।

प्रतिसर्ग-पु० [म०] रुद्र, मनु, मरीचि आदि द्वारा की गयी सृष्टि; प्रलय; पुराणका एक भाग जिसमें प्रलय आदिवा विचार विभा गया है ।

प्रतिसम्ब-वि० [स०] प्रतिकूल, विरुद्ध आचरण करनेवाला, विरुद्धाचारी ।

प्रतिसाधानिक-पु० [म०] चारण, सागव ।

प्रतिसामंत-पु० [स०] शत्रु, विपक्ष ।

प्रतिसायम्-अ० [स०] हर शाम ।

प्रतिसारण-पु० [स०] दूर हटाना, दूरीकरण, अपसारण; घाबकी मरहम-पट्टी बनना (सुश्रुत); मरहम लगानेका एक औजार; चूर्ण, द्रव्य आदिको महायुगाने दौत, जीम आदिका रंगलीसे रंगनना (कुशुन) ।

प्रतिसारणीय-वि० [स०] प्रतिसारणके योग्य ।

प्रतिसारी(रिन्)-वि० [स०] उलटी दिशामें जानेवाला ।

प्रतिसीरा-खी० [स०] परदा ।

प्रतिसूर्य-पु० [म०] एक प्रकारका उत्पात जिनमें वर्तमान सूर्यके अन्तर्गत एक और सूर्य दिखाई देता है; गिरगिट ।

प्रतिसृष्ट-वि० [म०] मेजा हुआ, प्रेषित; जिसका निराकरण किया गया हो, निराकृत; मत्त, मतवाला ।

प्रतिसेना-खी० [म०] शत्रुकी सेना ।

प्रतिसोमा-खी० [म०] एक पौधा, महिषव्रता ।

प्रतिस्कंध-पु० [म०] कान्तकेयका एक अनुचर ।

प्रतिष्ठी-खी० [म०] पराधी की ।

प्रतिस्थान-अ० [स०] हर जगह, सर्वत्र ।

प्रतिस्नान-वि० [स०] नहाया हुआ, जो स्नान कर चुका हो ।

प्रतिस्नेह-पु० [म०] प्रेमके बदले किया जानेवाला प्रेम, प्रेमभा मित्रदान ।

प्रतिस्पंदन-पु० [म०] स्पंदन, हरकत, स्फुरण ।

प्रतिस्पर्द्धा, **प्रतिस्पर्धा**-खी० [म०] लाग-काट, होड़ ।

प्रतिस्पर्द्धा(हिन्), **प्रतिस्पर्धा**(धिन्)-पु० [स०] प्रतिस्पर्द्धा करनेवाला, होड़ लगानेवाला; प्रतिद्वंद्वी ।

प्रतिस्वाध-पु० [स०] नाकसे पीन्ध और गाढा कफ निकलनेका एक रोग ।

प्रतिस्वन-पु० [स०] प्रतिशब्द ।

प्रतिस्वर-पु० [म०] प्रतिशब्द ।

प्रतिहंता(ह्)-पु० [स०] रोकनेवाला; निवारण करनेवाला ।

प्रतिहत-वि० [स०] रोका हुआ, अवरुद्ध; दूर किया हुआ, निरस्त; निराश किया हुआ; पराभूत किया हुआ । -धी, -मति-वि० विरोधभाव रखनेवाला ।

प्रतिहति-खी० [स०] आघातके जवाबमें किया जानेवाला आघात, प्रतिघात; रोकने या हटानेकी क्रिया; रोष, क्रोध; नैराश ।

प्रतिह्वय-पु० [स०] आघातके जवाबमें आघात करना ।

प्रतिह्वय-पु० [स०] निवारण; परित्याग; हटाना ।

प्रतिहता(ह्)-पु० [स०] सोलह प्रकारके कविकोंमेंसे एक; हटानेवाला; नाश करनेवाला ।

प्रतिहस्त, **प्रतिहस्तक**-पु० [स०] प्रतिनिधि; सहायक ।

प्रतिहार-पु० [स०] निवारण; द्वारपाल, क्योड़ीदार; द्वार, दरवाजा; ऐंद्रजालिक, बाजीगर; बाजीगरी; उरगाता द्वारा गये जानेवाले सामवा एक अवयव । -भूमि-खी० क्योड़ी । -हल्ली-खी० द्वारपालिका ।

प्रतिहारक-पु० [स०] ऐंद्रजालिक; दूसरे स्थानपर ले जानेवाला; प्रतिहार सामका गान करनेवाला ।

प्रतिहारय-पु० [स०] प्रवेष्ट; द्वारमें प्रवेश करनेकी आज्ञा । **प्रतिहारी**-खी० [म०] द्वारपालका काम करनेवाली स्त्री, द्वारपालिका ।

प्रतिहारी(रिन्)-पु० [म०] द्वारपाल ।

प्रतिहार्य-पु० [स०] इद्रजाल, बाजीगरी । वि० छौटाया, हटाया जानेवाला; जिसका प्रतिरोध किया जाय ।

प्रतिहास-पु० [म०] हंसनेके जवाबमें हंसना; कनेर ।

प्रतिहिंसा-खी० [म०] हिंसाके बदलेमें की जानेवाली हिंसा ।

प्रतिहिंसित-पु० [म०] दे० 'प्रतिहिंसा' । वि० जिसे बरछेमें क्षति पहुँचायी गयी हो ।

प्रतिहित-वि० [म०] रखा हुआ, जमाया हुआ ।

प्रतीधक-पु० [स०] विदेह देश ।

प्रतीक-वि० [म०] प्रतिकूल, विरुद्ध; बिलोम, उलटा । पु० अग, अवयव; अक्ष, भाग; वह जिसपर कितीका आरोप किया गया हो, प्रतिकप; प्रतिमा; किमी वाक्य, पद, मश आदिके कुछ अक्षर जिनसे पूरेका बोध हो; छँह, चेहरा, किसी चीजका आगेगा हिस्सा ।

प्रतीकार-पु० [स०] दे० 'प्रतिकार' ।

प्रतीकाक्ष-पु० [स०] दे० 'प्रतिकाक्ष' ।

प्रतीकोपासना-खी० [स०] ब्रह्मके आदित्य आदि प्रतीकोंकी ब्रह्मरहिमे उपासना करना; किसीके प्रतीककी की जानेवाली उपासना; प्रतिमा-पूजन ।

प्रतीक्ष, **प्रतीक्षक**-वि०, पु० [स०] प्रतीक्षा करनेवाला ।

प्रतीक्षण-पु० [म०] प्रतीक्षा करना; प्रतीक्षा; सम्मान; पूजा करना; ध्यान देना; वचन आदिका पालन ।

प्रतीक्षा-खी० [स०] आमरा, इतजार; पूजा, सम्मान; ध्यान देना ।

प्रतीक्षित-वि० [स०] जिसको प्रतीक्षा की गयी हो; जिसका खयाल किया गया हो; पूजित, सम्मानित ।

प्रतीक्षी(धिन्)-वि०, पु० [स०] दे० 'प्रतीक्ष' ।

प्रतीक्ष्य-वि० [म०] जिसको प्रतीक्षा की जाय; प्रतीक्षाके योग्य; पूज्य; ध्यान देने योग्य ।

प्रतीघात-पु० [स०] दे० 'प्रतिघात' ।

प्रतीघातक-वि०, पु० [स०] दे० 'प्रतिघातक' ।

प्रतीघातन-पु० [स०] दे० 'प्रतिघातन' ।

प्रतीघाती(धिन्)-वि०, पु० [स०] दे० 'प्रतिघाती' ।

प्रतीघ्न-पु० [स०] दे० 'प्रतिघ्न' ।

प्रतीची-खी० [म०] पश्चिम दिशा । -पति-पु० वरुण ।

प्रतीचीन-वि० [सं०] पश्चिम दिशाका, पश्चिमी, पछाहीं; पिछला ।

प्रतीचीन-पु० [सं०] वक्त्र ।

प्रतीच्य-वि० [सं०] पश्चिमका, पश्चिमी, पछाहीं ।

प्रतीच्य-की० [सं०] पुलस्त्यकी माता ।

प्रतीच्य-पु० [सं०] ग्राहक (स्व०) ।

प्रतीच-वि० [सं०] जाना हुआ, बात, मात्र, प्रसिद्ध, मशहूर; हृष्ट, प्रसन्न; जिसका आदर हो, सम्मानित, प्रतिष्ठित; विश्वास किया हुआ; प्रसिद्ध; गत, बुद्धिमान्; संकल्प किया हुआ ।

प्रतीच-की० [सं०] हान, बौध; प्रसिद्धि, ख्याति; आदर; हर्ष; विश्वास; प्रस्थान ।

प्रतीच-वि० [सं०] ज्ञातया हुआ ।

प्रतीच्य-पु० [सं०] आराम, सात्वता । -समुत्पाद-पु० दुःखके निम्नलिखित बारह निदान जिनमें क्रमशः एकसे दूसरेकी उत्पत्ति मानी जाती है—(१) अविद्या, (२) संस्कार, (३) विज्ञान, (४) नामरूप, (५) षडायतन, (६) स्पर्श, (७) वेदना, (८) तृष्णा, (९) उपादान, (१०) मन, (११) जाति और (१२) जरामरण (क्षो०) ।

प्रतीचाह-पु० [सं०] हृष्ट, निश्चान ।

प्रतीच-वि० [सं०] प्रतिकूल, उलटा, विलोम; अप्रिय; हठो; बाधक, विरोधी । पु० राजा शत्रुतनुके पिता; एक अर्थालंकार जहाँ प्रमिद्ध उपमानको उपमेय बना दिया जाय वा उपमेयसे उपमानका निरादर आदि कार्या जाय । -**त-वि०** विरुद्ध जानेवाला; प्रतिकूल । -**गति-की०**, -**गमन-पु०** पीछेकी ओर जाना । -**गामी (गिन्)**-वि० विरुद्धाचरण करनेवाला । -**तरण-पु०** नाव या जहाजको धाराके विरुद्ध ले जाना । -**दर्शनी**, -**दर्शिनी**-की० स्त्री, नारी । -**दर्शी (शिन्)**-वि० विपरीत देखनेवाला । -**बचन-पु०** खंडन, प्रतिकूल कथन । -**विपाकी (किन्)**-वि० जिसका परिणाम उलटा हो, उलटा फल देनेवाला ।

प्रतीपक-वि० [सं०] विरुद्ध, प्रतिकूल ।

प्रतीपी (पिन्)-वि० [सं०] प्रतिकूल; अङ्गपाल ।

प्रतीपोकि-की० [सं०] खंडन, प्रतिकूल बचन ।

प्रतीपमान-वि० [सं०] जिसकी प्रतीति हो रही हो, जान पड़ता हुआ; (वह अर्थ) जो व्यञ्जना द्वारा प्रकट हो रहा हो ।

प्रतीर-पु० [सं०] तट; किनारा ।

प्रतीवाप-पु० [सं०] दे० 'प्रतिवाप'; धातुओं आदिका मिश्रण; ज्येष्ठ आदि महामासी ।

प्रतीवेश-पु० [सं०] दे० 'प्रतिवेश' ।

प्रतीवेशी (शिन्)-पु० [सं०] दे० 'प्रतिवेशी' ।

प्रतीह-वि० [सं०] प्राप्त; स्वीकृत ।

प्रतीह-पु० [सं०] भरतवंशका एक राजा ।

प्रतीहार-पु० [सं०] दे० 'प्रतिहार' ।

प्रतीहारी-की० [सं०] दे० 'प्रतिहारी' ।

प्रतीहास-पु० [सं०] दे० 'प्रतिहास' ।

प्रतुष्ट-पु० [सं०] परमा, खडन, कौशल आदि पक्षी जो अपना चारा बीचसे तोड़कर खाते हैं; कौचनेका एक

आला ।

प्रतुष्टि-की० [सं०] संतुष्टि, तुष्टि ।

प्रतुष्टी-की० [सं०] नाभी-दीर्घत्वका एक रोग जिसमें गुदासे लेकर अंतर्गत दर्द होता है ।

प्रतुष्ट, प्रतुष्ट-वि० [सं०] वेगवान् ।

प्रतुष्टिका-की० [सं०] तोशक, गद्दा ।

प्रतुष्ट-पु० [सं०] अकुश; चातुर; पैना; कौचनेका एक आला; कोई काम करनेको विवश करना ।

प्रतुष्टी-की० [सं०] नगरके बीचकी चौड़ी सड़क, शाहगर्ह; गली, कुचा; बजारके बीचका रास्ता; झिलेके नीचेसे होकर जानेवाला रास्ता; शिदन या गलेपर बाँधी जानेवाली एक तरहकी पट्टी ।

प्रतुष्ट-पु० [सं०] सतोष; स्वायुध मनुके एक पुत्र ।

प्रतुष्टमा-सं० कि० मनुष्ट करना; समझाना-मुझाना- 'राम प्रतीपी मातु मव कवि विनीत वर नैन'-रामा० ।

प्रत-वि० [सं०] दिया हुआ, प्रसन्न ।

प्रत-वि० [सं०] पुराना, पुरातन; परंपरागत । -**तृत्त्व-पु०** दे० 'पुरातत्त्व' । -**विद्-पु०** पुरातत्त्ववेत्ता ।

प्रत-पु० [सं०] शरीरका कोई गौण अंग (जैसे नाक); अध्याय, परिच्छेद; अन्ध; एक मान । अ० प्रत्येक अंगमें, अंग-अंगमें ।

प्रतंगिरा-की० [सं०] एक दुर्गा, तांत्रिकोंकी एक देवी; मिरनका पेड़ ।

प्रतंगिरा (रस)-पु० [सं०] चाक्षुष मन्त्रतरोके एक ऋषि ।

प्रत-की० धनुषकी डोरी ।

प्रतंचित-वि० [सं०] पूजित, सम्मानित ।

प्रतंजन-पु० [सं०] लेपन; अञ्जन लगाना ।

प्रतंत-वि० [सं०] जो मरिचक हो, प्रत्यमर । पु० नीमा; मरिचक देश । -**पर्वत-पु०** हिमालय के पर्वतोंके पासका छोटा पर्वत ।

प्रतयक् (क्)-अ० [सं०] पीछे, प्रतिकूल दिशामें; पश्चिममें, पश्चिमकी ओर, पहले, प्राचीन कालमें । -**चेतन-वि०** जिसकी चेतना अन्तर्मुखी हो । पु० पुत्र (सा०); सर्वज्ञ; परमेश्वर; जीवात्मा । -**पर्णी**, -**पुष्पी-की०** चिचका; मृषिकपर्णी । -**प्रपण-वि०** आत्मलीन । -**अग्नी-की०** मृसाग्नी; वज्रदंती । -**क्षोता (तसु)**-वि० पश्चिमकी ओर गढ़नेवाला (नद) । -**क्षोतसी-की०** नर्मदा ।

प्रतय-वि० [सं०] जो आँसोंके सामने हो, जो आँसोंसे थिराई दे, परोक्षता उलटा, जिसका ग्रहण किसी हानिदिय-से हो सके; स्पष्ट, साफ । पु० एक प्रकारका हान जो द्रव्य और अर्थके मन्त्रिकर्षसे उत्पन्न होता है और चार प्रकारके प्रमाणोंके अवगत माना जाता है; किसी हानिदिय द्वारा कर्तु-विशेषका ग्रहण । अ० स्पष्टतः, साफ-साफ ।

ज्ञान-पु० द्रव्य और विषयके सन्धिकर्षसे उत्पन्न हान ।

दर्शन, -**दर्शी (शिन्)**-वि० जिसने कोई घटना साक्षात् देखी हो । पु० साक्षी, गवाह । -**दृष्ट-वि०** जो आँसोंसे देखा जा सके । -**दृष्ट-वि०** प्रत्यक्ष रूपसे देखा हुआ ।

प्रमा-की० श्रद्धाके संपर्कसे प्राप्त सही ज्ञान ।

प्रमाण-पु० प्रत्यक्ष ज्ञानरूप प्रमाण । -**फल-वि०**

साक्षात् फल देनेवाला।—**भोग**-पु० किसी वस्तुका वह भोग जो उसके स्वामीके सामने किया जाय।—**कषण**-पु० व्यंजन आदिमें, उनके सिद्ध होनेके बाद, ऊपरसे मिलाया या दिवा जानेवाला नमक (आदक आदिमें ऐसा कषण वर्जित है)।—**बादी (विन्)**-वि० केवल प्रत्यक्ष माननेवाला। पु० चार्वाक मत जो प्रत्यक्षके अतिरिक्त और किसी प्रमाणको नहीं मानता; वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने।—**विहित**-वि० जिसका प्रत्यक्ष रूपसे विधान हो।—**सिद्ध**-वि० जो प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सिद्ध हो, जिसकी सिद्धिके लिए प्रत्यक्षके अतिरिक्त किसी और प्रमाणकी आवश्यकता न हो।

प्रत्यक्षता-स्त्री०, **प्रत्यक्षत्व**-पु० [म०] प्रत्यक्ष होनेका भाव।

प्रत्यक्षर-अ० [स०] प्रत्येक अक्षरमें, अक्षर-अक्षरमें।

प्रत्यक्षी (विन्)-वि० [स०] जिसने किसी बातको साक्षात् देखा हो, प्रत्यक्षदृष्ट।

प्रत्यक्षीकरण-पु० [म०] स्वयं अपनी आँखोंसे देखनेकी क्रिया; किसी इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करनेकी क्रिया।

प्रत्यक्षीकृत-वि० [म०] आँखोंसे देखा हुआ; जिसका ग्रहण किसी इन्द्रिय द्वारा हो चुका हो।

प्रत्यक्षीभूत-वि० [म०] जो प्रत्यक्ष हो चुका हो।

प्रत्यक्ष-प्रत्यक्षोंका सामान्य रूप।—**अक्ष**-पु० अन्दरका अंग या नेत्र। वि० अन्दरके अंगोंवाला।—**आत्मा (स्मन्)**-पु० ब्रह्म, परमात्मा; जीवात्मा।—**आशा**-स्त्री० पश्चिम दिशा।—**पति**-पु० वरुण।—**उदक् (व)**-स्त्री० पश्चिम और उत्तरके बीचकी दिशा। अ० पश्चिमोत्तरकी ओर।—**इय**-पु० अहिच्छन्न नामका प्राचीन देश; दक्षिण पंचाल।

प्रत्यक्ष-वि० [स०] नया, हालका, ताजा; शोधित, शुद्ध।—**गंधा**-स्त्री० सोनजूही।—**यौवन**-वि० जो मरी जवानीमें हो।—**व्यस्क**-वि० नया उम्रका, नौजवान।

प्रत्यग्रथि-पु० [म०] प्रत्यग्रथका निवासी या राजा।

प्रत्यक्षमुख-वि० [स०] जिसका मुँह पश्चिमकी ओर हो।

प्रत्यन्तर-वि० [म०] मन्त्रिक, तत्प्राप्त।

प्रत्यनीक-पु० [म०] शत्रु; शत्रुता, शत्रुसेना; विघ्न; प्रति-बादी; एक अर्थालङ्कार जहाँ शत्रुओं ने जीत सन्नेके कारण उसके पक्षके किसी व्यक्तिमें बैर निकाखनेका वर्णन किया जाय या किसी मित्रकी मरारके बदले उसके किसी संबंधी आदिके प्रति कोई अच्छा काम करना दिखाया जाय। वि० विरोधी, विपक्षी।

प्रत्यनुमान-पु० [स०] प्रतिकूल अनुमान (जैसे—“पर्वत वहिमान् है” के विरोधमें “पर्वत वह गमाववान् है” ऐसा अनुमान)।

प्रत्यपकार-पु० [स०] अपकारके बदले किया जानेवाला अपकार।

प्रत्यब्द-अ० [स०] प्रति वर्ष, हर साल।

प्रत्यभिज्ञा-स्त्री० [म०] कमीके देखे हुए व्यक्ति या पदार्थको फिर देखनेपर होनेवाला वह ज्ञान कि यह अमुक व्यक्ति वा पदार्थ है, पहचान; यह ज्ञान कि परमेश्वर और जीवात्मा एक हैं।—**दर्शन**-पु० एक दर्शन जिसके अनु-

सार महेश्वर या परमेश्वर ज्ञान या परमात्मा माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञात-वि० [स०] पहचाना हुआ।

प्रत्यभिज्ञान-पु० [म०] पहचान; वह वस्तु या चिह्न जिसमें कोई पहचाना जाय।

प्रत्यभिभूत-वि० [म०] पराभूत, विजित।

प्रत्यभियुक्त-वि० [स०] जिसपर प्रत्यभियोग लगाया गया हो।

प्रत्यभियोग-पु० [स०] अभियुक्त या प्रतिग्राहीके ओरसे बादीपर लगाया जानेवाला अभियोग।

प्रत्यभिवाद, **प्रत्यभिवादन**-पु० [स०] प्रणाम करनेवालेको दिया जानेवाला आशीर्वाद; प्रणामके बदले प्रणाम करना।

प्रत्यभिरुद्ध-पु० [स०] दे० ‘प्रत्यभियोग’।

प्रत्यभिग्र-पु० [म०] शत्रु, दुश्मन।

प्रत्यक्ष-पु० [स०] विश्वास; ज्ञान; शपथ; आचार; छिद्र; निश्चय; प्रसिद्धि; ख्याति; सहकारी कारण (सौ०); कारण; बुद्धि; स्वाद; अम्यास; प्रयोग; साधन; ध्यान; छन्दोंकी सख्या जाननेकी एक रीति; आश्रित जन; सहायक; विष्णु; वह उपसर्ग जैसा शब्द जो किसी धातु या मूल शब्दके अंतमें कोई सहापद, क्रियापद, अव्यय या विशेषण बनानेके लिए लगाया जाता है, परमर्ग (व्या०)।—**कार**, **कारी (विन्)**-वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला।—**कारिणी**-स्त्री० मुहर, मुद्रा।—**प्रतिभू**-पु० वह प्रतिभू या जमानतदार जो ऋण देनेवालेके प्रति महाजनको यह विश्वास दिलाता है कि “मैं इसे जानता हूँ, यह मला आदमी है।”—**प्रतिवचन**-पु० निश्चिन और स्पष्ट उत्तर।—**सर्व**-पु० महत्त्व या बुद्धिसे उत्पन्न सृष्टि।

प्रत्यक्ष-पु० [म०] प्रतात होनेकी क्रिया।

प्रत्ययित-वि० [म०] विश्वस्त; आत।

प्रत्यक्षी (विन्)-वि० [म०] विश्वास करनेवाला, विश्वास-युक्त।

प्रत्यरा-स्त्री० [स०] आरोपी हदताके लिए उनके साथ परिवेकी पुष्टीमें जड़ी जानेवाली लकड़ी, गज।

प्रत्यर्क-पु० [स०] सत्यके पात कभी-कभी देख पड़नेवाला प्रतिसूर्य।

प्रत्यर्थ-वि० [स०] उपयोगी। पु० उत्तर; शत्रुता; विरोध।

प्रत्यर्थक, **प्रत्यर्थिक**-पु० [म०] विरोधी, विपक्षी।

प्रत्यर्थी (विन्)-पु० [म०] शत्रु; प्रतिवादी, मुद्दालेह।

प्रत्यर्पण-पु० [म०] लो हुई वस्तुको उसके अधिकारी या किसी दूसरेको देना, गृहीत वस्तुका पुनर्दान।

प्रत्यर्पित-वि० [म०] लौटाया हुआ।

प्रत्यक्षनेज-पु० [म०] पुनः पोता।

प्रत्यक्षमार्ग, **प्रत्यक्षमार्ग**-पु० [स०] अनुचितन; सहिष्णुता।

प्रत्यक्षर-वि० [म०] अति निकट।

प्रत्यक्षरुद्धि-स्त्री० [म०] नीचेकी ओर आना।

प्रत्यक्षरोहण-पु० [स०] बाधा, रूकावट।

प्रत्यक्षरोह-पु० [म०] अक्रोह, उतार।

प्रत्यक्षरोहण-पु० [म०] दे० ‘प्रत्यक्षरुद्धि’; मार्गशीर्षमें होनेवाला एक त्यौहार।

प्रत्ययशास्त्र-प्रत्यय-पुं [सं०] जोजन करना ।

प्रत्ययसित-वि० [सं०] खाया हुआ, युक्त; जो फिर पुराना (पुरा) रहने-सबने अपना चुका हो ।

प्रत्ययवर्क-पुं [सं०] प्रतिवादी या मुद्दालेहका वह उत्तर जिसमें वह वादीके अभियोगका खण्डन करता है, मुख्यके दावेके विरोधमें मुद्दालेहकी ओरसे लगाया जानेवाला जवाब ।

प्रत्ययवस्थाता(तु)-पुं [सं०] शत्रु; प्रतिवादी, मुद्दालेह ।
प्रत्ययवस्थाप-पुं [सं०] विरोधी या प्रतिवादीके रूपमें स्थित होना, विरोध; धक्का करना; पूर्व स्थितिमें बने रहना ।

प्रत्ययवहार-पुं [सं०] सहाय, निवासा; प्रलय; लक्ष्मणके लिए तैयार सैनिकोंको युद्धसे निवृत्त करना ।

प्रत्ययवाच-पुं [सं०] हान; बाधा; सम्बोधनपामन आदि विहित नित्यकर्म न करनेसे होनेवाला पाप; दुष्कृत, पाप; विरुद्ध आचरण (सृष्ट); नैराश्य; परिवर्तन; सत्तावाली वस्तुका लोप; जो नहीं है उसका आविर्भाव न होना ।

प्रत्ययवैक्षण-पुं [सं०] किसी बातके पूर्वापरका विचार करना, देखभाल, निगरानी ।

प्रत्ययवैक्षा-स्त्री० [सं०] 'प्रत्ययवैक्षण' ।

प्रत्ययहमा(हमन्)-पुं [सं०] गेरु ।

प्रत्ययहीला-स्त्री० [सं०] एक नाडा-रोग जिसमें पेटमें अर्बुद बन जाता है जो मल-मूत्रके द्वारको रोक देता है ।

प्रत्ययलम्ब-पुं [सं०] (सूत्रका) हवन; अन्त, समाप्ति ।

प्रत्याकार-पुं [सं०] ध्यान ।

प्रत्याख्यात-वि० [सं०] अस्वीकृत, इनकार किया हुआ; खचित; मना किया हुआ; सूचित किया हुआ, निवारित, प्रसिद्ध, मशहूर; अतिक्रान्त ।

प्रत्याख्याप-पुं [सं०] इनकार; खंडन, निराकरण; उपेक्षा ।

प्रत्यागत-वि० [सं०] वापस आया हुआ, लौट आया हुआ । पुं लक्ष्मणका एक ढंग ।

प्रत्यागतासु-वि० [सं०] जिसके प्राण लौट आये हों, पुनर्जीवित ।

प्रत्यागति-स्त्री० [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्यागम, प्रत्यागमन-पुं [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्याघात-पुं [सं०] आघातके उत्तरमें किया जानेवाला आघात ।

प्रत्याचार-पुं [सं०] अनुकूल व्यवहार ।

प्रत्याताप-पुं [सं०] वह स्थान जहाँ खूब धूप आये ।

प्रत्यादाप-पुं [सं०] फिरसे लेना या प्राप्त करना ।

प्रत्यादिन्य-पुं [सं०] दे० 'प्रतिमूर्त्य' ।

प्रत्यादिष्ट-वि० [सं०] निराकृत; छाँड़ित; बोधित; निर्देश किया हुआ; अस्वीकृत; धक्का किया हुआ; चिताया हुआ ।

प्रत्यादिष्ट-पुं [सं०] निराकरण; खंडन; वह जो किसीको लज्जित करे या नीचा दिखाये; चेतावनी, हिदायत; आशा; अस्वीकृत, इनकार ।

प्रत्याधान-पुं [सं०] मस्तक (बै०); वह स्थान जहाँ कोई वस्तु जमा की जाय ।

प्रत्याध्मान-पुं [सं०] एक बातव्याप्ति जिसमें पेट फूल जाता है ।

प्रत्यामयन-पुं [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्यानाह-पुं [सं०] कुपकुपके आवरणका प्रवाह ।

प्रत्याकीत-वि० [सं०] लौटकर लाया हुआ ।

प्रत्यापत्ति-स्त्री० [सं०] पुनरागमन; वैराग्य ।

प्रत्याम्नाय-पुं [सं०] अनुमान, नामयका पाँचवों अवयव-निगमन; प्रतिनिधि (बै०) ।

प्रत्याय-स्त्री० [सं०] राजस्व, कर, टैक्स ।

प्रत्यायक-वि०, पुं [सं०] विश्वास दिलानेवाला; व्याख्याता; प्रमाणित करनेवाला ।

प्रत्यायन-पुं [सं०] विश्वास दिलानेकी क्रिया; व्याख्या करनेवाला; (वधूकी) लीवा जाना; विवाह करना; सूर्यका अस्त होना ।

प्रत्यायित-पुं [सं०] विश्वास प्रतिनिधि या दूत ।

प्रत्यारम्भ-पुं [सं०] पुनरारम्भ; निषेध ।

प्रत्यालीढ-पुं [सं०] बाण चलानेका एक आसन जिसमें बाणों पर आगे बढ़ते हैं और बाणों पीछे खींच लेते हैं । वि० बाणों ओर बढ़ाया हुआ ।

प्रत्यावर्त्तन-पुं [सं०] लौट आना, वापस आना ।

प्रत्याशा-स्त्री० [सं०] आशा ।

प्रत्याशी(शिर)-वि० [सं०] आशा करनेवाला ।

प्रत्याश्रय-पुं [सं०] अरण जैसेका स्थान ।

प्रत्याश्वास-पुं [सं०] पुनः साँस लेना ।

प्रत्याश्वासन-पुं [सं०] मानवना, दाह ।

प्रत्याश्वास-वि० [सं०] जिस आत्माका दी गयी हो, जिसे दाहम बँधाया गया हो ।

प्रत्यासंकलित-पुं [सं०] पक्ष और विपक्षमें बही हुई बातोंको मिलाकर विचार करना ।

प्रत्यासंग-पुं [सं०] भूयोग, सम्बन्ध ।

प्रत्यासत्ति-स्त्री० [सं०] निवृत्तता; निवृत्त सम्बन्ध, प्रसन्नता; अत्यधिक प्रत्यक्षता । कारणरूप सम्बन्ध (स्था०) ।

प्रत्यासन्न-वि० [सं०] जो बहुत निकट हो, अति निकटस्थ; मग्न । मरण-सूत्र-वि० जो मर रहा हो ।

प्रत्यासर, प्रत्यासार-पुं [सं०] मेलाका पिछला भाग; ऐसी मोचोक्ता जिसमें एक व्यूहके पीछे दूसरा बनाया गया हो ।

प्रत्यास्वर-पुं [सं०] डबनेके बाद फिरसे उदित हुआ स्वर । वि० पुनः चमकनेवाला ।

प्रत्याहृत-वि० [सं०] हटाया हुआ, निवारित; अन्वीकार किया हुआ ।

प्रत्याहरण-पुं [सं०] पीछे खींचना, हटाना; निग्रह करना; इन्द्रियोंकी विषयोंमें निवृत्त करनेकी क्रिया ।

प्रत्याहार-पुं [सं०] पीछे खींचना, हटाना; इन्द्रियोंकी विषयोंमें हटाना; अष्टांग योगके अन्तर्गत एक बहिरंग साधन जिसमें इन्द्रियोंको उनके विषयोंसे हटाकर चित्तके समान निरुद्ध करते हैं; प्रलय; वधोंकी संक्षेपतः ग्रहण करनेकी एक क्रिया (व्या०) ।

प्रत्याहृत-वि० [सं०] वापस बुलाया हुआ ।

प्रत्याहृत-वि० [सं०] पीछे खींचा हुआ, हटाया हुआ; जिसका निग्रह लिया गया हो ।

प्रत्युक्त-वि० [सं०] जिसका उत्तर दिया गया हो; जिसका

उत्तर द्वारा खंडन किया गया हो ।
प्रत्युक्ति-**की०** [सं०] उत्तर, जवाब ।
प्रत्युच्चार, **प्रत्युच्चारण**-**पु०** [सं०] पुनरक्ति ।
प्रत्युजीवन-**पु०** [सं०] फिरसे जी उठना, पुनर्जीवन ।
प्रत्युत्त-**अ०** [सं०] इसके विपरीत, वरिष्ठ, वार्त् ।
प्रत्युत्क्रम-**पु०** [सं०] आक्रमण करनेके लिए बूझ करना;
 युद्धकी तैयारी; मुख्य कार्यकी सिद्धिके लिए किया जानेवाला
 गौण कार्य; पहला कदम (किसी कार्यमें) ।
प्रत्युत्तर-**पु०** [सं०] उत्तर पानेपर दिया गया उत्तर,
 उत्तरका उत्तर ।
प्रत्युत्थापन-**पु०** [सं०] किसी बड़ेके आनेपर उसके प्रति
 सम्मान प्रकट करनेके लिए अपने आसनसे उठ जाना,
 अग्रुत्थान; विरोधीका सामना करनेके लिए उठ खड़ा
 होना; बुद्ध वा किसी कार्यके लिए तैयारी करना ।
प्रत्युत्थित-**वि०** [सं०] जो किसी बड़ेके आनेपर उसके प्रति
 सम्मान प्रकट करनेके लिए वा किसी शत्रुका मुकाबला
 करनेके लिए उठ खड़ा हुआ हो ।
प्रत्युत्पन्न-**वि०** [सं०] जो फिरसे उत्पन्न हुआ हो; जो
 तत्काल उत्पन्न हुआ; उपस्थित । **पु०** गुणन । -**भस्ति**-
वि० जिससे उचित उत्तर वा उपाय तत्काल सुझ जाय,
 प्रतिभाशाली; साहसी ।
प्रत्युदाहरण-**पु०** [सं०] प्रतिकूल उदाहरण, किसी उदा-
 हरणके विरोधमें दिया गया उदाहरण ।
प्रत्युद्गत-**वि०** [सं०] किसी व्यक्तिके प्रति आदर प्रकट
 करनेके लिए अपने आसनमें उठा हुआ; किसीके विरुद्ध
 गया हुआ ।
प्रत्युद्गति-**की०** [सं०] दे० 'प्रत्युद्गमन' ।
प्रत्युद्गम, **प्रत्युद्गमन**-**पु०** [सं०] किसी बड़े वा अतिथिके
 आनेपर उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए अपना
 आसन छोड़कर खड़ा हो जाना वा उसके पासतक जाना,
 स्वागत करना ।
प्रत्युद्गमनीय-**वि०** [सं०] स्वागत करनेके योग्य, पूज्य ।
पु० वे बख (पोती-चादर) जो यह और भोजनके अवसरपर
 काममें लाये जायें ।
प्रत्युद्धार-**पु०** [सं०] एक प्रकारका नाडी-रोग ।
प्रत्युद्धारण-**पु०** [सं०] पुनः प्राप्त करना ।
प्रत्युद्यम-**पु०** [सं०] प्रतिकार, प्रतिक्रिया ।
प्रत्युपकार-**पु०** [सं०] किसी उपकारके बदलेमें किया हुआ
 उपकार, भलाईके बदलेमें की हुई भलाई ।
प्रत्युपकारी (विष्)-**वि०**, **पु०** [सं०] प्रत्युपकार करनेवाला ।
प्रत्युपदेश-**पु०** [सं०] उपदेशके बदलेमें दिया हुआ उपदेश;
 रायके बदलेमें दी हुई राय ।
प्रत्युपपन्न-**वि०** [सं०] दे० 'प्रत्युत्पन्न' ।
प्रत्युपमान-**पु०** [सं०] उपमानका उपमान ।
प्रत्युपलब्ध-**वि०** [सं०] जो पुनः प्राप्त हुआ हो ।
प्रत्युपस्थान-**पु०** [सं०] परोक्ष ।
प्रत्युत्त-**वि०** [सं०] जवाब, जवाब, वैधाना हुआ;
 बोधा हुआ ।
प्रत्युत्तर-**पु०** [सं०] उत्तर जैसा एक पक्षी; उत्सृष्टा स्रु-
 दूसा उत्सृष्ट वा कीटा ।

प्रत्युत्सृष्ट-**पु०** [सं०] उत्सृष्ट जैसा पक्षी ।
प्रत्युत्त-**पु०** [सं०] प्रातःकाल ।
प्रत्युत्त (सु)-**पु०** [सं०] प्रातःकाल ।
प्रत्युत्त-**पु०** [सं०] प्रातःकाल; आठ बज्जोमेंसे एक; सूर्य ।
प्रत्युत्त (सु)-**पु०** [सं०] प्रातःकाल ।
प्रत्युत्त-**पु०** [सं०] विना, बाधा ।
प्रत्युत्त-**वि०** [सं०] दो वा दोसे अधिकमेंसे एक-एक, अलग-
 अलग, हर एक । -**बुद्ध**-**पु०** वह बुद्ध जो और बुद्धोंकी
 तरह लोकस्वायाममें प्रवृत्त न होकर एकांतमें साधना द्वारा
 अपना ही कल्याण करे ।
प्रत्युत्त-**पु०** [सं०] फैलना; प्रसिद्ध होना वा करना; कीर्त
 नीय फैलानेका स्थान; फैलना; प्रदर्शन करना ।
प्रत्युत्त-**वि०** [सं०] गणना वा क्रममें जिसका स्थान पहला
 हो, अव्यय; जो सबसे बड़कर हो, श्रेष्ठ; प्रधान, मुख्य;
 पहलका । **अ०** पहले, आगे । -**कल्प**-**पु०** करने योग्य
 सबसे अच्छा उपाय; मुख्य नियम । -**कल्पिक**-**पु०** वह
 जिसने अभी योग्याभ्यास आरंभ किया हो, नौसिखिया
 योगी । -**कल्पित**-**वि०** पहले सोचा हुआ; शीर्षस्वा-
 नीय । -**कारक**-**पु०** कर्ता कारक (व्या०) । -**कुसुम**-
पु० सफेद अगस्तका फूल । -**ज**-**वि०** जो 'सर्वमें पहले
 उत्पन्न हुआ हो । -**वृक्ष**-**पु०** पहले पहल देखना ।
 -**धार**-**की०** पहली दूँद । -**निर्विद्ध**-**वि०** जिसका पहले
 उल्लेख हुआ हो । -**पुरुष**-**पु०** वह व्यक्ति जिसके विषय-
 में कुछ कहा जाय (व्या०) । -**प्रसूता**-**की०** पहली बार
 बच्चा देनेवाली (गाय) । -**भंगल**-**वि०** बहुश्रुत । -
बौद्ध-**पु०** बद्धी जवानो । -**रात्र**-**पु०** रातका पहला
 भाग । -**वय (सु)**-**पु०** वचन । -**वयसी (सिष्)**-
वि० नयी उम्रका । -**विरह**-**पु०** पहले-पहल होनेवाला
 विरोग । -**साहस**-**पु०** सबसे बलकी सजा, प्राचीन
 कालका एक प्रकारका अर्धदंड जिसमें २५० पणतक जुर्-
 माना किया जाता था । -**सुकृत**-**पु०** पहला उपकार
 वा सेवा ।
प्रथमक-**वि०** [सं०] पहला ।
प्रथमतः (तस्)-**अ०** [सं०] पहले, सबसे पहले ।
प्रथमा-**की०** [सं०] कर्ता कारक (सं० व्या०); मदिरा ।
प्रथमाक्रमक-**पु०** [सं०] (ऐसेर) दे० 'प्रथमाक्रमणकारी' ।
प्रथमार्ध, **प्रथमार्च**-**पु०** [सं०] दो समान भागोंमेंसे पहला,
 पूर्वार्ध ।
प्रथमाश्रम-**पु०** [सं०] ब्रह्मचर्याश्रम ।
प्रथमी-**की०** [सं०] प्रथमी ।
प्रथमेतर-**वि०** [सं०] पहलेके बादका, दूसरा ।
प्रथमोदित-**वि०** [सं०] पहले कहा हुआ ।
प्रथा-**की०** [सं०] प्रमिद्धि; स्थापित; रीति, परिपाटी
 (हिं०) ।
प्रथित-**वि०** [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात; बढ़ा हुआ, फैला
 हुआ; दिखलाया, प्रदर्शित किया हुआ । **पु०** विष्णु ।
प्रथिति-**की०** [सं०] प्रसिद्धि, स्थापित ।
प्रथिमा (अव)-**की०** [सं०] स्थूलता, दृढत्व ।
प्रथिमी-**की०** [सं०] पृथ्वी ।
प्रथु-**पु०** [सं०] विष्णु । **वि०** विस्तृत, फैला हुआ ।

प्रत्युक्त-पु० [सं०] विचका; शावक ।

प्रद-वि० [सं०] देनेवाला (वीगिक शब्दोंमें, जैसे-हर्षप्रद, कामप्रद) ।

प्रदक्षिण-पु० [सं०] अर्द्धाभक्तिके भावसे देवता आदिके चारों ओर इस प्रकार घूमना कि दाहिना अंग बराबर उसीकी ओर पड़े, परिक्रमा, करी । वि० विनम्र; शुभ; दाहिनी ओर स्थित । -क्रिया-क्री० परिक्रमा । -पद्धिका-क्री० आंगन ।

प्रदक्षिणा-क्री० [सं०] दे० 'प्रदक्षिण' ।

प्रदक्षिणाभि(सू)-वि० [सं०] (वह अधि) जिसकी रूपों-का स्वर दाहिनी ओर हो ।

प्रदक्ष-वि० [सं०] बहुत जला हुआ ।

प्रदक्षिण-पु० दे० 'प्रदक्षिण' ।

प्रदक्ष-वि० [सं०] दिया हुआ ।

प्रद्व-पु० [सं०] विदीर्ण होने या फटनेका भाव; दरार; छिद्र; बाधा; सेनाका तितर-बितर होना; क्षियोंका एक रोग जिसमें उनके गर्भाशयसे सफेद या लाल रंगका लसदार पदार्थ बहता है ।

प्रद्व-पु० [सं०] भारी बमझ ।

प्रद्व-पु० [सं०] रूप, शब्द-वर्त; आदेश, आज्ञा ।

प्रद्व-पु० [सं०] दिखा देनेवाला; देखनेवाला; गुरु, पैगम्बर, सिद्धांत, मत । वि० दिखलानेवाला; सिखलाने-वाला; अभिव्यक्त ।

प्रद्व-पु० [सं०] दिखलानेकी क्रिया, दिखाना; सिखलाना; उदाहरण; अभिव्यक्त्यन; रूप; नजारा ।

प्रद्व-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ तरह-तरहकी वस्तुएँ प्रदर्शित की जायें; नुमाइश ।

प्रद्व-वि० [सं०] जो दिखाया गया हो; प्रदर्शनीमें रखा हुआ; जनाया हुआ; सिखलाया हुआ ।

प्रद्व-वि० [सं०] देखनेवाला, दर्शक; दिखलाने-वाला ।

प्रद्व-पु० [सं०] बाण, तीर ।

प्रद्व-पु० [सं०] बहुत अधिक ताप; प्रज्वलन ।

प्रद्व-पु० [सं०] बनामि ।

प्रदास(तृ)-पु० [सं०] देनेवाला, दाता; कन्यादान करनेवाला; द्रव ।

प्रदास-पु० [सं०] देना, दान; कन्यादान; अकुश; जेबे । -छात्र-पु० बहुत बड़ा दानी, दासवीर ।

प्रदासक-पु० [सं०] दान; भेंट, उपहार ।

प्रदास-पु० [सं०] उपहार, भेंट ।

प्रदासक, प्रदासी(विद्व)-वि०, पु० [सं०] देनेवाला, प्रदान करनेवाला ।

प्रदास-पु० [सं०] दाह, जलन; भस्मसाह होने, भस्म ।

प्रदिक्ष(सू), प्रदिक्षा-क्री० [सं०] दो मुख्य दिशाओंके बीचकी दिशा, विदिक्षा, कोण ।

प्रदिक्ष-वि० [सं०] क्षिप्त । पु० भीमें अच्छी तरह घूना हुआ भांस जिसमें ऊपरसे नीचा, तक आदि भिजना गया हो ।

प्रदिक्ष-वि० [सं०] दिखाया हुआ, बताया हुआ; निवृत्त किया हुआ; उद्घाटन हुआ; आदिष्ट ।

प्रदीप-पु० [सं०] दीपक, विराम; वह जो प्रकाश करे अथवा किसी विषयकी स्पष्ट करे (इस अर्थमें इस शब्दका प्रयोग ग्रंथोंके नाममें होता है (जैसे-काव्यप्रदीप); एक राग । (विशेष-कुल्लके साथ जुबनेपर 'प्रदीप'का अर्थ होता है रोशन करनेवाला, नाम उजागर करनेवाला ।)

प्रदीपक-वि० [सं०] प्रकाश करनेवाला; स्पष्ट करनेवाला । पु० छोटा दीपक; प्रकाश करनेवाला; स्पष्ट करनेवाला ।

प्रदीपति-क्री० दे० 'प्रदीपति' ।

प्रदीपन-पु० [सं०] प्रकाश करना; जलाना; उपोजित करना, जगाना; लाल रंगका और आगके समान चमक-वाला एक प्रकारका स्थावर विष जो बहुत अधिक दाह उत्पन्न करता है । वि० प्रकाश करनेवाला; उपोजित करने-वाला, जगानेवाला ।

प्रदीपिका-क्री० [सं०] छोटा दीपक; अर्ध या विषय स्पष्ट करनेवाली छोटी पुस्तक ।

प्रदीप्त-वि० [सं०] जलाया हुआ (आग आदिके विषय); प्रकाशित; जलता हुआ, जगमगाता हुआ; उपोजित, जगाया हुआ (भूख आदिके विषय); दीप्तियुक्त; चमकीला । -प्रज्ञ-वि० दीक्षा बुद्धिवाला ।

प्रदीप्ति-क्री० प्रकाश; प्रभा; चमक ।

प्रदुग्ध-पु० दे० 'प्रदुग्ध' ।

प्रदुग्ध-वि० [सं०] बिगड़ा हुआ; दोषयुक्त; दुष्ट, गुरे स्वभाव-का; लंपट ।

प्रदुग्ध-वि० [सं०] दोषयुक्त बनानेवाला, दूषित करनेवाला ।

प्रदुग्ध-पु० [सं०] दोषयुक्त बनाना; चीपट करना, रट कर देना ।

प्रदुषित-वि० [सं०] विशेष रूपसे दूषित ।

प्रदुषि-क्री० [सं०] बमझ ।

प्रदेष-वि० [सं०] देने योग्य, दान करने योग्य । पु० उपहार, भेंट ।

प्रदेश-पु० [सं०] किसी देशका वह बड़ा भाग जो भाषा, रीति, आबहवा आदिकी दृष्टिसे उसी देशके अन्य भागोंसे भिन्न हो, प्रांत; स्थान, जगह; अंगूठेके सिरमें लेकर तर्जनीके सिरतककी दूरी; दीवार; निक्षय, संक्षय; दिखलाना, निर्देश करना । -कारी(विद्व)-पु० सन्ध्या-सियोंका एक भेद ।

प्रदेश-पु० [सं०] परामर्श, उपदेश देना; दिखलाना; नजर, भेंट ।

प्रदेशी-वि० [सं०] अंगूठेके बावकी उँगली, तर्जनी ।

प्रदेशित-वि० [सं०] दिखलाया, बताया हुआ ।

प्रदेशीय-वि० [सं०] प्रदेश-सम्बंधी; प्रदेशका ।

प्रदेश(वृ)-पु० [सं०] प्रधान विचार-पक्ष ।

प्रदेश-पु० [सं०] प्रलेप, लेप करना; कोड़े आदिपर दवा चढ़ाना ।

प्रदीप-पु० [सं०] भारी दीप; अभ्यवस्था; सायंकाल; रात-का पहला पहर; बचोदशी अत जिसमें दिनभर उपवास करते हैं और सायंकाल शिवकी पूजा करके नीज करते हैं । वि० कुरा, दुष्ट ।

प्रवृत्त-पु० [सं०] नाच, स्था। वि० नाचनेवाला।
 प्रपंच-पु० [सं०] विस्तार, फैलाव; संसार, अवचका जगत्-
 का जंजाल, अवकाश (हि०); छत्र, बोझा; निजता; राशि;
 प्रतिमुक्ता; विरलेषण; छनेला; बनेला (हि०)। -प्रुद्धि-
 वि० चालना, बोलेबाज। -प्रवचन-पु० विलुप्त कथन।
 प्रपंचक-वि० [सं०] विस्तार करनेवाला; व्याख्या करने-
 वाला।
 प्रपंचन-पु० [सं०] विस्तार करना; व्याख्या करना।
 प्रपंचित-वि० [सं०] जिसका विस्तार किया गया हो,
 विस्तारित; जो ठगा गया हो, प्रसारित, जिससे भूख
 हुई हो।
 प्रपंची (विष्णु)-वि० [सं०] प्रपंच रचनेवाला; छछिया,
 बोलेबाज; बखेला खड़ा करनेवाला।
 प्रपञ्च-पु० [सं०] (पक्षीके रूपमें ब्यूट सेनाके) पक्षका
 अग्रभाग।
 प्रपञ्च-पु० [सं०] वह पदार्थ जिसपरसे किसी वस्तुका
 पतन हो (हल आदि); उड़ जाना; नीचे गिरना; झुगु।
 प्रपतित-वि० [सं०] जो उड़ गया हो; नीचे गिरा हुआ;
 जिसका क्षय हो गया हो; खत।
 प्रपत्ति-स्त्री० [सं०] अनन्त अक्ति।
 प्रपथ-पु० [सं०] चौड़ी सड़क। वि० विशाल।
 प्रपथ-वि० [सं०] अति हितकर।
 प्रपथ्या-स्त्री० [सं०] हरीतकी, हड़।
 प्रपथ-पु० [सं०] पैरका जगला भाग, पैरका पंजा।
 प्रपथन-पु० [सं०] प्रवेश, पहुँच।
 प्रपथीय-वि० [सं०] प्रपद-संबंधी; प्रपदका।
 प्रपथ-वि० [सं०] शरणमें आया हुआ, शरणागत; प्राप्त;
 युक्त; दोन; कष्टग्रस्त। पु० (बाई) वह व्यक्ति जो नाचा-
 लिंग होनेके कारण अपने अस्मितावकके अधीन हो, अति-
 रक्ष्य। -पारिजात-पु० शरणागतके मनोरथ पूर्ण करने-
 वाले, कृष्ण। -पाठ-पु० कृष्ण।
 प्रपञ्चा-पु० [सं०] चक्रवर्ध।
 प्रपर्ण-वि० [सं०] जिसके पत्ते हल गये हों। पु० गिरा
 हुआ पत्ता।
 प्रपलावन-पु० [सं०] भाग खड़ा होना, पलायन।
 प्रपलावी (विष्णु)-वि० [सं०] भगोका।
 प्रपलाश-वि०, पु० [सं०] दे० 'प्रपर्ण'।
 प्रपा-स्त्री० [सं०] पौसरा; कृप; शीज; पशुओंका पानी
 पिलाने आदिका स्थान। -पाशिका-स्त्री० पौसरा
 खानेवाली स्त्री। -पञ्च-पु० शीतल कुंज।
 प्रपाक-पु० [सं०] भस्मका पकना; प्रदाह।
 प्रपाठ, प्रपाठक-पु० [सं०] सवक, पाठ; पुस्तकका
 अध्याय।
 प्रपाणि-पु० [सं०] हथेली; हाथका अग्रभाग।
 प्रपात-पु० [सं०] पहाड़ या चट्टानका ऐसा किनारा जिसके
 आगे या नीचे कोई रोक न हो, पहाड़ या चट्टानका ऊँचा
 खड़ा किनारा, अतट; छरना; निर्धर; किनारा, तट;
 गिरना, पड़ावसे नीचे गिरना, उछानका एक ढंग;
 आक्रमण।
 प्रपातन-पु० [सं०] गिराना, नीचे फेंकना।

प्रपातन-पु० [सं०] छरनेका पावी।
 प्रपाती (विष्णु)-पु० [सं०] वह चट्टान या पहाड़ जिसका
 किनारा खड़ा हो।
 प्रपाथ-पु० [सं०] सवक; मार्ग।
 प्रपाथिक-पु० [सं०] मोर।
 प्रपान-पु० [सं०] पीना; पेश।
 प्रपालक-पु० [सं०] पत्ता।
 प्रपाली (विष्णु)-पु० [सं०] बलराम।
 प्रपालामह-पु० [सं०] परदादा; परजन्म; कृष्ण।
 प्रपालामही-स्त्री० [सं०] परदादी।
 प्रपिपुष्प-पु० [सं०] दादाका नाचा, बबेरा परदादा।
 प्रपीडक-पु० [सं०] दबानेवाला; सतानेवाला।
 प्रपीडन-पु० [सं०] निचोड़ना; घेरना; वह जो दबाये।
 प्रपीत, प्रपीन-वि० [सं०] सूजा हुआ; फैला हुआ।
 प्रपीति-स्त्री० [सं०] पीनेकी किया।
 प्रपुञ्ज-पु० [सं०] बड़ा झुंड।
 प्रपुञ्ज-पु० [सं०] पौन, पोता।
 प्रपुष्पाट, प्रपुष्पाट, प्रपुष्पाट-पु० [सं०] चक्रवर्ध।
 प्रपूरक-वि० [सं०] पूरा करनेवाला; भरनेवाला; तुल्य
 करनेवाला।
 प्रपूरण-पु० [सं०] भरना; पूरा करना; तुल्य करना;
 मिश्रण।
 प्रपरिका-स्त्री० [सं०] कटोरी, मटकटैया।
 प्रपरित-वि० [सं०] विशेष रूपसे पूरा किया हुआ; अच्छी
 तरह भरा हुआ।
 प्रपर्य-पु० [सं०] परजन्म; अधिनीकुमार।
 प्रपीडरीक-पु० [सं०] पुडरी नामका पौधा, पुंजरिया।
 प्रपीत्र-पु० [सं०] पोतेका वेडा।
 प्रपीत्री-स्त्री० [सं०] पोतेकी वेडी।
 प्रप्यावन-पु० [सं०] पञ्चन।
 प्रफुल्ल-वि० [सं०] फिलना, फूलना।
 प्रफुल्ल-स्त्री० [सं०] कुमुदिनी, कुर्द; कमलिनी।
 प्रफुल्लित-वि० [सं०] फिलना हुआ; अति प्रसन्न, प्रसन्नित।
 प्रफुल्ल-वि० [सं०] दे० 'प्रफुल्ल'।
 प्रफुल्ल-वि० [सं०] खिला हुआ, विकसित; जिसमें फूल
 लगे हों; फूला हुआ; प्रसन्न। -नयन, -नेत्र-वि० जिसकी
 आँखें प्रसन्नतासे फैली हुई हों। -वदन-वि० जिसका
 मुख प्रसन्न दिखता हो।
 प्रफुल्लचंद्र राय-पु० रसायनशास्त्रके रसायननामा विद्वान्
 (१८९१-१९५४); बंगालकी आर्थिक उन्नतिके लिए आप
 सतत प्रयत्नशील रहे। जीवधिमार्ग करनेवाले कारखाने
 'बंगाल केमिकल एंड फार्मेसिटिकल वर्क्स'की स्थापना
 आपने ही की थी।
 प्रबंध-पु० [सं०] प्रकृत बंधन; (अविच्छिन्न) क्रम; ग्रंथ,
 कथा आदिकी रचना; निबंध; आबोजन; व्यवस्था। -
 कर्ता (स्त्री)-वि०, पु० प्रबंध करनेवाला। -कल्पना-
 स्त्री० वह रचना जिसमें थोड़ेसे सत्य वृत्तान्तमें बहुत कुछ
 काल्पनिक बातें मिलानी गयी हों, कथा (जैसे-कार्यवरी)।
 -कारिणी-वि० स्त्री० किसी सचा, संघ श्रम्यादिके निष्कर्षी-
 को कार्यरूप देनेवाली या उसकी ओरसे प्रबंधकार्य करने-

वाची (समिति) । —**काव्य**-पु० (युक्तका उच्छ्वा) वह काव्य जिसमें किसीके जीवनकी विशेष घटनाओंका क्लृप्त चित्रण किया गया हो । —**संचालक**-पु० किसी संस्थाके प्रशासिकों देखरेख करनेवाला संचालक ।

प्रबंधक-वि० पु० [सं०] दे० 'प्रबंधकर्ता' ।

प्रबन्ध-पु० [सं०] पद ।

प्रबन्ध-वि० [सं०] प्रधान, श्रेष्ठ ।

प्रबन्ध-वि० [सं०] प्रकृत बलवाला, बहुत बड़ी; प्रबंध, उद्यम, जोरका; मारी, महात्मा; दानिकर । पु० कौपल, पल्लव ।

प्रबन्ध-कौ० [सं०] प्रसारिणी कला । वि० कौ० दे० 'प्रबल' ।

प्रबन्धिका-कौ० [सं०] पहेली ।

प्रबन्धक-वि० [सं०] भगाने, हटानेवाला; निवारण करनेवाला; पीड़न करनेवाला; अस्वीकार करनेवाला ।

प्रबाधन-पु० [सं०] निवारण करना; सताना; हनकार करना ।

प्रबाधित-वि० [सं०] पीड़ित; आगे बढ़ाया हुआ ।

प्रबाल-पु० [सं०] नया कोमल पत्ता; नव-पल्लव; नूँगा; बीणाकी लकड़ी, बीणाबंध; शिष्य; जानवर । —**पक्ष**-पु० लाल कमल । —**फल**-पु० लाल चंदन । —**मस्त**(श)-पु० मूँगेका भरम । —**जर्ज**-वि० मूँगेके रंगका, लाल ।

प्रबालक-पु० [सं०] एक बाल ।

प्रबालिक-पु० [सं०] एक शाक, जीवशाक ।

प्रबास*-पु० दे० 'प्रवास' ।

प्रबाह*-पु० दे० 'प्रभात' ।

प्रबाहु-पु० [सं०] हाथका अगला भाग ।

प्रविसना*-अ० कि० प्रवेश करना, घुसना ।

प्रवीन*-वि० दे० 'प्रवीण' । कौ० अन्धी बीणा ।

प्रवीर*-वि० दे० 'प्रवीर' ।

प्रबुद्ध-वि० [सं०] जागा हुआ, जाग्रत; प्रबोधयुक्त; संवित, हानी; खिला हुआ, विकसित; (जादू आदि) जिसका असर पड़ने लगा हो; सजीव ।

प्रबुध-पु० [सं०] सहर्षि ।

प्रबोध-पु० [सं०] जागना; जागरण; सचेत होना (ला०); यथार्थ ज्ञान, तत्त्वज्ञान; सांत्वना, दादस; सतर्कता; उन्नी हुई गंधको फिर तेज करना; फूलका खिलना, बिकास; व्याख्या करना ।

प्रबोधक-वि० पु० [सं०] जगानेवाला। सचेत करनेवाला (ला०); ज्ञान देनेवाला, ज्ञानदाता; दादस देनेवाला; राजाको प्रातःकाल जगानेवाला, खुतिपाठ करनेवाला ।

प्रबोधन-पु० [सं०] जगना; जगाना; सचेत होना; तत्त्वज्ञान; यथार्थ ज्ञान; बोध कराना; समझाना; गंधको फिर तेज करना ।

प्रबोधवाक*-स० कि० जगाना; सचेत करना; समझाना-बुझाना; कोई बात सिखाना; जटस बँधाना, तसछी देना ।

प्रबोधनी-कौ० [सं०] दे० 'प्रबोधिनी' ।

प्रबोधित-वि० [सं०] जगाया हुआ; जिसका प्रबोध किया गया हो, समझाया-सिखलाया हुआ ।

प्रबोधिता-कौ० [सं०] एक वर्णद्वय ।

प्रबोधिनी-कौ० [सं०] देवोत्थान एकदली; बुराकवा ।

प्रबद्ध*-पु० पर्वत ।

प्रबंध-वि० [सं०] कुञ्ज, रौदा हुआ; पूर्णतः पराभूत ।

प्रबंधन-पु० [सं०] तोष-पात्र; बाहु, हवा; प्रबंध बाहु, जोरकी हवा; एक लकीर-रौदा; एक प्रकारकी समष्टि । वि० तोष-कीच करनेवाला, जट करनेवाला । —**सुप्त**-पु० हनुमान् ।

प्रबन्ध-पु० [सं०] नीमका पेड़ ।

प्रबन्धक-पु० [सं०] एक वर्णद्वय । वि० बहुत सुंदर ।

प्रबन्धा-कौ० [सं०] लाजवंती ।

प्रबन्ध-पु० [सं०] उत्पत्ति, जन्म; उत्पत्तिक कारण; उत्पत्तिका स्थान; मूल; जड़; नदी आदिका उद्गमस्थान; पराक्रम; साठ सप्तसर्पोंमेंसे एक; विष्णु ।

प्रबन्धन-पु० [सं०] उत्पत्ति; उत्पत्तिस्थान ।

प्रबन्धिता(श)-पु० [सं०] शासक; प्रभु ।

प्रबन्धिष्यु-वि० [सं०] प्रभावशाली; शक्तिशाली । पु० प्रभु, लकीर, मालिक; विष्णु ।

प्रबन्धिष्युता-कौ० [सं०] प्रभावोत्पादकता ।

प्रबोजन-पु० [सं०] बोभोजन, सविजनका पेड़ ।

प्रभा-कौ० [सं०] तेज, नमक, दीप्ति; प्रकाश; किरण; सूर्य-विंव; दुर्गा; कुबेरकी पुरी; सूर्यकी एक पत्नी; एक अमरता; बहुवकी माता; एक वृत्त । —**कर**-पु० सूर्य; शिव; अग्नि; चंद्रमा; समुद्र; मदराका पीपा; भीमांसाके एक प्रसिद्ध आचार्य जो 'गुरु' नामसे विख्यात है; कुश-दीपका एक पर्वत । —**करी**-कौ० सिद्धिकी दस अवस्थाओंमेंसे एक (बी०) —**कीट**-पु० जुगदू । —**पल्लवित**-वि० जिसपर दीप्ति फैली हुई हो । —**प्ररोह**-पु० प्रकाशकी किरण । —**संज्ञक**-पु० देवताओं, महात्माओं आदिके मुखके चारों तरफका वह दीप्तिमय जो चित्तों या मूर्तिवी-में दिखलाया जाता है । —**क्षेपी**(विष्णु)-वि० प्रकाशमें ढका हुआ; नमक मिलेला हुआ ।

प्रभाट*-पु० दे० 'प्रभात' ।

प्रभाय-पु० [सं०] भागका भाग, डकड़का डकड़ा; मिश्रका भिन्न (जैसे-१/३ का २/५) ।

प्रभात-पु० [सं०] सवेरा, प्रातःकाल; प्रभासे उत्पन्न सूर्यका पुत्र । वि० जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो । —**करणीय**-पु० प्रातःकालका कृत्य । —**कल्प**,-**प्रात**-वि० प्रभातपत्र । —**काळ**,-**समय**-पु० तबका, प्रातःकालकी बेला । —**कैरी**-कौ० [हिं०] कोई उत्सव मनाने या किसी बातका प्रचार करनेके उद्देश्यसे जुलूस बनाकर विशेष प्रकारके नारे लगाते हुए मोरमें बस्तीमें घूमना ।

प्रभासी-कौ० सवेरे गाया जानेवाला एक प्रकारका गीत; दातुन (साधुओंकी बोली) ।

प्रभाष-पु० [सं०] दीप्ति, प्रकाश ।

प्रभाषन-पु० [सं०] दीप्तिमान् करना ।

प्रभाष-पु० [सं०] दीप्ति, कानि; उद्भव, उत्पत्ति; सामर्थ्य, शक्ति, विक्रम; सूर्यका एक पुत्र; सुग्रीवका एक मंत्री; राजकीय शक्ति, राजाका कौशल और दंडसे उत्पन्न तेज, प्रताप; फल, परिणाम; असर; दबाव; विस्तार । —**कर**-वि० असर डालनेवाला । —**ज**-वि० प्रभावमें उत्पन्न । पु० तीन

प्रकारको राजकृतिनीमेंसे एक जो शेष और दंडके रूपमें प्रकट होती है।—**छात्री(किन्)**-वि० प्रभाववाली।
प्रभावक, प्रभावक-वि० [सं०] प्रसुप्त, जिसका प्रभाव हो। प्रभाव करनेवाला।
प्रभावशी-की० [सं०] काटिकेयवी एक अनुचरी। एक अक्षरकला जिसका वर्ण प्रयुग्मने किया था; अंग देशके राजा चित्रवर्मा रानी (म० भा०); एक छंद। वि० की० प्रभाववाली।
प्रभावना-की० [सं०] प्रकट करना; (किसी सिद्धांतका) प्रचार।
प्रभाववान्(बद), **प्रभावी(विद्)**-वि० [सं०] शक्ति-शाली; प्रतापी।
प्रभावान्(बद)-वि० [सं०] दीप्तिपुङ्गव।
प्रभावाम्बित-वि० [सं०] प्रभावसे युक्त; प्रभावित।
प्रभावित-वि० [सं०] जिसपर प्रभाव पड़ा हो।
प्रभावण-पु० [सं०] व्याख्या।
प्रभासंत-पु० [सं०] परमेश्वर; रुद्र।
प्रभास-वि० [सं०] प्रचुर प्रभाववाला, अति दीप्तिमान्।
 पु० दीप्ति, प्रकाश; एक प्राचीन तीर्थ, सोमतीर्थ; एक वस्तु; काटिकेयका एक अनुचर; एक जैन गणाधिप।
प्रभासन्-पु० [सं०] आलोकित, प्रकाशित करना।
प्रभासना-अ० कि० आसित होना, प्रसीत होना, दिखाई पड़ना।
प्रभास्वर-वि० [सं०] दीप्तिपुङ्गव, बहुत चमकीला।
प्रभिन्न-वि० [सं०] भिन्न, जो अलग हो; बहुत अधिक भेद-वाला; भिन्न; जो हृदयक दुकने-दुकने हो गया हो; परिवर्तित; विकृत; दीला किया हुआ; मिटा हुआ; खिला हुआ; मतवाला (हाथी)। पु० वह हाथी जिसके गंडस्थलने मर चुका हो, मतवाला हाथी।—**कट-वि०** (वह हाथी) जिसके फटे हुए कुंमस्थलसे दान नष्ट रहा हो।
प्रभिर्जाजन-पु० [सं०] तेरुमें तैयार किया हुआ एक तरबूत अंजन।
प्रभीत-वि० [सं०] बहुत डरा हुआ।
प्रभु-पु० [सं०] अधीश्वर, स्वामी; अन्नदाता; शास्त्र; ईश्वर; विष्णु; शिव; ब्रह्मा; ईश्वर; पारा; राजा, स्वामी या श्रेष्ठ पुरुषका संबोधन; ईश्वर प्रांतके कायस्थोंकी उपाधि।
 वि० शक्तिशाली; योग्य, दक्ष; प्रचुर; स्वाधीन; मुकाबलेका।
 -**भक्त-वि०** जो अपने स्वामीका सच्चा सेवक हो, जो अपने स्वामीमें अनुरक्त हो, बकादार। पु० अच्छी जातिका घोड़ा।—**छात्रि-की०** कीच और सेनाका बल; पूर्ण प्रभुत्व, परम सत्ता।
प्रभुता-की०, प्रभुत्व-पु० [सं०] प्रभुका मान, गौरव, महत्त्व; अधिकार, स्वामित्व; वैभव, ऐश्वर्य।
प्रभुताई-की० दे० 'प्रभुता'।
प्रभु-पु० दे० 'प्रभु'।
प्रभूत-वि० [सं०] जो हुआ हो, भूत; उपपन्न, उद्भूत; प्रकृत अधिक, प्रचुर; उन्नत; पूर्ण; पक्का।
प्रभूतता-की०, प्रभूतत्व-पु० [सं०] प्रचुरता; राशि।
प्रभूति-की० [सं०] उत्पत्ति-स्थान; शक्ति; आधिक्य, प्रचुरता।

प्रभुपु-वि० [सं०] प्रभावशाली; समर्थ।
प्रभुति-अ० [सं०] इत्यादि, वगैरह। की० आरंभ।
प्रभु-पु० [सं०] भेद, प्रकार; किस; अंतर; स्तोत्रम; विभाग; विधोग; दानका नाम।
प्रभेद-वि० [सं०] काबज, चौरनेवाला; अंतर करनेवाला।
प्रभेद-वि० [सं०] दे० 'प्रभेदक'।
प्रभेद-पु० दे० 'प्रभेद'।
प्रभंभा-पु० [सं०] गिरना; निकलकर गिर जाना।
प्रभंभा-पु० [सं०] नाकका एक रोग, पीनस।
प्रभंशित-वि० [सं०] निष्कासित; फँका हुआ, गिराया हुआ;...से बंशित।
प्रभंश(सिन्)-वि० [सं०] गिरनेवाला; हटनेवाला।
प्रभट-वि० [सं०] गिरा हुआ, पतित; दूटा हुआ, क्षति।
 पु० शिक्षापर धारण की गयी माला, शिक्षार्थिनी माला।
प्रभट-पु० [सं०] दे० 'प्रभट'।
प्रभंछ-पु० [सं०] पहियेके बाहरी हिस्सेका खंड, चक्केका खंड।
प्रभ-वि० परम।
प्रभ-वि० [सं०] हुआ हुआ, निमग्न।
प्रभना(अल्), प्रभना(भस्)-वि० [सं०] प्रसन्न, हट।
प्रभ-वि० [सं०] विचारित, सोचा हुआ; चतुर।
प्रभ-वि० [सं०] प्रकट बुद्धिवाला। पु० चवन कृषिका एक पुत्र।
प्रभ-वि० नशेमें चूर; मगवाला; पागल, विक्षिप्त; असावधान, प्रमादयुक्त; सध्या-पूजा न करनेवाला; भूल-चूक करनेवाला।—**गीत-पु०** नशेकी शालतेमें गाया हुआ गीत।—**क्षिप्त-वि०** कापरबाह, प्रमादी।
प्रभ-वि० [सं०] प्रसन्न होनेका भाव, मतवालापन; पागलपन; लापरवाही।
प्रभ-पु० [सं०] शिवके एक प्रकारके अनुचर; घोड़ा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र।—**नाथ, पति-पु०** शिव।
प्रभ-पु० [सं०] मथना; मार मारना, बध; नष्ट करना; पीडा पहुँचाना, कष्ट देना, उपपीडन; क्षति पहुँचाना।
प्रभ-की० [सं०] हक, इरीतकी।
प्रभ-वि० [सं०] शिव।
प्रभ-वि० [सं०] मथना; मार मारना, बध; नष्ट करना; पीडा पहुँचाना, कष्ट देना, उपपीडन; क्षति पहुँचाना।
प्रभ-वि० [सं०] अच्छी तरह मथा हुआ; जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो, उपपीडित; रौंदा हुआ; जिसका बध किया गया हो। पु० बिना जलका मट्ठा।
प्रभ-वि० [सं०] नाश करनेवाला।
प्रभ-वि० [सं०] शिव।
प्रभ-वि० [सं०] मथवाला, प्रसन्न; जिसमें बहुत मद्य हो, प्रकट मद्यवाला; उम्र; लापरवाह; विवेकहीन। पु० कट्टरेका कल; हथै, मोद; एक दैत्य।—**कानन, बध-पु०** वह ज्वाल जिसमें राजा अपनी रानियोंके साथ विहार करता है, क्रीडोद्यान, प्रसोदन।
प्रभ-वि० [सं०] कामुक।
प्रभ-पु० [सं०] कामेच्छा; क्रीडोद्यान।
प्रभ-की० [सं०] रूपवती युवती; सुंदर स्त्री; एक वणिज

हृत्; कन्या राशि । -कानन, -वन-पु० दे० 'प्रमद-कानन' । -जन-पु० युवती स्त्री; स्त्री जाति ।

प्रमद-वि० [सं०] कापरवाह, असाधन ।

प्रमद-वि० [सं०] अति मूढ़; विषण्ण ।

प्रमद-पु० [सं०] बध; मृत्यु; पतन; नाश ।

प्रमद-वि० [सं०] एक दैत्य; विष्णु; शिवका एक अनुचर;

नाश करना; निकासन । वि० नष्ट करनेवाला ।

प्रमदित-वि० [सं०] नष्ट-ध्वस्त किया हुआ, रौंदा हुआ ।

प्रमदित(तु), प्रमदी(विन्) -वि० [सं०] कुचरनेवाला, नष्ट करनेवाला ।

प्रमा-स्त्री० [सं०] चेतना, बोध; जो जैसा है उसको उस रूपमें जानना, किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान या अनुभव (न्या०); आधार, नीब (दे०); माप ।

प्रमाण-पु० [सं०] वह साधन जिसके द्वारा किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान हो, प्रमाका साधन (न्या०); वह साधन जिसके सहारे कोई बात सिद्ध की जाय, उपर; वह जिसका वचन या निर्णय यथार्थ या आस माना जाय; माप; परिमाण, मात्रा; इच्छा, सीमा, अवधि; एक अधीश्वर जहाँ आठ प्रमाणोंमेंसे किसी एकका कथन हो; धर्मशास्त्र; मूलधन; विष्णु; एका; हेतु, कारण; नियम; वैराशिककी पहली राशि (ग०); [हिं०] यथाश्चता, सत्यता; निश्चय, पक्का इरादा; ठिकाना, भरोसा; मानने या आदर करने योग्य वस्तु; आशापत्र, आदेश । वि० यथार्थ; चरितार्थ; सत्य; उपरित, ठीक । ज० तक, पर्यंत । -कुशल-वि०

वाद-विवाद या बहस करनेमें चतुर, युक्तिपट । -कोटि

-स्त्री० प्रामाणिक वस्तुओं या आधारोंकी श्रेणी या वर्ग; वाद-विवादमें वह युक्ति जो प्रमाण मानी जाती है । -ज्ञ-

वि० प्रमाण-अप्रमाणको जाननेवाला, पंडित । पु० शिव ।

-दृष्ट-वि० शास्त्रादिते सम्मत (जो प्रमाणके रूपमें पेश किया जा सके) । -पत्र-पु० वह पत्र या लेख जो किसी

बातका प्रमाण माना जाय । -पुष्प-पु० मधुसूय, पंच ।

-प्रवीण-वि० तर्क-कुशल । -भूत-वि० जो किसी बातका प्रमाण हो या माना जाय, प्रमाणरूप । पु० शिव ।

-बन्धन, -बाध्य-पु० न्यायसंगत बाध्य । -शास्त्र-पु० न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र । -सूत्र-पु० वह सूत्र जिससे

कोई वस्तु मापी जाय ।

प्रमाणक-वि० [सं०] (समासांतमें) 'परिमाण या विस्तारका ।

प्रमाणतः(सत्) -ज० [सं०] प्रमाणके अनुसार ।

प्रमाणवाक्य-ज० कि० दे० 'प्रमानवा' ।

प्रमाणाधिक-वि० [सं०] परिमाणसे अधिक; अत्यधिक ।

प्रमाणिक-वि० [सं०] जिसके लिए कोई प्रमाण हो, प्रमाण-सिद्ध; जो किसी बातका प्रमाण हो, प्रमाणरूप (हिं०) ।

पु० चौबीस अंगुली एक लंबाईकी माप, हाथ ।

प्रमाणिका-स्त्री० [सं०] एक छंद ।

प्रमाणित-वि० [सं०] प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाणसिद्ध ।

प्रमाणी-स्त्री० [सं०] एक छंद, प्रमाणिका ।

प्रमाणीकृत-वि० [सं०] जो प्रमाण ठहराया गया हो ।

प्रमातव्य-वि० [सं०] बध्य, मारने योग्य ।

प्रमाता(तु)-वि० [सं०] प्रमाकर ज्ञानको प्राप्त करनेवाला,

जो प्रमाण द्वारा किसी वस्तुका ज्ञान प्राप्त करे; किसी विषयका साक्षात्कार करनेवाला, विषयी । पु० अंतर्धारण-को वृत्तिसे अवच्छिन्न या उसमें प्रतिबिंबित चैतन्य (दे०) ।

प्रमातामाह-पु० [सं०] परमाना ।

प्रमातामाही-स्त्री० [सं०] परनानी ।

प्रमाथ-पु० [सं०] मथना, मथन; बलपूर्वक हरण करना; बलात्कार; बहुत अधिक दुःख देना, बहरीकन; बध; संहार;

कार्तिकेयका एक अनुचर; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; शिवके एक प्रकारके अनुचर, प्रमथ ।

प्रमाथिनी-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा ।

प्रमाथी(विन्)-वि० [सं०] मथनेवाला; बलपूर्वक हरण करनेवाला; पीटा पहुँचानेवाला; मारनेवाला; नष्ट करने-

वाला; छुट्ट कर देनेवाला; काटनेवाला । [स्त्री० 'प्रमाथिनी'] पु० एक राक्षस; एक सवस्तर ।

प्रमाद-पु० [सं०] कर्तव्यको अनर्थमें समझकर उससे निवृत्त होना और अनर्थमें कर्तव्य समझकर उसमें प्रवृत्त होना, अनवधानता; मूढ़-चूक, गफलत, लापरवाही;

मद, नशा; उन्माद; मूर्च्छा; संकट, विषय ।

प्रमादवाक्(बध)-वि० [सं०] प्रमाद करनेवाला, प्रमाद-युक्त; बिना विचारे काम करनेवाला; मतवाला; पागल ।

प्रमादिका-स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका कीमार्थ किसीने नष्ट कर दिया हो; कापरवाह स्त्री ।

प्रमादित-वि० [सं०] तिरस्कृत, हेय समझा हुआ ।

प्रमादी(विन्)-वि० [सं०] जो बराबर प्रमाद करे, प्रमाद-शील, लापरवाह; मथ; क्षिप्त ।

प्रमान-पु० दे० 'प्रमाण' ।

प्रमाना-स० कि० प्रमाणके रूपमें स्वीकार करना, प्रमाण मानना, ठीक मानना; प्रमाणित करना; सिद्ध करना ।

प्रमाणी-वि० प्रामाणिक, मान्य ।

प्रमापक-वि० [सं०] प्रमाणित करनेवाला । पु० प्रमाण ।

प्रमापण-पु० [सं०] मारण, बध ।

प्रमापयिता(तु)-वि०, पु० [सं०] मारनेवाला, हत्यापरा ।

प्रमापित-वि० [सं०] ध्वस्त; हत ।

प्रमापी(विन्)-वि०, पु० [सं०] मारनेवाला; नष्ट करने-वाला ।

प्रमापु, प्रमापुक-वि० [सं०] मरणशील, नश्वर ।

प्रमावक-वि० [सं०] धोने, साफ करनेवाला; पोंछनेवाला; मिटानेवाला ।

प्रमावर्ज-पु० [सं०] धोना, माफ करना; पोंछना; दूर करना ।

प्रमित-वि० [सं०] जिसका यथार्थ ज्ञान हुआ हो; ज्ञात, अवगत; परिचित, अव्य; मापा हुआ; प्रमाण द्वारा सिद्ध किया हुआ; (समासांतमें) 'परिमाण या विस्तारका ।

प्रमितार-स्त्री० [सं०] एक बर्णिक वृत्त ।

प्रमिति-स्त्री० [सं०] किसी प्रमाण द्वारा प्राप्त यथार्थ ज्ञान, प्रमा; माप ।

प्रमीह-वि० [सं०] पेशाब किया हुआ, मृत्तित; वन ।

प्रमीत-वि० [सं०] मृत, मरा हुआ; बर्णिक वृत्त ।

पु० बहके निमित्त मारा हुआ पशु ।

प्रसीति-सी० [सं०] स्त्रियु; नाश ।

प्रसीकन-पु० [सं०] अँलें बंध करना ।

प्रसीका-सी० [सं०] तंत्रा; शिबिलता; क्रांति; अर्जुनकी एक भार्या ।

प्रसीलिका-सी० [सं०] तंत्रा ।

प्रसीकित-वि० [सं०] जिसकी अँलें मुँदी हो ।

प्रसुक्त-वि० [सं०] जिसका बंधन खोल दिया गया हो; परित्यक्त; प्रक्षित ।

प्रसुक्ति-सी० [सं०] मोक्ष, मुक्ति ।

प्रसुख-अ० इत्यादि, बगैरह । वि० [सं०] प्रथम; सुख, प्रधान; श्रेष्ठ; सम्मान्य, प्रतिष्ठित । पु० सम्मान्य व्यक्ति; मुक्त; समृद्ध; पुत्राग वृद्ध; अध्याय आदिका आरंभ ।

प्रसुग्ध-वि० [सं०] मृच्छित, अचेत; हतबुद्धि; बहुत सुंदर ।

प्रसुदित-वि० [सं०] अति प्रसन्न । -बद्धा-सी० एक वर्णवृत्त । -हृदय-वि० जिसे नातरिक प्रसन्नता हो ।

प्रसुद-वि० [सं०] हर्षयुक्त । पु० अति हर्ष ।

प्रसुचित-वि० [सं०] चुराया हुआ; हतबुद्धि ।

प्रसुपिता-सी० [सं०] एक प्रकारकी पहेली ।

प्रसूह-वि० [सं०] बघाया हुआ, चकराया हुआ; मूर्ख ।

प्रसूत-पु० [सं०] कृष्णवृत्ति, कृषि; श्रुत्यु । वि० श्रुत; आहृत; दृष्टिसे जोखल ।

प्रसूह-वि० [सं०] भोया हुआ, साफ किया हुआ; पोंछा या चमकाया हुआ ।

प्रमेध-वि० [सं०] प्रमा या यथार्थ ज्ञानके योग्य, जो प्रमा या यथार्थ ज्ञानका विषय हो सके वा जिसका किसी प्रमाण द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय, अवधारणके योग्य, अवधार्य । पु० वह जो प्रमा या यथार्थ ज्ञानका विषय हो सके वा जिसका किसी प्रमाण द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय, प्रमाका विषय ।

प्रमेह-पु० [सं०] एक रोग जिसमें शरीरकी बाहुओं अनेक रूपोंमें पेशाबके रास्ते गिरा करते हैं ।

प्रमेही (हिन्) -वि०, पु० [सं०] प्रमेहका रोगी ।

प्रमोक्ष-पु० [सं०] त्याग; फेंकना; मोक्ष, मुक्ति ।

प्रमोक्षण-पु० [सं०] चंद्रमा या सूर्यके ग्रहणका अंत ।

प्रमोचन-पु० [सं०] मुक्त करना; छोड़ना; छुड़ाना; हरण ।

प्रमोचनी-सी० [सं०] एक तरहकी ककरी, गोडुवा ।

प्रमोद-पु० [सं०] प्रकट हर्ष, आनंद; कापिकेयका एक अनुचर; एक नाग; एक संवत्सर; कबी शृंगधि; एक प्रकारकी सिद्धि जिससे आध्यात्मिक दुःखोंका विनाश हो जाता है (सां०) ।

प्रमोदन-वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला । पु० विष्णु ।

प्रमोदित-वि० [सं०] प्रमोदयुक्त, प्रसन्न । पु० कुबेर ।

प्रमोदी (हिन्) -वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला, प्रमोदजनक, प्रसन्न । [सी० 'प्रमोदिनी' ।]

प्रमोचना-सं० कि० प्रमोचना, समझाना ।

प्रमोहा-पु० [सं०] मोहा; जप्ता; सहाधीनता, मूर्खता ।

-चित्त-वि० बघाया हुआ, हतबुद्धि ।

प्रमोहन-पु० [सं०] मोहित करना; बह अन्ध जिसके प्रयोगसे शत्रुदल संघाहीन हो जाय ।

प्रमोहित-वि० [सं०] स्तब्ध, चकराया हुआ ।

प्रमोही (हिन्) -वि० [सं०] मोहजनक, हतबुद्धि करनेवाला ।

प्रमोहन-वि० [सं०] मुरझाया हुआ; मैला । -बद्ध-वि० जिसका चेहरा खतर गया हो । -शरीर-वि० जिसका शरीर मुरझा गया हो, निःशक्तता हो गया हो ।

प्रमोहा-सी० [सं०] एक अम्तरा ।

प्रमंक-पु० दे० 'पर्यंक' ।

प्रमंस-अ० दे० 'पर्यंत' ।

प्रमत्त-वि० [सं०] जिसने इंद्रियोंकी बधमें किया हो, यम-युक्त, वशी; श्रुद्धात्मा; पवित्र; प्रयत्नवान्; लग्न; सावधान । पु० पवित्र व्यक्ति, सत्पुरुष ।

प्रमत्तात्मा (व्यान्) -वि० [सं०] जितेंद्रिय, आत्मनिग्रही ।

प्रमत्त-पु० [सं०] किसी कार्य या उद्देश्यकी वृत्तिके लिए किया जानेवाला व्यापार, प्रयास, कोशिश; अभ्यवसाय; कठिनता; आत्माके ९ गुणोंमेंसे एक; कलकी प्रातिके लिए शीघ्रतापूर्वक की जानेवाली क्रिया (ना०); श्वास, जिह्वा, कंठ आदिका वह व्यापार जिसके सहारे बर्णोंका उच्चारण होता है । (व्या०) । -प्रेक्षणीय-वि० जो कठिनाईसे देखा जा सके । -शील-वि० प्रयत्नमें लगा हुआ, जो प्रयत्न कर रहा हो ।

प्रमत्तवान् (वत्) -वि० [सं०] प्रयत्नमें लगा हुआ, सक्रिय, सचेष्ट ।

प्रमत्त-वि० [सं०] मसाले आदि देकर बढ़िया तौरसे पकाया हुआ ।

प्रमारा-पु० [सं०] हिंदुओंका एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा और यमुनाके संगमपर बसा हुआ है; इन्द्र; बौद्ध; यक्ष । -अय-पु० इन्द्र ।

प्रमारावाह-पु० प्रयागका पंछ ।

प्रमाचन-पु० [सं०] गिरगिहाना; गिरगिहाते हुए मँगना ।

प्रमाज-पु० [सं०] दर्श-पौर्णमास आदिका एक अगभूत याग ।

प्रमाज-पु० [सं०] यमन, प्रस्थान; यात्रा; बुढ़के लिए किया गया प्रस्थान, चढ़ाई; आरंभ; ससारने विदा होना, मरना; बौद्धकी पीठ; जानवरका पिछला भाग । -काळ, -समय-पु० प्रस्थान करनेका समय; मृत्युकाळ । -पट्ट-पु० कूचका डंका; बुढ़के लिए प्रस्थान करते समय बजाया जानेवाला नगाड़ा । -भंग-पु० यात्रा करते समय बीचमें कहीं रुक जाना, यात्रासंग ।

प्रमाजक-पु० [सं०] यात्रा, प्रस्थान; यमन; गति ।

प्रमात-वि० [सं०] प्रस्थित, जो रवाना हो चुका हो; मरा हुआ । पु० रात्रियुक्त; पहाड़ वा चट्टानका ऊँचा खंडा किनारा, प्रपात ।

प्रमाज-पु० दे० 'प्रयाग' ।

प्रमापज, प्रमापन-पु० [सं०] प्रस्थान कराना, चलायाना, दूर करना, भगाना ।

प्रमापित-वि० [सं०] भागे बढ़ाया हुआ; चले जानेके लिए विवश किया हुआ ।

प्रमाय-पु० [सं०] लंबाई, दीर्घता; बढ़ावा; समय, निर्वचण; अन्ध, अमान (अन्धादिका); अन्धालके कारण होनेवाली ग्राहकीकी दोष ।

प्रमास-पु० [सं०] प्रयत्न, कोशिश; अय, आयास ।

प्रयुक्त-वि० [सं०] जोता हुआ; जिसका प्रयोग किया गया हो; लगाया हुआ; किसी काममें लगाया हुआ; जोड़ा हुआ, एकमें मिलाया हुआ; समाधिस्थ; सुदूर दिवा हुआ (धन); प्रेरित; (अक्ष, मंत्र आदि) जिसका किसीपर प्रयोग किया गया हो; गतिमान् किया हुआ । पु० कारण ।—**संस्कार-वि०** साफ कर चमकाया हुआ (रत्नादि) ।

प्रयुक्ति-स्त्री० [सं०] प्रयोग; प्रेरण; नीयत, उद्देश्य; अवसर; परिणाम; प्रयत्न ।

प्रयुत-वि० [म०] युक्त; सहित; अस्पष्ट; खल्ल-भल्ल; ध्वस्त; दस्त लाख । पु० दस लाखों सख्या, १०,००,००० ।

प्रयुक्त-पु० [सं०] योद्धा; मेधा; वायु; मन्वासी; इद्र ।

प्रयुद्ध-पु० [सं०] कड़ाई; जग । वि० जो युद्ध कर चुका हो; युद्ध करनेवाला ।

प्रयोक्तृ(क)-वि० [सं०] प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; किसी काममें लगानेवाला, प्रेरक । पु० कृष्ण देनेवाला, उत्तमर्ण, महाजन; नाटकका दूरधार; कमनैत; पाठ करनेवाला, वाचक ।

प्रयोग-पु० [म०] किसी काममें लाना या लावा जाना, व्यवहार, इस्तेमाल; अनुष्ठान; (अक्ष-शस्त्र) चलाना या छोड़ना, शस्त्रपात; हानको अमलमें लाना या बरतना, अमल, प्रक्रिया-शास्त्रका उल्ला; नाटकका खेला जाना, अभिनय; मारण-मोहन आदि तांत्रिक अभिचार; वह ग्रन्थ जिसमें यह-वर्षा क्रियाओंकी विधि बतायी गयी हो, पद्धति; योजना; साधन; पाठ; आरम्भ; परिणाम; मंत्र; भूत-प्रेत आदिके उपासनके लिए किया जानेवाला मनो-धारण, सूदूर रूपया देना; उदाहरण, दृष्टान्त; साम, दाम आदिका अवलम्बन । —**ज्ञ, निपुण-वि०** जिसमें अभ्यास-जन्म अनुभव प्राप्त हो । —**बाद्-पु०** (एक्सपेरिमेंटलिज्म) भाषा, विषय, भाव, छद् आदि मन्वी पुरानी परंपराके विरोधी नये-नये प्रयोग करते रहनेकी स्वाहितिकी, कवियोंकी प्रवृत्ति जिसकी तहमें पाठकी चौड़ा देनेकी लालसा भी, अज्ञात रूपसे, विद्यमान रहती है । —**विधि-स्त्री०** प्रयोगशालाक विधि (मी०) ।

प्रयोगात्(तत्स)-अ० [म०] प्रयोग द्वारा; परिणामरूपमें, अनुसार; कार्यतः ।

प्रयोगातिशय-पु० [म०] वह प्रस्तावना जिसमें प्रस्तुत प्रयोगके अतर्गत दूसरा प्रयोग उपस्थित हो जाता है और उर्मापर पात्र प्रवेश करते हैं (ना०) ।

प्रयोगार्थ-पु० [म०] मुख्य कार्यकी सिद्धिके लिए किया जानेवाला गौण कार्य ।

प्रयोगार्ह-वि० [सं०] प्रयोगके योग्य, जिसका प्रयोग किया जा सके ।

प्रयोगी(निज्)-वि० [सं०] प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; प्रेरक; जिसके सामने कोई उद्देश्य हो ।

प्रयोग्य-पु० [सं०] (गाढ़ीमें जोता जानेवाला) घोडा (वै०) ।

प्रयोजक-पु० [सं०] प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; किसी काममें लगानेवाला; जोड़नेवाला, एकमें मिलानेवाला; प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक, प्रेरणार्थक क्रियाका कर्ता (व्या०); सुदूर रूपया देनेवाला, महाजन; ग्रंथ-लेखक; संस्थापक; धर्मशास्त्री । वि० प्रेरक; नियुक्त करनेवाला; जो कारण बने ।

प्रयोजन-पु० [सं०] प्रवृत्तिका कारणभूत उद्देश्य, वह उद्देश्य जिसकी पूर्तिके लिए कोई किसी काममें प्रवृत्त हो, अर्थ, अभिप्राय, गरज; उपयोग, इस्तेमाल, काम; हेतु; साधन, उपाय; लाभ ।

प्रयोजनवर्ती कक्षाणा-स्त्री० [सं०] वह कक्षाणा जिसके द्वारा किसी निश्चित प्रयोजनकी सिद्धिके लिए वाच्यार्थसे मिश्र अर्थ निकाला जाय ।

प्रयोजनवान्(वत्)-वि० [सं०] जिसे कोई प्रयोजन हो, प्रयोजन रखनेवाला; सुदूरगरज; उपयोगी ।

प्रयोजनीय-वि० [सं०] प्रयोगमें लाने योग्य, उपयोगी ।

प्रयोज्य-वि० [सं०] प्रयोगके योग्य; जो चलाया, फेंका जाय; जो काममें लगाया जाय । पु० नौकर, दहलू; मूल धन, पूँजी ।

प्ररक्षण-पु० [सं०] रक्षा करना ।

प्ररुज-पु० [सं०] देवसेनाका एक सेनापति ।

प्ररुदित-वि० [म०] बहुत रोता-चिल्लाता हुआ ।

प्ररुह-वि० [म०] (अकुर आदि) जो ऊपरकी ओर बढ़े ।

प्ररुह-वि० [सं०] उमा हुआ (वृक्ष आदि); उत्पन्न; जिसने जड़ पड़ ली हो, बड़मूल; खूब बढ़ा हुआ; खूब बढ़नेवाला (केश आदि) ।

प्ररुहि-स्त्री० [म०] बाद, रुद्धि ।

प्ररूपण-पु०, प्ररूपणा-स्त्री० [सं०] व्याख्या करना, समझाना ।

प्ररोचन-पु० [म०] रुचि उत्पन्न करना, रुचि-संपादन; उत्तेजित करना; दे० 'प्ररोचना' ।

प्ररोचना-स्त्री० [सं०] दे० 'प्ररोचन'; स्तुति; नाटककारकी प्रशंसा द्वारा नाटकके प्रति दर्शकोंमें रुचि उत्पन्न करना, आगे आनेवाली बातका इस प्रकार कथन करना कि दर्शकोंकी रुचि या औत्सुक्य बढ़ जाय (ना०) ।

प्ररोह-पु० [म०] अकुरित होना; उत्पत्ति; आरोह, चढाव; अकुर; मत्तान; प्रकाश-भरण; नया पत्ता या दृष्टि; अर्बुद । —**भूमि-स्त्री०** उपजाऊ जमीन । —**शास्त्री(खिन्)-वि०** (वह वृक्ष) जिसकी शाखा लम्बी जा सके ।

प्ररोहण-पु० [सं०] उगना, जमना; उत्पत्ति, अकुर; दृढ़नी ।

प्ररोही(हिन्)-वि० [सं०] उगनेवाला, जमनेवाला; उत्पन्न होनेवाला; बढ़नेवाला ।

प्रलंबक-पु० [म०] कुदना; कुदना ।

प्रलंब-वि० [म०] लटवता हुआ, लटका हुआ; अधिक लंबा; सुस्त । पु० लटकनेकी क्रिया, लटकाव; लटकनेवाली चीज; शाखा, डाल; स्तन; माला; एक प्रकारका हार; एक असुर जिसे बलरामने मारा था; खोरा; रँग; गाथा । —**ज्ञ, प्रयन, हा(हन्)-पु०** बलराम । —**बाहु-वि०** जिसकी बांह अधिक लंबी हो, आजानुबाहु ।

प्रलंबक-पु० [सं०] रोहिष वृण ।

प्रलंबव-पु० [म०] लटकना; अवलंबित होना ।

प्रलंबाह-वि० [म०] जिसका अङ्कोष नीचेतक लटका हो, बड़े अङ्कोषवाला ।

प्रलंबित-वि० [सं०] लटका हुआ ।

मल्लकी (विन्) - वि० [सं०] छटकनेवाला; सहाय लेनेवाला ।
प्रलम्ब - पु० [सं०] काम, प्राप्ति; बोझा देना, छलना ।
प्रलम्बन - पु० [सं०] बोझा देना, छलना ।
प्रलयन - पु० [सं०] बर्तालाप; अनर्थक वचन, प्रलाप, वचन; दुःखा गेना ।
प्रलयित - वि० [सं०] वधित; जो दीनतापूर्वक कहा गया हो । पु० दे० 'प्रलयन' ।
प्रलय - वि० [सं०] गृहीत; जो छला गया हो ।
प्रलब्ध - वि० [सं०] प्राप्त; जो [सं०] छल करनेवाला, वचक ।
प्रलब्धकर - वि० [सं०] प्रलय करनेवाला ।
प्रलय - पु० [सं०] लयको प्राप्त होना, नष्ट होना, न रह जाना; विनाश, संहार; संसारका अपने मूल कारण प्रकृति में सर्वथा लीन हो जाना, सृष्टि का सर्वनाश; शृङ्खल, बेहोशी; एक सांस्कृतिक भाव जिसमें सुख या दुःखके कारण मनुष्य जड़ हो जाता है (सां०); भारी वा व्यापक संहार; अंकार (वै०) । - **कर**, - **कारी (रिज)** - वि० दे० 'प्रलयकर' । - **काल** - पु० प्रलयका समय । **अलखर** - पु० प्रलयके समयका बादल । - **एयोधि** - पु० प्रलयके समयका समुद्र ।
प्रल्लाट - वि० [सं०] जिसका ललाट ऊँचा हो ।
प्रलय - पु० [सं०] अच्छी तरह काटना; खड, लेख, दुकड़ा ।
प्रलयन - पु० [सं०] फसल काटना ।
प्रलविता (तृ) - वि०, पु० [सं०] काटनेवाला ।
प्रलवित्र - पु० [सं०] काटनेका साधन, हँसिया आदि ।
प्रलाप - पु० [सं०] बात-चीत; अड-बड वकला, निरर्थक बात, बकवास; दुःखका रोग; ज्वराधिक्यके बेहोश होकर अल-बड बकना । - **हार (हृज)** - पु० एक तरहका अञ्जन, कुन्-स्थापन ।
प्रलापक - पु० [रं०] बचनप्रवर्तनेवाला; एक तरहका सन्निपात रोग जिसमें लोग प्रलाप करता है ।
प्रलापी (विन्) - वि० [सं०] प्रलाप करनेवाला, अनाप-शानाप बकनेवाला ।
प्रलिप - वि०, पु० [सं०] लेप करनेवाला ।
प्रलिप्त - वि० [सं०] लिपिका हुआ, लिपिपट्टा हुआ, लिप्त ।
प्रलीन - वि० [सं०] विलीन; लुप्त; प्रलयको प्राप्त, विनष्ट; क्लान्त, चेष्टाशून्य, जड़ ।
प्रलीनता - स्त्री० चेष्टानाश, जडता ।
प्रलीनेन्द्रिय - वि० [सं०] जिसकी इन्द्रियाँ शिथिल हो गयी हैं ।
प्रलुठित - वि० [सं०] उछलता हुआ; लुटनेका हुआ ।
प्रलुब्ध - वि० [सं०] जो लालचमें पड़ गया हो ।
प्रलुब्धता - वि०, स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जिसे किसीने अनुचित प्रेम हो गया हो ।
प्रलुब्ध - वि० [सं०] काटा हुआ । पु० एक तरहका कीड़ा ।
प्रलेप - पु० [सं०] लेप, धाव या फोटोपर कोई मलहम चवाना; धाव या फोटोपर चवानेका मलहम ।
प्रलेपक - पु० [सं०] प्रलेप करनेवाला; एक प्रकारका मद्यञ्जर ।
प्रलेपन - पु० [सं०] लेप करनेकी क्रिया ।
प्रलेप्य - वि० [सं०] लेप करने योग्य । पु० साफ-सुधरे,

छोटे हुए बाल ।
प्रलेह - पु० [सं०] एक प्रकारका स्पर्शन, कोरमा ।
प्रलेह्य - पु० [सं०] चाटना ।
प्रलोठन - पु० [सं०] उछलना; लुटना ।
प्रलोठित - वि० [सं०] दे० 'प्रलुठित' ।
प्रलोप - पु० [सं०] नाश, विलय ।
प्रलोभ - पु० [सं०] अधिक लोभ, लालच; प्रलोभन ।
प्रलोभक - वि०, पु० [सं०] प्रलोभन देनेवाला, लालच उत्पन्न करनेवाला ।
प्रलोभन - पु० [सं०] लालच देना; ललचाना; ललचाने-वाली वस्तु ।
प्रलोभनी - स्त्री० [सं०] बाढ़ ।
प्रलोभित - वि० [सं०] प्रलोभनमें पड़ा हुआ, प्रलुब्ध ।
प्रलोभी (विन्) - वि० [सं०] ललचानेवाला, लालची, प्रलोभनमें पड़नेवाला ।
प्रलोल - वि० [सं०] लुब्ध; कपित ।
प्रवंग, **प्रवंगम** - पु० [सं०] पक्षी, बदर ।
प्रवंचक - वि०, पु० [सं०] ठग, धूर्त ।
प्रवंचन - पु० [सं०] ठगना, बोझा देना ।
प्रवंचना - स्त्री० [सं०] ठगी, धोखेबाजी, धूर्तता ।
प्रवंचित - वि० [सं०] जो ठगा गया हो, जिसे धोखा दिया गया हो ।
प्रवक्ता (क) - वि०, पु० [सं०] अच्छा वक्ता; वेद आदिका अच्छा तरह प्रवचन करनेवाला (स्त्व०) ।
प्रवच - पु० [सं०] पक्षी; बदर ।
प्रवचन - पु० [सं०] विशेष रूपसे कहना, कथं समझाते हुए कहना; वेद, पुराण आदिका उपदेश करना; शास्त्र ।
प्रवद - वि० बोलनेमें कुशल, वार्त्ता ।
प्रवचनीय - वि० [सं०] प्रवचनके योग्य ।
प्रवट - पु० [सं०] जी ।
प्रवण - वि० [सं०] दातुर्वा, टेढ़ा, वक्र; खड़ा; विन्नी वस्तु-की ओर मुका हुआ, प्रवृत्त; नञ्ज; आमक, क्षीण; दीर्घ, लघा अनुकूल । पु० चौराहा; ढाल, उतार; उदर ।
प्रवणता - वि० [सं०] प्रवृत्ति, छुवाव ।
प्रवास्त्यत् - वि० [सं०] दे० 'प्रवत्स्यत्' । - **पतिका**, - **प्रेयसी** - स्त्री० वह नायिका जिसका नायक परदेस जाने-वाला हो ।
प्रवत्स्यत् - वि० [सं०] दे० 'प्रवत्स्यतिका' ।
प्रवत्स्यत् (तृ) - वि० [सं०] जो विदेश जानेवाला हो ।
प्रवदन - पु० [सं०] धोपणा ।
प्रवप - वि० [सं०] स्खलकाय ।
प्रवपण - पु० [सं०] मुडन ।
प्रवचण - पु० [सं०] चातुक्य; अंकुश; कपकेका ऊपरका हिस्सा ।
प्रवचा (यस्) - वि० [सं०] हृद, दृढ़ ।
प्रवर - वि० [सं०] प्रपान, भेद्य; सबसे जेठा । पु० आह्वान; खड आरम्भ करनेके समय दिया जानेवाला अग्निवा आह्वान; सतति; गोत्र, संतान; किसी गोत्रके प्रवर्तक सुनियोगसे कोई एक; अवारकी लक्ष्मी; आचरण; उपरना ।
प्रव्याप - वि० बहुत झुंझ । - **गिरि** - पु० मगधका

एक पर्वत जो आजकल 'बराबर' पहाड़ कहलाता है।
-खन-पु० अन्धे गुणोंसे युक्त व्यक्ति। -लक्षित-पु० एक छन्द। -बाह्वन-पु० अधिनाकुमार।

प्रवरण-पु० [सं०] आह्वान; वर्षान्तपर होनेवाला स्वीकार (दी०)।

प्रवरा-स्त्री० [सं०] गोदावरीकी एक सहायक नदी; अमर-की लक्ष्मी।

प्रवर्ग-पु० [सं०] यशस्विन, होमाग्नि; विष्णु; एक वाग; एक मिट्टीका यज्ञपात्र।

प्रवर्त-पु० [सं०] किसी कार्यका आरम्भ; उत्तेजन।

प्रवर्तक-पु० [सं०] प्रवृत्त करनेवाला, किसी काममें लगाने-वाला; चला देनेवाला, आरम्भ करनेवाला, जारी करनेवाला; आविष्कार करनेवाला; (दि०) उसका देनेवाला, उभारनेवाला, किसी पूर्व सूचित पात्रका प्रवेश (जा०); मध्यस्थ, पंच।

प्रवर्तन-पु० [सं०] प्रवृत्त करना, किसीको किसी बातमें लगाना; आरम्भ करना, चलाना, जारी करना; उसका उभारना; आविष्कार करना (दि०)।

प्रवर्तना-स्त्री० [सं०] प्रवृत्त करनेकी क्रिया, प्रेरण।

प्रवर्तयिता(न)-वि०, पु० [सं०] गति देनेवाला; आरम्भ करनेवाला; स्थापित करनेवाला; उभारनेवाला।

प्रवर्तित-वि० [सं०] आरम्भ; चालित; स्थापित; उत्तेजित; प्रकाशित; सूचित; शुरू किया हुआ।

प्रवर्त (वि०)-वि० [सं०] उठान या प्रवाणित होनेवाला; मक्ति; आरम्भ करनेवाला; प्रयोगमें लानेवाला; फैलाने-वाला।

प्रवर्तन, प्रवर्धन-पु० [सं०] बढ़नी हुई।

प्रवर्ध-पु० [सं०] भारी वर्षा, जोरकी वागिश।

प्रवर्धन-पु० [सं०] वर्षा, बारिश; पक्की वागिश; किष्किपा-के पासका एक पर्वत जिसपर रामने अपने वनवासकालमें कुछ समयतक निवास किया था।

प्रवर्ध (वि०)-वि० [सं०] वरसानेवाला; बौद्ध करनेवाला (वाणी आदि)।

प्रवर्ह-वि० [सं०] दे० 'प्रवर्ह'।

प्रवलाकी (किन्)-पु० [सं०] नौप; मोर।

प्रवल्हिका-स्त्री० [सं०] दे० 'प्रवल्हिका'।

प्रवसन-पु० [सं०] विदेश-यात्रा; मरण।

प्रवह-पु० [सं०] बहाव; वायु; मात प्रसारकी वायुओंमेंसे एक जिसके सहारे नक्षत्र परिभ्रमण करते हैं; अग्निकी सत जिह्वाओंमेंसे एक; धर, नगर आदिसे बाहर जाना, बहि-यात्रा; पानी बहाकर ले जानेका कुंड।

प्रवहण-पु० [सं०] बहली, डोली; पेत; लक्ष्मीको ब्याह देना। -अंग-पु० जहाजका नष्ट होना, पेत-ध्वंस, पेतभंग।

प्रवहमान-वि० [सं०] प्रवाहशील, बहनेवाला।

प्रवह्नि, प्रवहिका, प्रवह्नी-स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रवाक-पु० [सं०] घोषणा करनेवाला।

प्रवाक (व्)-वि० [सं०] युक्तियुक्त बातें कहनेवाला, वाक्-पटु, वाग्मी; बहुत अधिक बोलनेवाला, वाचाल।

प्रवाचक-वि० [सं०] वाग्मी, सुवक्ता; अर्थवोक्तक।

प्रवाचन-पु० [सं०] विवाहित, घोषणा; उपाधि, नाम।

प्रवाच्य-पु० [सं०] साहित्यिक रचना।

प्रवाण-पु० [सं०] कपड़ेका छोर या मंचल बनाना।

प्रवाणि, प्रवाणी-स्त्री० [सं०] जुलाहोंकी दरजी।

प्रवात-पु० [सं०] स्वच्छ वायु, ताजा हवा; तेज हवा; हवादार जगह। वि० जिसमें तेज हवा लगती हो।

प्रवाद-पु० [सं०] बोलना; ब्यक्त करना; लोगोंमें प्रचलित बात, जनश्रुति, निवृत्तनी; बातचीत, वार्तालाप; चुनौती।

प्रवादक-वि० [सं०] वाच बजानेवाला (मगी)।

प्रवादी (विन्)-वि०, पु० [सं०] प्रवाद करनेवाला।

प्रवान-पु० दे० 'प्रमाण'।

प्रवार-पु० [सं०] ओढ़नेका बन्ध, उत्तरीय ओढ़नी; आच्छादन।

प्रवारण-पु० [सं०] निषेध, मनाही; प्रतिरोध, रोकथामने किया जानेवाला दान, काम्यदान; उत्तम वस्तु (जैसे डायी, घोडा आदि) या दान; महादान; इच्छा पूर्ण करना; दे० 'प्रवार'; वर्षान्तमें होनेवाला बौद्धोंका एक स्वीकार।

प्रवाल-पु० [सं०] दे० 'प्रवाल'।

प्रवास-पु० [सं०] परदेशमें रहना, विदेशवास; परदेश जाना। गत-स्थ-स्थित-वि० परदेश गया हुआ, जो घर न हो।

प्रवासन-पु० [सं०] बाहर रहना; देशनिष्क्रामन; वध।

प्रवासित-वि० [सं०] देशमें निकाला हुआ।

प्रवासी (विन्)-वि० [सं०] परदेशमें रहनेवाला।

प्रवास्व-वि० [सं०] देशनिवाला देने योग्य।

प्रवाह-पु० [सं०] बहनेकी क्रिया या भाव, बहाव; जल आदिकी धारा, किसी वस्तुका अद्भुत क्रम, बँहा हुआ तार, अखंड परंपरा; श्राविको नदीकी पानीमें बहा देना, बटना-क्रम; ताला; झील, अच्छा बीधा; व्यवहार।

प्रवाहक-वि० [सं०] अच्छी तरह बहान करनेवाला। पु० राक्षस।

प्रवाहणी-स्त्री० [सं०] मलमार्गको एक पेशी जो मलको बाहर निकालती है।

प्रवाहिका-स्त्री० [सं०] ग्रन्थी रोम, बहनेवाली, धारा, नदी-समुद्र लालसाको लहरोंमें यह प्रवाहिका स्पन्दित होती-कामायनी।

प्रवाहित-वि० [सं०] बहाया हुआ; होया हुआ।

प्रवाहिनी-स्त्री० [सं०] नदी।

प्रवाही-स्त्री० [सं०] वाहू।

प्रवाही (विन्)-वि० [सं०] बहनेवाला, प्रवाहयुक्त; ले जानेवाला; चला देनेवाला।

प्रविकट-वि० [सं०] बहुत बड़ा, विशाल।

प्रविकर्षण-पु० [सं०] खींचना, तानना।

प्रविकीर्ण-वि० [सं०] छिन्नराया, फैलाया हुआ।

प्रविक्यात-वि० [सं०] सुप्रसिद्ध, बहुत मशहूर।

प्रविक्याति-स्त्री० [सं०] अनिशव प्रसिद्धि।

प्रविग्रह-पु० [सं०] सम्प्रविच्छेद।

प्रविचय-पु० [सं०] खोज, अनुसन्धान, ज्ञान-पञ्चाल।

प्रविशित-वि० [सं०] जाँचा हुआ, परीक्षित।

प्रविचेतन-पु० [सं०] समझ, बोध।

प्रबलित-वि० [सं०] विशेष रूपसे फैला हुआ, दूर तक फैला हुआ, व्याप्त; बिखरे हुए (वाल)।
प्रविदार-पु० [सं०] स्फोट।
प्रविदारण-पु० [सं०] स्फुटन; विशेष विदारण; खुद; भौक-भञ्जक।
प्रविद्ध-वि० [सं०] फैला हुआ; मरा हुआ; परित्यक्त।
प्रविद्वत्-वि० [सं०] तितर-बितर किया हुआ; भगाया हुआ।
प्रविधान-वि० [सं०] किसी विषयपर विचार करना, वह उपाय जिसका प्रयोग किया गया हो।
प्रविचल-वि० [सं०] फैला हुआ, उछाला हुआ; धुन्ध।
प्रविपल-पु० [सं०] विपलका एक छोटा भाग।
प्रविर-पु० [सं०] पीला चन्दन।
प्रविरल-वि० [सं०] अति विरल।
प्रविलय-पु० [सं०] पिघलना; पूर्ण लय।
प्रविहर-पु० [सं०] पथराह।
प्रविविक्त-वि० [सं०] विलकुल अलग; एकाकी।
प्रविषा-खी० [सं०] अतिविषा नामक वृक्ष, अतीम।
प्रविष्ट-वि० [सं०] घुसा हुआ, अन्दर गया हुआ।
प्रविसना*-अ० कि० प्रवेश करना, घुसना।
प्रविस्तार, प्रविस्तार-पु० [सं०] घेरा, फैलाव।
प्रवीण-वि० [सं०] निपुण, कुशल।
प्रवीणता-वि० [सं०] निपुणता, बौद्ध।
प्रवीण*-वि० दे० 'प्रवीण'। खी० अच्छी चीन।
प्रवीर-पु० [सं०] अच्छा धीर, सुमट। वि० उत्तम; बली।
-बाहु-पु० एक राक्षस।
प्रवृत्त-वि० [सं०] जुना हुआ; (दत्तारके रूपमें) ग्रहण किया हुआ।**-होम-**पु० एक प्रकारका होम।
प्रवृत्त-वि० [सं०] प्रवृत्तियुक्त, लगा हुआ, रत; त्रिमका आरम्भ हुआ हो, आरम्भ; निश्चित; निर्दिष्ट, निर्बाध; निर्विवाद; वर्तुलाकार। पु० एक गोलाकार गहन; कार्य।
प्रवृत्तक-पु० [सं०] एक भागवृत्त।
प्रवृत्ति-खी० [सं०] प्रवाह, बहाव, मनका किसी विषयकी ओर झुकाव; वार्ता, वृत्तान्त, आरम्भ; उत्पत्ति; आचार-व्यवहार; अधवसाय; माग्य; एक प्रकारका प्रथक (न्या०); शब्दोंके अर्थका बोध करानेकी एक शक्ति; इन्द्रिय आदिका अपने-अपने विषयमें निरत होना, सांसारिक विषयोंके प्रति आकर्षित, निवृत्तिका उलटा, हाथीका मूद; किसी नियमका किसी प्रसंगमें लगना।**-ज्ञ-**पु० भेदिना, जासूस।
-निमित्त-पु० किसी शब्दके किसी विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेका हेतु।**-पराहृष्य-वि०** जो समाचार वतलाना न चाहता हो।**-मार्ग-पु०** संसारके धर्मोंमें सञ्चन रहना।**-विज्ञान-पु०** वाक्-व्यक्तका ज्ञान (नौ०)।
प्रवृद्ध-वि० [सं०] अतिशय वृद्धिको प्राप्त, बहुत अधिक बढ़ा हुआ, प्रौढ़; घमण्डी; उम; विशाल।
प्रवेक-वि० [सं०] प्रधान; सर्वोत्तम।
प्रवेग-पु० [सं०] अधिक वेग।
प्रवेद-पु० [सं०] जौ।
प्रवेधि, प्रवेणी-स्त्री० [सं०] बेणी, चोटी, जल आदिका प्रवाह; हाथीकी झूल; एक नदी।

प्रवेता(तु)-पु० [सं०] रथ हॉकनेवाला, सारथि।
प्रवेद्य-पु० [सं०] प्रकट करना, जाहिर करना।
प्रवेद्य-पु० [सं०] बाण छोड़ना; लंबाईकी एक माप (नौ०)।
प्रवेप, प्रवेपक, प्रवेपयु, प्रवेपन-पु० [सं०] कौपना, चबल होना।
प्रवेरित-वि० [सं०] इधर-उधर फैला हुआ।
प्रवेर-पु० [सं०] पीली मूँग।
प्रवेश-पु० [सं०] भीतर जाना, घुसना; पैठ, पहुँच, रस्ताई; किसी पात्रका रसमचपर आना (ना०); किसी विषय, शास्त्रकी जानकारी, अभिज्ञता; दूसरेके काममें दखल देना; धाती रखना; घुसका किसी राशिमें संक्रमण; द्वारा किसी कार्यमें सलून रहना; सुरे देनेकी विचकारी।**-द्वार-पु०** भीतर जानेका द्वार या रास्ता।**पञ्च-पु०** वह पत्र जिसके द्वारा कहीं प्रवेश करनेका अधिकार प्राप्त हो।**-शुल्क-पु०** प्रवेश पानेका अधिकार प्राप्त करनेके लिए दिया जानेवाला धन।
प्रवेशक-पु० [सं०] प्रवेश करनेवाला; नाटकमें दो अंकोंके बीचका एक प्रकारका अंक जिसमें नीच पात्र न दिखाई हुई नया भावी घटनाओंकी सूचना देते हैं।
प्रवेशन-पु० [सं०] प्रवेश कराना; प्रवेश; सतर दरवाजा, सिंहद्वार; रतिक्रिया; छे जाना, पहुँचाना।
प्रवेशना*-अ० कि० प्रवेश करना। सं० कि० प्रवेश कराना।
प्रवेशिका-खी० [सं०] प्रवेश-पत्र या प्रवेश शुल्क, मंस्कृत, अग्नेयी आदिकी एक परीक्षा (शा०)।
प्रवेशित-वि० [सं०] घुसाया हुआ, पैठाया हुआ; पहुँचाया हुआ।
प्रवेद्य-वि० [सं०] प्रवेश करने योग्य, जिसमें प्रवेश किया जाय; जिसका प्रवेश करगया जाय, जो बजाया जाय (वाद्यगन्ध)। पु० बाहरमें आनेवाला मान, आयात।
-शुल्क-पु० बाहरमें आनेवाले मालपर लगाया जानेवाला कर, आयातकर।
प्रवेप*-पु० दे० 'प्रवेप'।
प्रवेष्ट-पु० [सं०] भुजा, कर्णार्ध, श्वाका मूद; हाथीकी पीठ, हाथीकी झूल।
प्रवेष्टक-पु० [सं०] दाहिनी भुजा, दायां हाथ।
प्रवेष्टा(ष्ट)-वि० पु० [सं०] प्रवेश करने का करनेवाला।
प्रव्यक-वि० [सं०] स्फुट, स्पष्ट।
प्रव्याहार-पु० [सं०] वाद-विवादका जारी रहना या बटना।
प्रव्याहृत-वि० [सं०] कथित; जो भाविष्यवाणीके रूपमें कहा गया हो।
प्रव्यज-पु० [सं०] सन्ध्यास लेना; विदेश-गमन।
प्रव्यजित-वि० [सं०] जिसने सन्ध्यास लिया हो, सन्ध्यासी; जो भाग या बढ़त गया हो (नौका आदि); जो बाहर चला गया हो। पु० सन्ध्यासी; बौद्ध भिक्षुका शिष्य; सन्ध्यास-ग्रहण; सन्ध्यासाश्रम।
प्रव्यजिता-खी० [सं०] बढामासी; मुंठी; तापसी, सन्ध्या-यिनी।
प्रव्यज्या-खी० [सं०] सन्ध्यास; सन्ध्यासाश्रम; देशत्याग;

विदेश-गमन । -प्रह्व-पु० सम्पास लेना । -प्रस-पु० हिंदुओंके उपनयनके डंगका नेपाली शैलोंका एक प्रकारका संस्कार ।

प्रज्ञावाचसित-पु० [सं०] वह जो सम्पाससे स्तुत हो गया हो । सम्पासप्रद ।

प्रभाज-पु० [सं०] सम्पास ।

प्रभाजक-पु० [सं०] सम्पासी । [को० 'प्रभाजिका' ।]

प्रभाज(क)-पु० [सं०] सम्पासी ।

प्रशंस-को० प्रशंसा, स्तुति । वि० प्रशंसाके योग्य ।

प्रशंसक-वि०, पु० [सं०] प्रशंसा करनेवाला ।

प्रशंसन-पु० [सं०] प्रशंसा करना, गुणोंका बखान ।

प्रशंसना-को० [सं०] दे० 'प्रशंसन' । * सं० कि० प्रशंसा करना, तारीफ करना, सराहना ।

प्रशंसनीय-वि० [सं०] प्रशंसा करने योग्य, स्तुल्य ।

प्रशंसा-को० [सं०] गुणोंका बखान, गुणकीर्तन, तारीफ, बहाई; क्याति । -शुस्वर-वि० उच्च स्वरमें प्रशंसा करनेवाला ।

प्रशंसित-वि० [सं०] जिसकी प्रशंसा की गयी हो ।

प्रशंसी(सिन्)-वि०, पु० [सं०] दे० 'प्रशंसक' ।

प्रशंसोपमा-को० [सं०] उपमाका एक भेद जिसमें उपमेय-की प्रशंसाके द्वारा उपमानका उत्कर्ष दिखाया जाता है ।

प्रशंस्य-वि० [सं०] प्रशंसाके योग्य; अपेक्षाकृत अच्छा ।

प्रशस्य-वि० [सं०] अपनी शक्तिवर करनेवाला ।

प्रशारवरी-को० [सं०] नदी ।

प्रशारवा(खन्)-पु० [सं०] समुद्र ।

प्रशाम-पु० [सं०] शांत करना, शमन; निवृत्ति; शांति ।

प्रशमन-पु० [सं०] शांत करना, दवाना, शमन; नीरोग करना; रक्षण; बंध; शांति ।

प्रशल-पु० [सं०] दे० 'प्रसल' ।

प्रशस्त-वि० [सं०] जिसकी प्रशंसा की गयी हो; प्रशंसाके योग्य, स्तुल्य; श्रेष्ठ, उत्तम; शुभ; वितृप्त; लज्जा-चौका; चौड़ा मार्ग, (लजाट); साफ-सुधरा (हि०) । -पाद्-पु० न्यायके एक प्राचीन आचार्य । -बचन-पु० प्रशंसा-वाक्य, स्तुति ।

प्रशस्तात्रि-पु० [सं०] मध्यदेशके पासका एक पहाड़ ।

प्रशस्ति-को० [सं०] प्रशंसा, तारीफ, बहाई; वर्णन; किसीकी प्रशंसामें लिखी गयी कविता आदि; राजाका वह आज्ञापत्र जो परधर आदिपर छोड़ा जाता था और जिसमें राजवंश तथा उसकी कीर्ति आदिका वर्णन रहता था; वह प्रशंसासूक्त वाक्य जो पत्रके आदिमें लिखा जाता है, सरनामा; प्राचीन ग्रंथ या पुस्तकका वह आदि और अंतवाला अंश जिससे उसके रचयिता, काल, विषय आदिका ज्ञान होता है । -गाथा-को० प्रशंसात्मक गीत । -पद्य-पु० आज्ञापत्र, लेखपत्र ।

प्रशस्य-वि० [सं०] प्रशंसाके योग्य, स्तुल्य, प्रशंसनीय (इसका अतिशयार्थक रूप भेद है) ।

प्रशंस-वि० [सं०] शांत किया हुआ; शांत; सहाया हुआ, बशमें किया हुआ; श्रुत । पु० एशिया और अमेरिकाके बीचका एक महासागर, 'पैसिफिक' । -काय-वि० जिसकी दृष्टाई पूरी हो गयी हो, संतुष्ट । -चित्त, -जी-वि० जिसका मन शांत हो । -चेष्ट-वि० जिसने प्रत्यक्ष

करना छोड़ दिया है । -बाध-वि० जिसकी सब बाधाएँ दूर हो गयी हों ।

प्रशंताख्या(खन्)-वि० [सं०] दे० 'प्रशान्तचित्त' ।

प्रशान्ति-को० [सं०] शांति; विश्राम; शमन ।

प्रशान्तीय-वि० [सं०] जिसकी शक्ति क्षीण हो गयी हो ।

प्रशास्त्र-वि० [सं०] जिसकी बहुत-सी शाखाएँ चारों ओर फैली हों; (भूगोल) जो अपनी पंचवीं अवस्थामें हो (जब हाथ-पैरोंका निर्माण होता है) ।

प्रशास्त्रा-को० [सं०] शास्त्रासे निकली हुई शाखा; दहनी (शास्त्राके अनुसार इसके की काष्ठीयक अर्थ हो सकते हैं) ।

प्रशास्त्रिका-को० [सं०] दहनी, छोटी दाढ़ ।

प्रशासक-पु० [सं०] शासन करनेवाला; आचार्य, उपदेष्टा ।

प्रशासन-पु० [सं०] शिष्य आदिको ही जानेवाली कर्तव्य-की शिक्षा; शासन ।

प्रशासित-वि० [सं०] विशेष रूपसे शासित; आदिष्ट ।

प्रशासिता(तृ)-पु० [सं०] शासन करनेवाला, शासनकर्ता ।

प्रशास्ता(स्तृ)-पु० [सं०] शासन करनेवाला, शासनकर्ता, राजा; होताका प्रधान सहायक, मैत्रावरुण; परामर्शदाता ।

प्रशास्त्र-पु० [सं०] प्रशास्ता नामक ऋषिकका पद या कार्य; वह पात्र जिसमें प्रशास्ता सोमपान करता है । वि० प्रशास्ता-संबंधी ।

प्रशिक्ष-वि० [सं०] शासित; आदिष्ट ।

प्रशिक्ष्य-पु० [सं०] शिष्यका शिष्य ।

प्रशीत-वि० [सं०] ठंडसे जमा हुआ ।

प्रशून-वि० [सं०] सूजा हुआ ।

प्रशोचन-पु० [सं०] जलाना, दागना ।

प्रशोच-पु० [सं०] सूखना, सुख होना ।

प्रशोचन-पु० [सं०] एक रोगकारक राक्षस ।

प्रशोतन-पु० [सं०] चुनेकी क्रिया, चुना, क्षरण ।

प्रश-पु० [सं०] नवाक, पूछ-ताछ; पूछी जानेवाली बात; भविष्य-संबंधी जिज्ञासा; विचारणीय विषय, समस्या; पुस्तकका कोई छोटा खंड, 'पैरामाफ'; एक उपनिषद् ।

-कथा-को० वह कथा जिसमें कोई प्रश्न हो । -वृत्ती-को० पदेकी । -पद्य-पु० वह परचा जिसपर उत्तर देनेके लिए प्रश्न अंकित हों । -बादी(दिन्)-पु० ज्योतिषी, दैवज्ञ । -विवाक-पु० वह ज्योतिषी जो ग्रहदशा आदि-संबंधी प्रश्नोंका उत्तर दे (वे०); मध्यस्थ, पंच । -विवाद्-पु० विवादास्पद प्रश्न ।

प्रश्नी(सिन्)-वि०, पु० [सं०] प्रश्न पूछनेवाला, पूछ-ताछ करनेवाला ।

प्रश्नोत्तर-पु० [सं०] सवाल-जवाब; एक अलंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर दोनों रहते हैं ।

प्रश्नोपनिषद्-को० [सं०] अथर्ववेदकी एक उपनिषद् ।

प्रश्न्य-पु० [सं०] शैलिय, ठोकापन ।

प्रश्न्यि-को० [सं०] विभास ।

प्रश्न्य, प्रश्न्यन-पु० [सं०] विनय; प्रणय; प्रीति; सहारा (जा०) ।

प्रश्नी(सिन्)-वि० [सं०] नम्र; सरलप्रकृति; मिथुनसार ।

प्रश्न्यन-पु० [सं०] एक पर्वत ।

प्रश्नित-वि० [सं०] दे० 'प्रश्नी' ।

प्रसङ्ग-वि० [सं०] विविक्त; कृत ।
प्रसिद्ध-वि० [सं०] सुप्रसिद्ध; युक्तियुक्त (स्वर-वर्ण) जिनमें संधि हुई हो ।
प्रसन्न-पु० [सं०] वसिष्ठ संबंध; स्वर्गोक्त संधि ।
प्रसास-पु० [सं०] सौप्त बाहर निकालना; बाहर निकाली हुई सौप्त ।
प्रसन्न-वि० [सं०] पूछने योग्य, जो पूछा जाय ।
प्रसा(पु०)-वि०, पु० [सं०] पूछनेवाला, प्रसन्नकर्ता ।
प्रस-वि० [सं०] आगे चलनेवाला, अग्रगामी; भेद, प्रधान ।
-बाद(ह)-पु० वह बह जो हलमें निकाला जा रहा हो ।
प्रसूही-की० [सं०] वह गाय जो पहले पहल गामिन हुई हो ।
प्रसंख्या-की० [सं०] कुल अंकोंका जोड़; मनन, ध्यान ।
प्रसंख्यान-पु० [सं०] धनना; सम्पत्ति धन; ध्यान; स्वार्थि; अस्वार्थी, युक्तता ।
प्रसंग-पु० [सं०] प्रकृत संग; संबंध, लगाव; व्याप्तिरूप संबंध; विषयका सारतन्त्र्य, प्रकरण; एक प्रकारकी संगति (न्या०); अवैध संबंध; की-पुष्पका संयोग, समागम; अद्वैतता, आसक्ति, प्राप्ति; सिलसिला; अवसर, मौका; * बात, विषय । -**दान**-पु० एक स्थानपर आक्रमण करनेकी बात चलाकर दूसरे स्थानपर आक्रमण कर देना ।
-विषय, **-विशेष**-पु० मानसोच्चका एक उपाय ।
-विनिर्मुक्ति-की० किसी बातका घटित न होना ।
-सम्प-पु० प्रमाणकी भी प्रमाणित करनेका कृतक (न्या०) ।
प्रसंगी(गिन्)-वि० [सं०] प्रसंगयुक्त; अनुराग रखनेवाला, अनुरागी; सहवास करनेवाला; गौण; आकस्मिक ।
प्रसंघ-पु० [सं०] भारी सभ; बहुत बड़ा समूह ।
प्रसंखन-पु० [सं०] संयोग करना, मिलाना; प्रयोगमें लाना ।
प्रसंखन-पु० [सं०] संधि, योग, भेद ।
प्रसंखना-सं० कि० प्रसंघ करना ।
प्रसक्त-वि० [सं०] जो प्रसंगका विषय हो, प्रसंगप्राप्त; संबंध, लगा हुआ; आसक्त, निरत; बराबर बना रहनेवाला, निरत; स्थायी; प्राप्त; निकट, सदा हुआ; स्फुटित ।
प्रसक्ति-की० [सं०] प्रसंग; आसक्ति; आपत्ति; अनुमिति; व्याप्ति; अन्वयवासय; प्राप्ति ।
प्रसज्य-वि० [सं०] जो संबंध किया जाय; जो प्रयोगमें लाना जाय; सभ्य । -**प्रतिषेध**-पु० वह विषय जिसमें प्रतिषेधकी प्रधानता रहती है और विधिकी अग्रधानता ।
प्रसति-की० [सं०] निर्मलता; प्रसन्नता; अनुग्रह ।
प्रसत्ता(स्वप्)-पु० [सं०] धर्म; प्रजापति ।
प्रसज्य-वि० [सं०] निर्मल; प्रसादयुक्त; स्वच्छ; शांत; संतुष्ट; हर्षयुक्त, सुख; उचित, युक्त; कृपाङ्क । -**कल्प**-वि० शांतप्राय; सत्यप्राय । -**अल**, **-सखि**-वि० जिसका पानी साफ हो । -**मुक्त**, **-वदन**-वि० जिसके चेहरेसे प्रसन्नता प्रकट होती हो ।
प्रसन्नता-की० [सं०] प्रसन्न होनेका भाव; स्वच्छता; स्पष्टता ।

प्रसन्न-पु० [सं०] कोनेका एक वेत्रग ।
प्रसन्न-की० [सं०] चावलसे बनी हुई मदिरा; प्रसन्न करनेकी क्रिया ।
प्रसन्नता(अन्व)-पु० [सं०] विष्णु । वि० प्रसन्न, संतुष्ट ।
प्रसन्नित-वि० प्रसन्न, सुख ।
प्रसन्नोरा-की० [सं०] एक प्रकारकी मदिरा ।
प्रसन्न-पु० [सं०] बलात्कार, जल । -**दम**-पु० (जंगली पशुओंका) बलात् दमन करना, सपाना । -**हरण**-पु० बलपूर्वक हरण कर के जाना ।
प्रसन्न-पु० [सं०] आल; बौधेकी रस्सी आदि ।
प्रसर-पु० [सं०] आगे बढ़ना, बढ़ाव; फैलना, फैलाना, विस्तार; वेग; प्रवाह; प्रलय; समूह; बढ़ावा; साहस; युद्ध; प्रेमपूर्ण बांधा; लोहेका बाण; भारावा प्रसार; आसार; बात, पित आदिका बट-बट जाना ।
प्रसरण-पु० [सं०] आगे बढ़ना, सरकना; पलायन; फैलना, प्रसार; सेनाका चारों ओर फैलकर शत्रुकी घेरावा; स्वभावका माधुर्य ।
प्रसरणी-की० [सं०] सेनाका चारों ओर फैलकर शत्रुकी घेरावा ।
प्रसर-की० [सं०] प्रसारणी लता ।
प्रसरित-वि० फैला हुआ; आगे बढ़ा हुआ ।
प्रसर-पु० [सं०] फैलना, चलाना; पृथक करना ।
प्रसरन-पु० [सं०] फैलना, चलाना; बरमाना ।
प्रसर-पु० [सं०] ब्रह्मालोक 'सदस्' नामक मण्डपमें जाना; एक प्रकारका साम ।
प्रसरण-पु० [सं०] आगे बढ़ना, हिसकना; सेनाका चारों ओर फैल जाना; ब्रह्मालोक 'सदस्'में प्रवेश करना ।
प्रसरणी-की० [सं०] सेनाका चारों ओर फैल जाना ।
प्रसरणी(विन्)-वि० [सं०] सरकनेवाला, आगे जानेवाला; रेतनेवाला ।
प्रसल-पु० [सं०] हेमन्त ।
प्रसर्त-वि० [सं०] प्रसव-वेदना-प्रसन्न की ।
प्रसल-पु० [सं०] बच्चा जनना, गर्भमोचन; उत्पत्ति; उत्पत्ति-स्थान; फल; फूल; अवस्था, संतति । -**गृह**-पु० बच्चा जननेका घर, सौरी । -**धर्म**(विन्)-वि० फलप्रद; उत्पादक । -**बंधन**-पु० वह पतला सीका जिसपर फूल, फल लगते हैं, वृत्त । -**वेदना**, **-व्यथा**-की० प्रसवकी पीड़ा, बच्चा जनते समय होनेवाली पीड़ा । -**स्थली**-की० माता; उत्पत्तिस्थान । -**स्थान**-पु० बच्चा जननेकी जगह; बौद्धता ।
प्रसल-पु० [सं०] पियाल दूध, चिरौजीका पेड़ ।
प्रसल-पु० [सं०] बच्चा जनना, गर्भमोचन; उत्पन्न करना ।
प्रसल-सं० कि० जन्म देना । अ० कि० उत्पन्न होना ।
प्रसल(तु)-पु० [सं०] उत्पन्न करनेवाला, पिता, जनक ।
प्रसल-की० [सं०] माता ।
प्रसल-वि० [सं०] जन्म देनेवाली, उत्पन्न करनेवाली ।
प्रसल(विन्)-वि० [सं०] जन्म देनेवाला, उत्पन्न

करनेवाला ।

प्रसाध-वि० [सं०] प्रतिकूल; जो बायीं ओर हो, बायाँ; अनुकूल; प्रसन्ननीय ।

प्रसाह-पु० [सं०] शिकारी चिविया या पशु; प्रतिरोध; सङ्घ ।

प्रसाह-पु० [सं०] विंश पशु; सङ्घना; प्रतिरोध; आक्रियन; पराभूत करना ।

प्रसाह-की० [सं०] दृष्टिका ।

प्रसाह-अ० [सं०] बलाह, बलपूर्वक । -चौर-पु० डाकू, छुटेरा । -हण-पु० बलाह हर लेना, छीन लेना; छट्ट लेना ।

प्रसाधिका-की० [सं०] बारीक दानेका भल (साँची आदि) ।

प्रसाध-पु० [सं०] निर्मलता; स्वच्छता; अनुग्रह, कृपा; देवताकी चढ़ावी गयी वस्तु; हर्ष, प्रसन्नता; मानसिक शांति; स्वाभावकी सरलता; महात्मा या गुरुकी जड़न या उसकी छा जुकनेपर बची हुई भोग्य वस्तु; काम्यके तीन गुणोंमेंसे एक, किसी काम्य या रचनाका विशेष रूपसे सरल और सुगोचर होना; धर्मका एक गुण; भोजन (भक्त-साधुओंकी बोलीमें); *दे० 'प्रसाद' । -पह-पु० राजाकी ओरसे सम्मानार्थ दिया जानेवाला शिरोवस्त्र । -पराह-मुख-वि० प्रतिकूल, अप्रसन्न; किसीकी कृपाकी परवा न करनेवाला । -पराह-पु० कृपापात्र । -ख-वि० कृपायुक्त, मेहरबान, प्रसन्न ।

प्रसाधक-पु० [सं०] निर्मल बनानेवाला; प्रसन्न करनेवाला; देश, धन आदिका अधार्मिकके हाथसे धर्मनिष्ठके हाथमें जाना (को०) ।

प्रसाधन-वि० [सं०] निर्मल बनानेवाला, प्रसाधकारक, प्रसन्न करनेवाला । पु० प्रसन्न करना; राजाका लेमा ।

प्रसाधना-की० [सं०] सेवा; पूजा; स्वच्छ करना । * सं० क्रि० प्रसन्न करना ।

प्रसाधनीय-वि० [सं०] प्रसन्न करने योग्य ।

प्रसादित-वि० [सं०] शांत, प्रसन्न किया हुआ; आराधित; स्वच्छ किया हुआ ।

प्रसादी-की० किसी देवताकी चढ़ावी हुई वस्तु; महात्मा, गुरु या किसी मान्य व्यक्ति द्वारा दी गयी वस्तु ।

प्रसादी(दिन)-वि० [सं०] निर्मल बनानेवाला; प्रसन्न करनेवाला; प्रसादयुक्त, प्रसन्न ।

प्रसाधक-वि० [सं०] शृंगार करनेवाला; भूषक; सिरू बा निष्पन्न करनेवाला, साधनकर्मी, निष्पादक । पु० राजाका वह सेवक जो उसे बह, भूषण आदि बहनाता है ।

प्रसाधन-पु० [सं०] शृंगार, बनाव, शृंगारकी सामग्री, भूषण, कंधी आदि जिससे शृंगार किया जाता है । निष्पादन, सिद्धि ।

प्रसाधनी-की० [सं०] कंधी ।

प्रसाधिका-की० [सं०] शृंगार करनेवाली, प्रसाधनकर्मी; तिन्नी धान ।

प्रसाधित-वि० [सं०] जिसका प्रसाधन या बनाव-शृंगार किया गया हो, अलंकृत; निष्पादित, संपादित; प्रमाणित ।

प्रसार-पु० [सं०] फैलानेकी क्रिया, फैलाव, पसार; फैलने या व्याप्त होनेकी क्रिया; संचार, बर-बर जाना,

फिरना; (छुट) छोलना ।

प्रसारक-वि० [सं०] फैलानेवाला ।

प्रसारक-पु० [सं०] फैलानेकी क्रिया, फैलाना, पसारना; आगे करना; बढ़ाना; फैलकर शत्रुको घेर लेना; (विक्रयके लिए) छोलकर दिखलाना ।

प्रसारना-सं० क्रि० पसारना, फैलाना ।

प्रसारिणी-की० [सं०] गंधप्रसारिणी नामकी कता; अपा-मार्ग; काजवंती; फैलकर शत्रुको घेर लेना; एक मुक्ति (संगीत) । वि०, की० फैलानेवाली ।

प्रसारित-वि० [सं०] फैलाया हुआ, पसारा हुआ; (विक्रय-के लिए) प्रशस्त ।

प्रसारी(रिक्)-वि० [सं०] फैलानेवाला; निकलनेवाला (समासे) ।

प्रसार्य-वि० [सं०] प्रसारणके योग्य, फैलाने योग्य ।

प्रसाह-पु० [सं०] बखमें करना, जीतना; आत्मशासन ।

प्रसित-वि० [सं०] आनंद; आसक्त; संलग्न; अति श्रुत, बहुत साफ । पु० पीर, मवाद ।

प्रसिति-की० [सं०] बंधन; बंधनका साधन, रस्ती, बंजौर आदि; जाळ; तटु; आक्रमण; विस्तार; क्षेपण; क्रम; कथि-कार, प्रभाव ।

प्रसिद्ध-वि० [सं०] सजाया या सँवारा हुआ, अलंकृत, श्रुति; जिसकी प्रसिद्धि या शोहरत हो; ख्यात, मशहूर ।

प्रसिद्धि-की० [सं०] ख्याति; सजाने या सँवारनेकी क्रिया, शृंगार करना; भूषण, बनाव; सफलता; सिद्धि ।

प्रसीदिका-की० [सं०] छोटी बाटिका ।

प्रसृत-वि० [सं०] विनोदा या दबाया हुआ । पु० एक बहुत बड़ी संख्या ।

प्रसृत-वि० [सं०] गहरी नींद सोया हुआ; संप्रदित (कूळ); सहायीन (सुभृत); निष्क्रिय, निश्चेष्ट ।

प्रसृति-की० [सं०] गहरी नींद; सहायीनता; निश्चेष्टता ।

प्रसृ-की० [सं०] उत्पन्न करनेवाली; माता; पौरी; फैला; कता; अलंकार; कोमल दण ।

प्रसृका-की० [सं०] पौरी ।

प्रसृत-वि० [सं०] प्रसव किया हुआ; उत्पन्न, संजात । पु० कूळ; उत्पत्तिक साधन; बाह्य मन्त्रतरका एक देवगण ।

प्रसृता-की० [सं०] बह की जिसे कुछ हो काळ पूर्व बसा पैदा हुआ हो, अर्थात् ।

प्रसृति-की० [सं०] प्रसव; उत्पत्ति; संतान; अपत्य; माता; प्रसूता, अर्थात् । -प्रसृ-पु० बसा जननेका पर वा स्थान, सौरी । -ज-पु० प्रसव-वेदना । -उवर-पु० प्रसवके कुछ काल बाद होनेवाला ज्वर । -अवध-पु० दे० 'प्रसृति-गृह' । -बाधु-की० प्रसवकालमें गर्भाशयमें उत्पन्न होनेवाली वायु ।

प्रसृष्टिका-की० [सं०] प्रसूता, अर्थात् ।

प्रसृ-वि० [सं०] उत्पन्न, संजात । पु० कूळ; फल । -बाध-पु० कामदेव । -बर्ष-पु० वर्षवा ।

प्रसृक-पु० [सं०] फूल; कली ।

प्रसृनेपु-पु० [सं०] कामदेव ।

प्रसृत-वि० [सं०] आने बढ़ा हुआ, खिसका हुआ; फैला हुआ, विस्तीर्ण; कना; संलग्न; मिश्रित; गया हुआ, गत;

मिथुनः द्रुतः प्रदक्षितः नम्र । पु० अर्द्धावधि, पसरः दो
पलका एक मान । -ज-पु० एक प्रकारकी जारव संतान ।
प्रस्तुता-स्त्री० [सं०] जंघा ।
प्रस्तुति-स्त्री० [सं०] आगे बढ़ना; फैलाव; अर्द्धावधि, पसरः
दो पलका एक मान ।
प्रस्तुष्ट-वि० [सं०] स्वाभा हुआ, परित्यक्त ।
प्रस्तुष्टा-स्त्री० [सं०] फैलायी हुई उमकी; मुद्रका एक दण्ड ।
प्रसेक-पु० [सं०] सींचना, आसिंचन; चूना, क्षरण; झुँझते
पानी छटना या नाकसे पानी गिरना; बमनः करछुलकी
कटोरी ।
प्रसेकी(किन्)-वि० [सं०] बहनेवाला; जिससे मवाद
निकलता रहे; ऐसे प्रणवाका । एक प्रकारका असाध्य प्रण
वा धार ।
प्रसेद-पु० प्रसेद, पसीना ।
प्रसेविका-स्त्री० [सं०] छोटी नाटिका, छुद्राराम ।
प्रसेविवाक्(बल्)-वि० [सं०] प्रसन्न ।
प्रसेव-पु० [सं०] एक प्राचीन राजा (हरिवंश) ।
प्रसेनजित्-पु० [सं०] एक प्राचीन राजा (हरिवंश) ।
प्रसेव-पु० [सं०] प्रकट सेवन; शीणकी तूँबी; कपड़े या
चमड़ेका पैला ।
प्रसेवक-पु० [सं०] शीणकी तूँबी; कपड़े या चमड़ेका
पैला ।
प्रस्कंदन-पु० [सं०] कूटना, फाँटना; वह स्थान जहाँसे
कूटा जाय अतोत्तार विरेचन; मवादेव ।
प्रस्कंदिका-स्त्री० [सं०] विरेचन; अतोत्तार ।
प्रस्कण-पु० [सं०] एक ऋषि जो कन्यके पुत्र थे ।
प्रस्कण-वि० [सं०] कूटा हुआ; गिरा हुआ, पतित; परा-
जित । पु० आसिंच्युत व्यक्ति; पापी; निषय मंग करने-
वाला व्यक्ति; बोधेका एक रोग ।
प्रस्कृष्ट-पु० [सं०] बर्तुलकाकार वेदी; सहारा, अवलंब ।
प्रस्कृष्टन-पु० [सं०] स्थलन, पतन ।
प्रस्तर-पु० [सं०] पथर; पत्थी आदिका विछावन; विस्तार,
विछावन; कुशका मुट्ठा; मणि, रत्न; एक प्रकारका ताल;
चौरस मैदान; ग्रंथका अध्याय । -अद्-पु० पखानभेद,
हज्जोज नामक कला । -युग-पु० वह ऐतिहासिक काल
जब लोग पथरके हथियारोंसे काम लेते थे ।
प्रस्तरण-पु०, प्रस्तरणा-स्त्री० [सं०] विछावन; आसन ।
प्रस्तरिणी-स्त्री० [सं०] सफेद दूध, बच ।
प्रस्तरैछा-पु० [सं०] एक विनोदेव ।
प्रस्तरौपल-पु० [सं०] चंद्रकांत मणि ।
प्रस्तर-पु० [सं०] स्तुति; सुमनस्तर ।
प्रस्तार-पु० [सं०] फैलाना; ढकना; घासका जंगल; पत्थी
आदिका विछावन; विछावन, विस्तार; परत; चौरस मैदान;
शीर्षा; एक प्रकारका ताल; छत्रोंके भेद जाननेकी एक
विधि । -पंक्ति-स्त्री० एक छंद ।
प्रस्तारी(विस्)-वि० [सं०] फैलानेवाला (समाप्तमें) । पु०
एक नेत्ररोग ।
प्रस्तार्थम्-पु० [सं०] आँखका एक रोग ।
प्रस्ताव-पु० [सं०] प्रकट स्तुति; अवसर, मौका; प्रसंग,
प्रकरण; सामवेदका एक अंश जिसका गान प्रस्तीता नामक

कविक करता है; आरंभ; नाटककी प्रस्तावना; सभाके
सामने विचारके लिये रखी हुई बात (आ०) ।
प्रस्तावक-पु० [सं०] प्रस्ताव करनेवाला ।
प्रस्तावना-स्त्री० [सं०] आरंभ; प्रारम्भ; नाटकके आरंभमें
संज्ञापरका नदी, विदूषक या पारिपायिकके साथ होनेवाला
संज्ञापर जिसमें प्रस्तुतका परिचय आदि रहता है ।
प्रस्तावित-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ, आरम्भ; वर्णित,
कथित; जिसका प्रस्ताव किया गया हो, जो प्रस्तावरूपमें
रखा गया हो (आ०) ।
प्रस्तिर-पु० [सं०] पत्थी आदिका विछावन ।
प्रस्तीत, प्रस्तीम-वि० [सं०] संतत; चनित ।
प्रस्तुत-वि० [सं०] विशेष रूपसे स्तुत; जिसकी चर्चा चल
रही हो, प्रकरणप्राप्त, प्राप्तिक; उपस्थित; प्रयत्नसे किया
हुआ; पठित; उद्यत; तैयार; आरम्भ । पु० छिपा हुआ
विषय, प्रकरणप्राप्त विषय; उपमेय ।
प्रस्तुताङ्कुर-पु० [सं०] एक काम्यालंकार जहाँ प्रस्तुतके
कथनमें दूसरे वर्णित प्रस्तुतका घौलन किया जाय ।
प्रस्तुति-स्त्री० [सं०] प्रशंसा (वि०); प्रकट स्तुति; निष्पत्ति ।
प्रस्तोता(तु)-वि० [सं०] विशेष रूपसे स्तवन करनेवाला ।
पु० सामका प्रथम भाग गानेवाला कविक ।
प्रस्तोम-पु० [सं०] एक प्रकारका साम; प्रसंग; संदर्भ ।
प्रस्थपथ-वि० [सं०] परिमाणन; एक प्रस्थ पकानेवाला ।
प्रस्थ-वि० [सं०] प्रकट रूपसे स्थित; प्रस्थान करनेवाला;
फैलानेवाला, हट, स्थिर । पु० पर्वतके ऊपरकी समतल
भूमि, सानु; समतल भूमि, चौरस मैदान; विस्तार; बर्तीत
पलका एक प्राचीन परिमाण, आठकला चतुर्थांश; एक
प्रस्थके मापकी कोई वस्तु । -कुसुम, पुष्प-पु० मरवा;
एक प्रकारका नीबू, तुलसीकी एक जाति ।
प्रस्थल-पु० [सं०] एक प्राचीन देश ।
प्रस्थान-पु० [सं०] गमन; रवानगी; जगिपुकी मुख-यात्रा,
कूच; प्रेषण; मार्ग; एक प्रकारका नाटक (मा०); विधि,
पद्धति; मृत्यु, मरण; उपदेशका साधन (जेमे-उपनिषद्,
गीता और ब्रह्मसूत्र); वस्त्र आदि जो यात्राके पहले गंतव्य
स्थानकी दिशामें कहीं रख दिया जाता है (आ०) । -
ज्वरी-स्त्री० उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र ।
प्रस्थानी-वि० जानेवाला, प्रस्थान करनेवाला ।
प्रस्थापन-पु० [सं०] प्रकट स्थापन; प्रस्थान करना;
मेजना; रीतिमें लगाना; प्रमाणित करना; प्रयोगमें लाना;
पशुओंका हरण ।
प्रस्थापना-स्त्री० [सं०] मेजना, प्रेषण ।
प्रस्थापित-वि० [सं०] विशेष रूपसे स्थापित; मेजा हुआ,
प्रेषित; आगे बढ़ाया हुआ ।
प्रस्थापी(विस्)-वि० [सं०] जो प्रस्थान करनेकी हो, जो
कहीं जानेवाला हो ।
प्रस्थिका-स्त्री० [सं०] अंगठा कला ।
प्रस्थित-वि० [सं०] जिसने प्रस्थान किया हो; विशेष रूप-
से स्थित, हट ।
प्रस्थिति-स्त्री० [सं०] गमन, यात्रा, प्रस्थान, कूच; †
विशेष स्थिति ।
प्रस्थ-पु० [सं०] स्नानपात्र; ‡ दे० 'प्रक्ष' ।

प्रस्नव-पु० [सं०] बहना; निकलना; (पानी, दूध आदि-को) धारा; मूत्र ।
 प्रस्नव्य-वि० [सं०] जिसमें तेल या चिकनाई अधिक हो ।
 प्रस्नुत-वि० [सं०] टपकने, बहनेवाला । -स्ननी-स्त्री० वह स्त्री जिसके स्तनोंसे वात्सल्य प्रेमके कारण दूध टपक रहा हो ।
 प्रस्नुषा-स्त्री० [सं०] पोतीकी स्त्री, नतोहू ।
 प्रस्नेव-वि० [सं०] स्नान करने योग्य (जल आदि) ।
 प्रस्पर्दन-पु० [सं०] प्रकाशन ।
 प्रस्फुट-वि० [सं०] सुस्पष्ट; प्रकृत, विकसित; प्रकट, स्पष्ट ।
 प्रस्फुटन-पु० [सं०] विकसित होना; प्रकट होना ।
 प्रस्फुटित-वि० [सं०] फूटा या खिँका हुआ, विकसित ।
 प्रस्फुटण-पु० [सं०] निकलना; चमकना; स्पष्ट होना; कपन ।
 प्रस्फुरित-वि० [सं०] कौपात हुआ, हिलता हुआ ।
 प्रस्फोटन-पु० [सं०] विशेष रूपसे फूटना या विदीर्ण होना; फूट निकलना; विकसित होना या करना; ताकन; धुप; (अन्न आदि) फटकना ।
 प्रस्मृत-वि० [सं०] भूला हुआ, विस्मृत ।
 प्रस्मृति-स्त्री० [सं०] भूलना, विसरण ।
 प्रस्वद्, प्रस्वद्न-पु० [सं०] बहना, चूना, क्षरण ।
 प्रस्वस-पु० [सं०] गिरना, (गर्भका) पात (सुस्रुत) ।
 प्रस्वसन-पु० [सं०] द्रावक पदार्थ ।
 प्रस्वसी (सिन्धु)-वि० [सं०] गिरनेवाला; (बह गयी) जिसका पात हो जाय ।
 प्रस्वव-पु० [सं०] लगातार चूना या बहना; स्तनसे निकला हुआ दूध; प्रवाह; भारा; पेशाब; आँसू; उबलते हुए चावलका ऊपरसे बहकर गिरता हुआ मॉँड़ ।
 प्रस्ववण-पु० [सं०] जल आदिका लगातार चूना या बहना; पसीना; स्तनसे निकलता हुआ दूध; पेशाब करना; वह स्नान जहाँसे पानी गिरता या बहता है; क्षरना, प्रपात; मात्सवान् पर्वत ।
 प्रस्ववणी-स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी योनि वा भग ।
 प्रस्वाव-पु० [सं०] चूनेकी क्रिया, क्षरण, बहाव; मूत्र; उबलते हुए चावलका ऊपरसे बहता हुआ मॉँड़ ।
 प्रस्वृत-वि० [सं०] क्षरित; क्षरा हुआ ।
 प्रस्वन, प्रस्वान-पु० [सं०] उच्च शब्द, जोरकी आवाज ।
 प्रस्वाप-पु० [सं०] सोनेकी क्रिया, सोना; स्वप्न; एक अन्न जिसका प्रयोग करनेपर शत्रुको नींद आ जाती है ।
 प्रस्वापक-वि० [सं०] सुलानेवाला; मारक ।
 प्रस्वापन-पु० [सं०] सुलाना; एक अन्न जिसका प्रयोग करनेपर विपक्षीको नींद आ जाती है ।
 प्रस्वापिनी-स्त्री० [सं०] सत्यभामाकी एक बहन जो कृष्णकी पत्नी थी (हरिवंश) ।
 प्रस्वार-पु० [सं०] अंकार (वै०) ।
 प्रस्विज-वि० [सं०] जिसे पसीना आ गया हो ।
 प्रस्वेद-पु० [सं०] पसीना ।
 प्रस्वेदित-वि० [सं०] जिसे पसीना आ गया हो; तप्त, पसीना लानेवाला ।
 प्रस्वेदी (विच्)-वि० [सं०] पसीनेसे तर-भर ।

प्रहंतव्य-वि० [सं०] बध् ।
 प्रहणन-पु० [सं०] बध, मारण ।
 प्रहणेमि, प्रहणेमि-पु० [सं०] चंद्रमा ।
 प्रहत-वि० [सं०] आहत; निहत, मारा हुआ; (शेर आदि) जिसपर आघात किया गया हो; वितत, फैलाया हुआ; पराभूत; विद्वान् ।
 प्रहति-स्त्री० [सं०] आघात, चोट ।
 प्रहर-पु० [सं०] एक दिनका आठवाँ भाग, याम, पहर; पहरा । -कुटुंबी-स्त्री० कुटुंबिनी नामक क्षुप । -विरति-स्त्री० पहरका अंत ।
 प्रहरक-पु० [सं०] पहरेंदार, घड़ियाली ।
 प्रहरस्नान-ज० कि० प्रसन्न होना - 'पक्षि प्रहरले मुनि समुदाई' - रामा० ।
 प्रहरण-पु० [सं०] छीनना; हटाना; प्रहार, आघात; आक्रमण; युद्ध; दम, दमन; अन्न; (अग्निमें तृणादि) फेंकना; परदेदार गाड़ी या डौली; हृदयका एक प्रथम; गाड़ीमें बैठनेका स्थान । -कक्षिका-कक्षिता-स्त्री० चौदह अक्षरीका एक छंद ।
 प्रहरणीव-वि० [सं०] लज्जे वा आक्रमण करने योग्य; गट करने, दूर करने योग्य । पु० एक अन्न ।
 प्रहरी (विच्)-पु० [सं०] पहरेंदार, घड़ियाली ।
 प्रहर्ता (हृ)-वि० पु० [सं०] मेजनेवाला; आक्रमण; प्रहार करनेवाला ।
 प्रहर्ष-पु० [सं०] अत्यधिक प्रसन्नता; पुरुषेन्द्रियमें उत्तेजना या तनाव आना ।
 प्रहर्षण-पु० [सं०] हर्ष, प्रसन्नता; हर्षजन्य रोमांच; अभीष्टकी प्राप्ति; बुध ग्रह; एक काव्यालंकार जहाँ बिना परिश्रमके ही कार्य सिद्ध होने या अभीष्टसे भी अधिक सफलता मिलनेका वर्णन किया जाय अथवा जहाँ वह दिखलाया जाय कि जिस बातके लिए यत्न आरंभ किया गया था, वह बीचमें ही प्राप्त हो गयी । वि० पुनर्कृत करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला ।
 प्रहर्षणी, प्रहर्षिणी-स्त्री० [सं०] हल्दी; एक वर्णवृत्त ।
 प्रहर्षित-वि० [सं०] कटा किया हुआ, संभोगके लिए उत्तेजित किया हुआ; रोमांचित; प्रसन्न ।
 प्रहर्षुल-पु० [सं०] बुध ग्रह ।
 प्रहसंती-स्त्री० [सं०] बही अंगीठी; दूधी; वासंती कृता ।
 प्रहसन-पु० [सं०] जोरकी हँसी; परिहास, विहंगी; भागकी तरहका हास्य रसप्रधान एक रूपक (सा०) ।
 प्रहसित-पु० [सं०] एक बुद्ध; जोरमें हँसना । वि० हँसता हुआ, प्रसन्न ।
 प्रहस्त-पु० [सं०] पना, प्रतल; रावणकी मेनाका एक सेनापति ।
 प्रहाण-पु० [सं०] परित्याग; ध्यान; चेष्टा, उद्योग ।
 प्रहाणि-स्त्री० [सं०] परित्याग; कमी, अभाव; हानि ।
 प्रहान-पु० दे० 'प्रहाण' ।
 प्रहाति-स्त्री० दे० 'प्रहाणि' ।
 प्रहार-पु० [सं०] आघात, वार मारण; कठहार । -बल्ली-स्त्री० मांसरोषिणी कृता ।
 प्रहारक-वि० [सं०] प्रहार करनेवाला ।

प्रहारण-पु० [सं०] काम्यदान, मनचाहा दान ।
प्रहारना०-सं० कि० प्रहार करना, बार करना, मारना; (अस्त्र) फेंकना या चलाना ।
प्रहारासी-वि० [सं०] जो आघातसे घायल हो गया हो ।
 पु० आघातके सतसे होनेवाली जीर्ण या तीव्र पीड़ा ।
प्रहारित०-वि० जिसपर प्रहार किया गया हो ।
प्रहारी(विभू)-वि० [सं०] प्रहार करनेवाला; आक्रमण करनेवाला; नष्ट करनेवाला । पु० भेड़ भोड़ा ।
प्रहारक-वि० [सं०] हलपूर्वक हरण करनेवाला ।
प्रहार्य-वि० [सं०] प्रहार करने योग्य; हरण करने योग्य ।
प्रहास-पु० [सं०] अट्टहास, ठहाका; सिरस्कार; व्यंग्योक्ति; एक नाग; शिव; नट्य सीमतीर्थ; रंगोक्ती चटक ।
प्रहासक-वि०, पु० [सं०] हँसानेवाला, मसखरा ।
प्रहासी(सिन्धु)-वि० [सं०] ठहाका लगानेवाला, जोरसे हँसनेवाला; चमकनेवाला । पु० मीन; विदूषक ।
प्रहित-वि० [सं०] फेंका हुआ, चकाया हुआ (अस्त्र); फैलाया हुआ; भेजा हुआ, प्रेरित; नियुक्त; उपयुक्त; निष्कासित । पु० दाल, साधन ।
प्रहीण-वि० [सं०] परित्यक्त; पकाकी; लुप्त; जीर्ण-शीर्ण । पु० नाश; हानि । -जीवित-वि० मृत । -वीच-वि० पापरहित, निष्पाप ।
प्रहुत-पु० [सं०] भूतबद्ध, बलिबैस्वदेव ।
प्रहुति-क्री० [सं०] उत्तम होम (बै०) ।
प्रहुत-वि० [सं०] जिसपर प्रहार किया गया हो, आहत; फेंका हुआ, चकाया हुआ, उठाया हुआ (अस्त्र आदि) । पु० आघात, बार ।
प्रहृष्ट-वि० [सं०] अति प्रसन्न, प्रसुधित; खरा (रीम) । -चित्त, -मना (नस्त्र)-वि० बहुत प्रसन्न । -मुख, -बदन-वि० जिसका चेहरा प्रसन्न हो । -रूप-वि० जो प्रसन्न देख पड़े, जिसे देखनेसे मनमें प्रसन्नता हो । -रोमा(मन्त्र)-वि० जिसके बाल खड़े हों ।
प्रहृष्टक-पु० [सं०] काक ।
प्रहृष्टात्मा(स्मृ)-वि० [सं०] दे० 'प्रहृष्टचित्त' ।
प्रहेणक-पु० [सं०] पुना; लपसी; त्र्योहारमें बाँटी जानेवाली मिठाई ।
प्रहेलक-पु० [सं०] दे० 'प्रहेणक'; पहेली ।
प्रहेला-क्री० [सं०] स्वच्छन्द क्रीड़ा ।
प्रहेलि, प्रहेलिका-क्री० [न०] पहेली ।
प्रहाद, प्रहाद-पु० [सं०] अतिशय आनन्द, अत्यधिक प्रसन्नता; प्रमोद; आवाज, शब्द; विष्णुका एक प्रसिद्ध यन्त्र जो हिरण्यकशिपुका पुत्र था, एक नाग; एक प्राचीन देश ।
प्रहास-पु० [सं०] क्षय ।
प्रह-वि० [सं०] पसन्न ।
प्रहृषि, प्रहृषि-क्री० [सं०] प्रसन्नता ।
प्रहृष-वि० [सं०] प्रसन्न ।
प्रहादक-वि० [न०] प्रसन्न करनेवाला, हर्षकारक । [क्री० 'प्रहादिका' ।]
प्रहादन-वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला, हर्षजनक । पु० प्रसन्न करना ।
पह्रादित-वि० [सं०] प्रसन्न किया हुआ ।

प्रहारी(विभू)-वि० [सं०] प्रसन्न होनेवाला ।
प्रह-वि० [सं०] नम; झुका हुआ; दातुर्भाव; आसक्त ।
प्रहण-पु० [सं०] नम्रता प्रकट करनेके लिए झुकना ।
प्रहृल-पु० [सं०] सुंदर शरीर ।
प्रहृलीका-क्री० [सं०] पहेली ।
प्रहृजलि-वि० [सं०] हाथ जोकर सामने झुका हुआ ।
प्रहाण-वि० [सं०] झुका हुआ ।
प्रहृद-पु० [सं०] आवाहन, आवाहन ।
प्रांग-वि० [सं०] लंबे डील-डौलका । पु० छोटा डील, पणव ।
प्रांगण-पु० [सं०] आंगन; छोटा डील, पणव ।
प्राञ्जल-वि० [सं०] सरल, मुनीष; खरा, ईमानशायी; समतल, बराबर ।
प्राञ्जलता-क्री० [सं०] अथेकी सरलता ।
प्राञ्जलि-वि० [सं०] जो हाथ जोड़े हो, नवाजलि । क्री० जोड़े हुए हाथ ।
प्राञ्जलिक, प्राञ्जली(विभू)-वि० [सं०] दे० 'प्राञ्जलि' ।
प्रांत-पु० [सं०] अंत, शेष भाग सिरा, छोर; किनारा; कोण; सीमा, हद्द; पृष्ठ भाग; किसी देशका कोई बड़ा भाग, प्रदेश (जैसे-विहार, आ०), एक ऋषि । -रा, -खर-वि० वास रहनेवाला । -दुर्ग-पु० नगरके परकोटेके बाहरकी बस्ती; परकोटेके बाहरका दुर्ग । -निवासी(सिन्धु)-वि० सीमापर रहनेवाला । -पति-पु० (गवर्नर) प्रांतका सर्वोच्च अधिकारी, सूबेदार, राज्यपाल । -पुष्पा-क्री० एक पोषा । -भूमि-क्री० अंतिम स्थान; सीढ़ी; समाधि । -विरस-वि० जो अंतमें निस्तार हो; अंतमें स्वाद-हीन हो । -हृषि-क्री० कितिज । -सूस्थ-पु० छाया आदिसे रहित लंबा मार्ग । -स्थ-वि० सीमापर रहनेवाला ।
प्रांतः(नस्त्र)-अ० [सं०] सीमा या छोरसे होकर ।
प्रांतर-पु० [सं०] लंबा रास्ता छाया आदिमें रहित मार्ग; वन; पेड़का खोखला भाग, कोटर । -सूस्थ-पु० दे० 'प्रांतस्थ' ।
प्रांतिक-वि० [सं०] दे० 'प्रांतीय' ।
प्रांतीय-वि० [सं०] प्रांत-संबंधी; प्रांतका ।
प्रांतीय सरकार-क्री० प्रांतका शासन चला देनेवाली सरकार ।
प्रांतीयता-क्री० [सं०] अपने प्रांतके प्रति मोह या पक्षपात ।
प्रांशु-वि० [सं०] ऊँचा; लंबा । पु० लंबा आदमी ।
-प्राकार-वि० जिसका परकोटा बहुत ऊँचा हो । -लक्ष्य-वि० लक्षे मनुष्यको प्राप्त ।
प्राहमरी-वि० [अ०] आरम्भिक, प्रारम्भिक । -स्कूल-पु० वह स्कूल जिसमें आरम्भिक शिक्षा दी जाय ।
प्राहृष्ट-वि० [अ०] व्यक्तिविशेषसे सन्न; व्यक्तिविशेषका निजी; जो औरोंसे छिपाया जाय, गुप्त, आपसी; गैर-सरकारी (जैसे-प्राहृष्ट सचिव) । -सेकेटरी-पु० किसी बड़े आदमीका वह निजी सहायक जो पत्र-व्यवहार तथा अन्य व्यक्तिगत कार्योंमें उसकी सहायता करता है, खास नवीम ।

प्राकृत्य-पुं [सं०] प्रकट होनेका भाव, प्रकटता।
प्राकरनिक-वि० [सं०] जिसका प्रकरण हो, प्रकरणप्राप्त;
 प्रस्तुत; उपपन्न।
प्राकृतिक-वि० [सं०] तरजोह देनेके लायक।
प्राकृतिक-पुं [सं०] परदारोपजीवी; जो द्वारा नियुक्त
 नरतक; क्षियौकी मंडलीमें नान्धनेवाला पुरुष।
प्राकाश-पुं [सं०] आठ सिखियोंमेंसे एक जिसके प्राप्त हो
 जानेपर मनुष्य जो चाहता है वह हो जाता है।
प्राकार-पुं [सं०] नगर या किल्लेके चारों ओर रक्षाके भिन्न
 बनायी जानेवाली दीवार, परकोटा; ईंट, लकड़ी आदिका
 बनाया हुआ वेरा।
प्राकारीय-वि० [सं०] प्राकारके बोन्य; परकोटेसे घिरा
 हुआ।
प्राकाश-पुं [सं०] प्रकाशका भाव, प्रकटता; प्रसिद्धि,
 ख्याति।
प्राकृत-वि० [सं०] प्रकृति-संबंधी; प्रकृतिका; असंस्कृत;
 उजबु; नीच; स्वभाव-सिद्ध, स्वाभाविक; साधारण, सामान्य।
 जो प्रांतकी बोली; एक प्राचीन भाषा जिसका
 प्रयोग संस्कृतके नाटकों आदिमें तथा अन्य ग्रंथोंमें मिलता
 है; एक नक्षत्रबीधी। -**उच्चर-पुं** वर्षा, सरर और वसंतमें
 क्रमशः बात, पिता और कसके प्रकोपसे होनेवाला उच्चर।
 -**दोष-पुं** बात, पितादिके कोपसे उत्पन्न दोष।
 -**प्रकथ-पुं** एक प्रकारका प्रकथ जिसमें प्रकृतितकका
 मकामें लय हो जाता है। -**मानुष-पुं** साधारण व्यक्ति।
 -**मित्र-पुं** प्राकृत शत्रुके देशके ठीक बादवाले देशका
 राजा। -**हातु-पुं** वह राजा जिसका देश किसी अन्य
 राजाके देशसे लगा हुआ हो।
प्राकृतारि-पुं [सं०] दे० 'प्राकृतशत्रु'।
प्राकृतिक-वि० [सं०] प्रकृतिसे उत्पन्न; प्रकृति-संबंधी;
 प्रकृतिका, कुदरती; लौकिक; असार। -**चिकित्सा-जो०**
 मुख्यरूपसे प्राकृतिक उपचारोंपर आधारित चिकित्सा-पद्धति।
 -**भूगोल-पुं** भूगोल-विद्याका वह भाग जिसमें समुद्र,
 पर्वत, नदी आदिकी प्राकृतिक विशेषताओंका विवरण
 रहता है।
प्राक्(च्)-वि० [सं०] सामनेका, अगला; पूर्वका,
 पूर्वी; पहलेका। अ० पहले, आगे। -**कथन-पुं** भूमिका,
 प्रस्तावना। -**कर्म(च्)-पुं** पूर्व जन्मका कर्म। -
काक-पुं पहलेका समय, बीता हुआ समय, प्राचीन
 काल। -**कालिक-काकीन-वि०** पहलेका, पुराना,
 प्राचीन। -**कुछ-वि०** (वह कुछ) जिसका सिरा पूर्वकी
 ओर हो। -**कुत-वि०** पूर्व जन्ममें किया हुआ। पुं० पूर्व
 जन्ममें किया हुआ कर्म। -**चरणा-जो०** अंग, योगी।
 -**चिर-अ०** यथासमय, ठीक समयपर। -**छाव-पुं**
 छाया पूर्वकी ओर पड़नेका समय, अपराह्न। -**छानव-पुं**
 पहलेका शिष्य। -**कुछ-वि०** (कुछ) जिसका सिरा
 पूर्वकी ओर हो। पुं० कुछका ऐसा सिरा। -**प्रवचन-वि०**
 जो पूर्वकी ओर टालाई हो। -**प्रहार-पुं** पहला
 आघात। -**कक-पुं** कटकर। -**कस्तुरी-जो०** पूर्वी-
 कास्तुरी नामक नक्षत्र। -**अच-पुं** हृदयस्थित। -
कास्तुरी-पुं हृदयस्थित। -**हर्षणा-जो०** खर्चोंवक

समयकी संख्या, प्रातःकालकी संख्या। -**सेवक-पुं** वक्ता
 का प्रथम सेवक। -**सौमिक-पुं** सोमयामके पहले किने
 जानेवाले अग्निहोत्र, दर्श, पूर्णिमास आदि। -**कोटा-**
(तस्)-वि० पूर्वकी ओर बहनेवाला।
प्राकन-वि० [सं०] पहलेका, प्राचीन; पूर्व जन्मका।
 पुं० भाव्य, प्रारब्ध।
प्राकृ-पुं [सं०] प्रकटता, प्रचंडता, तीक्ष्णता।
प्राग्-प्राच् का समासगत रूप। -**अनुराग-पुं** पूर्वा-
 नुराग। -**अभाव-पुं** कार्यका अपनी उत्पत्तिके पहले
 कारणमें न रहना, अपनी उत्पत्तिके पहले कारणमें कार्यका
 अभाव। -**अभिहित-वि०** पूर्वकथित। -**उच्छि-जो०**
 पूर्वजन। -**उत्तर-वि०** पूर्वोत्तर। -**उत्तरा-जो०** दे०
 'प्रागुदीची'। -**उदीची-जो०** ईशान कीर्ण। -**ऐतिहासिक-वि०**
 इतिहासमें वर्णित कालके पूर्वका। -**उयोसिच-पुं**
 कामरूप देश। -**उपुर-पुं** प्राक्वोसिच देशकी राजधानी
 जिसका आधुनिक नाम गौहाटी है। -**दक्षिणा-जो०**
 दक्षिण-पूर्वका कीर्ण, अग्निकीर्ण। -**दक्ष-पुं** पूर्वकी
 देश। -**द्वार-पुं** पूर्वका द्वार। -**अच-पुं** जीवनसे
 पहलेका समय जो औषध-सेवनके दस कालखण्डोंमेंसे
 एक माना जाता है; भोजनके पहले औषधका सेवन।
 -**अच-पुं** पूर्व जन्म। -**आग-पुं** अगला भाग।
 -**भार-पुं** उत्कर्ष; पर्वतका अग्रभाग; किसी वस्तुका
 अग्रभाग; राशि। -**भाव-पुं** पूर्व जन्म; उत्कर्ष,
 श्रेष्ठता। -**क्षय-पुं** पूर्व बिह। -**बंश-पुं** वंशशास्त्र-
 में इतिहासके पूर्वका वह जिसमें यजमान आदि रहते हैं;
 विष्णु; पहलेका वंश। -**बचन-पुं** पहलेका निश्चय;
 मनु आदिका वचन। -**बृत्त-बृत्त-पुं** पहलेकी
 पट्टना।
प्रागकथ्य-पुं [सं०] प्रगल्भ होनेका भाव, प्रगल्भता;
 साहस; वमक, वृद्धता; विकास; वार्धक्यता; ठाढ़-पाढ़; हठता;
 प्रकटता; जीका अयमें रहित होना जो सात्त्विक भाव
 माना जाता है।
प्राग-पुं [सं०] अवन, इमारत।
प्राग-पुं [सं०] चरम या शीर्षबिंदु। -**सर-वि०** पहला,
 सबसे आगेका। -**हर-वि०** प्रधान, मुख्य।
प्राग्राट-पुं [सं०] पतला दही; मट्ठा।
प्राग्राथ-वि० [सं०] श्रेष्ठ, प्रधान।
प्राघात-पुं [सं०] नुक।
प्राघार-पुं [सं०] चूर्नेकी क्रिया, क्षरण।
प्राधुन, प्राधुनिक, प्राधुनिक-पुं [सं०] अतिवि।
प्राधूर्णक, प्राधूर्णिक-पुं [सं०] अतिवि।
प्राक्-प्राच् का समासगत रूप। -**व्याच-पुं** व्यवहार-
 शास्त्रके अनुसार एक प्रकारका उत्तर जिसमें प्रतिवादी यह
 कहता है कि वादी प्रस्तुत अभियोग लगाकर पहले की
 मेरे ऊपर दावा कर चुका है और उसमें उसकी हार हुई है।
 -**मुख-वि०** जिसका मुँह पूर्वकी ओर हो, पूर्वामुख।
प्राचक्य-पुं [सं०] प्रचंडता, उग्रता; अत्यंतता।
प्राचार-वि० [सं०] जो प्रचलित अथवा विरुद्ध हो। पुं०
 पंखदार चौड़ी।
प्राचर्य-पुं [सं०] प्रकट अनार्य।

प्राचिका-शी० [सं०] शक्ति; राजकी जातिकी एक विधिया।
प्राची-शी० [सं०] पूरव; पूरव और पूरवके बीचकी दिशा या स्थान। -**पति-पु०** इंद्र। -**सूक्त-पु०** पूर्वी क्षितिज।

प्राचीन-वि० [सं०] पूरवका, पूरवी; पहलेका, पुराना।
पु० दे० 'प्राचीर'। -**गर्भ-पु०** एक कवि। -**याथा-शी०** पुरानी कथा। -**सिद्ध-पु०** चंद्रमा। -**पद्मस-पु०** बेल्का पेड़। -**बर्हि(स्)-पु०** एक प्राचीन राजा जो प्रजापति कहलाते थे और जिनसे प्रचेतागण उत्पन्न हुए; इंद्र। -**मंस-पु०** पुराना विश्वास; वह मत जो प्राचीन कालमें चला आ रहा हो।

प्राचीनता-शी० [सं०] प्राचीन होनेका भाव, पुरानापन।
प्राचीना-वि० शी० [सं०] पुरानी ('प्राचीन'का शी०)।
शी० राला, पाठा।

प्राचीनामलक-पु० [सं०] जलआमला।
प्राचीनावीत-पु० [सं०] (आजमें) दाहिने कंधेपरसे धारण किया हुआ बन्धोपवीत।

प्राचीनावीती(तिष्ठ)-वि० [सं०] जिससे प्राचीनावीत धारण किया हो।

प्राचीनोपवीत-पु० [सं०] दे० 'प्राचीनावीत'।

प्राचीनोपवीती(तिष्ठ)-वि० [सं०] दे० 'प्राचीनावीती'।
प्राचीर-पु० [सं०] नगर, किले आदिके चारों ओर रक्षाके लिए बनायी गयी दीवार, परकोटा, चहारदीवारी।

प्राचुर्य-पु० [सं०] प्रचुर होनेका भाव, प्रचुरता, आधिक्य, बहुतायत; राशि।

प्राचैतस-पु० [सं०] बाष्मीके मुनि; प्रचेताका पुत्र; मनु; दक्ष; वक्त्रके पुत्र।

प्राचिस्त-पु० 'प्रायश्चित्त'।

प्राच्य-वि० [सं०] पूरवका, पूरवी; पहलेका, पुराना; सामनेका, अगला। पु० सरावती नदीके पूर्वका देश; इत देशका निवासी। -**आषा-शी०** पूरवी भाषा। -**कृषि-शी०** एक छंद।

प्राच्यक-वि० [सं०] पूरवी, पूर्वस्थित।

प्राचक-पु० [सं०] सारथि।

प्राजन-पु० [सं०] बाहुक, कीड़ा।

प्राजहित-पु० [सं०] गार्हपत्य अग्नि।

प्राजापत्य-वि० [सं०] प्रजापतिसे उत्पन्न; प्रजापति-सबही; प्रजापतिका; जो प्रजापति देवताके निमित्त हो। पु० आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक जिसमें कन्याका पिता वर और कन्यासे गार्हस्थ्य धर्मका पाठन करनेकी प्रतिष्ठा करानेके अनंतर दोनोंकी पूजा करके कन्यादान करना है; बारह दिनोंका एक प्रकारका व्रत; प्रयास; पितृलोक; विष्णु; रोहिणी नक्षत्र।

प्राजापत्या-शी० [सं०] सन्ध्यास ग्रहण करनेके पूर्व की जानेवाली एक प्रकारकी इष्टि जिसमें दक्षिणाके रूपमें सर्वस दान कर दिया जाता है।

प्राजिक-पु० [सं०] बाज पक्षी।

प्राजिता(ह)-पु० [सं०] सारथि।

प्राजी(जिन्)-पु० [सं०] बाज पक्षी।

प्राजेवा-पु० [सं०] रोहिणी नक्षत्र।

प्राज्ञ-वि० [सं०] बुद्धिमान्; चतुर, दक्ष; महान्। पु० चतुर मनुष्य; एक तरहका तोता; कल्किदेवके बड़े भाई (पु०); जीवात्मा (वे०)। -**मन्य-मानी(निन्)-वि०** अपनेकी बहुत बुद्धिमान् माननेवाला (एत अर्थमें 'प्राह-मन्य' और 'प्राहमानी' रूप भी होते हैं)।

प्राज्ञा-शी० [सं०] बुद्धि; बुद्धिमत्ता की।

प्राज्ञी-शी० [सं०] विदुशी; विद्वान्की स्त्री; सर्वकी एक पक्षी।

प्राज्य-वि० [सं०] जिसमें न्यून भी पक्षा हो; प्रचुर, मयूत; विशाल; ऊँचा; दीर्घ।

प्राज्ञिवाक, प्राज्ञिचेक-पु० [सं०] न्याय करनेके लिए राजाकी ओरसे नियुक्त विचारक, न्यायाधीश।

प्राणस-पु० [सं०] बायु; रसजन।

प्राणती-शी० [सं०] भूख; छाँक; हिचकी, शिका।

प्राण-पु० [सं०] बायु; शरीरके भीतरकी जीवनधाररूपी बायु (इसके पूर्व भेद माने गये हैं-प्राण, अपान, स्थान, उदान और समान); श्वास, सोंस; बल, जीव; जीवन, जान; धाण; धार्मिक; पावन; कालका मानरूप श्वास; मूलाधारमें रहनेवाली बायु; वह जो प्राणोंके समान प्रिय हो; सैवन्वत मन्वतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक; कान्यका आत्मा-रूप रस; एक संश्रद्धा, श्रद्धा; 'ध' वर्ण, यकार; एक प्रकारका साम; मत्स्य; विष्णु। -**अधार-पु०** वह जिसपर जीवन अवलंबित हो, जीवनका सहाय; पति, खादिक; प्रेमी, प्रियतम। -**कर-वि०** ताजगी कानेवाला; बल बढ़ानेवाला, बलकारक। -**कष्ट-पु०** मरनेके समय होनेवाला कष्ट। -**कौत-पु०** प्रिय व्यक्ति; पति। -**कृच्छ-पु०** प्राणका सक्त, जान-जोखिम। -**ग्रह-पु०** नाक।

-**चात-पु०** मार डालना, मारण। -**चातक-वि०** मार डालनेवाला, प्राण हर लेनेवाला। -**घन-वि०** जो प्राण हर के, घातक। -**चव-पु०** शक्तिवृद्धि। -**च्छिद्-वि०** प्राण ले लेनेवाला, प्राणहारक। -**च्छेद्-पु०** बध, हत्या। -**जीवन-पु०** विष्णु जो प्राणोंका स्थान और पोषण करते हैं; प्राणाधार। -**स्वासा-पु०** मृत्यु; आरम्भ-हत्या। -**दंड-पु०** मीतकी सजा। -**द-वि०** जान डालनेवाला। [स्त्री० 'प्राणदा']। पु० जल; रक्त; जीवन नामका द्रव्य; विष्णु। -**द्वित-पु०** पति। वि० प्राण-प्यारा। -**दा-शी०** दह, इरीतकी; एक प्रकारकी शुटिका (आ० वे०)। -**दाता(ह)-वि०** पु० किसीकी जान बढ़ानेवाला। -**दान-पु०** प्राण देना; किसीकी प्राण-रक्षा करना। -**दुरोद्ध-पु०** जान जोखिम-में डालना; जानकी बाजी लगाना। -**द्रोह-पु०** किसीकी जान लेनेके फेरमें रहना। -**धन-पु०** वह जो प्राणके समान प्यारा हो, अत्यंत प्रिय व्यक्ति। -**धार-वि०** जिसमें प्राण हो, जीवित। पु० प्राणी। -**धारण-पु०** जीवन धारण करनेकी क्रिया, जीव-शक्ति; जीवनका सहाय। -**धारी(रिन्)-पु०** प्राणी, जीव। -**नाथ-पु०** पति, स्वामी; प्रेमपात्र, प्रियतम; यम, एक महात्मा जिन्होंने 'परिणामी' सप्रदाय चलाया (इनका लक्ष्य सर्वधर्मसमन्वय था और वे अपनेको हिंदुओंका कर्तिक, सुलभानोंका मेहदी और ईसाईयोंका मसीहा मानते थे)।

-**नाभी**-पुं० [हिं०] महात्मा प्राणनाभके संप्रदायका अनुयायी; प्राणनाभका चलाया हुआ संप्रदाय । -**नाभ**-पुं० मृत्यु; वध । -**नाभक**-वि० जान लेनेवाला, प्राण-हारक । -**निग्रह**-पुं० प्राणायाम । -**पण**-पुं० जानकी बाजी । -**पति**-पुं० पति; प्रेमपात्र, प्रियतम; वैभ; आत्मा । -**पत्नी**-स्त्री० मुख-ध्वनि । -**परिकल्प**-पुं० जानकी बाजी लगाना । -**परिग्रह**-पुं० प्राण चारण करना, जन्म लेना । -**प्यारा**-पुं० [हिं०] वह जो प्राणीके समान प्रिय हो, अत्यंत प्रिय व्यक्ति; पति, खाविंद; प्रेमपात्र, प्रियतम । [स्त्री० 'प्राणप्यारी'] - **प्रतिष्ठा**-स्त्री० देवप्रतिमाका एक प्रकारका संस्कार जिसमें भग्नों द्वारा देवताका प्रतिमार्थ आवाहन करते हैं; भग्नों द्वारा किसी देवताका उसकी प्रतिमार्थ निवास कराना । -**प्रद**-वि० प्राण देनेवाला, प्राणदायक; प्राणीको रक्षा करनेवाला; बलकारक । -**प्रदा**-स्त्री० कद्वि नामकी ओषधि । -**प्रपाण**-पुं० मृत्यु । -**प्रिय**-पुं० प्रियतम, पति । वि० जो प्राणीके समान प्रिय हो । -**बाध**-पुं० जानका खतरा । -**बाधा**-स्त्री० [हिं०] दे० 'प्राण-कृच्छ्र' । -**भक्ष**-वि० जो केवल हवा पौष्ट्य रहता हो । -**भक्ष**-पुं० जान जानेका खतरा । -**भास्वान्**(मृत्यु)-पुं० ससृष्ट । -**भृत्**-वि० प्राणवान्, जीवित । पुं० प्राणी; विष्णु । -**भोक्षण**-पुं० मृत्यु; आत्महत्या । -**वम**-पुं० प्राणायाम । -**दाया**-स्त्री० श्वास-प्रश्वास-क्रिया; भोजन आदि जिनमें उक्त क्रियाका निर्वाह होता है; जीवन-निर्वाह । -**योनि**-पुं० परमेश्वर; वायु । स्त्री० जीवनका मूल । -**रंश**-पुं० मुँह; नाक । -**रोच**-पुं० प्राणायाम; जानका खतरा; एक नरक । -**बल्लभ**-वि० 'प्राणप्रिय' । [स्त्री० 'प्राणवल्लभा'] -**बायु**-स्त्री० प्राणवापी वायु, प्राण । -**विनाश**-वि० मृत्यु-पुं० मृत्यु, मौत । -**विद्योग**-पुं० मृत्यु । -**वृत्ति**-स्त्री० प्राणका श्वास-प्रश्वास आदि व्यापार । -**व्यय**-पुं० प्राणत्याग, जीवनोत्सर्ग । -**शरीर**-पुं० परमेश्वर (जिसका प्राणात्मक रूपमें ध्यान किया जाता है) । -**शोषण**-पुं० बाण । -**संकट**-**संदेह**-**संशय**-पुं० ऐसा संकट जो जानपर आ जाय, जान जानेका भय, जानजीखों । -**संभृत**-पुं० बायु । -**संयम**-पुं० प्राणायाम । -**संहिता**-स्त्री० एक प्रकारका वेदपाठ । -**सन्न**(रू)-पुं० शरीर । -**सम**-पुं० पति, प्रियतम । वि० प्राणप्रिय । -**समा**-स्त्री० पत्नी । -**सार**-वि० अति बलशाली, बलपूर्ण । -**सूत्र**-पुं० जीवनमूत्र । -**इंता**(रू)-वि० पुं० जान लेनेवाला, प्राणहारक । -**हर**-**हारी**(रिजु)-वि० प्राण हरनेवाला, जान लेनेवाला; बलनाशक । -**हारक**-वि० जान लेनेवाला, वातक । पुं० वत्सनाभ नामक विष । -**ह्रासि**-स्त्री० प्राणनाश । -**ह्रीम**-वि० निर्जीव । सु०-**आना**-मय कर्म होना । -**उष्** आना या सूख आना-बदलवासी हो जाना; बहुत अधिक धररा जाना; बहुत खर जाना । -**गच्छेक** आना-अपनासक होना । -**छूटना**-**जाना** या **निकलना**-मरना, देहावसान होना । -**छोड़ना**-**त्यागना**-मरना । -**छाकना**-जीवनका संचार करना, सजीव बनाना । -**बैजा**-मरना;

अधिक कष्ट पाना; किसीकी बहुत चाहना । -**पद्याम**-होना-**मरना** । -**बचाना**-जान बचाना, पिंड छुड़ाना । -**सुइकी** आना-बहुत अधिक दुःख होना, दुःखसे व्याकुल होना । -**सुह्रीमें** या **हथेलीपर** लिखे रहना-मरनेकी तैयार रहना । -**रखना**-**मिलाना** । -**केना**-मार डालना । -**हरना**-मार डालना; बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना । -**हारमा**-**मर** जाना; हतोत्साह होना । -**से** हाथ जोना-मर जाना । -**(गी)** पर आ पचना-प्राण संकटमें पचना, जानजीखों होना । -**पर** खेलना-जानकी बाजी लगा देना, जान जोखोंमें डालना । -**पर** बीतना-प्राण संकटमें पचना ।

प्राणक-पुं० [सं०] जीव; जीवक मृग; गौद ।

प्राणध-पुं० [सं०] वायु; श्वास; प्रणपति; तीर्थ । वि० शक्तिशाली ।

प्राणन-पुं० [सं०] गला; जल; श्वास; जीवन; जीवनी-त्यादन ।

प्राणमय-वि० [सं०] जिसमें प्राण हैं, प्राणयुक्त । -**कोष्ठ**-पुं० वेदांतके अनुसार शरीरके पाँच कोशोंमेंसे दूसरा; पाँच कर्मेंद्रियोंके सहित प्राण, अगान आदि पाँच प्राण ।

प्राणवृक्षा-स्त्री० [सं०] प्राणवान् या जीवित होनेका भाव । **प्राणवान्**(वृत्)-वि० [सं०] जिसमें प्राण हैं, सम्राण, जीवित । [स्त्री० 'प्राणवती']

प्राणांत-वि० [सं०] मृत्यु, मौत ।

प्राणांतक-वि०, पुं० [सं०] प्राण लेनेवाला ।

प्राणांतिक-वि० [सं०] प्राण हरनेवाला, वातक; जीवन-पर्यंत रहनेवाला । पुं० वध, हत्या; वधक ।

प्राणाभिद्रोत्र-पुं० [सं०] दे० 'प्राणाहुति' ।

प्राणाघात-पुं० [सं०] वध, हत्या ।

प्राणाचार्य-पुं० [सं०] वैद्य ।

प्राणातिपात-पुं० [सं०] वध, हत्या । -**विरमण**-पुं० अहिंसा ऋत (जै०) ।

प्राणात्सा(स्रज्)-पुं० [सं०] जीवात्मा, सूत्रात्मा ।

प्राणात्त्व-पुं० [सं०] मृत्यु, भोग; मृत्युका समय; जानका खतरा ।

प्राणाद्-वि० [सं०] वातक ।

प्राणाधार-पुं० [सं०] जीवनका अवलंब या सहारा; पति; प्रियतम ।

प्राणाधिक-वि० [सं०] जो प्राणीसे भी बढ़कर हो; बल-वश ।

प्राणाधिनाथ-पुं० [सं०] पति ।

प्राणाधिप-पुं० [सं०] आत्मा ।

प्राणाध्व-पुं० [सं०] जानका खतरा ।

प्राणावसन-पुं० [सं०] प्राणीके निकलनेका प्रधान मार्ग (यि नी है-दोनों कान, नाकके दोनों छेद, दोनों अँखें, गुदा, उपर और मुख) ।

प्राणावन-पुं० [सं०] क्षान्तिप्रिय ।

प्राणाधाम-पुं० [सं०] श्वास-प्रश्वासकी गतिका नियमन, योगके आठ भंगोंमेंसे एक ।

प्राणाधामी(मिन्)-वि० [सं०] प्राणायाम करनेवाला ।

प्राणाध्व-वि० [सं०] उज्जित, उपयुक्त ।

प्राग्वाचरोध-पु० [सं०] आसका अवरोध ।
प्राग्वाचन-पु० [सं०] एक प्रकारका आसन (सं०) ।
प्राग्वाहसि-जी० [सं०] भोजनके आरंभमें पाँच प्रास 'प्राणव स्वाहा', 'अमावा स्वाहा' आदि मंत्र पढ़कर पूर्वमें प्राणोंके निक्षिप्त काला ।
प्राग्विक-वि० [सं०] बिना शोर किये बोधनेवाला ।
प्राग्वित-वि० [सं०] जिसमें जीवनका संचार किया गया हो ।
प्राणी(गिष्)-वि० [सं०] जिसमें प्राण हो, प्राणवान् ।
 पु० जीवन्मु, मनुष्य; व्यक्त (हिं०) । -**(गि)वासी**-**(किष्)**-वि० जीवोंकी इत्था करनेवाला । -**आत**-पु० जीवनगत्, प्राणिवर्ग । -**धूत**-पु० मेदे, तीतर आदिकी लक्ष्मिपर बाजी लगाना । -**पीषा**-जी० जीवोंकी सताना । -**आता(ग)**-जी० एक धूप, गर्भदात्री । -**बोचन**-पु० जानवरोंकी लक्ष्मिमें प्रवृत्त करना । -**बच**-पु० जीव-इत्था । -**हिंसा**-जी० जीवोंको कष्ट देना या मारना । -**हिता**-जी० पादुका, खर्क; जूता ।
प्राणीत्व-पु० [सं०] ऋण, कर्म ।
प्राणेष्टा, प्राणेष्टरी-पु० [सं०] पति, स्वामी; प्रेमपात्र, प्रियतम ।
प्राणेष्टा, प्राणेष्टरी-जी० [सं०] पत्नी; प्रियतमा ।
प्राणोत्कम्पा, प्राणोत्सर्ग-पु० [सं०] द्रव्य ।
प्राणोत्तार-वि० [सं०] भोजन, आहार ।
प्राणोपेत-पु० [सं०] जीवनयुक्त, जीवित ।
प्राण-पु० [सं०] प्राण ।
प्रातः(तर्)-पु० [सं०] सवेरा; तड़का । अ० सवेरे, तड़के ।
 -**कर्म(तर्)**, -**कार्य**, -**कृत्य**-पु० प्रातःकाल किया जानेवाला कर्म (ईश्वरार्चना आदि) । -**काळ**, -**क्षण**, -**समय**-पु० सवेरेका समय, प्रभात; रातके अंत और सुबोधके पहलेका तीन मुहूर्तका समय । अ० सवेरे, तड़के । -**कालिक**, -**कालीन**-वि० प्रातःकालका; प्रातःकाल-संबंधी ।
 -**संध्या**-जी० प्रातःकालकी संध्या, रातका अंतिम एक दंड और दिनका पहला एक दंड; प्रातःकाल किया जानेवाला संध्याकर्म । -**सबन**-पु० दे० 'प्रातस्सन' ।
 -**स्नान**-पु० सवेरेका स्नान । -**स्नायी(विष्)**-वि० सवेरे स्नान करनेवाला । -**करण**-पु० प्रातःकाल देवताका स्मरण । -**करणीय**-वि० जो प्रातःकाल स्मरण करने योग्य हो, पुण्यचरित ।
प्रातः-पु० सवेरा, प्रातःकाल । * अ० सवेरे, तड़के । -**माथ**-पु० सूर्य ।
प्रातर-पु० [सं०] एक नाग ।
प्राहर्-अ० [सं०] दे० 'प्रातः' । -**अधान**-पु० कलेवा ।
अह-पु० सवेरेसे दोपहरतकका समय, पूर्वाह्न । -**आध**-पु० सवेरेका इत्था भोजन, कलेवा । -**आशी**-**(शिष्)**-वि० सुबह कलेवा करनेवाला । -**आहुति**-जी० प्रातःकाल दी जानेवाली आहुति; अग्निहोत्रका द्वितीयोद । -**रोच**-पु० तुल्यिपाठका, वरी । वि० जो सवेरे गाया जाय । -**अप**-पु० प्रातःकालकी प्रार्थना । -**दिन**-पु० पूर्वाह्न । -**भोक्ता(वृत्)**-पु० कौआ । -**भोजन**-पु० दे० 'प्रातराह्न' । -**धुक्**-वि० प्रातःकाल जोगा हुआ (रथादि) । -**विकस्वर**-वि० प्रातःकाल उदय होनेवाला । -**हुत**, -**होम**-पु० प्रातःकाल किया जानेवाला इवध ।

प्रातःकाल-वि० [सं०] प्रातःकाल-संबंधी; प्रातःकालका ।
प्रातस्त्व-वि० [सं०] दे० 'प्रातस्तन' ।
प्रातस्-प्रातःका समासगत रूप । -**त्रिबर्ग**-जी० गंगा । -**सबन**-पु० प्रातःकाल किया जानेवाला सवन ।
प्राति-जी० [सं०] दूति; काम; अंगुठेके सिरेसे तर्जनीके सिरतककी दूरी ।
प्रातिकृष्टिक-वि० [सं०] गला पकड़नेवाला ।
प्रासिका-जी० [सं०] जपा, अक्षतुल ।
प्रातिकूलिक-वि० [सं०] विरुद्ध, प्रतिकूल ।
प्रातिकूल्य-पु० [सं०] प्रतिकूल होनेका भाव, प्रतिकूलता ।
प्रातिजनीन-वि० [सं०] विरोधीके उपयुक्त; प्रत्येक व्यक्तिके लिए उपयुक्त ।
प्रातिज्ञ-पु० [सं०] तर्कका विषय ।
प्रातिद्वैसिक-वि० [सं०] प्रतिदिन होनेवाला ।
प्रातिनिधिक-पु० [सं०] प्रतिनिधि । वि० प्रतिनिधिमूलक ।
प्रातिपक्ष-वि० [सं०] विरुद्ध, प्रतिकूल ।
प्रातिपक्ष्य-पु० [सं०] विरोधी, प्रतिकूलता; सञ्ज्ञता ।
प्रातिपक्षिक-वि० [सं०] बाधा करनेवाला; रास्तेसे जानेवाला । पु० बाधा ।
प्रातिपद्-वि० [सं०] जो प्रतिपदाको उत्पन्न हुआ हो; प्रतिपदा-संबंधी; प्रतिपदाका; आरम्भका ।
प्रातिपदिक-पु० [सं०] अग्नि; धातु, प्रत्यय और प्रत्ययातसे भिन्न अर्थवान् शब्द, वह अर्थवान् शब्द जो धातु और प्रत्ययसे भिन्न हो और जिसमें प्रत्यय न लगा हो, जैसे 'राम' (सं० व्या०) ।
प्रातिभ-वि० [सं०] प्रतिभा-संबंधी; प्रतिभाका; प्रतिभायुक्त, प्रतिभावान् । पु० प्रतिभा; योगमार्गका एक उपसर्ग या विघ्न (पु०) ।
प्रातिभान्-पु० [सं०] प्रतिभूका भाव, प्रतिभूत्व, जामिन-दारी; वह धन जो प्रतिभू या जामिनकी देना पड़े । -**अण**-पु० किसीकी जमानतपर लिया गया ऋण ।
प्रातिभासिक-वि० [सं०] जो वास्तव न हो पर भ्रमवशा विशेष प्रकारका भासित होता हो, अवास्तव (जैसे-सीपमें चंद्रिका भान) ।
प्रातिकृषिक-वि० [सं०] उसी रूपका, नकली ।
प्रातिक्रोमिक-वि० [सं०] विरुद्ध, विपरीत; अग्रिम ।
प्रातिक्रोम्य-पु० [सं०] क्रमविरुद्धता; विरुद्धता, वैपरीत्य ।
प्रातिवेशिक, **प्रातिवेश्यक**, **प्रातिवेश्यक**-पु० [सं०] पक्षी ।
प्रातिवेश्य-पु० [सं०] पक्षीस; पक्षीसी, वह जिसका घर अपने घरके सामने या बाद हो ।
प्रातिवाक्य-पु० [सं०] वे ग्रंथविशेष जिनके द्वारा भिन्न-भिन्न वेदों तथा एक ही वेदके अनेक तरहसे स्वरोंके उच्चारण, पदोंके क्रम और विच्छेद आदिका निर्णय होता है ।
प्रातिसीम-पु० [सं०] पक्षीनी ।
प्रातिस्थिक-वि० [सं०] अपना-अपना, प्रत्येकका; निजी ।
प्रासिद्ध्य-पु० [सं०] बदला, प्रतिशोध ।

प्रातिहर्ष-पु० [सं०] प्रतिहर्षा काय ।

प्रातिहार, प्रातिहारक-पु० [सं०] वैद्वालिक, बाजीगर ।

प्रातिहारिक-पु० [सं०] बाजीगर; द्वारपाल ।

प्रातिहार्य-पु० [सं०] इन्द्रजाल, बाजीगरी; द्वारपालका काय ।

प्रातीसिक-वि० [सं०] जो वास्तव न हो पर अमवश विशेष प्रकारका भासित होता हो, प्रातिभासिक; जो केवल कल्पनामें हो ।

प्रातीप-पु० [सं०] भोष्पितामहके पिता शान्तनु ।

प्रातीपिक-वि० [सं०] प्रतिकूल आचरण करनेवाला, प्रति-कुलचारी; विपरीत, उल्टा ।

प्रात्यंतिक-पु० [सं०] सीमांत देशका राजा वा शासक ।

प्रात्यक्ष-वि० [सं०] प्रत्यक्ष-संबंधी ।

प्रात्यधिक-पु० [सं०] प्रत्यय-प्रतिभू । वि० विवक्षत ।

प्रात्यहिक-वि० [सं०] प्रतिदिनका, दैनिक ।

प्राथमकव्यिक-पु० [सं०] वह विद्यार्थी जिसने अभी वेदका अध्ययन आरंभ किया हो। वह व्यक्ति जिसने अभी योगका आरंभ किया हो ।

प्राथमिक-वि० [सं०] पहला, आदिम; पहलेका; प्रारंभिक, पहली बार घटित होनेवाला ।

प्राथम्य-पु० [सं०] प्रथम होनेका भाव, पहलापन ।

प्राक्क्षिप्य-पु० [सं०] परिक्रमा करना ।

प्रादानिक-वि० [सं०] होम, नैवेद्य आदि संबंधी ।

प्रादीपिक-वि०, पु० [सं०] घर-क्षेत्र आदिमें आग लगाने-वाला (की०) ।

प्रादुराक्षि-पु० [सं०] एक गौत्रप्रवर्तक ऋषि ।

प्रादुर्भाव-पु० [सं०] प्रकट होना, प्रकाश; उत्पत्ति; अस्तित्वप्रमाण; देवताका पृथ्वीपर प्रकट होना ।

प्रादुर्भूत-वि० [सं०] जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो, जो प्रकट हुआ हो; उत्पन्न । —मनोभव-की० एक प्रकारकी मध्या नायिका जिसके मनमें कामका पूरा प्रादुर्भाव होता है और जिसमें कामकलाके सभी विद्व प्रकट होते हैं (वेशव) ।

प्रादुष्करण-पु० [सं०] प्रकट करना; उत्पन्न करना ।

प्रादुष्कृत-वि० [सं०] प्रकट किया हुआ; उत्पन्न किया हुआ, उत्पादित; प्रज्वलित किया हुआ ।

प्रादुष्य-पु० [सं०] प्रादुर्भाव ।

प्रादेश-पु० [सं०] अँगूठेकी मिरसे तर्जनीके सिरतककी दूरी; प्रदेश, प्रांत; स्थान ।

प्रादेशन-पु० [सं०] दान ।

प्रादेशिक-वि० [सं०] प्रदेश-संबंधी; प्रदेशका; अर्थात् लोक; प्रसंगगत; स्थानिक; सीमित । पु० किसी प्रदेशका शासक, स्वैदार ।

प्रादेशिनी-की० [सं०] तर्जनी ।

प्रादेशी (सिन्धु)-वि० [सं०] अँगूठेकी नोकसे तर्जनीकी नोकतक लंबा ।

प्रादोष, प्रादोषिक-वि० [सं०] प्रदोष-संबंधी; प्रदोषका ।

प्राधानिक-पु० [सं०] विध्वंसक अन्ध; दुष्टका उपकरण, लकाईका सामान ।

प्राधा-की० [सं०] कवचपक्षी एक पक्षी ।

प्राधानिक-वि० [सं०] श्रेष्ठ; सुस्थाय; प्रधान, मूलप्रकृति-संबंधी ।

प्राधान्य-पु० [सं०] प्रधान होनेका भाव, प्रधानता; श्रेष्ठता; मूल कारण ।

प्राधीत-वि० [सं०] जिसने अच्छी तरह अध्ययन किया है, प्रकट रूपमें शिक्षित ।

प्राध्य-वि० [सं०] जो दूर हो, दूरवर्ती; नम्र; बद्ध; अनु-कूल । पु० लंबी राह; सवारी; रथ आदि; बंधन; परि-हास; कीटा ।

प्राण-पु० दे० 'प्राण' ।

प्राणी-पु० दे० 'प्राणी' ।

प्राणेश-पु० दे० 'प्राणेश' ।

प्राप-पु० [सं०] प्राप्ति, पहुँचना (जैसे-दुष्प्राप); जलका प्रचुर होना । वि० प्राप्य ।

प्रापक-वि०, पु० [सं०] प्राप्त करने या करानेवाला; पहुँचानेवाला ।

प्रापण-पु० [सं०] प्राप्त करना या कराना; पहुँचाना, ले जाना; हवाला ।

प्रापणिक-पु० [सं०] व्यापारी, सौदागर ।

प्रापणीय-वि० [सं०] प्राप्त करने कराने या योग्य; पहुँचाने योग्य ।

प्रापति-की० प्राप्ति; एक सिद्धि ।

प्रापना-पु० [सं०] प्राप्त करना, पाना ।

प्रापयिता(तु)-वि०, पु० [सं०] प्राप्त करानेवाला ।

प्रापित-वि० [सं०] प्राप्त कराया हुआ; पहुँचाया हुआ ।

प्रापी(सिन्धु)-वि० [सं०] प्राप्त करनेवाला; पहुँचानेवाला (समासांतमें) ।

प्राप्त-वि० [सं०] पाया हुआ, जो मिला हो, लब्ध; जो आ पड़ा हो, उपस्थित; स्थापित; पूरा किया हुआ; जहाँ कोई पहुँचा हो, आसादित; उचित । —कारी(सिन्धु)-वि० उचित कार्य करनेवाला । —काळ-वि० जिसने करनेका समय उपस्थित हो, समयोचित । पु० उचित समय, किसी बातका उपयुक्त अवसर; मृत्युका समय । —जीवन-वि० जिसकी जान लौट आयी हो, जो मरते-मरते बच गया हो । —दोष-वि० जिसने दोष लगा हो, दोषी । —पंचव्य-वि० मरा हुआ, मृत । —प्रसवा-वि० की० जो बच्चा जननेको हो । —बीज-वि० बोया हुआ । —बुद्धि-वि० जो बेहोशीके बाद फिर होशमें आ गया हो; बुद्धिमान् ।

—भार-पु० बोझ देनेवाला पशु (सैल आदि) । —भाज-वि० चतुर; सुंदर । —अनोरथ-वि० जिसका अनोरथ पूर्ण हो गया हो । —बौधन-वि० जिसकी जवानी आ गयी हो । —रूप-वि० उपयुक्त; रूपवान्, मनोहर; सुदि-

मान् । —व्यवहार-वि० बाल्य ।

प्राप्तु-की० [सं०] वह लक्ष्य जो रजस्वला हो गयी हो ।

प्राप्त्य-वि० [सं०] पाने, मिलने योग्य ।

प्राप्तार्थ-वि० [सं०] सकल । पु० मिली हुई वस्तु ।

प्राप्तावसर-वि० [सं०] दे० 'प्राप्तकाल' ।

प्राप्ति-की० [सं०] पाया जाना, मिलना, लाभ; पहुँच; उपार्जन; उदय; अनुमति; हिस्सा; आग्य; संज्ञा; पूर्व कर्मोंका फल; फलान्य (ना०); आठ सिद्धियोंमेंसे एक

जिसके द्वारा प्रत्येक अन्त्येष्ट पदार्थ मिलता है। आय, भना-गम; कायदा, काम; जरासंधकी एक पुत्री जो संसरे व्याही गयी थी; कामदेवकी एक पत्नी; चंद्रमाका न्यारहवाँ स्थान (६० उषी)। -सम-पुं न्यायमें एक विशेष जाति।

प्राक्पाशा-स्त्री० [सं०] प्रासिकी भाशा, मिलनेकी भाशा; आरम्भ कार्यकी एक अवस्था जिसमें 'फलप्रासिकी भाशा' होती है (ना०)।

प्राक्-वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य; जहाँतक पहुँच ही सके; जो मिल सके, मिलने योग्य। -कारी(विन्)-पुं वह इंद्रिय जो विषयतक पहुँचकर उसका ज्ञान कराती है (जैसे-आँख)। -रूप-वि० जिसे प्राप्त करना सरल हो।

प्राक्कथ-पुं प्रवृत्ता; प्रधानता; शक्ति।

प्राक्कालिक-पुं [सं०] दे० 'प्राक्कालिक'।

प्राक्चक्र-पुं [सं०] उपःकाल; वही, माघ।

प्राक्चक्र-पुं [सं०] दे० 'प्राक्चक्र'।

प्राग्जन-वि० [सं०] बाहुसंबंधी। पुं स्वाती नक्षत्र।

प्राग्जति-पुं [सं०] हनूमान्; भीष्म।

प्राग्भ-पुं [सं०] प्रभुता, प्रभुत्व; प्रधानता, श्रेष्ठता।

प्राग्भूत-वि० [सं०] विभूत; प्रभुत्व।

प्राग्भाकर-वि० [सं०] मीमांसके प्रसिद्ध आचार्य प्रभाकर-से संबंध रखनेवाला। पुं प्रभाकरके मतका अनुयायी।

प्राग्भासिक-वि० [सं०] प्रभात-संबंधी, प्रातःकालिक।

प्राग्भूत, प्राग्भूतक-पुं [सं०] उपहार, भेंट, नजर; रिश्त।

प्राग्भाषिक-वि० [सं०] जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणोंसे सिद्ध हो, शास्त्र-सिद्ध; मानने योग्य; प्रमाण-संबंधी; जो मान, परिमाणका कान दे; जो किसी बातका प्रमाण हो, प्रमाण-रूप; शास्त्र। पुं प्रमाणोंकी माननेवाला; वह जो प्रमाणोंकी जानता हो, प्रमाणवेत्ता, न्यायशास्त्री; व्यापारियोंका प्रधान।

प्राग्भाष्य-पुं [सं०] प्रमाणत्व, शास्त्रसिद्ध होना; विश्वसनीयता; प्रमाण। -बादी(विन्)-वि० प्रमाणमें विश्वास करनेवाला।

प्राग्भाषिक-वि० [सं०] जो प्रमादके कारण हुआ हो, प्रमाद-जनिता; सदेव।

प्राग्भाष-पुं [सं०] अक्षता; उन्माद, नशा; कापरवाही; मूर्ख।

प्राग्भाषिनी-वि० [अं०] जिसमें किसी बातकी प्रतिष्ठा की गयी हो। -नोट-पुं वह लेख या पत्र जिसमें कोई व्यक्ति यह प्रतिष्ठा करता है कि मैं अमुक मिलिकी या जब कभी भी मंगलपर अमुक व्यक्तिकी या इस पत्रके बाहककी इतना कृपा दूँगा; वह कामज या कणपत्र जिसमें सरकार प्रजासे कुछ कण लेकर यह प्रतिष्ठा करती है कि अमुक व्यक्तिके इतना कण लिया गया और इसका स्रष्टा इस हिसाबसे कणदाताकी दिया जायगा।

प्राग्भाष्य-पुं [सं०] कण, कर्म; मृत्यु।

प्राग्भाष्य, प्राग्भाषिक-वि० [सं०] मनोक, सुदर, मनोहर। प्राग्- (वत्)-वि० [सं०] कृगमग, करीब-करीब। अं अधिकतर, अक्सर।

प्राग्-पुं [सं०] मृत्यु; अनशन द्वारा होनेवाली मृत्यु; अनशनमृत्यु; बाहुल्य, अधिकत्व। वि० मुख्य, समान;

पूर्ण (इन अर्थोंमें इस शब्दका प्रयोग समासमें होता है, जैसे-'कष्टप्राग्')। -वात्-वि० अग्रासक्त। -वृत्त-पुं सामान्य वात। -अव-वि० जो प्रायः हुआ करे, सामान्य। -विधायी(विन्)-वि० जो प्राचीनपेशन कर मरनेका संस्कार कर चुका हो। -वृत्त-वि० जो विकल हो न हो।

प्राग्वा-पुं [सं०] प्रवेश, आरंभ; एक शरीर त्यागकर दूसरेमें प्रवेश करना (स्न०); शरण लेना; मृत्यु, स्वेच्छामे भरना; स्थान बदलना; जीवनमार्ग; दूधके योगमें बना हुआ एक ध्वनज; वह आहार जिससे अनशन भंग किया जाय।

प्राग्वासी-वि० [सं०] आरंभिक। पुं एक याग जो सोम-यागके आरंभमें किया जाता है; सोमयागका पहला दिन।

प्राग्वात्-पुं [सं०] पवित्रता, विमुक्तता।

प्राग्वादी-पुं दे० 'प्राग्वादी'।

प्राग्वा- (वत्)-अं [सं०] अधिकतर, बहुधा, अक्सर।

प्राग्वाचित-पुं [सं०] वह शास्त्र-विहित कर्म जो पापका मार्जन करनेके लिए किया जाय; शोधन।

प्राग्वाचित-स्त्री० [सं०] दे० 'प्राग्वाचित'।

प्राग्वाचितिक-वि० [सं०] जिसका प्राग्वाचित किया जाय, प्राग्वाचितके योग्य; प्राग्वाचित-संबंधी।

प्राग्वाचित-वि० [सं०] प्राग्वाचित करनेवाला।

प्राग्वाणिक, प्राग्वाणिक-वि० [सं०] जो यात्राके समय आवश्यक या उचित हो। पुं शंख, चँबर, दही आदि मंगलद्रव्य जो यात्राके समय घुम माने जाते हैं।

प्राग्वा-वि० [सं०] जो अधिकतर होता हो, प्रायः होने-वाला, सामान्य।

प्राग्वासी(विन्)-पुं [सं०] बोधा।

प्राग्वागिक-वि० [सं०] जिसका नित्य प्रयोग होता हो, जिसका नित्य प्रयोग किया जाय।

प्राग्वाज्य-वि० [सं०] प्रयोजनके योग्य, (वह वस्तु) जो किसीके विशेष प्रयोजनकी हो (जैसे-पंडितके लिए पुस्तक आदि। शास्त्रके अनुसार ऐसी वस्तुओंका दंडपरा और वस्तुओंकी भीति नहीं हो सकती)।

प्राग्वा- 'प्राग्वा'का समासगत रूप। -देवता-पुं वह देवता जिसे सभी मानते हैं, सर्वपूज्य देवता। -द्वीप-पुं स्थलका वह भाग जो तीन ओर पानीमें घिरा हो और एक ओर स्थलमें लगा हो। -आसी(विन्)-वि० जो आम तौरमें होता हो, सामान्य। -वाद्-पुं लोकोक्ति, कहावत।

प्राग्वापगमन-पुं [सं०] दे० 'प्राग्वापवेश'।

प्राग्वापयोगिक-वि० [सं०] जो साधारण हो, सामान्य।

प्राग्वापविह-वि० [सं०] जो प्राग्वापवेश कर रहा हो।

प्राग्वापवेश, प्राग्वापवेशन-पुं [सं०] जान देनेके लिए दाना-पानी छोड़कर पक्ष रहना; मृत्युके लिए किया जाने-वाला अनशनव्रत।

प्राग्वापवेशनिका-स्त्री० [सं०] दे० 'प्राग्वापवेश'।

प्राग्वापवेशी(विन्)-वि० [सं०] प्राग्वापवेश करनेवाला।

प्राग्वापेश-वि० [सं०] जो प्राग्वापवेश कर रहा हो।

प्राग्वा-पुं [सं०] आरंभ; कार्य; प्रवृत्त।

प्रार्थन्य-पु० [सं०] आरंभ करना, शुरू करना ।
प्रार्थनिक-वि० [सं०] आरंभका; आरंभमें होनेवाला ।
प्रार्थक-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ । पु० तीन प्रकार-
 के कर्मोंमेंसे वह जिसका फल भोगा जा रहा हो; भाव्य,
 किम्बत; वह जो शुरू किया गया हो ।
प्रार्थि-कौ० [सं०] आरंभ; हाथी बाँधनेका खँडा वा
 रस्ता ।
प्रार्थनी (विद्य)-वि० [सं०] प्रारम्भवाला, भाव्यवान् ।
प्रार्थित-वि० [सं०] जिसे शुरू करनेका विचार किया
 गया हो ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्ररोह, अंकुर ।
प्रार्थिता (तृ)-वि० [सं०] दान करनेवाला ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्रथान कण ।
प्रार्थक-वि० [सं०] प्रार्थना करनेवाला । पु० प्रणयकी
 आकांक्षा करनेवाला ।
प्रार्थन्य-पु० [सं०] मँगना, याचना करना, याचन ।
प्रार्थना-सं० कि० प्रार्थना करना । कौ० [सं०] किसीसे
 कुछ मँगना; किसी बातके लिए किसीसे विनयपूर्वक
 कहना, नम्र निवेदन, याचा; आक्रमण, अभियान; हिंसा;
 एक प्रकारकी मुद्रा (सं०); इच्छा, चाह; दावा, अभियोग ।
 -पत्र-पु० वह पत्र या लेख जिससे किसीसे किसी बातके
 लिए प्रार्थना की गयी हो, अरजी । -अंग-पु० प्रार्थना-
 की अस्वीकृति । -समाज-पु० ब्रह्मसमाज जैसा एक
 नवीन संग्रह । -सिद्धि-कौ० इच्छाकी पूर्ति ।
प्रार्थनीय-वि० [सं०] जिसके लिए प्रार्थना की जाय,
 प्रार्थना करने योग्य । पु० द्वार युव ।
प्रार्थितव्य-वि० [सं०] प्रार्थना करने या चाहने योग्य ।
प्रार्थिता (तृ)-वि०, पु० [सं०] प्रार्थना करनेवाला,
 याचक; प्रणयाकांक्षी ।
प्रार्थित-वि० [सं०] जिसकी या जिसके लिए प्रार्थना की
 गयी हो, याचित; आकांक्ष; अवश्य; आवश्यक; हत; जिसकी
 चाह, तलाश हो । पु० इच्छा । -दुर्लभ-वि० जिसके
 लिए इच्छा की गयी हो, पर जिसका मिलना कठिन हो ।
प्रार्थी (धिन्)-वि० [सं०] प्रार्थना करनेवाला; चाहने-
 वाला, इच्छुक; आक्रमण करनेवाला ।
प्रार्थ्य-वि० [सं०] प्रार्थना करने योग्य, जिसके लिए
 प्रार्थना की जाय ।
प्रार्थ-वि० [सं०] विशेष रूपसे लटकनेवाला । पु० सीने-
 तक लटकनेवाली माला; एक तरहकी मोतियोंकी माला;
 लोका स्तन; एक तरहका कढ़ू ।
प्रार्थक-पु० [सं०] सीनेतक लटकनेवाली माला ।
प्रार्थिका-कौ० [सं०] एक तरहका सीनेका हार ।
प्रार्थ-पु० [सं०] हिम, बर्फ । -पर्वत-पु० चूचर,-
 सैल-पु० हिमालय । -रश्मि-पु० चंद्रमा; कपूर ।
प्रार्थ्या-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।
प्रार्थ्यादि-पु० [सं०] हिमालय ।
प्रार्थ-पु० [सं०] जौ ।
प्रार्थ-पु० [सं०] फावड़ा ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्राचीर, चहारदीवारी; उपरना; एक
 देश ।

प्रार्थ-पु० [सं०] ओढ़नेका बन्ध, उत्तरीय, ओढ़नी,
 चादर ।
प्रार्थनीय-पु० [सं०] उपरना आदि ऊपरसे ओढ़नेका
 बन्ध ।
प्रार्थ-पु० [सं०] ओढ़नेका बन्ध, ओढ़नी; आवरण; एक
 जिहा या क्षेत्र । -कूर्ण-पु० एक प्रकारका उच्छ्व पक्षी ।
 -कीट-पु० एक प्रकारका कपरेका कीड़ा; चीलर ।
प्रार्थक-पु० [सं०] ओढ़नेका बन्ध, उत्तरीय ।
प्रार्थिक-पु० [सं०] प्रार्थन करनेवाला ।
प्रार्थिक-पु० [सं०] प्रवाल, मृगिका ध्यापार करनेवाला ।
प्रार्थ-वि० [सं०] प्रवास वा यात्रा-संबंधी ।
प्रार्थ-वि० [सं०] प्रवास या यात्राके उपयुक्त ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्राहट, वर्षाकृत, पावस ।
प्रार्थ-पु० [सं०] रक्षण; आश्रय ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्रयोग होनेका भाव, कुशलता,
 निपुणता ।
प्रार्थ-कौ० [सं०] वर्षाकृत, पावस । - (इ)
 काळ-पु० वर्षाका मौसम ।
प्रार्थ-पु० [सं०] शरदकाळ ।
प्रार्थ-वि० [सं०] विशेष रूपसे आहृत, पिरा हुआ; ढका
 हुआ । पु० ओढ़नेका बन्ध, उत्तरीय, 'रैपर' ।
प्रार्थ-कौ० [सं०] प्राचीर, चहारदीवारी; बाड़ा; आभ्या-
 रमिक अंधकार, अज्ञान (भायाका एक परिणाम-जै०) ।
प्रार्थ-वि० [सं०] योग; जानकार । पु० दूत, एकत्री ।
प्रार्थ-पु०, -प्रार्थ-कौ० [सं०] वर्षाकाल, पावस ।
प्रार्थ-कौ० [सं०] कैलाच; विसंकीर्ण ।
प्रार्थ-वि० [सं०] वर्षाकृत-संबंधी । पु० सौर ।
प्रार्थ-वि० [सं०] जो वर्षाकृतमें उत्पन्न हुआ हो । पु०
 हस्तावात ।
प्रार्थ-वि० [सं०] जो वर्षाकृतमें उत्पन्न हो ।
प्रार्थ-वि० [सं०] वर्षाकाल-संबंधी; वर्षाकालमें उत्पन्न;
 वर्षाकृतमें देय (क्षण आदि) । पु० कदमका पेड़; कुडजका
 पेड़; कुरैया; प्रचुरता, आधिपत्य ।
प्रार्थ-कौ० [सं०] कैलाच; काळ पुनर्नवा ।
प्रार्थ-वि० [सं०] वर्षाकृतमें होनेवाला । पु० वैदूर्य मणि;
 धाराकर्षक; कुरैयाका पेड़; विकट वृक्ष ।
प्रार्थ-पु० [सं०] बढ़िया कनी चादर, शाल ।
प्रार्थ-वि० [सं०] जो प्रवेशके समय दिया वा किया
 जाय । पु० कारखाना ।
प्रार्थ-वि० [सं०] जिसने वा जिसके द्वारा प्रवेश
 मिले, प्रवेशका साधनरूप; प्रवेश-संबंधी; जिसमें घुसनेकी
 आदत हो ।
प्रार्थ-पु० [सं०] दे० 'प्रागज्य' ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्रज्ज्या, सन्त्यास; बेकार धूमना ।
प्रार्थ-पु० [सं०] भोजन करना; स्वाद लेना; आहार ।
प्रार्थ-वि०, पु० [सं०] खानेवाला ।
प्रार्थ-पु० [सं०] खाना; खिलाना; भोजन ।
प्रार्थनीय-वि० [सं०] खाने योग्य, खाद्य । पु० आहार ।
प्रार्थ-पु० [सं०] प्रशस्त होनेका भाव, प्रशस्तता;

विशिष्टता ।

प्राशास-पु० [सं०] प्रशासता नामक शक्तिष्का कर्म या पद; शासन; राज्य ।

प्राशित-वि० [सं०] साया हुआ, भक्षित । पु० पितृतर्पण; योजन, भक्षण ।

प्राशित्र-पु० [सं०] पुरोबाह्य आतिका वह भाग जो मन्त्रा-
के लिए एक पात्रमें अलग रखा जाता है; वह पात्र;
साधपदार्थ ।

प्राशित्राहरण-पु० [सं०] नायके कानके आकारका वह पात्र
जिसमें प्राशित्र रखा जाता है ।

प्राप्ती (शिक्ष)-वि० [सं०] प्राशन करनेवाला, खानेवाला ।
[को० 'प्राशनी']

प्राशिनक-पु० [सं०] प्रदन करनेवाला, प्रदमकर्ता; पंच,
मन्थस; साक्षी; सभाकी काररवाई करनेवाला, सन्ध ।
वि० जिसमें ग्रहन हो ।

प्राश्य-वि० [सं०] खाने योग्य ।

प्रासंग-पु० [सं०] वह जूना जिसके सहारे नये बैल
निकाले जाते हैं; तुल्य; तुल्यवत् ।

प्रासंगिक-वि० [सं०] जिसका प्रसंग हो, प्रसंगप्राप्त;
प्रसंगोक्ति ।

प्रासंग्य-पु० [सं०] वह नया बैल जो हल आदिमें निकास
आ रहा हो ।

प्रास-पु० [सं०] कैकना; भाला; अनुप्रास, वर्णसाम्य ।

प्रासक-पु० [सं०] भाला; पाता ।

प्रासक-पु० [सं०] कैकना; † दे० 'प्राशन' ।

प्रासादिक विज्ञान-पु० [सं०] गर्भवती नारियोंको प्रसव
करानेकी कलाका विवेचन करनेवाला विज्ञान ।

प्रासाद-पु० [सं०] राजभवन, महल; देवालय; विशाल
भवन, आलीशान इमारत; महल या बड़े भवनकी छत;
दर्शकोके लिए बना हुआ ऊँचा स्थान । -**कुम्भकुट-पु०**
पाकू कुट्टर । -**गर्भ-पु०** राजभवनके अंदरका अग्रना-
गार । -**प्रतिष्ठा-की०** देवालयमें मूर्तिका स्थापन ।
-**मंडना-की०** एक प्रकारका रंग । -**शृंग-पु०** महल
या मंदिरकी चोटी । -**शास्त्री (विष्णु)-वि०** प्रासादमें
सोनेवाला ।

प्रासादिक-वि० [सं०] कृपायुक्त, अनुकूल; सुंदर; जो
प्रासादके रूपमें दिया जाय ।

प्रासादीय-वि० [सं०] प्रासाद-संबंधी; प्रासादका ।

प्रासिक-पु० [सं०] मालेसे लकनेवाला योका ।

प्रासुतिक-वि० [सं०] प्रसुति-संबंधी ।

प्रासेय-पु० घोड़ेके साजकी रस्ती ।

प्रास्कण्य-पु० [सं०] एक प्रकारका साम ।

प्रास-वि० [सं०] निकास हुआ, वक्षिष्ठ, निष्कासित;
फेंका हुआ ।

प्रासारिक-वि० [०] प्रसार-संबंधी; प्रसारमें काम
आनेवाला ।

प्रासादिक-वि० [सं०] प्रसादके रूपमें काम आनेवाला;
प्रसंगोक्ति; समयोक्ति ।

प्रासुत्य-पु० [सं०] विचार या तर्कका विषय बनना ।

प्रासादिक-वि० [सं०] जो प्रसादके समय आवश्यक वा

उचित हो । पु० दे० 'प्रासादिक' ।

प्राशिक-वि० [सं०] जो लोहमें एक प्रस्थ हो; यी एक
प्रस्थ देकर खरीदा गया हो; जिसमें एक प्रस्थ अन्य ढेर
वा पके; जिसे बोलनेमें एक प्रस्थ बीज लगे ।

प्राशकण-वि० [सं०] सरना-संबंधी ।

प्राह-पु० [सं०] मृत्युकी शिक्षा ।

प्राहारिक-पु० [सं०] प्रहरी, पुलिस कर्मचारी ।

प्राहुण्य, प्राहुणक-पु० [सं०] अतिथि, पाहुन ।

प्राह्ण-पु० [सं०] दिनका पूर्व भाग, पूर्वाह्न ।

प्राह्णतन-वि० [सं०] पूर्वार्द्धमें होनेवाला या पूर्वाह्न-संबंधी ।

प्राह्णव-पु० [सं०] प्रह्लादका वंशज ।

प्रिटर-पु० [अ०] मुद्रक, छापनेवाला ।

प्रिटिंग-की० [अ०] छापनेका काम, छपाई; मुद्रण । वि०
छापनेवाला । -**हूक-की०** छपाईके काम आनेवाली
खाड़ी । -**प्रेस-पु०** हाथसे चलायी जानेवाली टाइप
छापनेकी कल । -**मशीन-की०** टाइप छापनेकी वह
कल जो साधारण हैंड प्रेसमें अच्छी होती है और विशेषकर
विज्ञानीके बख्ते चल्ती है ।

प्रिंस-पु० [अ०] राजा; राजकुमार, शाहजादा; राजकुलका
कोई पुरुष । -**आर्च सेल्स-पु०** इंगलैण्डका युवराज ।

प्रिसिपल-पु० [अ०] किसी कालेज या बड़े विद्यालयका
सर्वोच्च अध्यापक या अधिकाारी; वह धन जो सूरपर दिया
गया हो, मूल धन ।

प्रिथिमी-की० धूम्र, चरती ।

प्रिथकर-वि० [सं०] प्रसन्नकारक ।

प्रियंकर-की० [सं०] श्वेतकंदकारी; बृहत् जीवंती;
अमंगल ।

प्रियंकार-वि० [सं०] दे० 'प्रियकर' ।

प्रियंगु-की० [सं०] एक वृक्ष; राई; पीपल; कौंगनी नामका
अन्न; कुटकी ।

प्रियंवद-वि० [सं०] प्रिय बोलनेवाला । पु० गगनचारी
पक्षी, लेखर; एक गंधर्व ।

प्रियंवदा-की० [सं०] एक वृत्त । वि० की० प्रिय बोलने-
वाली ।

प्रिय-वि० [सं०] जिसके प्रति प्रेम हो, प्यारा; अच्छा
लगनेवाला, हृद्य जो छोटा न जा सके, जिससे अलग
होनेकी जी न चाहे; स्वीर्ता । पु० स्वामी, पति; प्रेमी,
आसिक; एक प्रकारका वृक्ष; जीवक नामकी ओषधि;
अच्छी लगनेवाली बात, अनुकूल बात; हित । -**कर-
वि०** हर्ष उत्पन्न करनेवाला, हर्षप्रद; हित करनेवाला ।
-**कलत्र-पु०** वह पुरुष जो अपनी पत्नीको बहुत प्यार
करता हो । -**कांक्षी (शिक्ष)-वि०** मका चाहनेवाला ।

काम-वि० मका चाहनेवाला; हितैषी । -**कारक,-
कारी (रिक्त)-वि०** हित करनेवाला । पु० मित्र । -**कृत्-
पु०** हित करनेवाला; विष्णु । -**जय-पु०** स्तेषपात्र

व्यक्ति; स्था-संबंधी । -**जानि-पु०** दे० 'प्रियकलत्र' ।

जीव-पु० सोनापाठा । -**तोषण-पु०** एक रसिध ।
वि० प्रियको तुष्ट करनेवाला । -**दत्ता-की०** दान की
जानेवाली प्रवृत्ति । -**दर्श-वि०** दे० 'प्रियदर्शन' ।

दर्शन-वि० जो देखनेमें अच्छा लगे, सुंदर, सुंदर ।

पु० तोता; पिङ्गलक्ष्म; गंधर्वोंका एक राजा। -**दूर्वा**-(**विन्दु**)-वि० सफेद स्नेहकी बहिले देखनेवाला। पु० सम्राट् अशोकका एक नाम। -**द्वेषक**-वि० जिसे नुपसे प्रेम हो। -**धन्वा**(**धन्व**)-पु० शिव। -**निवेद्य**-पु० सुसंवाद। -**निवेद्यिता**(**तु**)-वि०, पु० संवाद-वाक्य। -**पात्र**-वि०, पु० प्यारा। -**पुत्र**-पु० एक पक्षी। -**प्राच**-वि० अर्थात् प्रिय। पु० प्रिय वचन। -**प्रेम्बु**-वि० असीध वस्तुकी प्रासिकी इच्छा रखनेवाला। -**प्राच**-पु० प्रेम। -**प्राचण**-पु० प्रिय वचन। -**प्राची**(**विन्दु**)-वि० प्रिय बोलनेवाला, मीठी बात कहनेवाला। [**की**-'प्रियमात्रिणी'।] -**प्रद्वन**-वि० जिसे आभूषण प्रिय हो। -**प्रभु**-वि० जिसे कुराव प्यारी हो, महाप्रिय। पु० बहुराम। -**रण**-वि० जिसे युद्ध प्रिय हो, शेर। -**रूप**-वि० सुंदर, सुभय। -**बक्ता**(**बक्**)-वि० चापकृत। -**बचन**-पु० अच्छी लगनेवाली बात, मधुर-वचन। वि० मधु-सी मीठी बात कहनेवाला, मधुरभावी। -**बधस्थ**-पु० प्रिय मित्र। -**बर्णी**,-**बह्नी**-**की** प्रियतु। -**बादिका**-**की** एक बाजा। -**बादिनी**-**की** एक तरहकी चिकिया। वि० **की** मधुर बोलनेवाली। -**बादी**(**विन्दु**)-वि०, पु० प्रिय बोलनेवाला, मधुर-भावी; चापकृत। -**ब्रत**-वि० जिसे व्रत प्रिय हो। पु० स्वार्थभुव मनुके एक पुत्र। -**साक**-पु० पिपासाक। -**अवा**(**बक्**)-पु० विष्णु। -**संगमन**-पु० प्रिय और प्रियाके मिलनेका स्थान; कश्यप और अदितिसे मिलनेका स्थान। -**संदेश**-पु० अच्छा या अनुकूल संवाद, सुसंवादी; चपाका पेड़। -**संहार**-वि० मुकरनेवाला। -**संवास**-पु० प्रिय व्यक्तियोंके साथ रहना। -**सख**-पु० प्रिय मित्र; खैरका पेड़। [**की**-'प्रियसखी'।] वि० मित्रोंकी प्यार करनेवाला। -**सख्य**-पु० प्रिय लगनेवाला सत्य वचन। वि० जिसे सत्य प्रिय हो। -**साक**-पु० पिपासाक नामका पेड़। -**सुहृद्**-पु० प्यारा मित्र। -**स्वस्थ**-वि० जिसे सोना प्रिय हो, आरुखी।

प्रियक-पु० [सं०] पिपासाक वृक्ष; कदंब वृक्ष; एक तरहका चितकबरा हिरन; प्रियतु; भ्रमर; केसर; धाराकर्द्व; एक पक्षी; कांसिकेत्यका एक अनुचर।

प्रियतम-वि० [सं०] सबसे अधिक प्यारा। पु० पति, स्वामी; प्रेमी, आशिक।

प्रियतमा-वि० **की** [सं०] सबसे अधिक प्यारी। **की** पक्षी; प्रेमिका; मायका।

प्रियता-**की**, **प्रियत्व**-पु० [सं०] प्रिय होनेका भाव; प्रेम।

प्रियातु-पु० [सं०] आमाका पेड़।

प्रिया-**की** [सं०] पत्नी, भार्या; प्रेमिका; **की**, नारी; छोटी हजयची; चमेडी; मरिचा; संवाद, समाचार।

प्रियाक-वि० [सं०] सुसमाचार सुनानेवाला।

प्रियाक्यान-पु० [सं०] शुभ समाचार।

प्रियासिधि-वि० [सं०] अतिप्रसन्न करनेवाला।

प्रियाक-पु० [सं०] मर्हणा खाद्य पदार्थ।

प्रियापत्न्य-पु० [सं०] एक प्रकारका शृंग।

प्रियापात्र-पु० [सं०] प्रिय वस्तुका अनाथ।

प्रियाप्रिय-पु० [सं०] हित और अहित। वि० अच्छा-पुरा।

प्रियाई-पु० [सं०] विष्णु। वि० प्रेमके योग्य।

प्रियाक-पु० [सं०] एक पेड़ जिसके फलोंके राजकी शिरी चिरीजी होती है।

प्रियाक-**की** [सं०] दास।

प्रियातु-वि० [सं०] जिसे प्राण प्यारे हों।

प्रियैरी(**विन्दु**)-वि० [सं०] प्रिय चाहनेवाला।

प्रियोक्ति-**की** [सं०] चापकृतकी बात, चाहु बाण्य।

प्रियोहित-पु० [सं०] दे० 'प्रियोक्ति'।

प्रिबी-वि० [अ०] अंतरंग। -**कौसिक**-**की** सम्राट् या बादशाहके परामर्शदाताओंकी परिपद; ग्रेट् मित्रके सम्राट्के परामर्शदाताओंकी परिपद जिसके सदस्य राज-कुछके लोग, बड़े-बड़े सरकारी कर्मचारी तथा पदारी आदि होते हैं; इस कौसिका न्याय-विभाग जो अंग्रेजी राज्यमें अंगीकृत सबसे बड़ा और अंतिम न्यायालय है। -**कौसिक**-पु० प्रिबी कौसिका सदस्य।

प्रिबक-पु० कदंब।

प्रिब-वि० [म०] प्रीतिभुक्त; प्रसन्न, पुराना।

प्रिबन-पु० [सं०] प्रसन्न करना; प्रसन्न करनेवाला।

प्रिबल-पु० [सं०] गैरा।

प्रिबित-वि० [सं०] प्रसन्न; सतुष्ट।

प्रिब-वि० [सं०] प्रीतिभुक्त; प्रसन्न, हृष्ट। * **की** प्रेम, प्रीति।

प्रिबम-पु० प्रियतम, पति, स्वामी; किसी नायिकाका प्रेमिक, आशिक।

प्रिबि-**की** [सं०] हर्ष, प्रसन्नता, आनंद; तुषि; प्रेम; प्यार; कृपा; कामदेवकी एक पत्नी; विजुम्भ आदि २७ बोगोंमेंसे दूसरा बोग (क० व्यो०)। -**कह**-वि० हर्ष या प्रेम उत्पन्न करनेवाला। -**कर्म**(**तु**)-पु० प्रेम-पूर्ण कार्य, मैत्रीपूर्ण कार्य। -**कारक**,-**कारी**(**विन्दु**)-वि० दे० 'प्रीतिकर'। -**कृद्**(**तु**)-पु० कामदेव। -**ह**-वि० प्रसन्न करनेवाला, हर्षदायक। पु० जीर्ण। -**हृत्**-वि० प्रीतिपूर्वक दिया हुआ। पु० वह धन जो कन्याको विवाह-में माता, पिता आदिसे मिले। -**दान**,-**दात्र**-पु० प्रेम-वत्ता दिया हुआ पदार्थ या ह्वय, प्रेमोपहार। -**धन**-पु० प्रेमवत्ता दिया हुआ धन। -**पात्र**-वि०, पु० प्यारा, प्रेमभाजन। -**प्रेम**-पु० (दोह्र) किसीकी स्वास्थ्य-कामनासे ग्रहण किया जानेवाला प्रेम। -**भोज**-पु० वह भोज जिसमें प्रियजन, सगे-संबंधी सम्भावसे सम्मिलित हों (भा०)। -**भोज्य**-वि० जो आनंदपूर्वक खाया जाय। -**रीति**-**की** प्रीतिपूर्ण व्यवहार, प्रेम-व्यवहार। -**बर्द्धन**,-**बर्द्धन**-पु० मिश्रण। वि० प्रीति बढ़ानेवाला। -**बाद्**-पु० मैत्रीपूर्ण बाद। -**विवाह**-पु० प्रेम-संबंधके कारण होनेवाला विवाह। -**स्निग्ध**-वि० प्रेमके कारण आर्द्र (मौलें)।

प्रीत्वर्ध-अ० [सं०] प्रसन्नताके छिप, प्रसन्न करनेके छिप।

मुष्ट-वि० [सं०] जका हुआ, दण्ड।

मुष्क-पु० [सं०] बर्फीला; जलविद्ध; सृष्ट; सिर। वि० तप्त।

प्रक-पु० [अ०] प्रमाण, सत्ता; किसी छपनेवाली वस्तुका

वह मनुष्य जो उसकी छपाईके पहले मनुष्यादिवाँ ठीक करनेके लिए तैयार किया जाता है; वस्तुविशेषके प्रथमसे बहनेका साधन, वस्तुविशेषका प्रतिरोधक (जैसे—'बाइ-प्रूफ', 'फायरप्रूफ')।—रीबर-पुं मूफकी मनुष्यादिवाँ ठीक करनेवाला।

भूम-पुं समुद्रकी गहराई नापनेके काम जानेवाला सीसे आदिका बना हुआ छट्टेके आकारका र्थ।

मैल-पुं [सं०] झुला, पाकना।

मैलख-पुं [सं०] झुकनेकी क्रिया, झुकना; झुका; एक प्रकारका वीर रस-प्रधान एकांकी नाटक।—कारिका-की० नर्तकी।

मैला-की० [सं०] झुका; परिभ्रमण; नृत्य; एक प्रकारका वर; शोरेकी एक प्रकारकी चाल।

मैलिल-वि० [सं०] कपित; झुला हुआ।

मैल्लोक, मैल्लोक-पुं [सं०] हिलना, झुकना; झुलना।

मैल्लक-वि०, पुं [सं०] देखनेवाला, दर्शक।

मैल्लन-पुं [सं०] देखनेकी क्रिया, देखना; आँख; किसी प्रकारका अभिनय, तमाशा आदि खेल।—कूट-पुं आँखका डेला।

मैल्लनक-पुं [सं०] तमाशा देखनेवाला।

मैल्लणिका-की० [सं०] वह स्त्री जिसे तमाशा देखनेका शौक हो।

मैल्लणीच-वि० [सं०] देखने योग्य; सुंदर; दृष्टिगोचर; विचारके योग्य।

मैल्लणीचक-पुं [सं०] तमाशा।

मैल्ला-की० [सं०] देखना; बह्य; किसी बातकी अच्छाई और दुराईका विवेक; किसी प्रकारका अभिनय, तमाशा आदि; देखकी चाल, छाया।—कारी(रिन्)-वि० लोच-समझकर काम करनेवाला।—गृह-स्थान-पुं राजाजीका मंत्रणा-गृह; रंगशाळा।—प्रबंध-पुं नाटकका अभिनय।—समाज-पुं दर्शकोंका समुदाय, दर्शक-द्वंद्व।

मैल्लागार-पुं [सं०] दे० 'मैल्लागृह'।

मैल्लाबाब(बत)-वि० [सं०] लोच-समझकर काम करनेवाला, चतुर।

मैल्लित-वि० [सं०] देखा हुआ।

मैल्लित(रु)-वि०, पुं [सं०] देखनेवाला, दर्शक।

मैल्ली(झिन्)-वि० [सं०] देखनेवाला; गौरसे देखनेवाला; ...जैसी आँखों वा दृष्टिवाला (जैसे—'दृग्मैल्लिणी')।

मैल्लव-वि० [सं०] दे० 'मैल्लणीच'।

मैल्ल-वि० [सं०] मरा हुआ, मृत। पुं मृतात्मा; वह योनि जिसमें मनुष्य मरनेके उपरांत सपिंड होनेतक रहता है; इस योनिमें पत्नी हुई श्रुतकी आत्मा; एक प्रकारकी देव-योनि; मर्यक आकारवाला आदमी; नरकमें रहनेवाला प्राणी; अथक परिश्रम करनेवाला आदमी।—कर्म(रु),—कार्य-कृत्य-पुं श्रुतके निमित्त किये जानेवाले दाह आदिसे लेकर सपिंडीकरणतकके कृत्य।—काव-पुं शव।—मात-वि० मृत।—गृह-गौह-पुं श्मशान।—गोप-पुं प्रेतोंका रक्षक।—चारी(रिन्)-पुं शिव।—क्षर्षक-पुं प्रेतके निमित्त किया जानेवाला

तर्पण; प्रेतके निमित्त साधुमरतका किया जानेवाला विशेष प्रकारका तर्पण।—दाह-पुं शवको जलानेकी क्रिया।

देह-की०,—शरीर-पुं वह शरीर जो श्रुतकी आत्माको मरनेके बादसे लेकर सपिंडीकरणतक प्राप्त रहता है।—धूस-पुं चिताका धुआँ।—नदी-की०

वैतरणी नदी।—नाथ-पुं यमराज।—नाह-पुं [सं०] दे० 'प्रेतनाथ'।—निर्वातक,—निर्धारक-पुं

शवकी श्मशानतक के जानेवाला मनुष्य, शवहारक।—पल्ल-पुं पितृपक्ष।—पटह-पुं प्राचीन कात्ता एक

प्रकारका राजा जो शवदाहके समय बसाया जाता था।—पति-पुं यमराज।—पर्बत-पुं गयातीर्थके अंतर्गत

एक पर्वत।—पाव-पुं आदमें काम आनेवाला वरगम।—पावक-पुं रातके समय श्मशान, कर्मस्थान, जगल

आदि सूनी जगहोंमें दिखाई देनेवाला चलता हुआ प्रकाश जिसे लोग प्रेतकीय समझते हैं।—पिच-पुं वह पिचा जो दाहसे लेकर सपिंडीकरणके दिनतक प्रेतके निमित्त

पारा जाता है।—पुर-पुं,—पुरी-की० यमपुरी।—भाब-पुं मृत्यु।—भूमि-की० श्मशान।—मेघ-पुं

श्रुतके निमित्त किया जानेवाला आह।—राक्षसी-की० तुलसी (कहते हैं कि जहाँ तुलसी रहती है वहाँ

भूत-प्रेत नहीं फटकते)।—राज-पुं यमराज।—लोक-पुं यमलोक।—वन-पुं श्मशान।—बाहित-

वि० जिसपर मृत सवार हो, भूतादि।—विधि-की० श्रुतक-संस्कार।—शिक्षा-की० गयातीर्थ-स्थित वह

शिक्षा जिसपर आह करनेमें श्रुतक प्रेतनोनिमें छुटकारा पाता है (मरुदपुं)।—छुडि-की० मरणाशौचके दीर्घसे

रहित होना।—शौच-पुं दे० 'प्रेतशुद्धि'; श्रुतका एक प्रकारका संस्कार।—श्राद्ध-पुं दाहकी तिथिसे लेकर

एक वरसतक श्रुतके निमित्त किये जानेवाले आदमेंसे कोई एक।—हार-पुं दे० 'प्रेतनिर्वातक'; निकट संबंधी।

प्रेतता-की०, प्रेतत्व-पुं [सं०] मरणा प्रेतकी अवस्था या धर्म।

प्रेतनी-की० प्रेतकी स्त्री।

प्रेताधिप-पुं [सं०] यमराज।

प्रेताक्ष-पुं [सं०] प्रेतोंके निमित्त पारा जानेवाला पिंडा; श्रुतकीन मोजन।

प्रेताचन-पुं [सं०] एक नरक।

प्रेतावास-पुं [सं०] श्मशान।

प्रेताशौच-पुं [सं०] मृत्युके कारण होनेवाला अशौच।

प्रेतास्थि-की० [सं०] सुदंकी हड्डी।—चारी(रिन्)-पुं शिव।

प्रेति-की० [सं०] मृत्यु; गमन। पुं आहार।

प्रेतिक-पुं [सं०] प्रेत।

प्रेती-पुं प्रेत पूजनेवाला, प्रेतपूजक।

प्रेतेषा, प्रेतेश्वर-पुं [सं०] यमराज।

प्रेतोम्भाक्-पुं [सं०] प्रेतबापाके कारण होनेवाला उन्माद।

प्रेत्यजाति-की० [सं०] मरकर फिर जन्म लेना, पुनर्जन्म, पुनरुत्पत्ति।

प्रेत्यभाब-पुं [सं०] दे० 'प्रेत्यजाति'।

प्रेत्या(लघु)-पुं [सं०] बाहु; धंद।

प्रेम्सा-खी० [सं०] प्राप्त करनेकी इच्छा, पानेकी इच्छा ।

प्रेम्बु-वि० [सं०] पानेकी इच्छा करनेवाला, पानेका इच्छुक ।

प्रेम(न)-पु० [सं०] प्यार, सुहृद्वत्, अनुराग; कृपा; श्रद्धा, केहि; अर्नव; मन्त्रक; बापु; ईद; एक अलंकार (केशव); माया और लोभ । -कलह-पु० प्रेमवश या प्रेममें किया जानेवाला कलह । -गर्विता-खी० वह नायिका जिसे अपने पतिप्रेमका गर्व हो । -जल-ज्वर-पु० प्रेमके कारण आँखोंसे निकलनेवाले आँसू, प्रेमाश्रु । -जा-खी० मरीचि कविकी पत्नी । -पातन-पु० प्रेमाश्रु; नेत्र (प्रेमाश्रु बहानेवाला) । -पात्र-वि०, पु० प्यारा, प्रियपात्र । -पाश-पु० प्रेमका फँदा या बंधन । -पुस्तिका-खी० पत्नी । -पुलक-पु० प्रेमके कारण होनेवाला रोमांच । -प्रत्यय-पु० बीणा आदिके स्वरका प्रेन (जै०) । -बंध-बंधन-प्रेमका बंधन । -भक्ति-खी० प्रेमभावसे की जानेवाली विष्णुभक्ति (वैष्णव) । -भगति-खी० दे० 'प्रेम-भक्ति' । -भाब-पु० प्रेमका भाव । -लक्षणा भक्ति-खी० दे० 'प्रेम-भक्ति' । -बारि-पु० प्रेमके कारण आँखोंसे निकलनेवाले आँसू ।

प्रेमचंद-पु० हिंदीके सर्वप्रमुख उपन्यासकार (१८८०-१९३६) जिन्होंने विभिन्न मानवीय संबंधों, सामाजिक बाँधों पारस्परिक स्थिति और उनके संस्कार तथा शील-वैचित्र्य और अतृप्तिका मार्मिक चित्रण करनेवाले गोदान, मेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि और गवन जैसे उच्च कोटिके उपन्यास लिखे हैं । आपने उच्च कोटिकी कहानियाँ भी लिखी हैं ।

प्रेमवती-खी० [सं०] पत्नी ।

प्रेमाक्षेप-पु० [सं०] एक प्रकारका आक्षेप अलंकार जिसमें प्रेमका वर्णन करते समय उसमें व्याघात भी दिखाया जाता है (केशव) ।

प्रेमाक्षाप-पु० [सं०] प्रेमपूर्वक की जानेवाली बात-चीत; एक दूसरेसे प्रेम करनेवाले दो या अधिक व्यक्तियोंकी आपसी बातचीत ।

प्रेमाक्षिगन-पु० [सं०] प्रेमके साथ या प्रेमके आवेशमें गले लगाना; नायक-नायिकाका परस्पर आक्षिगन ।

प्रेमाश्रु-पु० [सं०] प्रेमके कारण आँखोंमें छबनेवाले आँसू, प्रेमके आँसू ।

प्रेमी(मिन्)-पु० [सं०] प्रेम करनेवाला । वि० प्रेमयुक्त, प्रेमवाला ।

प्रेय(स्)-वि० [सं०] अधिकतर प्यारा, प्रियतर । पु० सांसारिक सुख; एक प्रकारका अलंकार; * प्रेमी-‘तहँ प्रतीप उपमा कहत भूषण; कविता प्रेय’ भू० ।

प्रेयसी-खी० [सं०] पत्नी; प्रियतमा ।

प्रेयान्(यस्)-वि०, पु० [सं०] दे० 'प्रेय' ।

प्रेयोपत्य-पु० [सं०] कक पत्नी ।

प्रेरक-वि०, पु० [सं०] प्रेरणा करनेवाला, प्रयोजक; भेजनेवाला ।

प्रेरण-पु० [सं०] किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करना, प्रेरणा करना; फैकना; भेजना; आदेश; चेष्टा ।

प्रेरणा-खी० [सं०] किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करनेकी

क्रिया; किसीको किसी काममें लगाना; उसकावैकी क्रिया; फैकना; भेजना ।

प्रेरणार्थक क्रिया-खी० [सं०] क्रियाका वह रूप जिससे वह बीध हो कि उसका व्यापार किसी अन्यकी प्रेरणासे कर्ता द्वारा संपन्न हुआ है ।

प्रेरणीय-वि० [सं०] प्रेरणा करने योग्य, जिसे किसी कार्यमें प्रवृत्त किया जाय; फैकने योग्य; भेजने योग्य ।

प्रेरणा-सं० क्रि० प्रेरणा करना; फैकना, चलायना; भेजना ।

प्रेरयिता(स्)-वि०, पु० [सं०] प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक; फैकनेवाला; भेजनेवाला ।

प्रेरित-वि० [सं०] किसी कार्यमें प्रवृत्त किया हुआ; फैका हुआ, चलाया हुआ; भेजा हुआ; आदिष्ट ।

प्रेष-पु० [सं०] प्रेषण; पीष; शोक ।

प्रेषक-वि०, पु० [सं०] भेजनेवाला; आदेश देनेवाला ।

प्रेषण-पु० [सं०] प्रेरणा करना, नियोग; भेजना ।

प्रेषणीय-वि० [सं०] प्रेरणा करने योग्य; भेजने योग्य ।

प्रेषना-सं० क्रि० भेजना ।

प्रेषित-वि० [सं०] प्रेरित किया हुआ, नियोजित; भेजा हुआ; निर्वासित । पु० स्वर साधनेकी एक रीति ।

प्रेषितव्य-वि० [सं०] प्रेरित करने योग्य, नियोज्य; भेजने योग्य, जिसे भेजा जाय ।

प्रेष्ठ-वि० [सं०] जो सबसे अधिक प्रिय हो, अत्यंत प्रिय । पु० प्रियतम; पति ।

प्रेष्टा-खी० [सं०] प्रियतमा; गधा ।

प्रेष्ठ्य-पु० [सं०] नौकर, चाकर, टहल; दूत; सेवा । वि० जिसे प्रेरित किया जाय वा आदेश दिया जाय; जो भेजा जाय । -जन-पु० नौकरोंका समुदाय । -भाब-पु० दासत्व, दासता ।

प्रेष्ठ्यता-खी० [सं०] दासता, चाकरी; दूतत्व ।

प्रेष्ठ्या-खी० [सं०] नौकरानी, भुला ।

प्रेस-पु० [अ०] वह कल जिससे कोई चीज दबायी जा पेरी जाय; छापनेकी कल; वह स्थान या कार्यालय जहाँ छपाईका काम हो, छापखाना । -प्रेस्-पु० प्रेस-संबंधी कानून, वह कानून जिसके द्वारा छापेखानेवालोंके अधिकारों आदिका नियंत्रण किया जाता है । -रिपोर्टर-पु० वह व्यक्ति जो पत्रके छिद्र समाचार एकत्र करता है । सु० (किसी चीजका)-में होना-अप्रकाशित रूपमें होना; छापनेकी स्थितिमें होना ।

प्रेसिडेंट-पु० [अ०] वह प्रधान समारंभ जिसकी देख-रेखमें किसी सभा या समितिकी कार्रवाइयाँ हो, किसी सभा या समितिका प्रधान पदाधिकारी; संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आदि प्रजातंत्र शासनवाले देशोंका राष्ट्रपति (भा०) ।

प्रेसिडस-खी० [अ०] प्रयोग; अन्यास; रीति; प्रथा; हाक्टर या बकीलका व्यवसाय वा कारोबार; व्यवहार (ग०) ।

प्रेष-पु० [सं०] प्रियका भाव, प्रियता; स्नेह; कृपा ।

प्रेष-पु० [सं०] क्लेश, कष्ट; मर्दन; प्रेरणा करना, प्रेरण; उन्माद ।

प्रेषणिक-वि० [सं०] आदेशका पाठन करनेवाला (सेवक आदि) ।

प्रेम्ह-पु० [सं०] दे० 'प्रेम्ह' (समाप्त श्री) ।

प्रौढ-पु० [सं०] पौष्टिकी क्रिया, पौष्टना; बच्चे हुए लड़कों को चुनना ।

प्रौढ-पु० [सं०] पीकदान, उगाऊदान ।

प्रौढ-वि० [सं०] कहा हुआ, उक्त, कथित ।

प्रौक्षण-पु० [सं०] छिक्काव, सेचन; यन्त्रों के निमित्त पशुका वष करना; वष ।

प्रौक्षण-वि० [सं०] छिक्कानेका जल; वह वहपाव जिसमें वह जल रखा जाता है ।

प्रौक्षण-वि० [सं०] प्रौक्षणके योग्य, जिसका प्रौक्षण किया जाय । पु० प्रौक्षणके काममें लाया जानेवाला जल ।

प्रौक्षित-वि० [सं०] जिसपर जल आदि छिक्का गया हो, जल आदिसे सिक्का जिसकी बलि दी गयी हो, बलिदान किया हुआ (पशु) ।

प्रौक्षित-वि० [सं०] प्रौक्षण करने योग्य, जिसका प्रौक्षण किया जाय ।

प्रौष्ठ-पु० [सं०] किसी व्यक्ति या आयोगनका कार्यक्रम; वह पत्र या कागज जिसपर कोई कार्यक्रम लिखा हो ।

प्रौष्ठ-वि० [सं०] अति प्रसन्न ।

प्रौष्ठ-वि० [सं०] स्वीत, बड़ा हुआ; सूजा हुआ ।

प्रौज्ञासन-पु० [सं०] मारण, बध ।

प्रौज्ञ-पु० [सं०] परित्याग ।

प्रौज्ञ-वि० [सं०] विशेष रूपसे त्वाणा हुआ, परित्यक्त ।

प्रौटीन-पु० [सं०] प्राणियों, तरकारियों, दालों आदिमें पाया जानेवाला एक पदार्थ जिसका निर्माण एमिनोएसिडसे होता है ।

प्रौटैस्ट-पु० [सं०] विरोध करनेवाला; एक ईसाई संप्रदाय जिसे मार्टिन लूथरने रोमन कैथोलिक संप्रदाय, पोपके अधिकार आदिके विरोधमें सोलहवीं शताब्दीमें स्थापित किया था; इस संप्रदायका अनुयायी ।

प्रौट-वि० [सं०] दे० 'प्रौट' ।

प्रौटा-वि० [सं०] दे० 'प्रौटा' ।

प्रौटि-वि० [सं०] दे० 'प्रौटि' ।

प्रौट-वि० [सं०] सिला हुआ, गुँथा हुआ; पिरोया हुआ; कंधाईके बल फैलाया हुआ; रँधा हुआ; छिपा हुआ; जमा हुआ; जोड़ा हुआ । पु० बन्ना, कपड़ा ।

प्रौटोत्साह-पु० [सं०] छत्र, छाता; सेमा ।

प्रौट-वि० [सं०] जिसने अपनी गरदन ऊपर उठा ली हो; जिसे बहुत अधिक उत्साह हो ।

प्रौट-वि० [सं०] अति उत्पन्न; बहुत बड़ा । -भ्रूट-पु० बहुत बड़ा कर्मचारी; प्रिय सेवक ।

प्रौट-वि० [सं०] बहुत अच्छा ।

प्रौट-वि० [सं०] विशेष रूपसे उठा हुआ, निकला हुआ या उत्पन्न ।

प्रौट-पु० [सं०] ताक जैसा एक वृक्ष ।

प्रौट-वि० [सं०] अच्छी तरह लिखा हुआ, पूर्ण रूपसे विकसित ।

प्रौटारण-पु० [सं०] हटाना, निकालना; पिछे छुड़ाना ।

प्रौटारित-वि० [सं०] हटाया हुआ, निकाला हुआ; बढ़ाया हुआ; दिया हुआ ।

प्रौटार-पु० [सं०] प्रबल उत्साह, अत्यधिक उत्साह ।

प्रौटार-वि० [सं०] उत्साह बढ़ानेवाला, पीठ ठोकनेवाला ।

प्रौटार-पु० [सं०] उत्साह बढ़ाना; एक प्रकारका नाट्याल्कार; विम्वत बोधकर किसी काममें लगना (सा०) ।

प्रौटारित-वि० [सं०] जिसका उत्साह बढ़ाया गया हो, जिसको बढ़ावा दिया गया हो ।

प्रौटार-वि० [सं०] जो बहुत धमंड करे ।

प्रौट-वि० [सं०] भवानक; प्रसिद्ध; स्थापित; यात्रापर निकला हुआ । पु० घोड़ेकी नाक; घोड़ेका मुँह; स्तरका ध्वजन; पथिक; कसर; गर्भाशय; चूतक; गल्ला; गुफा; भय; साकी या सावा; यात्री; आतंक, त्रास ।

प्रौट-वि० [सं०] आदर, गौरव, तर; जिममेंका पानी निकल गया हो ।

प्रौट-वि० [सं०] आदर, गौरव, तर; जिममेंका पानी निकल गया हो ।

प्रौट-वि० [सं०] तौंदवाला ।

प्रौट-वि० [सं०] आगे निकला हुआ ।

प्रौट-वि० [सं०] शब्दावयव ।

प्रौट-वि० [सं०] आदर, गौरव, तर; जिममेंका पानी निकल गया हो ।

प्रौट-वि० [सं०] जलता हुआ, प्रवृत्त ।

प्रौट-वि० [सं०] अंकुरित; भेदन कर निकला हुआ ।

प्रौट-वि० [सं०] उठाया हुआ; परिश्रमी ।

प्रौट-पु० [सं०] वह बच्चा जो कर्ज लेनेवाला शतोंके साथ रसोदके तौरपर लिखाता है, हैटनोट ।

प्रौट-वि० [सं०] विशेष रूपसे उत्तम, जँचा; आगे निकला हुआ; बढ़ावदा; शक्तिशाली ।

प्रौट-पु० [सं०] किसी विश्वविद्यालय या बच्चे विशाल-का अध्यापक; वह जो सिल्लाने या ग्रन्थोपार्जनके लिए कला-संस्थी विशिष्ट कार्य करे ।

प्रौट-वि० [सं०] बाइस-सालरका सहायक पदाधिकारी, उपकुलपति ।

प्रौट-पु० [सं०] दम्भ होना, जलना; दाह; सताप ।

प्रौट-वि० [सं०] जो परदेश गया हो, प्रवासी । - पतिका, -प्रेयसी, -अर्चुका-वि० वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो । -भार्य-पु० वह पुरुष जो स्त्रीके प्रवाससे दुःखी हो । -सरण-पु० विदेशमें मरना ।

प्रौट, प्रौट-पु० [सं०] सौरी मछली; सौंद, बैल; बैच, स्टूक; एक प्राचीन देश (म० भा०) । -पट-पु० आद-पद, भादोंका महीना । -पट-वि० पूर्वाभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र । -पट-वि० [सं०] भाद्रपदमासकी पूर्णिमा । -पट-वि० जिसका जन्म पूर्वाभाद्रपद या उत्तरभाद्रपद नक्षत्रमें हुआ हो ।

प्रौट, प्रौट-वि० [सं०] सौरी मछली ।

प्रौट-वि० [सं०] बहुत गरम, अति उष्ण ।

प्रौट, प्रौट-पु० [सं०] हाथीका पैर; तर्क; गौड । वि० बुद्धिमान; तात्त्विक ।

प्रौट-पु० दे० 'पुरोहित' ।

प्रौट-वि० [सं०] जिसकी पूरी छवि हो चुकी हो, प्रहृष्ट; जिसकी उम्र अधिक हो गयी हो, लीस और पचासके बीच-

की अवस्थावाक्यः पुष्टः परिपक्वः जिसमें पूर्णता आ गयी हो (जैसे श्रीद विद्वान्) ; निपुण, दक्षः जिसे किसी बातका पूरा अनुभव हो, अनुभवी, परिणतबुद्धिः गाढ़ा; बनावः प्रयत्नः वध्यः विचारितः उदाया हुआ; तक्षितः पु० चौबीस अक्षरोंका मंत्र (मं०) - अक्षर-पु० बना यादक। -बाद्-वि० जो उक्तमें बैठता हो, जिसके पैरोंके तलवे आसमपर हो हों। -बाद्-पु० प्रबल या गर्वमयी उक्ति।

श्रीदत्ता-की०, श्रीदत्त-पु० [सं०] श्रीद होनेका नाम।
श्रीद्धा-वि०, की० [सं०] दे० 'श्रीद'। की० वह की जिसकी वज्र अधिक हो लगी हो, तोससे लेकर पचास या पचपनके बीचकी अवस्थावाली की; सब प्रकारकी रतियों निपुण तथा कम रुद्धा और प्रचुर कामवासनावाली अधिक अवस्थाकी नायिका (सा०) - अचरीरा-की० वह श्रीदा नायिका जो अपने नायकमें परकी-सयोगके विद्द देखकर अचर या प्रकृति हो उठे। -चरीरा-वह श्रीदा नायिका जो प्रियतममें विकासविद्द देखकर प्रत्यक्ष कोप न कर ब्यर्थसे अपना आश प्रकट करे। -चरीराचरीरा-की० नायकमें परस्त्रीगमनके विद्द देखकर कुछ प्रकट और कुछ अप्रकट रूपसे शोध प्रदर्शित करनेवाली नायिका।

श्रीदि-की० [सं०] पूर्ण बुद्धि; परिपक्वता; सामर्थ्य, शक्ति; वृद्धता; साहस। -बाद्-पु० प्रबल उक्ति, हठोक्ति।

श्रीदोक्ति-की० [सं०] प्रबल उक्ति; एक काव्यालंकार जहाँ उत्कर्षका जो कारण न हो उसे उसका कारण बताया जाय।

श्रीण-वि० [सं०] निपुण, कुशल; विद्वान्।

फल्ग-पु० [सं०] पाकका पेड़; जड़ आदि सात द्वीपोंमेंसे एक (पु०) पिछवालेकी खिक्की या दरवाजा; दरवाजेके पासकी जमीन; हिंदुओंका एक तीर्थ (हरिवंश)। -जाता-की० सरस्ती नदी। -प्ररोह-पु० बरोह (पाकका)। -प्रखण्ड-राज-पु० वह स्थान जहाँसे सरस्ती नदी निकलती है, सरस्ती नदीका उद्गम (मं० भा०)। -समुद्रमवा-समुद्रवाचका-की० सरस्ती नदी।

फल्गा-की० [सं०] सरस्ती नदी।

फल्गासरण-पु० [सं०] सरस्ती नदीका उद्गम।

फल्वग-पु० [सं०] बानर; हिरन; पाकका पेड़।

फल्वगम-पु० [सं०] मेढक बानर।

फल्वगमैव-पु० [सं०] हनुमान्।

फल्व-पु० [सं०] तैरनेकी क्रिया, तैरना; उछाल, कुदना; छोटी नाव, उड्डाप; श्वपच, चांढाल; बंदर; मेड़ा; मेढक; शत्रु; कार्दव; लोह; जलपक्षी; मछली पकड़नेका एक प्रकारका जाल; कौदवा; बड़ावा; जलकुण्ड, सुरगाया; नागरमोषा; पाकका पेड़; ढाल, उत्तार; शब्द; नदीकी वाद; एक संबत्सर। -श-पु० बंदर; सूर्यका सारभि; मेढक; शिरीषका पेड़। -शति-पु० मेढक। -शा-की० नन्या राक्षि।

फल्ग-वि० [सं०] उछलने, कुदनेवाला। पु० चांढाल; मेढक; पाकका पेड़; रस्ती, तलवार आदिपर नाचनेवाला।

फल्गग-पु० [सं०] हनुमान्।

फल्ग-पु० [सं०] तैरनेकी क्रिया, तैरना; उछलना, कुदना; उठना; महाप्लवन; ढाल, उत्तार; चौकैकी एक

नाक। वि० हाथवाँ।

फल्गाका-की० [सं०] नाक, मेड़ा।

फल्गिक-पु० [सं०] नावसे चार उत्तारनेवाला, नौझो।

फल्गित-पु० [सं०] तैरना; उछलना।

फल्गित(सु)-वि०, पु० [सं०] उछलनेवाला।

फल्गित-पु० [सं०] पानके आकारकी लकड़ीकी वह छोटी तहदी जिसके चौड़े भागकी ओर दो पाये और नोककी ओर एक पेंसिल लगी रहती है और जो थोरेसे ऊँचिर्वाँ रखनेपर जलकर्म लगी है, जिससे उसमें लगी पेंसिलसे अपने आप अक्षर आदि बनने लगते हैं (प्रतिविधा)।

फल्ग-वि० [सं०] गूळ-संबंधी, गूळका; गूळका बना हुआ, गूळमिश्रित। पु० पाकका फल; पाकके पैरोंका समुदाय।

फल्ग-पु० [सं०] इमारत बनाने, लेती करने आदिके कामकी जमीनका टुकड़ा; ऐसी जमीनका नकशा; उपस्थास, फधानी, नाटक आदिका कथानक; दुरभिसिधि, साजिश।

फल्ग-पु० [सं०] किसी बननेवासी इमारतका नकशा; नगर, जिले आदिका बड़े पैमानेपर बना हुआ नकशा; किसी किये जानेवाले कामकी योजना, स्कीम।

फल्ग-पु० [सं०] जल आदिका उमककर बहना; उछाल, कुदना; कुदकी; गंधगी निकाळनेके छिद्र किसी तरह परायेकी छानना।

फल्ग-पु० [सं०] जल आदिका उमककर बहना; गीता छानना; किसी वस्तुको पानीमें डेरना; प्रत्यकाक्षीय भारी वाद; वाद, सैकाव।

फल्गित-वि० [सं०] जिसपर पानी चढ़ आया हो, जो जलमें डूब गया हो; जल आदिसे ब्याप्त। पु० वाद।

फल्गी(विन्)-वि० [सं०] उमककर बहनेवाला; फैलने-वाला, व्याप्त होनेवाला। [की० 'फल्गिनी'] पु० पक्षी।

फल्ग-वि० [सं०] गीता देने योग्य; जो उछल्यु जाय।

फल्गु-वि० [सं०] (वह अन्न) जो जल्दी पककर तैयार हो जाय (वै०)।

फल्ग-पु० [सं०] सृजन, फोड़े आदिपर चढ़ाई जानेवाली केई जैसी दबा; घुना, कंकव, सुछाँ आदिसे तैयार किया जानेवाला गारा जिसे दीवारपर उसे समतल और सुपक बनानेके लिए लगाते हैं, पलस्तर।

फल्ग(हन्), फल्ग(हन्)-पु० [सं०] युक्त। - (ह)श, -श-पु० रोहका हृक्ष, रोहितक हृक्ष।

फल्गी-की० [सं०] तिथी, बरघट्ट; एक रोग जिसमें तिथी बढ जाती है। -फल्व-पु० कानका एक रोग। -श-पु० -हंश-की० दे० 'फल्गहन्'।

फल्गि-पु० [सं०] पीपका पेड़।

फल्गि-पु० [सं०] तिथी रोग।

फल्गि-पु० [सं०] जिसे तिथी रोग हुआ हो।

फल्गि-पु० [सं०] अग्नि; स्नेह; वर जलन, गृहदाह।

फल्ग-वि० [सं०] जल आदिसे ब्याप्त, तराबोर; उछल

हुना; आहत, उका हुना; तीन मात्राओंसे युक्त (वर्ण)। पु० तीन मात्राओंवाला स्वर वा वर्ण; उछाल, कुदना; चौकैकी एक प्रकारकी चाल; तीन मात्राओंवाला ताल (संगीत)। -शति-की० उछलते या छलंग मारते हुए गमन करना। पु० छरगोश।

पुसि-की० [सं०] वछते हुए मयम करवा; उछाक, कुदान; जल आदिका उमककर बहना या चारों ओर फैल जाना; किसी स्वर या वर्णका तीन मात्राओं सहित उच्चारित होना; लोहेकी एक विशेष चाख ।

पुसुह-वि० [सं०] जला हुआ, धन ।

प्लेग-पु० [अ०] कोई भयानक संक्रामक रोग; एक मयानक संक्रामक रोग जिसमें मिलाठी निकलती है और बहुत तेज दुखार आता है, ताकन ।

प्लेड-पु० [अ०] बाहु आदिका चिपटा, समतल और प्रायः बराबर मोटाईका डुकका, पट्टी; ताँवे आदिकी वह चिपटी पट्टी जिसपर किसी प्रकारका लेख खुदा हो; सीने या चाँदीका म्वाला या विशेष प्रकारकी पट्टी जो डुकदोक

आदिमें बाजी मारनेवालेको पुरस्कारके रूपमें दी जाती है; तश्तरी, रक्वाबी; फोटो केनेके कामका छीसा ।

प्लेडार्म-पु० [अ०] कोई चौकीर और चोरस चबूतरा, विशेषतः वह जिसपरसे माणव या उपदेश किया जाय, मंच; रेकवे स्टेजमैनपरका वह लंबा ऊँचा चबूतरा जिसके सामने ट्रेन लगती है और जिसपरसे होकर लीम उसपर सवार होते वा उससे उतरते हैं ।

प्लेडिज-पु० [अ०] सफेद रंगकी एक प्रसिद्ध बहुमूल्य बाहु जो बहुत कमी और प्रायः अन्य बाहुओंसे मारी होती है ।

प्लोस-पु० [सं०] धावपर बाँधी जानेवाली पट्टी; कपडा ।

प्लोच-पु० [सं०] दम्ब होना, जलना; दाहती पीना ।

प्लोचण-वि० [सं०] जलनेवाला । पु० जलन ।

फ

फ-देवनागरी वर्णमालामें प वर्णका द्वितीय वर्ण । उच्चारणस्थान ओष्ठ ।

फंक-की० फाँक, चोरा हुआ डुकका ।

फँकनी†-की० दे० 'फँकी' ।

फंका-पु० उतना दाना वा चूर्ण जितना एक बार फाँका या खाया जाय; * फाँक, डुकका । **मु०-करना-नष्ट करना । -मारना-फाँकना ।**

• **फँकी-की०** फाँकी जानेवाली दवा; रेचक चूर्ण; † छोटी फाँक ।

फंग-पु० फंदा, बंधन -'मसि कोई प्रीतिके फंग परे'-सर; बधीनता; प्रेम, अनुराग ।

फणिका-की० [सं०] मारंगी; जवासा; देवताङ्क; दंती । -**फणिका-की०** मूलाकाली ।

फंजी-की० [सं०] मारंगी; दंती; मजीठ ।

फंड-पु० [सं०] छहर, जठर; [अ०] कार्य-विशेषके लिए कलश वा एकत्र किया हुआ धन ।

फंड-पु० फंदा, फाँस, बंधन; मायाजाह; कपट; गलेह, दुःख । -**घार-वि०** फंदा लगानेवाला, फँसानेवाला ।

फंदना, फँदना-अ० कि० फंदमें पकना, फँसना; मुग्न्य होना । **सं०** कि० लॉघना, फँरना ।

फंदरा†-पु० दे० 'फंदा' ।

फंदा-पु० सरकीली गोंठेवाला रस्ती, तार आदिका विशेष प्रकारका वेरा जिसमें फँसनेसे प्राणी बंध जाता है, फाँस; पशु-पक्षियोंको फँसानेका जाल; फँसानेवाली वस्तु, बधन; छल, प्रपंच, धोखा; दुःख, कष्ट । **मु०-छुड़ाना-कैदसे रिहा करना । -देना-गिरह देना; फंदा लगाना । (किसीपर)-पकना-रना** हुआ प्रपंच सफल होना । -**मारना-जालमें फँसना । - (है) में जाना वा पकना-जालमें फँसना; बधमें होना । -में खाना-जालमें खाना, फंदमें खाना ।**

फँदना-सं० कि० किसीसे फँदनेका काम करना, किसीको फँदनेमें प्रवृत्त करना; * फंदमें खाना, फँसना ।

फँदाबना-सं० कि० दे० 'फंदना' ।

फँसावा-अ० कि० हकलाना; खोलते हुए दूध आदिका ऊपर उठना ।

फँसना-अ० कि० फंदमें पकना, पकवमें जाना; उलझना । (किसीसे **फँसना-किसीसे** अवैध संबंध, आशनाई होना ।)

फँसरी†-की० फंदा, फाँस ।

फँसाना-सं० कि० फंदमें खाना, उलझाना; काबूमें करना । **फँसावा, फँसावा-पु०** फँसनेका भाव; वह चीज या बात जिसमें आदमी फँस जाय, जटकाव ।

फँसिहारा-पु० फँसानेवाला; ठग ।

फँसरी-की० जाल, फंदा ।

फ-पु० [सं०] कटुबचन; फुलार; निष्फल बचन; झगडा-वात; जेभाई, निष्फलता; बुद्धि; विस्तार । **वि०** प्रकट, प्रत्यक्ष ।

फक-वि० स्पृच्छ, शुभ; फीका, बदरग । **मु० (रंग)-पक् जाना वा हो जाना-हरके मारे लम्ब हो जाना, बहुत अधिक पवरा जाना; विवर्ण हो जाना ।**

फकीरी-की० कजीरत, दुर्गति ।

फक्रत-वि० [अ०] अकेला, केवल । **अ०** एकमात्र, सिर्फ ।

फका-पु० फाँक, डुकका ।

फकीर-पु० [अ०] मीस माँगनेवाला, भिक्षारी; वह जो शरीररक्षाभरके लिए माँग-खाकर ईश्वरका भजन करता हो, साधु; सुसलमान साधु; अकिंचन मनुष्य (बस्तुतः वह जिसके पास केवल एक दिनका भोजन हो) । **मु०-का घर बका है-फकीरको अपनी शक्तिसे सब कुछ प्राप्त है । -की सदा-वह आवाज जो फकीर माँगनेके समय देते हैं ।**

फकीरगी-की० मीस माँगनेवाली औरत ।

फकीराना-वि० फकीरोंका-सा, फकीरों जैसा । **पु०** वह भूमि जो फकीरोंके निवाहके लिए दान की गयी हो ।

फकीरी-की० फकीरका भाव, भिक्षारीपन; साधुता; अकिंचनता । **वि०** फकीर-संबंधी; फकीरका । -**छटका-पु०** साधु-फकीरकी बतायी हुई दवा, जकी-नूदी ।

फकीह-पु० [अ०] फिकाह या इस्लामी धर्मशास्त्रका पंक्ति ।

फक-पु० [सं०] पशु, विकलांग व्यक्ति ।

फक-पु० [अ०] खोलना; दो लुकी हुई चीजोंकी अलग

करना, छुपाना ।

कक्ष-पुं० गली-गुफा; दुर्गम, कक्ष अर्थ जो अधिकतर
होते हुए भी बसा बना रहे। अणुसूक्ष्म अर्थ। - बाह्य
-वि० बाह्य-गुफा तकनेवाला । - बाह्य-ली० बाह्य-
गुफा तकनेकी क्रिया ।

कक्षिका-ली० [सं०] पूर्वपक्ष जो तरफ-निर्णयके लिए उप-
स्थित किया जाता है। कपटयुक्त व्यवहार, धोखा, रसा ।
कपटकुलरिहस, कपटकेरिहस-पुं० [अ०] बंधक रखी हुई
बस्तुकी छुपाना ।

कक्षर-पुं० दे० 'कक्ष' ।

कक्षीर-वि० धर्मक करनेवाला, दोषी मारनेवाला ।

कक्ष-पुं० [का०] धर्म, धर्मक, भाव ।

कक्षिषा-अ० गर्वित, धर्मके साथ ।

कक्ष-पुं० जाल, धंदा ।

कक्षुषा-पुं० दे० 'काग' ; कागके उपलक्ष्यमें दिया जाने-
वाला उपहार ।

कक्षुमहद-ली० कायुमते महीनेमें करनेवाली दूध, पर्वों
आदिसे युक्त जोरकी हवा; कायुमते होनेवाली बारिश ।
कक्षुनिषा-पुं० किंसिं नामक पुष्पवृक्ष ।

कक्षुहारा, कक्षुहारा-पुं० काग लैकनेवाला; काग मारने-
वाला ।

कक्षर-ली० [अ०] प्रभास, तपका ।

कक्षक-पुं० [अ०] दे० 'कक्ष' ।

कक्षि-ली० दे० 'कक्षर' ।

कक्षिहारा-ली०-ली० कजीहत करनेवाली बात ।

कक्षीता-पुं० दे० 'कजीहत' ।

कक्षीती-ली० दे० 'कजीहत' ।

कक्षीकृत-ली० [अ०] वीर्य, महत्ता । सु०-का बक-
वह बक जिसमें प्रार्थना करनेका महत्त्व हो । - की
पराधी-विहाराका प्रमाणरूप विह, सत्ये की सत्य ।
(सुलनानामें यह अलन है कि किसी प्रकार विहानकी
विहाराकी स्थितिसे रूपमें उसके विरपर पानी बौंधते है
जिसे 'कजीकृतकी पानी' कहते है ।)

कक्षीहृष-ली० [अ०] अपमान, वैह्वन्ती; दुर्बला, दुर्गति;
धरवासी ।

कक्षीहृषी-ली० दे० 'कजीहत' ।

कक्ष-वि० दे० 'कक्ष' । - कक्ष-वि० दे० 'कक्ष-
कर्त्ता' । - कक्ष-ली० दे० 'कक्षक' ।

कक्ष-पुं० [अ०] अनुग्रह, दया, विद्या महत्ता ।

कट-पुं० [सं०] सौकर्य फैला हुआ फल भूत । ली०
[हि०] किसी चीज, कमी, हलकी तथा पतली चीजपर
आघात करने अथवा उसमें किसी दूसरी कमी कलुष
निरने या जोरसे हिलनेसे उत्पन्न होनेवाला अर्थ, कक्षी-
नॉस आदिसे फलनेसे उत्पन्न होनेवाला अर्थ । - कट-
ली० 'कट' अर्थकी आहृति । - ली०-कति धातु
तत्पञ्च ।

कटका-पुं० लतिक, किकरी । अ० सत्कार, सुरक्ष ।

कटका-ली० अथ आदि कटनेसे निकलनेवाला अथवा
साधारण पदार्थ ।

कटका-पुं० हुकेका पीला किलह रत्नक गुहता-पीला
५८-क

कांता है । सं० किलह अर्थकी हारा; अथ आदि सत्कार
करना, हाकना; अ० इस प्रकार हिलाना कि 'कट पट' अर्थ
उत्पन्न हो; कैंकना, अकनना । अ० 'किं' जाना; कल
जाना; कलना; कल्य होना; तपकमाना; अथ कलना
सु०-पड़ोरावा-अथ आदि रूप या छात्र दोस अथ
करना; कल्य तरङ्ग देखना-आकनना; कलना (अ०) ।
- (वे) देखा-माने देना ।

कटकरमा-सं० किं फटकना, सत्कार करना; कैंकना ।
कटकारी-ली० दे० 'किलहरी' ।

कटकावा-सं० किं किसीकी कटकनेमें प्रवृत्त करना,
किसीसे कटकनेका काम कराना ।

कटका-पुं० प्रुतिमेकी युगकी; काम्यके गुणसे दित्त कविता,
मिरी तुकबंदी; तपकपाठ; कटका चिपियोंको उकामेके
लिए कलें हुए वेरमें रस्तीमें लहारे लीं जानेवाली कलकी
जिसे हिलकर 'कट-कट' अर्थ उत्पन्न करते है ।

कटकावा-सं० किं कैंकना; कटकावा; कटकावा ।

कटकार-ली० फटकारनेकी कला या भाव; किसीकी
कलित करने वा उसका तिरस्कार करनेके लिए क्रोधके
आवेशमें कही जानेवाली कभी बात, जानत-मनमंस ।

कटकारवा-सं० किं किसीकी कलित करने वा उसका
तिरस्कार करनेके लिए क्रोधपूर्वक कही बातें कलना, कलना-
मनमंस करना; कलना देकर किलना वा कलना करना
(जुटिया कलकारना); कलना करना, पैदा करना (अथवा
कटकारना); कलनेको शास्त्र करते समय पत्थर आदिपर
कलना, पल्लवना; कैंकना; कलना, अथवा कलना ।

कटकिचा-पुं० एक प्रकारका विष ।

कटकी-ली० किसीमादकी फंसाकी हुई किसी रत्नका
एक तरफका भाग; दे० 'कटका' ।

कटवा-अ० किं किसी प्रकारके दण्ड वा आघातसे किसी
बस्तुका दो वा अधिक लंबोंमें विभक्त हो जाना वा लंबोंमें
द्वार पड़ जाना, विदीर्ण होना। किसी पैनी वा; कुकीकी
चीजके लंबीगले किसी बस्तुमें द्वार पड़ जाना वा कलना
कोई भाग अलग हो जाना; आघातके रूपमें किसी हुए
पदार्थका छिन्न-भिन्न हो जाना (जैसे-बाधक कटना, अंग-
कार कटना); कल्य हो जाना; दूध आदिका इस प्रकार
विभक्त होना कि उसका जलभाग सारभासमें अलग हो
जाय; किसी बस्तुकी अधिकता होना (अथवाके साथ);
जोनेका लवारके आरेखके विषय कलना ।

कटकावा-सं० किं किसी बस्तुसे 'कट-कट' अर्थ उत्पन्न
करना; कलना करना दोष-रूप करना; अ० किं 'कट-
कट' अर्थ होना ।
कटकाटिया, कटकाटिया-ली० (कट-कट अथवा करनेवाली)
मोटा-सावकिक ।

कटहारा-वि० फटा हुआ; अंग-अंग निकलनेवाला ।

कटा-ली० [सं०] सौकर्य फल, दौस; छल । वि० [हि०]
जो पट गया हो; जिसमें फटा या दराव हो; पटा-तुच्छ ।
पुं० छेद । - (ही) बाबा-ली० अर्थकी हुई आवाज ।

.. (दे) हलक-वि० किसीके पास कुछ हो । - (हलक) अ०
अधिकतरतमी स्थितिमें, कुछकिसीकी आकलने । सु०
(किसीके) - (दे) देखा अथवा कल; देखा-माने देना ।

पुष्कर, मितीके लगनेमें पचना, चिलीकी पकन अपने-छिर-लेना ।

फटाफट-पु० 'फट'को पुलंद भावना; † फटाफट ।

फटाफट-पु० [सं०] सौपका फन-फैलना; फनका फैलाव ।

फटाफटी(विष्णु)-पु० [सं०] सौप ।

फटाफट-पु० फटाफटी किया; फटने बैसी पीड़ा; फटनेके कारण पकी हुई वस्त्र आदि ।

फटिका-पु० दे० 'स्फटिक' ।

फटिका-खी० एक तरहकी सुराब जो बी आदिके समीरसे बिना खीचे तैयार की जाती है ।

फटीचर-वि० जो मैले-कुचैले कपड़े पहने हो, अर्थात् बेक-भूषण, सुराब-कपकपका-सकल-सुराब फटीचर और नाम रख दिया सनोहरदास-नया जीवन ।

फट्-खी० [सं०] एक अक्ष-अक्ष (सं०); एक अनुकरण शब्द जिसका प्रयोग तंत्रमें अक्षपर्वण, करन्दास, भगन्दास और अन्यसकले प्रकाशन, होमादिके आवाहन आदिमें होता है ।

फट्टा-पु० बोरे हुए बालका जंवा टुकड़ा ।

फट्टी-खी० पतला फट्टा ।

फट्-खी० जुधका रोषा जुआरियोंके जुआ-लेकनेका अर्थ, जुधका अर्थात् जुगाममें वह स्थान जहाँ बैठकर जुगामदार मजदूर बैठता है; पक्ष आदिके चिह्नसे उत्पन्न होनेवाला शब्द; ० फट्, फटि । पु० मारका हरला; वह धावी जिसका लीप चली रहती है, चरका । -फट्-खी० दो वाः अर्थात् मार उत्पन्न 'फट्' शब्द; 'फट्' शब्दकी अनेक बार आवृत्ति । -फट्-पु० जुआ लेकनेवाला, जुगामी । -फट्टी-खी० फटाफटाका काम, जुआ लेकना । सु० -रखना; -कमाना-सौं कमाना ।

फट्फट-खी० फटफटकी किला या माघ, स्पंदन, स्फुरण ।

फट्फट-खी० दे० 'फटफट' ।

फट्फटाना-अ० कि० एक-एककर वा अचानक बलायमान होना, बीबा-बीबा बंभित होना; शरीरके किसी अंग वा भागका एक-एककर गतियुक्त होना वा सिकुटना और फैलना, स्फुरित होना; झिलना-डुलना वा गतियुक्त होना ।

फु० फटफट कटना-मलत्त होना ।

फट्फटाना-सं० कि० किसीकी फटफटनेमें प्रवृत्त करना; उत्पन्नता उत्पन्न करना (का०) ।

फट्फटबीस-पु० शराबोंके घासम-प्रबंधमें एक उत्पन्न ।

फट्फटाना-सं० कि० किसी वस्तुमें 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करना; पक्ष आदिकी इस प्रकार झिलना कि उससे 'फट-फट' शब्द उत्पन्न हो, फटफटाना । अ० कि० 'फट-फट' शब्द होना; छलमटाना; छलक होना ।

फट्फटाना-सं० कि० किसीकी फाटनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे फाटनेका कामकरना ।

फट्टिया-खी० [सं०] फट्टिया हीरा ।

फट्टिया-पु० फुटकर माछ वेचनेवाला बगिया; सुधमें लड्डू-का नाचिक, ललिक ।

फट्टी-खी० ईंट, पत्थर आदिका एक एक चौड़ा, पक्ष, गज चौड़ा और लंब अक्ष लंबा टुकड़ा ।

फट्टिया-फट्टिया-पु० दे० 'फट्टिया' ।

फट्टी, फट्टी-खी० फट्टी, ठाँस; छोटा फाटका ।

फन-पु० [सं०] सौपका फन; मासफुट, नथवा । -फन-पु० सौप । -फन-पु० सौप; फन । -फन-पु० सौप ।

-फन-पु० सौप । -फन-पु० सौप; नौकी संध्या ।

-फन-पु० सौपका फन जो फटी मारनेपर मोठाकार हो गया हो; कुंठलीकृत फन । -फन-पु० सौपके फन-पर स्थित नथि ।

फनबाद(बत)-पु० [सं०] सौप ।

फना-खी० [सं०] 'फन' । -फन-पु० सौप । -फन-पु० सौप; शिव । -फन-पु० फनकी चौकी सतह । -फन-पु० फनपर । -फन-पु० सौप ।

फनाबाद(बत)-पु० [सं०] सौप ।

फनिक-पु० [सं०] सौप ।

फनिका-खी० [सं०] काले गूलरका पेड़ ।

फनिक, फनिक-पु० [सं०] नथवा एक तरहकी चुल्लू ।

फनित-वि० [सं०] गया हुआ, फन; तरल किया हुआ ।

फनिनी-खी० [सं०] सविणी; सविणी नामकी ओषधि ।

फनी-पु० [सं०] शेषनाग; बाहुकि; पतंजलि मुनि ।

फनी(विष्णु)-पु० [सं०] सौप; राहु; पतंजलि; रौमा या दीन । -[पि]कन्या-खी० नागकन्या । -फेबा, -

फेसर-पु० नागसेर । -फेक-पु० एक पक्षी । -फेक-पु० एक प्रकारका सौपकार चक्र जिसके द्वारा शुभ या अशुभ नाडीकृत जाना जाता है (ज्यो०) । -जिह्व, -

जिह्विका-खी० महाकाष्ठकी, बड़ी सतावर । -सतव-पु० सौपकी तल, संप्रथया । -फन-पु० (शेषनागी) विष्णु । -वाचक-पु० वाचकि । -वसि-पु० बस सौप; शेष वा बाहुकि; पतंजलि । -मिष-पु० बाहु । -सैन-पु० अर्धम । -आवित-वि० पतंजलि मुनि द्वारा उक्त, पतंजलिका कहा हुआ । -भ्रम-पु० पतंजलि मुनिका रचा हुआ महाभाष्य नामक व्याकरणग्रंथ । -भुक्-

(बु) पु० मरक (जो सौपोंको खाते हैं); मोर । -भुक्-पु० बोरेके सौप मारनेके कामका एक औजार जो सौपके मुँहके आकारका होता था । -कटा; -कट्टी-खी० पानकी बेल । -ईत्री-खी० गंधनाकुली, रास्ना । -हृत्-खी० धुइ दुराकथा ।

फनी-पु० [सं०] दे० 'फनी' ।

फनी-पु० [सं०] दे० 'फनी' । -फन-पु० एक प्रकारका चक्र जिसके द्वारा शनिकी मलमलितिके अनुसार अक्ष, ब्रह्म आदि सात द्वीपोंका शुभाशुभ फल जाना जाता है (ज्यो०) ।

फन-पु० [अं०] किसी कर्मके उचित वा अनुचित होनेके संबंधमें मुस्ती वा मुछा (अर्थात् चार्य) द्वारा शास्त्रके अनुसार दी गयी व्यवस्था ।

फन-पु० [अं०] विजय; जीत; सफलता, कामयाबी । -असीर, -असीर, -बाह-वि० जिते विजय प्राप्त हुई हो, विजयी; सफल, कामयाब । -बासा-पु० जीतकी लुट्टीमें की जानेवाली रचना । -बेक-पु० पगड़ी धीमेनेका एक रंग; किसीका बाह्य रूपनेका एक रंग; एक लच्छा हुके-का नैना । पु० -का रंगका वह लच्छा-जीतकी-लुट्टीमें

बजाया बानेवाका नयाक ।

कतह पुरखीकरी - पु० आगरा जिलेके अंतर्गत एक इतिहास-प्रसिद्ध स्थान (बाहर और राणा सोंयाका बुक यहीं हुआ था) ।

कतिगा - पु० शीर्ष परदार कीटा; विशेषकर वह जो दीपक या प्रकाशपर झुकाता है; पतंग, परवाना ।

कतीक - पु० [सं०] दे० 'कतीका' । -सोज - पु० दे० 'कतीकासीक' ।

कतीका - पु० [अ०] दीपककी बत्ती; वषकी मोटी बत्ती; बंदूक या तोपमें दी जानेवाली बत्ती, पत्तीता; बत्तीके आकारमें छपेटा हुआ कागज जिसपर कोई धंध लिखा रहता है और जिसकी धूनी प्रेतग्रस्त व्यक्तिकी दी जाती है, पत्तीता । -शोर - पु० बौबट, झमादान ।

कतुहरी - खी० दे० 'कतुह' ।

कतुर - पु० दे० 'कतुर' ।

कतुरिया - वि० दे० 'कतुरिया' ।

कतुर - खी० [अ०] 'कतुर' - 'कतह' का बहु० विभब, जीत; छटका माल ।

कतुरी - खी० [अ०] कमरतककी एक प्रकारकी बिना आस्तीनकी कुरती जिसमें सामनेकी ओर बटन या चुंकी लगायी जाती है ।

कते - खी० कतह, विजय ।

कतेह - खी० विजय, जीत ।

कतहारी (रिनु) - पु० [सं०] पक्षी, चित्रिया ।

कतह - वि० कतह करनेवाला; खोलनेवाला । पु० परमेश्वर ।

कदकना - अ० कि० 'कद-कद' शब्द करना; आत, रस आदिका पकते समय 'कद-कद' शब्द करना; * दे० 'कदकना' ।

कदका - पु० तैयारीकी उस अवस्थामें कुछ आदिका पाग अब वह 'कद-कद' शब्द करता है ।

कदकना - अ० कि० शरीरमें अधिक फुंसियाँ या गरमीके दाने निकल आना; रूख या वीधमें बहुत-सी शाखाएँ या टहनियाँ निकल आना; † किसी चीजका उबलते समय 'कद-कद' शब्द करना ।

कदिया - खी० दे० 'करिया' ।

कद - पु० उस स्थितिमें सोंयाका सिर अब वह फैलकर छत्रके आकारका हो गया हो; दे० 'कन' । -आखी - पु० शेषनाग - 'कालिका-कृपान', मुंडमाछीके विश्रुते है, रामचंद्र-पान फनमाछीके जहरसे - कछिराम ।

कन, कन - पु० [अ०] गुन, दुनर; खूनी, विशेषता; विज्ञा, इन्म; जोहर, कौशल; कारीगरी; सोझा, फरेब, छल, चालकी, मझारी । [इह कन मीछा - हर काममें होखियार, प्रत्येक कार्यमें निपुण ।]

कनकनी - अ० कि० 'कन-कन' शब्द करना; सनसनाहटके साथ चबना ।

कनकार - खी० 'कन'की आवाज ।

कनगवा - अ० कि० कहा फूटना, पनपना ।

कनवा - पु० कतिगा; अंडुर, कछा ।

कनवा - अ० कि० कायका आरंभ होना, ठाना जाना ।

कन-कन - खी० दो या अधिक बार उत्पन्न 'कन' शब्द, 'कन' शब्दकी आवाज ।

कनकना - अ० कि० 'कन-कन' शब्द करना; तेजीसे छिड़ना ।

कनस - पु० पनस, कटहल ।

कन - खी० [अ०] बिनाश, अस्तित्व नष्ट होना, मिटना; मृत्यु, मौत; परमात्मा और जीवात्मा या उपास्य और उपासकका अभेद होना (सं०) । वि० नष्ट, बरबाद; मृत । -क्रिष्ठा - वि० ईश्वरमें लीन ।

कनवा - स० कि० आरंभ करना; तैयार करना ।

कनाखी - खी० फनीका समूह - 'काछकी फनाखी' नकत बनमाछी है - पचाकर ।

कनिगा - पु० सर्प, नाग ।

कनिव - पु० दे० 'कनाव' ।

कवि - पु० दे० 'कवी'; दे० 'कन' । -धर - पु० सोंप ।

-कति, -राख - पु० दे० 'कणिपति' ।

कनिव, कनिव - पु० सोंप; कतिगा - 'अब करि कनिव चूना कै करत' - प० ।

कनिवाछा - पु० सोंप; † तानी छपेटनेके फामकी सरपेकी एक लकड़ी, छपेटन ।

कनी - पु० दे० 'कणी' । खी० दे० 'कन' ।

कनस - पु० दे० 'कानूस' ।

कनी - खी० पकर; कपडा बुननेका एक औजार; राख ।

कपक - खी० दूध, बाद ।

कपकना - अ० कि० बटना, पुष्ट होना ।

कपकस - वि० बहुत मोटे और मड़े शरीरवाला ।

ककना - अ० कि० एक-एककर रोना ।

ककका - पु० झलका, फफोला ।

ककवा - अ० कि० गोबर आदिका बिकारविशेषके कारण बंदर फैलना; दाढ़ आदिका दूधकी प्राप्त होना या फैलना ।

ककसा - पु० फेफडा । वि० जो भीतरसे खाकी हो, पीला; स्वावर्हित, पीका ।

ककूद - खी० मुकरी ।

ककूरी - खी० सुतकी छोटी जिससे खियाँ सारीकी गाँठ बाँधती है, नीवी, नारा; फल, लकड़ी आदिपर बरसातमें या लोहके कारण जमनेवाली कार्बोसि तरहकी सफेद वस्तु, मुकरी ।

ककोर - पु० एक तरहका जंगली प्याज ।

ककोछा - पु० जलने, रगड़ खाने आदिसे सरीरपर होने-वाला ज्वार जिसके भीतर चैप या पानी मरा रहता है, छाका, झलका, भावना । मु० (दिल्ले) - (ले) कोकना - जकी-कटी घुनावा ।

ककना - अ० कि० दे० 'ककना'; मोटा होना ।

ककती - खी० प्रसंगानुसृत उक्ति; ऐसी बात जो किसीपर ठीक-ठीक पड़े, चुटीली बात । मु० - उबाला था ककती - चुटीली बात कहना, चुटीली लेना ।

ककब - खी० कपनेका आवा; सोभा, सौंदर्य ।

ककवा - अ० कि० सोभा देना, सजना, जला बाह्य होना ।

कबावा-स० कि० देखे स्वामपर कनाना कहीं सवे नर
सुंदर जान पड़े ।

कबि-श्री० योग, सुंदरता, छवि ।

कबीर-वि० सोमा देवताका, सजनेवाला, सुंदर ।

करब, करब-पु० [का०] दे० 'करिब' ।

कर-पु० दे० 'कर'; दे० 'कर'; विज्ञापन; बुझ, एग-
'करमें कते दुखन कर' (कनककाय); [सं०] ककक, डाक ।

करक-पु० दे० 'करक' ; * श्री० दे० 'ककक' ।

करक-वि० [अ०] तेज, तेज चकनेवाला । मु० (चक्रीका)
-होना-चाक जिसकी चारिये कसते तेज होना; सुईका
आमेका समय बताना ।

करक-पु० [अ०] दे० 'करक' ।

करकन-श्री० कककनेकी क्रिया वा भाव ।

करकना-अ० कि० दे० 'कककना' ।

करकना-पु० बंदिपर रक्षा जानेवाला छपर; दरवानेपर
लगाया जानेवाला दूर-बीदी करत उधारत फरको'-
र ।

करकना-स० कि० दे० 'कककना'; अलग करना ।

करकिल-पु० गांधीमें हरसेके बाहर पठरीमें लगाय जाने-
वाला लूँटा जिसके सहारे ऊपरका बौंवा बसाया जाता है ।

करासा-पु० फरगनाका खनेवाला ।

करासा-पु० तुर्किस्तानके उजबक प्रजासंघका एक वंश
जो यानका वैदिक राज्य था ।

करसा-वि० जो जूटा न हो, साफ, शुद्ध । -ई-श्री०
सफाई, शुद्धता ।

करसा-वि०-स० कि० साफ करना; शुद्ध करना; आरंभ
देना ।

करबंद-पु० [का०] वेदा ।

करबंदी-श्री० पुनराव, बाप-पेटेका नाता ।

करब-श्री० [अ०] दरार, शिफाफ फेलाव । पु० दे०
'करब' ।

करबलगी-श्री० दुखिमानी ।

करबलानी-वि० [का०] दुखिमानी ।

करबिदा-पु० दे० 'करबंद' ।

करबी-पु० [का०] सतरंजका बजीर जो सबसे महत्त्वका
मोहरा होता है । -बंद-पु० पैरके जोरपर चकनेवाली
बजीरके सह; बजीरके जोरपर बैठ हुना मोहरा । मु०-
बनवा-पैरका बजीरके छानेमें पहुँचकर बजीर बन
जाना ।

करबी-पु० दे० 'करबी' । 'कबी' ।

करब-वि० [का०] अति दृढ़, जट ।

करब-श्री० दे० 'करब' ।

करब-पु० [का०] जानेवाला दिन, कल ।

करबा-अ० कि० दे० 'ककना' ।

करब-पु० छक-काटा, करे, बंदि-पंच; नलरा ।

करबंदी-वि० मरेदी, बाकबाज ।

करकर-श्री० दे० 'करकक' ।

करकर-श्री० [का०] जखी, रेंजी । अ० जखी-जखी,

भनाव । मु०-ककना-बली-बली पना ।

करकरना-अ० कि० दे० 'कककना' ।

करकुहा-पु० फतिगा ।

कबा-पु० [अ० 'कैम'] बौंवा; बह बौंवा-जिसपर कोची
बसाता है; [अ० 'काम', 'कामे'] कंजीर किवा और
चेसमें कसा हुआ छपनेके लिए तैयार मैटर; पुस्तक आवि-
का एक बारमें छापा हुआ अंश, जुज । मु०-देस-
चेसमें कसर मैटरको छापनेके लिए तैयार कर देना ।

करसा-वि० [पा०] (समाप्तके अंतमें) हुबम देवैवाका
(कारकरमा) ।

करसाह-श्री० आवा, आवाकपमें कुछ मॉयना, कोरे
बीच मेनने की आवा, 'आर्ब' ।

करसाह-श्री० जिसकी करसाह की गयी हो, करमा-
हस करके बनवाया, मंगवाया हुआ; बहिषा ।

करसा-पु० [का०] आवा, राजकीय आवा या आवापत्र;
अस्थायी कानूनके रूपमें निकली हुई राजकीय आवा,
'आर्किनेस' । -[मॉ] पुझार-पु० हाकिम, बादशाह ।

वि० आवा करनेवाला । -बरबारी-वि० अनीन, आवा-
कारी, सेवक । -बरबारी-श्री० परमावरदार होनेका
भाव । -रबा-पु० हाकिम, बादशाह । -रबाई-श्री०

बादशाही, हुकूमत ।

करसावा-स० कि० कबना, आवा करना (आवार्थक प्रयोग) ।

करसाह-श्री० दे० 'करियाह' ।

करकांश-पु० [अ०] दूरीको एक मॉय, २२० गज, मीलका
आठवां भाग ।

करको-श्री० [अ०] सरकारी कर्मचारियोंको भाषी तनखाह-
पर भिजनेवाली छपी छुट्टी ।

करबरी-पु० रसवी सनका दूसरा महीना, 'फेब्रुअरी' ।

करबारी-पु० खलिहान ।

करबी-श्री० भूना हुआ चाबक, लाई ।

करब-पु० दे० 'करब' । -बंद-पु० कर्णके रूपमें बना
हुआ ऊँचा खान ।

करबी-श्री० संग मुँह और चौड़े पेंदेका बरतन जिसके
झुँवर हुकेका मैचा बैठया जाता है, पुनपुकी; बंदकका
एक पुर्जा जिसमें गज रखते हैं । वि० फर्का; फर्क-
संबंधी । -जूता-पु० फर्शपर या घरमें पहननेका जूता ।
-पंखा-पु० छतमें लटकानेका पंखा । -सकाम-पु०
वह सकाम जिसमें सिर फर्कके साथ लग जाय, बहुत
झुककर किना जानेवाला सकाम ।

करब-पु० [का०] फासलेकी एक माप जो १८ हजार
फुटकी होती है ।

करस-पु० दे० 'करस'; * दे० 'करसा' ।

करसा-पु० फाफा; परशु ।

करसी-श्री०, वि० दे० 'करसी' ।

करबू-वि० [का०] शिवा हुआ, जीर्ण ।

करई-पु० [का०] कीरा, टीका, व्याख्या; कुंजी ।

करइत-श्री० [अ०] मसजिदा, मज्जुलता । -कबल-वि०
करहात देनेवाला ।

करइ-पु० एक दृश जिसकी गणना पंच देवतकमेंमें है,
पारिम ।

करइरी-वि० तेज, चालाक; दे० 'करइरी' ।

करइरबा-अ० कि० कककना; ककरना ।

करहरी-पुं शब्द। वि० कर्म-अस्माः शुद्ध प्रत्यय ।
 करहरी-अ० कृ० दे० 'करहर' ।
 करहरी-स्त्री० फल, संसदी फल ।
 करहरी-वि० [अ०] प्रत्यय, प्रत्यय ।
 करहरी-पुं [का०] 'कोरी-करहरी' कहानीका नायक
 जिसने छोटी से मिलनेके लिए कोरी बेसितुनी छोटीके
 गहलक करहरीकर कानेकी छत पूरी की ।
 करहरी-पुं आपसे क्याथा हुआ पीठा ।
 करहरी-वि० दे० 'कराह' । पुं० लंबी-चौकी सुली जगह,
 मेवा; दे० 'कराह' ।
 करहरी-वि० दे० 'कराह' । स्त्री० दे० 'कराह' ।
 करहरी-वि० [का०] बोधा, विस्तृत, कुशादा । -दृष्ट, -
 दृष्ट-वि० धनी, उदार । -हरीसका-वि० ऊँची
 दिम्बतपात्र; वेधपात्र ।
 करहरी-स्त्री० करहरी होना, फेंकाव; सुखहाली, बहुलता;
 बोधा का तंग ।
 करहरी-स्त्री० [अ०] सुत्कारा; रेफिको; मलमया ।
 -करहरी-पुं स्त्रीचावन, पाखाना । मु०-करहरी-चौच
 जान् । -करहरी-सुत्कारा राना, पुरस्त फला ।
 करहरी-वि० [का०] ऊँचा (समाप्तमें व्यवहृत-सरकराज,
 नवरोकराज) । पुं० ऊँचाई, दुर्गदी ।
 करहरी-स्त्री० ऊँचाई ।
 करहरी-वि० [का०] दे० 'कराहरी' ।
 करहरी-स्त्री० दे० 'कराहरी' ।
 करहरी-वि० [का०] मूला हुआ, विस्तृत । पुं० ऊँचको-
 का एक लोक । -करहरी-वि० विस्मरणशील ।
 करहरी-स्त्री० विस्तृति, भूल-भूल ।
 करहरी-वि० दे० 'कराहरी' । पुं० फलहार; फेंकाव ।
 करहरी-पुं [अ०] मगना, मायब होना ।
 करहरी-वि० भागा हुआ । पुं० अपराधी जो भाग गया हो
 या भागकर छिड़े ।
 करहरी-पुं दे० 'कराह' ।
 करहरी-पुं फाँसका रहनेवाला, फेंक; धक तरहकी
 छिंद ।
 करहरी-पुं फाँसका रहनेवाला । वि० फाँसका । स्त्री०
 फाँसकी भाषा, फेंक ।
 करहरी-वि० [का०] इकट्ठा किया हुआ, राशीकृत ।
 करहरी-स्त्री० इकट्ठा करना, जुटाना ।
 करहरी-स्त्री० एक तरहका लहंगा; बोदनी (दुर्दृष्ट) ।
 पुं० मिट्टीकी नौद ।
 करहरी-स्त्री० [का०] जुलूमकी शिकायत, कन्या-अत्या-
 चारसे बचानेकी प्रार्थना, दुहाई नाछिस । -रहरी-वि०
 ऊँचीचित्तके व्यापक शिकनेवाला । -रहरी-स्त्री० हंसाफ ।
 करहरी-वि० करियाद, नाछिस करनेवाला । पुं०
 अधिकोका, मुत्तलीस । मु०-होना-नाछिस-करियाद
 करना ।
 करहरी-पुं [अ०] नाचक आदिका कचरा थोकर साफ
 करवा; निर्गम करना । अ० कृ० साफ होना; निर्गम
 होना ।
 करहरी-पुं [अ०] 'किरिस्ता' ।

करहरी-स्त्री० कनकेकी डाक जिसपर गतकेकी कल, रौकी
 जाती है- 'कनके कनके करहरी' -सबक छिद्र फल ।
 करहरी-पुं [अ०] जुटा करनेवाला; जमात, पक्ष; मुन-
 रमेमें नारी, प्रतिवादी या वादी-प्रतिवादी पक्षका कोई
 व्यक्ति । -कोरहरी-पुं मुहरी । -कोरी-स्त्री० मुहरी,
 तरपदारी । -सायी-पुं मुहरी । -साकिर-पुं
 तीसरा फरीक वा पक्ष जो मुकदमेमें अपनेसे आड़े ।
 करहरी-पुं नारी-प्रतिवादी दोनों, उभयपक्ष (द्विकर्तव्य) ।
 करहरी-पुं [अ०] जुटाका हुक्म जिसका पावन बंदोंके
 लिए फल हो (नमान, रौना, हज ह०) ।
 करहरी-स्त्री०-स्त्री० एक दूरी ।
 करहरी-स्त्री० दे० 'करहरी' ।
 करहरी-पुं [अ०] पुगपात्र, पीकदानो ।
 करहरी-स्त्री० फलकनेकी क्रिया, स्पंदन ।
 करहरी-पुं दे० 'करहरी' ।
 करहरी-स्त्री० छोटा फावना; सेतीके काम जानेवाला एक
 औजार; दे० 'करहरी' ।
 करहरी-पुं 'करहरी' ।
 करहरी-वि० [का०] जुमाया हुआ, मुग, मासिक ।
 करहरी-पुं [का०] छल, धोखा । वि० (समाप्तके अंतमें)
 ठगने, जुमानेवाला (द्विकर्तव्य, नकराकरे) । -करहरी-
 वि० ठगनेवाला, धोखेवाला । -करहरी-वि० ठगा हुआ,
 जिसने धोखा खाया हो ।
 करहरी-वि० दे० 'करहरी' ।
 करहरी-वि० करेब करने, धोखा देनेवाला ।
 करहरी-पुं [अ०] कंठा, पताका ।
 करहरी-स्त्री० दे० 'करहरी' ।
 करहरी-स्त्री० [अ०] चिकी, बेनी ।
 करहरी-वि० [का०] देवा हुआ, बिका हुआ ।
 करहरी-पुं [का०] रोखनी; रौनक; हमति ।
 करहरी-वि० [का०] (समाप्तके अंतमें) बेचनेवाला (बेचा-
 करहरी) ।
 करहरी-पुं [अ०] अंतर, दूरी; विरुपाव, मेद, मित्रता;
 मर्म, सिर ।
 करहरी-स्त्री० [अ०] मग; दारा ।
 करहरी-पुं [अ०] ईश्वरादि अवश्य कर्तव्य कर्म, (मुत्तक०)
 शास्त्रविहित कर्म; कर्तव्य; जिम्मेदारी; कर्तव्य । - (अ०)
 देव-पुं हर एकका जाती कर्म (रोधा, नमान ह०) ।
 -करहरी-पुं अंत्यकालीन संसभ मान लेना । मु०-करहरी
 करवा-कर्तव्यका पावन करना । -करहरी-मानना,
 कर्तव्य करना । (किरीपर) -होना-अवश्य कर्तव्य
 होना, कर्म होना ।
 करहरी-वि० अवश्य कर्तव्य; कर्म किया हुआ, समझी,
 कार्यात्मक ।
 करहरी-पुं [अ०] आधिक्य, इतरात ।
 करहरी-वि० [अ०] छल, अकेला; बेवोद । स्त्री० चिकी-
 रिता; निम्नचित्तकी स्त्री, बंद; चिकी; चादर, शाक;
 रजाईका ऊपरका पक्ष; पुं व्यक्ति, अकेला आदमी;
 गंभीरका बरक । -करहरी-स्त्री० वह कागज जिसपर अति-
 उत्तम अपराध और दफा लिखी जाती है, अभियोगपत्री ।

—शाकीय-श्री० कुंठित्वे दुप वाक्सी सूची।—बहार-
पु० म्यक्ति।—दिसाव-श्री० दिसावका विद्वत्।

क्रान्ति-शब्द-श्री० अकम-अकम हर आदमीते।

काली-वि० जिसमें एक ही। श्री० फर्द, सूची।

कालीका-पु० [सं०] कौमी हुई जैमिनीके साथ हनेकी;

नवी धरनी या कला; कौमकता।

कालिका-श्री० [सं०] पादनाथ, जता।

कर्म-श्री० [अ०] साक्षिका कारवार करनेवाली कौठी वा

वही दुकान।

कर्म-श्री० दे० 'करिवा'।

कर्म-पु० [अ०] रीशनी; ठाट-बाट, ज्ञान-चौकत; दण्डवा।

कर्म-पु० तेजी। सु० -अरना; आरना-तेजीसे

देवना।

कर्म-पु० [अ०] फर्द विछानेवाला; सेमा क्यानेवाला;

हाथ, देनेवाला।—ज्ञाना-पु० वह कनरा वा मकान

जिसमें सेने और वनका सामान रखा जाय।

कर्म-पु० कर्म-श्री० फर्दवाली श्री।

कर्म-श्री० फर्दवाली काम।—पंखा-पु० छतका

पंखा।

कर्म-पु० [अ०] वह चीज जो जमीनपर विछायी जाय

(हरी, काकोल, जामिन ह०); विछाना; बरातल; कर्म

आदि कूटकर वही कौ हुई जमीन, गय।—(सं०) झाक-

पु० जमीन, भरती। सु० -से जर्मलक-भरतीसे

जाकायासक।—(सं०) जर्मल होना-भरना; दफन होना।

कर्म-वि० फलका। श्री० दे० 'कर्म'।—जुला-पु०

कर्मपर या घरमें पहननेका जूता; लपेट, चप्पल।

कर्म-पु० वह हाथ जो कर्मपर रखकर जर्जवा जाता

हो।—खलाम-पु० वह खलाम जिसमें सिर फर्के साथ

लग जाय, बहुत झुककर किया जानेवाला लगान।—

जुलका-पु० चौड़े पैदाका पुष्का।

कर्म-पु० फर्माग; आकाश।

कर्म-पु० [सं०] पैर-पौषीका गुदेदार बीजकोश; शस्य;

संतान; कर्मपरिणाम, नतीजा; बरला; कर्मसे प्राप्त होने-

वाला सुख-दुःख-रूप भोग; भ्याज; नफा; हानि; गणित-

क्रियासे प्राप्त अंक; उद्देश्य, प्रयोजन; तीर-बरछी आदिका

अग्र भाग; सखवार आदिकी धार; डाल; फाज; आर्तव;

आयफज; गिरी; कंकोल; विफला; कौरीयाका पैर; पासेपर-

की विरी।—कर्म-पु० कर्मल।—कर्म-श्री०

होतीपर।—कर्म-पु० फर्मापर क्यनेवाला महसुल।—

कर्म-श्री० वनपेर, सखेरी।—कर्म-वि० फलकी

कामना करनेवाला।—कर्म-पु० फलका मौसम।—

कर्म-पु० कुच्छमतका एक भेद जिसमें फर्माका काप

पीकर रहना होता है।—कर्म-पु० जर्मलविना; कर्म-

का पैर।—कर्म-पु० नारियलका पैर।—कर्म-श्री०

कीच-पु० अंककोश, कीटा।—कर्म-पु० फलकी

अप्राप्ति, नेराय।—कर्म-पु० प्राद्वीरिहिन-वि० फल

विफला; विद्वत्।—कर्म-वि० फल देनेवाला। पु० सुख।

—कर्म(पु०),—कर्म-वि० फल देनेवाला; जाकायासक।

—कर्म-पु० भ्याज पका करनेके लिए बरकी रुपये जाद्वि

देनेकी रस।—कर्म-वि० [हिं०] फलनेवाला; कर्मयुक्त।

—कर्म-श्री० दे० 'फलनिष्पत्ति'; अंतिम परिणाम।

—कर्म-वि० फलप्राप्तिमें विराम।—कर्म-श्री०

फलकी उत्पत्ति।—परिणति-श्री०,—परिणाम,—पाक

—पु० फलका अच्छी तरह पक जाना।—कर्म-श्री०

वे चीजे जो फल फलनेके बाद नष्ट हो जाते हैं।—कर्म-

वसावा-श्री० एक नापिक रोषा।—कर्म(किन्नु)-पु०

गर्मनाक वृक्ष।—कर्म-पु० फल बढोना।—कर्म-

पु० फलदार वृक्ष।—कर्म-पु० गाबर-शकजम आदि-

के बगकी वनस्पति।—कर्म-पु० फलकी—कर्म-श्री०

एक तरहका खजूर।—कर्म-पु० फलकी नौद।—कर्म-

पु० दे० 'फलदान'।—कर्म-श्री० अनीह-सिद्धि, सफ-

कता।—कर्म-श्री० प्रियंगु।—कर्म-श्री०,—कर्म-श्री०

श्री० [हिं०] कई तरहके फल, भेजे।—कर्म-पु०

[हिं०] फल और फूल।—कर्म(विन्नु)-वि० जिसमें

फल आ रहे हों।—कर्म(ज्),—कर्म(विन्नु)-

वि० फल भोगने या पानेवाला।—कर्म(ज्)-

वि० फलभोजी। पु० ईदर।—कर्म-श्री० कर्मफल

भोगनेका स्थान (सर्ग या नरक)।—कर्म-वि० जिसमें

फल लग रहे हों, फलोंसे भरा हुआ।—कर्म-पु० कर्म-

फल(सुख-दुःख)का भोग; कामादिका अधिकार।—कर्म-

(विन्नु)-वि० फल खानेवाला।—कर्म-श्री०

बीजकार।—कर्म-पु० नारियलका पैर।—कर्म-श्री०

अजमोदा।—कर्म-श्री० एक तरहका खजूर।—

कर्म-पु० फलप्राप्ति; वेतन; पुरस्कार; नाटकमें नायककी

उद्देश्यसिद्धिका स्थान।—कर्म-पु० तर्जुन।—कर्म-

श्री० दे० 'प्रयोजनशील लक्षणा' (सां०)।—कर्म-

वि० (सुख) जिसमें फल न लगे।—कर्म-श्री० धारमें

भरनेकी मोटी बत्ती।—कर्म-पु० तर्जुन।—कर्म-

श्री० वस्तिकर्मका एक भेद।—कर्म(विन्नु)-पु० फल

बेचनेवाला, सेवाफरोश।—कर्म-पु० जहरीले फलवाला

पैर।—कर्म-पु० फलनेवाला वृक्ष।—कर्म-पु० क-

हल।—कर्म-पु० तरकारीके काम आनेवाला फल।

शकके ९ भेदोंमेंसे एक।—कर्म-पु० नमरा।—

कर्म(किन्नु)-वि० फलयुक्त; फलामय।—कर्म-

वेरका पैर।—कर्म-श्री० सत्कर्मविशेषका फल बताने-

वाला वाक्य; ऐसे वाक्यका अर्थ।—कर्म-पु० भाग।

—कर्म-श्री० फलकी मनुचता; सफलता।—कर्म-

पु० गुरु।—कर्म-कर्मल, कर्मल, कर्मल।—कर्म-

वि० फल उत्पन्न करनेवाला।—कर्म-पु० अनीह-

सिद्धिका साधन।—कर्म-श्री० फलप्राप्ति।—कर्म-

पु० सौम्यतान्नयन संस्कार।—कर्म-पु० अनीह-

हारी-श्री० काकि।—वि० जिसमें अन्न न पका

हो।—कर्म-वि० फलदित, निष्फल।—कर्म-वि०

फलके उद्देश्यसे काम करनेवाला। सु० -आना-(पैर)

फल लगना, फलना।—कर्म-अर्थ, सत्कर्मका फल

भोगना।—कर्म-नतीजा मिळना, कियेकी समा

मिकना-१-कान्ति-कलना, कलना (कर्मका) फल-जनक होना ।

कलक-पु० [सं०] लक्ष्मीका तत्सत्, पट्टी तौबे, हाथीचों, दपती आदिका पट्ट जो लेख वा चित्रके आधारका काम दे; चौकी; जित्तक इधेकी; कल; परिणाम; काम; आर्तक; कलकका बीजकोष; लकटकी लसि; बोरीका पाट; ठाक; कल, तीरकी गोली । -बंश-पु० भास्कराचार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिष-संप्रदायी ग्रंथ । -सम्बन्ध-वि० तत्सो जैसी चौकी अंशवाला ।

कलक-पु० [अ०] आकाश; * स्वर्ग । -जगद्वा-वि० मुत्तीवतका मारा; मुफलिष, फटे हाल । -परबाज-वि० असमावपर पहुँचनेवाला । -मर्तवा, -रुक्ता-वि० ऊँचे पदपर आसीन, आधीमर्तवा । -सैर-वि० बाजुवेग-वाला (बोका) । लो० संग । -के)वीर-वि० नडा, जगठ । सु० -दूदना, -पर कलना, -पर कलना-दे० 'आसमान'में । -बाद आना-जमानेके उकट-फेर बाद आना ।

कलकमा-अ० कि० छलकना; कलकना ।

कलका-पु० कफोका, शलका ।

कलकी (किङ्क)-वि० [सं०] कलकों, तल्लोसे बना हुआ; जो डाक छिये हो । पु० चौकी; चंदन ।

कलकी-वि० आकाशीय ।

कलकः (कल्क)-अ० [सं०] कलस्वरूप, क्षतिक्रिय ।

कलक-पु० एक बुल, मौली ।

कलन-पु० [सं०] कलना; परिणाम उत्पन्न करना ।

कलना-अ० कि० (देखें) फल आना, फलजुक्त होना; फल देना, फलजनक होना; संतानवती होना; बहुतसे दानों वा फलियोंका मिश्रण आना । सु० -कलना-फलजुक्त होना; बाजबोवाला होना, छल-सीमावतुक्त होना ।

कलफंद-पु० दे० 'फरफंद' ।

कलबाद (कल्)-वि० [सं०] फलजुक्त; फल देने वा उत्पन्न करनेवाला; जिसमें नाटकका फल हो । पु० फल-वार बुल ।

कलबली-लो० [सं०] प्रियंगु । वि० लो० कलबाळी ।

कलबा, कलस-पु० [सं०] कटहल ।

कलसप्रभ-पु० [अ०] तर्कविद्या, दर्शनशास्त्र; ध्यान, विद्या ।

कलसप्रभा-पु० दर्शनविद्, दार्शनिक ।

कलहक-पु० [सं०] तक्का ।

कलही-लो० [सं०] कपास; शाल्मली ।

कल्लो-वि० [अ०] कोरें आविष्ट (व्यक्ति वा वस्तु), अशुक्ल । पु० किंग । -कल्लो-वि० अशुक्ल-अशुक्ल ।

कल्लोग-लो० छलंग; छलंगमें तै की जानेवाली दुरीत मार्गदर्शकी एक कसरत ।

कल्लोगमा-अ० कि० कूदना, छलंग गहरना ।

कल्लो-पु० [सं०] बौस ।

कल्लो-पु० [सं०] तालपत्र, सारांश ।

कल्ला-लो० [सं०] खमी; प्रियंगु; शिलिशिय ।

कलकना-सं० कि० छलंग मार्ग पर करना ।

कलकपोल-लो० [सं०] कलकी प्रामा ।

कलकल-पु० [सं०] फल आना; फल मानेका आनंद; खर-कल्लो; कलावस्तुकी बह, अवस्था जिसमें कलकी प्रसिद्धि होती है (ना०) ।

कलकल-वि० [सं०] फलोंसे भरा हुआ ।

कलकल-लो० [सं०] जंगली केला ।

कलकल्लो-पु० दे० 'अकलकल्लो' ।

कलकल-वि० [सं०] फल-मयुक्त । पु० तोता ।

कलकल-पु० [सं०] फल कलना, विशेषतः प्रसादिका ।

कलकल्लो-पु० [सं०] खिरनी; फल देनेवाला, ईश्वर; फलों-का अन्वय ।

कलकल-वि० दे० 'कल्लो' । [लो० 'कलानी']। सं० कि० फलनेका कारण वा प्रेरक होना ।

कलानी-लो० भय ।

कलानुबंध-पु० [सं०] फलों वा परिणामोंका क्रम ।

कलानुमेय-वि० [सं०] जो फलसे जाना जा सके ।

कलानुमेयी (विष्)-वि० [सं०] कलका आकांक्षी ।

कलापेक्षा-लो० [सं०] कलकी अपेक्षा, कलाज्ञा ।

कलापेत-वि० [सं०] कलहीन; अनुत्पादक ।

कलकल-पु० [सं०] कर्म-विशेषका शुभाशुभ वा शुद्ध-अशुद्ध फल ।

कलकल-पु० [सं०] लट्टे फलोंवाला पेड़; अम्कवेत; हमकी । -बंधक-पु० बंद, अनार, विषादिक, अम्कवेत और विचोराका समाहार ।

कलकल-वि० [सं०] लट्टे फलसे बसा हुआ (प्रदार्थ) । पु० हमकी आदिकी चटनी ।

कलाबोविष्ट-लो० [सं०] शींगुर ।

कलार-पु० फलाहार ।

कलाराम-पु० [सं०] फलोंका राग ।

कलावी (विष्)-वि० [सं०] कलकी कामना करनेवाला ।

कलाखेन, कलालेन-पु० [अ० 'फलीनेल' एक तरहका मुकायम कनी कपडा ।

कलासन-वि० [सं०] फलयोजी । पु० तोता ।

कलापरी (विष्)-वि० [सं०] फल काकर रहनेवाला, कलाहारी ।

कलासंग-पु० [सं०] फलके प्रति आसक्ति ।

कलासक्त-वि० [सं०] फलमें आसक्ति रखनेवाला, फल-कामी ।

कलासन-पु० [सं०] दाख, खजूर आदिसे बना हुआ आसन ।

कलाखि-पु० [सं०] नाखिखका पेड़ ।

कलाहार-पु० [सं०] फल-भूषका आहार । वि० फल खाकर रहनेवाला ।

कलाहरी (विष्)-वि० [सं०] फलाहार करनेवाला; दूध आदिसे मिश्रित, अन्नरहित (फल-पिठाई) ।

कल्लि-पु० [सं०] एक प्रकारकी मछली ।

कल्लि-वि० [सं०] फलका उपयोग करनेवाला । पु० परंत ।

कल्लि-लो० [सं०] सरपट आदिका मुकीका भाग; एक तरहकी सेम, चिन्पाणी ।

कल्लि-वि० [सं०] कला हुआ, सफा; फलीभूत । पु०

कल-कलः एक संवत्सर, वैश्व-॥ कलसिच-५० अतिशय
कलं वह अंग जो अन्तर्गतकी गतिसे सुभासुम जगद
बलदा दे ।

कलित-॥ ॥ रजसका सी ।

कलितार्थ-५० [सं०] तापय, निवेद्य ।

कलित-वि० [सं०] कलमुक्त, कल देनेवाला । ५० अर्थः
बलीनाक, रोम ।

कलिकी-॥ ॥ [सं०] मिश्रण कता; जपिनीश्यां वृद्धिः
हलायच ।

कली-॥ ॥ अन्तरे पल्ले फल जिनमें एक साथ कई दाने
या बीज होते हैं, मटर, सेम, केलाव आदि; [सं०] एक
तरकी मछली; दे० 'कलिनी' ।

कली(किन्)-वि० [सं०] कलमुक्त, कल देनेवाला; काम-
जनक । ५० वृद्धि ।

कलीकरण-५० [सं०] अनाजकी भूसे वा भूतसे अन्न
करना, मॉचना, कटना; फटना ।

कलीकृत-वि० [सं०] मॉषा या कूटा हुआ; फटकर साफ
किना हुआ ।

कलीका-५० [अ० 'कलीका'] बली; ताबीजकी बली जिसकी
भूनी प्रेतबाधाको रोगीको देते हैं; वह बली जिससे
बंदूक या तोपकी बाफकी आग देते हैं । ५०-विशाला-
भाग कर्णाया; बंदूक वा तोपकी दण्डना । -सुभावा-
ताबीज वा बंधकी भूनी देना ।

कलीकृत-वि० [सं०] कलरूपमें परिणत, कलित, संकल ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

कलीकृत-५० [सं०] एक विशेष कता ।

क्राह-खी० [अ०] सहा, समझ (समास्तोषमें) ।

क्राहहस-खी० समझाना, शिक्षा; आदेश; चेतावनी ।

क्राह-खी० फल आदिका चाहू आदिसे बंधाईमें तराखा हुआ टुकड़ा, खंड; नारंगी, चकोतरे आदिका प्राकृतिक रूपमें विभाजित अंश जो छिलकेके अंदर होता है ।

क्राहना-स० क्रि० चूर वा चानेकी झल्लावाली चीजको हाथको ठोठसे सटाये बिना मुँहमें डाल लेना, फंका मारना ।

क्राह-पु० फाँकनेकी क्रिया, फंका; धतनी चीज जितनी एक बारमें फाँकी जाय; * फाँक ।

क्राहो-खी० दे० 'फाँक'; फाँकनेकी चीज ।

क्राह, क्राहो-खी० एक तरहका साग ।

क्राह-पु० [सं०] एक तरहका कड़ा जो औषध-चूर्णको गरम पानीमें भिगोकर छान लेनेसे प्रस्तुत होता है । वि० जो आसानीसे तैयार किया गया हो ।

क्राह-पु० भाग, हिस्सा; क्रमसे बँटा हुआ भाग । -**बँदी-खी०** वह कागज जिसमें जमींदारीके हिस्सोंका ज्योरा लिखा हो ।

क्राहक-पु० [सं०] काथ, कादा ।

क्राहना-स० क्रि० बँटाना, विभाग करना ।

क्राह-पु० कोनिया ।

क्राह-पु० [सं०] पेट, उदर ।

क्राह-खी० दे० 'फाँका'; * कमर - 'फाँके सोहै गुजरती फेंटा' - भ्रामगीत ।

क्राहो-पु० भीतीका कमरमें बाँधा हुआ भाग, फेंटा ।

मु० - पकड़ना - फेंटा पकड़कर भागनेसे रोकना; किसी चीजका किसी पुरुषको भरण-पोषणके लिए जिम्मेदार ठहराना । - **बाँधना** - कमर कसना, तैयार होना ।

क्राह-खी० उछाल, छल्लाग; फंदा, जाल ।

क्राहना-अ० क्रि० उछलना, छल्लाग करना । सं० क्रि० कूदकर लौपना; * फंदेमें फाँसना ।

क्राहो-पु० फंदा ।

क्राहो-खी० गद्दा बाँधनेकी रस्ती ।

क्राहक-पु० कृपा-करकट ।

क्राहो-खी० बारीक शिर्छा; मलाईकी पतली तह; माँझ ।

क्राह-खी० पाश, फंदा; बाँस आदिका कड़ा रेशा जो कौटकी तरह चुभ जाय, किराच; मनमें चुभने-खटकने-वाली बात (चुभना, निकलना, निकालना); बाँस आदिकी पतली तीली । **मु०** - निकलना - कौटा निकलना; चिपमें चुभनेवाली बातका दूर होना ।

क्राहना-स० क्रि० फंदेमें कसना (रस्तीमें डोल); फंदेमें फंसेना; धँस-पैचमें बाँधना; बसमें, हाथमें काना ।

क्राहो-खी० रस्तीका फंदा जिससे गला छुटकर जान निकल जाय; वह टिकटिकी या फंदा जिसपर प्राणदंड पाये हुए अपराधीको लटकाते हैं; इस रीतिसे दिया जानेवाला प्राणदंड । **मु०** - **कड़ना** - फाँसी चढ़ाया जाना । - **चढ़ाया**, - **देना** - फंदेसे गला छोटकर मौतकी सजा देना । - **पकड़ना** - फाँसीकी सजा पाना । - **कड़ना** - फंदेसे गला कसना ।

क्राह-पु० [अ०] जुमाना । वि० बढिया, सुँवर ।

क्राहक-पु० [अ०] कर्म करनेवाला, क्रियाका कर्ता (ध्या०) । **खी०** [अ०] युक्तीका तार जिसपर अदरी कागज नथी किये जाते हैं; सिलसिलेवार रखे हुए कागज, मिसल; अक्षर आदिके सिलसिलेसे नथी किये हुए अंक । **मु०** - **करना** - नथी करना; मिसलमें शामिल करना ।

क्राहो-खी० फाहल होना, कटुत्व ।

क्राहव वेष-पु० [अ०] वह कलम जिसकी 'नलिका'में स्वाही भर देनेसे लिखते समय उसे बार-बार दाबातमें डुबाना पड़ता ।

क्राह-पु० [अ०] भूखा रहना, उपवास, अनाहार ।

- **कहा** - वि० फाका करनेवाला, छुपापोंकित । - **कबी-खी०** भूखी मरना, कयातार कई दिनोंतक भूख न मिटना ।

- (**ऊँ**) **मस्त** - वि० झुफलीमें भी मस्त रहने, चिता-परवाह न करनेवाला । - **मस्ती-खी०** तंगदस्तीकी हालतमें भी मस्त रहना । - **शिकनी-खी०** उपवास-भग । **मु०** - (**ऊँ**) का मारा - जो फाँके करते-करते डूबला, कमजोर हो गया हो । - **मरना** - भूखी मरना ।

क्राहतई-वि० फालता (पेंडकी) के रंगका, सुर्खीमायल, खाकी रंगका । पु० सुर्खीमायल रंग, खाकी रंग ।

क्राहता-खी० [अ०] पेंडकी, पंडुका; कुमरी । **मु०** - **डब** जाना - पकड़ा जाना; बेहोश होना ।

काग-पु० कागुनमें होनेवाला रागरंग, बीली; कागुनमें गाया जानेवाला गीत ।

कागुन-पु० माथेके बाद आनेवाला महीना जिसमें होली होती है, फाल्गुन ।

कागुनी-वि० कागुनका ।

क्राह-वि० [अ०] बदकार, दुश्चरित्र । [खी० 'फाविरा']

क्राहिल-वि० [अ०] बढ़ा हुआ, आवश्यकतासे अधिक; हिसाबसे बढ़ा या खर्चसे बढ़ा हुआ; बिदाग, गुणी ।

- **बाकी-खी०** देने-पावने या आमद-खर्चके हिसाबके बाद निकलने या बाकी रहनेवाली रकम ।

क्राहक-पु० बढ़ा दरवाजा, सिंहद्वार; तोरण; 'मवेशी-खाना, कौजीहौस; * फटकना - 'फाटक दैकर हाटक मोंगत मोरे निपट सुधारी' - सर । - **द्वार-पु०** कौजी हावसका प्रबंधक ।

क्राहक-पु० सट्टा, सट्टेका जुमा । - (**के**) **बाज़-पु०** सट्टेबाज़ ।

क्राहो-खी० [सं०] फिटकरी ।

क्राहना-अ० क्रि० दे० 'फटना' ।

क्राह-पु० फाटनेसे निकला हुआ टुकड़ा; छेनेका पानी । **क्राहना-स०** क्रि० चौरना, शिगाफ करना; टुकड़े करना; पाना, फेलाना (अंछ, मुँह); खटाई आदिके बीजसे दूधके जलीय और ठोस भागको अलग-अलग कर देना । **क्राह**

खाह-वि० फाट खानेवाला, बिगड़ल । **मु०** **क्राह खाना** - मेथिने आदिका किसीकी चौरकर खा जाना; झगलना, काटने दौटना ।

क्राहि-खी० [सं०] गुब दहीमें गुंथा हुआ सत्पू ।

क्राहिल-पु० [सं०] राब; शीरा ।

क्राहिमा-खी० [अ०] सुहम्मदकी बेटी जो अलीको ब्याही गयी, हसन-हुसैनकी माता ।

क्रासिद्धा-श्री० [अ०] भारवाः कुरानकी बहनी सूरतः पर-
मेकगत भारमाकी सहरिके छिप सूर्य फातिहा आदि पदे
धानेकी रस । -कुरावाही-श्री० फातिहा पदनेकी रस ।
क्रासिद्धा-स० कि० (र०) पुनना; † किसी कामकी शुरु
करना ।

क्रासी-वि० [अ०] कना होनेवाला, मरने-मिटनेवाला,
वाशवान् ।

क्रान्त्स-पु० [फा०] एक तरहका शमदान जिसपर बारीक
करने या कागजका प्लेन-सा बना होता है, एक
तरहका बड़ा कंदील; शीशेका गिलास जिसमें मोमबत्ती
जलाई जाती है । - (से) प्रकाशक-प्रकाशी-पु०
कागजका बना हुआ कंदील जिसमें लगे कागजके हाथी-
बोरे बजासे घूमते और उनकी छाया कंदीलके कागजपर
पकती है ।

क्राकर-पु० कूट ।

क्राफा-श्री० पोपकी बुदिया ।

क्राफुवा-पु० फलिया ।

क्राब-श्री० फन, घोसा ।

क्राबना-अ० कि० दे० 'फनना' ।

क्राबदा-पु० [अ०] लाभ, नफा; मासि; प्रयोजनकी सिद्धि;
नतीजा; गुण । - (रे) मंद-वि० लाभजनक; गुणकारी;
उपयोगी ।

क्रावर-पु० [अ०] आग; फेर । - अलार्म-पु० आग
लगनेकी सूचना अपने आप मिल जानेकी व्यवस्था । -
आर्म-पु० आशेषाक्ष, तसंचा-बंदूक आदि । - एंजिन-
पु० आग पुझानेकी कल, दमकल । - प्रिगेड-पु० आग
पुझानेवाले कर्मचारियोंका दस्ता । - मैच-पु० ईंजन या
मट्टीमें कोयला डालनेवाला या आग पुझानेवाला कर्मचारी ।

क्रावा-पु० दे० 'फावा' ।

क्राव-पु० दे० 'फाल' ।

क्रावसी-श्री० दे० 'फारिगसी' ।

क्रावना-स० कि० दे० 'फावना' ।

क्रावज-पु० दे० 'फार्म' ।

क्रावस-पु० [अ०] ईरान, पारस ।

क्रावसी-श्री० [अ०] फारसी भाषा । वि० फारसका ।
पु० फारसका रहनेवाला, ईरानी । - ब्राँ-वि० फारसी
पढ़ा हुआ । सु० - बघारना-बैनीके फारसीशानी दिखाने-
के लिए फारसी बोलना ।

क्रावा-पु० कलहा, कटी हुई फाँक, फाक; फरा ।

क्राविश-वि० [अ०] जो फरागत हो चुका हो, कार्यसे
निवृत्त, निश्चित । - प्रसी-श्री० बेबाकीकी रसीद । सु०
- होना-निवृत्त होना; शौच जाना ।

क्रावेन हाइट-पु० एक जर्मन विज्ञानविद् जिसने फारेन
हाइट थर्मामीटरका आविष्कार किया । - थर्मामीटर-पु०
थर्मामीटरके तीन भेदोंमेंसे एक जिसमें हिमांक (फ्रीजिंग
प्वाइंट) ३२° पर और कथनांक (बॉयलिंग प्वाइंट) २१२°
पर होता है ।

क्रावे-पु० [अ०] भाकति; नकशा, नमूना; संज्ञा; श्रवण
आदिका छपा हुआ नमूना; कंपोज किया और चेषमें कसा

हुआ छपनेके लिए तैयार मैटर; पुस्तक आदिका एक शर्त-
में छापा हुआ अंश, लुब्ध; बने रहनेका सेत, वास्तव
जिसमें वैज्ञानिक रंगसे लेती की जाय ।

क्राव-श्री० कटी हुई सुपारी । पु० बग; एक बगका
फासला; [सं०] हल्की नोकरीमें लगाया जानेवाला
नुकीला कोहा जिससे जमीन खुदती है; कुत्ता; एक दिव्य
या दैवी परीक्षा; माँगकी पट्टी, सीमेंट भाग; शुद्धता;
फर्माग; एक तरहका फावरा; पूजा; लडा; बरामा; शिव;
विजौरा नीबू; खरी बन्हा; जोती हुई जमीन । वि० खरी ।
- कूट-वि० जुता हुआ । पु० जुता हुआ सेत । - गुप्त-
पु० बरामा ।

क्राव-श्री० [अ०] शकुन । - (से) नेक-पु० शुभ शकुन ।
- बद्-पु० असुगुन, अपशकुन ।

फालखेला-श्री० [सं०] एक पक्षी ।

फाल्द-वि० आवश्यकतासे अधिक, फालिज; बेकार,
निकम्मा ।

फाल्सई-वि० फालसेके रंगका । पु० फालसेके रंगसे
मिलता हुआ रंग ।

फाल्सा-पु० [फा०] गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक छोटा
फल जिसके सट्टा (शर्बती) और मीठा (शकरत) दो भेद
होते हैं ।

फाल्साई-वि०, पु० दे० 'फाल्सई' ।

फाल्हास-वि०, पु० [सं०] दे० 'फाल्कूट' ।

फालिज-पु० [अ०] पक्षाघात रोग, आंख अंगका रुज हो
जाना, लकवा । - जूदा-वि० जिसे फालिज हुआ हो ।
सु० - गिरना-भारना-फालिजकी बीमारी होना ।

फाल्हा-पु० [फा०] एक तरहकी मेवई जो मैदेके बारीक
टुकड़े दूध, बेकरमें बालकर तैयार की जाती है ।

फाल्हा-पु० [फा०] खरबूजेककड़ीका सेत ।

फाल्गुन-पु० [सं०] फाल्गुनका महीना; अर्जुन; अर्जुन
वृक्ष ।

फाल्गुनानुज-पु० [सं०] वैज्र, वसंतकाल; नकुल-सहदेव ।

फाल्गुनाक-पु० [सं०] फाल्गुनका महीना ।

फाल्गुनिक-पु० [सं०] फाल्गुन मास । वि० फाल्गुनी
नक्षत्र-संबंधी; फाल्गुनकी पूर्णिमा-संबंधी ।

फाल्गुनी-श्री० [सं०] फाल्गुनकी पूर्णिमा; पूर्वा फाल्गुनी
या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र । - भव-पु० बहरपति ।

फावरा-पु० चौड़े फलकी कुराह, बेलचा । - (दे) से
दाँत-चौड़े, बढसल दाँत । सु० - बजाना-खोदकर
गिराना, डाना ।

फावरी-श्री० छोटा फावरा; काठकी कुदाल जिससे चौड़ेकी
छाद आदि हटते हैं ।

फावा-वि० [फा०] खुला हुआ; प्रकट, सरीह । - शाल्सी-
श्री० खुली गल्ली । सु० (परदा)-करना-शुभ बात
प्रकट कर देना ।

फासफरस-पु० [अ०] एक ज्वलनशील मूल तत्त्व जो
साधारण तापमानमें खुला रखनेसे धीरे-धीरे जलता रहता
और अंधेरें दीप्तियाँ दिखाई देता है ।

फासका-पु० दे० 'फासिका' ।

फासिद्-वि० [अ०] फसाद करनेवाला, खराबी, विगाह

पैदा करनेवाला; दुरा, खोटा ।
क्रासिख-वि० [अ०] जुदा करनेवाला, अंतर करनेवाला ।
क्रासिख-पु० [अ०] दूरी, अंतर ।
फाहा-पु० इन्, धी आदिमें तर की हुई चर्र वा कपड़ा; मरहम चुपकी हुई पट्टी ।
फाहिशा-खी० [अ०] दुश्चरित्र खी, पुंश्रुती ।
फिकरना-अ० कि० गीदबका बोलना ।
फिकवाना-स० कि० किसीसे फिकनेका काम करना ।
फिगाक-पु० [सं०] एक पक्षी; फिगा ।
फिगा-पु० एक चिबिया ।
फिकर-खी० दे० 'फिक' ।
फिकर-पु० [अ०] उद्देश्य-विधेयशुक्त परसमूह, बाक्य, जुमला; रीढ़की हड्डी; फरेकी बात, चकमा; झोसा ।
-बंदी-खी० हुकमती । **-(२) बाज़ा-वि०** चकमा देने-वाला, धोखेबाज । **-बाज़ी-खी०** चकमा देना, धोखे-बाजी । **मु०** -चल जाना-चकमेका काम कर जाना ।
-जुस्त करना-वि० लसे कोरे मोर्जे बात जोड़कर कहना ।
-(२) जबना-कवती, आवाजा कसना । **-ओबना-** झूठी बात बनाकर कहना । **-बसना-धोखा**, चकमा देना ।
फिकवाना-स० कि० दे० 'फिकवाना' ।
फिकार-पु० [अ०] इसलामी धर्मशास्त्र, मजहबी कानून ।
फिकैत-पु० गतका-फरी, पदा-बनेदीका खिलासी, पटेबाज ।
फिकैती-खी० गतके-पटे आदिकी कुशलता, पटेबाजी ।
फिक-खी० [अ०] सोच, चिन्ता; अदिशा; काब्य-रचनाके लिए किया जानेवाला चिन्तन; परवाह; यत्न । **-मंद्-** वि० [त्रिते किसी बातकी चिन्ता लगी हो, सोची । **-(के)-मआवा-खी०** जीविकाकी चिन्ता ।
फिगार-वि० [फा०] (समासात्म) बायल. जल्मी ('बिह-फिगार', 'सीनाफिगार') ।
फिचकुरा-पु० यूष्ठा आदिमें मुँहसे निकलनेवाला फेन, झाग ।
फिट-अ० धिक्कार, लानत, फटकार ।
फिटकरी-खी० एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्कटिककी तरह सफेद होता और दवा, रंगारंग आदिके काम आता है ।
फिटकार-खी० लानत, धिक्कार; शाप । **मु०** (मुँह वा चेहरेपर) -बरसना-चेहरेका मलिन, उतरा हुआ होना ।
फिटकरना-स० कि० धिक्कार-फटकार बताना ।
फिटकरी-खी० दे० 'फिटकरी' ।
फिटकी-खी० छींटा; कपड़ेकी डुनावटमें निकले हुए फुचरे; * फिटकरी ।
फिटन-खी० [अ० 'फैतन'] चार पहियोंकी झुली हलकी घोषा-गाड़ी ।
फिटर-पु० [अ०] 'फिट' करनेवाला, कलोंके पुरजे दुस्त करनेवाला मिस्त्री ।
फिटवा-स० कि० हटा देना, अगा देना ।
फिट-वि० दे० 'फिट्ठा' ।
फिट्ट-वि० (फटकार, अपमानसे) उतरा, खिसियाया हुआ (चेहरा) ।
फितवा-पु० [अ०] झगका-फसाह; उपद्रव; दुष्टता; एक

तरबका इन् (उठाना, बरपा करना) । **-अँवाज़ा-पर-** **वाज़-वि०** झगका उठानेवाला, फसादी । **मु०** -अगमना -मिटे हुए झगकेकी फिर उठाना ।
फितरत-खी० [अ०] प्रकृति, स्वभाव; पैदाइश; सृष्टि; बाकाकी; चाल ।
फितरत-अ० प्रकृतिसे, स्वभावतः ।
फितरती-वि० प्रकृतिगत, पैमाइशी (इस अर्थमें अब फितरी चल्ता है); खरारती, चालबाज ।
फितरी-वि० सज्ज, पैदाइश, प्रकृतिगत; प्राकृतिक ।
फितूर-पु० दे० 'फुतूर' ।
फितुरी-वि० दे० 'फुतुरी' ।
फिटवी-वि० दे० 'फितवी' ।
फिदा-वि० [अ०] मुग्ध, आसक्त; किसीपर जान देनेवाला ।
-ई-वि० प्राण निष्कावर करनेवाला । **पु०** इस्माईलिया फिरकेका अनुयायी । **मु०** -होना-आशिक होना; किसीके लिए जान देना ।
फिदा-वि० [अ०] फिदा होनेवाला; किसीके लिए जान देनेवाला । **पु०** सेवक, दास (प्रार्थना-पत्रोंमें प्रार्थकी नामके पहले लिखा जाता है) ।
फिदा-पु० दे० 'फिदा' ।
फिना-खी० वि० दे० 'फना' ।
फिनिबा-अ० खी० कालमें पवनननेका एक गहना ।
फिकरी-खी० पपकी-उड़ि गै बदनकी लाहिमा फिकरी परी अधरान-रपुराज० ।
फिरंग-पु० यूरोप, यूरोपीय; यरमीकी बीमारी । * **खी०** बिलायती तलवार-चमकती चपला न, केरत फिरंगी अट -भूषण ।
फिरंगिस्तान-पु० यूरोप ।
फिरंगी-पु० यूरोपियन । **वि०** यूरोपीय, बिलायती । **खी०** बिलायती तलवार ।
फिरंट-वि० फिरा हुआ, बिस्द; नाराज ।
फिर-अ० पीछे, अनंतर; दूसरे समय; तब; पुनः, दोबारा; इसके जल्पावा । **-फिर-अ०** बार-बार, पुनः-पुनः ।
-भी-अ० तिसपर भी, तब भी ।
फिरजीन-पु० [अ०] मिसके प्राचीन वादशाहोंकी उपाधि । **वि०** धर्मवी, सरकश । **-(ने) बेसामान-पु०** वह आदमी जो निर्धन होते हुए भी धर्मवी हो ।
फिरकना-अ० कि० फिरकना, नाचना ।
फिरक-पु० [अ०] जमात, समुदाय; जाति, संप्रदाय ।
-बंदी-खी० जमात बनाना, गरीबबंदी । **-बार-अ०** फिरके, संप्रदायके अनुसार । **-बाराना-वि०** संप्र-दायिक, संप्रदायगत ।
फिरकी-खी० चकर; फिरारी; तकलमें लगा हुआ चमरे-का टुकड़ा; माछखंभकी एक कसरत; कुश्तीका एक पैंच; भागा छपनेकी रीक । **-ई-पु०** एक तरहका ढंड । **मु०** -की तरह फिरना-एक जगह या एक हालतमें खिर न रहना ।
फिरकैर्यो-खी० चकर ।
फिरयाना-पु० यूरोप-बिलायती; अमेज ।
फिरता-वि० नापस । **पु०** नापसी; अजीकार ।

क्रिद्वीस-पु० [अ०] स्वर्ग, विरहित; उद्यान ।

क्रिद्वीस-पु० [अ०] कारसेके प्रसिद्ध महाकाम्य षाह-
नामाका रचयिता अनुक्रासिम तूरी (१३२-१०२० ई०) ।

क्रिदा-अ० कि० कमी बर, कमी उबर जाना; घुमना,
भ्रमण करना; चक्कर खाना; मंजलाकार घुमना; लौटना,
पलटना, मुकना; बदलना; मुकलना; लौटाया जाना,
फिराया जाना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना; फेरा या
चलाया जाना (छुरी फिरना); पोटा जाना । सं० कि०
(पाखाना) करना या कर मारना । फिरकर-मुककर,
पलटकर ।

क्रिदनी-खी० [फा०] पिये हुए चाबलोंकी खीर ।

क्रिदवाना-स० कि० फिराने या फेरनेका काम करना ।

क्रिदाऊ-वि० जो फिरता हो सके । जाक (माल) ।

क्रिदाक-पु० फेर, चिना; दोह ।

क्रिदाक-पु० [अ०] वियोग, जुदाई । —(ऊँ)बार-पु०
प्रियतम, प्रेमपात्रसे बिछोह ।

क्रिदाक्रिया-वि० वियोगात्मक, जिसका विषय वियोग हो ।
-अमम-खी० वह काम्य जिसमें विरहका वर्णन हो ।

क्रिदाव, क्रिदावि-खी० करियाव ।

क्रिदामा-स० कि० इधर-उधर चलना, घुमाना, भ्रमण
या सैर करना; चक्कर खिलाना; साथ छिड़े फिरना;
मोचना, लौटाना; औरका और करना; (पाखाना) करनेमें
प्रवृत्त करना ।

क्रिदार-पु० [अ०] माग जाना, पलायन करना ।

क्रिदारी-वि० मागा हुआ, पकावित (अभियुक्त इ०) ।

क्रिदास-खी० [फा०] बुझिमाना, समझदारी; मासुद्रिक ।

क्रिदि-अ० दे० 'फिर' ।

क्रिदिकी-खी० दे० 'फिरकी' ।

क्रिदिदाव-खी० दे० 'करियाव' ।

क्रिदिदावि-खी० दे० 'करियाव' ।

क्रिदिदावी-वि०, पु० दे० 'करियादी' ।

क्रिदिस्ता-पु० [फा०] देवता; मुसलमानोंके विश्वासानुसार
ज्योतिसे निर्मित एक दिव्य बोन, देवदूत; हिंदुस्तानके
मुसलमान राज्योंके प्रसिद्ध इतिहास 'तारीखे फिरिदता'-
का लेखक । -झसलत, -झू-वि० देवोपम सभावाला,
नेक, अछा । -खीरत-वि० साधुचरित, नेक । -खूरत-
वि० जो देखनेमें बहुत नेक, अछा मालूम हो । सु०-
(स्ते)का काममें कूकना-भगड़ी होना । -का युज्जर
न होना, -की दाऊ न गलना-किसीकी पहुँच न
होना । -के पर झलना-प्रवेशका साहस न होना;
युजर न होना । -दिखाई देना, -नजर आना-मौत
करीब होना । -स्तौंको झबर न होना-नितांत
गुप्त होना ।

क्रिदिह्रा-पु० एक चिबिया ।

क्रिदिहरी-खी० दे० 'फिरकी' ।

क्रिदि-पु० [अ०] दे० 'फिरका' ।

क्रिदिकौर-अ० नीरन, तुरत; खुदाकी राहपर, ईस्कर-
प्राप्त्यर्थ ।

क्रिदिक्रीकल-अ० हकीकतमें, सचमुच ।

क्रिदिक्राक-अ० तात्काल; अभी, इस समय ।

क्रिद्वी-खी० पिंडकी ।

क्रिद्व-अ० [फा०] पिङ्ग, छी (तिरकारचक्र) ।

क्रिद-वि० सारहीन; कुछ नहीं । सु०-हो जाना-बेकार
सिद्ध होना; कुछ न रह जाना ।

क्रिद्वी-वि० पीछे रह जानेवाला, काममें पिछड़ा रहने-
वाला; निकम्मा ।

क्रिद्विद्वाना-अ० कि० फिर होना; ढीला, कमजोर हो
जाना ।

क्रिद्वलन-खी० फिरलनेकी क्रिया; फिरलनेकी जगह ।

क्रिद्वलना-अ० कि० चिकनाईकी अधिकतासे पौंवाका न
टिकना, सरकना; (ला०) लुभाना, मनका झुकाव होना;
घुमना, धर्म या नीतिले झिगना । वि० फिरलनवाला ।

क्रिद्वलाना-स० कि० किसीके फिरलनेका कारण होना ।

क्रिद्वलिट-खी० फिरलनेका भाव; फिरलन; पिच्छलता ।

क्रिद्विरि-खी० [अ०] सूची, फर्द ।

क्रिद्विना-स० कि० (कपड़ा) कचारा ।

क्रि-खी० दोष, बुराई, खोट । अ० [अ०] में, बीच; मे;
प्रति, हर, पीछे । -कस-अ० प्रतिव्यक्ति, आदमी पीछे ।

-जमाना-अ० आजके जमाने, वर्तमान कालमें । -
साळ-अ० प्रतिवर्ष । -सैकदे-अ० सैकदे पीछे, प्रति-
शत ।

फ्रीका-वि० सीठा, बेमजान; जो शोख या चटकीला न हो,
हलका (रंग); कांतिहीन; * बेअसर, व्यर्थ ।

फ्रीसा-पु० [पुरा०] यूनान देशकी पतली पट्टी जो ग्रीस-
किनारीकी तरह कपड़ोंके हाथियेपर लगायी जाती है;
निवाडीकी पतली धज्जी जिससे कागज आदि बाँधने,
अंग्रेजी ढंगके जूतोंको बनने हैं ।

फ्रीफरी-खी० दे० 'फिकरी' ।

फ्रीनी-खी० दे० 'फिरनी' ।

फ्रीरोज़-वि० [फा०] विजयी; सफल; सौभाग्यशाली ।

-अंध-वि० सफल, सौभाग्यशाली । -शाह-पु० हिंदु-
स्तानके खिलजी बादशाहोंमेंसे एक जो अपने भतीजे
अलाउद्दीनके हाथों (१२९० ई०में) कातल किया गया;
तुगलक वंशका बादशाह, गयासुद्दीन तुगलकका भाई
जिसका राज्यकाल शांति और सृष्टिका था (राज्यारोहण
१३५१ ई०) ।

फ्रीरोज़ा-पु० [फा०] ननके काम आनेवाला एक कीमती
पत्थर जिसका रंग नीला या हरा होता है । -अमम-
वि० नीली आँखोंवाला ।

फ्रीरोज़ी-खी० विजय; सफलता, भाग्योदय । वि० फ्रीरोजे-
के रमका ।

फ्रीक-पु० [अ०] हाथी । -फ़ाना-पु० हाथियोंका अस्त-
बल, हस्तिशाळा । -दूद-वि० बड़े-बड़े दाँतोंवाला । पु०
हाथीदाँत । -पा-पु० एक रोग जिसमें एक या दोनों पाँव
खर जाते हैं, रूखेपद । -पाया-पु० जोड़ाई करके बनाया
हुआ मोटा खंभा । -खान-पु० हाथीखान, महावत ।

फ्रीकी-खी० पिंडकी-रौबों बहुत ज़्यादा अर फ्रीकी-प० ।

फ्रीस-खी० [अ०] शिक्षा-शुल्क; प्रवेश-शुल्क; बाबदर, बक्कल
आदिका मेहनताना ।

फ्रीसायोरस-पु० दूनानी वैज्ञानिक और दार्शनिक जो

आत्माकी अमरता और पुनर्जन्मका कायक था।

फुँकना—अ० कि० फुँका जाना, अमर होना, अलाना; नष्ट होना; व्यर्थ खर्च होना। पु० दे० 'फुंकना'।

फुँकनी—स्त्री० दे० 'फुंकनी'।

फुँकरना—अ० कि० फुंककारना, फुँकार करना।

फुँकनावा, **फुँकना**—स० कि० फुँकने या जलानेका काम करना।

फुँकार—पु० फुंककार।

फुँकारना—अ० कि० फुंककारना, नाँपका गुस्सेमें मुँहसे हवा छोड़ना।

फुँकैया—पु० फुँकनेवाला।

फुँकी—स्त्री० गोंद; बिंदी।

फुँदना—पु० सूँ, कन आदिका फूल या गुच्छा; शम्भा।

फुँदिया—स्त्री० शम्भा, फुँदना।

फुँदी—स्त्री० बिंदी 'सारी कटकलि पाठकी बिलसति फुँदी किलार'—मतिराम; गोंद।

फुँसी—स्त्री० छोटी फुँदिया।

फु—पु० [सं०] मंत्र पढ़कर फुँकनेका शब्द; तुच्छ बात।

फुआ—स्त्री० पिताकी बहन, बूआ।

फुआरारा—पु० फुआरा।

फुक—पु० [सं०] पक्षी।

फुकना—पु० मसाना, मृशायय; वही फुकनी। अ० कि० दे० 'फुँकना'।

फुकनी—स्त्री० गोंस आदिकी नली जिसके छेदमें फुँक मारकर आमको हवा देते हैं।

फुककी—स्त्री० दे० 'फोकली'।

फुचवा—पु० (दरी आदिमें) हुनाबट्टे बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुजला—पु० [अ०] बचा हुआ अंश; सीझी; मैल।

फुजूल—वि० [फा०] ज्यादा; बेकार, अनावश्यक।—**फुजूल**—वि० अनावश्यक व्यय करनेवाला, अपव्ययी।—**फुजूल**—स्त्री० अनावश्यक व्यय करना, अपव्यय।

फुट—पु० [सं०] सोंपका फन। 'वि० फटा हुआ; स्फुटित; [वि०] बिना जोड़ेका, अकेला; जो किसीके साथ या किसी श्रेणी-सिलसिलेमें न हो।—**अस**—पु० मतनेद।

फुट—पु० [अ०] पाँव, पाद; लंबाईकी एक माप जो १२ इंचकी होती है।—**नोट**—पु० बुझके नीचे दी जानेवाली टिप्पणी, पादटिप्पणी।—**पाथ**—पु० सड़कके अगल-बगलकी पटरी।—**बाछ**—पु० चमड़ेका बड़ा गेंद जिसके भीतर रबड़ी मैलीमें हवा भरी रहती है; उस गेंदसे खेला जानेवाला खेल।

फुटकर, **फुटकल**—वि० फुट, अकेला, अलग, भिन्न; जो किसी श्रेणी-सिलसिलेमें न हो; जिसमें कोई तरहकी जोड़ें हों, विविध; बोझी मात्रामें तोड़कर होनेवाली (बिक्री), खुदाई। पु० रेजगारी।

फुटका—पु० छाका, फफोका; धान आदिका ऊषा।

फुटकी—स्त्री० छोटी अंठी; दूध आदिके बसे हुए कण; गायी चूबका छीटा; एक छोटी चिबिया, फुदकी।

फुटेहरा—पु० मटर आदिका सूना हुआ दाना जिसका छिन्का फट गया हो।

फुटैल—वि० दे० 'फुटैल'।

फुह—वि० दे० 'फुट' (हिं०)।

फुहक—पु० [सं०] एक प्रकारका वस्त्र।

फुहिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकारका वस्त्र।

फुहैल—वि० जिसका जोड़ा न हो; झुंडसे अलग रहनेवाला। (जानवर); हतभार्य।

फुतकार—पु० फुंककार।

फुतर—पु० [अ०] फसाद; शरारत; घटना; कमजोरी; क्षापी।

फुतुरिया, **फुतुरी**—वि० फुदूर करनेवाला।

फुत्कर—पु० [सं०] अग्नि।

फुत्कार—पु० [सं०] दे० 'फुत्कार'।

फुत्कत—वि० [सं०] फूँका हुआ; चिछाया हुआ। पु० फूँक से बजनेवाले वाद्यकी ध्वनि; चीत्कार; दे० 'फुत्कति'।

फुत्कति—स्त्री० [सं०] दे० 'फुत्कति'।

फुदकना—अ० कि० (सेढक, छोटी चिबियों, चिबियोंके बच्चोंका) उछलते हुए चलना, झूदना; हर्षके अतिरेकमें उछलना।

फुदकी—स्त्री० एक छोटी चिबिया जो फुदकती हुई चलती है।

फुनंग—पु० दे० 'फुनगी'।

फुनकार—पु० दे० 'फुकार'।

फुनगी—स्त्री० वृक्ष या शाखाका सिरा; शाखाके अंतकी कोमल पत्तियाँ और टूटा।

फुनना—पु० फुँदना।

फुनफुनी—अ० पुनःपुनः, बार-बार—'हरि भगति बिना दुःख फुनफुनी'—कबीर।

फुनि—अ० पुनि, पुनः।

फुफुकारक—वि० [सं०] जो हाँफ रहा हो, हाँफनेवाला।

फुफुस—पु० [सं०] फेफड़ा।

फुफुई—स्त्री० साड़ी कसनेकी डोरी या साड़ीके दो छोरोंकी गोंद जो खिचो सामनेकी ओर लगाती है।

फुककाना—अ० कि० फुंककारना।

फुककार—पु० सोंपके मुँहसे हवा निकालनेकी आवाज, फुँकार।

फुककारना—अ० कि० सोंपका गुस्सेमें मुँहसे जोरसे हवा निकालना, फुँकार करना।

फुफी—स्त्री० दे० 'फूफी'।

फुफुस—पु० [सं०] दे० 'फुफुस'।

फुहू—स्त्री० दे० 'फूफी'।

फुफेरा—वि० फूँका या फूँकीके नातेका (भार्य आदि)।

फुबसी—स्त्री० साड़ीका चुना हुआ किनारा।

फुर—स्त्री० छोटी चिबियोंके उछलने होनेवाली परोंकी आवाज (फुरते उड़ जाना)। * वि० सत्य।—**फुर**—स्त्री० बार-बार होनेवाली 'फुर'की आवाज।

फुरकत—स्त्री० [अ०] विवोग, जुदार्ह।

फुरकना—स० कि० मुँहसे झरकना (कदी आदि)।

फुरसी—स्त्री० तेजी; नुस्ती; जल्दी।

फुरतीला—वि० तेज; नुस्त; फुरतीसे काम करनेवाला।

फुरवा—अ० कि० स्फुटित होना; उद्भूत होना, निकलना (शब्द); चमक पड़ना; सत्य होना; फलदायक होना;

असर करना; फफकना ।

फुरफुरावा-न० कि० इस तरह बबना कि परों या नैनोसे 'फुर-फुर' आवाज हो । स० कि० फुरेरी पिराना; पंख आदि फफकाना ।

फुरफुरी-बी० बबनेके लिए पंख फफकाना ।

फुरमाव-पु० दे० 'फरमान' ।

फुरमाना-न० स० कि० दे० 'फरमाना' ।

फुरसत-बी० [अ०] अवकाश, खाली बक्त, छुट्टी; इत-मीनाना; रोगसे मुक्ति । **मु०** -पाना-छुटकारा पाना । -से-अवकाशमें; धीरे-धीरे ।

फुरहरना-न० कि० स्फुरित होना; प्रकट होना; फरहरना; हिलना; फफक लड़ना ।

फुरहरी-बी० परों आदिकी फफकनाहट; कंप; दे० 'फुरेरी' । **मु०** -छेना-कंपना ।

फुराना-न० कि० सत्य होना, फुरना । स० कि० सत्य करना, सत्य सिद्ध करना ।

फुरेरी-बी० सीक या तिनकेके सिरेपर कपेटी हुई रई जिसपर हथ, तेल आदि चुपका जाय; कंपकी, कंपयुक्त रोमांच; फफकनेका भाव । **मु०** -छेना-कंपके साथ रोमांच होना; हिलना; सतक हो जाना ।

फुरती-बी० दे० 'फुरती' ।

फुरसत-बी० दे० 'फुरसत' ।

फुक-पु० 'फुक'का समस्तमें व्यवहृत रूप । -कारी-बी० गुलबंदीका काम, गुलकारी; एक कपड़ा जिसपर रंगीन रेशमसे फुक कपे होते हैं । -चुहरी-बी० एक छोटी चिड़िया जो फूलोंपर उका नीर उनका रस चूसा करती है । -झकी-बी० एक तरहकी आतिशबाजी जिसे जलानेपर फुक जैसी चिनगारियाँ झकती हैं; झगका लगानेवाली बात (फुकझकी छोड़ना); झगका कराने-लगानेवाली ची । -बर पु० एक कपड़ा जिसपर रेशमसे फुक बने होते हैं । -बाई-बी० दे० 'फुकबारी' । -बाकी-बी० दे० 'फुकबारी' । -बार-वि० प्रफुक, प्रमुदित । पु० रंगीन कामके बने हुए फुक-पीपे जिन्हें सजावटके लिए बरतके साथ ले जाते हैं । -बारी-बी० फूलोंका (छोट) बाग, पुष्पवाटिका । -सरा-बी० एक चिड़िया । -सुँची-बी० फुकचुहरी चिड़िया । -हारा-पु० माली ।

फुकका-पु० हलकी-पतली रौंदी, चपाती; * फफोला ।

फुककी-बी० छोटा फुकका ।

फुकफुका-वि० फुला-फुला-सा ।

फुकांग-पु० एक तरहकी मींग ।

फुकाई-बी० सल्लेकी बीमारी; बह्लका एक भेद; फुकानेकी क्रिया ।

फुकाना-स० कि० किसी चीजको हवा भरकर फैलाना; मोटा करना; चापवली करने कीसिका विभाग बढ़ाना, गर्व बढ़ाना; फूलनेका कारण होना, उपपित करना । अ० कि० फूलना ।

फुकावळ-पु० दे० 'फुकेल' ।

फुकावट-पु० दे० 'फुकावट' ।

फुकावट-बी० फुलनेकी क्रिया; फैलाव, कपार ।

फुकावा-पु० बोटी या बड़ा मीथनेकी फुंदनेवार बोटी ।

फुकिंग-पु० दे० 'सुकिंग' ।

फुकिवा-बी० छनाकार सिरेवाला काँटा; कानमें पहननेकी डोंग ।

फुक्सिकेप-पु० [अं० 'फुल्लिकेप'] एक विशेष आकारका सफेद कागज (१२^१ × २५^१ या २२^३ × १९^१) ।

फुकेरा-पु० फूलोंसे बनानी हुई छतरी ।

फुकेल-पु० सुखद्वार तेल ।

फुकेली-बी० फुकेल रखनेका बरतन ।

फुकेहरा-पु० सुत या रेशमका बना बंदनहार; फुलेरा ।

फुकीरा-पु० बड़ी पकौड़ी ।

फुकीरी-बी० बेसनकी पकौड़ी ।

फुल-वि० [स०] खिलना, हुना, विकसित; प्रसन्न । पु० फूल । -तुबरी-बी० फिटकरी । -दाम(न)-पु० एक वर्णवृत्त । -नयन-पु० एक तरहका हिरन; बड़ी आँख ।

वि० दे० 'फुलनेत्र' । -नेत्र-छोचन-वि० जिसकी आँखें हँसते खिल रही हों । -फाल-पु० फटकनेमें खूब वा छाजसे निकलनेवाली हवा ।

फुल्लन-पु० [सं०] हवासे फुलना ।

फुल्लरीक-पु० [सं०] जिला, भूभाग, सर्प ।

फुल्लि-बी० [सं०] पुष्पित होना, खिलना ।

फुली-बी० दे० 'फूली'; फुलिया; फूलके आकारका कोई गहना ।

फुबार्रा-पु० फुहारा ।

फुस-बी० बहुत पीपी, अस्फुट आवाज । -फुस-बी० बहुत पीपी, साफ सुनाई न देनेवाली आवाज; ऐसे स्वरमें कही जानेवाली बात, कानाफूसी । पु० फुफुस । **मु०** -फुस करना-सुनाई न देनेवाले स्वरमें बोलना । -से-बहुत पीपी आवाजमें, चुपकेमें ।

फुसकारना-न० कि० फुफकारना; फूँक मारना ।

फुसकी-बी० बिना आवाजके निकलनेवाली अपानवायु ।

फुसका-पु० फुचका ।

फुसफुसा-वि० जल्दी टूट जानेवाला, कमजोर ।

फुसफुसाना-अ० कि० पीपी, अस्फुट आवाजमें बोलना, फुसफुस करना ।

फुसलाना-स० कि० मीठी बातोंसे बहलाना, धुलाना देना, बहकाना ।

फुस-पु० [फा०] दे० 'जकस' । -शर-पु० जादूगर ।

फुहर-वि०, बी० दे० 'फुह' ।

फुहार-बी० नन्दी-नन्दी बूंदोंकी झर्री, हाँसी, जलकण (जबना, पबना) ।

फुहारा-पु० बारीक धार या फुहारके रूपमें पानी कपर फैलनेवाला यंत्र; हस्तसे निकलनेवाली बारीक धार ।

फुही-बी० फुहार ।

फूँक-बी० होठोंकी मिलाकर मुँहके मध्य भागसे जोरके साथ निकाली हुई हवा, दम, साँस; किसीपर मंत्रका प्रभाव डालनेके लिए मुँहसे छोड़ी हुई हवा; गींजे आदिका कस । **मु०** -निकल जाना-दम निकल जाना, मर जाना । -मारना-किसीपर फूँककी हवा छींका, फूँकना ।

-सू-बहुत कमजोर, दुबला-पतला (आदमी) ।

फूँकना-स० कि० होठोंकी मिलाकर मुँहके मध्य भागसे

हवा छोड़ना; कूँक मारना; मंत्र पढ़कर सुन्ने हवा छोड़ना; कूँककर बजाना; कूँककी हवासे प्रभावित करना; जलाना; भस्म करना; कुसता करना (शकुन्ति); बरबाद करना; फैलाना । **कु०** कूँक-छाप बाळना- उका देना, बरबाद कर देना । **कूँक-कूँककर कदम या पाँव रखना**-बहुत सावधानतासे, हर तरहके खतरोंसे बचते हुए काम करना ।

कूँका-पु० कूँक मारनेकी क्रिया; मायके बनपर लगनेवाली दवाएँ लगाकर नशेसे कूँक मारना; कूँका मारनेकी मन्त्र, फोका ।

कूँद-कौ०, कूँदा-पु० दे० 'कुँदना' । -(क)कूँदारा-वि० जिसमें कुँदना लगा हो ।

कूँस-पु० दे० 'कूँस' ।

कू-कौ० कूँकनेकी आवाज ।

कूई-कौ० कुदारा; कुँदो। **कु०** -कूई ताल भरता है-थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है ।

कूट-कौ० कूटनेकी क्रिया; एकाका उल्टा, विगाड़, विरोध । **पु०** एक तरहकी कसकी जो पकनेपर फट जाती है । **कु०** -बाळना-विगाड़, विरोध उत्पन्न करना । -**पड़ना-फूट** पैदा होना ।

कूटन-कौ० कूटकर अलग हुआ टुकड़ा; शरीरकी संधियोंमें होनेवाली पीड़ा ।

कूटना-अ० कि० चोट या धक्का खाकर टूटना; मग्न होना; फटना; लचका या सतहकी मेदकर बाहर आना, तोड़ या फोड़कर निकलना; (शब्दका मुँहसे) निकलना; खराब, निकम्मा हो जाना (ऑल, तकरार); उगना, अंकुरित होना; शास्त्रारूपमें निकलना; खिलना; अलग, विच्छिन्न होना; विच्छरना; बिपक्षसे जा मिलना; कुत्सियों, दानों आदिके रूपमें होनेवाले रोगका प्रगट होना (गरमी, कोढ़); स्वादीका रसकर कागजकी दूसरी ओर निकलना; जोशमें दर्द होना; फोका जाना (जंगलियाँ) । **कु०** कूट-कूटकर रोना-बिलख-बिलखकर रोना ।

कूटा-पु० लेतमें टूटकर गिरी हुई बालें; संधियोंमें होनेवाली पीड़ा । **वि०** कूटा हुआ; खराब, विगड़ा हुआ । -(टी) **कौड़ी-कौ०** निकम्मा कौड़ी । **कु०** -(टी)ऑल्लिका सारा-कई देठोंमेंसे बना हुआ अकेला पेड़ा, बहुत प्यारा पेड़ा । -**ऑल्लि न देख सकना**-देखकर जलना, देखना भी सक्षम न होना । -**ऑल्लि न भाला**-अति अभिय होना, तनिक भी अच्छा न लगना । -**कौड़ी (पासमें)** न होना-कुछ न होना; बिल्कुल नादार होना । -(डे) **मुँहसे न बोलना**, बात न करना-बिल्कुल ही उपेक्षा करना, एक बात भी न करना ।

कूकार-पु० [सं०] कूँक, ऊँकार; तौपका ऊँकार; सित कना; चीत्कार ।

कूकसि-कौ० [सं०] दे० 'कूकार' ।

कूका-पु० कूसी या बुकाका पति ।

कूकी-कौ० बापकी बहिन ।

कूकु-कौ० दे० 'कूकी' ।

कूद-पु० कूक ।

कूना-अ० कि० पुनित होना ।

कूक-पु० सौम्यता जननद्विरूप या कलीयावक भंग जो सुंदरता और सुकुमारताका प्रतीक बन गया है, खिली हुई कली, पुष्प; कूककी झुल्ला बेल-बूटा, आभूषण इत्यादि; पीतक आदिकी सुंदरी; बत्तीका जला हुआ अंश; स्वतः कुछका दाम; खिलीका भासिक लाल; रज; गर्मोत्पन्न; शब्दादिके बाद रहनेवाला अवि-अवशेष; सुखमार्गमें तीसरे या पाँचवें दिनका कातिहा; सार; पहली बार खींची हुई मूत्राश; तबे और रोंगेके मेरुसे प्रस्तुत एक भिन्न भाव; उटनेकी शोक वज्र । * **खी०** कूकनेका भाव, उमंग, आनंद । -**कारी-खी०** बेल-बूटे बनाना, उल्लकारी । -**गोमी-खी०** गोमीका एक भेद जिसका कूक तरकारीके रूपमें खाया जाता है । -**मरी-खी०** दे० 'कूकमरी' । -**कोक-पु०** चैत्र-शुक्ल पक्षादशीकी होनेवाला एक उत्सव । -**दान-पु०** गुहदस्ता रखनेका पात्र । -**दाद-वि०** कुलीवाला; जिसपर कूक-पत्ते या बेल-बूटे बने हों । -**शिर्ख-पु०** एक तरहका बटिया धान । -**भौस-खी०** एक तरहकी भंग । -**मली-खी०** एक वैली । -**बाळा-पु०** माजी । **वि०** कूकदार । -**बाळी-खी०** माकिन । **कु०** -**आमा-कूक** लगना । -**उतारना**, -**छोड़ना-कूक** चुनना । -**चुपचा-कूक** तोपक एकज करना । -**लड़ना-मुँहसे** मीठे शब्द निकलना । -**पड़ना-बत्तीके** मुँहपर गुह बनना । -**मेजना-कूक**के संकेत द्वारा प्रेमी-प्रेमिकाका एक-दूसरेको संदेश भेजना । -**बाळीकी सैर-महरीणी** (पुरानी दिष्टी)में होनेवाला एक साजाना मेला । -**ह्वा-बहुत** झुल्लार । -**दूँधकर खीना** या **रहना-बहुत** थोड़ा खाना, अल्पाहार होना । -**(खी०)की चार-चारके** रूपमें मुँहे हुए कूक जो पीरों आदिकी कमोंपर डाले जाते हैं । -**की छड़ी-कूक**के द्वार कपटी हुई छड़ी । -**की सेज-पुष्पशय्या**, झुल और चैनमरी स्थिति । -**की सेजपर सोना-कुल-चैनकी** जिवंदी बसर करना । -**के कटिमें तुलना-बहुत** झुल्लार होना; राजसिक झुल्ल योगना ।

कूकबिया-कौ० जूती-फाटी जो कूकबिया पाँव उभाणे चळते चरण धसे-मीरा ।

कूकना-अ० कि० (वैष-पोषमें) कूक आना, कुसमित होना; कलीका खिलना; गर्वसे हसरना; अति प्रसन्न होना; हवा भरनेसे तन जाना, फैलना; मोटा होना, सजना; ढीका, शिथिल होना (हाथ-पाँव कूकना); रुठना, नाराज होना; सुनहले प्रकाशसे युक्त होना । **कु०** -**कूककर कुप्पा** हो जाना-अत्यधिक हर्ष या गर्व होना; बहुत मोटा हो जाना । **कूकना-कूकना**-धन-धान्य और वाक-वाचोंसे सुखी होना । -**काकना-प्रसन्न** होना । **कूका-कूका** फिरना-आनंदमें मग्न होकर वा गर्वसे हसरते हुए बिचरना । **कूके न समाना-सुखी**में आपसे बाहर होना ।

कूका-पु० खीर; ऑल्लकी फूली ।

कूकी-कौ० ऑल्लकी पुतलीपर पका हुआ सफेद दाम जिससे बटि मंड हो जाती और सारी भी जाती है; एक तरहकी सखी ।

कूका-पु० सुका लण, कूस । † **खी०** कूकी ।

कूस-पु० सुखी धास जो छप्पर पोंधने, रंधन आदिके काम

भावे; जीर्ण-शीर्षं वस्तु ।

कूब-वि० भरे ढंगसे काम करनेवाला, वेष्टकर (विशेषतः की); नया, गंठा (-गाली) । **कौ०** वेष्टकर की । **पञ०** वेष्टगपन, भ्रष्टापन ।

कूबर-वि०, कौ० दे० 'कूब' ।

कूबा-पु० खंका गाछ ।

कूही-कौ० कुहार, क्षीसी ।

कूक-कौ० फेंकनेकी क्रिया ।

कूकना-स० कि० किसी चीजको हाथसे ऐसी हलकत देना कि कुछ दूर जा गिरे; जमीनपर गिराना; पटकना; उछालना; लै जाकर दूसरी जगह डालना (कूबा); डालना (कौमी, पासा); श्वर-उपर खेले देना; चलायना (तीर); सरपट दौबाना (घोड़ा); गैबाना; छोड़ना; परित्याग करना; अपम्यय करना; घुमाना, भौजना (पटा) ।

कूकरना-अ० कि० दे० 'फेंकना' ।

कूकाना-स० कि० फेंकनेका काम दूसरेसे कराना ।

कूगार-पु० दे० 'किंग' ।

कूट-कौ० दे० 'कूट'; लपेट; फेंकनेकी क्रिया । **मु०** -कसना; -बाँधना-कटिबद्ध होना । -**चरना**, -**पकड़ना** जानेसे रोकना ।

कूटना-स० कि० हाथ या उंगलियोंकी हलकतसे मिटाना (पीठी इ०); अच्छी तरह मिटाना, गन्धुमजु करना (ताछ) ।

कूटा-पु० कमरका घेरा; कमरपर लपेटा हुआ कपड़ा, कमरबंद; भीतीका वह भाग जो कमरपर लपेटा गया हो; सिरपर लपेटा हुआ कपड़ा, छोटी पगड़ी; सूती वस्त्र की छड़ी ।

कूटी-कौ० अंदरनपर लपेटा हुआ सूत ।

कूकरना-अ० कि० (सिरका) अनाश्रुत होना; गीदड़ या स्यारका चिछाना; फूट-फूटकर रौना, फेंकना ।

कूकारना-स० कि० (सिरकी) खोलना, अनाश्रुत करना ।

कूकैल-पु० फेंकनेवाला; पल्लवान ।

कूज-पु० केंची दीवारकी तुफां टोपी ।

कूट-कौ० दे० 'कूट' ।

कूटा-पु० दे० 'कूट' ।

कूटकार-पु० [सं०] गीदड़ोंका रौना ।

कूण, कूण-पु० [सं०] हाग, दुग्धुलोंका समूह । -**दुग्धवा-कौ०** दुधिया हासका एक भेद । -**धर्मा (मन्)** -वि० क्षणमंशुर । -**पिंड-पु०** दुग्धुद; निरर्क; सारहीन बात । -**मेह-पु०** प्रमेहका एक भेद । -**वाही (विह्व)** -पु० छाननेको काम आनेवाला कपड़ा ।

कूणक, कूणक-पु० [सं०] कूण; एक मिठाई, बत्तासफेनी ।

कूह-पु० फेंटा ।

कूना-कौ० [सं०] एक तरहकी पीठी ।

कूमल-वि० [सं०] दे० 'कैलिक' ।

कूना-कौ० [सं०] एक क्षुप ।

कूनाप्र-पु० [सं०] दुग्धुला ।

कूनासनि-पु० [सं०] रंज ।

कूनिका-कौ० [सं०] दे० 'कूनाका'; 'कूनी' ।

कूनिक-वि० [सं०] कूनुक, हागदार ।

कूनी-कौ० [सं०] धीमे छाना हुआ मैदेका लच्छा जिसे दूधमें भिगीकर और शक्कर मिलाकर खाते हैं, सुधाफेनी ।

कूकवा-पु० छातीके नीचे स्थित वेशीके आकारका लवण जिससे रीढ़वाले अधिकांश भागी सांस लेते हैं; कुकुस ।

कूकरी-कौ० सुस्कीसे होंठोंपर पकनेवाली पपड़ी ।

कूकरी-कौ० दे० 'कूकरी' ।

कूक-पु० [सं०] सियार; गीदड़ ।

कू-पु० [सं०] गीदड़; [हिं०] घुमाव; रास्तेका घुमाव, चक्कर; परिवर्तन, बदलना; भ्रम; विपरीतता (समझका फेर); फर्क, अंतर; उलझन; बहकावा, उपाय; मुकसान; प्रेतवापा; अदला-बदल । * **अ०** ओर, तरफ (चहुँफेर); दे० 'फिर' । -**पलटा-पु०** गोना । -**फार-पु०** उलट-फेर; चक्कर । -**बदल-पु०** तबदीली । **मु०** -**खाना-चक्कर** काटना, घुमावके रास्ते जाना । -**बैचन-सिंह** सिला लमना । -**मैं पड़ना-नुकसान** उठाना; उलझन, कठिनाईमें पड़ना । -**लंगाना-मुक्ति** लगाना ।

कूना-स० कि० घुमाना; दिशा बदलना; लौटाना; वापस लेना; बदलना; पलटना; घुमाना; भौजना (मुस्कर, पटा); क्रम बदलना; अभ्यास करना; चाल सिखानेके लिए चक्कर देना, निकालना (घोड़ा); इस वक़्तसे उस वक़्त करना; उलटना-पलटना (पात्र); जपना (माछा); पोतना, लेप करना, फिराना, धीरे-धीरे श्वर-उपर ले जाना; प्रचारित करना (ढोकी) ।

कूव-पु० [सं०] सियार; राक्षस । वि० वर्त; विज्ञ ।

कूवट-कौ० घुमाव; पंच; अंतर; इट्टे खपरैलोंको निकालकर उनकी जगह नये रखनेकी क्रिया, फेरौरी ।

कूवटा-पु० तारकी कई बार लपेटकर बनाया हुआ सोनेका छद्मा ।

कूरी-पु० लपेट; चौगिरी घुमाव; परिक्रमा, चक्कर, भौंवर; बार-बार आना-जाना, गश्त; फिर आना, पुनरागमन; (मिश्रकको) लौटा देना । -**फेरी-कौ०** उलट-पुलट; क्रम बदलना । **मु०** -**देना** -मिश्रकको बिना कुछ दिये लौटा देना; चक्कर देना ।

कूरी-अ० फिर, पुनः ।

कूरी-कौ० फेरा, चक्कर, भौंवर; गश्त; खुदाफरोशोंका लौटा बेचनेके लिए गली-कूचोंमें घूमना; रस्सीपर घैठन देनेकी चरखी । -**बाला-पु०** फेरी करने, घूम-फिरकर चीजें । बेचनेवाला । **मु०** -**पड़ना** -भौंवर होना ।

कूह-पु० [सं०] सियार ।

कूरीरी-कौ० इट्टे खपरैलोंको निकालकर उनकी जगह नये रखनेकी क्रिया ।

कूह-पु० [सं०] उच्छिष्ट, जूठन । वि० [अ०] विकल, नाकामयाव; (परिक्षामें) अनुत्तीर्ण ।

कूह-पु० [अ०] काम, कर्म; हुकमी; क्रियापद (व्या०) । -**सुतखरी-पु०** सकर्मक क्रिया । -**लाजिम-पु०** अकर्मक क्रिया ।

कूहा, कूहिका, कूही-कौ० [सं०] दे० 'कूह' (सं०) ।

कूहरिल-कौ० 'किहरिल' ।

कूसी-वि० [अ०] सुंदर; भक्कदार, जिसपर काम किया हुआ हो ।

कूज-पु० [अ०] लाभ, अर्थात् । -**(कू) धाम-पु०** धाम लोगो, जन-साधारणकी अर्थात्, लोकहित ।

कौन्नी—पु० अन्तरके दरबारका सुप्रसिद्ध विद्वान् अनुष्ठीय
कौन्नी जो अनुष्ठीयका छोटा भाई था और जिसने मन्त्र-
भारतका फारसीमें उल्फा किया।

कौन्नी—वि० [अ०] फैज पहुँचानेवाला, उदार, दरिवादि।
कौन्नी—की० उदारता, दरिवादि।

कौन्नी—पु० बंदूक, तमचे या तोपका दमग जाना; इनका एक
बार दमगना (छातार बार फैर किये)।

कौन्नी—पु० फैज, काम; खेल; नखरा, बनावट; राशि;
फैजान, विस्तार।

कौन्नी—अ० क्रि० अधिक स्थान घेरना, आकारका बढ़ना,
पसरना; बोलका फैदना, मोटा होना; अधिक दूर तक
जाना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना; बूझ होना; बिलरना,
पूरा तनना (हाथ फैलाना); मचलना; हठ करना।

कौन्नी—पु० [य०] बानी; मक्कार। वि० [हि०] कज्जलखर्च।
कौन्नी—की० [य०] चाकाकी, मक्कारी; [हि०]
कज्जलखर्च।

कौन्नी—स० क्रि० पसरना, विस्तार करना, बिछाना;
आयोजन करना; बिलरना; बढ़ाना; बोलना, तानना;
प्रचार करना; प्रसिद्ध करना; बिसावकी पूरी प्रक्रिया
दिखाना, प्रसार करना (भ्याज फैलाना); गुणा-भागकी
जर्ज-पक्काई करना।

कौन्नी—पु० लंबाई-चौड़ाई; विस्तार, प्रसार; प्रचार।

कौन्नी—की० फैजान।

कौन्नी—पु० [अ०] दंग, तर्ज; कपड़े आदिका प्रचलित दंग,
बजा; प्रथा।

कौन्नी—पु० [अ०] निर्णय, निश्चय (करना, होना)।

कौन्नी—पु० [अ०] निर्णय, निश्चय; निश्चय। सु० -
सुनाना—सुकरनेका निर्णय सुनाना।

कौन्नी—पु० तीरका पीछेकी ओरका सिरा।

कौन्नी—पु० लंबा योला चोंगा; झुंका।

कौन्नी—पु० दे० 'कुदना'।

कौन्नी—वि० पोका; निस्तार। पु० छेद, खाली जगह।

कौन्नी—की० चोंगी; फुकी; छूँटी।

कौन्नी—पु० फुजल; सीढ़ी; मूसी; नीरस पदार्थ; एक तृण,
वृक्षपुष्पी।

कौन्नी—वि० मूल्यरहित; निरर्थक; निस्तार—'अलि चलि
और और दिखावत अपनी कौन्नी बान'—सू०—का-
मुपत।—अ०—मुपसमें।

कौन्नी—पु० छिलका।

कौन्नी—की० दे० 'फौकल'।

कौन्नी—पु० गुरुद्वारा।

कौन्नी—पु० दे० 'फौकल'।

कौन्नी—वि० दे० 'फौकल'।

कौन्नी—पु० बिंदी, टीका—'कौन्नी पावक नहिं, सिंधुरक फोटा'
—विद्यापति।

कौन्नी—पु० [अ०] छायाचित्र, अस्स।—**ब्राह्म**—पु० छाया-
चित्र।—**ब्राह्म**—पु० फोटो, छायाचित्र उतारनेवाला,
अस्स।—**ब्राह्म**—की० छायाचित्र उतारनेकी कला,
अस्स।

कौन्नी—स० क्रि० तोपना, ठुकरने करना; विदीर्ण करना;

कने छिन्नके, लचका आदिकी तोपना (कोबा, नारियल);
शरीरमें जगह-जगह कोरे वा घाव पैदा कर देना; शस्त्र
निकाशना; छेद करना, सेंध लगाना (शरीर); खराब,
भंजा करना (थोड़े); बहका, फुसकाकर अपनी ओर कर
लेना (गवाह); प्रकट करना; खोल देना (मंज)।

कौन्नी—पु० शरीरमें किसी स्थानपर होनेवाला पीड़ाकारक
घोष, जिसके एक जानेपर भीतरसे पूर निकलता है, जग,
बड़ी फुंसी।

कौन्नी—की० छोटा कोबा।

कौन्नी—पु० [अ०] वैली, कोष; अंडकोष; लगान, पोत;
कमरबंद या सिरबंद (?)।—(हे) **बाह**—पु० खानाची,
तैयारीदार। सु०—अरना—लगान देना।

कौन्नी—पु० [अ०] एक यंत्र जो ध्वनिकी अंकित करता
या लक्षकी चूचियोंमें भरता और कुंजी देकर चूचियोंको
धुमानेपर पुनः उसे उसी रूपमें प्रकट कर देता है,
धामीकीन।

कौन्नी—पु० दे० 'फौह'।

कौन्नी—स० क्रि० दे० 'फौहना'।

कौन्नी—वि० [अ०] छापेखाने, कारखाने आदिमें काम
करनेवालोंका मुखिया या उनपर निगरानी रखनेवाला
कर्मचारी।

कौन्नी—पु० खंका गाला जो किसी चीजसे तर किया गया
हो, फाहा।

कौन्नी—पु० [अ०] कुहारा।

कौन्नी—अ० [अ०] ऊपर। पु० ऊँचाई; चौड़ी; श्रेष्ठता। सु०
—ले जाना—जागे बढ़ जाना।

कौन्नी—की० [अ०] सेना; जनसमूह, मजमा।—**बाह**—पु०
सेनानायक; बादशाह आदिकी सवारीमें हाथीपर अग्रे
बैठनेवाला, कोतवाल।—**दारी**—की० फौजदारका पद;
मारपीट, कडाई।—**अदालत**—की० अपराधोंका विचार,
निर्णय करनेवाली अदालत, दंड-अभ्यस्त करनेवाला न्याया-
लय।—**अक्रूर**—पु० फौजदारी अदालतका शासिक।
सु०—का बूँदत खाना—सेनाका हारना, पराजित होना।

कौन्नी—वि० फौजसे संबंध रखनेवाला। पु० सैनिक।

कौन्नी—की० [अ०] मरना, गुजर जाना; खो जाना
(होना)। सु०—वि० मृत, मरा हुआ।

कौन्नी—वि० मृत्यु-संबंधी। की० मृत्युकी ध्वनी।—**नासा**,
—रजिस्टर—पु० वह ध्वनी या रजिस्टर जिसमें श्रुतजनों-
की मृत्युतिथि और उनका नाम-पता लिखा जाता है।

कौन्नी—अ० [अ०] अभी, तुरंत, क्षणपट।

कौन्नी—वि० जल्दीका।

कौन्नी—पु० [फा०] कना और बदिना जोड़ा जिसके
द्विधारा और तेज धारवाले जोड़ा बनाये जाते हैं।—
तन—वि० बंद शरीरवाला।

कौन्नी—वि० फौजदारका बना हुआ, बहुत कना वा
मजबूत। की० बलमका डंडा।

कौन्नी—पु० दे० 'फौमारा'।

कौन्नी—पु० कांस देशका सिक्का।

कौन्नी—पु० बुरीफा एक देश जो स्पेनके उत्तरमें है।

कौन्नी—वि० कांसका। पु० कांसका रहनेवाला। की०

कांसकी भाषा, मँच ।

भ्रातृ-पु० [मं०] दीली, छोटी मासीनका बंवा कुरता जो

बन्ने और किराँ नी पहनती है ।

श्रेय-पु० [मं०] चौकटा ।

ब

ब-देवनागरी वर्णमालामें बर्णका तीसरा वर्ण । उच्चारण-
स्वान ओष्ठ ।

बंक-वि० * देवा, बक्र; † तिरछा; नीर, पराक्रमी *
विफट, दुर्गम । * ज० बक्ररूपसे, तिरछी निगाहसे ।
-नाक-को० बह नकी जिससे सुनार जुड़ाई करते समय
चिरागकी लौ फूँकते है ।

बंक-पु० [मं० 'बैक'] बह कार्यालय जो लोगोंका बर्षा
अमावस्यके रूपमें बना करता और माँगनेपर दूल्हे साथ
उन्हें बापस देता है ।

बंकट-वि० देवा, बक्र-‘बंकट ओह चपक जति लोचन’-
धुर ।

बंकराज-पु० एक तरहका साँप ।

बंका-वि० दे० ‘बंक’; बहिवा ।

बंकाई-को० बंक होनेका भाव; बँकपन ।

बंकिम-वि० देवा ।

बंकिमचंद्र बहोपाध्याय-पु० बंगालके महाम् उपन्यास-
कार (१८१८-१८९४) जिन्होंने ‘आनंदमठ’, ‘काल-
कुंडला’, ‘दुर्गेश्वरदिनी’ आदिकी रचना की । बंगला भाषा-
की सभ्यतेमें आपका बहुत बड़ा हाथ था ।

बंक्र-वि० दे० ‘बंक’ ।

बंक्रता-वि० देवापन ।

बंकेज-ज० झुट्टोंके बक ।

बंग-पु० बंगाल, बंग; * एक दबा जो ताकत बढ़ाती है;
* बाँग ।

बंगई-को० एक तरहकी कपास; शाररत, नटखटी ।

बंगाल-वि० बंगालका । को० बंगालकी भाषा, बंगभाषा ।

पु० सुजी जगहमें बना छंदर छोटा हवादार मकान; सभसे
ऊपरकी छतपर बना हुआ छोटा हवादार कमरा; बंगालका
पान ।

बंगाली-को० एक गहना जो चूड़ियोंके साथ पहना जाता
है; पानोंकी एक जाति ।

बंगसार-पु० जहाजपर चढ़नेके लिए पुल जैसा बना हुआ
चबूतरा ।

बंगारा-वि० देवा; नटखट, उपद्रवी; अज्ञान ।

बंगाल-पु० भारतका एक पूरबी प्रांत, बंग देश; एक
राग ।

बंगालिका-को० एक रागिनी ।

बंगाली-पु० बंगालका रहनेवाला, बंगदेशीय । को०
बंगला भाषा; एक रागिनी ।

बंगुरी-को० एक गहना, बंगली ।

बंक्क-पु० दे० ‘बंक’ ।

बंक्कता, बंक्कसाई-को० दे० ‘बंकता’ ।

बंक्क-पु० दे० ‘बंक’ ।

बंक्क-स० कि० उमरा । को० दे० ‘बंक’ ।

बंक्क-स० कि० उमरा ।

बंछि-वि० दे० ‘बंछित’ ।

बंछना-स० कि० बंछ करना, चाहना ।

बंछनीय-वि० दे० ‘बांछनीय’ ।

बंछित-वि० दे० ‘बांछित’ ।

बंछर-पु० खेतोंके अवशेष जमीन, बह जमीन जिसे खेत न
बना सकें, ऊसर ।

बंछारा-पु० दे० ‘बनजारा’ ।

बंछुल, बंछुल-पु० दे० ‘बंछुल’ ।

बंछा-वि० न फलनेवाला (पेड़, पौधा), बंध्य । वि०,
को० बंध्या । को० बंध्या स्त्री ।

बंछना-ज० कि० बाँटा जाना, भाग किया जाना; वितरित
होना ।

बंछवाई-को० बाँटनेकी उन्नत ।

बंछवाना-स० कि० बाँटनेका काम दूसरेसे कराना ।

बंछवारा-पु० बाँटनेका काम; विभाजन, अलगोला ।

बंछा-पु० पान आदि रखनेका कला । वि० छोटे करका ।

बंछाई-को० बाँटनेका काम; बाँटनेकी उन्नत; जमीन बंदो-
बलाकी वह रीति जिसमें मालिककी लगानके रूपमें उपज-
का नियत भाग मिले, बटाई ।

बंछाधार-वि० चौपट, सलानास (कर देना) ।

बंछाना-स० कि० बंछाना करना; अपना हिस्सा अलग
कर लेना; शायिक, छटोका होना ।

बंछान-वि० बाँटनेवाला ।

बंछेरा-पु० बाँटनेवाला ।

बंछ-पु० [मं०] छोटी गडरी, पुल्किदा; गड्ढा, पूछा ।

बंछा-पु० अरबीकी जातिका एक कंद जो तरकारीके काम
आता है; बंदी बखारी । वि० पुच्छहीन ।

बंछी-को० फतुही; बयकबंदी ।

बंछेरा, बंछेरा-पु० छाजनके रीचोरीच लगाया जानेवाला
बला जिसपर ठाकवा नोह रहता है ।

बंछेरी-को० दे० ‘बंछेरा’ ।

बंछ-पु० [फा०] बाँध, बंध; कैद, बंधन; गिरफ्त, गाँठ; अंगों-
का जोड़; जंजीर; सिला हुआ पीता जिससे अंगरखा,
अंगिया आदिके पते बाँधते हैं, तनी; कुश्तीका पंच; बुद्धि,
उपाय; पांच वा छ मिसरीके उर्दू-फारसी पक्का डुकका;
सूची, फिहरिस्त; कागजका बंधा डुकका; छात्रकी चपटी
चूरी । वि० बंधा हुआ, बंधा हुआ; कसा, जकड़ा हुआ;
भरा या पक्का हुआ; कैद; कुंशी-ताला लगा हुआ, सिला
हुआ; जो खुला न हो, जो चलता न हो; जिसकी गति,
क्रिया रुक हो; (समासके अंतमें) बाँधनेवाला (नालबंद) ।
-गोली-को० करमकला । -बंछ-पु० जोड़-जोड़,
गाँठ-गाँठ (टूटना) । -बाण-पु० कारागारका रखक,
कैद । -साक-को० बंदीगृह, कैदखाना । पु० -
बंछ डीछे कर देना-बका देना, पला कर देना ।

बंछी-को० [फा०] सेवा, बकरी; बंधन, आराधना;

नमस्कार, प्रणाम। मु० - कबूट्र होना-प्रणाम, बंदना
नमस्कार होना।

बंदना-पु० दे० 'बंदन'; * सिद्ध; रौली; बंदनवार।

बंदनवा-को० 'बंदनीवा'।

बंदनवार-पु० सुंदर पर्वी, फूलों आदिकी झालर जो मंगल
अवसरोंपर दरवाजे, मंथन आदिपर बाँधी जाती है।

बंदना-को० दे० 'बंदना'। स० कि० बंदना करना,
प्रणाम करना।

बंदनी-को० सिरपर पहननेका एक गहना, सिरबंदी। *
वि० को० बंदनीया (समाप्त)।

बंदनीमाछ-को० पैंतैक कटकनेवाली माछ।

बंदर-पु० एक खानपानी पशु जिसकी कुछ बातें मनुष्यसे
मिलती हैं और जिसमें मुक्ति कुछ विकसित होती है, मकंद,
कपि। -काछ-पु० बंदरका बाव। -बुबकी-को०
मजबूत डरानेके लिए दी जानेवाली धमकी। मु० -का
बाव-बंद बाव जो कभी उखले नहीं (बंदरका बाव जब
खलने लगता है तो वह खुजलाकर उसे छील देता है)।

बंदर-पु० [फा०] जहाजके स्कने-ठहरनेकी जगह, बंदर-
गाह। -गाह-पु० समुद्र-किनारे भेसा हुआ नगर जहाँ
जहाज ठहरते हैं, पोर्ट।

बंदरिया, बंदरी-को० मकंदी, बाजरी।

बंदर-पु० [फा०] सेबक, दास; बन्धवर्ती (बच्चा विनय
दिखानेके लिए अपने आपको कहता है)। -ए, खुदा-
पु० खुदाका बंदा (साधारण आदमीका संबोधन)। -

ए बेहाम-पु० बेपेते-श्रीकीका गुलाम। -ज़ादा-पु०
सेबकका बंदा, गुलामजादा (बच्चा नम्रतावश अपने बेटेको
कहता है)। -ज़ादी-को० सेबककी बेटे, गुलामजादी।

-निबाज़-वि० बंदेपर अनुग्रह करनेवाला (सम्मान-
सूचक संबोधन)। -निबाज़ी-को० कृपा, अनुग्रह।
-परवर-वि० बंदेका पालन करनेवाला (सम्मानसूचक
संबोधन)।

बंदार-वि० दे० 'बंदार'; पूजनीय, बंदनीय।

बंदार-पु० देवदासी।

बंदि-को० [सं०] बंधन, कैद। पु० कैदी; चारण। -छोर*
-पु० दे० 'बंदीछोर'।

बंदिस-को० [फा०] बंधनेका भाव; रोक, प्रतिबंध; गोंठ;
शम्योजनाना, रचना; उपाय, पेशबंदी; साजिश।

बंदी-को० [सं०] कैद; [हिं०] सिरका एक गहना, बंदनी;
दूकानों, कामकाज आदिका बंद रहना; [फा०] बाँधना,
बंद करना; कैद करना; बंदी; कागज। -झाना, -जर-
पु० कैदखाना। -छोर* -पु० बंधनसे छुटानेवाला। -
बान* -पु० कैदी।

बंदी (रिश्)-पु० [सं०] चारण; कैदी।

बंदूक-को० [फा०] एक प्रसिद्ध आग्नेयास्त्र जिसमें एकही-
के छुदेमें कोरेकी बंधी नली कनी होती है और उसमें
गोली भरकर बाइककी सहायतासे दागी जाती है। -ची
-पु० बंदूक चलातेवाला सिपाही। मु० -छलियाना-
मरी हुई बंदूकको छातीसे लगाकर मिथाना बंधना।
-झाण्डा-बंदूक चलाना।

बंदूकी-को० दे० 'बंदूक'।

बंदी-को० दासी, बंदी।

बंदीबन्ध-पु० [फा०] प्रबंध; इंतजाम; जमीनका प्रबंध,
खेतका जगम ठहराकर किसीकी जोतने-रोतनेके लिए देना;
जमीनकी नाप और जगम तै करनेका काम, 'सिटिजमेंट'।

-आकसर-पु० बंदीबन्धका काम करनेवाले मजदूरकेका
प्रधान अधिकारी। -हुसमरारी-पु० स्थायी बंदीबन्ध।

बंध-पु० [सं०] बंधन; बंधनेका साधन; बांध बंधनेकी
चोटी; बंजीर, बेड़ी; बाँध; कैद; गोंठ; पकनना; बाँधना;

निर्माण; व्यवस्था; संयोग; पट्टी; सामंजस्य; प्रदर्शन;
बोधका बंधन (सुझिका उलट); परिणाम; अंगन्यास;

स्नायु; शरीर; आँसुका एक रोग; रसिका कोई (सुख)
आसन; बंधक रकौ हुई वस्तु। -कदम-पु० कैद करना।

-संघ-पु० पूरी सेना (जिसमें उसके सारे अंग हैं)।

-मोचनिका, -मोचिनी-को० एक योधिनी। -स्वम-
पु० हाथी आदि बंधनेका बँटा।

बंधक-पु० [सं०] बंधने, पकड़नेवाला; रस्ती; बाँध; गिरवी;
अंगन्यास; बादा; अंग करनेवाला; बंधन; कैद; चिनिमय।

बंधकी-को० [सं०] पुंल्लि; बेघना; हस्तिनी; बंध्या की।

बंध-बुझाई-को० विवाहके अंतमें बंदनवारके पत्तेकी गोंठ
झोकेकी रस्म। इसे बन्दी रखसके पूर्व घर झोका है
और नेग माँगता है।

बंधन-वि० [सं०] बंधनेवाला; रोकनेवाला, "पर अन्ध-
कथित। पु० बाँधना; बंजीर, बेड़ी; रस्ती; पकनना; कैद;
कैदखाना; निर्माण; संयोग; रोक; कृति पहुँचाना; बँठक;

पेसी; स्नायु; पट्टी; बाँध; पुल; बाहुजोका मिश्रण; दमन।
-कारी (रिश्)-वि०, पु० बंधनेवाला; आश्रित्य करने-

वाला। -प्रवि-को० पट्टीकी गोंठ; कौंस; पशुजोकी
बंधनेकी रस्ती। -पाखक, -रक्षी (रिश्)-पु० कारा-

गारका रक्षक, जेकर। -इज्जु-को० बंधनेकी रस्ती।
-बैस्म (न)-पु० कारागार। -स्वम-पु० हाथी आदि

बंधनेका बँटा। -ख-पु० कैदी। -खान-पु० तबेला,
अलखल।

बंधना-अ० कि० बाँधा जाना, कसा-जकसा, कपेटा जाना;
कैद होना; मुच्य होना; फँसना; गँठना; पारबंद होना;
निश्चित होना; मोरचा नियत होना। पु० बंधन; बंधनेका
साधन (रस्ती, बोर आदि); * दे० 'बंधना'।

बंधगागर-पु० [सं०] कारागार।

बंधगालख-पु० [सं०] कारागार।

बंधवि-को० बंधन, बाँधने, फँसानेवाली चीज।

बंधनिक-पु० [सं०] जेकर।

बंधनी-को० [सं०] शरीरके संधि-स्थानोंकी बंधनेवाली
नसे; बन्धन, बाँधनेका साधन।

बंधनीय-पु० [सं०] बाँध। वि० बाँधने योग्य; रोकने
योग्य।

बंधपिता(न)-वि०, पु० [सं०] बाँधनेवाला।

बंधव-पु० दे० 'बंधव'।

बंधवाना-स० कि० बाँधनेका काम दूसरेसे कराना।

बंधाकि-पु० बंधाड़।

बंधाव-पु० बंधा हुआ क्रम, परिपाटी; दस्तूरी; बाँध;
तालका सम।

वैद्याना-सं० क्रि० बॉपनेका काम दूसरेसे कराना; बापन कराना; कैद कराना।

वैद्याना-पु० नावमें वह जगह जहाँ रस्कर आनेवाला पानी जमा होता है।

वैद्याना-खी० तानेकी सौधी बॉपनेकी बोटी।

वैद्याना-वि० [सं०] बौधा हुआ; जो कैद किया गया हो।

वैद्याना-पु० [सं०] कामदेव; शरीरपरका तिलक; चमड़ेका पंख।

वैद्याना-खी० छोटा बॉब या सेंक-लेत भर गया तो एक ओरसे वैद्याना काटकर चाकरू पानी निकाल दिया-कृप०।

वैद्याना-खी० वैधी व्यवस्था, निश्चित या नियमित प्रबंध; बचिब।

वैद्याना(विद्यु)-वि० [सं०] बॉपने, एकदनेवाला (समासमें व्यवहृत, -मत्स्यवंधी, द्युवंधी)।

वैद्याना-पु० [सं०] स्वजन, आत्मीय, भाति, समीप; भाई; मित्र; पति; पिता; वंशुजीव नामक फूल; संबंध। -काम-वि० भाई-बंध, स्वजन, संबंधियोंसे स्नेह रखनेवाला।

-कृत्य-पु० संबंधीका कर्तव्य। -जग-पु० आत्मीय, निकट संबंधियोंकी समष्टि, भाई-बंध। -जीव, -जीवक-पु० गुरुदुपहरिया। -जीवी(विद्यु)-पु० एक तरहका लाल। -द्वय-वि० संबंधियों द्वारा परिलक्ष। -द्वय-पु० विवाहके समय कन्याकी संबंधियोंसे मिला हुआ वन।

-बोधक-पु० स्वजन-संबंधी, भाई-बंध। -आद्य-पु० वंशुता, भाईचारा। -बर्ण-पु० भाई-बंध, वंशुजन।

-हीन-वि० जिसका कोई अपना न हो, अस्वहाय।

वैद्याना, वैद्याना-पु० कैदी।

वैद्याना-पु० [सं०] दे० 'वंशु-जीव'; जारज संतान।

वैद्याना, वैद्यानी-खी० [सं०] व्यवसायिणी खी।

वैद्याना-खी० [सं०] रिश्ता, संबंध; भाईचारा; वंशुवर्ग।

वैद्याना-पु० [सं०] भाईचारा, संबंध; स्नेह।

वैद्याना-खी० [सं०] पुंशकी खी।

वैद्याना(मत्स्य)-वि० [सं०] जिसके मित्र और संबंधी हों।

वैद्याना-पु० [सं०] मुकुट; गुरुदुपहरिया; भग; ईंस; बगला; खली। वि० बहारा; झुका हुआ, बक्र; चढ़ाव-उतारवाला; ऊंचा-नीचा; हानिकारक; छुदर।

वैद्याना-खी० [सं०] कुलटा; वेध्या।

वैद्याना-पु० [सं०] कुलटाका पुत्र; वेध्या पुत्र; वेध्याका दहल; गुरुदुपहरिया। वि० झुका हुआ, बक्र; छुदर, मनोहर।

वैद्याना-पु० [सं०] गुरुदुपहरिया।

वैद्याना-पु० [सं०] दे० 'वंशु'।

वैद्याना-पु० [सं०] छेद। वि० दे० 'वंशु'।

वैद्याना-पु० [सं०] दे० 'वंशु'।

वैद्याना-पु० वंधाना प्रतिबंध; संतान।

वैद्याना-वि० [सं०] बॉपने योग्य, बंधनीय; निर्माणके योग्य; बॉपन न करनेवाला (दृष्टादि); बंधित (समासात्तमें)।

-फल-वि० न करनेवाला, फलहीन।

वैद्याना-खी० [सं०] बौधा खी या माघ; बौधिका एक रोग; एक गंधद्रव्य। -कनईटी-कनई कनई। -समय, -पुत्र, -सुत-पु० बौधिका बेटा, भलीक, अनजोनी बात,

वह जिसका व्यवस्था संभव न हो।

वैद्याना-खी० म्युनिसिपलिटिकी ओरसे बना हुआ वह पाखाना जो सर्वसाधारणके काम जाता है।

वैद्याना-पु० बंधा; 'बन्ध-बन्ध' अर्थ। * खी० गंधकार-बंधा ही मैं मरि गया बाहर हुई न बंध-साखी।

वैद्याना-पु० पानीकी कल; पानी बगानेका नल; सीता।

वैद्याना-अ० क्रि० गाय-बैलका नल।

वैद्याना-पु० चंद पीनेकी बॉसकी नली।

वैद्याना-पु० बंध, कुल; बॉस; * बॉसरी। -कारक-पु० बॉसरी। -छोषव-पु० दे० 'वंशकोवन'।

वैद्याना-खी० दे० 'वंसी'।

वैद्याना-खी० वह स्थान जहाँ बॉसकी बहुत-सी कीठियाँ हैं।

वैद्याना-खी० बॉसरी; मछली फँसानेका झंटा; विष्णु, कृष्ण-दिके चरणविह। -धर-पु० कृष्ण।

वैद्याना, वैसोर-पु० बॉसके ठीकरे भादि बनानेवाली एक जाति, बरकार।

वैद्याना-खी० दे० 'बहोनी'।

वैद्याना(भय)-खी० [सं०] प्रायुर्ब, आधिक्य।

वैद्याना-पु० दे० 'बहोनी'।

वैद्याना-खी० आस्तान।

वैद्याना-खी० दे० 'बहोनी'।

वैद्याना-खी० वरुण; जल; पट; समुद्र; दुनना; ताना; अग; गंधक। अ० [फा०] साथ, से; लिए, बास्ते; पर (दिन-दिन)। -छुद-अ० अपनेसे, -आपको। -छुदनी-अ० अच्छी तरह, भली भाँति, सम्यक् रीतिमें। -छेद-अ० कुशलपूर्वक, अच्छी तरह, मलाईसे। -छेदियत, -छेदनी-अ० सेरियतके साथ, कुशलपूर्वक। -तीर-अ० विना, सिवा। -ज्ञा-वि० जो अपनी जगहपर हो, ठीक, उचित।

-आद्य-अ० (-के) स्थानपर, वरले। -विस्त-अ० दे० 'वजिसह'। -विस्तह-अ० दृढ़, ठीक ठीक; कुल; ज्योका लों। -हुज-अ० सिवा, बगैर, (-को) छोड़कर। -तीर-अ० (-के) तरीकेपर; द्वारा, मारफत। -द्वस्त-अ० (-के) हाथसे, द्वारा, मारफत। -द्वस्त-अ० साधारण

अम्बासके अनुसार, यथानियम; यथापूर्व, पहलेकी तरह। -दौलत-अ० (-के) सत्तारे, द्वारा; (-को) रूपसे; (-के) कारण। -नास-अ० (-के) नाममें, नामपर; (-के) प्रति, विरुद्ध (मुकदमेंमें-रखनी सिव बनाम रामधनी)। -निस्वत-अ० अपेक्षा, मुकाबलेमें। -मुका-बका-अ० (-के) मुकाबलेमें, तुलनामें। -मुसिकह-अ० कठिनाईसे, मुसिकलेसे। -सूजिब-अ० (-के) अनुसार, मुताबिक। -रंग-अ० (-के) सत्ता, मानिद। -राह-अ० (-को) राहसे; (-के) तौरपर; दे० क्रममें। -सर्वे कि-अ० इस कर्तसे कि, अगर। -सख-अ० (-के) कारण। -सूरत-अ० सूरतमें, स्थितिमें, बहालत।

-कुष-अ० आजासे, आवेशानुसार। -हैसियत-अ० (-के) रूपमें, माते; (-को) स्थितिमें।

वैद्याना-पु० वैर, शत्रुता; † वैर। वि० बहारा, वधिर।

वैद्याना-पु० दे० 'वीर'।

वक्रा-वि० दे० 'वाक्का' ।

वक्रावा-अ० कि० पयस्व होना, उन्मत्त होना ।

वक्र-पु० [सं०] वक्रता; वक्रक; ठग; ढोंगी; कुचेर; नीमके हाथों मारा गया एक राक्षस; कृष्णके हाथों मारा गया एक राक्षस; एक कवि; एक पुष्पवृक्ष, अमल; वक्रवर्ण ।

* वि० वक्रते जैसा सकेर । -वक्रव-पु० वृक्षविशेष ।

-वक्रा-पु० दे० 'वक्रवर्दन' । -वक्र-वि० ढोंग करने वाला । -विचित्रा-स्त्री० एक तरहकी मछली । -विष्ट-पु० भीम; कृष्ण । -वृष्ट-पु० एक प्रकारका गंधद्रव्य ।

-व्याज-पु० वगैरे जैसी ध्यानमग्न होनेकी शिक्षाक मुद्रा, साधुताका ढोंग । -व्यानी(निवृ)-वि० वगल-अमल, वक्रध्यान कमानेवाला । -निवृष्ट-पु० कृष्ण; भीम । -पंचक-पु० कापिक-शुद्ध एकादशीसे पूर्णिमा तकके पाँच दिन । -मौन-पु० वक्रध्यान । वि० वक्र-ध्यानी । -बन्ध-पु० एक आयुर्वेदोक्त वन जो अर्क आदि खींचनेके काम आता है । -रिष्ट-पु० भीम । -वृष्टि-वि० वगलामगत, ज्ञान-ध्यानका ढोंग कर लोगोंको ठगने-वाला । स्त्री० वगलामगत होनेका भाव, पाखंड । -व्रत-वक्र-व्रती(विष्ट)-वि० दे० 'वक्रवृत्ति' ।

वक्र-स्त्री० वक्रनेकी किया, वक्रबात । -झक, -वक्र-स्त्री० वक्रबात, बेकार बात । -बाद्-स्त्री० निरर्थक बातों, वक्रबात । -बादी-वि० वक्रवाद करनेवाला, वकी ।

-बास्-स्त्री० बेकार बात जो लगातार कुछ देरतक कहा जाय, वक्रवक्ता; वक्रनेकी किया । -बासी-वि० वक्रवाद करनेवाला ।

वक्रा-पु० वाक्, वाणी, वाक्य, बोल । मु०-फटना-मुँहसे आवाज या बोल निकलना-'क्या कहूँ, वक्र नहीं फटता'-कृ० ।

वक्रा-पु० दे० 'वक्रुचा' ।

वक्रची-स्त्री० एक मछली; दे० 'वक्रुची' ।

वक्रतर-पु० [फा०] जिरह, लोहेके आलका बना हुआ कवच । -पोषा-वि० जो वक्रतर परने हो, कवचधारी ।

वक्रता, वक्रतार-वि०, पु० दे० 'वक्रा' ।

वक्रना-स० कि० बोलना, मुँहसे निकालना (शालियाँ) ।

अ० कि० बबबबना, वक्रबास करना । मु०-झकना-बबबबना, गुस्तेमें बोलना, बिगड़ना ।

वक्र-पु० [अ०] गाय, बैल; कुरानकी एक धरत । -ईष्ट-स्त्री० सुसज्जमानोंका एक त्योहार जिस दिन ईश्वरके प्रीत्यर्थ पशुबलि करना फर्ज माना जाता है । -कसाव-पु० चिक, कसाई ।

वक्रता-अ० कि० अपना दोष, अपराध स्वीकार करना; बबबबना ।

वक्रव-पु० [अ० 'वक्रव'] गौंद आदिसे कसा किया हुआ कपडा जो कपड़ोंके काकर, आस्तीन आदिमें कसाई कानेके लिए दिया जाता है ।

वक्रवाता-स० कि० किसीसे दोष-अपराध स्वीकार करना ।

वक्रा-पु० एक प्रसिद्ध पाल्पू चीपावा, छग । [स्त्री० 'वक्रती' ।] मु०-(रे)की माँ कबलक ज़ेर मनाबेगी-दोषी, अपराधी कलकत बच सकता है ?

वक्ररी-स्त्री० दे० 'वक्ररि' ।

वक्ररस-पु० [अ० 'वक्ररस'] कोरे, पीतल आदिका चमकीर छछा जिससे ससने आदिको रँगाये हैं, वक्ररसा ।

वक्रर-पु० छिन्का; छक ।

वक्रवाना-स० कि० किसीकी वक्रनेमें प्रवृत्त करना ।

वक्रस-पु० [अ० 'वक्रस'] कपड़े आदि रखनेका छोटा संदूक; गहने आदि रखनेका बक्का ।

वक्रसना-स० कि० दे० 'वक्रसना' ।

वक्रसवाना, वक्रसाना-स० कि० दे० 'वक्रसवाना' ।

वक्रसीस-स्त्री० दे० 'वक्रसीस' ।

वक्रसुधा, वक्रसुधा-पु० दे० 'वक्रसुधा' ।

वक्रा-स्त्री० [अ०] बाकी रहना, बना रहना, जीवित रहना ।

वक्राव-पु० दे० 'वक्रावन' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

वक्राव-स्त्री० दे० 'वक्रावली' ।

जैर अपनी कपटवृत्ति के लिए प्रसिद्ध है, वह । [खी० 'बगली']-भगवत्-वि० साधुताका जोग कर दुविधाको उगनेवाला, पाखंडी ।

बगला, बगलासुखी-खी० दे० 'बगल' ।

बगलियाना-अ० कि० बगल से होकर जाना, अलग हट कर जाना । स० कि० अलग करना; बगलमें करना ।

बगली-वि० [फा०] बगलका, एक ओरका । खी० अंगरेजे आदिमें कपड़े नीचे लगावा जानेवाला टुकड़ा; वह वैसी जिसमें दूनी सुई, तागा रखते हैं; बगलमें रखनेका तकिया; दरवाजेकी बगलमें मारी जानेवाली सेब; मुगदरकी एक कसरत । -बूँसा-पु० बगल से भारा जानेवाला बूँसा; छिपकर किया जानेवाला बार; दोस्त बनकर दुश्मनी करनेवाला । -दौंग-खी० कुपतीका एक पेंच । -बाँह-खी० एक तरहकी कसरत । -कूँगीट-पु० कुपतीका एक पेंच ।

बगलूदी-खी० एक चिड़िया ।

बगलूही-वि० तिरछा । [खी० 'बगलूही'] ।

बगलना-स० कि० दे० 'बल्लना' ।

बगल-पु० जामा; बाग; बगल ।

बगलना-स० कि० बुमाना-फिराना; सैर करना । अ० कि० भागना, दौड़ना; बूमना-फिरना ।

बगलरा-पु० गार्थीको गोपनेकी जगह ।

बगलना-स० कि० दे० 'बगराना' ।

बगलवत्त-खी० [अ०] बागी होना; राज-विद्रोह; विप्लव; आतंकता, बदकमली । सु०-का बड़ा डडाना वा बुलंद करना-विद्रोह करना, विद्रोहकी घोषणा करना ।

बगिया-खी० छोटा बाग, बाड़िका ।

बगीचा-पु० बाग; छोटा बाग ।

बगीची-खी० छोटा बाग ।

बगुला-पु० दे० 'बगल' । -भगवत्-वि० दे० 'बगला-भगवत्' ।

बगूरा-पु० दे० 'बगू' ।

बगूला-पु० [फा०] नंबरकी तरह बूमती हुई हवा, बगदर ।

बगेरी-खी० दे० 'बगेरी' ।

बगेदना-स० कि० धक्का देकर गिरा देना, हटा देना ।

बगेरी-खी० गौरैयासे मिली-जुलती एक छोटी चिड़िया, भरद्वाज ।

बगीचा-पु० दे० 'बगीचा' ।

बगल, बगल-बाग, जगाम, बला ।

बगरी-खी० दे० 'बगी' ।

बगरी-खी० चार पहियेकी घोड़ागाड़ी, जोड़ी ।

बगबंद-पु० दे० 'बागबंद' ।

बग-'बाग'का समासमें जानेवाला लज्जु रूप । -छाछा-पु० दे० 'बागबंद' । -बगला-पु० उँगलीमें पहननेका एक हथियार जिसमें बाणके नखकी शकलके काँटे निकले होते हैं; शेरपंखा; बघोकी पहनानेका एक गहना । -बगल-पु० दे० 'बगलना' । -बगलियाँ-खी० दे० 'बगलना' । -बार-पु० बाणकी मूँछका भाग ।

बगला-पु० एक गहना जिसमें बाणके नख लगे होते हैं ।

बगलना-पु० दे० 'बगू' ।

बगल-पु० बगलनेकी किया; वह चीज या वस्तुका जो बगलनेके काममें कामा जाय, छोटा; बगलकी गंध ।

बगलना-स० कि० हौग, जोरा, व्याज आदि चीजें फल-फलाकर दाक, तरकारी आदिमें बाकना, छौंकना, तपक देना। पांखिल दिखानेके लिए किसी विषयकी चर्चा करना; छोटना (विदात बगलना) ।

बगूरा-पु० दे० 'बगू' ।

बगेरा-पु० लकड़बग्घा ।

बगेलखंड-पु० मध्यभारतका एक प्रदेश जिसमें रीवा, मैहर आदि रियासतें थीं ।

बगेलखंडी-पु० बगेलखंडका रहनेवाला । खी० बगेलखंडकी बोली ।

बग-खी० एक घोषा जिसकी जड़ दवाके काममें आती है ।

* पु० दे० 'बचन' ।

बगका-पु० आबू, लौकी आदिका पतला चिपड़ा टुकड़ा जिसपर बेसन लपेटकर बी वा लेकमें लकते हैं ।

बगकाना-वि० बघोके कायक; बघनेकी नापका, छोटा बघो जैसी (-भारत) । [खी० 'बगकानी'] ।

बगल-खी० बचनेका भाव बचाव; जो खर्चमें बच जाय, बची हुई चीज, रकम; काम, नफा ।

बचन-पु० दे० 'बचन' ।

बचना-अ० कि० बाली रहना, खर्चसे बचरना; रक्षा, बचाव होना (खतर, विपत्त, सांघातिक रोग आदिसे); प्राण-रक्षा होना; अलग रहना, परहेज करना । * स० कि० बोलना, कहना ।

बकपन-पु० लकड़पन, बालकपन ।

बकलैया-पु० बचानेवाला, रक्षक ।

बगला-पु० दे० 'बग' ।

बगाना-स० कि० रक्षा करना; बाली रखना, खर्च न होने देना; अलग रखना; छिपाना ।

बगल-पु० बचनेका भाव, रक्षा; आत्मरक्षा; सफाई (अभियोगसे); बचानेका भाव ।

बग-पु० नवजात शिशु; शिशु; बत्त, लकड़ा । वि० कमउम्र, नादान; अनुभवहीन । -कहा-वि० खी० बहुत बच्चे जननेवाली, बहुप्रसवा (खी०) । -कहरी-खी० बार-बार बच्चे देना । -हाल-पु० गर्भाशय । -हानी-खी० दे० 'बगलाना' । -हाल-वि० लौटेबाज । -(कच्चे)-

कच्चे-पु० बाक-बच्चे, छोटे बच्चे । -बाकी-खी० वह खी जिसकी गोदमें बच्चा हो । सु०-देखा-गाय-मैस आदिका बच्चा जनना । -निकलना-अंशसे बच्चा बाहर जाना । -(खी०)का लेक-बहुत आसन काम ।

बगी-खी० पावजेका गुँवर; बगलाकी लीछिम रूप ।

बगल-पु० दे० 'बत्त'; डाक; बल, सीमा ।

बगल-वि० दे० 'बत्तल' ।

बगल-पु० दे० 'बग' ।

बगल-पु० दे० 'बाग'; 'बगल' ।

बगल-पु० बगल । खी० बच । -बाग-पु० एक स्थावर विष ।

बगल-पु० गायका बग ।

बगल-पु० दे० 'बगल' ।

बटाक—वि० बका, ऊँचा ।

बटाखियन—पु० [अं०] पैरल सेनाका एक विभाग जिसमें कई कंपनी होती हैं ।

बटाखी—खी० बटखीका एक जोहार, रस्खानी ।

बटिका—खी० दे० 'बटिका' ।

बटिया—खी० छोटा, गोल, चिकना पत्थर (शास्त्रग्राम्भी बटिया); छोटा बट्टा, लोहिया; * मार्ग, रास्ता; † बँटाई, बँटैया, जमीनकी वह व्यवस्था जिसमें माछिककी जगानके रूपमें पैदावारका नियत भाग मिले ।

बटी—खी० गोली, पटी; एक पकवान, बकी; * बाटिका ।

बट्ट—पु० दे० 'बट्ट' ।

बट्टा—पु० छोटा खानेदार पैला जो मुँहपर लगी डोर खींचनेसे खुलता-बंद होता है; † बड़ी बटलोई ।

बट्टई—खी० छोटी बटलोई ।

बट्टक—पु० दे० 'बट्टक'; लवण ।

बट्टरना—अ० क्रि० इकट्ठा होना; सिमटना ।

बट्टका—पु० चावल आदि पकानेका बड़े मुँहका पात्र ।

बट्टकी—खी० छोटा बट्टका ।

बट्टा—पु० दे० 'बट्टा'; * एक तरहका मास ।

बटेर—खी० तीतरसे मिलती-जुलती एक चिकिया जो अक्सर लकानेके शौकके लिए पाली जाती है । —बाज़—पु० बटेर पालने, लकानेवाला । —बाज़ी—खी० बटेर पालना, लकाना; इसका व्यवसाय ।

बटोर—पु० आदमियोंका जमाव; किसी खास कामके लिए बहुतसे लोगोंका जमा होना ।

बटोरन—खी० झाबने-बुहारनेसे इकट्ठा होनेवाला कूड़ा; झाब-बटोरकर लगाया हुआ बल्लुओंका ढेर; बटोरकर एकत्र किये जानेवाले खेतमें पड़े दाने ।

बटोरना—स० क्रि० समेटना; इकट्ठा करना, जमा करना; बिलारी हुई चीजोंकी इकट्ठा करना, चुनना ।

बटोही—पु० पछिका, राही ।

बट्ट—पु० गोला, बटा; गेंद; शिकन; पैठन; बाट ।

बट्टा—पु० वह रकम जो रुपये, नोट, हुकी आदि मुनाने, बदलने या बेचनेपर उसके मूल्यमेंसे काट ली जाय, दस्तूरी, दहाली; कमी; बाटा, नुकसान । —ख़ाता—पु० हानि या घाटेका खाता; वह खाता जिसमें दूबी हुई रकमें लिखी जायें । **मु०** —**खगना**—बट्टेमें चलना, पूरा मूल्य न मिलना; (इज्जत, नाम आदिमें बट्टा लगना) कमी होना, दाग लगना । —**सहना**—घाटा, नुकसान उठाना ।

बट्टा—पु० गोल, लमोतरा पत्थर जिससे पीसने-कूटनेका काम लिया जाय, लोड़ा; पत्थरका चिकना, छोटा गोला; राजीगरका प्लाहा; वह गोला जिसे राजीगर कमानपर चलाते हैं; पान, रत्न आदि रखनेका डिब्बा । —**डाक**—वि० खूब चौरस और चिकना । —(**हे**)**बाज़**—पु० बाजीगर, नजरबंदीके खेल करनेवाला । वि० धूर्त, चालाक ।

बही—खी० छोटा बट्टा; (साबुन आदिकी) टिकिया; शुष्की छोटी मेथी ।

बट्ट—पु० बजरबट्ट; बाटीदार चारखाना; * बटा, गोला—'नामरी या जगमें वे उछलत, जेहि विधि नटके बट्ट'—नामरीदास ।

बईगा—पु० बैरे ।

बब—पु० बरगद, बट । —**कोठा**—**बट्टा**—पु० बरगदका गोदा ।

बब—'बका'का समासमें व्यवहृत रूप । —**दँता**—वि० बड़े दँतीवाला । —**हुसा**—पु० लकी पूँछवाला हाथी । —**पेटा**—वि० बड़े पेटवाला । —**बेरी**—खी० झरबेरी (?) । —**बोल**—**बोझ**—वि० डींग मारनेवाला, बड़े बोल बोलनेवाला । —**भाग**—वि० दे० 'बकभागी' । —**भागी**—वि० बड़े भाग्यवाला, सुशानसीध । —**मुँहा**—वि० बड़े, अधिक लंबे मुँहवाला; बकबोला ।

बब—खी० बकवाद, डींग । —**बब**—खी० बकब करना, व्यर्थ बकते जाना । **मु०** —**मारना**—डींग हड़कना ।

बबप्पन—पु० बफ़ा, महफ़ा, गौरव ।

बबबकाना—अ० क्रि० बकबक करना; डींग मारना ।

बबबबिया—वि० बबबकानेवाला ।

बबरा—वि० बका । [खी० 'बकरी']

बबराना—अ० क्रि० दे० 'बराना' ।

बबवा—खी० [सं०] घोड़ी; अथिनी नक्षत्र; दाली; बकभागिन ।

—**कूत**—**हुत**—पु० वह दास जो दासीके साथ ब्याह करनेमें दास बना हो । —**मुख**—पु० बकभासि; शिब; एक प्राचीन जनपद । —**सुख**—पु० अथिनीजुमार ।

बटबागि—खी० दे० 'बटबागि' ।

बटबागि—खी० [सं०] समुद्रस्थित काठानल ।

बबबालन—पु० [सं०] बकभासि ।

बबबार—वि० बका ।

बबबारी—खी० प्रशंसा; बबप्पन ।

बबहंस—पु० एक राग । —**सारंग**—पु० एक राग ।

बबहंसिका—खी० एक रागिनी ।

बबहवा—पु० एक तरहका धान । वि० बका ।

बबहर—**बबहर**—पु० एक खट-मिट्टा फल; उसका पेड़ ।

बबहार—पु० ब्याहके बाद कन्यापक्षकी ओरसे होनेवाली ब्रातियोंकी ज्योना ।

बका—वि० जिसका बोल, फैलाव अधिक हो; लंबा-चौड़ा; छोटेका उलटा; उम्रमें अधिक; पद, प्रतिष्ठा, अधिकार आदिमें अधिक; भारी महशुसवाला; कठिन; विस्तार, परिमाणवाला (हतना, कितना बका); ऊँचा, विशाल, (बड़े हौसलेका); अधिक, बहुत (बका भारी) । [खी० 'बकी'] । पु० जुजुर्वा, गुजजन; बका आदमी, अधिक शक्ति, प्रभाववाला पुरुष; उरदकी पीठीकी बी वा तेलमें तली हुई टिकिया । —**आदमी**—पु० धनी, बड़े पद, प्रतिष्ठावाला व्यक्ति । —**हूँ**—खी० बका होना; विस्तार, डील; बबप्पन, महत्ता; प्रशंसा । —**कास**—पु० भारी काम, कठिन काम । —**कुलंज**—पु० मोथा । —**घर**—पु० अमीरका घर; जेल-खाना (ब्यं०) । —**बराना**—पु० ऊँचा बराना । —**जानवर**—पु० सुख; गाय-बैल । —**दिन**—पु० लंबा दिन; २५ दिसंबरका दिन, 'क्रिसमसडे' । —**नहान**—पु० प्रस्ताका चालीसवें दिनका सान (मुसल) । —**बाबू**—पु० हेडक्वार्टर । —**बुहा**—पु० जुजुर्वा, गुजजन । —**बोल**—पु० गवॉक्ति, डींग ।

—**साहब**—पु० प्रधान अधिकारी (यूरोपीय); कलेक्टर; रेजीडेंट । —(**की**) **हलायकी**—खी० बड़े दानेकी हलायकी

बिसका छिन्का इन्के करवाई रंगका होता है। -कड़ाई-
-को० बरी मटकटैया। -गोटी-को० चौपायाका एक
रंग। -बास-को० कठिन काम, बरा काम। -बी-
को० बूझाका सम्मानजनक संशोधन। -झासा-को०
चेचक, बीतला। -झीसखी-को० लकायी करनेका एक
औजार। -राई-को० सरसोंका एक भेद। -**(रे)** अठ्ठा
-पु० समुद्र। -बड़े-वि० बड़े नाम, प्रतिष्ठा, शक्ति,
अधिकारवाले लोग। -काद-पु० प्रिडिग भारतका
मन्नर-जेनरल। -कोग-पु० बड़े भादमी। **हु०** -
(की) बड़ी बालें बनना-दूधकी लेना, डींग मारना।
-**(के)** बरतनकी सुरचना-बनी, बड़े आदमीकी जूठन।
-बापका बेटा-बड़े नाम, प्रतिष्ठावालेका बेटा, बड़े घराने-
का भादमी। -बोडका सिर नीचा-सम्बन्धी नीचा
देखना पड़ता है।

बहिस, **बहिस**-पु० [सं०] मछली फँसानेकी कंठिया, बंसी;
नहरके कामका एक प्राचीन शस्त्र।

बड़ी-को० डरवकी पीठमें पैठा, मसाला आदि मिलाकर
बनायी और सुखायी हुई दिकिना, कुम्हरीरी; पकीरी।

बहुजा-पु० दे० 'बिबीजा'।

बड़ेर-पु० बग्ला, बंकर।

बड़ेरा-वि० दे० 'बड़ा'। † पु० दे० 'बड़ेर'।

बड़ेरी-को० दे० 'बड़ेर'।

बड़ीना-पु० बकरी, प्रभंसा।

बहु-वि० बड़ा।

बड़ो-को० दे० 'बड़ती'।

बड़-को० बड़नेका भाव, बढ़ती (निजक समस्तपद 'घटबड़'में
व्यपहर)।

बड़ई-पु० एक हिंदू जाति जो लकड़ीका काम करती है।
-गिरी-को० बड़ईका रंधा।

बड़ो-को० बड़नेका भाव, बृद्धि, अधिकता; धन-संपत्तिकी
वृद्धि, सृष्टि। **हु०** -का पहरा-उन्नति-सृष्टिके दिन,
उत्कर्षकाळ।

बड़ना-अ० क्रि० शोक, आकार, फैलाव, संख्या, माप
आदिका अधिक होना, रंधा, ऊँचा होना, बृद्धि होना;
धन-आयकी वृद्धि होना; आगे जाना; दूसरेने आगे निकल
जाना; काम होना; मईया होना; विरामका शुभाया जाना;
शुकायका बंद किया जाना। **बड़कर**-अधिक अच्छा,
मेढ़। **हु०** बड़कर अच्छा-पसंद करना। **बड़कर**
बोखना-दूसरीसे अधिक दाम लगाना, बड़ी बोली-बोखना।
बड़-बड़कर बोखना-डींग मारना; डिठार, गुस्ताखी
करना।

बड़ो-को० हाथ, शुहारी; पेशगीके रूपमें लिया जाने-
वाला अन्न या रकबा।

बड़वारि-को० बड़ती।

बड़ना-स० क्रि० नाकार, विस्तार, संख्या, परिमाण
आदिमें वृद्धि करना; पहलेसे अधिक रंधा-चीका, ऊँचा
करना, ऊपर छठाना; धन, मान आदिकी वृद्धि करना;
तरकी देना, उन्नति करना; ऊँचा, मईया करना (भाब);
आगे करना; आगे निकलना, ले जाना (बोश); सरा-
हना, बढ़ाना देना; समेटना, उठाना (बुकान, दस्तर-

खान); गुहाना (दिया); सतारना (चूकियाँ, गहने)।
* अ० क्रि० चुकना, समाप्त होना।

बड़ाच-पु० बड़नेकी क्रिया या भाव; बढ़ना; आगे जाना
(सिनाफ), फैलाव।

बड़ाबच-पु० गोबरका छोटा पिंड जो खलियानमें अन्धकी
राशिपर (तौलने, उठानेके पहले) बृद्धिजनक मानकर
रखा जाता है।

बड़ाबा-पु० हिम्मत, होसला बढ़ानेवाली बात; मोस्ताहन;
उत्तेजन, हुरिवाला।

बड़िया-वि० अच्छा, उमदा, अच्छी किस्मका। को० एक
तरकी दाढ़; * बाद-'जिन्हहि छींकि बड़िया मेंह आवे,
ते विकल नवे जुदुराव'-सूर।

बड़ेक-को० कमवाली मेथीकी एक जाति।

बड़ेका-पु० जंगली सुन्नर।

बड़ेया-पु० बड़ानेवाला; * बड़ई।

बड़ोतरी-को० बढ़ती; बढ़ाया हुआ भद्र, क्षेत्रफल।

बणिक्(बू)-पु० [सं०] बनिया, बनिज-व्यापार करने-
वाला; विक्रेता (शक ' ')। -**(बू)** कटक-पु० व्यापा-
रियोंका दल, कारवों। -**बध**-पु०-व्यापार; व्यापारी;
दुकान; तुला राशि। -**साथ**-पु० दे० 'बणिकटक'।

बणिग्-'बणिक्'का समासगत रूप। -**आम**-पु० व्यापा-
रियोंका मंडल। -**बंजु**-पु० नीलका पोषा। -**बह**-
पु० उंट। -**बीपी**-को० बाजारका मार्ग; बाजार।
-**बुधि**-को० व्यापार, कारबार।

बत-'बात'का समासमें व्यवहृत छद्म रूप। -**कहाबा**-
पु० बातचीत; विवाद। -**कही**-को० बातचीत। -
चल-वि० बकनाही। -**बड़ाच**-पु० बातका बढ़ जाना,
झगडा, विवाद। -**रस**-पु० बातका रस, बातचीतका
मजा।

बतक-को० दे० 'बतल'।

बतल-को० बंसकी जातिका एक जलपक्षी।

बतर-वि० बढ़तर।

बतरान-को० 'बातचीत'।

बतराया-अ० क्रि० बातचीत करना। स० क्रि० बत-
ठाना।

बतरीई-वि० बातचीत करनेका बन्धुक।

बतखाना-स० क्रि० दे० 'बताना'। † अ० क्रि० बात
करना।

बताना-स० क्रि० कहना, बयान करना; जताना, सम-
झाना; सूचित करना, प्रकट करना; गाने-नाचनेमें उमकिया-
से गान या नृत्यके भावोंकी प्रकट करना; (छा०) खबर
लेना, मरम्मत करना (आने दो तो बताता हूँ)। पु० पत्नी-
पुरानी पगड़ी जिसपर नयी पगड़ी बाँधी जाती है; हाथका
कपड़ा।

बतास-पु० दे० 'बतासा'।

बतास-को० बावु; बातरोज।

बतासा-पु० खालिस धोकरकी बनी हुई एक मिठाई,
शर्करागुग्गुलु एक आतिशबाजीमें सुलझा। **हु०** -**(से)** झा
बुलना-झट नह हो जाना।

बतिया-पु० कुछ ही दिनोंका लगा हुआ छोटा फल।

वर्तमाना-बन्ध-म० कि० बात करना; वेचने में फलका लगना ।
वर्तमान-बन्ध-की० बातचीत ।

वर्तनी-पु० बत्तीस दवाओं और येवोंके योगसे बनाया हुआ छत्रु वा इकबा जो प्रसक्तो दुष्टिके लिए खिलाया जाता है । दाँत काटनेका चाब वा चिह्न ।

वर्तनी-की० नीचे-ऊपरकी दंतपंक्ति; बत्तीसों दाँत; बत्तीस चीनेका समूह । मु०-विखना-खुलकर हँसना । -हसना-दाँतोंका गिर जाना । -विखाना-दाँत दिखाना; हँसना । -बजना-अधिक जाड़ा लगना ।

वत्स-पु० कलावत् ।

वत्सला-पु० पोसा देनेकी बात, मुलावा, शँसा । मु०-
(छे) बगना-बातें बनाना; मुलावा देना ।

वत्सी-की० अर्द्ध, दौदारा-उपर कुच नीके लगे अनत बत्ती आदि-रहीम ।

वत्स-पु० दे० 'वत्स' ।

वत्सर-वि० दे० 'वत्सर' ।

वत्सि-वि०, पु० दे० 'बत्तीस' ।

वत्सी-की० वर्ष, पुराने कपड़े आदिकी पैठ या बट्कर बनायी हुई पलकी पुनी जिसे तेरहमें झलकर दिया जलाते हैं; दुना हुआ; निवाक जैसा, फीता जिसे लंबोंमें झलकर जलाते हैं; कपड़ेकी कढ़ी पैठी हुई बत्ती जो घावके भीतर भरी जाती है; सोमबत्ती; दिया; फलीता; सौंफ आदिपर गंधद्रव्य छपेटकर बनायी हुई बत्ती जो पूजन आदिमें जलायी जाती है; कीरेका पैठा हुआ कपड़ा; चिराग; छाजनमें लगानेका कास आदिका पूजा । मु०-विखाना-रोशनी दिखाना । -देना-दाना (तोप आदि) । -लगाना-जलाना, आग लगाना ।

वत्सी-वि० तीस और दो । पु० बत्तीसकी संख्या, ३२ ।

वत्तीसा-पु० दे० 'वत्तीसा' ।

वत्तीसी-की० दे० 'वत्तीसी' ।

वत्तीसा-पु० गाय-वैल रखनेकी जगह ।

वत्तीसा-पु० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ सागके रूपमें खायी जाती हैं ।

वद-की० गिल्टी; चौपायोंका एक रोग; धरला, एबज ।
-में-बदलेमें ।

वद-वि० [का०] दुरा, खराब; दुष्ट, खोटा; अनुभ ।

-वद्वेष-वि० दुरा चाहनेवाला, बदस्वाह । -वद्वेषी-की० बदस्वाही । -अवद्वेष-वि० अशिट; दुश्शील ।

-वद्वन्-की० अशंति, उपद्रव । -वद्वन्-की० अन्वयसा, अशंति, कुशासन । -वद्वन्-वि० प्रबंधमें अपद्रव, जिसके प्रबंधमें दोष, खराबियाँ हों । -वद्वन्-की० कुप्रबंध । -कार-वि० कुकर्म; व्यभिचारी, दुश्चरित्र । -कारी-की० कुकर्म; दुराचार; व्यभिचार, परजीवन । -किरदार-वि० दुश्चरित्र । -किस्मत-वि० अभाग्य, दुरी किस्मतवाला । -वद्वन्-वि० जिसके अक्षर खराब हों । -वद्वन्-की० दुरी किस्मत । -वद्वन्-वि० दुरी भावना, दुरे स्वभाववाला । -वद्वन्-वि० दुरा चाहनेवाला, दुश्मन । -वद्वन्-की० देव, शत्रुता ।

-वद्वन्-वि० दूसरेके विषयमें दुरी धारणा रखनेवाला; संदेह करनेवाला, शक्की । -वद्वन्-वि० कुचाराणा;

शक । -वद्वन्-वि० दुराई करनेवाला, निंदक । -वद्वन्-की० दुराई, निंदा । -वद्वन्-पु० अरते हुए पावका अतिरिक्त मांस । -वद्वन्-वि० दुश्चरित्र, व्यभिचारी । -वद्वन्-की० दुश्चरित्रता, व्यभिचार, दुरा चाल-चलन ।

-वद्वन्-वि० अक्षय्य, गाली-गलौज करनेवाला; दुष्ट-पट । -वद्वन्-की० दुरे सम्पद कहना; गाली-गलौज ।

-वद्वन्-वि० खोटा, नीच, कमीना । -वद्वन्-वि० जिसका स्वाद खराब हो, कुत्साद । -वद्वन्-वि० जिसे तमीज, सलीका न हो, गँवार; अशिट, गुस्ताख ।

-वद्वन्-की० अशिटता, गुस्ताखी । -वद्वन्-वि० अधिक दुरा, ब्यादा खराब । -वद्वन्-वि० दुरेसे दुरा, निहायत खराब । -वद्वन्-वि० असम्भ, अशिट, उजड़ । -वद्वन्-वि० असम्भता, अशिटता, उजड़-पन ।

-वद्वन्-वि० जिसकी नीयत दूसरेकी जमा मार लेनेकी हो, बेईमान, बदनीयत । -वद्वन्-वि० क्वा-नत, बेईमानी । -वद्वन्-वि० बर्गहीन, बदमिजाज ।

-वद्वन्-वि० बर्गहीन, अपने आपको बहुत बड़ा समझना । -वद्वन्-वि० मद्रद्वय, निराश; असफल ।

-वद्वन्-वि० शाय, अशितकामनाका उद्गार । -वद्वन्-वि० दुरी नजरवाला । की० दुरी निगाह, कुप्रति ।

-वद्वन्-वि० अभाग्य, बदकिस्मत । -वद्वन्-वि० दुर्भाग्य । -वद्वन्-वि० दुरी नस्सका, नीच, कमीना । -वद्वन्-वि० लोग जिसकी निंदा करते हैं, जिसकी दुराईकी प्रसिद्धि हो । -वद्वन्-वि० कोकनिदा, अपकीर्ति । -वद्वन्-वि० दुरी बात करनेका दोष, लांछन, कलंक । -वद्वन्-वि०, की० दे० 'बदनीयत' ।

-वद्वन्-वि० दुरी नीयतवाला, जिसके दिलमें दुराई हो, बेईमान । -वद्वन्-वि० नीयत, इरादेका खोटा होना, बेईमानी । -वद्वन्-वि० जो देखनेमें दुरा लगे, भरा, कुप । -वद्वन्-वि० जो खाने-पीनेमें परहेज न करे, कुपम्भ करनेवाला । -वद्वन्-वि० कुपम्भ, अयुक्त आहार-विहार । -वद्वन्-वि० कुकर्म, व्यभिचारी ।

-वद्वन्-वि० कुकर्म, व्यभिचार, बदकारी । -वद्वन्-वि० अभाग्य, बदनीयत । -वद्वन्-वि० दुर्भाग्य, कम-वस्ती । -वद्वन्-वि० दुर्गंध, कुवास । -वद्वन्-वि० जिससे दुरी बात आये, दुर्गंधयुक्त । -वद्वन्-वि० बद-मजा होना, कड़ुता, विषाद । -वद्वन्-वि० जिसका स्वाद अच्छा न हो, कुत्साद, फीका । -वद्वन्-वि० शराबके मजेमें नूर, मतवाला, मदहोश; कामुक । -वद्वन्-वि० मदहोश, मतवालापन; कामुकता । -वद्वन्-वि० दुष्कर्म-से जीविका करनेवाला; दुरे चाल-चलनका, दुष्ट, दुष्ट, दुष्ट । पु० दुष्टा, दुष्ट जन । -वद्वन्-वि० बदचलनी; छुटारा, दुष्टता । -वद्वन्-वि० दुरे, तीखे स्वभाववाला, चिकचिका, विगड़ैल । -वद्वन्-वि० स्वभावका तीखा होना, चिढ़विषादन । -वद्वन्-वि० सेन-सेनमें बेईमानी करनेवाला, बदचलन ।

-वद्वन्-वि० दुरी बातपर विश्वास करनेवाला । -वद्वन्-वि० दुरे रंगका, जिसका रंग धर, विषय गया हो, फीका । पु० जिस रंगकी चाल हो उससे भिन्न रंग (ताक); भिन्न रंगकी नोट (बोतर) । -वद्वन्-वि० दुरे चलनवाला,

कुषाही, दुष्ट, सोदा। -रिकाव-वि० (बोका) जो सवार होते समय शरारत करे। -रू-वि० नुरी शक्लका, कुरूप। -रौह-वि० दे० 'भद्राह'। -रौकी-की० रीष विगडना, भक्त उठ जाना; अप्रतिष्ठा। -रुमास-वि० मुँहबोद, सक्कस (बोका); मुहँफट। -रुजा-वि० जिसका तौर-तरीका अच्छा न हो। -सक्क-सक्क-वि० कुरूप, भौंका। -सगल-वि० अशुभ, मनहूस। -सगली-की० असुधुन। -सलीकरी-की० बेचकरी, फूहकपना; बदतमीजी। -सलीक-वि० बेचकर, फूहक; बदतमीज। -सखली-की० दुर्व्यवहार, बुरा बर्ताव। -सली-वि० खोटे स्वभावका, दुष्टशील। -सूरत-वि० कुरूप, भौंका, नुरी शक्लका। -सूरती-की० कुरूपता, खूबसूरतीका उल्टा, भौंकापन। -हजमी-की० अपन, अजीर्ण। -हवास-वि० जिसका होश-हवास ठिकाने न हो, बवराया हुआ, उद्विग्न। -हवासी-की० होश-हवासका ठिकाने न होना, बवराहद, परीशानी। -हाल-वि० जिसका हाल बुरा हो, दुर्दशाग्रस्त।

बन्धन-पु० दे० 'बधन'; [फा०] शरीर, देह। -तौल-की० मातृलब्धकी एक कसरत। -निकाह-पु० मातृलब्धकी एक कसरत। मु० -जखना-बुझारकी तेजी होना। -इटना-जोशमें हलका दई, तनाव होना (अंगका पूर्वरूप)। -डीला करना-बधनका तनाव दूर करना। -तज्जता होना-बधन अक्षर जाना। -बुहारा होना-बधन झुक जाना। -फलना-बधनपर फोड़े-पुंसियाँ निकलना। -अँ आरा लगना-बहुत क्रोध होना। -सनसनाना-बधनमें सनसनी पैदा होना। -सौं बेमें डका होना-हर एक अंगका सुंदर और सुनासित होना। -सूखकर काँटा हो जाना-बहुत दुख हो जाना। -हरा होना-बधनका हर और ताजा होना।

बधना-स० कि० ठहराना; नियत, पक्का करना (कुश्ती, उसका दिन, स्थान आदि); शतें लगाना; गिनना, समझना (बह किसीको कुछ बधता नहीं); मानना (गवाह बधना); * कहना, बर्णन करना-विप्र बधत बहु बधि बधि बाला-रघुराज। बधकर-शतें लगाकर, पूरे जोरके साथ।

बधनी-वि० देह-संबंधी, शारीरिक।

बद्ध-पु० [सं०] बेरका पेड़ या उसका फल; कपास; किनौला। -कुण-पु० बेर पकनेका समय।

बद्ध-अ० [फा०] बाहर, दरवाजेके बाहर (शहर-बंदर करना-नगरसे निर्वासित करना)। -नवीस-पु० हिस्साकी गलतियाँ, न मानने लायक रकमें निकालना। -नवीसी-की० बंदरनवीसका काम। मु० -निका-कना-हिस्सावमें गलती निकालना; किसीके बिन्ने रकम निकालना।

बद्धा-की० [सं०] कपासका पौधा। * पु० बादल।

बद्धार्थ-की० बधली।

बद्धामलक-पु० [सं०] पानी-आम्रज।

बद्धि-की० [सं०] बेरका पेड़।

बद्धिक-की० [सं०] बेरका पेड़ या फल; गंगाका एक उद्गम-स्थान तथा उसका निकटवर्ती आश्रम-स्थान।

बद्धिकश्रम-पु० [सं०] भीनमर (मदवाह)में स्थित वैष्णवोंका एक प्रधान तीर्थ जहाँ नर-नारायण कविबोधने तपस्या की थी।

बद्धी-की० * बादल; [सं०] कपासका पौधा; दे० 'बद्धिका'। -बद्ध-पु० एक गंधद्रव्य। -नाथ-पु० बद्धिकाका मंदिर। -नारायण-पु० बद्धिकाश्रममें प्रतिष्ठित नारायणकी प्रतिमा; बद्धिका नामक स्थान। -बद्ध, पत्रक-पु० एक गंधद्रव्य। -कल-पु० बेरका फल। -कला-की० नील शेषालिका। -बध, बध-पु० बेरका बंगल; बद्धिकाश्रम। -बासा-की० दुर्गा। -बीछ-बद्धिकाश्रमका एक पहाड़।

बद्ध-पु० [अ०] फेर-कार, परिवर्तन; एवज, बदला।

बद्धना-अ० कि० एकसे दूसरी स्थितिमें जाना, भिन्न होना, रंग-रूप दूसरा हो जाना; एककी जगह दूसरा हो जाना, दूसरी जगह भेजा जाना; नियुक्त होना, तबादला होना; (मत, विचार, स्वभावका) दूसरा हो जाना (अप ने बिलकुल बदल गये हैं); बातसे इटना, मुकरना। स० कि० दूसरा रंग-रूप देना, फेर-कार करना; एककी छीन कर या एकके बदलेमें दूसरी चीज लेना, काममें जाना (कपडा, मकान); एक चीज देकर दूसरी चीज लेना, बदला करना।

बद्धधाना-स० कि० बदलनेका काम कराना।

बद्धा-पु० बदलनेकी क्रिया, अदक-बदल; एकके बदले दूसरी चीज देना, लेना; वह चीज जो किसी चीजके बदलेमें दी-ली जाय, मुआबजा; वह काम जो किसी कामके बदलेमें, जबाबमें किया जाय, पलटा, प्रतिकार (जुमाना, लेना); कर्मका फल, प्रतिकार। मु० -देना-प्रत्युपकार करना। -लेना-प्रत्युपकार करना। - (छे)में- ('के) एवजमें, ब्यापार।

बद्धाई-की० बदलनेकी क्रिया; बदलेमें ली या दी जाने-वाली चीज; कोई चीज बदलनेमें ऊपरसे लगनेवाली रकम। बद्धाना-स० कि० दे० 'बदलवाना'।

बद्धी-की० छाये हुए बादल, धटा; एकके स्थानपर दूसरेका रसा, भेजा या लगाया जाना, तबादल।

बद्धौचला-की० बदलनेकी क्रिया।

बद्धा-वि० ('बधना'का भूतकाळ) नियत, भाग्यमें लिखा हुआ (जो भाग्यमें बदा है वह होकर रहेगा)। पु० अदक, नियति। मु० -होना-भाग्यमें लिखा होना।

बद्धान-की० बदलनेकी क्रिया या भाव, बदा जाना।

बद्धावदी-की० बोध, प्रतिबोधिता। अ० बद्धकर, प्रतिबोधिता-पूर्वक।

बद्धास-पु० दे० 'बादास'।

बद्धामी-वि० दे० 'बादामी'।

बद्धि-की० बदला, एवज। अ० बदले, एवजमें।

बद्धी-की० कृष्णपक्ष, अंधेरा प्रायः [फा०] बुराई, अपकार, नैष्ठिका उल्टा।

बद्ध-की० 'बद्ध'।

बद्ध, बद्ध-पु० दे० 'बादल'।

बद्धेस-पु० विदेश।

बद्धुका-की० दे० 'बद्धुका'।

बर्ह-पु० [अ०] गरुके रेतिस्तानमें रहनेवाली एक असम्भ आति; उस जातिका जन । † वि० नुरा, दोषभाजन (बनना); बदननाम ।

बर्ह-वि० [सं०] बँधा हुआ, बँधा हुआ; अर्ध-बनमें फँसा हुआ, अयुक्त (सीधे); लुका हुआ (बर्हाने); जमा हुआ; रक्षित; बंद किया हुआ; प्ररक्षित, प्रकटित । -**कब्ह**,-**कब्ध**-वि० बर्हपरिहार । -**केसर**-वि० जिसमें किजल्क मा केसर बन गया हो । -**कोष**,-**सम्पु**,-**रोष**-वि०

क्रोध पालनेवाला; क्रोध दवानेवाला । -**कोष्ठ**-वि० जिसे कोष्ठबन्धका रोग हो, कब्जते पीड़ित । -**गुह**-पु० एक रोग जिसमें आँतमें मलका अवरोध हो जाता है । -**ग्रह**-वि० हठ पकड़ा हुआ । -**क्षिप्त**-वि० जिसका मन किसी विषयपर जमा हो । -**क्षिप्त**,-**बाक्** (क्) -वि० मोन, जो चुपपी साधे हुए हो । -**दृष्टि**,-**नेत्र**,-**छव्य**-वि०

जो किसी चीजपर आँखें मकावे, जमावे हो । -**धार**-वि० लगातार बहनेवाला । -**निश्चय**-वि० जिसने पक्का निश्चय कर लिया हो । -**नेपथ्य**-वि० जो नट वा अभिनेताकी वेष्टभूषा धारण किसे हो । -**परिकर**-वि० जिसने

कमर बँध लो हो, तैयार । -**पुरीच**-वि० जिसे कब्ज हो । -**प्रतिज्ञ**-वि० बचनबद्ध । -**प्रतिभुव**-वि० प्रति-

ध्वनियुक्त । -**फल**-पु० करज । -**भू**,-**भूमि**-**क्षी**-मकानका (पक्का) फर्श; मकान बनानेके लिए तैयार की गयी जमीन । -**मुष्टि**-वि० जिसकी मुट्ठी दानके लिए न खुले, कंजुस; जिसकी मुट्ठी बँधी हो । -**मूल**-वि०

जिसे जब पक्का लो हो, धर्मूल । -**मौन**-वि० जिसने चुपपी साध लो हो । -**मुक्ति**-**क्षी**-वंशी बजानेका एक ङंग । (संगीत) । -**रसाल**-पु० एक नदिया नाम । -**राज्य**-वि०

किसीके प्रति हठ रागयुक्त, आसक्त । -**राज्य**-वि० जिसे राज्य प्राप्त हुआ हो, राज्यारूढ । -**वसति**-वि०

जिसके रहनेका स्थान निश्चित हो । -**वेपथु**-वि० जिसे कँपकँपी हो गयी हो । -**वैर**-वि० जिसके मनमें किसीके प्रति वैर बढमूल हो गया हो । -**शिख**-वि० जिसकी शिखा बँधी हो; अत्यवयस्क । पु० छोटा बच्चा । -**शिखा**-**क्षी**-भूम्यामलकी । -**सूत**,-**सूतक**-पु० विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ पारा । -**स्नेह**-वि० (किसी-पर) आसक्त, अनुरक्त ।

बर्हाने-वि० [सं०] सम्मान-प्रदर्शनके लिए जिसके हाथ जुड़े हों ।

बर्हानंद-वि० [सं०] आनंदयुक्त ।

बर्हाराग-वि० [सं०] दे० 'बद्धराग' ।

बर्हाशुष्य-वि० [सं०] अनुत्तम; कृतसंस्कार ।

बर्हायुष-वि० [सं०] जो हविषार नषे हो, शक्कसज्ज ।

बर्हासंक-वि० [सं०] जिसके मनमें शंका उत्पन्न हो गयी हो ।

बर्हाश-वि० [सं०] आशान्वित ।

बर्ही-**क्षी**-गोधनेका साधन, बोर, रस्सी; गलेमें पहननेका एक गहना ।

बर्होत्सव-वि० [सं०] जो उत्सवका आनंद ले रहा हो वा उत्सव मना रहा हो ।

बर्होदर-पु० [सं०] कोष्ठबद्धता । वि० जिसे कब्ज हो ।

१०

बर्ह-पु० दे० 'बर्ह' ।

बर्हना-**क्ष** सं० वि० बर्ह करना, मार डालना । पु० टेंदी-दार पात्र जिसमें सुलसमान प्रायः लोटेका काम लेते हैं ।

बर्हाई-**क्षी**-**बर्हावा**, उत्सव; मंगलान्तर; सुशोभे मौकेपर-का गाना-बजाना; हट-भिन्नके हर्ष, सफलतापर किया जानेवाला हर्ष-प्रकाश, सुभारकवाद; सुभारकवादका गीत;

शुभ अवसरपर दिया जानेवाला उपहार । सु० -**बर्हना**-पुन-जन्म आदिपर बाजा, खासकर शहनाई, बजना ।

बर्हाना-**क्ष**-सं० वि० बर्ह करना ।

बर्हाना,-**पु०** बर्हाई ।

बर्हाना,-**पु०** बर्हाई; मंगलान्तर; पुन-जन्म आदिके अवसर-पर भेजा जानेवाला उपहार ।

बर्हिक-पु० बर्ह करनेवाला, जहाज; भ्याप, बदेहिया ।

बर्हिया-पु० बैल, घोड़ा, बकरा आदि जिसका अंठकीस कुचल वा निकाल दिया गया हो; बैल । सु० -**बैठना**-चलते हुए बैल का बैठ जाना; धाटा बीना ।

बर्हियाना-**क्ष**-सं० वि० बर्हिया करना ।

बर्हिर-पु० [सं०] बर्हा ।

बर्हिरता-**क्षी**-[सं०] बर्हापन ।

बर्हिरित-वि० [सं०] बर्हा किया हुआ ।

बर्हिरमा(अश्व)-**क्षी**-[सं०] बर्हापन ।

बर्ह-**क्षी**-दे० 'बर्ह' ।

बर्हक-पु० दे० 'बर्हक' ।

बर्हटी-**क्षी**-दे० 'बर्हटी' ।

बर्हुरा-पु० बगला, नवंबर ।

बर्हवा-**क्षी**-दे० 'बर्हवा' ।

बर्ह्य-वि० दे० 'बर्ह्य' ।

बन-पु० कपास; दे० 'बन'; * घर । -**जाख**-पु० जमी-कंदकी जातिका एक पौधा जिसकी जब बनवाती अकसर खोदकर खाते हैं । -**कंडा**-पु० अपने आप खूसा हुआ मोहर जो ईधनका काम दे । -**कडवी**-**क्षी**-एक पौधा जिसका मोद दवाके काम आता है, पापका । -**कचूर**-पु० एक पौधा । -**कटा**-वि० जंगली (लकड़ी) । -**कटी**-**क्षी**-एक तरहका नौस; जंगलकी काटकर आबाद करनेका हक । -**कपास**-**क्षी**-पटसनकी जातिका एक पौधा । -**कपासी**-**क्षी**-एक पौधा जिसके देहोंसे रस्सी बटते हैं । -**कर**-पु० जंगलकी पैदावारपर लिया जानेवाला कर; दे० क्रममें । -**कहा**-पु० एक जंगली पेड़ । -**कस**,-**कुस**-पु० एक घास जिसकी रस्सी बटी जाती है । -**कोरा**-पु० लोनियाका साग । -**खंड**-पु० बनका कोई भाग, वनस्थली । -**खंडी**-**क्षी**-बनखंड । पु० बनवासी । -**खरा**-**क्षी**-बह ब्रमीन जिसमें कपासकी फसल बोधी गयी रही हो । -**गरी**-**क्षी**-एक मछली । -**गाव**-पु० एक तरहका हिरन; एक तरहका तेंदू । -**घर**-पु० दे० 'बनच' । -**खरी**-**क्षी**-एक जंगली घास । -**खारी**-वि०, पु० दे० 'बनचारी' । -**खीर**,-**खीरी**-**क्षी**-सुरागाय । -**ख**,-**जाख**-वि०, पु० दे० 'बनच', 'बन-जात' । -**अयोत्तना**-**क्षी**-माफी लता । -**तुरई**-**क्षी**-बंदाख । -**तुलसी**-**क्षी**-एक पौधा जिसकी पत्तियाँ और

मंजरी तुलसीसे मिलती है, बरबरी। -बू-पु० बादर, बनद। -बाम-पु० बनमाला। -बैक-देवता-पु० दे० 'बनदेवता'। -बैबी-खी० जगलकी अधिकाणी देवी। -घातु-खी० गेक, रंगीन मिट्टी। -बिधि-पु० समुद्र। -बीबू-पु० एक सदाबहार फूल। -पट-पु० पैनोंकी छालका बना कपड़ा। -पति-पु० सिंह। -पथ-पु० जंगलसे होकर गया हुआ रास्ता। -पाद-पु० जंगली पड़ुआ, सन। -पाती-खी० 'बनस्पति'। -पाक-पु० गीचेका रसक, माली। -पिंडालू-पु० एक जंगली पेड़। -फल-पु० बनमें होनेवाले फल। -बकरा-पु० ठंडे प्रदेशोंमें पाया जानेवाला एक पक्षी। -बरै-पु० जंगली कुष्ठम, खारेजा। -बसन-पु० छालका बना हुआ कपड़ा। -बारी-बनकन्या; * पुष्पेयान। -बास-पु० बनमें बसना; घर छोड़कर अधिक कष्टके स्थानमें रहनेकी विषय किया जाना। -बासी-वि०, पु० बनमें रहनेवाला, जंगली। -बाहन-पु० लौका, जलयान। -बिलाब-पु० बिल्लीकी जातिका एक वन्य जंतु। -मानुस-पु० बिना पूँछका बंदर जिसकी शक्ल आदमीसे कुछ अधिक मिलती है; निरा जंगली, असभ्य समुच्च। -माक, -माका-खी० दे० 'बनमाला'। -माखी-पु० दे० 'बनमाली'। -मुरगा-पु० जंगली मुरगा। -मूँगा-खी० मोठ। -रक्षा-पु० बनकी रक्षाली करनेवाला; बहे-लियोंकी एक जाति। -राज-पु० जंगलका राजा, सिंह; बहुत बड़ा वृक्ष। -राब-पु० दे० 'बनराज'। -रीठ-पु० जंगली रीठा। -रीठा-खी० एक पौधा जिसकी छालसे रस्सी बनती है। -रुइ-पु० जंगली पेड़; कमल। -रुहिया-खी० एक तरहकी कपास। -बसन-पु० छालका बक। -स्थली-खी० जंगल। -हरदी, -हलदी-खी० दाइहली।

बनडर-पु० विनौका; ओला।
बनक-खी० बाना, भेष; बनावट; बनकी उपज; मैत्री-
'जातों अनवन मोहि; तासों बनक बनी पुन्दे'-बन०।
बनकर-पु० अक्ष-प्रहारकी एक काट; दे० 'बन'में।
बनज-पु० दे० 'बनज'; दे० 'बन'में।
बनजना-स० कि० व्यापार करना।
बनजरी-पु० दे० 'बनज'।
बनजारन, बनजारी-खी० बनजारेकी खी।
बनजारा-पु० जो बैलोंपर अनाज लादकर बेचनेको ले जाय, ढोडा लादनेवाला; बनज, व्यापार करनेवाला।
बनजी-पु० व्यापारी। खी० व्यापार-'कीड लेती कीड बनजी लावे'-झंदटस।
बनबा-पु० बिलावल रागका एक भेद। -देवगरी-खी० एक रागिनी।
बनस-खी० बनावट; मेल; सलमे-सितारेकी नेक जिसके दोनों ओर हाथिया हो।
बनवाई-खी० बनकी भयंकरता।
बनवा-अ० कि० बनाया जाना, निर्मित, रचित, तैयार होना; नया रूप मिलना; दूसरी स्थितिमें जाना, आसीन, नियुक्त होना; सुधारना; दुरुस्त होना; सिद्ध, सफल होना (काम, बात); सजना, सँवरना-'प्रातः भवे सव भूय बनि

बनि भयंभवे भवे'-रामचंद्रिका; बनावट करना, जो बात अपनेमें न हो उसका प्रदर्शन करना; फटका जाना, साफ होना (अनाज); नेकूप बनाया जाना; मालदार होना; पटना, मेल होना; हो सकना, शक्य होना। मु० बन आना-संयोग मिलना, अभीष्ट-सिद्धिका अवसर मिलना। बनना-ठगना-बनाव-सिंगार करना, सजना-सँवरना। बन पड़ना-हो सकना, शक्य होना। बन-बनाकर-बनकर, पूरी तरह बनकर। बना रहना-कायम रहना, मौजूद रहना।

बनवि-खी० बनाव, सिंगार; बनावट।
बनवाई-वि० बनझंसेके रागका।
बनप्रसा-पु० [फा०] एक पौधा जो दवाके काम आता है।
बनरीब-पु० बका जंगल; बका वृक्ष-'चंदनकी कुटकी मली ना बबूल बनरीब'-कबीर।
बबरा-पु० दे० दुहा; (लड़केके) ब्याहमे गाया जानेवाला एक गीत; * बंदर।
बनरी-खी० हुलहिन, नवबधू; मकंदी।
बनबच-पु० प्राचीन भारतका एक प्रांत।
बनबना-स० कि० बनाना।
बनबा-पु० पनडुब्बी (जलपक्षी); एक तरहका बछनाग।
बनबाबा-स० कि० बनानेका काम करना।
बनबारी-पु० बनमाली, कृष्ण।
बनबैया-पु० बनानेवाला।
बनसपती-खी० दे० 'बनस्पति'।
बनसी-खी० मछली फंमानेकी कौटिया; मुरली।
बनहटी-खी० एक तरहकी छोटी नाव।
बना-पु० दुहा; बर; दे० 'बाना'।
बनाइ-अ० दे० 'बनाय'।
बनाउ-पु० दे० 'बनाव'।
बनाउरि-खी० बाणावली।
बनागि-खी० दावानल।
बनागि-खी० दावानल।
बनात-खी० एक रंगीन ऊनी कपड़ा जिसका जंगरखा आदि बनाते हैं।
बनासी-वि० बनासका बना हुआ।
बनाना-स० कि० रचना, निर्माण करना, तैयार करना, वस्तुको काममें लाने लायक रूप देना; नया रूप देना, दूसरी वस्तुमें बदल देना (रास्ते शहर, दोस्तसे दुश्मन हो); गठना, रचना (बात, बहाना); छाप करना, चिहना-फटकना (अनाज); काट-छीलकर दुरुस्त करना; सँवरना; किसी पदपर नियुक्त, आसीन करना; सुधारना, मरम्मत करना; कमना, पैदा करना (स्वया बनाना); व्यवस्था द्वारा उपहास करना, ब्याज-निंदाके द्वारा लजबाना। बना-कर-अच्छी तरह। मु०-पछोड़ना-फटकना, साफ करना। -बिगाड़ना-अच्छी या बुरी हालतमें पहुँचाना। बनाने रखना-विदा रखना, कायम रखना।
बनाफर-पु० राजपूतोंकी एक उपजाति।
बनार्बत, बनारबनस-पु० बर-कन्याकी जन्मपथियोंका स्थान।
बनाय-अ० अच्छी तरह; बहुत ज्यादा; बिल्कुल।

बनार-पु० चाकद; कासमर्द; काशीकी उत्तर-सीमापर स्थित एक प्राचीन राज्य ।

बनारस-पु० बाराणसी, काशी ।

बनारसी-वि० बनारसका; बनारसमें बना हुआ । पु० काशीवासी ।

बनाब-पु० बनाबट; बनना-सँवरना; सुक्ति, उपाय; मेल ।
-सिंघार-पु० बनना-सँवरना ।

बनाबट-खी० बनानेकी क्रिया, रचना, मठन; रूप; बनने-का भाव, आर्चक, दिखावा, गुमाश्च ।

बनाबटी-वि० दिखाऊ; कृत्रिम, नकली ।

बनाबवा-पु० अनाज बनानेपर निकलनेवाली मिट्टी, कंकरी, कचरा आदि ।

बनाबनहार, बनाबनहार-पु० बनानेवाला, रचयिता; कुपारनेवाला ।

बनाबना-स० क्रि० दे० 'बनाना' ।

बनाबरी-खी० बाणोंकी अवधि, पंक्ति ।

बनास-खी० राजपूतानेकी एक नदी ।

बनासपारती-खी० दे० 'बनरपति'—'...नासपाती खाती ते बनासपाती खाती है'—भूषण ।

बनि-खी० अन्नके रूपमें दी जानेवाली दैनिक मजदूरी ।

-हार-पु० बनीपर काम करनेवाला; खेतीके काममें किसानकी सहायता करनेवाला स्वतंत्र मजदूर । -हारी-खी० दे० 'बनि' ।

बनिक-पु० दे० 'बणिक' ।

बनिज-पु० दे० 'वाणिज्य' । -झोपार-पु० वाणिज्य-म्यापार ।

बनिजना-स० क्रि० क्रि० व्यापार करना; क्रय करना ।

बनिजारा-पु० दे० 'बनजारा' ।

बनिजारिन, बनिजारी-खी० बनजारेकी स्त्री ।

बनित-पु० बनाया; सजावट ।

बनिता-खी० स्त्री। पत्नी ।

बनिया-पु० व्यापार करनेवाली एक हिंदू जाति; वैश्य; आटा-दाल आदि बेचनेवाला ।

बनियाहन-खी० गंजी जैसी कुरती जो बुनी होनी है; बनियेकी स्त्री ।

बनी-खी० अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मजदूरी; बन-खली; हाटिका; * बन्, नाथिका । * पु० बणिक, बनिया ।

बनीनी-खी० बनियेकी स्त्री; बनियायन ।

बनीर-पु० बेत, बानीर ।

बनेटी-खी० पटेबाजीके अभ्यासमें काममें लायी जानेवाली वह लाठी जिसके दोनों सिरीपर लट्टू लगे रहते हैं ।

बनैका-वि० जंगली, वन्य ।

बनौबास-पु० दे० 'बनवास' ।

बनौजा, बनौबा-वि० बनाबटी ।

बनौटी-वि० कपासके फूलके रंगका, कपासी ।

बनौधा-पु० दे० 'बनवध' ।

बनौरी-खी० ओछा, उपल ।

बनार-पु० बनरा, दूल्हा ।

बनात-खी० दे० 'बनात' ।

बनी-खी० अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मजदूरी;

† बनीर, दुश्मिन ।

बनिह-पु० दे० 'बहि' ।

बप-पु० बाप, पिता । -भार-पु० नापकी हत्या करने-वाला, पितृघातक; पोछा देनेवाला ।

बपसिस्मा-पु० [अ० 'बैपसिम'] ईसाई धर्मकी दीक्षाके समय किया जानेवाला एक संस्कार ।

बपना-स० क्रि० बीज बोना, बपन ।

बपु, बपुस-पु० शरीर; रूप; अवतार ।

बपुरा-वि० बेचारा, दीन, अशक्त ।

बपौती-खी० नापकी छोटी हुई जामदार, पैतृक संपत्ति ।

बप्पा-पु० बाप (प्रायः संवोधनरूपमें प्रयुक्त) ।

बफारा-पु० आप; दवा मिले हुए पानीकी मापसे शरीर या अंगविशेषकी सेंकना (दिना, लेना); इस प्रकार काममें लायी जानेवाली दवा ।

बफौरी-खी० मापसे पकयी हुई बरी ।

बबकना-स० क्रि० उत्तेजित होकर बोकना, बमकना; * उछलना ।

बबर-पु० [फा०] अणुक्राममें पाया जानेवाला शेर, सिंह ।
-अकाछी-पु० प्रथम महायुद्धके बाद संवदित अकाछि-बोंका एक गुप्त दल जो कुछ दिनोंतक कतल, डकैती आदि करता रहा ।

बबा-पु० दे० 'बाबा' ।

बबुआ-पु० बका जमींदार, बाबू; पुत्र, दामाद, देवर आदिका स्नेहयुक्त संबोधन ।

बबुई-खी० बहे जमींदार, बाबूकी बेटी; बेटी; छोटी जनक-का संबोधन ।

बबुरा-पु० दे० 'बबूल' ।

बबूल-पु० एक प्रसिद्ध कैंटीला पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी और मजबूत होती और फल, पत्तियाँ, गौर आदि दवाके काम आते हैं, कीकर ।

बबूला-पु० दे० 'बगूला'; दे० 'बुलबुल' ।

बभली-खी० जौकके आकारका छिपकली जैसा एक अणु जिसकी पीठपर चमकीली धारियाँ होती हैं; बमकुस ।

बभूला-खी० दे० 'बभूत' ।

बभरी-खी० [स०] बुयो ।

बभु-वि० [सं०] गहरे भूरे रंगका; गजा, खल्लट । पु० अग्नि; नेवला; गहरा भूरा रंग; भूरे बालोंवाला व्यक्ति; शिव; विष्णु; चातका सफाई करनेवाला; भूरे रंगकी कोई वस्तु । -केस-वि० भूरे बालोंवाला । -छातु-खी० सोना; गेरू । -छोसा(मन्)-वि० भूरे बालोंवाला ।
-बाहन-पु० अर्जुनका एक पुत्र ।

बम-पु० शिवकी प्रसन्नताके लिए कहा जानेवाला एक शब्द; एकके, बैलगाड़ी आदिमें आगेकी ओर निकला हुआ गैस या लकड़ी जिसमें बोरे, बैल आदि जोते जाते हैं; शहनाईके साथका छोटा या मझा नगाका । -भौछा-पु० शिव । मु० -बम करना-शिवोपासकोंका शिवकी प्रसन्न करनेके लिए 'बम-बम' कहना । -बोछना-समाप्त हो जाना (शक्ति, पूँजी, सामग्री आदिका), दिवाला हो जाना ।

बस-पु० [अ० 'बाव'] लोहेका लंबीतरा गोला जिसमें बारूक और छिटकनेवाली चीजें भरी होती हैं और जो हवाई-

जहाजसे गिराया जाता और हाथसे तथा तीपमें भरकर भी फेंका जाता है । -काँच-पुं वचनका प्रहार, विस्फोट । -गोळा-पुं वचनका गोळा । -बाज़-विं दुश्मनपर वम करानेवाला (हवाई जहाज) । -बाज़ी, -बारी-स्त्री वम-वर्ग ।

वचनका-अं किं आवेष्टमें अपने वल-पौरुषकी डींग मारना; उछलना; फूटना ।

वचनका-स्त्री शोरगुल (मचाना) ।

वचनका-सं किं वमन करना ।

वचनपुलिस-स्त्री० दे० 'चंपुलिस' ।

वचनाना-सं किं बदकर बोलनेके लिए बढ़ावा देना ।

वमीठा-पुं बॉबी, वमीक ।

वमेक-पुं विवेक ।

वमोट्टा-पुं दे० 'वमीठा' ।

वमूनी-स्त्री० दे० 'वमनी'; आँखका एक रोग, चिलनी; हाथीकी पूँछ समानका रोग; लाल रंगकी जमीन ।

वव-स्त्री० जुलाहोंका एक औजार, कंधी । पुं०, स्त्री० दे० 'वव' ।

ववव-पुं दे० 'वैन' ।

ववना-सं किं बीज बोना; वर्णन करना । अं किं बहना; लगना, आरोपित होना । पुं० मित्रों तथा सर्वथियों के यहाँ भेजा जानेवाला पकवान या इस तरहकी कोई चीज ।

ववर-पुं दे० 'वैर' ।

ववस-स्त्री० दे० 'वव(स्)' । -वाक्का-विं वयस्क, बुढ़ा । -सिरोमणि-पुं जवानी, यौवन ।

ववा-पुं गौरवासे मिलती-जुलती एक चिकिया जो अपना धौंसला बड़े कौशलसे बनाती है; जादूतों आदिमें माक तोलनेका काम करनेवाला ।

ववाई-स्त्री० बयाका धंधा; तोलनेकी उजरत, तौलार्ह ।

ववान-पुं [अं] कथन, वचन, उक्ति; वर्णन; वक्तव्य; तथ्योंका वह विवरण जो अदालतमें बादी या प्रतिवादी द्वारा लिखकर या जवानी प्रस्तुत किया जाय; (अरबी, फारसी) साहित्यशास्त्रकी एक शाखा । -तहरीरी-पुं लिखा हुआ बयान जो प्रतिवादी अरजदावेके जवाबमें दाखिल करता है । -ताईरी-पुं दूसरेके बयानकी पुष्टि करनेवाला बयान । -वावा-पुं दावेका विवरण । सु० -से बाहर-ववर्णनीय, जो कहा न जा सके ।

ववाना-पुं वह रकम जो सीधा पक्का करनेके लिए खरीदार बेचनेवालोंकी पेशगी देता है और पीछे बस्तुके मूल्यमें से काट लेता है, साई । * अं किं वववाना ।

ववावान-पुं [फां] जंगल, उमाकसुद ।

ववावानी-विं जंगली, वनवासी ।

ववार, ववारि-स्त्री० हवा, वायु; शीतल-मद वायु ।

सु० -करना-पक्का झलना, पंखसे हवा करना ।

ववारी-स्त्री० व्याह; दे० 'वयर' ।

ववाका-पुं वह छेद जो बाहरका दृश्य देखने या गोली चलानेके लिए दीवारमें बना हो; ताखा, आला ।

ववाकिस-विं, पुं दे० 'ववालीस' ।

ववालीस-विं चाणल और दी । पुं चाणल और दोकी

संख्या, ४२ ।

ववारी-विं अस्ती और दो । पुं अस्ती और दोकी संख्या, ८९ ।

ववर्गा-पुं छत पाटनेकी पलखकी पटिया; पाटनेके लिए भरनपर लगायी जानेवाली लकड़ी ।

वव-पुं दूहा । -काख-पुं म्याह । -का पानी-नहसूके समय बरका नहाया हुआ पानी जो कन्याको नहलानेके लिए उसके यहाँ भेजा जाता है । -वैल-स्त्री० म्याहकी एक रत्न ।

वव-पुं दे० 'वल'-दिख्यो मैं राजकुमारको वर'-रामचंद्रिका । -खोर-विं खोरदार, जवरदस्त । -ओरी-स्त्री० जवरदस्ती । अं बलात् ।

वव-विं श्रेष्ठ । -वाँच-पुं सुरंगित मसाला ।

वव-अं वक्ति । पुं वरगद; वरदान, आशीर्वाद; 'वाल' का विकृत रूप । -टुट-सोर-पुं दे० 'वलोड' ।

वव-अं [फां] ऊपर, पर; बाहर । पुं फल; कोय, वगल; देह । विं छे जानेवाला, डोनेवाला (दिलबर, आदि); श्रेष्ठ, उत्तम; पूर्ण । -अकस-अं उल्टा, विरुद्ध, विपरीत ।

-ऊरार-विं खिर, कायम, बहाल, हड़; जीवित; बना हुआ । -खास-अं-झाल, -झाल-विं उठा हुआ, विसर्जित (जल्सा आदि); मयास; नौकरीसे अलग किया हुआ, बरतारक । -झालगी-स्त्री० समाप्ति; बरतारफी ।

-झिक्काफ-विं विरुद्ध, प्रतिकूल । अं (' के) विरुद्ध, खिलाफ । -खुरदार-विं सफल, फलता-फूलता हुआ; माय्यशाली । पुं बैठा, संतान । -झवान-विं जो

जवानपर हो, कंठल, वाद । -जन्मा-विं ठीक, उप-उत्तक, वयायोग्य । -सर-विं अधिक अच्छा, ऊँचा, श्रेष्ठ । -सरफ-विं नौकरी आदिसे अलग किया हुआ, मौकूक ।

अं एक ओर, अलग, दूर । -सरफ़ी-स्त्री० नौकरीसे अलगहगी, मौकूफी । -सरी-स्त्री० उच्चता, श्रेष्ठता । -द्वार-विं उठानेवाला, डोनेवाला (संवापके अंतमें-

अमलबरदार) । -दारी-स्त्री० डोना, उठाना (संवापदने समस्त होकर-बाजबरदारी, बारबरदारी) । -दास्त-स्त्री० सहन, उठाना; जानवरोंकी देखभाल, रखरखाव ।

-दास्ता-विं उठाया, बढ़ाया हुआ । -पार-विं खड़ा, उपस्थित । [सु० -० होना-खड़ा होना, मचना (फसाद बरपा होना)] । -बस्तर्-अं बरवशी । -बाद-विं फेंका हुआ, नष्ट; तबाह (जाना, होना) । -बादी-स्त्री० नाश, तबाही, खराबी । -मखा-अं सामने, मुँहपर, खुलमुखता । -महल-अं ठीक मौकेपर । विं मौकेका, उपयुक्त । -बहल-अं समयपर, मौकेपर । -हल-विं ठीक, वयाय; सच्चा । सु०-आना-पूरा होना, सफल होना । -लाना-पूरा करना, सिद्ध करना ।

ववई-पुं तमोली ।

ववईदाज़-पुं लंबी लाठी या बंदूक लेकर चलनेवाला सियाही; चौकीदार ।

ववकत-स्त्री० [अं] रुद्धि, बढ़ती; सौभाग्य; लाभ; बहु-तावत; एकत्री संख्या (बनिये तोलनेमें एकके बदेके अक्सर 'वकत' कहते हैं); बढ़ती करनेका गुण, प्रभाव, प्रसाद । सु० -उठाना-पूरा न पड़ना, घटना; अवजति होना ।

—देवा-बदना; वृद्धि करना। —होवा-बदना, वृद्धि होना।

वरकली—वि० जिसमें वरकत हो; वरकत के लिए निकाला हुआ (रूपवा)।

वरकमाँ—अ० कि० घटित न होना; टलना; बचना, अलग रहना।

वरकावाक—स० कि० निवारण करना; इदना; बचाना; पीछा छुड़ाना।

वरकावना—स० कि० दे० 'वरकाना'।

वरख—पु० दे० 'वर्ष'।

वरखना—अ० कि० बरसना। स० कि० बरसाना।

वरखा—खी० वर्षा; वर्षा ऋतु।

वरखाना—स० कि० दे० 'बरसाना'।

वरग—पु० दे० 'वर्ग'; दे० 'वर्ग'।

वरगाद—पु० भारतका एक प्रसिद्ध एक जिसकी गणना पाँच पवित्र वृक्षोंमें है और जिसकी आयु और विस्तार सम्भवतः सब पेड़ोंसे अधिक होता है, वट।

वरघर—पु० एक तरहका देवदार।

वरच्छा—खी० दे० 'वरेच्छा'।

वरछा—पु० भावा।

वरछी—खी० छोटा वरछा।

वरछैत—पु० वरछा रखने, चलावेवाला।

वरजना—स० कि० मना करना, रोकना।

वरजनि—खी० मनाही, रोक।

वरट—पु० [सं०] एक अन्न।

वरटूँह रस्तेख—पु० अमेज दार्शनिक तथा गणितज्ञ (जन्म १८७०)।

वरत—पु० दे० 'व्रत'। खी० रस्ती; वह रस्ती जिसपर चढ़कर नट खेल करता है।

वरतन—पु० मिट्टी, धातु आदिका पात्र जो खासकर खाने-पीनेकी चीजें रखने या पकानेके काममें लाया जाय, भाँडा; व्यवहार, वर्तव।

वरतना—स० कि० काममें लाना, इस्तेमाल करना; वर्तान करना।

वरतनी—स्त्री० शब्दका वर्णक्रम, हिज्जे।

वरसाना—स० कि० नौटना, वितरण करना। पु० पुराने कपड़े, उताड़ा।

वरताव—पु० वर्तनका ढंग, व्यवहार।

वरती—वि० दे० 'व्रती'। स्त्री० बत्ती।

वरव—पु० 'वर्षा'।

वरवचाना—स० कि० दे० 'वरदाना'।

वरदा—पु० दे० 'वरषा'; [तु०] दास; युद्धवंदी।—**क्रोश**—पु० दास-दासियोंकी खरीदने-बेचनेवाला।—**क्रोशी**—स्त्री० दास-दासियोंकी खरीदने-बेचनेका रोजगार।

वरदाना—अ० कि० गाय, भैस आदिका जोषा खाना, गायिन होना। † स० कि० गाय-भैस आदिको जोषा खिलाया, गायिन कराना, वरदाना।

वरदिया, वरदिया—पु० चरवाहा।

वरदौरा—पु० वैद्यक शैलीके खान, प्रधान।

वरघ, वरघा—पु० दे० 'वैद्य'।—**बुखान**—खी० गो-

शुशिका।

वरधाना—अ० कि०, स० कि० दे० 'वरदाना'।

वरव—पु० रंग। अ० वस्तिक।

वरवन—पु० दे० 'वर्णन'।

वरवना—स० कि० वर्णन करना।

वरवर—पु० दे० 'वर्नर'।

वरवा—स० कि० बरण करना, चुनना; व्याह्वाना; बारण करना, मना करना; नियुक्त करना; निर्ममित करना। अ० कि० जलना।

वरवाला—पु० जहाजका फाजिल धानी निकाळ देनेका परनाला।

वरक—खी० दे० 'वर्क'।

वरकानी—वि० दे० 'वर्कनी'।

वरक्री—खी० एक मिठाई जो चीनीकी चासनीमें खोया, पेठा, बेसन आदि मिलाकर बनायी जाती है।

वरक्रीला—वि० दे० 'वर्काला'।

वरकंड—वि० दे० 'वरिवड'।

वरकट—अ० वरवत्, हठात्।

वरकटी—खी० बोझ (छत्तीस)।

वरवत्—पु० [अ०] एक बाजा, ऊट।

वरवर—पु० उत्तरी अफ्रीकाका सहाराके उत्तर और मिस्र तथा भूमध्यसागरके बीचका मूलंड, बर्वर, हम्ह। वि० असध्य, गम्भी, बर्वर। * खी० दे० 'वडवड'।

वरवशाना—अ० कि० दे० 'वडवशान'।

वरवरिवत्—खी० बर्वरता, जगलीपन।

वरवरिस्तान—पु० बर्वर देश, अफ्रीका।

वरवरी—खी० नुड़ी बकरी। वि० बर्वरका, बर्वरचित।

वरवस—अ० अवर्दस्ती, वलपूर्वक; अकारण, गम्य।

वरम—पु० दे० 'वर्म'।

वरमा—पु० लकड़ीमें छेद करनेका औजार; भारतकी पूर्वी सीमासे लगा हुआ एक देश, ब्रह्मदेश।

वरमी—पु० वरमावासी। खी० वरमाकी भाषा; छोटा वरमा। वि० वरमाका; वरमा-संघी।

वरमा—पु० अक्षा; वरमा।

वरमाड—पु० दे० 'वरमाव'।

वरमाणा, वरमाणा—स० कि० आशीर्वाद देना।

वरमाव—पु० आश्विन; आशीर्वाद।

वरराना—अ० कि० दे० 'वराना'।

वरदे—पु० बरें, भिख।

वरवट—खी० तिहरी।

वरवा—पु० दे० 'वरवै'।

वरवै—पु० एक मासिक छंद।

वरवना—अ० कि०, स० कि० दे० 'वरसना'।

वरवा—खी० दे० 'वर्षा'।

वरवाना—स० कि० दे० 'बरसाना'।

वरवासन—पु० दे० 'वर्षाशन'।

वरस—पु० कालका वह मान जिसमें पृथ्वी सूर्यके एक बार परिक्रमा करती है, ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट ४६ सेकेंडका समय, वर्ष।—**गॉट**—खी० जन्मदिवस, साल-गिरह; जन्मदिवसका उत्सव। **यु०**—**दिवका दिन**—

बरसका दिव-सुशोका दिन, लोहार जो सालभरके बाद आवे।

बरसना-अ० कि० बायुमंडलके जलशुका घनीभूत होकर बूंदोंकी शक्लमें आवे आना, वर्षा होना; बूंदोंकी तरह गिरना, झरना (फूल, वस्त्र); शफरातमें मिलना; साफ शक्लना, टपकना। स० कि०बरसाना। मु० बरस पड़ना - बहुत कुछ होकर बँटना, फटकारना, बक-सक करना।

बरसाहत-खी० जेठ वदी अमावस्या, बट-सावित्री जतः * वर्षाकाल।

बरसाहना-वि० खी० हर साल बचा देनेवाली (गाय-मैल)। खी० ऐसी गाय।

बरसाह-वि० बरसनेवाला (बाढ़)।

बरसात-खी० वर्षाके दिन, वर्षा ऋतु-मोटे हिसाबसे आषाढ़से आश्विनतकका समय।

बरसाती-वि० बरसातका; बरसातमें होनेवाला। पु० मोमजामे या दूसरे बाटरप्रक कपड़ेका बना हुआ ओवर-कोट; बाटरप्रफ; बरसातमें सौने लाकड़ सबसे ऊपरकी मंजिलपर बना हुआ हवादार कमरा या बरामदा; मकानके आगे बना हुआ छतदार फाटक जिसमें घोड़ा-पानी आदि लाकर बकती है; चौबेका एक रोग; बरसातमें पैर आदिमें होनेवाले कोड़े; बरस पड़ी।

बरसाना-स० कि० वर्षा करना; वर्षाकी बूंदोंकी तरह गिराना; बड़ी संख्या, मात्रामें फैकना, बल्लेना (फूल)। पु० गोकुलके समीपका एक प्रसिद्ध गाँव जो इषमाजकुमारी राधाका जन्मस्थान माना जाता है।

बरसायल-खी० शुभ-मुहूर्तों दे० 'बरसाहत'।

बरसिचा-पु० दे० 'बरसरसिगा'; वह वैल जिसका एक सींग ऊपर और दूसरा नीचे गया हो।

बरसी-खी० सृष्टीकी प्रथम वार्षिक तिथिको किया जानेवाला आद्य।

बरसीला* -वि० बरसनेवाला।

बरसीहा* -वि० बरसनेवाला।

बरहंडा-पु० कच्चा भंडा।

बरहना-वि० [फा०] नंगा, बखरहित। -पा-वि० नगे-पावें।

बरहमंड* -पु० दे० 'ब्रह्मांड'।

बरहम-वि० [फा०] परीशान; क्रुद्ध; उद्विग्न; मडु-मडु, देतरतीव।

बरहा-पु० मोटा रस्ता; सेतोंकी मिंचाईके छिद बनी हुई नाली।

बरही-खी० प्रत्युताका शिशु-जन्मके १२ वें दिनका स्नान; उस दिनका उत्सव; * जलानेकी लकड़ीका गड्ढा; मोटी रस्ती। * पु० मोर, वर्षा; साड़ी; मुरगा; अग्नि, बर्हि। -पीढ़* -पु० मोरके पंखोंका मुकुट। -मुल्ल* -पु० देवता।

बरही* -पु० जन्मके बादका बारहवाँ दिन।

बरांदा-पु० दे० 'बरामदा'।

बरांडी-खी० दे० 'ब्रांडी'।

बरा-पु० दे० 'बरा' * बटपड़; बाहुपर पहननेका एक गहना।

बराह* -खी० दे० 'बराह'।

बराक-पु० दे० 'बराक'। वि० बीवनीय; बेचारा; अथम;

मुच्छ।

बराट-पु० दे० 'बराटिका'।

बराटिका-खी० दे० 'बराटिका'।

बराह-खी० बरके साथ कन्यापक्षके वर्षा जानेवाले लोग, जनेत; दूल्हेकी सवारीका जुलूस; गीह, मजना। मु०-करना-बरातमें शामिल होना।

बराती-वि० बरातमें शामिल होनेवाले, बरपक्षकी ओरसे कन्यापक्षके वर्षा जानेवाले। पु० बरातमें आवे हुए लोग।

बरानकोट-पु० [अ० ब्राउनकोट] मिथाहिदीका ऊनी ओवरकोट।

बराना-स० कि० परहेज करना, बचाना; अलग रखना, टाकना; रखा करना; चुनना, छँटना; * जलना। अ० कि० जलना-'नैन दीठ नहिं दिया बराही'-प०।

बराबर-वि० [फा०] समान, तुल्य, सवश; समतल, हम-बारा; बल, दरजे आदिमें समान, समकक्ष। * अ० लगातार; एक पंक्तिमें; साथ; सदा; तक। -का-वि० बल, बय आदिमें समान, जोड़का; सामनेका (बराबरके मकानमें)।

-बराबर-अ० साथ-साथ, एक पंक्तिमें; समान भागमें, आपेआप। मु०-करना-समतल करना; परिमाण, ऊँचाई आदिमें समान करना; खतम कर देना; बाकी न छोड़ना (सारी कमाई खा-पीकर बराबर कर गी)। - (पर)छुटना-

कुप्ती, बटेरों आदिकी लड़ाईमें लड़नेवालोंका बिना हारे-जीते अलग हो जाना, किसीकी जीत-हार न होना।

-से निकलना-पाससे निकलना।

बराबरी-खी० समानता, प्रतियस्पर्धा; पुन्ताखी।

बरामदा-पु० [फा०] बाहर आना, निकलना, प्रकट होना; निकास; मालकी रवानगी; नदीके बटनेसे निकलनेवाली जमीन, संगमरार (बर+आमद=ऊपर, बाहर आना)।

-गी-खी० बरामद होना। मु०-करना-छिपी-छिपायी हुई चीजको बाहर लाना, प्रकट करना (चोरीका भाव, खजानेसे रूपया)। -होना-बाहर आना, प्रकट होना।

बरामदा-पु० [फा०] मकान या बालाखानेकी दीवारमें लमाकर बनाया हुआ सावधान जिसकी छत या छाजन खंभोंपर टिकी हो।

बराय-अ० [फा०] वास्ते, किय। -झुड़ा-अ० खुदाके वास्ते, ईश्वरके नामपर। -नाम-अ० नामके किय, दिखानेको। -सैत-अ० छंदके अनुरोधमें; पादपूर्तिके किय। वि० पादपूरक; व्यर्थ, फाल्गू।

बरायन* -पु० विवाहके समय दूल्हेकी पहनाया जानेवाला लोहेका छल्ला; विवाहके समयका कलश।

बरार-पु० एक जंगली जानवर; मध्यप्रदेशका एक भाग; [फा०] कर। वि० (समासांतमें) काने, से जाने, पूरा करनेवाला।

बराही-खी० एक रागिनी। -ब्राम-पु० एक संकर राग।

बराह-पु० बरानेका भाव, बचाव, परहेज।

बराहुरी-खी० [फा०] बर-आहुरी तनखाका चिट्ठा; उसमीनेकी कदं, गोशबारा।

बरास-पु० एक तरहका कपूर जो अधिक सुगंधित होता है, भीमसेनी कपूर।

बरासी-खी० [स०] एक तरहका कपड़ा।

बराह-पु० दे० 'बराह'। अ० दे० 'ब'।
 बरिबार्ह-खी० अर्धरस्सी। अ० बलपूर्वक।
 बरिबाल-खी० दे० 'बरात'।
 बरिबार-वि० बलवान्-तपवर विप्र सदा बरिबार-रामा०।
 बरिबल-खी० बरेबल, फलदान।
 बरिबल-वि० बलवान् प्रचंड, दुर्बल।
 बरिबार्-खी० बटिका, गोली। वि० दे० 'बरिवार'। -ई-खी०, अ० दे० 'बरिबार्'।
 बरिबाल-खी० दे० 'बरात'।
 बरिबार्-वि० बलवान्, शक्तिशाली।
 बरिबार्-पु० एक पोषा जिसकी जड़ दवाको काम आती है।
 बरिबार्-पु० एक पक्षवान।
 बरिबार्-खी० [सं०] मछली फँसानेकी कँटिया, बंसी।
 बरिबार्-अ० क्रि०, सं० क्रि० 'बरसना'।
 बरिबार्-खी० दे० 'बर्ष'।
 बरिस-पु० दे० 'बरस'।
 बरी-वि० बली; [अ०] आजाद, रिहा; फारिग; निर्वोष।
 खी० [हिं०] सूँका हुआ नरक, कंकणका नूना; दे० 'यकी'।
 -का नूना-कंकणका नूना जो पल्लवर आदिके काम आता है।
 बरीबर्-पु० [सं०] बैल।
 बरीस-पु० दे० 'बरस'।
 बरीसना-अ० क्रि०, सं० क्रि० दे० 'बरसना'।
 बरीसनु-पु० राधाका जन्मस्थान बरसाना।
 बरु-अ० बलिका भले ही।
 बरुना; बरुवार्-पु० ब्राह्मणकुमार जिसका उपनयन हो रहा हो; उपनयन; बह गीत जिसे गाकर भिक्षा-भुषिवाले ब्राह्मण उपनयनके निमित्त मोल माँगते हैं; बंगाली ब्राह्मणोंका एक भेद; मूँजका छिलका जिसमें डलिया आदि बनाते हैं। वि० दुष्ट, शरारती।
 बरु-अ० दे० 'बह'।
 बरुनालय-पु० समुद्र।
 बरुन-पु० दे० 'बरुण'।
 बरुना-पु० एक पेड़। खी० दे० 'बरुण'।
 बरुनी-खी० दे० 'बरुनी'।
 बरुय-पु० दे० 'बरुय'।
 बरुयी-खी० उत्तर प्रदेशकी एक छोटी नदी।
 बरुवार्-पु० ठाटके नीचे लंबाईमें दिया जानेवाला मोला बट्टा।
 बरुवार्-खी० छोटा बरुका।
 बरे-अ० ऊँची आवाजसे; बलपूर्वक; बदलेमें।
 बरेखी, बरेयी-खी० ब्याहकी ठहरौनी, मँगनी; बौहपर पहननेका एक गहना।
 बरेछा-खी० ब्याहकी ठहरौनी।
 बरेज, बरेजा-पु० पानकी बाटी।
 बरेठ, बरेठा-पु० गोरी।
 बरेस-खी० मथानीकी रस्सी।
 बरेता-पु० सनका मोटा रस्ता।

बरेदी-पु० बराहा।
 बरेवा-पु० दे० 'बरेज'।
 बरेवा-पु० दे० 'बरेवा'।
 बरो-पु० एक वास।
 बरोक-पु० बह धन जो कन्यापक्षकी ओरसे बरपक्षके हस्त-क्षिप्त दिया जाता है कि ब्याहकी बातचीत पक्षी समझी जाय, फलदान [बर-रोक]। अ० बलपूर्वक-'होइ सो बैल जेहि बारी, मानहिं सवै बरोक'-प०।
 बरोठा, बरीठा-पु० डेवड़ी; बैठक। -(ठे)का चार-द्वार पूजा।
 बरोठ-वि० खी० दे० 'बरोठ'।
 बरोह-पु० बरगद, पाक आदिकी बाखियोंसे निकलनेवाली प्रशाखा जो धीरे-धीरे जमीनतक पहुँचकर अड़ पकड़ लेती है, बरगदकी जटा।
 बरौंछी-खी० सूखरके बाणोंकी सूँची जिससे सुनार गहना साफ करते हैं।
 बरौनी-खी० पल्लवके किनारेके बाण; † पानी भरने आदि-का काम करनेवाली टूटनी, क्लारिन।
 बरौरी-खी० बरी।
 बरौं-खी० [अ०] बिजली, बिजुल। -ज्वाव-वि० जिसपर बिजली गिरी हो, बिजलीका मारा हुआ। -साव-वि० बिजलीकी तरह चमकनेवाला। -दुव-वि० बहुत तेज दीपने, भागनेवाला; धारदार, तीक्ष्ण। -जुमा-पु० बिजुलकी स्थिति माझम करनेका आला। -शस्त्रार-वि० अति द्रुतगामी।
 बरौं, बरौं-पु० अंग्रेज लेखक तथा राजनीतिज्ञ जो ब्रिटिश पार्लियामेंटका सदस्य था और फ्रांसीसी क्रांति, अमेरिकन टेक्सेसान, बारेन हेस्टिंग्सका मामला आदि विषयोंपर दिये भाषणोंके लिए प्रसिद्ध है (१७२९-१७९७)।
 बरौत-खी० दे० 'बरकत'।
 बरौर-वि० [सं०] बहरा। पु० बकरी या भेड़का बच्चा; बकरा; खेल्, परिहास।
 बरौं-वि० बिजलीका; बिजलीकी शक्तसे चलनेवाला। (-पंखा, रेडियो ह०)।
 बरौस्त-वि० दे० 'बरलास्त'।
 बरौ-पु० [फा०] प्रता; लंबाईका इशियार।
 बरौ-पु० दे० 'बरठा'।
 बरौं-वि० दे० 'बरे'।
 बरौना-सं० क्रि० दे० 'बरजना'।
 बरौन-पु० दे० 'बर्णन'।
 बरौना-सं० क्रि० बर्णन करना। खी० दे० 'बर्णना'।
 बरौना, बरौना-सं० क्रि० दे० 'बरतना'।
 बरौत-पु० दे० 'बरतान'।
 बरौत-वि० दे० 'बर्तुल'।
 बरौ-पु० बैल।
 बरौस्त-खी० दे० 'बरदाश्त'।
 बरौ-पु० दे० 'बर्ण'।
 बरौवा-सं० क्रि० बर्णन करना। खी० दे० 'बर्णना'।
 बरौर-पु० [अ०] लपका बह हिस्सा जिसमें लगी हुई बत्ती

मुँहपर जलती है।

बर्बाद सा-पु० (जार्ज) १८५६-१९५०; सुप्रसिद्ध आयरिश नाटककार जो अपनी सुमती प्रक्रियाओं के लिए तथा कथन-चारका संवाचीक करने के कारण अत्यंत लोकप्रिय हो गया था।

बर्बा-खी० [फा०] जमा हुआ पानी; वायुमंडल की भाष जो सरदीसे धनीभूत होकर बरफ के गाले की श्रमक में अजीनपर गिरती और फिर जमकर कभी हो जाती है; बर्फ में रखकर जमाया हुआ दूध, फलोंका रस आदि। वि० बर्फ जैसा ठंडा; बर्फ-सा सफेद (हीना, हो जाना)। -**की नदी-हिमानी**, ग्लेशियर। -**की कुलफो-बर्फ के योगसे कुलफो में जमाया हुआ दूध आदि। मु० -गिरना-पड़ना-आकाशसे बर्फका गिरना, हिमपात।**

बर्बांनी-वि० [फा०] बर्फका; बर्फसे ढका हुआ (पहाड़)।

बर्बा-खी० दे० 'बरफो'।

बर्बाका-वि० बर्फमें युक्त, बर्फसे ढका हुआ।

बर्बाट-पु० [स०] राजमाष।

बर्बाटी-खी० [स०] राजमाष; बेरवा। † बीका।

बर्बर-वि० [स०] असभ्य, जंगली, उग्र; अनार्य; दुँवर-राले। पु० दुँवराले बाल; जंगली, असभ्य आदमी; एक कोष; एक बछली; एक सुगंधित वृक्ष; इथियोपिया का बाज; एक तरबूका नृत्य।

बर्बरा-खी० [स०] बनतुलसी; एक नदी; एक तरबूकी मक्खी; एक फूल; पीत चंदन।

बर्बरी-खी० [स०] बनतुलसी; ईगुर।

बर्बरी (बिन्नु)-वि० [स०] दुँवराले बालोंवाला।

बर्बा-पु० बिब।

बर्बाक-वि० [अ०] चमकता हुआ; तेज, द्रुतगामी; चतुर। **बर्बाका-अ०** कि० सपना देखते हुए आदमीका नीलना; बबबकाना, प्रलाप करना।

बर्बा-पु० बिब, ततैया; सरसोंके आकारका एक छोटेदार पौधा जिसमें केसरिया रंगके फूल लगते हैं और बीज तेलहनके काम आता है।

बर्बास-खी० दे० 'बरसात'।

बर्बा-पु० [स०] दे० 'बर्बा'।

बर्बाज-वि० [स०] शक्तिशाली; फाड़ने या खींच लेनेवाला; बकाचौष पैदा करनेवाला। पु० पत्ता; खींचने, फाड़नेकी क्रिया।

बर्बा (बिन्नु)-पु० [स०] दे० 'बर्बा'।

बर्बा-वि० 'बुलंद'।

बर्बा-खी० दे० 'बुलंदी'।

बल-पु० [स०] शरीरकी शक्ति, ताकत; स्थूलता; सेना; शुक; बलराम; इन्द्रके बाधों मारा गया एक राक्षस; अरोसा, सहरा (हि०); बलका बर्ब; अपका जो; कोभा; बरण वृक्ष। -**कंद-पु०** बालाकंद। -**कर-कारक-वि०** बल देनेवाला। -**कास-वि०** बलका हृत्पुंज। -**काज-पु०** सेना। -**चक्र-पु०** सेना; राज्य, साम्राज्य। -**ज-वि०** बलसे उत्पन्न; बलजाल। पु० नगरका द्वार; खेत; फसल; अक्की राशि; बुद्ध। -**ज्या-खी०** धृष्टी; एक तरबूकी जुड़ी; सुंदर स्त्री; रस्ती। -**द-पु०** बैल, जीवक; गृध्राधि-

का एक भेद। वि० बल देनेवाला। -**दुर्ष-पु०** बलका धर्म। -**वा-खी०** अश्वगंध। -**वाक-पु०** बलराम।

-**देव-पु०** बलराम; बाहु। -**हिंद (ए) पु०** इंद।

-**मासक-पु०** इंद। -**पति-पु०** सेनापति; इंद।

-**पांडुर-पु०** कुंदका घोष। -**पुच्छक-पु०** कोभा।

-**टूटक-पु०** रोड़ मछली। -**प्रमथनी-खी०** दुर्गाका एक रूप। -**प्रध-खी०** बलरामकी माता, रोहिणी।

-**बीज-पु०** कंधीके बीज। -**बीर-बीर-पु०** कृष्ण (बलरामके भाई)। -**बुता-पु०** [हि०] ताकत, जोर।

-**भद्र-पु०** बलवान् पुरुष; बलराम; नीलगाय; अनंत; लोभ। -**भद्रा-खी०** शायमाणा; लोभ; धृत्कुमारी।

-**भद्र-पु०** बलका धर्म। -**मुख्य-पु०** सेनानायक।

-**राम-पु०** कृष्णके बड़े भाई जो रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, बलदेव, हलधर। -**वर्जित-वि०** निर्बल। -**वर्जन-वि०** बल बढ़ानेवाला। -**वर्जिनी-खी०** जीवक।

-**वर्जी (बिन्नु)-वि०** बल बढ़ानेवाला। -**विकर्मिका-**

-**खी०** दुर्गाका एक नाम। -**विष्वास-पु०** सेना-भूतन। -**ज्यसन-पु०** सेनाकी पराजय। -**ज्यूह-पु०** एक समाधि। -**झाखी (किन्नु)-वि०** बलयुक्त, बली।

-**शील-वि०** बलशाली। -**सूदन-पु०** इंद। -**स्थिति-खी०** शिविर, छावनी। -**हा (हन)-पु०** सेनाका नाश करनेवाला; दलेष्वा; इंद। -**हीम-वि०** निर्बल, कमजोर। **मु० (किसीके)-पर** कृदना-किसीके भरोसे इतराना। -**भरना-ताकत** दिखलाना, जोरमें आना।

बल-पु० पछ, बगल, करघट; ऐंठन; शिकन; फेरा, टेढ़ापन; लकड़; फर्क; घाटा। **मु० -आना-शिकन**

पड़ना; फर्क आना। -**उतरना-शिकन** दूर होना। -**की बात-शरात** या बालाकीकी बात। -**की छेना-धर्म** करना। -**खाना-नाराज** होना; टेढ़ा होना; लचकना; घाटा सहना। -**खुलना-पीषा** होना। -**देना-ऐंठना, भरोना**। -**निकालना-टेढ़ापन** या शिकन दूर करना। -**पड़ना-घाटा** होना; फर्क होना; शिकन आना।

बलक-पु० [स०] आधी रातके बादका स्वप्न; शीरे और दूधका शरवत।

बलकटी-खी० राज-करकी किस्त जो मुसलमानों राज्य-

कालमें फसल काटनेके समय बसूल की जाती थी।

बलकना, बलकना-अ० कि० उमगना, जोशमें आना; इतरा कर नोलना, बलनलाना।

बलकवि-खी० प्रवाद, उल्लास, जोश-'रस-बलकनि उन-

भदि न कहूँ सके'-धन०।

बलकल-पु० दे० 'बलकल'।

बलकाना-स० कि० उबालना; उमगाना, उसकाना।

बलक-वि० [स०] शेत, सफेद। पु० सफेद रंग। -**गु-पु०** चंद्रमा।

बलाम-पु० [अ०] कफ, दलेष्वा।

बलामी-वि० कफप्रधान (प्रकृति); कफजन्य (रोग)।

बलदुष्ट, बलसोष्ट-पु० नाक टूटनेसे होनेवाला कोष।

बलदिया-पु० गाय-बैल चरानेवाला।

बलन-पु० [स०] बलवान् बनानेकी क्रिया।

बलना—अ० क्रि० जलना, दहनना ।

बलबलाना—अ० क्रि० ऊँटका बोलना; बकबकाना; उफनना ।

बलबलकाहट—स्त्री० बलबलानेकी किया; ऊँटकी बोली ।

बलम—पु० [सं०] एक जहरीला कीड़ा ।

बलमी—स्त्री० सपने ऊपरकी छत; उसपरकी कोठरी ।

बलम—पु० प्रियतम ।

बलमीक—पु० बॉली ।

बलब—पु० दे० 'बल्य' ।

बलया—स्त्री० दे० 'बल्य' ।

बलख—पु० [सं०] बलराम; † इंद्र ।

बलवर्द्ध—वि० दे० 'बलवर्त' ।

बलवर्त—वि० बलवान् ।

बलवत्ता—स्त्री० [सं०] बलवान् होनेका भाव, शक्तिभक्ता ।

बलवा—पु० दंगा, फसाद, उपद्रव; विप्लव, बग़ावत; पाँचमे अधिक आदमियोंका मिलकर एक या अधिक आदमियोंकी मारना (झा०) ।—**हूँ**—वि०, पु० बलवा करनेवाला, विद्रोही, बागी ।

बलवान् (बल)—वि० [सं०] शक्तिशाली, बली, ताकतवर ।

बलवार—वि० बलवान्—'सहित भीरु बानर बलवारे'—रघुराज सिंह ।

बलसुम—वि० बलुआ, रेतीला ।

बलौगक—पु० [सं०] वसत ऋतु ।

बला—स्त्री० [सं०] बरिदारा; एक मंत्र जिसके प्रयोगसे योद्धाकी भूल-व्यास नहीं लगती; दृष्टि; दक्षिणी एक कन्या; छोटी बहनका संवोधन (ना०) ।—**बलुह**—पु० बला (बरिदारा), महाबला (सहदेवी) † अगिबला (कैंगनी) और नागबला (गैरेन) इन चार पौष्टिक जोषधियोंका समूह ।—**पंचक**—पु० बलावतुष्टय और राजबला ।

बला—स्त्री० [अ०] कष्ट, आपत्ति, आफत; भूत-प्रेत, मेल-बाधा; रोग-व्याधि; बहुत कष्ट देनेवाली वस्तु, व्यक्ति ।—**कक्षा**—वि० मुसीबतें उठाने, कठिनाइयाँ झेलनेवाला ।

—**नसीब**—वि० अभाग्य ।—**नोखा**—वि० बहुत खानेवाला; बहुत शराब पीनेवाला ।—**(ये) असमानी**—स्त्री० अचानक आनेवाली विपत्ति, दैवकोप ।—**जान**—स्त्री० जीका जंजाल, झंझट ।—**नागहान**,—**नागहानी**—स्त्री० आकस्मिक विपत्ति ।—**बद**—स्त्री० बुरी बला । **मु०**—**उत्तरना**—विपत्ति आना, दैवकोप होना । (**किस्तीकी**)—

(**कुछ**) करे या करने जाय—नहीं करना ।—**का**—

गजबका, हद दरजेका । (**मेरी**)—**जाने**—मैं न जानता हूँ,

न जाननेकी गरज है ।—**ठल्ला**—कहते, परीशानीसे या

तंग करनेवाले आदमीसे छुटकारा मिलना ।—**पीछे**

लगाना—बलैका साथ होना ।—**मोल लेना**—जान-बूझ-

कर झंझट-झमेलेमें पड़ना । (**मेरी**)—**से**—कुछ परचा नहीं,

(मेरी) जूतीकी नोकसे । **बलायें** लेना—किस्तीकी बला,

रोग-व्याधि अपने ऊपर लेना ।

बलाह—स्त्री० दे० 'बला' [अ०] ।

बलाक—पु० [सं०] बगल; एक पुराण-वर्णित राजा; पुरखा

पुत्र ।

बलाका—स्त्री० [सं०] प्रिया; कायुकी स्त्री; बगली; वकपत्ति;

नृत्यका एक भेद ।

बलाकाब—पु० [सं०] जहू-वंशका एक राजा ।

बलाकिका—स्त्री० एक तरहका छोटा बगला ।

बलाकी (किन्)—वि० [सं०] बगलेंसे पूर्ण, जहाँ बहुतसे बगले हों । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

बलाम—पु० [सं०] सेनानायक; बहुत बली शक्ति ।

बलाह—स्त्री० [सं०] मूँग ।

बलाज—वि० [सं०] बलवान् । पु० उरद ।

बलात्—अ० [सं०] बलपूर्वक, जबरदस्ती ।—**कार**—पु० बल-पूर्वक, जबरदस्ती कुछ करना; बलप्रयोग; अन्याय; अत्याचार; स्त्रीकी हठ्ठाके बिना बलपूर्वक किया जानेवाला संभोग; महाजनका कणिको रोककर और मारपीटकर पावना बसल करना (रघु०) ।—**कृत**—वि० जिसपर बलाकार किया गया हो, जिससे जबरदस्ती कुछ कराया गया हो ।

बलात्काराभिगम—पु० [सं०] बलपूर्वक किया जानेवाला संभोग ।

बलाधिक—वि० [सं०] अधिक बलवाला ।

बलाधिकरण—पु० [सं०] सेनाकी काररबाई ।

बलाधिक्य—पु० [सं०] बलकी अधिकता ।

बलाध्यक्ष—पु० [सं०] सेनापति ।

बलानुज—पु० [सं०] कुष्ण ।

बलान्वित—वि० [सं०] बली, बलशाली ।

बलाबल—पु० [सं०] बल और बलामात्र; (दो पक्षों आदि-का) तुलनात्मक बल और निर्भरता, सहज और सहज-हीनता ।

बलाय—पु० [सं०] वरुण वृक्ष । स्त्री० [हिं०] दे० 'बला' [अ०] । **मु०**—**लेना**—दे० 'बलायें लेना' ।

बलाराति—पु० [सं०] इंद्र ।

बलालक—पु० [सं०] जल-औंकार ।

बलायलेप—पु० [सं०] बलका धर्मद ।

बलाश, **बलास**—पु० [सं०] कफ; क्षय ।—**बल**—पु० औंकार एक रोग ।—**बर्धन**—वि० कफ बढ़ानेवाला ।

बलासक—पु० [सं०] रोगके कारण औंलके सफेद हिस्सेमें बना हुआ पीला दाग ।

बलासी (सिन्)—वि० [सं०] क्षयरोगसे ग्रस्त ।

बलाह—पु० [सं०] जल ।

बलाहक—पु० [सं०] बादल; मोघा; सपोंका एक भेद; एक पर्वत ।

बलिदम—पु० [सं०] विष्णु ।

बलि—पु० [सं०] विरोचनका पुत्र दैत्यराज जिसे पुराणोंके अनुसार विष्णुने वामनरूप धरकर छल्य; चँवरका दंड ।

स्त्री० देवताकी चढ़ाई जानेवाली चीज, चढ़ावा, नैवेद्य; पूजा; बलिपशु; जमीनकी उपजका भाग जो राजाकी

मिले, राजकर; पंच महायज्ञोंके अंतर्गत चौथा, भूतयज्ञ;

बल, सिक्कबन; पेटमें नाभिके ऊपर पड़नेवाली रेखा; बवा-

लीरका मस्ता; गुरावतंके पास होनेवाला एक फोका;

छाजनका छोर; * सखी ।—**कर**—वि० कर देनेवाला;

बलि चढ़ानेवाला; भुर्रा पैदा करनेवाला ।—**कर्म**(र्)—

पु० भूतयज्ञ; पूजा; राजकर देना ।—**दान**—पु० दैवताको

पूजन-सामग्रीका अर्पण; दैवताके उद्देश्यसे पशुवध करना,

कुरागी - **ह्रिद्**(**ह्र**) - पु० विष्णु । - **ध्वंसी**(**सिध्**) - पु० विष्णु । - **नन्दन** - पु० सुत - पु० बाणासुर । - **पद्म** - पु० वह पद्म जिसका किमी देवताके प्रीत्यर्थ वह किया जाय । - **पुच्छ** - **मुच्छ** (**ञ**) - पु० कोमा । - **पोद्गी** - स्त्री० बड़ी पोद्गी । - **पिय** - पु० कोथका पेड़ । - **बंघन** - पु० विष्णु । - **भृत्** - वि० कर देनेवाला, भरीन । - **भोज**, **भोजन** - पु० कोमा । - **मंदिर्**, **बैरम**(**ह्र**), **सह**(**ह्र**) - पु० पाताल लोक । - **मुष्ण** - पु० बंदर । - **वैश्वदेव** - पु० भूतपक्ष । - **हरण** - पु० सब जीवोंको बलि देना । - **हा**(**ह्र**) - पु० विष्णु । **मु०** - **चड़ना** - बलिदान होना, मारा जाना । - **चड़ना** - बलि देना । - **आना** - निछावर होना ।

वर्णिक - पु० [सं०] एक जाति ।
वर्णित - वि० बलि चढ़ाया हुआ, मारा हुआ; दे० 'बलित' ।
वर्णिनी - स्त्री० [सं०] अतिवक्ता; वरियारा ।
वर्णिमा(**मन्**) - स्त्री० [सं०] वक्ता, ताकत ।
वर्णिया - वि० बलवान् ।
वर्णिवर् - पु० [सं०] दे० 'बलीवर्' ।
वर्णिवा - पु० [सं०] कँटिया, बंसी ।
वर्णित - वि० [सं०] सबसे अधिक बली, अतिशय बलवान् । पु० ऊँट ।
वर्णिष्णु - वि० [सं०] अपमानित ।
वर्णिहारना - सं० क्रि० निछावर करना ।
वर्णिहारी - स्त्री० निछावर होना, कुर्बान जाना । **मु०** - **आना** - निछावर होना । - **लेना** - बकायें लेना ।
वली - स्त्री० [सं०] लम्बावर शिकनसे पकी हुई रेशा, बलि; कला । - **मुष्ण** - पु० बंदर ।
वली(**किन्**) - वि० [सं०] बलवान्, ताकतवर । पु० मैसा; सौँह; ऊँट; मूअर; बकराम; सैनिक; कक; एक तरहकी चमेकी ।
वलीक - पु० [सं०] छप्परका फिनारा ।
वलीन - पु० [सं०] विच्छेद ।
वलीवर् - पु० [सं०] सौँह; बैल ।
वलीवा - वि० जिसमें बाल अधिक मिला हो, रेतोला । पु० बड़ई जमीन ।
वलीन - पु० बल्किस्तानमें बसनेवाली एक जाति ।
वलीखिलान - पु० हिंदुस्तानके पश्चिममें अवस्थित एक देश ।
वलीची - पु० बल्किस्तानका निवासी । स्त्री० बल्किस्तानी भाषा ।
वलीत - पु० [अ०] ठंडे देशोंमें होनेवाला एक पेड़ जिसे यूरोपवाले पवित्र मानते हैं ।
वलीत - वि० [सं०] बलवान्, शक्तिशाली ।
वलीत - पु० पानीका बुलबुल ।
वलीवा - स्त्री० दे० 'बला' । **मु०** - **लेना** - दे० 'बलायें' केन' ।
वलीक - पु० दे० 'बलीक' ।
वलीक - पु० [सं०] आसवशी तलछट ।
वलीक - अ० [फा०] किंतु, प्रत्युत; अच्छा हो कि (बलि तुम कल आओ) ।
वली - पु० [अ०] सीनेकी नलीका अधिक चौड़ा भाग; पतले

सीनेका खोलका लट्टू जिसके भीतर बिजलीकी बली होती है ।
वली - वि० [सं०] बलवान्; बलकारक । पु० बौद्ध सिद्ध; श्रुत, शीर्ष ।
वली - स्त्री० [सं०] अतिवक्ता; अवगणा; प्रसारिणी; सिद्धि ।
वलीन - वि०, पु० दे० 'बलीन' ।
वलीनी - स्त्री० प्रिया; * छत - 'ताकी बर बलीनी, विविध अति ऊँची, जासों निपटे नजीक सुरपतिको अगर है' (कान्यागौरी); दे० 'बलीनी' ।
वलीन - पु० डंडा; माला; चौंटी या सोनेका पणर चढ़ा हुआ सोंटा जिसे राजाओं, दूतों आदिकी सवारोंके अगल-बगल लेकर चलते हैं, सोंटा । - **बरदार** - पु० वलीन लेकर चलनेवाला, अनुचर ।
वलीमटेर - पु० स्वयंसेवक, 'बाहंटीवर' ।
वलीनी - स्त्री० दे० 'बलीनी' ।
वली - पु० [सं०] चरवाहा, स्वाला; रसोइया, पाचक; विराटके यहाँ पाचकका काम करते समय भीमका नाम ।
वलीनी - स्त्री० [सं०] स्वाकिन, गोपी ।
वली - पु० लकड़ीका छना, सीधा लट्टा; नाब सेनेका डोंग; गैद मारनेका चपटा डंडा, डैट ।
वलीनी - स्त्री० एक रागिनी ।
वली - स्त्री० छोटा बहा; डोंग; * कला ।
वली - पु० [सं०] एक करण (स्त्री०) ।
वलीज - पु०, **वलीजा** - स्त्री० [सं०] एक मोदी धात ।
वलीव - पु० [सं०] एक दैत्य जो बलरामके हाथों मारा गया ।
वलीक, **वलीक** - पु० [सं०] बल्ल देश या बहोंका निवासी ।
वलीवना - अ० क्रि० बेकार नमना ।
वलीवर - पु० बगूला, अंध ।
वलीवा - पु० बंदर ।
वलीवियाना - अ० क्रि० भटकना ।
वली - पु० [सं०] ज्योतिषके करणोंमेंसे पहला ।
वलीवरा - पु० बगूला ।
वलीन - पु० दे० 'बलीन' ।
वलीवा - सं० क्रि० नौना; विलेना । अ० क्रि० विलेना । वि०, पु० नौना ।
वलीवरा - अ० क्रि० दे० 'बलीवरा' ।
वलीवरी - स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदामें मस्से पैदा हो जाते हैं ।
वलीव - पु० दे० 'बलीव' ।
वलीरी - पु० एक तरहका बारीक रेशमी कपड़ा ।
वलीव - वि० [सं०] (बलीव) जो काफी बड़ा हो गया हो ।
वलीवणी, **वलीवनी**, **वलीवणी**, **वलीवनी** - स्त्री० [सं०] वह गाय, जिसका बलीव काफी बड़ा हो गया हो, बलीनी ।
वलीव - वि० [सं०] जरा-जोरी ।
वली - वि० [सं०] मूर्ख, अज्ञान ।
वलीव - पु० दे० 'वलीव'; एक पौधा ।
वलीव - पु० एक चिकिया ।

बर्तली-वि० बर्तलका; बर्तली रंगका । पु० हलका पीला रंग; पीला कपड़ा ।

बर्तलर-पु० दे० 'बैखानर' ।

बस-पु० बस, बसि, काबू ।-का-काबूका, बसियारका ।

बस-वि० सुवासित ।

बस-स्त्री० [अं०] यात्रियोंको होनेवाली छारी । अ० [फा०] काफी, अच्छा बहुत; इतना हो; (आधा अर्धमें) ठहरो, रुको ।-करो-ठहरो, रुक जाओ, खतम करो ।

बसति-स्त्री० दे० 'बस्ती' ।

बसन-पु० दे० 'बसन' ।

बसना-अ० कि० स्थायी रूपसे रहना; ठिकना, ठहरना; आगाद होना; मनुष्योंका रहने लगना; * बैठना-ध्वार-पगो पगो पिक्की बसि भीतर आपने सीस सँवारी-देव; बसाया जाना, सुगंधसे बासा जाना । पु० बैठन; पैली; रुपये रखनेकी जालीदार पैली; † बरतन ।

बसनि-स्त्री० बास, रहाइश ।

बसनी-स्त्री० रुपये रखकर कमरमें बाँधनेकी एक प्रकारकी लकी पैली ।

बसर-स्त्री० [फा०] गुजर, निर्वाह (करना, होना) ।-भोकास-स्त्री० निर्वाह, जीवन-यापन ।

बसवार-पु० तबका, छीक । वि० सोंधा ।

बसवास-पु० बास, रहना; रहनेका ठिकाना; रहनेका ढंग ।

बसह-पु० बैल ।

बसोधा-वि० बासा हुआ, सुवासित ।

बसा-स्त्री० दे० 'बसा'; * बई, जिड़ ।

बसात-स्त्री० दे० 'बिसात' ।

बसाना-स० कि० बननेकी प्रेरित करना; बसनेका प्रबंध करना; आगाद करना; ठिकाना; बासना, सुवासित करना; * बिठाना । अ० कि० बस चलना-'तन मन हारेहूँ हँसै; तिनसो कहा बसाय'-वि०; बसना; गंध देना; बढू करना ।

बसिआना, बसियाना-अ० कि० बासी हो जाना ।

बसिबीर, बसिबीरा-पु० रातमें होनेवाले कुछ पूजनोका आगला दिन जब परके सब लोग रातका पका हुआ बासी धो खाना खाते हैं; बासी भोजन ।

बसिया-वि० बासी । पु० बासी भोजन ।

बसिह-पु० दे० 'बसिह' ।

बसीकत, बसोगत-स्त्री० बस्ती; बसनेकी क्रिया, निवास ।

बसीकर-वि० दे० 'बसीकर' ।

बसीकरन-पु० दे० 'बसीकरण' ।

बसीठ-पु० दूत, संदेशवाहक ।

बसीडी-स्त्री० दूतका काम, दौत्य ।

बसीली-पु० बस्ती, निवासस्थान ।

बसीना-पु० निवास; रहाइश ।

बसीका-वि० बासका, गंधयुक्त; दुर्गंधयुक्त ।

बसु-पु० दे० 'बसु' ।-बैच-पु० दे० 'बसु' में ।-बा-स्त्री० दे० 'बसु' में ।

बसु-पु० दे० 'जगदीशचंद्र बसु', 'सुभाषचंद्र बसु' ।

बसुमती-स्त्री० दे० 'बसुमती' ।

बसुरी-स्त्री० बाँसुरी ।

बसुख-पु० एक औजार जिससे बड़ई लकड़ी काटता-छीलता है ।

बसुली-स्त्री० छोटा बसुल; वह औजार जिससे राज ईंटें गढ़ता-छीलता है ।

बसेरा-पु० रात बितानेका स्थान, ठिकनेका ठिकाना; वह जगह जहाँ विधियों रात बितायें, पोसला; रहना, ठिकना; रहनेवाला । **सु०**-करना;-केना-रातमें ठिकना, बसना ।

बसेरी-पु० बसने-ठिकनेवाला ।

बसेवा-पु० बसनेवाला ।

बसोबास-पु० बासस्थान ।

बसीधी-स्त्री० सुवासित और लच्छेदार रबड़ी ।

बस्ट-पु० [अं०] छाती; वह बिज बा मूर्ति जिसमें कमरमें ऊपरका भागभर दिखावा गया हो ।

बस-स्त्री० दे० 'बसु' (केवल 'बीज'के साथ समासमें प्रयुक्त) । पु० [सं०] बकरा ।-ऊर्ण-पु० सालका बैल ।-गंधा,-झोड़ा-स्त्री० अजमोड़ा ।-सुख-वि० बकरे जैसे सुसजावा ।-श्रृंगी-स्त्री० मेवासींगी ।

बसरा-पु० दे० 'बस' ।-मोचन-पु० किसीके बदनपर लंगोटीतक न रहने देना, सप कुछ छीन लेना ।

बस्राड-पु० [सं०] बकरेका मूत्र ।

बस्ता-वि० [फा०] बंधा हुआ (दस्त-बस्ता, कमर-बस्ता); तह किया हुआ । पु० वह कपड़ा जिसमें कितायें या कागज-पत्र बाँधे जायें, बैठन; बैठनमें बँधी हुई पुस्तकें, कागजपत्र । **मु०**-बँधना-कागजपत्र समेटना, (इस्तर, बदरतेसे) धर जानेकी तैयारी करना ।

बस्ताजिन-पु० [सं०] बकरेका चर्म ।

बस्तार-पु० पुष्टिदा ।

बस्ति-स्त्री० दे० 'बस्ति' ।

बस्ती-स्त्री० बसनेका भाव; आबादी, आबाद घरोंका समूह; गाँव, कसबा इ०; स्थानविशेषमें बसनेवाले लोग, आबादी (छोटी, बड़ी बस्ती, दस हजारकी बस्ती) ।

बस-पु० दे० 'बस' ।

बस्य-वि० अधीन, बशमें आनेवाला । पु० अधीनत्व व्यक्ति; सेवक ।

बह-पु० बही बहँसी ।

बहँगी-स्त्री० बौंसके फट्टेके दोनों छोरोंपर छोका लटकाकर बनाया हुआ बौंस होनेका साधन, काँवर ।

बहक-स्त्री० बहकनेका भाव, पथभ्रष्टता; बह-बदकर या अर्ध-बंद होलना, बहबहाइट ।

बहकना-अ० कि० ठीक रास्तेसे हटकर गलत रास्तेपर जाना, पथ-भ्रष्ट होना; चूकना; भुलावेमें जाना, भोला खाना; नशेमें अर्ध-बंद या धमधम बह-बदकर होलना; * छछलना । **मु०** बहकी-बहकी बाँट करना-मदोन्मत्तकी तरह अर्ध-बंद बहना; बह-बदकर होलना ।

बहकाना-स० कि० ठीकसे गलत रास्तेपर ले जाना, पथ-भ्रष्ट करना; भुँरे, हासिकर कामके लिए प्रेरित करना; भुलावा देना, भ्रममाना; बहलाना (बहौकी) ।

बहकाबह-स्त्री० बहकानेकी क्रिया ।

बहकावा-पु० बहकानेवाली बाल, भुलावा ।

बहलोक—**खी०** पानी बहनेकी नाली ।

बहसद—**वि०** सत्तर और दो । पु० सत्तर और दोकी संख्या, ७९ ।

बहन—**खी०** दे० 'बहिन' * पु० (सायका) बहना, होना ।

बहना—**अ०** कि० तरल पदार्थका नीचेकी ओर जाना, धारके रूपमें प्रवाहित होना; धारा वा बहावके साथ जाने जाना; हवाका चलना; घूना, सवित होना; फूटना, मवाद निकलना; अपनी अगहसे हट जाना; चरित्रप्रवृत्ति होना; नष्ट होना; दूब जाना; बहुत सस्ता पिकना; * उठना; चलना । स० कि० बहन करना, डोना; धारण करना, बिभावा ।
मु० बहनी गंगामें हाथ धोना—पेसी चोखते कायवा उठाना जिससे सब उठा रहे हों ।

बहनापा—पु० बहिनका नाता ।

बहनी—**खी०** दे० 'बहि'; † रोहनी ।

बहनु—पु० बाहन, सवारी ।

बहनेकी—**खी०** वह खी जिसके साथ बहनका नाता जोड़ा गया हो, मुँहकीली बहन ।

बहनेही—पु० बहिनका पति, भगिनीपति ।

बहनीठा—पु० बहिनका बेटा, भाँजा ।

बहनीरा—पु० बहिनकी ससुराल ।

बहम—पु० दे० 'बहम' ।

बहर—**अ०** बाहर 'गावत बहारें सड़ नीतर बहरके'—सड़ । **खी०**, पु० दे० 'बह' ।

बहरना—**अ०** कि० पीतना, कटना (समय)—'बहरि परै नाहि समै नये विधरा'—घन० ।

बहरा—**वि०** जिते सुनाई न दे, अवग्राहिहीन; ऊँचा सुननेवाला; अनसुनी करनेवाला, ध्यान न देनेवाला (—बन जाना) । **मु०**—**पद्य**—बहुत ज्यादा बहरा ।

बहराना—**स०** कि० दे० 'बहलाना'; * बाहर करना । * **अ०** कि० बाहर होना; बह जाना; ख जाना; बहरा हो जाना—'बहै दिने रहोगे कहाँ लौ बहरावनेको'—घन० ।
बहरिया—**वि०** दे० 'बाहरी' । पु० मंथिरका सेवक जो बाहर रहे (पल्लभसंप्रदाय) ।

बहरियाना—**स०** कि० बाहर करना; अलग करना । **अ०** कि० बाहर या बाहरकी ओर जाना; अलग हो जाना ।

बहरी—**खी०** बाजसे मिलती-जुलती एक शिकारी चिड़िया । **वि०** दे० 'बही' ।

बहरूप—पु० गोरक्षपुर, चंपारन आदिमें बसनेवाली एक जाति जो बैलोंका रोखगार करती है ।

बहल—**खी०** सवारीके काम आनेवाली छतरदार बैलगाड़ी, बहली ।—**छांना**—पु० गाड़ीखाना ।

बहल—**वि०** [सं०] बना, ठोस, दृढ़; बहरीला; विस्तृत; गहरा; गाढ़ा; कर्कश (स्वर); प्रचुर । पु० एक तरहकी रेश ।—**नाँच**—पु० एक तरहका चंदन ।—**स्वच**—पु० स्वतन्त्र्यवाला लोभ ।—**बस्म**(ज्)—पु० आँसुका एक रोग ।

बहलना—**अ०** कि० मनका दुःख, बकेश देनेवाली बातसे हटकर प्रसन्नताजनक व्यापारमें लगना, मनोरंजन होना ।
बहलना—**स०** कि० मनकी दुःख, बकेश देनेवाली बातसे हटकर प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें लगाना, टिक

सुख करना, मनोरंजन करना; भुलाना देना, बहलाना ।

बहलानुवाग—पु० [सं०] माझा लाल रंग ।

बहकाव—पु० मनका बहलना, किसी प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें लग जाना ।

बहलिस—**वि०** [सं०] जो खूब ठोस और दृढ़ हो गया हो ।

बहली—**खी०** दे० 'बहल' ।

बहल्ला—पु० आनंद ।

बहली—**खी०** कुस्तीका एक पैच ।

बहस—**खी०** [अ०] समाल-जबाब; बाद-विवाद, खंडव-मंडन; दुज्जत, झगडा; मुकदमेमें पक्षविशेषके वकीलका अपने पक्षकी युक्ति-प्रमाणके साथ प्रस्तुत करना; मतलब, लगाव (मुझे दूसरेसे कोई बहस नहीं); * होव ।—**क्रान्ती**—**खी०** कानून-विषयक बहस ।—**मुवाहिदा**—पु० बाद-विवाद, शाकाथ ।—**वाकियाती**—**खी०** वह बहस जो घटनाओं, तथ्योंको लेकर की जाय ।

बहसना—**अ०** कि० बहस करना, विवाद करना; होव लगाना ।

बहादुर—**वि०** दे० 'बहादुर' ।

बहादुर—**वि०** [फा०] शूर-वीर; साहसी, निडर ।

बहादुराना—**अ०** [फा०] वीरतापूर्वक, वीरोचित प्रकारसे । **वि०** वीरोचित, वीरतायुक्त ।

बहादुरी—**खी०** वीरता, मरदानगी ।

बहाना—**स०** कि० बहनेका कारण, कर्ता होना, जल् या दूसरे प्रकारके द्रव पदार्थको किसी दिशामें प्रवाहित करना; बहनेके लिए धारामें ढालना; बूँदों या धारके रूपमें गिराना, ढालना (आँव बहाना); सस्ता बेचना; उठाना; बरबाद करना । पु० [फा०] किसी कामके करने या न करनेका झूठा, बनावटी हेतु, मिस, होला; निमित्त, ब्याज ।—**(मे) बहानी**—**खी०** बहाने बनाना ।

बहाने—**अ०** 'के बहानेसे'; 'के हेतु, निमित्त बनाकर ।

बहार—**खी०** [फा०] बसत ऋतु; खिलती हुई जवाना; विकास; शोभा; आनंद, उत्क, मजा; तमाशा; नारंगीका फूल; एक रागिनी ।—**सुबारी**—**खी०** एक रागिनी ।—**महास्व**—पु० एक राग ।—**(रे) बानिष**—**खी०** फारसीका एक प्रसिद्ध कहानी-समूह ।—**हुस्न**—**खी०** रूपकी छटा, यौवनकी । **मु०**—**बर आना**,—**पर होना**—जबानीपर जाना, खिलना, पूर्ण विकास होना ।

बहारना—**स०** कि० साधना, झाड़ लगाना ।

बहारी, **बहारू**—**खी०** बंदनी, झाड़ू ।

बहाल—**अ०** [फा०] असली हालतपर, पूर्ववत् । **वि०** व्यो-का लो; प्रसन्न, खुश; तदुस्त; कायम ।

बहाली—**खी०** पुनर्मियुक्ति; † जुलबा देनेवाली बात, झोठा ।

बहाव—पु० बहनेका भाव वा क्रिया, प्रवाह, धारा ।

बहि(हिस्)—**अ०** [सं०] बाहर, भीतरका उलटा; बाहर-से, अलग ।—**शाखा**—**खी०** बाहरका कमरा ।—**खीठ**—**वि०** जो बाहर ठंडा हो ।—**खड्**—**वि०** बाहर बैठने-वाला ।—**ख**—**वि०** बाहरका ।

बहिर—**खी०** बहू, खी ।

बहिकम—पु० उन्न, अवस्था ।

बहिष्-पु० दे० 'बहिष्' ।

बहिष्-की० पितृकी पुत्री, भगिनी ।

बहिष्वापा-पु० दे० 'बहिष्वापा' ।

बहिर्वा-की० बाह्य ।

बहिष्वा-की० बाह्य, प्रान्त ।

बहिरः, बहिरा-वि० बहिरः, बहिरः ।

बहिरत्-वि० बाहर ।

बहिरावा-स० कि० बाहर निकालना । अ० कि० बाहर होना; बहिरा होना ।

बहिर- 'बहिष्' का समासगत रूप । -**अंग-वि०** बाहरी, अंतर्गतका उलटा; बाहरवाला । पु० बाहरी भाग, अंग । -**अर्थ-पु०** बाह्य उद्देश्य । -**इंद्रिय-की०** बाहरी इंद्रिय, बाह्य विषयोंकी ग्रहण करनेवाली इंद्रिय (कान, नाक आदि) । -**गत-वि०** बाहर गया हुआ; जो बाहर हो; अलग । -**गमन-पु०** बाहर जाना । -**गामी-वि०** -वि० बाहर जानेवाला । -**गोह-अ०** घरके बाहर; परदेशमें । -**जगत्-पु०** बाह्य जगत् । -**जानु-अ०** हाथोंकी पुटनेके बाहर किये हुए । -**देश-पु०** गाँव या नगरके बाहरका स्थान; परदेश । -**हार-पु०** बाहरी दरवाजा, तोरण । -**हारी(वि०)-वि०** जो घरके बाहर हो । -**ध्वजा-की०** दुर्गा । -**निस्सारण-पु०** बाहर निकालना । -**अव-वि०** बाहरी । -**आय-पु०** बाहरका हिस्सा । -**भूत-वि०** जो बाहर हो या हो गया हो; बहिरत् । -**अमरक-वि०** जिसका मन किसी ओर लगा हो । -**मुख-वि०** जिसका मन बाहरी विषयोंमें लगा, आसक्त हो; विमुख । पु० देवता । -**बाष्पा-की०** -**आन-पु०** बाहर आना, विदेशयात्रा । -**भुक्ति-वि०** बाहर रखा या बोधा हुआ । -**योग-पु०** बाह्य विषयपर ध्यान जमाना । -**लब्ध-पु०** अधिक कोण बनानेवाला लंब । -**छापिका-की०** एक तरहकी पहली जिसमें उसका उत्तर पहलीके शब्दोंके बाहर रहता है, भीतर नहीं । -**लोम-** **लोमा(अन्)-वि०** जिसके बाल बाहरकी ओर निकले हों । -**वास(स्)-पु०** कोपीनके ऊपर पहननेका कपड़ा । -**बिकार-पु०** गरमीकी बीमारी, आतशक । -**व्यसन-पु०** लंपटता । -**व्यसनी(वि०)-वि०** लंपट, व्यभिचारी ।

बहिष्वा-वि० जो न देनेवाली (गाय, जैस आदि) ।

बहिष्वा-वि० [सं०] बाहर जानेवाला, बाहरी । पुं० कर्कट; बाहरका भेदिया ।

बहिष्-वि० 'बहिष्' का समासगत रूप । -**करण-पु०** बाहर करना, अलग करना; बहिरिंद्रिय, अंतर्करणका उलटा ।

-**कार-पु०** बाहर करने, अलग करनेका भाव; भर्त्सना, विद्रोहीसे बाहर करना; वस्तु-विशेष (वर्ग या देश-विशेषके माल, संस्था आदि)का सामूहिक व्यवहार-स्थान, 'बायकाट' । -**कुटीचर-पु०** बेकहा । -**कृत्-वि०** जिसका बहिष्कार किया गया हो, निकाट हुआ; परित्यक्त । -**क्रिया-की०** बाहरी क्रिया; बाह्य संस्कार ।

-**धट-पु०** दे० 'बहिर्धट' । -**परिधि-अ०** घेरेसे बाहर ।

-**प्रज्ञ-वि०** जिसे बाह्य विषयोंका ज्ञान हो । -**प्राकार-पु०** परकोटा । -**प्राण-बहुत** भिन्न वस्तु; द्रव्य ।

बही-की० हिसाब-किताब लिखनेकी पुस्तक, महाजनों, व्यापारियों आदिके हिसाबका रजिस्टर (लिफ्टी बुक) मोटी कापी जो हिंदुस्तानी ढंगसे हिसाब लिखनेके काम आती है । -**खासा-पु०** किसी महाजन, व्यापारी आदिकी बहियाँ, हिसाबकी किताबें । **मु०** -**वर चढ़ना** या **ढँकना** -बहीपर लिख लिया जाना ।

बहीर-की० मोड़-जैहि नारम गये पंछिता तेई गई बहीर'-बीजका सेनाके साथ चलनेवाला सेवक-समुदाय; फौजी सामान-अथ बहीर चलती करी काहिइ पहुँचने कोल'-मुजान । अ० बाहर ।

बहीरति-की० [सं०] बाह्य रति-आभिगन, जुवन आदि ।

बहुटा-पु० बाँहका एक गहना ।

बहु-वि० [सं०] दोसे अधिक, अनेक, बहुत, ज्यादा । -

कटक-वि० बहुत कटनेवाला । पु० छद्म गोष्ठर; जवाला; हिताल । -**कंटा-की०** कटकारी । -**कंद-पु०** छुरन ।

-**कम्पा-की०** हतकुमारी । -**कट-वि०** बहुत काम करनेवाला, परिश्रमी । पु० ह्राद, देनेवाला, भंगी; ऊँट ।

-**करा-** **करी-की०** ह्राद । -**कर्मिका-की०** सूता-कानी । -**काम-वि०** बहुत-सी इच्छाओंवाला । -**कार्जन-वि०** बहुत दिनका, पुराना । -**कूर्च-पु०** एक तरहका नारियल । -**केतु-पु०** एक पक्षी । -**क्षम-वि०** बहुत सहनेवाला । -**क्षीरा-वि०** की० बहुत अधिक दूध देनेवाली (गाय) । -**गंध-वि०** तीव्र गंधवाला । -**ग्रा-की०** कस्तूरी । -**गंधा-की०** जूही; चंपकी कल्ला स्याह-जोरा । -**गुहा-** **गुहा-की०** कटकारी; भूगर्भालय ।

-**गुण-वि०** कई तारों या स्तंभोंवाला; जिसमें बहुत-से गुण हों । -**गुना-[वि०]** पु० खुले मुँहके डब्बेके आकारका पीतलका बरतन जो बटोरी, कगारी आदिका काम देता है । -**गुरु-पु०** परलवभाही व्यक्ति । -**ग्रंथि-पु०** हाथ । -**छिन्ना-की०** कंदयुक्त । -**अल्प-वि०** बहुत मोलनेवाला, बाला । -**अपिपता(तु)-वि०** पु० बड़बड़िया । -**आखी-की०** एक तरहकी ककड़ी । -**अ-वि०** बहुत जाननेवाला, बहुत विषयोंका जानकार । -**तंत्री-वि०** बहुत-से तंतुओंवाला (धारी) । -**तंत्रीक-वि०** जिसमें बहुत-से तार हों (बाध) । -**तिष्ठा-की०** काकमाची । -**तृण-पु०** मूँच । वि० तृणपूर्ण; तृण जैसा ।

-**त्वक्(च्)-वि०** -**त्वक्-पु०** भोजनपत्र । -**द्वंद्वी(वि०)-वि०** जिसके पास बहुतसे दंढधारी हों । -**दृशी(वि०)-वि०** जिसने बहुत देखा-सुना हो, बहुत दूरदर्शी । -**दूहा-की०** चंच नामका साग । -**दायी-वि०** उदार । -**दुष्ट-पु०** गेहूँ । -**दुष्टा-की०** दुष्टार साग । -**दुग्धिका-की०** गृह । -**धंधी-वि०** जो एक साथ बहुतसे कामोंमें अपनेकी फँसाये रखता हो । -**धन-वि०** जिसके पास बहुत धन हो । -**धर-पु०** धिप । -**धाम्य-पु०** एक संवत्सर । -**धार-पु०** वज्र । -**दाह-पु०** शंख । -**नामा(अन्)-वि०** जिसके बहुत-से नाम हों । -**पक्षीक-वि०** जिसके कई पक्षियाँ हों । -**पत्र-पु०** अन्नका ध्यान । वि० बहुत पसोँवाला । -**पत्रा-** **पत्री-की०** हतकुमारी; शिवलिङ्गिनी; दुधिया पास; बहती; मुरझाव । -**पत्रिका-की०** मेथी; वचः

सुर्भोजन। -वद्- -पाद्-वि० बहुतसे रौंवाला। पु०
बराद। -पदीविभक्ति-पु० दे० 'प्रतिपद विभक्ति'
(परिशिष्टमें)। -वद्- -पाद्-पु० बराद। -पुत्र-वि०
अनेक पुत्रोंवाला। पु० सप्तपुत्र। -पुत्री-की० शतमूली।
-पुत्र-वि० सप्तद्व। -पुत्र्य-पु० नीम; पारिमर्श दृष्ट।
-प्रकार-अ० अनेक प्रकारसे। वि० बहुविध। -प्रज-
वि० जिसके अधिक घर-घरे हों। पु० दल; पृथा;
मूँव। -प्रसिद्ध-वि० जिसमें बहुत-सी प्रतिष्ठाएँ या दावे
हों; (मुकदमा) जिसमें अनेक अभियोग या दावे हों।
-प्रद-वि० बहुत देनेवाला, महादानी। -प्रसू-की०
बहुत-से बच्चोंकी माँ। -फळ-वि० जो बहुत फले। पु०
कर्म; बनमंडा। -फला-की० खोरा; छोटा करेला, करेला;
सुर्भोजन; काकमात्री। -फली-की० आमलकी;
सुगेबाँह। -फेना-की० सातला; संलातुली। -बल-वि०
अतिबली। पु० सिंह। -बाहु-वि० बहुत-सी बाहोंवाला।
पु० रावण। -बीज-वि० निजोरा नीव; बीजवाला
केला; झरीफा। -अक्ष-वि० बहुत खानेवाला। -भाग्य-
वि० बड़े भाग्यवाला, बख्शारी। -आभी (विष्)-वि०
बहुत बोलनेवाला। -भुज-वि० अनेक भुजाओंवाला।
-भक्ष-पु० चारसे अधिक रेखाओंसे घिरा हुआ क्षेत्र
(ज्या०)। -भुजा-की० दुर्गा। -भूमिक-वि० कई
मजिलोंवाला। -भोका (कृ)-वि० बहुत खानेवाला।
-भोग्या-की० बेव्या। -भोकी (जिन्)-वि० पैद।
-भञ्जरी-की० तुलसी। -भस-वि० अति सम्मानित,
बहुमानयुक्त; कई रायें रखनेवाला। पु० अधिकतर, बहु-
संख्यक औगोका मत, कसरतराय (हिं०); अनेक मत, कई
तरहकी रायें। -भसि-की० बहुमान, बहुत मान, इज्जत
-भक्ष-पु० सीसा। वि० बहुत मैला। -भान-पु०
अति आदर, मान। -भानी (निष्)-वि० बहुत
आदरणीय। -भाम्ब-वि० आदरणीय, सम्मानित।
-भार्य-वि० अनेक रास्तीवाला। पु० चौराहा।
-भा-की० गंगा; दुधरिना, पुंयली की।
-भार्य-की० वह स्थान जहाँ कई रास्ते मिलें।
-मुख-वि० कई तरहकी बातें कहनेवाला; अनेक
दिशाओंमें जानेवाला। -मुखी-वि० की० अनेक विषयों,
दिशाओंमें लागू होने, जानेवाली। -मृत्-वि० मधुमेह
रोगसे पीडित। पु० मधुमेह। -मृज-पु० एक तरहका
गिरगिट। -मूर्ति-पु० बनकपाश; विष्णु; बहुरूपिया।
-मूख-वि० बहुत-सी जकोंवाला। पु० सत्कण्डा; नरसल;
सहजन। -मूक-पु० खस। -मूला-की० सतावर।
-मूख-वि० अधिक मूखका, बेसकमत। -बाजी-
(जिन्)-वि० जिसने बहुत बह किये हों। -रंग-वि०
अनेक रंगोंवाला, रंग-विरा। -रङ्गी-वि० [हिं०] जो
बहुत-से रंग बदले; बहुरूपिया। -रञ्जिका-की० मेदा।
-रस-वि० जिसमें बहुत रस हो; तरह-तरहके स्वाद-
वाला। -रसा-की० महाव्योतिष्मती। -रिपु-वि०
जिसके बहुत-से शत्रु हों। -रूपिया-वि०, पु० [हिं०]
अनेक रूप धरनेवाला। -रङ्गा-की० कंदपुष्प।
-रूप-वि० अनेक रूपोंवाला, बहुरूपिया। पु० शिव;
विष्णु; ब्रह्मा; सूर्य; कामदेव; गिरगिट; केश; ताडव

मृत्युका एक मोह। -रूपक-वि० अनेक रूपोंवाला।
पु० एक जीव। -रूपा-की० दुर्गा। -रेता (तस्)-
वि० जिसमें बहुत वीर्य हो। पु० ब्रह्मा। -रोमा (मन्)-
वि० जिसकी देहपर बहुत बाल हों, लोमछ। पु० मेघ।
-बचन-पु० संज्ञा, क्रिया आदिका वह विकार जिससे
बहुत या एकसे अधिकका मोह हो। -वर्ण-वि० नरुंग।
-वल्क-बल्कल-पु० पियासा। -वार्तिक-वि०
अनेक बयौतक चल्ने, रहनेवाला। -विक्रम-वि० अति
पराक्रमी, बहुत वीर। -विज्ञ-वि० विज्ञो, कठिनाहोसे
भरा हुआ। -विद्-वि० बहुत बड़ा विद्वान्।
-विध-वि० अनेक प्रकारका। अ० अनेक प्रकारसे, बहुत
तरहसे। -विवाह-पु० (पालिमें) एक साथ कई
स्त्रियोंसे विवाह करना। -विस्तार-पु० बहुत अधिक
फैलाव। वि० विस्तृत। -वीर्य-वि० अधिक वीर्यवाला।
पु० बहेबा; मेमल; मरवा। -व्ययी (विन्)-वि०
कुञ्जलसर्व, उलक। -वीहि-वि० जिसके पास बहुत
धान हो। पु० व्याकरणके चार मुख्य समासोंमेंसे एक।
-वस्तु-वि० जिसके बहुतसे दुरमन हों। पु० गौरवा,
चटक। -वस्त्य-वि० जिसमें बहुत कौट या गोंसियाँ
हों। पु० लाल खैर। -वाक्क-वि० अनेक शाखाओंवाला।
पु० मृद्व। -वाल-पु० मृद्व। -वाक्क-वि० अनेक
शिक्षाओंवाला। -वाक्क-की० जलपिप्पली। -सिरा
(रस्)-वि० अर्थ-पु० विष्णु। -भुत-वि० जिसने
बहुत-से शास्त्र शुरूसे पढ़े हों; विद्वान्; जिसने अनेक शास्त्रों-
की बातें सुनी हों, बहुज्ञ। -संख्य-संख्यक-वि०
बड़ी संख्यावाला, जो गिनतीमें बहुत हो। -संतति-
वि० अधिक बाल-बच्चोंवाला। पु० एक तरहका बंस।
-सार-वि० जिसमें बहुत सार हो, ठोस। पु० खैरका
पेठ। -सुता-की० शतमूली। -सु-की० बहुत बच्चोंकी
माँ; शूकरी। -सुसि-की० बहुत बच्चोंकी माँ; बहुत
आनेवाली गाय। -खबा-की० शस्त्रकी। -खन-
पु० उखल; शंस। वि० बहुत बोलनेवाला। -स्वामिक-
वि० जिसके बहुतसे मालिक हों।

बहुक-पु० [सं०] सूर्य; मदार; केकडा; वातक; तालाव
खोदनेवाला। वि० जो सँहने धानमें खरीदा गया हो।

बहुदनी-की० छोटा बह्दा।

बहुत-वि० अधिक, ज्यादा (मात्रा या संख्यामें); काफी,
पूरा। अ० अधिक मात्रामें, ज्यादा। -अच्छ-वि० (स्वीकृत-
स्वक) बेहतर है, ऐसा ही होगा। -करके-अधिकतर,
माय; बहुत संभव है। -कुछ-काफी, थोड़ा नहीं।
-प्रब-बहुत अच्छा।

बहुतक-वि० बहुतने।

बहुता-की०, बहुत-पु० [सं०] बहुतायत, आधिनय।
बहुतायत-की० दे० 'बहुतायत'।

बहुतायत, बहुतायत-की० अधिकता, ज्यादाती, इफरात।
बहुतेरा-वि० बहुत-सा। अ० बहुत-बहुत तरहसे।

बहुतेरे-वि० बहुत-से, अनेक।

बहुधा-अ० [सं०] अनेक प्रकारसे; बहुत करके, अक्सर।
बहुदुरा-अ० कि० लौटना, वापस आना, फिर मिलना।

बहुदि-अ० फिर; पीछे, अनंतर।

बहुरिया-**खी**० दुलहिन, नयी बहू।
बहुरी०-**खी**० मुना हुआ गेहूँ या जौ।
बहुरी०-**अ**० दे० 'बहुरि'।
बहुल-**वि**० [सं०] बहुत, अनेक; बहुत-सा, प्रचुर; काला।
 पु० अग्नि; आकाश; सफेद मिर्च; काला रंग; कृष्ण पक्ष।
 -**गंधा**-**खी**० छोटी इलायची। -**पक्ष**-**पु**० लाल सड़कन।
बहुलता-**खी**० [सं०] बहुतात, प्रचुरता।
बहुला-**खी**० [सं०] इलायची; गांध; नीलका पौधा; एक देवी; चंद्रमाकी बारहवीं कला। -**चौध**-**खी**० [हिं०] भाद्र-कृष्ण चतुर्थी। -**घन**-**पु**० बृदावनके ४४ वनोंमेंसे एक।
बहुलायास-**वि**० [सं०] अमसाध्य।
बहुलायाप-**वि**० [सं०] बकनादी।
बहुलाविष्ट-**वि**० [सं०] घना बसा हुआ।
बहुलाश्व-**पु**० [सं०] मिथिलाके एक प्राचीन नरेश।
बहुलिका-**खी**० [सं०] सप्तमिचक्र।
बहुकित-**वि**० [सं०] बढाया हुआ, वधित।
बहुली०-**खी**० इलायची।
बहुलीकृत-**वि**० [सं०] बढाया हुआ, वधित; प्रकट किया हुआ।
बहुवार-**पु**० एक वृक्ष।
बहुवाः(शस्त्र)-**अ**० [सं०] बहुत बार, बहुत तरहेत।
बहुँदा-**पु**० बौध्ध परहननेका एक गहना।
बहु-**खी**० पुनर्वाप; दुलहिन; पत्नी।
बहुवृक्ष-**पु**० [सं०] सन्म्यासियोंका एक भेद।
बहुवृमा-**खी**० [सं०] एक अर्थात्कार-उपमेयके एक ही धर्मके लिए अनेक उपमानोंका कथन।
बहुँता०-**खी**० बहकर जमा होनेवाली मिट्टी।
बहुँत०-**वि**० दे० 'बहुँत'।
बहुँदा-**पु**० एक बंगली पेड़ और उसका फल जो दवाके और चमड़ा सिझानेके काम आता है, विभीतक।
बहुँद-**वि**० जो इधर-उधर मारा-भारा फिरे, आवारा।
बहुँदा-**पु**० दे० 'बहुँदा'।
बहुँरी०-**खी**० मिस, बहाना।
बहुँला-**पु**० कुपलीका एक पंच।
बहुँलिया-**पु**० चिवियाँ फँसानेका काम करनेवाला, चिकी-मार।
बहुँर०-**पु**० बहुँरनेका भाव, लौटाना; वापसी। अ० दे० 'बहुरि'।
बहुँरना०-**स**० कि० लौटाना, वापस करना।
बहुरि०-**अ**० दे० 'बहुरि'।
बहु-**खी**० [अ०] छंद, शेरका वजन। पु० महासमुद्र; समुद्र; बड़ा दरिया, नदी; उदार व्यक्ति; तेज धीका; जहाजोंका वेड़ा। -**(रु)** अरब-**पु**० अरब सागर।
 -**बाह्र**-**पु**० लाल समुद्र। -**आज़म**-**पु**० महासमुद्र।
 -**झकमास**-**पु**० अतलांतक महासागर। -**हिंद**-**पु**० हिंदमहासागर।
बुरी-**वि**० समुद्री; दरिबारी।
बहुवृक्ष-**पु**० [अ०] प्रघात महासागर।

बौ-**पु**० गाय-बैलीका आवाज; * बार, दफा।
बौक-**पु**० टेढ़ापन, बकता; गधा छीलनेका मरोतेकी लकड़ा एक जोरार; एक तरहकी टेढ़ी छुरी; एक तरहका शिकंजा जिसमें किसी चीजको दबाकर देते हैं; दे० 'बाँका'; बाजू-पर पहननेका एक गहना; पैरका एक गहना; एक तरहकी चौड़ी चूड़ी; बौकसे लकड़की कला; नदीका घुमाव; बनुष्।
वि० दे० 'बाँका'। -**खोरी**-**खी**० एक हथियार। -**मक**-**पु**० पीतलकी नली जिससे सुनार टँका गलानेके लिए दियेकी लौपर फूँक मारते हैं।
बौकबा०-**वि**० बोर, साहसी।
बौकड़ी, **बौकुडी**-**खी**० साढ़ी आदिपर टँकनेका सुनहला या सफेद फोटा।
बौकना०-**स**० कि० टेढ़ा करना। अ० कि० टेढ़ा होना।
बौकपन, **बौकपना**-**पु**० टेढ़ापन, बकता; सुंदरता, छवि; छनीलापन, शौकीनी; शौखी, अदा।
बौका-**वि**० टेढ़ा, तिरछा, बक; सजबजका, शौकीन, छैल-छनीला; शौख; बीर, साहसी; शुभा। पु० एक अर्धचंद्राकार औजार जिससे बाँसका काम करनेवाले बाँस छीलते-काटते हैं।
बौकिया-**पु**० नरसिया नामका बाजा।
बौकी-**खी**० छोटा बाँका; लगान।
बौकुना०-**वि**० टेढ़ा, बाँका; चतुर; बीर, साहसी; पैना।
बौगा-**खी**० [फा०] आवाज, बौली; मुर्गेकी आवाज; अजान।
बौगड़-**पु**० हिसार, रोहनक और करनाल जिले।
बौगड़ू-**खी**० बौगड़ देशकी बौली। † **वि०** मूर्ख, वज्रु।
बौगदरा-**पु**० बघियालकी ध्वनि; काफिलेके प्रस्थानके समय होनेवाली घंटाध्वनि।
बौगर-**पु**० ऊँची जमीन, बह जमीन जो बाढ़में न डूबे; एक तरहका बैल।
बौगा०-**पु**० कपास, वह रई जो ओढ़ी न गयी हो।
बौगुर-**पु**० चिवियाँ फँसानेका जाल, फदा-**तुलसिदास** यह विपति बाँगुरो तुमहिसे बने निरेरे'-विनय०।
बौचना-**स**० कि० पढ़ना; * बचाना-**बाल** बिलेकी बहुत मै बाँचा'-रामा०; चुनना, चयन करना। अ० कि० बचाना, बाकी रहना; रखा पाना।
बौछना०-**खी**० दे० 'बाँछा'। * **स**० कि० चाहना; दे० 'बाछना'।
बाँछा०-**खी**० दे० 'बाँछा'।
बाँछित०-**वि**० दे० 'बाँछित'।
बाँछी०-**वि**० बाँछा करनेवाला।
बाँछ-**वि**० जिससे संतान या फल उत्पन्न न हो। **खी**० बध्या **खी**, गाय आदि। -**काकोली**-**खी**० लिखसा, बनपरबल। -**पन**, -**पना**-**पु**० बाँछ होना, बंध्यत्व।
बाँट-**खी**० बाँटनेकी क्रिया, बटवारा; ताश आदिके पणोंका बाँटा जाना; हिस्सा, बाँटा-**बाह्रमें कसु बाँट तुम्हारी**-**सूर**; दे० 'बाट'। -**बाँट**-**खी**० बटवारा, हिस्सा-बटवारा।
सु०-**पढ़ना**-**दे०** 'बाँटें आना'।
बाँटमा-**स**० कि० हिस्से करना, कई भाग कर देना; बहुतांकी कोषा-योषा देना, वितरण करना; * पीसना, घोटना।

बौद्ध-पु० बौद्धके किंवा; हिस्सा, वस्त्रा; बौद्धें मिलने वाली वस्तु । -**बौद्ध**-**की**० आदिबन-श्रुतका चतुर्विंश ।

मु०-(३)में जाना या पचना-हिस्सेमें जाना ।

बौध-पु० दो नदियोंके संगमके बीचकी जमीन । † वि० वा ।

बौधा-वि० (पशु) जिसकी पूँछ कट गयी हो; (पुरुष)जिसे आगे-पीछे कोई न हो, असहाय । [की० 'बौधी' ।]

बौधी-की० बिना छुंकी गाय या कोई मादा पशु; छोटा रंगीन बंदा जिसे झुमरके नाचमें लालके लिए बजाते हैं ।

-**बाझ**-वि०, पु० लाठीबाज; शरारत करनेवाला ।

बौध-पु० दास, टण्डू; बंधन, फंदा ।

बौध-पु० बंदर ।

बौद्ध-पु० एक तरहका पीषा जो आम आदिके बूझोंमें कमकर उनके रससे पुष्ट होता है ।

बौधी-की० दासी, लोही ।

बौध-पु० बंदी, बंधुआ ।

बौध-पु० पानी रोकनेके लिए बनाया हुआ कच्चा या पक्का मेड़, रेंद ।

बांधकिये-पु० [सं०] दुश्मनीका पुत्र, जारज ।

बांधके-पु० [सं०] दे० 'बांधकिये' ।

बांधना-सं० कि० रस्ती, जंजीर आदिते कसना; बाँध देना, बंधनमें लाना; रस्ती आदिमें फँसाकर खँटे आदिते जेठकाना; लपेटना (पगड़ी, पट्टी); लपेटकर कसना, समेटना (गडरी, बिसर); बाँधकर धारण करना (पत्नी, सलवार); जोड़ना (हाथ); कैद करना; नियम, बचन आदिते बंधनमें डालना, पारबंध करना; मेघ या बाँध बनाकर रोकना; गति-हीन करना; कीलना, शक्ति, प्रभाव नष्ट कर देना; जमाना (निशाना); नियत करना (इष्ट, गुजारा, वारी आदि); चूर्ण, जाशनी आदिकी गोली, छड्डू आदिका रूप देना; ठोक करना (पत्थर); व्यवस्थित, क्रमबद्ध करना; जोड़ना, बटोरना (दल, मोल); बनाना (मीरचा); लगातार करना, जमाना (झर्री, ताँता); सोचना (ख्वाल, मंश); भावकी पक्ष या पक्ष-रचनाका रूप देना, निर्वचन ।

बाँधनीपीरि-**की**० पशुशास्त्र ।

बाँध-पु० मंझा, बंदिश; जलमें बनायी हुई जोड़ना; खसाली पुलज; झुंठी लोहमत; कब्रियादर रंगारंगमें कपड़े की जगह-जगह बाँध देना; इस तरह बाँधकर रेंगा हुआ कपड़ा । **मु०** -**बाँधना**-मंझा बाँधना; खसाली पुलज पकाना; झुंठी लोहमत लगाना ।

बांधव-पु० [सं०] भाई-बंधु; स्वजन, निकट-संबंधी । -

बुरा-की० मैत्रीभाव, सद्भाव, कृपा ।

बांधव-वि० [सं०] बांधव-संबंधी ।

बांधव-पु० [सं०] रक्त-संबंध, नाता, रिश्ता ।

बांधिक-वि० बंधा हुआ, बद्ध-गुन बाँधिल होर न छोड़िये जू-वन० ।

बांधु-वि० [सं०] बंधु वृत्त-संबंधी ।

बांधु-पु० [सं०] विवाह ।

बाँधी, **बाँसी**-की० दीमकोंका पीठा, बमीठा; साँपका बिल ।

बाँध-पु० ब्राह्मण ।

बाँधा-वि० दे० 'बाँधा' ।

बाँध-वि० दे० 'बाँध' ।

बाँस-पु० तिनकेकी बांसिका एक जंघा, सीषा, गिरहदार पीषा जो बहुतसे कामोंमें आता है, बंश; भूमिकी एक माष; नावकी लष्मी । -**बूँ**-पु० एक बारीक कपड़ा ।

-**कक**-पु० एक बारीक धान, बाँसी । **मु०** -**पर चढ़ना**-बदनाम होना । -**पर चढ़ाना**-बदनाम करना । -

चढ़ना-छाड़ी चलना, मारपीट होना । -**चढ़ावा**-छाड़ी चलाना, मार-पीट करना । -**बराबर**-बहुत जंघा ।

-**(सी)** उछलना-बेहद खुश होना; बहुत उछल-कूद करना ।

बाँसली-की० दे० 'बाँसुरी' ।

बाँसा-पु० नाकके बीचकी उभरी हुई इड़ी; रीढ़; पिपा-बाँसा; बीच गिरानेके लिए इलके साथ लगा हुआ बाँसका नल । -**गद्गा**-पु० कुश्तीका एक पंच । **मु०** -**फिर जाना**-नाककी इड़ीका टेढ़ा होना (जो शत्रु निकट होनेका सूचक है) ।

बाँसी-की० एक तरहकी क्लिक जो नैच बनानेके काम आती है; एक धान जिसका नावल बारीक और झुगंधित होता है; एक तरहका गेहूँ; एक घास; सफेदी किये हुए पीले रंगका एक तरहका पत्थर; बाँसुरी ।

बाँसुरी-की० पहले पीले बाँसका बना एक वाजा जो मुँहसे फूँककर बजाया जाता है, बंशी ।

बाँसुली-की० एक धान; दे० 'बाँसुरी' । -**कंद**-पु० एक तरहका जंगली घुरन ।

बाँह-की० हाथका कंधेसे हथेलीतक भाग, बाहु, गुजा; (हाथ) बल; भरोसा; शरण; आस्तीन; एक कसरत । -

सोह-पु० कुश्तीका एक पंच । -**बोख**-पु० रक्षा या सहायता करनेका बचन । -**मरोख**-पु० कुश्तीका एक पंच । **मु०** -**की छौह लेना**-शरणमें आना । -**गहना**, -**पकड़ना**-भरण-रक्षणका भार उठाना; अपना; विवाह करना । -**चढ़ाना**-लखनेकी तैयार होना, आस्तीन चढ़ाना; कोई काम करनेके लिए तैयार होना । -**टूटना**-सदमे बने सहायकता उठ जाना; भाँसका भरना । -**देना**-सहारा, सहायता देना । -**कुलंद** होना-साहस करना; उदार होना ।

बा-पु० पानी; वार, दफा । की० [यु०] माता । अ० [फा०] पास, साथ (संज्ञापदसे मिलकर युक्तताका अर्थ देता है ।) -**अदब**-वि० अदबवाला, विनीत । अ० अदबके साथ, विनयपूर्वक । -**असर**-वि० असर रखनेवाला, प्रभावशाली । -**आबरू**-वि० आबरूदार, प्रतिष्ठित । अ० इज्जतके साथ । -**इफ्तियार**-वि० अधिकार रखनेवाला । -**ईमान**-वि० ईमानदार । अ० ईमानके साथ । -**कमाल** वि० गुणी, कमालवाला । -**कार**-वि० जो कुछ करता हो, वैठा-ठाका, बेकार न हो । -**कामवा**-वि० नियमित । अ० कार्यके साथ, नियमानुसार । -**फुहा**-वि० मंगलपक्ष, जिसे रैबरका सामीप्य प्राप्त हो, खुदा-रसीदा । -**शरफ**-वि० गरजमंद । -**जाबस्ता**-अ० जावते-से, नियमानुसार । वि० नियमबद्ध, कायदा । -**मज्जा** वि० मजेदार, स्वादिष्ट । -**मज्जा**-वि० रसिक, विनीतशील । -**मुशरफ**-वि० सफक, जिसकी कामना पूरी हो

गयी हो। - **सुरीवत**-वि० सुरीवतवाला। - **बज़ा**-वि० बजेशर, सम्भ, शिष्ट। - **बज्जु**-अ० होते हुए, यथावि, अगरचे। - **बफ़ा**-वि० बफ़ादार; प्रीति निमानेवाला; वचनपालक। - **बाऊर**-वि० शऊरदार, सलीकादार, चतुर। - **सलीका**-वि० जिसे काम करनेका सलीका, ढंग आता हो। - **सबाब**-वि० ठीक, यथावश्यक। - **हज**-अ० इकट्ठे, मिलकर, परस्पर।

बाह*-**खी**० दे० 'बाई'।

बाहनि*-**खी**० बचना।

बाहिल-**खी**० ईसाइयोंकी इलहामी धर्मपुस्तक, इंजील।

बाहस-वि० दे० 'बाईस'। पु० दे० 'बाईस'; [अ०] कारण, सबब, हेतु।

बाहमिकल-**खी**० [अ०] दो पहियोंकी गाड़ी जो सवारके पाँचोंकी इरकतके ही सहारे चन्ती है, साइकिल, पैरगाड़ी।

बाई-**खी**० बायु; बातव्यापि। **मु०** - **का इखल**, - **खी शौक**-बातकोप; सन्निपात। - **पचना**-सन्निपात होना; मिजाज बिगड़ना। - **पचना**-बातकोपका शांत होना; धमक टूटना। - **पचाना**-धमक तोड़ना।

बाई-**खी**० प्रतिष्ठित महिला; बेरवा। - **जी**-**खी**० बेव्या, नायिका।

बाईस-वि० बीस और दो। पु० बाईसकी संख्या, २२।

बाईसी-**खी**० बाईस चीजों, पथोंका समूह।

बाउ*-पु० बायु; अपान बायु।

बाउर*-वि० बाबला; मूर्ख; गूँगा; [खराब, बुरा।

बाउरी*-**खी**० दे० 'बावली'।

बाऊ*-पु० दे० 'बायु'।

बाक-पु० [म०] बगलका समूह; * वाक्य, वचन, शब्द। - **बाख***-वि० बाचाल, बातूनी।

बाकना*-अ० कि० 'बकना'।

बाकल-पु० छाल, बकल।

बाकला-**खी**० एक छोटा फसली पौधा जिनकी फलियाँ तरकारीकी तरह खायी जाती हैं और डाने शाल आदि धनानेके काम आते हैं।

बाकली-**खी**० एक पेड़ जिनके पत्ते रेशमके कोवोंको छिलाने जाते हैं।

बाकस*-पु० बक्स, संदूक।

बाका*-**खी**० बागी, बाक्सक्ति।

बाकिरा-**खी**० [अ०] कुमारी; अनाविधा भोती।

बाकी*-अ० लेकिन, अगर। **खी**० एक धान।

बाझी-वि० [अ०] बचा हुआ, अवशिष्ट; जो सदा बना रहे; मौजूद, विद्यमान; देन, न चुकाया हुआ (पावना)। **खी**० एक सस्वाकी दूसरीमेंसे घटानेका गणित, व्यवकलन, (निकासना); घटानेसे निकलनेवाली संख्या। - **बार**-वि० जिसके यहाँ लगान या पावना बाकी हो। - **बारह**-अभी बाकी है, असमाप्त।

बाकुआ-पु० ऊँचीके फूलका सुखाया हुआ केसर।

बाकुल-वि० [सं०] बकुल वृक्ष-सम्बंधी। पु० बकुलका फल।

* पु० बकल, छाल, बाकल।

बाखर*-पु० एक रुप।

बाखरी*-**खी**० दे० 'बखरी'।

बाखर-पु० [फा०] हिंदुकुश और बक्षु (आक्सस) के बीच अवस्थित एक प्राचीन जनपद, 'बैक्ट्रिया'; बख्श प्रदेश।

बाग-**खी**० लगान, रास। - **होर**-**खी**० लगाममें बँधी जानेवाली रस्ती। **मु०** - **उठाना**-चल पड़ना। (**किसी ओर**) - **मोड़ना**-धुमाना, ठे जाना। - **हाथसे छूटना**-बेकाब होना; मौका हाथसे जाता रहना।

बाग-पु० [फा०] जमीनका वह टुकड़ा जिसमें फल-फूलके पेड़-पौधे करीनेमें लगाये गये हों, बाटिका, उपवन; लगाने हुए पेड़ोंका झुंड, बाड़ी। - **बाग**-वि० अति प्रसन्न, प्रसुद्धित (होना)। - **बाग**-पु० बागकी देखरेख करने-वाला, बाड़ी। - **बानी**-**खी**० बागवानका काम, पद। - **बान**-पु० दे० 'बागवान'।

बागना*-अ० कि० बोलना; चलना, घूमना।

बागर-पु० नदीके किनारेकी जमीन जहाँतक उसका पानी वाटमें भी न पहुँचता हो; * जाल, कंदा; रस्ती; मरभूमि - 'बागर देख लुभका घर है'-कबीर।

बागल*-पु० बगला।

बागा*-एक पुराना लंबा पहनावा।

बागी-वि० [ज०] ब्यावत करनेवाला, बिद्रोही; न दबने-वाला, सरकश।

बागीचा-पु० [फा०] छोटा बाग।

बागुर*-पु० जाल, कंदा।

बागेशरी*-**खी**० दे० 'बागीशरी'; एक रागिनी।

बाघंबर-पु० बाघकी खाल; एक तरहका रोपेदार कंबल।

बाघ-पु० सिध्दे समान बल-विक्रम रखनेवाला, लबाईमें उससे कुछ छोटा एक हिल जंतु, व्याघ्र। [**खी**० 'बाघिन']। - **बख**-पु० बघनसा।

बाघ-पु० चौपायोंका एक रोग; एक तरहका कन्तूर।

बाघी-**खी**० जौधके जोड़में होनेवाली एक तरहकी गिरी।

बाघ*-वि० बाघ्य, वर्णनीय।

बाघना-स० कि०, अ० कि० दे० 'बाँचना'।

बाघा*-**खी**० वचन; बाघ्य; बोलनेकी शक्ति, प्रतिभा।

- **बाँच**-वि० प्रतिभावद।

बाछ-पु० बाछनेकी क्रिया, छेड़ाई; चंदे, मालगुजारी आदि का आनुपातिक (रसदी) पहरा; बाछा। **खी**० मुखका प्रांतभाग जहाँ दोनों होंठ जुड़ते हैं। **मु०** - (**छँ**)-**खिलना**-प्रसन्न होना; खुशीसे खिल जाना।

बाछना-स० कि० छोटना, चुनना; जुदा करना, विभक्त करना।

बाछा*-पु० बछ्म; * बचा, बस।

बाछी*-**खी**० बछिया।

बाज*-पु० घोड़ा, बाजी; दे० 'बाजा'। अ० बिना, छोड़कर।

बाज़-पु० [फा०] एक प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया; सभापदसे संयुक्त होकर खेलनेवाला, करनेवालाका अर्थ देता है (कन्तूरवाज, पतंगबाज)। अ० फिर, दोबारा। वि० बंयित; कोई-कोई, कुछ, विशिष्ट। - **बाघत**-**खी**० छोटना, बापसी।

- **बाबा**-पु० दादा उठाना, छोड़ना; स्वस्वका त्याग, दखल-बंदारी। - **बीह**-**खी**० किसीके मिल जानेके बाद उससे मिलने जाना, बापसी मुलाकात। - **पुर्ल**-**खी**० पूछताछ, जवाबतलबी। **मु०** - **आना**-**लौटना**; छोड़ना,

त्यागना; वचना, दूर रहना । -रखना-रोकना, मना करना ।

बाजवा-पु० दे० 'बाजरा' ।

बाजना-पु० बाजा ।

बाजना-अ० कि० लभना; लगना, बैठना (चोट आदिका); पहुँचना-‘ताह आह चितउर गढ बाजा’-प०; दे० ‘बजना’ ।

बाजरा-एक मोटा अनाज; उसका पौधा ।

बाजा-पु० बजानेका वध, बाध । -**गाजा-पु०** अनेक प्रकारके साथ बजनेवाले बाजे; धूमधाम ।

बाज़ार-पु० [फा०] वह स्थान जहाँ साधारण आवश्यकताकी वस्तुएँ या कोई खास चीज बेची-खरीदी जाय, बाट, मंडी; खरीद-बेचीके लिए जमा हुए लोग; भाव; बाजार लगनेका दिन, समय । -**भाव-पु०** किसी चीजके बाजार-में बेचे-खरीदे जानेका भाव, प्रचलित दर । **मु०-करना-चीजें** खरीदने या बेचनेके लिए बाजार जाना । -**का गज-वह** आदमी जो इधर-उधर मारा-मारा फिरे । -**करी मिठाई-आसानीसे** मिठनेवाली चीज; बेधपा । -**गरम या गर्म होना-बाजारमें** खूब खरीद-विक्री, चहल-पहल होना । (**किसी चीजका**) -**गरम या गर्म होना-जोर, अधिकता, प्रचलता** होना (रिश्त, गिरफ्तारियोंका बाजार०) । -**गिरना-भाव** घटना, मंदी होना । -**तेज़ होना-भाव** चढ़ना, बहुत मँग होना । -**भाव देना या पीटना-खूब पीटना, पूरी मरम्मत करना** । -**मंदा होना-किसी वस्तुका** दाम घटना; कम बिक्री होना । -**में आग लगना-चीजोंके** दाम चढ़ जाना । -**लगना-बाजारमें** चीजोंका बिक्रीके लिए रखा, लगाया जाना; दुकानें खुलना; चीजोंका ढेर, अंवार लगना; भीड़ होना । -**लगाना-चीजोंकी** इधर-उधर फैला देना; भीड़ लगाना ।

बाज़ारी-वि० बाजारका; मामूली, साधारण लोगोंमें प्रचलित; अशिष्ट (प्रयोग, मुहाविरा) । -**औरत-खी०** बेधपा । -**गध-खी०** अविश्वसनीय बात ।

बाज़ारक-वि० दे० ‘बाजारी’ ।

बाज़ि-पु० घोड़ा; पक्षी; बाण । वि० चलनेवाला ।

बाजी-खी० बरी बहन । पु० घोड़ा; * बजनिया ।

बाज़ी-खी० [फा०] खेल; करतब, तमाशा; दौब, शर्त; ताश-शतरंज आदिका एक पूरा खेल; एक खिलाड़ीके खेलनेका समय, बारी; घोड़ा, चालाकी । -**गर-पु०** जादूके खेल करनेवाला, नट । [खी० ‘बाजीगरनी’] । -**गरी-खी०** बाजीगरका काम; घोड़ा, चालाकी । -**चा-पु०** खेल, खिलाड़ । **मु०-आना-ताश-गञीफेकी** शीर्षमें अच्छे पत्ते मिळना । -**बदना-शर्त** बदना (लगाना) । -**मारना-जीतना** । -**ले जाना-आगे** बढ़ जाना, जीतना ।

बाजु-अ० बिना; (-के) सिबा ।

बाजू-पु० [फा०] बाईं, मुना; सेनाका दाहिना या बायाँ भाग, पक्ष; विधियाका पैना; चौखटेकी दाहिने-बायेंकी खरी लकड़ी; बाजुबंद । -**बंद-पु०** बाईपर रहनेका एक गहना, मुजबंद । -**बीर-पु०** बाजुबंद । **मु०-टूटना-बाईं टूटना**, गतबल हो जाना । -**तौखना-पक्षीका**

उड़नेके लिए तैयार होना ।

बाह-अ० बगैर, बिना ।

बाहल-पु० फँसाव, बहाव; उलझन; लड़ाई ।

बाहना-अ० कि० दे० ‘बहना’, फँसना-‘तैं सुमटा पडित होह कैसे बाहा आह’-प० ।

बाट-पु० पथर, छोटे आदिका टुकड़ा जो चीजें तौलनेके काम आवे, वजन, बटखरा । **खी०** टेंडन, बल; राह, मार्ग । **मु०-करना-रास्ता** करना । -**का रोड़ा-बाधक, विघ्नरूप** । -**जोहना-देखना-रंतजार** करना । -**परना-हाका** पटना । -**पारना-रास्तेमें** लूट लेना, डाका डालना । -**लगाना-मार्ग** दिखलाना; बेवकूफ बनाना ।

बाटकी-खी० बटुली ।

बाटना-स० कि० पीसना, घोंटना; * बटना, पेंटना ।

बाटिका-खी० दे० ‘बाटिका’ ।

बाटी-खी० उपलोंकी आग या अगारोपर लेंके हुई छोटी, मोटी रोटी, अंगाकड़ी; गोली; तसला; कदोरी; * बाटिका ।

बाब-खी० फसलकी रक्षाके लिए बनाया हुआ कटि-बॉम आदिका घेरा, झाबंदी, डही; तेजी; डाढ़ नामका गहना ।

बाबव-पु० [म०] बटबाभि; माधन; घोड़ियोंका झुड़ । वि० बटबामर्षी ।

बाबा-पु० इहाता, पैग; पशुशाका ।

बाहि-खी० दहूर; मेंढ; बाही ।

बाहिस-खी० [अ०] बिलावती ढगकी कुरती ।

बाही-खी० [अ०] शरीर, देह । -**गाब-पु०** अगरक्षक मैनिक; गेमे मैनिकोंका दस्ता ।

बावी-खी० फलोंका बाग; बाटिका; बिगि जगड़; घर ।

बाबीर-पु० [स०] मजदूर ।

बाही-पु० दे० ‘बाटव’ ।

बाढ़-खी० बढनेकी किता या भाव, बुद्धि, विकास; बहुतायत, अधिकता; नफा; नदी आदिके जलका बढ़ना, फैलना; अतिवृष्टिसे धरनीका जम्बझ होना; बहुत-सी तोपों, बंदूकोंका एक साथ दबना; नुलवार आदिकी धार; कोर; सान; किनारा । **मु०-का डोरा-तलवारकी** धारकी रेखा । -**पर चढ़ाना-सान** देना; उकसाना, भड़काना । -**मरना-रोगादिमें** बाटका रूक जाना । -**रोकना-आगे** बढ़नेमें रोकना ।

बाढ़ना-अ० कि० दे० ‘बढ़ना’ ।

बाढ़ि-खी० बाढ़, बुद्धि ।

बाही-खी० बाढ़, बुद्धि; लघार दिये हुए अलके ब्याजरूपमें मिठनेवाला अन्न; नफा । * पु० बड़ई-‘बादी आवत देखिपर तखर डोलन लग’-कबीर ।

बाहीबाना-पु० भार तेज करनेवाला, सान चढ़ानेवाला ।

बाघ-पु० [स०] लोहेका फल लगा हुआ नरसल या पतली सीधी लकड़ीका टुकड़ा जिसे धनुषपर चढ़ाकर मारते हैं, तीर, शर; बाणका फल, गत्ती; निशाना; सर-पत; गायका धन; ५ की संख्या; बाणासुर; बाणभट्ट; अक्षि । -**गंगा-खी०** गंगाकी एक सहायक नदी जो कश्मीर जाता है कि एक पहाड़में रावणके बाण मारनेसे निकली है । -**गोबध-पु०** बाणकी मार । -**बिध-पु०** विघ्न ।

-तृण-वि-पुं तरकश । -वाता-की० एक नदी ।
 -पथ-पाठ-पुं बाणके पहुँचनेकी हर, मार । -पर्णी
 -की० एक पौधा । -पाणि-वि० बाणोंसे लैस । -
 -पुंला-की० बाणका पंखवाला छोर; एक पौधा । -पुह-
 पुं बाणासुरकी राजधानी, शीणितपुर । -भट्ट-पुं
 कार्तवीरके रचयिता प्रसिद्ध संस्कृत कवि जो महाराज
 हर्षवर्धनके दरबारमें रहते थे । -मुक्ति-की०, -भोजन
 -पुं तीर छेड़ना । -भोजन-पुं तरकश । -रेखा-
 की० बाणका लंबा घाव । -किंग-पुं नर्मदासे पाया
 जानेवाला एक सफेद पत्थर जिसकी शिवलिंगके रूपमें
 पूजते हैं । -हर्षण-पुं दे० 'बाणवृष्टि' । -वर्षा(पिन्)
 -वि० बाणोंकी वर्षा करनेवाला । -बार-पुं कवच,
 बस्तर; बाणोंका समूह । -विद्या-की० बाण चलानेकी
 विद्या, तीरंदाजी । -वृष्टि-की० बाणोंकी वर्षा । -
 -संचान-पुं बाणको घुंत्तपर चढ़ाना । -सिद्धि-की०
 बाणसे निशाना मारना । -सुता-की० उपा, अनिरुद्ध
 की पत्नी । -हा(हन्)-पुं विष्णु ।

वागाम्यास-पुं [सं०] बाण चलाने, तीरंदाजीका अभ्यास ।

वाणावली-की० [सं०] बाणासुरकी पत्नी ।

वाणावलि, वाणावली-की० [सं०] बाणोंकी पंक्ति ।

वाणाव्य-पुं [सं०] तरकश ।

वाणासज-पुं [सं०] अनुप ।

वाणासुर-पुं [सं०] राजा बलिके सौ बेटोंमें सभसे बड़ा
 जिसके, पुराणोंके अनुसार, हजार हाथ थे और जिसकी
 बेटों उपासे कृष्णके पीते अनिरुद्धका ब्याह हुआ ।

वाणि-की० [सं०] दे० 'वाणि' ।

वाणिज्य-पुं [सं०] दे० 'वाणिज्य' ।

वाणी-की० [सं०] दे० 'वाणी' ।

वाणी(पिन्)-वि० [सं०] बाणोंसे युक्त ।

वात-पुं दे० 'वात' । की० कथन, वचन; वाता, वातचीत;
 वक्तव्य (मेरी बात तो सुन लो); चर्चा, प्रसंग; कील, करा;
 विषय, मामला; घटना; संयोग, प्रसंग; बहाना, बनावट;
 गूढ़ अर्थ, भेद, मर्म; कथनमात्र; कभी बात, डाँट, अलंघना
 (-रहना, सुनना); बातका विश्वास, साख (बात जाना);
 तात्पर्य, मतलब; खूबी, प्रशंसाकी बात; काम; लगाव;
 जीज, बस्तु; आदत, गुण (अच्छी, बुरी बातें); स्थिति,
 हालत; मोल, दाम (एक बात); रास्ता, उपाय (मेरे लिए
 एक ही बात रह गयी है); आदेश (कभीकी बात मानो);
 संदेसा; इच्छा, कामना । -कील-की० दो या अधिक
 आदमियोंका आपसमें बातें करना, बातलाप, गुप्तगू ।

-क्रूरता-वि०, पुं बातें बनानेवाला, झूठी बातें आदि
 करनेवाला; चापलूस । सु० -आँखमें बाँधना-दे०
 'बात गाँठ बाँधना' । -जाना-चर्चा छिड़ना । (किसी-
 पर)-आना-दीपारोप होना । -आ पड़ना-प्रसंग
 आना; संयोग उपस्थित होना । -उठना-चर्चा चलना,
 जिक्र होना । -उठाना-चर्चा चलाना; बात न मानना ।

-उठना-चर्चा फैलना । -उठाना-बात टालना ।

-उठटना-बात पलटना; विरुद्ध बात कहना । -कहते-
 तुरत, झट । -का और-और-बातका मतलब, बातका
 सिरपर । -काटना-बीचमें बोलना, दौकना, बातका

खंडन करना । -का घनी,-का घुरा-जो कहे वह
 करनेवाला । -काय पड़ना-बातकी जानकारी होना ।
 -का बर्तगढ़ करना या बनाना-छोटीसी बातको बहुत
 बड़ी बना देना, तिलका ताड़ बनाना । -की तरह-असल
 मतलब, तात्पर्य । -की पुनिया-बहुत बातनी । -की
 बातमें-छन भरमें, तुरत । -खुलना-छिपी बातका
 प्रकट हो जाना । -गड़ना-झूठी बात कहना । -गाँठ
 बाँधना-बात दिलमें बैठ लेना, अच्छी तरह पकड़
 लेना । -घूँट जाना-दे० 'बात पी जाना' । -चबा
 जाना-बातको कहते-कहते बीचमें उड़ा देना; बातका रुख
 दूसरी ओर कर देना । -जाना-साख जाना; पतवार
 उठना । -टलना-बातका अन्वया होना, कहे मुताबिक
 न होना । -टाकना-बात न मानना; सुनी अनसुनी
 करना । -ठहरना-ब्याह तै होना । -ठुहरना-
 दूसरेकी बातको उलटकर जवाब देना । (मुँहसे)-ज
 जाना-मुँहसे बोल न निकलना । -ज करना-बर्तकके
 सारे न बोलना । -ज पूछना-खोज-खबर न लेना; ध्यान
 न देना; तुच्छ समझना । -निकलना-चर्चा चलना ।
 -नीचे डालना-अपनी बातको कट जाने देना, अपनी
 बातका आग्रह त्याग देना । -पकड़ना-कथनमें गलती,
 असंगति बताना; मुक्ताचीनी करना । -पचना-झुनी
 हुई बातका दूसरोंसे न कहा जाना । -पर जाना-अपनी
 बातका पक्ष, हट करना । -पर जाना-किसीके कहेपर
 विश्वास कर लेना, बात मानना । -पर पूछ डालना-
 किसी बातकी मूल जाना या उसपर ध्यान न देना । -पर
 बात कहना-जवाब देना । -पर बात निकलना-
 चर्चा या प्रसंग, दूसरेके कुछ कहनेके कारण किसी बातका
 कहा जाना । -पलटना-बात बदलना । -पाना-
 असल मतलब समझना । -पी जाना-बातको अनसुनी
 करना, बातको सह लेना । -पूछना-खोज-खबर लेना,
 ध्यान देना; * कह करना । -फँकना-ताने मारना; कह
 रखना । -फेरना-बात पलटना । -फैलना-चर्चा
 फैलना । -बड़ना-बातका बहस या झगड़ेका रूप ले
 लेना; मामलेका तूल खींचना; साख, मान-प्रतिष्ठा बढ़ना ।
 -बढ़ाना-बहस, झगड़ा करना; मामलेकी तूल देना ।
 -बढ़लना-बातपर कायम न रहना, दूसरी बात कहना;
 बातका विषय, पहेल, बदलना । -बनना-काम बनना;
 मान, साख बढ़ना । -बनाना-बहाना करना; काम सँभाल
 लेना, विगड़ने न देना । -बात में-हर बातमें । -विग-
 डना-काम विगड़ना; साख नष्ट होना । -मारना-
 असल बात छिपा लेना; अन्वय बोलना । -मुँहपर लाना
 -बात बोलना । -में कल आना-बात झूठी ठहरना ।
 -में बात निकलना-बातमें थारीकी निकालना, बालकी
 खाल खींचना । -रखना-कहा मान लेना, बातका
 आदर करना; मान रखना; अपने वचनका पालन करना;
 दुराग्रह करना । -रहना-वचनका पालन होना; प्रतिष्ठा
 बनी रहना । -रखना-बातमें आग्रह होना । -(तँ)
 छोटना-बद-बदकर बोलना । -बनाना-बनावटी बातें,
 बहाना करना; चापलूसी करना । -मिलाना-दोनों हाँ
 करना । -सुनना-कभी बातें सुनना । -(तँ) की

कभी-वालों के बैठक न दूनेवाला सिखसिला, लगातार रोहना । -वालों में-वालों के सिखसिलेमें, वाचनीके दरमियां । -में आना-वालों का विश्वास कर लेना, पोसा खाना । -में उठाना-उपर-उपरकी बातों या हँसी-में डालना । -में लगाना-वालोंमें उलझाना, बहलाना ।

वाचिनी-पुं [अ०] भीतर; अंतःकरण, मानस ।

वाचिनी-वि० [अ०] भीतरी ।

वाचिनी-वि० [अ०] छूट, मिथ्या, गलत; रद्द किया हुआ ।

-परस्त-वि० मिथ्याकी पूजनेवाला, काफिर ।

वाची-की० वची ।

वाचुल-वि० दे० 'वाचुल' ।

वाचुनी-वि० बहुत बोलनेवाला, बकी ।

वाचा-पुं गोद, भंका [अ०] स्नान ।

वाच्य-पुं वचुमा नामका साग ।

वाद्-अ० दैवतलव, फजूल, बेकार । पुं तर्क; बहस; हुज्जत; धर्म; बाजी; दस्तूर; अतिरिक्त मूल्य जो पीछे काट दिया जाता है । वि० छोटा हुआ । मु० -करना, देना अलग कर देना, काट देना । -मेखना-धर्म बदना ।

वाद्-अ० [अ०] पीछे, अनंतर । -को, -में-पीछे ।

वाद्-पुं [फा०] हवा, वायु; बोका । -कस्त-पुं छतसे लटकनेवाला पंखा; धौकनी । -खोद-पुं बाल झड़ जाने की बीमारी, गंजापन । -गद्-पुं गवला, बवंडर ।

-गीह-पुं झरोखा । -मुमा-पुं वायुकी दिशा बतानेवाला आला । -पा, -रस्ताह-वि० हवाकी तरह तेज चलनेवाला (बोका) । -बान-पुं बाल । -बानी-वि० पालसे चलनेवाला (जहाज) । -क्रोश-वि० चापलस, डोंग मारनेवाला । -दे)प्रिज्ञा-की० पतझड़की हवा ।

-किर्रंग-पुं गरमकी बीमारी, आतझक । -बहारी-पुं बसतकी सुहावनी हवा ।

वाद्काकुल-पुं तालका एक मुख्य भेद ।

वाद्वा-अ० कि० बहस करना, झगडा करना; ललकारना ।

वाद्-पुं [सं०] कपास; कपासका सग; सूती वस्त्र; वेर, रेहम; जल; दक्षिणावर्त शंख * पुं बादल । वि० बरका; कपासका; मोटा, भारीका उल्हा ।

वाद्वा-की० [सं०] कपासका पेच या सूत ।

वाद्वाधन-पुं [सं०] वेदांत सूत्रके रचयिता वेद-व्यास ।

-संबंध-पुं बहुत दूरका, खींच-तानकर जोडा हुआ संबंध । -सूत्र-पुं गणधन ।

वाद्वाधन-पुं [सं०] शुक्रदेव ।

वाद्वाध-वि० [सं०] वेर झकड़ा करनेवाला ।

वाद्वाध, वाद्वाध-की० वचकी ।

वाद्वाध-पुं वायुसंघर्षमें संघित और घनीभूत आप जो मेहके रूपमें धरतीपर आती है, मेघ, अम्र; एक तरहका दूधिया रंगका पत्थर । मु० -उठना; -बढ़ना-बादलोंका फैलना, छाना, घटा उठना । -वरजना-बादलोंके संबंधसे धीरे ध्वनि उत्पन्न होना । -धिरना-मेघोंका छाना । -छँटना-फटना-घटाका बिखरना । -में बिगड़ी लगाना-कठिन काम करना । -(हों)से बार्न करना -आकाशसे बार्न करना; बहुत ऊँचा होना ।

वाद्वाध-पुं खींचीका चपटा सार जो मोटा हुनने या कटा-वत् बनानेके काम आता है, जरबस ।

वाद्वाध-पुं [फा०] राजा, मुलताना सरदार; ईश्वर; स्वतंत्र प्रकृतिका पुरुष; सतरंजका एक मुहरा; ताशका एक पत्ता । -ज्ञावा-पुं बादशाहका वेदा, राजकुमार । -ज्ञादी-की० बादशाहकी वेदी, राजकुमारी । -पसंद-पुं खयालवादी रंग । -(है) बजस-पुं वर्तमान नरेश, वह बादशाह जो तत्काल राज्य कर रहा हो ।

वाद्वाध-की० राज्य, हुकूमत; बादशाहका पद; राज्यत्व ।

वाद्वाध-वि० बादशाहका; राजोचित, साहाना । की० राज्य, शासन; मनमाना व्यवहार । -खर्च-पुं शाहाना-खर्च, भारी फुजूलखर्च । -करमान-हुकूम-पुं राजाशा ।

वादाम-पुं [फा०] एक प्रसिद्ध मेवा जिसकी गिरी छावी जाती और बहुत पुष्टिकर होती है; उसका पेड़ । -पाक-पुं एक प्रसिद्ध पुष्टिकर पाक । -क्रोश-पुं बादाम बेचनेवाला ।

वादामी-वि० बादामके रंगका; बादामी शङ्करा; बादामका बना हुआ । पुं बादामके छिलकेसे मिलता हुआ रंग; वह खयासरा जिसकी इंद्रिय बहुत छोटी हो; बादामके रंगका घोड़ा; किलकिला पक्षी; एक धान । की० बादामकी शङ्करा एक डिबिया जिसमें जवाहरात रखते हैं; एक तरहकी मिठाई जिसमें बादाम डाले जाते हैं, बादाम रखनेकी रिकामी; रिकामीकी शङ्करा एक मिठाई । -आँख-की० बादामकी शङ्करा छोटी आँख ।

वादि-अ० व्यर्थ, बेकार ।

वादित-वि० जो बजाया गया हो ।

वादी-पुं दे० 'वादी' । वि० बातकारक, वानज । की० बातविकार । -पन-पुं वायुविकार; बातकारक होना । -बवासीर-की० बवासीरके दो भेदोंमेंसे एक जिसमें मस्तेसे खून नहीं आता ।

वादीगर-पुं वाजीगर ।

वादुर-पुं चमगादड़-ते बिथना वादुर रचे रहे उरध मुख झूल-साकी ।

वाध-पुं [सं०] प्रतिरोध; रोक, प्रतिवध; कष्ट, पीडा; बाधा देनेवाला; * रूँचकी रस्ती ।

वाध-वि० [सं०] बाधा करनेवाला, रुकावट डालनेवाला; विघ्नकारक, कष्ट देनेवाला । पुं क्षिपीका एक रोग जो प्रजननमें बाधक होता है ।

वाधन-पुं [सं०] बाधा करना; विरोध करना; कष्ट देना ।

वाधना-की० [सं०] अर्थाति; कष्ट; बाधा, प्रतिरोध; पीडन । * सं० कि० रुकावट डालना; विघ्न करना ।

वाधिता(ह)-वि०, पुं [सं०] बाधा पहुँचानेवाला; बाधा डालनेवाला; पीडक ।

वाधा-की० [सं०] अवनत, रुकावट, विघ्न; पीडा, कष्ट; भय (मित्रताधा) । -हर-वि० बाधा दूर करनेवाला ।

वाधित-वि० [सं०] जिसमें रुकावट पड़ी हो; अंतगत; प्रत्यक्ष; आसारी ।

वाधिता(गु)-वि०, पुं [सं०] दे० 'वाधिता' ।

वाचिर्ब-पु० [म०] बहुरापन ।

वाधी (विध) -वि० [स०] बाधा डालनेवाला; हानि पहुँचानेवाला ।

वाध्य-वि० [स०] पीडित; रोका हुआ; विवश; रद करने योग्य । -**रेशा (तत्)** वि० नपुंसक ।

वाय-पु० वाण; एक तरहकी आतिशबाजी; ऊँची लहर; खई धुनेका ढंका, मुठिया; बाध, मंजरी रस्मी; * काँति; चमक । स्त्री० सज्जबज; आदत ।

वानहृत*-पु० दे० 'वानैत' ।

वानक*-स्त्री० वाना, मेघ, एक तरहका रेशम ।

वानगी-स्त्री० धोतीसी चीज जो ब्राह्मणको देखनेके लिए दी जाय, नमूना ।

वानना*-स० क्रि० बनाना ।

वानवे-वि० नम्बे और दो । पु० नम्बे और दोकी मल्ला, ९२ ।

वानर*-पु० दे० 'वंदर' ।

वाना-पु० पहनावा, मेस; दुनाबद; तानेमें भरा जानेवाला आका सूत; एक तरहका बारीक तागा; बाले जैसे एक हथियार जिसका ऊपरी हिस्सा दुधारी तलवारका सा होता है; रीति, चाल; पहली जुतारें; * निशान; वर्ण, रंग । स० क्रि० फैलाना, प्रसारित करना (मुँह वाना) ।

वानात-स्त्री० दे० 'वनत' ।

वानावरी*-स्त्री० वाणावली; वाणविधा (?) ।

वानि*-स्त्री० वान, आदत; मजबूज; रंग, चमक; वचन, वाणी ।

वानिक*-स्त्री० मेस, वाना ।

वानिन-स्त्री० वानियेकी स्त्री ।

वानिधा*-पु० दे० 'वनिधा' ।

वानी-स्त्री० दे० 'वाणी'; * वर्ण; चमक; * वाणिज्य । * पु० वनिया; [अ०] नीबें डालनेवाला, आरंभ करनेवाला; कारणरूप; प्रेरक । -**मबानी-पु०** असह कारण ।

वानूनो-स्त्री० [फा०] भद्र महिला, कुलांगना; शराबकी सुराही ।

वानैत-पु० वाना फेरनेवाला; वाण चलावेवाला; योडा ।

वाप-पु० पिता, माताका पति, जनक । -**दादा-पु०** पुरखे, पूर्वपुरुष । **मु०** -**का-पैतृक**, मौखी । -**की भीज समझना**-अपनी मित्रकीपति समझना । -**दादाका नाम बुबाना**-कुलकी प्रतीका मिटाना । -**दादा बखाना**-बाप-दादाकी उरा-भला कहना, गाछी देना । -**दादासे-पीदिमोसे** । -**बबाना**-अति सम्मान करना; चापलूसी करना । -**दे, -रे बाप-दुःख** या अय सूचित करनेवाला उद्गार ।

वापरना-स० क्रि० न्यवहार करना, काममें लाना ।

वापा-पु० बाप; दे० 'बाप्पा' । -**बैर-पु०** पुरतैनी अदावत ।

वापिका-स्त्री० दे० 'वापिका' ।

वापी-स्त्री० दे० 'वापी' ।

वापुरा-वि० गरीब; बेचारा; पुच्छ, नगण्य । [स्त्री० 'वापुरी']

वाप्प-पु० दे० 'बाप'; पिता या अन्य आदरणीय जनका

संवीधन ।

बाप्पा-पु० मेवाड़के राजवंशका आदिपुरुष (जन्म ७६९ वैक्रम) ।

बाफ़ी-स्त्री० 'माप' ।

बाक्र-पु० [फा०] संज्ञापदसे समस्त होकर 'दुननेवाला' अर्थ देता है (नूनाफ़) ।

बाक्रता, बाप्रता-वि० [फा०] दुना हुआ । पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; कदतरीका एक रंग ।

बाब-पु० [अ०] द्वार, दरवाजा; दरवार; पुस्तकका अध्याय, परिच्छेद; प्रकार, विषय ।

बाबत-स्त्री० [फा०] विषय; जरीया । (किसीकी बाबत-किसीके विषय, बारेमें) ।

बाबर-पु० भारतके मुगल राजवंशका प्रवर्तक जहांगीरन मुहम्मद (१५८३-१५९० ई०) ।

बाबरची-पु० दे० 'बाबरची' ।

बाबरी-स्त्री० जुल्फ, काजुल ।

बाबल*-पु० बाबुल, पिता, वाना-'बाबल मैद गुलाब्या रे, एकह खिलावी म्बारी बाँह'-मीरा ।

बाबा-पु० [फा०] बाप; दादा; बूढ़ा, एके बालोंवाला आदमी; साधु-सन्म्यासी; एक संवीधन; साधु-सन्म्यासियोंके लिए प्रयुक्त एक आदरसूचक शब्द, बच्चोंके लिए प्यारका शब्द । -**बाबब-पु०** दे० 'बादम'; तरौका । -**जी-पु०** साधु, सन्म्यासी; इनका संवीधन । **मु०** -**आबब निराका है**-रीति-नीति निराकी है ।

बाबिल-पु० इराकका एक प्राचीन नगर जो फ़रात नदीके किनारे बसा था और एक समृद्ध राज्यकी राजधानी था, 'बैबिलोनिया' ।

बाबी*-स्त्री० साधुनी ।

बाबुल-पु० दे० 'बाबिल'; गप, पिता ।

बाबू-पु० बड़ा क्षत्रिय जमींदार; ठाकुर; शिक्षित, प्रतिष्ठित जन; झूक (बड़े बाबू, देख झूक); दे० 'बाबूजी' । -**जी-पु०** पिता या अन्य आदरणीय जनका संवीधन । -**साहब-पु०** आदरणीय जनके लिए प्रयुक्त शब्द ।

बाबूना-पु० दवाके काम आनेवाला एक पौधा । -**(मे)का लेल**-बाबूनेके फूलोंको तिलके साथ पेरकर निकाला हुआ लेल ।

बाभना-पु० दे० 'बाक्षण'; भूमिहार ।

बाभ-वि० दे० 'बाव' । स्त्री० एक गहना; एक मछली; * स्त्री । पु० [फा०] कोठा, छत । -**देव-पु०** 'वामदेव' ।

बामकी-स्त्री० एक देवी ।

बामन-पु०, वि० दे० 'वामन' ।

बामा-स्त्री० दे० 'बामा' ।

बामी-स्त्री० बंभी; एक तरहकी मछली । वि० बाममार्गी ।

बाम्बन-पु० दे० 'बाक्षण' ।

बायेंब-वि० दे० 'बायों'; नूका हुआ । **मु०** -**देना-तरह देना**; फेरा देना ।

बाब*-स्त्री० बाबु; बातका कोप-'भटा एककी पित करे, करे एककी बाब'; बापी, बाबली ।

बाबक*-पु० बाक्क, हूल ।

बाबकाह-पु० [अ०] संबंध-रत्याग, बहिष्कार; सामाजिक

या व्यापारिक संबंध, वस्तुविशेषके व्यवहार आदिका स्थान।

बायल—पुं० मिनी, संविधानोंके बहो जेजी जानेवाली मिठाई आदि (बैठना); † दे० 'बयाना'; † सु०—देना—छेड़छाड़ करना (जले घर बायल दिया)।

बायविर्हा—पुं० एक लता जिसके फल दबाके काम आते हैं।

बायबी—वि० बाहरी, गैर, अजनबी।

बायव्य—वि०, पुं० दे० 'बायव्य'।

बायलर—पुं० [अं० 'बायलर'] बड़ा बरतन जिसमें कोई चीज डबायी जाय; ईजनका वह भाग जहाँ भाप तैयार करनेके लिए पानी खोलाया जाता है।

बायल्ला—वि० बातकारक।

बायली—वि० दे० 'बायबी'।

बायस—पुं० दे० 'बायस'।

बायस्कोप—पुं० [अं०] परदेपर चलते-फिरते चित्र दिखलानेवाला एक यंत्र।

बायी—वि० पूर्वकी ओर मुँह होनेपर उत्तरकी ओर पड़नेवाला (अंग), दाहनाका उलटा, बाय; विरुद्ध, प्रतिकूल।

[स्त्री० 'बायी'।] पुं० बाँये हाथसे बजाया जानेवाला तबला।

सु०—कदम लेना—दे० 'बायी पाँव पूजना'।—**देना**—कतरा जाना; त्याग देना।—**पाँव या पैर पूजना**—शुद्ध मानना; हार मानना; उस्तादीका कायल होना।

—(ई) **हाथका काम या खेल**—बहुत आसान काम।

—**हाथसे गिनवाया रखवा लेना**—जल्दबस्ती लेना, भरवा लेना।

बायु—स्त्री० दे० 'बायु'।

बायी—अ० बायी ओर; प्रतिकूल (होना)। **सु०—होना**—प्रतिकूल होना।

बारबार—अ० फिर-फिर, कई बार।

बार—स्त्री० समय; देर; दफा; मर्तवा। पुं० द्वार (घर-बार); जनसमूह; दहलू; बेरा; किनारा; धार; * केश; बाळ; *

बाळक; ठिकाना; * बारि, जल; [सं०] दरार, छेद।

—**तिव**,—**बधू**,—**बधूटी**,—**मुखी**—स्त्री० बारवधू

—**बार**—अ० पुनः-पुनः, अनेक बार।

बार—पुं० [फा०] शोध, भार; ऋणभार; फल; वृक्षशाखा; गर्म; भ्रूण; दरबार, हजलास; दखल, पहुँच। प्र० संज्ञापदसे युक्त होकर 'बरसनेवाला' अर्थ देता है

('गोबरबार'; 'दरियाबार')।—**आवर**—वि० फलनेवाला, फलदार।—**कक्षा**—वि०, पुं० शोध देनेवाला।—**छाना**—

पुं० मालखाना, मोशम।—**गाह**,—**गाह**—स्त्री० दरबार; कचहरी; शाही लेमा।—**गौर**—वि० शोध देनेवाला।

पुं० लडाईके काम आनेवाला जानवर; थोड़ेके लिए घास करनेवाला, घसियारा।—**सा**—पुं० छोटा दरवाजा;

बारजा।—**बान**,—**बाना**—पुं० वह चीज जिसमें कुछ रखा जाय, बेरा, पैला आदि; रसद; दूटे-फूटे सामान।—**बार**—

वि० फलयुक्त; गर्मबसी।—**बडाई**—स्त्री० गिना दोबो मोक्ष बाँट लेना।—**बरवार**—वि० शोध देनेवाला। पुं० मोटिया, मजदूर।—**बरवारी**—स्त्री० शोध-सामान देनेका काम;

डुआई; डोनेकी उजरत; डुआईका साधन, बाहन।—**बाब**—

वि० पहुँचनेवाला।—**बाबी**—स्त्री० प्रवेश, पहुँच।

—(रे) **हहसान**—पुं० उपकारका शोध।—**छातिर**—वि०

मारस्वरूप, कष्टप्रद।—**जहाज**—पुं० जहाजका शोध।—

सबुल—पुं० साबित करनेकी जिम्मेदारी।

बार—पुं० [अं०] बारिस्ट्री, बकीलोंका समूह; बारिस्टरका

पेशा; मुलशाका; मदिरालव।—**असोसिवेशन**,—**एसो-**

सिवेशन—पुं० बकीलोंकी सभा।—**कम्स**—पुं० (कचहरीमें)

बकीलोंके बैठनेका कमरा।—**काइनेरी**—स्त्री० बकीलोंके

उपयोगके लिए (कचहरीके साथ) स्थापित पुस्तकालय।

बारक—स्त्री० दे० 'बारिक'। * अ० एक बार।

बारजा—पुं० बालाखानेके मामले पाठकर बनाया हुआ खुला

या छतदार बरामदा।

बारण—पुं० दे० 'बारण'।

बारता—स्त्री० दे० 'वार्ता'।

बारवा—सं० कि० रोकना, निवारण करना; न्योछावर

करना; जलाना।

बारनिश—स्त्री० [अं० 'बारनिश'] लकड़ी-चमड़े आदिपर

चमक कानेके लिए लगाया जानेवाला रोगन; बारनिशकी

चमक।

बारवा—स्त्री० एक रागिनी।

बारस—वि०, पुं० दे० 'बारह'—'बारम माम जहाँ नौमानी

—पन०। † स्त्री० डावशी।

बारह—वि० दसमे दो अधिक। पुं० बारहकी मन्थ्या, १२।

—**खबी**—स्त्री० व्यंजनके बारहों खरोंसे युक्त रूप।—**दूरी**—

स्त्री० वह कमरा जिसमें सब ओर बारह या अधिक दरवाजे

हो।—**परथर**—पुं० छावनीकी नीमा (उत्तपर प्रायः बारह

परथर गड़े होते हैं); छावनी।—**बान**,—**बाना**—वि० दे०

'बारहवानी'।—**बानी**—वि० खरा, मालिम (मोना);

निर्दोष, बेपेच; पूरा, कामिल।—**मासा**—पुं० वह पक्ष या

गीत जिसमें बारहों महीनोंकी प्राकृतिक विशेषताओंका

वर्णन हो।—**मासी**—वि० बारहों महीने फलने-फूलनेवाला,

सदावहार; जो बारहो महीने रूटे, काम करे।—**मुकाम**—

पुं० इरानी ममीनके बारह परदे।—**बक्रात**—स्त्री० रबी-

खल-ओवल्की १२ वीं तिथि जो मुहम्मदकी निधनतिथि

है।—**सिंगा**,—**सिवा**—पुं० हिरनका एक भेद जिसके

नरके लंगोंमें अनेक शाखाएँ होती हैं। **सु०—गुना**

लिखना—बारपर बार गुना देनेकी शर्त स्वीकार

करना।—**परथर बाहर करना**—छावनीकी हदमें निकाल

देना।—**पानीका**—बारह बरसका (शुद्ध)।—**बच्चे-**

वाली—शुद्धी, बहुपसवा स्त्री।—**बाट करना**—तितर-

वितर करना; बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट करना।—**बाट छालना**—

दे० 'बारह बाट करना'।—**बाट जाता या होना**—तितर-

वितर होना; बरबाद, नष्ट भ्रष्ट होना।

बारहों—वि० बारहवों। अ० दे० 'बारहा'।

बारहा—अ० [फा०] अनेक बार।

बारहों—स्त्री० नबेकी बरही।

बारहों—पुं० मरनेके बादका बारहवों दिन; स्तनानके जन्मसे

बारहवों दिन।

बारा—वि० बालक, किशोर; कीमलवय, कमसिन। पुं० बेटा;

बालक। **बारैत**—* बचपनसे।

कारा-पु० [का०] समय, बार; विषय, मामला परकोटा ।
(भारतमें...के विषयमें) ।

कारात-खी० दे० 'वरात' ।

कारासी-वि०, पु० दे० 'वरासी' ।

कारावरी-खी० दे० 'वारवरी' ।

बारान-पु० [फा०] मेघ, वृष्टि; बरसात । वि० बरसने-
वाला । -गीर-पु० छत्रा । -दीहा-वि० जो बरसात
देख चुका हो; वृद्धवृद्ध ।

बारानी-वि० [फा०] वर्षापर अवलंबित, सींची न जा
सकनेवाली (फसल, जमीन) । खी० वह जमीन जिसमें
केवल वर्षासे सिंचाई हो, कुएँ आदिका सुभीता न हो।
विना सींचे होनेवाली फसल; बरसाती कोट ।

बाराह-पु० दे० 'बाराह' । -कंद-पु० दे० 'बाराहकंद' ।

बाराही-खी० दे० 'बाराही' ।

बारि-पु० दे० 'बारि' । (-ज, -द, -चि, -वाह
आदि दे० 'बारि'में) ।

बारिक-खी० सैनिकोंके रहनेके लिए बने छबि दालान जैसे
मकानोंकी पंक्ति । -मास्टर-पु० बारिककी निगरानी
करनेवाला अफसर ।

बारिगार-पु० इथिबारोपर सान रखनेवाला ।

बारिगार-खी० दे० 'बारिगार' -'बितर सीह बारिगार
तानी'-पं० ।

बारिश-खी० [का०] वर्षा, मेघ; बरसात ।

बारिस्टर-पु० [अ० 'बैरिस्टर'] इंग्लैंडकी वकालतकी
परीक्षामें उत्तीर्ण वकील, जो हिंदुस्तानमें विना वकालत-
नामके मुकदमोंमें बैरती कर सकता है ।

बारिस्टरी-खी० बारिस्टरका धंधा, वकालत ।

बारी-खी० अनेक व्यक्तियोंमेंसे प्रत्येककी भिलनेवाला
यथाक्रम अवसर, बारी; बारीके नुसारका दिन । -का-
बारीमें जानेवाला (अर) । -बारीसे-एकके बाद दूसरा ।
बारी-वि० खी० कमसिन (लकड़ी) । खी० किशोरी,
बालिका; नवयुवती; बड़े पैरोंका बाग; किनारा; बार; छोर;
आँठ; दे० 'बाली'; घर; खिखी । पु० एक हिंदू जाति जो
दोने-पत्तल आदि बनानेका धंधा करती है ।

बारीक-वि० [फा०] महीन, बहुत पतला; सूक्ष्म; समझने-
में कठिन, गूढ़ । -बीन-वि० सूक्ष्मदर्शी; तीक्ष्णबुद्धि;
नुफाचीन । -बीनी-खी० बारीकनीनका भाव ।

बारीका-पु० पतली रेखाएँ खींचनेकी महीन तुली ।

बारीकी-खी० [फा०] बारीकपन, सूक्ष्मता; खूबी, सूक्ष्म
गुण-लेश ।

बारीस-पु० दे० 'बारीस' ।

बारुणी, बारुनी-खी० दे० 'वारुणी' ।

बारू-खी०, पु० दे० 'बारू' ।

बारूत-खी० [तु०] बारूद ।

बारूद-खी० शोर, गंधक और कोबलेका बारीक चूर्ण जो
अग्निसे संयोगसे भस्म उठता और आतिशबाजी तथा तोप-
बंदूक चलानेमें काम आता है । -झागा-पु० बारूद या
गोली-बारूदका भंडार ।

बारै-अ० [फा०] अंतमें, आखिरकार; लेकिन; फिर ।

बारै-वि०, पु० बारह ।

बाहोडा-पु० शर; व्याहरी एक रस्म, श्राद्ध ।

बाबर-वि० [सं०] बरबर देशमें उत्पन्न ।

बाबरीड-पु० [सं०] आमकी गुठली; अंशुवा; धीम; बेहवा-
पुत्र ।

बाई-वि० [सं०] मोरके पंखका बना हुआ ।

बाईस्पत, बाईस्पत-वि० [सं०] शुद्धस्पति-संबंधी । पु०
एक संवत्सर; एक शब्दकोष ।

बाईगा-वि० [सं०] अमर-संबंधी ।

बाईगा-पु० दे० 'बाईगा' ।

बाईगू-पु० [फा०] जेरी जैसा एक बीज जो दवाके काम
आता है, तुलसीका ।

बाळ-खी० जो, गेहूँ आदिका वह भाग जिसमें दाने लगे
होते हैं, खोसा; * बाळ, तण्णी । पु० [सं०] बच्चा, बालक;
वह जिसकी उम्र सोलह वर्षमें ऊपर न हो। बछेरा; सुगंध-
वाला; पाँच बरसका हाथीका बच्चा; दूध; नारियल; केस;
रोआँ, श्रीशे आदिकी चीजोंमें पड़ी हुई दारार । वि० जो
पूरी नाइकी न पहुँचा हो; नवीनित; नासमझ, मूर्ख । -
कमानी-खी० [हि०] बच्चेके नैलेंसमें लगायी जानेवाली
बारीक कमानी । -काँड-पु० रामायणका पहला खंड
जिसमें रामचंद्रके जन्म, बाललीला, विवाह आदिका वर्णन
है । -काल-पु० वचपन, बाल्य । -कूमि-पु० जूँ ।

-कृष्ण-पु० कृष्णका बालरूप । -केलि, -केली-खी०
बच्चोंका खेल, बालक्रीडा । -क्रीडन-पु० बच्चोंकी
क्रीडा । -क्रीडनक-पु० खिलाती । -क्रीडा-खी० दे०
'बालकेलि' । -खंडी-[हि०] पु० देवी हाथी । -खिस्व
-पु० कपियोंका एक वर्ग (पुराणोंके अनुसार ये ढीलमें
अंगूठेके बराबर हैं और सूर्यके रथके आगे-आगे चलते हैं,
इनकी संख्या ६० हजार है) । -खोरो-पु० [हि०] बाल
झननेका रोग, गंधावन । -गर्नबत्ती-खी० पहली बार
गायिन होनेवाली गाय । -गोपाल-पु० बालकृष्ण; बाल-
बच्चे । -गोविंद-पु० बालकृष्ण । -ग्रह-पु० बालकों-
को पीड़ा पहुँचानेवाला उपग्रह या पिशाच (इनकी संख्या
९ बतायी गयी है, नाम ये हैं-रुद्र, रुद्रादपस्मार, शकुनी,
रेवती, पूतना, गंधपूतना, शीतपूतना, मुखमंडिका, नैग-
मेघ); बालरोगविशेष । -चंद्र-पु० दूजका चाँद ।

-खर-पु० बालकोंमें चारित्र्य, लोकसेवा और स्वावलंबन-
का भाव लानेके लिए व्यापित सप्ताका सदस्य, 'स्वाध-
स्काउट' । -खरित-पु० बाललीला, वचपनके काम । -
खर्ब-पु० काफियेय । -खर्बा-खी० बच्चोंका दख-
रखाव, शिक्षापालन । -खानुमंत्रिका-खी० बच्चोंकी दी
जानेवाली एक दवा, चौरही । -खड-खी० [हि०] जटा-
मासी । -छत्तरी-खी० [हि०] नुटिया; कन्तरीकी छतरी ।

-लंज-पु० धानीकर्म । -लवण-पु० खैरका पेड़ । -
लृण-पु० अरम, नवजात घास । -लौह-पु० [हि०]

बाल दूट जानेसे होनेवाला फोड़ा । -लुलक-पु० खैरका
पेड़ । -लन-पु० नाबालिगकी संपत्ति । -लु-पु०
पूँछ । -ली-खी० दे० 'वारुण' । -पक्षाघात-पु०
(इनकैनटाएल पैरासिटिस) बच्चोंकी होनेवाला पक्षाघात ।

-पख-पु० खैरका पेड़; जवाब । -पाइया-खी० बाली-
में बंधनेकी मोतियोंकी लदी । -पुत्रक-पु० अल्पवयस्क

पुन । -पुष्पी-ली० जूरी । -बबो-पु० [हि०] ककडे-
वाले, संतान । -बॉथा-वि० [हि०] ठीक, सटीक, पक्का ।
-० गुकाम-पु० [हि०] हर आवाका पालन करजे-
वाला, इशारेपर काम करनेवाला सेवक । -बुद्धि-ली०
बाळोपित बुद्धि; नासमझी, कम-अकली । वि० लकडोको-
सी अकल रखनेवाला; अल्पबुद्धि । -बोच-वि० बाळको-
की समझमें आनेवाला; मात्तान । -ब्रह्मचारी (वि०)-पु०
वचनसे ब्रह्मचर्य रखनेवाला, आज्ञ्य ब्रह्मचारी । -
अब्रह-पु० एक विष । -आब-पु० वचपन; बालरूप ।
-अैबज्य-पु० रसाजन । -ओग-पु० प्रातःकालका
(कलेवाक्य) नैवेद्य । -ओज्य-पु० चना । -ऑरी-
ली० [हि०] बोझोका एक दोष । -असि-ली०, वि० दे०
'बालबुद्धि' । -अस्व-पु० छोटी, बिना खालकी मछली ।
-अस्व-पु० मूखोका मरनेका ढंग (जै०) । -मुकुब्-
पु० बालक कृष्ण । -मूळक-पु० छोटी मूली । -मूलिका-
ली० आमनेका पेड़ । -सुरा-पु० दृगछौना । -
यहोपवीतक-पु० दे० 'बालोपवीत' । -रवि-पु० बाल-
सूर्य । -रस-पु० एक आयुर्वेदोक्त औषध । -राज-पु०
कैद्वी मणि । -रोय-पु० बच्चोंकी होनेवाला रोग । -
लीका-ली० बाल-चरित, बालक्रीडा । -बस्व-पु०
मछा; कद्दूर । वि० जिसका लकडा बहुत छोटा हो ।
-बच-पु० बालकी हत्या । -बाझ-पु० बकरा ।
-बिबबा-ली० छोटी उम्रमें ही विधवा हो जाने-
वाली स्त्री; मौना या पति-समागमके पहले विधवा हो
जानेवाली स्त्री । -बिपु-पु० दुजका चोंद, बालचंद्र । -
निबाह-पु० वचपनका, छोटी उम्रका ब्याह । -व्यजन-
पु० चेंबर । -मंग-वि० जिसके सींग अभी निकले हों ।
-संभ्या-ली० गोपूजिवेला, संभवाका पूर्व भाग । -
सत्ता, -सखि-पु० वचपनका दोस्त; बच्चोंका दोस्त;
मूर्खका दोस्त । -सत्ता-वि० [हि०] बाल साफ करने,
उगनेवाला (सापुन, दवा) । -साल्य-पु० दूध । -सूर्य-
पु० उगता हुआ सूर्य । -स्थान-पु० वचपन । -इट-
पु० बच्चेका बैठ, निद । मु० -आना, -पचना-शीघ्रे,
चीनी, धातु आदिकी चीजोंपर चटकनेका निशान पचना ।
-उगना-बाल जमना । -का कंबल बनाना, -की
मेक बनाना-अतिरजना करना, तिलका ताव बनाना;
परका क्रीमा बनाना । -की खाल खींचना या निकालना-
बारीकी निकालना, बहुत छाननीन करना । -
खिचकी होना-स्थावृत्ते संकेत बाल अधिक हो जाना । -
धूपमें पकाना-बूढ़ा हो जानेपर भी ज्ञान, अनुभवमें कीरा
रहना । (किसी काममें)-पकाना-(कुछ करते हुए)
बूढ़ा होना; अनुभव प्राप्त करना । -बराबर-बहुत बारीक;
जरा-सा, रसीमर । -बॉका होना-कठ, चोट पहुँचना;
हानि, अनिष्ट होना । -बॉथा निशान ठकाना-पक्का,
अचूक निशाना लगाना । -बाल-पूरा; सिरसे पैरतक;
हर एक; जरा-सा । -बाल गज मोती पिरोना-क्षुब्ध
बनाव-भंगार करना । -बाल गुनहवार होना-हर
तरहसे, सिरसे पैरतक अपराधी होना । -बाल बुझन
होना-हर एकका बुझन होना, सबीका शत्रु हो जाना ।
-बाल बँचना या बँधा होना-(किसीके कण-उपकारमें)

बहुत अधिक बँधा, दबा होना । -बाल बचना-विषयमें
पढ़ते-पढ़ते बच जाना, पढ़नेमें तनिक-सी भी कसर रहना,
साफ बचना ।
बॉल-पु० [अ०] गेंद; (यूरोपीय ढंगका) नाचका जलसा,
समुह-नृत्य । -बॉल-पु० सामूहिक नृत्य ।
बालक-पु० [सं०] बच्चा, लकडा; नाबालिग, अनजान,
नासमझ नाइसी; अंगूठी; कक्का, कंकण; बोरे या हाथीकी
पुँछ; सुगंधवाला; केस; एक जलीय पौधा, मोथा । -बाल-
पित-पु० बालकोकीसी, नासमझीकी बात । -ब्रिथा-
ली० केला; इंदुवास्थी ।
बालकताई-ली० लकड़पन, नासमझी ।
बालकपन-पु० वचपन; नासमझी ।
बालकी-ली० बालिका ।
बालकीब-वि० [सं०] बालक-संबंधी; बालकीका ।
बालटी-ली० लोहे, पीतल आदिका बना ढोल ।
बालट्ट-पु० पेचको दूसरे मिरते कसनेवाला पेचदार छला ।
बालवा-पु० बैल ।
बालना-सं० मि० जलाना ।
बालपन-पु० वचपन ।
बालम-पु० पति; प्रेमी । -खीरा-पु० एक तरहका खीरा ।
बालघ-पु० [सं०] ११ करणोंमेंसे दूसरा (ज्यो०) ।
बाला-पु० कानमें पहननेका एक गहना, धडी वाली; गेहूँ-
जोकी फलमें लगनेवाला एक कीड़ा; स्त्री [सं०] लकडी,
बालिका; १९ वरसमें कम उम्रकी युवती; युवती; पक्का;
हल्दी; छोटी इलायची; एक सालकी बछिया; सुगंधवाला;
नारियल; सैरका पेड़; धतकुमारी; दस महाविद्यालयोंमेंसे
एक; एक वर्णवृत्त । वि० [हि०] कमनिन; बालस्वभाव,
भोला । -जोबन-पु० [हि०] उठती ब्रह्मानी । -ओला-
वि० [हि०] सीधासादा, सरल ।
बाला-वि० [फा०] ऊपरका; ऊँचा । पु० टोल, लबाई-
कँचारा । -ए टाक-वि० अलग, दूर (रखना) । -कुष्पी-
ली० पुराने समयमें प्रचलित एक शारीरिक ढँक । पु०
भारी चीत्रोंकी ऊपर उठानेका आला, 'फ्रेन' । -छाना-
पु० ऊपरकी मंत्रिलका कमरा, अटारी । -दस्त-वि०
पदमें कँचा, बघा । -मल्लीव-पु० बैठनेकी कँची जगह ।
वि० सवसे अच्छा, बढिया । -पोशा-पु० पलगपोशा;
ओवरकोट । -बंद-पु० सिरपेच; एक तरहका अंगरखा;
एक तरहका लिहाफ । -बर-पु० अगरलेका बह भाग
जो आगेकी कलीमें निकला हुआ और दायनके नीचे छिपा
रहता है । -बाला-अ० ऊपर-ऊपर; बाहर-बाहर ।
बालाई-वि० [फा०] ऊपरका (हिस्सा) । स्त्री० मलाई ।
-आसबूनी-ली० ऊपर आसदनी, वेतन या बँधी वृत्ति-
के अतिरिक्त मिलनेवाली रकम ।
बालाघ-पु० [सं०] कनूतरका दरवा ।
बालाजी बाजीराव-पु० तीसरा पेशवा (१७४०-६१ ई०) ।
बालाजी विश्वनाथ-पु० पहला महाराष्ट्र पेशवा, पेशवाई-
का संस्थापक (१७२० ई०) ।
बालातप-पु० [सं०] सुनरेकी धूप ।
बालादित्य-पु० [सं०] नवोदित सूर्य ।
बालाच्यापक-पु० [सं०] बच्चोंकी पढ़ानेवाला ।

बाळापन-पु० बचपन, कबकपन ।
 बाळासब-पु० [सं०] बच्चोंका रोग ।
 बाळास-पु० [सं०] बालस्य; कन्याराशिमें स्थित सूर्य ।
 बाळासस्य-वि० [सं०] अल्पवयस्क, कमसिन ।
 बाळासस्था-स्त्री० [सं०] बचपन ।
 बाळि-० स्त्री० अंगरी । पु० [सं०] दे० 'बाळी(छिन्)' । -
 हांसा(सु), -हा(इच) -पु० राम । -कुमार-पु० अंगद ।
 बाळिका-स्त्री० [सं०] छोटी कनका; बेटा; बाळी; छोटी
 इलायची; बाळू । -विद्यालय-पु० कनकियोंका सपरसा ।
 बाळिया-वि० [अ०] बचप्राप्त, सवाना । पु० सवाना
 आदमी ।
 बाळिया-स्त्री० सवानी, १५ वर्षसे अधिक उमकी कनकी,
 युवती ।
 बाळिनी-स्त्री० [सं०] अश्विनी नक्षत्र ।
 बाळिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] बचपन, बाळावस्था ।
 बाळिमा-वि० [सं०] बालोचित; बालमुक्ति, नासमझ;
 लापरवाह । पु० शिष्टा; मूर्ख व्यक्ति; [फा०] तक्रिया,
 मसनद; बढती ।
 बाळिस्त-पु० [फा०] अंगूठेके सिरेसे छिगुनोके छोरतककी
 कलाई, विस्त ।
 बाळिस्तिया-पु० बौना, भडत ही नाटा आदमी ।
 बाळिस्त्य-पु० [सं०] बचपन; मूर्खता ।
 बाळिस्त्य-वि० दे० 'बाळिस्त' । पु० दे० 'बाळिस्त'; [अ०
 'बैलेन्ट'] पत्थरके छोटे-छोटे टुकड़े जो सड़क बनानेके काम
 आते हैं; गिट्टी । -गाड़ी-स्त्री० गिट्टी, कंकड़ आदि डोने-
 वाली रेलगाड़ी ।
 बाळी-स्त्री० [फा०] सिरहाना; तक्रिया ।
 बाळी-स्त्री० सोने या चाँदीके तारका छल्ला जो कानमें
 पहना जाता है; गेहूँ-जो आदिकी बाळ, खोशा ।
 बाळी(छिन्)-पु० [सं०] मिथिधाका बानर राजा और
 सम्राटका बहा भाई जो रामके हाथों मारा गया । - (लि)
 कुमार, -तनय, -सुत-पु० अंगद ।
 बाळीदगी-स्त्री० [फा०] नाद, हृष्टि ।
 बाळीस-पु० [सं०] मूत्रावरोध ।
 बाळुकी, बाळुंगी-स्त्री० [सं०] दे० 'बाळुकी' ।
 बाळु, बाळुक-पु० [सं०] एलुवा; पानी-आँवला ।
 बाळुका-स्त्री० [सं०] बाळू, रेत; ककरी; कपूर । -गह-
 पु० एक तरहकी मछली । -धन्त्र-दवा कुँकनेका एक
 वंश । -स्वेद-पु० पसीना लानेके लिए गर्म बाळुकी
 मोटलीसे सेंकना ।
 बाळुकी-स्त्री० [सं०] एक तरहकी ककरी ।
 बाळू-स्त्री०, पु० रेत । -दानी-स्त्री० वह क्रिया जिसमें
 स्याही छसानेके लिए बाळू रखते हैं । -बुई-वि० जो
 बाळू से मट हो गया हो । पु० वह जमीन जो रेत पर
 जानेके कारण खेतीके लायक न रह गयी हो । -शाही-
 स्त्री० एक प्रसिद्ध मिठाई । -की चक्की-शीशेका अंठा-
 कार पात्र जिसमें मरी दुई रेत उसके छेदसे एक धंटेमें
 नीचेके पात्रमें गिर जाती है । -की भील-क्षण-अंगुर
 वस्तु, वह चीज जिसके विगचनेमें देर न लगे ।
 बाळूक-पु० [सं०] एक विध ।

बाळु-पु० [सं०] धूपका चाँद ।
 बाळेमियाँ-पु० गाजीमियाँ ।
 बाळेय-वि० [सं०] बालकोंके लिए बितकर; बलिके बोम्ब;
 सुदु, मुलायम; बलिके छपर । पु० बलिका बेटा; गया ।
 बाळेया-स्त्री० [सं०] बलिकी बेटा ।
 बाळेट-पु० [सं०] बेरका पेट ।
 बाळोपकरय-पु० [सं०] बालकोंका उपचार ।
 बाळोपकार-पु० [सं०] बच्चोंका इलाज ।
 बाळोपवीत-पु० [सं०] लँगोटी; जनेक ।
 बाळू-पु० [अ० 'बोल्'] छोड़े आदिकी बनी एक प्रकारकी
 कील जिसके एक सिरेपर पुडी और दूसरे सिरेपर टिकरी
 कसनेके लिए चूकियाँ बनी होती हैं ।
 बाळ्य-पु० [सं०] बचपन, बाळकाल; १६ वरसतककी
 अवस्था; नासमझी । -काळ-पु० बचपनका समय ।
 बाळुक, बाळिक, बाळरीक-पु० [सं०] बळखदेस;
 बळखता रहनेवाला; बळखका बोस; केसर; हाँग ।
 बाळ-पु० दे० 'बाळू'; अपानबाळु; बातदोष ।
 बाळकी-स्त्री० दे० 'बाळी' ।
 बाळकूता-स्त्री० बागमता ।
 बाळय-वि० पचास और दो; † दे० 'वामन' । पु० बावन-
 की संख्या; ५२; † दे० 'वामन' । सु० -तोळे पाव रसी
 -विष्कूल ठीक । -बीर-बडत चतुर और बहादुर ।
 बाळना-वि० ठिगना, बौना ।
 बाळभक-पु० पागलपन ।
 बाळर-वि० दे० 'बावला' । पु० [फा०] विश्वास ।
 बाळरकी-पु० खाना पकानेवाला, रसोइया । -झाना-
 पु० रसोई, पाकशाला ।
 बाळरा-वि० पागल ।
 बाळरि, बाळरी-स्त्री० दे० 'बावली' ।
 बावला-वि० बातरोमी, पागल, सिकी । -पन-पु० पागल-
 पन, सनक, सिङ्ग ।
 बावली-स्त्री० चौथा कुआँ जिसमें नीचे जानेके लिए
 सीढ़ियाँ बनी हों; छोटा सोपानयुक्त तालाब । वि० स्त्री०
 दे० 'बावला' ।
 बावली-वि० दे० 'बावली' ।
 बावेली-पु० कुहराम ।
 बाळिया-पु० [फा०] बसनेवाला ।
 बाव्य-पु० [सं०] आँध; माप; जोहा । -कंठ-वि० जिसका
 गला भर आया हो । -कल-वि० (शब्द) जो आँसुओंके
 कारण अस्पष्ट हो । -दुर्दिन, -पूर, -प्रकर-पु० आँसुओं-
 की बाढ़ । -मोझ, -मोचन-पु० आँध बहाना ।
 -विह्वल-वि० जो रौनेके कारण धक्का गया हो ।
 -हृष्टि-स्त्री० आँसुओंकी वर्षा । -संविग्ध-वि० दे०
 'बाष्पकल' । -सखिल-पु० अश्रुजल ।
 बाष्पक-पु० [सं०] माप; एक साग, मारिच ।
 बाष्पका-स्त्री० [सं०] हिंसुपत्री ।
 बाष्पात्र-पु० [सं०] अश्रुजल ।
 बाष्पाकुल-वि० [सं०] जो आँसुओंके कारण मंद पड़
 गया हो ।
 बाष्पासार-पु० [मं०] दे० 'बाष्प-हृष्टि' ।

वाचिका-**ली०** [सं०] एक वीरा ।
वाष्पी (विष्)-**वि०** [सं०] औष्य वा औष्य जैसा कोई तरल पदार्थ बहानेवाला ।
वाष्पोपीड-**पु०** [सं०] औसुओंकी बाढ़ ।
वाष्पोद्भव-**पु०** [सं०] औसुओंका निकलना ।
वासंति-**वि०**, **पु०** दे० 'वासंति' ।
वास्त-**पु०** निवास; वास्तस्नान; वस्त्र; * दिन । **ली०** गंध; वासना; आग; एक इधियार । -**कूल**-**पु०** एक सुगंधित धान । -**भस्ती**-**पु०** एक खुशबूदार चारक ।
वासकसज्जा-**ली०** दे० 'वासकसज्जा' ।
वासठ-**वि०** साठ और दो । **पु०** वासठकी संख्या, ६९ ।
वासन-**पु०** वरतन; वस्त्र ।
वासनबारा-**पु०** सुगंधित करनेवाला ।
वासना-**सं०** कि० वसना; सुवासित करना । **ली०** दे० 'वासना'; गंध ।
वासर-**पु०** दे० 'वासर' ।
वासव-**पु०** इंद्र ।
वास्तसी-**ली०** कपडा; वस्त्र ।
वासा-**पु०** अड्डसा; एक पक्षी; भोजनालय; * निवास-स्थान । **वि०** वासी ।
वासिम-**पु०** वासुकि नाग ।
वासित-**वि०** वासित; सुगंधित किया हुआ; कपड़ेसे उका हुआ ।
वासिही-**ली०** वसास नदी ।
वासी-**वि०** रहनेवाला; देरका पका हुआ; दूसरे जून या रातका पका हुआ (खाना); पिछले दिनका लोहा, रखा हुआ (फल, पानी); मूला; कुम्हलाया हुआ । -**ईद**-**ली०** ईदका दूसरा दिन । -**तिवासी**-**वि०** कई दिनोंका । -**मुँह**-**वि०** जिसने सवेरेसे कुछ खाया न हो । **अ०** बिना कुछ खाये, खाली पेट । **मु०**-**कड़ीमें उबाल आना**-मुझमें जवानीका जोश जगना; समय नीत जानेपर कुछ करनेकी इच्छा होना। अशक्तका सशक्तता आचरण करना । -**बच्चे न कुत्ता खाय**-झाड़-पोंछकर स्वयं खा जानेवालेके यहाँ दूसरोंके लिए गुंजाइश कहाँ ? -**भासमें खुदा का साक्षा**-कठिनाईसे मिली रही चीजमें भी अकस्मात् किसी बँटानेवालेका आ पहुँचना ।
वासुकी-**पु०** वासुकि नाग । **ली०** सुगंधित पुष्पोंकी माला ।
वासीची-**ली०** दे० 'वासीची' ।
वास्त-**वि०** [सं०] बकरेसे प्राप्त या संबंध रखनेवाला ।
वाह-**पु०** [सं०] बाहु; धोखा; * प्रवाह; निकास; वेतकी जुताई । **वि०** बह, सशक्त ।
वाहक-**पु०** दे० 'वाहक'; * सवार ।
वाहकी-**ली०** पालकी दोनेवाली कहारिन ।
वाहन-**पु०** दे० 'वाहन'; एक पैर ।
वाहना-**सं०** कि० दोना; हँकना; फेंकना; † साफ करना, शराना-'जब हम रात बाहनेके लिए कंधा उठावें' मारना; खेत जोतना; † गाय आदिकी गाभिन कराना । **अ०** कि० बहना ।
वाहनी-**ली०** नदी; सेना ।
वाहर-**अ०** स्थान या वस्तुविशेषकी सीमाके उस पार;

अंदरका उलटा; अलग; दूर, अन्यथा-से अधिक (दूरेसे बाहर) । **पु०** बाह्यरूप, ऊपरी भाग; परदेश । -**जामी**-**पु०** ईश्वरका सगुण रूप । -**बाहर**-**अ०** ऊपर-ऊपर; दूर-दूर । -**भीतर**-**अ०** अंदर और बाहर । -**बाह्य**-**पु०** मंजी । **वि०** बाहरी । -**बाह्यी**-**ली०** मंजिन । **मु०**-**करना**-निकास देना, अलग करना, वशिष्ठत करना । -**का**-जो वरका न हो, गैर; ऊपरका । -**की** इबाछगना-बाहरवालोंका अंतर पकना; आबारा होना । -**जाना**-भरसे निकलना, परदेश जाना । -**से**-ऊपरसे, आधिरा; दूसरे स्थान, परदेशसे । (आज्ञा, हुक्म आदिसे)-होना-माननेसे इनकार करना ।
बाहरी-**वि०** बाहरका; गैर; पराया; अजनबी; परदेशी; दिव्याक । -**टाँग**-**ली०** कुदरीका एक पैर ।
बाह्रजोरी-**अ०** हाथसे हाथ मिलाये हुए ।
बाह्र-**ली०** [सं०] बाहु ।
बाहिज-**अ०** बाहरसे, ऊपरसे ।
बाहिनी-**ली०** सेना; सवारी ।
बाहिय-**अ०** बाहर ।
बाहिरा-**अ०** दे० 'बाहर' ।
बाहीक-**वि०** [सं०] बाहरका, बाहरी । **पु०** पञ्चावकी एक नाति वा इस जातिका व्यक्ति ।
बाहु-**ली०** [सं०] बाँह, भुजा । -**कुंड**-**कुब्ज**-**वि०** लूला । -**कुंय**-**पु०** डैना । -**ज**-**पु०** क्षत्रिय; तोता; जगली तिल । -**सरण**-**पु०** तैरकर नदी पार करना । -**प्र**-**जान**-**पु०** बाहुपर चँवा जानेवाला वस्त्र । -**हँह**-**पु०** अजदह । -**पाश**-**पु०** बाहोंकी फैलाकर हथेलियोंकी मिला लेनेसे बननेवाला घेरा, आलिंगन करते समय बाहुओंकी मुद्रा । -**प्रसार**-**पु०** हाथका फैलाव । -**बल**-**पु०** भुज-बल, शरीरबल; पराक्रम । -**भूषण**-**पु०**, -**भूषा**-**ली०** भुजबंद, केयूर । -**भेदी (दिन)**-**पु०** विष्णु । -**मूल**-**पु०** कंधे और बाँहका जोड़ । -**बुद्ध**-**पु०** कुशती, भिन्नत । -**बोध**, -**बोधी (विन)**-**पु०** कुशती लक्ष्मणवाला । -**लता**-**ली०** लता जैसी बाँह; सुकुमार बाहु । -**विशेष**-**पु०** हाथ फेंकना; तैरना । -**विमर्द**-**पु०** बाहुयुद्ध । -**विस्फोट**-**पु०** ताल ठेंकना । -**वीर्य**-**पु०** बाहुबल । -**व्यायाम**-**पु०** दह, कसरत । -**शाली (लिख)**-**पु०** शिव; मीम; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । -**शिक्ष**-**पु०** कथा । -**होच**-**पु०** बाँहोंमें होनेवाला एक वात रोग । -**संभव**-**पु०** क्षत्रिय । -**हजार**-**पु०** दे० 'सहस्रबाहु' ।
बाहुक-**पु०** [सं०] एक नाग; नकुल; बंदर; नलका उस समयका नाम जब वने अयोध्यानरेश कतुपर्णके सारथि थे । **वि०** अधीन, आश्रित; तैरनेवाला ।
बाहुगुण्य-**पु०** [सं०] बहुतसे गुणोंका होना ।
बाहुजम्ब-**वि०** [सं०] जो बहुत बड़े जनसमाजमें फैला हो ।
बाहुबंदी (तिन), **बाहुबंदेय**-**पु०** [सं०] इंद्र ।
बाहुघा-**ली०** [सं०] महाभारतमें वर्णित एक नदी; राजा परीक्षितकी पत्नी ।
बाहुभाष्य-**पु०** [सं०] बकवक करना, बकवास ।
बाहुरना-**अ०** कि० मुकना, छोटना; वापस आना ।
बाहुरूष्य-**पु०** [सं०] बहुरूपता ।

बाहुल-पु० [सं०] काविक मास; बाहुनाग; अश्वि । -ग्रीव
-पु० मीर ।

बाहुकी-स्त्री० [सं०] काविककी पूर्णिमा ।

बाहुक्य-पु० [सं०] बहुतात, बहुरास; बहुरूपता ।

बाहुभुज्य-पु० [सं०] बहुभुज होनेका भाव ।

बाहु-स्त्री० दे० 'बाहु' ।

बाहुर-अ० दे० बाहर ।

बाहुरा-पु० प्राणन ।

बाह्य-पु० रथ, यान । अ० बाहर, परे । वि० [सं०]
बाहरी; गैर, बेगाना; बहिर्गत, बहिष्कृत; ऊपरी,
दिलाल । -करण-पु० बाह्य ज्ञानेन्द्रिय । -कृति-
स्त्री० पारेका एक संस्कार । -पट्टी-स्त्री० जवनिका ।
-रूप-पु० ऊपरी, दिलाल रूप । -रत्न-संयोग-
पु० भगवे बाहरी रतिक्रिया । -छिगी(मिन्)-
वि० धर्मविरोधी । -वासी(सिन्)-वि० बस्तीके
बाहर रहनेवाला । पु० चाकाल । -विश्वि-स्त्री० एक
रोग । -विषय-पु० प्राणकी बाहर रोकना । -वृत्ति-
स्त्री० प्राणायामका एक भेद ।

बाह्याचरण-पु० [सं०] ढकीसला ।

बाह्याभ्यन्तर-पु० [सं०] प्राणायामका एक भेद । वि०
बाहरी और भीतरी (रोग) ।

बाह्यायाम-पु० [सं०] अनुत्तम रोग । धनुर्हंकार ।

बाह्यालय-पु० [सं०] बाह्यकोका देश ।

बाह्यीक-पु० [मं०] दे० 'बाह्यीक' ।

बिगा-पु० दे० 'ब्यग' ।

बिजन-पु० दे० 'ब्यजन' ।

बिज-पु० बिट्ट, बूँद; अमृष्य; बिंदी ।

बिद्वि-पु० [सं०] बूँद ।

बिदा-पु० बड़ी बिंदी । स्त्री० दे० 'बूँदा' ।

बिंदी-स्त्री० सुत्रा, सिफर; नुक्ता; गोल टीका ।

बिंदु-पु० [सं०] बूँद; बिंदी; अनुस्वारका चिह्न; शून्य;
अधस्तात; अमृष्य; नाटकका वह स्थल जहाँ गौण घटनाओं-
का विस्तृत रूप ग्रहण करना आरम्भ होता है । -चित्र, -
चित्रक-पु० एक तरहका युग जिसके बदनपर चित्रियाँ
होती हैं । -संज्ञ-पु० पासा; निशात; खेलनेका गेंद ।
-देव-पु० शिव । -पत्र-पु० एक वृक्ष, भोजपत्र ।
-फल-पु० मोती । -भासी(लिन्)-पु० एक ताल ।
-राजि-पु० एक सर्प । -रेखक-पु० अनुस्वार; एक
पक्षी । -रेखा-स्त्री० बिंदुओंसे बनी हुई रेखा । -बास्वर
-पु० गर्भाधानका दिन ।

बिबुक-पु० [सं०] बूँद ।

बिबुका-पु० बिंदी ।

बिबुकि-वि० [सं०] बिबियोंसे पूर्ण ।

बिबुरी-स्त्री० दे० 'बिबुरी' ।

बिबुली-स्त्री० बिंदी, टिकली ।

बिब्रावन-पु० दे० 'बूँदावन' ।

बिब्य-पु० दे० 'बिब्याचक' ।

बिबना-अ० कि० बीधा जाना; उलझना । स० कि०
छेदना ।

बिबाना-अ० कि० बेधा जाना ।

बिबिवा-पु० मोती बेधनेवाला ।

बिब-पु० [सं०] अमृष्य, प्रतिष्ठाया; कमंडलु; सूर्य या
चंद्रमाका मंडल; कुंदरु; गिरगिट; झलक; मंडल जैसा कोई
तक; उपमेय; आरना; * बौली । -फल-पु० कुंदरु ।

बिबक-पु० [सं०] चंद्रमा या सूर्यका मंडल; कुंदरु ।

बिबट-पु० [सं०] सरसों ।

बिब, बिबी-स्त्री० [सं०] कुंदरुकी लता ।

बिबाधरोही-वि० स्त्री० [सं०] जिसके होंठ कुंदरु जैसा
लाल हों ।

बिबिका-स्त्री० [सं०] सूर्य या चंद्रमाका मंडल; कुंदरुकी
लता ।

बिबिस-वि० [सं०] प्रतिबिंबित ।

बिबिसार-पु० [सं०] बुद्धके समकालीन मगधनरेश
अजातशत्रुका पिता ।

बिबु-पु० [सं०] सुपारीका पेड़ ।

बिबोट, बिबोट-वि० [सं०] जिसके होंठ कुंदरुकी तरह
लाल हों । पु० कुंदरु जैसा लाल होंठ ।

बि, बिज-वि० दो ।

बिबाजा-पु० सूर; बहाना ।

बिबाधा-पु० व्याधा । स्त्री० व्याधि ।

बिबाधि-स्त्री० दे० 'व्याधि' ।

बिबाना-स० कि० जनना । अ० कि० पशुका बच्चा जनना ।

बिबापी-वि० व्यापी ।

बिबाहना-स० कि० व्याह करना ।

बिकट-वि० दे० 'विकट' ।

बिकना-अ० कि० बेचा जाना, दाम लेकर दिया जाना;
* मुग्ध होना ।

बिकरम-पु० दे० 'बिक्रम'; दे० 'बिक्रमादित्य' ।

बिकरार-वि० बेकार, विकल; दे० 'विकराल' ।

बिकराल-वि० दे० 'विकराल' ।

बिकर्म-पु० कुकर्म, बुरा काम ।

बिकल-वि० विकल, बेचैन ।

बिकलाई, बिकलाई-स्त्री० विकलता, बेचैनी ।

बिकलाना-अ० कि० व्याकुल होना । स० कि० व्याकुल
करना ।

बिकलाना-स० कि० बेचनेका काम दूसरेमें कराना; विकने-
में सहायता करना ।

बिकसना-अ० कि० खिलना, फूलना; प्रमत्त होना;
फूटना, फटना ।

बिकसाना-स० कि० विकसित करना; प्रसन्न करना । *
अ० कि० दे० 'बिकसना' ।

बिकाड-वि० जो बेचा जानेवाला हो ।

बिकाना-अ० कि० विकना; यशमें होना । स० कि०
खरीदना ।

बिकार-पु० दे० 'विकार' । * वि० विकृत ।

बिकारी-स्त्री० मन, सेर, रुपये आदिके चिह्नरूप, टेंडी
पार्श्व । वि० दे० 'विकारी' ।

बिकास-पु० दे० 'विकास' ।

बिकासना-स० कि० विकसित करना; खोलना । अ०
कि० विकसित होना; प्रकट होना ।

विभुक्तः—वि० चीकनेवाला । अ० कि० चीकना ।

विभोतः—वि० अनेत, वेदोक्ष ।

विभीर्हि—वि० चीकना, चीकवाला ।

विधिष्ठि—स्त्री० दे० 'विधिष्ठि' ।

विच्छी—स्त्री० दे० 'विच्छू' ।

विच्छू—पु० एक रंगनेवाला जहरीला वस्तु जिसके डंक मारनेसे प्राणियोंको बहुत पीड़ा और कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है; दुष्प्रिय; एक तरहकी घास ।

विच्छेषः—पु० दे० 'विच्छेप' ।

विछना—अ० कि० विछाया-फैलाया जाना ।

विछलन—स्त्री० फिसलन ।

विछलना, **विछलाना**—अ० कि० फिसलना; डगमगाना ।

विछाना—स० कि० विछानेका काम किसी औरसे कराना ।

विछाना—स० कि० आसन-विस्तार आदिको जमीन, चार-पाई आदिपर फैलाना; बिखेरना; मारकर गिरा देना ।

विछावतः—स्त्री० विछानेकी चीज, विछावन ।

विछावन—पु० दे० 'विछौना' ।

विछिस्त—वि० दे० 'विछिस्त' ।

विछिन्ना—स्त्री० पाँवकी उँगलियोंमें पहननेका एक गहना ।

विछुआ, **विछुआ**—पु० पाँवका एक गहना; एक तरहकी छुरी (कटार) ।

विछुवन—स्त्री० विछुवनेका भाव, वियोग, जुदाई ।

विछुवना—अ० कि० जुदा होना, साथ छूटना, वियोग होना ।

विछुरता—पु० विछुवनेवाला; वह जो विछुआ हुआ हो ।

विछुरना—अ० कि० दे० 'विछुवना' ।

विछुरनि—स्त्री० दे० 'विछुवन' ।

विछुना—वि० विछुआ हुआ ।

विछोई—वि० दे० 'विछोई' ।

विछोबा—पु० विछुवन, वियोग ।

विछोय—पु० दे० 'विछोह' ।

विछोह—पु० वियोग, जुदाई ।

विछोही—विछुआ हुआ, वियुक्त ।

विछौना—पु० वह कपड़ा जिसे चारपाई आदिपर बिछाकर सोया जाय, विस्तार ।

विजन—पु० दे० 'व्यजन' । वि० दे० 'विजन'—'..विजन जुलाती ते वै विजन जुलाती है'—भूषण ।

विजना—पु० पखा ।

विजय—स्त्री० दे० 'विजय'—'चंड-पु० मंदिरोंमें लटकाया जानेवाला बड़ा घटा ।—सार-पु० एक जगली पेठ जिसकी लकड़ी ढोल आदि बनानेके काम आती है ।

विजयी—वि० दे० 'विजयी' ।

विजली—स्त्री० रंग, रासायनिक क्रिया या चुंबकीय शक्तिसे उत्पन्न शक्ति-विशेष, बिजुत; एकमे दूसरे बादलोंमें या बादलोंसे धरतीकी ओर बिजलीका विसर्जन; इस विसर्जनसे उत्पन्न प्रकाश, तबिय; कानमें पहननेका एक गहना; गलेमें पहननेका एक गहना; आमकी गुठलीके सीतका गुहा ।

वि० बहुत तेज, अति चंचल, हुताग्नी ।—**बहर**—पु० वह स्थान जहाँ बिजलीकी शक्ति उत्पन्न करके नगर या क्षेत्र-विशेषमें वितरित की जाय ।—**बन्धाव**—पु० ऊँची इमारतों-पर बिजलीमें बन्धावके लिए लगा हुआ नौकरदार लोहा ।

—**मार**—पु० एक बड़ा पेड़ । **मु०**—का कवचा,—**की कवच**—बिजली चमकनेके बाद सुनार देनेवाली गजगदा-हट ।—**गिरना**—बिजलीका आकाशसे धरतीकी ओर आना; किसी चीजका बिजलीके रास्ते या निशानेमें पड़ना, बज-पात होना ।

विजहान—वि० जिसका चीज नष्ट हो गया हो, हतवीर्य ।

विजाली—वि० दे० 'विजातीय' ।

विजान—वि० ज्ञानरहित, अनजान ।

विजायठ—पु० बाज्रव ।

विजुरी—स्त्री० दे० 'बिजली' ।

विजूका, **विजूका**—पु० पक्षियों आदिको मगानेके लिए सेतमें बनाया हुआ पुतला आदि ।

विजै—स्त्री० दे० 'विजय' ।

विजोग—पु० दे० 'वियोग' ।

विजोना—स० कि० अच्छी तरह देखना; देख-रेख करना ।

विजोरा—पु० दे० 'किजोरा' । † वि० निर्बल ।

विजोहा—पु० दे० 'विजुहा' ।

विजोरा—पु० नौबूके बर्गका एक फल जो आकारमें बड़ी नारंगीके बराबर होता है, बीजपूर; इसका पेड़; तिष्ठके मेरुसे बनी हुई एक तरहकी बरी ।

विजोरी—स्त्री० एक प्रकारकी बरी जो पीठी और पेटके बीचके मेरुसे बनती है ।

विजुल—स्त्री० दे० 'बिजली' ।—**पास**—पु० बिजली गिरना, बजपात ।

विजुल—स्त्री० दे० 'बिजली' । पु० छिक्का, त्वचा ।

विजू—पु० एक वन्य जंतु जिसकी शक्ति विछोसे मिलती है ।

विजूहा—पु० एक वर्णवृत्त ।

विष्कना—अ० कि० दे० 'विष्कुना' ।

विष्कुना—अ० कि० दे० 'विचकना'; तनना ।

विष्कुना—पु० दे० 'विजूका' ।

विष्काना—अ० कि० चीकाना; डराना; चंचल कर देना ।

विटबे—स्त्री० विडम्बना ।

विट—पु० विदूषक; वेदयागामी; वैश्य । स्त्री० वीट ।

विटक—पु० [सं०] कीड़ा ।

विटका—स्त्री० [सं०] दे० 'विटक' ।

विटप—पु० वृक्ष; स्त्री०; वृक्षादिकी नयी शाखा ।

विटपी—पु० दे० 'विटपी' ।

विटरना—अ० कि० धँसोका जाना ।

विटारना—अ० कि० धँसोका, गंदा करना ।

विटालना—अ० कि० फैलाना, बिखेरना ।

विटिनिबा—स्त्री० दे० 'विटिया' ।

विटिया—स्त्री० बेंटी, बच्ची ।

विटीरा—पु० उपलोंकी राशि ।

विट्ठल—पु० विष्णुका एक नाम; पंढरपुर (सोलापुर) में स्थापित देवमूर्ति ।

विठलाना—स० कि० दे० 'विठाना' ।

विठाना—स० कि० बैठाना ।

विठालना—स० कि० दे० 'विठाना' ।

विडंब—पु० आडंबर ।

विडंबना—स्त्री० दे० 'विडम्बना' ।

विड-पु० बीडा दे० 'विदु'; [सं०] एक तरहका नमक, कारी नमक ।

विडई-झी० गेंडुरी, हेंडुरी ।

विडर-वि० अलग-अलग, जो सदा न हो; * निडर, ठोठ ।

विडरना*-अ० कि० तितर-वितर होना; भागना; डरना, चौकना (जानबरोका) ।

विडराना-स० कि० तितर-वितर करना; भगाना ।

विडबना*-स० कि० तोड़ना ।

विडा*-पु० दृष्ट-कविरा चंदनका बिका पैठ्या आक पलास'-कबीर ।

विडारना-स० कि० तितर-वितर कर देना; विपक्षी दलको डराकर भगा देना-'मारोच विडारयो जलधि उतारयो'-रामचंद्रिका; नष्ट करना ।

विडाळ-पु० [सं०] मार्जार, बिलब; एक दैत्य; आँसुका डेका । -पव, -पवक-पु० एक तोक । -ब्रतिका-वि० दोगी ।

विडाळक-पु० [सं०] बिलब; मेघविड ।

विडाळास-वि० [सं०] जिसकी आँखें बिलोकी-सी हों ।

विडाळिका-झी० [सं०] छोटी बिलो; हरताल ।

विडाळी-झी० [सं०] बिलो; आँसुका एक रोग ।

विडिक-पु० [सं०] पानका बीड़ा, गिल्लरी ।

विडी-झी० दे० 'बीडी' ।

विडी*-पु० बिटप ।

विडीजा(जस्)-पु० [सं०] रंग ।

विडुटी*-पु० कमाई; काम ।

विडबना, विडावना*-स० कि० कमाना; संचय करना ।

वित*-पु० दे० 'विष्' ।

वितताना*-अ० कि० बिकल होना । स० कि० दुःख देना, सताना ।

वितवा*-पु० विष्ठा । अ० कि० दे० 'बीतना'-'विते बहुत दिन जात न जाना'-रघुराज सिंह ।

वितरना*-स० कि० वितरण करना, बाँटना ।

वितवना*-स० कि० विताना ।

विताना-स० कि० गुजारना, व्यतीत करना । * अ० कि० बीतना-'भवो द्रौपदीको बसन बासर नहीं विताय'-रसराज ।

वितानवना*-स० कि० दे० 'विताना' ।

विततीतना*-अ० कि० बीतना, गुजरना । स० कि० विताना ।

वितुंड-पु० दे० 'वितुंड' ।

वितुंडे*-पु० वितंडवाद ।

वितुनना*-स० कि० देश-देशा अलग कर देना -हाय अज-भ्योहार-गति अति परिनिहि वितुनति भूय'-वन० ।

विस्-पु० विष्, वन-रौलत; हैसियत; वृत्ता, सामर्थ्य ।

विस्वा-पु० अंगूठेके सिरेसे छिं गुनीकी छोरतककी लंबाई, बालिष्ठ ।

विस्वी-झी० धर्मोदाय ।

विथकना-अ० कि० थकना; मुग्ध होना; चकित होना ।

विथरना, विथुरना*-अ० कि० विथरना; अन्ध-अन्ध होना; सिलना ।

विथराना, विथुराना*-स० कि० विथरना, छिटकाना ।

विथा*-झी० दे० 'व्यथा' ।

विथारना*-स० कि० विथरना, छितराना ।

विथित*-वि० दे० 'व्यथित' ।

विथुरिख*-वि० बिलरा हुआ ।

विथोरना*-स० कि० दे० 'विथरना' ।

विथुकना*-अ० कि० चौकना, भयकना; फटना; धावक होना ।

विथुकाना*-स० कि० चौकाना, भयकाना; फाड़ना; धावक करना; † मुह टेढ़ा-मेढ़ा बनाना, चिढ़ाना, विचकाना-'खिलौं मुह विदकाकर हंस पपी'-मृग० ।

विथुर-पु० विदग्ध देश, दरार; तौंभे और जस्तेके मेखसे बनी उपधातु; इस उपधातुका बना बरतन जिसपर चौंटी-के पत्तरसे बेल-बूटे बने हों । -साङ्ग-पु० विदरका काम करनेवाला ।

विथुरन*-झी० विदग्ध होना; दरार । वि० विदग्ध करने-वाला ।

विथुरना*-अ० कि० फटना, विदग्ध होना ।

विथुरी-झी० विदरके बरतन बनानेका काम ।

विथुकना*-स० कि० दलित करना ।

विथुहारा*-स० कि० धान आदिको छोटकर जुताई करना ।

विथुहनी*-झी० विदहनेकी क्रिया ।

विधा-झी० रवानगी, रहस्यत; जानेकी हजाजत; गौना ।

-ई-झी० रहस्यत, रवानगी; विदा करते समय दिये जानेवाले रुपये आदि, रहस्यताना ।

विधारना*-स० कि० फाड़ना, विदग्ध करना; नष्ट करना ।

विधारी-पु० दे० 'विधारी' । -कंद-पु० दे० 'विधारीकंद' ।

विधिसा*-झी० दे० 'विधिशा' ।

विधीरना*-स० कि० विदग्ध करना; आहत करना ।

विधुराना*-अ० कि० मुस्कुराना ।

विधुरानि*-झी० मुस्कुराहट ।

विदूखना, विदूषना*-स० कि० दोष देना, लगाना; बिगाड़ना ।

विदुरित-वि० दूर किया हुआ ।

विदेश-पु० 'विदेश' ।

विदेशी-वि० दे० 'विदेशी' ।

विदोख*-पु० बैर, विद्वेष ।

विधीरना*-स० कि० चलाना; फँसाना-'खायके पान विधीरत ओठ हैं, बैठि समानें बने अलभेला'-क० कौ० ।

विदूषत-झी० [अ०] नयी बात; ईजाद; धर्ममें कोई नयी बात, नयी रीति निकालना; जुल्म, अत्याचार; झगडा, लड़ाई ।

विदूषती-वि० विद्वत् करनेवाला ।

विद्व-झी० दे० 'विद्वज्'; बुराई; दुर्दशा ।

विद्व-वि० विधा हुआ, छेदा हुआ ।

विद्वसना*-स० कि० विद्वंस करना, नष्ट करना ।

विध-झी० दे० 'विधि' । पु० हाथीका चारा या रातिय; दे० 'विधि' । मु०-मिलाना-आय-व्ययका हिसाब ठीक करना ।

विधवा-पु० विधि, मन्त्र । अ० कि० वेधा जाना, विधना ।

* स० कि० फँसाना ।

विमानि*—वि० मानरहित ।
 विमानिकृत—वि० जो मानरहित किया गया हो; जिससे (किसीको अपना) विमान बनाया हो—'विमानिकृत राजहंस'—राम० ।
 विमूढ—वि० दे० 'विमूढ' ।
 विमोचना*—स० कि० टपकाना; छीनना, मुक्त करना ।
 विमोद, विमोदा—पु० बौदी, वस्त्रीक ।
 विमोहना*—अ० कि० मृग, आसक्त होना । स० कि० मृग करना ।
 विमोदा—पु० बौदी, वस्त्रीक ।
 विव*—वि० दो; दूसरा । पु० बीज ।
 विवत—पु० आकाश; * एकांत स्थान ।
 विवहृता—वि० विवाहित ।
 विवाह*—वि० दूसरा । † पु० बीज ।
 विवाज*—पु० सदा रहाना ।
 विवाज*—वि० व्याजपर दिया हुआ (धन) ।
 विवाज*—पु० वह क्षेत्र जिसमें (धानके) बीज रोपनेके लिए बोये जायें ।
 विवाह, विवाहा*—दे० 'व्याध' ।
 विवाधि*—क्री० दे० 'व्याधि' ।
 विवाजा*—स० कि०, अ० कि० दे० 'व्याजा' ।
 विवापना*—अ० कि० दे० 'व्यापना' ।
 विवापान*—पु० दे० 'व्यापान' ।
 विवापानी—वि० दे० 'व्यापानी' ।
 विवारी, विवार*—क्री०, विवार*—पु० दे० 'व्याल' ।
 विवार*—पु० साँप; शेर ।
 विवाह*—पु० दे० 'व्याह' ।
 विवाहना*—स० कि० व्याह करना ।
 विवोग—पु० दे० 'विवोग' ।
 विरंग—वि० बेरंग; कई रंगोंवाला ।
 विरंभि*—पु० मछा ।
 विरंज—पु० [फा०] नावक; भात; [अ०] पीतल ।
 विरंजारी—पु० [फा०] गवलेका व्यापारी ।
 विरंजी—क्री० छोटी क्रील । वि० [अ०] पीतलका ।
 विरंज*—क्री० छोटा पौधा ।
 विरकस*—वि० दे० 'विरक्त'—'वैरागी विरक्त चहा ग्रैही चित्त उदार'—साक्षी ।
 विरक्त, विरक्त*—पु० दे० 'वृषभ' ।
 विरक्त*—स० कि० रचना, बनाना, सजाना । अ० कि० उबटना ।
 विरक्त*—पु० दे० 'वृक्ष' ।
 विरक्ति, विरक्तीक—पु० दे० 'वृक्षिक' ।
 विरक्त—वि० निर्मल; निर्दोष; गुणरहित ।
 विरक्षना*—अ० कि० उलक्षना; मचलना; कुद होना ।
 विरक्षाना*—अ० कि० कुद होना ।
 विरक्त, विरक्ता*—पु० दे० 'वृक्षांत' ।
 विरक्ता—पु० बुद्धा, शक्ति ।
 विरक्ताना*—स० कि० विस्तर करना, बँटना ।
 विरक्ति*—क्री० दे० 'विरक्ति' ।
 विरथा*—वि० व्यर्थ । अ० अकारण, निष्प्रयोजन ।

विरहंग*—पु० सूर्य ।
 विरह*—पु० नाम, वार्द, वश ।
 विरह*—वि० बड़े नामवाला, विख्यात । पु० नामी योद्धा ।
 विरह*—वि० दे० 'वृद्ध' ।
 विरहाई*—क्री० जुड़ापा ।
 विरहापन*—पु० जुड़ापा ।
 विरविराना*—स० कि० शिकायतकी तरह धीरे-धीरे कुछ कहना ।
 विरमना*—अ० कि० रुकना, अटकना; देर करना; विश्राम करना; प्रेममें बैठना ।
 विरमाना*—स० कि० रोक, अटका रखना; मोह लेना, प्रेममें बँधना; विमाना । अ० कि० ठहरना, विश्राम करना—'सधन गुजत बैठि उनपर ओर है विरमाहि'—सूर; मुलाना ।
 विरल*—वि० दे० 'विरल' ।
 विरला—वि० बहुतोंमेंसे कोई एक ।
 विरले—वि० (बहु०) इने-जिने, बहुत थोड़े ।
 विरवा*—पु० पौधा, वृक्ष ।—हूँ—† क्री० दे० 'विरवाही' ।
 विरवाही*—क्री० छोटे पौधोंका समूह; वह स्थान जहाँ बहुत-से छोटे पौधे उगे हों ।
 विरस*—वि० दे० 'विरस' । पु० विगाड़ ।
 विरसना*—अ० कि० दे० 'विरसना' ।
 विरह*—पु० दे० 'विरह' ।
 विरहा—पु० एक तरहका लोकगीत जिने खास तौरसे अहीर गाते हैं; दे० 'विरह' ।
 विरहाना*—अ० कि० विरह-व्यथाका अनुभव करना—'राधा विरह देखि विरहानी, यह गति विन नंदन'—मूर ।
 विरही*—वि० दे० 'विरही' ।
 विराग*—पु० दे० 'विराग' ।
 विरागना*—अ० कि० विरक्त होना ।
 विराजना—अ० कि० शोभित होना; बैठना, आसीन होना ।
 विराद*—पु० [फा०] भार, वज्र; भार-बंद, सजातीय ।
 —कुसी—क्री० बहुवच ।—झाड़ा—पु० अतीजा ।—झाड़ी—क्री० अतीजी ।
 विरावराना—वि० [फा०] सार्का-सा, भारीके अनुरूप ।
 विरावरी*—क्री० [फा०] भारीचारा; जाति, गोज । सु०—से झारिज, बाहर होना—जातिभ्रुत होना ।
 विराज*—वि० केगाना, पराया ।
 विराना*—वि० पराया । † स० कि० (सुँह) चिढाना ।
 विराल*—पु० दे० 'विवाल' ।
 विरावना*—स० कि० दे० 'विराना' ।
 विरास*—पु० दे० 'विरास' ।
 विरासी*—वि० दे० 'विरासी' ।
 विरिक्त*—पु० दे० 'वृक्ष'; दे० 'वृष' ।
 विरिक्त*—पु० वृक्ष ।
 विरिच*—वि० दे० 'वृद्ध' ।
 विरिच*—क्री० केला, समय; बार, दफा ।
 विरिया*—क्री० कानका एक पहना ।
 विरी*—क्री० पानका बीड़ा; गठरी; बिस्ती ।
 विरक्षना, विरक्षाना*—अ० कि० उलक्षना; क्षणिक;

विहरना ।
 विह्व-पु० दे० 'विरद' ।
 विह्वैत-वि०, पु० दे० 'विरदैत' ।
 विह्वार्थ-वि०-खी० वृद्धापा ।
 विह्व-वि० दे० 'विरूप' ।
 विरोधा-पु० दुःख, चिन्ता ।
 विरोधा-पु० एक दवा, यथाविरोधा ।
 विरोधना*-अ० कि० विरोध करना-‘नवहिं विरोधे नहिं कल्याणा’-रामा० ।
 विरोधना*-स० कि० दे० 'विरोधना' ।
 विह्व-वि० दे० 'वृद्ध' ।
 विह्व-पु० दे० 'विलव' ।
 विह्वना*-अ० कि० देर करना; रुकना; लटकना ।
 विह्वित-वि० दे० 'विल्वित' ।
 विह्व-पु० [सं०] जमीन या दीवारमें बनाया हुआ लघु छेद; इस तरहका छेद जिसमें कोई जंतु (चूहा, साँप आदि) रहता हो; दरवाजा घेरा । -कारी(विह्व)-पु० चूहा ।
 -बास, -बासी(विह्व)-वि० भोंदमें रहनेवाला । पु० ऐसा जानवर । -शव, -शायी(विह्व)-वि० विलमें रहनेवाला । पु० ऐसा जंतु । -स्वर्ग-पु० नरक । मु०-हूँदना-बचावकी जगह हूँदना । -अँ-चुमना-छिप जाना, घरमें बैठ रहना ।
 विह्व-पु० [अं०] येथे हुए माल या किये हुए कामके पाबनेका पुरज; कानूनका मन्दिता, विधेयक ।
 विह्वल-अ० दे० 'विल्व' ।
 विह्वलना-अ० कि० दुःखी होना, विलाप करना; * ताक जाना ।
 विह्वलना*-अ० कि० दे० 'विल्वलना' । स० कि० दुःख देना, रुकना ।
 विह्वना-वि० अलग, जुदा । * पु० विहगाव; रंज, बुराई । मु०-मानना-बुरा मानना; दुःखी होना ।
 विह्वाना-अ० कि० अलग होना । स० कि० अलग करना ।
 विह्वाना-पु० अलग होनेका भाव या क्रिया ।
 विह्वलन*-वि० दे० 'विलक्षण' ।
 विह्वलना*-अ० कि० लखना, ताकना ।
 विह्वली-खी० रेलसे भेजे जानेवाले मालकी रसीद जिसे दिखानेपर भेजा हुआ माल मिलता है ।
 विह्वली-खी० आँखकी पलकपरकी पुंती; एक कीड़ा, रूंगी ।
 विह्वलना*-अ० कि० विलाप करना ।
 विह्वल-अ० दे० 'विल' में ।
 विह्वलना-अ० कि० दुःख, पीड़ा आदिसे विकल, भिन्न होना, रीना-विलापना; गिरगिराना; कीर्तना कुल-बुलाना ।
 विह्व-पु० 'विल्व' ।
 विह्वलना*-अ० कि० देर करना; रुकना, अटकना; प्रेममें सँपकर रुक जाना ।
 विह्वलना*-स० कि० रोकना, अटकना; प्रेममें फँसाना, बाँधना ।
 विह्वलना*-अ० कि० विलखना, विलाप करना-‘विल-

कात परे इक कटे गात’-सुबान०; धक्काना ।
 विह्वल-वि० खेल-कूद, आवागामी समय बितानेवाला; बेहतर ।
 विह्वलना*-स० कि० खोना, गँवाना; नष्ट करना या कराना; छिपाना ।
 विह्वलना*-अ० कि० सजना, शोभित होना । स० कि० बरतना, भोगना ।
 विह्वलना*-स० कि० बरतना, भोगना; दूसरेकी बरतनेमें प्रवृत्त करना ।
 विह्वल-पु० विह्व ।
 विह्वल-पु०, विह्वल-खी० बाँसकी तीलियोंका बना पान रखनेका डिब्बा ।
 विह्वल-अ० [अं०] विना, बगैर । -लकड़लकड़-अ० निस्स-कोच, विना बके-अटके । -माता-अ० प्रतिदिन, हर रोज । -बजह-अ० अकारण । -बासा-अ० सीधे, बराहे रास्ता; बगैर जरियेके । -बाक, -बुआ-अ० निस्सदेह, निश्चयपूर्वक । -बाँस-अ० विना किसी शर्तके । -शिरकत गैर-अ० विना दूसरेकी शिरकतके ।
 विह्वल-खी० विह्वी; सितकनी; कुर्सेमें गिरी हुई चीजें निकालनेका कौंटा; कद्दूकश ।
 विह्वलकंठ-पु० दे० 'विह्वलीकंठ' ।
 विलापना-अ० नष्ट होना; छिन्न-भिन्न होना; लुप्त होना ।
 विलाप-पु० दे० 'विलाप' ।
 विलापना*-अ० कि० विलाप करना ।
 विलापत-पु० दे० 'विलापत' । * वि० बहुत ।
 विलापन-पु० [सं०] मोंद; गुफा ।
 विलाप-पु० बधी विल्ली ।
 विलाप-खी० विह्वी ।
 विलाप-पु० विह्वल, माजोर ।
 विलाप-पु० बधी विल्ली, माजोर ।
 विलाप-पु० एक राग । * खी० पत्नी, खी० प्रेमिका ।
 विलाप-पु० दे० 'विलाप' ।
 विलापना*-स० कि० बरतना, भोगना ।
 विलापनी-खी० वेदवा ।
 विलाप-वि० दे० 'विलाप' । पु० एक पेड़ ।
 विलियड-पु० [अं०] एक अमेरी खेल जो लकी छबियोंमें भेजपर खेला जाता है । -ट्रेबुल-पु० विलियड खेलनेकी भेज । -रूम-पु० विलियड खेलनेका कमरा ।
 विलिया-खी० कटोरी ।
 विलियड-पु० मछली फँसानेका कौंटा या उसमें लगाया जानेवाला चारा ।
 विलियडना*-अ० कि० लोटना ।
 विलियड-पु० दे० 'विलियड' ।
 विलियड-वि० [सं०] विलमें लोनेवाला । पु० साँप आदि ।
 विलियड-खी० विल्ली; कद्दूकश; दरवाजेकी सितकनी ।
 विलीकना*-स० कि० देखना, अवलोकन करना ।
 विलीकवि-खी० चितवन, बहि ।
 विलीकन-पु० नेत्र ।
 विलीकना*-स० कि० मथना; गड़मड़ करना ।
 विलीकन*-वि० अलोकना; बदसूरत ।

बिछोवा-स० कि० मथना; ढाकना, गिराना (ऑव्)-
‘जुलसी मेंदोवै रोइ रोइ कै बिलोवै ऑनु...’-कविता० ।
दि० दे० ‘बिलोव’ ।

बिछोरना*-स० कि० दे० ‘बिलोफना’ ।

बिछोल-वि० बंचल; सुदर ।

बिछोलना*-अ० कि० बिलना-ढोलना ।

बिछोवना*-स० कि० दे० ‘बिलोना’ ।

बिलौका(कस्)-पु० [सं०] बिलमें रहनेवाला जंतु ।

बिलौठा-पु० बिलौका बच्चा ।

बिलौर-पु० दे० ‘बिलौर’ ।

बिलौरा*-पु० बिलौका बच्चा ।

बिल-अ० [अ०] से, साथ; लिप; द्वारा । -**हराहर**-अ०
हरादेके साथ, जान-बूझकर । -**कुल**-अ० सारा, तमाम;
निपट । -**फ़ज़**-अ० फज़ कीजिये, मान लीजिये ।
-**फ़ले**-अ० अभी, सरेदस्त, फिलहाल । -**मुफ़ा**-अ०
हक़्दवा, अलक़ हिसाब । वि० जो घटाया-बढ़ाया न जा
सके (लमान, माछपुजारी) ।

बिल-पु० [सं०] गहड़ा; थाला, आलवाल; हाँग । -**मूला**-
खी० बराहीकंद । -**सू**-खी० दस बत्तोंकी मीं ।

बिल्ला-पु० नर बिल्ली; पद या सत्पाविशेषकी सदस्वत्ता-
सूचक पट्टी, बैन ।

बिल्लाना-अ० कि० चीलें मारकर रोना, बिलाप करना ।

बिल्ली-खी० शेर, चीते आदिकी जातिका एक मांसाहारी
छोटा जंतु जो पालतू और जंगली दोनों तरहका होता है;
सिंदकनी । -**छोटन**-पु० एक बनस्पति । **मु०** -**का**
रास्ता फाटना-बिल्लीका सामनेसे निकल जाना जो
अनुभव समझा जाता है । -**को छींचाँके फ़ना**
मनुष्यका जैसा स्वभाव होना है वैसे ही बिजुर उसके
मनमें आते हैं ।

बिलौर-पु० शीशे जैसा सफ़ेद एक पारदर्शक पत्थर,
स्फटिक ।

बिलौरी-वि० बिलौरका बना हुआ; बिलौरकीसी
चमकवाला ।

बिल्व-पु० [सं०] बेलका पेड़ या फल । -**दंड**, -**दंडी**-
(बिन्)-पु० शिव ।

बिल्वण-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध कवि जिसने विक्रमांकदेव-
चरितकी रचना की थी ।

बिल्वना*-अ० कि० दे० ‘बिल्वना’ ।

बिल्वना*-स० कि० सुलझाना । अ० कि० सुलझना
-‘नीक सनुन विवरहि सगर होइहि धरम निबाध’-
रामाय ।

बिल्वराना-स० कि० (बालोंको) सुलझाना; सुलझवाना ।

बिल्वसाह*-पु० दे० ‘व्यवसाय’ ।

बिलव*-खी० पौधेके चमड़ेका फटना ।

बिलाम*-पु० विमान, रथ ।

बिल्वेचना*-स० कि० बिल्वेचन करना ।

बिलप-पु० [अ०] बड़ा पादरी जो विभागविशेषका बर्मा-
ध्यक्ष (गवर्नर) हो ।

बिलाला-खी० राधाकी एक स्त्री ।

बिष-पु० दे० ‘विष’ ।

बिषवा-खी० विषय-वासना ।

बिषाव*-पु० साँग ।

बिषारा*-वि० विषाक्त ।

बिषिवा*-खी० दे० ‘विषवा’ ।

बिर्सच*-पु० संवयका अभाव, अपव्यय; लापरवाही;
विमन; डर ।

बिर्सभर*-पु० दे० ‘विश्वभर’ ।

बिर्सभर*-वि० जो संभाला न जा सके; देखवर ।

बिर्सभार*-वि० जो सम्भाला न जा सके; वसुध, अचेत ।

बिस-पु० दे० ‘विष’; [सं०] मृणाल । -**कंठिका**-खी०
एक तरहकी बकी । -**कंठी (ठिक्)**-पु० एक तरहका
बगला । -**कुसुम**, -**पुष्प**, -**प्रसूज**-पु० पद्मपुष्प ।

-**ग्रंथि**-खी० आँखका एक रोग । -**नाभि**, -**कला**-
खी० कमलका पौधा । -**नासिका**-खी० एक तरहकी
बकी । -**वर्म(व)**-पु० एक नेत्ररोग । -**शास्त्रका**-
खी० क्लमलकी जड़ ।

बिसकरमा*-पु० दे० ‘बिषकर्म’ ।

बिसखपरा-पु० गोहकी जातिका एक जहरीला जडु; गदह-
पुरना; एक बनीपत्ति ।

बिसखपरा, **बिसखोपरा**-पु० दे० ‘बिसखपरा’ ।

बिसतरना*-स० कि० बिस्तार करना । अ० कि० फैलना ।

बिसतार*-पु० दे० ‘बिस्तार’ ।

बिसव*-वि० दे० ‘विश्व’ ।

बिसन*-पु० व्यसन; पतन; दुर्भाग्य; दोष ।

बिसनी*-वि० दे० ‘व्यसनी’ ।

बिसमद, **बिसमव***-पु० दे० ‘विसमव’ ।

बिसमव*-पु० विस्मय, आश्चर्य; मदेह; गर्व, विषाद ।

बिसमरना*-स० कि० भूलना ।

बिसमिल-वि० जबह किया हुआ; जगमी, घायल ।

-**गाह**-खी० बथालय ।

बिसमिल्ला-पु० दे० ‘बिस्मिल्ला’ ।

बिसयक*-पु० प्रदेश; विषय; राज्य ।

बिसरना-अ० कि० भूल जाना ।

बिसरात*-पु० खञ्जर ।

बिसराता-स० कि० मुला देना ।

बिसराम*-पु० दे० ‘विश्राम’ ।

बिसरामी*-वि० विश्राम देनेवाला, सुखर-‘सुत्रा सी
राजा कर बिसरामी’-प० ।

बिसरावना*-स० कि० दे० ‘बिसराना’ ।

बिसर-पु० [मं०] अकुर, अंखुवा ।

बिसवार-पु० किसपत ।

बिसवास*-पु० दे० ‘विश्वास’ ।

बिसवासिनी*-वि० खी० विश्वास करनेवाली; विश्वास-
घात करनेवाली ।

बिसवासी*-वि० विश्वासी; अविश्वसनीय-‘दे यह पेट
महा बिसवासी’-प० ।

बिससना*-स० कि० विश्वास करना, पतियाना; बध
करना; चीर-फाड़ करना ।

बिसहना*-स० कि० दे० ‘बिसाहना’ ।

बिसहर*-पु० विषपर, सर्प ।

विहित-पु० [का०] स्वर्ग, वैकुण्ठ, वज्रतः स्वर्गोपम स्थान ।
 -(हे)वरी-पु० सर्वोच्च स्वर्ग, अर्थात् मु० -का जानवर
 -भार । -का मेघा-अनार । -की कुमरी-नाचने-
 गानेवाली स्त्री । -की हवा-शीतल-मंद-सुगंध वायु ।
 -को ठोकर वा छात मारना-मिले वा मिछते हुए
 ससको छोड़ना ।

विहिता-पु० विहितका रहनेवाला; (मशकते) पानी
 भरनेवाला; मिट्टी ।

विही-पु० [का०] नाशपातीकी सबल्का एक फल; उसका
 पेय; अमरुद । -बाना-पु० विहीका बीज ।

विही-स्त्री [का०] मरहः नेकी । -कृपाह-पु० मरहः
 चाहनेवाला, हैतवी ।

विहीन-वि० दे० 'विहीन' ।

विहुरना-अ० कि० दे० 'विहुरना' । स० कि० छोड़ना ।

विहुरन-वि० दे० 'विहीन' ।

विहोरना-अ० कि० विहुरना ।

बीष-स्त्री० पयालका बना गोल आसन; गेंडुरी; सरहंढेका
 बाँस जैसा लंबा बना हुआ मुट्ठा जो छाजनके नीचे लगाया
 जाता है ।

बीषा-पु० पयालका बना गोल आसन; गेंडुरी ।

बीदना-स० कि० अनुमान करना; दे० 'बीनना' ।

बीधना-स० कि० छेदना, बेधना । * अ० कि० दे०
 'बिधना' ।

बी-स्त्री० प्रतिष्ठित महिला, बीबी (प्रतिष्ठित महिलाओंके
 नामके साथ लगाया जाता है) ।

बीका-वि० दे० 'बीका' ।

बीख-पु० डग, कदम; दे० 'बिष' ।

बीया-पु० मेनिया ।

बीचा-पु० बीम बिस्त्रिका रकवा (एक जरीब लबी और एक
 जरीब चौड़ी जमीन) ।

बीच-पु० किसी वस्तु, क्षेत्र आदिका मध्य भाग, दरमियान,
 बत्ता; दो चीजोंके मध्यका फासिला, अंतर, फर्क; * अव-
 सर, अवकाश-‘पायो बीच हँद अभिमानी हरि विनु
 शोकल जान्यो’-सर । अ० बीचमें, दरमियान; अरसेमें ।

-बिच्छाव-पु० मध्यस्थता, विचरई । -बाला-पु०
 विनुवा, मध्यस्थ । मु० -करना-विचरई करना । -

खेत-खुल्लमखुल्ला, डकेनी चोट । -पड़ना-(दशा
 आदिमें) फर्क होना । -पारना-भेद, विलगाव करना ।

-बीचमें-योही योही देरपर । -में कुदना-दखल
 देना, दौंग अड़ाना । -में ढाड़ना-मध्यस्थ बनना ।

-में देना-साक्षी बनना । -में पड़ना-विचरई करना;
 जिम्मेदार बनना । -रखना-भेद करना; छिपाना ।

बीचोबीच-ठीक मध्यमें ।

बीचि-स्त्री० दे० 'बीचि' ।

बीछना-स० कि० छँटना, चुनना ।

बीछी-स्त्री०, **बीछू**-पु० दे० 'बिच्छू' ।

बीज-पु० [सं०] फलवाले पेड़-पौधेका गर्भाद, वह दाना या
 गुठली जिससे पेड़-पौधेका अंकुर उगे, तुलस, गीया; शुक्र;
 मूल कारण, जड़; कथावस्तुका मूल; बीजगणित; अंशका बीज
 रूप; अक्षर या अक्षरों; अंशका मूल भाग; मज्जा । * स्त्री०

विजली । -कसां(ई)-पु० शिव । -कृत-पु० वाजी-
 करण । वि० बीजकारक । -कोचा-कोच-पु० फूलका

वह भाग जिसमें बीज रहता है, बीजावर । -किया-
 स्त्री० बीजगणितकी क्रिया । -खाव-स्त्री० [हिं०] किसानों-

को बीज-खावके लिए दी जानेवाली तकवी । -गणित
 -पु० गणितका एक भेद जिसमें संख्याकी जगह अक्षरका

प्रयोग करते हैं । -गर्भ-पु० परवह । -गुहि-स्त्री०
 सेम; भूरी; फली । -द्वर्क-पु० अभिनयकी व्यवस्था

करनेवाला । -ग्रथ-पु० मूल तथ्य । -धान्य-पु०
 धनिर्वा । -निर्वाण-पु० बीज बीना । -पावप-पु०

भिलावा । -पुष्प-पु० फूलका आदि पुरव । -पुष्प-
 पु० मरवा; मदन । -पूर-पूरक-पु० विजोरा नीव ।

-पेशिका-स्त्री० जंघकोश । -प्रोह-प्रोही(हिं०)
 -वि० बीजसे उत्पन्न होनेवाला । -फलक-पु० विजोरा

नीव । -बंद-मु० [हिं०] बरियारेके बीज । -संज्ञ-पु०
 किसी देवताके लिए निश्चित मंत्र; गुर । -मालका-स्त्री०

कमलगट्टा । -मार्ग-पु० बायमार्गका एक भेद । -रख
 -पु० उरद । -रुह-पु० दाना, धान्य । -रेचन-पु०

जमालगोदा । -वपन-पु० बीज बीना; खेत । -बाध
 -पु० बीज बीनेवाला; बीज बीना । -बाधन-पु० शिव ।

-हृष-पु० असनाका पेड़ । -सू-स्त्री० धृवी । -स्थापन
 -पु० बीज बीनेका मुहूर्त । -हरार-हारिणी-स्त्री०

जादूगरनी ।

बीजक-पु० [सं०] विजोरा नीव; बीज; प्रसवके समय बच्चेके
 सिरका उसकी मुजाओंके बीचमें आ जाना, सूजी; भोज
 जानेवाले मालकी सूजी जो दाम और खर्चके हिसाबके
 साथ खरीदारके पास भेजी जाती है; कबीरदासके पदोंका
 एक समूह ।

बीजन, **बीजना**-पु० व्यजन, पखा ।

बीजरी-स्त्री० दे० 'विजली' ।

बीजल-वि० [सं०] बीजदार ।

बीजांकुर-पु० [सं०] अंकुर । -म्याव-पु० बीजसे अंकुर
 और अंकुरसे बीजकी उत्पत्तिका अनादि प्रवाह ।

बीजा-पु० बीज । * वि० दूसरा ।

बीजाकृत-पु० [सं०] वह लेन जो बीज छोड़कर जीत दिया
 गया हो ।

बीजाक्षर-पु० [सं०] मंत्रका प्रथम अक्षर ।

बीजाक्य-पु० [सं०] जमालगोदा ।

बीजाक्य-वि० [सं०] बीजसे भरा हुआ ।

बीजाध्वज-पु० [मं०] शिव ।

बीजापहारिणी-स्त्री० [सं०] जादूगरनी ।

बीजार्य-वि० [सं०] संतानेच्छु ।

बीजाव-पु० [सं०] कोतख घोड़ा ।

बीजित-वि० [सं०] बीया हुआ ।

बीजी-स्त्री० गिरी, मीनी, गुठली ।

बीजी(जिन्)-वि० [सं०] बीजवाला । पु० पिता; क्षेत्रज
 संतानका असल बाप (क्षेत्रीसे भिन्न); सूर्य ।

बीजु-स्त्री० विजली-‘चमकई दसल बीजुकी नाई’-प० ।
 -पाव-पु० वपपात ।

बीजुरी-स्त्री० विजली ।

बीजू-वि० बीजसे उत्पन्न; जो कल्मी न हो (-जाम) । पु० दे० 'बिजु' ।

बीजोद्क-पु० [सं०] बीजा ।

बीजोसि-खी० [सं०] बीज बीनेकी क्रिया ।

बीज्य-वि० [सं०] बीजसे उत्पन्न; कुलीन ।

बीझ, बीझा-वि० बीझ, जनसंख्या ।

बीझना-अ० क्रि० फैलना; उन्नमना ।

बीट-खी० चिड़ियोंका मैला ।

बीह-खी० गुंडीकी शक्लमें रसे हुए रूपसे ।

बीबा-पु० पानकी शिखरी; ध्यानके जुंहेके पास बंधी बीरी ।

मु०-उठाना-किती कामका भार लेना, करनेकी प्रतिज्ञा करना । -हालना-रखना-किन्ती कठिन कामका भार उठानेके लिए सामंतों, सरदारोंके सामने पानका बीबा रखना । -देना-नाचने-गानेवालों आदिकी सार्थ देना ।

बीबी-खी० छोटा बीबा; गठरी; पत्नी कपेटकर बनायी हुई सिंगरेट-जैसी वस्तु; मिस्ती ।

बीतना-अ० क्रि० गुजरना, कटना; दूर होना; घटित होना; पचना ।

बीतनि-खी० क्षणभंगुरता-बीतनिकी रूप तूँ ठहरि देरि गये बीते-धन० ।

बीता-पु० दे० 'बिचा' ।

बीती-खी० किसीके ऊपर बीती, गुजरी हुई बात, घटित घटना; वृत्त ।

बीथि; बीथी-खी० दे० 'बीधी' ।

बीथित-वि० दे० 'व्यथित' ।

बीथना-अ० क्रि० दे० 'बिथना' । स० क्रि० दे० 'बीथना' ।

बीजा-पु० गाँवकी मालगुजारी तै करना ।

बीन-खी० बीणा । -कार-पु० बीणावादक ।

बीनना-अ० क्रि० चुनना; चुनना ।

बीनवना-अ० क्रि० विनती करना-पय लविग प्रानपति बीनवी-रातो ।

बीना-खी० दे० 'बीणा' ।

बीक्री-पु० बृहस्पतिवार ।

बीबी-खी० भले घरकी खी, कुलायना; पत्नी; बेटा, खी और छोटी ननदका आदरार्थक संबोधन; फासिमा ।

बीभस्स-वि० [सं०] घृणा उत्पन्न करनेवाला; सकागला (मांसादि); पापी । पु० साहित्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्वादी आस जुगुप्सा है; घृणोत्पादक वस्तु; अर्जुन ।

बीभस्सा-खी० [सं०] घृणा, जुगुप्सा ।

बीभस्सित-वि० [सं०] घृणित, भिन्नित ।

बीभस्यु-पु० [सं०] अर्जुन, अर्जुनका पेड़ ।

बीस-पु० [फा०] बर, जोखिम । -ब हरास-पु० खौफ और सतार ।

बीमा-पु० [फा०] ठेका; जमानत; मूल्य, दुर्घटना, यात्राके रास्तेमें खो जाने आदिकी हानि भर देने, उसके बदलेमें निश्चय धन देनेकी जिम्मेदारी, 'इन्स्योरेंस' । -दार-पु० बीमा करनेवाला, 'पाक्षि-होस्टर' । मु०-करवा-शक्तिपूर्विकी जिम्मेदारी लेना । -मे)की पाक्षि-बीमेका प्रकारनामा ।

बीमार-पु० [फा०] वह व्यक्ति जिसे रोग हुआ हो; मरीज । वि० रोगी; आशिक । -दारी-खी० रोगीकी सेवा, तीमारदारी ।

बीमारी-खी० [फा०] रोग, मर्ज; कृत; संकट ।

बीब, बीबा-वि० दूधरा । पु० बीज ।

बीर-वि० बीर, बहादुर । पु० बीर पुत्र; भार्य; एक तरहका भेन । * खी० सखी-फिरत कहा है बीर बाबरी नईसी...-हठी; कलावाँका एक गहना; कानका एक गहना; चरमाह; चरानेका कर ।

बीरठ-पु० दे० 'बिरवा' ।

बीरज-पु० दे० 'बीर्य' ।

बीरना-पु० भार्य, बीर; दे० 'बीरन' ।-मूख-पु० एक पोथा ।

बीरबहूटी-खी० किलनकी जातिका, गहरे लाल रंगका एक बरसाती कौड़ा, इद्रवधू ।

बीरा-पु० दे० 'बीरा'; प्रसादस्वरूप दिने जानेवाले फल-फूल आदि ।

बीरी-खी० पानका बीबा; मिस्ती; कानका एक गहना; एचेसे बना हुआ सिंगरेट ।

बीरी-पु० दे० 'बिरवा'-जस असोक बीरी तर सीता'-प० ।

बीर-वि० पोला । पु० नीची जमीन जहाँ पानी जमा हो जाय; मंत्र; डेल ।

बीबी-खी० [फा०] बीबी, खी; पत्नी, गृहिणी ।

बीस-वि० दसका दूना, उन्नीससे एक अधिक; बंदर, श्रेष्ठ । पु० बीसकी सख्या, २०; * विष । -बिरसे-अ० निश्चयपूर्वक, यकीनन; बहुत करके ।

बीसवा-स० क्रि० शतरंज आदि खेलनेके लिए, बिसात फेलाना ।

बीसरना-अ० क्रि०, स० क्रि० भूल जाना ।

बीसी-खी० बीसका समूह, कौड़ी; साठ संवत्सरोंके तीन-मेंसे कोई विभाग; जमीनकी एक नाप ।

बीह-वि० दे० 'बीत'-सौंघहु मै लवार भुजबोहा'-रामा० ।

बीह-वि० ऊब-खाव; विकट; विभक्त; जुदा ।

बुँद-खी०, पु० बुँद; बीर्य ।

बुँदकी-खी० छोटी बिंदी या दाग । -दार-वि० जिसपर बहुतसो बुँदकियाँ बनी हों ।

बुँदा-पु० टिकनी; टिकनीके आकारका गोदना; कानका एक गहना; * बूँद ।

बुँदिया-खी० एक तरहकी मिठाई ।

बुँदिर-पु० [सं०] मकान ।

बुँदीदार-वि० जिसपर बिंदियाँ हों ।

बुँदेलखंड-पु० बुँदेलोंका देश, भारतका वह भूभाग जिसमें उत्तरप्रदेशके उत्तर-पश्चिमके कुछ जिले और पन्ना, छतरपुर आदि रियासतें पड़ती थी ।

बुँदेलखंडी-वि० बुँदेलखंडका । पु० बुँदेलखंडका निवासी । खी० बुँदेलखंडकी भाषा ।

बुँदिका-पु० एक तरहके राखपूत जो बुँदेलखंडमें रहते हैं ।

बुँदीरी-खी० बुँदिया नामकी मिठाई ।

हुआ-की० दे० 'हुआ' ।

हुक-की० एक बारीक कपड़ा जो बकरमकी तरह कड़ा होता है । पु० [सं०] हाथ ।

हुकचा-पु० [फा०] कपड़ेकी गठरी ।

हुकची-की० छोटा हुकचा, दजियोंकी पैली जिसमें वे सुई, तामा आदि रखते हैं ।

हुकटा, हुकहा-पु० दे० 'बकोटा' ।

हुकमी-की० पूर्ण, सफ़ा; चूर्णरूप रंग ।

हुकबा-पु० उबदल ।

हुकस-पु० दे० 'हुकस' ।

हुकुमा-पु० हुकमी; पाचक ।

हुक-पु० [सं०] हथियार; हथियार अग्रयांस; बकरा; समय ।

हुकन-पु० [सं०] कुत्ते आदि जानवरोंका बोकना ।

हुकस-पु० [सं०] चाँदाक; भंगी ।

हुकसी-की० [सं०] नीलका पौधा ।

हुका-पु० अन्नकका चूर्ण । की० [सं०] रक्त ।

हुका(कन)-पु० [सं०] दे० 'हुका' ।

हुकी-की० [सं०] हृदय, कलेजा ।

हुझार-पु० [अ०] भाषा; ज्वर; भकास, दिल्का गुबार ।

हुझारा-पु० कसी हुकिस्तानका एक प्रदेश या उसकी राजधानी ।

हुझारी-वि० हुझारका रहनेवाला । की० बखार; वीखार-में बनायी हुई भंगीठो ।

हुहाचा-पु० [पु०] कपड़ोंकी गठरी, हुकचा ।

हुहाची-की० छोटा हुगचा ।

हुहाचा-पु० [फा०] कसाईका छुरा

हुज-पु०, की० [सं०] बकरा, बकरी । -कसाच-पु० कसाई; बूच । -दिल्क-वि० डरपोक; भीस । -दिल्की-की० कायरपन, भीसा ।

हुजियाका-पु० वह बकरी या बंदर जिसे कलहर नचाता हो ।

हुजुर्ग-वि० [फा०] बका, हुक; आदरणीय । पु० शुक्लजन्म; संत, महात्मा; पुरखा, गण-दादा (बहु०में व्यवहृत) ।

-झादा-वि० शुक्लवात; कुलीन । पु० शुभकार; कुलीन व्यक्ति । -हार-वि० हुजुर्ग (प्रायः बाप या दादाके साथ व्यवहृत) ।

हुजुर्गाना-वि० हुजुर्गके अनुरूप, शुक्लजन्मवित ।

हुजुर्गी-की० बकपन, बकारी ।

हुझाना-अ० कि० (आग, दीपक आदिका) जलना बंद होना, शांत होना; जलती चीजका ठंडा होना; हुझावा जाना; शांत होना, मिटना (प्यास); (चित्तका) सुख, खदास होना ।

हुझाई-की० हुझानेकी क्रिया या उबरत; बूझनेकी क्रिया । हुझाना-स० कि० भाग या जलती हुई चीजको ठंडा करना, जलनेका अंत करना, गुच्छ करना। जलती हुई चीजको पानीमें डालकर ठंडा करना; तबबत् आदिकी जहर भिड़े हुए पानीमें डालकर ठंडा करना; शांत करना, मिटना (प्यास); समझाना; बूझनेका काम दूसरेसे कराना, पहेलीका उत्तर पूछना । * अ० कि० शांत होना । हुझारल-की० हिताव समझना, हिसान-कहनी ।

हुझीबक-की० किसी वस्तुका ऐसा अनोखा वर्णन जिसके आधारपर उसका अर्थ बूझने, उत्तर देने या वस्तुका नाम बतानेमें बहुत सोच-विचार करना पड़े, पहेली ।

हुट-की० दे० 'हुटी' ।

हुटवा-अ० कि० हटना, भागना ।

हुटकी-की० हुटकी ।

हुटवा-अ० कि० बूबना ।

हुटहुटवा-अ० कि० कुदबुझना ।

हुडाना-स० कि० दे० 'हुडाना' ।

हुडावा-पु० दे० 'हुडावा' ।

हुद्दा-वि० बूढ़ा । [की० 'हुददी']

हुदमस-की० बूढ़े पुर्बोंकी हिंस, बुढ़ीतीमें जवानोंकी लमंग ।

हुदाई-की० हुदापा, हुडावसा ।

हुदाना-अ० कि० बूढ़ा होना ।

हुडापा-पु० बूढ़ा होनेकी अवस्था, बार्दकद, बुढ़ीती ।

हुडिया-की० बूढ़ा की, बुढ़ी । -पुराण-पु० तरबहीन वात, उकोसला । -बैठक-की० एक तरहकी बैठक ।

हुदौती-की० हुडापा ।

हुत-पु० [फा०] मूर्ति, प्रतिमा; प्रेमपात्र, माशक । वि० मूर्तिकी तरह जड़, निश्चेष्ट । -ध्राना-पु० मंदिर ।

-सरास-पु० मूर्तियाँ बनानेवाला । -परस्त-पु० मूर्तिकी पूजा करनेवाला; सौंदर्योपासक । -परस्ती-की० मूर्ति-पूजा ।

-शिकन-पु० मूर्तिकी तोड़ने-कोड़नेवाला, मूर्तिभंजक। प्रतिमा-पूजाका घोर विरोधी । सु० -बन जाना या हो जाना-मूर्तिकी तरह स्थिर और मौन हो जाना ।

हुतना-अ० कि० हुझाना; शांत होना ।

हुताना-स० कि० हुझाना; शांत करना । अ० कि० दे० 'हुतना' ।

हुतास-पु० बटन ।

हुत-वि० दे० 'हुत' ।

हुचा-पु० झोंसा, दम ।

हुवहुदा-पु० वलकुला ।

हुद-वि० [सं०] जया हुआ; हानी; पड़ित; विकसित ।

पु० बौद्ध धर्मके प्रवर्तक गौतम बुद्ध जो विष्णुके लगे अवतार माने जाते हैं, सिखार्थ (जन्म ई० पू० ५५७, निर्वाण ई० पू० ४७७) । -गदा-की० गदाके पासका वह म्यान जहाँ हुदको हुदल्य प्राप्त हुआ । -ब्रम्ह-पु० बुद्धके स्मृति-चिह्न (अग्नि, नख, केश आदि) । -धर्म-पु० बौद्ध धर्म । -पुराण-पु० पराकररचित कलितबुद्धिविस्तार ।

हुद-पु० [सं०] हुदपद ।

हुदाम-पु० [सं०] बौद्ध धर्मके सिखात ।

हुदि-की० [सं०] जानने, समझने और विचार करनेकी शक्ति, समझ, अह्म; अतःकरणकी निदधयात्मिका शक्ति (बे०); प्रकृतिका पहला परिणाम, महत्त्व । -कामा-की० काश्मिरकी एक मातृका । -हुत-वि० बुद्धिपूर्वक, सोच-समझकर किया हुआ । -कीसक-पु० चतुराई ।

-गम्ह-पु० प्रभा । -वि० जो समझमें आ सके । -कानु(स्)-वि० प्रभा । पु० धृतराष्ट्र । -हितक-वि०

शुद्धिमात्पूर्वक सोचनेवाला । -**झींझी(विज्)**-वि०
 शुद्धिसे योगिका करनेवाला, विभागों काम करनेवाला ।
 -**तव-पु०** महत्तर । -**दोष-पु०** समझकी कमी,
 खराबी । -**मूल-पु०** उत्तरजका खेल । -**वर्ग-वि०**
 शुद्धिकी पहुँचके बाहर । -**पुरस्सर-पूर्वक-अ०** इनाम
 करने, इच्छा-पूर्वक, सोच-समझकर । -**प्रामाण्यवाद-पु०**
 'शुद्धिवाद' । -**बल-पु०** शुद्धिका बल । -**अंश-पु०**
 एक दोष या रोग जिसमें शुद्धि ठिकानेसे काम नहीं करती ।
 -**ओह-पु०** विभागका धक्का जाना । -**योग-पु०**
 ज्ञानयोग । -**बाध-पु०** अन्य विषयोंकी तरह धर्ममें जो
 शुद्धि की सवोंपर प्रमाण है-यह मत, 'रैशनलिज्म' ।
 -**बादी(विज्)**-वि० शुद्धिवादकी माननेवाला ।
 -**बिलास-पु०** कल्पना । -**वैभव-पु०** शुद्धिकी प्रशंसा,
 शुद्धिबल । -**शक्ति-की०** शुद्धिबल । -**शास्त्री(विज्)**-
 वि० शुद्धिमान् । -**सुख-वि०** सच्चे भाववाला, नेक-
 नीयत । -**सुखि-की०** नेकनीयता । -**सख-सहाय-पु०**
 मंत्री । -**इत-वि०** वैभक्त, निर्वुद्धि । -**हा(इज्)**-
 पु० शराय (शुद्धिका नाश करनेवाली) । -**हीन-वि०**
 निर्वुद्धि, नासमझ ।

शुद्धिमात्ता-की० [सं०] शुद्धिमाता, समझदारी ।
शुद्धिमात्री-की० दे० 'शुद्धिमाता' ।
शुद्धिमान्(अव्)-वि० [सं०] चतुर ।
शुद्धिबन्त-वि० अन्धमय, समझदार ।
शुद्धीश्रि-की० [सं०] शान्तिश्रि, मन ।
शुद्धी-की० दे० 'शुद्धि' ।
शुद्धशब्द-पु० [सं०] शुद्धशब्द ।
शुचंगाव-वि० मूर्ख ।
शुच-पु० [सं०] पण्डित, विद्वान् ; सौमन्त्रिकका एक ग्रह
 जो पुराणोंके अनुसार चंद्रमाका इष्टपतिकी पत्नी ताराके
 गर्भमें उत्पन्न पुत्र है; देवता; कुत्ता । -**चक्र-पु०** शुद्धकी
 गतिका शुभाशुभ-चक्र एक चक्र । -**जन्म-पु०** पण्डित,
 विद्वान् । -**जाबी-पु०** शुद्धके पिता, चंद्रमा । -**रक्ष-पु०**
 पन्ना । -**बाद-बासर-पु०** मंगलवार और शुक्रवार-
 के बीचका दिन, चहार शंवा । -**सुत-पु०** पुच्छरवा ।

शुचवान-वि० शुद्धिमान् ।
शुधान-पु० [सं०] आचार्य । वि० विद्व, ज्ञानी; जागरित ।
शुधि-की० दे० 'शुद्धि' ।
शुधित-वि० [सं०] शांत, जाना हुआ ।
शुधिल-वि० [सं०] विद्वान् ।
शुध-वि० [सं०] जानने योग्य ।
शुनकर-पु० कपका शुननेवाला ।
शुनना-सं० कि० भांगेसे कपका बनाना, तानोंके सुतोंसे
 बानेका सूत निकालना; ऊन आदिके भांगेसे सलाईके
 द्वारा मोना, सुखवंद आदि बनाना; झुल्लो, बान, बेलके
 छिलके आदिसे जाली बनाकर चारपाई, कुर्सी आदिकी
 छाछी अगह करना ।
शुनवाना-सं० कि० शुननेका काम करना ।
शुनाई-की० शुननेकी क्रिया; शुनायद शुननेकी मजदूरी ।
शुनायद-की० शुननेका दंड, ताने-बानेका बना-सीना
 होना ।

शुनिवा-की० एक मिठाई, सुदिना ।
शुनिबाह-की० [का०] जह, नील; आधार; आरंभ ।
शु०-काकना-रखना-नील काकना ।
शुनिबाही-वि० मूलगत; नीलका कार्य देनेवाला, आधाररूप ।
शुनुकना-अ० कि० दाह मारकर, जोर-जोरसे रौना ।
शुनुकारी-की० दाह मारकर रौना ।
शुनु-पु० [सं०] जह ।
शुनुआ-की० [सं०] खानेकी इच्छा, मूख ।
शुनुकित, शुनुकु-वि० [सं०] मूखा, झुपित ।
शुनुसा-की० [सं०] जाननेकी इच्छा ।
शुनुसु-वि० [सं०] जिहाड़ा ।
शुर-की० अग, योनि (प्रायः गाली-गलौजमें प्रयुक्त) ।
शुरकना-सं० कि० चूर्ण जैसी वस्तुकी छिन्नकना ।
शुरकाना-सं० कि० दे० 'शुरकना' ।
शुनुआ-पु० [अ०] लंघा पहनाका जिससे बाहर निकलनेके
 बल मुक्तमान बिचौं जपना सारा शरीर एक लेती है,
 नकाब । -**पोष-वि०** जो शुरका ओढ़े हो । **शु०-(के)में**
छींछे खाना-परदेमें बचकनी करना ।
शुरा-वि० कराव, इशित; हानिकर; खोटा, कुचाणी ।
पु० शुराई; हानि, अनिष्ट । -**ई-की०** दे० कर्ममें । -**काम**
 -पु० निहित कर्म; व्यवहार । -**अच्छा-वि०** अच्छा-
 शुरा । पु० हानि-काम (सोचना); गाली-गलौज; अपवाद
 (कहना, सुनना) । -**बज्र-पु०** कष्टका समय, विपत्तिका ।
 -**हाल-पु०** दुर्दशा; अर्थिक कष्टकी स्थिति; तबाही ।
शु०-करना-अनुचित काम करना, हानिकर कार्य करना;
 नुकसान पहुँचाना । -**कहना-निंदा** करना, बदनाम
 करना । -**काहना-शुराई** चारना, (फिंसीके) अनिष्टकी
 कामना करना । -**बनना-शुराई** लेना, दोषी बनना;
 बदनाम होना । -**मानना-शुन्नी** होना; नाराज होना ।
 -**छगना-नागवार** लगना, अच्छा न लगना । -**हाल**
 होना-तबाह होना; घोर कष्टमें होना; (रोगीकी) हालत
 बिगड़ना । -**(रे)दिन-कष्टके दिन, विपत्तिका । -०का**
साथी-विपत्तिका साथ देनेवाला ।
शुराई-की० शुरा होना, खराबी, दोष; सुट्टाई, दुष्टता;
 अपकार, अनिष्ट; निंदा, बदनी; दुश्मनी । -**अछाई-**
की० नेकी-बदी, अच्छा-शुरा काम । **शु०-भागो** आना-
 बुरे कामका फल मिटना ।
शुराहा-पु० [का०] लकड़ी, कोयले आदिका चूरा ।
शुरि-की० अग, योनि ।
शुरी-वि० की० दे० 'शुरा' । -**खबर-की०** सौतकी खबर ।
 -**गत-गति-की०** दुर्दशा, शुरा हाल । -**बघी-की०**
 मुसीबतकी घड़ी, विपत्तिका । -**खरह-अ०** बहुत ज्यादा;
 कसकर । -**बज्र-गिराह-की०** शुराईकी गिराह, पाप-
 की बधि । -**बला-की०** सारी बला, बहुत कष्ट देनेवाली
 चीज; विपद । -**कस-की०** बुरी आदत । -**सुखबत-**
की० कुसंगति, शुरका साथ । **शु०-गत करना-बहुत**
मारना । -खरह पैसा खाना-दुर्बवहाद करना ।
 -**खामना-दि०** शुराई खाना, पापनुक्ति होना ।
शुरुज-पु० दे० 'शुरु' ।
शुरुज-पु० [सं०] एक नीच जाति जो टीकरे, चट्टाई आदि

बनानेका काम करती है।

कुल्लु-पु० [अ० 'मृषा'] बाक या तारकी हूँची जो गर्द हाकने, दाँत मोजने; बाक सेवारने आदिके काममें कायी जाती है। तसवीर बनाने, रंगरीसण करनेके काम आनेवाली बाछीकी हूँची।

कुर्ज-पु० गणन; मीनार; मुंन्द, कलस; राशि।

कुर्जी-खी० छोटा कुर्ज।

कुर्जुबा-पु० [का०] धनिक मध्यम वर्ग (म्यापारी तथा बका बेतन पानेवाले लोग)। वि० इसमें सर्वत्र रखनेवाला (-मनोवृत्ति)।

कुर्द-खी० [का०] आमदनी, नफा; बाजी; शतरंजमें बादशाहका भेका रह जाना। -बार-वि० (गोह उठानेवाला) सहनशील। -बारी-खी० सहनशीलता।

कुर्दाफरोश-पु० कियोकी उठाकर देव देनेवाला (किचनेपर)।

कुर्द-वि० [का०] ऊँचा। -आबाज़-खी० ऊँची, ओरकी आवाज। -हूकबाक-वि० माग्यबाज, सौभाग्यवाली। -परबाज़-वि० ऊँचे खनेवाला; ऊँचे ख्यालका; उबकाती। -परबाज़ी-खी० मुलद-परबाजका भाव। -बाबा-मरतबा-वि० उच्चपदस्थ। -हिम्मत, -हौसिका-वि० ऊँची हिम्मत, हौसिकावाला।

कुर्द-खी० [का०] ऊँचाई; उत्कर्ष।

कुर्दबॉग-पु० [अ०] बिलापती कुत्तेका एक भेद जो अधिक बलवान् और बराकती छनकका होता है।

कुर्दबुक-खी० [अ०] एक छोटी चिरिया जिसकी बोली बहुत मधुर होती है और जो कारसी-उर्द काबमें फूलोंकी आशिक मानी गयी है। -बाज़-पु० कुर्दबुक खानेवाला।

(के)खीराज़-पु० शैखसाही। -हज़ार हास्तान-खी० मोठी आबाज।

कुल्लुका-पु० पानीका छुछा, बुल्लुद; क्षणमंथुर वस्तु।

कुल्लुका-स० कि० कुलानेका काम कराना; शोलनेमें प्रवृत्त करना।

कुल्लुका-पु० [द०] माकती विचली हज़ु; उसमें पहननेका एक पहना।

कुल्लुकी-पु० बेषेकी एक जाति।

कुल्ला-स० कि० पुकारना, पास आनेको कहना; किसीको बोलनेमें प्रवृत्त करना।

कुल्ला-पु० कुलानेका भाव, न्योता।

कुलि-खी० [स०] भग, योनि; गुदा।

कुलीबा, कुलीबा-पु० दे० 'कुलाबा'।

कुल्लुना-स० कि० बोलना-सकुन न बिय छिन एक बचन मनमाने हुल्ले-रातो।

कुल्लुका-पु० दे० 'कुल्लुका'।

कुल, कुल-पु० [स०] भूमी; खूसा मोबर; जल; संपत्ति।

कुल्ल-पु० [स०] फलका छिलका।

कुल्लरना-स० कि० झाड़ू देना, शाफना।

कुल्लारा-पु० बरी झाड़ू।

कुल्लारी-खी० झाड़ू, बहनी।

कुल्ला-खी० [स०] एक पीषा।

कुँद-खी० पानी या दूसरे तरक पदार्थका बहुत छोटा अंग,

कतरा; बिंदु; बीब; एक रंगीन कणक।

कुँदा-पु० बरी छिलका; मुँदा।

कुँदावासी-खी० हलकी बर्ग।

कुँदी-खी० एक तरहकी मिठाई; मुँदिया; वर्षाके जलकी मुँद।

कु-खी० [का०] बंध; मुगंध; दुर्गंध; (का०) ठसक, मान-धान (नवाबीकी मु०); दंग। -बास-खी० बू; झराग; निशान।

कु-बचना, -कैलना-मेद, कल्लका प्रसिद्ध हो जाना।

कुका-खी० पिनाकी बहिन, फूफी; एक खीकी ओरसे दूसरीके किए आधारवृत्त संयोगन; एक तरहकी मछली।

कुर्-पु० एक पीषा जिससे सज्जीहार बनाते हैं; कौषा।

कु-पु० बंशुक, कुकट्टा; एक बूझ, लकड़ी।

कुकना-स० कि० कूर करना, पीसना; छँटना (अंग्रेजी कुकना)।

कुका-पु० कुदय, कलेजा।

कुक्क-पु० कसाई; मांस-विक्रेता। -झाना-पु० कसाई-खाना।

कुक्क-वि० कनकडा; गंगा।

कुक्की-वि०, खी० कनकटी।

कुल्लना-स० कि० बोझा देना।

कुल्लना, कुल्लिना-पु० [का०] बंदर।

कुल्ल-खी० कुल्लेका भाव; समझ।

कुल्लना-स० कि० समझना; जानना; पूछना।

कुट-पु० हरा चना; चनेका पीषा; * देह; [अ०] मोटे तहका अंग्रेजी जूता जिससे छलनेमें कुछ ऊपरतक पीष डक जाता है।

कुटना-स० अ० कि० भागना-कह बाजि स्वयं साजके जात बूटे-सुजान।

कुटनि-खी० नीरबहरी।

कुटा-पु० छोटा पीषा; फलका छोटा पीषा; कपड़े आदिपर बनी हुई फूल-पत्ती।

कुटी-खी० जड़ी; अंग; कपड़ेपर बने हुए छोटे बेल-बूटे; तासके पत्तीपर बनी हुई चिठी।

कुटना-स० अ० कि० डबना, लीन होना।

कुषा-पु० जलमें डूबरकर मरनेवाला आदमी जो प्रेत बन गया हो।

कुड़-पु० काक रंग; नीरबहरी। † वि० कुहडा।

कुडा-वि० बरी उम्रका, जो बुढ़ापेकी अवस्थामें हो, बुढ़। † खी० बुढ़ खी। -सुरादो-वि० चालका, अनुभवी;

बुद्ध (व्यक्ति)। -पॉय-वि० बुढ़ा बेवकूफ। -कुँस, कुस-वि० अति बुद्ध। **मु०**-(हे)तोतेको पकाना-पटने-सीखनेकी उम्र बीत जानेपर सिखना-पढ़ाना। -मुँह मुहसि-

उड़ापेमें जवानोके शौक आदि करना।

कुरी-वि०, खी० दे० 'बूढ़ा'। -बूढ़-खी० बूढ़ ईद जो रमजानके पूरे २० दिन बाद होती है। -बूढ़ो-खी० बहुत बूढ़ी खी।

कुस-पु० दे० 'बूढ़ा'।

कुता-पु० बल, शक्ति; बस, सामर्थ्य।

कुता-पु० चनाका पेड़।

कुस-खी० [का०] भूमि, जमीन।

कुसना-स० अ० कि० दे० 'बूढ़ना'।

बृह-पुं कवी चीनी; चीनी; चूर्ण ।

बृह-पुं दे० 'बृह' ।

बृहदा-स्त्री राधा-चंद्रमणी-पुंजकी नवकुंज विहरत आय । जहाँ बृंदा जति भली विधि रची वनक बनाय ।'-वन० ।

बृहदारण्य-पुं [सं०] बृहदारण्य ।

बृहर्ण-वि० [सं०] पौषक, पुष्टिकर । पुं पुष्ट करना; एक तरहकी मिठाई ।

बृह-पुं मेरिया; गीदक ।

बृहाह-पुं [सं०] दुकान; खंड; भास ।

बृहच्छ-पुं दे० 'बृह' ।

बृह-पुं दे० 'बृह' । -केतु-पुं ब्रह्म-पुं शिव ।

बृहम-पुं दे० 'बृहम' ।

बृषिका, बृषिका-स्त्री [सं०] दे० 'बृषी' ।

बृषी, बृषी-स्त्री [सं०] किसी कवि या संत महात्माका आसन ।

बृहद्-बृहद्का समासगत रूप । -बंजु-पुं महाचंतु नामक शाक । -चित्-पुं कलपूर । -छद्-पुं अक्षरोट । -छद्-पुं एक मत्स्य । -छिबी-स्त्री एक तरहका ककरी । -छ्वा(बल्)-वि० बड़े नामवाला, महायशः ।

बृहज्-बृहज्का समासगत रूप । -जवन-वि० बड़े नितबोवाला । -जन-पुं नामी, यशस्वी पुरुष । -जातक-पुं बराहमिहिररचित जातकग्रंथ । -जाबाह-पुं एक उपनिषद् । -जीवसिका, जीवसती-स्त्री एक औषधि, महाजीवती ।

बृहब्रुका-पुं [सं०] मेरी, डका ।

बृहसिका-स्त्री [सं०] उपरना, दुपट्टा ।

बृहती-स्त्री [सं०] बड़ी बीणा; नारदकी बीणा; ३६ की संख्या; सीने और रोहके बीचका एक भाग; वनमंडा; अट-कटैया; वागी; एक वृत्त; उपरना । -पति-पुं बृहस्पति ।

बृहत्-वि० [सं०] बड़ा, विशाल; लंबा-चौड़ा; शक्तिशाली; घना; चमकीला; स्पष्ट; ऊँचा (स्वर) । पुं विष्णु; एक मत्स्य । -कद्-पुं विष्णुकद्; गाजर । -कथा-स्त्री गुणाढ्यरचित कहानियोंकी पुस्तक । -भंजरी-वि० क्षेमेश्वररचित कहानियोंकी पुस्तक । -काय-वि० विशालकाय, बड़े बिल-बिलका । -कीर्ति-वि० बहुत यशस्वी ।

-कुक्षि-वि० बड़ी तोंदवाला । -केतु-पुं अति । -कोशासकी-स्त्री एक तरहका कुम्हड़ा । -सर-वि० और अधिक बड़ा; मूल पर्याय, देश आदिसे अधिक आकार या विस्तारका (जिसमें आद्य-पासके कुछ और पर्याय वा देश सम्मिलित हों-जैसे बृहत्तर गारत) । -साह-पुं हिताल । -वृज-पुं बौस । -त्वक्(ब्)-पुं नीम । -पत्र-पुं हाथीचंद; सफेद कौष; कासमर्द ।

-पर्ण-पुं सफेद लोष; -पादलि-पुं कुरा । -पाद्-पुं बरगद । -पाही(लिम्)-पुं बनबीरा । -पीलु-पुं पहाड़ी अक्षरोट । -पुष्प-पुं पेठा; केलेका पत्र । -पुष्पी-स्त्री सनई । -फल-पुं चिचका; कुम्हड़ा; कटल । वि० कामदायक । -सहाय-वि० शक्तिशाली निमहाला ।

बृहद्-बृहद्का समासगत रूप । -अंग-वि० जिसका

छरीर बड़ा है; जिसके बहुतसे भाग हैं । पुं हाथी । -

आरव्यक-पुं वस सुख उपनिषद्मेंसे एक । -पृष्ठा-स्त्री बड़ी हथबन्दी । -वृत्ती-स्त्री एक पोषा । -वृक्ष-पुं सफेद लोष; सप्तपर्ण । -वृक्षी-स्त्री लज्जाल । -बल-स्त्री लज्जाल; महाबल; सफेद कौष । -बीज-पुं आमड़ा । -अंकी-स्त्री नायमाणा लता । -अहारिका-स्त्री दुर्गा । -आनु-पुं अग्नि; चीता; चरें । -भुज-वि० लंबी मुजाबोवाला । -रथ-पुं हंइ; जरासंधका पिता । -राक्षी(विन्)-पुं एक तरहका छोटा वृक्ष । -वर्ण-पुं सोनामाखी । -वल्ली-स्त्री करेला । -वाही(विन्)-वि० बड़-बड़कर बातें करनेवाला, ढोंग मारनेवाला ।

बृहज्-बृहज्का समासगत रूप । -मल्ली-स्त्री एक विशेष गंधद्रव्य । -नट-पुं अर्जुन । -नट-पुं एक वृण; अर्जुन । -नल-पुं अर्जुन; बाँह । -नला-स्त्री अर्जुनका बिराठके बहाँ की-रूपमें रहते समयका नाम । -नाट-पुं एक राग । -नारदीय-पुं एक उपपुराण । -नारायण-पुं एक उपनिषद् । -निब-पुं महानिब । -नेत्र-वि० दूरदर्शी, बुद्धिमान् ।

बृहस्पति-पुं [सं०] सौरमंडलका पंचम और सबसे बड़ा ग्रह; एक कवि जो देवतयंत्रोंके गुरु माने जाते हैं; एक स्थितिकार । -चाक-पुं ६० संवत्सरीका चक्र । -पुरोहित-पुं ह्र । -वार-पुं शुक्रवार । -स्थिति-स्त्री बृहस्पतिकी बनायी हुई स्थिति ।

बृह-पुं मेढक ।

बृह-स्त्री [अ०] लकड़ी छोटे आदिकी लंबी, कम चौड़ी चौकी; जजका आसन, पद; न्यायालय; न्यायालय-विशेषके विचारकर्ता; आनरेरी और स्पेशल मजिस्ट्रेटोंका इजलास; पारुमेंट; व्यवस्थापक सभामें पक्ष-विशेषके बैठनेका स्थान ।

बृह, बृह-स्त्री मूठ, दस्ता ।

बृह-स्त्री चौह, टेक ।

बृहना-सं कि० बंद करना; घेरना ।

बृह-वि० आधा; कठिन । पुं ब्योरा ।

बृह-स्त्री बौसकी छिछली टोकरी जिसमें सिंचाईके लिए साक आदिका पानी उलोचते हैं; दे० 'देही' ।

बृह-पुं एक लता जिसका बंटल मजदूर और लंबोला होता है और टोकरी आदि बनानेके काम आता है; बैठकी छड़ी । सु० -की तरह काँपना-डरते बहुत काँपना ।

बृह-स्त्री-स्त्री बिंदी, टिकली ।

बृह-पुं बड़ी टिकली; माथेपरका एक गहना; टीका, तिलक ।

बृह-स्त्री-स्त्री बिंदी; टिकली; मुज्रा; माथेपर पहननेका एक गहना ।

बृह-पुं ब्योरा, मरगल ।

बृह-स्त्री-स्त्री दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

बृह-स्त्री-स्त्री कि० दे० 'ब्योरा' ।

-वि० बर्षोंका अवनय करनेवाला, अशुद्ध, अधिनीत, गुस्ताख । -अध्वरी-श्री० अधिनय, दिगार, गुस्ताखी । -आब-वि० जिसमें आब-बमक न हो । -आबक-वि० बेइज्जत, प्रतिष्ठारहित । -आबकई-श्री० बेइज्जती । -ईसाफ-वि०, -ईसाफी-श्री० अन्याय, नाइसाफी । -इज्जत-वि० प्रतिष्ठारहित, जलीक; अपमानित । -इज्जती-श्री० बेइज्जत होना; अप्रतिष्ठा, अपमान । -इस्म-वि० अपद; विचाररहित । -इस्मी-श्री० बेइस्म होना; विधाका अभाव । -ईसाब-वि० बर्षोंको व मानने वाला, बेदीन; देन-लेनेमें झुठार कर देनेवाला, बदबवानत; बदनीयत; झुठा; तमक हराम । -ईसानी-श्री० बेदीनी; बदबवानती; बदनीयती; झुठार । -उ-अ-वि० जिसे किसी बातके मानने, करनेमें कोई उज-आपत्ति न हो । अ० बिना किसी उजके । -उनबानी-श्री० बेकाबदगी, अनौचित्य । -ऊबूर-वि० दे० 'बेकदर' । -ऊबूर-वि० जिसकी कोई पूछ न हो । -ऊबूरी-श्री० आदरमानका अभाव, बेइज्जती; पूछ न होना । -ऊबार-वि० विकल, बेचैन । -ऊबारी-श्री० बेचैनी, बेकली । -ऊक-वि० बेचैन, विकल । -ऊकी-श्री० बेचैनी । -ऊस-वि० अस्तहाया; हीन, विवश । -ऊसी-श्री० अस्तहायास्वा; दीनता, विवशता । -ऊहा-वि० जो किसीका कहना, दाव व माने, स्वच्छंद । -ऊनूरी-वि० गैरकानूनी, नियमविरुद्ध । -ऊनू-वि० जिसका बस न चले, विवश, छात्र । -ऊस-वि० दे० 'बेकार' । -ऊसदारी-श्री० बेकायदा होना, अनियमितता; अनियम । -ऊसदा-वि० नियमविरुद्ध, नियमरहित, अनियमित । -ऊर-वि० जिसके पास कोई काम न हो, निष्ठान; निकम्मा; बेरोजगार; निरर्थक । -ऊरी-श्री० बेकार होना; बेरोजगारी । -ऊसूर-वि० निरपराध; निदोष । -ऊटक-वि० अ० बिना-संकोचके, बेधक । -ऊतर-वि० निर्मय । अ० निर्मय होकर, बिना करे । -ऊता-वि० निरपराध, बेकसद; खता न करनेवाला, अच्छ (निशाना) । -ऊबर-वि० जिसे (किसी बातकी) जानकारी न हो; अज्ञापन, लापरवाह; बेसुध । -ऊबरी-श्री० बेखबर होना । -ऊबानमान-वि० बेचका, परदेसी । -ऊार-वि० बिना कौंटिका; अवरहित । -ऊव-वि० जिसे अपनी झुब-झुब न हो, आत्मविस्तृत; नशेमें चूर, मगहोश । -ऊदी-श्री० आत्मविस्तृति; मदहोशी । -ऊकी-वि० निष्ठर । अ० निर्मयतापूर्वक, बिना करे । -ऊवाही-श्री० नौद न आना, जागृण । -ऊव-वि० जिसे कोई सोच-फिक्र न हो । -ऊवगी-श्री० बेगानापन; अनजानपन । -ऊाना-वि० गैर, पराया; अनजान । -ऊन-वि० गुण-रहित; बिना गीन या रस्तीकी (गाय) । -ऊनाह-वि० निरपराध, बेकसूर । अ० बिना कोई अपराध किये, अकारण । -ऊनारी-श्री० निदोषता, बेकुसरी । -ऊमान-अ० बेधक, निस्तदेह । -ऊर-ऊरा-वि० गुणहीन, जिसके कोई घर-बार न हो । -ऊराहा-वि० दे० 'बेचिराग' । -ऊरगी-श्री० बेचारापन; दीनता, विवशता । -ऊरा-वि० हीन, अस्तहाय, विवश । -ऊराहा-वि० जहाँ दीया न जलता हो; कोई रहता न हो; गैर-आवाज ।

[ऊ०-० होना-(पर) उजड़ना; बैठेका सर जाना ।] -ऊँ ब चरा-अ० बिना उज, बिना कुछ कहे-मुने । -ऊँ-वि० बेकल, बेकार । -ऊँनी-श्री० बेकली, वर-राष्ट । -ऊँबा-पु० बिना खंभेका खीमा । -ऊब-वि० बिना अच्छा, निरुद्ध । -ऊबार-वि० न बोलनेवाला, मूक (बानबर्); जो अपनी दशा खुद न कह सके; दीन । -ऊर-वि० निर्धन, गरीबी । -ऊबाला-वि० बिना हाँक-बलेके, जगलरहित । -ऊबाल-वि० जो घंटे-छीमे नहीं; सदा बना रहनेवाला । -ऊ-वि० जो अपनी जगहपर न हो, बेमौका; अनुचित, उरा । -ऊान-वि० निष्प्राण, सुदा; बेदम, दुर्बल । -ऊाबितगी, -ऊाबतगी-श्री० बेजाबितापन, अनियमितता । -ऊाबिता, -ऊाबता-वि० जो नियमागुल न हो, बेकायदा । -ऊार-वि० नाराज; दुःखी; परीक्षान; ऊबा हुआ । -ऊारी-श्री० नाराजगी; परीक्षानी । -ऊन-अ० बेमौका, कुसमय । -ऊब-वि० बिना जोशका, असंज; जिसका जोश न हो, लाजबाब; बेमेक । -ऊिकट-वि० जिसके पास टिकट न हो । -ऊिकाना-वि० जिसका कुछ ठीक न हो; अधिवसनीय । -ऊिकाने-वि० जो अपनी जगहपर न हो, असंगत; बिना पते या निशानका; जिसका भरोसा न किया जा सके । अ० बेमौके । -ऊील-वि० भद्रा, कुरूप । -ऊंगा-वि० दूरे ढंगवाला, वैशज्ज; भद्रा; अम्यवस्थित । -ऊब-वि० निराले ढंगवाला; देहा, हड्डी; खतरनाक । अ० दूरी तरह, बहुत ज्यादा । -ऊअमूल-अ० बेखटके, निस्तकोच । -ऊअमूल-वि० अलग रहनेवाला, तटस्थ, उदासीन । -ऊअमूलगी-श्री० उदासीनता, किसीसे वास्ता न रखना । -ऊअमूल-वि० जिसमें बनावट न हो, सरल; शिक्षाक शिक्षाचार न बरतनेवाला; मनोचररहित, धनिष्ठ (मित्र) । अ० निस्तकोच, बेधक । -ऊअमूलगी-श्री० बनावट, मनोचका अभाव; सरलता; आज्ञाहीन; धनिष्ठता । -ऊअसीर-वि० बेकसर । -ऊमी-वि० बदतमीज, उजड़ु । -ऊरतीब-वि० क्रमका अभाव, विच्छलता । -ऊर-वि० बेध; गैर तरहमें पढ़ी जानेवाली (गजल) । अ० दूरी तरह, बहुत ज्यादा । -ऊरी-वि० अनुचित, बेकायदा । -ऊरीके-अ० अनुचित रूपसे । -ऊब-अ० बिना उलाचे; बिना सोंगे । -ऊबजुह-वि० ध्यान न देनेवाला, बेपरवाह । -ऊहाहा-अ० बहुत तेजीसे, बदबास होकर (आगना); बिना सोचे-विचारे । -ऊाब-वि० बेचैन, विकल, अधीर । -ऊाबी-श्री० बेचैनी, अधीरता । -ऊार-वि० बिना तारका । -ऊा तार-पु० बिना तारके बिपुद्धंतसे भेजा जानेवाला तार, 'बायर-लेस' । -ऊाक, -ऊाका-वि० जो माने-बजानेमें ताकसे चूक जाय । -ऊका-वि० बेमेल, असंगत; बेमौका (बात); बेतुकी बात कहनेवाला; तुकररहित (छंद) । -ऊुकी-वि० अ० असंगत (बात) । [ऊ०-०-ऊँकना-असंगत, बेतुकी बात बकना ।] -ऊीर-अ० बेतरह । -ऊलकी-वि० जिसका दखल, कच्चा हटा दिया गया हो । -ऊलकी-श्री० कच्चेका हटाना जाना, असामीका खेतसे बेखल

कर दिया जाता। - **दूध**-वि० बेजान, सुदा; बहुत कम-
जोर, क्षिणिक। - **दुष्ट**-अ० विना सोचे-अटके, बेवक।
वि० संतोच, आना-गोछा न करनेवाला। - **दुर्ग**-वि०
निष्ठुर, निर्णय; आलस्य। - **दुर्दी**-छी० निर्दयता, बे-
रहमी। * वि० दे० 'बेवर्द'। - **द्वार**-वि० जिसमें कोई
दाग न लगा हो, निष्कलंक, निर्दोष। - **द्वार**-छी०
अन्याय, जुलूम। - **०** घर-वि० जुलूम करनेवाला,
अन्यायी। - **द्वाना**-वि० विना दानोका; मूर्ख। पु०
अनारका एक वदिया भेद जिसके दानेमें नामकी ही
सीढ़ी होती है; एक तरहका सहजत; विहीदानी।
- **द्वानिशी**-छी० नासमशी, बेजकली। - **द्वान**-वि०
सुपत, विना दामका। [- **०** का गुलाम-बैसेका गुलाम,
आधाकारी।] - **द्वारा**-वि० दाना न करने, अधिकार
न जतानेवाला; दस्तबन्दार। - **दिमाश**-वि० अप्रसन्न;
वदमिजाज। - **दिल**-वि० स्निह, उदास, भग्नहृदय।
- **दीव**-वि० बेसुरीबत; निर्लज्ज। - **दीव**-वि० धर्मग्रन्थ,
धर्मको न माननेवाला। - **बधुक**-अ० निर्भय होकर,
विना सोचे-अटके। वि० निर्भय। - **बरस**-वि० धर्मग्रन्थ,
जिसका धर्म नष्ट हो गया हो। - **धीर**-वि० धैर्यरहित।
- **बंश**-वि० निर्लज्ज। - **नज्जीर**-वि० बेजोड़, अनुपम।
- **बमक**-वि० पीका, बेमजा। - **बबा**-वि० दीन, अस-
हाय। पु० मुसलमानोंका एक फिर्का। - **नाप**-वि० न
नापा हुआ। - **नास**-वि० गुप्तनाम। - **नामोनिशान**-
वि० बेपता, जिसका पता-ठिकाना न हो। - **निमून**-
वि० अद्वितीय, बेजोड़। - **नियाज़**-वि० जिसे किसी
चीजकी चाह या आवश्यकता न हो, बेपरवा। - **निचाज़ी**-
छी० किसी चीजकी चाह, परवाह न होना। - **निचाम**-
वि० नियाममे बाहर, जंगी (तलवार)। - **नूर**-वि०
जिन्नकी ज्योति चली गयी हो (आँख)। - **पनाह**-वि०
जिसमें बचाव न हो सके; निराश्रय। - **परदगी**, -
परदगी-छी० परदेका हट जाना; भेदका प्रकट हो जाना;
बेवज्जती। - **परदा**-वि० परदेसे बाहर; जिस (छी)का
मुँह खुला हो; प्रकट, खुला। - **परवा**, - **परवाह**-वि०
जिसे किसी बातकी फिक्र न हो, निर्दह। - **परवाई**, -
परवाही-छी० बेफिक्री; लापरवाई। - **पाह**-वि०
निश्वाय, मौचक। - **पीर**-वि० निर्दय, दूसरोंका दुख-
दर्द न समझनेवाला; निष्ठुर। - **क्रसल**, - **क्रसल**-वि०
- बेमौसम; बेवक्त। [- **०** की बहार-बेमौसम चीज
(खोमचैवाले बेमौसम फल बेचते समय कहते हैं)।]
- **क्रावदा**-वि० जिससे कोई लाम, फल न हो, बेकार।
- **क्रिक**-वि० चिंतारहित, बेपरवा, निर्दह। - **क्रिक**-
वि० बेफिक्र। - **क्रिकी**-छी० निर्दिचता। - **बधुक**-
वि० बेजोड़, बेमिस्ल। - **बरकत**-वि० जिसमें बरकत न
हो, जिससे पूरा न पड़े। - **बरकती**-वि० बरकत न
होना, पूरा न पचना। - **बस**-वि० विवश, लाचार,
असहाय। - **बसी**-छी० विवशता, लाचारी। - **बहरा**-
वि० असाया; जिसे कुछ आना न हो, बेहस्य, बेडनर।
- **बाक**-वि० निष्ठुर, दीठ। - **बाक**-वि० जिस (क्रिसान
खाते)में कुछ बाकी न हो, नुकाया हुआ; जिसने पूरा
पाचना नुका दिया हो। - **बाकी**-छी० निर्भयता,

शृङ्खला। - **बाकी**-छी० बेनाक होना, नुकता, पूरी
सफाई। - **बाल** व **पर**-वि० असहाय, दीन-हीन।
- **बुनियाद**-वि० बिना जगका, निर्मूल; भगवर्दत।
- **ब्वाहा**-वि० अविवाहित। - **भाव**-वि० बेहिसाव।
[मु०- **०** की बचना-बहुत मार पचना।] - **भज्ञा**-
वि० स्वादरहित; बचनायका। - **भसक**-अ० निष्प्रयो-
जन, बेकार। वि० निर्बक। - **भनका**-पु०
जिसमें मन न लगता हो। - **भरम्मत**-वि० जिसकी
भरम्मत न हुई हो, हटा-कटा। - **भरम्मती**-छी०
बैरम्मत होनेका भाव। - **भसरक**-वि० अनुपयोगी,
बेकार, निष्कम्पा। - **भहल**-वि० बेमौका। - **भाभी**-
वि० अर्थरहित; बेकार, लमो। - **भाखस**-वि० जिसका
पता न लगे, अज्ञात। - **मिछाबद**-वि० क्षाफित,
शुद्ध। - **मुवासिब**-वि० अनुचित। - **मुरीबत**-वि०
जिसमें लिहाज, सुरीबत न हो, तोताबदम। - **मुरीबती**-
छी० बेसुरीबत होना, तोताबदमी। - **मेल**-वि० जो मेल
न खाता हो, अनमिल, बेजोड़। - **मेह**-वि० वेद, निष्ठुर;
निष्कलण। - **मौसम**-वि० जिसका अवसर न हो; अनुप-
युक्त, नायुतासि। - **मौके**-अ० असमय, बिना अवसरके।
- **मौत**-अ० बिना मौत आये, बिना कालके (मरना)।
- **मौसिम**-वि० जिसका मौसिम न हो, अस्मयिक।
अ० बिना उचित समयका। - **मर्वा**-वि० बेमजा, बेजुलक।
- **रहत**-वि० बेमेल; बेमौका। - **रह**-वि० रसधीन,
बेमजा। - **रहम**-वि० जिसमें रहम न हो, निर्दय।
- **रहमी**-छी० निर्दयता, वेददर्श। - **राह**-वि० पथग्रन्थ;
कुचाली। - **राही**-छी० पथग्रन्थता, गुमराही; कुचाल।
- **रिचा**-वि० निश्छल, सरल, सच्चा। - **रुज़**-वि०
बेसुरीबत; रुध; प्रतिकूल। - **रुज़ी**-छी० उपेक्षा; प्रति-
कूलता; बेसुरीबती। - **रुप**-वि० कुरूप। - **रेश**-वि०
जिसके दाढ़ी-मुँछे न आये हों। - **रेशा**-वि० बिना
रेशेका (आम इ०)। - **रोक-डोक**-अ० बिना किसी रुका-
वटके, बेखटके। - **रोज़गार**-वि० जिसके पास जीविकाका
साधन न हो; नौकरीसे अलग किया हुआ, बेकार। - **रोज़**-
गारी-छी० बेरोजगार होनेका भाव, बेकारी। - **रीनक**-
वि० जिसकी शोभा, चहल-पहल चली गयी हो, उदास।
- **रीनकरी**-छी० बेरीनक होनेका भाव। - **रुखाम**-वि०
सुईजोर, सरकस, दाग न माननेवाला। [मु०- **०**
सुबाना-दोढ़क कहना; बहुत गालियाँ देना।] - **रुज़त**-
वि० बेमजा, स्वादरहित; निष्कल। - **रुता**-वि०
किसीकी रु-रिजायत न करनेवाला, खरा; दोढ़क (बात)।
- **रुहिाज़**-वि० बेसुरीबत; निर्लज्ज। - **रुसक**-वि०
बेमजा, रसरहित। - **रुसती**-छी० रसमंग, बदमजगी,
आमंद न आना। - **रुसी**-वि० खरा; किसीका लिहाज,
सुरीबत न करनेवाला। - **रुसी**-छी० खरापन, निष्प-
क्षता। - **रुसल**, - **रुसल**-वि० प्रतिष्ठारहित, तुच्छ,
नगण्य। - **रुसल**-वि० तुच्छ, जलील, बेवज्जत। - **रुसरी**-
छी० बेवज्जती, जिहात। - **रुसक**-वि० निर्दुष्टि, नासमझ।
- **रुसकी**-छी० नासमझी, मूर्खता। - **रुसल**-अ० अस-
मय, बेमौके, कुसमयमें। [मु०- **०** की रागिनी का
साहवाई-बेमौका बात।] - **रुसता**-वि० बचनका पाठन,

प्रीति का निर्वाह न करनेवाला; कुतन्त्र; मित्रको भोला देने-वाला । -बक्राई-**खी०** बेवका होनेका भाव; बेसुरीबती; कुतन्त्रता । -बाह्वा-**वि०** बेचरिया; अकारण; नाहक । -सखर-**वि०** बेसलीका, कूहक; बेअकल । -सक-**अ०** निस्सह, अकर । -सरम-**सम०** **वि०** निरुचक । -सन्नी-**खी०** निरुज्जता । -सुमार-**वि०** अगणित; बेहिसाव । -सँभर-**वि०** बेहोश । -सँभार-**सँभाक-वि०** जो सँभाकके बाहर हो; **बेहोश** । -सत्तर-**वि०** मंगा । -सतरी-**खी०** मंगापन । -सबब-**अ०** अकारण, विभावजह । -सबरा-**वि०** दे० 'बेस्र' । -सबरी-**खी०** अचैय । -सबात-**वि०** नश्वर, लणभयुर । -सबाती-**खी०** बेसमात होना । -सबरी-**खी०** बेसजी । -सब-**वि०** जिसमें सम, धीरज न हो, अधीर । -सम्मी-**खी०** अधीरता । -समस-**वि०** नासमस । -समसी-**खी०** मूर्खता । -सर-**वि०** अश्वारहित । -सरा-**सिरा-वि०** जिसके सिरपर कोई न हो; स्पर्धंद । -सरोसामान-**वि०** जिसके पास कोई सामग्री न हो । -सखीअ-**वि०** बेअकर, कूहक । -साप्रस-**वि०** स्वाभाविक, अकृत्रिम, जिसके लिए स्नेहना न पड़ा हो (भाव, उक्ति) । -सामान-**वि०** जिसके पास माक-अलपाव या जरूरी औजार आदि न हो, उपकरणहीन । -सामानी-**खी०** मुफकिसी, सामन-सामग्रीका अभाव । -सिलसिला-**वि०** क्रमरहित, अव्यवस्थित । -सिलसिले-**अ०** बिना क्रम, सिलसिलेके । -सुब-**वि०** अचेत, बेहोश; आलसिस्त । -सुर-**वि०** जिसका स्वर ठीक न हो । -सुरा-**वि०** जो शुद्ध स्वरमें न गा सके; स्वरदोषयुक्त, अशुद्ध स्वरमें गाया जानेवाला (गाता) । **खी०** 'बेसुरी' । -सूद-**वि०** बेकायदा, अव्यर्थ । -सोबेसमसे-**अ०** बिना सोच-विचार किये, झट । -हबाद-**वि०** स्वादरहित, बदजायका । -हंगम-**वि०** बेहोश, भरा । -हंगम-**वि०** बेवक । -हकीकत-**वि०** तुच्छ, उपेक्षणीय । -हद-**वि०** असीम; बहुत अधिक । -हबा-**वि०** निरुज्ज, बेधर्म । -हबाई-**खी०** निरुज्जता । **[खु०-० का जामा पहन लेना, -० का बुरका ओढ़ या सुँहपर ढाक लेना-नितांत निरुज्ज हो जाना]** । -हबास-**वि०** बेहोश; परीधान; पमाक । -हाक-**वि०** कष्टसे व्याकुल, जिसका हाक दुरा हो । -हिजाब-**वि०** बेपदी; अज्जवारहित । -हिजाबी-**खी०** बेपदीगी; निरुज्जता । -हिम्मत-**वि०** जिसमें हिम्मत न हो, करपोक । -हिस-**वि०** गतिहीन, सुप्त । -हिसाब-**वि०** बेहद, अमित; बहुत ज्यादा । -हुनर-**हुनरा-वि०** जिसके कुछ आता न हो, अनाड़ी, बेअकर । -हुरमस-**वि०** बेहज्जत । -हुरमती-**खी०** बेहज्जती । -हुरगी-**खी०** बेहूदापन; अश्रद्धा, असम्बत्ता । -हूदा-**वि०** असंगत, बेतुका; अश्रद्धा, भरा । -० गो-**वि०** बेहूदा बातें करनेवाला, बकवास करनेवाला । -हूक-**वि०** बेफिक्र । -होह-**वि०** जिसके होश न हो, अचेत । -होशी-**खी०** अचेत-पन, मूर्च्छा । **खु०-परकी उबाना-बेदुकी ईकना, गप मारना । -परके कबूतर उबाना-चतुराईके बलसे ज़नबीनी बात हर लेना । हवाई गिरह बाँधना । -पँदीका छोड़ या बधना-जो किसी बातपर स्थिर न रहे, जिसका**

मत बदलता रहे, डुलसुल ।
बेहकि-खी०** दे० 'बेला' तथा 'बेल' ।**
बेकारखी०-खु०** जोरसे दुकानेकी आवाज ।**
बेकुरा-खी०** [सं०] सर, आवाज ।**
बेक-खु०** दे० 'बेच' ।**
बेह-खी०** [का०] जह, नीव । -कुन-**वि०** जह उलाने-वाला । -कुनी-**खी०** जह उलाक देना । -ब जुनबाद-**खी०** जहमूल (उल्लाव देना) ।
बेग-खु०** दे० 'बेग'; [प्र०] अनौद, सरदार (मुगलोंके नामके साथ लगाया जानेवाला 'खों'का समानार्थक शब्द); [अं० 'बेग'] किरमिच, चमड़े आदिका लंबोतरा, एकसका काम देनेवाला पैदा । -पाहू-**खु०** पैदके साथ बजाया जानेवाला एक बाजा, मशकमीन ।
बेगारी-खु०** होरातराश; जोहरी ।**
बेगना-अ०** कि० बेगपूर्वक करना, जल्दी करना ।**
बेगस-खी०** [खु० 'बेगुम'] बड़े आदमीकी बीबी, खातून; रानी; रानीकी शक्कवाला ताशका पत्ता ।**
बेगमात-खी०** [खु०] बेगमका बहुवचन ।**
बेगमी-खु०** कपूरी पानका एक भेद । **वि०** बेगम-संबंधी ।**
बेगर-वि०** दूधक, मित्र ।**
बेगबती-खी०** एक वर्णवृत्त ।**
बेगार-खी०** [का०] जबर्जस्ती, बिना उजरत दिये कराया जानेवाला काम; वह जिससे इस तरहका काम कराया जाय (एकना); बेमनका काम । **खु०-टालना-बिना मन लगाये, बेगारीकी तरह काम करना ।**
बेगारी-खी०** दे० 'बेगार' ।**
बेगि-अ०** जल्दी, बेगपूर्वक, झटपट ।**
बेगुना-खु०** दे० 'बेगन' ।**
बेचक-खु०** बेचनेवाला ।**
बेचना-स०** कि० ठास लेकर (कोई वस्तु) देना, विक्रा करना; पैसके बदलेमें देना (धर्म, ईमान इ०) । **खु०** बेच खाना-नष्ट कर देना; उड़ा डालना ।**
बेचनाना, बेचाना-स०** कि० दे० 'विक्रवाना' ।**
बेचवाल-खु०** दे० 'बेच' ।**
बेची-खी०** विक्री, विक्रय ।**
बेचू-खु०** बेचनेवाला ।**
बेचू-खु०** एक जंगली जानवर जिसके बालोंका मस बनाया जाता है ।**
बेसा-खु०** दे० 'बेसा' ।**
बेसक-खु०** जौ, चना, मटर आदिकी मिली हुई फसल; ऐसा अनाज ।**
बेसना-स०** कि० निशाना लगाना, बेधना ।**
बेसरा-खु०** दे० 'बेसरा' ।**
बेसा-खु०** बेध, निशाना ।**
बेदकी-खी०** दे० 'बेदी' ।**
बेदका, बेदका-खु०** दे० 'बेदा' ।**
बेदा-खु०** पुनः लकड़ा; स्नेहका संनोहन, बधा । -बेदी-**खी०** बाल-बच्चे, स्तन । -(२) बाबा-**खु०** बरका पिता । **खु०-बनाना-गोद लेना ।**
बेदी-खी०** लकड़ी, पुनी; नबेकी ओरसे बालिका या शुब-**********

तीका स्नेहस्पृक संवीधन । -बाळा-पु० कन्याका पिता ।
-ब्यबहार-पु० विवाह-संपर्ष । सु०-बैना-बेटी व्या-
हना । -छेना-किसीकी बेटीसे व्याह करना ।

बेटीना-पु० बेदा ।

बेठ-झी० दस्ता, मूठ ।

बेठन-पु० पुस्तक आदिको गर्दसे बचानेके लिए उसपर
छपेटा जानेवाला कपड़ा, खोल ।

बेब-झी० नाव, धाला ।

बेबना-स० कि० बाब लगाना, धाला बनना ।

बेबा-पु० लट्ठों या तस्तीको बाँधकर और उनपर बाँसका
टट्टर रखकर बनायी हुई नाव; नावों या जहाजोंका समूह;
नाव । सु०-बूबना-काम दिगबना, नष्ट, तबाह होना ।
-पार होना-संकट कटना, काम हो जाना ।

बेबिन, बेबिनी-झी० नाचने गानेका पेशा करनेवाली स्त्री,
नटिनी ।

बेबिया-पु० एक तरहका नट ।

बेबी-झी० कैदियाँ, हाथी-घोषों आदिके पावोंमें पबनायी
जानेवाली लोहेकी जंजीर, निगड़ (कटना, पबना); बंधन;
छोटा बेबा, नाव; दे० 'बैबी' । वि० स्त्री० कठिन ।

बेद-पु० घेरनेका कार्य; नाश; अंकुरित बीज ।

बेदई-झी० पीठी भरकर बनायी हुई रोटी ।

बेदना-स० कि० बाब बनाना, रूँपना; डोरोंको घेरकर
ले जाना ।

बेदा-पु० एक तरहका कड़ा; मकानकी बारी ।

बेपी-झी० दे० 'बेणी' । -फूल-पु० सांसफूल ।

बेत-पु० दे० 'बैत' । -पानि-वि० जिसके हाथमें बेत
या दंड हो ।

बेतना-स० कि० जान पबना ।

बेतबा-झी० बुदेलखडकी एक नदी ।

बेताल-पु० दे० 'बेताल'; दे० 'बै' में; * चारण ।

बेद-पु० दे० 'बेद'; [फा०] बैत । -बाक्र-पु० बैतके
छिलकेसे कुरसियाँ आदि बुननेवाला । -बाक्री-झी०
बेदबाफका काम । -मजदू-पु० बैतका एक वेद जिसकी
टहनियाँ जमीनकी ओर झुकी रहती हैं । -मुस्क-पु०
बेतका एक वेद जिसके फूलोंका जर्क दवाकें काम जाता है ।

बेदन-झी० दे० 'बेदन' ।

बेदना-झी० दे० 'बेदना' ।

बेदमाल-झी० बह तस्ती जिसपर सिकलीगर अपना
औजार रगड़ते हैं ।

बेदार-वि० [फा०] जागता हुआ, जागरूक; चौकड़ा ।

-बदल-वि० भाग्यशाली । -भरज-वि० बुद्धिमान् ।

-बास-जागते रही (चौकीदारोंकी आज्ञा) ।

बेहारी-झी० [फा०] जागरण, जागस्कता ।

बेध-पु० छेद; मोती, मूँगे आदिमें किया हुआ छेद;
दे० 'बेध' ।

बेधक-वि० बेधनेवाला ।

बेधना-स० कि० छेद करना; घाव करना ।

बेधिषा-पु० अकुश ।

बेन-पु० दे० 'बैनु'; महुवर ।

बेनट-झी० बटूममें खोसी रहनेवाली संगीन, 'ब्योनेट' ।

बेना-पु० बाँसके छिलकेका बना हुआ पंखा; एक गहना;
* खस; बाँस ।

बेनिबा-झी० पंखी; किनाबके पंखेके किनारे दूसरे पंखेको
रोकनेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी ।

बेनी-झी० किरियोंकी चोटी; भिवेणी; किनाबके पंखेके
किनारे लगायी जानेवाली वह लकड़ी जो दूसरे पंखेकी
सुलनेसे रोकती है ।

बेनु-पु० दे० 'बैनु' ।

बेनीरा-पु० दे० 'बिनीला' ।

बेनीरी-झी० दे० 'बनीरी' ।

बेपारा-पु० दे० 'व्यापार' ।

बेपारी-पु० दे० 'व्यापारी' ।

बेमारी-झी० दे० 'बीमारी' ।

बेमांसि-वि० दे० 'बै'के साथ ।

बेयरा-पु० खानसामा, बैरा ।

बेर-पु० एक प्रसिद्ध फल; उसका पेड़; देर, समय; शरीर ।

झी० बार, दफा । -जरी-झी० हजबेरी ।

बेरबा-पु० कड़ाहमें रहनेका कमा ।

बेरा-झी० समय; सबेरा; दफा । पु० मिला हुआ जो
और चना; * बेबा, नाव; पोत-समूह; [अ० 'बेमार'] किसी
बड़े अफसरका चपरासी जिसका काम बिट्ठी-पत्री, संवेसा
आदि ढाना, ले जाना हो; खानसामा ।

बेरादरी-झी० दे० 'बिरादरी' ।

बेरमा-वि० दे० 'बीमार' ।

बेरिआ, बेरिया-झी० बेला, समय ।

बेरी-झी० मिला हुई सरसों और अलसी; * दे० 'बैरी'; *
नौका । पु० खजियोंकी एक जाति ।

बेईद-वि० बुलंद, ऊँचा ।

बेईद-पु० बिहब, देर ।

बेल-पु० एक प्रसिद्ध फल-वृक्ष जो हिंदू धर्ममें पवित्र माने
गये वृक्षोंमेंसे है; हस्तका फल, बिल्व, भीफल । -गिरी-
झी० बेलके फलका गुदा । -पत्ती-झी० बेलपत्र । -पत्र
-पु० बेलका पत्ता । -पाल-पु० बेलपत्र ।

बेल-झी० जमीन, दीवार, पेड़ आदिपर फैलनेवाला विना
तनेका पौधा; लता; बंध; कागज, कपड़े आदिपर रंग,
रेशम आदिमें बनाये हुए लताकी शक्लके फूल-पत्ते; कपड़े-
पर टाँका जानेवाला फीता जिसपर जरीके तारोंसे फूल-
पत्तियाँ बनी हों; दाग-बेल; * बेला । -बूटा-पु० कागज,
कपड़े आदिपर बनाये जानेवाले फूल-पत्ते । -हाशिषा-
पु० बेल छापनेका ठप्पा । सु० -बदना-बंध बदना ।
-मँड़े बड़ना-कामका पूरा होना ।

बेल-पु० एक तरहकी कुदाल । -बा-पु० छोटी कुदाल;
लंबा खुरपा । -दार-पु० फावड़ा चलावेवाला मजदूर ।

-दारी-झी० बेलदारका काम ।

बेलबी, बेलरी-झी० बेल, लता ।

बेलब-पु० काठका बना लंबा, मोला दस्ता जिससे चकले-
पर रोटी, पापड़ आदि बेलते हैं; पत्थर या लोहेका भारी
मोला जिससे सबक आदि दवाकर बराबर करते हैं,
'रोलर'; छापने, ईंल पेरनेकी कल आदिका बेलनकी
शक्लका पुरवा ।

शेखना-स० कि० बकलेपर शेखनेसे रोटी, पूरी आदि बनाना। पु० दे० 'बेकन'।
 शेखपाचा-स० कि० शेखनेका काम दूसरेसे कराना।
 शेखसना-स० कि० विकास, मौज करना।
 शेखहरा-पु० दे० 'शेखहरा'।
 शेखा-पु० एक प्रसिद्ध सुगन्धित फूल; उसका पौधा; मोलिया; मोगरा; कटोरा; सारंगी जैसा एक बाजा। स्त्री० दे० 'शेखा'।
 शेखि-स्त्री० बेल, छता।
 शेखी-पु० साथी, सहायक।
 शेखट-स्त्री० विषयता, संकट।
 शेखपार-पु० दे० 'ब्यापार'।
 शेखपारी-पु० दे० 'ब्यापारी'।
 शेखरा-पु० दे० 'ब्योरा'। - (रं) बार-अ० तफसीलके साथ।
 शेखसाद-पु० दे० 'ब्यवसाय'।
 शेखस्था-स्त्री० शास्त्रीय विधान; प्रबंध; स्थिति।
 शेखहरना-स० कि० व्यवहार करना, बरतना।
 शेखहरिया-पु० महाजन, साहूकार; मुनीम।
 शेखहार-पु० दे० 'व्यवहार'।
 शेखा-स्त्री० [फा०] विषया, रोक।
 शेखाई-स्त्री० दे० 'विवार'।
 शेखान-पु० दे० 'विमान'।
 शेखा-वि० [फा०] अत्या, अधिक। - क्रीमल-वि० बहु-मूल्य, दामी। - क्रीमली-वि० दे० 'वैशकीमत'। - बहा-वि० वैशकीमत। - बर-अ० बहुधा, अक्सर।
 शेखी-स्त्री० अधिकता, बुद्धि; नफा।
 शेख-पु० दे० 'शेख'।
 शेखवर-पु० वैभानर, अक्षि।
 शेख-पु० दे० 'शेख'।
 शेखन-पु० चनेका आटा।
 शेखनी-वि० शैसनका बना हुआ। स्त्री० शैसनकी बनी हुई पूरी।
 शेखर-स्त्री० नाकका एक गहना, एक तरहका मुकुट। पु० गथा, खम्बर; एक अन्यत्र जाति।
 शेखरा-पु० एक शिकारी चिबिया; खम्बर। दे० 'शे' में।
 शेखना-स्त्री० शैखा, रंजी। - पन-पु० शैखावृत्ति।
 शेखहना-स० कि० खरीद करना, मोल लेना।
 शेखा-स्त्री० शैखा, रंजी।
 शेखारा-वि० शैठानेवाला; रखने, नमानेवाला।
 शेखाहना-स० कि० मोल लेना, खरीदना।
 शेखाहनी-स्त्री० सीढ़ा; खरीद।
 शेखाहा-पु० सीढ़ा; खरीदी हुई चीज।
 शेखा-स्त्री० शैखा।
 शेखसा-अ० कि० दे० 'विहंसना'।
 शेख-पु० छेद। वि० [फा०] अच्छा, मज। - सर-वि० अधिक अच्छा। अ० बहुत अच्छा, अच्छी बात है (खोहृति सन्नि करता है)। - शरी-स्त्री० मलाई, हिल। - बूद-बूदी-स्त्री० मलाई, हिल, खुसहाली।
 शेखरी-वि० दे० 'शौह'। * पु० जंगल आदि विकट

स्थान।
 शेखरी-पु० अनाजका बीज। वि० पीछा।
 शेखरी-पु० पुनिया; जुलाहोंकी एक उपजाति।
 शेखर-वि० ख्यात; विक्रम, जुदा। पु० बावली।
 शेखरी-अ० कि० फटना, दरार पड़ना।
 शेखरा-वि० अलगा, जुदा। पु० दे० 'शेयरा'।
 शेखराजा-अ० कि० विदीर्ण होना, फटना। स० कि० फाटना, विदीर्ण करना।
 शेखरी-स्त्री० चंदा।
 शेखरा-पु० सारंगीके ढंगका एक बाजा; बेल।
 शेख-पु० दे० 'बेह'।
 शेखन-अ० विना, बगैर। वि० बिहीन।
 शैक-पु० [अ०] लोगोंका रुपया जमा करने और मंगिनेपर ब्याजसहित लौटा देनेका कारबार करनेवाली कोठी।
 शैकर-पु० [अ०] महाजन।
 शैगन-पु० दे० 'शैगन'।
 शैगनी-वि० दे० 'शैगनी'। स्त्री० एक एकवान जो शैगनका डकका बेलनमें छपेकर लेखमें तलनेसे तैयार होता है।
 शैजना, शैजनी-वि० शैगनी।
 शैह-पु० [अ०] बादकदर, अमेजी बाजा रजानेवालोंका जत्था; अमेजी बाजा। - मास्टर-पु० शैहका मंचालक, वाद्य-निर्देशक।
 शैबना-स० कि० दे० 'शै' फना'।
 शैबा-पु० दे० 'शै' फना'।
 शैत, शैता-पु० दे० 'शैत'।
 शै-स्त्री० जुलाहोंकी कंधी; * पु०, स्त्री० दे० 'शय'। - संधि-स्त्री० बध-संधि।
 शै-स्त्री० [अ०] खेत आदिकी ऐसी भित्री जिसमें खरीदने-वालेका उस चीजपर स्थायी और पूर्ण अधिकार होता है। - नामा-पु० वह कागज जो बेचनेवाला खरीदनेवालेको लिखता है।
 शैकना-अ० कि० बहकना।
 शैकुठ-पु० दे० 'शैकुठ'।
 शैखरी-स्त्री० दे० 'शैखरी'।
 शैखानस-पु० दे० 'शैखानस'।
 शैगन-पु० एक पौधा जिसका फल तरकारीके काम आता है, चंदा।
 शैगनी-वि० शैगनके रंगका। पु० शैगनके रंगसे मिलता हुआ रंग। स्त्री० दे० 'शै' गनी'। - शैद-स्त्री० एक तरहकी छीट।
 शैजली, शैजवती-स्त्री० दे० 'शैजवती'।
 शैजई-वि० हलके नीले रंगका। पु० हलका नीला रंग।
 शैजनाथ-पु० दे० 'शैजनाथ'।
 शैजनी-वि० [अ०] अंडेका; अंडाकार।
 शैजा-पु० [अ०] अंडा; अंडकोष।
 शैजिक-वि० [सं०] बीज-संबंधी; पैतृक; मूल-संबंधी। पु० अंकुर; कारण; आत्मा।
 शैट-पु० [अ०] गेंद खेलनेका बड़ा।
 शैटरी-स्त्री० [अ०] तोपखाना; रासायनिक पदार्थोंके योगसे विष्णु उत्पन्न करनेका एक यंत्र।

वैठक-**खी**-**वैठनेका** कमरा, चौपाय; **वैठनेकी** चीज, आसन; पैदा; **वैठनेका** ढंग; बहुतसे लोगोंका किसी खास कामके लिए इकट्ठा **वैठना**, जमाव; जलसा, अधिवेशन; उठना-**वैठना**, सुबह; मूर्ति या स्तंभके नीचेका आधार; उठने-**वैठनेकी** कसरत; एक पैंव; **वैठकी**; एक तरहकी पूजा, निवाज। -**खाना**-**पु** **वैठने**, मिलने-जुलनेका कमरा। -**बाज़**-**वि** **वृत्ति**, धारणी।

वैठका-**पु** **वैठने** या मित्रोंसे मिलने-जुलनेका कमरा।

वैठकी-**खी** उठने-**वैठनेकी** कसरत; आसन; मेजपर रख कर जलनेका लैप, 'टैबुल-लैप'।

वैठका-**खी** **वैठनेकी** क्रिया; **वैठनेका** ढंग; आसन।

वैठना-**अ** **क्रि०** इस तरह स्थित होना कि चूतक जमीन या किसी आसनपर टिका रहे और कमरसे ऊपरका वह उसके बल सीधा रहे, आसीन होना; चढ़ना, सवार होना; इज्जत करना; अपनी जगहपर ठीक जाना, छोटा-बड़ा न होना (चूत, नग); (नम, जोड़का) अपनी जगहपर आ जाना; बैठना; बैठना, दबना; गिरना, दबना (घर); लहमें जमना; लौहमें ठहरना; खर्च होना; पड़ना, लगना (लाठी, डडा); (खीका) रखली बनना, भरमें पड़ना; बेकार रहना; दूबना, अस्त होना; काम बिगड़ना; सपना, मंजना (बाप); अडे सेना; (चायलका) लौह छाकर धक्का-मा हो जाना। -**बैठा**-**ठाला**-**वि०** बेकार, निठला। -**बैठा**-**भास**-**पु** पानी और चावलको एक साथ आगपर चढ़ाकर पकाया हुआ भात। -**बैठी**-**रोटी**-**खी** बिना मेहनतकी आमदनी (पेंशन आदि)। **बैठे**-**बैठ**-**पु** एक तरहकी कसरत। **बैठे**-**बिठाये**, **बैठे**-**बैठे**-**अ** अकारण मुस्तमें; अचानक।

बैठनि-**खी** **वैठनेकी** क्रिया या तरीका।

बैठनी-**खी** करघेमें बुननेवालेके **वैठनेके** लिए बनी हुई जगह।

बैठवाना-**स** **क्रि०** विठाने, अपनी जगहपर जमाने, रोपनेका काम दूसरेमें कराना।

बैठाना-**स** **क्रि०** किसीकी भूमि या आसनपर स्थित कराना, **वैठनेकी** कहना; स्थापित करना; अपनी जगहपर स्थित करना; सवार कराना; जमाना, जड़ना; अपनी जगहपर लाना (नस, जोड़); दवाना, पिचकाना (फोड़ा); रोपना, गाड़ना; घरमें डाल लेना; बेकार बना देना।

बैठारना-**स** **क्रि०** दे० 'बैठाना'।

बैठालना-**स** **क्रि०** दे० 'बैठाना'।

बैठाल-**वि०** [सं०] विडाल-संबंधी। -**बस**-**पु** भर्मका आडवर। -**बसिक**, -**बसी** (तिन्) -**वि०** भर्मका आडवर करनेवाला, ढोगी।

बैठना-**स** **क्रि०** दे० 'बैठना'।

बैथ-**पु** [सं०] बंसिकी चीजें बनानेवाला।

बैस-**खी** [अ०] घेर, पथ। **पु** घर, आलय; स्थान।

-**बाज़ी**-**खी** पथ-पाठकी प्रतियोगिता; गंत्याकृति।

बैसरनी-**खी** दे० 'बैसरणी'।

बैताल-**पु** बेताल; स्तुतिपाठक; भाट; एक प्रेतवीनि।

बैतालिक-**पु** दे० 'बैतालिक'।

बैतुलजाला-**पु** [अ०] लीबालथ, पास्ताना।

बैतुलमाह-**पु** [अ०] सार्वजनिक कोष; राजकीय; लावारिस माह जो जम्त हो जाय।

बैतुलमुकद्दस-**पु** [अ०] यक्षालम।

बैतुलाह-**पु** [अ०] सुदाका घर; खानपकावा।

बैद-**पु** दे० 'बैव'। -**हूँ**-**खी** बैधका पेठा।

बैदाहूँ-**खी** चिकित्सा, उपचार।

बैदुर्ब-**पु** दे० 'बैदुर्ब'।

बैदुर्बी-**खी** दे० 'बैदुर्बी'।

बैन-**पु** वचन, बोल।

बैनसेय-**पु** दे० 'बैनसेय'।

बैना-**पु** दे० 'बायन'; दे० 'बैना'। * **स** **क्रि०** बोना।

बैपार-**पु** दे० 'ब्यापार'।

बैपारी-**पु** दे० 'ब्यापारी'।

बैयर-**खी** खी।

बैयॉ-**अ** बुदबोले बल।

बैबा-**पु** बैसर। † **खी** छोटी ननंद (पुदेल०)।

बैरंग-**वि०** [अ० 'बैरिंग'] (विट्टी, पारसल आदि) जिसका महसूल भेजनेवालेने न चुकाया हो। **मु०** -**लौटना** - बिना काम हुए, बिफल लौटना।

बैर-**पु** दे० 'बैर'; शत्रुभाव, दुश्मनी; विरोध, कुराई।

मु० -**काड़ना** -**लेना** -**बटला** लेना। -**ठानना** -**साधना** करना (लड़नेको तैयार होना ?)। -**पक्का**-**कह** देना।

बैरक-**पु** [अ०] झडा, निशान।

बैरख-**पु** दे० 'बैरक'।

बैरन, **बैरिन**-**खी** शत्रु खी; सीत।

बैरा-**पु** चपरासी, बैयरा।

बैराखी-**खी** एक गहना, बरेखी।

बैराग, **बैराग्य**-**पु** दे० 'बैराग्य'।

बैरागर-**पु** खानि, आकर।

बैरागी-**पु** वैष्णव साधुओंका एक भेद।

बैरावा-**अ** **क्रि०** वासप्रस्त होना; दे० 'बैरावा'।

बैरिस्टर-**पु** [अ०] दे० 'बैरिस्टर'।

बैरी-**वि०**, **पु** दुश्मन, विरोधी।

बैल-**वि०** [सं०] बिलमें रहनेवाला; बिलमें रहनेवाले जंतुओंसे संबंध रखनेवाला। **पु** [हिं०] गो-जातिका नर जो अनेक देशोंमें कृषिका मुख्य आधार है। **वि०** मूर्ख, निर्बुद्धि (ला०)। -**गाड़ी**-**खी** बैल द्वारा खींची जानेवाली गाड़ी।

बैलर-**पु** दे० 'बायल'।

बैलुल-**पु** [अ०] हवासे हलकी गैससे भरा हुआ रक्कका पैका जो आकाशमें उड़ता है; गुम्बारा।

बैलब-**वि०** [सं०] बैल धुस-संबंधी; बैलकी लकड़ीका बना हुआ; बैलके बड़ोसे पूर्ण। **पु** बैलका फल।

बैल-**पु** [सं०] जालमें फँसे हुए या शिकारी जंतुके मारे हुए जानवरका मांस।

बैसंहर, **बैसंदूर**-**पु** वैश्वानर, अग्नि।

बैस-**खी** न्यास, उग्र; जबानी। **पु** क्षत्रियोंका एक भेद;

† वैश्य। **मु०** -**चड़ना**-**जबानी** जाना।

बैसना-**अ** **क्रि०** दे० 'बैटना'।

बैसर-पु० जुलाहोंका एक बीमार, कंघी ।
बैसबाबा, बैसबारा-पु० अवधका पन्थिमी भाग ।
बैसबाबी-झी० बैसबाबकी बही, अवधका एक भेद ।
बैसाख-पु० चैतके बाद पड़नेवाला महीना, बैशाख ।
-बैसन-पु० दे० 'बैशाखनंदन' ।
बैसाखी-झी० वह छाट्टी जिसे टेककर लंगड़े चलते हैं; बैशाखकी पूर्णिमा ।
बैसाना, बैसारना-स० कि० दे० 'बैठाना' ।
बैसिक-पु० दे० 'बैशिक' ।
बैहर-झी० बावु । वि० बराबना ।
बौक-पु० किनारमें चूल्की जगह लगाया जानेवाला छोटेका कोला ।
बौगना-पु० एक वरतन, बहुयुता ।
बौबा-पु० बास्करमें आग लगानेकी रस्ती ।
बौबी-झी० दे० 'बौ' की ।
बौ-झी० बच्चा, पत्नी (भाईजी-बो = भोजी, जेठानी; रामा-बो, इत्यादि) ।
बोजनी-झी० दे० 'बोनी' ।
बोभाई-झी० बोनेका काम; बोनेकी उजरत ।
बोभाना-स० कि० बोनेका काम दूसरेसे कराना ।
बोक-पु० बकरा ।
बोकरा-पु० बकरा ।
बोकला-पु० बकला ।
बोकाण-पु० [सं०] तोपका ।
बोखार-पु० दे० 'बुखार' ।
बोगुमा-पु० घोड़ोंकी एक बीमारी ।
बोचना-स० कि० शेलना, बोकना-'उन्हें गेंदकी तरह छछाक दिया' पर वे बीच न सके'-जिदगी ।
बोज-पु० घोड़ोंकी एक किस्म ।
बोजा-झी० चावलकी शराब ।
बोझ-पु० भार, बजन; भारी लगनेवाली चीज; गठरी, गड्ढा; उतना भार, सामान जितना एक आदमी, बैल, घोडा आदि एक बारमें उठा सके, खेप; भारी लगनेवाला काम, आदमी; कार्यभार, जिम्मेदारी । **मु०** -उठाना-कोई कठिन काम करनेका भार लेना । -उतरना-किसी कठिन कामसे ऊपरत पाना; जी हलका होना ।
बोझना-स० कि० लादना, बोझ रखना ।
बोझल, बोझिल-वि० भारी, बजनदार ।
बोझा-पु० दे० 'बोझ' ।
बोझाई-झी० बोझनेका काम; बोझनेकी उजरत ।
बोट-झी० [जं०] नाव; पुआँकस ।
बोट-पु० लकड़ीका कुंदा; खंड, टुकड़ा ।
बोटी-झी० सांसका छोटा टुकड़ा । **मु०** -बोटी काटना-शरीरके छोटे-छोटे टुकड़े कर देना । -बोटी फड़कना-अंग-अंग फड़कना, बहुत जुलजुलापन होना ।
बोबना-स० कि० डुबाना ।
बोबल-पु० एक चिथिया ।
बोब-पु० अजगर; एक पतली, लंबी फली जो तरकारी बनानेके काम आती है ।
बोबी-झी० धमकी; बहुत ही छोटी रकम; नौकी ।

बोत-पु० घोड़ोंकी एक जाति ।
बोतल-झी० बोसका एक बरतन जिसकी गरदन लंबी और पतली होती है । -बासिनी-झी० शराब । **मु०** -की बोतल चढ़ा जाना-बोतलकी सारी शराब पी जाना ।
बोतली-झी० छोटी बोतल । वि० बोतलके रंगका ।
बोता-पु० ऊँटका बच्चा जो जमी सवारी आदिके काममें न आता हो ।
बोदकी-झी० कुसुम, बरेंका एक भेद ।
बोदर-झी० लंबीली छड़ी ।
बोदा-वि० मोटी अड्डा, गावरी; दम्बू; सुस्त । -पन-पु० मोटी अड्डा होना; दम्बपन ।
बोदध्य-वि० [सं०] जानने, ध्यान देने योग्य; जाग्रत करने योग्य ।
बोदा (दुष्ट)-वि०, पु० [सं०] जानने, समझनेवाला; नैयायिक ।
बोध-पु० [सं०] ज्ञान; जानकारी; जताना; सांत्वना, तसली । -कर-वि० जगानेवाला । पु० स्तुतिपाठक, बंदी । -मध्य-वि० समझमें आने लायक । -बासर-पु० देवोत्थानी पकादशी ।
बोधक-वि० [सं०] बोध करानेवाला, जतानेवाला, सूचक । पु० शृंगाररसका एक ह्रास; युत्तर, भेदिया ।
बोधन-पु० [सं०] ज्ञान कराना, जताना; जगाना; उद्दीपन; विकसित करना; बुध ग्रह ।
बोधना-स० कि० समझाना-बुझाना; जताना ।
बोधनी-झी० [सं०] समझ; ज्ञान; प्रबोधिनी पकादशी; पीपल, पिप्पली ।
बोधनीय-वि० [सं०] जताने, जगाने योग्य ।
बोधयिता (बु)-वि०, पु० [म०] जगानेवाला, बतलानेवाला; शिक्षक ।
बोधान-वि० [सं०] चतुर, बुद्धिमान् । पु० चतुर मनुष्य; बुद्धस्वति ।
बोधायन-पु० [सं०] ब्रह्ममन्त्रवृत्तिके रचयिता एक आचार्य ।
बोधि-झी० [सं०] समाधिका एक भेद; पीपलका पेड़ । -तरु-**मु०** -बुद्ध-पु० गयामें अवस्थित पीपलका पेड़ जिसके नीचे बुद्धको बुद्धत्वकी प्राप्ति हुई । -मंडल-पु० वह स्थान जहाँ गौतमको बुद्धत्व प्राप्त हुआ । -सरब-पु० बुद्धत्वप्राप्तिका अधिकारी जो अभी उम्र पदपर पहुँच न पाया हो, बुद्धविशेष ।
बोधित-वि० [सं०] जिसे बोध कराया गया हो ।
बोधितव्य-वि० [सं०] जानने योग्य ।
बोधी (धिर)-वि० [सं०] जाननेवाला; ज्ञानेवाला ।
बोधोदय-पु० [म०] ज्ञानका उदय, ज्ञानोत्पत्ति ।
बोध्य-वि० [सं०] जानने योग्य; जताने योग्य ।
बोना-स० कि० बीज जमीनमें खालना, बिखेरना ।
बोनी-झी० बोनेकी क्रिया; बोनेका मोसम ।
बोबा-पु० खान; गठरी; बरकी बीज-बस्तु ।
बोय-झी० दे० 'दू' ।
बोरा-झी० बोदने, डुबानेकी क्रिया; बोव । पु० एक गहना; चाँदी या सोनेका गोशक ।
बोरका, -बोरिका-पु० दायात ।

बोरना*-स० कि० बुबाना बुबाकर तर करना; रँगना; मिलावट करना; चोपट करना, नाश करना (कुछ, प्रतिष्ठा आदि)।

बोरसी*-श्री० अंगठी।

बोरा-पु० टाटका बना बरा यैसा जिसमें अनाज आदि रखते या भरकर अन्यत्र भेजते, जे होते हैं; चुँपक।

बोरिया-श्री० छोटा बोरा। पु० [फा०] सजूरके पत्तोंकी चटारें।-**चाक्र**-पु० चटारें बनानेवाला। **मु०**-बँचना उठाना या समेटना-चल देना, रास्ता लेना।-**सम्हा-रना**-चलनेकी तैयारी करना।

बोरी-श्री० छोटा बोरा।

बोरो-पु० एक तरहका थान।

बोर्ड-पु० [अ०] लकड़ीका तस्ता; दपती; कमेटी, मंडल; कार्य-विशेषके लिए स्थापित (सरकारी) मंडल, विभाग (रेलवे-बोर्ड); म्युनिसिपल बोर्ड; जिला बोर्ड।-**आबू-बाइरेस्ट**-पु० संचारकमंडल।

बोर्डिंग-हाउस-पु० [अ०] छात्रावास।

बोल-पु० एक गंधद्रव्य, रसगंध; बबल, जो कुछ बोला जाय, बात; शब्द; गीतका टुकड़ा जो गाया या बजाया जाय; किसी गानेकी ध्वनि; ताना; संख्या; प्रतिष्ठा।-**चाक**-श्री० बातचीत; साधारण व्यवहारकी भाषा, रोजके बोलनेका ढग, रोजमर्रा; बातचीतका संबंध (-बंद होना)।-**तान**-श्री० संगीतके टुकड़ोंकी मूल रूपसे मिला आलाप या तानके रूपमें रखकर गाना।-**पट**-पु० वह चित्रपट जिसमें पार्श्वके बोलने, गाने आदिकी आवाज भी सुनाई दे, सवाकू चित्र। **मु०** बाला होना-बदती-चढ़ती होना; मान-प्रतिष्ठा अधिक होना।-**मारना**-व्यर्थ करना।

बोलता-वि० बोलता हुआ; बाचाल; सजीव, सप्राण। पु० प्राण; आत्मा।

बोलसी-वि० श्री० बोलती हुई। श्री० बोलनेकी शक्ति। **मु०**-बंद होना-बोल न सकना; लज्जा या दुःखके अधिरेकते मुँहसे बोल न निकलना।

बोलनहार*-पु० आत्मा, बोलता।

बोलना-अ० कि० मुँहसे शब्द, आवाज निकालना; शब्द करना (गाने, पेद आदिका); चटखना (लकड़ी); रोकटोक करना; आग्रह करना। स० कि० कहना; आज्ञा देना; जवाब देना; * बुकाना, पुकारना; बुलवाना; * जानना; छेड़छाड़ करना। **मु०** बोल जाना-खतम हो जाना; जवाब देना, कामके लायक न रहना; हिम्मत हार जाना। **बोखि पठाना***-बुला भोजना।

बोलबाना-स० कि० कहवाना; दे० 'बुकवाना'।

बोलबाला-पु० एक सदाबहार पेड़।

बोकोबिक-पु० अभिकवर्गके अधिनायकत्वका समर्थक।

बोकसर-पु० मौकसिरी; एक तरहका बोरा।

बोलाबाखी*-श्री० बातचीत; बातचीतका संबंध।

बोडाना-स० कि० दे० 'बुकाना'।

बोकाबा-पु० दे० 'बुकाना'।

बोली-श्री० बोल, वचन; भाषा, बोल-बाज; बीकामकी आवाज, खरीदारकी ओरसे लगाया गया चीजका दाम;

व्यंग्य, फवरी; पशु-पक्षियोंकी आवाज।-**ठोली**-श्री० व्यंग्य, कटाक्ष (-मारना)।-**बार**-पु० वह बसानी जिसे खेत बिना मिला-पटोके दिया गया हो। **मु०**-कसना-दे० 'बीछी मारना'।-**बोलना**-व्यंग्य करना, फवरी कसना; बीकाममें चीजके दाम लगाना।-**मारना**-ताने देना, आवाजें कसना।

बोबना*-स० कि० बोना।

बोवाई-श्री० दे० 'बोवाई'।

बोवाना-स० कि० दे० 'बोवाना'।

बोह-श्री० डुबकी।

बोहना*-अ० कि०, स० कि० (बीज) बोना, खेतमें बीज छिटकना (अमर०)।

बोहनी-श्री० पहाड़ी बिकी; † बीज बोने, छिटकनेकी क्रिया-‘जुलाहवाँ हुई और बोहनी भी’-अमर०।

बोहित, **बोहय***-पु० नाव, जहाज।

बोहित्य-पु० दे० 'बोहित्य'।

बौब*-श्री० लंबी टहनी; लता।

बौबना*-अ० कि० टहनी फँकना; दूरतक फैलना; आगे बढ़ना; लिपटना।

बौडर*-पु० दे० 'बवंडर'।

बौरी-श्री० कच्चा, छोटा फल, ढोंडी; कली; दमकी, छटाम।

बौमानी*-अ० कि० सपनेमें प्रकाश करना।

बौखल-वि० बदहवास, विक्षिप्त।

बौखलाना-अ० कि० होश-हवासमें न रहना, विक्षिप्तकेने काम करना; क्रोधसे पागल हो उठना।

बौखलाहट-श्री० बदहवासी, विक्षिप्ता; क्रोधावेश।

बौखा-श्री० हवाका तेज होना।

बौख-श्री० दे० 'बौखार'।

बौखार-श्री० हवाके होकेसे तिरछी होकर गिनेवाली बूँदें; वर्षा, झड़ी; भरमार (करना, पचना, होना)।

बौबना*-अ० कि० मतवाला होना।

बौबय-वि० पागल, सनकी।

बौबहा-वि० बौदम, पागल।

बौद-वि० [सं०] बुद्धि-संबंधी; बुद्ध-संबंधी। पु० बुद्धप्रवर्तित धर्मका अनुयायी।-**धर्म**, -**मत**-पु० बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।

बौध-पु० [सं०] बुधका पुत्र, पुत्रवा।

बौबायन-पु० [सं०] कल्पवृक्षके रचयिता एक ऋषि।

बोना-वि० बहुत छोटे या ठिगने कदका बामन। पु० ऐसा आदमी।

बोर-पु० आमकी मंजरी, मोर।

बोरही*-श्री० पागलपन।

बोरवा-अ० कि० आममें बोर लगना, आमका फूलना।

बोरहा*-वि० बौद्ध, पागल।

बीरा-वि० पागल; बीला-भाळा; रूंगा।-**हूँ**-श्री० बाबलापन।

बीराबा*-अ० कि० बावला, पागल हो जाना। स० कि० उन्मत्त करना; बहकावा।

बीराह*-वि० दे० 'बावला'।

बीरी*—वि० स्त्री० बाबली, पगली।
 बीरसिरी—स्त्री० मौलसिरी।
 बीहर*—स्त्री० बध्, दुलहिन।
 ब्यंग—पु० चुटकी, ताना; गूढ़ार्थ।
 ब्यज्ज—पु० दे० 'अञ्जन'।
 ब्यक्ति—स्त्री०, पु० दे० 'व्यक्ति'।
 ब्यजन—पु० दे० 'अञ्जन'।
 ब्यसीतना*—अ० कि० ब्यसीत होना, गुजरना।
 ब्यथा—स्त्री० दे० 'व्यथा'।
 ब्यलीक—वि०, पु० दे० 'व्यलीक'।
 ब्यवहारी—पु० दे० 'व्यवहार'।
 ब्यवहरिया—पु० व्यवहार, लेन-देन करनेवाला।
 ब्यवहारी—पु० व्यवहार, वताव; रुपयेका देन-लेन; मुकदमा; झगडी-गमीमें झरीक होनेका संभव।
 ब्यवहारी—पु० व्यवहार, देन-लेन करनेवाला; व्यापारी; जिसके साथ मैत्री-संभव हो।
 ब्यसज—पु० दे० 'व्यसज'।
 ब्यज—पु० स्रद्ध; दे० 'व्याज'।—झोर—पु० स्रद्ध खाने-वाला।—बद्धा—पु० नफा-नुकसान।
 ब्याज्—वि० स्रद्ध पर दिया हुआ (रक्का)।
 ब्याध, ब्याधा*—पु० दे० 'व्याध'।
 ब्याधि—स्त्री० दे० 'व्याधि'।
 ब्याना—स० कि० (पशुका) जनना। अ० कि० बचा देना।
 ब्यापक—वि० दे० 'व्यापक'। * स्त्री-व्यापकता।
 ब्यापना*—अ० कि० व्याप्त होना। स० कि० पकटना, प्रसना।
 ब्यापार—पु० दे० 'व्यापार'।
 ब्यापारी—पु० दे० 'व्यापारी'।
 ब्यार, ब्यारि—स्त्री० हवा।
 ब्यारी—स्त्री० दे० 'व्याल'।
 ब्याल—पु० दे० 'व्याल'।
 ब्याली—स्त्री० मरिणी। वि० सर्पधारण करनेवाला। पु० शिव।
 ब्याल—पु० रातका भोजन।
 ब्याच*—पु० व्याह।
 व्याह—पु० स्त्री-पुरुषमें विधिवत् पती-पत्नी सम्बन्धी स्थापना, विवाह, पाणिग्रहण।
 व्याहृता—वि० विवाहित; जिसके साथ व्याह हुआ हो। पु० पति। स्त्री० विवाहिता पत्नी।
 व्याहृता*—स० कि० किसीकी विधिवत् पति या पत्नी बनाना; व्याह करना (बेटे या बेटिका)।
 ब्यौच—स्त्री० नम आदिका अपने स्थानसे हट जाना, मोच।
 ब्यौचना—अ० कि० हाथ, पैर आदिके रक्कायक मुक्त जानेसे तत्सका हट जाना, मोच जाना।
 ब्यौत—स्त्री० कपड़ेकी काट, काट-छाँट; ढंग, ढव; उक्ति, उपाय; प्रबंध; योजना; किकायतसारी; * कृतांत, डाक-पकि नामकी ब्यौत मुनि की बल दुपहि पत्थाव-विहारी। मु०—बनना—उपाय होना, बीज निकलना।

ब्यौतना—स० कि० सिलारके लिए कपड़ेकी नापसे काटना।
 ब्यौतना, ब्यौतना—स० कि० दे० 'ब्यौतना'।
 ब्यौताना—स० कि० कपड़ेकी नापके अनुसार (बरजीसे) कटवाना।
 ब्यौपार—पु० व्यापार।
 ब्यौपारी—पु० व्यापारी।
 ब्यौरना*—स्त्री० ब्यौरने अर्थात् बाँझोंकी सुलझाने-सँभारने-की किया वा ढंग।
 ब्यौरना*—स० कि० गुंथे हुए बाँझों, तारों आदिको अलग-अलग करना, सुलझाना—'मजज करि खंजन-नपनि बैठौ ब्यौरति वार'—विहारी।
 ब्यौरा—पु० एक-एक बातकी अलग-अलग कहना, विवरण, तफसील; हाल; अंतर।—(रे)वार—अ० तफसीलके साथ, विस्तारपूर्वक।
 ब्यौसाय—पु० दे० 'व्यवसाय'।
 ब्यौर—पु० रुपयेका देन-लेन, व्यवहार। मु०—कलना—महाजनीका कारवार होना।
 ब्यौरा, ब्यौरिया—पु० रुपयेका देन-लेन करनेवाला, महाजन।
 ब्यौरा, ब्यौरा—पु० दे० 'व्यवहार'।
 ब्यौरिया—पु० दे० 'व्यवहार'।
 ब्यव*—पु० ईद, समूह।
 ब्रज—पु० दे० 'ब्रज'।—भाषा;—मंडल;—राज—दे० 'ब्रज'में।
 ब्रजना*—अ० कि० जाना, गमन करना।
 ब्रज्ज—पु० [स०] स्वर्ग; दिन; शिव; अटार, घोड़ा; एक रोग; बाणकी नोक; सीसा।
 ब्रज्ज*—पु० ब्रज्ज।
 ब्रज्ज(ब्र)—पु० [स०] मथिदानदस्वरूप जगत्का मूल तत्त्व; हिरण्यगर्भ; वरु; सत्य; तत्त्व; प्रणव; ब्रज्जा (समास-मे); ब्रज्जण; तत्पत्त्या; ब्रज्जवर्ग; २० योगोंमेंसे एक; एककी संख्या।—कन्वका;—कन्व्या—स्त्री० सरस्वती; ब्रज्जी-वृत्ति।—कर्म(ब्र)—पु० ब्रज्जणके कर्तव्य कर्म; वेदविहित कर्म।—कला—स्त्री० दाक्षायणीदेवी।—कल्प—पु० ब्रज्जा-की भाव। वि० ब्रज्जाके तुल्य।—कांड—पु० वेदका शान-कांड, ब्रज्जतत्त्वकी सीमांना करनेवाला भाग।—काह—पु० शब्दतुका पक।—कुंड—पु० एक सरोवर।—कुशा;—कोशी—स्त्री० अजमोदा।—कूट—पु० एक पर्वत; विद्वान् ब्रज्जण।—कूर्च*—पु० रजस्वलाके स्पर्श आदिके प्रायश्चित्त में किया जानेवाला एक जत।—कोश—पु० संपूर्ण वेद।—क्षत्र—पु० ब्रज्जण और क्षत्रियमें उत्पन्न एक संकर जाति।—गति—स्त्री० मोक्ष।—गौट—स्त्री० [हिं०] जनेऊकी मुख्य गौ।—गुप्त—पु० पुराने समयके एक प्रमुख ज्योतिषी (जन्म सन् ५१८ ई०)।—गौल—पु० ब्रज्ज।—ग्रंथि—स्त्री० ब्रज्जगौ।—ग्रह—पु० ब्रज्जाराक्षस।—घातक;—घाती(विश्व)—वि० ब्रज्जणकी हत्या करने-वाला।—घातिनी—वि०, स्त्री० ब्रज्जणकी हत्या करने-वाली। स्त्री० अतुले दूसरे दिन रजस्वलाकी संज्ञा।—घोच—पु० वेदपाठ; वेद।—ह्र—वि०, पु० ब्रज्जहत्या करनेवाला।—चक्र—पु० समारचक।—चर—पु० ब्रज्जणकी दूजा-

छिपकलीकी जातिका एक छोटा जंतु, बमनी; एक तरहकी मिक; एक तरहका पीतल।

ब्राह्मण-पु० [सं०] शबतूतका पेय।

ब्राह्मण-पु० [सं०] ब्राह्मणका धर्म, ब्राह्मणत्व; ब्राह्मणोंका समूह; शनि ग्रह। वि० ब्राह्मणके योग्य, अनुरूप।

ब्राह्मण-पु० [सं०] याज्ञवल्क्य।

ब्राह्मी-स्त्री० [सं०] ब्राह्मी शक्ति; सरस्वती, वाणी; दुर्गा; रोहिणी नक्षत्र; ब्राह्मणविषसे विवाहिता स्त्री; वह प्राचीन लिपि जिससे देवनागरी और अन्य आधुनिक भारतीय लिपियोंकी उत्पत्ति हुई। एक प्रसिद्ध बूढ़ी जो आयुर्वेदमें बुद्धिबल मानी गयी है। - कंड-पु० बाराही कंड। - गायत्री-स्त्री-एक वैदिक छंद।

ब्राह्म-वि० [सं०] दे० 'ब्राह्म'।

ब्रिगेड-पु० [सं०] सेनाका एक विभाग।

ब्रिगेडियर-पु० [सं०] ब्रिगेडका नायक। - जनरल-पु० ब्रिगेडियर।

ब्रिटिश-वि० [सं०] ब्रिटेनका, अंग्रेजी। - राज-पु० अंग्रेजी हुकूमत। - द्वीप-पु० इंग्लैंड, वेल्स और स्कॉटलैंड, ग्रेट ब्रिटेन।

ब्रिटेन-पु० [सं०] इंग्लैंड, वेल्स और स्कॉटलैंड।

ब्रीच-पु०, ब्रीचा-स्त्री० दे० 'ब्रीच'।

ब्रीचना-अ० कि० लक्षित होना।

ब्रीचियर-पु० [सं०] छापेके अक्षरों(टाइप)का एक भेद।

ब्रुच, ब्रुवाण-वि० [सं०] अपने आपको कहनेवाला, होनेका दावा करनेवाला (ब्राह्मणब्रुव, क्षत्रियब्रुव)।

ब्रेक-पु० [सं०] पहिये वा गतिचक्रकी गतिकी रोकनेवाला वंश; दे० ब्रेकवान। - ब्रान-पु० रेलमें गाँवका रुकना जिसमें ब्रेक लगा होता है। **ब्रु०** - छगाना-गाथी आदि-रोकनेके लिए ब्रेककी दबाना।

ब्रुडल-पु० [सं०] बिलावती ढंगकी जनाना कुरती।

-पीस-पु० साड़ीके साथ बना हुआ कुरतीका कपडा।

ब्रुडल-पु० [सं०] चित्र, लिखावट, कपीज किये हुए मैटर आदिका तबिये, जस्ते आदिपर बना हुआ ठप्पा; गैरआबाद जगहमें बसनेवालेकी राज्यकी ओरसे दिया जानेवाला जमीनका डुकान; भूमिखंड; गृहसमूह; किसी वस्ते मकानका वह खंड जो अपने आपमें पूर्ण हो।

ब्रुडल-पु० [सं०] इस्पातका चौकीर पतला पत्तर वा डुकान जिससे दाढ़ी बनानेका काम किया जाता है, पत्ती।

ब्रुडल-पु० [सं०] जाल, फंदा।

भ

भ-देवनागरी वर्णमालामें पदमर्कका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ।

भंकार-पु० भीषण शब्द; भनमनाहट।

भंकारी-स्त्री० [सं०] बँस; फगवा।

भंका(कु)-वि०, पु० [सं०] तोड़ने, भंग करनेवाला।

भंकि-स्त्री० [सं०] टूटने, खंडित होनेका भाव।

भंग-पु० [सं०] टूटना, खंडित होना; खंड, विपटन; ध्वंस, नाश (राज्यभंग; सत्त्वभंग); पराजय; संकोच; लहर; झुकाव; अस्वीकार; प्रास; देवापन; छल; कुटिलता; बाधा; भय; सोता; लकड़ा। - **भङ्ग-पु०** विघ्न-बाधाओंकी दूर करना। - **बासा-स्त्री०** हल्दी। - **सार्थ-वि०** कुटिल, छली।

भंग-स्त्री० भँग। - **घुटना-पु०** भँग घोटनेका सोटा।

- **फ़रोश-पु०** भँग बेचनेवाला।

भंग-वि० बहुत भँग पीनेवाला, भंगेडी। - **छाना-पु०** भँग छाननेका स्थान।

भंगड़ी-वि० दे० 'भंगेडी'।

भंगना-अ० कि० टूटना; पराजित होना। स० कि० तोड़ना; नष्ट करना।

भंगरा-पु० एक बूढ़ी, भंगरैया; दे० 'भंगेरा'।

भंगराज-पु० एक चिबिया; भंगरा।

भंगरैया-स्त्री० भुंगराज।

भंगा-स्त्री० [सं०] भँग। - **कट-पु०** भँगका पराग। - **स्वन-पु०** महासारतीक एक राजवि।

भंगान-पु० [सं०] एक तरहकी मछली।

भंगार-पु० दे० 'भंगार'। स्त्री० कृष्ण-करकट, कतवार- 'गहर भेच बनाइया भीतर भरी भंगार'-साही।

भंगारी-स्त्री० [सं०] दे० 'भकारी'।

भंगि-स्त्री० [सं०] देवापन, कुटिलता; लहर; बिच्छेद; ढंग; वेश-विन्यास; बहाना; छल; व्यंग्य; विनय।

भंगिमा(अन)-स्त्री० [सं०] वक्तता, कुटिलता।

भंगी-पु० मैले, कृष्ण-करकटकी सफाई करनेवाली एक अछूत जाति; उस जातिका व्यक्ति। वि० भँग छाननेवाला। स्त्री० [सं०] दे० 'भंगि'।

भंगी(गिर)-वि० [सं०] सम ही जानेवाला, नाशवान्; * भग करनेवाला।

भंगील-पु० [सं०] हानैरिय सभ्यी दोष।

भंगुर-वि० [सं०] भग होनेवाला; अधिक दिन न टिकनेवाला; टेढ़ा, कुटिल; छली, बैरमान। पु० नदीका मोड़।

भंगुरा-स्त्री० [सं०] अतिविषा; प्रियपु।

भंगेडी-वि० भँग पीनेका आदी, बहुत भँग पीनेवाला।

भंगेरा, भंगेला-पु० भँगके रेसोका बना हुआ कपडा।

भंग-पु० [म०] भँगका खेत। वि० भग करने, तोड़ने योग्य।

भंजक-वि०, पु० [सं०] भग करनेवाला, तोड़नेवाला।

भंजव-पु० [सं०] भंग करना, तोड़ना; ध्वंस, नाश करना; द्रुतक्षय। वि० भंग करनेवाला; पीड़ा देनेवाला।

भंजवक-पु० [सं०] टूटना, बिखरना; नाश; पीड़ा; बाधा डालना। * स० कि० तोड़ना।

भंजवा-अ० कि० भंजया जाना; भंजा जाना; बटा जाना।

भंजा-स्त्री० [सं०] अक्षपूर्ण।

भंजाई-स्त्री० भंजनेकी क्रिया या उभरत; नोट आदि भुनानेके लिए दी जानेवाली रकम।

भंजामा-स० कि० तुड़वाना; भुनाना (सिपकेका); भंज-

बाना (रस्ती आदिका) ।
भंजी(विन्)-वि० [सं०] तोड़नेवाला, नष्ट करनेवाला ।
भंदा-पु० बैयन ।
भंदाकी-स्त्री० [सं०] भंदा ।
भंदुक-भंदूक-पु० [सं०] श्वेताक्ष वृक्ष ।
भंड-पु० पात्र, वरतन; 'भंडा'का समासगत रूप ।-**फोड़**-पु० मिट्टीके वरतनोंकी पटककर तोड़ देना वा उनका तोड़ा जाना; भंडाफोड़ ।
भंड-पु० [सं०] भौंर, अदलील बातें कहनेवाला । वि० अदलील बातें कहनेवाला निर्लज्ज; पाखंडी ।-**खपस्वी**-(विन्)-पु० बना हुआ तपस्वी, साधु ।-**हासिनी**-स्त्री० श्रेया ।
भंडक-पु० [सं०] खेंचविच ।
भंडसाक, **भंडसिद्धा**-पु० नाचके साथ होनेवाला एक तरहका गाना ।
भंडन-पु० [सं०] कवच; युद्ध; क्षान्ति, सुराई ।
भंडना-स० क्रि० दे० 'भंडना' ।
भंडभौंच-पु० दे० 'भंडभौंच' ।
भंडरिया-स्त्री० दीवारमें बनी हुई छोटी अलमारी ।
भंडरिया-पु० दे० 'भंडुर' । वि० पाखंडी; भूत ।-**पय**-पु० भूतता, पाखंड ।
भंडसारा-स्त्री० दे० 'भंडसाक' ।
भंडसाक-स्त्री० खाली ।
भंडा-पु० भौंरा, वरतन; रहस्य ।-**फोड़**-पु० भेद, छिपी बातका प्रकट हो जाना । **झुं**-फूटना-भेद खुलना ।
भंडाकी-स्त्री० [सं०] दे० 'भंदाकी' ।
भंडाना-स० क्रि० बीजोंकी तोड़ना-फोड़ना; उछल-फूट भचाना; हूँदना ।
भंडार-पु० ढेर, खजाना; वह स्थान जहाँ घरका अन्नादि रखा जाय, कोठार; पाकशाला; पेठ; अग्निकोण ।
भंडारा-पु० साधुओंका भोज; पेठ; भंडार; * समूह ।
झुं-खुल जाना-पेट फटकर अंतोंका बाहर निकल जाना ।
भंडारी-पु० भंडारका अध्यक्ष, तोषाखानेका दारोगा; रसोइया; * खजांची । स्त्री० दीवारमें बनी छोटी अलमारी; छोटी कीठरी; * कोष, खजाना ।
भंदि-स्त्री० [सं०] लहर । पु० सिरिसका पेड़ ।
भंजित-पु० [सं०] एक क्षत्रिय जिनसे भालिष्यायन नामका गोत्र चला । वि० तिरस्कृत ।
भंजिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] छल, भोला ।
भंजिर-पु० [सं०] सिरिसका पेड़ ।
भंजिल-पु० [सं०] माय्य; कुशल; सदेश-बाहक; शिखी; सिरिसका पेड़ ।
भंजिहा-पु० भोर ।
भंजी-स्त्री० [सं०] भंजिहा; सिरिसका पेड़ ।
भंजीसकी-स्त्री० [सं०] दे० 'भंजी' ।
भंजीर-पु० [सं०] चौलाई; सिरिसका पेड़; वटवृक्ष ।
-कसिका-स्त्री० भंजीठ ।
भंजीरी-स्त्री० [सं०] भंजिहा ।
भंजील-पु० [सं०] भंजिहा ।

भंजुआ-पु० दे० 'भंजुआ' ।
भंजुक, **भंजुक**-पु० [सं०] भाकुर मछली; श्वेताक्ष वृक्ष ।
भंजुविचा-पु० दे० 'भंजुविचा' ।
भंजीका-पु० हास्यरसकी भरी कविता; भौंरोंके गानेका गीत ।
भंजिल-पु० [सं०] माय्य; सदेश-बाहक; लक्षणाते हुए चलना ।
भंजीरी-स्त्री० बबूलकी जातिका एक पेड़ ।
भंज-पु० [सं०] चूल्हेका मुँह; धुआँ; मक्षिका ।
भंजना-स० क्रि० डरना ।
भंजराक्षिका-स्त्री० [सं०] मच्छक ।
भंजराक्षी-स्त्री० [सं०] मच्छक ।
भंजा-पु० बड़ा बिल वा छेद । स्त्री० [सं०] दुग्धी ।
भंजाना-स० क्रि० माय, बैल आदिका जोरसे खोलना, रेंधाना ।
भंजार-पु० [सं०] गाय आदिके रेंधानेका शब्द ।
भंजीरी-स्त्री० एक तरहका कसिया; फिरेरी, फिरकी ।
भंजिरी-स्त्री० भय, डर ।
भंजर, **भंजरा**-पु० बड़ी मधुमक्खी; भिड़ ।
भंजना-स० क्रि० भ्रमण करना, घूमना; चक्कर लगाना, भेंदराना ।
भंजर-पु० भ्रमर; जलावतें; गहड़ा ।-**कली**-स्त्री० कील-में जकी हुई वह कड़ी जो सब ओर घूम सके (वह प्रायः पशुओंके गलेकी जंजीरमें लगायी जाती है) ।-**जाल**-पु० सांसारिक जाल ।-**भीख**-स्त्री० घूम-फिरकर भोगी जानेवाली भीख, मधुकरि । **झुं**-**में पड़ना**-चक्कर, बल्लेमें पड़ना, बबड़ा जाना ।
भंजरा-पु० भ्रमर, भौंरा; लट्ट ।
भंजरी-स्त्री० जलका चक्कर, भवर; सिर, बाड़ी तथा पशुओंकी पीठ आदिपर बालोंका एक जैदपर घुमाव; भौंवर, परिक्रमा; गहत; घूम-घूमकर होड़ा बेचना ।
भंजाना-स० क्रि० घुमाना; फेरमें डालना, भ्रममें डालना ।
भंजारा-वि० घूमनेवाला, भ्रमणशील ।
भ-पु० [सं०] नक्षत्र; ग्रह; शुक्राचार्य; राशि; शुक्र; पहाड़; आंति; भ्रमण; भ्रमर ।-**कक्षा**-स्त्री० नक्षत्रोंका गमनमार्ग ।-**फूट**-पु० राशियोंका समूह जिससे बिबाहकी गणनामें वर-कन्याका शुभाशुभ जाना जाता है ।-**गण**-पु० छंदःशास्त्रमें माना हुआ एक गण जिसमें आदिगण शुभ और अंतके दो लघु होते हैं; राशिचक्र; ग्रहका राशिचक्रमें परिभ्रमण ।-**शोल**-पु० नक्षत्रोंका गमनमार्ग ।-**चक्र**-पु० राशिचक्र; नक्षत्रचक्र ।-**पंजर**-पु० आकाश ।-**भंडल**, **-बर्षा**-पु० दे० 'भचक्र' ।
-लता-स्त्री० राजबला लता ।-**समूह**-पु० नक्षत्र-समूह ।-**सूचक**-पु० ज्योतिषी ।
भंजना-पु० भौंर; बड़े माई या बराबरवालेका संबोधन ।
-जी-पु० नौकर भालिके सामने उसके बेटे वा नवयुवक भालिकेको वस शब्दसे संबोधित करते हैं ।
भंजवाई-स्त्री० दे० 'भोजवाई' ।
भक्ष-भक्ष-स्त्री० रह-रहकर होनेवाली चमक; रह-रहकर

वेगसे निकलनेवाले धुँएँ का शब्द । अ० रह-रहकर होनेवाली चमक वा धुँएँ के निकलने के शब्द के साथ ।

अक-अक्षर—अ० कि० 'अक-अक्षर' शब्द करके जरूरी वा रह-रहकर चमकना ।

अकभूर—वि० उबड़, सूढ़—'मेम-पीर-कवा कहीं कहा अकभूर लो'—वन० ।

अकभूर—अ० अनाज के सफ़ाई की संघ ।

अकसना, **अकसाना**—अ० कि० साध पदार्थका अधिक समय तक पड़े रहने के कारण खड़ा और बरबूर हो जाना । **अकस**—पु० बराबरी चीज, होना (बच्चों को छराने के लिए कहा जाता है) ।

अकुआ, **अकुआ**—वि० मूढ़, बतपुत्रि, जिसकी अक्ल गुम हो गयी हो ।

अकुआना, **अकुआना**—अ० कि० अकुआ बनना । स० कि० चकपका देना ।

अकुआ—पु० तोपमें बणी भरनेका गज ।

अकुआ—अ० कि० माराज होना, रुठना, धुँध होकर मुँह ढाक लेना—'जिन्हीने मनावा, बरी ठहर जी, यों ही अकुआने लगी'—व्य० ।

अकोसना—स० कि० भक्षण करना; जल्दी-जल्दी खाना, दूँसना ।

अकोस—वि० अकोसनेवाला ।

अक्षिका—अ० [सं०] क्षीर ।

अक्षुड—पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।

अक्ष—वि० [सं०] अनुरागी, बफादार; अनुगत; भक्तियुक्त; विभावित; चाहा हुआ; पूजित; पकाया हुआ । पु० भोजन; अन्न; भात; भाग; उपासक, सेवक ।—**कंस**—**पात्र**—पु० भातकी थाली ।—**कर**—पु० एक तरहका धूप ।—**कार**—पु० रसोइया ।—**सूह**—पु० बौद्ध भिक्षुओंकी भोजनशाला ।

—**छंद**—पु० भोजनकी इच्छा, भूख ।—**जा**—अ० अमृत ।—**तूर्य**—पु० भोजनके समय बजाया जानेवाला एक प्राचीन वाद्य ।—**दाता**—**दायक**—**दायी**—**(विज्)**—वि०, पु० भरण-पोषण करनेवाला ।—**दास**—पु० वह दास जिसे अपने बदलेमें मालिकसे केवल भोजन मिलता रहे ।—**द्वेष**—पु० मंदाभि ।—**पुलाक**—पु० भातका कौर; मई (?) ।—**बच्छक**—वि० दे० 'भक्तवत्सल' ।

—**मंड**—**मंडक**—पु० भातका मई ।—**वत्सक**—वि० भक्तकी प्यार करनेवाला, भक्तके प्रति स्नेहयुक्त ।

—**शरण**—पु०,—**शाका**—अ० भोजनशाला; धर्मोपदेशका स्थान ।—**सिक्थ**—पु० दे० 'भक्तमंड' ।

अक्षा—वि०, पु० [सं०] पूजक, आराधक ।

अक्षा—अ० भक्ति ।

अक्षाकाक्षा—अ० [सं०] खानेकी इच्छा, भूख ।

भक्ति—अ० [सं०] सेवा; आराधना; ईश्वर या पूज्य व्यक्ति-के प्रति अत्यनुराग; भक्ति; विभाग (नैते, क्षेत्रभक्ति); विभागरेखा; रोगप्रवृत्ति; एक वृत्त ।—**गम्भ**—वि० सेवासे प्राप्त (शिव) ।—**छेद**—पु० रेखाओं द्वारा की जानेवाली विचकारी; वैष्णवके विह्व (तिलक, मुद्रा आदि) ।—**पूर्वक**—अ० भक्तिवहित ।—**प्रवच**—वि० भक्तिमें लीन ।—**आजग**—वि० भक्तिके योग्य, अद्वय ।—**आर्वा**—पु० मोक्षप्राप्तिके

तीन मर्गोंमेंसे एक ।—**सौर**—पु० भक्तिरूप योग, भक्तिके द्वारा भगवान्‌की पानेकी साधना ।—**हस**—पु० ईश्वरके प्रति उत्कट अनुराग, रति ।—**छ**—वि० बफादार, विश्वासी (सोफा, नौकर) ।—**सूत्र**—पु० सांख्यिकृत भक्तिप्रतिपादक पुनःसंघ ।

भक्तिमान्—**(भव)**—वि० [सं०] भक्तियुक्त । [अ० 'भक्ति-मयी']

भक्तोपसाधक—पु० [सं०] रसोइया, पाचक ।

भक्षण—पु० [सं०] भोजन; खाना; भक्षण ।—**कार**—पु० इच्छा; रसोइया ।—**पत्रा**—अ० पानकी बेल ।

भक्षक—वि० [सं०] खानेवाला, भक्षण करनेवाला; पेटू । पु० आहार ।

भक्षटक—पु० [सं०] छोटा गोखरू ।

भक्षण—पु० [सं०] खाना; दाँतोंसे काटकर खाना । वि० खानेवाला ।

भक्षणीय—वि० [सं०] भक्षण करने योग्य ।

भक्षना—स० कि० भक्षण करना, खाना ।

भक्षयिता—**(वृ)**—वि० पु० [सं०] भक्षण करनेवाला ।

भक्षिका—अ० [सं०] आहार; खाना (समासांतमें) ।

भक्षित—वि० [सं०] खाया हुआ । पु० आहार ।—**सौच**—पु० नूतन ।

भक्षी—**(क्षिन्)**—वि० [सं०] खानेवाला ।

भक्ष्य—वि० [सं०] खानेयोग्य । पु० वह जो खाया जाय, आहार ।—**कार**—पु० रसोइया, पाचक ।—**वस्तु**—अ० खानेकी चीज ।

भक्ष्याभक्ष्य—वि० [सं०] खाद्य-अखाद्य (पदार्थ) ।

भक्ष्य—पु० भक्ष्य, आहार ।

भक्षना—स० कि० खाना, भक्षण करना ।

भक्षी—अ० एक वास ।

भर्गवर—पु० [सं०] शुद्धावर्तके किनारे होनेवाला फोफा जो फूटनेपर नासूर हो जाता है ।

भग—पु० [सं०] सर्व; शिवका एक रूप; चंद्रमा; द्वादश आदित्योंमेंसे एक, ईश्वरकी ९ विभूतियों—देव्येय (गणिमादि), वीर्य, वंश, श्री (सौभाग्य), ज्ञान और वैराग्य; सौभाग्य; माहात्म्य; इच्छा; क्रांति; मोक्ष; धर्म; योगिनी; शुद्ध और अद्वैतकी बीचका स्थान; उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र; धन; यज्ञ ।

—**कास**—वि० संतोषका इच्छुक ।—**ज**—पु० शिव ।—**वृत्त**—पु० ग्राम्यश्रोतिषपुरका एक राजा जो कुशक्षेत्रके युद्धमें पांडवोंसे लड़कर मरा था ।—**द्वारण**—पु० एक रोग ।

—**देव**—वि० कामी ।—**दैवत**—पु० उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।—**नंदन**—पु० विष्णु ।—**नासा**—अ० भगोष्ठोंके ऊपरके संघिसानके पासका एक भाग ।—**नेत्रज**—पु० शिव ।

—**अक्षक**—पु० सेंच आ, कुटना ।—**शास्त्र**—पु० कामशास्त्र ।—**हा**—**(हव)**—**हारी**—**(रिन्)**—पु० भिक्ष; विष्णु ।

—**क्षिपिका**—अ० दे० 'भगनास' ।

भगई—अ० कमरमें लपेटकर पहनी जानेवाली चिट, कंगोटी ।

भगवत्—वि० भक्त, भगवत्प्रभजनमें लगा रहनेवाला; निरा-मिषमोत्री । [अ० 'भगतिन'] पु० वैष्णव साधु; राज-पूतानाकी एक जाति, भगतिवा; होलीमें बनाया जानेवाला

एक तरफका खान। -बछलक-वि० दे० 'मत्तलस्तक'।
 -बाछ-पु० लोहे मचानेवाला।
 भगकि, भगती-की० दे० 'भक्ति'।
 भगविद्या-पु० राजदूतानामें बहनेवाली एक जाति जो
 गाने-बजानेका पेशा करती है।
 भगवत्, भगवत्-की० बहुतसे लोगोंका बदबवास्त होकर
 एक साथ भागना (पहना-भचना)।
 भगवत्-वि० दे० 'भग्न'।
 भगवा-पु० मानवा। अ० कि० दे० 'भागवा'।
 भगनी-की० दे० 'भगिनी'।
 भगव-पु० दे० 'भगल'।
 भगवती-पु० संत।
 भगवना-अ० कि० खरमें रखे हुए अनाजका गरमीसे
 सड़ने लगना।
 भगल-पु० छल, धोखेबाजी; शोबीमरी।
 भगली-वि० छली; शोबीमरी करनेवाला।
 भगवत्-वि० दे० 'भगवान्'।
 भगवती-की० [सं०] दुर्गा; कस्मी; देवी; सम्मान्य स्त्री।
 भगवत्पत्नी-की० [सं०] गंगा।
 भगवदीय-पु० [सं०] भगवद्भक्त।
 भगवद्-भगवद् (भगवान्)का समासगत रूप। -गीता-
 की० कुक्षेत्रके मैदानमें कृष्ण द्वारा अर्जुनको दिया गया
 ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग-विषयक उपदेश। -हुम-पु०
 महावीरि वृक्ष। -भक्त-वि०, पु०, भगवान्का भक्त,
 वैष्णव। -भक्ति-की० भगवान्को भक्ति। -विभक्त-
 पु० भगवान्की मूर्ति।
 भगवन्मय-वि० [सं०] भगवान्में तन्मय।
 भगवा-पु० एक रंग, काषाय; हल रंगमें रंगा हुआ वस्त्र।
 भगवान्(जन)-वि० [सं०] ऐश्वर्यवि श्रद्धागजुक्त;
 पूज्य। पु० परमेश्वर; विष्णु; शिव; बुद्ध; जिन; पूज्य,
 महिमाशाली पुरुष।
 भगवत्-पु० [सं०] बवासीर।
 भगवत्-की० भगनेकी क्रिया।
 भगवत्-पु० वर्षाके कारण अमीन धंसनेमें हो जानेवाला
 गड्ढा; बह गड्ढा जो कुर्छा बैठ जानेके बाद हो जाता है।
 भगवाना-स० कि० बरा-भमकाद भगनेको विवश करना,
 खदेड़ना, हुतकारना; की, बच्चे आदिको बहकाकर साथ
 ले जाना। * अ० कि० भागना।
 भगाल-पु० [सं०] मनुष्यकी खोपड़ी।
 भगाली(लिङ्ग)-पु० [सं०] मनुष्यकी खोपड़ी धारण
 करनेवाला, शिव।
 भगिनिका-की० [सं०] बहिन।
 भगिनी-की० [सं०] बहिन, सहोदरा; भाग्यवती स्त्री।
 -भक्ति, भक्ति(ई)-पु० बहनीर्ह। -सुत-पु० मांजा।
 भगिनीय-पु० [सं०] मांजा।
 भगिरथ-पु० [सं०] सर्वेश्वरी राजा दिक्षीपके पुत्र जो
 कहा जाता है कि धीरे तप करके गंगाको स्वर्गसे पृथ्वीपर
 लाये। -कम्पा-की० गंगा। -भयल-पु० महाप्रवास,
 असाधारण प्रयत्न। -सुता-की० गंगा।
 भगेव, भगेव-वि० दे० 'भगोव'।

भगेव-पु० [सं०] ऐश्वर्यका देवता।
 भगोवा-वि० भागा हुआ; रणभूमिसे भागनेवाला, बरपोक।
 भगोव-पु० [सं०] भगके बहरी हिस्सेका किनारा।
 भगोव-वि० दे० 'भगोव'।
 भगोवती-की० दे० 'भगवती'।
 भगोव-वि० भगेव; भगवा रंगमें रंगा हुआ, गेवजा।
 भगवत्-वि० रणभूमिसे भागा हुआ, भगोव।
 भगव-वि० भगोवा, बरपोक।
 भग्न-वि० [सं०] टूटा हुआ, खंडित; चूर किया हुआ,
 नष्ट; रीका हुआ; बराबा हुआ; बतारा। पु० पैरका
 अक्षिभंग। -क्रम-वि० जिसका क्रम भंग हो गया हो।
 -विच्छ-वि० भग्नहृदय, निराश। -वेष्ट-वि० विकल
 होकर चेष्टासे विरत हो जानेवाला। -ताल-पु० एक
 तरफका ताल (संगीत)। -दृष्ट-वि० जिसके दाँत टूट
 गये हों। -वृष्ट-वि० जिसका धर्म लौक दिया गया हो,
 गलितगर्भ। -वृष्ट-पु० युद्धमें हार होनेकी खबर लाने-
 वाला दूत। -निद्र-वि० जो सोते समय जगा दिया गया
 हो। -पाव-पु० पुनर्वसु, उत्तराषाढा, कृत्तिका, उत्तरा-
 कात्युनी, पूर्वा माघपदा और विशाखा नक्षत्र जिनमें भरने
 पर दिपाव दीप लगता है। -पृष्ठ-वि० जिम्मेकी पीठ,
 रीढ़ टूट गयी हो; सामनेसे आनेवाला। -प्रक्रम-पु०
 रचनाका क्रम बिगड़ जाना, काव्यका एक दोष।
 -प्रतिज्ञ-वि० जिसने अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी हो।
 -भना(गस्)-वि० भग्नहृदय, हतोत्साह। -भनो-
 दय-वि० विकल-यनोदय, जिसका मनोदय भंग हो गया
 हो, नाकाम। -भान-वि० अनाश, तिरस्कृत। -विषा-
 णक-वि० जिसके सींग टूट गये हों। -प्रस-वि० जिसका
 जत टूट गया हो। -श्री-वि० गतसीर्दय। -श्रृंग-वि०
 दे० 'अश्रुविषाणक'। -संधि-वि० जिसकी हड्डीका जोड़
 टूट गया हो। पु० एक रोग। -संधिक-पु० मक्खन
 निकाला हुआ दही, घोल। -हृदय-वि० जिमका हृदय,
 दुःखादिके कारण, टूट गया हो; निराश; उदास।
 भगवत्-पु० [सं०] मूल श्रव्यका और श्रवण; समान विभागों-
 मेंसे कुछ भग।
 भगवात्मा(मन्त्र)-पु० [सं०] चंद्रमा।
 भगवापव-वि० [सं०] जिसने मकटों, शत्रुओपर विजय
 प्राप्त कर ली हो।
 भगवापव-पु० [सं०] संहर।
 भगवा-वि० [मं०] हताश।
 भगनी-की० दे० 'भगिनी'।
 भगोत्साह-वि० [सं०] जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो।
 भगोद्यम-वि० [सं०] जिसका प्रयत्न विकल हो गया हो।
 भक्त-की० भक्तनेका भाव या क्रिया।
 भक्तवा-अ० कि० लेंगकाते हुए चलना।
 भक्त-पु० दे० 'भक्त'।
 भक्तक-वि०, पु० दे० 'भक्त'।
 भक्तक-पु० दे० 'भक्त'।
 भक्तवा-स० कि० खाना, भक्षण करना।
 भक्त-वि०, पु० [सं०] भजन-भक्ति करनेवाली; विभाग
 करनेवाला।

अक्षर-पु० [सं०] सेवा, आराधना; भगवान् या उपास्य देवताका नाम अपना, स्मरण; भगवान् वा किसी देवताकी स्तुतिमें रचित पद (हिं०); स्तव; विभाजन । —**पूजन-पु०** पूजा-उपासना । —**वारिक-पु०** बौद्ध विहारका एक कर्मचारी ।

अजना-सं० कि० सेवा, भक्ति करना; उपास्य देवताको याद करना; अपना; * जाश्व सेना । * अ० कि० भागना; पहुँचना ।

अजनार्णव-पु० [सं०] अजनका, भगवान्को याद करनेका आनन्द । वि० अजनमें तल्लीन रहनेवाला ।

अजनागनी-वि० अजनानन्द, भगवद्भजनमें मस्त रहनेवाला ।

अजनी-वि० अजन गानेवाला ।

अजनीक, अजनोपदेशक-पु० अजन गायक उपदेश करनेवाला ।

अजनीय-वि० [सं०] सम्मान्य, पूज्य ।

अजाना-सं० कि० भगना । अ० कि० भागना ।

अजितव्य-वि० [सं०] दे० 'अजनीय' ।

अजियादर-सं० की० धी, रही आदिके साथ पकाया हुआ चावल ।

अजैव्य, अजय-वि० [सं०] दे० 'अजनीय' ।

अट-पु० [सं०] बौद्ध; सैनिक; एक वर्षसंकर जाति; दास; कुचर । —**घेटक-पु०** फौजकी ठुकी । —**बलाग्र-पु०** वीर; सेना । —**मेर-पु०** दे० 'अटमेर' । —**मेरा-पु०** मुठमेर, मिर्जत, टक्कर; अचानक सामना या मेट होना ।

अटई-सं० झूठी तारीफ, चापलसी, भाटपन ।

अटकटाई-सं० दे० 'अटकटैया' ।

अटकटैया-सं० एक बनीयति, कंटकारी ।

अटकना-अ० कि० रास्ता भूलना; रास्ता भूलकर इधर-उधर फिरना; व्यर्थ घूमना; तलाशमें फिरना; भ्रममें पड़ना; * चूक जाना ।

अटका-पु० व्यर्थ घूमनेकी क्रिया; चक्कर—'द्वार न पावे सड़का फिरि फिरि अटका खाय'—साली ।

अटकाना-सं० कि० गलत रास्ता बताना, बहकाना ।

अटकैया-पु० अटकनेवाला । की० दे० 'अटकटैया' ।

अटकीहाँ-वि० अटकानेवाला ।

अटसीतर-पु० एक चित्रिका ।

अटनास, अटबाँसि-सं० एक कृता ।

अटनेर-पु० सिंधुके पूर्वी तटपर स्थित एक प्राचीन राजधानी ।

अटनेरा-पु० अटनेरका रहनेवाला; वैद्यकी एक उपजाति । **अटमटी-देखते** हुए भी देखलाई पड़ना—'अटमटी लागी जो पै बीच बाझी नसै'—घन० ।

अटा-पु० गंदा, बैगल ।

अटियारा-पु० दे० 'अटियारा' ।

अटियारी-सं० दे० 'अटियारी'; एक संकर रागिनी ।

अटिहारिन, अटिहारी-सं० दे० 'अटिहारिन' ।

अट्ट-सं० सली, अलि (बराबरकी बीका संवोधन) ।

अट्टारा-पु० वैद्यकी एक उपजाति ।

अटैया-सं० दे० 'अटकटैया' ।

अट्ट-पु० [सं०] मांड; पंडित; दाक्षिणात्य ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; स्वामी (मांडकादिमें राजाओंका संवोधन) ।

—**नाशापण-पु०** वेणीसेधार (संस्कृत) नाटकके रचयिता ।

अट्टाचार्य-पु० [सं०] दर्शनशास्त्रका पंडित, सम्मानित अध्यापक (पदवीरूपमें प्रयुक्त); बंगाली ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

अट्टार-पु० [सं०] पूज्य, माननीय (पदवीरूपमें प्रयुक्त) ।

अट्टारक-वि० [सं०] पूज्य, माननीय । पु० राजा (ना०); मुनि; तपस्वी; पंडित; सूर्य; देवता । —**बार-बासर-पु०** रविवार ।

अट्टारिका-सं० [सं०] सम्मान्य स्त्री, देवी ।

अट्टि-सं० [सं०] श्रीधर स्वामीके पुत्र मट्टिकृत (कुछ विद्वानोंके मतसे मरुहरिकृत) संस्कृत महाकाव्य ।

अट्टिनी-सं० [सं०] अनभिषिक्त रानी; ब्राह्मणी; सम्मान्य स्त्री ।

अट्टोजि-पु० [सं०] सिंहातकीमुदीके कर्ता ।

अट्टा-पु० बड़ी मट्टी; ईंटें आदि एकानेका पजाबा; बड़ा चूल्हा जिसपर कड़ा चढ़ाकर गुब्ब, मौजके लिए पूरियाँ आदि बनायी जायें ।

अट्टी-सं० खास कामोंके लिए बना हुआ बड़ा चूल्हा; मद्य बनानेका स्थान; * मॉद ।

अट्ट-वि० अट्ट—'साधु-मतो क्यों मानै दुरमति जाकी सबै स्यानि परवी अट्ट'—घन० ।

अट्टियाना-अ० कि० माटा जाना ।

अट्टियारखाना-पु० अट्टियारीका घर; वह जगह जहाँ बहुत खोरगुल होता हो; कमीने, अस्थव्य कोनोंकी बैठक ।

अट्टियारव, अट्टियारिन, अट्टियारी-सं० अट्टियारेकी स्त्री; लड़ाकी औरत । **मु०** (अट्टियारिनी)की तरह लड़ना—विहाते, उंगलियों आदि चमकाते और घंटी गालियाँ बकते हुए लड़ना ।

अट्टियारपन-पु० अट्टियारेका पेशा; अट्टियारीकी तरह लड़ना-झगड़ना, कमीनापन ।

अट्टियारा-पु० सरायमें यात्रियोंके ठिकने, खाने-पीनेका प्रबंध करनेवाला ।

अट्टियाल-पु० अट्टा ।

अट्टियारिन-सं० अट्टियारिन ।

अट्ट-पु० [सं०] एक वर्षसंकर जाति (प्रा०) ।

अट्टक-सं० चमक-दमक, अट्टकीलापन; अट्टकनेका भाव, शिक्क । —**दूर-वि०** चमक-दमकवाला ।

अट्टकना-अ० कि० प्रखलित होना, बल खटना, जोरमें जलने लगना; क्रुद्ध होना; चौकना, विदकना ।

अट्टकाना-सं० कि० आगकी तेज करना, प्रखलित करना; उत्तेजित करना, बढ़ावा देना; बहकाना; चौकाना, छराना । **अट्टकीला-वि०** चमक-दमकवाला, अट्टकदार; अट्टकनेवाला ।

—**एन-पु०** चमक-दमक; अट्टकीला होनेका भाव ।

अट्टकैल-वि० अट्टकनेवाला, चौकने, विदकनेवाला ।

अट्टभट्ट-सं० बड़े ढोल, पोली चीज आदिकी आवाज; किसी चीजके जोरसे गिरनेकी आवाज; बकवास ।

अट्टभङ्गाना-सं० कि० 'अट्ट-भट्ट' आवाज पैदा करना । अ० कि० 'अट्ट-भट्ट' आवाज होना ।

अट्टभट्टिया-वि० बड़ी, डींग मारनेवाला ।

अवधि-३० एक दिवस पौवा, बमोज।

मधुबूजा-पु० एक बिंदू जाति जो दाना भूनने और भाव शोधनेका काम करती है, मुख्यता ।

भक्त्या-यु० द्वे० 'भक्त्या' ।

अथसाहसि, अथसाहसि-साहस माय ।

भद्वर-पु० शौका, वरतन ।

अकारः—पु० द्वे० 'अकार' ।

भवास्त-जी० दिलमें भरी हुई बातें, शुवार, बिल्का मुखार
(निकाळना) ।

भविष्य-पु० चौर ।-ई०-जी० चोरी । ज० चोरकी तरह
-‘इत उत चितै चला भविष्यई’-रामा० ।

મહીનું-સીંઘ વડાવા ।

अब्जना-पु० सफरदार; रडियोंकी दफाली करनेवाला ।

भबेरिया-पु० दे० 'मॅबेरिया'।

भङ्ग, भङ्गुर-पु० प्राकारोंकी एक (नीची) आति जो बाजियों-की देखदर्शन आदि कराने तथा अभिष्य बतलानेका काम करती है; इस जातिका व्यक्ति-‘भङ्ग कहाँ सुन भङ्गुरी बिन बरसे ना जाय’ ।

भजन-पु० [सं०] कहना, कथन; वर्णन ।

अणना*—स० क्रि० कहना, वर्णन करना ।

अणित्त-वि० [सं०] कहा हुआ, कथित । पु० कथन; वर्णन ।

भयिणा(तु)-वि०, पु० [सं०] बोलनेवाला, वक्ता ।

भणिसि-ली० [सं०] कथन; वार्ता ।

भत्तरीक-पु० मथुरा और इंदौरके बीचका एक गाँव ।

भक्तवान्-पु० व्यासके संबंधमें होनेवाली कथा ज्योनार ।

मत्तार*—पु० दे० 'मत्तार' ।

भस्तीजा-पु० भार्यका बेटा ।

भस्तीजी-खी० भाईकी बेटी ।

भक्तुआर्-पु० पेठा ।

भत्ता-पु० कर्मचारीको दिवा जानेवाला सफर-खर्च या भोजन-व्यय; कोई वैधी रकम जो कर्मचारीको बेतनके अतिरिक्त मिले ।

अद्वैत-वि० [सं०] पूजित, सम्मानित; सन्न्यस्त । पु० बौद्ध
मिक्ष ।

भारत - वि० भादोंमें होनेवाला । श्री० भादोंमें होनेवाली फसल ।

महाक-पु० [सं०] सौभाग्य, अभ्युदय ।

भवावर-पु० वर्तमान ग्वालियर राज्यके अंतर्गत एक प्रदेश ।

भवुना†-पु० ढेर (मृग०) ।

अर्द्धसं-वि० भोका, वेडंगा ।

भवेत्सिद्धः—वि० दे० 'भद्रस' ।

भदौह*—वि० दे० 'भदौहाँ' ।

भक्षीहर्षा—वि० मादोमें होनेवाला (आम, अमरुद इ०) ।

भदौरिया-पु० भदाबरका रहनेवाला; क्षत्रियोंकी एक उपजाति ।

भक्ष-वि० वेदंगा, भौका, वेधैल; अशिष्ट; अयुक्त ।-पक्ष-
पु० वेदंगापन; अशिष्टता; अयुक्तता ।

भद्रंकर-वि० [सं०] मंगलकारक, शुभ ।

भद्रंकरण-पु० [सं०] मंगलसाधन

भद्र-वि० [सं०] मङ्ग, सधु; छुम, मयंकवारी; लेड;
सुंदर । पु० मंगळ, सुकसौभाग्य; सोमा; जीवा; शिव;

यक्षदेवः मोथाः उत्तर दिशाका दिग्मन्त्रः संजनः शुभेवः
एक करण (ज्यो०) : बैलः एक प्रकारका हाथीः देवदारः

कार्य; एक देववर्ग; स्वरसाधनकी एक प्रणाली; * सिर, दाही-खैछ आदिका मंडन, आवाकरण । * बि० जिसको सिर,

शब्दी जादिका मुंढन पुया हो—‘छीन्हों हृदय क्क्याय सर
पय प्रलय भव भये क्यों मारि’—सर।—कंद-प० श्लोक।

-कपिल-पु० शिव । -काय-वि० सुंदर, भव्य देह-
वाला । -कायक-वि० योग्यकायक । प० महाकायक ।

अङ्गवर्ती-खी० [सं०] कृष्णकी एक पुत्री; हथिनी; कटक; वेसा।

अङ्गवाह(वह)-वि० [सं०] दे० मंगलमय। पु० देववाह।

अङ्गाव-पु० [सं०] बलराम।

अङ्गा-वि० खी० [सं०] अङ्ग। खी० नाकाक्षरंगा; एक विशेषकी द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियाँ; कल्पि ज्योतिषकां शुभ कार्यके क्रिद एक निविद योग; शुभद्रा; दुर्गा; माया; हल्ली; कटक; अनन्ता; अपराजिता; कृष्णा; जीवन्ती; नीली; रास्ना; एक वृत्त; दृष्टी। सु०-उत्तरना-मरम्मत करना, सजा देना।-लम्बाना-विज पकना, बाधा उपस्थित होना।

अङ्गाकरण-पु० [सं०] अङ्ग नामक करण; सुंजन।

अङ्गाकृति-वि० [सं०] सुंदर, मज्ज आकृतिवाला।

अङ्गाकष-पु० [सं०] स्रज।

अङ्गानंद-पु० [सं०] स्वर-साधनकी एक प्रणाली (संगीत)।

अङ्गाभङ्ग-वि० [सं०] भला-बुरा।

अङ्गारक-पु० [सं०] अठारह क्षुद्र दीपोंमेंसे एक।

अङ्गारुपप्रिका-खी० [सं०] गंधाली।

अङ्गाली-खी० [सं०] गंधाली।

अङ्गावर्ती-खी० [सं०] कटक; महाभारतक एक नगरी।

अङ्गावह-वि० [सं०] मंगलकारक।

अङ्गावय-पु० [सं०] चंदन।

अङ्गाव-पु० [सं०] जंबूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक; नमुदेवका एक पुत्र।

अङ्गासन-पु० [सं०] राजसिंहासन; योगका एक आसन।

अङ्गिका-खी० [सं०] अङ्गा तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी); योगिनी दशाके अंतर्गत पौचमी दशा; एक वृत्त।

अङ्गी(त्रिज्)-वि० [सं०] आर्यशाली।

अङ्गेस-पु० [सं०] शिव।

अङ्गेव-पु० [सं०] शिवका एक रूप।

अङ्गेला-खी० [सं०] बही इलायची।

अङ्गेदनी, अङ्गेदनी-खी० [सं०] बला; नागबला।

अनक-खी० धीमी, अस्पष्ट ध्वनि; उबती हुई खबर (पकना)।

अनकना-अ० कि० बोलना।

अनना-सं० कि० कहना।

अनभमाना-अ० कि० 'अन-अन' आवाज करना; गुंजार करना।

अनभमाहट-खी० धीमी आवाज; गुंजार।

अनित-वि०, पु० दे० 'अणित'।

अनिति-खी० दे० 'अणित'; रचना।

अबका-पु० बर्क खींचनेका यंत्र।

अबकी-खी० छूटी धमकी, बंद-बुझकी।

अभञ्ज, अभञ्ज-खी० भीड़-भाड़, पक्षम-पक्षा।

अभक-खी० भस्मनेका भाव; भस्म उठाना; तेज बढ़ा।

अभकना-अ० कि० जोरसे जल उठाना; भस्मना।

अभका-पु० दे० 'अबका'।

अभकी-खी० दे० 'अबकी'।

अभरना-अ० कि० डराना; धराना; भरना, भ्रममें पकना, भ्रूना।

अमरी-खी० झींगुर।

अमृका-पु० कपट, शोका; चिनगारी। वि० अंगरेकी तरह छाट, प्रकलित।

अमृका-पु० दे० 'अमृका'।

अमृत-खी० वह मत्स्य जिसे शिवभक्त शरीरपर लगाते हैं, यक्षकुंड, बूनी भादिकी राख। सु०-रमाना-पैराय धारण करना, साधु हो जाना।

अमृवर-खी० दे० 'अमृत्'।

अमरी-खी० झींगुर-बराभ मये तें जैसे नोक्त अमरी स्वर...'-सुंदर।

अमृकर-वि० [सं०] डरावना, भयोत्पादक। पु० एक तरहका छोटा उल्हा; एक बाज।

अमृ-अ० कि० हुआ। पु० [सं०] विपद् वा अनिच्छी संभावनासे उत्पन्न दुःखजनक भाव, डर, खौफ; क्षतरा; भयानक रस।-कंध-पु० भयसे उत्पन्न होनेवाला कंपन।

-कर, -जवक-वि० भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना, क्षतराक।-हिंमि-पु० एक रणबाध।-अस्त्र-वि० बहुत डरा हुआ।-आता(ह)-वि०, पु० भयसे छुटाने-वाला।-द, -दायी(विज्)-वि० भय उत्पन्न करनेवाला।

-दर्शी(सिन्)-वि० भयानक।-दान-पु० भयसे दिवा जानेवाला दान।-हुत-वि० डरसे भागनेवाला।-धन-वि० भयानक।-नाशन-वि० भयका नाश करनेवाला।

पु० विष्णु।-नाशिनी-खी० नाशमाणा कता।-भासी-वि० भय दूर करनेवाला।-प्रसीकार-पु० भयका निवारण।-अह, -अहसी(विज्)-वि० डरा-वना।-प्रवृत्त-पु० भय दिखाना, डराना।-आह्वान-पु० अपना आह्वानत्व बताकर खतरसे बचनेका उपाय करनेवाला।-भीत-वि० [हिं०] डरा हुआ।-अह-वि० डरकर भागा हुआ।-मोचन-वि० भयसे छुटाने-वाला।-वर्जिता-खी० दी गोंमेंसे शीचकी सीमा जो वादी-प्रतिवादी आपसमें मिलकर मान लें।-विह्वल-वि० डरसे जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, भयाकुल।-व्यूह-पु० भय उपस्थित होनेपर सेनाके रक्षार्थ रचा जानेवाला व्यवस्थित।-हील-वि० डरपोक।-छान-वि० निरस्य।-स्थान-पु० भयका कारण।-हरण, -हर्ता(ह)-वि०, -हारक, -हारी(विज्)-वि० भय दूर कर देनेवाला।-हेतु-पु० भयका कारण।

अमृबाद-पु० माई-बंद।

अमृ-खी० [सं०] एक राक्षसी जो कालकी बहन थी।* पु० अया, आई।* अ० कि० हुआ।

अमृकुल-वि० [सं०] डरसे धरना हुआ, भय-विह्वल।

अमृकांत-वि० [सं०] भयसे अभिभूत।

अमृसीसार-पु० [सं०] भयके कारण होनेवाला अतीसार।

अमृत-वि० [सं०] दे० 'अमृकुल'।

अमृत-वि० भयानक।

अमृत-वि० [सं०] भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना। पु० बाध; राहु; अय; काम्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्वादी भाव भय है (रा०)।

अमृना-अ० कि० डरना। सं० कि० डराना।

अमृन्वित-वि० [सं०] भयसे युक्त, डरा हुआ।

अमृवह-वि० [सं०] भय दूर करनेवाला।

अवधारण-वि० [सं०] अवसे विचलित न होनेवाला ।

अवधारण-वि० अमानक ।

अवधारण-वि० [सं०] डरा हुआ ।

अवधारण-वि० [सं०] दे० 'अवधारण' ।

अवधारण-वि० दे० 'अवधारण' ।

अवधारण-वि० डरावना ।

अवधारण-वि० [सं०] अवजनक, खतरनाक ।

अवधारण-वि० [सं०] अवकाशमय, प्रोत्साहन ।

अवधारण-वि० दे० 'अवधारण' ।

अवधारण-वि० [सं०] स्वाधीन; राजा; बैल; कीड़ा ।

अवधारण-वि० [सं०] अति, अत्यंत; अत्यंत कीमती; अत्यंत ।

अवधारण-वि० अत्यंत हिंदू जाति । वि० सव, पूरा, सारा ।

* अ० के वल, हारा । -पार्श्व-वि० अ० मर पाने, चुकता हो जानेका भाव; मर पाने, बेवाकीकी रसीद । -पूर-वि० पूरी तरह मरा हुआ, परिपूर्ण । अ० पूरे तीरसे । -पेट-वि० अ० जो भरकर, पेट भरकर । -सक-वि० शक्तिभर, चित्तवादी होके । सु०-पाना-पूरा पानना वसूल हो जाना; कियेका कल पाना ।

अवधारण-वि० [सं०] भार; डेर, समूह; आधिक्य, अतिरिक्त; पीनता; एक तीर; चोरी; स्तुति; आक्रमण । वि० (समा-सांतमें) मरण करनेवाला; बहन करनेवाला । -व-वि० तेज जानेवाला ।

अवधारण-वि० एक चिन्ता ।

अवधारण-वि० अ० कि० दे० 'अवधारण' ।

अवधारण-वि० नदी किनारेका डाल्वा हिस्सा (?) -वि० दोनों नदीके अरकमें उतर गयी-सूत्राः खड्ड ।

अवधारण-वि० अ० कि० दे० 'अवधारण' ।

अवधारण-वि० [सं०] कुम्हार; सेवक ।

अवधारण-वि० [सं०] पालन; पोषण; धारण; उपादन; श्रुति, वेतन; अरणी नक्षत्र । वि० मरण-पोषण करनेवाला ।

अवधारण-वि० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे दूसरा; पियातरीके एक लक्ष । वि० अ० मरण करनेवाली । -मू-वि० राहु ।

अवधारण-वि० [सं०] मरण करने योग्य ।

अवधारण-वि० [सं०] वेतन; उजरत; पालन-पोषण, अरणी नक्षत्र । -भुक्त(वि०)-वि० नौकर; मजदूर ।

अवधारण-वि० [सं०] मजदूरी; खी ।

अवधारण-वि० [सं०] स्वामी; रखक; मित्र; अग्नि; सूर्य; बंद ।

अवधारण-वि० [सं०] कौसा; मरी हुई चीज; भरतीकी चीज, निरर्थक वस्तु, भराव; एक तरहका लवा; [सं०] शकुंतलासे उत्पन्न दुष्प्रवृत्तका पुत्र जिसके नामपर यह देशका नाम भारतवर्ष पड़ा; कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न दशरथ-पुत्र; एक मुनि जो नाट्यशास्त्रके प्रवर्तक माने जाते हैं; नट; श्वर; जुलाहा; जवमत; आयुर्वेदी; अग्नि; क्षेत्र । -वर्ष-वि० भारतवर्ष; भारतवर्षके अतर्गत कुमारिका खट । -वर्ष-वि० नाट्यशास्त्रका जानकारी । -पुत्र-वि० पुत्रक-वि० नट, अभिनेता । -प्रसू-वि० कैकेयी । -भूमि-वि० भारतवर्ष । -वर्ष-वि० दे० 'भारतवर्ष' । -वर्ष-वि० नाटकके अंतमें आशीर्वादरूपमें गाया जानेवाला पद्य । -वीणा-वि० वीणाका एक भेद । -वाक्-वि० नाट्यशास्त्र ।

अवधारण-वि० [सं०] भारतवर्षमें भेद ।

अवधारण-वि० आत्म-वैगम आदिकी भुन और मसलकर बनाया हुआ सालन, चोखा । अ० [सं०] गौशयुक्त होना ।

अवधारण-वि० [सं०] राम ।

अवधारण-वि० कांत, पति; स्वामी ।

अवधारण-वि० कौत्सेके बरतन बनानेवाला ।

अवधारण-वि० एक चीजका दूसरोंमें भरा, बैठाया जाना, भराव; भीतर मरी हुई चीज; पक्कीकारी; प्रवेश, दाखिला, किया जाना (सेना, पुलिस, स्वयंसेवकदल आदिमें) ।

अवधारण-वि० रामानुज भरत ।

अवधारण-वि० [सं०] लोकपाल; राजा; अग्नि; * रामके छोटे भाई भरत ।

अवधारण-वि० दे० 'अवधारण' ।

अवधारण-वि० भरत पक्षी ।

अवधारण-वि० [सं०] एक गौत्र-प्रवर्तक और मंत्रकार ऋषि; भरत पक्षी; एक अग्नि; एक अर्हत ।

अवधारण-वि० कि० खाड़ी भरतन आदिमें कोई चीज डालना, खाड़ी जगहकी किसी चीजसे पूर्ण करना; डालना; छेद, अवकाशको बंद करना; तोप, बंदूक आदिमें गोला, गोली आदि डालना; चुकाना (ऋण); पूर्ण करना (नुकसानकी); पदपर नियुक्ति करना; सींचना; कुपई आदिसे घरे आदिमें पानी लाना; शिकायत करना; बरपलाना; बिलमपर तबाकू और भाग रखना; भेदना; * गुजर करना; सहना; देखमें पीटना । अ० कि० मरा जाना, पूर्ण होना; पाकका पूरा होना; मनका क्रोध, क्रोध आदिमें पूर्ण होना; पुष्ट, मोटा होना (शरीर); गर्भवती होना (गाय, कुतिया आदिका) ।

अवधारण-वि० अ० पहनावा, वेशभूषा ।

अवधारण-वि० अ० करपेकी डरकी; छछुर्छटा; मोरनी; एक जंगली वृद्धि; संपका विष उतारनेका मंत्र; * दे० 'अरणी' ।

अवधारण-वि० अ० कि० फूलना; रोमांच होना; घबहाना ।

अवधारण-वि० अ० वृज्जन; घबहाहट ।

अवधारण-वि० अ० सामना, मुठभेड़ ।

अवधारण-वि० अ० अम; भेद; साह, प्रतिष्ठा (खुलना, खोना, गँवाना, बनाना) -संपति अम गँवाइके बसे रहे कह्यु नाहि'-रहीम ।

अवधारण-वि० अ० कि० फिरना; भटकना; अटकना; गुमराह होना । अ० अति, भूल ।

अवधारण-वि० अ० कि० अममें डालना; बहकाना, भोखा देना; व्यर्थ घुमाना । * अ० कि० भटकना; चकित होना ।

अवधारण-वि० अ० बहुतायत, आधिक्य; बाहुल्य ।

अवधारण-वि० अ० कि० एकबारगी गिर पड़ना, अराना; टूट पड़ना । स० कि० 'अर' शब्दके साथ गिराना; किसीकी टूट पड़नेमें प्रवृत्त करना ।

अवधारण-वि० अ० हिमालयके अंचलमें होनेवाली एक जंगली भेड़ ।

अवधारण-वि० अ० भरवानेकी किया या उजरत; गौश उठानेकी टोकरी ।

अवधारण-वि० अ० कि० भरनेका काम करना ।

अवधारण-वि० अ० कि० भरनेका काम करना ।

अवधारण-वि० अ० कि० भरनेका काम करना ।

अवधारण-वि० अ० नाव ।

अव्यय-पुं० [सं०] आद्य ।
 अव्यय-पुं० [सं०] आद्य; कृता । [खी० 'अव्ययी' ।]
 अव्यय, अव्यया-पुं० सर्व ।
 अव्यय-पुं० सर्व ।
 अव्यय-पुं० [सं०] वर्तमान काल । * सर्व० आपका ।
 अव्यय-पुं० [सं०] वर्तमान काल ।
 अव्ययी-खी० [सं०] स्त्री। खी० दे० 'अव्यय' ।
 अव्यया-ज० कि० वृत्तान्त; अक्षर स्थान ।
 अव्यय-पुं० दे० 'अव्यय' ।
 अव्ययिणी-खी० एक तरहकी पदी हुई नाव ।
 अव्य-पुं० [सं०] उत्पत्ति; जन्म; होना; संसृति; प्राप्ति; संसार; अग्नि; शिव; कुशल; * दे० 'अव्य' । (समासमें 'से उत्पन्न' का अर्थ होता है ।) -केतु-पुं० एक पुच्छल तारा । -क्षिति-खी० जन्मस्थान । -क्षम-पुं० दानानल । -चक्र-पुं० किस-किस कर्मसे जीवात्माकी किस-किस चीनिमें जाना पड़ता है यह जाननेका चक्र (चक्र) । -चाप-पुं० शिवका धनुस् । -पण्ड-पुं० आवागमनसे मुक्ति । -जल-पुं० दे० 'अव्यसमुद्र' । -श्व-पुं० देवदार । -चरण-पुं० परमेश्वर । -नाशिनी-खी० सरयू नदी । -प्रत्यक्ष-पुं० समाधिही एक अवस्था । -बंधन-पुं० संसार-बंधन, जन्म-मरणका चक्र । -अर्थ-पुं० संसृति का अंत । -अंधन-पुं० परमेश्वर; काल । -अव्य-पुं० बार-बार जन्म लेने और मरनेका अर्थ, कष्ट । -आमिनी, -आमा-खी० पार्वती । -आव्य-पुं० भौतिक सत्तासे भ्रम । -भीति-वि० जिससे पुनर्जन्मका भय हो । -भीति-खी० जन्म-मरणका अर्थ, सत्सृति का अर्थ; सांसारिक अर्थ । -भूत-पुं० परमेश्वर । -भूति-खी० देवत्व । पुं० 'उत्तराव्यय' के रचयिता । -भूष-वि० दे० 'अव्य-भूषण' । -भूषण-वि० जगत्के भूषणरूप । पुं० शिवका भूषण, मत्स्य आदि । -भोवा-पुं० लौकिक सुखोंका उपभोग । -अव्य-पुं० लौकिक सुखसे विरक्ति । -मोक्ष-पुं० भवबन्धनकी काटनेवाला, परमेश्वर । -रस-पुं० लौकिक सत्तामें प्राप्त होनेवाला रस । -रस-वि० एक प्राचीन वाद्य जो दाह-सत्कारके समय बजाया जाता था । -विहास-पुं० माद; लौकिक सुख । -अव्य-पुं० जन्म और मृत्यु । -शुद्ध-पुं० भौतिक दुःख । -क्षेत्र-पुं० चंद्रमा । -संगी (गिन) -वि० लौकिक सत्तामें अनुरक्त । -संभव-वि० संसारसे उत्पन्न, सांसारिक । -संशोधन-पुं० एक तरहकी समाधि । -समुद्र, -सागर, -विश्व-पुं० सत्सारूप समुद्र ।
 अव्यय-वि० [सं०] उत्पन्न; जीवित; आधीनार्थ होनेवाला । पुं० अस्तित्व ।
 अव्ययी-खी० [सं०] जहरीला बाण ।
 अव्ययी-वि० [सं०] आपका ।
 अव्ययीया-वि० खी० [सं०] आपकी ।
 अव्यय-पुं० [सं०] होना, भाव; जन्म, उत्पत्ति; मर, मराना; स्थान, क्षेत्र; अधिष्ठान; जन्मकुंडली; गह्वर । -धीरिका-खी० घरका भीतरी ताबाज । -पति-पुं० घरका मालिक; राशि-स्वामी ।
 अव्यय-ज० कि० दे० 'अव्यय' ।

अव्ययी-खी० गृहिणी ।
 अव्ययी-वि० [सं०] होनेवाला ।
 अव्ययी-पुं० कैरा ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] शिवमंदिरका सदन ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] पहले या बादका जन्म ।
 अव्ययी-सं० कि० वृत्तान्त ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] दे० 'अव्यसमुद्र' ।
 अव्ययी-खी० पार्वती ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] संसारका छोर ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] कैलास पर्वत ।
 अव्ययी-वि० [सं०] भीतराग ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] काश्चिन्न; गणेश ।
 अव्ययी-खी० [सं०] बुद्धि, पार्वती । -कांत, -पति, -वल्लभ, -सख-पुं० शिव । -गुरु, -सत्त-पुं० हिमवान् । -वन्द्य-पुं० काश्चिन्न; गणेश ।
 अव्ययी-सर्व० [सं०] आप, श्रीमात् (समीप) ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] दे० 'अव्यसमुद्र' ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] गुरुकुल ।
 अव्ययी-खी० [सं०] दे० 'अव्ययनी' ।
 अव्ययी-खी० [सं०] शिवके सिरपर रहनेवाली गंधा ।
 अव्ययी-वि० दे० 'अव्यय' ।
 अव्ययी-वि० [सं०] मरालकारी; धार्मिक । पुं० मंगल, कल्याण ।
 अव्ययी-वि० [सं०] जो हो चुका है, भूत ।
 अव्ययी-वि० [सं०] होनेवाला, अव्ययी-खी० ।
 अव्ययी-खी० [सं०] जिसका होना अटल हो, होनी; भाग्य ।
 अव्ययी-वि० [सं०] होनेवाला, होनेवाला । [खी० 'अव्ययी' ।]
 अव्ययी-वि० [सं०] भावी; जीवित; अव्यय, सुदूर । पुं० मराना; आर ।
 अव्ययी-पुं० दे० 'अव्यय' ।
 अव्ययी-वि० [सं०] होनेवाला, भावी ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] होनेवाला काल । वि० होनेवाला, भावी । -काल-पुं० क्रियाके तीन कालोंमेंसे एक, अनागत काल (व्या०) । -गुप्त-खी० सुरतिगुप्ता नायिकाका एक भेद । -ज्ञान-पुं० होनेवाली बातोंकी जानकारी । -पुराण-पुं० अठारह पुराणोंमेंसे एक । -सुरति-गोपना-खी० दे० 'अव्ययीगुप्ता' ।
 अव्ययी-वि० [सं०] होनेवाला, भावी । पुं० होनेवाला काल; जल; एक फल । -काल-पुं० दे० 'अव्ययीकाल' । -पुराण-पुं० अव्ययीपुराण ।
 अव्ययी-वि० 'अव्ययी' का समासगत रूप । -आक्षेप-पुं० एक अप्रार्थक । -वक्ता (वक्ता), -वादी (विद्)-पुं० वह जो आगे होनेवाली बातोंकी पहले बता दे, ज्योतिषी । -वाणी-खी० अव्ययीजन, पेशीनगोई ।
 अव्ययी-वि० [सं०] जीवित या सत्तायुक्त । पुं० जीवधारी; अनुचर ।
 अव्ययी-वि० चावनाका; आनंदानवाका ।
 अव्ययी-पुं० [सं०] संसारका स्वामी, शिव ।

अभ्य-वि० [सं०] विषयमान; होनेवाला, भावी; योग्य, उपयुक्त; सुंदर; शानदार; शांत, प्रसन्न; शुभ; सख्त । पु० कमरख; करेला ।

अभ्यता-स्त्री० [सं०] उपयुक्ता; सौंदर्य ।

अभ्या-स्त्री० [सं०] पार्वती; गजपीपल ।

अभ्य-पु० अभ्य, आहार; [सं०] कुत्ता । वि० भूँकनेवाला । [स्त्री० 'अभ्या' ।]

अभ्यक-पु० [सं०] कुत्ता ।

अभ्यण-पु० [सं०] भूँकना; कुत्ता ।

अभना-०-स० कि० दे० 'अन्नना' ।

अभा-स्त्री० [सं०] स्वर्णक्षीरी ।

अभित-पु० [सं०] भूँकनेकी क्रिया ।

असंत-पु० [सं०] काल, समय ।

असन-पु० [सं०] भौरा ।

असना-०-अ० कि० तैरना; डुबना; घँसना ।

असर्मत-०-वि० जका हुआ ।

असम-पु० दे० 'अस्य' ।

असमा-पु० आटा (साधु); दे० 'अस्मा' [अ०] ।

असक-पु० [सं०] बहा भौरा ।

असानी-पु० दुर्गा आदिकी प्रतिमाकी पूजनीपरांत नदीमें प्रवाहित करना ।

असानी-स० कि० तैराना; डुबाना; घँसाना ।

असिंह, असिंह-पु० कमलनाक ।

असित-वि० [सं०] अस्मीभूत । पु० अस्य ।

असुंद-पु० हाथी ।

असुर-पु० पतिका बड़ा भारी; जैठ ।

असूँ-पु० हाथीकी सूँड़ ।

अस्का, अस्काका, अस्काका-स्त्री० [सं०] छोटी मक्का ।

अस्का-स्त्री० [सं०] भाषी; मशक; प्राणायामका एक प्रकार । -फला-स्त्री० एक सुप ।

अस्की-स्त्री० [सं०] दे० 'अस्का' ।

अस्म(न)-पु० [सं०] राख; चित्ताकी राख; दबाके काम-के लिए फूँकी हुई धातु आदि; कुत्ता । -कार-पु० धोरी । -कूट-पु० राखका ढेर; एक पर्वत । -गंधा, -गंधिका, -गंधिनी-स्त्री० रेणुका (गंधद्रव्य) । -गर्भ-पु० तिनिया वृक्ष । -गर्भा-स्त्री० रेणुका; कपिलशिशुपा ।

-गान्न-पु० कामदेव । -वय, -पुंज-पु० अस्मराक्षि ।

-तल्ल-पु० हिम, पाला । -प्रिय-पु० शिव । -बाण-पु० ज्वर । -मेह-पु० अमरी (पथरी) रोगका एक भेद ।

-राशि-स्त्री० राखका ढेर । -रोहा-स्त्री० दम्बा वृक्ष, दम्बरहा । -वेधक-पु० कपूर । -शयन, -शय्या-पु० शिव । -शर्करा-स्त्री० पोटास (?) । -शाबी (विष्)-पु० शिव । -शुद्धिकर-पु० शिव । -साय-पु० जो अस्मरूप हो गया हो, अस्मीभूत । -खान-पु० सारी देहमें अस्म मलना ।

अस्मक-पु० [सं०] सोना; चाँदी; विडंग; एक रोग जिसमें जो कुछ खाया जाय तुरंत पचा जैसा बात होता (हेक्तिम पचता नहीं) और रोगीकी तेज भूख लगी रहती है ।

अस्मार्ग-वि० [सं०] अस्मके रंगका ।

अस्मार्गि-स्त्री० [सं०] अस्मक रोग ।

अस्माच्छ-पु० [सं०] कामरूपका एक पर्वत ।

अस्माच्छेष-वि० [सं०] जो राखमात्र रह गया हो, जो जलकर राख हो गया हो । पु० राखके रूपमें बचा अंश ।

अस्मासुर-पु० [सं०] एक दैत्य जिसने शिवसे यह वरदान प्राप्त किया था कि वह जिसके स्तिरपर हाथ रखेगा वह जल जायगा ।

अस्माह्व-पु० [सं०] कपूर ।

अस्मिन्-वि० जला या जलाया हुआ ।

अस्मीभूत-वि० [सं०] जो जलकर राख हो गया हो, नष्ट ।

अस्सङ्ग-वि० मोटा, बेटील (मनुष्य) ।

अस्सी-स्त्री० चूने, कीयले आदिका चूरा ।

अहराना-अ० कि० सक्नारानी गिरना; दूट पड़ना ।

अहूँ-स्त्री० मोह ।

अहूँ-पु० खरादी ।

अह्वर, अह्वरि-स्त्री० दे० 'अह्वर' ।

अह्वर-पु० दे० 'आव' ।

आंग-वि० [सं०] आँगका बना । पु० आँगका लेत ।

आंग-स्त्री० गाँजेकी जातिका एक वीष जिसकी पत्तियों नशा पैदा करती है; इसकी पत्तियाँ, रुत पत्तियोंकी बोट-कर बनाया हुआ पेय । **आंग-स्त्री०** जाना-नखेमें होने-की-सी बातें करना । -छानना-आंग पीना । (बरमें भूँजी)-न होना-दरिद्र होना ।

आंगक-पु० [सं०] चीयका ।

आंगीन-पु० [सं०] आँगका लेत । वि० आँगका ।

आँज-स्त्री० आँजेकी क्रिया या भाव; मोह; तह; भुनाई, वट्टा ।

आँजना-स० कि० तह करना; डोर आदिकी कई लकड़ोंकी एकमें मिलाकर बटना; बुझाना (भुगदर आदि) ।

आँजा-पु० दे० 'आनजा' । [स्त्री०-'आँजी' ।]

आँजी-स्त्री० चुगली; बहकाने; रुत करनेवाली बात । **आँजी-पु०** मारना-बाधा डालना ।

आँट-पु० दे० 'भाट' ।

आँटी-पु० बैंगन ।

आँड-पु० [सं०] आँफा, बरतन; धोतेल्का कुप्पा; दुकानका माक, सामान; धोत्रेका एक साज; नदीका पेड़ा; आँफका काम; एक बाजा; गर्दभांड वृक्ष । -**आँफक-पु०** गैर विहारमें पात्र रखनेका काम करनेवाला व्यक्ति । -**पति-पु०** व्यापारी । -**पुट-पु०** हजाम । -**पुष्प-पु०** एक तरहका लीप । -**प्रतिआँडक-पु०** विनिमय, चीजोंका बदला-बदला । -**भरक-पु०** पात्रमें रखी हुई वस्तुएँ । -**शाखा-स्त्री०** मंडार ।

आँफ-पु० मसखरा; मसखियोंमें हँसी-मजाककी मकलें आदि करनेका पेशा करनेवाला; वह जिसके पैरों में बात न पड़े; निर्लेख्य व्यक्ति; दे० 'आँफा'; * उपद्रव; हँसी; अंडाफोड़-'हँस'कपड़ कर होरहि आँफ'-प० । -**भगतिने-पु०** नाचने-गाने आदिका पेशा करनेवाले ।

आँडक-पु० [सं०] छोटा पात्र; व्यापारिक वस्तुएँ ।

आँडन-पु० [सं०] हाड़ा ।

आँडना-स० कि० बिगाड़ना, नष्ट करना; बदनाम करते फिरना; * भूम-भूमकर देखना । अ० कि० अडकना ।

मौख्य-पुं वरतन; * मौखपन । मु०-(हे)भरवा-
पछताना; फूट-फूटकर रोना । -मैं जी बेवा-किसीपर
रिक्त बना होना ।

मौखवार-पुं [सं०] मंदार, मोहाम; खजाना ।

मौखवारिक-पुं [सं०] मंदारी; खजाना ।

मौखार-पुं [सं०] मंदार ।

मौखारिक, मौखारी(रिक्)-पुं [सं०] मंदारी, मंदारका
रक्त; जघन्य ।

मौखि-खी [सं०] किसमत । -बाहू-पुं हज्जाम ।
-छाछ-खी मौखी दुकान ।

मौखिक-पुं [सं०] हज्जाम; तुरही आदि बजाकर
जयानेवाला ।

मौखिका-खी [सं०] औजार; एक पौधा ।

मौखिनी-खी [सं०] ठेकरी ।

मौखिल-पुं [सं०] हज्जाम ।

मौखीर-पुं [सं०] बराह; एक क्षुप । -बन-पुं बुंदान-
का एक भाग । -मौखन, -मौखी(सिक्)-पुं कृष्ण ।

मौखीय-पुं मौखपन ।

मौख-वि [सं०] दीप्त, प्रकाशयुक्त; वज्ररूप ।

मौखि-खी दे० 'मौखि' ।

मौखि-खी तरह; प्रकार; रंग; * मर्यादा । -मौखिके-
तरह तरहके; रंग-विरंगके ।

मौख-पुं [सं०] एक उपपुराण ।

मौखना-सं कि० रंग-रंगसे जान लेना, ताडना ।

मौख-वि मौख जानेवाला, ताड जानेवाला ।

मौखी-वि, खी घूमनेवाली ।

मौखि-मौखि-पुं सजाटमें होनेवाली आवाज ।

मौखिया-सं कि० खरादपर घुमाना; * गदकर सुंदर
बनाना; † घुमाना; मथना (मट्टा भावना), मिलाना ।

मौखि-खी परिक्रमा; विवाहके समय की जानेवाली
अधिकी परिक्रमा; खेल जोतते समय एक बार चारों ओर
घूम आना । * पुं और । मु०-भरना-परिक्रमा
करना ।

मौखि-पुं आवत, भँवर; परिक्रमा ।

मौखि, मौखी-खी-खी नकार, परिक्रमा ।

मौखी-खी (गलेकी) आवाज, स्वर, शब्द ।

मा०-ज० चाहे, या । * ज० कि० हुआ । खी [सं०]
चमक, दीप्ति; मिश्रण; क्रांति । -कर-पुं सूर्य । -कूट-
पुं एक मछली । -कोष्ठ-नाभि, -मेमि-पुं सूर्य ।
-हवि-पुं किरातार्जुनीयके रचविता । -रूप-पुं
आत्मा; मग्न ।

माह-पुं भाव; प्रेम; विचार । खी० रीति, प्रकार;
भाऊ-डाक ।

माहप-पुं आरुख, भाईचारा ।

माहू-पुं एक ही मौपापका नेटा, भाता, सहोदर, भाति-
बंधु; बराबरवाले (मियन)का संनोषन । -पारा-पुं
भाईका भाता या भाव, बंधुत्व । -दूख-खी मेवादूख ।
-बंद-पुं कुलकुटुंबके लोग, भाति-जन । -बिराद्वर-
पुं भाई-बंद ।

माह-पुं दे० 'माव' ।

माह-पुं भाव; प्रेम; स्वभाव; रूप; प्रभाव; दृष्टि;
महिमा; अवस्था; † भाई ।

माहू-ज० समझमें ।

माहसी-खी माह ।

माहुर-पुं एक तरहकी मछली ।

माह-वि [सं०] जिसे नित्य मौजन दिया जाता हो,
आश्रित; खाने योग्य; औपचारिक, गौण । पुं चावल ।

माहिक-वि [सं०] आश्रित ।

माह-वि [सं०] बहुत खानेवाला, मकोस ।

माह-पुं दे० 'भागन' ।

माहना-ज० कि०, सं० कि० कहना, बोलना ।

माहना-खी दे० 'भावा' ।

भाग-पुं [सं०] हिस्सा; अंश; बँटवारा; चौपाई; परिधिका
३० बौ भाग; राशिकका ५० बौ भाग; राशि या संख्या-
विशेषकी कई अंशमें बँटनेकी क्रिया, तकसीम (गं०) ।

-कल्पना-खी हिस्से बँटना, बँटवारा । -धान-पुं
खजाना । -खेय-पुं भाग; भाग्य; सीमाव्य; राजकी
दिया जानेवाला कर; भाग पानेका अधिकारी । -कल-पुं

भाक्यकी भाजकसे भाग देनेपर प्राप्त संख्या, कथि । -

माह(ज)-वि हिस्सेदार । -मुक्(ज)-पुं राजा ।

-कल्पना-खी जहदजहदकल्पना । -हर-वि हिस्सेदार ।

-हार-पुं भाग, तकसीम । -हारी(रिक्)-वि-

हिस्सेदार । पुं उत्तराधिकारी ।

भाग-पुं भाग्य, तकदीर; कलाट; पारबै; प्रातःकाल ।

-अरा-वि भाग्यवान् । -बत-बत-वि भाग्य-

वान्, खुशनसीब । मु०-खुलना, -जागना-तकदीर

खुलना, भाग्यदीय होना । -फूटना-दुरे दिन आना ।

भागक-पुं [सं०] भाग्य भाजक ।

भागक-खी बहुतसे लोगोंका आतंकित होकर एक साथ
भागना, भगदड़ ।

भागदौड़-खी दौड़बुद, भागदड़ ।

भागना-ज० कि० किसी जगहमें हट जानेके लिए दौड़ना,
पलायन करना; चल देना; जान बचाना, हारकर पला-
यन करना ।

भागनेय-पुं दे० 'भागिनेय' ।

भागारा-पुं एक संकर राग ।

भागवत-पुं [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें
मुख्यतः कृष्णकी कथा वर्णित है; देवीभागवत; भगवद्गीता ।
वि० भगवत्संधी ।

भागवती-खी एक तरहकी कंठी ।

भागवारा-खी भागनेकी हलचल, भागदड़ ।

भागवारी(विन्)-वि [सं०] हिस्सा चाहनेवाला ।

भागवारी-वि [सं०] हिस्सा पानेका हकदार; हिस्सेके
मुताबिक बाँटा जानेवाला ।

भागिक-वि [सं०] भाग-संबंधी, भागिक; जिसपर
भाग्य मिले ।

भागिनेय-पुं [सं०] भागवत ।

भागि(मिक्)-वि [सं०] जिसमें भाग, हिस्से हैं;
हिस्सेदार; शामिक, शरीक (पापभागी); मालिक, अधि-
कारी; गौण । पुं हिस्सेदार ।

असरीरथ-वि० [सं०] भगीरथ-संबंधी । * पु० दे० 'भगीरथ' ।

भागीरथी-खी० [सं०] गंगा; गंगाक्षी वह शाखा जो बंगालमें बहती है (पुराणोंके अनुसार भगीरथ गंगाकी स्वर्गसे पृथ्वीपर लाये) ।

भाहुरि-वि० [सं०] सांख्यसूत्रोंपर भाष्य लिखनेवाले एक मुनि ।

भाहू-वि० भगोदा ।

भाभ्य-वि० [सं०] विभाज्य, भाग, हिस्सेका अधिकारी ।

पु० शुभाशुभव्ययक कर्मजन्य अष्ट, नियति, तत्कदीर; सौभाग्य । -क्रम-पु० भाग्यका क्रम, फेर । -दोष-पु०

भाग्यका दोष, तत्कदीरकी खराबी । -बल-पु० भाग्यका बल, तत्कदीर । -आव-पु० जन्मकुंडलीमें भाग्यका स्थान (कृष्णसे ९ वें) । -क्षिपि-खी० तत्कदीरकी क्षिप्रगति, अष्ट रेखा । -बहा, -बहास-अ० भाग्यके बल, किस्मतसे । -बाह्-पु० भाग्यके अनुसार ही शुभा-

शुभकी प्राप्ति माननेका सिद्धांत । -बाधी (विष्)-वि० भाग्यवाद माननेवाला । -विधाता(सु)-पु० तत्कदीर बनानेवाला, अष्टका निर्वता । [खी०-'विधापी']

-विषय-पु० भाग्यका कष्ट-फेर, दिनका फेर । -विश्व-पु० दुर्भाग्य । -शाखी (लिख्)-वि० भाग्य-वाद् । -संपद्-खी० सौभाग्य । -हीन-वि० अभाग्य, बदनसीब ।

भाग्यबाद् (वत्)-वि० [सं०] भाग्यशाही, सुखकिस्मत । भाग्यधीन, भाग्यवाच्य-वि० [सं०] भाग्यपर आश्रित, जो भाग्यके अधीन हो ।

भाग्योदय-पु० [सं०] भाग्यका लुटना, जागना । भाजक-पु० [सं०] भाग करनेवाला, विभाजक, वह संख्या जिससे किसी राशिको भाग दें ।

भाजकांश-पु० [सं०] वह भाजक जिससे किसी राशिको भाग देनेपर कुछ बचे नहीं ।

भाजन-पु० [सं०] बरतन, पात्र; योग्य अधिकारी; आधार; एक तौल, आठका विभाग करना । वि० भाग लेनेवाला, शामिल होनेवाला ।

भाजना-अ० कि० दे० 'भागना' । भाजित-वि० [सं०] भाग किया हुआ, विभक्त । भाजी-खी० [सं०] मीठा; साग आदि ।

भाजी (जिष्)-वि० [सं०] भाग्य लेनेवाला, शरीक होनेवाला; संबद्ध । पु० सेवक, नौकर ।

भाज्य-वि० [सं०] भाग करने योग्य, विभाग्य; वह अंक जिसमें भाग दिया जाय ।

भाट-खी० नदीके किनारोंके बीचकी जमीन, पेड़ा; दे० 'भाट' । पु० राजाओं आदिके यश, वंश, चरितका गान करनेवाला, बंदी; एक जाति जो अपने जजमानोंका वंश-चरित सुनाने, स्तुतिपरक तुकबंदी आदि करनेका पेशा करती है; झूठी बग़ाई करनेवाला, चापलूस; [सं०] भाषा, किराया ।

भाटक-पु० [सं०] भाषा, किराया । भाटा-पु० समुद्रके पानीके नियतकालिक चढ़ावका उठार, ज्वारका ऊठडा; पथरीकी जमीन ।

भाटि-खी० [सं०] भाषा; बेशककी कमाई । भाखी-पु० भाटका कार्य, स्तुतिपाठ ।

भाठ-खी० नदीकी बाढ़में बहकर आनेवाली मिट्टी जो किनारेकी जमीनपर जम जाती है; धारा । भाठ-पु० दे० 'भाटा'; यद्वा ।

भाठी-खी० भाटा; * दे० 'भट्टा' । भाष-पु० भट्टाईकी भट्टी जिसमें भाख गरम कर वह दाला भूतता है । सु० -झोंकना-गुच्छ काम करना; निरर्थक मम करना । -में जाय-चूल्हेमें जाय । -में झोंकना, -में डालना-चूल्हेमें डालना, नष्ट करना; त्यागना ।

भाषा-पु० वह रकम जो किसी जीवकी इस्तेमाल करनेके बदले दी जाय, किराया; गाड़ी आदिका किराया । - (के) का टहू-डनरतपर काम करनेवाला; वह आदमी जिसे पैसा देकर जो चाहे काम ले ।

भाबैसा-वि० भाड़ेपर काम करनेवाला, भूतिभोगी । भाण-पु० [सं०] रूपक (व्यङ्ग्यात्म्य)का एक नेद (रसमें हास्यरसकी प्रधानता होती है और वह एक अंकका होता है) ।

भास-पु० उबाला हुआ स्वावक; व्याहकी एक रसम, बरके पिताका कन्याके पिताके घर जाकर कच्ची रसोई खाना; [सं०] दीप्ति; प्रभात । वि० चमकदार; प्रकट होनेवाला ।

भाति-खी० [सं०] चमक; दीप्ति; ज्ञान । भातु-पु० [सं०] सर्व ।

भाधा-पु० गौर रखनेकी शैली, तरकश; बड़ी भाधी । भाधी-खी० चमकेकी धौकनी ।

भादौ-पु० साननेके बाद पड़नेवाला महीना, भाद्रपद । भादौ-पु० दे० 'भादो' ।

भाद्र-पु० [सं०] दे० 'भाद्रपद' । -पद्-पु० भादौका महीना । -पद्-खी० पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र । -पद्-खी० भाद्रपदकी पूर्णिमा ।

भाद्रभासुर-पु० [सं०] सतीका पुत्र ।

भाद्री-खी० [सं०] भादौकी पूर्णिमा ।

भावन-पु० स्वयं; [सं०] प्रकाश; दीप्ति; ज्ञान; प्रतीति ।

भावन-पु० बहिनका पुत्र । [खी० 'भावनजी']

भावन-अ० कि० तोड़ना; काटना; नष्ट करना ।

भावन-खी० जादूके खेल करनेवाली, जादूगरनी ।

सु०-का कुनवा-जहाँ-तहसि लिये हुए बनेछ उपादानों-से बनी बस्तु । -का पिढारा-वह जिसमें तरह-तरहकी चीजें मौजूद हों ।

भावन-वि० [सं०] स्वयं-संबंधी ।

भावन-खी० यमुना ।

भावन-वि० [सं०] स्वयं-संबंधी । पु० दाहिनी ओंस ।

भावा-अ० कि० बचना, अच्छा लगना; फटना; * भाग होगा, जान पड़ना । * स० कि० खराबपर चढ़ाना; चमकाना ।

भावा-पु० [सं०] स्वयं; प्रभाव; किरण; मदारा; राजा; स्वामी; विष्णु; शिव । -कष-पु० ग्रहणादिसे स्वयं-विशेषा कापना । -केसर-पु० सर्व । -ज-पु० ज्ञान; यम । -जा, -लक्षणा, -लक्षणा-खी० यमुना । -दिश, -धार-पु०

रविवार । -पाक-पु० औषधको धूपमें रखकर तैयार करने या पकानेकी क्रिया । -प्रसाध-पु० रामायणमें वर्णित एक राजा को कहा जाता है कि प्राणोंके शापसे दूसरे जन्ममें रावण हुआ । -कला-की० कला । -सुखी-की० सर्वसुखी । -सुप्त-पु० बग; शनि । -सुता-की० यमुना । -सैन-पु० कर्णका एक पुत्र ।

भाबुमली-की० [सं०] गंगा; दुर्बोधकी पत्नी; विक्रमादित्यकी रानी जो इन्द्रजाल विद्याकी रक्षिता थी ।

भाबुमान्(मव)-वि० [सं०] तेजोमय, दीप्तिमान्; सुंदर ।

पु० धर्म; कृष्णका एक पुत्र ।

भाब, भाव-की० पानीको खोलानेसे निकलनेवाला वाष्पीय रूप; खोले हुए जलसे ऊपर उठनेवाला सूक्ष्म जलकण, वाष्प, सुखार; ठोस या तरल पदार्थका अधिक तापसे होनेवाला गैस रूप । शु० -भरवा-चित्रियोंका अपने बच्चोंके मुँहमें मुँह डालकर हवा भरना ।

भाबर, भाभर-पु० एक पास जिसकी रस्ती बड़ी जाती है; पहाड़की तलहटी और तराईके बीचका जंगल ।

भाभरा-वि० लाल रंगका ।

भाभी-की० बड़े भाईकी स्त्री, भावज ।

भाभ-पु० [सं०] दीप्ति, चमक; धर्म; क्रोध; मदार; बह-नोरी एक वृत्त । * की० भासिनी ।

भाभक-पु० [सं०] बहनेवाला ।

भाभता-पु० भावता, प्रियतम ।

भाभती-की० भावती, प्रियतमा ।

भाभनी-पु० [सं०] परमेश्वर ।

भाभह-पु० [सं०] एक जलकार-शास्त्री ।

भाभा-की० [सं०] कौथी की; सत्यमाया; * की ।

भाभिन-की० दे० 'भासिनी' ।

भाभिनी-की० [सं०] क्रोध करनेवाली स्त्री; सुंदरी स्त्री ।

भाभी(मिह)-वि० [सं०] कौथी; क्रुद्ध; छुदर; दीप्तिमान् ।

भाब-पु० भाई; भाव; इच्छा; प्रेम; परिमाण; दर; डग ।

भाबप-पु० भाईचारा ।

भाभा-वि० जो अच्छा लगता हो, प्यारा ।

भाभगी-की० [सं०] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवाके काम आती हैं ।

भाभड़-पु० [सं०] एक पक्षी । [की० 'भाभड़ी' ।]

भाभ-पु० [सं०] बोझ, सुख; राशि, ढेर; जिम्मेदारी; संभार; कठिन कार्य; २ हजार पलका एक बजन; बहंगीका बोझ; बहंगी; विष्णु; ढोल बजानेका एक ढंग; * आश्रय; भाव । वि० बोझा-सा लगनेवाला, कठिन, कष्ट-रूप । -कैट्ट-पु० गुरुत्वबैद्ध, भारका मध्यविन्दु । -झम-वि० भार बहन करनेमें समर्थ (योगादि) । -जीवी(विह)-पु० भारवाहक । -गुला-की० स्तंभके नीचे भागोंमेंसे बीचका भाग । -बूँड-पु० बहंगी । -आरी(विह)-झूट-वि० भार बहन करनेवाला । -भूत-वि० बौद्धरूप, कष्टप्रद; मृत । पु० विष्णु । -बहि-की० बहंगी । -बाह-बाहक-बाहिक-पु० बौद्ध होनेवाला, मोटिया । -बाहन-पु० लट्ठ पट्टा गांधी । -बाही-की० नील । -बाही(विह)-वि० दे० 'भारभारी' ।

-शंकु-पु० लटकन, लिवर । -सिब-पु० भारतवर्षका

एक प्राचीन राजवंश । -सह-वि० भारी बोझ उठानेमें समर्थ । पु० गधा । -हर-हार-वि०, पु० बोझ उठानेवाला । -हारी(विह)-पु० विष्णु; कृष्ण । वि० भार बहन करनेवाला । शु० (किस्तीका)-ठठाना-दायित्व ग्रहण करना । -उत्तरना-किस्ती कठिन कर्तव्यका पूरा होना; कष्टसे मुक्ति मिलना । -देना-सैम डालना ।

भाभक-पु० [सं०] भार; एक तौल ।

भाभर-पु० [सं०] भारतवंशमें उत्पन्न जन; भारतवर्ष, हिंदुस्तान; (भारतवंशका चरित्ररूप ग्रन्थ) महाभारत; नाट्य-शास्त्र (भारतवृत्त); नट; संधाय (हिं०)-'सरी एक भारत मा, मा असवारनह मेले'-प० । -खंड-पु० दे० 'भारतखंड' । -खात-वि० हिंदुस्तानमें जनमा हुआ । -नंद-पु० ताकके ६० सेटोंमेंसे एक । -महासागर-पु० भारतवर्षके दक्षिणमें अवस्थित महासमुद्र । -माता(गु)-की० भारतवासियोंकी जननीरूप भारतमूमा । -रख-पु० प्रगाढ़ पंडित्य, अद्वितीय राष्ट्रसेवा, विश्वशांतिके प्रयत्नादिके लिए भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला सर्वोच्च सम्मान । -बर्ष-पु० जब्दोपके ९ वर्षोंमेंसे एक, हिंदुस्तान । -बासी(सिह)-पु० भारतमें बसनेवाला, हिंदुस्तानी । -संतान-की० भारतमें उत्पन्न जन, भारतवासी ।

भारतवर्षीय-वि० [सं०] भारतवर्ष-संबंधी ।

भारति-की० दे० भारती ।

भारती-की० [सं०] वाणी; वाणीकी अधिष्ठात्री, सरस्वती; मंडन मिश्रकी पत्नी; एक वृत्ति या वर्णनशैली (सां०), एक पक्षी; नाट्यकला; मन्मत्तासियोंकी एक उपाधि; भारतमाता ।

भारतीय-वि० [सं०] भारत-संबंधी । पु० भारतवासी ।

भारतीयकरण-पु० [सं०] भारतीय नमाना; सम्पा या विभागविशेषके कर्मचारियों भारतीयोंका प्रधानना कर देना ।

भारतेंदु हरिश्चंद्र-पु० (संवत् १९०७-१९०९) वर्तमान हिंदी गद्यके प्रवर्तक जिन्होंने हिंदी साहित्यकी नवीन मार्ग दिखलाया । उन्होंने मुख्य रूपसे नाटकोंकी रचना की किंतु श्रृंगाररसयुक्त तथा देशभक्तियम काव्य एवं अन्यान्य विषयोंकी ओर भी ध्यान दिया ।

भारथ-पु० बुद्ध; अर्जुन; दे० 'भारत' ।

भारथी-पु० सिपाही ।

भारद्वाज-वि० [सं०] भरद्वाजके गोत्र या वंशमें उत्पन्न । पु० द्रोणाचार्य; अगस्त्य; मंगल ग्रह; बृहस्पतिका एक पुत्र; भारद्वाज पक्षी; अश्वि ।

भारद्वाजी-की० [सं०] जगदी कपास ।

भारना-सं० कि० बोझ लादना; दबाना ।

भारथ-पु० [सं०] भारद्वाज पक्षी ।

भारव-पु० [सं०] धनुषकी डोरी ।

भारवी-की० [सं०] तुलसी ।

भारा-वि० भारी; विशाल; अधिक; असह्य । † पु० भावा; दे० 'भार' ।

भाराकौठ-वि० [सं०] बोझसे दबा हुआ ।

मार्गमार्ग-ली० [सं०] एक वर्गपद ।

मार्गकक्षर-पु० [सं०] गौश उतारना ।

मार्गकक्षर-पु० [सं०] गौश उतारना ।

मार्ग-पु० [सं०] सिंह ।

मार्गिक-वि० [सं०] भारी; सजा हुआ (रखीपट) । पु०
गौश होनेवाला (पोर्टर) ।

मारी-वि० कठिन; बका; बहुत व्यादा; गहरी; देरमें पचने-
वाला; भारूप; कष्टकर । -पण-पु० भारी होनेका भाव,
रोश; गरिष्ठता । -भरकम-वि० बड़े डीक-डोका ।
मु० -रहना-नुप रहना । (-पर)-होना-कर्मस्त
पचना, (-से) प्रबल होना (अकेला दसपर भारी है) ।

मारी(वि०)-वि० [सं०] भारवाला, बजनी ।

मारीट-पु० [सं०] एक पक्षी ।

मार्गक-पु० [सं०] एक विभिया; एक साथ; उस सामके
द्रष्टा एक कृति ।

मार्गक-पु० [सं०] वैद्य ब्राह्म और अविवाहित वैद्यासे
उत्पन्न पुत्र; हमसामने शक्तिहीन उपासना करनेवाला ।

मारीवि-ली० [सं०] भारवहन; गौश होनेकी क्रिया ।

मारीवृक्ष-पु० [सं०] गौश होनेवाला, मोटिया ।

मार्ग-पु० [सं०] भग्न देशका राजा; प्रत्येकका एक पुत्र ।

मार्गक-वि० [सं०] मृग-संबन्धी या मृगसे उत्पन्न । पु०
मृगके वशमें उत्पन्न पुरुष; मुक्ताचार्य; परशुराम; मार्कण्डेय;
जमदग्नि; शिव; एक प्राचीन जनपद; मनुष्योद्गी; कुन्धार;
ज्योतिषी; हाथी; एक हिंदू जाति । -मित्र-पु० हीरा ।

मार्गक-पु० [सं०] हीरा ।

मार्गवी-ली० [सं०] लक्ष्मी; पार्वती; देवयानी; दूब ।

मार्गवीय-वि० [सं०] मृग-संबन्धी ।

मार्गवैश-पु० [सं०] परशुराम ।

मार्गी-ली० [सं०] भारंगी ।

मार्गी-ली० [सं०] भारंगी ।

मार्गीजी-ली० [सं०] वनकपास ।

मार्ग-वि० [सं०] भरण करने योग्य । पु० मेवक; आश्रित
व्यक्ति; आयुधजीवी ।

मार्गी-ली० [सं०] विवाहिता स्त्री, पत्नी । -द्रोही(हिन्)-
-वि० पत्नीके प्रति द्वेष-भाव रखनेवाला । -वृक्ष-पु०
पतंग नामक वृक्ष । -सौश्रुत-वि० स्त्रीके वशमें रहने-
वाला ।

मार्गीजित-वि० [सं०] जनशुद्ध, जोरका शुलभ । पु०
एक तरहका हिरन ।

मार्गी-वि० [सं०] अपनी पत्नीको दूसरेके पास भेजने-
वाला, जोरकी कर्माई खानेवाला ।

मार्गीटिक-वि० [सं०] स्त्रीके शासनमें रहनेवाला ।

मार्गीक-पु० [सं०] पत्नीत्व ।

मार्गीक-पु० [सं०] बिना नियोगके परस्त्रीगमन करनेवाला;
एक तरहका हिरन; एक पर्वत ।

मार्गी-पु० [सं०] प्रवृत्ता; जीर; अभिक्रान्त; तीव्रता ।

मार्ग-पु० माला; गौरी; माछ; [सं०] भाषा; लकाट; तेज;
अंधकार । -मार्ग-पु० शिव; गणेश । -मार्ग-ली०
दुर्गा । -मार्ग-पु० सिद्ध शिव । -मार्ग(वि०)-
वि० जो किसीकी ओर देखता रहे । पु० मार्गिकके द्वारासे

दौकनेताओं नौकर । -मार्ग(वि०), -मार्ग, -मार्ग, -
मार्ग-पु० शिव ।

मार्गक-ली० दे० 'मलका' ।

मार्गक-सं० कि० मर्जी भौति देखना; तल्लस करना
(केवल 'देखना'के साथ प्रयुक्त) ।

मार्गक-वि० [सं०] (बह पुरुष) जिसके भावसे सौभाग्य-
सम्पन्न होय है । पु० शिक करपण नामका भक्ष (भार);
धर्म; लक्ष्मी; रौह मछली; कछुआ ।

मार्ग-पु० बरका, नेत्र । -मार्ग-पु० माला धारण
करने, लकानेवाला ।

मार्ग-ली० बरछी; शूल ।

मार्गी-ली० मालेकी गौरी; शूल ।

मार्ग-पु० माछ; [सं०] सूर्य ।

मार्गक, मार्गक, मार्गक, मार्गक-पु० [सं०] रीछ,
भाछ ।

मार्ग-पु० एक वन्य हिंस जंतु जिसके शरीरपर छेद-
वाह होते हैं ।

मार्गता-पु० प्रेमपान-कैसे मन बन लुटते मार्गताके
नैन-रतन; होलहार ।

मार्ग-पु० दर; निर्लक्ष; [सं०] जन्म, उपपत्ति; होना, सत्ता,
अभावका उत्पत्ति; जिसमें उत्पन्न होनेवाला विकार, हर्ष-
शोक, आदि मनोविकार; भावना; जो कुछ मनमें सोचा जाय,
छयाल; शब्द या वाक्यका अर्थ; आशय; राग, प्रेम; भाव-
सम्बन्ध अंग-वेष्टा, अंगी; अवस्था, दशा; हेतुवत्, रूप
(दासभाव); स्वभाव; अक्षा; भक्ति; जन्मकुलकी विभिन्न
स्थान (तनु, धन आदि); गीतका भाव बतानेवाली अंग-वेष्टा;
प्रधानी शयन, उपवेशन आदि बारह प्रकारकी वेष्टाओंमेंसे
कोई एक; पदार्थ; आत्मा; योगी; प्रव्य, गुण, कर्म; सामान्य
विशेष और समवाय-वे ६-पदार्थ (वैशेष); निश्चय;
प्राणी; व्यवहार; विश्व; कोव्य; शार्ङ्गद्वय; उपदेश; एक
संस्तर; वंग, प्रकार; आदर-मान; विश्वास । -मार्ग-
ली० हृष्टा, मनोभाव । -मार्ग-वि० मनसे जानने
योग्य । -मार्गी(हिन्)-वि० भाव, तात्पर्यको समझने-
वाला, रसज्ञ । -मार्ग-पु० काम, कामदेव । -मार्ग-वि०
मनोभाव समझनेवाला । -मार्गी(वि०)-वि० दे०
'मार्गदशी' (असाधु) । -परिमार्ग-पु० संग्रह न करते
हुए भी संग्रहकी हृष्टा करना (जै०) । -प्रधान-वि०
जिसमें भावकी प्रधानता हो; जिसकी भावानुभूति अधिक
तीव्र हो, भाविक । -प्रधान-वि० भावप्रधान, भावुक ।
-प्रधानता-ली० भावप्रधान होना; भावोंके बल, भावों-
से परिचालित होनेकी प्रवृत्ति; भावुकता । -बोधक-वि०
भाव बताने वा प्रकट करनेवाला । -भक्ति-ली० अक्षा-
भक्ति, आदर । -मार्गवाह-पु० मुँहसे छूट न होकर,
पर मनमें छूटी बातें सोचना (जै०) । -मार्ग-पु० मनमें
मैथुनका विचार रखना (जै०) । -मार्ग-पु० वह व्यक्ति जो
यति जैसा आचरण करे । -मार्गक-वि० किसी चीजका
भाव, धर्म, गुण आदि बतानेवाला (प्रत्यय, संज्ञा) । -मार्गक-
पु० क्रियाका वह रूप जिसमें वाक्यका उद्देश्य कर्ता वा कर्म
न होकर भाव होता है (व्या०) । -विकार-पु० भावके ६
विकार-उत्पत्ति, अस्तित्व, विपरिणामन, वर्धन, क्षय और

भाषा (पाठ्य) :- **दुष्ट**-पुं० शब्दाः । **अर्थव्यक्त**-वि० भावव्यक्त । **शब्दकला**-स्त्री० शब्द 'अलंकार' जिसमें भाषा की संधि होती है । **शक्ति**-स्त्री० एक प्रकारका वर्णन जिसमें एक भाषा की शक्ति से साथ दूसरेका उदय होता है और शांति ही चमत्कार होता है । **सुखि**-स्त्री० भाषा की शक्ति, नेकनीयता । **सूत्र**-वि० अनासक्त । **संधि**-स्त्री० दो भाषाओं की संधि (का वर्णन) ; वह स्थिति जब मनमें एक साथ कई प्रबल भाव उत्पन्न हों । **सम्बन्धित**-वि० संचातुक्त, जिसका अस्तित्व हो । **समाहित**-वि० जिसके मनमें भाव केंद्रित हो, भक्त । **सर्व**-पुं० कल्पना-प्रसूत रचना ; तन्मात्राओं की उपपत्ति (सं०) । **स्व**-वि० भावमें कीन । **स्विकार**-वि० अनुसक्त । **हिंसा**-स्त्री० कार्यतः हिंसा न करते हुए मनसे पुत्रा सोचना (जै०) । **हीन**-वि० भावरहित ।

भाषा-अ० मनमें आवे, जो चाहे तो ।

भाषक-वि० [सं०] भाषना करनेवाला ; उपपादक ; जेव-रकर ; रसदा ; भावमत्ता भक्त ; प्रेमी । पुं० भाष, मनो-विकार । अ० शेष ।

भाषक-स्त्री० बड़े भाषा की स्त्री, जो भाषे । पुं० [सं०] दे० 'भाष' ।

भाषता-वि० जो मनको भावे, अच्छा लगे-'सुनि भावती भरत भात'-रामचंद्रिका । पुं० प्रेमभाव । [स्त्री० 'भावती' ।]

भाषन-पुं० [सं०] निमित्त कारण ; लक्ष्य ; शिव ; विष्णु ; उपादान ; कवि-वर्चन ; चित्तन, कल्पना ; भक्ति-भावना ; अनुसंधान ; निर्धारण ; स्मरण ; प्रमाण ; किसी चूर्णको रससे तर करके घोटना ; सुवासित करना ; अनुभूति । वि० दे० 'भाषक' ; अ० भावे, अच्छा लगनेवाला ।

भाषना-अ० क्रि० दे० 'भाषा' । स्त्री० [सं०] चित्तन, ध्यान, लयाल, कल्पना ; उपादान ; कवि-वर्चन ; अनुसंधान ; स्मरण ; प्रमाण ; इच्छा, इरादा ; कौश ; जल ; चूर्ण आदिको रस, काय भाविके साथ बार-बार तर करके घोटना । -**मार्ग**-पुं० आध्यात्मिक व्यवस्था । **भुक्त**-वि० चित्तित ।

भाषनामय-वि० [सं०] भाषनावुक्त ; काव्यनिक ।

भाषनामय-पुं० [सं०] शिव ।

भाषावि-स्त्री० जो जीमें भाषा, जो कुछ सोचा हो ।

भाषावीच-वि० [सं०] चित्तनकी योग्य, कल्पनाके योग्य ; सहनीय ।

भाषांतर-पुं० [सं०] मनकी व्यवस्था दूसरी हो जाना ; अर्थान्तर ।

भाषातुल्य-वि० [सं०] भाषका अनुसरण करनेवाला ।

भाषातुल्य-स्त्री० [सं०] छाया । वि० स्त्री० दे० 'भाषातुल्य' ।

भाषाभास-पुं० [सं०] वनाशटी भाषा ; अनुपयुक्त स्थानमें भाषका दिखलाया जाना (सं०) ।

भाषार्थ-पुं० [सं०] वह अर्थ जिसमें अनेक शब्दका अर्थ न हैकर समूचे वाक्यको भास्य दे दिया जाय, मतलब, तात्पर्य ।

भाषाकीया-स्त्री० [सं०] छाया ।

भाषाच-वि० [सं०] कोमल, मादुका दयाल ।

भाषाभित-पुं० [सं०] नृलका एक भेद ।

भाषिक-वि० [सं०] भाषनाप्रधान, मादुका क्षमाभाविक भावी ; मर्मज्ञ । पुं० एक अर्थान्तर-भूत यह अभिव्यक्ति घटनाओंका इस तरह वर्णन करना कि वे सर्वोक्ति सामने घटित होती हुई जान पड़े ।

भाषित-वि० [सं०] सोना हुआ, चित्तित ; जाना हुआ ; प्रमाणित ; प्राप्त ; शोधित ; जिसमें किसी रस भाविको भावना दी गयी हो ; वासित ; मिश्रित ; व्यक्त किया हुआ । **बुद्धि**-वि० दे० 'भावितारमा' ।

भाषिता-स्त्री० [सं०] होनहार ।

भाषितास्वर(स्वर)-वि० [सं०] जिसने ईश्वर-स्मरण द्वारा अपनी आत्मा शुद्ध कर ली हो, संत ; तज्जीन ।

भाषित-पुं० [सं०] प्रियोक-स्वर्ग, सर्व और पंताल ।

भावित्व-पुं० [सं०] होनहार, अव्यर्थभावित ।

भाविनी-स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री ; साध्वी स्त्री ; भावनावुक्त स्त्री ; मोक्षप्रिय स्त्री ; स्वैरिणी (?) ।

भावी-स्त्री० होनी, होनेवाली बात ।

भावी(विष्)-वि० [सं०] होनेवाला, होनहार ; भविष्यत् ; सुंदर, नम्य ; अनुसक्त ।

भावुक-वि० [सं०] भावी ; जो जल्दी भावी, विशेषतः कोमल, कृष्ण भावोंके अधीन हो जाय, कोमलचित्त ; सद्भाव, रसक ; मंगलयुक्त । पुं० वरनोई ; मंगल ; रसमयी भाषा ।

भावुकता-स्त्री० [सं०] भावुक होनेका भाव, भाव-प्रवणता ।

भावे-अ० दे० 'भाव' ।

भावोदय-पुं० [सं०] एक प्रकारका वर्णन जिसमें एक भाषा की शांति और दूसरेका उदय हुआ हो और उदयमें ही चमत्कार हो (सं०) ।

भावोद्दीपक-वि० [सं०] भाषाओंको उत्तेजित करनेवाला ।

भावोन्मेष-वि० [सं०] भावविह्वल ।

भावोन्मेष-पुं० [सं०] भाषाका उदय ।

भाव्य-वि० [सं०] होनेवाला, भावी ; भाषना करने योग्य, सिद्ध करने योग्य । पुं० होनी ।

भाव-प० भाषा, वाणी ।

भाषक-पुं० [सं०] कहने, बोलनेवाला (समासांतमें) ।

भाषण-पुं० [सं०] बोलना, कथन ; व्याख्यान ; कृपापूर्ण शब्द । -**प्रतियोगिता**-स्त्री० विषय-विशेषपर बोलनेकी प्रतियोगिता ।

भाषना-अ० क्रि० बोलना, कहना ।

भाषांतर-पुं० [सं०] अनुवाद, उलथा, तर्जुमा । -**कार**-पुं० उलथा करनेवाला ।

भाषा-स्त्री० [सं०] (बोलकर) भावप्रकाश करनेका साधन ; किसी विशेष देश या जनसामान्यमें प्रचलित शब्दावली और उसे बतानेका ढंग, बोली ; प्रादेशिक भाषा या बोली ; हिंदी ; व्यक्ति-विशेषके लिखने-बोलनेका ढंग ; परिभाषा ; शैली ; सरस्वती ; अजीदाबा ; एक रागिनी । -**ज्ञान**-पुं० शब्द, शब्दार्थ और व्याख्यानका ज्ञान । -**तत्त्व**-पुं० भाषा-विज्ञान । -**वाद**-पुं० अजीदाबा । -**वद**-वि० हिंदी भाषामें लिखित । -**विज्ञान**-**शास्त्र**-पुं० वह विज्ञान जिसमें भाषाकी उपपत्ति, रूपपरिवर्तन आदि विषयोंका विचार किया गया हो । -**विद**-पुं० भाषा या भाषाव्योका

अच्छा बाता । -सम्-पु० एक सम्बन्धकार-सम्बन्धी
 ऐली बीजना जिससे बाध्य कई भाषाओंका माना जा सके ।
 आधिक-वि० [सं०] भाषा-संबंधी, बोली-संबंधी ।
 आधिकार-वि०, स्त्री० [सं०] बोलने, कहनेवाली । स्त्री०
 बाणी, भाषा ।
 आधिक-वि० [सं०] कथित, उक्त । पु० कथन, बोली ।
 आधितारु-वि०, पु० [सं०] बोलने, बात करनेवाला ।
 आधी(विश्व)-वि० [सं०] (समासके अंतर्गत) बोलनेवाला
 (हिंदीभाषी, बँगलाभाषी); कहनेवाला, बतानेवाला 'धिय
 आगमभाषी भलो...' । - (वि) पक्षी (विश्व)-पु० बोलने-
 वाला पक्षी ।
 आध्य-पु० [सं०] बोलना; भाषा में लिखित कोई ग्रन्थ; सूत्र
 वा मूल ग्रंथकी व्याख्या, विवृति; व्याख्या । वि० कहने
 योग्य । -कार, -कृत-पु० आध्य लिखनेवाला ।
 आसंत-वि० [सं०] प्रकाशमान; सुंदर । पु० सूर्य; चंद्र;
 नक्षत्र; भास पक्षी ।
 आसंती-स्त्री० [सं०] तारा ।
 आस-पु० [सं०] चमक, दीप्ति; कल्पना; बोध; योग;
 मुग्धा; स्वप्रवासवदत्ता आदिके कर्ता, कालिदासके पूर्ववर्ती
 एक (संस्कृत) महाकवि; शकुंत पक्षी । -कर्म-पु० एक
 राक्षस ।
 आस-स्त्री० दे० 'आषा' ।
 आसक-वि०, पु० [सं०] चमकानेवाला, प्रकाशक ।
 आसता-स्त्री० [सं०] गृभ्र जैसा स्वभाव, लालच; चम-
 कोलापन ।
 आसन-पु० [सं०] चमकना; रोशन होना ।
 आसना-अ० कि० प्रतीत होना; प्रकाशित होना; हुबना,
 धंसना- 'यद्य सत दे गोपिन करै जाबहु विरह नदीमें
 आसति'-सूर । सं० कि० बोलना, कहना ।
 आसमंत-वि० चमकदार ।
 आसमान-वि० [सं०] जान पड़ता हुआ; दिखाई देता
 हुआ । पु० सूर्य ।
 आसा-स्त्री० दे० 'आषा' ।
 आसिक-वि० [सं०] दिखाई पड़नेवाला, लक्षित होने-
 वाला ।
 आसित-वि० [सं०] प्रकाशित, चमकीला ।
 आसी(विश्व)-वि० [सं०] चमकनेवाला ।
 आसु-पु० [सं०] सूर्य ।
 आसुर-वि० [सं०] चमकीला, दीप्तिमान्; अयंकर । पु०
 गौर; रफटिक; कुडौष । -पुष्पा स्त्री० रुचिकाळी ।
 आस्-स्त्री० [सं०] चमक, दीप्ति; किरण; आभास; प्रति-
 विम्ब; अच्छा । -कर-पु० सूर्य; गौर; अधि; शिव; सोना;
 शिखांतशिरामणिके कर्ता प्रसिद्ध ज्योतिषी (११वीं-१२वीं
 शती); धातु, पत्थर आदिकी खोद, छीलकर मूर्ति आदि
 बनानेवाला । -कर्म-पु० दे० 'आस्कर्म' । -भुति-
 पु० विष्णु । -मिष-पु० लाज ।
 आस्करि-पु० [सं०] बैलसत मनु; कर्म; सुग्रीव; शनि ग्रह;
 एक मुनि ।
 आस्कर्म-पु० [सं०] धातु, पत्थर आदिकी मूर्ति बनानेकी
 कला ।

आस्वन-वि० [सं०] अस्मत्त वचा हुआ; अस्म-संबंधी ।
 आस्व-वि० [सं०] प्रकाशित करने योग्य, प्रकट करने
 योग्य ।
 आस्वसी-वि०, स्त्री० [सं०] दीप्तिमती । स्त्री० एक प्राचीन
 नदी ।
 आस्वर-वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकीला । पु० सूर्य;
 दिन; अधि । -वर्ण-वि० प्रकाशके रंगका ।
 आस्वान्(वस्व)-वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकता हुआ ।
 पु० सूर्य; गौर; दीप्ति ।
 मिग-पु० दे० 'भृंग'; विलनी । † स्त्री० माषा । -राज
 -पु० दे० 'सृंगराज' ।
 मिगाना-सं० कि० तर, सिक्क करना ।
 मिगोरा-पु० भंगरा; भृंगराज पक्षी ।
 मिगाना-सं० कि० दे० 'मिगोना' ।
 मिगोवा, मिगोवना-सं० कि० दे० 'मिगोना' ।
 मिड-पु० [सं०] मिडी ।
 मिडिपाळ-पु० दे० 'मिदिपाळ' ।
 मिडी-स्त्री० [सं०] एक क्षुप और उसकी कली जो तरकारी-
 के काम आती है, रामतरौह । -सक-पु० मिडीका क्षुप ।
 मिडपाळ, मिदिपाळ-पु० [सं०] हाथसे कैदा बानेवाला
 छोटे बड़े जैसा एक मत्स्य; डेकलीस ।
 मिडु-वि० [सं०] नष्ट करनेवाला । पु० विडु । स्त्री० वृत्त
 अर्थका प्रसव करनेवाली स्त्री ।
 मिसार-पु० खबरा, खपाकाळ ।
 मिक्का-पु० माई ।
 मिक्कण-पु० [सं०] मील मँगना ।
 मिक्का-स्त्री० [सं०] मँगना, वाचना, भीस; सेवा; मृति,
 मजदूरी; मिश्र, सन्ध्यासीकी भीजनार्थ दिया जानेवाला
 (सिद्ध) अन्न (करना, कराना) । -करण-पु० भीस
 मँगना । -चर, -चार-पु० मिश्रक । -ज्या-स्त्री०
 भीस मँगना, मिक्कावृत्ति । -जीवी(विश्व)-वि० भीस
 मँगकर जीविका चलावेवाला । -पात्र-पु० भीस मँगने-
 का बरतन, कपाळ; मिक्का अधिकारी । -भाँच-पु०
 भीस मँगनेका बरतन । -आखन-पु० दे० 'मिक्कापात्र' ।
 -मुक(ज)-वि० मिक्काजीवी । -वृत्ति-स्त्री० भीस
 मँगकर गुजर करना, मिक्काजीवी जीवन ।
 मिक्का-पु० [सं०] मिश्रक ।
 मिक्काटन-पु० [सं०] भीस मँगनेके लिए फिरना ।
 मिक्का-पु० [सं०] मिश्रार्थ प्राप्त अन्न ।
 मिक्कावी(विश्व)-वि०, पु० [सं०] भीस मँगनेवाला,
 मिक्का ।
 मिक्काई-वि० [सं०] मिश्रा देने योग्य ।
 मिक्कासी(विश्व)-वि० [सं०] मिक्काजीवी ।
 मिक्षित-वि० [सं०] मिश्राके रूपमें प्राप्त ।
 मिक्षी(विश्व)-वि० [सं०] भीस मँगनेवाला ।
 मिश्र-पु० [सं०] भीस मँगनेवाला; सन्ध्यासी; गौड
 सन्ध्यासी । -ज्या-स्त्री० मिक्कावृत्ति । -रूप-पु०
 महादेव । -संघ-पु० गौड सन्ध्यासियोंका संघ । -
 संघासी-स्त्री० मिश्रके कपड़े, चोवर, गुदरी । -सूत्र-
 पु० गौड मिश्रकोंके लिए बने हुए नियमोंका संग्रह ।

मिश्रक-पु० [सं०] मीस मॉननेवाला, मिशारी ।
 मिश्रकी-की० [सं०] मिश्रक की ।
 मिश्रणी-की० [सं०] मीस सम्पासिनी ।
 मिश्र-मीसका समस्तमें म्यनहत छुनु रूप । -मॉनन,
 -मॉनन-की० मिशारिन, मिश्रकी । -मॉना-पु० मीस
 मॉननेवाला ।
 मिशारिणी-की० दे० 'मिशारिन' ।
 मिशारिन, मिशारिनी-की० मिश्रकी, मिश्रमंगन ।
 मिशारी-पु० मीस मॉननेवाला, मिश्रक । वि० कगाल,
 मकिचन ।
 मिशिया-की० मीस ।
 मिशिवारी-पु० मिशारी ।
 मिशाना-स० कि० दे० 'मिगोना' ।
 मिगोना-स० कि० पानी आविसे तर करना ।
 मिगोना-पु० दे० 'गडुगुना' ।
 मिष्का-की० दे० 'मिक्षा' ।
 मिष्कु-पु० दे० 'मिक्ष' ।
 मिष्कु-पु० दे० 'मिक्षक' ।
 मिश्रवना-स० कि० मिगोनेका काम कराना; मिगोना ।
 मिश्रवाना-स० कि० मिगोने या मेजनेका काम कराना ।
 मिशाना, मिजोना-स० कि० दे० 'मिगोना' ।
 मिदनी-की० स्तनका अग्रभाग, चूचुक ।
 मिश्रत-की० मुठमेक ।
 मिश्र-की० ततैया, बंदे । पु० -का कृपा-पेसा कुल,
 कुडुन जिसके एक आदमीको छेविने तो सब कनकेको
 मामदा हो जायें ।
 मिश्रना-अ० कि० टकराना; सटना; कटना, घुमना ।
 मिशरिया-वि० भीतर रहने, जाने-जानेवाला, अंतरंग ।
 पु० बल्लभ-कुलके मंत्रिकोंके भीतर रहनेवाला पुजारी ।
 मिश्रक-पु० कपड़ेके भीतरका पल्ला, अस्तर । वि०
 भीतर ।
 मिश्रकी-की० चक्कीके नीचेका पाट ।
 मिशाना-अ० कि० डरना, भीत होना ।
 मिश्र-पु० [सं०] खंड, टुकड़ा; भाग; दीवार ।
 मिश्रि-की० [सं०] मीत, दीवार; नीर्वे; चित्राधार; भेद,
 वरार; खंड; दूटी हुई वस्तु; चटार्क; दीप; अवस्तर । -
 कासन-पु० चूहा । -चित्र-पु० दीवारपर बना हुआ
 चित्र । -चौर-पु० संभ मारनेवाला चोर । -पन्नक-
 पु० (प्लेकार्ड) दीवारपर चित्रकाया जानेवाला वह कालन
 जिसके एक ही ओर बड़े अक्षरोंमें विज्ञापन, सूचना आदि
 छपी हो या हाथसे लिखी गयी हो । -पासन-पु० एक
 तरहका चूहा ।
 मिश्रिक-वि० [सं०] तोड़नेवाला । पु० दीवार ।
 मिश्रिका-की० [सं०] दीवार; छिपकली ।
 मिश्र-पु० [सं०] मूलका एक मेद ।
 मिश्र-पु० मेर, अंतर ।
 मिश्र-पु० [सं०] तज्जवार; बज्र; हीरा ।
 मिश्रना-अ० कि० छिदना, बिड़ होना; घुसना, पैसल
 होना ।
 मिश्रा-की० [सं०] दटना, कटना; पार्थक्य; अंतर; भेद,

प्रकार; पीरा ।
 मिश्रि, मिश्रि, मिश्र-पु० [सं०] बज्र ।
 मिशुर-पु० [सं०] मिदना, कटना; नष्ट होना; फाटकर
 भेज; बज्र; हाथी शीपनेकी जमीर । वि० छेदने, मक्षि-
 वाला; तुनुका मिश्रित ।
 मिश्रि-वि० [सं०] तुनुक, जो आसानीसे टूट जाय ।
 मिश्र-वि० [सं०] (समासांतमें) तोड़ने, नष्ट करनेवाला ।
 की० खंडन; अंतर; प्रकार ।
 मिश्र-वि० [सं०] भेदनीय । पु० नव; करारोंको काटता
 कुम्हा बहनेवाला नद ।
 मिश्र-पु० [सं०] बज्र ।
 मिश्रकना-अ० कि० मक्षिचयोंका भिनभिनीना; किसी
 (गंदी) चीजपर मक्षिचयोंके झुंडका बैठना; बहुत गंदा
 होना; विन लगना ।
 भिन-भिन-की० मक्खी आदिके परोंकी आवाज ।
 भिनभिनीना-अ० कि० मक्षिचयोंका 'भिन-भिन' करना ।
 भिनसार, भिनसार-पु० कणकाल, तबका ।
 मिश्रही-अ० सवेरे, तबके ।
 मिश्र-वि० [सं०] अलग, जुदा; छिन्न, खंडित; प्रस्पृष्टित;
 दूसरा; ढीला किया हुआ; मिश्रित; परिवर्तित; मसल
 (हाथी) । वह सख्या जो पूर्ण सख्यासे कम हो (ग०);
 रकबा एक दीप; अलग; कुल । -कट-वि० मसल (हाथी) ।
 -कट-पु० मसल हाथी । -कट-वि० नायकरहित,
 बेसिरी (सेना) । -कम-वि० कमभग दीपयुक्त । पु०
 कमभग । -गति-वि० तेज चालमें जानेवाला । -गर्भ-
 वि० जिसका भूह बिस्तर गया है; अस्त-म्यस्त (सेना) ।
 -ग्राहिका-की० कर्कटी, कूट । -वर्षा(विश्व)-वि०
 पक्षपाती । -देशीय-वि० दूसरे देशका, विदेशीय ।
 -देश-वि० आगत । -भाजन-वर्षेडा टुकका ।
 -मिश्रास्मा(स्मृ)-पु० चना । -मतावर्षा-
 (विश्व)-वि०, पु० दूसरे मत, मनहबको माननेवाला ।
 -मयाद, -मयादी(विश्व)-वि० जिसमें मयादा भग
 कर दी है, अनियंत्रित । -योजनी-की० पाषाणमेवक
 पोषा । -रुचि-वि० जिसकी रुचि भिन्न हो । -वर्ण-
 वि० विवर्ण; दूसरी जातिका । -वृत्त-वि० जो कर्तव्य-पथ-
 से भ्रष्ट हो गया है; जिसमें छंद-संबंधी दोष हों । -वृत्ति-
 वि० दूसरे पेयका; दुरा जीवन व्यतीत करनेवाला; भिन्न
 भाव, रुचिवाला । -संहति-वि० जिसका संबंध विच्छिन्न
 हो गया हो, विपुक्त । -हृदय-जिसका हृदय छिद
 गया हो ।
 मिश्रक-पु० [सं०] मीस ।
 मिश्रता-की० [सं०] मिश्र होनेका भाव, भेद, विलगन ।
 मिश्राना-अ० कि० चकराना ।
 मिश्राय-वि० [सं०] मिश्र छोड़नेवाला; स्पष्ट अर्थवाला ।
 मिश्राय-पु० [सं०] सीतेला मारी ।
 मिश्रना-अ० कि० डरना, भीत होना ।
 मिश्रा-की० [सं०] मय । * पु० दे० 'मिमा' ।
 मिश्रंग-पु० दे० 'मृग' ।
 मिश्रना-अ० कि० दे० 'मिकना' ।
 मिश्रि-पु० दे० 'मृग' ।

मिनिडिका-श्री० [सं०] श्वेत पुंवा ।
 मिडनी-श्री० दे० 'मीडनी' ।
 मिडनी-श्री० एक बंगली देव जिसका फल दवाके काम
 जाता है और उससे तेक भी निकाला जाता है, मल्लतक ।
 मिड-पु० [सं०] मील । -शरी-श्री० नीलगाय । -
 तक्ष-पु० कोष । -शूषण-पु० पुंल्वी ।
 मिड्डी-श्री० [सं०] कोष ।
 मिडोट, मिडोटक-पु० [सं०] कोष ।
 मिडू-पु० दे० 'विडित' ।
 मिडू-पु० मशकसे पानी डोनेवाला, सक्का ।
 मिडू(ज्)-पु० [सं०] वैद्य; चिकित्सक; दवा, उपचार ।
 -पाक्ष-पु० अतर्ह वैद्य । -मिवा-श्री० शुक्ल ।
 मिष-पु० 'मिष'का समासगत रूप । -जित-पु० औषध ।
 -भद्रा-श्री० भद्रवतिका । -भद्रा(तु)-श्री० बासक,
 अङ्गुला । -वर-पु० अधिनिकुमार । -विद्-पु०
 चिकित्सक, वैद्य ।
 मिषावर्त-पु० [सं०] कृष्ण ।
 मिषज-पु० [सं०] रोगनिवारण; औषध ।
 मिष्टा, मिसदा-श्री० मूल, विष्ठा ।
 मिष्ठा, मिष्ठाका, मिष्ठा, मिष्ठा-श्री० [सं०]
 पकाव ।
 मिस-पु० विदित, स्वर्ग ।
 मिस-पु० दे० 'विडित' ।
 मिसती-पु० दे० 'मिष्टी' ।
 मिस्स-श्री० कमलकी जड़ ।
 मिस्सदा, मिस्सा, मिस्सदा-श्री० [सं०] दे० 'मिष्ठा' ।
 मीगना-अ० कि० दे० 'मीगना' ।
 मीगी-श्री० दे० 'मुंगी' ।
 मीगना-स० कि० मीगना, दवाना, बंध करना (औंछ);
 काटना ।
 मीगना-अ० कि० मीगना; स्नान करना; प्रविष्ट होना;
 मेल-जोल बढ़ाना; गड़द होना ।
 मीट-पु० दे० 'मीट' । † श्री० दीवार; भित्ति (कुन्देल) ।
 मी-अ० अवयव; तक; अधिक । श्री० [सं०] भय, भीति;
 भासका । -कर-वि० भयोत्पादक ।
 मीट-पु० दे० 'मीम' ।
 मीक-श्री० दे० 'मीक्ष' ।
 मीक्ष-श्री० मिश्रा, पाचना; मीगनेसे प्राप्त अन्नादि,
 खेतरा । मु० -का दुकान-मीक्षमें मिली हुई चीज ।
 मीक्ष-वि० दे० 'मीषण' ।
 मीक्ष-वि०, पु० दे० 'मीम्' ।
 मीगना-अ० कि० पानीसे तर होना, गीला होना । मु०
 -(मी) बिस्वी-भय या स्वार्थसे अति नम्र, दीन बना
 होना । -हाल-आधी रातके बादकी रात जो अधिक ठंडी
 होती है ।
 मीजना-अ० कि० दे० 'मीगना'; बढ़ना, व्यतीत होना-
 'जोय चुपचा चाय म्मी-म्मी मीजत सरबरी'-वन० ।
 मीज-वि० सरस, सुखी-'मीजे वन आनंद विराजो
 निवरक तुम'-धन० ।
 मीट-पु० दे० 'मीटा' ।

मीटा-पु० टीका, हूय; टीकेकी समझकी वमीन; पानकी
 नेत्र चढ़ानेकी छिप बनावा हुआ टीका ।
 मीष-श्री० आदमियोंका जमाव, मजमा, जनसमूह; संकट
 (कटना, पचना) । -मेष-पु० दे० 'मीक्ष-माक्ष' । -
 माक्ष-श्री० मीक्ष, मजमा; भक्षमेषका ।
 मीक्ष-श्री० मलनेकी क्रिया ।
 मीक्ष-स० कि० मलना; मिश्रना; मिलाना ।
 मीक्ष-वि० तंग, संकीर्ण ।
 मीक्षी-श्री० मिडी ।
 मीक्ष-वि० [सं०] बरा हुआ, भयप्रसन्न । पु० भय, भीति;
 खेतरा । -ग्रासन-पु० मुँहचोर गवेवा । -चारी(रिन्)-
 वि० बरता हुआ क्षम करनेवाला । -चित-वि० मनमें
 बरा हुआ ।
 मीक्ष-श्री० दीवार; छत । मु०-में दीक्षना-शक्तिसे
 बाहर, अस्मय कार्य करनेमें प्रवृत्त होना ।
 मीक्ष-अ० अंदर; परके अंदर; मध्यमें । पु० अंतर, अंत-
 करण; जनानखाना । मु०-का-अंदरका; मनका; अग्रकट,
 मनमें रहनेवाला । -कुशी-उपवीची, पर कितीके
 काम न जानेवाली वस्तु । -ही मीक्ष-मन ही मन,
 अंदर ही अंदर ।
 मीक्ष-अ० मीक्ष ।
 मीक्षरिवा-पु० दे० 'मितरिया' ।
 मीक्षरी-वि० मीतरका, अंदरकी; मनका; अग्रकट । -दोष-
 पु० कुशलीका एक पैर ।
 मीति-श्री० [सं०] भय, डर; कप । -कर, -कारी(रिन्)-
 वि० भयकर । -कृत्-वि० भयोत्पादक । -च्छिद्-वि०
 भयका निवारण करनेवाला ।
 मीक्षी-श्री० भय; दीवार ।
 मीक्ष-पु० मोर, भिनसार ।
 मीमना-अ० कि० मीगना; पैरत होना, जप होना ।
 मीमी-वि० श्री० हलकी, मीठी (लुशब्) ।
 मीम-वि० [सं०] डरावना, भय उपजानेवाला; विद्याल-
 काय । पु० मयानक रस; शिव; परमेश्वर; पौर्वो पावनोंमेंसे
 दूसरे जो बाहुके पुत्र माने जाते हैं, भीमसेन; वसन्तीके
 पिता विदर्भनरेश; कुम्भकर्णका वेदा । -कर्मा(मन्)-
 वि० डरावने काम करनेवाला; महा पराक्रमी । -कामुक,
 -धन्वा(मन्)-वि० बहुत बड़े धनुषवाला ।
 -कुमार-पु० धोतकच । -चंडी-श्री० एक देवी ।
 -तिथि-श्री० माघ-शुक्ल पक्षादशी । -दर्शन-वि०
 डरावनी शक्तवाला, भीमरूप । -ह्रावशी-श्री० माघ-शुक्ल
 द्वादशी-माघ-वि० डरावनी आवाजवाला । पु० डरा-
 वनी आवाज; शेर; प्रलयकालमें प्रकट होनेवाले सप्त
 वादलोंमेंसे एक । -पराक्रम-वि० जिसका
 पराक्रम दूसरोंके दिलमें भय पैदा करे, महा बली ।
 -पक्षशी-श्री० एक रागिनी । -वृक्ष-पु० युधिष्ठिर ।
 -बल-पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक अग्नि । वि० भारी
 बलवान् । -मुख-पु० एक तरफका बाण; एक बानर ।
 -दक्ष-पु० एक असुर जो कृमान्तारमें विष्णुके हाथों
 मारा गया; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र । -दक्षी-
 श्री० ७७ वें वर्षके ७ वें मासकी ७ वी रात जिस पर

सुर-की० एक कीटा ।

सुरक-पु० भोजन, आहार; भगिन ।

सुरकी०-की० फर्दुदी ।

सुरकीर, सुरकार्य-की० सक्नेसे उत्पन्न दुर्गण ।

सुरकाना-स० कि० भूकने, बकनाद करनेमें प्रवृत्त करना ।

सुरक-वि० दे० 'सुनकर' ।

सुरक-वि० भूसा, पेट; जिसके पास कुछ न हो, कंगाल ।

सुर-वि० [सं०] खाना डुना; भोगा डुना; जो भोगा जा

रहा हो । **पु०** भोजन । -**पूर्व-वि०** जो पहले भोगा जा

नुका हो । -**भोग-वि०** जो भोग नुका हो; जो भोगा

गया हो । -**भोगी-वि०** [हि०] जो किसी चीजका इन्-

द्रुख ठठा नुका हो, कृतभोग । -**बुद्धि-की०** (पेटमें)

अन्नका भूलना । -**शेष-समुच्चित-पु०** खानेसे बचा

हुआ अन्नादि; उच्छिष्ट । -**सुप्त-वि०** भोजनके बाद

सोनेवाला ।

सुरकि-की० [सं०] भोजन; भोग; आहार; कच्चा, दखल;

प्रत्येकी दैनिक गति; सीमा । -**पात्र-पु०** खानेका बरतन,

बाल आदि । -**प्रद-वि०** भोग या भोजन देनेवाला ।

पु० मूँगा । -**बजित-वि०** जिसका भोग बजित हो ।

सुरकोच्छिष्ट-पु० [सं०] जठन ।

सुर-भूख का समासगत रूप । -**मरी-वि०** भूखों

मरनेवाला, सुखरूप । -**मरी-की०** भूखों मरनेकी स्थिति,

पोषण न मिलनेके कारण शरीरका क्षीण होना ।

सुराना-अ० कि० क्षुधित होना ।

सुराल-वि० भूख ।

सुरगत-की० विसात; * दे० 'सुरकि' ।

सुरगतना-स० कि० भोगना, सहना । **अ०** कि० बीतना,

पूरा होना । **सु०** सुरगत लेना-निवट लेना, समाप्त लेना ।

सुरगसान-पु० सुरगतनेकी क्रिया; कीमत या देनेका नुकता

क्रिया जाना; ग्राहकको खरीदना हुआ माल देना, 'डेलि-

वरी'; निवटारा ।

सुरगसाना-स० कि० चुकाना, अदा करना; समाप्त करना;

विताना; पहुँचाना (मिरी सारी बातें बर्दा सुरगता दी);

सुरगतनेके लिए बाध्य करना ।

सुरगाना-स० कि० भोग कराना, भोगवाना ।

सुरग-की० विसात; * दे० 'सुरकि' ।

सुरगि-की० दे० 'सुरकि' -बला अग्रुति योगे कर्ह साधि

कथा तपजोग-ए० ।

सुरगा-वि० बुद्ध, मूर्ख ।

सुरप्र-वि० [सं०] जो (रोगादिके) टेढ़ा हो गया हो;

अन्न । -**नैत्र-पु०** एक सन्निपात जिसमें रोगीकी आँखें

टेढ़ी हो जाती हैं ।

सुरक, सुरक-वि० मूर्ख, जहमति ।

सुरकर-पु० [सं०] सौँप; जार; पत्ति; सीसा; अस्त्रेवा नक्षत्र;

आठकी संख्या; विद्वक । -**बातिनी-की०** काकोजी ।

-**किष्ठा-की०** महासर्मगा । -**दमनी-की०** नाकुली ।

-**पर्णी-की०** नागदमनी । -**पुष्प-पु०** एक छुप ।

-**प्रवात-पु०** एक वर्णवृत्त । -**सुर(ज),-भोगी-**

(गिर)-पु० मोर; गरुड । -**भोजी(विष्)-पु०** मोर;

गरुड; एक तरहका सौँप । -**कस्ता-की०** पानकी देह ।

-**विष्मिल-पु०** एक वधिक छंद । -**सनु-पु०** गरुड ।

-**सिद्ध-पु०** एक वृत्त । -**संगसा-की०** एक वृत्त ।

सुरंगम-पु० [सं०] सौँप; सीसा; राहु; अस्त्रेवा नक्षत्र;

आठकी संख्या ।

सुरंगत-पु० काले रंगकी एक विष्मिया, * सौँप ।

सुरंगारी-की० [सं०] नकुल्ल, राना ।

सुरंगारूप-पु० [सं०] नामकेसर ।

सुरंगिनी-की० [सं०] सपिणी, एक छंद ।

सुरंगी-की० [सं०] सपिणी, नागिन; एक वर्णवृत्त ;

सुरंगेस-पु० [सं०] दे० 'सुरंगेश' ।

सुर-पु० [सं०] बावू; हाथ; हाथीकी खँ; बाल; रेखा-

गणितके किसी क्षेत्रकी सीमारेखा, बाहु; विशुद्धका आधार;

छायाका मूल । -**कोटर-पु०** कौंस । -**ग-पु०** सौँप ।

-**वारण-पु०** नेवका; मोर; गरुड । -**भोजी(विष्)-**

पु० गरुड; मोर । -**राज-पु०** शेषनाग । -**गी-की०**

सपिणी; अस्त्रेवा नक्षत्र । -**क्यावा-की०** निरापद

आश्रय । -**ज्या-की०** भुजकी ज्या । -**बंद-पु०** बंद-

रूप हाथ; लंबा हाथ; बाईमें प्रहलनेका तीन केरेका एक

गहना । -**दख-पु०** हाथ । -**पास-पु०** गरुडाही । -**बंद-**

पु० [हि०] बावूबंद । -**बंद-पु०** केशुर । -**बंद-पु०**

भुजपाश, बाईके भीतर भर लेना । -**बल-पु०** बाहुबल ।

-**बाध-पु०** नोकवार । -**मज्ज-पु०** जोड़ । -**मूल-**

पु० कथा । -**बहि-की०** भुजबंद । -**कस्ता-की०** कस्ता

जैसी कीमल कमनीय बौह । -**बीर-पु०** भुजबल ।

-**सिल्व-पु०** कंधा । -**सिर(स्)-पु०** कंधा ।

-**संभोग-पु०** आलिंगन । -**स्वस-पु०** बौहका अक्षर

जाना ।

सुरगांतक-पु० [सं०] गरुड; मोर; नेवका ।

सुरगासन-पु० [सं०] मोर; गरुड ।

सुरगेश, सुरगेश-पु० [सं०] शेषनाग; बाहुकि ।

सुरपात-पु० दे० 'सुरपत्र' ।

सुररिया-की० जरई ।

सुरवा-पु० मधुमेजा ।

सुरांतर, सुरांतराल-पु० [सं०] छाती; मोद ।

सुरा-की० [सं०] बाहु, भुज; सर्पकी कुंठली । -**कंद-**

पु० हाथकी उंगलीका नाथून । -**दख-पु०** हाथ ।

-**मज्ज-पु०** कुहनी । -**मूल-पु०** कथा, बाहुबल । **सु०**

-**उठाकर कहना, उठाना या टेकना-प्रतिज्ञा करना ।**

सुराप्र-पु० [सं०] हाथ ।

सुराकी-की० एक तरहका टेढ़ा छुरा, सुखरी ।

सुरिवा-पु० उबाले हुए धानका चन्नक; धी या तेलमें

भुनी हुई तरकारी ।

सुरिज्य-पु० [सं०] दास; रोग; हस्तसृष्ट । **वि०** स्वतंत्र ।

सुरिज्या-की० [सं०] दासी; नेव्या ।

सुरेजा-पु० चबैना ।

सुरेज-पु० सुरंगा पक्षी ।

सुरीना-पु० भूना हुआ अन्न; सुराईमें दिया जाने-

वाला अन्न ।

सुरजु-पु० [सं०] आहार; पाश; अग्नि; यज्ञ ।

सुर-पु० मधुमेकी हरी बाक; जुआर या बाजरेकी बाक;

पुच्छा ।

मुनीर-पु० पोपोंकी एक जाति ।

मुनवीर-जी० खी प्रेतः दे० 'मृत्तिनी' ।

मुनराई-जी० मोहरा होना, कुंदपना-पेने कटाछनि
मोज-मनोजके बानस बीच विधी मुनराई-वन० ।

मुनराना-अ० कि० दे० 'मोहराना' ।

मुनगा-पु० उकनेबाका छोटा-कीका, फतिगा; पुच्छ,
नगण्य प्राणी ।

मुनगी-जी० ईलकी फसलको लगनेवाला एक कीका ।

मुनवा-अ० कि० भूना जाना, सिकना; बपये आदिका
छोटे सिकोंमें बढका जाना ।

मुन-मुन-जी० धीमी, जरपट ध्वनि (खासकर कुदकर
गेठनेवालेकी) ।

मुनमुनाना-अ० कि० 'मुन-मुन' करना, स्पष्ट स्वरमें
कुदने प्रकट करना ।

मुनबाई, मुनराई-जी० मुनानेके बदलेमें दी जानेवाली
रकम, भाँस; भूनेकी उजरत ।

मुनाना-स० कि० मोटकी बपयों या किसी बड़े सिक्केको
छोटे सिकोंमें बढकावाना; भूनेका काम करना ।

मुनि-जी० दे० 'भूमि' ।

मुनिबा-पु० दे० 'भूमिबा' ।

मुनकना-स० कि० छिक्कना, उरकना । अ० कि० उर-
भुरा होना; * भूकना, बढका जाना ।

मुनकस-पु० दे० 'मुकुस' ।

मुनका-पु० चुरा, कुसनी; मिट्टीकी दवात, कुन्ना ।

मुनकावा-स० कि० मुनसुराना, छिक्कना; * मुनका
देना ।

मुनकी-जी० छोटा मुनका, कुविहया; कोठिला; हीज ।

मुनकुटा-पु० छोटा कीका ।

मुनकुन-पु० चूर्ण ।

मुनकुन-पु० चूर्ण; बह बस्तु जो चूर-चूर हो गयी हो ।

मु०-निकलना-चूर-चूर होना; पीटकर भरता बना
दिया जाना ।

मुनता-पु० दे० 'भरता' ।

मुनसुरा-वि० चूर्णरूप; जो हट टूटकर चूर्णरूप हो जाय ।

-हट-जी० मुनसुरापन ।

मुनकी-जी० मुँकनी; फसलको लगनेवाला एक कीका ।

मुनबना-स० कि० मुनका देना, बढकाना ।

मुनसना-अ० कि०, स० कि० मुनसना ।

मुनहरा-पु० मोर, तक्का ।

मुनराई-जी० मोलापन ।

मुनाना-अ० कि० मुनानेगे जाना । स० कि० मुनवाना,
बढकाना; भूक जाना ।

मुनबना-अ० कि०, स० कि० 'मुनाना' ।

मुनह-पु० [सं०] एक मोघप्रवर्तक ऋषि; भारद्वाजी ।

मुनुरिका, मुनुरी-जी० [सं०] एक तरहकी मिठाई ।

मुनुरा-वि० बहुत काफा । † पु० विशेष प्रकारसे बनावी
हुई एक तरहकी चीनी ।

मुनक-वि० बहुत भूकनेवाला, विसरगशील ।

मुनका-वि० विसरगशील । पु० एक तरहकी पास ।

मुनकाना-स० कि० भूकनेकी प्रेरित करना; बढकाना;
मुनाना; † खी देना ।

मुनसना-अ० कि०, स० कि० गरम राखमें झुलसना ।

मुनका-स० कि० भूकना; दे० 'मुनकाना' । अ० कि०
मुनानेमें पकना; बढकना; विसरण होना ।

मुनकावा-पु० बढकानेकी सुक्ति, बीका, चकमा ।

मुनका-स० कि०, अ० कि० भूकना ।

मुनका-पु० दे० 'भुजंग' ।

मुनका-पु० दे० 'भुजंग' ।

मुन-पु० [सं०] भुलकोंक; अग्नि । * जी० भूमि; भौ ।

-पति-पु० भुलकोंकका पति; * राजा । -पाल-
पु० दे० 'भूपाल' ।

मुन-पु० [सं०] जगत्, लोक (तीन या चौदह); जन,
प्राणी; आकाश; जल; समुद्र; चौदहकी संख्या (संकेत) ।

-कोश-पु० भूसंक (प्रसाद) । -जय-पु० स्वर्ग,
मर्त्य और पाताल । -राखनी-जी० गंगा । -भरा(र)-
पु० जगत्का धारण-पोषण करनेवाला । -आधन-पु०

लोकलगा । -भ्राता(र)-जी० दुर्गा । -मोहिनी-वि०
जी० जगत्की मोहनेवाली । -विदित-वि० जगत्प्रसिद्ध ।

मुननेवर-पु० [सं०] राजा; शिव; उकीसाके अंतर्गत एक
प्रसिद्ध तीर्थ; वहाँ स्थापित शिवलिंग ।

मुननेवरी-जी० [सं०] दस महाविद्याओंके अंतर्गत एक
देवी ।

मुनको(कस्)-पु० [सं०] देवता ।

मुनमु-पु० [सं०] स्वामी; स्वयं; चंद्रमा; अग्नि ।

मुनकी-पु० [सं०] अंतरिक्ष लोक ।

मुन-पु० दुआ; कर ।

मुनार, मुनार-पु० दे० 'भूपाल' ।

मुनि-जी० दे० 'भूमि' ।

मुनुरी-पु० [सं०] काकमुनुरी । जी० एक जल ।

मुनुरी-जी० [सं०] एक तरहका जल ।

मुन-पु० भूसा ।

मुनना-अ० कि० दे० 'मुँसना' (भूँकना)-'हस्ती चदि
नहिं कीलिये कूकर भुंसे जु लाल'-साखी ।

मुनी-जी० दे० 'भूमी' ।

मुनुर-जी० लूँ ।

मुनुरी-पु० दे० 'मुनुरी' ।

मुनीरा-पु० भूसा रखनेका घर ।

मुँकना-अ० कि० कुत्ता मौ-मौ करना; ब्यर्थ बकना ।

मुँकना-स० कि० पकाना; सताना; * भोगना-राज कि
भूजन भरत पुर वृष कि जियहि बिनु राम'-रामा० ।

मुँका-पु० भर्त्सना; भूजा हुआ जल, चबैना ।

मुँक-जी० बाढ़ मिली हुई मुरमुरी मिट्टी ।

मुँकरी-जी० नाक, गरी आदिकी माफ़ी मिळनेवाली
जमीन ।

मुँकिया-पु० मँगनीके हल-वैलेंसे खेतीकरनेवाला व्यक्ति ।

मुँका-पु० प्रमर ।

मुँकना-अ० कि० भूँकना ।

भू-जी० [सं०] भूमि, धरती, जमीन; स्वान; महाग्नि;
यकना संकेत; पदार्थ । वि० (समासांतमें) ...से उत्पन्न या

होनेवाला (सर्पभू, मनीभू)। -कंद-पुं० महाबाणिका।
 -कंद-पुं० भूमयमें होनेवाली उषण-उष्णसे भरतीकी
 ऊपरी सतहका हिस्सा, भूजल। -०सूचकग्रन्थ-पुं०
 एक ग्रन्थ जिसके द्वारा भूकंप होने और उसकी दूरीका
 पता चलता है। -कर्वच-बीच-पुं० एक तरहका
 कर्च। -कविस्थ-पुं० एक तरहका कैव। -कर्म-पुं०
 पृथ्वीका व्यास। -कर्वुदारक-पुं० उष्णविशेष, लितेवा।
 -कवच-पुं० कृष्णके पिता बहुदेव। -काक-पुं० एक
 तरहका बाज; कौच; नीला कर्वर। -कुम्भी-की०
 भूपाटली। -कुम्भाची, कुम्भाची-की० भूरेकुम्भका,
 बिदारी। -केवा-पुं० बराह, सितार। -केवा-की०
 राक्षसी। -केवा-की० सोमराजिका वृक्ष। -सिख-
 पुं० खर। -खंड-पुं० भूभाग। -खर्वरी-की० छोटा
 खर्वर। -गंधपति-पुं० शिव। -गंधा-की० मुरा
 मायक गंधद्रव्य। -गार-पुं० एक विष। -गर्भ-पुं०
 भरतीका भीतरी भाग; विष्णु; नवभूति नामक कवि। -
 गृह-पुं० तहखाना। -० विधा-की०, -०शास्त्र-
 -पुं० वह शास्त्र जिसमें भूमिकी भीतरी बनावटका ज्ञान
 हो। -गृह-गोह-पुं० तहखाना। -गोह-पुं० भू-
 मंडल; भूगोलशास्त्र। -० विधा-की०, -०शास्त्र-पुं०
 पृथ्वीके बाह्यरूप, प्राकृतिक विभाग आदिका ज्ञान कराने-
 वाली विधा या शास्त्र। -गोहक-पुं० भूमंडल। -घन-
 -पुं० शरीर। -चक्र-पुं० विपुबरेखा; क्रांतिरेख। -चर-
 -वि० चलचर। पुं० चलचर प्राणी; शिव। -चरी-
 -की० योगकी एक मुद्रा। -चर्चा, चर्चावा-की०, -
 चर्चा-पुं० भरतीकी छाया; अंधकार। -चाल-पुं०
 [हिं०] भूकंप। -जंतु-पुं० प्राणी; एक तरहका पौधा।
 -जंतु-पुं० गेहूँ; बनजामुन। -जात-पुं० वृक्ष। -
 जोह-पुं० [हिं०] भूकंप। -तत्त्व-पुं० भरतीकी रचना-
 का विज्ञान। -०विज्ञान-पुं०, -०विधा-की० भूगम-
 शास्त्र। -०विद्-पुं० भूगमशास्त्रका पंडित। -तक-
 -पुं० जमीनकी सतह, भरतल, भूपृष्ठ, पाताल। -ताली-
 -की० भूपाटली; मुषली। -तुंबी-की० एक तरहकी
 ककरी। -तृण-पुं० रूसा नामकी घास। -दान-पुं०
 घर, जमीन, सेत आदिका दान; भूमिहीन वर्गमें भूमिका
 वितरण करनेके लिए चलाये गये आंदोलनमें सहयोग करते
 हुए सेतों, बाग-बगीचों आदिका दान करना। -हार-पुं०
 खर। -वेच-पुं० माक्षण। -घन-पुं० राजा। -घर-
 -पुं० पहाड़; रोपनाग; रस आदि बनानेके काम आने-
 वाला एक रंग; कृष्ण; शिव; सातकी संख्या। -०राज-
 -पुं० हिमालय। -बासी-की० भूरेऔंठका। -प्र-पुं०
 पहाड़। -पारा-पुं० भूमिनाग, कैनूना। -निच-पुं०
 चिरायता। -नेता(रु)-पुं० राजा। -प-पुं० राजा।
 -पटल-पुं० पृथ्वीकी ऊपरी सतह। -पति-पुं० राजा;
 शिव; इंद्र। -पतिल-वि० पृथ्वीपर (बाखल आदि होकर)
 गिरा, पड़ा हुआ। -पद्म-पुं० वृक्ष। -पदी-की० एक
 तरहकी बमेली। -परिधि-की० पृथ्वीकी परिधि। -
 पक्षा-पुं० एक वृक्ष। -पवित्र-पुं० गोबर। -पाटली-
 -की० एक तरहका पौधा। -पाक-पुं० राजा; [हिं०]
 भूष भारतका मीठाक रस्य; उसकी राजधानी। -पाखी

-की० एक रागिनी। -पुत्र-मंगल ग्रह; नरकासुर।
 -पुत्री-की० सीता। -प्रकंप-पुं० भूकंप। -फल-
 -पुं० हरी मूँगा; एक तरहका वृक्ष। -बवरी-की० झड़-
 बेर। -भर्ता(रु)-पुं० राजा। -भाय-पुं० भूखंड,
 प्रदेश। -भार-पुं० भरतीपर होनेवाले पापका भार।
 -०हारी(रिज)-पुं० परमेस्वर। -भुक्(जु)-पुं०
 राजा। -भूय-पुं० पहाड़; राजा; विष्णु; सातकी संख्या।
 -भंडक-पुं० भरती, भूगोल। -भम्बसागर-पुं० यूरोप
 और एशियाके बीच अवस्थित एक समुद्र। -भई-पुं०
 राजा। -भुक्-की० भूमिखनरी। -रमण-पुं०
 राजा। -रुह-पुं० वृक्ष; अर्जुन वृक्ष। -रुहा-की०
 वृक्ष। -रुम्मा-की० शंखपुष्पी। -रुता-की० कैनूना।
 -रेखनचक्र-पुं० दे० 'भूकंपचक्र चक्र'। -कोक-पुं०
 मत्स्यलोक। -कोटम-वि० [हिं०] भरतीपर कोटनेवाला।
 -वलय-पुं० पृथ्वीकी परिधि। -वलय-पुं० राजा।
 -वस्तु-पुं० कुकुरमुत्ता। -शाक-पुं० राजा। -सब-
 -पुं० विष्णु; बिलमें रहनेवाला जंतु। -साव्य-की०
 जमीनपर सीना। -सार्करा-की० एक कंद। -साथी-
 (विज)-वि० जमीनपर सोनेवाला; जमीनपर गिरा हुआ;
 वृत्त। -सुदि-की० भूमिकी शुद्धि (कोपने आदिसे)।
 -सोलु-पुं० भूकंडुदारक। -अना(बस)-पुं० बस्मीक।
 -संपत्ति-की० जमीनके रूपमें संपत्ति (सेत, जमींदारी)।
 -संस्कार-पुं० बगनेके लिए भूमिकी कोपना, नापना,
 रेखाएँ खींचना आदि। -सुत-पुं० मंगल; नरकासुर।
 -सुता-की०-सीता। -सुर-पुं० माक्षण। -सृक्-
 (शु)-पुं० मनुष्य। -स्कोट-पुं० कुकुरमुत्ता। -
 स्वर्ग-पुं० भरतीपर स्वर्गक स्थान; सुमेरु पर्वत। -
 स्वामी-मिन्-पुं० जमीनका मालिक, जमींदार।
 -हरा-पुं० दे० 'सुईहरा'।

भूषा-पुं० रई जैना रोशदार पदार्थ। वि० सफेद। * की०
 युवा।

भूई-की० रईका छोटा गाछ।

भूक-की० दे० 'भूल'। पुं० [सं०] छिद्र; काल; वसंत;
 अंधकार।

भूकना-अ० कि० दे० 'भूकना'।

भूकल-पुं० [सं०] विगड़ैल बोस।

भूख-की० आहारकी आवश्यकतासे उत्पन्न विकलता;
 मोचनकी इच्छा, छुपा; इच्छा। -हृत्ताल-की० बंदियों
 आदिका विरोधमें खाना न खाना। मु० -भर जाना-
 छुपाका नष्ट हो जाना; भूल न करना। -[सौं] भरना
 -छुपाकटसे पीकित होना, निराहार रहना।

भूखण, भूखण-पुं० दे० 'भूखण'।

भूखणा-सं० कि० सजाना, भूषित करना। † अ० कि०
 उपवास करना।

भूखा-वि० जिसे भूख लगी हो, क्षुधित; किसी जीवकी
 चाह रखनेवाला, इच्छुक; सुखसुख। -नंगा-वि० अन्न,
 वस्त्रके कटसे पीकित; दीन, दरिद्र। मु० -रहना-उपवास
 करना; जल रखना।

भूखण-पुं० आसामके उत्तर और हिमालयके दक्षिणमें
 अवस्थित एक राज्य।

भूतानी-पु० भूतानका निवासी; भूतानका बोका। की० भूतानकी भाषा। वि० भूतान-संबंधी; भूतानका।
 भूदिवा-वि० भूतानका। पु० भूतानका रहनेवाला। -
 चाद्वारम-पु० एक तरहका पहाड़ी पेड़ जिसका फल खाया जाता है और छक्की में चबाने की काम आती है।
 भूष-की० बहुरे जमीन; कुर्छेका सीता।
 भूत-वि० [सं०] जो हो चुका हो; अतीत, गीता हुआ; वस्तुतः घटित; उत्पन्न; सत्ता; प्राप्त; युक्त; रूप वा अवस्था-विशेषको प्राप्त (पनीभूत, पुंजीभूत); सत्त्व। पु० पंच-महाभूतों-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश-मेंसे कोई एक तत्त्व; प्राणी; प्रेत; पिशाच; गीता हुआ सम्य, भूत काष्ठ; कृष्ण पक्ष; शिव; काण्डिकेय; जगत्; कल्याण; पुत्र; बहुत बड़ा मत्त, पंचकी संख्या; उपयुक्तता। -कर्ता (है)-पु० ब्रह्मा, जगदा। -कक्षा-की० पृथ्वी आदि पंचभूतोंकी उत्पादिका निवृत्ति आदि चोच कक्षा (विशेष)। -काक-पु० गतका। -केश-पु० सफेद दूध; इंद्रावणी। -केसी-की० श्वेत तुलसी। -क्रांति-की० भूतावेश। -खाना-पु० [हिं०] गंदा घर। -बाँचा-की० मुरा नामक गंधद्रव्य। -गण-पु० शिवके अनुचर; प्रेतगण। -ग्रस्त-वि० जिसे भूत लगा हो। -ग्राम-पु० प्राणिसमष्टि; देह। -ग्र-पु० लघुपुत्र; मौजपत्र; ऊँट। -ग्री-की० तुलसी। -चतुर्दशी-की० कार्तिक-कृष्ण चतुर्दशी। -चारी (विन्)-पु० शिव। -धिता-की० तत्त्वोका ध्यानकीन। -जटा-की० जटामासी। -जप-की० तत्त्वोपर प्राप्त विजय। -तृण-पु० एक घास। -द्वनी-की० शिवकी एक शक्ति। -दया-की० संपूर्ण प्राणियोंके प्रति दयाभाव। -द्रावी (विन्)-पु० काल कनेर। -हुद् (हृ)-वि० जीनोंमें द्रोह करनेवाला। -हुम-पु० इलेभ्यतिक इह। -धरा-धात्री-धारिणी-की० धरती। -नाच-पु० शिव। -नायिका-की० दुर्गा। -नाशन-पु० रुद्राक्ष; सरसो; मिलावो; हंस। -निष्प-पु० शरीर। -पक्ष-पु० कृष्ण पक्ष। -पति-पु० शिव; अधि; तुलसी। -पत्नी-की० कृष्ण तुलसी। -पुष्प-पु० इवोनाक इक्षु। -पूर्णमा-की० आश्विनकी पूर्णिमा। -पूर्व-वि० जो पहले हो चुका है, पूर्ववर्ती, पहला। -प्रकृति-की० मूलप्रकृति। -प्रतिषेध-पु० प्रेतादिका निवारण। -प्रेत-पु० भूत-पिशाच आदि। -बखि-की० भूतबह। -ब्रह्मा (हन्)-पु० देवल, देवमाध्य लेनेवाला ब्राह्मण। -भर्ता (है)-पु० शिव। -भावन-पु० भूतोंके सट्टा, ब्रह्मा; धिवा; विष्णु। -भावी (विन्)-वि० जीनोंकी सृष्टि करनेवाला; अतीत और आगामी। -भाषा-की०, -भाषित-पु० प्रेतोंकी भाषा, पैशाची। -भूत्-पु० विष्णु। -भैरव-पु० भैरवका एक रूप। -भहैधर-पु० शिव। -भासा (हृ)-की० गौरी। -मायुका-की० पृथ्वी। -मात्रा-की० तन्मात्रा। -मारी-की० बीका नामक गंधद्रव्य। -बज्र-पु० गृहस्थके छिप करतव्य पंच महायज्ञोंमेंसे एक, बलि-वैद्यदेव। -योनि-पु० परमेश्वर। की० प्रेतयोनि। -राज-पु० शिव। -बाद-पु० मौक्तिक बाद। -बास-पु० बड़ेका पेड़। -बाहन-पु० शिव। -बिकिया-

की० अपसरार रोग; प्रेतवाधा। -बिद्या-की० आनुवंशिक बह विभाग जिसमें पिशाच आदिकी बाधासे उत्पन्न रोगोंका इलाज बताया गया है। -बिवाचक-पु० शिव। -बृह-पु० बड़ेका। -बेसी-की० श्वेत शेफालिका। -बुद्धि-की० पूजाके पहले शरीर अथवा उसके उपादान-रूप पंचभूतोंकी मंत्र द्वारा बुद्धि। -संचार-पु० भूता-वेश, प्रेतवाधा। -संचारी (विन्)-पु० दावानल। -संज्ञ-पु० प्रलय। -सर्ग-पु० भूतसृष्टि। -साधनी-की० पृथ्वी। -सार-पु० इवोनाकका एक मेद। -सिद्ध-वि० जिसने भूत-प्रेत आदिकी ब्रह्ममें कर लिया है। -सूक्ष्म-पु० तन्मात्र। -सृष्टि-की० भूतोंकी सृष्टि; भूतावेशसे उत्पन्न प्राति। -हंती-की० नीली दूध; शक्ति कनोरी। -हत्वा-की० जीवपत्र। -हृ-पु० गुरुत्वर। -हा (हृन्)-पु० मौजपत्रका इक्षु। -हारी (विन्)-पु० काल कनेर; देवदार। -हास-पु० सत्ति-पातका एक मेद। -मु० -उत्तरना-पागल कर देनेवाले गुस्तेका उत्तर जाना; क्षणका दूर हो जाना। -का पकवान-की मिठाई-भजनश दिखार देनेवाला या जल नष्ट हो जानेवाला पदार्थ। -कक्षना-सवार होना-गुस्तेमें पागल-सा हो जाना; किसी कामको करनेकी धुन सवार होना। -बनकर लगाना-डूरी तरह पीछे लगाना। -बनना-नशेमें चूर होना; क्रोधाभिभूत होना; किसी काममें भिड़ जाना। (किसी बातका)-सवार होना-किसी चीजके पीछे पड़ जाना, उसका हठ पकड़ लेना।
 भूतक-पु० [सं०] सुनेरपरका एक लोक।
 भूतकालिक-वि० [सं०] भूतकाल संबंधी।
 भूतनी-की० लोप्रेत, भुतनी; दे० 'भुतिनी'।
 भूतलिका-की० [सं०] दृक्ता; असवर्ग।
 भूतोकुश-पु० [सं०] कदप कपि; गावजुर्वी।
 भूतलक-पु० [मं०] यम; रुद्र।
 भूता-की० [सं०] कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी।
 भूताक्ष-पु० [मं०] सूर्य।
 भूतागति-की० भूतका-सा व्यापार, विलक्षण बात-
 'दौर पर न निगोधी थकें बड़ी भूतागति है'-धन०।
 भूतात्मा (स्मन्)-पु० [सं०] परब्रह्म; हिरण्यगर्भ; विष्णु; शिव; जीवात्मा; देह; युद्ध। वि० जिसकी आत्मा शुद्ध हो।
 भूतादि-पु० [सं०] परमेश्वर; अर्धकार।
 भूताधिपति-पु० [सं०] शिव।
 भूतानुर्धवा-की० [सं०] जीवदया।
 भूतानिर्धग-पु० [सं०] प्रेतावेश।
 भूतायन-पु० [सं०] परमेश्वर।
 भूतारि-पु० [सं०] हंग।
 भूतार्थ-वि० [सं०] प्रेतप्रेतित।
 भूतार्थ-वि० [सं०] यथाथ, वस्तुतः घटित।
 भूतावास-पु० [सं०] शरीर; शिव; विष्णु; बड़ेका।
 भूताविह-वि० [सं०] जिसे भूत लगा हो।
 भूतावेश-पु० [सं०] भूत लगना, प्रेतवाधा।
 भूति-की० [मं०] होना, उत्पत्ति; संपत्ति, वैभव; अग्नि-
 आदि जड़ स्थितियों; अभूत; वृद्धि नामकी जीवपि; रक्षा;

हार्मोनिक-नैराश्रय भूना हुआ मंस; दान-साध। पु०
रिक्त; शिक एक विपुल्य। -कल-वि० बैलनकी बाह
रिक्तताका। पु० राजाका मंत्री; हृदयस्थि। -काल-पु०
हृन्मकाक। -काल-पु० मरुदा; परिसार; तरङ्गाना।
-कल-पु० शिव। -गर्भ-पु० भवभूति। -ह-पु०
शिव। -ह-की० मंगा। -निधान-पु० भविष्य
नक्षत्र। -भूषण-बाह्यन-पु० शिव। -बर्धन-वि०
ऐश्वर्य बढ़ानेवाला। -सित-वि० जो अस कमानेके
कारण भेग हो (शिव)।

भूमिक-पु० [सं०] कपूर; चंदन; विराजता; अमवायन,
रुसा।

भूमिनी-की० भूतपोनिप्राप्त की; बाकिनी।

भूमी-वि० भूत-पूजक।

भूमीक-पु० [सं०] विराजता; अमवायन; भूषण; कपूर।

भूतेज्य-वि० [सं०] भेत-पूजक। पु० भेत-पूजा।

भूतेज्या-की० [सं०] भेत-पूजा।

भूतेज्य-पु० [सं०] शिव।

भूतेज्य-पु० [सं०] शिव।

भूतेज्य-की० [सं०] आधिन-कृष्णा चतुर्दशी।

भूतेज्या-पु० [सं०] भेतवापसे उपज कन्माद।

भूतेज्य-पु० [सं०] बीती हुई या मौजूद बातका
हवाला।

भूतेज्य-पु० [सं०] भेतवापसे उपज कन्माद।

भूतम-पु० [सं०] सीना।

भूतम-पु० दे० 'भूत'।

भूतना-सं० कि० आगपर रखकर इस तरह पकाना कि
छिलका कड़ा हो जाय; बीतेलमें तलना; गरम रेतमें
कालकर अनादिको पकाना; अलाना; बहुत कट देना;
बूँदोंकी बाढ़ या मशीनगनकी गोछियोंसे बहुतोंका एक
साथ बंध करना।

भूषण-पु० [सं०] राजाओंमें श्रेष्ठ, सम्राट्।

भूषण-पु० [सं०] राजादनी वृक्ष।

भूषण-की० गरम रेत या धूँ; गरम राख।

भूषण-पु० [सं०] मिट्टीका बना हुआ।

भूषणी-की० [सं०] सर्वपत्नी, छाया।

भूमा(मन्)-पु० [सं०] बहुल; विशाल राशि; ऐश्वर्य;
संख्या; विराट् पुरुष; भरती; प्राणी।

भूमि-की० [सं०] जमीन, भरती; स्थान, क्षेत्र; देश
(भारतभूमि); जमींदारी; भूमिका (ना०); विस्तार; जीम;
एककी संख्या; आधार; मंडिक, तहा (समभूमिक प्रासाद);
योगिके चित्तकी एक अवस्था; उपपत्तिस्थान (सीरोंकी भूमि)।

-कंदक, -कंदर-पु० कुकुरमुत्ता। -कंदली-की० एक
लता। -कंद, -कंदन-पु० भूकंप, भूचाक। -कंद-
पु० एक तरहका कंद। -कृष्ण, -कृष्ण-जमीन-
पर होनेवाला कुम्हड़ा, भूरकुम्हड़ा। -कूर्मिक-की०

एक तरहका छोटा खर। -गस-वि० भूरासित।

-गर्भ-पु० भवभूति। -गम-पु० ऊँट। -गृह-पु०

तल्लाना। -गोचर-पु० मनुष्य। -गंधक-पु० एक

फूलका पौधा। -गल, -गलन-पु० भूकंप। -जंहु-

पु० छोटा बाहुन। -ज-वि० भरतीसे ऊपर। पु० मंज

ग्रह; मनुष्य; नरकासुर; सोबा; भूमि; एक तरहका मेष।

-जा-की० सीता। -जीवी(विन्)-पु० जमीनसे

जीविका करनेवाला, कृषक। -लक-पु० जमीनकी सतह।

-लाव-पु० जमीनका दान। -लैव-पु० माझन। -

लर-पु० सर्वत; रोचनाय। -लाग-पु० केंचुआ। -

प-पु० राजा। -पक्ष-पु० बहुत तेज सीमा। -पक्षि,

-पक्ष-पु० राजा; क्षत्रिय। -पास-पु० एक पीछा।

-पिशाच-पु० ताकाका पैर। -पुन-पु० मंगल ग्रह;

नरकासुर; स्थानक। -पुर्द्वर-पु० राजा दिलीप।

-प्रच्छ-पु० भूकंप। -भाग-पु० भूभाग; प्रवेश। -

भुङ्क(ञ्), -भुङ्क-पु० राजा। -भङ्क-पु० भू-

पादिका। -भङ्कभूषणा-की० माथनी कता। -रक्षक

-पु० देशरक्षक; तेज पीछा। -रंजी-की० इतिनी

नामक वृक्ष। -रज्ज-पु० वृक्ष। -रह-पु० वृक्ष।

-रहा-की० दूर। -रज्ज-की० दूरेत उपराजिता। -

कता-की० संक्षुप्ती। -रज्ज-पु० घोड़ा। -काव-

पु० मनुष्य; भूमिकी प्राप्ति। -केपन-पु० भरती कीपना;

गोबर। -बर्धन-पु० खन। -बल्ली-की० भूरुआँवा।

-बाह-वि० पु० जमीनपर सोनेवाला। बाहका; अंगकी

कतार। -बाह-पु०, -बाह-की० जमीनपर सीना।

-संभव-पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। -संभव-की०

सीता। -सप्त-पु० भूमिदानरूप यह। -सुप्त-पु० दे०

'भूमिसंभव'। -सुर-पु० माझन। -स्वोम-पु० एक

ही दिनमें पूरा होनेवाला एक यह। -स्तु-पु० केंचुआ।

-स्तु(क्ष्)-वि० जंघा; लेंबा; पंख। पु० मनुष्य;

वैद्य; चोर। -स्वाही(मिन्)-पु० राजा। -हार-

पु० मध्यप्रदेशमें बसनेवाली एक हिंदू जाति जो अपनेको
माझन कहती है।

भूमिका-की० [सं०] भरती; तहा; वक्तव्य विषयकी पूर्व-
खबरा, प्रधापिकी प्रस्तावना, तमहीन; लिखनेका तस्ता;
योगसिद्धिसे दृष्टिसे योगिके चित्तकी कोई विशेष अवस्था
(बी०); नटकी वेशभूषा; अभिनेताका पाट। -गल-पु०

नाटकीय वस्त्र पहननेवाला। -भाग-पु० फर्स। -भू-

बाँधना-किसी बातको सीधे-सीधे जोड़ेमें न कहकर छने

कहनेके लिए हथ-उपरसे बहुतसी बातें लाकर जोड़-तोड़

मिकाना।

भूमिचर किसान-पु० वह काश्तकार जो दस्ताना लगान

जमाकर भूमिका स्वामी वन यथा हो और सीधे सरकारको

लगान देने लगा हो (आ०)।

भूमिचा-पु० जमीनदार; देवता।

भूमिचर-पु० [सं०] राजा।

भूमि-की० [सं०] दे० 'भूमि'। -कंद-पु० दे० 'भूमि-

कंद'। -पक्षि, -भुङ्क(ञ्)-पु० दे० 'भूमिपति'।

-रह-पु० वृक्ष। -सह-पु० वृक्षविशेष।

भूमिचर-की० [सं०] जमीनपर गिरने या बैठनेकी वृच्छा।

भूमिचर-पु० [सं०] राजा।

भूमिचर-वि० [सं०] दूसरे देशका। पु० आसन्नवर्ती देश-

का राजा।

भूयानमकी, भूयानमकी-की० [सं०] भूरुआँवा।

शृंगार-पुं० [सं०] भैरव; जीवक ।
 शृंगि-पुं० [सं०] शिष्या एक अनुचर ।
 शृंगिरिडि, शृंगिरिडि-पुं० [सं०] दे० 'शृंगरिडि' ।
 शृंगी-स्त्री० [सं०] भौरी, विलनी-‘डरियतु शृंगीक्रीड ली
 मत बहई है जाति-विहारी अतिविषा; भौंग ।
 शृंगी(गिज)-पुं० [सं०] शिष्या एक गण; बरगद ।
 शृंगीश-पुं० [सं०] शिव ।
 शृंगेरिडि-पुं० [सं०] दे० 'शृंगरिडि' ।
 शृङ्गुवा, शृङ्गुस-पुं० [सं०] स्त्री-वेशधारी अभिनेता ।
 शृङ्गुटि, शृङ्गुटी-स्त्री० [सं०] भ्रूंग, मी चवना; भौ (जा०) ।
 शृगु-पुं० [सं०] एक मोक्षप्रवर्तक कवि जो ब्रह्माके पुत्र
 माने जाते हैं; जमदग्नि; शुक्राचार्य; शुक्र प्रभ; शुक्रवार;
 कृष्ण; शिव; पद्माङ्का खड्ग कमार; अशित्वाका ।-कृष्ण-
 पुं० आनुकिक भर्षाच ।-ज, -तन्वय-पुं० शुक्राचार्य;
 शुक्र ।-तुंग-पुं० हिमालयकी एक चोटी ।-जंवल-पुं०
 परशुराम; शुक्र ।-नाथ, -नाथक, -पति-पुं० परशु-
 राम ।-पात-पुं० पद्माङ्कके कमारमे गिरकर आत्महत्या
 करना ।-पुत्र-पुं० शुक्र ।-रेखा, -लता-स्त्री०
 विष्णुकी छातीपर पद्मा हुआ शृङ्गके लाल मारनेका चिह्न ।
 -वल्ली-स्त्री० तैत्तरेय उपनिषद्की एक शाखा ।-वार,
 -वासर-पुं० शुक्रवार ।-शार्दूल, -श्रेष्ठ, -सत्तम-
 पुं० परशुराम ।-सुत, -सुत-पुं० शुक्र; परशुराम (?) ।
 श्रुत-वि० [सं०] प्राप्त, बहल किया हुआ; भरा हुआ;
 पोषित, पाला हुआ; मजदूरी या किरायेपर लिया हुआ ।
 पुं० वेतन लेकर काम करनेवाला दास, नौकर ।-श्रुति-
 वि० शक्तिशाली; ऐश्वर्यवान्; जिसने भस्म लगाया हो ।
 श्रुतक-वि० [सं०] मजदूरी वा वेतनपर रखा हुआ । पुं०
 वेतनपर काम करनेवाला नौकर ।
 श्रुतकाण्डधन-पुं० [सं०] वैतनिक शिक्षकसे पदना ।
 श्रुतकाण्डापक-पुं० [सं०] वेतन लेकर शिक्षणकार्य करने-
 वाला ।
 श्रुति-स्त्री० [सं०] ले जाना; लाना; भरण; भरणका साधन,
 वेतन, मजदूरी; भोजन ।-कर्मकर-पुं० मजदूर, वेतन
 लेकर काम करनेवाला नौकर ।-शुक्ल(ज्)-पुं० वेतन
 लेकर काम करनेवाला नौकर ।-रूप-पुं० किसी विशेष
 कामके लिए पारिश्रमिकके बदले दिया जानेवाला पुरस्कार ।
 श्रुत्य-वि० [सं०] भरण करने योग्य । पुं० मेवक ।-धर-
 माधु-पुं० विनम्र सेवक ।-भरण-पुं० श्रुलौका पाठन ।
 -भर्ता(र्तृ)-पुं० नौकरीका पाठन करनेवाला; गृह-
 स्वामी ।-भाष-पुं० सेवामात्र, पराश्रय ।-वर्ग-पुं०
 दास-समूह ।-क्षुति-स्त्री० सेवकोंका पाठन ।-शाली-
 (किन्)-वि० जिसके बहुतसे सेवक हों ।
 श्रुत्वा-स्त्री० [सं०] दासी; युति ।
 श्रुमि-स्त्री० [सं०] भैरव; गूला ।
 श्रुत-वि० [सं०] अतिशय; प्रचंड; शक्तिशाली । ज०
 अत्यधिक ।-क्षीपक-वि० बहुत क्षोभी ।-श्रावण-वि०
 बहुत कठोर, निष्ठुर ।-श्रुमिष्ठ, -पीठित-वि० अत्य-
 धिक कष्टग्रस्त ।-पत्रिका-स्त्री० महानीली ।
 श्रुत-वि० [सं०] भूना हुआ; आलपर वा गरम रेतमें पकाया
 हुआ । पुं० पकाया हुआ मांस ।-कार-पुं० भूतनेवाला;

मांस पकानेवाला ।-संभुल-पुं० भूना हुआ अन्न ।
 श्रुत-पुं० [सं०] लार्ह ।
 श्रुति-स्त्री० [सं०] भूना; सनी वाटिका ।
 श्रुति-स्त्री० भिन्न, मुद्राकाता; नजर ।
 श्रुतना-सं० कि० मिलना; गले लगना वा लगाना; छूना,
 पकटना ।
 श्रुति-स्त्री० दे० 'श्रुत' ।
 श्रुति, श्रुतना-सं० कि० तर करना ।
 श्रुत, श्रुतना-पुं० दे० 'श्रुत' ।
 श्रुत-पुं० [सं०] मेवक; मेघ; डरपोक आदमी ।-पर्णी-
 स्त्री० मंडकपर्णी ।-शुक्ल(ज्)-पुं० सौंप ।-रव-पुं०
 मेवकोंका टराना ।
 श्रुतसूत्र-पुं० [सं०] एक तंत्रोक्त आसन ।
 श्रुति-स्त्री० [सं०] मेवकी; मंडकपर्णी ।
 श्रुत-पुं० दे० 'श्रुत' ।
 श्रुतज-पुं० दे० 'श्रुत' ।
 श्रुतना-सं० कि० अन्य स्थानके लिए रवाना करना,
 पहुँचाये जानेका प्रबंध करना, प्रेषण करना ।
 श्रुतवाना-सं० कि० भेजनेका काम । दूसरेसे कराना ।
 श्रुत-पुं० रीढ़वाले प्राणियोंकी खोपड़ीके अंदर रहनेवाला
 भूरा गूदा जो नाडी-मंडल और मनकी क्रियाओंका केंद्र ।
 माना जाता है, विमान, मग्न; चंद्रा; * मेवक । शु-
 खाना, -पकाना-वकन करके खोपड़ी खाना ।
 श्रुत-स्त्री० दे० 'श्रुत' ।
 श्रुतना-सं० कि० दे० 'श्रुत' ।
 श्रुत-स्त्री० [सं०] बकरीकी जातिका एक चौपाया जो दूध,
 रोयें और मांसके लिए भी पाला जाता है; मेवकी; बहुत
 सीपा, मेवक आदमी; मेवा ।
 श्रुत-स्त्री० दे० 'श्रुत' ।-वाल-स्त्री० मेविया भसान ।
 श्रुतना-सं० कि० भिन्न देना, सदा देना, जोड़ना-
 'किनाक मेवकर पत्नी चली गयी'-मनो, नव० ५५ ।
 श्रुत-पुं० मेदा, मेघ ।
 श्रुतिया-पुं० कुत्तेकी जातिका एक हिंस्र जंतु जो प्रायः
 मेव-बकरियोंका शिकार किया करता है, बृक ।
 श्रुतिया भसान-पुं० मेव जैसी अंध अनुकरणकी प्रवृत्ति ।
 श्रुतिहरा-पुं० गवैरिया ।
 श्रुति-स्त्री० [सं०] मेरी ।
 श्रुत-पुं० [सं०] मेवा, मेघ ।
 श्रुत-वि० [सं०] जिससे डरा जाय ।
 श्रुत (श्रु)-वि० [सं०] भेदन करनेवाला; विघ्न डालने-
 वाला; भेद खोलनेवाला; पद्व्यंज करनेवाला ।
 श्रुत-पुं० [सं०] छेदना; दारणा; विलगाव, अंतर; तादात्म्य
 का अभाव; क्षति, चोट; परिवर्तन; द्रोह; पराजय; कोष्ठ-
 शुद्धि, रेचन; छिपी हुई बात, रहस्य; मर्म; प्रकार; श्रुत;
 सुलना, प्रकट होना (रहस्यभेद); राजनीतिके चार उपायों-
 मेंसे एक, शत्रुपक्षमें फूट डालना ।-कर, -कारक,
 -कारी(रिच), -कृत्-वि० भेद करनेवाला ।-ज्ञान-
 पुं० द्वैतज्ञान, द्वैतकी प्रतीति ।-धर्मी(सिन्), -रुचि-
 वि० विश्वकी परब्रह्मसे मिश्र समझनेवाला, द्वैतवादी ।
 -नीति-स्त्री० फूट डालनेकी नीति ।-प्रत्यय-पुं०

दैतवादमें विधवास । -बुद्धि-श्री० अंतर करनेवाही दष्टि, दैतभाव । वि० दैतवादी । -भाब-पु० दो व्यक्तियों, कौनों साथ दो तरहका व्यवहार, फर्क । -बाबू-पु० दैतवाद । -बाबू(विष्णु)-वि० दैतवादी । -बिधि-श्री० दो वस्तुओंमें अंतर करनेकी शक्ति । -सह-वि० जो भेद साक्षर अलग बिधा जा सके ।

मेवक-वि० [सं०] भेद करनेवाला; छेदन करनेवाला; नष्ट करनेवाला; अंतर करनेवाला; रचक । पु० भेदकारक गुण, विशेषता ।

मेवकासिधयोक्ति-श्री० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकारका एक भेद जिसमें 'और ही', 'व्यारा' आदि शब्दों द्वारा उपमानसे उपमेयको मिश्र कहा जाय ।

मेवशी-श्री० रवदी ।

मेवज-पु० [सं०] छेदन; फाटना; विखगाना; भेद, अंतर करना; रचन, दस्त लाना; छुरा; हाँगा अम्लवेत । वि० दे० 'भेदक' ।

मेविका-श्री० [सं०] नास, व्यंस । वि० श्री० दे० 'भेदक' ।

मेविल-वि० [सं०] छेदा, फाटा, विखगाना हुआ ।

मेविषा-पु० भेद जाननेवाला; जासूस ।

मेविर, मेवुर-पु० [सं०] बज ।

मेवी(विष्णु)-वि० [सं०] भेदकारक; भेद जाननेवाला; भेद लेनेवाला । पु० अम्लवेत ।

मेवीसार-पु० छेद करनेका औजार, बरमा ।

मेव-पु० भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ ।

मेव-वि० [सं०] भेद करने योग्य । पु० विशेष्य । -रोग-पु० वह रोग जिसकी चिकित्सा चौर-काफके जरिये की जाय ।

मेव-श्री० बहिन । पु० [सं०] सूर्य; चंद्रमा ।

मेवा-सं० कि० भिगोना ।

मेव-वि० [सं०] दे० 'भेतव्य' ।

मेर-पु० [सं०] लगावा, ढंका ।

मेरा-पु० एक तरहकी नाव, मेला ।

मेरि, मेरी-श्री० [सं०] दे० 'मेर' । -कार-पु० मेरी बजानेवाला ।

मेरु-वि० [सं०] मयानक । पु० गर्मभारण; एक पक्षी; हिल जंतु (मेखिया, सियार आदि) ।

मेरु-पु० [सं०] सिवार आदि हिल जंतु ।

मेर-वि० [सं०] भीर; मूर्ख; लंका, ऊँचा; अक्षिर; क्षिप्र । पु० नाव; एक ऋषि ।

मेरु-पु० [सं०] ज्ञाव ।

मेरु-पु० [सं०] तैरना ।

मेला-पु० भेद; भिन्न; भिन्नता; नाव; † गुड़ आदिका बड़ा पिंड ।

मेली-श्री० गुड़ आदिकी पिंडी; गुड़ ।

मेलु-पु० [सं०] शिवका एक अनुचर ।

मेव-पु० दे० 'मेर'; बारी ।

मेवना-सं० कि० भिगोना ।

मेव-पु० दे० 'मेर' ।

मेवज-पु० [सं०] दवा; उपचार; जल; विष्णु । वि० आरोग्य-लाभ करनेवाला । -करण-पु० दवा तैयार

करना (बौ०) । -हृत्-वि० मीरोग किमा हुआ । -वीर्य-पु० औषधी मीरोग करनेवाही शक्ति ।

मेवजाय-पु० [सं०] दवा खानेके साथ या बाद खावी जानेवाही चीज, अनुपान ।

मेवजागर-पु० [सं०] दवाकी दुकान ।

मेवज-वि० [सं०] आरोग्यदायक ।

मेवमा-सं० कि० भेस बनाना ।

मेव-पु० बाह्य रूप; पहनावा; वेश-भूषा, पहनावे आदिसे बदला हुआ रूप (बनाना, बदलना) ।

मेवज-पु० दे० 'मेवज' ।

मेवना-सं० कि० भेस बनाना ।

मेव-श्री० मोजातीय एक माता पशु जिसका दूध गायके दूधसे अधिक गाढ़ा और स्नेह-युक्त होता है, मखिषी ।

मेव-पु० मेसका नर, मखिष ।

मेवरी-श्री० मेसका चमड़ा ।

मेव-पु० दे० 'मय' । -जल-वि० दे० 'मयजनक' । -वा-वि० भवोत्पादक ।

मेव-पु० [सं०] मिश्रा; मिश्रणमें प्राप्त वस्तु, मील । वि० मिश्राजीवी । -काळ-पु० मिश्राका समय । -करण-वि० दे० 'मेव' । -श्री० दूध-चूसकर मील मँगना । -जीविका-श्री० मिश्रापर जीवन व्यतीत करना । -भुक्-वि० मिश्राजीवी । -कृषि-श्री० दे० 'मेव-जीविका' ।

मेवक-पु० [सं०] दान, मील ।

मेवक-वि० [सं०] मिश्र-संबंधी । पु० मिश्रकोंका समूह ।

मेवका-पु० [सं०] मीलमें मिश्रा हुआ अन्न ।

मेवकासी(शिव)-वि० [सं०] मिश्रा खानेवाला । पु० मिश्राक ।

मेवकाहार-पु० [सं०] मिश्राक ।

मेवक-पु० [सं०] मिश्राक-दण्ड; सन्ध्यास ।

मेव-पु० [सं०] मील ।

मेवक-वि० दे० 'मीचक' ।

मेवक-वि० [सं०] मेव-संबंधी ।

मेव-वि० भवदायक ।

मेव, मेवा, मेनी-श्री० बहिन ।

मेनी-पु० भांजा ।

मेव-वि० [सं०] भीम-संबंधी । पु० उग्रमेव; भीमका वंशज ।

मेनी-श्री० [सं०] दमयंती; माघ-शुद्धा एकादशी ।

मेवा-पु० भार; बराबरवाले या छोटेका संबंधन । -चार, -चारा-पु० चारचारा । -चारी-श्री० भारचारा । -बूज-श्री० कार्तिक-शुद्धा द्वितीया ।

मेव-वि० [सं०] मेव-संबंधी; भवानक, उरावना; दुःखी । पु० शिवके अवताररूप माने जानेवाले शिवके अंगविशेष; शिव; भय; भवानक रस; एक नद; एक रागा; लालका एक भेद; गीदक; एक पर्वत । -कारक-वि० भवावना । -संज्ञ-पु० संबंधविशेष । -संज्ञक-पु० विष्णु । -मल्लक-पु० लालका एक भेद । -बाह्य-पु० कुशा, शाल ।

मेव-श्री० [सं०] दुर्गा; दस महाविद्याओंमेंसे एक; एक रागिनी; एक नदी; मेव सन्ध्यासिनी । वि० श्री० दे०

‘शैव’-पुं० सांख्य (शाम्भारी) साधकों, ब्रह्म-मार्गकी विधिसे उपासना करनेवालोंकी चक्ररूपमें बैठी हुई मंडली; सभ्यों आदिका समूह । -शास्त्र-शब्द० वह शास्त्र जो काशीखंडके अनुसार काशीमें प्राणत्याग करने-वालोंकी मरते समय पापोंसे शुद्धिके लिए शैव द्वारा दी जाती है ।

शैवशक्ति-वि० [सं०] शैव-संबंधी ।

शैववेष्ट-पुं० [सं०] विष्णु; शिव ।

शैवः, शैवी-पुं० दे० ‘शैव’ ।

शैवाद्या-पुं० भारद्वाज; विरादरी ।

शैवज-पुं० [सं०] शैवज; उवा पक्षी ।

शैवज्य-पुं० [सं०] शैवज, चिकित्सा; शिष्य पुत्र; आरोग्य-दायक शक्ति । -रत्नावली-शब्द० आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध चिकित्साग्रंथ ।

शैव्यकी-शब्द० [सं०] शैव्यकी कन्या, रविपत्नी ।

शैव्य-वि० भयस्त, डरा हुआ; जिसपर किसी प्रेत आदिका आवेश होता हो ।

शैव्य-सं० कि० शरीरमें लुकीली चीज (भाज, छुरा आदि) छुसेटना । ज० कि० भूंकना ।

शैव्याह-पुं० आवाजकी दूरतक पहुँचानेके लिए काममें लाया जानेवाला शैव्य ।

शैव्याह-पुं० भूकन ।

शैव्य-पुं० दे० ‘मोद’ ।

शैव्य-वि० मदा; बदशक्त, बेवैल; * मूर्ख । [शब्द० ‘मोक्ष’] । -पत्र-पुं० मदापन; अशिक्षा ।

शैव्य, शैव्य-वि० जिसकी बार तेज न हो ।

शैव्य-वि० मूर्ख, दुष्ट ।

शैव्य, शैव्य-पुं० एक तरहकी छुरही; ईजिनमें लगा हुआ वह साधन जिसके द्वारा ऊँची आवाज पैदा की जाती है; पेसी आवाज, सीटी ।

शैव्य-पुं० भूकनेकी आवाज ।

शैव्य, शैव्य, शैव्य-पुं० महाराष्ट्रका एक राजवंश ।

शैव्य-वि० [सं०] दे, अहो (संबोधन); * दे० ‘मया’ ।

शैव्य-वि० भूला । पुं० राक्षस-‘कीन्हेसि शैव्य देव द्योता’-पं० ।

शैव्य-वि० [सं०] भोगने योग्य ।

शैव्य-वि० [सं०] भोग करनेवाला; भोजन करने-वाला; सहन करनेवाला; शासन करनेवाला । पुं० पति; राजा; विष्णु ।

शैव्य-पुं० [सं०] भोग; अधिकार; अनुमति ।

शैव्य-पुं० [सं०] सुख-दुःखादिका अनुभव; सुख; दुःख; संयोग; भूमि आदिका कल भोगना, भुक्ति, कल्पा; वेष्टका श्रुति; संपत्ति; शासन; चीजकी काममें लाना; पाप-पुण्यका फल; भोजन; लाभ, आय; देवताके आगे रखा जानेवाला मिठाज आदि, नैवेद्य; सर्वाधिकारा शक्ति-विशेषमें मत्तिका; संपत्ति (कैला हुआ) कन; कुंठली; सौंप; पक्षिपद सेना; देह । -गुच्छ-पुं० वेष्टका श्रुति ।

-गुच्छ-पुं० अनानखाना । -खास-वि० भोग वा कष्टसे उत्पन्न । -गुच्छ-शब्द० भोगकी वस्तुती इच्छा । -देह-

शैव्य-पुं० सुखके बाद जीवात्माको पाप-पुण्यका फल भोगनेके लिए भिक्षुकेवाला क्लृप्त शरीर । -खर-पुं० सौंप ।

-साध-पुं० पावन करनेवाला । -पति-पुं० भ्रष्टेश विशेषकी शासक । -शास्त्र-पुं० सांख्य । -विश्वविद्या-

शैव्य-पुं० मूर्ख । -ब्रह्म-पुं० वह ब्रह्म वा रेहन जिसमें कन्या देनेवालेकी म्याजके बदले ब्रह्म रखी चीजकी काममें कनिका अधिकारी हो । -सुख-वि० भोग करने-

वाला । भूमि-शब्द० भारतवर्षसे मित्र देश (भारतवर्ष-कर्मभूमि कहा गया है) । -भूत-पुं० केवल भोजन-

वत्ता लेकर काम करनेवाला नौकर । -काय-पुं० अनाज-का म्याज, डेढ़वा, सवाई । -छिप्सा-शब्द० भोगकी पुण्या । -विद्या-पुं० शारीरिक वा इंद्रियजन्य सुखों-

का अधिक भोग, भोज, देश । -गुच्छ-पुं० सैन्य-रचना-का एक प्रकार-सैनिकोंकी एकके पीछे एकके क्रमसे खड़ा करना । -शक्ति-वि० योगी । -सखा-पुं० जनान-

खाना, अंत-पुर । -स्वाध-पुं० शरीर; अंत-पुर ।

शैव्य-सं० कि० सुख-दुःखका अनुभव करना; सहना, सुगमना; छुपक उठाना; संयोग करना ।

शैव्य-शब्द० नली; नाककी लीन; कानमें पहननेकी तरकी; लीन आदिकी अटकानेके लिए उसमें लगायी जाने-

वाली कील ।

शैव्य-शब्द० [सं०] पाताक गंगा; नागिन; नागपुरी; एक नदी; कृष्णपक्षकी द्वितीयाकी रात ।

शैव्य-सं० कि० दे० ‘भोगना’ ।

शैव्य-सं० कि० दे० ‘भोगना’ ।

शैव्य-वि० [सं०] भोग्य । पुं० सौंप; नाव्य ।

शैव्य-पुं० [सं०] भोग वा कष्टका अंत ।

शैव्य-पुं० [सं०] भोगमें बाधा डालनेवाला कर्म आदि (बै०) ।

शैव्य-सं० कि० दूसरेको भोग कराना ।

शैव्य-वि० [सं०] भोगोपयोगी । पुं० धन संपत्ति ।

शैव्य, शैव्य-पुं० [सं०] धान्य ।

शैव्य-शब्द० [सं०] मागधों द्वारा की जानेवाली स्तुति ।

शैव्य-पुं० [सं०] अंत-पुर ।

शैव्य-पुं० [सं०] सांख्य; शैव्यका मुखिया ।

शैव्य-शब्द० [सं०] नागिन; राजाकी उपपत्नी ।

शैव्य-पुं० [सं०] शैव्य; बाहुक्ति; पर्वतशक्ति ।

शैव्य-वि० [सं०] भोग करनेवाला; विषयासक्त, भोग-विकासमें रत; कुंठलीवृत्त; कणदार । पुं० सौंप; जमींदार; राजा; नई । -वि० [सं०] कौस्त-पुं० बाहु ।

-वि० [सं०] कलुषमंशुषा नामक वृक्ष । -सुख-वि० [सं०] भोग । -ब्रह्म-पुं० चंद्रन ।

शैव्य-पुं० [सं०] एक तीर्थ ।

शैव्य-वि० [सं०] भोग करने योग्य । पुं० भोग्य वस्तु, धन-संपत्ति; भोग्यवत् रखा हुई चीज । -भूमि-शब्द० भोगका स्थान; मय्येकीक ।

शैव्य-शब्द० [सं०] वेष्टका ।

शैव्य-पुं० [सं०] भोजपुर; राजा हुसुका एक पुत्र; कान्य-

कुञ्जमें नवीं शतीमें हुआ एक प्रतापी नरेश; माछवाला परमारवंशी राजा जो बड़ा पंडित, कवि और गुणी जनका आवूर करनेवाला था (१०-११वीं शती), राजा भोज ।
-कट-पु० भोजपुर । -देव-पु० कान्तकुञ्ज-नरेश भोजराज । -पति-पु० भोजराज; कंत । -पुर-पु० भोजकट नामका जनपद । -पुरिया-वि० [हिं०] भोजपुरका । पु० भोजपुरका निवासी । -पुरी-वि० [हिं०] भोजपुरका । पु० भोजपुरका निवासी । श्री० भोजपुर प्रदेशकी बोली । -राज-पु० राजा भोज । -बिद्या-श्री० इंद्रजाल ।

भोज-पु० बहुतसे लोगोंका साथ बैठकर खाना, ज्योनार; एक तरहकी शराब; पाकशाला । -भात-पु० भातका भोज ।

भोजक-पु० [सं०] भोजन करानेवाला; परसनेवाला; भोजन करनेवाला; ज्योतिषी । वि० खानेवाला; भोजन देनेवाला; * भोगी ।

भोजन-पु० [सं०] ठोस आहारकी गलेके नीचे पहुँचाना, खाना; खानेकी चीज, खाद्य; खिलाना; भोगना; धन; एक पर्यंत । -काछ-पु० खानेका समय । -खानी-श्री० रसोई । -शुद्ध-पु० रसोईघर, भोजनशाला । -खाना-पु० आहारका त्याग, उपवास । -अट्ट-पु० [हिं०] पेट । -भूमि-श्री० भोजन करनेका स्थान । -बन्ध-पु० खाना-कपड़ा । -बेका-श्री०, -समय-पु० दे० 'भोजन-का' । -व्याघ्र-वि० खानेमें संक्रम्य; जिसके खाद्य-पदार्थका अभाव हो । -व्यय-पु० खाने-पीनेका खर्च । -शाका-श्री० भोजन करनेका स्थान; रसोई ।

भोजनक-पु० [सं०] एक पीथा ।

भोजनाच्छादन-पु० [सं०] खाना-कपड़ा ।

भोजनाधिकार-पु० [सं०] पाकशालाकी अध्यक्षता ।

भोजनार्थी(भिक्षु)-वि० [सं०] भोजनका इच्छुक, भूखा ।

भोजनाकष-पु० [सं०] भोजनशाला; होटल ।

भोजनीय-वि० [सं०] खाने योग्य, भोज्य; जिसकी भोग कराया जाय । पु० आहार; समुद्री नमक । -मृत-वि० जो अजीर्णसे मरा हो ।

भोजनोत्तर-वि० [सं०] जिने भोजनके बाद खाया जाय (भोषधि आदि) ।

भोजयिता(पु)-वि० [सं०] खिलानेवाला ।

भोजक-पु० भवजाल, भवसागर ।

भोजी(जिन)-वि० [सं०] (समाप्तान्तमें) भोजन करने-वाला; भोगनेवाला ।

भोज्य-वि० [सं०] खाने योग्य, भोजनीय । पु० भोजन, खाद्य । -काछ-पु० भोजनका समय । -संभव-पु० शरीरका रस ।

भोज्याह-वि० [सं०] जिसका जन्म खाया जा सके । पु० खाद्य जन्म ।

भोज-पु० [सं०] भूटान देश; तिब्बत ।

भोज्य-पु० [सं०] भूटान ।

भोटिया-पु० भूटानका निवासी । श्री० भूटानकी भाषा ।

-बाबाय-पु० मूँफकी; बाबूआशार ।

भोटिया-वि० [सं०] भोट देशका ।

भोजर, भोजक-पु० अन्नक, भुक्ता ।

भोयार, भोयरा-वि० जिसकी थार कुँव हो गयी हो ।

भोयराणा-ज० कि० भोयरा होना ।

भोयार-पु० एक तरहका बीका ।

भोना-ज० कि० रँगना; अनुरक्त होना; पैवस्त होना ।

भोपा-पु० दे० 'भोपा' ।

भोम-श्री० भूमि, धरती—'जित जाकेँ तित पाणी पाणी हुई सव भोम हरी'—गीता ।

भोमि-श्री० दे० 'भूमि' ।

भोमीरा-श्री० मूँगा ।

भोर-पु० रात बीतने और सुबोध होनेके पहलेका समय, तबका; प्रभात; एक सदाबहार वृक्ष; एक पक्षी; * भूल; अम । * वि० भोला; चकित—'सूर प्रभुकी निरखि सीधा, अई तबनी मोर'—चर ।

भोरा-वि० दे० 'भोला' । [श्री० 'भोरी']—नाथ-पु० दे० 'मोकानाथ' । -हूँ-श्री०, -पन-पु० भोलापन, सिपवाई ।

भोराना-सं० कि० बहकाना, भुलाना । ज० कि० अममें पचना; भुलानेमें जाना ।

भोक-पु० [सं०] वैश्य पिता और नदी नामाने उत्पन्न सतान ।

भोखना-सं० कि० बहकाना ।

भोखा-वि० सीधा, सरल, जिसमें बनाबद्ध, छलकपट न हो; मूर्ख, दुष्ट । -नाथ-पु० सिव । वि० सीधा-सादा । -पन-पु० सिपाई, मूर्खता । -जाका-वि० सीधा-सादा, निष्कपट ।

भोखि-पु० [सं०] ऊँट ।

भोहरा-पु० दे० 'अँहररा' ।

भौ-श्री० आँखके ऊपरकी हड्डीपर अनुष्णके आकारमें जमे हुए बाल । मु०—बड़ाना;—खानना—रौप प्रकट करना, नाराज होना ।

भौकना-ज० कि० दे० 'भूँकना' ।

भौखाछी-पु० भूक्षप ।

भौवा-वि० दे० 'भौका' ।

भौवी-श्री० पहाड़ी । वि० श्री० भौंकी ।

भौहूँ-पु० टीका, कगार ।

भौतुवा-पु० प्रायः हाथमें होनेवाला एक तरहका वातज कोष रोम; एक छोटा कीड़ा; तेलका बेल ।

भौर-पु० अमर; अजबर्त ।

भौरहाई-श्री० भौराँका मेंढराना—'आरस बिमाबरी है होत भौरहाई है'—घन० ।

भौरा-पु० एक काला परदार कीड़ा जो फूलोंका प्रेमी माना जाता है; अमर; बरी मधुमक्खी; पक्षिकी नाभि; रहटकी खड़ी चरखी; * एक खिलौना, कटहू; हिंदोलेमें ऊपर लगी हुई छकरी; तबखाना ।

भौराना-सं० कि० बुमाना, भौर फिराना ।

भौराखा-वि० बुँचराखे (खाक) ।

भौरि-श्री० चक्राकारमें दौड़े हुए बाक या रोयें जो छुमा-छुमचक्क माने जाते हैं; भौरा; भौर; एक तरहकी बाटी;

एक तरहका और।

और्ह-खी० दे० 'औ'।

और्हरा०-पु० दे० 'और्हरा'।

औ०-पु० दे० 'औ'। दे० 'मय'। -जल, -जलि०-पु० भवजाल, भवसागर।

औनोकि०-वि० [सं०] भूयोज-संबंधी।

औनक, औनका-वि० भय वा आश्चर्यसे हतबुद्धि, इका-बहा, हैरान।

औजरा-वि० [सं०] सर्प-संबंधी; सर्प जैसा।

औज०-खी० दे० 'भावज'।

औजलि-खी० भवजाल, अवर्धन- 'मै' गुरि न औजलि जालें'-कवीर।

औजाई, औजी-खी० सावज, बड़े आईकी खी।

औजिण्य-पु० [सं०] दासता।

औज्य-पु० [सं०] वह राज्य-प्रबंध जिसमें प्रजाका खयाल न कर राजा अपना ही काम देखे।

औट-पु० [सं०] तिष्ठत-निवासी।

औत-वि० [सं०] भूत-संबंधी; भूतनिर्मित, भौतिक; वैशा-चिक; भूताविष्ट। पु० देवक, पुजारी; भूतपूजक; भूतयज्ञ; भूतोंका समूह।

औतक-वि० [सं०] भूताविष्ट।

औतिक-वि० [सं०] भूत-संबंधी; पंचमहाभूतों वा किसी एक भूतसे बना हुआ, पाथिव, मादी; क्षरीर-संबंधी; प्रेत-संबंधी; पिशाचकृत। पु० मोती; शिव; तत्त्व; तत्त्वोंके गुण; उपद्रव, आपि-व्याधि। -बाद-पु० पंचभूतोंके आधार-पर बना हुआ सिद्धांत। -विज्ञान-पु० वह विज्ञान जिसमें तत्त्वोंके गुण आदिका विवेचन किया गया हो। -विद्या-खी० मादुर्गरी। -सृष्टि-खी० देव, मनुष्य, तिर्यक्-इन तीन भौतियोंका समूह।

औती-खी० [सं०] रात।

औन०-पु० दे० 'मदन'।

औना०-अ० क्रि० चक्र लगाना, घुमना।

औपाल-पु० [सं०] राजकुमार।

औम-वि० [सं०] भूमि-संबंधी; भूमिसे उत्पन्न। पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; जल; आकाश; प्रकाश; अग्नि कवि। -दिन-पु० औमवार। -प्रबोध-पु० मंगलवारको पड़नेवाला प्रबोध। -रत्न-पु० मूँगा। -राशि-खी० मेघ और शुक्ति राशियाँ। -वार, -वासर-पु० मंगलवार।

औमक-पु० [सं०] भूमिसे रहनेवाला प्राणी।

औमज-पु० [सं०] विश्वकर्मा।

औमासुर-पु० [सं०] नरकासुर।

औमिक-वि० [सं०] भूमि-संबंधी; पृथ्वीपर रहनेवाला। पु० भूस्वामी, जमींदार।

औमी-खी० [सं०] भूमिमुत्ता, सीता।

औम्य-वि० [सं०] भूमि-संबंधी; पृथ्वीपरका।

और०-पु० औरा; औरा; घोड़ोंका एक भेद।

औरिक-पु० [सं०] कोषाध्यक्ष।

औरीकी-खी० [सं०] टकलाह।

औरी-खी० [सं०] धक राग।

औमन-पु० [सं०] दे० 'औमन'।

औगी-पु० एक दुःखार करनेवाला फसिला।

औंस, औंस-पु० [सं०] नीचे गिरना, पतन, हास; नाश; मार्गसे विचलित होना; परित्याग।

औंसक, औंसक-पु० [सं०] नीचे गिरना, पतन; अट होना। वि० नीचे गिरनेवाला।

औंसित-वि० [सं०] नीचे गिराया हुआ; वंचित।

औसी(सिन्)-वि० [सं०] अट होनेवाला; छोड़नेवाला।

अटकनेवाला; बरबाद करनेवाला।

अकुंल-पु० [सं०] कौवेरुधारी नट।

अकुटि-खी० [सं०] दे० 'अकुटि'।

अज्ज-पु० [सं०] भूतना।

अज्जर०-पु० अर्तार, पति।

अजरा०-पु० [सं०] दे० 'अजरा'।

अजरा०-पु० [सं०] छोटा भूतना।

अज-पु० [सं०] घुमना, चक्र; भूक; अटकना; मिथ्या, अव्यवर्धन (जैसे रस्तीकी सौंप समझना); चक्राष्ट; जलावत; चक्राचौष; उत्स, शीत; चक्रकारा रोग; चाक; चक्र; छराद; आति अर्थालंकार; * अरम, प्रतिष्ठा। -कारी(रिन्)-वि० अमोतापादक। -जार०-पु० अम-जाल। -जाक-पु० मोहपाह। -भूक-वि० अमसे उत्पन्न, अमजनित। -बास-पु० ऊपर ही ऊपर चक्की रहनेवाली बासु। -संशोधन-पु० भूलुपहार।

अमण-पु० [सं०] घुमना, फिरना; यात्रा; अक्षिरता; चक्र; चक्राचौष। -कारी(रिन्)-वि० घुमनेवाला, घुमकड़। -विलसित-पु० एक वृत्त। -बुलास-पु० यात्राका वर्णन, पर्यटनकी कहानी।

अमणी-खी० [सं०] मनोविनोदके लिए चक्र खानेका साधन (चरकी ?); जोक; पाँच धारणाओंसे एक।

अमस्कृती-खी० [सं०] तिनकों वा बाँस आदिकी लपधि-योंसे बना छाना।

अमरा०-पु० दे० 'अमरा'।

अमरा०-अ० क्रि० घुमना, अमरा करना; अममें पड़ना, भूलना; अटकना।

अमरावि०-खी० दे० 'अमरा'।

अमर-पु० [सं०] औरा, मधुप; उडब; कामी; चाक; बड; लकड़ा; चक्राचौष। -करबक-पु० मधुमक्षियोंकी संदू-कची जिसे चोर साज रखते और रोशनी दुश्मानके लिए मधुमक्षियोंकी झोळ देते थे। -कीट-पु० एक तरहकी मधु। -गीत-पु० वह गीत-संग्रह जिसमें अमरकी सरोपितकर गोपियोंने उडबको उठाहना दिया है। -छल्ली-खी० एक छता। -अ-वि० अमरसे उत्पन्न (मधु आदि)। -मिहर-पु० मधुमक्षियोंका झुंड। -पद-पु० एक वृत्त। -ग्रिह-पु० एक तरहका कदर। -आरी-खी० एक कूक। -विकासिता-खी० एक छंद। -हस्त-पु० एक प्रकारका हस्त-विन्यास (ना०)।

अमरक-पु० [सं०] अमर; भेंवर; लुसक, पट्टा; खेलने-का गैह।

अमरासिधि-पु० [सं०] चपक।

अमरार्णव-वि० [सं०] बकुल वृक्ष।

अमरादि-पु० [सं०] दे० 'अमर-भारी' ।
 अमरावली-ली० [सं०] शैलीकी पंक्ति ।
 अमरिका-ली० [सं०] बाएँ तरफ़ मूसला ।
 अमरी-ली० [सं०] मादा मौरा; पार्वती; जलुका कटा ।
 अमात्यक-वि० [सं०] योसेमें बहनेवाला, संवित् ।
 अमाना-स० कि० घुसना; बहकाना, भ्रममें डालना ।
 अमासक-पु० [सं०] तलवार आदि साक करनेवाला ।
 अमि-ली० [सं०] चकर; कुम्हारका चाक; करादा खैर;
 बगला; भ्रम; भूक; सेनाका चक्राकार झूट ।
 अमित-वि० [सं०] घूमता, चकर खाता हुआ; घुमावा,
 चकर खिलाया हुआ । -वेज-वि० घेंवा-तावा ।
 अमी (मिस्)-वि० [सं०] घूमने, चकर खानेवाला;
 भ्रमयुक्त ।
 अमीन-वि० भ्रमण करनेवाला ।
 अमिमा (मस्)-ली० [सं०] उग्रता, अतिचार ।
 अम्-वि० [सं०] नीचे गिरा हुआ; विगड़ा हुआ; दूषित
 आचारवाला; क्षीण; नष्ट; -से च्युत । -किम्-वि० किसने
 अपना विहित कर्म छोड़ दिया है । -विद्-वि० विद्वासे
 रक्षित । -जार्-वि० जो मार्ग भूल गया हो । -जी-
 वि० भाग्यहीन ।
 अम्हा-ली० [सं०] पतित ली, दुश्चरित्रा ।
 अम्हाचर-वि० [सं०] जिसका आचार निम्न गया हो ।
 पु० दूषित आचरण; बैरमानी ।
 अम्हाचिकार-वि० [सं०] पदच्युत ।
 अम्ह-वि० [सं०] भूला हुआ; भ्रमयुक्त; बैरान, परेशान;
 भ्रमता, चकर खाता हुआ । पु० मचवाला हाथी; भट्ठा;
 भ्रमण, चकर; भूक ।
 अम्हापहचुसि-ली० [सं०] अपहृष्टि अलंकारका एक
 भेद, जहाँ किसीकी किसी पदार्थमें अन्य पदार्थका भ्रम हो
 जानेपर सच्ची बात कहकर उसका निराकरण किया जाय;
 आंति दूर करनेके लिए सच्ची बात कहना ।
 अम्हि-ली० [सं०] अवधार्य ज्ञान, भ्रम; चकर; अस्विरता;
 स्वेद; धववाह्य; एक अर्थालंकार जहाँ उपमानके सम्यक्
 उपमेयको देखनेपर उपमानका निश्चयात्मक भ्रम हो ।
 -कर-वि० भ्रमजनक । -नाशन-वि० भ्रम, आंशिका
 नाश करनेवाला । पु० शिव । -इर-वि० आंशिका नाश
 करनेवाला । पु० मंत्री ।
 अम्हिमाह (मस्)-वि० [सं०] भ्रमयुक्त, चकर खाता
 हुआ । पु० एक अर्थालंकार, आंति नामक अलंकार ।
 अम्ह-पु० [सं०] एक साम; साम द्योमिसे एक ।
 अम्हक-पु० [सं०] त्वचामें रहनेवाला पिता (आ० वे०) ।
 वि० चमकानेवाला ।
 अम्हजु-पु० [सं०] दीप्ति, चमक ।
 अम्हज-पु० [सं०] चमकाना ।
 अम्हजा-स० कि० शीमित होना; चमकना ।
 अम्हमान-वि० क्षीमाभमान ।
 अम्हि-ली० [सं०] चमक, दीप्ति ।
 अम्हिण्यु-वि० [सं०] चमकनेवाला । पु० विष्णु; शिव ।
 अम्ही (जिम्)-वि० [सं०] चमकनेवाला, दीप्तिभूक्त ।
 अम्ह-पु० दे० 'आता' ।

अम्हा (ह्)-पु० [सं०] सगा भार । - (ह्) मर्हि-संज्ञिक
 -वि० किसी नामका भार । -अ-पु० भारीका पुत्र । -
 जा-ली० भारीकी पुत्री । -अम्हा-ली० भाग्य । -
 वृत्त-वि० भांसे मिला हुआ । पु० विवाहके समय भांसे
 बहनकी मिठी हुई कोई वस्तु । -ह्रितीवा-ली० कापिक
 झुका द्वितीया, मैवाद्वा । -हुत्त-पु० भतीजा । -अम्ह
 -पु० चमक भार । -अम्ह-पु० भारीकासा स्नेह, भाव,
 भारीचारा । -अम्ह-ली० भाग्य । -अम्हुर-पु० जेठ,
 पतिका वगैरे भार । -ह्रत्वा-ली० भारीकी हत्वा ।
 अम्हपुत्र-पु० [सं०] भतीजा ।
 अम्हपुत्री-ली० [सं०] भतीजी ।
 अम्हक-वि० [सं०] भारीका; भांसे मिला हुआ ।
 अम्हत्त-पु० [सं०] भाग्य ।
 अम्ह-पु० [सं०] भार ।
 अम्हीच-वि० [सं०] आता-संबंधी । पु० भतीजी ।
 अम्हिय-पु० [सं०] भतीजा । वि० आता-संबंधी ।
 अम्ह्य-पु० [सं०] भाग्य, आत्स्नेह ।
 अम्ह-वि० [सं०] भ्रमयुक्त; घुमनेवाला । पु० भूक, थोका;
 भ्रम, मिथ्या ज्ञान ('यथोपर') ।
 अम्हक-वि० [सं०] भ्रमजनक; घूर्त; बहकानेवाला । पु०
 सियार; चुंबक; ठग ।
 अम्हमर-वि० [सं०] भ्रमर-संबंधी । पु० भौरोंका एकट्ठा
 किया हुआ शहर; चुंबक; अपस्मार रोग; एक तरहका
 मूल ।
 अम्हरी-ली० [सं०] दुर्गा; खँवर ।
 अम्हरी (मिस्)-वि० [सं०] अपस्मार रोगसे पीड़ित; चकर
 खानेवाला; शहरसे बना हुआ ।
 अम्हिस-वि० [सं०] घुमाया, चकर खिलाया हुआ
 (नेत्रादि) ।
 अम्ह-पु० [सं०] आकाश; वह अम्ही जिसमें नक्षत्रोंमें दाना
 भूतते है ।
 अम्हिक-पु० [सं०] सरोरकी एक नाड़ी ।
 अम्हक, अम्हक-पु० [सं०] कौके देशमें काम करनेवाला
 ऋतु ।
 अम्हक, अम्हक-पु० [सं०] दे० 'भूक' ।
 अम्हकि, अम्हकी-ली० [सं०] भ्रम; भी ।
 अम्ह-ली० भीह ।
 अम्ह-ली० [सं०] भी । -कुटि, कुटी-ली० भ्रम । -
 अम्ह-पु० एक साँप । -अम्ह-वि० अम्ह-पु० भी देदी
 करना, भ्रम । -अम्ह-पु० भौका मूल । -अम्ह,
 अम्ह-पु० भी देदी करना, भी च्छादक रोग प्रवृत्त करना ।
 -अम्ह-पु० दोनों भवोंके बीचका स्थान । -अम्ह-
 ली० नेत्राचदार भी । -विक्रिवा-ली० भ्रम । -
 विच्छास-पु० भवोंका भीहक संवादन, मंत्री ।
 अम्ह-पु० [सं०] गर्मस् शिष्ट । -अम्ह-वि० पु० भ्रणहत्या
 करनेवाला । -ह्रत्वा-ली० गर्मपत द्वारा गर्मस् शिष्टकी
 हत्या करना । -ह्रा (ह्र)-वि०, पु० भ्रणहत्या करने-
 वाला ।
 अम्ह-पु० [सं०] नाश; वसन; बर ।
 अम्हरी-स० कि० भीन होना, बरना ।

म

म-देवनागरी वर्णमालामें पञ्चमका अंतिम व्यञ्जन-वर्ण ।
उच्चारणस्थान कौष्ठ और नासिका । स्पष्ट वर्ण, अनु-
नासिक ।

मंकिळ-पु० [सं०] दावानल, वनाग्नि ।

मंङ्कुर-पु० [सं०] आरुणा ।

मंका(कृ)-वि० [सं०] गीताखोर ।

मंक्षण-पु० [सं०] जौषपर बौधनेका कनक, ऊरुप्राण ।

मंङ्कु-ज० [सं०] दुरंत, मीरतासे; अत्यधिक; वस्तुतः,
यथार्थमें ।

मंख-पु० [सं०] नाट, बंदीजन; एक औषध; एक तरहके
सन्न्धासी ।

मंखी-खी० बन्धोंके गलेमें पहनानेका एक जेवर ।

मंग-खी० मंग, सीमत । पु० [सं०] नावका अगला भाग ।

मंगल, मंगल-पु० मित्रमंगा, याचक ।

मंगनी-खी० मंगनेका भाव; मंगकर, काम हो जानेपर
छौटा देनेका बचन देकर ली हुई चीज; ब्याह पक्का करनेकी
रस्म । -की चीज़-पुनः छौटा देनेकी शर्तपर ली
हुई वस्तु ।

मंगल-पु० [सं०] शुभ, कल्याण; सौभाग्य; अग्रीह अर्थकी
सिद्धि; सौरमण्डलका एक ग्रह जो पृथ्वीका पुत्र माना जाता
है; मंगलवार; विष्णु; अश्विना एक नाम । वि० कल्याण-
कारी, शुभ; शुभ लक्षणयुक्त; सचचा; बीर । -करण-
कर्म(श्)-पु० कार्याक्रममें सफलताके लिए प्रार्थना
करना । -कलश-पु० दे० 'मंगलघट' । -काम-वि०
मंगलकी कामना करनेवाला, शुभचिंतक । -कामना-
खी० कल्याणकी कामना । -कारक, कारी(रिक्)-वि०
कल्याणकारी । -कार्य-पु० शुभ कार्य, ब्याह, जन्म
आदिका उत्सव । -काल-पु० शुभ वर्षी । -क्षीम-
पु० उत्सवादिके समय पहना जानेवाला रेशमी वस्त्र ।
-गान-पु० मंगलके अवसरपर होनेवाला गाना-बजाना ।
-गीत-पु० मंगलके अवसरपर गाया जानेवाला गीत ।

-ग्रह-पु० शुभ ग्रह; मंगल नामक ग्रह । -घट,-
पात्र-पु० शुभ कार्योंमें देवताके सामने रखा जानेवाला
जलपूर्ण घट । -चंडिका, -चंडी-खी० एक देवी ।
-च्छाय-पु० वरगद; पाकड़ । -तर्ष, -बाध-पु० शुभ
अवसरपर बजाये जानेवाले बाजे । -देवता-पु० शुभ-
कारी देवता, इष्टदेव । -हार-पु० प्रासादका मुख्य द्वार ।
-ध्वनि-खी० मंगलके अवसरपरके होनेवाली ध्वनि, मंगल
गीत आदि । -पत्र-पु० ताबीजके तौरपर धारण किया
जानेवाला पत्र । -पाठक-पु० बंधीजन, स्तुतिपाठक ।
-पाणि-वि० जिसका हाथ शुभ हो । -पात्र-पु० वह
पात्र जिसमें मंगलकी चीजें रखी हों । -पुष्प-पु०
मंगलिक पूजन आदिमें गृहीत पुष्प । -प्रह-वि० कल्याण-
कारी । -प्रदा-खी० हस्ती; शमीका पेड़ । -प्रख-
पु० पुराणोंमें वर्णित एक पर्वत । -जेरी-खी० मंगलके
अवसरपर बजाया जानेवाला ढोल । -मासिका-खी०
दे० 'मंगलगीत' । -बाध-पु० आशीर्वाद । -बावी-
(विक्)-वि० आशीर्वाद देनेवाला । -बाद,-बलर-

पु० सोमवारके बादका दिन, मौसवार । -विधि-खी०
वह रीति या रस्म जिसका पाठन कल्याणके लिए किया
जाय । -शक-पु० मंगलवाचक शब्द । -सूचक-वि०
भाष्योदयका बोधक । -सूत्र-पु० हस्तीमें रेंगा सूत जो
ब्याहके समय वर-कन्याके हाथोंमें बांध दिया जाता है;
संधा खियों द्वारा गलेमें पहना जानेवाला पवित्र सूत्र ।
-स्नात-पु० मंगलिक अवसरपर या मंगलिक पूजनके
लिए किया जानेवाला स्नान ।

मंगलमय-वि० [सं०] कल्याणमय, मंगलरूप । पु०
परमेश्वर ।

मंगल-वि० मंगली (पुरुष); मंगलकी पैदा होनेवाला । -
सुखी-खी० वेद्या ।

मंगला-खी० [सं०] पार्वती; पतिव्रता स्त्री; सफेद दूध;
नीली दूध; हस्ती । -व्रत-पु० शिव; पार्वतीके नामसे
किया जानेवाला एक व्रत ।

मंगलारुह-पु० [सं०] एक तरहका अगर ।

मंगलाचरण-पु० [सं०] शुभ कार्यके आरंभमें मंगल-
कामनासे की जानेवाली देवस्तुति; ग्रंथारंभमें लिखा
जानेवाला मंगलिक पद आदि ।

मंगलाचार-पु० [सं०] मंगलकृतके पहले होनेवाला मंगल-
गान; शुभानुष्ठान ।

मंगलायन-पु० [सं०] सुख-समृद्धिका मार्ग । वि० जो हस्त
मार्गपर हो ।

मंगलार्चन-पु० [सं०] गणेश ।

मंगलाक्षय-पु० [सं०] मंगलमय परमेश्वर; मंदिर ।

मंगलाबह-वि० [सं०] शुभ, मंगलकारी ।

मंगलाबास-पु० [सं०] देव-मंदिर ।

मंगलाहक-पु० [सं०] वे मंत्र जिनका पाठ विवाहके समय
वर-बधुके कल्याणार्थ किया जाता है ।

मंगलाहिक-पु० [सं०] कल्याणके लिए प्रति दिन किया
जानेवाला मंगल कृत्य ।

मंगली-वि० (खी या पुरुष) जिसकी कुंडलीमें चौथे,
आठवें या बारहवें स्थानमें मंगल पड़ा हो; (वह कुंडली)
जिसके चौथे, आठवें या बारहवें स्थानमें मंगल हो । खी०
[सं०] दे० 'मंगला' ।

मंगलीय-वि० [सं०] शुभावह, भाग्यवान् ।

मंगलेष्ट-वि० [सं०] मंगल, अभ्युदय बाहनेवाला ।

मंगलोत्सव-पु० [सं०] मंगलिक उत्सव ।

मंगल्य-वि० [सं०] मंगलकारक; सुदर; पवित्र । पु० चंदन;
सोना; बेल; पीपल; नारियलका पेड़; तहरी; मयूर; सिंदूर;
अभिषेकके लिए लाया हुआ तीर्थजल । -कुसुमा-खी०
संक्षुब्धी ।

मंगला-खी० [सं०] दुर्गा; हस्ती; दूध; चमेलीकीसी गंध-
वाला अगर; एक हथ, काढ़ि लता; सफेद बन्ध; शंखपुष्पी ।
मंगलाभा-सं० कि० मंगलनेका काम कराना; दूसरेके हाथ
कोई चीज मंगाना ।

मंगिनी-खी० [सं०] नाव ।

मंगुल-पु० [सं०] पाप ।

मंगोहर-वि०, स्त्री० (लङ्का) जिसकी किसी साथ मंगनी हुई हो।

मंगोल-पु० मनुष्योंकी चार मूल जातिबोमेंसे एक जो तिब्बत, चीन, जापान आदि देशोंमें बसती है और जिसका रंग हल्का पीला तथा नाक चिपटी होती है।

मंथ-पु० [सं०] छाटा; मथिया; मचाना; सिंहासन; रग-भूमि। -मंथप-पु० फसलकी रक्षाकीके लिए वा विवाहादिके अवसरपर बनायी हुई मचान। -मूथ-पु० मचानकी संमालनेवाला खंभा।

मंथक-पु० [सं०] मंथ।

मंथकाग्र-पु० [सं०] छटमल।

मंथिका-स्त्री० [सं०] मथिया।

मंथर-पु० मंथर; दे० 'मत्सर'।

मंजन-पु० दाँत आदि साफ करनेके काममें लाया जाने वाला विशेष चूर्ण; * स्नान; माछिन्दा 'मंजन के नित न्हाय कै अंग अंगोछि कै बार छुरावन लागी'-कलित०; मंजना, रगना।

मंजना-अ० कि० मंजा जाना; अभ्यास होना, अनुभवसे दक्षता प्राप्त होना।

मंजर-पु० [सं०] मीठी; तिलक वृक्ष; वल्ली; दे० 'मंजरी'।

मंजर-पु० [अ०] दृष्टिका आनय; ध्रुव, नन्मरार; देखने योग्य वस्तु या स्थान; शरीरका।

मंजरी-स्त्री० [सं०] दे० 'मंजरी'।

मंजरित-वि० [सं०] मंजरीमेंसे लदा हुआ।

मंजरी-स्त्री० [सं०] कल्ला, कौपल; सीकमें रुगे हुए छोटे घने फूल; मीठी; तिलक वृक्ष; लता; तुलसी। -वासर-पु० मंजरीकी झलका चक्कर। -मंज-पु० बेल।

मंजरीक-पु० [सं०] तुलसी; तिलक वृक्ष; बेल; अशोक वृक्ष; मीठी।

मंजा-स्त्री० [सं०] बकरी; मंजरी; लता।

मंजाह-स्त्री० मंजनेकी क्रिया; मंजनेकी उज्जरत।

मंजारी-स्त्री० बिलो।

मंजि-स्त्री० [सं०] मंजरी; लता। -फला-स्त्री० केलेका पेड़।

मंजिका-स्त्री० [सं०] वेदवा।

मंजिमा(मन्)-स्त्री० [सं०] सुंदरता, मनोहरता।

मंजिल-स्त्री० [अ०] उतरने या ठहरनेकी जगह; पड़ाव, रुकना; एक दिनका सफर; मकान; पाँचशाखा; मकानका दरवाजा या छत; वह स्थान जहाँ डाकके बोरे बदले जायें। -गाह-पु०, स्त्री० उतरनेकी जगह। - (छे)मंजिल-स्त्री० असल मुराद। -हस्ती-स्त्री० जिवनी। -मु०-डराना-मकान बनाना। -मारी होना-पात्रा पूरी करना कठिन होना। -मारना-वात्रा पूरी करना; मुश्किल हो करना।

मंजिहा-स्त्री० [सं०] मजीठ। -मेह-पु० एक प्रकारका प्रमेह (सुमृत्)। -राग-पु० मजीठका रंग; मजीठके रंग जैसा पका, स्वाधी अनुराग।

मंजी-स्त्री० [सं०] मंजरी; लता।

मंजीर-पु० [सं०] डुबक, नूपुर; मचानाका ढंढा बाँधनेका खंभा; एक जाति।

मंजीरा-पु० दे० 'मजीरा'।

मंजील-पु० [सं०] वह गाँव जिसमें मुख्यरूपसे धोबी रहते हों।

मंजु-वि० [सं०] सुंदर, मनोहर। -केसी(मिन्)-पु० कृष्ण। वि० सुंदर बालोंवाला। -मति, -ममथ-वि० सुंदर बालवाला। -गमना-वि० स्त्री० मनोहर गतिवाली। स्त्री० हंसनी। -मर्त-पु० नेपाल। -मुंज-पु० मनोहर मुंजन। -घोष-वि० मधुर, मनोहर बोलवाला।

पु० पंडुक; एक पूर्व जिन; धर्मप्रचारके लिए चीन जानेवाले एक बौद्ध आचार्य। -घोषा-स्त्री० एक अप्सरा। -वैच-पु० मंजुघोष। -माथ, -मज्ज-पु० एक पूर्व जिन, मंजुघोष। -नाशी-स्त्री० सुंदर स्त्री; दुर्गा; धंदणी, कवी। -पाठक-पु० तोता। -प्राण-पु० ब्रह्मा।

-माथिणी-वि० स्त्री० मधुरभाषिणी। -भापी(विन्)-वि० मधुरभाषी। -बचन-वि० सुंदर मुखवाला; सुंदर। -बापी(विन्)-वि० मधुरभाषी। -अपी-पु० मंजुघोष। -स्वन, -स्वर-वि० जिसकी आवाज या बोली मीठी हो।

मंजुल-वि० [सं०] सुंदर, मनोहर। पु० कुज; तोता; कूब। मंजूर-वि० [अ०] जो देखा गया हो; पसंद किया हुआ, स्वीकृत।

मंजूरी-स्त्री० स्वीकृति, मंजूर होना।

मंजूषा-स्त्री० [सं०] पिटारी; मजीठ; पथर; वह तहतरी आदि जिसमें रखकर अभिनन्दनपत्र भेंट किया जाता है। मंजूसा-स्त्री० दे० 'मंजूषा'।

मंजुला-वि० दे० 'मंजुला'।

मंजु-पु० दे० 'मंजुसा', अटेरनके बीचकी लकड़ी; चरखेका मुँहका। * वि० मंजुल, बीचका। † स्त्री० खटिया।

मंजिषाना-स० कि० धँसकर पार करना; पार करना; नाव सेना।

मंजोला-वि० दे० 'मंजोला'।

मंठ-पु० [सं०] मैदका बना एक पकवान, माठ।

मंथ-पु० [सं०] मोंथ; सार; मलाई; सुरा; धरद, धक शाक; मट्ठा; आभूषण; सेठक। -थ-वि० मोंथ पीनेवाला। पु० दे० कर्ममें। -हारक-पु० मथ बनानेवाला, कलाल।

मंथक-पु० [सं०] एक प्रकारका पिष्टक या रोटी; गीतका एक अंग।

मंथन-पु० [सं०] सजाना, मँगार करना; आभूषण; सुक्ति-प्रमाणसे पक्ष-विशेषकी पुष्टि करना; वि० मँगार करनेवाला। -मिथ-वि० अलकारका प्रेमी। -मिथ-पु० सुप्रसिद्ध मीमांसक जो कहा जाता है कि शकटाचार्यसे शास्त्रार्थमें पराजित हुए थे।

मंथना-स० कि० सजाना, सँवारना; दे० 'मोंथना'।

मंथप-पु० [सं०] छाया हुआ, पर चारों ओरसे खुला हुआ बैठनेका स्थान, मंथपा; कुंज (जैसे लतामंथप)। वि० दे० 'मंथ' में।

मंथपक-पु० [सं०] छोटा मंथप।

मंथपिका-स्त्री० [सं०] छोटा मंथप।

मंथपी-स्त्री० छोटा मंथप; सदी।

मंथर-पु० दे० 'मंथल'।

मंथरना-अ० कि० मंथक बाँधना; सब ओरसे घेर लेना। मंथराना-अ० कि० मंथकाकार चक्कर देते हुए उड़ना;

किसीके आस-पास चकरा काटना; घूमते रहना ।

मँहरी-खी० पयालकी चढाई ।

मँहल-पु० [सं०] गोल बेरा, हलका, कुंडली; सूर्य-चंद्रका विरा; सूर्य-चंद्रके हर्ष-निर्णय करनेवाला बेरा, परिवेश; गोल; समूह, मंडली, समिति; एक प्रकारका सैन्य-समूह; चाक; कर्मदेवका एक खंभ; प्रहरीका गतिपथ, कक्षा; क्षितिज; क्षत्र, प्रदेश, ग्राम-समूह; एक तरहका सौंप; कुशा; एक तरहका कुछ रोग जिसमें शरीरमें गोल सफेद दाग पड़ जाते हैं; गोल बंधन; लड़कू; राज्यविशेषके निकट और दूरके सड़, मित्र आदि राज्योंका मंडल । —**कायिक-वि०** जिसका धनुर् झुका हुआ हो । —**नृत्य-पु०** मंडलका घूमते हुए नाचना । —**पत्रिका-खी०** काल गदह-पुरना । —**पुष्पक-पु०** एक कीड़ा । —**वर्षी(सिंघ)-पु०** मंडलका शासक । —**वर्ष-पु०** देशम्पयी वर्षा ।

मंडलक-पु० [सं०] भाईना; दे० 'मंडल' ।

मंडलाकार, मंडलाकृत-वि० [सं०] मंडलके आकारका, गोला ।

मंडलाग्र-पु० [सं०] वह तलवार जिसकी नोक कुछ झुकी हो, खंजर ।

मंडलाधिप-पु० [सं०] दे० 'मंडलेश्वर' ।

मंडलाधीश-पु० [सं०] दे० 'मंडलेश्वर' ।

मंडलित-वि० [सं०] भर्तुलकार बनाया हुआ ।

मंडली-खी० छोटा मंडल, जमात, समुदाय; दूर; युद्ध ।

मंडली(सिंघ)-वि० [सं०] मंडल, हलका बनानेवाला । पु० सौंप; सौंपका एक भेद; विष्ठी; सेंधुवार नामका जंतु; सूर्य; मंडलाधिपति; बरगद ।

मंडलीक-पु० [सं०] मंडलका राजा; कद राजा ।

मंडलीकरण-पु० [सं०] मंडल या कुंडली बनाना; कुंडली मारना ।

मंडलीश-पु० [सं०] दे० 'मंडलेश' ।

मंडलेश-पु० [सं०] देशका शासक, नरेश ।

मंडलेश्वर-पु० [सं०] एक मंडलका शासक, राजा, चार सौ योजन करनेवाले प्रदेशका राजा ।

मँहवा-पु० मंडप; शामियाना ।

मंडा-खी० [सं०] हुरा; आँख । † पु० जमीनकी एक नाप; दोबिया ।

मंडार, मँडारा-पु० हावा, दोकरा; गव्दा (१०) ।

मंडित-वि० [सं०] सजाया हुआ, भूषित ।

मंडिता(सु)-वि० [सं०] शोभित करनेवाला (आभूषण) ।

मंडी-खी० (किसी खास चीजकी) थोक-विक्रीका बाजार, बड़ा बाजार; बाजार । **मु०** —**कगना-बाजार** लगना, खुलना ।

मंडील-पु० कामदार करनेवाला सुरेठा, मटील ।

मँहजा-पु० एक मोटा अनाज ।

मँहक-पु० [सं०] मेढ़का एक लाल; एक प्रकारका नृत्य; एक रतिबंध । —**पर्णी-खी०** प्राची; मंजिडा । —**प्लुति-खी०** मेढ़का उछलना । —**गति-वि०** मेढ़ककी तरह चलनेवाला ।

मँहकी-खी० [सं०] मेढ़की; मड़कपर्णी; मल्ल खी; घोड़ेके सुरका तलवा ।

महूर-पु० [सं०] लोहेका मेल, कौट जो दवाके काम आता है ।

मंडा-पु० एक औजार जो कमख्वाब हुननेवालोंके काम आता है ।

मंतव्य-वि० [सं०] मानने योग्य, माननीय । पु० मत ।

मंतु-पु० [सं०] सलाह; राय; अपराध; मानवजाति; प्रजापति; राजा । खी० समझ, इच्छा ।

मंत्र-पु० [सं०] गुप्त बातों, कानमें कही जानेवाली बात, सलाह, मंत्रणा; वह शब्द या शब्द-समूह जिससे किसी देवताकी सिद्धि या अलौकिक शक्तिकी प्राप्ति हो; वेदका संहिताभाग; कार्यसिद्धिका गुर (मूलमंत्र) । —**कार-पु०** मंत्र करनेवाला, मंत्रद्वेष । —**कुशल-वि०** मंत्रणामें पड़ । —**कार्य-पु०** मंत्रणाका विषय । —**कृत-पु०** मंत्रकार मंत्रणा करनेवाला । —**गृह-पु०** जादुस, गुप्तचर । —**गृह-पु०** मंत्रणागृह । —**जल-तोष-पु०** अभिमंत्रित जल । —**जिह्व-पु०** अग्नि । —**ज-वि०** मंत्रणाकुशल । पु० मंत्री; गुप्तचर; तंत्र-मंत्र जाननेवाला । —**ह-वाता(सु)-पु०** गुरु । —**वर्षी(सिंघ), ब्रह्मा(व्य)-पु०** वेदमंत्रोंका साक्षात्कार करनेवाला । —**दीक्षिति-पु०** अग्नि । —**देवता-पु०** मंत्र-विशेष द्वारा आवाहित देवता । —**हुम-पु०** छटे मन्त्रतर्के द्वंद । —**घर, घारी(सिंघ)-पु०** मंत्री । —**पाठ-पु०** वेदमंत्रोंका पाठ । —**पूत-वि०** मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ । —**प्रयोग-पु०** प्रयुक्ति-खी० मंत्रसे काम लेना । —**फल-पु०** मंत्रणाका परिणाम । —**बल-पु०** मंत्रकी शक्ति । —**बीज, बीज-पु०** मंत्रका पहला पद । —**भेद-पु०** गुप्त बातोंका प्रकट कर दिया जाना । —**मुग्ध-वि०** मंत्रसे मोहित, बश किया हुआ; जडवत् । —**मूर्ति-पु०** शिव । —**मूल-पु०** जादू; राज्य । —**मंत्र-पु०** मंत्रवाला तबीज । —**योग-पु०** मंत्रका प्रयोग । —**वादी(सिंघ)-पु०** मंत्रका उच्चारण करनेवाला, मंत्रज्ञ, जादूगर । —**विद्-वि०** मंत्रज्ञ । —**विद्या-खी०** तंत्र-मंत्रकी विद्या । —**शक्ति-खी०** मंत्रका प्रभाव । —**श्रुति-खी०** वह मंत्रणा जिससे दूसरेने सुन लिया हो । —**संस्कार-पु०** मंत्रपूर्वक किया जानेवाला संस्कार; विवाह; मंत्र-ग्रहणके पूर्व किया जानेवाला उसका दशविध तन्त्रोक्त संस्कार (जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आध्यायन, तर्पण, दीपन और गोपन) । —**संहिता-खी०** वेदोंका मंत्रभाग । —**साधन-पु०** मंत्रकी सिद्ध करनेका दत्त करना । —**सिद्धि-खी०** मंत्रका सिद्ध होना, मंत्रका प्रभावकर होना । —**सुत्र-पु०** मंत्र पदकर बहनाया गया जोरा । —**स्नात-पु०** स्नानके बदले पढ़ा जानेवाला मंत्र । —**हीन-वि०** बिना मंत्रका; अदीक्षित; अवसंस्कृत ।

मंत्रण-पु० [सं०] मंत्रणा, मन्त्रिकरा करना; एकांतमें सलाह-मन्त्रिकरा करना ।

मंत्रणा-खी० [सं०] मन्त्रिकरा करना; सलाह ।

मन्त्रिक-पु० [सं०] मन्त्रियोंवाला (समासांतमें) ।

मन्त्रिणी-खी० [सं०] मन्त्रीकी पत्नी; स्त्री जो मन्त्रीका काम करे ।

मन्त्रित-वि० [सं०] जिसका मंत्र द्वारा संस्कार किया गया

हो, अभिमंत्रित कथित; (विषय) जिसपर लकाह दी जा
ली गयी हो ।

मंत्रित्व-पु० [सं०] मंत्रीका पद, कार्य ।

मंत्री (मित्र)-पु० [सं०] जिसके साथ वक्तात्मै मन्त्रिबरा
किया जाय, सचिव, मंत्री; लकाह देनेवाला; राज्यके
किसी विभागका वह प्रधान अधिकारी जिसकी सलाहसे
उस विभागका कार्य संचालन हो । -(त्रि)पुर-वि०
मंत्रीका कार्य-भार वहन करनेमें समर्थ । -वसि-पु०
प्रधान मंत्री । -प्रकाश-पु० सुयोग्य मंत्री । -प्रभाव,
-सुख्य, -खेड-पु० प्रधान मंत्री । -मंडल-पु०
मंत्रियोंका मंडल, परिषद्, 'कैबिनेट' ।

मंत्रिका-पु० मंत्र आननेवाला (कवीर) ।

मंत्रोक्त-वि० मंत्रमें जिसका उल्लेख हो ।

मंत्रोदक-पु० अभिमंत्रित जल ।

मन्त्र-पु० [सं०] मन्थन; क्षोभ; मथानी; ध्वंस; किरण; एक
पेय; रगड़से आग पैदा करनेका एक साधन; आँसुका
मैल; कर्धुल; कृष्णसार शृङ्गा एक भेद । -ज-पु०
मन्थन । -गिरि, -पर्वत-पु० मंदर पर्वत । -गुण-पु०
मथानीकी रस्ती । -द्वंद्व, -द्वंद्वक-पु० मथानीका डंका ।
-विषय-पु० वह खंभा जिसमें मथानीकी रस्ती लीची
जाती है । -क्षौल-पु० मंदर पर्वत ।

मन्त्रक-वि० मन्थन करनेवाला ।

मन्थन-पु० [सं०] मथना, विकोना; तत्त्वबोधके लिए किसी
विषयको बार-बार पढ़ना, सोचना; मथानी; रगड़से आग
पैदा करना । -बट-पु०, -बटी-क्षी० दही मथनेका
मटका आदि ।

मन्थनी-क्षी० [सं०] दही मथनेका बरतन ।

मन्थर-वि० [सं०] सुस्त, मंद; जल्दमति; स्थूल; नीच;
देहा; बका; चौड़ा; गंभीर । पु० कोष; फल; बाधा; मथानी;
क्षोभ; शिरके बाल; मन्थन; गड़; गुप्तक; वैशाख मास;
मंदर पर्वत; एक हरिण । -शक्ति-क्षी० मंद गति, धीमी
चाल । वि० धीमी चालवाला । -विषेक-वि० भले-
बुरेका निर्णय करनेमें जिसे देर लगे ।

मन्थरा-क्षी० [सं०] कैकेयीकी कुब्जा दासी (इसीके बह-
कान्तेसे रानीने दशरथसे रामको वनवास और भरतको
राज्य देनेके बर माँगे) ।

मन्थरित-वि० [सं०] मंद किया हुआ ।

मन्थरु-पु० [सं०] चंचरकी हवा ।

मन्था-क्षी० [सं०] मेथी ।

मन्थाच्छ-पु० [सं०] मंदर पर्वत ।

मन्थात्रि-पु० [सं०] मंदर पर्वत ।

मन्थान-पु० [सं०] मथानी; मंदर पर्वत; अभिलतास;
शिवका एक नाम ।

मन्थानक-पु० [सं०] एक तरहकी घास ।

मन्थिनी-क्षी० [सं०] दही मथनेका मटका ।

मन्थी (मित्र)-वि० [सं०] मथनेवाला; पीड़क ।

मन्थोदक-पु० [सं०] क्षीरसागर ।

मन्थोदधि-पु० [सं०] क्षीरसागर ।

मन्थ्य-वि० [सं०] मन्थन करने योग्य ।

मन्-वि० [सं०] सुस्त; धीमा; गंभीर; मृदु; मर्ल; हलका;

धीका; छोटा (मंदीदरी); दुर्बल (मंदाम्नि); नीच । पु०
शनि; वम; अभाव्य; प्रलय; एक तरहका हाथी । -कर्म-
वि० कुछ-कुछ बहारा, कंचा छननेवाला । -कर्मो (मन्)-
वि० काम न करनेवाला, आलसी । -कांत-वि० जिसकी
कांति कुछ फीकी पड़ गयी हो । -कांति-पु० चंद्रमा ।
वि० सुरक्षावा हुआ । -कारी (रिक्)-वि० मंदगतिसे
या मूर्खतापूर्वक काम करनेवाला । -ग-वि० मंलगामी ।
पु० शनि । -गति-वि० धीमी चालवाला । क्षी०
ग्रहोंका ध्वंसे दूर चला जाना । -गमन, -गामी-
(मित्र)-वि० धीमी चालसे चलनेवाला । -चेता-
(सत्)-वि० मंदबुद्धि । -च्छाद्य-वि० पुंशक ।
-धी, -बुद्धि-वि० मंदी अज्ञाना, अल्पबुद्धि । -फल-
पु० ग्रहगतिका एक भेद । वि० देरसे फल देनेवाला ।
-बल-वि० बलहीन । -भाक् (ज्)-वि० मंदभाव्य ।
-आगी (गिन्)-वि० अभागा, बदनसीध ।
-प्रति-वि० मोटी या खोटी अज्ञाना । -विभव-
वि० दरिद्र, अकिंचन । -धीरै-वि० शक्तिहीन ।
-समीर, -समीरण-पु० हलकी, सुखद बायु । -स्मित,
-हास, -हास्य-पु० हलकी हँसी ।

मंदक-वि० [सं०] मूर्ख, दुर्धृ ।

मंदकणि-पु० [सं०] एक ऋषि ।

मंदट-पु० [सं०] पारिमद्र वा देवदाह वृक्ष; फरहा ।

मन्धर्षी-क्षी० [सं०] दुर्गा ।

मन्धर-पु० [सं०] वह पर्वत जो पौराणिक कथाके अनुसार
समुद्र मन्थनेमें मथानी बनाया गया था; मंदार स्वर्ग;
आईना; आठ वा सोलह लक्षियोंवाला मोतियोंका हार ।
वि० मंद । -गिरि-पु० मंदर पर्वत; मुँगेरके पासका
एक पर्वत । -वासिनी-क्षी० दुर्गा ।

मन्धरा-वि० डिगना । पु० एक तरहका बाजा ।

मन्धरी-क्षी० एक पेड़ जिसकी लकड़ी गाबियाँ आदि
बनानेके काम आती है ।

मन्ध्रक-पु० मादक, मृदग (घन०) ।

मन्ध्र-पु० एक तरहका बाजा ।

मन्धसान, मन्धसानु-पु० [सं०] अग्नि; प्राण; नंद ।

मन्ध्रा-वि० मंद, धीमा; दीला; जिसकी माँग कम हो,
नीचे मालपर बिकनेवाला (सीता); खराब । क्षी० [सं०]
मूर्खकी स्मृति जो उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरावादा, उत्तरा
भाद्रपद और ऐश्विन वृश्चिकमें पड़े ।

मन्ध्रकिनी-क्षी० [सं०] गगाकी स्वर्गमें बहनेवाली धारा,
आकाशगंगा; स्मृति का एक भेद; एक बर्णवृत्त ।

मन्ध्रकांत-वि० [सं०] धीरे-धीरे आगे बढ़नेवाला ।

मन्ध्रकांता-क्षी० [सं०] एक बर्णवृत्त ।

मन्ध्राक्ष-वि० [सं०] संकुचित आँसुवाला । पु० लज्जा ।

मन्ध्राक्षि-क्षी० [सं०] साचनशक्तिका दुर्बल हो जाना,
हाजमेका विगड़ जाना ।

मन्ध्रास्त्र (स्मृ)-वि० [सं०] मूर्ख; नीच ।

मन्ध्रादर-वि० [सं०] उपेक्षा करनेवाला ।

मन्ध्रामल-पु० [सं०] मंदाम्नि ।

मन्ध्राना-अ० कि० मंद धमना ।

मन्ध्रानिल-पु० [सं०] धीमी, सुखद बायु ।

मंदार-पु० [सं०] नंदनकाननके पाँच हथोमेंसे एक; पारि-
मद्र; मदार; भद्रा; हाथी; मंदारपुष्प । -पुष्प,-
माका-औ० मंदारके फूलोंकी माका । -बह्नी-औ०
माघ-शुद्धा बह्नी । -सप्तमी-औ० माघ-शुद्धा सप्तमी ।

मंदारक-पु० [सं०] दे० 'मंदार' ।

मंदारु-वि० [सं०] जिसकी संस क्षीण हो रही हो ।

मंदिरा(मन्)-औ० [मं०] मंदता, सुस्ती, भीमापन ।

मंदिर-पु० [सं०] घर; देवालय; नगर; शिविर; समुद्र ।

-पक्षु-पु० विही । -मणि-पु० शिव ।

मंदिरा-औ० [सं०] अस्तबल ।

मंदिर-पु० मंदिर; घर ।

मंदिरा-पु० सुदृग-‘मंदिरा बाजै रंग सो’-वन० ।

मंदी-औ० मंद होनेका भाव, तेजीका उल्टा; सुस्ती ।

मंदुरा-औ० [सं०] अस्तबल; चटारै । -पति,-पाल-
पु० सारस ।

मंदोदक-वि० [सं०] जिसमें जल पूरा न हो ।

मंदोदरी-औ० [सं०] राजकी पत्नी जो मय दानवकी
कन्या और पंचकन्याओंमेंसे एक मानी जाती है । वि०
औ० छोटे, तंग घेठवाली ।

मंदोदरी-औ० मंदोदरी ।

मंदोष्ण-वि० [सं०] थोड़ा गरम, कुलकुना ।

मंद्र-पु० [सं०] गंभीर ध्वनि; संगीतके तीन स्वरसत्तकों-
(मद्र, मध्य, तार)मेंसे पहला; एक बाजा, ध्वज; एक तरह-
का हाथी । वि० गंभीर; प्रसन्न; आह्लादकारी । -ध्वनि-
औ०, -स्वन-पु० गंभीर ध्वनि, गर्जन ।

मंद्राज-पु० दे० 'मंदराज' ।

मंशा-पु० दे० 'मनशा' ।

मंसना-सं० कि० 'मनसना' ।

मंसव-पु० दे० 'मनसव' ।

मंसा-औ० चाह, इच्छा; अभिप्राय ।

मंसुख-वि० दे० 'मनसुख' ।

मंहगा-वि० दे० 'महंगा' ।

म-पु० [सं०] शिव; मन्ना; विष्णु; चंद्रमा; यम; समय;
विष; मगण । -गण-पु० पिगलका एक गण जिसमें तीनों
वर्ण गुरु होते हैं ।

महका-पु० दे० 'मायका' ।

महसंत-वि० दे० 'मैसंत' ।

मई-औ० [अं० 'मै'] हैसवी सन्का पाँचवाँ महीना जो
प्रायः वैशाखमें पड़ता है ।

मउनी-औ० दे० 'मौनी' ।

मउरी-पु० दे० 'मौर' । -छोराह-औ० विवाह समा-
सिके बाद और जलग करनेकी रस्म ।

मउखिरी-औ० दे० 'मौखिसरी' ।

मउसी-औ० मौकी बहिन ।

मकई-औ० ज्वार ।

मकड़ा-पु० बड़ी मकड़ी; एक घास ।

मकड़ाभा-अं० कि० मकड़ीकी तरह चलना, अकड़कर
चलना, हतराना ।

मकड़ी-औ० एक कीड़ा जो अपने घेड़े एक तरहका जुआक
निकासकर जाला बुनता है और उसमें फँस जानेवाली

मच्छियों आदिकी खा जाता है ।

मकतब-पु० [अं०] लिखने-पढ़नेका स्थान; पाठशाला;
छोटे बच्चोंकी पाठशाला; बच्चेकी पाठशाला में बनेकी रस्म,
विधायन । -का बार-बचपनका साथी ।

मकतबा-पु० [अं०] पुस्तकालय; किताबोंकी दुकान ।

मकतब-पु० [अं०] करल करनेकी जगह, बचसल ।

मकता-पु० [अं०] गजल या कलीदेका आखिरी शेर जिसमें
कविका उपनाम होता है ।

मकतब-वि० [अं०] लिखा हुआ, लिखित । पु० पत्र । -

हलैह-पु० वह जिसे पत्र लिखा गया हो ।

मकतब-वि० [अं०] करल किया हुआ, इत ।

मकतब-पु० बालकनका एक प्रदेश जो पहले बुनानका
भाग था (सिंदूर पहले यहाँका राजा था), 'मैसोनिबा' ।

मकतब-पु० [अं०] शक्ति, सामर्थ्य, बस; धन । -बाछा-
वि० सामर्थ्यवाला; पैसेवाला । मु० -चलना-बस
चलना ।

मकुना-पु० दे० 'मकुना' ।

मकुनालीस-पु० [अं०] सुंदक पत्थर ।

मकुल-वि० [अं०] बीमा किया हुआ (आ०); बंधक
रखा हुआ, जमानतमें दिया हुआ ।

मकुल-पु० [अं०] वह इमारत जिसमें किसीकी काम हो,
समाधि, मजार ।

मकुल-वि० [अं०] जिसपर कच्चा किया गया हो, अधि-
कृत (वस्तु, संपत्ति) ।

मकुल-वि० [अं०] कनूल किया गया, माना हुआ, प्रिय ।

-(के) झुवा-वि० खुदाका प्यारा ।

मकुलियत-औ० (किसीका) प्रिय या प्यारा होना; लौक-
प्रियता ।

मकरंद-पु० [सं०] फूलोंका रस, मधु; फूलोंका केसर,
किजल्क; कोयल; अमर; एक वृक्ष; एक ताल ।

मकरंदवती-औ० [सं०] पाटला रुत ।

मकर-पु० [सं०] मगर; पक्षियाल; मछली; बारह राशियों-
मेंसे दसवाँ; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक । -कर्कट-पु०

क्रांतिवृत्त । -कुंडल-पु० मकराकृत कुंडल । -केसव,

-केतु-पु० कामदेव । -क्रांति-औ० निरक्ष रेखासे २१

अंश दक्षिणमें स्थित अक्षरेखा । -ध्वज-पु० कामदेव;

अधिरावणका डारपाल जिसकी उपपत्ति हनुमान्का पत्नीना

एक मछलीके पी लेनेसे बतायी गयी है; आनुवंशिक एक

प्रसिद्ध रस, रसविद्र । -राशि-औ० बारह राशियोंमेंसे

एक (दसवीं) राशि । -लांछन-पु० कामदेव । -बाहन

-पु० वरण । -बन्धु-पु० मकरके आकारमें की हुई

सैन्यरचना । -संक्रांति-औ० माघ मासकी संक्रांति

जिस दिन सूर्य उत्तरायण होता है । -सप्तमी-औ०

माघ-शुद्धा सप्तमी ।

मकर-पु० दे० 'मक' । -चाँदनी-औ० दे० 'मक-

चाँदनी' ।

मकरदार-पु० बादलेका तार ।

मकरांक-पु० [सं०] कामदेव ।

मकराकृत-वि० [सं०] मकर या मछलीके आकारका । -

कुंडल-पु० मछलीके आकारका कुंडल ।

मकराक्ष-पु० [सं०] खरका पुत्र जो रामके हाथों मारा गया।

मकराक्ष-क्षी० कैंची।

मकराक्ष-पु० [सं०] समुद्र।

मकराक्ष-पु० [सं०] वरुण।

मकरी-क्षी० [सं०] मादा मगर; मछली; † मकरी; जंतिकी कीलके ऊपर लगायी जानेवाली एक लकड़ी।

मकरी(रिन्)-पु० [सं०] समुद्र।

मकरज-वि० मगधस्त।

मकरज-वि० [अ०] दूषित; दूषा उत्पन्न करनेवाला; दूषित; नाजायज (काम)।

मकरीरा-पु० एक छोटा कीरा।

मकरई-क्षी० एक तरहका गौर।

मकरसूत्र-वि० [अ०] उल्टा हुआ; औषा।

मकरसूत्र-पु० [अ०] इरादा, मतलब, उद्देश्य; अभीष्ट। -वर-वि० जिसका अभीष्ट सिद्ध हो गया हो; प्राप्तकाम।

मकरसूत्र-वि० [अ०] जिसका कलर किया गया हो; अभीष्ट, उद्दिष्ट। पु० उद्देश्य, मतलब।

मकरसूत्र-वि० [अ०] बाँटा हुआ, तफसील किया हुआ। पु० बाँटा, भाग्य; भाग्य। -कलई-पु० भाजक। -

भाजक-पु० मष्टक समायोक्त। मु०-का लिखा -भाग्यका लिखा; तफदीर।

मकाई-क्षी० दे० 'मकई'।

मकाई-क्षी० [अ०] बैठनेकी जगह; गुदा, मखदार।

मकाम-पु० [अ०] रहनेका स्थान, घर। -वार-वि० मकानवाला। पु० मकानका माणिक। मु०-हिका देना

-बहुत शीघ्र मकान।

मकानास-पु० [अ०] 'मकान'का बहु०।

मकाम-पु० [अ०] दे० 'मुकाम'।

मकु-अ० चाहे; वसि; शायद।

मकुट-पु० [सं०] मुकुट।

मकुना-पु० बिना दाँतका या बहुत छोटे दाँतवाला (नर) हाथी; वह पुरुष जिसे मुँह न हो।

मकुनी-क्षी० काटेमें बैसन मिलाकर या भरकर बनायी हुई बादी।

मकुन-पु० [सं०] भारना; मुकुन; कुम्हारका डबा; मौल-सिरी; कली।

मकुल-पु० [सं०] कली; बकुल वृक्ष।

मकुल-पु० [सं०] मोटा बनसूँ।

मकुनी-क्षी० दे० 'मकुनी'।

मकुलक-पु० [सं०] कली; शरीका पेड़।

मकुला-पु० [अ०] उलक, बचन, कील; काहावत।

मकेरुल-पु० [सं०] एक तरहका पराश्रयी कीट।

मकी-क्षी० दे० 'मकीय'।

मकीई-क्षी० दे० 'मकीय'।

मकीषा-पु० छोटा कीषा (कीषाके साथ प्रयुक्त)।

मकीष-क्षी० एक छुप जिसके फल, पत्ते आदि दवाके काम आते हैं; इसका फल; रसयरीका चौथा या फल।

मकीरना-सं० क्ति० दे० 'मरीरना'।

मकीरुल-पु० एक सदाबहार पेड़।

मकीहा-पु० फसलमें जगनेवाला एक कीषा।

मकष-पु० नर मकरी। -जाछा-पु० मकरीका जाल।

मकरी-पु० दे० 'मक'।

मकल-पु० [सं०] प्रस्ताको होनेवाला एक प्रकारका शूल-रोग।

मका-पु० मकई; नये दानेकी प्यार; [अ०] अरबका एक प्रधान नगर जो मुहम्मदका जन्मस्थान और मुसलमानोंका सर्वप्रधान तीर्थ है।

मकार-वि० [अ०] मक करनेवाला, छली।

मकारी-क्षी० मक, कपट, धोखेवाजी।

मकी-वि० मकेका। पु० मकनेका रहनेवाला।

मकक-पु० [सं०] शिलाजतु।

मककोल-पु० [सं०] खबिया।

मकख-पु० दूध या दहीकी चिकनाई जो मधनेसे निकलती है, कच्चा बी, नबनीत।

मकखी-क्षी० सर्वत्र पाया जानेवाला एक परदार कीषा, मक्षिका; मधुमक्खी; बंदूक, तमकेका बह निशान जिससे कष्टका निशाना ठीक किया जाता है।

-कूत-वि० मारी कंजूस (दाख आदिमें पसी मक्खीतकनी चूस जानेवाला)। -मार्-वि० मक्खियाँ मारनेवाला, चिनीमा। पु० एक छोटा जंतु। -

कागज-पु० एक चेषदार कागज जिसपर मक्खियाँ चिपक और कुछ देर बाद सर जाती हैं। मु०-छोचना हाथी निगलना-छोटे दोषसे बचना और बका करना। -पर मक्खी

मारना-बेसमझे, पूरी नकल करना। मक्खियाँ मारना-बेकार बैठ रहना, कुछ न करना।

मकख-पु० [सं०] मकुना हाथी।

मक-पु० [अ०] बनाकट, धोखा, छल, कपट, फरेब। -चौदनी-क्षी० पिछली रातकी चौदनी जिसमें सबेरा होनेका धोखा होता है; धोखा देनेवाली चीज।

मक्ष-पु० [सं०] क्रोध; सम्म; अपना दोष छिपाना। -कीर-पु० पिवाल वृक्ष।

मक्षिका-क्षी० [सं०] मधुमक्खी; मक्खी। -मल-पु० मीस। मु०-स्थाने मक्षिका-मक्खीपर मक्खी मारना, पूरी ओर नैसोचे-समझे की जानेवाली नकल।

मक्षिकासन-पु० [सं०] मधुमक्खियोंका छत्रा।

मक्खी-पु० काला या काले दागवाला सच्चा धोखा।

मल-पु० [सं०] वक्ष। -किया-क्षी० वक्षकी विधि। -जासा(र)-पु० (विशामित्रके यक्षकी रक्षा करनेवाले) राम। -हिर(र)-वि० यक्षदेवी। पु० राक्षस। -

ह्वी(रिन्)-वि० यक्षविरोधी, यक्षनाशक। पु० शिव। -वक्षि-पु० यक्षाभि। -शाखा-क्षी० यक्षशाखा। -

हा(रिन्)-पु० इंद्र; शिव।

मक्षज-पु० [अ०] खजाना; भंडार, जमा करनेकी जगह; गोले-बाक्यका भंडार, 'मैयलीन'।

मक्षल-पु० काका रक्षम।

मक्षली-वि० मक्षलका बना हुआ; काले रक्षमका।

मक्षस-वि० [अ०] सेवित; सेव्य, पूज्य। पु० स्वामी।

मक्षली-पु० पूज्य, सेव्य (संबोधन)।

मक्षल-वि० [अ०] जिससे खदशा, खतरा हो, भय-

संज्ञक ।

मन्त्रक-पु० मन्त्रक ।

मन्त्रविद्या-पु० मन्त्रन ध्याने, वेचनेवाला । वि० मन्त्रन
मिकाला हुआ (मन्त्रनिवा दूध) ।

मन्त्रनी-स्त्री० एक छोटी मछली ।

मन्त्राग्नी-वि० [अ०] छिया हुआ, गुप्त ।

मन्त्रमन्त्र-स्त्री० [अ०] एक मोटा रोशनी कपड़ा जो ऊपरकी
ओर बहुत नरम और रोयदार होता है; चौकाईके पीछेपर
लगनेवाला कूट ।

मन्त्रमन्त्री-वि० मन्त्रमन्त्रका, मन्त्रमन्त्रका बना; मन्त्रमन्त्रता ।

मन्त्रमन्त्रा-पु० [अ०] मन्त्रा, मन्त्रेला ।

मन्त्रमन्त्र-वि० [अ०] नद्योर्मे चर, बरमन्त्र ।

मन्त्रमन्त्र-पु० [अ०] उन्नम, लीला; मूक ।

मन्त्रमन्त्र-वि० [अ०] जो पैदा किया गया हो, सृष्ट । स्त्री०
प्राणी; सृष्टि; लिखित ।

मन्त्रमन्त्र-स्त्री० चराचर जगत्, सृष्टि ।

मन्त्रमन्त्र-वि० [अ०] मिला-जुला, गन्ध-मन्त्र ।

मन्त्रमन्त्र-वि० [अ०] दोलना, वर्णमन्त्र ।

मन्त्रमन्त्र-वि० [अ०] खास किया हुआ, कार्यविशेषके लिए
अलग किया हुआ ।

मन्त्राग्नि-स्त्री० [सं०] वनमें संस्कृत अग्नि ।

मन्त्रामन्त्र-पु० [सं०] दे० 'मन्त्राग्नि' ।

मन्त्राग्नि-पु० [सं०] यज्ञाग्नि; तालमन्त्राग्नि ।

मन्त्रामन्त्र-पु० [सं०] यज्ञशाला ।

मन्त्री-स्त्री० दे० 'मन्त्री' ।

मन्त्रीना-पु० एक तरहका कपड़ा ।

मन्त्रीक-पु० मन्त्रा, ठंडा ।

मन्त्रीलिखा-वि० मन्त्रीक करनेवाला ।

मन्त्र-पु० [सं०] सूदक्षी ।

मन्त्र-पु० [सं०] शाकदीपका एक भाग; शाकदीपी मन्त्राण ।

-द्विज-पु० शाकदीपी मन्त्राण ।

मन्त्र-रास्ता, मार्ग; मन्त्र । -दा-वि० मार्गदर्शक ।

मन्त्र-पु० दे० 'मन्त्र' । -चट-वि० मन्त्र वादनेवाला,
बकवादी । -चट्टी-स्त्री० मन्त्र वाद जाना, बकवासी ।

-पत्नी-स्त्री० माथापत्नी ।

मन्त्राग्नी-स्त्री० [फा०] मिर्जई, रजाई आदिपर लगायी जाने
वाली गीट ।

मन्त्रद, मन्त्रद-पु० मूँग या उरकेके बीसनाक लवण ।

मन्त्रदूर-पु० दे० 'मन्त्रदूर' ।

मन्त्र-पु० [सं०] दक्षिणी विहार, कीकट देश; मन्त्र-
निवासी; भाद, मागध ।

मन्त्रा-स्त्री० [सं०] पिप्पली ।

मन्त्राधिप, मन्त्राधिप-पु० [सं०] मन्त्रधनरेश; जरासंध ।

मन्त्राधिप-वि० [सं०] मन्त्रधका; मन्त्र संबंधी ।

मन्त्र-वि० मन्त्र, हुआ हुआ; अति प्रसन्न, आनंदित ।

मन्त्रा-अ० कि० प्रसन्न होना; दूचना, लीन होना ।

मन्त्र-पु० एक हिल जलजंतु, मकर, पक्षियाक; कानमें
पहननेका एक गहरा । अ० [फा०] डेकिन, पर । -वर्ष
-पु० एक तरहका नैटिला बॉल । -मन्त्र-पु० मन्त्र;
बहुत बड़ी मछली ।

मन्त्रा-वि० धर्मकी; इठी; खंड ।

मन्त्राधिप-पु० [अ०] सूरज कृष्णकी जगह या दिशा,
पश्चिम । -अर्ध-वि० पश्चिमी सम्प्रदायसे प्रभावित । -

की मन्त्रा-ज्ञानकी मन्त्रा ।

मन्त्राधिप-वि० पश्चिमी । पु० पश्चिमका रहनेवाला;
यूरोपीय । -तहजीब-स्त्री० पश्चिमी सम्प्रदाय ।

मन्त्रा-वि० [अ०] गहरवाला, धर्मकी ।

मन्त्रा-स्त्री० धर्म ।

मन्त्राधिप-पु० रतनजीत ।

मन्त्राधिप-वि० [अ०] दवा, दवाया हुआ, पराजित ।

मन्त्रा-पु० खोई; [सं०] स्त्री० [फा०] मन्त्री । -हानी-
स्त्री० मन्त्रियों उदना ।

मन्त्राधिप-पु० मार्गशीर्ष, अमावस-मन्त्रा ठंड बहोती पड़े
मोहि बेगि मन्त्राकी हो'-मोरा ।

मन्त्राधिप-पु० दे० 'मार्गशीर्ष' ।

मन्त्राधिप-पु० दे० 'मन्त्र' । -वर्ष-पु० जरासंध ।

मन्त्राधिप, मन्त्राधिप-पु० मन्त्र देश ।

मन्त्राधिप-वि० मन्त्रधका; मन्त्रधमें उपजनेवाला । -पाव-पु०
मन्त्रधमें होनेवाला पाव जो पानकी सबसे बढ़िया किस्म
माना जाता है ।

मन्त्राधिप-सं० कि० जलाना-विरह अंगारानि मन्त्राधिप
हिय होरी-स्त्री०-वन० ।

मन्त्राधिप-पु० दे० 'मन्त्र' ।

मन्त्राधिप-स्त्री० मीठुर मछली ।

मन्त्राधिप-पु० दे० 'मन्त्र' ।

मन्त्राधिप-पु० [अ०] मीठी, गुदरा, गिरी; मेजा, दिमाग;
सार भाग । -चट-वि० मन्त्र वाद जानेवाला, बक्की ।

-चट्टी-स्त्री० मन्त्र वाद जाना, बकवाक करके खोपकी
छा जाना । -पत्नी-स्त्री० माथा-पत्नी, सिर खपाना ।

-रोशक-पु० लेंपनी । -सन्ध-पु० वातकी तह ।
मु०-के कीड़े उडाना-बकवाससे खोपकी छा जाना ।

-खा जाना, खा लेना, -खाद जाना-बकवाक करके
खोपकी खाई कर देना । -पिलपिला करना-भारकर
भरता बना देना ।

मन्त्र-वि० [सं०] दूबा हुआ; तन्मय; हर्ष-मन्त्र । -गिरि-
-देव-पु० समुद्रमंथन पर्वत ।

मन्त्र-पु० [सं०] एक द्वीप; एक स्नेह देश; मन्त्रा मन्त्रा;
धन; पुरस्कार ।

मन्त्राधिप (मन्त्र)-पु० [सं०] इंद्र सातवें क्षत्रके व्यास;
उल्ल । -जित्-पु० मेघनाद । -प्रत्य-पु० इंद्रमन्त्र
नगर ।

मन्त्राधिप-स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे दसवें; एक औषध ।

-अर्धोपत्ती-स्त्री० आर्ध-कृष्णा त्रयोदशी । -अर्ध-भू-
-पु० झुका झर ।

मन्त्राधिप-स्त्री० इंद्राणी ।

मन्त्राधिप-पु० नीके रंगका कपड़ा; * दे० 'मन्त्राधिप' ।

मन्त्राधिप-स्त्री० दाव; लवक ।

मन्त्राधिप-अ० कि० लक्ष्मी, वनसे आदिकी बीजका दक्कर
'मन्त्र-मन्त्र' भाषाण करना; लवकना । सं० कि० लक्ष्मी,
व नसे आदिकी बीजोंको दवा-दिहाकर 'मन्त्र-मन्त्र' भाषाण

पैदा करना ।
मन्त्रा-पु० मन्त्रक, झुलेकी पैदा ।
मन्त्रावहार-स० कि० लचकाना, हिलाना ।
मन्त्रा-अ० कि० होना; जारी, बरपा, छोड़, हलचल होना; फैलना ।
मन्त्रावहार-स० कि० इस तरह लचकाना कि 'मन्त्र-मन्त्र'-की आवाज निकले ।
मन्त्ररंग-पु० किलकिला पड़ी ।
मन्त्रिका-स्त्री० [सं०] भेड़ता; अपने बर्गकी भेड़ बसु ।
मन्त्रलना-अ० कि० किसी चीजको छेने या न देनेका इच्छा करना, किसी चीजके लिए रोना-धीना ।
मन्त्रा-वि० मन्त्रलेवाला, हठी । पु० बौंसकी बनी बिबिया ।
मन्त्रलना-अ० कि० मन्त्री मालूम होना । स० कि० 'मन्त्रलना'का प्रे० ।
मन्त्री-स्त्री० मन्त्री, बमनका उल्लास ।
मन्त्रा-पु० खाद; मन्त्रिया ।
मन्त्रा-स्त्री० खंभोंपर बौंसके फट्टे आदि बाँधकर बनाया हुआ आसन, मंच ।
मन्त्रावा-स० कि० मन्त्रनेका कर्ता, साधक होना; कराना; जारी या बरपा करना ।
मन्त्रमन्त्र-स्त्री० 'मन्त्र-मन्त्र'की आवाज, किसी 'चीजके लचकनेसे होनेवाली आवाज ।
मन्त्रिया-स्त्री० छोटी, चौकोर चौकी जो खाटकी तरह सुतकी आदिसे बुनी गयी हो ।
मन्त्रिह-स्त्री० मन्त्रलेका भाव, इच्छा ।
मन्त्र-पु० दे० 'मन्त्र'; बड़ी मन्त्री । - **धातिली**-स्त्री० बंसी ।
मन्त्र-पु० दे० 'मन्त्र' ।
मन्त्र-पु० एक उड़नेवाला कीड़ा जो आमतौरसे बरसातमें पैदा होता और आदमियों-जानवरोंका मृत्यु पीता तथा कई रोगोंके फैलनेका कारण होता है । - **दानी**-स्त्री० मन्त्ररिसे बन्नेके लिए लगाया जानेवाला जालदार परदा । - **मु**-पर तोप लगाना-छोटे आदमीको दवाने, ढंढ देनेके लिए भारी तैयारी करना ।
मन्त्र-पु० दे० 'मन्त्र' । - **ता**-स्त्री० मन्त्र ।
मन्त्री-स्त्री० दे० 'मन्त्री' । - **कट्टा**-पु० एक तरहकी सिकाई । - **भवन**-पु० राजाजैके महलों, चिकित्सक आदिमें मन्त्रियों पालनेके लिए बना ताजा या होज । - **भार**-पु० मनुष्य, मन्त्र ।
मन्त्रीद्वी-स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती ।
मन्त्ररंग-पु० एक जलपक्षी, मणीचक, मन्त्ररंग ।
मन्त्री-स्त्री० एक प्रधान जलजीव जिसकी छोटी-बड़ी अंगणित आसियाँ होती हैं और जो केफनेके बड़े मन्त्ररंगसे सॉल लेता है, मन्त्र; मन्त्रीकी शब्दा लटकन । - **गोता**-पु० कुश्तीका एक पंच । - **द्वार**-पु० दरीकी एक बुनावट । - **मार**-पु० मनुष्य, माहीगीर । - **का** लेख-कोई नामकी मन्त्रीके कलेजेका लेख जो केफनेके रोगोंमें कामदायक माना जाता है । - **का मोही**-एक तरहका बुनावट मोती ।

मन्त्रा-पु० मन्त्रीका शिकार करनेकी नाव ।
मन्त्री-स्त्री० दे० 'मन्त्री' ।
मन्त्रा, **मन्त्रा**-पु० मन्त्रियों पकड़नेका पेशा करनेवाला, माहीगीर ।
मन्त्र-वि० [अ०] जिसका विक्रय किया गया हो, कथित, उक्त । पु० चर्चा, विक्रय । - **पु**-**बाछा**-वि० ऊपर कहा हुआ, उपर्युक्त ।
मन्त्र-वि० [अ०] कथित, उक्त ।
मन्त्री-पु० समन आदि तामील करनेका काम करनेवाला; अवैतनिक चपरासी जिसे तलबानेसे उजरत दी जाय ।
मन्त्र-वि० [अ०] जन्म किया हुआ; खोया हुआ; भगवत्प्रेममें लीन; मस्त; बेहुष । पु० उन मुसलमान फकीरोंका वर्ग जो नंगे रहते और अत्यन्त, अत्यन्त होते बकते हैं । **मु**-की बक-अत्यन्त प्रकाश, पगलेकी बक ।
मन्त्र-पु० [का०] उजरत, मन्त्रीपर काम करनेवाला; मोटिया, बनिहार; शरीरभ्रमसे जीविका करनेवाला । - **खल**-पु० संघटित श्रमिकवर्ग । - **खं**-पु० श्रमिकों या व्यवसायविशेषके मन्त्रियोंका सब ।
मन्त्री-स्त्री० [का०] शरीरभ्रम, बोझ डोने आदिका काम; उजरत, पारिश्रमिक । - **पेशा**-वि० मेहनत, मन्त्रीका पेशा करनेवाला ।
मन्त्रा-अ० कि० दुबना, निमग्न होना ।
मन्त्र-वि० [अ०] पागल, बाबल; सिद्धी; आशिक; किसीपर मरनेवाला । पु० अरबीकी प्रसिद्ध प्रेमकथा कैला-मन्त्रना नायक, कैस; बहुत दुबला-पतला आदमी; बेध-मन्त्र ।
मन्त्र-पु० [अ०] जवब करनेकी जगह, वक्षल ।
मन्त्र-वि० [अ०] हठ, पक्का, टिकाऊ; पुष्ट, बलशुक्त । - **दिलका**-कहे दिलका, हृदयिक ।
मन्त्री-स्त्री० हठता, टिकाऊपन; सबलता, ताकत ।
मन्त्र-वि० [अ०] जिसपर जन्म किया गया हो, विवश, लाचार ।
मन्त्र-अ० मन्त्र होकर, लाचारीमें ।
मन्त्री-स्त्री० विवशता, लाचारी ।
मन्त्रा-पु० [अ०] लोगोंके जमा होनेकी जगह; मीठ, जमाव । - **उल** जवावर-पु० दीपपुत्र ।
मन्त्रा-वि० [अ०] जमा किया हुआ, सगृहीत । पु० लोक; समग्र; राशि; देर । - **(पु)** का हृन्-पु० वह इन् जिसमें कई इन् मिले हों । - **जाबिता दीवानी**-पु० दीवानी मुकदमोंकी विचार-विधि बतानेवाला कानून-समग्र । - **जाबिता कौज़दारी**-पु० फौजदारी मुकदमोंकी विचार-विधि बतानेवाला कानून-समग्र । - **द्वार**-पु० मुगलकालका एक माल-कर्मचारी ।
मन्त्र-वि० हठका; कुलका (-कीमतर); साम्यिक ।
मन्त्र-पु० [अ०] लेखादिका विषय, लेखादिमें निबद्ध भाव; विषय, लेख, निबध । - **जबीस**-पु० लेख लिखनेवाला, निबधकार । - **जबीसी**-स्त्री० लेख लिखनेका काम । - **निगार**-पु० दे० 'मन्त्रमन्त्र' । - **निगारी**-स्त्री० दे० 'मन्त्रमन्त्र' । **मु** - **बाँधना**-किसी

भावकी कृष्ण वा पद्मं ध्यात्तु करणा । —कृष्णवा—दी जेणो,
रचनाजोको भाव मिल जाणा ।

मज्झमूल-वि० [अ०] निमित्त, दुरा; नीच ।

मज्झमूल-की० [अ०] दुरा, निरा; अस्तीना ।

मज्झकथा-वि० [अ०] जीता-बोधा हुआ । पु० जीती-बोधी
हुई जमीन, क्षेत्र ।

मज्झकथ-वि० [अ०] चोट खाया हुआ, मारा हुआ । पु०
सिका ।

मज्झकथ-वि० [अ०] जिसे चोट लगी हो, जल्मी, घायल ।

मज्झसिद्ध-की० [अ०] जल्लेकी, बैठनेकी जगह; सभा,
परिवार, जल्लास ।

मज्झसिद्धी-वि० सभा-संघी । पु० सभामें शासिक होने-
वाला, सम्पन्न ।

मज्झसुत्त-वि० [अ०] जिसपर जुलूस किया गया हो,
घोरित, सताना हुआ ।

मज्झहव-पु० [अ०] रास्ता; पथ, धर्म, संप्रदाय; हीन ।

मज्झहवी-वि० मज्झहव, धर्मविशेषसे संबंध रखनेवाला ।
पु० भोगी सिल । —आज्ञादी—की० अपने धर्मके आज-
रणकी स्वतंत्रता । —कृष्णार्ह—की० धर्मके नामपर, धर्म-
की रक्षा या प्रचारके लिए होनेवाली कृष्णार्ह ।

मज्जा-पु० [अ०] स्वाद, रस, जायका; चसका; सुख,
आनंद, सुत्त; तमाशा; सजा, कर्मफल । —(अ०) दार-
वि० स्वादिष्ट, बढ़िया, जिसमें सुत्त, आनंद आवे ।
—दारी—की० स्वाद; आनंद । सु० —किरकिरा होना-
रसमग होना, कार्यका आनंद न मिलना । —कलना,—
पाना—सुत्त उठाना; दंड, फल योगना । —कलना-
कितना फल चखाना, दंड देना । —कलना—सुख योगना,
सुत्त उठाना । —(अ०) का—मनेदार; ठिकानेका; उप-
सुत्त; काम चलाक, उपयोगी । —की बात—तमाशेकी,
सुत्तकी बात । —से—सुखपूर्वक, मौजसे ।

मज्जाक-पु० [अ०] चक्केकी चार; स्वाद, जायका; हवि,
मनका सुकाय हँसी, दिल्लगी । —पसंद-वि० हँसी ।
सु० —उठाना—परिहास करना । —का आवनी—
हँसोकर, परिहासप्रिय जन ।

मज्जाकल-अ० हँसीमें ।

मज्जाकिया-वि० हँसोकर, विनोदी । अ० मजाकमें ।

मज्जाज्ञ-वि० [अ०] अनात्मिक, कल्पित; अधिकारप्राप्त ।
पु० लाक्षणिक अर्थमें व्यवहृत पद; कृत्यार्थ । —(अ०)
समाश्रय-वि० जिसे सुनने, विचार करनेका अधि-
कार हो ।

मज्जाज्ञ-अ० मानकर; कल्पनासे; नियमानुसार ।

मज्जाज्ञ-वि० अनात्मिक, कल्पित, बनाबटी; लौकिक
(इसके मजाजी) ।

मज्जाह-पु० [अ०] बिहारलकी जगह, दरगाह; कम ।

मज्जारी-अ० निहरी, मजारी ।

मज्जाक-की० [अ०] हाकि, सामर्थ्य, मजदूर ।

मज्जिक-की० दे० 'मज्जिक' ।

मज्जिच्छेद-पु० [अ०] जोबदारी सुकरमे सुनने और
शसन-प्रबंधका काम करनेवाला अकसर ।

मज्जिच्छेदी-की० मज्जिच्छेदका पद, काम; मज्जिच्छेदकी

जराकृत ।

मजीठ-की० एक कता जिसकी जगों और बंडोंकी
उबाकर काक रंग निकाला जाता है ।

मजीठी-वि० मजीठके रंगका, गहरा सुन्न ।

मजीर-की० दे० 'मजीरी' ।

मजीरा-पु० कौत्सीकी छोटियोंकी जोड़ी जिसे ताक देनेके
लिए बनाते हैं ।

मज्जमहार-पु० बंगालियोंकी एक कुलपदवी ।

मज्जरी-पु० दे० 'मज्जरी'; दे० 'मज्ज' ।

मज्जरी-की० दे० 'मज्जरी' ।

मज्जेज-की० गर्व, घमंड ।

मज्जेज-की० दे० 'मज्जा' ।

मज्जेज-पु० [सं०] बूढ़ना, गोता मारना; नहाना; मज्जा ।

मज्जेज-अ० कि० नहाना; गोता खाना ।

मज्जेज-पु० [सं०] दे० 'मज्जेज' ।

मज्जेज-की० [सं०] नदीकी हड्डिके नीतर भरा स्नेहरूप
पदार्थ; पेन-पौनीका सारभाग । —कर-पु० करिष । —

रज(स्)-पु० एक नरक; छुरना । —रस्-पु० छुरक,
बीर । —सार-पु० जाती-फल ।

मज्जा(अव)-पु० [सं०] दे० 'मज्जा' ।

मज्जा-पु० दे० 'मज्ज' ।

मज्ज-वि० मज्ज, नीच । —धार-की० नीचधारा । सु०
—धारमें छोड़ना—कोई कार्य अपूर्ण अवस्थामें ही छोड़
देना; किसीको ऐसी अवस्था स्थितिमें छोड़ देना जब वह
न धर जा सके, न ऊपर ।

मज्जका-वि० नीचका, दरमियानी ।

मज्जाना-अ० कि०, पैठना, प्रवेश करना । सं० कि०
प्रवेश कराना, बुसाना ।

मज्जार-अ० नीचमें, मज्जमें ।

मज्जाबना-अ० कि० सं० कि० 'मज्जाना' ।

मज्जिवाना-अ० कि० नाब सेना ।

मज्जिवारा-वि० मज्जका, नीचका ।

मज्ज-सर्व० मै; मेरा ।

मज्जना-पु० कलाहपर दूसरे गहनोंके बीचमें पहननेका
एक गहना ।

मज्जेका-पु० गोवियोंका एक औजार; † दे० 'हमेका' ।

मज्जेका-वि० मज्जेका; न बहुत बड़ा, न छोटा ।

मज्जेकी-की० गोवियोंका एक औजार; एक तरहकी बैल-
गाड़ी । वि० की० दे० 'मज्जेका' ।

मज्ज-पु० मज्जका । 'मज्जेका' समासमें व्यवहृत रूप ।

—मज्जरा-पु० व्याहृके कुछ पहर होनेवाली एक रस्म ।

—मज्जा-वि० मिट्टीके रंगका, खाली ।

मज्ज-की० मज्जकेका भाव, नखरेका भाव, ऊचक । पु०
[सं०] शव ।

मज्जना-अ० कि० चलनेमें हाथ, बाँझ, गी आदिको
नाच-मखरेकी अवस्था हिलाना, ढठकाकर चलना; हिलना;
हटना ।

मज्जवि-की० दे० 'मज्ज' ।

मज्ज-पु० बड़े सुँहका घड़ा, माट ।

मज्जाना-सं० कि० किसी विशेष अंगसे मज्जनेकी क्रिया

करना, उसे नखरेकी अदासे बिलाना, चमकाना ।
मठकी-**खी** छोटा मठका; मटक ।
मठकीछा-**वि** मठकनेवाला ।
मठकीमक्का-**खी** मठकानेका काम, मटक (ममासमें, आँखमटकीमक) ।
मठर-**पु** एक छिद्रक जन्म जिसकी दाह और रोटीयों भी खापी जाती है । -**गस्त**-**पु**, **खी** टहलना; जावारा फिरना । -**गल्ली**-**खी** दे० 'मदरगस्त' । -**बूचा**-**पु** मठके हरे दानोंके साथ चूरा मिलाकर बनायी हुई धुपरी । -**बौर**-**पु** मठके बराबर चुपक ।
मठराखा-**पु** जीमें मिला हुआ मठर ।
मठिधाना-**स** कि० मिट्टी मलकर धोना (हाथ, बरतन आदि) ।
मठियाँ-**पु** एक पक्षी; कज्जा । **खी** शृणिका; शब ।
मि० मटमैला । -**फूस**-**वि** जरासी ठेसमें बिलर जानेवाला, अति दुर्बल । -**मसाव**-**वि** मटियामेट, नष्ट । -**मेठ**-**वि** मिट्टीमें मिला हुआ, नष्ट । -**साँप**-**पु** साँपोंका एक जेज जिसका रंग मटमैला होता है ।
मटियाळा-**वि** मटमैला ।
मटीका-**वि** मटियाळा, मटमैला (दुग्ध) ।
मटुका-**पु** मुकुट ।
मटुका-**पु** दे० 'मटका' ।
मटुकिचा, **मटुकी**-**खी** छोटा मठका ।
मट्ट-**पु** [सं०] एक तरहका ढोक; एक तरहका नृत्य ।
मट्टी-**खी** दे० 'मिट्टी' ।
मट्टर-**वि** छुल, धोमा ।
मट्टा-**पु** पानी मिलाकर मया हुआ दही जिससे मक्खन निकाल लिया गया हो, छाँछ ।
मठ-**पु** [सं०] छात्रावास; साधु-संन्यासियोंके रहनेका स्थान, आश्रम; देवालय । -**बिता**-**खी** मठका कार्य-भार । -**बारी**(विन)-**पु** मठका प्रधान, साधु-संन्यासी । -**खिचि**-**वि** मठमें रहनेवाला ।
मठरना-**पु** सुनारों और कसेरीका एक औजार ।
मठरी-**खी** दे० 'मठकी' ।
मठखी-**खी** मैदेकी बनी एक तरहकी ममकीन टिकिया ।
मठा-**पु** दे० 'मट्टा' । -**मूसल**-**पु** मठा (तक) और मूसल जैसी बेलक बाँसे (मठा-मूसलकी धमकना=बेमेल बाँसे करना, दृग्) ।
मठाधीन-**पु** [सं०] महंत ।
मठाधन-**पु** मठा; विचार्य ।
मठारना-**स** कि० गोलई लानेके लिए बरतनकी मठरनेसे पीठना ।
मठिया-**खी** छोटा मठ; फूलकी बनी हुई चूड़ियाँ ।
मठी-**खी** [सं०] छोटा मठ ।
मठी(दिह)-**पु** [सं०] मठाधीन ।
मठुकी-**खी** दे० 'मठकी' ।
मठीडा-**पु** कुपोंका जगत ।
मठोर-**खी** दही मयनेकी मठकी; नीळ बनानेका माठ ।
मठौरा-**पु** एक तरहका रंदा ।
मठई-**खी** लकड़ी आदिके खंभोंपर छप्पर रखकर बनायी

हुई कुटी, शोपकी ।
मठराणा-**ज** कि० दे० 'मँचराना' ।
मठवा-**पु** दे० 'मँचप' ।
मठहट-**पु** दे० 'मरहट' ।
मठा-**पु** 'माडा' नामक नेत्ररोग; प्रकोष्ठ, कमरा ।
मठाका-**पु** छोटा तालाब, पोखरी ।
मठिबार-**पु** ध्वनिवाँकी एक जाति ।
मठ्या-**पु** एक मोटा अनाज ।
मठैया-**खी** मठई, शोपकी ।
मठ-**पु** मठ । **वि** जो एक जगह बैठ जानेपर वहाँसे जल्द हटे नहीं ।
मठना-**स** कि० ऐसी चीज बड़ना, लगाना जिससे पूरी वस्तु डक जय (तसबीरपर शीशा, चौखट, मेजवर कपका) बनावेके मुँहपर चमका लगाना; शोपना (दीप) ।
मठवाना-**स** कि० मठनेका काम करना ।
मठाई-**खी** मठनेका काम; मठनेकी मण्डी ।
मठरी-**खी** छोटा मठ; छोटा मठि; कुटी ।
मठैया-**पु** मठनेवाला ।
मठि-**पु**, **खी** [सं०] बहुभूत्य और कतिपुक्त पत्थर, रत्न, जवाहिर; भेड़जन; बकरीके गलेकी घेली; लिंगका लग्नभाग; योनि; लग्नभाग; कठार, मणिबंध; चक्र । -**कंकज**-**पु** रत्नजटित कंकज । -**कंठ**-**पु** नीलकंठ पक्षी । -**कंठक**-**पु** मुग्धा । -**कणिका**-**खी** मणिमय कर्णभूषण; काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ कहते हैं कि विष्णुकी उत्कट तपस्या देखकर शिवका स्तिर बिलनेसे उनके कानका मणिमय कुंडल गिर गया । -**कर्णेश्वर**-**पु** कामरूपका एक शिवलिंग । -**काचन**-**पु** रत्न और सोना । -**कोय**-**पु** रत्न और सोने जैसा शोभा-सुंदरता बढ़ानेवाला संयोग । -**काच**-**पु** स्फटिक; बाणका पंचवाला हिस्सा । -**कार**-**पु** जौहरी; जवाक गहने बनानेवाला । -**कुंडल**-**पु** रत्नजटित कुंडल । -**कूट**-**पु** कामरूपके पासका एक पर्वत । -**गुण**-**पु** एक वर्णवृत्त । -**श्रीच**-**पु** कुबेरका एक पुत्र । -**सारक**-**पु** सारस । -**सुंदक**-**पु** पानीपर रहनेवाला एक पक्षी । -**दीप**-**पु** रत्नजटित दीप; दिव्या काम देनेवाला मणि । -**दीप**-**पु** रत्नका दीप । -**हीर**-**पु** हीर-सागरमें अवस्थित मणिमय दीप जो त्रिपुरसुंदरीका निवास-स्थान माना जाता है । -**धनुष**(स्)-**पु** इंद्रधनुष । -**ज्वर**-**पु** सौंफ; एक समाधि । -**पक्ष**-**पु** एक कोषि-सत्त्व । -**पुर**-**पु** आसाम और बर्माकी सीमापर अवस्थित एक देशी राज्य; उसकी राजधानी । -**पुष्पक**-**पु** सप्त-देवके संस्कार नाम । -**सूर**-**पु** सुधुम्मा नाडीके अंदर माने हुए छ चक्रोंमेंसे तीसरा जिसका स्थान माभिसे कुछ ऊपर माना जाता है । -**बंच**-**पु** कलई । -**कंचन**-**पु** मणिवाँका बाँपा जाना; मोतिवाँकी छकी; कलई । -**बीज**-**पु** अनारका पेड़ । -**भद्र**-**पु** एक यक्ष । -**भद्रक**-**पु** एक प्राचीन जाति; एक नागराज । -**भार**-**पु** सारस । -**भित्ति**-**खी** शेषनागका मण्डक । -**भूमि**-**खी** रत्नोंकी खान; रत्नजटित भूमि । -**मंजरी**-**खी** मणिवाँकी पंक्ति । -**मंजप**-**पु** मणिखचित

मंडप; शेषनाथका मन्दिर । -मंडित-वि० रत्न जवा
हुआ । -मंड-पु० सैषा भवक । -माका-की० मणि-
योंकी माका; लक्ष्मी; नमक; एक वर्णवृत्त । -मेकल-
वि० मणियोंसे वित्त हुआ; मणियोंकी मेकलासे युक्त ।
-मेघ-पु० दक्षिण भारतका एक (पुराणवर्णित) पर्वत ।
-यष्टि-की० मोतियोंकी लकीर; रत्न जवाी हुई लकीर ।
-हच-पु० एक मोषिसत्त्व । -हाण-पु० धिगरफा रत्न-
का रंग । -हाज-पु० हीरा । -हीर-पु० पुर्वैदियका
एक रोग । -हर-पु० हीरा । -क्षौक-पु० मंदराचलके
पूर्वमें स्थित एक पर्वत । -क्षाम-पु० नीलम । -सर-
पु० मोतियोंकी माला । -सुत्र-पु० मोतियोंकी लकीर ।
-सोपाव-पु० रत्नजडित लोदी । -सोपावक-पु०
सोनेके तारमें गुथे हुए मोतियोंकी माला । -खक(खू)
-की० रत्नोंका हार । -हृन्व-पु० रत्नजडित या स्फ-
टिकसे बना मण्डल ।

मनिक-पु० [सं०] मिट्टीका बसा स्फटिकनिर्मित प्रासाद;
मोनिका अभयाराग ।

मणिलव(मन्)-वि० [सं०] मणिलुप्त । पु० सर्व; एक
पहाड़ ।

मणीङ्ग-पु० [सं०] हीरा ।

मणीच-पु० [सं०] हाथ; फूल; मोती ।

मणीचक-पु० [सं०] चंद्रकान्त मणि; मत्स्यरग पक्षी ।

मणीचक-पु० [सं०] फूल ।

मर्तग-पु० [सं०] हाथी; बादल; एक राजर्षि । -ज-पु०
हाथी ।

मर्तगी(मिन्)-पु० [सं०] हाथीका समार ।

मत-अ० न, नहीं (निषेधात्मक, जैसे-मत करो) । की०
दे० 'रति' । वि० [सं०] सम्मत, अभिप्रेत, माना हुआ;
अर्थात्; लोचा-विचारना हुआ; सम्मानित; बराबर किया
हुआ । पु० राय, सम्मति; विचार; सिद्धांत; धर्ममत, पक्ष;
अभिप्राय, संज्ञा; चुनावमें, प्रस्ताव आदिके पक्ष-विपक्षमें,
निर्धारित विधिसे प्रकट किया हुआ मत, वोट, राय (आ०) ।
-गणना-की० मतों, वोटोंकी गिनती । -दान-पु०
चुनाव आदिमें विधिबद्ध मतप्रकाश । -जेद-पु० मतकी
भिन्नता, राय न मिलना । -बाद-पु० वह मत जो
बादका रूप ग्रहण कर ले । -संग्रह-प्रश्नविशेषपर मत-
प्रकाशके अधिकारियोंकी रायोंका इकट्ठा किया जाना ।
-स्वातन्त्र्य-पु० मत, विचारकी स्वतंत्रता ।

मतना-अ० कि० मग स्थिर करना; विचारना-‘मतै नैठि
बादल औ गौरा’-प०; मतबाला होना ।

मतलब-पु० [अ०] अभिप्राय, आशय; जन्म; वरज, स्वार्थ;
प्रयोजन; वास्ता; उत्पत्ति । मु० -का आशय, का
बार-गरज निकालनेके लिए दोस्ती करनेवाला; सुदगर्ज ।

मतलबी-वि० अपनी गरज देखनेवाला, स्वार्थी ।

मतलबाना-दे० ‘मिचलाना’ ।

मतली-की० दे० ‘मचली’ ।

मत्तल-वि० [अ०] बाधा हुआ, जिसकी इच्छा हो,
अभिप्रेत ।

मत्तल-वि० की० [अ०] बाधा हुई, मायाका ।

मत्तलार, मत्तलार-वि० दे० ‘मत्तलाला’ ।

मत्तलाला-वि० (क्षरावके) नशेमें चूर, मस्त; नदमस्त;
(बलादिके) सर्वसे हतराता हुआ । [की० ‘मत्तलाली’]
पु० किलेकी दीवारसे शत्रुपर कुदकाया जानेवाला भारी
परत ।

मत्तलार-पु० [सं०] दूसरा मत, भिन्न मत ।

मत्त, मत्त-पु० सलाह, उपदेश, सम्मति; सुमति-‘विना
मत्तकी राज गयी राणयोकी सौद’-गिरिपर ।

मत्तलिकार-पु० [सं०] मत, वोट देनेका हक ।

मत्तलिकारी(मिन्)-वि० [सं०] मत देनेका अधिकारी ।

मत्तलुग्रा-की० [सं०] एक निग्रहस्थान ।

मत्तलुबाधी(मिन्)-वि० [सं०] मतविशेषका अनुगमन
करनेवाला ।

मत्तली-की० मत्त ।

मत्तलबकी(मिन्)-वि० [सं०] मत या धर्मविशेषका अव-
लंबन करनेवाला ।

मत्ति-की० [सं०] बुद्धि, समझ; राय; इच्छा; अभिप्राय ।

-कर्म(ज)-पु० बुद्धिका विषय । -गति-की० विचार-
सरणी । -गर्म-वि० बुद्धिमान् । -वर्ष-पु० दूसरोंका

भान ताक लेना या ताक लेनेकी शक्ति । -दा-वि० की०

बुद्धि देनेवाली । की० ज्योतिष्मती कता । -दैव-पु०

मतभेद । -मिजब-पु० स्थिर विचार । -पूर्व-अ०

लोच-समझकर, इरादा करके । -प्रकर्ष-पु० चातुर्य ।

-जेद-पु० विचार-परिवर्तन । -अंश-पु० बुद्धिनाश;

पागलपन । -अम-पु० बुद्धिका भ्रम, अड्डका उलटकर ।

-आति-की० दे० ‘मतिभ्रम’ । -मद-वि० मंत्रबुद्धि,

कमसमझ । -विपर्यय-पु० भ्रम । -विभ्रंश-पु०-

विभ्रंति-की० दे० ‘मतिभ्रम’ । -छाकी(किन्)-वि०

बुद्धिमान् । -हीन-वि० निर्वुद्धि । मु० -मारी जाना-

बुद्धिअंश होना, अड्डका मारा जाना ।

मत्ति-अ० दे० ‘मत’; लज्ज ।

मत्ती-की० दे० ‘मति’ । अ० दे० ‘मत’ ।

मत्तिमाव(मन्)-वि० [सं०] बुद्धिमान्, समझदार ।

मत्तिमाव-वि० दे० ‘मतिमान्’ ।

मत्तीर-पु० दे० ‘मतीरा’ ।

मत्तीरा-पु० तरङ्ग ।

मत्तीस-पु० एक बाना ।

मत्तेई-की० सौतेली माँ ।

मत्तेक-पु० [सं०] मत्तोंकी समानता, (तो या अधिक

अधिक्योका) एक ही रायका होना ।

मत्क-पु० [सं०] खटमल ।

मत्कुज-पु० [सं०] खटमल; मकुना हाथी; बिना दादी-

मुँछका मर्द; औषधपर बोधनेका वक्ता; नारियलका पेय;

मैसा ।

मत्त-वि० [सं०] मतबाला, मस्त; उन्मत्त; धमकी; अति-

प्रसन्न । पु० मस्त हाथी जिसके गंडखलसे मद झरता

हो; कोषक; धतूरा; मैसा । -काशिनी, काशिनी-

की० सुंदरी की । -कीश-पु० हाथी । -गर्व-पु०

सवैया छंदका एक भेद । -वंती(मिन्), -मारा,

हकी(मिन्)-पु० मस्त हाथी । -मयूर-पु० मस्त मोर;

मेघ जिसे देखकर मोर मस्त हो जाता है । -बारण-

पुं० मस्त हाथी; वरामदा दीवारकी खँटी; झुपारोका चुर। -समक-पुं० चौपायोंका एक भेद।
 मचक-वि० [सं०] जो कुछ-कुछ मच हो।
 मचता-स्त्री० [सं०] मस्ती, मत्वालापन।
 मचताही-स्त्री० दे० 'मचता'।
 मचा-स्त्री० [सं०] मच, मरिचा; एक वर्णकृत।
 मचाही-स्त्री० [सं०] एक वर्णकृत।
 मचाह-पुं० [सं०] वरामदा; हाथी।
 मचैय-पुं० [सं०] मस्त हाथी।
 मत्वा-पुं० माथा, कण्ठ; सिर; सामनेका या ऊपरका हिस्सा। मु० -टेकना-ममस्कार करना, बंदना करना।
 मत्वे-पुं० सिरपर।
 मत्व-पुं० [सं०] सिरावन, हँगा; सिरावन फिराना; हान-प्राप्तिका साधन।
 मत्स्य-पुं० [सं०] मछली; हँसियाकी मूठ।
 मत्सर-पुं० [सं०] डाह, जलन; क्रोध, द्वेष। वि० डाह करनेवाला; कृपण।
 मत्सरी(रिक्)-वि० [सं०] मत्सरयुक्त, जलनेवाला; द्वेषी।
 मत्सरिका, मत्सरिणी-स्त्री० [सं०] मोटी जीर बिना साफ की गयी खोई।
 मत्स्य-पुं० [सं०] मछली; विराट् देश; मत्स्य-नरेश; जीन राक्षि; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे पहला। -कर्मिका-स्त्री० मछलियाँ पकड़नेका हाथ। -गंधा-स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती; जलपीपल। -बास-स्त्री० [सं०] मछली पकड़नेका जाल।
 -जीवी(विक्)-पुं० मछुआ। -द्वेष-पुं० विराट् देश। -द्वेषी-स्त्री० अगहन सुदी दावशी। -द्वेषी-पुं० पुराणोंमें वर्णित एक द्वीप। -घासी-स्त्री० मछली रक्तेका हाथ। -ध्वज-पुं० एक पर्वत। -मारी-स्त्री० सत्यवती। -नासक, -नाशन-पुं० कुरर पक्षी। -पुराण-पुं० अठारह महापुराणोंमेंसे एक। -बंज-पुं० मछली पकड़नेवाला, मछुआ। -बंजन-पुं० बंसी, कंठिया। -बंजी(विक्)-पुं० मछुआ। -मुद्रा-स्त्री० तांत्रिक पूजामें व्यवहृत एक मुद्रा। -रंक, -रंश-पुं० मछरंग पक्षी। -राज-पुं० रोहित या रोडु मछली; विराट्-नरेश। -विज्ञा-स्त्री० एक पौधा। -बेध-पुं० मछली फँसानेका काँटा, बंसी। -बेधनी-स्त्री० बंसी, कंठिया। -बा(इन्)-पुं० मछुआ।
 मत्वाही-स्त्री० [सं०] सोनलता; भासी; गाबर दूर।
 मत्वाह-वि० [सं०] मछली खाकर रहनेवाला।
 मत्वाहताह-पुं० [सं०] विष्णुके दस अवतारोंमेंसे पहला।
 मत्वाहान-पुं० [सं०] मछरंग पक्षी। वि० मछली खानेवाला।
 मत्वाहन-पुं० [सं०] तांत्रिक साधनामें व्यवहृत एक साधन।
 मत्स्यैश्वर्य-पुं० [सं०] मत्स्यकालके एक प्रसिद्ध हठ-योगी जो गोरखनाथके गुरु थे।
 मत्स्यैश्वर्य-स्त्री० [सं०] सत्यवती।
 मत्स्योदरी-स्त्री० [सं०] मत्स्यवर्णा, सत्यवती; काशीका एक तीर्थ, मछोदरी।

मत्स्योदरी(विक्)-पुं० [सं०] विराट्देश।
 मत्स्योदरीह-पुं० [सं०] व्यास।
 मत्स्योपजीवी(विक्)-पुं० [सं०] मछुआ।
 मय-पुं० [सं०] मयनेकी क्रिया या मय, विलोडन; बम; क्लेश; गतिवारी नामका वृक्ष। -पर्वत-पुं० मंदराचल।
 मय-सं० कि० आलोकन करना, दूष, दहीकी मयानी जादिले विधोना; किसी बातकी बार-बार सोचना, विचारना; छान डालना; (कोरेका) घूटनेके लिए टीसना, क्लेशसे व्याकुल करना; नाक, दखन करना। * पुं० मयानी।
 मयनाचल-पुं० [सं०] मंदर पर्वत।
 मयनिवा-स्त्री० दे० 'मयानी'।
 मयनी-स्त्री० दही मयनेका मटका; मयनेकी क्रिया; मयानी।
 मयनाह-पुं० हाथीवान, मयनाह; मस्तक-पीडा-"दिष्टि तरहुँही हेर न माने। जनु मयनाह रहे सिर जाने"-पं०।
 मयानी-स्त्री० दही मयनेका डंढा जिसके एक सिरेपर कट्यारदार खोरिया लगी होती है।
 मयित-वि० [सं०] मया हुआ; पीडित; दलित। पुं० बह मनु। जिसमें पानी न मिलाया गया हो।
 मयिता(ह्)-वि०, पुं० [सं०] नाश करनेवाला।
 मयी(विक्)-पुं० [सं०] मयानी; शिथिल; बज्र, बायु।
 मयुरा-स्त्री० [सं०] ब्रजमेंबलके अंतर्गत एक प्रसिद्ध नगरी और तीर्थ जो भारतवर्षकी सात मौख्यायिका पुरियोंमें परिगणित है। -नाथ-पुं० कृष्ण।
 मयुरिवा-वि० मयुराका।
 मयुरेस-पुं० [सं०] कृष्ण।
 मयुल-पुं० मस्तूल।
 मय्य-पुं० दे० 'माया'।
 मय्यिका, मय्यी-स्त्री० [सं०] एक श्रुति (स्मृति)।
 मय-स्त्री० [अ०] दे० 'मय'। पुं० [सं०] मयके सेवनमें मनमें होनेवाला विकार, नशा; मस्ती; मस्त हाथीका कनपटीमें खरनेवाला जल; उन्माद; हर्ष; गर्व, * दे० 'मय'। * वि० मय। -कट पुं० हिजड़ा, नपुंसक, पंड। -कर-वि० नशा पैदा करनेवाला। -करी(रिक्)-पुं० मस्त हाथी। -कल-वि० मस्त, मदो-मस्त; धीरे-धीरे, अल्पद बोधनेवाला; मस्तीमें भ्रमा हुआ; नाश। -कृत्-वि० मदकर, नशा पैदा करनेवाला। -कोहल-पुं० सौं। -गंध-पुं० छतिवन; भय। -गंधा-स्त्री० मरिचा; जलसी। -गमन-पुं० मेला। -गल-वि० दे० 'मदकल'। -घनी-स्त्री० पोष, प्रतिका। -गुह-वि० जो नदीमें चूर होकर लुप्त रहा हो। -जल-पुं० मस्त हाथीकी कनपटीसे खरनेवाला जल, दान। -जवर-पुं० कामम्बर; बल जादिका मय, नशा। -द्वि-पुं० मस्त हाथी। -धार-पुं० महा-भारतमें उल्लिखित एक पर्वत। -पति-पुं० इंद्र। किणु। -मय-वि० मय करनेवाला। -प्रसेक, -प्रसक्त-पुं० मदकल। -मया-पुं० बमद चूर होना। -मयिनी-स्त्री० शतमूली। -मरा-वि० [हिं०] मस्त; मत्स्यकाल-

जनक। [खी० 'मदमरी'। -मत्त-वि० मत्त, मत-
वाला, मदीनमत। -मत्तक-पु० एक तरहका भत्ता।
-मात्ता-वि० [हि०] मत्त, मदमत्त; कामुक। [खी०
'मदमाती'।] -मुकुलित-वि० नदी, मल्ली आदिसे
अभ्युदयी (अँसे)। -मुकुलितानी-खी० वह स्त्री जिसकी
आँखें नदीसे बँदसी हो रही हों। -मुक्(ब्)-दान-
मात्र करनेवाला (हाथी)। -मोहित-वि० नदी वा
धमँडसे चूर। -राग-पु० कामदेव; मतवाला; मुग्ध।
-लेखा-खी० मदजलसे बननेवाली लकीर; एक वर्ण-
रूप। -धारण-पु० मत्त हाथी। -वारि-पु० दान-
वारि। -विक्रित-वि० मत्त, मत्त। -विह्वल-
विक्रित-वि० कामातुर। -ध्याधि-खी० यदास्थ।
-शाक-पु० पोय। -शौडक-पु० जाती फल। -सार-
पु० शहरतुका पेड़। -स्वल्-पु० सरावकी डुकान।
-व्याग-पु० मयालय। -खावी(विग)-वि० दे०
'मदमुक'। -इस्तिनी-खी० एक तरहका करज।
-हेतु-पु० मस्तीका हेतु, कारण; धायाका पेड़।

मध्यंतिका-खी० दे० 'मदयंतिका'।

मद्य-खी० अफीमके सत्त और पानके योगसे बननेवाला;
एक नशीला पदार्थ जिसे तबाकूकी तरह पीते हैं। -खी-
वि० मदक पीनेवाला।

मद्यकू-वि० [अ०] हृत्ता हुआ; दिक्(क्षय)का रोगी।

मद्यकू-वि० [अ०] दाखिल किया हुआ, प्रविष्ट।

मद्यकू-खी० [अ०] वह स्त्री जो घरमें डाल ली गयी हो,
रखेली।

मद्य-खी० [अ०] सहायता; कुमक। -प्राच-पु० किस्ती-
के महायत्ताथ दिया जानेवाला धन; पेशगी। -गार-
वि० सहायक।

मद्य-पु० [सं०] कामदेव; काम; प्रेम; वसतकाल; आर्कि-
गनका एक भेद; अमर; खंजन; मैनफल; खैर; मौलसिरी;
धतूरा; मोम। वि० मदकारक। -कंडक-पु० सार्विक
अनुराग-जनित रोमांच। -कदन-पु० शिव। -कलह-
पु० प्रेमकलह। -काकुर-पु० कपोत। -कृष्ट-वि०
कामाच। -गृह-पु० अग; जन्मकुंडलीमें लक्ष्मी सतिवों
स्थान। -गोपाल-पु० कृष्ण। -चतुर्वशी-खी० चैत्र-
शुद्धा चतुर्वशी। -तंत्र-पु० कामशास्त्र। -ताक-पु०
एक ताल। -त्रयोवशी-खी० चैत्र-शुद्धा त्रयोवशी।

-वमन-पु० शिव। -वहन-पु० कामको जला देने-
वाले, शिव। -विषय-पु० मदनोत्सव। -हादसी-
खी० चैत्रशुद्धा द्वादशी। -हिद्(ब्)-पु० शिव।
-धवा-खी० चैत्रकी पूर्णिमा। -नालिका-खी०
असती स्त्री। -पक्षी(विष्य)-पु० खजन। -पाठक-
पु० कोयल। -पीडा, बाधा-खी० कामव्यथा। -फल-
पु० मैनफल। -बान-पु० [हि०] बेलाका एक भेद।
-भव-पु० नक्षत्रोंका विशेष स्थान। -मनोहर-पु०
मनहर छंद। -मस्त-पु० [हि०] चंभेकी जातिका एक
लौह गंधवाला पुष्पवृक्ष। -मह-पु० कामदेव संबंधी एक
उत्सव। -महोत्सव-पु० आधुनिक होलीसे मिलता-
जुलता एक प्राचीन उत्सव जो चैत्रशुद्धा द्वादशीसे
चतुर्वशीतक होता था; होली। -मोहन-पु० कृष्ण।

-रिपु-पु० शिव। -कलित-वि० कामकोशमें संलग्न।
पु० कामकोश। -कलित-खी० एक वर्णरूप। -लेख-
पु० नायक-नायिकाका एक-दूसरेको लिखा हुआ प्रेमपत्र।
-शाका-खी० कोयल; मैना। -सदन-पु० अग;
जन्मकुंडलीमें लक्ष्मी सतिवों स्थान। -सारिका-खी०
मैना। -हरा-खी० एक मासिक वृत्त।
मद्यक-पु० [सं०] मैनफल; दौना; खैर; मौलसिरी;
धतूरा; मोम।

मदनकुश-पु० [सं०] किंग; नखसूत।

मदनाटक-पु० [सं०] शिव।

मदना-खी० [सं०] सुरा; कस्तूरी; अतिमुक्त लता।

मदनाधिक-पु० [सं०] कोटी।

मदनातपत्र-पु० [सं०] अग।

मदनातुर-वि० [सं०] कामातुर।

मदनायुध-पु० [सं०] अग; सुंदरी स्त्री।

मद्वारि-पु० [सं०] शिव।

मदनाक-पु० [सं०] अग; कमल; कुंडलीमें सप्तम स्थान।

मदनी-खी० [सं०] सुरा; कस्तूरी। वि० [अ०] नागरिक।
पु० यदीनेका रहनेवाला।

मदनीय-वि० [सं०] नशा पैदा करनेवाला; प्रेम वा राग
उत्पन्न करनेवाला।

मदनोत्सव-पु० [सं०] मदन-महोत्सव; होली।

मदनोधान-पु० [सं०] प्रमोदवन।

मदप्रन-पु० [अ०] दफन करनेकी जगह, वह गढा जिसमें
मुर्देकी दफन करें, कब्र।

मदप्रन-वि० [अ०] दफन किया हुआ।

मदयंतिका, मद्यंसी-खी० [सं०] वनमण्डिका;
(मिहदी ?)।

मदयिता(तु)-वि० पु० [सं०] नशा पैदा करनेवाला;
मदनोत्सव बनानेवाला; आमंत्रित करनेवाला।

मदयितु-वि० [सं०] मादक। पु० कामदेव; मेघ; कल-
वार; मद्य।

मदयुन-वि० [अ०] देनदार, कर्णी।

मदर-पु० वदार्, हमला।

मदरसा-पु० [अ०] पदानेकी जगह, पाठशाला।

मदरास-पु० भारतवर्षका दक्षिण-पूर्वी प्रांत; इस नामका
नगर।

मदरासी-वि० मदरासका। पु० मदरासका रहनेवाला।

मदरोक्ष-वि० मतवाला; हैराव; मीर; बेहोश।

मदोच-वि० [सं०] जो मस्ती या बल आदिके गर्वसे अंधा
हो रहा हो।

मदोचर-पु० [सं०] इन्द्रका हाथी; मत्त हाथी।

मदोच, मदोच(स्)-पु० [सं०] महजल।

मदाकू-वि० [सं०] मत्त (हाथी)।

मदास्थ-वि० [सं०] मत्त। पु० तापका पेड़।

मदार्तक, मदास्थ-पु० [सं०] अति मद्यपानसे होनेवाला
एक रोग।

मदाधि-वि० खी० कत्याकारिणी।

मदापनव-पु० [सं०] नशा उतारना।

मद्वार-पु० आका [सं०] मत्त हाथी; सगर; कामुक; एक

गंधध्वजः, धूर्तः, रुग्णः [अ०] मध्वन्मनोका भ्रमणपथः
दाघरा, मंडलः आभारः जिसपर किसी वस्तुकी स्थिति हो;
धुरी ।

महारिवा-पु० दे० 'मदारी' ।

मदारी-पु० बाजीगर; बंदर-भालू, नचानेवाला ।

मदालस-वि० [सं०] जो नजेके कारण मुस्त हो ।

मदालसा-की० [सं०] चंद्रवंशी राजा प्रतर्दनकी विदुषी,
मदबादिनी पत्नी जिसकी कथा मार्कण्डेय पुराणमें वर्णित है ।
वि० की० मदसे अलसायी हुई ।

मदाल्हापी(पिन्)-पु० [सं०] कोयल ।

मदालु-वि० [सं०] जिससे मद छरता हो; मस्त ।

मदि-की० [सं०] पेटला, सिरामन ।

मदिवां-की० दे० 'मादा' ।

मदिर-वि० [सं०] नशा, मस्ती पैदा करनेवाला; मदभरा ।
-दक(हृ)-नयन-वि० सुंदर नेत्रोंवाला ।

मदिरा-की० [सं०] मद्य, शराब; वस्तुदेवकी एक पत्नी ।

-मृह-पु०, -साका-की० शराबखाना । -सत्त्व-पु०
आमृत ।

मदिराक्षी-वि० की० [सं०] मद्य, मदभरी आँखोंवाली ।
मदिराक्षनयन-वि० [सं०] बड़े-बड़े और मदभरे नयनों-
वाला ।

मदिरालय-पु० [सं०] शराबखाना ।

मदिरोल्लस, मदिरोल्लस-वि० [सं०] नजेमें चूर ।

मदीना-पु० [अ०] नगर; अरबका एक प्रमुख नगर जहाँ
मुहम्मदका मजार है । -मुनीबरा-पु० मदीना ।

मदीब-वि० [मं०] मेरा ।

मदीका-वि० नजेमें चूर, मद्य; † मदभरा, उन्मादकारी
(मदीकी चितवन, अमर०) ।

मदीकट-वि० [सं०] मद्य; मस्त (हाथी) । पु० मस्त
हाथी; पंडुकी; एक तरहकी शराब ।

मदीकट-वि० [सं०] नशी वा गर्वसे चूर ।

मदीम्भस-वि० [मं०] मतवाला, मदांध ।

मदीजित-वि० [सं०] धर्मधर्म फूला हुआ ।

मदीछापी(पिन्)-पु० [सं०] कोयल ।

मदीवै-वि० की० मदोदरी ।

मदी(हृ)-सर्व० [सं०] मैं ('अस्मद्'का एक रूप) ।

मदीय-पु० [सं०] माँगुर मछली; एक जलपक्षी; पेड़पर
रहनेवाला एक जंतु; एक वर्णसंकर जाति ।

मदीयुर-पु० [सं०] माँगुर मछली; एक वर्णसंकर जाति ।

-प्रिया-की० सिंधी मछली ।

मदी-की० [अ०] आदी लकीर जिसे खींचकर नीचे लेखा
या लेख लिखना आरंभ करते हैं; लेखकी समाधिपर खींची
जानेवाली लकीर; शीर्षक; विभाग; छाया; खाना ।

-दे) नजर-वि० जो निगाहके सामने हो; उद्घिष्ट,
लक्ष्य । -फ्राजिल-की० बेकार मद्य, बेकार चीज ।

-मुकाबिल-वि० बराबरीका दावेदार, प्रतिस्पर्धी ।

मदी-पु० [अ०] आर । -ब अङ्गर-पु० आर-भाटा ।

मदी-वि० दे० 'मदा' ।

मदी-वि० [अ०] मदद करनेवाला; प्रयत्नक ।

मदी-वि० प्रयत्न, तारीफ करना ।

मदी-पु० एक तरहका पुराना पेता ।

मदिम-वि० मध्वम; कर्म अच्छा; मंदा ।

मदी-अ० बीचमें; मद, सातेमें ।

मद्य-पु० [सं०] मद्य आदिकी पीनेसे खींचा हुआ मद्यक
अर्क, सुरा, शराब । -कीट-पु० सिरकेमें उत्पन्न कीड़ा ।

-कुंभ-पु० दे० 'मधुमांड' । -कुम्भ-पु० माँकका पेड़ ।

-विनीवलाहा-की० (डिस्टिलरी) शराब तैयार
करनेकी जगह, अभिसावणी । -पंक-पु० शराबकी पीने

(?) । -प-वि० मद्य पीनेवाला, शराबी । -पान-पु०

शराब पीना । -पापी(विन्)-वि० मद्यप, शराबी । -

पुष्प, -पुष्पी-की० धौ, पातकी । -बीज-पु० खमीर ।

-मंडि, -भाजन-पु० शराब रखनेका बर्तन, मटका,

मधुघट । -मंड-पु० शराबका फेन । -वासिनी-की०

दे० 'मधुपुष्पा' । -विक्रम-पु० शराबकी बिक्री । -

संधान-पु० शराब चुआना, मद्यव्यवसाय ।

मद्यपापान-पु० [सं०] मद्यक, वाट ।

मद्याक्षेप-पु० [सं०] शराब पीनेकी लत ।

मद्यामोह-पु० [सं०] बकल हृष्ट ।

मदीकर-वि० [सं०] मंगलकारी ।

मदी-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद; मदी नरेश; मदीवामी;
हर्ष; मंगल । -सुता-की० माद्री ।

मदीक-पु० [सं०] मदीवामी; मदीका राजा । वि० मदीमें
उत्पन्न ।

मदीका-की० [सं०] मदी देशकी ची ।

मदीस-पु० दे० 'मदरास' ।

मद्य, मधि-पु०, वि०, अ० दे० 'मध्व' ।

मधु-पु० [सं०] शहद; मद्य; पुंस्वरस; वसत ऋतु; चेतका
महीना; जल; सोमरस; दूध; मुलेठी; शर्करा; अशोक;

विष्णुके हाथों मारा गया एक दैत्य । वि० मीठा ।

-कंठ-पु० कोयल । -कर-पु० भौरा; कानी पुरुष;
रसिक व्यक्ति; एक तरहका चावल । -करी-की०

भ्रमरी; एक अजकी भिक्षा जो सन्मयासीके लिए विहित
है । -करी(रिन्)-पु० भ्रमर । -ककटिका-

की० विजोरा नींबू । -ककडी-की० विजोरा नींबू;

खजूरका फल । -कार, -कारी(रिन्)-पु० मधु-

मक्खी मधुपर्णी । -किरी-की० एक राग । -कुक्कुटी-

की० एक नींबू जिसका फल बदबूदार होता है । -कू-

-पु० मधुमक्खी; भौरा । -कैटभ-पु० विष्णुके कानके

मेलेसे उत्पन्न दो दैत्य-मधु और कैटभ । -कोश, -कोष

-पु० शहदका छत्ता । -क्रम-पु० मधुमक्खीका छत्ता ।

-हीर, -हीरक-पु० खजूर । -खजूरिका, -खजूरी

-पु० खजूरका एक मेद । -गंध-पु० अजुनका पेड़;

मोलसिरी । -गंधि, -गंधिक-वि० मीठी सुगंधवाला ।

-गाधव-पु० कोयल । -गुंज-पु० शीभांजन वृक्ष ।

-शह-पु० बाचपेय वनके अंतर्गत होनेवाला शहदका

होम । -शोच-पु० कोयल । -चक्र-पु० शहदकी

मधिलयोंका छत्ता । -चक्रहा-की० मयूर हिरण्य । -ज

-पु० मीम । -जा-की० मिसरी पृथ्वी । -आकक-

पु० मधुमक्खीका छत्ता । -जित्-पु० विष्णु । -अविच-

-पु० बरेकेका पेड़। -सक-सक-पु० ईल। -प्रव-पु० लीम मीठी नीलें-शब्द, धी और शर्करा। -दीप-पु० कामदेव। -बूल-पु० आमका पेड़। -वृत्ती-खी० पल्लव। -हुल-पु० मधुपका पेड़; आमका पेड़। -हिद्-(व्)-पु० विष्णु या कृष्ण। -चातु-खी० माक्षिक। -बुद्धि-खी० खीर, शकर। -चेनु-खी० दानके छिप कसित शब्द आदिकी गांव। -नाही-खी० मधुमक्खीके छुटेका कोष। -नापिल-पु० एक संकर जाति, मोरक। -मेला(रु)-पु० मौरा। -व-पु० मधुकर, अमरः * उदबः देवता (कविभिः); वि० शरावी(कविभिः)। -पटल-पु० शब्दकी मक्खियौका छत्ता। -पति-पु० कृष्ण। -पर्क-पु० दही, घी, शब्द, जल और शर्कराका योग जो देवता और अतिथिके सामने रखा जाता है। -पर्क-वि० मधुपर्कका अधिकारी। -पर्णिका-पर्णी-खी० नीलका पीठा; गुग्गुलु; गंभीरी। -पवन-पु० वांस्ती हवा। -पाका-खी० सरजूना। -पात्र-पु० पान-पात्र (मक्का); शराव रखनेका बरतन। -पापी(विन)-पु० मौरा। -पीछ-पु० अखरोट। -पुर-पु०, -पुरी-खी० मधुरा। -पुष्प-पु० महुआ; अशोक; मौलसिरी; सिरिस। -पुष्पा-खी० नागवती; धी। -प्रणय-पु० शरावकी लत। -प्रतीका-खी० समाधिकी एक भूमि। -प्रसेह-पु० मधुमेह। -प्राधान-पु० एक संस्कार जिसमें नवजात शिशुको मधु चढाया जाता है। -प्रिय-पु० बलराम; अक्षर; भूमि जंतु। -फळ-पु० मीठा नारियल। -फलिका-खी० मीठा खजूर। -वन-पु० [हि०] दे० 'मधुवन'। -बहुला-खी० माषकी लता। -बाखा-खी० अमरः शराव पिऊनेवाली ऊबकी। -बिबी-खी० ऊँरू। -बीज-पु० अनार। -भांड-पु० शरावका बरतन। -भार-पु० एक मात्रिक छद्। -भिद्(द्)-पु० विष्णु। -भूमिक-पु० मधुमती भूमिकामें स्मित योगी। -मक्खी-खी० [हि०] शब्दकी मक्खी। -मक्ष-पु० अमर। -मक्षा-खी० अमर। -मक्षिका-मक्षी-खी० शब्दकी मक्खी। -मज्ज(जन)-पु० अखरोटका पेड़। -मज्ज-वि० शरावके नशेमें चूर; वमनसे उद्दीप्त। -मज्ज-पु० विष्णु। -मक्षिका-खी० मालती लता। -मल्ल-मेदेमें धी-शब्द मिठाकर बनायी जानेवाली एक तरहकी मिठाई। -मात-पु० एक राग। -सारंग-पु० सारंग रागका एक मेद। -माधव-पु० वसंतके दो मास-वैत और वैशाख एक सकर राग। -माधवी-खी० एक तरहकी शराव; एक रागिनी। -माधवीक-पु० एक तरहकी शराव। -मारक-पु० अमर। -मालती-खी० मालती लता। -मास-पु० वैतका महीना; वसंत काळ। -मूल-पु० रताल। -मेह-पु० पेशाबके साथ शकर आका रोग, शर्करा प्रमेह। -मेही(हिद्)-वि० मधु-नेहका रोगी। -बटिका-खी० मुलेठी। -बही-खी० ईल। -बामिनी-खी० बर-बच्छे प्रथम मिलनरात्रि। -स्व-वि० मधुर रसवाला, मीठा। पु० ईल; ताड़। -रसा-खी० मूला; दाख; गंभीरी; दुधिया। -रसिक-पु० मौरा। -राज-पु० मौरा। -रिपु-पु० विष्णु।

-रीछ-पु० [हि०] दक्षिणी अमेरिकाका एक जंतु जो शक्करमें रोछसे मिलता और शब्दका चौकीन होता है। -रुमन-पु० लाठ सहजन। -रिद्(रु)-, -रेह, -रेही(विन), -खोख-पु० मौरा। -वन-पु० वह वन जिसमें मधुदेव रहता था और जहाँ शङ्खने मधुरा नगरी बसायी; किष्किपाका वह वन जिसमें मधुरा रहते थे; कोयल। -बल्ली-खी० मुलेठी। -बाक्(व्)-पु० कोयल। -बार-पु० शरावका दौर, बार-बार मध पीनेका क्रम। -बिहिद्(व्)-पु० विष्णु। -वस-पु० मौरा। -शर्करा-खी० शब्दमें बनायी हुई शकर। -शाख-पु० मधुपका पेड़। -शाका-खी० मदिरालय, मक्खाना। -शिष्ट-शेष-पु० मोम। -झी-खी० वसंतधी। -धोनी-खी० मूला। -बासा-खी० जीवंती। -झील-पु० मधुपका पेड़। -सख, -सहाय, -सारथि-पु० कामदेव। -सिक्क-पु० मोम। -सुहद्-पु० कामदेव। -सुवन-पु० मधु दैत्यकी मारने-वाले कृष्ण; मौरा। -सुवनी-खी० पालकका साग। -खान-पु० मधुमक्खियोंका छत्ता। -खव-पु० मधुपका पेड़। वि० जिससे शब्द या मिठास सृजे। -खवा-खी० मुलेठी; सजीवनी दूटी; मूला। -खवा(बस्)-पु० मधुपका पेड़। -स्वर-पु० कोयल। -हा(हन्)-पु० विष्णु; मधु निकालनेवाला; एक शिकारी बिबिया; देवह।

मधुक-पु० [सं०] महुआ, मुलेठी। वि० मीठा; सुरीला; शब्दके रंगका।

मधुका-खी० [सं०] मुलेठी; मधु; कृष्णपर्णी लता।

मधुमती-खी० [सं०] एक नदी। समाधिकी वह अवस्था जब रज और तमका कोष होकर सत्य गुणका पूर्ण प्रकाश होता है; तंत्रमें वर्णित एक नायिका या योगिनी; मधु दैत्यकी कन्या।

मधुमय-वि० [सं०] मधु, मिठाससे भरा हुआ।

मधुमान्(मद्)-वि० [सं०] मीठा; मधुसूक्त; प्रिय।

मधुर-वि० [सं०] माधुर्ययुक्त; मीठा; प्रिय; सुंदर; कोमल, लोचनारहित, कानोंकी प्रिय लगनेवाला (स्वर); प्रिय-दर्शन, सौम्य। पु० मिठास; गुड़; मीठा पेय; भान; विष; महुआ। -कंठक-पु० एक मछली। -कंठी(तिन्)-वि० मीठे स्वरसे गातेवाला। -कंठदी-खी० मीठा नीबू। -गात्र-वि० सुंदर। -जंबीर-पु० जंबीरी नीबूका एक मेद। -जव-पु० दे० 'मधुवय'। -खक्(व्)-पु० भोका पेड़। -प्रियदर्शन-पु० शिव। -फळ-पु० नेरका एक मेद, राजबंदर। -बीजपूर-पु० एक तरहका नीबू। -भापी(विन्)-वि० जिसकी बोलीमें मिठास हो। [खी० 'मधुरभाषिणी']। -बल्ली-खी० नीबूका एक मेद। -जवा-खी० पिछखजूर। -खान-वि० मधुर शब्द करनेवाला। पु० शंख। -स्वर-वि० मीठे स्वरवाला।

मधुरार्थ-खी० मिठास, माधुर्य।

मधुरक-वि० [सं०] मधुर; प्रिय। पु० जीवक वृक्ष।

मधुरता-खी०, मधुरत्व-पु० [सं०] मिठास, माधुर्य।

मधुरार्थ-खी० मधुरता, मिठास।

मधुराभा-अ० कि० मिठास पैदा होना ।
 मधुराष-पु० [सं०] मिठास ।
 मधुराग्ल-पु० [सं०] आमका ।
 मधुरिका-झी० [सं०] बन सौंफ ।
 मधुरित-वि० [सं०] मधुर बनाया हुआ, जिसमें मिठास पैदा की गयी हो ।
 मधुरिमा(मधु)-झी० [सं०] मिठास, माधुर्य ।
 मधुरी-झी० दे० 'माधुरी' । * वि० झी० मीठी, रुचिकर ।
 मधुल-वि० [सं०] दे० 'मधुर' । पु० मध ।
 मधुलिका-झी० [सं०] राई ।
 मधुल-पु० [सं०] मधुपका पेड़; मधुपका फूल; अमर; मुलेठी ।
 मधुलरी-झी० अमरी; दे० 'मधुलरी' ।
 मधुल्लिङ्ग-पु० [सं०] मोम ।
 मधुल्य-वि० [सं०] शहरसे बना हुआ । पु० मोम ।
 मधुल्यित-पु० [सं०] मोम ।
 मधुल्य-पु० [सं०] बसंतोत्सव ।
 मधुल्य-पु० [सं०] बसंतोत्सव ।
 मधुल-पु० [सं०] जलमधुआ ।
 मधुलिका-झी० [सं०] मूवी; मुलेठी; मधुली (गेहूँ)से बनायी हुई शराब ।
 मधुली-झी० [सं०] आमका पेड़; पानीमें पैदा होनेवाली मुलेठी; मध्य देशका गेहूँ ।
 मधुल्य-पु० [सं०] दोपहर, मध्याह्न ।
 मध्य-पु० [सं०] बस्तुका बीचका भाग, केंद्र; देशका मध्य भाग, कमर; बस्तुका भीतरी भाग; बीचकी अवस्था; संगीतमें बीचका सप्तक; नृत्यमें मध्यम गति । वि० बीचका, दरमियानी; अंतर्वर्ती; मध्यम; व्याप्य । * अ० बीचमें ।
 -कर्म-पु० अर्द्ध व्यास । -कुह-पु० उत्तर कुह और दक्षिण कुहके बीचका देश । -गंध-पु० आमका पेड़ ।
 -रात-वि० बीचमें स्थित, बीचका । -ज्या-झी० मध्यदिन रेखा । -सापिनी-झी० एक उपनिषद् ।
 -ईश-पु० सामनेका दाँत । -दिन-पु० दोपहर ।
 -दीपक-पु० दीपक जलकारका एक वेद । -देश-पु० हिमालय और विन्ध्य तथा कुरुक्षेत्र और प्रवागके बीचका देश; बीचका भाग । -नगर-पु० नगरका भीतरी भाग । -पक्षोपी(पिन्)-पु० दे० 'मध्यम पक्षोपी' ।
 -पात-पु० एक प्रकारका पात (क्रीडा); परिचय ।
 -पूर्व-पु० मध्यका पूर्वार्ध (मध्यपूर्व काल); (मिथिलईस्ट) यूरोपीयोंकी दृष्टिसे पश्चिमाका दक्षिण-पश्चिमी तथा अफ्रीकाका उत्तर-पूर्वी भाग । -प्रस्ता-वि० झी०, बह गाय जिसे बचा दिये कुछ दिन डुप हों । -अक्ष-वि० (भोजनके) बीचमें खायी हुई (रवा) । -आय-पु० बीचका भाग । -आर-पु० बीचकी अवस्था । -अभि-पु० बारका मुख्य रत्न । -अब्जा-झी० एक वर्णना (संगीत) । -आय-पु० एक ताल । -धुम-पु० आचीन और अर्धचीन कालकी बीचका समय; भारतके इतिहासमें राजपूतकालसे मुगलकालतकका समय; यूरोपके इतिहासमें ६०० से १५०० ईसवीनकाल । -रात्र-पु०, -रात्रि

झी० आधी रात । -छोक-पु० मर्त्यलोक, भूलोक ।
 -वय(स्)-पु०, झी० अथेड उम्र । -वय(वस्)-वि० अथेड उम्रवाला । -वर्ती(सिन्)-वि० बीचमें स्थित, केंद्रवर्ती । पु० पेच; मध्यम । -वित्त-वि० मध्य देशका, न कमीर, न गरीब । -वृत्त-पु० नाभि । -व्य-पु० विनुआ; तटस्थ, उदासीन । वि० मध्यमें स्थित । -व्यल-पु० मध्यभाग; कमर ।
 मध्यम-वि० [सं०] बीचका, मझका; मँझका; न बढ़िया, न बटिया । पु० सात स्वरोंमेंसे चौथा; तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक (सां०); एक राग; कमर (तनुमध्यम) ।
 -पद-पु० समासका बीचका पद । -छोपी(पिन्)-पु० समास जिसमें पूर्व पदमें उत्तर पदका संबंध जोड़नेवाला पद जुड़ हो (स्वर्णकलश-सीनेका बना हुआ कलश, छायातर) । -पांडव-पु० अर्जुन । -पुरुष-पु० पुरुषवाचक सर्वनामके तीन भेदोंमेंसे एक, वह पुरुष जिससे बात की जाय । -रात्र-पु० आधीरात । -छोक-पु० मर्त्यलोक, भूलोक, भरती । -वय(स्)-पु०, झी० अथेड उम्र । -वयस्क-वि० अथेड, मध्यम वयवाला । -संग्रह-पु० गहने-कपड़े आदि भेजकर परकी को कुसलाना । -साहस-पु० मनुके अनुसार कठोर और नरमके बीचका दंड-चौच सौ पणलकका जमाना ।
 मध्यमक-वि० [सं०] बीचका; सबका । पु० किसी चीजका भीतरी भाग ।
 मध्यमा-झी० [सं०] बीचकी उँगली; वह लकड़ी जो रज-स्वला ही चुकी हो; नायकके प्रेम या दीपके अनुसार उसका आनंद-भोग करनेवाली स्त्री; कमलकी कर्णिका ।
 मध्यमाहरण-पु० [सं०] आयत मान निकालनेकी क्रिया (बी० ग०) ।
 मध्यमिका-झी० [सं०] रजःप्राप्त लकड़ी ।
 मध्यमीय-वि० [सं०] मध्य सवधी; बैद्रीय ।
 मध्यमेस्वर-पु० [सं०] काशीमें स्थित एक शिवलिंग ।
 मध्यरथता-झी० [सं०] विचबई; तटस्थता ।
 मध्या-पु० [सं०] रजःप्राप्त लकड़ी; विचली उँगली; वह नाविका जिसमें काम और लज्जा समान हों ।
 मध्याह्न-पु० [सं०] दोपहर । -भोजन-पु० (लं०) दोपहरमें किया जानेवाला मुख्य भोजन ।
 मध्याह्नोत्तर-पु० [सं०] तीसरा पहर, दोपहरके बादका समय ।
 मध्ये-अ० दे० 'मदे' ।
 मध्य-पु० एक संप्रदाय-प्रवर्तक और वेदांत-सूत्रोंपर मध्य लिखनेवाले वैष्णव आचार्य । -संग्रह-पु० मध्य द्वारा प्रवर्तित वैष्णव-संप्रदाय ।
 मध्यक-पु० [सं०] मधुमक्खी ।
 मध्याचारी-पु० दे० 'मध्य' ।
 मध्याह्न, मध्याह्नक-पु० [सं०] एक तरहका आमका पेड़ ।
 मध्यावास-पु० [सं०] आमका पेड़ ।
 मध्याची(शिष्ट)-पु० [सं०] शहर या मिठाई खानेवाला ।
 मध्यास-पु० [सं०] मधुपकी बनी शराब ।
 मध्यासवधिक-पु० [सं०] शौचिक ।

अभ्यासाद्-वि० [सं०] अष्टदके स्वादवाका ।
 अभिजा-की० [सं०] ग्रह ।
 मनःकल्पित-वि० [सं०] मनगदत, कर्जा ।
 मनःक्षेप-पु० [सं०] मनका क्षेप ।
 मनःपति-पु० [सं०] विष्णु ।
 मनःपाप-पु० [सं०] मानसिक पाप ।
 मनःपीडा-की० [सं०] मानसिक कष्ट ।
 मनःभूत-वि० [सं०] मन जिसे पवित्र मानना हो, अतः
 रात्मा द्वारा अनुमीत (मनःपूर्त समाचरेत्) ।
 मनःप्रणीत-वि० [सं०] मनकी प्रिय; कल्पित ।
 मनःप्रसाद-पु० [सं०] चित्तकी प्रसन्नता ।
 मनःप्रसूत-वि० [सं०] मनःकल्पित ।
 मनःप्रिय-वि० [सं०] मनकी प्रिय ।
 मनःप्रीति-की० [सं०] चित्तकी प्रसन्नता ।
 मनःशक्ति-की० [सं०] मनोबल ।
 मनःशिक्ष-पु० [सं०] नैसर्गिक ।
 मनःशिक्षा-की० [सं०] नैसर्गिक ।
 मनःशीघ्र-वि० [सं०] मनकी तद्रह तेज ।
 मनःसंकल्प-पु० [सं०] दिलकी इच्छा ।
 मनःसंस्कार-पु० [सं०] मनपर पड़नेवाला प्रभाव; मनका
 परिष्कार ।
 मनःसंग-पु० [सं०] आसक्ति ।
 मनःसंताप-पु० [सं०] श्कानि; अफसोस ।
 मनःसिद्धि-की० [सं०] एक देवीका नाम ।
 मनःसुख-वि० [सं०] मनकी प्रिय; पु० मनका सुख ।
 मनःस्थैर्य-पु० [सं०] मनकी दृढता ।
 मन-पु० चालीस सेरका वजन; * दे० 'मणि' ।
 मन(स्)-पु० [सं०] शान, संवेदन, संकल्प आदिकी
 साधनरूप अंतरिद्रिय, चित्त; अंतःकरणकी संकल्प-विकल्प
 करनेवाली दृष्टि (दे०); इच्छा, जी । ['मन' शब्दसे बने
 हुए नीचे लिखे सामासिक शब्दोंका प्रयोग केवल हिंदीमें
 होता है ।]-कामना-की० दे० 'मनोकामना' ।-गर्व,
 गर्वित-वि० मनका गढ़ा हुआ, कल्पित ।-च्छा-वि०
 साहसी, दौलतवाला; निम्न; मनमौजी ।-चाहा-वि०
 मनका चाहों हुआ, मनोमिलित ।-चीता-वि० सोचा
 हुआ, चाहा हुआ, मनभाया ।-जात-पु० मनोमय,
 कामदेव ।-बोझि-वि० दे० 'मनोवांझि' ।-भाषा-
 वि० मनकी भाषेवाला, मनोमुकूल, प्रिय ।-भाषता,-
 भाषण*-वि० जो मनकी भाषे, प्रिय लगे, प्यारा । [की०
 'मनभाषाती']-मस्ति-वि० जो मन कटे बह करनेवाला,
 स्वच्छंद ।-मथन-पु० कामदेव ।-मानता-वि०
 मनमाना ।-भावा-वि० जो मनकी भाषे, रचे; जो
 मनमें भावे, जो जी चाहे । अ० ध्येच्छ, जितना जी
 चाहे । [की० 'मनमानी']-मानी-की० मनमाना
 काम ।-० घर जानी-की० स्वेच्छापूर्ण कारगराई ।
 -मुक्ती-वि० मनमौजी ।-मुदाह-पु० मनमें मेल या
 गुराई आ जाना, वैमनस्य ।-मोहक-पु० मनका लब्ध,
 खयाली पुकार ।-मोहक-वि० मनकी मोहनेवाला,
 प्यारा । [की० 'मनमोहनी'] पु० कृष्ण ।-मौजी-
 वि० अपनी मौजसे, अपने इच्छानुसार काम करनेवाला,

स्वच्छंद ।-ईश-पु० दे० 'मनोरंजन' ।-ईश्वर-वि०
 मनोरंजक । पु० दे० 'मनरंजन' ।-रौचन*-वि० मन
 लुभानेवाला ।-काहू*-पु० मन-मोहक ।-हर-वि०
 दे० 'मनोहर' । पु० घनासुरी छंद ।-हरण-वि० मनो-
 हर । पु० मनकी हरने, मोहनेकी क्रिया; एक वर्णवृत्त ।
 -हरव-वि०, पु० दे० 'मनहरण' ।-हार,-हारि-
 वि० दे० 'मनोहारी' । मु० (किसीसे)-अटकना,-
 डकड़ना-किसीपर दिक् आना, प्रेम होना । (किसीपर)
 -आना-किसीपर दिक् आना ।-कषा करना-दिक्
 छोटा करना, बिस्मत्त होना ।-करमा-इच्छा होना,
 जी चाहना ।-का कषा-कमजोर दिक् ।-का
 मारा-खिन्न-हृदय ।-का मैल-बैर-मुग्न; दुर्भावना ।
 -का मैल-कोटे, बुरे दिक् ।-की मनमें रहना-
 इच्छा पूरी न होना, मनका चाहू न होना ।-की
 मौज-मनकी लहर ।-के लब्ध जाना-न होनेवाली
 बातकी आशा करने प्रमथ होना, खयाली पुकार पकाना ।
 -चकना-जी चाहना, इच्छा होना ।-डोकना-इच्छा
 होना, ललचना; (मनका) विचलित होना ।-देमा-मन
 लगाना ।-धरमा*-ध्यान देना ।-फटमा-चाह-प्रीति
 न रहना, विरक्ति हो जाना ।-बढ़ना-हौसला बढ़ना,
 उत्साहित होना ।-बढ़ावा-उत्साह बढ़ाना, बढ़ावा
 देना ।-भरना-रुति होना; अभाव; दुष्टि, समभाव
 होना ।-आना-रचना, अच्छा लगना ।-आमना-
 संतोष होना; निश्चय होना; आना; दिक् मिलना, प्रीति
 होना; अक्ष ठिकाने लगना ।-मारना-इच्छाओंकी
 दशना; मनोनिग्रह करना ।-मारे(हुए)-खिन्नचित्त,
 उदास होकर ।-मिलना-रचि, प्रश्रुतिमें समानता होना;
 प्रीति होना ।-में आना-खयाल उठना, इच्छा होना ।
 -में मैल जाना-(किसीके विषयमें) मनमें गुराई, दुर्भाव
 पैदा होना ।-मैल करना-उदास होना; मनमें दुर्भाव
 जाना ।-मैल होना-किसीके बारेमें खयालका खराब
 होना, सिक्क होना ।-मोहना-मन लुभाना ।-काना*-
 मन लगाना ।-से उतरना-मनमें अनादर या तिरस्कार
 हो जाना ।-हरना-मन मोहना ।-ही मन-अंदर
 ही अंदर, चुपचाप ।-होना-इच्छा होना ।

मनहीं-पु० आदमी, मानव ।

मनकना-अ० कि० हिलना, हाथ-पाँव आदिसि कोई चेष्टा
 करना-“जापता करन हारे नेहहू न मनके”-भूषण ।
 मनका-पु० माला, सुमिरनी आदिका दाना, गुरिया ।

मनकूला-वि० की० [अ०] चर, चल, जिसे दूसरी जगह
 ले जा सकें ।-जाबदाह-की० चक्क सपत्ति ।

मनकूहा-वि० की० [अ०] निकाह की दुई; विवाहिता
 (की) ।

मनग्रह-वि० [अ०] जन्म किया हुआ, छन्दोबद्ध ।

मनन-पु० [सं०] सोचना; समझनेके लिए बार-बार
 विचार करना; अनुमान ।-बोझि-वि० जिसे मनन
 करनेकी आवश्यक हो; विचारशील ।

मननीय-वि० [सं०] मनन करने योग्य ।

मनर्था-पु० नरना, देवकपास ।

मनभावना-सं० कि० माननेकी प्रेरित करना; मनानेका

काम कराना ।

मनसा-पु० [अ०] इच्छा, इरादा; भाव, विचार ।

मनसबुद्धि-पु० [सं०] मनकी बुद्धि, अंतर्दृष्टि ।

मनसवाना-स० [अ०] इच्छा, इरादा करना ।

मनसब-पु० [अ०] पद, उद्देश; अधिकार; दरजा; सेवा; वंशपरंपरासे मिलनेवाली वृत्ति । -वार-पु० अधिकारी; मनसब (वृत्ति) पानेवाला ।

मनसबी-वि० मनसब, पदसे संबंध (कच्चे मनसबी-पद-संबंधी कर्तव्य) ।

मनसा-वि० मनसे उत्पन्न, मानस । [सं०] जरफ़ाब मुनिकी पत्नी और बाबुकि नागकी बहिन । अ० मनसे, मनके द्वारा । -पंचसी-खी० आषाढ़-रूप वंचनी । -बाबा-कर्मना-अ० मन, बचन और कर्मके द्वारा । खी० मन; इच्छा; अभिप्राय; इरादा; अभिप्राय; बुद्धि ।

मनसाना-अ० [अ०] उत्साहित होना; उमंगमें आना; दे० 'मनुसाना' ।

मनसावनी-पु० चबल-पठल । वि० जहाँ चबल-पठल हो ।

मनसिकार-पु० [सं०] मनमें ग्रहण करना ।

मनसिज-पु० [सं०] काम; कामदेव; चन्द्रमा ।

मनसिमंथ-वि० [सं०] जिसका प्रेम या नेह शिथिल हो ।

मनसिनाथ-पु० [सं०] काम ।

मनसुख-वि० [अ०] रस किया हुआ, काटा हुआ (नस्ल-रस करना) ।

मनसुखी-खी० मनसुख होनेका भाव ।

मनसुख-वि० [अ०] जिससे निश्चय की गयी हो, सबकुछ; मंगल ।

मनसुखा-पु० योजना, तजबीज; जोर-तोड़, युक्ति; इरादा । -बाज़-वि० योजना, बनानेवाला, युक्ति सोचनेवाला ।

मनसूर-पु० [अ०] नबी शरीफ़ा एक प्रसिद्ध मुसलमान सूफ़ी जो 'अनलहाक' (अह मद्धास्मि) कहा करता था और इस अपराधमें खलीफ़ाके हुक्मसे खलीफ़र चढ़ा दिया गया । वि० विजयी ।

मनकोत-वि० [सं०] ध्यारा, मनको प्रिय लगनेवाला ।

मनकाय-पु० [सं०] मनोरथ, मनकी इच्छा ।

मनकार-पु० [सं०] (दुःख या सुखका) पूर्ण हान ।

मनकाय-पु० [सं०] मनका ताप, दुःख; अनुताप ।

मनकाय-पु० वर सह जो दुर्गाका वाहन हो ।

मनमुष्टि-खी० [सं०] मनका संतोष ।

मनमुष्टि-खी० [सं०] मनकी रुष्टि ।

मनमोहा-खी० [सं०] दुर्गा ।

मनस्कार-पु० [सं०] किसी विषयके प्रति मनकी आसक्ति, चित्ताभोग; दे० 'मनकार' ।

मनस्विनी-खी० [सं०] मनकी स्त्री; प्रजापतिकी एक पत्नी सोमकी माता; दुर्गा ।

मनस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] मन्थी, जैसे मनवाला, बुद्धिमान्; स्थिरचित्त, धनिक । पु० सरय नामका पुराण-वर्णित जंतु ।

मनहसर-वि० दे० 'मुनहसर' ।

मनहु-अ० मानो ।

मनहूस-वि० [अ०] अमाया; अशुभ; अशुभवृत्तक उद्देशी भरा हुआ (मनहूस सरल) ।

मनहूसी-खी० मनहूस होनेका भाव; उदासी ।

मना-पु० [अ०] रोक, निषेध । वि० विविध, अविविध । -ई-खी० दे० 'मनाही' ।

मनाका-खी० [सं०] इपनी ।

मनाक्, मनाक्-अ० [सं०] धोका-सा, जरा-सा; धीरे-धीरे । -(क)कर-वि० मुस्त, काहिल । -प्रिच-वि० अव्यग्रिच ।

मनावी-खी० दे० 'मुनावी' ।

मनावा-स० [अ०] रुठे, बिगड़े हुएको प्रसन्न करना, राजी करना; किसी बातके होनेकी प्रार्थना करना; प्रार्थना करना, अनुहार करना ।

मनावी-खी० [सं०] दे० 'मनावी' ।

मनार-पु० [अ०] मीनार, ज्योतिस्तंभ; मसजिदका वह स्तंभ जिसपर खड़ा होकर मुसलमान अर्ज देता है ।

मनाख-पु० चकोरका एक भेद ।

मनाचना-पु० मनानेकी क्रिया ।

मनावी-खी० [सं०] मनुकी पत्नी ।

मनाही-खी० मुनानियत, निषेध ।

मनि-पु०, खी० दे० 'मणि' । -धर-पु० दे० 'मणिधर' ।

-साह-वि० चमकता हुआ; सुंदर, शोभायुक्त ।

मनिका-पु० दे० 'मनका' ।

मनित-वि० [सं०] जाना हुआ, स्नात; माना हुआ ।

मनिषा-खी० मनका, पुरिया ।

मनिहार-पु० चूड़ी, टिकी, सिंदूर आदि (फेरी करके) बेचनेवाला ।

मनिहारन, मनिहारिन, मनिहारी-खी० चूड़ी बेचने या पहनानेवाली स्त्री, बुद्धिहारिन । -लीला-खी० मनिहारिन बनकर राधाकी चूड़ी पहनानेकी रूपकी लीला ।

मनी-खी० [अ०] नीय; [का०] गर्व, अभिमान; * दे० 'मणि'; [जो०] रुपया-पैसा । -आहूर-पु० हाकसानेका चेक जिसके जरिये अन्यत्र स्थित जनके पास रुपया भेजा जाता है । -बैग-पु० चमईका बना बटुआ जिसमें रुपया-पैसा रखते हैं ।

मनीक-पु० [सं०] अजन ।

मनीजर-पु० [अ० 'मैनेजर'] किसी कार्यालय, संपत्ति आदिका प्रबंधकर्ता ।

मनीषा-खी० [सं०] बुद्धि; इच्छा; विचार; स्तुति (बै०) ।

मनीषिका-खी० [सं०] बुद्धि, मनीषा; इच्छा ।

मनीषित-वि० [सं०] चाहा हुआ, अनिच्छित ।

मनीषी(विष्)-वि० [सं०] बुद्धिमान्; पंडित, विचारशील । पु० बुद्धिमान् मनुष्य, पंडित, विचारशील पुरुष ।

मनु-अ० मानो । पु० [सं०] ब्रह्माके मानसपुत्र स्वर्गपुत्र मनु जो आदिप्रजापति और मनुस्मृतिके कर्ता माने जाते तथा भ्रमंतरके अधिष्ठाता होते हैं; ब्रह्माके १५ मानसपुत्रों-मेंसे कोई एक; मनुष्य; विष्णु; मन; स्तुति, मंत्र । खी० मनुकी पत्नी, मानवी; वनमेयी । -अ, -आस-पु० मनु-नंदान, मनुष्य । -आ-खी० खी० । -अवै-पु० तलवार । -अवै-पु० विष्णु । -संहिता-खी० मनुस्मृति ।

-स्थिति-**की०** आदि मनुका धवाया धर्मशास्त्र ।
 मनुजता-**की०**, मनुजत्व-**पु०** मनुष्यता ।
 मनुजाय-**पु०** [सं०] नमस्को, राक्षस ।
 मनुजाविष-**पु०** [सं०] राजा ।
 मनुजैर्द्व, मनुजैश्चर-**पु०** [सं०] राजा ।
 मनुजोत्तम-**पु०** वह जो मनुष्योंमें श्रेष्ठ हो ।
 मनुष्य-**पु०** दे० 'मनुष्य' ।
 मनुष्य-**पु०** [सं०] मानव, आदमी, इंसान । -कार-**पु०**
 मनुष्यका उद्योग, पुरुषार्थ । -कृत-**वि०** मनुष्यका किया,
 बनाया हुआ । -गमना-**की०** मनुष्यमारी । -जाति
 -**की०** मानवसमष्टि, मनुष्य समुदाय । -धर्मा(मनु)-
 -**पु०** कुल । -वक्ष-**पु०** जतिविस्तकार । -छोक-**पु०**
 शूलोक्त, धरती । -धाम-**पु०** पालकी । -हार-**पु०**
 मनुष्यकी चोरी, अपहरण । -हारी(विश्व)-**पु०** मनुष्य-
 की चोरी करनेवाला ।
 मनुष्यता-**की०** [सं०] मनुष्योचित भाव, गुण, दया,
 धर्म-बुद्धि, सौजन्य आदि; इंसानियत ।
 मनुसा-**पु०** मनुष्य; जवान, मर्द ।
 मनुसाई-**की०** पुरुषार्थ, मर्दानगी ।
 मनुसाबा-**अ०** कि० पुरुषत्वका अभिमान, मर्दानगीकी
 भावना जगना ।
 मनुवार-**पु०** मनानेके लिए की जानेवाली विनती, मनाने-
 का यत्न; विनती, हुर्यामद । -नीति-**की०** मनाने,
 प्रसन्न करनेकी नीति ।
 मनुवारना-**अ०** कि० मनुवार करना, मनाना ।
 मन्त्री-**की०** मुरादावादी कलई करनेमें काम आनेवाला
 एक चूरा ।
 मनै-**पु०**, वि० दे० 'मना' ।
 मनौ-**अ०** दे० 'मानो' ।
 मनोकामना-**की०** [हिं०] मनकी कामना, अभिलाष ।
 मनोवश-**वि०** [सं०] मनमें भरो, छिपा हुआ । पु० इच्छा;
 विचार ।
 मनोगति-**की०** [सं०] इच्छा; मनकी गति ।
 मनोगामी-**की०** [सं०] इच्छा ।
 मनोगुहा-**की०** [सं०] मैनसिल; एक ईश्वर ।
 मनोगुहीत-**वि०** मन द्वारा ग्रहण किया हुआ ।
 मनोप्राप्ति(विश्व)-**वि०** आकर्षण, सुन्दर ।
 मनोव-**पु०** [सं०] कामदेव ।
 मनोजव-**वि०** [सं०] मनके जैसा वेग जिसका हो, अति
 वेगवान्; पितृव्य । पु० विष्णु ।
 मनोजवा-**की०** [सं०] अग्निकी एक जिह्वा; दुर्गाकी एक
 शक्ति; करियारी । वि० की० दे० 'मनोजव' ।
 मनोजयी(विश्व)-**वि०** मनकी तरह तेज ।
 मनोज-**वि०** [सं०] सुन्दर, मनोहर ।
 मनोज्ञा-**की०** [सं०] राजकुमारी; मद्य; कलौजी; वीक्ष
 ककीका । वि० की० दे० 'मनोज' ।
 मनोर्द्ध-**पु०** [सं०] मनोनिग्रह ।
 मनोर्द्ध-**वि०** [सं०] वरचिच्छ, जिसका मन किसी वस्तु-
में पूरी तरह रम रहा हो; मनसे दिया हुआ ।
 मनोर्द्ध-**पु०** [सं०] मनका स्नेहा, पीडा, मनस्ताप ।

मनोदाही(विश्व)-**वि०** [सं०] मनको ब्रह्मनेवाला ।
 मनोनयन-**पु०** [सं०] पसंद करना, चुनना ।
 मनोनिग्रह-**पु०** [सं०] मनकी इच्छानों, वृत्तियोंकी वश-
में रहना ।
 मनोनिवेश-**पु०** [सं०] मन लगाना ।
 मनोनीय-**वि०** [सं०] पसंद किया हुआ; चुना हुआ ।
 मनोर्भवा-**पु०** [सं०] उदासी, विषाद; नैराश्य ।
 मनोमय-**पु०** [सं०] कामदेव ।
 मनोमाय-**पु०** [सं०] मनका माय, वृत्ति ।
 मनोमिलाव-**पु०** [सं०] मनकी इच्छा ।
 मनोमूल-**पु०** [सं०] चंद्रमा ।
 मनोमथन-**पु०** [सं०] कामदेव ।
 मनोमय-**वि०** [सं०] मनोरूप, मानस । -कोव-**पु०**
 आत्माके आचरणरूप पंचकोषोंमेंसे तीसरा ।
 मनोमगलिन्य-**पु०** [सं०] मनमें मैल आना, मनमोदाव ।
 मनोवाची(विश्व)-**वि०** [सं०] इच्छानुसार गमन करने-
वाला ।
 मनोयोग-**पु०** [सं०] मनको किसी विषयमें एकाम्र करके
 लगाना ।
 मनोयोगि-**पु०** [सं०] कामदेव ।
 मनोर्जक-**वि०** [सं०] मनोर्जन करनेवाला ।
 मनोर्जन-**पु०** [सं०] मनबहालाव, दिक्का खुद होना ।
 वि० मनोर्जक ।
 मनोरथ-**पु०** [सं०] मनकी कामना, अभिलाषा । -कृत-
 वि० इच्छानुसार चुना, वरण किया हुआ (पति) ।
 -दाचक-**वि०** इच्छा पूरी करनेवाला । -सिद्धि-**की०**
 इच्छाका पूर्ण होना ।
 मनोरम-**वि०** [सं०] सुंदर, मन हुआनेवाला ।
 मनोरमा-**की०** [सं०] गोरोचना; कातंबीवांजुनकी पत्नी ।
 वि० की० दे० 'मनोरम' ।
 मनोरा-**पु०** गोबरने बने चित्र ।
 मनोराग-**पु०** [सं०] हृदयानुराग, प्रेम ।
 मनोराज्य-**पु०** [सं०] कल्पनासिद्धि, जागतेका सपना,
 खयाली पुकाव ।
 मनोरा हलक-**पु०** एक वीत ।
 मनोश्च(व्)-**पु०** [सं०] मनस्ताप ।
 मनोचय-**पु०** [सं०] चेतनाका नाश ।
 मनोछोद्व-**पु०** [सं०] मनकी चंचलता, शक ।
 मनोचक्षुषा-**की०** [सं०] प्रेमिका, प्रियतमा ।
 मनोचहा-**की०** [सं०] हृदयकी एक नज्दिका ।
 मनोवांछा-**की०** [सं०] मनकी अभिलाषा, इच्छा ।
 मनोवांछित-**वि०** [सं०] मनका चाहा हुआ, अभिलषित ।
 मनोविकार-**पु०** [सं०] मनकी भावना या मनका आवेग ।
 मनोविज्ञान-**पु०** [सं०] मनकी प्रकृति, वृत्तियों आदिका
 विवेचन करनेवाला विज्ञान, मानसशास्त्र ।
 मनोविनोद-**पु०** [सं०] मनोर्जन ।
 मनोविश्लेषण-**पु०** [सं०] मनके विचारोंकी समीक्षा,
 चित्तविश्लेषण ।
 मनोवृत्ति-**की०** [सं०] मनका विकार, चित्तवृत्ति ।
 मनोवैद्य-**पु०** [सं०] मनका विकार, मनका आवेग ।

मनोवैज्ञानिक-वि० [सं०] मनोविज्ञान-संघी ।
 मनोव्यथा-स्त्री [सं०] मनस्ताप ।
 मनोव्याधि-स्त्री [सं०] मानस रोग ।
 मनोसर-पु० मनोविकार ।
 मनोहस-वि० [सं०] निरास ।
 मनोहर-वि० [सं०] मनको हरने, चुरानेवाला, सुंदर ।
 पु० छप्पय छंदका एक भेद ।
 मनोहरता-स्त्री [सं०] सुंदरता ।
 मनोहरताई-स्त्री मनोहरता, सुंदरता ।
 मनोहर्ता(ई)-पु० [सं०] दिव चुरा देनेवाला ।
 मनोहारी(रिज्)-वि० [सं०] मन हरनेवाला, सुंदर ।
 मनोहारा-स्त्री [सं०] मनसिंह ।
 मनोही-स्त्री मनावन; मानता, मज्जत ।
 मज्जत-स्त्री किसी कार्यकी सिद्धि या जनिष्टके निवारणपर किसी देवताकी पूजा करनेका संकल्प, मनोही । छु० -
 उल्लास-मज्जत पूरी करना । -मानना-मनोही मानना ।
 मन्मथ-पु० [सं०] कामदेव; कैवला पेक्ष । -प्रिया-स्त्री रति । -बंधु-पु० चंद्रमा । -खेल-पु० प्रेम-पत्र ।
 -सख-पु० वसंत । -सखाम-वि० समान प्रेम अनुभव करनेवाला । -सुहृद्-पु० दे० 'मन्मथसख' ।
 मन्मथानन्द-पु० [सं०] एक तरहका आम ।
 मन्मथानल-पु० [सं०] कामाग्नि ।
 मन्मथाकष-पु० [सं०] आमका पेक्ष; मग ।
 मन्मथाविह-वि० [सं०] जिसके हृदयमें प्रेमका प्रवेश हो गया हो ।
 मन्मथी(विह)-वि० [सं०] प्रेमासक्त ।
 मन्मथोदीपन-पु० [सं०] प्रणव बढ़ाकर करना । वि० प्रणव छोड़कर करनेवाला ।
 मन्मथ-पु० [सं०] गुप्त रूपसे की जानेवाली कानाफूसी ।
 मन्थ-वि० [सं०] अपने आपकी मानने, समझनेवाला (समासातिमें-पंडितमन्थ) ।
 मन्था-स्त्री [सं०] गलेके पिछले भागकी एक शिरा; हान ।
 मन्थाका-स्त्री [सं०] गरदनका पिछला भाग ।
 मन्थु-पु० [सं०] क्रोध; अहंकार; उत्साह; दैन्य; शोक; यह; अक्षि; शिव ।
 मन्थुमात्र(मन्थ)-वि० [सं०] क्रोध, अहंकार वा दैन्य हत्यादिसे युक्त ।
 मन्थर-पु० [सं०] (मनु+अन्तर) मनुका अधिकारकाल, एकद्वार चतुर्थी; दुर्मिष्ठ ।
 मन्थर-वि० [अ०] भागा हुआ (अपराधी) ।
 मम-सर्व० [सं०] मेरा, मेरी ('अहं'का गठी-एकनवन-रूप) । -कार-पु० किसी चीजकी अपनी समझना, ममता; निजी संपत्ति ।
 ममता-स्त्री, ममत्त्व-पु० [सं०] किसी चीजकी अपनी समझना; अपनापन; स्नेह; अहंकार; बन्धुके प्रति भक्ति स्नेह; मोह ।
 ममरक्षी-स्त्री सुवारकमादी, बधावा ।
 ममरक्षी-स्त्री [सं० 'मौमाक्षी'] मनुमखी-जीवनमय एकत्र कर रही उन ममाक्षिणी-सा लक्ष्मी-कायायनी ।

ममान, ममाना-पु० मानाका कर ।
 ममारक्षी-स्त्री-स्त्री दे० 'ममरक्षी' ।
 ममास-पु० दे० 'ममास' ।
 ममिषा-वि० ममेरा, मामाके दरजेवाला । -ससुर-पु० पति वा पत्नीका मामा । -सास-स्त्री पति वा पत्नीकी मामी ।
 ममिषावर्ता-पु० दे० 'ममिषावर्ता' ।
 ममिषावर्ता-पु० मामाका कर ।
 ममी-स्त्री (मिलके किसी वारदाहका) सुरक्षित रूपसे रखा हुआ शव ।
 ममीरा-पु० हल्दीकी जातिका एक पौधा जो आँखके रोगोंकी उत्पत्ति कोषि माना जाता है ।
 ममोखा-पु० एक छोटी चिन्मिषा, धोमिन ।
 मम्वक-पु० चंद्रमा ।
 मम्वक-पु० सुगंध, सिंह ।
 मम्व-प्र० [सं०] जिस शब्दमें लगता है उससे बना हुआ (कनकमय), मरा हुआ (जलमय), युक्त (दरामय) आदि अर्थ उत्पन्न करता है । [स्त्री० 'ममी'] पु० दानव-शिल्पी जिसने इंद्रप्रस्थमें सुषिष्ठिके छिपे अद्भुत समग्र्य बनाया; खबर; घोषा; ऊँट; मेक्सिको (अमेरिका)में पुराने जमानेमें बसनेवाली एक जाति । -लनखा-स्त्री मदी-दरी ।
 मम्व-अ० [अ०] दे० 'मै' । स्त्री० [का०] शराव । -कड़ा, -छाना-पु० मदिरालव । -कस्त-वि० शराव पीनेवाला । -कक्षी-स्त्री शराव पीना, मम्वपान । -कृषार, -मोक्ष-वि० दे० 'मयकक्ष' । -कृषारी, -मोक्षी-स्त्री दे० 'मयकक्षी' । -परख-वि० शराबी, मदिरा-मक्त । -परखी-स्त्री मदिरामय । -क्रारी-पु० शराव बेचनेवाला ।
 मम्वगल-पु० मस्त हाथी ।
 मम्वट-पु० [सं०] पर्णकुटी ।
 मम्वन-पु० मदन, कामदेव ।
 मम्वमंत, मम्वमल-वि० मम्वमंत, मस्त ।
 मम्वट, मम्वटक-पु० [सं०] बनमूल ।
 मम्वस्तर-वि० [अ०] दे० 'मुवस्तर' ।
 ममा-स्त्री माया; मोक्ष सत्ता; प्रेम-बंधन; दया; कृपा -'हैं तो धार तुम्हारे सुतकी मया करति गुन रक्षिणी'-सर; [सं०] घोषी; खचरी; ऊँटनी ।
 ममार-वि० दयालु, कृपायुक्त ।
 ममारी-स्त्री धरन-'संभ जंनूद सुविहम रवी हविर ममारि'-सं० ।
 ममु-पु० [सं०] किरण; हिरन । -राज-पु० कुबेर ।
 ममुक-पु० [सं०] किरण; धिखा; दीप्ति; शोभा; क्रीड ।
 ममुकी(विह)-वि० [सं०] चमकीला, दीप्तिमान् । पु० एक प्राचीन अक्ष ।
 ममु-पु० [सं०] मीरा एक पर्वतका नाम । -केतु-पु० कांतिकेय । -गति-स्त्री एक वर्णवृत्त । -मीवक-पु० लुत्तिवा । -चंडक-पु० गुह-कुम्भ । -अंश-पु० सोना-पाड़ा । -तुल-पु० लुत्तिवा । -धवज-पु० दे० 'मोरज' । -धुल-पु० एक तरहका माच । -धवक-

पु० मोरके पौंकी धक्का मक्का । -पुच्छ-पु० मोरकी पूछ । -दध-पु० कापिकेय । -विद्वत्ता-की० भवडा ।
-मिक्षा-की० मोरकी चोटियाँ एक धुप ।

मधुरक-पु० [सं०] मोर; पिचवा; तुलिया ।

मधुरिका-की० [सं०] भवडा, मोरवा ।

मधुरी-की० मोरनी ।

मधुरीष-पु० [सं०] कापिकेय ।

मरद-पु० [सं०] मकरंद ।

मर-[सं०] मृत्यु; भरती (वै०) ।

मरक-पु० [सं०] मरी, मरामारी । * की० हशारा, राह, बढावा-‘मरते डरत न बर परे दरै मरक मनु मेन’-वि० ।

मरकज-पु० [अ०] बृष वा दायरेका मध्यविंदु, वैज्र; सतर मुकाम, मुख्य स्थान ।

मरकड़ी-वि० केंद्रीय, प्रधान (कमेटी, हुकूमत) ।

मरकत-पु० [सं०] पत्ता । -पत्नी-की० पान्की । -

मरद-पु० [हिं०] पत्ताका पहाड़-‘मरकत-मरदपर संगमी रतनहार, ऊहरे तरंगदार गंगा-यमुनाकी है’-लछिराम ।

मरकना-अ० कि० दक्कर दूटना; दबना ।

मरकहा-वि० (संगते) मारनेवाला (वैज्र, भंसा इ०); दबहुट । [की० ‘मरकही’] ।

मरकना-स० कि० दक्कर तोड़ना ।

मरकूम-वि० [अ०] लिखा हुआ, लिखित (रक्तम-लिखना) ।

मरकत-पु० मरकत, पत्ता । -सैल-पु० मरकतका पहाड़-‘मानो मरकत-सैल मिलाऊँ कैलि चली बर नीर-बहूँ’-तुलसी ।

मरकहा-वि० मरकहा, संमिसे मारनेवाला ।

मरगजा-वि०, पु० दे० ‘मरुगजा’-‘नख सिल सुदर विड सुरतके अर मरगजी पटोरी’-सूर ।

मरबट-पु० बह स्थान जहाँ मुँदें जकड़े जाते हैं, मसान ।

मु०-कम भुत्तना-मसानका भूत, डरावनी शक्का आदमी ।

मरवा-पु० दे० ‘मिरवा’ ।

मरज-पु० दे० ‘मर्ज’ ।

मरजाद, मरजादा-की० दे० ‘मयांदा’ ।

मरजिया-पु० पानीमें डूबकर चीजें निकासनेवाला, गोता-खोर-‘जो मरजिया होइ तहाँ सो पावे बह सीप’-प० । वि० जो मरकर जिया हो; जो मरते-मरते बचा हो; अथमरा; मरनेकी अवत ।

मरड़ी-की० [अ०] झुंझी; स्वीकृति; इच्छा; रवि ।

मरजीबा-पु० दे० ‘मरजिया’ ।

मरन-पु० [सं०] मरना, मृत्यु; बचनाग । -धर्मा(मंजु), -सील-वि० मरनेवाला, मर्त्य ।

मरणांतक-वि० [सं०] जिसका अंत मृत्यु हो, जानलेवा ।

मरणांतक-पु० [सं०] मृत्युके कारण क्षातिजनकी लगनेवाला अशौच ।

मरणीय-वि० [सं०] मरनेवाला, मर्त्य ।

मरणोन्मुख-वि० [सं०] जो मर रहा हो, आसन्न-मरण ।

मरत-पु० [सं०] मरण ।

मरवा-पु० [अ०] दे० ‘मर्तवा’ ।

मरतवा-पु० रीतन किया हुआ मिट्टीका बरतन जिसमें अचार, मुरम्बा आदि रखते हैं ।

मरवा-वि० मरता हुआ; दुर्बल । मु०-‘क्या न करता-जीवनसे निरास व्यक्ति सब कुछ करनेकी तैयार हो जाता है । - (ते)की आरम्भ-दुखियाकी ओर सताना ।

-जीते-किसी तरह, ज्यों-त्यों करके । -दमक-आखिरी बलवत्, विदगीमर । -मरते-मरते समय; मौतके पास पहुँचकर ।

मरद-पु० दे० ‘मर्द’ । -है-की० मरदानगी, नीरता ।

मरदना-स० कि० मसखना; मौकना; रौदना, तहस-बहस करना ।

मरदविचार-पु० माफिक करनेवाला टहल ।

मरदाकगी-की० दे० ‘मर्दानगी’ ।

मरदाना-वि०, अ० दे० ‘मर्दाना’ ।

मरदू-वि० [अ०] रद किया हुआ; बहिष्कृत; तिरस्कृत; निकम्मा; नीच ।

मरन-पु० दे० ‘मरण’ ।

मरना-अ० कि० जीता न रहना, जीवन-क्रियाका बंद हो जाना, मरण होना; दखना, मुरझाना; वृत्तमाप हो जाना, गड़ जाना (शरीरसे मर जाना); अति श्रम, अति कष्ट करना, खपना; दुष्टता, प्रभावहित हो जाना (पूना, मुहावा); दब जाना, नष्ट हो जाना (भूख, व्यास, पाखाने-की हाजत इ०); तबाह हो जाना; मरना, कुश्ता हो जाना, (बातु इ० को) जीतर जाना, सोखना (पानी); दुबना, बसल न होना (पावना, रपवा); पिटना, मारा जाना (गोद, मोहरा); शेकनेका अधिकारी न रहना आसन्न, मोहित होना (किसीपर मरना) । मु० मरकर जीना-

मरते-मरते बचना । मर-लप जाना-मरकर नष्ट हो जाना । मरना-जीना-जीवन-मरण; जीवन-मरणका चक्र; शादी-गमी । मरनेतककी फुरसत न होना-दम मारने-को फुरसत न मिलना, कामकी मारी भीड़में होना ।

-पचना-अति श्रम करना; अति कष्ट सहना; जान तोड़कर मेहनत, कोशिश करना । मर-पिटकर, मर-मिटकर-बड़ी कठिनाईसे । मर-मरकर-बड़ी मेहनतसे, जान तोड़कर । मर मिटना-मरकर मिट जाना, जान दे देना; तबाह हो जाना ।

मरनि-की० दे० ‘मरनी’ ।

मरनी-की० मौत, अंत्येष्टि; मृत्युशोक, गमी ।

मरमुखा-वि० पेट; भूखें मरता, कंगाल ।

मरम-पु० दे० ‘मर्म’ ।

मरमर-पु० [य०] एक तरहका पत्थर जो बहुत चिकना होता और रगड़नेसे खूब चमकता है, संगमरमर (शह करै रंगोंका होत है, पर आम तीरसे सफेद रंगवालेकी ही संगमरमर कहते हैं) ।

मरमरा-पु० एक पक्षी । वि० जो जरा-सा दबानेमें डूट जाय ।

मरमराना-अ० कि० ‘मर-मर’की आवाज करना; बाल आदिका दक्कर दटना ।

मरमराहट-की० दबी आवाजमें, अपने आप, असंतोष

प्रकट करनेकी किया; अंशतः प्रकट करनेकी लिए दही अथावा कड़े गये शब्द—'छड़-पारके अंशने सिपाहियोंकी मरमराहट बंद कर दी'—सुगुः डाक आदिके टूटनेकी अथावा ।

मरमी—वि० दे० 'ममी' ।

मरम्मल—को० [ज०] दूदी-फूदी चीजकी दुक़्त करना; सुधार, दुरुस्ती। [अ०] मार, पिटाई, शारीरिक दंड ।
—लकड़—वि० जिसकी मरम्मत करना जरूरी हो ।

मरम्मली—वि० मरम्मत करने लायक; मरम्मतसंबंधी ।

मरबट—पु० मुंडपर देखाई बनावा—'अंजन औंजि मौंजि मुख मरबट फिरि मुख हेरी री'—धन० ।

मरबा—पु० दे० 'मरबा' ।

मरबाना—स० कि० मारनेका काम कराना, मारनेकी उकसाना ।

मरसा—पु० बरसातमें होनेवाला एक साग ।

मरसिया—पु० [ज०] करण रसकी कविता जिसमें किसीकी वस्तु या वीरगतिका वर्णन हो; करवकाके शहीदोंके शिरधर्ममें रचित इस प्रकारका काव्य; शूत व्यक्तिके गुणा-वली; भातम, सियापा (कहना, पढ़ना) । —झुब्झी—पु० मरसिया पढ़नेवाला । —झुब्झानी—को० मरसिया पढ़ना ।

मरहटा—पु० दे० 'मरहट' ।

मरहटा, मरहटा—पु० दे० 'मराठा' ।

मरहटी—वि० मरहटोंसे संबंध । को० मराठी ।

मरहम—पु० [ज०] चापपर लगायेका छेप; चापकी दवा ।
—पट्टी—को० चापपर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना; जखमका हलाक ।

मरहमल—को० [ज०] कृपा, अनुग्रह । सु०—करवा,—करवावा—देना, भ्रान्त करना ।

मरहम—पु० [ज०] १२ नील या दिनमरका लहर; कूचकी जगह; यात्रियोंके ठिकनेकी जगह, पड़ाव; मिलेके हल-मिले बनी हुई हमारात जिसपर बैठकर सैनिक युद्ध करते हैं; कठिन काम, झमेला; दर्जा । —(छे)द्वार—पु० दो पढ़ावोंके बीचके रास्तेकी निगरानी करनेवाला चौकीदार ।

मरहुन—वि० [ज०] रेहन किया हुआ ।

मरहुना—वि० को० [ज०] बंधक रखी हुई (संपत्ति) ।

मरहुम—वि० [ज०] वरुणा हुआ, माक किया हुआ; स्वर्गवासी, जगती ।

मराठा—पु० महाराष्ट्र देशका निवासी; महाराष्ट्र देशका अवाक्षण निवासी ।

मराठी—को० महाराष्ट्रकी भाषा । वि० मराठोंसे संबंध रखनेवाला; मराठोंका ।

मरासिब—पु० [ज०] पद, दरजा ('मरतवा'का बहु०); पदाका; मानका लंब ।

मराबा—स० कि० दे० 'मरबाना' ।

मराबल—वि० मारा, पीटा हुआ; मार खानेवाला—'छठ्ठु सदा तुम मोर मराबल'—रामा०; हरावा हुआ; मरिबल ।

मरार—पु० काछी (छपीसमदर्भ); [सं०] अन्नसंसार ।

मराक—पु० [सं०] राजवंश; एक तरहकी बतख; कारंजव; दादक; काजक; घोड़ा । वि० चिकना ।

मरिह—पु० दे० 'मरिह'; मरह ।

मरिहम—पु० दे० 'मरुहम' ।

मरिह—को० [सं०] काकी मिच ।

मरिहा—पु० दे० 'मिरचा' ।

मरिहम—को० [ज०] इसाकी माता; कुमारी ।—का पंखा—एक सुगंधित घास ।

मरिहक—वि० बहुत दुबका, कमजोर, बेदम ।—ढट्टू—पु० बहुत दुबका, कमजोर घोड़ा ।

मरी—को० बघाई बीमारी, महामारी; प्रेतोंका एक भेद; सागुदानेका पेड़ ।

मरीचि—पु० [सं०] जहाके दस मानसपुत्रोंमें सबसे बड़े जिनकी गणना सप्तविंशति है; किरण; ज्योति; मरीचिका ।

—गर्म—वि० किरणोंवाला । पु० सूर्य । —जक—कोष—पु० सुगन्धना । —माछी (सिन्धु)—पु० सूर्य । वि० जो किरणोंकी माछा पारण किये हुए हो ।

मरीचिका—को० [सं०] सुगन्धना ।

मरीची (सिन्धु)—वि० [सं०] किरणोंवाला । पु० सूर्य ।

मरीज—वि० [ज०] जिसे रोग हो, रोगी ।

मरीजा—वि० को० [ज०] रोगिणी ।

मरीवा—पु० [सं०] 'मेरिचो' एक सुलायम जली कपड़ा ।

मरंदा—को० [सं०] ऊँचे लकड़वाली ली ।

मरु—पु० [सं०] मरुभूमि, रेगिस्तान; मारवाड़; पर्वत; कुश्कक वृक्ष; मरुआ नामक पौधा ।—जाता—को० कोऊ ।

—वेस्त—पु० रेगिस्तान । —द्विप—पु० घंटा । —द्वीप—पु० मरुभूमिमें स्थित हरित स्थान, मरुलिस्तान । —धन्वा—

धन्वा (धन्वा)—पु० मरुभूमि । —धर—पु० मारवाड़ ।

—भूमि—को० रेगिस्तान, जलरहित रेतीला मैदान ।

—मूरह—पु० करीक ।—संभव—पु० एक तरहकी मूर्खी ।

—संभव—को० महेन्द्रवाणी; छोटा जवासा; एक तरहका खरि । —खल—पु० रेतीला मैदान, रेगिस्तान ।

मरुआ—पु० बहरी जैसा एक पौधा; वह लकड़ी जिससे हिंदोला लकड़ाया जाता है—'मरुआ लगे नग ललित लीला सुविधि सिरप संभारि'—सूर; बँहरे ।

मरुह—पु० [सं०] मोर ।

मरुल—पु० [सं०] बाहु; देवता ।

मरुल—पु० [सं०] प्राण; बाहु (इनकी संख्या सात मानी गयी है—उग्र, भीम, पांत, धुनि, सासह, अभिमुख, विशिप); देवता; बायुका अधिष्ठाता देवता; सोना; मरुमा ।

—कर—पु० ऊर ।—समय—सुलु—सुलु—पु० हनुमान् । भीम । —पट—पु० बादवान । —पसि,—पाक—पु० हँद ।

—पय—पु० आकाश । —पूव—पु० सिंह । —फल—पु० ओला । —वर्त्म—पु० आकाश । —सख—पु० अग्नि ।

मरुत्त—पु० [सं०] एक चंद्रवंशी राजा जिसने अनेक बड़े-बड़े सब किये थे; बाहु ।

मरुत्तक—पु० [सं०] मरुमा, नागदीना ।

मरुवली—को० [सं०] बर्मकी पत्नी ।

मरुवाह (वह)—पु० [सं०] हँद; हनुमान् ।

मरुह—'मरुह'का समासगत रूप । —शय—पु० देवगण जिनकी संख्या पुराणोंमें ४९ बतायी गयी है ।—रथ—पु० घोड़ा; देवघर । —बाह—पु० दुर्गा; आग ।

मकरना-अ० कि० मरोना जाना, बल खाना।

मरक-पु० [सं०] कारकव।

मरक-पु० [सं०] मरना।

मरक-पु० [सं०] मरना; व्याघ्र; राहु।

मरका-पु० दे० 'मरना'।

मरक-वि० कठिन। -करि-कठिनाई से।

मरक-पु० मोर; एक तरहका चिरन।

मरक-पु०-जी० [सं०] कपास; जवासा।

मकरा-पु० मरोक, पैठन।

मरोक-जी० पैठन, बल; आँके रोगमें आँतोंमें होनेवाली पैठन, पेशिश; ० क्षोभ; बमर। -फली-जी० पेशिशमें काम करनेवाली एक फली।

मरोकना-स० कि० पैठना, बल देना; उभेठना (कान); मसलना; पीका देना; मरदन मरोककर मार डालना।

मरोका-पु० पैठन, मरोक; पेशिश।

मरोकी-जी० मरोक, पैठन; गीले जाटे आदिकी बची जो हाथोंको मलनेसे बन जाती है।

मरोर-जी० पैठन; गर्ब-सा भू जावत देखिके, मनमें करे मरोर-सा लोभ; पछतावा-‘यों मन माँई मरोर करे जिमि चोर मरे घर पैठन न पावो’-सुधानिधि।

मरोरना-स० कि० दे० 'मरोरना'। मु० हाथ मरोरना-पछताना-‘काहु छुबै न पावे, गये मरोरत हाथ’-प०।

मरक-पु० [सं०] प्राण; देह; बंदर।

मरक-पु० [सं०] मरका।

मरक-पु० [सं०] बंदर; मरका; इलीशा पक्षी; एक रतिबंध; एक स्थावर विष; दोहेका एक भेद; छप्पका एक भेद। -पाळ-पु० सुग्रीव। -पिप्पली-जी० चिचका। -प्रिय-पु० खिरनीका पेड़। -बास-पु० मकरीका जाड़ा। -शीर्ष-पु० शिखर।

मरकटी-जी० [सं०] बानरी; मकड़ी; अजमोदा; कौछ; छत्रके नौ प्रत्ययोंमेंसे अंतिम।

मरक-पु० [मं०] मंगरा।

मरक-जी० [सं०] तहखाना; सुरंग; बंध्या स्त्री।

मरक-पु० [मं०] व्यापारी।

मरक-पु० [मं०] रोग, व्याधि, बीमारी, आजार; आहत, कता; दुःख।

मरु-जी० [मं०] दे० 'मरु'।

मरु-पु० [सं०] बीबी; पीठमर्द। जी० घेना।

मरु, मरु-पु० [सं०] मनुष्य; भूलीक।

मरुका-पु० [मं०] दरजा; पद; बार, दफा।

मरुका-पु० दे० 'मरुका'।

मरु-वि० [सं०] मरणशील, मरकर। पु० मनुष्य। -घमरु(मरु)-वि० मरणशील। -आर-पु० मनुष्य-स्वभाव। -मुखा-पु० किरर जिसका मुँह मनुष्यका और थक पशुका माना जाता है। -लोक-पु० मनुष्यलोक, भूलीक।

मरु-पु० [सं०] मर्दन; [का०] पुरुष, मर; मनुष्य; वीर पुरुष; पति। -आवसी-पु० मका आदमी; बहादुर, मरदाना। -बहा-पु० वीर, बहादुर। -बाह-वि० जी० पुंलक्षी। -(ई) लुवा-पु० मंगवाला मक,

मुदाका बंधा; मका आदमी। -(बै) ब्रज-पु० स्त्री-पुरुष; आम लोग।

मरु-पु० [सं०] मर्दन करनेवाला।

मरु-पु० [सं०] मलना, मांछिष करना; रौदना, कुच-कना; चूर्ण करना; घोंटना; नाश करना।

मरु-सं० कि० मर्दन करना, मांछिष करना; रौदना, कुचकना-‘सक मुनिगण मुकुटमणिको मर्दियो अभिमान’-राम०; गूँथना, माँचना; चूर्ण करना; नाश करना।

मरु-पु० [सं०] मर्दगसे मिलता-जुलता एक प्राचीन जाड़ा।

मरु-जी० [का०] बहादुरी; पुरुषत्व, मर्दानापन।

मरु-वि० [का०] पुरुष-संबंधी, मरुका; पुरुषोचित; बहादुर; जर्बमर्द। पु० मर्दाना बैठक। म० मरुकी तरह, पुरुषोचित प्रकारसे। -बार-अ० मरुकी तरह, बहादुरीसे।

मरु-वि० [सं०] मर्दन किया हुआ, मका, रौदा, कुचका हुआ।

मरु-जी० मर्दानगी; पुंस्त्व।

मरु-पु० पुच्छ पुरुष; वीर मर्द; पति (जी०)।

मरु-पु० [का०] मनुष्य; जनसाधारण; आँखोंको पुतली। -आजारी-वि० लोगोंको सतानेवाला। -आजारी-जी० लोगोंको सताना, मनुष्योंका उत्पीड़न। -जोर-पु० नरमही। -शिनास-वि० आदमीकी बहचानने-वाला। -मुमारी-जी० देशमें रहनेवालोंकी गिनती करना, मनुष्यगणना।

मरु-पु० [का०] आँखोंको पुतली।

मरु-जी० [का०] मर्दानगी; पुंस्त्व।

मरु-पु० [सं०] दे० 'मर्द' (सं०)।

मरु(रु)-पु० [सं०] शरीरका वह नाजुक भाग जहाँ चोट लगनेसे अधिक पीडा हो या तुरत मृत्यु हो जाय, जीवन-न्याय; संविन्याय; तात्पर्य; रहस्य, तत्त्व; गुहायें। -कील-पु० पति। -वा-वि० मर्ममेदी, तीव्र। -बासी-वि० मर्मपर आघात करनेवाला। -ज-वि० अत्यंत कष्टदायी। -छिड़-वि० दे० 'मर्मच्छेदी'। -छेदी(विद्व)-वि० मर्ममेदी। -ज-वि० तत्त्व, गुहायें-को जाननेवाला, रहस्यज्ञ। -पीडा, -श्रम-जी० हृदयमें होनेवाली तीव्र वेदना। -प्रहार-पु० मर्मस्थानपर किया गया आघात। -मेद-पु० रहस्यका उद्घाटन, हृदयका भेदन। -मेद-पु० बाण। -मेदी(विद्व)-वि० मर्मस्थलको छेदनेवाला; अति दुःखद; दिक्को लगने-वाला। -पु० बाण। -ज-पु० दिक्को लगनेवाली बात; गुद बात। -बाक-पु० मेदकी बात, गुद बात। -विद्व-वि० मर्मज्ञ। -मेदी(विद्व)-वि० मर्ममेदी। -खल-वि० शरीरकी नाजुक जगह, जीवन-न्याय। -स्पृष्ट(विद्व)-वि० दिक्को लगने-वाला, मर्ममेदी।

मरु-पु० दे० 'मरु'। [सं०] पत्नी वा पेंके दिक्को होनेवाली आवाज, पत्नीको खरखराहट। -धवि-जी० खरखराहट।

मरु-पु० दे० 'मरु'। [सं०] पत्नी वा पेंके दिक्को होनेवाली आवाज, पत्नीको खरखराहट। -धवि-जी० खरखराहट।

मर्मवित्त-वि० [सं०] जिससे मर्मर ध्वनि हो रही हो।
 मर्मरी-की० [सं०] एक तरहका देवदारु; हल्दी।
 मर्मरीक-पु० [सं०] निर्धन व्यक्ति; दुष्ट नर।
 मर्मरौतक-वि० [सं०] हृदयको छेदनेवाला।
 मर्मापात-पु० [सं०] मर्मसंलक्षण आघात, हृदयपर गहरी चोट लगना।
 मर्मरौतिग-वि० [सं०] मर्मको छेदनेवाला।
 मर्मरौतक-पु० [सं०] रहस्यका पता लगाना, तत्त्वका अनुसंधान।
 मर्मरौति-वि० [सं०] मर्ममेदी।
 मर्माहत-वि० [सं०] जिसके हृदयको कभी चोट पहुँची हो।
 मर्मिक-वि० [सं०] मर्मविद्, रहस्य जाननेवाला; तीक्ष्ण।
 मर्मि-वि० मर्मज्ञ, रहस्य जाननेवाला।
 मर्मरौतक-पु० [सं०] रहस्य प्रकट करना।
 मर्म-पु० [सं०] मर्म्य, अनुसंधान; युवा पुरुष; प्रेमी; कीर्तक।
 मर्म-की० [सं०] सीमा।
 मर्मरौतक-की० दे० 'मर्मादा'।
 मर्मरौतक-की० [सं०] सीमा; नदी, समुद्रका किनारा; अवधि; सीमाका चिह्न; न्याय्य पथमें स्थिति, सदाचार; आचारकी शाखा, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा; प्रसिद्धा (हिं०); समझौता। -गिरि-पु० सीमाका काम देनेवाला पहाड़। -आवध-पु० निपट सीमा या चिह्नकी ओर दीक्षणा। -पाठक-वि० मर्मरौतका पालन करनेवाला। -पुरुषोत्तम-पु० राम। -बंध-पु० सीमाके अंदर रहना। -व्यतिक्रम-पु० सीमोद्धरण।
 मर्मरौतक-वि० [सं०] मर्मरौतका त्याग या उल्लंघन न करनेवाला; सीमाके भीतर रहनेवाला। पु० पक्षीसी।
 मर्म-पु० [सं०] विचार, विमर्श; सुँघनी।
 मर्म-पु० [सं०] रमकना; विचार करना; सकाह देना।
 मर्म-पु० [सं०] सहन, क्षाति, देव।
 मर्म-पु० [सं०] सहना, क्षमा करना।
 मर्मभीष-वि० [सं०] क्षमा करनेके योग्य।
 मर्मित-वि० [सं०] सहा हुआ, क्षमा किया हुआ।
 मर्मि(विन्)-वि० [सं०] सहन करनेवाला, क्षमावान्।
 मर्म-पु० मुसलमान फकीरोंका एक भेद; सफेद रंगका बड़ा रंगक।
 मर्म-पु० [सं०] मैल, गंदगी; क्षीरसे निकलनेवाला मैल-सूत्र, पुरीष, कफ, प्लीहा, लूट आदि; विद्या, गू; कीह आदिका कीट; पाप; दुराई; विकार; बात, पिच, कफ। वि० पुष्ट; गंदा; कुष्ठ। -कर्षण-वि० गंदगी दूर करनेवाला। -ज-वि० मर्मनाशक। पु० सेमलका गुच्छा। -जी-की० नागदमनी। -ज-पु० पीप, मवाद। -वृक्षित-वि० गंदा, मलिन। -द्राक्षी(विन्)-वि० विवेक। पु० जमालगोटा। -हार-पु० गुदा। -बाष्पी-की० बच्चेका मल-मूत्रादि पीने, मरि कपड़े आदि साफ करनेवाली भाव। -धारी(विन्)-पु० एक तरहके जैन साधु जो क्षीरपर मल पीते रहते हैं। -वज्र-पु० चौथ जानेके छिप छूट आदिके नीचे रखा जानेवाला चीनी मिट्टीका पात्र, कमीठ। -वृ-पु० कट्टर। -वृष्ट-पु०

पुस्तकका पहला या बाहरी पृष्ठ। -मार्ग-पु० दे० 'मलपाम'। -मुक्(व्)-पु० कौआ। -मेविषी-की० कुट्टी। -मास-पु० अधिक मास, छौद। -मुग-पु० कलियुग। -रुचि-वि० पापमें रुचि रखनेवाला। -रोषक-वि० जो मलकी रोके, काविज, कम्ब करनेवाला। -वासा-की० ऋतुमयी स्त्री। -विनाशिनी-की० शंखपुष्पी। -विसर्जन-पु० मलत्याग, पाखाना फिरना। -शुद्धि-की० पेटका साफ हो जाना, कोष्ठ-शुद्धि। -हारक-वि० मैल या पापको दूर करनेवाला। पु० गंगी।
 मलक-पु० [अ०] करिश्ता, देवता (मुसल०)।
 मलका-पु० [अ०] अभ्याससे प्राप्त निपुणता। की० दे० 'मलिका'।
 मलकाना-पु० एक राजपूत जाति जो मुसलमान राज्य-कालमें मुसलमान बन गयी। † सं० कि० हिकाना, चकाना (अँग्ले)।
 मलकुलमीत-पु० [अ०] भीतका करिश्ता।
 मलखान-पु० लकड़ीका खंभा जिसके सहारे एक खास कसरत की जाती है; मलखंमपर की जानेवाली कसरत।
 मलखम-पु० दे० 'मलखंम'।
 मलखाना-पु० आक्का-कदलका चनेरा भाई जो बत्सराज-का पुत्र था; दे० 'मलकाना'। * वि० मलमक्षी।
 मलखाना-वि० मल, दूध हुआ, मरगाज। पु० बैंगनके लंबीतरे टुकड़ोंकी पकौड़ी।
 मल-पु० [अ० 'मिलेट'] लकड़ीका हथौड़ा।
 मल-वि० विषा हुआ (पैसा, रुपया इ०)।
 मल-पु० [सं०] मर्दन, मसलना; लेप करना; तंबू।
 मल-सं० कि० मसलना; मालिश करना; मरोड़ना; हाथसे रगड़ना।
 मलनी-की० कुम्हारोंका एक औजार।
 मल-पु० कूड़ा-करकट; गिरे हुए मकानके ईंट-पत्थर, मिट्टी आदि।
 मलमल-की० भारतका एक बारीक, सफेद सुती कपड़ा जो बहुत पुराने जयानेसे प्रसिद्ध था और जिसे बिदेशी भी बड़े चावसे मंगाते थे।
 मलमलाना-सं० कि० बार-बार खोचना, खोचना-बंद करना (अँग्ल, पल्क); * बार-बार आश्रित करना।
 मल-पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक पर्वत जो सात कुलपर्वतोंके अंतर्गत है और जिसपर चंदनके वृक्षोंकी बहुलता है; पश्चिमी घाटका मैसूरके दक्षिण और त्रिवांकूर-के पूर्वमें पड़नेवाला भाग; मलाबार देश; उद्यान; नंदन-कानन; पर्वतका पार्श्व, शीर्षांग; पुराणवर्णित १८ द्वीपोंमेंसे एक। -गिरि-पु० मलय पर्वत; * चंदन। -गिरि-पु० [हिं०] दारचीनीकी जातिका एक वृक्ष। -ज-पु० चंदन; राहु। -जुम-पु० चंदन; मदन वृक्ष। -वासिनी-की० दुर्गा। -समीर-पु० मलय पर्वतकी ओरसे जानेवाली हवा, दक्षिणी वायु।
 मल-की० [सं०] निरोग; बकुली।
 मलवागिरि-पु० दे० 'मलवागिरि'।
 मलवाचक-पु० [सं०] दे० 'मलवागिरि'।

महाबाहिक-पु० [सं०] मलय-समीर ।

महाबाह्य-पु० दक्षिण भारतका एक प्रदेश । श्री० उक्त प्रदेशकी भाषा ।

महाबाही-पु० मलयालममें बसनेवाली एक जाति । वि० मलयालम देशका । श्री० मलयालम देशकी भाषा ।

महाबोध-पु० [सं०] चंदन ।

महाराना-स० कि० दे० 'महाराणा'-'कोऊ दुल्हारवि महारवि कोऊ नुटकी बजावे कोऊ देति करतारै है'-रायसराना ।

महाबाना-स० कि० मलनेका काम कराना ।

महस्ता-पु० एक तरहका कुप्पा जिसमें पी जादि रहते है ।

महाहम-पु० दे० 'महहम' ।

महाहूँ-श्री० दूध वा दहीकी सादी, बालाई; सार भाग; मलनेकी क्रिया; मलनेकी मजदूरी ।

महाकर्षी(वि०)-पु० [सं०] भंगी ।

महाका-श्री० [सं०] कामवती श्री; दूती; हथिनी ।

महाट-पु० मोटा, बढिया कागज जो कागजकी गाँठोंपर लपेटा रहता है ।

महान-वि० दे० 'म्हान' ।

महावि-श्री० 'म्हाति' ।

महावार-पु० दक्षिण भारतका अब सागरके तटपर बसा हुआ प्रदेश । -हिन्दु-पु० बम्बईकी एक पहाड़ी जहाँ धनिकोंका निवास है ।

महावारी-पु० महावारका रहनेवाला ।

महामत-श्री० [अ०] शिष्टकी, पटकार, अर्चना; गहनी ।

महावा-पु० बमोंके दक्षिणमें स्थित एक प्राच्यद्वीप ।

महार-पु० एक राग जो वर्षा ऋतुमें गाया जाता है, मल्लार ।

महारि-पु० [सं०] एक क्षार ।

महारी-श्री० वसंत रागकी एक रागिनी ।

महाल-पु० [अ०] दुःख; विषाद । मु० आना-कितीकी ओरसे चिपका छिन्न हो जाना, मनमें मेल आ जाना ।

महाबोध-पु० [सं०] कञ्ज ।

महासथ-पु० [सं०] बड़ी औतका निचला भाग जहाँ मल रहता है ।

महाह-पु० दे० 'महाह' ।

महाहस-श्री० [अ०] नमकीनी; सजोनापन, सुंदर सौवलापन ।

महिंग-पु० दे० 'मलग' ।

महि-पु० अमर ।

महिक-पु० [अ०] बादशाह, सुल्तान; सरहद और पंजाबके मुसलमानोंकी एक सम्मानजनक उपाधि । -ज्ञादा-पु० शाहजदा । -मुकुञ्जम-पु० सजाद ।

महिका-श्री० [अ०] महारानी; [सं०] दे० 'महिका' ।

महिक, **महिच्छ**-पु० दे० 'म्हच्छ' ।

महिन-वि० [सं०] मैला, मलयुक्त; काला; धूमिल; कदास; पापमें रवि रखनेवाला; क्षुद्र; बीदा । पु० पाप; अद्भुत; सुहागा । -प्रभ-वि० जिसकी प्रभा यकिन हो गयी हो । -मुक्त-वि० उदास । पु० जक्ति; जेत; एक तरहका बदर, गोलगूल ।

महिनता-श्री० [सं०] मैलापन; अद्भुतता; धूमिलत्व; सुहावा ।

महिना-पु० [सं०] स्वादी ।

महिना-श्री० [सं०] रजस्वला श्री; काल खौह ।

महिनाहूँ-श्री० महिनता ।

महिनाना-अ० कि० महिन, मैला होना ।

महिनी-श्री० [सं०] रजस्वला श्री ।

महिम्मुच-पु० [सं०] मलनाम, वायु; अग्नि; चौर; चित्रक वृक्ष ।

महिषामेद-वि० मिट्टीमें मिठा हुआ, लहस-नलस (हो जाना) ।

महिष्ठ-वि० [सं०] अति महिन; पापी ।

महिष्ठा-श्री० [सं०] रजस्वला श्री ।

महिस-श्री० सुनारोंका एक औजार ।

महीरा-पु० चूरमा; कश्मीरमें बननेवाला एक कनी कपडा जो महा जानेके कारण अधिक गरम और गरम होता है । [फा० मालीरा-महा हुआ ।]

महीन-वि० मैला, महिन; उदास ।

महीनता-श्री० महिनता ।

महीमस-वि० [सं०] मैला; काला; पापी । पु० कोड़ा; पीला कसीस ।

महूक-पु० एक चिड़िया; एक कीड़ा । वि० झुंवर । -दास-पु० एक संतकवि ।

महूक-वि० [अ०] उदास, विषादयुक्त ।

महच्छ-पु० दे० 'म्हच्छ' ।

महेरिया-पु० [अ०] बाधा देकर आनेवाला बर जो नयी खोजके अनुसार मच्छरोंके काटनेसे पैदा होता है, मौसमी बुखार ।

महैरा-पु० जाड़ेके दिनोंमें दूधको रातभर ओसमें रखनेके बाद उसमें शकर, केशर इत्यादि की आदि मिलाकर मथनेमे निकला हुआ फेन, नमक ।

महोत्सर्ग-पु० [सं०] मलत्याग ।

महोल-श्री० महोला, महाल-राधे महो हरि धावतेकी भरि कै भुज भेंटिसे मेदि महोलें-देव ।

महोलना-अ० कि० दुःखित होना, पछताना ।

महोला-पु० अरमान; दुःख ।

मह-पु० [सं०] कुदती लकड़नेवाला, पहलवान; एक प्राचीन श्राव्य हथियार जाति; एक प्राचीन जनपद; कपोल; पात्र । वि० बलवार, पट्टा । -श्रीवा-श्री० महयुद्ध । -अ-पु० मिर्च । -दूय-पु० एक तरहका नगाडा । -नाग-पु० पेरारत; बाल्यायनका एक नाम । -भू-भूमि-श्री० अक्षाका । -पुद्-पु० कुदती, बाहुयुद्ध । -विधा-श्री० कुदती । -साक्षा-श्री० अक्षाका ।

महूक-पु० [सं०] दीपक; दीबट; दाँत; नारियलके छिलकेका बना हुआ पात्र ।

महा-श्री० [सं०] श्री; महिका; पक्कड़ी लता ।

महार-पु० [अ०] एक राग, महा ।

महाह-पु० [अ०] कैबट, माशी । [श्री० 'महाहिन' ।]

महाही-वि० महाह-संबंधी । श्री० महाहका पेशा या पद ।

मछि-झी० [सं०] मछिका। -**गंधि-पु०** कनर। -
बाथ-पु० कोलियासकृत और अन्य प्रधान संस्कृत काम्यों-
 के एक प्रसिद्ध टीकाकार (संभाव्य काक १४ बी शती ई०)।
 -**पत्र-पु०** छत्राक।

मछिक-पु० बंगालियोंकी एक उपाधि; एक बंगाली
 (कायस्थ) जाति।

मछिका-झी० [सं०] बेलेंकी जातिका एक सफेद और
 सुगंधित फूल; एक वर्णवृत्त। -**पुष्प-पु०** कुटज वृक्ष;
 कदण वृक्ष; मछिकाका फूल।

मछिकाश; मछिकासम्प-पु० [सं०] एक तरहका हंस
 जिसकी दोंगें और चोंच भूरी होती हैं; घोड़ेकी जाति
 जिसकी आँखोंपर सफेद पन्ने होते हैं।

मछिकामोद-पु० [सं०] तालका एक भेद।

मछिकार्जुन-पु० [सं०] भीमैलपर स्थापित एक शिवलिंग।

मछी-झी० [सं०] मछिका; एक वर्णवृत्त।

मच्छरी-झी० एक तरहकी नाव।

मच्छराना; मच्छाना; मच्छरना०-म० कि० चुमकारना,
 स्नेहसे हाथ फेरना।

मचिकल-पु० दे० 'मुचकिल'।

मचाजिब-पु० [अ०] बंधे समयपर मिलनेवाली बंधी
 रकम; भुति; देय धन ('मुचजब'का बहु०)।

मचाजरी-वि०, अ० दे० 'मुचाजी'।

मचाद-पु० [अ०] मसाला; सामग्री; धान।

मचाकी-पु० दक्षिण भारतकी एक अर्धसम्य जाति; हंस
 जातिका जन।

मचासी-पु० [अ०] दे० 'मवेशी' ['माशिया' (चौपाया)-
 का० बहु०]।

मचास-पु० गद, दुर्ग; आश्रयस्थान; किलेके परकोटे आदि-
 पर छोटे बोंस।

मचासी-झी० छोटा गद। पु० किलेदार, नायक।

मवेशी-पु० दूध, बंगर; दूध देने या बोझ देनेके काम
 आनेवाला चौपाया। -**झाना-पु०** मवेशी रखनेका
 बाड़ा; वह बाड़ा जिसमें दूसरेका खेत चरनेवाली मवेशी
 बंद किये जाते हैं।

मस-पु० [सं०] मच्छर; क्रोध।

मसक-झी० [का०] मेढ़ वा बकरीकी खालकी सीकर
 बनाया हुआ पैदा जिससे मिश्री पानी डोते हैं। पु० [सं०]
 मच्छर; मस्सा; शाकटिकाका एक प्रदेश। -**कुटी-झी०**
 मच्छर बाँकनेकी चोरी। -**हरी-झी०** मसहरी।

मसकी(किन्)-पु० [सं०] गूलरका पेड़।

मसकूक-वि० [अ०] मिसपर शक किया गया या किया
 जाता हो, संश्रिय।

मसकूर-वि० [अ०] जिसका शुक किया गया हो; शुक-
 गुजार; कुत्ता।

मसकूरल-झी० [अ०] अम; मेहनत; कठोर अम।

मसकूरली-वि० मसकूर करनेवाला, मेहनती।

मसाका-पु० [अ०] शराब; काम; मन बहलानेका काम,
 दिलपहकाव।

मसाकू-वि० [अ०] किसी शराब या काममें लगा हुआ,
 कार्यरत।

मसरब-पु० [अ०] दे० 'मुसरब'।

मसारिक-पु० [अ०] पूरन, वह विद्या जिहार खरज
 निकलता है।

मसारिकी-वि० पूरनी।

मसाक-पु० रेशम और धत मिलकर बुना जानेवाला एक
 घाटीदार कपड़ा।

मसबरा-पु० [अ०] मंत्रणा, सलाह; साजिश।

मसबिरा-पु० दे० 'मसबरा'।

मसाहूर-वि० [अ०] जिसकी शूहरत हुई हो, प्रसिद्ध, नामी।

मसान-पु० दे० 'मसान'।

मसाह-झी० [अ०] लंबी गोल लकड़ीके सिरे या लोहेकी
 सलासपर कपड़ा लपेटकर बनायी हुई मोटी बत्ती जिसे
 तेकसे तर कर ब्याह-बरात आदिमें जलाते हैं (नेस कैपोंके
 चलनेसे अब इसका रिवाज ठठसा रहा है)। -**झी-पु०**
 मशाह दिखानेवाला। **मु०-छेकर** हँड़ना-साबधानीसे
 हँड़ना, अन्धरी तरह सलाह करना।

मसीधत-झी० [अ०] रोखी, पनड। **मु०-बधारना-**
 लंबी-चौड़ी बातें करना, बौंग मारना।

मशीन-झी० [अ०] यंत्र, कल। -**गज-झी०** चक्राकार
 बंदूक जिससे लगातार सैकड़ों गोलीयें छूटती हैं। -**मैम-**
 पु० मशीन चलानेवाला कर्मचारी; प्रेसमैन।

मशीनरी-झी० [अ०] किसी कारखाने आदिकी सब तरह-
 की मशीनें, यंत्र-समष्टि; किसी यंत्र या वस्तुके कल-
 पुरजे।

मसक-पु० [अ०] किसी कामका अभ्यास, रगत, कुशाग्रता-
 प्राप्तिके लिए किसी कामकी बार-बार करना।

मसका-वि० [अ०] मसक रखनेवाला, अभ्यस्त।

मसकाही-झी० अभ्यस्तता, निपुणता।

मसकाता-झी० [अ०] खिचोका बनाव-सिंघार करनेवाली
 झी, प्रसाधिका।

मच-पु० दे० 'मस'।

मचि-झी० [सं०] दे० 'मसि'।

मपी-झी० [सं०] दे० 'मसि'।

मस-वि० चुप, मौन। **मु०-करना-चुप** करना, चुप
 होना। -**मारना-चुप** रहना।

मस-पु० [सं०] तौल, माप; [अ०] स्पर्श; छूना; संभोग।
 झी० [हिं०] घूँझोका आरम्भिक, रोमाञ्चक रूप; † दे०
 'मसि'। **मु०-(सँ)** भीजना या भीगना-घूँझोका
 लगना, निकलने लगना।

मस-पु० मच्छर। -**हरी-झी०** जालीदार कपड़ेका
 परदा जो मच्छरोंसे बचनेके लिए मसहरीके ऊपर लगाया
 जाता है; वह पलंग जिसके पाथोंमें मसहरी लगानेके
 लिए बडे कने हो।

मस-मांस का समासमें व्यवहृत कबु रूप। -**सबा-वि०**
 मांस खानेवाला। -**हार-वि०**, पु० दे० 'मांसा-
 हार'।

मस-मांस का समासमें व्यवहृत कबु रूप। -**बास-पु०**
 मसलाका प्रसवके एक महीने बादका स्थान। -**वासी-**
 पु० साधु-सम्न्यासी जो एक जगह एक महीनेसे अधिक
 न रहे। झी० एक पुरुषके साथ एक महीनेसे अधिक न

रहनेवाली थी, वेदवा ।

मसक-पु०, की० दे० 'मसक'—'मिज गौरव अनुसार विविध मसक उपाधि: अकास'—राम० ।

मसकस-की० दे० 'मसकृत' । पु० अरब देशका एक नगर जहाँका अनार भारतमें आकर इसी नामसे बिकता है; बहोसे आनेवाला अनार ।

मसकना-अ० कि० दबाव या तनावसे दरकना; कपड़ेका इस तरह फटना कि ताने-बानेमेंसे किसीके तार साधित न रहें; (चिपका) मसौसना, विवशताकी पीड़ा अनुभव करना । स० कि० दबाकर या तानकर फाटना, दरार डाल देना; मसकना ।

मसकरा-वि०, पु० दे० 'मसकरा' ।

मसकना-पु० [अ०] सिकलीगरीका एक औजार ।

मसका-पु० मसकना; दहीका पानी; बँधा हुआ पारा; * मच्छर—'मसका कहत मेरी सखरि कौन उधै'—झुंढ० ।

मसकीन-वि० दे० 'मसकीन' ।

मसझर-वि० [अ०] हँसीक, परिहासप्रिय । पु० हँसी-मजाक पसंद करनेवाला, परिहासप्रिय व्यक्ति; विद्वक् ।
—एक-पु० ठट्टेवाली, हँसीपण ।

मसखरी-की० मसखरापन ।

मसजिद्-की० [अ०] सिजदा करनेकी जगह, उपासना-स्थल, वह इमारत जिसमें मुसलमान इकट्ठा होकर नमाज पढ़ते हैं । मु०—में चिराग जलाना—मजत पूरी करनेके लिए मसजिदके ताकोंमें दीये जलाना ।

मसन-पु० [स०] ठोकना, माप करना; ओषधि; चोट ।

मसनद्-पु० [अ०] गरी; बड़ा तकिया । —नसी-वि० मसनदपर बैठनेवाला । पु० राजा; बादशाह; अमीर । —का गधा—मुल्ल अमीर ।

मसनबी-की० [अ०] उर्दू-फारसीका वह प्रबंधकाम्य जिसके हर शेरके दोनोँ मिसरोंका काफिया एक, पर हर शेरका काफिया जुदा हो ।

मसनूई-वि० [अ०] बनाबी, कृत्रिम ।

मसमुद्-पु० भक्तमथका ।

मसबारा-पु० मशाल ।

मसरना-न० कि० मसकना—'जुँवर कान्ह जमुनामें न्हात । मसरत सुमंग लौंवे गात'—धन० ।

मसरक-पु० [अ०] सर्प (खच्च) करनेकी जगह, मौका; काम; उपयोग ।

मसरफ़ी-वि० जो व्यवहारमें आता हो ।

मसरा-की० [सं०] मसर ।

मसरू-पु० दे० 'मशरू' ।

मसरूका-वि० [अ०] चुराया हुआ, चोरीका ।

मसरूक-वि० [अ०] सर्प किया गया; काममें लगा हुआ ।

मसल-की० [अ०] कड़ावत, लोकोक्ति; मिसाल ।

मसकसि-की० दे० 'मसकहत'—'बैठे हकले जाह करन मसकति भली'—सुजान० ।

मसकन-की० मसकनेकी क्रिया, रगड़, रगड़न—'मैं वह हकली-सी मसकन हूँ जो बनती कानोंकी लाली'—कामा-दनी ।

मसकना-स० कि० किसी नरम चीजको दबाकर मसकना,

रगड़ना; रगड़ना ।

मसकन्-अ० मिसालके तौरपर; उदाहरणरूपमें ।

मसकहत-की० [अ०] धितकर सहाह; धित, भलाई; धितकी दृष्टि, नीति । —अंधदेश-वि० मसकहत सोचने-वाला, धितका विचार करनेवाला । —(ले)बहस-की० वह जो सामयिक आवश्यकताकी दृष्टिसे कतय्य हो, समयका आदेश ।

मसकहतन्-अ० (मसकहत—धित) लाभकी दृष्टिसे ।

मसखा-पु० [अ०] सवाल, प्रश्न; पूछने योग्य बात; विषय (मजहबी मसल), समस्या । मु०—हक होना—उलझन, कठिनाईका दूर हो जाना या उसका उपाय मिल जाना ।

मसबाली-पु० दे० 'मस' (मांस)के साथ ।

मसबिदा-पु० दे० 'मसीदा' ।

मसहार-वि०, पु० दे० 'मस' (मांस)के साथ ।

मसा-पु० दे० 'मसा' ।

मसान-पु० मुरदे जलानेका स्थान, इमशान, मरफट; बच्चोंको होनेवाला एक तरहका सूखा; * रणभूमि । मु०—जगाना—शवसाधन करना ।

मसाना-पु० [अ०] पेशाबकी वैली, मूलाशय ।

मसानिया-पु० मसान जगानेवाला; ओहा; होम ।

मसानी-वि० मसान जगानेवाला । की० मसानमें रहने-वाली पिशाचिनी आदि ।

मसाल-की० दे० 'मशाल' । —की-पु० दे० 'मशालकी' ।

—हुम्मा-पु० एक चिथिया ।

मसालह-पु० [अ०] खुशियों, भलाई (मसकहतका बहु०); मसाला ।

मसालहत-की० [अ०] मुल्ल करना, मेल-मिलाप, सम-होता ।

मसाला-पु० वह सामग्री जिससे कोई चीज बनायी जाय या कार्य संपन्न किया जाय (मकान बनानेका मसाला, अल्लवारका मसाला, बरतन जोड़नेका मसाला इ०); गुण, स्वाद आदि बढ़ानेवाली सामग्री (दाल, तरकारी, पना आदिका मसाला), धनिया, लौंग, मिर्च इ०; साधन, सामान (दिल्लीका मसाला) । —(ले)द्वार-वि० जिसमें मसाला पका हो (—तरकारी) । —का तेल—झुगधित द्रव्योंके योगसे बनाया हुआ तेल ।

मसाहत-की० [अ०] नापना, पैमाइश; ध्वनमिति ।

मसाहति-की० दे० 'मसाहत' ।

मसिद्-पु० वह लंबा रस्ता जिसमें जहाजका लगर उठाया जाता है ।

मसि-की० [सं०] स्वाही, रोशनाई; कालिख; काजल; मिट्टीकी; * मूछोंका आरम्भिक रूप । —कूपी-की० दवात । —अल-पु० स्वाही । —जीवी(विन्)-वि०, पु० लेखनकार्य द्वारा जीविका चकनेवाला । —धान-पु०, —धानी-की० दवात । —पण्ड-पु० लेखनोपजीवी, लेखक । —एक-पु० कलम । —पात्र-पु० दवात । —प्रसू-की० कलम; दवात । —मुल्ल-वि० काले मुँह-वाला । —नर्ण-वि० रौशनाईके रंगका, काला । —विन्दु-पु० दिठोना ।

मसिक-पु० [सं०] लोपका विल ।
मसिका-झी० [सं०] गिरुंही; नील रोफाफिका ।
मसित-वि० [सं०] चूर किया हुआ ।
मसिवर, **मसिबार**-पु० मशाल ।
मसिबाना-अ० क्रि० भर जाना ।
मसिबारा-पु० मशालची ।
मसी-झी० [सं०] दे० 'मसि' ।
मसीका-पु० माथा ।
मसीत, **मसीद**-झी० मसजिद-'मोंगकै खेबो मसीत-को सोइबो'...-कविता० ।
मसीना-झी० [सं०] मलसी ।
मसीह-पु० [अ०] ईसाई धर्मके प्रवर्तक ईसा । -इम,
 -मक्रस-वि० दे० 'मसीहाधम' ।
मसीहा-पु० [फा०] मसीह; मुर्देको जिंदा देनेकी शक्ति रखनेवाला । -ई-झी० मुर्देको जिंदा करने, जीवनदान करनेकी शक्ति, चमत्कार । -इम,-मक्रस-वि० जिसमें ईसाकी तरह मुर्देको जिंदा कर देनेकी सामर्थ्य हो (ईसाइयोंकी विश्वास है कि ईसा फूँक मारकर मुर्देको जिंदा कर देते थे) ।
मसीही-वि० मसीहका । पु० मसीहको माननेवाला, ईसाई ।
मसुर-पु० [सं०] दे० 'मसूर' ।
मसुरिया-झी० दे० 'मसुरिका' ।
मसुरी-झी० दे० 'मसूर' ।
मसू-झी० कठिनाई ।
मसूबा, **मसूबा**-पु० दाँतोंके नीचेऊपरका मांस ।
मसूर-पु० [सं०] दाढ़के काम आनेवाला एक जल जो रबीको फसलमें बोया जाता है ।
मसूरक-पु० [सं०] तकिवा ।
मसूरा-झी० [सं०] मसूर; वैद्या; * मसुरकी बरी ।
मसूरिका-झी० [सं०] चेचकका एक भेद जिसके दाने बड़ी मातासे छोटे, मसुरकी दाढ़के बराबर होते हैं; कुटनी ।
मसूरी-झी० [सं०] मसूरिका ।
मसूस, **मसूसन**-झी० मन मसोसनेका भाव, अतन्व्यता -'बाह नवेति न रुसिचो जानति भीतर भीन मसूसनि रोवै'-रस० ।
मसूसना-अ० क्रि० दे० 'मसोसना' ।
मसूण-वि० [सं०] विकना; मुलायम; चमकदार ।
मसूणा-झी० [सं०] मलसी ।
मसेबरा-पु० मांसकी बनी चीजें ।
मसोसना-अ० क्रि० दवाना, मरोड़ना; दुःख, आकांक्षा आदिकी (किसी विषयतावश) भीतर ही भीतर दबा रहना, मन ही मन दुःख करना, घँटना ।
मसोसा-पु० मसोसनेका भाव, दुःख, कुढ़न ।
मसोसा-पु० [अ० 'मसलदा'] दुहरानेके लिए लिखित-अक्षीपित-लेख; खरी; पुस्तकादिका मूल लेख; मनवश ।
 -नबीस-पु० मसोसा बनानेवाला । - (रे)बाज़-वि० युक्ति सोचनेवाला, चालाक । सु० -गौड़ना-मजमून बनाना; मनवश बौधना ।

मसकर-पु० [सं०] बौंस; बोला बंसि; गति; हान ।
मसकरी-झी० दे० 'मसकरी' (अपव) ।
मसकरी (रिम्)-पु० [सं०] सन्धासी, चतुर्भुजमी; चंद्रमा ।
मसका-पु० दे० 'मसका' ।
मसकरा-वि० पु० [अ०] दे० 'मसकरा' ।
मसिजद-झी० [अ०] दे० 'मसजिद' ।
मस-वि० नशेमें चूर, मत्त, मत्तबाला; बेफिक, बेपरवा; प्रसन्न; जिससे मस्ती टपके, मदमरा (नयन); मस्तीपर आया हुआ, कामबश, जिसकी संभोगेच्छा प्रबल हो रही हो; [सं०] कँचा । पु० सिर । -दाह-पु० दैवदाह ।
 -मूल-पु० गरदन ।
मसक-पु० [सं०] सिर, माथा । -मूलक-पु० गरदन ।
 -मूल-पु० सिर-दर्द । -स्नेह-पु० दिमाग ।
मसगी-झी० [फा०] एक तरहका गोंद जो दवाके काम आता है ।
मस्ताना-वि० मस्त; मस्त जैसा । अ० क्रि० मस्त होना, मस्तीपर आना ।
मसि-झी० [सं०] तौल, माप ।
मसिक-पु० [सं०] मस्तक ।
मसिष्क-पु० [सं०] भंजा, दिमाग । -खब् (ख्)-पु० मेजेके ऊपरकी सिली ।
मसी-झी० मस्त होनेका भाव, मत्तबालापन, नशा; नवानीका नशा; काम, संभोगेच्छाकी प्रबलता; गर्ब; वह पानी जो हाथी, ऊँट आदिके मस्त होनेपर उनकी कन-पटी, गरदन आदिसे टपकता है; मय; कुछ इश्वरसे विशेष अवस्थाओंमें टपकनेवाला पानी । सु० -झाड़ना-मस्ती उतरना, दूर होना, अलू ठिकाने आना । -झाड़ना-मस्ती (नशा, गर्ब) दूर कर देना । -पर आना-मस्त होना ।
मस्तु-पु० [सं०] दहीका पानी; छेनेका पानी ।
मस्तुलुंग-पु० [सं०] दिमाग ।
मस्तूल-पु० [पुर्त०] नाव, जहाजके बीचमें गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा जिसमें पाल बाँधा जाता है ।
मस्ता-पु० शरीरपर दानेके रूपमें उमरा हुआ मांसपिंड; बवासीरकी बीमारीमें गुगके बाहर और भीतर निकल आनेवाला दाना ।
महँ-अ० में ।
महँगा-वि० जिसके दाम अधिक या उचितसे अधिक हों, गरी । -ई-झी० महँगी; महँगीका भत्ता ।
महँगी-झी० महँगा होना, गरीबी; आवश्यक वस्तुओंकी दुर्लभता ।
महँ-पु० मठाधीश, साधु-सपका मुखिया; मुखिया ।
महँसी-झी० महँतका पद या कार्य ।
मह-वि० महत्, बड़ा । अ० दे० 'महँ' । -राज्य,-राजा-पु० दे० 'महाराज' । -राजा-पु० दे० 'महाराजा'; दे० क्रममें ।
मह(ख्)-[सं०] दीप्ति; उत्सव; बलि; यज्ञ; महत्ता; शक्ति; आनंद; प्रचुरता; बल ।
महक-झी० गंध, वास । -दाह-वि० महकनेवाला, सुगंधदार ।

महकना-अ० कि० महक देना, वास आना ।

महकवि-अ० महक ।

महकमा-पु० [अ०] दुबम करनेकी जगह; कचहरी; विभाग, सरिस्ता ।

महकान-अ० गंध, वास ।

महकीका-वि० महकदार ।

महकूम-वि० [अ०] जिसे हुकम दिया गया हो; अभीन; शासित ।

महक-वि० [अ०] खालिस, निरा; फेंकल, फकत; सरा-सर (म० बेवकूफी) ।

महकूर-पु० [अ०] हाजिर होनेकी जगह; वह साक्ष्यपत्र जिसपर बहुत-से लोगोंके हस्ताक्षर हों । -नामा-पु० किन्ही हला आदिके सर्वथमें लिखाया गया साक्ष्यपत्र या श्रावतनामा जिसपर आस-पासके बहुत-से लोगोंके हस्ताक्षर हों ।

महजिद-अ० दे० 'मसजिद' (हरिश्चंद्र) ।

महजान-पु० [स०] दे० 'महाजन' ।

महत्-पु० महत्त्व । अ० प्रतिष्ठा-‘बचन कठोर कहत, कहि दाहल अपनी महत् गैबावत’-सूर ।

महत्तवान-पु० कार्यमें पीछेकी ओर लगी हुई छेदी ।

महत्ता-पु० गाँवका मुखिया, महतो; सुसी, सुहारिर ।

* अ० अपनेकी वक्ता मानना; गर्व ।

महताब-अ० [फा०] चौदनी; महताबी । पु० चौद ।

महताबी-अ० [फा०] एक तरहकी आतिशबाजी जिसके छूटनेपर सफेद रोशनी निकलती है; चौदनीका आनंद लेनेके लिए बनाया गया चबूतरा, (नहर आदिके किनारे) बारहदरी आदि ।

महतारी-अ० माता ।

महती-वि० अ० [म०] दे० 'महत्' । अ० नारदकी बीणा; महत्ता; वनमदा । -द्रावरी-अ० आद्रपद-छुका द्रावरी ।

महतु-पु० महत्त्व, वक्ताई-‘बुदावन जजको महतु कापै वरन्यो जाई’-सूर ।

महतो-पु० प्रमुख कृषक; गाँवका मुखिया; कुछ कुलोंकी उपाधि ।

महत्-वि० [स०] वक्ता, वृहत्; श्रेष्ठ; ऊँचा; भारी; तीव्र; प्रधान । [अ० 'महती'] -कथ-वि० चापकूट । -तत्त्व-पु० प्रकृतिका प्रथम विकार, बुद्धितत्त्व (सा०) ।

महत्त्व-वि० [स०] सत्ये वक्ता । -समापवर्तक-पु० वह वक्ता संख्या जिसका भाग दो या अन्य संख्याओंमें पूरा-पूरा जा सके ।

महत्तर-वि० [स०] (दो पदावयों, विषयों आदिमें) अधिक वक्ता । पु० प्रधान पुत्र; गाँवका मुखिया; दरबारी; शूद्र ।

महत्तरक-पु० [स०] दरबारी, मुसाहब ।

महत्ता-अ० [स०] बहप्पन; महिमा; गुरुता; उच्च पद ।

महत्त्व-पु० [स०] बहप्पन, महत्ता; गुरुता; वजन; अधिक परिणाम-जनक, अधिक आवश्यक होना; श्रेष्ठता । -पूर्ण, -युक्त, -शास्त्री(विद्व) -वि० महत्त्वका ।

महत्वाकांक्षा-अ० [स०] वक्ता वजनेकी आकांक्षा ।

महवी-पु० [अ०] पथ-प्रवर्णक, रहनुमा; मुसलमानोंके

बारहवै इमाज जो प्रलयकाळके कुछ पहले प्रकट होते ।

महवृद्-वि० [अ०] जिसकी हद चौध दी गयी हो, सीमित; नियत ।

महवृ-‘महवृत्ता समासगत रूप । -आवास-पु० बहुत छाँवा चौथा मकान । -आवास-वि० ऊँचे मन, विचार-वाला । -आशय-पु० बनेका आशय । -गुण-वि० जिसमें महान् पुत्रके गुण हों । -बारूनी-अ० एक लता, महेंद्रवारणी ।

महव-पु० दे० 'मधन' ।

महमा-स० कि० दे० 'मधन' ।

महनिबा-पु० मधनेवाला ।

महनीय-वि० [स०] पूजनीय, सम्मान्य; महिमा-मंथित, गौरवपूर्ण ।

महनु-पु० मधन करनेवाला; नाश करनेवाला ।

महफिल-अ० [अ०] आदमियोंके जमा होनेकी जगह; जलसा, समा; नाच-रंगका जलसा । सु०-जममा-जलसा लगना, जलसेका रंग जमना ।

महफूज-वि० [अ०] जिसकी शिकायत की गयी हो, रक्षित, निरापद ।

महवृत्त-वि० [अ०] प्यारा, प्रेमपात्र ।

महवृत्ता-वि० अ० [अ०] प्यारी, प्रेमिका ।

महमत्त-वि० मदमत्त-‘मन कुंजर महमत्त था, फिरता गहिर गैरीर’-साखी ।

महमद-पु० दे० 'मुहम्मद' ।

महमदी-वि०, पु० दे० 'मुहम्मदी' ।

महमद-अ० महकते हुए, सुवास-सहित ।

महमद-वि० महकता हुआ, सुघबूदार-‘सुस कस्तूरी महमदी बाणी फूटी वास’-कबीर ।

महमदना-अ० कि० महकना; सुगंध बखेरना ।

महमा-अ० दे० 'महिमा' ।

महमान-पु० दे० 'मैहमान' ।

महमिक-पु० [अ०] ऊँटकी पीठपर रखनेका परदेदार हौदा ।

महमूद-वि० [अ०] जिसकी हमद-प्रशंसा की गयी हो, स्तुत, प्रशस्त । [अ० 'महमूदा'] -शज्जन्वी-पु० गजनीका एक इतिहास-प्रसिद्ध मुसलमान सरदार जिसने भारतपर १७ हमले किये थे ।

महमूरी-अ० [फा०] एक तरहकी मलमल; चौदीका एक पुराना सिक्का ।

महमेज-अ० [अ०] सवारोंके जूतेकी एड़ीपर लगा हुआ एक तरहका कौटा जिससे घोड़ेकी एक लमाते है ।

महम्मद-पु० दे० 'मुहम्मद' ।

महम्मदी-वि०, पु० दे० 'मुहम्मदी' ।

महर-वि० सुगंधित, महकता हुआ । पु० मुखिया; जज-मंडलमें प्रत्येक एक आदरस्वक उपाधि; नंद; एक पक्षी; कहार; [अ०] वह धन या संपत्ति जो मुसलमान वर निकाहके समय कन्याकी देता या देनेका वचन देता है । सु०-बख्शवान-पत्तिका कब-मुनकर पक्षीसे महर माफ करा लेना । -बाँवना-महरकी रकम नियत करना ।

महर्ष-वि० [अ०] मेद जाननेवाला । पु० विकट संबंधी जिससे (सुखमान कन्या या स्त्रीका) ब्याह जायज न हो-नाप, भारी, नाचा इ०; वह पुरुष जिससे परदा जायज न हो-पति, देवर इ० । स्त्री० अंगियाकी कठोरता अंगिया ।-(**मे**)राज्ञ-वि० भेरी ।

महारा-पु० कटार । वि० बका; मुखिया । -ई०-स्त्री० महारापन, प्रधानता ।

महाराज-पु० महारानी वल्ली, गाँव; नंदके रहनेकी जगह; दे० 'मह'में ।

महाराज-स्त्री० दे० 'महाराज' ।

महारी-स्त्री० स्त्रीके लिए आदरसूचक उपाधि (ब्रज); यथोदा; गृहस्वामिनी; स्वाकिन पत्नी ।

महारी-स्त्री० कटारिन; स्वाकिन पत्नी ।

महर्ष-वि० [अ०] रीका गया, बजित; निषिद्ध; बंघित; धीन (किसी वस्तुसे); बेनसीब; नाकामी ।

महर्ष-स्त्री० महर्षम होना; बेनसीबी; नाकामी ।

महरेदा-पु० महरका वेदा; कृष्ण ।

महरेदी-स्त्री० महरकी बेटी; राधिका ।

महर्षता-स्त्री० [सं०] दे० 'महापंथा' ।

महर्षक-पु० [सं०] ऊपरके सात लोकोंमेंसे चौथा ।

महर्षि-पु० [सं०] बहुत बड़ा कवि, परमर्षि (स्वास्, नारद आदि); ब्रह्मके दस मानसपुत्र वा प्रजापति (मरीचि आदि) ।

महर्षिका-स्त्री० [सं०] मदकटैया ।

महल-पु० [अ०] उत्तरनेकी जगह; बड़ा मकान; राजा-रहसका मकान, प्रासाद; मौका, बत्त; पत्नी, वेगम (दूसरे महलसे दो बेटे हैं) । -दार-पु० मकानका प्रबंध और रखक । -सरा-पु० जनानखाना, अंतःपुर । -ले)प्रास पु० बड़ी वेगम, पटरानी ।

महल्ला-पु० [अ०] शहर या कसबेका एक भाग, टोला; महल्लेके लोग । -ले)दार-पु० महल्लेका चौपरी ।

महशार-पु० [अ०] लोगोंके हकड़ा होनेकी जगह; कयामतका दिन, प्रलयकाल; भारी उपद्रव, हंगामा । सु०-बरपा होना-भारी उपद्रव मचना ।

महस्सिक-पु० [अ० 'मुहस्सिक'] बखल करनेवाला ।

महस्स-वि० [अ०] हसर किया गया, जिससे ईश्या की जा रही हो । पु० बजरी पठानोंकी एक शाखा ।

महसूर-वि० [अ०] जिसका हिसाब कर लिया गया हो, परिगणित; मिनहा किया हुआ ।

महसूर-वि० [अ०] बेरा हुआ, बेरेमें यका हुआ ।

महसूल-वि० [अ०] रासिल किया हुआ, सगृहीत । पु० कर; राजस्व; मालगुजारी; किराया ।

महसूली-वि० जिसपर महसूल लगे; बैरंग ।

महसूस-वि० [अ०] धार्मिकियोंमेंसे किसीके द्वारा अनुभूत (विषय); हात; प्रकट । सु०-करना-होना-अनुभव करना, होना ।

महसूसत-पु० [अ०] इशियमाक्ष विषयोंकी समष्टि ।

महसूख(बल), महसूली(विष्)-वि० [सं०] तेजोयुक्त; दीर्घिमान्; महान् ।

महर्ष-अ० दे० 'मह' ।

महाप-वि० [सं०] महाकाय, भारी-भरकम । पु० ऊँट; गोलरु; रक्त चित्रक पौधा; एक तरहका चूहा; शिव ।

महाप-पु० [सं०] एक पर्वत ।

महाप-पु० [सं०] शत्रु; शिव ।

महापकार-पु० [सं०] निषिद्ध अपकार; घोर अज्ञान ।

महापुत्र-पु० [सं०] बहुत बड़ी संख्या; एक अरब ।

महा-पु० मट्टा । स्त्री० [सं०] गाढ़ा गोपबद्धी । 'महर्ष' शब्दका समासगत रूप । -अहि-पु० शेषनाग । -कंद-पु० लहसुन; प्याज । -कंदु-पु० शिव । -कण्ठ-पु० सशूद्र; वरुण; एक पर्वत । -कपित्थ-पु० बैकका पेड़; काल लहसुन । -कपोत-पु० एक जहरीला साँप । -कर-वि० लंबे हाथोंवाला; जिसमें अच्छी आय हो । पु० एक नौबिसव ।

-कर्ण-पु० शिव; एक नाम । -कला-स्त्री० शुद्ध पक्षकी द्वितीयाकी रात । -कल्प-पु० ब्रह्मकल्प । -कवि-पु० बहुत बड़ा कवि; महाकाव्यका रचयिता; झुकावाय ।

-कांत-पु० शिव । -कांता-स्त्री० धरती । -काश-वि० भारी-भरकम झरीवाला । पु० शिवका एक अनुचर; हाथी । -कासिकी-स्त्री० कासिकी पूर्णिमा । -काल-पु० अखंड, अनंत काल; शिवका सहायकारी रूप, रुद्र; उज्जैनमें स्थापित प्रसिद्ध शिवलिंग जो १२ ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक है; शिवका एक अनुचर; एक लता । -पु० उज्जैन ।

-काली-स्त्री० दुर्गाका एक भयानक रूप, रक्षापी । -काव्य-पु० बड़ा काव्य; आठ या इससे अधिक सर्गोंवाला वह प्रबंधकाव्य जिसमें विविध कर्तुओं, दृश्यों आदिका वर्णन हो और जिसमें सभी रसों तथा विविध छंदोंका समावेश हुआ हो । -कुमारा-पु० राजाका सबसे बड़ा बेटा, युवराज । [-कुमारामाख-पु० युवराजकी मन्त्रणासमाका प्रधान ।] -कुल-पु० उच्च कुल; वह श्रोत्रियकुल जिसमें दस पीढ़ियोंमें वेदाध्ययन होता आ रहा हो । वि० उच्च कुलमें उत्पन्न । -कुलीन-वि० ऊँचे कुल, धरातमें जनमा हुआ । -कुट्ट-पु० गलित कुट्ट । -कुण्ड-पु० भारी तपस्या, विष्णुका एक नाम ।

-कुण्ड-पु० जहरीला काला साँप । -केतु-पु० शिव । -कोशल-पु० दक्षिण कोशल, आधुनिक मध्यप्रदेशका बिंदीमापी भाग । -कोशा-स्त्री० एक नदी । -कलु-पु० बड़ा बूझ-अधमेय, राजस्व आदि । -कम-पु० विष्णु । -कषेय-पु० शिव । -क्षीर-पु० ईश । -खर्ब-पु० सौ खर्बकी संख्या । -गंगा-स्त्री० महाभारतमें वर्णित एक नदी । -गंध-पु० हरिचन्दन; कुटज; जलवेत । वि० तीव्र गंधवाला । -गंधा-स्त्री० नागबला; केवड़ा; चामुष्का । -गज-पु० दिग्गज । -गजपति-पु० मगेशका एक रूप; शिवका एक अनुचर । -गव-पु० कठिन रोग; ऊँट । -गर्भ-पु० विष्णु, शिव । -गह-वि० लंबी गर्दनवाला । -गुण-वि० अति गुणकारी (शेष) ।

-गुरु-पु० श्रेष्ठ पुरुषजन-माता, पिता और आचार्य । -गुह्य-स्त्री० सोमलता । -गोवा-स्त्री० अनंतमूल । -गौरी-स्त्री० दुर्गा । -ग्रंथ-पु० बड़ा ग्रंथ, अधिक महत्वका ग्रंथ । -ग्रह-पु० राहु । -ग्रिह-पु० ऊँट; शिव । -बूझ-स्त्री० मल । -भूत-पु० बहुत पुराना ची । -बोध-वि० बहुत जोरकी आभाषणा । पु० भारी

हस्ता; बाजार । -बोधा-की० काकहासिणी । -बन्धु-
 पु० बँचका साग । -बन्ध-पु० बन्धूत शिबका एक
 अनुचर । -बन्धा-की० चामुण्डा । -बन्धवर्ती(सिन्धु)
 -पु० सार्वभौम नरेश, सम्राट् । -बन्धु-की० विशाख
 सेना । -बन्ध-पु० बन्धुत्व । -बिभ्रा-की० महा-
 मेदा । -बिबीर-पु० कमळा नील । -बन-पु० भेडजन,
 बका आदमी; वाति या भेणी-विशेषका मुखिया; जनसमूह,
 जनता; देन-लेन करनेवाला, साहूकार । [-बन्वी-की०
 [हि०] महाजनका पेशा, रुपयेका लेन-देन ।] -बन-वि०
 बहुत बका विनेता । -बन्ध-पु० समुद्र । -आखी-की०
 पीताघोषा; राजकोषातकी । -बिह्व-वि० जिसकी जीन
 बहुत लंबी हो । पु० शिव; एक दैत्य । -झापी(सिन्धु)-
 वि० बहुत बका झानी । पु० महासुनि; शिव । -ज्योति-
 (स्)-पु० सूर्य; शिव । -ज्योतिष्मती-की० बड़ी
 मालकंगनी । -ज्वाल-वि० समकता हुआ, बहुत चम-
 कता हुआ । पु० हवनकी अग्नि; शिव; एक नरक । -
 तप-पु० दे० 'महत्तप' । -तपा(पस्)-वि० कठोर
 तप करनेवाला । पु० विष्णु । -तप्तकृष्ण-पु० एक कृष्ण
 व्रत । -तप्त-पु० नीचेके सात लोकोंमेंसे पाँचवाँ । -
 तारा-की० एक तनोक्त देवी; जैनोंकी एक देवी । -तिक्त-
 पु० नीम । -तीक्ष्ण-वि० अति तीक्ष्ण । -तीक्ष्णा-
 की० भिलावाँ । -तेजा(जस्)-वि० अति तेजस्वी;
 अति पराक्रमी । पु० नीर; पारा; कापिकेय; अग्नि । -
 त्याग, त्यागी(सिन्धु)-वि० बहुत त्याग-शील । पु०
 शिव । -द्वंद्व-पु० लंबी मुजा; भारी दंड, सजा; बन्धूत ।
 -० धर-पु० बमराज । -० धारी-पु० [हि०] बम-
 राज । -द्वंद्व-पु० बड़े दाँतीवाला हाथी; शिव । -द्वंसा-
 की० नाशवेल । -द्वंद्व-पु० शिव; एक राक्षस । -द्वंसा-
 -की० मनुष्यके जीवनमें ग्रहविशेषका निर्धारित योग-
 काल । -द्वान-पु० बका । दान; उन सोहब दानोंमेंसे
 कोई जिनका फल स्वर्ग माना गया हो (गुलापुरष, सोनेकी
 गौका दान, गजदान, कन्यादान इ०) । -द्वार-पु० देव-
 दार । -देव-पु० शिव । -देवी-की० दुर्गा, पार्वती;
 सभने बड़ी रानी, पटरानी । -देवा-पु० भूमिदेवका
 कोई मुख्य भाग जिसके अंदर कई देव हों । -दुस-पु०
 पीपल; बका वृक्ष । -द्रोण-पु० शिव; सुमेरु पर्वत । -
 द्रोणा-की० द्रोणपुष्पी । -द्वार-पु० बका या मुख्य
 दरवाजा । -द्वीप-पु० महादेश, पुराणानुसार पृथ्वीके
 सात मुख्य विभाग-जम्बू, भ्रूक्ष, शाकल, कुक्ष, कौच,
 शाक और पुष्कर; पृथ्वीका वह बका भाग जिसमें कई देश
 हों, जैसे एशिया, यूरोप आदि । -घन-वि० बहुत बका
 धनी; बहुमूल्य । पु० सोना; बहुमूल्य वस्त्र; गंध धूप; सेतो ।
 -घनुष(स्)-पु० शिव । -घातु-पु० सोना; सुमेर ।
 -नक्ष-पु० नंदवंशके अंतर्गत एक राजा; दे० क्रममें ।
 -नक्ष-की० बंगालकी एक नदी; सुरा, मथा; दे० क्रम-
 में । -नगर-पु० बका शहर । -नट-पु० शिव । -
 नदी-की० बड़ी नदी, समुद्रगामिनी नदी; उड़ीसासे
 होकर बंगालकी खाड़ीमें गिरनेवाली एक नदी । -नरक-
 पु० २१ नरकोंमेंसे एक । -नवमी-की० आश्विन-छुपका
 नवमी । -नाटक-पु० दस अंकीवाला नाटक । -नाह-

पु० बहुत जोरकी आवाज; हाथी; गरबनेवाला बालक;
 बका लोक; शंख; कान; शिव; सिंह; ऊँट । -नाम-पु०
 एक दानव । -नारायण-पु० विष्णु । -नास-पु०
 शिव । -निब-पु० बकावन । -निब्रा-की० सुरु ।
 -निचाप-पु० बाणवेदी धारा । -निषम-पु० विष्णु ।
 -निर्वाण-पु० ब्यति सत्ताका पूर्ण नाश, परिनिर्वाण ।
 -निशा-की० रात्रिका दूसरा और तीसरा पहर; दुर्गा;
 प्रलयरात्रि । -नीच-पु० रजक । -नील-वि० गहरा
 नीला । पु० एक तरहका नीलम; शंखराज पक्षी । -नृत्थ,
 -नेत्र-पु० शिव । -नेत्रि-पु० कौशा । -पंक-पु०
 'महा पाप (शो) । -पंचमूक-पु० देह, अरनी, सोना-
 पादा, काश्मरी और पाटला-इन पाँच पक्षोंकी बड़ोंका
 योग । -पंचविध-पु० सिधिया (धंभी), कालकूट, मोथा,
 बछनाग और शंखकर्णी-इन पाँच विशेषोंका समूह । -
 पक्ष-वि० बड़े पक्ष; दक या कुटुंबवाला । पु० गहर ।
 -पक्षी(सिन्धु)-पु० उल्लू । -पथ-पु० राजपथ;
 महाप्रस्थानका पथ, सुरु; हिमालयके उत्तरका वह रास्ता
 जिससे बुधिशिर आदिने स्वर्गारोहण किया था; एक नरक ।
 -पथ-पु० इवेत कमल; सौ पथकी मय्या; दक्षिण दिशा-
 का दिग्गज; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; एक नंदवंशी
 राजा । -० पर्व पु० नंदवंशका अंतिम राजा । -पवित्र-
 पु० विष्णु । -पातक-पु० बहुत बका पाप; स्तुतिवर्णित
 वे पाँच महापाप-जहल्ला, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी-
 गमन और इस प्रकारका पाप करनेवालोंका संसर्ग । -
 पातकी(सिन्धु)-वि० महापातक करनेवाला । -पात्र-
 पु० प्रेतकर्म कराने और उसका दान देनेवाला ब्राह्मण,
 महाब्राह्मण; महाभौरी । -पाए-पु० शिव । -पाप-
 पु० महापातक । पाप्मा(मन्त्र)-वि० महापातकी ।
 -पाण्डुपत्त-पु० मीलसिरी । -पासक-पु० गौडभिक्षु ।
 -पुट-पु० रस और भस्म बनानेकी एक विशेष विधि ।
 -पुष्प-पु० बहुत बका पुष्प; एक बौधिसत्त्व । -पुष्पा-
 की० एक पुराणवर्णित नदी । -पुत्र-पु० दुर्गा आदिसे
 रक्षित नगर । -पुराण-पु० व्यासराचित अठारह महा-
 पुराणोंमेंसे कोई एक । -पुरुष-पु० भेड जन, महिमा-
 शाली पुरुष; नारायण; दृष्ट, इजरात (व्य०) । -पुष्प-
 लाल कनेर; कुर वृक्ष; एक कौशा । -पृष्ठ-पु० ऊँट । -
 प्रजापति-पु० विष्णु । -प्रतीहार-पु० नगर या दुर्गके
 रक्षकोंका प्रधान । -प्रभ-वि० मष्टी प्रमाणात् ।
 -प्रभु-पु० परमेश्वर; राजा; इंद्र; चैतन्य महाप्रभु;
 बलधाचार्य; कोई बका साधु, सन्यासी । -प्रलब्ध-पु०
 ब्रह्माकी भावु शेष होनेपर होनेवाला संपूर्ण सृष्टिका
 नाश । -प्रसाद-पु० अगवान् या किसी बड़े देवताका
 प्रसाद; शिवाजीकी चढ़ाया हुआ भात; देवीकी बलि
 किये हुए बकरेका मांस । -प्रस्थान-पु० महायात्रा,
 सुरु । -प्राज्ञ-वि० परमज्ञानी; महापंडित । -प्राण-
 वि० अधिक बल, उत्पत्तवाला । पु० प्रत्येक वर्गका दूसरा
 और चौथा अक्षर (कर्ममें 'ख', 'घ' और चर्गमें 'छ',
 'ह' इ०) काका कौशा । -फल-वि० बहुत फलने या
 फल देनेवाला । पु० देलका पेड़ । -फला-की० इंद्र-
 वारुणी; तितलौकी; एक तरहकी बरछी । -वन-पु०

हृदयमन्त्रे अंतर्गत एक वन । -बह-वि० अति बड़ी ।
 पु० बायु; सीता; दुःख । -बका-की० सहदेवी; पीपल;
 नीलका पीपा । -बकाचिह्न-पु० सक्ते वक्ता सैनिक
 अधिकारी, रक्षामंत्री । -बलेधर-पु० महाबलेश्वर नामक
 स्थान (उड़ीसा)में स्थापित एक शिवलिंग । -बाहु-वि०
 लंबी बांहवाला; बलवान् । पु० विष्णु; धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।
 -बोधि-पु० बुद्धदेव; नौद भिक्षु । -ब्राह्मण-पु० वह
 ब्राह्मण जो प्रेतकर्म कराता और उसमें किंवा जानेवाला
 दान लेता हो, महापात्र । -अबा-की० एक पुराणवर्णित
 नदी । -भाग-भागी(विन्)-वि० अतिमायवान्;
 सुविद्यमान; पुण्यात्मा । -आयवत-पु० परम वैष्णव; रथ
 महायन्त्र; भीमद्वारागर्भ पुराण । -आगा-की० दाहा-
 यणी । -आरत-पु० व्यासरचित इतिहासग्रंथ जिसमें
 भारतवंशका चरित और कौरव-पांडवोंमें हुए महासंग्रामका
 वर्णन है। कुरु-पांडव-युद्ध; महायुद्ध; महाग्रंथ । -आर्य-
 पु० (पाणिनिकृत व्याकरण-सूत्रपर पतंजलि-लिखित) हर्ष-
 भाष्य । -भिक्षु-पु० बुद्धदेव । -भीता-की० कजाह ।
 -भीम-वि० अति अर्थकर । पु० शिष्यका अनुचर भूमी;
 राजा सांतनु । -भीह-पु० व्याकिन नामका कीटा । -
 भीष्म-पु० शांतनु । -भूत-पु० पंचभूत वा उनमेंसे
 कोई एक; परमेश्वर । -भैरव-पु० शिव । -भीष-पु०
 भारी आनव; सौंप । -भीसा-की० दुर्गा । -मंडल-पु०
 वक्ता, प्रधान, कैद्रीय मंडल वा संघ । -अंत्र-पु० वेदमंत्र;
 अति शक्तिशाली मंत्र, उच्चम सत्ताह । -अंघ्री(विन्)-
 पु० प्रधानमंत्री । -अणि-पु० अधिक दूतवान् मणि,
 रत्न । -अति-वि० अति दुःखिमान्; उदाराशय । -अद्-
 -पु० मत्ता हाथी । -अद्वा(नस्)-वि० ऊँचे दिह-
 वाला; उदारचित्त । -अहिम-वि० महामहिमायुक्त; अति
 महत्त्वशाली । -अहोपाध्याय-पु० बहुत बड़ा उपाध्याय,
 अध्यापक; महापंडितसंस्कृतके महापंडितोंकी एक उपाधि ।
 -मांस-पु० नरमांस; गोमांस । -माई-की० [हिं०]
 काकी, देवी । -मात्र-वि० वक्ता; वदिया । पु० महामंत्री;
 महावत्स हाथीपीपर निगरानी रखनेवाला । -मान्य-
 वि० परम माननीय, अति सम्मानार्ह । -माच-पु०
 शिव; किष्णु । वि० भारी भाषाकी । -माया-की०
 जगत्की कारणभूता अविद्या; जगत्की अधिष्ठात्री दुर्गा;
 बुद्धदेवकी माता । -मारी-की० बवाई बीमारी, मरी;
 महाकाही । -माघ-पु० बड़ी उदर । -० तैल-पु०
 बकरेके मांस और दवाओंके योगमें बनाया जानेवाला एक
 तैल (आंव) । -मुंडनिका-मुंडी-की० गोरख मुंडी ।
 -मुख-पु० कुंभीर, धक्किया । -मुद्रा-की० एक
 संश्लोक मुद्रा । -मुनि-पु० मुनिश्रेष्ठ; व्यास; अमल्ल;
 बुद्धदेव । -मूर्ति-पु० विष्णु । -मूक-पु० प्याज । -
 मूक-वि० मर्हणा; दामी । पु० माणिक । -मुश-पु०
 बड़ा पशु; हाथी । -मुचुञ्जय-पु० शिवका एक प्रसिद्ध
 मंत्र जो अकारमुचु-निवारक माना जाता है । -मेघ-
 पु०, -मेघा-की० अष्टवर्गके अंतर्गत एक ओषधि । -मेघ-
 -पु० शिव । -मेघा-की० दुर्गा । -मोह-पु० भारी
 मोह; विषवशासत्कार अशान । -मोहा-की० दुर्गा ।
 -यज्ञ-पु० गृहस्थके लिए नित्य कर्तव्य पंचकर्म-वैद्व-

अथवा; अग्निहोत्र, तर्पण, अतिथिपूजन और भूतबलि ।
 -यक्षा(नस्)-वि० महाविशाली; परम कीर्तिशाली ।
 -यक्षा-की० द्यूत । -याच-पु० शीतघर्मके तीन
 मुख्य संप्रदायोंमेंसे एक । -युवा-पु० चारों युवोंका योग,
 चौकी । -युद्ध-पु० बहुत बड़ी लड़ाई ('प्रथम महायुद्ध'
 -यूरोपीय राष्ट्रोंका युद्ध जो १९१४ से १९१८ तक चकता
 रहा । द्वितीय महायुद्ध १९३९ से १९४५ तक चकनेवाला
 यूरोपीय युद्ध, जिसमें पीछे अमेरिका और जापान भी
 सम्मिलित हुए) । -योगी(विन्)-पु० महान् योगी;
 शिव; विष्णु; मुर्गा । -योगेश्वर-पु० पितामह, पुनस्त, सतिष्ठ,
 पुच्छ, पुच्छ, अंगिरा, ऋतु और कश्यप । -योगि-की०
 एक योनिरोग । -रुक्-पु० मूँगा । -रुक्म-पु० सीना;
 चर्रा । -रुक्-पु० रुक्मस्य राज-होरा, मोटी, वैदर्भ,
 पश्चाराग, गोमेद, पुश्चाराग, पश्चा, नीलम और मूँगा । -रुक्-
 -पु० भारी बोझ; वह बोझ जो अनेका दस सख्त धनु-
 धरोंसे ढक लके । -रुक्(विन्)-पु० दे० 'महारथ';
 किसी विषयका प्रकाश विद्वान् वा किसी क्षेत्रका महान्
 व्यक्ति या नेता । -रुक्-वि० बहुत रसवाला । पु० रंझ;
 खजूर; कौड़ी; कसेरु; पारा; अन्नक; सीनामन्त्री, कांतिशार
 कोहा । -राज-पु० बड़ा राजा, बादशाह; राजा, ब्राह्मण,
 माधुसूत आदिका सम्मान-सूचक संबोधन । -राजाधि-
 राज-पु० राजाओंका राजा, सम्राट् । -राजिक-पु०
 एक गण-देवता । -राज्ञी-की० महाराजकी प्रधान रानी,
 महारानी; दुर्गा । -राणा-पु० [हिं०] मेवाड़ और भील-
 पुरके राजाओंकी उपाधि । -रात्र-पु० अर्द्ध रात्रि ।
 -रात्रि-की० महाप्रलय; आधी रातके बाद दो सुहृत्का
 रात्रिकाल । -राष्ट्र-पु० अद्भुत रामायणमें वर्णित
 रावण जो जानकीके हाथों मारा गया । -रावळ-पु०
 [हिं०] नैसकमेर और हिंगपुरके राजाओंकी उपाधि ।
 -राष्ट्र-पु० दक्षिण-पश्चिम भारतका एक प्रदेश; उस
 प्रदेशका निवासी; बड़ा राष्ट्र । [-राष्ट्री-की० मध्यकाल-
 की वा दूसरी प्राकृतोंमेंसे एक मुख्य भाषा; महाराष्ट्र
 देशकी भाषा; मराठी । -राष्ट्रीय-वि० महाराष्ट्र-संबंधी;
 महाराष्ट्र देशवासी । -रुद्र-पु० शिव । -रेता-
 (नस्)-पु० शिव । -रोग-पु० भारी रोग (आनु-
 वैदिक मत्तसे ये आठ रोग-उन्माद, क्षय, दमा, क्रोध,
 मधुमेह, पक्षी, उदररोग और अमर) । -रोगी(विन्)-
 वि० महारोगसे पीड़ित । [की० 'महारोगिणी' ।] -रौद्र-
 वि० अति अमानक । पु० शिव । -रौद्री-की० दुर्गा ।
 -रौरव-पु० २१ नरकोंमेंसे एक । -रुक्म-की०
 नारायणकी शक्ति, लक्ष्मी । -रुक्मि-पु० शिव । -
 रुक्मि-वि० [हिं०] महाकाही करनेवाला । -रुक्म-
 पु० कीटा । -रुक्मि-पु० सुंदर । -रुक्मि-पु० ईश्वरी
 पाँचवीं शतीमें रचित एक पाण्डिग्रंथ जिसमें शीतघर्म और
 सिंहलका इतिहास दिया गया है । -रुक्मि(नस्)-
 पु० शिव । वि० विशाल वक्तावाला । -रुक्म-पु० घना
 और बड़ा जंगल । -रुक्म-की० दूध । -रुक्म-पु०
 विष्णुका ब्राह्म अवतार । -रुक्मि-की० माधवी लता ।
 -रुक्म-पु० शिशुमार, संस । -रुक्म-पु० महर्ष-
 प्रकाशक वाक्य 'अहं ब्रह्मस्मि', 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा

ब्रह्म' आदि उपनिषद्वाक्य । -वात-पु० त्फानी हवा, अंध । -वादी (विद्)-वि० शास्त्रार्थ करनेमें तेज । -बाहु-की० दे० 'महाबात' । -बाष्पी-की० गंगा-स्नानका एक विशेष योग जो चैत्र-कुण्डा त्रयोदशीकी शतमिमा नक्षत्र और शनिवार होनेसे पड़ता है । -बास्तिक-पु० पाणिनिके सूत्रोंपर काव्यायनकृत बास्तिक । -बिक्रम-पु० सिंह; एक नाग । -विद्या-की० संश्लेष दस देवियों-काकी, तारा, घोडशी, भुवनेश्वरी, जैवी, छिन्नमस्ता, वृषावती, नगलासुखी, मातंगी और कमला-स्मिका; दुर्गा; गंगा । -विद्यालय-पु० (कालेज) उच्च शिक्षा देनेवाला विद्यालय । -विरति-पु० शिव । -विल-पु० आकाश । -विष-पु० दो-मुँहा साँप । -विषुव-पु० मेघको संक्रांति (इस दिन दिन-रात बराबर होते हैं) । -वीथि-पु० एक नरक । -वीर-वि० बहुत बहावीर, योद्धा । पु० सिंह; वज्र; विष्णु; गरुड; इन्-मान्; यज्ञाग्नि; कोयल; सफेद घोड़ा; बाज; जैनोंके चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर (त्रिचूलाके गर्भसे उत्पन्न महा-राज सिद्धार्थके पुत्र जो युवावस्थामें ही राज-पाट छोड़कर तप करने बनें चले गये । निर्वाणकाल ५२० ई०) । -वीरा-की० क्षीरकाकोली । -वीर्य-वि० अति वीर्य-शाली । पु० ब्रह्मा; एक बुद्ध; वाराही नंद । -वीर्या-की० बनकपास; महाशतावरी; सूर्यकी पत्नी संशा । -वृक्ष-पु० सेतुद्रुं; ताड़; बहुत बड़ा पेड़ । -वृष-पु० एक तीर्थ; भारी बैल, साँड़ । -वेग-पु० शिव; गरुड । वि० प्रवह वेगवाला । -व्याधि-की० महारोग । -व्याहृति-की० सप्त व्याहृतियोंमेंसे पहली तीन-ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः जो गावही मंत्रमें गृहीत हैं । -व्रण-पु० दुष्ट व्रण । -व्रत-पु० बहुत बड़ा कठिन व्रत; बारह वरस चलनेवाला प्रायश्चित्तरूप व्रत । वि० दे० 'महाव्रती' । -व्रती (विन्)-वि० महाव्रत धारण करनेवाला । पु० शिव । -शंख-पु० बड़ा शंख; ललाट; कमण्डलीकी इट्टी; सौ शंखकी सख्या; कुबेरकी एक निधि । शक्ति-की० महती शक्ति; दुर्गा । पु० कार्तिकेय; शिव । वि० महती शक्तिवाला । -शठ-पु० पीछा पतारा । -शतावरी-की० बनी सतावर । -शतक-पु० शिंगा मछली । -शाख-पु० बड़ा गृह्य । -शास्त्र-पु० लंबा सुशुद्ध चारल । -शासन-पु० महत्त्वपूर्ण राजाशा । वि० जिसका शासन महान् हो । -शिरा (रस्)-पु० एक तरहका साँप । -शीला-की० शत-मूली । -शुक्ति-की० सीप । -शुक्र-की० सरस्वती । -शुद्ध-पु० चोटी । -शुद्ध-पु० गोप । -शुद्धी-की० अहीरिन । -शुद्ध-पु० आकाश । -शमसान-पु० काशी नगरी, बाराणसी । -अमण-पु० बुद्धदेव । -जी-की० बुद्धदेवकी एक शक्ति । -श्वास-पु० आस रोगका एक भेद । -श्वेता-की० सरस्वती; दुर्गा; सफेद छकर । -बडी-की० दुर्गा; सरस्वती । -संक्रांति-की० मकर संक्रांति (?) । -संस्कार-पु० अंशोष्टि । -सखी-की० परम साध्वी, पतिव्रता । -सख-वि० अति बलशाली, मजाना । पु० बुद्धदेव; कुबेर; इक्ष्वाकु पशु । -सभा-की० बड़ा जलसा; महासभा; हिंदू महासभा । -सभाई-

वि०, पु० [हिं०] हिंदू महासभाका अनुयायी । -समया-की० ककरी, ओदमिया, बला । -समुद्र-पु० बड़ा समुद्र, महासागर । -सर्व-पु० महाप्रलयके बाद होनेवाली नवी सृष्टि । -सर्ज-पु० कडहल । -सह-वि० बहुत सहनेवाला, क्षमाशील । पु० फूलवाला कुम्भक वृक्ष । -सहा-की० माघपर्णी, अम्लान वृक्ष । -सातप-पु० एक व्रत । -सांघिविग्रहिक-पु० परराष्ट्र-मंत्री । -सागर-पु० महासमुद्र । -सारथि-पु० अरुण । -साहस-पु० अतिसाहस; बलात्कार; जबदस्ती छीन लेना, डकैती । -साहसिक-वि० अति साहसी । पु० बलात्कार करनेवाला; बलपूर्वक हरण करनेवाला । -सिंह-पु० दुर्गाका वाहन सिंह; शरभ । -सिद्धि-की० एक तरहका जादू । -सुख-पु० मृगार; रति; बुद्धदेव । -सूक्ष्मा-की० रेत । -सूत-पु० बुद्धका डका । -सेन-पु० महासेनापति; कार्तिकेय; शिव । -स्कंध-पु० छंट । -स्कंधा-की० जामुनका पेड़ । -स्वामी-की० पृथ्वी । -स्मापु-पु० अस्मिन्वर्धननाथी । -स्वन-वि० भारी शब्दवाला । पु० एक तरहका डील । -हंस-पु० विष्णु । -हवि (ष्)-पु० गायका घी । -हास-पु० अट्टहास । -हिकका-की० एक तरहकी हिकी । मु० -माई जाना-भयसे काँपने लगना, बहबहास हो जाना ।

महाही-की० मयनेका काम; मयनेकी उजरत । महाउत-पु० दे० 'महावत' । महाउर-पु० दे० 'महावर' । महाख-पु० [सं०] शिव । महाचार्य-पु० [सं०] प्रधान आचार्य । महाध्व-वि० [सं०] अति धनी; परम संपन्न । महातम-पु० दे० 'महाहम्य' । महात्मा (स्वन्)-पु० [सं०] जिसकी आत्मा या स्वभाव महान् हो, उच्चाशय; सत, योगी; सिद्ध पुण्य; परमात्मा; शिव; महत्त्व; दुष्ट (व्य०) । महादेवी बर्मा-की० (जन्म सं० १९६४-) छायावादी युगीकी सर्वश्रेष्ठ कवयित्री और गीतलेखिका । अभ्यस्तके प्रति आत्मनिवेदन और गंभीर आध्यात्मिक वेदना आपके काव्यकी मुख्य विशेषता है । रचनार्थः कविता-नीहार, रश्मि, नीरजा, सांघ्यगीत, दीपशिक्षा; निबंध-अतीतके चलचित्र, मृंखलाकी कवियों । विद्यात्मकता और छायावादी कविताके गुणोंका समावेश आपके गद्यकी मुख्य विशेषता है ।

महानंद-पु० [सं०] परमानंद; दे० 'महा'में । महानंदा-की० [सं०] मय; माघ-शुद्धा नवमी; दे० 'महा'में । महान-वि० दे० 'महान्' (असाधु) । -ता-की० दे० 'महता' ।

महावक-पु० [सं०] बड़ा नगाका । महाबुधा-पु० [सं०] उँचे मन, आशयवाला, महाशय । महान् (हस्)-वि० [सं०] बड़ा, ऊँचा, महत् । महापणा-की० [सं०] बड़ी नदी । महाविषय-पु० [सं०] सोम रस ।

महाभाष्य-पु० [सं०] प्रधान मंत्री ।
 महावक्त्र-वि० महा, बहुत अधिक ।
 महायुध-पु० [सं०] शिव ।
 महारथ-वि० [सं०] बड़े काम उठानेवाला; बड़ा । पु० बड़ा काम ।
 महारत्न-की० [अ०] अ-यास, मयक; योग्यता; हुनरमंदी; दखल, पहुँच, जानकारी ।
 महारथ-पु० [सं०] मंत्री जंगल ।
 महार्थ-वि० [सं०] महंगा; दाम्नी ।
 महार्थता-की० [सं०] महँगी, महँगापन ।
 महार्थ-वि० [सं०] बहुमूल्य ।
 महार्थ-पु० [सं०] महासमुद्र; शिव ।
 महार्थ-वि० [सं०] बड़े, गहरे अर्थवाला, महत्वपूर्ण ।
 महार्थक-पु० [सं०] जंगली अरक; सोंठ ।
 महार्थ-पु० [सं०] एक अरब या १० अरबकी संख्या ।
 महार्थ-वि० [सं०] बहुमूल्य । पु० सफेद ध्वन ।
 महाल-पु० [अ०] महाल; वह जमींदारी जिसमें कई पट्टियाँ हों; विभाग । -बार-अ० हर महालका अलग-अलग (मं० जमाबंदी) ।
 महालय-पु० [सं०] विहार; मंदिर; तीर्थ; आश्रित कृष्ण पक्ष; परमात्मा ।
 महालया-की० [सं०] आश्रित-कृष्णा अमावस्या ।
 महाघट-की० जाड़ेकी वर्षा ।
 महाघट-पु० हाथीघान, आंजुशिक ।
 महाघर-पु० आलका रंग जिससे कियौं पाँव रँगती है ।
 महाघरा-पु० दे० 'मुहानरा' ।
 महाघरी-की० महाघरकी गोली ।
 महाघरी-पु० [सं०] तरंग ।
 महाघरीप्रसाद द्विवेदी-पु० (सं० १९२७-१९९५) आपने हिंदी भाषाकी व्याकरणसम्मत, परिमाणित और परिनिष्ठित बनाने और 'सरस्वती'का संपादन करते हुए विभिन्न विषयोंपर नये लेखकोंकी उत्पन्न करनेका ऐसा ऐतिहासिक महत्वका कार्य किया है कि हिंदी साहित्यिक इतिहासका एक युग ही आपके नामसे दिवेदीयुग कहा जाता है ।
 महाशान-वि० [सं०] बहुत खानेवाला, अतिमोजी ।
 महाशय-वि० [सं०] उच्छाशय, महाभय, उदार । पु० ऊँचे मन, आशयवाला पुष्प; समुद्र । [की० महाशया ।]
 महास्मा(इमन्)-पु० [सं०] बहुमूल्य पत्थर ।
 महाहमी-की० [सं०] आश्रित-शुद्धा अष्टमी ।
 महासि-की० [सं०] बड़ी तलवार ।
 महासुरी-की० [सं०] दुर्गा ।
 महास्पद-वि० [सं०] उच्चपदस्थ; शक्तिशाली ।
 महा-पु० [सं०] तीमरा पहर, अपराध ।
 महि-अ० दे० 'महँ' ।
 महि-की० [सं०] महिमा; पृथ्वी; महत्त्व । -देव-पु० आश्रित । -सुता-की० सीता । -सुर-पु० आश्रित ।
 महिका-की० [सं०] हिम, पहाड़ ।
 महिल-पु० दे० 'महिल' ।
 महिमंभ-वि० महिनामंभित-'सोवै सिद्ध चारन सुनीत महिमंभ है'-धन० ।

महिमा(मन्)-की० [सं०] बर्णना, बक्ष्यन; महत्ता; महात्म्य; जट सिद्धियोंमेंसे एक, अपनी देहका चाहे जितना बिलाल कर लेनेकी शक्ति । - (मं०)मंभित-वि० महिमायुक्त ।
 महिमाशायी-वि० की० [सं०] महिमाशालिनी ।
 महिमाशाय(वत्)-वि० [सं०] प्रतापी, गौरवशाली, बड़ा ।
 महिर्ष-अ० प्र० मैं-प्रगटे भूतल महिर्षी-सूर ।
 महिवाडर-पु० महेरा ।
 महिर-पु० [सं०] सूर्य ।
 महिला-की० [सं०] स्त्री; भद्र नारी; मदमत्त स्त्री; प्रियंशु कता; रेणुका ।
 महिच-पु० [सं०] मैसा; महिषासुर; स्मृतियोंमें उल्लिखित एक वर्णस्कर जाति । -घ्नी-की० दुर्गा । -धज-पु० यमराज । -पाल, -पालक-पु० मैसे पालनेवाला । -महिनी-की० दुर्गा । -बाहन-पु० यमराज ।
 महिषाक्ष, महिषाक्षक-पु० [सं०] एक तरहका युग्युल ।
 महिषार्दन-पु० [सं०] कालिकेय ।
 महिषासुर-पु० [सं०] एक असुर जो दुर्गाके हाथों मारा गया । -चातिनी, -महिनी-की० दुर्गा ।
 महिषी-की० [सं०] मैसा; अमिषिता रानी, 'पटरानी'; रानी; सैरिणी; व्यभिचारिणी स्त्री । -मिया-की० शूली नामकी धास ।
 महिषेश-पु० [सं०] महिषासुर ।
 महिष्ठ-वि० [सं०] बड़ेमे बड़ा, सवने बड़ा ।
 मही-की० महुआ, छाछ; [सं०] धरती; मिट्टी; भूमिपति, देश; गाय; एक नदी; एक वर्णवृत्त । -क्षिप्-पु० राजा । -ज-पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; अहंरक । -जा-की० सीता । -दुर्गा-पु० कक्षा किला । -देव-पु० आश्रित । -धर-पु० पर्वत; विष्णु; वेदोका भाष्य करनेवाले एक पण्डित । -० भाष्य-पु० महीधर-लिखित भाष्य । -ध्र-पु० पर्वत । -प, -पाल-पु० राजा । -प्राचीर-पु० समुद्र । -पुत्र-पु० मंगल; नरकासुर । -पुत्री, -सुता-की० सीता । -सुक्त (ज), -शुक्-पु० राजा । -रुह-पु० वृक्ष । -लता-की० केंचुआ । -सुत-पु० मंगल ग्रह; नरकासुर । -सुर-पु० आश्रित ।
 महीच-वि० वारिक; पतला ।
 महीना-पु० वर्षका बारहवाँ भाग, ३० दिनका समय, मास; दरमाबा; मासिक धर्म । सु०-(ने) से होना-कृत्यवती होना ।
 महीयाव् (वत्)-वि० [सं०] अधिक बड़ा, महान्; शक्तिशाली । [की० 'महीयसी' ।]
 महिर-की० खोकरनेपर मक्खनके नीचे बैठ जानेवाला मेल; दे० 'महेरा' ।
 महीला-की० [सं०] दे० 'महिला' ।
 महीरा-पु० [सं०] धूमिनीपति, राजा ।
 महुँ-अ० दे० 'महँ' ।
 महुवर-पु० मदारियों द्वारा बजाया जानेवाला एक बाजा, तंत्री । † की० दे० 'महुजरी' ।
 महुजरी-की० महुआ मिलाकर पकायी हुई रोटी ।

महुवा, महुवा-पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके फूल, फल खाने और लकड़ी रंधनेके तथा इमारती कामोंमें जाती है, महुक।

महुवारी-खी० महुयका नाव।

महुकम-वि० दे० 'महुकम'।

महुकर-वि० महुर (रास्ते)।

महुका-पु० महीसल।

महुलिया-पु० महुवा। खी० महुवेकी शराव।

महुवरि-खी० दे० 'महुवर'।

महुस-पु० दे० 'महुक'।

महुरत-पु०, महुरति-खी० दे० 'मुहूर्त'।

महुच-पु० महुक, महुवा; महुर (कविप्रि०)।

महेश-पु० [सं०] विष्णु; ईश्वर; एक कुलपर्वत। -कवली-खी० एक प्रकारका केला। -पुरी-खी० अमरावती। -वाकणी-खी० बकी ईद्रायन।

महेशी-खी० [सं०] गुजरातकी एक नदी।

महेर-खी० दे० 'महेरा'; झगडा, झड़पन।

महेरणा-खी० [सं०] शतकी वृक्ष।

महेरा-पु० महुमें नमक या भीडा डालकर पकाया हुआ चावल; मडा।

महेरि-खी० दे० 'महेरा'।

महेरी-खी० उवाली हुई ज्वार; * दे० 'महेरा'। वि० बाधा डालनेवाला।

महेला-पु० पशुओंकी खिलाया जानेवाला एक पुष्टिकारक द्रव्य। खी० [सं०] दे० 'महोला'।

महेलिका-खी० [सं०] महिला, स्त्री।

महेस-पु० [सं०] शिव; परमेश्वर। -बंधु-पु० बिल्व वृक्ष।

महेशानी-खी० [सं०] पार्वती।

महेश्वर-पु० [सं०] शिव; परमेश्वर।

महेश्वरी-खी० [सं०] दुर्गा।

महेष्वास-वि० [सं०] बड़े भनुषवाला; बड़ा बोझ।

महेश-पु० दे० 'महेश'।

महेशी-खी० पार्वती।

महेश्वर-पु० दे० 'महेश्वर'।

महेश्वरि-पु० [सं०] मरणाशौचके अंतमें किया जानेवाला एक श्राद्ध।

महैला-खी० [सं०] बकी श्लायनी।

महोक्ष-पु० [सं०] बड़ा वैक।

महोक्ष-पु० दे० 'महोक्षा'।

महोक्षा-पु० कोपके आकारकी एक चिड़िया जिसकी बोली बहुत तेज होती है।

महोगनी-पु० एक सदानहार पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुर्सी आदि बनानेके काम आती है।

महोष्ण-पु० दे० 'महोत्सव'।

महोष्ण-पु० दे० 'महोष्ण'।

महोटी-खी० [सं०] बृहती नामक क्षुप।

महोती-खी० महुयका फल।

महोत्पल-पु० [सं०] पद्म; सारस पक्षी।

महोत्सव-पु० [सं०] बड़ा उत्सव, समारोह।

महोत्साह-वि० [सं०] दे० 'महोत्सव'।

महोदधि-पु० [सं०] महासागर।

महोदध-वि० [सं०] अति समृद्ध; गौरवशाली; महासु-मात्र। पु० कान्यकुब्ज देश; कान्यकुब्ज नगरी; स्वामी; मोक्ष।

महोदवा-खी० [सं०] नागवला। वि० खी० दे० 'महोदय'।

महोदर-वि० [सं०] बड़े पैदवाला। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक राज्य।

महोदरी-वि० खी० [सं०] बड़े पैदवाली। खी० भगवती।

महोदार-वि० [सं०] अतिशय उदार।

महोद्यम-वि० [सं०] अतिशय उद्यम, उत्साहवाला।

महोद्यत-वि० [सं०] अतिशय उद्यत, जंवा।

महोपाध्याय-पु० [सं०] बड़ा अध्यापक; पंडित।

महोपानी-खी० एक वृक्ष तथा उसका फल।

महोषा-पु० हमीरपुर जिलेका एक कस्बा जो हिंदूकालमें चंद्रक राजाओंकी राजधानी था और आस्था-ऊदलका वासस्थान होनेके कारण बहुत प्रसिद्ध है।

महोषिवा, महोषी-वि० महोषैका।

महोरत-पु० [सं०] बड़ा सौंप; एक संपर्गण।

महोरस्क-वि० [सं०] चौकी छातीवाला।

महोला-पु० बहाना; धोखा।

महोच-वि० [सं०] जिसकी धारा प्रखर हो।

महोवा (जल)-वि० [सं०] अति ओज, तेजवाला, परम तेजस्वी।

महोषध-खी० [सं०] अति गुणकारी औषध; सौंठ; लह-सुन; बछनाग; अतिस।

महोषधि-खी० [सं०] मेघ ओषधि; जड़ी; दूध; लम्बाइ; शतावरी, सधदेवी आदि जिनका भूगर्भ अग्निपिकके जलमें मिलाया जाता है।

महोषधी-खी० [सं०] सफेद मटकटैया; बाग़ी; कुटकी; अतिबला; हिरमोचिका।

मौ-ज-ज-मैं। खी० माता, जननी। -जाई-खी० सगी बहन। -जाया-पु० सगा भाई। -बाप-पु० माता-पिता; मातृ-पितृ-तुल्य व्यक्ति। -सरकार-खी०

मातृ-पितृ-तुल्य (रक्षण, पालन करनेवाली) सरकार।

मौख-पु० दे० 'माख'।

मौखना-ज-जि० क्रोध करना, नाराज होना।

मौग-खी० बालोंको संवारकर बनायी हुई रेखा। -कोटी-खी० मॉग-पट्टी, ननाव-सिंगार। -टीका-पु० माथेपर पहननेका एक गहना। -पट्टी-खी० बाळ संवारना, केशरचना, मॉगचोटी। -कूल-पु० दे० 'मौगटीका'।

मु-उज्ज्वना-विषया होना।

मौग-खी० मॉगनेकी क्रिया या भाव; याचना; चाह; तलब; अधिकाररूपमें की हुई याचना (आ०)। -जौक-कर, -लौककर-इतर-उपरसे लेकर।

मौगव-पु० मॉगना, मॉग; दे० 'मौगन'।

मौगवा-स-जि० याचना करना, कुछ देनेकी प्रार्थना करना; चाहना; प्रार्थना करना; * बुला मॉगना-'चौं आनु मॉगों धरि केमा'-प०।

सांगणिक-वि० [सं०] मंगलजनक, मंगलसूचक । [स्त्री० सांगणिकी ।] पु० नाटकमें मंगलपाठ करनेवाला पात्र ।
सांगणिक्य-वि० [सं०] मंगलकारी । पु० मंगलका भाव, सांगणिकता; सांगणिक द्रव्य-‘वेध्याध्यायी’ भाषाणोंके उत्कृष्ट सांगणिकसे राजमार्ग भर गया होता-हजारीप्र० ।
-कामा-स्त्री० द्रव्य; हजरीमें गोरोचन; हरे । -**कुसुमा**-स्त्री० मंगलपुष्पी ।
सांगणिका-स्त्री० [सं०] गोरोचन; भीखी ।
सांगणिकाहारी-स्त्री० [सं०] नाचमाणा लता ।
सांगणिका-अ० कि० फेलाता, प्रसिद्ध होना-‘कीरति आहु सकल जग सांगी’-रामा०; शुरू होना ।
सांगना-स० कि० रगभर साफ करना; रगभर चमकाना; सांझ देना; मरक करना ।
सांजर-पु० पंजर ।
सांजा-पु० पहली वर्षाका फेन-‘सांजा मनहु मीन कई व्यापा’-रामा० ।
सांजिह-वि० [सं०] मजीठके रगका; लाल । पु० लाल रंग ।
सांझ-अ० मध्य, मीतर ।
सांझा-पु० पतंगकी डोरपर, उसे कहा और मजबूत करनेके लिए, मला जानेवाला मसाला; हलदी चढ़नेके बाद बर-कन्याको पहनाये जानेवाले पीले कपड़े; पेक्का तना; तनाव (?) नदीकी धाराके बीचका छोटा टापू । **सु०**-**डोला होना**-कमजोरी मालूम होना । -**(से)का जोड़ा**-हलदीकी रस्मके बाद बर-कन्याको पहनाये जानेवाले कपड़े । -**बैठना**-बर-कन्याका व्याहृति दो-तीन दिन पूर्व पीले कपड़े पहनकर एकतावास करने लगना ।
सांझिक-वि० दे० ‘सांझला’ ।
सांझी-पु० नाव लेनेवाला, महाह; * मध्यक्ष ।
सांठ-पु० मटका ।
सांठ-पु० मटका; नील घोलनेका मटका; बनी मठली ।
सांठी-स्त्री० फूलकी बनी चूरी; मठली ।
साँव-पु० पकाये हुए चावलकी पानी, मंच, पसाव; एक तरहका मारवाही गीत; ब्रह्मांड-‘सकल साँव मैं रमि रखा सावित्र कहिये सोय’-कबीर ।
साँवना-स० कि० फेला देना, रखना (मंबाना, छपीस०)-‘चोपाड़ साँधी चौहटे अरध-उरध बाजार’-साखी ।
साँवना-स० कि० रौंदना; मसकना; मूँवना; अनावकी बालोंसे कुचलकर दाने निकालना; * लगाना, पोतना; सजाना; ठानना, शुरू करना-‘हो तुमये फिर बुद्धि माँकी’-रामचंद्रिका ।
साँवनी-स्त्री० गोट, हाथिया ।
साँवलि-पु० [सं०] मंडलाका राजा, मंडलाधीश ।
साँवव-पु० मंडप ।
साँववी-स्त्री० [सं०] कुशध्वजकी कन्या जो सरतको व्याही गयी थी ।
साँवव्य-पु० [सं०] एक पुराणवर्णित ऋषि ।
साँवा-पु० आँखका एक रोग; उसपर पड़नेवाला सफेद जाला; छुनुरा, एक तरहका पराठा; मंडर ।
साँवी-स्त्री० साँव; कपड़े या सुतपर दिया जानेवाला

कलक ।
साँवक-पु० [सं०] मंदक शाखाके मासक ।
साँवक्य-पु० [सं०] वस मुख्य उपनिषदोंमेंसे एक ।
साँवी-पु० मंडप; विवाहमंडप ।
साँवधी-पु० मंडप; अतिविशाल ।
साँव-वि० मरु, उमरक; फीका, बेजाव; मात, हारा हुआ ।
साँतना-अ० कि० मरु, उमरक होना ।
साँता-वि० मरु, मरुवाला ।
साँत-वि० [सं०] मंत्र-संबंधी ।
साँत्रिक-वि० [सं०] मंत्र-संबंधी । पु० मंत्रवेत्ता, वेदमंत्रोंका पाठ करनेमें कुशल; जतर-मंतर जानने, करनेवाला ।
साँथा-पु० दे० ‘माथा’ । -**बाँधव**-पु० सिरके बाल बाँधनेकी बं री; सिरपर लपेटनेका कपड़ा ।
साँथव-पु० [सं०] मंथरत्व, धीमापन; सुस्ती ।
साँद-स्त्री० खूंखार जानवरोंके रहनेकी जगह, गुफा । वि० फीका, बेजान, धूमिल । **सु०**-**पड़ना**-फीका पड़ना, बेजाव होना ।
साँथी-स्त्री० [फा०] रोग; पकावट ।
साँदर-पु० थुंरगका एक भेद ।
साँदा-वि० [फा०] बीमार; भका हुआ; बचा हुआ, छूटा हुआ ।
साँदार-पु० [सं०] मंदार वृक्ष ।
साँध-पु० [सं०] मंदता; दुर्बलता ।
साँधाता-पु० [सं०] सर्ववशका (दलीप आदिमें बहुत पहले होनेवाला एक चक्रवर्ती राजा) ।
साँपना-अ० कि० मसाला होना, नष्टसे प्रभावित होना ।
साँपनी-स्त्री० मातृकापूजनके लिए बनाया गया एक पकाव । अ० साँपि, में ।
सांस-पु० [सं०] प्राणियोंके शरीरका मुलायम, चिकना, रक्त वर्णका वह अंश जो हड्डी, चमड़े, नम आदिते भिन्न होता है; आमिष, गोदत; मछलीका सांस; फलका गुदारा भाग; कीट; सांस बेचनेवाली एक जालि; समय । -**कंदी**-स्त्री० सांसकी ध्वजन, ददोरा । -**कच्छप**-पु० ताड़में होनेवाला एक प्रकारका फीका । -**कारी**-**(विन्)**-पु० श्विर, लहू । -**केशी**-**(विन्)**-पु० अशोक मसाला । -**म्रिषि**-स्त्री० मांसकी गाँठ जो शरीरमें यंत्र-तंत्र निकल आती है । -**पछदा**-स्त्री० मांसरोहिणी लता । -**ज**-पु० चरनी । -**साव**-पु० गलेकी ध्वजनका रोग । -**तेज**-**(स्)**-पु० धरनी । -**दुलन**-पु० डीहन् । -**झापी**-**(विन्)**-पु० अम्लमेत । -**निर्घांस**-पु० शरीरका रोग । -**प**-पु० फिशाच, दीव । -**पचन**-पु० मांस पकानेका बरतन । -**पिंड**-पु० शरीर; मांसका लोटा । -**पिटक**-पु० मांसकी पिठारी, बडुत-सा मांस । -**पित्त**-पु० अम्ल, हड्डी । -**पेशी**-स्त्री० शरीरके भीतर एक-दूसरेसे जुड़े हुए मांसपिंड; ८६ दिनसे १२६ दिनतकका जूना । -**फल**-पु० तरबूज । -**फला**-स्त्री० मंडा । -**अक्ष**, -**अक्षी**-**(विन्)**-वि० मांस खानेवाला । -**असा**-**(पु)**, -**असी**-**(विन्)**-वि०, पु० मांस काढ़नेवाला । -**असी**-**(विन्)**-वि० दे० ‘मांसमक्ष’ । -**मासा**

—झी० माषपर्णी । —बोनि-पु० रक्तमांस-युक्त जीव ।
 —रस-पु० मांसका रसा, शीरवा । —रोहिणी-झी०
 एक कटा, चर्मकटा । —छत्ता-झी० मांसकी सिकुवन,
 चमकेकी घुरी, बल । —विक्क-पु० मांसकी बिक्री । —
 विक्की (विक्क)-पु० कसाई; बनके लिए पुत्र या पुत्रीको
 बेचनेवाला । —बूदि-झी० मांसका बद जाना । —सार,
 —स्वैह-पु० चरवी । —हासा-झी० चमका ।
 मांसक-वि० [सं०] गुदारा, स्थूल, युष्ट; बलवान् । —
 कला-झी० मंटा, बैगन ।
 मांसाह, मांसादी (विक्क)-वि० [सं०] मांस खानेवाला ।
 मांसारि-पु० [सं०] अम्लवेत ।
 मांसारल-पु० [सं०] मुँहसे कटकनेवाला मांस ।
 मांसापुष्ट-पु० [सं०] एक रोग ।
 मांसाशी (सिन्)-वि० [सं०] मांसाहारी । पु० राक्षस ।
 मांसाहारी (सिन्)-वि० [सं०] मांसका आहार करने-
 वाला ।
 मांसिक-वि० [सं०] मांस बेचकर जीविका चलानेवाला ।
 मांसिनी-झी० [सं०] जटामांसी ।
 मांसी-झी० [सं०] जटामांसी; कचकोली; मांसच्छदा ।
 मांसेष्टा-झी० [सं०] चमगादड़ ।
 मांसोद्व-पु० [सं०] मांसके माष पकाया हुआ चावल,
 पुलाव ।
 मांसोपजीवी (विक्क)-वि०, पु० [सं०] मांस बेचकर
 जीवन-निर्वाह करनेवाला ।
 मांसि-अ० बृद्धके भीतर, अपने ही अंदर—‘सब अंधि-
 चारा मिटि गया जब दीपक देख्या मांसि’—साखी ।
 मांसि-अ० दे० ‘मांस’ ।
 मा-अ० [मं०] निषेधार्थक—नहीं, मत । झी० लक्ष्मी;
 माता; मान, माप । —कंद-पु० आमका पेड़ । —कंदी-
 झी० अंधला; पीत चंदन; महाभारतमें वर्णित एक नगरी ।
 —चब-पु० विष्णु; दे० क्रममें । —नाथ, —पति-
 पु० विष्णु ।
 मा-सर्व० [अ०] प्रश्नवाचक—क्या, कौन; जो, जो कुछ ।
 —कबल, —सबक-वि० जो पहले हो, पूर्ववर्ती; प्रथमोक्त ।
 —बाव-वि० जो बादमें हो, परवर्ती । —सिवा-अ०
 इसके सिवा । पु० अनात्म पदार्थ मात्र । —हसल-पु०
 मो कुछ हासिल हो, फल, उपज; नफा ।
 माई, माई-झी० छोटे पुत्रा जैसा मीठा या नमकीन
 पकवान जो विवाहके समय बनाया जाता है; मामी;
 कुलदेवी ।
 माईकेल मधुसूदन वत्स-पु० बंगलाके महान् कवि
 विन्होने ‘मैपनाद बष काव्य’ आदि काव्योंकी रचना की
 (१८२४-१८७३) ।
 माहल-वि० दे० ‘मावल’ ।
 माई-झी० माता, माँ; बूढ़ा; आदरणीया स्त्रीका संबोधन;
 किसी भी स्त्रीका संबोधन; * कुल देवता—‘...अर माइन-
 में बपिही’—सर । —का लाल-हिम्मतवाला; वीर; कदार,
 दानी ।
 माकर-वि० [सं०] मकरसे संयुक्त या उत्पन्न ।
 माकरी-झी० [सं०] माय-शुद्धा सप्तमी ।

माकलि-पु० [सं०] इंद्रका सारथि (मातलि); चंद्रमा ।
 माकूल-वि० [अ०] अकृमें आनेवाला, दुर्दिशावा; ठीक,
 सुनासिब; अच्छा; काफ़ी; समझदार; शिष्ट; बादमें परा-
 जित, कायक (—करना) । पु० तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र ।
 —पर्सव-वि० उचित बातको मान लेनेवाला, समझदार ।
 माकूलियत, माकूलीयत-झी० [अ०] ईशानियत,
 समझ-बूझ, संजीवरी ।
 माकूस-वि० [अ०] उकटा, विपरीत ।
 मासिक, मासीक-वि० [सं०] (शब्दकी) मन्थिचर्याका;
 मन्थिचर्योसे प्राप्त । पु० शब्द; सोनामन्थी; रूपामन्थी ।
 —ज-पु० मोम । —कल-पु० एक तरहका नारियल ।
 —मार्करा-झी० शब्दसे बनायी हुई मिसरी ।
 मास-पु० अप्रसन्नता; रोष; गर्व—‘तिग्गमहुँ रावन तै
 कवन सख बढि तज मास’—रामा० ।
 मासन-पु० दे० ‘मकसन’ । —चौर-पु० मासन चुराने-
 वाला; कृष्ण ।
 मासना-अ०—अ० कि० रोष करना, अप्रसन्न होना ।
 मासी-अ० मन्थी; सोनामन्थी ।
 मागव-पु० दे० ‘भागव’ ।
 मागव-वि० [सं०] मगधका; मगधसे उत्पन्न । पु० मगध-
 नरेश; भाटका पेशा करनेवाली एक वर्णसंस्कार जाति,
 * जरासंध ।
 मागवा-झी० [सं०] मगधकी राजकुमारी; पिप्पली ।
 मागधिक-वि० [सं०] मगध-संबंधी । पु० मगधनरेश ।
 मागधिका-झी० [सं०] पिप्पली ।
 मागधी-झी० [सं०] मगधकी भाषा; चार मुख्य प्राकृतोंमें-
 से एक; मगधकी राजकुमारी, सफेद जीरा; पिप्पली;
 चीनी; वृक्षिका; एक तरहकी इलायची; एक नदी; मगध
 जातिकी स्त्री ।
 माघ-पु० [सं०] ११ वीं चांद्र और १० वीं सौर मास,
 फागुनके पहलेका महीना; शिशुपाल बंधके रचविता
 प्रसिद्ध संस्कृत-महाकवि (१० वीं शती ई०) । —काव्य-
 पु० शिशुपालवध ।
 माघवती-झी० [सं०] पूर्वं दिशा ।
 माघी-वि० माघका । झी० [सं०] माघकी पूर्णिमा ।
 माघ-पु० [सं०] जुंदा फूल ।
 माच-पु० दे० ‘मचान’ ।
 माचना-अ०—अ० कि० दे० ‘मचना’ ।
 माचल-वि० मचलनेवाला, हँसी ।
 माचा-पु० बड़ी मचिया; परलंग; मचान ।
 माधिका-झी० [सं०] मन्थी; आमकेका पेड़ ।
 माधिस-झी० दे० ‘दियासलाई’ ।
 माधी-झी० मचिया; हल्के साय व्यंजहारमें लाया जाने-
 वाला जुआ; देहवाहीमें गाड़ीवानके बैठनेकी जगह ।
 माछ-पु० मछली ।
 माछर-पु० मच्छर ।
 माछी-झी० मन्थी ।
 माअरा-पु० [अ०] घटना; वृत्त, हाल ।
 माअ-पु० सरोकी शफलका एक भाव । —फल-पु० माअ-
 के शाकका गोंद ।

मातृ-मातृ—**की०** [अ०] चाशनीमें उबालकर बनायी हुई दवा, पाक; पिछी हुई मींग जो चाशनीमें ढाकर जमा की गयी हो; कई बीजें भिगाकर बनायी हुई वस्तु । —**कक्षा**—**पु०** मातृ निकाशनेकी सुचनेी वा चमचा ।

मातृ—**पु०** दही रखनेका मटका; वह मटका जिसमें रंगरेज रंग रहते हैं ।

मातृ—**पु०** चौदोंकी कक्षाका एक पीला कौड़ा जो प्रायः पेशों के पेशोंमें होता बनाकर रहता है ।

मातृ—**की०** मिट्टी; धूल; करीर; द्रव ।

मातृ—**पु०** मैदकी मोथनदार मोटी पृथ्वी जो चाशनीमें पाग की गयी हो; मटकी; [सं०] सक्क ।

मातृ—**पु०** [सं०] धरतीका एक पारिपार्श्विक गण; व्यास; मातृगण; कलाक ।

मातृ—**की०** एक तरहकी कपास; [सं०] कवच ।

मातृ—**पु०** [सं०] एक वृक्ष; एक तौल ।

मातृ—**सं०** कि० धारण करना; सजावा; पूजना; * ठानना ।

मातृ—**पु०** [अ०] इमारत आदिका नक्शा; स्तंभा; अनु-करणीय वस्तु वा व्यक्ति ।

मातृ—**पु०** [सं०] एक वर्णसंकर जाति ।

मातृ—**पु०** मंथन ।

मातृ—**पु०** दूसरी मंजिलकी बैठक; मचिया ।

मातृ—**की०** दे० 'मदी'; मचिया ।

मातृ—**पु०** [सं०] दे० 'मानक' ।

मातृ—**पु०** [सं०] मनुष्य; मालक; बीना; सोलह लक्षियोंका दार ।

मातृ—**पु०** [सं०] मालक; बीना; वृद्ध, ब्राह्मण-मालक; सोलह या बीस लक्षियोंका दार; मूल व्यक्ति ।

मातृ—**की०** [सं०] मालिका; किशोरी ।

मातृ—**वि०** [सं०] मातृ-संबंधी ।

मातृ—**पु०** [सं०] मालकीकी मंडली, मालसमूह ।

मातृ—**पु०** [सं०] गुलाबी या लाल रंगका एक रस ।

मातृ—**की०** [सं०] मातृ पलकी तौल ।

मातृ—**की०** [सं०] छिपकली ।

मातृ—**पु०** [सं०] सेवा नमक ।

मातृ—**पु०** [सं०] हाथी; चांदा; किरात; एक ऋषि ।

मातृ—**मकर**—**पु०** विशालकाय वक्रिया ।

मातृ—**की०** [सं०] एक महाविषा; कदंबकी एक कन्या ।

मातृ—**की०** माता । **वि०** [अ०] पराजित, हारा हुआ ।

की० पराजय, हार (शतरंज आदिमें) ।

मातृ—**वि०** दे० 'मोतदिल' ।

मातृ—**अ०** कि० मत्त होना, नशेमें होना ।

मातृ—**वि०** दे० 'मोतदिल' ।

मातृ—**की०** विश्वसनीयता ।

मातृ—**पु०** [अ०] मृत्युशोक; रोजा-पीडा, स्वापा ।

—झापा—**पु०** वह घर जिसमें मृत्यु हुई हो । —**द्वार**—**वि०** मातृ मगनेवाला, सोगी । —**पुरखी**—**की०** मृत व्यक्ति के घर जाकर समवेदना-प्रकाश करनेकी क्रिया ।

पु० —**मगना**—**शोक** करना ।

मातृ—**वि०** मातृ-संबंधी; शोक-सुख । —**झापा**—**पु०** शोक-सुख पहनावा; काका या नीले रंगका कपड़ा ।

—झापा—**की०** मातृ करनेवालोंकी पक्षि ।

मातृ—**पु०** [सं०] वह जो माताके सामने वा उसपर ही मर्दानगी दिखावे, नेत्रद्वार ।

मातृ—**पु०** [सं०] बाध ।

मातृ—**पु०** [सं०] इन्द्रके सारथिका नाम । —**सारथि**—**पु०**—**पु०** इन्द्र ।

मातृ—**वि०** [सं०] आशाधीन; नीचे काम करनेवाला । **पु०** अनौन कर्मचारी, सहकारी ।

मातृ—**की०** मातृ होनेका भाव, अधीनता ।

माता—**की०** [सं०] जननी ।

माता—**की०** [सं०] माँ, जननी; आवरणिया, बबोद्वार कीका सरोवन; गाय; घरती; कश्मीर; दुर्गा; मातृका; शीतला; चैत्यक; आकाश; जीव; विभूति; रेवती; जटामाता ।

—(ता)पिता—**पु०** माँ-बाप ।

माता—**पु०** [सं०] मापनेवाला, मापक ।

माता—**वि०** मतवाला, नशेमें चर् ।

माता—**पु०** [सं०] नाना ।

माता—**की०** [सं०] नानी ।

मातृ—**पु०** [सं०] मामा; धरती; एक तरहका धान । — **पुत्रक**—**पु०** मामाका बेटा; धरतीका फल ।

मातृ—**पु०** [सं०] माता; मातृकी—**की०** [सं०] माता ।

मातृ—**पु०** [सं०] मातृधान सर्प ।

मातृ—**पु०** [सं०] विजौरा नीबू; खजूरका फल ।

मातृ—**पु०** [सं०] विजौरा नीबू ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

मातृ—**पु०** [सं०] माताका बेटा ।

विना माँका ।

मातृका-**खी** [सं०] माता; दादी; धाय; सौतेली माँ; वर्ग-माता; मन्त्राणी, माहेबरी, इन्नाणी, कोमारी, वैष्णवी, बाराही तथा चातुर्धा आदि तांत्रिकोंकी ये सात देवियाँ (इनकी संख्या ७ से १६ तक बतायी गयी है) ।

मातृत्व-**पुं** [सं०] माँ, संतानवती होना; माताका पद ।

मात्र-**अ०** [सं०] केवल, सिर्फ ।

मात्रा-**खी** [सं०] परिमाण; कव्य वर्णके उच्चारणमें लगने-वाला काल; (संगीत) स्वरका स्थितिकाल, एक स्वरके उच्चारणमें लगनेवाला काल; अक्षरमें छमायी जानेवाली स्वर-सूचक रेखा; औषधका एक बार सेवन करने योग्य परिमाण; खुराक; इन्द्रिय; इन्द्रियवृत्ति; धन; कानका एक आभूषण; अवयव । -**प्युतक**-**पुं** ऐसी रचना जिसमें कोई मात्रा हटा देनेसे दूसरा अर्थ निकले । -**वस्ति**-**खी** तैलवस्ति । -**वृत्त**-**पुं** मात्रिक छंद । -**समक**-**पुं** एक छंद । -**स्पर्श**-**पुं** विषयके साथ इन्द्रियका संयोग ।

मात्रिक-**वि०** [सं०] मात्रा-संबंधी; मात्राओंकी गणनावाला (छंद) । -**छंद**-**(सु.)**-**पुं** वह छंद जिसमें मात्राओंकी गणना की जाय ।

मात्सर-**वि०** [सं०] मत्सरयुक्त ।

मात्सर्य-**पुं** [सं०] मत्सरता; मत्सर, दूसरेका उत्कर्ष देखकर जलना ।

मात्स्य-**वि०** [सं०] मत्स्य-संबंधी; मछलीका । पुं० एक ऋषि ।

मात्स्यिक-**पुं** [सं०] मछुआ ।

माध-**पुं** [सं०] मधन; पथ; * दे० 'माधा' ।

माधना-**सं०** क्रि० दे० 'मधना' ।

माधा-**पुं** मस्तक, कलाट, पेशानी; बस्तुका अग्रभाग ।

मुं-**कूटना**-**सि०** पीटना । -**घिसना**-**अनुनय**-**विनय** करना; भूमिमें सिर रग्याकर प्रणाम करना । -**टेकना**-**भूमिमें** सिर लगाकर प्रणाम करना । -**ठनकना**-**किसी** अनिष्टकी पहचाने आशंका होना । -**पची करना**-**देर** तक सोचना-समझना; विशेष परिश्रमसे समझाना, सिर खपाना । -**मारना**-**सि०** मारना, मायापन्थी करना । -**रागना**-**दे०** 'माधा घिसना' । -**(से)पर बल पड़ना**-**चेहरेसे** रोष, अप्रसन्नता प्रकट होना ।

माधुर-**वि०** [सं०] मधुराका । पुं० मधुरावासी; चोरे; कायस्थोंकी एक उपजाति ।

माधे-**अ०** माधेपर; अरोसे । **मुं**-**चढ़ाना**-**शिरोधार्य** करना । -**टीका होना**-**(किसी** बातका) किसीके नाम ठेका होना, खास तौरसे किसीके जिम्मे होना । -**मड़ना**-**गले** कपाना, सिर झोपना ।

माद-**पुं** [सं०] मद, मत्तता; हर्ष; गर्व ।

मादक-**वि०** [सं०] नशा पैदा करनेवाला; हर्षजनक । [खी० 'मादिका'] पुं० दासूह ।

मादकता-**खी** [सं०] नशीलापन ।

मादक-**पुं** [सं०] मत्तता; कामदेव; भर्तृ; लौघ । वि० मादक ।

मादवी-**खी** [सं०] आंग ।

मादूर-**खी** [का०] माँ । -**आद**-**वि०** जन्मका, पैदाइशी

(-जन्म); सहीदर । -**नंग**-**वि०** एकदम नंगा जिसके वदनपर सुत न हो । -**(दे)नंग**-**खी** पत्नीकी माता, सास । -**खीदूर**-**खी** पतिकी माता, सास ।

मादुरिया-**खी** दे० 'मादूर'-'मादुरिया घर बेटी आई'—कबीर ।

मादुरी-**वि०** [का०] माँका; पैदाइशी, जन्मसिद्ध । -**नंग**-**खी** मातृआषा ।

मादा-**खी** [का०] खी; खी प्राणी, नरका उलटा । -**ए-खूर**-**खी** गयी । -**ए-गाव**-**खी** गाव ।

मादिक-**वि०** दे० 'मादक' ।

मादी-**खी** दे० 'मादा' ।

मादस, **मादस**-**वि०** [सं०] मुस्त जैसा ।

मादा-**पुं** [अ०] वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी हो या बनायी जाय; जड़ पदार्थ; सभ्रका मूल, भातु; समझ; योग्यता; मवाद ।

मादी-**वि०** [अ०] मादका, भौतिक, जड़; पैदाइशी ।

माद्वती-**खी** [सं०] मादी जौ नकुल-सहदेवकी माता थी; परीक्षितकी पत्नी ।

माद्री-**खी** [सं०] पांडुकी दूसरी पत्नी; कृष्णकी एक पत्नीका नाम । -**बंदव**, -**सुत**-**पुं** नकुल-सहदेव ।

माद्विष-**पुं** [सं०] माद्रीके पुत्र-नकुल और सहदेव ।

माधव-**पुं** [सं०] विष्णु; कृष्ण; बसंत; वैशाख; मधुएका पक्ष; काली मृगा; सायणाचार्यके माई जो पीछे विष्णुरूप मुनिके नामसे प्रसिद्ध हुए । वि० मधुनिर्मिता; वास्तविक ।

माधिका-**खी** [सं०] माधवी लता ।

माधवी-**खी** [सं०] एक झुगधित फूलोंवाली लता, बांसी; शहदेसे बनी शराब, मधुशर्करा; एक रागिनी; कुटनी; दुर्गा । -**लता**-**खी** बांसी लता ।

माधवेष्टा-**की०** [सं०] बाराही कंद ।

माधयोचित-**पुं** [सं०] ककौल ।

मापुक-**पुं** [सं०] मनुस्मृतिमें उल्लिखित एक वर्णसंकर जाति; मधुएकी शराब ।

मापुकी-**वि०** खी [सं०] मधुकर जैसी, प्रवरकी-सी ।

मापुर-**पुं** [सं०] च्येलेकी फूल । वि० मधुरसे उत्पन्न ।

मापुरई-**खी** मिठास, माधुरी ।

मापुरता-**खी** दे० 'मधुरता' ।

मापुरिया-**खी** दे० 'माधुरी' ।

माधुरी-**खी** [सं०] मधुरता, मिठास; शराब ।

माधुर्य-**पुं** [सं०] मिठास; लाजव्य, सहज सुंदरता; दबाहुता; पांचाजी रीतिवाले काम्यका एक गुण जिसमें उर्वर्ग और संयुक्ताक्षरोंका अभाव, सानुस्वार वणोंका प्रयोग तथा लुट् समासोंका व्यवहार होता है; शब्दा-वलीमें मनकी मोह लेनेका गुण । -**प्रधान**-**वि०** (काम्य) जिसमें माधुर्य गुणकी प्रधानता हो ।

माधूर-**वि०** [सं०] मिष्टभाषी । पुं० एक मिष्टभाषिणी वर्णसंकर जाति ।

माधैवा-**पुं** दे० 'माधव' ।

माघी, **माघी**-**पुं** दे० 'मधुप' ।

मार्गद्विज-**वि०** [सं०] मध्यम, विचला । पुं० दोपहर; शुद्ध यजुर्वेदकी एक शाखा ।

मार्धादिनी-श्री० [सं०] शुद्ध यजुर्वेदकी एक शाखा ।

माध्य-वि० [सं०] मध्यका; विचला ।

माध्यम-वि० [सं०] मध्यका; विचला; मध्यवर्ती । पु० कार्यविशेषकी वाहनरूप वस्तु; 'मीथिवम'; साधन; जरीया ।

माध्यमिक-वि० [सं०] मध्यका; विचला । [श्री० 'माध्यमिकी'] पु० बौद्धधर्मका एक संप्रदाय ।

माध्यस्थ-वि० [सं०] मध्यस्थ; तटस्थ । पु० मध्यस्थता; निष्पक्षता ।

माध्यस्थ्य-पु० [सं०] मध्यस्थता-बीचविषय; निष्पक्षता ।

माध्याकर्षण-पु० [सं०] पृथ्वीकी वह आकर्षणशक्ति जिससे ऊपर उछाली हुई चीज फिर नीचे आती है, गुरुत्वाकर्षण ।

माध्याह्निक-वि० [सं०] मध्याह्नका । पु० मध्याह्नमें करनेका कर्म ।

माध्व-वि० [सं०] मधुनिर्मित; मीठा; मध्वप्रवर्तित; मध्वका अनुयायी । -संप्रदाय-पु० मध्वाचार्य प्रवर्तित हैतवादी वैष्णव संप्रदाय ।

माधिक-पु० [सं०] शब्द बहुधा करनेवाला ।

माधी-श्री० [सं०] मधु आदिसे बनायी हुई शराब; माधवी कला । -मधुरा-श्री० मीठा खजूर ।

माधीक-पु० [सं०] मधुपरी शराब ।

मान-पु० [सं०] आदर, प्रतिष्ठा; आत्म-सम्मान; अभिमान; नायकके किमी अपराधसे नायिकाका रुठना (ता०); क्रोध; परिमाण; पैमाना; मानदंड; नाप; तौल; प्रमाण; तालका एक विराम । -कंद-पु० एक तरहका मीठा कंद । -कलह-कलह-पु० मानजनित कलह । -गृह-पु० कोपनवन । -ग्रंथि-श्री० ग्रिय वा नायककी परखीमें अनुराग प्रकट करनेवाली चेष्टासे उत्पन्न कोप; अपराध । -चित्र-पु० नवशा । -ज-वि० मानसे उत्पन्न । पु० क्रोध । -दंड-पु० नापनेका डंडा; पैमाना । -धन-वि० मानका धनी, प्रतिष्ठा दी जिसका धन हो । -धनिका-श्री० ककरी । -पत्र-पु० अभिनंदनपत्र । -परेक्षा-पु० भरोसा; विश्वास, आशा । -संग-पु० मानहानि; (आयिकाके) मानका हटना । -सरी-वि० श्री० [हिं०] मिजाजदार, स्वाभिमानी । -भाव-पु० रुठनेके समयकी चेष्टा, चोचला । -मंदिर-पु० वेशशाला; कोपभवन । -मनौती-श्री० [हिं०] कठनामाना; मज्जत । -सरोर-पु० विगाड़ । -मोचन-पु० मान छुड़ाना, रुठे हुए प्रियकी मनाना । -रंझा, रंझी-श्री० जलपट्टी । -वर्जित-वि० मानरहित; जलील । -सूत्र-पु० करपनी; नापनेका फीता । -हानि-श्री० अपमान, बेहज्जती । मु० -इस्लाम-वात रखना, (किसीके) बह्यनका सम्मान करना (उन्होंने इस कृत्यसे मेरा मान रख लिया) ।

मानक-पु० [सं०] मानकंद ।

मानसा-श्री० मनौती ।

मानन-पु० [सं०] मान, आदर करना ।

मानना-स० कि० स्वीकार, कबूल करना; आदर, मान करना; गुण, योग्यताका कायल होना; (किसीपर) मज्जा करना; तिथि, पर्व आदि स्वीकार और उस दिनके विशेष कर्तव्योंका पालन करना, मनाता; मज्जत करना; समझना, खयाल करना । अ० कि० समझना, फर्ज करना; रानी होना ।

माननीय-वि० [सं०] मान करने योग्य, आदरणीय ।

मानव-पु० [सं०] मनुष्यकी संतान, मनुष्य; बालक ।

वि० मनु-संबंधी; मनुष्योचित । -बर्मेशास्त्र-पु० मनु-सृष्टि । -पुराण-पु० एक उपपुराण ।

मानवता-श्री० [सं०] मनुष्यता ।

मानवती-वि० श्री० [सं०] दे० 'मानिनी' ।

मानवी-वि० मानवका; मनुष्य-संबंधी । श्री० [सं०] नारी, स्त्री ।

मानवीय-वि० [सं०] मानव-संबंधी, हंसानी ।

मानवेंद्र-पु० [सं०] राजा; नरदेष्ट ।

मानस-पु० मनुष्य-मनु अनेक मानस उपजाये-छत्रप्रकाश; [सं०] मन, चित्त; मानसरोवर; रामचरितमानस । वि० मनसे उत्पन्न; मनःकृत । [श्री० 'मानसी'] -क्षारी(रिन्)-वि० मानसरोवरमें रहनेवाला । पु० हंस । -जम्मा(म्भन्)-पु० कामदेव । -जप-पु० वह जप जो मन ही मन मंत्रका उच्चारण करते हुए किया जाय । -तीर्थ-पु० राग, द्वेष आदिमें रहित मन । -देव-पु० मानवेंद्र, राजा । -पुत्र-पु० (महाकाे) सकल्पमात्रमें उत्पन्न पुत्र । -पूजा-श्री० बाधोपचारके बिना मनसे की जानेवाली पूजा । -व्रत-पु० अहिंसा, सत्य आदि व्रत । -शास्त्र-पु० मनकी प्रकृति, क्रियाओं, वृत्तियों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मनोविज्ञान । -शास्त्री(शिन्)-पु० मानसशास्त्रका पंडित । -स्वम्यासी(सिन्)-पु० दशनामी सन्यासियोंका एक भेद । -सर, -सरोवर-पु० मानसरोवर । -हंस-पु० एक हृत् ।

मानसरोवर-पु० हिमालयमें स्थित एक पवित्र झील ।

मानसालय-पु० [सं०] हंस ।

मानसिक-वि० [सं०] मन-संबंधी ।

मानसी-श्री० [सं०] एक विधादेवी । वि० श्री० मनसे उत्पन्न, मनःकृत (-सृष्टि, -पूजा) । -गंगा-श्री० गोवर्द्धन पर्वतके पासका एक सरोवर ।

मानसून-पु० [सं०] भारतीय महासागरमें बहनेवाली हवा जो मईके दूसरे पखवाड़ेसे सितंबरके मध्यतक दक्षिण-पश्चिम और अक्टूबरके मध्यसे दिसंबरके मध्यतक उत्तर-पूर्व दिशासे चल करती है; भारत और आसपासके देशोंमें दक्षिण-पश्चिमी मानसूनका मौसम, बरसात; वर्षके कुछ महीनोंमें एक और कुछमें उसकी विपरीत दिशासे बहनेवाली हवा ।

मानसीका(कस्)-पु० [सं०] हंस ।

मानहूँ-अ० दे० 'मानो' ।

माना-स० कि० मापना, नाप-तौल करना । अ० कि० जडना, समाना ।

मानिद-वि० [फा०] सपना, समान ।

मानिक-पु० एक प्रसिद्ध रत्न, माणिक्य, छाल । -चंदी-श्री० साधारण सुपारी । -देस-श्री० मानिकता पूरा ।

समिका-खी [सं०] मध, शराब; बाट पकका बनन ।
मानिहर-पु० [अ०] कक्षाका प्रमुख विद्यार्थी जिसका कर्तव्य कक्षामें अनुशासनकी रक्षा आदि करना होता है ।
मानिक-वि० [सं०] सम्मानित ।
मानिता-खी०, मानिन्ध-पु० [सं०] मानी होनेका भाव, अभिमान, गौरव ।
मानिनी-वि० खी० [सं०] मान, अभिमान करनेवाली, मानवती । खी० नायकके किसी अपराधसे कड़ी दुई नायिका (सा०) ।
मानी-खी० [सं०] नापनेका पात्र जिसमें दो अजकिपर कोई चीज आवे; सोलह सेरका अन्नका मान; वर्षा; कुदाल आदिका छिद्र जिसमें बैठ पड़नायी जाय; वह छेद जिसमें कोई चीज जड़ी जाय; चक्कीके ऊपरवाले पाटकी छक्की । पु० [अ०] अर्थ, मतलब, अभिप्राय; हेतु (बहु०में व्यव-हृत) ।
मानी(निव)-वि० [सं०] मान करनेवाला; मानयुक्त, प्रति-ष्ठित; स्वामिमाना; कूडा हुआ (नायक); (सभासके अंतमें) माननेवाला (पंडितमानी, मटमानी) । पु० सिंह ।
मानुष-पु० दे० 'मनुष्य' ।
मानुष-वि० [सं०] मनुष्य-संबंधी, मानव । पु० मनुष्य; प्रमाणके तीन भेदोंमेंसे एक ।
मानुषक, मानुषिक-वि० [सं०] मनुष्य-संबंधी ।
मानुषी-वि० मानुषीय, मनुष्यका । खी० [सं०] खी, नारी; चिकित्साके तीन भेदों—आधुरी, मानुषी, दैवी—मेंसे एक ।
मानुष्य, मानुष्यक-पु० [सं०] मनुष्यता; मानवदेह, मनुष्यजाति; मनुष्य-समूह । वि० मनुष्य-संबंधी; मनुष्यका ।
मानुस-पु० मनुष्य, आदमी ।
माने-पु० मानी, मतलब, अर्थ ।
मानो, मानो-अ० जैते, गोया ।
मानोशक-पु० [सं०] मनोहरता ।
मानो-अ० दे० 'मानो' ।
मान्य-वि० [सं०] मानने योग्य, आदरणीय, पूज्य । -स्थान-पु० मान्यता, पूज्यताका कारण (विष्णु, बंधु, बय, कर्म और विद्या) ।
मान्यता-खी० [सं०] (किसी सिद्धांत आदिका) मान्य होना; किसी सत्ताकी स्वीकृति देना या प्रामाणिक मान लेना ।
माप-खी० मापनेकी क्रिया वा भाव; नाप; परिमाण, मिकदार; बाट, मान ।
मापक-पु० [सं०] मापनेवाला; पैमाना; बाट; अनाज तोलनेवाला, बया (खी०) ।
मापन-पु० [सं०] नापना; तराजू ।
मापना-सं० कि० वस्तुका विस्तार, धनत्व या वजन मापन करना, नापना; पैमाइश करना । * अ० कि० मत्त, मत्वाका होना, मातना । खी० [सं०] दे० 'मापन' ।
माफ-वि० [अ० 'मुआफ़'] क्षमा किया हुआ, बरखा गया । -करी-क्षमा करी; रास्ता छोड़ें; जान छोड़ें ।
माफकत, माफिकत-खी० दे० 'मुआफिकत' ।

माफिक-वि० अनुकूल, अनुसार ।
माफ़ी-खी० क्षमा, माफ सिना माना; वह जमीन जिसकी मातृगुजारी वा कमान माफ हो, छाहिराज जमीन । -दार-वि० जिसके पाप माफी जमीन हो ।
माम-पु० ममता, बहता ।
मामकत-खी० [अ० 'मुआमिकत'] मामला; झगडा; विवाद । -दार-पु० तहसीलदार (अ० प्र०) ।
मामका, मामिका-पु० काम-काज, धंधा; देन-लेन; खरीद-बेची; काम; कटना, वात; विवाद, मुकदमा । -दानी,-रसी-खी० बातकी तहतक पहुँचना, व्यवहार-कुशलता ।
मु०-करना-तै करना, समझौता करना । -वटान-सौदा करना ।
मामा-पु० माँका भाई, मातुल । खी० [फा०] माता; इया; खाना पकानेवाली, पाचिका; सेविका, नौकरानी । -गिरी, -गरी-खी० मामाका काम ।
मानी-खी० मामाकी पत्नी; मातुलानी; अपना दोष न मानना; स्वीकृति । **मु०-पीना-अपनी** गलतीपर ध्यान न देना । -अरना-बागी करना, समर्थन करना -'वेद भगत है मामी'-वन० ।
मार्ह-पु० मामा, मातुल ।
मार्ह-वि० [अ०] भरा हुआ; भावार्थ; समृद्ध ।
मामूख-वि० [अ०] अमल किया हुआ; जिसपर अमल किया जाय । पु० वह बात जो रोज की जाय, निरन्तर निरन्तर; अम्यता; रीति, दस्तूर; दस्तुरी; वह व्यक्ति जिसपर मित्ये-रिज्म या दिव्नाटिज्म किया जाय । **मु०-के दिव-रजोधर्मका** समय । -से होना-शुभमती होना (मुसल०) ।
मामूली-वि० रोज होनेवाला, साधारण ।
मार्ह-अ० मध्य, बीच ।
माय-वि० [सं०] मायावी । पु० अक्षर; पीतांबर । * खी० माता, माँ; दे० 'माया' । अ० दे० 'माहि' ।
मायक-वि० [अ०] पु० माया करनेवाला ।
मायका-पु० पीहर ।
मायण-पु० [सं०] वेदभाष्यकर्ता सायण और भाषवके पिता ।
मायन-पु० विवाहमें मातृकापूजनका दिन; उस दिनका कृत्य; [म०] दे० 'मायण' ।
मायनी-खी० मायाविनी ।
मायख-वि० [अ०] मेक करनेवाला, झुका हुआ, आकृष्ट; (रंगबाजी शब्दोंसे समस्त जोकर) मिठा हुआ, मुक्त (सम्बन्धीमायख, खुसीमायख) ।
माया-खी० [सं०] बोझा, कपट; इंद्रजाल, जादू; पर-मेस्वरकी अम्यक बीजरूप शक्ति जो प्रत्येकी कारणभूत है; प्रकृति, अविद्या; जीवकी बंधनेवाले चार पाशोंमेंसे एक (ज्ञेयगम); मोहकारिणी शक्ति; लक्ष्मी; दुर्गा; प्रज्ञा (वे०); कृपा; बुद्धकी माताका नाम; जीला, करामात (वह सब जन्मोंकी माया है); धन-दौलत (हिं०); ममता, (हिं०) संसारसक्ति, पुत्र-कल्लादिमें राग । -कार,-कुर-पु० जादूकर, इंद्रजाल करनेवाला । -आक-पु० माया, मोहका फंदा; बर-गृहस्त्रीका बजाज । -जीवी-वि०-पु० दे० 'मायाकार' । -दैवी-खी० बुद्धदेवकी

माता। -पट्ट-वि० मायावी। -पति-पु० ईश्वर।
-पाक्ष-पु० मायाका पंखा। -पुरी-खी० हरिद्वार।
-प्रयोग-पु० छत्रप्रयोग, वृत्तता; जादूका प्रयोग।
-फल-पु० माजफल। -दृष्ट-पु० सीताकी छलने-
के लिए मारीच राक्षस द्वारा वृत्त स्वर्णशृंगका रूप।
-मोह-पु० अक्षुब्धको मोहनेके लिए विष्णुकी देहसे
उपपन्न पुत्रविशेष; माया और मोह। -मुद्-पु० माया-
बलसे किया जानेवाला मुद्। -बाद्-पु० संसारकी
मिथ्या माननेका सिद्धांत। -बादी(विच्)-पु० माया-
वादको माननेवाला। -सीता-खी० सीताहरणके पूर्व
अग्निद्वारा रचित नकली सीता। -सुत-पु० बुद्धदेव।

मायावि-पु० [सं०] नरविक।

मायाव-पु० [सं०] मगर।

मायामय-वि० [सं०] मायायुक्त।

मायावली-खी० [सं०] कामदेवकी खी रति।

मायाबाध(वत्)-वि० [सं०] दे० 'मायावी'। पु० कंठ।

मायावी(विच्)-वि० [सं०] माया करने, जाननेवाला,
जादूगर, छलनेवाला, चरबी। [खी० 'मायाविनी']।

पु० परमात्मा; विज्ञी; माजफल।

मायाव्य-पु० [सं०] रामकी विश्वामित्रसे प्राप्त एक अस्त्र।

मायिक-वि० [सं०] मायावाला; मायाकृत, बनावटी।
पु० जादूगर; माजफल।

मायी(विच्)-वि० [सं०] मायावाला, मायाविशिष्ट। पु०
जादूगर; छलिया; परमेश्वर; कामदेव; अग्नि; शिव।

मायु-पु० [सं०] ध्वज; पिपा; शब्द (वै०)।

मायूर-वि० [सं०] मयूर-संबंधी; मयूरपंखवाला बना; मयूर-
को प्रिय लगनेवाला। पु० मोरों द्वारा खींचा जानेवाला
रथ; मोरोंका झुंड।

मायूरक; मायूरिक-पु० [सं०] मोर पकड़नेवाला।

मायूरी-खी० [सं०] अजमोदा नामक पीषा।

मायूस्-वि० [अ०] निराश, मगधद्वय।

मायूली-खी० नैराश्य, नाउम्मेदी।

मार-पु० [सं०] मारण, बध; मृत्यु; विघ्न; कामदेव; प्रेम,
राग; लज्जाने, बहकानेवाली शक्ति (वै०); धृतर।

-कायिक-पु० मारके अनुचर (वै०)। -क्रिच्-पु०
शिव; बुद्ध।

मार-खी० मारनेकी क्रिया, धोद; मारपीट, लफाई;
निजाना (तोपकी मार); कट, क्लेश (मरीचीकी मार)।

-कट-खी० हरने-बाधितारकी लफाई, बुद्ध; बैरिजी।
-धाक्-पीट-खी० लफाई, एक दूसरेकी मारना।

मार-पु० [का०] सौंप। -आस्तीन-पु० आस्तीनका
सौंप, दोहा वनकर डुरमनी करनेवाला। -झोर-पु०

अफमानिस्तान आदिमें होनेवाला एक तरहका बकार।
-गीर-पु० संपेरा। -पैच-पु० छल-कपट, जाऊ-करब।

-माही-खी० बाम मछली। -(रे)गज-पु० खजानेकी
रक्षा करनेवाला सौंप।

मारक-वि० [सं०] मारनेवाला, जान लेनेवाला; नाशक;
दमन या शमन करनेवाला। पु० मारणकरी; महामारी;

बाध। -व्याध-पु० कुंठकीमें लगने सातवाँ और दूसरा
स्वान।

मारका-पु० [अ० 'मार्क'] चिह्न, निशान; [अ०] बुद्ध-
लक्ष; बुद्ध; लफाई-लफाई; हंगामा। -आराई-खी०
लगनेके लिए पंक्तिबद्ध होना; बुद्ध। -(के)का-मुचिक;
भारी, महत्त्वपूर्ण (मारकेकी बात)। मु०-सर करवा-
बुद्धमें जयकाम करना।

मारकील-पु० एक मोटा, कोरा कपड़ा।

मारकेछ-पु० [सं०] शत्रुकी संभावना उपस्थित करने-
वाला व्यवहार।

मारग-पु० दे० 'मार्ग'।

मारगम-पु० दे० 'मार्गण' (माण)-'राम-मारगम-गन
चले लहलहात जनु ब्याल'-रामा०।

मारजन-पु० दे० 'मार्जन'।

मारण-पु० [सं०] मारना, जान लेना; शत्रुनाशके लिए
किया जानेवाला तांत्रिक अभिचार; भस्म करना (धातु-
का); एक विश्व।

मारसीक-पु० एक तरहका बका हथौड़ा।

मारभा-पु० कि० पीटना, प्रहार करना; धोद पहुँचाना,
फिस्ती चोवसे आघात करना; ठोंकना (मिच्छ); पटकना
(सिर); पछाड़ना; जान लेना, हत्या करना; काटना,
जकाना (मरदन); जीतना (सैदान, कुश्ती); नाश करना,
बर्बाद करना; पकड़ना (मछलियाँ); शिकार करना;
दवाना (गुस्ता, पिपा); सहना (भूख, ब्याल); प्रभाव
रहित कर देना (जहरकी मारना); भस्म, कुशता करना
(धातु); लगाना (गोता, लकड़)।

मारकृत-खी० [अ०] जरीया, बलीका; हान; अभ्यात्म-
हान; अभ्यात्म-विषयक रचना।

मारवा-पु० एक सुकर राग।

मारवाह-पु० राजपूतानेका एक भाग (अजमेर, जयपुर)।

मारवाही-वि० मारवाह देशका। पु० मारवाहवासी।
खी० मारवाहकी भाषा।

मारा-वि० मारा हुआ; म्रत, पीकित। * खी० माला-
'दूद आँसु जनु मलतनह मारा'-वं०। मु०-मारा
फिरवा-दुर्दशाग्रस्त होकर जहाँ-तहाँ भटकना; ठर-ठरकी
ठोकरें खाना।

मारालक-वि० [सं०] घातक, संहारकारी।

मारामार-खी० इफरात, बहुतायत; हलचल, भगदड़; दौड़-
धुप; मारपीट। अ० बहुत जल्दी।

मारि-खी० [सं०] महामारी, मरी; मारण, बध।

मारिका-खी० [सं०] मरी, महामारी।

मारिक-पु० दे० 'मारीच'।

मारित-वि० [सं०] मारा हुआ; नष्ट किया हुआ; भस्म
किया हुआ (द्रव्य)।

मारिच-पु० [सं०] नाटकका सूत्रधार; नाटकदिमें किसी
सम्मानित व्यक्तिसे सौंपनका शब्द; मरता नामका
साग।

मारी-खी० [सं०] मरी, महामारी; चंकी।

मारीच-पु० [सं०] एक राक्षस जिसने सीता-हरणके समय
सीनेका मृग बनकर सीताको लकवाया था; बका हथौड़ा;
मिथंके पीछेका समूह। वि० मरीचि-रहित (सं०)। -बहरी
-खी० मिथंका पैर।

मारीकी-खी-[सं०] बुद्धदेवकी माता, मायादेवी ।
मरहंड-पु० [सं०] सौंषका अंश; मोहर ।
मरुत-पु० [सं०] बासु; बासुके अधिष्ठाता देवता; बास; प्राण; स्वामी नक्षत्र । वि० मरु-संघी ।-**खचव**, -**सुल**-पु० इन्मार् । -**अल**-पु० (चरोंके द्वारा) सर्वत्र प्रवेश करना (राजाके कर्तव्योंमेंसे एक) ।
मारुतात्मज-पु० [सं०] इन्मार् ।
मारुताशन-पु० [सं०] सौंप; कांसिकैयका एक अनुचर ।
मारुति-पु० [सं०] इन्मार्; भीम ।
मारु-पु० बुद्धमें गाथा-बजावा जानेवाला एक राग; अंका; मरुदेशवासी । वि० काट करनेवाला (मारु नवन); युद्धो-त्साह; रणरंग जगानेवाला (मारु बाजा) । -**बाजा**-पु० एक बाध ।
मारुज-वि० [अ०] अर्ज किया हुआ, निवेदित । पु० निवेदन, प्रार्थना ।
मारुका-वि० [अ०] प्रसिद्ध, ज्ञात; (किया) चित्तका कर्ता मान्य हो ।
मारु-अ० के कारण, बजहसे ।
मारुंड-पु० [सं०] दे० 'मारुण्डेय' ।
मारुण्डेय-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि । -**पुराण**-पु० १८ मुख्य पुराणोंमेंसे एक जो एक पक्षी और मारुण्डेय ऋषि के स्मारकरूपमें है । (दुर्गासप्तमती श्वी पुराणका एक अंश है ।)
मारु-पु० एक जर्मन सिक्का जो अंग्रेजी शिल्पिके बराबर होता है ।
मार्केट-वि० [सं०] बंदर-संघी ।
मार्कव-पु० [सं०] मैगरेया ।
मार्का-पु० छाप, चिह्न । वि० चिह्नवाला (समासमें) ।
मार्केट-पु० [अ०] बाजार, मंडी ।
मार्किस-पु० [अ०] अंग्रेज सरदारोंकी उपाधि जिसका दर्जा ब्यूक और अर्लके बीच होता है ।
मार्ग-पु० [सं०] रास्ता, पथ; भ्रमणपथ (ग्रहका); गुदा; कस्तूरी; शृंगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास । -**तोरण**-पु० (अभिनदन आदिके लिए) रास्तेमें बनाया हुआ तोरण या फाटक । -**दर्शक**-वि०, पु० रास्ता दिखानेवाला, रह-नुमा । -**त्रग**-पु० राजमार्गके शहर-उपर बसा हुआ बाजार, कत्वा आदि । -**धेनु**-**धेनुक**-पु० एक योजन या चार कोस । -**बंध**-पु० रास्ता रोकनेके लिए रखे गये पत्थर, बल्ले आदि । -**रक्षक**-पु० रास्तेकी निगरानी करने-वाला । -**क्षोभक**-पु० रास्ता साफ करनेवाला, अग्रणी । -**हर्ष**-पु० राजपथपर बनाया हुआ प्रासाद ।
मार्गण-पु० [सं०] अन्वेषण, खोज, प्रेम; याचना; याचक; बाण ।
मार्गणक-वि०, पु० [सं०] याचक, निवेदक ।
मार्गजा-खी-[सं०] अन्वेषण; याचना ।
मार्गज-पु० दे० 'मार्गण' ।
मार्गव-पु० [सं०] स्मृतियोंके अनुसार एक संकर जाति ।
मार्गशिर, **मार्गशीर्ष**-पु० [सं०] अगहनका महीना ।
मार्गिक-पु० [सं०] पक्षिक; युगोंकी मारनेवाला, शिकारी ।
मार्गित-वि० [सं०] अन्वेषित ।

मार्गी-खी-[सं०] संगीतमें एक मूच्छना ।
मार्गी(मिन्)-वि० [सं०] भागे बहकर रास्ता बतानेवाला; पथप्रदर्शक ।
मार्च-पु० [अ०] इसकी सन्का तीसरा महीना; सैनिकोंका नवी-पुर्जी वालासे चलना; सेनाका प्रस्थान, हूव ।
मार्च-पु० [सं०] मार्जन; भीषी; विष्णु ।
मार्चक-वि०, पु० [सं०] मार्जन करनेवाला ।
मार्चव-पु० [सं०] भी-भोजकर साफ करना; शोधन; शरीरकी अंतर्वाष्प श्रुतिके लिए मंत्र पढ़ते हुए कुशादिते जल छिन्नकना; दोषहानन; औषधका पेश ।
मार्जना-खी-[सं०] मार्जन; सुदृग्-ज्वनि ।
मार्जनी-खी-[सं०] हाम्प ।
मार्जनी(मिन्)-पु० [सं०] अग्नि ।
मार्जनीय-वि० [सं०] मार्जन करने योग्य ।
मार्जार-पु० [सं०] बिलास । -**कंठ**-पु० मोर । -**कणिका**, -**कणी**-खी-बाहुडा । -**गंधा**-खी-मुद्र-एणी ।
मार्जारक-पु० [सं०] बिल्ली; मोर ।
मार्जारी-खी-[सं०] मादा बिल्ली; गंधनाकुंजी; कस्तूरी ।
-टोही-खी-[सं०] एक रागिनी ।
मार्जारीय, **मार्जालीय**-पु० [सं०] बिल्ली; शूद्र; देहका मार्जन करनेवाला ।
मार्जाल-पु० [सं०] दे० 'मार्जार' ।
मार्जित-वि० [सं०] शोधित ।
मार्जिता-खी-[सं०] दहीमें घी, चीनी, सख्ख आदि जल-कर बनाया जानेवाला एक खाद्य (मौखंड ?) ।
मार्तंड-पु० [सं०] सूर्य; शक्र; आक ।
मार्सिक-वि० [सं०] मिट्टीसे बना हुआ, श्रुपिकासे निर्मित । पु० कसीरा; पुरवा ।
मार्त्य-वि० [सं०] मर्त्य, मरणशील । पु० मरणशीलता ।
मार्तव्य-पु० [सं०] सुदृग् बजानेवाला; नगर ।
मार्तृगिक-वि०, पु० [सं०] सुदृग् बजानेवाला ।
मार्तव-पु० [सं०] सुदृता; चिपकी कीमलना; नरमी; परायेका दुःख देखकर दुःखी होना; एक वर्णसंकर जाति ।
मार्तृक-वि० [सं०] शूद्रोंका-अंगूरका बना हुआ । पु० मष ।
मार्कत-खी-[अ०] दे० 'मारफत' ।
मार्मिक-वि० [सं०] मर्मज्ञ, लूनी-बारीकी समझनेवाला; मर्मस्पर्शी ।
मार्शल-वि० [अ०] युद्धोपयोगी; वीर; युद्धप्रिय । पु० सेनापतिके दरजेका फौजी अफसर । -**ल**-पु० फौजी अफसरोंका शासन, सैनिक शासन ।
मार्ष, **मार्षिक**-पु० [सं०] मरसेका साग ।
मार्शि-खी-[सं०] मार्जन, शोधन ।
माल-पु० [सं०] एक म्लेच्छ जाति; बंगालका एक प्रदेश, आधुनिक मेदिनीपुर; क्षेत्र; कपड़; वन; विष्णु; बराल ।
माल-खी-दे० 'माला'; चौकी सक्क; बरलेके मुंढेरसे जानेवाली सड़की चोरी । • पु० दे० 'मल'; † सक्कके आस पासकी कच्ची भूमि [अ०] कलबाव, सामान; बह-मूल्य वस्तु; वन-चौराह; वस्तु, सामग्री; वाणिज्य-क्षामग्री;

मालगुजारी, राजस्व; स्वादिष्ठ और तर मोज्य पदार्थ; रेल आदिसे भेजा जानेवाला सामान; वह चीज जिसपर विट्टी दाली जाय; उपपादनभूत वस्तु; बनका पास; हकीकत, हसी (कुछ माल न समझना)। -**अवास्त-ली०** लगान, मालगुजारी आदिसे मुकदमे सुननेवाली अदालत। -**झाना-पु०** माल-अस्तवा' रखनेका स्थान, गोदाम। -**शाही-ली०** माल देनेके काम जानेवाली ट्रेन। -**गुजारी-पु०** मालगुजारी अदा करनेवाला, जमींदार (मध्य देश)। -**गुजारी-ली०** भूमिकर, जमीनका मह-सुख जो जमींदार सरकारको अदा करता है। -**गोदाम-पु०** बड़े व्यापारीका मालखाना, व्यापारकी वस्तुएँ रखनेका स्थान; रेल, जहाज आदिसे आने-जानेवाला माल रखनेका स्थान। -**जामिन-पु०** नगदी जमानत देनेवाला। -**डाल-पु०** रुपया-पैसा, माल-मत्ता। -**दार-वि०** धनी। -**दूना-पु०** एक पक्वान्न जो आटेकी चीनीके रसमें घोलकर मेवे डालकर धीमे पूर की तरह छान लेनेसे तैयार होता है। -**भूमि-ली०** नेपालके पूर्वमें अवस्थित एक प्रदेश। -**मंजी-पु०** राजस्वमंत्री। -**मत्ता-मत्ता-पु०** धन-सौकर, अस्तवा। -**मत्त-वि०** धनमदसे मत्त। -**मल्ली-ली०** धनमद। -**महकमा-पु०** राजस्वका प्रबंध करनेवाला सरकारी विभाग। -**माल-वि०** माल मारनेवाला, गवन करनेवाला। -**मु०** -**उवावा**-तर माल खाना; रुपये खर्च करना या गायब करना। -**काटना-दूतरेका** पैसा इधिवाना; नाजायज तौरसे हथपा पैसा करना; चकती ट्रेन आदिसे माल चुराना। -**न समझना**-हकीकत न समझना, कुछ न गिनना। -**मारना-दूतरेका** धन इधिवाना, रिश्वत, ख्यानात आदिसे पैसा पैदा करना।

मालकङ्गमी-ली० एक लता जिसके दानोंका तेल दवाके काम आता है।

मालक-पु० [सं०] नीम; गोंबके पासका जंगल; नरिचरी-का बना पाव; लाल-पत्र।

मालका-ली० [सं०] माल।

मालकोश, मालकौषा, मालकौशिक-पु० [सं०] एक ओख राग।

मालखंभ-पु० एक खंभा जिसपर तरह-तरहकी कसरत की जाती है, मलखंभ।

मालचकक-पु० [सं०] कूल्हा।

मालति-ली० दे० 'मालती'।

मालती-ली० [सं०] एक प्रसिद्ध लता जिसके फूलोंमें बड़ी मोठी सुगंध होती है; चाँदनी; सुवर्ती; रात्रि; एक नदी; एक बर्णवृत्त; जायफल, कछिका। -**झार-जात-पु०** सुनामा। -**टोही-ली०** [हिं०] एक रागिनी। -**सीरज-पु०** सुहागा। -**पत्रिका-ली०** जात्रिका। -**कल-पु०** जायफल। -**माला-ली०** मालतीके फूलों-की माला।

मालद्व-पु० [सं०] रामायणमें वर्णित एक प्रदेश।

मालद्व-पु० पूर्वी बिहारका एक नगर; उस नगरके आस-पास होनेवाला एक ककरी बाग।

मालदीप-पु० हिंद महासागरका एक द्वीपसूत्र।

मालन-ली० दे० 'मालिन'।

मालहरी-ली० एक तरहकी ईल।

मालव-वि० [सं०] मलय-संबंधी; मलयगिरिपर लपक। पु० चंदन।

मालव-पु० [सं०] मालवा; मालवाके निवासी; एक राग। -**गौह-पु०** एक संकर राग। -**झी-ली०** श्री रागकी एक रागिनी।

मालवक-पु० [सं०] मालवा; मालवाका निवासी।

मालवा-पु० मध्य भारतका एक प्रसिद्ध प्रदेश। ली० एक नदी।

मालवी-वि०, पु० दे० 'मालवीय'। ली० [सं०] एक रागिनी; पावा।

मालवीय-वि० [सं०] मालव-संबंधी; मालवाका। पु० मालवाका रहनेवाला; मालवीकी एक उपजाति। -**पंडित मदनमोहन**-सुप्रसिद्ध भारतीय नेता; जन्म २५ दिसंबर, १८६१, मृत्यु १९४६; काशी हिंदू विश्वविद्यालयके संस्थापक; हिंदू संभ्यताके सजीव प्रतीक थे। ३५ वर्षतक निरंतर कांग्रेसकी सेवा की और १९०९, १९१८, १९३२ में तीन बार उसके अध्यक्ष चुने गये।

मालसी-ली० [सं०] एक रागिनी; केशोंकी परिपुष्ट करनेवाला एक वृक्ष।

माला-ली० [सं०] पंक्ति; भेणी; हार; माल्य; लकी; समूह। -**कंड-पु०** अपामार्ग। -**कंद-पु०** एक कद। -**कर-कार-पु०** माली, माला बनानेवाला। -**गुण-पु०** हार। -**ग्रंथि-ली०** ग्रंथिद्वारा। -**गुण-पु०** भूस्त्रण। -**दीपक-पु०** दीपक अलंकारका एक भेद जहाँ पूर्व-पूर्व कथित वस्तु उत्तर-उत्तर कथित वस्तुके उत्कर्षका कारण हो (यह दीपक और एकावलीके मेलसे बनता है)। -**दूर्वा-ली०** ग्रंथिद्वारा। -**बर-वि०** जो माला धारण किये हो। -**प्रस्थ-पु०** एक प्राचीन नगर। -**फल-मणि-पु०** हड्डा। **सु०** -**फेरना**-जप करना, भगवद्-जन करना।

मालामाल-वि० धन-धान्यसे भरा हुआ, समृद्ध; भरपूर।

मालारिष्ट-ली० [सं०] पाचो।

मालाळी-ली० [सं०] एका।

मालावती-ली० [सं०] एक रागिनी।

मालिक-पु० [सं०] माली; रंगरेज; एक चिड़िया; [अ०] स्वामी, अधिपति; ईश्वर; पति।

मालिका-ली० [सं०] पंक्ति; माला, हार, चंद्रमालिका; देवी; अंगुरी शराब; जल्सी; राजभवन; एक नदी; एक चिड़िया।

मालिकाना-पु० जमींदारीका हक जो कायतकार जमींदार-को देता है; स्वामित्व। वि० मालिक जैसा।

मालिकी-ली० स्वामित्व; मालिकाना हक; मिलकियत।

मालित-वि० [सं०] जिसे माला पहनायी गयी हो; जो बेर किया गया हो।

मालिन-ली० मालीकी ली०; मालीका काम करनेवाली ली०।

मालिनी-ली० [सं०] मालिन; चंपा नगरी; दुर्गा; मंदा-विनी; विनीषणकी माता; बिराट्टके महलमें गुप्त वास करते समय द्रौपदीका नाम; एक नदी जिसके तटपर शकुंतलाका

जन्म हुआ था; एक छद ।

मासिक्य-पु० [स०] मलिनता; अपवित्रता; अपकार ।

मासियत-क्री० मूय; वन, दौकत ।

मासिषा-पु० [अ०] माल्युनारी; मासियत ।

मासिषा-क्री० [अ०] मलनेका भाव या काम, मर्दन ।

मासी-वि० मालका, आर्थिक ।

मासी(लिय)-वि० [सं०] जो माला पहने हो; युष्क, मंडित (अंशुमाली) । पु० माला बनाने, फूल बेचनेवाला; बागवान; एक हिंदू जाति जो फूल बेचने, माला रूपने आदिका काम करती है ।

मासीप्रलिया-पु० [य०] विषाद रोग, चित्तका स्वभावतः सिन्न, सशंक रहना ।

मासीवा-वि० [फा०] मला हुआ । पु० चूरमा, मलीया; ऊनी शाल या पट्ट-जिसके रोप मलनेसे बहुत नरम हो जाते हैं ।

मासु-क्री० [सं०] एक लता; नारी । -धान-पु० एक सौं । -धानी-क्री० एक लता ।

मास्य-वि० [अ०] जाना हुआ, खात; प्रकट; प्रसिद्ध ।

मासुर-पु० [सं०] बिल्ब-वृक्ष; कैयका पेड़ ।

मास्य-पु० [सं०] माली ।

मास्येया-क्री० [सं०] बही श्लायची ।

मासीपमा-क्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें एक उपमेयके अनेक उपमान कहे जाते हैं ।

मास्य-पु० [सं०] माला, हार; पुष्प । -जीवक-पु० माली । -पुष्प-पु० सनका पौधा । -पुष्पिका-क्री० शणपुष्पी । -हृत्ति-पु० माली ।

मास्यवान्(वत्)-वि० [न०] जो माला धारण किये हो । पु० पुर्णार्गेमें वर्णित एक पर्वत; एक राक्षस ।

मासु-पु० [सं०] एक वर्णसंकर जाति ।

मासुवी-क्री० [न०] कुश्ती ।

मावस-पु० दे० 'महावत' ।

मावली-पु० दे० 'मवाली' ।

मावस-क्री० दे० 'अमावस' ।

मावा-पु० सप्त; मौड़; खीया; चदनका वृक्ष; तवाकूमें डाला जानेवाला सुगंधित खमीर, मसाला; [अ०] आश्रयस्थान, ठिकाना । † क्री० मा ।

माघ-पु० [फा०] उरद । सु० -मारना-उरदके दानोंपर मंत्र पढ़कर किसीपर फैकना, जादू करना ।

माशा-पु० आठ रत्तीका एक वजन, तोलका बारहवाँ भाग । सु० -तोला होना-चित्तका स्थिर न होना, छन-छनमें बदलना ।

माशाब्रह्मा-अ० जो अल्लाह चाहे; क्या कहना है । (किमीकी सुदरताकी सराहना करते हुए बोल्ते हैं, खुदा नजदे बदसे बचायेका-सा भाव होता है) ।

माशी-वि० उरदके रंगका । पु० स्याही मास्य, हरा रंग ।

माशुक्-वि० [अ०] जिसपर कोई आशिक हो, प्रेमपात्र, प्यारा; सुंदर, मोहक । -(श्री)हृषीकेशी-पु० ईश्वर, खुदा ।

माशुका-क्री० [अ०] प्रेयसी, प्रेमिका ।

माशुकाना-वि० माशुकी जैसा । -अंदाज-पु०, -अदा-क्री० मय सुमानेवाली अदा, हाव-भाव ।

माशुकी-क्री० माशुकपन; मोहक रूप, हाव-भाव ।

माष-पु० दे० 'माष'; [सं०] उरद; माशा; मस्ता; महामुख । -कलाव-पु० उरद । -पर्णी-क्री० जंगली उरद । -शोनि-पु० पाप । -वर्द्धक-पु० सुनार ।

माषना-अ० कि० दे० 'माषना' ।

माषाद-पु० [सं०] कलुआ ।

माषाश, **माषाशी(शिर)**-पु० [सं०] धाव ।

मास-पु० [सं०] वर्षका बारहवाँ भाग, महीना; १२की सख्या । -कालिक-वि० महीनेभर रहनेवाला । -आत-वि० एक महीनेका (शिष्ट) । -वेच-वि० जिसे महीनेभरमें चुकाना हो । -प्रमित-पु० प्रतिपदाका चंद्रमा । -प्रवेश-पु० महीनेका आरंभ । -कल-पु० मास-विशेषका शुभाशुभ फल । -मास-पु० वर्ष । -स्तोम-पु० एक वृत्त ।

मासन-पु० [सं०] सोमराजी लता ।

मासना-अ० कि० 'मलना । स० कि० मिथाना ।

मासर-पु० [सं०] मौड़; यहाँमें प्रयुक्त एक पेय; कौजी ।

मासाव-पु० [सं०] महीनेका अंत; अमावस्या; सकांति ।

मासावधिक-वि० [सं०] एक महीने बना रहने या महीनेभरमें होनेवाला ।

मासिक-वि० [सं०] मास-संबंधी; प्रति मास होनेवाला; माहवार, महीनेमें एक बार निकलनेवाला (पत्र, पुस्तक) । पु० प्रतिमास निकलनेवाला पत्र, माहनामा; मासिक आद । -धर्म-पु० कलु, रजोधर्म ।

मासी-क्री० मोसी, मौकी बहन ।

मासीन-वि० [सं०] एक महीनेका; माहवार ।

मासुरी-क्री० [सं०] दादी ।

मासूम-वि० [अ०] निष्पाप; निर्दोष; कलुष-रहित ।

मासुर-वि० [सं०] मधुरका; मधुरकी आकृतिका ।

मासेहि-क्री० [सं०] प्रति मास किया जानेवाला वृद्ध ।

मास्टर-पु० [अ०] मालिक; गृहस्वामी; शिक्षक; व्यापारी जहाजका कप्तान; विषयविशेषमें निष्णात, उस्ताद । -आव् आदू-स-पु० साहित्यकी एक डिग्री या उपाधि, एम० ए० । -आव् काज़-पु० कानूनकी एक डिग्री, एल० एल० एम० । -की-क्री० वह कुंजी जिससे अलग-अलग कुंजियोंसे खुलनेवाले बहुतसे ताले खुल जायें । -टेयर-पु० होशियार और निपुण दर्जा । -पीस-पु० श्रेष्ठ, कलामय कृति ।

मास्टरी-क्री० मास्टरका भाव या काम, अध्यापक-वृत्ति ।

मास्य-वि० [सं०] महीनेभरका; महीनेभर बना रहनेवाला ।

माह-अ० मध्य, बीच, में ।

माह-पु० दे० 'माष'; [फा०] चाँद; महीना, मास । -साव-पु० चाँदनी; चाँद । -सावी-क्री० एक आतिश-बानी; छत या चबूतरा जिसपर बैठकर चाँदनीका आनंद ले सकें; चकोतरा । -मासा-पु० मासिक पत्र । -बमाह-अ० हर महीने, माहवार । -हल्ल-रू-वि० चाँदसे मुखबैठा, चंद्रमुख । -बार-अ० हर महीने, प्रति मास । वि० मासिक । -बार-पु० मासिक वेतन, तन-

खाह । -बारी-अ० दे० 'माहवार' । की० मासिक वेतन, वृत्ति; मासिकधर्म, रजोदर्शन । - (हे)कामिछ-पु० पूर्ण चंद्र, राकेस । -नी-पु० दूजका चाँद । मु०-ताब देना -नौपके पक्षीतेमें आग देना ।

माहकस्थली-की० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।

माहत*-की० महात्मा, महिमा ।

माहन-पु० [सं०] ब्राह्मण ।

माहना*-अ० कि० उमरना, उमरमें आना ।

माहकी*-पु० महलका नौकर; सेवक-“...कौन हंस कियो कीस मातु खास माहली”-कविता० ।

माहौं*-अ० दे० 'महें', 'माहें' ।

माहा-की० [सं०] गाय, श्वेतु ।

माहाकुल; माहाकुलीन-वि० [सं०] महाकुल, ऊँचे घरानेमें उत्पन्न ।

माहाजय; माहाजनीन-वि० [सं०] महाजनोचित, बड़े आदमीके योग्य ।

माहास्थ-पु० [सं०] महास्थता; महिमा; गौरव; किसी ज्ञत, स्थान, पूजनका पुण्यजनक फल; इस फलका वर्णन करनेवाली रचना ।

माहाना-वि० [का०] माहवार ।

माहाराज्य-पु० [सं०] महाराजपद, अधिराजत्व ।

माहिं*-अ० मध्य, भीतर ।

माहिचत-की० [अ०] दे० 'माहीचत' ।

माहिचाना-वि० दे० 'माहाना' ।

माहिर-पु० [सं०] इद्र । वि० [अ०] महरार रखनेवाला; कुशल, निपुण; अच्छा जानकार; चतुर ।

माहिहा*-पु० मोही ।

माहिच-वि० [सं०] मैसका (दूध, दही) ।

माहिचिक-पु० [सं०] मैस पढ़नेवाला; व्यवहारिणी क्षीमें अनुरक्त पति; पक्षीके व्यवहारिकी कमाई खाने-वाला ।

माहिचमरी-की० [सं०] ईहव क्षत्रियोंकी राजधानी जो नर्मदाके तटपर समवतः आपुनिक जबलपुरके पास बसी थी-(मंडला ?)

माहिच्य-पु० [सं०] एक वर्णसंकर जाति ।

माही-की० [का०] मछली ।-गीर-पु० मछली पकड़ने-वाला ।-पुस्त-वि० जो बीचमें ऊँचा और किनारोंसे नीचा हो । पु० एक तरहका कारचोवीका काम ।-भरा-तिच-पु० राजाओं, बादशाहोंकी सभारीके आगे चलने-वाले, मछली, ग्रहों आदिकी आकृतियोंवाले; सात हाँडे ।

माहीपत-की० [अ०] तत्त्व, जौहर; अस्वीयत ।

माहुरी-पु० जहर ।

माहूँ, माहौँ, माहो-पु० सरसों आदिकी फसलको कगने-वाला एक बीजा ।

माहौँ-वि० [सं०] इन्द्र-संघर्षी; इन्द्रकी पूजा करनेवाला । पु० यात्राके छिप छुप माना जानेवाला एक योग ।

माहौँ-की० [सं०] इन्द्राणी; पूर्व दिशा; गाय; एक मायका ।

माह्य-वि० [सं०] मिट्टीका बना हुआ । पु० मंगल ग्रह; नरकाक्षर; मूँसा ।

माहेवी-की० [सं०] नाव; माही नदी ।

माहेस-वि० [सं०] मदेश-संघर्षी ।

माहेसी-की० [सं०] दुर्गा ।

माहेश्वर-वि० [सं०] महेश्वर-संघर्षी । पु० शिवोपासक; एक उपपुराण; एक अक्ष ।

माहेशरी-की० [सं०] दुर्गा; एक मातृका; वैद्यकी एक उपजाति; यवतिष्ठा कला ।

मिगनी-की० दे० 'मैगनी' ।

मिगी-की० दे० 'मीगी' ।

मिट-पु० [अ०] टकसाल ।

मिंकाहूँ-की० मीकनेकी क्रिया; मीकनेकी मजदूरी ।

मिस्त-पु० मित्र ।

मिस्वर-पु० मसजिदके बीचमें बना बह ऊँचा स्थान जिसपर खड़े होकर इमाम धार्मिक भाषण करता है ।

मिआद्-की० दे० 'मीआद्' ।

मिआन*-पु० पालकी, मिआना । वि० छोटे डील-डौलका, दे० 'मिआना' ।

मिकदार-की० [अ०] परिमाण; माप-तौल; मात्रा ।

मिक्कनासीस-पु० [सं०] चुपक परधर, 'मैगनेट' ।

मिक्कनासीसी-वि० चुपकाव ।

मिक्कराज्ञ-की० [अ०] कतरनी ।

मिक्कराज्ञा-पु० [अ०] युलगीर; बह तीर जिनके फलमें दो गोसियाँ होती हैं ।

मिकाडो-पु० जापान-मन्त्रादकी उपाधि ।

मिक्सचर-पु० [अ०] पेय औषधि विममें कई दवाएँ मिली हैं ।

मिग*-पु० मृग, हरिण ।

मिचकाना*-स० कि० (फलक) झपकाना ।

मिचना-अ० कि० (ऑखोका) बंद होना ।

मिचराना-अ० कि० अरुचिसे थोड़ा-थोड़ा खाना ।

मिचलाना-अ० कि० मतली आना ।

मिचौनी, मिचौली-की० मीचने, मूँदनेकी क्रिया (किंवल 'ऑखमिचौली'में प्रयुक्त) ।

मिछा*-वि० दे० 'मिछ्या' ।

मिजराच-की० [अ०] तारका बना छस्का जिसकी नोकमें आधात कर सितार आदि बजाते हैं ।

मिज्ञाज-पु० [अ०] मिलावट; पंचमहाभूतों (पूनानी और अरब दार्शनिकोंने चार ही तत्त्व माने हैं)के मिश्रणसे उत्पन्न होनेवाली अवस्था; तबीयत; प्रकृति; स्वभाव; आदत; गर्व, धर्मद । -वूँ-वि० मिज्ञाज समझनेवाला, हचि, बिचार जाननेवाला । -द्वार-वि० धर्मडी । -पुरसी-की०

मिज्ञाज पूछना, तबीयतका हाल पूछना (करना) । -बाछा-वि० धमडी, मिज्ञाजदार । -शिनास-वि०

मिज्ञाज पहचाननेवाला । -शिनासी-की० मिज्ञाज पहचानना । मु० -आली-मुबारक-बारीक-मिज्ञाज कैसा है ? तबीयत ठीक है तो ? -न

मिछना-धमके मारे किसीसे बात न करना, बहतराना । -पहचानना-किसीके हचि-स्वभावको समझना । -पाना-मिज्ञाज, स्वभाव पहचान लेना । -पूछना-

तबीयतका हाल पूछना, कुशल-प्रश्न करना । -मै आना

—विक्रमं भाना । —सातर्षं आसमानपरं होना—बसंत बहुत बढ़ जाना, गर्वसे पाँच सीधे न पचना । —होना—बसंत होना ।

मित्राजी—वि० धर्मजी, मित्राजवाला ।

मिटना—अ० क्रि० चिह्न, दाग आदिका दूर होना, उत होना; नष्ट होना; बर्बाद होना ।

मिटाना—स० क्रि० दाग, निशान आदि दूर करना; नष्ट, उत करना; बर्बाद करना; रर करना ।

मिटिया—खी० मिट्टीका छोटा पात्र । वि० मिट्टीके रंगका; मिट्टीका । —कुस—वि० दुर्बल, कमजोर । —महल—पु० मकई, झोपड़ी (अं०) । —साँप—पु० मिट्टीके रंगका साँप ।

मिटिबाना—स० क्रि० मिट्टी लगाकर या मिट्टी रगड़कर साफ करना ।

मिट्टी—खी० भरतीकी कपरी सतह जो टूटी हुई चट्टानोंके पूरकी बनी होती है और जिसपर पेड़-पौधे उगते हैं; जमीन; धूल, खाक; मरुत, कुदता; झरीकी बनावट; झरीर; प्रकृति; खमीर; लाश । —का लेख—एक प्रसिद्ध खनिज द्रव जो कैपों आदिमें तेलकी तरह जलाया जाता है । **मु०**—उठना—लाश, जनाजा उठना । —करना—खतब, बरबाद करना । —का पुतला—मनुष्य (ला०) ।

—की मूरत—मानव-शरीर । —के आचच—मूख, भोंद ।

—के मोल—बहुत सस्ते दामों (विकना) । —खराब (झ्वार)

होना—अत्येष्टि, क्रिया-कर्म ठिकानेसे न होना । —ठिकाने

लगाना—अत्येष्टि समुचित प्रकारसे होना । —ठिकाने

लगाना—समुचित प्रकारसे (फिलीकी) अत्येष्टि करना । —

ढालना—देखपर परदा ढालना । —देना—लाशकी दफन

करना; लाशकी कर्ममें सुलानेके बाद उपस्थित जनोंका

उपर बोरी-थोकी मिट्टी ढालना (मुसल०) । —पकड़ना—

पक पकना, अच्छी तरह जम जाना । —पलीद होना—

दुर्दशा होना; जलील होना; क्रिया-कर्म ठिकानेसे न

होना । —में मिलना—नष्ट, बरबाद हो जाना । —में

मिट्टी मिलना—सुर्दका दफन होना ।

मिट्टी—खी० चुबन ।

मिट्टू—वि० मधुमाषी; लुप्पा । पु० तोता ।

मिठ—‘मिठा’का समासमें व्यवहृत लघु रूप । —बोला—

वि० मधुरमाषी । —लोना—वि० जिसमें नमक कम

पवा हो ।

मिठाई—खी० मिठास, मिठाव, शरीरी (लकड़, पेदा,

झरती आदि) । **मु०**—चढ़ाना—मन्नत पूरी होनेपर

किसी देवी देवताकी मिठाई अर्पित करना । —बाँटना—

किसी सफलता या अभीष्ट-सिद्धिकी खुशीमें मिठाई

बाँटना ।

मिठाना—अ० क्रि० मिठा होना ।

मिठास—खी० मिठापन, माधुर्य ।

मिटोरी—खी० ज़रद या चनेकी बरी ।

मिषवा—अ० क्रि० चिपक जाना—‘वन आनंद देखिनि

आनि मिषै’ ।

मिषिक—वि० [अं०] बीचका, मध्यवर्ती । —खी—वि०

मिषिक पास (गिरस्कार-सत्यक) । —स्कूल—पु० वह

स्कूल जिसमें मिषिकसकी पढ़ाई होती हो ।

मिषुखिबारी—खी० मदिखा, कुटी ।

मिर्तग—पु० हाथी ।

मिर्तगम—वि० [सं०] थोका चलनेवाला, थोरे चलनेवाला,

मंदगामी । पु० हाथी ।

मिर्तपच—वि० [सं०] थोका अन्न पकानेवाला; कंचुस ।

मित—खी० मिति, सीमा—‘मत्कृत दोस छिह्ने बहुबाभर

उक्त नहीं मित नाथ’—सुर । वि० [सं०] नया-गुला, परि-

मित; थोका; क्षिप्त । —हु—पु० समुद्र । —भाषी(विन्)

—वि० कम बोलनेवाला; नये-तुले शब्दोंमें अपनी बात

कहनेवाला । [खी० ‘मितनापिणी’] । —अनुक—भोजी-

(विन्)—वि० थोका खानेवाला, मिताहार । —मसि-

—वि० अल्पबुद्धि । —व्यसिता—खी० किकायत-शिखरी ।

—व्यथी(विन्)—वि० कम खर्च करनेवाला, किकायत-

शिखार ।

मिताही—खी० मित्रता, दोस्ती ।

मिताक्षरा—खी० [सं०] याज्ञवल्क्य स्मृतिकी विशानेश्वर-

कृत टीका ।

मितार्थ—वि० [सं०] परिमित अर्थवाला । पु० चतुराईके

साथ थोड़ी बातें कहकर ही काम पूरा करनेवाला दूत ।

मितार्थक—पु० [सं०] वह दूत जो थोड़े शब्द कहकर ही

चतुराईसे अपना काम कर ले (सा०) ।

मिताहार—वि० [सं०] थोड़ा खानेवाला; नयी-गुली खुराक

खानेवाला । पु० परिमित आहार ।

मिति—खी० [सं०] मान; सीमा; विज्ञान; समयकी सीमा ।

मिती—खी० तिथि, तारीख; हुकी आदि चुकानेकी तिथि;

दिन । —काटा—पु० गणितकी एक रीति जिससे हुंकी

सुरत और व्याज जोकते हैं । **मु०**—काटना—सूँ

काटना । —पूजना—हुंकीकी अवधि पूरी होना ।

मित्र—पु० दे० ‘मित्र’ ।

मित्र—पु० [सं०] दोस्त, बंधु, सखा; साथी; युवादिमें साथ

देनेवाला राष्ट्र; सूर्य; बारह आठियोंमेंसे पहला । —कर्म-

(नृ)—पु० मित्रोचित कार्य । —ध्व—वि० विश्वासघाती,

दोस्तकी दगा देनेवाला । —द्रोह—पु० मित्रका अहित,

अनिष्ट करना । —द्रोही(विन्)—वि० मित्रका द्रोह

करनेवाला । —पंचक—पु० धी, शहद, डूँबची, सुरागा

और गुग्गुलु-इन पाँचोंका योग । —आच—पु० मित्रता,

दोस्ती । —भेद—पु० दोस्तीका टूट जाना । —बुद्ध-

पु० दोस्तोंके बीचकी लड़ाई, मित्रसे युद्ध । —छात्र-

पु० मित्रकी प्राप्ति, फिलीसे दोस्ती होना । —वत्सल-

वि० मित्रप्रिय । —बहृष्टक—पु० एक वैवाहिक योग ।

—सप्तमी—खी० मार्गशीर्ष-शुक्ल सप्तमी । —सेव—पु०

बारहवें मनुका एक पुत्र; एक बुद्ध ।

मित्रता—खी०, मित्रत्व—पु० [सं०] दोस्ती ।

मित्रा—खी० [सं०] लक्ष्मण-शत्रुघ्नकी माता सुमित्रा; एक

अम्बुका नाम ।

मित्राई—खी० मित्रता ।

मित्राक्षर—पु० [सं०] वह छंद जिसके दोनों चरणोंकी

तुल्य मिलती हो ।

मित्रावरुण—पु० [सं०] मित्र और वरुण ।

मित्रावसु—पु० [मं०] विशावसुका एक पुत्र ।

मिथः(भस्)-अ० [सं०] परस्पर, अन्योन्य ।

मिथि-पु० [सं०] निमित्ते पुत्र जनक ।

मिथिक-पु० [सं०] राजा जनक ।

मिथिका-स्त्री० [सं०] विदेशकी राजधानी । -पति-पु० जनक ।

मिथु-अ० [सं०] झूठमूठ ।

मिथुन-पु० [सं०] नर-मादा, स्त्री-पुरुषका जोड़ा; संयोग; मैथुन; बारह राशियोंमेंसे तीसरी । -भाव-पु० जोड़ा होना; मैथुन ।

मिथुनीकरण-पु० [सं०] नर-मादाको झकड़ा करना, जोड़ा मिलाना ।

मिथुनीभाव-पु० [सं०] मैथुन, जोड़ा खाना ।

मिथुनेष्वर-पु० [सं०] चक्रवाक ।

मिथ्या-वि० [सं०] झूठ, असत्य; व्यर्थ । -क्रोष-पु० बनापटी क्रोध । -ग्रह-पु० हठ, दुराग्रह । -धर्मा-स्त्री० कपटाचरण, मकारी । -अखिपत-पु० असत्य-भाषण, झूठी चर्चा । -ज्ञान-पु० भ्रम । -दृष्टि-स्त्री० नास्तिकता । -निरसन-पु० कसम खाकर इनकार करना । -पुरुष-पु० दे० 'छापपुरुष' । -प्रतिज्ञ-वि० प्रतिज्ञाका पालन न करनेवाला । -भाषी(विन्)-वि० झूठ बोलनेवाला । -मति-स्त्री० भ्रांति । -योग-पु० गलत हस्तेमाल; प्रकृतिविरुद्ध कार्य (आ०) । -वचन, -वाह-पु० झूठी बात, असत्य कथन । -वादी(विन्)-वि० झूठा, मिथ्यावादी । -व्याहार-पु० अनधिकार चर्चा । -साक्षी(विन्)-पु० झूठा गवाह ।

मिथ्याचार-पु० [सं०] कपटाचरण, मकारी ।

मिथ्यात्व-पु० [सं०] मिथ्यापन, झुठपन ।

मिथ्याव्यवसिति-स्त्री० [सं०] एक अनधिकार जहाँ कोई झूठी कही हुई बात साबित करनेके लिए दूसरी झूठी बात कही जाय ।

मिथ्यापवाद-पु० [सं०] झूठी तुष्टमत, आरोप ।

मिथ्यामिश्रण-पु० [सं०] झूठा अभियोग, झूठा इज्जाम लगाना ।

मिथ्यामिर्शन-पु० [सं०] झूठा दोष, तुष्टमत लगाना ।

मिथ्याहार-पु० [सं०] अयुक्त, प्रकृतिविरुद्ध आहार ।

मिथ्योत्तर-पु० [सं०] एक प्रकारका झूठा जवाब ।

मिथ्योपचार-पु० [सं०] गलत इलाज ।

मिथ-प्र० [अ०] से; का; पर । -जानिब-अ० के जानिवसे, तरफसे । -मुसल्ला-अ० कुलमेंसे, सबमेंसे ।

मिनकनार्-अ० कि० डरते-डरते या धीरेसे कुछ बोलना ।

मिनकी-स्त्री० बिही-“मूसा हत उत फिरे, ताकि रही मिनकी”-छुदरदास ।

मिनट-पु० [अ०] घटेका साठवाँ भाग, ६० सेकंड ।

मिन-मिन-अ० धीमे धीमे या नाकसे मिले हुए अल्पद स्वरमें । स्त्री० धीमी या नाकसे मिली हुई अल्पद ध्वनि ।

मिनमिनामा-अ० कि० 'मिन-मिन' करना ।

मिनहा-पु० [अ०] घटाव, मुनरा, कटौती (करना, होना) ।

वि० जो काट लिया गया हो, जो घटा लिया गया हो ।

-ई-स्त्री० मिनहा होना, कटौती ।

मिनिट-पु० [अ०] मिनट; सभा, बैठक आदिकी काररवाई-

का संक्षिप्त विवरण । -मुक-स्त्री० बैठक आदिका कार्य-विवरण लिखनेकी वही ।

मिनिस्टर-पु० [अ०] मंत्री; राजदूत; (रैसाई) धर्मोपदेशक, पादरी ।

मिनिस्टरी-स्त्री० मंत्रीका पद या विभाग; मंत्रिमंडल ।

मिन्नत-स्त्री० [अ०] निनती, आनिजी; चापलूसी; वषकार; कृतवृत्ता । -कथा-वि० एवसान लेनेवाला । -गुजार-वि० कृतवृत्ता । -मु-उठाना-एवसान लेना ।

मिन्मिन्न-पु० [सं०] एक रोग जिससे ग्रस्त आदमी नाकसे बोलता है । वि० जिससे यह रोग हुआ हो ।

मिमिबाबा-अ० कि० 'मि-मि' करना, बकरी या भेड़का बोलना ।

मिर्चा-पु० [फा०] सरदार; मालिक; पति; शिक्षक, वस्ताद; अमीरखादा, मालिकका बैठा; मुसलमान; सम्मानित जनका संबोधन; पहाड़ी राजपूतोंकी उपाधि; दूत; कुटना; † कलावंत, पक्का गवैया । -गिरी, -गरी-स्त्री० पदीनी, शिक्षिका कार्य । -जी-पु० शिक्षक, वस्ताद । -बीबी, -बीबी-पु० पति-पत्नी । -मिह्, -वि० मयुरमाधी; मोला, बुद्ध । पु० वक्ता; तोता । -मु-की जूती, मिर्चा का सर -जिसकी चीज हो उसीके विरुद्ध उसका प्रयोग करना । (अपने मुँह)-मिह्, बनना-(अपने मुँह) अपनी तारीफ करना । -मिटह् बनाना-तोतेकी तरह रटाना, बिना समझाये पढ़ाना ।

मिथान-पु० [फा०] मध्य भाग; तलवार आदिका खोल या मिलाफ । -तह-स्त्री० बीचकी तह । -तहरी-स्त्री० वह विस्तर जिसमें उपरले और अस्तरके बीच रहकी तह हो गयी हो । -दारी-स्त्री० दहाली; कुटनापन । -बाछा-वि० मझोले कदका । -मु-मेंसे निकला पड़ना -बहुत तेज मिजाजका होना, बात-बातपर लकनेकी तैयार होना ।

मिथाना-वि० [फा०] बीचका, मझोला । पु० एक तरहकी पाककी; गाड़ीका बम; हारमे लड़ीके बीचका बड़ा मोती; मझोले कदका पोशा । -क्रह्-वि० मझोले आकारका, जिसका कद न अधिक ऊँचा हो, न नीचा । -रह्-वि० मध्यमा वृत्तिका आश्रय करनेवाला । -रही-स्त्री० बीचका रास्ता एकड़ना, अतिमे बचना ।

मिथानी-स्त्री० [फा०] पाजामेमें दोनों पायँवोंके बीचका कपडा, रुमाक ।

मिरग-पु० दे० 'मृग' । -चिक्का-पु० एक छोटी चिड़िया । -छला-पु० दे० 'मृगछाला' ।

मिरगिया-वि०, पु० मिरगीका रोगी ।

मिरगी-स्त्री० एक मानस रोग, अपस्मार ।

मिरचा-पु० लाल मिर्च ।

मिरचाई-स्त्री० काला-दाना । दे० 'मिर्च' ।

मिरजई-स्त्री० कमरतकका बंदरार लँगरखा ।

मिरज्ञा-पु० [फा०] अमीरजादा, शहजादा; मुगलोंकी उपाधि; तैमूरिया वंशके शाहजादोंकी उपाधि । -ई-स्त्री० बुजुर्गी, सरदारी; मिरजापन, रैसी या हाकिमाना मिजाज; दे० 'मिरजई' । -छेला-पु० छेल-छीला, रंगीला आदमी । -कोवा-पु० दुबला-पतला, नाजुक-

मिजाज मनुष्य - मिजाज - वि० नायकमिजाज; तुल्य-मिजाज ।

मिरजाय-पु० [फा०] मूँगा ।

मिरजानी-वि० [फा०] मंत्रीका ।

मिरदंग-पु० दे० 'सुदंग' ।

मिरबना* -स० कि० मिलावना ।

मिरिच-खी० दे० 'मिर्च' ।

मिरियासि* -खी० बपती, पैतृक मर्यादा - 'वह तो सत्यक मलिन सर करदनकी मिरियासि' - दीनद० ।

मिर्गी* -खी० दे० 'मिरगी' ।

मिर्च* -खी० काले रंगका, गोल, कटुतीक्ष्ण स्वादवाला दाना जो मसालेके रूपमें व्यवहृत होता है; छाल मिर्च, मिरना ।

मु० - (वे०) लगना - बहुत बुरा लगना, अक्षय होना ।

मिल-खी० [अ०] आटा आदि पीसनेकी कल या कारखाना; कपड़ा बुननेकी कल या कारखाना, पुनरीपर, लकड़ी चीरने आदिकी कल या कारखाना । - मजदूर - पु० मिलमें काम करनेवाला मजदूर । - महाल - पु० मिल-मजदूरोंकी बस्ती । - मालिक - पु० मिल या कारखाने आदिका मालिक या संचालक ।

मिलक* - खी० दे० 'मिल्क' ।

मिलकना* - अ० कि० जलना - 'तब फिर जरनि भई नख मिलते, दिया बाति जनु मिलकी' - सूर ।

मिलकाना, मुलकाना* - स० कि० दे० 'मलकाना' ।

मिलकी* - पु० दे० 'मिल्की' ।

मिलता-तुलता - वि० लगभग समान, एकसा ।

मिलन - पु० [म०] मिलना, भेंट; इकट्ठा होना; मिश्रण ।

मिलनसार - वि० जो सबसे प्रेमके साथ मिलता, मेहन-जोड़ रखता हो, सुशील ।

मिलनसारी - खी० मिलनसार स्वभाव, सुशीलता ।

मिलना - अ० कि० संयोग होना, जुड़ना, सटना; एक होना; मिश्रित होना; भेंट होना; भेंटना, गले मिलना; भिड़ना; छूना; समान होना; एकसा होना; पाना (पता, नफा); लाभ होना; सूरोंका मेल होना; पक्षमें हो जाना, अनुकूल हो जाना; * दूध डूबना । मु० मिल-तुलकर - इकट्ठा होकर, मेलके साथ । - (ना) तुलना - भेंट-मुलाकात, राहोसर । - मिल-बाँटकर खाना - सनकी बाँटकर नफे आदिमें दूसरोंकी शामिल करके खाना या उपभोग करना ।

मिलमी - खी० ब्याहकी एक रख, कन्यापक्षवालोंका वर-पक्षवालोंसे गले मिलना और उन्हें रुपये देना ।

मिलबना* - स० कि० दे० 'मिलाना' ।

मिलबाई* - खी० मिलवानेकी क्रिया या भाव; मिलवानेके बदले दिया जानेवाला धन ।

मिलवाना - स० कि० दूसरेकी मिलने या मिळानेके लिए प्रेरित करना; मिलन कराना; योग कराना ।

मिलवाई* - खी० मिलानेकी क्रिया; मिलानेकी उज्जरत; भेंट, मिलन (कैदीके साथ); मिलनी ।

मिला-तुला - वि० मिश्रित, गड़-भड़ ।

मिलान - पु० मिलानेकी क्रिया; मिलाकर बाँचना; तुलना;

६८-क

* पञ्च - 'ओहि मिलान नौ पहुँचे कोह' - प० ।

मिलाना - स० कि० एक चीजका दूसरी चीजमें योग करना, मिळावट करना; इकट्ठा करना, संयोग करना; सटाना, जोड़ना; भेंट कराना; एक व्यक्तिको दूसरेके पास पहुँचाना; स्त्री-पुरुषका संयोग कराना; मेल कराना; मिळाकर देखना, तुलना करना; मिलान करना; किसीको अपनी ओर करना; दूसरे पक्षसे कोड़ना; (बाजेके) खरोंका मेल करना ।

मिळाव - पु० मेल; भेंट; प्रेम, दोस्ती ।

मिळाव - पु० दे० 'मिळावट' ।

मिळावट - खी० मिलाया जाना, मिश्रण; बढ़िया चीजमें घटिया चीजका मेल ।

मिळिब - पु० [स०] औरा ।

मिळिबक - पु० [म०] एक तरहका सोंप ।

मिळिक* - खी० दे० 'मिल्क' ।

मिळिदरी - वि० [अ०] सेना-सम्बंधी, फौजी । खी० सेना, फौज ।

मिळित - वि० [स०] युक्त, लगा हुआ; मिला हुआ ।

मिळीनी - खी० मिळावट, मेल; मिश्रणकी रस या लसमें मिला हुआ रस ।

मिस्क - खी० [अ०] अधिकारभुक्त वस्तु; माल, जायदाद; भूमिपति; जागीर, माफी ।

मिस्कियत - खी० दे० 'मिल्कीयत' ।

मिस्की - पु० मिस्कवाला, जमींदार, जागीरदार ।

मिस्कीयत - खी० वह चीज जिसपर मालिकाना हक हो, जायदाद, जमींदारी ।

मिस्दन, जौन - पु० इंग्लैंडका महान् कवि जिसने 'पैरा-डाइज ऑस्ट' नामक महाकाव्य लिखा (१६०८-१६७४) ।

मिस्त - खी० मेहन-जोड़, मिलनसारी; [अ०] मजहब, दीन, संप्रदाय; जाति, फिर्का ।

मिशन - पु० [अ०] विदेश भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल; मिशनरियोंकी ईसाई बनानेके लिए भेजे हुए धर्मोपदेशकोंका मंडल; प्रदेशविशेषमें धर्मप्रचार करनेवाली संस्था; जीवन का ईश्वरानियुक्त कार्य ।

मिशनरी - पु० [अ०] (ईसाई) धर्मोपदेशक, पादरी ।

मिशि, मिशी - खी० [स०] मधुरिका; शतपुष्पा; जटा-मासी ।

मिश्र - पु० दे० 'मिस्त्र'; [स०] श्रेष्ठ, सम्मानित जन; ब्राह्मणोंकी एक उपजातिकी उपाधि; हाथियोंकी एक जाति; औषध लवण; इंद्रवन; कृत्तिका, विशाखा नक्षत्रोंका गण (ज्यो०) । वि० जिसमें कोई चीज मिली हो या मिळायी गयी हो, कई चीजोंके संयोगसे बना हुआ; संयुक्त । - केसी - खी० एक अस्तर । - गुणा - पु० [हिं०] आने-पारने, मन-मेर आदिका गुण । - ज - पु० खबर । - जाति - वि० वर्णसंकर, दौमल । - जाम्ब - पु० वह धान्य जिसमें कई अनाज मिले हों, बैज्ञ । - पुष्पा - खी० मेथी । - भाग - पु० आने-पारने, मन-मेर आदिका भाग । - वर्ण - वि० दोरंगा; बहुरंगा । पु० काला अंगुर । - कला - खी० मंदा । - खड्ग - पु० खबर ।

मिश्रक - वि० [स०] मिळावट करनेवाला । पु० खारी नमक; जस्ता; नंदनवन; महाभारतमें वर्णित एक तीर्थ ।

मेअकावण-पु० [सं०] नंदनवन ।
 मेअण-पु० [सं०] मिलावट, दी या अधिक चीजोंको एकमें मिलाना ।
 मेअित-वि० [सं०] मिला या मिलावा हुआ; मिलावट-गुला ।
 मेअित-खी० [सं०] मंदा आदि सात संक्रांतियोंमेंसे एक ।
 मेअी-खी० दे० 'मिली' ।
 मेअेया-खी० [सं०] एक साग; मयुरिका; शतपुष्पा ।
 मेअ-पु० [सं०] छल; बहाना; स्पर्धा, होड़ ।
 मेअि, मिअिका, मिसि-खी० [सं०] जटामासी; सोया; सीफ ।
 मेअ-वि० [सं०] मिठा; स्वादिष्ठ; सिक्क, तर । पु० मिठास; मिठाई । -पाक-पु० सुरम्बा । -भायी(विअ)-पु० मिठे शब्द बोलनेवाला, मयुरभायी ।
 मेअाच-पु० [सं०] मिठाई; मिठा पकवान ।
 मेअ-पु० बहाना; ढोंग । -ह्वाअ-वि० बहानेबाज, छली ।
 मेअ-खी० [अ०] कुमारी, विनम्याही लड़की । पु० [फा०] तौबा । -गर-पु० कतेरा ।
 मेअकीच-वि० [अ०] दे० 'मिस्कीन' ।
 मेअकीनसा-खी० मिस्कीनी, दीनता ।
 मेअना-अ० कि० मिलाया जाना; मला जाना ।
 मेअर-पु० दे० 'मिल' ।
 मेअरा-पु० [अ०] दरवाजेका एक पद, किवाड़; खेर या बैठका भाषा साग । (मिअर)ए औबल-पु० डेरका पबला अर्ध भाग या चरण । -तर-पु० बड़िया, दुस्त मिसरा । -तरह-पु० बह मिसरा जो रचनाका छंद, तुकांत (काफिया, रद्दफ) बतानेके लिए रचा या चुना जाय, पूर्तिके लिए दी हुई समस्था ।
 मिअरी-वि०, पु०, खी० दे० 'मिली' ।
 मेअरोटी-खी० कई तरहकी ढालोंके आटेकी बनी मोटी रोटी, बाटी ।
 मेअल-खी० दे० 'मिअल' ।
 मेअहा-वि० दे० 'मिअ' में ।
 मेअाल-खी० [अ०] नजीर, ब्यात, नमूना; चित्र, प्रतिकृति; कराना; आलम असबाब (स्थूल जगत्) और आलम अखाइ (आत्माओंका लोक)के बीच एक लोक जो स्थूल जगत्का प्रतिकृप है, स्वप्नजगत् (स्०) ।
 मेअाली-वि० ब्यांतरूप में ।
 मिअिल-खी० [अ०] मुकदमेकी काररवायोंके कागजात जो इकट्ठा करके नथी कर दिये गये हों; छपे हुए फार्म जो सिलसिलेसे लगाकर रखे गये हों, फौजका एक टुकड़ा ।
 मिअिली-वि० जिसके बारेमें कोई मिअिल बन चुकी हो, सजायाफ़ता ।
 मिअिल-पु० सेकल करनेका औजार ।
 मिअीन-वि० [अ०] कंगाल, अकिचन; भूखा, दीन; असाहाय । -सूरत-वि० जिसकी सूरतमें दीनता और भोलापन प्रकट हो, पर असलमें जो शरारती और दुष्ट हो ।
 मिअीनी-खी० मिस्कीनपन, कंगाली; दीनता ।
 मिअोट-पु० खाना, भोजन; एक मेअ वा दस्तरखानपर

बैठकर खाना खानेवाले; गुप्त भक्षण ।
 मिअर-पु० [अ०] नाम या पद-बोधक संज्ञाके साथ लगाया जानेवाला सम्मानसूचक शब्द, महाशय, जनाब, श्रीयुक्ता समानार्थक ।
 मिअर-पु० छत बनाने, पकस्तर करनेमें काम आनेवाला पिटना; नीळकी टिकिया बमानेकी कल ।
 मिअरी-पु० कुशल कारीगर; कल-पुरनेका काम जाननेवाला । -झावा-पु० लोहार, बढई आदिके मिअर काम करनेकी जगह ।
 मिअिरैजम-पु० दूसरेकी इच्छाशक्तिपर असर डालकर उसे अचेत वा बन्दीभूत कर लेनेकी विद्या, सम्प्रीहनविद्या; ऐसा अस्तर डालनेका सिद्धांत, 'मिअरिजम' ।
 मिअ-पु० [अ०] शहर; उत्तर-पूर्वी अफ्रीकाका एक देश जिसकी पुरानी सम्भवताकी गणना दुनियाके प्राचीनतम सम्भवताओंमें की जाती है ।
 मिअी-वि० मिलाका । पु० मिलाजिवासी । खी० चीनीकी एक मिठाई, मिमरी; मिलकी भाषा । मु० -का कूजा-कूजेमें जमायी हुई मिली । -की डली-बहुत मोठी चीज ।
 मिअ-वि० [अ०] सब्ज, तुष्य, मांसिद ।
 मिअा-पु० मूँग, मोठ आदिका भूसा; कई तरहकी ढालोंको एक साथ पीसकर बनाया हुआ आटा ।
 मिअी-खी० एक मजन जिमें खियाँ सिंगारके लिए दौंतीपर लगाती हैं और जिम्मे लगातेसे उनपर स्याह रंग चढ़ जाता है । -काजल-पु० बनाव-सिंगार । -बान-पु०, -दानी-खी० मिअी रखनेका पात्र । -सुरमा-पु० बनाव-सिंगार । -की धडी-मिअीकी लक जो खियाँ ओंठीपर जमाती हैं ।
 मिअचना-सं० कि० मीचना, बद करना ।
 मिअन-खी० [अ०] दे० 'मिअन' ।
 मिअराव-खी० [अ०] दे० 'मिअराव' ।
 मिअानी-खी० मयानी ।
 मिअिका-खी० [सं०] पाला, हिम ।
 मिअिचना, मिअिचना-सं० कि० दे० 'मीचना' ।
 मिअिर-पु० [सं०] सूर्य; चंद्रमा; शायल; बाधु; आका; विक्र-मावित्यकी सभाके नवरत्नोंमेंसे एक, बराहमिअिर । वि० बूढ़ा ।
 मिअिरकुल-पु० गुप्त सम्राटोंकी हरानेवाला प्रसिद्ध हूण विजेता ।
 मिअिराण-पु० [सं०] शिव ।
 मिअी-वि० दे० 'महीन' ।
 मीअनी-खी० दे० 'मिअनी' ।
 मीअि-खी० गिरी, मयज ।
 मीअना-सं० कि० मसलना; दबाना, हाथसे मलना या रगड़ना, मर्दब करना ।
 मीअक-पु० दे० 'मिअक' ।
 मीअना-सं० कि० मीअना, मसलना, हाथसे मलना ।
 मीआद्-खी० [अ०] कार्यविधिपेके लिए नियत काल, अवधि, मुअत; दंडकी अवधि । मु०-मुअर दना-अवधि नीत जाना । -बोकरा-बैदकी सजा सुनाना (मो०) ।

मीथानी-वि० मीथानवाणा, जिसका काल निश्चय हो (पुकार, हुंरी); सजायापना, जो दंड भुगत चुका हो।
-कुसार-पु० साविपासिक ज्वर जो दूसरेसे थोपे और कभी-कभी छूटे इतना चला जाता है, 'टापकावह'।
-हुंरी-को० वह हुंरी जिसका रथया मित्ती पूजनेपर चुकाना पड़े।

मीच-को० मृत्तु, मीठ।

मीचना-स० कि० (अँख) मूँदना, बंद करना।

मीचनी-स० कि० मलना, मसलना।

मीजान-पु० [मं०] जोड़, जमा; तराजू; तुला राशि।

-(ने)कुल-पु० कुल रक्तों या संख्याओंका जोड़, 'ग्रैव टोटल'। मु०-मिलना-जमा-संस्कृतका मीजान बराबर होता।

मीटर-पु० [अं०] खर्च हुए पानी, बिजली आदिके नापने-का यंत्र।

मीठा-वि० जिसमें मिठास हो, मधुर रसवाला; सुखादिष्ठ, मजेदार; प्रिय; हल्का; तौमत्तारहित; मंदा, भीमा; मधुर-भावी; बिजड़ा, जनका। पु० मिठास; गुड़; मीठी वस्तु, मिठाई, वछनाग; चकोतरा नीबू। -आलू-पु० शनकद। -ईंजौ-पु० काशा कुटज। -कद्दू-पु० कुम्हड़ा। -गोखरू-पु० छोटा गोखरू। -आबलू-पु० चीनी या गुड़ डालकर पकाया हुआ चावल, मीठा पुलाव। -डगर-वि० मीठी-मीठी बातें करके ठगनेवाला, वनावटी दोस्त। -तंबाकू-पु० वह तंबाकू जिसमें गुड़ कुछ अधिक डाला गया हो। -तेलू-पु० तिलका तेल। -तेलिया-पु० वछनाग। -नीबू-पु० चकोतरा नीबू। -नीम-पु० एक छोटा पेड़ जिसके पत्ते और फल नीमके-से होते हैं। -पानी-पु० लेमोनेड। -पीहवा-पु० घोड़ेकी तेज और सुस्तके बीचकी चाल। -बरस-पु० खोका अठारहवाँ बरस (स्त्रियाँ इसे मनहूस समझती हैं)। -भात-पु० दे० 'मीठा चावल'। -मीठा-वि० हल्का-हल्का, थोका-थोका (दर्द)। -बिच-पु० बत्तनाग बिच, वछनाग। -सालू-पु० दे० 'मीठा बरस'।

मीठी-वि० को० मिठासयुक्त, प्रिय, मधुर। -गाळी-को० वह गाळी जो बुरी न लगे, समुद्राळमें मिलनेवाली गाळी। -छुरी-वि० दोस्त बनकर गल्ला काटनेवाला, विश्वासपाती। -दूँबी-को० कदमू। -नजर-को० प्रेम-भरी दृष्टि। -नींद-को० सुलकी नींद, निश्चितताकी नींद। -भार-को० वह भार जिसकी चीज ऊपर न दिखाई दे। -लकड़ी-को० छुलेटी। मु०-छुरी चकाना-दोस्तीके परदेमें गल्ला काटना।

मीच-को० एक स्वरसे दूसरे स्वरपर जानेका एक सुंदर ढंग (स्त्रीत)।

मीचकी-मेढकी।

मीठ-वि० [सं०] मृत्तित।

मीठुलम, मीठुल(दधलू)-पु० [सं०] शिव।

मीती-पु० दे० 'मित्र'।

मीन-पु० [सं०] मछली; बारह राशियोंमेंसे अंतिम। -केतव, -केतु-पु० कामदेव। -गंधा-को० मत्स्यगंधा, सत्यवती। -गोबिका-को० नाछ, तडान। -आली-

(शिव)-पु० बगला। -ज्वज-पु० कामदेव। -नेत्रा-को० गंधद्वार। -रंका-रंग-पु० मछरंग नामका पक्षी; जलकोशा। मु०-मेख निकालना-दोष निकालना, छिद्रान्वेषण करना।

मीना-पु० राजपूतानाकी एक सुकृषि जति। को० [फा०] नीला रंग; रंगविरंगा घोड़ा; छोड़े और सोने-चौदीयर बनाया जानेवाला रंगीन काम; शराबकी बोलल, सुराही; (का०) झराव। -कार-पु० मीनाका काम करने वाला। -कारी-को० मीनाका काम। -बाजार-पु० चौहरी बाजार; सुंदर चीनोंका बाजार; वह बाजार जिसमें स्त्रियाँ ही सब चीजें बेचती हैं।

मीनार-को० [अ० 'मनार'] स्तंभरूपमें बनी हुई, अधिक ऊँची इमारत; मस्जिदमें अमान देने, संधी लगाने, जहाजों-को रास्ता दिखानेके लिए बने हुए स्तंभ।

मीनालख-पु० [सं०] समुद्र।

मीमांसक-वि०, पु० [सं०] मीमांसा करनेवाला; मीमांसा-शास्त्रका पंडित।

मीमांसन-पु० [सं०] मीमांसा करना।

मीमांसा-को० [सं०] विचारपूर्वक तत्त्वनिर्णय, विवेचना करना; १ उल्लेखमेंसे एक जिसमें यज्ञादि वैदिक कर्मकांक्षका निरूपण और सोपी की अर्थविषयक शांकाओंका समाधान किया गया है, जैमिनीय दर्शन (इसे विशेषतः पूर्वमीमांसा और वेदांतदर्शनको उत्तरमीमांसा कहते हैं)। -कार-पु० मीमांसासूत्रके रचयिता जैमिनि ऋषि।

मीमांसित-वि० [सं०] जिसकी मीमांसा की गयी हो।

मीमांस्य-वि० [सं०] मीमांसा करने योग्य।

मीपाह-को० [अ०] दे० 'मीआह'।

मीथानी-वि० दे० 'मीमादी'।

मीर-पु० [सं०] समुद्र; जल; सीमा। -जा-को० लक्ष्मी।

मीर-पु० [फा०] 'अमीर'का लघु रूप; सरदार; प्रधान अधिकारी; नेता; मुखिया; तास या गंजीफेके बादशाहका पता; प्रतियोगितामें जीतने, जीतकर होनेवाला; प्रसिद्ध उर्दू कवि मीर मुहम्मद 'नकी'का उपनाम (मिथन १८१० ई०)। -अरब-पु० अरबके मीर अली। -अर्ज-पु० बादशाह-के सामने खोपड़ी अर्पित पेश करनेवाला कर्मचारी।

-अलम-पु० शाही झंडा लेकर चलनेवाला। -आप्रौर-पु० अस्तबलका दारोगा। -आसिख-पु० तोपखानेका दारोगा या अध्यक्ष। -आक्रिहा, -कारखी-पु० काफिले-का सरदार। -कल-पु० भारी पत्थर जो फड़की द्वारा रखनेके लिए उसके चारों कोनोंपर रखे जाते हैं।

-बल्लही-पु० एक अफसर जो मुसलमानी राज्यकालमें कर्मचारियोंका वेतन बाँटता था। -बल्लू-पु० जलशाना-पति, अमीरल बह। -मुहब्बी-पु० एक कविपति बीर जिसे हीजरे पूजते और अपना मूल पुत्र्य कर्ताते हैं।

-मंत्रिक-पु० मुसलमानी राज्यकालका एक कर्मचारी जिसका काम शाही फौजके पहुँचनेके पहले पक्षा-पर पहुँचकर वहाँका प्रबंध करना होता था। -मज-

किस-पु० समापति। -मसबल्लू-पु० बाबरकोखानेका दारोगा। -महल्लू-पु० महल्लेका चौधरी। -मुंशी-

-पु० प्रधानलेखक, पेशकार। -शिकार-पु० दाराओं,

बादशाहीके शिकारका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।
-सामान-पु० नवाबों, बादशाहोंकी पाकशालाका प्रबंधक।

मीरजा-पु० दे० 'मिरजा'।

मीराज-श्री० [ज०] दे० 'मेराज'।

मीरास-श्री० [सं०] वृत्त व्यक्तिकी छोरी हुई सपत्ति जो उसके उत्तराधिकारियोंको मिले, तरका, वपौती।

मीरासी-पु० एक मुसलमान जाति जो गाने-बजानेका पेशा करती है। [श्री० 'मीरासिन(सन)']।

मीरी-श्री० मीर होनेका भाव, सरदारी। पु० खेल, प्रतियोगिता आदिमें औल रहनेवाला (लकड़ा)।

मीर-पु० [सं०] निमेष; वन; [अ०] दूरीकी एक नाप, १७६ गज (मोटे हिसाब आधा कोस)। -के पत्थर-दूरी या प्रगति बतानेवाले चिह्न।

मीरन-पु० [सं०] मूँदना; सिकोचना।

मीरिस-वि० [सं०] मूँदा हुआ; सिकोका हुआ, संकुचित। पु० एक अर्थलंकार जैसे रूपश्रुति साध्य होनेके कारण उपमान-उपमेयमें भेद न देख पड़े, दोनों एकमें मिले हुए-से लगें।

मीर-पु० [सं०] सेनापति। वि० क्षातिकारक, हानिकार; पूज्य, सम्मानार्ह।

मीबा(बन्ध)-पु० [सं०] उदरकृमि; बाधु; छोटा, शीकर।

मूँगरा-पु० मोल, मुद्रितादार लकड़ी जो ठोकेने-पीटनेके कान जाती है।

मूँगरी-श्री० छोटा मूँगरा।

मूँगौली-श्री० मूँगा बना एक पकवान।

मूँगौरी-श्री० मूँगकी दालकी बरी।

मूँचन-पु० दे० 'मोचन'।

मूँचना-सं० कि० मुक्त करना, छोड़ना।

मुचित-वि० मुक्त, सुला।

मुँज-पु० [सं०] मूँज; राजा भोजका चन्दा जो अपभ्रंशका कवि था। -केसी(शिल्प)-पु० विष्णु। -ग्राम-पु० महामारतमें बसित एक प्राचीन नगर। -अणि-पु० पुखराज। -अस्त्र-श्री० मूँचकी बनी मेखला।

-मेखली(शिल्प)-पु० शिवा विष्णु। -बट-पु० एक प्राचीन तीर्थ।

मुँजक-पु० [सं०] घोड़ोंकी आँखोंमें होनेवाला एक रोग।

मुँजर-पु० [सं०] कमलकी जड़।

मुँजकी-वि० श्री० मूँजकी।

मुँजबान्(बन्ध)-पु० [सं०] कैलासके पासका एक पर्वत; सोमलताका एक भेद।

मुँजातक-पु० [सं०] मूँज; एक कट।

मुँजात्रि-पु० [सं०] एक पर्वतका नाम।

मुँज-पु० [सं०] सिर, मूँज, मस्तक; कटा हुआ सिर; मुँगा हुआ सिर; लाल; मुँसका सेनापति एक वैद्य; राहु; मुँसकीपनिषद्; पैरका दूँड; एक प्रकारका लोहा, मुँगा-यस; बोल। वि० मुद्रित; अथन। -कर-पु० दे० परिशिष्टमें। -किहू-पु० मंहर। -कणक-पु० कलाप, फेराव। -कल-पु० नारियल। -माछा-श्री० कटे हुए सिरों या कोपकियोंसे माला। -माछी(शिल्प)-

पु० मुँसोंकी माला बानन करनेवाला, शिव। -कीह-पु० मंहर। -खाकि-पु० बेरी धान।

मुँचकरी-श्री० पुटनोंके बीचमें सिर रखकर बैठनेकी मुद्रा।

मुँचशिरा-पु० एक तरहके मुसलमान फकीर जो अपने सिर, चेहरे आदिपर धूरेमें धाव करके भीख माँगते हैं।

-पन-पु० लेन-देन आदिमें झगडा और हठ।

मुँचक-पु० [सं०] मूँचनेवाला, नाई; सिर; अथर्ववेदकी एक उपनिषद् जो दस प्रधान उपनिषदोंमेंसे है, मुँचको-पनिषद्।

मुँचन-पु० [सं०] मूँचना; दिजादिके किए विहित एक संस्कार, बाळकके सिरके बाळ पड़की बार मूँचनेकी रस्म।

मुँचना-अ० कि० मूँगा जाना, ठगा जाना।

मुँचखा-पु० चरखेका वह अंग जिसपर माछ रहती है।

मुँचा-वि० मुद्रित; गंजा; बिना सींगका (वैद्य, बकरा)।

पु० बिना नोकका जूता; एक आदिवासी जाति जो छोटा नागपुर, राँची, मिरजापुर आदिके जंगली आगोंमें बसती है। श्री० मुँचा लोगोंकी भाषा जिसके अंदर खरबार, सयाही, मुटारी, कौरवा आदि अनेक बोलियाँ आती हैं; [सं०] मुद्रिता श्री० मन्मासिनी, वैरागिन; गोरखमुंडी।

मुँचाई-श्री० मूँचनेका काम; मूँचनेकी मजदूरी।

मुँचाना-सं० कि० दे० 'मुचाना'।

मुँचावस-पु० [सं०] एक प्रकारका लोहा, मंहर।

मुँचासा-पु० सिरपर बाँधनेका साफा।

मुँचित-वि० [सं०] मूँगा हुआ। पु० कोड़ा।

मुँचिया-श्री० दे० 'मुद्रिया'। * पु० सिर मुँचाकर बना हुआ साधु, सन्मासी।

मुँची-श्री० वह श्री जिसका गिर मुँगा हुआ हो; वेवा औरत; गोरखमुंडी।

मुँची(शिल्प)-वि० [सं०] जिसके सिरके बाल मुँज दिव गये हों; बिना सींगका। पु० नाई; धाव; सन्मासी।

मुँचीरिका, मुँचीरी-श्री० [सं०] गोरखमुंडी।

मुँचैर-श्री० खेतकी मेंढ; दे० 'मुँचैरा'।

मुँचैरा-पु० छतके चारों ओरकी मेंढ जैसी दीवार; पुश्ता।

मुँचैरी-श्री० छोटा मुँचैरा।

मुँचो-श्री० सिरमुँची श्री; राँव।

मुँचक्रिह-वि० [अ०] इतिकार करनेवाला; एकसे दूसरी जगह या दूसरे हाथमें जानेवाला या गया हुआ।

मुँचज्ज-वि० [अ०] इतखान किया हुआ, छाँटा हुआ; बधिया; प्रशस्त; साररूप।

मुँचज्ज-वि० [अ०] इतजाम करनेवाला, प्रबंधक; प्रबंध-कुशल; मितव्ययी।

मुँचजिर-वि० [अ०] इतजार करनेवाला।

मुँचशिर-वि० [अ०] बिखरनेवाला; बिखरा हुआ; चितित, उद्धिन्म।

मुँचही-वि० [अ०] इतिहा; हदको पहुँचानेवाला; पारगामी (मिथान)।

मुँचवा-अ० कि० आँखका बंद होना, परक लगना; उँकना, नंद होना; छिपना, तिरोहित होना।

मुँचरा-पु० एक तरहका मुँचल।

मुँहरी-कौ० छछा; मँगड़ी।

मुँसिवावा-वि० मुँसियों जैसा; मुँसीके उपपुत्र।

मुँसी-पु० [अ०] मज्जन् सोचने, लिखनेवाला; लेखक; मुँहर भाषा, मुँहर जगह लिखनेवाला; किताबी; मुहरिर; बानेका मुहरिर; उर्दूकारसी पढ़ानेवाला। -**झाणा-पु०** उर्दूकारकी दफ्तर। -**गिरी-कौ०** लेखनदृष्टि, मुहरिरी।

मुँसा-पु० पति, शौहर, जसम (मुँदुल०-तिरस्कारमें प्रयुक्त)। -**मुँस** पूतकी कोसनेमें नहीं लजाती। -**जमर०**।

मुँसरिम-पु० [अ०] प्रबंध करनेवाला; जजी; कलेक्टरी आदिके दफ्तरका प्रधान।

मुँसरिमी-कौ० मुँसरिमका पद या काम।

मुँसिक-पु० [अ०] ईसाफ करनेवाला, न्यायाधीश; न्यायविभागका एक अधिकारी जिसका पद सत्र-जजसे छोटा होता है। -**मिज्ञाज-वि०** न्यायशील, ईसाफपसंद।

मुँसिकाना-वि० न्यायोचित, न्याययुक्त।

मुँसिकी-कौ० न्यायशीलता; मुँसिकफा पद; मुँसिककी अदालत।

मुँह-पु० प्राणिवेदके शिरोभागमें स्थित वह छिद्र जिसमें आहारग्रहण और श्वासेके सापन्नरूप अवयव होते हैं, मुख; चेहरा; छेद, धरास; बरतन आदिका वह छेद जिससे कोई चीज अंदर डाली जाय; बाट, पार; किनारा; योग्यता, श्रियाकत; सामर्थ्य; हिम्मत; मजाल। अ० की ओर, दिशामें (पूर्व मुँह, किस मुँह बैठे हो ?)। -**अँचियारो-अ०** दे० 'मुँहअँचरे'। -**अँचरे-उजाले** -अ० बहुत सचेरे, तर्के। -**अस्सीर०-वि०** जवानी, मोलिक। -**बँवा-पु०** एक बाजा। -**बंदीपकरी-कौ०** चूमाचाटी; बकबाद। -**चोर-वि०** जो दूसरोंसे मुँह छिपाये, दूसरोंके सामने जानेसे बचनेवाला; सँपू। -**चोरी-कौ०** मुँहचोर होना। -**छुआई-कौ०** पूछनेकी रस्म अदा करना। -**छुट-वि०** मुँहफट। -**जोह-वि०**

बहुत बोलनेवाला, लफाका, कल्लादराज; लगामकी न माननेवाला (बोहा)। -**जोरी-कौ०** लफाकापन, कल्लादराजी; बदलगामी। -**झाँसा-वि०** जिसका मुँह मुलस दिया गया हो (एक माली)। -**दर मुँह-अ०** सामने, दबदू। -**दिखाई-कौ०** दुलहिनका मुँह देखनेकी रस्म; वह धन, आभूषण आदि जो दुलहिनका मुँह देखकर उसे दिया जाय। -**देखा-वि०** बिलकुल ऊपरी, दिखाऊ; मुँह ताकता रखनेवाला। -**नाछ-कौ०** दे० 'मुँहनाछ'। -**पट्टा-पु०** घोड़ेका एक साज, सिरबंद। -**पातर०-वि०** मुँहका हल्का, मुँहफट। -**फट-वि०**

जो मुँहमें आये वह बक देनेवाला, जवान-दराज, बदजवान। -**बंद-वि०** जिसका मुँह खुला न हो; निन-खिजा; कुमारी (शायरी)। -**बँवा-पु०** मुँहपर कपड़ा बाँध रखनेवाला जैन साधु। -**बोछा-वि०** मुँहसे कबकर बनाया हुआ, माना हुआ, अनासक्तिक (भाई, बेटा)। [कौ० 'मुँहबोछी']। -**बोछी बहिन-कौ०** वह भी जिसमें मुँहसे काहकर बहिनका नाता जोड़ लिया गया हो।

-**अद-अ०** अच्छी तरह, ठिलसे (गोछना, बात करना)। -**अराई-कौ०** घूस। -**मँगा-वि०** अपना मँगा हुआ

(दान); मनोमिलित (मुँहमौगी मुराद)। -**कना-वि०** झीठ, झोका, सिरबदा। **मु०** -**आँसुआँसे बोना-बहुत** रोना। -**आना-मुँहमें** छाले पड़ना। -**हुतना-आ** निकल आना-चेहरा चँस जाना, बहुत दुबला हो जाना; लज्जित हो जाना; चेहरेका भाव उतर जाना। -**उजला होना-इज्जत** रह जाना, बेआबरूमें बच जाना।

-**उठाकर कहना-वेधोवे-समसे** बोलना, जो जोंमें आये बक देना। -**उठाने कहे जाना-वेधक**, बिना इकर-उभर देखे चले जाना। -**उतरना-मुँहपर** तेज, कांति न रहना; चेहरेसे घुसी, उदासी प्रकट होना। -**आँधाकर पड़ना या छेटना-डुख**, रोष या मानसे अकम जाकर पड़ना। -**करना-फोड़ेका फूटना। (किसी ओरको)** -करना-किसी ओर जानेका विचार करना।

-**का कच्चा-जिसके** पैरमें बात न पचे; जिसकी बातका मरोसा न हो; लगामका हटक न सहनेवाला (बोहा)। -**का कच्चा या सफ़्त-मुँहजेर**; लगामका मंजुश न माननेवाला (बोहा)। -**का कौर या निवाछा-बहुत** आसान काम। -**छीनना-किसीकी** रोटी छीनना, मिक्ती हुई वस्तुसे बंचित करना। -**का मीठा-ऊपरसे** भला, पर दिखता खोटा; चिकनी-चुपकी बातें करनेवाला।

-**काळा करना-(अपने)** मुँहमें काखिख पोतना; न्यमि-वार, दुरे कर्म करना; दूर होना, फिर मुँह न दिखाना (या अपना मुँह काळा करे); (दूसरेको) बेइज्जती करना; दूर करना, फेंकना; लगनत मेवना (मुँह काळा करो ऐसी चीजका)। (किसीका) -**काळा हो-मुँहमें** काखिख लगे; नाश हो (शाप)। -**काळा होना-मुँहमें** काखिख लगना, देखभत होना; दूर होना; नष्ट होना। -**का कच्चा-गातका** बनी, बादेका पका। -**किटना-मुँह** कील दिया जाना, जवान बंद हो जाना। -**की खाना-थप्पक खाना, पिटना;**

कियेका फल पाना; दुरी तरह हारना, जकील होना। -**की बार मुँहसे** बात **छीनना-एक** आदमी जो बात कहना चाहता हो दूसरेका उससे पहले कह देना। -**कील देना-मंत्र-बलसे** जवान बंद कर देना, चुप करा देना; घूससे मुँह बंद कर देना। -**के कौए उड़ जाना-चेहरेपर** हवाहवा उड़ने लगना; हवास गायब हो जाना।

-**के डुक्के उड़ जाना-पानमें** अधिक चूना होनेके कारण मुँहका कट जाना। -**के बल गिरना-किसी** वस्तुकी प्राप्तिके लिए आतुर हो जाना; धोखा खाना। -**के कुछन झबना-निर्लज** हो जाना। -**के छायाक होना-(किसी का)** सितिके अनुरूप होना। -**खुलना-(फोड़े आदिका)** मुँह बहा होना; श्वासेमें झीठ हो जाना, बदजवानीकी आदत लगना। -**खुलवाना-बोलनेको** लाचार करना; गुस्ताख बनाना। -**खुल्लू होना दे० 'मुँह खुलना'।**

-**खीककर रह जाना-कुछ कहते-कहते चुप** हो जाना। -**चपड़ा कर देना-कलेपर** जोरका तमाचा लगाना। -**चलना-मुँह** चलाया जाना। -**चलाना-खाना;** घोड़े का काटना; जवानदराजी करना। -**चाटना-प्यार** करना; खुशामद करना। -**चिढ़ाना-किसीकी** मुझाकृति, श्वासेके रंग आदिकी तकल (चिढ़ानेके लिए) मुँह गिराकर करना। -**चूम लेना-किसीकी** शक्ति, योग्यताका कायल

हो जाना, अपनेसे बहुत बड़ा मान लेना (कोई कठिन काम करनेकी चुनौती देनेका भाव होता है—युग अशुभ काम कर सके तो तुम्हारा मुँह चूम लेंगा)। —**छिपाना**, —**छुपाना**—छन्नावस सामने न आना, लुप्त होना। —**छुना**—दिखानेके लिए ऊपरी मनसे कहना। —**जहर हो जाना**—मुँहका बहुत कड़वा हो जाना। —**जुझारना** या **जुझ करना**—खानेका नाम करना, जरा-सा साकर छोड़ देना। —**जोड़ना**—काना-फूसी करना। —**झुकसना**—मुँहको आग लगाना; लानत भेजना। —**झलना**—चोपाचो-का चारेसे मुँह लगाना, खाना। —**डॉक** या **डॉपकर होना**—मुँहपर औचल या कमाक रखकर रौना, अधिक विहाय करना। —**तक** या **ताकते रह जाना**—चकित होकर चुप रह जाना। —**तकना** या **तकना**—किसीसे आस लगावे बैठे रहना; चकित, हतबुद्धि होकर किसीकी ओर देखना। —**तकने** या **ताकने** लगाना—चकित होकर किसीका मुँह देखने लगना। —**तोड़कर जवाब देना**—पेसा जवाब देना कि दूसरेकी चुप ही रह जाना पड़े। —**तोड़ जवाब**—निरुत्तर कर देने, चुप करा देनेवाला जवाब। —**थकना**—थकानसे बागिद्विषया एक जाना, मुँह डुबने लगना। —**थुथाना**—मुँह लटकाना। —**दिखाना**—सामने आना। (**किसीका**)—**देखकर**—(किसीका) किञ्चाज करके; (किसीकी) प्रसन्न करनेके लिए (पक्षोंका मुँह देखकर सब सह रही हूँ)। —**बात कहना**—चापकसीकी बात करना। —**देखकर उठना**—सचरे ओंस झुलने ही किसीपर निगाह पड़ना। —**देखना**—दे० 'मुँह तकना'। —**देखने** लगना—दे० 'मुँह तकने लगना'। —**देखी करना**—किसीकी इच्छा या चुनौती कायाक रख कर व्यवहार करना, पक्षपात करना। —**देखी बात**—किञ्चाज, मुरौत, तरफदारी, चापकसीकी बात। —**देखेकी**—ऊपरी, दिखाना (—प्रोति, बाह)। —**देना**—बैक, बोधे आदिका चारेपर मुँह डालना। —**धो रखी**—हस चीजकी आशान न करी, अपना मुँह देखो। —**पकड़ना**—बोलनेसे रोकना। —**पड़ना**—हिम्मत होना। —**पर**—सामने, दू-बद; होठोंपर, जवानपर; चेहरेपर। —**पर जाना**—किञ्चाज, मुरौत करना। —**पर डीकरी रख लेना**—बेमुरौत हो जाना। —**पर ताखा लग जाना**—जवान बंद हो जाना; चुप्पी साथ लेना। —**पर धूकना**—अत्यधिक घृणाप्रकाश या तिरस्कार करना; अपमानित करना। —**पर न धूकना**—अति हेय समझना, उसकी ओर देखना तक नहीं। —**पर नाक न होना**—निर्लज्ज होना। —**पर कँक देना** या **कँक मारना**—बहुत खका होकर कोई चीज देना या लौटा देना। —**पर झटका झूटना**—चेहरा पीछा हो जाना, चेहरेपर हवाधौं उड़ना। —**पर मुँह लगाना** या **हो जाना**—चुप्पी साथ लेना, एक शब्द भी न कहना। —**पर रखना**—बखना, खाना; (तीप आदिके) सामने, जदपर रखना। —**पर खाना**—कहना, बयान करना। —**पर झकझ फूकना**—प्रसन्नतासे चेहरेपर लाली आ जाना। —**पर हवाधौं उड़ना**—अथ, बरबाद आदिसे चेहरेका पीछा या सकेद हो जाना। —**पसारकर चौबना**—कोई चीज पानेके लिए लपकना। —**पसारना**—मुँह

फैलाना; (**कुछ**) पानेके लिए आगे बढ़ना; अधिक दाम माँगना। —**पाना**—बस वा मर्जी पाना, भाषानुकूल दिखाना। —**पेट बलना**—कै दस्त दोनों होना। —**फटना**—सरदी, झुरफीके कारण होठों, कपोलोंकी त्वचा घुसकर पटना। —**फुलाना**—नाराज होना, रूठना। —**फूँकना**—मुँहकी आग लगाना, लानत भेजना। —**फेर लेना**—बेवश या नाराज हो जाना। —**फैलाना**—अधिक दाम माँगना; अधिक लोभ करना। —**बंद कर देना**—चुप कर देना; घूम देकर अपने विषय कुछ करने, कहनेसे रोक देना। —**बंद कर लेना**—चुप हो जाना। —**बनवा रखो**—दे० 'मुँह धो रखो'। —**बनाना**—चेहरेकी छद्म विगाड़ना; चेहरेसे रोष प्रकाश करना; मुँह बिगाना। —**बाना**—दे० 'मुँह फैलाना'। —**बिगाड़ देना**—भारकर चेहरा खराब कर देना। —**बिगाड़ना**—मुँह बनाना, चेहरेसे नाराजगी प्रकट करना; मुँहका स्वाद बिगाड़ देना। —**भर आना**—मुँहमें पानी आना, भतली होना। —**भरके**—लगाव; भर पूर; वधेच्छ। —**भरना**—मुँहमें कौर डालना; घूस देना, मुँह बंद करना। —**भारना**—चारेपर मुँह डालना; काटने-को मुँह चलाना, काटना; बंद जाना, मात करना। —**मीठा करना**—मिठाई खाना, खिलाना घूस, इनाम आदिके रूपमें कुछ देना। —**मीठा होना**—किसीसे कुछ मिलना; मँगनी होना। —**में आना**—जवानपर आना। —**में काखिल पुतना** या **लगाना**—भारी बदनामी होना, कलंकका टीका लगाना। —**में झाक**—मुँहमें खाक पड़े (अशुभ या डिठाईकी बात अपने या दूसरेके मुँहसे निकलनेपर कहते हैं)। —**में खून लगाना**—चसका लगाना। —**में गुच्छी** या **बी-शकरे**—तुम्हारा मुँह मीठा हो (किसीके कोई हर्षका समाचार सुनानेपर कहते हैं)। —**में घुनघुनिबा** भर लेना—चुप्पी साथ लेना, मूक बन जाना। —**में जवान न रखना**—गूँगा होना; बेजवान होना। —**में जवान रखना** या **होना**—बोलनेमें समर्थ होना, वाक्शक्ति रखना (हम भी मुँहमें जवान रखते हैं)। —**में जाना**—खाया जाना, भक्ष्य बनना। —**में तिनका लेना**—अति दीन बनना, दाँतोंमें तिनका दवाना। —**में धूकना**—जलीक, बेवज्जत करना। —**में दाँत न पेटमें जाँत**—अति बूढ़ होना। —**में पड़ना** या **बोलना**—हतनी भीमी जावाजमें पड़ना या बोलना कि दूसरेकी सुनारि न दें। —**में पानी भर आना**—राज टपकना, ललचाना। —**में लगाव न होना**—जवानपर अकुश न होना, जो मनमें आवे बक देना। —**में लूका लगाना**—मुँह झुल्लसना; मुँह काका करना। —**मोड़ना**—बेवशी करना, ध्यान न देना; अजग हो जाना; इनकार करना; हराना; पीछे दकेद देना। —**लगाना**—हुज्जत करना, ललचाना; डिठाई-से बोलना; चल्का लगाना। —**लगाना**—हीठोसे घुबाना, बखना; पीठ, गुस्ताख बनाना। —**लटकाना**—मुँह फुलाना, मुसाफ़ातिसे रोष आदि प्रकट करना। —**लपेटकर पक रहना**—दुःख या रोषमें मुँह दककर पक रहना। —**लख होना**—कोषमें चेहरेका काक होना। (**अपना-सा**)—**लेकर रह जाना**—लुप्त होकर चुप हो जाना, खिनिवाकर रह जाना। —**साकसे भर देना**—(हर्ष-

समाचार सुनानेवालेका) मुँह मीठा करना। -सँभा-
लना-जवान काश्में रखना, सोच-समझकर बोलना
(मुँह सँभालकर बातें करो)। -सीबा-नुपुषी ब्या
होना। -सुखना-गला, जवानका घुलना; मनमें अय
भर जाना, धरा जाना। -से-जवानी, ऊपर से
(-कहना)। -से वृष टपकना वा वृषकी बू आना-
बच्चा, नादान, नासमझ होना। -से निकलना-कहा
जाना। -से फूल खिलना-बोल वा बातोंमें बहुत
मिठास होना। -से बात न निकलना-डर वा गुस्से-
के मारे मुँहसे आवाज न निकलना। -से शक वा
काद टपकना-किसी वस्तुके लिए कालापित होना,
मनमें अति लोभ होना। -से काल उगलना-मुँहसे
बहुत भीठे शब्द निकलना। -स्वाह होना-दे० 'मुँह
काला होना'। -ही मुँहमें-नुपके-नुपके (-कहना,
बातें करना)।

मुँहाचही-की० डींग मारना-मुँहाचही सेनापति
कीन्ही सफटासुर मन गर्व बढ़ावो'-खर; बोलचाल; (प्रेमी-
प्रेमिकाका) परस्पर मुँह देखते रहने, नित्य साथ बने
रहनेकी अवस्था-जीवन मुँहाचहीको नीको'-खर (?)।
मुँहास-अ० मुँहतक, बिलकुल ऊपरतक।
मुँहासा-पु० सुवावस्थामें बेहरेपर निकलनेवाली एक तरह
की कुंसी।

मु-पु० [सं०] महेश; धन।
मुअज्जम-वि० [अ०] पूब, पुनुर्य; महात्।
मुअज़्ज़न-पु० [अ०] अर्ज देनेवाला, नमाजके लिए
आह्वान करनेवाला।
मुअसल-वि० [अ०] खाली, बेकार, काम न देनेवाला
(अग); कामसे कुछ अरसेके लिए अलग किया हुआ,
अस्थायी रूपसे पदच्युत (कर्मचारी)।
मुअसली-की० मुअसल होनेका भाव।
मुअरब-वि० [अ०] बाबर, शिष्ट, सभ्य।
मुअरबाना-अ० अरबके साथ।
मुअरिब-पु० [अ०] अरब सिखानेवाला।
मुअम्मा-पु० [अ०] परेकी; पेशवार बात; रहस्य। मु०
-खुलना-मेद खुलना; गुप्ती खुलना।
मुअला-वि० [अ०] ऊँचा; ऊँचे भरतबेवाला।
मुअल्लिम-पु० [अ०] इल्म देनेवाला, शिक्षक।
मुअल्लिमा-की० [अ०] शिक्षिका।
मुआ-वि० भरा हुआ, सृत; निगोबा; नाकारा (की०)।
[की० 'मुई'।]-बादल-पु० इर्धन। -(ई) मिट्टी-
की० काश, शव। -०की निशानी-मृत व्यक्तिकी
संतान वा स्मृतिचिह्न।

मुआहना, मुआयना-पु० [अ०] अवलोकन, निरीक्षण;
जाँच-पड़ताल।
मुआक-वि० [अ०] दे० 'माक'।
मुआकिक-वि० दे० 'मुआकिक'।
मुआकिकत-की० अनुकूलता; मेल-जोल।
मुआमला-पु० [अ०] दे० 'मामला'। -हॉ-कहना,
-शिवास-वि० बातकी तथ्यक पहुँचनेवाला, अनुसरी।
मुआफिज-पु० [अ०] इलाज करनेवाला, चिकित्सक;

बैध, हकीम।

मुआफिजा-पु० [अ०] इलाज करना, चिकित्सा; औषधो-
पचार।

मुआयना-पु० [अ०] वह चीज जो किसीके बदलेमें दी
जाय, बदला, पकड़ा; वस्तुका मूल्य; तावान, हजाना।

मुआहिदा-पु० [अ०] कौल-करार; इकरारनामा।

मुकद्व, मुकद्वक-पु० [सं०] व्याज; ऊँदरु; साठी धान।

मुकट-पु० दे० 'मुकुट'।

मुकतई-की० मुक्ति, मोक्षपद।

मुकता-पु० दे० 'मुक्ता'। † वि० बहुत।

मुकतालि-की० मोतियोंकी लकी, मुक्ताबली।

मुकति-की० मुक्ति।

मुकतर-वि० [अ०] टपकाया हुआ, बँट-बँट करके टप-
काया, साफ किया हुआ।

मुकता-वि० [अ०] कटा-छँटा हुआ, कतरा हुआ; सभ्य,
शिष्ट। -बाड़ी-की० शरअके अनुसार तराशी हुई दाढ़ी
(मुसल)।

मुकदमा-पु० [अ० 'मुकदमा'] अदालतमें गया हुआ
मामला, व्यवहार; दावा, नालिश। -(मे) बाज़-वि०
मुकदमा लड़नेवाला, जिसे मुकदमा लड़नेका शौक हो।
-बाज़ी-की० मुकदमा लड़ना।

मुकदम-वि० [अ०] पहला, आला; जो पहले हो चुका
हो, पुराना; फर्ज, अवश्य कर्तव्य। पु० गाँवका चौधरी।

मुकदमा-पु० [अ०] आरंभ, प्रस्तावना; सिरनामा;
घटना; अदालतमें गया हुआ मामला, व्यवहार।

मुकदर-पु० [अ०] भाग्यलेख, भाग्य, तर्कगरी। -आख-
माई-की० भाग्यकी परीक्षा करना।

मुकदस-वि० [अ०] पवित्र, पाक। -किताब-की०
इहामी किताब, औपनिषद धर्मग्रंथ (पुराना, बंजील इ०)।
-इस्ती-पु० संत पुरुष, महात्मा।

मुकना-अ० कि० मुक्ति, छुटकारा पाना; चुकना।

मुकनकल-वि० [अ०] कुपक-ताला लगाया हुआ, बंद।

मुकम्मल-वि० [अ०] पूरा किया हुआ, समाप्त; संपूर्ण,
अखंड।

मुकम्मल-वि० [अ०] पूरा करनेवाला।

मुकरना-अ० कि० कही हुई बातसे हटना, नटना, इन-
कार करना।

मुकरनी-की० दे० 'मुकरी'।

मुकराना-सं० कि० मुक्त करना; मुकरनेमें प्रवृत्त
करना।

मुकरी-की० वह कविता जिसमें पहले कही हुई बातका
अंतमें खंडन-सा किया जाय, परेकी जैसी कविता।

मुकरम-वि० [अ०] सम्मानित; पूज्य। [की० 'मुकरमा'।]

मुकरमी-मुकरम'का संबोधन कारकका रूप, 'मान्यवर'
आदिका समानार्थक।

मुकरर-वि० [अ०] दुहराया हुआ, कहा हुआ, द्विकृत।
अ० दोबारा, फिरसे (कहना)। -से हुकरर-दोबारा-
तिबारा, बार-बार।

मुकरर-वि० [अ०] ठहराया हुआ, तै किया हुआ, नियत;
नियुक्त। [की० 'मुकरर'।] अ० अवश्य, निश्चय।

मुकररी-**की०** निमुक्ति; निश्चित किया गया वेतन या राजस्व ।

मुकररि-**वि०** [अ०] तकरीर करनेवाला; वक्ता ।

मुकल-**पु०** [सं०] अमलनास; शुग्मुल ।

मुकलाना-**स०** कि० खोलना ।

मुकलबा-**पु०** गौना ।

मुकलबिबात-**की०** [अ०] पुष्टिकारक दवाएँ ।

मुकलबी-**वि०** [अ०] ताकत देनेवाला, बल बढ़ानेवाला, पुष्टिकारक ।

मुकलबला-**पु०** [अ०] बराबरी करना; बराबरी; आमना-सामना; मुठमेक; लड़ाई; विरोध; मिश्रकर जौबना; स्थान; पृथ्वीका सूर्य और चंद्रमाके बीच एक सीधमें होना । **मु०**-(**हे**) पर बा में आना-लड़नेके लिए सामने आना; सामना करना ।

मुकलबिल-**वि०** [अ०] मुकलबला, बराबरी करनेवाला; प्रतिस्पर्धी; सामनेका । **अ०** आमने-सामने ।

मुकलम-**पु०** [अ० 'मकाम'] ठहरने, खड़ा होनेकी जगह; पड़ाव; ठहराव; वासस्थान, घर; मौका; सरोदका परदा; माधककी अवस्थानभूमि; भूमिका (सं०) । **मु०**-करना-ठहरना, उतरना । -**बौलना**-ठहरने, पड़ाव करनेका हुक्म देना ।

मुकामी-**वि०** स्थानीय, स्थानविशेषके संबंध, 'लोकल' । -**अफसर**-पु० स्थानीय अधिकारी । -**ख़ाबर**-**की०** स्थानीय समाचार ।

मुकियाना-**स०** कि० मुक्ती लगाकर शरीरकी पीड़ा दूर करनेका प्रयत्न करना; (हलके) घुँसे लगाना ।

मुकिर, **मुकिर**-**वि०** [अ०] शक़ार करनेवाला, स्वीकार करनेवाला; दस्तावेज लिखनेवाला । **मु०**-होना-शक़ाक़ करना ।

मुकुद-**पु०** [सं०] विष्णु; कृष्ण; कुनेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; एक रत्न; पारा; कुंदरू ।

मुकुदक-**पु०** [सं०] प्याज; साठी पान ।

मुकु-**पु०** [सं०] मोक्ष; उत्सर्ग ।

मुकुट-**पु०** [सं०] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो ताजकी तरह धारण किया जाता था । -**धर**, -**बारी**(**रिज**)-**वि०** मुकुट धारण करनेवाला (राजा) ।

मुकुत-**वि०** मुक्त । पु० मोती ।

मुकुताहक-**पु०** मोती ।

मुकुर-**पु०** [सं०] दर्पण, आईना; मौलसिरी; कुम्हारका बड़ा; महिला कता; कोली वृक्ष, दे० 'मुकुल' ।

मुकुल-**पु०** [सं०] कली; वह कली जिसका मुँह जरा-जरा खुल रहा हो; शरीर; आत्मा ।

मुकुलित-**वि०** [सं०] मुकुलविशिष्ट; अशक्तिला; अशुद्ध ।

मुकुलक, **मुकुल**-**पु०** [सं०] मोठ ।

मुकैस-**पु०** दे० 'मुकैश' ।

मुकुलक-**पु०** [सं०] दती वृक्ष ।

मुकुदद-**वि०** [अ०] कैद किया हुआ, बंदी, जेलमें बंद ।

मुका-**पु०** घूँसा, भारनेके लिए बंधी हुई मुड़ी । -(**के**) बाज़ी-**की०** घूँसेबाजी, घूँसीकी लड़ाई ।

मुकी-**की०** घूँसेबाजी; दर्द दूर करनेके लिए शरीरपर

धीरे-धीरे मुके लगाना ।

मुकैस-**पु०** दे० 'मुकैश' ।

मुक़क़ैस-**पु०** सोने-चाँदीका तार, बादक़ा; सोने-चाँदीके तारोंका बना कपड़ा; ताश् ।

मुक़क़ैसी-**वि०** सोने-चाँदीके तारोंका बना, जरी या ताश्का बना हुआ । -**ग़ोख़रू**-**पु०** तारोंका बना महीन मोख़रू ।

मुकली-**पु०** एक तरहका कदूर ।

मुक-**वि०** [सं०] मोक्षप्राप्त, भवबंधनसे मुक्त; बंधनरहित, खुला हुआ; छूटा हुआ; क्षिप्त, फैला हुआ । -**कंजुक**-**वि०** (वह साँप) जिसने केंचुल उतार दी हो । -**कंड**-**वि०** जिसकी आवाज़, बोली खुली, स्पष्ट हो; बेधक । -**कच्छ**-**वि०** जिसका काँठ खुला हो, लुंगी पहननेवाला । पु० बौद्ध सम्प्रदायी । -**केसा**-**वि०** जिसके बाल बंधे, गुंथे न हों । -**केशी**-**की०** फ़ाली । वि० **खी** खुले बालोंवाली । -**कखु**(**ख**)-**वि०** जिसकी बालें खुली हों । पु० सिंह । -**केसा**(**तस्**)-**वि०** जिसका बिच संसारकी आसक्ति, जिसकी आत्मा भवबंधनसे, मुक्त हो चुकी हो । -**झार**-**वि०** जिसका दरवाज़ा खुला हो, निर्वाण । -**नीति**-**की०** देसावरसे आनेवाले मालपर बाधक कर न लगानेवाली वाणिज्य-नीति । -**निर्मोक**-**वि०** जिसने हालमें केंचुली छोड़ी हो । पु० वह साँप जिसने केंचुल कुछ ही समय पहले छोड़ी हो । -**बचना**-**की०** मोतिया फूलका एक संद; वेला । -**रसा**-**की०** रास्ना । -**लख**-**वि०** लज्जारहित, निर्लज्ज । -**पसन**-**वि०** निर्बल । पु० दिगंबर जैन । -**वेणी**-**वि०** **की०** जिसकी वेणी बंधी न हो । **की०** द्रौपदी । -**म्यं**-**पु०** रौद्र मछली । -**संग**-**वि०** जिसने समस्त विषयोंसे आसक्ति छोड़ दी हो । पु० परित्राजक ।

-**इस्त**-**वि०** जिसका हाथ खुला हो, दानी, उदार ।

मु०-**कंडसे**-**कैची** आवाज़में; खुलकर; निरस्कींच रूपमें ।

मुकावर-**पु०** [सं०] जैन ।

मुका-**की०** [सं०] मोती; वेदया; रास्ना । -**कलाप**-**पु०** मोतियोंका हार । -**गुण**, -**दाम**(**ह**)-**पु०** मोतियोंकी लड़ी । -**गुह**-**पु०** सीप । -**पुष्ट**-**पु०** कुंदका पौधा ।

-**प्रस्**-**की०** सीप । -**प्राख**-**पु०** मोतियोंका हार । -**फल**-**पु०** मोती; कपूर । -**मणि**-**पु०** मोती । -**भासा**(**ह**)-**की०** सीप । -**लसा**-**की०** मोतियोंकी माला ।

-**मुकि**-**की०** वह सीप जिसमें मोती पैदा होता है । -**स्कोट**-**पु०** सीप । -**हल**-**पु०** मुकाफल, मोती ।

मुकागर-**पु०** [सं०] सीप ।

मुकासा(**व्याह**)-**वि०** [सं०] प्राप्तमोक्ष; आसक्तिरहित ।

मुकाबली-**की०** [सं०] मोतियोंकी लड़ी ।

मुकाबास-**पु०** [सं०] सीप ।

मुकि-**की०** [सं०] छुटकारा; मोक्ष, जन्ममरण-रूप बंधनसे छुटकारा मिलना; नश्वस्वरूपकी प्राप्ति; आजादी । -**क्षेत्र**-**पु०** काशी । -**धाम**(**ह**)-**पु०** मुक्ति देनेवाला स्थान, तीर्थ । -**पत्र**-**पु०** छुटकारेका परवाना । -**प्रद**-**वि०** मुक्ति देनेवाला । -**क्रोड**-**की०** [हिं०] ईश्वरियोंका एक सेवा और धर्मप्रचारकार्य करनेवाला संघटन,

‘साधुवेशन आमी’ । -मंडप-पुं विनयाधर्मदिर (काशी); जगन्नाथमस्ति स्थान विशेष । -भार्य-पुं मुक्ति पानेका मार्ग, साधन । -मुक्त-पुं मुक्तिक । -काम-पुं मुक्ति, छुटकारा मिलना । -स्वाभ-पुं भ्रमणकी समाप्ति, मोक्षके बाद किया जानेवाला स्नान ।

मुक्तिका-स्त्री [सं०] मोती ।

मुख-पुं [सं०] मुँह; दरवाजा, निकलने-पैठनेका रास्ता । -कमल-पुं कमल जैसा मुख । -कान्ति-स्त्री चेहरेका आव, सौंदर्य । -खुर-पुं दाँत । -गंधक-पुं प्याज । -चपल-विं बाचाल । -चपला-स्त्री आर्या छदका एक भेद । -चित्र-पुं मुखपट्टपर छपा हुआ चित्र । -चीरि-स्त्री जीभ । -चूर्ण-पुं चेहरेपर मलनेका सुगंधित पाउडर । -ज-विं मुखसे उत्पन्न । पुं ब्राह्मण । -दूषण-पुं प्याज । -दूषिका-स्त्री चेहरेपर होनेवाली कुंती । -होच-पुं जीभका दोह । -घावन-पुं मुँह धोना । -चीता-स्त्री ब्राह्मणपट्टि नामक वस्त्र । -मिरीसक-विं आलसी, निठरू (आदमी) । -निवासिनी-स्त्री सरस्वती । -पट-पुं डुरका; घूँघ । -षाक-पुं मुँह पकना; वैठो, धोखे आदिको होनेवाला एक रोग । -पिंड-पुं प्राप्त; मृत व्यक्तिके उद्देश्यमें अत्यधिक पूर्व दिया जानेवाला पिंड । -पिडिका-स्त्री मुँहासा । -पूरण-पुं मुखमें मरा हुआ पानी, कुहा; मुखमें कोई चीज भरना । -पूछ-पुं पुस्तक, मासिक पत्र आदिका आवरण-पुंड । -प्रक्षालन-पुं मुँह धोना, साफ करना । -प्रसाद-पुं मुखकी प्रसन्नता; मुखकी प्रसन्न मुद्रा । -प्रिय-विं जो छानेमें अच्छा लगे, सुस्वादु । पुं नारंगी; ककरी; लवंग । -बंद-पुं [हिं०] धोखेका एक रोग । -बंध-बंधन-पुं पुस्तककी प्रस्तावना, भूमिका । -बंधनी-स्त्री [हिं०] (मजिल)शैतान घोड़े, गाथ आदिका मुँह बाँधनेके लिए पड़नायी जानेवाली जाली, जाबा । -भूषण-पुं पान । -भेद-पुं चेहरेका विकृत हो जाना । -भंडनक-पुं तिलक वृक्ष; मुखका आभूषण; पान । विं मुँह की शोभा बढ़ानेवाला । -भंडल-पुं चेहरा । -भार्जस-पुं मुँह साफ करना, मुखप्रक्षालन । -मोद-पुं काला सहिजन । -वंश्रण-पुं लगाम । -रुचि-स्त्री मुखकांति । -रोग-पुं गले, मसूरे, जीभ आदिमें होनेवाला रोग । -लंगल-पुं खर, कुत्ता । -लेप-पुं सौंदर्यके लिए मुखपर लगाया जानेवाला लेप; एक मुखरोग । -बल्लभ-विं स्वादिष्ट । पुं भ्रनारका पेड़ । -वायिका-स्त्री अंडा । -बाध-पुं मुँहसे बजाया जानेवाला बाजा । -बास-पुं गंधरुण नामक बास; कपूर, लौंग आदि मुँहको सुगंधित करनेवाली चीजें । -बासन-पुं मुखकी सुवासित करनेवाली ओषधि । -वासिनी-स्त्री सरस्वती । -विद्धा-स्त्री तैलपायिका नामक कीड़ा जिसके मुखस्पर्शमें ही किसी चीजमें दुर्गंधि आ जाती है । -व्याघान-पुं बँवाई । -मुदि-स्त्री दातुन आदिकी सहायतामें मुख साफ करना; भोजनके बाद घाव, इलायची आदि खाकर मुख शुद्ध करना; इस कार्यके लिए उपयोगी वस्तु । -क्षेप-पुं

राहु । -क्षोच-पुं मुखकी सूजन । -क्षोचव-पुं मुख शुद्ध करनेवाली वस्तु, दातुचीनी, तज । -क्षोची-विं-पुं बँबीर । -क्षोच-पुं मुँह सूजना; व्यास । -क्षी-स्त्री मुँहकी शोभा, कांति । -संभव-पुं ब्राह्मण; पुष्करमूल । -मुख-पुं उच्चारणकी सरलता या सौंदर्य । -खाव-पुं खार, काला; मूक, खारका बहना । -हास-पुं प्रसन्न मुखाकृति ।

मुखवा-पुं चेहरा, मुख ।

मुखतार-पुं [अ०] अधिकार-प्राप्त व्यक्तिविशेषके प्रति-निधिरूपमें कार्य करनेका अधिकारी; एजेंट; कामूपेक्षा वर्गका एक भेद जो वकीलसे छोटा होता है । -कार-पुं कार्याधिकारी । -कारी-स्त्री मुखतारी । -नामा-पुं वह लेख जिसके जरिये कोई आदमी मुखतार बनाया जाय, मुखतारका अधिकार-पत्र । -० आम-पुं मुखतारेआम बनानेका अधिकार-पत्र । -० खास-पुं मुखतारेखास बनानेका अधिकार-पत्र । - (रे) नाम-पुं वह व्यक्ति जिसे किसीकी ओरसे कोई कार्य करनेका अधिकार दिया गया हो । -कुल-पुं स्वधिकारी । -खास-पुं वह जिसे किसी मुकरमेकी पैरवी या और कोई खास काम करनेका अधिकार दिया गया हो ।

मुखतारी-स्त्री मुखतारका काम या पेशा ।

मुखनी-स्त्री मुख्य स्त्री या कार्यकर्मी -‘हमारे गोलकी मुखनी है यह’-सुगं ।

मुखजल-विं [अ०] हिजबा, नपुंसक ।

मुखजलक-विं [अ०] तखसीफ किया हुआ, घटाया हुआ । पुं शब्दका लघु रूप (जैसे ‘माह’का ‘मह’); वह शब्द जिसका कोई वर्ण या मात्रा घट गयी हो ।

मुखविर-पुं [अ०] खबर देनेवाला, जासूस; वह मुल-जिम जो अपराध स्वीकार कर सरकारी गवाह बन जाय तथा जिमें माफ़ी दे दी जाय ।

मुखबिरी-स्त्री जासूसी ।

मुखम्मस-विं [अ०] पाँच कोनोंवाला, पजगोशा । पुं वह पक्ष जिसमें हर बरदमें पाँच मिसरे हों ।

मुखर-विं [सं०] अधिक बोलनेवाला, बाचाल; शोर करनेवाला; अभियारदी; वज्रता, शब्द करता हुआ । [स्त्री ‘मुखरा’] पुं शंख; कीड़ा; मुखिया ।

मुखरिका-स्त्री [सं०] दे० ‘मुखरी’ ।

मुखरित-विं [सं०] ध्वनित, शब्दाव्ययान ।

मुखरी-स्त्री [सं०] लगाम; मोहरी ।

मुखाकृति-स्त्री [सं०] चेहरा ।

मुखागार-विं दे० ‘मुखाग्र’ ।

मुखाग्नि-स्त्री [सं०] जंगलकी आग; चितामें आग लगानेके पहले खबके मुँहमें आग देनेकी क्रिया ।

मुखाग्र-विं [सं०] कंठस्थ, जबानी याद ।

मुखाग्रव-विं [अ०] जिससे खिताब किया जाय, जिससे बात-चीत की जाय, संबोध ।

मुखातिव-विं [अ०] खिताब या संबोधन करनेवाला, बात करनेवाला; मुताबकजह ।

मुखापेक्षी (शिव)-विं (सं०) (टम्परेका) मुँह जोहनेवाला, पराश्रित ।

मुसामब-पु० [सं०] मुखरीग ।

मुसारी-ली० मुसकृति; कपर वा सामनेका भाग; दण्डन ।

मुसालकृत-ली० [अ०] विरोध; शत्रुता ।

मुसालिक-वि० [अ०] विरोध करनेवाला; शत्रु; उलटा ।

मुसालु-पु० [सं०] एक बीटा कंद, महाकंद ।

मुसालसमय-ली० [अ०] झगडा; लड़ुता ।

मुसासथ-पु० [सं०] धूक; राल ।

मुसास-पु० [सं०] केकडा ।

मुसिया-पु० प्रधान व्यक्ति, अगुआ; वह व्यक्ति जिसका कर्तव्य गाँवमें होनेवाले अपराधों, दुर्घटनाओं आदिकी पूचना थानेमें भेजवाना हो; वल्लभकुलके मंदिरोंमें मूर्तिके पूजन, योग लगाते आदिका काम करनेवाला ।

मुखिक-वि० खलल डालनेवाला, बाधक ('रुबन') ।

मुखीय-वि० [सं०] मुख-संबंधी; मुख्य ।

मुखसिक-वि० [अ०] भिन्न, जुदा, विस्मय; कई तरहका ।

मुखसर-वि० [अ०] संक्षिप्त; साररूप; छोटा ।

मुखसर-अ० [अ०] थोड़ेमें, संक्षेपमें ।

मुखतार-पु० [अ०] दे० 'मुखतार' ।

मुख्य-वि० [सं०] मुख-संबंधी; प्रधान, प्रथम, जो गौण न हो; श्रेष्ठ । पु० मुखिया, अगुआ; बहादुरोंमें शास्त्रीक प्रथम कर्ण । -मन्त्री (विज्)-पु० प्रधान मन्त्री । -सर्ग-पु० लापर लुछि ।

मुख्यतः (सर्व) -अ० [सं०] प्रधानतः, खास तौरसे ।

मुख्याय-पु० [सं०] शायक प्रधान अर्थ ।

मुखर-पु० गायबुम मुंगरी जो व्यापारके काममें लायी जाती है, जोड़ी (फेरना, हिलाना) ।

मुखा-पु० [अ०] गवैया, कलावंत । [ली० 'मुखायि']

मुगरा-पु० दे० 'मुंगरी' ।

मुगरी-ली० दे० 'मुंगरी' ।

मुगल-पु० [फा०] एक प्रसिद्ध लडाकू तातारी जाति (जिसका आदिस्थान मंगोलिया है और जिसमें चंगेज खान, इलाकू खान और तैमूर जैसे इतिहास-प्रसिद्ध विजेता हुए । भारतका अंतिम मुसलमान राजवंश इसी जातिका था) । -ई-वि० दे० क्रममें । -पठान-पु० जमीनपर खाने खाँचकर १६ कंकड़ियोंसे खेला जानेवाला एक खेल ।

मुगलई, मुगलई-वि० [फा०] मुगलोंका-सा, मुगली ।

-टोपी-ली० एक तरहकी ऊँचे गोशोंवाली टोपी ।

-पराठा-पु० एक विशेष प्रकारका पराठा जो मेवे, अंडे आदिके योगसे तैयार किया जाता है । -हुडी-ली० चौड़ी-चकली, भजतु हुडी ।

मुगलानी-ली० [फा०] मुगल ली; हरमसरा (अंतःपुर)-की दासी; सिलाईका काम करनेवाली ली ।

मुगलिया-वि० [फा०] दे० 'मुगली' ।

मुगली-वि० [फा०] मुगलोंका; मुगलोंका-सा । -हुडी-ली० मुगल बच्चोंकी धी जानेवाली एक विशेष हुडी ।

मुगलीया-वि० [फा०] मुगलोंका । -झाबवान-पु० हिंदुस्तानका मुगल राजवंश ।

मुगलज, मुगलज-वि० [अ०] मोटा; गाढा; मेढा,

गंदा; अजीर्ण ।

मुगलजात, मुगलजात-ली० [अ०] गंदी गालियाँ ।

मुगलता-पु० [अ०] बीका; प्रेम ।

मुगुध-वि० दे० 'गुग्ध' । -सिध-ली० मुग्धा नायिका-कहा मंगोछति मुगुध तिथ पुनि-पुनि चंदन आनि'-ललितम् ।

मुग्ध-वि० [सं०] मोहित; मूढ़; मोला; सुंदर । -कर-वि० मुग्ध, मोहित करनेवाला । [ली० 'मुग्धकरी'] -हुडि-वि० मूर्ख, नासमझ; मोला । -बोध-पु० बोधदेवकृत आरंभिक संस्कृत-व्याकरण ।

मुग्धा-ली० [सं०] जीवनप्राप्त सरल स्वभाववाली नायिका ।

मुग्ध-पु० [सं०] लाछ, लाछ ।

मुग्धु-पु० [सं०] एक पेड़ जिसकी छाल और फूल दवाके काम आते हैं; दे० 'मुकुट' ।

मुग्धना-सं० मि० दे० 'मुग्धना' ।

मुग्धका-पु० [पु०] कोई खास काम न करने या नियत तिथिपर हाजिर होनेका प्रतिज्ञापन जिसका पालन न होनेपर प्रतिज्ञा करनेवाला निर्धारित अर्थदंड देना स्वीकार करता है (दिना, छिन्नना) ।

मुग्धिर-वि० [सं०] दाता । पु० धर्म; बाधु; देवता ।

मुकुट-पु० [सं०] एक सर्ववशी राजा जो माधाताका बेटा था और जिसकी निद्रा भग करनेके कारण कालयवन जलकर भस्म हो गया; मुकुटदका पेड़ ।

मुकुटी-ली० [सं०] मुट्ठी; उगली मटकाना; सँकसी ।

मुकुंदर-पु० बड़ी मूँछोंवाला; भौरी शकलवाला और भौंदू ।

मुकु-मूँछका समासमें व्यवहृत लघुरूप । -मुंडा-जिसने मूँछें मुँका की हों ।

मुकुका, मुकुपि, मुकुल-वि० बड़ी मूँछोंवाला ।

मुकुपि-पु० बड़ी मूँछोंवाला, मुकुल, मुकुंदर ।

मुकुकर-पु० [अ०] नर, पुरुष; पुंलिंग (व्या०) । -समाई-पु० जलमुरीद, जोरुका गुलाम ।

मुकुकिर-पु० [अ०] जिन्न करनेवाला; याद करने, कराने-वाला; भगवान्का नाम जपनेवाला ।

मुकुसुद-पु० [अ०] कोशिश करनेवाला; सही रास्ता निकालनेवाला; जिहाद करनेवाला ।

मुकुन-सर्व० मुसको ।

मुकुमिल-वि० [अ०] संक्षेपमें कथित; जिसमें व्योरा न हो; हकूदा किया हुआ ।

मुकुरा-वि० [अ०] जारी किया हुआ; हिसाबमें लिया (या मिनहा किया) हुआ । पु० कटौती, मिनहाई; अदबसे सलाम करना; राजाओं आदिके सामने जाकर सलाम करना; वेष्टाका महफिलमें बैठकर गाना । -ई-पु० मुजरा करनेवाला; सलाम करनेवाला; दरबारी । -गाह-पु०, ली० शाही दरबारमें वह स्थान जहाँ खड़े होकर लोग मुजरा अर्ज करें । मु० -करना-मिनहा करना; अदबसे सलाम करना; वेष्टाका बैठकर-बिना नाचके-गाना ।

मुजलिम-पु० [अ०] जुम करनेवाला, अपराधी ।

मुजरत-ली० [अ०] हानि; कष्ट ।

सुन्दर-वि० [अ०] अकेला; अविवाहित; विरक्त ।
सुन्दर-वि० [अ०] तपिषा किया हुआ, अनुभूत; अधूक (सुखा, दवा) । -सुखा-पु० अनुभूत योग ।
सुखद-वि० [अ०] जिसका स्वाद हुआ, विन्ददार ।
सुखद-वि० [अ०] तजवीज किया हुआ; प्रस्तावित ।
सुखविज्ञ-पु० [अ०] तजवीज करनेवाला, प्रस्तावक ।
सुखस्सम-वि० [अ०] जिसवाला, शरीरधारी; मूर्तिमान् ।
सुखस्समा-पु० [अ०] मूर्ति, प्रतिमा ।
सुखावका-पु० [अ०] मुद्रा, रुबाई; मार-काट ।
सुखाविर-पु० [अ०] पकौसी; मसजिदमें रहनेवाला; दरगाह आदिमें श्राव, लगानेवाला ।
सुखाविर-खी० [अ०] मुजाविरका पद या कार्य ।
सुखावका-पु० [अ०] अश्चयन; परवा ।
सुखाविर-पु० [अ०] कोशिश करनेवाला; जिहाद करनेवाला ।
सुजाहिम-वि० पु० [अ०] मुजाहिमत करनेवाला, रोकनेवाला, बाधक ।
सुजाहिमत-खी० [अ०] रोक-टोक, बाधा, विरोध ।
सुजिर-वि० [अ०] हानिकर ।
सुख-सर्व० 'मैं'का बहु रूप जो कर्म और सर्वथ कारककी छोड़कर शेष कारकोंमें विभक्तिके योगसे होता है ।
सुखे-सर्व० 'मैं'का कर्म और सप्रदान कारकका रूप ।
मुटका-पु० एक मोटा रेशमी कपड़ा जो पूजन आदिमें धोतीकी जगह पहना जाता है ।
मुटरी-खी० दे० 'मुटरी' ।
मुटई-खी० मोटापन; पुष्टि; घमंड । **मु०** -खड़ना-धमंड बढ़ना ।
मुटाना-अ० कि० मोटा होना; घमंडी हो जाना ।
मुटारा-वि० जो पैसवाला हो जानेके कारण घमंडी और लापरवाह हो गया हो ।
मुटिया-पु० बोझा डोनेवाला ।
मुट्टा-पु० घास-फूस, सरपट आदिका मुट्टीमें आने लायक पूजा, पुष्टिदा; दस्ता, मुटिया ।
मुट्टी-खी० बंधी हुई हथेली, मुट, मुष्टि; मुट्टीमें आनेभर वस्तु; मुट्टीकी चौड़ाईकी माप; पकड़, कब्जा (-में आना, होना); मुसनी; मुट्टीपर अन्न जो दानके लिए निकाला जाय, चुटकी । **मु०** -गरम करना-हाथमें चुपकेसे रुपये धर देना, धूस देना । -में आना या होना-कब्जे, कान्में आना, होना । -में हुआ बंद करना-अनहोनी बात करनेकी कोशिश करना ।
मुटमेव-खी० निर्वन्त; सामना (-होना) ।
मुटिका-खी० मुट्टी; घूँसा ।
मुटिया-खी० कब्जा, दस्ता; धुनिबोंका बेलन जिससे वे तौतपर मारते हैं ।
मुट्टी-खी० दे० 'मुट्टी' ।
मुट्टी-खी० काठका बना एक तरहका बुनघुना ।
मुट्टका-अ० कि० मुट्टका ।
मुट्टा-अ० कि० सीधी चीजका मुट्टका; खम होना, अगल-अगल या पीछेकी ओर घूमना, गतिहीन दिशा बद-

लना; † घूँसा जाना; ठगा जाना ।
मुट्टा-वि० बंधा ।
मुट्टवरिया-खी० सिरहाना ।
मुट्टवाना-स० कि० मुट्टे या मोहनका काम करना ।
मुट्टवारी-खी० सिरहाना; मुँहरा ।
मुट्टहरा-खी० सारी वा चावरका सिरके ऊपर रहनेवाला भाग; इस भागमें पका हुआ लेक आदिका भस्मा ।
मुट्टाना-स० कि० सिरके बाह्य छतरेसे बनवाना । † अ० कि० घूँसा जाना; ठगा जाना ।
मुट्टिया-पु० वह जिसका सिर घूँसा हुआ हो; सन्ध्यासी; बैरागी । खी० मोबी लिपि, महाजनी लिपि ।
मुट्टभरिद-वि० [अ०] गिने हुए; कई; अनेक; बहुतेरे ।
मुट्टवारी-वि० [अ०] सीमाका अतिक्रमण करनेवाला; एकसे दूसरेकी लगनेवाला, संक्रामक, छुतहा (रोग); सकर्मक (क्रिया) ।
मुट्टअक्षि-वि० [अ०] तमल्लुक, लगाव रहनेवाला, संबद्ध; संयुक्त ।
मुट्टअक्षि-वि० [अ०] संबद्ध ।
मुट्टअक्षिनी-पु० [अ०] वरके लोग, बाल-बच्चे ।
मुट्टअक्षि-पु० [अ०] इन्म सीखनेवाला, शिक्षार्थी, शिष्य ।
मुट्टअक्षि-वि० [अ०] तमल्लुक, (धर्म, जातिका पक्ष-पात) करनेवाला; कट्टर ।
मुट्टअक्षि-पु० [अ०] कलाम करने, रोकनेवाला; उत्तम पुरुष संबंधी ।
मुट्टा-पु० कोठे या बरामदेके किनारे रेडिंगका काम देनेके लिए खड़ी की हुई, पतली, नीची दीवार; [अ०] तपिया लगानेकी जगह, तपियागाह ।
मुट्टाना-वि० मूतनेवाला; अधिक मूतनेवाला ।
मुट्टरुजी-वि० [अ०] बालबाज, फरेबी, फसादी ।
मुट्टरुजि-वि० [अ०] अलग-अलग; विविध; फुटकक; बिखरा हुआ ।
मुट्टरुजित-खी० [अ०] फुटकल चीजें; फुटकल खजोकी मद ।
मुट्टवका-वि० [अ०] गोद लिया हुआ । पु० दत्तक पुत्र, लेपाक ।
मुट्टवरि-वि० [अ०] बरकत देनेवाला, पवित्र ।
मुट्टमौवक-वि० [अ०] धनी, मालदार ।
मुट्टरुजि-पु० [अ०] तरजुमा करनेवाला, उल्हाकार ।
मुट्टरिद-वि० [अ०] चितित, फिक्रमंद; उद्विग्न ।
मुट्टरावि-वि० [अ०] समानार्थक, हममानी ।
मुट्टरुजि-वि० [अ०] आजाद, संभनरहित । अ० बिल-कुल, कतई ।
मुट्टराशी-वि० [अ०] मुँहनेवाला-‘जो देखो वह हुआ नौकरीका मुट्टराशी’-पूर्ण ।
मुट्टरुजि-खी० [अ०] तलाक दी हुई खी ।
मुट्टवका-वि० [अ०] तबकी (भाषा) रखनेवाला, धर्मोदधार ।
मुट्टवका-वि० दे० 'मुट्टवजिह' ।
मुट्टवजिह-वि० [अ०] तबक-मुह करनेवाला, ध्यान

देनेवाला ।

मुत्तवक्रा-वि० [अ०] बफात पाया हुआ, मृत, परलोक-गत ।

मुत्तवल्ली-पु० [अ०] मस्तिष्क या वक्क संपातिका प्रबंध करनेवाला; संरक्षक ।

मुत्तवस्त्रिस्त-वि० [अ०] दरमियानी, बीचका; मध्यम भेगीका ।

मुत्तवातिर-वि० [अ०] लगातार ।

मुत्तवसी-पु० [अ०] लेखक, मुंशी; हिस्सा लिखनेवाला, गणक । -गिरी-खी० मुत्तवसीका काम, डूकी ।

मुत्तवसिरी-खी० मोतियोंकी कंठी ।

मुत्तवस्मिल-वि० [अ०] बर्दाश्त करनेवाला, सहनशील ।

मुत्तवहर्कि-वि० [अ०] हरकत करनेवाला, गतिशील; सरयुक्त (वर्ण) ।

मुत्तवक्रव-खी० [अ०] मुताधिक होना, सट्टा, अनुरूप होना ।

मुत्ताविक्क-वि० [अ०] सट्टा, अनुरूप । पु० शोधनके बाद छापी जानेवाली कापी । अ० अनुसार ।

मुत्तालवा-पु० [अ०] माँगना, तलब करना; माँग; पावना ।

मुत्तास-खी० पेशाबकी हाजत ।

मुत्ताह-पु० [अ०] मीयादी, अस्वायी निकाह जो मुसल-मानोंके लीया संप्रदायमें जायज है ।

मुत्ताही-खी० [अ०] वह खी जिससे मुत्ताह किया गया हो; रखली ।

मुत्तिलह-पु० मोतीचूरका ढब्दू ।

मुत्तेहरा-पु० कलाईपर पढ़नेका एक गहना ।

मुत्तकि-वि० [अ०] इत्फाक करनेवाला, सहमत; एकतरफ, संयुक्त ।

मुत्तका-वि० [अ०] जिसे इत्फाका दी गयी हो, उचित, आगाह ।

मुत्तसिल-वि० [अ०] भिखनेवाला; लगा हुआ, निकटत्व ।

मुत्तहिद-वि० [अ०] इत्तिहाद रखनेवाला, संयुक्त; एक ।

मुत्तहिदा-वि० [अ०] इकट्ठा, संयुक्त ।

मुत्तिय-पु० मोती ।

मुत्तसील-पु० [सं०] इत्थशाल नामक योग (ज्यो०) ।

मुद्-पु० [सं०] हर्ष; उमंग ।

मुद्गिर-वि० [अ०] तदवीर करनेवाला; बुद्धिमान् । पु० राज्यप्रबंध करनेवाला, भंत्री ।

मुद्गिमा-वि० [अ०] रिमाग रखनेवाला; घमडी ।

मुद्गिरि-पु० [अ०] शिक्का (दरसे) देनेवाला, अध्यापक ।

मुद्गिरि-खी० [अ०] मुद्गिरिका काम, अध्यापकी ।

मुद्गर्वत-वि० [अ०] हर्षयुक्त, मुदित ।

मुद्गा-खी० [सं०] हर्ष, मोद । * अ० मतलब यह कि; लेकिन ।

मुद्गाप्रलव-खी० [अ०] दखल देना, हस्तक्षेप; रोकटोक । -वेला-खी० दूसरेके घर या जमीनमें उसकी इजाजतके बिना चला जाना ।

मुद्गाम-अ० [अ०] सदा, निराल ।

मुद्गामी-वि० [अ०] सदा रहनेवाला ।

मुदित-वि० [सं०] मोदयुक्त, आनंदित । पु० कामसाधनमें वर्णित एक प्रकारका आरंभिक ।

मुदिता-खी० [सं०] हर्ष, आनंद; चित्तकी वह अवस्था जिसमें दूसरेका सुख देखकर सुख होता है (यो०); वह परकीया जो परपुत्रकी प्रीति पानेकी कामनाके अकरमाद पूरी हो जानेसे प्रसन्न होती है (सा०) ।

मुदिर-पु० [सं०] मेघ; कामुक; व्यभिचारी; मेंढक ।

मुदीवर-वि० [अ०] गोल, मंडलाकार ।

मुद्र-पु० [सं०] मूंग; जलकौआ; दकन । -पर्णी-खी० बनमूंग । -मुक्क(ज), -भोजी(जिक्)-पु० बोरा ।

-मोदक-पु० मूंगका ढब्दू ।

मुद्रर-पु० [सं०] मुगद; हथौड़ा; मुगरा; एक प्राचीन अस्त्र; मोगरा । -मत्स्य-पु० मागुर मछली ।

मुद्रल-पु० [सं०] एक वृक्ष, रोहिण; एक गोश्रवर्तक मुनि ।

मुद्रवन-पु० [सं०] बनमूंग ।

मुद्रक-मुद्रक-पु० [सं०] बनमूंग ।

मुद्रा-पु० [अ०] अमिप्राय, मतलब, इच्छा । वि० जिसका दावा किया गया हो, चाहा हुआ । -अल्लेह-पु० दे० 'मुद्रालेह' । -सर्तरीबी-पु० जो महज मुकरनेकी तरतीबके लिए मुद्रालेह बनाया गया हो, जिसके विरुद्ध कोई दादरमी न मंगी गयी हो । -अल्लेहा-खी० मुद्रालेह ।

मुद्रबा-खी० मुद्दी ।

मुद्दी-पु० [अ०] दावा करनेवाला; वादी; दावेदार; † शत्रु ।

मुद्रत-खी० [अ०] अरसा; लंबा अरसा; काल; अवधि, मीमाद । -दराज-खी० लंबा अरसा, बहुत दिन ।

मुद्दी-वि० [अ०] मीमादवादा, मावधि ।

मुद्रालेह-पु० जिसपर दावा किया गया हो, प्रतिवादी ।

मुद्क-वि० दे० 'मुक्क' ।

मुद्दा-पु० टखना, युक्त ।

मुद्दी-खी० रस्मी, डोरीकी खिसकनेवाली गाँठ ।

मुद्दक-पु० [सं०] छापनेवाला, 'मिटर' ।

मुद्दग-पु० [सं०] मुहर करना; छापना; छपाई; मुँदना ।

मुद्दगालव-पु० [सं०] छापाखाना, प्रेस ।

मुद्दगव-पु० [सं०] मुद्रा, मुहरसे छापना; छपाई ।

मुद्गकित-वि० [सं०] मुहर किया हुआ; छपा हुआ । -पत्र-पु० नामांकित पत्र, वह पत्र जिसपर राजाकी या किसी अधिकारीकी मुहर लगी हो, परवाना ।

मुद्रा-खी० [सं०] नामकी मुहर; सिक्का; नाम सुदी हुई अंगुली; मुख, हाथ, गर्दन आदिकी कोई विशेष भावस्वक स्थिति; मुखचेष्टा; शरीरपर छपानेके हुए बिन्दुके आयुर्धो-संकेत, चक्र आदिके चिह्न; दैवपूजनमें हाथकी उँगलियोंका विशेष विन्यास (तं०); इठवैगके आसन; परवाना राह-दारी; सीसेके डके हुए अक्षर जो छापनेके काम आते हैं, 'टाइप'; कौच या स्फटिकका बना मुद्रक जो गौरखर्पची कानमें पहनते हैं; एक अलकार जहाँ प्रकृत अर्थके अतिरिक्त पद्यमें कुछ और भी सामिप्राय नाम निकलते हैं । -कार-पु० मुहर बनानेवाला । -दोरी-खी० [सं०] एक रागिनी । -तल्ल-पु० पुराने सिक्कोंके सहारे देशविशेषका

प्राचीन इतिहास मातृम करनेका विज्ञान । -**कार्य**-पु० मध्यम । -**चक्र**-पु० छापेकी कल, प्रेस (आ०) । -**रक्षक**-पु० वह अधिकारी जिसके पास रानकीय मुहर रहे । -**रक्षक**-पु० विद्यालयपरचित एक संस्कृत नाटक । -**लिपि**-श्री० छाया । -**विज्ञान**, -**साक्ष**-पु० मुद्रातत्त्व ।

मुद्राक्षर-पु० [सं०] मुहरका अक्षर; टाण ।

मुद्राक्षर-पु० [सं०] अन्य राज्यमें जानेका परवाना (पासपोर्ट) देनेवाला अधिकारी (कौ०) ।

मुद्रिका-श्री० दे० 'मुद्रिका' ।

मुद्रिका-श्री० [सं०] मुहर; नाम सुदी पुरै अंगूठी; अंगूठी; सिक्का ।

मुद्रित-वि० [सं०] मुहर किया हुआ; छापा हुआ; मुँदा हुआ; बंद; निःशब्द ।

मुद्रा-अ० [सं०] धर्म, वेदायदा । * पु० छूट ।

मुद्रा-पु० [अ०] सुखाया हुआ अंगूर, दाहा ।

मुद्रा-पु० संहितन, धोमोजन ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] उगाया हुआ । पु० वह नवश जो सतहसे उभरा हुआ हो । -**कारी**-श्री० बेल-बूटोंका काम जो लकड़ी, कपड़े आदिपर किया जाय ।

मुद्रमुद्रा-पु० मैदेका बना हुआ एक पकवान ।

मुद्राक्षर-वि० दे० 'मुद्राक्षर' ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] बरा हुआ; अवलंबित; आश्रित ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] बाद-विवाद, वात्सल्य; तर्कशास्त्र ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] जिसे पुकारा, संशोधन किया जाय (आ०) ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] पुकारनेवाला; छिंदोरा पीटनेवाला । श्री० छिंदोरा, ढोल पीटकर किसी बातकी घोषणा करना ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] नफा, लाभ, (शुद्ध 'मुद्राक्षर') ।

मुद्राक्षर, **मुद्राक्षर**-पु० दे० 'मुद्राक्षर' । -**मुद्राक्षर** मुद्राक्षर क्या चढवि सार न बहरा होई -**कबीर** ।

मुद्राक्षर-श्री० [अ०] परस्पर संबंध; मेल; उपयुक्तता ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] बाज्रिय, ठीक, उचित ।

मुद्रि-वि० [सं०] मननशील । पु० मोनव्रती, वाक्स्पयी, कवि; तपस्वी; जिन; बुद्ध; सतकी संख्या । -**कम्पा**-श्री० मुनिकी वेदी । -**कुमार**-पु० अल्पवयस्क मुनि ।

-**कर्तृ**-श्री० एक तरहका कनूर । -**कृद्**-पु० छतिवन । -**कृद्**-पु० कक कृद् । -**कृद्**-पु० पाणिनी, कात्यायन और पराजलि । -**कुम्भ**, -**पाद्म**-पु० श्मशानक; बकम । -**काम्य**-पु० तिथी । -**पितृ**-पु० तर्जनी ।

-**पुत्र**-पु० मुनिभेद । -**पुत्र**-पु० दीना । -**पुत्र**-पु० संजन; दमन कृद् । -**पुत्र**-पु० मुनिद्रुमका फूल ।

-**भक्त**-पु० तिथीका चावल । -**भक्त**-पु० हक; उपवास; अगस्त्यका फूल । -**भक्त**-पु० तिथीका चावल ।

-**हृत्ति**-वि० तपस्वीका जीवन वित्तानेवाला । -**भक्त**-पु० तपस्या ।

मुद्रिणी-श्री० छाल पत्तीकी मात्रा ।

मुद्रिणी-पु० [सं०] मुनिभेद; बुद्धदेव ।

मुद्रिणी-पु० दे० 'मुद्रिणी' ।

मुद्रिणी-पु० विद्याप-विद्याप रक्षनेवाला कर्मचारी ।

मुनीनी-श्री० विद्याप-विद्याप रक्षनेका काम ।

मुनीनी, **मुनीनी**-पु० [सं०] मुनिभेद; बुद्धदेव; विष्णु ।

मुद्रा, **मुद्रा**-पु० छोटे बच्चोंका प्यारका संशोधन ।

मुद्राक्षर-पु० [सं०] तिथीका चावल ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] अकेला, तनहा; अमिश्रित (औषध) ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] फारसी बनाया हुआ । पु० दूसरी भाषाका शब्द जो फारसी बना लिया गया हो ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] फरहट देनेवाला, प्रसन्नता-जनक ।

पु० सुखादु और सुगंधित, दिव्य-जिवरकी ताकत देनेवाली दवा (तिय्य) ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] गरीब, कंगाल, निर्धन । -**का** माळ-सस्ता माळ (केरीवाले) ।

मुद्राक्षर-श्री० [अ०] गरीबी, निर्धनता ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] कसाद करनेवाला; झगडा; झगडा; कमानेवाला ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] तफसीलवार, विस्तृत; खोल्कर बयान किया हुआ । अ० खोल्कर, खोलेवार । पु० केंद्र या सदरका उकटा; केंद्रस्थ नगरके ईर्द-गिर्दके स्थान ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] केंद्रस्थ नगरके ईर्द-गिर्दके स्थान ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] तफसील करनेवाला, व्याख्याकार ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] कायदा करने, देनेवाला, कामकारी ।

-**मत्तक**-वि० प्रयोजनके अनुकूल । मु० -**वचना**,

-**होवा**-कामकारी, अनुकूल होना ।

मुद्राक्षर-वि० [का०] बिना दामका, सैतमें मिला हुआ ।

अ० विनदामो । -**खोर्द**, -**खोर्द**-वि० बिना मेहनत किये, दूसरेकी कमाई खानेवाला । -**का**-विना कुछ दिये प्राप्त, सैतका; व्यर्थका; बेफायदा । (-**का** माळ, दर्दसर) ।

-**मै**-विनदामो; व्यर्थ; बेकार ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] झूठा इलजाम लगानेवाला; झूठी बातें बतानेवाला; फसादी ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] फसाद देनेवाला; इस्लामी कानूनके अनुसार दंडाक्षा करनेवाला, सरहें हाकिम ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] बरी, मुक्त; पाक; निर्दोष ।

मुद्राक्षर, **मुद्राक्षर**-वि० [अ०] कुल; बोका-सा; खरा, परखा हुआ । पु० मात्रा; रकम, रुपयेकी संख्या (मुद्राक्षर पोंच रुपये) ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] परखनेवाला, समीक्षक ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] अरपट, गोल, द्व्यर्थक (बात) ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] बदला, मुद्राक्षर; बदल-बदल ।

मुद्राक्षर-वि० [अ०] जिसमें बरकत दी गयी हो; बरकत-का हेतु; सीमास्थानी; शुभ; मला । श्री० सुखखरी ।

-**बाद्**-श्री०, पु० बघाई, शुभकामना; सुभारक हो, सुदा बरकत दे, बघाई । -**बादी**-श्री० दे० 'मुद्राक्षर-बाद्' ; बघाईके गीत । -**सकायत**-श्री० प्याह आदिके

अवसरपर एक दूसरेकी सुभारकवादी देना ।

मुद्राक्षर-श्री० सुभारकवादी, बघाई ।

मुद्राक्षर-पु० [अ०] हदसे ज्यादा तारीफ या पुराई करना, आशुषि; बढ़ाकर कहना । -**आनेज**-वि० अतिरंजित, बढ़ाकर कहा हुआ ।

मुद्राक्षर-श्री० [अ०] संशोधन, मैनुन ।

मुद्राई-वि० [अ०] जयज, झरोझते अतुल्य; विहित।
मुद्राईसा-पु० [अ०] बहस, वाद; वाद-विवाद करना।
मुद्राई-पु० [अ०] आरम्भ; उद्देश्य (ध्या०)।
मुद्राई-पु० [अ०] आरंभ करनेवाला; मौखिक; आरंभिक कक्षाका छात्र।
मुद्राई-वि० [अ०] पकड़; डुबा; कँसा डुबा, लगा डुबा।
-ए-बख्ता-वि० मुसीबतमें फँसा डुबा, विपद्ग्रस्त।
मुद्राई-वि० [अ०] जो हो सके, होनेवाला, संभाव्य।
मुद्राई-पु० [अ०] इतिहास करनेवाला, परीक्षक।
मुद्राई-की० [अ०] सत्तनत, राज्य।
मुद्राई-मुद्राई, मुद्राई-वि०-की० [अ०] रोक, निषेध, मनाही।
मुद्राई-की० [सं०] मोक्षकी कामना।
मुद्राई-वि० [सं०] मोक्षका अधिकायी। पु० सन्मार्गी।
मुद्राई, **मुद्राई**-पु० [सं०] बादल। वि० जिसकी मुक्ति हो गयी हो।
मुद्राई-की० [सं०] मरनेकी इच्छा।
मुद्राई-वि० [सं०] जो मर रहा हो, आसन्न-मरण; मरणका इच्छुक।
मुद्राई-वि० [अ०] आसानीसे मिलनेवाला; उपलब्ध; प्रस्तुत।
मुद्राई, **मुद्राई**-पु० भूने गेहूँ और शुष्कका लब्ध।
मुद्रा-पु० [सं०] एक दैत्य जो विष्णुके हाथों मारा गया; बैठन। -**ज**-पु० पलायन, धृष्ट। -**क**-पु० कट-हल्का पेश। -**जिह्वा**, -**द्वार**, -**दिष्ट**-पु० मुरारि, कृष्ण। -**सुप्त**-पु० मुर दैत्यका बेटा, अस्मासुर। -**हा**(इच्छा), -**हारी**(विजय)-पु० विष्णु; कृष्ण।
मुद्राई-की० दे० 'मूली'।
मुद्राई-की० मुद्राईकी क्रिया या भाव।
मुद्राई-अ० कि० मुद्रा; मोच जाना; छोटना; * विच-कना; नष्ट होना।
मुद्राई-सं० कि० मुद्राईका कारण होना; मोक्षना; फेरना; नष्ट करना।
मुद्राई-की० कालमें पहननेकी छोटी-सी बाली; कानकी लूँ; दे० 'मुद्रा'।
मुद्राई*-की० मूर्खता।
मुद्राई-पु० एक पाकट पक्षी जिसके नरके सिरपर कलगी होती है, मुद्रागी नर, मुद्रा। **मुद्रा**-**बनाना**-किसीकी उकड़ें, बैठकर और घुटनोंके बीचसे दोनों हाथ निकलवाकर कान पकड़ना (संभारवत्का एक प्रकार)।
मुद्राई-की० दे० 'मुद्राई'।
मुद्राई-की० मुद्राईकी मादा, कुमकुटी। -**बाळा**-पु० मुरगियाँ बेचनेवाला। वि० मुरगीका जना। **मुद्रा**-**का**-मुरगीका जना (मागी)। -**का मू**-निकम्मी चीज। -**विठाना**-मुरगीकी अंधेपर विठाना।
मुद्राई-पु० दे० 'मुद्राई'।
मुद्राई-पु० दे० 'मोच'।
मुद्राई-अ०-ज० कि० मूर्च्छित होना।
मुद्राई-पु० मोचपकका बना चैर।
मुद्राई-की० दे० 'मूर्च्छा'। -**बैत**-वि० मूर्च्छित।

मुद्राई-अ०-ज० कि० मूर्च्छित होना।
मुद्राई-वि० दे० 'मूर्च्छित'।
मुद्राई-अ०-ज० कि० मुद्राईका।
मुद्राई-अ०-ज० कि० कूट-पत्तोंका खेलने कमाना, कुम्हलाना; चेहरेंसे मुद्राई, उदासी भादि प्रकट होना।
मुद्राई-पु० [अ०] बरतिकाव करनेवाला; किसी कर्मका कर्ता; मपरापी।
मुद्राई-पु० [अ०] इसकामसे फिरा डुबा, मुसलमान जो काफिर हो जाय।
मुद्राई-पु० [अ०] वह जिसके पास कोई चीज रहन या बंधक रखी जाय, तिहनदार।
मुद्राई-वि० [अ०] तरतीब दिया डुबा, वस्तुओंकी बधा-बान रखकर रचित, प्रस्तुत।
मुद्राई-पु० [अ०] तरतीब देनेवाला।
मुद्राई-वि० [फा०] मरा डुबा, घुटा; घुटपट्ट; बेजान, अति दुर्बल; सुखा, मुद्राईका डुबा; मारा डुबा (घात), कुवता। पु० घुटक, खब, लाश। -**खीर**-वि० दे० 'मुद्राई'।
-कवार-वि० मुद्राई खानेवाला। -**दिष्ट**-वि० जिसकी तबीयत मरी हुई हो, निवृत्त। -**दिष्टी**-की० मुद्राई दिल् होना। -**बावल्**-पु० रंज। -**संख**-पु० दे० 'मुद्राई'। -**संग**-पु० सीसे और सेंदुरका मिश्रण जो दबाके काम आता है। -**सन**-पु० दे० 'मुद्राई'।
मुद्राई-**उठाना**-जनाजा उठाना; मरना (शाप-उसका मुद्रा उठे)। -**उठाना**-मुद्राईकी दाह या दफन करनेके लिए ले जाना। -**कर देना**-मार डालना; अधमरा कर देना। (किसीका)-निकले-मर जाय, जनाजा उठे (शाप)। -**(दे)**का माल-लावारिस माल, घुट जनका छोड़ा डुबा। -**की कज** या गोर पह-चानना-दूधरेकी चाकाकी, छल-छमाकी अन्धरी तरह समझना; अति चतुर होना। -**की नौद** सोना-बैखर होकर सोना, मुद्राई मरना। -**से शर्त बाँधकर सोना**-ऐसी नौद सोना जो जगाने में जल्द न लुके।
मुद्राई-वि० [फा०] मरा डुबा, मुद्राई; बेजान; अपवित्र, नापाक, नाकारा (कि०)। पु० लाश; अपनी मौत मरा डुबा जानवर। -**खीर**-वि० दे० 'मुद्राई'।
-कवार-पु० मरे हुए जानवरका मांस खानेवाला।
-माल-पु० हाराम माल। **मुद्रा**-**खाना**-मरे हुए जानवरका मांस खाना।
मुद्राई-पु० मरखल, मारवाह।
मुद्राई-अ०-ज० कि० दे० 'मुद्राई'।
मुद्राई-पु० [अ०] फलोंका पाक जो उन्हें उपाककर और चाशनीमें ढाककर तैयार किया जाय; चतुष्कोण क्षेत्र जिसके चारों ओर बरार और कोण समकोण हों; बैठनेका एक आसन। वि० वर्ग, वर्गाकृत। -**क्रोश**-पु० मुराई बेचनेवाला।
मुद्राई-पु० [अ०] पाठन करनेवाला; रक्षक; सर-परस्त, सहायक।
मुद्राई-पु० मुने मक्केकी छुरी; मुने हुए चाबक, काई भादि। **मुद्रा**-**(री)** का पैका-मोटा-ताया आदमी।
मुद्राई-अ०-ज० मुद्रा या बैठके कारण किसी चीजका

दूट जाना; किसी कठोर वस्तुके टूटनेसे इस प्रकारका शब्द होना।

सुरिया—**की०** सुरी, पेंशन।

सुरक—**पु०** [सं०] एक प्राचीन बाघ।

सुरका—**की०** [सं०] नर्मदा नदी; सुरली।

सुरलिका—**की०** [सं०] सुरली।

सुरलिया—**की०** सुरली।

सुरली—**की०** [सं०] बंशी, नईसुरी।—**बहर**—**पु०** सुरली धारण करनेवाले, कृष्ण।—**मनोहर**—**पु०** कृष्ण।

सुरबा—**पु०** पैरका गद्दा; * मोर।

सुरबी—**की०** बनुषकी डोरी।

सुरसिध—**पु०** [अ०] सीपी राह (स्नानार्थ) दिखातेवाला; पुत्र, पीर।—**कामिख**—**पु०** सच्चा गुरु।—**ज्ञावा**—**पु०** गुरुमार्थ, पीरका बैठा।

सुरसिख—**पु०** [अ०] भेजेनेवाला; पत्रलेखक।

सुरस्ता—**वि०** [अ०] जड़ा हुआ, रत्नजटित, जड़ाक।
पु० वह गद्य या पद्य जिसमें हर दूसरा शब्द पहले के शब्दका हमबजन और काफिया हो।—**कार**—**पु०** गहरोंमें नगीना या रत्न जड़नेवाला, जविया।—**कारी**—**की०** जवियेका काम।—**मिगार**—**पु०** बहुत सुंदर अक्षर लिखनेवाला।

सुरही—**पु०** सिर।

सुरहा—**वि०** मूल नक्षत्रमें जनमा हुआ (शालक); नटखट।
पु० दे० 'सुर'में।

सुरा—**की०** [सं०] एक गंधद्रव्य; चंद्रयुक्त यौर्वकी माता।

सुराबा—**पु०** छमाठी—'इन पर जाल्वा आपना लिया सुराबा हाथ'—कवीर।

सुराद—**की०** [अ०] मतकब, अमीश; कामना, मनोरथ।

पु०—पाना;—**बर आना**—कामना पूरी होना, मनोरथ सिद्ध होना।—(रौं) के दिख—युवावस्था।

सुरादिक—**वि०** [अ०] समानार्थक, हमसानी।

सुरादी—**वि०** सुराद रखनेवाला, जिसकी कोई कामना हो।

सुरामा—**सं०** कि० चुभलाना; चवाना; दे० 'मोका'।

सुराफा—**पु०** [अ०] ऊँची अदालतमें पुनर्विचारकी प्रार्थना, अपील।

सुराघडा—**पु०** पगड़ी, सुरेड।

सुरसर—**पु०** कमलकी जड़ जिसकी तरकारी बनती है; * दे० 'सुरारि'।

सुररि—**पु०** [सं०] (सुर दैत्यको मारनेवाले) कृष्ण; विष्णु।

सुरसा—**पु०** तरकी, कर्णकूल—'ऊँसे सुरसा तियजवन चौ मुकुतन डुति पार'—वि०; दे० 'मुंकासा'।

सुरीद—**पु०** [अ०] चेला, शिष्य; अनुग्रहण करनेवाला।

सुरीवी—**की०** [अ०] शिष्यत्व, छात्रिणी।

सुरु—**पु०** दे० 'सुर'।—**सुस**—**पु०** बत्सासुर।

सुरभा—**पु०** पैरका गद्दा।

सुरका—**वि०** दे० 'सुर'।

सुरकाई—**की०** खूबता।

सुरकमा—**अ०** कि० दे० 'सुरहाना'।

सुरेध—**पु०** साफ।

सुरेर—**की०** दे० 'मरोड'।

सुरेबा—**सं०** कि० दे० 'मरोडना'।

सुरेरा—**पु०** दे० 'मुंकेरा'; दे० 'मरोड'।

सुरीवज—**वि०** [अ०] जारी, प्रचलित।

सुरीवजा—**वि०** दे० 'सुरीवज'।

सुरीवत—**की०** [अ०] मरदानगी; उदारता; इनसानियत; सोझा; दूसरका फिदाबा मुकाइजा।

सुरीवली—**वि०** सुरीवतवाला, मुकाइज।

सुरी—**की०** आगे पीछेके स्वरोंकी मिलाकर किसी स्वरका उच्चारण करना (संगीत)।

सुरा—**पु०** [अ०] जिविया; सुरगा।—**केवा**—**पु०** एक पीषा, जटाधारी।—**बाज़**—**पु०** सुरने लगनेवाला।

—**बाज़ी**—**की०** सुरने लड़ना।—**सुसल्लम**—**पु०** समुदा पकाया हुआ सुरवा।—(रौं) **चमन**—**पु०** बनपक्षी; बुलबुल।—**ज़र**—**पु०** सुरज; सुरेकी शकका प्याला।

सुराबी—**की०** [फा०] एक जलपक्षी जो सुरगीके बराबर होता है, जलकुम्हट।

सुरकिष—**पु०** [अ०] दे० 'सुरतकिष'।

सुरदी—**की०** [फा०] कृत्रुके विह जो चेहरते प्रकट हो; भारी मय या गहरी चित्ताकी छाया (—छाना)।

सुरा—**वि०**, **पु०** [फा०] दे० 'सुरदा'।

सुरसुर—**पु०** [सं०] भूलकी आवा; कंठपर; स्वयंका बोका।

सुरा—**पु०** मरोडफकी; मरोड। **की०** नैसीकी एक जाति जो अधिक दुबार होती है। † **पु०** करवी, सुरसुरा; एक तरहका पेंडनदार छड़ा।

सुरी—**की०** पेंडन; पागों आदिके दो सिरोंकी जोड़नेके लिए बट देना; भीतीकी छेपेदर कमरपर बाजा हुआ बक; कपड़ेकी बज्जी आदिकी बटकर बनानी हुई बत्ती।

—**दर**—**वि०** गोंडदार; पेंडनदार।

सुरी—**की०** [सं०] बनुषकी डोरी।

सुरसिध—**पु०** दे० 'सुरसिध'।

सुरक—**पु०** दे० 'सुरक'।

सुरकट—**की०** जंगियाका वह हिस्सा जो स्तनपर पड़ता है।

सुरकना—**अ०** कि० मंद-भेद बँसना, सुकराना।

सुरकिल—**वि०** जो सुनकरा रहा हो; पुलकित, प्रसन्न।

सुरकलम, **सुरकलम**—**वि०** [अ०] जिसपर कोई इलजाम, दोष लगाया गया हो। **पु०** वह व्यक्ति जिसपर किसी सुरेका इलजाम लगाया जाय, अभिसुरक।

सुरतवी—**वि०** [अ०] दे० 'सुरतवी'।

सुरताव—**पु०** (पश्चिमी) पंजाबका एक प्रसिद्ध नगर।

सुरतावी—**वि०** सुरतानका। **पु०** सुरतानका रहनेवाला। **की०** एक रागिनी।—**मिह्री**—**की०** एक तरहकी धिकनी मिट्टी जो सिर मलने, रँगारमें अक्षर देने आदिके काम आती है।

सुरना—**पु०** दे० 'सुरलाना'।

सुरमची—**पु०** सुलम्मा करनेवाला।

सुरम्मा—**वि०** [अ०] चमकाया हुआ; चाँदी या सोनका पानी चढ़ाया हुआ। **पु०** चाँदी या सोनेका पानी जो दूसरी बातपर चढ़ाया जाय; गिलट; कलश; सुलम्मेका काम; दिखावा, दीमट।—**गर**,—**लाज़**—**पु०** सुलम्मा करनेवाला।

मुकुट-वि० [अ०] कपा, मुकुटा हुआ, संकुट।
 मुकुट-की० दे० 'मुकुटी'।
 मुकुटा-वि० दे० 'मुकुटा'।
 मुकुटिक-वि० [अ०] पीछेसे आकर मिलनेवाला; मिलाना जानेवाला; सामिक।
 मुकुटिद-वि० [अ०] धर्म (इस्लाम)से विमुख हो जानेवाला; काफिर।
 मुकुटिम-पु० [अ०] इह्दाम करनेवाला, दिलमें कोई बात डालनेवाला।
 मुकुटि-पु० मुल्ला।
 मुकुटमल-की० [अ०] एक-दूसरेसे मिलना, भेंट, मिलना-मुलना; हेल-मेल; जान-पहचान; साहज-सहज। -का शिव-कैदियों, वही अधिकारियों आदिसे लोगोंके मिलनेके लिए निवत दिन।
 मुकुटावली-पु० मिलनेवाला, मित्र; परिचित।
 मुकुटमल-की० [अ०] नौकरी, सेवा। -पेशा-वि० नौकरोंसे जीविका करनेवाला।
 मुकुटमल-पु० [अ०] सदा एक साथ रहनेवाला, अनुचर; नौकर, सेवक; कर्मचारी। - (से) प्रसास-पु० मित्रों सेवक।
 मुकुटम-वि० [अ०] नरम, कोमल, मुकुमार; अनुकूल।
 -चारा-पु० ऐसा भोजन जो सड़नेमें लाया-खवाया जा सके, नरम चारा (खिचड़ी, इत्यादि); कोमल शरीरवाला।
 मुकुटमल-की० मुकुटमलन, नरमी, कोमलता।
 मुकुटमलित, मुकुटमली-की० मुकुटमल।
 मुकुटा-पु० [अ०] देखना, निरखना; छिड़ा, सुरी-वत।
 मुकुट-पु० दे० 'मुकुट'।
 मुकुटी-की० गुंजा लताकी जड़ जो दवाके काम आती है, यष्टिमधु, जेठीमधु।
 मुकुट-पु० [अ०] देश; राज्य; प्रदेश। -गिरी-की० दूसरे देशोंकी जीतना और उनपर शासन करना, राज्य-विस्तार। -हारी-की० शासन। -रानी-की० राज्य-प्रबंध। - (के) प्रहारा-पु० बुनिया, जगत्।
 मुकुटी-वि० [अ०] मुकुटा, देशी; शासन-प्रबंध-संबंधी, अतीतिक। -काट-पु० गबनर-जेनरल।
 मुकुटी-पु० [अ०] शक्ति करनेवाला, प्राप्ति।
 मुकुटी-वि० [अ०] देर करनेवाला; आगेके लिए टाकनेवाला; रोकना या आगेके लिए टाका हुआ, ललित। पु० नन्नोंकी एक खास चाल।
 मुकुट-पु० कुट्टा, मुल्ला।
 मुकुटा-पु० वह पक्षी जो और पक्षियोंकी फँसानेके लिए पौध बंधकर जालमें डाल दिया जाता है, कुट्टा; [अ०] मोहबी; मसजिदमें रहने या नवाज पढ़ानेवाला; मसजिद या मकतबमें बच्चोंकी पढ़ानेवाला।
 मुकुटा-पु० मुकुटा; मसजिदकी दीवारों खानेवाला; कट्टर मुसलमान (मौलानाका हिंदुस्थानी रूप)।
 मुकुटानी-की० मुकुटी पक्षी।
 मुकुट-पु० [अ०] वह जिने कोई काम सौधा गया हो;

रकबाका; कार्यविशेषपर नियुक्त करिदा।
 मुकुटिक-पु० [अ०] बंधी करनेवाला; काम सौधनेवाला। [की० 'मुकुटिका']।
 मुकुटिम-पु० [अ०] दे० 'मुकुटिमन'।
 मुकुटा-अ० कि० मरना।
 मुकुटिद-पु० [अ०] पैदा करनेवाला, जनक।
 मुकुटिक-पु० [अ०] संघाटक, संकलनकर्ता।
 मुकुटिक-वि० [अ०] संगृहीत, संकलित।
 मुकुटिसर-वि० [अ०] अंतर करनेवाला, कारगर।
 मुकुटी-वि० [अ०] तुल्य, सममूल्य। अ० कवच, अंदा-जर् (एवम्, योपे आदिके साथ व्यवहृत-मु० पौच धीमे)।
 मुकुटिक-वि० [अ०] अनुकूल, अनुसार; तुल्य, समक, मिलता-मुलता; योग्य, उचित।
 मुकुट-वि० [अ०] बूटेदार, बेल-बूटेवाला। पु० बूटेदार कपडा।
 मुकुटी-की० [सं०] देवत कण्ठ।
 मुकुटिक-पु० [अ०] शकत करनेवाला, अनुप्राहक; मित्र।
 मुकुट-पु० [अ०] पानी पीनेकी जगह, होज, हरना, झील; मजहब; तौर-तरीका।
 मुकुटिक-पु० [अ०] खुदाकी जातमें दूसरेकी शरीक करनेवाला, ईश्वरके अतिरिक्त किसी औरकी भी पूज्य, उपास्य माननेवाला; काफिर।
 मुकुटिक-वि० [अ०] जिने शरक, वहाँसे दौ गयी हो, सम्मानित; विभूषित।
 मुकुट-वि० [अ०] जिसकी शरह, व्याख्या की गयी हो; विवाद, विस्तारसे कथित।
 मुकुट-पु० [सं०] धान इत्यादि फूटनेका मोटा डंडा, मूक।
 मुकुटी-की० [सं०] दे० 'मुकुटी'।
 मुकुटी-वि० [सं०] मुकुटधारी ब्रह्मराज।
 मुकुटा-वि० [अ०] रुपसाध्य, एक जैसा होना।
 मुकुटिक-वि० [अ०] सद्य, समक, मानिद।
 मुकुटा-पु० [अ०] शायरीका एकदुआ होकर और पढ़ना, कवितापाठकी मजलिस।
 मुकुटा-पु० [अ०] मासिक वेतन, बचोफा।
 मुकुट-की० कपे और कोहलीके बीचका बिस्ता, रॉह। (खु० मुकुटें बाँध लेना-बाहोंपर रस्ती कसकर कपड़ेमें कर लेना, गिरफ्तार कर लेना।) पु० [फा०] कल्टरी। -
 -वागा-पु० एक इशका बीज जो दवाके काम आता है।
 -नाका-पु० कल्टरी-सूचकी नामि। -बार-वि० अति सुगंधित। -बिलास-पु० गंधविलास। -ह-वि० जिससे कल्टरीकी गंध आवे; सुगंधित। -बेद-पु० जिसमें होनेवाला एक तरहका रस जो दवाके काम आता है।
 मुकुटिक-वि० [अ०] कठिन, कठसाध्य; क्लिष्ट, कठिनाईने समझमें आनेवाला। -कुसा-वि० कठिनाई दूर करने, संकट काटनेवाला। -कुसाई-की० कठिनाई दूर करना, संकट काटना। -पखंड-पु० रचनामें छिद्र शब्दावली रखनेवाला, छिद्रतामिद। सु०-आसाज होना-कठिनाई दूर होना, संकट काटना।

मुष्की-वि० [फा०] कस्तूरीके रंगका, स्वाह; कस्तूरीकी गंधवाला; जिसमें कस्तूरी मिली हो।

मुष्की-वि० [फा०] कस्तूरीके रंगका, स्वाह। पु० स्वाह रंगका बोधा।

मुष्क-पु० [फा०] मुष्की; मूँसा, मुष्का। वि० मुष्कीयर (चीरो), बोधा-सा। -**प्राक-की०** मुष्कीयर बू; मिष्कीका पुतला, मनुष्य। -**ज्व-पु०** मूँसेबाज; पहलवान; बस्त-मैथुन करनेवाला। -**ज्वनी-की०** मूँसेबाजी; पहलवानी; बस्तमैथुन। -**पर-पु०** मुष्कीयर पर धृत पक्षी (का०)। -**माल-आकी-की०** मुष्कीकी मालिश।

मुश्तइक-वि० [अ०] भयकनेवाला, प्रभवित रूपटें फेंकनेवाला।

मुश्तबहा-वि० [अ०] जिसपर या जिनमें मुश्तबा हो, संदिग्ध। -**आहमी-पु०** बह जिसपर चोरी आदि करनेका संदेह किया जाय, संदिग्ध जल।

मुश्तम्मिक-वि० [अ०] शामिक, मिला हुआ, संयुक्त।

मुश्तरक-वि० [अ०] शरीक किया हुआ, संयुक्त।

मुश्तरका-वि० [अ०] जिसमें कोई शरीक हो, साझेका, संयुक्त। -**प्रावदान-पु०** संयुक्त परिवार। -**जाबदाह-की०** संयुक्त संपत्ति, साझेकी चीज।

मुश्तरक-वि० [अ०] शरीक, भागी। पु० जनैकार्यक शब्द।

मुश्तरी-पु० [अ०] खरीदार; इश्तराफ़ ग्रह।

मुश्तहर-वि० [अ०] मुश्तहर दिया हुआ, प्रसिद्ध, विहा-पित।

मुश्तहिर-पु० [अ०] इश्तिहार देनेवाला, विहापक।

मुश्तही-वि० [अ०] भूख लगानेवाला; इन्धुक।

मुश्ताक-वि० [अ०] इन्धुक, आकांक्षी, शौक रखनेवाला।

मुष्क-पु० [सं०] दे० 'मुष्क'।

मुष्क-पु० [सं०] मूसल।

मुष्की-की० [सं०] छिपकली; तालमूलिका।

मुष्की(किन्)-पु० [सं०] नकराम (मूसल जिनका एक शब्द है)।

मुष्पा-की० [सं०] धातु गलानेका पात्र, बरिया।

मुष्पि-की० [सं०] चोरी, मूसनेकी क्रिया।

मुष्पित-वि० [सं०] चुराया हुआ; चवित।

मुष्पु-की० गुंआर।

मुष्क-पु० [सं०] अंबकोष; चोर; डेर; मोरवा नामका पेड़। वि० मोटा-साजा, मांसल। -**शुष्क-वि०** बधिया। -**शोध-पु०** अंबकोषकी सजन।

मुष्क-पु० [सं०] एक वृक्ष, मौलिक।

मुष्कर-वि०, पु० [सं०] बड़े अंबकोषवाला।

मुष्ट-वि० [सं०] चुराया हुआ।

मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टि-की० [सं०] मूँसोंकी लफाई, मूँसे-बाजी।

मुष्टिथ-पु० [सं०] बालक।

मुष्टि-वि० मष्ट, मोन-संत मिले कल्लु कहिये कहिये। मिले अस्त मुष्टि करि रहिये'-कबीर। की० [सं०] मुष्टी; मुष्टीभरकी मात्रा; मूँसा; मूँठ, कच्चा; ४ तोले(बैबकके मतसे ८ तोले)का परिमाण, पक्ष; चोरी, मूसना; एक मष्ट; १९-क

एक पेड़। -**कवच-पु०** मुष्टी बंधना। -**कुश-पु०**

धनुषका मध्य भाग। -**कुल-पु०** एक तरहका सुभा जिसमें मुष्टीके भीतरकी चीजका नाम, उसकी संख्या सम (जुस्त) है वो विषय (ताक) आदि पूछा जाता है।

-**बच-पु०** मुष्टी बंधना; मुष्टीमें ग्रहण करना।

-**मिक्षा-की०** मुष्टीभर नावकी मिक्षा। -**नेच-वि०**

मुष्टीसे नापने बोध; मुष्टीभर; बोधा। -**मुष्ट-पु०** मूँसेबाजी, 'बावितन'। -**बोग-पु०** आसान मुस्ला, चुटकुला।

मुष्टिक-पु० [सं०] कंसके दरबारका एक पहलवान जो बलरामके हाथों मारा गया; मूँसा; सुनार।

मुष्टिकीतक-पु० [सं०] बलराम।

मुष्टिका-की० [सं०] मुष्टी; मूँसा।

मुष्टक-पु० [सं०] काली सरसो।

मुसकवि, मुसकविया-की० दे० 'मुसकान'।

मुसकराना-अ० कि० इस तरह हँसना कि न शब्द हो, न दाँत दिखाई दे, होंठोंमें हँसना, मंद-मंद हँसना।

मुसकराहट-की० मुसकरानेकी क्रिया, मंद हास।

मुसका-पु० दे० 'जावा'।

मुसकान, मुसकानि-की० दे० 'मुसकराहट'।

मुसकाना-अ० कि० दे० 'मुसकराना'।

मुसकिराना, मुसकुराना-अ० कि० दे० 'मुसकराना'।

मुसकिराहट, मुसकुराहट-की० दे० 'मुसकराहट'।

मुसकिन-वि० [अ०] चुप करानेवाला; तसकीन देने-वाला। पु० तसकीन देनेवाली दवा।

मुसक्याव-की० दे० 'मुसकान'।

मुसक्यावा-अ० कि० दे० 'मुसकराना'।

मुसजब-पु० दे० 'मुसज्जर'।

मुसटी-की० मुष्टिया।

मुसहका-वि० [अ०] तसदीक किया हुआ, जाँचा हुआ, प्रमाणीकृत।

मुसहस-पु० [अ०] छः भुजोंवाला क्षेत्र या आकृति; बह पक्ष जिसके हर बंदमें छः भित्ति हैं।

मुसरिक-वि० [अ०] तसदीक करनेवाला।

मुसना-अ० कि० छीना या चुराया जाना-पहराहत पर मुसो साहको रण्डा करने लागो चोर'-सुंदर। स० कि० दे० 'मूसना'-'चोर मुसै घर जारै'-कबीर। * पु० 'चूना'-कातिक गनपति बुझ बैसना, एक चढ़े मोरपर एक मुसना'-विधापति। † वि० मूसनेवाला।

मुसजका-वि० [अ०] तसदीक किया हुआ, रचित।

मुसका-पु० [अ०] असल(खैर)की ठीक नकल, दूसरी प्रति; रसीदका अन्धा जो देनेवालेके पास रह जाता है।

मुसकिर-पु० [अ०] तसदीक करनेवाला, रचयिता, प्रवक्ता।

मुसकिराना-की० [अ०] रचयित्री, लेखिका।

मुसकरी-वि० [अ०] साफ करनेवाला, शोधक। -**ए-ज्व-वि०** रक्तशोधक।

मुसजब-पु० धोऊआरका जवाकर मुखाया हुआ रस जो दवाके काम आता है।

मुसमुं, मुसमुं-वि० अस्त, बहा हुआ। पु० विनाश।

मुसलमान-वि० [अ०] जड़पहल, अहमद। पु० अहमद
क्षेत्र, आहमद। - **मुसल** - पु० दिल्ली, आगरे आदिके किलो-
के अठपहल मुसल।

मुसलमा-वि० [अ०] (अमुक) इस्मावाला, नामवारी।
मुसलमात-वि० की० [अ०] नामवाली, नामधेया। की०
की (बी०)।

मुसलिक-पु० [अ०] फजलखर्च, उकास।
मुसलित-की० [अ०] सुधी, हथ, आहद।
मुसलह-वि० [अ०] तमरीह किया हुआ, भोरेवार।
मुसल-वि० मूल-... सोई मतिमंद कविकेसव मुसल
तो। पु० [सं०] मूल। - **खार-अ०**, वि० दे०
'मुसलाधार'।

मुसलमान-पु० [अ०] इस्लाम मजहबकी माननेवाला,
मुसलिम।

मुसलमानी-वि० मुसलमान-संबंधी। की० मुसलमान
होना; इस्लाम, मुसलमान बच्चेकी छिगेदियके अग भाग-
की लकवा काटा जाना; खतना; मुसलमान की।

मुसलाधार-अ० मोटी धारसे, बड़ी-बड़ी धारसे (मिह बर-
तना)। वि० मोटी धारवाला। **मु०** - **मेह बरतना-**
मोनोंकी बर्षा होना।

मुसलामुसलि-की० [सं०] मूलकोंकी लकवा, एक-दूसरेपर
मूलकोंमें प्रहार।

मुसलाबुध-पु० [सं०] बकरा।

मुसलिम-पु० [अ०] मुसलमान। - **कीम-की०** हिंदु-
स्लानके संप्रदायवादी मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली
संस्था (१९०६ में स्था०)। - **कीमी-पु०** मुसलिम लोग-
का ऊनुयायी।

मुसलिह-पु० [अ०] इस्लाम करनेवाला, सुधारक।
मुसली-की० [सं०] एक बनस्पति जिसकी जड़ दवाके
काम आती है; छिपकली।

मुसली(लिज)-पु० [सं०] मूल धारण करनेवाले,
बन्धु।

मुसल्य-वि० [सं०] मूलसे मारने या बध करने योग्य।
मुसलम, मुसलमा-वि० [अ०] तसलीम किया हुआ,
माना हुआ; अर्पित, पूरा; निर्विवाद।

मुसलस-वि० [अ०] तिकोना। पु० त्रिकोण।

मुसल्ला-पु० [अ०] वह दरी या मोरिया जिनपर नमाज
पढ़ा जाय, जानमाज; नमाज पढ़नेकी जगह, ईबगह; *
मुसलमान।

मुसल्लिर-पु० [अ०] तसवीर बनानेवाला, चित्रकार; बेछ-
वटे बनानेवाला।

मुसल्लिरी-की० [अ०] मुसल्लिरका काम या पेशा;
नकशी, चित्रकारी।

मुसल्लर-पु० एक जंगली (आदिवासी) जाति जो दोमे,
पतलें बनाने आदिका काम करती है।

मुसल्लरि-की० मुसल्लरकी की।

मुसल्लि-वि० [अ०] दस्त लानेवाला, विरेचक। पु०
दस्त लानेवाली दवा, विरेचन।

मुसल्लिर-पु० [अ०] सफर करनेवाला, यात्री; परदेशी।
- **जाना-पु०** मुसल्लिरोंके ठहरनेकी जगह, छाया; रेखे

रदेशानपर (सीपरे दरजेके) मुसल्लिरोंके ठहरनेके छिप बना
हुआ सायबान। - **गाबी-की०** यात्रियोंकी ले जानेवाली
रेखे ट्रेन, पैसेजर ट्रेन। **मु०** - **की गठरी-सदरीसे**
सुकसा हुआ आदमी।

मुसल्लिर, मुसल्लिरी-की० [अ०] सफर, प्रवास;
परदेश।

मुसल्लिर-पु० दे० 'मुसल्लिर'।

मुसल्लिर-की० [अ०] साथ लठने-बैठना, मुसल्लिरी।
मुसल्लिर-पु० [अ०] साथ लठने-बैठनेवाला, साथी, सह-
बली; राज-नवाबोंके बे दरबारी जिनका खास काम बात-
चीतसे उनका दिल बहलाना होता है।

मुसल्लिरी-की० मुसल्लिरका पर या काम।

मुसल्लिर-की० [अ०] कष्ट, दुःख; सक्त; विपद्, आफत।
- **प्रवा-वि०** विपद्ग्रस्त, दुःखिया। **मु०** - **का मारा-**
विपद्ग्रस्त, जमागा। - **के दिन-दुदिन, कठकाल।**

मुसल्लि-की० मुसल्लिर, कपसे कोहनौतकका हिस्सा।

मुसल्लाना-अ० कि० दे० 'मुसल्लाना'।

मुसल्लार-की० दे० 'मुसल्लार'।

मुसल्लार-पु० दे० 'मुसल्लार'।

मुसल्लिनी(बेनिटो)-पु० १८८२-१९४५; इटलीके
फासिटी दलका नेता तथा इटलीका प्रधान मंत्री १९२२ से
१९४३ तक।

मुसल्लाना-अ० कि० दे० 'मुसल्लाना'।

मुसल्लार-की० दे० 'मुसल्लार'।

मुसल्लि-की० दे० 'मुसल्लार'।

मुसल्लान-अ० दे० 'मुसल्लान'।

मुसल्लार-वि० मोटा-नाजा, तगबा; बढमाश।

मुसल्लार-पु० [सं०] नागरमोवा।

मुसल्लार-वि० [अ०] इस्लाम देनेवाला; माफी माँगने-
वाला।

मुसल्लार-वि० [अ०] आगे आनेवाला, माफी। पु०
भविष्यत्काल।

मुसल्लार-वि० [अ०] खर, स्थायी, सदा रहनेवाला;
पक्का, दृढ़; पदविशेषपर स्थायी रूपसे निभुका; स्थायी।
- **जगह-की०** स्थायी पद, नौकरी। - **मिजान-वि०**
खिरबित्त।

मुसल्लार-वि० [अ०] सीधा, कजु; ठीक।

मुसल्लार-पु० [अ०] इस्लामा धार करनेवाला, फरि-
यादी, अभियोक्ता।

मुसल्लार-वि० [अ०] लबा, लभोगत। पु० समकोण चतु-
र्भुज।

मुसल्लार-पु० [अ०] प्रार्थना करनेवाला, इच्छुक।

मुसल्लार-वि० [अ०] मनन मानने कायक, प्रामाणिक,
ठकसाही, विश्वसनीय।

मुसल्लार-वि० [अ०] जुना हुआ, भ्रष्ट। पु० मुहम्मदकी
पदवी। - **कमाकपाशा-पु०** आधुनिक तुर्कीके निर्माता।
मौर प्रथम राष्ट्रपति।

मुसल्लार-वि० [अ०] फायदा उठानेवाला; फायदा चाहने-
वाला।

मुसल्लार-वि० [अ०] अकर्म किया हुआ, अपवादभूत।

मुस्तहक-वि० [अ०] हक रखनेवाला, अधिकारी; योग्य ।
मुस्ता-की० [सं०] एक तरहकी बात, मोबा ।
मुस्ताद-पु० [सं०] अंगली सुख ।
मुस्ताम-पु० [सं०] नागरमोबा ।
मुस्तैद-वि० [अ० 'मुस्ताद'] तैयार, अमादा, तत्पर;
 तुस्त, तेजोसे काम करनेवाला ।
मुस्तैदी-की० तैयारी, तत्परता; मुस्तै, तेजी ।
मुस्तौजिर-पु० [अ०] ठेकेदार, हजारेदार ।
मुस्तौजिरी-की० ठेकेदारी ।
मुस्तौभी-पु० [अ०] हिसाब-किताबकी जॉच करनेवाला
 अधिकारी, आडिटर; तनखाह बाँटनेवाला ।
मुहकम-वि० [अ०] पक्का; मजबूत, टिकाऊ ।
मुहकमा-पु० [अ०] दे० 'महकमा' ।
मुहकिहक-वि० [अ०] तहकीक करनेवाला; युक्ति-प्रमाण-
 से सिद्ध करनेवाला; दार्शनिक, सत्यान्वेधी ।
मुहसमिम-पु० [अ०] इहतिमाम करनेवाला, प्रबंधक ।
 -बंदोबरत-पु० बंदोबरन्ते के कामका प्रधान अधिकारी,
 'मेडिलमैट आफिसर' ।
मुहतरम-वि० [अ०] सम्मानित, अद्वरणीय ।
मुहताब-वि० [अ०] जिसे किसी चीजका अग्रिम और
 आवश्यकता हो, हाजतमंद; चाह रखनेवाला; गरीब; किसी
 बातके लिए दूसरेपर आश्रित (ईश्वर किसीका मुहताज न
 करे); विवश । -छाना-पु० बह स्थान जहाँ गरीबोंको
 भोजन आदि दिया जाय ।
मुहताजी-की० मुहताज होना ।
मुहदिस-पु० [अ०] हदीसका हाता ।
मुहनाल-की० धातुकी बनी दोड़ी जिसे हुक्के या सटकनी
 निगाहीपर लगाते हैं ।
मुहब्बत-की० [अ०] चाह, प्रीति; प्रेम, इश्क; स्नेह,
 मित्रता । -नामा-पु० प्रेमपत्र, मित्र या प्रियजनका
 पत्र । मु० -उछलना-प्रेमका जोश मारना । -की
 नजर-की निगाह-प्रेमसूचक दृष्टि ।
मुहब्बती-वि० प्रेमी, स्नेहशील ।
मुहम्मद-वि० [अ०] बहुत सराहा हुआ, अति प्रशंसित ।
 पु० इ-लाम धर्मके प्रवर्तक जिनमें मुसलमान ईश्वरका दूत
 और संदेशवाहक (रसूल, पैगंबर) मानते हैं और उनके
 विश्वासानुसार जिनके हृदयमें कुरान उतरा (५७०-६३२
 ई०) । -गोरी-पु० शहाजुद्दीन मुहम्मद गोरी जिसने
 मन् ११९३ में महाराज पृथ्वीराजको पराजित किया ।
मुहम्मदी-वि० [अ०] मुहम्मदसे सबद्ध; मुहम्मदका ।
 पु० मुहम्मदका अनुयायी, मुसलमान ।
मुहय्या-वि० [अ०] दे० 'मुहैया' ।
मुहर-की० किसी चीजपर खुदा हुआ नाम, पद वा प्रतीक
 जिसे हस्ताक्षरके बदले वा उसकी प्रामाणिकताके लिए
 छाप स्कें; मुद्रा; इस प्रकार छपा हुआ नाम आदि; छाप;
 अँगूठी; अक्षर । -कम-पु० मुहर खोदनेवाला, मुद्रा-
 कार । -बंदवार-पु० (राजा या शासककी) मुहर रखने-
 वाला अधिकारी । -शाही-की० बादशाहकी मुहर,
 राजकीय मुद्रा । मु० -करना-मुहर लगाना । -
 लगाना-(आज्ञा आदिका) पक्का हो जाना; प्रामाणिकताकी

छाप लग जाना । -लगाना-पक्का कर देना; प्रामा-
 णिकताकी सनद दे देना ।
मुहर-वि० मुहर ।
मुहरा-पु० सामना, आगा; बरतन आदिका मुँह; मार,
 निशाना; चौकेके मुँहपर पहनानेका एक साज; सेनाका
 अग्रभाग । मु० -लेना-मुकाबला करना । -(रे)पर
 खड़ा करना-तोप आदिकी मारके सामने खड़ा करना ।
मुहरा-पु० [फा०] कौरी, सीप, शंख; शीशे या सूँकेका
 दाना, मनका; शतरंज या चौसरकी गोद; कागज आदि
 बाँटनेका आला, पोटना । -बाज़ी-की० पैयारी, बाजी-
 गरी ।
मुहरी-की० दे० 'मोहरी'; दे० 'मोरी' ।
मुहरम-वि० [अ०] हराम ठहराया हुआ, निषिद्ध । पु०
 मुसलमानी मालका पहला महीना जिसकी दसवीं तारीख
 को इमामहुसैन शहीद हुए; शोककाण्ड; कानाकी चार-
 दीवारी । मु० -की पैदाइश-सदा खिन्न, उदास रहने,
 रोनी शक बनाये रखनेवाला ।
मुहरमी-वि० मुहरमका; रोनी सूरतवाला; शोकम्यजक ।
मुहरिक-पु० [अ०] हरकत देनेवाला, चालक; प्रेरक;
 प्रस्तावक ।
मुहरिर-पु० [अ०] लिखनेवाला, लेखक, मुंशी; बकीलका
 मुंशी । -धाना-पु० धानेका मुंशी । -पेशी-पु० अफ-
 मरकी आश्रय लेखनेवाला कर्मचारी । -फाटक-पु०
 भवेसीखानेका मुंशी ।
मुहरिरी-की० मुहरिरका काम वा पेशा ।
मुहलत-की० [अ०] अवकाश, कुरसत; कार्य-विशेषके
 लिए मिलनेवाला समय ।
मुहल्ला-पु० दे० 'महल्ला' ।
मुहसिम-पु० [अ०] इश्तियान, भलाई करनेवाला, उप-
 कारकर्ता; सहायक । -कुश-वि० भलाई करनेवालेके
 साथ बुराई करनेवाला, कुतब्ब । -कुशी-की० कुतब्बना ।
मुहसिल-पु० दे० 'मुहस्सिल'; प्यादा ।
मुहस्सिल-पु० [अ०] महसूल वसूल करनेवाला, तहसील-
 दार; तहसीलका निपाही ।
मुहाफिज़-पु० [अ०] हिफाजत करनेवाला, रक्षक ।
 -खाना-पु० कचहरीके अंतर्गत वह स्थान जहाँ निर्णीत
 मामलोंकी मिसलें रखी जाती हैं । -दफ्तर-पु० मुहा-
 फिजखानेका निरीक्षक, 'रेकर्डकीपर' ।
मुहाफिज़त-की० [अ०] रक्षा, रखवाली, निगरानी ।
मुहार-की० [अ०] कैंटीन नैलेक ।
मुहाल-वि० [अ०] कठिन; नायुमकिन, अनहोनी । पु०
 दे० 'महाल' ।
मुहाला-पु० हाथीके दाँतपर चढ़ायी हुई पीतलकी चूड़ी ।
मुहाबरत-की० [अ०] परस्पर बातचीत करना ।
मुहाबरा-पु० [अ०] बोलचाल, बातचीत; लाक्षणिक या
 कविर् व्यंग्यार्थमें रूढ़ वाक्य वा प्रयोग; अभ्यास ।
मुहासबा-पु० [अ०] हिसाब; हिसाबकी जॉच, हिसाबके
 बारेमें पूछताछ । -मु० -सखल करना-हिसाब मँगना ।
मुहासरा-पु० [अ०] चार्गे ओगमें घेर लेना, घेरा
 (करना) ।

मुद्रासिब-पु० [अ०] हिसाब जानने, करने, देने या जाननेवाला ।

मुद्रासिब-पु० [अ०] मालगुजारी, राजस्व; पैदावार; आय; नफा (महसूलका बहु०) । -**झाम-पु०** कुल पैदावार, कच्ची निकाली ।

मुद्रि०-सर्व० दे० 'मोहि' ।

मुद्रिब-वि० [अ०] मुद्रण्यत करनेवाला, प्रेमी । -**(ध्मे)-धतन-पु०** देशभक्त, स्वदेशप्रेमी ।

मुद्रिम-की० [अ०] कठिन या भारी काम; दुःख; चढ़ाई ।
मु०-सर करना-कुराई जीतना; कठिन काम करना ।

मुद्रिर-वि० [सं०] मूर्ख । पु० कामदेव ।

मुद्रिम०-की० दे० 'मुद्रिम' ।

मुद्रः(दुस्) -अ० [सं०] बार-बार, पुनः-पुनः ।

मुद्रमुक्त(म्) -पु० [सं०] बोका ।

मुद्रत-पु० [सं०] ११ क्षणका समय; दो डंड या ४८ मिनटका समय; विवाह, यात्रा आदिके लिए फलित ज्योतिषकें अनुसार शुभाशुभ काल ।

मुद्रैवा-वि० [अ०] तैवार, प्रसुत; आमादा; मौजूद ।

मुद्रमान-वि० [सं०] मूर्च्छित होता हुआ; मोहमुक्त ।

मुद्रा-की० दालके काम आनेवाला एक हिंदक अनाज ।

मु०-की बाल खानेवाला-बेवस; डरपीक ।

मुद्राफकी-की० एक छुप जिसके फल खाने और तेल निकालनेके काम आते हैं ।

मुद्रारी-की० एक तरहकी तोप ।

मुद्रा-पु० चूनेके तत्पक्षे निर्मित कई रंगोंवाला एक कठोरे पदार्थ जो समुद्रमें रहनेवाले एक तरहके कीड़ोंका घर होता है और जो रख माना जाता तथा दवाके भी काम आता है, मवाल; देवमाला एक भेद ।

मुद्रिवा-वि० मुँगके रंगका, हरा । पु० हरे रंगका एक भेद ।

मुद्र-की० ऊपरके डोंडपर उठी हुई रोमरावि जो पुरुष होनेका चिह्न है; कुत्ते, बिल्ली, शेरके नयनोंके अगल-बगल उगनेवाले छंदे बिरल बाल । **मु०-का बाल-जिसका** किसीके बर्हों बहुत मान-जान, प्रभाव हो । -**जीन्धी होना-कविमत होना** । -**(छँ) ठसकवाना-मुँछोंके बाल चुनवा** लेना; जलीक करना, गर्व चूर करना । -**ठसकवा-गर्व** नष्ट करना; कभी सजा देना । -**अरोचना-दे० 'मुँछों' पर ताव देना** । -**मुँछवाना-हार मान लेना, पुनरात्मका दावा त्याग देना** (यह बात हुई तो मुँछे मुँछा हूँगा) । -**(छँ) का हँका-सेवक्योंकी नमाज जो बैठकी मसै रीतिपर मुसलमान शिर्षों दिखानी है । -पर ताव देना-मुँछोंके सिरोंके बालोंकी मरोचना, अपनी बर्हों करना ।**

मुँज-की० एक तृण जिसके छिककेरी बान बटते और उपनयनके समय ब्रह्मचारीको जिसकी मेलका पहनाते हैं ।

मुँच-पु० सिर, कपाल, यात्रा । -**कटा-वि०**, पु० गला काटनेवाला; भारी चुकसान पहुँचानेवाला । **मु०-कपाना-सिर चढ़ाना । ची-का हो आबाह-बहुत शक्तिशाली और जबरदस्त हो जाना । -मुँचाना-सम्पाद लेना ।**

मुँचन-पु० मुँचन-संस्कार । -**छेदन-पु०** मुँचन और कन-

छेदन ।

मुँचना-सं० कि० सिरके बाल छत्तुरेसे बनाना; हजामत बनाना; चेला बनाना; ठगना ।

मुँची-की० सिर । -**काटा-वि०** सिरकटा, मरने योग्य, बन्ध (पुरुषोंके छिप शिर्षोंकी एक गाली) । -**बन्ध-पु०** कुपतीका एक रेंच ।

मुँवना-सं० कि० बंद करना, ढकना; रख करना ।

मुँवर-की० मुँदरी, अँगूठी ।

मु०-पु० [फा०] बाल । -**ब-मु०-अ०** बाल-बाल; हफ-हफ । -**बाक-पु०** वह बच्ची या फीता जिसे शिर्षों नोटोंमें बाककर मुँवती है । -**शिवाक-पु०** बालकी खाल खींचनेवाला । -**शिवाक्री-की०** बालकी खाल खींचना, मुक्ताचीनी ।

मूक-वि० [सं०] गूंगा । -**बधिर-वि०** गूंगा-बहिरा ।

-**विधाकव-पु०** गूंगों-बहरीका विधाकव । -**आव-पु०** मौन, गूंगापन ।

मूकना०-सं० कि० त्यागना; बंधनमुक्त करना ।

मूका०-पु० मोखा; दे० 'मुक्का' ।

मुकिमा(मन्)-की० [सं०] गूंगापन ।

मूखना०-सं० कि० दे० 'मूखना' ।

मूचना०-सं० कि० दे० 'मोचना' ।

मूछ-की० दे० 'मुँछ' ।

मुज्री-वि० [अ०] देमा देने, पीछा पहुँचानेवाला, जाक्षिम; उट । **मु०-का चंगुल-जाक्षिमका पजा । -का माल-जाक्षिम वा कंजुसका माल ।**

मूक्षना०-अ० कि० मूर्च्छित होना -'सोचनि जूझत मूक्षत ज्यौ'-बन० ।

मूठ-की० कम्बजा, दस्ता; मुट्ठी; मुठ्ठीभर चीज; एक तरहका जुआ जो कौशियोंकी मुट्ठीमें बंद करके खेला जाता है; एक तरहका मंत्रप्रयोग । **मु०-करना-बटेरकी मुट्ठीमें पकड़कर** कबाँके लिए तैयार करना । -**मारना-मंत्र पढ़कर** शत्रुको और कोई चीज फेंकना, टोना करना; हस्त-मैयुन करना ।

मुठना०-अ० कि० नष्ट होना ।

मुस-पु० दे० 'मुट्ठा' ।

मुदि०-की० दे० 'मुट्'; दे० 'मुट्ठी' ।

मुठी०-की० दे० 'मुट्ठी' ।

मूच-पु० दे० 'मुँच' ।

मूचना-सं० कि० दे० 'मुँचना' ।

मुठ-वि० [सं०] मुग्ध; हक्का-बक्का, हैरान; मूर्ख, जड़मुक्ति । पु० योगदर्शनमें मानी हुई चित्तकी पाँच भूमियोंमेंसे दूसरी, चित्तका समोपगुणके आधिक्यसे विवेकशून्य होना । -**गर्भ-पु०** कृत वा विगता हुआ गर्भ । -**ग्राह-पु०** गलत धारणा; नासमझके मनमें जनी हुई बात; खप्ता । -**ग्राही(हिब)-वि०** किसी सिखांत आदिका गलत अर्थ व्याकर उससे चिपका रहनेवाला, दुरामही । -**चैता(तत्)-, बुद्धि-मति-वि०** मूर्ख, नासमझ । -**सत्त्व-वि०** उन्मत्त, विक्षिप्त ।

मुहता-की० [सं०] मुँहता; नासमझी ।

मुहताला(लज्ज)-वि० [सं०] मूर्ख; मीचक ।

मूल-पु० मूल, पेशाव ।

मूलना-अ० कि० पेशाव करना ।

मूल-पु० [सं०] रक्तसे गुणोंके द्वारा स्रवित जलीय द्रव जो मूत्राशय(मसाना)में जमा रहता है और उपर्युक्त मार्गसे बाहर निकलता है, पेशाव । -कृष्ण-पु० शकर और कटके साथ पेशाव आनेका रोग । -कृष्ण-पु० एक तरहका मूत्राघात रोग । -अग्नि-की० मूत्राघात रोगका एक भेद । -अठहर-पु० मूत्राघातके कारण उत्पन्न विकार । -दोष-पु० पेशावमें कोई खराबी होना प्रमेह । -मिरीच-पु० पेशाव एक जानेकी बीमारी । -पृष्ठ, -प्रसेक-पु० मूत्रमार्ग, मूत्रनली । -परीक्षा-की० पेशावकी जाँच, मूत्रके दोषोंको मात्स्य करना । -कृष्ण-की० प्रयुसी; कर्कोटी । -क-वि० अधिक पेशाव आनेवाली (दवा) । -बुद्धि-की० मूत्रका प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होना । -शुक्र-पु० मूत्रके साथ शीर्ष निकलनेका रोग । -शुक्र-पु० मूत्रनलीमें होनेवाला शूल, 'वृत्रिरी काकिक' ।

मूत्राघात-पु० [सं०] पेशाव बंद हो जानेका रोग ।

मूत्राशय-पु० [सं०] पेशावमें स्थित बैठी जिसमें पेशाव इकट्ठा होता है ।

मूत्रिका-की० [सं०] सलईका पेड़ ।

मूत्रित-वि० [सं०] मूत्रके रूपमें निकलना हुआ; जो पेशाव लग जानेके कारण गंदा हो गया हो ।

मूर-पु० उत्तर-पश्चिम अक्षीकामें बसनेवाली एक मुसलमान जाति; * मूल; मूल नक्षत्र; जमी; मूल धन ।

मूरख-वि० दे० 'मूर्ख' ।

मूरखसाई-की० मूर्खता ।

मूरछना-की० दे० 'मूरछना' । सं० कि० मूर्च्छित होना ।

मूरछा-की० दे० 'मूरछा' ।

मूरत-की० दे० 'मूर्ति' ।

मूरति-की० दे० 'मूर्ति' । -बस-वि० मूर्तिमान् ।

मूरध-पु० दे० 'मूर्ध' ।

मूरि, मूरि-की० मूल; जमी, बूटी ।

मूरिस-पु० [अ०] बारिस करनेवाला, वह जिससे बिरसा या तरका मिले; शृत पूर्वज । -[से]आका-पु० वश या कुलका आदि पुरुष, मूल पुरुष ।

मूरख-वि० दे० 'मूर्ख' ।

मूर्ख-वि० [सं०] मूढ़, नासमझ, अज्ञ; गायत्री-रहित; अर्धसहित गायत्री न जाननेवाला । -पंडित-वि० पण्डित्वा मूर्ख । -आशु-वि० जिसका भारी मूर्ख हो । -अंध-पु०, -अंधकी-की० मूर्खोंकी टोली, दल ।

मूर्खता-की०, मूर्खत्व-पु० [सं०] मूढ़ता, नासमझी ।

मूर्खी-की०, मूर्खी-पु० मूर्ख, मूर्ख की ।

मूर्खिमा(मय)-की० [सं०] मूर्खता ।

मूर्च्छन-पु० [सं०] मूर्च्छित होना या करना; पारेका तीसरा संस्कार; वेदोक्त करनेका अंग; दे० 'मूर्च्छना' ।

मूर्च्छना-की० [सं०] मूर्च्छा; संगीतमें ग्रामका सातवाँ भाग, सातों स्वरोंका क्रमसे आरोह-अवरोह ।

मूर्च्छा-की० [सं०] वेदोक्षी, संज्ञाकोष, सम्बोध; मूर्च्छन; बुद्धि; म्यासि । -रोग-पु० वेदोक्षीकी बीमारी, हिस्टी-

रिया रोग ।

मूर्च्छा-वि० [सं०] मूर्च्छित, संज्ञाहीन ।

मूर्च्छित-वि० [सं०] मूर्च्छावृत्त, वेदोक्ष; संस्कार किया हुआ (सोना, लोहा आदि); कथित; म्यास (स्वर, सुगंध इ०) ।

मूर्त-वि० [सं०] मूर्तिवृत्त, साकार; ठोस, कठिन ।

मूर्ति-की० [सं०] शरीर; स्वरूप वा शब्द, प्रतिमा;

मूर्तता, ठोसपन । -कृष्ण-की० मूर्ति गढ़नेकी कला ।

-कार-पु० मूर्ति बनानेवाला । -प-पु० मूर्तिको रक्षा

करनेवाला; पुजारी । -पूजक-वि० मूर्तिकी पूजा करने-

वाला, पुतपरस्त । -पूजा-की० देवप्रतिमाका पूजन ।

-अंजक-वि० मूर्तियोंकी तोड़नेवाला, भुत्तश्चिक्न ।

मूर्तिमा(मय)-वि० [सं०] मूर्तिविशिष्ट, साकार । पु० शरीर ।

मूर्द(र), मूर्ध(र) -'मूर्दा' वा 'मूर्धा'का समासमें व्यवहृत

रूप । -कर्ण, -कर्णरी-की० छतरी, छत्र । -खो-पु०

[हि०] छतरी, छत्र । -ख-वि० सिरसे उत्पन्न होनेवाला ।

पु० केश । -ज्योति(स्)-की० बह्मरश्मि । -पुष्प-

पु० सिरसिका पेड़ । -रस-पु० मर् । -वेष्ट-पु० पगड़ी ।

मूर्धन्य, मूर्धन्य-वि० [सं०] मूर्धांसे उत्पन्न; मूर्धांसे उत्पन्न; श्रेष्ठ, शीर्षस्थानीय । -वर्ण-पु० देवनागरी वर्ण-मालाके मूर्धांसे उत्पन्न वर्ण ('क', 'ख', 'ग' और 'घ') ।

मूर्धा(वं), मूर्धा(वं)-पु० [सं०] मस्तक, सिर; मुकुटके नीतरका तालु और कंठके बीचका वह भाग जो मस्तक या शीर्षस्थानके ठीक नीचे रहता और जहाँसे मूर्धन्य वर्णोंका उच्चारण होता है ।

मूर्धाभिषिक्त, मूर्धाभिषिक्त-वि० [सं०] जिसके सिरपर अभिषेक किया गया हो; श्रेष्ठ; सर्वमान्य (मत, नियम) । पु० राजा; क्षत्रिय; एक वर्णसंकर जाति ।

मूर्धाभिषेक, मूर्धाभिषेक-पु० [सं०] राजाओंके राज्या-रोहणके समय सिरपर किया जानेवाला अभिषेक ।

मूर्धाभिषिक्त, मूर्धाभिषिक्त-पु० [सं०] शास्त्रण पिता और क्षत्रिय मातासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति ।

मूर्धा, मूर्धा-की० [सं०] मरोड़कणी लता ।

मूल-पु० [सं०] जड़; कंद; आदि कारण; उत्पत्तिस्थान; आरम्भ; ग्रंथकारकी मूल शब्दावली (टीका) ब्याख्यामें

भिन्न); मूल धन; हाथ-पैर आदिका आदि भाग (भुज-मूल, पादमूल); वस्तुका निचला भाग, पादमरेक (पर्वत-मूल); चरण; २० नक्षत्रोंमेंसे उज्ज्वली; युगित राक्षसा

मूल; निकुंज; सूरन । वि० आद्य, प्रथम । -कर्म(र)-पु० उच्चाटन, बशीकरण आदिका प्रयोग जो मंत्र और

जन्म-वृत्तिवैकी जड़से किया जाय, देना । -कार-पु० मूल ग्रंथकर्ता । -कारण-पु० आदि कारण, प्रथम

हेतु । -कारिका-की० किसी सूत्रग्रंथकी श्लोकबद्ध विवृति; मूल धनकी एक विशेष वृद्धि वा व्याय; मट्टी ।

-कृष्ण-पु० ११ पर्णकृष्ण श्रौतोंमेंसे एक । -ग्रंथ-पु० ग्रंथकारकी मूल रचना, असल किताब (जिसकी टीका, व्याख्या की गयी हो) । -च्छेद-च्छेद-पु० जड़से

उखाड़ देना, समूल नाश । -ज-पु० अदरक; जड़से

उत्पन्न होनेवाला पौधा । वि० मूल नक्षत्रमें उत्पन्न । -
तत्त्व-पु० आधारभूत सिद्धांत; मूल पदार्थ । -त्रिकोण-
पु० ग्रहोंकी कुछ विशेष राशियोंमें स्थिति । -वैद्य-
पु० चौरशास्त्रके प्रवर्तक एक कवि; कंस । -द्रव्य-
धन-पु० व्यापार आदिमें लगायी हुई पूँजी । -धातु-
की मत्त । -एवार्थ-पु० मौलिक जगत्का उपादान-
भूत भौतिक पदार्थ; तत्त्व । -एर्णी-की० मंडूकपर्णी ।
-पुरुष-पु० बंधका आदि पुरुष । -पुष्कर-पु० पुष्कर-
मूल । -पोली-की० पोय । -प्रकृति-की० प्रपंचकी
कारणरूप शक्ति; दुर्गा; सत्त्व, रज, तमकी साम्यावस्था;
प्रधान (सं०) । -फलद्रु-पु० कटहल । -बंघ-पु०
दृढयोगके अंतर्गत एक किया । -मूल-वि० मूल,
आधाररूप, जवका काम देनेवाला, बुनियादी । -मूल्य-
पु० पुराना या पुश्तैनी नौकर । -मंत्र-पु० कुंजी;
मूल तत्त्व । -रस-पु० मोटा लता । -बाप-पु०
जबकी बोने, रोपनेवाला । -विच-पु० मूल बन ।
-व्यस्य-पु० प्राणदंड । -व्याधि-की० मुख्य रोग,
असल मर्ज । -ब्रती (सिक्) -पु० केवल जई-कंद, मूल
-खाकर रहनेवाला । -शाकट-शाकी (किन्) -पु०
वह खेत जिसमें जई पैदा हो या बहे । -स्थान-पु०
आदि स्थान, बाप-दादोका वास्तव्य; परमेश्वर; राजधानी;
मुल्तान नगर । -स्थानी-की० गोटी । -छोस (स्) -
पु० शरने, नदी आदिका वज्रम-स्थान; मुख्य पाता ।

मूलक-वि० [सं०] (समासके अंतमें) मूलवाला; मूलसे
उत्पन्न (पापमूलक, आत्ममूलक); मूल नक्षत्रमें उत्पन्न । पु०
मूली; एक स्वारविष । -एर्णी-की० शोभाजन वृक्ष ।
-पोतिका-की० मूली ।

मूलतः (हस्) -अ० [सं०] मूल रूपमें; आदिमें, प्रथमतः ।
मूला-की० [सं०] मूल नक्षत्र; सप्तावर ।
मूलाधार-पु० [सं०] नाभि और शिश्नके मध्य स्थित एक
वृक्ष ।

मूलिक-वि० [सं०] मूलगत; मौलिक; प्रधान, मुख्य । पु०
जई साकर रहनेवाला; तपसी ।
मूलिका-की० [सं०] जक; जड़ी; जबोंका डेर ।
मूलिन-वि० [सं०] मूलसे उत्पन्न । पु० वृक्ष ।
मूलिनी-की० [सं०] नोषधि, जबी ।

मूली-की० एक पौधा जिसकी जड़ और पत्ते शाककी तरह
खाये जाते हैं । मु० -गाजर समझना-पुच्छ समझना,
(किसीको) कुछ भी न गिनना ।
मूली (किन्) -वि० [सं०] मूलसूक्त । पु० वृक्ष ।
मूल्य-वि० [सं०] उन्मूलनके योग्य; खरीदने योग्य; जो
मूलमें हो । पु० बस्तुके बदलेमें दिया जानेवाला धन,
कीमत, दाम; वेतन, पारिश्रमिक; उपबोधिता । -रहित,
-हीन-वि० जिसका कुछ मूल्य न हो, निःकम्मा । -
वृद्धि-की० दाम बढ़ना ।

मूल्यवात् (वत्) -वि० [सं०] मूल्यवाला, दायी, कीमती ।
मूल्यवान्-पु० [सं०] मूल्य निर्धारित या निश्चित करनेकी
किया ।
मूषा-पु० [का०] चूहा । -दान-पु० चूहा फेंसानेका
मंदूक या पिंजड़ा ।

मूसली-की० [सं०] ताड़मूली ।
मूष-पु० [सं०] चूहा; गवाक्ष; मोखा; सोना-बौंदी गहने-
की कुंविया ।

मूषक-पु० [सं०] चूहा; चोर । -एर्णी-की० आसुरकर्णी ।
-बाह्व-पु० गणेश ।

मूषण-पु० [सं०] मूसना, चुराना ।
मूषा-की० [सं०] चुहिया; गवाक्ष; कुंविया; देवताद
वृक्ष । -कर्णी-की० आसुरकर्णी । -तुरा-पु० मीला
भोया ।

मूषिक-पु० [सं०] चूहा; चोर; सिरसका पेड़; एक प्राचीन
जनपद । -रथ-पु० गणेश । -विषाण-पु० चूहेका
सींग, अनहोनी बांत ।

मूषिकांक, मूषिकांचन-पु० [सं०] गणेश ।
मूषिका-की० [सं०] चुहिया; कुंविया ।
मूषिकाद, मूषिकाराति-पु० [सं०] विषाह ।
मूषिकार-पु० [सं०] नर चूहा ।

मूषी-की० [सं०] सोना आदि गहनेकी कुंविया ।
मूषी (विष्) -पु० [सं०] बका चूहा ।
मूषीक-पु० [सं०] बका चूहा ।

मूषीकरण-पु० [सं०] कुंवियामें सोना-बौंदी आदि
गहाना ।

मूस-पु० चूहा । -दानी-की० चूहा फेंसानेका सद्क वा
पिंजड़ा ।

मूसना-सं० कि० चुराना; चुराकर ले जाना ।
मूसर-पु० दे० 'मूसल' ।

मूसल-पु० लकड़ीका मोटा डंडा जिससे धान कूटते हैं,
मुचल । -बंघ-पु० मुरतबा; पीका । -धार- अ० दे०
'मुसलाधार' । मु० - (लीं) बोल बजाना-बहुत खुशी
मानना, अत्यंत प्रसन्नता प्रकट करना ।

मूसली-की० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है;
छोटा मूसल; खरलमें डालकर मसाला आदि कूटनेका
पाथर का लोहेका बट्टा या छोटा डंडा -'इमामदस्तेकी'
मूसली उठा लाया और लगा तालेपर दनादन प्रहार करने'
-मनो०, सब० ५५ ।

मूसा-पु० चूहा; बहूरी धर्मके प्रवर्तक जो पैगंबर या ईश्वरके
सदेशवाचक माने जाते हैं । -ई-पु० मूसाका अनुयायी,
बहूरी । -कामी-की० एक लता जो दवाके काम
आती है ।

मूसीकार-पु० [का०] एक कवित्व पदवी ।
मूसीक्री-की० [फा०] संगीत-विद्या ।

मूकद्व-पु० [म०] एक मुनि, मार्कण्डेय ऋषिके पिता ।
मूग-पु० [सं०] पशु, जगली जानवर; हिरण; आखेटो-

पयोगी पशु, कपोत; अन्वेषण; पीछा; कस्तूरी; हाथीकी एक
जाति; मृगधिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास; मकर राशि;
चंद्रमाका छांछन; कामशास्त्रमें माने हुए पुरुषके चार
भेदोंमेंसे एक । -काचन-पु० लहाना; शिकारके जानवरी-
से मरा हुआ वन । -चर्म (स्) -पु० हिरणकी छाल जो
पवित्र मानी जाती है । -छाला-पु० [हिं०] दे० 'मृग-
चर्म' । -छोपा-पु० [हिं०] मृगशावक, हिरणका बच्चा ।
-जल-पु० मृगतृष्णा । -० स्थान-पु० मृगजलमें

स्नान, भनहीना वस्त । -आलिका-खी० हिरनैकी फँसनेका जाल । -जीवन-पु० शिकारी, व्याध । -शुषा, -शुष्मा, -शुष्मिका-खी० कहीं धूपमें रेतोले मैदानोंमें शोषवाली जलभराकी मिथ्या प्रतीति । -बूँदा, -ईसक-पु० कुपा । -बाध-पु० शिकारके जानवरोंसे भरा हुआ बन; सारनाथ । -खर-पु० चंद्रमा । -बूँद, -धूर्तक-पु० शृगाल । -नयन, -नयनी-वि० खी० हिरन या शृगशाबककी ली आँखोंवाली (खी) । -नाभि-पु० कस्तूरी; कस्तूरीशृंग । -आ-खी० कस्तूरी । -नेत्रा-खी० सौर मार्गशीर्षकी कुछ विशिष्ट राशियाँ । -पति-पु० सिंह । -पालिका-खी० कस्तूरीशृंग । -पोत-पु० शृगछोना । -मिश्र-पु० एतत्पर उगी हुई घास । -बंदिनी-खी० हिरन फँसनेका जाल । -बचाजीव-पु० व्याध, शिकारी । -भक्ष्या-खी० जलमासी । -मद-पु० कस्तूरी । -आसा-खी० कस्तूरीमलिका । -मास-पु० मार्गशीर्ष मास । -मिश्र-पु० चंद्रमा । -शुक्ल-पु० मकर राशि । -मेघ-पु० शृगमद, कस्तूरी । -धूध-पु० हिरनोका मुँद । -रसा-खी० लवदेई । -राज-पु० सिंह; व्याघ्र; चंद्रमा; शृगशिरा नक्षत्र । -राटिका-खी० जीवती नामक ओषधि । -राट(ज)-पु० सिंह । -रोचना-खी० पीछा जग-राग । -रोम(त्र)-पु० ऊन । -आ-पु० ऊनी कपडा । -लौचन-पु० चंद्रमा; शृगशिरा । -लेखा-खी० चंद्रमाका धन्वा, शृगांत । -लोचन-पु० चंद्रमा । -लोचना, -लोचनी-वि० खी० शृगनयनी । -बल्लभ-पु० एक वास । -वारि-पु० शृगजल । -बाह्यन-पु० वायु; स्वाति नक्षत्र । -आध-पु० शिकारी; एक नक्षत्र । -शाव, -शावक-पु० शृगछोना, हिरनका सुकुमार बच्चा । -शिर(स)-पु०, -शिरा-खी० २७ नक्षत्रोंमें से पंचमों । -शीर्ष-पु० शृगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास । -श्रेष्ठ-पु० व्याघ्र । -हा(हृन्)-पु० शिकारी । सुगणा-खी० [सं०] खोज, अन्वेषण । सुगवा-खी० [सं०] शिकार, आखेट । -यान-पु० सदल-बल शिकारके लिए जाना । -बन-पु० शिकारगाह, रक्षोत । सुगु-पु० [सं०] भक्ष्या; शृगाल; व्याध । सुगव्य-पु० [सं०] शृगवा । सुगाव्य-पु० [सं०] चंद्रमा; चंद्रमाका धन्वा; कपूर; वायु; एक प्रसिद्ध रसौषध । सुगांबजा-खी० [सं०] कस्तूरी । सुगांतक-पु० [सं०] चीता । सुगारा-पु० हिरन । खी० [सं०] सवदेई । सुगाखी-वि० खी० [सं०] शृगनयनी । सुगाजिन-पु० [सं०] शृगचर्म । सुगाजीव-पु० [सं०] व्याध । सुगाध्व-पु० [सं०] शेर; चीता । सुगादनी-खी० [सं०] सवदेई; शृगवारुणी; एक तरहकी ककोटी । सुगव्यवि-पु० [सं०] कुपा; सिंह; सिंह राशि । सुगारि-पु० [सं०] कुपा; सिंह, बाघ; काल सहिजन;

सिंह राशि । सुगावि(व)-पु० [सं०] व्याध । सुगावा, सुगावाव-पु० [सं०] सिंह । सुगित-वि० [सं०] जिसका पीछा किया गया हो, अन्वेषित; बाधित । सुगी-खी० [सं०] हिरनी; कियोंका एक भेद; मिरगी रोग । -पति-पु० कृष्ण । सुगेंद्र-पु० [सं०] सिंह; व्याघ्र । -खटक-पु० बाघ, ह्येन । सुगेंद्राक्षी-खी० [सं०] । अकृता । सुगेंद्राक्ष-वि० खी० [सं०] शृगनयनी । खी० सुगेंद्र । सुगेंद्र-खी० [सं०] इवेत शृगवारुणि । सुगोट-पु० [सं०] मृगका पीछा । सुगव-वि० [सं०] जिसका पीछा या अन्वेषण किया गया । सुखकटिक-पु० [सं०] संस्कृतका एक प्रसिद्ध नाटक । सुख-पु० [सं०] सुदृग । सुजा-खी० [सं०] मार्जन । सुज्य-वि० [सं०] मार्वनीध । सुज-पु० [सं०] शिव । सुहन-पु० [सं०] अनुग्रह, अनुकंपा । सुहा, सुहानी, सुही-खी० [सं०] पारंगती, दुर्गा । सुहीक-पु० [सं०] शिव; हिरन; एक मछली । सुणाक-पु० [सं०] कमलनाल, कमलकी जड़; जल । -सूख-पु० कमलमालका तंतु । सुणालिका-खी० [सं०] कमलनाल । सुणालिनी-खी० [सं०] कमलका पीछा, कमलिनी; कमल-समूह; कमलोंसे भरा हुआ स्थान । सुणाली-खी० [सं०] कमलनाल । सुणाली(लिन्)-पु० [सं०] कमल । सुणमय-वि० [सं०] मिट्टीका बना हुआ । सुणमूर्ति-खी० [सं०] मिट्टीकी मूर्ति । सुत-वि० [सं०] मरा हुआ, मुर्दा; सुतवत्; मारा हुआ, कुप्ता (घात) । पु० मरण; मौख मोंगना । -कव्य-वि० सुतमाय, मरा हुआसा । -गृह-पु० वज्र । -बेल-पु० मुर्देके ऊपर डाला जानेवाला कपडा । -जीव-पु० तिलक चूड़ । -जीवन-पु० मुर्देकी जिलाना । -वार-वि०, पु० रँडुआ । -निर्वातक-पु० मुर्देकी इमशान पहुँचानेका पेशा करनेवाला । -भर्तृका-खी० वह खी जिसका पति मर चुका हो, रँड । -मत्त, -मत्तक-पु० शृगाल । -मातृक-वि० जिसकी माँ मर चुकी हो । -कस्तुरा-खी० वह खी या गाय जिसकी संतान जीवित न रहती हो । -संजीवन-वि० मुर्देकी जिलानेवाला । पु० मुर्देकी जिलाना । -संजीवनी-वि० खी० मुर्देकी जिलानेवाली (ओषधि) । खी० मुर्देकी जिलानेकी विधा, मंत्र । -सूत-पु० रससिद्ध । -सूतक-पु० मरा बच्चा जनना । -स्थान-पु० किसी व्यक्ति के मरनेपर किया जानेवाला स्नान । -हार-पु० मुर्दे होनेका काम करनेवाला । सुतक-पु० [सं०] सुर्दा, शव; मरणाशौच । सुतकांतक-पु० [सं०] गौदक; सियार ।

शुद्धाक्षर-पु० [सं०] आवली ।
 शुद्धाक्षर-पु० [सं०] शुद्धाक्षर शुद्ध ।
 शुद्धि-क्षी० [सं०] शुद्ध, गौत । -रेखा-क्षी० हाथकी शुद्धयुक्त रेखा ।
 शुद्धीस्थित-वि० [सं०] जो मरकर फिर जी उठा हो ।
 शुद्ध(रु)-क्षी० मिट्टी । -कर-पु० कुम्हार ।
 -करण-पु० मिट्टीका बरतन । -तालक-पु० अरहर; गोपीचंदन । -वच-पु० कुम्हार । -वाज-(-रु)माँड-पु० मिट्टीका बरतन । -पिच-पु० मिट्टीका देला, कंदा ।
 शुद्धिका-क्षी० [सं०] मिट्टी । -कवच-पु० नेमा ।
 शुद्धयुक्त-वि० [सं०] मौलिक जीतनेवाला । पु० शिव; शिवका एक अक्षरशुद्धनिवारक मंत्र ।
 शुद्ध-क्षी० [सं०] प्राणविद्योग, मरण, मौत । पु० वम; ग्वाह हड्डिसे एक । -कर-वि० मरणकारक । पु० किसीकी शुद्ध होनेपर उसकी संपत्तिके सर्वभेद क्कनेवाला कर । -काक-पु० मौतकी वही । -दूत-पु० मौतकी कबर कानेवाला । -नासक-पु० पारा । -पत्र-पु० वसीयतनामा । -पाश-पु० बमका फंदा । -पुष्प-पु० ईल । -फका, -फली-क्षी० केका । -बीज-पु० बौल । -भीत-वि० मौतसे डरनेवाला । -शुल्क-पु० रोग । -योग-पु० प्रह-नक्षत्रोंका शुद्धकारक योग ।
 -लोक-पु० वमलोक; मर्त्यलोक, भूलोक । -बचन-पु० शिव; काका कौआ । -शब्दा-क्षी० वह शब्दा जिसपर रोगीकी शुद्ध हो, मरनसेज; ऐसे रोगीकी शब्दा जो दो-चार दिनका मेहमान हो या जिसकी शुद्ध निश्चित हो । -सुति-क्षी० केकड़ेकी मादा । पु०-साध्यापर पढ़ा होना-सांघातिक रोगसे पीड़ित वा दो-चार दिनका मेहमान होना ।
 शुद्धा, शुद्धा-क्षी० [सं०] अच्छी, चिकनी मिट्टी मिट्टी -'शुद्धा-सा वह कथकार'-युगवाणी ।
 शुद्ध-पु० [सं०] धूल ।
 शुद्धा-ज० व्यर्थ, नाहक ।
 शुद्ध-पु० [सं०] भारीत पक्षी ।
 शुद्ध-पु० [सं०] डोळकी तरहका एक वाजा, सुरज ।
 -फक-पु० फटहल । -फलिनी-क्षी० कौशातकी ।
 -बाहक-पु० शुद्ध बजानेवाला ।
 शुद्धगी-क्षी० [सं०] तोरई ।
 शुद्धगी(विश्व)-वि०, पु० [सं०] शुद्ध बजानेवाला ।
 शुद्धा-क्षी० [सं०] मिट्टी । -कर-पु० वज्र ।
 शुद्धि-वि० [सं०] कुचका, मसला, चूर किया हुआ ।
 शुद्धिनी-क्षी० [सं०] अच्छी, सुकायम मिट्टी ।
 शुद्ध-वि० [सं०] कोमल, सुकायम; दयालुक; जो तीखा न हो, मधुर (स्वर, वचन); मंद (गति) । -कोष्ठ-वि० नरम कोठेवाला, जिसे हल्के बिरेबनसे दस्त या जाव ।
 -घण-पु० अलुराधा, चिना, सुगंधिवा और रेवती-इन चार नक्षत्रोंका गण । -गमना-क्षी० हँसी । वि० क्षी० मंद गतिवाली । -चर्मी(मिश्र), -खक(रु)-पु० भोजपत्र । -छाक-पु० सीताक हल । -दुर्ज-पु० सफेद कुश । -पर्ब(रु)-पु० नरकुश; बँत । -पुष्प-पु० सिरिसका पेड़ । -फक-पु० नारियल; विकल

पौधा; कोमल फल । -आली(विश्व)-वि० मधुरमायी ।
 -मंद-वि० मंद, मधुर (गति, स्वर) । -रोमक, -रोमा(मन्त्र)-पु० शरनोष्ठ । -स्पर्श-वि० जो छूनेमें सुकायम हो । पु० कोमल हथौड़ी, बहुत हल्के हाथोंसे चूना ।
 शुद्धा-क्षी० [सं०] नरमी, कोमलता; मंद-मधुर होना ।
 शुद्ध-वि० [सं०] कोमल, वृद्ध । पु० जल ।
 शुद्धाई-क्षी० शुद्धता, नरमी ।
 शुद्ध-पु० [सं०] मौलिकपद; नील पत्र ।
 शुद्धी-क्षी० [सं०] गंगर, कपिल शस्त्रा । वि० क्षी० कोमलगी ।
 शुद्धीका-क्षी० [सं०] गंगर, कपिल शस्त्रा ।
 शुद्धीकासव-पु० [सं०] गंगरी शराव ।
 शुद्ध-पु० [सं०] बुद्ध; छद्म ।
 शुद्धाक्ष-पु० दे० 'शुणाक' ।
 शुद्धा-ज० [सं०] झूठमूठ, झूठे तौरपर; दूधा । वि० झूठ, मिथ्या । -ज्ञान-पु० अज्ञान । -आली(विश्व)-वि० झूठ बोलनेवाला । -बाह-पु० झूठ; मिथ्या वाक्य; चापलसी । -आली(विश्व)-वि० झूठ, मिथ्यावादी ।
 शुद्धाक्षी(विश्व)-पु० [सं०] एक तरहका सासर ।
 शुद्धार्थक-वि० [सं०] अशंभव; झूठ । पु० अशंभव बात ।
 शुद्धालक-पु० [सं०] आमका पेड़ ।
 शुद्धोष्ठ-पु० [सं०] मिथ्या कवन । वि० मिथ्यावादी ।
 शुद्ध-वि० [सं०] बोधित, साफ किया हुआ; विचारित; चूना हुआ । पु० मिर्च ।
 शुद्धि-क्षी० [सं०] शोधन; विमर्श; चूना ।
 मै-प्र० अधिकरण कारकका चिह्न । क्षी० बकरीकी बोली ।
 -मै-क्षी० बकरीकी बोली ।
 मैगनी-क्षी० दे० 'मैगनी' ।
 मैव-पु०, क्षी० खेतकी हदबंदी, सिंचाई आदिके लिए उसके हद-गिर्द बनाया हुआ मिट्टीका घेरा, डीबा; * प्रतिष्ठा ।
 -बंदी-क्षी० हदबंदी, मैव बनाना ।
 मैवहा-सर्व० मैरा ।
 मैवरानी-ज० कि० मैवराना-‘राजपंथि तेहिपर मैराही-प० ।
 मैवक-पु० दे० 'मैवक' ।
 मैवकी-क्षी० दे० 'मैवकी' ।
 मैचिका, मैची-क्षी० [सं०] मैहँदी ।
 मैवर-पु० [अं०] सदस्य, समासद ।
 मैवरी-क्षी० सदस्यता, मैवरका पद ।
 मैह-पु० वर्षा, हाथी ।
 मैहरी-क्षी० दे० 'मैहँदी' ।
 मैक-पु० [सं०] बकरी (नर-मादा दोनों) ।
 मैकल-पु० [सं०] अमरकंदक पर्वत । -कम्मा, -सुता-क्षी० नर्मदा नदी ।
 मैकलात्रि, मैकलात्रि-पु० [सं०] मैकल पर्वत । -जा-क्षी० नर्मदा नदी ।
 मैल-पु० दे० 'मैव' ।
 मैल-क्षी० [का०] लँटा, लँटा कीक । पु० -ऑकना-हाथ-पाँवमें कीले ठोंक देनेकी सजा देना; हराना, दवा

लेना । -मारवा-कील ठीकना; बाचक होना, बकावट बाचना ।

मेखवा-पु० हाथे आदिके मुँहपर बाँधनेका बाँसकी पट्टीका घेरा ।

मेखल-की० दे० 'मेखल' । पु० [सं०] दे० 'मेखल' (तमास भी) ।

मेखला-की० [सं०] करघनी, किंकिणी; धागे आदिकी करघनी, कटिघुन; तीन छत्रोंवाली मुँह-मेखला जो उपनयन-कालमें ब्रह्मचारीकी धारण करनी पड़ती है; तलवार बाँधनेका कमरबंद; तलवारकी मूठ; घोड़ेका तंग; पहाड़की ढाल, झेल-तलह; नर्मदा नदी; होमकुंठके ऊपर बना हुआ मिट्टीका घेरा ।

मेखली-की० रामलीला आदिमें व्यवहृत एक पहनावा; * करघनी ।

मेखली (किन्ना)-पु० [सं०] मेखलापारी, ब्रह्मचारी; शिव ।

मेखी-वि० [फा०] जिसमें मेखसे छेद किया गया हो ।

-रूपवा-पु० वह रूपवा जिसमें छेद करके चौड़ी निकाल ली गयी और सीसा भर दिया गया हो ।

मेखलीन-पु० बाबूदखाना; सामयिक पत्र, 'मेखलीन' ।

मेखनी-की० मेख-बकरी आदिकी लेंदी ।

मेख-पु० [सं०] बादक; बरतनेवाला बादक; समूह; छः

मुख्य रागोंमेंसे एक; मोथा । -काल-पु० वर्षाकाल ।

-गर्जन-पु०, -गर्जना-की० बादलोंका गरजना ।

-विलस-पु० चातक । -जाल-पु० मेखसमूह, घन-पटा । -जीवन-पु० चातक । -उपोत्ति(स)-की०

विजली । -डंवर-पु० बादलोंका गरजना । -दीप-पु०

विजली । -दूत-पु० महाकवि कालिदासका एक खंभ-काव्य जिसमें एक विरोधी यक्षने अपनी प्रेयसीके पास

अपना सौँदा मेखनेके लिए मेखकी दूत बनाया है । -द्वार-पु० आकाश । -नाह-पु० मेखका गर्जन; बरन; राखण-

का वेदा इंद्रविज जी लक्ष्मणके हाथों मारा गया । -

-जित्-पु० लक्ष्मण । -बाब-पु० माइकेल मधुसूदन-

रचित बैंगलाका प्रसिद्ध महाकाव्य । -बाबाकुलासक-

-पु० मोर । -बामा(मर)-पु० मुसक । -निर्बोध-

-पु० बादलोंका गरजना । -पुष्प-पु० जल; ओला;

विष्णु या कृष्णके रथके चार घोड़ोंमेंसे एकका नाम ।

-मंखल-पु० आकाश । -महार-पु० एक मित्र राग ।

-माला-की० बादलोंकी पंक्ति । -माछी(किन्ना)-पु०

बादलोंसे घिरा, वका हुआ । -मूर्ति-की० विजली ।

-मेवुर-वि० बादलोंसे सिलत वा रिनग्न । -मोनि-

-पु० कुबरा; पुर्ण । -रव-पु० मेखगर्जन । -रेका,-

-केका-की० मेखपंक्ति । -वर्ण-वि० बादलोंके-से रंग-

वाला । -वर्ण-की० नीलका पीपा । -वर्ण-पु०

प्रलयकालीन बादलोंका एक भेद, संघर्ष । -वस्त-

(व)-पु० आकाश । -वज्रि-पु० विजली । -बाई-

-की० मेखमाला, बादलोंका समूह । -बाब-पु० बंद ।

-वेधम(व)-पु० आकाश । -वल्ली(किन्ना)-पु० चातक ।

-सार-पु० चीनिया कपूर । -सुहृद(व)-पु० मोर ।

-स्तविषोन्नव-पु० विघटक वृक्ष ।

मेखाँल-पु० [सं०] वर्षाका अंत; शरत्काल ।

मेखाँ-पु० मेढक ।

मेखाम-पु० [सं०] वर्षाकाल; वर्षाका सारस ।

मेखाँल-वि० [सं०] बादलोंसे वका हुआ ।

मेखाँवर-पु० [सं०] बादलोंका गरजना ।

मेखार्न-पु० बक; मयूर ।

मेखार्न-की० [सं०] बका ।

मेखार्नकी(विन्ना)-पु० [सं०] मोर ।

मेखारि-पु० [सं०] बायु ।

मेखारि-की० धनपटा ।

मेखारि-की० [सं०] ओला ।

मेखोद-पु० [सं०] घटाका उठना ।

मेख-वि० [सं०] काला, कृष्णवर्ण । पु० काकिमा; अंध-

कार; मेघ; धुरवा; मयूरचंद्रिका ।

मेखक-की० [सं०] इयामता, स्याही ।

मेखकसाई-की० मेखकता ।

मेख-की० [फा०] लकड़ी, संगमरमर आदिकी बनी उँची

चौकी जो खाना खाने, छिन्ने आदिमें आधारके रूपमें

काममें लगी जाती है, टेबल । -पोहा-पु० मेखपर

छिदनेका कदवा । -बाव-पु० आतिथ्य करनेवाला,

मोजनका नियंत्रण देनेवाला । -बाकी-की० अतिथि-

सत्कार, मेहमानदारी ।

मेख-पु० [अ०] एक कौड़ी अफसर जिसका पद कप्तानने

ऊपर और लेफ्टिनेंट कर्नलसे नीचे होता है । -जैवरक-

-पु० एक कौड़ी अफसर ।

मेखा-पु० मेढक ।

मेखारिदी-की० [अ०] संख्या या मतोंकी अधिकता, बहु-

मत; बहुसंख्यक पक्ष, समुदाय ।

मेखारिज-पु० [अ०] दे० 'मिस्मिरेजम' ।

मेखमराहृजर-पु० [अ०] मिस्मिरेजम करनेवाला ।

मेढ-पु० कुलियों, मजदूरोंका मुखिया, जमादार ।

मेढक-पु० मिटाने, नाश करनेवाला ।

मेढनहार-पु० मिटाने, नष्टवा करनेवाला ।

मेढवा-सं० कि० दे० 'मिटाना' ।

मेढा-पु० मंथा ।

मेढिया-की० जल, दूध आदि रखनेकी छोटेकी शक्का,

पर उससे कुछ बड़ा मिट्टीका पाव ।

मेढ-पु० दे० 'मेढ'; [सं०] हाथीपान; मेदा ।

मेव-पु०, की० दे० 'मिह' ।

मेवर्-पु० चक्र, मंखल; घेरा; कुंडली, फेंदी ।

मेख-पु० [अ०] पदक, तमगा ।

मेखक-वि० [अ०] चिकित्साशास्त्र-संबंधी ।

मेखिया-की० मदी ।

मेखिसि-की० [अ०] चिकित्साशास्त्र; दवा ।

मेख-पु० एक छोटा जंतु जो जल-स्थल दोनोंमें रह

सकता है, मंखल ।

मेवकी-की० मादा मेवक, मंखकी । **मु०-को** मुकाम

होना-छोटे आदमीमें बड़ीकी बराबरी करनेका

हौसला होना ।

मेवा-पु० मेवका घर, मेघ । -**सिंगी-की०** एक रुता

जिसकी अड़ दबाके काम आती है ।

मेदिनी-शब्दकोश-शब्द, यः ।

मेडी-शब्दकोश-तीन छविशब्दों का बोध ।

मेद-पुं० [सं०] मेदा; शिवा; शिवन । -मं०-शब्दकोश-मेदासिन्धी ।

मेधि-पुं० [सं०] अनाज दाने के समय बैलों की पहचान करनेवाला जुआड़ा ।

मेधिका-शब्दकोश [सं०] मेधी ।

मेधी-शब्दकोश-एक पशुशब्द जिसके दाने मसाले और दवा के भी काम आते हैं ।

मेधीरी-शब्दकोश-मेधीका साग मिठाकर बनानी हुई बरी ।

मेद-‘मेदस्’ का समासगत रूप । -कुच्छ-पुं० दुं० । -सारा-शब्दकोश-अष्टवर्ग के अंतर्गत एक ओषधि, मेदा ।

मेद-शब्दकोश-दे० ‘मेदा’ । पुं० [सं०] दे० ‘मेद(स्)’ । -ज-पुं० एक प्रकारका गुरुपुच्छ ।

मेद(स्)-पुं० [सं०] मांससे उत्पन्न एक प्राण, चर्मा; चर्मा वा मोटाई बहुत बढ़ जानेका रोग । -‘(स्)कृत्-पुं० मांस ।

मेदपाद-पुं० मेदाप ।

मेदस्की(विद्)-वि० [सं०] मोटा, जिसके बदनमें अधिक चर्मा हो ।

मेदा-शब्दकोश [सं०] अष्टवर्ग के अंतर्गत एक ओषधि । पुं० [अं०] आमाशय, पेट ।

मेदिनी-शब्दकोश [सं०] प्रथिवी, भरती; मेदा; एक शब्दकोष ।

मेदुर-वि० [सं०] अतिशय चिकना; मोटा ।

मेदी-‘मेदस्’ का समासगत रूप । -ज-पुं० बड़ी । -बुद्धि-शब्दकोश-चर्मा का बढ़ जाना, अधिक मोटा हो जाना; अंतर्बुद्धि ।

मेध-पुं० [सं०] यक्ष; हवि; वह पशु जिसकी यक्षमें बलि की जाय । -ज-पुं० विष्णु ।

मेधा-शब्दकोश [सं०] धारणाशक्ति; बुद्धि; सरस्वतीका एक रूप; बल, शक्ति (दे०) । -कर-वि० स्मृति, बुद्धि बढ़ानेवाला । -विद्-पुं० कात्यायन । -हृद्-पुं० काष्ठिदास ।

मेधा(बल)-पुं० [सं०] स्वार्थमुक्त मनुका एक पुत्र ।

मेधासिद्धि-पुं० [सं०] अनुस्यूतिके एक प्रसिद्ध टीकाकार ।

मेधाबाह्(बल)-वि० [सं०] मेधावी ।

मेधाविनी-वि० शब्दकोश [सं०] मेधावाली । शब्दकोश-वि० ।

मेधावी(विद्)-वि० [सं०] मेधायुक्त; बुद्धिमान्; पंडित । पुं० तीता; अथवा शक्ति के पुत्रका नाम ।

मेधि-पुं० [सं०] दे० ‘मेधि’ ।

मेधिर-वि० [सं०] मेधावी ।

मेधिह-वि० [सं०] अतिशय मेधावी ।

मेध-वि० [सं०] लक्ष्मि, बुद्धि बढ़ानेवाला, मेधाजनक; पवित्र; यक्ष-संभवी; यक्षके योग्य । पुं० जी; खडिर; कर्कर ।

मेध्या-शब्दकोश [सं०] केतकी, संखपुण्डी, माछी, मंछकी आदि बुद्धिबर्द्धक वृद्धि ।

मेधका-शब्दकोश [सं०] एक अस्त्र जिसके गर्भसे शकुंतला की उत्पत्ति हुई; हिमवान् की पत्नी, मेना ।

मेधकात्मजा-शब्दकोश [सं०] शकुंतला; भारती ।

मेना-शब्दकोश [सं०] हिमवान् की पत्नी, मेनका ।

मेनाप-पुं० [सं०] मोटा; विभी; बकरा ।

मेन-शब्दकोश-विवाहिता भंग्रेज वा यूरोपीय शब्द; सामान्य एक पचासिते ‘सती’ भी कहते हैं । -साहूबा-शब्दकोश-प्रसिद्ध भंग्रेज वा यूरोपीय महिला ।

मेनका-पुं० मेनका वक्ता; * बोनेकी पक्ष वाणि ।

मेनार-पुं० [अं०] इमारत बनानेवाला; राज, क्षत्र ।

मेनो-पुं० [अं०] मेनोरेडमका कण्ट रूप ।

मेनोरिचल-पुं० [अं०] स्मारक, वादगार; प्रार्थना-पत्रके साथ मेना जानेवाला तन्त्र-विचारण; आभिवन्दन ।

मेनोरेडम-पुं० [अं०] वादवास्त; व्यापारिक लिखा-पढ़ी-में लिखा जानेवाला एक प्रकारका पत्र जिसमें संवोधन, प्रेषकका नाम आदि नहीं होता ।

मेच-वि० [सं०] जिसकी नाप-तौल हो सके; जो जाना जा सके ।

मेचर-पुं० [अं०] म्युनिसिपल कारपोरेशनका अध्यक्ष ।

मेर-पुं० दे० ‘मेर’ ।

मेरबानी-शब्दकोश-मिथाना; मिठावट ।

मेरबानी-सं० कि० दे० ‘मिथाना’ ।

मेरा-सर्व० ‘मै’का संबंधकारक रूप, मरीय । * पुं० दे० ‘मै’ ।

मेराठ, मेराठ-पुं० मिथाना, मेंठ-‘गहन छूट दिनकर-कर सति सौ मयेद मेराठ’-पं० ।

मेराज-शब्दकोश [अं०] सीढ़ी; ऊपर चढ़नेका साधन; मुसलमानों के विश्वासानुसार मुहम्मदका आसमानपर जाकर ईश्वर-साक्षात्कार करना ।

मेराना-सं० कि० मिथाना ।

मेर-पुं० [सं०] सुमेरु चर्बत; जपमालामें सनने ऊपर । रहनेवाला प्रधान मन्त्रका; कामालामें वंगलीकी पीर; हारका मध्यमणि; लज्ज-गुरुके विचारसे छटोकी संव्य ।

जाननेकी प्रक्रिया (पिंगल); उच्चर भुव । -वृद्ध-पुं० रोद; एकसे दूसरे भुवकी जानेवाली कल्पित सरल रेखा ।

-देवी-शब्दकोश-रूपमदेवकी माता । -धामा(मन्त्र)-पुं० शिव । -पृष्ठ-पुं० आकाश । -रथ-पुं० तनुवेकी छत्रका चक्र; चरखा । -शिवर-पुं० मेरकी चोटी; ‘सहस्रार’ चक्र । -साहस-पुं० ग्यारहवें मनु ।

मेरक-पुं० [सं०] पूष, पूना ।

मेरुवकी(विद्)-वि० [सं०] मेरुव-विशिष्ट, टोचवाला (प्राणी) ।

मेर-पुं० [सं०] मिथान, मिठाप; सग; मेरु; [वि०] प्रीति, मन्त्रा मिथान; मित्रता; अनुकूलता; संगति; मिठावट; जोष वा चकरा; सरह, किरम । -जोष-मिठाप-पुं० प्रीति-संबंध, सारोत्सव, धनिष्ठता । पुं०-‘खाना’, -‘बैठना’-पठना, अनुकूलता होना; संगतिके उपयुक्त होना ।

मेर-शब्दकोश [अं०] धाकका पेड़ा; धाक; बाकसे भेजी जानेवाली चिट्ठियों आदि; धाकनाही । -देव-शब्दकोश-धाक-गाही । -बाध-पुं० रेकनेका वह उच्चा जिसमें धाक भेजी जाय ।

मेरक-पुं० [सं०] मिथान; संग, मयाव; मेरु; विनाहके संबंधमें प्रभाविका मिथान करना ।

मेरक-पुं० [सं०] मिथान; संग; मुठमेर; ‘मिथाना’

मिठावट ।

मेकना—स० कि० मिलाना; ढालना, उडेलना; पढ़ाना—‘मेकी कंड सुमनकी माका’—रामा०; फैलना; चकाना—‘जापे मेलत वल वल सुनिये त्रिभुवन राय’—राम०; उडेलना । अ० कि० मिलना, समागम होना; पहुँचना ।

मेकीपु, **मेलायुक**, **मेलाडुक**—पु० [स०] दवात, मसिपात्र ।

मेका—खी० [स०] मिलन, समागम; जनन; रौशनारी; नीलका पौधा । पु० भीड़, जमाव; बीबीकी खरीद-बिक्री, देवदर्शन, तीर्थस्नान, सैर-समाधा आदिके लिए निवृत्त तिथि और स्थानमें होनेवाला लोगोंका जमाव । —**डेका**, —**तमाशा**—पु० मेका, सैर-समाधा । **मु०**—**कगना**—जमाव होना, भीड़ लगना ।

मेकाबंदा—खी० [स०] दवात, मसिपात्र ।

मेकाव—पु० संबिल, पक्का; डेरा ढालना—‘मागर सौर मेकान पुति करिरे खुकुल नाव’—राम० ।

मेकापक—पु० [स०] मिलाने, ढकड़ा करनेवाला; ग्रहोंका संयोग; भीड़, जमाव ।

मेकापन—पु० [स०] मिलना, संयोग, समागम ।

मेकी—वि० अधिक लोगोंसे डेल-मेल रहनेवाला, मिलन-मारी । पु० मित्र, संगी । —**मुकाकाली**—पु० संगी-साथी, मित्र ।

मेक—पु० राजपूतानाके मेवात प्रदेशमें बसनेवाली एक लष्करी जाति जो मुसलमानों शासनकालमें हिंदूसे मुसलमान हो गयी (इस जातिके लोग पहले कूट-मार करते थे) ।

मेबा—पु० [फा०] फल; छुसाया हुआ फल (चिलगोना, बादाम आदि) । —**वार**—वि० फलदार (इक्षु) । —**फरीख**—पु० ताजा वा छुसाये हुए फल बेचनेवाला ।

मेबाटी—खी० मेवा भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान ।

मेबाड़—पु० राजपूतानाका एक राज्य जिसकी राजधानी पहले बिचौर और फिर उदयपुर रही और जिसका राजकुल अपनी बीरता और स्वाधीनता-प्रेमके लिए बड़े आदरकी दृष्टिसे देखा जाता रहा है ।

मेबाड़ी—वि० मेबाड़का । पु० मेबाड़निवासी ।

मेबात—पु० राजपूतानाका एक इलाका जो अब गुजराँव जिले (पूर्वी पंजाब) और अलवर तथा भरतपुर जिलोंके अंतर्गत है ।

मेबासी—पु० मेबातका रहनेवाला, मेव ।

मेबासा—पु० दे० ‘मबास’ ।

मेबासी—पु० दे० ‘मबासी’ ।

मेसीन, **मेसीनरी**—खी० [अ०] दे० ‘मशीन’, ‘मशीनरी’ ।

मेथ—पु० [स०] मेदा; बारह राशियोंमेंसे पहली राशि ।

—**कंचल**—पु० कनी कंचल । —**पाल**, —**पालक**—पु० गधेरिया । —**मास**—पु० सौर वैशाख मास । —**छोचन**—पु० चकई । —**बल्ली**, —**विबागिका**, —**विबाजी**—खी० मेदाहिनी । —**बुचन**—पु० इंद्र । —**शंख**—पु० एक स्वार विष, सिंगिया । —**शंखी**—खी० मेदाहिनी । —**संक्रांति**—खी० सूर्यके मेहराजिमें प्रवेश और सौर वर्षके प्रारंभका

दिन ।

मेवा—खी० [स०] छोटी इलाकची ।

मेविका, **मेवी**—खी० [स०] मेव; जटामासी; तिलिच इक्षु ।

मेख—पु० [अ०] विचारधियाँ, चीजी अफसरों आदिका संयुक्त

भोजनालय; छात्रावाससे संबद्ध भोजनालय ।

मेस्मराइज़र—पु० [अ०] दे० ‘मेस्मराइजर’ ।

मेस्मरिज्म—पु० [अ०] दे० ‘मिस्मरेज्म’ ।

मेहँदी—खी० एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ हाथ-पैर रँगनेके काममें लायी जाती हैं, हिना; ब्याधकी एक रस्म

(मुसल०) । **मु०**—**का रचना**—मेहँदीका रंग खिलना ।

—**रचना**, —**कगना**—हाथ-पैर रँगनेके लिए मेहँदीकी

पत्तियों पीसकर लगाना । (**पैरमें**)—**कगना होना**—पैरोंका

काममें न लाया जाना; उठकर न आना-जाना ।

मेह—पु० वर्षा; इकी (पड़ना, बरसना) । **मु०**—**की जॉल**

न **शुलभा**—लगातार गहरी वर्षा होना ।

मेह—पु० [स०] मूत्र प्रमेह; मेघ, मेघा; बकरा । —**जरी**—

खी० हल्दी ।

मेह—वि० [फा०] बहा, बुजुर्ग; सरदार । —**सर**—वि०

अधिक बहा । पु० चिन्ताके नवाचकी उपाधि; अंगी, मैला

साध करनेवाला ।

मेहतारानी—खी० अंगिन ।

मेहन—पु० [स०] श्रम; शिष्टन; मोरबा नामका पेव ।

मेहनत—खी० [अ०] श्रम; कोशिश, उद्योग; कष्ट । —**कहा**

—वि० मेहनत करनेवाला; कष्ट उठानेवाला । —**मजदूरी**

—खी० शारीरिक श्रमका काम, उजरतपर की जानेवाली

मजदूरी । **मु०**—**ठिकाने लगाना**—श्रमका सफल होना ।

मेहनताना—पु० पारिश्रमिक, मजदूरी; बकीलकी फीस ।

मेहनती—वि० मेहनत करनेवाला, परिश्रमी ।

मेहमान—पु० [फा०] जो दूसरेके घर जाकर टिके, अतिथि,

पाहुना; भोजनके लिए निमन्त्रित जन । —**झापा**—पु०

अतिथिशाखा, मुसाफिरखाना । —**वार**—पु० अतिथिस्तकार

करनेवाला, मेजबान । —**दारी**—खी० अतिथिस्तकार,

मेहमानोंकी खातिर-तज्जा; मेहमान । —**मजाज़**—वि०

मेहमानोंकी खातिर-तज्जा करनेवाला, खिलाते-पिलाने-

का शौकीन । —**नवाज़ी**—खी० अतिथिस्तकार ।

मेहमानी—खी० मेहमानदारी; किसीके यहाँ मेहमान होना,

पहुनाई ।

मेहर—खी० दे० ‘मिह’ । —**बान**—वि० दे० ‘मिहबान’ ।

—**बानी**—खी० दे० ‘मिहबानी’ ।

मेहरबा—पु० मेह; बादल—‘उमड़ि-उमड़ि बुमड़ि-बुमड़ि

रस राखिले मेह-मेहरबा’—वन० ।

मेहरा—पु० जनसा, स्त्रिय; खजियोंका एक गड़; * इष्टि,

बादल—‘उपरि-उपरि अब बरसन लाग्यो अचरजकी यह

मेहरा’—वन० ।

मेहराब—खी० [अ०] मसजिदमें वह भनुपाकार स्थान जहाँ

इमाम खड़ा होकर नमाज पढ़ता है; डाटवाला मोल दर-

वाजा; दरवानेके ऊपरकी भनुपाकार बनावट, कमान ।

—**वार**—वि० मेहराबवाला, भनुपाकार ।

मेहराबी—वि० मेहराबदार । खी० एक तरहकी खमदार

तलवार ।

मेहराऊ-**खी**० **खी**, औरत ।
 मेहरी-**खी**० **खी**, पत्नी ।
 मेह-**पु**० [फा०] **सूर्य** । **खी**० **प्रेम**, प्रीति; कृपा, दया । -
 बान-**वि**० कृपाक्ष, अनुग्रहकर्ता; प्रीति रखनेवाला । -
 बानी-**खी**० कृपा, अनुग्रह; प्रीति ।
 मै-**सर्व**० उद्यम पुरुषका कर्ताका रूप, अहम् ।
 मैब-**खी**० **दे**० 'मैब' ।
 मैबा-**सर्व**० मेरा ।
 मैब-**पु**० [सं०] एक असुर जो विष्णुके हाथों मारा गया;
 एक दानव ।
 मैबू-**सर्व**० मुशको ।
 मै-**प्र**० **दे**० 'मय' । **अ**० [अ०] साथ, सहित (मैखर्व,
 मैयू) । **खी**० [फा०] मद्य, शराब । -**कदा**, -**जाना**-
पु० शराबखाना, मदिरालय । -**कदा**, -**कवार**, -**कोष**-
पु० शराब पीनेवाला, मद्यप । -**कषी**, -**कषारी**, -**कोषी**-
खी० शराबखोरी, मद्यपान । -**परस्त**-**वि**० मद्यव्यसनी ।
 -**परस्ती**-**खी**० मद्यपानका व्यवसन, शराबकी कला ।
 -**फरोस्त**-**पु**० शराब बेचनेवाला, मद्य-विक्रेता । -
फरोशी-**खी**० शराब बेचनेका काम वा पेशा ।
 मैका-**पु**० **दे**० 'मायका' ।
 मैगमाकाटा-**पु**० [अ०] अंग्रेज जातिकी वैयक्तिक और
 राजनीतिक स्वाधीनताका अधिकारपत्र जो उसने १२१५
 ई० में अपने तत्कालीन बादशाह जॉनसे प्राप्त किया था ।
 मैगनेट-**पु**० [अ०] चुंबक पत्थर ।
 मैगल-**वि**० **दे**० 'मदगल' ।
 मैब-**पु**० [अ०] मुकाबले या कुश्तीका प्रतिस्पर्धिताका
 खेल जो दो पक्षोंके बीच हो । **खी**० दियासलाई । -**काकस**-
पु० दियासलाईकी चिबिया ।
 मैजक-**खी**० **दे**० 'मजिल' ।
 मैजिक-**पु**० [अ०] जादू; जादूका खेल । -**कैटन**-**पु**०
 वह यंत्र जो शीशेपर बने हुए चित्रका परिरक्षित प्रतिचित्र
 सामने कुछ दूरपर लगे हुए सफेद परदेपर छाकता है ।
 मैजीशियन-**पु**० [अ०] मैजिक करनेवाला, जादूगर ।
 मैटर-**पु**० [अ०] द्रव्य; अत्र पदार्थ; कंपोज किया हुआ
 खेल, समाचार आदि ।
 मैब-**खी**० **मैब**; प्रतिष्ठा ।
 मैब-**वि**० [सं०] मित्रता; मित्रता दिया हुआ; मित्रमान-
 युक्त; मित्र(सर्व)संबंधी । **पु**० मित्रता; सर्वलोक; अनु-
 राधा नखत्र; युद्ध; मल्लयुद्ध; आक्षण; बंगाली आक्षणोंका
 एक अङ्ग ।
 मैत्रक-**पु**० [सं०] मित्रता; बौद्ध मंदिरका पुजारी ।
 मैत्रायण-**पु**० [सं०] एक ऋषिका नाम ।
 मैत्रावरुण, मैत्रावरुण-**पु**० [सं०] आत्म्य; बसिष्ठ (इन
 दोनोंकी उत्पत्ति मित्र और वरुण दोनोंके संयुक्त बीजसे
 मानी गयी है); बहके १६ ऋषिकोंमेंसे एक ।
 मैत्री-**खी**० [सं०] मित्रता, दोस्ती । -**बक**-**पु**० बुद्ध ।
 मैत्रेय-**पु**० [सं०] एक भारी बुद्ध; सर्व; एक ऋषि; एक
 वर्णसंकर जाति ।
 मैत्रेयिक-**खी**० [सं०] मित्रयुद्ध, दोस्तीके बीचकी लड़ाई ।
 मैत्रेयी-**खी**० [सं०] पाण्डवककी पत्नी; अहल्या ।

मैब-**पु**० [सं०] मित्रता ।
 मैबिल-**वि**० [सं०] मिथिलाका । **पु**० मिथिलानिवासी;
 मिथिलानरेश (जनक) । -**कवि**, -**कविक**-**पु**० विद्या-
 पति ।
 मैबिली-**खी**० [सं०] सीता; मिथिलानकी भाषा ।
 मैबुल-**पु**० [सं०] जोड़ा खाना, खी-पुश्पका समागम,
 रतिक्रिया; विवाह । -**जवर**-**पु**० कामन्दर ।
 मैबुनी(मिन्)-**वि**० [सं०] मैबुन करनेवाला ।
 मैबा-**पु**० [फा०] बहुत बारीक भाटा । -**लकड़ी**-**खी**०
 एक जड़ी । -**(दे)**की **कोई**-बहुत मुलायम (पेट) ।
 मैदान-**पु**० [फा०] चौकीचकरी समतल जमीन; बुध-
 दोष, खेल आदिका स्थान; रणक्षेत्र, अखाड़ा; कमलकी
 तराश; विस्तार; क्षेत्र (गजलका मैदान) । -**(जे)**जंग-
पु० युद्धक्षेत्र, रणभूमि । **मु**० -**करवा**-**पु**० बुद्ध करना ।
 -**छोचना**-अजह छेड़ना; रणक्षेत्रसे भागना । -**आना**-
 शौचके छिप बस्तीके बाहर जाना । -**जीतना**, -**मारना**-
 लड़ाई जीतना, विजय-लाभ करना । -**बदना**-**लड़ने**,
 बल-परीक्षाके छिप दिन, स्थान नियत करना । -**मैं**
आना-**लड़ने**, मुकाबलेके छिप सामने आना । -**मैं** **उत्त-**
रवा-कुछतोके छिप अखाड़ेमें आना; कार्यक्षेत्रमें आना ।
 -**साफ** **कर देना**-विजय-बाधाओंको दूर कर देना;
 सबको मार भगाना । -**साफ** **होना**-रास्तेमें कोई
 विजय-बाधा न होना; (किसीका) अकेला होना । -**हाथ**
रखना-लड़ाई जीतना ।
 मैदानी-**वि**० मैदानका; मैदानमें काम आनेवाला; सम-
 तल । **खी**० वह लाकटेन जो ऑगनमें लटकती या गाड़ी
 जाय; आटे वा मैदेका खमीरदार घोल ।
 मैब-**पु**० सोय; राहमें मिलाया हुआ सोय-**मैन** **दुरग**
 चढ़े पावक बिच नाहीं पिवरि परेंगे'-नागरीशास; *
दे० 'मयन' । -**कल**-**पु**० एक कैंटीला दृष्ट; इसका फल
 जो दवाके काम आता है । -**मयब**-**वि**० कामातुर ।
 मैब-**पु**० [अ०] मनुष्य; पुरुष, व्यक्ति (पुकिस्मैन, मशीन-
 मैन आदि) ।
 मैबसिल-**पु**० एक खनिज द्रव्य जिसे शीघ्रकर दवाके
 काममें लाते हैं ।
 मैना-**खी**० एक चिबिया जो अपने शोककी मिठासके
 छिप प्रसिद्ध है; सारिका; पारसीकी माताका नाम ।
 मैनाक-**पु**० [सं०] एक पर्वत जो पुदगानुसार हिमालय-
 का वेदा है और जिसके पंख हृदके हाथों काटे जानेसे बच
 गये हैं; एक दानव ।
 मैनाल-**पु**० [सं०] मछुना ।
 मैमस-**वि**० मदमत्त; गर्वीका ।
 मैमल-**खी**० **ममता** ।
 मैमा-**खी**० माता ।
 मैमा-**पु**० [अ०] मापने-तौलनेका आला, कौंदा; कलौटी;
 पात्रकम, कौंसी † बटिया किसकी मददपर जमीन ।
 मैर-**खी**० सर्व-विषयी लहर ।
 मैरा-**पु**० खेतकी रखवाकी करनेवालेके बैठनेके छिप
 बनावी हुई मचान ।
 मैरेव-**पु**० [सं०] एक तरहका मद्य ।

मैक-पु० शरीर, कपड़े आदिसे चिपका हुआ मरु, गर्द इ०; मैका करनेवाली चीज, मरु; विकार; किसीकी ओरसे भयमें संक्षिप्त हुं:क-मुभाव । -**खोरा**-वि० जो मैककी छिपा सके, गर्दखोरा (रंग) । पु० वह कपड़ा जो दूसरे कपड़ोंको मैका होनेसे बचानेके लिये नीचे पहना जाय; नमदा । पु०-**काटना**-मैक दूर करना ।

मैका-वि० मैकबाधा, समरु, गंदा । पु० कृपा; पू० -**कुचैला**-वि० बहुत मैका ।

मैकान-पु० [अ०] मूकका मुकाव, प्रवृत्ति; रवि ।

मैबासा*-पु० दे० 'मबास' ।

मैहर*-पु० मायका ।

मै*-प्र० दे० 'मै' । सर्व० दे० 'मो' ।

मौंगरा-पु० दे० 'मुंगरा' तथा 'गोगरा' ।

मौछ-खी० दे० 'मूँछ' ।

मौबा*-पु० लड़का, बालक ।

मौडा-पु० बौम, बेंत आदिका तिरपार जैसा गोलाकार आसन ।

मो*-सर्व० 'मै'का एक रूप जो त्रय और अव्ययीमें विभक्ति आदिके लगनेसे हो जाता है; मेरा ।

मोह*-खी० धीमें सना हुआ आटा ।

मोक-पु० [सं०] केंचुर ।

मोकना*-सं० कि० छोड़ना; फेंकना-'रोम्यो तहाँ जोर माराच मोक्यो'-राम० ।

मोकल*-वि० बधनरहित, स्वच्छ ।

मोकका*-वि० दे० 'मोकल' ।

मोका-पु० दे० 'मोका' तथा 'मोखा' ।

मोक्ष-पु० [सं०] छुटना, बंधनसे छूटना, छुटकारा; जीवका जन्म-मरणके बंधनसे छूटना, मुक्ति; गिरना, हाड़ना (भौंदा, पत्ते); फेंकना (बाण); पाटलिका पेड़ । -**दा**-वि० खी० मोक्ष देनेवाली । खी० मार्गशीर्ष-शुद्धा एकादशी । -**दात्री**, -**दायिनी**-वि० खी० मोक्ष देनेवाली । -**देव**-पु० चीनी यात्री हेनसांगका भारतीय नाम । -**हार**-पु० सर्व; काशी तीर्थ । -**धर्म**-पु० महाभारत-शांतिपर्वका १७३ रे अध्यायके बादका अंश । -**शास्त्र**-पु० अध्यात्मविद्या । -**साधन**-पु० मोक्षका उपाय-शम, दम, योग, ज्ञान इ० ।

मोक्षक-वि० [सं०] मुक्ति या छुटकारा देनेवाला । पु० मोक्षका पेड़, मुष्कक ।

मोक्षण-पु० [सं०] खोलना, छोड़ना, मोचन; गिराना; फेंकना ।

मोक्ष-वि० [सं०] मोक्षके योग्य, मुक्तिका अधिकारी ।

मोखा-पु० रोहनदान, शरोखा; एक वृक्ष, मुष्कक ।

मोगरा-पु० बड़े और अधिक सुगंधित फूलवाला देवा ।

मोगल-पु० दे० 'मुगल' ।

मोगली-पु० एक बंगली पेड़ ।

मोच-वि० [सं०] निरर्थक, व्यर्थ जानेवाला । पु० बाका; परकोटा । -**कर्म**(**मैच**)-वि० निरर्थक काममें लगा हुआ । -**पुण्या**-खी० बंध्या ।

मोचा-खी० [सं०] पाटलका फूल; विबंध ।

मोचिपा-खी० अधिक चौड़ी, बड़ी और मोटी गरिबा ।

मोच-खी० हाथ-पोंच, गर्दन आदि किसी बगैके मोड़की तसमें चोट आदिसे मोच और पीसा होना या उसका भयनी जगहसे हट जाना (आना) । पु० [सं०] केला; सहिजन; धुसका निवास । -**मिर्बास**, -**रस**, -**सार**, -**साव**, -**खस**-पु० शालमिका रस ।

मोचक-वि० [सं०] छुटकारा दिवानेवाला, मुक्तिकारक । पु० निरागी; मोक्ष; केला; सहिजन ।

मोचव-पु० [सं०] बंधन, कट आदिसे छुड़ाना, छुटकारा देना, दिखाना; हरण (बख मोचन) । वि० (समाप्तमें) छुड़ानेवाला (संबन्धयोग्य) ।

मोचना*-सं० कि० गिराना (भाँदा); छुड़ाना । पु० वह जोर जोरसे नारें मूँछ आदिके पके हाथ उखाड़ता है; लुहारोंका एक औजार ।

मोचनी-खी० छोटी मोचना; [सं०] सटकटैया ।

मोचयिता(**तु**)-वि० [सं०] छुटकारा दिवानेवाला, मोचनकर्ता ।

मोचा-खी० [सं०] केला; सहिजन; नीलका पौधा; सेमक । **मोचाट**-पु० [सं०] स्वाह जीरा; कदली-स्तंभका भीतरी भाग; चंदन ।

मोची-पु० खुले सीटनेवाला, चमड़ेका काम करनेवाला । खी० [सं०] हिममोचिका ।

मोची(**विच**)-वि० [सं०] मुक्त करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

मोच्छ*-पु० दे० 'मोक्ष' ।

मोझा-पु० [फा०] पंखमें पहननेका एक हुना हुआ कपड़ा, पायताबा; पंखका टखने और पिंढकीके बीचका भाग; कुश्तीका एक पैच ।

मोझिजा-पु० [अ०] चमत्कार, करामात, वह काम जो मानवशक्तिसे परे हो ।

मोट-खी० गठरी; पुर, चरसा । * वि० दे० 'मोटा' ।

मोटक-पु० [सं०] पित्तपंगमें व्यवहृत दुहरा किया हुआ कुशद्रव्य ।

मोटकी-खी० [सं०] एक रागिनी ।

मोटव-पु० [सं०] चूर्ण करना; पीसना; बाधु ।

मोटर-खी० [अ०] गतिशक्ति देनेवाला यन्त्र; ऐसे यन्त्र (मांतरिक दहनसे परिचालित इंजन) द्वारा चालित सवारी गाड़ी, मोटरकार । -**कार**-खी० मोटर, हवागाड़ी । -**खाना**-पु० मोटरकार रखनेका स्थान, 'मोटर-गैरेज' ।

डाइवर-पु० मोटर चकनेवाला । -**बस**, -**छारी**-खी० आदमी या माक डोनेवाली गाड़ी जो मोटर-इंजनसे परिचालित हो । -**बोट**-खी० मोटर-इंजनसे चालित नाव । -**साहकिक**-खी० मोटर-इंजनसे चकनेवाली साहकिक, 'फटफटिया' ।

मोटरी-खी० दे० 'गठरी' ।

मोटा-वि० जिसकी देहमें मांस-मेद अधिक हो, रूखकाय; मांसल; बड़े घेरेवाला; गाढ़; दहीज (कपड़ा, कागज); जो पतला या भारीकन हो (सूत, अक्षर, आटा); भारी; बढ़िया; चूड़मका उछदा, रूख (खुदिक, बार); भरा; * बलवान्, जबर्दस्त । [खी० 'मोटी' ।] खी० [सं०] बरि-बारा । -**जसामी**-पु० मालदार आदमी । -**हूँ**-खी० दे० क्रममें । -**कास**-पु० जिसमें अधिक बुद्धि या कुश-

लताकी आवश्यकता न हो। - **झोटा**-वि० घटिया, मझूली (अनाज, कपड़ा)। - **साजा**-वि० हट-पुष्ट, तगड़ा। - **(सी)मकल**-समझ-**सी**० सूझ, चेचदार बातोंकी समझनेमें असमर्थ बुद्धि। (- **का**-**स्वूल**-बुद्धि, सूझ)। - **आबाज़**-**सी**० मरी, मरी आवाज़। - **पुसाई**-**सी**० अनगढ़ दोक़ोंकी जोषारं। - **बात**-**सी**० सुली, सपकी समझमें आने लायक बात। - **(२)मक**-**पु**० अधिक मोटा, ढीले बदनवाला आदमी। - **हिस्सा**-**अ**० अंदाजन, लगभग, कुछ कमी-बेश। - **तौरपर**-**साधारण** या **स्वूल** रूपसे। **पु**० - **खाना**-**पहनना**-**सस्ता**, घटिया अन्न-वस्त्र खाना-पहनना।

मोटाई-**सी**० मोटा होना, स्थूलता; धन या बकका गर्व। **पु**० - **बदना**-**धमंडी**, छरारती हो जाना। - **झबना**-**धमंड** या शराशत दूर होना।

मोटाया-**अ**० कि० मोटा होना; पैसवाला होना; धमंडी हो जाना।

मोटापा-**पु**० मोटाई, स्थूलता; धमंड, गर्व।

मोटिया-**पु**० बोझ ढोनेवाला, कुली; गाढ़ा, गंभी।

मोटापित-**पु**० [सं०] एक हाव-प्रियकी बर्चा चलनेपर नायिकाके अनुरागका, छिपानेकी चेष्टा करते हुए भी, प्रकट हो जाना।

मोट-**पु**० दाहके काम आनेवाला एक मोटा अन्न, बनमंग।

मोटस-**वि**० जुप।

मोड़-**पु**० मुबनेका भाव-पुसाव; रास्तेका पुसाव, वह जगह जहाँसे रास्ता दूसरी दिशाकी ओर गया हो; कागज आदि-का मुड़ा हुआ कोना। - **तोड़**-**पु**० पुसाव।

मोड़ना-**स**० कि० पुमाना; झुकाना; टेढ़ा करना; दिशा बदलना; लौटाना, पीछेकी ओर फिराना; कागज इत्यादि-की किसी स्थानपर उल्टकर दवा देना या ढोहरा कर देना।

मोड़ी-**सी**० मराठी भाषाकी एक लिपी।

मोज-**पु**० [सं०] सूखा फल; मगर; मझूली; झावा।

मोतविल-**वि**० [अ०] जिसमें एतदाह (समतता) हो, न गरम, न तर, समशीतोष्ण; औसत दरजेका।

मोतबर-**वि**० [अ०] एतबार, आरोसा करने लायक, विश्वसनीय।

मोतबरी-**सी**० [अ०] विश्वसनीयता।

मोताह-**पु**० [अ०] नियत मात्रा, लूराक, वह मात्रा जिसकी आदत हो।

मोतियदाम-**पु**० एक वर्णबृच।

मोतिया-**पु**० बेलेका एक मेद; एक तरहका सलमा। **सी**० एक चिन्तिया। वि० मोतीके जैसा; छोटे, गोल दानोंवाला।

- **बिंद**-**पु**० आँखोंमें पानी उतरनेका रोग जो प्रायः बुढ़ापेमें होता है।

मोती-**पु**० एक बहुमूल्य रत्न जो सीपीमेंसे निकलता है, मुक्ता; केसरोंका एक जोषार। * **सी**० माली। - **चूर**-**पु**० छोटी मुँदियोंका ढङ्ग। - **झिरा**-**पु**० छोटे दानोंकी चेचक। - **बेल**-**सी**० मोतिया बेल। - **मास**-**पु**० एक तरहका मास। - **महक**-**पु**० लिप्लेकी किलेकी एक सुंदर हमारत। - **मसजिद**-**सी**० दिहोके किलेमें

वनी हुई संगमरमरकी सुंदर मसजिद। - **सिरी**-**सी**० मोतियोंकी माला। - **(सिर्वा)**का झाला-कानमें पहननेका एक आभूषण। **पु**० - **उगलना**-**मुँहसे** सुंदर सुंदर शब्दावली निकलना। - **गरजना**-**मोतीमें** बल पड़ जाना। - **टंडा होना**-**मोतीका** टूट जाना या बेआन हो जाना। - **पूकमें** कोलना-**सुंदर**, बहुमूल्य वस्तुकी बेकदरी करना। - **पिरोना**-**मोतियोंकी** लकी बनाना; बहुत सुंदर अक्षर लिखना; सुंदर, ललित शब्दावली लिखना, बोचना। - **रीखना**-**मोती** बढोरना; बिना मेहनतके धन कमाना। - **(सिर्वा)**से **मॉग** भरना-**मॉगमें** मोती पिरोना। - **से मुँह** भरना-मुशकबरी या सुंदर बातसे रीझकर निहाल कर देना।

मोतीखाल नेहरू-**पु**० जन्म ६ मई, १८६१; बकासतसे काफ़ी रूपा और वश कमाया। जलियाँवाला बाग हत्या-काण्डकी जाँचके बाद आपने देशके लिये सर्वस्व त्याग दिया। देशबंधु दासके साथ मिलकर स्वराज पार्टीकी स्थापना की और भारतके लिये संविधानकी रूपरेखा भी तैयार की। ६ फरवरी, १९३२ की आपकी मृत्यु हुई। पंडित जवाहरलाल नेहरू आपके एकमात्र पुत्र हैं।

मोथरा-**वि**० मोथरा, कुद।

मोथा-**पु**० नागरमोथा।

मोद-**पु**० [सं०] हर्ष, आकाश; सुगंध। - **मोदिनी**-**सी**० जामुन।

मोदक-**पु**० [सं०] लड्डू; मिठाई; एक वर्णमंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्रा मातासे बतायी गयी है, मधुनापित। वि० मोदजनक। - **कार**-**पु**० हलवाई।

मोदिका-**सी**० [सं०] मिठाई।

मोदकी-**सी**० [सं०] एक तरहकी गदा।

मोदन-**पु**० [सं०] हर्ष; मोद, आनंद देना; सुगंध बिखेरना। वि० मोदजनक।

मोदना-**अ**० कि० आनंदित होना, प्रसन्न होना; सुगंध फैलाना-**फूल-फूल** तरह फूल बढावात। मोदत महा मोद उपजावत-**राम**०। स० कि० प्रसन्न करना।

मोदयंती-**सी**० [सं०] वनमालिका।

मोदा-**सी**० [सं०] अजमोदा।

मोदाख-**पु**० [सं०] आमका पेड़।

मोदाख-**वि**० [सं०] हर्षयुक्त।

मोदाखा-**सी**० [सं०] अजमोदा। वि० **सी**० दे० 'मोदाख'।

मोहित-**वि**० [सं०] मुदित, हर्षयुक्त किया हुआ।

मोदिनी-**सी**० [सं०] अजमोदा; जूही; चमेली; कस्तूरी; महिरा।

मोड़ी-**पु**० दाह, चावल आदि बेचनेवाला, परचूनिया। - **झाना**-**पु**० मंडार।

मोरी (विच)-**वि**० [सं०] प्रसन्न; प्रसन्न करनेवाला; सुगंधित; सुगंध फैलानेवाला।

मोचुक-**पु**० [सं०] मलुआ।

मोड़-**वि**० मोड़, मुड़।

मोम-**पु**० दे० 'मोमा'।

शोभा*—स० कि० भिगोना । † पु० छाया, पिटारा ।

शोबिया†—छी० छोटा मोना ।

शोभोभ्रम—पु० [अ०] दो-तीन अक्षरोंके संयोगसे बना किसी नामका संक्षिप्त सांकेतिक रूप ।

शोभो-छद्म-भरणीव—छी० [अ०] कंठ्य करनेवाली वह मशीन जिसमें एक-एक अक्षर उल्टा और कंठ्य होता चलता है ।

शोषक*—पु० मलाबारमें बसनेवाली एक सुसज्जमान जाति ।

शोभ—पु० एक हल्के पीले रंगका पिचलनेवाला पदार्थ जिससे शहदकी मक्खियाँ अपना छप्ता बनाती हैं; जमाया हुआ मिट्टीका तेल । —गर्ह—पु० मोमकी चीजें बनाने-वाला । —जामा—पु० मोमका रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा जिसपर पानी फिसल जाता है । —विछ—वि० नरम दिखवाला, हवाईविच । —बत्ती—छी० मोटे भागेपर मोम चढ़ाकर बनायी हुई बत्ती जिसे रोशनीके लिए जलाते हैं । मु० —की नाक—अस्थिरचित्त व्यक्ति जिससे जो बात चाही मनवा ली । —की भरियम—अति सुकुमार छी । —होना—पिचलना, नरम होना; कठोर हृदयका दयासे द्रवित हो जाना ।

शोभिन—वि० [अ०] ईमानदार, सच्चा । पु० सच्चा सुसज्जमान; सुसज्जमान जुलाहा; शीया ।

शोभिया—छी० [फा०] मसाला लगाकर रखी हुई लाश; वह मसाला जिसे लकनेसे बचानेके लिए लाशपर लगाते थे ।

शोभियाई—छी० [फा०] एक तरहका शिलाजतु । मु० —निकाछना—कड़ी मेहनत लेना; बहुत मारना ।

शोमी—वि० मोम जैसा; मोमका बना हुआ । —छीट—छी० एक तरहकी बहुत मुलायम छीट । —मीसी—पु० एक तरहका नकली मोती ।

शोषण—पु० खस्तेपनके लिए गुंथे हुए आटेमें बी देना । —दार—वि० जिसमें मोयन दिया गया हो ।

शोरंग—पु० नेपालका पर्वी माय ।

शोर—पु० एक बड़ा पक्षी जो अपनी सुंदरता और नृत्यके लिए प्रसिद्ध है, मयूर । —चंद्रा*—पु० दे० 'मोरचंद्रिका' ।

—चंद्रिका—छी० मोरपक्षके ऊपर बनी हुई चंद्राकार बुटियाँ । —खाल—पु० एक तरहकी कमरत । —छल्ल—पु० मोरकी पंखके परीका चंबर । —छली—पु० मोरछल्ल हलानेवाला । —छोह*—छी० दे० 'मोरछल्ल' । —खज—पु० एक रागा जो कृष्णके कहनेसे अपनी देह भारसे चित्रानेके लिए तैयार हो गया था । —पंखी—छी० वह नाव जो मोरके पंखके आकारकी हो; एक तरहका पंखा जो छोलनेसे मंडकाकार हो जाता है; मालखंभकी एक कसरत । वि० मोरके पंखके रंगका । —पखा*—पु० मोरका पंखा; मोरपंखकी कलगी । —मुकुट*—पु० मोरपंखका मुकुट जिसे पाल-लीलाके समय कृष्ण धारण किया करते थे ।

—शिखा—छी० एक जड़ी ।

शोरका—पु० [फा०] किलेके रक्षार्थ उसके चारों ओर खोदी हुई खाई; युद्धके समयके लिए खोदी हुई खाई आदि; मोरनेपर या उसके भीतर रहनेवाली मेना । —बंदी—छी० खाई, घुस आदिसे शत्रुसेनाकी मारसे बचते हुए लकनेका ।

प्रबंध करना । मु० —कौंधना—मोरचार्बंदी करना । —

मारना,—छेना—मोरचा जीतना ।

मोरचा—पु० [फा०] मनी पईचनेसे लोहेपर जयनेवाली पीलापन किये हुए काष्ठ तह जो उसकी धीरे-धीरे खा डालती है, बंग; आग्नेयपर जमा हुआ मैक; चीटियोंके एक जाति । मु० —खाना—बंग लगना; काम न लेनेसे पुण्य-शक्तिका घटना, छीजना ।

मोरट—पु० [सं०] ईसकी जव; प्रसवसे सात रात बादका दूध; बंकोटका फूल; कर्णपुष्प लता ।

मोरटा—छी० [सं०] मूषा लता ।

मोरन—छी० सिलसल ।

मोरना*—स० कि० दे० 'मोरना'; वहाँसे सम्बन्ध निकालना ।

मोरजी—छी० मादा मोर; नयमें लटकानेका टिकरा ।

मोरचा—पु० एक वृक्ष, मुष्का* मोर, मयूर ।

मोराना*—स० कि० फिराना; † पथरके कौलमें ईसकी जंगारियों डालना ।

मोरी—छी० नाली; गँडे पानीकी नाली; * बागबोर; मोरनी ।

मोर्चा—पु० दे० 'मोर्चा' ।

मोल्—पु० मूल्, दाम । —तोल्,—भाब—पु० दाम ठहराने, लौदा पटानेकी बातचीत(करना, होना) । मु० —करना—बीजके दाम तै करना; उचितसे अधिक दाम भोगना । —बढ़ाना—दाम बढ़ाना । —छेना—छरीद लेना; मनुष्यको धन देकर खरीदना, दास बनाना ।

मोळना*—पु० मोलना, मोलकी ।

मोळी—पु० दे० 'मोळी' ।

मोलाई*—छी० मोल्-तोल् ।

मोळाना†—स० कि० मोल्-भाव करना ।

मोल्ह—पु० [अ०] सँचा ।

मोवना—स० कि० दे० 'मोना' ।

मोष—पु० [सं०] चोरी; छद्म; चोरीका माह; चोर; * मोक्ष—'मोहूँ दीजे मोष उवों अनेक अपमन दवो'—वि० ।

मोषक—पु० [सं०] चोर; बंध करनेवाला ।

मोषण—पु० [सं०] चुराना; छटना; काटना; बंध ।

मोषयिता(शु)—पु० [सं०] चोरी करानेवाला; छद्म करानेवाला ।

मोह—पु० [सं०] मूर्च्छा; अज्ञान; अविद्या; देहादिमें आरम-बुद्धि; ममता; आति; (मोहजनित) दुःख; २२ संचारी भावोंमेंसे एक; * स्नेह । —कल्लि—पु० मोहपाश, मायाजाल । —निद्रा—छी० अज्ञान और अंधविश्वासमें डूबा रहना । —निष्ठा—छी० मोहराति । —पाश—पु० मोहका जाल । —अंध—पु० आति-निवारण, अज्ञानका तिमोमाश । —अंध्र—पु० मोहमें डालनेवाला मंत्र । —सुप्तर—पु० संकराचार्य-रचित एक स्तोत्र । —रात्रि—छी० मद्धाके ५० वर्ष बीतनेपर होनेवाला प्रलय; भाद्र-कृष्णा अष्टमीकी रात । —शाह—पु० मोह, अज्ञान उत्पन्न करनेवाला शाक, ग्रथ ।

मोहक—वि० [सं०] मोहजनक; सुग्ध कर देनेवाला ।

मोहवा†-पु० बरतन आधिका मुँह; बस्तुका अणक वा कपरका भाग दे० 'मोहरा'।

मोहसमिस-पु० दे० 'मुहसमिस'।

मोहसाज-वि० दे० 'मुहसाज'।

मोहन-वि० [सं०] मोहनेवाला; मोहकारक। पु० मोहना, डुभाना; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक कृष्णका एक नाम; सुरत, संयोग; (शत्रुको) वेधुष करदेनेवाला मंत्र, एक अभिचार; शत्रुका पीसा।-मोवा-पु० [हि०] एक तरहका हल्वा।-माछा-खी० सोनेके रानोंकी बनी हुई माछा।

मोहनक-पु० [सं०] चैत्र मास।

मोहनदास, कर्मचंद गांधी-पु० दे० 'गांधी'।

मोहना-सं० कि० डुभाना; छलना-माधापति दूहि बह मोहा†-रासा०। अ० कि० मुग्ध होना।

मोहनाक-पु० [सं०] अंगरकले चालित एक जल जो शत्रुकी मूर्च्छित कर देता था।

मोहनी-खी० [सं०] माया; पीईका साग; मोहक प्रभाव, बलीकरण; एक तरहकी जूही। वि० खी० दे० 'मोहिनी'। पु०-ढाखना-मन मोह लेना, जादू करना।

मोहनीय-वि० [सं०] मोहने योग्य।

मोहफिल्-खी० दे० 'महफिल्'।

मोहकबल-खी० दे० 'मुहकबल'।

मोहर-खी० दे० 'मुहर'।

मोहरा-पु० बरतन आधिका मुँह; किसी चीजका कपरका वा सभनेका हिस्सा; सेनाका बड़ा; सेनाका अभ्रमाण; पशुओंके मुँहपर बाँधी जानेवाली जाली; अँगियाका बंद वा तनी; बाहर निकलनेका छेद वा द्वार। [फा०] शतरंजकी गोदी।

मोहरी-खी० पात्रामेका नीचेकी ओरका मुँह, पायँचा; बरतन आधिका छोटा मुँह; † बह रस्ती जो मरकहे पशुओंके मुँहपर लगाकर पगहेसे जोड़ दी जाती है।

मोहररि-पु० दे० 'मुहररि'।

मोहलत-खी० दे० 'मुहलत'।

मोहला-पु० दे० 'महला'।

मोहार-पु० शहरकी मकिलियोंका छत्ता; मुहरा, मुँह, द्वार।

मोहाल-पु० दे० 'महाल'। वि० दे० 'मुहाल'।

मोहि, मोहि-सर्व० मुझे, मुझकी (प्रज और अपनी)।

मोहित-वि० [सं०] मोहप्राप्त, मुग्ध; डुभाया हुआ।

मोहिनी-वि० खी० [सं०] मोहने, मन डुभानेवाली। खी० एक नगर; विष्णुका बह भारी-रूप जो समुद्र-मंथनके समय उन्होंने देवीकी छलनेके लिये धारण किया था; वैशाख-शुक्ल पक्षादशी; जूहीका एक मेह; मोहकारक प्रभाव, जादू (भा०)।

मोही (वि०)-वि० [सं०] मोहकारक; मोहजुक्त; स्नेह करनेवाला; छोभी।

मोही-खी० एक तरहकी मछली।

मोही-वि० खी० चुप, मौन।

मोह-वि० [सं०] मूँजका बना हुआ।

मोहवान-वि० [सं०] मुंजवान पर्यंतपर या उससे उत्पन्न।

मोही-खी० [सं०] मूँजकी बनी हुई तीन कंठोंकी मेख।

-बंध, -बंध-पु० मूँजकी करघनी धारण करना, उपनयन।

मोहा-पु० लकड़ा।

मोहा-पु० [अ०] बटित होनेका स्थान, घटनास्थल; स्थित होनेका स्थान (मकानका मोहा); उपजुक्त काष्ठ, अमसर।

-(क) बेसीछे-अ० चाहे अण, अमसर-अनवसरका विचार किये बिना। मु०-लकड़ा; देखना-अनुकूल अवसरकी राह देखना, धातमें रहना।-बैना-अमसर, अवकाश देना।-साल है-समय मिला तो।-(क)वर-ऐन बकपर, आवश्यकताके समय।-से-उपजुक्त समयपर, वधावसर।

मोहा-वि० चुप, मौन; मूर्ख, दुर्बुद्ध।

मोहा-पु० [सं०] कौआ।

मोहा-वि० [अ०] रोका, ठहराया हुआ; रर किया हुआ; छोड़ा हुआ; नौकरीसे छुड़ाया हुआ; बक किया हुआ; अवर्धित, मुनबसर। पु० बह अमर जिसपर और जिसके पहलेके अक्षरपर हरकत (रि, जवर, पेछ) न हो।

मोहा-खी० [अ०] काम या नौकरीसे अलग किया जाना, बरतकी।

मोहा-वि० [सं०] मुक्तिके लिये प्रयत्न करनेवाला। पु० मोती।-संभुल-पु० सफेद मक्का।-दाम(ह)-पु० मोतियोंकी लकी; छंद-विशेष।-प्रसवा, -छाकि-खी० मुक्ताछाकि, सीपी।-सर-पु० मोतियोंका हार या लकी।

मोवा-पु० [सं०] सूकता, मौन।

मोवा-वि० [सं०] मुखसंबंधी। पु० मुखसे होनेवाला पाप (अमत्य-अक्षण, अभाष्य-कथन इ०)।

मोवरि-पु० [सं०] एक प्राचीन हिंदूराजवंश।

मोवरि-पु० [सं०] मुखरता।

मोवा-वि० [सं०] मुखसंबंधी, जवानी।

मोवा-पु० [सं०] मुखता।

मोवा-पु० [सं०] मोचता, निरबंधता।

मोवा-पु० [सं०] केला (फल)।

मोवा-खी० [अ०] लहर, हिजोर; मनकी लहर, तरंग; सुख, आनंद; सहाई; उमगमें दिया हुआ दान-जोचि निराकर हू चले, छै काखनकी मौवा-वि०। मु०-मारना-सुख भोगना, पेश करना; लहरें उठना।-में आवा-मनमें उठना, मनमें आना; किसीको कुछ देने आदिकी इच्छा होना।

मोवा-पु० [अ०] स्थान, रखनेकी जगह; गाँव।

मोवा-वि० जो मनमें आये बह कर बैठनेवाला; आनंदी।

मोवा-वि० [अ०] बजन किया हुआ, तुका हुआ; ठीक, उपजुक्त, यथायोग्य; छंदोबद्ध, छंदके नियमसे बुद्ध (पद्य)।

मोवा-वि० [फा०] उत्पन्न, सृष्ट; स्थित, विद्यमान; सामने कवा, उपस्थित; वैचार; उपलब्ध।-शी-खी० उपस्थिति, बाजिरी।

मोवा-वि० [अ०] वर्तमान, हालका।-ज़मावा-पु० वर्तमान काल।

मोवा-खी० [अ०] सृष्टि, बराबर जगत्।

मोवा-पु० लकड़ा।

मौल्य-पुं० [सं०] मूल्यता; बचपन।

मौल्य-की० [का०] मृत्यु, मरण; क्षामत, मुलीवत। **मु०**
-आना-क्षामत, भागत आना। -का जर देस
आना (लेना)-बार-बार मृत्यु आनेकी आशंका होना।
-का डकका-आसन्नमरण, रोगीकी आँखोंमें पानी
बहना। -का सत्ताचा-मौतकी याद दिखानेवाली बात।
-का पसीना-रोगीके माथेसे छूटनेवाला पसीना जो
मृत्युका लक्षण माना जाता है। -का सासना-मारी
खतरा, प्राणभय। -का सिरपर लेखना-मौत करीव
होना, मरनेके दिन आना। -की चढ़ी-मृत्युका।
-के घाट उतारना-मार खलना। -के दिन बूरे
करना-कष्टसे दिन काटना, कठिनाईमें जीना। -के
मुँहमें आना-खतरोंमें पड़ना, जानकी जोखिम लेना।
-मौताना-कष्ट, कठिनाईयोंसे ऊबरकर मौत मनाना।

मौदिक-वि० [सं०] मौदिक, मिठाई-संबंधी।

मौदिकिक-पुं० [सं०] मौदिकविकेता, हलवाई।

मौद्रिक-पुं० [सं०] कौमा।

मौद्रिक्य-पुं० [सं०] मुद्रक मुद्रिका पुत्र।

मौद्रिक्याचन-पुं० [सं०] मौसममुद्रके एक प्रमुख शिष्य।

मौद्रिक-पुं० [सं०] मूँग उत्पन्न होने योग्य क्षेत्र।

मौन-पुं० [सं०] मुनिभाव; न बोलना, चुप्पी। -अंग-
पुं० मोन लौकना, चुप्पी स्थापक बोलना। -मुद्रा-
की० चुप्पी, मौन-भाव। -व्रत-पुं० न बोलनेका व्रत।
व्रती(सिद्ध)-वि० मौनव्रतधारी।

मौन-पुं० मौयन, धोका मेल।

मौना-पुं० दोकरा, पिढारा।

मौनी-छोटा मौना, पिढारा; की० [सं०] मौनी जमा-
वास्था। -अमावास्या-की० माघकी अमावास्या।

मौनी(निवृत्त)-वि० [सं०] मौनव्रतधारी। पुं० मुनि;
मौनव्रतधारी साधु। -बाबा-पुं० [हिं०] मौनव्रती
साधु।

मौनैव-पुं० [सं०] एक प्रकारके गर्भव।

मौर-पुं० एक तरहका मुकुट जो व्याहके अवसरपर वर-
की पहनाया जाता है; गरदनका पीठकी ओरका भाग;
गौर, मजरा। वि० (ममासमें) श्रेष्ठ, शिरोमणि (सिर-
मौर)।

मौरजिक-पुं० [सं०] मुरज बनानेवाला।

मौरना-अ० कि० गौर लगाना।

मौरसिरी-की० दे० 'मौलसिरी'।

मौरी-की० छोटा मौर।

मौरसी-वि० [अ०] बिरसेमें मिला हुआ, बाप-दादाका;
पैतृक (संपत्ति)। -काश्तकार-पुं० वह काश्तकार
जिसकी जमीनपर उसके वारिसोंकी भी बड़ी हक
हासिक हो।

मौर्य-पुं० [सं०] मूर्याता।

मौर्य-पुं० [सं०] भारतका एक प्राचीन राजवंश जो चंद्र-
गुप्तसे आरंभ हुआ।

मौर्यी-की० [सं०] धनुष्की घेरी; क्षत्रियोंके धारण करने
योग्य मूर्धन्यी मेलाङ्ग।

मौर्य-वि० [सं०] मूरगत; मूलगत; पुराण, पुरातनी

(शिवक इ०); परंपरागत (प्रथा)। पुं० बका जमींदार।

मौर्यी-पुं० [अ०] इसलामी धर्मशास्त्र(शरी)का पंथित;
अरबी-फारसीका आश्रित; धर्मनिष्ठ (मुसलमान); अरबी-
फारसी पढ़ानेवाला। -गिरी-की० मौर्यीका काम,
अध्यापकी।

मौलसिरी-की० एक सदाबहार पेड़ जिसके फूल बड़ी
मधुर गंधवाले होते हैं, बहुल।

मौला-पुं० [अ०] मालिक; परमेश्वर; बादशाह; आज्ञा-
दत्ता हुआ गुलाम; सहायक; पसेली। -घोड़ा-वि०
मौलावाला; बेपरवाह; बका दानी।

मौलाना-पुं० [अ०] अरबीका बहुत बड़ा विद्वान्, बका
मौलवी।

मौलि-पुं० [सं०] चोटी; मस्तक; किरिट, मुकुट; अशोक
वृक्ष की० दे० 'मौली'। -मणि-पुं० मुकुटमें अंका
हुआ मणि। -मुकुट-पुं० मुकुट, ताज।

मौलिक-वि० [सं०] मूल-सम्बन्धी, मूलगत; मुख्य; अकु-
लीन; जो किसीकी छाया, उलगा, अनुकृति आदि न हो।
पुं० कद-मूल खोदने, बेचनेवाला।

मौलिकता-की० [सं०] मौलिक होनेका भाव।

मौली-की० [सं०] चोटी।

मौली(छिन्न)-वि० [सं०] जिसके सिरपर चोटी या
मुकुट हो।

मौल्य-वि० [अ०] जन्मप्राप्त (शिक्षा)। पुं० जन्मतिथि;
पेटा; दे० 'मौल्य-शरीक'। -कबाँ-पुं० मौल्यकी कबा
कहनेवाला। -शरीक-पुं० मुहम्मदकी जन्मकथा; वह
मजलिस जिसमें उक्त कथा कही जाय।

मौल्य-पुं० [सं०] मूल्य।

मौल्य-वि० [सं०] मूल्य-संबन्धी; मूल्यके आकारका।
पुं० महाभारतका एक पर्व।

मौल्य-की० [सं०] मूल्यवादी, मूल्यकी लड़ाई।

मौल्य-पुं० [सं०] ठग, धूर्त।

मौल्य-पुं० दे० 'मौल्य'।

मौल्य-वि० दे० 'मौल्य'।

मौल्य-वि०, पुं० [सं०] दे० 'मौल्य'।

मौल्य-पुं० मौल्य बहिन अर्थात् मौल्यका पति।

मौल्य-पुं० [अ०] काल, समय; कतु। - (मे)झिझाँ-
पुं० पतझड़। -गुल्ल-पुं० वस्तु कतु। -बहार-पुं०
वसंत कतु।

मौल्य-वि० [अ०] जिसका मौल्य हो, (वर्तमान)
कतुका; मौल्यके कारण होनेवाला (कुलार इ०)। -कल्ल
-पुं० कतुफल। -कुलार-पुं० चैत या माद्री-कुमारके
महीनोंमें होनेवाला कुलार।

मौल्य-पुं० दे० 'मौल्य'। वि० दे० 'मौल्य'।

मौल्य-की० मास, माँकी बहन।

मौल्य-वि० [अ०] बरक किया हुआ, वर्णित; प्रशंसित।
[की० 'मौल्य'।]

मौल्य-वि० [अ०] नाम रखा हुआ, नामधारी। [की०
'मौल्य'।]

मौल्य-वि० [अ०] बरक किया हुआ, मिलान किया
हुआ; मिला हुआ। [की० 'मौल्य'।]

मौलेश-वि० मौलेशी नातेवाला; मौलेशी संभव या उससे उपज (—भाई, बहिन इ०) ।

मौलेशी-पु० [सं०] मुहूर्त जाननेवाला, ज्योतिषी ।

मौलेशिक-वि० [सं०] मुहूर्तसे उपज । पु० मुहूर्तनेता, ज्योतिषी; दक्षकी कन्या मुहूर्तसे उपज एक देवगण ।

म्लास-वि० [सं०] पक्षा या सीखा हुआ, अभ्यस्त ।

म्लोच-खी० विक्षोभी गोलो । कु० —की छोड़-विस्वीका मुँह । —० पकड़ना-सबसे अधिक खतरेका काम करना ।

—म्लोच करना-हरके मारे भीमे स्तरमें बोलना ।

म्लान-पु० [फा०] तलवार आदि रखनेका कोष या गिराफ लट्वाकोष; * शरीर ।

म्लाना-सं० कि० (तलवार आदिको) म्लानमें करना, रखना । पु० दे० 'मियाना' । वि० बीचका, मझोला; मीठा

—'लंबी है न टेंगनी न पातरी न म्लानी है'—सुंदरदास ।

म्लानी-खी० दे० 'मियानी' ।

म्युनिसिपल-वि० [अं०] म्युनिसिपलिटो (नगरपालिका) संबंधी—(कर्मचारी) ।

म्युनिसिपलिटि-खी० [अं०] स्थानीय स्वायत्तशासनका अधिकारप्राप्त नगर या कस्बा; ऐसे नगरका प्रबंध करनेवाली कमेटी, नगरसभा, नगरपालिका ।

म्युनिसिपल-पु० [अं०] कला, पुरातत्त्व, प्राणिशास्त्र आदिकी निदर्शक वस्तुओंका संग्रहालय, अजायबघर ।

म्वी-खी० दे० 'म्वी' ।

म्वी-खी० एक सदाबहार पेड़, निर्गुंडी, सिंदुवार ।

म्वी-पु० दे० 'म्वी' ।

म्वी-पु० [सं०] कपड़; अपना दौध छिपाना; ब्रह्मण ।

य

य-देवनागरी वर्णमालाका छम्बीसवीं व्यंजन वर्ण ('ई' और 'अ'के संयोगमें उपज, कुछके मतसे युक्ताक्षर) । स्वयं और ऊम्भवणोंके बीचका वर्ण होनेसे इसे अंतस्वर्ण कहते हैं । इसके उच्चारणमें कुछ आंतरिक प्रयत्न तथा कुछ बाह्य प्रयत्न भी होते हैं ।

यंत, यंता(यु)-पु० [म०] संवाल्क, शासक; सारथि; महावत ।

यंति-खी० [सं०] दमन ।

यंत्र-पु० [सं०] अंक या अक्षरोंसे युक्त विशेष आकार या कोष्ठ (जिनमें देवताओंका वास माना जाता है (तं०), जंतर; औजार, फल, मशीन; ताला; बीणा; वाजा; बाधसे उपजक संगीत; बंदूक; एक विशेष वस्तु; निर्वचन; जाल, फंदा । —कर्मिका-खी० राजीगरकी पेटी । —गृह-पु० वेध-शाला; यंत्रगारुह (प्राचीन कालमें अग्राधिकी कृषि होते थे); स्थान या घर जहाँ कल, औजार, मशीनसे काम होता हो, कारखाना । —वेष्टि-पु० राजीगरी । —लक्ष्मा- (लक्ष्)-पु० यंत्रनिर्माता । —लोच-खी० दे० 'मशीन-गल' । —नाल-पु० कुपेंसे जल निकालनेका नल । —उपेक्ष-पु०, —उपेक्षा-खी० यंत्राधिकी सहायतासे हाथ-पैर हिलानेवाली युक्ति । —वेष्टी-खी० लक्ष्मी । —प्रवाह-पु० कृषिमें स्तल । —यंत्र-पु० डीगा, टोटका ।

यज्ञा-पु० [सं०] तेज; स्नेहज, लेपन; मिलाप; मिश्रण; इच्छा करना ।

यज्ञिमा(मन्)-खी० [सं०] मृदुता ।

यज्ञि-वि० [सं०] अतिशय मृदु ।

यज्ञिमाण-वि० [सं०] मरता हुआ; मरा हुआ-सा, मृत-प्राय ।

यज्ञास-वि० [सं०] कुम्हलाया हुआ, स्थान ।

यज्ञाव-वि० [सं०] कुम्हलाया, सुरक्षाया हुआ; दुर्बल; भक्ति, गंधा । —मना(मन्)-वि० क्षिप्रचित्त, उदास ।

यज्ञावि-खी० [सं०] स्थानता, कांतिक्षय; भक्तिता; उदासी ।

यज्ञावी(विन्)-वि० [सं०] कुम्हलाता, सुखता, छीजता हुआ ।

यज्ञि-वि० [सं०] अस्पष्ट वाक्य बोलनेवाला; स्थान । पु० अस्पष्ट वाक्य ।

यज्ञि-पु० [सं०] वह जो संस्कृत न बोलनेवाला हो, अनार्य; विदेशी; आर्य-सदाचारका पालन न करनेवाला; हिंजल, शिगरफ; ताँबा; अनार्य भाषा । वि० पापरात; नीच । —कंद-पु० लहसुन । —जाति-खी० अनार्य, अतस्कृत-भाषी जाति । —देश-पु० अनार्य देश, चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था आदिसे रहित देश । —भाषा-खी० अनार्य भाषा; विदेशी भाषा । —भोजन-पु० गेहूँ; दाक । —मंदक-पु० म्लेच्छ देश । —मुल-पु० ताँबा ।

यज्ञि-पु० [सं०] गेहूँ ।

यज्ञि-पु० [सं०] म्लेच्छ भाषा; अपभाषा; परभाषा ।

यज्ञा-सर्व० यज्ञा ।

—मात्का-खी० नीसठ कलाओंमेंसे एक जिसमें यंत्रका बनाना और उसका व्यवहार करना शामिल है । —मार्ग-पु० नहर । —राज-पु० मर्हो, तारोंकी गणिका ध्वज एक यंत्र (ज्यो०) । —विद्या-खी० यंत्रोंके निर्माण और पालनकी कला । —शर-पु० यंत्रसे चलनेवाला बाण आदि । —शाखा-खी० वेधशाळा; वह स्थान जहाँ मशीनें कलें और औजार आदि हों । —सूत्र-पु० कठपुतली नचानेका पाग, सूत ।

यंत्र-पु० [सं०] पट्टी, धावपर बौधेका कपड़ेका बंधन; शिष्य, यंत्रक; यंत्रमें करनेवाला ।

यंत्रण-पु० [सं०] निर्वचन; बौधना; रक्षा करना ।

यंत्रणा-खी० [सं०] यातना, पीडा, क्रोध ।

यंत्रणी, यंत्रिणी-खी० [सं०] छोटी ताक ।

यंत्रापीड-पु० [सं०] एक साप्ताहिक ज्वर जिसमें रक्तका रंग पीला हो जाता है ।

यंत्राक्य-पु० [सं०] यंत्रशाळा; छापाखाना, प्रेस ।

यंत्रास-पु० [सं०] एक राग ।

यंत्रिका-खी० [सं०] पक्षीकी छोटी बहन, छोटी बाली; छोटा ताक ।

यंत्रि-वि० [सं०] यंत्रयोगसे बंधा हुआ; ताक लगाया हुआ; जकड़ा हुआ, बंध किया हुआ । —कथ, —काथ(य)

वि० चुप किया हुआ।

बंशी (विष्णु) - वि०, पु० [सं०] निर्वन्धन करने, बँधने-बांधा; चुप्पा, नया हुआ; बाजा बजानेवाला; तांत्रिक; जंतरवाला।

ब-पु० [सं०] गमन करनेवाला; गाड़ी; वायु; वयान; बम; यन्त्र संयंत्र; भाग्य; योग; जी; स्वाय; प्रकाश। -**बध्म**-पु० पितृका एक गण जिसमें बहला बर्ण लघु और शेष योगों गुण होते हैं।

बक-वि० [फा०] बक; अकेला। -**कलम**-अ० एक-बारगी। -**बह्म**-वि० काना; एक सख्ता (चित्र आदि)। -**बकनी**-वि० सबकी एक निगाहसे देखनेवाला; एक-मही (तत्परी)। -**जही**-वि० एक दादानी (ओलाह)। -**जबान**-वि० बातका पक्का; एक भाषावाणी। -**[मु० - होकर कहना]** - मिलकर एक बात कहना। -**जरी**-वि० धकनाली (बंदूक या पिस्तौल)। -**जा**-वि० इकट्ठा; मिलाजुला। -**आहूत**-कौ० इकट्ठा होना; एकत्रता।

-**जान**-वि० लूट गुलामिला हुआ, एकदिल। -**तरफा**-वि० एक तरफका। -**शर**-कौ० वह राय जो दूसरे पक्षका विचार किये बिना दी या कायम की जाय। -**कैलजा**-पु० वह कैलजा जो बिना दूसरे पक्षका विचार जाने किया जाय। -**पर**-पु० एक तरफका लफेद कटुतर। -**कली**-कलसी-वि० जो सारमें एक ही फलक पैदा करे (जमीन)। -**बग**-वि० एक तरफ, तिरछे चलनेवाला (घोड़ा)। -**बचक**-अ० पका-एक, अचानक। -**बारगी**-अ० अकस्मात्, सहसा, अचानक। -**मंजि**-वि० एक मंजिबका (मकान)।

-**माहरी**-वि० एक मोंके (बधे)। -**सुस्त**-अ० इकट्ठा, एक बारमें। -**रंग**-रंगा-रंगी-वि० एक रंगका, अंदर-बाहरमें एक। -**कल**-कली-वि० एक-तरफा, एक सख्ता। -**रू**-वि० एक तरफ लिसा हुआ। -**रोज़**-वि० एक दिनका। -**कल**-अ० बिकरुल, तमाम। -**लार्ह**-कौ० छोटे अर्जकी, एक पाठकी चादर; नकाब; चोपा। वि० फर्दी (साड़ी या धोती)। -**लोही**-वि० जो लोहेके एक टुकड़ेका बना हो (तखवार, नैसा, कमाड़ी आदि)। -**कौसा**-वि० एकमात्र (पुत्र)। -**कौसी**-वि० कौ० एकमात्र (पुत्री)।

-**शंसा**-पु० इतवार। -**सर**-वि० अकेला; इकट्ठा, कुल। -**सर्**-वि० एक-सा, एक प्रकारका। -**साबित**, **सामी**-कौ० सप्रसता, बकसी होना। -**सार**-वि० एक जैसा। -**साखा**-वि० एक साख्ता। -**सू**-वि० एक ओर; ठहरा हुआ; पकाम। -**सुह**-कौ० पका-प्रसा; ठहराव; दिवसमई, विद्यास; स्थिति। **मु०** -

अंगूर सद् जंहर - अनार सद् बीमार - बोली-सी चीज और बहुत-से चाहनेवाले। -**जान** हो काकिब - अभि-कदव मित्र। -**न बक**-एक वा दूसरा। -**न सुह** दो सुह - एक नला तो भी ही, दूसरी और पीछे पड़ी। -**सीरी सद् देव** - दुहापा सी बीमारियोंके बराबर है।

यके बाह हीरारे - एकके बाद दूसरा। -**रिबाबल** **काजी** - सद् गवाह - हाकिमकी रियायत सी गवाहों-से बेहतर है। -**सर हज़ार सीदा** - एक जान और

हजारों संकट।

बकीब-पु० [अ०] बिभास; प्रणीति। **मु०** - **बक** - बिभास होना। - **कद** - बिभास करना। - **जान** - पतवार करना। - **झाबी** - सच जानी।

बकीब-अ० [अ०] अवकाश; निःसंदेह; बिभासपूर्णक।

बकीबी-वि० [फा०] असंदिग्ध।

बकुम-कौ० [फा०] महीनेकी पहली तारीख, एकम।

बकुर-पु० [सं०] पैदमें हाथों और एक पैरों जिसमें जीवनको पचानेवाला रस रहता है, गिराव बहकमें होनेवाले रोग (शोष, वृद्धि आदि)। -**कोच**-पु० बकुर-के अगरी स्थैतिक कला।

बकुदाकिम-कौ० [सं०] तिलचटा, चपका।

बकुदुहर-पु० [सं०] बकुरका बट जाना।

बकोक-पु० एक पैर।

बक-पु० [सं०] एक देवयोगि; कुबेरके सेवक; कुबेर; ईश्वरन; पूजा; प्रेत, नृत्य; कुत्तम बह। -**कद**-पु० कपूर, अगर, कटुटी और कंठके संयोगसे बना हुआ अंगराग। -**ग्रह**-पु० एक कल्पित ग्रह; प्रेतवाहा।

-**सह**-पु० बरगद। -**धू**-पु० पूजाका दूध; देवदास इकका गोंद। -**मायक**, **य**, **बसि**-पु० कुबेर।

-**पु**-पु० बकोका नगर, अकपापरी। -**रस**-पु०

फूलोंके रससे तैयार की हुई शराब। -**राह**-पु० कुबेर।

-**राशि**-कौ० दीपावली। -**बिच**-पु० वह शुषण जो

यक्षकी तरह धनकी केवक रखवाकी करता हो, उसका प्रयोग न करता हो। -**स्थल**-पु० एक पौराणिक तीर्थ।

बलन-पु० [सं०] पूजन; अक्षय।

बल्लाधिप, **बल्लाधिपति**-पु० [सं०] कुबेर।

बल्लामक-पु० [सं०] पिठलनूर।

बल्लाबास-पु० [सं०] यक्षोंका वासस्थान; बटपूज।

बलिणी, **बली**-कौ० [सं०] यक्षकी स्त्री; कुबेरकी स्त्री।

बलु-पु० [सं०] बल करनेवाला; एक प्राचीन जनपद; यक्ष जनपदका निवासी।

बल्ल-पु० [सं०] कुबेर।

बह्म-पु० [सं०] दे० 'यक्षमा'; 'बह्मन्'का समासगत रूप। -**ग्रस्त**-वि० क्षय रोगसे ग्रस्त। -**ग्रह**-पु० क्षयरोग। -**जी**-कौ० दाह, अंगूर।

बह्मा (हम)-पु० [सं०] क्षयरोग, तपेधिक।

बह्मी (हम)-वि०, पु० [सं०] क्षयरोगी।

बल-कौ० [फा०] सख्त बरफ; गिरकर जमी हुई बरफ;

पाछेसे जमा हुआ पानी।

बल्लनी-कौ० [फा०] मोरवा; जबले हुए मांसका रस।

बयानक, **बयानगी**-कौ० [फा०] समीपता; निकटका

संघर्ष; अनोखापन; सहयोग।

बयाना-वि० [फा०] आत्मीय; अकेला; अद्वितीय।

बगूर-पु० एक दूध।

बव-पु० दे० 'बह'।

बक-पु० दे० 'बह'।

बलिनी-कौ० दे० 'बलिणी'।

बल-पु० [सं०] बकता।

बल-पु० [सं०] कथिक्; एक वैदिक ऋषि; क्षिप; चंद्रमा।

वि० पूज्यः पवित्रः ईश्वरीय ।
यजमान-पु० [सं०] अधिपतिः; यह करनेवाला ।
यजमान-पु० [सं०] यह करना; यज्ञका स्थान । -**कर्त्ता**(सं०)
 -पु० यह करनेवाला ।
यजमान-पु० [सं०] यह करनेवाला; दक्षिणा आदि देकर
 आश्रमोंसे धार्मिक कृत्य करनेवाला; महादेवका एक विश्व
 स्वरूप परिवार वा आत्मिका मुखिया ।
यजमानक-पु० [सं०] दे० 'यजमान' ।
यजमानकी-स्त्री० यजमानोंका वास्तव्य; यजमानका भाव
 वा धर्म; विवाह आदिके अवसरोंपर पुरोहित, नार्त, वारीके
 काम करनेका अधिकार; पुरोहिता ।
यज्ञाक-वि० [सं०] उदार; पूजक ।
यज्ञि-पु० [सं०] यज्ञ; यज्ञकर्ता ।
यज्ञी(विभू)-पु० [सं०] यह करनेवाला; पूजा करनेवाला ।
यज्ञीय-पु० [अ०] मायिकाका लक्षका, उमिषया खानदान-
 का दूसरा खणीका जिसने करनलका नुद कराया और
 जिसमें इमान हुसेन छोड़ी हुए ।
यज्ञ(स्)-पु० [सं०] वेदके गद्य ग्न (जिन संबंधों पर
 या अन्तान-विषयक कोई नियम न हो वे यज्ञ हैं), दे०
 'यज्ञवेद' । -**यज्ञि**-स्त्री० यज्ञवेद ।
यज्ञवेद, **यज्ञवेदी**(विभू)-पु० [सं०] यज्ञवेद जानने-
 वाला ।
यज्ञवेद-पु० [सं०] चारों वेदोंमेंसे एक, वह वेद जिसमें
 यज्ञों(गद्य गनों)का संग्रह है (इसमें विशेषतया यज्ञकी
 क्रियाओं और उसके भेद-प्रभेदोंका विवरण और प्रतिपादन
 है । इसमें दो वेद हैं-कृष्ण यज्ञवेद, शुक्ल यज्ञवेद वा
 तैत्तिरीय और शान्तनेयी सहिता । यज्ञवेदके दो आश्रम
 हैं-शुक्लका शतपथ ब्राह्मण और कृष्णका तैत्तिरीय
 ब्राह्मण) ।
यज्ञवेदी-वि० दे० 'यज्ञवेदीय' ।
यज्ञवेदीय-वि० [सं०] यज्ञवेदका शाखा; यज्ञवेदके अनु-
 सार कृत्य करनेवाला (आश्रम); यज्ञवेद-संबंधी ।
यज्ञव्यति-पु० [सं०] विष्णु ।
यज्ञव्याघ्र-पु० [सं०] एक गणपति ।
यज्ञर-पु० [सं०] आश्रम ।
यज्ञ-पु० [सं०] हवन-पूजनयुक्त एक वैदिक कृत्य, ऋतु,
 मस, वाग; लोकहितके विचारसे की हुई पूजा; अनुष्ठान,
 होम; यज्ञ-देवता; विष्णु; अग्नि । -**कर्म**(अञ्)-वि०
 यज्ञमें लगा हुआ । -**कर्म**-वि० यज्ञतत्त्व । पु० विष्णु ।
 -**काम**-वि० यह करनेका ह्नुक्त । -**काल**-पु० यज्ञका
 शास्त्रानिर्दिष्ट समय; पूर्णमासी । -**कीलक**-पु० यज्ञका
 बलिपशु बौधेनका भंडा । -**कुंड**-पु० हवन करनेका
 नुद, अन्नकुंड । -**कुन्**-वि० यह करने, करनेवाला ।
 -**केतु**-पु० एक राक्षस । -**कोष**-वि० यज्ञसे देश रखने-
 वाला । पु० एक राक्षस । -**क्रतु**-पु० विष्णु, हवन-
 महोत्सव । -**क्रिया**-स्त्री० यज्ञके कृत्य । -**गन्ध**-वि०
 यज्ञद्वारा प्राप्य (विष्णु) । -**गिरि**-पु० एक पर्वत । -
गुह्य-पु० विष्णु । -**घन**, **गुह्य**(ह)-वि० यज्ञविष्मंभुक्त ।
 पु० राक्षस । -**तंत्र**-पु० यज्ञका विस्तार । -**तुर्ग**-पु०
 यज्ञका घोड़ा । -**जला**(ह)-पु० यज्ञरक्षक; विष्णु ।

-**हस्ति**-स्त्री० शूल्क, यह करानेके उपलक्ष्यमें आश्रमों-
 को दिया हुआ धन । -**हस्त**-पु० यज्ञके अस्त्रास्त्ररूप
 भात पुत्र । -**हैवी**(विभू)-वि० यज्ञविरोधी । [स्त्री०
 'यज्ञविरोधी'] -**हृदय**-पु० यज्ञकी सामग्री । -**हर**-पु०
 यज्ञ-वारणकर्त्ता पुत्र, विष्णु । -**धर्म**-पु० होमका धर्म ।
 -**धेमि**-पु० कृष्णका एक नाम । -**धति**-पु० यजमान;
 विष्णु । -**धृष्टी**-स्त्री० यजमानकी स्त्री; यज्ञकी स्त्री,
 दक्षिणा । -**धृष्टी**-स्त्री० यज्ञमें स्वस्मानसे एक-ही पग
 बढ़नेकी क्रिया । -**धृष्ट**-पु० पुराण-वर्णित एक पर्वत ।
 -**धृष्ट**-पु० यज्ञका बलिपशु (घोड़ा, बकरा) । -**धाम**,
 -**आश्रम**, -**आश्रम**-पु० यज्ञमें काम आनेवाले घराने । -
 -**धृष्ट**-पु० विष्णु । -**फल**-पु० यज्ञका फल देनेवाले,
 विष्णु । -**धृष्ट**-पु० यज्ञमें सबयोग करनेवाला । -**धातु**
 पु० अधिका एक नम । -**भाग**-पु० यज्ञका अंश;
 (यज्ञांश पानेवाले) देवता । -**भुक्त**(ञ्)-पु० देवता ।
 -**भावन**-पु० विष्णु । -**भुक्त**(ञ्)-पु० देवता । -
 -**भूमि**-स्त्री० यज्ञका स्थान । -**भूषण**-पु० कुशा । -
 -**भृत्**-वि० यज्ञका आयोजन करनेवाला । पु० विष्णु ।
 -**भोक्ता**(कृ)-पु० विष्णु । -**भंज**-पु० यज्ञका
 मंदन । -**भंज**-पु० यज्ञके लिए वेरा हुआ स्थान । -
 -**भोक्ता**-पु० यज्ञका विशाल समारोह । -**भुक्त**-पु०
 यज्ञका आरंभ । -**भृत्**-पु० विष्णु । -**भृत्**-पु० यज्ञका
 बलिपशु बौधेनका खंभा, यूपकाष्ठ, यज्ञस्थल । -**भोग**-पु०
 विष्णु । -**भोग्य**-वि० यज्ञके योग्य । पु० गृहका पेड़ ।
 -**हस्त**-पु० सोम । -**राद**(ञ्)-पु० चंद्रमा । -**देत**
 (स्)-पु० यज्ञका बीज, सोम । -**दिग्ग**-पु० विष्णु ।
 -**दिग्द**(ह)-पु० यज्ञका आत्मादनकर्त्ता, पुरोहित ।
 -**वराह**-पु० विष्णुका शस्त्र-अवतार । -**वर्द्धन**-वि०
 यज्ञका विस्तार, प्रसार करनेवाला । -**वृद्ध**-पु० एक कवि,
 याज्ञवल्क्यके पिता । -**वल्ली**-स्त्री० सोमलता । -**वाट**-
 पु० वह स्थान जो यज्ञके लिए गैरा और तैयार किया गया
 हो । -**वाह**-वि० यज्ञका संचालन करनेवाला । -**वाहन**-
 पु० यह करनेवाला; ब्राह्मण; विष्णु; शिव । -**वाही**-
 (विभू)-वि० दे० 'यज्ञवाह' । -**विर्ध**-पु० यज्ञ-
 की विकल्पा । -**विजृम्भ**-वि० यज्ञमें अकृतकार्य, विफल
 होनेवाला । -**वीर्य**-पु० विष्णु । -**वृक्ष**-पु० बरगद ।
 -**वेदिका**-स्त्री० यज्ञकी वेदी । -**वेदी**-स्त्री० यज्ञकी
 वेदिका । -**व्रत**-वि० यह करनेवाला; यज्ञके नियमोंका
 पालन करनेवाला । -**वस्तु**-पु० राक्षस, अस्त्र । -**वस्तु**
 -पु० यज्ञमंडप, वह कुक्षसे छाया हुआ स्थान जिसके नीचे
 यज्ञकार्य संपन्न होता था । -**वाला**-स्त्री० यह करनेका
 स्थान, यज्ञमंदिर । -**वाला**-पु० भीमांसा । -**शिष्ट**,
 -**शेष**-पु० यज्ञका अवशेष । -**शील**-वि० बार-बार या
 उत्साहसे यह करनेवाला । -**श्लो**-स्त्री० सोमलता ।
 -**संभार**-पु० यज्ञके लिए आवश्यक सामग्री । -**संश्लि**-
 वि० यज्ञसे उत्साहित । -**संस्तर**-पु० यज्ञभूमि । -
 -**संस्था**-स्त्री० यज्ञका मूल रूप । -**सहज**-पु० यज्ञमंडप
 का स्थान, यज्ञभूमि । -**साधन**-पु० यज्ञरक्षक विष्णु ।
 -**सार**-पु० गृहका पेड़; विष्णु । -**सिद्धि**-स्त्री० वह
 की मर्यादा । -**सुख**-पु० जनेक, यज्ञोपवीत । -**सेन**-

पुं० विष्णुः एक दानवः एक ब्रह्मदनेशः । -स्वाधु-पुं० दे० 'यहूय' । -हृष, -ह्रा(ह्)-पुं० शिव । -हृष-पुं० विष्णु । -होता(ह्)-पुं० यद्यपि वेदताओंका आवाहन करनेवाला; मनुका एक पुत्र ।

यज्ञक-पुं० [सं०] यज्ञकर्ता; यज्ञ ।

यज्ञाश्र-पुं० [सं०] यज्ञ-सामग्री; गृह्य; अग्नि; एक हिरण, कृष्णसारः विष्णु । -शोभि-औं यज्ञ-सामग्रीका उत्पत्ति-स्थान ।

यज्ञांश-औं [सं०] सोमकृता ।

यज्ञाधार-पुं० [सं०] यज्ञस्थान, यज्ञशाला ।

यज्ञात्मा(स्मृ)-पुं० [सं०] विष्णु ।

यज्ञाविपत्ति-पुं० [सं०] यज्ञके स्वामी, विष्णु, यज्ञपुत्र ।

यज्ञावधिष-पुं० [सं०] अग्निहोत्रमें गाया जानेवाला एक साम; एक प्रकारका साम ।

यज्ञारि-पुं० [सं०] शिव; राक्षस ।

यज्ञावयव-पुं० [सं०] विष्णु ।

यज्ञासन-पुं० [सं०] देवता ।

यज्ञिक-पुं० [सं०] यज्ञके प्रसादस्वरूप प्राप्त भुक्ष्य भक्ष्य ।

यज्ञिष-वि० [सं०] यज्ञ-संबंधी या यज्ञके उपयुक्त 'यज्ञका' मंगलकर्ता; कर्मकांडके लिए उपयोगी; पवित्र । पुं० देवता; द्वापर युग । -ह्येष्ट-पुं० होमादिके लिए उपयुक्त देव, भारतवर्ष; कृष्णसार वृक्षकी वासभूमि ।

यज्ञीय-वि० [सं०] यज्ञ-संबंधी; यज्ञका । पुं० गृह्यका पेक्ष । -ब्रह्मपाद-पुं० विकृत यज्ञ ।

यज्ञेश-पुं० [सं०] विष्णु; सूर्य ।

यज्ञेश्वर-पुं० [सं०] विष्णु ।

यज्ञेष्ट-पुं० [सं०] रोहित वास । वि० जिससे यह इष्ट हो ।

यज्ञोपकरण-पुं० [सं०] यद्यपि काम जानेवाले पात्रादि ।

यज्ञोपवीत-पुं० [सं०] यह द्वारा संस्कार किया हुआ उपवीत, यज्ञघ्न, जनेक । -संस्कार-पुं० उपनयन-संस्कार, जनेक पहनानेका संस्कार (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यके लिए भिन्न-भिन्न वस्त्रादि निर्धारित किया गया है) ।

यज्य-पुं० [सं०] यजन करने योग्य, पूजनीय । पुं० यज्ञ ।

यज्या-औं [सं०] यज्ञ ।

यज्यु-पुं० [सं०] यजमान; यजुर्वेदीय ब्राह्मण । वि० यज्ञ करनेवाला; यजन, पूजन करनेवाला; भक्त, भद्राहु ।

यज्वा(अवस्)-पुं० [सं०] यज्ञ करनेवाला; विष्णु ।

यज्ञर-पुं० एक पक्षी ।

यत्त(तस्)-अ० [सं०] क्योंकि, चूंकि ।

यत्त-वि० [सं०] संवत्, संवत्सित दमन किया हुआ; प्रति-यत्त । -चित्त, -मना(यत्त), -आमस-वि० जिसका मन नियंत्रित हो । -वत्त-वि० संयमी ।

यत्तन-पुं० [सं०] यत्न करना ।

यत्तनीय-वि० [सं०] यत्न करने योग्य ।

यत्तमाय-वि० [सं०] यत्न करना हुआ, कोशिस में लगा हुआ, चेष्टाशील ।

यत्तात्मा(स्मृ)-वि० [सं०] संयत्तमा, संयमी ।

यत्ति-पुं० [सं०] जितेंद्रिय, विरक्त होकर मोक्षके लिए प्रयत्न करनेवाला; सन्ध्यासी; योगी; शैतानर जैन साधु; ब्रह्मका

एक पुत्र; विश्वामित्रका एक पुत्र; नहुषका एक पुत्र; महाचारी; कल्पयका एक नेत्र । औं गीत या छंदमें विश्रामका स्थान रोक, रुकावट; मनोविकार; निर्वेचन; एक राग; विषयः संक्षिप्त; सूर्यका एक प्रबंध । -यज्ञावयव-पुं० यज्ञियोंका विशेष चांद्रायण व्रत । -यज्ञी-पुं० सन्ध्यास । -यज्ञ-पुं० यत्तिका शिक्षापान । -अंय-पुं० छंदमें यत्ति निश्चित स्थानपर न होनेका दोष । -अज्ञ-पुं० यत्तिमें दोषसे युक्त छंद । -हय-पुं० रामायुवा-चार्य । -संज्ञपन-पुं० संवत्स्य और कुक्ष-जक पीकर पावन किया जानेवाला तीन दिनोंका एक व्रत सात दिनोंका एक व्रत (वायक) ।

यत्तिष्ठ-वि० [सं०] वेष्टित ।

यत्तिनी-औं [सं०] विषया ।

यत्ती(स्तिष्ठ)-पुं० [सं०] सन्ध्यासी ।

यत्तीय-पुं० [अ०] वे यो-वाका यत्ता, यत्ताय । वि० पिना यो-वापका (यत्ता); देवोक्ष । -ज्ञाना-पुं० अनाथावक ।

यत्तुका, यत्तुका-औं [सं०] यत्तनका पीषा ।

यत्तेंद्रिय-वि० [सं०] जितेंद्रिय, संयतेंद्रिय ।

यत्-सर्व० [सं०] जो । -किंचित्-अ० थोड़ा-सा, कुछ; बहुत कम । -यत्तौ चास्ति-जितसे छपन नहीं है, नितांत, अविशेष ।

यत्त-वि० [सं०] वेष्टित; सतत; युका हुआ; प्रयत्नशील ।

यत्त-पुं० [सं०] उद्योग, उपाय; सार-सम्हाल, रोगशान्ति-का उपाय, उपचार; न्यायके १४ गुणोंमेंसे एक जिसके तीन प्रकार हैं-प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवन्मोक्ष । -यत्त-वि० दे० 'यत्तवान्' । -यत्त-अ० चेष्टापूर्वक, उपाय द्वारा ।

-यत्ती-वि० सचेष्ट, आग्रही, जम्बवत्सादी ।

यत्तवती-वि० औं [सं०] यत्तनमें लगी हुई ।

यत्तवान्(यत्)-वि० [सं०] प्रयत्नशील, यत्नमें लगा हुआ ।

यत्त-अ० [सं०] जहाँ । -तत्त-अ० जहाँ-तहाँ; जगह-जगह ।

यत्तु-औं [सं०] छाती और गलेके बीचकी मंजलाकार हड्डी, हंसकी ।

यत्तांश-वि० [सं०] भागके अनुकूल; यथायोग्य ।

यथा-अ० [सं०] जिस प्रकार; जैसे । -कथित-वि० जैसा पहले कहा गया हो । -कथ्य-अ० कथनमेंके अनुसार । -कर्म-अ० कर्मानुसार । -काम-अ० वयेच्छ, मनमाने । वि० जो इच्छाके अनुकूल हो ।

-कामी(मिच्छ), -कारी(रिच्छ)-वि० स्वेच्छाचारी, मनमाना करनेवाला । -काम्य-अ० इच्छाअनुकूल ।

-काय-अ० कायाके अनुकूल । -कार्य-अ० कार्यके अनुकूल, जैसा करना चाहिये । -काल-अ० उचित समयपर । वि० समयके उपयुक्त । -कूल-वि० कुला-

नुसार । -कृत्त-वि० नियमानुसार किया हुआ । -क्रम-अ० क्रमके अनुसार । पुं० यथासंस्थ नामक अर्थात्कार । -क्षम-अ० शक्तिभर । -जात-वि० भूतः

नीच । -ज्ञान-अ० ज्ञातक माध्यम हो । -तत्त-वि० तत्त्व-वि० क्योंकि त्यों, इन्हू, जैसा हुआ हो । -तुत्ति-अ० जी भरकर । -दिक्(श्), -दिश-अ० चारों ओर ।

काष्ठद्वयः मनुष्यके मस्तकपरकी दो प्रकारकी रेखाओंमेंसे एक । -**धृष्ट**-**क्षी**-**यमकी** दाढ़; एक शिव; रोग और मृत्युके विशेष भयवुक्त कार; कातिक और जगहन महीनों के कुछ दिन (अ० दे०) । -**दुस्तिवा**-**क्षी**-**दे** 'यम-द्वितीया' । -**दूत**-**दूतक**-**पु** कौला; यमके दूत । -**दूतिक**-**क्षी**-**इमकी** । -**देवता**-**पु** भरणी नक्षत्र जिसके देवता यम हैं । -**दुम**-**पु** सेमरका पेड़ । -**द्वार**-**पु** यमराजके बरका दरवाजा । -**द्वितीया**-**क्षी** कातिक-शुक्ला द्वितीया, जैयादूज । -**द्वर**-**पु** दोनों ओह धारवाली तलवार या कटारी । -**द्यानी**-**क्षी** यमका निवास-स्थान । -**नक्षत्र**-**पु** सरणी नक्षत्र । -**माध**-**नाह**-**पु** यमोंके स्वामी, धर्मराज । -**पद**-**पु** वह पद जिसकी आशुति हुई हो । -**पास**-**पु** यमकी फौस । -**पुर**-**पु** यमका स्थान, यमलोक । -**पुरी**-**क्षी** यमनगरी, यमलोक । (सु० - **पहुँचाना** - सार हाकना, प्राण ले लेना) । -**पुरुष**-**पु** यमराज; यमके दूत । -**मस्थ**-**पु** एक प्राचीन नगर । -**मित्र**-**पु** यदृक्ष । -**मयिनी**-**क्षी** यमुना नदी । -**घातवा**-**क्षी** नरकाकी पीशा; अंतकालकी पीशा । -**रथ**-**बाह्व**-**पु** भेता । -**राज**-**पु** यमोंका स्वामी, धर्मराज । -**राज्य**-**राज**-**सव**-**पु** यमलोक । -**रु**-**पु** दे० क्रममें । -**वरा**-**वि**-**क्षी** आज्ञाम अविवारिता, चिर-कुरारी । -**व्रत**-**पु** यमके समान निष्पक्ष राजधर्म, राजाका दंड, नियम । -**स्वभा**-**क्षी** यमराजकी कच-हरी । -**सू**-**पु** सूर्य । **क्षी** वह क्षी जिसके जुबर्वा बच्चे हों । -**सूर्य**-**पु** ऐसे दो कमरोंवाला मकान जिनमें एक कमरेका खल उत्तर हो और दूसरेका पश्चिम । -**स्तीन**-**पु** एक दिनमें होनेवाला एक बह । -**स्वसा**(**स**)-**क्षी** यमुना नदी; दुर्गा । -**हंता**(**ह**)-**पु** कालका नाश करनेवाला ।

यमक-**पु** [सं०] एक शब्दालंकार जिसमें एक ही शब्द या शब्दखंड-अगर सार्थक हो तो भिन्न अर्थोंमें एक ही पद्यमें अनेक बार प्रयुक्त होता है; एक दृष्ट; मेनाका एक व्यूह; यमज; संयम । वि० जुबर्वा; दोहरा ।

यमदग्नि-**पु** [सं०] दे० 'यमदग्नि' ।

यमन-[अ०] भरका एक प्रदेश । पु० निरोध करना; बंधन; विराम देना, रोकना; शासन; यमराज; वि० [सं०] नियंत्रण करनेवाला ।

यमनकल्याण-**पु** दे० 'यमनकल्याण' ।

यमनिका-**क्षी** [सं०] दे० 'यमनिका' ।

यमनी-**क्षी** एक क्षौमरी पत्थर, रत्न (यमनकी) ।

यमनय-**पु** [सं०] शिव ।

यमवा-**क्षी** [सं०] एक नक्षत्रयोग ।

यमक-वि० [सं०] जो जोषमें हो; जुबर्वा । पु० दोनो संख्या; जोष । -**यद्व**-**पु** कनकार । -**यद्वक**-**पु** अस्मंतक; कोविदार । -**सू**-**क्षी** वह गाव जिसने एक बारमें दो बच्चे दिये हों ।

यमका-**क्षी** [सं०] हिमकीका रोग, पुहरी बिचकी; एक नदी; एक तांत्रिक देवी ।

यमकाह्वन, **यमकाह्वनक**-**पु** [सं०] गोकुलके दो पौरा-

णिक अर्जुन वृक्ष ।

यमली-**क्षी** [सं०] जोषी; एकमें मिली हुई दो चीजें; धाकरा और चोली ।

यमांतक-**पु** [सं०] शिव, सृष्ट्यंजय; यम ।

यमातिराज-**पु** [सं०] ४५ दिनोंमें होनेवाला एक बह ।

यमादित्य-**पु** [सं०] सूर्यका एक रूप ।

यमानिका, **यमानी**-**क्षी** [सं०] अजयायन ।

यमानुजा-**क्षी** [सं०] यमराजकी छोटी बहन; यमुना ।

यमारि-**पु** [सं०] विष्णु ।

यमाख्य-**पु** [सं०] यमका घर, यमपुर ।

यमिक-**पु** [सं०] एक प्रकारका साम ।

यमित-वि० [सं०] संयत, दबाया हुआ; बैधा हुआ ।

यमी-**क्षी** [सं०] यमकी बहन, यमुना नदी ।

यमी(**मित्र**)-**वि** [सं०] संयमी ।

यमुव-**पु** [सं०] एक ऋषि ।

यमुना-**क्षी** [सं०] जमुना नदी; यमकी बहन; दुर्गा ।

जमक-**पु** सूर्य । -**वसि**-**पु** विष्णु । -**मित्र**-**पु**

यमुनाके दो भाग करनेवाले, बलराम । -**प्रासा**(**ह**)-**पु** यम ।

यमुनोत्तरी-**पु** एक पर्वत जो यमुनाका जहम-स्थान है ।

यमैरुका-**क्षी** [सं०] ढोल या पविवाह जो यमी पूरी होनेपर बजाते हैं ।

यमेश-**पु** [सं०] सरणी नक्षत्र ।

यमेश्वर-**पु** [सं०] शिव ।

यवासि-**पु** [सं०] चंद्रवंशके एक राजा, नहुषके पुत्र ।

-**पत्त**-**पु** महाभारतवर्णित एक तीर्थ ।

यवावर-**पु** [सं०] दे० 'यावावर' ।

यवि-**पु** [सं०] यवावह; बालक ।

यवी(**विज**)-**पु** [सं०] शिव; यमका पीशा ।

यवु-**पु** [सं०] यमका पीशा; पीशा ।

यवकाय-**पु** [अ०] अंगरकी खराबीसे होनेवाली एक

खास बीमारी जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है, पीलिया ।

यव-**पु** [सं०] जौ; एक जौकी एक तीक्ष्ण लंबाईकी एक नाप, तिहाई इंच; उँगली, अँगूठेकी यवाकार रेखा; वेग; वह वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो ।

-**कंडक**-**पु** लेतापपाव । -**कलस**-**पु** इंद्रजौ ।

-**क्षीत**-**पु** एक ऋषि, भरद्वाजके पुत्र । -**क्षा**-**क्षी**

महाभारतवर्णित एक नदी । -**क्षार**-**पु** जौके सौम्यकी जलकर निकाला हुआ खार, जवाखार । -**क्षोद**-

सूर्य-**पिष्ट**-**पु** जौका जाड़ा । -**क्षुर्मी**-**क्षी** वैशाख-शुक्ला चतुर्थी । -**ज**-**पु** यवहार; मैदुका पीशा; अजवा-

यन । -**सिका**-**क्षी** संक्षिप्ता नामकी लता । -**सोच**-

पु रत्नोंकी सदेव करनेवाली यवाकार रेखा । -**द्रीध**-

पु जावा द्वीपका पुराना नाम । -**माख**-**पु** जौके सूखे बंठक; जुआरका पीशा; जुआरका दाना । -**ज**-**पु**

यवहार । -**कल**-**पु** इंद्रजौ; ध्यान; राँस; बटामासी;

कुटब; पाकका पेड़ । -**विपु**-**पु** वह हीरा जिसमें विद्युत्सहित यमरेखा हो । -**सूच**-**पु** जौकी करार ।

-**मध्य**-**पु** एक तरहका ढोल; एक चाँदायन प्रता राँच दिनका एक बह । -**लास**, -**सूक**, -**सूक**-**पु** जवा-

कार। -वर्णन-पु० एक जहरीला कीड़ा (द्रुमुत)।
 -शाक-पु० एक प्रकारका शाक। -आङ्-पु० एक
 मास जिसमें केवल जौके आटेका व्यवहार होता है। -
 सुर-पु० जौकी शराव।
 वचक-पु० [सं०] जौ।
 वचक्य-वि० [सं०] जौ बोलनेके उपयुक्त; जिसमें जौ बोवा
 गया हो।
 वचन-पु० [सं०] गाजर; गेहूँ; बेग; तेज बोझ; यूनानका
 निवासी; मुसलमान; कालवचन नामक राजा। -विह्व-
 पु० गुग्गुलु। -मिय-पु० मिर्च।
 वचनाचार्य, वचनेश्वर-पु० [सं०] वचन जातिका एक
 ज्योतिषाचार्य।
 वचनानी-की० [सं०] यूनानकी भाषा; यूनानकी लिपि।
 वचनारि-पु० [सं०] कृष्ण।
 वचनाश्व-पु० [सं०] मिथिलाका एक प्राचीन राजा।
 वचनिका-की० [सं०] नाटकका पर्दा; कला।
 वचनी-की० [सं०] वचन जातिका की०; वचनकी की०।
 वचनेष्ट-पु० [सं०] एक तरहका लहसुन; एक तरहका
 प्याज; नीमका पेड़; मिर्च; सीता।
 वचनेष्टा-की० [सं०] जंगली खजूर।
 वचमती-की० एक वर्णहस्त।
 वचलक-पु० [सं०] एक पक्षी।
 वचस-पु० [सं०] शास; भूसा।
 वचार्-पु० [सं०] जौ या चावलका सजाकर खड़ा किया
 हुआ मॉह, जौकी खौजी।
 वचाम-पु० [सं०] जौका ढूँह। -ज-पु० वचक्षार; अज-
 मादन।
 वचान-वि० [सं०] वेचवान्, तेज।
 वचानिका, वचानी-की० [सं०] अजवायन, खराब जौ।
 वचाश्व-पु० [सं०] उषाका हुआ जौ।
 वचाश्व-पु० [सं०] जौकी खौजी।
 वचाश्व-पु० [सं०] जौकी फसलको हानि पहुँचानेवाला एक
 कीड़ा।
 वचास, वचासक-पु० [सं०] जवासा नामका पौधा; एक
 तरहका खदिर।
 वचासा-की० [सं०] एक तुण।
 वचाङ्ग-पु० [सं०] वचक्षार।
 वचिष्ठ-पु० [सं०] सबसे छोटा भार; नौबवान; अग्नि;
 अग्निदेके एक मंत्रद्वारा ऋषि, अग्निवचिष्ठ। वि० सबसे
 छोटा, कनिष्ठ।
 वचिनीर-पु० [सं०] पुराणवर्णित अनमीठका एक पुष्प;
 भागवतके अनुसार दिमीठका एक पुष्प।
 वचीषाङ्ग(वस्)-वि०, पु० [सं०] अपेक्षाकृत छोटा।
 [की० 'वचीषती']।
 वचीज्व-पु० [सं०] जवाक्षार।
 वच्य-वि० [सं०] दे० 'वचक्य'। पु० यहीना; जौका खेत।
 वच्यवसती-की० [सं०] वैदिक कालकी एक नदी या
 नगरी।
 वच्यकौच-वि० [सं०] सूत।
 वच्य(स्)-पु० [सं०] कीर्ति। सुख्याति, सुनाम; प्रशंसा।

मु० -वाचा-प्रशंसा करना; कृतज्ञ होना। -मानना-
 कृतज्ञ होना; विहोरा मानना।
 वच्य-पु० [सं०] जस्ता।
 वच्यव, वच्यम-पु० [सं०] एक प्रकारका हरा पत्थर जो
 पित्रकीसे बचानेवाला और रोग दूर करनेवाला माना
 जाता है, जंगे वच्यव।
 वच्यस्कर-वि० [सं०] कीर्तिजनक।
 वच्यस्काय-वि० [सं०] यशोहिम्न्यु।
 वच्यस्व-वि० [सं०] स्यात्किंकारक, वच्यस्कर।
 वच्यस्या-की० [सं०] जीवंती, ऋषि नामक पौधा।
 वच्यस्वती-की० [सं०] कीर्तिमती।
 वच्यस्वान्(वस्)-वि० [सं०] यशस्वी, कीर्तिमान्।
 वच्यस्विनी-की० [सं०] वनकपास; महाज्योतिष्मती;
 गंगा। वि० की० (वह की०) जिसे यश प्राप्त हो।
 वच्यस्वी(स्विन्)-वि० [सं०] सुख्यात, जिसका खूब
 यश हो।
 वच्यी-वि० यशस्वी।
 वच्यीक-वि० कीर्तिमान्।
 वच्यमति-की० दे० 'यशोदा'।
 वच्योगाथा-की० [सं०] कीर्तिगान, गौरवकथा।
 वच्योद्-पु० [सं०] पारा। वि० यश देनेवाला।
 वच्योद्-की० [सं०] नदकी पक्षी; दिल्लीकी माताका नाम;
 एक वर्णहस्त। -नन्दन-पु० कृष्ण।
 वच्योजन-वि० [सं०] यश ही जिसका धन है, यशस्वी।
 वच्योचर-वि० [सं०] अपना यश कायम रखनेवाला,
 यशस्वी। पु० रुक्मिणीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र, एक
 अर्हका नाम; सावन मासका पौनर्वशी दिन।
 वच्योचरा-की० [सं०] गौतम बुद्धकी पत्नी; सावन मास-
 की चौथी रात।
 वच्योचरेय-पु० [सं०] यशोभराका पुत्र, राहुल।
 वच्योच्य-वि० [सं०] प्रसिद्ध, नामी।
 वच्योमति-की० दे० 'यशोदा'।
 वच्योमती-की० नदकी पक्षी; [सं०] शुकप्रसूकी दूतीया।
 वच्योमत्य-पु० [सं०] मार्कण्डेय पुराणोक्त एक जातिका नाम।
 वच्योमाश्व-पु० [सं०] विष्णु।
 वच्योचर्म(ज्)-पु० [सं०] कीर्तिपथ।
 वच्योहा(हस्)-वि० [सं०] यशका नाश करनेवाला।
 वच्य-वि० [सं०] यशार्ह।
 वच्य(द्यु)-पु० [सं०] यशकर्ता।
 वच्यि-की० [सं०] छाडी, छत्री; पताकाका डंडा; टहनी,
 डाल; जेठी मधु, मुलेठी; मोतियोंका एक प्रकारका हार;
 लता; बाँह; तौत; रैस। -प्रह-पु० दंढपारी। -प्राण-
 वि० बहुत कमशोर। -मधु-पु० मुलेठी, जेठीमधु।
 -मंत्र-पु० वह चूपचकी जिसमें गंधी हुई छत्रीकी छाया-
 से समयका ज्ञान प्राप्त हो।
 वच्यिक-पु० [सं०] डंडा; मजीठ; जलकुसुट।
 वच्यिका-की० [सं०] छत्री, लण्डी; जेठी मधु; बापी,
 बावली; हार, गंधी।
 वच्यिकाभरण-पु० [सं०] जलकी डंडा करनेका उपाय
 (सुश्रुत)।

बाही-खी [सं०] मुठेडी; मोतिबोंकी माला जिसमें बीच-बीचमें मणि हो।

बसार-पु० [अ०] अधिक, प्रभूत दौलत; बाबाँ हाथ; अभाग्य अनुभूति। वि० बाबाँ। -बसव-वि० बाबाँ और बाबाँ।

बसक-पु० [सं०] एक गोज-प्रवर्तक ऋषि, वास्तुके पिता।

बह-सर्व० निकटस्थ वस्तुका निर्देशक सर्वनाम (बच्चा और स्त्रियाँको छोड़कर) बच सभी जीवों और पदार्थोंके लिए व्यवहृत होता है। विभक्ति क्माते समय इसका रूप खड़ी बोलीमें 'हस' और ब्रजभाषामें 'बा' हो जाता है। वि० जब 'बह'के साथ कोई संज्ञा होती है तब वह विशेषणका काम करता है-जैसे 'बह आदमी'।

बाहो-अ० हस स्थानपर, हस जगह।

बहि-सर्व० 'बह'का विभक्ति क्मनेके पहलका पुराना हिंदी रूप। वि० संज्ञाके साथ प्रयुक्त होनेपर विशेषण हो जाता है।

बहिया-पु० जकरियाका पुत्र जो इसका पूर्ववर्ती एक पैगंबर था और इसाके (पिता ?) होनेका समाचार लाया था (इसका वध कर दिया गया था, इसका दूसरा नाम जॉन था)।

बही-अ० [यह+ही] निश्चित रूपसे यह, यह ही।

बहू-पु० [ब०] एक देश, इसाका जन्म-स्थान।

बहू-पु० याकूबका चौथा लड़का जिसके नामसे कौमका नाम बहूदी पड़ा।

बहुदिन-खी० बहूदीकी खी।

बहुदिया-पु० फिलिस्तीन और कलन, वस्तुतः कलनका दक्षिणी भाग।

बहूदी-पु० यहूद देशका निवासी; एक शायी जाति।

बहूबहू-पु० कन्धतरकी एक जाति।

बाँ-अ० दे० 'बाहो'।

बाँचना-खी० दे० 'बाचना'।

बाँचा-खी० माँगना, प्रार्थनापूर्वक माँगना।

बाँचिक-वि० [सं०] बंध-संबंधी।

बा-सर्व० ब्रजभाषामें विभक्तिके साथ जानेवाला 'बह'-का रूप। वि० संज्ञाके साथ होनेपर विशेषण होता है, -या, बा। खी० [सं०] गति; चाल; रथ, यान; अवरोध, रोक; ध्यान; प्राप्ति; योगि। अ० [फा०] स्त्रिह, विकल्प-सूचक शब्द, अथवा, बा, किंवा; संवोधनसूचक हे, ऐ।

-**अखी-हूकाही-पु०** दे खुदा (दुआ माँगने, आश्चर्य प्रकट करनेके लिए)। -**अवद-शीआ** खीग लम्बेके समय करते हैं। -**किस्मत-खी०** इस्मत या अफसोसके समय दुर्भाग्यकी शिकायतके लिए प्रयुक्त। -**रब-खी०** दे परवरदिवार (दुआ, आश्चर्य)।

बाक-पु० हिमालयपर भिलनेवाला एक बंगली बैल जिसकी पूँछके बाकसे चंवर बनता है। * वि० एक (बैलवाही)।

बाकूत-पु० [अ०] काक रंगका एक बैज्ञकीमत पत्थर, काक; एक खास पुलाज जिसके नावक काक हों। -**किमारी-पु०** किमरके रंगका बाकूत।

बाग-पु० [सं०] बग। -**संताज-पु०** इद्रपुत्र जवंत।

बाचक-पु० [सं०] माँगनेवाला, भिक्षारी।

बाचकता-खी० [सं०] भीख माँगनेका काम, भिक्षुकी सेवा।

बाचव-पु० [सं०] दे० 'बाचना' (खी०)।

बाचनक-पु० [सं०] बाचक।

बाचना-स० कि० प्रार्थना करना, माँगना। खी० [सं०] माँगनेकी किना।

बाचमाव-वि० [सं०] बाचना करनेवाला, बाचक।

बाचित-वि० [सं०] प्रार्थित, माँगा गया। पु० भिक्षावृत्ति।

बाचितक-पु० [सं०] माँगनेकी वस्तु।

बाचिता(ह)-पु० [सं०] भिक्षारी; प्रार्थी।

बाचिधु-वि० [सं०] माँगनेकी जिसकी आदत हो।

बाचना-खी० [सं०] दे० 'बांचा'।

बाचव-वि० [सं०] बाचना करने योग्य, माँगने योग्य।

बाज-पु० [सं०] अज; यह करनेवाला; एक ऋषिका नाम।

बाजक-पु० [सं०] यह करने या करानेवाला; राजाका हाथी; मस्त हाथी।

बाजन-पु० [सं०] बह करने, करानेका कार्य।

बाजमान-पु० [सं०] यहका वह भाग जिसे बजमान स्वयं करता है।

बाजा-पु० [फा०] संगवाई, जैमाई।

बाजि-खी० [सं०] बह। पु० यह करनेवाला।

बाजी(किम)-वि० [सं०] यह करनेवाला (समासांतमें)।

बाजु-वि० [सं०] बजुबैध-संबंधी।

बाजुबी-वि० खी० [सं०] दजुबैधसे संबंध रखनेवाली।

बाजू-पु० [अ०] सहायक है, यह जबरत मूढ़का पोता था जो अलतोई पहाड़में जा बसा, इसकी नाति और संतान भी इसीके नामसे प्रसिद्ध है। -**माजूज-पु०** दोनों माई और उनकी संतान; दो व्यक्ति जो मिलकर शरारत करें।

बाजू-वि० [सं०] यहका; यह-संबंधी।

बाजूर-पु० [सं०] एक प्रकारका साम।

बाजवल्क्य-पु० [सं०] प्रसिद्ध ऋषवादी ऋषि, राजा जनकके गुरु, मैथिली और गार्गीके पति; वैशंपायनके शिष्य एक ऋषि, बाजवल्क्य स्मृतिके रचयिता, बाजवल्क्यके वंशधर।

बाजसेनी-खी० [सं०] बजसेन (द्रुपद)की पुत्री, द्रौपदी।

बाजिक-पु० [सं०] यह करने, करानेवाला; गुजराती राजाकी एक उपजाति; खेरा पलाश; कुसुम। पीपल; बज-मान। वि० यह-संबंधी। -**आजय-पु०** विष्णु।

बाजिय-वि० [सं०] यह-संबंधी; यहके उपयुक्त। पु० यह-कर्ममें कुशल व्यक्ति।

बाज्य-वि० [सं०] यह कराने योग्य; यह करनेका अधिकारी; जिसके लिए यह किया जाय; जो यहमें दिया या न्यदा जानेवाला हो; जो यह करनेसे प्राप्त हो (दक्षिणा)। पु० यहकर्ता।

बात-वि० [सं०] गत; व्यतीत। पु० समय; कृच; मूलाक।

बातन-पु० [सं०] बदला, परिशोध; पुरस्कार, पारितोषिक; प्रतिशोध।

बातना-खी० [सं०] कति कठ, पीड़ा; यमलोककी दंड-पीड़ा।

बाह्य-वि० [सं०] आक्रमणयोग्य (शत्रु); आक्रमणीय ।
बाह्या-वि० [सं०] पथिके मार्गकी स्त्री, जेठानी या देवतानी । वि० जानेवाला । पु० सारवि ।

बाह्याबाह्य-पु० [सं०] आना-जाना, समनागमन; आवा-भावा ।

बाहु-पु० [सं०] रास्ता चलनेवाला, पथिक; जानेवाला; काल, समय; बाधु; कष्ट; हिंसा; अस्त्र; राक्षस । -जन्-पु० शुश्रूष । -धान-पु० राक्षस । -घानी-स्त्री राक्षसी ।

बाहुक-पु० [सं०] पथिक ।

बाहिक-पु० [सं०] एक बौद्ध संप्रदाय ।

बाह्या-स्त्री [सं०] जानेकी क्रिया; तीर्थयात्रा; यात्रियोंका समूह; सेवा; मार्ग; कालयापन; यान; प्रस्थान; चढ़ाई, जुड़वात्रा; उपाय, व्यवहार; जीवन-निर्वाह; उत्सव; मृत्यु-गान-युक्त, रासलीलाके डंगका बंगालमें प्रचलित एक अभिनय । -प्रसंग-पु० तीर्थयात्रा ।

बाह्याबाह्य-पु० तीर्थयात्रियोंको देवदर्शन करानेवाला, पूजा ।

बाहिक-पु० [सं०] यात्री; राहखर्च, यात्राकी सामग्री; तीर्थयात्री; वह जो जीवन-भरणके उपयुक्त हो; यात्राका उद्देश्य; उत्सव; उपाय । वि० यात्रा-संबंधी; रीतिके अनु-सार, प्रमाणानुसार ।

बात्री (त्रिन्)-पु० [सं०] यात्रा करनेवाला, मुसाफिर; तीर्थयात्रा करनेवाला । वि० जो यात्रा कर रहा हो ।

बाह्याभ्य-पु० [सं०] दयार्थता, अस्त्रियत; औचित्य ।

बाह्याभ्य-पु० [सं०] दयार्थ होनेका भाव, दयार्थता, सत्य; उपयुक्तता ।

बाह्यभूति-पु० [सं०] समुद्र; वन ।

बाह्य-स्त्री [सं०] स्मृति, स्मरणशक्ति; स्मरणकरनेकी क्रिया । -अव्याय-स्त्री भूतकालिक दशकी याद । -अह्ना-स्त्री अह्नाकी याद; फकीरोंका सलाम, खुदाकी हवादत । [मु० - होना-जान-पहचान होना ।] -आवरी-स्त्री याद करना, मिजाज-पुरस्ती करना, पत्र भेजना । -गार-गारी-स्त्री स्मारक, स्मृतिचिह्न । -गार-स्त्री स्मरणशक्ति, स्मृति; स्मरणार्थ लिखा हुआ लेख । मु०-करोगे-स्मरण करोगे; पछताओगे । -किंवा है-हुलासा है । -करमाना-बादशाह या उच्च पदाधिकारीका किसीको हुलाना ।

बाह्य-पु० [सं०] बहुका बंशज; कृष्ण; गोपन । वि० यदु-सम्बन्धी । -गिरि-पु० एक पर्वत ।

बाह्य-स्त्री [सं०] यदुकुलकी स्त्री; दुर्गा; कुटिनी; झुर्रा, गदिरा; गृष्टपुत्र (आ०) ।

बाह्य-वि० [सं०] याद-संबंधी । पु० गृष्टपुत्र ।

बाह्यसंज्ञा, बाह्यसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'बाह्यपति' ।

बाहु-पु० [सं०] पानी; कोई तरल पदार्थ ।

बाह्य-वि० [सं०] दे० 'बाह्य' ।

बाह्य-वि० [सं०] स्वतंत्र; ऐच्छिक; अप्रत्याशित । -आधि-स्त्री ऋणशोध किये बिना न लीजनेवाली गिरवी वस्तु ।

बाह्य-वि० [सं०] जैसा, जिस प्रकारका । [स्त्री 'बाह्यी']

बाह्य-पु० [सं०] यदुवंशका; यदु-संबन्धी ।

बाह्य-पु० [सं०] सवारी, घोड़ा-गाड़ी इत्यादि वाहन; यमन, जाना; अभिवादन, आक्रमण । -कर-पु० बढ़ाई । -घात्र-पु० पीत । -अंश-पु० पीतसंग ।

बाह्य-पु० [सं०] गार्भी, बाह्य ।

बाह्य-अ० [अ०] अर्थात्, प्रत्यक्ष यह है ।

बाह्य-पु० [सं०] विज्ञाना; चलाना; व्यवहार करना; परिस्वाग; निरसन, निश्चयना ।

बाह्य-स्त्री [सं०] समय काटना; चलाना; जीवन-निर्वाहके लिए दिया हुआ धन ।

बाह्य-वि० [सं०] यापन करने योग्य, वाप्य ।

बाह्य-वि० [सं०] व्यतीत किया हुआ; हटाया हुआ ।

बाह्य-स्त्री [सं०] अटा ।

बाह्य-वि० [सं०] यापन करने योग्य; छोड़ने योग्य; गोपनीय, लक्षणीय; निदनीय ।

बाह्य-वि० [सं०] आमदनी, लाभ; धूस, ऊपरी आमदनी । -जी-पु० पाने लायक वस्तु; कण-विलक्षी एकम; अभि-कार ।

बाह्य-वि० [सं०] पाया हुआ [समस्त पदोंमें- 'समद-याप्तता'] ।

बाह्य-पु० प्राप्त करनेवाला ।

बाह्य-पु० [सं०] पानेवाला (समस्त शब्दोंमें जैसे 'काम-याद', 'फतहयाव') ।

बाह्य-पु० [सं०] टट्टू; छोटा घोड़ा ।

बाह्य-पु० [सं०] मैथुन, संयोग ।

बाह्य-पु० [सं०] पहरे, तीन घंटेका समय; काल, समय; नियंत्रण, रोक; यमन; प्रगति; यान, सवारी; सक्क; एक प्रकारके देवता । वि० यम-संबन्धी । *स्त्री रात । -छोच-वि० पहरे-पहरेपर बोलने, शब्द करनेवाला । पु० शृंगार; युगां, पक्षी । -छोषा-स्त्री घड़ीका यंत्र, घड़ियाल । -बाह्यी-स्त्री समय बतानेवाली घड़ी । -मेमि-पु० रंज । -हृत्ति-स्त्री सतर्कता ।

बाह्य-पु० [सं०] पुनर्वसु नक्षत्र ।

बाह्य-स्त्री [सं०] कुलवधू; वहिन; पतोह ।

बाह्य-पु० [सं०] जुबर्ब वच्चे; एक प्रकारके तंत्र-भंध-ब्रह्म, विष्णु, रुद्र, गणेश, आदित्य-यामल ।

बाह्य-स्त्री [सं०] रात ।

बाह्य-पु० [सं०] दे० 'जामाता' ।

बाह्य-पु० [सं०] वह जो यमगोजमें उत्पन्न हो ।

बाह्य-पु० [सं०] पहरेका आधा भाग, वेद पंदा ।

बाह्य, बाह्यी-स्त्री [सं०] यामिनी; रात; कुलवधू; वहिन; कन्या; पतोह; दक्षिण दिशा; धर्मकी पत्नीका नाम ।

बाह्य-पु० [सं०] पहरेका, पहरेदार । वि० यम-संबन्धी । बाह्य-स्त्री [सं०] रात ।

बाह्य-पु० [सं०] दे० 'जामिन्' । -वेच-पु० दे० 'जामिन्वेच' ।

बाह्य, यामिनी-स्त्री दे० 'यामिनी' ।

बाह्य-स्त्री [सं०] रात; हस्ती; कश्यपकी एक स्त्री । -कर-पु० राक्षस; उल्ह, पक्षी; शुश्रूष ।

बाह्य-पु० [सं०] चंद्रमा ।

वासीरा-खी० [सं०] रात ।

वायुन-वि० [सं०] यमुना-संबंधी; यमुनातटवर्ती । पु०
अंजन; एक वैष्णव आचार्य; वायुनाचार्य; एक प्राचीन
जनपद; एक तीर्थ; एक पर्वत ।

वायुनेष्टक-पु० [सं०] सीता ।

वायेश-पु० [सं०] बहनका लड़का; धर्मकी पत्नी यामीका
लड़का ।

वाय्य-पु० [सं०] यमदूत; विष्णु; शिव; अगस्त्य; अदन,
भरणी नक्षत्र । वि० यम-संबंधी; दक्षिणका । -विग्गवा-
खी० तमालपत्री । -हुम-पु० सेमलका पेड़ ।

वाय्या-खी० [सं०] दक्षिण दिशा; भरणी नक्षत्र; राशि ।

वाय्यावन-पु० [सं०] दक्षिणायन ।

वाय्योत्तरदिग्गंध-पु० [सं०] कर्वांश; दिग्गंध ।

वाय्योत्तररेखा-खी० [सं०] एक कल्पित रेखा जो किसी
स्थानसे चलकर सुमेरु-कुमेरुके चारों ओर मानी गयी है
(भारतके ज्योतिषी उज्जयिनी या कंकासे इसका प्रारंभ
मानते थे । आजकल इस रेखाका केंद्र प्रायः ग्रीनविच
माना जाता है) ।

वाय्योद्भूत-वि० [सं०] दक्षिणमें उत्पन्न ।

वाय्यावर-वि० [सं०] सदा घूमनेवाला, खानाबदोश,
जिसका कोई नियत स्थान न हो । पु० सम्न्यासी, परि-
त्राजक; अश्वमेधका घोड़ा; जरतार पुत्रि; ब्राह्मण ।

वायी(विह)-वि० [सं०] जानेवाला ।

वार-पु० [का०] भित्र; प्रेमी; परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला;
साथी; सहायक; हिमायती । -बाध-वि० सबसे दोस्ती
लगानेवाला । -झार-वि० मित्रवचक, मित्रकी लूटने
वाला । -र(र)शास्त्रि-पु० पका; गहरा दोस्त ।

वारजंड-पु० [पु०] कालीनका एक प्रकारका बेल-बूटा;
चीनी दुक्खिलानका एक नगर ।

वाराना-पु० [का०] मैत्री; अनुचित प्रेम (खी-पुरुषका) ।
वि० मित्रका-सा, मित्रताका ।

वारी-खी० मैत्री, मित्रभाव ।

वार्यावन-पु० [सं०] यकी गोत्रमें उत्पन्न पुरुष ।

वाल-खी० [पु०] घोड़ेकी गर्दनपरके बाल, अवाल ।

वाव-पु० [सं०] जौका सत्तू; छाख; महावर । वि० जौसे
बनाया हुआ, जौका ।

वावक-पु० [सं०] जौ; जौका सत्तू; जौकी बनी हुई
बस्तु; छाख; अलक्तक, आलता, महावर; माछी धान;
उकड़; बेरो यान ।

वावज्जीवन-अ० [सं०] जीवनपर्यंत, आजीवन ।

वावर्-वि० [सं०] जितना; सव । अ० जहाँतक; जबतक
(यह 'तावर्'के साथ आता है) ।

वावन-पु० [सं०] जीवान । वि० यवनका, यवन-संबंधी ।
-कक्क-पु० शिलारस ।

वाववक-पु० [सं०] काक अंडी, रक्त परंज ।

वाववाळ-पु० [सं०] मक्का, जुआर ।

वाववाळी-खी० [सं०] मक्केसे बनायी हुई चीनी ।

वावकी-खी० [सं०] करकशाकि नामक ईल । वि० खी०
यवन-संबंधी ।

वावर-वि० [का०] सहायक; हिमायती; मित्र ।

वावरी-खी० सहायता; मित्रता; हिमायत; सहारा ।

वावशुक-पु० [सं०] जवाहार ।

वावस-पु० [सं०] वासका देश बंटलका पूजा, भूसा १० ।

वावा-खी० [का०] बेहूरा नाँव ।

वावास-पु० [सं०] जवासेकी झरना ।

वाविक-पु० [सं०] मक्का, जुआर ।

वाविहोत्र-पु० [सं०] यज्ञ ।

वावी-खी० [सं०] संक्षिनी; सबतिका लता ।

वावु-पु० [सं०] आश्विन, परिरंजन; संभोग ।

वाहीक-पु० [सं०] कठैत ।

वास-पु० [सं०] प्रवास, चेष्टा; काल बयासा । खी० [अ०]

नैराश्य, मायूसी; सव, अंदेश ।

वासमन, वासमीन-खी० [का०] नमेकी ।

वासा-खी० [सं०] कौवल; मैना ।

वासीन-खी० [अ०] वाच्यार्थ, कुरानकी एक सुरत जो
इसी शब्दमें आरंभ होती है ।

वासु-सर्व० दे० 'जासु' ।

वास्क-पु० [सं०] वस्त्र गोत्रज पुरुष; निरुक्तके प्रणेता
वास्क-मुनि ।

वास्कायनि-पु० [सं०] वास्कके गोत्रमें उत्पन्न पुरुष ।

वाहि-सर्व० इसकी ।

वाहू- [का०] दे खुदा । पु० एक प्रकारका कव्चर जिसके
मुँहमें ऐसी 'वाहू-वाहू' ध्वनि निकलती है ।

वाहवु-वि० [सं०] पूजाकी या यज्ञकी इच्छा करनेवाला ।

वाियसु-वि० [सं०] योगी; योगेष्ठ्यम् ।

वायासा-खी० [सं०] जानेकी इच्छा ।

वायु-पु० ईसा मसीह ।

वुआन-पु० [सं०] सारथि; ब्राह्मण; अम्न्यासी योगी ।

वुआनक-पु० [सं०] वुआन योगी ।

युक-पु० [सं०] एक मान (चार हाथ लंबा); दैवत मनुके
एक पुत्रका नाम; योगी । वि० जुड़ा हुआ, जकड़ा हुआ;
उचित; संयुक्त, सहित; नियुक्त; मिलित; निपुण, चतुर ।
-कर्मा(मैर)-वि० जिते कोई काम सौंपा गया हो ।
-अना(नस्)-वि० दत्तचित्त । -रथ-पु० एक
औषध-योग । -रसा-खी० गंधरास्ना, रास्ना, रासन ।
-रूप-वि० उचित, अनुरूप । -श्रेयसी-खी० माकुली
कंद; गंधरास्ना ।

युका-खी० [सं०] श्लापणी; एक वृत्त ।

युकाहार-पु० [सं०] संयुक्त वर्ण, मिलित वर्ण ।

युकावस-पु० [सं०] जोहेका एक प्राचीन शस्त्र ।

युकार्थ-वि० [सं०] अर्थयुक्त; अर्थगर्भ ।

युकाहार-पु० [सं०] उचित आहार । वि० उचित आहार
करनेवाला ।

युकि-खी० [सं०] योग, मिलन; तर्क; कहा; दलील,
उचित विचार; हेतु, कारण; न्याय, भेति; कौशल,
चातुर्य; अनुमान; उपाय, योजना; बाल, रीति; एक
अर्थकार जहाँ अपना मर्म छिपानेके लिए किसी क्रिया या
उपाय द्वारा दूसरेको धोखा दिया जाय । -कर-पूर्ण-
वि० तर्कके अनुकूल; विचारपूर्ण । -युक्त-वि० युक्तिपूर्ण,
उचित; चतुर; प्रमाणित, सिद्ध । -संगत-वि० युक्ति या

तर्कने अनुकूल ।

सुगंधर-वि० [सं०] जूना धारण करनेवाला । पु० हरिश्च, कृष्ण; गांधीका वस्त्र; दूधिके पुत्र, सात्वतिके पौत्र; एक पर्वतका नाम; कलका एक मंत्र ।

सुग-पु० [सं०] सुगम, जोषा; पीढ़ी, पुरुष; विस्तारपर बड़ी जानेवाली पासेकी गोळ गोठियाँ; पासेके खेलकी वे दो गोठियाँ जो साथ ही एक धरमें आ जायें; बृहस्पतिक एक राशिमें स्थित रहनेका पंचवर्षीय काल; समय, काल; जमाना; पुराणमतसे कालका सुदीर्घ परिमाण; सत्य, नेता, दारपं, कलियुग;(गांधीका) जूना । वि० दोकी संख्यावाला । -**कीलक**-पु० सैला, बग और जूके भिडे छेदोंमें बांधी जानेवाली लकड़ी । -**क्षय**-पु० सुगका अंत । -**धर्म**(इ)-पु० जुगाडमें क्या हुआ दुबारा चमका । -**चैत्रना**-की० कालविशेषकी विशिष्ट प्रवृत्ति । -**धर्म**-पु० समय-नुकूल आचरण, व्यवहार । -**व**-पु० गंधर्व । -**वृ**-अ० एक जूमें, अलग-अलग; साथ-साथ, एक साथ, एक समय । -**वृ**-पु० वह वृक्ष जिसकी पत्तियाँ ढंठकपर आनेसे-सामने हों; कचनार, कोविदार; पहाड़ी जान-नृत । -**प्रतिष्ठा**-की० शोधका पेश । -**पुरुष**-पु० सुगका महान्, भेद पुरुष । -**प्रतीक**-पु० सुगका प्रति-निधि, भेदतम पुरुष । -**बाहु**-वि० लंबी भुजावाला, जिसकी भुजाएँ जूके समान दीर्घ हों । -**सुग**-अ० बहुत दिनोंतक । -**ज**-पु० जोषा, सुगम । वि० वह जो दोकी संख्यामें हो ।

सुगति-की० दे० 'सुति' ।

सुगम-पु०, वि० दे० 'सुगम' ।

सुगलक-पु० [सं०] जोषा; पक्षीका वह जोषा जिसका एक साथ अन्य हो ।

सुगलक्य-पु० [सं०] बहल वृक्ष ।

सुगांत-पु० [सं०] सुगकी समाप्ति; प्रलय ।

सुगांतक-पु० [सं०] प्रलय; प्रलयकाल ।

सुगांतर-पु० [सं०] अन्य सुग; दूसरा समय । सु० -**करना**-आमूल परिवर्तन कर देना; समय, प्रया बदल देना ।

सुगांतक-पु० [सं०] बर्ष, साल । वि० सुगकी विभक्त करनेवाला ।

सुगाति-पु० [सं०] सचिका प्रारंभ; सुगका पहला दिन । वि० सुगके आरंभका, पुराना । -**कृ**-पु० शिव ।

सुगाधा-की० [सं०] सुगारंभकी तिथि, वह तिथि जिससे सुग आरंभ हुआ । वैशाख-शुक्ल तृतीया सत्ययुग, कार्तिक-शुक्ल नवमी त्रेतायुग, भाद्र-कृष्ण त्रयोदशी द्वापरयुग और पौष-आमावस्या कलियुगके आरंभकी तिथि हैं ।

सुगाध्या-पु० [सं०] प्रजापति; शिव ।

सुगाधसार-पु० [सं०] सुगका अनतारी, महान् पुरुष; सुगलरूप पुरुष ।

सुगोष्ठा-पु० [सं०] बृहस्पतिके साठ वर्षोंके राक्षिकक्रमें गतिक्रमसे पॉच-पॉच वर्षोंवाले सुगोंके बारह अधिपति ।

सुगौरव-पु० [सं०] एक तरहकी सैन्य व्यवस्था ।

सुधम-पु० [सं०] जोषा; अन्योन्याभय-संघर्षयुक्त वस्तुएँ,

इंद्र; कुलकका एक मेर, सुगलक; मिथुन राशि । वि० दोकी संख्यावाले (व्यक्ति, पदार्थ आदि) । -**क्षरी**(रिन्)-वि० जोहमें चकने, घूमनेवाले । -**ज**-पु० जुबों बने, यमज, यमल । वि० जोहके रूपमें उत्पन्न । -**धर्मा**(मंन्)-वि० समागत; मिलनशील, मिथुन-धर्मा । -**वृ**-पु० कचनार; भोजपत्र; सतिवन, छति-वन, गुग्गुपर्ण । -**पर्णा**, -**कला**-की० वृक्षिकाणी । -**ककिनी**-की० दुधिया, दुडी । -**सुग**-पु० अँखकी पुतलीमें घरे हुए दो फंदेद विपु ।

सुगम-पु० [सं०] जोषा, सुगम ।

सुगमांजन-पु० [सं०] सोतांजन और सौवीरांजनका संघात ।

सुगमेध-की० [सं०] संयोगकी इच्छा ।

सुग-पु० [सं०] जोषी, वह गांधी जिसमें दो बीजे वा बैठ जुते; दो पशु जो एक साथ गांधीमें जुते; जोषी । वि० जोते जाने योग्य; जोता जानेवाला । -**बाह**-पु० गांधी-वान; जोरी हाँकनेवाला ।

सुग-पु० [सं०] संयोग, मिलाप; एक प्रकारका साम । वि० मिला हुआ; मिलावने योग्य; उचित ।

सुत-पु० [सं०] चार हाथकी एक नाप । वि० सुक, मिला हुआ; सहित । -**वेध**-पु० एक योग जिसमें चंद्रमा पापग्रहसे सातवें स्थानमें या पापग्रहके साथ होता है ।

सुतक-पु० [सं०] जोषा; अचल; एक प्राचीन परिधान; सपके दोनों ओरके उठे हुए किनारे; मैत्रीकरण; संश्रय; संरिह ।

सुति-की० [सं०] मिलन, मिलाप, योग; गांधीमें बीजेकी पॉचनेकी रस्ती; नाथा जिससे जूधा और हरिसकी एक-में जोकते हैं ।

सुद-पु० [सं०] परस्पर अभिधातके लिए शूल-प्रहारका क्रम, संग्राम, लड़ाई, रण । -**कारी**(रिन्)-पु० योद्धा ।

वि० सुद करनेवाला । -**काल**-पु० सुदका समय । -**क्षेत्र**-पु० दे० 'सुदभूमि' । -**गांधर्व**-पु० सुदके गाने । -**पोत**-पु० (वारशिप) लड़ाईके काम आनेवाला जहाज, रणपोत । -**प्रवीण**-वि० सुदकी कलामें दक्ष ।

-**प्रास**-पु० सुदवंदी; एक प्रकारका दास, ध्वजाहत । -**वंदी**(रिन्)-पु० लड़ाईमें पकड़ा गया शत्रुपक्षका आदमी । -**वंदी**-की० लड़ाईका बंद होना । -**भू**, -**भूमि**-की० रणक्षेत्र, जिस स्थानपर सुद हो । -**अंजी**(रिन्)-पु० सुदविभाग या सुदकार्यका संचालन करने-

वाला मंत्री । -**मार्ग**-पु० सुदकी पद्धति । -**सुधि**-पु० सप्रसेनका एक पुत्र । -**रंश**-पु० सुदलक्ष; बंदानन, कापिकेय । -**वर्ण**-पु० सुदका प्रकार-विशेष । -**विद्या**-

-**की०**, -**शास्त्र**-पु० सुदका शास्त्र, विद्यान । -**वीर**-पु० सुद करनेवाला पराक्रमी व्यक्ति; वीररसके नायकका एक मेर (सा०) । -**क्षति**-की० सुद करनेकी क्षति । -**शाकी**(रिन्)-वि० सुदप्रेमी, सुद पसंद करनेवाला ।

-**सार**-पु० जोषा ।

सुदक-पु० [सं०] योद्धा; युद्ध; युद्धकारी विमान (भा०) ।

सुदम-वि० [सं०] सुदप्रिया सुद-संबंधी ।

युद्धाचार्य-पुं० [सं०] युद्ध-विद्याकी शिक्षा देनेवाला ।
युद्धाभि-पुं० [सं०] एक ऋषि ।
युद्धोन्मत्त-पुं० [सं०] एक राक्षस, महोत्तर । वि० युद्ध-
 के लिए पागल; युद्धमें आतमविस्मृत ।
युद्धाधीति-पुं० [सं०] एक ऋषि ।
युद्धाभि-पुं० [सं०] दे० 'युद्धाभि' ।
युद्धाभि-पुं० [सं०] केमराजका पुत्र, भरतका मामा;
 राजा भीष्मका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र ।
युद्धाय-पुं० [सं०] शत्रु; क्षत्रिय ।
युद्धामन्द-पुं० [सं०] पांडवपक्षका एक वीर ।
युद्धासर-पुं० [सं०] नंदका एक नाम ।
युद्धिक-वि० [सं०] लड़नेवाला; योद्धा ।
युद्धिष्ठिर-पुं० [सं०] कुंतीसे उत्पन्न पांडुके सबसे बड़े
 पुत्र, धर्मराज, धर्मपुत्र ।
युध्य-पुं० [सं०] धनुष; अस्त्र-शस्त्र; बाण; युद्ध; योद्धा ।
युध्य-वि० [सं०] युद्धके योग्य, जिससे युद्ध किया जा
 सके ।
युनिवर्सिटी-स्त्री० दे० 'यूनिवर्सिटी' ।
युपित-वि० [सं०] पिटाया हुआ; हटाया हुआ; भ्रांत;
 दुःखित ।
युयु-पुं० [सं०] घोड़ा ।
युयुस्वर-पुं० [सं०] एक तरहका छोटा बाघ ।
युयुक्षमान-वि० [सं०] ब्रह्मलीन होनेका इच्छुक; मिलन,
 संयोगका इच्छुक ।
युयुस्ता-स्त्री० [सं०] युद्धकी इच्छा; वैरभाव, शत्रुता ।
युयुस्तु-पुं० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० युद्धकी
 इच्छुक, लड़नेकी इच्छा रखनेवाला ।
युयुधान-पुं० [सं०] योद्धा; क्षत्रिय; हठ; सात्वतिका एक
 नाम ।
युरोप-पुं० दे० 'यूरोप' ।
युरोपियन-पुं०, वि० दे० 'यूरोपियन' ।
युव-युवन्का समासगत रूप । -लक्षति-वि० त्रिसे
 जवानोंमें ही खल्वाट रोग हो गया हो । -गर्ह-पुं०
 मुँहासा । -जर्त-वि० जवानोंमें ही बूढ़ा दिखाई पड़ने-
 वाला । -पक्षित-वि० जिसके बाल जवानोंमें ही लफेट
 हो गये हों । -पिठिका-स्त्री० मुँहासा । -राहू-
 स्त्री० युवराजका पद । पुं० दे० 'युवराज' । -राज-पुं०
 राज्यका उत्तराधिकारी राजकुमार । -राक्षी-स्त्री०
 [वि०] युवराजका पद; [सं०] युवराजकी पत्नी । -राक्षी-
 स्त्री० वह युवती (ब्येड कन्या) जो युवराजका पद ग्रहण
 करे (जैसे ब्रिटेनमें प्रिंसेज आफ वेल्स) । -रानी-स्त्री०
 [वि०] दे० 'युवराक्षी' । -हा(हृय)-पुं० बालहंता, बाल-
 हत्या करनेवाला ।
युष्क-पुं० [सं०] तरुण, जवान, सीलहस्ते तीस वर्षकी
 अवस्थाका मनुष्य ।
युवति; **युवती**-स्त्री० [सं०] जवान स्त्री; हल्दी; भिरंगु;
 सोनझड़ी ।
युवतीछा-स्त्री० [सं०] सोनझड़ी, स्वर्णयूषिका ।
युवनायक-पुं० [सं०] प्रेमनवित्तका पुत्र और मांभाताका
 पिता ।

युष्मन्-वि० [सं०] जवान, तरुण ।
युवा(वन्)-वि० [सं०] तरुण, जवान ।
युवान-वि० तरुण ।
युवानक-वि० [सं०] दे० 'युवान' ।
युष्मदीय-वि० [सं०] तुम्हारा ।
यू-अ० दे० 'यो' ।
यू-स्त्री० [सं०] दासका जूत ।
यूक-पुं० [सं०] जूँ; चीलर । -लिक्षा-स्त्री० जूँका अंडा,
 लीछ ।
यूका-स्त्री० [सं०] जूँ जो सिरके बालोंमें होती है; छट्मल
 गूलर; अजवायन; एक परिमाण, यवका अष्टमांश, लिक्छासे
 अठगुना ।
यूत-पुं० दे० 'युति' ।
यूति-स्त्री० [सं०] मेल, मिश्रण, मिलावट ।
युध-पुं० [सं०] सत्रातीय जीवोंका समूह, समुदाय, झुंड;
 सेना, पौत्र । -य-पुं० एक देववर्ग । -यारी(रिश्)-
 वि० झुंडमें चलनेवाला (बंदर, हाथी, हिरन आदि) । -
 नाथ, -प, -पति, -वाल-पुं० झुंडका स्वामी, नेता;
 सेनाध्यक्ष । -बंघ-पुं० सेनाकी एक टुकड़ी, समूह ।
 -झट-वि० युद्धमें निकला या निकला हुआ । -मुख्य-
 पुं० सेनाकी किसी टुकड़ीका प्रधान ।
यूयक-पुं० [सं०] दे० 'यूय' ।
यूयिका, **यूयी**-स्त्री० [सं०] बूढ़ी (फल, पौधा) ।
यूनक-पुं० गरीकी लकी ।
यूनान-पुं० [ग्रीक-भाषीयों] यूरोपका एक देश जो
 प्राचीन कालमें अपनी शूरता, सम्पत्ता और संस्कृतिके लिए
 विशेष प्रसिद्ध था (यूनान शब्द आयोनिवासे बना है जो
 इस देशका एक द्वीप है) ।
यूनानी-पुं० यूनानका नागरिक । स्त्री० यूनानकी भाषा;
 यूनानकी शिक्षा-प्रणाली, इकोमी । वि० यूनान देशका;
 यूनान-संबंधी ।
यूनिवर्स-स्त्री० [अ०] सच, सभा । -जेक, -छेना-पुं०
 ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंडका संयुक्त राष्ट्रीय झंडा ।
यूनिवर्सिटी-स्त्री० [अ०] विविध विषयोंके शिक्षण, परी-
 क्षण या दोनोंकी व्यवस्थाके लिए स्थापित शिक्षा-संस्था जो
 प्रायः कालेजों आदिका भी नियमन करती है, विद्यापीठ,
 विद्वद्विद्यालय ।
यूनीफार्म-पुं० [अ०] किसी विशेष संस्थाकी विशेष
 पोशाक ।
यूप-पुं० [सं०] वहका वह स्तंभ जिसमें बलिपशु बाँधते
 थे; वह स्तंभ जो यक्की समासिका चिह्न होता है; विजय-
 स्तंभ । -कटक-पुं० यूपके सिरे, आधारपरका लकड़ी या
 लोहेका कण । -कण-पुं० यूपका पीसे सिक भाग । -
 केतु-पुं० भुरिम्बा । -केशी(शिर)-पुं० एक राक्षस ।
 -खर-पुं० [वि०] वह गध्वा जिसमें यूपका आरोपण
 हो । -खड्ग-पुं० यूप काटनेका कार्य । -बाह-पुं०
 यूपकी लकड़ी; काष्ठ । -हु, -हुम-पुं० खैरका पेड़ ।
 -ध्वज-पुं० वह । -अध्व-पुं० यूपका मध्य भाग ।
 -यूकी(जंघ)-पुं० यूपका सिर । -लक्ष्य-पुं० एक
 पक्षी । -बाह-वि० यूप ले जानेवाला । -वेहन-पुं०

पृथकी एकनेवाला वस्त्र ।--संस्कार-पुं० पृथकी स्थापना, प्रतिष्ठा ।

पृथक्-पुं० [सं०] पृथक् लक्ष्मियों के भेद, प्रकार ।

पृथंग-पुं० [सं०] पृथक्-संबंधी कोई भी वस्तु ।

पृथाक्ष-पुं० [सं०] एक राक्षस ।

पृथाहुति-स्त्री० [सं०] पृथकी स्थापनाके समयका एक संस्कार ।

पृथोहार्य-पुं० [सं०] पृथकी स्थापनाका उत्सव ।

पृथ्व-पुं० [सं०] पलाश ।

पृथ-पुं० दे० 'पृथो' ।

पृराख-पुं० एक पहाड़ । स्त्री० पृरोप-पश्चिमाक्षी सीमापरकी एक नदी ।

पृरेनस-पुं० [मी०] एक ग्रीक देवता; ग्रहविशेष (हशेल-आविष्कृत) ।

पृरेनियम-पुं० [अ०] एक भारी और शूभ्र धातु-समूह जो पानीसे १८^० गुना भारी होता है ।

पृरेशियन-पुं० [अ०] पृरोप+पश्चियन) जिनके माँ-बापमेंसे कोई एक पश्चिमाक्षी तथा दूसरा पृरोपका हो ।

पृरोप-पुं० [अ०] पूर्वी गोलार्द्धका सबसे छोटा महाद्वीप जिसके उत्तर आर्कटिक, पश्चिम अटलांटिक, दक्षिण भूमध्य-सागर तथा पूर्वमें काकेशस और ब्राह्म पर्वत हैं ।

पृरोपियन-पुं० [अ०] पृरोपके किसी देशका नागरिक । वि० पृरोपका; पृरोप-संबंधी ।

पृरोपीय-वि० पृरोपका; पृरोप-संबंधी ।

पृथ-पुं० [सं०] दाल इत्यादिका पानी, जूस, शोरबा; शहदका पेय ।

पृथुङ्ग-पुं० [अ०] याकूबका सुंदरतम लकड़ा जिसे उसके भाईने ईश्वरसे मिली सीदागरके हाथ देच दिया था जहाँ बादमें वह बहुत प्रतिष्ठित पदपर पहुँचा ।

पृथ-पुं० समूह; कुटुंब; सेना ।

ये-सर्वं वह सब, सर्वनाम 'यह'का बहु० ।

येहूँ-सर्वं यही ।

येऊँ-सर्वं यह भी ।

येतोह-वि० इतना ।

येन-सर्वं [सं०] जिससे । -केन प्रकारेण-जिस किसी भी तरहसे ।

येन-पुं० [जा०] जापानकी मुख्य शृङ्गा ।

येमन-पुं० [सं०] जर्मना, ज्ञाना ।

येह-सर्वं दे० 'यह' ।

येहू-अ० यह भी ।

यी-अ० इस प्रकार । -ही-अ० इसी रूपमें; इसी तरहसे; निष्प्रयोजन, बेमतलब ही ।

यी-सर्वं यह ।

योक्थ-वि० [सं०] जोड़ने योग्य; मिलुक करने योग्य ।

योक्थ(स्यु)-पुं० [सं०] जोड़ने, मिलाने या बाँधनेवाला; बाँधीमाना; उभाड़नेवाला, उद्योजित करनेवाला ।

योक्थ-पुं० [सं०] रस्ती; वह रस्ती जिससे गाड़ीका बैल चुरमें बँधा हो; रस्ती बाँधनेका पैय, औजार ।

योर्गवर-पुं० [सं०] योक्थ; मंत्र जो लकड़-खकोंके छोपनके लिए प्रयुक्त होता था ।

योग-पुं० [सं०] जोड़नेका कार्य (अ०); संयोग; संघर्ष, संघर्ष; युक्ति, उपाय; नियम, विधान; धृष्ट; उपयुक्तता; परिणाम; कौशल; बचीकरण; गाड़ी; वाहन; कवच काम; धन; व्यवसाय; औषध; ध्यान; संगति; छल; विश्वासपात; सञ्जनाइके लिए आवेजित वन, मंत्र, पूजा, छल, कपट आदि युक्तियाँ; दूत; दूतमाला; दूतयोग; चित्तशुद्धिका निरोध; मोक्षका उपाय; प्रेम; प्रयोग; मेल-मिलाप; वैराग्य; नाम; नाम आदि श्रुत काळ; साम आदि चार प्रकारके उपाय; सहयोगिता; ज्योतिषमें प्रधान नक्षत्र युक्ति, प्रयोग, अभिचारिक अनुष्ठान जो बारह है, योग, उत्तरा-पतरा; उत्सव, पर्व (स्नान आदिका); संपत्तिका लाभ और ह्रास; एक छंद; चंद्र-सूर्यकी विशेष स्थिति के कारण होनेवाले फलित ज्योतिषके विशिष्ट काळ; विशिष्ट तिथिसे, बारी और नक्षत्रोंका निश्चित नियमसे पढ़ना; अष्टांग योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधिका अंतर्भाव है; इत्येवम् । -कन्या-स्त्री० बशीराकी कन्या । -कुंडलिलिनी-स्त्री० एक उपनिषद् जो प्राचीन नहीं मानी जाती । -क्षेम-पुं० अलम्ब वस्तुका लाभ और लम्ब वस्तुकी रक्षा करना; राष्ट्राका सुप्रबंध; काम; कल्याण, भंगल; निर्वाण, शांति; दूसरेकी धन-संपत्तिकी रक्षा; वह वस्तु जो उत्तराधिकारियोंमें न बँटे । -गति-स्त्री० ऐक्यकी स्थिति; परस्पर संयुक्त होना । -गामी(मिन्)-वि० योगबलसे जानेवाला (बायुमार्गसे) । -गच्छ(स्)-पुं० ब्राह्मण । -घर-पुं० इन्सान् । -वर्ण-पुं० जादू, दिखानेवाली युक्तनी । -ज-वि० योगसे उत्पन्न । पुं० योग-साधनकी एक अवस्था; अगर लक्ष्मी । -कल-पुं० जोड़, अंकोंके जोड़नेसे प्राप्त फल । -सत्य-पुं० योगके सिद्धांत; एक उपनिषद् । -तारा-पुं० परस्पर मिले हुए तारे; किसी नक्षत्रका प्रधान तारा । -वर्ष-पुं० महर्षि पतञ्जलिकृत योगशूत्र । -दान-पुं० योगदीक्षा; सहयोग करना, हाथ बँटाना; कपटदान । -जर्म(मिन्)-पुं० योगी । -धारणा-स्त्री० ध्यानकी एकाम स्थिति । -धारा-स्त्री० ब्रह्मपुत्रकी एक सहायक नदी । -नंद-पुं० मगधके नौ नंद राजाओंमेंसे एक । -माद्य-पुं० शिव । -माविक-पुं० एक मछली । -निद्रा-स्त्री० समाधि-निद्रा; अर्द्ध समाधि और निद्रा; युगके अंतमें प्रलयकाळकी विष्णु-निद्रा जो दुर्गा मानी गयी है; योगकी समाधि; युरोपमें धीरोंकी शृङ्खला । -निद्राशु-पुं० विष्णु । -निलय-पुं० महादेव । -पह-पुं० एक प्राचीन परिवान जो पीठसे घुटनोंतक होता था; जैकला (साधुओंका) । -पति-पुं० शिव; विष्णु । -पानी-स्त्री० योगकी पत्नी; धीरवीर; योगमाता । -पथ-पुं० योगकी ओर ले जानेवाला मार्ग । -पद-पुं० चार अंगुल चौड़ा एक प्रकारका उत्तरीय जो पूजनादि अवसरोंपर उपवीर्यके समान धारण किया जाता था और दाघ, हिरनके चमड़े या सूतका होता था । -पाद-पुं० कयोष्टदायक कृत्य (जी०) । -पारंग-पुं० सिद्ध योगी, पूर्ण योगी; शिव । -पीठ-पुं० योगकी योग्य आसन; देवीका योगासन । -पुरुष-पुं० स्वार्थ-सिद्धिके लिए साधु हुआ आदमी (की०) । -कल-पुं० जोड़नेसे

प्राप्त कर। —**बल**-पु० तपोबल; योग-साधनसे अर्जित अलौकिक शक्ति। —**ब्रह्म**-वि० (ब्रह्म योगी) जिसका योग पूर्ण न हुआ हो, योगमार्गसे व्युत्त। —**माता**(तु)-**स्त्री**० पीवरी; दुर्गा। —**माया**-**स्त्री**० सूक्ष्म समाधिसे अलौकिक शक्ति; विष्णुकी शक्ति, भगवती; यशोदाकी कन्या। —**मूर्ति**-**धर**-पु० एक प्रकारके पितर; शिव। —**वाज्ञा**-**स्त्री**० योगकी वाज्ञा; ब्रह्मवाज्ञा जिसमें परमात्मासे योग हो; वाज्ञाके अनुकूल योग (क० ज्यो०)। —**युक्त**-वि० योगरत, योग-रूपन। —**युक्ति**-**स्त्री**० योगकी आसक्ति; गंभीर समाधिमें लीन होना। —**योगी**(गिन्)-पु० योगासीन योगी। —**रंश**-पु० नारंगी। —**रथ**-पु० योग प्राप्त करनेवाला साधन। —**राजगुमुकु**-पु० गुग्गुलु-प्रधान एक औषध जो पाठिया, वातरीग, लकड़-बादिरमें उपकारक है। —**रुद्धि**-**स्त्री**० दो शब्दोंके योगसे बना शब्द जिसमें युक्त शब्द अपने सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ देते हैं—जैसे पच-बाण। —**रोचना**-**स्त्री**० एक वैद्व्यात्मिक रूप (रसको रूपांशे) बालमें अध्यय होनेकी शक्ति आ जाती है, ऐसा माना जाता है। —**बाणी**-**स्त्री**० विमालयका एक तीर्थ। —**वासिष्ठ**:-**वासिष्ठ**-पु० एक वेदांत-ग्रंथ जो बसिष्ठनिमित्त कहा जाता है (कुछ लोग वासुकीश्वर रामायणके अंतर्गत मानते हैं)। —**बाह**-पु० अनुस्वार और विसर्ग। —**बाही**(हिन्)-पु० औषध, द्रव्य जो कई औषधियोंकी एकमें मिलने योग्य करे; योगका माध्यम; सज्जीव्यार पारा। —**विक्रय**-पु० कपटपूर्ण विक्रय। —**विद्**-पु० योगका हानी; शिव; औषधियोंके योगसे औषध बनानेवाला; बाजीगर, वैद्व्यात्मिक। —**वृत्ति**-**स्त्री**० योग द्वारा प्राप्त चित्तकी शुद्ध वृत्ति। —**व्रात्ति**-**स्त्री**० योग-साधनसे प्राप्त शक्ति, तपोबल। —**शब्द**-पु० सामान्य अर्थ देनेवाला, योगिक शब्द। —**क्षरीरी**(विन्)-पु० योगी। —**क्षान्**-पु० पतनजि क्रियुक्त योग-विषयक ग्रन्थ, छः शास्त्रोंमेंसे एक (इसमें चित्रवृत्तिके निरोधका सांगोपांग विवेचन है, तत्त्वकल्पनामें यह प्रायः सांख्यका अनुगामी है। केवल इसमें एक अधिक तत्त्व है, पुरुषविशेष। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधिका इसमें विज्ञान और चिन्तन निरूपण है)। **शास्त्री**(विन्)-पु० योगशास्त्रका हाता। —**शिक्षा**-**स्त्री**० एक उपनिषद्। —**स्वप्न**-पु० किसी योगके कारण पंचा हुआ नाम—जैसे दंडसे दंडी। —**सार**-पु० सदाके लिए रोगमुक्त करनेवाले उपाय, साधन (भिन्न क्रतुओंमें भिन्न पदाधिकार इसमें त्याग और संयम है)। —**सिद्ध**-वि० (योगी) जिसका योग पूरा हो चुका हो। —**सिद्धि**-**स्त्री**० योगकी सफलता। —**सूत्र**-पु० पतंजलि-प्रणीत सूत्रोंका संग्रह। —**स्थ**-वि० योगमें लगा हुआ। **योगसूत्र**-पु० [सं०] विष्णु। **योगवाक्**(वच)-पु० [सं०] योगी। [स्त्री० 'योगवती']। **योगी**-पु० [सं०] योगके अंग (यि आठ है—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि)। **योगीजन**-पु० [सं०] सिद्धांतन (कहा जाता है कि इसने रूपांशेसे भूगर्भस्थ वस्तुओंका दर्शन होता है); नेत्र-रोगी-को दूर करनेवाला अंजन, प्रछेप। **योगीश**-पु० [सं०] वन सात भागोंके नाम जिनमें मंगल

ग्रहकी कक्षाएँ विभक्त हैं (पा० सं०)। **योगीश्वर**-पु० [सं०] योगके विघ्न, योगके लिए विघ्न-कारक आकस्मादि। **योगीश**-**स्त्री**० [सं०] मुषकी गति जो आठ दिन रहती है और मूत्र, पूर्वापाद तथा उत्तरापाद नक्षत्रोंकी क्रांति करती है। **योगीश्वर**-पु० [सं०] एक लोक देवता। **योगी**-**स्त्री**० [सं०] सीताकी एक सखी। **योगाकर्षण**-पु० [सं०] परमाणुओंकी अविभाज्य रूपसे मिलनेवाली आकर्षण-शक्ति। **योगागम**-पु० [सं०] योगशास्त्र। **योगाचार**-पु० [सं०] शैक्षिक एक दार्शनिक संप्रदाय जिसमें वाक्पाठका निषेध किया गया है और समग्र प्रपञ्च चित्तका विविध परिणाम मात्र माना जाता है, विज्ञान-वाद; योगका आचरण। **योगात्मा**(मन्त्र)-पु० [सं०] योगी। **योगानुशासन**-पु० [सं०] योगशास्त्र। **योगावृत्ति**-**स्त्री**० [सं०] रीति-नीति, प्रथाओंके कारण होने-वाला संस्कार। **योगाभ्यास**-पु० [सं०] योगसाधन, योगके अंगोंका यथा-विधि अभ्यास। **योगाभ्यासी**(सिद्ध)-वि० [सं०] योगसाधन करनेवाला। पु० योगी। **योगार्णव**-पु० [सं०] नारंगी। **योगाराधन**-पु० [सं०] योगाभ्यास करना, योग-साधन। **योगारूढ**-वि० [सं०] बीतराज। पु० निष्काम योगी। **योगासन**-पु० [सं०] योगनिर्दिष्ट बैठनेकी विधि। **योगित**-वि० [सं०] जिसपर प्रयोग (अभिचार) किया गया हो; संभावित, जादू मारा हुआ; पागल किया हुआ। **योगित**-**स्त्री**० [सं०] योगित्व; स्थिति। **योगित्व**-पु० [सं०] योगी होनेका भाव वा किया। **योगिनी**-**स्त्री**० [सं०] रणविशालिनी; दुर्गाकी सखी, चौसठ देवियाँ; तपस्विनी, योगाभ्यासिनी; योगमाया; माषाद-कृष्णा एकादशी; आठ विशेष देवियाँ—ब्रह्मणी, माहेश्वरी, कामारी, नारायणी, वाराही, इंद्राणी, वासुंदा और महालक्ष्मी (ज्यो०); विशेष तिथिमें विशेष दिशामें स्थित योगिनी। —**यम**-पु० योगिनीकी स्थितिका निर्देशक ज्योतिष्यक। **योगिया**-पु० एक राग जिसमें गांधार छोड़कर शेष स्वर कोमल लगते हैं। **योगीन्द्र**-पु० [सं०] सर्वश्रेष्ठ योगी। **योगी**(गिन्)-वि० [सं०] जुड़ा हुआ, संबंधयुक्त; संबन्धी। पु० अलौकिक शक्तिसंपन्न पुरुष; आत्मब्रह्मानी, सुख-दुःखादिमें सम रहनेवाला; योगसिद्ध, सिद्ध पुरुष; नारंगी; महादेव। —(ति)कुंज-पु० एक तीर्थ। —**दंड**-पु० बेंत। —**नाथ**-पु० शिव। —**निद्रा**-**स्त्री**० हृषीकी, हलकी नीद्र। —**राज**-पु० दे० 'योगीन्द्र'। **योगीश**, **योगीश्वर**-पु० [सं०] योगिराज, सर्वश्रेष्ठ योगी; वाक्पल्लवका नाम; शिव। **योगीश्वरी**-**स्त्री**० [सं०] दुर्गा।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] एक प्रकारका रस (आ० वे०); महान् योगी ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] सिद्ध, योगीश्वर; कृष्ण; शिव; देवहीनके पुत्रका नाम; एक तीर्थ; नौ सर्वभेद योगी (कवि, हरि, भंतिरि, मनुज, विष्णुकावन, आदिहोत्र, दुमिल, चमत् और करमाजन) ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] दुर्गाका एक रूप, शास्त्रोंकी देवी; दुर्गा; कलिका ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] एक धातुसे दूसरी धातु या उसी धातुका योग करनेका साधन (सीसा) ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] एक उपनिषद्; गुप्त रूपसे तथा छल-रूपसे शत्रुनाशकी युक्ति ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] पात्र, अधिकारी, लायक; भेद, शीलवान्; उचित; जोड़ने लायक; सुंदर; आदरणीय; जोड़ने लायक; समर्थ; निपुण । पु० रथ, गाड़ी; पुण्य नक्षत्र; कवि नामकी ओषधि; चंदन ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] उपयुक्तता; क्षमता; बुद्धिमान्; प्रतिभा; कौशला; अनुकूलता; बावके तीन तात्पर्यबोधक गुणोंमेंसे एक; शब्द अर्थ-संबंधकी संभवनीयता ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] युवती; अन्वयास; श्रव्यक्रियाका अन्वयास (संयुक्त) ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] युष्मिकी बह पतका भाग जो दो बड़े भुजोंमेंसे मिलाने । वि० संयुक्त करनेवाला, संयोजक, जोड़नेवाला ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] एकत्रीकरण, मिलान; योग; परमात्मा; द्रोणका मानविशेष (दौ, चार, जाठ कोसकी मत्तदेवकी मितियाँ मानी जाती हैं । कोसकी लंबाई ४००० हाथ । जैनी दस हजार कोसका योजन मानते हैं) । -**गंधा**-श्री० सत्वती, शांतनुषकी, म्यासकी माता; सीता; कस्तूरी । -**गंधिका**-श्री० सत्वती; कस्तूरी । -**पणी**, -**वस्त्र**-श्री० यजोठ ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] नियुक्ति, संयोजन; व्यवस्था, आयोजन; कोई काम करनेका विचार, भावी कार्यपद्धतिकी पूर्व-कल्पना, 'स्कीम'; जोड़, मिलान; वनावट, रचना; पटना; व्यवहार; प्रयोग ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] योजना करने योग्य; मिलाने, जोड़ने योग्य ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] योजनका; योजन-संबंधी ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] युक्त, जो मिलाना गया हो; निव-मित; बनाया हुआ, रचित ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] व्यवहार-योग्य; जोड़ने योग्य । पु० ये संख्याएँ जिनका योग किया जाय ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] जौत, नाभा, बह रस्ती जो जूएकी बैलकी मददसे जोड़ती है; उपाय; संपत्ति; अवर्धन । -**संयुक्त**-वि० भनी; संपत्तिशाली । -**हीन**-वि० धनहीन, निर्धन ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] युक्त करने योग्य; जो युक्त करता हो ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] युक्तकर्ता, रणकुशल । पु० युद्ध करनेवाला ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] रणकुशल सैनिक ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] योद्धा, योद्धा ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई; रणसामग्री ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि०, पु० [सं०] दे० 'योद्धा' ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] योद्धा, योद्धा । -**(वि)वन**-पु० एक विशेष जंगल (प्रा०) ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] ज्वार, मक्का, यचनाक ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] उत्पत्तिस्थान, जहाँसे कोई वस्तु पैदा हो; स्थितियोंकी जननेश्वर; देह; अंतःकरण; कारण; गर्भ; गर्भाशय; वन्म; जड़; एक नदी (कुश्मीरकी); नाकर, खानि; प्राणिविभाग (पुराणमत्तसे इनकी संख्या ८४ कास है, कुछ २१ कास मानते हैं) । -**कंद**-पु० योनिना रोग-विशेष जिसमें गोंठ पड़ जाती है । -**क**-पु० योनि-से उत्पन्न जीव (जालुज और अंडज) । -**द्वेष**-पु० पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र । -**घोष**-पु० उपदेश, गरमी । -**कूट**-पु० [हिं०] योनिसे अंदरकी गोंठ जिसमें एक छेद होता है और जिससे होकर वीर्य गर्भाशयमें जाता है । -**अंश**-पु० एक योनिरोग जिसमें गर्भाशय अपने स्थानसे हट जाता है । -**सूक्ष्म**-वि० सूक्ष्म, जो आवागमनसे छूट गया हो । -**सुद्रा**-श्री० तांत्रिकोंकी एक सुद्रा जिसमें वैजलियोसे योनिना आकार बनाते हैं । -**वर्ज**-पु० एक अति सक्षीर्ण मार्ग जिसे पार करनेवालेको मोक्षका अधिकारी माना जाता है (यह गया, कामाख्या आदिमें है) । -**रंज**-पु० रजःस्त्राव । -**सूक्ष्म**-पु० योनिकी पीसा, क्षियोंका एक रोग । -**अंश**-श्री० शतपुष्पा । -**संयुक्त**-पु० वर्णसंकर । -**संयुक्त**-पु० योनिकी क्षियोंकी कार्य; एक ओषधि । -**संयुक्त**-पु० वह जो योनिसे पैदा हो, जालुज-अंडज । -**संयुक्त**-पु० गर्भवती क्षियोंका एक रोग जिसमें गर्भका मुख बंद हो जानेसे बच्चा दम पुटकर मर जाता है (इसमें गर्भिणीको जानका भी खतरा रहता है) ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] योनिबंध, योनिना एक रोग जिसमें अंदर गोंठ पड़ जाती है ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [अ०] दिवस, दिन; तारीख, तिथि ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [अ०] दे० 'यूरोप' ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि०, पु० [अ०] दे० 'यूरोपियन' ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] पुंशली, दुश्चरित्रा श्री; नवयुवती, बाका ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] श्री, नारी ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] 'योषित' ।

कोश-वर्ण-वर्ण-श्री० [सं०] श्री, नारी । -**कृत**-वि० नारी-कृत । -**प्रतिपातना**-श्री० श्रीकी प्रतिमा । -**प्रिया**-श्री० हृदी ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] 'योषित'का समागत रूप । -**ब्राह्म**-पु० मृत पुरुषकी श्री ग्रहण करनेवाला पुरुष । -**रज**-पु० नारी-रज ।

कोश-वर्ण-वर्ण-वि० [सं०] 'यह'का नैसर्गिक रूप ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] एक साथ ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] नर्म-सखा, क्रीडा, विनोद, खेलका साथी । वि० युक्तियुक्त, सर्वसंगत ।

कोश-वर्ण-वर्ण-पु० [सं०] अक्षविशेष जो अक्षोंका निवारण करे ।

वीर्यचरान्वय-पु० [सं०] युगंधर गोत्रका व्यक्ति; उदयन-का एक मंत्री ।

वीर्य-पु० [सं०] योग-यज्ञोक्त अनुश्रुती पुरुष ।

वीर्यक-वि० [सं०] योगका; योग-संबंधी ।

वीर्यिक-वि० [सं०] मिला हुआ; योग-संबंधी । पु० अष्टा-ईश मात्राओंवाले छन्द; साध्योंके तीन भेदोंमेंसे एक (व्या०) ।

-**सख्य-पु०** अर्थोंका भावक शब्द ।

वीर्यिक-वि० [सं०] एक वीरजनक जानेवाला ।

वीर्यक, वीर्यक-पु० [सं०] विवाहमें मिला हुआ धन, दहेज; वह संपत्ति जो कन्याके पितृवर्गकी ओरसे वरपक्षको दी जाती है; चढ़ावा (दुल्हिनकी सामग्री); उपहार ।

वीर्यिक-वि० [सं०] गृध्रका; समूह-संबंधी; झुंडमें रहने-वाला । पु० संगी, साथी ।

वीर्यिक-वि० [सं०] युद्धका; युद्ध-संबंधी ।

वीर्य-पु० [सं०] योद्धा, सिपाही । वि० वीर ।

वीर्य-पु० [सं०] योद्धा; प्राचीन कालकी एक युद्ध-कुशल जाति; एक प्राचीन देश; बुधधिरका एक पुत्र ।

वीर्य-वि० [सं०] योनिता; योनि-संबंधी । पु० जानि-विशेष (यवन ?); विवाह-संबंध ।

वीर्य-पु० [सं०] युवतियोंका समूह; लास्यत्वका एक भेद ।

वीर्य-पु० [सं०] युवतीका पुत्र ।

वीर्य-पु० [सं०] वास्याकन्याके बादकी अवस्था जिसकी स्थिति १६ से ४०-४५ वर्षतक मानी जाती है, जबानी; युवतियोंका दण्ड । -**कंडक-वि०**-**पु०** मुंहासा । -

कण्ठ-पु० लास्य, सुंदरता; स्नान ।

वीर्यवाचिक-वि०-**पु०** [सं०] युवती ।

वीर्यवाच-पु० मांघातका एक नाम ।

वीर्यिक-वि० [सं०] यौवनका; यौवन-संबंधी ।

वीर्यवोज्ज्व-पु० [सं०] कामदेव, मदन ।

वीर्यवज्ज-वि० [सं०] युवराजका; युवराज-संबंधी ।

वीर्यवज्ज-पु० [सं०] युवराजका पद; युवराजत्व ।

वीर्यवज्जविवेक-पु० [सं०] राज्यके उत्तराधिकारी राजकुमारका अभिवेक-कर्म ।

र

र-देवनागरी वर्णमालाका सप्तार्धसर्ग व्यंजन और दूसरा अक्षर वर्ण; उच्चारण स्थान मूढा। दूसरे वर्णसे सवुक होनेपर यह, = और, -ये तीन रूप ग्रहण करना है । र, स और (विसर्ग) एकजातीय वर्ण है-जैसे प्रातर, प्रातन्, प्रातः ।

रक-वि० [सं०] निर्धन. गरीब; कुपण, कलूस; मर्द, झुलत, आलसी । [स्त्री० 'रकिणी'] पु० निर्धन व्यक्ति; मिथुन; कृपण मनुष्य ।

रकु-पु० [सं०] सफेद चित्तियोंवाला हिरन ।

रंग-पु० [सं०] रंगा धातु; सौभाग्य; नाट्यस्थान; क्रीडा-गार; रंगमंच; समामवन, स्थान; नाचघर; रणभूमि. बुद्ध-क्षेत्र; नृत्य; क्रीडा; खदिरसार; वर्ण, किसी पदार्थका वह गुण जिससे वह स्वयं-किरणोंके कुछ रंगोंको वसित और कुछको परावर्तित कर आँखपर डालता तथा कुछको सोख लेता है (जैसे काका रंग सभी किरणोंके वर्तनसे होता है या ग्राहक पदार्थमेंसे किसी भी किरण, प्रकाशका परावर्तन नहीं होता । जिन पदार्थोंसे समग्र प्रकाशका परावर्तन होता है वे सफेद दिखाई देते हैं); कोई खास वर्ण; मिश्रित वर्ण; शरीरका वर्ण । -**कार-पु०** रंगनेवाला । -**काष्ठ-पु०** पतंग लकड़ी, बकम । -**क्षेत्र-पु०** अभिनय-स्थल; उत्सव, समारोहका स्थान । -**गृह-पु०** नाट्य, अभिनय-का स्थान । -**खर-पु०** नाटकमें अभिनय करनेवाला । -**ख-पु०** सिद्ध । -**जवनी-स्त्री०** लाख, लाक्षा । -**जीवक-पु०** चित्रकार; अभिनेता । -**जीविक-पु०** रंगनेवाला । -**व-पु०** सोदगा; खदिरसार । -**वहिका-स्त्री०** नागवेल । -**वृ-वृद्धा-स्त्री०** फिटकरी ।

वायक-पु० एक तरहकी पहाड़ी मिट्टी; कंकुड़ । -**दैवता-पु०** रंगभूमिका अधिष्ठाता एक कल्पित देवता । -**द्वार-पु०** रंगमंचका प्रवेश-द्वार; नाटककी प्रस्तावना । -**पद्मी-पुष्पी-स्त्री०** नीली नामका रंग । -**पीठ-पु०** नृत्य-

शाला । -**प्रवेश-पु०** अभिनयके लिए किसी पात्रका रंगमंचपर आना । -**बद्ध-पु०** [हिं०] हलदी (साधु) । -**विरंग-विरंगा-वि०** [हिं०] अनेक रंगोंवाला; भौतिक-भौतिक । -**बीज-पु०** दे० 'रंगबीज' । -**अरिषा-पु०** [हिं०] रंगसाज, रंग करनेवाला; किनाक, दीवार आदिपर चित्र बनानेवाला । -**अवन-पु०** आभूषण-प्रभेद, विलास-बिहारका स्थान, रंगमंच । -**भूति-स्त्री०** आश्विनी, कोजागर पूर्णिमा । -**भूमि-स्त्री०** अभिनय, नाटक खेलनेका स्थान, नाट्यशाला; बुद्धक्षेत्र; क्रीडास्थान, आश्विन; उत्सव; समारोहका स्थान । -**मंच-पु०** वह स्थान जहाँ नाटकादिका अभिनय, नृत्य, खेल, जलसा इत्यादि हो । -**मंडप-पु०** रंगभूमि, नाट्यशाला । -**मध्य-पु०** रंगमंच, 'स्टेज' । -**मल्ली-स्त्री०** वीणा, वीन । -**महल-पु०** [हिं०] भोग-विलासका स्थान, प्रमोदयवन; अंतःपुर; रंगभूमि, रंगशाला; रंगमंच, अभिनयका स्थान । -**माता-पु०** स्त्री० लाख, लाक्षा; कुटनी । -**मातृका-स्त्री०** लाख । -**रस-पु०** आनंदक्रीडा, आनंद-प्रयोग । -**रसिया-पु०** [हिं०] मौजी, विलासी पुरुष । -**राज-पु०** तालके साठ भेदोंमेंसे एक (संगीत) । -**रूप-पु०** सुरत, शकल । -**छता-स्त्री०** मरोड़फली, आवतकी लता । -**छासिनी-स्त्री०** शेफाली, शेफालिका । -**कलिका-स्त्री०** नागवल्ली । -**विद्याधर-पु०** अभिनेता; नृत्यप्रवीण, कुशल व्यक्ति; तालके मुख्य साठ भेदोंमेंसे एक (संगीत) । -**बीज-पु०** चोंदी । -**झाका-स्त्री०** वह स्थान जहाँ नाटक खेला जाय, नाट्यशाला । **मु०** -**जाना-खदना-भली** अति रंग रूप जाना, रंग खूबना । -**उपमा-उत्तर-रक्षा-भूक**, जल आदिके कारण रंगका हल्का पड़ना, उड़ जाना । -**खेकना-डाकना-फैंकना-पानीमें डुका रंग हाथ**, पिचकारी आदिसे किसीपर डालना (प्रायः

होलीके अक्षरपर ऐसा किया जाता है)। -**मिस्तरना**-रंग चटकोला होना। -**फीका बच्चा वा होना**-दे० 'रंग उठाना'। -**मरना**-विषमें रंग पूरना; रंगना। -**मरचना**-रंगक्षेत्रमें शीघ्र बुझ होना। -**मरकना**-व्यर्थ बुझ करना; भ्रम मचाना।

रंग-उ० शोभा, सौंदर्य; मौज; आनंद, मौज; ठाट-बाट, साज-सामान, टीस-टाम; चाल, दब-तिनकी दान लेत है हमसो, देखतु इनको रंग'-सूरा प्रकार, तरङ्ग; अक्षर, प्रभाव; रोव, धाक; अद्भुत ध्वज; व्यापार (विशेषतः समृद्धि आदिके प्रदर्शनमें ईश्वर, स्वामीके प्रति कृतज्ञताके लिए-जैसे लक्ष्मीकी पद्म अतुल कृपा कवीका रंग है); प्रेम, राग, अनुराग; तरंग, मौज; दशा। -**रंग**-पु० हाल, दशा, स्थिति; तीर-तरीका; व्यवहार, लबाबा; चिह्न, लक्षण। -**तरा**-पु० बड़ी मोठी नारंगी, सतरा। -**रङ्गी**-स्त्री० आनंद, मौज, लेख। **रु०**-**आना**-आनंद आना। -**उल्लूकना**-इसरीपर प्रभाव, रोव, धाक न रहना; प्रतिकूल स्थिति होना; आनंदका घट जाना, नाश हो जाना। -**उल्लूकना**, -**उल्लूकना**-शोभा, रौनक घटना। -**काछना**-चाल चलना, ढंग पकड़ना, प्रहण करना। -**कड़ना**-हर्षित होना; रजित होना; प्रभाव, अक्षर पड़ना। -**कूला**, -**टपकना**-जबानी आना, जबानी उमड़ना, जीवनका विकास होना। -**जमना**-धाक, रोव, प्रभाव, अनुकूल स्थिति होना; क्षुद्र आनंद, मजा होना। -**जमाना**-प्रभाव स्थापित करना, धाक बैठाना, बाँधना। -**देना**-अपनेमें प्रेमासक्त करनेके लिए किसीके प्रति प्रेम प्रकट करना (बाजार)। -**पकड़ना**, -**पर आना**-रौनक, शहारपर आना। -**बाँधना**-रोव जमाना, धाक बाँधना। -**बदलना**-स्थितिमें परिवर्तन होना; अच्छी दशामें होना। -**बरसना**-रौनक, शोभाकी हड़ि होना। -**बाँधना**-मदल्ल, प्रभाव स्थापित करना; रोव गाँठना। -**बिगड़ना**-रोव, प्रभाव कम होना, नष्ट होना। -**बिगाड़ना**-रोव, महत्त्व घटाना, नष्ट करना; शेकी किर्किरी करना। -**मैं छलना**-किसीके प्रभाव, अक्षरमें आना; किसीके अनुकूल वाचरण करना, चलना। -**मैं भंग करना**-बना-बनाया लेख बिगाड़ना; आनंद, हर्षके क्षणमें उपद्रव करना। -**मैं रंगना**-तन्मय होना; अनुकूल होना; किसीका अनुकरण करना। -**रञ्जना**-उत्सव, जशान करना। -**रञ्जना**-क्रीडा, प्रमोद करना। -**छाना**-अक्षर दिखाना; विशेषता प्रकट करना; स्थिति, अवस्था उत्पन्न करना।

रंग-पु० [फा०] वर्ण; वह एकनीदार चीज जो बाजारांमें मिछोली और कपड़ा, लकड़ी, आदि रंगनेके काम आती है; किरणोंका रंग (इसका प्रभाव आँखोंपर पड़ता है, और जो रंग किसी पदार्थ द्वारा परावर्तित होता है वही उसमें दिखाई देता है); ध्वज, ढंग, तरीका; लेख; उद्घास, आनंद; दशा, हालत; रौनक, व्यवहारी; इंप, (ताशके लेखमें); चौपड़की खास रंगक, आठ मोटियाँ। -**आकृष्टाक्षी**-स्त्री० रंग छिक्कना। -**पाखी**-स्त्री० होलीका उत्सव। -**मर**-पु० शाका एक लेख। -**साज़**-

पु० रंग बनानेवाला; दीवार, मेज आदिपर रंग बूझानेवाला। -**साज़ी**-स्त्री० रंगसाजका काम।

रंगई-पु० छपे हुए कपड़े बोलनेवाली धीकियोंकी एक जाति। **रंगत**-स्त्री० हाकत, वस्त्र; आनंद, मजा; रंग।

रंगना-पु० एक इष्ट।

रंगना-स० कि० रंग देना (दीवार, चित्र आदिमें); रंगमें डुबोना (कपड़ा)। -**रंगा साधार**-पु० सज्जन बना हुआ व्यक्ति, धार्मिकी।

रंगपुरी-स्त्री० एक तरहकी नाब।

रंगवाति-स्त्री० सुगंधित द्रव्यकी बनी बन्दी (मति०)।

रंगवट-पु० [अ० 'रिक्ट'] नवा सिपाही; नौसिखिया।

रंगरेज-पु० [फा०] कपड़ा रंगनेका काम करनेवाला। [स्त्री० 'रंगरेजिन']।

रंगरेखी-स्त्री० दे० 'रंगरली'।

रंगीनी-स्त्री० लाल रंगकी चुनरी।

रंगवा-पु० जानवरोंका एक रंग।

रंगवाई-स्त्री० दे० 'रंगई'।

रंगवाना-स० कि० दे० 'रंगाना'।

रंगांगण-पु० [स०] रंगभूमि।

रंगांगा-स्त्री० [स०] फिटकरी।

रंगई-स्त्री० रंगनेका काम या भाव; रंगनेकी मजदूरी।

रंगालीक, **रंगालीवी** (विश्व)-पु० [स०] रंगाक्षेमे गुजर करनेवाला, रंगसाज।

रंगाना-स० कि० रंगनेका काम करना।

रंगाभरण-पु० [स०] तालका एक मुख्य भेद।

रंगार-पु० राजपूतोंकी एक उपजाति; एक वैश्य उपजाति; मध्यप्रदेश और दक्षिण भारत-निवासी एक जाति (इस जातिके लोग हेलीका पेशा करते और अपनेकी ब्राह्मण कहते हैं)।

रंगारि-पु० [स०] कनेर।

रंगालय-पु० [स०] रंगखल, रंगशाला।

रंगावट-स्त्री० रंगई।

रंगावतारक-पु० [स०] अभिनेता; रंगसाज।

रंगावतारी (रिश्)-पु० [स०] अभिनेता।

रंगिणी-स्त्री० [स०] शर्मसूत्री; कैवर्तिका लता। वि० स्त्री० रंगवाली; विनोदिनी, रसिका।

रंगिणी-पु० रंगनेका काम करनेवाला; रंग बनानेवाला।

रंगी (विश्व)-वि० [स०] विनोदी, मौजी; रंगवाला;

रंगनेवाला; अनुरक्त; अभिनय करनेवाला।

रंगीन-वि० [फा०] रंगा हुआ; चमकदारपूर्ण; बिलास-प्रिय, देशप्रसंद; सुखद रूपनसे युक्त।

रंगीनी-स्त्री० रंगीन होना; मृगार, सजावट; रंगीलापन।

रंगीरेटा-पु० एक जगली पेड़।

रंगीका-वि० मौजी; झुंझर; प्रेमी। [स्त्री० 'रंगीकी']।

-**पन**-पु० रंगीला होनेका वाव, रंगनी। -**(की)**-

टोपी-स्त्री० एक रागिनी, टोपी रागिनीका एक भेद।

रंगीना-पु० रंगनेवाला।

रंगोपजीवी (विश्व)-पु० [स०] अभिनय द्वारा रोजी कमानेवाला, मठ।

रंग, **रंगक**-वि० शोभा, जरा, किंचित्।

रंज-पुं० [फा०] दुःख; शोक; दुर्ग; लफलीक भक्तसेत; पछताप । † वि० नाराज ।

रंजक-पुं० [सं०] रंजेज; रंगसाज; रंगुर; मेहदी; मिठाई; विचकी; एक अग्नि (सुभूत) । वि० रंगनेका काम करनेवाला; मनोरंजक, हर्षकरक । खी० [फा०] बंदूक, तोपकी शरदकी प्याली; बन्दूक जो इस प्यालीमें रंजी जाय; बीजा, तमालका दम (बाजाक); उल्लेख नात; तीक्षा, चटपटा चूर्ण । मु० - बंधना-बंदूक, तोपकी प्यालीमें शरद रखकर जलाना; पादना (बाजाक) । -आद आना-तोप, बंदूककी प्यालीकी शरदका यों ही जलकर रह जाता, गोली, गोला न छूटना ।

-विष्णुना-तीप, बंदूककी प्यालीमें रंजक रखना । रंजक-पुं० [सं०] रंगनेका काम, रंगना; यम प्रसन्न करना; रंग बनानेके साधनभूत पदार्थ-शेफालिका, इलदी, नील, कुसुम, मण्डा आदि; रंजक; कमीना; शीना; जाय-फल; काक चंदन; पित्त । वि० रंजक । -केशी-खी० नीलीका रंग ।

रंजक-पुं० [सं०] कटार । रंजना-सं० कि० इर्मित करना; भजना; रंगना । रंजनी-खी० [सं०] इलदी; पर्यटी; नालवल्ली; नीली वृक्ष; मण्डा; पदार्थी कता; रूपमकी तीन मुतिधर्मों दूसरी (संगीत) । -दुष्प-पुं० पूतिकरंज, कंजा । रंजनीय-वि० [सं०] रंगने योग्य; हर्ष, आनंद दे सकनेवाला ।

रंजा-खी० एक मछली, 'उलकी' । रंजित-वि० [सं०] रंगा हुआ; हर्षित; अनुरक्त । रंजित-रंजीदगी-खी० [फा०] नाराजगी; अनयन, वैमनस्य ।

रंजीदा-वि० [फा०] नाराज; दुःखी । रंज-वि० [सं०] धूर्त; वैचन; विकल; जिसका अंग छिन्न हो गया हो । पुं० निस्तान मरनेवाला मनुष्य; अफक वृक्ष ।

रंजक-पुं० [सं०] फलहीन वृक्ष । रंजा-खी० [सं०] रंज, विषया । रंजापा-पुं० वैधव्य ।

रंजाधरी(मिथु)-पुं० [सं०] ४८ वर्षकी अवस्थाके बाद रंजुआ होनेवाला पुरुष ।

रंजी-खी० मानने-गानेका व्यवसाय करनेवाली और धन लेकर संभोग करनेवाली स्त्री, वेदया । -बाज-पुं० वेदयामात्री । -बाजरी-खी० वेदयागमन । मु० - रंजना-वेदयाको संभोग आदिके लिए साध रखना ।

रंजुआ-पुं० वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो । रंजीरा-पुं० रंजुआ ।

रंजीरी-खी० विषया ।

रंज(रु)-वि० [सं०] रमण, आनंद करनेवाला; * अनुरक्त ।

रंजि-खी० [सं०] शोभा; विराम । -रंज-पुं० एक परम दानी और यक्षकी पराणिज राजा; विष्णु; कुप्ता ।

-रंजी-खी० चंचक ।

रंजु-पुं० [सं०] सधक, मार्ग; नदी ।

रंज-पुं० बड़ा, रौखमी आनेके लिए दीवारमें बनाये हुए छेद, रंज; किन्हेकी दीवारका रौखा जिससे तोप, बंदूक आदिकी ओर चकते हैं ।

रंजना-सं० कि० रंजा करना, नजाना; रंजिते लकड़ीकी सतह चिकनाना ।

रंजा-पुं० बंदूकोंका एक औजार जिससे लकड़ीकी चिकनी और सम बनाते हैं ।

रंजक-पुं० [सं०] रंजीदा, रंजनेवाला; बरबाद करनेवाला ।

रंजक-पुं० [सं०] रंजित, भोजन बनाना; नष्ट, बरबाद करना ।

रंजित-वि० [सं०] पकाया, रंज हुआ; नष्ट किया हुआ ।

रंज-पुं० [सं०] छेद; दीया अग; लज्जसे आदर्य स्थान ।

रंजगत्त-पुं० [सं०] बोझेंके गलेका एक नेम ।

रंजा-पुं० जुलाहीका एक औजार जिसमें नानेकी रस्ती बाँधते हैं; रं० 'रमा' ।

रंज-पुं० [सं०] गर्जन; टेक, सवार; छड़ी, बंडा; गोल; रंज, मूक; केला (रंजु); एक जलर ।

रंजक-पुं० [सं०] रंजना; आक्किन (?) ।

रंजक-पुं० पुं० रंजक ।

रंजा-पुं० कोहेका मोटा, चिपटे सिरवाला, बड़ा बंडा जो दीवार आदिमें छेद करनेके काम आता है । खी० [सं०] केला; एक अप्सराका नाम; गायका रंजना, बिहाना; गौरी; उलकी दिशा; एक तरहका नाच । -रंजीदा-खी० स्नेह-छुड़ा चुतीया । -रंजि-पुं० इद्र । -कल-पुं० केला ।

रंजना-ज० कि० गायका बोलना ।

रंजिणी-खी० [सं०] एक रागिनी ।

रंजित-वि० [सं०] शब्द किया हुआ; बनाया हुआ ।

रंजी(मिथु)-पुं० [सं०] शरणाक; बृद्ध, बृद्ध आदमी । वि० रंजयाणि, जिसके हाथमें रंजा हो ।

रंजोरु-वि० खी० [सं०] कदलीस्तम्भके समान जोंबोवाली (खी); सुंदर ।

रंज(रु)-पुं० [म०] वेग, गति ।

रंजक-पुं० रंजकपूतिकी हविष, काकल ।

र-पुं० [सं०] अग्नि; कामाग्नि; ताप, अर्थ; वेग; सितारका एक बोल; स्वर्ण; वर्ण; शब्द; रं० 'रगण' । वि० तीक्ष्ण, प्रखर । -कार-पुं० 'र' वर्णका बोधक अक्षर । -राज-पुं० तीन वर्णोंका शब्द जिसमें पहला, तीसरा गुरु और दूसरा लघु होता है; देवता; अग्नि ।

रंजक-खी० [ज०] रिखाया, प्रजा; कायतकार, असारी; नौकर; मुक्ताब्जि; बिना किराया दिये मकानमें रहनेवाला आदमी । -आज्जार-वि० प्रजाकी पीडा देनेवाला । आज्जारी-खी० प्रजापर कत्याचार करना, उत्पीडन । -द्वार-पुं० हाकिम, शासक । -द्वारी-खी० हुकुमत, सत्तमत, राज्य, शासन । -विवाज-वि० प्रजाकी सहायता, रक्षा करनेवाला (शासक, स्वामी) ।

-निवाज-खी० प्रजाकी रक्षा । -परवर-वि० प्रजा-वत्सल, प्रजापालक । -परवरी-खी० प्रजाकी रक्षा, सहायता । -वारी-वि० (संदीवस्त) जो एक-एक काश्त-

साथ-साथ, अलग-अलग हो । **खी०** एक बंधोवस्तु जिसमें कायस्थकार सीधे सरकारकी माफगुजारी देता है ।

रक्षक-खी० दे० 'रक्षक' ।

रक्षक-खी० ज० कुछ भी, जरा भी ।

रक्षक-खी० रजनी, रात, रैन ।

रक्षक-खी० खैर, मयवी, दही मयनेकी लकड़ी। येहुँका दरदरा आटा, रजनी, पूर्ण [रक्षा का अन्वयार्थक रूप] ।

* **खी०** खी० अनुरक्त, पनी हुई, इनी हुई; सहित, युक्त; मिश्र हुई ।

रक्षक-पु० [अ०] तालुकेदार, सरदार (राजा, नवाब, सेनापति, शाहजादा, हाकिम, उच्च वर्गका आदमी, अमीर, धनी); शरीफ, शिष्ट, प्रतिष्ठित मनुष्य । - **उक्त बहर-पु०** जल-सेनापति । - **झुझुझुझार-पु०** वह सरदार जो किसीके अधीन न हो । - **झाझा-पु०** रईसका लकना । - **झाझी-खी०** रईसकी लकड़ी ।

रक्षक-खी० अमीरी, धन-संपन्नता ।

रक्षक-खी० प्रभुता, स्वामित्व ।

रक्षक-खी० सर्व० मध्यम-पुष्पका आहरस्वचक संवोधन, आप ।

रक्षक-खी० दे० 'रक्षक' ।

रक्षक-पु० पतौक, पचाँसे पकोड़ी, रिकवेंच ।

रक्षक-पु० लहू, रफिर । **खी०** काल । - **कंध-पु०**

मूँगा, बिद्रुम; रताव, राजपकांडु ।

रक्षक-पु० मूँगा; केसर, कुंकुम; काल चंदन ।

रक्षक-पु० क्षेत्रफल, लंबाई-चौड़ाईका गुणा करनेसे प्राप्त गुणनफल; विरी हुई जमीन, बेतर, अजाता ।

रक्षक-पु० घोड़ीकी एक जाति ।

रक्षक-पु० एक पीषा ।

रक्षक-खी० [अ०] धन, नियत संख्याके रुपये; अरबीकी 'हजार' जो शब्दोंके संक्षिप्त रूपसे बनी हैं; लिखना, तहरती, लेखन; सुहर, छाप; पूरी रक्बा, जोड़; प्रकार, भाँति; मूँगबानू वस्तु; जेवर, गहना; सम्मिश्रित संपत्तिका एक भाग; मालगुजारी, लगानकी दर; शाह-जादेकी लिखित चिट्ठी; कशीदा किया धारीदार कपड़ा; निशान; कीमतका निशान; डंग, तीर, तरीका । - **साखर-सिखाव-खी०** वह आमदनी जो लगानके अलावा जमींदारकी मिलती हो ।

रक्षक-खी० निशान किया हुआ, लिखा हुआ । **पु०** एक तरहका किसान जिसके साथ कुछ रियायत की जाती है ।

रक्षक-पु० [अ०] नरम चौरस जमीन । **खी०** गरम (दिन) ।

रक्षक-खी० डंग, तरीका; लगान ।

रक्षक-खी० [अ०] जोहिका पावशान जो जीतमें दोनों ओर रस्सी या तस्सेसे लटकता रहता है और जिसपर पैर रखकर घोड़ेपर चढ़ते हैं; बादशाहों, अमीरोंकी सवारीका घोड़ा; अठपहलू प्याला; बकी रक्षावी । - **खर-पु०** घोड़ेपर चढ़ानेवाला नौकर, साँस; वह नौकर जो अमीर आदमियोंके घोड़ेके साथ दीवता है; खासावरदार, बादशाहोंके साथ खाना लेकर चलनेवाला मेवका अन्वार, चटनी, पिठाई वगैरह बनाकर बेचनेवाला आदमी, हलवाई; रक्षावियोंमें खाना लगाकर रखनेवाला । - **खाख-पु०** वह

कमरा, तस्मा जिसमें रक्षाव लटकती है । **खु-पु०** रक्षावके चमके, तस्मेका सवारोंमें दूट जाना । - **खाना-घोड़ेपर** किसीके चढ़ते समय साँसका रक्षाव पकड़ना । - **खै-सहवाना, हमराह** । - **खै रक्षक-घोड़ेपर** सवार होना । - **खै रक्षक-हर वक्त चलनेकी तैयार रहना** ।

रक्षक-खी० तस्ती, चीनी मिट्टी हलादिकी बनी भाखी; छिछली छोटी भाखी जिसकी दीवार बाहर सुखी हो; साकी; वह बोझ जिसे पकड़कर परेवर ले जायें; घोड़ेकी गलमें लटकनेवाली लकड़ा; लकड़कमें प्रचलित एक प्रकारका रुपया; कटोपर लटका जानेवाला एक प्रकारका दमियकका तेल । - **खेहरा-पु०** बीसा मुँह, गोल मुँह । - **खेहरा-पु०** वह आदमी जो जोमसे कभी इतर, कभी लहर डी, खुशामदी, प्रियवादी, नाडकार । - **खामना-पु०** बदलछ, गोल मुँह, चकला मुँह ।

रक्षक-खी० [अ०] एक प्रेमिकाके कई प्रेमी होना, प्रणयकी प्रतियोगिता ।

रक्षक-खी० [अ०] पानीके समान द्रव; तरल; मुलायम, नरम । **पु०** गुलाम । - **उक्त कंध-खी०** नरमदिल ।

रक्षक-खी० बौंदी, लौंडी, कनीज ।

रक्षक-पु० [अ०] प्रतिस्पर्द्धा; एक प्रेयसीके प्रेमियोंमेंसे कोई एक; संरक्षक ।

रक्षकानेवस्त, हस्त बाब-पु० [अ०] सात सितारे, सप्तभि ।

रक्षक-खी० दे० 'रक्षावी' ।

रक्षक-खी० नाचनेवाला । [खी० 'रक्षासी']

रक्षक-स० कि० दे० 'रक्षक' ।

रक्षक-पु० [सं०] लहू, रफिर; काल रंग; तँबा; पुराना आँवला; कुंकुम; कमल; काल चंदन; सिद्धा ईगुर; पतंगकी लकड़ी; बिचक, बेत (नदीतटपर होनेवाला); गुलदुप-हरिया, बंधुका एक मछली; एक जहरीला मेढक । **खी०** अनुरक्त, आसक्त; रँगा हुआ; सुखी, काल; विलासी, ऐबास; झुद्ध, शोधित । - **खामातिसार-पु०** एक रोग जिसमें लहूके दस्त आते हैं, रक्तातिसार । - **कंध-पु०** साधका वेच (हस्ते राक निकलती है) । - **कंधा-खी०** विक्कन वृक्ष । - **कंध-खी०** काल कंधवाला; सुरीली आबाजवाला । **पु०** कोयल; मंदा । - **कंधी (ठिक्)** - **खी०** सुरीली आबाजवाला । **पु०** कोयल । - **कंध-पु०** मूँगा, बिद्रुम; काल प्याज । - **कंध-पु०** मूँगा, प्रवाल, बिद्रुम । - **कंध-पु०** कुई, नीलीफर, कुमुद । - **कंध-पु०** एक प्रकारका कंद जिसके फूल गहरे काल रंगके होते हैं ।

- **कंध-खी०** चंपाकेला । - **कंध-पु०** काल रंगका कमल । - **कंध-पु०** काल कनेर । - **कंध-पु०** काल कचनारका वृक्ष । - **कंध-खी०** काल गहवर्तूना, रक्त पुनर्वर्णा । - **कंध-पु०** एक रोग जिसमें फेफड़ेसे मुँहकी राह खून निकलता है । - **कंध-पु०** पतंगकी लकड़ी । - **कंध-पु०** कुमुद-पु० कुं । - **कंध-पु०** काल कंधरीया । - **कंध-पु०** विसर्प रोग (इसका लक्षण है-सारे शरीरमें जलन, कमी-कमी काल रंगका हो जाना और कुछकी भीति गलना) । - **कुसुम-पु०** कचनार;

भामिनीका पेक; मदार; पारिमद्र बा फरहदा पेक । -
कुमुदा-ली० अनारका पेक । -**कुमिजा-ली०** काक,
 काक । -**केसर-पु०** फरहद, पारिमद्रका पेक । -**केसी-**
(विष्) -**वि०** तामने, काल रंगके बालोवाला ।
 -**कैर-पु०** काल कुमुद । -**कोकनव-पु०** काल कमल ।
 -**क्षव-पु०** कभिर बहना, रक्तपाव । -**खविर-पु०**
 बह खैर जिसके फूल काहें; रक्तसार । -**खोखव-**
पु० खनूरका पेक । -**गंधक-पु०** एक गंधद्रव्य, मोल । -
गंधा-ली० असर्गव, अमर्गवा । -**गम्री-ली०** मेंहदीका
 पेक । -**गुस्म-पु०** एक ली-रोग जिसमें गर्भासवमें रक्त-
 की गाँठ-सी बँध जाती है । -**गैरिक-पु०** गेरू, स्वर्ण-
 नैरिक । -**ग्रीव-पु०** कनूर; राक्षस । -**ग्रंथि-ली०**
 काल खजवंती; एक रोग जिसमें शरीरमें लहड़ी गाँठें बंध
 जाती हैं । -**घ्न-पु०** रोहितक वृक्ष । **वि०** जिससे
 रक्त नष्ट हो । -**घ्नी-ली०** एक द्रव; गाँवर । -**चंदु-**
पु० तोता, सुझा । -**चंदन-पु०** काल चंदन । -**चित्रक-**
पु० काल बीता वृक्ष । -**चूर्ण-पु०** सेंदुर; कमीला ।
 -**च्छर्दि-ली०** रक्तमन, खूनकी कै । -**ज-वि०** रक्तसे
 उत्पन्न; रक्तविकारसे होनेवाला । -**कुमि-पु०** रक्त-
 विकारजनित कीड़ा । -**जवा-ली०** देवीफूल, जवाकुसुम,
 अकडुल । -**जिह्व-पु०** शेर, सिंह । **वि०** काल जीमवाला ।
 -**जर्ण-पु०** ज्वार, जोहरी । -**जुंघ-पु०** तोता, सुझा ।
वि० जिसका मुख काहें हो । -**जुंघक-पु०** एक कीड़ा,
 भूनाग, कँनुवा । -**तृण-पु०** काल रंगका तृणविशेष ।
 -**तृणा-ली०** एक तृण, गोमूत्रिका । -**दंतिका-ली०**
 चंफिका एक प्रकारके अम्र दानवोंका आहार करनेवाली
 दुर्गा । -**दंती-ली०** दे० 'रक्तचंफिका' । -**दुखा-ली०**
 नलिका नामक गंधद्रव्य । -**दूषण-वि०** रक्त दूषित करने-
 वाला, खून खराब करनेवाला । -**दृक्(श्)-पु०** कोयल;
 कनूर; चकोर; सारस । **वि०** काल खोलोवाला । -**दुम-**
पु० काल बीजासन वृक्ष । -**धारा-ली०** मांसके भीतरकी
 दूसरी कला, सिली जो रक्त धारण करती है (आ० दे०) ।
 -**धानु-ली०** गेरू; तौबा । -**नयन-वि०**, **पु०** दे०
 'रक्तवृक्ष' । -**माडी-ली०** दाँतकी रक्तमें होनेवाला रोग
 विशेष । -**नाल-पु०** झुसना, जीवशाक । -**नासिक-**
पु० उल्ल । -**निर्यास-पु०** काल बीजासन वृक्ष । -**नील-**
पु० एक अत्यंत विषैला विच्छू (सुश्रुत) । -**नेत्र-वि०**,
पु० दे० 'रक्तवृक्ष' । -**प-पु०** राक्षस । **वि०** रक्तपायी, रक्त
 पीनेवाला । -**पक्ष-पु०** गधड़ । -**पट-पु०** अमण । **वि०**
 काल कपड़े पहननेवाला । -**पत्र-पु०** पिंडाळ । -**पत्रा-**
ली० नाकुली; काल गधड़पुरना । -**पद्मी-ली०** खजवंती,
 कजाळ । -**पर्ण-पु०** काल गधड़पुरना । -**पल्लव-पु०**
 अशोक वृक्ष । -**पा-ली०** जोंक; डाकिनी । -**पाका-**
ली० हड्डी लता । -**पात्र-रक्त** गिरना, बहना, रक्त-
 काय; ऐसा प्रहार जिससे किताकी रक्त बहे; खूनखराबी,
 मारकाट । -**पाता-ली०** जोंक । -**पाद्-पु०** बरमद;
 तोता । -**पायी(विष्)-वि०** रक्त पान करनेवाला, खून
 पीनेवाला । [ली० 'रक्तपायिनी'।] **पु०** खटमल, मत्तुण ।
 -**पारद-पु०** इंगुर, हिंगुल, शिपरक । -**पाषाण-पु०**
 काल पत्थर, गेरू । -**पिच-पु०** जवाफूल । -**पिचक-**

पु० बवा, अकडुल; रताळ । -**पिंकाक-पु०** रताळ ।
 -**पिच-पु०** एक रोग जिसमें मुख, नाक, कान, गुदा,
 योनि आदिसे रक्त गिरता है । -**पु-ली०** एककी
 पुन । -**पुच्छक-पु०** रंगनेवाला एक कीड़ा । -**पुनर्नवर-**
ली० काल रंगकी पुनर्नवा, गधड़पुरना, वैशाखी । -**पुनर्नव-**
 रक्तपत्रिका, कीशिता, बर्मेकु, विषम्री, रक्तमंदा, मंज-
 पत्रिका, लोम, नव, पुष्पिका, नम्य । -**पुष्प-पु०** कनेर,
 करवीर(अनार) बंधूक; पुत्राग; अकडुल । -**पुष्पक-पु०**
 पलाश; सेमक । -**पुष्पा-ली०** सेमक; चंपाकेला;
 सिंदूरी; नागवीन; पुनर्नवा । -**पुष्पिका-ली०** काज-
 वंती; काल पुनर्नवा । -**पुष्पी-ली०** आवतंकी कटा,
 भी; पाँवर; नागवीन; बवा, अकडुल । -**पूतिक-ली०**
 काल पीर, काल रंगकी पूतिका । -**पूय-पु०** एक नरक
 (पु०) । -**पूरक-पु०** हमली । -**पूर्य-वि०** रक्तसे भरा
 हुआ । -**प्रतिस्वाच-पु०** जुकामका एक भेद । -**प्रहर-**
पु० महरका एक भेद जिसमें कीड़ी योमिसे रक्त-मथाह
 होता रहता है । -**प्रमेह-पु०** एक पुच्छ-रोग (हस्तमें
 खूनका-सा दुर्गंधपूर्ण पेशाब होता है) । -**प्रभृति-ली०**
 पित्त-प्रकोपसे होनेवाला एक रोग । -**प्रक्ष-पु०** मुचकुंद
 वृक्ष; काल कनेर । -**क्क-पु०** सेमक; बगद । -**कका-**
ली० कुँवर, तुड़ी; स्वर्णवल्ली । -**कूल-पु०** [हिं०] अक-
 डुल; पलाश । -**केनज-पु०** केरंका, कुपसुत । -**अच-**
पु० मांस, गोशत । -**अंजर-पु०** बैतकी लता; जीम ।
 -**अंजरी-ली०** काल कनेर । -**अंजळ-पु०** खोंकी एक
 जाति (सुश्रुत); काल कमल; एक जहरीला पशु ।
 -**अंजलिका-ली०** काल काजवंती, कजाळ । -**अप-**
पु० जोंक; राक्षस । **वि०** जो रक्त पीकर उत्पन्न हो । -**अस्त-**
पु० काल रंगकी एक छोटी मछली । -**अस्तक-पु०**
 सारस । **वि०** काल मस्तकवाला । -**मातृका-ली०** पंचे
 कुप भोजनसे पैटमें बननेवाला रक्त (आ० दे०); एक
 रोग (सं०) । -**मुल-पु०** रौह मछली; यहिक धान्य ।
 -**मुदा(दंष्ट)-पु०** सारस । -**मूलक-पु०** देवसर्प,
 सरसीका पीषा । -**मूला-ली०** लजानू, काजवंती ।
 -**मेह-पु०** दे० 'रक्तप्रमेह' । -**मोक्षण-पु०** खून खराब
 हो जानेपर उसे बाहर निकालनेकी क्रिया, फरद (आ०
 दे०) । -**मोचन-पु०** फरद, शरीरका खून निकालना ।
 -**यष्टि-ली०** मज्जी । -**रंया-ली०** मेंहदी । -**रज(स्)-**
पु० सिंदूर । -**रस-पु०** निवेसार । -**रसा-ली०**
 राला । -**राशि-ली०** पर्वतिका कीड़ा (सुश्रुत); एक
 नेत्ररोग । -**रेख-पु०** पुत्राग; सिंदूर; पलाशकलिका ।
 -**रैवतक-पु०** खनूर वृक्षका एक प्रकार । -**रोग-पु०**
 रक्तदीपसे होनेवाला रोग, जैसे जुह । -**खोचन-वि०**,
पु० दे० 'रक्तनेत्र' । -**खटी-ली०** जेवक, शीतला रोग ।
 -**खरटी-ली०** दे० 'रक्तवृक्ष' । -**खर-पु०** कुसुम,
 मज्जी, दुपहरियाका फूल, हट्टी, दासबट्टी, काख,
 दाक और अनारका सम्राहार (हस्तमें रंग निकलता है) ।
 -**खर्ण-पु०** इंदवधू, बीरबट्टी; मूंगा; कमीला, कंफिक;
 लहसुनिया, गोमैद; काल रंग । **वि०** काल रंगका ।
 -**खर्क-पु०** काल रंगकी बटेर । -**खर्मी(खर्म)-पु०**
 मुर्गा । -**खर्न-पु०** बेगन । **वि०** रक्त बढानेवाला ।

—**बन्धन-रक्त**-**रक्त** गन्धपुरना । —**बन्धन-रक्त**-**रक्त** मज्जी; बन्धन; पयारी; मज्जी; पिपी कटा । —**बन्धन-रक्त**-**रक्त** सन्ध्यासी । वि० जिसके कपड़े काट हों । —**बाह-रक्त**-**रक्त** यक्ष बाहरी; बाहरी । —**बाह-रक्त**-**रक्त** सिद्ध । —**बाह-रक्त**-**रक्त** रक्त-विकार-जनित सिद्धि, फोड़ा । —**बाह-रक्त**-**रक्त** गुग्गुलु जैसे काष्ठ पत्तों के पत्रनेवाला एक रोग । —**बाह-रक्त**-**रक्त** रक्तिकी वृद्धि; काष्ठ विविधा, अपायाल; काष्ठ भस्म, द्रव्य । —**बाह-रक्त**-**रक्त** रक्त रोगका अन्तर; वेदना; रोग; एक राक्षस जिसके वरतीयर गिरने-वाले रक्तके विदु-विदुसे राक्षस तैयार हो जाते थे और जिसका कथ बंधिकाये किया था (विशेषागत) । —**बाह-रक्त**-**रक्त** तरदी, एक कटीला पेय । —**बाह-रक्त**-**रक्त** सिद्धि, सिद्धि-पुत्री । —**बाह-रक्त**-**रक्त** गन्धपुरना, पुन-जंवा । —**बाह-रक्त**-**रक्त** शेषालिका, निपुण; इरसिगार । —**बाह-रक्त**-**रक्त** आकाशसे काष्ठ रंगके पानीकी वर्षा । —**बाह-रक्त**-**रक्त** वह फोड़ा जिससे मवादकी जगह रक्त निकले । —**बाह-रक्त**-**रक्त** कमीला । —**बाह-रक्त**-**रक्त** काष्ठ, दाह्यकानी । —**बाह-रक्त**-**रक्त** काष्ठ कमलकी जड़, मसीक । —**बाह-रक्त**-**रक्त** काष्ठ फूलोंवाला सेमल । —**बाह-रक्त**-**रक्त** सिद्ध । —**बाह-रक्त**-**रक्त** काष्ठ सहजिन । —**बाह-रक्त**-**रक्त** सारस; गंधाविरोजा । —**बाह-रक्त**-**रक्त** विनाशक एक श्रृंग । —**बाह-रक्त**-**रक्त** एक विष । —**बाह-रक्त**-**रक्त** पुत्राग । —**बाह-रक्त**-**रक्त** अति विषैला विष (सुमुत) । —**बाह-रक्त**-**रक्त** बातक सन्धिपातका एक वेद । —**बाह-रक्त**-**रक्त** कुष्ठमका फूल । —**बाह-रक्त**-**रक्त** केसर, कुङ्कुम । —**बाह-रक्त**-**रक्त** जौक । —**बाह-रक्त**-**रक्त** गन्धगत पेय, बंध, कुलका संघर्ष । —**बाह-रक्त**-**रक्त** झुरगा । —**बाह-रक्त**-**रक्त** काष्ठ सरसी । —**बाह-रक्त**-**रक्त** चंदन; खैर; पतंग; वाराही कंद; अमलपेत; रक्त बीजासन । —**बाह-रक्त**-**रक्त** बहते रक्तकी रोकनेका कार्य । —**बाह-रक्त**-**रक्त** जून बहना, निकलना, गिरना; घोषोंका एक रोग जिसमें आँखोंसे रक्त-या काष्ठ पानी बहता है । —**बाह-रक्त**-**रक्त** एक रागिनी । —**बाह-रक्त**-**रक्त** मिलाव ।

रक्तक-**रक्त** रक्तिक; काष्ठ वक्ष; काष्ठ रंगका घोड़ा; काष्ठ सहजिन; काष्ठ रंग; गुल दुपहरिया; कुङ्कुम । वि० अनुरागी; विनोदी ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठिका, लकड़ा, सुखी ।

रक्तक-**रक्त** कौवागोटी; काकतुंडी; गुजा, रपी, करजनी ।

रक्तक-**रक्त** मूँगा ।

रक्तक-**रक्त** केसर; काष्ठ चंदन; कमीला; मूँगा; खटमल; मंगल ग्रह; जीवंती । वि० काष्ठ शरीरवाला ।

रक्तक-**रक्त** जीवंती; कुष्ठकी; मजीठ ।

रक्तक-**रक्त** घोषोंके मंडकीपका एक रोग ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ वक्ष भारण करनेवाला । पु० काष्ठ कपड़ा (विशेषकर देशी); सन्ध्यासी ।

रक्तक-**रक्त** पंचम स्वरकी चार मृत्तियोंमेंसे दूसरी (संकीर्ण); मजीठ; काष्ठ; कट्टरपरा; एक तरहकी सेम; पुंघकी; कष्टकाण्ड; वक्ष; एक प्रकारकी मकड़ी; शिरा, नस (कानके पासकी) । वि० काष्ठ अनुराका ।

रक्तक-**रक्त** मूँगा । वि० जिसकी मृत्ति काष्ठ हो ।

रक्तक-**रक्त** रक्तसे रंगा हुआ या चुपचा चुपचा । पु० काष्ठ चंदन ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ नेमोंवाला; मयंक । पु० कस्तूर; सारस; बकीरा; मैसा; साठमेंसे अष्टावनवाँ संवत्सर ।

रक्तक-**रक्त** वह अतिसार जिसमें जूनके दस्त जाते हैं ।

रक्तक-**रक्त** किन्नरी । वि० काष्ठ ओठ-वाली ।

रक्तक-**रक्त** चमड़ा ।

रक्तक-**रक्त** रक्तविकारसे होनेवाली आँखोंकी सूजन ।

रक्तक-**रक्त** एक गन्धद्रव्य, बोल ।

रक्तक-**रक्त** वीरबहूदी । वि० रक्त जैसी आभावाला ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ जवा ।

रक्तक-**रक्त** एक नेत्ररोग जिसमें आँखोंसे काष्ठ पानी निकलता और उनमें काष्ठ रेखाएँ दिखाई देती हैं ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ अन्नक ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ फूलोंवाला एक विशेष पौधा ।

रक्तक-**रक्त** महाराष्ट्र, एक पौधा ।

रक्तक-**रक्त** एक रोग जिसमें पकने और बहनेवाली कुंसियाँ निकलती हैं और खरीर पीका एक जाता है; एक शुकदी-जनित रोग जिसमें रिंगपर काले फोड़े और काष्ठ कुंसियाँ निकलती हैं ।

रक्तक-**रक्त** आँखका एक रोग जिसमें कोरीपर कमलके आकारवाला मांसका एक मंडल बन जाता है ।

रक्तक-**रक्त** जूनी बगानी ।

रक्तक-**रक्त** मजीठ ।

रक्तक-**रक्त** रताख ।

रक्तक-**रक्त** जूनको बहनेसे रोकनेवाला ।

रक्तक-**रक्त** फल, रक्तमोक्षण, खरीरका जून निकलवाना ।

रक्तक-**रक्त** देखके सात आशयोंमेंसे चौथा जिसमें रक्तका होना माना जाता है (फेफड़ा, हृदय, यकृत और कोठे जिनमें रक्त रहता है) ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ कमीक ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ कनेर ।

रक्तक-**रक्त** प्रेम, अनुराग, रती बराबर तौल ।

रक्तक-**रक्त** रती, पुंघकी ।

रक्तक-**रक्त** लकड़ा लिये हुए, काष्ठिकाशुक्त ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ, लकड़ा ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ रंग ।

रक्तक-**रक्त** काष्ठ कमल; सेमल ।

रक्तक-**रक्त** रोग; एक बहुत जहरीला विष (सुमुत) ।

रक्तक-**रक्त** रक्तविकारसे उत्पन्न खरमी, आत-शक रोग ।

रक्तक-**रक्त** गेरु; काष्ठ नामक रक्त, माणिक्य ।

रक्तक-**रक्त** राक्षसीका समूह ।

रक्तक-**रक्त** रक्षा करनेवाला, रक्षक । पु० रक्षा; काष्ठ,

काका, काका; कृप्य छंदका एक उपनेद । -पाक, -
वाकक-पु० रक्षक, पहरेदार ।

रक्ष(स्)-पु० [सं०] राक्षस, अक्षुर, दैत्य ।

रक्षक-वि०, पु० [सं०] पहरा देनेवाला; पालन करने-
वाला; रक्षा करनेवाला; सुरक्षित रखनेवाला ।

रक्षण-पु० [सं०] सुरक्षित रखना; रक्षा करना; रखवाली
करना; पालन-पोषण । -कृत्ता(री)-वि०, पु० रक्षा
करनेवाला; रक्षक ।

रक्षारक्ष-पु० [सं०] मृगकुच्छु रोग ।

रक्षणि, रक्षणी-स्त्री० [सं०] श्रायमाणा कृता ।

रक्षणीय-वि० [सं०] रखने योग्य; रक्षा करने योग्य ।

रक्षन्-पु० दे० 'रक्षण' ।

रक्षता-सं० कि० रक्षा करना; संभालना-'अगे कीस
सब चले पुकारत रक्षतु रघुकुलकाथा'-रघुराज ।

रक्षस-पु० राक्षस, अक्षुर ।

रक्षा-स्त्री० [सं०] (रक्ष, अनिष्ट, आपत्तिसे) बचानेकी
क्रिया; रखवाली; रखना; सुरक्षा; भ्रम, राक्ष; कपास या
रेशमका सूत्र जो विशेष अवसरपर कलाईपर बाँधा जाता
है । -गृह-पु० चौकी; विश्राम-भवन; सौरी, सुतिका-
गृह, जवाहलता । -पति-पु० नगरवागियोंका रक्षक
(प्रा०) । -पद्म-पु० भोजनप्रका पेय; सफेद सरसों ।

-पाक, -पुरुष-पु० पहरेदार, प्रहरी । -प्रदीप-पु०
बह दीपक जो भूत-प्रेतसे बचनेके लिए जलाया जाय
(नं०) । -बंधन-पु० सलूनो या सलोनो नामका त्योहार
जो भावणी पूर्वमासीको होता है (इस अवसरपर बहनें अपने
माथोंकी और पुरोहित अपने यजमानोंकी कलाईमें कपास
या रेशमका अभिमंत्रित रक्षासूत्र बाँधते हैं) । -भूषण-
पु० भूषण, जतर, कबच जो भूत-प्रेतादिसे बचनेके लिए
पहना जाता है । -मंगल-पु० अनुष्ठान, धार्मिक क्रिया
जिसे भूत-प्रेतबाधासे बचनेके लिए किया जाय । -मणि,
-रक्ष-पु० बह मणि या रत्न जो ग्रहकोपसे बचनेके
विचारसे धारण किया जाय ।

रक्षाङ्ग-स्त्री० राक्षसपत्नी ।

रक्षाधिकृत-पु० [सं०] नगररक्षा और शासनका अधि-
कारी (प्रा०) ।

रक्षापेक्षक-पु० [सं०] प्रहरी, पहरेदार; अतःपुरका प्रहरी;
अभिनेता, नट ।

रक्षिक-पु० [सं०] रक्षक, बचानेवाला; पहरेदार ।

रक्षिका-स्त्री० [सं०] रक्षा; रक्षाकार्यके लिए नियुक्त स्त्री ।

रक्षित-वि० [सं०] जिसकी रक्षा की गयी हो; रक्षा हुला;
प्रतिपाक्षित । पु० भाँक; एक प्रकारके वैष ।

रक्षिता-वि० स्त्री० [सं०] रक्षा की हुई; बचायी हुई । स्त्री०
एक अमरता ।

रक्षिता(स्)-वि०, पु० [सं०] रक्षा करनेवाला ।

रक्षी-पु० राक्षसोपासक ।

रक्षी(क्षिन्)-पु० [सं०] पहरेदार, चौकीदार; रक्षा करने-
वाला, रक्षक ।

रक्षोन्म-पु० [सं०] सफेद सरसों; मिठाईका पेय; हॉग;
बासी, खट्टा मँक । वि० राक्षसकी मारनेवाला ।

रक्षोष्णी-स्त्री० [सं०] बन्धा, बच ।

रक्ष-वि० [सं०] रक्षणीय, रक्षा करने योग्य ।

रक्षमाण-वि० [सं०] जिसकी रक्षा हो रही हो; रक्षित
होनेवाला; रक्षा जानेवाला ।

रक्ष-पु० [जं०] नाच, नृत्य, मुञ्जरा । -आरक्षार-
पु० एक तरहका नाच । -(कसे) शाकस-पु० मोर-
का नाच जिसमें पेशवाजके दो कोने उठाकर नाचनेवाला
मोरकी-सी सज्ज बनाकर दिखाता है; घुटनोंके बल किमा
जानेवाला एक नाच जिसमें काछनी या पेशवाजका बेरा
फेकर चकर बनाने लगता है । -दूरदृष्टी-पु० आँधीसे
पेड़-पत्तियोंका जोरसे हिलना । -क्रान्त्स-पु० प्रकाशित
मीनारका चमकना; फागुलका चकर करना । -विस्मृक
-पु० त्रिबह किये हुए जानवरका फककना । -रक्षावी-
पु० एक तरहका नाच । -सनीबर-पु० सनीबरकी
टहणियों और पर्णोंका हिलना ।

रक्ष, रक्षा-स्त्री० चरी, पशुओंके चरनेके लिए सुरक्षित
भूमि, रक्षौना, रक्षावी हुई चरभूमि; बह जंगल या चरा-
गाह जिसमें सर्वसाधारणकी लकड़ी या घास काटनेकी
मनाही हो ।

रक्षना-सं० कि० धरना; टिकाना; ठहरना; बचाना, रक्षा
करना (अपनी चीज रखना सीखें); निर्बाध, पालन करना
(बात रखना); हिफाजत करना, नष्ट न होने देना (इच्छत
रखना); एकत्र करना (जोड़-जोड़कर धन रखना); सौपना,
सुपुर्द करना; रेहन, बंधक करना; अपने हाथमें; अधिकार-
में करना; पालन-पोषण, व्यवहारके लिए अपने अधिकारमें
लेना (पोषा, गाय, पशुपालन रखना); नियुक्त करना,
तैनात करना (कामके लिए आदमी रखना); रोक लेना;
चोट पहुँचाना (मुका, धप्पड़ रखना); मुलती करना,
दूसरे दिनपर टाकना (बह बात कलपर रखें); उप-
स्थित न करना, बचना (बह जहमत अलग रखें); आरौप
करना; विनये लगना; थोपना (सब कुछ मेरे सिर रखें);
कणी, कर्जदार होना (पैसा न रखना); (मनमें) अनुमान,
धारणा करना (विश्वास रखना); डेरा कराना, ठहराना
(जहाँ धर्मशास्त्रमें रख दिया है); स्त्री-पुरुषसे संबंध करना
(औरत, मर्द रखना); संयोग करना (साजारु); गर्भ धारण
कराना (पेट रखना); (चिन्तियोंका) अडे देना (रतक साल-
में कितने अडे रखती हैं); बचाना (महीनेमें सा-पीकत क्या
रखते हैं) ।

रक्षनी-स्त्री० रखेल, रखी हुई स्त्री, उपपत्नी ।

रक्षक-पु० [फा०] सुराख, छेद; नकब; हड्डिका टूटना;
तलवारका निशान; फितना, फसाद ।

रक्षका-पु० दे० 'रक्षक' ।

रक्षबाई-स्त्री० पहरेदारी, चौकीदारी; रखवालीकी मजदूरी;
रखनेकी क्रिया या ढंग; रखनेकी उजरत; चौकीदारीका
देस; खेत रक्षाना ।

रक्षबाणा-सं० कि० रखनेका काम दूसरेसे कराना ।

रक्षवार-पु० रखवाला; चौकीदार, पहरेदार; रक्षा करने-
वाला ।

रक्षवारी-स्त्री० दे० 'रक्षवाली' ।

रक्षवाका-पु० रक्षा करनेवाला, रक्षक; चौकीदार, पहरे-
दार ।

रखवाली-सी० रक्षाकार्य; हिफाजत, सुरक्षा ।

रत्नश्री-श्री० बहू मय जिसे पहानी, नेपाली पीते है ।

रखाई-खी० रक्षा करनेकी क्रिया; रक्षा करनेका भाव;
वह धन जो रक्षा करनेके बदले दिया जाय।

रखान-खी० रखीना, चराईकी भूमि ।

रखाना-स० क्रि० रखवाना; रक्षा करना, रखवाली करना ।

रक्षार्थ—पु० एक प्रकारका हेंगा जिससे बंबई राज्यमें जुते हुए खेतको समथर करते हैं ।

रक्षित्याः-पु० रक्षनेवाला, रक्षक ।

रक्षिपाना-स० क्रि० राखसे माँजना (हरतन आदि); पकाये खेरका कपड़ेमें लपेटकर पानी सूखने और कसाव निकलनेके विचारसे राखमें रखा जाना ।

रखीसर*—पु० ऋषीश्वर (कबीर) ।

रखेदिया-पु० ढोंगी साधु, राख रगककर बमा हुवा साधु ।

रखेछ, रखेली-झी० रखनी, उपपत्नी (जो बिना विवाह किये घरमें रखी जाय) ।

रखैया-पु० रक्षा करनेवाला; रखनेवाला ।

हल्लैल-ली० हे० 'रल्लैल' ।

रखींकी†-खी० राखी, रक्षासूत्र ।

रखौत, रखौना-पु० चरी, चरनेके लिए रखायी हुई सुरक्षित भूमि ।

रखीनी†-खी० दे० 'राखी' ।

रङ्गवा-पु० [फा०] सफेद-छाक मिश्रित रंग; घोड़ा; रस्तेम-
का घोड़ा ।

रग-खी० [फा०] नस, नाडी; फूल-पत्तेका रेशा; आँखका मोरा; तार, तामा; नरक, जात; दूध पिलानेवाडीका प्रभाव; बुढ़ी आदत; हठ, जिद । -अन-वि० फल्द

खोकेनेवाला, दूषित रक्त निकालनेवाला । -जॉ-खी०

वह बड़ी रग जिससे सभी रगोंमें खून पहुँचता है।

—जाली—वि० जिसमें रगोंका जाल फैला हो ।—दानी—

स्त्री० धूर्तता, बेईमानी । -दार-नि० रेशेदार; कुरी

आदतवाला; जिसमें कुछ सत उभरे हुए हों (कपड़ा) ।

-पट्टा-पु० असल-नसल इत्यादिका पता होना ।

लक्षण प्रकट होता । - रगमें-हर रगमें, सारे शरीरमें ।

-रगसे वाकफ होना-पूरी तरह जानना । -रेखमें

पका होना—किसी आदमीमें किसी खोटी आदतका अत्यधिक मात्रामें होना; गोشت-पोस्तमें शामिल होना; धारामें होना। — (१०) निम्न भाग—यह भाग

होना । - (ग) मिलक जाना - बहुत दुबला होना । - मरना - नसोंकी ताकत जाती रहना; न्यमर्द हो जाना; कमजोर हो जाना । - (गौ) में लून दीटना - नसोंमें खूनकी तेज चाल होना ।

रगड़-खी० घर्षण, घिसनेकी क्रिया या भाव; बह चिह्न

जो ध्वंसे हो जाय; कदा परिश्रम; हठ; क्षयवा; देश;
धन्ना (कहारोंके लहजेमें); हलन्नी चोट जिसमें चमका छिल

जाय; होलका जल्द-जल्द बजना । मु०-खाना-पक्के

खाना । -देना-पीस डालना; तग करना । -पकना-

अधिक परिश्रम पढ़ना (उसे बहुत रमाइ पड़ी, इसीसे थक

गया) ।-लगना-छिड़ जाना, हलकी चोट आना ।

रगड़ना-स० क्रि० विसना, वर्षण करना; पीसना (मसाका,

मौन); कोई काम बार-बार करना; कोई काम जल्द और

परिश्रमपूर्वक करना (यह काम तो दस दिनोंमें रगड़

डालेंगे); तग करना, परेशान करना; स्त्रीके साथ संभोग

करना (बाजारू)। अ० नि० विकास न करना, जहाँका

तहाँ रहना; अत्यधिक परिश्रम करना ।

रगवद्वाना-स० क्रि० रगवदनेमें प्रवृत्त करना, रगवदनेका

काम दूसरेसे लेना ।

रगङ्गा-पु० रगङ्क, धर्षण; अति परिश्रम, ह्यगङ्गा; जल्द अत

न हीनिवाला क्षगडा । -क्षगडा-पु० लकार-क्षगडा;

वस्त्रेण । मु०-दना-धिसना, रगदना ।

रत्ना-पु० एक संस्कारका मोटा अन्न जो दक्षिणी पहाड़ीपर होता है, रत्नी । † खी० अधिक बर्बकी बादकी दूध जो खिलके लिए कामवायक होती है ।

रत्नु-पु० [सं०] सुवैवंशीय राजा दिक्षीय और राजी सुवक्षिणीके पुत्र और अन्नके पिता, रत्नुवंशके मूल पुरुष; रत्नुवंशमें उपपन्न मनुष्य । वि० द्रुतगामी । -**का**-पु० रत्नुवंश-प्रणेता कालिदास । -**कुल**-पु० रत्नुका वंश, वंशधर । -**कै**-पु० रत्नुवंशरूपी कुमुद । -**गौरव**, -**वंश**, -**सिलक**, -**नाथ**, -**पति**, -**मणि**, -**वर**, -**वीर**-पु० रामचंद्र । -**कुलोत्तंस**-पु० रत्नुकुलके सुपुत्रमणि, रामचंद्र । -**तनय**-पु० रत्नुके वंशज, रामचंद्र । -**सिलक**-पु० रत्नुवंशके धृषण, रामचंद्र । -**मंदन**-पु० रामचंद्र । -**नाथ**-पु० रत्नुओंके स्वामी, रामचंद्र । -**नाथक**-पु० रत्नुकुलमें प्रधान, रामचंद्र । -**पति**-पु० रत्नुकुलके स्वामी, रामचंद्र । -**राह**-**राव**-पु० रत्नुकुलके राजा, रामचंद्र । -**रै**-**दे** 'रत्नुराय' । -**वंश**-पु० रत्नुका वंश, खानदान; कालिदास-निर्मित एक महाकाव्य । -**कुमार**-पु० रामचंद्र । -**मणि**-पु० रत्नुवंशके मणि, रामचंद्र । -**वंशी**(**सिन्धु**)-पु० वह जो रत्नुके वंशमें उत्पन्न हो; क्षत्रियोंकी एक उपजाति (वे रत्नुके वंशमें उत्पन्न कहे जाते हैं) । -**वर**, -**वीर**, -**श्रेष्ठ**-पु० रत्नुवंशमें श्रेष्ठ, वीर रामचंद्र ।

रत्नुचम-पु० [सं०] रत्नुश्रेष्ठ, रामचंद्र ।

रत्नुह-पु० [सं०] रत्नुवक्षियोंमें प्रधान रामचंद्र ।

रत्नक-पु० [सं०] रत्नविता, रचना करनेवाला । * वि० दे० 'रत्नक' ।

रत्न-पु० [सं०] दे० 'रत्ना' ।

रत्ना-**खी** [सं०] निर्माण, बनानेकी क्रिया; निर्माणकी प्रक्रिया; व्यवस्था, प्रबंध; तैयारी; उत्पादन; नवसृष्टि; कौशल; निर्मित वस्तु (घर, दूर्ति, ग्रंथ आदि); सृष्टि; विन्यास; सँवारना (बाल, वेश आदि); गूँथना; उद्यम, उद्योग; चमत्कारपूर्ण गद्य, पद्य; विश्वकर्माकी खी (पु०) । सं० कि० सिरजना, निर्माण करना; निश्चित करना, विधान करना; ग्रंथ आदि लिखना; उत्पन्न करना; ठानना, करना; आयोजन करना; जाल रचना; कल्पना करना; काल्पनिक सृष्टि करना; श्रृंगार करना; क्रमसे रखना, सजाना; रँगना, रजित करना । अ० कि० गासक या अनुरक्त होना; रँग जाना, रंग चढ़ना ।

रत्नविता(**रु**)-वि० [सं०] निर्माता, प्रणेता, रत्नेवाला । पु० प्रयत्नकार ।

रत्नवाना-स० कि० (किसी औरसे) रत्ना कराना, रचनाके लिए किसीकी मेरित करना; मेहँदी आदि लगवाना ।

रत्नाना-स० कि० आयोजन, संभार, समारोह करना; दे० 'रत्नवाना', मेहँदी, अलंकरण आदिसे (हाथ-पैर) रँगाना; (मेहँदी) लगाना ।

रत्नित-वि० [सं०] निर्मित, बनाया हुआ ।

रत्नचिन्ति-अ० परिश्रम करके, गदगदकर (सर) ।

रत्नी-वि० शोभा, जरा ।

रत्नक-पु० दे० 'रत्न' ।

रत्नक-पु० दे० 'रत्नक' ।

रत्नक-पु० दे० 'रत्नक' ।

रत्नक-पु० दे० 'रत्नक' ।

रत्नक-**खी**-दे० 'रत्ना' ।

रत्न-पु० राजत्व, महत्त्व-अंजन यहें सुहाव यहें । प्रवरज-सरन गहै रत्न रहै ।'-भना० ।

रत्न(**सु**)-पु० [सं०] क्षियोंका मासिक रक्तस्राव (यह चौरह, कभी-कभी बारह वर्षकी अवस्थासे आरंभ होकर पचास-पचपन वर्षके वयःक्रमतक रहता है), मज्जु, कुसुम, आर्तव; तीन शुण्णोंसे दूसरा (सांख्य); वल्ल; वायु; शुक्ल, लोह; मांस; आकाश; पाप; कमरेसे मंदा हुआ एक प्राचीन बाना; एक मान, तील (आठ परमाणुओंका); सेत, पापका; स्कंदकी एक सेना; बलिष्ठके पुत्रका नाम; * चाँदी, रजत; * बोरी, रत्नक । **खी**० धूल, गर्द; पराग; रास; प्रकाश; ज्योति । -**कण**-पु० [हि०] धूलिका, रत्नकण, गर्द ।

रत्न-पु० [फा०] अंगूर । वि० रंगनेवाला (रंगरेण) ।

रत्नक-पु० [सं०] बोरी ।

रत्नगिरि-पु० ह्रद, फाफर ।

रत्नतल-**खी**० कीर्ता, शूद्रता ।

रत्न-वि० [सं०] धृष्ट धवल, उज्ज्वल, चाँदीके रंगका; चाँदीका बना हुआ । पु० चाँदी, रूपा; सोना; मुद्राधार; धवल रंग; पहाड़; रत्न; रत्न; हाथीचर्म । -**कुंज**-पु० चाँदीका कलश । -**कूट**-पु० मलय पर्वतकी बोटी ।

-**जवरी**-**खी**० किसी व्यक्ति या संस्थाके जीवनकाल, कार्यकाल आदिके २५ वर्ष पूरे होनेपर मनाया जानेवाला उत्सव (आ०) । -**सुति**-वि० रजत जैसा कमकोण । पु० हनुमान् । -**नाम**-पु० एक वल्ल (पु०) । -**नाभि**-पु० कुबेरका एक वंशधर । -**पर्वत**-पु० चाँदीका पहाड़ ।

-**पात्र**-पु० चाँदीका बरतन । -**प्रख्य**-पु० कैलास पर्वत । -**भाजन**-पु० रजतपात्र । -**बाह**-पु० एक क्षत्रि ।

रजतमय-वि० [सं०] चाँदीका बना हुआ ।

रजताह-**खी**० सफेदी ।

रजताकर-पु० [सं०] चाँदीकी आन ।

रजताचल-पु० [सं०] रजतादि, कैलास; चाँदीका पहाड़; चाँदीका वह कृत्रिम पहाड़ जो दामके लिए बनाया जाता है (यह महादान है-पु०) ।

रजतोपम-पु० [सं०] रूपामाखी ।

रजधानी-**खी**० राज, 'हमकी जिल्लि-जिल्लि जोग पठावत आपु करत रजधानी'-हर; दे० 'राजधानी' ।

रजज-वि० [सं०] रंगनेवाला । पु० रंगनेका काम; किरण । **खी**० [अ० 'रेजिन'] राल; एक प्रकारका गोंद ।

रजजा-अ० कि० रंगा जाना; रंगमें डुबाया जाना । सं० कि० रंगना; रंगमें डुबाना । **खी**० संगीतकी एक मूर्च्छना ।

रजनी-**खी**० [सं०] रात; नीली, नाख; जलुका, एक पहाड़ी लता; हल्दी; दाहहल्दी; शास्त्रकी दीपकी एक नदी (पु०); लाह, लाख । -**कर**-पु० चंद्रमा; कपूर । -**गंगा**-**खी**० दुसना नामक पुष्पवृक्ष । -**वर**-पु० राक्षस; चंद्रमा । वि० जो रातको चलता, घूमता-फिरता हो ।

-**अल**-पु० ओस; पाला; नीवार । -**ईह**-पु० दी

रातों और उनके बीचका (दिनांक) समय । -रवि-पु० चंद्रमा । -मुख-पु० सार्यकाक, संस्था, प्रदोषकाक, सूर्यास्तके चार दंड बादका समय । -रमय-पु० रात्रिका स्वामी, चंद्रमा । -हास्य-की० शैकाजी, हरसिंहार । वि० की० रातमें जिसका हास, विसास हो ।

रजनीस-पु० [सं०] चंद्रमा ।

रजपूत-पु० दे० 'राजपूत' । [की० 'रजपूतिन' ।]

रजपूती-की० राजपूतवन, क्षत्रियवन; शरणा; बीरता ।

रजय-पु० [अ०] अरबी और मुसलमानोंके सात्तका सातवाँ चांद्र मास (पहले वह मास पवित्र समझा जाता था और इस मासमें युद्ध निषिद्ध था) ।

रजयहा-पु० नदी या नहरसे निकाला हुआ बहा नल ।

रजयती, रजयती-वि० की० जिससे रजयत्त हो रहा हो, रजयत्त ।

रजयबा-पु० देशी रियासत, राज्य; राजा ।

रजयार-पु० राज्यहार; राजका बरवार ।

रजयका-वि० की० [सं०] कतुभती । की० वह की जिसका रज प्रभावित हो रहा हो ।

रजा-की० [अ०] मर्जी; राजाजत, अनुमति; सुशी, प्रसन्नताकी स्थिति; सुशान्दी; स्थूलत, सुष्टि; स्वीकृति ।

-कार-वि० सुख । पु० स्वयंसेवक, बालटियर । -ओई-की० दूसरेकी सुशान्दी, दूसरेकी सुख करनेकी कोशिश ।

-पहरी-की० वर्षकी सुष्टियोंकी सूची । -मंय-वि० रात्री, सुशान्द । -मंयरी-की० रात्री-सुशी; मंयरी ।

रजाहस, रजायस, रजायसु-की० आश्वा; कुबम, अनुमति ।

रजाई-की० राजापन, राजा होनेका भाव; * दे० 'रजा'; दे० 'रजाई'; दे० 'रजाय' ।

रजाई-की० [का०] रंगीन कपड़ेकी बरदार दुकानें, छोटा किताब ।

रजाभा-सं० कि० राज्यसुख भोग कराना ('राज्य' या 'राज' शब्दके साथ ही यह प्रयुक्त होता है) ।

रजाय-की० आश्वा; कुबम, मर्जी, हज्ज; दे० 'रजा' ।

रजिया-की० देह सेरकी एक माप जिससे अनाज नापा जाता है ।

रजिया बेगम-की० [अ०] गुलामवंशके द्वितीय सुकुतान अस्तमयकी लक्ष्मी जिसने १२३६ में १२४० ई० तक विलीके तत्काल शासन किया ।

रजिस्टर-पु० [अ०] सादे पन्नोंकी बही किताब, बही जिसपर खानेवार, सिलसिलेवार किसी मदका आव-व्यय, किसी विषयका व्योरेवार विवरण लिखा जाता हो, दफ्तर, यावदास्त, बाजिरीकी किताब, पंजी ।

रजिस्टर-वि० [अ०] दे० 'रजिस्ट्रीमुद्रा'; पंजीबद्ध ।

रजिस्टार-पु० [अ०] वह व्यक्ति जो रजिस्टरमें दर्ज करे, जो रजिस्ट्री करे वह; सरकारी कर्मचारीका एक पद ।

रजिस्ट्री-की० [अ०] बाकस्तरमें मद्रुल देकर पत्र आदि रजिस्टरमें दर्ज कराकर भेजनेका कार्य; इस विषयसे भेजी जानेवाली चिट्ठी; रजिस्ट्रारके रजिस्टरमें कोई बात दर्ज कराना; कोई लिखित प्रतिष्ठापक कानूनके अनुसार सरकारी रजिस्ट्रारोंमें दर्ज करानेका काम । -मुद्रा-वि०

जिसकी रजिस्ट्री करावी गयी हो; रजिस्टरमें दर्ज किया हुआ; पक्की किताब-पदीयाका ।

रजिस्ट्रेशन-पु० [अ०] रजिस्टरमें दर्ज करना (करना, होना), पंजीवन ।

रज्जी-वि० [अ०] कमीना, पाजी; छोटी बालिका ।

रज्जु-की० दे० 'रज्जु' ।

रज्जुकुल-पु० राजपरिवार, राजवंश ।

रज्जुगुण-पु० [सं०] प्रकृतिका धर्मविशेष; तीन गुणोंमेंसे एक जिसके कारण भोग, विकास, प्रदर्शनकी शक्ति पैदा होती है (सांख्य) । -गोत्र-पु० बलिष्ठका पुत्र (पु०) ।

रज्जुवर्धन, रज्जुधर्म-पु० [सं०] रजयत्त होने, बियाँका भासिक धर्म ।

रज्जोरस-पु० [सं०] मंथकार ।

रज्जुका-वि० [अ०] रोजी, कुराक देने, पहुँचानेवाला । पु० ईश्वर, मुद्रा ।

रज्जु-की० [सं०] रस्ती, और, जेबरी; नागबीर, क्लामकी और; बियाँके सिरकी चोटी । -कंड-पु० एक आचार्य ।

वि० जिसके गलेमें रस्ती लगी या बंधी हो । -बाखक-पु० एक जलचर पक्षी । -बाख-पु० एक पक्षी (सू०) ।

रज्जु-की० [अ०] युद्ध, संग्राम, लड़ाई ।

रज्जुना-पु० रंगरेजोंका वह वस्तु जिसमें रंगे कपड़ेका रंग निचोड़ते हैं ।

रटत-की० रटनेकी क्रिया या भाव, रटाई ।

रटती-की० [सं०] माध-रूपा चतुर्दशीकी पुण्यतिथि ।

रट-की० किसी शब्दका बार-बार उच्चारण करना; कौबो-की बोली ।

रटय-की० रटनेकी क्रिया या भाव । * पु० जोर-जोरसे कहना, बोलना ।

रटना-की० रटनेकी क्रिया, पुन, रट । सं० कि० किसी शब्द, पद, वाक्यकी बार-बार आवृत्ति करना; कठाय करनेके लिए किसी गंध, पद, वाक्यका बोलकर पाठ करना, बोलना । अ० कि० बार-बार शब्द करना; वजना ।

रट-वि० शुष्क, कृष्ण ।

रटना-सं० कि० दे० 'रटना' ।

रविया-की० एक साधारण देशी कपास ।

रव-पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई, संग्राम; शब्द; रमण; गति; दुःख भेष । -कर्म(र)-पु० युद्ध, संघर्ष । -कासी(मिन्)-वि० युद्धक्षु, संग्राम चाहनेवाला । -कारी(रिन्)-वि० युद्ध, संग्राम करनेवाला । -कोष-पु० युद्धकोष, युद्धकी सहायताके लिए विशेष रूपसे इकट्ठा किया गया धन । -क्षिति, -क्षोणी, -क्षमा-की०, -क्षेत्र-पु० युद्धका ज्ञान, मैदान, खल । -क्षेत्र-पु० दे० 'रज्जु' । -गोचर-वि० युद्धक्षि । -छोड़-पु० [हिं०] कृपा (जरासंधकी लड़ाईमें रणक्षेत्र छोड़कर दारका जानेसे यह नाम पड़ा) । -दूरे-पु० रणभेरी, युद्धका वाद्य-विशेष, गुरही । -हुंहुंभी, -मेरी-की० दे० 'रज्जु' । -पंक्ति-वि० रणमें कुशल, प्रयोग, दक्ष । -विष-वि० युद्धभेरी । -भू, -भूमि-की० युद्धखल । -मत्त-पु० हाथी । -मुष्टि-पु० कुचिका । -मुख-पु० संग्रामका मुख्य भाग । -रंज-पु० हाथी

के दोनों दोंतों के बीचकी जगह। -रंग-पुं मुखक्षेत्र; मुख, संप्रभ; लड़ाईका वस्त्र। -रज-पुं व्याकुलता, व्यग्रता; प्रबल कामना; पछतावा; मच्छक। -रणक-पुं प्रबल कामना, लफाटा; अशांति, व्यग्रता; प्रेम; कामदेव। -रक्षणी-कीं मुखकी देवी जो विजय देनेवाणी मानी जाती है, विजयलक्ष्मी। -राष्ट्र-पुं मुखका राजा। -सिखा-कीं मुख-विद्या, कलाकी शिक्षा। -संकुल-पुं मुकुल मुख, वनघोर मुख। -सखा-कीं मुखका लवण, मुखकी तैयारी। -सहाय-पुं मुखमें सहायक, मित्र। -सिखा-सिंह-पुं [हिं०] तुलसी, नरसिंहा। -स्तंभ-पुं मुखमें प्राप्त विजयका स्मारक स्तंभ, विजयस्तंभ। -स्थल-पुं रणक्षेत्र, लड़ाईका मैदान। -स्वामी(मिन्)-पुं शिव; सेनापति, मुखका प्रधान संचालक। -हंस-पुं एक वर्णवृत्त (अन्य नाम मनहंस, मानसहंस)।

रत्नकार-पुं [सं०] ज्वलमानाइट, शब्द; गुजन (अम-रादिका)।

रत्नांगण-पुं [सं०] मुखक्षेत्र, लड़ाईका मैदान।

रत्नाक्षर-पुं [सं०] रणक्षेत्र, मुखमूर्ति।

रत्नेश्वर-पुं [सं०] विष्णु।

रत्नेश्वर-पुं [सं०] शिव; विष्णु।

रत्नेष्टक-पुं [सं०] कान्तिकेयका एक अनुचर; एक दैत्य। वि० जो मुखके लिपि उन्मत्त हो।

रत्न-वि० [सं०] अनुरक्त; प्रेममें पड़ा हुआ; लीन, लया हुआ। पुं समीप; किंग; योनि; प्रेम। -कील-पुं कुत्ता। -गुरु-पुं पति, स्वामी। -ताली-कीं कुटनी। -नाराक-नारीश्वर-पुं लंपट; कुत्ता; कामदेव। -मिथि-पुं खंजन, खँवरिच। -बंश-पुं दे० 'रतिबंध'। -मृग-सायी(विन्)-पुं कुत्ता। -हिंसक-पुं लंपट, दुश्चरित्र; कींचोर।

रत्न-रात'का समासमें व्यवहृत छद्म रूप। -जगा-पुं रात्रिजागरण; वह उत्सव जो रातभर जागकर हो; भाद-कुण्ठा द्वितीयाकी तिथिका त्योहार जिसमें कियों कनली जाती है। -बाँस-पुं रातका चारा (हाथियों, घोड़ोंका)।

रत्न-पुं दे० 'रत्न'। -जोत-कीं मणिविशेष; एक औरधौवयोगी पौषा (कुमार; कश्मीरमें होता है); वृह-हंती, वही देती।

रत्नाकर-पुं दे० 'रत्नाकर'; दे० 'रत्नजोत'।

रत्नागार-पुं समुद्र, सागर।

रत्नार-वि० दे० 'रत्नारा'।

रत्नारा-वि० किंचित् लाल, लालछू; लाल।

रत्नारी-पुं एक विशेष वान। कीं लाठी, लठार, मुर्खी। वि० कीं दे० 'रत्नारा'।

रत्नाकिया-वि० दे० 'रत्नारा'।

रत्नावली-कीं दे० 'रत्नावली'।

रत्नहंती-वि० लाल मुँहवाला। [कीं 'रत्नहंती']। पुं बंदर।

रत्नाहंती-कीं कोव् चक्रमेव पहले दिन रत्न बाँटनेका चक्रम।

रत्नाली-कीं काल चंदन।

रत्नायुक्त-पुं [सं०] कुत्ता।

रत्ना-कीं कर्तु; सुकनी।

रत्नाभा-अ० किं० रत्न होना। स० किं० अपनेमें रत्न करना।

रत्नावनी-कीं [सं०] वैद्या; रंजी।

रत्ना-पुं विद्या; वाराही कंद।

रत्नि-अ० दे० 'रत्नी'। कीं [सं०] दक्षप्रजापतिकी कन्या, कामदेवकी पत्नी; प्रेम, अनुराग, प्रीति, आसक्ति; संमोग, मैथुन; लौह, शोभा; शृंगार रसका स्थायी भाव; वह कर्म जिसके उदयसे मन प्रसन्न हो; रक्षस्व, गुप्त भेद; सौमन्य। -कर-वि० आनंदवर्द्धक; प्रेमवर्द्धक। पुं एक समाधि; कामी। -कह-पुं संमोग, मैथुन। -कल-पुं कामदेव। -कुहर-पुं योनि, भग। -केलि-किया-कीं संमोग। -गृह-पुं दे० 'रति-भवन'। -ह-पुं वह जो रतिक्रियामें प्रवीण हो; कीमें अपने प्रति प्रेम उत्पन्न करनेमें दक्ष पुरुष। -तस्कर-पुं कुपंथी, दुराचारी, वह जो अपने साथ स्त्रियोंको दुराचारमें प्रवृत्त करे। -दान-पुं प्रसंग, संमोग। -बैष-पुं विष्णु; कुत्ता; एक राजा। -भावा-पुं सोलह रतिबंधोंमेंसे एक। -नाथ-नाथक-पति-पुं कामदेव। -बाह-पुं कामदेव। -पक्ष-पुं एक वर्णवृत्त। -पाश-पुं एक रतिबंध। -मिथ-वि० कामुक, जिसे मैथुन प्रिय हो। पुं कामदेव। -मिथ-वि० कीं (वह की) जिसे मैथुन प्रिय हो। कीं शक्ति की श्रुति (सं०); दास्याधिणी। -प्रीता-कीं कामिनी, मैथुनसे आनंदित होनेवाली की। -कल-वि० संमोगमें आनंद उत्पन्न करनेवाला। -बंध-पुं संमोगका ढंग, प्रकार, आसन। -बंध-पुं पति; नायक। -अवध-अंधिर-पुं प्रेमी-प्रेमिकाका रतिक्रीडागृह, मैथुन-गृह; योनि, भग। -भाष-पुं की-पुरुषका परस्पर अनु-राग। -औल-पुं दे० 'रतिभवन'। -महर-कीं अन्तरा। -मिथ-पुं एक समोगसुभ्रा, आसन। -हमण-पुं कामदेव; मैथुन। -हस-वि० प्रेम जैसा यथुर। पुं रतिजन्य आनंद। -हाह-पुं कामदेव। -लंपट-वि० कामी। -लक्ष-पुं समोग। -लील-पुं एक ताल (संगीत)। -लील-पुं एक राक्षस। -बर-पुं कामदेव; रतिकी मेट (जो रतिके अग्रभागसे किसी स्त्रीकी दी जाय)। -बर्द्ध-पुं कामशक्तिवर्द्धक एक प्रकारका मोदक (भा० वे०)। -बाली-कीं प्रेम, प्रणय, अनुराग। -बाही(विन्)-पुं एक राग। -शक्ति-कीं संमोग-शक्ति। -शूर-पुं पुंस्ययुक्त व्यक्ति। -संधी-पुं संमोग। -संहित-वि० जिसमें प्रेम या प्रणयकी अधिकता हो। -सम्भरा-कीं स्पृहा। -समर-पुं मैथुन। -सह-पुं कामदेव। -साधव-पुं शिशन, किंग। -सुहर-पुं एक रतिबंध।

रत्निक-अ० भोका-सा, जरा-सा, रत्नीभर। रत्निका-कीं [सं०] जपम-स्वरकी तीन श्रुतियोंमेंसे अंतिम (संगीत)। रत्निक-अ० तबके, मुरहरे, सनेरे, प्रातःकाल।

रतिबंध-वि० खुरदुरत, सुंदर ।

रती-क्री० दे० 'रति'; † डाई जी या आठ चाबलका मान; घुँघची, गुंजा । म० बोधा, कम, जरा, जरासा, रतीभर, किंचित् ।

रतीको-म० रतीभर भी, जरा भी-‘केहू न छाँडत यूँमि रतीकी-राम० ।

रतीश-पु० [सं०] कामदेव ।

रतुआ-पु० एक बात ।

रतुआ-पु० पेरीकी ईश ।

रतोपक-पु० लाल कमल; गेरू; लाल झुरमा; लाल खुरिया ।

रतीधी-क्री० एक नेत्र-रोग जिसमें रोगीकी रातके समय नहीं सुझता ।

रतीही-वि० रागमय, रत्नाक्त-‘नाहर आव बसंत मयौ नखकेसू रतीही किये हिये खोपनि’-धना० ।

रत्न-वि०, पु० दे० 'रत्न' ।

रत्नक-पु० कुछकुछ लाल रंगका म्यालिकरकी तरफ मिलने-वाला एक पत्थर ।

रत्नी-क्री० डाई जी या आठ चाबलका एक मान; घुँघची; * सोदर्य, शोभा ।

रत्नी-क्री० लकड़ी या बौसला ढाँचा, संदूक आदि जिसपर रत्नकर शक्यो अंतिम संस्कारके लिए ले जाते हैं, टिकठी, अर्घ्य, विमान ।

रत्न-पु० [सं०] बहुमुख्य और चमकीले पदार्थ विशेषतः खनिज पत्थर जिन्हें आभूषणोंमें इकट्ठे हैं, हीरा, पन्ना, मोती, माणिक्य, लाल, जवाहर, नगीना आदि (मुख्य रत्न नौ हैं-माणिक्य, नीलम, लहसुनिया, हीरा, पन्ना, पुखराज, मूँगा, मोती, गोमेद); अपने वर्गमें, जातिमें उत्कृष्ट वस्तु, ब्यक्ति, पदार्थ; सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र्य (जै०) । -कर-पु० कुंवर । -कर्णिका-क्री० कानोंका एक जगह आभूषण (प्रा०) । -कार-पु० [हि०] जोहरी-‘मारवाली रत्नकारोंकी लुटा’-भा० ।

रत्न-वि० विकास । -कीर्ति-पु० एक गुड़ । -कूट-पु० एक पर्वत; एक बोधिसत्त्व । -केसु-पु० एक पुत्र; एक बोधिसत्त्व । -गर्भ-पु० कुंवर; एक गुड़; समुद्र । -गर्भा-क्री० पृथ्वी । -गिरि-पु० बिहारका एक पहाड़ (इसपर राजगृह राजधानी स्थित थी); एक प्रकारका रम (भा० दे०) । -गुह्य-पु० स्तूपके मध्यकी कोठरी जिसमें धातु रखी जाती थी (जै०) । -ग्रीष्म, तीर्थ-पु० एक तीर्थ ।

-गर्भ-पु० रत्नोंके अधिष्ठाता देवता; एक बोधिसत्त्व । -गर्भ-पु० एक बोधिसत्त्व । -गर्भा-क्री० रत्नोंकी छाया, कति, चमक । -तत्त्व-पु० रत्नालंकृत शब्दा ।

-गर्भ-पु० सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र्य (जै०) । -दामा-क्री० राजा जनकजी की, सीताकी माता (गर्भसं०); रत्नोंकी माला । -दीप-पु० कल्पित रत्नविशेष (कहा जाता है, पातालमें स्त्रीके कारण प्रकाश रहता है); रत्नका या रत्नजटित दीपक । -दुग्ध-पु० मूँगा । -दीप-पु० रत्नमय दीप; प्रवाल, मूँगादीप ।

-धर-वि० धनवान्, अमीर । -धारा-पु० एक पर्वत (पु०) । -जहरा-क्री० एक नदी (पु०) । -जैनु-क्री०

रत्नविमित शाय (एक महादान) । -बेध, -धव्य-पु० एक बोधिसत्त्व । -नाम-पु० विष्णु । -निकष-पु० रत्नोंकी राशि । -निधि-पु० समुद्र; छत्तेर पर्वत; विष्णु; खंजन पक्षी, मनोका । -परीक्षक-पु० रत्न-पारखी, जोहरी । -पर्वत-पु० छत्तेर पर्वत । -पाणि-पु० एक बोधिसत्त्व । -पारखी-पु० रत्न परखने, परखानेवाला ।

-पीठ-पु० एक तीर्थ (सं०) । -प्रकीर्ण-पु० रत्नविशेष जिसमें दीपकासा प्रकाश हो । -प्रभ-पु० एक प्रकारके देवता । वि० रत्नके समान दीप्तिमान् । -प्रभा-क्री० पृथ्वी । -बाहु-पु० विष्णु । -माका-क्री० मणियोंकी माला, हार; बल्कि कम्पा । -माळी(किन्)-पु० देव-वर्ग-विशेष । -मुकुट-पु० एक बोधिसत्त्व । -मुख्य-पु० हीरा । -राज-पु० लाल, माणिक्य । -राशि-क्री० रत्नोंका समूह । -शाखा-क्री० रत्नोंके रखनेका स्थान; रत्नजटित मण्डल । -संभव-पु० भ्यानी दुग्ध; एक बोधिसत्त्व । -सानु-पु० छत्तेर पर्वत । -सू, -सूति-क्री० पृथ्वी ।

रत्नवती-क्री० [सं०] पृथ्वी; वीरकेतुकी कम्पा ।

रत्ना-क्री० [म०] एक नदी (पु०) ।

रत्नाकर-पु० [सं०] समुद्र; वाष्पोंके मुनिका पूर्व नाम; खान, मणियोंके निकलनेका स्थान; रत्नसमूह; एक बोधिसत्त्व ।

रत्नागिरि-पु० दे० 'रत्नगिरि' ।

रत्नाचल-पु० [सं०] रत्नोंका ढेर; रत्नोंका कुत्रिम पहाड़ जिसे दानके लिए बनाते हैं (पु०) ।

रत्नाग्रि-पु० [सं०] एक पर्वत ।

रत्नाधिपति-पु० [सं०] कुंवर ।

रत्नाभूषण-पु० [सं०] रत्नजटित आभूषण, जवाक गहना ।

रत्नावली-वि० मणियोंकी माला; एक रागिनी; एक अर्थालंकार जहाँ प्रस्तुत अर्थ निपलनेके साथ-साथ उचित क्रमसे कुछ अन्य वस्तुओं या तत्त्वोंका उल्लेख होता है; एक प्रकारका हार ।

रत्नेश-पु० [सं०] कुंवर; समुद्र ।

रत्नोच्चा, रत्नोल्का-क्री० [म०] एक देवी (सं०) ।

रत्न-पु० [म०] बाहन, गाधी, यान (घोषों आदिसे बाहित, युद्ध, बिहारका यान जिसमें दो या चार पहिये होते थे और दो या चार पशु नाथे जाते थे); पैर, खरण; शरीर; वेतल छाता (भा० दे०); अंग, मांग; तिनिस शृङ्ख; आनंद; क्षीण-स्थान, बिहारस्थल; शतरजका एक मोहरा जिसे संमति कंट कहा जाता है । -कल्पक-पु० यह अधिकारी जिसके अधिकारमें राजाओंके रथ, बाहन आदि रखा करते थे (प्रा०); घर, बाहन, वेश आदिकी सज्जा, व्यवस्था करनेवाला वनपतियोंका अधिकारी (प्रा०) । -कार-पु० रथ बनानेवाला; एक वर्षसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति साक्षिभ्य पिता (क्षत्रिय-वैश्यसे उत्पन्न) और करिणी माता (वैश्य-शूद्रसे उत्पन्न)से मानी गयी है । -कुर्बिक-पु० सारथि । -कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

-कौत-पु० एक प्रकारका लाल (संगीत) ।

सवारों)। -**शुषि-स्त्री**० रथरविणी, रथके किनारे लम्बा हुआ लकड़ी, लोहे आदिका धरा जो सखोंके प्रहार और टक्करसे उभे बसाता था। -**चरन्-पाद्-पुं**० रथका पहिया; चक्का, चक्रनाका। -**चर्या-स्त्री**० रथसे बाधा करना। -**संस्कार-पुं**० रथोंके छिप, पकड़ी सभक (खजूर-की लकड़ी और पथरसे बनायी जाती थी-प्रा०)। -**चित्रा-स्त्री**० एक प्राचीन नदी। -**हु-पुं**० बेंत; तिमिश वृक्ष। -**नीड-पुं**० रथके भीतरका स्थान, बैठनेकी जगह, गद्दी। -**पति-पुं**० रथी, रथका नायक। -**पर्याय-पुं**० बेंत; तिमिश वृक्ष। -**प्या-स्त्री**० एक प्राचीन नदी। -**सहो-स्त्व-पुं**० दे० 'रथयात्रा'। -**यात्रा-स्त्री**० आपाद-शुद्धा द्वितीयाकी पुरीमें होनेवाला उत्सव जिसमें सुभद्रा, बलराम और जगन्नाथकी मूर्तियाँ रथपर निकालने हैं (हिंदुओंके अतिरिक्त जैन और बौद्ध भी यत्र उत्सव मनाते हैं और रथ पर जिन एवं बुद्धकी मूर्तियाँ निकालते हैं)। -**योजक-पुं**० सारथि। -**यर्म(श्)-पुं**०, -**बीधि-स्त्री**० मुख्य मन्त्र, राजमार्ग। -**बाह-पुं**० सारथि, घोड़ा। -**बाहक-पुं**० सारथि। -**बाहन-पुं**० रथके पहियोंके ऊपरवाला ढाँचा। -**शाळा-स्त्री**० रथ चलनेकी जगह, गाड़ीस्थान। -**शास्त्र-पुं**०, -**विद्या-स्त्री**० रथ चलानेकी विद्या। -**ससनी-स्त्री**० माप-शुद्धा ससनी, सयेंके रथारोहणकी तिथि। -**सुत-पुं**० सारथि, रथचालक।

रथवान्(वत्)-पुं० [सं०] सारथि, रथ हाँकनेवाला।

रथीग-पुं० [सं०] रथका पहिया; चक्र, एक अक्ष; चक्का।

-**पाणि-पुं**० चक्रपाणि, विष्णु। -**वर्ती(सिन्)-पुं**० चक्रवर्ती, सम्राट्।

रथीगी-स्त्री० [सं०] ऋद्धि नामकी ओषधि।

रथाक्ष-पुं० [सं०] रथका घुरा; पहिया; कार्तिकेयका एक मनुष्य; चार अंगुलका एक प्राचीन परिमाण।

रथाम्-पुं० [सं०] श्रेष्ठतम घोड़ा, वह घोड़ा जिसका रथ युद्धमें सबसे आगे रहे।

रथाञ्ज-पुं० [सं०] बेंत।

रथावरोही(हिन्)-वि०, पुं० [सं०] दे० 'रथी'।

रथावर्त्त-पुं० [सं०] एक तीर्थ।

रथिक-पुं० [सं०] रथका सवार, रथी; तिमिश वृक्ष।

रथी(विन्)-वि० [सं०] रथपर चलनेवाला। पुं० घोड़ा।

रथोत्सव-पुं० [सं०] रथयात्राका उत्सव।

रथोद्धता-स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

रथोपस्थ-पुं० [सं०] रथका मध्य भाग।

रथोरगा-पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति।

रथोप्या-स्त्री० [सं०] एक नदी (पुं०)।

रथ्य-पुं० [सं०] चक्र; पहिया; रथमें जुतनेवाला घोड़ा; सारथि।

रथ्या-स्त्री० [सं०] रथका मार्ग, ऋद्धि; राजमार्ग, सड़क, प्रशस्त पथ; २०, २१ हाथ लंबी सड़क (प्रा०); चौक, चौराहा; वह स्थान जहाँ कई मार्ग मिलें; रथोंका समूह; नाली, नाथदान।

रद्-पुं० [सं०] दौत। -**चङ्ख-पुं**० ओठ, अक्षर। -**छङ्क-पुं**० ओठ; दौतोंका चिह्न (विशेषतः रतिकाङ्क)। -**दान-पुं**० दौतोंका चिह्न ढालना। -**वट-पुं**० ओठ, ७२

अक्षर।

रद्-वि० खराब, रईस; तुच्छ, डीन, फोका। -**बद्दल-पुं**० परिवर्तन, खलट-मुकट, बदल-बदल।

रदन-पुं० [सं०] दौत। -**चङ्ख-पुं**० ओठ, अक्षर।

रदकी(विन्)-पुं० [सं०] दौतोंका, दौत। पुं० हाथी।

रद्वी(विन्)-पुं० [सं०] हाथी।

रद्वीक-पुं० [अ०] घोड़े, कंठपर पीछे बैठनेवाला आदमी; पीछेकी सेना; वह शस्त्र या पद जो शेर, गजल, कसीदेमें काफिये, अंशानुप्रासके पीछे बार-बार आये। -**वार-अ०** अक्षरक्रमसे। **सु०** -**चमकना-रद्वीकका** चमत्कार-पूर्ण होना। -**बाँधना-रद्वीकका** व्यवहार करना।

रद्-वि० [अ०] काटा, छोटा हुआ; तोड़ा, बदला हुआ; खराब, निकम्मा। पुं० झुटलाना; गलत साबित करना; न मानना; फेर देना। स्त्री० बमन, पै। -**(शे)बद्दल-पुं**० फेरफार, उलट-फेर, परिवर्तन।

रद्वा-पुं० तह, खट, स्तर; चारों ओर एक बारमें उठायी जानेवाली मिट्टीकी दीवारका अग्रविशेष; पूरी दीवारकी लंबाईमें एक ईंटकी जोड़ा; मिठाईकीका चुनाव (शाली-में); गरदनपर कुहनी और कलाईके बीचकी हड्डीसे आघात करना (कुइती); चमकनेकी मोहरी (विशेषकर भालुओंके मुह-पर बाँधनेकी)। **सु०** -**जमाना-आरोप** करना, इत्तहास लगाना। -**रखना-एक** तब पर दूसरी तह रखना; इल-जाम रखना; खानेपर खाना।

रद्दी-वि० [अ०] निकम्मा, बेकार। स्त्री० बेकार फेंके हुए कागज आदि। -**झाना-पुं**० वह स्थान जहाँ खराब, रद्दी चीजें फेंकी, रद्दी जायें।

रद्दार्-स्त्री० दोहर, खोल।

रद्दाराजक-पुं० छोटे छेदोंका जाल।

रन-पुं० युद्ध; जगल, वन। -**छोह-पुं**० दे० 'रणछोह'।

-**रंका-वि०** शर-बीर; बोझा, बहादुर। -**बाँकुरा-वि०** बोझा, बीर। -**बाद्री-वि०** लम्बाका, बोझा, झर।

रन-पुं० [अ०] ताल; शील; समुद्रका लक्ष-विशेष (जैसे कच्छका रन); क्रिन्ट ब्लेकमें बहैराजका एक यहिप्रयत्न दूसरे यहिप्रयत्न के बिना बहियत हुए दौड़ लगाना, धावन।

रनकना-अ० कि० (धुँवर आदिको) मंद-भद्र शब्द होना।

रनना-अ० कि० शब्द करना; हानकार करना।

रनवरिया-स्त्री० नेपालमें पायी जानेवाली एक भेड़।

रनवास, रनिवास-पुं० रानियोंका महल, अंतःपुर।

रनित-वि० शंकार करता हुआ; बजता हुआ; ध्वनित।

रनी-वि०, पुं० बोझा, बीर।

रपट्टा-स्त्री० आदत, अभ्यास, बान, 'रम्भ'; फिसलना; ढाल, उतार; दौड़ (विशेषतः तेज दौड़); रसछा, सूचना, 'रिपोर्ट'।

रपटवा-अ० कि० नीचे या आगेकी ओर फिसलना, सर-कना, जम न पाना; तेजोमे, बिना रुके, जल्दी-जल्दी चलना। सं० कि० अविलंब कर ढालना; मैथुन करना (पानाङ्क)।

रपटाना-सं० कि० सरकाना, फिसलाना; रपटनेकी प्रेरित करना; चपट कोई काम पूरा करना।

रपट्टा-पुं० फिसलन, फिसलाना; चपेट, झपट्टा; दौड़-धूप।

रक-पु० सुंदर रंग-‘विषके अमुराग सुहृगमरी रसिहरे न पंथति रूप-रक’-बन० ।

रक-वि० [अ०] कच्चा वा जल्दीमें किया हुआ, नमूनेके तौरपर बना हुआ; जो साफ, ठीक न बना हो; खुरदरा । रफते-रफते-अ० दे० ‘रफता-रफता’ ।

रफरी-पु० [अ०] वह आदमी जो किसी मामले, खेल आदिमें निर्णय करे ।

रफछ-पु० कनी चादर, ‘रैपर’ । खी० एक प्रकारकी बंदूक, ‘राफछ’ ।

रफा-पु० [अ०] उठाना, ऊँचा करना; तरकी; निकासना; दूर करना; पूरा करना; समाप्त करना; फैलना करना; निर्णय बात । -रफा-पु० खस्य करना; फैलना करना; पीछा छुड़ाना; फैलना; तय्युदा बात ।

रफाकल-खी० [अ०] संग; मेलजोल; बकावारी; एकता ।

रफास-खी० [अ०] बुलंदी, ऊँचाई; पदीशक्ति; प्रतिष्ठा ।

रफीज-वि० [अ०] ऊँचा, बुलंद ।

रफीक-पु० [अ०] संगी-साथी; सहकारी; मित्र; साक्षीदार; मुसाहिब ।

रफीदा-पु० [अ०] पुराने कपड़े जो इकट्ठे सिले हों; गद्दी ज़िमपर जीन कसते हैं; कापुक, गद्दा; वह गद्दी जिसको लगाकर नानवाई तंदूरमें रोखी बिपकाते हैं; गोल, वेढी पगड़ी (अवध, अनादर-सूचक) ।

रफ-पु० [अ०] जले, फटे कपड़ेके छोटे सुराखमें तागे भरकर बरार करना, जाली लगाना । -गर-पु० रफू करने वाला । -गरी-खी० रफू करनेका काम; रफू करनेका पेशा । मु० -करवा-असंभल, बिपरीत बातोंमें सारमजब्य जीवन । -खुलना-रफूके तागे टूट जाना । -चकर होना-चंपत, पायब, फटा होना; खिसक जाना, नुपकेसे चला जाना ।

रफ्त-खी० [फा०] रवानगी, गमन (जैसे-आमद-रफ्त) ।

रफ्तनी-खी० गमन, जाना; बिक्रीके लिफ् माल बाहर भेजना, मालकी निकासी, निर्यात ।

रजसार-खी० [फा०] गति, चाल; चलनेका ढंग, भाव ।

-गुमसार-खी० चाल-चलन, तौर-तरिका । -ज़माना-खी० जमानेकी गति, गति, चाल । - (र)मस्ताना-खी० मस्तानी चाल, झुम झुमकर चलना; नखरोंकी चाल ।

रजता-रजता-अ० क्रमशः; क्रमशः; धीरे-धीरे ।

रज-पु० [अ०] ईश्वर, परमेश्वर, मास्कि; परबदिगाय, पावन-वीण करनेवाला; * मुसलमानी मत-‘कीन्ही काल मयुरा दोहाई फेरी रबकी’-भूषण ।

रजब-पु० एक वृक्षके रस या निर्धासको पकाकर बनाया जानेवाला एक लचीला पदार्थ; रजबकी बनी हुई चीज; एक वृक्ष । खी० गहरा श्रम, रगड़; फजल हैरानी; फेट, चकर; दुमाव, चलनेके लिफ् बफिक दूरी । -छाँव-पु० माषाओं आदिके बंधनेसे मुक्त छंद ।

रजबना-स० कि० फेरना; घुमाना, चकाना । अ० कि० घूमना, चकाना ।

रजरी-खी० औटाकर गाढा किया हुआ चीनी मिश्रित दूध, बलीही ।

रजवा-पु० कीचड़; बार-बार आने-जानेसे होनेवाला श्रम ।

रु० -बचन-जोरकी बर्ण होना ।

रबर-पु० [अ०] दे० ‘रबर’ ।

रबरी-खी० दे० ‘रबकी’ ।

रबाना-पु० एक छोटा रफ जिसमें मजारे मी लगे रहते हैं ।

रबाब-पु० [अ०] एक तरबकी सारंगी ।

रबाबिया-पु० रबाब बजानेवाला ।

रबी-पु० [अ०] मीसम बहार, वसंत; वसंत ऋतुमें काटी जानेवाली फसल, चैती । -उल आखिर या सानी-पु०

मुसलमानोंका चौथा महीना (चांद्र) । -उल जीबल-पु०

मुसलमानोंका तीसरा महीना (चांद्र) ।

रबील-खी० एक विविध ।

रब्त-पु० [अ०] अन्धास, रफ्त, मयक; संभव, रिश्ता; मेल-जोल; बंदिश, जोबना । -ज़ब्त-पु० मेल-जोल, राह-रस्म; आमद-रफ्त; निरोध करना; जम्ब करना । मु० -

ऊटना-ऊटना-लगाव न रहना; बंदिश दुस्त न रहना । -डाकना-मयक, अन्धास करना ।

रब्ब-वि० [स०] आरंभ, शुरू किया हुआ । [खी० ‘रब्बा’] ।

रब्ब-पु० [अ०] दे० ‘रब’ ।

रब्बा-पु० [फा० ‘अरबा’] तीप के जानेवाली गायी; बैल-से खींची जानेवाली गायी, रथ ।

रब्बाब-पु० दे० ‘रबाब’ ।

रब्बुलरबाब-पु० [अ०] पालकोंका प्रतिपालक ।

रभस-पु० [स०] औसुक्य; आवेश; वेग, त्वरा (जल्द-बाजी-जुरे भावमें); पूर्वपरका अविचार, होक, अनुताप, पछतावा; मिलन; हर्ष; रग, रहस्य; प्रेमीस्वाह; प्रबल कामना; क्रोध; एक राक्षस । वि० वेगयुक्त; प्रबल; हर्ष-युक्त ।

रभेयक-पु० [स०] सौंपके रूपमें रहनेवाला एक राक्षस ।

रभ-वि० [स०] प्रसक्त करनेवाला, आनंदकारक; सुंदर, प्रिय । पु० आनंद, हर्ष; रमण; कामधैवत; लाल जशोका; पति; प्रेमी ।

रभक-खी० लहर, तरंग; पैंग (मूलेकी) । पु० [स०] प्रेमी; कांत; छपपति ।

रभक-वि० [अ०] बहुत थोडा, जरा-सा । खी० आखिरी सौंस; नशेका असर; स्वयं, थोडा-सा अंश ।

रभकजश-पु० आठोंमें पकनेवाला एक मोटा धान ।

रभकना-अ० कि० बिंदीकेपर धलना, पैंग मारना-‘सोटा बदे रभकत दोक दिसि, डार परसत जाय’-हरिश्चंद्र; क्षमते, हतराते हुए चलना ।

रभचकरा-पु० बेसनकी मोटी रोटी ।

रभचारी-पु० चमचा, छोटी करछी ।

रभजना-पु० दे० ‘रामजना’ ।

रभज्ञान-पु० [अ०] मुसलमानी वर्षका नया महीना ।

रभज्ञानी-वि० रमजानका; रमजान-संबंधी; रोजोंका; उनके मुतल्लिक; रमजानमें उत्पन्न । पु० मुसलमानी नाम ।

रभसोका-पु० दे० ‘रमसोका’ ।

रमसोका-पु० नूपुर, डुँवक ।

रमड-पु० [स०] हाँस; एक प्राचीन देस या वर्षाका विभासी ।

रमयणा—अ० कि० वरसना—‘वमकि सुदरस रमयि जित आनंद वम-आसारा’।

रमय—वि० [सं०] रमनेवाला; प्रिय, मनोहर। पु० केलि, बिलास, क्रीडा; संयोग, मैथुन; विचरण करना, घूमना; कामदेव; पति; गथा; जवन; अंबकोश; स्वयंका सारथि, अर्धा; परलक्ष्मी जड़; रम्यक नामक वर्षा; वक्रायन; एक वर्षावृष्टि; एक वन। —**चंद्रसेखर बैकट**—एक प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक—जन्म ७ नवम्बर १८८८; भौतिक विज्ञानमें नोबेल पुरस्कार प्राप्त १९१०। —**रामना**—स्त्री० वह नायिका जिसका नायक तो संकेत-स्थानपर पहुँच गया हो, पर वह स्वयं न उपस्थित हो पाये।

रमणक—पु० [सं०] शीतहोत्रका पुत्र; जंबूद्वीपका एक वर्ष।
रमणा—स्त्री० [सं०] रामतीर्थस्थित एक शक्ति; सुंदर स्त्री; पत्नी; प्रिया; एक वृक्ष।

रमणी—स्त्री० [सं०] स्त्री; सुंदर स्त्री; एक गंधद्रव्य, बाला, सुगंधवाला।

रमणीक—वि० सुंदर, मनोहर।

रमणीय—वि० [सं०] सुंदर, रचिर, रम्य।

रमणीयता—स्त्री० [सं०] सुंदरता, मनोहरता; स्त्री अथवा क्षण-क्षणमें नया रूप धारण करनेवाला माधुर्य (मा०)।

रमसा—वि० पुमक्वाङ्, एक जगह स्थिर न रहनेवाला।

रमति—पु० [सं०] कामदेव; नायक, प्रेमी; स्वर्ग; काल; कौशल।

रमरूखा—पु० सिंगा नामक बाजा, पुष्पका।

रमरू—पु० [अ०] ऑलैंकी एक बीमारी जिसमें ऑलैं सुल्ल हो जाती है।

रमरी—पु० अगाहन महीनेमें पकनेवाला जवहन।

रमन—वि०, पु० ‘रमण’।

रमनक—पु० दे० ‘रमणक’।

रमनसौरा—पु० एक मछली।

रमना—अ० कि० विहार करना; भोग-विलास, रतिक्रीडा करना; व्यास होना; अनुरक्त होना; घूमना-फिरना; चलता होना, चल देना; अर्द्ध हो जाना; चैन करना, दिल बहलाना; सिर करना; बसना; समाना। पु० जरा-गाह; बेरा, हाता; सुंदर, रमणीक स्थान।

रमनी—स्त्री० दे० ‘रमणी’।

रमनीक—वि० दे० ‘रमणीक’।

रमणीय—वि० दे० ‘रमणीय’।

रमक—पु० [अ०] फलित ज्योतिषका प्रकार-विशेष भ्रिममें पासे फेंककर उसके बिंदुओंके अनुसार फलका अनुमान करते हैं (भारतमें इस विधाका प्रवेश मुसलमानों द्वारा हुआ)।

रमसरा—पु० कलके लेतका एक वृक्ष।

रमा—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी; पत्नी; लोभान्वय; सपत्ति; वैभव; शोभा। —**कार**—**वच**—पु० विष्णु। —**जहै**—पु० विष्णु। —**विकेत**—**निवास**—पु० विष्णु। —**पक्षि**—**रमण**—पु० विष्णु। —**बीज**—पु० एक ताम्रिक मंत्र, लक्ष्मीबीज। —**बेष**—पु० शीवास्त चदन।

रमाना—स० कि० लगाना, जोड़ना (रास); पोतना;

सुख करना; मोहित करना; अनुरक्त बनाना; रोकना, ठहरना; अट्ठक बनाना।

रमाही—पु० एक वारीक चावल।

रमास—पु० दे० ‘रमाँस’।

रमित—वि० सुख, छुमाया हुआ।

रमी—स्त्री० भलाशा आदिमें होनेवाली एक प्रकारकी घास जो कागज, रस्ती आदि बनानेके काम आती है।

रमुज—स्त्री० [अ०] कटाक्ष; इशारा (ऑँखों, मुँह और मोँसे); पहेली; मेढ़, रहस्य (‘रम्ह’ का बहु०)।

रमेना—अ० कि० रमना।

रमेस—**रमेखर**—पु० [सं०] विष्णु।

रमेती—स्त्री० काम लेकर बदलेमें काम करनेकी प्रथा (‘हुँक बा पैठ’); ऐसे काममें लगनेवाला दिन।

रमेनी—स्त्री० बीजकका दोहों चौपाइयोंसे युक्त भाग।

रमेना—पु० राम; ईश्वर।

रम्ज—स्त्री० [अ०] इशारा (ऑँख, मुँह, मोँ आदिते); मेढ़, रहस्य; पेचदार बात; मंशा।

रम्मट—पु० युद्धके समय बजाया जानेवाला बाजा—‘ये तुरही, रम्मट, धौसे’—गूण०।

रम्माक—पु० [अ०] रमक फेंककर फल कहनेवाला, ज्योतिषी, नज्जी।

रम्भ—वि० [सं०] सुंदर, मनोहर; रमणीय, मनोरम। पु० चंपा वृक्ष; बक, जगत्स्य वृक्ष; वीर्य; बाहुके सात भेदोंमेंसे एक जिसकी वृत्ति ४ से ७ कीलतक प्रति पंदा है; अन्वीधका एक पुत्र; परलक्ष्मी जड़। —**क्षीर**—पु० वक्रायन, महानिबि। —**पुष्प**—पु० सेमरका पेड़। —**कल**—पु० कुचिला। —**क्षीर**—पु० विष्णु। —**खानु**—पु० पहाड़की चोटके ऊपरकी सम भूमि।

रम्भक—पु० [सं०] वक्रायन, महानिबि; जंबूद्वीपका एक संत; छुक, धातु।

रम्भा—स्त्री० [सं०] स्थलपद्मिनी; रात; गंगा नदी; इंद्रायन। वि० स्त्री० दे० ‘रम्भ’।

रम्भाक्षि—पु० [सं०] एक कवि।

रम्भामखी—स्त्री० [सं०] मुरईमोवला।

रम्भाना—अ० कि० गाय-भैरवा गोलना, रेंगना, धाकना।

रव—पु० [सं०] वेग, तेजी; प्रवाह; ऐलके ६ पुत्रोंमेंसे चौथा; भूक, गर्द, रज।

रवन—स्त्री० दे० ‘रयनि’।

रवना—अ० कि० गोलना, रव करना; अनुरक्त होना, प्रेममग्न होना; रेंगना, रगने मीगना; मिलना, संयुक्त होना।

रवनि—स्त्री० रवनी, रात।

रवा—स्त्री० [अ०] बाहिरदारी, दुनियासाजी, दिखावा, बनावट; मझारी। —**कार**—वि० मकार; दुनियासाज।

रवासत—स्त्री० दे० ‘रियासत’।

रवि—वि० [सं०] धनी, संपत्तिशाली। पु० कुबेर; जनि; एक प्रकारका साम।

रव्यता—स्त्री० दे० ‘रञ्ज्यत’।

ररकार—पु० रकारकी ध्वनि।

रर—स्त्री० रट, रटन।

रक्ता—खी० रक्तेका भाव; कराह; दीस, साल, कसक ।
रक्ता—अ० कि० पीड़ा देना, साधना ।
रक्ता—अ० कि० रटना, बार-बार एक ही बात कहना; (कहकर) पुकारना—‘कब जननी कहि मोहि ररे’—सूर ।
रक्षिता—वि० रत्नेवाला; गिरगिराकर मँगनेवाला, मँगनेकी पुन लगानेवाला । पु० उन्मुखी जातिका एक पक्षी, रक्षा; रक्षुआ ।
रक्षा—वि०, पु० रार या लगाना करनेवाला; मँगकी रट लगानेवाला, पीछे पककर मँगनेवाला; अथवा, नीच ।
रक्षना—अ० कि० एकमें मिलना । **सु०**—मिलना—पुलना-मिलना, एक हो जाना ।
रक्षाना—स० कि० एकमें मिलना, सम्मिलित करना ।
रक्षी—खी० कीटा, विहारा, सुधी, प्रसन्नता; एक प्रकारका अन्न, चना ।
रक्ष—पु० रक्षा, धनकमपक्षा; बाबा; हला ।
रक्षक—पु० [सं०] श्रुतिविशेष; बरौनी; ऊनी वस्त्र; कंचल ।
रक्ष—पु० [सं०] अग्नि; शम्भु; शौर; मनमनाइट, गुंजार; रक्षि, सूर्य ।
रक्षक—पु० रक्षका पेड़ ।
रक्षका—अ० कि० सपटना, लपटना; उछलना, उमगना ।
रक्षण—पु० [सं०] रव, शब्द; कोयल; ऊँट; विदूषक; सौंद; कौसा; * रमण । वि० शब्द करता हुआ; गरम, तप्त; अस्थि, चंचल । —**रेती**—खी० यमुनातटको रेतीकी भूमि, कृष्णका विहारस्थल ।
रक्षार्हा—खी० रावत (राजा) होनेका भाव; प्रभुता, स्वामित्व ।
रक्ष—पु० [मं०] कोयल ।
रक्षन—वि० कीटा, रमण करनेवाला । पु० पति, भर्ता, स्वामी; रमण ।
रक्षना—अ० कि० शब्द करना, बोलना; रमना; कीटा, रमण करना । पु० रावण ।
रक्षि, रक्षनी—खी० रमणी, मंदरी, खी ।
रक्षना—पु० रवाना होनेका, राहदारीका परवाना, जानेवाली चीजके साथ रक्षनेवाली चुगीकी रसीद, प्रमाणपत्र; कागज जिसपर रवाना किये हुए मालका विवरण हो; भेज काम काज करने या सोदा जानेवाला लोदीहार ।
रक्षा—वि० [फा०] प्रवाहित, बहता हुआ; जारी; भक्षक किंवा हुआ, अभ्यस्त; बोझा (शस्त्र आदि); दे० ‘रवाना’ ।
रक्षित—पु० नेत्रे, लोभिवेकी जातिकी सम्जीका पोषा ।
रक्षा—पु० छोटा टुकड़ा, कण, टाना (चौदी, चावल, चीनी, मिश्रीका रवा); घुघुकी छरी; बारुका दाना; मूजी ।
—द्वार—वि० दानेदार, रवेवाला । —**अर**—अ० परासा, नडत थोड़ा ।
रक्षा—वि० [फा०] उचित, ठीक; प्रचलित; पूरा करनेवाला (समाप्तमें) । —**द्वार**—वि० हितैषी, श्रुतचित्तक; संवंध, लगाव रखनेवाला । —**रक्षी**—खी० जल्दी, भाग-दीड ।
रक्षा—पु० [फा०] चलन, रीति, प्रथा, परिपाटी ।
रक्षा—पु० [सं०] रंधक चीजकी बजम करनेवाला ।
रक्षानी—खी० प्रस्थान, प्रमाण ।
रक्षाना—वि० [फा०] प्रस्थित, चला हुआ; भेजा हुआ ।

रक्षानी—खी० बड़ा, प्रवाह ।
रक्षानी—वि० खी० आनंद प्रवाहमें गमन—‘आज देखी अति-अति राख रक्षानी है’—घन० ।
रक्षा—पु० दे० ‘रक्षा’ ।
रक्षा—पु० लाल, बल्ला अथवा; दे० ‘रक्षा’ ।
रक्षा—खी० [अ०] कहानी; कहावत ।
रक्षा—पु० एक पेड़ जिसके नीच और पत्ते दवाके काम आते हैं ।
रक्षि—पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; सरदार; जाक, मदार; लाल अशोक; पहाड़; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; बारहकी संख्या ।
—कर—पु० सूर्यकिरण । —**कांतमणि**—पु० सूर्यकांतमणि । —**कुल**—पु० सूर्यवंश । —**मणि**—**०** **रक्षि**—पु० राम । —**चंचल**—पु० काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थ, लोलाककुंड । —**चक्र**—पु० सूर्यका मंडल; सूर्यके रथका पवित्रा; जीवनके शुभाशुभका निरूपण करनेवाला चक्रविशेष (ज्यो०) । —**ज**—पु० ‘रवितनय’ । —**केतु**—पु० सूर्यके उत्पन्न तारे, पुच्छल तारे । —**जा**—खी० यमुना । —**जात**—पु० सूर्यकिरण । —**तनय**—**नंद**—**नंदन**—**पुत्र**—पु० सावणि मनु; वैवस्वत मनु; यम-राज; शनि; अभिनिकुमार; सुधी; कण । —**तनवा**—**तनुजा**—**नंदिनी**—खी० यमुना । —**तीर्थ**—पु० एक प्राचीन तीर्थ । —**दिन**—पु० रविवार, शतवार । —**नाथ**—पु० कमल, पद्म; बंधूक, दुपहरिया । —**नेत्र**—पु० दे० ‘रविलोचन’ । —**वृत्त**—पु० दे० ‘रवितनय’ । —**मित्र**—पु० लाल कमल; लाल कनेर; ताँबा । —**बाण**—पु० वह बाण जिसके चलनेसे सूर्यका सा प्रकाश हो । —**विष**—पु० सूर्यका मंडल; माणिक्य । —**मंडल**—पु० सूर्यके चारों ओर दिखाई देनेवाला लाल मटल; सूर्यका विष । —**मणि**—**रक्ष**—पु० सूर्यकांतमणि । —**रक्षक**—पु० माणिक्य । —**लोचन**—पु० विष्णु । —**लौह**—**संज्ञक**—पु० ताँबा । —**वंश**—पु० सूर्यवंश । —**वंशी**—**विष्णु**—पु० सूर्यवंशमें उत्पन्न पुरुष, सूर्यवंशी । —**वार**—**वासर**—पु० शनिवार, आदित्यवार । —**वारधि**—पु० अर्जुन । —**सुंदर**—पु० भगदरके लिपि उपकारक एक रम (आ० वे०) । —**सुखन**—पु० दे० ‘रवितनय’ । —**सुत**—**सुनु**—पु० दे० ‘रवितनय’ ।
रक्षि—पु० [सं०] एक जैन आचार्य ।
रक्षि—खी० [फा०] बगोचेकी भ्यारियोंके बीच चलनेके लिए बना हुआ पतला रास्ता; चाल, रफ्तार; दंग, तौर; रस्म, रवाज; कानून, कायदा; चलन, रवैया ।
रक्षिनाथ ठाकुर—पु० कवि, नाट्यकार, कहानी लेखक आदि, जन्म ७-५-१८६१; भारतके प्राचीन आदर्शोंके प्रेमी थे, १९०१ में शान्तिनिकेतनकी स्थापना; १९१३ में गीतांजलिपर नोबेल पुरस्कार मिला; मृत्यु ८ अगस्त १९४१ ।
रक्षि—पु० [सं०] कामदेव ।
रक्षि—पु० चलन, प्रथा; तौर, तरीका ।
रक्षाना—खी० [सं०] काची, करपनी; रस्सी; जिहा; लगाव, रसिम । —**कलाप**—**गुण**—पु० एक प्रकारकी भाषेकी बनी करपनी ।

रसाधोपमा-खी० [सं०] दे० 'रसनीपमा' ।

रसक-पु० [फा०] जलज, बाह्य, कुदर, ईश्वरी, हसद ।

रसिम-खी० [सं०] किरण; रस्सी, डोरी; धोनेकी लगाम; बुरीनी । -रसराप-पु० चीसत या चीजन कठिबोझका मुक्ताहार । -रसु-पु० कृषिका नक्षत्रमें स्थित होकर उदित होनेवाला ऋतु, पुच्छलतारा । -रसित-पु० आदिलपत्र । -रसाली(रिज्)-पु० मर्य । -रसुच-पु० मर्य ।

रस-पु० [सं०] स्वाद, रसनैद्रियका ज्ञान, संवेदन (इसकी संख्या ६ है-मधुर, अम्ल, कषण, कटु, कषाय और तिक्त); ६ की संख्या (न्या०); साये हुए अन्नका प्रथम परिणाम; तत्त्व, सार; मनमें उत्पन्न होनेवाला वह भाग जो काम्य-पाठ, अभिनय-दर्शन आदिसे होता है, विभाव, अनुभाव और संचारीके योग द्वारा अर्जित स्वाधी भावमें उत्पन्न चित्तवृत्ति-विशेष, आनंद (सा०) (ये जो प्रकारके माने गये हैं-भृंगार, हास्य, कृष्ण, बीर, वीर्यम, रौद्र, भयानक, शांत और अद्भुत); नौकी संख्या (सा०); आनंद प्रेम; श्रव, तरल पदार्थ; जल; शराप; वेग, उमंग, जोश; हृच्छा; केकि, कामक्रीडा; गुण; फली, वनस्पतिवर्षाका जलीय अंश जो कूटने, दबाने या निचोड़नेसे निकलता है; छोरवा; रसा; शरवत; बुझका निषीस, मोह; धोखे, हाथियोंका एक रोग (इसमें पैरसे पानी निकलता है); धौय; राग; विष; दूध; अमृत; गधरस; शिलारस; पारा; हिंगुल, शिगरफ; धातुओंकी फूँककर तैयार किया हुआ मस (जैसे-रससिंदूर-आ० वे०); एक गधद्रव्य, बिल; एक प्रकारकी भेज; भोति । -रसूर-पु० [हि०] औषधीपयोगी मकंद रगकी एक धातु । -रसु(रु)-पु० पारे द्वारा रस तैयार करनेकी क्रिया (आ० वे०) । -रसु-खी० विहार, क्रीडा; ईसी-दिहगी । -रसुर-पु० कूर । -रसुरी(रिज्) पु० पारे, गंधक आदिके सेकसे तैयार की जानेवाली एक रसोपधि । -रसुरी-पु० रसगुला । -रसुर-पु० सपरिया, संगपसरी । -रसुर-खी० [हि०] मीठा भात । -रसु-रसु-रसु-पु० रसित; शिगरफ; बोल नामक गंध-द्रव्य । -रसुअवर-पु० शरीरकी धातुमें प्रविष्ट ज्वर । -रसु-पु० रसित, रसाजन; ईश्वर; हिंगुल, शिगरफ । -रसुरी-वि० रसक, काम्य, संगीतका भाता । -रसु-पु० [हि०] छेनेसे बनायी जानेवाली एक मिठाई । -रसु-पु० जीम । -रसु-वि० जो परम स्वादिष्ट हो । पु० आनंदधन, कृष्ण । -रसु-पु० सुहागा । -रसुरी-पु० ईशका रस छाननेकी छरनी । -रसु-पु० गुड; रसित; शरावकी तरलछट । -रसु-पु० रसित । -रसु-वि० रसका भाता; कुशल, निपुण; काम्यमार्ग । -रसु-खी० जीम; गंगा । वि०, खी० दे० 'रसक' । -रसु-पु० भृंगार रस; मधुर, मीठा रस । -रसु-खी० [हि०] एक प्रकारका गन्ना । -रसुअवर-खी० जलकी तन्मात्रा (सा०); दे० 'तन्मात्रा' । -रसुअवर-पु० एक प्रकारका रस (आ० वे०) । -रसु(रु)-पु० रसक, रसित । -रसु-पु० निरम, आचारसे स्वादिष्ट पदार्थोंका स्वाग करना (जै०) । -रसु-वि० सुदृढ़, आनंददायक; स्वादिष्ट । पु० विकसित । -रसु-खी० सफेद मिर्चुनी, सिंधुमार ।

-रस-वि० [हि०] जिसमें रस हो, शोरबेदार; रसवाला (आम, नीच आदि); स्वादिष्ट । -रसु-खी० गन्ना, कन्ना । -रसु(रिज्)-पु० मीठा बनीरी नीच । -रसु-खी० पारा; शरीरकी सात धातुओंमेंसे एक । -रसु-खी० दानके निमित्त निमित्त गुडकी गाय । -रसु-पु० पारा । -रसु-पु० रसित । -रसु-पु० पारा; शिव । -रसु-पु० शाक वृक्ष । -रसु-खी० मैनसिल । -रसु-पु० पारा; भृंगार रस; राजा; पृथ्वी; चंद्रमा । -रसु-पु० दे० 'रसत्याम' । -रसु-खी० पारेकी शोषकर बनाया जानेवाला एक रस (आ० वे०) । -रसु-पु० गुड; चीनी । -रसु-पु० रसोदया, भोजन बनानेवाला । -रसु-पु० गंधक, पारे, नमकने निमित्त एक दवा । -रसु-खी० सतावर, मालकंगनी । -रसु-पु० मालक; प्रथमकाव्य । -रसु-पु० नारियल; अंबला । -रसु-पु० सोमरता । -रसु-पु० शरीरके भीतर नारीका एक अंश (आ० वे०) । -रसु-खी० [हि०] पुरानी नालकी बंदूक-तोपे दागनेका पल्लो । -रसु-खी० [हि०] एक फल, मकीय । -रसु-पु० रसक, रसित । -रसु-पु० पारेका मस । -रसु-वि० [हि०] आनंदमें मग्न; आनंद, तर । -रसु-पु० पारेसे तैयारकी जानेवाली एक औषध; रसका भेदोपभेद (सा०) । -रसु(रिज्)-पु० एककर रसकी अधिकतासे फटा हुआ फल । -रसु-पु० पारेकी मारने, मस करनेकी क्रिया । -रसु-पु० शरीरसे निकलनेवाली मल । -रसु-वि० आनंदमग्न, रंगमें मस्त; पसीनेसे भरा; आत; तर, लोला । -रसु-पु० हलताल आदिसे बनायी जानेवाली एक औषध । -रसु-खी० दे० 'रसमातुका' । -रसु-खी० जीम । -रसु-पु० पारा मारने, छुद करनेकी क्रिया । -रसु-खी० एक सुगंधित द्रव्य, शिलारस । -रसु-खी० [हि०] एक रंगला मिठाई । -रसु-खी० दो रसोंका उपयुक्त मेल (जैसे-कडुआ-तीता, तीता-नमकीन, भृंगार-हास्य इ०) । -रसु-पु० एक औषध । -रसु-पु० भृंगार रस; रसित; पारा; लंबेके मस, गंधक, पारे आदिके योगसे बनायी जानेवाली एक औषध । -रसु-पु० दे० 'रसराज' । -रसु-वि० रसवाला, जिसमें रस हो । -रसु-पु० पारा । -रसु-पु० रसजन; पारा । -रसु-पु० कुछ विशिष्ट द्रव्य जिनसे रंग निकाला जाता है (जैसे-लाक, हलदी, मजीठ, डाक, हरसिंगार आदि) । -रसु-खी० [हि०] दे० 'रसक' । -रसु-पु० रसाराप, प्रेम, आनंदकी वातचीत; छेकछाक; हांगका; बकवाद । -रसु-पु० दमनका पहाक मेद जिसमें एक गुरु और एक लघु रहता है । -रसु-खी०-खी० भोजनसे बने रसकी फैलानेवाली नाडी (आ० वे०) । -रसु(रिज्)-पु० मधु-विकेता, हाराय रचनेवाला । -रसु-पु० रसका अनुचित मेल (जैसे-तीता-मीठा, कडुआ-मीठा इ०-आ० वे०); एक पधमें दो प्रतिकूल रसोंकी स्थिति (जैसे-भृंगार-रौद्र, हास्य-भयानक इ०-सा०) । -रसु-पु० सीता । -रसु-पु० एक आयुर्वेदीक रस जो प्रवृत्ताके लिए उपयोगी है । -रसु-पु० रसायन-शास्त्र । -रसु-पु०

पु० उपपद आदिमें उपकारक एक आयुर्वेदिक रस ।
 सौधव-पु० सुधामा; पारेको शुद्ध करना । -संभव-
 पु० रक्त, लून । -संरक्षण-पु० पारेको शुद्ध करना,
 युक्तित करना, बंधना और भस्म करना । -संस्कार-पु०
 पारेका बंधन, मूर्च्छन, मारण आदि अटारह संस्कार । -
 सागर-पु० ईश्वर रसका शुद्ध दोषरूप एक सागर (पु०) ।
 -साम्य-पु० चिकित्साके पहले परीक्षा करना कि रोगीके
 शरीरमें कौन रस कम और कौन अधिक है । -सार-पु०
 मधु । -सिद्ध-पु० पारे, बंधकके योगसे निर्मित एक
 रसोपध । -सिद्ध-वि० रसकी अभिव्यक्ति आदिमें कुशल ।
 -स्वाभ-पु० ईशुर, हिंदुल, शिगरफ । -जाव-पु०
 अमलनेत्र ।

रस-वि० [फा०] पहुँचानेवाला; स्निह होनेवाला; छूने-
 वाला । पु० वह आदमी जिसके पास कोई पहुँचे ।

रसक-पु० [सं०] क्षपरीया, संगेवसरी; फिटकरी । -कार-
 वेष्टक-पु० संगेवसरी, पतला क्षपरीया । -वर्तुर-पु०
 दलदार मोटा क्षपरीया ।

रसक-की० [सं०] एक कुछ रोग ।

रसद-पु० [फा०] अनाज, खानेका सामान; भत्ता, राशन;
 बिस्ता, बस्तर; सेनाके लिए खाद्य सामग्री । वि०, पु०
 [सं०] दे० 'रस'में ।

रसन-वि० [सं०] पसीना कानेवाला । पु० आस्वादन,
 स्वाद लेना; ध्वनि; कक; जिह्वा; † रस्ता ।

रसना-अ० कि० रसमग्न होना; प्रकृत होना; तन्मय
 होना; पूर्ण होना; † धीरे-धीरे बहना; टपकना । सं० कि०
 कोई द्रव पदार्थ धीरे-धीरे छोड़ना, टपकना । की० [सं०]
 जीम; रसस्वाद (न्या०); एक ओषधि; रास्ना, नागदौनी;
 गंधमहा; मेखला, करबनी; रस्ती; कगाम; चंद्रहार । -रस
 -पु० पक्षी (शौत न होनेसे जीमसे ही बोलनेवाला) । सु०
 -बोलना-बोलना आरंभ करना । -ताकूले कगाना
 -बोलना बंद करना ।

रसनापद-पु० [सं०] निर्वच ।

रसनीय-वि० [सं०] स्वाद लेने वा चखने योग्य; स्वादिष्ट ।

रसमंत्रिय-की० [सं०] रसना, स्वादकी इन्द्रिय, जीम ।

रसमेष्ट-पु० [सं०] ईश्वर ।

रसमोपसा-की० [सं०] उपमानका एक भेद जिसमें उप-
 मानोंको एक श्रृंखला रहती है और उपमेय उपमान होता
 जाता है ।

रसमग्न-की० रसिम, किरण-‘छूटी छवि-रसमें व्यक्त बोले
 वसमें’-वन० । † पु० दक्षिण भारतीयोंका, दालकी तरह
 का, एक खाद्य पदार्थ ।

रसमसा-वि० रसमग्न; पसीनेसे युक्त; रसमय, आनंद-
 मय-‘योगी औ गोपात्रकी अति रसमयी समाज’-हरि-
 चन्द्र ।

रसमसाना-अ० कि० रसमसा होना, रस वरसना-
 ‘सदा सामयन इत रसमसे’-वन० ।

रसमि-की० रसिम, किरण; प्रकाश, आभा ।

रस-रस-अ० धीरे-धीरे, धनै-धनै ।

रसर-की० रस्ती-‘री वने कौन कर, कचे पही रसर’-
 ‘आज’ (२६-१-५४) ।

रसर-पु० दे० ‘रस्ता’ ।

रसरी-की० रस्ती, बीरी ।

रसवंत-वि० रसमरा, रसीला । पु० रसिक; प्रेमी; रसग ।

रसवंसी-की० रसीत ।

रसवत्-की० दे० ‘रसीत’ ।

रसवती-की० [सं०] शुद्ध स्वरवाली एक संपूर्ण जातिकी
 रागिनी; रसोत्तर । वि० की० रसपूर्ण, रसीली ।

रसवत्ता-की० [सं०] रसीलापन, रसयुक्त होना; माधुर्य,
 मिठास; सुंदरता ।

रसवर-पु० नाबके छेदोंको भरनेका मसाला ।

रसवाद(वत्)-वि० [सं०] रसवाला, जिसमें रस हो । पु०
 एक अर्थकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रसका अंग
 होकर प्रयुक्त हो ।

रस-वि० [फा०] पहुँचानेवाला, दूर जानेवाला (जैसे-
 विद्युत्तर) ।

रसांगक-पु० [सं०] शीवेष्ट; घूपका शुद्ध ।

रसाजिन-पु० [सं०] रसीत ।

रसा-की० [सं०] भूमि, पृथ्वी; नदी; रसातल; जिह्वा;
 अंगूर; आम; लोहवान; सिकारत; काकीली; वैजनी;
 सलई; पादा; मेदा । -रस-पु० सुगं । -रस-पु०
 पृथ्वीके नीचेके सात लोकोंमेंसे छठा । [सु०-०-पहुँचाना-
 -बरबाद कर देना, मरिचामंद करना ।] -रसि-पु०
 राजा । -रासी(विष्णु)-वि० जीमसे पानी पीनेवाला ।
 पु० कुत्ता । -रसव-पु० एक गन्धद्रव्य, नील ।

रसा-पु० शोरवा, शोक (सरकारी आदिको) । वि० [फा०]
 दे० ‘रसी’ । -रस-वि० शोक, शोचनेवाला ।

रसाइन-पु० दे० ‘रसायन’ ।

रसाहनी-पु० रसायनी, रसायन विद्या पाननेवाला,
 कीमियागर ।

रसाई-की० [फा०] पहुँच; दाखिल ।

रसाप्रक्ष-पु० [सं०] रसीत ।

रसाज्वा-पु० [सं०] स्वाद, रसका पता न होना; रसका
 अनुभव न करना, चखनेपर भी खटाम, मिठास आदिका
 अनुभव न करना (आ० वे०) ।

रसाज्ज-पु० [सं०] अमका । वि० रससिक्त ।

रसाज्ज-वि० [सं०] रसयुक्त; सुंदर ।

रसाचार-पु० [सं०] स्वयं, रवि ।

रसाधिक-पु० [सं०] सुखागा ।

रसाधिक-की० [सं०] किशमिश ।

रसाप्यज्ज-पु० [सं०] मादक द्रव्योंकी जौंच-पकताह तथा
 विकसकी व्यवस्था करनेवाला राजकर्मचारी ।

रसाणा-अ० कि० आनंद लुटना-‘राध अज मिश्रित नस
 रसनि रसादे’-नागरी० । ० सं० कि० आनंदित करना-
 ‘सिन्है रुवे सोहै करी रसियानि रसाकै’-वन० ।

रसाभास-पु० [सं०] किसी रसका अनुचित प्रकरण या
 स्वातंत्र्य वर्णन; एक अर्थोत्कार (हसमें हसी प्रकारके वर्णन
 रहते हैं) ।

रसावृत्त-पु० [सं०] एक प्रकारका आयुर्वेदिक रस ।

रसावृत्त-पु० [सं०] अमलनेत्र; वृक्षारु, विषाणिक; एक
 खटई, चुक ।

रसामयक-पु० [सं०] एक तरहकी वास ।

रसामयक-की० [सं०] कलाविशेष, पञ्चाङ्गी ।

रसामयक-पु० [सं०] एक वास ।

रसायन-पु० [सं०] पदार्थोंका तत्त्वगतज्ञान, दे० 'रसायन-कला'; जराभ्याभिननायक ओषधि (जैसे-विद्वंगरस, माहीरस इ०); तबिते सीना बनानेका कल्पित योग; भातुओंको भस्म करने, एक भातुको दूसरी भातुमें परिवर्तित करनेकी विधा; मठा, तक्र; विष; कटि, कमर; बाय-विडंग; गहब । -ह-वि०, पु० रसायनविद्याका जानने-वाला । -फका-खी० बह, बरे । -वर-पु० लहसुन । -बरा-खी० काकजंघा; कँगनी । -विज्ञान, -शास्त्र-पु० पदार्थमें मिलनेवाले तत्त्वोंका विवेचन करनेवाला और तत्त्वगत पदार्थोंमें परिवर्तन होनेपर पदार्थकी नयी स्थितिका निरूपण करनेवाला शास्त्र । -जैह-पु० घारा ।

रसायनिक-पु० कीमियागर । वि०, पु० दे० 'रासायनिक' । रसायनी-पु० कीमियागर । खी० [सं०] दुहापेकी दूर करने वाली ओषधि; गोरखदुखी, अमृतसंजीवनी; शुद्ध; महा-करंज; मकोब; मजीठ; मांसरोषिणी; कंदगिलोब; कनफोजल; सफेद निलोब; शंखपुष्पी; नाडी ।

रसार-वि०, पु० दे० 'रसाल' ।

रसाल-वि० [सं०] रसीला; मीठा, मधुर; स्वादिष्ट; सुंदर; शुद्ध, भावित । पु० आम; कटहल; ईख; गेहूँ; लोभान; अमलभेत; कुंदर तुण; बोल नामक गंधद्रव्य; * राजस, कर, बरहाल; दे० 'रिसाल' । -शर्करा-खी० ईखके रसकी चीनी ।

रसालय-पु० [सं०] रसशाला, रसनिर्माणका स्थान; आमोद-प्रमोदका स्थान; आमका पेड़ ।

रसालय-पु० कौतुक ।

रसालसा-खी० [सं०] बीड़ा, गन्ना; गेहूँ; कुंदर तुण ।

रसाला-खी० [सं०] शीलब, सिलखन; दही, घी, मिर्च, शहद आदिके योगसे बननेवाली एक प्रकारकी चटनी; दहीमें लाना गया सत्तू; पौड़ा; अंगूर, दाख; दुब; विदारिकंद; जीम । * पु० दे० 'रिसाला' ।

रसालाञ्ज-पु० [सं०] कलमी आम ।

रसालिका-वि० खी० [सं०] रसयुक्त; शृद्ध; मधुर । खी० अँधिया; ससला, सातला ।

रसालिहा-खी० [सं०] पिठवन ।

रसाली-खी० [सं०] बीड़ा ।

रसाली(छिन्न)-पु० [सं०] बीड़ा, गन्ना; चना ।

रसालेख-पु० [सं०] बीड़ा ।

रसाव-पु० रसनेकी क्रिया या भाव; जोतकर तथा हँगा चलाकर लेतकी यों ही रबने देना ।

रसावर, रसावक-पु० दे० 'रसीर' ।

रसावा-पु० ईस्का कच्चा रस रसनेका मिट्टीका पात्र ।

रसावैह-पु० [सं०] गंधाविरोध ।

रसाव-पु० [सं०] मधपात्र ।

रसासी(विन्न)-वि०, पु० [सं०] शराबी, मद्यप ।

रसावासा-खी० [सं०] पञ्चाङ्गी कला ।

रसावक-पु० [सं०] घारा, कोड़ा, ईपूर आदि आठ महा-

रसोंका समाहार ।

रसास्वादी(विन्न)-वि० [सं०] रसका आस्वादन करने-वाला, रस चखनेवाला; आनंद लेनेवाला । पु० भ्रमर ।

रसाङ्क-पु० [सं०] गंधाविरोध । वि० रसवाचक ।

रसाङ्क-खी० [सं०] रसाला; सतावर । वि० खी० दे० 'रसाङ्क' ।

रसिआउर-पु० ईख या गुब्बेके रसमें पकाया हुआ चाबक, बखीर; नबबू द्वारा प्रस्तुत रसियाबर जीमते समय गाया जानेवाला गीत ।

रसिआवर, रसिआवक-पु० दे० 'रसिआउर' ।

रसिक-वि० [सं०] रस, स्वाद लेनेवाला; आनंदी, मीठी, कोडाप्रेमी; रसयुक्त, स्वादिष्ट; सुंदर, मनोहर । पु० प्रेमी; सहृदय व्यक्ति; काव्यमर्मज्ञ, रसिया; विषय-विशेषका पारखी, पंक्ति; बोका; सारस; हाथी; एक छंद ।

-विहारी(विन्न), -शिरोमणि-पु० कृष्ण ।

रसिकता-खी० [सं०] रसिकपन; सुरभि; हँसी-मजाक ।

रसिका-खी० [सं०] सिलखन, दहीका शरवत; ईस्का रस; जीम; करवनी; सारिका; जरीरकी बातु । वि० खी० दे० 'रसिक' ।

रसिकाई-खी० रसिकता ।

रसिकेश्वर-पु० [सं०] कृष्ण ।

रसिख-वि० [सं०] रसयुक्त; ध्यान करता, वज्रता, बोलता हुआ; झुलझा किया हुआ; जरा-जरा टपकता, रसला, बहता हुआ । पु० ध्यान; सत्य; अंगूरी सराब, द्राक्षास्य । रसिया-पु० रसिक, रस लेनेवाला व्यक्ति; कायुनका एक गीत जिसके गानेका रचाव मज तथा बुंदेलखंडमें है ।

रसियाव-पु० ईखके रसमें पका चाबक, बखीर ।

रसी-खी० एक तरहकी सखी । पु० * दे० 'रसिक' ।

रसीब-खी० [फा०] पहुँच, प्राप्ति; किसी चीजके मिलनेका प्रमाणपत्र; खबर, वता । झु०-करना-(चौंदा, थपक आदि) लगाना, देना । -काटना-रसीब छिलकर देना ।

रसील-वि० दे० 'रसीला' ।

रसील-वि० रसयुक्त, रसपूर्ण; स्वादिष्ट, मजेदार; रस, आनंद लेनेवाला; ब्यसनी, बिलासी; बोका, छैला । [खी० 'रसीली'] -पन-पु० रसीला होना ।

रसुन-पु० [सं०] लहसुन ।

रसूम-पु० [अ०] (रसमका बटु०) रसम; नियम, कानून; नेग, प्रथातुसार दिया जानेवाला धन; नजराना, भेंट (विशेषतः किसानोंकी ओरसे जमींदारोंकी) । -अदा-कत-पु० सरकारी न्यायके लिपि मुकदमा वायर करते समय दिया जानेवाला धन, कोर्टफीस, स्टॉप ।

रसूल-पु० पैगंबर, ईश्वरका दूत ।

रसूली-वि० [अ०] रसूल-सवधी; रसूलका । खी० एक प्रकारका गेहूँ या जौ; एक प्रकारकी काली मिट्टी ।

रसैङ्ग-पु० [सं०] जीरा, धनिया, पीपल, विट्ठ, शहद और रससिद्धके योगसे बननेवाली एक रसोपध; पारा; राजमाष । -बेचक-पु० सीना ।

रसेबसे-अ० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः ।

रसेचर-पु० [सं०] घारा; एक रसोपध; दर्शनविशेष (रसमें पारेकी शिवका वीर्य और गंधकतो पार्यतीका रज-माना गया है) ।

रहा-वि० बचा हुआ, छूटा हुआ ('रहना' का भूतकाळीन रूप) । -रहा-वि० बचा-बचाया, बचा-छुचा ।

रहाइस-श्री० चित्ति, सङ्गता; बरदास; युञ्जहास ।

रहाई-श्री० रहना; आराम, चैन ।

रहाड़ी-श्री० टेक, स्थायी, गीतका पद्य पद ।

रहाड़-वि० [सं०] परामर्श देनेवाला । पु० मंत्री; प्रेतात्मा ।

रहावा-अ० कि० होना; रहना ।

रहावनी-श्री० गाँवके पशुओंके खड़े होनेकी जगह ।

रहिय-वि० [सं०] 'रह' के विना, 'रह' से होन, शून्य ।

रहियी-पु० वना ।

रहीम-वि० [अ०] रहम करनेवाला, कृपाणु । पु० अम्बुज रहीम खानखाना का काव्यनाम; परमात्मा ।

रहुवा-पु० डकखोर, खानेपर काम करनेवाला ।

रहू-वि० दे० 'रह' ।

रहूवा-श्री० कम उपजाऊ भूमि (कंकरीली, पथरीली, केंचीनीची भूमि) ।

रहूव-वि० रहू-रहू 'रहू' कौन सुदामा हूँ आप समाज करे'-सुर ।

राक-पु० [सं०] रक्त युगके रोमसे बना बल आदि ।

राग-पु० दे० 'रागा' ।

रागशी-पु० एक प्रकारका चावल ।

रागा-पु० एक प्रसिद्ध धातु-रंग, रंग ।

राँव-वि० दे० 'रव' । अ० जरा भी ।

राँवना-अ० कि० भ्रम करना, अनुरक्त होना, रंग पकटना । स० कि० रंगना, रंग चढ़ाना ।

राँजना-अ० कि० आँखमें काजक लगना । स० कि० रंगना; रंगिते जोड़ना, टीका लगाना (फूटे बरतन आदिमें) ।

राँदा-पु० दिदिहरी, दिट्टिय; दे० 'रहँदा' । श्री० चोरोकी सांकेतिक भाषा ।

राँव-श्री० बेवा, विधवा, जिस स्त्रीका पति मर चुका हो; वेधवा, रंडी (क०) ।

राँदी-पु० एक बंगाली चावल ।

राँवना-अ० कि० रोना, विषाद करना ।

राँव-अ० पास, निकट । वि० परिपक्व मुक्तिवाला (प०) ।

-पक्कीस-अ० आस-पास, अकौस-पक्कीसमें ।

राँवना-स० कि० पकना (ओज्ज्वल), पाक करना ।

राँपी-श्री० मोचिवीका चमड़ा छीलने, तराशनेका एक औजार ।

राँमना-अ० कि० रँवना, बोलना, चिलाना (गाय, बैल, भैंस आदिका) ।

राभा-पु० राजा ।

राह-पु० राय, सरदार, छोटा राजा ।

राहता-पु० दे० 'रायता' ।

राहूक-श्री० [अ०] एक तरहकी बंदूक ।

राहूद्वारा-पु० दे० 'रामद्वारा' ।

राहू-श्री० एक छोटी सरस; अथ परमाणु; * राजसी, राजा होना । -अर-अ० बहुत थोड़ा । सु०-काई करना या होना-डुकने-डुकने करना, होना । -नोन उतारना-नजराने बन्नेके सिरके चारों ओर राई नमक पुसाकर जागमें डालनेका ढोंक । -रही करके-

बारीकसे बारीक हिसाब करके । -से पर्वत करना-जरासी बातकी बहुत बढ़ाना; हीनकी महान् बनाना ।

राहू-पु० राजा ।

राहू-पु० राजवंशीय व्यक्ति; क्षत्रिय; वीर पुरुष ।

राहू-पु० अंतर्पुर, जमानखाना (राजाजीका)-'ये सुनंत तब राहू माही'-रामा० । सर्वे आपका, श्री-मानका ।

राहू-पु० राजकुलोत्पन्न पुरुष; राजा ।

राहू-पु० राहू । -गहा-पु० कर्दव नामक बैल; इस बैलकी जड़ । -ताहू-पु० कैलासके उत्तरकी एक शील, रावणहृद, मानतलाई । -वत्ता-पु० जंगली बंदूक ।

राहू-पु० राहू ।

राहू-श्री० [सं०] पूर्णिमाकी रात; पूर्णिमा; पहले-पहल रजस्वला होनेवाली स्त्री; सुखलीका रोग । -वत्ति-पु० चंद्रमा ।

राहू-वि० [अ०] छिछनेवाला, मुहरिर ।

राहू-पु० [सं०] चंद्रमा ।

राहू-पु० [सं०] वैश्य, विद्याचार; कुटु, दुर्भुक्त व्यक्ति; कुंवरके कौश-रक्षक; पारे और गंधकके बोगसे बना एक रस; उमकासवाँ संवत्सर । -विवाह-पु० वह विवाह जिसमें युद्ध द्वारा कन्या प्राप्त की जाय ।

राहू-श्री० [सं०] राक्षसी स्त्री । राहू-श्री० दुष्ट, क्रूर स्वभाववाली स्त्री ।

राहू-श्री० जले पदार्थका शेष, भस्म । -दाही-श्री० सिंगरेट आदिकी रास गिराने, छोड़नेकी रकबी ।

राहू-श्री०-स० कि० कपट करना, छिपाया; दे० 'रखना' ।

राहू-श्री० रक्षाबंधनका डोरा, रक्षा, मंगलसूत्र (जो माछण तथा बहनें आगनी पूर्णिमाकी राँवती हैं); † रास, भस्म ।

राहू-पु० [सं०] रजन, मनको प्रसन्न करना; प्रीति, अनु-राग; आकर्षण (मित्र वस्तु, सांसारिक सुख-संबंधी); पंच-क्लेशोंमें एक (वी०); कष्ट, क्लेश; ईर्ष्या, द्वेष; सुगमिज्ज लेप, अंगराग (चंदन, कपूर, कस्तूरी आदिसे निर्मित); अलक्तक, आकृता; रंग (विशेषतः काक); राजा; चंद्रमा; सूर्य; स्वर्ग, वृषी, स्वर्गगोत्रे युक्त, विशिष्ट ताक्ष-ल्य-युक्त अग्नि (स्वर्गमेदसे रागके तीन प्रकार होते हैं-संपूर्ण-सार्ता स्वर्गवाह, राहू-छ स्वर्गवाह और ओहव-पौच स्वर्ग-वाह । मंतगके मतसे तीन भेद ये हैं-शुद्ध, सांस्क और मंकी वा सकर । छ राग ये हैं-ओ, वसेत, पंचम, शैव, मेघ और मर-नारायण) । -वृषी-पु० कामदेव; खेरका पेड़; कास । -क्लेश-पु० रास; कामदेव । -दाहि-पु० महर । -इच्छ-पु० रंग । -पुष्प-प्रसव-पु० दुप-हरिया, बहुजीव; रक्तमाला । -पुष्पी-श्री० जवा । -मुक्-पु० माणिक्य । वि० रामान्वित । -रंग-पु० गाना-बजाना, रंग छिक्कना आदि । -रहू-पु० कामदेव । -रक्षा-श्री० रति, कामदेवकी स्त्री । -राहू-पु० अनार, दाफले बननेवाला एक प्राचीन खाद्य; आमका सुरभा । -सारा-श्री० मैनसिल ।

राहू-अ० कि० रंग जाना; अनुरक्त होना; मिश्रण

होना । सं० कि० माना, अनापना ।

रामायि-श्री० [सं०] मजीठ ।

रामायित-वि० [सं०] आसक्त, अनुरक्त; क्रुद्ध, कुपित ।

राधाक-वि० [सं०] देवकी भाषा बँधकार न देनेवाला ।

राधाकवि-पु० [सं०] मुकेश्वर ।

रामिनी-श्री० [सं०] रामकी पत्नी (कुरु छत्रीस रामनिवाँ मानी जाती है-संगीत); जयश्री नाम्नी लक्ष्मी; विदग्धा या मत्तवाली श्री ।

रामिच-वि० [अ०] हस्त्यक्त, स्वादिष्टमंद ।

रामी-श्री० रानी, राजाकी श्री ।

रामी(गिन्)-पु० [सं०] प्रेमी; अव्यक्त वृक्ष; मनुष्य; मकरा; छ मात्राओंके छंद । वि० रंगा हुआ, रंजित; लाल, अरुण; विश्वासत्वा रंजन करने, रंगनेवाला ।

राबध-पु० [सं०] राम; रघुजुलका व्यक्ति; दशरथ; अज; एक बहुत बड़ी समुद्री मछली ।

राचना-सं० कि० रचना । अ० कि० रचा जाना, रंगा जाना; प्रेम करना, अनुरक्त होना; लीन, मग्न होना; शोभा देना, फनना; प्रसन्न होना । वि० रचनेवाला । [श्री० राचनी]

राछ-पु० कारीगरोंका औजार; तानेका तागा उठाने-गिरानेका जुलाहोंका एक औजार; लकड़ीके मोतरका साल, होर; जुलूस; बरात; हथौड़ा; चक्कीके शीचका लुँटा । -बँधिया-पु० राछ बँधनेका काम करनेवाला जुलाहा या आदमी । पु० -पुमाना, -फिराना-बसकी पालक्रीपर चढ़ाकर कुर्चे आदिकी परिक्रमा करना ।

राक्षस-पु० दे० 'राक्षस' ।

राज-पु० राजा समासमें व्यवहृत रूप (यह अनेक शब्दोंके साथ प्रयुक्त होकर बड़ाई, भेदता आदिका अर्थ प्रकट करता है) । -कथा-श्री० इतिहास; राजाकी कथा । -कर्व-पु० बड़े, स्वादिष्ट फलोंवाला कर्तव । -कन्या-श्री० राजपुत्री; केवड़ेका फूल । -कर-पु० राज्यस, खिराज । -ककड़ी-श्री० ककड़ी । -कर्ण-पु० हाथीकी सूँड़ । -कसी(रुं)-वि० राजा बनानेवाला, किसी भी व्यक्तिकी राज्यासनपर प्रतिष्ठित करने, उतारनेकी शक्ति रखनेवाला । -कला-श्री० चद्रमाकी एक कला । -कषोक-पु० नागरमोथा, मद्रमुखा । -काबै-पु० राज्य संरक्षी कार्य; राजाहा । -कुँअर-पु० राजकुमार । -कुँअर-पु० शक्तिशाली राजा । -कुमार-पु० राजाका पुत्र । -कुमारी-श्री० राजाकी पुत्री । -कुल-पु० राजवंश; राजदरबार; म्यावालय; राजप्रासाद; राजमार्ग । -कुलक-पु० परचलकी बेल । -कुष्मांड-पु० बैगन । -कोल-पु० बड़ा डेर । -कोलाहल-पु० तालके साठ भेदोंमेंसे एक । -कोषासक-पु०, -कोषासकी-श्री० बड़ा नेतृता, पिता; तराई । -क्षयक-पु० एक तरहकी राई । -खजूरी-श्री० पिच्छलूर । -खरी-श्री० [हिं०] राजसिंहासन; राज्याधिकार; राज्याधिकार । -बारी-श्री० मायकी जातिका एक पशु । -गिरि-पु० बहुधा; मगधका एक पर्वत । -गुरु-पु० राजाका मन्त्र; विहारमें एक ऐतिहासिक स्थान । -ब-वि० राजाकी हत्या करनेवाला; तीक्ष्ण । -बँधक-पु० पुष्पागका फूल । -बिहू-पु०

राजके बिहू-छत्र, चंबर आदि । -बिहूक-पु० शिवन, उपरस्य । -बूझमवि-पु० तालके साठ भेदोंमेंसे एक । -बँबू-पु० बड़ा आमून; पिच्छलूर । -बदमा(बमबू)-पु० दे० 'राजबदमा' । -जीरक-पु० एक जीरा । -तर्प-पु० बह झासनप्रणाली जिसमें राज(स्टेट)का अधिपति राजा हो । -तख-पु० कनिषादी, कणिका; अमरुतास । -तकली-श्री० एक तरहका सफेद गुलाब; बड़ी सेबती, सुवर्णपुष्प । -ताक-पु० सुपारीका पेड़ । -तिमिषा, -तिमिष-पु० तरबूज । -तिरक-पु० राज्याधिकार, नये राजके राज्यारोहणका उत्सव । -बँड-पु० राजशासन; राजाहा, विश्वासते दिया हुआ दंड । -बँस-पु० चौका, सामनेके नीचे और ऊपरके दोनो बड़े दाँत । -बूत-पु० किसी राज्य या राजाका (सति; विग्रह, नैतिक कार्यादि-संरक्षी) स्तंभ केकर किसी अन्य राज्यमें जानेवाला व्यक्ति, प्रतिनिधि (प्राचीन कालमें राजदूत विशेष अवसरोंपर भेजे जाते थे, अब स्थायी रूपसे सभी देशोंमें सभी देशोंके राजदूत रहा करते हैं) युद्धकालमें समय शत्रुदेशोंके राजदूतोंको वापस बुला लिया जाता है और शत्रुदेशके राजदूतोंको लौटा दिया जाता है । -बूझी-श्री० बड़ी पत्तियों, मोटे कालोंवाली दूध, गोंडर । -बचू-श्री० चक्कीका नीचेका घाट । -देशीय-वि० राजाके समान, राजकल्प । -हुस-पु० अमरुतास, आरुक्थ । -द्रोह-पु० राज्य या राजाके विरुद्ध आचरण, बगावत, विद्रोह । -द्रोही(हिं)-वि० राजद्रोह करनेवाला, बगी । -द्वार-पु० राजाका द्वार; म्यावालय । -धरूरक-पु० धर्म बतूरा, कनक बतूरा । -धर्म-पु० राजाका धर्म, कर्तव्य (शांतिस्थापन, प्रजापालन आदि); महाभारतके शांतिपर्वका राजकर्तव्य-विषयक अध्याय । -धर्म(मैन्)-पु० कदयपका एक पुत्र; सारसोंका राजा (मं० मां०) । वि० राजाके समान आचरण करनेवाला । -धानी-श्री० मुख्य नगर, शासन-केंद्र; राजा, शासकके रहनेका नगर । -धान्य-पु० एक धान, इषामा धान । -धुर-पु० शासनभार । -धुस्तूरक-पु० बड़े फूल और बहुत आचरणयुक्त बतूरा, कनक बतूरा । -जय-पु० राजनीति । -भासा(मन्)-पु० परबल । -नीति-श्री० राज्यकी रक्षा और शासनको दृढ़ करनेका उपाय बनानेवाली नीति । -नीतिक-वि० राजनीति सवधी । -नील-पु० पत्ता, मरकत मणि । -पंत्ती-पु० [हिं०] बड़ा पक्षी (दे० मैकराना) । -पटोल-पु० परबल । -पह-पु० धक उपरस्य । -पट्टिका-श्री० चातकी । -पति-पु० सम्राट् । -पत्नी-श्री० रानी । -पथ-पु० बड़ी सड़क, मुख्य मार्ग । -पद्धति-श्री० राजनीति; राजमार्ग । -पर्णी-श्री० प्रसारिणी उता । -पर्काहु-पु० लाल प्याज । -पाक-पु० राजा; प्रताका शासक, 'महानर'; राज्यका रक्षक (जैसे-सेना) । -पीछ-पु० महापीछ वृक्ष । -पुत्र-पु० राजकुमार; क्षत्रिय; एक वर्णसंकर जाति जिसकी कुलपति क्षत्रिय पिता और कर्ण मातामे कही जाती है (पु०); बड़ी जातिका आम;

पुत्र मद्र । - **पुत्रक**-पुं० राजकुमार । - **पुत्रा**-स्त्री० राजमाता, जिस स्त्रीका पुत्र राजा हो । - **पुत्रिका**-स्त्री० राजकुमारी; इतने जूही; एक विविधा, कारारि; पीतल । - **पुत्री**-स्त्री० राजकन्या; राजपुत्र माता; बूढ़ी; मातृसी; कटुषा कदरु; रेणुका; छट्ठर । - **पुर**-पुं० राजका नगर, राजधानी । - **पुरष**-पुं० राजकर्मचारी । - **पुरष**-पुं० जनकचंपा; नागकेसर । - **पुष्पी**-स्त्री० वनमासिका; जाती; करुणी फूल (कौकलमें) । - **पुजित**-पुं० ब्राह्मण । वि० जिसकी जीविकाका प्रबंध राजाकी ओर से हो । - **पुत्र्य**-पुं० सुवर्ण । - **पुत**-पुं० [हिं०] राजपुत्र; (राजपूतानाके क्षत्रिय) । - **पुताना**-पुं० [हिं०] राजस्थान । - **प्रासाद**-पुं० राजभवन । - **प्रिय**-पुं० करुणिका फूल; काल प्याज । - **प्रिया**-स्त्री० काल धान, तिलवासिनी; काल प्याज । - **प्रिय**-पुं० राजकर्मचारी । - **फणिजलक**-पुं० नारंगीका पेज । - **फल**-पुं० बका आम; परबल; खिरनी । - **फला**-स्त्री० जानुन । - **फरु**-पुं० कठगुजर, कटुमर । - **बधुर**-पुं० पेठेदी बेर; नमक; आँवला । - **बाकी**-स्त्री० [हिं०] राजवाटिका, राजका उद्यान । - **बाहा**-पुं० [हिं०] बकी नहर । - **बीजी**(जिन्)-वि० राजकुलका । - **भंडार**-पुं० राजकोष, राजका खजाना । - **भक्त**-वि० राज्य या राजा-में भक्ति रखनेवाला । - **भक्त**-स्त्री० राज्य या राजा-के प्रति प्रेम । - **भट्टिका**-स्त्री० हापुजी, गोमांसीर नामक जलपक्षी । - **भत्ता**-पुं० (प्रिमी पटी) दे० 'राजाधिदेय' । - **भद्रक**-पुं० पारिमद्रक या फरबद वृक्ष; सफेद मदार; नीम; कुड । - **भवन**-पुं० राजमहल, प्रासाद । - **भावा**-स्त्री० देशकी वह भाषा जो राजकायों तथा न्यायालयों आदिमें प्रयुक्त हो । - **भूष**-पुं० राजत्व । - **भूष्य**-पुं० राजाका सेवक, नेतनयोगी नौकर । - **भोग**-पुं० [हिं०] एक महीन धान । - **भोग्य**-पुं० चिरीजी, पिवाळ; राजभोग धान; जावित्री । - **भंडल**-पुं० राज्यके आस-पासके चारों ओरके राज्य (नीति-शास्त्रमें बारह राज-भंडल माने गये हैं) । - **भंडक**-पुं० बका मेढक, वर्षा-घोष । - **भंडर**, - **भंडरी**(जिन्)-पुं० राजका जमाख । - **भराळ**-पुं० राजहस । - **भडल**-पुं० [हिं०] राजाका भवन; बंगालका एक समुद्र-तटवर्ती पहाड़ । - **भडिची**-स्त्री० पटरानी । - **भाता**(शु)-स्त्री० राजाकी माता । - **भात्र**-पुं० नाममात्रका राजा । - **भातुष**-पुं० राजकर्मचारी; राजमंत्री । - **भार्य**-पुं० मुख्य सक्क, राजपथ । - **भाष**-पुं० बकी उरद, नील माष । - **भाष्य**-पुं० वह लेख जो उरद बीनेके बोधय हो । - **भुद्र**-पुं० सुनहले रंगकी मूँग । - **भुद्रा**-स्त्री० राजाके नामकी या सफरीजी भुद्र । - **भुनि**-पुं० राजर्षि । - **भुगांक**-पुं० बह्मामें दिया जानेवाला एक मिश्र रस । - **बह्मा**(कमर)-पुं० क्षययोग, तपेदिक । - **बह्मी**(हिमन्)-वि० क्षययोगी । - **बाज**-पुं० राजाकी सफारी; राजाका सुख; सफारी निकालना; पालकी । - **बोग**-पुं० योग-शास्त्रके एक योग, अष्टांगयोग; किसीके जन्मके समय ग्रहोंका ऐसा सम्प्रिपात जिसके प्रभावसे उसके राजा या राजाके समान हो जानेकी संभावना रहती है । - **बोव**

-वि० राजाके उपयुक्त । पुं० चंदन । - **रंग**-पुं० कौरी । - **रथ**-पुं० राजाका रथ । - **राज**-पुं० कुबेर; चंद्रमा; सम्राट् । - **राजेवर**-पुं० एक रसोपच (राद; कुआदिमें उपयोगी); राजाधिराज । - **राजेवारी**-स्त्री० दस महा-विद्याओंमेंसे एक; महाराणी । - **रीति**-स्त्री० अँसा । - **रीग**-पुं० असाध्य रोग; क्षय रोग । - **रक्षक**-पुं० वे चिह्न जिनके होनेसे मनुष्य राजा होता है (सामुद्रिक) । - **रक्षम**(शु)-पुं० राजविह । **रक्षमा**(कमर)-पुं० सुविधिर । वि० राजलक्षणयुक्त (पुरुष) । - **रक्षनी**-स्त्री० राजनी, राजवैभव; राजाकी शक्ति और शोभा । - **रंश**-पुं० राजाका कुल । - **रंश**-वि० राजवंशका, राजाके कुलमें उत्पन्न । पुं० राजाका वंशज । - **रचस**-पुं० राजशक्ति; राजपद । - **रचम**(रंज)-पुं० राजमार्ग; बकी चौड़ी सड़क; एक रत्न । - **रवका**-स्त्री० नव-प्रसारिणी । - **रवका**-पुं० बका आम; चिरीजी; खिरनी; पेठेदी बेर; एक रसोपच । वि० राजका प्रिय । - **रवकी**-स्त्री० करंछेकी बेठ । - **रवसति**-स्त्री० राजमहल । - **राहणी**-स्त्री० मन्विशेष । - **राह**-पुं० योका । - **राह**-पुं० राजाका हाथी । - **राजय**-पुं० संपूर्ण जातिका एक राग । - **राया**-स्त्री० राजनीति । - **राद्रोह**-वि० राजद्रोह, बगावत । - **राद्रोही**(हिन्)-वि० राजद्रोह करनेवाला, बगी । - **राद्रोह**-पुं० एक ताल (संगीत) । - **बीजी**(जिन्)-वि० राजवंशका । - **बीधी**-स्त्री० राजमार्ग । - **बुल**-पुं० अमलतास; प्रियाल वृक्ष; भद्रबूष वृक्ष; इमोनक वृक्ष । - **बुनि**-स्त्री० (प्रिमी पटी) दे० 'राजाधिदेय' । - **बैष**-पुं० राजाओंके वहाँ रहनेवाला वैष; कुशल चिकित्सक । - **बाण**-पुं० पटसन । - **बाकर**-पुं० हिलसा मछली । - **बाक**-पुं०, **बाक**-जिका-स्त्री० बघुआ, वास्तुक । - **बाक**-पुं० महीन सुगंधित चावल, राजयोग । - **बिबी**-स्त्री० बौकी, गूदे-दार सेम । - **मुक**-पुं० एक बकी जातिका काल तोता, प्राज्ञ । - **ज**-पुं० एक ध्यान । - **भ्रंश**-पुं० राजछत्र; मागुर मछली । - **झी**-स्त्री० राजाका वैभव; राजाकी शोभा । - **संसद्**-स्त्री० राजसभा, दरबार; न्यायालय, धर्माधिकरण जिसमें राजा हो । - **सत्ता**-स्त्री० राजशक्ति; राजतंत्र (शा०); देशविशेषकी प्रजा, जनताके धरण-पोषणके लिए स्थापित शासन-व्यवस्था । - **सफर**-पुं० दे० 'राजसफर' । - **सभा**-स्त्री० दरबार, राजाकी सभा; राजाओंकी सभा । - **समाज**-पुं० राजसभा; राजमंडली, राजमण । - **सर्प**-पुं० एक बका सर्प, भुजंगभीजी । - **सर्षप**-पुं० राई । - **सायुज्य**-पुं० राजत्व । - **सारस**-पुं० मोर । - **सिंह**-पुं० भेड़ राजा । - **सिरी**-स्त्री० दे० 'राजसी' । - **सूर**-पुं० यक्षविशेष जिसे कराने-से किसी राजाकी 'सम्राट्' कहलानेका अधिकार प्राप्त हो जाता है । - **सुचिक**-वि० राजस्य पक्ष-सर्पनी । - **रुंध** पुं० बोधा, अथ । - **रुंध**-पुं० एक कवि । - **रुंध**-पुं० राजपूताना । - **रु**-पुं० राजाका अश, भूमि आदि-का राजाकी दिया जानेवाला कर, राजधन । - **रुंधी**(मिन्)-पुं० विष्णु । - **हंस**-पुं० सोना पक्षी (रसकी चोंच और पैर लाल होते हैं); मालव, मनोहर राग और

श्री रामके मेरुसे उन्ना एक संकर राज ।

राज्य-पु० राज्य, शासित देश; जनपद; प्रजापावनकी व्यवस्था, शासन; अधिकारकाळ (राज-मार्गोंका राज); प्रभाव, पूरा अधिकार; सुव्यवस्थित राजनीतिक इकाई ।
-**काज**-पु० राज्यप्रबंध, व्यवस्था । -**पाट**-पु० शासन, राजसिंहासन; देश, जनपद (एक राजा, राज्यके जननी) ।
मु० -**देना**-शासनभार देना । -**पर बैठना**-राजाका, राज्यकी अधिकार पाना ।

राज-पु० मकान बनानेवाला, बर्बर । -**शिर**-पु० मकान-बनानेवाला । -**गिरी**-**की०** राजगीरका काम या पद ।
राज्ञ-पु० [का०] रहस्य, भेद, गुप्त बात ।
राजक-वि० [सं०] दीप्तिमान्, चमकनेवाला । पु० काला अगर राजा ।

राजकीय-वि० [सं०] राजा या राज्यसे संबंध रखनेवाला ।
राजनी-**की०** राजका पद ।
राजगीरपाकाकारी(चक्रवर्ती)-पु० जन्म १८७९; बकाकृत लोकतर सत्याग्रहमें शामिल १९१९; कांग्रेसके महामंत्री १९२१; मद्रासके मुख्यमंत्री १९३७-१९३९; प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल १९४८-५०; पुनः मद्रासके मुख्यमंत्री १९५२ से १९५४ तक रहे ।

राजस-वि० [सं०] चौदीका; चौदी-संबंधी । पु० चौदी ।
राजस-**की०**, **राजस्य**-पु० [सं०] राजाका भाव या कर्म, राजपद ।

राजवा-**अ०** कि० विराजना; रहना; सोमित होना ।
राजस्य-पु० [सं०] राजा; क्षत्रिय; भूमि; खिरनीका पेड़ ।
-**बंधु**-पु० क्षत्रिय, क्षत्रबंधु (हीनार्थ) ।
राजपि-पु० [सं०] राजपद, क्षत्रियकुलमें उत्पन्न क्षत्रि ।
राजस-वि० [सं०] रजोगुणसे उत्पन्न । पु० आवेश, क्रोध; गर्व ।

राजसातुकरण-पु० [सं०] (कामफिस्केशन) दे० 'समप-हरण' ।

राजसिक-वि० [सं०] रजोगुणसे उत्पन्न, राजस ।
राजसी-वि० राजाओंका-सा; राजाके योग्य । वि० **की०** [सं०] रजोगुणमयी ।

राजापण-पु० [सं०] राजप्रासादका आँगन ।
राजा(अन्)-पु० [सं०] किसी देश, मंडल, जातिका शासक और नियामक, नरेश, अधिपति, स्वामी; मंडेजी शासनके समयकी एक उपाधि; वनी; प्रिय, प्रेमपान (राजाक) ।

राजापि-**की०** [सं०] राजाका क्रोध ।
राजाज्ञा-**की०** [सं०] राजाकी आज्ञा ।
राजासन-पु० [सं०] पिशाच, विरौजीका वृक्ष ।
राजस्यवर्तक-पु० [सं०] राजावर्त, राजवर्त पत्थर ।
राजाद्वय-पु० [सं०] खिरनी; विरौजी; डेह ।
राजाद्वी-**की०** [सं०] खिरनी ।
राजापि-पु० [सं०] बग अदरक; एक पहाड़ ।
राजाधिकारी(रिज), **राजाधिकृत**-पु० [सं०] स्वाधीन, विचारपति; राजकर्तृकारी ।
राजाधिराज-पु० [सं०] राजाओंका राजा, सम्राट् ।
राजाधिराज-पु० [सं०] वह मगर जहाँ राजाका जन्म हो, राजधानी ।

राजाध्या(अन्)-पु० [सं०] राजमार्ग ।

राजामक-पु० [सं०] छोटा राजा, शासंत ।
राजाज्ञ-पु० [सं०] राजाका आज्ञा; एक धान, दीर्घशूलक ।
राजाभियोग-पु० [सं०] राजाका प्रजासे बहुपूर्वक कोई काम लेना ।

राजाभिषेक-पु० [सं०] राजसिद्धि ।
राजाज्ञ-पु० [सं०] छोटी गुठली, अधिक गूदेवाला बड़ा आम, राजफल, रमरात्र ।

राजास्य-पु० [सं०] अमलजैत ।
राजावर्त-पु० [सं०] सफेद भाक ।
राजाई-पु० [सं०] कपूर; अगर; एक धान, राजाध; जामुनका पेड़ । वि० राजाके योग्य ।
राजाई-पु० [सं०] राजा द्वारा प्रदत्त वस्तु; उपहार ।
राजाका-पु०-पु० [सं०] राजाका-**की०** [सं०] बड़ा लौभा, कदू ।

राजास्य-पु० [सं०] मूली ।
राजावर्त-पु० [सं०] एक उपरान, लाजवर्द ।
राजासन-पु० [सं०] सिंहासन, तहल ।
राजासनी-**की०** [सं०] सड़में सोम रखनेकी चौकी या पीड़ा ।

राजापि-पु० [सं०] डुमईया साँप ।
राजि-**की०** [सं०] पंक्ति, कतार; रेखा, लकीर; राई । पु० रेखेके बीच, आयुके पुत्र । -**फछा**-**की०** चीना ककरी ।
राजिक-वि० [अ०] रोजी देनेवाला, परवरदिगार ।
राजिका-**की०** [सं०] पंक्ति, श्रेणी; ब्यारी; रेखा, काली सरसी; मड़भा; कठगूलर; छोटी फुंसियाँका रोग (बूप लगने, गर्मीके तापसे होता है); एक परिमाण । -**चित्र**-पु० सरसोंके दाने जैसी चित्रियोंवाला एक साँप ।
राजित-वि० [सं०] सोमित, शोभायमान; उपस्थित ।

राजिमान्(मन्)-पु० [सं०] एक साँप ।
राजिल-पु० [सं०] एक विषहीन सर्प । -**फछा**-**की०** खरूजा; ककरी ।

राजिव-पु० कमल ।
राजी-**की०** [सं०] कतार, श्रेणी; काली सरसी; राई । -**फछ**-पु० परवल ।

राजी-**की०** रजामंदी ।
राज्ञी-वि० [अ०] अनुकूल, सहमत; सम्मत; नीरोग; खुश; सुखी; संतुष्ट । -**नामा**-पु० बादी-प्रतिवादीके मतैक्यसे मुकदमा उठाने, इच्छित निर्णय देनेके लिए दिया हुआ केंस ।

राजीव-पु० [सं०] कमल; नील कमल; एक प्रकारका सारस; रेवा मछली; एक प्रकारका मृग; हाथी । वि० भारी-दार; राजदृष्टिसे निर्वाह करनेवाला । -**वण**-पु० एक यात्रिक छंद, माछी ।

राजीविणी-**की०** [सं०] कमलकी ।
राजुक-पु० [सं०] एक प्रांतका प्रबंध करनेवाला राजकर्म-चारी (मौदी) ।

राजुदल-पु० [सं०] एक दल ।
राजेश्वर-पु० [सं०] राजाधिराज; एक पहाड़, राजाधि ।
राजेश्वरप्रसाद-पु० स्वतंत्र भारतके प्रथम राष्ट्रपति; जन्म

२ दिसेर, १८८४; मृत्यु २८ फरवरी, १९६६; कांग्रेसके महासत्री १९२२; कांग्रेसके अध्यक्ष १९३४ तथा १९३९; केंद्रे के खासमंत्री १९४७; भारतीय गणतंत्रके राष्ट्रपति १९५० से मई १९६२ तक।

राज्य-पु० [सं०] परबल।

राज्यभर-पु० [सं०] महाराज, राजाधिराज, सम्राट्।

राज्येष्ट-पु० [सं०] राजभोग्य; राजाध्वज ध्वज; काल ध्वज।

राज्येष्टा-खी० सं० केला; पिंडलजूर।

राज्योपकरण-पु० [सं०] राजनिधि (श्रद्धा, निधान, नीयत इ०)।

राज्योपजीवी(विन्)-पु० [सं०] राजकर्मचारी; राजाकी सेवा करके जीविका अर्जन करनेवाला व्यक्ति।

राज्योपसेवी(विन्)-पु० [सं०] राजाका सेवक।

राज्ञी-खी० [सं०] रानी; सूर्यकी पत्नी, मंदा, (मत्स्य पु०); नील वृक्ष; कौंस।

राज्य-पु० [सं०] शासन; एक राजा या राज्यपद्धतिका देश (जैसे-ईरान, रूस आदि); मंडल, राष्ट्र, देश, विषय। -**कर्ता(वृ०)**-पु० शासक, अधिकारी, राजा।

-**व्युत्त-वि०** राजसिंहासनसे हटाया हुआ, राज्यभ्रष्ट (राजा)। -**व्युत्ति-खी०** राजाका राजसिंहासन, राज्याधिकारसे वंचित किया जाना।

-**संघ-पु०** शासनका षण्, प्रणाली, पद्धति। -**त्याग-पु०** राज्य करनेका, शासन करनेका अधिकार छोड़ देना।

-**व्यव्य-पु०** राजतिलकका उपकरण, सामग्री। -**पुरा-खी०** राज्यका, शासन-वार, शासनकी अभिमोहारी।

-**प्रद-वि०** राज्य देनेवाला। -**मंग-पु०** राज्यका नाश, ध्वंस।

-**लक्ष्मी-खी०** विजययोग्य; राज्यवैभव। -**लोभ-पु०** राज्यका लोभ, राज्यप्राप्तिकी आकांक्षा; भारी लोभ।

-**व्यवस्था-खी०** राज्यका नियम, नीति, विधान, कानून। -**स्वामी(विन्)-पु०** शासक, राजा।

राज्यका-खी० [सं०] रायता।

राज्यांग-पु० [सं०] प्रकृति, राज्यके साधक अंग (राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल, सुहृद)।

राज्याभितिक-वि० [सं०] जिसका राजतिलक या राज्याभितिक हुआ हो।

राज्याभिषेक-पु० [सं०] राज्यारोहण, राजगद्दीपर बैठानेकी रीति (विद्वन्मंत्र्यसे पवित्र तीर्थोंके जल और औषधियोंसे अभिषेक किया जाता है); राजस्य बहके बाद राजाका तीर्थजकादिसे अभिषेक।

राज्योपकरण-पु० [सं०] राजनिधि।

राटि-पु० [सं०] पक्षी। खी० बुद्ध।

राटुल-पु० लकड़ी, लोहा आदि तोलनेका वक्ता तराजू।

राट्(त्र)-पु० [सं०] राजा; सरदार, अष्ट पुंश्व (वैयक शब्दोंके अंतमें इसका प्रयोग होता है)।

राठ-पु० राज्य; राजा।

राठवर-पु० दे० 'राठी'।

राठीर-पु० राजस्थानका एक प्रसिद्ध राजवंश; राजपूतोंकी एक उपजाति।

राव-वि० निकम्मा; होन, नीच; कायर, भगोड़ा।

रावा-पु० सरपों; कुशकी जातिकी एक बास, रादी।

राव-वि० दे० 'राव'। † खी० राद, हागका।

रावा-खी० [सं०] एक पुरीका नाम (प्रा०); कांति, चमक।

राडि-पु० उत्तरीय वंग (प्रा०)।

राड़ी-खी० एक मोटी बास।

राण-पु० [सं०] पत्ता मोरकी पूँछ।

राणा-पु० राजा (राजपूतानाके कुछ राजाओं तथा नेपालके सरदारोंके लिए प्रयुक्त)।

राणिका-खी० [सं०] लगाम।

रात-खी० संध्यासे सबेरतकका समय जब सूर्यका प्रकाश नहीं मिलता, रात्रि, रजनी। -**दिन-अ०** सदा, सर्वदा।

-**राजा-पु०** उच्छ। -**रात्री-खी०** एक पौधा और उसका फूल जो रातमें फूलता है, रजनीपौधा।

रातरी, रातरी†-खी० रात।

रातवाक-अ० कि० अनुरक्त होना, मुग्ध होना; रेंगा जाना; लाल हो जाना; लाल रंगसे रेंगा जाना।

राता-वि० रेंगा हुआ; काल, सुर्ख, किरमिजी। [खी० 'राती'।]

राति-खी० दे० 'रात'। -**चर-पु०** राक्षस, निशाचर।

रातिव-पु० [अ०] वृष्टियोंका दैनिक आहार; हाथियोंका खाद्य (विशेषतः अन्न)।

रातुल-पु० दे० 'राटुल'।

रातिल-पु० जुआरके लिए हातिकर एक छोटा लाल कीड़ा।

रात्रक-वि० [सं०] रात्रि-संबंधी। पु० वैद्यके घर वर्षभर रहनेवाला।

रात्रिचर-वि० [सं०] रातमें घूमनेवाला। पु० राक्षस, निशाचर।

रात्रिदिन-अ० [सं०] रात-दिन।

रात्रि-खी० [सं०] रात, निशा; हल्की। -**कर-कार-पु०** चंद्रमा; कपूर। -**चर-चारी(रिक्)-वि०**, पु० दे० 'रात्रिचर'। -**ज-पु०** तारे आदि। -**जल-पु०** ओस।

-**जागर-पु०** रातमें जागना या पहरा देना; जाग। वि० रातमें जागता रहनेवाला। -**द-पु०** मच्छर।

-**तिथि-खी०** शुक्ल पक्षकी रात। -**नाथ-पु०** चंद्रमा। -**नाशन-पु०** सूर्य। -**पाठशाळा-खी०** वह पाठशाळा जहाँ रातमें पढ़ाईकी व्यवस्था हो। -**पुष्प-पु०** रातमें खिलनेवाला पुष्प, कुँई। -**बल-भट-पु०** राक्षस, असुर। -**मणि-पु०** चंद्रमा; कपूर। -**रक्ष-रक्षक-पु०** प्रहरी। -**हाग-पु०** अंधेरा। -**वाल(स्)-पु०** अंधकार; रातमें पहननेका कपड़ा। -**विगम-विराम-पु०** निशांत, प्रमाण, प्रातःकाल। -**विश्लेषगामी(विन्)-पु०** चक्रवा। -**वेद-वेदी(विन्)-पु०** सुरमा।

-**साम(त्र)-पु०** साम-विशेष। -**सुक-पु०** कवेदका एक चक्र; दुर्गा सप्तशतीके अंतर्गत एक चक्र। -**हास-पु०** कुसुद। -**हिंदक-पु०** (राजाओंके) अंतःपुरका प्रहरी; रातमें गश्त लगानेवाला।

रात्रिक-वि० [सं०] दे० 'रात्रि'; कुछ रातोंके लिए पर्याप्त।

रात्रिका-खी० [सं०] रात्रि।

रात्र्यंध-वि० [सं०] रात्रीधका गेगी रातकी देव भक्तने-में अममर्थ।

रामच-पु० [सं०] राक्षस; यौर ।
 राव-पु० [अ०] विजलीकी कवक; बादलोंका परिप्लव ।
 राव-वि० [सं०] रौपा हुआ; ठीक, सिद्ध किया हुआ; पूरा किया हुआ ।
 राक्षस-पु० [सं०] सिद्धांत ।
 राक्षि-की० [सं०] सिद्धि; साफल्य ।
 राव-पु० [सं०] वैशाख; कृपा, अनुग्रह; अनुदय; धन; † मवाद । -ईक-पु० बह; बर्षा; ओला ।
 रावच-पु० [सं०] साधना; प्राप्ति; तोष, संतोष ।
 रावनाच-सं० कि० पूजा, आराधना करना; पूरा, सिद्ध करना; साधना, काम निकालना । की० [सं०] बाणी ।
 रावनी-की० [सं०] पूजा ।
 रावा-की० [सं०] वैशाखकी पूर्णिमा; अनुराग, प्रीति; बुभानुकन्या, कृष्णकी प्रेमिका; विशुद्ध; विशाला नक्षत्र; औषला; एक वर्णवृक्ष; अथिरवकी पत्नी जिसने कर्णका पालन किया था । -कौरा-बल्लभ-पु० कृष्ण ।
 -कुंज-पु० गोवर्द्धनके पासका एक कुंज । -संज्ञ-पु० एक तंत्र (हसमें भोजोंके साथ-साथ रावाकी रहस्यवही जल्पिका वर्णन है) । -बल्लभ-पु० [हिं०] एक वैष्णव संप्रदाय । -स्वामी-पु० [हिं०] एक मतप्रवर्तक आचार्य; एक संप्रदाय ।
 रावाकृष्णच (सर्वपक्षी)-पु० जन्म ५ फिब्र, १८८८; दर्शनके प्राध्यापक यद्वा १९११-१७, कलकत्ता वि० वि० १९११-१६; काशी हिंदू विश्वविद्यालयके कुलपति १९१९-४८; स्वयं भारतके राजदूत १९५१-५२; भारतके उपराष्ट्रपति १९५३ से मई १९६२ तक; राष्ट्रपति मई १९६२ से ।
 रावाहमी-की० [सं०] आश्रय-गुहा अष्टमी ।
 राविका-की० [सं०] राधा, बुभानुकन्या; एक मायिक छंद ।
 रावी-की० [सं०] वैशाखी पूर्णिमा ।
 रावेय-पु० [सं०] कर्ण (राधा-अथिरवकी पत्नीका अपत्य सं० भा०) ।
 रावच-वि० [सं०] आराधनाके योग्य ।
 रान-की० [फा०] जॉय ।
 रानवार्-सं० कि० स्वीकार करना, कबूलना ।
 रानमुरई-की० कबरी तरोई ।
 राना-पु० दे० 'राणा' । -पति-पु० स्वर्ग ।
 राना-अ० कि० अनुरक्त होना-कौन कभी ओ और न राई-प० ।
 राना-वि० [अ०] अंदाज, नज़ाकतसे चरनेवाला; नाज़ुक; झंवर । -ई-की० [अ०] झुझारिामी; धुससूरी ।
 रानी-की० राजाकी स्त्री; स्वामिनी; प्रेमिकाके छिपे स्नेहपूर्ण संशोधन; शिबोंके छिपे सम्मानसूचक शब्द । -काजह-पु० एक धान ।
 रापच-पु० बंजर ।
 रापली-की० एक नदी (नेपाळसे निकलकर सरयूमें गिरती है) ।
 रापरगाछ-पु० एक तरछका मृत् ।
 रापी-की० दे० 'रौपी' ।
 राव-की० खोख, गाढ़ा सीरा (जिसमें दाने पड़ जाते हैं);

† कर्माईके एक सिरिसे दूसरे सिरितक लगी हुई छंदी लकड़ी ।
 रावकी-की० रवकी, बसोही, औटकर गाढ़ा बनाया हुआ दूध ।
 रावना-सं० कि० खेतमें एक विशेष ङंगसे खाद देना ।
 राविता-पु० [अ०] संतप, मेछ-मिछाप; कोई चीज जो गिनावे, बंधे, बुद्धस्त करे; जोड़, मेछ ।
 रामच-पु० [सं०] प्रसन्नता; वेग ।
 राम-पु० [सं०] परशुराम; बलराम; दाशरथि राम (दे० 'रामचंद्र'); तीनकी संख्या; चौका; प्रेमी; बरण; ईश्वर; मनुष्या; अशोक वृक्ष; रमण; एक मायिक छंद । -अंजीर-पु० [हिं०] पाकर वृक्ष । -कजरा-पु० [हिं०] एक धान । -कपास-की० [हिं०] जरमा, देवकापास । -कली-की० [हिं०] एक रागिनी, मेरव रागकी स्त्री । -कट्टा-पु० [हिं०] एक प्रकारका बबूल । -केला-पु० [हिं०] एक प्रकारका केला; एक प्रकारका भास । -गंगा-की० एक नदी (पीछीभीतसे चकर गंगामें मिलनेवाली) । -गिरि-पु० रामटेक, नागपुरकी एक पहाड़ी (विपदपूर्वमें वर्णित) । -गिरी-की० दे० 'रामकली' । -बंगी-की० [हिं०] एक तरबकी तोप । -बंझ-पु० कौशल्यके गर्भसे उत्पन्न राजा दशरथके पुत्र (रामायण, रामचरितमानस आदि काव्योंके नायक, विष्णुके मुख्य दस अवतारोंमेंसे एक); दे० क्रममें । -काक-पु० उद्दकी पीठीसे निर्मित एक एकवान, बका; मोटी रोटी, बाटी । -जमनी-की० रेणुका; कौशल्य; रोहिणी । -जवा-पु० [हिं०] जिस व्यक्तिके पिताका पता न हो, वर्णसंकर जातिविशेष (हस जातिकी लक्ष्मिर्वा वैद्य-वृत्ति करती है) । -जनी-की० [हिं०] रामजना जातिकी स्त्री; जिस स्त्रीके पिताका पता न हो; वैश्या । -जमनी-पु० [हिं०] एक बारीक चावल । -जयंती-की० एक देवीमूर्ति । -जामुन-पु० [हिं०] एक महोले आकारका जामुनका वृक्ष । -जौ-पु० [हिं०] एक प्रकारकी जई (दाने जैसे बड़े) । -झोल-पु० [हिं०] पायल, पानेय । -डेक-पु० [हिं०] दे० 'रामगिरि' । -टोपी-की० [हिं०] एक संकर रागिनी । -तरुणी-की० सीता; सेवती । -तरौई-की० [हिं०] भिंडी । -सारक-पु० रामोपासकोंका मंत्र 'रां रामाय नमः' । -सिख-पु० एक तिल । -मुछसी-की० दे० 'रामा-मुछसी' । -सेजपास-पु० [हिं०] एक प्रकारका तेज-पात । -वृक्ष-पु० रामकी बान्सी सेना; बड़ी और अजीब सेना । -दाना-पु० [हिं०] सफेद दानोंवाला भरसेकी जातिका एक पीसा; उसके बीज; एक धान । -दास-पु० द्यूमाय; समर्थ रामदास, शिवाजीके गुरु; एक धान । -दूत-पु० द्यूमाय । -दूरी-की० एक तुलसी, पर्वदुष्पी, विशाला; मागदौन; माग-पुष्पी । -देव-पु० राम; राजस्थानसे प्रचलित एक पंच । -धनुष-पु० बंदधनुष । -धाम(न)-पु० साकेत लोक । -मनुष्या-पु० [हिं०] लौकी, चीपा । -नचमी-की० वैद्य-गुहा नचमी, रामका जन्म-दिन । -नामी-की० [हिं०] खादर, दुपट्टा जिसमें राम-नामकी छाप लगी हो; सोनेका कंठहार । -नौमी-की० [हिं०]

दे० 'रामनवमी' । -पास-पु० [हि०] नौकरी जातिकी एक शास्त्री । -पुर-पु० भयोप्या; स्वर्ग । -फटाका-पु० रामानंदी तिलक (तीन चक्की ककीर), कर्जपुंङ्ग । -फरु-पु० सीताफल, शरीफा । -बैदाई-श्री० [हि०] रोमें सम-विभाजन, आपे आपकी वैदाई । -बबूक-पु० [हि०] एक प्रकारका बबूक, कोकर । -बॉस-पु० [हि०] एक मोटा बॉस (हसते नालकीका डंढा बनाते हैं); केतकी-की जातिका एक पोषा । -बाब-पु० [हि०] एक प्रकारका नरसक, रामशर; दे० 'रामबाण' । -बिकास-पु० [हि०] एक धान । -भोग-पु० [हि०] एक तरबका आम; एक तरबका चावल । -भंज-पु० दे० 'रामभारक' । -रक्षा-स्तोत्र-पु० विस्वामित्ररचित एक स्तोत्र । -रज(स्)-श्री० एक प्रकारकी पीली मिट्टी । -रस-पु० नेमक; † बनी दुई भंग । -ढाखी-श्री० [हि०] एक प्रकारकी ईस ।

-राज्य-पु० रामका शासन; सुशासन, रामका-सा प्रजा-सुखकारी शासन; सैदर । -राम-पु० नमस्कार, प्रणाम । श्री० मेट, मुलाकात । अ० ढुणा, आशय आदि सूचक छन्द, छिः, बाह । -रोका-पु० [हि०] भवर्षका शीतल । -लबू-पु० प्याज (साधुओंकी भाषा) । -लबण-पु० लॉमर नमक । -लीला-श्री० रामके चरित्रका अभिनय; रामके चरित्रके अभिनयके लिए होनेवाला समारोह । -बल्लुमी-पु० [हि०] एक वैष्णव संप्रदाय । -बाण-पु० अजीर्णके लिए उपयोगी एक रसोष । वि० क्षीम गुणकारी, उपयोगी, लाभदायक, अमोघ (औषध) । -बीणा-श्री० एक बीणा । -बार-पु० ईसके आकार-प्रकारका एक नीरस पोषा । -शिला-श्री० गवाकी एक पहाड़ी । -ब्री-पु० एक राग । -सखा-पु० सुमी । -सनेही-पु० [हि०] एक वैष्णव संप्रदाय । -सीता-पु० [हि०] सीताफल, शरीफा । -सेतु-पु० रामेश्वरके निकट समुद्रमल्ल बट्टानीका समूह (हते रामके सेतुका अवशेष मानते हैं) । -सेतुर-पु० [हि०] कौसा, एक प्रकारकी घास ।

रामकृष्ण परमहंस-पु० स्वामी विवेकानंदके शुभ (१८३६-१८८६) ।

रामचंद्रमुकु- (१८८४-१९४१ ई०) हिंदीके महान् साहित्य-समीक्षक जिन्होंने सर्वप्रथम हिंदी समीक्षाका सफूर्ण विकास किया । आपने मनेवोगेंपर उच्च कोटिके निबंध भी लिखे हैं जिनका हिंदी साहित्यमें विशिष्ट स्थान है । रचनाएँ-तुलसी, दूर और जायसोके साहित्यकी समीक्षाएँ, हिंदीसाहित्यका इतिहास, त्रिपथगा; निबंध-समग्र-वितामणि (दो भागोंमें) ।

रामठ-पु० [सं०] अकरोट; डींग; जिवश; एक देश; हस देशका निवासी ।

रामठी-श्री० [सं०] डींग ।

रामणीयक-पु० [सं०] रमणीयता । वि० सुंदर, मनोहर ।

रामसि-श्री० मिश्राके लिए ब्रूमना-किरना, मिश्रादन ।

रामना-अ० कि० विचरना, ब्रूमना-किरना ।

राममोहन राय, राज-पु० विद्वान् तथा प्रसिद्ध समाज-सुधारक, 'साधारण मज्जसमान'की स्थापना आपने की (१७७४-१८३१ ई०) ।

रामक-वि० [सं०] रामक-संबंधी ।

राम-श्री० [सं०] सुंदरी बाबा, श्री; गाम-कलकुलक श्री; अशोक; मठभट्टाया धीकुमार; मोरोचन; डींग; हंडुर; मेरु; बबियणी; राधा; सीता; लक्ष्मी; छंदोंके विभिन्न भेद । -तुलसी-श्री० सकेद बंडलवाली तुलसी । -मिच-पु० रात्रिनी ।

रामानंद-पु० [सं०] रामायत संप्रदायके प्रवर्तक एक वैष्णव आचार्य (१३५६-१४९७ ई०) ।

रामानंदी-वि० रामानंद-संबंधी । पु० रामानंद संप्रदायका अनुयायी ।

रामाबुज-पु० [सं०] रामके छोटे भाई, लक्ष्मण; औपेय्य संप्रदायके प्रवर्तक एक आचार्य (सं० १०७३-११९४) ।

रामायण-श्री० [सं०] रामचरित्र-संबंधी शास्त्रीके मुनिरचित आदि काव्यग्रंथ (मूल कई ग्रंथ भी इसी नामसे परिचित हैं-जैसे अष्टादश रामायण, अग्निवेश रामायण, तुलसीदासका रामचरितमानस इ०) ।

रामायणी-वि० रामायण-संबंधी; रामायणका । पु० रामायणका पाठ करनेवाला; रामायणका पंडित, कथावाचक ।

रामायत-पु० रामानंद द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय ।

रामायक-पु० दे० 'रामायण' ।

रामाबुज-पु० [सं०] वनुव् ।

रामायत-पु० [सं०] रामानंद द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव उपसंप्रदाय ।

रामिज्ञ-वि० [अ०] इसारा करनेवाला (रम्बू-इसारा करना) ।

रामिज-पु० [सं०] प्रेमी; पति; कामदेव; प्रेमपात्र ।

रामी-श्री० कौल नामक धातु ।

रामेश्वर-पु० [सं०] दक्षिणके रामेश्वर नामक स्थानमें स्थापित एक शिव-लिंग जिसके स्थापक राम कहे जाते हैं, चार बड़े तीर्थोंमेंसे एक तीर्थ ।

रामेपु-पु० [सं०] रामशर या रामबाण नामक पोषा; ईसका एक भेद ।

रामोपमिषद्-श्री० [सं०] अथर्ववेदकी एक उपनिषद् ।

राम्बा-श्री० [सं०] रजनी, रात ।

राय-पु० राजा; सरदार; मुस्लिम कालमें हिंदुओंकी दी जानेवाली एक उपाधि; भाद । -करीदा-पु० बड़ा करीदा ।

-कबाक-पु० वैद्योंकी एक उपजाति । -बेल-श्री०

सुंदर, सुगंधित फूलोंवाली एक लता । -भोग-पु० राज-भोग धान ।

-सुनिधा, -सुनी-श्री० लाल पक्षीकी मादा । -राबाय-पु० राजाधिराज; मुस्लिम कालकी एक उच्च उपाधि । -रासि-श्री० राजकीश, राजाका खजाना ।

-साहब-पु० संपन्न हिंदू राजमन्त्रीको मिलनेवाली क्रिश्चि कालकी एक उपाधि ।

राय-श्री० [फा०] मत; परामर्श, सलाह; समझ, विचार;

सुझाव, तद्वद । सु०-कायम करना-निर्णय करना,

एक निश्चयपर पहुँचना ।

रायर्वा-वि० [फा०] (रास्तेपर बड़ा हुआ) व्यर्थ, अकारय, बेवकत ।

रायज-वि० [अ०] प्रचलित, जारी; जो रीतिके अनुसार हो ।

रायटर-पु० [अ०] पाठ उच्छ्रित्यसे बैरन कायस, एक जर्मन व्यापारी जिसने समाचार-पत्रोंकी तार द्वारा खबरें भेजनेके

क्षिप प्रवेष्टी खोली थी; समाचार नेत्रनेवाली एक प्रवेष्टी ।
राज्य-पुं० उसके साग, कर्दू, कुम्भवा, बुँदिया आदिमें
राई, नमक, मिर्च, जीरा आदि मसाले तथा बड़ी डालकर
तैयार किया हुआ एक भोज्य पदार्थ ।

राज्य-वि० [अ०] शाही, राजकीय । जी० कागजकी
०० ईच'बीही और २६ ईच लकी नाप; इस नापका
कागज छापनेवाली मशीन ।

राज्य-पुं० शिगलमें लिखित किसी राजाका चरित्र-
विषयक काव्य-ग्रंथ, रासो (जैसे-पृथ्वीराज रासो,
बीसलदेव रासो); किसी वीर पुरुष या सती नारीका
यशोगीत ।

राज-जी० शगवा, लकरार ।

राजि-दे० 'राज'-'राजिरी मची है' विपुराणिके तबेलामें
-भूषण ।

राज-जी० दक्षिणी भारतके जगलोंमें मिलनेवाला एक
सदाहरार पेड़; इस पेड़का निवाँल, गोंद (काला, सफेद),
घुप (बामिश, औषधके काम आता है); पतला, लसदार
पुष्प; पशुओंका एक रोग ।

राजि-जी० छोटे दानोंका बाजरा ।

राज-पुं० [अ०] शब्द, गुंजार, आवाज; [हिं०] राजा;
दरबारी सरदार; राजाओंकी पदवी (कच्छ, राजपूतानाके
कुछ भागोंमें); पत्नी, अमीर, बंदीजन, भाट, चारण, †
हिमालयकी तराईमें मिलनेवाला एक पेड़ । -बहादुर-
पुं० मिथिला कालकी एक उपाधि । -रक्षा-पुं० हिमालय-
पर होनेवाला एक बहुत बड़ा पेड़ । -साहज-पुं० मिथिला
शासनकालकी एक उपाधि ।

राज-पुं० राज-रंग; नाच-गाना; प्यार-दुलार ।

राज-पुं० राजप्रासाद; महल ।

राज-जी० कपड़े आदिका बर, छोलदारी; बारहदरी ।

राज-वि० [स०] हाहाकार करनेवाला । पुं० लकाका
प्रसिद्ध राजा जिसका बंध रामने युद्धमें किया, दशानन,
लंकेछ (इसके पिताका नाम विश्वश्रवा तथा माताका कैकसी
था) । -गंगा-जी० सिंहलकी एक नदी (पुं०) ।

राज-पुं० [सं०] राम ।

राज-पुं० [सं०] राजका कोई पुत्र; मेघनाद ।

राज-पुं० सरदार, सामंत; छोटा राजा; शूर, वीर, योद्धा;
मेनापति ।

राज-पुं० दे० 'राज' । -गज-पुं० लका ।

राज-पुं० कि० दूतोंकी रजाना ।

राज-पुं० अंतःपुर, रनिवास । सर्व० आपका ।

राज-पुं० सर्व० दे० 'राज' ।

राज-पुं० राजा; कुछ राजाओंकी उपाधि; सरदार; आदर-
स्वक संभोधन (संपन्न क्षत्रियोंके लिए); अंतःपुर,
रनिवास; राजाका भगियोरा ।

राज-जी० पञ्चावली पाँच नदियोंमेंसे एक ।

राज-पुं० [अ०] रसद, सिपाहियोंकी खूना, निर्वजित
भूत तथा मात्रामें वस्तुओंके वितरणकी व्यवस्था ।

राज-जी० [सं०] समान जातिकी बहुत-सी वस्तुओंका
देरा; क्रांतिदिनमें जानेवाले विशेष तारासमूह (मेष,
वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन,
मकर, कुंभ और मीन) । -चक्र-पुं० ग्रहोंके चलनेका
मार्ग, वृत्त; राशियोंका चक्र, मंडल । -नाम(ज)-पुं०
जन्मकाळकी राशिके अनुसार रखा हुआ नाम । -प-
पुं० किसी राशिका सामी, अधिपति देवता । -भान-
पुं० मन्त्रांश, किसी राशिका नाम, अंश । -भोग-पुं०
किसी ग्रहकी किसी राशिमें स्थिति; किसी ग्रहकी किसी
राशिमें स्थितिका काल । मु० -आना-अनुकूल होना ।
-मिलना-मेल मिलना; दो व्यक्तियोंकी एक राशिमें
उत्पत्ति होना ।

राज-वि० [अ०] रजसत् लेनेवाला, घूसखोर ।

राज-पुं० [सं०] देश; राज्य; जाति, 'नेशन'; पुरुरवाके
अंशज काशीका पुत्र; ईति, देशभ्यापी भाषा । -कर्मज-
पुं० राजा या शासकका प्रजापर अत्याचार करना ।

-कूट-पुं० एक क्षत्रिय राजवंश, राठौर । -गोप-पुं०
राजा; राजाका प्रतिनिधि । वि० राष्ट्रकी रक्षा करनेवाला ।

-संज-पुं० राज्य, शासन-व्यवस्था । -ध्वज-पुं० किसी
देशका राष्ट्रीय झंडा । -पसाका-जी० दे० 'राष्ट्रध्वज' ।

-पति-पुं० राष्ट्रका स्वामी; बहुमत द्वारा निर्वाचित किसी
देशका सर्वप्रधान शासक (आधुनिक प्रजातन्त्रप्रणालीमें) ।

-पाठ-पुं० राजा; कसका एक भाई । -आषा-जी०
किसी राष्ट्रकी वह मुख्य प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग उस

राष्ट्रके अन्य भाषा-भाषी नागरिक भी सार्वजनिक कार्योंमें
करें । -भूत-पुं० राजा; प्रजा; शासक । -भूत-पुं०
राष्ट्रका रक्षक, शासक; प्रजा । -भेद-पुं० शत्रुराज्यमें

विच्छेद, विद्रोह उत्पन्न करानेकी नीति । -वासी(विज)-
पुं० (नेशनलिस्ट) राष्ट्रके हितकी सर्वाधिक महत्त्व देने तथा

उसकी एकता, संप्रभुता आदिके लिए प्रयत्न करनेवाला । -
वासी(सिन्)-पुं० राष्ट्रमें निवास करनेवाला, प्रजा । -
विच्छेद-पुं० बलवा, विद्रोह । -संघ-पुं० (लोग ऑफ
नेशन) विश्वके राष्ट्रोंका सघ जो प्रथम महायुद्धके बाद

राष्ट्रोंके आपसी झगड़े शांतिपूर्वक हल करनेके उद्देश्यसे
बनाया गया था ।

राष्ट्र-पुं० [सं०] राज्य; देश । वि० राष्ट्र-सर्वधी ।
राष्ट्र-पुं० [सं०] राज्यका सीमारक्षक ।

राष्ट्र-पुं० [सं०] राजा; प्रजा । वि० राष्ट्र-सर्वधी;
राष्ट्रका ।

राष्ट्र-जी० [सं०] अटकटैया, कटकार ।

राष्ट्र-पुं० [सं०] राष्ट्र-सर्वधी; राष्ट्रका । पुं०
राजा; राजाका साला (ना०) ।

राष्ट्र-पुं० [सं०] किसी राष्ट्रका नागरिक होनेका भाव;
राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति ।

राष्ट्र-पुं० [सं०] शब्द, ध्वनि; कोलाहल; नृत्यकीड़ा (माना
जाता है कि इसका प्रवर्तन कात्तिककी पूर्णिमाको कृष्णने
किया); कृष्ण-लीलाके अभिनययुक्त नाटक; एक लोकनाम,
रसिया; विकास; नर्तकोंका समाज; मंडला । -ताल-
पुं० १२ मात्राओंका एक ताल (संगीत) । -धारी(विज)-
पुं० कृष्णचरितका अभिनय करनेवाला व्यक्ति या समाज

[यह अभिनय गीत, नृत्य, वाद्यसे युक्त रहता है] । -
नृत्य-पुं० नृत्यका एक भेद । -धूमिमा-जी० रास
आरम्भ होनेकी तिथि, कार्तिककी पूर्णिमा । -धूमि-जी०

रासकीटाका स्थान । -**अंशक**-पु० रासकीटा करने-वालोंका इलाका समूह; रासधारियोंका अभिनय; रासधारियोंका समाज । -**अंशुली**-क्षी० रासधारियोंकी टोली । -**वात्रा**-क्षी० शरदपूर्णिमाका एक उत्सव (पु०); वैशाखमासाका एक शाक उत्सव । -**खीला**-क्षी० कुण्डका गोपियोंके साथ कृत नृत्य, क्रीडा; रासधारियोंका कुण्ड-क्रीडा-संरंभी अभिनय । -**खिलास**-पु० रासका नृत्य, क्रीडा । -**विहारी (रिच)**-पु० कुण्ड ।

रास-क्षी० लगाम, बाग; डेर; मेधादि राशि; चौपायोंका समूह; जोड़; भ्याज । पु० एक छंद; काव्य नामक नृत्य; एक स्थान; गीत, दत्तक । -**चक्र**-पु० दे० 'राशिवक्र' । -**जशनि**-पु० वह जो गीत किया गया हो, मुखवत्ता । -**बैठाना**-लेना-गोद लेना ।

रास-पु० [अ०] अतरीप; घोड़ों, बैलोंकी सस्यारके लिए प्रयुक्त शब्द (शे रास बैल, चार रास घोड़े) । वि० ठीक, दुस्त; मुबारक [रासका सक्षिप्त रूप] । **सु०** - **आना** - अनुकूल होना, ठीक होना ।

रासक-पु० [स०] हृदय काव्यका एक भेद [एक अक्का, पात्र पौरव-हास्यरसप्रधान, नायक मूर्त, नायिका चतुर, सज्जन नहीं होता] ।

रासन-वि० [म०] जीम-संरंभी; सुखादुःख, स्वादिष्ट; शब्द करनेवाला । पु० आम्नादन करना; शब्द करना ।

रासना-क्षी० दे० 'रास्ना' ।

रासभ-पु० [म०] गथा ।

रासभी-क्षी० [स०] गथा ।

रासविहारी घोष-पु० बंगालके सुख्यात विविध जिन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालयकी धारी रक्त ननमें दी थी (१८५५-१९२९) ।

रासायन-वि० [स०] रसायन-सम्बन्धी; रसायनका ।

रासायनिक-वि० [स०] रसायनशास्त्र या तत्त्व-संवेधी । पु० रसायनशास्त्री । -**शास्त्रा**-क्षी० रसायनशास्त्र, तत्त्व-विषयक प्रयोग, परीक्षाका स्थान ।

रासि-क्षी० दे० 'राशि' ।

रासिज-वि० [अ०] पक्का; मजबूत, पावदार; विश्वसनीय; खालिस, खरा ।

रासी-क्षी० रसी, निकट शराव (तीसरी बार खींची हुई); मज्जी । वि० नकली, खराब (रासी तार) ।

रासु-वि० ठीक; सीधा ।

रासेरस-पु० [स०] रासविहार, क्रीडा; उत्सव; हास्य-विनोद; गोष्ठी; शृंगार ।

रासेधरी-क्षी० [म०] राधा ।

रासी-पु० विंगल भाषामें लिखित काव्यग्रन्थ (इसमें किसी राजाका चरित्र, युद्ध, वीरता, प्रेम-विषयक वर्णन रहता है-जैसे पृथ्वीराज रासी, सुमान रासी, भीमछदेव रासी इ०) ।

रास्त-वि० [का०] उचित; अनुकूल, मुनाफिक; दुस्त, ठीक, सही; सीधा; सच्चा; नेक । -**गो**-वि० उचित, सत्य बोलनेवाला । -**बाज़**-वि० सच्चा, ईमानदार । -**बाज़ी**-क्षी० सचाई, ईमानदारी ।

रास्ता-पु० [का०] राह; बाल, प्रथा; उपाय । **सु०** -

कटवा-मं० क, रास्ता तय होना । -**काटना**-चलने-वालेके आगे होकर एक ओरसे दूसरी ओर निकल जाना (अपशकुनसूचक-विही आदिके लिए प्रयुक्त) । -**देखना**-बाट जोड़ना, प्रतीक्षा करना । -**बताना**-टाकना, बडाना । -**(स्त्री) घर खाना**-ठीक करना; उचित मार्ग-पर जाना, सुमार्ग-पर चलाना ।

रास्ना, **रास्निका**-क्षी० [म०] एक कंद, गंधनाकुली, वोहरासन; एक ओषधि, एलापर्णा; रुद्रकी प्रधान पत्नी ।

रास्व-पु० [म०] दूतपात्र (महाकाव्यके लिए) ।

रास्व-पु० [स०] कुण्ड ।

राहु-पु० दे० 'राहु' । क्षी० [का०] रास्ता, बाट,

मार्ग; राति-रिवाज, प्रथा । -**झर**-पु० मार्गमय ।

-**गीर**-पु० पथिक मुसाफिर । -**चबैनी**-क्षी० स्वयंके मार्गमें मृतात्माकी तुलिके उद्देश्यमें किया जाने-वाला बेसनके लड्डू, आदिका दान । अक्षय तृतीयाको दिया जानेवाला बेसनके लड्डू, चनेका भूजा, पानी मरा शस्त्र, पंख आदिका दान । -**छत्ता**-पु० रास्ता चलनेवाला; पथिक; साधारण आदमी; अजनबी ।

-**चाह**-क्षी० रंग-रंग । -**चौराही**-पु० चौरस्ता, चौमुहानी । -**जन**-पु० छेरा, बाहू । -**जनी**-क्षी० छट, खैली । -**दानी**-क्षी० पारपत्र, 'पासपेट' ।

-**दारी**-क्षी० राह, सड़कका महल्ल, कर; चुगी ।

-[का परवाना-आवापत्र जिसके द्वारा किसी मार्ग-से जाने, माल ले जानेका अधिकार दिया गया हो, परवाना राहदारी] । -**बर**-पु० मार्गप्रदर्शक । -**बरी**-

क्षी० मार्गप्रदर्शन । -**रस्त**, **राति**-क्षी० व्यवहार, मेन-देन; परिचय । -**(हे) खुदा**-अ० खुदाके लिए, खुदाके नामपर । क्षी० ईश्वर प्रासिका साधन, मार्ग । **सु०**

-**ताकना**, **-देखना**-प्रतीक्षा करना । -**पकना**-लेट, डाफा पड़ना । -**पूछना**-रास्ता मासूम करना ।

-**बाबत होना**-राह अलग होना । -**खाना**-काम देखना; रास्ते जाना ।

राहगीर-पु० एक घटिया कवच ।

राहल-क्षी० [अ०] आराम, चैन, आसुर्गो, सुख, करार ।

राहना-स० कि० चक्कीके पाटों या रेतों आदिको सुर-दरा करना ।

राहरी-पु० अहरार ।

राहरी-पु० चक्कीका नीचेका पाट बैठानेके लिए बनाया हुआ मिट्टीका चपतरा ।

राहि-क्षी० राधा ।

राहित्य-पु० [म०] रहित होनेका भाव, अभाव, न होना ।

राहिय-पु० [अ०] रेहन, बंधक रखनेवाला ।

राहिम-वि० [अ०] रहम करनेवाला ।

राही-क्षी० राधा । पु० यात्री, मुसाफिर । **सु०** -

करना-टाकना, चलना करना । -**होना**-चल देना ।

राहु-पु० एक मछली, रोहू-हना राहु अरजुनके बाना'-प०, [स०] त्याग; छायारूप अंधकार; नौ प्रहों-मेंसे एक, विप्रचिति और सिधिका पुत्र (समुद्रमंथनके बाद अमृत-वितरणके समय इसने भी छिपकर अमृतका

पान कर लिया था। वह भेद सूर्य-चंद्रने मोहिनी (विष्णु)-
ने खोल दिया जिसपर विष्णुने इसे चकते मारा।
फलतः इसके सिर और बड़ अलग हो गये, पर वह
मरा नहीं। तभीसे सूर्य-चंद्रने बैरशोभनके लिए वह
दोनोंको ग्रस्तता है जिससे सूर्य-चंद्र-ग्रहण होता है—
पु०] —ग्रस्तन, -ग्रस्त, -ग्रस्तन, -सुस्तक, -स्पर्श-
पु० ग्रहण, उपरान्त, सूर्य-चंद्रका राहु द्वारा ग्रस्त होना।
—पुच्छ-पु० आदी, अवरक। —मेरी (विष्णु), —सूख-
मिष्णु-पु० विष्णु। —मात्ता (रु)-की० सिका।
—रत्न-पु० गोमेद मणि।

राहुक-पु० [सं०] यशोभरासे उत्पन्न गौतमनुष्ठ पुत्र।

राहुच्छिद्र, राहुच्छिद्र-पु० [सं०] लहसुन।

रिखण-पु० [सं०] दे० 'रिगण'।

रिंग-की० [अ०] अँगूठी, छल्ला; गोल बड़ी चूड़ी; बेंत
बायादिका चक्र; घेरा, मखल। —ग्रस्टर-पु० सरकसके
बीचकी चिरी हुई भूमिमें घोड़े आदि जानवरोंसे तरह-तरहके
काम लेनेवाला कर्मचारी।

रिंगण-पु० [सं०] रेंगना, दबकर धीरे-धीरे चलना;
सरकाना, फिसलना; रिंगना, विचलित होना।

रिंगण-की० दे० 'रिंगण'।

रिंगनी-की० मध्य प्रदेशमें होनेवाली एक तरहकी
ज्वार।

रिंगला-पु० एक पहाड़ी बाँस।

रिंगाना-अ० कि० रेंगना, धीरे-धीरे चलना। स० कि०
जुमाना-फिराना, धीरे-धीरे चलना; परिश्रमपूर्वक दौड़ना
(बनौके लिए)।

रिंगावना-स० कि० दे० 'रिंगाना'।

रिंगिनी-की० जहाजके अग्न्युत्तरे बंधनेकी रस्सी।

रिंव-पु० [का०] धार्मिक बंधनोंकी न माननेवाला,
स्वच्छंद, मननीजी आदमी—'मनसोन या जगन् माहि
रिंव है'—सुंद०।

रिंवा-वि० उद्धत, निरजुश।

रिंवा-पु० एक तरहका कीकर।

रिंवायत-की० [अ०] रहम, नरमी; बचाव, रक्षा; जत;
मिह्रबानी, ध्यान, खयाल; साधारण नियमोंकी कड़ाई
छोड़कर, दया, कृपापूर्ण बरताव करना; लिहाज, तरफ-
दारी।

रिंवायती-वि० रिंवायत किया हुआ। —रुजसत-की०
ब्याह्र महीने काम करनेके बाद एक महीनेके लिए सवेतन
मिलनेवाली छुट्टी।

रिंवाय-की० [अ०] ('रिंवायत'का बहु०, उर्दूमें एकवचन)
प्रजा।

रिंवाँछा-की० बेसन या उरदकी पीठी और अरुंके पत्तों
आदिसे बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।

रिंवा-पु० [अ०] दो पहियोंकी एक छोटी गाड़ी जिसे
आदमी खींचता है; साइकिलके डंगकी गाड़ी जिसमें तीन
पहिये होते हैं।

रिंवा-की० कील।

रिंवा-की० दे० 'रंवा'।

रिंवा-की० दे० 'रंवा'।

रिंवा-की० [अ०] पतलापना; रोना; धीरे पतला होना;
रोना; दवा; कृपा।

रिंवा-वि० [सं०] शून्य, खाली (जैसे-रिंवायत, रिंवायत);
निर्जन। पु० जंगल। —कुंभ-पु० रिंवायत (की ध्वनि),
किरपक जाया, दुर्गोष्ण जाया। —आँध-पु० सुनखा
बरतन। —हस्त-वि० निर्जन; खाली हाथ।

रिंवा-की० [सं०] शून्यता, खाली होना।

रिंवा-की० [सं०] चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ।

रिंवा-पु० [सं०] रविवारकी पड़नेवाली रिंवा तिथि।

रिंवा-पु० [सं०] उत्तराधिकारमें प्राप्त धन। —ग्राही-

(रिंवा)-वि० रिंवा ग्रहण करनेवाला (पुत्र आदि)।

—हारी (रिंवा)-पु० उत्तराधिकारमें धन पानेवाला व्यक्ति;
माता।

रिंवा-पु० [सं०] दे० 'रिंवाहारी'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'। —पति-पु० दे० 'कक्षपति'।

रिंवा-की० [सं०] कील, जूँका अडा; जमरेण।

रिंवा-पु० दे० 'रिंवा'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० दे० 'कक्ष'।

रिंवा-पु० [अ०] खराक; रोनी, जीविका; खाना—'तेरी
तो रिंवा तेरे घर बैठे आइ'—सुंद०।

रिंवा-वि० [अ०] खाम किया हुआ; विशेष प्रयोजनके
लिए रक्षित, निश्चित किया हुआ; अन्तमें प्रयोगके लिए
सुरक्षित।

रिंवा-पु० [अ०] रक्षित सेना, मैनिंग; सकट कालके
लिए सुरक्षित सैनिक।

रिंवा-पु० [अ०] कल, नतीजा; परिणाम।

रिंवा-पु० [अ०] विहित, स्वर्ग; विहितका सारोपा;
वरकत; दया।

रिंवा-वि० [अ०] रजीज, पाजी, कमीना।

रिंवा-की० निर्लज्जता।

रिंवा-वि० दे० 'कजु'।

रिंवा-पु० [अ०] दे० 'रिंवा'।

रिंवा-पु० [अ०] रीतिनेवाला; विवेकता या गुणपर प्रसन्न
होनेवाला।

रिंवा-स० कि० दे० 'रिंवाना'।

रिंवा-वि०, रिंवा-पु० (गुण, विवेकता, रूप आदिपर)
प्रसन्न होनेवाला; अनुसारी, प्रेमी—'रीति नहिं रिंवा
वह बिना हियके लीन'—रतनह्वारा।

रिंवा-स० कि० अपने ऊपर किसीको प्रसन्न या मुह
करना; सुमाना, मोहित करना।

रिंवा-वि० प्रसन्न होने, रीतिनेवाला।

रिंवा-पु० प्रसन्न होना, रीतिना।

रिंवा-स० कि० दे० 'रिंवाना'।

रिंवा-वि० रीतिनेवाला।

रिडमिंग अफसर-पु० [अ०] चुनावके समय मतकी गणना करके फलकी घोषणा करनेवाला अधिकारी।

रिडायर-वि० [अ० 'रिडायर'] जो कार्यसे अवसर ग्रहण कर नुका हो, अवकाशप्राप्त, पेंशनवापता।

रिजवास*-पु० रनिवास।

रिज, **रिजु***-खी० दे० 'जटु'। -बंसी-वि० खी० जटु-मती या रजसला (खी)।

रितना*-अ० कि० खाली होना।

रितवना*-स० कि० खाली करना।

रितौना*-स० कि० दे० 'रितवना'।

रिदि*-खी० दे० 'कदि'। -सिदि-खी० दे० 'कदि-सिदि'।

रिधम-पु० [स०] वस्तु; प्रेम।

रिन*-पु० दे० 'कप'। -बंखी-वि० कर्जदार।

रिनिजाँ, **रिनिचाँ***-वि० कणी।

रिनी*-वि० कणी, कर्जदार।

रिप-पु० [स०] शत्रु; हिंसा; पृथ्वी।

रिपटना*-अ० कि० रपटना, फिसलना, फिसलना-चंद्रमाकी रिपटती हुई शिखमिल-मृग०।

रिपु-पु० [स०] शत्रु, वैरी; कपसे छटा स्थान; भुवका पौत्र, किष्टिका पुत्र। -घासी(तिर),-धन,-सूचन-वि० शत्रुओंका नाशक। पु० शत्रुत्व।

रिपुता-खी० [स०] शत्रुता, वैर।

रिपोर्ट-खी० [अ०] सूचनार्थ घटनाविशेषका विस्तृत वर्णन; प्रतिवेदन; कार्यका विवरण (संस्था, आंदोलन, उत्सव, आदिका); छात्रव्यक्तियोंका विवरण (वस्तु, व्यक्ति आदिके विषयमें)।

रिपोर्ट-पु० [अ०] संवादवाता (समाचारपत्रका); समा-समितिा व्याख्यान, विवरण लिखनेवाला; अदालत, कौलिक आदिकी रिपोर्ट लिखनेवाला सरकारी आदमी।

रिभ-पु० [स०] पावक, पाप; काष्ठभ्य। वि० नीच। -बाहू-वि० पापनाशक।

रिक्काम-पु० [अ०] सुधार, संस्कार, दोष या वृद्धि दूर करना।

रिक्कामैर-पु० [अ०] समाज-सुधारक।

रिक्कामैशन-खी० [अ०] सुधार, संशोधन (ईसाई मतका वह सुधार जिसका परिणाम प्रोटेस्टेंट मत है)।

रिजु-पु० दे० 'जटु'।

रिमक्षिम-खी० पुहार पकना, छोटी-छोटी बूटें पकना।

रिमाईंडर-पु० [अ०] यादविहानी, याददास्त।

रिमाक-पु० [अ०] राय, मत प्रकट करना।

रिमिका-खी० काशी मिर्चकी वेल्।

रिवा-खी० [अ०] दिखावा, बनावट, दुर्गंगी, मकारी।

-कार-वि० मकार। -कारी-खी० मकर, करव (करना, होनाके साथ)।

रिवाई-वि० [अ०] मकार।

रिवाज-पु० [अ०] नाग; 'रोजा'का बड्ड; दे० 'रिवाजत'।

मु-मारना-परिश्रम करना; व्यायाम करना।

रियाजत-खी० [अ०] मिहनत, मसकत; अभ्यास; व्यायाम; मजदूरका पेशा।

रियाजी-खी० [अ०] गणित (अंक, बीज, रेखा ग०)। † वि० मेहनती; कसरती।

रियायत-खी० दे० 'रिआयत'।

रियायती-वि० दे० 'रिआयती'। -सुहृदी-खी० दे० 'रिआयती स्वसत'।

रियासत-खी० [अ०] राज, शासन, हुकूमत; रईसकी हुकूमतमें रहनेवाला इलाका; रईस होना, अमीरी।

रियासती-वि० रियासतका; रियासत-संबंधी।

रियाह-खी० [अ०] हवाई, अमरा, पेठकी वातु।

रिरंसा-खी० [स०] रमण, विहार वा संभोगकी इच्छा।

रिरंखु-वि० [स०] रमण, विहार वा संभोगका इच्छुक।

रिर-खी० जिद, हठ।

रिरना*-अ० कि० दीनता प्रकट करना, गिरगिहाना।

रिरिहा-पु० गिरगिहाकर, रट लगाकर माँगनेवाला।

रिरी-खी० [स०] पीतल।

रिखना*-अ० कि० घुसना, पैटना; मिल जाना, एक हो जाना; भरमारकर एक ओरकी गिर पकना।

रिखीरू-पु० [अ०] सहायता, साहाय्य (ईन-दुःखियों, पीछितोंके लिए)।

रिबाज-पु० [अ०] रीति, प्रथा, चरन।

रिबायत-खी० [अ०] दूसरेके शब्द दुहराना, दूसरेकी बातकी नकल; किस्ता, कहानी; हदीस, इस्लामी परंपरा; गहररी कतबे।

रिबायत-पु० [अ०] एक तरहका नमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ मरी और एक-एक कर छोड़ी जाती हैं।

रिब्यू-खी० [अ०] नवप्रकाशित पुस्तककी संक्षिप्त आलोचना; आलोचना लेख (किसी पुस्तकके विषयमें); अनेक विषयोंपर विचार प्रस्तुत करनेवाली पत्रिकाएँ (जैसे-मार्गर्न रिब्यू, इंडियन रिब्यू)। नजरसानी, दिवे हुए फेसलेपर पुनर्विचार (अदालत)।

रिक्ता-पु० [फा०] संबंध, नाता। - (इसे) दार, -मंद-पु० संबंधी। -दारी-खी० संबंध।

रिक्व-पु० [स०] मृग।

रिक्व-खी० [अ०] कौच, घूस, उत्कोच, नियमविरुद्ध काम करानेके लिए किसीको दिया जानेवाला धन। -जोर-वि०, पु० घूस खानेवाला। -जोरी-खी० घूस लेना।

रिषम-पु० दे० 'कषम'।

रिषि-पु० दे० 'कषि'।

रिषीक-पु० [स०] शिव। वि० हानिकारक।

रिष्ट-पु० [स०] मंगल; उज्ज्वल; अशुभ; हानि; पाप; दुर्भाग्य; नाश; न होना। वि० बाधक; बरबाद, नष्ट; प्रसन्न; मोटाटाजा।

रिष्टि-खी० [स०] अशुभ; खराब।

रिष्यभूक-पु० [स०] एक पहाड़ (इसीपर राम-मुग्धीनकी जेठी बुरें की)।

रिस-खी० कोष, कोप। **मु**-मारना-कोषकी दवाना, गुस्ता पी जाना।

रिसना-अ० कि० नन्हें-नन्हें छेरोमें तरल द्रव्य (पानी, तेल, घी आदि)का निकलना।

रिसवाना-सं कि० दे० 'रिसाना'।

रिसहा-वि० क्रोधी, बात-बातपर विगड़नेवाला, विगड़-विष।

रिसहावा-वि० कुपित, क्रुद्ध।

रिसान-पु० तानेके सूतोंको साफ करना।

रिसाना-अ० कि० क्रुद्ध, नाराज होना। सं० कि० किसीपर क्रोध करना।

रिसानी-अ० क्रोधी-जोर धार शृयुनाथ रिसानी'-रामा०।

रिसाका-पु० अन्य स्थानोंसे वसूल करके राजधानी भेजा जानेवाला कर।-द्वार-पु० दे० क्रममें।

रिसालत-अ० [अ०] पैगवरी।

रिसालदार-पु० [फा०] रिसाले, पुस्तकार सेनाका अफसर; रिसाल, राजवर ले जानेवालोंका मुख्य संचालक, बदनदार।

रिसाला-पु० [अ०] छोटी किताब; पत्र (मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक आदि); सौ सवारोंका दस्ता; अस्वारोधी सेना।

रिसि-अ० दे० 'रित'।

रिसिवाला, रिसिधाना-अ० कि० क्रुद्ध, कुपित होना। सं० कि० किसीपर विगड़ना, क्रोध करना।

रिसिक-अ० खट्वा, तलवार।

रिसीहा-वि० किये हुए कुपित, क्रुद्ध।

रिस्टवाच-अ० [अ०] कलाबंदी।

रिहरी-अ० देसीकी जमीन।

रिहल-पु० [अ०] गिरवी, गिरवी रखना; किसीकी (माल, जमीन आदि) कोई चीज देकर कण लेना।-नामा-पु० देहन्की दस्तावेज।

रिहसल-पु० [अ०] काम ठीक लगने तथा ठीक समयपर करनेके पहले उसका अभ्यास, तैयारी करना; नाटकके अभिनयका अभ्यास।

रिहल-अ० [अ०] पोथी रखकर पढ़नेके लिए काठकी बनी एक प्रकारकी खुलने और बंद होनेवाली सत्ती।

रिहलत-अ० [अ०] ग्वानगी, कूच; मीत (करना, होनाके साथ)।

रिहा-वि० [फा०] छुटा हुआ, मुक्त (बंधन, कारा आदिसं); उबरा, बचा हुआ (मकद आदिसं)।

रिहाई-अ० मुक्ति, छुटकारा।

रीधना-सं० कि० पकाना, उमालना, रोंपना।

री-अ० परी, जरी (सक्षियोंके लिए संशोधन)। अ० [सं०] क्षरण, टपकना; गति; वध; शय्य।

रीगज-पु० भादों-कुआरे होनेवाला धान।

रीगना-अ० कि० चिढ़ना।

रीह-पु० माछ।-पति, -राज-पु० जामवंत।

रीज्या-अ० [सं०] दण्डा; भर्त्सना, निंदा।

रीझ-अ० रीझने, प्रसन्न होने या मोहित होनेकी क्रिया।

रीझना-अ० कि० प्रसन्न होना; सुख, मोहित होना; + नुराना, पकना-धकपर रीजे उर्दा मान'-ग्राम०।

रीठ-अ० तलवार; युद्ध। वि० खरापा; अनुग्रह।

रीठा-पु० चूना बनानेके लिए ककड़ फूँकनेका मट्टा;

[सं०] करवा; करवाकी जातिका एक वृक्ष; फेविल (इसके फलको भिगेकर अलनेसे फेन निकलता है जिससे ऊनी कपड़े साफ किये जाते हैं)।-करंज-पु० रीठा नामका पेड़।

रीठी-अ० दे० 'रीठा'।

रीह-अ० मेरुदंड, गर्दनसे कटित जानेवाली एक अस्थि-शृंखला; आधारभूत अंग वः तत्त्व।

रीठक-पु० [सं०] रीढ़।

रीठा-अ० [सं०] अवस्था।

रीण-वि० [सं०] क्षरित, लुप्त, चुआ, टपका हुआ।

रीत-अ० दे० 'रीति'।

रीतना-अ० कि० रिक, खाली होना।

रीता-वि० रिक, शून्य, खाली।

रीति-अ० [सं०] क्षरण, क्षरना, टपकना; दंग, दम, प्रकार, तरीका; रवाज, चलन, परिपाटी; नियम, कानूना; विशिष्ट पद्धतना जिनके कारण भोज, माधुर्य, प्रसादकी स्थिति हो (इसके तीन भेद हैं-वैदमी, गौडी और पांचाली-सा०); पीतल; स्वभाव; गति; प्रशंसा, स्तुति; मंहर, कोहेका मेल; जले सोनेका मेल।-काछ-पु० हिंदी साहित्यका वह काल जब रीतियथ लिखनेकी विशेष प्रवृत्ति थी (१६ वीं मे १९ वीं सदीतक)।-ग्रंथ-पु० नायिकाभेद, नखशिख, बारहमासा, अलकार आदिका विवेचन करने तथा उनके उदाहरण प्रस्तुत करनेवाली रचना।-पुष्प-पु० कुसुमाञ्जन।

रीतिक-पु० [सं०] पुष्पाञ्जन।

रीतिका-अ० [सं०] पीतल; नस्तेका मरम।

रीम-अ० [अ०] बीस दस्ते कागजकी गर्दू, 1 पाँच, मवाद, तलछट।

रीर-अ० दे० 'रीढ़'।

रीरी-अ० [सं०] पीतल।

रीरमाँ-अ० [फा०] रन्सी, डोरी।

रीरयूक-पु० दे० 'रिथयूक'।

रीस-अ० दे० 'रिम'।-डाह; स्पर्धा, बराबरी-दिबन सीस चढ़ाव कोन तब रीस करंगो'-दीनदयाल।

रीसना-अ० कि० क्रुद्ध, खफा होना।

रीसा, रीहा-अ० एक क्षात्री, वनरीहा।

रीह-अ० [अ०] हवा; गठिया।

रंज-पु० एक प्रकारका बाजा।

रंज-पु० [सं०] वध जिनमें मित्र न हो, कर्मका बिना हाथ-पाँवका शरीर।

रंजिका-अ० [सं०] रणभूमि, लड़ाईका मैदान; विभूति; दूतिका, देहरी।

रंजवाना-सं० कि० पैरोसे कुचलवाना, खुंदवाना, रौद-वाना।

रंजली-अ० अरुणी, वसिष्ठकी पत्नी।

रंजना-अ० कि० रकना; मार्ग न मिलनेमें रकना; फँसना, उलझना; रोक, रखाके लिए काँटेदार क्षात्रियोंकी बाट लगाना, बिरना; किसी काममें लगाना।

र-पु० [सं०] ध्वनि, शब्द, रंग; वध; गति। * अ० 'अर'-का संक्षिप्त रूप, और।

रुखा*-पु० रौआँ, चारीके छोटे बाल; † एक आनेका चतुर्धांश, एक पैसा ।

रुखाघास-खी० एक सुगन्धित धाम; इम घाससे सुवासित तेल ।

रुखाना*-स० कि० दे० 'रुलाना' ।

रुखाबा†-पु० दुधबा, धाक, रोव; आतंक, भय ।

रुखाखी-खी० रुईकी पोली बची, पुनी ।

रुई-खी० एक पेठ जिसकी छाल, पसियाँ रगईके काम आती हैं ।

रुई-खी० कपासकी दोँदी, कोसका भीतरी धुआ, रेशा, तुल (दोँदी एक आनेपर फट जाती है और रुई बाहर दिखाई देती है, फिर इसे इकट्ठा करते हैं। रुई मोटी, चारीक कई तरहकी होती है, लंबे रेडोकी रुई अच्छी समझी जाती है) । वि० रुईके समान नरम, मुलायम (कोई चीज) । -**दाह**-वि० जिसमें रुई मरी हो । **सु०** -**का** गाला-रुईके गाला-म मफेद, कोमल । -**की** तरह **तूना**-नौचना; बहुत मारना-पीटना; उल्ला-पछाड़ करना, गालियाँ देना । -**की** तरह **तुनना**-लूब मारना-पीटना । -**खा**-रुईके समान नरम ।

रुकना-अ० कि० धमना, ठहरना; आगे न बढ़ना; कार्यमें बाधा होना; आगा-पीछा करना; बंद होना (माथियों बिना काम रुका है); क्रम टूटना (बाइका रुकना); नमन, धीरेका गिरनेमें रुकना (बाजाक) । **रुक-रुका-कर**-ठहर-ठहरकर ।

रुकमंगव*-पु० दे० 'रुममंगद' ।

रुकमंजनी-खी० सजावटके लिए वागमं लगाया जानेवाला एक पौधा, रुक्मजनीका फूल ।

रुकमिनी-खी० दे० 'रुक्मिणी' ।

रुकरा†-पु० एक नरहकी ईंख ।

रुकवाना-स० कि० रोकनेका काम कराना ।

रुकाव-पु० अवरोध, अटकाव, मलावरोध, रुकाव; रतमन ।

रुकावट-खी० रोक, बाधा ।

रुकुम*-पु० दे० 'रुकम' ।

रुकुमी*-पु० दे० 'रुकमी' ।

रुक(व)-खी० [सं०] शोभा, काति; इच्छा; आनंद ।

रुक(ज)-खी० [सं०] दे० 'रुजा' । -**(क)** प्रतिक्रिया-खी० चिकित्सा ।

रुक्म-पु० [अ० 'रुक्म'] पुर्जा, चिट, छोटा पत्र; निमन-पत्र; कुची, कर्जदारकी ओरने महाजनकी लिखा हुआ कागज ।

रुक्म*-पु० रुल, पेड़ ।

रुक्म-पु० [सं०] सोना; लोहा; धातु; नागकेशर; रुक्मिणीका एक भाई । वि० चमकीला । -**कारक**-पु०

सुनार । -**केश**-पु० विदर्भराज भीष्मकका पुत्र । -**पाश**-पु० मृगका फंदा, जिसकी सहायतासे गहने आदि पकने जाते हैं । -**पुर**-पु० एक नगर, पुराणासुसार पञ्चका

वासस्थान । -**रथ**-पु० द्रोणाचार्य; भीष्मकका पुत्र; शल्यका पुत्र । -**बाहुन**-पु० द्रोणाचार्य ।

रुक्मवल्ली-खी० [सं०] एक छंद, चंपकमाला ।

रुक्ममंगद-वि० [सं०] सोनेके बाजुबंध पहननेवाला ।

पु० एक अगवद्भक्त राजा ।

रुक्मजिनी-खी० एक फूलदार पौधा ।

रुक्मि-पु० [सं०] रुम्यक और हैरण्यवर्धके बीच स्थित पाँचवाँ वर्ष (जै०) ।

रुक्मिणी-खी० दे० 'रुक्मिणी' ।

रुक्मिणी-खी० [सं०] कृष्णकी प्रथम पत्नी जो विदर्भ-नरेश भीष्मककी पुत्री थी (इसका विवाह शिशुपालने निश्चित था, पर कृष्णने हरण करके इससे विवाह किया) ।

रुक्मी(विमल)-पु० [सं०] भीष्मकका ज्येष्ठ पुत्र, रुक्मिणीका भाई (इसमें कृष्णका भारी बुद्ध हुआ था जिसमें पराजित होकर यह अपने नगरमें नहीं गया और दूसरा नगर बसाकर वहाँ रहने लगा) । -**(विम)वर्ष**, -**वारण**, -**चारी(रिज)**, -**मिद**-पु० बलदेव । -**शासन** पु० कृष्ण ।

रुक्म-वि० [सं०] जो सिन्धु, चिकना न हो, रुखा; नीरस; कठोर; खुरा; कपक-खाप । पु० रुक्म ।

रुक्मता-खी० [सं०] रुक्मापन, रुखाई ।

रुक्म-पु० तृण, घास; 'रुक्म'का समासमें व्यवहृत रूप ।

-**पद्म**-पु० बंदर; भूत (पेड़पर रहनेवाला) ।

रुक्म-पु० [फा०] चेहरा, मुखा, गाल, कपोल; आकृति, चेहरेका भाव; कृपावृष्टि; मुखाकृतिते प्रकट होनेवाला भाव; ध्यान; भागेका भाग; एक कथित विद्याक पक्षी जो हाथीतक को बड़ा ले जाता है; शतरंजका एक मोहरा । अ० तरफ, ओर; सामने ।

रुक्मदार-पु० [फा०] बाजारभाव (घटता हुआ) ।

रुक्मसत-खी० [अ०] छुट्टी, तासील; परवानगी, आशा, इजाजत; विदाई, प्रस्थान, रवानगी; मुहलत, अवकाश ।

रुक्मसताना-पु० [फा०] विदाईके समय दिया जानेवाला धन, विदाई ।

रुक्मसती-वि० जिसे छुट्टी मिली हो । खी० विदाई (दुल-हिनकी); विदाईके समय दिया जानेवाला धन, विदाई ।

रुक्मसार-पु० [फा०] कपोल, गाल ।

रुखाई-खी० रुक्मापन, रुखा होनेकी क्रिया या भाव; शुष्कता; बेसुरोवती; खीलका लग्न, व्यवहारकी कठोरता ।

रुखान-खी० दे० 'रुखानी' ।

रुखाना*-अ० कि० रुखा होना; चिकना न रहना; खुरा । स० कि० 'की' तरफ रुक करना, लगाना ।

रुखानी-खी० बंदरोंका एक औजार (जिससे लकड़ी छिलते, काटते और उसमें छेद करते हैं); संगतराशोंकी टोंकी; तेलीका धानी चलाकेका औजार ।

रुखावट, **रुखावट**-खी० रुखाई ।

रुखिता*-खी० क्रोध करनेवाली नायिका, मानवती ।

रुखिचा†-खी० पेठेसे ढकी जमीन ।

रुखुरी†-खी० मुना हुआ चना, चबैना; छोटा पौधा ।

रुखीदा-वि० रुक्मासा, जो रुखाई लिये हो । [खी० 'रुखीही']

रुमजा†-पु० टपका, एक पसुरी ।

रुमिचा†-वि० दे० 'रोमी' ।

रुण-वि० [सं०] नीमार, अस्वस्थ; झुका हुआ; टेढ़ा; टूटा हुआ ।

कर्म—‘कर्म’का समासगत रूप । —**दाह**—पु० [स०] ज्वर-विशेष, सन्निपात ज्वर (यह बीस दिन रहता है; रोगी बकता है, व्याकुलता, अलन, भेटमें दर्द, प्यास खा करती है, दुःसाध्य) । —**अथ**—पु० रोगका अथ । —**भेषज**—पु० रोगकी दवा ।

हन्मी(निम्न)—पु० [स०] जंघादीका एक पर्वत ।
हृच—की० दे० ‘रचि’ । —**दाह**—वि० रचने, अच्छा लगनेवाला, योग्य । —**हृच**—अ० मनोयोगपूर्वक ।
हृचक—वि० [स०] स्वादिष्ट, जायकेदार; रचिकर । पु० चौकोर खंभा; घोड़ेका साज, गहना; नयक; माला; सज्जीखार; काला नमक; निष्क, मोनेका एक प्राचीन शिक्षा; शयनिर्दय; रोचना; मागव्य द्रव्य; विजोरा नीबू; दाँत; कदरता; दक्षिण दिशा; एक तरहकी इमारत जिसमें तीन ओर छज्जा हो और उत्तरकी ओर बंद हो ।

हृचता—वि० दे० ‘रचित’ ।
हृचना—अ० कि० प्रिय, अच्छा जान पड़ना, पसंद आना ।
हृचा—की० [स०] दीप्ति, प्रकाश; इच्छा; शोभा, सुंदरता; चिक्कियों (मैना, तोता, बुलबुल आदि)का बोलना ।
रुचि—पु० [स०] एक प्रजापति, रौच्य मुनिके पिता ।
की० इच्छा; अनुराग; प्रवृत्ति, पसंद; कांति; किरण; शोभा, सुंदरता—‘शोभत दृढककी रुचि बनी’—राम०; भूख, खानेकी इच्छा; स्वाद; गौराचन; आलिंगनका एक प्रकार । —**कर**—वि० प्रिय, अच्छा लगनेवाला; उम्दा, स्वादिष्ट । —**कारक**—वि० रुचि पैदा करनेवाला; स्वादिष्ट । —**कारी(रिच)**—वि० सुस्वादु, स्वादिष्ट; प्रिय, मनोहर; रचिकारक । —**धाम(न)**—पु० सूर्य । —**फल**—पु० नासपाती । —**अर्ता(री)**—पु० सूर्य; स्वामी, मालिक । —**बर्दक**—वि० रुचि बढ़ाने, पैदा करनेवाला; भूख बढ़ानेवाला ।

रुचित—वि० [स०] इच्छित, मनचाहा । पु० इच्छा; मीठा पदार्थ ।

रुचिता—की० [स०] रुचि होना; रोचकता, शोभा, सुंदरता; अनुराग; एक छंद, अतिजगतीका एक भेद ।
रुचिमती—की० [स०] देवकीकी माता, कृष्णकी नानी, उग्रसेनकी पत्नी ।

रुचिर—वि० [स०] चमकीला; सुंदर, मनोहर; मीठा, मधुर; भूख बढ़ानेवाला । पु० मूली; केसर; कुंकुम; लौंग । —**केतु**—पु० एक बोधिमत्त्व । —**रुचि**—पु० एक अल-निवारण । —**अंगार्थ**—पु० एक बोधिसत्त्व ।

रुचिरांजन—पु० [स०] सहिजन, शोभांजन ।
रुचिरा—की० [स०] सहिजन, शोभांजन ।
रुचिरा—की० [स०] केसर; मूली; लौंग; एक कर्णवृत्त; एक मात्रिक छंद; एक नदी ।

रुचिराङ्ग—की० सुंदरता, मनोहरता ।
रुचिर्य—पु० [स०] मधुर, मीठा स्वाधपदार्थ । वि० जिसे पानेकी इच्छा हो ।

रुची—की० [स०] दे० ‘रचि’ ।
रुच्छ—वि० कठोर (व्यथहारमें); कुपित, क्रुद्ध; रुखा । पु० दे० ‘रुख’ ।
रुच्य—वि० [स०] पसंद आनेवाला, रचिकर; खूबसूरत,

सुंदर । पु० स्वामी, पति; जड़हन धान; सैधा नमक; पुष्टिकारक वस्तु; कतक वृक्ष । —**कंद**—पु० सूरन, ओल ।
रुच—पु० [स०] रोग; धाव; कष्ट; भोग; चमकेसे मड़ा एक प्राचीन बाजा । —**ग्रस्त**—वि० रोगी, जिसे कोई बीमारी हो ।
रुजा—की० [स०] रोग; कष्ट; भेद; भग; धकावट; कोढ़ । —**कर**—वि० रोगकारक । पु० कमरल फल; व्याधि । —**सह**—पु० एक वृक्ष, धन्या ।

रुजापह—वि० [स०] रोग दूर करनेवाला ।
रुजाती—वि० [स०] रोगमें पीड़ित, रोगी ।
रुजाळी—की० [स०] रोग, पीडाका समूह ।
रुजी—वि० रोगी, बीमार ।
रुजू—वि० [अ० ‘रज्जु’] प्रवृत्त । पु० किमी ओर जा लगना, झुकाव होना ।

रुसना—अ० कि० अरना, पूजना (पाव आदिका); दे० ‘अरुहना’, ‘उरुहना’ ।

रुसनी—की० एक छोटी चिड़िया ।
रुस्नान—पु० झुकाव, किसी ओर प्रवृत्त होना ।
रुद्(र्)—की० [स०] क्रोध ।
रुठ—पु० क्रोध, गुस्मा ।

रुठना—अ० कि० दे० ‘रुठना’ । वि० रुठने-प्रचलने-वाला ।

रुठाना—स० कि० नाराज, असंतुष्ट करना ।
रुठा—की० [स०] सरस्वती नदीकी एक शाखा ।
रुधित—वि० [स०] वज्रता, खनकारता, शब्द करना हुआ ।
रुध—पु० [स०] कलश्वर, चिड़ियोंका बोधना; ध्वनि, शब्द ।
* **की० दे० ‘कतु’** ।

रुतबा—पु० [अ०] ओहडा, दरजा, मर्तबा; इज्जत, दुर-मत; कदर, पाया, प्रनिमान; मीठी, जीना । —**वार**—वि० शरीफ, ऊँचे दरजेका, प्रतिष्ठित । —**शिनाम**—वि० पद, रुतबा पहचाननेवाला । —**शिनामी**—स्वा० नमबा पहचानना ।

रुस्तिका—स्वा० [स०] दे० ‘रुदनी’ ।
रुदती—स्वा० [स०] एक छोटा पौधा, मजीबनी, महा-मांसी । वि० स्त्री० रोनी हुई ।

रुदथ—पु० [स०] बन्धा; कृता; मुर्गा ।
रुदव—पु० रौदन, रोना, विलाप, क्रन्दन ।
रुदराज—पु० दे० ‘रुद्राक्ष’ ।
रुदित—वि० [स०] रोया हुआ; रोना हुआ, जो रो रहा हो । पु० रुदन, क्रन्दन ।

रुदुर्वा—पु० अगहनिया धान ।
रुदुर्वा—पु० चावलका एक भेद ।

रुद्ध—वि० [स०] रोका हुआ; बेरा हुआ; रुका हुआ; रुँदा हुआ; विस्तकी गति रोक दी गयी हो । —**कंद**—वि० जिसका गला रूँध, फँस गया हो और बेलनेमें असमर्थ हो । —**खू**—पु० सूखकृच्छ, पीवाके साथ पेक्षाव उत्तरना ।

रुद्धक—पु० [स०] नमक ।
रुद्ध—पु० [स०] एक प्रकारके गणदेवता (इनकी संख्या स्याद्व माती जात्रों है—अजैकपाद, अहिमघ्न, त्रहा, विशरूपहर, गुरुप, त्र्यंबक, अवरजित, दृषाकि, शंख, कपर्दी और रैवत । इनकी उत्पत्ति सृष्टिमें असफल प्रवृत्तके

मुक्ते मानी जाती है। वेदमें रङ्ग शब्द अधि, निम्न, वण, पूषा, क्षेम आदिके लिए भी व्यवहृत हैं। ग्यारह-
वी संख्या शिवका रूप-विशेष शिवकर्मका पुत्र; एक
प्रकारका शाय आक, मदार, रौद्र रस; आर्द्रा नक्षत्र।
वि० रौनेवाला, क्रंदन करनेवाला; विह्वलनेवाला; अर्चन।
-कमल-पु० रङ्गाक्ष। -कलस-पु० प्रहसंतिके समय
प्रयोगमें लाया जानेवाला कलश। -काली-स्त्री० दुर्गाकी
एक विशेष मूर्ति। -कुंड-पु० एक तीर्थ (अजमे)। -
कोटि-स्त्री० एक प्राचीन तीर्थ। -गण-पु० शिवके
अनुचर (इनकी संख्या तीस करोड़ मानी जाती है। ये
योगसाधनाके विघ्न दूर करते हैं)। -शर्ष-पु० अधि।
-ज-पु० वारा। -जटा-स्त्री० ईसरमूल, सुपना, रङ्गा;
सोफ; तीन-चार हाथ ऊंचा एक पोषा (इसके पत्ते तनेकी
ओर बने और ऊपर क्रमशः छोटे होते जाते हैं, फल लाल,
पास, कास, हृदयरोगमें उपकारक), सुपना, रङ्गाणी,
ईश्वरी, नेत्रपुष्पा। -सतव-पु० तीसरे कृष्ण (जैन
हरिवंश)। -ताल-पु० शृङ्गका एक ताल। -तेज-
[हि०] पु० कार्तिकेय। -पति-पु० शिव। -पत्नी-
स्त्री० दुर्गा; अलसी। -पीठ-पु० एक तीर्थ (सं०)।
-पुत्र-पु० बारहवें मनु, रङ्गावर्णि। -प्रमोक्ष-पु०
बहू स्नान जहाँसे शिवने निपुत्र राक्षसपर गणवर्णा की
थी। -प्रिया-स्त्री० पार्वती; हरे। -भूमि-स्त्री०
रमशान, मरुपट; एक विशेष भूमि (ज्यो०)। -बज्र-पु०
रङ्गके उद्देश्यसे किया जानेवाला यज्ञ। -बामल-पु०
रैव-सैरवीके सवायसे युक्त एक तापिक ग्रंथ। -रोदन-
पु० सोना। -रोमा-स्त्री० कार्तिकेयकी एक मालिका।
-रुद्रा-स्त्री० रुद्रजटा पोषा। -लोक-पु० बहू लोक
जहाँ शिव, रुद्रोंका वास माना जाता है। -बट-पु०
एक प्राचीन तीर्थ। -बटन-पु० शिवके पाँच मुख;
पाँचकी सख्या। -विंशति-स्त्री० रुद्रवीर्य, प्रभवादि ६०
वर्षोंमेंसे अंतिम बीस साल। -वीणा-स्त्री० एक तरहकी
वीणा। -सावर्णि-पु० बारहवें मनु। -सुंदरी-स्त्री०
देवीकी एक मूर्ति। -सू-स्त्री० ग्यारह पुत्रोंकी जननी।
-स्वर्ग-पु० रुद्रलोक। -हिमालय-पु० हिमालयकी
एक चोटी। -हृदय-पु० एक उपनिषद्।

रुद्रका-पु० रुद्राक्ष।

रुद्रट-पु० [सं०] काम्बालकार ग्रंथके रचयिता, भट्ट वामुक-
के पुत्र, भट्टभट्ट, शतानंद।

रुद्राव-पु० [सं०] रुद्रका भाव या धर्म, रुद्रता।

रुद्रबंसी-स्त्री० एक वनोपधि।

रुद्रबान् (बट्ट)-वि० [सं०] रुद्रगणोंमें युक्त। पु० सोम;
रुद्र; अधि।

रुद्रा-स्त्री० [सं०] रुद्रजटा पोषा; विद्रम लता, एक
गंधद्रव्य।

रुद्राक्ष-पु० [सं०] रमशान, मरुपट।

रुद्राक्ष-पु० [सं०] एक बड़ा वृक्ष जिसके दानोंकी माला
जपनेके लिए परम पवित्र मानी जाती है और जैनोंमें
जिसका बहुत आदर है। वि० लाल आँखोंवाला।

रुद्राणी-स्त्री० [सं०] रुद्रपत्नी, पार्वती; रुद्रजटा नामक
लता।

रुद्रारि-पु० [सं०] कामदेव।

रुद्रावास-पु० [सं०] शिवका वासस्थान-काशी, कैलास,
रमशान।

रुद्रवि-वि० [सं०] रुद्र-संबन्धी; रुद्रका; अधानक। पु०
प्रसन्नता, आनंद।

रुद्रा-स्त्री० [सं०] रुद्रवीणा।

रुद्रोपनिषद्-स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्।

रुद्रोपस्थ-पु० [सं०] एक पर्वत।

रुद्रिर-पु० [सं०] रक्त, लून, लहू; लाल वर्ण; मंगल ग्रह;
एक मणि, दे० 'रुधिराख्य'। वि० लाल रंगका। -रुद्रक-
पु० एक बी-रोग जिसमें पेटमें शूल, दाह होता और योका-
सा घूमता है जिसने गर्भका भी भ्रम हो जाता है। -
पाकी (विन्)-वि० लून पीनेवाला। [स्त्री० 'रुधिर-
पायिनी'] पु० राक्षस। -पित्त-पु० रक्तपित्त; नकसीर,
रुधिरामय। -प्लीहा (हृन्)-पु० एक तरहकी पिल्ली।
-रुद्रिवाह-पु० रोगविशेष (रक्तकी अधिकतासे धुर्म-सा
निकलना, शरीर और आँखका रंग ताँबे-सा हो जाना,
मुँहसे रक्तकी गंध आना)।

रुधिराक्ष-वि० [सं०] लूनमें बीणा हुआ; रक्त-सा लाल।

रुधिराख्य-पु० [सं०] एक स्वल्प मणि (कहते हैं, हीरा
इसीका परिणाम है)।

रुधिरान्न-पु० [सं०] मगलकी बहू गति (ज्यो०)।

रुधिरामय-पु० [सं०] एक रोग, रक्तपित्त।

रुधिराक्ष-पु० [सं०] राक्षस। वि० रुधिर पीने, रुधिरसे
जानेवाला।

रुधिराशी (विन्)-वि० [सं०] लून पीनेवाला।

रुधिरोग्रासी (विन्)-पु० [सं०] बृहस्पतिके साठ वर्षोंमेंसे
सत्तावनवों। वि० रुधिर बमन करनेवाला।

रुनलून-स्त्री० नूपुर आदिकी क्षनकार।

रुनाई-स्त्री० अहणाई, लाकिमा।

रुनिल-वि० बनता, क्षनकार करता हुआ।

रुनी-पु० धोखोंकी एक जाति।

रुनुक-रुनुक-स्त्री० नूपुर आदिकी लगातार होनेवाली
क्षनकार।

रुनुलुनु-स्त्री० नूपुर आदिकी क्षनकार।

रुनुल-पु० एक प्रकारका वेत।

रुनी-स्त्री० अमरुद।

रुपथा-अ० क्रि० जमना, लगाया, गाढा या रोपा जाना;
अवना, हट जाना।

रुपमनी-वि० स्त्री० रूपवती-एक सौ एक बाहिर रूप-
मनी-प०।

रुपथा-पु० भारतका मुख्य सिक्का जो भातसे बनता है;
बन-संपदा। -पैसा-पु० बन-शैल। -बाळा-वि०
धनी, अमीर। सु० -उठावा-रुपथा खर्च करना। -
उठाना-रुपथा खर्च, बर्बाद करना। -जोड़ना-भन
बटोरना, संचित करना। -छीकरी करना-अमित व्यय,
अनावश्यक खर्च करना। -पानीमें रँगना-पैसा बर्-
बाद करना।

रुपहरा-वि० दे० 'रुपहला'।

रुपहला-वि० चोरीके रंगका, चोरी जैसा। [स्त्री० 'रुप-

इली']

रुपा-पु० वटिया चौरी, रूपा ।

रुपिका-ली० [सं०] मदार, आक ।

रुपिका-पु० दे० 'रूपवा' ।

रूपीका-वि० दे० 'रूपहका' ।

रुवाई-ली० [अ०] बार मिसरोंका एक जड़-कारसी छंद (प्रथम तीन चरण सानुप्रास होते हैं) । -रुमन-पु० शालक रागका एक सेह । -तराना-पु० रुवाई जिसके चारों चरण सानुप्रास हों ।

रुमा-पु० दे० 'रोमांच' ।

रुमन-पु० [सं०] सौ कीटि बानरोंका वृषपति एक बानर (रामा) ।

रुमनाब् (बब्)-पु० [सं०] एक ऋषि; नमककी खान-वाला एक पर्वत ।

रुमांचित-वि० दे० 'रोमांचित' ।

रुमा-ली० [सं०] सुग्रीवकी पत्नी; नमककी एक खान; एक नदी ।

रुमाक-पु० दे० 'रुमाक' ।

रुमाकी-ली० तिकीना सैंगटा; सुगर भोजने, खिलायेका एक ढाथ ।

रुमावली-ली० दे० 'रोमावली' ।

रुना-अ० कि० शोभित होना, छा जाना-‘दसनि जोतिशाल मोतीमाकसी रहे’-पन० ।

रुवाई-ली० सौदेव, शोभा ।

रुद-पु० [सं०] काला हिरन; एक ऋषि-विष्णुदेवोंका एक गण; एक फलदार वृक्ष; एक शेर ।

रुदवा-पु० बरी जातिका एक प्रकारका उख ।

रुदु-वि० रुखा, रुद्ध, जो विकना न हो ।

रुदना-अ० कि० मारा-मारा फिरना, आबारागर्द होना; इधर-उधर फिरना, हिलना-डुलना; दबा रह जाना-‘मनकी मरुई मन ही में कलि जाति है’-रत्नाकर ।

रुवाई-ली० रोना; रोनेकी इच्छा या प्रवृत्ति ।

रुदना-स० कि० किसीकी रोनेमें प्रवृत्त करना; भटकाना, फिराना; बरबाद करना ।

रुद्ध, रुद्धा-ली० वह जमीन जिसकी उर्वरा शक्ति घट गयी हो ।

रुवा-पु० सेमलकी नई ।

रुवाई-ली० दे० 'रुवाई' ।

रुवाब-पु० दे० 'रुवाब' ।

रुदु, रुदुक, रुदुक-पु० [सं०] परब वृक्ष ।

रुवाई-पु० [सं०] एक ऋषि, नृपगु ।

रुवाना-ली० [सं०] मद्रकी एक पत्नी ।

रुव-पु० [सं०] क्रोध ।

रुवा-ली० [सं०] क्रोध, गुस्सा ।

रुवानिष्ठ-वि० [सं०] क्रोधसे भरा हुआ ।

रुषित-वि० [सं०] क्रुद्ध, कुपित, दुःखी ।

रुक्कर-पु० [सं०] कलरी वृद्धि; मिलावा ।

रुद-वि० [सं०] क्रुद्ध, कुपित, ताराज ।

रुदता-ली० [सं०] रुद होनेका भाव, अप्रमत्तता ।

रुदपुष्ट-वि० दे० 'रुष्ट-पुष्ट' ।

रुष्टि-ली० [सं०] क्रोध, रोष ।

रुसवा-अ० कि० दे० 'रुसना' ।

रुसवा-वि० [का०] मिथित; जलीक, कांछित; रुवार, अपमानित; बदनाम, बेगैरत । * पु० बदनामी । -ई-ली० कजीहत; कैबली; रुवारी ।

रुसा-पु० दे० 'रुसा' ।

रुसित-वि० रुद्ध, अप्रमत्त ।

रुसु-पु० [अ०] पशुं, रसाई; रसवार; पक्षापन; मज-वृत्ति ।

रुस-पु० दे० 'रुस' ।

रुसु-पु० [अ०] खुदाकी तरफसे पैगाम लानेवाला न्यायि, पैगंबर, रसु ।

रुस-वि० दे० 'रुष्ट' ।

रुस-ली० [का०] उगना । वि० मजबूत; ताकतवर; दिखे । -झेड़-वि० उगा हुआ ।

रुसनी-वि० [का०] जो उगे; जहाँ कोई चीज उगे ।

रुसम-पु० [का०] फारसका प्रसिद्ध पहलवान, जीलका वेडा । वि० वीर, बहादुर; निर्भीक; छिपा हुआ गुणी ।

- (मे) वरु-वि० विषविजयी, अपने समयका सबसे बड़ा पहलवान । -हिंदू-वि० हिंदुस्तानका सबसे बड़ा पहलवान ।

रुहक-पु० [सं०] छेद, ग्राहक ।

रुहकि-ली० रुठना ।

रुहा-ली० [सं०] दूर; लाजवंती; ककड़ी; अतिबला; मास-रोहिणी कता ।

रुहिर-पु० रुक, रुद्ध, रुधिर ।

रुहलख-पु० कठके पठानोंका प्रदेश (अथवा पश्चिम-उत्तरमें बसा) ।

रुहल-पु० पठानोंकी एक जाति ।

रुहल-पु० 'अलख-अलख' कहकर भील मंगनेवाले मिथुक; दे० 'रुहल' ।

रुहटा-पु० दे० 'रौं गटा' ।

रुहना-स० कि० दे० 'री नना' ।

रुह-वि० रुका हुआ ।

रुहना-स० कि० (रक्षाके लिए) कोदेदार पीधे आदिमें घेर देना, बारी या घेरा बना देना; रास्ता बंद कर देना ।

रु-पु० [का०] चेहरा, मुँह; शक, सूरत; मायनेका हिस्सा, आगा; ऊपरी भाग, सिरा; कारण, बजह, ध्यान; बहाना, होला, टाकमटोल; रुखसारा (समस्त पराईमें व्यवहृत-जैसे खूबक, माहुर) । -रु-जमीन-पु० बरातल, जमीनकी मतल । -रु-जुर्द-पु० पीला चेहरा । वि० कश्चित, शर्मिदा । -रु-बाद-ली० दे० 'रुदाद' । -रु-खलून पु० संकेत, इशारा; संबोधन, खिताब । -गिरवाली-ली० मुँह फेरना, बगवत, विद्रोह, अवज्ञा करना । -गिरा-वि० मुँह फेरनेवाला; करार हो जानेवाला; क्रुद्ध, अप्रमत्त; जिसका भीतर-ऊपर एकसाँ हो (कपका); बेदिमाग, बुझिहीन; भीतरी भाग बाहर किया हुआ (कपडा) ।

-दाद-ली० गुजरी हुई बातें; समाचार; हाल; विवरण; किस्सा, हालत; क्वाकली कारवाही; घटना; दादसा, भय; व्यवस्था; मुकदमेका रंग-रंग । -जुर्मा-वि० मुँह दिखाने

वाला जाहिर, प्रकट होनेवाला । - **नुमाई-खी** मुँह दिखाना; मुँह दिखीला (बह बच जो दुखदिनकी उसके संबंधी मुँह दिखानेके बरमेमें भेंट करते हैं) । - **पाक-पु** रुमाक । - **पोखी-वि** जो मुँह छिपावे हुए हो (पेश-पोखीका संघित रूप) । पु० वह अपराधी जो किसी मुकदमेकी जाँचके समय भाग जाय; अनुपस्थित हो जाना । - **पोखी-खी** मुँह छिपाना; भाग जाना; भाग्य हो जाना । - **बकार-पु** परवाना, तख्तीरी हुजूम; वह खत जो बराबरीके अफसरको भेजा जाय । वि० कामके लिए तैयार; जानेवाला; होनेवाला । - **बकारी-खी** मुकदमेकी पैदी । - **बराह-वि** सुपार, इलाहा किना हुआ; प्रस्थान, यात्राके लिए तैयार; कामके लायक; काबिल, तैयार । - **बक-अ** सामने, आगे, मुकाबिल (जाना, करना, जाना, होना क्रियाओंके साथ व्यवहृत) । - **ब-सेहत-वि** अच्छा होनेकी तरफ मायक । - **रिआयत-खी** पास, छिद्दाज, तरफदारी (करना, होनाके साथ व्यवहृत) । - **शिनास-वि** जानपहचानी, परिचित । - **शिनासी-खी** परिचय करना, साबब-सलामत । - **सल्लेह-वि** गोरे नेबरेका; लुखरत; प्रतिष्ठित, इब्जतदार; पाकदामन; शिदोष, बेबेय; दयानतदार (होनाके साथ व्यवहृत) । - **सिबह, स्वाह-वि** काले मुँहका; गुनबगार; बदचलन, बदकार; जलोल; कमबल, बदकिरमत; बेइज्जत; मुजरिम, अपराधी । पु० आकाश; सूर्य । **रुई-खी** दे० 'रई' । - **शर-वि** दे० 'रईदार' । **रुक-पु** बसुआ; एक औषधोपयोगी रुख । * **खी** नलबार । **रुख-पु** रुख । वि० [सं०] जो कोमल, चिकना न हो । **रुख-पु** रुख, पेड़ । * **वि** रुखा । **रुखबारी-पु** पेड़ । **रुखना-अ** अ० कि० रुठना, नाराज होना । **रुखरा-पु** दे० 'रुखरा' । वि० दे० 'रुखा' । **रुखा-वि** जिसमें चिकनापन न हो (जैसे-रुखे बाक); किना तेल-वीका बना हुआ, अरुचिकर, स्वादहीन (भोजन); नीरस, शुष्क, रमहीन; खुरदरा, असम; रमेह-हीन, प्रेमशून्य; कठोर; बिरक्त, उदासीन । - **पन-पु** रुखारै, रुखा होना; नीरसता; कड़ाई, कठोरता; स्वादहीनता; उदासीनता । - **माख-पु** नकाशीदार बरतन (कसेरा) । - **सूखा-वि** मिना वी और मसालेका बतना; जिसमें चरपापन न हो (भोजन) । **खु-पबना-शील-सकोन-रहित होना, बेसुरीजत होना; तीखा पबना, नाराज होना ।** **रुखना-अ** अ० कि० दे० 'रुखना' । **रुख-पु** [अ०] गालों और भौठोंपर सुखी खानेके लिए लगाया जानेवाला एक विशेष प्रकारका पाउखर; एक तरहकी डुकनी जिससे सोने-चाँदी आदिपर कलई करते हैं (खरिबा-पारा मिलाकर हस्तसे बरतनपर कलई करते हैं) । **रुखवेष्ट (मैकखिनबी)** - पु० १८८०-१९४५, अमेरिकन राष्ट्रपति १९३३ से १९४५ तक; (विणोबो) १८५८-१९१९ अमेरिकन राष्ट्रपति १९०१ से १९०९ तक । **रुखना-अ** अ० कि० दे० 'अरुखना', 'उरुखना' ।

रुठ-खी रुठना, नाराज होना; क्रोध । **रुठन-खी** रुठनेकी क्रिया या भाव । **रुठना-अ** अ० कि० अग्रसक, नाराज होना । **रुठवि-दे० 'रुठन' ।** **रुख-पु** [अ०] पाँच गजका एक मान । **रुख, रुखा-वि** उत्तम; भेद । [खी 'रुखी'] **रुख-वि** [सं०] उत्तम, संज्ञात; प्रबलित, प्रसिद्ध; अविभाज्य, अकेला; (बह संख्या) जो विभक्त न हो; वढ़ा हुआ, आरुढ़; * गँवार, उज्जु; कठोर, कड़ा । पु० वह शब्द जो समुदायशक्तिसे अर्थबोधक हो, जिसका खंड न हो (वैगिकना विलोम-जैसे घट, गौ ह०); व्युत्पत्तिप्रप्त अर्थ, प्रकृति-प्रत्यय-युक्त अर्थके स्वानपर दूसरे अर्थका प्रकाशक शब्द । - **वौबना-खी** दे० 'आरुढ़-वौबना' । **रुखा-खी** [सं०] प्रसिद्धि, प्रबलित अर्थमें विनियुक्त लक्षणा (सा०) । **रुडि-खी** [सं०] जन्म, उत्पत्ति; प्रसिद्ध, ख्याति; प्रथा, चाल; वढ़ाई, वढ़नेका भाव; हडि; उभार, उठान; शब्दकी शक्ति जो वैगिक न होनेपर भी अर्थ स्पष्ट करती है । **रुब-पु** [का०] नदी; बाला; साजका तार; गीत; आनंद; सुंदर युवका; पर-नुवा पक्षी । **रुब-पु** [सं०] सरत, शरत्; इधर पराध, वस्तु (विशेष वर्णसे भिन्न); प्रकृति, स्वभाव; बेश; सोदय; शरीर, विषय, प्रत्ययके वैगिक बने शब्दका रूपांतर, स्वरूप; देश-कालका भेद, दशा; लक्षण, चिह्न, विकार, भेद; रूपक; * रूपा, चौदी । वि० समान अनुरूप; रूपवान्- 'समय समय सुंदर सवै रूप कुरूप न कोह'-वि० । - **कर्ता (रुँ), -कृत्-पु** विशकर्ता । - **कौता-खी** एक वर्णवृत्त । - **गबिला-खी** वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व हो । - **बनाक्षरी-खी** एक वृत्त, दंष्टका एक भेद । - **बनुदशी-खी** कांतिक बरी चौदस, नरक बनु-दशी (इस तिथिकी उवटन लगती है) । - **जीबिनी-खी** बेधवा । - **जीबी (विन्)-पु** बहुरूपिया । - **धर-वि** लुखरत, सुंदर । - **धारी (विन्)-वि** रूपवान्; सुंदर; बेश बदलनेवाला (नट, बहुरूपिया) । - **नाशक-पु** उल्क । - **पति-पु** विशकर्मा, त्वष्टा । - **मंजरी-खी** एक फूल; एक धान । - **माखा-खी** एक मायिक छंद । - **माखी-खी** एक वर्णवृत्त । - **रेखा-खी** किसी कार्य या योजनाका शूल रूप, वह चित्र जो अभी केवल रेखाओंके रूपमें हो; किसी आकृति या चित्रका रेखाग्रय रूप । - **रूपक-पु** रूपकालंकारका साधन रूपक । - **शाखी (विन्)-वि** रूपवान्, सुंदर । - **खी-खी** एक सकर रागिनी । - **संपति, -संपद्-खी** सुंदरता, सुसुप्ता । **रूपक-पु** [सं०] (रूपका आरोप करना) अभिनय-प्रदर्शन-युक्त दृश्य काव्य (इसके दस भेद और अठारह उपभेद उपरूपक है); एक अर्थालंकार, जहाँ साधर्म्यके कारण उपमेयमें उपमानका आरोप किया जाय-उपमानकी तद्रूपता होनेपर तद्रूप और दोनोंमें अभेद होनेपर अभेदरूपक होता है; सात भाषाका एक होताका ताक (संगीत); मूर्ति, प्रति-कृति; चौदी; रूपया; एक परिमाण ।

रूपकातिशयोक्ति-खी० [सं०] अतिशयोक्तिका एक भेद जिसमें उपमेय, वाचक भर्माविका जोष कर केवल उपमानका उत्प्रेक्ष किया जाता है।

रूपक-पु० [सं०] आरोपण, आरोप करना; परीक्षा; प्रमाण।

रूपता-खी० [सं०] रूपत्व; सुंदरता।

रूपमयी-वि० खी० रूपवती।

रूपमय-वि० [सं०] परम सुंदर। [खी० 'रूपमयी']

रूपवा-पु० दे० 'रूपवा'।

रूपवत्, रूपवत्-वि० सुंदर रूपवान्-रूपव कौन अधिक सीता से जन्म विद्योग भरे'-ख०।

रूपवती-खी० [सं०] एक छंद (केदार), गौरी (काम्य-प्रभाकर); रत्नवती, चंपकमाळा वृत्त। वि० खी० सुंदरी।

रूपवान् (वत्)-वि० [सं०] सुंदर; जिसकी कोई आकृति हो; जो किसी रंग, वर्णका हो।

रूपसी-खी० रूपवती खी०।

रूपा-पु० चौंदा; बटिया चौंदा; सफेद बैल; हवेल रंगका घोड़ा।

रूपाजीवा-खी० [सं०] वेदवा, रबी।

रूपाधिबोध-पु० [सं०] ध्वन्य पदार्थ, वस्तुका इंद्रिय-कल्प ज्ञान।

रूपाध्वज-पु० [सं०] टकसालका प्रधान अक्षर, नैष्ठिक; कोषाध्वज।

रूपाध्वज-पु० [सं०] एक प्रकारका चित्र (रूप-लोकका ज्ञान करानेवाला); ध्वानकी एक भूमि (प्रथमा आदि चार भेदोंसे युक्त); एक प्रकारके देवता (बी०)।

रूपाध्वज-पु० [सं०] सुंदर पुरुष।

रूपाध्वज-पु० [सं०] कामदेव।

रूपिका-खी० [सं०] सफेद मदार, आक।

रूपी (विन्)-वि० [सं०] रूपवाला, रूपवारी; समान, सदृश; सुंदर, रूपवान्।

रूपेन्द्रिय-खी० [सं०] आँख, नेत्र।

रूपेध्वज-पु० [सं०] एक शिबलिंग।

रूपोपजीविनी-खी० [सं०] वैश्या।

रूपोपजीवी (विन्)-पु० [सं०] बहुरूपिया; नट।

रूप्य-पु० [सं०] सोना; चौंदा; रूपवा। वि० सुंदर; उपमेय; सुद्राक्षित।

रूप्यक-पु० [सं०] रूपवा।

रूप्याध्वज-पु० [सं०] खर्जाजी।

रुक्म-पु० [सं०] रंज, परंजका पत्र।

रुक्म-पु० रौम, डोम (मीरा)।

रुक्म-पु० [फा०] दुर्गी, पूर्वी कैसर कानिस्तानका राज्य जिसकी राजधानी कुस्तुनिया थी; [अ०] कमरा।

रुक्म-पु० [अ०] रुक्मना, छलना।

रुक्मानिया-पु० एक यूरोपीय देश।

रुक्मानी-पु० रुक्मानिका निवासी; वि० दे० 'रुक्मानी'।

रुक्माक-पु० [फा०] हाथ-झुंहे पोंछनेका कपड़ेका चौकोर टुकड़ा; चिकन, चौकोन शाकका टुकड़ा (टिकीना दुहरकर ओटते हैं)। मुसलमानी समयमें कमर भी बाँधते थे; भियाणी, पाजामेकी मोहरियोंकी ओझनेवाला चौकोर टुकड़ा; ठाँका रुक्माक (एक सिरपर चौंदाका एक टुकड़ा

बाँधा रहता था; वस्त्रमें फँसाकर वही टुकड़ेकी बाँटीके पास बतना देवाते थे कि बाजी मर जाता था)। **रु०** -पर रुक्माक भिगीमा-बहुत अधिक रोना।

रुक्माकी-खी० दे० 'रुक्माकी'।

रुक्मी-वि० [फा०] रुक्मनिवासी; रुक्मा; रुक्ममें होनेवाला।

रुक्म-वि० [सं०] गरम, उष्ण; जला हुआ।

रुक्मना-अ० [अ०] जोर-जोरसे शब्द करना, चिढ़ाना- 'संगहिं सवे चलो भावबके ना तो मरिहौ रुक्मि'-ख०।

रुक्मा-वि० अच्छा, उत्तम।

रुक्म-पु० [अ०] नियम, कायदा; रेखा, लकीर खींचनेका डंडा; सतर, कागजपर सीधी खींची हुई लकीर।

रुक्मनाक-सं० कि० दवा देना।

रुक्मर-पु० [अ०] रेखा, लकीर, सतर खींचनेका डंडा; पट्टी, पैमाना; शासक।

रुक्म-पु० दे० 'रुक्म'।

रुक्म-पु० [सं०] महुआ, बासक। वि० मिळाने, जीपा-पीपी करनेवाला; सजानेवाला।

रुक्म-पु० [सं०] भूषित करना, सजाना; अनुलेपन।

रुक्माक-वि० दे० 'रुक्मा'।

रुक्मि-वि० [सं०] भूखि आदिमें मरा, सजा हुआ; जो चिकना न हो।

रुक्म-पु० [फा०] सोवियत रुक्म, यूरोप-एशियाके भूखंडपर फैला हुआ, पृथ्वीके विस्तारके चर्चामें स्थित एक विशाल देश।

रुक्मना-अ० कि० रोव करना, नाराज होना, रुठना- 'तेहि रिसहौ पर हेरल, रुमेउ नागर नाहै'-प०।

रुक्मा-पु० महुआ, बासक; एक सुगंधित घास, मोतिदा, सौफिया (फकनेपरका नाम), रोहिण, गंधबेला, भूतल।

रुक्मी-खी० [सं०] सिरपर जमा हुआ मैल; रुक्मी भाषा। वि० रुक्मा; रुक्ममें उत्पन्न। पु० रुक्मनिवासी।

रुक्म-खी० [अ०] आत्मा; दिल, जी; आन्ध्रतरिक इच्छा, सत, सार (जैसे-रुक्मगुलाब)। -**अरुक्मी-वि०** साजगी देनेवाला। **रु०** -**रुक्म** हो जाना-भयमें सज या जड़ी-भूत हो जाना- 'रुक्मेकी एक ही गुरोइसें रुक्म कर्म हो जाती थी'।

रुक्म-खी० पुरानी वंश।

रुक्मना-अ० कि० उमड़ना; चढ़ना। सं० कि० घेरना, आवेष्टित करना।

रुक्मानी-वि० आत्मासवधी, आध्यात्मिक (ताकत ह०)।

रुक्मि-पु० रुक्मि, रक्त।

रुक्मी-खी० एक वृक्ष, खीरी, मायरी, अहिगवा, ईसरमूल।

-**मूल-पु०** रुक्मीकी छाल और जड़।

रुक्मा-अ० कि० गंधका रौनका; अर्धे प्रकारसे गाना।

रुक्मा-पु० गंधका वृक्ष।

रुक्मा-अ० कि० कीर्ण, सरीसृपोंका चक्कना; धीरे-धीरे चक्कना।

रुक्मी-खी० मटकटवा।

रुक्मा-सं० कि० पेटके बल या धीरे-धीरे चक्काना।

रुं-पु० [अ०] पर, भूमिका किराया, रुकान।

रुं-पु० नाकका मल।

रैंडा-पु० लिसेडेका फल ।

रैंडे-पु० औषध, जलाने आदिके काम आनेवाला एक छोटा

वृक्ष, परंड । -खरबूजा, -मेवा-पु० पपीता ।

रैंडना-पु० कि० गमित होना, प्रीत होना, विशेषतः पान, गेहूँ, जो आदिका उस अवस्थाको प्राप्त होना जिसके कुछ ही समय बाद उममें बालें फूटती हैं ।

रैंडी-पु० कुआर-कातिकमें होनेवाला एक पान ।

रैंडी-खी० रैंडका बीज ।

रैंडी-खी० ककड़ी, खरबूजेकी बतिया ।

रैंडी-खी० लडकोके रोनेका शब्द ।

रैंडना, रैंडना, -पु० एक पेड़ जो कुछ-कुछ बरूले के पेड़से मिलता है ।

रे-अ० [म०] सनौधनका शब्द, अरे, ओ, ओ (जीपोंके संबोधन, भर्त्सना, तिरस्कार और स्नेहके भावोंका व्यञ्जक) । पु० कथम स्वरका चिह्न (संगीत) ।

रेवेंडा-पु० दे० 'रेवेंडा' ।

रेडका-पु० दे० 'रेडका' ।

रेडबी-खी० दे० 'रेडबी' ।

रेडरा-पु० दे० 'रेडरा' ।

रेक-पु० [सं०] विरेचन, दस्त जाना; नीच, छोटी जातिका व्यक्ति; शका; संदेह; मेदक ।

रेकान-पु० नदीके पानीकी पहुँचके बाहरकी भूमि ।

रेकार्ड-पु० [अ०] मिसिल, मुकदमा, रंहराज. नफतरके कागज-पत्र; प्रायोंकोनकी प्लेट, नका ।

रेखा-खी० रेखा, लकीर; चिह्न, निशान; गिनती, गणना; निकलती हुई मूँछें, मसे; होरेका एक दोष (जिसमें लकीरें दिखाई दें) । पु० -आना, -मीजना, -जीवना-मूँछें निकलना शुरू होना । -खीचना, -खीचना-रेखा अंकित करना; कोई बात और देकर कहना ।

रेखता-पु० [फा०] अरबी-फारसी-मिश्रित हिंदीका गाना, गजल; उर्दूका आरम्भिक नाम ।

रेखना-सं० कि० रेखा, लकीर खीचना; चिह्न करना; खरोंचना ।

रेखा-खी० कण, टुकड़ा-पानी भादि पखानकी रेखा ठोकल गटे भूका-कभीर०, खी० [सं०] बिंदुकी गति जिसमें केवल लंबाई हो (अयामिति), लकीर; नृचक चिह्न (किसी पदार्थ, वस्तु आदिका-जैसे कर्म, भाव्य-रेखा); गणना; आकार, सूरत; हाथ, तलवे आदिकी टेढ़ी-सीधी लकीरें (इनके आधारपर भविष्यकथन, शुभाशुभ-निर्णय किया जाता है); होरेकी बीचकी दोषवृत्त लकीर ।

-गणित-पु० गणितका एक विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा सिद्धांतका निरूपण होता है, स्थान और परिमाण (जैसे-रेखा, धरातल, घन आदि)के गुण और संबंधोंका विज्ञान । -चित्र-पु० (स्केच) फंसिल आदिकी रेखाओंसे बनाया गया चित्र; थोड़े शब्दोंमें प्रस्तुत किया गया जीवन, वृद्ध आदिका ऐसा वर्णन जिसमें उसकी मुख्य विशेषताएँ आ जायँ । -पुर-पु०, -भूमि-खी० लंका-सुमेरुकी मध्यवर्ती कल्पित रेखापर स्थित प्रदेश (प्रा० ज्यो०) ।

रेखित-वि० अंकित, लिखित, खिचा हुआ; मसका, फटा हुआ; रेखा, लकीर खींचा हुआ ।

रेय-खी० [फा०] बाव ।

रेमिस्तान-पु० बाग़का मैदान, मरुस्थल ।

रेचक-वि० [सं०] दस्त खानेवाला, दस्तावर । पु० प्राणा-यामकी एक क्रिया (खाँची हुई साँसेको बाहर निकालना); जवाहार; जमाखोटा; पिचकारी ।

रेचन-पु० [सं०] दल खाना, कोठा शुद्ध करना; जुलाब, मल निकालकर पेटको साफ करनेवाली दवा ।

रेचनक-पु० [सं०] कमीला, कंसिलक ।

रेचना-खी० [सं०] कमीला । * सं० कि० बावु, मल बाहर निकालना ।

रेचनी-खी० [सं०] कमीला; बटपत्री; दंती ।

रेचित-पु० [सं०] घोड़ोंकी धक चाल; नृत्यमें हस्तचालन । वि० साफ किया हुआ, मल बाहर निकाला हुआ ।

रेच्य-पु० [सं०] छोटी या बाहर की हुई बावु (प्राणायाम); मेदक जुलाब ।

रेझ-वि० [फा०] रहानेवाला, तर करनेवाला (जैसे-धूरेच) ।

रेझगारी-खी० सुर्दा, छुट्टा (एकत्री, दुअत्री, चवत्री आदि) ।

रेझगी-खी० [फा०] सुर्दा, छुट्टा; सोने-चाँदीके तारका छोटा टुकड़ा ।

रेझवा-खी० [फा०] बहाना; ढालना; नाकसे पानी बहना ।

रेझ-रेझखीमा-पु० घोड़ोंका जुकाम ।

रेझा-पु० अँगिया, सीनारंद ।

रेझा-पु० [फा०] बहुत छोटी चीज, छोटा टुकड़ा, खर; मजदूर लडका (बड़े राजगीरीके साथ काम करनेवाला); मुनारोंका एक औजार; धान-ज्यों कीरी रेजा हुने-कभीर०; नग, अरद ।

रेजिडेंट-पु० [अ०] अंगरेजी राजप्रतिनिधि जो देशी राज्योंमें रहा करता था ।

रेजिष्ट-खी० [फा०] जुकाम ।

रेजीमेंट-खी० [अ०] मेनाका एक स्थायी विभाग (कर्मलके अधीन और कई टुकड़ियोंमें विभक्त) ।

रेजू-पु० ब्रज बमानेका एक तरहका रेशा ।

रेट-पु० [अ०] भाव, दर; निश्च; चाल, गति ।

रेडियम-पु० [अ०] एक प्रकाशमय धातु ।

रेडियो-पु० [अ०] एक तरहका विद्युत्-चुंबक जिसकी सहायतासे बिना तारके ही बार्ता, संगीत, समाचार आदि बहुत दूर-दूरतक प्रसारित किया जा सकता है; वह यंत्र जिससे आकाशवाणीकेंद्र द्वारा प्रसारित प्रेमा समाचार, संगीत आदि सुना जा सके ।

रेणु-खी० [सं०] धूल; बाव; कणिका, बहुत छोटा परिमाण संसार; विरंग । -रूपित-पु० गंध । वि० धूलमें संना हुआ । -बास-पु० बीरा । -सार-सारक-पु० कपूर ।

रेणुका-खी० [सं०] बाव; धूल; परशुरामकी माता; संसार; सखाद्विपर स्थित एक तीर्थ; * पृथ्वी । -सुव-पु० परशुराम ।

रेतकुम्हवा-खी० [सं०] एक नरक, रेतकुंड ।

रेत-स्त्री० बालः बलुर् भूमि ।
 रेत(स्)-पु० [सं०] वीर्यः जलः पारा । -ज-पु० पुत्र ।
 -जा-स्त्री० बालः ।
 रेतज-पु० [सं०] वीर्यः ।
 रेतना-स० कि० रेतोसे रगकर काटना, चिकना करना;
 औजारकी धार रगटना; धीरे-धीरे रगकर काटना; (जैसे-
 गला रेतना) ।
 रेतल-पु० एक पक्षी ।
 रेतला-वि० दे० 'रेतीला' ।
 रेतवा-पु० रेतनेवाला ।
 रेत्या-पु० बालः; धूलः, मिट्टी; बलुर् भूमि ।
 रेतिया-पु० रेतनेवाला ।
 रेली-स्त्री० कोहेका एक औजार जिससे रगकर कोई वस्तु
 काटी या चिकनी की जाती है; नदी, समुद्रतटकी बलुर्
 भूमि; नदीका द्वीप, टापू, पानी बटनेसे धाराके बीच
 निकली रेलीकी भूमि ।
 रेलीला-वि० बलुआ, बालुकामय । [स्त्री० 'रेलीली' ।]
 रेत्य-पु० [सं०] पीतल ।
 रेत्य-पु० [सं०] वीर्य, शुक्र; पारा; अमृत, पीपुषः पदाम् ।
 रेत्या-स० कि० किसी चीजके सहारे लटकाना ।
 रेली-स्त्री० अलगनी; रंग देनेवाली वस्तु ।
 रेतु-स्त्री० दे० 'रेणु' ।
 रेतुका-स्त्री० दे० 'रेणुका' ।
 रेत-वि० [सं०] क्रूर; मिश्रित, दृष्टिगत; कृपण ।
 रेत-पु० [सं०] 'र' अक्षर; 'र'का किसी वर्णके पहले
 आनेपर मस्तकस्वरूप^{११} (जैसे-दर्प, धर्म, कर्म आदिमें);
 राग; शब्द । वि० कुत्सित, मिश्रित, दृष्टिगत ।
 रेत-पु० [सं०] कन्देदमें उल्लिखित एक ऋषि जिन्हे
 अमरीने कुपमें डाल दिया था; एक कश्यप-वंशीय ऋषि ।
 रेतहान-पु० [सं०] शिवका एक नाम; अमरा नोर ।
 रेतुजा, रेतुजा-पु० पुण्य, बड़ा उल्ल ।
 रेत-स्त्री० बहाव, धारा; नीर; बहुतायत । -ठेल, -पेल-
 स्त्री० मोड़भाड़; धक्कनका; अधिकता, बहुतायत ।
 रेत-स्त्री० [अ०] कोहेकी शहतीर, सलाख जोड़ी हुई
 लाइन जो जमीनपर खिंची रहती है, कोहेकी घटी (जिस-
 पर रेलगाड़ी चलती है); रेलगाड़ी । -हजिन-पु० रेतका
 हजिन । -गाड़ी-स्त्री० कोहेकी पटरियोंपर चलनेवाली
 गाड़ी, 'रेलवे ट्रेन' । -पुल-पु० रेलगाड़ी आने-जानेके
 लिए बना हुआ नदी, नाले आदिका पुल । -मंरी-
 पु० मर्मिर्मलका वह सदस्य जिसके जिम्मे रेतका
 मोहकमा हो । -मोटर-स्त्री० वह मोटर जो रेतकी
 सड़कपर चले । -रौड-पु०, -लाइव-स्त्री० रेतकी
 पटरी, रास्ता । -वे-स्त्री० रेतकी सड़क; रेतका बिभाग ।
 रेतना-स० कि० धक्का देना, डकेलना; अधिक खी लेना,
 छानना । अ० कि० अधिक होना, खूब भरा होना ।
 रेखा-पु० धावा, पट्टाई, आक्रमण; बीजभास; जलका बहाव,
 तोंक; अधिकता; समूह, पक्षि; महीन और सुंदर नौलोंकी
 बजानेकी रीति (तबल) ।
 रेखिन-स्त्री० [अ०] रोकके लिए लगाया जानेवाला छत्रदार
 या ईंट पत्थर आदिका ढाँचा ।

रेखी-पु० दालके काम आनेवाला एक द्विरल अक्ष ।
 रेख-पु० [सं०] सूँवेके एक पुत्र ।
 रेख-पु० [सं०] हिमालयपर मिलनेवाला एक पेड़ ।
 रेख-पु० [सं०] सुभर; बंस; बिषवैद्य; दक्षिणावर्त स्रक्ष ।
 रेख-पु० मेरुका समूह, गल्ला ।
 रेखा-पु० चीनी या गुग्गुला चासनी फेटकर बनाया हुआ
 ठुकरा जिसपर तिल जमाया होता है ।
 रेखी-स्त्री० छोटी-छोटी टिकियाके रूपमें बना रेखा । सु०
 -के फेरमें आना-छालचमें पड़ना ।
 रेख-पु० [सं०] जंजीरी नीर; अमलतास, आरग्वध वृक्ष;
 एक राजा, रेखतीका पिता और बलरामका श्वशुर ।
 रेखक-पु० [सं०] एक तरहका खजूर, पारेवत वृक्ष ।
 रेखती-स्त्री० [सं०] सताईसवौं नक्षत्र; गाय; एक बालमूह;
 दुर्गा; रेत मनुकी माता; बलरामकी पत्नी । -अव-पु०
 शनि । -रमण-पु० बलराम ।
 रेखना-स० कि० दे० 'रेन' ।
 रेखरी-पु० दे० 'रेखा' । स्त्री० एक तरहकी ईख ।
 रेखा-स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी; कामदेवकी स्त्री, रति; नील-
 का पौधा; एक नाम; दुगा नर्मदाका प्रवाहक्षेत्र, रीबों;
 दीपक रागकी एक रागिनी ।
 रेखा-स्त्री० [सं०] बड़ी और लंबा दाढ़ी । -सक्रो-पु०
 बूढ़ा आदमी ।
 रेख-पु० [सं०] उम्मा, मजबूत और चमकीला रेखा
 जिसे रेखमका कीड़ा कोया-अपना कोश-बनानेके लिए
 निमित्त करता है; रेखमका सूत; रेखमका कपड़ा । -की
 गाँठ-रेखमके रेत, तारकी गाँठ जो बड़ी कठिनाईसे खुलती
 है । [सु० - पञ्चा-किसी कामका बहुत मुश्किल
 होना ।] -के लच्छे-रेखमके धागोंका गुच्छा; एक
 मिठाई जो रेखमके धागोंकी तरह होती है ।
 रेखमी-वि० रेखमका; रेखमसे बना हुआ; रेखम-सा सुला-
 यम या चिकना; बहुत ही नरम ।
 रेखा-पु० [सं०] सुतबा, सुतकी-सी इकहरी चीज (जंतुओं,
 वनस्पतियों, फलों आदिमें मिलता है) । -हार-वि०
 रेखेवाला ।
 रेख-पु० [सं०] धानि, खति; हिंसा । * स्त्री० दे० 'रेख' ।
 रेख-पु० [सं०] धौवेका हिनहिनाना; शेर या सिंहका
 गरजना ।
 रेखा-स्त्री० [सं०] रेखा, हांसना, धौवेका हिनहिनाना; मिह-
 का गरजना ।
 रेखी-रेखी-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ नाश्ता और
 भोजन आदि मिलता है, उपाहारगृह ।
 रेह-स्त्री० खागमिश्रित धूल; रेखा-रुसत कसीदीमें मनी
 तनक कनककी रेह-मतिराम ।
 रेख-पु० [सं०] ऋण देनेवालीकी कुछ धन-संपत्ति उस
 समयतकके लिए देना जबतक उसका हिसाब जुका न
 दिया जाय, बंधक, गिरवी । -हार-पु० जिसके पास कोई
 जायदाद बंधक रखी हो । -जामा-पु० वह कागज
 जिसपर रेखकी शायीकी छिन्ना-पट्टी की गयी हो ।
 रेह-स्त्री० [अ०] दे० 'रेख' ।
 रेख-वि० रेखका, जिम्मे रेह अधिक हो ।

रेहू-पु० दे० 'रोहू' ।

रैअति०-खी० दे० 'रैयत' ।

रैकेड-पु० [अ०] रेनिस लेखनेका बहा ।

रैलिक-वि० [सं०] पीतलका; पीतल-संबंधी ।

रैलुवा-पु० दे० 'रायता' ।

रैल्य-पु० [सं०] पीतलका बरतन ।

रैवास-पु० रामानंदका शिष्य और कबीर आदिका सम-
काहीन एक चमार भक्त; चमार ।

रैवासी-पु० मोटा धान, जकहन । वि० रैवास-प्रवर्तित
संप्रदायका ।

रैन, रैनि०-खी० रात; रेणु-भौवेकुंठनाथ उर नासनि
चाहत जा पद रैन-चर ।

रैनी-खी० तार खींचनेकी चाँदी-सोनेकी गुल्ली ।

रैमुनिया-खी० लाख चिड़ियाकी मादा; एक अरहर ।

रैयस-खी० [अ०] प्रजा, रियावा ।

रैयाराव-पु० छोटा राजा; एक पुरानी पदवी जो राजे
अपने सरदारोंकी प्रदान करते थे ।

रैल०-खी० राशि, समूह, झुंड ।

रैवत-पु० [सं०] एक पर्वत; एक सामंजस; शिव; एक वैष्णव
जिसकी गणना बालप्रबंध में है; आनंदका एक राजा; रैवतकी
गर्भसे उत्पन्न पाँचवें मनु ।

रैवतक-पु० [सं०] द्वारकाके पासका एक पर्वत ।

रैवन्ध-पु० [म०] धन, दोलत; एक प्रकारका साम ।

रैवा०-पु० विवाद; झगडा, लड़ाई ।

रैहर-पु० झगडा, युद्ध ।

रैहो०-पु० [अ०] एक सुगंधित पौधा; बलिशश (खुदाई);
जोलाव; गुजारा; रबम, हनायन ।

रैहो०-पु० दे० 'रौहो' ।

रौंग-पु० रोम, रौंयाँ ।

रौंगटा-पु० रौंयाँ, लोम । मु०-(टे)खड़े होना-रोमांच
होना ।

रौंगटी-खी० बेईमानी (लेखमें)-'रौंगटि करत तुम लेखत-
हीमें परी कहा यह बानि'-मूर ।

रौंगट-खी० मेल, मिट्टी, धूल ।

रौंठा०-पु० अमहर, सुखायी हुई आमकी खटार ।

रौंठ-खी० ठकुराई ।

रौंठ-पु० रौंयाँ ।

रौंसा०-पु० लोबिया, रोहेंकी फली ।

रोआव-पु० दे० 'रआव' ।

रोक-पु० [सं०] नक़्द रुपया; रोकड़; नक़्द दाम देकर
चीज ख़रीदना; छिड़; दीसि; नौका । वि० चल, गति-
मान् । खी० [हिं०] अटकाव, रुकाव, छँक; रोकनेवाली
चीज (विशेषतः जानवरोंकी रोकनेके लिए बनायी हुई
बाड़, चहारदीवारी आदि); काम करनेपर प्रतिबंध;
मनाही, निषेध । -रौंक-टोक-खी० बाधा, अवरोध,
प्रतिबंध; निषेध, मनाही । -राम-खी० रोकटोक, अवरोध ।

रोकड़-खी० नक़्द रकम, रुपया; जमा, पूँजी । -बहरी-
खी० वह बही जिसमें नक़्द रुपयोंके लेन-देनका हिसाब
हो । -बिक्री-खी० वह बिक्री जो नक़्द दामपर की गयी
हो । मु० -मिलाना-आय व्ययका हिसाब लगाकर

रकमके बटने-बटनेका पता लगाना ।

रोकबिबा-पु० नक़्द रुपया; रोकड़ रखनेवाला, मुनीम,
खजानाधी ।

रोकना-सं० क्रि० गति, चाल बंद करना (जैसे-मोटर
रोकना, पानीकी धार रोकना); जानेसे मना करना;
किन्नी काम, बातका क्रम बंद करना; बाधा, अवचन
बाधना; मना करना; कहर न आने देना (छाठी, तल-
वार आदिका प्रहार छाठी, तलवार आदिसे रोकना);
बश, काबूमें रखना, संयत रखना (मन रोकना, कार्रसा
रोकना); सामना करना (बाधा, आक्रमण रोकना); छँकना
(रास्ता रोकना, प्रकाश रोकना) ।

रोख०-पु० दे० 'रोष' ।

रोग-पु० [सं०] शरीरकी विकारपूर्ण अवस्था, बीमारी;
कोई बीमारी (हैजा, ज़ेग, चेक ह०) । -कारक-
वि० बीमारी पैदा करनेवाला । -काड-पु० बकमकी
लकड़ी । -प्रस्त-वि० बीमार, रोगसे पीड़ित । -ज-
वि० रोगनाशक । पु० औषध; आयुर्वेद-शास्त्र । -नाशक
-वि० बीमारी दूर करनेवाला । -निदान-पु० रोगके
मूल कारण, उसके लक्षणोंकी पहचान करना । -परीसह-
पु० कबसे कबे रोगकी बिना कुछ ध्यान दिये बरदाश्त
करना (जै०) । -मुरारि-पु० अरकी एक औषध । -
राज-पु० यक्ष्मा, क्षयरोग । -लक्षण-पु० रोगके लक्षण
जिनसे रोगकी पहचान हो । -शिला-खी० मैनासिक ।
-शिल्पी (पिन्)-पु० सोनालका पेश । -ह-पु०
औषध । -हर-वि० रोगनाशक । -हारी (दिन्)-वि०
रोगनाशक । पु० वैद्य ।

रोगदई, रोगदैया-खी० दे० 'रौंगदी' ।

रोगान-पु० [फा०] कोई चिकनी चीज, तेल, घी ह०;
एक पतला लेप, बानिश, पालिश (जुते, लकड़ी आदि-
पर चमक लानेके लिए व्यवहार की जाती है); लाख
आदिका बना मसाला (मिट्टीके बरतनोंपर चढ़ाया जाता
है); बरेंके नेलका बना मसाला (चमड़ेकी मुलायम करने-
के लिए लगाया जाता है) । -जोश-पु० एक तरह-
का साहस । -दाश-पु० करछा, करछुल जिसमें घी
दागते हैं । -दार-वि० रोगन चढ़ाया हुआ, चम-
कीला । -क्रोश-पु० नेली । -ते)गुल-पु० गुलाब-
के फूलका तेल । -ज़रई-पु० घी । -तलछ-पु० कढ़वा
तेल । -सिबाह-पु० अलसीका तेल; कढ़वा तेल ।

रोगानी-वि० [फा०] तेल, घी लगा या चुपका हुआ;
बानिश किया हुआ; जिसके खमीरमें रोगन मिलाया
गया हो । -रोटी-खी० खमीरमें रोगन मिलायी हुई
रोटी; घी चुपकी हुई रोटी ।

रोगाकांक्ष-वि० [सं०] रोगी, रोगसे पीड़ित ।

रोगातुर-वि० [सं०] रोगसे चबराया हुआ, पीड़ित ।

रोगार्त-वि० [सं०] रोगसे दुःखी, भयाकुल ।

रोगाह्वय-पु० [सं०] कुछकी एक औषधि, कुट ।

रोगिणी-वि० खी० [मं०] रोगसे पीड़ित (औ) ।

रोगित-वि० [सं०] रोगी, पीड़ित । पु० कुत्सेका पागलपन ।

रोगिया-पु० बीमार, रोगी ।

रोगी (मिन्)-वि० [सं०] अस्वस्थ, व्याधिग्रस्त, बीमार ।

—(वि) सप्त-पु० ज्योतिष ।

रोजक-वि० [सं०] रचनेवाला; शिव; मनोरंजक, विल-
स्वरप । पु० भूषण; कला; राजपरकुंज; प्रविण्ण, अंशुकर
(नेपाली) । -हृदय-पु० विट और सैषव कवण ।

रोचन-वि० [सं०] शिव, अम्हा लबनेवाला; शोभावान् ;
दीप्तिमान् । पु० बूझ; काला सेमर; सफेद सकिजन; प्याज;
करंज; देश; अंकोट; अनार; अमलतास; कमीला; कांतिपत्र;
गोरोचन; रोचना; रोकी; रोगके अविद्याता देवता (हरि-
वंश); कामदेवके बाँच बाणोंमेंसे एक; स्वारोचिष् मन्वंतरके
इंद्र । -फळ-पु० विजौरा नीबू ।

रोचनक-पु० [सं०] जंजीरी नीबू; बंशलोचन ।

रोचना-स्त्री० [सं०] रक्त कमल; बंशलोचन; उज्ज्वल
आकाश; काला सेमर; गोरोचन; सुंदर स्त्री; वसुदेवकी स्त्री;
टीका; तिलक ।

रोचनी-स्त्री० [सं०] आँवला; मैनसिल; सफेद निसीध;
गोरोचना; कमीला; दंती; तारा ।

रोचमान-वि० [सं०] चमकता हुआ; शोभायुक्त; सुंदर ।
पु० घोषेकी गरदनपरकी एक मंथरी; स्कंदका एक अनुचर ।

रोचि(स्)-स्त्री० [सं०] प्रभा, चमक, कांति; किरण,
रश्मि; ज्योति; प्रकट होती हुई शोभा ।

रोचिष्णु-वि० [सं०] चमकदार; अर्धकारों आदिस जग-
मगाता हुआ; रचि (भूष) जगानेवाला ।

रोची-स्त्री० [सं०] एक शाक, हिलनोथिका ।

रोजक-पु० रोना-शोना; विलाप, रोना-पीटना ।

रोज-पु० [फा०] दिन; वक्त । अ० प्रतिदिन, हर रोज,
नित्य । -अक्षरूँ-वि० प्रतिदिन बढ़नेवाला (धन, यश
आदि) । -नामचा-पु० वह किताब जिसमें दैनिक
विवरण लिखा जाय, 'आयरी'; वह बही जिसमें रोजका
वित्तव लिखा जाय, दर्ज हो; वह रजिस्टर या किताब
जिसमें पटवारी अपना हर रोजका काम लिखता है; पुलिस
थानेका रजिस्टर नं० १ जिसमें पुलिसके दैनिक कार्योंका
विवरण लिखा जाता है । -नामा-पु० तिथिपत्र; दैनिक
पत्र । -बन्धो-ज-अ० प्रतिदिन, हर रोज; क्रमशः, लगा-
तार । -अर्द्ध-अ० नित्य, प्रतिदिन, हर रोज । पु० अहले
जमानकी भाषा, बोलचालके शब्द और मुहावरे । -रोज-
अ० प्रतिदिन, हर रोज । -ब शब्द-अ० रात-दिन;
हमेशा, नित्य । - (जे) क्रयामः-क्रयामस्त-पु० कया-
मतका दिन । -जज्ञा-पु० कमीका फल मिलनेका दिन,
कयामतका दिन । -दाद-पु० दे० 'रोकेहन्न' । -
नजाल-पु० दुश्मनसे रिहाई पानेका दिन; कयामतका
दिन । -किराऊ-पु० विरह, विवोगका काल, समय,
अवधि, दिन । -बद-पु० बुरे दिन । -इज्ज-हिसाब-
पु० कयामतका दिन ।

रोजगार-पु० [फा०] जीविका, धनसंचयका काम, कर्म,
व्यवसाय । मु० -चमकता-व्यापार, व्यवसायमें लाग
होना ।

रोज्ञा-पु० [फा०] एक मजहबी फर्ज जिसमें प्रातःकाल
एक बही रातसे सध्याके एक धकी बादतक विलकुल नहीं
खाते; उपवास, अनाहार; रोजेका दिन; रोजेका महीना,
रमजान । -झोर-झर-पु० रोजा न रखनेवाला

आदमी । -बार-पु० वह जो रोजा रखता है । मु०
-अप्रसार करना-रोजा खोखना । -खाना-भित्त
रोजोंमें कोई न रखना । -खोखला-दिनभर भ्रत रहने-
के बाद सध्याको पहले पहल कुछ खाना । -टूटना-
भ्रत खंडित होना ।

रोज्ञाना-अ० [फा०] नित्य, हर रोज ।

रोज़ी-स्त्री० [फा०] खुराक, रज्जु; जीविका । -बार-वि०
जिसे खर्चके लिए नित्य कुछ दिया जाय । -विगाह-
वि० छगी रोजी विगाहनेवाला, निकम्मा । -रसौं-वि०
रोजी पहुँचानेवाला । पु० परवरदिगार ।

रोज़ीबा-पु० [फा०] दैनिक वेतन, मजदूरी (जो रोजाना
मिले); खुराक (जो रोजाना दी जाय); पेंशन, बजीफा । †
अ० निल, प्रतिदिन ।

रोझ-स्त्री०, पु० नीलगाय-‘हम भी पाहन पूजते होते
बनके रोझ’-साखी ।

रोट-पु० बहुत मोटी रोटी; सरबत, महुषके रसमें बनायी
हुई मोटी रोटी; छिट्ट, हाथियोंका रातिव ।

रोटका-पु० बांकर ।

रोटिका-स्त्री० [सं०] कुल्फी, हलकी, छोटी रोटी ।

रोटिहा-पु० रोटियोंके (खानेके) बदलेमें काम करनेवाला
नौकर ।

रोटिहाना-पु० पकी रोटियों रखनेका छोटा चबूतरा ।

रोटी-स्त्री० गुंथे आटेकी तवेपर या आगपर सिंकी और
नेलन या हाथसे दबाकर बटायी हुई गोल टिकिया,
चपाती, फुलका; खाना, आहार, भोजन । -कपड़ा-
पु० खाना-कपड़ा; गुजर-बसरकी सामग्री । -दाऊ-
स्त्री० रोटी और दाऊ; भोजन । -फळ-पु० एक
फल; इस फलका पेज । मु० -कमाया-जीविका, रोजी
नलाना, पैदा करना । -की पीठ-उलटकर सैका जाने-
वाला रोटीका पक्ष ।

रोठा-पु० एक तरहका बाजर ।

रोखेज-पु० [अ०] सरकारी मोटर गाड़ियों द्वारा यात्रियोंके
गमनागमनकी नियमित व्यवस्था ।

रोषा-पु० ककड़, ईट-पत्थरके टुकड़े; एक पंजाबी धान,
पंजाबकी एक जाति; अरोड़ा; (ला०) बाधा । मु० -
डालना-बाधा खड़ी करना । - (दे) अटकावा-बाधा
डालना ।

रोस्(स्)-पु० [सं०] स्वर्ग; भूमि; बाबापुत्रिणी । [स्त्री०
दे० 'रोदसी'] ।

रोस्न-पु० [सं०] रोना, विलाप करना ।

रोस्नी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी; स्वर्ग; 'पुरति ई भूरि भूरि
रोदमीके आस-पास'-राम० ।

रोषा-पु० वनपृथ्वी कीरी, प्रत्यवा; बारीक, सूक्ष्म तौल; पेक-
की शाख ।

रोष-पु० [सं०] रोक, निषेध, बाधा; मेरा; तीर, किनारा;
बारी । -कूप्-पु० साठ संवत्सरोंमेंसे पैदाकीसवाँ (६०
सं०) । -बस्ता-स्त्री० टेढ़े किनारेवाली नदी ।

रोषक-वि० [सं०] रोकनेवाला ।

रोषव-पु० [सं०] गुप्त ग्रह; रोक, अवरोध; दमन ।

रोचना-सं० हि० रोकना ।

रोम-पु० [सं०] पाप; अपराध; दोष, लोपका पेड़ ।

रोना-अ० कि० शोक, कष्टजनित विकलताके कारण कुछ कष्ट उठना, कुछ विशेष प्रकारके स्वर निकलना और आँसू बहना, विहाना तथा आँसू बहाना, रुदन या विहाप करना; शिकायत करना; अफसोस करना, झींकना; रज, गम, शोक करना; कुदम; बाँझा करना; करिबाद करना; दुःख बयान करना; पछताना । **वि०** रोनेवाला; मुहरमी; बिबकिडा । **पु०** रुदन, अश्रवात; कुहराम; मातम; अफसोस, गम; शिकायत; तकलीफ; करिबाद; बाँझा; कुदम । **मु०** -आना-दिख भर आना, अफसोस होना । -**पढ़ना**-मातम होना, कुहराम मचना । -**पीटना**-विहाकर, छाती पीटकर रोना ।

रोनी-धोनी-वि० **खी०** रोनेधोनेवाला, मुहरमी । **खी०** रुदन, विहापकी प्रवृत्ति; मनहूसी ।

रोप-पु० [सं०] रोपण (धान, पेड़ आदिके लिए); ठहराव, रुकावट; छिद्र; छेद; बाण; बुद्धि फेरना, मोहन; † हरिस्तके छोरपरकी जवके पारवाली हलमें लगी लकड़ी ।

रोपक-वि० [सं०] जमाने, लगानेवाला; स्थापित करनेवाला; (रीबार आदि) उठावनेवाला । **पु०** सोने-चौंकीकी तोलका एक मान, सुवर्णका सत्तरवाँ अंश ।

रोपण-पु० [सं०] लगाना, बैठाना (बीज, पौधा); स्थापित करना; ऊपर रखना; खड़ा करना; उठाना (रीबार आदि); मोहित करना, मोहन; बुद्धि फेरना, बुद्धि; बिचारमें गबनगी पैदा करना; धावपर पपड़ी बँधना, घुसना; किसी प्रकारका लेप लगाना ।

रोपना-स० कि० लगाना, जमाना; पौधा लगाना, एक जगहसे दूसरी जगह गाबना; स्थापित करना, रखना; ठहराना, ठिकाना; बीज बोना; रखना; हथेली या कोई वस्तु पैकाना, कोई पात्र आगे बढ़ाना (कोई वस्तु लेनेके लिए) ।

रोपनी-खी० रोपाई, रोपने (धान आदिके पौधोंको गाबने)का काम ।

रोपित-वि० [सं०] जमाया, लगाया हुआ; उठाया, खड़ा किया हुआ; रखा हुआ, स्थापित; मोहित, भ्रांत ।

रोब-पु० [अ० 'रुब'] धाक, दबदबा; तेज, प्रताप; आतक । -**दाब-पु०** तेज; आतक । -**हार-वि०** तेजस्वी; प्रभावशाली । **मु०** -में आना-धाक, प्रभाव मानना; भय मानना ।

रोमंश-पु० [सं०] जुगाली, पायुर ।

रोम-पु० इटलीकी राजधानी; [सं०] छिद्र; जल ।

रोमन्-पु० [सं०] रोमों, रोंगटा, शरीरपरके बाल; पर । -**कण्ठक-पु०** खरगोश । -**कूप-पु०** त्वचाके वे छोटे-छोटे छेद जिनसे रोम निकलते हैं । -**केशर-पु०** गुच्छ **पु०** चँवर । -**पाटक-पु०** कनी कपड़ा । -**पाद्-पु०** अंगदेशका एक राजा जिसने कथ्यम्बकी पत्नी साताकी गोद लिया था । -**बद्ध-पु०** वह बल जो रोमोंसे जुना, बँधा हो । **वि०** रोमोंसे बँधा, जुना हुआ । -**भूमि-खी०** चमड़ा, त्वचा । -**राजी-छता-खी०** रोमावली, रोमोंकी मेणी; पैदपरके गहरे बाल, नाभिसे ऊपरके बाल । -**हर्ष-पु०** रोम, रोंगटे खड़े होना, रोमांच । -**हर्षण-**

पु० रोमोंका खड़ा होना (हर्ष, शोक, भय आदिके कारण); वेदव्यासके एक शिष्य, सप्त पौराणिक । **वि०** रोंगटे खड़े करनेवाला, अर्बकर, बाँधण । **मु०** -**रोममें-सारे** शरीरमें, अंग-वगमें । -**रोमसे-पूर्ण** हृदयसे, तन-भरसे ।

रोमक-पु० [सं०] सोमर झीलका नमक, साकंभरी, पांशु-लवण; ज्योतिषका एक सिद्धांत; एक प्रकारका चूल्हा ।

रोमन-पु० [अ०] रोम-निवासी । -**कैबलिक-पु०** ईसा-इसवीका एक पुराना संप्रदाय (इस संप्रदायमें मरियमकी उपासनाकी प्रथा है और गिरजाघरोंमें मूर्तियाँ भी रखी जाती हैं) ।

रोमांच-पु० [सं०] रोमोंका उमरना, खड़ा होना (आनंद, भय आदिके), पुलक ।

रोमांचित-वि० [सं०] पुलकित, हुशरोमा, जिसके रोम खड़े हों ।

रोमांतिक मसूरिका-खी० [सं०] चेचक जैसा एक रोग, छोटी माता ।

रोमाग्र-पु० [सं०] रोमोंका सिरा ।

रोमानी-वि० जिसमें मुख्य रूपसे शारीरिक प्रेमका वर्णन हो ।

रोमाली-खी० [सं०] रोमावली, रोमराजी, रोमोंकी पक्ति ।

रोमावलि, रोमावली-खी० [सं०] रोमोंकी पक्ति; नाभिसे ऊपरकी ओर जानेवाली रोमपंक्ति ।

रोमिख-वि० रोमेश्वर, बालोंवाला ।

रोमोद्भूत, रोमोद्भव-पु० [सं०] रोमहर्ष, रोमांच ।

रोम्यरीली-पु० (१८६६-१९४४) प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक; नोबेल पुरस्कार-विजेता, १९१५; विश्वास्तिके समर्थक ।

रोम्य-पु० रोम, रोम, रोंगटा । **मु०** -**खड़ा होना-रोमांच होना** । -**टपना होना-कुछ न बिगड़ पाना**, कोई क्षति न होना (बाक बाँका न होना) । -**पसीबना** -दया उपजना, करुणाई होना ।

रोर-खी० रौला, कोलाहल, हल्ला; बहुतसे लोगोंकी एक साथ निकली हुई ध्वनि; रोने-बिहानेका शब्द; हलचल, धूमधाम; उपद्रव; निर्भरता, गरीबी -'रोरके जोरतें सोर धरनी कियो चल्थो दिज द्वारका जाय ठाक्यो' -सर; विपत्ति । **वि०** दुर्दमनीय, प्रचंड; उद्वत; दुष्ट, अत्याचारी ।

रोरा-पु० गोंजिका चूर; दे० 'रोर' ।

रोरी-खी० दे० 'रोली'; * धूम, चहल-पहल, दौड़धूप -'रोरि परी गोकुलमें जँह तहँ गाह फिरत पय दोहनकी' -मर । **वि०** खी० कचिर, सुंदर । **पु०** लहसुनिया नग ।

रोरुदा-खी० [सं०] रुदन, विहाप, जार-जार रोना । **रोलंब-पु०** [सं०] मनुष्य, भ्रमर; झुष्क भूमि । **वि०** अविश्वासी ।

रोल-पु० पानीका रेंका, तोड़, बहाव; रखानी जैसा एक औजार जिससे बरतनकी नक्काशीकी तनीन साफ करते हैं; [सं०] हरा ज्वरक । * **खी०** हल्ला, कोलाहल; शब्द, ध्वनि, आवाज ।

रोलर-पु० [अ०] झुलकनेवाली चीज, बेहन; स्वाही देनेका बेहन जो सरेत और गुड़के मेल या रबरसे बनता है । -**श्रेम-पु०** बेहनकी कमान । -**मोल्ड-पु०** सरेसका रोलर ढालनेका साँचा ।

रोका-पु० शोरमुक, कोलाहल; बेलन; घोर मुक; २४ मासाओंका एक छद; † चौका बरतन करनेका काम ।

रोखी-खी० हलदी-चूनेकी बनी ठाक चुकनी, थी (जिसका तिलक लगाते हैं) । पु० लहसुनिया नग ।

रोखनहार-वि०, पु० रोखेवाला; धृस्युका शोक करनेवाला, आत्मीय ।

रोखना-वि० बहुत जल्दी रोनेवाला, बुरा माननेवाला; चिदनेवाला, लेल, हँसीमें बुरा माननेवाला । * अ० कि० दे० 'रोना' ।

रोखनिहारा-वि०, पु० दे० 'रोखनहार' ।

रोखनी-थोखनी†-खी० दे० 'रोनी-थोनी' ।

रोखी-पु० दे० 'रोखी' ।

रोखासा-वि० रोनेको तैयार, रोनेका श्चलुक । [खी० 'रोखाशे' १]

रोखन-वि० [का०] जलता हुआ; प्रकाशित; प्रकाशपूर्ण, नमकरार; प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर; जाहिर, प्रकट ।

-**आरा (वेगम)**-खी० ग्राहजहाँकी पुत्री । -**चौकी**-खी० एक किरमके बाजेबालोंकी चौकी, गडबारी, नफरी (परियों, राजाओंके द्वारपर पहर-पहरपर बजनेके कारण इसका यह नाम पड़ा है) । -**झमीर**, -**विमाता**-वि० अन्नमंद, सुपुत्र । -**दान**-पु० मोखा, शरीसा ।

रोखनाई-खी० स्थायी, मसि; प्रकाश, रोशनी ।

रोखानी-खी० प्रकाश, उजाळा; चिराग, दिया; दीपमाला-का प्रकाश, दीपोत्सव; ज्ञान, शिक्षाका प्रकाश ।

रोख-पु० [सं०] क्रोध; विद्वेध, विरोध; विद; लंनेका उत्साह, उमंग, जोश ।

रोखन-पु० [सं०] पारा; कमीठी; ऊसर भूमि । वि० क्रोध-शील; क्रुद्ध ।

रोखनित, **रोखित**-वि० [सं०] क्रुद्ध ।

रोमी (चिन्)-वि० [सं०] रोष करनेवाला, क्रोधी ।

रोस-पु० दे० 'रोष' । खी० दे० 'रौस' ।

रोसनाई-खी० दे० 'रोशनारी' ।

रोसनी-खी० दे० 'रोशनी' ।

रोसा-पु० एक सुगंधित घास, रूसा ।

रोह-पु० [सं०] चढ़ाई; चढ़ना; अंकुर, अंकुआ; कली; नील गाय । * वि० चढ़नेवाला । -**ग**-पु० सिंहलका एक पहाड़, आदमकी चौटी, विदूर पर्वत ।

रोहक-वि० [सं०] चढ़नेवाला । पु० सवार ।

रोहण-पु० [सं०] चढ़ना; अंकुरित होना, उगना; कपर-की ओर बढ़ना; बीयें; विदूरादि; एक राज्य ।

रोहण-पु० एक पेड़, मूहन या घसी वृक्ष ।

रोहमा-अ० कि० चढ़ना; कपरकी बढ़ना, जाना; सवार होना । सं० कि० चढ़ाना; कपर करना; भारण करना, अपने कपर रखना; सवार कराना ।

रोहि-पु० [सं०] बीज, वृक्ष । वि० धार्मिक, ब्रवी ।

रोहिण-पु० [सं०] गरुदका पेश; गूरुका पेश; भूतृण, रोहिण घास; पंद्रह भागोंमें विभक्त दिनका नवां भाग (इसकी देवी रोहिणी है) ।

रोहिणिका-खी० [सं०] लाल चेहरेवाली स्त्री (क्रोध या अहंग राग लेपके कारण) ।

रोहिणी-खी० [सं०] गाय; विजली; कटुहंसी; कजा, करंज; रौठा; म्हाववेता, सफेद कोआठीडी; लाल गदहपुरना;

विषाक्षेवी (खे०); गमारी; मबीठ, मंजिठा; ग्राही वृद्धि; जरा लंबी पीकी हर्द, जपरोपिणी; रोहूकी-खी एक मछली;

नक्षत्रवा कन्या; पंचवर्षीया कुमारी; वसुदेवकी एक स्त्री, बलरामकी माता; सताईस नक्षत्रोंमेंसे चौथा (यह रविके आकारका और पाँच तारोंसे बना माना जाता है । पुरा-गानुसार यह दक्षकी कन्या और चंद्रमाकी पत्नी है);

त्वचाकी छड़ी परत; गलेका एक रोग । -**कांत**-पु० चंद्रमा । -**पति**, -**बल्लभ**-पु० चंद्रमा; वसुदेव । -**योग**-पु० रोहिणी नक्षत्रका चंद्रमाके साथ योग (आषाढके कृष्णपक्षमें यह घटित होता है) । -**अस**-पु० भाद्र-कृष्णा-हमीकी किया जानेवाला एक व्रत ।

रोहिणीश-पु० [सं०] चंद्रमा; वसुदेव ।

रोहित-वि० [सं०] लाल रंगका, लोहित । पु० लाल रंग; रक्त, खून; रश्मि; केसर; कुकुम; रोहितक, रोहिता वृक्ष; बरका फूल; रोहू मछली; एक मृग; गधबौकी एक जाति ।

-**वाह**-पु० अग्नि ।

रोहितक-पु० [सं०] रोहिता, कूटशास्त्रका ।

रोहिता-पु० [सं०] अग्नि; राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र; रोहितमगद (मोनतटपर) ।

रोहितेय-पु० [सं०] रोहितक वृक्ष ।

रोहित-पु० [सं०] सयें । खी० सुगी, हरिणी; लाल रंगका घोड़ी, बबबा; नदी; एक लता ।

रोहिनी-खी० दे० 'रोहिणी' ।

रोहिण-पु० [सं०] एक घास जिसका जड़ सुगंधित होता है, रूसा ।

रोहिष-पु० [सं०] रूसा घास; रोहू मछली; गधेमें मिलता-जुलता एक मृग ।

रोही (हिन्)-वि० [सं०] चढ़नेवाला । पु० बट वृक्ष; अथर्व वृक्ष; उदुवर वृक्ष; कमा घास; नरेश्वा, रोहिण वृक्ष; एक मृग; रोहू मछली; * एक अश्व ।

रोहुन-पु० रोहन पेड़ ।

रोहू-पु०, खी० एक मछली जो बहुत अच्छी मानी जाती है (यह सामान्यतः पोंचसे दस सेरतककी होती है । इसके डाल पर होते हैं, अतः डालपरा भी कहते हैं); राजकिंगमें होनेवाला एक पेड़ ।

रौट-खी० लेल-हँसीमें बुरा मानना, रोना; चिदकर बेईमानी करना ।

रौव-खी० रोदनेका भाव या काम; चक्र, गदत, 'राउंड' (सिपाही) । सु० -**पर जाना**-गदतके लिए निकलना ।

रौद-खी० रोदनेकी क्रिया या भाव, मर्दन ।

रौदना-सं० कि० पैरोसे कुचलना, पददक्षित करना; बर-बाद, तहस-नहस करना; लालीसे मारना-पीटना ।

रौदी-खी० जानवरोंके रहनेका गाछ, बेरा ।

रौस-पु० पट्टा, निशान - 'रामहि राम पुकारतो जिम्हा परिगो रौस'-कवीर ।

रौसा-पु० बोझ, छोटिया; छोटियेके बीज; केर्वाच; केर्वाचके बीज ।

रौ-खी० [फा०] चाल, गति; वेग; पानीका बहाव, तीव्र,

रेखा; ढंग, चाल; पुन, खवाण; जोश । † पु० एक तरहका शेष; * दे० 'रव' ।

रौप्य-वि० [सं०] रुपय-संबंधी; सोनेका बना हुआ ।

रौप्य-पु० [सं०] रखापन, रखार ।

रौखुरा-खी० वह भूमि जो वादमें बाढ़ आ जानेसे खराब हो गयी हो ।

रौगन-पु० [अ०] चिकनी चीज, तेल, घी आदि; काख आदिसे निर्मित पका रंग ।

रौगनी-वि० तेलका; रौगन फेरा, लगाया हुआ ।

रौधनिक-वि० [सं०] रोधी, गोरोचन-संबंधी; रोधी, गोरोचनसे रंगा हुआ ।

रौध-पु० [सं०]-रोधवर्धे मनु; विल्वद्वाराची सन्यासी ।

रौजन-पु० [फा०] सुराख, छेद; दरार; रोशनदान ।

रौझा-पु० [अ०] बाग; मकबरा, समाधि (विशेषतः मुंबदर) ।

रौसा-पु० ससुर ।

रौसाइन-खी० रान, रावतकी पत्नी; ठकुराइन; कियों-के लिए एक आदरस्वक सम्बोधन; † कबारिन ।

रौसाई-खी० राव, रावत बीना; ठकुराई, सरदारी; राव, रावतका पद ।

रौदा-पु० धूप, घाम ।

रौदा-पु० दे० 'रोदा' ।

रौद्र-वि० [सं०] रुद्र-संबंधी; रुद्रका, भयकर; क्रोधपूर्ण । पु० काव्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव क्रोध है; क्रोध; धूप, घाम; दमराज; ग्यारह मात्राओंके छंद जिनकी संख्या २४४ तक है; एक अक्ष; एक केतु; साठमेंसे चौदहवाँ सवस्वर । -केतु-पु० एक केतु (पूर्वदक्षिण आकाशमें शूलके कणले हिस्सेका-मा; आकाशके तीन भागों-तकमें गमन करनेवाला-३० म०) । -दर्शन-वि० देखनेमें भयानक ।

रौद्रता-खी० [सं०] भयकरता; प्रवृत्ता, उग्रता ।

रौद्रार्क-पु० [सं०] २३ मात्राओंके छंदोंका नाम ।

रौद्री-खी० [सं०] रुद्रकी पत्नी, गौरी; गांधार नरकी पत्नी अति ।

रौप्य-पु० रमण करनेवाला, पति ।

रौनक-खी० [अ०] चमक, ताव; खूबी; ताजगी; चहल-पहल; बहार । -अक्षरौनक-वि० रौनक बढ़ानेवाला ।

-दार-वि० बहारदार; सजा हुआ । -(के) मङ्ग-

क्रिह-वि० समाभूषण, जो मङ्गलिकी आनंदमय बनाये । रौनी-खी० दे० 'रमणी' ।

रौव्य-वि० [सं०] चाँदीका; चाँदीका बना हुआ । पु० चाँदी, कपा ।

रौमक, रौमलवण-पु० [सं०] सौमर नमक ।

रौरा-पु० रोर, हला, शब्द ।

रौरव-वि० [सं०] दरावना, भयकर; कपटी, भूत; वातपर पद न रहनेवाला; रुद्र-युग-संबंधी । पु० एक भीषण नरक ।

रौरा-पु० दे० 'रौका' । सर्व-रावरा, आपका । [खी० 'रौरी']

रौराना-अ० कि० रकना, हला, प्रलाप करना ।

रौरि-खी० कोलाहल, शोर ।

रौरी-सर्व० आदरस्वक संबोधन, अप ।

रौसा-पु० हला, हुलस; ऊषम, हलचल ।

रौक, रौकिा-खी० पौक, तमाचा, झापक ।

रौसन-वि० दे० 'रोशन' ।

रौशनी-खी० दे० 'रोशनी' ।

रौम-खी० गति, हरकात, चाल; चाल-ढाल, रंग-ढंग; बागकी क्यारियोंके बीचका रास्ता; मकानकी ऊपरवाली मंजिलमें (आँगनके ऊपरका) चारों तरफका पतला रास्ता ।

रौसली-खी० चिकनी, उपजाऊ मिट्टी ।

रौसा-पु० दे० 'रौसा' ।

रौहाली-खी० घोषेकी एक चाल; घोड़ोंकी एक जाति ।

रौहिण-पु० [सं०] चंदन ।

रौहिण-पु० [सं०] रौहिणीपुत्र, बहराम; बुध ग्रह; बछा; मरकत, पत्ता ।

रौसव-खी० दे० 'रियासत' ।

रौखरी-खी० दे० 'रौखरी' ।

रौव-पु० दे० 'रौव' ।

ल

ल-देवनागरी वर्णमालका अठारहवाँ व्यंजन और तीसरा अंत्य वर्ण । उच्चारणस्थान दंत ।

लंक-खी० कसर; लंका नामक द्वीप, रावणकी वास-भूमि । -नाथ, -नाथक, -पति-पु० रावण; विभीषण ।

लंकाट-पु० [अ० 'लंगकाट'] एक भव्यत मोटा लठी कपड़ा ।

लंका-खी० [सं०] भारतके दक्षिणका एक द्वीप, सिंहल (कहते हैं, रावण इसी द्वीपका शासक था); एक झील; असपरा; कारा बना; शाखा, डाली; दो दलोंवाले (द्विदल) अन्न जो दालके काम आते हैं, शिबी बान्य; कुल्हा; दे० 'लंकिनी' । -बाघी (हिं०)-पु० हनूयान ।

-माथ, -पति-पु० रावण; विभीषण ।

लंकाधिपथ, लंकाधिपति, लंकाधिराज-पु० [सं०]

रावण; विभीषण ।

लंकापिका, लंकायिका, लंकारिका-खी० [सं०] अस-वरग ।

लंकारि-पु० [सं०] रामचंद्र ।

लंकिनी-खी० एक राक्षसी जिसका वध हनूमान्ने किया था ।

लंकूर-पु० दे० 'लंगूर' ।

लंकेरा, लंकेर-पु० [सं०] रावण; विभीषण ।

लंकोई-खी० दे० 'लंकोयिका' ।

लंकोटिका, लंकोपिका, लंकोयिका-खी० [सं०] अस-वरग ।

लंकाणी-खी० [सं०] लंगामका मुँहमें रहनेवाला अंस ।

लंघ-खी० लंग, काठ । पु० [सं०] मेल; उपपति; [फा०]

लंगबापन । वि० लंगबा, पॉष दवाकर चलनेवाला ।

लंगक-पु० [सं०] उपपत्ति ।

लंगदा-वि० नगा ।

लंगदी-खी० लंगोदी । वि० खी० नगी ।

लंगड़-वि० लंगड़ा । पु० लगर ।

लंगड़ा-वि० जिसका एक पैर टूटा, बेकार हो (आदमी, जानवर); जिसका कोई पाया टूटा हो (फलंग आदि) ।
पु० एक प्रसिद्ध कलमी आम ।

लंगडाना-अ० कि० लंगडाकर चलना ।

लंगड़ी-खी० एक छड़ । वि० खी० दे० 'लंगड़ा' ।

लंगन-पु० लॉघना, लघन ।

लंगनी-खी० लघनी ।

लंगर-पु० [फा०] लोहेका बहुत भारी काँटा जिसे नाव या जहाजको खड़ा करनेके लिये रस्सी या जनीरसे बाँधकर नदी या समुद्रमें गिरा देते हैं; सोटा रस्सा या बंजीर; वह स्थान जहाँ गरीबोंको पका खाना बाँटा जाय, पके खानेका मन्त्र; पहलवानोंका लँगोट; बखिया करनेके पहले कपड़ेमें भरे जानेवाले टोंके; हरद्वार गायके गलेमें बाँधा जानेवाला भुँदा; पवित्रों आदिमें तार आदिके सहारे लटकानेवाला जानेवाली भारी चीज; कमरके नीचेका हिस्सा; पैरमें पहननेका चाँदीका तोषा; * बाग़दोर । वि० बजनदार; शरारती, घोट-‘करिका लैबेके मिसलिन लगर मो डिग आह’-वि०; लंगड़ा । ई-खी० दे० 'लंगरारह' । -झावा-पु० पके खानेका सत्र । -गाह-पु०, खी० लगर करने, जहाजोंके ठहरनेका स्थान । -शर-वि० भारी (नदी, जिसकी धारा मथर गतिसे बहे) । मु०-उठाना-रुके हुए जहाजका रवाना होना । -करना-जहाजका ठहरना, पकाव करना; शरारत करना । -डालना-जहाजका लगर समुद्रमें फेंकना, जहाज खड़ा करना । -बाँधना-पहलवानों करना; लङ्घनेकी प्रस्तुत होना; मन्त्रार्चन धारण करना । -लँगोट(किस्ती के)धाने रखना वा (किस्ती-को) देना-पहलवानों सोखनेके लिये किसीकी शिथिलता स्वीकार करना ।

लंगरारह-खी० शरारत, दिठाई ।

लंगराना-अ० कि० दे० 'लंगडाना' ।

लंगरी-खी० शरारत ।

लंगरीबा-खी० शरारत, घृष्टता ।

लंगल-पु० [सं०] हल ।

लंगुरा-खी० [सं०] एक तरहका धान्य ।

लंगूर-पु० लांगूरी, बंदर; दुम (बंदरकी); एक बड़ा बंदर (रसकी दुम बड़ी और मुँह, हथेलियाँ और तलवे काले होते हैं) । -फल-पु० नारियल ।

लंगूरी-खी० बोबेकी उलछकर चलनेकी चाल; चोरोंकी चोरी गये पशुओंका पता बतानेके बदले दिया जानेवाला इनाम ।

लंगूल-पु० लांगूल, दुम, पूँछ ।

लंगूचा-पु० कुलमा, गुलमा, कीमते भरकर तली हुई जलवरकी आँत ।

लँगोट, लँगोटा-पु० कमरपर बाँधनेका बनाविधेय जिससे उपल और मित्त बाहर रहते हैं (पहलवान वा कसरती

लोग कुत्ता या व्यायामके समय इसे ही बाँधते हैं) । -

(ड)बंद-वि० मन्त्रकारी; लँगोट बाँधनेवाला । मु०-का दीक्षा-कानी । -का सखा-जो खांसखवाससे बचा रहे । -काब डालना-कुत्ता छोड़ देना । -बाँधना-कुत्तेके लिये तैयार होना ।

लँगोटिया मार-पु० बालमित्र ।

लँगोटी-खी० छोटा लँगोट, कोपन । मु०-पर कण खेळना-बोका साधन होनेपर विलासकी ओर दीवना । -बाँधवाना-दरिद्र बना देना । -बाँध लेना-दरिद्र होना; सांसारिक सुखोंका त्याग करना । -बाँधे फिरना-गरीबीके कारण नया फिरना । -बिकवाना-पेसा करना जिससे किसीके काम लँगोटीतक न रह जाय । -में मल-गरीबीकी हालतमें सुख रहनेवाला ।

लंगक-वि० [सं०] लॉघनेवाला; नियम तोड़नेवाला ।

लंगन-पु० [मं०] अनाहार, उपवास; रॉफना, लॉघना; अतिक्रमण करना; जोशकी बहुत तेज चाल; किसी काममें सुगमता लानेका उपाय ।

लंगनक-पु० [सं०] लॉघने, पार जानेका साधन, पुल ।

लंगना-स० कि० लॉघना, डॉफना । * वि० जिसने लंघन किया हो, भ्रूखा-‘सिंह बचा जो लंघना ही भी पास न खाय’-कबीर । खी० [सं०] उपेक्षा, अवमानना । लंगनीब-वि० [मं०] लॉघनेके योग्य, उल्लघन करने योग्य ।

लंगाना-स० कि० पार उतारना या करना ।

लंगित-वि० [सं०] लॉघा हुआ; उल्लङ्घित; उपेक्षित ।

लंग्य-वि० [सं०] लॉघने योग्य, अतिक्रमण करने योग्य; उपवास करने योग्य ।

लंग-पु० [अ०] दीपहरका जलपान ।

लंगा-खी० [सं०] रियत ।

लंग-पु० [मं०] पैर; काष्ठ; दुम; लोटा; लपटता, कुकर्म ।

लंगा-खी० [सं०] लक्ष्मी; निद्रा, नींद, नीना; कुल्हा ।

लङ्गिका-खी० [सं०] बेश्या ।

लंठ-वि० मूर्ख; अस्थव्य, उजड़ ।

लंघ-पु० किंग, शिइन; [सं०] विद्या, मल ।

लंघुरा-वि० दुमकटा (पक्षी) ।

लंतरानी-खी० [अ०] डींग; आत्मप्रशंसा ।

लंदराज-पु० एक तरहकी मोटी चादर ।

लंघ-पु० [अ० 'लँघ'] चिराग, दीपक ।

लंघक-पु० [सं०] एक जैन संप्रदाय ।

लंपट-वि० [सं०] कामी, विषयी । पु० कामी पुरुष ।

लंपटता-खी० [सं०] कुकर्म, कामुकता ।

लंपाक-वि० [सं०] लंपट, कुकर्म । पु० मुरंद नामक एक प्राचीन देश जो पश्चिमोत्तर सीमापर था ।

लंक-पु० कूद ।

लंब-पु० [सं०] किसी सरल रेखाके आधारपर समकोण बनानेवाली रेखा; एक रागका सेवविशेष; नाचनेवाला; भंड, रियत; पति; अग; विपुल रेखाकी समानांतर एक रेखा (ज्यो०); ग्रहोंकी विशेष गति (ज्यो०); एक लक्ष्य, प्रलंबाक्षुर; एक दीर्घ; एक छुनि । वि० लंबा । * खी० दे० 'विलंब' । -कर्म-वि० जिसके काल बड़े हों ।

पुं० बकरा; हाथी; गधा; खरगोश; बाघ; राकृत; अंकोट वृक्ष। -**केश**-वि० जिसके बाल लटकते हैं। -**ग्रीव**-पुं० कंठ। -**जठर**-वि० तोंदवाला। -**लवंग**-वि० [हिं०] ताव-सा लंबा। -**वृत्ता**-स्त्री० सिंहकी पिप्पली। -**पवीचरा**-स्त्री० काफिलेकी एक मातृका। -**बीजा**-स्त्री० एक तरहकी पिप्पली। -**स्तनी**-स्त्री० वह स्त्री जिसके स्तन लटकते हैं।

लंबक-पुं० [सं०] लंब देखा; किसी अंगका कोई अभाव; पात्रविशेष; मुखका रोगविशेष; एक तरहका बीज (इसका जोड़ पंद्रह होता है-ज्यो०)।

लंबन-पुं० [सं०] नाभिक लटकनेवाला हार; झूलने की क्रिया; अवलंब, आश्रय; कफ; शिबका एक नाम। **लंबमान**-वि० [सं०] दूरतक गया या फैला हुआ। **लंबर**-पुं० दे० 'लंबर'; [सं०] एक तरहका ढोल। -**दार**-पुं० [हिं०] दे० 'लंबरदार'।

लंबा-स्त्री० [सं०] दुर्गा, लक्ष्मी; रिशत; एक तरहकी कच्ची ककड़ी। वि० [हिं०] जिसके दोनों सिरों पर एक दूसरेसे दूर हैं, जिसका विस्तार चौड़ाईसे अधिक हो (जैसे लंबा नाँस, रास्ता, सफर); जो अधिक ऊँचा हो (लंबा आदमी, पेड़); अधिक विस्तारवाला (समय, काल-मानके लिए-जैसे गरमीके दिन और जाड़ेकी रातें लंबी होती हैं); दीर्घ, परिमाणमें अधिक (जैसे लंबा खर्च)। -**चौड़ा**-वि० विस्तृत। -**सफर**-पुं० दूरकी यात्रा; दृष्टि। **मु०** -**करना**-किसीको चकता या चित करना; दराज करना। -**बनना**, -**होना**-चल देना, भग जाना।

लंबाई-स्त्री० लंबा होनेका भाव; लंबानका परिमाण।

-**चौड़ाई**-स्त्री० लंबान-चौड़ानका परिमाण।

लंबान-स्त्री० लंबाई। -**चौड़ान**-स्त्री० लंबाई-चौड़ाई।

लंबाना-सं० क्रि० लंबा करना।

लंबाधमान-वि० बहुत लंबा; लंबा हुआ।

लंबिक-पुं० [सं०] कोयल।

लंबिका-स्त्री० [सं०] घोंटी, गलेके अंदरकी घंटी।

लंबित-वि० [सं०] लटकता हुआ; अवलंबित; धँसा, डबा हुआ।

लंबिनी-स्त्री० [सं०] स्कंदकी एक मातृका।

लंबी-वि० स्त्री० दे० 'लंबा'। **मु०** -**चौड़ी हाँकना**-

बीग मारना। -**सानकर सोना**-वेफ़िक होकर सोना।

-**सानवा**-वेफ़िकसे सो जाना; बेखबर होकर देरतक सोना। -**साँस भरना** या **लेना**-शोक-दुःखसे नाँस लेना, आँस भरना।

लंबी (चिन्)-वि० [सं०] लटकनेवाला (समासांतमें)।

लंबुक-पुं० [सं०] लंबक, ज्योतिषमें एक योगका नाम; एक माग।

लंबू-वि० लंबी टोंगीवाला (आदमी, व्यवस्थे)।

लंबूचा-स्त्री० [सं०] सात लकियोंका हार।

लंबोसरा-वि० कुछ-कुछ लंबा, जो लंबाई लिये हुए हो।

लंबोदर-पुं० [सं०] गणेश। वि० पैर, अधिक खानेवाला; बड़ी तोंदवाला।

लंबोष्ठ-पुं० [सं०] ऊँट; एक देवता। वि० लंबे ओठवाला।

लंबोष्ठ-वि०, पुं० [सं०] दे० 'लंबोष्ठ'।

लंब-पुं० [सं०] प्राप्ति।

लंबक-वि०, पुं० [सं०] प्राप्त करनेवाला।

लंबन-पुं० [सं०] प्राप्ति; अन्वि; कांछन।

लंबनीच-वि० [सं०] प्राप्य।

लंबित-वि० [सं०] प्राप्त करवा हुआ।

लंबुक-वि० [सं०] जिसे बराबर प्राप्ति होती रहे।

ल-पुं० [सं०] रंज; दृष्टीवीज (तं०); लघु मात्राका संकेत (छंदशास्त्र)।

लड-स्त्री० ली, लमन।

लडआ-पुं० लोआ।

लडकी-स्त्री० लोकी।

लडटी-स्त्री० लकुटी।

लड्ड-पुं० [अ०] वाटपर खानेकी दवा, अवलेह।

लक-पुं० [सं०] लकट; जंगली भानगी बाल।

लकच-पुं० [सं०] दे० 'लकुच'।

लकबारा-पुं० परदादासे बड़ा दादा।

लकबगंधा-पुं० मेकियेकी जातिका एक जंगली जानवर।

लकबहारा-पुं० जगल आदिमें लकड़ियों तौड़कर बेचने-वाला।

लकड़ा-पुं० लकड़ीका बड़ा और मोटा कुड़ा।

लकड़ाना-पुं० [अ०] सुलभ लकड़ीकी तरह ससत हो जाना; बिना माँसका हो जाना, हाँक-हाँक हो जाना, बिल्कुल दुबला हो जाना।

लकड़ी-स्त्री० पेड़का कोई भी खड़ा हुआ भाग, छाखा, टहनो आदि; मेज, कुर्सी आदि बनाने या जलानेके लिए काटकर सुखाया हुआ पेड़; बँबन; लाठी, बैसाखी; गतका; पटा, विनपट। **मु०** -**खल्ला**-लाठी चलना, मार-पीट होना। -**देना**-मुरदा जलाना। -**सा**-बहुत दुबला। -**होना**-दुबला और कमजोर होना।

लकड़क-पुं० [फा०] चटियक मैदान, बंगाल बजर, वह मैदान जहाँ पेड़-पौधे और घास न हो। † वि० साफ-सुधरा; उज्ज्वल, स्वच्छ; चिकना।

लकड़-पुं० [अ०] गुण, योग्यता या पद-सूचक नाम, पदवी।

लकड़ी-स्त्री० दे० 'लकड़ी'।

लकड़क-पुं० [अ०] लंबी टोंग और गर्दनवाला एक जल-पक्षी। सारस। वि० लंबी टोंगीवाला; दुबला-पतला (आदमी)।

लकड़ा-पुं० [अ०] एक बीमारी जिसमें सूँह देड़ा हो जाता है और अन्य अंगोंपर भी इसका असर होता है; एक नाडी-संबंधी रोग जिसके कारण प्रभावित अंग निश्चेतन और शक्तिहीन हो जाता है, पक्षाघात, फाल्जि। **मु०** -**मारना**-लकड़ा रोगसे ग्रस्त होना।

लकड़ी-स्त्री० एक प्रकारकी लम्बी (इसके सिरेमें कंचातुम। तिरछी लकड़ी या कोड़ेकी अर्द्धवृत्ताकार अँकली बँधी होती है और इसमें ऊँचे पेड़ोंसे फल, सूखी लकड़ियाँ आदि तोफ़ते हैं)।

लकड़ा-पुं० [फा०] 'लकड़ा'।

लकड़ी-स्त्री० निहियोंकी एक जाति (नरके कोशोंसे एक

तरहका मुक्त निकलता है), मुक्तविद्या ।
कर्मकाण्ड-वि० पूर्णतः स्वच्छ ।
कर्मर-की० कागज, स्टेड बादिपर खींचा हुआ कवा
 निशान; रेखा; बर्तनपर उँगरी आदिसे बनायी हुई छवी
 रेखा; सौंपकी गतिका चिह्न; भारी; छकों और गतिनोंके
 पहियोंका निशान; कतार; क्रम; पंक्ति । **मु०**—का **कर्मर**
 —पुरानी टैलियोंपर ओख मुँदकर चकनेवाला । —पर
चकना-पुराने तरीकेपर चकना । —पीटवा-पुरानी
 प्रथाओंपर चलना; पछताना ।
ककुच-पु० [सं०] बकहर; * दे० 'लकुट' ।
ककुट-पु० एक पेठ जो विशेषतः बंगालमें होता है, लुकाठ,
 लखौड [सं०] छवी; काठी ।
ककुटिया; ककुटी*—की० छवी ।
ककुटी (दिह)-वि० [सं०] जिसके पास काठी हो ।
ककुटी*—की० ककुटी, ककरी ।
ककुटी*—पु० पहाड़ी बकरीकी एक जाति जिसके बालोंसे
 झाल-बुझाले आदि बनते हैं ।
कक्ष-पु० दे० 'लक्ष' ।
कक्ष-पु० [का० 'लक्षा'] नील; गिर; एक कनूतर जिसकी
 पूँछ पंखों तरह और ऊपर उठी होती है तथा गर्दन
 पीछेकी झुकी होती है । —कनूतर-पु० नाचकी एक मुद्रा
 जिसमें नर्तक कमरके बल बगलमें झुककर सिरकी जमीनके
 समीपतक ले जाता है; दे० 'लक्षा' ।
कक्षी-पु० घोड़ोंका एक भेद; लक्षपती । वि० लालके
 रंगका ।
कक्ष-वि० [सं०] लाल । —**कर्मा (सं०)**—पु० लाल लोथ ।
कक्ष-पु० [सं०] अलक्षक, महावर; लता, विषय ।
कक्षिमा-की० [सं०] गौह ।
कक्ष-वि० [सं०] ली 'हजार' । पु० ली 'हजारकी' मंख्या,
 १०००००; निशान, चिह्न; पैर; मोती; बहाना; अलका
 सधार-विशेष; दे० 'लक्ष्य' । —**पति-पु०** लक्षपती । —
बेची (विन्)—वि० निशानेका बंध करनेवाला । —**सुस-**
 वि० सोनेका बहाना करनेवाला ।
कक्षक-वि० [म०] लक्ष करनेवाला, प्रकट करनेवाला ।
 पु० संबंध या प्रयोजनमें अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द
 (सा०); एक लाखकी सख्या ।
कक्षण-पु० [सं०] विशेषतः सूक्ष्म शब्द; शरीररु रोग-
 सूचक चिह्न; शुभाशुभकी सूचना देनेवाले अगस्त्य चिह्न
 (सांख्यिक); शरीरपर स्थित विशेष प्रकारका काला दाग,
 लक्षण; निर्धारित दर; लक्ष्य, उद्देश्य; प्रस्तुत विषय;
 नाम; दर्शन; परिभाषा; बाल-दाल; दे० 'लक्ष्मण'; सारस
 पक्षी । वि० बतलानेवाला, सूचक । —**कर्मा (पु०)**—पु०
 गुणोंका वर्णन; परिभाषा । —**क्ष-वि०** शरीरपरके चिह्नोंकी
 जाननेवाला । —**प्रशस्त-वि०** अच्छे चिह्नोंके कारण
 बियायात । —**अक्ष-वि०** अच्छे चिह्नोंसे बचित, माय-
 दीन । —**लक्षणा-की०** लक्षणका एक भेद जिसमें एकका
 लक्षण दूसरेकी प्राप्त हो जाता है (सा०) ।
लक्षणक-पु० [सं०] चिह्न, निशान ।
लक्षणा-की० [म०] वह शब्दशक्ति जो म्यामन्य अर्थमें
 भिन्न अर्थ प्रकट करती है, अभिप्रेत अर्थ प्रकट करनेवाली

शब्दशक्ति (सा०); लक्ष्य, उद्देश्य; हंसी; सारसी; भटकेया
 (छोटी) ।
लक्षणी (विन्)—वि० [सं०] चिह्न या लक्षणवाला; लक्ष्णों-
 का पारखी ।
लक्ष्म-वि० [सं०] चिह्नका काम देनेवाला; धूम चिह्न-
 वाला ।
लक्ष्मा-अ० क्रि० दिखाई पड़ना । सं० क्रि० देखना ।
 की० दे० 'लक्ष्मा' ।
लक्ष्मा-की० [सं०] एक लाखकी संख्या, १००००० ।
लक्ष्मी-की० दे० 'लक्ष्मी' । पु० दे० 'लक्ष्म' ।
लक्षित-वि० [सं०] देखा हुआ; अनुमानतः समझा, जाना
 हुआ; लक्षण, चिह्नवाला । —**लक्षणा-की०** लक्षणका
 एक भेद ।
लक्षितव्य-वि० [सं०] जिसे विहित करना हो; जिसकी
 परिभाषा करनी हो ।
लक्षिता-की० [सं०] वह नायिका जिसका परपुरुष-प्रेम
 प्रकट हो गया हो ।
लक्षितार्थ-पु० [सं०] लक्षणा-शक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ ।
लक्ष्मी-की० [सं०] एक वर्णवृत्त ।
लक्ष्मी (विन्)—वि० [सं०] अच्छे चिह्नोंवाला ।
लक्ष्मन्-पु० [सं०] चिह्न; दाग; विशेषता; प्रधान;
 परिभाषा ।
लक्ष्मण-पु० [सं०] सुमित्रासे उत्पन्न दशरथके पुत्र, चिह्न;
 नाम; सारस; नाम; दुर्बोधनका एक पुत्र । वि० चिह्नोंवाला;
 भाग्यशाली; उत्पत्तिशील । —**प्रसू-की०** सुमित्रा ।
लक्ष्मणा-की० [सं०] एक पुत्रदा जर्षी, द्रवत कटकारी;
 हंसी; मद्रनरेश बृहत्मेजकी कन्या, कृष्णकी आठ पटरानि-
 योंमेंसे एक; दुर्बोधनकी पुत्री ।
लक्ष्मा (अन्)—पु० [सं०] सुमित्राके बड़े पुत्र; सारस पक्षी ।
लक्ष्मी-की० [सं०] एक देवी जो धनकी अधिष्ठात्री मानी
 जाती है (मनुस्मृत्यनने प्राप्त १४ रत्नोंमें एक यह भी
 थी और विष्णु द्वारा पत्नीरूपमें स्वीकार की गयी),
 महालक्ष्मी, कमला, श्री, लोकांमता; सुदरता, शोभा;
 प्रभुशक्ति; चंद्रमाकी स्याहवर्ती कला; अमृतदध; लोभाभ्य;
 सकलता; वीरगंगा; गृह-स्वामिनी; दुर्गा; सीताका एक
 नाम; कक्षि ओषधि; बृद्धि नामकी ओषधि; मोती; फलवाचू
 वृक्ष; कमल; हल्दी; शमी, छोकर, सफेद कीकर; सफेद
 तुलसी; मेदांसीनी; एक वर्णवृत्त । —**कांत-पु०** विष्णु;
 नरेश । —**गृह-पु०** लाल कमल । —**जगदीन-नारायण-**
 पु० चक्रविहङ्ग एक तरहके काले शालग्राम । —**दोषी-**
 की० [हिं०] एक सुंदर रागिनी । —**ताल-पु०** एक
 तरहका ताल वृक्ष; १८ मात्राओंका एक ताल (संगीत) ।
 —**धर-पु०** विष्णु; सखिणी छंद । —**नाथ-पु०** विष्णु ।
 —**निधि-पु०** जनकका पुत्र । —**नृसिंह-पु०** दो चक्र
 तथा वनमाला-विहित शालग्राम । —**पति-पु०** विष्णु;
 राजा; लौकिक पेश; सुपारीका पेश । —**पुत्र-पु०** लक्ष्मण;
 शोभा; कामदेव; धनी आदमी । —**पुष्प-पु०** लाल,
 माणिक; लोहा; कमल । —**पूजा-की०** लक्ष्मीके पूजनका
 त्थोहार जो दीपावलीके दिन होता है । —**फल-पु०**
 भीफल, बेल । —**रमण-बल्लभ-पु०** विष्णु । —**वसति-**

हीना; कुना, समीप जाना; उल्लूकना, छेकछाव करना; बदलेमें जाना; छोड़, ठिकानेपर पहुँचना; पौधोंका उगना, जमना, जड़ पकड़ना; फलना; काममें लवा जाना; पुहा जाना, दूध देते रहना; बाजी, दौब रखना; छपना, निशान होना; निश्चित कार्य, स्थानपर पहुँचना; होना; लेप दिवा जाना; सन जाना, लिपट जाना; भिड़ना; जारी होना; दरकार, आवश्यक होना; क्रम, सिलसिलेमें रखा, सजाया जाना; व्यवस्था होना; सकेद होना; पानी जक जानेके बाद एकनेवाले पदार्थका जलकर तहमें बैठ जाना; भिड़ना, 'में' लोकोका उपस्थित होना; दैयका निश्चित होना; आरोप किया जाना; चलना; रोशनी होना; ठीक बैठना (कुजी); हिसाब होना, 'का' ठहराव करना; ताकमें रहना; जानवरोंका जोषा लगना; प्रवृत्त होना। **मु०** लग चलना-किनीका माव पकड़ना। **कगरी** बात-चुभने, अलखनेवाली बात, जुदीकी बात। **कगी-कगायी**-कगी हुई, मुकरर। **लगे हाथ या हाथों**-माव ही, इसी सिलसिलेमें, योही।

कगनि*-खी० दे० लगन।

कगनी*-खी० रिंकाशी, छोटी बाड़ी; पानदानके अदरकी पान रखनेकी तश्तरी; परात।

कगनीय*-वि० [मं०] जो संकट, समुक्त किया जाव।

कगनय*-अ० करीकरीय।

कगमात*-खी० ध्वजन बणोंमें जोड़े जानेवाले स्वर-विह्व।

कगर*-पु० एक शिकारी चिड़िया, बाज।

कगलगा*-वि० कमजोर, दुबला-पतला, लज्जलक।

कगव*-वि० वैद्य, मृष्ट।

कगवाना*-म० कि० लगानेका काम करना।

कगवार*-पु० वार, उपपति।

कगवीर*-खी० [अ०] बैदूरगी।

कगहर*-पु० पानगदार बीटा, तराजू। वि० लगा, सवा हुआ। वि० खी० दूध देनेवाली (गाय)।

कगाई*-खी० लगाव; आरोप। -**कगाई***-खी० इधरकी बात उधर जा सुनाना। -**कतरी***-खी० एकही दुराई दूसरेसे कहना, लगाई-बगाई।

कगाड*-वि० लगानेवाला, जकनेवाला।

कगातार*-अ० निरंतर, बराबर, बिना रुके हुए, सिलसिलेमें।

कगाव*-पु० राधा, सरकार, जमींदारकी मिलनेवाला भूमिकर, पीत, राजस्व; वह स्थान जहाँ बोकिया बोल रखकर सुझाये; नावोंके ठहरनेका स्थान; दो मकानोंका सटा हुआ अंश जहाँसे आना-जाना सम्भव हो, लाग; लगना; लगाना; जगलमें शिकारकी टोहमें बैठनेके लिए ठोक किया गया स्थान-“जगलमें लगान कहाँ-कहाँ है, किसकी कहाँ बैठना है, निश्चित हो गया”-दृग०। -**मुकररी***-पु० जमीनके लिए मुकरर किया हुआ लगान। -**बाकई***-पु० अमली भूमिकर।

कगाना*-म० कि० जोड़ना, दो चीजोंको जोड़ना; एकमें करना, संलग्न करना; लगाना, सिलसिलेमें रखना; रोपना; सजाना, चिपकाना; कोई चीज लगाना, पोतना, मलना; कायम करना, व्यवस्था करना; अनुभव करना;

किसीमें नवी भारत बालना; प्रहार, चोट करना; फिट करना, बड़ना; बालना; सजाना; भीड़, सजमा कर लेना; अपराधी बनाना; दातव्य ठहराना; गाड़ना, ठोकना; नियुक्त, मुकरर करना; दूध डूढ़ना; अपने साथ, पीछे किसीको ले चलना या लिपे करना; हिसाब करना; संयुक्त, संबद्ध करना; जुगली करना; बंद करना; बाजी, दौबपर रखना; अपने आपकी किसी विषयमें बड़-बड़कर समझना; धारण करना, ओढ़ना; झुलाना, स्पर्श, सपर्क करना; ध्यान देना, पाम पहुँचाना; नियत स्थानपर पहुँचाना; धार तेज करना, सान धरना; दाम कूतना, तप करना, ठहराना; बदलेमें देना, करना; चिह्नित करना, कैलाना, निछाना; करना; खर्च करना; बिचार करना। -**(ने)काका-वि०** जुगुल्लो, इधरकी उधर करनेवाला। **मु०** -**बझाना**-झगडा करना। -**झझाना** झगडा कराके मुकदमा करना।

कगाम*-खी० [फा०] लोहेका दाँतदार छब जो घोड़ेके मुँहमें लगाया जाता है; हम छबके सिरोंपर बंधी रस्ती, चमड़ा, रात, बाग। **मु०** -**कगी करना**-घोड़ेकी चाल धीमी करना; कार्यादिका नियन्त्रण करना। -**बझाना**, -**झझाना**-कोई काम करनेसे किसीको रोकना, प्रतिबद्ध करना, संयत करना। -**बीछी करना**-घोड़ेकी मनचाही चाल चलने देना, कार्यादिका नियन्त्रण न रखना। -**किसे फिरना**-किसीको परखने, काबूमें करनेके लिए डूढ़ना, पीछा करना। (**किसी चीजकी**) हाथमें लेना-सच्चा-लनमूज हाथमें लेना।

कगाथ*-खी० प्रेम, लगन-“सूर जहाँ का स्याम गान है तिननीं क्यों कीजिये कगाथ”-सूर।

कगाबत*-अ० [अ०] अनतक (शकयमे ‘मे’, ‘नक’का अर्थ होता है)।

कगार*-खी० निष्कमिला, क्रम; लगन; प्रेम; पण्डित स्वध; लगाव, संबंध; बगबर कोई काम करते जाना, बंधेज; वह स्थान जहाँ जुआरियोंकी निश्चित ठिकानेका पता मिले। पु० सवधी; भेद लेनेवाला।

कगालगी*-खी० लाग, प्यार; मेल-जोल; लगने वा लगानेकी क्रिया; उलझनेकी क्रिया।

कगाव*-पु० संबंध, तात्सुक्य।

कगाबट*-खी० संबंध; प्रेम, प्यार; रम्य-जगत्।

कगावन*-खी० रोथीके साथ साथी जानेवाली चीज, तीवन, गालन; * लगाव, संबंध।

कगाववा*-म० कि० दे० ‘लगाना’।

कगि*-अ० दे० ‘लग’। खी० लगन; दे० ‘लगनी’।

कगित*-वि० [म०] समुक्त, संबद्ध; प्राप्त; प्रविष्ट।

कगी*-खी० मेल, प्रेम; लगाव; भूख; तरफदारी; आग; * दे० ‘लगनी’। -**कपटी***-खी० तरफदारी। **मु०** -**झुझना**-झुझा पूरी होना। -**झुरी होसी है**-इश्क झुरी बसा दे।

कगुड, कगुर, कगुल*-पु० [स०] लाठी, दंड; एक तरहका छोटा लौहदंड; लाठ कनेर। -**(ब)संशिका***-खी० एक तरहका छोटा बंस। -**हस्त***-पु० छत्री-नरदार। वि० दंड धारण करनेवाला।

लघुवी (विच्) - वि० [सं०] दंष्टारी ।

लघुवा - पु० प्रेमी, कागू - लघुवा मयो फिरत दिन-राजनी
लघुवा गौरी-श्रीदेवि - वन० । † वि० पीछे चलनेवाला,
साथ-साथ जानेवाला ।

लघू, **लघूल** - पु० दुम ।

लघी - अ० दे० 'लगी' ।

लघी - वि० [अ०] बेकार, व्यर्थ; अमगत, हेतुका । स्त्री०
बेहूदा बाग ।

लघीहर - वि० लघनेवाला, रिशवार ।

लघना - पु० अंकसीदार लघा-पतला बाँस (बह पेड़ोंसे फल
तोड़नेके काम आता है); लघा बाँस; नाथ खेनेका बाँस;
लघा बाँस लगाकर बनाया हुआ घास, कीचड़ इतनेका
फरसा; काम शुरू करना, काममें हाथ डालना (लघना,
लगावके साथ) । **मु०** - लघ जाणा - काम शुरू हो
जाना, कार्यका प्रारंभ हो जाना । - **लघाना** - कामको
सिलसिला देना, बराबर चलाये जाना ।

लघी - स्त्री० छोटा लग्गा ।

लघी - वि० लघनेवाला ।

लघव - पु० बाज; एक तरहका बीता, लक्ष्यवग्गा ।

लघवा - पु० दे० 'लघा' ।

लघी - स्त्री० दे० 'लगी' ।

लघन - पु० [म०] राशिविशेषके उदयकालका दिनान्त
(ज्यो०); निम्नी कामको करनेका श्रम मुहूर्त (ज्यो०);
विवाहका समय, व्याह; महालग; बटी, राजाकी स्तुति
करनेवाला । वि० लगा हुआ; जुड़ा हुआ; पीछे लगा
हुआ; मस्त (हाथी), श्रुत; लविजग । - **कंकण** - पु०
विवाहके पहले बर-कन्याके हाथमें बाँधा जानेवाला मंगल-
मय । - **कुंडली** - स्त्री० जन्मपत्री, जन्मकुंडली । - **ग्रह**
- वि० आश्री । - **ईद** - पु० गाते-बजाते समय स्वरवी
श्रुतिवांका सुदरतामें संयोग करना । - **दिन** - पु० विवाह
आदिका श्रम दिन । - **पत्र** - पु०, **पत्रिका** - स्त्री० वह
पत्र जिसमें विवाहकर्म, उसकी तिथि आदिका उल्लेख हो ।
- **मुहूर्त** - पु० विवाहका श्रम काल ।

लघक - पु० [मं०] प्रतिभू, कामिन; रागविशेष ।

लघाचार्य - पु० [मं०] ज्योतिषी ।

लघावु (स्) - स्त्री० [मं०] लघके अनुमात्र स्थिर की हुई
आयु ।

लघाह - पु० [मं०] दे० 'लघदिन' ।

लघिका - स्त्री० [सं०] दे० 'नमिका' ।

लघेश - पु० [मं०] लघका स्वामी ग्रह (ज्यो०) ।

लघोदय - पु० [मं०] लघका उदयकाल; लघके उदये
उत्पन्न कार्य, प्रभाव ।

लघटि, **लघट** - पु० [मं०] बायु ।

लघववग्गा - पु० लघववग्गा ।

लघिमा (मस्) - स्त्री० [मं०] एक सिद्धि जिसके प्रभावसे
मिष्ट पुत्र यथेष्ट होता, हल्का हो सकता है; हल्कापन,
लघुत्व ।

लघु - वि० [सं०] दुर्गोला; हल्का; छोटा; निर्बल; तुच्छ,
छुट; कम, अल्प; निस्तार; अस्थिरचित्त; स्वरथ; हस्त,
एक मात्रावाला; प्रिय । पु० लघ, काला अगर; पद

लघीको एक कालगणना; बारह मात्रावाला प्राणवायव;
एक मात्राके स्वर अ, इ, उ, क (व्या०); एक मात्रा
(छंद); पश्चा; चोरी; स्वस्थ व्यक्ति । - **कंकाल** - पु०
एक छोटा कंकाल । - **कंडकी** - स्त्री० लजाऊ । - **कटारी** -
स्त्री० [हिं०] दे० 'कंडकारी' । - **कण** - पु० सफेद जीरा ।
- **कर्क** - पु० सुई । - **कर्मी** - स्त्री० मूला । - **काय** -
पु० बकरा । वि० छोटे शरीरवाला । - **काश्मर्य** - पु०
कटफल । - **काड** - पु० डबेका बार रोकनेके काम
आनेवाला हल्का डंडा । - **किचारी** - स्त्री० तंत्रयुक्त एक
प्राचीन बाघ । - **कम** - पु० द्रुत गति, तेज चाल । वि०
तेज चलनेवाला । - **क्रिमा** - स्त्री० छोटी बात । -
खद्विका - स्त्री० आरामकुर्सी; मचिया । - **ग** - पु०
बायु । - **गण** - पु० अभिनी, पुण्य, हस्त नक्षत्रसमूह ।
- **गति** - वि० तेज चलनेवाला । - **गर्ग** - पु० टेंगरा;
तीन को देखी मछली (त्रिकटक); सैरा मछली । - **गर्वन**,
नामा (मस्) - पु० अगर, दुर्गवयुक्त लक्ष्मी । - **गहरी** -
स्त्री० एक माल (मगीत) । - **विच** - वि० चंचल चित्त-
वाला । - **चिंमिटा** - स्त्री० श्वेत इद्रवास्नी । - **चेता** (तस्) -
वि० नीच, नीचाश्रय । - **चट्टा** - स्त्री० बगी सतावर ।
- **जंगल** - पु० लघा पक्षी । - **ताल** - पु० एक तरहका
ताल (मगीत) । - **तिक** - पु० सुरदासख । - **तुपक** -
स्त्री० [हिं०] तमचा, पिस्तौल । - **दूती** - स्त्री० छोटी दंती ।
- **दुहुमी** - स्त्री० डुगी । - **त्राक्षा** - स्त्री० किशमिया ।
- **त्राक्षी** (विच्) - वि० जल्द पिघलने या बहनेवाला
(पारा) । - **नाम-कर्म** (स्) - पु० वह कर्म जिससे शरीर
न अधिक गुरु होता है, न हृद्य (जै०) । - **नालिक** -
पु० छोटी बट्टक । - **पंचक**, **पंचमूल** - पु० गोलक,
शालिपर्णी, छोटी कटार, पिठवन, ५ही कटेहरी - इन पाँच
वनस्पतियोंकी जड़ोंका सघन जो उपयोगी औषध है ।
- **पत्र** - पु० कमीला । - **पत्रक** - पु० रोचनी । - **पत्री** -
स्त्री० पीपलका पेड़ । - **पर्णी** - स्त्री० मरोड़फली, मूला;
मत्तार । - **पाक** - वि० सुपाक्य; जड़ पकनेवाला । पु०
सुपाक्य स्वाध पदार्थ । - **पाकी** (किन्) - पु० चेना, एक
प्रकारका अन्न । वि० जड़ पकनेवाला । - **पिच्छिल** -
पु० भूकुटुंबदारक । - **पुष्प** - पु० सुईदंड । - **पुष्पा** - स्त्री०
पीला केवड़ा । - **प्रखल** - वि० आलसी, काहिल । - **फल** -
पु० गूलर । - **बहर** - पु० एक तरहका छोटा बैर । -
भुक् (ज्) - वि० कम खानेवाला । - **मंघ** - पु० गति-
यारी (छोटी) । - **मति** - वि० स्वल्पबुद्धि, कमबुद्ध, मूर्ख ।
- **मवा** (मस्) - वि० दे० 'लघुचेता' । - **मांस** - पु०
तीतर पक्षी । - **मांसी** - स्त्री० छोटी जयमांसी । - **मान** -
पु० नायिकाका (नाचकर) हणस्थायी रोष । - **मेह** -
पु० एक ताल (मगीत) । - **लता** - स्त्री० कूलेकी बेल;
अमंतमूल । - **लघ** - पु० खन; लामजक नामकी धाम ।
- **लोजिका** - स्त्री० लोनी, एक माग । - **हुति** - वि०
हल्के दिलका; अस्थिरस्थित । - **शंक** - स्त्री० चेष्टा
करना । - **शंख** - पु० घोषा । - **शिर** - पु० एक ताल
(मगीत) । - **शीत** - पु० किमीश । - **समुप** - पु० वह
राजा या राज्य जिसे युद्धके लिए शीघ्र तैयार किया जा
सके । - **खवाफला**, **हैमदुग्धा** - स्त्री० लघुदुग्गीका । -

हस्त-वि० तेजोते बाण चलनेवाला । पु० अच्छा धनुर्धर ।
कपुल-वि० [सं०] इलका; महत्प्रदीप, पुच्छ ।
कपुलम-वि० [सं०] सबसे छोटा । -समापवत्त्व-पु०
 वह सबसे छोटी मंथना जो दो या अधिक संसारांसे पूरी-
 पूरी हो जाय ।
कपुला-स्त्री०, **कपुल**-पु० [सं०] रपु होनेका भाव,
 इलकापन, छोटाई । -की भावना-अपनेको छोटा या
 असमर्थ समझनेकी प्रवृत्ति ।
कप्याही(निम्न)-वि० [म०] अस्वाहारी, कम खानेवाला ।
कप्याहार-वि० [म०] दे० 'कप्याही' ।
कप्यी-स्त्री० [सं०] बेर; अस्तरग; छोटा रथ; कोमल अंगों-
 वाली पनली स्त्री ।
कच-स्त्री० लचकन, लचन; किसी वस्तुके दबने, झुकनेका
 गुण ।
लचक, **लचकन**-स्त्री० लचकनेका भाव या क्रिया ।
लचकना-अ० कि० लची चीजका दबाव आदिसे झुकना;
 क्षियोंकी कमरका नखरेनजाकतसे झुकना; चलते समय
 शिथीका प्रायः झुक-झुककर चलना ।
लचकनि-स्त्री० लचक; लचीलापन ।
लचका-पु० एक तरहका गोटा ।
लचकाना-म० कि० झुकाना, लचाना ।
लचकीला-वि० दबने या लचनेवाला, लचकदार ।
लचकीला-वि० लचकीला, लचकनेवाला; झुका हुआ ।
लचन, **लचनि**-स्त्री० दे० 'लचक' ।
लचना-अ० कि० दे० 'लचकना'; लफना ।
लचर-वि० जो टिक न सके, तथ्यहीन, कमजोर ।
लचलचा-वि० लचकदार । -पन-पु० लचक, झुकावका
 गुण ।
लचाना-स० कि० लचकाना ।
लचार-वि० दे० 'लचारा' ।
लचारी-स्त्री० दे० 'लचारी'; † ग्रामगीतोका एक भेद
 जो बिहारके कुछ स्थानोंमें प्रचलित है; मिर्क नमकसे
 बना हुआ आमका अचार, मोनअँचर; * बड़ोको दी जाने-
 वाली भेंट, उपायन, नजर ।
लचील-वि० लचकनेवाला, जो आसानीसे मुग्न सके;
 मृदु बल खानेवाला । -पन-पु० वस्तुओंके झुकने,
 लचकनेका भाव ।
लचुरी-स्त्री० मैदेसे बनी मुलायम पूरी, लचुरी ।
लच्छ-पु० वहाना, व्याज; निशानेके लिए निश्चिन
 स्थान । वस्तु, मो हथारको मंथना, लाख । स्त्री० दे०
 'लक्ष्मी' । वि० लो हजार या एक लाख ।
लच्छन, **लच्छन**-पु० लक्षण, चिह्न; लक्ष्मण ।
लच्छनार-स्त्री० दे० 'लक्षणा' । म० कि० अच्छी तरह
 देखना ।
लच्छमी-स्त्री० दे० 'लक्ष्मी' ।
लच्छा-पु० तरलीदार तार, डोरेका गुच्छा झुप्पा (रेशम,
 सूत आदिका लच्छा); लवे, पतले, शरीक कटे हुए डूबड़े;
 लच्छेके ढंगकी बनायी हुई कोई चीज; मैदेसे बनी एक
 मिठाई जो सुन-सी लम्बी और रेशीदार होती है; लट्टिया
 कैमर; एक गहना जो तारोंकी बई लठ्ठोंसे बनता है और

पोंमें पहना जाता है । -(लच्छे)वार-वि० जिसमें
 लच्छे पड़े हों (कोई खानेकी चीज); देरतक चलनेवाली,
 मनोहर (गाय) ।
लच्छि-पु० लाख, एक लाखकी संख्या । स्त्री० लक्ष्मी ।
 -बाध, -विबाध-पु० विघ्न ।
लच्छित-वि० स्वयं, चिह्नित किया हुआ; लक्षणयुक्त;
 आर्क्षित ।
लच्छिमी-स्त्री० दे० 'लक्ष्मी' ।
लच्छी-पु० घोड़ोंका एक भेद । स्त्री० मंटी, ऊन, कलावट्ट,
 सूत आदिका लपेटा हुआ गुच्छा; * दे० 'लक्ष्मी'-'लच्छी-
 सी जई मालिन बोटी'-सूर ।
लछन-पु० लक्षण; लक्ष्मण ।
लछना-म० कि० दे० 'लछना' ।
लछमन-पु० दे० 'लक्ष्मण' । -लछा-पु० रस्सों, तारोंका
 कटकनेवाला पुल; बदगोनारायणके रास्तेमें एक स्थान जहाँ
 ऐसा पुल है, एक बैल ।
लछमना-स्त्री० दे० 'लक्ष्मणा' ।
लछमी, **लछिमी**-स्त्री० दे० 'लक्ष्मी' ।
लछारी-वि० लचा; * था ।
लज-स्त्री० लज्जा, शर्म ।
लजकारिका-स्त्री० [म०] लज्जाञ्ज नामक पौधा ।
लजना-अ० कि० शर्मिंदा, लजित होना ।
लजनी-स्त्री० लज्जा पौधा ।
लजवती-वि० स्त्री० लज्जाशाला । स्त्री० लज्जा पौधा ।
लजवाना-म० कि० लजित, शर्मिंदा करना ।
लजापुरी-वि० शर्माहा, बहुत लजानेवाला । पु० लज्जातु
 नामक पौधा ।
लजाना-अ० कि० अपने अनुचित, भेद, बुरे आचरणका
 अनुभव करके मङ्गुचित होना, शर्माना । म० कि० लजित
 करना ।
लजारू-पु० दे० 'लज्जाल' ।
लज्जाल-पु० स्वयंसे निकुञ्ज जानेवाला एक पौधा ।
लजावचहारा-पु० लज्जित करनेवाला ।
लजावचा-म० कि० दे० 'लजवाना' ।
लजियाना-म० कि० दे० 'लजाना' । म० कि० लज-
 वाना, लजित करना ।
लज्जी-वि० [अ०] स्वादिष्ट, लज्जतदार; प्यारा ।
लजीला-वि० शर्मीला, लज्जाशील ।
लजुरी-स्त्री० रस्सी, डोर, लेजुर (कुपेंसे पानी भरनेकी) ।
लजोर-वि० लज्जाशील ।
लजोहा-वि० लज्जाशील, शर्मीला ।
लजौना-वि० शर्मीला; लजित करनेवाला-'सूर नवसुन
 मदन-लजौना'-मृ० ।
लजौहाँ-वि० लज्जाशील ।
लजका-स्त्री० [म०] बकवास ।
लज्जत-स्त्री० [अ०] स्वाद, मजा; सुख । -हार-वि०
 स्वादु, जायकेदार ।
लजरी-स्त्री० [म०] लज्जाल ।
लज्जा-स्त्री० [सं०] स्वभाव या अपने किसी अनुचित आच-
 रणके कारण हुई मनको मकोषपूर्ण अवस्था, शीघ्रा; मान,

प्रतिष्ठा; कजाह। -कटा,-कारी(विशु),-अध,-बह-वि० लज्जाजनक, शर्मिता करनेवाला। -आवा-खी० मुग्धा नायिकाके बार भेटोंमेंसे एक (केशव)। -झील-वि० शमीला; विनम्र। -झूझ,-हीन-वि० जिसमें लज्जा न हो, निर्लज्ज।

कजापविता(पु)-वि० [स०] कजवानेवाला।

कजापित-वि० [स०] शर्मिता, लज्जित।

कजाखु-पु० [स०] लज्जाख नामका पौधा। वि० लज्जा-शील।

कजाबंस-वि० लजीला। पु० कजाबू, लज्जवती।

कजावती-खी० [स०] लज्जवती। वि० खी० शमीली।

कजावानू(बह)-वि० [स०] कजाशील।

लजित-वि० [स०] लज्जावा हुआ, कजायुक्त, शर्मिता।

लजिनी, लजिरी-खी० [स०] लज्जा।

लजी*-खी० भियतमा (रासे)।

लट-पु० [स०] चोर; बच्चों वा मूलोंकी गहर बात करने-वाला; दोष, देह। -पर्य-पु० दारबानी।

लट-खी० नीचे लटकनेवाले सिरके लगे बालोंका एक गुच्छा; उलझे हुए बालोंका गुच्छा; एक बेंत; आँतमें पकने-वाले शरीरके कीड़े, चुन्ना; कलपट। -जीरा-पु० चिचका; दम जकहन। मु०-छिटकाना-मिरके बालोंको खोलकर खिंचना। -पक्का-सिरके बालोंका उलझना, लिपटना।

लटक-खी० लटकना; झुकाव; सुंदर चाल, अंग-अंगी। पु० [म०] ठग; घुट व्यक्ति, दुर्जन।

लटकव-पु० लटकनेकी क्रिया; लटकनेवाली चीज; सुंदर चाल; नाकड़ा एक गहना; सितेपत्रमें लगा हुआ रत्नगुच्छ; मालसम्पदा एक न्यायाम; एक वृक्ष।

लटकना-अ० कि० ऊँची जगहके आश्रयसे नीचेकी ओर अवलंबित होना; ऊँची जगहमें किसी चीजका आधारच्युत होकर झूलना; टँगना; कुछ चल-बिचल होना; किसीके आश्रयमें रहना; काम पूरा न होना, देर होना। लटकती चाल-एक खाती हुई सुन्दर चाल।

लटकवाना-अ० कि० लटकानेका काम करना।

लटका-पु० टोतका; रोग आदिका छोटा गुग्गुलु; गति, ढव; बात-चीतका बनावटी ढग; एक तरहका चलता गाना।

लटकाना-स० कि० लटकनेमें प्रवृत्त करना; टँगना; किसी खड़ी वस्तुकी किसी ओर झुकाना; इंतजार करना, फँसा रहना; देर करना।

लटकीला-वि० बल खानेवाला, लचकनेवाला, झुपने-वाला।

लटकी-पु० एक पेड़ जिसकी छालसे रंग निकालते हैं।

लटकीआ, लटकीबा-वि० लटकनेवाला। -मालखंभ-पु० वह मालखम्भ जिसकी लकड़ी भूमिमें गयी न हो।

लटमा-अ० कि० शककर गिरना; रोग, परिश्रम आदिके कमजोर पड़ जाना; बीला, सुख पड़ना; व्याकुल होना;

* इच्छा करना, ललचाना; अनुरक्त, आसक्त होना-‘चंद बरौ मुख देखि निछावरि कोहरि कोटि लटे कटि ऊपर’-भावविकास।

लटपट-वि० दे० ‘लटपटा’।

लटपटा-वि० गिरता-पड़ता; बीला-वाला, सरका हुआ; दूदा

दूदा (शम्भ); बंट-संड, जो व्यवस्थित न हो; बेवस शिथिल, धका हुआ; न बहुत गाढ़ा, न पतला, छ पुटा; मला-मसका, गीला हुआ, लकड़दार (कपड़ा)।

लटपटाव-खी० लकड़पटाहट; सुंदर चाल, लचक।

लटपटाना-अ० कि० कमजोरी, नशे आदिके कारण सीधे न चल पाना, ललचाना, गिरना-पड़ना; विचलित, अस्थिर होना; चुक जाना; ठीक न चल सकना; मोहित हो जाना; अनुरक्त, आसक्त होना।

लटभ, लटह-वि० [म०] सुंदर।

लटा*-वि० दुपला; लुबा; पतित; लुच्छ; लपट; दुरा-‘ससिके सीतल चौंदनी सुंदर सबाई मुद्राह। लने चोर चितमें लटी पटि रहीम मन आह’-राहीम।

लटापटी-खी० लटपटाना; लड़ाई झगडा; भिन्नत; भिन्न।

लटापोट*-वि० लहापोट; मुग्ध, आसक्त।

लटिया-खी० लच्छी, आँटी। -सब-पु० पदसन। मु०

-करना-सूतको लपेटकर आँटी, लच्छा बनाना।

लटी-खी० गप, झूठी बात; दुरी बात; वैश्या; साधुनी।

वि० खी० दे० ‘लटा’। मु०-मारना-गप हँकना-‘अर मूठनके बदन निहारत मारत फिरत लटी’-दूर।

लटुआ*-पु० दे० ‘लटह’।

लटुङ-पु० लुकाट।

लटुरी*-खी० दे० ‘लटूरी’।

लटू*-पु० दे० ‘लटह’।

लटूरी*-पु० कुप्पा।

लटूरी*-खी० सिरके बालोंका लटकनेवाला गुच्छा, अलक।

लटोरा-पु० एक पेड़, लटोरा, लिसेवा।

लह-पु० [स०] दुर्जन।

लहपट्टा*-वि० दे० ‘लचपट’।

लह-पु० लकड़ीका चढ़ाव-उतारदार एक प्रकारका गोल बड़ा (इसके नीचे एक कील लगी होती है जिसमें सूत लपेट कर झटकेसे खींचनेपर यह चक्कर खाकर नाचने लगता है); विजलीका बल। -दार-वि० लटहू जैसा; लटहू-वाला। -पगवाही-खी० वह पगवाही जिसके ऊपर गोला-मा बना होता है और आगे छज्जा-सा बाहर निकला होता है, छजेदार पगवाही। मु०-होना-मोहित, मुग्ध होना; चाहमें उत्कण्ठित, हैरान होना।

लह-पु० मोटी लाठी। -बंघ-पु० लठैत, लाठी बाँधने-

वाला आदमी। -बाज़-वि० लाठी चलानेवाला; लाठी बाँधनेवाला। -बाज़ी-खी० लाठीकी लड़ाई। -मार-वि० मारनेवाला; कठोर, कड़ी (बात)। मु०-लिये

फिरना-लाठी लेकर चलना; किसी वस्तु, सिद्धांत, व्यक्ति-का बराबर विरोध करना, विरुद्ध आचरण करना (जैसे-अच्छे पीछे लट्टु लिये फिरना)।

लहुरी*-वि० कड़ा, कठोर।

लहुरा-पु० जमीन नापनेका बाँस जो साढ़े पाँच हाथ लंबा होता है; लकड़ीका लंबा टुकड़ा, शहतीर; लकड़ीका खम्भा; छाबन, पाटनमें लगा बड़ा, कड़ी; गाढ़ा, मोटा कपड़ा, गफ मारकीन। -बंदी-खी० लट्टेकी सी जानेवाली जमीनकी नाप।

लहुर-पु० [म०] घोड़ा; ५८ राग; नाचनेवाला लच्छा;

एक जाति ।

कट्या-खी० [सं०] कट, अलक; पुंल्लि, व्यभिचारिणी; गौरवा; दुष्टिका; विश्व बनायेका साधन; कुसुम; करंजना एक भेद; घृत ।

कट्वाका-खी० [सं०] एक पक्षी, लट्वा ।

कट-पु० दे० 'लट्ट' ।

कटिबला-वि० कटैत ।

कटिवा-खी० काठी, बंडा ।

कटैल-वि० लाठी चलानेमें कुशल, लट्टाज ।

कर्वत-खी० भिंस्त; मुकाबला ।

कर्व-खी० किसी वस्तुकी क्रमबद्ध-गोल, लंबाईमें संलग्न पंक्ति; रस्सीके एकमें मिलाकर बटे हुए तारोंमेंसे कोई एक; पंक्ति; कतार, क्रम; फूली, बौरोंका छड़ीके बंगका गुच्छा । **कु०-मिलाना-मेक**, मिचता करना । -में रहना-किसी दल, पक्षमें शामिल होना, रहना ।

कर्वक-लक्षका दा समासमें व्यवहृत रूप । -**लेख**, -**लेखका**-पु० बच्चोंका लेख; मामूली शान, आसान काम । -**पत्र**-पु० बाकाबला; बच्चोंकी भी चंचलता । -**बुद्धि**-खी० बच्चों जैसी बुद्धि, अपरिपक्व मति ।

कर्वकाई-खी० कर्वकपन; नादानी; निलबिलापन, नटखटी ।

कर्वकना-अ० कि० ललकना-‘जुगल कुंजरको लड़कि लड़ाई । परम प्रेमरस धारस पावै ।’-धन० ।

कर्वका-पु० बालक (जो सोलह वर्षसे कम बयका हो); पुत्र । -**हैं**-खी० दे० ‘कर्वकई’ । -**बाला**-पु० संतान, औलाद; परिवार, पुत्र-कलत्रादि । -**(कई)का लेख**-आसान या महत्त्वहीन काम ।

कर्वकिनी-खी० दे० ‘कर्वकी’ ।

कर्वकी-खी० बालिका (जिसकी अवस्था १६ वर्षसे कम हो); पुत्री, बेटा । -**बाला**-पु० (ब्याहके अवसरपर) कन्याका पिता या सरस्वक; वन्यापक्ष ।

कर्वकौरी-खी० कर्वकपन ।

कर्वकौर, कर्वकौरी-वि० खी० ‘कर्वकौरी’ ।

कर्वकौरी-वि० खी० (वह खी) जिसको गोदमें बचा हो ।

कर्वकलाना-अ० कि० डगमगाना, हिलना-डुलना; डगमगाकर गिरना, झोंका साकर गिर पडना; विचलित, अस्थिर होना; झुक जाना ।

कर्वकली-खी० कर्वकलाना, डगमगाहट ।

कर्वना-अ० कि० क पदार्थ, व्यक्तिका दूसरे पदार्थ, व्यक्तिसे टकर खाना, मिश्र जाना; कुत्सी करना, एक दूसरेको पटकनेका प्रयत्न करना; एक दूसरेपर प्रहार करना; झगडा, वागवुद्ध करना; बहस करना; प्रतिपक्षकी चालोंकी बेवहार करनेके लिये कानूनी कोशिश करना; मेक खाना, पूरा पडना, अनुकूल पड जाना; संयुक्त होना ।

कर्वबा-वि० न गाढ़ा, न पतला, लटपटा; अनुपमक ।

कर्वबाबाना-आ० कि० दे० ‘कर्वलवाना’ ।

कर्वबाबरा, कर्वबाबला-वि० दुर्लक्षित, बुद्धव्या; उन्नत और मातमह, लक्षकपन (पुरे अर्थमें)से भरा हुआ; गँवार ।

कर्वबौरा-वि० दे० ‘कर्वबावरा’ ।

कर्वह-वि० दे० ‘लट्ट’ ।

कर्वह-खी० प्रहार, चोट करनेवालेपर प्रहार, चोट करना, बुद्ध; दो सेनाओं, राज्योंका एक दूसरेपर आक्रमण, संघाम; कुत्सी, महबुद्ध; झगडा, कलह, बहस; टकरा; कानूनी दाय-पेच करना; बैर, अनवध ।

कर्वका-वि० लक्षनेवाला, बोझा; कर्णकाक्ष । कसादी ।

कर्वाना-स० कि० एक-दूसरेमें कर्वह कराना; झगडे, कलहमें लगाना; फँसना, डालना; फँसाना; ललकाना; कामवासी, सकलताके लिये सीच-विचार करना; एक चीजको दूसरी चीजसे संवेग मिश्राना; प्यार, दुलार करना; प्रेमसे देना ।

कर्वायता-वि० लट्टैता, प्यारा ।

कर्वित-वि० [सं०] इपर-उपर घूमता हुआ ।

कर्वी-खी० कतार, पंक्ति; छनके रूपका गुच्छा; एक साथ मिलाकर बटे हुए रस्सी, गुच्छेकी तार; एक सीधमें गुंथी, लगी हुई वस्तु की चीजकी माला, पंक्ति ।

कर्वीला-वि० काकला, प्यारा ।

कर्व्या, कर्व्या-पु० लट्ट ।

कर्वैता-वि० लक्षनेवाला, लडाका; लाकला, जिसका बहुत अधिक प्यार किया जाय ।

कर्वैवा-पु० सिधार (बुद्धे) । [-**हाथभर जो गज बैठ**-आवश्यकतासे बड़े बलादि धारण करना, अपने वित्त या सामर्थ्यमें बाहर कोई काम करना । हमसे मिलनी-जुलती कहावत है, वित्त भरके वित्तनमियाँ सवा हाथकी बती ।]

कट्ट-पु० [म०] दे० ‘लट्ट’ ।

कट्टह, कट्टहुक-पु० [सं०] दे० ‘लट्टहु’ ।

कट्टह-पु० पिंकीके आकारकी बनी हुई एक मिठाई, मोदक ।

कु० (मनके)-खाना-पेमे कामकी कल्पना करना जिसका होना कठिन हो । -**खिलाना**-उत्पन्न, दाबन करना । -**बँटना**, -**मिलना**-लाम होना ।

कलाना-अ० कि० अधिक लाह-प्यार करना ।

कलंस-पु० कुत्सीका एक पैच ।

कलान-पु० बैकामी-‘गानहि हैं हैं लदाय लदा भरि’-सुदामाचरित ।

कर्विवा-खी० छोटी बैकामी ।

कल-खी० बुरी भावत, बान, देव; ‘लात’का समासमें व्यवहृत रूप । -**कोर-कोरा-वि०** हमेशा लात खानेवाला; नीच । **पु०** दास; चौखट, देहली; पायदाज, दरवानेपर रखा हुआ पैर पीछेका कपडा आदि । -**मर्बज** पु० पैरसे रीदना; पैरोंका आघात । -**हा-वि०** लात मारनेवाला (बोझ, बैल आदि) ।

कलवी-खी० दे० ‘कलरी’ ।

कलपत-वि० दे० ‘लघपथ’ ।

कलर-खी० बेल, लता ।

कलरा-पु० एक मोटा अन्न, रंजक ।

कलरी-खी० मोठ, केसारी; एक तरहकी चप्पल ।

कलारी-खी० [म०] काकवासिनी ।

कला-खी० [सं०] जमीन या किनी आधारपर फैलनेवाला पीषा, बेल; कोमल झाडा, कांड; पर्वत; दूध; माधवी; जहाँ, जाती; रघुवत्का; ज्योतिष्मती; सुंदरी खी;

कक्षा; मोतियोंकी लकी; लीक, रेखा। -करंज-पु० एक तरहका कंजा। -कर-पु० हाथ हिलानेका एक ढंग (नृत्यकला)। -कस्तुरिका-स्त्री० एक पौधा। -कुंज-पु० लतासे बिरा, छायामय स्थान। -गण-पु० कैलनेवाले पौधे। -गृह-अवन-पु० लताओंसे मध्यस्थ तरह निर्मित स्थान। -जिह्व-पु० सर्प। -तह-पु० नारंगी; ताक; साखू। -ताक-पु० हिताकका पेश। -भ्रम-पु० लताशाल। -पता-पु० [हि०] लता और पत्ते, पेड़-पौधे; हरियाली; जड़ी, वृद्धी। -पनस-पु० तरबूज। -पर्ण-पु० विष्णु। -पर्णी-स्त्री० तालमूल; मधुरिका। -पास-पु० कताओंका बाल, समूह। -प्रदान-पु० लता मंजु। -फल-पु० परवल, पटोल। -बाण-पु० कामदेव। -भ्रजा-स्त्री० यदाली लता। -संख-पु० लताओंकी सघन करके बनाया हुआ घर, स्थान। -मंडल-पु० लताओंका घेरा, कुंज। -मणि-पु० मूंगा। -मकर-पु० पक्ष। -सुष-पु० बंदर; वनमानुष। -बहि-स्त्री० मजीठ। -बाबक-पु० प्रवाल; अँसुवा; अकुर। -रव-पु० हाथी। -रसन-पु० सर्प। -बक-पु० लतागृह। -विताम-पु० लताओंसे बना हुआ मटप। -हृक्ष-पु० सलई, झलकी वृक्ष, नारियल। -वेष्ट-पु० एक रतिवध; एक पहाड़। -वेष्टन-पु० आत्मिकता एक प्रकार। -वेष्टि-वि० लताओंसे आच्छादित। पु० एक पहाड़। -वेष्टिक-पु० आत्मिकता एक प्रकार। -संकुत-पु० शाल। -शस्त्र-पु० सावली वृक्ष। -साधन-पु० एक साधना जिसका अधिकार लता अर्थात् वृक्ष है (वाममयी)।

कटाक्ष-स्त्री० दे० 'लताक्ष'।

कटाक्षना-स० कि० रौदना, कुचलना, लातमे मारना; फटकारना; हैरान करना, बकाना।

कटाक्षन-पु० [मं०] हस्तचालनका एक प्रकार (नृत्यकला)।

कटाक्षत-स्त्री० [अ०] लनीक होना; सूक्ष्मता, सुकुमारता; सुंदरता, आत्मिक; स्वच्छता; शोभा; रस, रोचकता; सुरवि।

कटाक्ष-पु० [मं०] हरित पलायु, हरा प्याज।

कटाक्षक-पु० [मं०] हाथी।

कटिका-स्त्री० [मं०] डेठ, छोटी लता; मोतियोंकी लकी।

कटिचर, कटिचल-वि० कतखोर।

कटिधाना-स० कि० रौदना; पैरोसे डबाना; लातोंमें खूब मारना।

कटिहर, कटिहल-वि० दे० 'लतिवर'।

कलीक-वि० [अ०] बारीक; साफ-सुधरा; रसमय, जायकेदार; अच्छा, बढ़िया; नरम, सुपाच्य (भोजन)। -मिज्ञा-स्त्री० जहर पचनेवाला आहार। -मिज्ञाज्ञ-वि० सुशमिज्ञ, जिदालिह, रसिक।

कलीका-पु० [अ०] खुरी; नाजुक और उम्दा चीज; सुंदरता, हाथरसकी लघु कहानी; हँसी-मजाककी बात; मनुष्य, चमत्कारपूर्ण बात। -गो-वि० मनुष्य बातें कहनेवाला। -बाज्ञ-वि० सुंदरके छोड़नेवाला, विनोदी।

कु० -कसना-दे० 'सुंदरका छोड़ना'।

कषा-पु० फटा-पुराना कपड़ा; कपड़ेका टुकड़ा; कपड़ा।

कु० -कष जाना-डुकने-डुकने हो जाना, नष्ट होना।

कसे केना-बनाना, हँसी उठाना।

कटिका-स्त्री० [मं०] गोह।

कसी-स्त्री० मारनेके लिए चलाया, उठाया हुआ पैर (चोरे, गधे, बैल आदिका); लात मारना; कपड़ेकी लकी चोर, पखी।

कषपष-वि० तर, भँगा हुआ; सना हुआ; लिपटा हुआ।

कषाक्ष-स्त्री० पटककर बसीटना, लोडाना; पराजय; हानि; शिकारी, डाँट-पटकदार। **कु०** -खाना-पटका, पछाश जाना; ध्वस्त, नष्ट किया जाना; शिकका जाना। -पक्षना-शिकका जाना।

कषाक्षना-स० कि० कीचड़ आदि पोटकर गंदा करना; पछाड़ना; पछाड़ लोडाना; शिककना; रौदना; हैरान करना।

कषेक्षना-स० कि० कीचड़ आदि लपेटना, सानना, मंदा करना; पटककर भूमिपर बसीटना, रयक्षना; पटकना, पछाड़ना; बकाना, हैरान, परेशान करना; डाँटना-टपटना।

कद्व-स्त्री० कदाव।

कद्वना-अ० कि० मारयुक्त होना; किसी चीजसे किसी चीजका डक, भर जाना; किसी भारी चीजका दूसरी चीज पर रखा जाना; सामान के जानेवाली सवारियोंपर अस-वार रखा जाना; कैद होना; चोला छूटना, मर जाना; गत होना, समाप्त होना। वि० बोझ डोनेवाला, लडुवा।

-कदाकँदा-वि० माराकांत।

कद्वकद्व-अ० (किसी गीली और गाढ़ी चीजके गिरनेमें उत्पन्न होनेवाले) 'लद-लद' शब्दके साथ।

कद्वाना-स० कि० लादनेका काम कराना।

कदाड, कदाळ-पु० कदाव, भराव।

कदान-स्त्री० (माल) लादनेकी किया।

कवाना-स० कि० दे० 'कदवाना'।

कदाक्ष-पु० लादनेका काम; बोझ; छत आदिका पटाव; बिना कड़ी धरनके डहरनेवाली ईंटकी जोड़ारें; छत, मिहराज जिसमें बिना कड़ी, धरनके ईंटकी जोड़ारें डहरे।

कदाक्षना-स० कि० कदवाना; माल लादकर ले जाना।

कदुआ, कदुवा-वि० बोझ डोनेवाला।

कदुषक-पु० [मं०] एक पक्षी।

कद्व-वि० बोझ डोनेवाला, लडुआ।

कद्व-वि० सुस्त, काहिल। -पक्ष-पु० डिलारें, सुस्ती।

कद्वना-स० कि० पाना; मँटना।

कली-स्त्री० पनबारीकी बपारी।

कष-पु० लचीली छत्रीको तेजीसे हिलानेमें उत्पन्न शब्द; तलवार, आदिकी चमककी चाल, तेजी; अजलि; अजलि-भर कोई वस्तु। -क्षप-वि० चंचल, अस्थिर; अथार; तेज, कुर्नीका। स्त्री० तेजी; चंचलता; हाथकी सफाई; नारीकी सुकुमारता; प्रेम आदिके व्यंजक एक चेष्टा जो लीलाके अंतर्गत है। -खाळ-स्त्री० वेदंगी या तेज चाल। **कु०** कष करना-लचीली छत्रीको हवामें तेजीमें हिलकर ध्वनि उत्पन्न करना; झलकाना, चमकाना। -से-त्वापूर्वक, क्षरमे।

लपक—**खी०** लपट, लो; चमक; तेजी, वेग; पुरती ।
लपकना—**अ०** कि० सटपट चल पकना; तेजीसे जाना;
 किसीपर छपटना, दूट पकना, आक्रमण करना; कोई चीज
 पानेके लिए हाथ बढ़ाना ।
लपकी—**खी०** एक तरहकी सीधी सिलाई ।
लपट—**खी०** आगकी लौ, ज्वाला; तपी हुई हवा, ऑन,
 गरमी; गंध; गंधपूरित वायुका झोका; झलका; लिपटने-
 की क्रिया ।
लपटना—**अ०** कि० आलिंगन करना; सटना, लग्न होना;
 धिरना; लगा रहना; सूत आदिका लपेटा जाना ।
लपटा—**पु०** गीली और गाढ़ी चीज; कढ़ी; सेई; † दे०
 'लपटीना' ।
लपटाना—**स०** कि० लिपटाना, चिपटाना, आलिंगन
 करना, गले लगाना; बेरना; सूत, डोर जैसी चीजसे फेरे
 डालकर बेरना, लपेटना । **अ०** कि० सटना, लगना;
 फँसना, उलझना; * लथपथ होना ।
लपटीला—**वि०** रबड़ीला, पिच्छल, फिसलनवाला—'लँची
 नीची राह लपटीली पाँव नहीं डहराई'—मीरा ।
लपटीआई—**वि०** लिपटनेवाला; सटा हुआ । **पु०** एक जगली
 चुन ।
लपटीना—**पु०** एक तरहकी घास जिसकी बाल कपड़ेसे
 चिपक जाती है । **वि०** दे० 'लपटीआई' ।
लपव—**खी०** लपनेकी क्रिया । **पु०** [नं०] मुख; कथन,
 भाषण ।
लपना—**अ०** कि० पतली, लचीली छड़ी आदिका घुमानेसे
 लचना; झुकना; तेजीसे चलना; * ललचना: † हैरान,
 परेशान होना ।
लपलपाना—**अ०** कि० लचीली छड़ी आदिका घुमानेसे
 झुकना; झिलना-डुलना; तलवार आदिका चमकना ।
स० कि० तलवार आदिको घुमाकर झुकाना; लंबी, पतली
 चीजको झिलाना-डुलाना; तलवार आदिको निकासकर
 चमकाना ।
लपलपाहट—**खी०** किसी पतली, लचीली वस्तुके दबाव या
 झोंकसे झुकनेकी क्रिया; चमक ।
लपसी—**खी०** बोझा धी डालकर बनाया हुआ आटेका पतला
 हलवा; लपटा, सेई ।
लपाना—**स०** कि० लचनेवाली चीजकी तेजीसे घुमाकर
 झुकाना; आगे बढ़ाना ।
लपित—**वि०** [सं०] कहा हुआ, कथित । **पु०** कथन, बोली ।
लपेट—**खी०** लपेटनेकी क्रिया; फेरा; किसी चीजकी मोटार-
 का विस्तार; बंध; घेठना; कपड़ेकी सह जो गठरी बॉपनेमें
 लगती है; चक्कर, उलझन; पकड़; कुपतीका एक दाव ।
लपेटन—**खी०** लपेट; घुमान; फेरा; उलझन, फँसना; मरोड़;
 घेठन । **पु०** लपेटनेवाली चीज, बंधने, बेरनेके काम
 आनेवाली चीज; वह चीज जो पैरमें उलझे; पैरमें फँसने
 वाली चीज ।
लपेटना—**स०** कि० सूत, कपड़े आदिको किसी चीजके
 चारों ओर फेरा, बेरा, देकर लगाना, बाँधना; किसी चीज-
 को सह लगाकर मोबना, समेटना; घेठन आदिमें बाँधना;
 समस्त शरीरको बंदीकर बेरना; काँध, बल्लमें करना,

चार, गति बंद करना; झंझट, उलझनमें डालना, फँसाना;
 गाढ़ी, गीली, चिपकनेवाली चीजकी मलना या पीसना ।
लपेटवाई—**वि०** लपेटे हुए; लपेटने योग्य; लपेटकर बनी हुई;
 चौरों, सोनेके तार लपेटकर बनायी हुई; जिसका अर्थ गूढ़
 हो; घुमान-फिराववाला, चक्करदार ।
लपेटा—**पु०** पगकी-किसरी लपेट छैत्र विधितो लपेटे—
 बनः; दे० 'लपेट' ।
लपेस—**पु०** [सं०] एक दैत्य जो बालग्रह माना जाता है ।
लपवई—**दे०** 'लपव' ।
लपिसका—**खी०** [सं०] लपसी ।
लपसुव—**पु०** [नं०] बकरीकी दाढ़ी ।
लपसुवी(विन)—**वि०** [सं०] दाढ़ीवाला (बकरा) ।
लफना—**वि०** [फा० 'लफना'] आबारा, सीहरा; बदमाश,
 दुश्चरित्र ।
लफना—**अ०** कि० दे० 'लपना' ।
लफलफाना—**अ०** कि०, **स०** कि० दे० 'लपलपाना' ।
लफलफानि—**खी०** लफलफानेकी क्रिया; चमक ।
लफाना—**अ०** कि० दे० 'लपाना' ।
लफ़ा—**पु०** [अ०] शब्द, अर्थयुक्त ध्वनि; बात । **ब-लफ़ा**
 —**अ०** शब्दशः ।
लफ़ी—**वि०** शास्त्रिक, वाच्य । —**झानी**—**पु०** शब्दार्थ,
 वाच्यार्थ ।
लफ़ाफ़ा—**वि०** [अ०] लच्छेदार बातें करनेवाला, अति-
 रंजना करनेवाला, बातूनी ।
लफ़ाफ़ी—**खी०** बाचालता, लच्छेदार शब्दावलीका प्रयोग,
 वाक्यावद्ध, बातूनीपन ।
लफ—**पु०** [फा०] ओठ, होंठ; किनारा, तट । —**ब-लफ**—
वि० मुँहसे मुँह मिलाये हुए । —**रेज़**—**मुँह** तक मरा
 हुआ । —**(बे)आच**—**पु०** नदी, सरोवर आदिका
 किनारा । —**जू**—**पु०** नदीका किनारा । —**एरिया**—**पु०**
 दरियाका किनारा । —**खबक**—**अ०** सज्जके किनारे ।
 —**(बो)लहजा**—**पु०** बोलनेका ढंग; उच्चारण और
 स्वरापातकी विक्षेपता । **मु०**—**लुएक होना**—**होंठ**
 सूखना । —**खोलना**—**बोलना**, बात करना । —**पर**
आना—**होंठोंपर आना**, कहा जाना । —**सीना**—**मुँह** बंद
 करना । —**हिलना**—**राग निकलना** । —**(बीं)पर आना**
 या **बुझ आना**—**मरणासन्न होना** । —**से लगाना**—**मुँह**-
 से लगाना ।
लबलबना—**अ०** कि० फँसना, उलझना ।
लबबबोई—**खी०** व्यर्थवा शूल-गयाइ, बला-गुला; अंधेर,
 अन्धबन्धा; अनौति, अन्धाध; मुलाबा देनेवाली बातें,
 बेईमानी ।
लबबबना—**अ०** कि० झूठ बोलना; गप मारना; लवारी
 करना ।
लबबा—**वि०** दे० 'लवरा' ।
लबबा—**पु०** मोटा, अनगढ़ ढंढा ।
लबबी—**खी०** छोटा लववा ।
लबबी—**खी०** लंबी हॉकी जिसमें ताड़ी जुबायी जाती है;
 शीरा निकासनेका दौरा ।
लबरा—**वि०** गप्पी; झूठा, झूठ बोलनेवाला; † गार्थ ।

लघुकाव्यी-**ली**० बंदूकके घोड़ेकी कमान।

लघुकवचनार्थ-**वि**० कौरी भी बीच देखकर पानेके छिप उपकनेवाला; छेपी; कपीर, चंचल; बिना मतलब किसी चीजपर हाथ चलावेवाला।

लघाह-**पु**० [फा०] एक लंघा और दीठा-ढाका पहनावा, चोपा, अवा; शरीर चोपा।

लघाह-**वि**० [अ०] खालिस, बेमेक। पु० सारांश, सुछासा; गुदा; मज्ज।

लघार-**वि**० झूठा; गप्पी; बक्री।

लघारी-**ली**० झूठ मोचना। * **वि**० जुगलखोर; झूठा।

लघाकच-**अ**० मुँह वा किनारेतक (भरा हुआ)।

लघी-**ली**० खींच, राव।

लघु-**पु**० [अ०] 'लघ'का बहु०; एक तरहका माजुल।

लघेद-**पु**० रुढ़ि, रीति, लोकआचार, परंपरा; वेदविरुद्ध नियम।

लघेदा-**पु**० अनगढ़, मोटा और छोटा डंडा।

लघेदी-**ली**० छोटा, पतला डंडा; जबरहस्ती।

लघेरा-**पु**० लसोका।

लघ-**वि**० [सं०] प्राप्त, मिला हुआ; भाग करनेसे प्राप्त (फल-ग०); अर्जित, पैदा किया हुआ। -**काम**-

वि० जिसकी बांछा पूरी हो गयी हो। -**कीर्ति**, -**नामा**-**(अन्)**, -**प्रतिष्ठ**-**वि**० प्रसिद्ध, यशस्वी। -**चेता**(तत्), -**संज्ञ**-**वि**० होशमें आया हुआ। -**जम्मा**(जम्)

वि० जिसने जम्म लिया है। -**तीर्थ**-**वि**० जिसे अवसर प्राप्त हुआ है। -**दास**-**पु**० कल्पसे प्राप्त दास। -**नाश**-**पु**० प्राप्त वस्तुका नाश। -**प्राप्तमन**-**पु**० प्राप्त धन

सुपात्रकी वाम करना। -**लक्ष**, -**लक्ष्य**-**वि**० जिसका निशाना लग गया हो; जिसकी हड बस्तु मिल गयी हो।

-**लक्षण**-**वि**० जिने कौरी काम करनेका अवसर मिला हो। -**काम**-**वि**० जिसे काम हुआ हो, उद्देश्यकी प्राप्ति हुई हो। -**हर**-**वि**० जिसे बरदान मिला हो। -**वर्ण**-**वि**० विद्वान्, पंडित। -**विद्य**-**वि**० विद्वान्। -**शब्द**-**वि**० लब्धनामा। -**सिद्धि**-**वि**० जिसकी सिद्धि प्राप्त हो गयी हो।

लक्षक-**वि**० [सं०] मिला हुआ, प्राप्त।

लक्षव्य-**वि**० [सं०] प्राप्त करने योग्य।

लक्ष्याक-**पु**० [सं०] भागफल (ग०)।

लक्ष्या-**ली**० [सं०] विप्रलब्धा, संकेतस्थलपर नायकके न आनेसे निराश हुई नायिका।

लक्ष्या(इष्ट)-**वि**०, **पु**० [सं०] प्राप्त करनेवाला।

लक्ष्यातिशाय-**वि**० [सं०] जिसे असाधारण शक्ति प्राप्त हो।

लक्षि-**ली**० [सं०] लाभ, प्राप्ति; भाज्यको भाजक द्वारा विभक्त करनेसे प्राप्त भागफल (ग०)।

लभन-**पु**० [सं०] प्राप्त करनेकी क्रिया; गर्भधारण।

लभनी-**ली**० दे० 'लभनी'।

लभस-**पु**० [सं०] पिछाड़ी, बह रस्सी जिससे घोड़ेकी पिछली टाँगें बाँधते हैं; धन; पाषाण।

लभ्य-**वि**० [सं०] पाने योग्य; उपलब्ध, न्याय्य।

लभ-**लभा**का समासगत रूप। -**गिरदा**-**पु**० योदी दानेदार रेसी। -**गोदा**, -**टंगा**-**वि**० लंबी टाँगवाला।

-**विष्ण**-**वि**० लंबी गरदनवाला। -**लघ**-**पु**० कदुर-बाजोंका लम्बा; लंबी बंदूक (पुराने बंकी); माछा, लीन। **वि**० लंघा और पतका। -**कुम्भ**-**वि**० लंकोहरा। -**सर्षप**-**वि**० लंघासगका (आदमी)।

लमही-**ली**० एक तरहकी मधुमक्खी।

लमक-**वि**० [सं०] लंपट, बिगारी। **पु**० लवपति।

लमकना-**अ**० कि० लसुका, लफटित होना; लपकना; † मंद-मंद चलना (हवाका)।

लमचा-**पु**० एक बरसाती वास।

लमजक, **लमजुक**-**पु**० कुछकी जातिकी एक मधकनेवाली वास, कामज।

लमहीगा-**पु**० एक जंगली जामवर।

लमची-**पु**० समथीका पिता।

लमहा-**पु**० [अ०] निमेष, पल, क्षण।

लमापा-**स**० कि० लंघा करना; दूरतक बढ़ाना। **अ**० कि० दूर बढ़, निकल जाना।

लघ-**ली**० स्वर; स्वरके आरोह, अवरोहका ईग, गानेकी धुन, चौकी; सन (संगीत)। **पु**० [सं०] मिछना, धक बस्तुका दूसरीमें गमन, बिछीन होना; ध्यानका एकप्र होना; कार्यका कारणमें लीन होना; प्रकृतिका विपरिणाम, सृष्टिका प्रलयावस्थामें अवलोक हो जाना; लोप; विनाश; कीका; गाने और बाजेके स्वरोंका मेक; स्वयं; विश्राम; विश्राम-स्थल; मानसिक निष्क्रियता; आलिंगना परमेस्वर; मूर्च्छा; हेगा, पाटा। -**घस**-**वि**० जो बिछीन हो गया हो। -**नालिक**-**पु**० बौद्ध मंदिर। -**पुत्री**-**ली**० नर्तकी। -**बद्ध**-**वि**० लयसे बंधा हुआ।

लघज-**पु**० [सं०] लय होना, शांति; विश्रामका स्थान; शरण, आश्रय लेना।

लघारंभ, **लघारंभ**-**पु**० [सं०] नर्तक, अभिनेता।

लघार्क-**पु**० [सं०] प्रलयकालका सूर्य।

लर-**ली**० दे० 'लर'।

लरकई-**ली**० लरकपन, नादानी।

लरकना-**अ**० कि० लटकना; झुकना; तिरछा होना।

लरका-**पु**० दे० 'लरका'।

लरकाना-**स**० कि० लटकाना; झुकाना; तिरछा करना; हटाना, जरा इधर-उधर स्थित करना।

लरकिनी-**ली**० लरकी।

लरखरना-**अ**० कि० दे० 'लरखराना'।

लरखरनि-**ली**० डगमगाहट; स्मिति, गतिमें च्युति, लर-खराहट।

लरखराना-**अ**० कि० दे० 'लरखराना'।

लरजना-**अ**० कि० कौपना, दिखना-बुझना; दहल जाना, भयभीत होना-'तिनको तुजुक्त देखि नेक हू न लरजा'-

भूषण; हँसना।

लरजा-**वि**० [फा०] कौपनेवाला।

लरजा-**पु**० [फा०] कैंपकैरी, धरधराहट; भूजोल; जूही-नुसार।

लरझिझ-**ली**० [फा०] कैंपकैरी, धरधराहट।

लरझर-**वि**० बहुत अधिक मात्रामें उपलब्ध; प्रचुर; बरसता हुआ।

कदमा-अ० कि० दे० 'कदमा' ।

कदमि-क्री० कदाही; दौन-‘कदन विनु जित्थो कदमि’
-गीता०; कदमेका पत्तिका ।

कदमा-वि० नरम । पु० वैभव ।

कदाई-क्री० दे० ‘कदाई’ ।

कदाका-वि० दे० ‘कदाका’ ।

करिकाई-क्री० दे० ‘करिकाई’ ।

करिकसखोरी-क्री० जेतानी; लकड़ोंका खेळ-‘सूरदास
प्रभु करत दिनहि दिन ऐसी करिकसखोरी’-सूर ।

करिका-पु० दे० ‘लकड़ा’ । -ई०-क्री० कचपन,
बात्यावस्था; लकड़ोंका आचरण; चंचलता ।

करिया-पु० दुपट्टा ।

करिकिनी-क्री० दे० ‘लकड़ी’ ।

करी-क्री० दे० ‘लकी’ ।

कर्ज-पु० सितारका पाँचवीं तार जो पीतलका होता है ।

कर्जविका-क्री० [सं०] नीचेतक लटकनेवाला हार; मोह ।

कल-वि० [सं०] कथित (जीम); हिलानेवाला; प्रेमी; क्रीडा-
शील; हस्तक । पु० एक गंधद्रव्य; अंकुर; उद्यान । -जिह्वा
-वि० जीम लपकपानेवाला; जीम लपकपाता हुआ; भयं-
कर । पु० कुत्ता; डँट ।

कलक-क्री० बखवती हस्तक, गहरी लालसा ।

कलकना-अ० कि० किसी चीजके लिए अत्यधिक उत्सुक
होना, गहरी लालसा होना; उमंगसे भर जाना ।

कलकार-क्री० लकड़नेके लिए प्रतिपक्षीको चुनौती देना,
प्रचारणा; किसीको लकड़नेके लिए बढ़ावा देना ।

कलकारना-स० कि० विपक्षीको लकड़नेकी चुनौती देना;
किसीको किसी आदमीसे लकड़नेका बढ़ावा देना, उभाड़ना ।

कलकित-वि० गहरी चाहसे प्रेरित ।

कलकना-अ० कि० किसी अभिलषित वस्तुकी प्राप्तिके
लिए उत्सुक, अधीर होना; आसक्त, लुब्ध होना; लालसा
करना ।

कलकाना-म० कि० किसीको कुछ पानेकी आशा बँधा-
कर अधीर करना; कोई छुमावनी चीज दिखाकर पानेके
लिए आकुल, व्यग्र, अधीर करना; मोहित, लुब्ध करना ।
अ० कि० दे० ‘लकड़ना’ ।

कलकई-वि० लकड़ाया हुआ; लालच उत्पन्न करने-
वाला ।

कलजिह्वा-वि०, पु० [सं०] दे० ‘लज्जिह्वा’ ।

कलवृद्ध-पु० [सं०] नीचका पेश ।

कलन-वि० [सं०] क्रीडाशील । पु० क्रीडा; जिह्वाका
चालन, लपकपाना; लकड़ा, बचा; साह, प्रियाल,
चिरोजीका हस्त; क नायकके लिए प्रेममयंक शब्द ।

कलना-क्री० [सं०] क्री; कामिनी; जीम; एक वर्णवृत्त ।
-मित्र-पु० कदंबका पेश; एक गंधद्रव्य, ह्रींघर । वि०
जीमकी प्रिय लगनेवाला, स्वादिष्ट; रमणीको प्रिय
लगनेवाला ।

कलविका-क्री० [सं०] छोटी क्री; दुच्छ क्री ।

कलमी-क्री० बौलकी गली-‘कदाहि कमीर लकनीके
मुयना तोहि कौने पकरी’-बीजक ।

कलरी-क्री० कानकी लोळकी ।

कलस-पु० [सं०] अरबक उच्चारण ।

कलही छट-क्री० मारकृष्णा बड़ी, हलकड़ी ।

कल्ला-पु० लकड़ोंका सामान्य संघोषन; लकड़ा (जो प्यारा,
दुकरा हो); प्रेमी, मायका संघोषन ।

कल्लाई-क्री० सुखी; लाली ।

कल्लाक-पु० [सं०] शिश ।

कल्लाट-पु० [सं०] भाषा; भाव्य । -सद-पु० कल्लाट-
की डाल या तल । -पटल-पटल-कलक-पु० माये-
का तल, विस्तार । -रेखा-रेखा-क्री० मसककी
रेखायें; भाव्यलेख । सु०-का कल्ला-भाव्यका लेख ।
-में होना-भाव्य, तकदीरमें होना ।

कल्लाटक-पु० [सं०] कल्लाट; सुंदर कल्लाट ।

कल्लाटा-पु० [सं०] शिश ।

कल्लाटाक्री-क्री० [सं०] दुर्गा ।

कल्लाटिका-क्री० [सं०] मायेका एक आभूषण, टीका;
तिलक, टीका ।

कल्लाटल-वि० [सं०] सुंदर कल्लाटवाला ।

कल्लाट्य-वि० [सं०] लल्लाट-संघोषी; लल्लाटके उपयुक्त ।

कल्लाना-अ० कि० किसी चीजपर मोहित, लुब्ध होना;
किसी चीजके लिए ललकना; पानेके लिए अधीर होना ।

कल्लाम-वि० [सं०] जिह्वावाला; सुंदर, रमणीय; श्रेष्ठ,
उत्तम । पु० भूषण; रत्न; तिलक; चिह्न, प्रमाण; ध्वज,
दंड और पताका; पंक्ति; दुम; घोड़ा; मायेपरका चिह्न
(गाय, बोधे आदिके); घोड़ेका आभूषण; अयाल ।

कल्लाम(न)-पु० [सं०] आभूषण, सजावट; साम्प्रदायिक
चिह्न; चिह्न; शंखा; दुम; लींग; घोड़ा; प्रधान ।

कल्लामक-पु० [सं०] फूलकी माला (मायेपर लपेटनेके
लिए) ।

कल्लामी-क्री० नुदरता; लाली; [सं०] कानका एक
गहना ।

कलित-वि० [सं०] क्रीडाशील; कामी; सुंदर, रमणीय;
सरल; निर्दोष; हृत्पित, प्रिय; दोहायमान, हिलता-
डोलता हुआ । पु० शृंगार रसका एक काव्यिक हाव;
एक अलंकार जहाँ वर्ण्य वस्तुके संवधमें जो कुछ कहना
हो उसे न बहकर उसका प्रतिविवरण कथन किया
जाय, जैसे ‘ललित सुषार किबिगा राहू’-राव्य देना
था, दे दिया बनवास; नृत्यमें हाथोंकी एक विशेष मुद्रा;
एक राग; एक विषम वर्णवृत्त; क्रीडा; सौंदर्य । -कल्ला-
क्री० सौंदर्यके आश्रयसे व्यक्त होनेवाली कला (संगीत,
काव्य आदि) । -कल्ला-क्री० दुर्गा । -कल्ला-पु०
संगीतका एक ताल । -पट्ट-वि० सुंदर पद, शब्द-
वाला । पु० एक मायिक छंद, सार, दोहै । -पुराण-
पु० ललितविस्तार, दुबका चरित्रग्रंथ । -प्रहार-पु०
हलका आवाज । -मित्र-पु० संगीतका एक ताल ।
-लोचन-वि० सुंदर नेत्रोंवाला । -विस्तर-पु० दे०
‘ललितपुराण’ । -बद्ध-पु० एक समाधि (बी०); -एक
वैधिसर ।

कलितई-क्री० दे० ‘कलितार्’ ।

कलितक-पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ ।

कलित्ता-क्री० [सं०] एक मृच्छना; पार्वती; कामिनी;

राधाकी एक सखी (पद्म, मङ्गल ५०); कस्तूरी: एक नदी (५०); एक वर्णहृत्। वि० ली० सुंदरी। —**वंचमी**—ली० आश्विन-शुद्धा पंचमी। —**बहरी**—ली० भाद्र-कृष्णा वरी। —**ससुमी**—ली० भाद्र-शुद्धा पसमी।

कलितार्थ—ली० सुंदरता।

कलितार्थ—वि० [सं०] शृंगार-रस-प्रधान (रचना)।

कलितोपमा—ली० [सं०] उपमा अलंकारका एक उप-भेद जहाँ उपमेव तथा उपमानमें सादृश्य दिखलानेके लिए ह्व, लौ, सम आदि वाचक शब्दोंका प्रयोग न कर ईर्ष्या, निरादर, बराबरी आदिके ध्वनक पद रखे जायें।

कलितार्थ—पु० लाल रंगवाला बैल।

कली—ली० लड़कियोंके संवोधनका शब्द; प्यार, दुलारसे पत्नी लक्ष्मी; नायिकाके लिए प्रेमसम्बन्धक संवोधन।

कलीतिका—ली० [सं०] एक तीर्थ (मं० भा०)।

कलीर्ष—वि० [सं०] ललाई लिये हुए, आतात्र।

कलुर—वि० [सं०] हकलानेवाला।

कल्ला—पु० लड़कोंके लिए प्यारका संवोधन; प्यार, दुलारका लक्षक; नौजवानोंका स्नेहपूर्ण संवोधन (पश्चिम), 'हाला'।

कल्लूला—पु० (सं० १८२०-१८८२) सिंहासन-बचीसी, बैताल-पचीसी, माधवविन्दास, प्रेमसागर आदिके रचयिता जिनकी गणना हिंदी गद्यके आरम्भिक लेखकोंमें जो जाती है।

कल्लू—ली० जीम। —**कपरी**—पत्नी—ली० बाढ़कारिता, ठकुरसुहाती, चिकनी-नुपरी बात।

कल्लूरी—पु० एक तरहका साग।

कलंग—पु० [सं०] लौंग; लौंगका पेड़। —**कलिका**—ली० लौंग। —**कुप**—पु० कलंगका फूल। —**कला**—ली० लौंगका पेड़; राशिकाकी एक सखी; [हिं०] एक तरहकी मिठाई।

कल—ली० दे० 'लौ'। —**लीन**—वि० तन्मय, मग्न।

कल—पु० [सं०] अल्प मात्रा, थोड़ा अंश; कालका एक मान, १६ निमेषका समय; लवा पक्षी; काटना; विनाश; वह जो काटा जाय; ऊन, बाल; काटा हुआ अंश; सुरा गायकी पूछके बाल; लामव्यक्त; जायफल; लवंग; रामके एक पुत्रका नाम। —**लेश**—पु० स्वल्प मात्रा; थोड़ा संबंध। —**लेश**—पु० दे० 'लवलेश'।

कलक—वि० [सं०] काटनेवाला। पु० एक विशेष द्रव्य।

कलकना—अ० कि० चमकना, कौपन; दिखाई देना।

कलका—ली० चमक; कौप; विजली।

कलदना—अ० कि० लिपट जाना—ज्यों मैं खोले किनार लोही आनि लवदि गौ गरै—धन०।

कलण—वि० [सं०] नमकीन; सुंदर; काटनेवाला। पु० लौन, नमक; एक राक्षस; काटनेकी क्रिया; काटनेका औजार, हँसिया, छुरी आदि। —**कलसक**—पु० लवण-विकेता। —**कलार**—पु० एक तरहका नमक। —**कल**—ली० खारे-पानीवाला। पु० समुद्र। —**कल**—पु० एक साग, लोनी, अमखोनी; कुस्फा, कुस्माय, पिंडी। —**कल**—पु० सैषव, विट और सचल नामक तीन नमकोंका समुच्चय। —**कल**—ली० गायके रूपमें स्थापित नमककी राशि। —**पाटलिका**—ली० नमककी

वैली (लौ)। —**प्रगाढ**—वि० जिसमें लवण अधिक हो।

—**भास्कर**—पु० तीनों नमक और कई औषधियोंके योगसे

तैयार किया हुआ एक पाचक चूर्ण। —**मद**—पु० खारी

नमक। —**मेह**—पु० प्रमेह रोगका एक भेद (आ० दे०)।

—**वंच**—पु० औषधियोंका पाक बनानेके लिए एक प्रकार-

का पात्र (आ० दे०)। —**वर्ष**—पु० कुशदीपका एक खंड।

—**वारि**—वि०, पु० दे० 'लवण जल'। —**व्याप**—पु०

अधिक नमक खानेसे होनेवाला घोंघोंका एक रोग। —

समुद्र—पु० खारे पानीका समुद्र।

लवणातक—पु० [सं०] लवणासुरकी मारनेवाले, शत्रुघ्न; नीद।

लवणा—ली० [सं०] आभा, चमक; जंगेरी; अमली; चुक; ज्योतिष्मती कला; खुरी नदी।

लवणाकर—पु० [सं०] नमककी खान; सौंदर्यका आगार।

लवणाच्छ—पु० [सं०] दान देनेके लिए कथित नमकका पहाड़ (मत्स्य पु०)।

लवणापण—पु० [सं०] नमकका बाजार।

लवणाच्छि—पु० [सं०] समुद्र। —**ज**—पु० समुद्री नमक।

लवणाण्व—[सं०] समुद्र।

लवणाच्छ—पु० [सं०] समुद्र; मधुपुरी (लवणासुरकी बसायी पुरी, आधुनिक मथुरा)।

लवणासुर—पु० [सं०] एक राक्षस (रसका वध शत्रुघ्ने किया था। यह मधुका पुत्र था)।

लवणित—वि० [सं०] नमक मिलाया हुआ।

लवणिमा—ली० [सं०] नमकीनी, सखीनापन; सौंदर्य।

लवणोत्कट—पु० [सं०] वह भोजन जिसमें नमक अधिक-इयक्ततासे अधिक पड़ गया हो।

लवणोत्पन्न—पु० [सं०] सैषा नमक।

लवणोत्पि—ली० [सं०] ज्योतिष्मती कला।

लवणोदक—पु० [सं०] खारा पानी; समुद्र।

लवणोदधि—पु० [सं०] लवणसमुद्र।

लवन—पु० [सं०] काटना; खेतकी कटाई, छुनाई; लौनी, खेत काटनेकी मजदूरोंमें दिया गया भत्ता (जो ढंठलके साथ दिया जाता है); खेत काटनेका औजार, हँसिया।

लवना—सं० कि० फसलको काटकर बटोरना। * अ० कि० चमकना—'चटक-चोप चपला दिय लवै'—धन०। वि० नमकीन; सुंदर। —**हँ**—ली० सुंदरता।

लवनि—ली० लवन, पत्नी खेती काटना; खेत काटनेकी मजदूरी।

लवनी—ली० नवनीत, मक्खन; दे० 'लवनि'; [सं०] शरीरका पेड़ या फल; काटनेकी क्रिया; काटनेकी उजरत; काटनेका औजार।

लवनीय, **लव्य**—वि० [सं०] काटने योग्य।

लवर—ली० आँच, ज्वाला, लपट।

लवकासी—ली० प्रेमसंबंध।

लवली—ली० [सं०] पीले रंगकी एक लता; एक विषम वर्णहृत्; * इरफारेवकी हृष्ट या उसका फल।

लवहरी—पु० जुबनो बच्चे।

लवा—पु० एक पक्षी; † लाजा, लावा, खील।

कवाई-वि० खी० सवः प्रसन्न, बाकरी व्यापी हुई (गाय) ।

खी० खवनी, खेतकी कटाई; खेत काटनेकी मजदूरी ।

कवाक-पु० [सं०] हँसिया; काटनेकी क्रिया ।

कवाजिम-पु० [अ०] 'कवाजिमा'का बहु०, दे० 'लवाजिमा' ।

कवाजिमा-पु० [अ०] जरूरी सामान; यात्रा आदिमें साथ

रहनेवाका सामान ।

कवाजिमात-पु० [अ०] 'लवाजिम'का बहु०, उपकरण, साधन, सामग्री ।

कवानक-पु० [सं०] हँसिया ।

कवारार-पु० बछवा ।

कवासी-वि० गप्पी, बक्री; रुपट ।

कवि-वि० [सं०] काटनेवाला, तेज बारवाला । पु० काटनेके काम आनेवाला औजार ।

कवित्र-पु० [सं०] हँसिया ।

कवेदिका-खी० [सं०] अन्न ।

कवापल-पु० [सं०] बर्फका टुकड़ा ।

कव-पु० [सं०] गौर ।

कवाकर-पु० [का०] सेना; सशस्त्र दल (खासकर सरहद्दी पटानोंका); अभियमित सेना; विशाल जनसमुदाय; छावनी । -कवासी-खी० चढ़ाई, हमला । -गाह-पु०, खी० छावनी, शिविर । -मवासी-पु० नेनामें तनखाह भँटनेवाला कर्मचारी, फौजका बच्चा ।

कवुन, कवुन-पु० [सं०] लहसुन ।

कवरी-पु० [का०] सैनिक; जहाजपर काम करनेवाला । वि० सेना-संबंधी; जहाजी । खी० जहाजियोंकी भाषा । -बोली-खी० फौजवालोंकी बोली जो आमतौरसे खिचड़ी होती है ।

कवच-वि० [सं०] इच्छा करनेवाला ।

कवच-पु० दे० 'कवचन' ।

कवचा-स० कि० दे० 'कवचन' ।

कचित-वि० [सं०] इच्छित ।

कव-पु० [सं०] नर्तक, नाचनेवाला; अभिनेता ।

कव-वि० [सं०] चमकता हुआ; हिलता हुआ । पु० ऊँटका ऊपर; लाल चंदन; [हिं०] चिपकनेका गुण; चिपकानेवाली चीज, गोद, लसा; आकर्षण । -हार-वि० कसवाला ।

कव-वि० [सं०] नर्तक, लास्य मृत्य करनेवाला । पु० एक वृक्ष ।

कवकर, कवगार-पु० दे० 'कवच' ।

कवदंष्ट्र-वि० [सं०] चमकती हुई आँखोंवाला (जैसे सूदी) ।

कववा-अ० कि० चमकना, झलकना; स्थित होना, दिखाई देना, विराजना; नाचना । स० कि० चिपकाना, सटाना ।

कवनि-खी० बोधित होना; विराजना, उपस्थिति ।

कवम-वि० खोटा, निकम्मा (सेना आदि) ।

कवकरका-पु० संबंध, तात्सुक (कवचक) ।

कवकसा-वि० चिपचिपा, गोदकी तरह चिपकनेवाला, कवदार । -हृद-खी० चिपचिपाहट ।

कवकसाना-अ० कि० चिपचिपाना, चिपकना ।

कवा-खी० [सं०] हवेली; कैसर ।

कविका-खी० [सं०] धुक, काला; पेड़ी ।

कवित-वि० [सं०] सुशोभित; प्रकट; कीर्तासील ।

कसी-खी० लस, चिपक; आकर्षण; संसर्ग, संबंध; लोभ, प्राप्तिकी आशा; दूध वा दही और बर्फके मेलसे बना शरबत ।

कसीका-खी० [सं०] काला; मौस और चमकेके बीच रहनेवाला रस; ईस्का रस ।

कसीका-वि० चिपचिपा, लसदार; आकर्षक, मोहक, सुंदर ।

कसुन-पु० दे० 'लहसुन' ।

कसुनिचा-पु० एक बहुमुख्य पत्थर ।

कसीका-पु० एक वृक्ष या वस्त्रका फल जो हस्तवेरी जैसा छोटा और लसदार होता है ।

कसीका-पु० दे० 'कसीका' ।

कसीका-पु० बहेलियोंका चिबिया फँसानेके लिए कासा रखनेका बाँसका चोंगा; गोददानी ।

कस्तमपस्टम-अ० किसी-किसी तरह, उर्वो-र्यों करके; धीरे-धीरे; अव्यवस्थित रूपसे ।

कस्त-वि० सजा हुआ, डीठा; अशक्त, कमजोर; [सं०] कौशित; पाक, शोभायुक्त; आलिंगित; कुशल, ठस ।

कस्तक-पु० [सं०] धनुषकी मूठ, बीचका अक्ष ।

कस्तकी(किन्)-पु० [सं०] धनुष ।

कस्तगा-पु० प्रारंभ करना (इस कामका कस्तगा लगा दो); लगाव, संबंध; सिल्सिला (दूरतक कस्तगा चला गया है) ।

कस्तान-वि० [अ०] बहुत घोलनेवाला, वाचाल; लफ्फेदार भाषा बोलनेवाला; सुबका ।

कस्तानी-खी० वाचालता; सुवचनानी ।

कस्सी-खी० चिपचिपाहट, लस, मठा (पश्चिम); दूध वा दही और बर्फके योगमें बनाया हुआ शरबत ।

कसीगा-पु० कियोंका कमरसे नीचेका धरादार एक पट्टा-नावा जो कमरमें नरसे बाँधा जाता है, धौधरा ।

कहक-खी० आगकी लपट; चमक; शोभा ।

कहकना-अ० कि० हवाका चलना, झोकें देना; ऊहराना, हिलना-डुलना (हवाके जोरमें पेड़-पौधेका); आगका जगना, जल उठना, धककना; लोभ, चाहसे कोई चीज पाने, देखनेके लिए बढ़ना, लपकना; चाहसे अधीर होना ।

कहका-पु० लचका; पतला गोटा ।

कहकाना-स० कि० झोका खिलाना; आगे बढ़ाना; बढ़ावा देना; लोभ, चाहसे लपकाना, बढ़ाना; आग दहकाना; ताव दिलाना, उभाकना (किसीके विरुद्ध) ।

कहकारना-स० कि० उभाकना, बढ़ावा देना, ताव दिलाना; प्रोत्साहित करना, कुत्ता छोड़ना, कुत्तेकी सन-कारना (शिकार आदिपर) ।

कहकौर, कहकौरि-खी० दूध और दुधबिनका फोहर-में एक दूसरेकी अपने हावसे कुछ खिलाना ।

कहका-पु० [अ०] झोलने या झन्झोके उधारणका खास ढंग; झोलना; लय ।

कहका-पु० [अ०] पक, छन; निमेष ।

कहक-खी० [अ०] कन ।

कहक-पु० पाना, प्राप्त करना; लाभ करना; † एक झँझोली

साथी, कंठा ।

कहलदार-पु० महाजन, जगदाता ।

कहलना-स० कि० पाना; काम करना; † काटना; फसक काटना; छीलना, टपारना । पु० उबार, झप दिना हुआ धन; कामके बदले मिलनेवाला धन; मास्य, तकदीर ।
-कहरी-कौ० वह महाजनी वही जिसमें कण लेनेवालोंके नाम, पते और रकमका खोरा रहता है । सु०-बुकाया, -पढ़ाया, -साफ करना-झप दे देना, कर्त्तव्य जदा करना ।

कहनी-कौ० कृषि, प्राप्ति; फलभोग; † ठठेरेंका बर्तन छिलनेका औजार ।

कहहर-पु० लबी और दीछी पोशाक, योगा, कनादा; एक तरहका तोता; छमी; झंझा, निशान ।

कहबरी-पु० एक तरहका तोता ।

कहज-पु० [अ०] मांस ।

कहमा-पु० क्षण, पल, मिनट, अत्यल्प काल ।

कहमी-वि० गीततबाजा ।

कहर-कौ० बाबुकी गति और स्वशंसे पानीमें होनेवाली बड़ा-बतारदार हरकत, हिलकोर, हिलोरा; जोश, उमंग; बेगमयी भावना, मनकी मौज; किसी विजातीय इन्धके संसर्गने शरीरमें रह-रहकर बेहोशी, पीका आदिका अनुभव करना; आनन्द, हर्ष, उल्लासका बेग; बाबुमें होनेवाला स्वरक्षय, गुँज; मोक्ष लेती हुई देदी चारु; बक, कुटिल रेखा; हवाका झोंका; कसीदेकी धारी । -वार-वि० कहरोँषाका; बकगतिसे जानेवाला; कहरियादार । -पटोर-पु०, -पटोरी-कौ० कहरियादार रेशमी कपड़ा । -बहर-कौ० आनन्द और सुख । सु०-आ जाना-पुन बँचना; इच्छाका जोर मारना । -आना-मौज उठना; उमंग पैदा होना; साँपके काटनेपर बदनमें लहर उठना । -उठना-मौज आना, जोश होना, उमंग उठना । -छूटना-उमंग पैदा होना । -वेना वा मारना-रह-रहकर कष्ट या पीका होना; सीधा न चलकर मुकते हुए जाना । -लेना-कहरमें नहाना; दरियाका मौज मारना । -(हँ)गिमना-बेकार रहना, बेशगलीमें रहना ।

कहरना-अ० कि० दे० 'कहराना'; † परचना ।

कहरा-पु० लहर; मजा, आनन्द; बाजोंकी गत जिसमें ताक-स्वरोकी कैवल्य लय होती है; बादलोंका कुछ देर जोरसे बरसना, झड़; † एक वास ।

कहराना-अ० कि० हवाके झोंकेने हिलना-डुलना, बर-धराना; हवाका चलना; पानीका हवाके झोंकेसे हलकीरा लेना; काले-काले बादलोंका उमड़ना; देदी-मेदी चारु चलना; उमंग, उल्लासमें ही जाना; जर्कडित होना, लपकना (किसी वस्तुके लिये); दहकना, मकनना (मागका); बिराजना, खोभायमान होना । छ० कि० हिलना-डुलना (बाबुके प्रवेगमें); देदा-मेदा चलना ।

कहरि-कौ० [सं०] तरंग ।

कहरिया-पु० देदी-मेदी रेखाओंका समूह, मेणी; गोटे, लचके आदिकी लहरदार टँकाई; रंगीन सांघी, कपड़ा जिसपर देदी रेखाएँ बनी हों; जरीके कपड़ेके किनारेपर

बने हुए बेल-बूटे, एक कपड़ा । * कौ० लहर । -वार-वि० लहरिया बना हुआ, लहरदार; बेल-बूटोंवाला ।

कहरी-कौ० [सं०] लहर, तरंग । † वि० मनमौजी ।

कहरीला-वि० लहरदार ।

कहल-पु० एक राग (दीपकका पुन) ।

कहकह-वि० हरा-भरा, कहकहाता हुआ । अ० लहरके साथ ।

कहकहा-वि० लहरहा, हरामरा; प्रकृत; आनन्दमय; हृष्ट-मुष्ट ।

कहलहाना-अ० कि० हरा-भरा, सरसम्भ होना; खुशीसे भर जाना; खुले, मुरहाये रोये, बेकमें बिकासके लक्षण जाना, पनपना; मोदना, हृष्ट-मुष्ट होना ।

कहली†-कौ० दलदल ।

कहसुआ-पु० दे० 'लहसुआ' ।

कहसुन-पु० एक पीपा जिसकी जब पंक्तिबद्ध ज्योंसे बनी होती है (रस्ती गंध व्याजकी तरह उम होती है); माथिकका एक दौष, अशोभक ।

कहसुधिया-पु० धूमिक रंगका एक कीमती पत्थर जहाँ काक, पीले और हरे रंगका भी होता है ।

कहसुवा†-पु० कसीदा; कसीदेके फूलका साग ।

कहा†-पु० दे० 'काह' ।

कहाछेह-पु० नाचकी एक गति; नाच, नृत्यकी प्रत गति । * कौ० लछल-बूद-'कहाछेह कहाँ भी मचाय रहे ब्रजमोहन ही उखनीद भरे ही'-धन० । वि० मूसल-धार, द्रुतगतिवाली (बर्षा) ।

कहालह-वि० हरा-भरा; प्रकृत ।

कहाखोट-वि० हँसीसे लोटता हुआ; प्रसन्न; ललसित; मुग्ध; लुब्ध, लट्ट ।

कहासी†-कौ० काश ।

कहासी-कौ० नाव, जहाज बाँधनेकी मोदी रस्ती; रस्सी ।

कहि-अ० तक, पर्यंत ।

कहिला†-पु० दे० 'रहिला' ।

कहीम-वि० [अ०] मोटा-ताजा, मांसल ।

कहु-अ० पर्यंत, तक । वि० लपु, छोटा ।

कहुरा-वि० लपु, छोटा, कमिष्ठ । [कौ० 'लपुर'] ।

कहू-पु० खून, रक्त । -खुहान-वि० बलसे तर ।

सु०-उबलना-सस्त गुस्ता आना । -उबर आना-किसी जगहसे लहू थोड़ा-थोड़ा करके निकलना ।

-औटना-कोष वा गमले जोश पैदा होना । -का

बूँट पीकर रह जाना-गुस्ता सब लेना । -का

प्यासा-जानी दुश्मन । -झूझ कर देना-बहुत उरा

देना । -पसीना एक करना-दे० 'लहू-पानी एक

करना' । -पानी एक करना-सस्त मुसीबत उठाना ।

-पानी एक होना-गुस्तेके मारे खाना-पीना अंग न लगना । -पानी होना-कोषाभिमूत होना । -पी

जाना-कल करना । -पीना-तकलीफ देना । -पी-

पीकर रह जाना-गुस्ता चुपचाप बर्दाश्त कर लेना ।

-बिगड़ना-खूनका खराब होना । -बोलना-हत्या-

का स्वयं प्रकट होना । -में बहाना-सत-विकल होना ।

-लगत वा मलकर सहीद होना-थोका काम करके

बहा काम करनेवालोंमें अपनी गणना करना । -सफेद हो जाना-सहाय्यता या दयाका न रहना ।

कौश-रेशम रंगनेवाला रंगरेज; लहका काम करने-वाला ।

कौशना-स० कि० पल्लवर करना; टिपकारी करना; बरतन धोनेके लिए लौके पत्तोंकी बैठाना ।

कौश-पु० [अ०] ध्वनि, स्वर; मयुर स्वर ।

कौश-खी० लंक, कमर, कटि; तुरन्ती कटी हुई फसल; भूसा; परिमाण, माया, निकदार ।

कौश-खी० पीतीका वह सिरा जिसे औंधोंके नीचेसे पीछे से आकर कमरमें बंधे हुए फटेमें खोसते हैं, काष्ठ ।

कौशमाह्वर-पु० [अ०] एक तरहका छोपेका टावर ।

कौशल-पु० [स०] हल; चौदका आधा उठा हुआ भ्रम; लिंग; एक कुल; ताड़ इश; हलकी कड़वी लकड़ी; फल तोड़नेका लग्गा; एक तरहका चावल । -पु०

किसान; हलवाहा । -चक्र-पु० एक विशेष चक्र जिससे कृषिका घुमाघुम फल जाना जाता है (क० उ०) । -ई०-पु० हरित । -ध्वज-पु० बहराम ।

-पञ्चति-खी०, -मार्ग-पु० हल जोतनेसे बनी हुई रेखा । -फाल-पु० हलका लोहेका वह भाग जो जमीनमें धँसता चलाता है ।

कौशलक-पु० [स०] अर्धर रोगमें श्लेष्मिका द्वारा बनाया हुआ हलके आकारका घाव ।

कौशलकी-खी० [स०] औषधके रूपमें काम आनेवाली कुछ औषधियाँ, कलियारी आदि ।

कौशलिक-पु० [स०] एक तरहका न्यावर विष । वि० हल-संबंधी ।

कौशलिका, कौशलिकी-खी० [स०] दे० 'कौशलकी' ।

कौशलिनी-खी० [स०] कलियारी ।

कौशली-खी० [स०] कलियारी; भँबड़ा; मारियक; कैलाच; जल-पिप्पली; गज-पीपल; पिठमन; चम्प; एक पुराणोक्त नदी ।

कौशली (किन्)-पु० [स०] बलराम, इक्ष्वाकु; नारियक; लोप ।

कौशलीय-पु० [स०] एक शिव-लिंग ।

कौशलीय-खी० [स०] हरित, हलका कट्टा ।

कौशु-पु० [स०] दुम; लिंग ।

कौशु-पु० [स०] दे० 'कौशुल'; अल-आहार । -कालन, -विशेष-पु० पूँछ हिलाना ।

कौशुकि-खी० [स०] दक्षिणार्ध ।

कौशुकि (किन्)-पु० [स०] धरत कचम नामक औषधि ।

कौशुवा-स० कि० बौक माना, लोपना; धार करना ।

कौशु-खी० बूँस, रिक्त ।

कौशु-पु० [स०] दाग निशान, चिह्न; नाम, दोष, कलंक; खंडसायक दाग; अंकन ।

कौशुवा-खी० [स०] दौग, कलंक; निदा ।

कौशुवित्त-वि० दे० 'कौशित' ।

कौशुवि-वि० [स०] दीपयुक्त कलकित; अन्तर्गु ।

कौशु-पु० एक तरहका घाव ।

कौशु-खी० लोपन, धावा ।

कौशुनी-खी० [स०] असती खी ।

कौशु-पु० दे० 'लंड' (हि०) ।

कौशु-पु० [स०] सातवाँ स्वर्ग (वे०) ।

कौशु-पु० [स०] लपटला व्यवचार ।

कौशु-वि० दे० 'लंडा' ।

कौ-खी० [स०] छेने या देनेकी क्रिया । अ० [अ०] न, नहीं, विना । -हवाक-वि० जिसका हवाज, उपाय न हो, असाध्य । -हृत्-वि० विचारहित; अनभिज्ञ; बेखबर । -हृत्सी-खी० अनभिज्ञता; बेखबरी । -उषाकी-वि० स्वच्छंद; बेपरवा; निडर । -० ककराणा-पु० मारी कुप्रबंध । -कलास-वि० जिसमें कुछ करनेकी गुंजाइश न हो । अ० निस्तेह, अवयव । -खिराज-वि० (जमीन) जिसपर लगान या मालगुजारी न देनी पड़े । खी० माफो-जमीन । -कौ-खी० आबारा, बेकार ।

-खार-वि० विवश, मजबूर; अशक्त; दीछ, असहाय । अ० विवश होकर, मजबूर । -खारी-खी० लाचार होना, विवसता, अशक्तता, असहायता । -जबाब-वि० निस्तर; बादमें हारा हुआ; बेजोड़ । -जबाब-वि० सदा रहनेवाला, निर्यक । -सादा-वि० अगणित, बेहिसाब ।

-दबा-वि० लाइलाज, असाध्य । -दाबा-वि० दावा न रखनेवाला, दस्तबंदार । पु० दस्तबंदारी; बेबाकी (-लिख देना) । -पता-वि० जिसका पता न हो । [सु०

-०] हो जाना-गायब हो जाना । -परबा-परबाह-वि० बेपरवा, बेफिक । -परबाह-खी० बेपरवाई ।

-अकान-वि० जिसके रहनेका कोई विशेष स्थान न हो, देशसे अनवच्छिन्न (ईश्वरका विशेषण) । पु० खुदाके रहनेका स्थान, विदित । -अज्ञह-वि० जिसका कोई धर्म, मजहब न हो, बेदीन; नास्तिक । -अज्ञह-खी० नास्तिकता, किसी मजहबको न मानना । -आनी-वि० निरर्थक, बेमानी । -मिलाल-वि० अद्वितीय, बेजोड़ ।

-मुहाक-मुहाका-अ० अवयव, निरुपाय होकर । -देव-अ० निस्संदेह । -बखद-वि० निस्सतान, बेजोड़ ।

-बारिस-वि० (स्वर्ग) जिसका कोई बारिस, छतरी-धिकारी न हो, निर्गोषा, निपूता (माल) जिसका कोई अधिकारी या दावेदार न हो । -बारिसी-वि० लावारिस (माल) । -० माल-पु० वह चीज जिसका कोई अधिकारी, दावेदार न हो । -बारीक-वि० जिसका कोई शरीक न हो, लकेका (ईश्वरका विशेषण) । -सानी-वि० बेजोड़, जिसका सानी न हो । -हल-वि० जो हल न हो सके, कठिन, असाध्य । -हासिल-वि० जिससे कुछ नाम न हो, निरर्थक, बेकारवा ।

काह-खी० अधि; प्रेमकी लगन ।

काहका-वि० लावक, योग्य ।

काहकी-खी० दे० 'काहकी' ।

काहद-खी० [अ०] रोशनी, प्रकाश; उजाला । -हाडल-पु० जहाजकी चट्टानसे धकरानेसे बचानेके विचारसे बनाया हुआ तर्तम जिसपर तेज प्रकाशकी व्यवस्था रहती है, प्रकाशगृह, प्रकाशस्तंभ ।

काहद-खी० [अ०] छतर, पंक्ति, लैन; कतार; रेककी लक; सिपाहियोंका आवाज, बारिक; पैशा, व्यवसाय ।

—**क्षिप्र**—पु० रेखावलीकी जाने-जानेकी छिप्र दी जानेवाली चल्ना, सँवत ।

काङ्क्ष—**खी** [अं०] क्षिप्र, चोबन । —**बॉब**—पु० सञ्चर-में चोबन-रखा करनेवाला यंत्र । —**बैस्ड**—**खी** हुबनेसे बचनेके छिप्र बाँधी जानेवाली एक तरहकी पेटी । —**बोट**—**खी** जहाज हुबते समय प्राण बचानेवाली नौका ।

काङ्क्षनेविषय—पु० [अं०] पुस्तकाव्यस्य ।

काङ्क्षेरी—**खी** [अं०] पुस्तकालय; पुस्तकोंका सग्रहस्थान । **काङ्क्षेस**—पु० [अं०] कोई विशेष कार्य करनेके छिप्र दिया गया अधिकारपत्र ।

काई—**खी** [फा०] एक रेसमी कपड़ा; एक तरहकी ऊनी चादर; शराबकी तलछट † धानका काना; सुत्रिया चाबलका काना; चुगली, मिठा । —**खुत्तरी**—**खी**—चुगली; चुगलखोरी ।

काऊ—पु० लौकी ।

काकरी, **काकरी**—**खी**—दे० 'लकरी' ।

काकिनी—**खी** [सं०] एक योगिनी (तः) ।

काकुच—वि० [सं०] लकुच-संबंधी ।

काकुटिक—वि० [सं०] बड़ा भारण करनेवाला । पु० पहरे-दार; सेवक ।

कांकेट—पु० [अं०] बड़ीकी जगह आदिमें शोभाके छिप्र लगाया जानेवाला लटकन ।

काङ्क्षकी—**खी** [सं०] सीता, जानकी ।

काङ्क्षण—वि० [सं०] लक्षण-संबंधी; लक्षणोंमें परिचित ।

काङ्क्षणिक—वि० [सं०] लक्षणोंको प्रकट करनेवाला; लक्षण-संबंधी; लक्षणोंकी जाननेवाला; लक्ष्यार्थवाला; गौण; पारि-भाषिक । पु० लक्षण पहचानने, जाननेवाला; पारि-भाषिक शब्द; एक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें ३२ भाग्यार्थ होती है ।

काङ्क्षण्य—वि० [सं०] लक्षण-संबंधी; लक्षण बतलानेवाला; लक्षणोंका ध्यान रखनेवाला ।

काङ्क्षा—**खी** [सं०] एक तरहका लाल रंग; काख, काङ्क्ष; एक कीड़ा जिससे लाल रंग तैयार किया जाता है ।

—**गृह**—पु० काङ्क्षा घर बिसे दुर्घोषनने पाँखोंकी जीवित जका देनेके छिप्र बारणावतमें बनबाबा था । —**तल**—पु० पलाश, दाक । —**तैल**—पु० हल्दी, काख, मजीठ डालकर पकाया हुआ तैल (अर, दाका नाश्क—भा० दे०) ।

—**प्रसाद**, —**प्रसादन**—पु० लाल लोभ वृक्ष । —**अषाव**—पु० दे० 'काङ्कागृह' । —**दक**—वि० काखसे रंगा हुआ ।

—**रस**—पु० महावर, अलुत्क । —**बृक्ष**—पु० पलाश; कौशाग्र ।

काङ्क्षिक—वि० [सं०] काङ्क्षका; काख-संबंधी; काखसे रंगा हुआ; बड़ी संख्या (काख)संबंधी ।

काख—वि० लक्ष, सौ हजार; बहुत अधिक । पु० सौ हजारकी संख्या । अ० बहुत, हदसे ज्यादा । **खी** पीपल आदि वृक्षोंपर लगनेवाले एक तरहके कीड़ोंमें बना हुआ पदार्थ-विशेष; लाल रंगके छोटे-छोटे कीड़े जिनसे काङ्क्ष निकलती है । —**पत्ती**—पु० लक्षपत्ती । **मु०**—**दकेकी** काख—बहुत उपयोगी बात । —**से** **खीख** होना—सब कुछ खी बैठना, कुछ न रह जाना ।

काङ्क्षना—**खी**—**सं०** कि० काखसे छूटे बरतनका छेद बंद करना; जान लेना, समझ लेना ।

काङ्क्षा—पु० काखसे बना हुआ एक रंग जिससे कियौं होंठ रंगती है; मोड़के पौबोंका एक रंग । * **खी** काख । —**गृह**—पु० दे० 'काङ्कागृह' ।

काखी—वि० मटैलका, पुँछणा लाल, काखके रंगका । पु० काखका-सा, मटैलका काल रंग; इस रंगका घोड़ा ।

काख—**खी** संबंध, लगाव; प्रेम; सद्धार; लगन, धुन, लगावट; उपाय, तरकीब; चढ़ा-कपरी; कौशलपूर्ण खर्च (इसमें छुरी, कटारीकी पेट, गर्दनमें बँसी हुई, भारघार दिखाते हैं); बैर, दुश्मनी; जादू, टोना; टोका लगानेका चेष, 'कीशन'; मस्म, धातुको रूँककर तैयार किया हुआ रस; नेग, नियत धन (जो भाट, नाई, ब्राह्मणकी दिया जाता है); लगान, भूमिकर; नृत्तका एक भेद; * रसद । * अ० तक, पर्वत । —**काट**—**खी**—**होव**; दुश्मनी ।

कागस—**खी** किसी चीजकी तैयारीमें लगनेवाला खर्च ।

कागना—पु० दोहमें रहनेवाला; शिकारी । अ० कि० दे० 'लगना' ।

कागार—वि० [फा०] दुबला-पतला; कमजोर ।

कागारी—**खी** दुबलापन; कमजोरी ।

कागि—अ० तक, पर्वत; से, जरिये, द्वारा; हेतु, के कारण; निमित्त, वास्ते ।

कागुडिक—वि० [सं०] जो बड़ेसे लैस हो । पु० प्रहरी ।

कागि—वि० लगने योग्य; लगनेवाला; संगत, चरितार्थ होनेवाला । * पु० प्रेमी—'मोंबलिया मेरे मनको लागू मित इत आवै'—धन० ।

कागो—अ० छिप्र, वास्ते ।

कागरक—पु० [सं०] एक तरहका पांडु रोग ।

कागरकोलस—पु० [सं०] दे० 'कागरक' ।

कागव—पु० [सं०] छोटा होना, लघुता; कुर्ती, त्वर, तेजी, अल्पता, कम होना; आरोग्य; अनुसक्तता; अभिवेक; महत्त्व-हीनता । * अ० कुर्ती, जल्दीसे; सहज ही । —**कारी**—**(रिज)**—वि० अपमानजनक, असोभन ।

कागविक—वि० [सं०] सक्षिप्त, छोटा ।

कागबी—**खी**—**कुर्ती**, जल्दी ।

कागबी(विजु)—पु० [सं०] बाजीगर ।

काखी—**खी**—दे० 'इलायची' । —**दाना**—पु० इलायची-के योगसे चीनीकी बनी एक मिठाई जो प्रायः मिर्चके आकारकी होती है ।

काखम—पु० काखन, कलंक ।

काखी—**खी**—**लक्ष्मी** ।

काख—**खी**—**लक्ष्मी**, धर्म; प्रतिष्ठा । —**बंस**—वि० लक्ष्मी-वान् । इयावार । —**बंती**, —**बन्ती**—**खी**—**लक्ष्मी** । **मु०**

—**के मारे**—**लक्ष्मी**के कारण । —**दखना**—आवर बचाना ।

—**से गडरी होना**—लक्ष्मीबश सिकुड़ जाना । —**से गङ्गा ज्ञावा वा गङ्गा**—बहुत ज्यादा शर्मिदा होना ।

काख—पु० [मं०] धानका काना, खीठ; खन; पानीमें भीगा चावल । —**पेवा**—**खी**, —**सँव**—पु० खीलका मीठ । —**अक**—पु० रोगियोंको पथके रूपमें दिया जानेवाला खीरका मान । —**खकु**—पु० खीरका मनु ।

—होम-पुं० एक होम जिसमें होमका इकलः किया जाता था।

काव्य-पुं० [सुं] वाक्का लया।

काव्य-जं० किं कवना, कवित होना। सं० किं कवित करना।

काव्यसारा (सूत्रक)-पुं० पंजाबके देशका नेता जिन्हें अपने उग्र विचारोंके कारण कुछ समयतक निर्वासित अवस्थामें रहना पड़ा। सामन्य रूपीयनके बहिष्कारकी सभामें पुष्पित द्वारा आहत होनेसे आपकी मृत्यु हुई (१८६५-१९२८)।

काव्य-पुं० [कां०] नीले रंगका एक पत्थर जिसकी मचना रत्नोंमें है, राजपूतों; एक तरहका विलासती नौका रंग।

काव्य-विं० काव्यके रंगका, नीला।

काव्य-ली० [सं०] वाक्का वाक्का लया, लीला।

काव्य-विं० [कां०] कला हुआ, जो कला न किया जा सके; कर्म, अवस्था कर्मत्व। —अव्यय-विं० एक दूसरेसे संबन्ध, (दो चीजों) जो एक दूसरेसे अलग न की जा सके; अवस्था कर्मत्व।

काव्य-पुं० [अं०] स्वयं वस्तु; अचरी सामान।

काव्य-विं० दे० 'काव्य'।

काव्य-ली० मोटा ऊँचा खंभा (यह पत्थर, लकड़ी या किसी धातुका होता है, जैसे अक्षोकी काष्ठ, हावायकी काष्ठ)। पुं० [अं० 'काव्य'] अंग्रेजी इस्लामके समयका श्रवण वा ईश्वर समसे वक्राकार, गवर्नर; [सं०] अस्त-श्रवण अर्थात् एक भेद जिसमें कर्म-अर्थ एक रहते हैं, पर अव्यय करनेपर वाक्यार्थ बदल जाता है; पानीके बहावकी रीतिसे किय बनाया हुआ शेष, पुष्पाकारके एक भागका प्राचीन नाम; काटका विवासी; जीर्ण-शीर्ण कपड़ा वा गहना; कपड़ा; शक्कों जैसी भाषा। विं० काट-संघर्ष; पुराना, पटा हुआ; बर्बाद-भा। —वच-वर्ण-पुं० शास्त्रीनी।

काट-पुं० [अं०] एक लाभ रखी हुई चीजोंका ढेर (बचने, नीलाय करने आदिके किय)।

काट-विं० [सं०] काट देश-संघर्षी।

काटरी-ली० [अं०] कपड़े या सामानके रूपमें पुरस्कार देनेकी एक व्यवस्था जिसमें बिट्टी बाणकर या टिकटके सहारे विजेताका नाम विभित किया जाता है।

काटरी-पुं० मुने महुए और तिरका लड्डू; गुना महुआ।

काटपुष्पा-पुं० [सं०] अनुप्रासका एक भेद (दे० 'काट')।

काटिका-ली० [सं०] छोटे-छोटे फल और ममासकाशी रचनाएँ (इसके अतिरिक्त तीन और रीतियाँ हैं—देवली, गौरी, बांकाजी)।

काटि-ली० थूक और ओठ सज्जनेकी दशा—'कूटविष्णु काटि सुंद काटि'—राम०; [सं०] दे० 'काटिका'।

काटि-विं० [सं०] दे० 'काटक'।

काट-पुं० दे० 'काट'। ली० दे० 'काट'।

काव्यकाटी-ली० काटीसे करार प्रहार करना।

काटी-ली० दंडा, नौसकी लकीर (जो नौतोंको छोकर बगरी बाड़ी है और टेकने, मारपीट आदिके काम आती

है)। —काटी-पुं० मीसकी तितर-वितर करनेके किय पुष्पिका काटीसे प्रहार करना। मुं०—काव्य-काटीसे मारपीट होना। —काव्य-काटीसे मारपीट करना।

—काव्य-काटी साथ रखना, किये रहना।

काव्य-पुं० काव्य, प्यार, दुकार। —काव्य-पुं० प्यार-दुकार।

—काव्य-विं० कये प्यारके साथ पका हुआ।

काव्य-विं० प्यार, दुकार। [ली० 'काव्य'।]

काव्य-पुं० प्यार। [ली० 'काव्य'।]

काव्य-पुं० [सं०] लकड़ा; लौकर।

काव्य-पुं० लड्डू; दक्षिणी नारंगी।

काव्य-पुं० दूकानदारसे किया हुआ दवाक जो दवाइकी बीका देकर भाक विक्रयता है। —काव्य-पुं० नृत्यता, नौसकाजी, काव्यिका काम।

काव्य-ली० पैर, पदा पाद-प्रहार। विं० [सं०] प्राप्त, किया हुआ। मुं०—काव्य-मार खाना; पैरकी ठीकरसे मारा जाना।

—काव्य-काव्यसे भरना। —काव्य-पुं० दूकानदारके कात मारकर दुपार जानवरोंका हट जाना। —मारकर काटा होना—प्रसवके बाद जीका जन्म-किन्ने के योग्य होना; निरोग होकर चल्ने-फिरने कलम।

—भरना—किसी वस्तुको कुछ समयतक छीप देना; उपेक्षा, पणा करना।

काव्य-ली० पुराना जूता।

काव्य-ली० [सं०] पानीकी किया।

काव्य-ली० [अं०] लैटिन भाषा।

काव्य-पुं० बहाना।

काव्य-ली० चीजें दूसरी जगह से जानेके लिए ऊँट, बैक, गाड़ी आदिपर लादना; पानी निकालनेके किय दौकीके दूसरे तिरपर लगा हुआ बेल्ला, मिट्टीका ढोका आदि।

—काव्य-ली० काव्यका काम।

काव्य-ली० आँव, भेदगी, पैद। मुं०—निकलना—तोड़ निकलना; अंतर्ग निकल जाना।

काव्य-सं० किं जनेक चीजोंकी एकपर एक रखना; गेनेके किय बोझ भरना; किनीपर जम्मेदारी, भार झकना।

काव्य-पुं० गेस काव्यके से जानेका काम करनेवाका (बैक, टट्ट, ऊँट आदिपर)।

काव्य-ली० भोवियोंकी गठरी; बोझा (किसी पशुपर लादनेका)।

काव्य-सं० किं शाना प्राप्त करना—'जो सुख शिव मनकादि व पाकर सी सुख योगिन लोपी'—नूर।

काव्य-पुं० [अं०] फटकार, बिहार, भर्त्सना। —काव्य-पुं० भर्त्सना, काव्य-भारत।

काव्य-पुं० [अं०] आनंद-प्रमोद आदिके किय बना हुआ हरीपासवाक्य मैदान। —देविस-पुं० छोटे मैदानमें लेका बालेवाक्य मैदान एक क्षेत्र।

काव्य-ली० [अं०] फटकार, बिहार, भर्त्सना। —भारत-ली० भर्त्सना, बिहार, फटकार। मुं०—का लीक (मकेमें) कपड़ा—वरनाय, नरकजन्—हीना।

—का मारा—धृति, कुल्लिध अभ्यास। —का लीक—कमताहार, अवधि भर्त्सना। —काव्य-वैदरेपर

उदासी, मनहूसी होना; लज्जतकी मोछार होना।—जेजवा
बिकारना। कोसना। कृष्णपूर्वक स्थाय होना, ठुकराना।

कावली-वि० कामतके योग्य; कामलका मारा।

कावा-स० कि० के जावा, कहींके कोई वस्तु लेकर आना;
उपस्थित करना, सामने रखना; पैदा करना (पैकीका फल
भादि); * जाग लगाना; लगाना।

कावे-अ० कवि, वाक्ता।

काव-पु० [सं०] बोलना, कथन ('वाक्' के साथ समस्त-
रूपमें प्रयुक्त)।

कावमिका-श्री० [सं०] वाक्ताव्य, वातचीत।

कावली-श्री० दे० 'लपली'।

काविका-श्री० [सं०] एक तरहकी पहेली।

कापी (विष्)-वि० [सं०] बोलनेवाला; पश्चात्ताप करने-
वाला।

कापु-पु० [सं०] एक औजार; एक वनौषधि, कद्रवंती।

काप्य-वि० [सं०] बोलने, कथने योग्य।

काफ़-श्री० [फा०] आत्मप्रवेश, दीग।—**ज़न**-वि०
दीग हाकनेवाला।—**ज़बी**-श्री० दीग हाकिना।

काब, **काबक**-पु० [सं०] एक पक्षी।

काबस्त-श्री० [अ०] ज्वालामुखीमें निकलनेवाला तप्त, तरल
पदार्थ, लावा।

काबर-वि० झूठ बोलनेवाला, कबार।

काबु-पु०, **काबू**-श्री० [अ०] एक तरहका मोभा, कर्दू।

काबुकी-श्री० [सं०] एक तरहकी बीणा।

काबुद-अ० [अ०] अवच्छद, निश्चय।

काबुदी-वि० अभिवाच, अवश्यकर्मण्य।

काभ-पु० [सं०] प्राप्ति, लब्धि; कायदा, नफा; अलार्ह,
उपकार; अनुभूति, ज्ञान, विजय।—**कर**,—**कारक**,—
कारी (रिज),—**कूद**,—**दायक**-वि० जिसमें काम हो।

—**क्षाधिक**-पु० कर्मक्षयके बाद प्राप्त होनेवाला पुण्य
(जै०)।—**अद**-पु० वह अभिमान जिससे कोई अपनेकी
कामाभिन्न और दूसरेकी पुण्यहीन समझे (जै०)।

—**लिप्ता**-श्री० कामकी प्रवृत्ति बचन।—**स्थाव**-पु०
ब्रम्भकुंडलीमें लपटसे स्वारचर्चा आन ('जो धन, बिना
आदिका चोतक होता है)।

कामोत्तराय-पु० [सं०] वह कर्म जिसके उदयमें लाभमें
विघ्न पड़ता है (जै०)।

कामाकाश-पु० [सं०] हानि-लाभ।

काम-पु० फौजका दस्ता (जिसमें पैदल, सवार और तोप-
खाना होता है), विजोड; समूह (जिनोका सेनाका)। **मु०**

—**घर जाना**-लफार्दे मोयेंपर जाना।—**बाँधना**-
सामान और बहुतसे लोगोंकी एकत्र करना।

कामी-अ० दूर। पु० [अ०] अरबी वर्णमालाका एक वर्ण।

—**काफ़**-पु० बेहूदा वाक्ता; लरी-खोटी, अपशब्द। **मु०**
—**काफ़ कहना**-नुरा-भला कहना, जानत-मकामन
करना।

कामज-पु० दे० 'कामजक'।

कामजक-पु० [सं०] वीरगमूढ।

कामजक-पु० लटकना; टिकना; † कर्हना।

कामबा-पु० कस्तरमें पैदा होनेवाली एक वास।

कामा-पु० [सि०] विभक्त और मंगोक्षिकाने बौद्धका भर्मा-
भ्यक्ष और शासक। † वि० कबा।

कामी-पु० एक फल (दिही, राजपूतानाकी ओर होता
है और साग, सरकारीके काम आता है)।

कामी-अ० दूर।

काबक-श्री० कपट, ज्वाला; अग्नि।

काबक-पु० काबक, धानका लग्न।

काबक-वि० [अ०] योग्य; गुणवान्; अधिकारी; उपयुक्त,
मुनासिब।

काबक-श्री० योग्यता।

काबकी-श्री० इकावची।

काबना-पु० गिरवी रखी हुई चीज।

कार-श्री० कोई चीज खाते समय मुँहसे निकलनेवाला
कसदार तरल द्रव्य, लाला; कतार; छत्राव। **मु०**—**जाना**,
—**टपकना**—किस्ती चीजके पानेका लीम होना।

कार-अ० साथ, पीछे। **मु०**—**लगाना**—फँसना।

कारी-श्री० [अ०] माल और मुसाफ़िरोकी डोनेके काम
आनेवाली बड़ी मोटर गाड़ी।

कारू-पु० लट्ठू।

कार्ड-पु० [अ०] इंग्लैंडके जमींदारों और रईसोंकी उपाधि;
जमींदार; मालिक; ईश्वर।—**सभा**-श्री० इंग्लैंडकी
पार्लियमेंटकी वह सभा जिसमें अभिजातवर्गीय प्रतिनिधि
रहते हैं।

काक-वि० नाणिक, रक आदिके रंगका; अत्यधिक क्रुद्ध;
बीचके खानेमें पहुँची हुई (चौसरकी मोटी);—'परो दाब
नरो छरी करिजे सारी लाल'—दीनदयाल; जिसकी सब
मोटियाँ बीचके खानेमें पहुँच गयी हों (चौसरका खेलाड़ी);
सबमें पड़के सफल होनेवाला (खेलाड़ी); साम्यवादका
अनुसरण करनेवाला (जैसे कालचीन)।—**अंभारा**,—
अभूका-वि० निहायन मुर्ख, बहुत लाल; गुस्तेकी बख्शमें
लाल, क्रोधमें तमतमाया हुआ।—**अंबारी**-श्री० एक
पटुवा।—**अगिन**-पु० एक पक्षी।—**आख**-पु० रताल;
अरबी।—**इलायची**-श्री० बड़ी इलायची।—**कणू**-
पु० बंडा, यजकर्म आख।—**कलपी**-पु० गुलचंदनी
(पीठा, फूल)।—**चाख**-श्री० एक टण, गोलू टण।

—**चंदन**-पु० रक्त चंदन।—**खीला**-पु० लाल फूलका
चित्रक, चीता।—**खीनी**-पु० सिरपर लाल बिंदियोंवाला
मफेद कबूतर।—**दावा**-पु० लाल रंगका पोस्तेका दाना

लाल खसखस।—**परी**-श्री० शराब; लाल पंखोंवाली परी।
—**पानी**-पु० शराब।—**पिलका**-पु० सफेद बैतों और
दुमवाला एक लाल कबूतर।—**पेटा**-पु० कुम्हड़ा।—**हुस**

कब-पु० बिना मर्मे जाने अटकलसे मतलब लगानेवाला,
अगम्य बातोंकी समझनेका दावा करनेवाला।—**बेग**-पु०
एक परदार लाल कीड़ा; मुसलमान संगियोंका एक पीर।

—**बेगी**-पु० लाल बेगका अनुयायी भ्रष्ट, भेगी, मेहतर।
—**अरई**-पु० एक शाव।—**मिर्ब**-श्री० मिरचा।

—**मुँहा**-पु० एक तरहका मिनावाँ।—**मुरमा**-पु० एक
पक्षी; मरुस्थित; गुलमकमली पीठा।—**मूळी**-श्री०

मलजम।—**काहू**-पु० एक विशेष प्रकारकी नारंगी।
—**साहर**-श्री० बिना साफ की हुई चीनी, खॉद।

-सकरी-पु० अमरुद । -समुद्र-पु० दे० काक सागर ।
-सर-पु० एक पक्षी (गरन, सिरका रंग काक, छती
लितकवरी, पीठ काकी, देवा सुनहला) । -साव-पु०
मरसा । -सावर-पु० अरब और अफ्रीकाके नख लित
एक समुद्र जिसका पानी काल दिखाई देता है । -सिखा,
-सिखी-पु० मुर्गा-‘माडू भागवन जानिके काक-
सिखा पुनि चीन’-रघुराज । -सिरा-की० काक सिर-
वाली बच्छ । -सेना-की० साम्यवादी देशकी सेना
जिसके हाथेका रंग काल हो । सु० -सौली दिखावा
वा निकालना-गुस्सेसे देखना । -पचना वा होना-
कोष करना । -पीका हो जाना वा होना-कोष करना ।
-होना-निहाल होना ।

काक-की० काका, बूक, रात; * कालसा, इच्छा; पु०
भूरापन लिये काल रंगकी छोटी बिबिदा; चौपायोंका एक
रोग; प्यारा बच्चा; पुन, लकड़ा; प्रिय, प्यारा व्यक्ति
प्रणवी; प्रेमी आदमी; * कालन, प्यार, दुलार; [का०]
माफिक; दुर्लभ रंग । -मव-पु० कृष्ण; एक तरहका
तोता । सु०-उगलना-नब्बड़ी प्यारी, महत्त्वकी बातें
कहना ।

काक-वि० [सं०] दुलार-प्यार करनेवाला । पु० विद्वक ।
काककीन-पु० दे० ‘नामकीन’ ।

काक कुलीबाका बूक-पु० भारतके असहयोग आंदोलनके
समय सीमांताका बहू राष्ट्रीय दल जिसके नेता सीमांत
गांधी डॉ० अब्दुल गफ्फार खॉं थे और जिसके सदस्य काल
कुरने पचना करते थे ।

काक-पु० कोई चीज पानेकी बहुत बड़ी हुई इच्छा, लोभ ।
काकचर-वि० जिसे बहुत अधिक लोभ हो, लालची ।
काकची-वि० लोभी, लोभपु ।

काकडेन-की० [अ० ‘कैटन’] हाथमें लटकाने लायक
चिमनीदार ऊँच ।

काकड़ी-की० नख और बालियोंमें मोतीके दोमों और
लगाया जानेवाला काल रंगका पत्तर ।

काक-पु० बालक, प्यारा बच्चा; प्रिय व्यक्ति; † चिरीजी;
[सं०] प्यार करना; बहुत अधिक ठाढ़ करना; प्यार; बूढ़े
जैसा एक विशेष जंतु । वि० प्यार करनेवाला ।

काकना-सं० कि० प्यार करना; इच्छा करना ।

काकनीय-वि० [सं०] प्यार करने योग्य ।

काक कीसा-पु० (रेडडेविज्म) सरकारी कागजपत्रों,
फाइलों आदिको बाँचनेमें काम जानेवाला काल पीता;
सरकारी कार्योंमें जानेके बहुत अधिक अनुसरणसे, होने-
वाली देरी, दीर्घसूता ।

काकमी-की० एक तरहका छोटी जातिका खरबूजा ।

काकरी-की० काकरी, काल रंगका नगीना ।

काकस-वि० [सं०] चंचक; जिसे किसी चीजकी प्रकृति
इच्छा हो; लोभपु; लोभ; असुख । पु० काकसा; तल्लीनता ।
काकसक-वि० [सं०] दे० ‘काकस’ ।

काकसा-की० [सं०] किसी चीजके पानेके लिए अल-
पिक इच्छा, अभिलाषा; औत्सुक्य; गर्मिणीकी इच्छा, दो-
हदा; एक बूढ़ा; सेद; अनुजय ।

काकसी-वि० इच्छुक, उत्सुक, इच्छा करनेवाला ।

काकसीक-पु० [सं०] रसा, खीरवा ।

काका-पु० आदर-सूचक संबोधन; कायस्थ, खत्री आदि
जातियोंका सूचक शब्द; छोटे, प्रिय व्यक्तिके लिए संबोधन-
का शब्द; [सं०] एक प्रसिद्ध फूल । * पु० दे० ‘काको’;
आफत-‘काका प्रानलकी बरत कइत न कोक बाग’-
कलस । वि० काल रंगका । की० [सं०] शुक्लाव, रात,
बूक । -किका-वि० कारसे तर । -काव-पु० जंगल
मूचना । -प्रमेह, -मेह-पु० प्रमेह रोगका एक मेद
जिसमें राकबी तरह पेशाब निकलता है । -भक्ष-पु०
एक नरक (पु०) । -किक-पु० वह जंतु जिसकी राकमें
विष हो (मकड़ी आदि) । -काव-पु० रात बहना;
मकड़ी । -काव-पु० रात, बूक बहना; मकड़ीका जाका ।
काकाटिक-वि० [सं०] ककाट-संबंधी; निकम्मा । पु०
दसविध रहनेवाला जोकर; वैदिक रहनेवाला, कालकी
आदमी; आदिगनका एक प्रकार ।

काकाटी-की० [सं०] ककाट ।

काकाव-पु० [सं०] मूच्छा ।

काकाविल, काकावु-वि० [सं०] लार टपकाता हुआ;
सुम्भ, ललचावा हुआ; प्यारा; दुलारा ।

काकिक-पु० [सं०] मीसा ।

काकित-वि० [सं०] प्यार-दुलार किया हुआ । पु०
आनंद; प्रेम ।

काकितक-पु० [सं०] प्रिय व्यक्ति ।

काकित-पु० [सं०] लग्न होनेका भाव, लौदर, रम-
णीयता; हाथ-भाव ।

काकिनी-की० [सं०] कासुक की ।

काकिमा-की० आली, मुली ।

काकी-की० काकिमा, मूखी; इज्जत, आभार; पीसी हुई
रूंद, सुरखी; प्रेतावित होना; * काकी लकड़ी, लम्बी ।

कासी(लिम्)-पु० [सं०] (किचोकी) कुमार्गपर ले जाने-
वाला पुरुष । वि० दुलार-प्यार करनेवाला ।

काकील-पु० [सं०] अग्नि ।

काकुका-की० [सं०] एक तरहका हार ।

काके-पु० अरमान, इत्तिस । सु०-पचना-किसी चीज-
को पाने, देखनेके लिए तरसना, लालायित होना ।

काको-पु० दे० ‘काके’; संकट ।

काकव-वि० [सं०] कालन, प्यार करने योग्य ।

काकवा-पु० काल रंगका एक प्राय ।

काव-पु० [सं०] कवा नामक पक्षी; काटना; खर-खर
करना; नष्ट करना । वि० काटनेवाला; नष्ट करनेवाला ।
* की० आंच, भाग्य; ली, लगन, प्रीति; † रस्सी; बंधक
रखी हुई चीजपर दी जानेवाली रकम; एक बरसेसे एक
दिनमें खांची जाने योग्य भूमि । -दाह-पु० तोपमें बली
लगानेवाला । वि० हागनेके लिए तैयार (तोप) । -
कक्कर-पु० सामग्री, सामान, अस्त्राव । सु०-ककसा
-बरसेसे पानी निकाल कर लेत खींचना ।

काक-पु० [सं०] कवा पक्षी; काटनेवाला, विभाजक; †
पानकी कसल (बाफेकी); खरसा मोट, पुरबटमें बैठीके
एक बार जाने-जानेका फेरा, काल ।

काक-पु० चमड़ा मला हुआ एक प्राचीन बाजा ।

कवय-वि० [सं०] कवयकुल, नमकीन; जिसका संस्कार कवयसे किया गया हो (जीवध आदि)। पु० ब्रह्मदीपके चारी ओरका समुद्र; सुन्दरी, नृत्य। -**सौवय-वि०** समुद्र-तटवर्ती।

कवयार्ता-पु० नमिर्वाणी एक जाति।

कवयार्थ-वि० [सं०] कवय-संबंधी; नमकका; कवय द्वारा संस्कृत (जीवध आदि); सुंदर। पु० कवय-निकेता; कवय-पात्र।

कवयव-पु० [सं०] कवयव, नमकीनी; सुंदरता; सुशी-कता। -**कविल-वि०** सौंदर्यविशिष्ट। -**कवरी-जी-की०** अत्यधिक सुंदरता।

कवय्या-की० [सं०] ग्राही वृद्धि।

कवय्याविल-वि० [सं०] सौंदर्य द्वारा प्राप्त। पु० जी धन; इहेव।

कवयस्ता-की० कवयव, सुंदरता।

कवया-सं० कि० काना।

कवयि-की० कवयव, सुंदरता।

कवनी-की० एक गीत-छंद; एक तरहका चकता माना।

-**बाज-वि०** कवनीका घोकीन; कवनी गानेवाला।

कवयाली-वि० निबर, बेकिर। की० आचारगी, बेकिरी, शोली। पु० अचारी वा बेकिर आदमी।

कवा-पु० कवा पक्षी; कावा, खीर। -**परकन-पु०** एक वैवाहिक रीति। मु० -मेक देवा-मंत्रसे उच्चाटन करना।

कावा-पु० [मं०] उवाकासुखी पर्वतसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ।

कावाणक-पु० [सं०] मगधके पासका एक प्राचीन देश।

कावारा-वि० आचारी।

काविक-पु० [सं०] भेसा।

काविका-की० [मं०] कवा पक्षी; भेसा।

कावु-पु० [मं०] दे० 'काव'।

काव्य-वि० [सं०] काव्ये योग्य।

कास-की० [फा०] सूत देह, श्व। मु० -ढठना-मर जाना। -**गलिर्बीसे किचवाना-मरनेके बाद जलील करना। -पर कास गिरना-(युद्धमें) काशोंका डेर लग जाना।**

कासा-पु० [फा०] अति दुर्बल, क्षीणकाय जन; मृन्देह; काश।

कास-की० कास, काह। वि० कास, सौ हजार-'पैका पैका जोइहाँ जुकिसे कास करीह'-कनरी।

कापवा-सं० कि० कासे छेद बंद करना।

कापुक-वि० [सं०] कौतुक, मालवी।

कास-पु० [सं०] उच्छ्वस; नृत्य; रास; स्त्रियोंका कोमल भावमय नृत्य; जस, रसा; कार।

कासक-वि० [सं०] क्रीडारत। पु० मयूर; नाचनेवाला; अभिनेता; शिषका एक भाग; आळिमान; एक अक्ष; सप्तसे ऊपरकी मंजिकपरका कमरा; पक्ष।

कासकी-की० [सं०] नर्तकी, अभिनेत्री।

कासव-पु० [सं०] पर-संचारक; नाचना।

कासा-पु० कसरा, निपचिपी, चिपकनेवाली चीज;

फंसाने, चिपकनेवाली चीज, मोद, वेप। मु० -कसावा-लगवा करना; फँसना। -हो कासा-चिपक जाना; पीछा न छोड़ना।

कासि, कासु-पु० दे० 'कास'।

कासिक-वि० [सं०] नाचनेवाला।

कासिका-की० [सं०] नर्तकी, वेधवा; उपरूपकका एक भेद।

कासी-की० गेहूँमें लगनेवाला एक काका बीड़ा, काही; कस्ती।

कासी (सिक्)-वि० [सं०] नृत्य करनेवाला।

कासोटनी-की० [सं०] छेद करनेका एक औजार।

कासव-पु० [सं०] नृत्य; बह नृत्य जिसमें बाघ और गंतिका योग हो; की-नृत्य; नर्तक, अभिनेता।

कासक-पु० [सं०] नृत्य।

कासा-की० [सं०] नर्तकी, अभिनेत्री।

काह-की० कासा, कास, काही; चमक, कांति। पु० काम, मुनाफा।

काहक-पु० दे० 'काहील'।

काहिक-वि० [फा०] जो पीछेसे आकर मिले; लगा, जुड़ा हुआ; पीछे लगा हुआ (होना)।

काहिजा-वि० [अ०] समुक्त, संलक्ष।

काही-की० कास; वेदा करनेवाला काल बीड़ा; फसलके लिए हानिकर एक बीड़ा जो विशेषकर गेहूँ-जोमें लगता है; सरसों; लाह, खीर। वि० मटमैलापन लिये कास, काहके रंगसे धिक्ता हुआ।

काहीरी नमक-पु० सेंधा नमक।

काहील-[अ०] शैतान वा दुष्ट अनात्माओंकी मगानेके लिए प्रयुक्त, 'काहील बका कूबत इहाविहा'का पहला शब्द जो हुणा, बिरिक या बुरी बातपर खेद प्रकट करनेके लिए शोलते हैं। मु०-पड़ना-विधाव आदिको मगानेके लिए 'काहीलबकाकूबत' पड़ना; लानत भेजना।

किंग-पु० [सं०] चिह्न, किसी वस्तु, पदार्थकी पहचानका साधन; नकली चिह्न; प्रमाण; कारण, अनुमान, साधक हेतु (न्या०); प्रधान, मूल प्रकृति (मा०); पुरुषकी जननेंद्रिय, शिवा; शिवालिंग; देवमूर्ति; शब्दोंका पु०, की० आदि-संबंधी भेद (भ्या०); रोगग्रस्त लक्षण; अर्थव्यक्त शक्ति; किंगनिर्णयके छः लक्षण (मा०); एक पुराण। -**देह-की०**, -**शरीर-पु०** सूक्ष्म देह, शत्रुके बाद फलयोगके लिए जीवार्थमाके साथ काम रहनेवाला सूक्ष्म शरीर। -**घर-वि०** केवल चिह्न धारण करनेवाला, दोगी। -**जारी (सिक्)-वि०** चिह्न धारण करनेवाला। -**नास-पु०** परिचायक चिह्नका नास; अंधकार; नीलिका नामक नेत्र रोग; शिषका नाश। -**पीठ-पु०** अरवा। -**पुराण-पु०** अठारह पुराणोंमेंसे एक। -**प्रसिद्ध-की०** शिवालिंगकी स्थापना। -**मात्र-पु०** प्रसा। -**बर्तिस-की०** जननेंद्रियका एक रोग। -**बर्तिस-वि०** किंगमें उत्तेजन लानेवाला। पु० कैम। -**बर्तिसी-की०** [विचरा, जगामाग]। -**बर्तिस (सिक्)-वि०** दे० 'किंगबर्दन'। -**हृत्ति-पु०** वेश बनाकर जीविका अर्जन करनेवाला; नकली साधु। वि० दोगी, आदवरी। -**बैदी-की०** अरवा। -**सौक-पु०** शिषकी सूजन।

—रुच-पु० ब्रह्मचारी ।

लिंगक-पु० [सं०] कैयका पक्ष ।

लिंगक-पु० [सं०] गले मिलना, आलिंगन ।

लिंगबान् (बन्)-वि० [सं०] चिह्नबाला । पु० एक सैन्य संप्रदाय जो गलेमें किंवा धारण करता है, लिंगावत ।

लिंगावत-पु० एक सैन्य संप्रदाय, लिंगबान् ।

लिंगार्चन-पु० [सं०] शिवलिंगका पूजन ।

लिंगार्ध (स्)-, लिंगोपरार्ध-पु० [सं०] जननेंद्रियका एक रोग ।

लिंगालिका-स्त्री० [सं०] एक तरहका चूड़ा ।

लिंगिक-पु० लैंगवापन ।

लिंगिनी-स्त्री० [सं०] धर्मका आडंबर करनेवाली स्त्रीः एक लता ।

लिंगी (सिद्ध)-पु० [सं०] ब्रह्मचारी; वेदभूषामे काम, जीविका, चलानेवाला; शायी; शिवलिंग पूजनेवाला; ढोली; परमात्मा; कारण, मूल; एक सैन्य संप्रदाय । वि० चिह्न-बाला; आर्चन; चिह्न धारण करनेका अधिकारी; जिसके मन और कर्ममें अनुरूपता हो; लिंगदेही । —(वि) लैंग-पु० ब्रह्मचारीकी पोशाक ।

लिंगेश्वर-स्त्री० [सं०] शिव, पुरुषको मूर्त्येद्रिव ।

लिट-पु० [अ०] बाधमें भरनेका एक तरहका नरम कपड़ा ।

लिट्टर-पु० [अ० 'लिटेल'] दरवाजे आदिके ऊपर की जानेवाली एक तरहकी ईंटोंकी जोड़ाई जिसमें नीचे कोई सहाय देनेकी आवश्यकता नहीं रहती ।

लिट्ट-वि० [सं०] जिसपर पैर फिसले, पिच्छिक ।

लिप्-पु० [सं०] लेप करना, पोतना; लिपिका एक अनुचर ।

लिपट-वि० [सं०] कामुक । पु० कामुक व्यक्ति ।

लिपाक-पु० [सं०] जंबीरी नीबू; गर्दभ, गधा ।

लिपि-स्त्री० [सं०] दे० 'लिपि' ।

लिप्-निमित्त, प्रयोगन आदिके सूचनके लिपि ('के'के साथ) प्रयुक्त होनेवाली संप्रदान-कारककी विभक्ति ।

लिपिज+—संबी टोंगोवाला पक्षिविशेष ।

लिकुच-पु० [सं०] दे० 'लकुच' ।

लिफ्फाव-पु० बहुत बड़ा लेखक (अभ्यर्थी) ।

लिफ्फा-स्त्री० [सं०] लीख, जूँका अंडा; एक परिमाण जो बहुत छोटा, आठ त्रस्तरेणुके बराबर होता है ।

लिफ्फिक-स्त्री० [सं०] लीख ।

लिख-वि०, पु० [सं०] लिखनेवाला ।

लिखत-स्त्री० दे० 'लिखिन' पु० । —पद्य-स्त्री० लिखा-पद्यका कागज ।

लिखवार-पु० एक लेखक, मुहरिर ।

लिखन-पु० [सं०] लिखनेकी क्रिया; चित्रकारी; दस्तावेज; लफट-रेखा, होनी ।

लिखना-सं० कि० कोई बात लिपिबद्ध करना, कागज आदिपर उठारना; रेखाएँ, चिह्न खींचना; चित्र बनाना; ग्रंथ रचना । मु० —पद्यना-अभ्ययन करना, विचारन करना । [किसीके नाम लिखना-किमीके त्रिमे पावना लिखाना ।]

लिखनी+—स्त्री० लेखनी, कलम; लिखनेकी क्रिया या काम; प्रारम्भ, होनी ।

लिखवाई—स्त्री० दे० 'लिखाई' ।

लिखवाना-सं० कि० दे० 'लिखाना' ।

लिखवार-पु० दे० 'लिखवार' ।

लिखाई—स्त्री० लिखनेका काम; लिखनेकी मजदूरी; लिखावट; लेख, लिपि । —पद्याई—स्त्री० विद्योपाजन ।

लिखाना-सं० कि० लिखनेका काम किसी अम्बसे कराना । मु० —पद्याना-लिखा देना; लिपिबद्ध कराना ।

लिखापड़ी—स्त्री० किसी ठहराव, शर्तके कागजपर लिखकर पका करना; पत्र-व्यवहार, चिट्ठियोंका आदान-प्रदान ।

लिखावट—स्त्री० लिखनेका ढंग; लिपि, लेख ।

लिखित-वि० [सं०] लिखा हुआ । पु० लिखी बात, लेख; प्रमाणपत्र, दस्तावेज; रचना, पुस्तक । —पाठक-पु० हस्तलिखित लेख आदि पढ़नेवाला ।

लिखितक-पु० [सं०] एक तरहके पुराने चौकीर अक्षर ।

लिखितम्ब-वि० [सं०] लिखने, चित्रित करने योग्य ।

लिखिता (तु)-पु० [सं०] विवहार ।

लिखेरा-पु० लेखक ।

लिख्य-पु० [सं०] लिखा ।

लिख्या-स्त्री० [सं०] दे० 'लिखा' ।

लियु-पु० [सं०] वृक्ष; बिरन; हडय; भू-प्रदेश ।

लिच्छवि-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजवंश (हसका शासन नेपाल, मगध और कोशलमें था । उद्भू, महावीर इसी वंशमें हुए थे) ।

लिहाना-सं० कि० पौष्टाना, किसीको लैटमें प्रवेश करना ।

लिहोरा-पु० लिहोरा ।

लिट्ट (ट्ट)-वि० [सं०] चाटनेवाला (ममामामन) । पु० मद पवन ।

लिट्ट-पु० मोटी रोटी (विशेषकर आगपर सेकी हुई) ।

लिट्टी-स्त्री० आगपर सेंककर तैयार की जानेवाली बाटी ।

लिट्टोरा+—पु० एक नमकीन पकवान ।

लिहारा+—पु० गीदड़ । * डरपीक, कायर ।

लिहोरी+—स्त्री० रबीकी फसल पीटनेके बाद ढोठमें लगे रह जानेवाले दाने ।

लिप-पु० [सं०] पौनना, लेप करना ।

लिपटना-अ० कि० सट जाना, चिपकना; आलिंगन करना, किसी काममें मनोयोगपूर्वक लग जाना ।

लिपटाना-सं० कि० सटाना, चिमटाना; गले लगाना ।

लिपट्ठा-पु० कपड़ा । वि० चिपचिपा ।

लिपट्टी-स्त्री० लैट्टी तरह गीला पदार्थ, कपड़ा-लता ।

लिपना-सं० कि० गोभी बीजसे पोता जाना; रंग आदिका फैल जाना । लिपापुता-वि० माफ, स्पष्ट; जिसपर रंग या और कोई चीज फैल गयी हो ।

लिपवाना-सं० कि० लीपनेका काम कराना ।

लिपाई—स्त्री० लीपनेकी क्रिया; लीपनेकी उन्नत ।

लिपाना-सं० कि० लेप करना, पुष्टाना, गोबर, मिट्टी आदिकी तरह चढ़वाना ।

लिपि-स्त्री० [सं०] लिखावट; लिखनेकी पद्धति (जैसे

रोमन, नागरी, जरबी (किपि); पत्र, लेख, खादि; लेप; विपकारी; बाह्य रूप। -कर, -कर-पु० लेखक, कुर्क; लेप करनेवाला। -करी (पु०) विपकारी। -क्याम, -क्याम-पु० लिखनेकी कला। -क्यास-पु० लिखनेकी क्रिया। -कलक-पु० पत्थर, धातुपत्र, तस्वी, पत्र आदि। -कल-वि० लिखा हुआ। -सजा-क्री० लिखनेका साधन।

किपिक-पु० [सं०] लेखक, कुर्क।

किपिक-क्री० [सं०] दे० 'किपि'।

किपी-क्री० [सं०] दे० 'किपि'।

लिह-वि० [सं०] किसी चीजमें पुता हुआ, चर्चित; भासक, अमुरत; ढका हुआ; फँसा हुआ, व्यसनारिमें डूबा हुआ; खरा किया हुआ; विपाक किया हुआ; खाया हुआ; मिला हुआ।

लिहक-वि० [सं०] विषमें गुहावा हुआ। पु० विषमें गुहावा हुआ भाग।

लिहा-क्री० [सं०] मिनटके बराबर एक कासमान; अंशका घाठवाँ भाग।

लिसि-क्री० [सं०] लेप।

लिसिका-क्री० [सं०] दे० 'लिहा'।

लिप्सा-क्री० [सं०] पानेकी इच्छा; इच्छा।

लिप्सित-वि० [सं०] जिसे प्राप्त करनेकी इच्छा की गयी हो, अभिलषित।

लिप्सितव्य-वि० [सं०] अभिलषणीय।

लिप्सु-वि० [सं०] पानेकी इच्छा रखनेवाला, इच्छुक।

लिप्ताक्री-पु० [अ०] खोल; कागजका पैला; कागजका चौकीर पैला जिसमें चिट्ठियाँ इ० रखकर भेजते हैं; मुद्रिका कपन; (ला०) पहनावा; (ला०) दिखाऊ सामान, ठाटपाट; (ला०) जर्दी, टूटने-फटनेवाली चीज। मु० -खुल जाना -भंग प्रकट होना। -बदलना -ठाट बदलना, नयी वेश-भूषा धारण करना। -बनाना -ठाट बनाना।

लिप्ताक्रिया-वि० कमजोर, चटरीजा (गहने इ०); दिखाऊ।

लिपकना-अ० कि० लथपथ होना, सनना (कीचड़, मीठी वस्तु आदिमें)।

लिपकी-क्री० [अ० ('लिपरी')] चुगकी, कपका-लुत्ता।

-बलाना; -बारवाना-पु० गुजर, निर्बाहका सामान।

लिबरक-वि० [अ०] उदार; उदारनीतिवाला। -पार्टी-क्री० एक राजनीतिक दल (इंग्लैंड, भारत)।

लिबास-पु० [अ०] पहननेका वस्त्र, पोशाक; भेस; कुर्क। [रस्मी लिबास-पु० दरबारी, सास मौकोंपर पहननेकी पोशाक।]

किपि, लिपि, लिपी-क्री० [सं०] दे० 'किपि'।

लिबाकृत-क्री० [अ०] योग्यता, बुद्धिमत्ता; गुण; शील; पात्रता; सामर्थ्य।

लिबाट-पु० दे० 'लुकाट'।

लिबार-पु० माथा; कुर्सें सटकर मोटका पानी उठेलनेका जरा गहरा बना हुआ स्थान।

लिबारी-पु० रंगरेज।

लिबोरी-वि० लालची, लोभी।

लिब-क्री० ली, लगन-देखकर राज रहेंदु लिब काह' -कबीर।

लिबर-पु० [अ०] जर उठानेवाला दंड या बंत्र; बहुत।

लिबाना-म० कि० बमना, पकाना; लानेका काम करना; साथ लाना।

लिबाक-पु० खरीदार; लेनेवाला।

लिबेरा-पु० लेनेवाला; लानेवाला।

लिह-वि० [सं०] क्षमप्राप्त, जो क्षीण हो गया हो।

लिप्स-पु० [सं०] नर्तक, अभिनेता।

लिप्ताम-क्री० [अ०] नीम, जवान; भाषा।

लिप्तोहा-पु० दे० 'लुतोहा'।

लिस्ट-क्री० [अ०] सूची, फेहरिस्त।

लिह-वि० [सं०] चाटनेवाला (समासात्ममें)।

लिहाज-पु० [फा०] ध्यानसे देखना; ध्यान, खयाल; खास खयाल; रिखायत, मुलाहजा; मंकीच, अदब; लज्जा (करना, रखना)।

लिहाजा-अ० [अ०] इसलिये, अतः; निदान।

लिहाका-वि० नीच, खराब; निकम्मा।

लिहापी-क्री० हँसी, निहा। मु० -लेना-निहा करना, बनाना।

लिहाक-पु० [अ०] मोटा रजार्, बोरेकी धूल; किसी चीजका रस, बरस बगाते ममय उसके ऊपर रखी जाने-वाली दवा (सि०)।

लिहित-वि० चाटना हुआ।

लीक-क्री० लई; रेखा; माफी; सर्व आदिके बहनेसे बनी हुई रेखा; पगढी; मर्वाद; लोकरोति, रस-रिवाज; गणना; प्रतिबंध, लाइन, दाग; जूँका अर्थात्। मु० -कनके -लीक खींचकर। -लीकना-रद निश्चय करना। -पीटना-पुरानी रस्मपर चलने जाना। -लीक चलना -रास्तेपर चलना; पुरानी रस्मपर चलना। -से बेखीक होना-गुमराह होना; पुरानी गाल छोड़ना।

लीक-क्री० [सं०] दे० 'लिहा'।

लीक-क्री० जूँका अर्थात् एक बहुत छोटी तौल, + लीक; मर्वाद।

लीग-क्री० [अ०] सम्रा; संघ; एक नाप (मालपर २ मील, समुद्रपर साढ़े तीन मील)।

लीक, लीकर-वि० सुल; चिपटनेवाला; लेन-देन साफ न रखनेवाला।

लीची-क्री० एक वृक्ष जिसका फल बहुत मोठा होता है; रस इक्षुका फल।

लीही-क्री० उबटन आदि मलनेपर निकलनेवाला देहका मेल; सीठी, रसहीन गूदा, रेशा। वि० नीरस; निस्तार; बेकाम।

लीबर-पु० [अ०] नेता, मुखिया, अग्रणी; तान-चार बिंदियोंवाला टाइप जिसका प्रयोग किसी असमाप्त कथनकी सूचनाके लिये होता है; अग्रलेख।

लीडिंग आर्टिकल-पु० [अ०] अग्रलेख।

लीह-वि० [सं०] चाटा, खाया हुआ; आखादित। -मुक -वि० जायका देखकर अस्वीकार किया हुआ।

लीयो-पु० [अ०] दे० 'लीयोप्राक'।

श्रीकोशिका-पुं० [अं०] पत्थरका छाया (रसमें एक विशेष प्रकारके कागजपर हाथसे लिखकर गरम किये हुए विशेष पत्थरपर छाप करारते है। यह उल्टा रहता है। यामें कागजपर छापनेपर अक्षर स्पष्ट हो जाते है।)।

श्रीकोशिकाकर-पुं० [अं०] श्रीमती छपाईका काम करने-वाला।

श्रीकोशिकाकी-श्री० [सं०] पत्थरपर छपाईकी कला।

श्रीहृ-श्री० गंधे, घोड़े, कच्छर आदि पशुओंका मल।

श्रीम-वि० [सं०] बिलीन; तन्मय; तत्पर; किसीके सहारे टिका हुआ; छिपा हुआ; ध्यानमग्न; संलक्ष्य; अभिधोषित; पिचका हुआ; गुला हुआ; लुप्त। पुं० संलक्ष्यता; अभिधोषण; लोप।

श्रीमता-श्री० [सं०] संलक्ष्यता; तत्कीनता; निःसंगता; उदासीनता।

श्रीमो टाडूप मल्लीम-श्री० [अं०] वह मल्लीन जिसमें पूरी पक्षि डलकर कंठोज होती है (प्रायः अक्षरोंके लिए प्रयुक्त)।

श्रीपना-सं० कि० पोतना; सकाईके लिए जमीन, दीवारपर मिट्टी, गोबरका लेप चढ़ाना। **शु०** -पोतना-सफाई करना। **श्रीप-पोतकर बराबर करवां-काम** विगड़ना, नष्ट करना।

श्रीचर-वि० मैल, कीचड़ आदिसे भरा हुआ। पुं० कीचड़ -'जिखियां लीवर बैसेनामै'-प्रायगीत; गंदगी, मैलापन।

श्रीचू-पुं० नीच।

श्रीद-श्री० पतका डकना, धब्बी -'बागाको दावन फट गयो और लीर झाक दे रह गयो'-झटछाप।

श्रीद-वि० नीचे रंगना। पुं० नील। -कंठ-पुं० दे० 'नीलकंठ'। -वक्र-वाचा-श्री० दे० 'नीलमाय'। -शरी-पुं० रंगरेज।

श्रीदक-पुं० देशी जूतेकी नोकपर लगाया जानेवाला हरा चमड़ा। वि० नील।

श्रीदमा-सं० कि० मिंगलना।

श्रीदवा-अं० [सं०] लेलमें; सहज ही।

श्रीदहि-अं० लेलमें, जनायास-'अति उत्तम तर सैल मन कीलहि लेहि ठाह'-रामा०।

श्रीकांडुज-पुं० [सं०] दे० 'नीलाकमल'।

श्रीका-पुं० गोदना; काला बोझ। * वि० नीला। श्री० [सं०] श्रीका, केलि; विलास, विहार; सौंदर्य; श्वगर-नेष्टा; प्रेमीका अनुकरण; अवतारीके चरित्रका अभिनय; रहस्यपूर्ण कार्य; एक भाषाशुद्ध; एक वर्णवृत्त। -कमल, -तामरस, -वध-पुं० विनोद या श्रीकाके लिए हाथमें लिया हुआ कमल। -कलह-पुं० श्रीकाके लिए किया जानेवाला कलह, प्रणयकलह। -गुह, -गोह, -बैद्य- (मृ)-पुं० श्रीका-भजन। -चतुर-वि० श्रीकामें कुशल। -ताल-पुं० संगीतका एक ताल। -मटन, -मृत्-पुं० श्रीकापूर्ण मूल। -पुष्पवोसम-पुं० विष्णुका जन्मवार। -मनुष्य-पुं० जन्मी मनुष्य। -वध-पुं० वज्रके नाकाका ओजार। -वापी-श्री० वह जलाशय जिसमें श्रीका की जाय। -मुक्त-पुं० विनोदके लिए पाका हुआ तीता। -साध्य-वि० मजबूत ही संपन्न होनेवाला। -

श्वक-पुं० श्रीकाका स्वाम।

श्रीकाक-श्रीकारविह-पुं० [सं०] दे० 'जीकाकमल'।

श्रीकाभरण-पुं० [सं०] देवक श्रीकाके लिए पहना हुआ भूषण (जैसे कमलका कंकन आदि)।

श्रीकाभय-वि० [सं०] श्रीकाभय; श्रीका-संघी।

श्रीकाधित-वि० [सं०] श्रीका करनेवाला; अभिनय करने-वाला। पुं० श्रीका; सहजसिद्ध कार्य।

श्रीकावली-वि० श्री० [सं०] श्रीका, विलास करनेवाली।

श्री० दुर्गाका एक नाम; सुंदर श्री; भास्कराचार्यकी पुत्री और उसकी बनावी हुई गणितकी एक प्रसिद्ध पुस्तक; एक शुद्ध स्त्रीकी रागिनी; एक मासिक छंद।

श्रीकाचावू(बह)-वि० [सं०] सौंदर्यमय, रमणीय; श्रीका-श्रीक।

श्रीकोशाम-पुं० [सं०] वह उद्यान जिसमें श्रीका की जाय।

श्रीवर-पुं० [अं०] तालमें खड़ेकी वह शक्ति जो उसमें लगनेवाली गलीकी बनावटसे मादूम होती है।

शुंग-पुं० [सं०] एक नीच, मादुलुंग।

शुंगी-वि० आबारा, लफंगा, बरमास।

शुंगी-वि० शुभा, बरमास।

शुंगी-श्री० छोटी घोंगी, तहमन; कपड़ेका डकका; खानवा।

शुंग-वि० [सं०] काटने, छीलने, नोचने, उखाड़नेवाला। पुं० काटना; छीलना; उखाड़ना।

शुंग-पुं० [सं०] काटने, नोचने, छीलने आदिकी क्रिया; जैन वसियोंका केशोत्पादन।

शुंग-श्री० [सं०] संक्षिप्त भाषण।

शुंगित-वि० [सं०] नोचा, उखाड़ा, काटा, झीला हुआ।

-केश-शुंग-पुं० जैन वसि (जिसके सिरके बाल नुचे हो)।

शुंग-वि० बिना हाथ-पैरका, लंगका-मूला; पनादिमें रहित।

शुंग-पुं० [सं०] एक साथ।

शुंग-श्री० [सं०] दे० 'शुंग'।

शुंग-पुं० [सं०] दे० 'शुंग'।

शुंगित-वि० [सं०] दे० 'शुंगित'।

शुंग-पुं० [सं०] एक तरकीबी वास।

शुंग-पुं० [अं०] चौर, छुटेरा।

शुंग-पुं० [सं०] चोरी, छुटा; छुड़कन।

शुंग-श्री० [सं०] चोरी; छुड़कन।

शुंग-पुं० [सं०] बाकू; कीमा।

शुंग-श्री० [सं०] लुटपाट।

शुंगित-वि० [सं०] लुटका हुआ; छुटा या चुराया हुआ।

शुंगी-श्री० [सं०] चोरी, छुटपाट; छुड़कना, लुटना।

शुंग-पुं० संक, कर्षण। -**शुंग-वि०** बिना सिर-पैर-हाथका(बक); लंगका-मूला; शाका-पक्वान्, हूँद; गठरीका-सा लपेटा हुआ।

शुंग-वि० पुच्छ-यंलहीन (बक); (बैक आदि) जिसकी पूँछपर बाक न हो। पुं० लपेटे हुए सड़की पिंडी।

शुंगित-श्री० [सं०] गंद, गोरक पिंड।

शुंगिताना-मं० कि० पिंडीके रूपमें कपेटना (मृत, रस्सी आदि)।

शुंगी-वि० जिसकी पूँछ या पर झड़ गया हो (चिड़िया)।

को० गिरी, गौरी (उपेदे हुए गौरी); [सं०] सद्व्यवहार विवेकशीलता ।
सुविधा-को० [सं०] एक तरहका ढोल ।
सुविधि-को० [सं०] कपिलवस्तुके पासका एक वन जहाँ बुद्धका जन्म हुआ था; एक राजकुमारी ।
सुभाट-पु० दे० 'सुभाठा' ।
सुभाठा-पु० जलती हुई या जलनकी लकड़ी ।
सुभाठी-को० छोटा सुभाठा ।
सुभाष-पु० [अ०] बुद्ध; कसदार रस (विह्वाने, हस-बोझ आदिका) । -**दाह**-वि० जिससे सुभाष निकले; कसदार ।
सुभाह-को० छ, गरम हवा-‘क्यों यह प्रीतमकी नीपम सुभाह है’-रसाकर ।
सुभजन-पु० एक अंजन जो लगानेवालेको अर्घ्य कर देता है ।
सुभ-पु० एक रोगन जो मिट्टीके बरतनोंपर चमक लानेके लिए लगाया जाता है; आगकी लपट; चिनगारी । -**दाह**-वि० जिसपर सुभ फेरा गया हो । -**साज**-पु० सुभ केरनेका काम करनेवाला ।
सुभना-अ० कि० छिपना, आरंभ हो जाना । **सु० सुभ** छिपकर-बहुत ही गुप्त रूपसे ।
सुभन-पु० [अ०] कौर, घास ।
सुभमान-पु० [अ०] कुराजमें वर्णित एक हकीम जो अपनी बुद्धिमत्ताके लिए प्रसिद्ध है । **सु०**-के पास हवा नहीं-रोसका प्रभाव होना । -**को** हिक्मतसिखाना-बुद्धिमानको अच्छा सिखाना; बेवकूफीकी बात करना ।
सुकारी⁺-को० सुभाठी, जली या जलती हुई लकड़ी ।
सुकाछिपी-को० सुकने-छिपनेका एक खेल ।
सुकाट-पु० एक वृक्ष या उसका फल ।
सुकाठ-पु० दे० 'सुभाठा'; दे० 'सुकाट' ।
सुकाना-सं० कि० छिपाना । अ० कि० छिपना, सुकना ।
सुकार-को० अग्नि, जलानेवाला शक्ति-‘व्यापते सुकार कर्वाते काम मारनको’-रत्ना ।
सुकारी⁺-को० एक सिरपर जलती हुई लकड़ी या फूसका पूला ।
सुकेडा-पु० जलती हुई लकड़ी, सुभाठा ।
सुकोना-सं० कि० छिपाना-‘...चोर करै केरि ललित सुन ना सुकोवे लू’-दीनदयाल ।
सुक्(ह)-पु० [सं०] लोप ।
सुकावित-वि० [सं०] छिपा हुआ, अदृश्य, नतर्हित ।
सुकोर⁺-को० सुकोर, लोमड़ी (बुढ़ेका) ।
सुखिवा-को० भूत औरत; पुंशरी, वेश्या, कुलटा ।
सुग-पु० कपड़ा; मोड़नी ।
सुग-को० [अ०] शब्द; भाषा; सम्बोधन । **सु०**-छोटना-**सावना**-पाठित्व-प्रदर्शनके लिए छिट, अन्ध-वर्णित सम्बोधन व्यवहार करना । -**सरावना**-शब्द गढ़ना; छिट सम्बोधनका व्यवहार करना ।
सुग-पु० गौरी चीजका मोला, छोटा (कमज आदि वस्तुओंके लिए वैधाय वस्तुका शारंगिक विचार) ।
सुगरी-को० पीसी हुई पीली वस्तुका पिंड ।

सुगरी-पु० कपड़ा; मोड़नी, छोटी चारर; कटा कपड़ा । † **वि०** सुगल्लोरी ।
सुगरी-को० कटीपुरानी पोती; † पीठ पीछे किसीका हाथ बढाना, चुगली ।
सुगरी-वि० [अ०] सुगतका, कीसगत; असली, मूल (अर्थ) । -**सागी**-पु० शब्दार्थ, असली माली ।
सुगरी-को० शी; पत्नी ।
सुगाव-पु० [अ०] 'सुगत'का बहुव०; सम्बोधन; सम्बोधन ।
सुगी-को० तुंगी; कटी पोती; लहंगेका किनारा ।
सुग्गा-पु० कपड़ा ।
सुगवना-अ० कि० सुदकना ।
सुगकना-सं० कि० झटकेसे कोई चीज छीन लेना ।
सुगरी-को० दे० 'सुगरी' ।
सुगवाना-सं० कि० नोचवाना ।
सुगुर-को० (मिट्टीकी) मर और पत्थरी पूरी ।
सुचा-वि० कोई चीज तुच्छकर भागनेवाला, चारें; कमीना, बदमाश; दुराचारी, लंछ ।
सुची-को० दे० 'सुगुर' । वि० को० दे० 'सुचा' ।
सुदंत-को० सुट ।
सुदकना-अ० कि० दे० 'सुदकना' ।
सुदना-अ० कि० डाकुओं आदि द्वारा छुटा जाना; बरबाद, तबाह होना; कोटना; निछावर होना-‘क्यों न झलभपर नट-सुट जाऊँ ।’
सुदरना-अ० कि० कोटना; सुदकना ।
सुदरा-वि० तुंकराका । [को०] 'सुदरी' ।
सुदना-सं० कि० किसीको सुदने देना; बचितसे कम दाम पर कोई चीज आहकरी देना; बरबाद करना; अंधाधुंध, बेरोक दान वा खर्च करना ।
सुदावना-सं० कि० दे० 'सुदना' ।
सुटिवा-को० छोटा कोटा । **सु०**-**हुवावा**-अपवशका काम करना; काम चौपट करना ।
सुदेरवा-पु० एक प्रकारका पक्षी ।
सुदेरा-पु० सुदनेवाला, डाकू ।
सुदव-पु० [सं०] सुदकने वा कोटनेकी क्रिया ।
सुदमा-अ० कि० भूमिपर लोट जाना, कोटना; सुदकना-‘सुदत सकने नीस चरन तर युग युग गन समये’-सूर ।
सुदावा-सं० कि० कोटना; सुदकना ।
सुठि-वि० [सं०] सुदका, गिरा वा लोटा हुआ । पु० कोटना (जैसे घोड़ेका) ।
सुधकना-अ० कि० दे० 'सुदकना' ।
सुधकाना-सं० कि० दे० 'सुदकना' ।
सुधकी, **सुधकी**⁺-को० दहीमें बनी हुई भांग ।
सुधसुधाना-अ० कि० कषकषाना ।
सुधकना-अ० कि० चकर खाते हुए जाने बढना वा गिरना, नोचे-ऊपर होते हुए फिसटना, रपटना ।
सुधकाना-सं० कि० कोई चीज इतनी तेजीसे फेंकना, डकेलना कि चकर खाती हुई बदे ।
सुधवा-अ० कि० सुदकना; गिरना; (पुष्प आदिका) चमन किया जाना, छोटा जाना ।
सुधवा-सं० कि० दे० 'सुदकाना'-‘कहाँ दखी देत

तुडा' ।

लुङ्गिवावा-सं कि० गोल तुपना, शुक्ला ।

लुङ्गि-वि० इमवा ल्गानेवाला, निरक, चुगलखोर; शराती; बदमाश । [ली० 'लुङ्गी' ।]

लुङ्गी-ली० दे० 'लुङ्गी' ।

लुङ्ग-ली० लोभ, लाल ।

लुङ्ग-पु० [अ०] रस, मजा; आनंद; लूनी; अनुभव; सौजन्य । -(क०) जिह्वा-पु० जीबनका सुख, जीविका मजा ।

लुङ्गि-ली० लोभ ।

लुङ्गा-पु० एक अगहनी धान ।

लुङ्गना-सं कि० फसल काटना; नष्ट करना; हटाना ।

लुङ्गाई-ली० सुंदरता, सलोनापन; फसल काटनेकी किया या मजदूरी ।

लुङ्गेरा-पु० फसल काटनेवाला; एक जाति जो शोरा आदि बनानेका काम करती है, नोनिया ।

लुङ्गवा-अ० कि० लुङ्गना, छिपना ।

लुङ्ग-वि० [सं०] छिपा हुआ; अदृश्य; अग्न; नष्ट; जो छुट किया गया हो; जिसका छोप हो गया हो; जिसका प्रयोग न होता हो । पु० लुङ्गा हुआ माक । -एव-वि० जिसमें एव (अव्य)का अभाव हो । -पिछोड़कल्लि-वि० जो आकाशसे बंचित हो गया हो । -प्रतिष्ठ-वि० जिसने अपनी प्रतिष्ठा भंग कर दी है । -प्रतिभ-वि० विवेकहीन ।

लुङ्गेपना-ली० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें उसके एक या एकधिक अंग लुप्त होते हैं ।

लुङ्गवा-अ० कि० लुङ्ग होना ।

लुङ्गरी-ली० पानी आदिमें नीचे बैठे हुआ मूँक, तल-छट, गद ।

लुङ्गु-वि० लुङ्ग, लुङ्गाया या लुङ्गवाया हुआ । पु० शिकारी; मेसी ।

लुङ्गुवर्गा-अ० कि० लुङ्ग, मोहित होना ।

लुङ्ग-वि० [सं०] आसक्त, राग, आकांक्षावाला; लुङ्गवाया, लुङ्गाया हुआ; मोहित; धनकाया हुआ । पु० व्याध; कामुक ।

लुङ्ग-पु० [सं०] लोभी व्यक्ति; कपट; बहेलिया; एक प्रकाशमान तारा ।

लुङ्गना-अ० कि० लुङ्ग होना ।

लुङ्गापति-ली० प्रौढा नायिकाका एक भेद (केशव) ।

लुङ्ग-पु० [अ०] सार भाग, गुहा, लुङ्गासा । -(छे०)

लुङ्गा-पु० सारका सार, निचोष; हट ।

लुङ्गा-अ० कि० आकृष्ट, मोहित, रागवुक होना; लालचमें पड़ना; लालसा करना । सं० कि० मोहमें डालना, बहकाना ।

लुङ्गित-वि० [सं०] धनकाया हुआ; अशांत; मुग्ध ।

लुङ्ग-पु० ईरानी नस्लकी एक पहाड़ी जाति जो उजबु-पनके लिए प्रसिद्ध है । -पन, -पना-पु० मूर्खता, उजबुपन ।

लुङ्गर्गा-अ० कि० शूलना; लटकना ।

लुङ्ग-पु० झुमका ।

लुङ्गी-ली० कानका एक आभूषण, कानकी हाकी; † दे० 'लुङ्गी' ।

लुङ्गा-अ० कि० लटकना, झूलना; झुक पड़ना; झिजना-झोका; एक बरगी आ जाना; मुग्ध, आकृष्ट होना ।

लुङ्गिवावा-अ० कि० पकाएक आ जाना; प्रवृत्त होना; प्रेमपूर्वक रसों करना, लपटना-झपटना-'बाचमके लेखा करत लुङ्गिवात है'-रत्नाकर ।

लुङ्गी-ली० हाककी व्यापी गाय ।

लुङ्ग-पु० [सं०] लटकना, लटकते हुए झूलना-झोका, झूलना ।

लुङ्गना-अ० कि० लहराना, लटकते हुए झूलना ।

लुङ्गा-पु० [सं०] भेसा । -कव-पु० मधिवर्धक । -कांता-ली० भेस ।

लुङ्गा-पु० [सं०] दे० 'लुङ्गा' । -केतु-पु० शिवका एक गण । -कडमा(इमर)-पु० यम ।

लुङ्गित-वि० [सं०] लटकता, झूलता हुआ; अशांत; विह्वल हुआ; दबाया हुआ; झपट; घुंघर । -कुंडल वि० जिसके कुंडल हिल रहे हों । -एल्ल-वि० हिन्दी पुरे टहनियोंवाला (हस्त) । -अंजन-वि० अभिराममें जिनके आभरण हिलते हों । -लगाकुल-वि० (विस्तर) जिसपर पुष्पहार बिखरे हों ।

लुङ्गार-ली० गरम और तपी हुई हवा, नू, गुआर ।

लुङ्ग-पु० [सं०] मस्त हाथी ।

लुङ्ग-पु० [म०] चतुष्का छोर ।

लुङ्गी-ली० लोहा-मदी काजी, लोहबदा ।

लुङ्गना-अ० कि० मोहित होना, ललपना ।

लुङ्गी-पु० एक अगहनी धान ।

लुङ्गार-पु० लोहेका काम करनेवाला; लोहेका काम करनेवाली एक जाति । [ली० 'लुङ्गारिन' ।]

लुङ्गारी-ली० लोहेका काम; लुङ्गारकी ली ।

लुङ्ग-पु० अमक-'लुङ्ग लुङ्ग' लोचनी मणि परे टुक लुङ्ग-साक्षी ।

लुङ्गी-ली० लोचनी ।

लुङ्गी-ली० तपी हुई बावु या उमका साँका । लुङ्गी-मारना, -लगाना-गम हवा लगनेमें उबर आदि हो जाना ।

लुङ्ग-पु० टूटा हुआ तारा, उल्का-'दिन की लूक परन बिधि लाये'-रामान; आगकी लपट, आला; जलती लकड़ी (जिसका कोई छोर जल रहा हो)-'यक लूक लीन्हीं बारि'-रघुराज । ली० गरमीकी तपी हुई हवा, लू ।

लुङ्ग-पु० आग; लुङ्गाठी-'जिह मुस पँचो अमृत खाये । तेहि मुस देखत लुङ्ग लोच'-कवीर ।

लुङ्गा-अ० कि० अगम लगाना, बलाना । अ० कि० छिपना ।

लुङ्गा-पु० आगकी लपट, आला; विनगरी; लकड़ी जिसका सिरा जलता हो-'हम थर जारा आपना, लूका लीन्हीं शाय'-साक्षी; †मछली फँसानेका जाक । लुङ्गी-लगावा-आग लगाना, जलाना; (कुँडमें)-लगाना-मुँह बलाना, सिरकार, अपमान करना (औरतीकी गाली) ।

लुङ्गी-ली० विनगरी; जलती हुई पतली लकड़ी । लुङ्गी-लगाना-आग लगाना; किसीको उपेक्षित होनेपर और

अपेक्षा-देवा ।

लक्ष-वि० [सं०] कक्षा ।

लक्ष-वि० दे० 'कक्षा' ।

लक्ष-सं० कपडा; चार, जोड़ी ।

लक्ष-पुं० वक्ष; बोटी ।

लक्ष-पुं० छत्र, चरती हुई कक्षी ।

लक्ष-की० लक्ष्मी किवा, कक्षी; अपहृत, लक्ष हुआ ।

मात्र । -कक्षी-की० लक्ष्मी; आर्थिक सौभाग्य ।

लक्ष-पाद; -मार्-की० लोगोंकी शारीरिक संख्या

देकर कक्षा प्रन होना ।

लक्ष-पुं० छुरे, बाण; छुरतामें बंद जानेवाला ।

लक्ष-सं० कि० जबरदस्ती छेदना; बरबाद, तबाह

करना। बोले, अन्धाय, अनुचित दंगले मिलीका धन ले

लेना। उचितसे अधिक दास लेना, छेदना; महीभूत करना,

मोहना; भोगना । पुं० -लक्ष-नामक दंगले मिली-

का कल सौभाग्य, ले लेना । -पाद-लक्ष्मी करना ।

लक्ष-की० दे० 'लक्ष' ।

लक्ष-पुं० एक पैरवर जो इन्धानके भतीमें वे और जिनके

द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय, कुरानके अनुसार, पुरुषमें पुनके

पापमें, ईश्वरका कोपभाजन होकर, नष्ट हो गया । * की०

५५५ । वि० [सं०] लक्षिण, विमल ।

लक्ष-की० [सं०] मकरी; फफोले जैसी फुलियाँ (बड़ा

जाता है, ये मकरीके मूत्रमें होती हैं); बंटी । -लक्ष-

पुं० मकरीका जात । -पट्ट-पुं० मकरीका अंश । -अक्ष-

पट्ट-पुं० वनमातुल ।

लक्ष-पुं० [सं०] शीत ।

लक्ष-पुं० [सं०] मकरी नामक रोग ।

लक्ष-पुं० [सं०] एक छुप ।

लक्ष-की० [सं०] छोटी मकरी ।

लक्ष-पुं० लक्ष नामके रैमवर द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय या

संस्था व्यक्ति; लक्ष्मी । * की० लक्ष्मी । पुं० -

लक्ष्मी-लक्ष्मी, आन लक्ष्मी ।

लक्ष-पुं० दे० 'लक्ष'; [सं०] पूँछ । वि० कटा हुआ; नष्ट

किया हुआ; कुतरा हुआ; आहत; छिद्रा हुआ । -पुच्छ-

-वि० जिसमें अपने पाप नष्ट कर दिने हैं । -पक्ष-

-वि० जिसके पर कटे हों, परकीव । -विष-वि० दे०

'लक्षविष' ।

लक्ष-पुं० लक्ष्मीधार; लक्ष्मी; [सं०] विभाग; दास;

प्रकार; अंतर; एक जानवर; कटा या टूटा हुआ पदार्थ ।

वि० कटा हुआ; विभक्त ।

लक्ष-सं० कि० (कक्ष) काटना ।

लक्ष-पुं० एक राग (छद्म स्वरोंका); [सं०] पूँछ, काण्ड ।

-विष-वि० पूँछके अंक नारनेवाला । पुं० मेला जीव

(विष्णु आदि) ।

लक्ष-की० कीलकी ।

लक्ष-सं० कि० लक्ष्मी; लक्ष्मी ।

लक्ष-वि० लक्ष्मी, जगन्नाथ (शिवस्वरूपमें) ।

लक्ष-सं० कि० दे० 'लक्ष्मी' ।

लक्ष-वि० विना बाधका; वैकल्या; अलक्ष्य ।

लक्ष-पुं० [सं०] मेक ।

लक्ष-वि० आसक्त; लक्ष्मी । पुं० -लक्ष्मी-पूर्व ठह-

रावा (शालीमें); उपवास, निद्रा करना ।

लक्ष-की० लक्ष्मी ।

लक्ष-की० लक्ष्मी ।

लक्ष-पुं० [सं०] मल ।

लक्ष-पुं० लक्ष्मी नाम जो मोटी बस्तीके रूपमें लिख-

कता है ।

लक्ष-की० बकरी आदिका गोक बँधा हुआ मल ।

लक्ष-पुं० कानजका एक लिहोना जो मिहाने या

जुड़कानेपर लपटा हो जाता है ।

लक्ष-पुं० [सं०] किरणोंकी केंद्रभूत करनेवाला लक्ष्मीका

ताल ।

लक्ष-की० दे० 'लक्ष्मी' ।

लक्ष-पुं० (चोपायोंका) समूह, मुंड ।

लक्ष-की० (नेलों, बकरियों आदिका) मुंड ।

लक्ष-सं० छुट्ट होकर तल ।

लक्ष-सं० तल, पर्वत ।

लक्ष-की० कपटी; विपक्षमेंके कानके लिए मोलकर पकड़ा

हुआ आटा; ईंटोंकी जोड़के लिए बाड़ा दिया हुआ

सुरही मिलित बारीक चूना । -लक्ष-की० सर्वज्ञ, सारी

जगत् ।

लक्ष-पुं० [सं०] व्याख्यान, भाषण, प्रवचन । -लक्ष-

-की० लक्ष्मी देना; बहुत सौभाग्य, बकवास करना ।

पुं० -लक्ष्मी-लक्ष्मीके साथ सौभाग्य या व्याख्यान देना ।

लक्ष-पुं० [सं०] बका, भाषण करनेवाला; -लक्ष-

प्राध्यापक ।

लक्ष-पुं० [सं०] पक्षि; लिखावट; लिखी बात; पक्ष;

लेखा, हिसाब-किताब; देवता । * वि० लिखने या लेखा

करने योग्य । * की० पक्षी वाता; रेखा । -लक्ष-पुं०,

-पक्षि-की० पक्ष; दस्तावेज । -पक्षि-प्रमाण-

-की० लिखनेकी शैली । -लक्ष-की० लिखना लिख-

कानेका विधाकरण । -लक्ष-पुं० लेख-लक्ष्मीका छत्र ।

-लक्ष-पुं० लिखनेका साधन । -लक्ष-लक्ष-पुं०

पत्रवाहक । -लक्ष-वि० पत्र ले जानेवाला ।

लक्ष-पुं० [सं०] लिपिकार; लिखनेवाला, कुर्क; विपकार;

प्रचर-चरिता; पत्राधिके लिए लेख लिखनेवाला; पक्ष; कृत ।

-प्रमाण-पुं० लिपिकारकी छत्र ।

लक्ष-वि० [सं०] लक्ष्मीदेना; लक्ष्मी । पुं० लिखनेका

काम; लिखनेकी कला; विपकारों कृतना; लेखा छत्रावा;

कै, बमन करना; जीवन्ते रक्षासे साथ धातुओं, विरोधों-

की पक्षा करना; उत्तेजन; काटना; कर्तव्य (लक्ष्मी दे०);

विरोधोंका कर्तव्य करनेवाली अपेक्षा; भोजन; लक्ष-

पक्ष एक तरफ़ तरफ़ (विपक्षी कर्म बमन जाती जाती

है); लक्ष्मी; लक्ष्मीका लक्ष्मी । -लक्ष-की० सात

धातुओं, विरोधों, बमन आदिकी सत्ता करनेवाली

विपक्षी । -लक्ष-पुं० कर्म आदि । -लक्ष-की०

लक्ष्मी (पत्र-पत्र रक्षा) दे० 'लक्ष्मी कर्मोपपन्न' (लक्ष-

पक्ष १ में) ।

लक्ष-वि० लिखनेवाला, लेखक ।

लक्ष-सं० कि० लिखना; लिख बताना; हिसाब लगाना;

लेखिका, समझना। **मु०** - जोखना - ज्ञात करना।
 लेखना; जीव करना।

लेखनिक-पु० [सं०] पत्रवाहक; लिखनेवाला; अपने बच्चे
 दूसरेसे दस्तावेज करानेवाला गिरफ्तार व्यक्ति।

लेखनिका-ली० [सं०] दुकान।

लेखनी-ली० [सं०] लिखने, अक्षर बनानेका साधन,
 कलम, बर्णतुलिका; कलम। **मु०** - डटाया-लिखना
 शुरू करना।

लेखनीय-वि० [सं०] लिखने योग्य; मोटापा आदि
 घटानेमें उपयोगी।

लेखपाल-पु० दे० 'पटवारी'।

लेखार्थ-पु० [सं०] वेवश्रेष्ठ, रस।

लेखाई, लेखाई-पु० [सं०] (पैसेज) किसी लेखाशिका
 बंद।

लेखा-ली० [सं०] रेखा; चित्रण; कृत्रिम; लिखा लिखना;
 मंद चंद्रमस; शरीरपर चंदनविले रेखाएँ बनाना।
 -बख-पु० चारों ओरसे घेरनेवाली रेखा। -बिबि-
 ली० चित्रांकन। -खिचि-ली० चौकीका संविलसक।

लेखा-पु० हिसाब; आव-व्यवका; व्ययिक्त अंदाज; विचार।
 -पल्ल-पु०, -खड़ी-ली०-हिसाब-विचारका कागज;
 रीकनबरी। **मु०** -लेख करका-हिसाब साफ करना;
 चौकट करना। -लेख कर-हिसाब चुकता
 करना।

लेखाई-लेखाई-पु० [सं०] लिखनेके कामका ताकपन।
लेखाई-ली० [सं०] छोटी रेखा; लिखनेवाली, छर्क; लेख
 का अंग लिखनेवाली।

लेखाई-वि० [सं०] लिखनावा हुआ; लिखा हुआ।
लेखाई-ली० [सं०] कलम।

लेखाई-वि० [सं०] लिखने, खरीचनेवाला; खूने-
 कागज।

लेखाई-पु० [सं०] पत्रवाहक।
लेखा-पु० विचारानुसार, समझमें।

लेखा-वि० [सं०] खरीचने योग्य; लिखने योग्य; जो
 लिखनेके लिए हो। **पु०** लेख लिखनेकी कला; चित्र;
 पत्र दस्तावेज। -लेख-वि० जो लिखा-पढ़ी करके पत्रा
 लिखा गया हो। -लेखनिका-ली० कलम, तुलिका आदि।
 -लेख-पु० मोटाक-पत्र। -लेख-पत्रक-पु० लेख;
 पत्र; दस्तावेज; ताकका पत्र। -लेख-पु० दस्तावेज;
 छठनामा। -लेखा-पु० दफ्तर।

लेखाई-पु० [सं०] लिखा-पढ़ी किया हुआ, दस्तावेज।
लेखा-ली० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० [सं०] एक तरहकी कमाल जिसमें ताँतकी
 अक्षर छोड़ेकी मंदीर लगी होती है और जिसके सहारे
 कलम की जाती है; नरज और लकीरी कमाल जिस-
 पर तीरदाजीका अन्धारा किया जाता है।

लेखाई-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेखा-पु० दे० 'लेख'।
लेखा-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लेख-पु० दे० 'लेख'।
लेख-पु० दे० 'लेख'।

लैङ्ग-पु० [सं०] बादनेकी किरा।

लैङ्गवा-पु० खेतमें दूटे उठलेंका वृक्षों वट, गार, पोषी, लवनी करनेवाली आदिको दिवा जानेवाला फलका भाग; दोनो हाथोंके बीच बढानेकायक उठल; राखवा; चारा।

लैङ्गुआ-पु० एक तरहकी बरसाती घास (बह कोनक और कसीको होती है, परती लकनेपर रोटीकी तरह फूलती है और इसे सागके तौरपर खाते और जानवरोंकी भी खिलाते हैं)।

लैङ्गुरा-पु० मिट्टीको ठीक करनेका कुम्हारोंका औजार।

लैङ्गा-अ० दे० 'लिङ्गा'।

लैङ्गवा-वि० दे० 'लिङ्गा'।

लैङ्गी-अ० दे० 'लिङ्गी'। पु०-करवा,-लेमा-बनाना, हँसी लगाना।

लैङ्गा-पु० दे० 'लिङ्गा'।

लैङ्गि-पु० [सं०] छुरावा।

लैङ्गी-अ० [सं०] कानके निरेश होनेवाला एक रोग।

लैङ्गि(हिर)-वि० [सं०] बादनेवाला।

लैङ्ग-पु० [सं०] बादने बोय चीज, चटनी। वि० बादने बोय।

लैङ्ग-वि० [सं०] किरा संबंधी (व्या०)। पु० एक पुरान और एक उपपुराण।-लैङ्ग-पु० वह पुरोहित जिसे देवताओं आदिका डान हो।

लैङ्गि-वि० [सं०] किङ्क, चिह्नोंसे प्राप्त (प्रमाण)। पु० अनुमान प्रमाण (बैरो); भास्कर, चिचरी; (सिक्कामल) किम-संबंधी; ली-पुष्पकी जननेद्रियसे संबंध रखनेवाला, लीन।

लैङ्गी-अ० [सं०] किमिनी नामक दूदी।

लैङ्गी-अ० [अ०] एक तरहकी बोझाली।

लैङ्ग-पु० [अ०] चिराल, रोपक, लाउटेन।

लैङ्ग-अ० लक, बरत।

लैङ्गि-अ० इटलीकी 'पुरानी वाला जो रोमकालमें प्रचलित थी, कातीनी।

लैङ्गोका-पु० [अ०] टारुमटेल, होकाववाला।

लैङ्ग-अ० [अ०] 'काइल' रेखा; सीमा-रेखा; पंक्ति; पैरक सेना; सिपाहियोंका निवासस्थान, बैरक।-डोरी-अ० देरसेना।

लैङ्गा-पु० अकहन, लगनी धान। अ० पु०, लीनीमें सामकर कनाकी चरवे आदिकी रोटीकी छडकी कटरी चुगली। पु०-कनावा-चुगली खाना।

लैङ्ग-पु० बछ्छा, छोटा बच्चा।

लैङ्ग-अ० [अ०] रात।-(छे)विह्वर-पु० रात-दिन।

लैङ्ग-अ० [अ०] लैङ्गा-मजदूरी देम-कहानीकी नायिका और मजदूरी देमिका देमली; दुर्गरी; क्वावा।-जबर्द-पु० लैङ्गा और मजदूरी; लैङ्गा-मजदूरी कहानी; नायिका-नायक।

लैङ्ग-पु० [अ०] किरावती श्व जो एक फूसले तैवार किरा जाता है।

लैङ्ग-पु० [अ०] 'लैङ्गसेल' विशेष अधिकारका प्रमाणपत्र, समद।

लैङ्ग-वि० तैवार, कोलकों देले हुएका, सजा हुआ अनिमित्त।

पु० किरा (बाग़ीचर पक्षानेका); एक तरहका सिरका; कनानी; * एक तरहका बाय।

लैङ्ग-अ० समान; एक।

लैङ्गी-अ० कानकी ली।

लैङ्गी-पु० किरती लीकी बस्तुका पिंड।

ली-अ० किरतीका ध्यान बाहुल्य करते वा माश्वर्य प्रकट करनेके लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द।

लीवर कोर्ट-पु० [अ०] लीकेकी अदाकत; लकीका।

लीङ्ग-पु० लैङ्ग, लीङ्ग। अ० चमक; ली, उल्लास।

लीङ्ग-पु० समझीनी, नमक; लीवर; लीचम, नेच।

लीङ्ग-अ० रोटी बनानेके लिए साने हुए आटेकी लीकी; एक तरहका कनी कंक। * पु० लीम।

लीङ्गज-पु० दे० 'लुङ्गजन'।

लीङ्ग-पु० पहली बार ससुराल जानेवाली लकीके साथ दासीका जाना।

लीङ्ग-अ० पहली बार ससुराल जानेवाली लकीके साथ जानेवाली दासी।

लीङ्ग-पु० [सं०] विश्वका एक विभाग, भुवन (साधारणतः स्वर्ग, पृथ्वी और वातावरण-ये तीन लोक माने जाते हैं, पर विशेष विभागके अनुसार १४ माने जाते हैं-७ ऊपर, ७ नीचे, दे० 'सप्तपाताळ', 'सप्तलोक'); संसार; पृथ्वी; मानवजाति, समाज; प्रजा; समूह; भूभाग, प्रांत; निवास-स्थान; विद्या; सांसारिक व्यवहार; इव; ७ या १४ का संख्या; वध।-लीङ्ग-पु० दुष्ट व्यक्ति।-कन्या-अ० जन-समाजमें प्रचलित कथा।-कन्या(री)-पु० मन्ना; किन्तु; महेन्द्र।-कन्य-वि० संप्रतिष।-कन्या-अ० कन्या नामक जोषधि।-कन्य-वि० विशेष लोकका इच्छुक।-कन्या-अ० मानव-जंगम।-कन्य-पु० शिव।-कन्य-वि० स्वयंमें रहनेवाला।-कन्य-अ० लोक-चार।-गान्धा-अ० परंपराप्राप्त गीतादि।-लीङ्ग-पु० साधारण जनतामें प्रचलित गीत।-कन्य(र)-पु० सर्व।-कन्य-अ० कन्य-वि० लोकचार।-कन्य(र)-अ० लक्ष्मी।-कन्य-वि० लोकविजयी।

पु० कवि; बुद्ध।-कन्य-पु० बुद्ध।-कन्य-१० जनसंघ।-कन्य-पु० सामयत्राणिका धान।-कन्य-पु० कन्य।-कन्य-पु०, कन्य-अ० तीनों लोक-माकाश, वातावरण और मर्यादको।-कन्य-वि० दुनिया-को छाननेवाला।-कन्य-वि० लोगोंकी कति सुविधाने-वाला।-कन्य-पु० स्वर्ग और पृथ्वी।-कन्य-पु० स्वर्गका द्वार।-कन्या(र)-पु० शिव।-कन्य-अ० पृथ्वी।-कन्य-अ० दे० 'लोकजनि'।-कन्य-वि० अकवाद; जनमुक्ति।-कन्य-पु० मन्ना; किन्तु; किन; राजा; बुद्ध।-कन्य-पु० कोल्लोंका मयन करने-वाला (सर्व)।-कन्या(र)-पु० शिव।-कन्य-पु० कन्य-पु० कन्यका; नरेश।-कन्य-पु० मन्ना; किन्तु; नरेश।-कन्य-पु०, कन्य-वि० कन्य-वि० कन्यका तरीका।-कन्य-पु०-राजा; कन्यका।-कन्य-पु० राजा।-कन्य-अ० दुर्गा।-कन्या-पु० मन्ना।-कन्या-पु० सर्व।-कन्य-पु० वह जो संसारमें सर्वत्र प्रचलित हो

(प्रथम आदि)। -प्रवीण-पु० पु०। -प्रवाह-पु० सर्व-
साधारणमें प्रवृत्ति वा। -प्रवाही(विष्)-वि०
दुनियाके साथ रहनेवाला। -प्रसिद्ध-वि० विष-
विषयात्, सर्वज्ञात्। -प्रिय-वि० जो बहुतसे कोनोंकी
प्रिय छने, दने। -बन्धु-बाँधव-पु० शिव; स्वर्ग।
-बाह्य-वि० दुनियासे विष्ठा करनेकी; सनातनसे वधि-
कृत। -भर्ता(र्ष)-पु० संसारका भरण-पोषण करने-
वाला। -भाबव, भावी(विष्)-पु० लोककी अन्तर्ग
करनेवाला; लोक-रचना करनेवाला। -भ्रत-पु० जनता-
की राय। -भर्षा-वि० लोकप्रिया। -भट्ट-पु०
विष्णु। -भासा(ह)-वि० कर्म; गौर। -भार्ग-
पु० लोकप्रवृत्ति प्रया। -बाह्य-वि० लोकन्याया-
चारण, व्यवहार। -रंजय-पु० जनताको संतुष्ट कर
उम्मा विधात प्राप्त करना। -रक्ष-पु० नरेश। -रक्ष-
पु० भद्रवाह, जनशुभ। -रक्ष-वि० [वि०] लोक-
प्रदा। -रक्ष-पु० साधारण वन। -कोचन-पु० सर्व।
वचन-पु० अन्तर्ग। -बाह्य-पु०, भार्ता-वि०
जनवाह। -विक्र-वि० लोकमिरित। -विज्ञा-वि०
लोकप्रसिद्ध। -विदिह-वि० विस्तेर सब कोम दुना
करते हैं। -विक्र-वि० जनमतको विरुद्ध; सन्तसे विरु-
द्ध; रक्षनेवाला। -विष्णु-वि० अवतिरुवात्। -विसर्ग-
पु० संसार, सृष्टिका भाग। -विसर्ग(गिब)-वि०
मसारकी रचना करनेवाला। -वृत्त-पु० कोकटीति।
-व्यवहार-पु० कोकटीति। -वृत्ति-वि० कोकटीति,
रचना। -संग्रह-पु० लोककल्याण; लोगोंकी अन्तर्ग
चाहना; मानवसंपर्कसे प्राप्त अनुभव; कोकोंका मग्न,
सारा विष। -संग्रही(विष्)-वि० लोगोंको संतुष्ट
करनेवाला। -संग्रह-वि० कोकटीति, पुष्टि।
-संग्रह-पु० सारे समारमें होनेवाला व्यापार वा
संपर्क; सांसारिक कार्य। -स्य-वि० वह शासन-
व्यवस्था जिसमें सत्ता जनताके हाथमें हो। -स्य-वि०
जनता द्वारा संवाहित (शासन)। -सर्ग-पु०
विष्णु। -सिद्ध-वि० लोक वा समाज द्वारा स्वीकृत;
प्रवृत्ति। -सुंदर-वि० सर्वप्रसंसित। पु० पु०।
-सेवक-पु० सार्वजनिक काम करनेवाला। -हर्षा-
वि० एक तरहकी हल्दी। -हार-पु० मसारका नाश
करनेवाला। -हार-वि० लोकमिरित। -हिड-पु०
मानवमात्रका कल्याण। वि० संसारका कल्याण करनेवाला।
कोकटी-वि० कोमकी। -कोकटी-वि० कोकटीकी छर'-
भट्ट।

कोकटी-पु० [सं०] देखनेकी क्रिया।

कोकटी-सं० कि० किसी चीजको गिरनेसे पहले ही हाथोंसे
पकव लेना; किसी बातके बीचमें ही दखल देकर कुछ करने
केना; रास्तेमें ही रुक लेना।

कोकटी-वि० दे० 'कोकटी'।

कोकटी-वि० [सं०] देखने की क्रिया; छर।

कोकटी-पु० विष्णु।

कोकटी-वि० [सं०] स्वाधीन, स्वायत्तियेसे संग्रह। -
कोकटी-पु० विष्णुकी द्वारा बुद्धि हुई विशेषमिति जो
मृगयामित्रिके सार्वजनिक कामों, सपका, सपार्थ आदिका

प्रबंध करते हैं।

कोकटी-पु० [सं०] परलोक (वह लोक जहाँ मरनेपर
जीवकी जाना पड़ता है)। -संग्रह-पु० परलोकमग्न,
संग्रह।

कोकटी-वि० [सं०] कोकोंके बीच अवस्थित।

कोकटी-वि० [सं०] परलोक मग्न दुना, मृत।

कोकटी-पु० [सं०] अवकाश, आकाश; जीवों और
तत्वोंका भाग्य, विषय (दे०)।

कोकटी-पु० [सं०] संसारका व्यवहार, चलन।

कोकटी-पु० एक वृक्ष वा फलका फल जो बरेके बराबर
और पकनेपर पीका और मीठा होता है।

कोकटी-वि० [सं०] असाधारण।

कोकटी-वि० [सं०] असाधारण।

कोकटी-पु० [सं०] विष्ठाका मार्ग, सृष्टिकर्ता।

कोकटी-वि० [सं०] असाधारण।

कोकटी-पु० [सं०] कोकटी; पु०; नरेश।

कोकटी-सं० कि० कोकों कीज उद्यानना; किसीको कीरें
चीज उद्यानकर देना (जैसे गेह आदि)।

कोकटी-वि० [सं०] लोगोंपर दबा करनेवाला।

कोकटी-पु० [सं०] कीमतीका कल्याण।

कोकटी-पु० [सं०] कोकटी, बदनामी।

कोकटी-वि० [सं०] संसार द्वारा प्रवृत्त। पु०
पु०।

कोकटी-पु० [सं०] संसारकी उक्ति।

कोकटी-पु० [सं०] इसी लोकपर भाग्य, विधात रखने-
वाला व्यक्ति; चाबोंका अनुपायी; चाबों-दखन (परीक्ष,
परलोकवाला संवदन करनेवाला नालिक मत); दुर्मित
छर।

कोकटी-वि० [सं०] नालिक; चाबोंका;
चाबोंका अनुपायी।

कोकटी-पु० [सं०] नारायण।

कोकटी-पु० [सं०] सार्ग सन्तुष्टिके परिवेष्टित करने-
वाली पौराणिक परमेश्वरी, चक्रवाल।

कोकटी-वि० [सं०] देखा दुना।

कोकटी(विष्)-वि० [सं०] जो लोकका स्वामी हो; जो
लोकमें निवास करे।

कोकटी-पु० [सं०] लोकका स्वामी; पु०; वारा।

कोकटी-पु० [सं०] लोकका स्वामी; पु०।

कोकटी-वि० [सं०] उत्कर्ष, सम्मान आदिकी कामना;
छसकी काजला।

कोकटी-वि० [सं०] कदाचित; एक अन्धकार (इसमें
कोकोफिका प्रवीण किया जाता है)।

कोकटी-वि० [सं०] लोकमें प्राप्त पदावस्था उत्तम,
असाधारण, विरक्षण।

कोकटी-पु० [सं०] सार्वजनिक कामका काम।

कोकटी-वि० कोमकी।

कोकटी-पु० माँ, बर्ष आदिके कोकटी के अंगर; किसकत।

कोकटी-वि० कोकटी, कोमकी (दुष्टिक)।

कोकटी-पु० अनुभव (बहुमें प्रवृत्त)। -बाह्य-पु० सर्व-
साधारण, जनता।

कोशाई-को० दे० 'कुशाई' ।
 कोष-को० लकीरान, लकड़, कोमलता, सुदृढता-कण्ठ
 रोग ॥ कवि; मणिप्राका; कुंजन, कोषना, कलाकला । पु०
 [सं०] और । -मर्कट-मस्तक-पु० बहवादा नामक
 गोपवि । -माकक-पु० जायी रातकी पहनेवा स्थान ।
 कोषक-वि० [सं०] मूर्त, विस्तार, गहरा दृष्ट हो । पु०
 मांसपिण्ड; कोषका तारा; काजल; निर्गुणि व्यक्ति किंवंचि
 मल्लत वा कानका एक गहना; मोटा कपडा; कदली,
 केला; केंचुली; अन्धकार; धुरिबोवाली स्थान वा कलात ।
 कोषन-वि० [सं०] चमकानेवाका । पु० अँसा; देखनेकी
 किता । -गोखर-पु० दे० 'ओवनपत्र' । वि० दहन । -
 पथ-मार्ग-पु० दक्षिण, दक्षिण अंदर पड़नेवाका क्षेत्र ।
 -पदक-वि० कोषपूर्ण दक्षिण देखनेवाका । -पात-पु०
 दक्षिणत, नजर डालना । -द्विस्त-को० तुल्यजन ।
 कोषवाचल-पु० [सं०] अँसका कोष ।
 कोषवा-सं० कि० कवि, इतिष पैदा करना; इच्छा
 करना; ॥ प्रकाशित करना । ज० कि० बाह्यता, लज्जता;
 विराजना । † पु० कम्पाके संतानवती होनेपर विद्वद्वृत्ते
 मेवा आनेवाका मांगसिद्ध उपहार जिसमें लौट, पुत्र आदि
 चीजें रहती हैं । को० [सं०] एक लौट देवी ।
 कोषवाचल-पु० [सं०] दक्षिणत ।
 कोषवाच-पु० [सं०] अँसका रोग ।
 कोषनी-को० [सं०] महाभागिका नामक गोपवि ।
 कोषवक-पु० [सं०] एक जलक (पु०) ।
 कोषून-पु० कोषका चूरा; कोषके मैकका चूर्ण ।
 कोट-को० कुलकना, कोटनेकी क्रिया । पु० गड; ॥ मित्रकी;
 † नोट, कमानि मुद्रा । -पडा-॥ पु० विवाहकी एक
 रक जिसमें घर-घरकी पीढे बदले जाते हैं; उत्तर-पैर । -
 पोट-को० आराम करना, लेटना । वि० हँसीके प्रवेगसे
 कभीर । मु० -पोट होना-हँसीका दहन वा बात देख
 सुनकर हँसते-हँसते गिर पड़ना । -मारना-लेटना; किसी
 के भेजमें कभीर होना । -कवाक-कुटकना; लेट जाना;
 किसी चीजपर आसिक होना; निद्र करना । -हो जाना,
 -होना-रीझना; व्याकुल होना ।
 कोटव-पु० भूमिपर कुटकनेवाका एक कर्मतर; गहरी
 जोताई करनेका एक हथ; रास्तेपरका कंकड़ । -सज्जी-
 को० एक तरहकी सजी ।
 कोटवा-ज० कि० नीचे-ऊपर होते हुए जाना, कुटकना;
 कर्कश बरकना, छटपटाना, आराम करना, लेटना । -
 कोटवा-ज० कि० लेटना; सोना । मु० कोट जाना-
 कुटकना; संताहीन होना या मर जाना । कोटवा
 फिरना-तकपटा फिरना, व्याकुल होना । कोट-पोट-
 कर डठ कपड़ होना-पीवार होकर अच्छा हो जाना ।
 कोटा-कोटा फिरना-बर्द आदिसे तकपना ।
 कोटा-पु० थक रकनेका पातुका एक छोटा पात्र । को०
 [सं०] एक साथ, समकालीन ।
 कोटिका-को० [सं०] एक साथ, समकालीन ।
 कोटिया-को० छोटा छोटा ।
 कोटी-को० छोटा छोटा ।
 कोट-पु० [सं०] बगीचपर छोटना, कुटकना । -मू-को०

कोटके कोटनेका स्थान ।
 कोटव-पु० [सं०] सिर हिलानेकी क्रिया ।
 कोटन-पु० [सं०] हिलाने-डुलाने, झुंझ या अक्षत करने-
 की क्रिया, घंजन ।
 कोटवा-सं० कि० बाह्यता, जरूरत महसूस करना ।
 कोटिल-वि० [सं०] मजिह, झुंझ किया हुआ ।
 कोटकमा-ज० कि० दे० 'कुटकना' ।
 कोटका-सं० कि० मोटना; लक करना ॥ (हूक) लोचना
 -'बद वाली बर हूक कितें दिन कोटत आये'-दीनर० ।
 ॥ ज० कि० कोटना, बगीचपर चलिटना ।
 कोटा-पु० सिरपर पीसनेके किए बना हुआ पथरका गोल,
 रंगा टुकड़ा, बट्टा । -छाक-वि० नीपट (करना) । मु०
 -छाकना-लम करना ।
 कोटिया-को० छोटा छोटा ।
 कोष-पु० दे० 'कोन'; [सं०] कोनका साथ ।
 कोषा, कोषात्मका-को० [सं०] बुद्धात्मिका ।
 कोषाद-पु० एक तरहका हार ।
 कोषिका-को० [सं०] दे० 'कोषाग्रा' ।
 कोषी-को० समकालीन ।
 कोष-पु० [सं०] अँव; पिण्ड; नमका लुटका माल ।
 कोष-पु० [सं०] चोरी वा लुटका घन; अँव ।
 कोष-को० छत्र, छात । -पोष-वि० कवच, बहुत
 बका हुआ । मु० -गिरना-निहत होना, मारा जाना ।
 -कलकना-हत्या करना; मार डालना ।
 कोषका-पु० यासका बड़ा टुकड़ा ।
 कोषका-पु० दे० 'कोषका' ।
 कोषारी-को० कन पानीमेंसे जलकी किनारे खान
 जाना । -कंवर-पु० एक तरहका छोटा मंजर ।
 कोषि-को० दे० 'कोष' ।
 कोष-पु० दे० 'कोष' ।
 कोषी, कोषी-पु० पठानोंकी एक जाति ।
 कोष-पु० एक बड़ा जिसके फूल लाल या सफेद होते हैं ।
 कोषरा-पु० जापानमें आनेवाका एक तरहका ताँबा ।
 कोष-पु० [सं०] कोषका देव । -रेणु-पु० मोक्ष दृष्टके
 फूलकी चुकती जिसका प्रयोग अंगरामकी तरह किया
 जाता था ।
 कोषक-पु० सं० कोष कूट ।
 कोष-पु० कवण, नमक; सुंदरता, लावण्य । -हरामी-
 वि० नमकहराम, कुतल । (मुहावरोंके लिए नमक लज्ज
 देखिले ।)
 कोषा-वि० नमकीन; सकोना, सुंदर । पु० सार, नीमा;
 एक साथ, समकालीन । ॥ सं० कि० सुतना, काटना । को०
 एक अजम्बरकी ।
 कोशाई-को० सुंदरता ।
 कोषारी-पु० नमक बनने, मिश्रनेका स्थान ।
 कोषिका-को० नमी नामका साथ ।
 कोषिया-पु० नमक बनाने और बेचनेका व्यवसाय करने
 वाली एक जाति, कोषियाँ । को० सोनी साथ ।
 कोषी-को० एक साथ, समकालीन; कबकी पक्षिणीन-
 मिश्रनेवाका हार, हार, सिरा या नमक मिश्रनेवाकी

मिथी कोना: * सुतर नायिका । * पु० नववीत ।
 कोष-पु० [सं०] बाण: वपेक्षा; नया वृद्ध; अनाया; छिपना;
 शब्दमें कितने अक्षरका कुल होना ।
 कोषक-वि० [सं०] बाधा करनेवाला; नाश करनेवाला ।
 पु० सं० ।
 कोषन-पु० [सं०] मंग करना; कुल करना; नष्ट करना;
 मुच ।
 कोषना-स० कि० मिथाना, कुल करना; मंग करना;
 छिपाना । म० कि० मिना, कुल होना; छिपना ।
 कोषाज्य-पु० [सं०] एक अंजन जिसे लगानेवाला अक्षर
 हो जाता है ।
 कोषा, कोषाभ्युद्धार-की० [सं०] विद्वान्मनस्वकी पालित
 पुत्री और अन्त्ययकी पत्नी; अन्त्ययबलके पास उदित
 होनेवाला एक तारा ।
 कोषाक-पु० [सं०] एक तरहका गौरव ।
 कोषाचक-पु० [सं०] दे० 'कोषाक' ।
 कोषाधिका-की० [सं०] श्रमाकी ।
 कोषाधिका-की० [सं०] एक तरहकी विधिवा ।
 कोषाक्ष: कोषाक्षक-पु० [सं०] गौरव, अंजक, कोमकी ।
 कोषिका-की० [सं०] एक तरहकी मिठाई ।
 कोषी (पिच)-वि० [सं०] क्षति पहुँचानेवाला; मंग करने-
 वाला; जो कुल हो सके ।
 कोषा (पु)-वि० [सं०] मंग करनेवाला ।
 कोष्य-पु० [सं०] चोरी या चुराका माल ।
 कोष्य-की० [अ०] गुविषा; पुतली; सिलौना; चित्र ।
 कोष्य-पु० कठपुतलीका तमाशा करनेवाला ।
 कोषान-पु० [अ०] एक वृक्षका निर्वास जिसे सुगंधके
 लिए आगपर जलाते और दवाके भी काममें लाते हैं ।
 कोषानी-वि० जिसमें कोषान हो या जिससे कोषान
 निकले; कोषान जैसा, सफेद । -ऊह-पु० एक तरहका
 सफेद कद ।
 कोषिष्ठा-पु० बोरेका एक अंग जिसकी तरकारी बनाते
 और बीजोंसे दाल और दालमोठ तैयार करते हैं ।
 -कंडई-पु० गहवा हरा रंग ।
 कोष-पु० [सं०] दूसरेका धन केनेकी इच्छा, लालच;
 लालसा, आकांक्षा; अविरता; कंचुकी; स्वार्थमें बाधक
 होनेवाला कर्म (जै०) । -मोहित-वि० लोभसे विच-
 लित । -विजली (विच)-वि० धन लेकर मुच न करने-
 वाला (राजा-की०) । -विरह-पु० लोभका अभाव ।
 -धुम्ब-वि० लोभहित ।
 कोभन-पु० [सं०] लालच; लालसा; सुवर्ण । वि० कुमाने-
 वाला ।
 कोभना-स० कि० आसक्त, मुग्ध होना । स० कि०
 कुमाना, मुग्ध करना ।
 कोभनीय-वि० [सं०] कुमानेवाला, मनोहर, आकर्षक ।
 कोभना-स० कि० मोहना, मुग्ध करना । म० कि०
 बोधित, मुग्ध होना ।
 कोभर-वि० कुमाने, मुग्ध करनेवाला ।
 कोभित-वि० [सं०] मुग्ध, मुग्ध ।
 कोभी (विच)-वि० [सं०] कितनी बन्धुका कोष इकट्ठे

वाला, लालच; मुग्ध ।
 कोभ्य-वि० [सं०] 'लोभनीय' ।
 कोभ (पु)-पु० [सं०] करीपरके बाल, रोम; पृष्ठ;
 * कोभकी । -कण्ठी-की० एक पोषा, जटामाली ।
 -कण्ठी-की० अममोदा । -कण्ठी-पु० करणीय ।
 -कण्ठी-पु० ऊँ । -कण्ठी-गर्भ, -रंभ, -विचर-पु०
 रोटीकी अममोदा छेद । -कण्ठी-पु० बालोंकी मट्ट करने-
 वाला रोग, नवापन । -हृष-पु० ऊँ जैसा एक कीट ।
 -पाद-पु० अंगके राजा (यह अवोभानरेड इक्षरके
 मित्त है) । -पुष्ट-पु० नंपा नमरी, वर्तमान भाग्य-
 पुर । -कल-पु० अन्व । -पूक-पु० ऊँ । -राशि-
 की० कोभाली । -लताधार-पु० तोर । -बाह्य-
 वि० बाल काटने लायक तेज । -बाही (विच)-वि०
 बालोंवाला या बाल काटनेके लायक तेज । -विच-
 वि० जिसके बालमें विच हो । पु० व्याघ्रादि । -काचन-
 पु० हस्ताल । -हर्ष-पु० रोमांच । -हर्षक-वि०
 रोमांचकारी । -हर्षक-पु० व्यासका एक शिष्य, उग्र-
 भवाका पुत्र, धृष्ट; रोमांच । वि० अव्यधिक भव, हर्ष
 बादि द्वारा रोटी कहे कर देनेवाला (धृष्ट, वृष्ट कादि) ।
 -हारी (विच)-वि० बाल काट देनेवाला । -हृष्ट-पु०
 हस्ताल ।
 कोभकी (विच)-पु० [सं०] पक्षी ।
 कोभक-पु० [सं०] कोभकी ।
 कोभकी-की० गौरवकी जातिका एक जानवर ।
 कोभकी-की० दे० 'लोभकी' ।
 कोभक-पु० [सं०] एक कवि (ये अमर माने जाते हैं-
 पु०) मेघ, मेघा; एक पोषा । वि० बने रोमोंसे मुक्त;
 जिसपर बाध जमी हो । -कण्ठी-पु० मदमें रहनेवाला
 एक जानवर । -कण्ठी-की० ककरी । -पक्षिका-
 की० एक तरहका कुम्हड़ा । -पक्षी-पक्षिणी-की०
 माधवणी कोषवि । -पुष्पक-पु० शिरोध, सिरिस ।
 -आर्ज-पु० कोमल बालोंवाला एक विलस जिसके
 करीरसे सुगंध निकलती है, गंधविकाय ।
 कोभना-की० [सं०] काकनया; मांसी; वच; शुक्रसिंही;
 महाभेदा; कलस; कोभकी; श्रमाकी; एक तरहकी बरी;
 दुर्गोकी एक अनुचरी; केदमर रचनेवाली एक की ।
 कोभनी-की० [सं०] एक पोषा ।
 कोभन-पु० [सं०] क्षरतीलापन ।
 कोभन-पु० दे० 'लोभन' ।
 कोभन-पु० [सं०] दे० 'रोमांच' ।
 कोभ-की० [सं०] वच ।
 कोभ-पु० [सं०] ऊँकी जातिका एक कीट ।
 कोभसि, कोभसकी, कोभसकी-की० [सं०] सीनेसे
 जातिका ऊँ हुए धने बाल ।
 कोभसिका-की० [सं०] कोभकी ।
 कोभन-पु० [सं०] गौरव, श्रमाक; कोभकी ।
 कोभसिका-की० [सं०] श्रमाकी; कोभकी ।
 कोभ-पु० कोक, कोम; अक्ष । की० ज्वाला, की-
 '...करनी किसी कोभ'-साक्षी । अ० दे० 'को' ।
 कोभन-पु० कोभन, जौसा; नागध्व ।

कोर-वि० लोल, चंचल; उत्कण्ठित, उत्सुक । पु० कान-की लोखण्डी, ललरी; कामका कुंठल; लक्ष्य, ध्येयका; अर्ध-
-‘बाए आनन कोरभारा बरनि काय जाय’-सूर ।

कोरना-अ० कि० चंचल होना; झुकना; लपकना, ललकना; कोदना; लिपदना; तैरना ।

कोरना-पु० औष, कोर ।

कोरी-का० बघौकी झुलते समय मानेका गीत; तोतेकी एक जाति ।

कोर-वि० [सं०] चंचल; हिलता-डोलता; क्षुब्ध, अशांत; क्षणिक, अस्थिर; बदलनेवाला, परिणामी, परिवर्तनशील; उत्सुक; लोभी । पु० किंग । -कूर्म-वि० सक्की बात झुननेवाला । -बट-पु० बाटु । -कल्लु(स्)-, कल्ल, -बेज, -कोचन-वि० जिसकी ओले चारों तरफ दीखती हों । -सिद्ध-वि० लालची । पु० सप । -विनेस-पु० मोलका ।

कोरक-पु० नव आदिका लटकन; पटेका लटकन; लोखण्डी ।

कोरकी-स्त्री० कानका निचला बाना, ललरी ।

कोरना-अ० कि० हिलना-डोलना; चंचल होना । सं० कि० हिलाना ।

कोरना-की० [सं०] जीन; लक्ष्मी; चंचल स्त्री; एक वर्ण-वृत्त; विजली; एक विशेष प्रकारकी नाव । † पु० बघौका एक किलौना ।

कोरनाझिका, कोरनाझी-की० [सं०] चंचल नेचौवाली स्त्री ।

कोरना-पु० [सं०] एक खुर । -कुंठ-पु० काशीका एक तीर्थ ।

कोरिका-की० [सं०] एक झाक, चांगेरी ।

कोरिल-वि० [सं०] हिला हुआ, झुप्य ।

कोरिली-की० [सं०] चंचल स्त्री ।

कोरुच-वि० [सं०] लालची, लोभी; कोई वस्तु पानेके लिए अर्पण, उत्सुक; चढो; नासक ।

कोरुपता-की०, कोरुपत-पु० [सं०] लालच; लालसा ।

कोरुपा-स्त्री० [सं०] अत्यधिक हण्डा, लालसा ।

कोरुच-वि० [सं०] दे० ‘कोरुच’ ।

कोरुच-वि० [सं०] बार-बार काटनेवाला ।

कोरुच-वि० [सं०] दे० ‘कोरुच’ ।

कोबा-की० लोभशी । पु० लबा नामका पक्षी ।

कोबा-पु० [जं०] बाव आदि बोमके लिए पानीमें नवा विठाकर तैयार किया हुआ द्रव ।

कोट-पु० [सं०] डेला; चिड़का काम देनेवाली कोई वस्तु; लोहा मेल, मुरना । -कास-पु० डेलेसे आघात करना । -का, -अंजना, -जेवन-पु० डेले कीनेका साफल, पेटका । -अर्दी(हिंदू)-वि० डेला तोड़नेवाला ।

कोटक, कोट्ट-पु० [सं०] दे० ‘कोट’ ।

कोटका-पु० लोहाका पात्र, तल्ला आदि ।

कोट-वि० [सं०] तौबेके रंगका, गमन; लोहेका बना । पु० कोहम नाँवा, भोला आदि कोई भी बाटु; लाल बकरा; रक्त; हथियार; मछली फैसामेका कौंटा; जंगर । -कटक-पु० मदन वृक्ष । -कटक-पु० लोहेकी जंजीर ।

-कोत-पु० चुपक । -का, -काक-पु० लोहार ।

-काचोच-पु० एक सिंहा या बाट । -किट्ट-पु०

लोहेका मेल । -रॉच-पु० एक जाति । -चासक-पु०

लोहार । -कारक-हारक-पु० एक नरक । -काकिना

-की० एक तरहका बस्तर (को) । -चूच-पु० [हिं०]

दे० ‘कोहचूच’ । -कूर्म-पु० लोहेका मेल, मोरचा;

लोहेका मुरादा । -ज-पु० लोहकिट्ट; कौंटा । -कास,

-बर्म(स्)-पु० झिलम । -किट्ट-पु० हीरा । -ज्राही-

(विच)-पु० सुहागा; अल्लवत । -बास-पु० लोहेका

बाण, साराच । -पटिका-की० लोहेकी तस्वी । -बास

-पु० जंजीर । -पुट्ट-पु० एक पक्षी, कंक । -प्रसिमा-

की० निहारि; लोहेकी मूर्ति । -बंधा-पु० [हिं०] दे०

‘लोहानी’ । -बद्ध-वि० लोहा जमा हुआ । -झल-

-पु० मोरचा । -झारक-पु० एक साग । -मुकिना-

की० लाल मेली । -रज(स्)-की० दे० ‘लोहमज’ ।

-राजक-पु० चोरी । -हंहर-पु० [हिं०] जहाजका

लंगर; कोई बहुत भारी नीब । -सिमा-पु० रकसे जड़ा

हुआ कोरा । -कांठ-पु० एक नरक; बरछी । -मंजल-

-पु० हाथी बाँधनेकी जंजीर । -संकर-पु० कई भातुमेंका

मिश्रण; हस्त । -संक्षेप-पु० सुहागा । -सा-पु०

कोलाय; लौलायकी जंजीर ।

कोहनी-स्त्री० नायका पानी उलीचनेका लोहाका बना

तल्ला ।

कोहवान-पु० दे० ‘लोवान’ ।

कोहल-वि० [सं०] लोहेसे बना हुआ; अस्पष्ट बोल्ना; हुआ । पु० मंजलका मुख्य छत्ता ।

कोहमारक-पु० [सं०] एक नरक ।

कोहनी-स्त्री० वह लडा जिसमें किसी सिन्घर लौहा

लगा हो ।

कोडा-पु० एक प्रसिद्ध भातु; हथियार; लौहनिर्मित वस्तु; बुद्ध-‘दुवौ अनी सनमुख मर लोहा मयेउ अमृद’-पं०;

धाक; लक बैल; बोधीकी हस्तरी । वि० लाल; बहुत बहा,

कठोर, धृ । सु० -करवा, -बैना-हस्तरी करना, हस्तरी

गर्म करके कपड़ेकी शिकन दूर करना । -राहवा-पु० बुद्ध

करना; बुद्धके लिए तैयार होना । -बजवा-बुद्ध, संवर्ष

होना । -बरसना-वसासान बुद्ध चमना । (किसीका)

-मानना- (किसीका) प्रभाव, प्रभुत्व मानना; हार

मानना । (किसीसे)-लेना-रुचना, माहसपूर्वक

सामना करना । - (दे) का दिक-निष्ठुर दिक । -का

पाणी-गल्लार आदिपर चढाया जानेवाला पानी । -की

कासी-ससन दिक । -के चने चढावा-बहुत कठिन

कार्य करना । -ठंडे होना-उर्मका कम हो जाना ।

कोहाच-पु० [सं०] जगुज ।

कोहाच-पु० [सं०] लाल बट ।

कोहावा-अ० कि० लोहेके पाचमें रहनेके कारण किसी

वस्तुमें उसका स्वाद वा रस जाना ।

कोहामिहार-पु० [सं०] मोटाजन-विधि जिसमें बुद्धका-

के लिए दासीकी सहाई होती है ।

कोहामिच-पु० [सं०] लाल बकरेका मांस ।

कोहाचस-वि० [सं०] तौबिका बना हुआ ।

लोहर-पु० लोहेका काम करनेवाली एक उपधाति ।

-झावा-पु० लोहरके काम करनेका स्थान । -**की** भट्टी-बह भट्टी जिसमें लोहर छोटा गरम करता या पिघलाता है । -**की** दवाही-कसीस । **मु०** -**झामेमें** खेवहवाँ बेचना-वेवहूसीका काम करना ।

लोहारी-ली० लोहारका काम या व्यवसाय ।

लोहि-पु० [सं०] एक तरहका सुहागा ।

लोहिका-ली० [सं०] लोहेका तल्ला ।

लोहित-वि० [सं०] लाल; लौहका रंग हुआ । **पु०** काल रंग; मंगल ग्रह; सर्प; एक बिरन; एक धान; अश्वपुत्र नर; तैला; रक्त केसर; मुक्त; रक्त चंद्रन; रोहित मत्स्य; एक समुद्र; एक झील; एक कला एक रोग; एक रक्त, काष्ठ; काल वस्तु । -**क्षयक-वि०** रक्ताभाव रोगमें ग्रस्त । -**झीर-पु०** अग्नि । -**चंदन-पु०** केसर । -**तूल-वि०** लाल शिक्षा-भाग्य । -**नयन-वि०** जिसकी आँखें (लोहसे) काल (हो गयीं) हों । -**पादक-वि०** जिसके तलवे भरी काल हों (बच्चा) । -**पुष्पक-पु०** भगार । -**मुक्ति-ली०** एक कीमती पत्थर । -**सुशिका-ली०** गेहू । -**राग-पु०** काल रंग । -**बासा(सस्)-वि०** जिसके वस्त्र लाल हों या रक्तों रंग हों । -**शतपथ-पु०** लाल कमल ।

लोहितक-पु० [सं०] लाल नामक रक्त; मंगल ग्रह; तैला; कामा; एक धान ।

लोहितारा-पु० [सं०] मयूर ग्रहा कापित वृक्ष ।

लोहिताक्ष-पु० [सं०] एक तरहका साँप; कोयल; विष्णु; कंदका एक अनुचर; लाल पासा; कौल; जंग ।

लोहिताक्षक-पु० [सं०] एक साँप ।

लोहिताधिप-पु० [सं०] मंगल ग्रह ।

लोहितानन-वि० [सं०] लाल मुँहवाला । **पु०** नेबला ।

लोहिताप(स्)-पु० [सं०] तैला ।

लोहितायस-वि० [सं०] लाल धातुमें निमिद्र । **पु०** तैला ।

लोहिताय-पु० [सं०] अग्नि; शिव ।

लोहितिमा(अक्ष)-ली० [सं०] कालिमा ।

लोहितीक-पु० [सं०] एक रात या सिका ।

लोहितेक्षण-वि० [सं०] लाल आँखोंवाला ।

लोहितोद्-पु० [सं०] एक नरक । **वि०** लाल पानीवाला ।

लोहितस्व-पु० [सं०] अश्वपुत्र नर; एक समुद्र; एक तरहका धान ।

लोहित्वा-ली० [सं०] एक नदी; एक अपसरा ।

लोहितिका-ली० [सं०] एक धमनी; एक रोषा ।

लोहिनी-ली० [सं०] काल वर्णकी ली ।

लोहिनीका-ली० [सं०] लाल कालि ।

लोहिवा-पु० लोहेका कारवार, व्यापार करनेवाला; भारवासी बलियोंकी एक जाति; काल बैल; लोहेकी गोथी । **वि०** लोहेका; काल रंगका (आमबर आदि) ।

लोही-ली० प्रत्यक्ष लाली-‘हील’ और लोही कालत कुलके जनम अर्धे-ग्रामगीत; लोही • मुलकी । **मु०** -**फटला-पी** फटना ।

लोह-पु० रक्त, लहू ।

लोहीकम-पु० [सं०] सेना ।

७६-क

लोह-पु० [सं०] पीतल ।

लोह-अ० तक, पर्यंत; समान, बराबर ।

लौकिक-अ० कि० जगत्तक; जगत्तक होना; धृष्टना, दिखाई देना ।

लौक-ली० एक प्रकारका वृक्ष या उसकी कली; नाक, कानका एक नाम्बण । -**विषा-पु०** देहनेके मेरसे बनाया जानेवाला एक तरहका कमाव । -**मुद्रक-पु०** एक तरहका फूल । -**लुता-ली०** एक रंगला मिठाई ।

लौघरा-पु० बरसातमें उगनेवाली एक घास ।

लौ विषा मिर्च-ली० एक तरहकी छोटी मिर्च जो बहुत कष्टनी होती है ।

लौहा-पु० लोहरा, लड़का; नमकीन, सुंदर लड़का । **वि०** नादान । -**पल-पु०** लौहा होना; लकड़पन; छिछोरपन । -**(रे)बाज़-वि०**, **पु०** बालकोंसे प्रेम और अमाकृतिक संबंध करनेवाला । **वि०**, **ली०** किछोर-बच्चे बालकोंसे अनुचित संबंध रखनेवाली प्रीति (ली) । -**बाज़ी-ली०** लौहेबाज़ होना, लौहोत्ति अनुचित संबंध रखना ।

लौवा-पु० दे० ‘लौवा’ ।

लौवी-ली० दासी, टहलनी, मजदूरनी ।

लौव-पु० मलमास ।

लौवरा-पु० पहली बर्षा ।

लौदा-पु० दे० ‘लौदा’ ।

लौ-ली० लपट, ज्वाला; दीपसिला; लौलकी; बाह, लाग; पुन; आशा, कामना ।

लौवा-पु० लाउ, कदू ।

लौकवा-अ० कि० देव पचना ।

लौकिक-पु० [सं०] लौकिक स्वर्ग, जगलोकमें वास करनेवाले जीव (जै०) ।

लौका-पु० कदू ।

लौकायतिक-पु० [सं०] जांचकका अनुयायी, नास्तिक ।

लौकिक-वि० [सं०] लोकका, सासारिक; व्यवहार-संबंधी; व्यावहारिक; सामान्य । **पु०** मांसाधिक व्यवहार, जलन; सात माताओंके छर ।

लौकिकशि-ली० [सं०] वह अग्नि जिसका संस्कार न हुआ हो, सामान्य अग्नि ।

लौकी-ली० लौका, कदू; अक्षमें लगाकर शराप नुआनेकी लकी ।

लौक-वि० [सं०] जो सारे समारमें फैला हो, सामान्य ।

लौगाधि-पु० [सं०] धर्मशास्त्रके एक प्राचीन आचार्य ।

लौज-ली० [अ०] बाढाम; बाढाम मिलाकर बनायी हुई एक तरहकी बरफी ।

लौजात-ली० [अ०] दे० ‘लौजियात’ । -**की** गोट-समोलेकी गोट ।

लौजिवात-ली० [अ०] लौकका बहुत; बाढामका इल्का ।

लौजीवा-पु० बाढामका इल्का; एक मिठाई जिसमें बाढाम-पिस्ता पीसकर कालने है ।

लौजोरा-पु० धातु गठानेका काम करनेवाला ।

लौह-ली० लौहना, पुसाव । -**पल-पु०** दे० ‘लौपटा’ ।

-**लौह-ली०** दो लकी छपारी; उलटने-पलटनेका काम;

दे० 'लोटपोट' । -फेर-पु० भारी परिवर्तन, उलट-फेर ।
 लौटना-अ० कि० बापस आना, फिरना; पीछे मुँह
 फेरना; मुकर जाना । स० कि० उलटना, घलटना,
 इधरते-उधर करना ।
 लौटना-की० लौटनेकी किया ।
 लौटना-स० कि० बापस करना; फेरना, करलना;
 उलटे फेर बापस करना; उलट-पुलट करना ।
 लौटानी-अ० लौटती बार ।
 लौबा-पु० पुरुषकी अननैद्रिय ।
 लौब, लौबहार-पु० छाजनके काम आनेवाली अरहरकी
 नरम टहन्यी ।
 लौब-पु० लवण, नमक ।
 लौबहार-पु० फसल काटनेवाला ।
 लौनार-पु० जानवरोंका अमला और पिछला पैर साथ
 बांधनेकी रस्ती; फसलकी कटाई; ईंधन, जलावन । ३
 वि० सुदर ।
 लौनी-की० फसलकी कटाई; अंकुशारमें आनेवाला कटा
 हुआ इँटल । ३ पु० नवनीत, मनसून ।
 लौरी-की० रहिया -'सो सुनि राधिका कवि गई उरि
 गौर के लौरिहिनी लपटासी'-सुधानिधि ।
 लौख-पु० [सं०] चंचलता, अस्थिरता; लोभ; लाकल ।
 लौस-पु० [फा०] किस होना; मिलावट; धम्या ।
 लौह-पु० [सं०] लोहा; शस्त्रास्त्र, हथियार । वि० लोहे
 या लौहका बना हुआ; लाल; लाल बकरेसे संबंध रखने-
 वाला । -कार-पु० लोहार । -कारक-पु० एक
 नाल । -ज-पु० मोरचा । -पुरुष-पु० बट निधयवाला
 व्यक्ति जो कठिनाइयों, बाधाओं, या किन्हीं अवकियोंमें
 विचलित न हो । -बंध-पु० लोहेकी जंजीर; बंधकई ।
 -भाँड़-पु० लोहेका पात्र । -भू-भी० लोहेकी कड़ाही ।

-मल-पु० लोहेका मैल । -मुग-पु० लोहेके प्राथमिक
 प्रयोगका ऐतिहासिक काल । -बहु-पु० दे० 'लोह-
 झंझू' । -सार-पु० लौहनिमित्त एक नमक ।
 लौह-की० [अ०] लोहनेकी तहसी, पटिया; पुस्तकका
 पन्ना । -कवीस-पु० पुस्तकके पहले पृष्ठकी समावट
 करनेवाला चित्रकार । - (दे०) पाक-की० कोरी पटिया ।
 -पैसाबी-की० कपाकलेख, भाग्यलेख । -महफूज-
 की० मुसलमानोंके विभासातुत्तर वह पटिया जिसपर
 मनुष्यके संपूर्ण कर्म लिखे होते हैं और जिसमें कोई
 हेर-फेर नहीं हो सकता ।
 लौहा-पु० दे० 'लोहा' । लौ० [सं०] लोहे आदिको
 कहाही ।
 लौहाकार्य-पु० [सं०] बाहुविद्या जाननेवाला ।
 लौहावस-वि० [सं०] लोहे वा लौहिका बना ।
 लौहावस-पु० [सं०] लोहेके लौहसे बननेवाला एक
 भासध ।
 लौहित-पु० [सं०] क्षिपका विसृल । वि० लौहित ।
 लौहिला-पु० लोहेका कारवार करनेवाली एक जाति,
 लोहिया ।
 लौहिलक-पु० [सं०] दे० 'लोहिला' ।
 लौहिलीक-वि० [सं०] जिसमें लाली हो ।
 लौहिल्य-पु० [सं०] एक तरहका धान; महापुत्र नद; एक
 सागर; एक पर्यंत; एक लोभ; लाल रंग, लाली ।
 लौहेश-वि० [सं०] (रथ) जिसका बम लोहे या और किसी
 धातुका बना हो ।
 लवाना, लवावना-स० कि० दे० 'लवान' ।
 लवारी-पु० जेबिया ।
 लवौ-की० लौ, ध्यान ।
 लवारि-की० लू ।

व

व-देवनागरी वर्णमालाका उनतीसवाँ और चौथा अक्षर
 वर्ण । उच्चारणस्थान दंतोष्ठ ।
 व-वि० टेढ़ा, झुका हुआ । पु० [सं०] नदीका घुमाव,
 नदीकण; आवारा आदमी । -वाल-की० शरीरकी एक
 भाग । -वाली-की० झुपटना गाड़ी । -सेव-पु०
 अगस्तका पेश ।
 व-वि० टेढ़ा; विकट ।
 व-वि० [सं०] एक पक्ष ।
 व-वि० [सं०] नदीका मोड़ ।
 व-वि० [सं०] चारजामेका अमला हिस्सा जो रोककें
 लिए रेंवा बना होता है ।
 व-वि० [सं०] बंगालकी पुरानी राजधानी ।
 व-वि० [सं०] एक पौधा ।
 व-वि० कुछ-कुछ टेढ़ा ।
 व-वि० [सं०] कौंदा ।
 व-वि० [सं०] टेढ़ा; लचीला, नमनशील ।
 व-वि० [सं०] पशुका; (घोड़े आदि) जानवरोंकी पंमली;
 करी; एक प्राचीन बाजा ।

व-वि० [सं०] पेट और जाँघके बीचका भाग; ऊर-
 सधि ।
 व-वि० [सं०] अक्षय नदी; गंगाकी एक शाखा ।
 व-पु० [सं०] बंगाल; एक बाहु, रोगा; रोगका भस्म;
 कपास; बैंगन; एक चंद्रवंशी राजा; एक पहाड़; एक वृक्ष ।
 -ज-पु० सिद्ध; पीतल । वि० बंगालमें उत्पन्न; बंगाली ।
 -जीवन-पु० चौदी । -देव-पु० बंगाल । -मल-
 पु० एक बाहु, सीसा । -मुहमल-पु० पीतल; कौंदा ।
 -सेव-सेवक-पु० लाल फुलोंवाला अगस्त्य ।
 व-पु० [सं०] एक वृक्ष ।
 व-पु० [सं०] बैंगन ।
 व-वि० [सं०] एक रागिनी ।
 व-वि० [सं०] ईरताल ।
 व-पु० [सं०] एक राग ।
 व-वि० [सं०] एक रागिनी ।
 व-वि० [सं०] बंगालका; बंगाल-संबंधी ।
 व-वि० [सं०] टोकरी, हथिया ।
 व-पु० [सं०] वृक्ष-विशेष ।

बन्धक-वि० [सं०] ठग, धूर्त; छल। पु० गोरव; मोक्ष
आपसी; चालू; मेवका।

बन्धकता-स्त्री० [सं०] ठगी, बृत्ता।

बन्धसि-पु० [सं०] अग्नि।

बन्धव-पु० [सं०] बृत्तं कीचक; समय।

बन्धव-पु० [सं०] ठगी; बृत्ता, प्रसारण। -बन्धुता-
स्त्री० ठगीमें कुशलता। -बन्धव-वि० ठगीकी ओर
प्रवृत्त। -बोध-पु० ठगीका अन्वय।

बन्धव-सं० कि० ठगना, धोखा देना; † बटना,
बोचना। स्त्री० [सं०] छल; ठगी; नष्ट काल वा श्रम। -
बन्धित-वि० ठगीमें कुशल।

बन्धनीय-वि० [सं०] परित्याग करने योग्य; जो ठगा जा
सके।

बन्धविता(तु)-वि०, पु० [सं०] ठग; बृत्त।

बन्धित-वि० [सं०] ठगा, धोखा खाया हुआ, प्रसारित;
रहित, विमुक्त।

बन्धिता-स्त्री० [सं०] एक तरहकी घरेली।

बन्धुक, बन्धक-वि० [सं०] धूर्त; बेईमान।

बन्धव-वि० [सं०] ठगा जानेवाला; त्याग्य।

बन्धु-पु० [सं०] मित्रिणः अशोक; वेणस; स्तम्भक; एक
पक्षी; एक नदी। -बुध-पु० अशोक। -मित्र-पु०
प्रेत।

बन्धक-पु० [सं०] एक पौधा; एक पक्षी।

बन्धुता-स्त्री० [सं०] अधिक दूध देनेवाली गाय; एक नदी।
दंष्ट-वि० [सं०] पुच्छहीन; अविबाहित। पु० अविबाहित
पुरुष; भाग; ईशिया आदिका दत्ता।

बन्धक-पु० [सं०] हिस्सा, भाग; बँटनेवाला।

बन्धन-पु० [सं०] हिस्सा लगाना, बँटना।

बन्धनीय-वि० [सं०] जो बँटा जाय, बँटने योग्य।

बन्धाल-पु० [सं०] कुदाल, मनित्र; नाव; युद्धका एक
प्रकार।

बन्धित-वि० [सं०] बँटा हुआ, विभाजित।

बन्ध-वि० [सं०] विकलांग, पशु; अविबाहित। पु० अवि-
बाहित पुरुष; मेवका; रौना; भाला।

बन्ध-पु० [सं०] तावका कला; बँसके नये कन्धके ऊपरका
पत्ता या आवरण; बकरी आदि बँधनेकी रस्ती; स्तन;
कुपा; कुत्तकी दुम; बादल।

बन्धाल-पु० [सं०] दे० 'बन्धाल'।

बन्ध-पु० [सं०] वह जिसके लिगाग्रपर चमका न हो;
अत्रयंग। वि० विकलांग।

बन्ध-पु० [सं०] कंजस; खोजा, अंतःपुरमें रहनेवाला
मेवका।

बन्ध-स्त्री० [सं०] धाँसुला, अविचारिणी।

बन्ध-वि० [सं०] प्रसक्त।

बन्धक-पु० [सं०] एक परोपजीवी पौधा, बन्दा; चारण;
मिथु।

बन्धक-स्त्री० [सं०] बन्दा।

बन्धव-पु० [सं०] चारण; बंदनाके योग्य व्यक्ति।

बन्धव-पु० [सं०] स्तुति; पूजन; नमस्कार; एक विष; एक
रोग; बौदा; एक अक्षर; सिद्धा; दे० 'बंदन'। -आकाश,

-आकाश-स्त्री० बंदनवार। -बार-पु० [हिं०] दे०
'बंदनवार'।

बन्धक-पु० [सं०] सम्माननुक्त अभिवादन।

बन्धक-स्त्री० [सं०] स्तुति; पूजन; बौद्धीकी एक पूजा;
होममसका तिथक।

बन्धी-स्त्री० [सं०] स्तुति, पूजा; वाचना या चोरी; मरे
हुएकी जिजानेकी एक दवा, जीवातु; बटी; गोरोचन;
तिथक।

बन्धीय-वि० [सं०] बंदना, सम्मानके योग्य। पु० पीत
मृगराज।

बन्धीयता-स्त्री० [सं०] बंदनीय होनेका भाव या गुण।

बन्धीय-स्त्री० [सं०] गोरोचना।

बन्ध-स्त्री० [सं०] एक परोपजीवी पौधा, बौदा; मिथुकी;
बंदिनी।

बन्धाक-पु० [सं०] बन्दा।

बन्धाक, बन्धाकी-स्त्री० [सं०] दे० 'बन्धाक'।

बन्धार-पु० [सं०] एक परोपजीवी पौधा, बौदा।

बन्धाक-पु० [सं०] स्त्रीय; चारण। वि० विनम्र, बंदनशील।

बन्धि, बन्धी-स्त्री० [सं०] कैदा; कैदी; बंदना, स्तुति; सोपान।

-कार-आह-पु० डाकू। -चोर-पु० चोर; डाकू।

-खन-पु० [हिं०] चारण, भट। -बाक-पु० कैदि-
का रत्नक, जेलर।

बन्धित-वि० [सं०] पूजित; पूज्य।

बन्धितव्य-वि० [सं०] पूज्य, पूजा करने योग्य।

बन्धिता(तु)-पु० [सं०] स्तुति करनेवाला; प्रशंसक।

बन्धी(विच)-पु० [सं०] बंदी, चारण; कैदी।

बन्धीक-पु० [सं०] ईश।

बन्ध-वि० [सं०] आदरणीय, पूज्य।

बन्धा-स्त्री० [सं०] बन्दा; गोरोचना।

बन्ध-वि० [सं०] पूजा, अक्ति करनेवाला। पु० अक्त; अम्यु-
दध, कल्याण; प्रालुब्ध।

बन्धु-पु० दे० 'बन्धु'।

बन्धुर-पु० [सं०] कोचबानके बैठनेकी जगह। वि० दे०
'बन्धुर'।

बन्धव-वि० [सं०] अनुत्पादक; निष्कण; सदोष। -कल-
वि० कलहीन, बेकार।

बन्धा-स्त्री० [सं०] वह स्त्री या गाय जिसे बन्धा न होता
हो; एक गंधर्व्य। -कूर्तिका-स्त्री० एक ओषधि।

-कूर्तिका-स्त्री० एक ओषधि, दिव्या। -तनव-पुत्र,

-सुत, -सुनु-पु० कोई कल्पित वस्तु, खयाली चीज।

-बुद्धिता(तु)-स्त्री० कोई कल्पित वस्तु।

बन्ध-पु० [सं०] बँस।

बन्धारव-पु० [सं०] रंगानेकी आवाज।

बन्ध-पु० [सं०] बँस; बँसकी गाँठ; ईश; श्वेतोर; बेंबेर;
बँसुरी; मेखंद; नाककी ऊपरकी हड्डी; कोई लंबी-पोली

हड्डी; तलवारके शीचका चौथा भाग; कुल, परिवार; जाति;
मंताव; एक ही बैसी वस्तुओंका समूह; युद्धोपकरण; लंबाई

नापनेका एक पैमाना (२० हाथ); विष्णु; बंशकीचन;
दर्प; साकृष्ट। -कटिज-पु० बँसका जगह। -कन्नूर

-पु० [हिं०] दे० 'बंशकूर्त'। -कक-पु० आकाशमें

उम्मेवाला सत । -कर-पु० बंशवर्तक पूर्वमा पुन ।
 -करा-बारा-ली० मवेर पवतसे विकल्नेवाली एक
 नदी । -करूर-पु० बंशलोचन । -कर्म(ब)-पु०
 बौद्धी दोहरी भारि बनानेका काम । -कार-पु० बंशक ।
 -कीर्ति-वि० जिसका बंश प्रसिद्ध हो । -कृष्-पु०
 मूल पुत्र । -कृष्-पु० बौद्धी ब्रह्मा । -कर्म-पु०
 ब्रह्मात्मिका । -कर्ममत्त-वि० आनुवंशिक । -कृष्-
 पु० बंशका नाथ । -कीरी-ली० बंशलोचन । -गोहा-
 (पु०)-पु० कुलका संरक्षक । -घटिका-ली० बर्षाका
 एक सेक । -चरित-पु० बंशका इतिहास । -चितक-
 पु० कुसीनामा तैयार करनेवाला । -व्येसा(तु)-पु०
 बंशका वंशिय व्यक्ति । -ज-वि० बौद्धका बना हुआ;
 के बंशमें उत्पन्न । पु० शौका बीज; संतान । -जा-ली०
 बंशलोचन; कन्या । -तंहुक-पु० बौद्धका चामल ।
 -तालिका-ली० बंशवृक्ष । -तिलक-पु० एक छंद ।
 -दुला-ली० एक वृक्ष, जीरिका । -बद-बारी(रिज)-
 पु० बौद्ध धारण करनेवाला; कुलका रक्षक; संतान ।
 -धाराव-पु० बौद्धका चामल । -कर्त्त(सिन्)-पु०
 भाँक, मसकरा । -नाडिका-नाडी-नाडिका-ली०
 बौद्धकी मछी; बौद्धी । -बाघ-पु० कुलका मुखिया ।
 -बाघ-पु० एक विशेषे बोध (व्यो); कुलका अंत ।
 -विजेनी-ली० बौद्धकी सांटी । -मेज-पु० एक तरह-
 की रंज; रंजकी जब या पौर जिससे अंकुर होते हैं ।
 -पत्र-पु० दरवाज; बौद्धका पत्ता; एक छंद; एक तरहका
 सरकंठा । -पत्रक-पु० सरकंठा; एक तरहकी रंज; एक
 मछली; दरवाज । -पत्रपत्रि-पु० एक छंद । -पत्नी
 -ली० एक वृक्ष, बौद्धा; एक तरहकी रंज । -पात्र-पु०
 बौद्धकी दोहरी भारि । -पील-पु० पुष्प । -पुष्पा-
 ली० एक कला, सदरेई । -पूरक-पु० बौद्धकी जब जिसमें
 जेबुआ होता है । -पोट-पु० बौद्धका अंकुर; अच्छे
 कुलका बना । -बाह-वि० कुलसे बाहर किता हुआ ।
 -अव-वि० बौद्धका बना हुआ; सर्वज्ञात । -वृष्-
 पु० कुलका प्रधान व्यक्ति । -भोज्य-वि० जिसपर बंशा-
 गत अधिकार हो । पु० मौकसी जायदाद । -मूल-पु०
 रंजकी जब । -बच-पु० बौद्धका चामल । -राज-पु०
 बहुत उंचा बौद्ध । -रोचना-ली० बंशलोचन । -लक्ष्मी
 -ली० कुलकी संपत्ति । -ल्ल-वि० कुलसे पृथक्,
 लकेला । -लोचन-पु० बौद्धके पीने भागमें बननेवाला
 सके पदार्थ । -लोचना-ली० दे० 'बंशलोचन' ।
 -बर्चन-वि० कुलकी उन्नति करनेवाला । पु० बंशकी
 उन्नति करना । -वितति-ली० बौद्धका बंशक ।
 -विस्तर-पु० पूरा बंशवृक्ष । -वृक्ष-पु० बौद्धका पेज;
 किसी कुलके पूर्वपुरुषों तथा वर्तमान सदस्योंकी वृक्षके
 ठगपर बनायी हुई टालिका, कुसीनामा । -वृद्धि-ली०
 कुलोन्नति । -सखका-ली० बीजावृत्त, नीचेके भागमें
 लगायी जानेवाली लुई । -व्य-पु० एक वृत्त ।
 -व्यविक-पु० एक छंद; बौद्धके अंदरका पीछा भाग ।
 -वीर-वि० जिसके बंशमें कोई न हो; संतानहीन ।
 बंशक-पु० [सं०] एक मछली; एक बड़ी रंज; एक तरहका
 छाया भाँस ।

बंशकुर-पु० [सं०] बौद्धका अंकुर ।
 बंशावध-वि० [सं०] बंशपरंपरासे जाता; उधाराधिकारमें
 जाता ।
 बंशाव-पु० [सं०] बौद्धका छोर ।
 बंशानुकीर्तन-पु० [सं०] बंशवृक्षका उल्लेख ।
 बंशानुचरित-पु० [सं०] बंशवृत्त ।
 बंशावध-ली० [सं०] बंशात्मिका ।
 बंशाव-पु० [सं०] बंशलोचन ।
 बंशिक-पु० [सं०] अंगार; काला गन्ना; चार लोमकी एक
 प्राचीन नाथ; दूध और बेणीसे उत्पन्न पुत्र ।
 बंशिका-ली० [सं०] बौद्धी; अंगार; पिपली ।
 बंशी-ली० [सं०] बौद्धी; धमनी; चार कर्वाका एक मान;
 बंशलोचन । -बध-पु० कृष्ण । -दध-पु० बशीकी
 ध्वनि । -बद-पु० वह धरगदा पेड़ जिसके नीचे कृष्ण
 बंशी बजाते थे । -बादल-पु० बशी ब्रह्मा ।
 बंशी(सिन्)-वि० [सं०] बंशविशेषका; बंशविशेषसे संबध
 रखनेवाला ।
 बंशीय-वि० [सं०] बंशविशेषसे संबध; एक ही कुलमें
 उत्पन्न; अच्छे बंशका ।
 बंशोज-वि० [सं०] कुल, बंशमें उत्पन्न ।
 बंशोज-ली० [सं०] बंशलोचन ।
 बंश-पु० [सं०] पूर्वज; सगान; विद्वाद्; शिष्य; रीढ़, पीठ
 की हड्डी; बेंदरे, छाजनके बीचकी लकड़ी; सात पुत्र उत्पन्न
 नीचेका संबंधी; बंशके सदस्य । वि० बेंदरेमें लग्या हुआ;
 मेरुदंडसे संबध; लक्ष्मणमें उत्पन्न; बंश-संबंधी ।
 बंशा-ली० [सं०] बंशिका ।
 ब-पु० [सं०] बाहु; बरगा; भजगा; बसन; नाग; बाहु;
 समुद्र; पानी; साँवना; आरर; कम्बाग; वासस्थान;
 संरकी, कोई का छंद; व्याध; वदन; अन्ध; राहु; लक्ष्मी
 पुत्र; एक लता; कलशमें आबिर्भूत ध्वनि; मद्य; प्रवेता;
 वृक्ष । वि० शक्तिशाली, बलवान् । अ० [सं०] और; न;
 (संबोजक अन्वय जो श्रावः पूर्वोक्तके अकारमें मिलकर
 'ओ' हो जाता है-जैसे मदीजन, कदीवेश ॥)
 बक-पु० [सं०] दे० 'बक' (समस्त ॥) ।
 बकल, बकल-ली० [अ०] इज्जत, प्रतिष्ठा; साव्य, विश्राम;
 बर्ग, ऊँचाई ।
 बकल-पु० [सं०] बीतरकी छात ।
 बकाची-ली० [सं०] एक तरहकी मछली ।
 बकाव-पु० [अ०] बर्ग, प्रतिष्ठा; गांधीय ।
 बकाव-ली० [अ०] बर्गलका काम, वेष्टा; दूसरेकी ओरमें
 मुकदमेकी पैरवी करना; प्रतिनिधित्व । -बासा-पु०
 किसी मुकदमेमें बकीर होनेका प्रमाणपत्र, वह कैस जिसके
 जरिये किसी बकीरकी किसी मुकदमेकी पैरवीका अधिकार
 दिया जाय ।
 बकाव-अ० बर्गलके जरिये ।
 बकाव-पु० [सं०] एक राक्षस ।
 बकी-ली० [सं०] दे० 'बकी' ।
 बकी-वि० [अ०] बकलवाला, प्रतिष्ठित; ऊँचा; छाव-
 वाला ।
 बकी-पु० [अ०] प्रतिनिधि; दूसरोंकी ओरसे मुकदमोंकी

वैरवी करनेवाला; बकालत करनेवाला अधिकारी; राजपति-
विधि। -सखर-पु० वह बकील बी सखरकी ओरसे
मुकदमोंकी वैरवी करे।

बकीली-खी० बकीलका कार्य या पेशा; बकील जैसी
वहस। वि० बकीलका; बकील जैसा।

बकुल-पु० [सं०] दे० 'बकुल'।

बकुल-खी० [सं०] एक मोषधि, कुटकी।

बकुली-खी० [सं०] बकुलका फूल; एक मोषधि, कामोली।

बकुल-पु० [सं०] शरीर, धन; मन्त्री आदिकी विद्या करने-
वाला बलि (बै०); कुलीकी पनाबकीमें रहनेवाला एक
जंग।

बकुल-पु० [अ०] बाहिर होना, घटित होना। सु० -मैं
जाना-बाहिर या घटित होना।

बकुल-पु० घटना, बारदात; ईशामा, फसल।

बकुल-पु० [अ०] समझ; जानना, जागहरी, खबर; अनु-
भव; ठहरना। -बार-वि० जानकार, अनुभव। सु०
-पक्षपना-अच्छ लोखना।

बकुल-पु० [अ०] समय, काल; अवकाश; मौका; नियत
काल; मौकाकी पड़ी; मुतोबकीली बकी, मुतिकम्; वर्त-
मानकाल, जंग। -आ-वर्तमानकालिक, जमानेका।

-का बार्बदे-जो सब काम नियत समयपर करना हो;
समयप्रसक्त। -कर बाबुबाह-वर्तमान काममें राज्य
गर्नेवाला राजा; निश्चित, निर्द्वंद्व। -की पूली-कालका
प्रभाव; दुर्बोधकी देन। -की चीज़-सामयिक वस्तु;

काल या कलुषोपयोग अनुकूल राग, रासिनी। -ना
बकुल-दे० 'बना वेवला'। -बेबक-ममय-कुसमय;

किसी समय, इमेया। सु० -आ जाना-नियतकाल,
मौकाकी बची आ जाना। -गुज़ारना-समय नष्ट करना;

दिन काटना। -तंग होना-कालका प्रतिकूल होना।
-देना-किसीसे मिलने, बातचीत आदिके लिए समय

नियत कर देना। -पक्षपर-मुसीबत जाना, कठिनाईमें
पटना। -पक्षपर-मुसीबतके वक्त। -पर-मौकेपर;

काम पक्षपर; वादे वक्तपर। -बेवकाल काम जाना-
अकरतके समय काम जाना।

बकुल-कबकल-अ० अवगत, समय-समयपर।

बकुल-वि० [सं०] कहने योग्य; निरदनीय; तुच्छ, ह्रस्व।
उत्तरदायी। पु० कथन, वचन; किसी विषयमें कबनीय
बात; निदा; विषय; लोख।

बका(बु)-वि० [सं०] कहने, बोलनेवाला; भाषणकाममें
प्रवीण, विद्वान्; ईमानदार। पु० कथा कहनेवाला पुन्य,
व्यास; अध्यापक; बुद्धिमान् व्यक्ति।

बकली-वि० बकला, सामयिक।

बकुल-वि० [सं०] बोलनेका इच्छुक।

बकुल-वि० [सं०] जो बोलना चाहता हो।

बकुल-पु० [सं०] बोलनेवाला, भाषणकता।

बकुल-वि० [सं०] बकुल-पु० [सं०] भाषण; बाल्कीलक,
व्यास।

बकुल-पु० [सं०] मुख, ध्वन, बोल; दंत तगर दूक; एक
छंद; राजकी नोक; कार्याईय; एक तरकीबी पोछाक। -बुल-
पु० दंत। -आ-पु० आक्षण; दंत। वि० बुलने

उत्पन्न। -साक-पु० मुँहसे उत्पन्न किया हुआ साक-मुँह-
से बजाया जानेवाला एक बाजा। -मुँह-पु० गणेश।

-बुल-पु० साक। -बुल-पु० रोषका। -परिस्व-
पु० शर्मा। -बुल-पु० बाराही कंद। -मेदी(वि)-
वि० बहुत चरचरा। -बास-पु० नारंगी। -बुल-
खी० मुँहा, बुँकी। -बोबन-पु० तुलसीवि० अन्य।

-बोबी(वि)-वि० मुखोष्ण। पु० बनीरी नैय।
बकलसब-पु० [सं०] रात, काल; अथरपु।

बकल-पु० [अ०] ठहराव; खुदाके नामपर छोड़ी हुई
बीज; देवोत्तर संपत्ति; लोकोपकारार्थ दी हुई वस्तु
(करना)। -नामा-पु० वह लेख जिसके द्वारा कोई

बीज बकल की जाय। सु० -कर देना-ईश्वरार्पण कर
देना, (पुण्यकार्यमें) लगा देना।

बकल-पु० ठहराव, विराम; देर; अन्य विरल।

बक-वि० [सं०] देदा, झुका हुआ; तिरछा; बालबाज;
बैरमान; निर्दय, क्रूर। पु० नासिका; नदीका मोष;

प्रति; मंगल; वह; बक प्रह; पर्यट; अस्मिन्मन्त्र एक
प्रकार; त्रिपुर राक्षस; एक राक्षस; पीछेकी ओर हटना।

-कंड-पु० बैरका बूझ। -कंड-पु० खदिर वृक्ष।
-कील-पु० हाथीके लिए प्रयोगमें जानेवाला अंकुश।

-सक-सक-पु० करवाल। -सकि-वि० उलटी
गतिवाला (प्रगति); बैरमान, कुटिल। खी० बलदी,
देदी बाल। पु० मंगल; स्वर्गसे पंचवर्षसे आठवर्षक प्रह।

-गल-पु० [हिं०] फूँकते बजानेका एक बाजा।
-गामी(मि)-वि० दे० 'कमगति'। -ग्रीव-पु०

कंड। -बुल-पु० तोता। -साक-नाक-पु० मुँहसे
बजानेका एक बाजा। -मुँह-पु० तोता; गणेश।

-बुल-पु० खर। -बुल-खी० देदी गिताह; क्षीप-
पूर्ण छद्मि; मंद छद्मि। -खर-पु० शिव (जो बुलके

बक चौंकी बारण करते हैं)। -खी-बुल-वि०-
वि० वृत्त; बैरमान। खी० वृत्ता, बैरमानी। -बक-
पु० जुगलखोर, पिड्डन; तोता। -नासिक-पु० उल्लू।

वि० देदी नाकवाला। -पाद-वि० जिसका पैर देदा
हो। -पुच्छ-पुच्छिक-बालवि, -लंगूल-पु०

कुचा। -पुच्छ-पु० अणुस्थ; पलाश। -अभित-पु०
कुटिल बाध। -खुज-पु० गणेश। -बकल-पु०

खर। -सकल-खी० कुडविनी नामक छप।

बकु-पु० [अ०] बहरी, सम्मान; गौरव; पर। सु० -खीना
-मान, प्रतिष्ठा गैराना।

बकल-खी०, बकल-पु० [सं०] देवापन; कुटिलता;
पीछेकी ओर हटना।
बकल-पु० [सं०] पलायन।
बकल-पु० [सं०] मूल्य।
बकल-वि० [सं०] देहे भंगवाला। पु० हस; माँप।
बकल-पु० [सं०] दीन।
बकल-पु० [सं०] आगेका देदा भाग; एक पोषा।
बकि-वि० [सं०] झूठ बोलनेवाला; कुटिलभाषी।
बकिल-वि० [सं०] देदा, झुका हुआ, बकीभूत।
बकिमा(अप)-खी० [सं०] देवापन, कुटिलता, बक
हीनेकी क्रिया या भाव।

बन्धी (किन्) - वि० [सं०] कुटिल; गरबन देदी करने, झुकानेवाला; पीछेकी ओर गमन करनेवाला (ग्रह); वेरमान; धूर्त। पु० बन्ध ग्रह; बुद्ध वा जैन; वह जिसके अंग जम्मेसे ही टेढ़े हों।

बन्धोक्ति - की० [सं०] एक अलंकार जिसमें कानु या शेष के बलपर मित्र अर्थ किया जाता है; बन्धकारपूर्ण उक्ति; कानु उक्ति। - **बन्धोक्ति** - पु० आचार्य जूतककृत साहित्यका एक प्रस्ताव ग्रन्थ जिसमें बन्धोक्तिको ही कान्यकी आत्मा कहा गया है।

बन्धोक्ति, **बन्धोक्ति** - की० [सं०] मद हंसी, मुलकान।

बन्धस - पु० [सं०] एक नरहन्त्री शराव (सुश्रुत)।

बन्धसम्प्रतिनी - की० [सं०] परनी।

बन्धस्थल - पु० [सं०] दे० 'बन्धस्थल'।

बन्ध (स्) - पु० [सं०] पेट और गलेके बीचका हिस्सा, छाती; बेल।

बन्धन - पु० [सं०] सीना; अग्नि; शक्ति प्रदान करनेवाला पदार्थ।

बन्धना - की० [म०] पेट; नदी वा उमका बाट।

बन्धवृद्ध - पु० [सं०] कवच।

बन्धवृद्ध - पु० [सं०] मीना, हृदय।

बन्धु - की० [सं०] दे० 'बन्धु'।

बन्धोधी - पु० [सं०] विश्वामित्रका एक पुत्र।

बन्धोज, **बन्धोद्ध** - पु० [सं०] कुच, रतन।

बन्धोमंडली (किन्) - पु० [सं०] नृत्यमें हाथोंकी एक विशेष स्थिति।

बन्धोमणि - पु० [म०] सीनेपर पहननेका रत्न।

बन्धमय - वि० [सं०] बन्धन्य; जो कहा जा रहा हो, कबनका विषय हो।

बगला, **बगलामुखी** - की० [सं०] दम मन्त्राविद्याओंमें एक (तं०)।

बगौरह - अ० [अ०] इत्यादि।

बगुनु - पु० [सं०] बन्धा। वि० बन्धवधिया।

बर्चडा, **बर्चडी** - की० [म०] दीयेकी बत्ती; कटार; मेला।

बच - पु० [सं०] मोता; मर्य; कारण। वि० बोलनेवाला (समासोत्तम)।

बच (स्) - पु० [सं०] शब्द; वाक्य; पक्षियोंका गाना; परामर्श; अदेश।

बचवतु - वि० [म०] बहुत बोलनेवाला, बकवारी। पु० ब्राह्मण।

बचन - पु० [सं०] बोलनेका क्रिया; आदर्शके मुँहसे निकले हुए सार्वक शब्दोंका समूह; बात, वाणी; कही हुई बात; शास्त्रादिका वाक्य; आदेश; बोधना; उच्चारण; शब्दका अर्थ या भाव; राय, शिक्षा; सीठा; पक्ष; अनेकका बोध करनेवाला व्याकरणका विशेष विधान। - **कर** - वि० बोलनेवाला; आशकारी। - **कार** - **कारी (किन्)** - वि० आशपाकल। - **गुप्ति** - की० अशुभ वृत्तियोंसे बचनेके लिए वाणीका संयम (वे०)। - **गौरव** - पु० आशका आदर। - **प्रादी (किन्)** - वि० आशकारी। - **पट्ट** - वि० बोलनेमें कुशल। - **बद्ध** - वि० अग्निमें कोई बन्धा किया हो, प्रतिभ्रम। - **रचना** - की० भाषणका अच्छा

कर्म। - **कक्षिता** - की० वह परकीया नायिका जिसकी बातोंमें उसका प्रेम प्रकट हो। - **विद्वन्धा** - की० वह परकीया नायिका जो बाह्यानुवृत्ति कित्तिकी बन्धीभूत करे। - **सहाच** - पु० मिलनसार साथी।

बचवानुग - वि० [सं०] आशकारी।

बचवाबोध - पु० [सं०] अपसम्पूर्ण बात।

बचनीय - वि० [सं०] कहने योग्य; निन्दनीय। पु० निंदा।

बोध - पु० निंदामक होनेका बोध।

बचनोपक्रम - पु० [सं०] भाषणका आरम्भ।

बचर - पु० [सं०] मुर्गा; नीच व्यक्ति।

बचतु - पु० [सं०] शत्रु; दोष, अपराध।

बचस - वि० [सं०] बहुत बोलनेवाला; चतुर।

बचसापत्ति - पु० [सं०] बृहस्पति।

बचुसा - अ० [सं०] बचन द्वारा।

बचस्कर - वि० [सं०] दे० 'बचनकर'।

बचस्वी (किन्) - वि० [म०] भाषणपटु।

बचा - की० [सं०] एक ओपधि; मैना।

बचो - 'बचस'का सामान्यत रूप। - **ग्रह** - पु० कान।

विद्व - वि० बोलनेमें कुशल। - **हर** - पु० म्मादवाक्य।

बच्छ - पु० बक्ष, छापी; बल्म; बधा।

बज्जन - पु० [म०] गोलनेकी क्रिया; तौल; मार, मारने, बणों या माशाओंकी माप (उर्दू-काश्मी); बकज्जन, मङ्गल, मान, प्रतिष्ठा। - **कश** - पु० गोलनेवाला। - **हार** - वि० गोलनेवाला; भारी; मङ्गलपुत्र, बकज्जन रखनेवाला।

बज्जनी - वि० बज्जन रखनेवाला, भारी; मङ्गलपुत्र।

बज्ज - की० [अ०] कारण, सचय; जरिया; बेहशा, मुग्ध, दय, रीति। - **(हे) ब्रज्ज** - की० जीविकाका मापन।

बज्जा (बज्जक) - पु० [अ०] रज्जना, तरनीव देना; बनाना; बनावट; दग; रीति-नीति; वेशभूषाका प्रचलित ढंग, फैशन प्रसव; मिनहाई। - **दार** - वि० मन्त्रब्रजका शीतल, तरदार; सुंदर; फैशनका स्थावर रखनेवाला; जो अपनी बजापर कायम रहे, अपनी रीति-नीतिका त्याग न करे। - **दारी** - की० सुंदर वेशभूषा; तरदारारी; अपनी रीति-नीतिका निर्वाह। - **हमल** - पु० प्रसव, रक्षा जनना।

बज्जारत - की० [अ०] बज्जरीका काम या पद।

बजाहल - की० [अ०] सुंदरता; बज्जना; सम्मानित होना, बज्जपन।

बजाहल - की० [अ०] खोलकर कहना, विस्तारसे बताना। **बज्ज** - पु० दे० 'बुज्ज'।

बज्जीका - पु० [अ०] नित्यकर्म; नित्यपाठके प्रार्थना, दैनिक वृत्ति; मासिक वेतन; पेंशन; छात्रावृत्ति। - **कृषार** - **दार** - पु० बज्जीका पानेवाला।

बज्जीर - पु० [अ०] मन्त्री, सचिव। - **(रे) बज्जम** - पु० प्रधान मंत्री। - **बज्जिरा** - पु० पराक्रमी। - **अंग** - पु० मुख्यमंत्री। - **तालीम** - पु० शिक्षामंत्री। - **आल** - पु० जयमंत्री।

बज्जीरिस्तान - पु० बज्जीरी कबीलेका प्रदेश।

बज्जीरी - पु० मरहटी पठनोंका एक कबीला या जाति। **की०** दे० 'बजारन'।

बज्जीह - वि० [अ०] सुंदर; मन्त्रावृत्ति; मुखबरा;

सम्मानित ।

बज्र-पुं [अ०] विद्यमानता, शौज्दगी, त्रिदगी । सु०
-पक्षवज्राः-पाना-अस्तित्वमे आना ।

बज्रहासः, बुज्रह-स्त्री० [अ०] 'बज्र'का बज्र० ।

बज्र-पुं [अ०] आनन्दतिरेकः आनन्दतिरेक या (काव्य,
मंजीतकी) रसानुभूतिसे होनेवाली आनन्दविस्तृति । सु०
-मे आना-आनन्दतिरेकमे क्षयमे लगना या आनन्द-
विस्तृति हो जाना ।

बज्र-वि० [स०] बहुत कठोरः शीघ्रः अनीदार, कठि-
न । पुं इन्द्रका अस्त्र, कुलिश, अशनि (कहा जाता है
कि यह दशोर्विकी अस्त्रमे बनाया गया था), विजयी;
कौरवका अस्त्र, भालाः हारा आदि छेदनेका औजार;
होराः कौशिकीः एक बज्रः एक तरहका श्वेत कुश; एक
तरहका खमा; हस्तायः अश्वकः बज्र जैसी कड़ु भाषा;
वज्राः वज्रपुष्पः प्राचीः कौकिलाल वृक्षः बृहदः एक योग
(ज्यो०); विष्णुके चरणोंका चिह्न; अमिषकका एक पुत्र;
-क जैसा चिह्न (सौ०) एक आनन्द; एक जल । -कंड-
पुं हनुमान् । -कंडक-पुं मेहुँकः कौकिलाल पेड़ ।
-कंडशास्मली-स्त्री० एक नरक । -कंद-कर्म-पुं
जाली घृष्टन; सक्षरकंठः गाल इशका कुल । -कर्षण-पुं
३३ । -कपाली(किन्)-पुं एक बुद्ध (सौ०) ।
-कचव-पुं हनुमजबुद्ध, अंगेष कचव, एक तरहकी
पामाधि । -कारक-पुं जल नामक इत्थ । -कालिका-
स्त्री० सायदेदी, बुद्धकी जननी । -काही-स्त्री० एक
जिन-शक्ति । -कटि-पुं एक कौषा (पत्थर, काष्ठका
भेदन करनेवाला) । -कौल-पुं विजयी । -कुच-पुं
एक विशेष समाधि । -कुट्ट-पुं एक पहाड़; हिमालयपर
स्थित एक पौराणिक नगर । -केतु-पुं नरकासुर ।
-क्षार-पुं एक क्षार । -गर्भ-पुं एक बोधिसत्त्व ।
-गोष-पुं इक्षवहृदी, वीरवहृदी । -घात-पुं बज्रका
आघात । -बोष-पुं विजयीकी कड़क जैसी आवाज ।
-चंचु-पुं गृध्र । -वर्मा(मंजु)-पुं गंगा । -जित्-
पुं गवधः विजयी । -ज्वाल-स्त्री० वैरोचनकी एक
पौत्री; कुंभकर्णकी पत्नी (?) । -टीक-पुं एक बुद्ध ।
-डाकिनी-स्त्री० एक उपास्य डाकिनीवर्ग (सौ०) ।
-दुं-पुं गणेश; गरुडः गीधः मच्छरः मेहुँक । -दुग्ध-
पुं नीलम । -द्वंद्व-पुं एक अस्त्र (इंद्र द्वारा अर्जुनको
प्रदत्त) । -द्वंद्व-पुं चूडा, मंत्र । -द्वंद्वी-स्त्री० एक
पौषा (शत्रुलोक काम आता है) । -द्वंद्व-पुं वीरवहृदी;
एक राक्षस (मां०) । -द्वज-पुं वृष्ट । -द्वेष्टा-स्त्री०
एक देवी । -दुम-पुं मेहुँक । -धर-पुं इन्द्र; बोधि-
मत्स्य; उल्फ । -धार्वाधरी-स्त्री० वैरोचनकी पत्नी; एक
तंत्रदेवी । -धार-वि० होरेकी तरह कठिन धारवाला ।
-धव-वि० नृसिंह । -जाम-पुं कृष्णका चक्र; रक्त-
का एक अनुचर; दानवोंका एक राजा । -निर्बोध-
-निष्पेक्ष-पुं विजयीका कड़कना । -पत्तन-पुं बज्रका
गिरना । -परीक्षा-स्त्री० होरेकी परत । -पाणि-पुं
इंद्र; माह्वण; एक बोधिसत्त्व । -पात-पुं बज्रका या
बज्रका गिरना; भारी विपत्ति । -पुण्ड-पुं तिष्ठका
कूल । -पुष्पा-स्त्री० शतपुष्पा । -प्रम-पुं एक

विषाध । -प्रकाश-पुं एक समाधि । -प्राय-वि०
बहुत कठोर । -बाहु-पुं इन्द्र; अग्नि; मद्र । -बीजक-
-बीजक-पुं नृत्यकरज । -भुजुटी-स्त्री० एक तंत्रदेवी
(सौ०) । -भृष्ट-पुं इन्द्र । -भेरव-पुं एक बौद्ध
देवता । -भवि-पुं होरा । -भवि-पुं एक बोधि-
मत्स्य । -भाला-स्त्री० एक प्रकारकी समाधि । -भुक्ष-
पुं एक तरहकी समाधि । -भुष्टि-पुं इन्द्र; क्षत्रिय,
योद्धा; एक हविषार; बाण चलानेके समयकी हाथकी एक
विशेष स्थिति; जंगली कोल । -भूली-स्त्री० माधवणी ।
-भोगिनी-स्त्री० एक देवी, वरदभोगिनी (नं०) ।
-रव-पुं क्षत्रिय । -रव-पुं शंकर । -लेव-पुं
एक पत्तनर, दीवार आदिपर लगानेका एक ममाल ।
-लोहक-पुं लुचक । -वध-पुं वज्रवातेसे होने-
वाली मृत्यु । -वल्ली-स्त्री० अभितंहर लता । -घारक-
पुं पांच प्राणि जिनके स्मरणमे वज्रपातका निवारण
होता है (त्रैमिनि, वैशंपायन, पुल्लव्य, पुलह (अगस्त्य ?),
सुमंत कपि) । -वाराही-स्त्री० एक तंत्रदेवी (सौ०); माया-
देवी, बुद्धकी माया । -विषकंठ-पुं गवधका एक पुत्र ।
-विहस-वि० विष्णु द्वारा निहत । -वीर-पुं महा-
कान्तद्र । -बुद्ध-पुं मेहुँक । -बेग-पुं एक राक्षस;
एक विषाध । -बुद्ध-पुं दुषारी तलवारके आकारकी
मेनारचक्र । -बाधव-पुं साही नामक जानवर । -
शान्वा-स्त्री० वज्रलामा द्वारा प्रवर्तित एक संघदाय
(त्रै०) । -शंखला-स्त्री० सोनह महाविद्याओंमेंसे एक
(त्रै०) । -मंघात-पुं पत्थर जोड़नेका मसाला; भीम ।
-संहत-पुं एक बुद्ध । -सख-पुं ध्यानी बुद्ध ।
-समाधि-स्त्री० एक समाधि (सौ०) । -सार-पुं
होरा । वि० बहुत कठोर । -सूचि-सूची-स्त्री० वह
गई जिसकी लोकपर होरा लगा हो । -सूच्य-पुं एक
बुद्ध । -सेन-पुं एक बोधिसत्त्व । -हस्त-पुं इन्द्र;
अग्नि; मरुत्; शिव । -हृद्य-वि० बहुत कड़े दिलका ।
बज्रक-पुं [सं०] होरा; वज्रक्षारः भूयका एक उपग्रह;
चर्मरोगके लिए विशेष प्रकारसे तैयार किया जानेवाला
एक तेल; एक श्रुति (संगीत) ।
बज्रांग-पुं [सं०] हनुमान्; साँप ।
बज्रांगी-स्त्री० [सं०] कौशिका; एक लता, हज्जोब
(कोटपर गुणकारी) ।
बज्राजुजा-स्त्री० [सं०] एक बौद्ध देवी ।
बज्राजु-पुं [सं०] कृष्णका एक पुत्र ।
बज्रा-स्त्री० [सं०] दुर्गा; मेहुँक; गुडव ।
बज्राकर-पुं [सं०] होरेकी खान ।
बज्राकारः बज्राकृति-वि० [सं०] बज्रकी शकृका ।
बज्रास्त्री-स्त्री० [सं०] मेहुँक ।
बज्राव्य-पुं [सं०] एक बहुमुख्य पत्थर ।
बज्राघात-पुं [सं०] विजलीका आघात ।
बज्राचार्य-पुं [सं०] एक तांत्रिक बौद्ध आचार्य, लामा
(वह की-पुत्र सहित विहारमें रह सकता है) ।
बज्राभ-पुं [सं०] एक बहुमुख्य पत्थर ।
बज्राभिषयन-पुं [सं०] एक प्राचीन अनुष्ठान (इसमें
तीन दिन केवल जोका सत् साकार रहते थे) ।

वज्राक्ष-पु० [सं०] काले रंगका अक्षक ।
 वज्रायुध-पु० [सं०] इंद्र ।
 वज्रावर्त-पु० [सं०] एक मेघ ।
 वज्रावर्ति-पु० [सं०] वज्र ।
 वज्रासन-पु० [सं०] एक तरहका आसन; कुक्ष; वज्र सिला
 जिसपर बुद्धने आसन लगाकर बुद्धत्व प्राप्त किया था ।
 वज्रास्थि-स्त्री० [सं०] सेंदुह । -शृङ्खला-स्त्री० कोकि-
 लाक्ष हृक्ष ।
 वज्री-स्त्री० [सं०] सेंदुह ।
 वज्री (सिद्ध)-पु० [सं०] इंद्र; उज्ज्व; वीर्य सन्नासी ।
 - (सिद्ध) सिद्ध-पु० गन्ध ।
 वज्रोचरी-स्त्री० [सं०] एक देवी (वी०) ।
 वज्रोद्भूत-पु० [सं०] एक समाधि ।
 वज्रोली-स्त्री० [सं०] उदयगिरि की एक विशेष स्थिति ।
 वट-पु० [सं०] वरगदका वृक्ष; कोही; गोभी; बटिका; छोटा
 गैर; शूल्य; एक तरहकी रोटी; रस्ती; एकरूपता; एक
 तरहका पक्षी । -कण्डू-पत्र-पु० एक तरहकी लकड़
 तुलसी । -पत्रा-स्त्री० एक तरहकी चमेरी । -पत्री-
 स्त्री० पाचरकोट नामक पौधा । -वासी (सिद्ध)-पु०
 वक्ष ।
 वटक-पु० [सं०] वक्का; पकौड़ा; बट्टा; गोभी; आठ मासे-
 की लौक ।
 वटव-पु० [सं०] एक विविधा, बटेर; एक सुगन्धित गृध्र;
 एक तरहका ज़मर; बजानी; पगड़ी; चटाई चोर ।
 बटाकर, बटाकर-पु० [सं०] रस्ती ।
 बटाजव-पु० [सं०] कुबेर ।
 बटि-स्त्री० [सं०] एक तरहकी नौदी ।
 बटिक-पु० [सं०] शतरंजका मोहरा ।
 बटिका-स्त्री० [सं०] गोभी; बटी; शतरंजकी मोटी ।
 बटी-स्त्री० [सं०] गोभी; रस्ती ।
 बटी (दिक्)-वि० [सं०] जिसमें डोरी लगी हो; गोम । पु०
 दे० 'बटिक' ।
 बट्ट-पु० [सं०] ब्रह्मचारी; बालक ।
 बट्टक-पु० [सं०] भैरव-विशेष; बालक; ब्रह्मचारी ।
 बटोवका-स्त्री० [सं०] एक नदी (भा०) ।
 बट्टक-पु० [सं०] गोभी, बटिका ।
 बठर-पु० [सं०] चिकित्सक, जलपात्र वृष्ट जन; मूर्ख ।
 वि० मूर्ख; दुष्ट ।
 बडब-पु० [सं०] वह घोड़ा जो घोड़ी जैसा हो । -घेबु-
 स्त्री० घोड़ी ।
 बडबा-स्त्री० [सं०] घोड़ी; अधिनी नक्षत्र; टासी; वेध्या;
 प्राज्ञान जातिकी स्त्री । -भर्ता (पुं०)-पु० उन्मैःभवा । -
 सुख-पु० बडवानल; शिव । -सुख-पु० अधिनीकुमार ।
 बडभा-स्त्री० [सं०] एक तरहकी विविधा ।
 बडभि, बडभी-स्त्री० [सं०] सबसे ऊपरी मंत्रिलपरका
 कमरा; मकानकी बाह्य छान ।
 बडब-पु० [सं०] दे० 'बडब' ।
 बडबा-स्त्री० [सं०] दे० 'बडबा' ।
 बडबसिक, बडबसी-स्त्री० [सं०] एक रायिनी ।
 बडा-स्त्री० [सं०] गोभी, बटिका ।

बडिवा-पु० [सं०] कटिया, बंसी; नक्षत्र लगानेका एक
 औजार ।
 बडू-वि० [सं०] बडा, बृहत् ।
 बण-पु० [सं०] शम्भ, सौरमुक्त ।
 बणिक (बु)-पु० [सं०] बाणिज्य, व्यापार करनेवाला;
 बनिवा । - (बु) कटक-दे० 'बणिकसार्थ' । -कर्म (बु)
 -पु०, -क्रिया-स्त्री० बनियेका पेसा, सौदामरी । -वध
 -पु० व्यापार; दुकान; तुला राशि । -हार्थ-पु०
 व्यापारियोंका मित्रोद, कारवर्ष ।
 बणिग्ग्राह-पु० [सं०] व्यापारियोंका मंडल ।
 बणिग्बन्धु-पु० [सं०] नीलका पौधा ।
 बणिग्भाव-पु० [सं०] व्यापार ।
 बणिग्बह-पु० [सं०] कैंट ।
 बणिग्बीबी-स्त्री० [सं०] हाट, बाजार ।
 बणिग्बुद्धि-स्त्री० [सं०] व्यापार ।
 बणिज-पु० [सं०] सौभाग्य; शिव; तुला राशि; एक
 करण (स्त्री०) ।
 बणिजक-पु० [सं०] व्यापारी ।
 बणिजा-स्त्री० [सं०] व्यापार ।
 बणिज्य-पु०, बणिज्या-स्त्री० [सं०] व्यापार, सौदामरी ।
 बर्हस-पु० [सं०] कर्मभूषण; शेखर; हार ।
 बर्हसित-वि० [सं०] दे० 'अवर्हसित' ।
 बर्ह-ज० [सं०] जेठ, अनुकंपा, मनोष, विमय आदिक।
 बोधक एक शब्द ।
 बरव-पु० [सं०] जन्मस्थान, मूल नामस्थान, स्वदेश ।
 -बोस्त-पु० देश-हिस्से । -बरस्नी-स्त्री० देशभक्ति ।
 बरनी-वि० अपने देशका, स्वदेशी; स्वदेशवासी ।
 बरीरा-पु० [सं०] तरीका; दस्तूर, चलन, राह ।
 बरू-स्त्री० [सं०] स्वर्गकी एक नदी । पु० मक्ष; आत्मका
 एक रोग; सच बोधनेवाला व्यक्ति ।
 बलीका-स्त्री० [सं०] बंध्या स्त्री; वह स्त्री या गाय जिसका
 गर्भ दुर्घटना आदिसे मिर जाय ।
 बल्-ज० [सं०] साधव या ममान्तात्मक एक शब्द जो
 संज्ञा या विशेषणके अंतमें जोड़ा जाता है ।
 बल्स-पु० [सं०] बछ्वा, गायका बच्चा; मंतान; पुत्र प्रायः
 प्यारका मन्त्रन करनेके (वि० संबोधनमें प्रयुक्त); वध;
 बत्तासुर; वक्ष, छाती; एक देश । -कामा-वि० स्त्री
 बच्चोंको प्यार करनेवाली; बच्चेकी चाह करनेवाली (स्त्री
 या गाय) । -घोष-पु० नक्षत्रोंके प्रथम वर्गमें स्थित एक
 देश । -तंती, -तंती-स्त्री० बछ्हेकी बोंबेकी लंबी
 रस्ती । -बूँत-पु० एक तरहका वान । -बाब-पु०
 एक विप्रेता पौधा, एक तैज जहर, बछनाय । -पाक,-
 पालक-पु० बछ्हेकी देखभाल करनेवाला; कृपा;
 बलराम । -पीसा-स्त्री० वह गाय जो बछ्हेकी दूध
 पिछा चुकी हो । -राख-पु० बल्स देशका राजा, उद्-
 वन । -रूप-पु० छोटा बछ्हा । -शाखा-स्त्री० वह
 स्थान जहाँ बछ्हे रले जायें ।
 बल्सक-पु० [सं०] बछ्हा; छोटा बछ्हा; सिद्ध, बच्चा;
 कुटन; पुण्यकसीत; इंद्र जी; निर्गुही । -बीख-पु०
 ह्रस्व जो ।

वत्सलर-पु० [सं०] अजान बछवा जो हठमें न जीता गया हो ।

वत्सलरी-श्री० [सं०] गीन सालकी बछिया, कलोर ।

वत्सल-पु० [सं०] बपे, साक ।

वत्सलसक-पु० [सं०] वर्षका अंतिम मास ।

वत्सलरवि-पु० [सं०] वर्षका पहला मास ।

वत्सलरार्थ-पु० [सं०] एक वर्षके लिए किया या दिया हुआ कण ।

वत्सल-वि० [सं०] पुत्र-प्रेमसे युक्त; छोटीके प्रति पुत्र-सा प्रेम करनेवाला । पु० पुत्रादिके प्रति रतिभाव; पुत्रकी भाग; विष्णुका एक नाम; प्यार ।

वत्साक्षी-श्री० [सं०] एक तरहकी कनजी ।

वत्साद्यन-पु० [सं०] मेडिया ।

वत्सादवी-श्री० [सं०] गुदच ।

वत्सलसुर-पु० [सं०] कंसका अनुचर एक अमुर जिस कणने मारा था ।

वत्सिका-श्री० [सं०] बछिया ।

वत्सिमा (अम्बु)-श्री० [सं०] बचपन ।

वत्सी (विश्व)-पु० [सं०] विष्णु । वि० जिसके बहुतने बने हैं ।

वत्सीव-पु० [सं०] गोपालक । वि० बत्स-मवर्धा ।

वदंति, वदंती-श्री० [सं०] बात, कथन, कथा ।

वदु-वि० [सं०] बोलनेवाला (ममासांतमे-प्रेम प्रियंवद) ।

वदक-पु० [सं०] बक्ता, कहनेवाला ।

वदतोभ्यावात पु० [सं०] कथनका दोष, पहने कहीं हुई गानके विरुद्ध कथन ।

वद्व-पु० [सं०] चेहरा, मुखक; मुख; छल; भाषण, कथन; अग्रभाग; विमुक्तका शीर्ष । -पचन, -माफल-पु० सॉल । -मदिरा-श्री० मुक्ताद्यन, अथराद्यन । -श्यामिका-श्री० मुक्ताका एक रोग; चेहरेपरका कालापन ।

वदनामय-पु० [सं०] मुक्ताका रोग ।

वदनासव-पु० [सं०] कार, बूक; अथरमय ।

वदबोद्ध-पु० [सं०] मुक्ताका गहर ।

वद्वन्ध, वद्वन्ध-वि० [सं०] उदार; अत्यन्त दानशील; बागी; मधुरभाषी. बातमें मंजु करनेवाला । पु० उदार व्यक्ति ।

वद्वाम-वि० [सं०] बोलनेवाला, भाषण करनेवाला ।

वद्वर-पु० [सं०] वेर; कपासका बीज ।

वद्वरा-श्री० [सं०] कपासका पौधा ।

वद्वाम-पु० [सं०] वादाम नामक फल ।

वद्वक-पु० [सं०] आवर्त, अंबर; एक मछली, पहिया, पाठीन ।

वद्वक-पु० [सं०] एक तरहकी मछली, वदाल ।

वद्वक-वि० [सं०] बहुत बोलनेवाला ।

वदि-अ० [सं०] कृष्णपक्षमें (महीनेके नामके अंतमें जोड़ा जाता है) ।

वदितव्य-वि० [सं०] कहने योग्य ।

वदित्वा (तु)-पु० [सं०] बोलने, कहनेवाला ।

वदी-अ० दे० 'वदि' ।

वदीमत-श्री० [अ०] अमानत, परोवर ।

वदुसामा-सं० कि० मला-बुरा कहना, दोषारोप करना ।

वद्व-वि० [सं०] कहने योग्य, अनिष्ट । पु० बात, कथन; कृष्ण पक्षके दिन । -पद्व-पु० कृष्ण पक्ष ।

वद्व-पु० [सं०] वार डालना, नाश, हनन; मृत्यु या शारीरिक दंड; आपात; कलना; विरोध; गुणनक्रिया; मारनेवाला । -कर्मविकारी (विद्व)-पु० जहाद ।

-काक्षी (विद्व)-वि० मृत्युकी इच्छा करनेवाला ।

-काम-वि० मारनेकी इच्छा रखनेवाला । -काम्या-श्री० मारनेकी इच्छा । -क्षम-वि० बचने योग्य ।

-जीवी (विद्व)-पु० बचका काम करने रोजी कमाने-वाला-कसार, जहाद, व्याधा आदि । -द्वं, -निग्रह-पु० फौसीकी सजा । -निर्जक-पु० हत्याका प्रायश्चित ।

-भूमि-श्री०, -स्थान-पु० वह स्थान जहाँ प्राणदंड दिया जाय, बचमर ।

वद्व-वि० [सं०] हत्या करनेवाला; घातक । पु० जहाद; व्याधा; मृत्यु; एक तरहका मरका ।

वद्व-पु० [सं०] घातक हथियार ।

वद्वगणक-पु० [सं०] कारागृह ।

वद्व-वि० [सं०] बचने योग्य ।

वद्वि-पु० दे० 'वधिक'; [सं०] कस्तूरी ।

वद्वि-पु० [सं०] कामदेव; कामासक्ति ।

वद्वि-वि० [सं०] दे० 'वधिर' ।

वद्व, वद्व-श्री० [सं०] पुत्रवध्; दुलहिन; पुवती ।

वद्व-श्री० [सं०] पिताके साथ रहनेवाली नवयुवती; पुत्रवध् ।

वद्व-श्री० [सं०] दुलहिन; पत्नी; पतीह; श्री; मादा जानवर । -गृहप्रवेश-पु० श्रीका पत्निके घरमें प्रवेश करने-यो एक विधि । -घन-पु० श्रीका निजी धन । -पक्ष-पु० कन्यापक्षके लोग । -वद्व-पु० विवाहके समय कन्याको दिया जानेवाला वस्त्र ।

वद्व-श्री० [सं०] नवयुवती; पुत्रवध् ।

वद्व-पु० दे० 'अववत्' ।

वद्व-वि० [सं०] जिसकी परिणति धृत्यमें हो ।

वद्व-वि० [सं०] मारनेको तत्पर । पु० हत्यारा ।

वद्व-वि० [सं०] मारनेका हथियार या उपाय ।

वद्व-वि० [सं०] इतन्व, मार डालने योग्य; दंख । पु० वह जिसका बप या सजा की जानेवाली हो । -घातक,

-ध्व-वि०, पु० प्राणदंड पाये हुए व्यक्तिका बध करने-वाला । -विद्व-पु० प्राणदंड पाये हुए अपराधीका विद्व ।

-विद्वि-पु० 'वध्वपद्व' । -पद्व-पु० वधदंड दिये जानेके समयका काल वस्त्र । -पद्व-पु० फौसी देनेके समय की जानेवाली मुनादी । -पाठ-पु० कारारक्षक,

'जेलर' । -भूमि-श्री०, -स्थल, -स्थान-पु० दे० 'वधभूमि' । -मात्रा-श्री० प्राणदंड जानेवालेके सिरपर पहनाया जानेवाला हार । -वास (स)-पु० प्राणदंड पाये हुए व्यक्तिका वस्त्र । -शिला-श्री० वह शिला या

पेटी जिसपर बध किया जाता है ।

वद्व-श्री० [सं०] बध, हत्या ।

वद्व-पु० [सं०] एक धातु, सीसा; समवेका तसमा ।

पञ्चक-पु० [सं०] सीता ।

वन्नि-वि० [सं०] वनिषा ।

वन्निषा-पु० [सं०] वनिषा पुष्प, शोभा ।

वन्नी-ली० [सं०] चमकेका तल्ला ।

वन्ध-पु० [सं०] जहा ।

वन्-पु० [सं०] जंगल; बाग, उपवन; जल; घर; सरना; पञ्चादिका समूह; पुष्पलवक, फूलोंका गुच्छा; सम्वासितोंकी एक उपाधि; काठका पात्र; काष्ठ; कल्प-निवास; प्रकाशकी किरण । -कङ्कल-पु० एक अच्छी जातिका मृग । -कन्ना-ली० वनपिप्पली । -कङ्कली-ली० जंगली केला । -करी(रिक्)-पु० दे० 'वनकुंजर' ।

-काम-वि० जंगलमें रहनेका इच्छुक । -कुंजर-गज-पु० जंगली हाथी । -कोकिलक-पु० एक वृक्ष । -कोञ्च-पु० एक कदम्ब । -कोछि-ली० जंगली बेर । -न-पु० वनवासी । -गमन-पु० सम्न्यास-ग्रहण । -गह्व-पु० वना जंगल । -गुप्त-पु० वायुस । -शोच-वि० प्रायः जंगलमें जानेवाला; जलमें रहनेवाला । पु० व्याधा; वनवासी; जंगल । -प्रादी(रिक्)-पु० व्याधा । -चंद-पु० देवदारु । -चंद्रिका-ज्योत्स्ना-ली० एक तरहकी चमेली । -चंपक-पु० चंपका एक पेड़ ।

-चम्-पु० वनमें भ्रमण करनेवाला आदमी; जंगली आदमी; चम्पू; एक बीज; भ्रमण । -चारी(रिक्)-पु० वनचर । -छाय-पु० जंगली बकरा; खर । -ज-वि० वनमें उत्पन्न । पु० जंगलमें रहनेवाला; हाथी; कमल; मोक्ष; जंगली विजोरा नौदू; वनकुलम्भी; एक फल, सुंदर ।

-जा-ली० वनतुलसी, वनकासी; अश्वगंधा; निर्गुडी; मुद्रपर्णी; सकेद कंटकारी । -जास-वि० वनमें उत्पन्न । -जीर-पु० काली जीरी । -जीवी(रिक्)-पु० लकड़-हारा; बहेलिया । -सिक-पु० इक, हरीतकी । -सिका, -सिकिका-ली० पाठा । -तुलसी-ली० बबरी । -ह-पु० बादल । -हाह-पु० वनाधि । -दीप-पु० वनचंपक । -देव-देवरा-पु० जंगलका अधिष्ठाता देवता । [ली० 'वनदेवी'] -द्विष-पु० वनकुंजर ।

-धाम-पु० जंगली जहा । -धेनु-ली० गायी । -पल्लव-पु० शोभावन नामक वृक्ष । -पांशुक-पु० व्याधा । -पिप्पली-ली० छोटी पीपल । -पूरक-पु० जंगली विजोरा नौदू । -प्रवेश-पु० दे० 'वनगमन' । -प्रस्थ-वि० तपस्वी । -प्रिष-पु० कोवल; लंगूर किरन; चंदेकेका पेड़; कपूकचरी । -मूषणी-ली० कोयल । -मक्षिका-ली० ईँट । -मक्षिका-ली० सेबतीका पीपा या फूल । -माहंग-पु० वनकुंजर ।

-माधुष-पु० एक तरहका बंदर । -माका-ली० वनके फूलोंकी माका; घुटनीतक लंबी कटु-कुसुमोंकी माका (हृण्णी) । -माकिनी-ली० दारकापुरी; बाराही । -माळी(रिक्)-वि० वनमाका पहननेवाला । पु० कुण्ड । -मुक्(क्)-मूल-पु० बादल । -मुह-पु० मुकुटक । -मुह-ली० मुद्रपर्णा । -मुह-ली० जंगली विजोरा नौदू; काकशासिणी । -जीव-ली० जंगली केला । -राज-पु० सिंह; एक वृक्ष, अदम्यतक ।

-राजि-राजी-ली० वन, जंगल, वृक्षसमूह; जंगलकी पगवंधी; वायुदेवकी एक दानी । -रह-पु० कमल । -रहली-ली० वनकी शोभा; केला । -रहा-ली० जंगली बेल । -रवरीका-ली० वनचुरी । -वास-पु० वनमें रहना । [मु०-०] देवा-वली छोकर वनमें रहनेकी आज्ञा देना । -लेवा-वली छोकर वनमें रहना । -वासक-पु० शास्त्रकी कंद । -वासव-पु० गंधविलास । -वासी(रिक्)-वि० वनमें रहनेवाला । पु० वनमें रहनेवाला व्यक्ति; एक ओषधि, कपय, बाराही कंद; शास्त्रकी कंद; द्रोणकाक, काला कौआ; नीलमहिष नामक कंद । -विकासिनी-ली० एक लता, जंघपुष्पी । -वीज-लीजक-पु० जंगली विजोरा नौदू । -हंसाकी-ली० वनमंडा । -वृष्टि-ली० जंगलसे जीविका चकाना । -वीहि-पु० तिथी । -वृहरी-ली० केनोबा; जंगली खली । -वृगट, -वृगटक-पु० मोहर । -शोभन-पु० कमल । -वा (वन)-पु० नौदू; बाघ; गंधविलास । -संकट-पु० मयूर । -समूह-पु० वना जंगल । -सरोजिनी-ली० वनकासी । -सिपु-पु० वनकुंजर । -स्थ-पु० वनवासी व्यक्ति; बानप्रस्थ; वृष । -स्थली-ली० वनकी भूमि, जहाँ वन हो । -स्था-ली० पीपल वृक्ष; बटवृक्ष । -स्थानी(रिक्)-वि० जंगलमें रहनेवाला । पु० तपस्वी । -लक(क्)-ली० वनमाला, गगली फूलोंकी माला । -हरि-पु० सिंह । -हरिदा-ली० वन-हल्ली । -इव-पु० एक एकाग्र यज्ञ । -हास-पु० कौंस; एक फूल, कुंद । -हासक-पु० काशानुष । -हुतासन-पु० वनाधि ।

वनर-पु० [सं०] वनमानुष ।

वनस्पति-ली०, पु० [सं०] विना फूलोंके वृक्ष (गुल्म, पीपल, पाकर आदि-मनुष्य) ; न्ना, वृक्ष आदि; मृगफली आदिका वनवा हुआ नैल (आ०) ; वरगद; सोम; तना; यक्षसंभ; फोसीकी टिकटा । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र, विष्णु; सम्न्यासी । -वाक-पुं, पौरी आदिके विषयमें सारांश पांग विवेचन करनेवाला विद्वान, वनस्पति-विद्वान ।

वनोत्त-पु० [सं०] वनकी भूमि; वनका सीमांत भाग । वनोत्तर-पु० [सं०] अग्र वन; वनका दीपरी भाग । वनाल-पु० [सं०] खरहा ।

वनाग्नि-ली० [सं०] वनमें लगनेवाला आग, दाशानल । वनाज-पु० [सं०] जंगली बकना । वनाटन-पु० [सं०] वन-भ्रमण ।

वनाटु-पु० [सं०] एक तरहकी नीली मन्थी । वनायु-पु० [सं०] एक प्राचीन प्रदेश (अष्टे घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध); वनायुका निवासी; पुरुरवाका एक पुत्र । -ज-पु० वनायुमें उत्पन्न घोड़ा ।

वनारिहा-ली० [सं०] वनहरिहा । वनार्चक-पु० [सं०] हार वनानेवाला । वनालक, वनालकक-पु० [सं०] गेक ।

वनालिका-ली० [सं०] एक लता, हाथीघुंटी । वनाल-वि० [सं०] केक जल पीकर रहनेवाला । पु० एक तरहका छोटा जी ।

वनाश्व-पु० [सं०] काला कौआ; जंगलमें रहनेवाला । वनाहिर-पु० [सं०] जंगली मृगर ।

बधि-पु० [सं०] अधि; डेर; बाचना। स्त्री० रच्छा।
 बभिका-स्त्री० [सं०] छोटा बब, कुंजबन।
 बभित-वि० [सं०] बाधित; सेवित; अभिलषित; पूजित।
 बभिला-स्त्री० [सं०] स्त्री; भिया, भेषही; मद्या; एक वृक्ष,
 तिष्का। -द्वि० (पु०) -पु० रमणी-देवी। -ओमित्री-
 स्त्री० नागिन जैती स्त्री। -मुष्क-पु० एक जाति। -
 बिकाल-पु० कियौना विहर, क्रीडा आदि।
 बनी-स्त्री० [सं०] छोटा बन।
 बनी(विष्)-पु० [सं०] बानपत्न्य; वृक्ष; सोम।
 बनीक-पु० [सं०] भिक्षुक; मन्मथासी।
 बनीपक, बनीयक-पु० [सं०] भिक्षुक।
 बनेकिष्ठक-पु० [सं०] अचानक या सहज मिलनेवाली
 वस्तु।
 बनेव-पु० [सं०] बनवर, जंगलमें, फिरनेवाला; जंगली
 आदमी; सम्भासी; वस्तु।
 बनेव-पु० [सं०] बधिया आत्म; पापका, पर्वर।
 बनेविषयक-पु० [सं०] दे० 'बनेकिष्ठक'।
 बनोत्सर्ग-पु० [सं०] मंदिर, रूप आदि बनवाकर सर्व-
 जनिक उपयोगके लिए दान करना।
 बनोन्वाह-पु० [सं०] गैरा।
 बनोज्जवा-स्त्री० [सं०] बन्दकपासी।
 बनोपद्रव-पु० [सं०] बनराह।
 बनोपल-पु० [सं०] घुसा गोबर, कंका।
 बनोका(कम्)-पु० [सं०] मपत्तो; अग्न्यवानी; वंदर,
 एकर आदि जानवर।
 बनोपधि-स्त्री० [सं०] जंगली जड़ी-बूटी।
 बन्-पु० [सं०] बाओदार, भारी।
 बन्ध-वि० [सं०] बजमें पैदा होनेवाला; जंगली। पु० जंगली
 जानवर; जंगली घोषा; बाराहीकंद; बनधुरन; शंभु; त्वचा।
 -द्वि०-पु० जंगली हाथी। -पक्षी(क्षिप्र)-पु० जंगली
 चिड़िया। -कुत्ति-स्त्री० जंगलमें उपजत पदार्थ। वि०
 ऐसी जीवोंपर जीवन बितानेवाला।
 बन्धा-स्त्री० [सं०] सघन बन्ध; बनीका मसूह; जल-प्लावन;
 अस्त्राधि; गोपाल-कक्षी; अस्त्रगंध; सुवन्ध; मुद्रपणी;
 भद्रमुखा।
 बन्धोपोद्गी-स्त्री० [सं०] बनपोष।
 बन्ध-पु० [सं०] मुंडन; बीज बोना; बजन; बोनेवाला।
 बन्धन-पु० [सं०] बीज बोना; केश-मुंडन; छुका; नारंगी
 दुकान; मंथुसाला; करवा।
 बन्धनी-स्त्री० [सं०] शाल बनाने या कपड़ा बुननेका
 स्थान।
 बन्धनीय-वि० [सं०] बोने योग्य; मुंडनके योग्य।
 बन्धा-स्त्री० [सं०] मेर; बंदी; विवर; जौतीका पर्दा। -कृष्ण-
 -पु० बन्धवा।
 बभित-वि० बोना हुआ।
 बभिक-पु० [सं०] जन्मक, पिता।
 बभुष्क-पु० [सं०] शरीरका रस।
 बभु-पु० [सं०] शरीर।
 बभु(धु)-पु० [सं०] शरीर, देह; आकृति; सौंदर्य; सुंदर
 रूप।

बभुन-पु० [सं०] स्नान; देवता।
 बभुमान-वि० बभुमान्, सुंदर और पुष्ट देहवाला; सुंदर;
 साकार, मूर्त।
 बभुवर-वि० [सं०] मूर्त; सुंदर।
 बभुव-पु० [सं०] आकृति-मूर्त।
 बभुवा-स्त्री० [सं०] बभुवा।
 बभुवसा-वि० स्त्री० [सं०] परम सुंदरी। स्त्री० बभुवारिणी
 कला; बनमैत्रवकी पत्नी।
 बभुष्मा(धुव)-वि० [सं०] शरीरी, मूर्त सुंदर।
 बभुवर-वि० [सं०] सौंदर्यवाला।
 बभु(धु)-पु० [सं०] पिता, जनक नारंग; बीज बोनेवाला,
 किमान; कवि।
 बन्ध-पु० [सं०] मीठा, दूहा, मिष्टीका स्त्रुप; दुर्ग, नगरकी
 खार्स निकली मिष्टी; स्त्री आदिका संगसे दूह आदिकी
 मिष्टी कुदेना; खंवा किनारा; तट; सेव; वृक्ष; पहाड़ीकी
 ढाल; पहाड़ीकी चोटी; अधिवृक्षा; नीबू; दुर्गस्थ नगरका
 सिंहद्वार; परिका; मैदान; घेरा; एक प्रजापति; स्त्रीसा;
 पिता; म्बास, कृष्णदेवायन; चौदहवें मनुका एक पुत्र।
 -क्रिया, -क्रीडा-स्त्री० सौंदर्य आदिका दृश्यकी मिष्टी
 कुदेना।
 बन्धक-पु० [सं०] पधिवेका घेरा; परिधि।
 बन्धा-स्त्री० [सं०] यजीठ; तीर्थवर निमिकी माता (जै०);
 मिष्टीका चिपटे सिरेका बंध।
 बधि-पु० [सं०] समुद्र; क्षेत्र; दुर्गति, म्यानकी दुर्गमता।
 बध्री-स्त्री० [सं०] बानी, मिष्टीका दूहा।
 बन्धा-पु० [अ०] बचनका पालन; प्रीति, मित्रता आदि-
 का निर्वाह; कर्मपालन; सुरीवत; कृतकता। -द्वार-
 वि० बचन-पालक; प्रीति, मित्रता आदिका निर्वाह करने
 वाला, स्वामिभक्त, राजभक्त। -द्वारी-स्त्री० बफादार
 होना; प्रीति आदिका निर्वाह; स्वामिभक्ति, राजभक्ति।
 बन्धा-स्त्री० [अ०] मृत्यु, मौत। मु० -बाना-मर
 जाता।
 बन्ध-पु० [अ०] दूतमहल, प्रतिनिधि-महल, 'डेपुटेशन'।
 बन्धा-स्त्री० [अ०] मरी, महामारी, एक ही वक्तमें बहुतों-
 की होनेवाला रोग (देहा, प्लेग इ०)। -ई-वि० महा-
 मारोत्तर, सुतरी (शोमरी)।
 बन्धा-पु० [अ०] कठिनार्थ; बोझ, भार; बला, अभिघात।
 वि० भाररूप, दूभर। - (ले) जान-वि० जानका
 अजाब, मारी कष्टका कारण (ही जाना)।
 बन्ध-पु० [सं०] बधन, कै।
 बन्धति-स्त्री० [सं०] बधन करनेकी क्रिया।
 बन्धु-पु० [सं०] बधन; बंधु; मत्तली; हाथीकी सँकसे
 निकाला हुआ पानी।
 बन्ध-पु० [सं०] उलटी, कै करना; बाहर निकालना;
 पीडा; आकृति; बधन करानेवाली दवा; भोग।
 बन्धा-पु०-सं० कि० कै करना।
 बन्धनी-स्त्री० [सं०] बंध।
 बन्धनीया-स्त्री० [सं०] मन्त्री।
 बन्धि-स्त्री० [सं०] बधनका रोग; बधन करानेवाली दवा।
 पु० अधि; वृद्ध; पन्ना।

वर्णित-वि० [सं०] वर्णन किया हुआ; वर्णन कराया हुआ।

वर्णी-स्त्री० [सं०] दे० 'वर्म'।

वर्णी(मित्र)-वि० [सं०] वर्म रोगसे ग्रस्त।

वर्ण्य-वि० [सं०] जिससे वर्णन कराया जाय।

वर्ण-पुं० [सं०] दे० 'वर्म'।

वर्णक-पुं० [सं०] बीटा; रोगक। वि० बहुत छोटा।

वर्णी-स्त्री० [सं०] बीटा; रोगक। -कूट-पुं० बौली, विमोटा।

वर्णक्रम-पुं० [सं०] उम्र, अवस्था।

वर्णपरिचयि-स्त्री० [सं०] अवस्थाकी प्रौढ़ता।

वर्णप्रमाण-पुं० [सं०] जीवनकाल।

वर्णान्वि-स्त्री० [सं०] बान्ध और तात्पर्यके बीचका काल।

वर्णस्थ-वि० [सं०] जवान; बली; प्रौढ़। पुं० समसामयिक व्यक्ति; समवयस्क मित्र।

वर्णस्था-स्त्री० [सं०] शान्त्वति; युवती; आमलका; हरीतकी; गुडुची; श्रीटा इलायची; काकीली; अस्वत्थ-पर्णा; मत्स्याक्षी; युवती; स्त्री।

वर्णस्थान-पुं० [सं०] जीवन।

वर्णस्थायन-पुं० [सं०] जवान बनाये रखना।

वर्ण-पुं० [सं०] जुलाहा।

वर्ण(स्)-पुं०, स्त्री० [सं०] उम्र, अवस्था; जवान; पक्षी; बया; शक्ति, स्वास्थ्य। -**(स्)वर्ण**, -**कृष्ण**-वि० स्वास्थ्य-वर्द्धक।

वर्ण-पुं० [सं०] हुनरा, पुननेकी क्रिया।

वर्ण्य-सर्व० [सं०] हम स्व।

वर्णस-स्त्री० अवस्था, उम्र। पुं० [सं०] पक्षी।

वर्णसिका-स्त्री० दे० 'वर्णसिका'।

वर्णस्थ-वि० [सं०] उम्र, अवस्थाका (समस्तरूपमें प्रयुक्त-जैसे अवयवस्थक, समवयस्क); सवाना, बाल्मि।

वर्णस्थ-वि० [सं०] दे० 'वर्णस्थ'।

वर्णस्थ-वि० [सं०] समवयस्क; समसामयिक। पुं० हम-जोड़ी, मित्र (प्रायः संशोधनमें प्रयुक्त)। -**भाव**-पुं० मैत्री।

वर्णस्थक-पुं० [सं०] समसामयिक व्यक्ति; सखा, मित्र।

वर्णस्था-स्त्री० [सं०] सहेली; अंतरंग सखी; ईंट।

वर्णस्थिका-स्त्री० [सं०] सखी, सहेली; विद्वत्त दासी।

वर्णा-स्त्री०, वर्णाक-पुं० [सं०] बाली, खली; लता।

वर्णाक-स्त्री० दे० 'वर्णा'।

वर्णुन-पुं० [सं०] ज्ञान; मंदिर; आदेश, नियम; रीति; स्थल।

वर्णोत्त-वि० [सं०] अधिक अवस्थाका, प्रौढ़। पुं० प्रौढावस्था।

वर्णोच्चा-स्त्री० [सं०] शक्ति; शक्तिकी वृद्धि।

वर्णोच्चा(वर्ण)-पुं० [सं०] मध्य अवस्थाका व्यक्ति।

वर्णोच्चक-वि० [सं०] अवस्थामें अधिक।

वर्णोच्चक-वि० [सं०] अल्प अवस्थाका।

वर्णोर्ध्व-पुं० [सं०] सीसा।

वर्णोर्ध्व-पुं० [सं०] सीमा।

वर्णोच्चक-पुं० [सं०] अवस्थाका अंतर।

वर्णोच्चक-वि० [सं०] वृद्ध।

वर्णोच्चक-स्त्री० [सं०] शक्तिका दास; उदाया बाना।

वर्ण्य-अ० [सं०] वर्णिक, जपित; ठेकिन।

वर्ण्य-पुं० [सं०] बंसीकी बौर; मुंहासा; वासका डेर; राशि, समुद्र; दो कर्कनेवाले हाथियोंकी अलग करने-वाली दीवार। -**खंडुक**-पुं० बंसीकी बौर।

वर्ण्यक-पुं० [सं०] हूरा, दीका, मिट्टीका बीटा; दीवार; हीरा; मुंहासा। वि० गोल; बका; दुखी; बरा हुआ।

वर्ण्य-स्त्री० [सं०] कटार; विरागकी बच्ची; सारिका।

वर्ण्यक-पुं० [सं०] वर्ण्य वृक्ष।

वर्ण्य-पुं० [सं०] चुनाव; परस्पर; इच्छा; देवता या मुक्त-जनोंसे इच्छा-पूर्वकसे छिप की जानेवाली प्रार्थना या खनकी कृपासे मिलनेवाला फल; भेद; दान; बेरा; बाघ; दुल्हा; प्रेमिक; लंपट; दहेज; जामाता; गौरा; केसर; चिरीजी; मौलमिरी; हल्दी; अन्नक। वि० भेद (समाप्त-के अंतमें जैसे विप्रवर, प्रियवर इ०)। -**कृष्ण**-पुं० हल्दी।

-**क्रीम्व**-पुं० कचनार। -**चर्व**-पुं० काला चंदन; देवदार। -**ज**-वि० बका, ओष, अम्र। -**मत्त**-पुं० एक कवि। -**सन्त**-वि० मृदर अंगोवाला। -**सन्त**-स्त्री० मृदर स्त्री। -**सिक्त**-पुं० कौरया; पंपट; रोगिक।

नीम। -**सिक्तिका**-स्त्री० पाठा। -**त्वच**-पुं० नीमका पेड़। -**द**, -**दाता**(**द**)-वि० बर देनेवाला। -**दक्षिण**-स्त्री० कन्यापक्षकी ओरसे विवाहके समय बरकी दिया जानेवाला धन, दहेज। -**दा**-स्त्री० कन्या; बुरदुर्ग; अशुभ; बाराही कद; अशर्मा। -**चतुर्थी**-स्त्री० भाग-छुट्टा चतुर्थी। -**दान**-पुं० देवता या धुरजनका प्रसन्न होना; किसीको दहे वस्तु देना; किसीकी कृपासे प्राप्त वस्तु। -**दानी**(**मि**)-वि० बर देनेवाला। -**दायक**-वि० बर देनेवाला। पुं० एक ममाधि। -**दायक**-पुं० एक वीथ; जिसको पतिव्रतों विपत्ती होती है। -**दुग्ध**-पुं० एक तरहका अगर। -**निर्ध**-पुं० बर, पतिका चुनाव।

-**वर्ण**-पुं० बराती। -**पर्णास्थ**-पुं० क्षीरकंदुकी। -**पीतक**-पुं० अन्नक। -**प्रदा**-स्त्री० गोपामुद्रा। -**प्रदान**-पुं० बर देना। -**प्रज**-वि० अच्छी काति-वाला। पुं० एक बोधिमस्थ। -**प्रस्थान**-पुं० बरावा।

-**कल**-पुं० नारिकेल। -**बाहिक**, -**बाह्यी**-पुं० केसर। -**मुली**-स्त्री० रेणुका नामक गंधद्रव्य। -**वाग्ना**-स्त्री० व्याहक समय बरका बाजे-गाजेके साथ कन्याके धर जाना; बरान। -**वृषति**, -**वृषती**, -**वोपि**-स्त्री० सुंदर स्त्री। -**वोप**-वि० बरदानके योग्य; विवाहके योग्य। -**वृष**-पुं० एक प्रख्यात वैद्यकण और कवि।

-**कृष्ण**-वि० जिसने बर पाया है; बरकपमें प्राप्त। पुं० चंपक वृक्ष। -**वर्णस**-स्त्री० सास। -**वर्ण**-पुं० चुनाव; बरका चुनाव। -**वर्ण**-पुं० तोना। -**वर्णिकी**-स्त्री० उत्तम स्त्री; सरस्वती; क्षमा; गौरी; कालुज, कैंगनी; गोरोजन; कास; हन्दी। -**वर्णी**(**मि**)-वि० अच्छे रंगका। -**वृद्ध**-पुं० मित्र। -**मि**-पुं० एक अन्न (ह्रद द्वारा परिवार सहित मिहल)। -**वृद्धी**-स्त्री० बहुत सुंदर स्त्री। -**सुरत**-वि० रतिक्रियाके

रहस्योकी जाननेवाला । -खी-खी० शरीफ औरत ।
-खक् (ख) -खी० दूल्हेकी पहनायी जानेवाली माछा,
जबमाछ ।

बह-वि० [फा०] 'आवर'का लघु रूप (सहापरीमें बिल्कर
बाता या रखनेवालाका अर्थ देता है-जानवर, नामवर) ।
बहक-पु० [सं०] बहक; कवादा; नाबका खंदोबा; कमरमें
कपटेनेका अंगीछा; काकुन, मियंगु; झबरेरी; बन्मंग;
बिबाहकी प्रार्थना करनेवाला ।

बराक-पु० [अ०] कटा हुआ कागज, पुस्तकका पन्ना; सोने,
चांदीका पत्तर; फूलकी पेंसुली । -बराहानी-खी०
पुस्तककी उल्ट-पुल्टकर देखना; पढ़नेका ढोंग करना ।
-सरा-पु० चांदी, सोनेका पत्तर बनानेवाला । खुं
-उकडवा-पुस्तककी उल्ट-पुल्टकर देखना, पुस्तकपर
झरझरी निगाह डालना; सारी परिवर्तन, क्रांति होना ।
-ब्याह करना-बहुम लिखना ।

बरका-पु० [अ०] पुस्तकका पन्ना ।

बरकी-वि० बरकनाला, परतदार ।

बरकिब-खी० [फा०] अन्धत्व; आंतरीक भय; कलरत,
भ्यायाम ।

बरकिशी-वि० कलरती ।

बरट-पु० [सं०] मंस; मित्र; एक अन्न; कुसुमका बीज;
एक फूल, गुड; शिनिधोका एक बंस ।

बरफ-पु०, बरटिका-खी० [सं०] कुसुम नामक पौधेका
बात ।

कटा-खी० [मं०] इमिती; बड़े; एक कीटा, गंधिया;
कुसुमका बीज ।

बरही-खी० [सं०] एक तरहकी मित्र; कुदका फूल ।

बरण-पु० [सं०] चुनना; याचना करना; धरना; एकना;
रक्षण; पतिका चुनना; निवारण; पूजन, मत्कार; पर-
कीटा; फूल; वरण नामक वृक्ष; वृक्ष; ऊंट; अनुष्ठा एक
अर्थकार; एक अन्न-मन्न; इष्ट; रत्न । -आला, -अल्
(अ) -खी० त्रयमात्र ।

बरणक-वि० [मं०] दकने, छिपानेवाला ।

बरणा-खी० [सं०] एक नदी, बरणा; मिथको एक सहा-
यक नदी; अरहर ।

बरणी-खी० किसी धार्मिक कार्यके लिए बख, पात्रादि
द्वारा पुरोहितादिका सम्मान ।

बरणीच-वि० [सं०] चुनने योग्य; ग्रहण करने योग्य;
प्रार्थना करने योग्य (बरके लिए) ।

बरना-खी० [सं०] चमकेका मसमा; हाथी या घोड़ेका
तंग । -काँच-पु० तसमेका डुकका ।

बरही-खी० [अ०] किसी विभागके कामचारियोंका विशेष
प्रकारका बख ।

बरवा-पु० बरग, ऊंट । * सं० कि० बाध करना ।
अ० [फा०] नही तो, फिर ।

बरध-अ० बरध, पत्नी, ऐसा नहीं (ह०) ।

बरस-पु० कबच; [अ०] शोध, ध्यान । -(से)बिध-
पु० जिनर, बहुमका लोथ ।

बरसेवहा-पु० एक काक बंदन ।

बरसिका(सु)-पु० [सं०] विबाहके लिए प्रार्थना करने-

वाला, पनि ।

बरख-पु० [सं०] मित्र ।

बरका-खी० [सं०] हंसिनी; मित्र ।

बरहक-पु० [सं०] एक जनपद ।

बरही०-पु० मोर ।

बरांग-पु० [सं०] मस्तक; भग, योगि; मुख्य माग; सुंदर
रूप; विष्णु; टहनी; एक जलम; दारचोनी; हाथी; एक
नक्षत्रवर्ष । वि० सुंदर शरीरवाला ।

बरांगक-पु० [सं०] दारचीनी । वि० सुंदर अंगीवाला ।

बरांगना-खी० [सं०] सुंदर स्त्री ।

बरांगी-खी० [सं०] हरिद्रा; नागदंती; मजिष्ठा ।

बरांगी(मिन्)-पु० [सं०] अम्लजैत । वि० श्रेष्ठांगमुक्त ।

बरा-खी० [मं०] अहंकार; धैर्य; मय; हल्दी; माछी;
त्रिकणा; सुहुच; रेणुका; पाठा; बिडग; मेदा; सोमराजी;
जालुकी; इवेत जपराजिना; पावनी । वि० खी० बरग
करनेवाली (हस्तका पठाउमें ही प्रयोग मिलता है-जैसे
स्वयंवरा, वतिवरा आदि) ।

बराक-पु० [मं०] शिव; बुद्ध; पपेट, पापडा । वि० दीन;
दबकी; नागहीन; दुःखी; दीन, बुरा (भय) ।

बराकक-वि० [सं०] बुरा; खराब ।

बराकाकी(मिन्)-वि० [सं०] मनोरथ-सिद्धिके लिए
प्रार्थना करनेवाला ।

बराचीवी(मिन्)-पु० [सं०] देवब, ज्योतिषी ।

बराट-पु० [सं०] कौरी; रस्सी ।

बराटक-पु० [सं०] कौरी; रस्सी; पत्र बीज, कमलगट्टा ।

-रवा(अस्)-पु० नागकेसर वृक्ष ।

बराटिका-खी० [सं०] कौरी; नागकेसर; तुच्छ वस्तु; एक
वातवैशिक विष ।

बराटी, बराडी-खी० [मं०] एक राग ।

बराण-पु० [सं०] इष्ट; वरण; वृक्ष ।

बराणसी-खी० [मं०] दे० 'बाराणसी' ।

बराद्व-पु० [सं०] रावादन, बियाल ।

बरावना-खी० [सं०] मुसुकी, मुदर की ।

बराव-पु० [सं०] उत्तम अन्न ।

बराबिच-पु० [सं०] अमलजैत । वि० श्रेष्ठनामा ।

बराक-पु० [सं०] करीदा ।

बराक-पु० [मं०] हीरा ।

बराबिच-खी० [सं०] माता ।

बराबोह-पु० [सं०] विष्णु; एक पक्षी; सवार; गजारीही;
सवारी करना । वि० अच्छे निर्मलवाला ।

बराबोहा-वि० खी० [सं०] नित्यिनी । खी० सुंदर स्त्री;
कटि ।

बराबा-वि० खी० [सं०] पति-कामिनी ।

बराबी(मिन्)-वि० [सं०] बर चाहनेवाला ।

बराबक-पु० [सं०] केसर, चंदन आदिसे बनी एक पूजा-
सामग्री (?) ।

बराब-वि० [सं०] बर देने योग्य, जो बरका पात्र ही;
बहुमूल्य ।

बराक, बराकक-पु० [सं०] लौह ।

बराकि-पु० [सं०] चंद्रमा ।

वराहिका-जी० [सं०] दुर्गा ।
वरासि, वरासि-पु० [सं०] मोटा कपड़ा ।
वरासत-जी० [अ०] वारिस होने; उत्तराधिकार; वृत्त पुरुषकी छोरी हुई संपत्ति, तरका, रिक्क । -की सवह-वारिस होनेका प्रमाण-पत्र । -नाम्ना-पु० उत्तराधिकार-पत्र ।
वरासतञ्ज-अ० वारिस होनेके अधिकारमें, उत्तराधिकार-रूपमें ।
वरासज-पु० [सं०] दूधके बैठनेका पीड़ा; उत्तम आसन; सिंहासन; अष्टद्वल; द्वारपाल; उपपति, जार ।
वरासी-जी० [सं०] एक तरहका मोटा कपड़ा ।
वराह-पु० [सं०] सूअर; मेवा; सौंभ; बाहल; मोषा; सूँस; मगर; विष्णु; एक माना; एक पहाड़; वाराही कंद; एक द्वीप; एक पुराण; वराहमिहिरा; मेनाका वराहकार मूह; विष्णुका एक अवतार । -कंद-पु० -नाम्ना(मन्त्र)-पु० वाराही कंद । -कर्ण-पु० एक तरहका बाण । -कर्णिक-जी० एक अक्ष । -कर्णी, -वृत्ती-जी० असंगंध । -कल्प-पु० वह काल जिसमें विष्णुने वराहका अवतार लिया था । -कांता-जी० वाराही । -काशी(सिन्धु)-पु० सूर्यमुखी कूल । -कांता-जी० लजाह; वराही । -ईह-पु० एक धुद्र रोग । -मिह-पु० एक प्रसिद्ध भोगिणी । -मुक्ता-जी० एक मोती जो वराहसे उत्पन्न माना जाता है । -वृष-पु० मूँदरोंका मुह । -मूह-पु० मुहकाळमें मेवाकी एक विशेष स्थिति । -मिह-जी० एक पवित्र शिला (हिमालयपर) । -मृग-पु० शिव । -सौल-पु० एक पहाड़ । -संहिता-जी० वराहमिहिर-प्रणीत एक ज्योतिष ग्रंथ, दृढसंहिता ।
वराहक-पु० [सं०] एक नागराज; हीरा (?) ; संस (?) ।
वराहगंगी-जी० [सं०] छुद्रगंगी (?) ।
वराहिका-जी० [सं०] केर्वाच ।
वराही-जी० [सं०] मूँदरी; नागरमोषा; अधगंधा; एक छोटा पक्षी; वाराही कंद ।
वरिसा(नृ)-वि० [सं०] जुनने, पसंद करनेवाला; ठकने, पढ़ा करनेवाला ।
वरिमा(मन्त्र)-जी० [सं०] उत्तमता; श्रेष्ठता, प्रधानता ।
वरिवसित, वरिवसित-वि० [सं०] पूजित, आदर, वरासित ।
वरिवत्सा-जी० [सं०] पूजा; शुश्रूषा ।
वरिसी-जी० [सं०] मछली फँसानेकी कंठिका ।
वरिष-पु० [सं०] वर्षा; वर्षा ।
वरिष-जी० [सं०] वर्षा; वर्षा क्रतु । -मिष-पु० चत्तक ।
वरिष्ठ-वि० [सं०] पूजनीय; सबसे अच्छा; बहुत भारी, बहुत बड़ा; बहुत सारा, दुष्ट । पु० तीतर; लौंवा; नारंगीका वृक्ष; मिर्च ।
वरिष्ठ-जी० [सं०] इन्दी; एक पीना, कुइर ।
वरिष्ठिष्ठ-पु० [सं०] सुगंधवाला; खस ।
वरी-जी० [सं०] सूर्यकी पत्नी संधा; सतावर ।
वरीता(नृ)-पु० [सं०] प्रणवाक्कांक्षी, विषाहाकांक्षी ठकने, पढ़ा करनेवाला ।

वरीमा(मन्त्र)-जी० [सं०] हे० 'वरिमा' ।
वरीमा(वस्त्र)-वि० [सं०] वस्त्र, मेढ; नखपुष्पक, नीलवान । पु० पुलह कपिका एक पुत्र; ७० बोमोर्दिमें एक ।
वरीवर्ष-पु० [सं०] वैक ।
वरीपु-पु० [सं०] कामदेव ।
वरक-पु० [सं०] एक कलत्र ।
वरुट-पु० [सं०] एक स्नेह्य जाति ।
वरुह-पु० [सं०] बैलका काम करनेवाली एक अवयव जाति ।
वरुव-पु० [सं०] एक आदित्य; एक देवता जो जलके अधिपति और पश्चिमके दिक्पाल कहे गये हैं; जल; समुद्र; नृवै; आकाश; एक वृक्ष; एक कवि; एक ग्रह, 'नियन्तृ' ।
-शुहीर-वि० जलोदर रोगमें प्रसृत । -ग्रह-पु० धोखे का रोग-विशेष; लक्ष्मी । -देव-देवस-पु० शतभिषा नक्षत्र । -पाश-पु० वरुणाका अक्ष, पाश, कंठा; एक जलचर, नाक, नक । -प्रवास-पु० वरुणकी पाशसे मुक्ति पानेके लिए आषाढकी पूर्णिमाको किंवा जानेवाला एक अनुष्ठान । -संढल-पु० रिवनी, पृषापाद, आद्रो आश्लेषा, शतभिषा आदि नक्षत्रोंका एक मंडल । -लोक-पु० वरुणाका क्षेत्र; जल ।
वरुणक-पु० [सं०] वरुण वृक्ष ।
वरुणांगक-पु० [सं०] अगम्य ।
वरुणा-जी० [सं०] एक नदी जो काशीमें गंगामें, म. ५ मिलती है ।
वरुणात्मजा-जी० [सं०] वारुणी, शराव ।
वरुणादिगण-पु० [सं०] षष्ठ-पौषीका एक वर्ग ।
वरुणाक्षय-पु० [सं०] समुद्र ।
वरुणावास-पु० [सं०] समुद्र ।
वरुणानी-जी० [सं०] वरुणकी स्त्री ।
वरुणाधि-जी० [सं०] लक्ष्मी ।
वरुणेश-पु० [सं०] शतभिषा नक्षत्र ।
वरुणोद्-पु० [सं०] एक समुद्र ।
वरुण-पु० [सं०] चतुरोव, उपरना ।
वरुण-वि० [सं०] सवक्त ।
वरुण-पु० [सं०] वस्तर, सजाव; बचाव; रथपरका घेरा, डाल; सेना; मनुष्य कोचक; मकान; समय । -व-पु० दलनायक; सेनापति ।
वरुणवती-जी० [सं०] मेना ।
वरुणाधिप-पु० [सं०] सेनानायक ।
वरुणिनी-जी० [सं०] मेना; वैशाख-कुम्भपक्षकी एक-बहो ।
वरुणी(विष्णु)-पु० [सं०] हाथीकी काठी; रक्षक; रक्षकों लिए बना हुआ घेरा; रथ । वि० रवाकड़ा; कवचपारी; सेनासे रक्षित; बचानेवाला ।
वरु-पु० [सं०] वरु; राजा; बंगालका एक भाग ।
वरु-जी० [सं०] यौध देव ।
वरु-अ० परे, दूर; उस ओर, उधर ।
वरुण-पु० [सं०] मिष ।
वरोयुक्त-पु० [सं०] अक्ष ।

शरेण्व-वि० [सं०] मुख्य; प्रधान; जिसकी वज्जा की भाँव; सर्वोत्कृष्ट । पु० महादेव; केसर; भृशका एक पुत्र ।
शरेण्व-पु० [सं०] शिप ।
शरीर-पु० [सं०] मरवा नामक पौधा या उसका फूल ।
शरीरक-शरीर-वि० शरीर [सं०] उत्तम औषधीय; सुंदरी ।
शरीर-पु० [सं०] शरीर ।
शर्क-पु० [सं०] काम ।
शर्कर-पु० [सं०] काम करनेवाला; [सं०] जवान; तरुण पशु; भकरा; मेमना, मेरका बघा; अजान पालतु जानवर; परिहास । -**शर्कर-पु०** भकरा आदि शीशुनेका नसमा ।
शर्करा-शरीर-वि० [सं०] पठिया, जवान बकरी ।
शर्कराद-पु० [सं०] कटाक्ष; शरीर के कुचपरका नखकृत; ऊपर उठते हुए शृंगका प्रकाश ।
शर्किंग कर्मिटी-शरीर-वि० [सं०] कार्यकारिणी समिति ।
शर्किंग क्लास-पु० [सं०] श्रमिक वर्ग ।
शर्कुड-पु० [सं०] शरीर, किली ।
शर्-पु० [सं०] स्वजातीय या समान-धर्मियोंका समूह; दल; एक स्थानमें उधरित होनेवाले वनोंका समूह; ग्रंथका विभाग, अध्याय; समान अर्थोंका भाग; वह समकोण जनु-भंज जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर हो; शक्ति; क्षेत्र; अर्थ, धर्म, काम-विवर्ग । -**शर्-पु०** पाठीन मछली । -**शर्-पु०** वर्गमूल, वह मर्यादा जिसमें वात, गुणनसे वर्गका प्रकाश प्राप्त हो । -**कल-पु०** समान राशियोंका गुणनफल । -**शर्क-पु०** वह संख्या जिसमें वर्गका वर्ग है ।
-स्थ-वि० अपने पक्षका साथ देनेवाला ।
शर्वा-शरीर-वि० [सं०] गुणन, घात ।
शर्वाकाना-सं० कि० उक्ताना; वहकाना; किसीकी उक्त-माकर कोई काम कराना ।
शर्वांक-पु० [सं०] वह अंक जो किसी मर्यादाका वर्ग हो ।
शर्वां(शर्वां)-वि० [सं०] वर्ग-विशेषसे संबद्ध ।
शर्वाकवर्ण-पु० [सं०] वर्गके अनुसार वर्तुओंका विभाग करना ।
शर्वाण-वि० [सं०] वर्ग-विशेषसे संबद्ध ।
शर्वा-वि० [सं०] वर्ग-विशेषसे संबद्ध । पु० एक ही वर्गका सदस्य, अक्षर आदि ।
शर्वावर्ण-पु० [सं०] राशियोंका अंश जिसमें स्थित होनेसे ग्रह गुप्त होते हैं (क० उद्यो०); प्रथम वर्ग व्यजन-वर्गोंका अंतिम वर्ग ।
शर्व-वि० [सं०] एक ही वर्ग, एक ही जाति वा समूहका । पु० सहयोगी; सहपाठी; समाजका सदस्य ।
शर्वम्भावा-पु० [सं०] पशुनामा (पराशरस्मृति) ।
शर्व(श्व)-पु० [सं०] रूप; शक्ति; कांति; तेज; अज्ञा विद्या; शुक ।
शर्वटी-शरीर-वि० [सं०] एक तरहका भाँव; बेधवा ।
शर्वरूप-पु० [सं०] तेज; शक्ति; विद्या ।
शर्वरूप-वि० [सं०] शक्तिवर्धक मल-विसर्जनपर उत्तर आनेवाला ।
शर्वरूप-पु० शक्ति, तेज (संस्कृत शर्वरूप); प्राक्क० प्राधान्य - 'प्राक्क०का उत्साह उसकी शारीरिक बल और मानसिक शर्वरूपमें सीमित था'-अमर० ।

शर्वस्वात्(शर्व)-वि० [सं०] शक्तिशाली; तेजोमय ।
शर्वस्वी(शर्व)-वि० [सं०] शक्तिशाली; उत्साही । पु० चंद्रमा; शक्तिशाली मनुष्य ।
शर्वां(शर्व)-पु० [सं०] चंद्रपुत्र ।
शर्वोद्ग्रह, शर्वोत्थिनिग्रह-पु० [सं०] कोष्ठबद्धता, कब्ज ।
शर्वोन्मेष-पु० [सं०] अतीसार ।
शर्वोन्मेष-पु० [सं०] मुद्रा ।
शर्व-वि० [सं०] रक्षित, मुक्त, परित्यक्त । पु० परित्याग ।
शर्व-वि० [सं०] परित्याग करनेवाला, छोड़नेवाला; निषेध करनेवाला ।
शर्व-पु० [सं०] निषेध; छोड़ना, त्याग; विंसा, वध ।
शर्वना-सं० कि० निषेध करना, रोकना । शरीर [सं०] दे० 'वर्जन' ।
शर्वशीव-वि० [सं०] निषिद्ध; निषेधयोग्य; अग्राह्य, छोड़ने योग्य; अनुचित, निष ।
शर्वविज्ञा(श्व)-वि० [सं०] वर्जन, त्याग करनेवाला; छोड़नेवाला; वरदानेवाला ।
शर्वित-वि० [सं०] त्यक्त, छोड़ा हुआ; अग्राह्य; निषिद्ध; रक्षित ।
शर्वित-शरीर-दे० 'वर्जित' ।
शर्वी(शर्व)-वि० [सं०] निषेध, परित्याग करनेवाला ।
शर्व-वि० [सं०] वर्जनीय; निषिद्ध । पु० चंद्रमाकी वह विशेष स्थिति जिसमें कोई नया काम शुरू करना मना है ।
शर्वअर्थ, शर्विधर्म-पु० अंग्रेजीके एक प्रसिद्ध कवि । कांसकी राजवर्माशिका इनपर बड़ा प्रभाव पड़ा था (१७७०-१८५०) ।
शर्व-पु० [सं०] रंग; रंगने, लिखनेके काम करनेवाला रंग; जाति; भेद; अक्षर; शब्द; स्वर; क्वांति, वधा; अच्छा गुण; प्रशंसा; बाह्य रूप; पोशाक; आकृति; लबावा; दहन, आवरण; नील आदिकी बरिदाएँ एक ताल; दशमका धर्म; अक्षय राशि (ग०); एकदशे संख्या; सीमा; धार्मिक कृत्य; अंगरामलेपन; केसर; एक रंगीन शब्दबन्ध; हाथीकी शूल; तसवीर । -**कंद-पु०** तृतिवा । -**कवि-पु०** कुत्तरका एक पुत्र । -**कृषिका-शरीर-वि०** मसिपात्र । -**कम-पु०** रंगोंका कम । -**कंदमेर-पु०** छंदःशास्त्रकी एक किताब जिसके अनुसार बिना मेरके निश्चित वर्णोंके हूटों आदिकी संख्या मास्य हो जाती है । -**गल-वि०** रंगा हुआ, वर्णित; नीलवर्णित-सम्बन्धी । -**गुरु-पु०** राजा । -**चारक-पु०** चित्रकार; रंगसाज । -**अष्ट-पु०** आठव । -**शुद्धि-पु०** शुद्धि, शुद्धी-शरीर-वि० चित्र बनानेकी कृत्ती, कलम (चित्रकारकी) । -**श्व-पु०** एक तरहकी सुपथित पीली लकड़ी, काठीयक । वि० रंग देनेवाला । -**श्व-शरीर-वि०** हल्दी । -**श्व-पु०** पत्र आदि । -**श्वक-पु०** जातिभेद करनेवाला, पतित मनुष्य । -**शर्व-पु०** जातिविशेषका कर्त्तव्य या पेशा । -**शर्व-शरीर-वि०** गुरु, ईश्वर आदि । -**नष्ट-पु०** छंदःशास्त्रकी एक किताब जिसमें निश्चित वर्णोंके किसी भेदका कृष्ण-गुरुके हिसाबसे रूप मास्य होता है । -**नाश-पु०** किसी अक्षरका शब्दमेंसे छुट हो जाना । -**पराका-शरीर-वि०** छंदःशास्त्रकी एक विधि जिसमें वर्ण-हूटोंके भेदोंमें आनेवाली कृष्ण और

गुरु भाषाओंकी संस्था मातृस ही जाती है। -**वत्स**-
-पु० वे पात्र जिनमें चित्रकार रंग रक्ता है। -**वरिच**-
-पु० संतोषका हान; अक्षरोंका हान करानेवाली पुस्तिका।
-**परिचर्य**-पु० जातिग्रंथ। -**पाठाक्ष**-पु० छंदःशास्त्र
की एक प्रक्रिया जिससे निमित्त संस्थाके वर्णोंके संपूर्ण
हृत्त और लघु, लघ्वंत आदि भाषाओंकी संस्थाका
शेष होता है। -**पात्र**-पु० दे० 'वर्णपात्र'। -**पुत्र**-
-पु० शुद्ध रासका एक भेद। -**पुष्प**, -**पुष्पक**-पु० राज-
तक्षणी नामक पुष्प; पारिजात। -**प्रत्यक्ष**-पु० वर्णहृत्तोंके
कुल भेद जाननेकी छंदःशास्त्रकी विशेष प्रक्रिया।
-**प्रसाध**-पु० अगुह। -**प्रस्ताव**-पु० निमित्तसंस्थक
वर्णोंके भेद-उपभेद और स्वरूप प्रकट करनेवाली छंदः-
शास्त्रकी विशेष प्रक्रिया। -**मिच्छ**-पु० एक ताल।
-**मीर**-पु० एक ताल। -**मेरु**-पु० [सं०] रंश या
जातिके कारण होनेवाला भेदभाव। -**मेदिनी**-की०
भास्कर। -**मेषिका**-की० एक ताल। -**मर्कटी**-की०
छंदःशास्त्रकी एक विशेष प्रक्रिया जिससे निमित्तसंस्थक
वर्णोंके समान्य हृत्तों आदिका पता लगता है। -**मस्तक**-
(तु)-की० लेखनी। -**मातृका**-की० सरस्वती। -
-**माला**, -**मालि**-की० अक्षरोंकी बराबरक हृत्त, स्वर-
स्वभाव सहित सभी अक्षर। -**मलि**-की० एक ताल।
-**रेखा**, -**रेखा**, -**रेखिका**-की० लक्षिका। -**लीक**-
-पु० एक ताल। -**वर्ति**, -**वर्तिका**-की० चित्र बनानेकी
गुली। -**बाकी**(विह)-पु० चारण। -**विकार**-पु०
किसी वर्णका दूसरे वर्णका रूप ग्रहण करना (मिस्त्र)।
-**विक्रिया**-की० जातिके प्रति श्रुता। -**विचार**-पु०
वर्णोंके आकार, उच्चारण और मलिके निबन्धोंसे एक
व्याकरणका एक भाग। -**विषय**-पु० वर्णोंका उलट-
फेर होना (मिस्त्र)। -**विभाग**-पु० हिंदू-समाजका
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-चतुर्वर्ग जातियोंमें भेद-
शास्त्रानुसार विभाजन। -**विक्षासिनी**-की० हन्दी।
-**विशोद्ध**-पु० मेष मारनेवाला; रचना-वीर। -
-**विकृति**-की० हिउत। -**वृत्त**-पु० वह छंद जिसके
चरणोंमें लघु-गुरु यथाक्रम और वर्णसंख्या समान हो।
-**वैद्य**-पु० जातिग्रंथ। -**व्यतिक्रान्ता**-की० अपनेसे
नीच वर्णके साथ संबंध करनेवाली स्त्री। -**व्यवस्था**, -
-**व्यवस्थिति**-की० वर्ण-विभाग। -**संकर**-पु० दो भिन्न
जातियोंके स्त्री-पुरुषके सहवाससे उत्पन्न व्यक्ति। -**संसार**-
-पु० अतर्जातीय विवाह। -**संहार**-पु० प्रतियुद्ध संघिका
एक भंग (जा०)। -**समागमाव**-पु० वर्णमाला। -
-**सुखी**-की० छंदःशास्त्रकी एक प्रक्रिया जिससे अनुसार
वर्णहृत्तोंकी शुद्ध संस्था और गंभीर जातिभक्त लघु तथा
आदि-वर्त गुरुकी संस्था मातृस की जाती है। -**स्थान**-
-पु० माला। -**ह्रीव**-वि० जानिच्युत।
वर्णक-पु० [सं०] नकाब; अभिनेताकी पोशाक; रंग;
अंगारण; चारण; सिद्ध; चंदन; अक्षर; हरणाल; मेरा;
परिधि; पुस्तकका अध्याय; चित्रकार।
वर्णक-की० [सं०] नकाब; रंग, रंगनेका साधन; चंदन;
अध्याय; हृत्त।
वर्णन-पु० [सं०] चित्रण; रंगना; लिखना; कोड़े बात

व्यवहार कहना, बयान; प्रशंसा, गुणकथन।
वर्णना-की० [सं०] व्यवहार कुछ कहना; प्रशंसा, गुण-
कथन।
वर्णनसहित-वि० [सं०] जिसका वर्णन न किया जा सके।
वर्णनशेष-वि० [सं०] चित्रण वा वर्णनके योग्य।
वर्णवली-की० [सं०] हन्दी।
वर्णसि-पु० [सं०] जल।
वर्णाका-की० [सं०] लेखनी।
वर्णाक्षर-पु० [सं०] भिन्न जाति, दूसरी जाति।
वर्णा-की० [सं०] अक्षर।
वर्णांग-पु० [सं०] शब्दमें किसी अक्षरका आ भिन्नता।
वर्णाद-पु० [सं०] चित्रकार; नायक; प्रेमिक; पत्नी द्वारा
अंगित बनने निबोध करनेवाला।
वर्णांगक-वि० [सं०] (शब्द) जो वर्णोंमें लिखा जा सके।
वर्णास्त्र(स्त्र)-पु० [सं०] शब्द।
वर्णाधिप-पु० [सं०] वर्णों(ब्राह्मण, क्षत्रिय)के अधिपति
ग्रह (क० स्त्री)।
वर्णांगुभास-पु० [सं०] एक कथासंकर, दे० 'अनुभास'।
वर्णापसह-पु० [सं०] वह जो जानिच्युत हो।
वर्णाधित-वि० [सं०] वर्णाङ्गीन।
वर्णाई-पु० [सं०] भंग।
वर्णाक्षर-वि० [सं०] निम्नतर जातिका।
वर्णाङ्ग-पु० [सं०] जाति और आयु। -**गुरु**-पु०
क्षिद्र। -**वर्ण**-पु० वर्ण और आश्रम-संबन्धी कर्मण्य।
वर्णि-पु० [सं०] मोना; अगम्य।
वर्णिक-पु० [सं०] लेखक। वि० वर्ण स्वधी। -**वृत्त**-पु०
दे० 'वर्णवृत्त'।
वर्णिका-की० [सं०] चित्र या चित्र-शालीमें व्यवहृत
विशिष्ट वर्णों, रंगोंका समवाय, व्याही, मणि; सोनेका
पानी, लक्षिका; चंद्रमा; विमेषन; अभिनेताकी पोशाक।
-**वरिग्रह**-पु० रूप-ग्रह (जा०)। -**अंग**-पु०
भावानुसार चित्रमें वर्णका प्रयोग।
वर्णित-वि० [सं०] कथित; वर्णन, बयान किंवा कथा;
चित्रित; प्रशंसित।
वर्णिनी-की० [सं०] स्त्री: किसी एक वर्णकी स्त्री; हन्दी।
वर्णी(विह)-पु० [सं०] चित्रकार; लेखक; ब्रह्मचारी।
चारों वर्णोंमें किसी एक वर्णका व्यक्ति। वि० विशेष रंग
या वर्णका (समासके अन्तमें)।
वर्ण-पु० [सं०] एक नद; धूस; एक प्रदेश, बन्ग।
वर्णारिह-पु० [सं०] छंदःशास्त्रकी एक प्रक्रिया जिसमें
किसी वर्णवृत्तके किसी भेदका कोई विशिष्ट रूप माना जाय।
वर्ण-पु० [सं०] प्रस्तुत विषय; उपमेय; कैसर; बनतुलसी।
वि० वर्णन वा चित्रणके योग्य।
वर्ण-पु० [सं०] आहार, जीविका (प्रायः समासके अन्तमें
प्रयुक्त-कस्यवर्त-प्रातःकालका भोजन)। -**वर्णाव**(व्यव)-
-पु० वादक, वेग। -**लक्षिका**, -**कोड**-पु० एक तरङ्गका
पीठक वा हस्तान।
वर्तक-पु० [सं०] जल बटेर; बहना; धोनेका सुर; एक
तरङ्गका पीठक। वि० रहनेवाला; निष्का अस्तित्व हो;
अनुरक्त।

वर्तका, वर्तकी-**की**० [सं०] मादा बटेर ।

वर्तन-**वि**० [सं०] रहने, ठहरनेवाला; गतिमान करने-वाला; जो गति रखनेवाला । पु० बैना; चक्कर खाना; घेठका; फेर-फार; ठहरना; जोकिना; बेतन, बुति; स्वापार; व्यवहार, आचरण; प्रयोग; तकला; नैद; बार-बार कहा हुआ शब्द; बोझे के नीचे की जगह; काय; पीमना; बटुआ; पात्र; विष्णु; कौशा; सलाई लगाकर चावका रूप देखना ।

-**दाव**-पु० जोकिना देना । -**विनिबोध**-पु० बेतन ।

वर्तनार्थी(**विच**)-**वि**० [सं०] जो तरी चाहनेवाला । ७

वर्तवि-पु० [सं०] पूर्व देश; मार्ग; सुख रागका एक भेद; स्तोत्र । **की**० मार्ग; लीक; पगनी ।

वर्तनी-**की**० [सं०] मार्ग; पिसार; तकला; रहना; हिज्जे ।

वर्तनाम-**वि**० [सं०] चलता हुआ, घूमता हुआ, चाख, उपस्थित, बिचमना; साक्षात्; आधुनिक; हालका । पु० व्याकरणका एक काम जिससे सूचित होता है कि किना मीठरा समयमें होनी या हो रही है; कृतांत; चलना व्यवहार ।

वर्तस्क-पु० [सं०] इतरपाठ; गतिहीन जल; आवर्ण; कौए-का घोंमला; एक मंडी; कर्म-पूर्ण सुदृढ जलाशय ।

वर्ति-**की**० [सं०] कौरे कपेदी दुई वस्तु, बत्ती; अजन; पाव-में भरनेकी बत्ती; पावपर सौपनेको एक नरककी पदी; उबटन, अनुत्प्रेषण; गोली, बंदी; देका; मलेकी मूत्रन; जादू-का, चिराग; कपड़ेके छोरपरकी झाल ।

वर्तिका, वर्तिर-पु० [सं०] बटेर ।

वर्तिका-**की**० [सं०] बत्ती; सलाई, शालाका; तुलिका; रंग; रटेर; एक वृक्ष, अजश्वनी । -**विचु**-पु० हीरेका एक दोष ।

वर्तित-**वि**० [सं०] घुमाया, चलाया हुआ; सपावित; बिनाया हुआ । -**जम्मा**(**जम्न**)-**वि**० उत्पादित ।

वर्तिष्णु-**वि**० [सं०] चक्कर खानेवाला; रहनेवाला; वर्तुला-कार; स्थिर; युद्धमें अडिग रहनेवाला ।

वर्ती-**की**० [सं०] दे० 'वर्ति' ।

वर्ती(**विच**)-**वि**० [सं०] बगननेवाला; स्थित रहनेवाला (पदान्तमें-जैसे दूरवर्ती आदि); कारनेवाला ।

वर्तीर-पु० [सं०] बटेर ।

वर्तुल-**वि**० [सं०] गोल, कृताकार । पु० गाजर; मटर; गुंडरुण; छहमा; नैद; शिकका एक गण; कुल ।

वर्तुला-**की**० [सं०] तक्रुके छोरपरकी पुंजी ।

वर्तुलाकार, वर्तुलाकृति-**वि**० [सं०] गोल ।

वर्तुलाक्ष-पु० [सं०] एक तरहका बाज ।

वर्तुली-**की**० गज-पिप्पली ।

वर्त्त(**वृ**)-पु० [सं०] मार्ग; लीक; प्रवाह; पलक; औठ, शरी; किनारी; बाधार, आशय; अवकाश, क्षेत्र । -**कर्त्त**-पु० एक नेत्ररोग जिसमें आँखमें कीचड़ जाता है । -**कर्त्त**(**वृ**)-पु० पथ-निर्माण । -**पातव**-पु० पातमें रहना । -**बंघ**, -**बंघक**-पु० आँखका एक रोग जिसमें एकमें मूत्रक नही खुलता । -**म्राक्षिका**-**की**० सीनामाखी ।

-**रोष**-पु० पलकका रोग । -**शाईरा**-**की**० पलकमें होनेवाली एक तरहकी फुंसी ।

वर्त्तवि, वर्त्तवी-**की**० [सं०] सड़क, रास्ता ।

वर्त्तावाय-पु० [सं०] रास्तेकी बकावट ।

वर्त्ताबुद्ध-पु० [सं०] पलकका एक रोग जिसमें पलकोंमें अंदर गाँठ बन जाती है ।

वर्त्ताबरोह-पु० [सं०] पलकोंका रोगविशेष ।

वर्त्ती-**की**० दे० 'वरदी' ।

वर्त्त, वर्च-पु० [सं०] सीसा; माखणयष्टिका; काटना; बिभा-जन; बदती; पुरति ।

वर्त्तक, वर्चक-**वि**० [सं०] बदनेवाला, पुनिकारक; काटने, छीलनेवाला । पु० बदने; माखणयष्टिका ।

वर्त्तकि, वर्चकि-पु० [सं०] दे० 'वर्चकी' ।

वर्त्तकी(**किन्**), **वर्चकी**(**किन्**)-पु० [सं०] बदने ।

वर्त्तव, वर्चव-पु० [सं०] काटना, छीलना; वृद्धि, बढ़ाना; अनुदव करनेवाला; दूसरे दौतर जमनेवाला दौतर; शिव; शिक्षण । **वि**० (समासांतमें) बदनेवाला (वर्चवर्जन) ।

वर्त्तिका, वर्चनिका-**की**० [सं०] पवित्र जल रखनेका छोटा बरत ।

वर्त्तनी, वर्चनी-**की**० [सं०] आबू; अरबी; कलसी, छोटा बरत ।

वर्त्तमान, वर्चमान-**वि**० [सं०] बढ़ता हुआ; वृद्धिशील । पु० एरटका वृक्ष; एक तरहकी पहली; विष्णु; बंगालका एक जिला या नगर, बटवान; एक पात्र, कसोरा; वह मकान जिसमें दक्षिणकी ओर द्वार न हो; एक रहस्यमय रेखाचित्र या उसी तरहका बना हुआ प्रासाद या मंदिर; मोठा नीचू; सतरा नृत्यकी एक मुद्रा; एक वर्णचक्र; जिन-विशेष ।

वर्त्तमानक, वर्चमानक-पु० [सं०] छोटा पात्र या टकन, कमोरा । **वि**० वृद्धिविशिष्ट ।

वर्त्तविता(**वृ**), **वर्चविता**(**वृ**)-पु० [सं०] बदनेवाला ।

वर्त्ता, वर्चा-**की**० [सं०] मोटाबरीकी एक सहायक नदी ।

वर्त्तापन, वर्चापन-पु० [सं०] काटना; नाडी-छेदन (वह नाडी जिसका संबंध नाभिसे होता है), नाल काटना; जम्म लेनेके दिनका नाडी-छेदनमें सबके एक उत्सव; वह उत्सव जिसमें तरकीबी कामना करते या तरकीवर बघाई देते हैं ।

वर्त्तिल, वर्धिल-**वि**० [सं०] बटा हुआ; कटा हुआ; मरा हुआ ।

वर्त्तिष्णु, वर्धिष्णु-**वि**० [सं०] वृद्धिशील ।

वर्त्तय, वर्चय-पु० [सं०] अन्न-भेद, अति उतरना, 'वर्त्तिवा'; बंखल जत्रण ।

वर्त्तय, वर्चय-पु० [सं०] चमका; चमकेका ससमा; सीसा ।

वर्त्तिवका, वर्चवी, वर्त्तिका, वर्चवी-**की**० [सं०] बड़ी, चमकेकी पेटी; बड़ी नामका गहना ।

वर्त्त(**वृ**)-पु० [सं०] बरसर, कवच; आधवस्थान; वचाव; पितृपापका; छाल । -**कंठक**-पु० पितृपापका, पर्यंक । -**कसा**, -**कवा**-**की**० सल्ला । -**चर**, -**हर**-**वि**० कवच धारण करनेवाला, कुतसवाह ।

वर्त्तव-पु० [सं०] नारंगीका पेड़ ।

वर्त्ता(**वर्च**)-पु० [सं०] एक उपधि जिसका क्षत्रिय, कायस्थ आदि प्रयोग करते हैं ।

वर्त्ति-पु० [सं०] एक मछली ।

बर्मिक-वि० [सं०] कनचयुक्त ।
 बर्मित-वि० [सं०] जिसने कनच धारण किया हो ।
 बर्मितोत्त-वि० [सं०] जिसका शरीर कनचसे ढका हो ।
 बर्मी(हिंन्)-वि० [सं०] दे० 'बर्मिक' ।
 बर्मुथ-पु० [सं०] एक तरकी मछली ।
 बर्व-वि० [सं०] श्रेष्ठ; चुनने योग्य; प्रधान (पदांशमें प्रयुक्त) -जैसे पंडितवर्य । पु० कामदेव ।
 बर्वा-खी० [सं०] कन्या; पतिवरा कन्या ।
 बर्वट-पु० [सं०] बोझा, लोबिया ।
 बर्वणा-खी० [सं०] नीली मक्की ।
 बर्वर-पु० [सं०] एक देश; नीच जाति; बर्वर देशका निवासी (छुपराहे बालवाला); मूल; प्रातिग्रह व्यक्ति; शब्दोंके संघातसे उत्पन्न शब्द; छुपराहे बाल; मूलका एक ढग; ईश्वर; पीला चंदन । वि० छल्लेदार; अस्पष्ट (शब्द) ।
 बर्वरक-पु० [सं०] एक चंदन ।
 बर्वरा-खी० [सं०] एक मक्की; बनतुलसी ।
 बर्वरी-खी० [सं०] बनतुलसी ।
 बर्वरीक-पु० [सं०] बनतुलसी; भारगी; महाकाल; छुपराहे बाल ।
 बर्वा-खी० [सं०] दे० 'बर्वरी' ।
 बर्बि-वि० [सं०] पैदर ।
 बर्वुर, बर्वूर-पु० [सं०] बरुल ।
 बर्व-पु० [सं०] इष्टि; वर्षाके रूपमें गिरना; झुकना; एक काल-वर्षाण, साल(सौर, चंद्र, नाक्षत्र और साधन); पृथ्वीका लंब; भारत; बादल । -कर-पु० बादल, मेघ ।
 -करी-खी० मीठु । -काल-पु० इष्टि चाहनेवाला ।
 -कामेष्टि-खी० वर्षाके लिए किया जानेवाला यज्ञ ।
 -काली-खी० जीरा । -केतु-पु० लाल पुनर्नवा ।
 -कोस-कोष-पु० ज्योतिषी; महीना । -गोडि-खी० [हिं०] दे० 'बरसगोड' । -घन-पु० पवन, हवा; वर्षा-नाशक ग्रह-योग । वि० वर्षा रोकने या वर्षासे बचाने-वाला । -ज-वि० वर्षाकाल या दीपाशमें उत्पन्न होने-वाला; वर्षासे उत्पन्न; एक सालका । -त्र-त्राण-पु० छाता । -धर-पु० बादल; पहाड़; वर्षाका शासक; अंतःपुरका रखक, खोजा; पृथ्वीको वर्षामें विभक्त करनेवाले पर्वत (दे०) । -धर्व-पु० खोवा । -प-पति-पु० वर्षाका अधिपति (ग्रह) । -पर्वत-लंमक-पु० पृथ्वीका वर्षासे विभाग करनेवाला पहाड़ । -वाकी(किन्)-पु० आघातक, आसला । -पुष्पा-खी० सहदेव नामक पेठा । -प्रतिबंध-पु० सूझा, अवर्षण । -प्रवेश-पु० नये सालका आरंभ । -प्रिय-पु० चातक । -फल-पु० वर्षाकरका शुभाशुभ, हटानिष्ठ सूचित करनेवाली कुंजली । -धर-पु० खोजा, अंतःपुरका रखक । -वसन्त-पु० शीतोंका वर्षाकालमें मकानमें रहना । -बृद्धि-खी० जन्मदिन ।
 बर्वक-वि० [सं०] बरसानेवाला; वर्षा करनेवाला ।
 बर्वण-पु० [सं०] इष्टि ।
 बर्वणी-खी० [सं०] इष्टि; रहना; कर्म ।
 बर्वणी-पु० [सं०] महीना ।
 बर्वणी-खी० [सं०] पुनर्नवा ।

बर्वा-पु० [सं०] वर्षाका जल ।
 बर्वा-पु० [सं०] मस; महीना ।
 बर्वा-खी० [सं०] इष्टि; बरसात । -काल-पु० बरसात ।
 -घोष-पु० बहा मेढक । -धृत-वि० वर्षामें धारण किया जानेवाला (वस्त्र) । -प्रमंजव-पु० तेज हवा, मीठी ।
 -प्रिय-पु० चातक । -बीज-पु० ओला । -अव-पु० रक्त पुनर्नवा । वि० बरसातमें उत्पन्न । -भू-पु० मेढक; केंचुआ; ईश्वर । खी० पुनर्नवा । वि० वर्षाकालमें उत्पन्न ।
 -भवी-खी० मेकी; पुनर्नवा; केंचुआ । -मद-पु० मोर ।
 -राज-पु०, -राशि-खी० वर्षाकाल । -लंकाविका-खी० पूजा । -शादी-खी० वर्षामें पवननेका वस्त्र ।
 बर्वागम-पु० [सं०] वर्षाका आरंभ ।
 बर्वाधिप-पु० [सं०] वर्षाका अधिपति (ग्रह) ।
 बर्वाधि(स्)-पु० [सं०] अंगल ग्रह ।
 बर्वाह-वि० [सं०] एक वर्षाके लिए पत्रांत ।
 बर्वाक-पु० [सं०] पत्रांत, फसिगा ।
 बर्वाशन-पु० [सं०] वर्षाकरके भोजनके रूपमें दिया जाने-वाला अन्नदान ।
 बर्वाधिक-पु० [सं०] एक तरहका विषैला माँप ।
 बर्विक-वि० [सं०] वर्ष या वर्षा-संबंधी । पु० अणु ।
 बर्वित-वि० [सं०] बरसा हुआ । पु० वर्षा ।
 बर्विता(स्)-वि० [सं०] वर्षा करनेवाला ।
 बर्विह-वि० [सं०] अतिशय बृद्ध ।
 बर्वी(पिन्)-वि० [सं०] (समाश्रममें) वर्षा करनेवाला; मालका ।
 बर्वीका-खी० [सं०] वृष्टि-विशेष ।
 बर्वीण, बर्वीच-वि० [सं०] मालका ।
 बर्वुक-वि० [सं०] वर्षा करनेवाला; अलमव ।
 बर्वुकाशुद, बर्वुकाशुद-पु० [सं०] कर्मनेवाला बादल ।
 बर्वेज-वि० [सं०] दे० 'बर्वज' ।
 बर्वेस-पु० [सं०] दे० 'बर्वोपिप' ।
 बर्वेक-वि० [सं०] बाघिक, मालाना ।
 बर्वोपिप-पु० [सं०] ओला ।
 बर्व्य-पु० [सं०] शरीर ।
 बर्व्य(न्)-पु० [सं०] शरीर; परिमाण; ऊँचाई; सुदृढ़ आकृति; मत्तह ।
 बर्व-पु० [सं०] मोरका पंख; पत्ता; ग्रथिपर्णी ।
 बर्वण-पु० [सं०] पत्ता ।
 बर्विधुष्पा(प्यन्)-पु० [सं०] अग्नि ।
 बर्वि(स्)-पु० [सं०] अग्नि; जल; यज्ञ; कुशा; चिकक इत्यादि; एक राजा; पानी ।
 बर्विण-वि० [सं०] मयूके पंखोंसे अलंकृत । पु० मोर; भारतवर्षका एक लघुद्वीप । -बाह-बासा(सस्)-वि० (बाण) जिसमें मोरका पंख लगा हो । -बाह-पु० स्कंद ।
 बर्विज्योति(स्)-खी० [सं०] अग्नि ।
 बर्विजुल-पु० [सं०] अग्नि देवता ।
 बर्विन्-पु० [सं०] एक पितृगण ।
 बर्विकेस-पु० [सं०] अग्नि ।
 बर्वी(हिंन्)-पु० [सं०] मोर; कवचपत्ता पुष्पा, कपूर ।

- (विं) कलुष-पुण्य-शिक्ष-पुं प्रथिगर्ण । -कल्य-पुं मन्त्र-पक्ष । -कल्य-पुं वान-वाहन-पुं स्वर । -कल्य-पुं एक गंधद्रव्य ।

बल्लभ-पुं [सं] भवलय; लभ ।

बल-पुं [सं] मेघ; शहतीर; एक असुर जो वृक्षा मार्ग था और जिसे इंद्रने पराजित किया था । -विह (व्), -नाशन-भिक्ष-सुख-इत्यादि-पुं इंद्र । -रसा-लीं गंधक ।

बलक-पुं [सं] ताम्रस मन्त्ररत्ने सप्तविंशतिसे एक रूपि; शहतीर; यात्रा; लुल्लस ।

बल्लभ-विं, पुं [सं] दे० 'बल्ल' ।

बल्लभ-पुं [सं] कवि, कमर ।

बल्लभ-पुं [सं] वृमना; चक्रर खाना; क्षोभ; ग्रह आदि का मार्गमें विचलित होकर चलना; बल्ल गति ।

बल्लभांश-पुं [सं] प्रहादिकी वक्र गतिकी दूरी ।

बल्लभि, बल्लभी-लीं [सं] वृषी, भद्रशाला; परकी बोटी; छाजन; सौराष्ट्रकी एक पुरानी नगरी ।

बल्लभ-पुं [सं] दो-दो पक्षियोंकी सैनिक स्थिति; कंकण; छात्रा, बंगोटी; कटिबंध; परिधि (महामानमें); घेरा; छात्रा; एक तरहका गल्लगेल ।

बल्लभित-विं [सं] घिरा हुआ; वेष्टित; चक्रर खाता हुआ; गोक्ष मुखा हुआ ।

बल्लभिता(त्)-विं [सं] परिघटन करनेवाला ।

बल्लभी(विन्)-विं [सं] कल्लगुल्ल; घिरा हुआ, जहा हुआ ।

बल्लाक-पुं [सं] वक, बगला ।

बल्लाक-लीं [सं] बकी, मादा बगला; वकपक्षि; प्रियतमा ।

बल्लाकी(किन्)-विं [सं] दे० 'बल्लाकी' ।

बल्लाट-पुं [सं] मूंग ।

बल्लावत-लीं [सं] बली होना; दे० 'बल्लावत' ।

बल्लासक-पुं [सं] कौयल; मेढक ।

बल्लाहक-पुं [सं] दे० 'बल्लाहक'; कृष्णको नार धोनेमेंसे कका नाम ।

बलि-लीं [सं] सिकुडन, झुरी; चन्दनादिसे शरीरपर बनी हुई रेखा; भोजनी; गंधक; एक बाघ (मंगीत); घेठमें पड़नेवाला बल; कतार; धार्मिक कर (की०) । -सुख, -वदन-पुं बानर ।

बल्लिक-पुं [सं] ओलती ।

बल्लित-विं [सं] बल खाया हुआ; भोजन, झुकाया हुआ; घेरा हुआ; संबद्ध; युक्त; सिकुडनदार; लिपटा हुआ; ढका हुआ; सहित । पुं काली मिर्च; नृत्यमें हाथ मोड़नेकी एक मुद्रा । -कंधर, -प्रीति-विं जिसकी गरदन झुकी हो ।

बल्लितक-पुं [सं] एक तरहका आभूषण ।

बल्लिन, बल्लिन-विं [सं] जिसपर झुरियाँ पड़ी हों, सिकुडनदार ।

बल्लिमाह(अह्)-विं [सं] झुरियोंवाला, सिकुडनदार ।

बल्लिर-विं [सं] घेरा-ताना ।

बल्लित-पुं, -बल्लित, बल्लित-लीं [सं] मछली

फँसानेका कौटा, बंसी ।

बली-लीं [सं] दे० 'बलि'; तरंग, लहर । -बल्ल-विं छलेदार । -सुख-पुं मंदर; एक बानर; गरम दूधमें मट्ठा मिकनेसे होनेवाला विकार । -बदन-पुं बंहर ।

बली-पुं [सं] स्वामी; संरक्षक; अष्टाहका प्यारा; सिक पुष्प; नानाछिगकी जायदादकी रक्षाके छिय भिम्बेदार आदमी । -बल्लाह-पुं अष्टाहका प्यारा, सुदारसीदा । -अहह-पुं सुवराज । -अहदी-लीं सुवराजका पद, सुवराजत्व ।

बलीक-पुं [सं] ओलती; सरकंडा ।

बलीनह-पुं [सं] वैल ।

बल्लक-पुं [सं] कमलकी जड़, भसीक; एक पक्षी । विं काक वा काका ।

बल्लक-विं [सं] बल्लवान्, शक्तिमाली ।

बल्लेकिन-सं [सं] दे० 'लेकिन' ।

बल्लक-पुं [सं] बका; पेक्षी छाल; खड; मछलीकी चोरी; पट्टिका लीन । -सह-पुं सुपारीका पेक्ष ।

-भुम-पुं भोजनका पेक्ष । -कल-पुं खनार ।

-रीध-लीं [सं] एक तरहका लोचवृक्ष । -बास-विं [सं] छालका बल ।

बल्लक-पुं [सं] पेक्षी छाल; पेक्षी छालका कपडा; एक तरहका बोध; एक दैव्य । -खंसीत-विं जो छाल का कपडा पहने हो ।

बल्लक-लीं [सं] एक तरहका पौधा जो दवाके काम आता है, शिखाबन्का ।

बल्लली(किन्)-विं [सं] बल्लक धारण करनेवाला, भिममें छाल हो ।

बल्लवान्(बल्ल)-पुं [सं] मछली । विं बल्लयुक्त ।

बल्लिक-पुं [सं] कौटा ।

बल्लित-पुं [सं] छाल ।

बल्लक-पुं [सं] कूटने, नाचनेवाला ।

बल्लान-पुं [सं] सरपट चाल (घोड़ेकी); बहुत बोकना ।

बल्ला-लीं [सं] लगाम, बाग ।

बल्लित-विं [सं] उछलना, कूदा हुआ; घुमाया, नचाया हुआ । पुं घोड़ेकी सरपट चाल; बग ।

बल्ल-पुं [सं] बकरा; बोधिद्रवका एक अधिष्ठाता देवता (की०); करीनी । विं सुदर, खिर; मधुर; बहुमूल्य ।

-अंघ-पुं विद्याभिनका एक पुत्र । -अ-पुं बकरा, छाग । [लीं 'बल्लाज'] । -दंसीसुत-पुं इंद्र ।

-बाह-विं मधुर गानेवाला (पक्षी) । -मन्न-पुं वनमूंग । -बोधि-लीं कलसुआ साग; एक लता ।

बल्लक-विं [सं] सुदर । पुं चंदन; एक वृक्ष; वन; मूल्य ।

बल्लक-पुं [सं] चमगादड़ ।

बल्लक-लीं [सं] चमगादड़; बाकुनी ।

बल्लक-लीं [सं] कल्लर रगका एक कौडा, तैक-पायी; पिटारी, मंजूषा ।

बल्लक-लीं [सं] चमगादड़; मंजूषा ।

बल्ल-पुं [सं] मेटा; पुत्र ।

वन्दीवत्त-श्री० [सं०] मां-पाका नाम, वंश-परिचय ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] भोजन करना; आहार ।
 वन्दीवत्त-वि० [सं०] लाया हुआ ।
 वन्दीवत्त, वन्दीवत्त-पु० [सं०] विमोद ।
 वन्दीवत्त-श्री० [सं०] चौदी; दीमक । -कूट-पु० विमोद ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] दीमक, चौदी आदि की चाकी हुई मिट्टी का ढेर, विमोद; इन्दीवद नामक रोग; वात्सीकि; वात्सीकि-
 ने पिता । -औस-पु० विमोद । -श्रीव-पु० सुरमा ।
 -संभवा-श्री० एक तरहकी ककड़ी ।
 वन्दी-पु० [सं०] एक मान (गिन रत्नों के बराबर); ओसना,
 फटना; आवरण; निषेध; एक तरहका मेहँ; एक मासा
 चौदी ।
 वन्दी-पु० [सं०] एक समुद्री जंतु, तिमिगिलगिल (?) ।
 वन्दी-श्री० [सं०] बीणा; सलबंका पेड़ ।
 वन्दी-वि० [सं०] प्रिय, प्यारा; निरीक्षण करनेवाला,
 प्रधान । पु० प्रियजन; नायक; पति; अध्वरु; स्वामी;
 मुख्य बीणा; एक समय; दे० 'वन्दीवाच्य' । -पाक-
 -पाक-पु० सार्वस ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] एक समुद्री जंतु, तिमिगिलगिल (?) ।
 वन्दीवत्त-श्री० [सं०] प्रियतमा, प्रेयसी । वि० श्री० प्यारी ।
 वन्दीवाच्य-पु० [सं०] ये एक वैष्णव संभवायके प्रवर्तक थे
 जो इन्दीव सदीमें हुए थे । इन्दीवने कृष्णमठिका प्रचार
 किया । बुरदान आदि अष्टछापके प्रमुख कवि इन्दीवके
 शिष्य थे ।
 वन्दीवाच्य-पु० [सं०] एक रतिपथ ।
 वन्दी-श्री० [सं०] गुजरातका एक राजनगर; गोपिका ।
 वन्दी-पु० [सं०] निर्झर; वन; कला; भगर ।
 वन्दी, वन्दी-श्री० [सं०] कला; मंजरी; मेथी; वन;
 एक बाजा ।
 वन्दी-पु० [सं०] गोप; रसोदया; भीमका एक नाम ।
 वन्दी-श्री० [सं०] गोपिका ।
 वन्दी-अ० [अ०] सुदा कसम, सचमुच ।
 वन्दी-श्री० [सं०] कला; पृथ्वी । -कंदकारिका-श्री० अग्नि-
 दमनी नामक झुप । -ख-पु० मिर्च; विपैठे फूलोंवाला
 एक बीजा । -वृषा-श्री० एक तरहकी वास, मालादूबा ।
 -सुरज-पु० अत्यन्तपूर्ण ।
 वन्दी-श्री० [सं०] कला; बैला; बैला; एक माण, बीघे ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] मूँगा ।
 वन्दी-श्री० [सं०] बाध-विशेष (समीत) ।
 वन्दी-श्री० [सं०] वन्दीदूत ।
 वन्दी-श्री० [सं०] कला; अजमोदा; अग्निदमनी; कैवर्तिका;
 चन्द; सारिवा, गुडुची, क्षिरी और रजनीका एक बर्ग ।
 -गद-पु० एक मछली । -ख-पु० मिर्च । -वन्दी-
 श्री० एक तरहका वर । -वृष-पु० साल वृक्ष ।
 वन्दीवा-श्री० [अ०] श्री वन्दी ।
 वन्दी-पु० [सं०] कुंज; मंजरी; क्षेत्र, खेत; परती जमीन;
 सुखा, निर्जल स्थान; रेगिस्तान; वीरान; फूलोंका गुच्छा;
 सुखाया हुआ मांस ।
 वन्दी-पु० [सं०] धूम्रमे सुखाया हुआ मांस; जगदी मन्त्र-
 का मांस; ऊमर; जगल; उजड़ा; खारी जमीन ।

वन्दीवत्त-श्री० [सं०] भागी वृक्ष ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] ओसना ।
 वन्दीवत्त-पु०, वन्दीवत्त-श्री० [सं०] एक तृण, उलप ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] एक असुर जिसे बलरामने मारा था ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] दे० 'वन्दीक' ।
 वन्दी-पु० [सं०] एक करण (ज्यो०) ।
 वन्दीकर-वि० [सं०] वक्षमें करनेवाला ।
 वन्दीकृत-वि० [सं०] वक्षमें किया हुआ ।
 वन्दीवत्त-वि० [सं०] वक्षवर्ती; आन्धकारी ।
 वन्दी-पु० [सं०] किसीका प्रभाव, शक्ति जिससे दूसरेसे कोई
 काम कर किया जाय; काबू; दृष्टा, चाह; किसी बातको
 अपने अनुकूल करानेकी शक्ति; अधिकारमें करना; जन्म;
 चकला, वैद्याभोजका निवासस्थान । वि० अधीन; आन्ध-
 कारी; मुग्ध । -कर-वि० वक्षमें करनेवाला । -क्रिया-
 श्री० वक्षीकरण । -ग-वि० आन्धकारी । -गत्त-वि०
 वक्षीभूत । -गमन-पु० दूसरेके अधिकारमें जाना । -
 गा-श्री० आन्धमें रहनेवाली श्री । -गामी(मिन्)-
 वि० वक्षमें जानेवाला । -वन्दी(सिन्)-वि० जो किसीके
 वक्षमें हो । -मु-का-जिसपर जोर या अधिकार हो ।
 -चलना-कुछ कहनेकी शक्ति होना । -में होना-
 अधिकार, आन्धमें होना ।
 वन्दी-प्र० [का०] मजापट्टमें युक्त शेरका सा, समका अर्ध
 देगा है (माहवश-चौद-सा-सुर) ।
 वन्दी-श्री० [सं०] आन्धमें रहनेवाली पत्नी ।
 वन्दी-पु० [सं०] दृष्टा करना ।
 वन्दी-श्री० [सं०] श्री; गाय; इधमी; कन्या; ननद; बौद्ध
 श्री या गाय ।
 वन्दी-पु० [सं०] एक विधिया ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] सुँस ।
 वन्दीवत्त-पु० [सं०] आन्धकारी, डाम । वि० वक्षीभूत,
 वक्षवर्ती ।
 वन्दी-श्री० [सं०] वक्षमें करना ।
 वन्दी-वि० [सं०] शून्य, रिक्त ।
 वन्दी-श्री० [सं०] अग्न ।
 वन्दी-श्री०, वन्दीवत्त-पु० [सं०] अधीनता; मन्मोहन;
 योगी एक मित्र ।
 वन्दी-श्री० [सं०] शमी, छोकरका पेड़; बाँटा ।
 वन्दीमा(मन्)-श्री० [सं०] वक्षमें करनेकी योग्यता प्राप्त
 शक्ति ।
 वन्दी-पु० [सं०] समुद्री वनमक; गजपिप्पली; वन्दी; चन्द;
 अपामार्ग ।
 वन्दी-पु० [सं०] दे० 'वन्दी' ।
 वन्दी(सिन्)-वि० [सं०] शक्तिशाली; संयमी, अपनेको
 वक्षमें रखनेवाला; वक्षमें किया हुआ, अधीन, वक्षवर्ती ।
 पु० शानक; ऋषि ।
 वन्दीकर-वि० [सं०] वक्षमें करनेवाला ।
 वन्दीकरण-पु० [सं०] वक्षमें जाना, मन्त्रादिके प्रयोगसे
 किसीको वक्षीभूत करना ।
 वन्दीकार-पु० [सं०] वक्षमें करना ।
 वन्दीकृत-वि० [सं०] वक्षमें किया हुआ; मंत्र द्वारा वक्षमें

किया हुआ ।

वशीभूत-वि० [सं०] अधीन; पराधीन ।

वर्द्धित्व-वि० [सं०] अतिवृद्धि ।

वक्ष्य-वि० [सं०] वक्ष्यमें किने जाने योग्य वा किया जाने-वाला; वक्ष्यमें किया हुआ । पु० दास; आश्रित; कर्म ।

-मित्र-पु० वह मित्र (राष्ट्र, राजा) जिसका इच्छानुसार उपयोग किया जा सके ।

वक्ष्यक-वि० [सं०] आभाषकारी ।

वक्ष्यका-की० [सं०] आभाषमें रहनेवाली की० ।

वक्ष्यता-की० [सं०] अधीनता ।

वक्ष्या-की० [सं०] वशीभूता की०; स्वयम्; गोरोचन; नील अपराजिता ।

वक्ष्य-अ० [सं०] यथावृत्तिके समय उच्चार्यमाण शब्द ।

-कर्ता(सुं)-पु० वक्ष्यका उच्चारण करनेवाला । **-कार-पु०** वक्ष्यका उच्चारण; होम ।

वक्ष्यक-पु० [सं०] एक साधका वक्ष्यका ।

वक्ष्यकणी, वक्ष्यकिणी-की० [सं०] वह गाय जिसका वक्ष्यका बना हो गया हो, वक्ष्यने गाय ।

वर्त्त-पु० [सं०] छ क्रतुओंमेंमें एक जो चैत्र-वैशाखमें होनी है (वर्त्त देवक्षयमें कामदेवका महत्त्व माना जाता है); अग्निमास; मसूरिका; विदूषका प्रचलित नाम (ना०); एक वृत्त, एक राग; एक ताल; पुष्प, वृक्ष ।

-काल-पु० वर्त्तन क्रतु । **-कुसुम-पु०** वृक्षविशेष ।

-घोष-घोषी(विष्)-पु० कीर्तन । **-जा-की०**

मर्कट भूरी; माधवी लता, वसतोत्सव । **-तिलक-पु०**

-तिलका-की० एक वर्णवृत्त । **-वृत्त-पु०** कीर्तन; आभ वृक्ष; रत्न मास; हिन्दोल राग । **-वृत्ती-की०**

पाटकी वृक्ष; माधवी लता; गनिकारी; कीर्तन । **-हु-पु०**

-हुम-पु० आभ वृक्ष । **-पंचमी-की०** माघ-शुक्ल पंचमी और उस दिन होनेवाला त्योहार । **-पुष्प-पु०** एक पुष्प; एक तरहका वृक्ष । **-वर्त्त-पु०** कामदेव ।

-वैरवी-की० एक रायिनी । **-महोत्सव-पु०** होलिकोत्सव । **-माक-पु०** [सं०] शुद्ध स्वरोका एक संपूर्ण

जातिका राग । **-मालिका-की०** एक छन्द । **-वात्रा-की०** वसतोत्सव । **-वोच-पु०** कामदेव । **-राज-पु०**

कतुराज । **-वृष-पु०** मसूरिका । **-वृत्त-पु०** कीर्तन (१); वसतोत्सव । **-सख-पु०** कामदेव, मल्ल-नाम । **-सखा-पु०** [सं०] दे० 'वसन्तमख' । **-सहाय-पु०** कामदेव ।

वसंतक-पु० [सं०] वसन्त क्रतु; एक तरहका वसन्तक ।

वसन्ता-पु० एक विधि ।

वसन्तार्त्त-पु० [सं०] वहेका, विभीतकका पेड़ ।

वसन्ती-पु० सरसोंके फूल जैसा एक हलका पीला रंग ।

वि० वसन्ती रंगका । **की०** वासन्ती लता ।

वसन्तोत्सव-पु० [सं०] होलिकोत्सव ।

वसन्त-की० [अ०] कैलाश; कुशाद्री; गुंजाश्श; आराम; मोका; कुरसत; बहुतायत ।

वसन्ति, वसन्ती-की० [सं०] वास, रहना; वर; धिपि; आभासी, वल्ली; आभार; विश्राधकाण्ड; राग; साधुनैका

मठ (त्रै०) ।

वसव-पु० [सं०] रहनेका स्थान, घर; नील ।

वसव-पु० [सं०] वस; उदनेकी वस्तु, आवरण; निवास;

मकान; किराँका कमरका एक गहना, रसना; तेजपात ।

-वर्षा-पु० वर्षा-परिवर्तन । **-सख(सुं)-पु०** लेमा ।

वसना, वसनी-की० [सं०] कमरका एक गहना ।

वसनार्था-की० [सं०] पृथ्वी ।

वसमा-पु० [अ०] नीलके पत्ते जिन्हें मेंहरीमें मिठाकर

शालीमें सिखाव करते हैं; एक तरहका छपा हुआ कपड़ा ।

-वार-वि० वस्तेसे रंगा हुआ । **-वोश-पु०** वस्तेसे रंगा हुआ कपड़ा पहननेवाला । **मु०** **-करना-वाली-**

में सिखाव लाना ।

वसवस्त-पु० [अ०] दे० 'वसवास्त' ।

वसवास्त-पु० [अ०] मुलावा; भ्रम; शंका, संदेह ।

वसवासी-वि० अशुभमें डालनेवाला; शक करनेवाला ।

वसव-पु० दे० ।

वसा-की० [सं०] मेद; मेद वा चरबीवाला पदार्थ; भंजा;

भटकर जैसा एक मूल । **-केतु-पु०** एक धूमकेतु ।

-छट-की० भेना । **-पाकी(विष्)-पु०** कुत्ता ।

-पावा(वृष्)-वि० मेद पीनेवाला । पु० एक वैदिक

देवता । **-प्रमेह-मेह-पु०** एक प्रमेह जिसमें मूत्रके

साथ वसा निकलती है । **-मूर-पु०** एक जनपद ।

-रोह-पु० कुकुरमुत्ता ।

वसाव, वसावक-पु० [सं०] संत ।

वसात-की० [अ०] मध्यस्थता, जरिया ।

वसाति-की० [सं०] एक जनपद; उषा । पु० वसाति

जनपदका निवासी; श्वत्कुका एक पुत्र; जनमेजयका पुत्र ।

वसावनी-की० [सं०] पीला शीशम ।

वसार-पु० [सं०] इच्छा, अभिप्राय; प्रयोजन ।

वसि-की० [सं०] वस; मकान ।

वसिक-वि० [सं०] रिक, खाली । पु० पचासनमें बैठने-

वाला ।

वसित-वि० [सं०] पहना हुआ; वसा हुआ; जमा किया

हुआ । पु० वस; वास-स्थान ।

वसितव्य-वि० [सं०] पहनने, धारण करने योग्य ।

वसिता(सुं)-वि०, पु० [सं०] पहननेवाला ।

वसिर-पु० [सं०] समुद्री नमक; गजपिपली; लाल

चिचड़ा; जलनीम ।

वसिष्ठ-पु० [सं०] एक कृषि (वेदके षड्विंशमें), विशेष-

पतः ऋग्वेदके सातवें मंडलके रचयिता बड़ी कोहे जाते

हैं । इनका नाम रामायण, महाभारत और पुराण-

ग्रंथोंमें प्रायः आता है । ये सुदासके पुरोहित थे । विश्व-

मित्रसे यह करायेपर सुदासमें क्रुद्ध हुए और विश्वमित्र-

से भी वैर हुआ । पुराणोंमें ये ऋषिके मानसपुत्र कोहे

गये हैं; सप्तर्षिमेंहलका एक तारा; एक स्थितिकार ।

-विहव-पु० एक साम । **-पुराण-पु०** एक उप-

पुराण । **-वाची-की०** एक जनपद । **-वज्र-पु०**

वहविशेष । **-वृक्ष-पु०** एक साम । **-सिद्धा-की०**

एक शिक्षा । **-संसर्ष-पु०** चार दिन चलनेवाला एक

यज्ञ । **-संहिता-की०** एक स्मृति । **-सिद्धांत-पु०** एक

अतिशय-अर्थ ।

वसिष्ठक-पु० [सं०] वसिष्ठ कवि ।
 वसिष्ठोक्त-पु० [सं०] एक साम ।
 वसिष्ठानुवद्-पु० [सं०] एक साम ।
 वसिष्ठोपपुराण-पु० [सं०] एक उपपुराण ।
 वसी-पु० [अ०] वह व्यक्ति जिसकी वसीयत की गयी हो या जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो ।
 वसी(सिद्ध)-पु० [सं०] उदयिकाव ।
 वसीश-वि० [ज०] चौथा श्रेणी कुला; विस्तृत ।
 वसीशत, वसीयत-श्री० [अ०] शत्रु या लवी बाजाके अन्तरपर शत्रुके शब्द अपनी संरक्षिके प्रथम, उपभोग आदिके विषयमें किया हुआ आदेश । -नामा-पु० शत्रुके शब्दके कर्तव्योंका आदेश-पत्र, शत्रुपत्र ।
 वसीश-वि० [अ०] दद, मजज्ज; टिकाक ।
 वसीश-पु० कौलकरा; इकरारनामा; वस्तावेज; कण-पत्र । -वार-वि० जिसके एकमें वसीका लिखा गया हो; महाजन । -सरकारी-पु० सरकारी कणपत्र, 'गवर्मेन्ट वॉन्ड' ।
 वसीम-वि० [अ०] मुदर ।
 वसीका-पु० [अ०] जरिया; सहाया; सहायता ।
 वसुचरा-श्री० [सं०] पृथ्वी; देश; राज्य; क्षिति; अस्वक की कन्या, सांवकी पत्नी; एक देवी । -धर-पु० पहाड़ । -धर-पु० राजा । -धृत्-पु० पहाड़ । -कुनासीर-पु० राजा ।
 वसु-वि० [सं०] सम्ये नसनेवाला; मधुर; शुष्क । पु० धन; रत्न; सोना; जल; पदार्थ; एक नमक; पीली मृग; माठ डेवताओंका एक वर्ग; माठकी संख्या; कुबेर; शिव; अग्नि; वृक्ष; सरोवर; लगाम, बागडोर; जुवा नौबनेकी रस्ती; वृक्ष; चंद्रमा; मीलसिरी; एक तरहकी मछली; छप्पका एक मेर । श्री० प्रकाश, दीप्ति; प्रकाशरविम; एक जड़ी, वृद्धि; अमरावती; अलका; वसुकी एक कन्या । -कर्म-पु० एक मंत्रघटा कवि । -कीट-कृमि-पु० मिच्छ । -क्र-पु० एक कवि । -कासक-पु० सोना । -किश्र-श्री० महाभेदा । -द-वि० धन देनेवाला । पु० कुबेर; विष्णु । -दा-श्री० पृथ्वी; एक देवी; स्कंदकी एक मातृका । -दाव-पु० विदेहराजका एक पुत्र; वृहद्रथका एक पुत्र । -दामा(मन्)-पु० वृहद्रथका एक पुत्र । -देव-पु० कृष्णके पिता । -दे-शुत-पु० कृष्ण । -देव-पु० धनिष्ठा नक्षत्र । -देव्या-श्री० धनिष्ठा नक्षत्र; पक्षकी नवी तिथि । -दैव-दैवत-पु० दे० 'वसुदेवत' । -हुम-पु० गूलर । -धर्मिका-श्री० रत्नकि । -जा-श्री० पृथ्वी, क्षिति; राज्य; लक्ष्मी । -लक्ष-पु० भरातल । -धर-पु० पहाड़; विष्णु । -नगर-पु० कुबेरकी राजधानी । -जान-पु० धन-दान । -धार-वि० धन, कोश रखनेवाला । पु० एक पहाड़ । -धारा-श्री० एक देवी (श्री); एक शक्ति (शै); कुबेरकी पुत्री, अलका; एक तीर्थ; नांदीमुख आदि का कृत्यविशेष; एक नदी; धन या दानका प्रवाह । -धात्री-श्री० पृथ्वी । -नेत्र-पु० नद्या (श्री) । -पति-पु० कृष्ण । -पाला(नृ)-पु० कृष्ण । -पाल-पु० राजा । -प्रद-वि० धन देनेवाला । पु० शिव;

कुबेर; स्कंदका एक अनुचर । -प्रमा-श्री० अग्निकी एक जिह्वा; कुबेरका राजनगर । -प्राण-पु० अग्नि । -बंध-महावान शास्त्रके एक प्राचीन शैल आचार्य । -ध-पु० धनिष्ठा नक्षत्र । -अरित-वि० धनपूर्ण । -अवा(मस्)-पु० एक मंत्रघटा कवि; एक कोसलनरेश । -मिश्र-पु० वैभाषिक संप्रदायके एक आचार्य (महापान शैल) । -रक्षित-पु० एक शैल आचार्य । -राक्ष-पु० एक कवि । -रुचि-पु० एक शंख । -रूप-पु० शिव । -रेशा(तस्)-पु० शिव; अग्नि । -रीषि(स्)-पु० यक्ष । -वन-पु० एक पौराणिक देश । -वाह-पु० एक कवि । -विह-वि० धन प्राप्त करनेवाला । -व्रत-पु० एक तरहका अनुष्ठान । -अवा(वस्)-पु० शिव । -श्री-श्री० स्कंदकी एक मातृका । -व्रत-वि० धनके लिए विवशा । -कोष्ठ-वि० वसुओंमें मेष्ठ (कृष्ण) । पु० चौंसी । -वेण-पु० कर्ण; विष्णु । -संपत्ति-श्री० धन-प्राप्ति । -सारा, स्कन्ही-श्री० कुबेरका राजनगर । -ईश-पु० वसुदेवका एक पुत्र । -इष्ट, इष्टक-पु० एक वृक्ष ।
 वसु-पु० [सं०] तौमर नमक, पाशुलवण; एक ताल; अर्क वृक्ष; एक पुष्प; काला अगर; बड़ी मीलमिरी ।
 वसुकोदर-पु० [सं०] गालीत्रापन ।
 वसुधाधिप-पु० [म०] राजा ।
 वसुज-पु० [सं०] राजा ।
 वसुमती-श्री० [सं०] पृथ्वी; देश; राज्य; जमीन; एक वृत्त । -पति-पु० राजा । -वृष्ट-पु० भरातल । -सुन-पु० नरक ।
 वसुर-वि० [म०] मृत्युवान ।
 वसुल-पु० [सं०] देवता ।
 वसुक-पु० [म०] बक वृक्ष या उमका पुष्प; मांभर नमक ।
 वसुज-पु० [म०] एक मंत्रघटा कवि ।
 वसुतम-पु० [म०] शीघ्र ।
 वसुमती-श्री० [सं०] धनी की ।
 वसुरा-श्री० [म०] वेद्या ।
 वसुल-पु० [अ०] मित्रता; प्राप्ति; पहुंचना; मिली, पहुंची हुई रक्त या चीज । वि० मिला हुआ, प्राप्त ।
 वसुली-वि० वसुल होने योग्य, प्राप्तव्य । श्री० वसुल कानेकी क्रिया, उगाही । दे० 'वसुल' ।
 वसुक-पु० [म०] गमन; अश्ववसाय ।
 वसुक-पु० [सं०] दे० 'वसुक्य' ।
 वसुकवनी-श्री० [सं०] दे० 'वसुकणी' ।
 वसकराटिका-श्री० [सं०] वृक्षिक ।
 वस्त-पु० [सं०] वस्त्र; रहनेका स्थान या मकान । † श्री० वस्तु । -कर्म-पु० शाक वृक्ष । -रक्ष-श्री० अजंघा । -मोक्ष-श्री० अजमोदा ।
 वस्त-अ० [अ०] शीघ्र, दरमिबान । पु० मध्य अमा; कटि । -हस्ते-विह-पु० मध्यमातर ।
 वस्तक-पु० [सं०] कृत्रिम लवण ।
 वस्तव्य-वि० [सं०] रहने, ठहरने योग्य; व्यवहार करने योग्य ।

वस्ती-श्री० [सं०] एक पीषा, वृषपत्रिका ।

वस्ती(वृ)-वि० [सं०] वस्त्र धारण करनेवाला; वस्त्रकने-वाला ।

वस्ति-श्री० [सं०] पैरु, नाभिके नीचेका भाग; मूत्राशय; पित्तकारी (एनीमा); निवास; कपड़ेका छोर । -कर्म(वृ)-पु० क्रिय, गुदा आदिमें पित्तकारी देना । -कर्मोच्च-पु० ऊपरि वृक्ष । -कुंडल-पु०, -कुंडलिका-श्री० मूत्राशयका एक रोग जिससे उसमें गोंठ पड़ जाती है । -कोश-पु० मूत्राशय । -मूत्र-पु० मूत्र, पेशाब । -वात-पु० एक मूत्ररोग । -सिर(स्)-पु० एनीमा-की टोंटी; मूत्राशयका ऊपरका संकीर्ण भाग । -झीरू-पु० मूत्राशयका ऊपरका संकीर्ण भाग । -शोधन-पु० मूत्रन, मूत्रफल ।

वस्ती-वि० दरमियानी, बीचका ।

वस्तु-श्री० [सं०] किसी चीजका आधार, पीठ; वह पदार्थ जिसकी स्थिति, सत्ता हो; सत्त्व; चीज, पदार्थ; व्यावहारिक पदार्थ; धन, संपत्ति; उपकरण; वृत्त, दृष्टि; नाटककी कहानी, घटना, कथा-वस्तु; धर्म, स्वभाव; योत्रना । -कृत-वि० अभ्यस्त । -अवस्थ-पु० अवस्थान । -आवृ-पु० वस्तुओंका योग । -आम-पु० वस्तुकी पहचान; तत्त्वज्ञान, मूल तत्त्वका बोध । -निर्देश-पु० वह मंगलचरण जिसमें कथाका कुछ संकेत, आभास रहता है; छंदः । -कल-पु० वस्तुका गुण वा शक्ति । -आवृ-पु० वधाधेना । -अवृ-पु० वास्तविक अंग । -आवृ-पु० किसी विषयका वाक् रूप । -इच्छा-श्री० ईच्छा; कथावस्तुका विकास । -आवृ-पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें इच्छा जगत्को व्यापक सत् मानती है, भूतवाद । -विनिमय-पु० वस्तुओंका अद्वयत्व । -वृत्त-पु० वधाधे विषय । -आवृ-वि० जिसमें वधाधेना न हो, नकली । -स्थिति-श्री० परिस्थिति; वास्तविक स्थिति ।

वस्तु-पु० [सं०] सार भाग; एक भाग, वास्तव्य ।

वस्तुकी-श्री० [सं०] श्वेत चित्ती शक ।

वस्तुतः(तस्)-अ० [सं०] यथार्थ; असलमें ।

वस्तुपमा-श्री० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद, धर्म-उत्प्रेषण ।

वस्तुमेका-श्री० [सं०] उत्प्रेषण अलंकारका एक भेद ।

वस्त-पु० [सं०] निवासस्थान, मकान ।

वस्त्र-पु० [सं०] कपड़ा; पोशाक । -कुट्टिम-पु० छाता; छेमा, छेरा । -कोश-पु० वस्त्र रखनेका थैला । -गृह-पु० छेमा । -सोपन-पु० ६४ कलाओंमेंसे एक । -अंधि-श्री० इमारत, नीची । -अंधी-श्री० छुकी या छाननेका वस्त्र । -अंधा-श्री० कपड़ेकी किनारी । -आवृ-श्री० अलमनी । -आवृ(विष्)-वि० कपड़ा धोनेवाला । -निर्मल-पु० शोभी । -अंधा-पु० एक कंद, कोककंद । -अ-पु० वस्त्र-विशेष राजकर्मचारी (शुक्रनीति); एक तीर्थस्थल । -पुत्रिका-श्री० गुहिका । -वृत्त-वि० कपड़ेसे छाना हुआ । -पेदा-श्री० कपड़ेकी टोकरी । -पेदा-श्री० हाथ । -अंध-पु० नीची, नारा । -अंध-पु० छेमा । -अंध-पु० रक्षाजन ।

-अंधा, -अंधी-श्री० मज्जी । -अंधा, -अंधी-विष्-पु० टाँकी । -अंधा-श्री० वस्त्रका उपपान, वह आदि । -अंधा, -अंधा-पु० कुसुमका पीषा । -विच्छा-पु० वेश-भूषाप्रियता । -वेशा, -वेश(न)-पु० छेमा । -वेशि-वि० कपड़ेसे आवृत ।

वस्त्र-पु० [सं०] कपड़ा ।

वस्त्रावृ-वि० [सं०] कपड़ेका छोर

वस्त्रावृ-पु० [सं०] ऊपरका कपड़ा, उपरना ।

वस्त्रावृ-पु० [सं०] कपड़ेकी दुकान ।

वस्त्र-पु० [सं०] वस्त्र; निवास; छाया; वेतन; मजदूरी;

मूल्य; द्रव्य; धन; मृत्यु ।

वस्त्र-पु० [सं०] शिविका कमरका एक गहना, करघनी, कटिचूषण ।

वस्त्रा-श्री० [सं०] स्नायु; नस ।

वस्त्रा-वि० [सं०] वेतनीपत्रीका; क्रय ।

वस्त्र-पु० [सं०] गुण, मूली; प्रशंसा; वस्त्रान ।

वस्त्र(वृ)-पु० [सं०] वस्त्र; निवासस्थान ।

वस्त्रा-पु० [सं०] वस्त्र ।

वस्त्र-पु० [सं०] दिन; मकान, निवासस्थान; चौराहा ।

वस्त्र-पु० [सं०] मिलन, प्रेमी-प्रेमिकाका मिलन; संमेलन, सहवास ।

वस्त्रा-पु० [सं०] मिलन; जोड़; वैध ।

वस्त्रा-श्री० [सं०] दो चीजमें जुड़ी हुई द्वाितीय जिनपर वक्ष्या कागज चिपकाकर उर्ध्व-कार्शिक छात्र सुश्रवणीका अभ्यास करते हैं । वि० मिलनेवाला, वस्त्र हासिल करने-वाला ।

वस्त्रोक्तसारा-श्री० [सं०] इन्द्रपुरी; कुबेरपुरी; गंगा; इन्द्र-नदी; कुबेरनदी ।

वस्त्र-पु० [सं०] वायु; शिशु ।

वह-मने-वाक-नीतिमें दूरस्थ, परीक्ष्य व्यक्ति से संकेतका शब्द; दूरस्थ, परीक्ष्य पदार्थोंका संकेत (विशेषणके रूपमें भी प्रयुक्त होता है-जैसे वह लकड़ा) । पु० [सं०] वेषा; वाहन; वायु; मार्ग; नद; प्रवाह; भार; पैलका कंघा; ले जाने, छोनेकी क्रिया; चार श्रेणका एक मान । वि० ले जानेवाला; वहन करनेवाला (पदार्थमें-जैसे गंधवह, भारवह) ।

वह-पु० [सं०] पैल; पथिक ।

वह-पु० [सं०] वायु; मित्र; सचिव; पैल ।

वह-श्री० [सं०] गाव; नदी ।

वह-पु० [सं०] पैल; पथिक ।

वह-श्री० [सं०] एक, अकेला होना, अद्वैतभाव, सुदाका एक, अद्वैत होना । -आना-पु० एकतावासका स्थान । -से-पु० अर्थके संपूर्ण पदार्थोंकी शक्त की ही अभिव्यक्ति मानना, 'सर्व सत्त्विक' वस्त्र'का विश्वास (एकी) ।

वह-श्री०-वि० एकसे संबद्ध, अद्वैतवादी ।

वह-विश्व, वह-वाणीवस्त्र-श्री० [सं०] अकेला, अद्वैत होना, यत्नार्थ, तीर्थ ।

वह-पु० [सं०] पैल, गाव; दान; शीचकर; लाकर कहीं ले जाना; सिर, कपड़ेपर लेना, धारण करना, उठाना;

बहना; संभोगा सवसे नीचेका हिस्सा (बास्त्र) । वि० ले जानेवाला । -अंग-पु० पीत आदिका भंग होना, दूब जाना ।

बहनीय-वि० [सं०] उठा या खींचकर ले जाने योग्य; भारणीय, ऊपर लेने योग्य ।

बहम-पु० [अ०] शक; शंका; कल्पना; अमूलक; गलत खयाल । -का पुस्तका- बहमी ।

बहमी-वि० भ्रमजनित; बहम करनेवाला ।

बहल-पु० [सं०] नाव, बेड़ा । वि० कर्कश; हठशील; दृढ़, मजबूत; भार होने या खींचनेमें अभ्यस्त (बैल आदि) । -गंध-पु० संवर चंदन । -अच्छु(स्)-पु० मेघ-भंडी । -त्वच-पु० श्वेत लोभ ।

बहला-खी० [सं०] सौंफ, सातुप्पा; बड़ी इलायची; शीपक रागकी एक रागिनी ।

बहल-पु० [अ०] जमनी जानवर ।

बहलत-खी० बहशीपन, आवसियोंसे भटकनेका भाव; पवराहट; चित्तकी अति चंचलता; मय, सलक । -असर-वि० पवराहट देना करनेवाला । -साक-वि० डरावना ।

बहशियावा-अ० बहशीकी तरह, जंगली जानवर या आदमीके अनुरूप ।

बहशी-वि० जंगली, आदमियोंकी सुहृदवत्से बघाने, भागने वाला; उग्र, असह्य । पु० जंगली जानवर; जंगली आदमी; असह्य जन । -औस-खी० जंगली असह्य जाति । -मिज्ञात्र-वि० जिसके स्वभावमें बहशीपन हो ।

बहरी-अ० उस जगह (दूरके छिपे) ।

बहा-खी० [सं०] नदी; धारा ।

बहाबी-पु० मौलवी अथवा बहाव-प्रवर्तित एक मुसलिम संप्रदाय जो केवल कुरानकी मानना है, इस्लामीकी प्रमाण बही मानता ।

बहिः(हिस्)-अ० [सं०] बाहर (समस्त परोंमें प्रयुक्त) ।

बहिस-वि० [सं०] डोया हुआ; हात; विख्यात; प्राप्त ।

बहिय-पु० [सं०] पीत; एक तरहका रव । -कर्म-पु० योगका एक भासन । -अंग-पु० दे० 'बहन-अंग' ।

बहियक-पु० [सं०] दे० 'बहिय' ।

बहिनी-खी० [सं०] नाव ।

बहिर-बहिस्का समासगत रूप । -अंग-वि०, पु० दे० 'बहिरंग' । -इंग्रिय-खी० दे० 'बहिरिगिय' । -गत-वि० दे० 'बहिरगत' । -अग्रव-पु० ध्वजमान जगत् । -देश-पु० दे० 'बहिरदेश' । -हार-पु० दे० 'बहिरहार' । -ज्वा-खी० दे० 'बहिरज्वा' । -अल-वि० दे० 'बहिराल' । -अल-वि०, पु० दे० 'बहिराल' । -योग-पु० दे० 'बहिरयोग' । -लव-वि० अधिक कोलवाला । पु० अधिक कोण मिश्र । -कापिका-खी० देना प्रयत्न, वाक्य, ऐसी वहेली जिसका उत्तर प्रश्नके बाहर होता है । -विकार-पु० दे० 'बहिविकार' । -कृषि-खी० बाधरूप । -अल-वि०, पु० कामुकता ।

बहियर-वि०, पु० [सं०] दे० 'बहियर' ।

बहिय-बहिस्का समासगत रूप । -करण-पु० दे० 'बहियकरण' । -कार-पु० 'बहियकार' । -कुटीकर-

पु० दे० 'बहियकुटीकर' । -कृत-वि० दे० 'बहियकृत' । -प्राण-पु० दे० 'बहियप्राण' ।

बहियक-वि० [सं०] बाहरका ।

बहरी-अ० उसी जगह (दूर, परीछके छिपे) ।

बहरी-सर्व० पूर्ववर्णित व्यक्ति, निश्चित व्यक्ति, दूसरा नहीं ।

खी० [अ०] देशीय मंदिर या आदेश जो किसी पैगंबर को मिले, इकादाम ।

बही(हिस्)-वि० [सं०] भार होनेवाला । पु० बैल ।

बहीर-पु० [सं०] एक नाडी-भंग; पेछी ।

बहुरक-पु० [सं०] सम्पासियोंका एक भेद ।

बहुरक, बहुरक-पु० [सं०] एक वृक्ष, बरेका ।

बहुर-सर्व० बहरी, बही ।

बहि-पु० [सं०] अग्नि; अठारिग; पाचन; क्षुधा; यान; पोषा आदि जोते जानेवाले जानवर; तीमकी संस्था; चित्रक; देवता; मकर; लोम; कृष्णका एक पुत्र; तुलसीका एक पुत्र; पुरोहित; आठवों कल्प । -कर-पु० एकमक; बिजली; अठारिग । -करी-खी० धानीबरी नामक पुष्प, बब । -काह-पु० दाहागुरु । -कुंड-पु० आग रखनेके छिप बना हुआ गढ़ा । -कुमार-पु० एक देवगण; (जै०) । -कोण-पु० अग्निर्कोण । -गंध-पु० गंधद्रव्य; यक्षधूप । -गर्भ-पु० वाम । -शर्मा-खी० श्यामी वृक्ष । -खाल-खी० कलिकारी । -जाबा-खी० स्वाहा ।

-ज्वा-पु० एक नरक । -ज्वाका, -पुष्पी-खी० धानकी वृक्ष । -दमनी-खी० अग्निदमनी धूप ।

-दीपक-पु० कुसुम । -दीपिका-खी० अन्नमोहा ।

-द्वैत-वि० अग्नि पूजक । -क्षीत-वि० अग्नि ज्ञेय ।

शुद्ध । -नामा(मन्)-पु० चित्रक, मित्रता । -नी-खी० जटामानी; गजपिपली । -बीज-पु० सोना; 'र' बीज; चित्रा नीर । -भूतिक-पु० नौदी । -भोग्य-पु० धी । -अंध-पु० गनियारी; अग्निमंथ । -भारक-पु० पानी । -मित्र-पु० बायु । -मुख-पु० देवता ।

-रेता(तस्)-पु० शिव । -लोह-पु० नीरा । -लोहक-पु० तीव्र; काँसा । -वक्ता-खी० कलिकारी ।

-वर्ण-खी० स्वाहा । -वर्ण-पु० रत्नोत्पल । -बलम-पु० धूना । -बलमा-खी० स्वाहा । -विल-पु० केसर; कुसुम । -शिलर-पु० न्योबमस्तक । -विला-खी० आगकी लपट; कलिकारी; धानकी । -मुद्-वि० अग्नि जैसा पवित्र । -शेखर-पु० केसर । -संज्ञक-पु० निजक । -सख-पु० बायु; जीवक । -सुख-पु० अन्नरस । -स्फुल्लिग-पु० चिनगारी ।

बहिक, बहिक-पु० [सं०] गरम, तप्त । पु० गाय, गरमी ।

बहिकारी-खी० [सं०] कर्म ।

बहा-पु० [सं०] बाधन, यान; गाड़ी ।

बहाक-पु० [सं०] के जानेवाला, बाधक; जोता जानेवाला जानवर ।

बही-अ० बहरी, उस जगह ।

बाक-पु० [सं०] समुद्र ।

बागाक-पु० [सं०] एक राग ।

बागाखी-खी० [सं०] एक रागिनी ।

बांछक-वि०, पु० [सं०] इच्छा करनेवाला ।

वाङ्मय-पु० [सं०] इच्छा करना ।

वाङ्मयीय-वि० [सं०] वाङ्मये योग्य, अभिलषणीय ।

वाङ्मा-स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह ।

वाङ्मि-वि० [सं०] इच्छित, चाहा हुआ । पु० इच्छा, चाह; एक ताल ।

वाङ्मिष्य, **वाङ्मय**-वि० [सं०] अभिलषणीय, अभिलषणी इच्छा की जाय ।

वाङ्मिनी-स्त्री० [सं०] पुंस्यो ।

वाङ्गी(**किम्**)-वि० [सं०] इच्छुक, चाहनेवाला; लंपट ।

वाङ्ग-वि० [सं०] वमन किया हुआ, मुँहमे निकाला हुआ; जिसने वमन किया है । पु० वमन; वमन किया हुआ पदार्थ ।

वाङ्गाय-पु० [सं०] कुत्ता; एक पक्षी ।

वाङ्गाय-पु० [सं०] वमन किया हुआ अन्न ।

वाङ्गासी(**शिव**)-वि० [सं०] वमन खानेवाला । पु० कुत्ता; मोवादिका उन्मेष कर भोज्य दानेवाला ।

वाङ्गि-स्त्री० [सं०] वमन करनेकी, जिन्हा । -**कृत्**-वि० वमन करनेवाला । पु० कोष्ठकटक वृक्ष, मेनफल । -**का**-स्त्री० कटुकी । -**शोषणी**-स्त्री० नीरा ।

वाङ्गिका-स्त्री० [सं०] कटुकी ।

वाङ्ग-वि० [सं०] वाँसका बना हुआ ।

वाङ्गिक-पु० [सं०] वाँस काटनेवाला; वाँसुरी बजावेवाला ।

वाङ्गि-स्त्री० [सं०] बमलेचन ।

वाङ्गि-पु० [सं०] दंस ।

वाङ्गुष्प-पु० [सं०] लौह ।

वाङ्गुष्प-पु० [सं०] ब्रह्मघ्न, ब्रह्मघ्नर ।

वाङ्गुष्प-वि० [सं०] जो पायनी लपटा हो ।

वा-अ० [सं०] मगध, मगध, विक्रम आदि का न्ययक शब्द -या, अथवा; [अ०] दे० 'वाय' । * सर्व० 'वह' का विग्रह पु० भा रूप ।

वाह*-सर्व० उसकी । स्त्री० बापी ।

वाहका-पु० [अ०] इंग्लैण्डके भूस्वामियों का उपाधि ।

वाहक-वि०, पु० [अ०] वाज, मनीष्य करनेवाला; धर्म या नीतिका उपदेश करनेवाला ।

वाहवा-पु० [अ०] दे० 'वाडा' ।

वाहस-पु० [अ०] प्रतिनिधिक रूपमे, दूसरेके स्थानपर काम करनेवाला व्यक्ति (ममस्त पदोभिः) । -**वाहसक**-पु० कुलपति, विधिविधायकका एक उच्च अधिकारी जो नासल्यका सहायक होता है और विश्वविद्यालयकी व्यवस्था आदि करता है । -**वेयरमैन**-पु० उपाध्यक्ष । -**प्रेसिडेंट**-पु० उपसभापति । -**राय**-पु० ब्रिटिश शासनकालमें हिंदुस्तानका सर्वोच्च शासक जो इंग्लैण्डके राजप्रतिनिधिकी हैसियतसे भारतमें रहता था ।

वाहक-पु० [अ०] सर्वोच्च भोदेवार मद्र शिक्षावेवाला पुरजा ।

वाक-पु० [सं०] वाक्य; कालोंका शृङ्खल; कालोंकी उपाय । वि० बक-संघी । * स्त्री० बाणी, सरस्वती ।

वाक्का-अ० [अ०] वस्तुतः, सत्यतः । वि० ठीक, दुस्तर; सच्चा ।

वाक्मि, **वाक्मि**-पु० [अ०] बटना; हटना; हटाना; हटानेवाला, हटानेवाला ।

वाक्मि-पु० [अ०] वाक्मिनामक वटु०, घटनाएँ, दुर्घटनाएँ, बारिदात ।

वाक्मि-वि० घटनामूलक, परिस्थितिसे प्राप्त । -**वाक्मि**-पु० [अ०] (घटनाकी) परिस्थितिसे मिलनेवाली (अप्रत्यक्ष) सहायता ।

वाक्मिनी-स्त्री० [सं०] एक देवी (सं०) ।

वाक्मि-वि० [अ०] जानकार, जानने, समझनेवाला; अविज्ञ । -**कार**-वि० किसी कामकी जानने, समझनेवाला, परिचिन । -**कारी**-स्त्री० जानकारी, परिचय ।

वाक्मि-वि० [अ०] जानकारी, अभिज्ञता, परिचय । **वाक्मिनी**-स्त्री० [सं०] ओपविधिसे, बहुरी ।

वाक्मि-पु० [सं०] बहुरी, मोलमिरीका फल ।

वाक्मि, **वाक्मि**-वि० [अ०] होनेवाला, घटित होनेवाला, सामने आनेवाला; असली । **मु०**-**होवा**-घटित होवा ।

वाक्मि-पु० [सं०] बात, संवाद, कथोपकथन ।

वाक्मि-वि० [सं०] कथोपकथन, बातचीत; लक्ष ।

वाक्(**व**)-स्त्री० [सं०] शब्द; वाणी, वाक्य; कथन; वार; शोकनेकी इच्छा; मरझती । -**कलह**-पु० लपका, कहावनी । -**की**-पु० साक्षात् । -**केहि**, **केही**-स्त्री० इन्दी-मजाक । -**क्षल**-पु० लगनेवाली बात । -**कलह**-वि० बहवचन । -**कलह**-पु० बहाना, दाखलनामी

बात; काकुके सहारे बितटा खड़ा करना । -**पट्ट**-वि० शान करनेमें बहुरी । -**पट्ट**-पु० गृहस्वति; पुष्प नक्षत्र; भाषण-कुशल व्यक्ति, बाग्मी; निदोष, पट्ट वचन । -**पट्ट**-पु० भाषणके योग्य अवसर; भाषणका क्षेत्र । -**पट्ट**-पु० भाषण-पट्टता । -**पट्ट**-पु० कर्मक्षेत्र, अपशब्द आदि । -**पट्ट**-पु० ऊँची उपायनमे शब्द । -**प्रसो**-पु० ताना । -**प्रसो**-स्त्री० सरस्वती नदी । -**प्रसो**-पु० वाग्मिता । -**प्रसो**(**वि**)-वि० भाषण-पट्ट । -**प्रसो**-स्त्री० लगनेवाली बात । -**सं**-पु० धीरे-धीरे शोकना । -**सावक**-पु० वेधनेवाली बात । -**स्व**-पु० अवाक रह जाना, शोक न निकलना ।

वाक्-स्त्री० [सं०] एक पक्षी ।

वाक्-पु० [सं०] पदोंका वह समूह जिससे वाक्का अभिप्राय स्पष्टतः समझमें आ जाय; कथन; आदेश; साधन; तर्क; पक्षियोंका कलहव । -**काँठ**-वि० जिसके कठमें बात हो, जो शोकने वाला हो । -**कर**-पु० आदेश पूरा करनेवाला । -**खं**-पु० दे० 'उपवाक्य' । -**खं**-पु० तर्कका खंजन । -**खं**-पु० मुँहका पक्षाघातसे प्रसन्न होना । -**पट्ट**-वि० वाक्क बनानेका निवध । -**पट्ट**-पु० किसी बातका परस्पर विरोधी अर्थ करना; परस्पर विरोधी वाक्य । -**पट्ट**-स्त्री० वाक्क बनाना । -**पट्ट**-पु० बहुत करी भाषा । -**विष्वा**-पु० पदोंका बधावना रखा जाना (व्या०) । -**विष्वा**-वि० भाषण-पट्ट । -**विष्वा**-स्त्री० दे० 'वाक्-शब्द' । -**वाक्**-पु० प्रवक्ता; शोकनेवालोंका मुखिया । -**वाक्**-स्त्री० पत्नी ।

वाक्पाठ्य-पु० [सं०] दीर्घ और छिद्र सम्बन्धित वाक्पाठ्य-
वली ।
वाग्गत-पु० [सं०] उद्यतत स्वर ।
वाग्गत-पु० [सं०] एक संकर जाति ।
वाग्गति-पु० [सं०] वृहस्पति ।
वाग्गता-पु० [सं०] 'वाग्गता'; चक्रवा-किरवा-‘मुमुक्षु-
मुमुक्षु वाग्गता के जीवनमें’-रघुराज ।
वाग्गति-वि० [सं०] गूँगा ।
वाग्ग-पु० [सं०] निर्णय; वाग्गवान्त; निर्णय व्यक्ति;
मेधिया; सान; कसौटी; पंक्ति; मुमुक्षु वाग्ग ।
वाग्ग-ली० [सं०] कृगम ।
वाग्ग-पु० [सं०] बचन भंग करनेवाला; आशाहता;
विवासावली ।
वाग्गवा-पु० [सं०] एक बुद्ध ।
वाग्ग-पु० [सं०] कवि; बका; ब्रह्मा; वृहस्पति । वि०
अच्छा शोकनेवाला ।
वाग्गवा-पु० [सं०] सरस्वती ।
वाग्ग-पु० [सं०] कवि; ब्रह्मा; वृहस्पति; एक शोध-
सम्प, मनुष्य ।
वाग्गवा-ली० [सं०] 'वाग्गवा'; वाग्ग-‘तदपि देवि मे देव
अस्मिन् । सफल होम हित निज वाग्गवा’-रामा० ।
वाग्गवा-पु० [सं०] एक तरहकी मछली ।
वाग्गवा-पु० [सं०] छोक देना, मुक्ति ।
वाग्गवा-वि० [सं०] छोटा हुआ; दिया हुआ; लौटाया
हुआ ।
वाग्गवा-ली० [सं०] एक ओषधि, वज्रनी, सोमराजी ।
वाग्ग-पु० [सं०] बैल; कमल ।
वाग्गवा-ली० [सं०] फंदा, जाक, वृग आदि फंसावेका
जाक । -वृक्ष-ली० वृक्ष आदि एककर जीविका
चलाना । वि० इस प्रकार अपनी जीविका चलानेवाला ।
वाग्ग-पु० [सं०] हिरन फंसावेका व्यापा ।
वाग्ग-पु० [सं०] एक तरहकी बड़ी मछली ।
वाग्गवा-पु० [सं०] विद्वान् ; अच्छा भाषण करनेवाला ।
वाग्ग-पु० [सं०] भाषणकी उत्पत्ति ।
वाग्ग-पु० [सं०] एक तरहका चमगादड़ वा पक्षी ।
वाग्ग, वाग्ग-पु० [सं०] पान देनेवाला रात्रसंवाक,
समास ।
वाग्ग-पु० [सं०] वातोन्नी कपेट ।
वाग्ग-पु० [सं०] बौद्ध-कटकार, अस्त्रना; वागीका
निर्वाण ।
वाग्ग-वि० [सं०] जिसको देनेकी बात कह दी गयी हो ।
वाग्ग-ली० [सं०] वह कन्या जिसके विवाहकी छवरीनी
किलोके साथ ही चुकी हो ।
वाग्ग-पु० [सं०] ओट ।
वाग्ग-पु० [सं०] किलोके साथ कन्याका विवाह-संवा
तय करना ।
वाग्ग-वि० [सं०] कटवाणी; अनुवचनी । पु० निरुक्त;
वह श्रावण जिसका उपयुक्त समयपर उपनयन-संस्कार न
हुआ हो ।
वाग्ग-ली० [सं०] सरस्वती ।

वाग्गवाक, वाग्गवा-वि० [सं०] जो सरस्वतीके लिए
पवित्र हो ।
वाग्गवा-ली० [सं०] सरस्वती ।
वाग्गवा-पु० [सं०] बोकनेकी वृद्धि; व्याकरण-संवाकी दोष
निदा, गणी ।
वाग्गवा-वि० [सं०] मीन ।
वाग्गवा-पु० [सं०] भावप्रकाश आदिके रचयिता एक
आनुवंशिक; अलंकारात्मक आदिके प्रणेता एक
साहित्याचार्य ।
वाग्गवा-ली०, वाग्गवा-पु० [सं०] पांडित्य; भाषण-
पटुता ।
वाग्गवा (मिन्) -वि० [सं०] भाषण-पटु, अच्छा बोकने-
वाला; बहुत बोकनेवाला; पंडित । पु० वृहस्पति; विष्णु;
गीता; पुरुवंशका एक राजा वक्ता ।
वाग्गवा-वि० [सं०] भिन्नभाषी; सत्यभाषी । पु० मंदिर;
विकल्प; विनम्रता; निवेद ।
वाग्गवा-वि० [सं०] मीन, कम बोकनेवाला ।
वाग्गवा-पु० [सं०] वह जिसका वाणीपर संवा हो, मुनि ।
वाग्गवा-पु० [सं०] वाणीका निर्वाण ।
वाग्गवा-पु० [सं०] मूक, गूँगा; वह व्यक्ति जो किसी
कारणसे मीन हो ।
वाग्गवा-पु० [सं०] शब्दोंका बुद्ध, श्रवण ।
वाग्गवा-पु० [सं०] कठोर वाणी; श्राप ।
वाग्गवा-पु० [सं०] एक तरहका चमगादड़ ।
वाग्गवा-ली० [सं०] एक देश; मारुती ।
वाग्गवा-वि० [सं०] पंडित; वागीकुल ।
वाग्गवा-पु० [सं०] वर्णनशक्ति; भाषाका निर्वाण ज्ञान ।
वाग्गवा-पु० [सं०] कथासुनी ।
वाग्गवा-पु० [सं०] मीन, दिक्-वहलावके लिए वाग्ग-
जीन करना ।
वाग्गवासी (मिन्) -पु० [सं०] कट्टार; पैड़की ।
वाग्गवा, वाग्गवा-पु० [सं०] मीन-भंग; शोक
निरुत्तना ।
वाग्गवा-पु० [सं०] वह व्यक्ति जो बोकनेमें विशेष कुशल
हो ।
वाग्गवा-पु० [सं०] भाषण, कथोपकथनमें चतुरता;
अलंकार और चमत्कारमयी उक्तिमें ब्रह्मता, प्रवीणता ।
वाग्गवा-पु० [सं०] बोकनेका अन्वय; वाताप; भाषण-
जीन ।
वाग्गवा-ली० [सं०] बचनब्रह्मता; विवासावली ।
वाग्गवा-ली० [सं०] एक नदी, वाग्गवा (विवाह) ।
वाग्गवा-पु० [सं०] मनुष्य ।
वाग्गवा-वि० [सं०] वाक्पाठ्य; वाक्, बचन-संवा;
बचन, वाणीसे किया हुआ (जैसे-वाग्गवा वाग्ग); पठन-
पाठन-संवा । पु० गव-पक्ष-संवाके लिखित वाक्, वाक्
समुद्र; ग्रंथ, ग्रंथ-समुद्र, साहित्य ।
वाग्गवा-ली० [सं०] सरस्वती ।
वाग्गवा-पु० [सं०] भाषणका आरंभिक भंड, भूमिका ।
वाग्गवा-ली० [सं०] सरस्वती ।
वाग्गवा-वि० [सं०] वाणीपर निर्वाण करनेवाला; मीन-

जतभारी (मुनि) ।

वाच-ली० दे० 'वाक्' । पु० [सं०] एक मल्लि; मदन नामक पीवा ।

वाचक-वि० [सं०] सूचक, बतावेवाला; मौखिक । पु० पाठक, बोलनेवाला; दूत; महत्त्वपूर्ण शब्द; संज्ञा, संकेत, नाम । -धर्मसूत्रा-ली० वह उपमा जिसमें वाचक और साधारण धर्मका कोष हो । -पद्य-पु० सावित्राय शब्द, सार्थक शब्द । -सूत्रा-ली० वह उपमा जिसमें उपमा-वाचक शब्द न हो ।

वाचकोपमाधर्मसूत्रा-ली० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक, उपमान और धर्म सुत हैं ।

वाचकोपमानसूत्रा-ली० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक और उपमान न हों ।

वाचकोपमेवसूत्रा-ली० [सं०] वह उपमा जिसमें वाचक और उपमेयका कोष हो ।

वाचकवी-ली० [सं०] गार्गी ।

वाचन-पु० [सं०] ध्वनेमें प्रवृत्त करना; उच्चारण, शिचना; बहना; प्रतिपादन ।

वाचनक-पु० [सं०] पदना, उच्चारण परेली; एक तरहकी मिठाई ।

वाचनालक्ष-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ समाचारण और पत्रकारों पढ़नेके लिए रखी जाती है ।

वाचनिक-वि० [सं०] मौखिक, शब्दों द्वारा व्यक्त ।

वाचयिता(सु)-वि० [सं०] बोलनेवाला; पाठ करानेवाला, पाठनवाचक ।

वाचसोपनि-पु० [सं०] वृक्षपनि ।

वाचस्पति-पु० [सं०] वृक्षस्पति; सोम; प्रजापति; अन्ना; मृक्ता; एक कोशकार; पुण्य नक्षत्र ।

वाचस्पत्य-पु० [सं०] भाषण-पटुता; सुंदर भाषण । वि० वाचस्पति-मन्त्री; वाचस्पति द्वारा कथित वा निमित्त ।

वाक्-अ० [सं०] बचनसे, बचन द्वारा । ली० बचन, शब्द; वाणी; वाक्य; सरस्वती । -पञ्च-पु० प्रतिष्ठापण । -बंध्य-वि० प्रतिष्ठाबद्ध । -बंध्य-पु० प्रतिष्ठामें बंधना । -बद्ध-वि० बाँधे, प्रतिष्ठामें विवश । -विपद्ध-वि० जो बंधनके योग्य न हो । -सहाय-पु० मार्ग-लाप करने योग्य, मिलनसार श्रेष्ठ ।

वाचाट-वि० [सं०] बकवारी, बाटनी; बीग मारनेवाला । वाचाल-वि० [सं०] शीघ्रमें तेज, पटु; बकवादो; बांग मारनेवाला; शब्दमय ।

वाचाकृता-ली० [सं०] बहुभाषण; बातचीतकी निपुणता ।

वाचिक-वि० [सं०] वाणी-संबंधी; मौखिक, वाणी द्वारा व्यक्त । पु० बचिनयका एक भेद जिसमें केवल वाणीके आश्रयसे बचिनय किया जाता है; मौखिक समाचार, संवाद । -पञ्च-पु० इकरानामा; पञ्च; समाचारपत्र । -द्वारक-पु० पञ्च; संवादवाचक, दूत ।

वाची(चिन्)-वि० [सं०] वाक्ययुक्त, बोलता हुआ; बोधक, सूचक (पदार्थमें) ।

वाचोबुद्धि-वि० [सं०] भाषणपटु, वाक्वी । ली० अच्छा भाषण; वक्ताव्य । -पटु-वि० वाक्वी ।

वाच्य-वि० [सं०] कहनेके योग्य; जिसका अभिप्रायकितने

बोध हो; निश्च । पु० निद्रा; अभिवेयार्थ; क्रियाका एक रूप (व्या०) । -विच्य-पु० अन्न, भिन्न कोटिका काव्य । -बज्ज-पु० कभी भाषा ।

वाच्यता-ली०, वाच्यत्व-पु० [सं०] निद्रा, वदनामी; वाच्य होनेका भाव ।

वाच्यार्थ-पु० [सं०] मूल अर्थ, शब्दका नियत अर्थ, अभिवेयार्थ ।

वाच्यवाच्य-पु० [सं०] कहनेन कहने योग्य बात ।

वाच्य-पु० [सं०] पंख, पर; भावाज; घी; अन्न; खाद्य; वस्त्र; आदमें दिया जानेवाला तंतुल-पिच; धन; चैत्र मास; जल; वस्त्र; वृद्ध; संवर्ष; दीर्घ; बाणमें पीछे लगा हुआ पंख; वेग; एक मुनि; तीन ऋतुओंमेंसे एक; लूटमें प्राप्त धन; प्रति-योगिनामें मिठा हुआ पुरस्कार; बहकें अंतमें पदा जानेवाला मंत्र । -कर्म(मंत्र)-वि० वृद्धमें संलग्न रहनेवाला । -संच-वि० जिसके पास गाम्भीर्य माल वा लूटका धन हो । -वाचा(वच्य)-वि० धन, पुरस्कार आदि देनेवाला । -वसि-पु० अग्नि । -वील-वि० जिसमें पान द्वारा छक्ति बढ़ाती है । -पेच-पु० सर्वोच्च स्थान प्राप्त करनेके निमित्त किये जानेवाले सोमयज्ञके सप्त रूपोंमेंसे एक । -अर्मीच-पु० एक साम । -मृत्-पु० एक साम । -ओवी(विन्)-पु० वाजपेय वृक्ष ।

-वाल-पु० मरकत, पत्रा । -अवा(वच्य)-पु० अग्नि; वेज । -सच-पु० विष्णु; शिव । -सवि-पु० सूर्य । -सज्ज-पु० वेन । वाज-पु० उपदेश, शिक्षा; धर्मोपदेश । वाजपेयक-वि० [सं०] वाजपेय यज्ञमें संबद्ध । वाजपेवी(विन्)-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसमें वाजपेय वृक्ष किंवा हो; वाक्मौकी एक उपाधि । वाच्य-पु० [सं०] वाजप्यावन गौत्रके प्रवर्तक एक कवि । वाच्य-वि० [सं०] वृद्ध या प्रतियोगिताके लिए इच्छुक; तेज; शक्तिशाली; उस्ताही; धन देनेवाला । वाजवत्-पु० [सं०] एक गौत्रकार कवि । वाजस-पु० [सं०] एक साम । वाजसनेय-पु० [सं०] यजुर्वेदकी एक शाखा; वाक्मवत्त्व । वाजसनेयक-वि० [सं०] वाक्मवत्त्वसे तत्त्व या उनके द्वारा रचित । वाजसनेवी(विन्)-पु० [सं०] वृद्ध यजुर्वेदीय शाखाके प्रवर्तक वाक्मवत्त्व या इस शाखाका अनुयायी । वाजित-वि० [सं०] पंखवाला, पंखयुक्त (बाण आदि) । वाजिव-पु० [सं०] शक्ति, दीर्घ, संवर्ष; छीछ या छेनेका पाणी । वाजिनी-ली० [सं०] घोड़ी; उषा; असंग । वाजिव-वि० [सं०] जहरी, उचित; कर्तव्य, फर्म । पु० तनकाह; पावना । वाजिवत्-पु० [सं०] 'वाजिव'का बहु०, जहरी जीवें; यही दुई तनकाहें पावने । वाजिनी-वि० उचित; आवश्यक । वाजिबुल जवा-वि० [सं०] जिसकी अदा करना आवश्यक हो, देव । वाजिबुल अङ्ग-पु० [सं०] जे सत्ते ओ बंदोबस्तकी समाप्ति-

एक जमीनदारों और कानूनकारोंके पारस्परिक अधिकारों, कर्तव्योंके विषयमें लिखी जायें।

वाणिज्यक शब्द-वि० [अ०] वचन, कतल करने योग्य।

वाणिज्यान् (मन्)—पु० [सं०] पटेल, परवल।

वाणिज्य, वाणिज्य-वि० [अ०] खुला हुआ, स्पष्ट; विस्तृत; स्पष्ट अक्षरोंमें लिखित।—**रहे**—हो—माझम हो, विदित हो।

वाजी (विज)—पु० [सं०] घोड़ा; अङ्गसा; वाजसनेयी शास्त्राका अनुयायी; फटे दूधका पानी; ईद्र; इहस्पति; सातको संस्था; बाण; लगाव; पक्षी; हवि। वि० तेज, तीव्र; सुदृढ; वीर; सशक्त; पंखदार।—**(जि)गंघा-खी०** असंगत।—**ईत, ईतक-पु०** अङ्गसा, वासक।—**पूछ-पु०** अन्धान पुष्प।—**झ-पु०** अभिनी नक्षत्र।—**अझ-पु०** चना।—**ओजन-पु०** सूँ।—**मेघ-पु०** अश्वमेघ।—**योजक-पु०** सर्वस; रथ चलावेवाला।—**राज-पु०** उद्वेगदा; विष्णु।—**विष्टा-खी०** बटुहा।—**वेग-वि०** घोड़े जैसे वेगवाला।—**बाजु-पु०** कनेरका पेड़।—**हाला-खी०** पुकसार, अलसक।—**सिरा (रस्)**—पु० एक दानव; भगवान्का एक अवतार।

वाजीकर-वि० [सं०] शक्तिवर्द्धक; कामोद्दीपक।

वाजीकरण-पु० [सं०] औषध द्वारा शक्तिवर्द्धन या कामोद्दीपन।

वाजीक्रिया-खी० [सं०] कामोद्दीपक औषधका प्रयोग।

वाज्जे, वाज्जेन-वि० [अ०] बजा करनेवाला, बनानेवाला, आविष्कारक।

वाट-वि० [सं०] बटुहाकी लकड़ीका बना हुआ। पु० बाग, घेरा, चहारादीवारी; उद्यान; मन्बक; भवन, इमारत; मंडप; एक अङ्ग; रंक्षण।—**घान-पु०** एक जनपद (कन्नरीसे नैर्ऋत्य कोणमें स्थित); एक वर्णसरक जाति (सू०); मैनिमोके स्वभावसे परिचित अधिकारी।—**मूलका-खी०** वह मूलका या जमीन जिससे कोई स्थान घिरा हो।

वाट-पु० [अ०] विजयकी प्रकाश या चालक शक्तिकी इकाई।

वाटक-पु० [सं०] बाड़ा, घेरा, उद्यान।

वाटर-पु० [अ०] पानी; जलाशय, समुद्र आदि; भूत; शरीका आव।—**कलर-पु०** पानी और गोंद मिलाकर तैयार किया हुआ रंग; जल और गोंद मिले रंगसे तैयार किया हुआ चित्र।—**गेट-पु०** पानी रोकने, बोकनेके लिए नहर, नदी, नाबे, आदिमें बनाया हुआ फाटक।—**वेंटिंग-पु०** जल और गोंद मिले रंगमें चित्र बनाना।—**मूक-वि०** जिसपर पानीका असर न हो।

पु० वह कपड़ा, कागज आदि जिसपर पानीका असर न हो; बरसाती कोट।—**क्राऊ-पु०** जलप्रपात।—**मार्क-पु०** पानीकी सतह, गहराईका सूचक चिह्न; कागजपर छपा हुआ निर्माण-स्थान आदिका पता जो अँखों और प्रकाशके बीच करनेसे दिखाई देता है।—**मेघ-पु०** बाढ़ सज्जार्का मेघपाइय।—**लेबेल-पु०** मैदान, जलाशयके पानीकी सतह।—**बमर-पु०** वह स्थान जहाँसे नगरमें पानीका वितरण होता है।

वाटि-खी० [सं०] घिरा हुआ स्थान।—**दीर्घ-पु०** एक तरहकी घास या सरपत।

वाटिका-खी० [सं०] उद्यान; वह जमीन जिसपर इमारत बनायी जाय।

वाटी-खी० [सं०] इमारतकी जमीन; मकान; उद्यान; रास्ता; एक अङ्ग; कर्मूल।

वाहक-पु० [सं०] बहुरी, युना हुआ जौ।

वाह्य-पु० [सं०] बरियारा; भुना जौ। वि० उद्यान-सम्पत्ति; बटकी लकड़ीसे बना हुआ।—**पुष्प-पु०** कैसर; चदन।—**पुष्पी-खी०** अतिवला नामक पोषा।—**मंड-पु०** भुने और दले हुए जौका मॉह।

वाव्या, वाव्याली-खी० [सं०] बरियारा, अतिवला।

वाव्यावनी-खी० [सं०] इतने पुष्पवाली अतिवला।

वाव्याक, वाव्यालक-पु० [सं०] दे० 'वाव्या'।

वाड-पु० [सं०] घेठन।

वाडक, वाडक-वि० [सं०] बोधो-सम्पत्ति। पु० समुद्रके अंदरकी आग; आक्षण; बोधा या बोधियोंका समूह; एक वैवाकरण; एक नरक; एक रतिवध।—**हरण-पु०** घोड़ेका चारा।—**हारक-पु०** एक जल-जंतु।

वाडवागि-खी० [सं०] समुद्रके अंदरकी आग।

वाडवानल-पु० [सं०] दे० 'वाडवागि'।

वाडवेय-पु० [सं०] सौंद; बोधा; आक्षण; अभिनदय।

वाडव्य-पु० [सं०] आक्षण-मंडली।

वाड-वि० [सं०] हट; अतिशय; उच्च स्वरयुक्त।

वाडम्-अ० [सं०] निश्चय ही, अवश्य ही, वम; हाँ (उत्तरमें); बहुत अधिक।

वाण-पु० [सं०] दे० 'बाण'।

वाणि-खी० [सं०] युननेकी क्रिया; कर्षा; बाणी, वचन, सरस्वती।

वाणिज-पु० [सं०] व्यापारी, बाडवागि।

वाणिजक-पु० [सं०] दे० 'वाणिज'।—**विष-वि०** वणिकोंमें आबाद।

वाणिजिक-पु० [सं०] सौदागर; वचक, ठग; बाडवानल।

वाणिज्य-पु० [सं०] व्यापार।—**वृत्त-पु०** किसी देशका वह प्रतिनिधि जो अन्य देशमें स्वदेशके व्यापारिक हितोंकी रक्षाके लिए नियुक्त हो।

वाणिज्यक-पु० [सं०] व्यापारी।

वाणिज्या-खी० [सं०] व्यापार।

वाणिता-खी० [सं०] एक वृत्त।

वाणिनी-खी० [सं०] अभिनेत्री, नर्तकी; कुलटा; भूत, मरत खी; एक वर्णवृत्त।

वाणी-खी० [सं०] सरस्वती; सार्धक शब्द, वचन; वाक्-शक्ति; जीव, रचना, वाणीकी ईद्रिय; स्वर; प्रथर-रचना; प्रशंसा; दुनार्ह; सरकबा।

वात-पु० [सं०] बाहु; वचनदेव; शरीरसे निकली हुई हवा; शरीररूप वायुके प्रकोपसे होनेवाला रोग, पाठिया आदि। वि० बड़ा हुआ; इच्छित; आकांक्ष; आहत।—**कंडक-पु०** पॉके जौकीमें होनेवाला वातरोग।—**कड-कूय-वि०** (शरीरमें) वात वायु फैल करनेवाला।—**कर्म-रू**—पु० पाद, गोच।—**कुंडलिका, कुंडली-खी०**

एक मूलरोग जिसमें पेशाब पीड़ा देकर बूँट-बूँट उत्पन्न होता है। -कुंभ-पुं० हाथीके मस्तकका नीचेका भाग।
 -केतु-पुं० मूत्र, गर्द। -केलि-स्त्री० प्रेमालाप।
 प्रेमिक या प्रेमिकाके शरीरपर दाँतों या नखोंका छाप।
 -कोपन-वि० शरीरमें वातकी कुपित करनेवाला।
 -वर्ध-पुं० वातजन्य गलफण रोग। -शामी(शिव)-
 पुं० पक्षी। -गुह्य-पुं० वातके प्रकोपसे उत्पन्न होने-
 वाला गठिया रोग; तूफान। -प्रस-वि० गठिया
 रोगसे पीडित। -श्री-स्त्री० शाळपर्णी; अमृगंश।
 -शूल-पुं० उद्योतिष-संघर्षी एक योग (हस्तमें बायुकी
 दिशासे कलाफलका विचार किया जाता है); बवंडर।
 -शूल-पुं० तीतर। -ज-वि० बायुसे उत्पन्न। पुं०
 एक तरहका शूल। -जात-पुं० बायुपुत्र, हनुमान्। -
 ज्वर-पुं० वात कुपित होनेसे उत्पन्न होनेवाला एक ज्वर।
 -तूल-पुं० हवामें ज्वर-ज्वर उठनेवाला सफेद और घाटीक
 नागा, सुविषाका घृत, इन्द्रतूल। -धूडा-स्त्री० तेज हवा;
 कठिन वातरोग; एक तरहकी मयूरिका; सुंदर स्त्री। -ध्वज
 -पुं० मेघ, बादल; धूलि। -नाडी-स्त्री० बायु-प्रकोपसे
 दाँतकी जड़में होनेवाला एक तरहका नाखून। -पंच-
 पुं० एक तरहका छौब। -पट-पुं० पताका, ध्वजा;
 नावका पाल। -पक्षी-स्त्री० दिशा। -पचाय-पुं०
 अंगका एक रोग। -पित्त-पुं० एक तरहका गठिया
 रोग। -पुत्र-पुं० हनुमान्; भीम; बंस्क। -पोथ-
 -पोथक-पुं० पलाश। -प्रकृति-वि० जिसको प्रकृति
 बायु-प्रधान हो। -प्रकोप-पुं० बायुकी अधिकता।
 -प्रमी-पुं०, स्त्री० हिरन; घोड़ा; नेवला। -प्रमेह-
 -मेह-पुं० एक तरहका मूत्र रोग। -प्रशमिनी-
 स्त्री० आलुखोरा। -कुक्षेत्र-पुं० कुपकृत; अंतका
 बायुसे फूलना। -भक्ष-वि० हवा पीकर रहनेवाला।
 -भंडकी-स्त्री० वातावर्त। -भृग-पुं० हवाके रखकी
 ओर दौड़नेवाला मृग। -रंश-पुं० पीपलका पेड़।
 -रक्त-शोणित-पुं० एक रोग। -रज-पुं० कुबकुर
 हृक्ष। -रथ-पुं० मेघ। -रुच-पुं० इंद्रधनुष; तूफान;
 रिशव। -रोग-विकार-पुं० वात-व्याधि। -रोहिणी-
 स्त्री० जोसपर चारों ओर कौंटेकी तरह मांस उभरनेका
 रोग। -रु-पुं० चना; बायु। वि० बायु बढ़ानेवाला;
 तूफानी। -वसि-स्त्री० मूत्र रोकना। -वैरी(रिन्)-
 पुं० परंड; बादाम। -व्याधि-स्त्री० गठिया। -वृष-
 पुं० पेड़, वस्ति। -सख-पुं० अग्नि। -सह-वि०
 गठिया रोगवाला। -सार-पुं० वेल। -सारधि-पुं०
 अग्नि। -स्कंध-पुं० आकाशका वह भाग जहाँ बायु
 गतिशील रहती है। -हस्त-वि० उन्मादग्रस्त। -हा-
 (हृन्)-वि० बायुनाशक।
 वातक-पुं० [सं०] जार; अशनपर्णी। -पिचक-पुं०
 जन्मजात छौब (जिसके अर्थ न हो)।
 वातकी(किन्)-वि० [सं०] वातरोगसे ग्रस्त।
 वातमज-पुं० [सं०] एक हिरन।
 वातर-वि० [सं०] तूफानी; तेज।
 वातरकारि-पुं० [सं०] पिचघनी छता।
 वातराज-पुं० [सं०] बाण; बाणका चरणा; चौटी; नारा;

उन्मत्त मनुष्य; निकम्मा आदमी; सालवृक्ष; कांड।
 वातरि-पुं० [सं०] कोढ़े और काइसे बना हुआ पात्र।
 वातरि-पुं० [सं०] बंडकीपक्षी सृजन।
 वातरि-पुं० [सं०] बायु।
 वातरि-पुं० [सं०] हिरन; सूर्यका घोड़ा।
 वातराज-पुं० [सं०] हनुमान्; भीम।
 वातराज, वाताम-पुं० [सं०] बादाम।
 वातापि-पुं० [सं०] एक राक्षस (कहते हैं यह भेड़ बन
 जाता था और उसका नाई आतापि इसे मारकर कपियों-
 को खिला देता था और फिर नाम लेकर पुकारता तो यह
 पेट कापकर निकल आता। ऐसे ही एक अवसरपर अगस्त्य
 इसे पचा गये।) -विद्व-वि०, -सूदन, -हा(हृन्)-
 पुं० अगस्त्य।
 वाताप्य-पुं० [सं०] शीघ्र; क्षमीर; जल; सोम।
 वातामोदा-स्त्री० [सं०] कस्तूरी।
 वातामज-पुं० [सं०] शरीरका, लिङ्गकी; छज्जा; घोड़ा; एक
 मयद्रष्टा ऋषि; एक जनपद (रा०)।
 वातायु-पुं० [सं०] हिरन।
 वातरि-पुं० [सं०] परंड; वातमूली; शेफालिका; बबानी,
 भागी; स्तुषी; विरंग; मूरन; जलुका।
 वाताली-स्त्री० [सं०] तूफान, वातावर्त।
 वातावरण-पुं० [सं०] पृथ्वीके चतुर्दिक् स्थित वायु; परि-
 स्थिति, जीवनको प्रभावित करनेवाली परिक्षिति।
 वातावर्त-पुं० [सं०] बवंडर।
 वाताय, वातासी(शिन)-पुं० [सं०] साँप।
 वाताय-पुं० [सं०] बटिया, तेज घोड़ा।
 वाताष्टीका-स्त्री० [सं०] पेटका एक रोग जिसमें नाभिके
 नीचे कड़ा अर्द्ध बन जाता है।
 वातास-स्त्री० बवार, हवा।
 वाताहार-वि० [सं०] हवा पीकर जीनेवाला।
 वाति-पुं० [सं०] सूर्य; बायु; चंद्र।
 वातिक-वि० [सं०] तूफानी; वातग्रस्त, गठिया रोगसे
 पीडित; पागल। पुं० पागल; बबखिया; वातक; एक
 तरहका ज्वर।
 वातिग-पुं० [सं०] बैंगन। वि० क्षमित्रशास्त्री।
 वातिगम-पुं० [सं०] बैंगन।
 वातीक-पुं० [सं०] एक छोटा पक्षी।
 वातीय-वि० [सं०] बायु-संघर्षी। पुं० चावलकी लपसी,
 कौजी।
 वातुल-वि० [सं०] वातग्रस्त, गठिया रोगसे पीडित; बायु-
 प्रकोपसे जिसकी मुट्ठी ठिकाने न हो, पागल। पुं० तूफान,
 वातावर्त।
 वातुलि-स्त्री० [सं०] चमगादड़।
 वातुल-वि०, पुं० [सं०] 'वातुल'।
 वातोवर-पुं० [सं०] एक वातरोग जिसमें पेट फूल जाता है
 और शरीरमें पीड़ा होती है।
 वातोना-स्त्री० [सं०] गोबिद्धा।
 वातोमि-स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त; बायुके संयोगसे ठठी
 हुई लहर।
 वात्या-स्त्री० [सं०] बवंडर; तूफान, भंपक। -वाक-

पु० बवंडर ।

वाल्स-पु० [सं०] एक गोपकार ऋषि; एक साम ।

वाल्सक-पु० [सं०] बछरीका झुंड ।

वाल्सरिक-वि० [सं०] वार्षिक । पु० ज्योतिषी ।

वाल्सक्य-पु० [सं०] प्रेम, स्नेह, संतानके प्रति माता-पिताका स्नेह । -रत्न-पु० एक माव (कुछ आचार्य वाल्सक्य रसको दसवें रस मानते हैं) ।

वाल्सि, वाल्सी-स्त्री [सं०] ब्राह्मणमें उत्पन्न शुद्धाकी कन्या । -पुत्र-पु० नार्ह, हजाम ।

वाल्स्य-पु० [सं०] एक ऋषि; एक गोत्र ।

वाल्स्याधन-पु० [सं०] न्यायदर्शनके आध्यकार; कामसूत्र-कार ऋषि ।

बाद्-पु० [सं०] बात-चीत; किसी तत्त्व, सिद्धांत आदिपर विचार-विमर्शके शिष्ट होनेवाली बात-चीत; तर्क; बहस; विवरण; व्याख्या; सिद्धांत; ध्वनि; ध्वनि करना; अफवाह; उत्तर; दावा; किसी शास्त्रके विरोधों द्वारा निश्चित मूलभूत तत्त्वों या सिद्धांतोंका समाहार (प्रगतिवाद, वधाधेवाद, सन्तुष्टतावाद, प्राकृतवाद, छायावाद, रहस्यवाद इ०) । -कर, -कृत्-वि० जो झगड़े, विवादका कारण हो ।

-कर्ता(रुं)-पु० संगीत-बाध बजानेवाला । -प्रस्त-वि० अनिश्चित, अनिर्णीत, विवादास्पद । -चंचु-वि० शास्त्रार्थमें दक्ष, कुशल; सजाक करनेमें कुशल । -ईह-पु० सारंगी आदि बाजोंकी कमानी । -प्रतिवाद्-पु० बहस, उत्तर-प्रत्युत्तर; शास्त्रीय तत्त्वविचारमें होनेवाला कथोपकथन । -बुद्-पु० झगडा, बहस । -ईग-पु० पीपलका पेड़ । -रत्न-वि० पक्षसम्पन्नमें कमा हुआ; बहस करनेका जादू । -विवाद-पु० झगडा, बहस । -साधन-पु० तर्कका प्रमाण ।

बादक-पु० [म०] बोलनेवाला; शास्त्रार्थ करनेवाला; बजानेवाला; ढोल बजानेका एक खास ढग ।

बादन-पु० [सं०] बाजा बजाना; बाजा बजानेवाला ।

बादनक-पु० [सं०] संगीत बाध बजाना ।

बादनीय-पु० [सं०] सर ।

बादर-पु० [सं०] कपासके मृतका कपड़ा; कपासका पौधा । वि० घुली ।

बादरा-स्त्री [सं०] कपासका पौधा ।

बादरायण-पु० [सं०] दे० 'बादरायण' ।

बादरायणि-पु० [सं०] दे० 'बादरायणि' ।

बादरि-पु० [सं०] बादरायणके पिता ।

बादरिका-पु० [सं०] बेर बोलनेवाला ।

बादक-पु० अंधकाराच्छन्न दिवस; [सं०] मुछेडी, जेठीमपु ।

बाद्दा-पु० [अ० 'बायदा'] वचन, प्रतिज्ञा, इकारार; कर्ज अदा करनेका वक्त । -प्रिक्षाक-वि० वचन भग करनेवाला, जो बादोंकी पूरा न करे । -प्रिक्षाक्री-स्त्री वचन-भंग । -क्रारमोक्ष-वि० अपने वचन, बादोंकी भूल जानेवाला । -शिकन-वि० बादोंकी तोड़नेवाला । -शिकनी-स्त्री वचन-भंग ।

बाधुबाध-पु० [सं०] शास्त्रार्थ, तर्क-वितर्क ।

बाधान्य-वि० [सं०] बदान्य, उत्तर ।

बाधाम-पु० [सं०] बाधाम ।

बादाक-पु० [सं०] एक मछली, सहस्रदंष्ट्रा ।

बादि-वि० [सं०] विद्वान्; चतुर; बोलनेवाला । -राद्-(ञ्)-पु० मंजुघोष ।

बादिक-वि० [सं०] बात करनेवाला; तर्क करनेवाला । पु० बाजीगर ।

बादित-वि० [सं०] बजाया हुआ; बोलनेमें प्रवृत्त किया हुआ । पु० बाध-संगीत ।

बादितव्य-वि० [सं०] कहे जाने योग्य । पु० बाध-संगीत ।

बादित्त-पु० [सं०] बाजा; संगीत । -छगुड-पु० नगाका आदि बजानेकी लकड़ी ।

बादिर-पु० [सं०] बेर जैसे छोटे फलवाला एक वृक्ष ।

बादिस-पु० [सं०] विद्वान्; ऋषि । वि० सत्यवादी ।

बादीह-पु० [सं०] बौद्ध विद्वान् मंजुघोष ।

बादी-स्त्री [फा०] घाटी; नदीके किनारेका मैदान; जंगल ।

बादी(विन्)-पु० [सं०] बोलनेवाला, बक्ता; पूर्वबक्ता, अदालतमें कोई अधिवोग, मुकदमा चलानेवाला, मुद्दे; गायक; बाजा बजानेवाला; रागका मुख्य स्वर; कीमिवा-गर; बुद्ध ।

बादुलि-पु० [सं०] विश्वामित्रका एक पुत्र ।

बाध-पु० [सं०] बाजा, बाजेका स्वर बजाना; कथन, भाषण । वि० जो कहा या बजाया जानेकी हो । -कर पु० बाजा बजानेवाला । -धर-पु० बाजा बजानेवाला । -निर्घोष-पु० बाजेका स्वर । -धोह-पु० मुरज, मृदग आदि बाजे ।

बाधक-पु० [सं०] संगीत-बाध ।

बाधमान-वि० [सं०] जो बजने या बोलनेमें प्रवृत्त किया जाय । पु० बाध-संगीत ।

बाध-पु० [सं०] प्रतिरोध; प्रतिबध ।

बाधन-पु० [सं०] बाधा ।

बाधा-स्त्री [सं०] पीडा; निषेध ।

बाधुक्य, बाधुक्य-पु० [सं०] विवाद, पाणिग्रहण ।

बाधू-स्त्री [सं०] पात्र; बेडा, नाव ।

बाधूल-पु० [सं०] एक गोपकार ऋषि, बाधूल गोत्रके मूल पुरुष ।

बाध्रीनस-पु० [सं०] यक्षा ।

बान-वि० [सं०] बहा हुआ; सुखाया हुआ; अंगल-संबंधी । पु० बहना; सुगंध; रहना; गमन; लुढ़कना; तरंगोंका उठना, बातीमि; सुखा फल; एक तरहका बंसलोचन; चुनने या नोनेकी क्रिया; चढाई; धना अंगल; अंगलोंका समूह; चतुर; व्यक्तिक; बस; बाना; दीवारमेंका छेद; सुरंग । -ईह-पु० बाना छेदनेकी लकड़ी; करपा ।

बानक-पु० [सं०] ब्रह्मचर्यवस्था ।

बानप्रस्थ-पु० [सं०] आर्योंके चार जीवन-विभागों, आश्रमोंमेंसे तीसरा; इस आश्रममें प्रतिष्ठित व्यक्ति; उदासी; सन्म्यासी; मनुष्यका पैदा; पकाश । वि० बानप्रस्थ-संबंधी ।

बानप्रस्थ्य-पु० [सं०] बानप्रस्थकी अवस्था ।

बानर-पु० [सं०] बंदर; एक गंधद्रव्य; दोहेका एक भेद । वि० बंदर-संबंधी; बंदर जैसा । -केतन, -केतु, -पवज-पु० अर्जुन । -प्रिय-पु० खिरनीका पेड़ । बानराक्ष-पु० [सं०] अंगली बकरा, बगछान ।

वाचराधास-पु० [सं०] कोश पूर ।

वाचराधस-पु० [सं०] वृक्ष व्यक्ति ।

वाचरी-स्त्री० [सं०] केवर्च; मर्कटी, बंदरी; वाचरीकी सेना-‘करिबौ मरि विनु वाचरी, बाढी मन मह जोम’-रघुराज ।

वाचरै-पु० [सं०] सुमीय वा हनुमान ।

वाचक-पु० [सं०] काकी वनतुलसी ।

वाचवासक-पु० [सं०] वैदेही मातासे उत्पन्न वैश्यका पुत्र ।

वाचवासिका-स्त्री० [सं०] सोलह मात्राओंका एक छंद ।

वाचस्पत्य-वि० [सं०] वृक्ष-सम्बंधी; वृक्षसे प्राप्त वा प्रस्तुत होनेवाला; वृक्षके नीचे होनेवाला (बसादि); वृक्षके नीचे रहनेवाला (शिव) । पु० वीषा; फूल-फल देनेवाला वृक्ष, आम, जामुन आदि; किसी वृक्षका फल; वृक्षोंका समूह ।

वाचा-स्त्री० [सं०] बटेर ।

वाचासु-पु० [सं०] भारतके पश्चिमोत्तरमें अवस्थित एक देश; हिरन । -ज-पु० वाचासु देशका घोड़ा ।

वाचिक-वि० [सं०] जंगलमें रहनेवाला ।

वाचीय-पु० [सं०] केवडी मोथा; गोम । वि० बुनने योग्य ।

वाचीर-पु० [सं०] बैत वा सरकंडा; विषक । -शुह-

पु० सरकंडेका मंथप । -ज-पु० कुछ नामक विप ।

वाचीरक-पु० [सं०] मूत्र ।

वाचेय-पु० [सं०] पानीमें होनेवाला तृणविशेष, केवडी मोथा । वि० जंगलमें रहने वा उत्पन्न होनेवाला, जल-सम्बंधी ।

वाच्य-वि० [सं०] वन-सम्बंधी ।

वाच्य-स्त्री० [सं०] वन-समूह; मृतवत्सा गौ ।

वाप-पु० [सं०] बीना; वृनना; मुंडन; स्नेह; बोलनेवाला; बीज । -हृ-पु० करवा ।

वापक-पु० [सं०] बीनेवाला ।

वापन-पु० [सं०] बीज बीना; मुंडन ।

वापस-वि० [सं०] लौटा हुआ, लौटाया, फेरा हुआ ।

वापसी-वि० [सं०] आखिरी, अंतिम (मौस) ।

वापसी-वि० फेरा, लौटाया हुआ । स्त्री० वापस होने, करनेका भाव । -किराया-पु० वापसी यात्राका किराया ।

-टिकट-पु० वापसी यात्राके लिए मिलनेवाला टिकट ।

-मुलाक़ात-स्त्री० मुलाक़ातके बदलेमें की जानेवाली मुलाक़ात । -यात्रा-स्त्री०, -सफ़र-पु० प्रस्थानके स्थानको लौटनेकी यात्रा ।

वापि-स्त्री० [सं०] तालाब ।

वापिका-स्त्री० [सं०] चौका कुआँ, बावली, छोटा तालाब ।

वापित-वि० [सं०] बीया हुआ; मँगा हुआ । पु० एक तरहका धान ।

वापी-स्त्री० [सं०] तालाब; बावली । -विस्तीर्ण-पु०

बहुत बड़ा छेद (बगी सेंध) । -ह-पु० वातक पत्ती ।

वापी(पिन्)-वि० [सं०] बीनेवाला ।

वाच्य-पु० [सं०] बारलीका पानी; बोवारी बान; कुट ।

वि० बापीसे प्राप्त होनेवाला (जल); जो बीया जानेकी हो ।

वाक्त्री-वि० [सं०] पूरा, संपूर्ण; बधेष्ट; प्रचुर; बफ़ा करनेवाला, बचनवाक्यक ।

वाचस्तगी-स्त्री० [सं०] लगाव, संवध ।

वाचस्ता-वि० [सं०] वैधा हुआ; लगा; जुड़ा हुआ संवध; संवंधी ।

वाच्य-स्त्री० स्त्री, बाया । वि० [सं०] बायाँ; विरुद्ध; टेढ़ा; नीच; बुरा; कठोर, निर्दय; इच्छुक; सुंदर; प्रिय । पु० कामदेव; एक रक्त शिव; वरुण; ब्रह्माके रथका एक अश्व; स्तन; वन; वज्रभा; बायाँ पार्श्व; बायाँ हाथ; प्राणी; कमल, मतली; सर्प; निषिद्ध कर्म; दुर्मात्य; संकट; कचोदका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; एक वर्णहृत्; बामाचार । -कक्ष

-पु० एक गोत्रकार कवि, बामकक्षायन गोत्रके मूल पुरुष । -हृ(श)-स्त्री० नारी । -हृशी-स्त्री० दे०

‘बामनयना’ । -देव-पु० शिव; गौतम योनीत्यर्थ एक

वैदिक कवि । -देवी-स्त्री० दुर्गा; सावित्री । -नववा;-

कोचवा-स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री । -जी-वि० धन

लानेवाला । -ज-स्त्री० सुंदर मौओवाली स्त्री; बायीं

बाँ । -भाय-पु० वेदविरुद्ध तंत्रमत (इसमें मंत्र, मांस, मैथुन आदि निषिद्ध बातोंका विधान है) । -मोच-पु०

बहुमूल्य वस्तुओंकी चोरी । -रथ-पु० एक गोत्रकार

कवि, बामरथ गोत्रके मूल पुरुष । -शील-वि० बुरे

स्वभावका । -स्वभाव-वि० अच्छे स्वभावका । -हस्त

-पु० बकरेका गलस्तन या गलकवच ।

वाम-पु० [सं०] कर्ज, तवार (हिंदीमें केवल ‘कर्ज-वाम’में प्रयुक्त) ।

वामक-वि० [सं०] बमन करनेवाला; प्रतिफल; निष्पूर । पु० एक संकर जाति; एक मावका ।

वामकी-स्त्री० [सं०] एक देवी (आदुगर और तांत्रिक अमीष्ट-सिद्धिके लिए इसका पूजन करते हैं) ।

वामदेव्य-पु० [सं०] एक साम; एक पहाड़; एक कवि । वि० वामदेवसे उत्पन्न ।

वामन-वि० [सं०] बीना, बहुत छोटे ढील-ढीलका; हल, खर्ब, नीच; बीना वा विष्णु-सम्बंधी; छुका हुआ । पु०

बीना आदमी; शिव; एक दिग्गज; एक मांस; छोटे ढील-ढीलका एक घोड़ा; एक नाग; गरुडवशी पक्षिविशेष;

अकोट वृक्ष; नाटा बैल; कौच दीपका एक पर्वत; विष्णुका एक अवतार; अदिति-पुत्र; अठारह पुराणोंमेंसे एक ।

-द्वादशी-स्त्री० भाद्र-शुक्ल द्वादशी, वामनकी पूजा-तिथि । -पुराण-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक ।

वामनक-वि० [सं०] छोटे कदका, बीना । पु० छोटे कदका आदमी, बीना; एक पहाड़; डिग्गानपन ।

वामना-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा ।

वामनिका-स्त्री० [सं०] स्कंदकी एक अनुचरी; बीनी स्त्री ।

वामनी-स्त्री० [सं०] बीनी स्त्री; घोड़ी; एक बीनरीय; एक

तरहकी स्त्री ।

वामलू-पु० [सं०] दीमकोंका बीटा, कृमीक, विमोट ।

वामागिनी, वामांगी-स्त्री० [सं०] पत्नी ।

वामांगी-स्त्री० वामांगी होना ।

वामांगी-वि० [सं०] पीछे छूटा हुआ; थका हुआ, लाचार;

उच्छिष्ट ।

वामा-स्त्री० [सं०] स्त्री; दुर्गा; गौरी; लक्ष्मी; सरस्वती; एक

वर्णहृत्; स्कंदकी एक अनुचरी ।

वामाक्षि-पु० [सं०] बायीं आँख; दीर्घ रैकार ।

वामाक्षी-क्षी० [सं०] दे० 'वामनवना' ।

वामावास, वामाचार-पु० [सं०] एक तांत्रिक मत (इसमें पंच मकारोंके आभवेसे उपात्यकी पूजा की जाती है) ।

वामाचारी(विन्)-पु० [सं०] तांत्रिक मतका अनुयायी, वाममार्गी ।

वामापीवन-पु० [सं०] पीत वृक्ष ।

वामारम-वि० [सं०] अदम्य, न झुकनेवाला ।

वामावर्त्त-वि० [सं०] बायी ओरकी घूमा हुआ; बायी ओर-से घूमकर की जानेवाली (परिक्रमा) । पु० बह शंख जिसमें बायी ओरका घुमाव हो ।

वामिका-क्षी० [सं०] चंचिका, दुर्गा ।

वामिक-वि० [सं०] सुंदर; घमंडी; धूर्त ।

वामी-क्षी० [सं०] घोषी; गंधी; गौरवा; हथिनी; वमन ।

वामी(मिन्)-वि० [सं०] वामाचारी; वमन करनेवाला ।

वामेक्षणा-क्षी० [सं०] दे० 'वामनवना' ।

वामोक, वामोक-क्षी० [सं०] सुंदर ऊरु-जोड़नेवाली स्त्री; सुंदरी स्त्री ।

वाम्नी-क्षी० [सं०] एक शीतकर की ।

वाम्य-पु० [सं०] अदम्यता; वामदेव कृषिका बोझ । वि० वामदेवसंबंधी; वमन करानेवाली दवाओंसे अच्छा किया जानेवाला ।

वाघ-पु० [सं०] एक साम; एक ऋषि ।

वाघ-पु० [सं०] हुनना; सौना; तागा; पक्षी; नायक । * स्त्री० वाघी; वासु । * सर्व० वाघ, उत्सको । -ईष्ट-पु० करवा । -रज्जु-क्षी० करवेकी है ।

वाय-अ० [अ०] हा, हाय (द्रुह्य या व्यवसायी व्यवजनामें व्यवहृत) । -किस्मत, -तकदीर-हाय किस्मत ।

वायक-पु० [सं०] जुलाहा; राशि; समूह ।

वायन-पु० [सं०] देवपूजाके लिए या विवाहादिके अवसर पर बनेवाली मिठाई; एक गंधद्रव्य, पुनना । -क्रिया-क्षी० हुननेकी क्रिया । -रज्जु-क्षी० दे० 'वाय-रज्जु' ।

वायनक-पु० [सं०] देवपूजा आदिके लिए बनी हुई मिठाई; एक गंधद्रव्य ।

वायव-वि० [सं०] वायु-संबंधी; पश्चिमोत्तर ।

वायवी-क्षी० [सं०] उत्तर-पश्चिमका कोण ।

वायवीय-वि० [सं०] वायु-संबंधी । -पुराण-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक ।

वाम्य-वि० [सं०] वायु-संबंधी । पु० पश्चिमोत्तरकोण; स्वाति नक्षत्र; वायुपुराण; एक अन्न ।

वायव्या-क्षी० [सं०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायस-पु० [सं०] अयर; तारपीन; कौआ; उत्तर-पूर्वकी तरफ रहनेवाला मकान । वि० काक-संबंधी । -जंघा-क्षी० एक पीठा, काक-जंघा । -तुंड-पु० हनुका जोड़; कौआ-ठोड़ी । -पीछु-पु० एक वृक्ष, काकपत्र ।

वायसांतक-पु० [सं०] वल्क ।

वायसादनी-क्षी० [सं०] एक लता, महाज्योतिष्मती; काकुत्थी, कौआठोड़ी ।

वायसारति, वायसरि-पु० [सं०] उल्लू ।

वासाङ्गा-क्षी० [सं०] काकमाची ।

वायसी-क्षी० [सं०] कोणकी मादा; काकमाची, छोटी

मकोय; महाज्योतिष्मती; कौआठोड़ी; सफेद बुँबची; महा-करंज; काकजंघा ।

वायसेक्षु-पु० [सं०] कौंस ।

वायसोलिका, वायसोली-क्षी० [सं०] काकोजी; महा-ज्योतिष्मती ।

वायु-क्षी० [सं०] हवा (पाँच तत्त्वोंमेंसे एक); सौंस; प्राण-वायु, जीवनवायु (जो पाँच प्रकारकी है-प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान; दे० 'पंचप्राण') । सात भेद दे० 'अनिल' तथा 'मरुद' । शरीररूप पाँच वायुओंके नाम-तक्षक (या नागवायु), धनंजय, देवदत्त, रुक्मर, रूमे । इस प्रकार कुल दस भेद दृश्य; वातप्रकोप । -केतु-पु० बूल । -कोम-पु० पश्चिम-उत्तरका कोना । -गंड-पु० अजीर्ण, अफरा । -शशि-वि० वायुकी तरह तेज चालवाला । -गीत-वि० वायु द्वारा गाया हुआ (सर्व-विदित) । -गुम्फ-पु० बगूला, बवंडर, वातचक्र; पेटका एक रोग, वायुगोला; भँवर । -ग्रस्त-वि० गठिया या उन्माद रोगसे आक्रांत । -आत, -तनय, -मंदन, -संभव, -सुत, -सूनु-पु० हनूमान्; भीम । -वार, -वाह-पु० मेघ । -वैष-पु० स्वाति नक्षत्र । -निष्प-वि० प्राणक, उन्मत्त । -पंचक-पु० शरीररूप पाँच वायुओंका समाहार । -पुराण-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक । -फल-पु० उपल; इंद्रधनुष । -भक्ष, -भोजन-वि० वायु पीकर रहनेवाला । पु० सोप; योगी, तपस्वी । -भक्षक-वि०, पु० हवा पीकर रहनेवाला । -भक्षण-पु० वायु पीकर रहना; हवा पीकर रहनेवाला-सर्पादि । -भक्ष-वि० हवा पीकर रहनेवाला । पु० सर्व । -भृक्-वि०, पु० दे० 'वायुभक्ष' । -मरुहपि-क्षी० एक लिपि (ललितविलार) । -मंडल-पु० आकाश, कानावरण; बवंडर । -यान-पु० हवाई जहाज । -क्या-क्षी० आँसुका एक रोग । -रोषा-क्षी० रात । -लोक-पु० एक लोक (पु०) । -वर्मे(रु)-पु० आकाश । -वाह-पु० धुआँ; वाष्प । -बाहन-पु० धुआँ; विष्णु; शिव । -वाहिनी-क्षी० शिरा । -वेगक, -वेगी(मिन्)-वि० हवाकी तरह तेज । -सख, -सखा-पु० अग्नि । -हा(हन्)-पु० एक ऋषि ।

वायुर-वि० [सं०] वायु-युक्त; तूफानी ।

वायवास्पद-पु० [सं०] आकाश ।

वारक-पु० [सं०] पक्षी ।

वारंग-पु० [सं०] तलवारकी मूठ, नष्ट शस्त्र निकालनेका एक औजार ।

वारंट-पु० [अ०] वह आज्ञापत्र जिसमें किसीकी कोई विशेष कार्य करनेका अधिकार दिया जाय । -गिरफ्तारी-पु० सरकारी कर्मचारीकी किसीकी गिरफ्तार करनेके लिए दिया गया अधिकार-पत्र । -तलाशी-पु० किसी सरकारी कर्मचारीकी किसी स्थान, व्यक्तिकी तलाशी लेनेके लिए दिया हुआ अधिकारपत्र । -रिहाई-पु० अदालतका आज्ञापत्र जिसके अनुसार छरकारी कर्मचारी बंदीकी मुक्त कर सके या ऊर्ध्व नायदाद वापस कर सके ।

वारवार-अ० दे० 'वारवार' ।

वार-पु० आक्रमण; आघात; नदी आदिका इधरका

किनारा-‘हरि झमिरे सो वार है गुरु झमिरे सो पार’
-माखी [सं०] रोक; दकन; द्वार. विरा हुआ स्थान;
नियत समय; वारी; दफा; दिन (सोम, वीम आदि); अव-
सर; समूह; बाण; शिव; मदिरापात्र, पानपात्र; एक कुत्रिम
विष; कुज हस्त; जलपाशि। -कन्याका, -कन्या, -नारी,
-मुखी, -युवती, -योषिद-खी० वेश्या। -सिध-
खी० वेश्या। -पार-पु० [हिं०] नदी आदिके दोनों
किनारे। अ० इस ओरसे उस ओरतक। [मु०-० करना-
पूरी मोटाई बेधकर दूसरी ओर निकलना। -० होना-
पूरा विस्तार तै करना।] -पाशि; -पाश्य-पु० दे०
‘वारपाशि’। -बाण, -वाण, -वारण-पु० कवच।
-बुधा, -वृषा-खी० कदली। -मुख्य-पु० गवैया या
नर्तक। -मुख्या-खी० प्रधान वेश्या। -रामा, -बधू-
वनिता-खी० वेश्या। -बाणि-पु० बाँसुरी बजानेवाला;
मुख्य गवैया; न्यायाधीश; एक संस्तर। -बाणी-खी०
वेश्या। -वासि, -वास्थ-पु० एक जनपद। -विष्ण-
मिनी, -सुंदरी, -खी-खी० वेश्या। -सेवा-खी०
कसब, वेश्यावृत्ति। मु०-स्वास्ती जाना-आधानका
निधानेपर न लगना; बुद्धिका सफल न होना।
वार-पु० [अ०] युद्ध। -शिप-पु० जंगी जहाज।
वारक-वि० [म०] रोकनेवाला, प्रतिरोधक, निवारक।
बाधा; एक तरहका पात्र; वारी; बोझका कदम; एक तरहका
घोटा; एक गन्धवृण; कठका म्यान।
वारकी (किन्)-पु० [म०] प्रतिबधक, प्रतिरोधक; प्रभु;
समुद्र; अच्छे लक्षणोंवाला घोडा; पर्णाजीवी।
वारकीर-पु० [सं०] डारपाल; वाडवाप्ति; माला; छोटी
कधी; जूँ; युद्धाथ।
वारट-पु० [मं०] क्षेत्र या क्षेत्र-समूह।
वारटा-खी० [सं०] हंमी।
वारण-पु० [सं०] निवारण; प्रतिरोध; निषेध; हाथी;
अकुश; कवच; प्रतिरोधका साधन; काला शीशम; पारि-
भद्र; हरताल; मफेड कोरैया; एक वृत्त। -कणा-खी०
गजपिप्पली। -कर-पु० हाथीकी खेंक। -कृच्छ्र-पु०
एक कृच्छ्र व्रत। -बुधा, -बलभा-खी० केला।
-शाला-खी० हस्तिशाला। -साङ्ख्य-पु० हस्तिनापुर।
-हस्त-पु० एक तरहका तारदार बाजा।
वारणसी-खी० [सं०] वाराणसी।
वारणामन-पु० [सं०] गणेश।
वारणावत-पु० [सं०] गंगाप्रवर्ती एक नगर जहाँ दुर्घो-
धनने पांडवोंकी जलाकर मारनेके लिए कलागृहका
निर्माण कराया था।
वारणीय-वि० [सं०] निषेध करने योग्य, मना करने
लायक; हाथी संबंधी।
वारत्र-पु० [सं०] चमकेकी पट्टी, तसमा।
वारत्रा-खी० [सं०] एक तरहकी चिड़िया।
वारद-पु० बादल।
वारदात-खी० दे० ‘वारिदात’।
वारन-खी० जिहावर। पु० बंदनवार; हाथी।
वारणा-स० कि० बलि जाना; उत्सर्ग करना; राई, नोन
आदि उतारना। पु० जिहावर। मु० बारने जाना-

निछावर होना।

वारनिहा-खी० [अ० ‘वामित्र’] लकड़ी आदिपर चमक
लानेके लिए लगाया जानेवाला एक रोगन।
वार-फेर-खी० जिहावर, नहि; दूल्हा-दुलहिनके सिरके
चोंगिर्द घुमाकर सुटाया जानेवाला रुपया-पैसा।
वारप्रसंगी-खी० आत्मविस्मृति, बेखुदी।
वारप्रता-वि० [फा०] आत्मविस्मृति, सुष-सुष भूला हुआ,
बेखुद।
वारयितव्य-वि० [मं०] निवारण करने योग्य।
वरविता (रु)-पु० [सं०] रक्षक; चुननेवाला, पति।
वारला-खी० [सं०] बरें; हंसी।
वारलीक-पु० [सं०] बलवा।
वाराणगा-खी० [सं०] वेश्या।
वारानिधि-पु० [सं०] समुद्र।
वारा-पु० वचन, किरावत; ठाम; नदी आदिका धरका
किनारा। वि० सस्ता; उत्सर्गकृत, जो जिहावर हुआ हो।
-म्बारा-पु० फैसला, निपटारा। मु०-पक्ष्मा,
-बैठना-वचन होना। -होना-जिहावर होना।
वाराणसी-खी० [सं०] काशी, बनारस।
वाराणसेय-वि० [सं०] काशीमें उत्पन्न या बना हुआ।
वारालिका-खी० [सं०] दुर्गा।
वारावस्की (दित्र)-पु० [सं०] अग्नि।
वारसि-पु० [मं०] समुद्र।
वाराह-वि० [मं०] शूकर-संबंधी; वराह अवतार-संबंधी;
वराहमिहिरकृत। पु० विष्णुका एक अवतार; शूकराकृत
ध्वजा; वाराही कदः एक पहाड़; कृष्ण यजुर्वेदकी एक
शाखा; एक साम; एक तीर्थ; एक पेड़, काशी मैना;
जलके पास होनेवाला बेंत, अंबुवेतस। -कंद-पु० एक
तरहका कद जिसपर शूकरकेसे बाल होते हैं। -कर्णी,-
पत्नी-खी० अमंगल। -कश्यप-पु० इस नामका ब्रह्माका
दिन जो इस समय रीत रहा है। -हावसी-खी० माध-
शुक्ला द्वादशी। -पुराण-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक।
वाराहांगी-खी० [मं०] दत्तो वृत्त।
वाराही-खी० [मं०] शूकरी; वराह रूपधारी विष्णुकी शक्ति;
स्फटिकी एक मातृका; एक कद; पृथ्वी; एक मान; एक नदी;
कंगनी; श्यामा पक्षी। -कंद-पु० एक महाकद, गेंदी।
वारि-पु० [सं०] जल; वर्षा; सुगंधवाला; लोबेर; एक वृत्त।
खी० मरत्युती; हाथी बौधनेकी बजोर; हाथी फंसनेका
गहड़ा या फदा; हाथी बौधनेका स्थान; बंदिनी; बाणी;
गगरा; [हिं०] जिहावर। -कंदक-पु० सिंघाड़ा। -कफ-
पु० समुद्र। -कर्णिका-खी० कुमिका। -कर्पूर-पु० एक
मछली। -कुड्ड-कुड्डक-पु० सिंघाड़ा। -कूट-पु०
नगरकी रक्षाके लिए बना हुआ दूहा। -कृमि-पु०
जोंक। -कोल-पु० कटुआ। -कोश-पु० दिव्य परीक्षा-
का अविमंत्रित जल। -गर्भ-पु० बादल। -खखर-पु०
कुमिका; जलखंड। -खर-पु० पानीके जीव-जंतु; मछली;
अंख। -०केतु-पु० मीनकेतन, कामदेव-‘कोपेठ तबहि
बारिकफे’-रामा०। -खामर-पु० सेवार। -वारी
(रिच)-वि० जलमें रहनेवाला (जंतु)। -ख-पु० कमल;
मछली; शस्त्र; घोषा; द्रोणी लवण; कौड़ी; उत्तम, खरा सोना;

लौग; एक साग । वि० जलमें उत्पन्न । -**जात**-पु०, वि० दे० 'बारिख' । -**जीवक**-वि० जलसे जीविका चलावे वाला । -**तर**-पु० खस । -**तरकर**-पु० सुय; बादल । -**आ**-खी० छाता । -**व**-पु० मेघ; नामरत्नोपा; बाला नामक गंधद्रव्य । वि० जल देनेवाला । -**दुर्ग**-वि० जलके कारण दुर्गम । पु० दे० 'बलदुर्ग' । -**झ**-पु० नातक । -**घर**-वि० जल धारण करनेवाला । पु० बावल । -**घानी**-खी० जलाधार । -**धार**-पु० एक पर्वत । -**धारा**-खी० जलकी धारा-वर्षा । -**धि**,-**मिधि**-पु० समुद्र । -**नाथ**-पु० बादल; वरुण; समुद्र; नामलोक । -**व**-वि० जल पीनेवाला; जलकी रक्षा करनेवाला । -**पथिक**-वि० जलके मार्गसे गमन करनेवाला । -**पर्णी**,-**पूर्ण**,-**पुडनी**-खी० जलकुम्भी; पानीकी कढ़ी । -**प्रवाह**-पु० जलधारा; जलप्रपात । -**बचन**-पु० बोध बंधि कर जलकी रोकना । -**बदर**-पु० दे० 'बारि-बदन' । -**बालक**-पु० एक गंधद्रव्य । -**अव**-पु० रत्नजन । वि० दे० 'बारिज' । -**मुक**(**च**)-पु० बादल । -**मूखी**-खी० दे० 'बारिपर्णी' । -**बंज**-पु० पानी खींचनेका यंत्र; पौबारा । -**दण**-पु० नाव । -**राज**-पु० वरुण । -**राशि**-पु० समुद्र । -**रुह**-पु० कमल । -**लोमा**(**मन्**)-पु० वरुण । -**बदन**-पु० पानी-आमला । -**बर**-पु० करीदा । -**वर्णक**-पु० बाल । -**वर्त**-पु० एक मेघ । -**बल्लभा**-खी० विहारी । -**बह**-वि० पानी ले जानेवाला । -**वास**-पु० कलाक, शराव बनानेवाला । -**बाह**-पु० मेघ; मोथा । वि० जल ले जानेवाला । -**बाहन**-पु० मेघ । -**बाही**(**हिन्**)-वि० जल देनेवाला । -**विहार**-पु० जलक्रीडा । -**श**-पु० विष्णु । -**शय**-वि० जलमें सोनेवाला । -**शास्त्र**-पु० गर्गप्रणीत फलित ज्योतिषका एक ग्रंथ (इसमें दृष्टिके आन और ममयका पता लगाया जाता है) । -**संभव**-पु० लौग; एक तरहका सीसा; उत्तार । -**साम्य**-पु० दुध ।

बारिख-वि० [सं०] जिसका निवारण किया गया हो, रोक हुआ; मना किया हुआ; छिपाया हुआ, ढका हुआ । -**बाम**-वि० निषिद्ध वस्तुओंके लिए लाकायित ।

बारिख-पु० [सं०] निषिद्ध, अविविहित कायोंका अन्वर्ण ।

बारिख-वि० [अ०] उत्तरनेवाला, आनेवाला; पहुँचनेवाला । पु० [सं०] दे० 'बारि' ।

बारिखत-खी० [अ०] ('बारिख'का बहु०, हिंदी-उर्दूमें एकवचनमें व्यवहृत) घटना; दुर्घटना; हाल, वृत्त; जुर्म, चोरी-चक्रेती इत्यादि ।

बारिखी-खी० निछावर, नलि ।

बारिख-पु० [अ०] उत्तराधिकारी, मृत जनकी संपत्तिका अधिकारी; मालिक; क्षेत्राधिकार लेनेवाला; रक्षक । -**(से)** ताजोसफ़त-पु० राज्यका उत्तराधिकारी, युवराज ।

बारिख-पु० [सं०] समुद्र ।

बारी-खी० [सं०] दे० 'बारि' ।

बारीड-पु० [सं०] हाथी ।

बारीकी-खी० किसी प्रिय जनकी बाधा दूर करनेके लिए उसके सिरके चारों ओर डुमाकर कोई वस्तु उत्सर्ग करना ।

बारीख-पु० [सं०] समुद्र ।

बार्हड-पु० [सं०] संपराज; नावका पानी उलीचनेका पात्र; थैल, कानका मैल; अँखला कीचड़ ।

बार्हडी-खी० [सं०] द्वारपिंडी, द्वारसोपान ।

बाह-पु० [सं०] वह हाथी जिसपर विजयपताका रहती है, विजयकुंजर; घोडा ।

बाहक-वि० [सं०] चुननेवाला ।

बाहड-पु० [सं०] मरणसत्या; टिकठी, अरधी ।

बाहण-वि० [सं०] जल, वरुण, भृगु या पश्चिम दिशा-सवयी । पु० जल; एक नक्षत्र, शतभिषा; भारतका एक प्रदेश; हरताल; एक उपपुराण; एक पेड़, वरुण वृक्ष; जलजलु; वरुणकी संतान; एक अस्त्र; पश्चिम दिशा । -**कर्म**(**न**)-पु० जलाशय (कुआँ, पोखरा) आदि बनवानेका काम । -**पाशाक**-पु० एक वक्ता समुद्री जंतु ।

बाहणक-पु० [सं०] एक जनपद ।

बाहणि-पु० [सं०] अगस्त्य; सत्यधृति; ससिद्ध; भृगु; एक जनपद; वरुण वृक्ष; दैतैल हाथी । खी० शराव ।

बाहणी-खी० [सं०] पश्चिम दिशा; शराव, मरिचा, वरुणकी स्त्री या पुत्री; उपनिषद् विद्या (वरुण-उपविष्ट होनेसे); घोड़ेकी एक चाल; दूध; गडदूध; एक नदी, शतभिषा नक्षत्र; इंद्रवारुणी, देवार्दन, हथिनी; शतभिषा-युक्त चैत्र कृष्णा त्रयोदशी; सलारामके लिए वरुण द्वारा प्रेरित कण्वका रम; कंदवंके फलका मध । -**बह**-पु० चौथा दीप और उसका समुद्र (जै०) । -**बल्लभ**-पु० वरुण ।

बारुणीस-पु० [सं०] विष्णु ।

बारुण्य-वि० [सं०] वरुणसे संबद्ध । पु० भ्रम ।

बारुड-पु० [सं०] अग्नि; पिंजरा; बसका छोर; दरवाजेका पहा; पाथेय ।

बारिख-पु० [सं०] ग्रीक देशका एक प्राचीन जनपद (राज-शाही जिलेके अंतर्गत) ।

बारिखी-खी० [सं०] दे० 'बारिख' ।

बार्-पु० [सं०] जल; रक्षक । -**आखन**-पु० जलाधार । -**गर**-पु० साला । -**हर**-पु० दे० क्रममें । -**वृ**-पु० दे० क्रममें । -**घानी**-खी० बड़ा । -**धारा**-खी० जलकी धारा । -**धि**-पु० समुद्र । -**अव**-पु० समुद्री नमक । -**जेव**-पु० समुद्री नमक । -**भट**-पु० सवियाल । -**मुक**(**च**)-पु० बादल । -**राशि**-पु० समुद्र । -**बट**-पु० पोत । -**बाह**-पु० बादल ।

बार्ही-वि० [सं०] वृक्ष-संबंधी; वृक्ष या काष्ठसे निर्मित; छालका बना हुआ । पु० बंगल ।

बार्ही-खी० [सं०] प्रवेताकी स्त्री ।

बाक्य-वि० [सं०] लफ्फाका बना हुआ । पु० जगल; वृक्षोंसे बिरा हुआ स्थान ।

बार्क-पु० [सं०] हंस ।

बार्ड-पु० [अ०] रक्षा; बिफाजत; किसी खास कामके लिए बेरा हुआ स्थान; बड़े नगरोंमें कई मुहल्लोंका समूह (प्रबंध आदिकी छविभाके विचारसे बनाया जाता है); अलग कमरा, विभाग (जेक, अस्पतालमें) ।

बार्डन-पु० [अ०] रक्षक; गार्जियन, अभिभावक ।

वार्द्धर-पु० [अ०] रक्षक, रक्षा करनेवाला; खेलके भीतर रहनेवाला पहरेदार ।

वार्थिक-वि०, पु० [सं०] लेखक ।

वार्ताक, वार्त्ताक-पु० [सं०] बटेर ।

वार्त्तमानिक-वि० [सं०] वर्तमानकाल-संबंधी; जो विद्यमान हो ।

वार्त्ता-स्त्री० दे० 'वार्त्ता' ।

वार्त्ताक, वार्त्ताक-पु० [सं०] बैंगन; बटेर । -**क्षाकट**, -**क्षाकिन**-पु० भेंडेका खेल ।

वार्त्ताकी, वार्त्ताकी-स्त्री० [सं०] बैंगन ।

वार्त्ताकु, वार्त्ताकु-पु० [सं०] बैंगन ।

वार्त्ताक, वार्त्ताक-पु० [सं०] बटेरका एक भेद ।

वार्त्तार, वार्त्तार-पु० [सं०] दे० 'वार्त्ताक' ।

वार्त्त-पु० [सं०] स्वास्थ्य, आरोग्य; कल्याण । वि० स्वस्थ; हल्का; निर्बल; अस्तर; कोई पेशा करता हुआ, किसी रोजगारमें लगा हुआ; जीविकापुस्त; साधारण; ठीक ।

वार्त्ता-स्त्री० [सं०] ठहरना, रहना; जनश्रुति, अफवाह; घटना; वृत्तान्त, हाल; विषय, प्रसंग-वातचीत; वृत्ति, जीविका (कृषि, वाणिज्य आदि); दुर्गा; भंदा; अन्य द्वारा खरीदा-बेचा जाना । -**वृत्ति-पु०** कामपर लगानेवाला, जीविकाका प्रबंध करनेवाला । -**वह-पु०** दूत; नीति-शास्त्रका आय-व्ययसे संबद्ध भाग; पनसारी । -**वृत्ति-पु०** गृहस्थ, विशेषकर वैश्य । -**हृत्-हर्ता(रुं)**, -**हार-पु०** दूत ।

वार्त्तानुकर्षक-पु० [म०] जासूस; दूत ।

वार्त्तानुजीवी(विन्द)-वि० [सं०] व्यापारसे जीविका चलावेवाला ।

वार्त्तायन-पु० [म०] गुप्तचर, पलकी, दूत ।

वार्त्तारंभ-पु० [सं०] व्यापार, कारबार ।

वार्त्तालाप-पु० [सं०] बातचीत ।

वार्त्ताविशेष-वि० [सं०] वृत्त ।

वार्त्तिक-पु० [सं०] व्याख्यान-ग्रंथ (काव्यायन आदिका); किसान; व्यवसायी; वैद्य; व्याख्या; विवाहका भोजन; आचारशास्त्रका अध्ययन करनेवाला; दूत, चर, जासूस; भंदा । वि० व्यवसायकुशल; समाचार-संबंधी; व्याख्यात्मक । -**कार-पु०** काव्यायन ।

वार्त्तिका-स्त्री० [सं०] व्यवसाय; बटेर ।

वार्त्तिकाहा-पु० [म०] एक साम ।

वार्त्त्रज-पु० [सं०] अर्जुन, जयंत । वि० इंद्र-संबंधी ।

वार्त्त्रर-पु० [सं०] एक साम ।

वार्द्ध-पु० [सं०] दक्षिणावर्त शस्त्र; घोड़ेकी गरदनपरकी गयी ओरकी ओरी जो घुम मानी जाती है; आम्नीज; कृष्णलोचन; काकचिन्ता; जल; रेशम ।

वार्द्ध-पु० [सं०] वर्षावाका दिन, खराब दिन; मसिपात्र; मसि, स्याही ।

वार्द्धाक्षिका-स्त्री० [सं०] वर्षा ऋतु ।

वार्द्धाक्षी-स्त्री० [सं०] एक पौधा ।

वार्द्ध-पु० [सं०] बादल, मेघ ।

वार्द्धक-पु० [सं०] वृद्ध आदमी; बुढ़ापा; बुढ़ापेकी कम-बोरी; बुढ़ाकी मंडली । -**आश-पु०** बुढ़ापा ।

वार्द्धक-पु० [सं०] बुढ़ापा ।

वार्द्धि-पु० [सं०] समृद्ध । -**अश-पु०** समृद्धी नमक ।

वार्द्धुष, वार्द्धुषि, वार्द्धुषिक, वार्द्धुषी(विन्द)-पु० [सं०] सूदखी, अधिक सूद देनेवाला ।

वार्द्धुषी-स्त्री०, **वार्द्धुष्य-पु०** [सं०] सूदखी ।

वार्द्धुष-पु० [सं०] समृद्धी लक्षण ।

वार्द्ध्य-पु० [सं०] बुढ़ापा ।

वार्द्ध्य-पु०, **वार्द्ध्यी-स्त्री०** [सं०] चमकेकी पट्टी, तसमा, चर्मरज्जु ।

वार्द्ध्यमस-पु० [सं०] स्नि कानोंवाला बकरा; एक पक्षी; गेंदा ।

वार्द्ध, वार्द्ध-पु० [सं०] नाव ।

वार्मण-पु० [सं०] कनचोका समूह ।

वार्मिण-पु० [सं०] कनचधारिणोका दल ।

वार्ध-वि० [सं०] बारण योग्य, जिसे रोकना, बारण करना हो; जल-संबंधी । पु० वरदान; संपत्ति; दीवार । -**वृत्त-वि०** बरके रूपमें प्राप्त ।

वार्द्धुज-पु० [सं०] कमल । वि० जलसे उत्पन्न ।

वार्धोका(कल्)-स्त्री० [सं०] जोक ।

वार्धणा-स्त्री० [सं०] वर्षणा, नीले रंगकी बनी मक्खी ।

वार्ध-वि० [सं०] वर्षा-संबंधी; वार्त्तिक ।

वार्धक-पु० [सं०] सुष्ठुन द्वारा निम्नतः पृथ्वीके दस भागों मेंसे एक (पु०) ।

वार्धगण-पु० [सं०] एक तरहके वैदिक आचार्य ।

वार्धभ-वि० [सं०] वृषभ, बैल-संबंधी ।

वार्धभानवी-स्त्री० [सं०] वृषभालुकी पुत्री, राधा ।

वार्धल-पु० [सं०] शूद्रका पेशा । वि० शूद्र-संबंधी ।

वार्धलि-पु० [सं०] शूद्रापुत्र ।

वार्धहर-पु० [सं०] एक साम ।

वार्धिक-वि० [सं०] वर्ष-संबंधी; प्रति वर्ष होनेवाला; वर्षा-कालमें होनेवाला; एक वर्ष टिकनेवाला । पु० त्रायमाणा लता ।

वार्धिका-स्त्री० [सं०] त्रायमाणा लता; बेलका फूल; वर्षमें नियमित रूपसे होनेवाली पूजा आदि ।

वार्धिक्य-वि० [सं०] वर्ष-संबंधी । पु० वर्षाकाल ।

वार्धिका-स्त्री० [सं०] ओला, करका ।

वार्ध-स्त्री० [सं०] वर्षा ऋतु ।

वार्धुक-वि० [सं०] बरसनेवाला, वर्षणशील ।

वार्धि-पु० [सं०] कृष्ण ।

वार्धय-पु० [सं०] वृष्णिका वंशज; कृष्ण; मलका सारथि ।

वार्द्ध-वि० [सं०] मोरके पंखसे बना हुआ ।

वार्द्ध-पु० [सं०] वृद्धी फल, एक तरहका भंदा ।

वार्द्ध्य, वार्द्ध्यि-पु० [सं०] वृद्धयुक्त पुत्र, जरासंध ।

वार्द्ध्यत-वि० [सं०] वृद्ध्यपत्तिसे संबद्ध या उत्पन्न ।

वार्द्ध्यत्व-वि० [सं०] वृद्ध्यपत्ति-संबंधी । पु० वृद्ध्यपत्तिका शिष्य; नास्तिक; अग्नि; पुण्य मक्षत्र; वृद्ध्यपत्तिका अर्ध-शास्त्र ।

वार्द्धि-वि० [सं०] मयूर-संबंधी ।

वार्द्धिचर-पु० [अ०] पुरस्कार या वेतन न लेकर मेना श० में काम करनेवाला व्यक्ति, स्वयंसेवक ।

बाल-पु० [सं०] (घोड़े आदिकी) पूँछके बाल; बाल । -
कुर्छाल-पु० नये उगते हुए बाल । -केशी-ली० एक
तरहका चहदण । -बाल-पु० पूँछ । -बि-पु० पूँछ;
एक मुनि; मैसा । -माटक-पु० एक करव । -बासक-
पु० हाथीकी पूँछका एक विशेष भाग । -पाइया-ली०
बाल गुहनेकी मोतियोंकी लकी । -पुत्र-पु० मूँछ । -त्रिब,
-सुरा-पु० गायकी आतिका एक जानवर जिसकी पूँछका
चंवर बनता है । -बंध, -बंधन-पु० घोड़ेकी पूँछ
बंधनेकी डोरी । -मात्र-पु० बालकी मोटाई । -धीज्य
-पु० जंगली बकरा । -व्यजन-पु० चमर । -हस्त-
पु० पूँछ ।

बालक-पु० [सं०] घोड़े या हाथीकी पूँछ; बालक; कमल;
अंगुठी ।

बालखिल्य-पु० [सं०] ई० 'बालखिल्य' ।

बालव-पु० [सं०] एक करण (अयो) ।

बाला-ली० [सं०] नारियल; एक तरहकी चमेली; वृत्त-
विशेष । वि० [का०] ऊँचा; बड़ा; दुजुर्ग । -गुह, -
गौह-वि० कुलीन, आलीखानदान । -जाह-वि०
ऊँचे भरतवेवाला । -ज्ञान-वि० ऊँची ज्ञानबाला ।

बालाङ्गी-ली० [सं०] एक पौधा ।

बालाग्र-पु० [सं०] बालकी नोक; एक मान । वि० बालकी
नोक जैसा ।

बालि-पु० [सं०] एक बानर, सुमीवका भाई; एक मुनि ।

बालिका-ली० [सं०] मुहरकी अंगुठी, सुत्रा; बाल; कानका
एक गहना; पत्थरोंकी सरसराहट; ई० 'बालिका' ।

बालिद्-पु० [अ०] बाप, पिता । -हुजुर्गवार-पु० पूर्य
पिता ।

बालिदा-ली० [अ०] माँ ।

बालिर्दन-पु० [अ०] माँ-बाप ।

बालिनी-ली० [सं०] अग्निनी नक्षत्र ।

बाली-ली० [सं०] तम; एक गहना; गहदा । पु० [अ०]
मालिक; शासक, राजा; महायक, मरक्षक । - (लिखे)-
मुस्क-पु० बादशाह ।

बाली (लिन्)-पु० [सं०] एक बानर, सुमीवका बड़ा भाई ।
- (लि) हंता (रु)-पु० राम ।

बालुक-पु०, बालुकी-ली० [सं०] एक तरहकी ककड़ी ।

बालु-पु० [सं०] एलबाली, कपित्थकी छाल; एक गधद्रव्य ।

बालुक-पु० [सं०] एक विष; एक गधद्रव्य; पत्रिवाला ।

वि० बादवाला या बालू जैसा; नमकमे बना हुआ ।

बालुकाबुधि-पु० [सं०] मरुभूमि ।

बालुका-ली० [सं०] रेत, बालू; चूर्ण; कपूर; ककड़ी;
शाखा (हस्त-पाद आदि) । -गड-पु० एक तरहकी
मछली । -ग्रन्था-ली० एक नरक (जै०) । -शंत्र-पु०
ओषध सिद्ध करनेका रसविशेष ।

बालुकास्मिका-ली० [सं०] शर्करा, चीनी ।

बालुकाकि, बालुकागर्ब-पु० [सं०] रेगिस्तान ।

बालुकेल-पु० [सं०] एक तरहका नमक ।

बालुकेवर-पु० [सं०] शिव ।

बालू-पु० [सं०] एक विष ।

बाल्य-पु० [सं०] पुत्र; गर्वा; एक करव, अंगार-बत्तरी ।

वि० बलिते उत्पन्न; कोमल; मेट या पूजामें देने योग्य ।

बालक-वि०, पु० [सं०] ई० 'बालक' ।

बालकल-वि० [सं०] छालका बना हुआ । पु० छालका
बना वस्त्र ।

बालकली-ली० [सं०] मदिरा ।

बाल्युक-वि० [सं०] बहुत सुंदर ।

बाल्युद्-पु० [सं०] एक तरहका चमगादड़ ।

बाल्मिकि-पु० [सं०] ई० 'बाल्मीकि' ।

बाल्मीक-वि० [सं०] बाल्मीकि द्वारा रचित । पु० चित्र-
ग्रन्थका एक पुत्र; ई० 'बाल्मीकि' ।

बाल्मीकि-पु० [सं०] रामायणके प्रणेता एक मुनि (ये
जातिके ब्राह्मण थे और अयोध्याके राजाओंसे इनका
अधिक संबंध था । कहा जाता है कि ये पहले डाकू थे,
पर एक क्षत्रिकी बातोंने इनके विचार बिल्कुल पलट
दिये और ये ध्यानवस्थित होकर बहुत दिनोंतक एक
ही स्थितिमें रहे और बल्मीक (बाँसे)से उँक गये जिससे
इनका उक्त नाम पड़ा । एक दिन स्नान करनेके लिए
तमसा किनारे जाने समय एक क्रौंच पक्षीको व्याध
द्वारा निहत और क्रौंचको व्याकुल देखकर इनके मुखमें
वाचावेशमें एक अनुष्ठप्प छंद 'मा निषाद प्रतिष्ठा
त्वमगम' शाश्वतीः ममाः । यत्तत्तन्मिधुनायैकमवधाः
कामनोहितम् ॥' निकल आया और फिर मुख्यतः इमी
छंदमें उन्होंने समस्त रामायणकी रचना की) ।

बाल्मीकीय-वि० [सं०] बाल्मीकि-मार्थी; बाल्मीकि
प्रणीत ।

बाल्म्य-पु० [सं०] प्यार; प्रिय होनेका माव; लोका-
प्रियता ।

बालहा-पु० प्रियतम, वल्लभ-'मोरा कहे गोपिनकी बांहों,
हमवै मयो भल्लचारी'-मोरा ।

बावचूक-पु० [सं०] कुशल वक्ता; बातूनी व्यक्ति ।

बावय-पु० [सं०] एक तरहकी तुलसी ।

बावुट-पु० [सं०] नाव, बेश ।

बावुत्त-वि० [सं०] चुना हुआ; नियुक्त ।

बावैला-पु० [अ०] रोना पीटना, क्रंदन, ऊँचा आवाजमें
फिवा जानेवाला विलाप (मचाना) ।

बाश-पु० [सं०] एक मास ।

बाशक-वि० [सं०] चिहाने, निनाद करनेवाला; रोने-
वाला । पु० अत्रमा ।

बाशन-पु० [सं०] गीतों आदिका बोलना, चिबियोंका
चहचहाना; मसिवयोंका मनभनाना । वि० चिहाने,
शब्द करनेवाला ।

बाशा, बाशिका-ली० [सं०] अर्द्धा ।

बाशि-पु० [सं०] आग, अग्निदेव ।

बासित-पु० [सं०] शब्द, ध्वनि (पशु, पक्षीकी) । वि०
चिहाना, शब्द किया हुआ ।

बासिता-ली० [सं०] वह हथिनी, गाय या अन्य मादा
पशु जिसे नरकी इच्छा हो; पत्नी; स्त्री । -गृष्टि-ली०
जवान हथिनी ।

बाशिष्ठ-पु० [सं०] एक उपपुराण; एक प्राचीन तोर्य ।
वि० बलिष्ठ-संबंधी ।

वासिनी-स्त्री [सं०] गोमती नदी ।
 वासी-स्त्री [सं०] नौकदार खुरा, कुल्हाड़ी आदि (वि०);
 सर, आवाज ।
 वासुरा-स्त्री [सं०] रात्रि ।
 वाञ्छ-पुं० [सं०] चौराहा; मकान; दिन; बैल; गोबर ।
 वाञ्छा-स्त्री [सं०] सक्ता गौ; माता ।
 वाष्कल-वि० [सं०] बहा । पुं० बीडा ।
 वाष्प-पुं० [सं०] माफ; औस; उष्मा; मटकट्या; ढोहा;
 गौतम बुद्धका एक शिष्य । -कण्ठ-वि० जिसका कंठ
 वाष्पसे भर जाया हो । -दुर्दिब-वि० वाष्पाच्छन्न
 (नेत्र) । -दूर-पुं० औसुओंकी बाद । -प्रकर-पुं०
 अधुषार । -मुख-वि० जिसका मुख औसुओंसे गोला
 हो । -मोक्ष, मोक्षण-पुं० अधुषात । -वृष्टि-स्त्री
 औसुओंकी वर्षा ।
 वाष्पक-पुं० [सं०] एक साग, मरसा ।
 वाष्पका-स्त्री [सं०] हिंदुपत्नी ।
 वाष्पांडु-पुं० [सं०] अधुजल ।
 वाष्पाङ्कुर-वि० [सं०] जो औसुओंके कारण धुंधला हो
 गया हो ।
 वाष्पाविलेक्षण-वि० [सं०] जिसकी औसैं औसुओंसे धुंधली
 हो गयी हैं ।
 वाष्पासार-पुं० [सं०] अधुवृष्टि ।
 वाष्पिका-स्त्री [सं०] हिंदुपत्नी ।
 वाप्पी, वाप्पिका-स्त्री [सं०] दे० 'वाप्पिका' ।
 वासंत-पुं० [मं०] कौकिल; कैंट; मलय पवन; मूँग; मैन-
 फल; जवान हाथी या और कोई जानवर; व्यभिचारी
 पुत्र । वि० वसन्ती, वसन्तमें उत्पन्न या उससे मनुष्य;
 युवा; परितोषी, कार्यमें सलग्न रहनेवाला ।
 वासंतिक-वि० [सं०] वसन्त-संबंधी; वसन्तमें नौधा हुआ ।
 वासंतिक-पुं० [मं०] विद्रुषक; भौंड; नर्तक; अभिनेता;
 वसन्तोत्सव । वि० वसन्त-संबंधी; वसन्तकालीन ।
 वासंतिकता-पुं० [सं०] वसन्तका आनंद ।
 वासंती-स्त्री [सं०] जूही; माधवी; नेवारी; गनियारी;
 मदनोत्सव; दुर्गा; एक वृत्त; एक रागिनी ।
 वासःकुटी-स्त्री [मं०] लेसा, पटसदन ।
 वासःखंड-पुं० [सं०] कपडेका टुकड़ा, चिथका ।
 वासःपखूली-पुं० [सं०] कपडा धोनेवाला ।
 वास-पुं० [सं०] निवास, रहना; घर, मकान; कपडा,
 पोशाक; अवस्थिति, स्थान; अहंसा; सुगंध; गंध; एक
 दिनकी यात्रा; पत्रक । -कर्ण-स्त्री वधाला । -गृह,
 -गोह, -मवन, -वेदम (इ)-पुं० अंतःपुर, शयना-
 गार । -धृक्-वि० बल धारण करनेवाला । -पर्वीच-
 पुं० रहनेकी जगहका परिवर्तन । -पट्टि-स्त्री पालतू
 पक्षियोंके लिए बनी हुई छतरी । -योग-पुं० कई
 द्रव्योंका मिश्रित चूर्ण; अवसर । -सञ्ज्ञा-स्त्री दे०
 'वासकसञ्ज्ञा' ।
 वास(स्)-पुं० [सं०] वस्त्र; वाणका पंख, रुई; परदा;
 मकईका जाल; रातमें रहनेका स्थान ।
 वासक-पुं० [मं०] वस्त्र; गंध; अहंसा; वासर दिन;
 वासस्थान; शयनागार; प्रवृत्तका एक भेद; एक गानांग ।

वि० वासने, सुगंधित करनेवाला; रहनेके लिए प्रेरित
 करनेवाला । -सञ्ज्ञा, -सञ्ज्ञिका-स्त्री अंगार करके
 नायककी प्रतीक्षा करनेवाली नायिका ।
 वासका-स्त्री [सं०] अहंसा; शयनागार ।
 वासकट-पुं० दे० 'वासकट' ।
 वासक-पुं० [सं०] गधा ।
 वासतेय-वि० [सं०] रहने, बसने योग्य ।
 वासतेयी-स्त्री [सं०] रात ।
 वासन-पुं० [सं०] वासना, सुगंधित करना; वस्त्र; वास;
 बसना; शान; जलपान; संदूक; मंजूषा; योगका एक
 आसन । वि० वास-संबंधी; रहने योग्य ।
 वासना-सं० कि० दे० 'वासना' । स्त्री [सं०] संस्कार;
 भावना; कल्पना; इच्छा, कामना; अज्ञान, भ्रम, मिथ्या-
 संस्कार; स्मृतिविरुद्ध; प्रमाण; एक छंद; प्रत्याशा; आत्मा;
 ज्ञान; दुर्गा ।
 वासनीय-वि० [मं०] जो माथापत्नी करनेपर समझमें
 जाये ।
 वासविता(तृ)-पुं० [सं०] वस्त्राच्छादित करनेवाला;
 रक्षा करनेवाला ।
 वासर-पुं० [सं०] दिन; एक नाग; मन्वंतरीका पहली
 रातका शयनमंदिर; बारी । वि० प्रातःकाल-संबंधी । -
 कम्बका-स्त्री रात्रि । -कृत्, -मणि-पुं० सूर्य ।
 -संग-पुं० प्रातःकाल ।
 वासराधीश, वासरेश-पुं० [सं०] सूर्य ।
 वासव-पुं० [सं०] इंद्र; भनिष्ठा नक्षत्र । वि० वसु-संबंधी;
 इंद्र-संबंधी । -काप-पुं० इंद्रचतुर् । -ज-पुं० अर्जुन;
 जयंत; बालि । -दिक्(श्वा)-स्त्री पूर्व दिशा ।
 वासवावरज-पुं० [सं०] विष्णु ।
 वासवावास-पुं० [सं०] आकाश ।
 वासवाशा-स्त्री [सं०] पूर्व दिशा ।
 वासवि-पुं० [सं०] इंद्रपुत्र-अर्जुन, जयंत, बालि ।
 वासवी-स्त्री [सं०] व्यासकी जननी, मत्स्यगथा, सत्य-
 वती, इंद्रकी शक्ति ।
 वासवेव-पुं० [सं०] वासवीपुत्र, व्यास ।
 वासा-स्त्री [सं०] अहंसा; माधवी कृता ।
 वासागार-पुं० [सं०] दे० 'वासगृह' ।
 वासाव-वि० [सं०] उषाकालीन ।
 वासायनिक-वि० [सं०] परस्पर धूमनेवाला ।
 वासि-पुं० [मं०] बहला; वास, रहना ।
 वासिक-वि० [अ०] बह, मजबूत ।
 वासिका-स्त्री [सं०] वासक ।
 वासित-वि० [सं०] बसाया, सुगंधित किया हुआ; मसाला
 डाला हुआ; कपड़ेसे ढका, वस्त्राच्छादित; ठहराया हुआ,
 रौका हुआ; किसी स्थानपर बसाया हुआ, प्रसिद्ध; रखने-
 वाला, युक्त; वासी, जो ताजा न हो । पुं० बसानेकी या
 आबादी घनी करनेकी शिकमत; स्मृतिजन्य ज्ञान, संस्कार;
 पक्षियोंका कलरव; [अ०] विजुआ; मन्थस्थ; पटक; अरब-
 का एक नगर ।
 वासिता-स्त्री [सं०] स्त्री; आर्या छंदका एक उपभेद; दे०
 'वासिता' ।

वासिक-वि० [अ०] वसक, प्रशंसा करनेवाला ।

वासिक-वि० [अ०] पहुँचनेवाला, मिचनेवाला; संयोगी (प्रेमी); जुड़ा, मिला हुआ; जो बखल हो चुका हो । - नवीस-पु० तहसीलका कर्मचारी जो बखलशुदा और बाकी मालगुजारीका हिसाब रखता है । -बाकी-खी० बखल हो चुकी और बाकी रकमें; ऐसी रकमोंका हिसाब ।

वासिकाल-खी० बखली, बखलशुदा रकमोंका जोड़ ।

वासिष्ठ-वि० [सं०] वसिष्ठ-संघी; वसिष्ठ द्वारा रचित या रट । पु० रक्त, खून; वसिष्ठके पुत्र ।

वासिष्ठी-खी० [सं०] गोमती नदी ।

वासी-खी० [सं०] तक्षणी, बखला आदि ।

वासी (सिद्ध)-वि० [सं०] रहनेवाला, अधिवासी; सुगंधित; वस्त्राद्यादित ।

वासुचरेय-पु० [सं०] एक नरक ।

वासुचरेयी-खी० [सं०] सीता ।

वासु-पु० [सं०] आत्मा; परमात्मा; विष्णु; पुनर्वसु नक्षत्र । -वृष-पु० एक जिन । -अवृ-पु० कृष्ण । -मंद्-पु० दो साम ।

वासुकि-पु० [सं०] एक देवता; तीन प्रमुख नामराजोंमेंसे एक (समुद्र-मंथनमें इसका रज्जुके रूपमें उपयोग किया गया था) । -सुता-खी० सुलोचना ।

वासुकी-पु० दे० 'वासुकि' ।

वासुकेय-पु० [सं०] वासुकि । -स्वसा (स)-खी० वासुकिकी बहन, मनसा देवी ।

वासुदेव-पु० [सं०] बभ्रुदेव-पुत्र, कृष्ण; अश्व; पीपल वृक्ष (मो०); एक उपनिषद् । वि० कृष्ण-संघी । -त्रिबंकी-खी० शतावरी । -त्रिब-पु० कापिकेय ।

वासुदेवक-पु० [सं०] कृष्ण; कृष्णका उपासक; वासुदेव नामको कलंकित करनेवाला ।

वासुदेवी-खी० [सं०] शतावरी ।

वासुरा-खी० [सं०] खी; हथिनी; रात, भूमि ।

वासु-खी० [सं०] बालागोंका संवोधन (ना०) ।

वासोद्ध-पु० [फा०] विरक्ति, बेजारी; मुसहसके रूपमें लिखित काव्य जिसमें नायिकाकी निंदा और अपनी बेरनाका वर्णन हो । -अमानत-पु० 'प्रमानत' कल-नवीरचित उर्दूका एक पसिद्ध काव्य ।

वासोद्धता-वि० [फा०] जला हुआ; दिखजला ।

वासोद्-वि० [सं०] कपड़ा देने वाला ।

वासोत्तु-वि० [सं०] वस्त्र धारण करनेवाला ।

वासौक (स)-पु० [सं०] वासगृह ।

वासूक-खी० [अ० 'वैरुकोट'] फतुही, बिना आस्तीनका परिधान जिसे कोटके नीचे और कमीजके ऊपर पहनते हैं ।

वास्त-वि० [सं०] बकरेसे प्राप्त या संबद्ध ।

वास्तव-वि० [सं०] वयार्थ, सत्य, निश्चित । पु० असल तत्त्व, परमार्थभूत वस्तु । -मै-सत्यतः, वयार्थतः, मन्वमुच ।

वास्तविक-वि० [सं०] सत्य, परमार्थभूत; वयार्थ, ठीक । पु० वयार्थवादी; माली ।

वास्तवोद्य-खी० [सं०] रात्रि ।

वास्तव्य-वि० [सं०] (निकम्मा समझकर) किसी स्थानपर छोड़ा हुआ; बसा हुआ; आबाद; रहनेवाला; वास योग्य ।

पु० बस्ती ।

वास्ता-पु० [अ०] संवध, लगाव; नाता; जरिया; काम, सरोकार; विचुआ, मध्यस्थ । सु० -देना-वीचमें डालना; दुहाई देना । -वपना-काम पचना; सरोकार होना ।

वास्तिक-पु० [सं०] पु० बकरीका झुंड ।

वास्तु-पु० [सं०] मकान बनाने योग्य स्थान; गृह, भवन; मकानकी नींव; कमरा; एक वस्तु; बहुआ; पुनर्नवा; एक अन्न । -कर्म (न)-पु० गृहनिर्माण । -काष्ठ-पु०

गृहनिर्माणके लिए उपयुक्त समय । -कारिगा-पु० तरबूज, कलीदा (?) । -कीर्ण-पु० एक तरहका पट-मटप । -ज-वि० गृहज, घरेलू । -ज्ञान-पु० गृह-निर्माणकी विद्या । -देव, -देवता-पु० गृहदेवता । -नर-पु० देवतारूपमें माना हुआ आदर्श भवन । -प-

पति, -पुरुष-पु० घरवाले स्थानका देवता । -पूजा-खी० वास्तुदेवकी पूजा । -प्रशमन, -शमन-पु० घरकी शुद्धि या सत्कार । -बंधन, -विघ्न-पु० गृहनिर्माण ।

-वाग-पु० दे० 'वास्तुशक्ति' । -विद्या-खी०, -शास्त्र-पु० गृहनिर्माण-सम्बन्धी विद्या । -शक्ति-खी०

गृह-प्रवेशके समय किया जानेवाला शांतिकर्म । -शाक-पु० बहुआ । -संपादन-पु० भवन-निर्माण । -स्थापन

-पु० भवन-निर्माण ।

वास्तुक-पु० [सं०] बहुआ; पुनर्नवा ।

वास्तुकी-खी० [सं०] एक साग ।

वास्तुक-पु० [सं०] बहुआ ।

वास्तूपसन, वास्तूपशमन-पु० [सं०] दे० 'वास्तु-शमन' ।

वास्ते-अ० [अ०] लिपि, देतु, कारण ।

वास्तेय-वि० [सं०] आबाद करने योग्य; बसाने योग्य; वस्ति, वस्तु वा वास्तु-सम्बन्धी ।

वास्तोष्पति-पु० [सं०] वास्तुपति; ऋद्ध ।

वास्व-वि० [सं०] वस्त्रसे बना हुआ; वस्त्रसे ढका हुआ ।

पु० वस्त्राच्छादित रथ ।

वास्व-पु० [सं०] भाप; गरमी; कोहा ।

वास्वेय-पु० [सं०] नागकेसर ।

वास्व-वि० [सं०] आच्छादित करने योग्य; वसावे जाने योग्य । पु० कुन्ताघा ।

वास्व-पु० [सं०] दिन ।

वाह-वि० [सं०] खींचने या ले जानेवाला; बहता हुआ (समाप्तके अन्तमें) । पु० ले जाना, डोना; वाहन, सवारी;

भारवाहक पशु, घोड़ा, बैल, भैंसा आदि; वायु; मोटिया, लोकर, खींचकर ले जानेवाला; धारा; एक प्राचीन यान; बाहु । -विषय (स), -रिपु-पु० भैंसा । -श्रेष्ठ

-पु० घोड़ा ।

वाह-अ० [फा०] साधु, धन्य, शाबाश, प्रशंसास्वरूप अव्यय, कभी-कभी आश्चर्य और व्यंग्यमें निंदाका भाव भी प्रकट करता है । -वाह-अ० साधु-साधु, धन्य-धन्य, क्या कहना है ! -बाही-खी० वाह-वाह डोना, बहुतोके झुंर-

से वाह-वाह निकलना, साधुवाद ।

वाहक-वि० [सं०] देने, ले जानेवाला; बहानेवाला; गति प्रदान करनेवाला । पु० वीज देनेवाला, भारवाहक;

मारथि या आरोही; एक विषैला कीड़ा।

बाहन-पु० [सं०] घोड़ा, रथ या अन्य कोई सवारी; दोनों; ले जाना; सवारीके काम आनेवाला या माल ढोने-वाला जानवर; हाथी, प्रयत्न, उद्योग करना। -**कार**-पु० रथादि बनानेवाला। -**घ**-पु० आरवाही पशुओं देखरेख करनेवाला, सार्वस। -**जैठ**-पु० घोड़ा।

बाहना-स्त्री० [सं०] सेना। * सं० कि० दे० 'बाहना'।

बाह्निक-पु० [सं०] भारपाक पशुओंके पालन आदिका पेशा करनेवाला।

बाहनीय-पु० [सं०] भारवाहक पशु।

बाहला-स्त्री० [सं०] धारा, प्रवाह, स्रोत।

बाहस-पु० [सं०] अजगर; झरना; अग्नि; एक साग।

बाहा-स्त्री० [सं०] बाहु।

बाहाबाह्वि-अ० [सं०] हाथमें हाथ, दृश्य-बदस्त, आसने-नामने (भिन्न)।

बाहाबाह्वी-स्त्री० [सं०] बाहुयुद्ध।

बाहि-पु० [सं०] दोनों, ले जाना।

बाहिक-पु० [सं०] छक्का, गाड़ी; ढोल, नगाड़ा; मार-वाहक।

बाहित-वि० [सं०] ढोया हुआ, वहन किया हुआ; व्यतीत किया हुआ; प्रवाहित; चालित, चलाया हुआ; बसित; नष्ट किया हुआ। तिमके लिए प्रयत्न किया गया हो। पु० भारी बोझ।

बाहिता(न)-पु० [सं०] चलानेवाला, नावक।

बाहिर-पु० [सं०] गजकुम्भके नीचेका हिस्सा, हाथोंके मग्नकका बीचका हिस्सा।

बाहिद-वि० [अ०] एक, अकेला, अद्वय। पु० एककी सख्या; सुदाका एक नाम।

बाहिदिया-पु० मुसलमानोंका एक सप्रदाय।

बाहिनी-स्त्री० [सं०] मैना; मैनाका एक विभाग (८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०० पैदल); नदी। -**निवेश**-पु० मैनाका पकान, शिविर। -**पनि**-पु० सेनानायक; समुद्र।

बाहिनीक-पु० [सं०] दे० 'बाहिनी'।

बाहिनीया-पु० [सं०] मैनानायक।

बाहिम-वि० [अ०] बहम करनेवाला; सोचने, कल्पना करनेवाला।

बाहिमा-स्त्री० [अ०] कल्पना-शक्ति।

बाहिवात-वि० [फा०] 'बाहीवात'का बहु०, बेहूदा, निकम्मा (बातें)। स्त्री० सुराकास; बदमाशी-आचारी।

बाही-वि० [अ०] दृढ़-भूटा हुआ; कमजोर; निकम्मा, बेहूदा, बेसिर-बैरकी (बात); आचारा, बदचलन। -**तबाही**

-वि० निरर्थक, बेहूदा (बातें) (-बकला, हँकना)।

बाही(विद्)-वि० [सं०] बहन करनेवाला, ढोनेवाला; बहनेवाला; बहानेवाला; उत्पन्न करनेवाला; पूरा करनेवाला। पु० रथ।

बाहीक-पु० [सं०] दे० 'बाहीक'।

बाहु-स्त्री० [सं०] दे० 'बाहु'।

बाहुक-पु० [सं०] दे० 'बाहुक'।

बाहुल-पु० [सं०] कार्तिक मास; शक्यमुनिका पुत्र।

बाहुवार-पु० [सं०] बड़ेसेका पैद।

बाहू-पु० [सं०] बान, सवारी; घोड़ा, हाथी आदि भार-वाहक पशु। वि० खींचा, ढोया या चढ़ा जानेवाला; दे० 'बाह'। -**आतिथ्य**-पु० विदेशी माल।

बाहक-पु० [सं०] रथ।

बाहली-स्त्री० [सं०] एक विषैला कीड़ा।

बाह्रातर-वि० [सं०] बाहर-भीतरका। अ० बाहर-भीतर।

बाह्राली-स्त्री० [सं०] घोड़ेके लायक बनी हुई सवक।

बाह्रविष-स्त्री० [सं०] बाह्य विषोंका ग्रहण करनेवाली पाँच शानेंद्रियों (आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा)।

बाह्रि-पु० [सं०] दे० 'बाह्रीक'। -**ज**-पु० बल्लका घोड़ा।

बाह्रीक-पु० [सं०] दे० 'बाह्रीक'।

बिह-पु० [सं०] घोड़ेका सूर।

बिहोश-पु० [सं०] मति।

बिजामर-पु० [सं०] आँसूका सफेद हिस्सा।

बिजीली-स्त्री० [सं०] ग्रेणी, कतार।

बिद्-पु० [सं०] दिनका भागविशेष; प्राति, काम; एक राजा (अवन्ती); धृतराष्ट्रका एक पुत्र; * समूह; विदु।

बिदक-पु० [सं०] प्राप्त करनेवाला; * जाननेवाला, वेत्ता।

बिदु-वि० [सं०] बुद्धिमान्, चतुर; उदार; प्राप्त करनेवाला। पु० एक बृंका परिमाण; हाथीके शरीरपर बनायी हुई रंगकी बिंदी; अनुसाराका चिह्न; शून्य; जकानेसे बना हुआ बिंदी जैसा चिह्न; सीढ़ीके बीच बनी हुई बिंदी; रत्नका एक दोष; छोटा टुकड़ा; सूँचका मुँह; रेखागणितका एक कल्पित स्थान; दे० 'विदु' (समास मी)।

बिदुर-पु० बृंदकी।

बिध-पु० विध्यान्त पर्वत।

बिधपत्र-पु०, **बिधपत्री**-स्त्री० [सं०] ज्वरापहा नामक पौधा।

बिध्व-पु० [सं०] भारतके मध्यमें स्थित एक पर्वतश्रेणी जो उत्तर भारतको दक्षिणमें अलग करती है और पूर्वा-पाद तथा पश्चिमी पाद नामक पहाड़ोंके उत्तरी सिररेतक पहुँच गयी है। -**कूट**, -**कूटक**, -**कूटन**-पु० अगस्त्य मुनि। -**कैलासवासिनी**-स्त्री० दुर्गाकी एक मूर्ति। -**गिरि**, -**पर्वत**, -**सैल**-पु० बिध्वश्रेणी। -**बूलिक**-पु० बिध्व पर्वतके दक्षिणमें बसनेवाली एक जाति। -**निलया**-स्त्री० दुर्गाकी एक मूर्ति। -**निवासिनी**(सिन्धु)-पु० दे० 'विध्ववासी'। -**वासिनी**-स्त्री० देवीकी एक मूर्ति। -**वासी**(सिन्धु), -**स्व**-पु० व्याधि मुनि। वि० विध्वपर रहनेवाला।

बिध्या-स्त्री० [सं०] छोटी इलायची; लवली नामक पौधा।

बिध्याचक-पु० [सं०] बिध्व पर्वत; बिध्व पर्वतकी एक शाखापर स्थित एक बस्ती जहाँ बिध्ववासिनी देवीका मंदिर है।

बिध्याटपी-स्त्री० [सं०] बिध्व पर्वतपरका जगल।

बिध्यात्रि-पु० [सं०] बिध्व पर्वत।

बिध्यारि-पु० [सं०] अगस्त्य मुनि।

बिध्याचकी-स्त्री० [सं०] राजा बलिकी स्त्री जो बाणकी माता थी।

विच-पु० [सं०] दे० 'विच' ।
विचक-पु० [सं०] दे० 'विचक' ।
विचट-पु० [सं०] दे० 'विचट' ।
विचा, विची-खी० [सं०] दे० 'विचा' ।
विचिका-खी० [सं०] दे० 'विचिका' ।
विचित-वि० [सं०] दे० 'वितित' ।
विचु-पु० [सं०] दे० 'विचु' ।
विचोष्ठ, विचोष्ठ-वि०, पु० [सं०] दे० 'विचोष्ठ' ।
विच-वि० [सं०] वीसवीं । पु० वीसवीं भाग ।
विचक-वि० [सं०] जिसमें बीसवीं छूटि की गयी हो;
 जिसमें बीस भाग हों; बीस ।
विचत-वि० [सं०] बीस (कुछ समस्त पदोंमें) ।
विशति-वि० [सं०] बीस; बीसकी संख्याका । खी० बीसकी
 संख्या; बीसकी संख्याका सूचक अंक, २०; एक प्रकारका
 व्यूह । -**प-पु०** बीस गाँवोंका स्वामी । -**बाहु, -भुज**
 -पु० रावण । -**वार्षिक-वि०** बीस वर्ष टिकनेवाला ।
विशतिम-वि० [सं०] बीसवीं ।
विशतीश, विसतीशी(शिशु)-पु० [सं०] बीस गाँवोंका
 स्वामी ।
विशद्वाहु-पु० [मं०] रावण ।
विशी(शिशु)-वि० [सं०] जिसमें बीस हिस्से हों ।
विशीलरी-खी० [सं०] मनुष्यका शुभाशुभ जाननेकी
 विशेष रीति (ज्यो०) ।
विश्वचिका-खी० [सं०] मेढकोंकी बोली; कर्कज प्वनि ।
वि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दोंके पूर्व लगनेपर
 पार्थक्य (वियोग), कार्यवैपरीत्य (विक्रय, विस्मरण), भाग
 या अंशोत्तरण (विभाग), अंतर (विशेष), क्रम (विधा),
 प्रतिफलता (विरोध), आधिक्य (विध्वंस), निषेध या राहित्य
 (विमूल), परिवर्तन (विकार) आदिका सूचन करता है ।
 पु० लोका; अक्ष; आकाश; आँख । पु०, खी० पक्षी ।
विककट-पु० [सं०] गोखरू ।
विककट-पु० [सं०] एक वृक्ष जिसकी लकड़ीसे श्रुवा बनाते
 थे, श्रुवावृक्ष ।
विककता-खी० [सं०] अतिषडा ।
विकटक-पु० [सं०] जवासा; विककट ।
विकप-वि० [मं०] कौपता हुआ, बंचल, अस्थिर ।
विकपन-पु० [सं०] एक राक्षस (सर्पदेका) कौपना, गति ।
विकपित-वि० [सं०] कौपता हुआ, अस्थिर । पु० मर
 पड़ते हुए स्वरका एक भेद; स्वरोंका सदेप उच्चारण ।
विकपी-खी० [सं०] एक श्रुति (संगीत) ।
विकपी(पिन्)-वि० [मं०] कौपता हुआ, झिलता हुआ ।
विक-पु० [सं०] दुरंतकी व्याधी हुई गायका दूध, पेयूष ।
विकष-पु० [मं०] ध्वजा; एक धूमकेतु; एक दानव,
 बालोंका समूह, लट; एक तरहका नौक सम्पासी । वि०
 झिला हुआ, विकसित; फैला हुआ; केशहान, बिना
 बालोंका; जो बिछकुल स्पष्ट हो गया हो ।
विकषा-खी० [सं०] एक क्षुप, महाझुंझी, कंदनपुष्पी ।
विकषित-वि० [सं०] झुला हुआ; झिला हुआ ।
विकष्य-वि० [सं०] (वह नदी) जिसके किनारे दलदल
 न हो ।

विकट-वि० [सं०] असा; विशाल; भयंकर; दुर्गम; बडा,
 विस्तृत; धमंजी; दुर्गर; टेढा; सुमिलक; लंबे दाँतोंवाला,
 दंतुर; विकृत; अस्पष्ट । पु० सीमलता; धृतराष्ट्रका एक
 पुत्र; स्वरका एक अनुचर; फोहा; अश्वर; वैदेहीकी एक
 मुद्रा; एक विष । -**श्रुति-वि०** भरी शकलवाला ।
 -**बद्ध-वि०** भरी शकलवाला । पु० दुर्गाका एक अनु-
 चर । -**विषाज, -श्रृंग-पु०** बारहसिया ।
विकटक-वि० [सं०] जिसके शरीरकी आकृति खरान हो
 गयी हो ।
विकटा-खी० [मं०] बुद्धकी जननी, मायादेवी; टेढ़े पैरों-
 वाली लडकी जो विनाहके योग्य न हो ।
विकटाकृति-वि० [सं०] भयावनी शकलवाला ।
विकटाक्ष-वि० [सं०] बराबनी आँखोंवाला ।
विकटावय-पु० [मं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० जिसकी
 शकल भरी हो ।
विकथन-वि० [सं०] डींग मारनेवाला । पु० डींग मारना;
 व्यय; मिथ्या इलावा; प्रशंसा ।
विकथा-खी० [सं०] डींग; प्रशंसा; मिथ्या प्रशंसा;
 व्यय; वकीलपणा ।
विकथी(स्थिन्)-वि० [सं०] डींग मारनेवाला ।
विकथा-खी० [सं०] बेकार, बेस्तर-पैरका बाग; कुत्तियन
 बाग (जै०); विशिष्ट बात ।
विकटु-पु० [मं०] एक यादव ।
विकर-पु० [सं०] रोग; बुद्धका एक तरीका; तलवारका
 एक हाथ । वि० हस्ताईन (दबके कागण) ।
विकरण-वि० [सं०] ज्ञानेन्द्रियोंसे होना ।
विकाराक-वि० विकाराक, भयकर; विकल, व्याकुल ।
विकाराक-वि० [सं०] भीषण, भयकर ।
विकाराख-खी० [सं०] दुर्गा ।
विकराखी(छिन्)-वि० [सं०] गरम, तप्त । पु० ताप ।
विकर्ण-पु० [सं०] कर्णका एक पुत्र; दुर्घोषधनका एक भाई
 एक माम; एक प्रकारका वाण । वि० बड़े कानोंवाला;
 कर्णरहित; बहारा ।
विकर्णक-पु० [सं०] गौठियनका एक भेद; शिवका एक
 गण ।
विकर्णिक-पु० [सं०] सारस्वन प्रदेश ।
विकर्णी-खी० [सं०] एक तरहकी ईंट (यह चंदी बनानेके
 काम आनेवाली) ।
विकर्णी(पिन्)-पु० [सं०] एक तरहका वाण ।
विकर्तन-पु० [सं०] खुर; मत्तार, पिताकी राक्षस्युत कर
 स्वयं राजा बननेवाला पुत्र । वि० काटनेवाला, खंड
 करनेवाला ।
विकर्म(श्)-पु० [सं०] निषिद्ध, अनुचित कर्म; विभिन्न
 प्रकारके कार्य; कामसे अवसर ग्रहण करना । -**क्रिया**-
 खी० अवहित या अपात्मिक कार्य । -**ख-वि०**, पु० वेद-
 विरुद्ध कार्य करनेवाला; पापी ।
विकर्मा(मन्)-वि० [सं०] दुराचारी, कर्मभ्रष्ट; कर्म न
 करनेवाला ।
विकर्मिक-वि० [सं०] अनुचित काम करनेवाला; विभिन्न
 कार्योंमें संलग्न । पु० बाजार या मेलेका निरीक्षक ।

विकर्ष-पु० [सं०] बाण; फासका; प्रत्यंवा क्षीचना ।

विकर्षण-पु० [सं०] आकर्षण, क्षीचना (प्रत्यंवा); हटाना; नष्ट करना; खानेसे परहेज करना; कुशतोका एक दौब; जाँच; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; आकर्षण-शाला; विपरीत कर्षण, विरुद्ध दिशाओं की ओर खिंचना, प्रतिकर्षण(जा०) ।

विकर्षक-वि० [सं०] चमकीला, वेदांग ।

विकृष्ट-वि० [सं०] नीच; बेचैन; व्याकुल; छुट्टा; हतोत्साह; अपूर्ण; खंडित; अपंग; पटा हुआ, न्यून, हासप्राप्त; अस्वामाविक; असमर्थ; प्रभावहीन; मुरझाया हुआ ।
-कृष्ट-वि० क्षीण, निस्तेज, हीनबल । -कृष्ट-वि० असहाय, दयनीय । -प्राणिक-जिसके हाथ कटे हों, हस्ताहीन, लूना ।

विकृष्टांग-वि० [सं०] बेकार अंगवाला; अंगहीन, न्यूनांग ।
विकृष्टा-खी० [सं०] वह खी जिसका ज्ञाव आरंभ हो गया हो, रजस्वला; कष्टहीना; दुषको गतिको एक विशेष अवस्था; समयका एक बहुत छोटा भाग, कलका ९० वीं भाग ।

विकृतानाभ-अ० कि० व्याकुल होना ।
विकृतास-पु० चमड़ा मढ़कर बनाया जानेवाला एक प्राचीन बाजा ।

विकलित-वि० व्याकुल, बेचैन; दुःखी, पीड़ित ।

विकलंद्रिय-वि० [सं०] जिसकी इंद्रियाँ विकृत हों; जिसका अपनी इंद्रियोंपर अधिकार न हो ।

विकल्प-पु० [सं०] विभिन्नता; उपाय; भेदयुक्त ज्ञान; अनिश्चय, सदेह; भूल; अज्ञान; वक्तव्य, कथन; आतं वाग्ना; गणना; चिंतन; सर्वथः एक समाधि; अर्वांतर कल्प; वैविध्य; कई नियमों आदिमेंसे एकका ग्रहण; एक बर्णालंकार जहाँ दो समान बलवाली विरुद्ध बातोंको लेकर कहा जाय कि या तो यही बात होगी, नहीं तो वह-या तो काम हो पूरा कर्हेगा या शरीर छोड़ देगा ।
-जाल-पु० तरह-तरहकी दुनियाँ । -संसारि-खी० लोगोंमें बातादि दोषोंका अनुमान (आ० बे०) । -सम-पु० व्यावर्तनकी एक जाति ।

विकल्पन-पु० [सं०] अनिश्चय, सदेह मानना; दो या दोमे अधिक विषयोंमेंसे किसी एकको मानना ।

विकल्पित-वि० [सं०] व्यवस्थित; विभक्त; अनिश्चित, सदिग्ध; अनियमित ।

विकल्प्य-वि० [सं०] निर्दोष; पापरहित ।

विकल्ब-वि० [सं०] जिसके शरीरपर कलब न हो ।

विकल्ब-वि०, पु० [सं०] दे० 'विकल्ब' ।

विकृपा, विकसा-खी० [सं०] मजीठ ।

विकस-पु० [सं०] चंद्रमा ।

विकसन-पु० [सं०] खिलना, प्रसृष्टन ।

विकसना-अ० कि० खिलना, प्रसृष्टित होना ।

विकसाना-स० कि० दे० 'विकसाना' ।

विकसित-वि० [सं०] प्रसृष्टित, प्रफुल्ल; प्रसन्न ।

विकल्ब-वि० [सं०] खुला हुआ; प्रफुल्ल; विकासशील; साफ सुनाई देनेवाला (शब्द); निष्कपट । पु० एक काव्यालंकार (इसमें विशेष बातकी पुष्टि सामान्य बातसे की जाती है) ।

विकल्बरा-खी० [सं०] रक्त पुनर्नवा ।

विकोश, विकोशी(क्षिन्)-वि० [सं०] इच्छारहित,

निष्काम ।

विकोक्षा-खी० [सं०] इच्छाका अभाव; द्विधा, अनिश्चय ।

विकाम-वि० [सं०] इच्छाप्रवृत्ति, निष्काम ।

विकार-पु० [सं०] रूप, धर्म आदि स्वाभाविक अवस्थाका परिवर्तित होना; परिवर्तन; मरु; रोग; बिचार, उद्देश्य आदिमें परिवर्तन होना; भावना; वासना; क्षोभ; आकृति, गठना विकृत होना; मूल रूप, प्रकृतिका विकसित रूप; जलम, क्षत । -हेतु-पु० प्रलोभन वा क्षोभ उत्पन्न करनेवाला विषय वा वस्तु ।

विकार-पु० दे० 'वकार' ।

विकारित-वि० [सं०] परिवर्तित या क्षरार किया हुआ ।

विकारी(रिन्)-वि० [सं०] परिवर्तनशील; विकारयुक्त, विकारवाला; क्रोध आदि दुष्ट मनोविकारोंवाला; आसक्त; विकारग्रस्त, परिवर्तित । पु० एक संवत्सर ।

विकार्य-वि० [सं०] परिवर्तनशील । पु० अहंकार ।

विकल, विकलक-पु० [सं०] दिनांत, संध्य; उपयुक्त समय भीत जानेके बादका समय, अलिकाल ।

विकालिका-खी० [सं०] जलपथी ।

विकारा-पु० [सं०] मर्दशन; प्रकाश; विस्तार, फैलाव; खुलना, प्रसार; आकाश; वक्र या सीधा मार्ग; खिलना, प्रसृष्टन; आनंद; अभिजाता; उत्कंठा; एक काव्यालंकार जहाँ किसी वस्तुका, निजी अभावाका परिहास किये बिना, अधिक विकसित होना दिखाया या कहा जाय; हृदिके लिए वस्तुके रूप आदिमें निरंतर परिवर्तन होना; प्रकात स्थान, विजय स्थान ।

विकाशक-वि० [सं०] दे० 'विकासक' ।

विकाशन-पु० [सं०] दे० 'विकासन' ।

विकाशित-वि० [सं०] दे० 'विकाशित' ।

विकाशिनी-खी० [सं०] स्फंदकी एक मातृका ।

विकाशी(क्षिन्)-वि० [सं०] चमकने या देख पड़नेवाला; खुलने या खिलनेवाला, विकासशील ।

विकास-पु० [सं०] खिलना, खुलना (मुख आदिका); प्रसन्नता, आनंद; फैलाव; बाढ़ । -बाढ़-पु० हार्विन द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि प्राणियोंका प्रादुर्भाव एक ही मूल तत्त्वसे हुआ है और वे क्रमशः विकसित होते हुए वर्तमान रूपमें पहुँचे हैं ।

विकासक-वि० [सं०] खोलने या (बुद्धि) बढ़ानेवाला ।

विकासन-पु० [सं०] प्रदर्शन; खिलना; फैलना; खुलना ।

विकासनाभ-स० कि० विकसित करना; प्रकट करना; निखलना । अ० कि० प्रकट या विकसित होना ।

विकासित-वि० [सं०] प्रकाशित; प्रदर्शित; प्रस्फोटित; विस्तारित ।

विकिर-पु० [सं०] पक्षी; कुँआ; विखेरना; बिखेरी जानेवाली वस्तु; मूजाके समय विघ्न-निवारणके लिए श्वर-उधर फेंका जानेवाला चावल; बूँद-बूँद करके चूनेवाला पानी ।

विकिरण-पु० [सं०] छिन्नानेकी क्रिया, तितर-बितर करना; चारों ओर फैलना; फाड़ना; मारना, हिंसन; शान; अर्द्ध बुझा; किरणोंका एकत्रीकरण (जैसे आतिशी शीशेमें); एक समाधि ।

विकिरण-पु० [सं०] नटश्योंका एक गज जो ४२ इंचका

होता था ।

विकीरण-पुं० [सं०] आक, मयार ।

विकीर्य-वि० [सं०] छितराया, फैलाया हुआ; भरा हुआ; मशहूर । पुं० स्वरके उच्चारणका एक दोष । -कारी-वि० [सं०] फैलावोला । -केशा-सूर्यज-वि० जिसके गाल बिसरे हों । -रोम(य)-संज्ञ-पुं० एक सुगंधित पौधा ।

विकुंठित-वि० [सं०] सिकुड़ा हुआ, मुड़ा हुआ ।

विकुंज-पुं० [सं०] महाभारतका एक जाति ।

विकुंड-वि० [सं०] तेज भारवाला; जो कुंठित न हो; जो रोका न जा सके; बहुत मोथरा । पुं० विष्णु; विष्णु-कोक, वैकुण्ठ ।

विकुंडा-स्त्री० [सं०] मनका कैदीकरण; विष्णुकी माता ।

विकुंडित-वि० [सं०] मोमरा; निर्वंक ।

विकुंमोह-पुं० [सं०] एक दानव ।

विकुम्भ-पुं० [सं०] अबोधभाके राजा कुक्षिका पुत्र । वि० सौंदवाला, तुंडिल ।

विकुम्भा-स्त्री० [सं०] अलक्षिक निद्रा ।

विकुम्भ-पुं० [सं०] शिव; ब्रह्मानुसार ऋष्यभारण करने की क्षमता (शौ०) ।

विकुम्भ-वि० [सं०] परिवर्तनशील; अपना सुधार करने-वाला; प्रसन्न ।

विकुम्भित-पुं० [सं०] विभिन्न रूप धारण करना ।

विकुल-पुं० [सं०] चंद्रमा ।

विकुल-पुं० [सं०] पक्षियोंका कूजना, भननाना; पेड़का गुड़गुमाना ।

विकुलित-पुं० [सं०] गुंजार; पक्षियोंका कलवर ।

विकुलन-पुं० [सं०] तिरछी चितवन ।

विकुम्भिका-स्त्री० [सं०] नाक, नासिका ।

विकृत-वि० [सं०] परिवर्तित; विकारयुक्त, बिगड़ा हुआ; असंस्कृत; भरा, कुरूप; भीमस्त; अलकृत; अस्वाभाविक; अपूरा, अपूर्ण; अराजक, बिद्रोही; रोगी; आघातित । पुं० दूसरा प्रजापति; रोग; परिवर्त राक्षसका पुत्र; विरक्ति (पुं०); साठमेंसे चौबीसवाँ संवत्सर । -इर्हान-वि० जिसकी सूरत बदल गयी हो । -इष्टि-पुं० ऐंवाताना । -इक्त-वि० लाल रंगमें रंगा हुआ या लाल धाँसे भरा हुआ । -इदन-वि० बदसूरत । -वेपी(विन्)-वि० असाधारण बल धारण करनेवाला । -स्वर-पुं० निवृत्त स्थानसे हटकर दूसरी श्रुतिपर ठहरनेवाला स्वर ।

विकृता-स्त्री० [सं०] एक यौगिनी ।

विकृति-स्त्री० [सं०] (विचार, उद्देश्य आदिका) परिवर्तन; असाधारण या आकस्मिक घटना; रोग, उत्तेजना, क्षोभ; आघात; मद्य आदि जिसमें व्यभिच पड़ा हो गया हो; शत्रुता; गर्भपात; परिवर्तित रूप; विकास; माया; एक वृत्त ।

विकृती-स्त्री० [सं०] रोग; शिव; विकास; मद्य ।

विकृष्ट-वि० [सं०] खोया हुआ, आकृष्ट; पृथक् किया हुआ; फैलाया हुआ; छटा हुआ; ध्वनि । -रतिर्वांस-वि० जिस (प्राप्त)की सीमाएँ बढ़ गयी हैं ।

विकेट-पुं० [अ०] (क्रिकेट) दोनों ओरके तीन-तीन स्तंभ और दो-दो गोलियाँ । -होर-पुं० अहाने, बाग आदिमें

जानेका वह चक्रदार फाटक जिसमेंसे मनुष्य तो जा सकते हैं पर चौपाने नहीं जा सकते ।

विकेय-वि० [सं०] जो ध्वजसे बंधित हो गया हो; जिसके पास झंडा न हो ।

विकेश-वि० [सं०] गजा; जिसके गाल खुले हों । पुं० एक मुनि ।

विकेशी-स्त्री० [सं०] मही; महीरूप शिवकी पत्नी; एक राक्षसी, पूतना; बिसरे बालोंवाली स्त्री; केशरहित स्त्री; केशगुच्छ । वि० स्त्री० केशवर्जिता ।

विकोक-पुं० [सं०] वृकासुरका पुत्र, कौकका अनुज ।

विकोश, विकोच-वि० [सं०] कोश, ध्वानसे बहिर्गत (तलवार); जिसपर किसी तरहका आवरण, आच्छादन न हो; जिसपर भूमी बा छिलका न हो ।

विकौमुक-वि० [सं०] जिसमें कोई औत्सुक्य या दिलचस्पी न हो, उदासीन ।

विक-पुं० [सं०] हाथीका बच्चा ।

विक्टोरिया-स्त्री० [अ०] फिटनसे मिलती-जुलती एक तरहकी घोड़ा-गाड़ी; ब्रिटेनकी सुख्यात रानी (१८१९-१९०१) । पुं० एक छोटा ग्रह ।

विक-वि० [सं०] पृथक् किया हुआ; रित ।

विक्रम-पुं० [सं०] विष्णु; बल, तेज आदिको अधिकता धारता; शक्ति; कदम; गमन, गति; दग; मार्ग; पैर; विरता; क्रमहीन वेदपाठकी प्रणाली; चौदहवाँ संवत्सर; दे० 'विक्रमादित्य' । * वि० श्रेष्ठ, उत्तम । -पट्टन-पुं० उज्जयिनी ।

विक्रमक-पुं० [सं०] क्रांतिकेयका एक गण ।

विक्रमण-पुं० [सं०] चलना; साहसपूर्वक आगे बढ़ना, धारता; दग भरना, कदम रखना ।

विक्रमाशीत-पुं० दे० 'विक्रमादित्य' ।

विक्रमादित्य-पुं० [सं०] उज्जयिनीका एक प्रतापी राजा (यह विक्रम नामक सवत्का प्रवर्तक माना जाता है और कहा जाता है कि इसने शकोंको पराजित कर भगाया था और सारा उत्तरभारत इसके शासनमें था । धन्यतरि, मल्लिनाथ आदि इसीके दरबारके नवरत्न थे) ।

विक्रमाब्द-पुं० [सं०] विक्रमादित्य द्वारा प्रणीत सवत्, विक्रम सवत् ।

विक्रमार्क-पुं० [सं०] दे० 'विक्रमादित्य' ।

विक्रमी-वि० विक्रमादित्य-सम्बंधी ।

विक्रमी(मिन्)-वि० [सं०] बल, पराक्रमवाला, धीर ।

पुं० धूर; विष्णु; शेर ।

विक्रमीच-वि० [सं०] विक्रमादित्य-सम्बंधी ।

विक्रय-पुं० [सं०] दाम लेकर कोई चीज देना; बेचना । -पत्र-पुं० वह कागज जिसमें किसी चीजका नाम, दाम और ग्राहक तथा विक्रेताका विवरण रहता है; नगदी चिट्ठा; 'कैश मेमो' । -प्रसिद्धि(य)-पुं० नीलाम करने-वाला, बोली बोलकर माल बेचनेवाला ।

विक्रयक-पुं० [सं०] बेचनेवाला ।

विक्रयण-पुं० [सं०] विक्री, बेचना ।

विक्रयिक-पुं० [सं०] विक्रेता, बेचनेवाला ।

विक्रवी(विन्)-पुं० [सं०] विक्रेता, बेचनेवाला ।

विकल्प-वि० [सं०] जी बेचा जानेको हो ।

विक्रांत-वि० [सं०] साहसी, वीर; विजयी; प्रतापी । पु० योद्धा; सिंहा; कदम; वीरता, पराक्रम; वैक्रांत यधि; एक प्रजापति; चलेका दग; एक तरहका मछ । -यति-पु० सुदर चालवाला मनुष्य । -बोधी(विन्)-पु० श्रेष्ठ योद्धा ।

विक्रोता-स्त्री० [सं०] लाल लबाछ; एक रक्ता; हसपदी; अङ्गुल; जयंती; अरणी; अग्निमय; मूसाकानी; अपराजिता ।

विक्रोता(रु)-वि० [सं०] वीर; विजयी । पु० मिह; शूर ।

विक्रोति-स्त्री० [सं०] यति; बल, शक्ति; विक्रम; साहस, वीरता; बोधेको सरपट चाल ।

विक्रम-पु० [सं०] डगकी लबाई ।

विक्रायिक-पु० [सं०] बेचनेवाला, विक्रोता ।

विक्रिया-स्त्री० [सं०] परिवर्तन; उत्तेजना; क्रोध; असहता; बुराई; शत्रुता, छति; असफलता; निर्बोध (दीपका); असलोच; कर्तव्यका पालन न होना; रोमांच; चाल पकाना; खराबी; अस्वस्थता ।

विक्रिपीपमा-स्त्री० [सं०] एक तरहका उपमालकार ।

विक्री-स्त्री० बेचनेको क्रिया; बेचनेमे मिला हुआ धन ।

विक्रीत-वि० [सं०] बेचा हुआ ।

विकुट्ट-पु० [सं०] जोहार; गाली, अपशब्द । वि० उद्धो-वित; कठोर; कर्कश ।

विकेतव्य, विकेय-वि० [सं०] पणितव्य, विकतेवाला, विकने योग्य ।

विकेता(रु)-पु० [सं०] बेचनेवाला ।

विकोष-वि० [सं०] क्रोधरहित ।

विक्रोश-पु० [सं०] गौहार; गाली ।

विक्रोशम-पु० [सं०] पुकारना; गाली देना ।

विक्रोष्टा(रु)-पु० [सं०] गौहार करनेवाला गाली देनेवाला ।

विक्ष्व-वि० [सं०] बेचैन; भयाक्रांत; डरपोक; अभिभूत; धुम्प; घबराया हुआ; विरक्त; ऊबा हुआ; कंपित; अस्थिर । पु० बेचैनी; घबराहट ।

विक्ष्वित-पु० [सं०] भय या नैराश्यपूर्ण वचन ।

विक्ष्रांत-वि० [सं०] हतोत्साह; आत; थका हुआ ।

विक्ष्रिप्ति-स्त्री० [सं०] आर्द्र, गोला होना ।

विक्ष्रिच-वि० [सं०] जी पसीनेसे आर्द्र हो गया हो ।

विक्ष्रिच-वि० [सं०] सड़ागला; जीर्ण; अत्यधिक आर्द्र; पकाकर मुलायम किया हुआ । -हृदय-वि० दयाई ।

विक्ष्रिष्ट-वि० [सं०] क्षतिग्रस्त; उत्पीडित; नष्ट किया हुआ । पु० एक उच्चारण-दोष ।

विक्ष्रिष्ट-पु० [सं०] आर्द्र होना; आर्द्रता; द्रावण; विगलन, क्षय ।

विक्ष्रिष्ट-पु० [सं०] (उबाछ या पकाकर) मुलायम या आर्द्र करनेको क्रिया ।

विक्ष्रित-वि० [सं०] आहत, घायल, चोट खाया हुआ । पु० घाव, जखम ।

विक्ष्रय-पु० [सं०] अति मद्यपानसे होनेवाला एक रोग (आ० वे०) ।

विक्ष्रय-पु० [सं०] विष्णु; कृष्ण; एक असुर । वि० प्रवाहित ।

विक्ष्रय-पु० [सं०] बहना ।

विक्ष्राहित-वि० [सं०] बोधा हुआ; स्नात ।

विक्ष्राव-पु० [सं०] खोसी; छींक; शब्द, स्वर; चिलाहट ।

विक्ष्रित-वि० [सं०] नीचे गिराया गया; दुःखी ।

विक्ष्रित-वि० [सं०] कैला, भिलेरा हुआ; त्यक्त, छोटा हुआ; भेजा हुआ; पागल; व्यर्थ, व्याकुल; जिसका खंडन किया गया हो । पु० योगकी पाँच अवस्थाओंमेंसे एक जिसमें चित्तवृत्ति प्रायः अखिर हो जाती है; भिलेरा जाना ।

विक्ष्रितक-पु० [सं०] विरोध किया हुआ शब्द ।

विक्ष्रितता-स्त्री० [सं०] पागलपन, उन्माद ।

विक्ष्रीणक-पु० [सं०] देवमंडली; विनाशकर्ता; वह स्थान जहाँसे आमिषाहारी हटा दिये गये हों; शिकके अनुचरोंका एक मुखिया ।

विक्ष्रीर-पु० [सं०] आक, मदार ।

विक्ष्रिणी-स्त्री० [सं०] दुष्टी ।

विक्ष्रण-वि० [सं०] रोड़ा हुआ; चूर्ण किया हुआ; प्रेरित, प्रोत्साहित किया हुआ ।

विक्ष्रम-वि० [सं०] जो अपेक्षाकृत छोटा हो ।

विक्ष्रम-वि० [सं०] अशांत; जिसका मन शांत या स्थिर न हो ।

विक्ष्रमा-स्त्री० [सं०] छायाका एक नाम ।

विक्ष्रोप-पु० [सं०] भिलेरना, पितर-वितर करना; कैलना; श्वर-उपर घूमना; हिलाना; चिला चढ़ाना; असंभ्रम; वक्त बर्बाद करना; मनवधानता; घबराहट; भय; चित्तकी अस्थिरता; अपशब्द कहना; कर्ण; प्रेषण; तर्का खंडन, शिथिल; एक रोग; भ्रुवीय अक्षरेखा; बड़ाव; एक अक्ष; बाधा । -छिचि-स्त्री० एक प्राचीन छिपि । -शक्ति-स्त्री० अविद्याकी शक्ति ।

विक्ष्रोप-पु० [सं०] कैलना, भिलेरना; भेजना; हिलाना, हलका देना; धनुषकी बोरी खींचना; विघ्न, बाधा; भूलके कारण होनेवाली घबराहट ।

विक्ष्रोष्टा(रु)-पु० [सं०] भिलेरने, पितर-वितर करनेवाला ।

विक्ष्रोभ-पु० [सं०] मनका आवेग, क्षोभ; गति; भय; आतका संघर्ष; विदीर्ण करना; हाथीके बलका एक भाग, पार्श्व ।

विक्ष्रोभण-पु० [सं०] एक दानव; मनमें क्षोभ होना या पैदा करना; हिलाना ।

विक्ष्रोभित-वि० [सं०] हिलाया हुआ; धुम्प, अशांत किया हुआ ।

विक्ष्रोभी(विन्)-वि० [सं०] क्षोभ उत्पन्न करनेवाला ।

विक्ष्रित-वि० [सं०] ठुकराईमें कटा हुआ; विघटित किया हुआ; अंग-अंग किया हुआ; दो खण्डोंमें बँटा हुआ; धुम्प; जिसका खंडन किया गया हो (तर्क) ।

विक्ष्री(विन्)-वि० [सं०] तोड़नेवाला; नष्ट करनेवाला ।

विक्ष्र-वि० [सं०] नासिकाहीन । * पु० विष, जहर ।

विक्ष्रव-पु० [सं०] खोदनेकी क्रिया ।

विक्ष्रव(वल्)-पु० [सं०] मझा; एक मुनि ।

विक्ष्रा-पु० दे० 'विषहा'; गल्ह (?) ।

विज्ञान-विशुद्धता—पु० [सं०] ज्ञाना, निगलना; नष्ट करना; * दे० 'विषाद'।

विज्ञानवित्त—पु० [सं०] मांसाहारी जानवरों द्वारा मक्षित शव (शेठ)।

विज्ञान—पु० दे० 'विषाण'।

विज्ञानस—पु० [सं०] एक मुनि।

विज्ञानवैद्य—की० जहरकी-सी कसबी गध।

विज्ञाना—की० [सं०] जीम, रसना।

विज्ञु, विज्ञव, विज्ञ, विज्ञु—वि० [सं०] दे० 'विज्ञ'।

विज्ञुर—पु० [सं०] राक्षस; चोर।

विज्ञेय—वि० [सं०] अज्ञात; चौकस।

विज्ञात—वि० [सं०] प्रसिद्ध, मशहूर, सर्वविदित; नाम-धारी; स्वीकार किया हुआ।

विज्ञाति—की० [सं०] प्रसिद्धि, शोहरत।

विज्ञापन—पु० [सं०] प्रसिद्ध करना; घोषणा करना; ब्याख्या करना; स्वीकार करना।

विज्ञादी—पु० [सं०] एक तरहका फूल।

विज्ञा—वि० [सं०] गंधहीन; बदबूदार।

विज्ञा—पु० [सं०] इगुरीका छह।

विज्ञा—की० [सं०] इपुषा; अजगंधा, अजमोदा।

विज्ञान—पु० [सं०] ऋणशोधन, कर्म चुकाना; गणना करना; विचार करना।

विज्ञात—वि० [सं०] चुकाया हुआ (ऋण); जिसकी गणना की गयी हो; विचारित।

विज्ञात—वि० [सं०] अतीत, बीता हुआ; बोते हुएसे पूर्वका; मृत; नष्ट; अंधकारावृत; अनुपस्थित, इधर-उधर गया हुआ; प्रभाहीन; मुक्त, विहीन, रक्षित (ममस्त पदोंमें)। पु० धिक्चौकी उठान। —**कल्प**—वि० जो पापमुक्त हो गया हो। —**कर्म**—वि० जिसकी क्रांति दूर हो गयी हो। —**ज्ञान**—वि० जिसकी समझ मारी गयी हो। —**नयन**—वि० जिसके नेत्र न हों, अंधा। —**अंध**—भी—वि० निर्माक। —**राग**—वि० जिसमें राग न रह गया हो। —**लक्षण**—वि० अभागा। —**श्रीक**—वि० जिसकी कांति चली गयी हो; अभागा। —**सुहृ**—वि० जिसमें इच्छा दोष न हो।

विज्ञात—की० [सं०] वह लक्षकी जो विवाह योग्य न रह गयी हो; परकीया।

विज्ञात—की० [सं०] वह की जिसका मासिक ज्ञात बंद हो गया हो, जो गर्भधारणकी अवस्था पार कर गयी हो।

विज्ञात—वि० [सं०] मृत।

विज्ञाति—की० [सं०] दुर्दशा, दुर्गति।

विज्ञात—पु० [सं०] बुद्ध।

विज्ञा—वि० [सं०] रोगरहित, नीरोग। पु० एक साथ कई तरहकी बातें या शब्द होना; किसी बातका प्रचार करना।

विज्ञाति—वि० [सं०] जिसके संबंधमें बातचीत की गयी हो; जो चारों ओर फैला हुआ हो (जनरल)।

विज्ञा—पु० [सं०] प्रखान, प्रयाण; पार्थक्य; अनुपस्थिति; त्याग; क्षान्ति; नाश; समाप्ति; मृत्यु; मोक्ष।

विज्ञा—पु० [सं०] दिग्बर बसि; पहाड़; भोजनका त्याग करनेवाला व्यक्ति।

विज्ञा—की० [सं०] (समुद्रका) गर्जन।

विज्ञा—पु०, **विज्ञा**—की० [सं०] निंदा; भर्त्सना; बडिना-फटकारना।

विज्ञाणीय—वि० [सं०] निन्दनीय; दुष्ट।

विज्ञा—की० [सं०] निंदा; बडि-फटकार।

विज्ञाति—वि० [सं०] निवृत्त; कुत्तित, दुरा; निषिद्ध; बडि-फटकारा हुआ, निर्मलित। पु० निंदा।

विज्ञा—वि० [सं०] निंदा करनेवाला।

विज्ञा—वि० [सं०] बडिने, निंदा करने योग्य।

विज्ञा—पु० [सं०] नाश; पिघलना; गलना; रिसना; बह जाना; मायब होना; छुल जाना; क्षिणिक होना।

विज्ञा—वि० [सं०] बहा हुआ; पिघला हुआ; टपककर, रिसकर निकला हुआ; गिरा हुआ; सखा हुआ; जीना पड़ा हुआ, क्षिणिक; विगता हुआ; विखरा हुआ; छस; विदीर्ण (हिं०)। —**केस**—वि० जिसके बाल बिखरे हों। —**नीय**—वि० जिसकी प्रथि या इज्जत बंद छुल गया हो। —**बंश**—वि० जिसका बंधन छुल गया हो। —**कज**—वि० जिसमें कज्जा न रह गयी हो, पृष्ट। —**वसन**—वि० नंगा।

विज्ञा—वि० [सं०] स्नात; घुसा हुआ, डूबा हुआ; धंसा हुआ (इविचार); आगे बढ़ा हुआ; गहरा; अत्यधिक।

विज्ञा—की० [सं०] आर्या छंदका एक भेद।

विज्ञा—पु० [सं०] डुबकी लगानेवाला; प्रवेश करनेवाला; छुम्ब करनेवाला।

विज्ञा—पु० [सं०] निंदा, अपवाद, असामंजस्य; विरोध; घृणा।

विज्ञा—पु० [सं०] डुबकी लगाना; प्रवेश करना; रसान करना।

विज्ञा—वि० [सं०] विलोडन या अवगाहन करनेवाली।

विज्ञा—की० दे० 'विज्ञा'।

विज्ञा—वि० [सं०] डुबकी लगाने या प्रवेश करने योग्य (जैसे गया)।

विज्ञा—वि० [सं०] परस्पर विरोधी; दुरे ढगने गायी हुआ; निंदित; विभिन्न प्रकारसे कथित।

विज्ञाति—की० [सं०] आर्याछंदका एक भेद।

विज्ञा—वि० [सं०] गुणहीन, निर्गुण; दुरा; जिसमें बीरी न हो; असफल; प्रभाहीन; अधूरा; अव्यवस्थित; विकृत।

विज्ञा—वि० [सं०] प्रचुर।

विज्ञा—वि० [सं०] श्रुत, छिपा हुआ; जिसकी निंदा की गयी हो।

विज्ञा—वि० [सं०] फैलाया या बिखर किया हुआ; बिखरेण किया हुआ; पकड़ा हुआ; जिसका विरोध या सामना किया गया हो; रोका हुआ।

विज्ञा—पु० [सं०] आक्रमण; आक्रामकोंसे बिर जानेपर जल्मानसे भागना।

विज्ञा—पु० [सं०] आक्रमण।

विज्ञा—पु० [सं०] कहा-सुनी, वाक्कह।

विज्ञा—पु० [सं०] शङ्की शक्ति आदिकी बिना पता लगाये बी आक्रमण कर बैठना; अंधाधुंध चढ़ाई।

विष्णुशासन-पु० [सं०] सङ्को भूमि दवा रखना; सङ्को जीतनेमें असमर्थ होनेपर दुर्गता अवस्था करना ।

विमगाहा-को० आर्था छंदका एक भेद ।

विगम-वि० [सं०] क्षुब्ध; भीत ।

विग्र-वि० [सं०] दे० 'विच' ; बली ।

विग्रह-पु० [सं०] अलगाना; फैलाना; विस्तार; विभाग; पार्यन्त; समस्त पदके संबंधोंको अलग करना (अर्थ); कलह; युद्ध; शरीर; रूप; फूट पैदा करना; खंड, भाग; सजावट; तत्व; शिवा; रसंदका एक अनुचर । -ग्रहण-पु० रूप-ग्रहण । -घर-वि० युद्ध करनेपर तुला हुआ ।

विग्रहण-पु० [सं०] रूप धारण करना; विभाजन; फैलाना; पकड़ना ।

विग्रहावर-पु० [सं०] शरीरका पृष्ठ भाग ।

विग्रही(हिन्)-वि० [सं०] युद्ध करनेवाला; लड़ाई-लगवा करनेवाला । पु० युद्ध-मंत्री ।

विग्रहेश्वर-वि० [सं०] युद्धका इच्छुक ।

विग्रहित-वि० [सं०] जिसको मनमें कोई बुरी धारणा जम गयी हो ।

विग्रहा-वि० [सं०] लड़ाई करने योग्य, योद्धव्य ।

विग्रही-वि० [सं०] जिसकी गर्दन पेंठ वा काट दी गयी हो ।

विघटन-पु० [सं०] अलग करना; तोड़ना; छिन्न-मिन्न करना; नाश, बरबादी ।

विघटिका-को० [सं०] समयका एक रूप मान, घड़ीका चौबीसवाँ हिस्सा (किसी-किसीके मतसे ६०वाँ हिस्सा), पल । विघटित-वि० [सं०] तोड़ा; पृथक् किया हुआ; विभक्त; नष्ट किया हुआ ।

विघटन-पु० [सं०] रगड़ना; छिलाना; खोलना, अलग करना; व्यथित करना, नाराज करना ।

विघटनीय-वि० [सं०] छिलाने, तोड़ने योग्य; अलग करने योग्य ।

विघटित-वि० [सं०] रगड़ा हुआ; तोड़ा-फोड़ा हुआ; खोला हुआ; व्यथित वा रूढ़ किया हुआ ।

विघटी(हिन्)-वि० [सं०] रगड़नेवाला ।

विघन-पु० [सं०] हथौड़ा; आघात करना; नष्ट या परा-भूत करनेवाला; इंद्र; दे० 'विघ्न' । वि० कठिन; नरम; बाधलोंसे रहित, निरञ्ज ।

विघर्षण-पु० [सं०] रगड़ने, घिसनेकी क्रिया ।

विघ्न-पु० [सं०] अर्द्धचित्त प्राप्त; आहार; शोष अन्न, (देवता, पितर आदिके उपयोगके बाद बचा हुआ) साध पदार्थ; खानेके बाद बचा हुआ अन्न; मीम ।

विघ्नसाध, विघ्नसाप्ती(सिन्)-वि०, पु० [सं०] देवतादि-के उपयोगके बाद बचा हुआ अन्न खानेवाला ।

विघात-पु० [सं०] चोट, आघात; ठुकड़े-ठुकड़े करना; निवारण; रोक; विरोध; परित्याग; विफलता; तोड़ना-फोड़ना; नाश; हत्या; व्याकुलता । -सिद्धि-को० बाधा दूर करना ।

विघातक-वि० [सं०] बाधक; बाधक ।

विघातन-पु० [सं०] विघात करनेका काम, क्रिया; हर्ना करना । वि० निवारण करनेवाला; हटानेवाला ।

विघाती(सिन्)-वि० [सं०] हत्याकारी; चोट पहुँचाने-वाला; विरोध करनेवाला, बाधक ।

विघुष्ट-वि० [सं०] उद्धोषित; ऊँची आवाजमें कहा हुआ ।

विघृणिका-को० [सं०] नाक ।

विघृण्य-पु० [सं०] दुमाना; चक्र देना ।

विघृणित-वि० [सं०] दुमाया वा चक्रर दिलाया हुआ ।

विघोषण-पु० [सं०] ऊँची आवाजमें घोषित करनेकी क्रिया, चिल्लाना ।

विघ्न-पु० [सं०] बाधा, अवचन, कठिनार्थ; विरोध; नाश वा भंग करनेवाला; गणेश; कृष्णपाक फल, काली मकोय । -कर-कर्ता(सु)-, कर्त्तृ-वि० बाधा उपस्थित करने-वाला । -कारी(सिन्)-वि० दे० 'विघ्नक'; देखनेमें मयानक । -विघ्न-नायक-नाशक-पु० गणेश । -पति-राज, विनायक, -इंसा(सु)-, हरण-हारी-विघ्न-पु० गणेश । -पतिवाहन-पु० चूहा । -प्रति-क्रिया-को०, -विघात-पु० बाधा दूर करना । -सिद्धि-को० बाधाका दूर होना ।

विघ्नक-पु० [सं०] अवचन, बाधा डालनेवाला ।

विघ्नोत्पन्न-पु० [सं०] गणेश ।

विघ्नित-वि० [सं०] जिसमें विघ्न या बाधा डाली गयी हो; धक्कावा हुआ ।

विघ्नो-पु० [सं०] गणेश । -कर्ता-को० सपेद दूध । -बाहन-पु० चूहा ।

विघ्नोत्पन्न-पु० [सं०] गणेश ।

विघ्नोत्तर-पु० [सं०] गणेश ।

विघ्न-वि० [सं०] चद्रहीन ।

विचकित-वि० [सं०] धक्कावा हुआ, औचक ।

विचकिल-पु० [सं०] एक तरहकी चमेली; मदन वृक्ष ।

विचक-पु० [सं०] एक शानव (पु०) । वि० चक्ररहित ।

विचक्षण-वि० [सं०] विद्वान्, दूरदर्शी, चतुर; धारतः दक्ष; चमकता हुआ, प्रकाशमान । पु० चतुर आदमी ।

विचक्षणा-को० [सं०] नागर्तरी ।

विचक्षा(क्षस्)-पु० [सं०] आध्यात्मिक गुरु ।

विचक्षु(स्)-वि० [सं०] अंधा; उदास; धक्कावा हुआ ।

विचक्षुन-वि०, पु० दे० 'विचक्षण' ।

विच्य, विच्यन-पु० [सं०] शकड़ा करना; परीक्षा करना; सिलसिलेवार, तरतीबसे रखना; तलाश करना ।

विचर-वि० [सं०] भ्रमण किया हुआ; भ्रूण-मटका हुआ ।

विचरण-पु० [सं०] घुमना-फिरना, चक्का, भ्रमण करना, पर्यटन । वि० जिसके पैर न हों ।

विचरणीय-वि० [सं०] आचरण करने योग्य ।

विचरन-पु० दे० 'विचरण' ।

विचरना-अ० क्रि० इतस्ततः घुमना ।

विचरवि-को० दे० 'विचरण' ।

विचरित-वि० [सं०] इतस्ततः घुमा हुआ, पर्यटित । पु० भ्रमण, पर्यटन ।

विचरिका-को० [सं०] खुरखी नामक रोग ।

विचरित-वि० [सं०] लेपा हुआ ।

विचरार्थ(सिन्)-वि० [सं०] जिसके बाध दाह न हो ।

विचल-वि० [सं०] निरंतर घूमने वा छिलनेवाला;

अस्थिर; स्थानसे हटा हुआ; प्रण, प्रतिज्ञासे हटा हुआ; धक्काया हुआ; घर्सेदी।

विचक्षता-**श्री०** [सं०] अस्थिरता; धक्काहट।

विचक्षण-**पु०** [सं०] जहाँ-तहाँ घूमना; अस्थिरता; घमंड।

विचक्षणा-**ज०** कि० स्थानप्रद होना; प्रतिज्ञासे धिगना; विचकित होना।

विचक्षणा-**स०** कि० विचकित करना; धक्काहटमें डालना।

विचक्षित-**वि०** [सं०] गया हुआ; अस्थिर, चंचल; स्थान या प्रतिज्ञासे धिगा हुआ; धक्काया हुआ।

विचार-**पु०** [सं०] निर्णय; तत्त्व-निर्णय; तत्त्व-परीक्षा; किसी विषयपर गंभीरताके साथ सोचना; कार्यविधि; स्थान-परिवर्तन; संदेह; विचक; वाद-विवाद; चुनाव; विद्वता; अभियोग आदिका निर्णय। -**कर्ता** (हं)-**पु०**

सोचने-विचारनेवाला; अभियोगका निर्णय करनेवाला, न्यायाधीश। -**ज्ञ**-**वि०** विचार करनेमें कुशल, प्रवीण।

पु० न्यायाधीश, जज। -**पक्षि**-**पु०** मुकदमेका कैसला करनेवाला जज। -**भू**-**श्री०** न्यायालय। -**भूह**-**वि०**

जिसे सोचने-समझनेकी शक्ति न हो। -**हाकिम**-**श्री०** विचार करनेकी शक्ति। -**शास्त्र**-**पु०** मीमांसा शास्त्र।

-**शील**-**वि०** सोच-विचार करनेकी शक्तिवाला। -**शीलता**-**श्री०** बुद्धिमत्ता, समझदारी। -**सरणी**-**श्री०**

विचार करनेकी पद्धति। -**स्थल**-**पु०** किसी विषयपर विचारका स्थान; न्यायालय, अदालत; तर्क। -**स्वार्त**-**शब्द**

-विचार प्रकट करनेकी स्वतंत्रता।

विचारक-**वि०** पु० [सं०] विचार करनेवाला, दार्शनिक। पु० जज, न्यायाधीश; नेता, पथप्रदर्शक; युसुचर।

विचारण-**पु०** [सं०] विचार करनेकी क्रिया; परीक्षा; संदेह; विचक; स्थान-परिवर्तन।

विचारणा-**श्री०** [सं०] परीक्षण; तर्क; विचार करना; घूमना-फिरना; संदेह; मीमांसा शास्त्र।

विचारणीय-**वि०** [सं०] विचार करने योग्य; चिन्त्य; संदिग्ध; प्रमाणित करने योग्य।

विचारना-**स०** कि० गौर करना; खोज करना, ढूँढना।

विचारवाञ्छ (वञ्छ)-**वि०** [सं०] विचारशील, मीमने-विचारनेवाला।

विचारग्रन्थ-**पु०** [सं०] प्रधान विचारक, जज।

विचारालय-**पु०** [सं०] न्यायालय।

विचारिका-**श्री०** [सं०] गृहीतानकी देख-भाल करनेवाली दासी; मामला-मुकदमा देखनेवाली श्री।

विचारित-**वि०** [सं०] विचार किया हुआ; सोना-समझा हुआ; संदिग्ध; अभिहित, विचाराधीन, जिसपर विचार होता हो। पु० विचार; संदेह; विचक।

विचारी (रिन्)-**वि०** [सं०] छंपट-विचरण करने, घूमने-फिरनेवाला; विचार करनेवाला। पु० कर्मका एक पुत्र।

विचार-**पु०** [सं०] कृष्णका एक पुत्र।

विचार्य-**वि०** [सं०] विचार योग्य, विचाराणीय; संदिग्ध।

विचार-**पु०** [सं०] युद्ध करना; विभाग करना; बीचका काक वा स्थान, अंतराल। वि० बीचका।

विचारक-**पु०** [सं०] हडाना; नष्ट करना।

विधित्त-**पु०** [सं०] किन्तु-विता करना, सोचना।

विधित्तनीय-**वि०** [सं०] विचाराणीय।

विधिता-**श्री०** [सं०] सोच-विचार; देख-भाल।

विधित्त-**वि०** [सं०] जिसपर विचार किया गया हो।

विधित्ता (ह्)-**वि०**, **पु०** [सं०] विचार करनेवाला।

विधित्व-**वि०** [सं०] चित्तन, विचार करने योग्य; संदिग्ध;

जिसकी देख-भाल की जाय।

विधि, **विधी**-**श्री०** [सं०] छहर, तरंग।

विधिक्रिया-**श्री०** [सं०] संदेह; अभिधाय; भूल।

विधिधीया-**श्री०** [सं०] तलाश करनेकी इच्छा।

विधिधीयु-**वि०** [सं०] तलाश करनेका इच्छुक।

विधित्व-**वि०** [सं०] जिसकी खोज की गयी हो।

विधिति-**श्री०** [सं०] विचार; अभ्यवधान।

विधित्त-**वि०** [सं०] अचेत; कर्तव्यविमूढ़।

विधित्ति-**श्री०** [सं०] विव्रन, बेहोशी; चित्त ठिकाने न रहना।

विधि-**वि०** [सं०] कई प्रकारके रंगों, बगौवाला; असाधारण; चकित, विस्मित करनेवाला; सुंदर; मनोरंजक; चित्रित; रंगा हुआ। पु० रौच्य मनुका एक पुत्र (पु०); एक अधोलंकार (इसमें फलसिद्धिके लिए उल्टा प्रयत्न दिखाया जाता है); विभिन्न रंगोंका समुदाय; अचना।

-**चरित्र**-**वि०** विचित्र ढंगमें आवरण करनेवाला।

-**देह**-**वि०** जिसका शरीर रंगा हो; जिसकी बनावट सुंदर हो। पु० बादल। -**रूप**-**वि०** कई तरहके रूपों-वाला। -**बीर्य**-**पु०** शांतनू-मत्स्यवतीके द्वितीय पुत्र (दे निःसंतान मरे। द्वैपायनने इनकी पत्नियोंमें निजीय द्वारा धृतराष्ट्र और पांडुको पैदा किया था)। -**भू**-**श्री०**

विचित्रवीर्यकी माता, सत्यवती। -**शास्त्र**-**श्री०** अजायन-धर, 'मूचियम'।

विचित्रक-**पु०** [सं०] भोजपत्रका पेड़; आश्चर्य, अचभा। वि० आश्चर्यजनक।

विचित्रता-**श्री०** [सं०] रंगवैभिन्य; अनोखापन।

विचित्रांत-**पु०** [सं०] अमर; भ्यात्र।

विचित्रा-**श्री०** [सं०] एक रागिनी; एक तरहका सफेद हिरन।

विचित्रित-**वि०** [सं०] तरह-तरहके रंगोंसे चित्रित, रंग-विरंगा; आश्चर्यजनक; आपूतित (समासरी)।

विचित्रक-**पु०** [सं०] तलाश, अभ्यवधान; वीर, योद्धा।

विचित्रक-**पु०** [सं०] एक विषैला कीड़ा।

विचित्र-**वि०** [सं०] जिसपर गमन या कष्ट किया गया हो; जिसमें प्रवेश किया गया हो।

विचित्र-**पु०** [सं०] जुनन।

विचित्रित-**वि०** [सं०] विशेष रूपसे चूमा हुआ; स्पर्श किया हुआ।

विचित्रित-**वि०** [सं०] अच्छी तरह पीसा हुआ।

विचेतन-**वि०** [सं०] संज्ञाहीन, अचेत; मूर्ख, विवेकरहित; विस्मरणशील; निर्जीव, मृत।

विचेता (सत्)-**वि०** [सं०] मूर्ख; अचेत; दुष्ट; विमूढ़; चतुर, विशेषक।

विचेष्ट-**वि०** [सं०] निश्चेष्ट, चेष्टाहीन; गतिहीन, अचक।

विच्छेद-पुं० [सं०] छेदना, हक-वपर कोटना, लक-पना (पीकासे); कात फैकना या कोटना (पीका)।
विच्छेद-स्त्री० [सं०] प्रयत्न; गति; व्यवहार; कुचेष्टा।
विच्छेदित-वि० [सं०] जिसके लिए प्रयत्न किया गया हो; परीक्षित; मूर्खतापूर्वक किया हुआ; अविचारित; अन्वेषित।
 पुं० शरीरको गति या संवाहन; इंगित; कार्य; आचार; पुरा कार्य; दुष्कर्म।
विच्छेद-वि० [सं०] जिसमें कोई तरहके छेद हो। पुं० दे० 'विच्छेदक'।
विच्छेदक-पुं० [सं०] कई मंजिलोंवाला भवन, राजप्रासाद आदि।
विच्छेदक-पुं० [सं०] एक सला, सुसला।
विच्छेदक-पुं० [सं०] विच्छेदक, देवमंदिर, महल।
विच्छेदन-पुं० [सं०] बमन, कै; उपेक्षा; अवमानना; क्षय।
विच्छेदिका-स्त्री० [सं०] बमन।
विच्छेदित-वि० [सं०] वसित, कै किया हुआ; परित्यक्त; उपेक्षित; शीघ्र; न्यून किया हुआ।
विच्छेद-पुं० [सं०] वैतकी कला।
विच्छेद-पुं० [सं०] पक्षियोंके जुंवकी छाया; गणि; वह जिसकी छाया न पड़ती हो। वि० विवर्ण, कांतिहीन; छाया रहित।
विच्छिन्ति-स्त्री० [सं०] काटकर अलग, टुकड़े करना, भंग करना; विनाश; पार्थक्य; विच्छेद; रोक, बाधा; कमी, नुस्ति; अभाव; अगम्य; वेधभूषा आदिकी कापरवाही; वेदगापन; शरीरको चित्रित करना (रंगों आदिसे); एक तरहका हार; एक हान (थोड़े श्मरापने पुरुषको मुख्य करने का प्रयत्न); यति (छंद); सीमा, हद (मकानकी)।
विच्छिन्न-वि० [सं०] काटकर अलग किया हुआ, विभक्त; जुदा, अलग; जिसका अंत किया जा चुका हो; कुटिल; निवारित; विभिन्न रंगोंसे चित्रित; छिपा हुआ; केपित।
विच्छुरण-पुं० [सं०] छिन्नकना; छेपना, मलना।
विच्छुरित-वि० [सं०] छिन्नका हुआ; छेपा हुआ; ढका हुआ। पुं० एक प्रकारकी समाधि।
विच्छेद-पुं० [सं०] काटकर अलग करना; क्रम टूटना; अलग, टुकड़े-टुकड़े करना; क्षति; नाश; निषेध; अन्वेष; मतभेद; परिच्छेद, अप्याय (पुस्तकका); नीचका अवकाश; यति (छंद); बंधकमक मंग होना।
विच्छेदक-वि०, पुं० [सं०] विच्छेद करनेवाला; काटकर अलग करनेवाला; विभाग करनेवाला।
विच्छेदन-पुं० [सं०] काटकर अलग करना; नष्ट, बरबाद करना; भेद करना।
विच्छेदनीय-वि० [सं०] विच्छेद करने योग्य; काटकर अलग करने योग्य; विभाग करने योग्य।
विच्छेदी (विश्व)-वि० [सं०] विच्छेद करनेवाला; जिसमें विच्छेद या मध्याधकाश हो।
विच्छेद-वि० [सं०] दे० 'विच्छेदनीय'।
विच्छेद-वि० [सं०] गिरा हुआ; स्थानजट; नीलित अंगसे काटकर निकाला हुआ (भा० दे०); विनष्ट; विश्रित; असंकीर्ण।
विच्छुति-स्त्री० [सं०] वियोग, पार्थक्य; पतन; किमी

नीचका अपने स्थानसे हट जाना; गर्भपात।
विच्छेदक-अ० कि० फिल्लना, स्थानजट होना।
विच्छेद-पुं० विच्छेद, विभोग।
विच्छेद-वि०, पुं० वियोगी, जिसका प्रियसे वियोग हुआ हो।
विच्छेद-पुं० वियोग, प्रियसे दूर होना।
विच्छेदी-वि०, पुं० वियोगी।
विच्छेद-वि० [सं०] बंधाहीन; (गाड़ी) जिसमें पहिया न हो।
विच्छेद-वि० दे० 'विनवी'।
विच्छेद-वि० [सं०] कुछे हुए, जिनकी कबरी न बनी हो (शास्त्र)।
विच्छेद-वि० दे० 'वसित'।
विच्छेद-वि० [सं०] अतथ्य, एकांत। पुं० निर्जन या एकांत स्थान; साक्षीका अभाव; दे० 'विजना'।
विच्छेद-स्त्री० [सं०] एकांतता, जनशून्य होना।
विजनन-पुं० [सं०] जनन, प्रसव करना।
विजना-पुं० पंखा, शीजन।
विजनित-वि० [सं०] जात, उत्पन्न; जन्म किया हुआ।
विजन्मा (स्मृन्)-पुं० [सं०] उपपत्तिका पुत्र; जातिधुन व्यक्तिका पुत्र; एक वर्णसंकर जाति (मनु०)। वि० जारजा।
विजम्बा-वि०, स्त्री० [सं०] मर्दिणी (स्त्री)।
विजपिल-पुं० [सं०] एक। वि० दे० 'विजिक'।
विजय-पुं० [सं०] बंद।
विजयंतिका-स्त्री० [सं०] एक योगिनी।
विजयंती-स्त्री० [सं०] एक अम्परा; माझी बूटी।
विजय-स्त्री० [सं०] जीतका पारितोषिक; लूटका माल; बहस, युद्ध आदिमें होनेवाली जीत। पुं० दिनका एक विशेष पंदा; एक सप्तरा; बर्षका तीसरा मास; एक सैन्य-बृह; प्रदेश, जिला; एक तरहकी नौसूरी; एक मान; देवताओंका रथ, विमान; यम; जयंतका पुत्र; कृष्णका पुत्र; अर्जुन; विष्णुका एक पार्श्व; ब्रह्माके विश्वरूप; कल्किपुत्र; मत्स्यवंद सवैयाका एक भेद (किशव); † जीमना, भोजन करना। -कर-वि० विजय करने-वाला। -कुंजर-पुं० युद्धक्षेत्रमें जानेवाला हाथी; राजाकी सवारीका हाथी। -केतु-पुं० शत्रुकी जीतकर फहरावी जानेवाली ध्वजा; एक विचार। -च्छेद-पुं० पंच लो मोतियोंका हार; ५०४ लक्षियोंका हार। -किंडिम-पुं० युद्धका एक प्राचीन बाजा। -तीर्थ-पुं० एक तीर्थ (पुं०)। -बृह-पुं० सदा विजयी होनेवाला सैन्यसमूह; सेनाका वह विभाग जिसपर विजय निर्भर हो; विजयस्वक दंड। -वृक्षमी-स्त्री० दे० 'विजया-दक्षमी'। -हुंजुमि-स्त्री० विजयके समय बजाया जाने-वाला नगाडा। -नंदन-पुं० हृदयकुवंची राजा जय। -नगर-पुं० कर्णाटकका एक नगर। -एलाका-स्त्री० जीतके समय फहरावी जानेवाली ध्वजा; विजय-स्वक चिह्न। -पूणिमा-स्त्री० विजयादशमीके बादकी पूणिमा, कारकी पूणिमा। -प्रत्यर्था (पिंड)-वि० विजयकी इच्छा रखनेवाला। -मर्दक-पुं० दे० 'विजय-किंडिम'। -बात्रा-स्त्री० विजय, जीतकी कामनासे की जानेवाली

यात्रा । -खड्गी- -श्री-की- विजयकी अधिष्ठात्री देवी ।
-सीख-पु० सदा जीतनेवाला । -सार-पु० इमारत
आदि बनानेके कामकी लकड़ीवाला एक बड़ा वृक्ष । -
सिद्धि-की० समलता; जीत ।

विजयक-वि० [सं०] विजय प्राप्त करनेमें कुशल ।

विजय-की० [सं०] दुर्गा; दुर्गाकी एक सखी; एक विधा
जिते विश्वामित्रने रामको सिखलाया था० विजयोत्सव;
यमकी पत्नी; एक योगिनी; वर्तमान अवस्थाकी द्वितीय
अर्धवर्षी माता; दक्षकी एक कन्या; कृष्णक माला; रंक्षकी
एक छोटी ध्वजा; एक पोषिकी विपैली जड़; राजकीय
सेवा; एक तरफका संवय; कश्मीरका एक पुण्यस्थान;
क्षमीका एक भेद; बचा; मजोठ; अग्निमय; भोग; एक
वृत्त । -दुकावरी-की० आश्विन-शुक्ला एकादशी;
फाल्गुन-कृष्णा एकादशी । -दसमी-की० आश्विन-शुक्ला
दशमीकी होनेवाला हिंदुओं, विशेषतः स्त्रियोंका एक
त्वोहार (हरी दिन प्राचीन कालमें राजा लोग युद्ध-जयके
लिए ससेन्य निकलते थे) । -सप्तमी-की० रविवारकी
पक्नेवाली किसी मासकी शुक्ला सप्तमी ।

विजयानन्द-पु० [सं०] तालका एक भेद (मंगीत) ।

विजयानुपाय-पु० [सं०] विजय प्राप्त करनेका साधन ।

विजयार्थी (विज्) -वि० [सं०] विजय चाहनेवाला ।

विजयार्थ-पु० [सं०] एक पर्वत ।

विजयी (विज्) -वि० [सं०] जिसकी जीत हुई हो । पु०
विजेता, जीतनेवाला । [की० 'विजयिनी' ।]

विजयेश-पु० [सं०] विजयके अधिष्ठाता देवता, शिव ।

विजयोत्सव-पु० [सं०] विजयवाद्दशमीका उत्सव; विजयके
वपलक्ष्यमें सनाया जानेवाला उत्सव ।

विजय-वि० [सं०] जराहीन, जो कमी बड़ा न हो; नया,
नवीन । पु० बँडल ।

विजरा-की० [सं०] जलकोशकी एक नदी ।

विजयार्द्र-वि० [सं०] जीर्ण; सदा-बाला ।

विजय-वि० [सं०] निर्जल, जलरहित । पु० अवर्षण, सूखा ।
विजला-की० [सं०] एक साग; नाबलके योगसे बनी हुई
एक तरहकी लपसी ।

विजय-पु० [सं०] अनापशनाप बकना, बकवाद; देवते
छुड़ी बातें कहना ।

विजयिस्त-वि० [सं०] कथित, उत्पट्ट कहा गया; बे-सिर-
पैरकी उफारी हुई (मात) ।

विजय-वि० [सं०] पिच्छल ।

विजय-पु० वियोग ।

विजयी-वि०, पु० वियोगी ।

विजय-वि० [सं०] उत्पन्न, जनमा हुआ; दोगला, बराम-
जदा; दूसरे रूपमें परिणम । पु० सखी छंदका एक भेद ।

विजला-की० [सं०] जारज, दोगली लकड़ी; सप-प्रसृता
की; माता ।

विजयि-वि० [सं०] मित्र जातिका, अन्य वर्णका । की०
मित्र जाति या वर्ग ।

विजयि-वि० [सं०] दूसरी जातिका, मित्र जाति, वर्णका ।

विजयक-वि० [सं०] जाननेवाला, परिचित ।

विजयन्ता-की० [सं०] चातुर्वर्ष ।

विजयवा-सं० कि० विशेष रूपसे जानना ।

विजय-पु० [सं०] लकनेका एक ढंग, तख्तारके ३२
हाथोंमेंसे एक ।

विजयविदा(तु)-वि०, पु० [सं०] विजय दिखानेवाला ।
विजयारी-पु० एक तरहकी मटिया भूमि जिसमें बाल बीया
जाता है ।

विजयार-की० [ज०] नजीरका पद या कार्य; नजीरका
दफ्तर; मंत्रिमंडल ।

विजयिस्त-वि० [सं०] प्रसिद्ध, विख्यात ।

विजयि-वि० [सं०] विजय चाहनेवाला ।

विजयि-की० [सं०] विजयकी कामना ।

विजयि-वि० [सं०] विजयका इच्छुक । पु० योद्धा;
अक्रामक; विरोध करनेवाला व्यक्ति; प्रतिपक्षी ।

विजयि-वि० [सं०] जिसने भूख न लगी हो ।

विजयि-वि० [सं०] मारने या नष्ट करनेकी इच्छा
रखनेवाला ।

विजयि-की० [सं०] जाननेकी इच्छा; अभ्येषण ।

विजयि-वि० [सं०] सीखने या जाननेकी इच्छा रखने-
वाला ।

विजयि-की० [ज०] भेद, मुलाकात; देखने, मिलनेके
'छिप जाना, जाना ।

विजयि-पु० [ज०] आगतुक, देखने या मिलनेके लिए
जानेवाला ।

विजयि-पु० [ज०] वह पुस्तक जो होटलों,
विद्यालयों आदि सार्वजनिक स्थानोंमें आगतुकीके विचार,
राय लिखनेके लिए रखी रहती है ।

विजयि-पु० [ज०] छोटा-सा कार्ट जिसपर किसी-
का नाम और पता दर्ज रहता है और जिस किसीमें
मिलना होता है उसके पास वह उस व्यक्तिके आनेकी
पूचना देनेके लिए भेज दिया जाता है ।

विजयि-वि० [सं०] जीता हुआ, जिसपर विजय हुई
हो; जिससे डरा जाय । पु० जीता हुआ देश, भूखंड;
वह ग्रह जो दूसरे ग्रहसे युद्धमें म्बुनवर हो (व्यो०);
विजय । -रूप-वि० पराजितके रूपमें आनेवाला ।

विजयि-वि० [सं०] विजयी ।

विजयि-पु० [सं०] वृषभ या विभाजन करनेवाला;
भेद करनेवाला; निर्णायक; वह जो डर गया हो ।

विजयि-पु० [सं०] शिव ।

विजयि-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसने शत्रुओंको
पराभूत कर दिया हो ।

विजयि-पु० [सं०] एक राक्षस । वि० जिसने शत्रुओंको
पराभूत कर दिया हो ।

विजयि-पु० [सं०] राजा पृथुका एक पुत्र ।

विजयि-पु० [सं०] एक मुनि ।

विजयि-की० [सं०] विजय; कम्पा ।

विजयि-वि० [सं०] विजयी ।

विजयि-वि० [सं०] जिसने अपनी इच्छाओंकी वशमें
कर किया है ।

विजयि-वि० [सं०] जिसपर नियंत्रण या विजय प्राप्त
करनी हो ।

विश्वस्वर-वि० [सं०] विजयी ।
 विश्वस्वरा-स्त्री० [सं०] एक देवी ।
 विश्विन, विश्विल-वि० [सं०] (रूपसी आदि) जिसमें अधिक रस न हो । पु० एक तरहकी रूपसी ।
 विश्विविल-वि० [सं०] दे० 'विजिल' ।
 विश्विवीर्य-स्त्री० [सं०] धूमने या मनोरंजनकी इच्छा ।
 विश्विवीर्य-वि० [सं०] धूमने या मनोरंजनकी इच्छा रखनेवाला ।
 विश्विव-वि० [सं०] टेढा, झुका हुआ; तिरछा; बेईमान ।
 विश्विव-वि० [सं०] जिह्मारहित, जिसके जीभ न हो ।
 विश्विवित-वि० [सं०] मृत, बेजान ।
 विश्विव-वि० [सं०] जयका इच्छुक ।
 विश्व-पु० [सं०] पक्षीके शरीरका वह भाग जहाँसे डेने निकलते हैं ।
 विश्वल-पु० [सं०] शास्त्रालीका इक्षु या कद ।
 विश्वली-स्त्री० [सं०] एक देवी; † विश्व, विजली ।
 विश्वभ-पु० [सं०] सिकोड़ना (भी); जँभाई ।
 विश्वभक-पु० [सं०] एक विद्याधर ।
 विश्वभण-पु० [सं०] जँभाई लेना; खुलना; खिलना; प्रफुल्ल होना; कामकाज; फैलाना; झुकाना; धनुष नटाना; सिकोड़ना (भी) ।
 विश्वभा-स्त्री० [सं०] जँभाई ।
 विश्वभिका-स्त्री० [सं०] जँभाई; हाँफ ।
 विश्वभित-वि० [सं०] त्र मायुक्त; खिला हुआ; फैला हुआ; खीन्ना या झुकाया हुआ (धनुष); क्लृप्त (काम-नश) । पु० प्रदर्शन, चेष्टा, आचार; परिणाम; जँभाई ।
 विश्वंभी(भिन्)-वि० [सं०] निकलने या प्रकट होनेवाला ।
 विजेतव्य-वि० [सं०] जीतने योग्य ।
 विजेता(तु)-पु० [सं०] जय प्राप्त करनेवाला वह जिसने जय प्राप्त की हो ।
 विजेय-वि० [सं०] पराजित करने योग्य ।
 विजै-स्त्री० जीत, विजय । -सार, -स्वाल-पु० एक वृक्ष ।
 विजोग-पु० विवोग ।
 विजोगी-वि०, पु० विवोगी ।
 विजोर†-पु० विजोरा नीम् । वि० कमजोर, निर्बल ।
 विजोहा-पु० विमोहा, एक वृक्ष ।
 विज्-पु० [सं०] पक्षी; पण ।
 विजल-वि० [सं०] फिसलाहटवाला, पिच्छिल । पु० एक तरहका बाण; शास्त्रमालीके; एक तरहकी चावलकी लपसी ।
 विजिल-पु० [सं०] दे० 'विजिल' ।
 विज्जु-स्त्री० विजली । -लता-स्त्री० विजुलता; विजली ।
 विज्जुल-पु० [सं०] दारचीनीका छिलका; त्वचा ।
 विज्जुलिका-स्त्री० [सं०] एक लता, जतुका, पहाड़ी ।
 विजोहा-पु० दे० 'विजोहा' ।
 विज्-वि० [सं०] जानकार; समझदार, विद्वान् । पु० चतुर मनुष्य; सुनि । -बुद्धि-स्त्री० जटामासी । -राज-पु० क्षत्रिराज; पक्षिराज ।
 विजता-स्त्री०, विजत्व-पु० [सं०] जानकारी; बुद्धिमत्ता ।
 विजस-वि० [सं०] सुचित, जनाया हुआ ।

विजसि-स्त्री० [सं०] सूचित करनेकी क्रिया; इस्तहार, विज्ञापन; निवेदन, प्रार्थना ।
 विज्ञासिका-स्त्री० [सं०] निवेदन, प्रार्थना ।
 विज्ञास-वि० [सं०] जाना, समझा हुआ; प्रसिद्ध ।
 -वीर्य-वि० जिसके बल या शक्तिका लोगोंको ज्ञान हो ।
 -स्थासी-स्त्री० ज्ञान या साधारण ढंगने तैयार किया हुआ पात्र ।
 विज्ञासव्य-वि० [सं०] जानने, समझने योग्य ।
 विज्ञाता(तु)-वि०, पु० [सं०] जानने, समझनेवाला ।
 विज्ञातार्थ-वि० [सं०] जो वस्तुस्थितिसे भली भाँति परिचित हो ।
 विज्ञाति-स्त्री० [सं०] समझ, ज्ञान; जानकारी; एक देव-योनि; एक कल्प ।
 विज्ञान-पु० [सं०] ज्ञान, समझ, प्रज्ञा; विवेक, शिक्षा-त्मिका बुद्धि; दक्षता, कार्यकुशलता; अनुभवजन्य ज्ञान; कारवार; मंथित; चोदहो विद्याओंका ज्ञान; किसी विषयका क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान; कर्म; आत्मा, मोक्ष आदिका ज्ञान । -कृत्स्न-पु० एक तांत्रिक कृत्स्न (बी०) ।
 -केवल-पु० जीवात्मा (म्यक्तिविशेषकी) । -घन-पु० विशुद्ध ज्ञान । -पति-पु० श्रेष्ठ ज्ञानी । -पाद्-पु० व्यास । -मातृक-पु० बुद्धि । -वाद-पु० योगाचारका मिश्रत जिसमें केवल ज्ञानकी सत्ता मानी जाती है, वस्तुकी नहीं । -वादी(विन्)-वि० विज्ञानवादका सिद्धांत माननेवाला; आधुनिक विज्ञानका पक्षपाती ।
 विज्ञानता-स्त्री० [सं०] अनुभूति; समझ ।
 विज्ञानमय-वि० [सं०] प्रज्ञायुक्त । -कोश, -कोष-पु० ज्ञानेन्द्रियोंके साथ बुद्धि ।
 विज्ञानिक-वि० [सं०] विज्ञा; जानकार ।
 विज्ञानिता-स्त्री० [सं०] किसी विषयका ज्ञान या पूर्ण परिचय; विज्ञानी होनेका भाव ।
 विज्ञानी(निन्)-वि० [सं०] किसी विषयका उच्चम ज्ञाता; किसी विज्ञानमें निष्णात, वैज्ञानिक; आत्मा-परमात्माके स्वरूपका तत्त्व जाननेवाला ।
 विज्ञानीय-वि० [सं०] विज्ञान-सम्बन्धी ।
 विज्ञापक-वि०, पु० [सं०] ममज्ञाने, बतलानेवाला; इस्त-हार करनेवाला ।
 विज्ञापन-पु० [सं०] ममज्ञाना; सूचना देना; इस्तहार; निवेदन, प्रार्थना । -पत्र-पु० विज्ञापनका अखबार ।
 -पुस्तिका-स्त्री० वह किताब जिसमें विज्ञेय वस्तुओंका परिचय दिया रहता है, सूचीपत्र ।
 विज्ञापना-स्त्री० [सं०] विज्ञप्ति करना, जतलाना, बतलाना; निवेदन ।
 विज्ञापनीय-वि० [सं०] विज्ञापनके योग्य, सिखलाये जाने योग्य ।
 विज्ञापित-वि० [सं०] विज्ञात, बतलाया हुआ; सूचित, इस्तहार किया हुआ ।
 विज्ञापी(पिन्)-वि० [सं०] सूचना देने, जतलाने, बतलानेवाला ।
 विज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] दे० 'विज्ञप्ति' ।
 विज्ञाप्य-वि० [सं०] बतलाने, सूचित करने योग्य । पु०

प्रार्थना, निवेदन ।

विश्वसु-वि० [सं०] यचना देने या निवेदन करनेकी रूढ़ि करनेवाला ।

विज्ञेय-वि० [सं०] जानने, समझने, सीखने योग्य ।

विग्रह-वि० [सं०] गुणरहित (धनुष) ।

विजय-वि० [सं०] ज्वररहित; चितारहित; मदेहहीन; शोक, मलेशहीन; प्रसन्न; अक्षय्य ।

विज्ञाहर्-वि० [सं०] वेमेल; अप्रिय ।

विटंक, **विटंकक**-वि० [सं०] सुंदर, रुचिर । पु० सबसे ऊँचा निरा, स्थान; कलत्रका दरवा या छतरी; पक्षियोंका पिंजरा; श्वी ककरी ।

विटंकित-वि० [सं०] मुद्रांकित ।

विट-पु० [सं०] कामुक; कामी; वेदवाप्रेमी, वेदवा रखनेवाला; वैशिक; धूर्त; विदूषककी श्रेणीका एक नाटकीय पात्र, नायकका स्वभाव; नायकका एक भेद; एक पहाड़; एक खैर; नारंगी; वृद्धा; माँचर नमक; एक खनिज द्रव्य; कोषलदार वृक्ष; मकान । -**कोला**-स्त्री० हल्दी । -**प**-पु० दे० क्रममें । -**पेटक**-पु० धूर्तमहली । -**प्रिय**-पु० मोगरा । -**भूत**-पु० एक असुर । -**माक्षिक**-पु० एक खनिज द्रव्य, सोनामाखी । -**लवण**-पु० साँचर नमक । -**वल्गुभा**-स्त्री० पाटलीका पेड़ ।

विटक-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति; नर्मदा तटस्थित एक प्रदेश (पु०); चौका ।

विटका-स्त्री० [सं०] विटोंके परस्पर मिलनेका कमरा ।

विटय-पु० [सं०] पेड़ या लनाकी नयी शाखा, कोषल; शाही, छतनार पेड़; पेड़; आदित्य-पत्र; ऐलास; विटोंको रखनेवाला; अठकोशके बीच या नीचेकी रेखा ।

विटपू-पु० [सं०] वृक्ष; धूर्त ।

विटपी(**विट्**)-वि० [सं०] शाखाओंवाला । पु० वृक्ष, शाही; वटवृक्ष । -(**वि**)**सूत्र**-पु० बंदर ।

विटारिका-स्त्री० [सं०] एक तरतका मोथा; विटोंके परस्पर मिलनेका कमरा ।

विटारय-पु० [सं०] विटके रहनेका मकान ।

विटि-स्त्री० [सं०] पीत चटन । -**कंठीरय**-पु० मध्य-सिद्धांतकोमुदीके रचयिता वरदराज ।

विटी-स्त्री० [सं०] दे० 'विटि' ।

विट्(**श**)-पु० [सं०] प्रवेश; वैषय, वनिया; अनुष्य । **श**-कन्या; प्रजा; जाति; परिवार । -**कुल**-पु० वैश्यका घर, परिवार । -**पण्य**-पु० व्यापारिक वस्तुएँ । -**पति**-पु० नरेश; वैद्यकीा मुखिया; जामाता, प्रधान व्यापारी । **विट्**(**व**)-स्त्री० [सं०] मरु, विष्ठा; प्रसार; कन्या । -**कारिका**-स्त्री० एक पक्षी । -**कुमि**-पु० आँतमें पकनेवाला कृमि । -**खदिर**-पु० एक तरहका बड़बूदर खैर । -**चर**-पु० पालतू मृगर । -**छूल**-पु० एक तरहका उदरशूल । -**संग**-पु० कम्प । -**सारिका**, -**सारी**-स्त्री० एक तरहकी मैना ।

विटक-पु० [सं०] विष्ठा ।

विटुल-पु० [सं०] एक देवता जो विष्णुके अवतार माने जाते हैं (कहा जाता है कि पंजरपुरके पुंडरीक नामक माक्षगर्भमें विष्णुका बहुत कुछ अंश आ गया था; उनकी

मूर्ति वहीं स्थापित है और विष्णुके प्रतीकके रूपमें पूजी जाती है) । -**कवच**-पु० एक प्रसिद्ध कवच ।

विटंक-वि० [सं०] नीच, कमीना, खराब ।

विटर-वि० [सं०] वाग्मी । पु० दूधरूपित ।

विटल-पु० [सं०] दे० 'विटुल' ।

विटोबा-पु० दे० 'विटुल' ।

विटंग-पु० [सं०] रायविटंग नामक पौधा जो कुमिनाशक होता है । वि० चतुर, कुशल ।

विटंब-पु० [सं०] नकल; चिदाना; हेय समझना; कष्ट देना; खिन्न करना, तुदाना; छेड़खानी । वि० अनुकरण-शील ।

विटंबक-वि० [सं०] पूरी-पूरी नकल करनेवाला; नकल उतारकर चिदानेवाला ।

विटंबन-पु०, **विटंबना**-स्त्री० [सं०] नकल उतारना; चिदाना, छेड़खानी करना; कष्ट देना; निंदा करना; निराश करना; छलना; उपहासका विषय ।

विटंबनीय-वि० [सं०] अनुकरण, नकल करने योग्य; उपहास्य ।

विटंबित-वि० [सं०] जिसकी नकल उतारी गयी हो, विकृत किया हुआ; जो प्रेक्षान किया गया हो, नीच; दीन, धोखा खाया हुआ; निराश ।

विटंबी(**विट्**)-वि०, पु० [सं०] विटंबना करनेवाला । **विटंब्य**-पु० [सं०] छपा या उपहासका विषय ।

विट-पु० [सं०] काला नमक, नोनहा नमक; दुकषा, एक प्रदेश । -**गंध**-पु० विटलवण । -**लवण**-पु० पत्र, लवण जो दवाके काम आता है, काला नमक ।

विहरना*-अ० क्रि० शौचलाना, डरना; भागना, तितर-बितर होना ।

विहराना*-स० क्रि० चौकाना, भगाना तितर-बितर करना, नष्ट करना ।

विहारक-पु० [सं०] बिलाव ।

विहारना*-स० क्रि० दे० 'विहारना' ।

विडाल-पु० [सं०] दे० 'विडाल' (समान श्री) ।

विडालक-पु० [सं०] दे० 'विडालक' ।

विडालाक्ष-वि० [सं०] दे० 'विडालाक्ष' ।

विडालाक्षी-स्त्री० [सं०] एक राक्षसी ।

विडाली-स्त्री० [सं०] विडाली; विदारीकद ।

विडाली-पु० [सं०] चिबियोंके उबनेका एक प्रकार ।

विडाली-पु० [सं०] अलग-अलग उड़ना ।

विडुल-पु० [सं०] एक तरहका वैंत ।

विदुरज-पु० [सं०] एक रक्त, वैद्यके मणि ।

विडोडा, **विडोडा**(**अस्**)-पु० [सं०] इद्र ।

विह-वि० 'विप'का समासगत रूप । -**गंध**-पु० विटलवण ।

-**प्रह**, -**बंध**-पु० मलरीध । -**जात**-पु० मल-मूत्रका ककना । -**ज**, -**सव**-पु० विष्टासे उत्पन्न कृमि । वि० मलसे उत्पन्न । -**संग**, -**सिद्ध**, -**भेद**-पु० दस्त आना, पेट चलना । -**सुद्ध**(**ज**), -**भोजी**(**विट्**)-वि० मल खानेवाला । पु० गुंजरका । -**भेदी**(**विट्**)-पु० दस्तावर दवा । -**लवण**-पु० साँचर नमक । -**बराह**-पु० ग्राम्य श्वेत । -**विचात**-पु० एक मूत्ररोग ।

विचीपातां-पु० दे० 'व्यतीपात'।

विचीपाती-वि० नटसदृश, शरारती (कवका)।

विचीर्ण-वि० [सं०] जो पार गया हो; दूरवर्ती; प्रदत्त; पूरा किया हुआ; पराभूत; परित्यक्त; नीचे गया हुआ; कमा किया हुआ; कमा हुआ (बुद्ध)।

विचुंष्ट-पु० हाथी।

विचुष्ट-पु० [सं०] एक भूतयोनि।

विचुष्ट-वि० [सं०] छेदा या चीरा हुआ। पु० एक साग, सुसना; सेवार।

विचुष्टक-पु० [सं०] धनिया; तुलिया; तामरुकी नामक पौधा; बाली पतननेका कानका छेद।

विचुष्टा, विचुष्टिका-स्त्री० [सं०] अरुओवला।

विचुष्ट-वि० [सं०] जिसका छिलका निकाल दिया गया हो।

विचुष्ट-वि० [सं०] असतुष्ट; अग्रसन्न।

विचुष्ट(२), विचुष्ट-वि० [सं०] जो व्याप्त न हो, पिपात्ता-रहित।

विचुष्ट-वि० [सं०] तुणरहित।

विचुष्ट-वि० [सं०] संतुष्ट।

विचुष्टक-वि० [सं०] दे० 'विचुष्ट'।

विचुष्टा-वि० [सं०] तुण्यारहित, उदासीन, निस्पृह।

विचुष्ट्या-स्त्री० [सं०] तुण्यका अभाव, संतुष्टि; विराक्ति; प्रबल इच्छा।

विचुष्ट-वि० [सं०] जलहीन।

विस्त-वि० [सं०] प्राप्त; ज्ञात; विचारित; परीक्षित; प्रसिद्ध।

पु० धन-संपत्ति, प्राप्त वस्तु; अधिकार; शक्ति। -काम-वि० धनका इच्छुक; लोभी। -कोश-पु० रुपया-सेवा रखनेकी थैली। -गोसा(५)-पु० कुबेर। -आय-वि० विवाहित, जिसने पत्नी प्राप्त की है। -द-वि० धन देनेवाला; सहायक। -दा-स्त्री० रत्नकी एक मातृका।

-नाथ-पु० कुबेर। -निचय-पु० धनकी बहुत बड़ी राशि। -प-वि० धनकी रक्षा करनेवाला। पु० कुबेर।

-पति, -पाल-पु० कुबेर। -पेदा, -पेदी-स्त्री० रुपया रखनेकी थैली। -मात्रा-स्त्री० मपति। -रक्षी(चिन्नु)-पु० धनी व्यक्ति। -वर्धन-वि० जिसमें अच्छी आय हो। -विचर्षी(चिन्नु)-वि० धनकी वृद्धि करनेवाला।

पु० सद्। -शास्त्र-पु० देन-लेनेमें धोखेबाजी। -संक्षय-पु० धन जमा करना। -समागम-पु० धनागम।

-हीन-वि० निर्धन, गरीब।

विस्त-वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध।

विस्तवान्(वत्)-वि० [सं०] धनवान्।

विस्तगम-पु० [सं०] धनकी प्राप्ति या प्राप्तिका माधन।

विस्तार्य-वि० [सं०] बहुत धनी।

विस्तारि-स्त्री० [सं०] धनकी प्राप्ति।

विस्तार्य-वि० [सं०] धन लगानेवाला।

विस्तार्य-पु० [सं०] कुशल, निपुण व्यक्ति।

विस्ति-स्त्री० [सं०] विचार; ज्ञान, चेतना; सम्मानना; अस्तित्व; प्राप्त वस्तु, प्राप्ति, लाभ।

विस्तीय-वि० [सं०] विस्तार्यधी; विस्तार्य व्यवस्थाके विचारसे चलनेवाला (विस्तीय बन्धी)।

विस्तीय, विस्तीय-पु० [सं०] कुबेर।

विस्तीय, विस्तीय-स्त्री० [सं०] धनकी इच्छा; लालच।

विस्तीय-विस्तार, फैलाव।

विस्त-पु० [सं०] जानकार होनेका भाव।

विस्त-वि० [सं०] वेदया, निर्द्वन्द्व।

विस्त-वि० [सं०] बरा हुआ, भीत।

विस्त-वि० [सं०] कुछ-कुछ बरा हुआ।

विस्त-वि० [सं०] भय, डर; आतंक। वि० भयंकर।

विस्तार्य-पु० [सं०] डरानेकी क्रिया। वि० डरावना।

विस्तारि-वि० [सं०] डरवाया हुआ।

विस्त-पु० [सं०] बैल।

विस्त-पु० पवन।

विस्तकना-अ० कि० धनका, शिथिल पड़ना; मुख्य या चर्चित होनेपर कुछ बोल न सकना।

विस्तकित-वि० धनका हुआ; जो मुख्य या चर्चित होनेके कारण कुछ बोलनेमें असमर्थ हो।

विस्तारना, विस्तारना-अ० कि० फैलाना, छितराना।

विस्त-स्त्री० व्याया, पीडा, कष्ट।

विस्त-वि० [सं०] व्यथित, दुःखित, कष्टमें पड़ा हुआ।

विस्त-पु० [सं०] क्षय, नाश; चोर; राक्षस। वि० धोका, अल्प; दुःखी, व्यथित, जो ठोस न हो; सदीय।

विस्त-स्त्री० [सं०] वियोगिनी, विरहिणी; विषया।

विस्त-स्त्री० [सं०] गोजिह्वा, गोभी।

विस्त-पु० [सं०] अर्गला (?)।

विस्त-वि० [सं०] दंतहीन (हस्ती)।

विस्त-स्त्री० [सं०] एक तरहकी कौड़ी।

विस्त-पु० [सं०] व्यास उत्पन्न करनेवाली नरपरी धातु; काटना, ईसना।

विस्त-वि० [सं०] नागर; निपुण; पंडित; रमिक; रसज्ञ, जला हुआ; जठराग्निसे पका हुआ, पचा हुआ; नष्ट; घला हुआ; जो जला या पचा न हो; सुदूर; भद्रतापूर्ण। पु० चतुर या धूर्त आदमी; एक घास।

विस्त-पु० [सं०] जलती हुई लाश (बौ०)।

विस्त-स्त्री० [सं०] विद्वत्ता, पांडित्य; कुशलता; रसिकता।

विस्त-स्त्री० [सं०] चतुरतामें परपुरुषका अपनेमें अनु-रक्त करनेवाली नायिका।

विस्त-स्त्री० [सं०] एक तरहका अजोर्ण।

विस्त-स्त्री० [सं०] एक नेत्ररोग।

विस्त-वि० [सं०] वाक्पटु।

विस्त-वि० [सं०] दिया हुआ; बाँटा हुआ।

विस्त-पु० [सं०] विद्वान्; मेना; युद्ध; सन, सम्मामो; क्रय; यह।

विस्त-वि० [सं०] एक वैदिक ऋषि।

विस्त-वि० [सं०] काटने या खानेका इच्छुक।

विस्त-वि० [सं०] विद्यमान, उपस्थित, मौजूद। अ० मौजूदगीमें, सामने।

विस्त-पु० [सं०] कंकारी वृक्ष; फाड़ना, विदारण करना; दरार, चीर।

विस्त-पु० [सं०] फाड़ना, विदारण करना; एक रोग, विदधि।

विद्युद्वा*-अ० कि० फटना । स० कि० काटना ।
विद्युर्ध-पु० [सं०] आधुनिक बरार; एक राजा; एक ऋषि; मसुरका एक रोग; दौत हिलना । -**जा-जी०** जगत्स-पत्नी, कोपायुद्धा; दमयंती; शक्तिपत्नी । -**समवा-**-**सुख-**खी० दमयंती । -**राज-**पु० विदर्भका राजा, भीष्मक ।
विद्युर्ना-खी० [सं०] विदर्भका राजनगर, कुंभिननगर; एक नदी; मनु चाक्षुषकी पत्नी ।
विद्युर्नाधिपति-पु० [सं०] कुंभिनपति भीष्मकराज ।
विद्युर्मि-पु० [सं०] एक ऋषि ।
विद्युर्ध-वि० [सं०] फणहीन (सौंघ) ।
विद्युर्धना-खी० [सं०] ज्ञान, विवेक ।
विद्युल-पु० [सं०] विभाग, पार्थिव्य; टुकड़ा; फट्टा; बेंत; सोना; लाल रंगका सोना; अनारका छिलका; डलिया (बॉलकी); टहनी; मिठाई; पीठी; चना; भटारकी दाह ।
 वि० खिटा हुआ; फटा हुआ, बिना टुकड़ा, पन्धरीन ।
विद्युलस-पु० [म०] मलने, दधाने, दलनेकी क्रिया; टुकड़े-टुकड़े करना; दमन; फाटना; फटना ।
विद्युलना*-स० कि० दलित, नष्ट करना ।
विद्युला-खी० [स०] कृताविशेष, पिष्ट ।
विद्युलस-पु० [सं०] पकाई हुई दाह; चना, भरहर आदि दो दलोंवाले अन्न ।
विदलित-वि० [सं०] दला, रौंदा, मला हुआ; टुकड़े-टुकड़े किया हुआ; फाटा हुआ, फैला हुआ, खिटा हुआ ।
विद्युष-वि० [सं०] (कपडा) जिसमें किनारी न हो ।
विद्युल-वि० [म०] क्षीण ।
विद्यु-खी० [सं०] ज्ञान, समझ; विद्या; [अ० 'विदाय'] 'विदाई, खलसती; दुलहिनकी मैकेसे विदाई । -**ई-**खी० विद्या होनेकी क्रिया; विद्या होनेकी अनुमति; जानेके समय दान जानेवाली रकम ।
विदान-पु० [सं०] विभक्त करना; टुकड़े-टुकड़े करनेकी क्रिया ।
विदाय-पु० [सं०] विभाग; वितरण; प्रस्थान; जानेकी अनुमति; विदा; विसर्जन; दान ।
विदायी(विन्)-पु० [सं०] ठीक-ठीक चलाने, रखनेवाला, निवामक; दान करनेवाला ।
विदार-पु० [सं०] युद्ध; प्लावन, जलाशयके पानीका ऊपरसे बहना; दे० 'विदारण' ।
विदारक-पु० [सं०] बाराके बीच स्थित वृक्ष या चट्टान; सखी नदीमें पानीके लिए खोदा हुआ गड्ढा; नौसादर ।
 वि० फाटने, विदारण करनेवाला ।
विदारण-पु० [सं०] टुकड़े करना, फाटना; प्रवाहके बीच स्थित वृक्ष या चट्टान जिससे नाव बौंधी जाय; रौंदना; युद्ध, लड़ाई; मुँह खोलना; जंगल आदि काटकर साफ करना; कट देना; बध करना; दूसरोंका पाप घोषित करना (जै०); कनेर; खपरिया; नौसादर ।
विदारणा-खी० [सं०] युद्ध, लड़ाई ।
विदारना*-स० कि० फाटना ।
विदारि-खी० [मं०] शालपर्णी । -**गंधा-**खी० दे० 'विदारि' ।
विदारिका-खी० [सं०] एक डाकिनी; ककवी तूँबी; विदारी-

कंद; गंधारी; शालपर्णी; बंधामूलकी सृजन ।
विदारिणी-खी० [सं०] काश्मरी ।
विदारित-वि० [सं०] फाटा हुआ ।
विदारी-खी० [सं०] शाक्यर्णो; भूमिकुम्भांड; एक कंठ-रोग; बगल वा पेटकी सृजन; कानका एक रोग; क्षीर-काकोली; बाराहीकंद; एक गोपधिया । -**कंद-**पु० भूमि-कुम्भांड । -**गंधा-**-**गंधिका-**खी० शालपर्णी ।
विदारी(विन्)-वि० [सं०] फाटनेवाला; काटनेवाला ।
विदार-पु० [सं०] विरगिट, कृकलास ।
विदाह-पु० [सं०] पिपके प्रकोपसे उत्पन्न जलन; हाथ-पैरकी जलन; औंतेमें खाद्य पदार्थोंसे अम्ल बननेकी क्रिया ।
विदाहक-पु० [सं०] विदाह करनेवाला; कास्टिक पोषाक ।
विदाही(विन्)-वि० [सं०] जलन उत्पन्न करनेवाला, दाहजनक; गंधिया; चरपरा । पु० दाह उत्पन्न करनेवाला द्रव्य ।
विदिक्(श्)-खी० [सं०] दो दिशाओंके बीचका कोना ।
 वि० विभिन्न दिशाओंमें गमन करनेवाला । -**(क्)** चंग-पु० हरिद्रांग पक्षी ।
विदित-पु० [सं०] कवि, विद्वान्; ऋषि; सृजना; प्रसिद्धि; लाभ, प्राप्ति । वि० प्रसिद्ध; जाना हुआ, अवगत; सूचित किया हुआ; स्वीकृत; जिसके लिए वचन दिया गया हो ।
विदिता-खी० [सं०] एक देवी (जै०) ।
विदिथ-पु० [सं०] विद्वान्; योगी ।
विदिष-खी० दे० 'विदिक' ।
विदिषा-खी० [सं०] दृषाणं जिलेकी राजधानी, वर्तमान भेल्ला; दिशाहीनता; एक नदी; दे० 'विदिक्' ।
विदिसा*-खी० दे० 'विदिक्' ।
विदीक्षित-वि० [सं०] जिसमें किरणें न हों, रहिमहीन ।
विदीपक-पु० [सं०] दीपक, दीया, 'लेप' ।
विदीपित-वि० [सं०] प्रकाशित; प्रज्वलित; वृषित ।
विदीप्त-वि० [मं०] चमकीला । -**तेजा(जस्)-**वि० कालिसाव् ।
विदीर्घ-वि० [सं०] फाटा हुआ; टूटा हुआ; मार डाला हुआ; निहत; फैला हुआ; खुला हुआ । -**मुख-**वि० जिसका मुख खुला हो । -**हृदय-**वि० जिसका दिल फट गया हो, मर्माहत ।
विदु-पु० [सं०] हाथीके कुंभोंके बीचका खात; जलहस्ती; गोपिष्ठका एक देवता । वि० उद्दिमान्, चतुर ।
विदुचम-पु० [सं०] सब कुछ जाननेवाला; विष्णु ।
विदुर-वि० [सं०] चतुर; जानकार; कुशल; नागर; पीर । पु० चतुर व्यक्ति; विद्वान्; बहयुक्तकारी; धृतराष्ट्र और पांडुके भाई जो ब्यास द्वारा भविष्यकी दासीके पुत्र थे ।
विदुल-पु० [सं०] बेंत; बंधुवैतस, जलवैत; एक गंधद्रव्य, गणरस ।
विदुला-खी० [सं०] भूहर, सातला; विद्वद्विर; एक महाभारतकी स्त्री ।
विदुष-पु० पंडित, विद्वान् ।
विदुषी-खी० [सं०] पंडिता स्त्री ।
विदुष्कृत-वि० [सं०] पापरहित ।
विदु-पु० [सं०] दे० 'विदु' ।

विद्व-वि० [सं०] पीठित, कष्टग्रस्त ।

विद्व-वि० [सं०] सुदूरवर्ती । पु० दूरस्थ देश, प्रदेश; एक देश; एक पहाड़ जहाँ वैद्वय मणिकी प्राप्ति होती है; कुक्का एक पुत्र । -ग-वि० दूरतक फैला हुआ; दूर जानेवाला । -ज-रक्ष-पु० विद्वर पर्वतसे प्राप्त मणि । -जात-वि० दूरवर्ती स्थानमें उत्पन्न । -भूमि-क्षी० विद्वर देश । -विगत-वि० अत्यन्त । -संभव-वि० दूरतक सुनाई देनेवाला ।

विद्वरथ-पु० [सं०] एक मुनि; बारहवें मनुका एक पुत्र; शृणिका एक बंशज; कुक्का एक पुत्र ।

विद्वरात्रि-पु० [सं०] विद्वर नामक पहाड़ ।

विद्वरित-पु० [सं०] दूर किया हुआ ।

विद्वरोन्नावित-पु० [सं०] वैद्वय मणि ।

विद्वषक-पु० [सं०] कामी, कामुक व्यक्ति; नकल आदि करके हँसानेवाला (पुराने समयमें राजाओंके मनोरंजनके लिए ऐसे व्यक्तिकी नियुक्ति होती थी); चार नायकोंमेंसे एक; परनिंदा करनेवाला, लक्ष । वि० दूषित या गदा करनेवाला, अष्ट करनेवाला; मजाक करनेवाला; परनिंदक ।

विद्वषण-पु० [सं०] गदा, अष्ट-करना; निंदा करना; व्यंग्य करना; दोषारीप करना ।

विद्वषणा-स० [सं०] सताना, कष्ट देना; दोषी ठहराना । अ० [सं०] दुःखी होना ।

विद्वष्टि-वि० [सं०] गंदा किया हुआ; अपमानित, काष्ठित ।

विद्वक्ष-वि० [सं०] जघा ।

विद्वक्षि-क्षी० [सं०] क्षोपणीका ओष्ठ ।

विद्वेष-पु० [सं०] एक ऋषि, दे० 'विदेह' ।

विद्वेष-वि० [सं०] जो देनेसे योग्य हो ।

विद्वेष-वि० [सं०] देहरहित; देवताओंका विरोधी (राक्षस); देवताओंके बिना किया जानेवाला (यज्ञादि) । पु० राक्षस; यज्ञ; पासेका सेक ।

विद्वेषन-वि० [सं०] पासा खेलना ।

विद्वेष-पु० [सं०] दूसरा देश, परदेश, देशांतर । -ग-वि० देशांतर गमन करनेवाला । -गत-वि० प्रवसित, परदेश गया हुआ । -गमन-पु० परदेश जाना । -ज-वि० दूसरे देशमें उत्पन्न । -निरत-वि० विदेश-भ्रमणमें आमंद माननेवाला । -वास-पु० दूसरे देशमें रहना । -वासी(सिन्धु)-वि० परदेशमें रहनेवाला । -रत्न-वि० परदेशमें रहने या घटित होनेवाला ।

विद्वेषी-वि० दे० 'विदेशीय' । पु० परदेशका रहनेवाला ।

विद्वेषीय-वि० [सं०] परदेशी, दूसरे देशका ।

विदेह-वि० [सं०] शरीररहित, अचेत, बेसुध; मृत, विरामी; दैहिक चिन्ताओंसे रहित; जिसकी उत्पत्ति माता-पितासे न हो (देवता आदि) । पु० राजा जनक; निमि; मिथिला; मिथिलाके निवासी; शरीररहित व्यक्ति । -कुमारी-जा-क्षी० सीता । -कूट-पु० एक पर्वत । -कैवल्य-पु० मृत्युके बाद मिलनेवाला मोक्ष, निर्वाण । -नगर-पु० जनकजी राजधानी, जनकपुर ।

विदेहक-पु० [सं०] एक पर्वत; एक वर्ष ।

विदेहत्व-पु० [सं०] शरीर न होनेका भाव । -गत-

वि० मृत ।

विदेहा-क्षी० [सं०] मिथिला ।

विदेही(विन्)-पु० [सं०] गङ्गा ।

विद्वेष-पु० [सं०] पाप; अपराध । वि० निर्दोष ।

विद्वेष-पु० [सं०] अधिक दुष्टता; किसी चीजसे अत्यधिक लाम उठाना; शोषण ।

विद्व-वि० [सं०] जानकार; पंडित, विद्वान् (समासांतमें) । पु० बुध ग्रह; तिलका पीथा; विद्वान् व्यक्ति । क्षी० समझ; ज्ञान; जानकारी ।

विद्व-वि० [सं०] छेदा हुआ; आहत; बाधित; विदीर्ण; चालित; तुल्य; आवद्ध, मिला हुआ; फैला हुआ; चलाया हुआ । पु० जखम । -कर्ण-वि० जिसके कान छिदे हैं । पु० विकर्णी । -कर्णा-कर्णिका-कर्णी-क्षी० वृक्ष-विशेष, पाटा । -क्षण-पु० कौटा चुनमें, उसकी नोक टूटनेसे होनेवाला काव ।

विद्वक-पु० [सं०] मिट्टी खोदनेका एक पुराना औजार ।

विद्व-क्षी० [सं०] एक छुद्र रोग जिसमें फुंसियाँ निकलती हैं ।

विद्वानुब-पु० [सं०] एक विशेष लभार्थका धनुष ।

विद्वि-क्षी० [सं०] छेदने आदिकी क्रिया ।

विद्य-पु० [सं०] प्राप्ति, लाभ ।

विद्यमान-वि० [सं०] उपस्थित, वर्तमान, यथाथ । -भस्ति-वि० क्षुत्तुर ।

विद्यमानता-क्षी०, विद्यमानत्व-पु० [सं०] उपस्थिति, मौजूदगी ।

विद्या-क्षी० [सं०] ज्ञान-विज्ञान, किसी विषयका विद्वेष ज्ञान; हुना; मन्त्र; जादू; गनिवाही; छोटी घंटी, एक वृत्त जादूकी एक गोली जिसे मुखमें रखनेपर उबनेकी शक्ति प्राप्त हो जाती है । -कर-वि० ज्ञानकी प्राप्ति करानेवाला । -कर्म(न)-पु० शाखादिका अध्ययन । -गुरु-पु० शिक्षक, पढ़ानेवाला । -गुरु-पु० विद्या पढ़ानेका स्थान, विद्यालय । -क्षण-सुनु-वि० विद्वान्, विद्वत्ताके लिए प्रसिद्ध । -सीध-पु० एक प्राचीन तीर्थ; शिव । -वृक्ष-पु० भोजपत्रका पेड़ । -दाता(न)-पु० पढ़ानेवाला, शिक्षक । -दान-पु० विद्या पढ़ाना; ग्रंथ, पुस्तक आदि देना । -दायाद-पु० विद्याका उत्तराधिकारी । -देवी-क्षी० सरस्वती; एक जिन देवी । -धन-पु० विद्या द्वारा अर्जित धन; विद्यारूपी धन । -घट-वि० विद्यावाला, जादूगर । पु० एक देवघोष (गंधर्व, किन्नर आदि); एक रतिबंध; एक वृत्त; एक ताल, एक यंत्र । -घरी-क्षी० विद्याघर जातिकी क्षी । -घारी(विन्)-पु० एक वर्णवृत्त । -ध-पु० विद्याघर । -पति-पु० राजदरबारका सबसे बड़ा विद्वान्; एक प्रसिद्ध मैथिलिक । -पीठ-पु० शिक्षार्थ; बड़ा विद्यालय । -बल-पु० जादूकी शक्ति; विद्या, शास्त्रज्ञानका बल । -भाक्(ज्)-वि० विद्वान् । -मंडलक-पु० पुस्तकालय । -मंदिर-पु० विद्यालय । -मठ-पु० महाविद्यालय; साधुओंका विद्यालय । -मणि-पु० विद्याघर; छोटी घंटी । -मद-पु० विद्याका समद । -महेकर-पु० शिव । -मार्ग-पु० मोक्षदायक मार्ग । -राज-पु० विष्णु ।

-राशि-पु० शिव । -लब्ध-वि० विद्याकी सहायतासे प्राप्त । -लाभ-पु० विद्याकी प्राप्ति । -वैश-पु० किसी विद्याके अध्यापकोंकी सूची । -बधू-स्त्री० विद्याकी देवी, सरस्वती । -विक्रय-पु० धन लेकर पढ़ाना । -विद्-वि० विद्वान् । -विरुद्ध-वि० जिसका विज्ञानसे मेल न खाता हो । -विशिष्ट-वि० विद्वत्ताके लिए प्रसिद्ध । -विहीन-वि० मूर्ख । -वृद्ध-वि० विद्या या ज्ञानमें बढ़ा हुआ । -वेदम(त्र),-सप्त(त्र)-पु० विद्यालय । -व्यवसाय,-व्यसन-पु० विद्या प्राप्त करनेकी क्रिया, अध्ययन । -व्रत-पु० गुरुके पास रहकर विद्योपाजन करना । -स्थान-पु० ज्ञानका एक अंग । -स्नात,-स्नातक-पु० वह जो वेदादिका अध्ययन पूरा कर चुका हो । -हीन-वि० अशिक्षित, मूर्ख । मु० -चलना-चतुराई, करतब (राजीमर्गीका), भूर्तताका सफल होना । -झूठी पढ़ना-चतुराई, करतब (राजीमर्गी), भूर्तताका नाकामयाब होना । -फलना-विद्याका फलीभूत, सफल होना । -लगना-दे० 'विद्या चलना' । -कौटाना-सिखायी हुई विद्याको मजबूतसे बापम करना ।

विद्याकर-पु० [सं०] विद्याका आकर, विद्वान् व्यक्ति ।
विद्यागम-पु० [सं०] विद्या, ज्ञानकी प्राप्ति ।
विद्याधरेंद्र-पु० [सं०] जांबवान् ।
विद्याधार-पु० [सं०] बहुत बड़ा विद्वान् ।
विद्याधिदेवता-स्त्री० [मं०] विद्याकी अधिष्ठात्री देवी, मारवती ।

विद्याधिप-पु० [सं०] शिव; विद्वान् ।
विद्याधिराज-पु० [सं०] श्रेष्ठ विद्वान्; पूर्ण पटित ।
विद्यानुपालन-स्त्री० [मं०] अध्ययन आदिकी प्रोत्साहन देना; अध्ययन ।

विद्यानुसेवन-पु० [सं०] विद्याध्ययन ।
विद्याभिमान-पु० [सं०] विद्वान् होनेकी मनोवृत्ति ।
विद्याभ्यास-पु० [मं०] विद्याध्ययन ।
विद्यारंभ-पु० [सं०] विद्याकी पढ़ाई आरंभ करनेका सम्कार ।

विद्यार्जन-पु० [मं०] विद्याकी प्राप्ति; ज्ञान या शिक्षा द्वारा कुछ प्राप्त करना ।

विद्यार्जित-वि० [सं०] विद्याके द्वारा प्राप्त ।
विद्यार्थ-वि० [सं०] विद्याप्राप्तिका इच्छुक । पु० विद्या प्राप्त करनेकी इच्छा ।

विद्यार्थी(यिन्)-पु० [सं०] विद्या पढ़नेवाला, छात्र, शिष्य । वि० विद्याका इच्छुक ।

विद्यालय-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ अध्ययन किया जाता है; विद्यागृह ।

विद्यावान्(वत्)-वि० [सं०] विद्वान् ।
विद्यासागर, ईश्वरचंद्र-पु० प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और समाजसुधारक, आधुनिक बंगला गणके जनक (इस्वी सन् १८२०-१८९१) ।

विद्यु-स्त्री० बिजली ।
विद्युत्कालक-वि० [सं०] (वह पदार्थ) जिसके एक सिरेसे स्पर्श होते ही विद्युत् दूसरे सिरेतक चली जाय (ताँबा आदि) ।

विद्युच्छिखा-स्त्री० [मं०] विपैली जड़वाला एक पौधा; एक राक्षसी ।

विद्युज्ज्वाल-पु० [सं०] एक नाग ।
विद्युज्ज्वाला-स्त्री० [मं०] कलिकारी पौधा; बिजलीकी कौध, तक्षितप्रभा ।

विद्युज्जिह्व-पु० [सं०] एक राक्षस, शूर्पणखाका पति; एक यक्ष । वि० बिजली जैसी जीमवाला ।

विद्युज्जिह्वा-स्त्री० [मं०] स्कंदकी एक मातृका ।

विद्युता-स्त्री० [सं०] एक विशेष शक्ति; बिजली; एक अम्बरा ।

विद्युत्ताल-पु० [सं०] स्कंदका एक अनुचर ।

विद्युत्-स्त्री० [सं०] बिजली; वज्र; ऊषा; एक तरहकी उल्का; एक वृक्ष; एक बीणा; प्रजापति ऋद्धिपुत्रकी चार कन्याएँ । पु० एक विशेष समाधि; एक अम्बरा; एक राक्षस । वि० बहुत चमकीला; निम्नम । -कंप-पु० बिजलीका कौधना । -केश-केशी(यिन्)-पु० एक राक्षस । -पराक-पु० प्रलयके सात मेघोंमेंसे एक । -पर्णा-स्त्री० एक अम्बरा । -पात,-प्रपतन-पु० बिजलीका गरना, वज्रपात । -पुंज-पु० एक विद्याधर । -प्रभ-पु० एक कृषि; एक दैत्य । वि० बिजली जैसा चमकनेवाला । -प्रभा-स्त्री० दैत्यराज शक्तिकी पौत्री; अम्बराओंका एक गण; एक नागकन्या । -शिव-पु० कोसा ।

विद्यत्य-वि० [मं०] बिजलीमें रहने या उसमें उत्पन्न होनेवाला ।
विद्यत्स्वान्(वत्)-वि० [मं०] बिजलीवाला । पु० शतल; एक पहाड़ ।

विद्युद्भूष-पु० [मं०] एक दैत्य ।

विद्युद्भूषेय-पु० [मं०] बिजलीकी कौध ।

विद्युद्गोरी-स्त्री० [मं०] शक्तिकी एक मूर्ति ।

विद्युद्गम(त्र)-पु० [सं०] बिजलीकी चमक या उसकी रेखा ।

विद्युद्द्योत-पु० [सं०] बिजलीकी चमक ।

विद्युद्दम्बज-पु० [सं०] एक अम्बर, प्रलयके सात मेघोंमेंसे एक, विद्युत्पताक ।

विद्युद्दम्ब-वि० [सं०] रथके रूपमें बिजलीका प्रयोग करनेवाला ।

विद्युद्दर्पणा-स्त्री० [सं०] एक अम्बरा ।

विद्युद्दल्ली-स्त्री० [सं०] बिजलीकी कौध ।

विद्युद्भाषक-पु० [सं०] बिजलीकी शक्ति, गति आदिकी दिशा मालूम करनेका यंत्र ।

विद्युद्भाल-पु० [सं०] एक बनार (रा०) ।

विद्युद्भाला-स्त्री० [सं०] बिजलीका समूह; एक छद्म; एक पक्षी ।

विद्युद्भाली(यिन्)-वि० [सं०] विद्युत्की माला धारण करनेवाला । पु० एक देवता; एक विद्याधर; एक अम्बर; एक छद्म ।

विद्युद्भुज-पु० [सं०] एक उपग्रह ।

विद्युद्भुता-स्त्री० [सं०] बिजलीकी देवीमेढ़ी रेखा ।

विद्युच्छेखा-स्त्री० [सं०] बिजलीकी लीक; एक वर्णवृक्ष ।

विद्युच्छोचन-पु० [सं०] एक तरहकी समाधि ।

विशुद्धोचना-श्री० [सं०] एक नागकन्या ।

विद्योद-पु० [सं०] शिव ।

विद्योदर-पु० [सं०] एक उन्नत योनि ।

विद्योत-पु० [सं०] विजयोक्षी चमक । वि० चमकनेवाला ।

विद्योतक, विद्योती(तिन्)-वि० [सं०] प्रकाशमान करनेवाला ।

विद्योतन-पु० [सं०] विजली । वि० चमकानेवाला ।

विद्योता-श्री० [सं०] एक अस्तर ।

विद्योपयोग, विद्योपार्जन-पु० [सं०] विद्या प्राप्त करना, ज्ञानार्जन, अध्ययन ।

विद्योपार्जित-वि० [सं०] जो विद्याके सहारे प्राप्त हुआ हो ।

विद्व-पु० [सं०] फौक; छिद्र; गह्वा; छेद करना; फाटना ।

विद्वध-वि० [सं०] हट-पुष्ट, मोटा-ताजा; पक्का, मजबूत, बंद; सज्जद, समुपेत; नग्न (?) । पु० विद्वधि ।

विद्वधि-श्री० [सं०] फोफा, विशेषकर अदरक । -प्र, -नाशन-पु० सज्जन, शोभाजन ।

विद्वधिका-श्री० [सं०] प्रमेहजन्य व्रण ।

विद्वध-पु० [सं०] बहना; पिघलना; भागना, पलायन; आतक, घबराहट; दुःख; भय; बुद्धि; निद्रा, शिकायत ।

विद्वधण-पु० [सं०] भागना, पलायन ।

विद्वान्-वि० [सं०] सोसेसे जगाया हुआ, जाग्रत अवस्था में लाया हुआ ।

विद्वध-पु० [सं०] दे० 'विद्वध' ।

विद्वधक-वि० [सं०] भगानेवाला; पिघलानेवाला ।

विद्वधण-वि० [सं०] भगानेवाला; घबराहटमें डालनेवाला । पु० भगाना; पराभूत करना; पलायन; पिघलाना; एक दानव ।

विद्वधिणी-श्री० [सं०] कोमाटोंटी ।

विद्वधित-वि० [सं०] पराभूत किया हुआ; भगाया हुआ; तितर-वितर किया हुआ; पिघलाया हुआ ।

विद्वधी(विन्)-वि० [सं०] भागनेवाला; भगानेवाला; पिघलनेवाला ।

विद्वध-वि० [सं०] भगाने योग्य, जो भगाया जाय ।

विद्वत-वि० [सं०] गला हुआ; पिघला हुआ; भागा हुआ; उरा हुआ; घबराया हुआ; नष्ट । पु० युद्धका एक ढग ।

विद्वत्ति-श्री० [सं०] गलना; पिघलना; भागना, पलायन; नष्ट होना ।

विद्वम-पु० [सं०] प्रवाल, मूँगा; मुकाफल, रत्नस्रज; नया पत्ता, कोपल; एक पहाड़ । वि० वृक्षरहित । -च्छवि-पु० शिव । -वृद्ध-पु० रत्नवृक्षकी शाखा । -कल-पु० एक सुगन्धित मीठ, कुंदुर । -लता-श्री० रत्नवृक्षकी शाखा; नली नामक गंधद्रव्य । -लतिका-श्री० नलिका नामक गंधद्रव्य ।

विद्वोह-पु० [सं०] हानि पहुँचानेके विचारसे किया हुआ कार्य; किसी राज्य या सरकारको उलटनेके लिय किया जानेवाला बल्लभ, उपद्रव, क्रांति ।

विद्वोही(विन्)-वि० [सं०] विद्वोह, द्वेष, वैर करनेवाला; राज्यका अनाष्ट करनेवाला, क्रांतिकारी ।

विद्वजन-पु० [सं०] विद्वान्, चतुर आदमी; कवि ।

विद्वत्कल्प-वि० [सं०] जो अधिक पढ़ा न हो ।

विद्वत्तम-वि० [सं०] बहुत बड़ा विद्वान् । पु० शिव ।

विद्वत्ता-श्री०, विद्वत्त्व-पु० [सं०] पांडित्य, बुद्धि, ज्ञान ।

विद्वत्सीय, विद्वत्सेय-वि० [सं०] दे० 'विद्वत्कल्प' ।

विद्वान्(द्रस्)-वि० [सं०] विद्याविशिष्ट; अत्यधिक शिक्षित, पंडित; तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञ । पु० पंडित, चतुर न्यायिक ।

विद्विद(व), विद्विष-वि० [सं०] द्वेष, शत्रुता रखनेवाला । पु० शत्रु ।

विद्विषाण-वि० [सं०] द्वेष करनेवाला ।

विद्विष्ट-वि० [सं०] जिसके प्रति द्वेष किया गया हो ।

विद्विष्टता-श्री० [सं०] विद्विष्ट होनेका भाव, द्वेष ।

विद्विष्टि-श्री० [सं०] विद्वेष, वैर ।

विद्वेष-पु० [सं०] शत्रुता, वैर; घृणा ।

विद्वेषक-वि०, पु० [सं०] विद्वेष करनेवाला, शत्रुता करनेवाला ।

विद्वेषण-पु० [सं०] वैर; दो जनोंमें वैर करा देनेकी क्रिया; शत्रु; घृणा करनेवाला ।

विद्वेषणी-श्री० [सं०] कोपना श्री; द्वेष करनेवाली श्री ।

विद्वेषिता-श्री० [सं०] शत्रुता, वैर ।

विद्वेषी(विन्), विद्वेष्टा(ष्ट)-वि० [सं०] विद्वेष करनेवाला । पु० शत्रु ।

विद्वेष-वि० [सं०] घृणा, द्वेष, वैरके योग्य । पु० ककोल ।

विधंस*-वि० विध्वस्त, नष्ट । पु० विध्वंस, नाश ।

विधंसना*-म० क्रि० विध्वस्त करना, नष्ट करना ।

विध-पु० [सं०] वेधना; प्रकार, किम्ब; हाथीना चार तरकीबा; कदिक; * ब्रह्मा ।

विधन-वि० [सं०] धनहीन, दरिद्र ।

विधनता-श्री० [सं०] गरीबी ।

विधना-श्री० होनी, अष्ट । * पु० दैव, ब्रह्मा । स० क्रि० फँसाना; वेधना; प्राप्त करना । अ० क्रि० वेधा जाना; फँसाया जाना ।

विधनुष्क, विधन्वा(म्बन्)-वि० [सं०] जिसके पाम धनुष् न हो ।

विधमन-पु० [सं०] धौकना, हवा पहुँचाकर सुलगाना; उल्लाना; उठाना, नष्ट करना । वि० हवा करके उड़ाने या बुझानेवाला ।

विधर*-अ० उधर, उस तरफ ।

विधरण-पु० [सं०] रोकना, पकड़ना । वि० रोकने, पकड़नेवाला ।

विधत्ता(तृ)-पु० [सं०] प्रवधक; सँभालनेवाला ।

विधर्म-वि० [सं०] बुरा, अन्याय; निरुण । पु० अन्याय; परधर्म ।

विधर्मक, विधर्मिक-वि० [सं०] धर्म-विरुद्ध आचरण करनेवाला; परधर्म माननेवाला ।

विधर्मा(मन्)-वि० [सं०] अन्याय, अनुचित कर्म करनेवाला ।

विधर्मा(मिन्)-वि० [सं०] स्वधर्मके विरुद्ध आचरण करनेवाला, धर्मव्रद्ध; परधर्मका अनुयायी; विभिन्न प्रकारका ।

विधवन-पु० [सं०] हिलाना; कँपाना; कँपन ।

विषया-श्री० [सं०] यह श्री जिसके पतिकी मृत्यु हो गयी हो, मृतमर्यादा, वेवा, रौंछ । -**धामी(मिह)-वि०** विषयासे यौन संबंध रखनेवाला । -**विवाह-पु०** विषयासे विवाह करना ।

विधवापन-पु० वैभव्य, रेंकापा ।

विधवावेदन-पु० [सं०] विधवासे विवाह करना ।

विधवाभ्रम-पु० [सं०] यह स्थान जहाँ विधवाओंके भरण-पोषण आदिका प्रबंध हो ।

विधायक-प० [सं०] कंपनी, बिरुना ।

विधायक-प्र० [सं०] मोम ।

विधायिका-सं. क्रि० विध्वस्त करना, बरबाद करना ।

विधा-स्त्री० [सं०] विभाग, हिस्सा; प्रकार, तरीका; शाखी
आदिका चारा; क्रयि; वेतन; उच्चारण; वेधन कर्म ।

विधा(धस)-प० [सं०] सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।

विधास्य-वि० [सं०] निर्धारित करने योग्य; प्राप्त करने योग्य; परा करने योग्य ।

विधाता-स्त्री० [मं०] मदिरा ।

विधाता (तु) - वि० [मं०] व्यवस्था करनेवाला; विभाग करनेवाला। पु० विभाग, व्यवस्था करनेवाला; बनाने-वाला; देनेवाला; ब्रह्मा; प्रारम्भ; विष्णु; शिव; कामदेव; विश्वकर्मा। - (तु) अ-पु० नारद।

विधायिका-वि० स्त्री० [सं०] विधायिका, विधान करने-
वाली ।

विधात्रायु(स्) - पु० [सं०] सूर्यप्रभा; सूर्यमुखी फूल ।

विधात्री—जी० [सं०] रचने, विधान करनेवाली; जननी;
व्यवस्था करनेवाली; पीपक, पिप्पली ।

विधान-पु० [सं०] कार्यका आयोजन; प्रवच, व्यवस्था;
नियन्त्रण; आदेश; काम करनेका ढंग, प्रणाली; निर्माण;
साधन; संपादन; हाथीका चारा; शत्रुतापूर्ण आचरण;
भोजना, प्रेरण; रस्म; प्राप्ति; प्रयोग; धन-संपत्ति; कानून;
उपमार्ग वा प्रत्यक्षका योग; साव-ढंड । -श-पु० पंक्ति;
शिक्षक, आचार्य । -शु-वि० विधान जाननेवाला ।

पु० शिक्षक, आचार्य । -परिवर्त्त-**की०** वह परिवर्त्त, समा जो भव्यस्थाको सुचारु रूपसे चलानेके लिए कानून बनाये । -**सुरक्ष-वि०** विधानके अनुकूल । -**प्रस-पु०** सूर्यका प्रतविशेष जो माघ-सुदी सप्तमीसे लेकर वीषतक चलता है । -**सप्तमी-**की०**** माघ-शुक्ल सप्तमी ।

विधानक-वि० [सं०] व्यवस्था करनेवाला; विधान जानने-
वाला । पु० विशेष आदेश (शासन); कट्ट, म्यथा ।

विधायिका-की० [स०] ब्रह्मती ।

विधानी(निम्न)-वि० [सं०] विधानसभा; विधिवन् कार्य करनेवाला ।

विद्यालय-वि० [सं०] कार्य करनेवाला; बनानेवाला;
 व्यवस्था देनेवाला; रचनात्मक; कानून बनानेवाला (आ०);
 सुपट्ट करनेवाला । प० संस्थापक, निर्माता ।

विधायी (विध्)—वि० [सं०] व्यवस्था देनेवाला; बनाने, पूरा करनेवाला; सुपुर्न करनेवाला । पु० संस्थापक, निर्माता ।

विधारण-पु० [सं०] रोकना; बहान करना; सँभाळना ।
वि० प्रथक् करनेवाला ।

विचार—पु० एक कता जो उपद्रव, क्षय आदि रोगोंमें बहुत गुणकारी होती है ।

विधारी(रिज)-वि० [सं०] रोक-धाम करनेवाला ।

विद्यालय-पु० [सं०] इथर-उधर दौडना ।

विद्यावित्त-वि० [सं०] विभिन्न विद्याओंमें पढायित, तितर-
वितर ।

विशाल-पु० [सं०] कंपनी ।

विधि-ला० [सं०] कार्य करनेका ढंग; सगति, मेळ; प्रयोजन। शास्त्रसम्मत व्यवस्था; धर्मग्रंथ, शास्त्र द्वारा निश्चित कर्तव्य। निर्देश; क्रियाका वह रूप जिसमें किसीको काम करनेका आदेश किया जाता है (आ०); एक अर्थालंकार जिसमें क्रिया विधिका विधान होता है। कार्य; आशय; उद्योग। एक देवी; वास्तु-ढाङ्ग, आचार-व्यवहार। पु० सृष्टिको रचना करनेवाला, मङ्गात; विष्णु; जम्भि; समय; हाथी।

आदिका चारा; पूजा, अभ्यर्थना करनेवाला। -कृ-
कृ-वि० हुक्म बजा जानेवाला। पु० सेवक। -ज्ञ-पु०
नियमोन्मूलन करनेवाला। -ज्ञ-वि० विधि-विधान

जाननेवाळा । -वशाक, -वशा (शिक्ष), -वशाक-पुं०
यक्षमें होता आदिके काबोपर नजर रखनेवाळा । -दृष्ट-
वि० विधानादिष्ट । -वैद्य-पुं० नियममित्रता । -निषेध-

पुं० कोई काम करने वा न करनेका शास्त्राय निर्देश ।
-पाठ-पुं० मृदंगके चार वर्णोंमेंसे एक । -पर्षागत-वि०
भाग्यसे प्राप्त । -पुत्र-पुं० ब्रह्माके पुत्र नाश्वर । -पुर-

पुं० मङ्गलानां । -पूर्वक, -वत्-अ० नियमानुसार ।
-प्रयोग-पुं० नियमका प्रयोग । -बोधित-वि० शास्त्र
विहित । -बह्व-पुं० विधिपूर्वक किया हुआ यह । -बोग

-पु० नियम-पालन। भाग्यका प्रभाव । -राज्ञी-क्षी०
[हि०] दे० 'विधिवत्' । -लोक-पु० ब्रह्मलोक, सत्य-
लोक । -कोप-पु० नियमोत्पन्न । -वधू-क्षी० ब्रह्माक्षी

पत्नी, सरस्वती ।-वक्ष्यात्-भ० देवयोगसे;

-धाहज-पु० हंस । -नि

कूलता । -विहित-वि० नियम या शास्त्रक

निषेध । -हीन-वि० अनियमित, अविविक्त । मु०-
बैठना-मेक खाना; इच्छानुकूल कार्य होना ।

विधित्समान-वि० [स०] जो करने या देनेको इच्छा रखता हो; स्वार्थी ।

विधित्वा-खी० [सं०] करनेकी इच्छा, मतलब, प्रयोजन ।
विधित्सित-वि० [सं०] जिसे करनेकी इच्छा की गयी
हो । प० नीयत, अभिप्राय ।

विधिवत्-वि० [सं०] जो करना चाहता हो ।

विभ्रंतः-प्र० दे० 'विभ्रंत' ।

विष्णु-पु० [सं०] चंद्रमाको कण्ट देनेवाला, राहु ।
 विष्णु-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर; मन्त्रा; विष्णु; शिव; एक ।
 राक्षस; यन्त्र; जलस्नान; वायु; एक प्रायश्चित्त; समय ।

-कृत-पु० एक ताल (संगीत) । -क्षय-पु० चद्रमाका

'विभुसुखी'। -मन्त्रक-पु० चंद्रमन्त्रक। -अभि-पु० चंद्रकांत मणि। -मुखी-बन्धी-खी० सुंदरी खी, चंद्रमाके समान मुखवाली खी।

विभुत-वि० [सं०] दे० 'विभूत'। -बन्ध-वि० जिसने अपने पंख हटाये हों। -बंधन-वि० बंधनमुक्त। -मात्स्य-वि० जो पार्थिव पदार्थोंका परित्याग कर नुका हो।

विभुति-खी० [सं०] दे० 'विभूति'।

विभुर-वि० [सं०] दुःखी; विभोगी; नचित; अनाकम्पता; विरोधी; शत्रुतापूर्ण; धराया, उरा हुआ; विकल, व्याकुल; असमर्थ, असहाय, अशक्त; परित्यक्त; एकाकी; विमूढ; जिसमें घुरा न हो (गाड़ी)। पु० भय; कष्ट; विभोग; मोक्ष; शत्रु; एक राक्षस; वह पुत्र जिसकी खी मर गयी हो। -बर्धन-पु० किसी भयजनक पदार्थका दर्शन; बर्धाति।

विभुरा-खी० [सं०] कानके पासकी एक अग्नि; दहीकी कलसी।

विभुवन-पु० [सं०] कपन।

विभूत-वि० [सं०] कंपना या हिकाया हुआ; कोपता हुआ; अतिर; परित्यक्त; हटाया, दूर किया हुआ; निकाला हुआ। -कम्पन-वि० पापमुक्त। -कम्प-वि० जिसके बाह बिखरे या कहरा रहे हों। -मिद्ध-वि० जगाया हुआ, जाग्रत अवस्थामें लावा हुआ। -वेष्ट-वि० जिसके बग बड़ या हिल रहे हों।

विभूति-खी० [सं०] हिकना, कंपन।

विभुन-पु० [सं०] हिकाना; कंपन; अनिच्छा, विकर्षण।

वि० कंपनेवाला।

विभुनित-वि० [सं०] हिकाया हुआ; कपित; उत्पीडित; दुःख।

विभूय-वि० [सं०] धूमरहित (अग्नि)।

विभूय-वि० [सं०] धूत, मटमेला।

विभूय-वि० [सं०] प्रवण, धारण किया हुआ; अलग किया हुआ; रौका हुआ; स्थायणीकृत; समर्पित; संभाला हुआ; रक्षित। पु० आहाती अवमानना; अस्तौष।

विभूति-खी० [सं०] पार्थक्या; विभावन; व्यवस्था; नियमन; पृथक् रखना; सीमा; विभाजक रेखा।

विधेय-वि० [सं०] देने योग्य; प्राप्य; करने योग्य; स्थापना-के योग्य; प्रदर्शित करने योग्य; प्रवर्णित करने योग्य; अधीन, वशवर्ती; विनम्र; शासित करने योग्य; 'द्वारा पराजित'। पु० कर्तव्य कर्म; आवश्यकता; वाक्यका वह अंश जो किसी संबंधमें कहा गया हो (व्या०)। -ज-वि० कर्तव्य समझनेवाला। -वर्ती(वि०)-वि० दूसरेकी आज्ञामें रहनेवाला।

विधेयता-खी० [सं०] विधिके योग्य होना; कधीनचा।

विधेयत्व-पु० [सं०] उपयोगिता; निर्भरता; अभीनता।

विधेयत्वा(स्वर)-पु० [सं०] विष्णु। वि० जिसकी आत्मा संयत हो।

विधेयविशेष-पु० [सं०] वाक्य-रचनाका वह दोष जिसमें प्रधान वात दबी रह जाय।

विधीत-वि० [सं०] योकर साफ किया हुआ।

विध्यापन-वि० [सं०] छितारने या छितर-बितर करने-वाला।

विध्व-वि० [सं०] क्षिप्तने योग्य; जिसे नष्टना, छेदना हो।

विध्वस्त-पु० [सं०] नियमका उल्लंघन।

विध्वपाज-पु० [सं०] नियमका पावन।

विध्वलकार-पु०, विध्वलक्रिया-खी० [सं०] एक काम्या-लंकार जहाँ किसी सिद्ध बातका, विशेष अभिप्रायसे, पुनः विधान किया जाय।

विध्वामास-पु० [सं०] एक अवर्णकार जिसमें आरी अनिष्टकी संभावना प्रदर्शित करते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बातकी अनुमति दी जाय।

विध्वंस-पु० [सं०] विनाश; क्षति; वैमनस्य; घृणा; अना-दर, अपमान; वैर।

विध्वंसक-वि० [सं०] नाशक; लंपट। पु० विनाशक रण-पीत।

विध्वंसन-पु० [सं०] नाश, बरबाद करना; अपमान करना। वि० नाश करनेवाला; सत्तीव्र नष्ट करनेवाला।

विध्वंसित-वि० [सं०] टुकड़े-टुकड़े किया हुआ; नष्ट किया हुआ।

विध्वंसी(सिद्ध)-वि० [सं०] नष्ट होनेवाला; नाशक; (सत्तीव्रका) नाश करनेवाला; शत्रु, वैरी।

विध्वस्त-वि० [सं०] नष्ट; बरबाद किया हुआ; तितर-बितर किया हुआ, प्रसन्न (व्यो०)।

विनंसी(सिद्ध)-वि० [सं०] नष्ट, छप्त होनेवाला।

विनी-सर्व० विभक्ति लगनेपर बना हुआ 'वह'का बहु०।

● अ० विना, बगैर।

विनन-वि० [०] बिलकुल नगा।

विनटन-पु० [सं०] हस्ततः अमण करना।

विनत-वि० [सं०] झुका हुआ, नमित; विनम्र; शिष्ट; वक्र, हतोत्साह; शिख; लुप्त। पु० एक तरहकी चौटी; एक नंदर। -काय-वि० जिसका शरीर झुका हो, नमित।

विनतक-पु० [सं०] धक पर्वत।

विनतकी-खी० दे० 'विनती'।

विनता-खी० [सं०] कृकवाली कृकी; वक्ष प्रजापतिकी पुत्री, कश्यपकी पत्नी, वक्की माता; एक तरहकी टोकरि; प्रमेहजन्य पीठ या पेटका अर्धकर कोषा; व्याधि लानेवाली एक राक्षसी। -सनवा-खी० विनताकी पुत्री, सुमति। -बंधन-सुख-सुख-पु० गवक; अण।

विनति-खी० [सं०] झुकाव; नम्रता; विनती, प्रार्थना, वयन।

विनती-खी० प्रार्थना।

विनतीदर-वि० [सं०] कमरेके पास झुका हुआ।

विनव-पु० [सं०] ज्वनि, शब्द, शोरगुल; छतितन नामक पेड़।

विनवी(विन्)-वि० [सं०] दे० 'विनादी'।

विनव-वि० [सं०] झुका या सिका हुआ, संयोजित; बंधन-मुक्त किया हुआ।

विनवन-पु० [सं०] झुकाना, लचामा; झुकना, लचना।

विनविन-वि० [सं०] झुकाया या (किसी तरफ) घुमाया हुआ; झुका हुआ।

विनव-वि० [सं०] झुका हुआ; विनीत, विनयी, सुशील।

-कंधर-वि० जिसकी गरदन झुकी हो।

विनम्रक-पु० [सं०] तनर-पुण्य ।

विनय-वि० [सं०] क्षिप्तः गुप्तः दुर्दृष्ट । श्री० मार्गप्रवर्त्तनः अनुशासनः शासनः मद्वताः शिष्टताः नम्रताः आचरणः प्रार्थनाः पृथक् करना । पु० जितेंद्रिय, संवयीः व्यवसायी, व्यापारी । -कर्म(न्)-पु० शिक्षण । -प्राही(विन्)-वि० अनुशासन-संबंधी नियमोंका पालन करनेवाला । -चर-पु० पुरोहित । -पिटक-पु० अनुशासन-संबंधी नियमोंका समग्र (सं०) । -प्रमाथी(विन्)-वि० अनुशासन भंग करनेवाला । -भाक्(ञ्)-वि० विनम्र । -योगी(शिन्)-वि० विनम्र । -शाक्(ञ्)-वि० मधुरभाषी । -शील-वि० विनम्र । -स्थ-वि० आशाकारी ।

विनयन-पु० [सं०] विनयः शिक्षणः निराकरणः दूरीकरण ।

विनयवान्(वन्)-वि० [सं०] नम्र, शिष्ट ।

विनया-श्री० [सं०] शाय्याली, बरिबारा ।

विनयावयव-वि० [सं०] विनम्र ।

विनयी(विन्)-वि० [सं०] विनम्र ।

विनयोक्ति-श्री० [सं०] मधुर वचन ।

विनयना*-सं० कि० प्रार्थना, अनुरोध करना ।

विनयन-पु० [सं०] हानि, नाश, लोपः वह स्थान जहाँ मरखती रेतमें लुप्त हो जाती है ।

विनयना*-अ० कि० नष्ट होना, बरबाद होना ।

विनयाना*-सं० कि० नष्ट करना, बरबाद करना । अ० कि० नष्ट होना ।

विनयन-पु० [सं०] नष्ट होनेवाला, नाशवान् ; जो चिर-स्थायी न हो, अनित्य ।

विनयन-श्री०, विनयनस्थ-पु० [सं०] अनित्यता, नश्वरता ।

विनष्ट-वि० [सं०] भ्रष्टः विह्वलः मरा हुआ ; विगटा हुआ, विह्वलः भ्रष्ट । पु० शब्द । -व्युत्प(ञ्)-वि० जिसको अर्थ नष्ट हो गयी हो । -दृष्टि-वि० जिसको दृष्टि नष्ट हो गयी हो । -वर्त्म-वि० जिसके विधान भ्रष्ट हों (देश) ।

विनष्टि-श्री० [सं०] नाशः पतनः लोपः ।

विनष्टोपजीवी(विन्)-वि० [सं०] मुदी खाकर जीनेवाला ।

विनस-वि० [सं०] नासिकाहीन ।

विनसना*-अ० कि० नष्ट होना ।

विनसना*-अ० कि० नष्ट होना । सं० कि० नष्ट करना ।

विना-अ० [सं०] न होनेपर, अभावमें, बगैर । -कृत-वि० पृथक् किया हुआ ; परित्यक्त । -अव, -आव-पु० पार्यवयः पृथक् होना । -वास-पु० अपने प्रियने पृथक् निवास करना ।

विनाट, विनाड-पु० [सं०] चमकेकी बेठी ।

विनाडि, विनाडिका, विनाडी-श्री० [सं०] बटिकाका साठहें भाग (२४ सेकेंड) ।

विनासी*-श्री० विनती, प्रार्थना ।

विनाय-वि० [सं०] जनाय, निराश्रय, परित्यक्त, रक्षक-हीन, अरक्षित ।

विनायित-वि० [सं०] शून्यावमान किया हुआ ।

विनायी(विन्)-वि० [सं०] मरजने, क्षीर करनेवाला ।

विनाय-पु० [सं०] दक्षताः (पीसने) क्षीरका झुक जाना ।

विनामित-वि० [सं०] झुकाया हुआ ।

विनायक-वि० [सं०] से जानेवाला ; हटानेवाला । पु० गणेशः नायकः मरुदः नुददेवः देशीका एक स्थानः मुखः आचार्यः विज्ज । -हेतु-पु० गुरुत्वजन, कृष्ण । -व्युत्प(ञ्)-श्री० गणेश-चौध, माध-सुरी चौध ।

विनायिका-श्री० [सं०] गुरुद या गणेशकी पत्नी ।

विनायका-श्री० [सं०] त्रिपरिका ।

विनाल-वि० [सं०] जिसमें डंठल न हो ।

विनाश-पु० [सं०] अस्तित्व न रहना, नाशः क्षयः लोपः विगट जाना । -धर्मा(संज्ञ), -धर्मा(संज्ञ)-वि० नश्वर, नष्ट होनेवाला ; क्षणमधुर । -संभव-पु० नाशका मूल कारण । -हेतु-पु० क्षयका कारण ।

विनाशक-वि० [सं०] नाश करनेवाला ; विनाशनेवाला ।

विनाशन-पु० [सं०] नाश करना ; क्षय करना ; हटाना ; एक अक्षर । वि० नाश करनेवाला ।

विनाशयिता(सु)-वि०, पु० [सं०] नाश करनेवाला ।

विनाशांत-पु० [सं०] क्षुत्तु ।

विनाशित-वि० [सं०] नष्ट-व्यस्त किया हुआ ।

विनाशी(विन्)-वि० [सं०] नश्वरः नाश करनेवाला ।

विनाशोन्मुख-वि० [सं०] नाशकी ओर प्रवृत्तः नाशो-यनः पका हुआ ।

विनाश्व-वि० [सं०] नष्ट करने योग्य ।

विनास-वि० [सं०] नासिकाहीन । * पु० दे० 'विनाश' ।

विनासक, विनासिक-वि० [सं०] नासिकाहीन ।

विनासन*-पु० दे० 'विनाशन' ।

विनासना*-सं० कि० नष्ट करना, बरबाद करना ; खराब करना ।

विनासिका-श्री० [सं०] एक विषैला कीड़ा ।

विनाह-पु० [सं०] कुपयका डकन ।

विनिव्-वि० [सं०] हंसनेवाला ; बड़ जानेवाला ।

विनिव्-वि० [सं०] निंदा करनेवाला ; बड़ जानेवाला ।

विनिदा-श्री० [सं०] शिकायत, निंदा ।

विनिदित-वि० [सं०] जिसकी बहुत निंदा की गयी हो, लोपित ।

विनिम्वरण-पु० [सं०] बाहर जानेकी क्रिया ।

विनिम्वर-वि० [सं०] निकला हुआ, बाहर गया हुआ ; बच निकला हुआ, भागा हुआ ।

विनिम्वरि-श्री० [सं०] पलायन ।

विनिम्वरि-वि० [सं०] फँका, चलाया हुआ ।

विनिम्वर-पु० [सं०] झुरचला, छीकना ।

विनिम्वर-पु० [सं०] अपराधः क्षति ।

विनिमीर्ण-वि० [सं०] छितराया हुआ ; इधर-उधर फँका हुआ ; चीका हुआ ; फँका हुआ ; भरा हुआ ।

विनिम्वर-पु० [सं०] काटना, टुकने-टुकने करना ।

विनिम्वर-वि० [सं०] टुकने-टुकने करनेवाला ।

विनिम्वर-वि० [सं०] जिसे क्षति पहुँचायी गयी हो, जिसके प्रति दुरा व्यवहार हुआ हो ।

विनिम्वर-वि० [सं०] काटा हुआ, चीरा हुआ ।

विनिम्वर-वि० [सं०] गुरुहीन ।

विनिम्वर-पु० [सं०] (भीड़ोंकी) समुचित करना ।

विचित्र-विचित्र-वि० [सं०] फेंका हुआ; नीचे दबाया हुआ ।
विचित्र-पु० [सं०] पैकना; उछालना; मेजना; पार्थक्य ।
विचित्र-वि० [सं०] जिसके पैरोंमें बेकियाँ न पड़ी हों ।
विचित्रमक-वि० [सं०] दो पक्षोंमेंसे किसी एकको सिद्ध करनेवाला ।
विचित्रमया-श्री० [सं०] परस्पर विरोधी दो पक्षोंमेंसे एक-का सुक्ति और प्रमाणसे निश्चय करना (वैज्ञ०); सिद्धांत ।
विचित्रहित-वि० [सं०] दका या छिपाया हुआ ।
विचित्रहिता(रु)-पु० [सं०] ढकने, छिपानेवाला ।
विचित्रह-पु० [सं०] पार्थक्य; विभाजन; प्रतिपक्ष; सयम; अवरोध; रुकावट, बाधा, व्याघात; वास्तविक विरोध ।
विचित्राक्ष-वि० [सं०] रोकने योग्य ।
विचित्रचित्त-वि० [सं०] घूमता हुआ; क्षुब्ध; अशांत; चिन्ता-बुल्ला हुआ ।
विचित्र-वि० [सं०] नष्ट, बरबाद; गुणा किया हुआ ।
विचित्र-पु० [सं०] अस्वका एक संचार जिससे निद्रित या स्तब्धताकी बेहोशी दूर होती है । वि० निद्रारहित, जाग्रत; जागर विताया हुआ; खिला या फेंका हुआ; उन्मीलित ।
विचित्रता-श्री०, विचित्रत्व-पु० [सं०] प्रबोध, जागरूकता, निद्राका अभाव; जाग्रत अवस्था ।
विचित्रवस्त-वि० [सं०] नष्ट, बरबाद किया हुआ ।
विचित्रचित्त-वि० [सं०] नीचे गिरा हुआ ।
विचित्रास-पु० [सं०] पतन; भ्रम, विनाश; संकट; नरक; दुर्घटना; कष्ट; मृत्यु; बध. हत्या; अनादर, अवमान; अकलकला । -गत-वि० विपक्ष, संकटग्रस्त । -प्रतीकार-पु० संकटसे बचनेका उपाय । -शंसी(सिन्)-वि० विपत्तिकी खूना देनेवाला ।
विचित्रासक-वि० [सं०] विनाशकारी, संहारकारी; अपमान करनेवाला; गिरानेवाला ।
विचित्रासक-पु० [सं०] गर्भपात करनेवाला ।
विचित्रासित-वि० [सं०] गिराया हुआ; नष्ट किया हुआ; मारा हुआ ।
विचित्रासी(सिन्)-वि० [सं०] नष्ट करनेवाला ।
विचित्रांध-पु० [सं०] किसी वस्तुमें संभव या लगाव होना (श्री०) ।
विचित्रग-वि० [सं०] ढुंढा हुआ ।
विचित्रय-पु० [सं०] अद्रव्यवत्, प्रतिदान; वधक; वर्णपरिवर्तन; एक देशकी मुद्राका दूसरेकी मुद्रामें परिवर्तन ।
विचित्रित-वि० [सं०] जिसका कोई वास्तविक कारण न हो; जो किसी कारणसे न हुआ हो ।
विचित्रिलन-पु० [सं०] बड़ होना, मुँदना (श्लेष्म, फूल आदिका) ।
विचित्रिकित-वि० [सं०] जो बड़ हो गया हो; मुँदरा हुआ ।
विचित्रिकितेक्षण-वि० [सं०] जिसने आँखें बंद कर ली हों या जिसकी आँखें बंद हो गयी हों ।
विचित्रेय, विचित्रेयन-पु० [सं०] एककोका गिरना; एकको मारना ।
विचित्रित-वि० [सं०] नियंत्रित; संवत । -वेला(सस्)-वि० जिसका मन नियंत्रणमें हो ।
विचित्रताहार-वि० [सं०] जिसका आहार संवत हो,

मिताहारी, अधिक खानेसे परहेज करनेवाला ।
विचित्रय-पु० [सं०] रोक; संयम; नियंत्रण; शासन ।
विचित्रय-वि० [सं०] रोक-धाम करने योग्य; संवत, नियंत्रित करने योग्य ।
विचित्रय-वि० [सं०] काममें लगाया हुआ, नियोजित; अपित; आविष्ट; प्रेरित; कार्यसे युक्त किया हुआ ।
विचित्रयकारमा(सम्भ)-वि० [सं०] जिसने किसी विषय-पर अपना मन जमा रखा हो ।
विचित्रयकार-वि० [सं०] नियुक्त करने योग्य; आविष्ट करने योग्य ।
विचित्रयकार(सम्भ)-वि०, पु० [सं०] नियुक्त करनेवाला ।
विचित्रयन-पु० [सं०] विभाग, बँटवारा; नियुक्ति; कार्य-भार; प्रयोग; संबंध ।
विचित्रयोजित-वि० [सं०] नियुक्त, लगाया हुआ; अपित; प्रेरित ।
विचित्रयोज-वि० [सं०] काममें लगाया जानेवाला; प्रयोगमें लाया जानेवाला ।
विचित्रय-वि० [सं०] अप्रभावित; निष्क्रिय ।
विचित्रयोजी(सिन्)-वि० [सं०] रोकने, बाधा डालनेवाला ।
विचित्रय-वि० [सं०] बाहर निकला हुआ; मुक्त; न्यतित ।
विचित्रय-श्री० [सं०] बाहर निकलना ।
विचित्रय-पु० [सं०] बाहर होना; प्रस्थान; फैल जाना ।
विचित्रय-पु० [सं०] उच्च स्वर ।
विचित्रय-वि० [सं०] बिलकुल सुनमान, जनश्रुत्य ।
विचित्रय-श्री० [सं०] पूर्ण विजय ।
विचित्रय-वि० [सं०] पूर्णतः पराभूत ।
विचित्रय-पु० [सं०] निश्चित नियम; पूर्ण निश्चय ।
विचित्रय-वि० [सं०] निश्चित; जिम्मा स्पष्ट रूपसे निर्णय किया गया हो ।
विचित्रय-वि० [सं०] पूर्णतः जलाया या नष्ट किया हुआ ।
विचित्रय-पु० [सं०] पूर्णतः जला देना या नष्ट कर देना ।
विचित्रय-वि० [सं०] जिसका निर्देश किया गया हो; सीपा हुआ ।
विचित्रय-वि० [सं०] जिसका निर्देश, उल्लेख किया जाय ।
विचित्रय-वि० [सं०] कँपाया, क्षुब्ध किया हुआ; फेंका हुआ ।
विचित्रय-वि० [सं०] फेंका हुआ; हटाया हुआ ।
विचित्रय-पु० [सं०] अत्यवसाय ।
विचित्रय-पु० [सं०] तलवारका एक हाथ ।
विचित्रय-वि० [सं०] फटा हुआ; छिड़ा हुआ ।
विचित्रय-पु० [सं०] एक कदम ।
विचित्रय-वि० [सं०] अत्यधिक स्वच्छ, जिसमें जरा भी मल न हो ।
विचित्रय-पु० [सं०] अच्छी तरह बनाना ।
विचित्रय(सु)-पु० [सं०] बनानेवाला ।
विचित्रय-वि० [सं०]...से बना हुआ; रचित; बनाया हुआ (वस्तु); निर्धारित, निश्चित ।
विचित्रय-श्री० [सं०] निर्माण, रचना ।
विचित्रय-वि० [सं०] छोड़ा हुआ; बंयनरहित; निकला हुआ ।

विनिर्मुक्ति-**खो**- [सं०] छुटकारा; मुक्ति ।
 विनिर्मुक्त-**वि**- [सं०] जो हतमुक्ति न हो ।-प्रतिज्ञ-वि०
 अपने वचनका पालन करनेवाला ।
 विनिर्मोक-**वि**- [सं०] आवरण-रहित; बन्धहीन ।
 विनिर्माण-**पु**- [सं०] प्रत्यान ।
 विनिर्वास-**वि**- [सं०] प्रस्थित, गया हुआ ।
 विनिर्वास-**वि**- [सं०] पूर्ण किया हुआ, संपन्न; निकला
 हुआ, उत्पन्न ।
 विनिवर्तक-**वि**- [सं०] पलटनेवाला; रद करनेवाला ।
 विनिवर्तन-**पु**- [सं०] लौटना; अंत होना ।
 विनिवर्ति-**खो**- [सं०] विराम, निवृत्ति ।
 विनिवर्तित-**वि**- [सं०] लौटाया हुआ; पलटा हुआ ।
 विनिवर्ती(सिन्)-**वि**- [सं०] लौटने, पलटनेवाला ।
 विनिवारण-**पु**- [सं०] रोक, नियंत्रण; दूर रखना ।
 विनिविष्ट-**वि**- [सं०] बसा हुआ; रखा हुआ; भिन्न ।
 विनिवृत्त-**वि**- [सं०] लौटा हुआ; हटा हुआ; समाप्त;
 मुक्त; छुट ।-काम-वि० जिसकी इच्छाओंका अंत हो
 गया हो ।-ज्ञाप-वि० ज्ञापक प्रभावसे मुक्त ।
 विनिवृत्ति-**खो**- [सं०] विराम, अंत; छुटकारा ।
 विनिवेदन-**पु**- [सं०] बोधित करना ।
 विनिवेदित-**वि**- [सं०] बोधित, जनाया हुआ ।
 विनिवेश-**पु**- [सं०] प्रवेश; आबाद होना; छाप;
 पुस्तकादिमें उल्लेख करना ।
 विनिवेशन-**पु**- [सं०] निर्माण; व्यवस्था; छाप डालना;
 प्रवेश; स्थिति ।
 विनिवेशित-**वि**- [सं०] प्रविष्ट टिका; ठहरा हुआ; बसा
 हुआ; निर्मित ।
 विनिवेशी(विश्व)-**वि**- [सं०] प्रवेश करनेवाला रहने,
 बसनेवाला अधिष्ठित ।
 विनिश्चल-**वि**- [सं०] अकपित, दृढ़, स्थिर ।
 विनिश्चित-**पु**- [सं०] प्रस्थापित ।
 विनिश्चास-**पु**- [सं०] गहरी सांस, उल्लास ।
 विनिर्पूत-**वि**- [सं०] पूर्णतः नष्ट किया हुआ ।
 विनिर्णय-**वि**- [सं०] अकपित, स्थिर ।
 विनिर्णय-**वि**- [सं०] खूब भूना हुआ ।
 विनिर्णयित-**वि**- [सं०] झपटा हुआ ।
 विनिर्णयित-**पु**- [सं०] झपटना, दृढ़ पड़ना ।
 विनिर्णय-**वि**- [सं०] जिसे पूरा करना हो ।
 विनिर्णय-**पु**- [सं०] पीसना, रगड़ना; मलना ।
 विनिर्णय-**वि**- [सं०] लिखित, वर्णित ।
 विनिर्णय-**वि**- [सं०] आहत, लोट खाया हुआ; विनष्ट;
 मारा हुआ; पूर्णतः पराभूत; छुट; उल्लिखित; पीड़ित । पु०
 दैनिक ताप; भारी विपत्ति; भूमकेतु ।
 विनिर्दिष्ट-**वि**- [सं०] रखा हुआ, जमाया हुआ; पृथक्
 किया हुआ ।-दृष्टि-**वि** जिसकी दृष्टि किसी चीजपर लगी
 हो ।-अज्ञा(नस्)-**वि**- जो किसी बातपर तुला हो ।
 विनिर्द्वय-**वि**- [सं०] छिपा हुआ; अस्वीकार किया हुआ ।
 विनीत-**वि**- [सं०] हटाया हुआ, रें गया हुआ; फैलाया
 हुआ; शिथिल; नम्र, विनयी; जानकार, ज्ञान रखनेवाला;
 निर्भय; सुंदर; स्वच्छ (बक) । पु० सिखलाया हुआ

वीणा; वृषभ; व्यापार; पुलस्त्यका एक पुत्र; दमनक ।
 -वेच-**पु**- सादी पोशाक ।
 विनीतक-**पु**- [सं०] सवारी, शिबिका आदि; वाहक ।
 विनीतता-**खो**, विनीतत्व-**पु**- [सं०] नम्रता, शिष्टता,
 भद्रता ।
 विनीति-**खो**- [सं०] शिक्षा; शिष्ट व्यवहार; नम्रता;
 आदर, सम्मान ।
 विनीत-**पु**- [सं०] कलक, तलछट; पाप, अपराध ।
 विनीतक-**पु**- [सं०] वह शव जो नीला हो गया हो(शौ०) ।
 विनु-**अ**- मिना ।
 विनुति-**खो**- [सं०] दूर करना, हटाना; एक पकाह कृत्य ।
 विनुत-**वि**- [सं०] अग्राया, हटाया हुआ; आहत ।
 विनुता-**वि**- अग्राया, अजीब ।
 विनेता(पु)-**पु**- [सं०] नायक, रहनुमा; गुरु; शासक ।
 विनेय-**वि**- [सं०] नेतव्य, जो ले जाया या हटाया जाय;
 जो शिक्षित किया जाय; जो शासित किया जाय । पु०
 शिष्य ।
 विनोकि-**खो**- [सं०] एक काव्यालंकार जहाँ किसी एक
 वस्तुके बिना अथ वस्तुका शोभित होना या शोभित न
 होना दिखाया जाय ।
 विनोद-**पु**- [सं०] दूर करना, हटाना; मनोरंजन; क्रोधा;
 कौतूहल; मनोरंजक बात; परिहास. प्रबल इच्छा; आत्मान-
 विशेष; एक प्रकारका प्रासाद; प्रमोद ।-रसिक-**वि**-
 क्रोधाशील ।
 विनोदन-**पु**- [सं०] हटाना, दूर करना. क्रोधा करना;
 मन बहलाना ।
 विनोदित-**वि**- [सं०] दूर किया हुआ; दृष्ट, प्रसन्न ।
 विनोदी(विश्व)-**वि**- [सं०] दूर करनेवाला कौतूहली,
 क्रोधाशील; मीनो ।
 विव-**वि**- [सं०] प्राप्त, लब्ध, विचारित; रखा हुआ;
 जिसका अस्तित्व हो; ज्ञान, ज्ञाना हुआ; विवाहित ।
 विवक-**पु**- [सं०] अगम्य ।
 विव्वा-**खो**- [सं०] विवाहिता स्त्री ।
 विव्यय-**पु**- [सं०] स्थिति ।
 विव्यसन-**पु**- [सं०] रखना, डालना ।
 विव्यस-**वि**- [सं०] रखा हुआ, जमाया, जबा हुआ;
 डाला हुआ, प्रवृत्त किया हुआ; व्यवस्थित. अर्पित; जमा
 किया हुआ ।
 विव्याक-**पु**- [सं०] छानबन ।
 विव्यास-**पु**- [सं०] रखना, स्थापन; अङ्गना; धारण
 करना; सुपुर्द करना; व्यवस्थित करना; अगोचरी स्थिति;
 फैलाना; प्रदर्शन; आधार; संग्रह; समूह ।
 विपंचनक, विपंचिक-**पु**- [सं०] अविविधकृत ।
 विपंचिका, विपंचि-**खो**- [सं०] एक तरहकी वीणा;
 क्रीडा, केलि ।
 विप-**वि**- [सं०] विद्वान् ।
 विपक्षिम-**वि**- [सं०] खूब पका हुआ; विकासकी प्राप्त ।
 विपक्ष-**वि**- [सं०] अच्छी तरह पका हुआ; पूर्ण अवस्थाको
 प्राप्त; पकाया हुआ; कच्चा ।
 विपक्ष-**पु**- [सं०] विरोधी पक्ष, शत्रु, विरोधी; प्रतिवादी;

किसी बातके विरोधमें कुछ कहना; किसी नियमके विरुद्ध व्यवस्था, बाधक नियम, अपवाद (व्या०); वह पक्ष जिसमें साध्यका अभाव हो (व्या०); निष्पक्षता; वह दिन जब पक्ष बदले। वि० प्रतिकूल, उलटा; पक्षपातरहित, निष्पक्ष; बिना पक्षका। -आव-पु०, -बुद्धि-क्षी० साधुताकी स्थिति। -रमणी-क्षी० वह क्षी जिसकी दूसरीके साथ प्रतिद्विष्टा चल रही हो।

विपक्षी (विपक्ष) - वि० [सं०] विरुद्ध पक्षका, बिना पक्षका। पु० शत्रु।

विपण-पु० [सं०] विक्रय; छोटा व्यापार; बाजार; शिव।

विपणन-पु० [सं०] विक्रय, व्यापार।

विपणि, विपणी-क्षी० [सं०] हाट; दुकान; विक्रीका माल; व्यापार; विक्री।

विपणी (विपण) - पु० [सं०] व्यापारी, दुकानदार।

विपत्ताक-वि० [सं०] भ्रजहीन।

विपत्ति-वि० [सं०] उष्ण हुआ; गिरा हुआ। -लोमा- (मन्)-वि० जिसके बाळ गिर गये हों।

विपद्-विपद् का समासगत रूप। -कर-वि० सकट उत्पन्न करनेवाला। -काळ-पु० सकटके दिन; दुर्दिन। -कल-वि० मंकट लानेवाला। -साधार-पुं० बहुत बड़ा संकट।

विपत्ति-क्षी० [सं०] सकट, आफत; शत्रु; नाश; यातना। -कर-वि० सकट उत्पन्न करनेवाला। -काळ-पु० कष्टके दिन। मु० -उठाना, -खेलना-तकलीफ सहना। -काटना-दुःखके दिन बिताना। -ढहना-किसीपर सहसा मारी दुःख पड़ना। -ओगना-कष्ट सहना। -में डालना-किसीको दुःख देना। -में पड़ना-सकटग्रस्त होना। -भोख लेना-जान-बूझकर सकटमें पड़ना। -सिरपर लेना-अर्थ शरद, दिक्कतमें पड़ना।

विपथ-पु० [सं०] भिन्न मार्ग; गलत रास्ता; एक बड़ी मरुवा; एक तरहका रथ। -गति-क्षी० घुरे रास्तेपर जाना। -गा-वि० क्षी० कुमार्गपर जानेवाली। क्षी० नदी। -गामी (मिन्)-वि० कुमार्गगामी।

विपद्वा-क्षी० [सं०] विपत्ति, दुःख।

विपद्-क्षी० [सं०] आफत, सकट; शत्रु; नाश। -आक्रांत-वि० सकट-ग्रस्त। -उद्धरण, -उद्धार-पु० सकटसे छुटकारा। -गत, -ग्रन्-वि० सकटापन्न। -दशा-क्षी० सकटकी अवस्था।

विपक्ष-वि० [सं०] शत्रु; नष्ट; मकटग्रस्त, नष्ट शक्ति। पु० सर्प।

विपक्षक-वि० [सं०] वदनसीध; शत्रु; नष्ट।

विपरिक्रांत-वि० [सं०] साहसी, वीर।

विपरिच्छिन्न-वि० [सं०] कटा हुआ, नष्ट। -भूख-वि० जिसकी जब बिलकुल कट गयी हो।

विपरिगमन-पु० [सं०] परिवर्तन।

विपरिणाम-पु० [सं०] परिवर्तन, पड़ना, मोड़ होना।

विपरिणामी (मिन्)-वि० [सं०] जिसकी अवस्था बदलती हो।

विपरिधाम-पु० [सं०] परिवर्तन, विनिमय; विशेष प्रकारका परिधान, वस्त्र, गणवेश।

विपरिवर्तन-वि० [सं०] लौटानेवाला। पु० चकर खाना; छोटना।

विपरिवर्तनी विद्या-क्षी० [सं०] अनुपस्थित व्यक्तिको लौटनेके लिए प्रेरित करनेवाला मंत्र या जादू।

विपरिवर्त्ति-वि० [सं०] लौटाना हुआ।

विपरिवर्त्ति-क्षी० [सं०] छोटना।

विपरीत-वि० [सं०] उलटा; प्रतिकूल; नियमविरुद्ध; अस्तव्य; विरुद्ध; बेमेल; अशुभ; भिन्न। पु० एक अर्थ-लंकार जहाँ कार्य-स्थितिमें स्वयं साधकका ही बाधक होना दिखाया जाय (केशव); एक रतिबंध। -कर, -कारक, -कारी (मिन्), -कृत्-वि० विरुद्ध काम करनेवाला। -गति-वि० उलटी दिशामें जानेवाला। -पेता- (तत्), -बुद्धि, -प्रति-वि० जिसका दिमाग फिर गया हो। -रति-क्षी० रतिके एक प्रकार। -लक्षणा-क्षी० व्यंग्यमें उलटी बात कहना। -बुद्धि-वि० प्रतिकूल कार्य करनेवाला।

विपरीतक-वि० [सं०] उलटा, प्रतिकूल। पु० विपरीत रति। विपरीतता-क्षी०, विपरीतत्व-पु० [सं०] विपरीत, विपरीत होनेका भाव। विपरीता-क्षी० [सं०] दुश्चरित्र, पुच्छली क्षी। विपरीतार्थ-वि० [सं०] उलटे अर्थवाला। विपरीतोपमा-क्षी० [सं०] उपमा अलंकारका एक प्रकार, जहाँ कोई भाग्यवान् व्यक्ति अनि हीन दशामें दिखाया जाय (केशव)।

विपर्यंक-वि० [सं०] बिना पत्तोंका। पु० पलाशका पेड़।

विपर्यय-पु० [सं०] व्यतिक्रम; विपरीतता; प्रतिकूलता, चक्र; पलायन; समाप्ति; परिवर्तन (स्थान, वस्त्रादिका); अनस्तित्व; हानि; विनाश; विनिमय; भूल; मकट; शत्रुता; विरोध।

विपर्यस्त-वि० [सं०] परिवर्तित, अस्त-व्यस्त, उलटा-पलटा हुआ; ओरका ओर समझा हुआ। -पुत्रा-क्षी० वह क्षी जिसे पुत्र न होना हो। विपर्याण-वि० [सं०] बिना चारजामेका। विपर्यास-पु० [सं०] परिवर्तन; विपरीतता, प्रतिकूलता उलट-पलट; भ्रम, भूल, मिथ्या ज्ञान। विपक्ष-पु० [सं०] समयका एक बहुत छोटा मान, पलका साठवाँ भाग।

विपक्षायन-पु० [सं०] भागना; विभिन्न दिशाओंमें भागना।

विपक्षायित-वि० [सं०] भागा हुआ; भगाया हुआ। विपक्षायी (मिन्)-वि० [सं०] भागनेवाला।

विपक्षाश-वि० [सं०] पत्रहीन। विपक्षव-वि० [सं०] पत्रिकाकार; वायु-रहित। पु० विद्युद पवन।

विपक्ष-वि० [सं०] विशेष रूपसे झुट्ट करने योग्य। विपक्षि-वि० [सं०] सधमदर्शी, विद्वान्, पंडित। पु० विद्वान् व्यक्ति।

विपक्षन-पु० [सं०] बयाबं बोध, प्रकृत ज्ञान (बौ०)। विपक्षी (मिन्)-पु० [सं०] एक बुद्ध।

विषकी (विष्) - पु० [सं०] एक वृक्ष ।
 विपांडु, विपांडुर - वि० [सं०] पीला ।
 विपांडुरा - स्त्री० [सं०] महामेदा ।
 विपांडुक - वि० [सं०] भूकुरित ।
 विपाक - पु० [सं०] पकाना; पकना; पूर्ण दशाको प्राप्त होना; पचना; फल; कर्मका फल; अमला-परिवर्तन; कठिनाई, संकट ।
 विपाट - पु० [सं०] एक तरहका बाण ।
 विपाटक - वि० [सं०] काढ़ने, फोड़ने, उल्लाड़नेवाला ।
 विपाटव - पु० [सं०] उल्लाड़ने, फोड़नेकी क्रिया ।
 विपाटव - वि० [सं०] बहुत लाल । - नेत्र - वि० जिसकी आँखें लाल हों ।
 विपाटित - वि० [सं०] फाड़ा हुआ; उन्मूलन; पृथक् किया हुआ ।
 विपाद् (ष्) - स्त्री० [सं०] दे० 'विपाशा' ।
 विपाठ - पु० [सं०] एक तरहका बजा बाण ।
 विपात - पु० [सं०] नाश ।
 विपातक - वि०, पु० [सं०] मलाने, पिघलानेवाला; नाश करनेवाला ।
 विपातन - पु० [सं०] नाश कराना, गलाना ।
 विपादन - पु० [सं०] बध; नाश करना ।
 विपादिका - स्त्री० [सं०] पैरका एक रोग, पादस्फोट, बेवार्श; पहेकी ।
 विपादित - वि० [सं०] नष्ट किया हुआ, बध किया हुआ ।
 विपाद्य - वि० [सं०] बध या नाशके योग्य ।
 विपाय - वि० [सं०] निष्पाय, पाय-रहित ।
 विपाया - स्त्री० [सं०] एक नदी ।
 विपाप्मा (पमृ) - वि० [सं०] निष्पाय; कट-रहित ।
 विपाळ - वि० [सं०] रक्षकहीन, अरक्षित ।
 विपाश - वि० [सं०] बंधनरहित, बंधन-मुक्त ।
 विपाशन - पु० [सं०] बंधनसे मुक्त करना ।
 विपाशा - स्त्री० [सं०] व्यास नदी ।
 विपासा - स्त्री० दे० 'विपाशा' ।
 विपिन - पु० [सं०] जंगल, वन; उपवन । - चर - पु० वनचर; जंगली आदमी; पशु, पक्षी आदि । - तिलका - स्त्री० एक बर्णवृत्त । - पति - पु० सिंघ । - विहारी (रिम्) - पु० वनमें विहार करनेवाला; कृष्ण ।
 विपिनीका (कस्) - पु० [सं०] वनमानुस; बंदर ।
 विपुंसक - वि० [सं०] जिसमें पौरुषकी कमी हो, पुंस्त्वहीन ।
 विपुंसी - स्त्री० [सं०] पुरुषके-से स्वभाववाली स्त्री ।
 विपुत्र - वि० [सं०] पुत्रहीन ।
 विपुह - वि० [सं०] जिसके रहनेका स्थान निश्चित न हो ।
 विपुल - वि० [सं०] बृहत्, बड़ा; विस्तृत; अधिक, प्रचुर; गहरा, अगाध; रोमांचयुक्त । पु० मेरु पर्वत; हिमालय; सम्मानित व्यक्ति; एक तरहकी हमारत । - शीघ्र - वि० लकी गतिवाला । - च्छाया - वि० धनी छायावाला । - जघना - स्त्री० बड़े नितनौवाली स्त्री । - ब्रज्य - वि० धनी । - पार्थ - पु० एक पहाड़ । - प्रज्ञ - बुद्धि; - मति - वि० विरोध बुद्धिमान् । - रस - पु० रस । - ओणि - वि० जिसके नितब बड़े हों । - स्कंध - वि०

चौड़े कंधोंवाला । पु० अर्जुन । - खबा - स्त्री० धीकुरा । - हृदय - वि० उदाराशय ।
 विपुलक - वि० [सं०] बहुत विस्तृत; पुलक; रोमांच-रहित ।
 विपुलता - स्त्री०, विपुलत्व - पु० [सं०] आभिन्न; प्रचुर; विस्तार ।
 विपुला - स्त्री० [सं०] पृथ्वी; एक छंद; आर्या छंदके तीन भेदोंमेंसे एक; एक सती, बहुला; एक ताल ।
 विपुलाई - स्त्री० दे० 'विपुलता' ।
 विपुलाखवा - स्त्री० [सं०] दे० 'विपुल-खवा' ।
 विपुलेक्षण - वि० [सं०] बड़ी आँखोंवाला ।
 विपुलोत्सक - वि० [सं०] चौड़े बहा-रुलवाला ।
 विपुष्ट - वि० [सं०] जो पुष्ट न हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो ।
 विपुष्टि - स्त्री० [सं०] अभ्युदय ।
 विपुष्प - वि० [सं०] पुष्पहीन (वृक्ष) ।
 विपुष्पित - वि० [सं०] प्रसन्न, प्रफुल्ल ।
 विपुष्य - पु० [सं०] सूँघ । वि० झुल्लू करनेवाला ।
 विपुष्यक - पु० [सं०] सकार्यक; सड़ा हुआ झुर्रा (बो०) ।
 विपुष्क (ष्) - वि० [सं०] पृथक्, अलग ।
 विपृक्त - वि० [सं०] विभक्त, विपुक्त, अलग किया हुआ ।
 विपृक्त्व - वि० [सं०] जिसमें मिलावट न हो, विच्छेद ।
 विपोद्भा - स्त्री० कि० पोहना, छेदना; पोतना; संहार करना ।
 विप्र - पु० [सं०] ब्राह्मण; पुरोहित; चतुर आदमी; पीपल-का वृक्ष; सिरिसका पेड़; चंद्रमा; आश्वपद; रतुतिपाठक । - काष्ठ - पु० कपासका पीपल । - कुंड - पु० ब्राह्मणकी जात्र मंजान । - चरण, - पद - पु० विष्णुके हृदयपर अंकित श्रृंखला चरण-चिह्न । - तापस - पु० ब्राह्मण सन्यासी । - ग्रिव - पु० पलाश वृक्ष । - बंधु - पु० नीच ब्राह्मण । - भाव - पु० ब्राह्मणका पद । - राम - पु० परशुराम । - शेषित - पु० ब्राह्मणका वच्छिष्ट । - समा-गम - पु० ब्राह्मणोंसे मेल-जोल रखना । - स्व - पु० ब्राह्मणकी संपत्ति ।
 विप्रक - पु० [सं०] नीच ब्राह्मण ।
 विप्रकर्ता (र्त) - पु० [सं०] अपमान, क्षति करनेवाला ।
 विप्रकर्ष - पु० [सं०] खींच ले जाना; दूरी, फासला; भेद, अंतर ।
 विप्रकर्षण - पु० [सं०] खींच ले जानेकी क्रिया; दूर करना; कार्य समाप्त करना ।
 विप्रकार - पु० [सं०] अपकार, अनादर क्षति; प्रतिशोध; विभिन्न धर्म ।
 विप्रकारी (रिम्) - वि० [सं०] अनादर, अपकार करने-वाला; विरोध करनेवाला; प्रतिशोध करनेवाला ।
 विप्रकीर्ण - वि० [सं०] छितराया हुआ; बिखरा हुआ; फेलाया हुआ; विस्तृत । - क्षिरोरुह - वि० जिसके बाल बिखरे हों ।
 विप्रकृत - वि० [सं०] अपकृत, अनादर; क्षतिग्रस्त ।
 विप्रकृति - स्त्री० [सं०] अपकार; परिवर्तन; क्षति; विरोध; प्रतिशोध ।
 विप्रकृष्ट - वि० [सं०] खींचकर हटाया हुआ, दूर किया

हुआ; दूरवर्ती; फैलाया हुआ ।
विप्रकृष्टक-वि० [सं०] दूरक ।
विप्रगीत-वि० [सं०] जिसके संबंधमें मतभिन्नता हो (वे०) ।
विप्रचिति-पु० [सं०] दनुवृत्त, दानव ।
विप्रच्छन्न-वि० [सं०] छिपा हुआ, गुप्त ।
विप्रणास-पु० [सं०] नाश, क्षय; मृत्यु ।
विप्रसारक-पु० [सं०] बहुत थोलेबाज ।
विप्रसारित-वि० [सं०] जो छला गया हो ।
विप्रसिकार-पु० [सं०] विरोध; खंडन; प्रतिशोध ।
विप्रसिद्धत-वि० [सं०] जिसका विरोध या प्रतिशोध किया गया हो ।
विप्रतिपत्ति-खी० [सं०] विरोध; मतभिन्नता; दो नियमों-का परस्पर विरुद्ध होना; भ्रातृ धारणा; संदेह; विरोधी भाव; पारस्परिक संबंध; धक्काबुट्ट; अमिश्रता; अपकीर्ति; विकृति ।
विप्रतिपद्य-वि० [सं०] जिसका विरोध किया जाय; विभिन्न प्रकारसे सिद्ध किया जानेवाला ।
विप्रतिपद्यमान-वि० [सं०] पापी ।
विप्रतिपद्य-वि० [सं०] परस्पर विरुद्ध; द्वन्द्विक, जिसका विरोध किया गया हो; गलत; निषिद्ध; अविज्ञ; परस्पर संबद्ध । -**बुद्धि**-वि० [सं०] जिसका मत भ्रममूलक हो ।
विप्रतिषिद्ध-वि० [सं०] निषिद्ध, वर्जित; जिसका विरोध किया गया हो; विरुद्ध अर्थवाला ।
विप्रतिषेध-पु० [सं०] निर्वन्धन, रोक; दो कवनोंका परस्पर विरोध; वर्जन, निषेध ।
विप्रतिसार, विप्रतीसार-पु० [सं०] पश्चात्ताप; दुष्टता, कुटिलता; क्रोध ।
विप्रतिसारी (विप्र)-वि० [सं०] अनुतापयुक्त, विषण्ण ।
विप्रतीप-वि० [सं०] उलटा, विपरीत, प्रतिकूल ।
विप्रत्यनीक, विप्रत्यनीक-वि० [सं०] शत्रुतापूर्ण ।
विप्रत्यय-पु० [सं०] अविश्वास ।
विप्रथित-वि० [सं०] प्रसिद्ध ।
विप्रदुष्ट-वि० [सं०] भ्रष्ट; पापी; कामी; नीच । -**भाव**-वि० कुटिल स्वभावका ।
विप्रदुस्त-वि० [सं०] मागा हुआ, पलायित ।
विप्रधर्ष-पु० [सं०] परेशानी, विरक्ति ।
विप्रनष्ट-वि० [सं०] जो पूर्णतः नष्ट हो गया हो; दुष्ट; निष्फल, बेकार ।
विप्रपात-पु० [सं०] उड़नेका एक विशेष ढंग; बिलकुल नीचे जाना; खप ।
विप्रबुद्ध-वि० [सं०] जगा हुआ, जागरूक; गानी ।
विप्रबोधित-वि० [सं०] त्रिपका जिक्र हो चुका हो; विचारित ।
विप्रमत्त-वि० [सं०] प्रमादप्रवृत्ति ।
विप्रमना (मत्)-वि० [सं०] शिक्षा, विषण्ण, अनमना; हतोत्साह ।
विप्रमाधी (मिध)-वि० [सं०] मथन करनेवाला, धुक्क करनेवाला; नष्ट करनेवाला ।
विप्रमुक्त-वि० [सं०] बन्धनसे मुक्त किया हुआ; छोड़ा, फेंका हुआ; में मुक्त (व्यतापमें) । -**भव**-वि० भय,

खतरेसे मुक्त किया हुआ ।
विप्रमोक्ष-पु० [सं०] बन्धनसे छुटकारा; मुक्ति ।
विप्रमोक्ष-वि० [सं०] जिसे मुक्त करना हो ।
विप्रमोह-पु० [सं०] नियमादिका भग, भ्रष्टाचार करना ।
विप्रमोहित-वि० [सं०] हतबुद्धि ।
विप्रबाध-पु० [सं०] बल देना; पलायन ।
विप्रबाध-वि० [सं०] पलायित; सभी दिशाओंमें भागा हुआ ।
विप्रयुक्त-वि० [सं०] अलग किया हुआ; विमुक्त; मुक्त किया हुआ; वंचित, विहीन ।
विप्रयोग-पु० [सं०] वियोग (विशेषकर प्रियसे), विच्छेद, अलगाव; अभाव; कलह, मतभेद; योग्य या पात्र होना ।
विप्रयोगी (मिन्)-वि० [सं०] (प्रिय आदिसे) विमुक्त, जो अलग हो ।
विप्रयोजित-वि० [सं०] से मुक्त किया हुआ ।
विप्रलम्ब-पु० [सं०] छल, धोखा, बहकावा; निराश्रय; छला जाना; निराश होना; प्रेमियोंका वियोग; विच्छेद; कलह । -**शृंगार**-पु० वियोग-शृंगार जिसमें विरह-वर्णन होता है ।
विप्रलम्बक-वि० [सं०] धोखा देनेवाला, बचक ।
विप्रलम्बन-पु० [सं०] छल करना, धोखा देना ।
विप्रलम्बी (मिन्)-वि० [सं०] दे० 'विप्रलम्बक' ।
विप्रलपित-वि० [सं०] जिसपर तर्क किया गया हो, विचारित ।
विप्रलस-पु० [सं०] तर्क, बहस, वाद-विवाद; विलाप ।
विप्रलब्ध-वि० [सं०] वंचित; छला हुआ; निराश; क्षतिग्रस्त; विरही ।
विप्रलब्धा-खी० [सं०] सकेत-स्थलमें प्रियके न मिलनेमें दुःखी नायिका ।
विप्रलब्धा (वष्ट)-वि० [सं०] छल करनेवाला ।
विप्रलब्ध-पु० [सं०] विनोय, विलय, पूर्णतः बिलीन हो जाना ।
विप्रलाप-पु० [सं०] देवतलब बहना; परस्पर खंडन-मंडन करना; विवाद-वचनका उल्लंघन । वि० जिसमें साराहीन बात न हो ।
विप्रलापी (विष्ट)-वि० [सं०] बकबादी, वादुनी ।
विप्रलीन-वि० [सं०] बिखरा, छितराया हुआ; तिनर-तिनर किया हुआ (सैन्धु) ।
विप्रलुपक-वि० [सं०] छीन-छापटवर से लेनेवाला; छपीक; कोतुप, लालची ।
विप्रलुप्त-वि० [सं०] नष्ट हुआ; जिसमें बाधा डाली गयी हो ।
विप्रलुप्त-वि० [सं०] कटा, तोड़ा हुआ; पकड़ किया हुआ ।
विप्रलोक-पु० [सं०] त्रिधीमार, बदेरिया ।
विप्रलोहित-वि० [सं०] अस्त-व्यस्त किया हुआ; खराब किया हुआ ।
विप्रलोप-पु० [सं०] व्यस, नाश, पूर्ण लोप ।
विप्रलोपी (विष्ट)-वि० [सं०] तोड़नेवाला ।
विप्रलोभी (मिन्)-पु० [सं०] किरात नामक पौधा ।
विप्रवसित-वि० [सं०] गत, प्रस्थित ।

विश्वनाथ-पु० [सं०] विवाद; कलह, मतभेद ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] विदेशगमन वा विदेशमें रहना;
 मिथुनोका एक अपराध जो अपना वस्त्र दूसरेको देनेके
 कारण होता है (बी०) ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] वैसलिका; परदेशमें रहना ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] हटाना हुआ; नष्ट किया हुआ
 (पापादि) ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] निरन्तर-निरन्तर किया हुआ; जोरसे
 मारा या हिलाया हुआ ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] जो पुरुषोंमें मन्त्र रखनेवाली स्त्री ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] अरहन्मार्गी प्रश्न ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] दैवज्ञ, ज्योतिषी ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] दैवज्ञ ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] फैलाना, बिस्तार करना ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] मारा हुआ; पराभूत (मैत्र्य); रौंदा हुआ ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] लोप, अन्त ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] लुप्त; रचित, रहित ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] चंद्रमा ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] दे० 'विश्वनाथ' ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] अग्रिय कार्य; अपराध । वि० जो
 आनन्ददायक न हो; अग्रिय । -कर, -कारी (रिक्)-वि०
 अग्रिय कार्य करनेवाला ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] अलसीकर; विनगारी कण; बिंदी ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] दूँद; सीकर; पक्षी ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] आत्मपोंका प्रथान ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] चारों ओर देखना ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] दृष्टिपात, चारों ओर देखना ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] चारों ओर दृष्टिपात करनेवाला ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] गत; जो तितर-धितर हो गया हो ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] परदेशमें रहनेवाला; निष्कामित ।
 -भर्तृका-वि० वह स्त्री जिसका पति विदेशमें हो ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] पोतरहित । पु० विभिन्न दिशाओंमें
 बहना; विरोध, प्रतिकूलता; द्वावन; अशांति; कष्ट; संकट;
 हला-पुला; उपद्रव, विद्रोह; नाश, बर्बादी; क्षति;
 (सतीत्य) अंग करना; पोत-अंग; शत्रु-अंग; अशुभ चिह्न;
 आईनेपरका ध्वजा; व्यासि; नियम आदिका भंग; पाप;
 दुष्टता; होहला मचाकर शत्रुको भीत करना; प्रसिद्ध
 करना; अत्याचार; अपहरण; अन्धका अध्ययन न होते
 हुए वेदका अनादर करना ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] विज्ञव करनेवाला ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] क्षणभंगुर, अस्थायी; विज्ञव,
 क्षति करनेवाला ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] शोकेली सरपट चाल; जलद्वावन;
 बर्बादी; होहला, उपद्रव मचायना ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] विज्ञव, उपद्रव करनेवाला, बलवाई,
 विद्रोही, क्रान्तिकारी; बाढ़ जानेवाला; फैलानेवाला ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] मित्रा करना; अपराध कहना ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] बहाया हुआ; वनबाहटमें डाला
 हुआ; नष्ट किया हुआ ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] उपद्रवी; बाढ़ जानेवाला;

फैलानेवाला ।

विश्वनाथ-वि० [सं०] दे० 'विप्र' ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] बिछरा हुआ; अस्तव्यस्त; वनबाया
 हुआ; भटका हुआ; नष्ट-भट; जो धुंधला हो गया हो
 (नेत्र); भग्न (प्रतिष्ठा आदि); उन्मत्त; आचारहीन;
 जिसका अपचार गलत हुआ हो; कुटिल; प्रतिकूल; जल-
 प्रसिद्ध । पु० फटना, फटोटा । -नेत्र, -कोचन-वि०
 जिसकी आँखें अश्रुपूर्ण हों । -भाषी (विश्व)-वि०
 अस्पष्ट बोलनेवाला । -श्रीनि-वि० दे० 'विश्वनाथ' ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] एक स्त्रीरोग (योनिमें सदा पीड़ा
 रहना) ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] हलचल, अशांति; नाश, बर्बादी ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] झुलसा, जलाया हुआ ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] क्रम, सिलसिला; दे० 'वीप्सा' ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] बिना फलका, कलहीन (हृद्); व्यर्थ;
 बेकार, निरर्थक; असफल; हताश; निराश; अह्वीन;
 अप्रभावकर ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] केतकी ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] मेल, मिश्रण; अनुकूलता; सय ।
 - (के) हिंदू-पु० भारतीय संव ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] घेर लेना, बंधनमें डालना; एक तरफकी
 गोल पट्टी (आवे०); कोष्ठबद्धता । -बर्त्ति-वि० बौद्धोंका
 एक मूर्तारोग । -हृद्-वि० कष्ट दूर करनेवाला ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] कष्ट करनेवाला । पु० (पीठ आदि-
 का पीडा) दोनों ओरमें बांधनेकी क्रिया ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] बधुहीन; जिसके कोई संवधी न हो;
 अविवाह ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] बंधा हुआ; बद्ध (कोष्ठ) ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] बलहीन, मिथिल; विशेष बलवान् ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] हटाना, दूरीकरण । वि० बाधारेहित ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] कष्ट, पीड़ा, वधना ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] सुजाहीन ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] महीसे उत्पन्न वैद्यका पुत्र ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] ज्ञाना हुआ; विकसित; चतुर, दक्ष;
 अचेत, बेहोश ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] विद्वानोंसे रहित । पु० विद्वान्, चतुर
 व्यक्ति देवता; चंद्रमा । -शुक्र-पु० बृहस्पति । -सतिनी,
 -वदी-वि० आकाशमार्ग । -सह-पु० कल्पवृक्ष । -हिंदू
 (पु०), -रिपु-पु० दैत्य । -चेतु-वि० कामधेनु ।
 -पति-पु० इंद्र । -प्रिया-वि० देवांगना; एक हृत् ।
 -वेदि-वि० [सं०] कल्पलता । -मति-वि० चतुर ।
 -राज-पु० इंद्र । -वध-पु० नन्दन । -विहिंदू (पु०)
 -पु० दैत्य । -विश्वनाथिनी-वि० अम्बरा । -वैद्य-
 पु० अश्विनीकुमार । -सह (पु०)-पु० स्वर्ग । -स्त्री-
 वि० देवांगना; अम्बरा ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] बृहस्पति ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] बृहस्पति ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] आचार्य; पंडित ।
विश्वनाथ-वि० [सं०] आकाशमार्ग ।
विश्वनाथ-पु० [सं०] देवमंदिर ।

विभुषण-पु० [सं०] इन्द्र ।

विभुषण-पु० [सं०] इन्द्र ।

विभोष-वि० [सं०] अनवधान । पु० जागरण; अनुभूति; प्रभा; समझ; एक विभाव (निद्राके पश्चात् वा अविधा दूर होनेपर चेतन्य काय-सा०); अनवधानता; ज्ञेय-सिद्धिमें शुणो वा शक्तिका व्यक्ति होना (ना०); एक पक्षी ।

विभोषण-पु० [सं०] जागना; जमाना; समझाना; तसही देना ।

विभोषित-वि० [सं०] जगाया, हुआ; सिखलाया; सम्-
झाया हुआ; विकसित ।

विभोष-पु० [सं०] दे० 'विभोष' ।

विभंग-पु० [सं०] झुकाना, सकुचन (भौका); तह; झुरी; भिन्न; नाचा; रोक; छल; तरंग; भग, टूटना; विभाग; बौद्धोंका एक वर्ग; सोपान; प्रकट होना, प्रकटन ।
वि० चपल ।

विभंगि-खी० [सं०] अनुकृति; मगि ।

विभंगी(गिन्)-वि० कपनशील; झुरिबोवाला ।

विभंगुर-वि० [सं०] अन्धिर (रष्टि) ।

विभक्त-वि० [सं०] बँटा हुआ; विभाग किया हुआ; अलग किया हुआ; भिन्न; विभिन्न प्रकारका; अलङ्कृत; मापा हुआ; अपना हिस्सा पाया हुआ; जो पृथक् हो गया हो; अपस्तुत; सम-परिमित । पु० एकांतवास; हिस्सा; संपत्ति (विभक्त); पार्थक्य; कातिकेव । -राज-वि० जिनके अंग अलङ्कृत हों । -अ-पु० संपत्तिके बँटवारेके बाद पैदा होनेवाला लक्षका ।

विभक्त(क)-वि० [सं०] व्यवस्था करनेवाला; विभाग करनेवाला ।

विभक्ति-खी० [सं०] बँटवारा; विभाग; उत्तराधिकारमें प्राप्त हिस्सा; पार्थक्य; कारकका चिह्न (व्या०) ।

विभक्त-वि० [सं०] टूटा-फूटा हुआ; छिन्न-भिन्न ।

विभक्त-पु० [अ०] एक बड़ी संख्या (सौ०) ।

विभक्तनीय-वि० [अ०] विभागयोग्य ।

विभक्त-वि० [सं०] जिसका विभाग करना हो; जिसका भेद दिखलाना हो ।

विभक्त-पु० [सं०] पार्थक्य; भेद ।

विभक्त-वि० [अ०] भयसे मुक्त । पु० भयमें मुक्ति ।

विभव-वि० [सं०] धनी; शक्तिशाली । पु० सर्वव्यापकता; शिवात् शक्ति; ऐश्वर्य; संपत्ति; उच्च पद; उदारताश्रयता; प्रभाव; अनावश्यक, योगविलासकी वस्तु; मोक्ष; एक सनस्तर; प्रलय (सौ०), एक ताल । -क्षय-पु० ऐश्वर्य-नाश । -मद-पु० ऐश्वर्यका मद । -शाली(किन्)-वि० दे० 'विभववान्' ।

विभववान्(वर)-वि० [अ०] धनी, ऐश्वर्यशाली; शक्तिशाली ।

विभववी(विन्)-वि० [सं०] दे० 'विभववान्' ।

विभोदक-पु० [अ०] एक ऋषि, ऋष्यश्रंगके पिता ।

विभोदिका-खी० [सं०] आङ्गुल नामक वृक्ष ।

विभोद्री-खी० [सं०] आवर्तकी कृता ।

विभोसि-खी० भेद, प्रकार, किस्म । वि० कई तरहका ।
अ० कई तरहमें ।

विभा-खी० [सं०] प्रभा, कांति; किरण; सौंदर्य । -कर-
पु० सूर्य; आकाश; भिन्नक वृक्ष; अग्नि; राजा; चंद्रमाका सूर्य द्वारा प्रकाशित अंश । -बस्तु-पु० अग्नि; सूर्य; चंद्रमा; एक तरहका हार; एक वस्त्र; एक वानर; नरक दैत्यका एक पुत्र; एक ऋषि; गायत्रीसे सोमकी चोरी करनेवाला एक गंधर्व; चित्रक; आकाश ।

विभा(स्)-खी० [सं०] चमक, कांति ।

विभाग-पु० [सं०] बँटवारा; पैतृक संपत्तिका हिस्सा; किसी वस्तुका कोई भाग; भिन्नका अंश; पार्थक्य; अभ्यास; व्यवस्था; मुद्रकमा । -कल्पना-खी० हिस्से बँटाना ।

-अ-वि० अंतर, भेद समझनेवाला । -धर्म-वि० बँटवारा-सम्बन्धी कानून । -पत्रिका-खी० वह दस्तावेज जिसमें बँटवारेका ब्योरा दिया गया हो । -भाक्(ज्)-वि० पैतृक संपत्तिमें हिस्सा पानेका अधिकारी । -रेखा-खी० सीमा-रेखा ।

विभागक-पु० [सं०] बँटवारा करनेवाला; व्यवस्था करने-
वाला ।

विभागत(तस्)-अ० [सं०] हिस्सेमें मुताबिक ।

विभागशः(शस्)-अ० [अ०] हिस्सेके बिसामसे ।

विभागी(गिन्)-पु० [सं०] विभाग, बँटवारा करनेवाला, हिस्सेदार ।

विभाजक-पु० [सं०] विभाजन करनेवाला, बँटनेवाला, वह संख्या जिससे भाग दिया जाय, भाजक । वि० बँटने-
वाला; टुकड़े करनेवाला ।

विभाजन-पु० [सं०] बँटना, विभाग करना; बँटवाना ।

विभाजिता(त्)-वि० [सं०] बँटवानेवाला ।

विभाजित-वि० [अ०] बँटवारा हुआ; बँटा हुआ; पृथक् किया हुआ ।

विभाज्य-वि० [अ०] जिसका बँटवारा किया जाय; भाग करने योग्य । पु० वह संख्या जिसमें किसी संख्यामें भाग दिया जाय ।

विभात-पु० [अ०] सवेरा । वि० चमका हुआ । -वानु-
खी० सवेरेकी हवा ।

विभाषि-खी० [सं०] चमका; शोभा, सुंदरता ।

विभाषा-अ० कि० चमकना; शोभा देना ।

विभाषा-अ० कि० चमकना ।

विभाष-पु० [सं०] आवक तीन अंगोंमेंसे एक-वह वस्तु वा अवस्था जो मनमें किसी भावकी उत्पन्न या उद्गीर्ण करे (आर्जवन, उदीपन-ये दो भेद हैं); भावोदय वा भावोद्-
पन्नका कारण (सा०); मित्र, परिचित व्यक्ति; शिव ।

विभाषक-वि० [सं०] अभिव्यक्त करनेवाला; वाद, तर्क करनेवाला ।

विभाषन-पु० [अ०] कल्पना; चिंतन; अनुभूति; तर्क; परीक्षण; वह मानसिक व्यापार जिसके द्वारा कान्यके नायकादिके साथ श्रोता वा पाठकका नादम्य होता है, साधारणीकरण (सा०) ।

विभाषना-खी० [सं०] एक अवर्णकार जहाँ (१) कारण-
के बिना वा (२) अपर्याप्त कारणसे अथवा (३) कारणका प्रतिबंध करनेवाली वस्तुके रहते हुए भी कार्यकी उत्पत्ति हो; (४) अथवा जहाँ अनेकसे वा (५) विपरीत हेतुमें

कार्यको उत्पत्ति दिखायी जाय वा फिर (६) कार्यसे ही कारणको उत्पत्ति का वर्णन हो ।

विभावनीय-वि० [सं०] जिसकी स्पष्ट अनुभूति या निश्चय किया जाय ।

विभाषरी-की० [सं०] रात; तारोंवाली रात; हल्दी; कुटनी; बेरया; सुखर की; कुटिल; चालवाब की; एक दृष्टि । -काल-पु० चंद्रमा । -मुख-पु० संभ्या ।

विभाषरीश-पु० [सं०] चंद्रमा ।

विभावित-वि० [सं०] प्रकट, व्यक्त किया हुआ; समझा हुआ, जाना हुआ; विचारित, विवक्षित; स्थापित, प्रमाणित ।

विभाषी(विद्)-वि० [सं०] शक्तिशाली; प्रकट करने-वाला; भाषका उदय करनेवाला ।

विभाव्य-वि० [सं०] जिसकी अनुभूति की जाय; जिसका विवेक या निश्चय किया जाय; जिसपर ध्यान दिया जाय ।

विभाष-की० [सं०] विकल्प, सुनाय, पसंदकी स्वतंत्रता; व्याकरणका वह भ्रान जहाँ अपवाद और विधान दोनों पाये जायें; प्राकृत भाषाओंका एक वर्ग; एक रागिनी; दृष्ट्य कारिका (वै०) ।

विभाषित-वि० [सं०] वैकल्पिक ।

विभास-पु० [सं०] चमक; एक सूर्य; एक राग; एक देवता ।

विभासक-वि० [सं०] चमकने या चमकानेवाला; प्रकट, प्रकाशित करनेवाला ।

विभासना*-अ० कि० चमकना, झलकना ।

विभासा-की० [सं०] चमक, झलक, कांति ।

विभासिका-वि० की० [सं०] चमकनेवाली ।

विभासित-वि० [मं०] दीप्त; चमकाया हुआ; प्रकाशित, प्रकटित ।

विभित्ति-की० [सं०] भेदन, काटकर अलग करना; खटित करना ।

विभिन्न-वि० [सं०] काटा, तोड़ा हुआ; छिद्रा हुआ, आहत; भगाया हुआ; धक्काया हुआ; हटाया; कई तरहका; मिश्रित; चित्र; प्रकटित; जो अविश्वसनीय हो गया हो; विकसित; परिवर्तित- जो अलग हो गया हो; भेद-भावयुक्त; विरोधी । पु० शिव ।

विभिन्नता-की० [सं०] विभिन्न होनेका भाव, अलगाव ।

विभी-वि० [सं०] निर्भीक ।

विभीत-वि० [सं०] डरा हुआ, भयभीत । पु० विभीतक, धंश ।

विभीतक-पु० [मं०] बहेबेका पक्ष ।

विभीतकी, विभीता-की० [सं०] नहेडा ।

विभीति-की० [सं०] भय; आशंका ।

विभीषक-वि० [मं०] मयोत्पादक ।

विभीषण-वि० [सं०] जति भयानक, बहुत डरावना; देशद्रोशी (आधु०) । पु० राजका एक भाई जो रामका पक्ष लेकर रावणसे लड़ा; गर्भपात; नरसख; डरानेकी क्रिया या साधन ।

विभीषणा-की० [सं०] एक मुहूर्त; स्कंदकी एक सायुध ।

विभीषिका-की० [सं०] भयप्रदर्शन, डराना; आतंक;

डरवानेका साधन; सर्वकर कांड ।

विभु-वि० [सं०] सर्वव्यापक; शक्तिशाली; योग्य, सक्षम; जितेंद्रिय; कठिन; स्खर; स्वाधी; विरुद्ध; महान् । पु०

आकाश; भवकाश; काल; आत्मा; स्वामी; प्रभु; दास, सेवक; भक्षा; शिव; विष्णु; सूर्य; चंद्र; कुबेर; एक देववर्ग; मुक्त ।

विभुता-की०, विभुत्व-पु० [सं०] स्वामित्व, प्रभुत्व; ऐश्वर्य; शक्ति; व्यापकता ।

विभुत-वि० [सं०] उपपन्न; उत्थित; व्यक्त; महान् ; शक्तिशाली ।

विभुति-की० [सं०] शक्ति; अलौकिक शक्ति; महत्वा; अभ्युदय, सृष्टि; उच्च पद; प्राप्ति; गोबरकी राख; शक्ति-प्रदर्शन; प्रभुता; ऐश्वर्य; लक्ष्मी; एक भुति (संगीत) ।

विभुतिमाव्(मत्)-वि० [सं०] शक्तिशाली; अलौकिक शक्तिसंपन्न; भक्त्य धारण किया हुआ ।

विभुमा(मन्)-पु० [सं०] कृष्ण । की० महत्वा; शक्ति ।

विभुरसि-पु० [सं०] जाम्बिकी एक मूर्ति ।

विभूषण-वि० [सं०] अलंकृत करनेवाला । पु० सजाना; अलंकार; मंजुश्री; सौंदर्य; कांति । -कला-की० एक समाधि ।

विभूषणा-की० [सं०] आभूषण; मज्जावट ।

विभूषणा*-सं० कि० अलंकृत करना, सजाना; शोभित करना ।

विभूषा-की० [सं०] आभूषण, अलंकार; अलंकरण; सजानेकी क्रिया; सौंदर्य, शोभा; कांति ।

विभूषित-वि० [सं०] अलंकृत; सजाया हुआ; गुणादिने युक्त; शोभित । पु० आभूषण ।

विभूषी(विद्)-वि० [सं०] सजा हुआ, अलंकृत; भूषित करनेवाला ।

विभूष्य-वि० [सं०] विभूषित; सर्वव्यापक । पु० शिव ।

विभूष्य-वि० [सं०] अलंकृत करने योग्य, सजाने लायक ।

विभूत-वि० [सं०] धारण किया हुआ; जिसका पोषण किया गया हो ।

विभेदन*-पु० भेदनेकी क्रिया, आलंगन ।

विभेसा(द्)-वि० [सं०] तोड़ने, काटनेवाला; नष्ट करनेवाला ।

विभेद-पु० [सं०] तोड़ना, खटित करना; विभाग करना; छेदना; संकीच; बाधा; परिवर्तन, मत-भिन्नता; फूट; पार्थक्य; अंतर; प्रकार; आहत करना; विरोध, खडन; धक्काहटमें डालना; वैर । -कारी(विद्)-वि० छेदने, काटनेवाला; अंतर करनेवाला; फूट डालनेवाला ।

विभेदक-वि०, पु० [सं०] काटने, छेदनेवाला; भेद दिखानेवाला; अंतर डालनेवाला ।

विभेद्व-पु० [सं०] काटने, फाड़ने आदिकी क्रिया; भेसाना; फूट डालना, पृथक् करना । वि० काटने, छेदनेवाला ।

विभेदना*-सं० कि० काटना; छेदना; प्रवेश करना ।

विभेदिक-वि० [सं०] पृथक् करनेवाला; विभाग करने-वाला ।

विभेदी(विद्)-वि० [सं०] काटने, छेदनेवाला; दूर, नष्ट करनेवाला; छेदकर प्रवेश करनेवाला; फंसी करनेवाला ।

विभेध-वि० [सं०] काटने, छेदने, पृथक् करने योग्य ।

विभो- [सं०] 'विभु'का संशोधन कारकका रूप ।

विभोर-वि० निमग्न, तल्लीन ।

विभो-पु० विभक्त, देखवर्ण, धनः प्रभुत्व ।

विभंश-पु० [सं०] अतीसारः क्षय, विनाशः पतनः वंशित होना; कमारः अपित्यका । -बन्ध-पु० एक एकाह बन्ध ।

विभंशित-वि० [सं०] विनष्ट किया हुआ; गिराया हुआ ।

-ज्ञान-वि० नाशमग्न । -पुण्य-पत्र-वि० जिसके पुण्य-पत्र तोड़ दिये गये हों ।

विभंशी(सिद्ध)-वि० [मं०] दुकड़े-दुकड़े होनेवाला; गिरनेवाला ।

विभ्रम-पु० [सं०] इतस्ततः भ्रमण करना; चकर खाना; लुढ़कना; अस्थिरता; उम्रता; बहदबाजी; धक्काबुझ; संदिग्ध; अस्थि, भूल; बहमः सौदर्य, शोभा; प्रणय-कैलि; एक हाव (सा०) ।

विभ्रमवती-स्त्री० [मं०] कन्या, लड़की ।

विभ्रमा-स्त्री० [सं०] वृद्धापा, जरा, वृद्धावस्था ।

विभ्रमी(विभ्र)-वि० [मं०] चारों ओर, इतस्ततः भ्रमण करनेवाला, चकर खानेवाला ।

विभ्राल-वि० [सं०] घूमा हुआ; चकर खाता, घूमता हुआ; चारों ओर फैला हुआ; भ्रममें पड़ा हुआ, धक्काया हुआ । -नयन-वि० तिरछी बितबनवाला । -मन्त्रा-(मन्त्र)-वि० हतयुद्धि । -होली-वि० जिसका दिमाग खराब हो गया हो; मज्ज । पु० बदर; खर्ये वा चद्रमङ्गल मङ्गल ।

विभ्रालि-स्त्री० [सं०] चकर खाना; जल्दबाजी, धक्काबुझ; भूल, भ्रम ।

विभ्राजित-वि० [सं०] चमकाया हुआ; कांतियुक्त किया हुआ ।

विभ्राट-पु० बलेहा, मद्यबो; आफत ।

विभ्राट(ज)-वि० [मं०] अलंकारसे दीप्त ।

विभ्रातुल्य-पु० [मं०] प्रतिद्विष्टता; वैर, शत्रुता ।

विभ्रेष-पु० [सं०] अपराध करना ।

विभ्रंजन-पु० [सं०] सजाना, अलंकरण; अलंकार ।

विभ्रंजित-वि० [मं०] सजाया हुआ, अलंकृत; ..में युक्त ।

विभ्रंजन-पु० [मं०] अच्छी तरह मथना ।

विभ्रजित-वि० [सं०] हवा हुआ, निमग्न ।

विभ्रत-वि० [मं०] भिन्न या विकट मत्तका; तिरस्कृत, उपेक्षित; संदिग्ध । पु० विपरीत मत; शत्रु ।

विभ्रति-वि० [मं०] भिन्न या विपरीत मनका; मूर्ख । स्त्री० मतभेद, मतविरोध; नापसंदगी; मूर्खता ।

विभ्रस-वि० [सं०] मद्ययुक्त; मस्त (हाथी) ।

विभ्रस्तर-वि० [सं०] देहरहित; निःस्पर्ध ।

विभ्रष्ट-वि० [सं०] मद्यरहित; निरानंद, जो मस्त न हो (हाथी) ।

विभ्रष्ट-वि० [सं०] जो कुछ काष्ठक मणका रंजन न करे ।

विभ्रष्टम-वि० [सं०] बीचका, उदासीन ।

विभ्रन-वि० सिद्ध, उदात्त, अनमना ।

विभ्रनस्क-वि० [मं०] सिद्ध, स्वास्त; व्याकुल, अधीर ।

विभ्रन(नस्क)-वि० [सं०] उदात्त; सिद्ध; धक्काया हुआ; विरोधी भाव रखनेवाला ।

विभ्रणिता(मन्त्र)-स्त्री० [सं०] उदासी, शिथिलता ।

विभ्रम्ब-वि० [सं०] क्षीररहित ।

विभ्रम्ब-पु० [सं०] विविध ।

विभ्रम्ब-पु० [सं०] रगड़ना, पीसना; रौंदना; संवर्ष, सुख; नाश; छेड़छाड़, बाधा; संघर्ष; खयाल; छाँटि; कालकत वृद्ध । -क्षम-वि० रौंदना सघन करनेवाला (धरातल) ।

विभ्रम्ब-वि० [सं०] मलने, रौंदने, पीसने, नष्ट करने-वाला । पु० पीसने, नष्ट करनेकी क्रिया; प्रहण; चक्रमर्द ।

विभ्रम्ब-पु० [सं०] मसलना; मलना; नष्ट करना; धुंसायि; एक राक्षस; पीसने, कुचलनेकी क्रिया; सुख; नाश, बर्बादी; प्रहण ।

विभ्रम्बनीय-वि० [सं०] मलने, पीसने योग्य ।

विभ्रम्बित-वि० [सं०] पीसा, रौंटा हुआ; रगड़ा हुआ, मला हुआ ।

विभ्रम्बि(विभ्र)-वि० [सं०] मलनेवाला; पीसकर चूर करनेवाला; नष्ट करनेवाला ।

विभ्रम्बि-पु० [मं०] मर्दनमें उत्पन्न सुगंधि ।

विभ्रम्ब-पु० [सं०] विचार, विवेचन; परीक्षण; समीक्षा; तर्क; ज्ञान; शिव, चरम विदुः एक संधि जिसमें बीजका अधिक विकास होना है किंतु फल प्राप्त होनेके पहले ही शापादिके कारण बाधाएँ उपस्थित होने लगती हैं । (ना०) । -वादी(विभ्र)-वि० तर्क करनेवाला ।

विभ्रम्ब-पु० [सं०] तर्क-वितर्क; परीक्षण, समीक्षा ।

विभ्रम्बित-वि० [मं०] विचारित, आलोचन ।

विभ्रम्बि(सिन्धु)-वि० [सं०] विचार करनेवाला; समीक्षक ।

विभ्रम्ब-पु० [मं०] विचारणा; आलोचना; उद्देग; व्याकुलता; शोष ।

विभ्रम्ब-वि० [मं०] माफ, बेदाग; विमुक्त; निर्दोष, रपट; पारदर्शक, दंत; सुंदर । पु० एक अन्नमयबी मन्त्र; एक समाधि; एक लोक; एक चाद्री वर्ष; एक तीर्थंकर; एक उप-धातु; पथकाष्ठ; मेधा नमक; अवरक्त । -कीर्ति-पु० एक बौद्ध आचार्य । -गर्भ-पु० एक समाधि । -इक्ष-पु० एक समाधि । -दास-पु० देवप्रीत्यर्थ दिया जानेवाला दान । -ध्वनि-पु० एक वृत्त । -निर्मास-पु० एक समाधि । -नेत्र-पु० एक वृद्ध । -प्रवीण-पु० एक समाधि; एक वृद्ध । -भास-पु० एक समाधि । -मणि-पु० एक वृद्ध । -मसि-वि० शुद्ध हृदयवाला ।

विभ्रम्ब-स्त्री० [मं०] ससला; एक देवी; सिद्धिकी दस भूमियो, अवलोकितेश्वर; एक; चौदहिका मुकुटमा; सरस्वती ।

-पति-पु० ब्रह्मा ।

विभ्रम्बामक-वि० [सं०] निर्मल ।

विभ्रम्बामा(व्यन्त्र)-वि० [मं०] जिसका मन पवित्र हो । पु० चंद्रमा (१) ।

विभ्रम्बामि-पु० [सं०] गिरनार पर्वत (गुजरात) ।

विभ्रम्बामक-वि० [सं०] निर्मल ।

विभ्रम्बामोक्त-पु० [सं०] एक तीर्थंकर ।

विभ्रम्बामोक्त, विभ्रम्बामोक्त-स्त्री० [मं०] एक नदी ।

विभ्रम्ब-पु० [सं०] कुतो जादिका अस्त्राष्ट मांस ।

विभ्रम्ब(पुं)-स्त्री० [सं०] सौतेली माँ । -(पुं)ज-पु० सौतेला भाई ।

विमान-वि० [सं०] जिसका मार्ग-चक्र न हो ।

विमान-वि० [सं०] असम्मानित । पु० असम्मान; दैन-
यान; बाधुयान; सात मंजिरीवाला मकान; रामप्रासाद;
देवमंदिर सजी हुई अरथी; रामलीला आदिमें काम
जानेवाला एक तरहका यान; एक तरहकी मीनार; कुंज;
वीर; अथवा; कैलाश । -**चारी(रिज्)**, -**बाण-वि०**
विमानसे यात्रा करनेवाला । -**चाळक-पु०** बाधुयान
चलानेवाला, 'पायलट' । -**निर्धूह-पु०** एक समाधि ।
-**राज-पु०** देवयानका चाळक; बहुत अच्छा विमान ।

विमानक-पु० [सं०] बाधुयान; सात मंजिरीवाला मकान
वा मीनार ।

विमानना-स्त्री० [सं०] अनादर, तिरस्कार ।

विमानित-वि० [सं०] अनादर, तिरस्कृत ।

विमानीकृत-वि० [सं०] निरादर विमान बनाया हुआ ।

विमार्ग-पु० [सं०] कुमार्ग; शाकना; शत्रु । वि० कुमार्ग-
पर जानेवाला । -**ग-**, -**गामी(मिन्)**-वि० दूरे रास्ते-
पर जानेवाला । -**गा-वि०** स्त्री० पुंशब्दी । -**दष्टि-वि०**
दूरे विषयोंकी ओर दृष्टिपान करनेवाला । -**प्रस्थित-**
स्व-वि० जो कुमार्ग पर हो ।

विमार्गण-पु० [सं०] किसी चीजको तलाश करना ।

विमार्जन-पु० [सं०] धोना, साफ करना; पवित्र करना ।

विमित-पु० [सं०] चार खंभोंपर टिकी हुई बगोईकार शाला;
गढ़ा कमरा, हमारत । वि० परिमित; निश्चित; निर्मित ।

विमिश्र-वि० [म०] मिला हुआ; जिसमें कई तरहकी चीजें
मिली हों । पु० सूटके साथ मूल बन ।

विमिश्रा-स्त्री० [सं०] कुछ प्रहली गतिका एक अंश ।

विमिश्रित-वि० [सं०] एकमें मिलाया हुआ, विमिश्र ।

विमुक्त-वि० [सं०] मुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ; स्वतंत्र;
परित्यक्त; कैला, चलाया हुआ; वचित, जिसने अभी
कैलुकी छोड़ी हो (सत्री), धीर, शान्त; से सवित; बचा
हुआ; बरी किया हुआ । -**कंड-वि०** जोरसे चिस्लाने या
रोनेवाला । -**प्रग्रह-वि०** जिसकी लगाम ढीली कर दी
गयी हो । -**शाप-वि०** जिसे शापमें सुटकारा मिल
गया हो ।

विमुक्ति-स्त्री० [सं०] रिहाई, सुटकारा; पार्यवय; मुक्ति,
मोक्ष । -**पथ-पु०** मोक्षका मार्ग ।

विमुख-वि० [म०] बहिर्मुख; बिरत; प्रतिकूल; वचित;
हताश; परहेजगार; उदासीन; मुलहीन; छिद्ररहित ।

विमुख-वि० [सं०] मुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ; अमर्मे पड़ा
हुआ; मीत; मोहित; मत्त । -**कारी(रिज्)**-वि० मोहने-
वाला; अमर्मे डालनेवाला ।

विमुपक-पु० [म०] मोहनेवाला; अभिनयना एक
प्रकार ।

विमुह-वि० [सं०] भिरानंद, खिन्न । पु० एक बड़ी सख्या
(शै०) ।

विमुह-वि० [म०] बिना मुहरका; खिला हुआ; प्रचुर ।

विमुद्रण-पु० [सं०] खिलनेमें प्रवृत्त करना ।

विमुह-वि० [सं०] धक्काया हुआ; मूर्ख; बेसुध; मोहित;
चतुर । पु० एक दैवयोगि । -**गर्भ-पु०** वह गर्भ जिसमें
बच्चा मर गया हो और प्रसवमें कट हो । -**बेला(सस्)**,

-**धी-वि०** मूर्ख, नासमझ । -**भाव-पु०** बेसुध होनेकी
अवस्था । -**हंज-वि०** धक्काया, चक्रावा हुआ ।

विमुहक-पु० [सं०] एक तरहका प्रहसन (ना०) ।

विमुह्य-वि० [सं०] जिसकी मूर्छा दूर हो गयी हो ।

विमुह्यित-वि० [सं०] जो अमरक गाढ़ा हो गया हो;
...से गुंजता हुआ; ...से पूर्ण; मिश्रित; बेहोश ।

विमुह्य-वि० [सं०] जमा हुआ; जो ठोस हो गया हो ।

विमुह्य-वि० [सं०] गंवा, खलाट ।

विमुह-वि० [सं०] जबसे उखाड़ा हुआ; मुलहीन; नष्ट ।

विमुह-पु० [सं०] मूलोच्छेद करना; नाश करना ।

विमुह-वि० [सं०] अमर ।

विमुह्यित-वि० [सं०] दै० 'विमर्दित' ।

विमुह्य-पु० [सं०] सोच-विचार, विवेचन ।

विमुह्य-वि० [सं०] जिसपर विवेचन या विचार करना
हो; जिसकी समीक्षा करनी हो ।

विमुह्य-वि० [सं०] विचारित, विवेचिग; आलोचित; रगड़ा
हुआ; मुका हुआ ।

विमोक्ष-पु० [सं०] मुक्त करना; अंत; परित्याग; विषयादि-
से सुटकारा । वि० मलहीन; रागहीन ।

विमोक्षा(कृ)-वि० [सं०] मुक्त करनेवाला ।

विमोक्ष-पु० [सं०] सुटकारा; मुक्ति, निर्वाण; आजाद
करना; दान; (बाण) चलाना; मेरु पर्वत; प्रहणका अंत ।

विमोक्षक-वि० [सं०] मुक्त करनेवाला ।

विमोक्षण-पु० [सं०] विमोचन, बंधनमुक्त करना; परि-
त्यजन; (बाण आदि) चलाना ।

विमोक्षी(क्षिन्)-वि० [सं०] जिसे मुक्ति, निर्वाण प्राप्त
हुआ हो ।

विमोच-वि० [सं०] ब्यर्थ, बेकार, निष्फल; अशोच ।

विमोचक-वि० [म०] मुक्त करनेवाला; गिरानेवाला,
छोड़नेवाला ।

विमोचन-पु० [सं०] दूर करना; मुक्त करना; उपमे
हटाना; निकालना; कैकना; गिराना; शिव ।

विमोचना-सं० कि० बधन-मुक्त करना; छोड़ना; बहाना,
गिराना ।

विमोचनीय-वि० [सं०] छोड़ने योग्य ।

विमोचित-वि० [म०] खोला हुआ; मुक्त किया हुआ ।
पु० शिव ।

विमोचितावास-पु० [सं०] अनुपयुक्त समस्तकर छोड़े
हुए आनमें निवास करना (शै०) ।

विमोच्य-वि० [सं०] छोड़ने, मुक्त करने योग्य ।

विमोह-पु० [सं०] मतिभ्रंश; भ्रम; अज्ञान; आसक्ति; एक
नक्का ।

विमोहक-वि० [सं०] भ्रममें डालनेवाला; लुब्ध करने-
वाला । पु० एक राग ।

विमोहन-पु० [सं०] भ्रम; बुद्धिभ्रंश; आकुल करनेकी
विधा, उखाड़न; डुबाना; एक नरक; कामदेवका एक
बाण । -**शील-वि०** भ्रममें डालनेवाला; मुग्ध करने-
वाला ।

विमोहना-सं० कि० मुग्ध होना; धोखा खाना । सं०
कि० मुग्ध करना, डुबाना; प्रभावित कर बशीबूत करना;

आंत करना ।

विमोहा-खी० [सं०] एक छंद ।

विमोहित-वि० [सं०] लुब्ध, मुग्ध; बेमुग्ध, मूर्खप्रसन्न; बचोक्त ।

विमोही (विह्व) -वि० [सं०] युष्म करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला; अचेत करनेवाला; मोहोहित ।

विमोह-पु० विमोहा, मोही ।

विमोहापण-पु० [सं०] मुरझानेमें प्रवृत्त करनेवाला ।

विमोह-पु० दो अंगोंवाला, महादेव ।

विम-वि० दो; दूसरा ।

विमति-पु० [सं०] एक पक्षी; नवपुत्र राजाका एक पुत्र ।

विमत्-पु० [सं०] आकाश; वायुमण्डल । वि० गतिशील ।

-पताका-खी० विजली । -पय-पु० वायुमंडल ।

विमद्-विमद्'का समासगत रूप । -भंगा-खी० आकाश भंगा । -गत्-वि० आकाशमें उड़नेवाला । -भूति-खी० अंधकार ।

विमन्मणि-पु० [सं०] चर्य ।

विमन्-पु० [सं०] दे० 'विमाम' ।

विमन्-पु० [सं०] एक प्रकारका आंन कृति ।

विमन्-वि० [सं०] भृष्ट; बेहवास; अविष्ट; परित्यक्त; दुःखी ।

विमन्-पु० [सं०] सविष्णुता; रोक; विराम; कष्ट ।

विमुक्त-वि० [सं०] अलग किया हुआ, परित्यक्त; रहित, बिना; जिसका किस्सेसे पार्यन्त हुआ हो, जुदा; अभावग्रस्त ।

विमुक्त-वि० [सं०] से विमुक्त; नचित, रहित ।

विमूय-वि० [सं०] यूथवृद्ध, जो अपने हुक्से अलग हो गया हो ।

विमो-वि० दूसरा ।

विमोहा-पु० [सं०] विच्छेद; पार्यन्त; विरह; अभाव; छुटकारा; व्यवकलन, वटाव । -भाक् (ज्) -वि० विहातुर । -भृगार-पु० भृगाररसका वह भेद जिसमें प्रेमियोंके विरहका वर्णन होता है, विप्रलम्भ-भृगार ।

विमोहास-वि० [सं०] जिसके कथानकका अंत वियोगमें हो, दुःखांत (नाटकादि) ।

विमोहावसान-वि० [सं०] जिसका वियोगमें अंत हो ।

विमोहावह-वि० [सं०] विच्छेद करनेवाला ।

विमोहिनी-खी० दे० 'वियोगिनी' ।

विमोहिनी-खी० [सं०] प्रेमीसे बिछुई हुई खी, विरहिणी ।

विमोही (मिन्) -वि० [सं०] भियासे बिछुड़ा हुआ, विरही । पु० विरही पुत्र; चक्रवाक ।

विमोजक-वि० [सं०] पृथक् करनेवाला । पु० धटायी जानेवाली छोटी मंथना ।

विमोजन-पु० [सं०] पृथक् करना; जुदाई; व्यवकलन ।

विमोक्ति-वि० [सं०] पृथक् किया हुआ; वंचित, रहित ।

विमोक्ष-वि० [सं०] अलग करने योग्य, जिसे पृथक् करना हो । पु० वह सख्या जिसमेंसे कोई संख्या घटायी जाय ।

विमो-वि० [सं०] जिसका रग अच्छा न हो, बदरग; कई रंगोंका । पु० [हिं०] एक तरहकी मिट्टी, कंकुष्ठ; विराम ।

-काबुली-पु० वायविक ।

विरच-पु० [सं०] प्रज्ञा ।

विरचन, विरचि, विरच्य-पु० [सं०] दे० 'विरच' ।

विरचक-पु० एक भाव ।

विरचित-वि० [सं०] जिसका प्रणय, भासक्ति बंद पड़ गया हो ।

विरक्त-वि० [सं०] जिसके रग, स्वभाव आदिमें परिवर्तन हो गया हो; अनुरक्त; उदासीन; क्षिप्त; आसक्त । पु० ताक देनेके काम जानेवाले बाजे ।

विरक्ति-खी० [सं०] भाव आदिका परिवर्तन; विराम; अनासक्ति; उदासीनता; क्षिप्ता ।

विरचन-पु० [सं०] सजानेकी क्रिया; धारण करना; निर्माण, रचना ।

विरचना-सं० कि० निर्माण करना, सजाना । * अ० कि० विरक्त होना, उदासीन होना ।

विरचयिता (वृ) -पु० [सं०] निर्माण, रचना करनेवाला ।

विरचित-वि० [सं०] निर्मित; पूरा किया हुआ; लिखित, रचित; धारण किया हुआ; कथित ।

विरचन-वि० [सं०] रग-परिवर्तन करनेवाला; रग-परिवर्तनके लिए उपयोगी ।

विरजस्-वि० [सं०] दे० 'विरजा (जस्)' । - (ज्) - समा (अस्) -वि० तमोगुणमें रहित, सत्यगुणयुक्त । -ग्रन्-पु० एक वृक्ष ।

विरजस्क-वि० [सं०] दे० 'विरजा (जस्)' ।

विरजस्का-खी० [सं०] गतातवा खी ।

विरजा-खी० [सं०] कपिल्यानी नामक पौधा; दूबा; नवप-की खी; कृष्णकी एक सखी; जगन्नाथ क्षेत्र ।

विरजा (जस्) -वि० [सं०] वृत्तिरहित, स्वच्छ; विरक्त । पु० विष्णु; एक तीर्थ; एक कवि; बसिष्ठका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । खी० गतातवा खी; दुर्गा ।

विरजा-पु० [सं०] मेरुके उत्तर स्थित एक पर्वत ।

विरट-पु० [सं०] कंधा; एक तरहका काला अगर ।

विरण-पु० [सं०] एक सुगंधित धाम ।

विरत्-वि० [सं०] जिसका अंत हो गया हो; निवृत्त; जिसने हाथ खींच लिया हो; विरक्त, अनुरक्त; लीन, संलग्न ।

विरति-खी० [सं०] विराम, अंत, मनका हट जाना, विराम ।

विरच-वि० [सं०] रच-रहित ।

विरच्य-पु० [सं०] शिव ।

विरच्य-खी० [सं०] नुरा रास्ता ।

विरच्-पु० प्रसिद्धि; नाम; यश, कीर्ति । वि० [मं०] अंतहीन ।

विरचावली-खी० कीर्तिकथा, गुणवर्णन ।

विरचै-वि० नामवर, यशस्वी ।

विरम-पु० [मं०] समाप्ति; अंत; स्वांस्त; त्याग ।

विरमण-पु० [सं०] रकमा, ठहरना; हाथ खींच लेना, त्याग करना; रमना ।

विरमना-सं० कि० रमना, मन लगाना; ठहरना; मुग्ध होकर रुक जाना; देर लगाना ।

विरमाना-सं० कि० मुग्ध करना; फँसा रखना; भ्रममें काने रखना ।

विरल-वि० [सं०] अवकाश द्वारा पृथक् किया हुआ, धना नदी। कम मिलनेवाला; घाटी; बोझा; शीला; पतला; दूरवर्ती। पु० दही। -**आनुक**-वि० जिसके घुटने बहुत बलम हैं। -**ब्रवा**-**खी**० चावल या अन्य किसी जलसे भरी हुई एक तरहकी लपसी। -**पातक**-वि० जो शायद ही पाप करे। -**भक्ति**-वि० जिसमें भिन्नता न हो, एक ही तरहका (काम आदि)।

विरलागत-वि० [सं०] जो शायद ही कभी घटित होता हो।
विरलिका-**खी**० [सं०] एक तरहका शीना कपडा।

विरलित-वि० [सं०] जो धना न हो।

विरव-वि० [सं०] बिना शब्दका, नोरव।

विरश्मि-वि० [सं०] जिसमें किरणें न हों।

विरस-वि० [सं०] नीरस; स्वादहीन; अश्वि; जो उबाने-वाला; कटकर; भिन्नुर। पु० कट; काम्यके रसका मंग होना।

विरसा-पु० [अ०] वृत्त न्यक्तिकी संपत्ति, तरका, मोरस।

विरह-पु० [सं०] जुदाई, वियोग; अभाव; अवियमानता; परित्याग; वियोगमें अनुभूत होनेवाला अनुराग। -**ज**-**जनि**-**जन्म**-वि० वियोगमें उत्पन्न। -**उत्तर**-पु० विरहजन्य ताप। -**विरस**-वि० विरहका खयाल होनेपर कष्ट देनेवाला।

विरहाग्नि-**खी**० दे० 'विरहानल'।

विरहाग्नि-**खी**० [सं०] दे० 'विरहानल'।

विरहानल-पु० [सं०] विरहकी अग्नि।

विरहिणी-**खी**० [सं०] पति, प्रियसे बिछुई हुई दुःखिनी नायिका; मजदूरी, पारिश्रमिक।

विरहित-वि० [सं०] परित्यक्त; रहित।

विरही(**हिन्**)-वि० [सं०] प्रियाके वियोगसे दुःखी; प्रियामें विद्युक्त; प्यकी।

विरहोत्फट्टित-**खी**० [सं०] नायकके किसी कारणसे न आनेमें दुःखी नायिका।

विराग-पु० [सं०] रंगका परिवर्तन; रागका अभाव; असंतोष; अरुचि; विकर्षण; विरक्ति; बहू राग जिसमें दो राग मिले हैं। वि० रागहीन, उदासीन।

विरागी(**मिन्**)-वि० [सं०] चाह, अनुरागरहित, उदासीन; विरक्त, निर्विषय।

विराज-वि० [सं०] चमकीला। पु० मंदिरका एक विशेष रूप; एक तरहका पक्काड़; एक पीछा; एक प्रज्ञापति।

विराज-पु० [सं०] शासन करना; व्याप्त होना; शोभित होना।

विराजना-अ० कि० शोभित होना; बैठना; रहना।

विराजमान-वि० [सं०] प्रकाशयुक्त, चमकता हुआ; वर्तमान, विद्यमान; बैठता हुआ।

विराजित-वि० [सं०] उपस्थित; सुशोभित; प्रकाशित; प्रसिद्ध।

विराज्ञी-**खी**० [सं०] रानी (बै०)।

विराज्य-पु० [सं०] शासन; राज्य।

विराट-पु० [सं०] मत्स्य देश (अलवर, जयपुर आदिका भूभाग); मत्स्य देशका राजा; बुद्ध; एक ताल (संगीत)।

-**ज**-पु० विराटदेशीय हारक, राजपट्ट। -**वर्ष**(**ह**)-

पु० महाभारतका एक खंड।

विराटक-पु० [सं०] दे० 'विराटज'।

विराट-वि० बहुत बड़ा।

विराट(**ह**)-पु० [सं०] प्राधान्य; भरतवा; ब्रह्माकी पहली संतान; आदि पुरुष, विश्वरूप ब्रह्मा; सौदर्य; कांति; शक्ति; शरीर; एक एकाड़।

विराणी(**मिन्**)-पु० [सं०] हाथी।

विरातक-पु० [सं०] अजुन बूझ।

विराट-वि० [सं०] जिसका सामना, विरोध किया गया हो; अपमानित; अपकृत।

विराट-पु० [सं०] विरोध; क्रुदाना, तंग करना; कष्ट देना; एक बली राक्षस जिसे रामने मारा था।

विराधन-पु० [सं०] विरोध; अपकार करना; तंग करना; कष्ट, पीड़ा।

विराधा-**खी**० [सं०] अपकार।

विराधान-पु० [सं०] कष्ट, पीड़ा।

विराम-पु० [सं०] ठहराव, अंत; विश्राम; वाक्यांश, वाक्य आदिके बाद रुकनेका स्थान; विष्णु; परिणाम (?)। -**ताल**-पु० ब्रह्मा तालका एक भेद।

विरामण-पु० [सं०] ठहराव।

विराल-पु० [सं०] भांजार, विलाव।

विराव-पु० [सं०] शब्द; विलापट; हहा, शोर; भन-भनाहट।

विरावण-वि० [सं०] शोरयुक्त करानेवाला।

विराविणी-वि० **खी**० [सं०] बोलने, शब्द करनेवाली; रोने-विहानेवाली। **खी**० झार; एक नदी।

विरावित-वि० [सं०] शब्दावमान किया हुआ।

विरावी(**मिन्**)-वि० [सं०] शब्द करनेवाला; रोने-विहानेवाला; गूँजनेवाला। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

विरावृत्त-पु० [सं०] काकी मिर्च।

विरास-पु० दे० 'विलास'।

विरासत-**खी**० [अ०] तरका, विरसा; उत्तराधिकारमें मिलनेवाला माल।

विरासी-**वि**० दे० 'विलासी'।

विरिंच, **विरिंचन**, **विरिंचि**-पु० [सं०] ब्रह्मा।

विरिक्त-वि० [सं०] खाली किया हुआ; निकासकर साफ किया हुआ; जिसे वस्तु कराये गये हैं।

विरिक्ति-**खी**० [सं०] खाली करानेकी क्रिया; विरेचन।

विरिच्छ-पु० [सं०] खर; ध्वनि।

विरुजान(**कमर**)-पु० [सं०] चमकदार हथियार या गहना।

विरुज-वि० [सं०] खचित, विदीर्ण; नष्ट; झुका हुआ; मंथ, सुस्त; बहुत बीमार।

विरुज-पु० [सं०] एक अक्ष-संबंधी मंत्र।

विरुज-वि० [सं०] तोड़ने, विदीर्ण करनेवाला; पीड़ा देने-वाला; नीरोग।

विरुजवा-**अ**० कि० उलहाना।

विरुजवा-**स**० कि० उलहाना। अ० कि० मचलना; उलहाना।

विरल-वि० [सं०] विस्मया हुआ; गूँजता हुआ; शब्दाव-

मान । पु० चिल्लाहट; घोर; गान; गुंजन; कलरव ।
विद्वद्-पु० [सं०] कीर्तिगाथा; बह कविता आदि जिसमें किसीके यश आदिका वर्णन किया गया हो; प्रशंसापुष्पक पदवी; चिल्लाहट; घोषणा । -ध्वज-पु० राजकीय पताका ।

विद्वदावली-स्त्री [सं०] विद्वत् यशोवा ।
विद्वद्वित-पु० [सं०] रोना-चिल्लाना; शोक ।
विद्वद्-वि० [सं०] बाधित, रोका हुआ; जिसका प्रतिरोध किया गया हो; अवरोध; संदिग्ध; छतरनाक; विरोधी, प्रतिकूल; शत्रुतापूर्ण; अभिय; जो अनुकूल न पड़े (आहार आदि); जो मेलमें न हो; असंगत । पु० विरोध; वैर; एक अर्थोल्कार । अ० विरोधमें । -कर्म(संज्ञ)-वि० असंगत कार्य करनेवाला । -जी-वि० शत्रुतापूर्ण भाव रखनेवाला । -प्रसंग-पु० निषिद्ध कार्य । -प्रतिकारिता-स्त्री पदका अनुचित अर्थका शीतक होना (सा०) । -हेवाभास-पु० एक प्रकारका हेत्वाभास (न्या०) ।

विद्वद्वता-स्त्री [सं०] प्रतिकूलता, वैपरीत्य ।
विद्वदाचरण-पु० [सं०] बुरा आचरण, बुरा कर्म ।
विद्वद्वार्य-वि० [सं०] विरोधी अर्थवाला । -वीर्यक-पु० दीपक अलंकारका एक भेद जहाँ एक ही बातसे दो परस्पर विरोधी कियार्थ साध-साध दिखायी जायें ।

विद्वदासन-पु० [सं०] निषिद्ध या वज्रित आहार ।
विद्वद्वीक-स्त्री [सं०] प्रतिकूल वचन, कलह ।
विद्वद्-वि० [सं०] रूखा, कटा, कर्कोश (वचन) ।
विद्वक्षण-वि० [म०] छुसाने, रूखा करनेवाला; नकोचक । पु० रूखा करनेकी क्रिया; निदा; शाप ।

विद्वक्षित-वि० [सं०] रूखा बनाया हुआ; ज्ञेय किया हुआ; आहत ।
विद्वज्-पु० [सं०] एक अग्नि जिसका स्थान जलमें माना जाता है ।

विद्वद्-वि० [सं०] अकुरित; ऊपर; चढ़ा हुआ । -बोध-वि० जिसकी बुद्धि बढ़ या परिपक्व हो गयी हो ।
विद्वद्वक-पु० [सं०] अकुरित अक्ष; एक लोकपाल (शै०) । शब्दाकुला एक पुत्र ।

विद्वदि-स्त्री [सं०] अकुरित होना ।
विद्वदिनी-स्त्री [सं०] वैशाख-कुला एकादशी ।
विद्वप-वि० [सं०] बदशक्ल, भद्दा; जिसकी आकृति विकृत हो गयी हो; कदाकार; विभिन्न प्रकारका; परिवर्तित; एक कम । पु० पांडु रोग; शिव; एक असुर; कुरुपता; रूप-भिन्नता; भरी शङ्ख; पिप्लोमूल । -करण-पु० आकृति विकृत करना; सति पहुँचाना । -चक्षु(स्त्र) पु० शिव । -परिणाम-पु० एककी अनेकमें परिणति । -रूप-वि० बदशङ्क, कुरुप ।

विद्वपक-वि० [सं०] कुरुप; भयकर; अनुचित । पु० एक असुर; ब्यंगपुष्पक नाम ।

विद्वपता-स्त्री [सं०] कुरुपता; विभिन्नता, बहुरूपता ।
विद्वपा-स्त्री [सं०] यमकी पत्नी; अतिविषा; दुराजना ।
विद्वपाक्ष-वि० [सं०] जिसकी नाँसें कुरुप हों; तरह-तरहके काम करनेवाला । पु० शिव; शिखा एक गण; एक शत्रु; एक बन्धु; एक दानव; एक राक्षस; एक नाम;

एक लोकपाल ।

विद्वपी(विद्व्)-वि० [सं०] सदा; कुरुप । पु० गिरगिट ।
विद्वेक-पु० [सं०] अँतकी सफाई; मल-निष्कासन; दिग्गम-की सफाई; जुलाब, विद्वेचन ।

विद्वेच-वि० [सं०] सारक, दस्त कानेवाला ।
विद्वेचन-पु० [सं०] दस्तावर दवा, जुलाब; दस्त काना; पांडु बूझ । वि० खोलनेवाला ।

विद्वेषित-वि० [सं०] दस्त काया हुआ ।
विद्वेषी(विद्व्)-वि० [सं०] दस्तावर ।
विद्वेध-वि० [सं०] दस्तावर दवा देने योग्य ।

विद्वेक-पु० [सं०] घारा; नदी ।
विद्वेभित-वि० [म०] शब्दित ।

विद्वेक-पु० [म०] चमक, कानि; धूप-रश्मि; दरादर; छिद्र; गड्ढा ।

विद्वेग-पु० [सं०] आरोग्य, रोगराहित्य । वि० स्वस्थ ।
विद्वेचन-वि० [सं०] प्रकाशित करनेवाला । पु० सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; अर्क; एक तरबूचा करना; एक तरबूचा द्योनाक; रोहित वृक्ष; राजा बल्लिका पिना; विष्णु । -सुत-पु० राजा बलि ।

विद्वेहा(द्वेह)-वि० [सं०] विरोध करनेवाला, मामना करनेवाला ।

विरोध-पु० [सं०] बाधा; प्रतिरोध; विपक्षता; अवरोध, रोक, प्रतिबंध; सामजस्यहीनता; विपरीतता; वैर, शत्रुता; कलह; सङ्कट; एक अर्थोल्कार, विरोधाभास जहाँ विरोध न होनेपर भी विरोध-सा भाव हो-जाति, द्रव्य, गुण, क्रिया-मेंसे किसी एकका दूसरी जाति, द्रव्यादिसे विरोध जान पड़े; कथानस्तुकी प्रगतिमें पड़नेवाली बाधा । -कारक-वि० कलह पैदा करनेवाला । -कारी(विद्व्)-वि० कलह बढ़ानेवाला । -कृत्-वि० विरोध करनेवाला । पु० शत्रु । -किंवा-स्त्री संग्रह, सवर्ध । -परिहार-पु० विरोधवा दूर होना, सामजस्य स्थापित होना । -बचन-पु० खटन, प्रतिकूल बात । -दामन-पु० कलह शांत करना ।

विरोधक-वि० [म०] कलह पैदा करनेवाला; बाधक । पु० अवर्णनीय विषय (ना०) ।

विरोधन-वि० [सं०] विरोध करनेवाला, लड़नेवाला । पु० बाधा, रोक; कलह; गंधर्ष; प्रतिरोध; क्षतिग्रस्त करना; असामजस्य; अवरोध; नाश ।

विरोधना-सं० [सं०] किं वैर, विरोध करना ।
विरोधाचरण-पु० [सं०] शत्रुतापूर्ण कार्य; विरुद्ध कार्य ।
विरोधाभास-पु० [सं०] विरोधका आभास एक अर्थोल्कार जहाँ वास्तविक विरोध न होकर विरोधका आभास-मात्र हो, दे० विरोध (अलंकार) ।

विरोधित-वि० [सं०] जिसका विरोध किया गया हो; क्षतिग्रस्त; अस्वीकृत ।

विरोधिता-स्त्री [सं०] विरोधी होनेका भाव; नक्षत्रोंकी प्रतिकूल दृष्टि (ज्यो०) ।

विरोधिनी-स्त्री [सं०] वैर, विरोध करनेवाली स्त्री; एक राक्षसी (भूतसङ्की पुत्री) ।

विरोधी(विद्व्)-वि० [सं०] विरोध करनेवाला; बाधक; अवरोध करनेवाला; बढ़ानेवाला; वैरी; अनुकूल न पड़ने-

बाला (आहार); प्रतिफल; वेमेल; प्रतिस्पर्धा करनेवाला; समबाद। पु० पचीसवीं संवत्सर, शत्रु। —(वि)श्लेष—
पु० एक प्रकारका श्लेषालंकार जहाँ छिट्ट चम्की द्वारा दो वस्तुओं में भेद या विरोध दिखाया जाव (किशव)।
विरोधी-शी० [सं०] दे० 'विरोध-वचन'।
विरोधीउपमा—शी० [सं०] उपमा अलंकारका एक भेद जहाँ किसी वस्तुकी उपमा एक साथ दो विरोधी उपमानोंके साथ दी जाव।
विरोध—वि० [सं०] जिसका विरोध करना हो।
विरोधन—पु० [सं०] पौधा लुप्ताना, रोपना; धावका भरना। वि० रोपनेवाला; धाव भरनेवाला।
विरोधित—वि० [सं०] रोपा हुआ; भरा हुआ (धाव)।
—द्रव्य—वि० जिसका धाव भर गया हो।
विरोधना(मन्)—वि० [सं०] बिना रोवेंका, रोमरहित।
विरोधित—वि० [सं०] अस्त-व्यस्त किया हुआ।
विरोध—पु० [मं०] अंकुरित होना, जमनेका स्थान, उद्भव-स्थान।
विरोधन—पु० [मं०] अंकुरित होना; रोपना; एक नाग। वि० (धावकी) भरनेवाला।
विरोधी(विन्)—वि० [सं०] रोपने, पौधा लुप्तानेवाला; अंकुरित होनेवाला।
विलंबन—पु० [मं०] लौथना, फाँव जाना अपकार, अपराध; उल्लंघन; भोजनादिमें परहेज।
विलंबना—शी० [मं०] लौथना; पराभूत करना, पराजित करना।
विलंबनीय—वि० [मं०] लौथने या पराभूत करने योग्य।
विलंबित—वि० [सं०] लौथा हुआ; उल्लंघित; पराजित, पराभूत। पु० भोजनादिमें परहेज।
विलंबी(विन्)—वि० [मं०] लौथनेवाला; उल्लंघन करनेवाला; चढ़नेवाला।
विलंब्य—वि० [सं०] पार करने योग्य (नदी आदि); पराभूत करने योग्य; सहन करने योग्य।
विलंब—पु० [सं०] लटकना, झूलना; देर; दीर्घसूत्रता; सुस्ती; एक संवत्सर। वि० लटकनेवाला।
विलंबन—पु० [मं०] लटकना; देर होना, सुस्ती दीर्घसूत्रता।
विलंबना—अ० कि० देर करना; रम जाना; लटकना; अवलंब लेना।
विलंबिका—शी० [सं०] एक तरहका अजीर्ण या मलमरोध जो कुछके मतसे हेजेकी अंतिम अवस्था है।
विलंबित—वि० [सं०] लटकता हुआ; आश्रित; अवलंबित; जिसमें देर हुई हो; भीमी लयवाला, द्रुतका उलटा (संगीत)। पु० सुस्त जानवर; सुस्ती; देर। —गति—शी० एक वृत्त।
—फल—वि० जिसका फल मिलनेमें देर हो।
विलंबी(विन्)—वि० [सं०] लटकने, सहारा लेनेवाला; देर करनेवाला। पु० एक संवत्सर, विलंब।
विलंब—पु० [सं०] मेट; दान; औदार्य।
विल—पु० [सं०] दे० 'विल' (सं०)।
विलक्ष—वि० [सं०] परिचायक विद्वानोंमें रहित; हस्तबुद्धि, पथशायी हुआ; चकित; शर्मिदा, लज्जित; अमाकृतिक,

बनावटी (हँसी आदि); लक्ष्यरहित; निशाना चूक जानेवाला; असाधारण, अलौकिक।
विलक्षण—वि० [सं०] अलौकिक, असाधारण; भिन्न चिह्नोंवाला; जिसमें कोई विशेष लक्षण न हो; वह अवस्था जिसका कारण न जान पड़े; अशुभ चिह्नोंवाला। पु० गौरसे देखना; वह अवस्था जिसका कोई कारण न हो।
विलक्षणा—शी० [सं०] श्रम्य-विशेष।
विलक्षित—वि० [सं०] अविहित; जो गौरसे देखा, समझा गया हो; हस्तबुद्धि, चकताया हुआ; कुढ़ा हुआ; जिसका भेद न किया गया हो, पार्थक्य न दिखाया गया हो।
विलक्ष्य—वि० [सं०] जिसका कोई लक्ष्य न हो; निशाना चूक जानेवाला (शान्)।
विलक्षना—अ० कि० दुःखी होना; * ताड़ जाना, भाँप लेना।
विलक्षणा—अ०—स० कि० कष्ट देना, दुःख देना। अ० कि० दुःखित होना।
विलग—वि० अलग। पु० अंतर, भेद।
विलगाना—अ०—स० कि० अलग करना। अ० कि० अलग होना।
विलगित—वि० [सं०] संबद्ध, सलग्न।
विलग्न—वि० [सं०] आबद्ध, संबद्ध, सलग्न; अवलंबित; लटकता हुआ; पित्रवद्ध (पक्षी); व्यतीत; पतला; नाजुक। पु० कमर; कटि; नितब; राशियोंका खदब; जन्मपत्रिका।
—मध्या—शी० पतली कमरवाली स्त्री।
विलग्न—वि० [सं०] दे 'विलग्न'।
विलज्ज—वि० [सं०] निर्लज्ज, बेहया।
विलज्जित—वि० [सं०] लज्जाया हुआ, शर्मिदा।
विलपन—पु० [सं०] विलाप करना; गप-शप करना; तेल आदिका नीचे बैठे हुआ मेल। —विनोद—वि० रोकथोक दूर करना।
विलपना—अ० कि० रोना, विलाप करना।
विलपाना—अ०—स० कि० बहाना, विलाप करना।
विलपित—वि० [सं०] रोया, विलाप किया हुआ। पु० विलाप।
विलक्ष्य—वि० [सं०] प्रदर्श; पृथक् किया हुआ।
विलक्षि—शी० [सं०] दूर करना, हटाना।
विलक्ष्य—पु० [सं०] द्रवण, विलग्न; विलीन होना; लोप; वृत्त्यु; नाश; प्रलय।
विलक्षण—पु० [सं०] द्रवण, विलग्न; क्षय होना; हटाना, दूर करना; क्षय करना; क्षय करनेवाला पदार्थ; विलीन होनेकी क्रिया, विलय।
विलस्य—पु० [सं०] चमकना; कीडन।
विलसना—अ०—अ० कि० शोभित होना; विलास करना; मीठ, आनंद करना।
विलसाना—अ०—स० कि० भोगना; भोगनेमें प्रवृत्त करना।
विलसित—वि० [सं०] चमकता हुआ; व्यक्त; शोभित; मीठाप्रिय, विनोदी। पु० चमक; चमकनेकी क्रिया; अभिव्यक्ति; मीठा; परिणाम, फल; अंगभंगी।
विलहवही—शी० [सं०] विलेके बंदोबस्तका म्योरा।
विलाता—शी० [सं०] एक तरहकी विडिया।

विकल्प-पुं [सं०] रोना; शोक करना ।

विकल्पव-वि० [सं०] हकानेवाला, जो विकल्पका कारण हो (संकादि); विपक्षानेवाला; नष्ट करनेवाला । पुं शिक्का एक गण; हकानेकी क्रिया; नाश; मृत्यु; नाशका साधन; विपक्षानेका साधन ।

विकल्पना-अ० किं विकल्प करना ।

विकल्पविता(तृ)-वि० [सं०] बोलने, विपक्षानेवाला ।

विकल्पित-वि० [सं०] बोला, विपक्षवाया हुआ ।

विकल्पी(पिन्)-वि० [सं०] रोने, विकल्प करनेवाला ।

विकल्पत-स्त्री [ज०] शासन; एक राजाके अधीन देश, राज्य; ईरान-अफगानिस्तान; भ्रिटेन; यूरोप; विदेश; बलीका पदा संरक्षकता; ईश्वरका सामीप्य ।

विकल्पती-वि० विकल्पयता; ईरानी; यूरोपीय; विदेशी ।

-अनन्तास-पुं रामर्षस । **-कद्व-पुं** एक तरहका कद्व । **-कपवा-पुं** विदेशी, यूरोपका बना हुआ कपवा । **-कासनी-स्त्री** कासनीका एक भेद ।

-कीकर-पुं पहाड़ी कीपर । **-बाक-स्त्री** यूरोपसे आनेवाली चिट्ठियाँ, अखबार आदि । **-नीक-पुं** नीला रंग-विशेष (चीनका) । **-पट्टा-पुं** लाल पट्टा ।

-पात-पुं रामर्षस, कृष्ण केतकी । **-प्याज-पुं** एक तरहका प्याज (हसमें गुरेदार जब होती है) ।

-बैंगन-अंडा-पुं एक तरहका सफेद बैंगन; टमाटर । **-माक-पुं** विदेशी माक, यूरोपका माक ।

-लहसुन-पुं मसालेके काम आनेवाला एक तरहका लहसुन । **-सिरिस-पुं** एक विदेशी सिरिस । **-सेम-स्त्री** एक तरहकी सेम ।

विकल्पन-पुं [सं०] एक प्रस्थापनाक ।

विकल्पित-वि० [सं०] द्रावित, विपक्षवाया हुआ ।

विकल्क-पुं [सं०] माजूर, विहाल ।

विकल-पुं दे० 'विलावल' ।

विकलकी-स्त्री एक रागिनी ।

विलास-पुं [सं०] चमकना; व्यक्त होना; क्रीडा; प्रणय-क्रीडा; हाव-भाव; सजीवता; लपटता; सौंदर्य; सुखोप-भोग; अंगभंगी; किसी चीजका सुंदर दृश्यसे हिलना-डुलना; एक हृत् । **-कानन-पुं** प्रमोदवन । **-कोदंड-खाप-अम्बा(म्बव)-बाण-पुं** कामदेव । **-गृह-अभवन-मंदिर-वेष्टम(त्र)-सख(त्र)-पुं** प्रमोद-गृह । **-वातायन-पुं** छज्जा ।

विलासक-वि० [सं०] हस्ततः प्रमग करनेवाला; नृत्य करनेवाला ।

विलासन-पुं [सं०] क्रीडा; प्रेमालिगन; विमोहन ।

विलासिका-स्त्री [मं०] एक तरहका शृंगार-प्रधान एकांकी रूपक ।

विलासिनी-स्त्री [मं०] सुंदरी युवती; कामुक स्त्री; वेश्या, पुंथली; एक वर्णरूप ।

विलासी(सिन्)-वि० [मं०] चमकदार; इधर-उधर घूमने वाला; क्रीडाशील; कामी; आरागतलभ । पुं नायक; अग्नि; चंद्रमा; सूर्य; कृष्ण; शिव; कामदेव ।

विलास्य-पुं [सं०] एक संन्यास ।

विलिख-वि० [सं०] भिन्न किंमका । पुं चिह्नका अभाव ।

विलिखित-वि० [सं०] छेपा हुआ ।

विलिख्य-पुं [सं०] खरीचना; हिलना ।

विलिखित-वि० [सं०] खरींचा हुआ; हिला हुआ ।

विलिख-वि० [सं०] छिपा हुआ; जिसमें दाग छग गया हो; कटुवित ।

विलिख-वि० [सं०] दूटा हुआ; अस्त-व्यस्त । **-अपेक्ष-पुं** अपेक्षामंकी दवा ।

विलीक-वि० व्यलोक, अनुचित ।

विलीन-वि० [सं०] संबद्ध, संलग्न; जका हुआ; उतरा, उतरकर बैठा हुआ (पक्षी); छिपा हुआ; छुप्त; मृत; नष्ट; उछा हुआ; विपक्ष हुआ; सपद्ध ।

विलीयव-पुं [सं०] विपक्षना; उछना ।

विलुचन-पुं [सं०] नीचना; छीलना ।

विलुठन-पुं [सं०] लठना; चोरी करना; छोटना ।

विलुठित-वि० [सं०] जो लूटा गया हो; लोटा हुआ ।

विलुपक-वि० [सं०] तोड़ने-फोड़नेवाला । पुं लुटेरा; नष्ट करनेवाला ।

विलुठित-वि० [सं०] क्षुब्ध, उतेजित; लुठकता हुआ ।

विलुप्त-वि० [मं०] खणित, विदीर्ण; भंग किया हुआ; क्षीण; नष्ट; अपहण; लूटा हुआ । **-वित्त-वि०** जिसका धन लुट लिया गया हो ।

विलुप्तयोनि-स्त्री [मं०] एक योनि-रोग ।

विलुप्त-वि० [सं०] अस्त-व्यस्त; क्षुब्ध । **-लुब्ध-वि०** क्षुब्ध दृश्यसे गमन करनेवाला ।

विलुलित-वि० [मं०] हिलना हुआ, लहराता हुआ, अस्थिर; क्षुब्ध; अस्त-व्यस्त । **-केशा-वि०** स्त्री जिसके सिरके बाल बिखरे हों (स्त्री) ।

विलुन-वि० [मं०] काटकर अलग किया हुआ ।

विलेख-पुं [सं०] खरीचना; फाटना; आहत करना ।

विलेखन-पुं [सं०] खरीचना; खोदना; उखाड़ना; चिह्न बनाना; चीरना; नदीका मार्ग; विभाग करना । वि० खरीचनेवाला ।

विलेखा-स्त्री [सं०] खरींच; चिह्न; इकरानामा ।

विलेखी(सिन्)-वि० [सं०] खरींचनेवाला; चिह्न बनाने-वाला ।

विलेप-पुं [सं०] लेप, चुपकनेकी चीज; अंगराग; गारा; पलस्तर; लेपना; गारा लगाना ।

विलेपन-पुं [सं०] अंगराग लगाना; लगाने, लेप करनेका पदार्थ, अंगराग ।

विलेपनी-स्त्री [सं०] वह स्त्री जिसे अंगराग लगा हो; सुवेशा स्त्री; मॉह ।

विलेपी(सिन्)-वि० [सं०] लेप करनेवाला; पलस्तर करनेवाला; छसदार; चिपका हुआ, साथ लगा हुआ ।

विलेप्य-वि० [मं०] जिसका लेप या पलस्तर किया जाय (गारा आदि) ।

विलेप्या-स्त्री [सं०] मॉह ।

विलेपासी(सिन्)-पुं [सं०] सूर्य ।

विलेप्य-पुं [सं०] विक्रम रहनेवाला जीव, मर्ष, चूहा, गौह, खरहा आदि ।

विलोक-पुं [सं०] नजर, दृष्टिपात; जनराहित्य, जना-

मात्र । वि० एकांत ।

विशोकन-पु० [सं०] देखना; विचार करना; तलाश करना; जानकारी हासिल करना; ध्यान देना, अध्ययन करना ।

विशोकना-स० क्रि० देखना ।

विशोकन-स० क्रि० देखनेकी क्रिया ।

विशोकनीय-वि० [सं०] देखने योग्य; समझने योग्य; सुंदर ।

विशोकित-वि० [सं०] देखा हुआ; जाना हुआ; विवेचित ।

पु० एक ताल; नजर; परीक्षण ।

विशोकी(किन्)-वि० [सं०] देखनेवाला; जानकारी हासिल करनेवाला ।

विशोक्य-वि० [सं०] देखने योग्य ।

विशोचन-वि० [सं०] आँखें विकृत या बक करनेवाला ।

पु० आँखें; नजर; एक दिन । -पथ-पु० दृष्टिपथ ।
-पात-पु० दृष्टिपात ।

विशोचना-पु० [सं०] आँखें ।

विशोट, **विशोटन**-पु० [सं०] छटकना ।

विशोटक-पु० [सं०] एक गछली ।

विशोड-पु० [सं०] छटकना, लोटना; आदोलित होना; मंथन ।

विशोडक-पु० [सं०] चोर ।

विशोदन-पु० [सं०] मथना; हिलाना; श्वर-उभर करना ।

विशोडना-स० क्रि० मथना; धुंभ करना, हिलाना ।

विशोडित-वि० [सं०] हिलया हुआ; धुंभ; मथित; छटकता हुआ । पु० मठा ।

विशोना-स० क्रि० दे० 'विशोना' ।

विशोप-पु० [सं०] अपहरण, लेकर भाग जाना; बाधा; क्षति; चोह; आघात; नाश । -भृत-पु० लूट-पाटका लोभ दिखलाकर जमा की हुई मेना (क्षी०) ।

विशोपक-वि० [सं०] दे० 'विशुपक' ।

विशोपन-पु० [सं०] भंग करना; नष्ट करना; काटकर या तोड़कर अलग करना; लूटना; चोरी करना; छोड़ देना; छुस करना ।

विशोपना-स० क्रि० लोप करना; लेकर भागना; बाधा डालना ।

विशोपित-वि० [सं०] भंग किया हुआ; नष्ट किया हुआ; लुप्त किया हुआ ।

विशोपी(पिन्)-पु० [सं०] नाश, विलोप करनेवाला; भंग करनेवाला ।

विशोषा(पृ)-पु० [सं०] चोर; डाकू ।

विशोष्य-वि० [सं०] तोषने, भंग करने, नष्ट करने योग्य ।

विशोभ-पु० [सं०] आकर्षण; प्रलोभन; भ्रम, मोह; बहकावा । वि० मिलोभ, लोभशून्य ।

विशोभन-पु० [सं०] भ्रममें डालना; बहकाना; प्रलोभन; चातुकारिता; प्रशंसा (ना०) ।

विशोभित-वि० [सं०] लुभाया हुआ; बहकाया हुआ; छलित; प्रशंसित ।

विशोभ-वि० [सं०] झूठ, विपरीत; क्रम या रीतिविशेष; उलटे क्रमसे उत्पन्न; पीछेका । पु० उलटा क्रम; सर्प; कुत्ता;

बण; पानी निकालनेका एक यंत्र; स्वरका अवरोह (संगीत) । -काव्य-पु० वह काव्य जो उलटा भी पढ़ा जा सके । -क्रिया-क्षी० उलटे क्रमसे करना, अंतीकी ओरसे आदिकी ओर जानेकी क्रिया । -ज,-जात,-वर्ण-वि० पिताकी अपेक्षा उच्चतर वर्णवाली मातासे उत्पन्न (संतान) । -विद्ध,-रसम्-पु० हाथी । -पाड-पु० अंतीकी ओरसे पढ़ना ।

विशोभक-वि० [सं०] उलटा, विपरीत, प्रतिकूल ।

विशोभन-पु० [सं०] मुख्यशिका एक अंग (ना०) ।

विशोभा(भन्)-वि० [सं०] उलटी ओर मुखा हुआ; केदारहित ।

विशोभाक्षरकाव्य-पु० [सं०] दे० 'विशोमकाव्य' ।

विशोभित-वि० [सं०] उलटा हुआ ।

विशोमी-क्षी० [सं०] आँवला ।

विशोक-वि० [सं०] चंचल, अस्थिर; धुंभ; ढीला; अस्त-व्यस्त; बिखरे हुए (बाल); सुंदर । -तारक-वि० चंचल आँसूवाला । -लोचन-वि० जिसके नेत्र अश्रुपूर्ण हों । -हार-वि० जिसका हार हिल रहा हो ।

विशोलन-पु० [सं०] हिलाना, चंचल करना; धुंभ करना ।

विशोलित-वि० [सं०] घुमाया, हिलाया हुआ; धुंभ किया हुआ । -रक् (श्)-वि० जिसकी आँखें चंचल हों ।

विशोलुप-वि० [सं०] लुप्यारहित, जिसे किसी वस्तुका लोभ न हो ।

विशोदित-वि० [सं०] गाढा लाल । पु० रङ्ग; शिब; एक तरहका प्याज; एक नरक ।

विशोदितक-पु० [सं०] वह शव जिसका रंग लाल हो गया हो ।

विशोहिता-क्षी० [सं०] अग्निकी एक जिह्वा ।

विह-पु० [सं०] दे० 'विह' ।

विह्व-पु० [सं०] दे० 'विह्व' । -मंगल-पु० महाकवि सूदासका अंधा होनेके पहलेका नाम ।

विह्वंतर-पु० [सं०] इहविशेष ।

विह्वेल-पु० [सं०] भिलसाका पुराना नाम ।

विह्विषु-वि० [सं०] छल करनेवाला, भोलेबाज ।

विह्विषु-वि० [सं०] जो बदना या प्रशंसा करना चाहता हो ।

विह्व-वि० दूसरा; दो ।

विह्वल(वृ)-वि० [सं०] कहनेवाला; व्याख्याता; सुधार करनेवाला, 'लेक्चरर' ।

विह्वला-क्षी० [सं०] कहने, व्यक्त करनेकी इच्छा; इच्छा; अभिप्राय, आशय; संदिह; हिचक ।

विह्वलित-वि० [सं०] कथनीय; कथित, उक्त; अभिप्रेत, इच्छित, अभिलषित; अपेक्षित; प्रथान; प्रिय; आश्रित । पु० प्रयोजन, अभिप्राय; उद्देश्य; आशय; अर्थ; जो कहनेकी इच्छा हो ।

विह्वलु-वि० [सं०] बोलनेकी इच्छा रखनेवाला ।

विह्वल-वि० [सं०] संतानहीन ।

विह्वला-क्षी० [सं०] वह गाय जिसे बछड़ा न हो ।

विह्वलु-वि० [सं०] बोलना चाहता हो ।

विवरण-पु० [मं०] झगड़ना; मुकदमेबाजी ।
विवदना-अ० क्रि० झगड़ा, विवाद करना ।
विवादित-वि० [स०] झगड़ा करनेवाला; विवादग्रस्त;
 जिसके लिए मुकदमा लगा गया हो ।
विवादिया-स्त्री० [सं०] बोलनेकी इच्छा ।
विवादिपु-वि० [सं०] बोलनेका इच्छुक ।
विवाध-पु० [सं०] भारदंड, जुआ; अथवा भूसेका टेर;
 एक पकाइ; सड़क, राजमार्ग; घड़ा; राजकर ।
विवाधा-स्त्री० [सं०] जुआ, जुआठा; बचन, इश्करी ।
विवाधिक-पु० [मं०] भारवाहक; केरीवाला; विसाती ।
विवाह-पु० [सं०] बिल; गड्ढा; युका; अवकाश; धकांत
 स्थान; छिद्र, दोष; अंतर; कड़ने आदिका धाव; नौकी
 संख्या; फैलाव, विस्तार । -**वर्षक**-वि० दोष दिख-
 लानेवाला । -**नालिका**-स्त्री० बौसुरी ।
विवरण-पु० [सं०] प्रदर्शन; स्पष्ट करना; व्याख्या;
 वर्णन; व्योरा; वाक्य ।
विवरणिका-स्त्री० [सं०] किसी घटना या संस्था आदिकी
 कारवायोंका क्रमबद्ध विवरण जो किसीके लिए तैयार
 किया जाय ।
विवरना-अ० क्रि० दे० 'विवरना' ।
विवाधानुग-वि० [सं०] छिद्रानुषेधी ।
विवाधार्थ(वस्)-वि० [सं०] कांतिहीन ।
विवाधक-वि० [सं०] त्याग करनेवाला ।
विवाधन-पु० [मं०] न्याय, परहेज; उपेक्षा; निषेध ।
विवाधित-वि० [सं०] मना किया हुआ; परित्यक्त, वंचित;
 प्रदत्त; बाँटा हुआ; जिसमेंसे कुछ छेदाया या छेड़ा जाय ।
विवाध-वि० [सं०] बर्णहीन; बदरग; बेआव; ओहट;
 नीच; सत्कर जातिका; अधिक्षित, मूर्ख । पु० वह जो
 जातिमें न हो; नीच जातिका आदमी; एक भाव जिसमें
 भय आदिके कारण चेहरका रंग बदल जाता है ।
विवाध-पु० [सं०] धूमना, गोलाभें चकर लगाना, लुद-
 कना, डुलकना; समूह; नाच; रूपंतर, भ्रम; आकाश;
 परिवर्तन; सुधार; भँवर; अविविधजन्य मिथ्या रूप ।
 -**कल्प**-पु० कल्पविशेष जिसमें अवनति होती है (शौ०) ।
 -**वाह**-पु० वेदातका एक मित्रांत (इसमें दृश्य जगत्की
 मिथ्या और भ्रमकी मत्त्व मानते हैं) । -**स्थायिकल्प**-
 पु० कल्पता ।
विवाधन-पु० [सं०] धूमना, चकर खाना; पाछेकी ओर
 धूमना; नीचेकी ओर लुदकना; अस्तित्व होना, रहना;
 अभिवंदना; सत्ताकी विभिन्न अवस्थाओंको पार करना;
 परिवर्तित अवस्था; एक तरहका नृत्य; परिक्रमा ।
विवाधित-वि० [सं०] धूमा या धुमाया हुआ; चकर खाया
 हुआ; परिवर्तित; निवारित; स्थानप्रद; सखित; उन्मीकित;
 व्यक्त; सिक्कीड़ा हुआ ।
विवाध(विन्)-वि० [सं०] धूमने, चकर खानेवाला;
 परिवर्तित होनेवाला; रहनेवाला ।
विवाध(व्)-पु० [सं०] धूमना ।
विवाधन-पु० [सं०] राह, रुद्धि; अभ्युदय; विभाग, सखित
 करना । वि० बढ़ानेवाला; रुद्धि, अभ्युदय करनेवाला ।
विवाधित-वि० [सं०] बढ़ा या बढ़ाया हुआ; उन्नत किया

हुआ; संतुष्ट; प्रसन्न; विमक्त, सखित ।
विवाध-वि० [सं०] शक्तिहीन; लाचार; अधीन; स्वतंत्र;
 अनिर्वाचित; जिसका अपनेपर बल न हो; संकाहीन; मृत;
 नष्ट; ध्वस्तसे संकित; ध्वस्त चाहनेवाला ।
विवाधता-स्त्री० [मं०] लाचारी; असहायवस्था ।
विवाध-वि० दे० 'विवाध' ।
विवाधता-स्त्री० दे० 'विवाधता' ।
विवाधन-वि० [सं०] बलहीन, नष्ट । पु० दिगंबर जैन ।
विवाध-वि० [सं०] वस्त्रहीन, नगा ।
विवाधता-स्त्री० [सं०] धर्मनगरी ।
विवाधान्(स्वन्)-पु० [सं०] स्वयं; स्वयंका सारथि अरुण;
 अर्क, मदार वृक्ष; वर्तमान मनु; देवता; एक दैत्य ।
विवाह-पु० [सं०] सात पवनमेंसे एक; अग्निकी सात
 बिह्वामेंसे एक ।
विवाध-पु० [सं०] विवेचन करनेवाला; विवादका निर्णय
 करनेवाला, न्यायाधीश ।
विवाधन-पु० [सं०] मध्यम्यता ।
विवाध-वि० [सं०] सुधार करने योग्य ।
विवाध-पु० [सं०] प्रचंड वायु, प्रभजन ।
विवाध-पु० [सं०] बहस; झगड़ा; खटन; मुकदमा;
 विहाना; आदेश । -**पद**-पु० मुकदमेका विषय ।
 -**नीह**-वि० विवाद, कलहसे डरनेवाला । -**वस्तु**-
 स्त्री० दे० 'विवाद-पद' । -**समन**-पु० झगड़ा तै करना ।
 -**डठाना**-बहस शुरू करना; झगड़ा खड़ा करना ।
विवाधार्थ(विन्)-पु० [मं०] वादी, मुरबई; मुकदमा
 लड़नेवाला ।
विवाधस्पद-पु० [मं०] विवादका विषय, विवाद-वस्तु ।
 वि० विवादका, विवादके योग्य (हिं०) ।
विवाध(विन्)-वि० [मं०] कलह करनेवाला, झगड़ाह;
 मुकदमेवाज; (स्व) जो रागके अनुकूल न पड़नेके कारण
 बहुत काम आये (मगीत) । पु० मुकदमा लड़नेवाला ।
विवाध-पु० [मं०] फैलाना, व्याप्तन ।
विवाध(विन्)-वि० [मं०] रोकने, निवारण करनेवाला ।
विवाध-पु० [मं०] गृहत्याग; निर्वासन; पार्थक्य । -**करण**
 -पु० निर्वासन, वृत्तनिकाका ।
विवाधन-पु० [मं०] निर्वासित करना ।
विवाधित-वि० [सं०] निर्वासित ।
विवाध-वि० [सं०] निकाल देने योग्य, निर्वासनके योग्य ।
विवाह-पु० [मं०] शादी, दांपत्यसूत्रमें आबद्ध होनेकी
 एक प्रथा (जो धर्मशास्त्रमें आठ प्रकार-आर्थ, मास्र, दैव,
 मानापरत्य, आतुर, गांधर्व, राक्षस और पंशाच-की मानी
 गयी हैं); एक पवन; धान, एक बड़ी संस्था (शौ०) ।
 -**काम**-वि० विवाहेच्छु । -**काल**, -**समय**-पु० ब्याह
 करनेका उचित समय । -**जुगुप्स**-पु० चार विवाह
 करना । -**दीक्षा**-स्त्री० विवाह-संस्कार । -**विच्छेद**-पु०
 पति-पत्नीका विवाह-सम्बन्ध तोड़ना, तलाक । -**विधि**-
 स्त्री० विवाह-संबंधी नियम । -**संबंध**-पु० विवाहके
 द्वारा होनेवाला संबंध ।
विवाहना-सं० क्रि० दे० 'ब्याहना' ।
विवाहित-वि० [सं०] ब्याहा हुआ ।

विवाहविद्या-वि० **श्री०** [मं०] जिस(श्री)का पाणिग्रहण संस्कार हो चुका हो, ब्याही हुई।

विवाहीनी-वि० विवाहिता, ब्याही हुई।

विवाह-वि० [सं०] ब्याह करने योग्य; विवाह द्वारा संबद्ध। पु० जामाता; दुस्सा।

विवाह-वि० दौ; दूसरा।

विवेक-वि० [सं०] विभुक्त, पृथक् किया हुआ; अकेला; स्वच्छ, पवित्र; स्पष्ट; विवेकी; प्रयाद (विचार); जिसका भेद स्पष्ट किया गया हो; जनहीन;...से मुक्त; रहित; निविष्ट। पु० एकांत स्थान; एकाकीपन। -**करित**-वि० निर्दोष चरित्रवाला। -**केता(तत्त्व)**-वि० शुद्ध मन-वाला। -**रहित**-वि० स्पष्ट बन्धितवाला। -**साध्यासन**-पु० एक आचार जिसमें त्यागीकी एकांत स्थान में रहना पड़ता है (जै०)। -**शरण**-वि० एकांत चाहनेवाला। -**सेवी(विद्यु)**-वि० एकांतमें रहनेवाला।

विचिका-श्री० [सं०] बदकिस्मत औरत; वह स्त्री जिसका पति उसे न चाहता हो।

विविक्ति-श्री० [सं०] पार्थक्य, विभाग; विवेक करना।

विविन्न-वि० [सं०] भ्रूय; बहुत कुछ; शक्ति।

विविचार-वि० [मं०] विवेकहीन; आचारहीन।

विचिचारी(रिज)-वि० [सं०] विचारहीन; मूर्ख; कुकर्मी, बचकलन।

विचिन्ति-श्री० [सं०] प्राप्ति, काम।

विचिन्ता-श्री० [सं०] जानने की इच्छा।

विचिन्तु-वि० [मं०] दे० 'विचिन्ति'।

विचिविचा-श्री० [सं०] ज्ञानप्राप्तिकी इच्छा।

विचिविचु-वि० [सं०] जाननेका इच्छुक।

विचिच-वि० [सं०] विभिन्न प्रकारका; कई तरहका। पु० विभिन्न प्रकारके काम; एक प्रकार।

विचिर-पु० गुफा, खोह; बिल; दरार।

विचीत-पु० [सं०] घिरा हुआ स्थान, विशेषकर गोचर भूमि। -**भर्ता(र्त)**-पु० गोचर भूमिका स्वामी।

विचीताप्यक्ष-पु० [सं०] चरगाहोंका निरीक्षक (श्री०)।

विचृक-वि० [सं०] छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

विचृक्ता-श्री० [सं०] दुर्भंगा, वसि द्वारा परित्यक्ता स्त्री।

विचृत्त-वि० [सं०] व्यक्त; स्पष्ट, प्रत्यक्ष; अनावृत, खुला हुआ; घोषित; जिसकी ब्याख्या की गयी हो; फैला हुआ; विस्तृत; नम्र; तबहीन। पु० नम्र भूमि; प्रकाशन; उच्चारणका एक प्रयत्न। -**हार**-वि० जिसका द्वार खुला हो; अनियंत्रित; असीम। -**गौरव**-वि० अपनी शक्तिका प्रदर्शन करनेवाला। -**भाष**-वि० निष्कपट, स्वच्छ-दृश्य। -**स्नान**-पु० सबके सामने स्नान करना। -**स्मयन**-पु० वह सुसज्जित जिसमें बत्तीसी नजर आ जाय।

विचृता-श्री० [सं०] एक योनिरीग; एक पौधा।

विचृताक्ष-वि० [मं०] जिसकी आँखें खुली हों। पु० कुम्कुट।

विचृतानन-वि० [सं०] जिसका मुँह खुला हो।

विचृतास्थ-वि० [सं०] जिसका मुँह खुला हो।

विचृति-श्री० [मं०] मास्य, टीका; प्रकीर्णन।

विचृतीक-श्री० [मं०] स्पष्ट कथन; एक अर्थोक्कार, जहाँ स्लेषसे छिपायी हुई बात कवि द्वारा स्वयं प्रकट कर दी जाय।

विचृत्त-वि० [सं०] पेंटा हुआ; चरित; चकर खाता हुआ; अमगशील; लौटा हुआ; अनावृत; प्रदक्षित। -**वैङ्ग**-वि० जिसका मुँह खुला हो, दाँत नजर आ रहे हों। -**बदन**-वि० जिसने मुँह फेर लिया हो।

विचृत्तांग-वि० [सं०] कष्टसे जिसका बदन पेंट रहा हो।

विचृत्ता-श्री० [सं०] एक तरहका नर्मरोग।

विचृताक्ष-वि० [सं०] दे० 'विचृताक्ष'।

विचृतास्थ-वि० [मं०] दे० 'विचृतास्थ'।

विचृति-श्री० [मं०] फैलाव, विकास; चकर खाना; छुड़कना।

विचृद्ध-वि० [सं०] बढ़ा हुआ; प्रौढ़, पूर्णतः विकसित; बहा; प्रचुर; शक्तिशाली। -**अस्तर**-वि० जिसका कौप वा ड्रेज बहुत बढ़ गया हो।

विचृद्धि-श्री० [मं०] बाद; वृद्धि; उन्नति, तरकी; समृद्धि। -**कर**, -**इ**-वि० उन्नति करनेवाला। -**भाङ्ग (ञ)**-वि० वृद्धिशील।

विचृद्ध-पु० [सं०] वह जो दूसरोंसे पृथक् हो जाय।

विवेक-पु० [मं०] यथार्थज्ञान; विचार, ध्यानहीन; अले-दुरेकी पहचान; वस्तुओंमें उनके गुणके अनुसार भेद करनेकी शक्ति; वय जगत्, प्रकृतिका अन्वय मन्त्र, पुरुष-से भेद करनेकी शक्ति; एक जलपात्र, जलद्रोणी; म्रिय पदार्थोंका स्वाग (जै०)। -**ख्याति**-श्री० यथार्थ ज्ञान। -**परिपंकी(विद्यु)**-वि० विचारकार्यमें बाधक होने-वाला। -**भाङ्ग (ञ)**-वि० चतुर, शानी। -**अष्ट**-वि० ज्ञानहीन। -**रहित**-वि० ज्ञानहीन। -**चिरह**-पु० अज्ञान। -**विशद्**-वि० स्पष्ट, बोधगम्य। -**विभात**-वि० मूर्ख, ज्ञानहीन।

विवेकवान्(वत्)-वि० [मं०] ज्ञानी, विचारवान्।

विवेकानन्द, **स्वामी**-पु० रामकृष्ण परमहंसके शिष्य, प्रकाश विद्वान्, सुचतुर वक्ता एवं महान् धर्मप्रचारक जो अमेरिका भी गये थे (१८६३-१९०२)।

विवेकिता-श्री० [सं०] विवेकी, ज्ञानी होनेका भाव, विचार-शीलता।

विवेकी(किन्)-वि० [सं०] अले-दुरेकी पहचान करने-वाला; ज्ञानी, विचारवान्; ध्यान-धीन करनेवाला। पु० देवमेनका पुत्र; विचारकर्ता।

विवेक-वि० [सं०] जो विवेचन, अले-दुरेका भेद कर सके; चतुर, शानी।

विवेचन-पु० [सं०] विवेक, सदस्यका निर्णय; अनुमंथन; मीमांसा; परीक्षण।

विवेचनीय-वि० [सं०] विवेचन करने योग्य।

विवेचित-वि० [सं०] निश्चित; तै किया हुआ; विवेचन किया हुआ; जिसका अनुसंधान किया गया हो।

विष्णोक-पु० [सं०] दे० 'विष्णोक'।

विशंक-वि० [सं०] संकरहित, निर्भय; निरापद।

विशंकट-वि० [सं०] विस्तृत; बहा, विशाल; उग्र, प्रचंड; अर्थकट।

विशङ्कनीय-वि० [सं०] डरने, शंका करने योग्य; संदिग्ध ।
विशङ्का-स्त्री० [सं०] संदेह, आशंका, भय, शंकाका अभाव ।
विशङ्की(किन्)-वि० [सं०] भय, आशंकायुक्त ।
विशङ्क्य-वि० [सं०] संदेह, भय, आशंका करने योग्य ।
विशङ्करा-स्त्री० [सं०] पत्नी ।
विश-पु० [सं०] दे० 'वित्त' (स०) । -**कंठा**-स्त्री० वह स्त्री जिसका कंठ मृणालके समान हो; मलाका ।
विशाद्-वि० [सं०] साफ, स्वच्छ; वेदांग, दवेत; चमकीला; सुंदर; ररष्ट; प्रकट; शांत; वितारहित । पु० सफेद रंग; जयद्रथका एक पुत्र । -**प्रश्न**-वि० विचक्षण, कुशाग्र-बुद्धि । -**प्रश्न**-वि० स्वच्छ प्रकाश विकीर्ण करनेवाला ।
विशदित-वि० [सं०] साफ किया हुआ ।
विशदित-वि० [सं०] उद्दिष्टित, कथित ।
विशय-पु० [सं०] संदेह, अनिश्चय; आश्रय, पनाह; मध्य, केंद्र ।
विशयी(विन्)-वि० [सं०] संदिग्ध, अनिश्चित; मशायी ।
विशर-पु० [सं०] वध; नाश; विशारण ।
विशरण-पु० [सं०] वध । वि० असहाय, अरक्षित ।
विशरद्-पु० दे० 'विशारद' ।
विशारद्-वि० [सं०] संग होनेवाला, नश्वर ।
विशार्व-पु० [सं०] अपान बाधुका त्याग ।
विशार्व-वि० [सं०] कष्टरहित; कौटिले मुक्त; जिसका बाणका धाव भर गया हो; जिसमें नोक न हो (बाण) ।
-करण-वि० बाणका धाव भरनेवाला । -**करणी**-स्त्री० एक ओपधि । -**कृत्**-पु० विशाली वृक्ष । वि० विशल्य-कारी ।
विशव्या-स्त्री० [सं०] युद्धवीर्य; अग्निशला; दनी-त्रिपुटा-कलिकारी; अजमेदा ।
विशसन-वि० [सं०] घातक, मारक । पु० वक्र खुर; एक नरक; काटना, चीरना, वध; युद्ध; कठोर व्यवहार ।
विशसित-वि० [सं०] काटा, चीरा हुआ ।
विशसिता(रु)-पु० [सं०] काटने, चीरने, छेदन करने-वाला; चांचाल ।
विशस्त-वि० [सं०] काटा हुआ-उजड़, भूट; प्रशंसित, विख्यात ।
विशस्ता(स्त)-पु० [सं०] वध, हत्या करनेवाला; चांचाल ।
विशस्ति-स्त्री० [सं०] वध ।
विशस्त-वि० [सं०] शास्त्रीन ।
विशपत्ति-पु० [सं०] राजा; जामाता; व्यापारियोंका मुखिया ।
विशा-स्त्री० [सं०] जाति, लोक ।
विशाकर-पु० [सं०] अद्रव्य, द्रवी ।
विशाख-पु० [सं०] कार्तिकेय-मिथुन; तनुजा; एक देवता; बाण चलाते समयकी एक मुद्रा; शिव; पुनर्नवा; बंधोंके लिए, खतरनाक समझा जानेवाला एक रौप्य (अपस्मार रोग) । वि० शास्त्रीन; हस्तकीन; विशाखा नक्षत्रमें लग्य । -**प्रह**-पु० बेलका पेड़ । -**ज**-पु० नारंगीका पेड़ । -**द्व**-पु० मुद्राराक्षस नाटकका रचयिता । -**पत्र**-पु० एक शिशुरोग (आ०वे०) । -**वृष**-

पु० एक देश, विशाखपत्तन (?) ।
विशाख-वि० [सं०] शाखाओंवाला ।
विशाख-पु० [सं०] बाण चलानेके समयकी एक विशेष मुद्रा ।
विशाखा-स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र; दूर्वा; दवेत पुनर्नवा; एक प्राचीन जनपद ।
विशाखिका-स्त्री० [सं०] शाखायुक्त दन्त; गदहपूरना; नौकी अपराजिता; करेला ।
विशातन-पु० [सं०] विष्णु; काटना, खंडित करना; नष्ट करना । वि० नष्ट करनेवाला; मुक्त करनेवाला ।
विशाप-पु० [सं०] एक मुनि । वि० शापमुक्त ।
विशाय-पु० [सं०] प्रहरियोंका बारी-बारोसे सोना ।
विशायक-पु० [सं०] एक छता, विशाकर ।
विशारण-पु० [सं०] मारण, वध; विदारण ।
विशारद्-वि० [सं०] अनुभवी, कुशल; विद्वान्; चतुर-चातुर्यपूर्ण (भाषण); स्पष्ट विचारवाला; प्रसिद्ध; वस्तुव-शक्तिसे रहित; साहसी, धीर । पु० वक्रुल वृक्ष ।
विशारदा-स्त्री० [सं०] कैर्वाण; छत्र दुरालमा ।
विशाल-वि० [सं०] बृहद्, बड़ा; विस्तृत; पूर्ण; प्रख्यात; शक्तिशाली । पु० एक पक्षी; एक हिरन; तक्षका पिता, एक असुर, इक्ष्वाकुका एक पुत्र; एक पहाड़; एक वृक्ष; एक तीर्थ । -**कुल**-पु० प्रसिद्ध वंश । -**तैलगर्भ**-पु० अक्षरोट । -**स्वक्**(च)-पु० छतिवन, सप्तपर्ण ।
-दा-स्त्री० एक छता । -**नेत्र**-पु० एक रोधिसत्त्व ।
-पत्र-पु० हिताल; मानकचू । -**पत्री**-स्त्री० एक, कद शक । -**फलक**-वि० जिममें बड़े फल लगते हों ।
-फलिका-स्त्री० निष्पावी । -**छोचना**-स्त्री० बड़ा ओंखेंवाली स्त्री । -**विजय**-पु० एक तरहकी व्युत्तरचना ।
विशालक-पु० [सं०] केंद; गरुड; एक वृक्ष ।
विशालता-स्त्री० [सं०] बड़ापन; विस्तार, व्याप्ति ।
विशाला-स्त्री० [सं०] इद्रवारणी; उज्जयनी नगरी; उपोदकी; महेंद्रवारणी; एक तीर्थ; दक्षकी एक कन्या; एक मूर्च्छना (मगीत); एक नदी ।
विशालाक्ष-वि० [सं०] बड़ी ओंखेंवाला । पु० एक तरहका मन्त्र; शिव; गरुड, गरुडका एक पुत्र, एक नाग; धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।
विशालाक्षी-स्त्री० [सं०] बड़ी ओंखेंवाली स्त्री; नामदनी, पार्वती; स्कन्दकी एक मातृका; एक योगिनी ।
विशाली-स्त्री० [सं०] पलाशी लता; अजमेदा ।
विशिका-स्त्री० [सं०] बाह, रेत ।
विशिल-वि० [सं०] शिखाहीन; गजा; (बाण) जिसकी नोक मोफरी हो गयी हो; (भाग) जिसमें लपट न हो; पुच्छहीन (वृमकेतु) । पु० बाण; आला; एक तरहका सरकंदा ।
विशिला-स्त्री० [सं०] कुदाल; छोटा बाण; एक तरहकी सूई; तनुजा; सक्क, मार्ग; वह मार्ग जिसपर सुनारी और जोहरियोंकी डुकानें हों (को०); नाइन; हगालय ।
विशिलाध्व-पु० [सं०] नृपीर ।
विशिल-वि० [सं०] तेज, तीक्ष्ण ।

विशिष्ट-पु० [सं०] मकान; प्रासाद; दैन्यद्विर ।
विशिरस्क-पु० [सं०] मेरु पर्वतके पासका एक पर्वत ।
 वि० मस्तकहीन ।

विशिरा(रस्), विशीर्षा(रस्)-वि० [सं०] मस्तक-हीन ।

विशिष्ट-वि० [सं०] विशेषतायुक्त; असाधारण; प्रसिद्ध; उत्तम; ... सर्वश्रेष्ठ; युक्त; विशेष रूपसे शिष्ट, भद्र ।
पु० विष्णु; सीसा (?) । -**कुल-वि०** सद्गुरुजन । **पु०** उत्तम कुल । -**चरित्र-बारी(वि०)**-पु० एक बोधिमत्स्य । -**पत्र-पु०** गण्डिवन । -**बुद्धि-की०** विवेक ।
-किरा-वि० मित्र लिंगका । -**वर्ण-वि०** उत्तम रंगका ।

विशिष्टता-की० [सं०] विशेषता ।

विशिष्टाद्वैत-पु० [सं०] रामानुज द्वारा प्रवर्णित एक मत जिसमें प्रकृति और पुरुषको मिश्र और सत्य मानते हुए भी दोनोंको अभिन्न मानते हैं । -**बादी(वि०)**-वि० विशिष्टाद्वैत मतका अनुयायी ।

विशिष्टी-की० [सं०] शंकराचार्यकी माता ।

विशीर्ण-वि० [म०] क्षीण; भग्न; बिखरा हुआ; जो तितर-बितर हो गया हो (सैन्य); गिरा हुआ (दत्तादि); अप्रव्यय किया हुआ, उड़ाया हुआ (खजाना); माला, रंगका हुआ (गंधद्रव्य), विफलीभूत; नष्ट, भ्रष्ट; झुगल ।
-पर्य-पु० नीम । -**मूर्ति-वि०** जिसका शरीर नष्ट हो गया हो । **पु०** कामदेव ।

विशील-वि० [सं०] दुश्चरित्र, दुष्ट, बद्राश ।

विशुद्धि-पु० [म०] कदम्बका एक पुत्र ।

विशुद्ध-वि० [सं०] साफ किया हुआ; पवित्र; निष्पाप; वेदांग; शोक; भ्रमोन्मा; विनश्वर; चमकता हुआ सफेद; सुनिश्चित; सफेद, खर्च किया हुआ (खजाना) । **पु०** शरीरका एक चक्र । -**करण-वि०** जिसके काम धर्मयम हों ।
-चरित्र-वि० शुद्ध चरित्रवाला । **पु०** एक बोधिसत्व ।
-धी-वि० धार्मिक बुद्धिवाला । -**प्रकृति-वि०** धार्मिक स्वभावका । -**भाव-मना(मस्)**-वि० पवित्र मन-वाला । -**सम्ब-वि०** शुद्धाचारी ।

विशुद्धात्मा(मस्)-वि० [सं०] जिसका मन पवित्र हो ।
विशुद्धि-की० [म०] पवित्रता, शुद्धता; सदिह आदि दूर करना (द्वेष, कणक) परिशोध; भूखुशुभार; पूर्ण ज्ञान; साधय । -**चक्र-पु०** एक चक्र जिसका स्थान गलेमें माना जाता है ।

विशुचिका-की० दे० 'विशुचिका' ।

विशुच्य-वि० [सं०] पूर्णतः रिक्त ।

विशुल-वि० [सं०] कुतहीन, बिना भालेका ।

विश्वलक्ष-वि० [म०] विश्वलक्षित, बधनहीन; अनियमित; लपट; बहुत अधिक शब्द करनेवाला ।

विश्वरूप-वि० [सं०] बिना सीमाका, श्वगहीन; (वह पर्वत) जिसके कोई चोटी न हो ।

विशेष-वि० [सं०] असाधारण, असाधारण्य; अधिक; प्रचुर । **पु०** भेद; अंतर करना; खास धर्म, गुण या परिचायक चिह्न, अंतर करनेवाला चिह्न; रोगकी वह अवस्था जब सुधार आरंभ होता है; अंग; प्रकार, किस्म; श्रेष्ठता, उत्तमता; द्रव्यका (जिनकी संख्या नौ है) खास गुण

(न्या०); सात प्रकारके पदार्थोंमेंसे एक; वर्ण, जाति; तिलक; विशेषण; एक अर्थालंकार, इसके तीन भेद हैं-

(१) जहाँ बिना आधारके ही आविषका वर्णन हो; (२) बोझ-सा काम करनेपर ही बड़ा काम या लाभ हो अथवा (३) जहाँ एक वस्तुका एक साथ कई स्थानोंमें होना वर्णित हो । -**कृष्-वि०** अंतर करनेवाला ।

-क्ष-वि० किसी विषयका विशेष ज्ञान रखनेवाला । -**हृदय-वि०** अव्यय रूपवाला । -**पतनीय-पु०** एक खास अपराध या पाप । -**प्रतिपत्ति-की०** मन्मान-सत्य विशेष चिह्न । -**भाग-पु०** हाथीके मस्तकका एक विशेष भाग । -**मस्ति-पु०** एक बोधिसत्व । -**लक्षण-लिंग-पु०** विशेष चिह्न ।

विशेषक-वि० [सं०] भेद स्पष्ट करनेवाला (चिह्न) । **पु०** भेद करनेवाला गुण; तिलक; रंगीन गंधद्रव्यसे शरीरपर रेखाएँ खींचना; एक अर्थालंकार जहाँ तीन पदोंमें एक ही क्रिया होनेसे उनका अन्वय एक साथ ही हो; एक तरहका पद्य जिसके तीन श्लोकोकी एक ही क्रिया होती है; तिलक वृक्ष । -**च्छेद-पु०** चौंसठ कलाओंमेंसे एक (ललाटपर तिलक बनानेकी कला) ।

विशेषण-वि० [सं०] विशेषतायुक्त । **पु०** विशेषधका धर्म; संज्ञाका गुण बतलानेवाला शब्द (व्या०); विशेषण, अंतर प्रकट करनेवाला चिह्न; प्रकार, किस्म; बड़ ज्ञान ।

विशेषता-की० [सं०] खसुचित, खूबी ।

विशेषना-सं० कि० विशेषता प्रदान करना ।

विशेषांक-पु० [सं०] किसी सामयिक पत्रादिका वह अंक जो किसी विशिष्ट अवसरपर, विशेष प्रकारकी उपयोगी सामग्रीके साथ प्रकाशित किया गया हो ।

विशेषित-वि० [सं०] विशेषणयुक्त; लक्षित; विशेष गुणके द्वारा जिसका भेद किया गया हो; उत्तम, श्रेष्ठ ।

विशेषी(विन्)-वि० [सं०] पृथक्, भिन्न; होड़ करनेवाला ।

विशेषोक्ति-की० [सं०] एक अर्थालंकार जहाँ पूर्ण या समर्थ कारणके रखते हुए भी कायेंका न होना दिखाया जाय ।

विशेष्य-पु० [म०] विशेषणयुक्त संज्ञा (व्या०) । **वि०** जिसका भेद करना हो, विशेषता दिखलानी हो ।

विशेष्यासिद्धि-की० [सं०] स्वरूपकी असिद्धि करनेवाला हेत्वाभास ।

विशोक-पु० [सं०] शोकका अंत; अशोकका पेड़; भीमका मारपी; ब्रह्माका एक मानसपुत्र; एक ऋषि; एक दानव; एक पर्वतश्रेणी । **वि०** शोकरहित; जिसमें शोककी कोई चर्चा न हो । -**कोट-पु०** एक पहाड़ । -**पट्टी-की०** रेशम-शुद्धा पट्टी ।

विशोका-की० [सं०] संप्रसाद समाधिके पहलेकी विचार-वृत्ति (यो०); शोकराहित्य; स्वदेशी एक मातृका ।

विशोचित-वि० [सं०] रक्तीन ।

विशोचय-पु० [सं०] शुद्ध करना, साफ करना; विष्णु; पेरुकी डालियोंकी छटाई; रेचन; निर्णीत होना; व्यव-कलन; प्रायश्चित्त । **वि०** शुद्ध, माफ करनेवाला ।

विशोचनी-की० [सं०] ब्रह्माकी पुरी; दंती; पान ।

विशोचनीय-वि० [सं०] शुद्ध, माफ करने योग्य; रेचन

करने योग्य; सुधार करने योग्य ।

विशोषित-वि० [सं०] साफ, शुद्ध किया हुआ; मेल, दाग आदिसे मुक्त किया हुआ ।

विशोषिणी-स्त्री० [सं०] नागदंती । -**बीज-पु०** जमाल-गोटा ।

विशोषी(विश्व)-वि० [सं०] शुद्ध, साफ करनेवाला ।

विशोष्य-वि० [सं०] शुद्ध, साफ करने योग्य; जो घटाया जाय । पु० कृष्ण ।

विशोषित-वि० [सं०] सजाया हुआ, अलंकृत ।

विशोष-पु० [सं०] शुष्कता ।

विशोषण-वि० [सं०] शुष्क करनेवाला; (पाव) सुखाने-वाला । पु० शुष्क करनेकी क्रिया ।

विशोषित-वि० [सं०] शुष्क किया हुआ; मुखांवा हुआ ।

विशोषी(विश्व)-वि० [सं०] अच्छी तरह सोखनेवाला; सुखानेवाला ।

विश्व-पु० [सं०] कांति, चमक; गति ।

विश्वार्पण-पु० [सं०] एक वृक्ष ।

विश्व-पु० [सं०] विश्वास; धनिकता, आश्रमीयता; गोपनीय विषय; विश्राम; प्रणय-कलह; वध, स्नेहपूर्वक पूछ-ताछ करना । -**कथा-स्त्री०** प्रेमाकाष । -**पात्र-पु०**, भूमि-स्त्री०, स्थान-पु० विश्वास करने योग्य विषय या व्यक्ति । -**भूत्व-पु०** विश्वस्त सेवक ।

विश्वभ्रम-पु० [सं०] विश्वास प्राप्त करना ।

विश्वमी(विश्व)-वि० [सं०] विश्वास करनेवाला; विश्वस्त; प्रेम-संबंधी; गोपनीय (वादी) ।

विश्रमण, विश्रमण-पु० [सं०] दान; दान करना ।

विश्रम-वि० [सं०] विश्रमणीय; निर्माक; शांत; धीर; दृढ़; विनम्र; अनिशय । -**नवोद्धा-स्त्री०** नायकपर विश्वास करनेवाली नवोद्धा नायिका । -**प्रक्षापी(विश्व)-वि०** विश्रस्त या गुप्त बातें कहनेवाला । -**सुप्त-वि०** शांतिपूर्वक सोनेवाला ।

विश्रम-पु० [सं०] आराम, विश्राम ।

विश्रमण-पु० [सं०] आराम करना, अगोंका तनाव दूर करना ।

विश्रमित-वि० [सं०] विश्राम कराया हुआ ।

विश्रम-पु० [सं०] सहारेका साधन, आश्रयस्थान ।

विश्रयी(विश्व)-वि० [सं०] आश्रय, सहारा लेनेवाला ।

विश्रव(स्व)-पु० [सं०] बड़ा नाम, विख्याति ।

विश्रवण-पु० [सं०] एक ऋषि ।

विश्रवा(वस्व)-वि० [सं०] विख्यात । पु० एक ऋषि जो रावण, कुबेर आदिके पिता थे ।

विश्रान्त-वि० [सं०] सुस्ताया हुआ, विश्राम किया हुआ; विश्राम करनेवाला; शांत; घटा हुआ (हुन्खादि); बका हुआ; समाप्त; रक्षित, वंचित; ड्रांत । -**कर्णयुगल-वि०** कर्णोत्पत्त पड्डनेवाला । -**पुष्पोद्गम-वि०** जिसका फूलना बंद हो गया हो । -**विच्छास-वि०** जिसने क्रोधा आदिका परित्याग कर दिया हो । -**क्षैर-वि०** जिम्मेदारमनी छोड़ दी हो ।

विश्रान्ति-स्त्री० [सं०] आराम, विश्राम; कमी; अंत; एक तीर्थ । -**कृत्-वि०** विश्राम देनेवाला । -**सूप्ति-स्त्री०**

विश्रामका साधन ।

विश्रामित-वि० [सं०] प्रदत्त; विमक्त ।

विश्राम-पु० [सं०] आराम; शांति; गहरी सोंस लेना (धमके बाद); आराम करनेकी जगह; कमी; अंत;

विराम; सनान । -भू-स्त्री० विश्रामस्थान । -**वेक्ष्य(स्व)-पु०** आराम करनेका कमरा । -**स्थान-पु०**

आराम या मनोरंजनका स्थान या साधन ।

विश्रामण-पु० [सं०] विश्राम कराना ।

विश्रामालय-पु० [सं०] पांथशाला, यात्रियोंके विश्राम करनेका स्थान ।

विश्राव-पु० [सं०] बहना, क्षरण; शोर-गुल; विख्याति ।

विश्रावण-पु० [सं०] बहाना; खून बहाना; सुनाना, वर्णन करना ।

विश्रि-स्त्री० [सं०] मृत्यु ।

विश्री-वि० [सं०] श्रीहीन, कांतिहीन; बदशक्त ।

विश्रुत-वि० [सं०] बड़ा हुआ; बहता हुआ; विख्यात; प्रसन्न । पु० वसुदेवका एक पुत्र; अम्भूति; प्रसिद्धि; मिथा ।

विश्रुतात्मा(त्वन्)-पु० [सं०] विष्णु ।

विश्रुति-स्त्री० [सं०] ख्याति; क्षरण, आव; एक भ्रुति (संगीत) ।

विश्रुप-वि० [सं०] डीला; बंधनमुक्त; ड्रांत ।

विश्रुपित-वि० [सं०] डीला, बंधनमुक्त किया हुआ ।

विश्रुह-वि० [सं०] डीला किया हुआ; पृथक् किया हुआ; दलसे अलग किया हुआ; स्थान-भ्रष्ट (अंगीदि) ।

-**संधि-स्त्री०** अग्नि-संग, संधि-भय ।

विश्रुष-पु० [सं०] वियोग; विप्रलंब; पाथंभय; हानि, अभाव; दारद, छिद्र ।

विश्रुषण-पु० [सं०] पृथक् करना, किसी चीजके अंगोंको अलग-अलग करना; संग करना ।

विश्रुषित-वि० [सं०] वियुक्त, पृथक् किया हुआ; विदीर्ण किया हुआ; संग किया हुआ ।

विश्रुषी(विश्व)-वि० [सं०] विश्रुनेवाला, डीला किया हुआ; (प्रिय वस्तुसे) अलग, वियुक्त ।

विश्रुष-वि० [सं०] जिसका नाम, ख्याति न हो ।

विश्रंकर-वि० [सं०] सबका निर्माण करनेवाला । पु० नेत्र ।

विश्रंतर-वि० [सं०] सबका परामर्श करनेवाला (सौ) ।

विश्रंमर-वि० [सं०] सबका अरण करनेवाला । पु० ईश्वर, विष्णु; एक तरहका विच्छू; अग्नि; इंद्र ।

विश्रंमरक-पु० [सं०] एक तरहका विच्छू ।

विश्रंमरा, विश्रंमरी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

विश्र-पु० [सं०] एक देववर्ग; समग्र ब्रह्मांड; ससार; सौंद, विष्णु; शिव; आत्मा; जीव; नागर, नगरनिवासी; तेरहकी संख्या; एक बंधध्वज; पितरोंका एक वर्ग । वि० समग्र, सकल; प्रत्येक; सर्वव्यापक । -**कडु-वि०** नीच, कमीना । पु० शब्द; शिकारी कुत्ता । -**कर्षा(ई)-पु०**

सृष्टिका रचयिता, परमेश्वर । -**कर्मा(मंन्)-पु०** देव-शिल्पी; सूर्य; सूर्यकी सात रश्मियोंमेंसे एक; संत, महात्मा; परमेश्वर; शिव; राज; बड़े; जेतना नामक धातु ।

-**काव-वि०** ब्रह्मांड जिसका शरीर है । पु० विष्णु ।

-**कावा-स्त्री०** दाह्यावणीकी एक मूर्ति । -**कारक-पु०**

शिव । -काह-पु० विश्वकर्मा । -काह-पु० सर्वको सात प्रमुख रहिमयोंमेंसे एक । -कूट-पु० हिमालयकी एक कोठी । -कृत-वि० विश्वकर्माका बनाया हुआ । -कूट-पु० विश्वकर्मा; सृष्टिकर्ता । -कृष्टि-वि० सभमें रहनेवाला; सबके प्रति सद्भाव रखनेवाला । -केतु-पु० अनिरुद्ध । -कोश-कोष-पु० वह यन्त्र जिसमें विश्वकी सारी वस्तुएँ संयोजित हों; वह ग्रंथ जिसमें संसारके सारे विषयोंका विवरण हो । -क्षय-पु० प्रलय । -क्षिति-वि० दे० 'विश्वकृष्टि' । -गंगा-स्त्री० बरारकी एक नदी । -गंध-वि० सर्वत्र गंध फैलानेवाला । स्त्री० व्याज; एक गंधद्रव्य । -गंधा-स्त्री० पृथ्वी । -गंधि-पु० पृथुका एक पुत्र । -ग-वि० सर्वत्र गमन करनेवाला । पु० ब्रह्मा; पूर्णिमासे उत्पन्न मरीचिका एक पुत्र । -गत-वि० सर्वव्यापक । -गर्भ-वि० सभी वस्तुओंको धारण करनेवाला । पु० विष्णु; शिव; रैवतका एक पुत्र । -गुरु-पु० लोकपिता, विष्णु । -गोचर-वि० सबके लिए बोधनय । -गोत्र-वि० सभी कुलोंसे सबका । -गोसा(य)-पु० विष्णु; शिव; इंद्र । -ग्रंथि-स्त्री० हस्तपदी; लाल लजाहू । -ग्रन्थ-वि० पूर्ण दीप्तिमें युक्त । -चक्र-पु० ब्राह्मणोंको दानमें दिया जानेवाला एक तरहका सुवर्ण-चक्र । -चक्ष-वि० सबको देखनेवाला । -चक्षु(स्)-वि० सबको देखनेवाला । पु० सब चीजोंको देखनेवाला नेत्र, विष्णु । -च्यवा(बस्)-पु० सर्वको एक रहिम । -जम-पु० मानव-जाति । -जनीन-जनीय-जन्म-वि० सबके लिए उपयुक्त; सबके लिए लाभदायक । -जयी(विन्)-वि० समारको जीतनेवाला । -जित्-वि० सबको जीतनेवाला । पु० एक एकाह; अग्निको एक रूप; बर्षका पाक्ष; विष्णु; एक दानव । -जीव-पु० बिभास्मा, ईश्वर । -ज्योति(स्)-वि० पूर्ण दीप्तिमें युक्त । पु० एक एकाह । -ज्योतिष-पु० एक ग्रीष्मप्रवर्तक ऋषि । -जनु-वि० ब्रह्मांड जिसका शरीर है । पु० विष्णु । -तुलसी-स्त्री० बनतुलसी । -तृप्त-वि० प्रत्येक वस्तुसे सतुष्ट । पु० विष्णु । -तोय-वि० जिसमें सबके लिए जल हो । -तोया-स्त्री० गंगा । -त्रय-पु० आकाश, वाताल और मर्त्यलोक । -द्वैह-पु० एक अक्षर । -दानि-वि० सबको देनेवाला । -दाव-वि० सबकी छुलसानेवाला । -दासा-स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । -दह(ह)-वि० सबको देखनेवाला । -देव-पु० एक देवता; एक देववर्ग । -देवा-स्त्री० रक्त दंडोत्पल; नामवला; छोटी गवेयुका । -दैव-दैवत-पु० उत्तरापादा नक्षत्र । -धर-पु० सबको धारण करनेवाला विष्णु । -धरण-पु०, -धा-स्त्री० विश्वका धारण-वीथण । -धाता(तु)-वि०, पु० विश्वकी धारण करनेवाला । -धाम(न)-पु० ईश्वर । -धार-पु० मेधातिथिका एक पुत्र; उसके द्वारा स्थापित एक वर्ष । -धारिणी-स्त्री० पृथ्वी । -धारी(रिन्)-वि० विश्वको धारण करनेवाला । पु० देवता । -धृक्, -धृत्-वि० प्रत्येक पृथ्वीको धारण करनेवाला । -धेना-स्त्री० पृथ्वी । -नंद-पु० ब्रह्माका एक मानस पुत्र । -नाच-पु०

शिव; काशीका एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग । -नगरी, -पुरी-स्त्री० काशी । -भह-पु० साहित्यरूपणके रचयिता । -नाम-पु० विष्णु । -नाभि-स्त्री० विश्वकी नाभि, विष्णुका चक्र । -पति-पु० ईश्वर; कृष्ण; अग्नि-विशेष । -पर्णी-स्त्री० भूम्यामलकी । -पा-पु० सबकी रक्षा करनेवाला; सर्व; चंद्रमा; अग्नि । -पाचक-वि० सबकी पकानेवाला (अनल) । -पावि-पु० एक क्वाणी गोपितृत्व । -पाता(तु)-पु० एक पितृवर्ग । -पाल-पु० विश्वका पालन करनेवाला, ईश्वर । -पावन-वि० सबको पवित्र करनेवाला । -पावनी, -पूजिता-स्त्री० तुलसी । -पुद्(व)-वि० सबका पोषण करनेवाला । -पूजित-वि० सबके द्वारा पूजा जानेवाला । -पूज्य-वि० सर्वमम्यान्व । -प्रकाशक-वि० सबको प्रकाशित करनेवाला । पु० सर्व । -प्रबोध-वि० सबको जाग्रत करनेवाला । पु० विष्णु । -प्या(पसन्)-पु० देवता; सर्व; चंद्रमा; अग्नि; विश्वकर्मा । -बंध-पु० विश्वका मित्र, शिव । -बीज-पु० मूल प्रकृति । -बोध-पु० बुद्ध । -भह-पु० सर्वतोभद्र नामक चक्र । वि० पूर्णतः अनुकूल । -भर्ता(तु)-पु० सबका मरण करनेवाला; ईश्वर । -भय-पु० वह जिससे सबकी उत्पत्ति हुई है, ब्रह्मा । -भाष, -भावन-वि० सबकी सृष्टि करनेवाला । पु० ईश्वर । -भुक्(ज)-वि० सबका भोग करनेवाला । पु० इंद्र, इंद्रका एक पुत्र; अग्नि; एक पितृवर्ग । -भुजा-स्त्री० एक देवी । -भू-पु० एक बुद्ध । -भेषज-पु० सबकी दवा, सौंठ । -भोजन-पु० सब प्रकारकी चीजें खाना । -भद्रा-स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । -भहेश्वर-पु० शिव । -भ्राता(तु)-स्त्री० विश्वकी माता, दुर्गा । -भुखी-स्त्री० एक दाक्षावणी (जालधरमें पूजित) । -भूति-वि० सब रूपोंमें रहनेवाला, सर्वव्यापक । पु० ईश्वर; शिव । -भोहन-वि० सबको मुग्ध करनेवाला । पु० विष्णु । -भोनि-पु० ब्रह्मा; विष्णु । -रथ-पु० गाथिका एक पुत्र । -राज, -राट्-राट्(ज)-पु० सारे विश्वका प्रभु । -रुचि-पु० एक देवयौनि; एक दानव । -रुची-स्त्री० अग्निकी मात जिह्वाओंमेंसे एक । -रूप-वि० सर्वव्यापक । पु० विष्णु; शिव; देवता; एक तरहका धूमकेतु; एक अक्षर । -रूपक-पु० काला अगर; खिरनी । -रूपी-स्त्री० अग्निकी एक जिह्वा । -रूपी(विन्)-वि० विभिन्न रूपोंमें प्रकट होनेवाला । -हता(हत्स)-पु० ब्रह्मा; विष्णु । -रोचन-पु० कचूर; नाभीच नामका साग । -लोचन-पु० सर्व; चंद्रमा । -लोप-पु० एक वृक्ष; एक वैदिक ऋषि । -बनि-वि० सब कुछ देनेवाला । -बर्णा-स्त्री० भूम्यामलकी । -बसु-पु० पुरूरवाका एक पुत्र । -बाह(व)-पु० महापुरुष । -बास-पु० सभी वस्तुओंका आधार; जगत् । -बाह-वि० सबको धारण करनेवाला । -बाहु-पु० विष्णु । -बिख्यात-वि० जो मारे संसारमें प्रसिद्ध हो । -विजयी(विन्)-वि० सबको विजित करनेवाला । -विद्-वि० सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ । पु० ईश्वर । -विद्यालय-पु० वह संस्था जहाँ सारी विद्याओंकी केंची शिक्षा दी जाय । -विद्याव(हस्)-वि० सब कुछ जाननेवाला । -विद्यापी(विन्)-पु० सदा;

देवता । -विभाव-पु० विश्वकी रचना । -विश्वत-
वि० विश्वविस्मयात् । -विश्व-पु० विष्णु । -विंसार-
(रिक्)-वि० सर्वत्र फैलनेवाला । -विस्ता-खी० वैज्ञाकी
पूर्णिमा । -वृक्ष-पु० विष्णु । -वेदा(इस्)-वि०
सर्वज्ञ । पु० ऋषि । -व्यापक-व्यापी(विन्)-
वि० जो सर्वत्र व्याप्त हो । पु० ईश्वर । -व्याप्ति-खी०
सर्वव्यापकता । -व्याप(वस्)-पु० रावणका पिता ।
-व्री-वि० सबके लिए उपयोगी (अग्नि) । -संस्कृत-पु०
प्रलय । -संभव-वि० जिसमें सब कुछ उत्पन्न हुआ
हो । पु० ईश्वर । -संहार-पु० विश्वका नाश । -सख-
पु० सबका मित्र । -ससम-पु० विष्णु; कृष्ण । -सह-
वि० सब कुछका सहन करनेवाला । -सहा-खी० पृथ्वी;
अधिकारी एक जिहा । -साक्षी(सिन्)-वि० सब कुछ
देखनेवाला । पु० ईश्वर । -सार-पु० तत्त्वविशेष ।
-सारक-पु० विद्वद्गुरु, ककारी । -सूक्(ज्)-वि०
सबकी रचना करनेवाला । पु० ब्रह्मा । -सृष्टि-खी०
विश्वकी रचना । -स्था-खी० शतावरी । -स्पृक्(श्)-
वि० सबका स्पर्श करनेवाला (महापुरुष) । -खट्टा(ट्ट)-
पु० सृष्टिका रचयिता । -हर्ता(र्ह)-पु० शिव । -हेतु-
पु० सबकी उत्पत्तिकारण, विष्णु ।

विश्वक-वि० [म०] समग्र; सर्वव्यापक । पु० पृथुका एक
पुत्र ।

विश्वकर्मजा, विश्वकर्मसुता-खी० [स०] मर्यपत्नी, मन्ना ।

विश्वकृत्सेन-पु० [स०] दे० 'विश्वकृत्सेन' ।

विश्वकर्मभ्रा(भन्)-पु० [स०] विष्णु ।

विश्वतः(सस्)-अ० [म०] चारों ओर, सर्वत्र ।

विश्वया-अ० [म०] सब जगह, सर्वत्र; सदा ।

विश्वयु-पु० [म०] बायु ।

विश्वसन-पु० [म०] विश्वास करना ।

विश्वसनीय-वि० [म०] विश्वास-योग्य, जिसका एतबार
किया जा सके ।

विश्वसित-वि० [स०] विश्वासपूर्ण; निर्भय; मदेह न
करनेवाला; विश्वस्त ।

विश्वस्त-वि० [म०] विश्वसनीय; विश्वासपूर्ण; निर्भय ।

-घाती(सिन्)-वि० विश्वास करनेवालेका नाश करने-
वाला । -वर्चक-वि० विश्वास करनेवालेकी बोझा
देनेवाला ।

विश्वस्ता-खी० [म०] विश्वा ।

विश्वोद-पु० [स०] ब्रह्मा ।

विश्वा-खी० [स०] पृथ्वी; सोंठ; विप्यली; चोरपुष्पी,
अतिविषा; शतावरी; अश्विनी एक जिह्वा; एक परिमाण;
दुसरी एक कन्या; एक नदी ।

विश्वाह-वि० [म०] सबपर दृष्टि रखनेवाला । पु० ईश्वर ।

विश्वाची-खी० [म०] एक वैदिक अम्तरा; एक तरहका
लकना जिसमें पीठ और हाथ निदोष्ट हो जाते हैं ।

विश्वातिथि-पु० [म०] वह जो सबका अतिथि बने,
सन्ध्यासी ।

विश्वातीत-वि० [स०] सबसे परे । पु० ईश्वर ।

विश्वाभ्रा(भन्)-पु० [स०] ईश्वर; मर्य; ब्रह्मा; शिव;
विष्णु ।

विश्वा-वि० [म०] सबका सक्षण करनेवाला । पु० अग्नि ।

विश्वावाचा(वस्)-पु० [स०] देवता ।

विश्वाधार-पु० [स०] विश्वका सधार, ईश्वर ।

विश्वाधिप-पु० [स०] विश्वका स्वामी, ईश्वर ।

विश्वाधर-पु० [स०] सविता; इन्द्र; अश्विनी पिता ।

विश्वाप्सु-वि० [म०] जो सब तरहका रूप धारण कर
सके ।

विश्वाभू-वि० [म०] सर्वव्यापक । पु० ईश्वर; इन्द्र ।

विश्वाभिन्न-पु० [स०] एक प्रसिद्ध ऋषि (ये मूलतः क्षत्रिय
थे । इनके पिताका नाम गाथि था और ये कान्यकुब्जके
मेरुश थे । एक गाथ-नंदिनी-के लिए बसिष्ठने इनका युद्ध
हुआ जिसमें ये पराजित हो गये । ब्राह्मणत्वका इनपर
इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि ये उसे प्राप्त करनेके लिए
तपस्या करने लगे । अंतमें उसमें इन्हें सफलता मिली
और बसिष्ठने भी इन्हें ब्राह्मणिके रूपमें स्वीकार कर
लिया) । -प्रिय-पु० नारियल; कात्तिकेय; राम ।

विश्वाभिन्ना-खी० [म०] एक नदी ।

विश्वाभूत-वि० [स०] जिसकी कभी मृत्यु न हो ।

विश्वाचन-वि० [म०] सममें प्रवेश करनेवाला, सर्वज्ञ ।

विश्वावाद(ज्)-वि० [स०] सबपर शासन करनेवाला ।
पु० ईश्वर ।

विश्वावसु-वि० [म०] सबका उपकार करनेवाला । पु०
विष्णु; एक गधर्व; एक सवत्सर; एक मरुत्वान्; पुरुवरका
एक पुत्र; जमदग्निका एक पुत्र; एक मनु । खी० रात ।

विश्वावास-पु० [स०] वह जो प्रत्येक वस्तुका आधार हो ।

विश्वास-पु० [म०] किसीके विश्वस्यमें उसके विशेष प्रकार-
का होनेकी धारणा; यकीन भरोसा; गुप्त संवाद या

* भेद । -कारक-कृन्-वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला ।

-कारण-पु० विश्वासका कारण । -कार्य-पु० गोपनीय

कार्य । -घात-पु० विश्वासमें विपरीत कार्य करना ।

-घातक-घाती(सिन्)-वि० विश्वास भग करने-

वाला; विश्वासके विपरीत कार्य करनेवाला । -परम-

वि० विश्वासपूर्ण । -पात्र-आजन-भूमि-वि०

जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय । -प्रह-वि०

विश्वास उत्पन्न करनेवाला । -अंग-पु० विश्वासमें

प्रतिकूल कार्य करना । -स्थान-पु० विश्वासका पात्र,

प्रतिभू, ओल । -हंता(र्ह)-हर्ता(र्ह)-वि० विश्वास-

घाती । पु०-जमाना-दिलाना-विश्वास उत्पन्न करना ।

विश्वास्तन-पु० [स०] विश्वास उत्पन्न करना ।

विश्वासिक-वि० [स०] जो विश्वास योग्य हो ।

विश्वासित-वि० [म०] जिसके मनमें विश्वास उत्पन्न
किया गया हो ।

विश्वासी(सिन्)-वि० [म०] विश्वास करनेवाला; जिसका
विश्वास किया जाय ।

विश्वास्थ-वि० [स०] विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य,
विश्वासपात्र ।

विश्वाह्वा-खी० [स०] सोंठ ।

विश्वेक्षिता(र्ह)-वि० [स०] सबको देखनेवाला ।

विश्वेदेव-पु० [स०] अग्नि; एक देवर्षि; तरहकी संख्या;
महापुरुष; एक जसुर; एक देवता ।

विश्वभोजा(जस्) - पु० [सं०] इन्द्र ।
 विश्वेश(वस्) - पु० [सं०] जक्षि ।
 विश्वेश - पु० [सं०] विश्वका स्वामी (जप्ता; विष्णु; शिव);
 जप्ता; एक लिंग; उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।
 विश्वेशा - स्त्री० [सं०] दक्षकी एक कन्या ।
 विश्वेश्वर - पु० [सं०] ईश्वर; शिवकी एक मूर्ति
 (काशीय); उत्तराषाढ़ा नक्षत्र । - पञ्चन - पु० काशी ।
 विश्वैकसार - पु० [सं०] एक पुराना तीर्थ (कश्मीर) ।
 विश्वौषध - स्त्री० [सं०] सौष्ठ ।
 विश्वंग - वि० [सं०] संलक्ष; लटका हुआ ।
 विश्वंगी (विन्) - वि० [सं०] संलक्ष होनेवाला; 'मे' लिस ।
 विश्वंश - पु० [सं०] कमलनाल ।
 विष - पु० [सं०] जहर, गरल; वस्त्रनाम, जल; कमल-
 नाल; एक सुगन्धित गौद; 'म' की ध्वनि (सं०) । - कंठ -
 पु० इंगुरी । - कंठक - पु० दुरालभा । - कंठका - कंठ-
 किनी, - कंठकी - स्त्री० वध्याककौटकी । - कंठ - पु०
 शिव । - कंठिका - स्त्री० बगला । - कंठ - पु० नीलकंद ।
 - कन्धका, - कन्धा - स्त्री० वह विषाक्त कन्या जिसमें
 भ्रमोग करनेवालेकी मृत्यु हो जाती है । - कुंभ - पु०
 विषपूर्ण घट । - कृत - वि० विषाक्त । कृमि - पु० विषमें
 उत्पन्न कीड़ा । - क्वाय - पु० एक न्याय जिसके अनुसार
 दूसरोंके लिए धातक सिद्ध होनेवाला पदार्थ उसमें उत्पन्न
 हुएके लिए धातक नहीं होता । - गंधक - पु० तुण-
 विशेष । - गंधा - स्त्री० कृष्ण अपराजिता । - गिरि -
 पु० वह पहाड़ जिसपर लगनेवाले पेड़-पौधे जहरीले हों ।
 - ग्रंथि - स्त्री० एक पौधा । - घटिका - स्त्री० एक सौर
 मान । - घा - स्त्री० गुच्छ । - घात - पु० विषवैष ।
 - घातक - वि० विषका प्रभाव हरण करनेवाला; विषका
 प्रयोग कर मारनेवाला । - घाती (विन्) - वि० विषका
 प्रभाव नष्ट करनेवाला । पु० शरीर । - ज - वि० विष-
 नाशक । पु० सिरिसका पेड़; जवाना; मिलावा; चंपक;
 गन्धलस; भूकटव । - झा - स्त्री० अतिविषा, अतीस ।
 - झिका - स्त्री० सफेद चिन्हा । - झी - स्त्री० हिल-
 मोचिका; बनवर्षिका; भूम्यामलकी; रक्त पुनर्वा; हरिद्रा;
 वृश्चिकाली; महाकरज; इन्द्रास्त्री, स्वल्पफला । - चक्र -
 पु० चकोर पक्षी । - ज - वि० विषमें उत्पन्न । - जल -
 पु० विष मिला हुआ पानी । - जित् - पु० एक तरहका
 मधु । - जिह्व - पु० देवताड । - जुष्ट - वि० विषैला;
 विषाक्त । - ज्वर - पु० विषके कारण उत्पन्न ज्वर; भँसा ।
 - तन्त्र - पु० सौंप आदिका विष दूर करनेकी प्रक्रिया
 (आ० वे०) । - तद् - पु० कुचला; विषैला वृक्ष । - तित्तु
 पु० कुचला । - तित्तुक - पु० एक विषैला पौधा । - तुक्क
 वि० धातक । - दंड - पु० विषका हरण करनेवाली आदकी
 लकड़ी; कमलनाल । - दंतक - पु० सर्प । - दंष्ट्रा -
 स्त्री० सर्पकाली । - द - वि० विषैला । पु० सफेद रंग;
 पृथ्वासीस; बादल; अतिविषा, अतीस । - दर्शनस्युक्त -
 पु० चकोर । - दा - स्त्री० अतिविषा, अतीस । - दाता -
 (म) - दासक, - दापी (विन्) - वि०, पु० जहर देने-
 वाला । - दिग्ध - वि० विषाक्त किया हुआ । - दुष्ट -
 वि० विष मिलाया हुआ । - दूषण - वि० विष दूर करने-

वाला । पु० भोजनादिमें विष देना । - द्रौघहर - वि०
 विषका प्रभाव दूर करनेवाला । - दुग्ध - पु० कारस्कर,
 कुचला । - द्विषा - स्त्री० गुडुचीका एक भेद । - धर -
 वि० विषैला । पु० सौंप; जलधर । - निलम्ब - पु०
 नागलोक, पाताल । - धरी - स्त्री० सर्पिणी । - धर्मा -
 स्त्री० केवाँच । - धात्री - स्त्री० मनसा देवी, अरुक्ताक्ष
 ऋषिकी पत्नी । - हंससी (सिन्) - पु० नागरभोजा । -
 गाढी - स्त्री० एक जम्बु सुदृढ़ । - वासन - पु० सिरिस-
 का पेड़; मानकंद; विष दूर करना । वि० विष नष्ट करने-
 वाला । - नाशिनी - स्त्री० एक लता, सर्पकाली; बंध्या-
 ककौटकी । - तुर् (दु) - पु० इयाना । - पत्रिका - स्त्री०
 जहरीला पत्ता; जहरीले बीजका छिलका; विषैले पत्ता-
 वाला एक पौधा । - पक्षग - पु० जहरीला माँप । - पर्णी
 - स्त्री० न्यग्रोध । - पादप - पु० विषैला वृक्ष । - पीत -
 वि० जिसने विषका घात किया है । - पुच्छ - पु० चिन्चू ।
 - पुट - पु० एक भवि । - पुष्प - पु० विषैला फूल;
 अलमोका फूल; नीला पद्म; मेनफल, मदन । - पुष्पक, -
 मुत्तक - पु० मेनफल; विषपुष्प खानेमें होनेवाला रोग ।
 - प्रदिग्ध - वि० विषाक्त । - प्रयोग - पु० औषधमें
 विषका प्रयोग करना । - प्रशमनी - स्त्री० बंध्याककौटकी ।
 - प्रस्थ - पु० एक पर्वत (म० भा०) । - भक्षण - पु०
 जहर खाना । - भद्रा - स्त्री० वृहस्पती । - भद्रिका - स्त्री०
 लघुदंती । - भिषक् (ज्) - पु० विषवैष । - भुजंग -
 पु० जहरीला सर्प । - मृत् - वि० विषैला । पु० सर्प ।
 - मंत्र - पु० मर्पदंशका मंत्र; मंत्र द्वारा सर्पविष दूर करने-
 वाला, सँपेरा । - मर्दिका, - मर्दनी, - मर्दिनी - स्त्री०
 गंधनाकुली । - माधुर - पु० शर्मी विष, सींगिया । -
 मुक् (ष्) - वि० जहरीला (शब्दादि) । पु० सर्प ।
 - मुष्टि - पु० एक क्षुप । - मुष्टिका - स्त्री० बकायल । -
 मूला - स्त्री० शिरामलक । - मूत्तु - पु० चकोर । - रस -
 पु० विष मिला हुआ पेय । - रूपा - स्त्री० मीठी नीम;
 अतिविषा; लेकसा । - रोग - पु० विषजन्य रोग । - लता -
 स्त्री० कमलकी माल; एक लता, इन्द्रास्त्री । - लांगल -
 पु० कलियारी । - वंशिका - स्त्री० विच्छ नामक पौधा ।
 - वसन - पु० जहर उगलना; बहुत ही अमिय एवं कड़वी
 बातें करना । - वल्ली, - वल्लि, - वल्ली - स्त्री० एक लता,
 इन्द्रास्त्री । - विटपी (विन्) - पु० विषैला वृक्ष । -
 विद्या - स्त्री० विषज्ज मंत्र । - विधान - पु० विधि-
 स्त्री० अपराधी, निरपराध ठहरानेको एक दिव्य परीक्षा ।
 - वृद्ध - पु० विषैला वृक्ष; गुल्ल । - न्वाय - पु० एक
 न्याय जिसमें कहा जाता है कि वस्तु बुरी होते हुए भी
 उत्पादकको उसे नष्ट नहीं करना चाहिये । - वेग - पु०
 विषका शरीरमें व्याप्त होना । - वैष - पु० मंत्र आदिसे
 विषका प्रभाव दूर करनेवाला । - वैरिणी - स्त्री० निर्विषा ।
 - व्रज - पु० एक तरहका विषैला फोड़ा, जहरबाद ।
 - शालक - पु० पथकंद, असौं । - शुक, - शंगी (विन्)
 पु० भिष, शंगरोल । - संयोग - पु० सिद्ध । - सूचक -
 पु० एक पक्षी, चकोर । - सूका (कन्) - पु० शृंगरोल,
 भिष । - हंसा (त्) - वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला ।
 पु० सिरिस । - हंभी - स्त्री० अपराजिता; निर्विषा । - ह -

वि० विष हरण करनेवाला; विषय। पु० निर्विषा; देव-
दाही। -हर-पु० विषका प्रभाव हरनेवाला मंत्र या
औषध; चोरक। -हरा-खी० निर्विषी; देवदाही, बंदाक;
मनसा देवी। -हरी-खी० मनसा देवी। -हा-खी०
बंदाक, देवदाही; निर्विषा। -ह्रा(हृन्)-वि० विष नष्ट
करनेवाला। पु० एक तरहका कदंब। -हारक-पु० एक
तरहका कदंब। -हारिणी-खी० निर्विषा। -हीन-
वि० जिसमें विष न हो (सर्प आदि)। -हृदय-वि०
कुटिलहृदय, घुरे दिलका। -हेति-पु० सर्प।

विषय-वि० [सं०] जका; इदतासे जमाया हुआ; विषका,
लिपटा हुआ; लटका हुआ; उत्पादित।

विषयित-वि० [सं०] विषका हुआ, सलसल।

विषयि-पु० [सं०] एक सौप।

विषय-वि० [सं०] दुःखी, विषादयुक्त; शोकमग्न।

-चेता(सत्), -मना(सत्)-वि० क्षिप्त, उदात्त।
-मुखा, -वदन-वि० जिसके चेहरेसे उदासी झल-
कती हो।

विषयता-खी० [सं०] उदासी; जड़ता।

विषयता-पु० [सं०] शिव।

विषय-वि० [सं०] जो समस्त न हो, असम; असमान,
दोसे पूरा-पूरा न बँटनेवाली (संख्या); कठिन; दुर्बोध, जो
जल्द समझमें न आवे, बिकट, जटिल, जो जल्द हल न
हो; दुर्गम; रूढ़िवा, मोटा; कष्टकर; उग्र, प्रचंड; खतरनाक,
दुरा, प्रतिकूल; असाधारण, अद्वितीय; बेईमान, छली; दुष्ट;
सविमल, अंतर देकर होनेवाला (अर्थ आदि); भिन्न। पु०
विष्णु; असमता; असाधारणता; सम न होनेका भाव; खतर-
नाक स्थिति; संकट; खट्टा; ऊबड़-खाबड़ जमीन; असम वृत्त,
ऐसा छंद जिसके चरणोंके अक्षरादि बराबर न हों; एक
काष्ठाकार जहाँ अत्यंत विकल्पता, विभिन्नताके कारण
दो बस्तुओंका संयोग 'कहाँ' यहाँ, 'कहाँ' वहाँ' कहकर अयोग्य
बतलाया जाय या जहाँ कार्य और कारण एक दूसरेके विल-
कुल विरुद्ध या विरुद्ध हों या फिर कोई अच्छा काम करने-
की चेष्टा करनेपर लाभ न होकर उल्टे हानि उठानी पड़े,
एक तरहका ताल; असम राशियाँ; एक जठराग्नि। -
कर्ण-वि० जिसके कर्ण असमान हों। पु० असम कर्णों-
वाला चतुर्भुज; समकोण-त्रिकोणका कर्ण। (ज्या०)। -
कर्म(न्)-पु० असाधारण कार्य। -काल-पु० अनुभव
या प्रतिकूल समय। -खात-पु० वह वन जिसमेंके गहूँ
या पादर्व बराबर न हों। -गत-वि० जो ऊबड़-खाबड़
जमीनपर रखा हो; संकटग्रस्त। -चतुरस्र-चतु-
र्भुज, -चतुष्कोण-पु० वह चतुर्भुज जिसकी भुजाएँ
असमान हों। -च्छद-पु० सप्तर्षि नामक वृक्ष। -
छाया-खी० छाया-वर्गीकी दीपहरके समयकी छाया।
-अवर-पु० जीर्णवर। -भ्रिभुज-पु० वह भ्रिभुज
जिसकी तीनों भुजाएँ असमान हों। -इष्टि-वि० दैवा-
ताना। -धाम-वि० अवस्थ (रात, पित्त और कफकी
अस्तुति अवस्था)। -नयन, -नेत्र, -विलोचन-पु०
शिव। -दलाश-पु० सप्तदलाश, छतिवन। -वाद्-
वि० जिसके चरण असमान हों। -बाण, -विशिष्ट, -
शर-पु० कामदेव। -लक्ष्मी-खी० कुममय, दुर्भाग्य।

-वृकल-पु० नारंगी। -विभाग-पु० संपत्तिका
असमान बँटवारा। -वृत्त-पु० वह छंद जिसके चरणोंकी
मात्राएँ आदि समान न हों। -व्यूह-पु० एक प्रकारकी
व्यूहरचना। -शिक्ष-पु० प्रायश्चित्तकी व्यवस्थाका एक
दोष। वि० (प्रायश्चित्तकी व्यवस्था) जो गलत दी
गयी हो; जिसका बँटवारा उचित रूपमें न हुआ हो
(मरनेके समय संपत्तिका)। -शील-वि० चिकचिका,
जिसका मिजाज एक-सा न रहता हो। पु० विक्रमादित्य।
-संवि-खी० एक तरहकी संधि, समसंपत्तिका विलोम।
-साहस-पु० औद्धत्य। -स्थ-वि० जो दुर्गम स्थान-
पर, करारेपर या संकटमें हो। -रघुहा-खी० दूसरेका
धन बेईमानीसे लेनेका लालच।

विषयक-वि० [सं०] असमान; जिसकी पालिश बराबर न
न होई हो (मोती आदि)।

विषयता-खी०, विषयत्व-पु० [सं०] असमता; अंतर;
निरापदता; औषणता; जटिलता।

विषय-खी० [सं०] खरबेरी; एक तरहका वृक्षनाम।

विषय-पु० [सं०] शिव।

विषय-खी० [सं०] एक जठराग्नि (आ० वे०)।

विषय-पु० [सं०] अनियमित आहार।

विषययुज-पु० [सं०] कामदेव।

विषयघात-पु० [सं०] ऊबड़-खाबड़ जमीनपर उतरना।

विषयसप्त-पु० [सं०] निश्चित समयपर भोजन न करना।

विषयसप्त-वि० [सं०] बेईमान; कपटी।

विषयित-वि० [सं०] असम या दुर्गम बनाया हुआ;
अव्यवस्थित; जो खतरनाक, बेरी बन गया हो; सिकोबा
हुआ।

विषयेश-पु० [सं०] शिव।

विषयेश-पु० [सं०] कामदेव।

विषय-पु० [सं०] शान्तिद्वीपों द्वारा गृहीत होनेवाले पदार्थ
(जप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द), इन्द्रियाध; भौतिक
पदार्थ; कारवार; इन्द्रियजन्य आनन्द; लक्ष्य; क्षेत्र, विस्तार;
विभाग, व्याख्या आदिका प्रकरण; प्रसंग; मजमून; उप
मेय; देश; राज्य; शासनव्यवस्थायुक्त वृहत् क्षेत्र; आश्रय-
स्थान; ग्राम-समूह; पति; शुक; व्रत, धार्मिक अनुष्ठान;
पौखली संस्था। -कर्म(न्)-पु० सांसारिक कार्य।
-काम-पु० भौतिक पदार्थों या आनन्दकी इच्छा। -
ग्राम-पु० इन्द्रियाधोंका समूह। -ज्ञ-वि० विशेष विषयका
अच्छा ज्ञान रखनेवाला। -ज्ञान-पु० सांसारिक कार्यों-
का ज्ञान। -निरति-खी० विषयाशक्ति। -निर्वादिणी,
-मसिति, -निर्वाचनी ससिति-खी० किसी सामग्रीमें
उपस्थित किया जानेवाला विषय, प्रस्ताव आदिका निश्चय
करानेवाली उपसमिति। -पति-पु० राज्यपाल,
'मन्तव'। -पराक्रम-वि० सांसारिक विषयोंसे
निरत। -प्रत्यभिज्ञा-पु० इन्द्रियाधोंका ज्ञान। -
प्रबन्ध-वि० विषयाशक्ति। -प्रसंग-पु० विषयाशक्ति।
-रत-वि० विषयभोगमें लीन रहनेवाला। -लोलुप-
वि० विषय-सुखका लोभी। -वासी(सिद्ध)-वि० पु०
देशवासी; सांसारिक कार्योंमें लगा हुआ। -संग-पु०
विषयानुसंगि। -ससिति-खी० दे० 'विषय-निर्वादिणी'

समिति'। -सुख-पु० इन्द्रियजन्य सुख। -स्नेह-पु०, -स्नेहा-स्त्री० विषय-सुखको इच्छा।
 विषयक-वि० [सं०] संबंधी, विषयक।
 विषयांत-पु० [सं०] देशको सीमा।
 विषयांतर-पु० [सं०] प्रसंगको छोड़कर भिन्न विषयका उपस्थापन करना; मूल विषयको छोड़कर इतर-उपराधी चर्चा करना। वि० जो भिन्नकुल पासका हो, पत्नीसका।
 विषया-स्त्री० विषयवासना; विषयवासनाको वस्तु।
 विषयाज्ञान-पु० [सं०] कृति; तंद्रा।
 विषयात्मक-वि० [सं०] विषय-संबंधी; इन्द्रिय-संबंधी।
 विषयाधिकृत-पु० [सं०] राज्यपाल, 'गवर्नर'।
 विषयाधिप-पु० [सं०] दे० 'विषय-पति'।
 विषयाधिपति-पु० [सं०] शांतका शासक, 'गवर्नर'; राजा।
 विषयानुकमणिका-स्त्री० [सं०] विस्तृत विषयसूची, 'इन्डेक्स'।
 विषयाभिरसि-स्त्री०, विषयाभिलाष-पु० [सं०] विषयभोग।
 विषयायी(विद्यु)-पु० [सं०] राजा; शार्नेन्द्रिय; जकवादी, नास्तिक; कामदेव।
 विषयासक्त-वि० [सं०] विषय-रत।
 विषयासक्ति-स्त्री० [सं०] विषयभोगमें लीन रहना।
 विषयी(विद्यु)-वि० [सं०] विलासी, कामी। पु० कामी पुरुष; नास्तिक; राजा; कामदेव; ज्ञान; अमीर; अहंभाव; शार्नेन्द्रिय; उपमान, अवयव (सा०)।
 विषयीय-वि० [सं०] विषय-संबंधी। पु० विषय, पदार्थ।
 विषयी(विद्यु)-वि० [सं०] विषयवाचनानामें लिप्त; मासारिक कामोंमें लगा हुआ।
 विषयोपरम-पु० [सं०] विषय-वासनाका त्याग।
 विषयोपसेवा-स्त्री० [सं०] विषयासक्ति।
 विषल-पु० [सं०] विष।
 विषल-वि० [सं०] सहने योग्य; पराभूत करने योग्य; संभव; जिसका निश्चय किया जा सके।
 विषांकुर-पु० [सं०] विषयुक्त किया हुआ अंकुर; भाला (जिसकी नोक विषाक्त हो)।
 विषांगना-स्त्री० [सं०] दे० 'विषकन्या'।
 विषांतक-पु० [सं०] शिव, वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला।
 विषा-स्त्री० [सं०] दुःखि; कम्बी तरौई; कम्बी कँदूरी; काकोली; कलियारी; अतिविषा।
 विषाक्त-वि० [सं०] विषमिश्रित।
 विषाख्या-स्त्री० [सं०] अतिविषा।
 विषाग्नि-स्त्री०, विषानल-पु० [सं०] विषजन्य अनल।
 विषाग्रज-पु० [सं०] तलवार।
 विषाण-पु० [सं०] मृग (राजा); सींग; शूकर, हाथी या गणेशका दाँत; केकड़ेका पंजा; चोटी, सिरा; मयानी; शिवके सिरपरकी सींग जैसी जटा; चूसक; अपने वर्गका प्रधान; तलवार। -कोश-पु० सींगका खोलला भाग।
 विषाणक-पु० [सं०] सींग; हाथी।
 विषाणांत-पु० [सं०] गणेशका दाँत।

विषाणिका-स्त्री० [सं०] मेघमृगी; कर्नाटमृगी; आमरतकी; सातका; कपमक।
 विषाणी-स्त्री० [सं०] कपमक; कर्नाटमृगी; क्षीरकाकोली; हमली।
 विषाणी(विद्यु)-वि० [सं०] सींगवाला; दाँतवाला। पु० सींग या दाँतवाला जानवर; हाथी; कपमक; मृगाटक।
 विषाद-पु० [सं०] अवसाद, उदासी; गम; नैराश्य; उत्साहहीनता; तंद्रा, छाँसि; सुखी; जकता; मन उबट जाना; एक संचारी भाव (कार्य-सिद्धिके उपायोंका अभाव होनेसे उत्पन्न दुःख); शिव। वि० विष खानेवाला। -कृत्य-जन्मक-वि० विव्रता आदि उत्पन्न करनेवाला।
 विषाद्व-वि० [सं०] उदासी पैदा करनेवाला। पु० विषाद उत्पन्न करना; कष्ट; नैराश्य।
 विषाद्वी-स्त्री० [सं०] पलाशी लता।
 विषादित-वि० [सं०] विषण्ण, विषादयुक्त किया हुआ।
 विषादिता-स्त्री० [सं०] विषादको अवस्था; विषण्णता।
 विषादी(विद्यु)-वि० [सं०] विषपान करनेवाला; विषण्ण, सिन्न; अधीर।
 विषाद्-वि० [सं०] विष खानेवाला। पु० शिव।
 विषानन-पु० [सं०] साँप।
 विषाक्ष-पु० [सं०] विषमिश्रित स्वाद प्रदाय।
 विषापवादी(विद्यु)-वि० [सं०] मंत्र द्वारा विषका प्रभाव दूर करनेवाला।
 विषापह-वि० [सं०] विषनाशक। पु० गरुड; मुष्मक नामक पक्षी।
 विषापहरण-पु० [सं०] विषका प्रभाव नष्ट करना।
 विषापहा-स्त्री० [सं०] अर्कमृगा; इंदराक्षी; निर्विषा; नागदमनी; सर्पकालिका।
 विषाभावा-स्त्री० [सं०] निर्विषा।
 विषायुध-पु० [सं०] साँप; विषैला जंतु; जहरमें भुसा अन्न।
 विषार-पु० [सं०] साँप।
 विषाराति-पु० [सं०] कृष्ण धत्तूरक।
 विषारि-पु० [सं०] महाचंचु या इतकरज।
 विषाला-स्त्री० [सं०] एक मछली।
 विषालु-वि० [सं०] विषैला; जहरीला।
 विषाक्ष-पु० [सं०] साँप; जहरमें भुसाया हुआ हर्षियार।
 विषास्य-पु० [सं०] साँप।
 विषास्वा-स्त्री० [सं०] भिलावों।
 विषी(विद्यु)-वि० [सं०] विषयुक्त, विषाक्त। पु० विष-पर साँप।
 विषुण-पु० [सं०] विषुव रेखा।
 विषुवद्व-पु० [सं०] बाण।
 विषुप-पु० [सं०] विषुव रेखा।
 विषुप्त-वि० [सं०] सोया हुआ।
 विषुव-पु० [सं०] वह समय जब दिन-रातका मान बराबर होता है। -च्छाया-स्त्री० मध्याह्नके समय वृषधरीके काँटेकी छाया। -दिन-पु० दे० 'विषुवदिन'। -रेखा-स्त्री० वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवोंके बीचोबीच पृथ्वी-तलपर चारों ओर गयी है।
 विषुवत्-वि० [सं०] बीचका, मध्यस्थित। पु० दे०

‘विभुव’।

विभुवत्—‘विभुवत्’का समासगत रूप ।—**विभ-**—**विभस-**
पु० वह दिन जब दिन-रातके मानमें कोई अंतर नहीं
होता ।—**देस-**—पु० विभुव रेखाके नीचे पड़नेवाले देश ।

—**वलय-**—**वृक्ष-**—पु० विभुव रेखा ।

विभूषिका—**श्री०** [सं०] एक तरहका अर्जुन जिसमें कै और
दस्त होता है और पेशाब नहीं उतरता, हैजा ।

विषैका—वि० विषयुक्त, जहरीला ।

विषौषधी—**श्री०** [सं०] नागदती ।

विषकंद—पु० [सं०] बिखरना, तितर-बितर होना; दूर
चले जाना ।

विषकंध—पु० [सं०] बाधा, गतिरोध ।

विषकंभ—पु० [सं०] बाधा; रोक; अगल; शहतीर, रतन;
वृक्ष; मंधन-दण्ड; कैलाश, विस्तार; वृक्षका व्यास; पर्वत-
श्रेणी; सत्पात्रस्य योगोंमेंसे एक (७५०); अर्जुनके मध्य रखा
जानेवाला बंध अंश जिसमें कथानकली प्रगतिता सकेत
रहता है (ना०); योगका एक बंधः कार्य-संपादन, कोई
काम करना ।

विषकंभक—वि० [सं०] सहारा देनेवाला । पु० दे०
‘विष्कंभ’ (ना०); एक योग (ज्यो०) ।

विषकंभन—पु० [सं०] बाधा डालना- विदारणका साधन ।

विषकंभित—वि० [सं०] जिसमें बाधा पड़ी हो; अस्थाहित;
से युक्त ।

विषकंभी(**भिन्**)—पु० [सं०] शिव; अगल; एक बोधिसत्त्व;
एक नाथिका देवता । वि० बाधा डालनेवाला ।

विष्क—पु० [सं०] नीस बर्तका हाथी ।

विष्कद—वि० [सं०] बिखरा हुआ, जो तितर-बितर हो
गया हो; जो चला गया हो ।

विष्कदव—वि० [सं०] सहारा दिया हुआ; जमाया, स्थिर
किया हुआ ।

विष्कर—पु० [सं०] अगल, एक टानन; बुढ़का एक डग;
पक्षी ।

विष्कल—पु० [सं०] ग्रामशुकर ।

विष्कलन—पु० [सं०] भोजन ।

विष्किर—पु० [सं०] पक्षी; अथवा छितराकर खानेवाले पक्षी
(कबूतर आदि); एक तरहका सोंप; एक अग्नि; काष्ठकर
टुकड़े टुकड़े करना ।

विष्टंभ—पु० [सं०] रोक; बाधा; सहन; प्रतिरोध; मलमूत्रका
रोध, पक्षाघात; पदक्रमण, आक्रमण ।

विष्टंभन—वि० [सं०] सहारा देनेवाला; रोकने, दबाने-
वाला । पु० रोकना, दबाना ।

विष्टंभित—वि० [सं०] दृढ़तापूर्वक जमाया, जकड़ा हुआ;
“से भरा या ढका हुआ ।

विष्टंभी(**भिन्**)—वि० [सं०] सहारा देनेवाला; रोकनेवाला;
गतिहीन करनेवाला । पु० (मल आदिक) रोकक पदार्थ ।

विष्ट—वि० [सं०] बुझा हुआ; भरा हुआ, युक्त ।

विष्टव—पु० [सं०] बुझन, लौक; पान; ध्याला ।—**हारी-**
(**रिन्**)—वि० लोगोंकी प्रसन्न करनेवाला ।

विष्टप्—**श्री०** [सं०] स्थान, भूभाग; स्वर्गलोक ।

विष्टव—वि० [सं०] दृढ़ताने जमाया या बाँधा हुआ; कड़ा

पका हुआ; रोक; सहारा दिया हुआ; भरा हुआ; ओ
पचा न हो ।—**शास्त्र**—वि० जिसके अंग कड़े पड़ गये हों ।

विष्टविष—**श्री०** [सं०] दृढ़तासे जमाना; सहारा देना ।

विष्टव—पु० [सं०] लोक ।

विष्टर—पु० [सं०] बैठनेके लिए फैलायी हुई धोती-सी
घास; यज्ञके यज्ञाका आसन; पचीस कुश-पुष्पाका बना
हुआ आसन; वृक्षः एक देवता; आसन, कुरसी; परलंग ।
वि० विस्तृत ।—**भाक्**(**ज्**)—वि० आसनासीन ।—
अवा(**बस्**)—पु० विष्णु; शिव ।

विष्टरा—**श्री०** [सं०] एक घास, गुडालीनी ।

विष्टराश—पु० [सं०] दृष्टका एक पुत्र ।

विष्टरुहा—**श्री०** [सं०] पीली केतकी ।

विष्टि—**श्री०** [सं०] व्याप्ति; काम, पेशा; मजदूरी, वेतन;
जबर्दस्ती लिया जानेवाला काम, बेगार; प्रेषण; नरकवास;
एक कर्ण, भट्ठा (७५०); वृष्टि ।—**कर**—पु० दासोंका
मालिक ।—**कृत्**—पु० दास ।

विष्टल—पु० [सं०] दूरवर्ती स्थान ।

विष्टा—**श्री०** [सं०] मल, पाखाना; पेट ।—**भुक्**(**ज्**)—
पु० शूकर ।—**भृ**—पु० मलकृमि ।—**भृवारक**—पु०
ग्राम-शकर ।

विष्टित—वि० [सं०] निकटवर्ती, मौजूद ।

विष्टेष्टा—**श्री०** [सं०] हल्दी ।

विष्णु—पु० [सं०] हिंदुओंके एक प्रधान देवता (वक्रोद्रे-
देवताओंमें विष्णुका स्थान गौण है, ब्राह्मण ग्रन्थों और
पुराणोंमें इनका महत्त्व बढ़ा । इनकी विदेवमें राणना १
और ये पालनकर्ता माने जाते हैं । विष्णुके उपासकोंकी
वैष्णव कहते हैं । विष्णुके दस अवतार कहे गये हैं । इनमें
मुख्यतया राम और कृष्णकी उपासना होती है); अग्नि,
वसु देवता; बारह आदिशक्तिमें प्रथम; एक धर्मशास्त्रप्रणेत
ऋषि; अथवा नक्षत्र; सत, महामा ।—**कंद**—पु० पर्व,
तरङ्गा बड़ा कंद ।—**कांची**—**श्री०** दक्षिणका एक तीर्थ ।
—**कांता**—**श्री०** नीली अपराजिता ।—**कांती**—**श्री०** एक
प्राचीन तीर्थ ।—**काक**—पु० एक लता, कोयल, नीली
अपराजिता ।—**क्रांत**—पु० इक्षुकेपा लता; उसका फूल;
एक लाल (मंथन) ।—**क्रांता**—**श्री०** अपराजिता; बाराही-
कंद; कृष्ण शलपुष्पी ।—**क्रांति**—**श्री०** अपराजिता ।—
क्षेत्र—पु० एक तीर्थ ।—**गंगा**—**श्री०** एक नदी ।—**गंधि**
—**श्री०** रक्त शलपुष्पी ।—**गुप्त**—पु० एक ऋषि और
वैवाकरण-चाणक्य, कोटिल्यका असली नाम; विष्णुकंद ।
—**गुप्तक**—पु० बड़ी मूली ।—**गृह**—पु० तालमल्लि ।
—**गोल**—पु० विपुव रेखा ।—**ग्रंथि**—**श्री०** शरीरकी एक
संधि ।—**चक्र**—पु० सुदर्शन चक्र ।—**ज**—वि० अथवा नक्षत्र-
में उत्पन्न । पु० अठारहवाँ कल्प ।—**सिंधि**—**श्री०** एका-
दशी; द्वादशी ।—**वैवत**—पु० अथवा नक्षत्र (इसके स्वामी
विष्णु हैं) ।—**वैवत्या**—**श्री०** दे० ‘विष्णुनिधि’ ।
—**हिंद**(**व्**)—पु० विष्णुके शत्रु ।—**हीर**—पु० एक द्वीप
(पु०) ।—**धर्म**—पु० एक अक्ष ।—**धर्मोत्तर**—पु०
विष्णुपुराणका एक अंग, एक उपपुराण ।—**धारा**—**श्री०**
एक प्राचीन तीर्थः एक नदी ।—**पंजर**—पु० विष्णुका एक
कवच (पु०) ।—**पक्षी**—**श्री०** लक्ष्मी; अदिति ।—**पृथ**—

पु० आकाश, कमल; क्षीरसागर, एक पहाड़, विष्णुका
वरणचक्र (पद्म)। - **पद्मी**-**क्षी०** गंगा नदी: वृष, कुंभ,
शुक्र, सिंह आदिकी संक्रांतियों; शारकापुरी। - **परा-
वण**-वि०, पु० वैष्णव, विष्णुकी भक्ति करनेवाला।
- **पर्विका**-**क्षी०** पृथिवी, पिठवन। - **पर्वी**-**क्षी०**
भुईँवाला। - **पीठ**-पु० एक पीठ, तीर्थस्थान (तं०)।
- **पुराण**-पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक। - **पुरी**-**क्षी०**
वैकुण्ठ, विष्णुलोक। - **प्रिया**-**क्षी०** लक्ष्मी; तुलसीका
पौधा। - **प्रति**-**क्षी०** विष्णु-पूजाके लिए ब्राह्मणोंकी दी
जानेवाली भूमि। - **अ**-पु० अवण नक्षत्र। - **माघा**-
क्षी० दुर्गा। - **यज्ञा**(शस्त्र)-पु० यज्ञयज्ञाका पुत्र और
कविक अवतारका पिता। - **यान**-**रथ**-पु० 'गुरु'।
- **रात**-पु० राजा परीक्षित। - **खिरी**-**क्षी०** बटेर।
- **लोक**-पु० वैकुण्ठ, मोलोक। - **वल्लभा**-**क्षी०** लक्ष्मी;
तुलसीका पौधा; कल्याणी, अशिक्षा। - **वाहन**, -
वाह-पु० गुरु। - **वृद्ध**-पु० एक मोक्षकार कवि।
- **शक्ति**-**क्षी०** लक्ष्मी। - **शिला**-**क्षी०** शालग्राम;
कान्तिचिकने पत्थरकी गंगा बटिया। - **शृङ्खल**-पु०
अवण नक्षत्रकी दाढ़शी। - **संहिता**, - **स्मृति**-**क्षी०**
एक प्रसिद्ध स्मृति। - **सर्वज्ञ**-पु० एक आचार्य, सायण-
के गुरु। - **हिता**-**क्षी०** तुलसीका पौधा; मरुआ।
विष्णुसर-पु० [मं०] विष्णुकी पूजाके निमित्त भूमिका
दान।
विष्यद्-पु० [मं०] दे० 'विरपद्'।
विष्यद्भन-पु० [मं०] कपन, धक्कन; आटे, घा और
चोनीके योगमें बना हुआ एक व्यञ्जन।
विष्वक्त्री-पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया।
विष्वक्-**क्षी०** [सं०] प्रधानता प्राप्त करनेके लिए की
जानेवाली होड़।
विस्फार-पु० [मं०] दे० 'विस्फार'।
विष्यद्-पु० [मं०] बूढ़, चूना, बहना, क्षरण; प्रवाह।
विष्यद्भन-पु० [सं०] एक तरहकी मिठाई; चूना, बहना;
उपदर बहना; पिघलना।
विष्य-वि० [सं०] विष देकर मार डालने योग्य।
विष्व-वि० [मं०] हिंस्र, हानिकारक।
विष्वक्(**व्यंक्**)-अ० [सं०] सर्वत्र, चारों ओर। पु०
विपुत्र। वि० सर्वव्यापक। - **कच**-वि० जिसके बाल
खिरे हों। - **सम**-वि० जो चारों ओर बराबर हो।
- **सेन**-पु० विष्णु; शिव; विष्णुका एक अनुचर; एक
मनु; एक कवि। - **काता**-**क्षी०** प्रिययु। - **प्रिया**-
क्षी० लक्ष्मी; प्रिययु। - **सेना**-**क्षी०** प्रिययु।
विष्वक्-वि० [मं०] समागत रूप। - **अवैक्षण**-वि०
चारों ओर देखनेवाला। - **गति**-वि० सर्वत्र जानेवाला।
- **वात**-पु०, - **वायु**-**क्षी०** एक तरहकी सब ओरसे
बहनेवाली हानिकारक वायु। - **वृत्त**-वि० चारों ओरसे
घिरा हुआ।
विसंकट-पु० [मं०] सिंह; इंदुदी। वि० भयानक, खौफ-
नाक।
विसंकुल-वि० [सं०] जो वषट्पाया न हो, धीर। पु०
पषट्पायन न होना।

विसंगत-वि० [सं०] बैमेल, जिसके साथ संगति न हो।
विसंचारी(**रिन्**)-वि० [सं०] इतस्ततः भ्रमण करनेवाला।
विसंज्ञ-वि० [सं०] संशारीन, बेहोश।
विसंज्ञित-वि० [मं०] संशयवित।
विसंज्ञित-वि० [सं०] जिनकी संधि संभव न हो।
विसंभरा-**क्षी०** [सं०] छिपकड़ी।
विसंभोग-पु० [सं०] पार्थक्य, जुदाई।
विसंयुक्त-वि० [सं०] वियुक्त, पृथक्।
विसंवाद-पु० [मं०] झूठा कथन; धोखा; प्रतिज्ञा भंग
करना; निराश करना; खंडन, असहमति।
विसंवादक-वि०, पु० [सं०] धोखा देनेवाला; प्रतिज्ञा भंग
करनेवाला।
विसंवादी(**विन्**)-वि० [मं०] धोखा देनेवाला; वचन
भंग करनेवाला; निराश करनेवाला; खंडन करनेवाला।
पु० राममें कभी-कभी लगनेवाला स्वर (संगीत)।
विसंयुक्त-वि० [मं०] अधिष्ठार, क्षुब्ध; विषम, जो समतल
न हो।
विसंहस-वि० [सं०] अलग किया हुआ, ढीला किया
हुआ।
विस-पु० [सं०] दे० 'विस'। † सर्व० उस।
विसरश-वि० [मं०] असमान, भिन्न; असाधारण।
विसभास-वि० [मं०] जिसका हिस्सा न हो।
विसम-वि० दे० 'विषम'।
विसमाप्ति-**क्षी०** [मं०] कार्यका पूरा न होना।
विसयना, **विसवना**-अ० [मं०] अस्त होना।
विसर-पु० [मं०] विभिन्न दिशाओंमें जाना, फैलना;
भीड़; झुड़; बड़ी राशि।
विसरण-पु० [मं०] फैलना; ढीला पड़ना।
विसर्ग-पु० [मं०] प्रेषण; डालना; बहाना; फैलना; दान;
हटाना, पृथक् करना; पार्थक्य; निर्माण; परित्याग; मल-
त्याग; मोक्ष; कांति, दीप्ति; सूर्यका दक्षिणी अवनय; शिख;
एक अक्षरका संकेत (:) जिसका उच्चारण आधे 'ह' के
समान होता है; प्रलय; शिव। - **सुवन**-पु० बिदा होते
समयका नुबन। - **सुस**-पु० विसर्गका लोप।
विसर्गी(**विन्**)-वि० [मं०] दान करनेवाला; त्याग
करनेवाला।
विसर्जन-पु० [सं०] दान; अतः समाप्ति; मलत्याग;
त्याग; फैलना; किसी कामपर भेजना; हॉक ले जाना
(पशुओंकी); प्रतिभाका धारामें बहाया जाना; विशेष
अक्षरपर सौंछ छोड़ना; कृति पहुँचाना; निर्माण; प्रशंसा
उत्तर देना; आहूत देवताओंमें जानेकी प्रार्थना करना
(आवाहनका उलटा)।
विसर्जनी-**क्षी०** [मं०] गुदाके मुँहपरके तीन बल्योमेंसे
एक।
विसर्जनीय-वि० [सं०] भेजा, निकास जानेवाला। पु०
एक अक्षरका संकेत, विसर्ग।
विसर्जिता(**रु**)-वि०, पु० [सं०] त्याग करनेवाला।
विसर्जिका-**क्षी०** [सं०] भेता झुग।
विसर्जित-वि० [सं०] भेजा हुआ; हटाया हुआ; त्यक्त।
विसर्व-पु० [सं०] इतस्ततः भ्रमण करना; रेंगना; फैलना;

कार्यका अप्रत्याशित दुःखद परिणाम (नाश); एक नमैरोग, सुजली । -ज्व-पु० मोम ।

विसर्पण-पु० [सं०] सरकना; रेंगना; फैलना; फेंकना; स्थान-त्याग; वृद्धि; वाढ; फोरेका स्फोट ।

विसर्पि, विसर्पिका-स्त्री० [सं०] सुजली नामका रोग ।

विसर्पिणी-स्त्री० [सं०] शंखिनी; बसतिता ।

विसर्पी(पिन्)-वि० [सं०] पसरने, फैलनेवाला; रेंगने-वाला; सुजली रोगसे पीडित । पु० सुजली रोग; एक नरक ।

विसर-पु० [सं०] दे० 'विसल' ।

विसामग्री-स्त्री० [सं०] साधनका अभाव; कार्य उत्पन्न करनेवाले कारणोंका न रहना ।

विसार-पु० [सं०] फैलाव; मछली; काष्ठ; बल्ला; रेंगना; सरकना; निकलना ।

विसारवि-वि० [सं०] जिसके साथ सारवि न हो ।

विसारिणी-स्त्री० [सं०] माघपणी ।

विसारित-वि० [सं०] फैलने, चलनेमें प्रवृत्त किया हुआ; संपादित ।

विसारी(रिन्)-वि० [सं०] निकलनेवाला; चलनेवाला; फैलनेवाला । पु० मछली ।

विसाल-वि० दे० 'विशाल' । पु० [अ०] मिलन, संयोग (प्रेमी-प्रेमिकाका); संयोग ।

विसिनी-स्त्री० [सं०] कमलका पौधा; शृणाल; पत्र-समूह ।

विसिल-वि० [सं०] विस; पथनालसे सज्ज रखनेवाला ।

विसुकुत-वि० [सं०] छक्कमरहित । पु० दुष्कर्म ।

विसुकुद्-वि० [सं०] जिसके कर्म अच्छे न हों ।

विसुख-वि० [सं०] निरानंद ।

विसुद्ध(द्)-वि० [सं०] मित्रहीन ।

विसुचन-पु० [सं०] जनानेकी क्रिया; सूचित करना ।

विशुचिका, विशुची-स्त्री० [सं०] दे० 'विशुचिका' ।

विशुच-वि० [सं०] बरबादा हुआ, उद्धिष्ट; विरक्त ।

विसुरण-पु०, विसुरणा-स्त्री० [सं०] दुःख, शोक; चिंता; विरक्ति ।

विसुरित-पु० [सं०] अनुताप, शोक; दुःख ।

विसुरिता-स्त्री० [सं०] ज्वर ।

विसृज्य-वि० [सं०] भेजा, छोड़ा जानेवाला; उत्पन्न किया जानेवाला ।

विसृत्-वि० [सं०] फैला, फैलावा हुआ; कथित, उक्त ।

विसृत्त-वि० [सं०] फैलने, व्याप्त होनेवाला; रेंगनेवाला ।

विसृमर-वि० [सं०] रेंगने, सरकनेवाला; चारों ओर फैलनेवाला ।

विसृष्ट-वि० [सं०] त्यक्त, छोड़ा हुआ; प्रेषित; फेंका हुआ, निर्मित; प्रदत्त; हटाया हुआ । पु० विसर्जनीय, विसर्ग (व्या०) ।

विसृष्टि-स्त्री० [सं०] प्रेषण; परित्याग, प्रदान; त्याग; निर्माण; संतान ।

विस्रोड-वि० [सं०] सहज किया हुआ ।

विस्रोम-वि० [सं०] सोमरहित; चंद्रहीन ।

विस्रोव्य-पु० [सं०] दुःख, कष्ट ।

विस्त्रुक्षित-वि० [सं०] (स्वर) जो ठीक तरह न निकलता हो; गिरता हुआ; भूल करवा हुआ; गटका हुआ ।

विस्त्र-पु० [सं०] दे० 'विस्त' ।

विस्तार-वि० [सं०] विस्तृत; लंबा; प्रभूत । पु० फैलाव, विस्तार; व्योरा, व्योरेवार विवरण; व्याप्ति; प्राचुर्य; राशि; समूह; आसन, पीठ; पर्वत; प्रणय ।

विस्तार-पु० [सं०] फैलाव; लंबाई-चोड़ाई; विशालता; व्योरा; वृत्तका व्यास; क्षुब्ध; वृक्षकी शाखाएँ ।

विस्तारण-पु० [सं०] पैर आदि फैलानेकी क्रिया ।

विस्तारणा-स० क्रि० फैलाना ।

विस्तारिणी-स्त्री० [सं०] एक भुति (संगीत) ।

विस्तारित-वि० [सं०] फैलाया हुआ; विस्तारपूर्वक कहा हुआ ।

विस्तारी(रिन्)-वि० [सं०] विस्तारयुक्त; बड़ा; शक्ति-शाली । पु० बटुछ ।

विलीर्ण-वि० [सं०] फैला हुआ, विस्तृत; लंबा-चोड़ा, विशाल; अत्यधिक; से आभूत । -कर्ण-पु० हाथी ।

-आनु-स्त्री० बक पैरोंवाली लक्ष्मी (विवाहके अयोग्य) । -पर्ण-पु० मानकद । -भेद-पु० एक बुद्ध ।

विस्तृत-वि० [सं०] से ढका हुआ; फैला हुआ; सुला हुआ; विस्तारवाला; बड़ा, विशाल; प्रचुर, व्याप्त ।

विस्तृति-स्त्री० [सं०] फैलाव; विस्तार; व्याप्ति; लंबाई, चौड़ाई, ऊंचाई या गहराई; वृत्तका व्यास ।

विस्थान-वि० [सं०] दूसरे स्थान या अगने संबंध रखने-वाला ।

विस्पंद-पु० [सं०] स्पंदन, धक्कन; एक ज्वजन ।

विस्फार-पु० [सं०] कपन, धरपराहट; ज्याकी टकार; सुलना ।

विस्फारक-पु० [सं०] एक सप्तिपात ज्वर ।

विस्फारण-पु० [सं०] फैलाना (डैना); खोलना ।

विस्फारित-वि० [सं०] खोला, फैलाया हुआ; फाटा हुआ, प्रकाशित; प्रकट किया हुआ । पु० धनुष चढ़ाना या बाण चलाना ।

विस्फोत-वि० [सं०] प्रचुर ।

विस्फुट, विस्फुटित-वि० [सं०] खिला हुआ; सुला हुआ ।

विस्फुर-वि० [सं०] जिसकी आँखें खुल चुकी हो ।

विस्फुरण-पु० [सं०] (विभुत्वा) कपन; स्पंदन; कौष ।

विस्फुरणी-स्त्री० [सं०] एक वृक्ष, तेंदू ।

विस्फुरित-वि० [सं०] कपित; स्फूर्तियुक्त, चंचल; बढ़ा हुआ, घुमा हुआ ।

विस्फुर्णिग-पु० [सं०] चिनगारी; एक विष ।

विस्फुर्णिगक-वि० [सं०] चमकता हुआ ।

विस्फूर्ज-पु० [सं०] गर्जन ।

विस्फूर्जन-पु० [सं०] गर्जन; वृद्धि, बढ़ना; फैलना ।

विस्फूर्जनी-स्त्री० [सं०] तेंदू, सिंदूर वृक्ष ।

विस्फूर्जित-वि० [सं०] शब्दावधान; स्फुटित; फैलाया हुआ; क्षुब्ध, कपित । पु० गरजना; सिकोचना; स्फुटन ।

विस्फोट-पु० [सं०] फटना, फूट पड़ना; जहरीला कोष ।

विस्फोटक-पु० [सं०] बका कोषा; एक प्रकारका कुंड; नेचक; फूटने, भङ्गकनेवाला पदार्थ । वि० भङ्गकने, फूटनेवाला ।

विस्फोटन-पु० [सं०] फूट पड़ना; कोषा निकलना; गर्जन ।

विश्वकर्मा-वि० [सं०] आश्चर्यजनक ।

विश्वर्य-वि० [सं०] गर्वहीन; जिसका गर्व नष्ट हो गया हो । पु० आश्चर्य, अचंभा; एक स्त्रीया भाव (समझमें न आनेवाले पदार्थके देखने-सुनने आदिसे होनेवाला आश्चर्य-सा०); बर्चस; संदेह; अनिश्चय । -कर, -कारी (रिज्)-वि० आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला ।

विश्वराम-पु० [सं०] आश्चर्य, अचंभा ।

विश्वरामकूल-वि० [सं०] आश्चर्ययुक्त ।

विश्वरपी (विज्)-वि० [सं०] विश्वरयुक्त; अचंभेमें पड़ा हुआ ।

विश्वरथ-पु० [सं०] भूल जाना ।

विश्वरूपक-वि० [सं०] आश्चर्यजनक ।

विश्वराम-पु० [सं०] बाजीगर; अम, छल; कामदेव; गंधर्वनगर; आश्चर्यमें डालना; अचंभेमें डालनेका साधन । वि० आश्चर्यकारक ।

विश्वारित-वि० [सं०] भूल जानेके लिए प्रेरित किया हुआ ।

विश्वित-वि० [सं०] आश्चर्ययुक्त, चकित; धमडी । पु० एक वृत्त ।

विश्विति-स्त्री० [सं०] आश्चर्य, अचंभा, विश्वर्य ।

विश्वरुत-वि० [सं०] भूला हुआ । -पूर्वसंस्कार-वि० पहलेका वादा या निश्चय भूल जानेवाला । -संस्कार-वि० वादा आदि भूल जानेवाला ।

विश्वरुति-स्त्री० [सं०] विश्वरथ, भूल जाना ।

विश्वर-वि० [सं०] आश्चर्यान्वित, चकित, विश्वित ।

विश्वरं-पु० [सं०] दे० 'विश्वरं' ।

विश्वर-पु० [सं०] पनन; क्षरण; क्षय; दीलापन; निर्बलता ।

विश्वरसन-पु० [सं०] गिराना, पतनका कारण होना; दीला करना; बंधन खोलना; रचन ।

विश्वरसा-स्त्री० [सं०] दे० 'विश्वर' ।

विश्वरसिका-स्त्री० [सं०] आहुति देनेका एक उपकरण ।

विश्वरसी (सिद्ध)-वि० [सं०] गिरनेवाला, सरक या फिसलकर गिर जानेवाला (जैसे हार) ।

विश्व-पु० [सं०] कच्चे मांसकी गंध; रक्त; वसा । -गंध-स्त्री० कच्चे मांसकी गंध । वि० कच्चे मांसकी गंधवाला । -गंधा-स्त्री० हड्डी नामका पीषा । -गंधि-स्त्री० हड्डी ।

विश्वरथ-वि० [सं०] दे० 'विश्वरथ' ।

विश्वर-पु० [सं०] क्षरण, बहाव; भारा ।

विश्वरथ-पु० [सं०] बहना, क्षरण ।

विश्वरसा-स्त्री० [सं०] क्षीणता; अशक्तता; हृदयवत्ता ।

विश्वरुत-वि० [सं०] बिखरा हुआ; दीला पना हुआ; कम-जोर, अशक्त । -चैता (सत्)-वि० उदात्त, विषण्ण ।

-बंधन-वि० जिसके बंधन खुल गये हैं । -वसथ-वि० जिसके बंधन ढीले पड़ गये हैं । -हार-वि० जिसका हार सरलकर गिर गया हो ।

विश्वरथ-वि० [सं०] दीला किया जानेवाला; खोला जानेवाला ।

विश्वर-[सं०] निस्तार्य; हड्डी ।

विश्वराम-पु० विश्राम, आराम ।

विश्वरथ-पु० [सं०] दे० 'विश्वर'; मोंक ।

विश्वरथ-पु० [सं०] बहाना; रक्त बहाना; अर्क-खुलाना; एक तरहकी गुश्की खराब ।

विश्वरथ-वि० [सं०] बहाया हुआ ।

विश्वरुत-वि० [सं०] बहा हुआ, रिसा हुआ ।

विश्वर-स्त्री० [सं०] बहना, क्षरण ।

विश्वर-वि० [सं०] स्वरहीन; बेमेल (स्वर); कर्कश ।

विश्वर-वि० [सं०] स्वादहीन ।

विश्वर-पु० [सं०] पक्षी; बाण; बादल; सूर्य; चंद्रमा; एक नाग । वि० आकाशमें गमन करनेवाला । -हाव-पु० गरुड । -हा (हव्)-पु० बहेलिया ।

विश्वर-पु० [सं०] छोटी चिड़िया । वि० आकाशमें गमन करनेवाला ।

विश्वर-पु० [सं०] पक्षी; सूर्य; एक देवर्षि ।

विश्वर-स्त्री० [सं०] चिड़िया (मादा); बहैनी ।

विश्वर-स्त्री० [सं०] बहैनी ।

विश्वर-पु० [सं०] बाज ।

विश्वर-स्त्री० [सं०] बहैनी ।

विश्वर-पु० [सं०] कि० नष्ट करना, भ्रष्ट करना; मार डालना ।

विश्वर-वि० [सं०] बध करने योग्य; नष्ट करने योग्य ।

विश्वर-अ० [सं०] मुसकाना ।

विश्वर-पु० [सं०] पक्षी; बाण; सूर्य; चंद्र; मेघ; ग्रह; ग्रहोंका एक विशेष अवस्थान । -पति, -राज-पु० गरुड । -वेग-पु० एक विचार ।

विश्वर-पु० [सं०] गरुड ।

विश्वर-पु० [सं०] गरुड ।

विश्वर-वि० [सं०] विदोष; मारा हुआ; आहत; निवारित; जिसका प्रतिरोध किया गया हो; बाधित । पु० जैनमंदिर । **विश्वर**-स्त्री० [सं०] आघात; बध; रोक; निवारण; अगाना; विफलता; पराभव । पु० मित्र, साथी ।

विश्वर-पु० [सं०] हिंसा, बध; चोट पहुँचाना; प्रतिरोध करना; बाधा डालना; धुनकी ।

विश्वर-पु० [सं०] हरण; स्थान-परिवर्तन; पार्यवय, विद्योग; अभाव ।

विश्वर-पु० [सं०] हडाना, ले जाना; स्थान बदलना; खोलना, फैलाना; आनंदके लिए घूमना-फिरना; मीज ।

विश्वर-अ० [सं०] बिहार करना, घूमना-फिरना ।

विश्वर-पु० [सं०] डाकू; श्वर-उपर घूमकर मीज लेनेवाला ।

विश्वर-पु० [सं०] अत्यधिक प्रसन्नता । वि० आनंदरहित ।

विश्वर-पु० [सं०] मुसकान ।

विश्वर-पु० [सं०] मंद, मधुर हास्य, मुसकान ।

विश्वर-पु० [सं०] मुसकान । वि० मुसकराता हुआ; जो हँसा गया हो ।

विश्वर-वि० [सं०] हस्तहीन; न्याकुल, हतबुद्धि; नेत्रस; अननुगमी; अशक्त; विद्वान्, सतुर ।

विश्वर-वि० [सं०] बधवाया हुआ, व्याकुल ।

विश्वर-पु० एक राग ।

विद्वान्-पु० मीर, प्रातःकाल । † अ० कल ।
विद्वान्मा-स० कि० छोकमा, अपनेकी पूज्य करना ।
विद्वान्पित-वि० [सं०] त्याग करनेके लिए प्रेरित; प्रवृत्त ।
 पु० दान ।
विद्वान्(स्)-पु० [सं०] आकाश ।
विद्वान्पति-स्त्री० आकाशमें गगन करनेकी शक्ति (जै०) ।
विद्वान्स-पु० [सं०] आकाश; पक्षी ।
विद्वान्(सत्)-पु० [सं०] पक्षी ।
विद्वान्-पु० [सं०] हरण, मटरगद्दी। धूमकर मनोरजन करना; कदम बढ़ाना; क्रीडा; क्रीडोपान, मनोरजनका स्थान; विष्णुकी मठ; कथा; हद्रका प्रासाद या ध्वजा; प्रासाद, फैलाव; एक पक्षी; विदुरेखक । -गृह-पु० क्रीडा-भवन । -देश-पु० मनोरजनका स्थान । -भूमि-स्त्री० मनोरजनका स्थान; चरागाह । -वन-पु० क्रीडोपान । -वापी-स्त्री० क्रीडाके लिए बना हुआ तालाब । -स्थली-स्त्री०, -स्थान-पु० क्रीडास्थान ।
विद्वान्-वि० [सं०] धूम-फिरकर विद्वान् करनेवाला। नौक मठ-संबंधी ।
विद्वान्-स्त्री० [सं०] नौक मठ ।
विद्वान्(रिक्)-वि० [सं०] मनोरजनके लिए धूमनेवाला, तत्काल करनेवाला (समासमें) अवलंबित, आनंद लेने-वाला, सुंदर । पु० कृष्ण ।
विद्वान्स-पु० [सं०] मुसकान ।
विद्वान्स-वि० [सं०] क्षति, हानि पहुँचानेवाला ।
विद्वान्स-पु० [सं०] किसीकी हानि, क्षति पहुँचाना ।
विद्वान्स-वि० [सं०] नुराई करनेवाला, हानिकारक ।
विद्वान्स-वि० [सं०] किया हुआ, कृष्ण; निमित्त, निश्चित; आदिष्ट; निवृत्त; रखा हुआ; विभक्त; करने योग्य; विभक्त विधान किया गया हो । पु० आदेश ।
विद्वान्स-स्त्री० [सं०] कार्यका विधान; कार्य विधि; कार्य-संपादन; व्यवस्था ।
विद्वान्स-वि० [सं०] पूर्णतः लुप्त, नीच; वंचित, रहित ।
 -आति, -धोति, -कर्ण-वि० नीच जातिका । -तिलक-वि० साम्प्रदायिक चिह्नसे रहित ।
विद्वान्स-वि० [सं०] ..से रहित, वंचित ।
विद्वान्स-पु० [सं०] शिवका एक अनुचर ।
विद्वान्स-वि० रहित ।
विद्वान्स-वि० [सं०] क्रीडित, विभक्त; फैलाया हुआ; हटाया हुआ । पु० खिलोके दस हाथोंमें एक, लज्जाके कारण कहनेके समय भी बातका न कहना (सा०) ।
विद्वान्स-स्त्री० [सं०] हरण, ले जाना; क्रीडा, विहार; फैलाव; बाढ़, बुद्धि ।
विद्वान्स-पु० [सं०] क्षति, नुराई; उपोषण ।
विद्वान्स-वि० [सं०] हानि पहुँचानेवाला, नुराई करने-वाला; निदक ।
विद्वान्स-पु० [सं०] हानि पहुँचाना; रगड़ना, पीसना; पीटा देना; कष्ट; रंज ।
विद्वान्स-वि० [सं०] धुंध, अशान्त; व्याकुल, पचकाया हुआ; भयाभिभूत; आपेमें बाहर; हतबुद्धि; कष्टग्रस्त; हताश; पिचला हुआ । -चेतन, -चेता(तत्), -

विद्वान्स-वि० जिसका मन बहुत व्याकुल हो; हतोत्साह ।
 -तनु-वि० जिसका शरीर शिथिल पड़ गया हो ।
 -लोचन-वि० जिसकी आँखें सिर न हों ।
विद्वान्स-स्त्री०, **विद्वान्स**-पु० [सं०] क्षोभ, वषकाट; चिंता, परेशानी ।
विद्वान्स-वि० [सं०] दे० 'विद्वान्स-तनु' ।
विद्वान्स-वि० [सं०] दे० 'विद्वान्स' । -सर्वांग-वि० जिसका सारा शरीर काँप रहा हो ।
वीक्षा-स्त्री० [सं०] एक तरहकी चाल; नाच, नर्तन; थोड़ेकी एक चाल; सधि; शकशिकी ।
वीक्ष-पु० [सं०] बावु, पक्षी; मन; [अ०] सप्ताह । वि० कमजोर, दुर्बल ।
वीक्षा-पु० [सं०] निर्वर्तन स्थान; चमक, काति; प्रकाश ।
वीक्ष-पु० [सं०] दृष्टि, नजर, निगाह; आश्चर्य; ध्येय वस्तु ।
वीक्षण-पु० [सं०] विशेष रूपसे देखना, निरीक्षण; जाँच; दृष्टि, नजर; आँस ।
वीक्षणीय-वि० [सं०] देखने योग्य; विचार करने योग्य; दृग्गोचर ।
वीक्षा-स्त्री० [सं०] देखना, दर्शन; जाँच-पड़ताल, शान, बेहोशी ।
वीक्षित-वि० [सं०] देखा हुआ । पु० दृष्टि, नजर ।
वीक्षिता(त्)-वि०, पु० [सं०] देखनेवाला ।
वीक्ष्य-पु० [सं०] आश्चर्य, विस्मय; आश्चर्यजनक पदार्थ; दृश्य; नर्तक, अभिनेता; घोडा । वि० दर्शनीय; आश्चर्य-जनक ।
वीक्षी, वीक्षी-स्त्री० [सं०] तरंग, लहर, अविवेक, अवकाश; सुख; चमक, दीप्ति; अल्पता; किरण । -क्षोभ-पु० तरंगोंका उठना । -तरंगान्ध्याय-पु० लगातार उठनेवाली लहरोंकी तरह एकके बाद दूसरा कार्य होना । -माली(किन्)-पु० समुद्र । -काक-पु० एक पक्षी, जलकोआ ।
वीज-पु० [सं०] दे० 'बीज' (समास भी) ।
बीजक-पु० [सं०] दे० 'बीजक' । -सार-पु० विजय-नारके बीज, विजौरा नौका सार ।
बीजका-स्त्री० [सं०] मुनका ।
बीजकाह-पु० [सं०] एक पेड़, विजौरा नौका ।
बीजन-पु० [सं०] पंखा; चँवर; पखा झलना; शंकोर; जीवजीव नामक पक्षी, पदार्थ, वस्तु; लोभ ।
बीजाकुलन्याय-पु० [सं०] दे० 'बीजाकुलन्याय' ।
बीजाम्ल-पु० [सं०] बुझाम्ल, चूका ।
बीजाविक-पु० [सं०] जँट ।
बीजित-वि० [सं०] झला हुआ, पंखा झलकर ठंडा किया हुआ; जलमे साँचा हुआ ।
बीजी(जिन्)-वि०, पु० [सं०] दे० 'बीजी' ।
बीजोदक-पु० [सं०] दे० 'बीजोदक' ।
बीज्य-वि० [सं०] पखा झलने योग्य; दे० 'बीज्य' ।
बीटक-पु० [सं०] पानका बीड़ा ।
बीटा-स्त्री० [सं०] प्राचीन कालका लकड़ोंका एक खेल, एक तरहका गुल्ली-ढंका; गुल्ली । -मुल्ल-पु० मुँहमें गुल्ली पकड़ना ।

वीटि, वीटी-खी [सं०] नागवल्ली; पानका बीडा।
वीटिका-खी [सं०] दे० 'वीटि', कपड़ेका बंधन या गाँठ।
वीन-खी दे० 'वीणा'।
वीणा-खी [सं०] सितार जैसा एक बाजा जिसके दोनों सितोर हुंसे लगे रहते हैं; विजली; एक योगिनी; प्रहोका एक विशेष अवस्थान (व्यो०)। -**गायत्री(किन्)**,-**गणगी(गिन्)**-पु० गायकदलका मुखिया। -**गाथी(चिन्)**-पु० गीतावादक। -**तंत्र-पु०** एक तंत्र। -**द्वंद्व-पु०** गीताका लबा दल, हुंसेके बीचका हिस्सा। -**पाणि-पु०** नारद। खी० सरस्वती। -**प्रसेव-पु०** गीताका वह पुरजा जिसमें तारका स्वर मद या तीव्र किया जाता है। -**रच-पु०** गीताका स्वर। वि० गीताकी तरह गुनगुनानेवाला। -**बंध-शाखाका-खी०** नीचेकी वह खूँटी जिसमें तार बंधे जाते हैं। -**बाद-पु०** गीता बजाना। वि० गीता बजानेवाला। -**बादक-पु०** गीता बजानेवाला। -**बादज-पु०** मिजराब, गीता बजाना। -**बादिनी-खी०** सरस्वती। -**बाद्य-पु०** गीता बजाना। -**विनोद-पु०** एक विद्याधर। -**विषय-पु०** गीता बजानेकी कला। -**इस्त-पु०** शिव। वि० जिनके हाथमें गीता हो।
गीतानुबंध-पु० [सं०] गीताका नीचेके हिस्सेका वह भाग जहाँ तार बंधे जाते हैं।
गीतावली-खी० [सं०] सरस्वती।
गीतास्व-पु० [सं०] नारद।
गीपी(गिन्)-वि० [सं०] गीतायुक्त, गीता बजानेवाला।
गीर्तन-पु० [सं०] चित्रियों या जानवरोंकी फँसाने या बंद करनेका जाल, पिंजरा या इस तरहका कोई साधन।
गीत-वि० [सं०] गुन, गुन, प्रशंसा, छोड़ा हुआ, अपवाद किया हुआ; स्तुति; जो बुद्धमें काम आने योग्य न हो। शांत; पालनू. रहित, निवृत्त; शिथिल; भारण किया हुआ, पढ़ना हुआ, आश्रित। पु० बुद्धके अनुपयुक्त हाथी या घोड़ा; हाथीकी अंकुश गश्कट और पैरोंसे ढाकर चलनेके लिए प्रेरित करना; अनुमानका एक प्रकार। -**कल्मष-वि०** पापने मुक्त। -**काम-वि०** इच्छासे रहित। -**चूण-वि०** निष्ठुर। -**क्षिप्त-वि०** विसामुक्त। -**जन्म-जरस-वि०** जन्म और बुढ़ापेसे मुक्त। -**प्रसरेण-वि०** रागहीन। -**तृण-वि०** जिसमें वामनायें न रह गयी हों। -**द्वंद्व-वि०** निरभिमान, विनम्र। -**भय-वि०** निर्भीक। पु० विष्णु, शिव। -**भी-वि०** निर्भीक। -**भीति-वि०** निर्भीक। पु० एक असुर। -**मत्सर-वि०** मत्सररहित, देवादिसे रहित। -**मल-वि०** स्वच्छ; निपाप। -**मोह-वि०** मोहसे रहित। -**राग-वि०** वासनारहित; इच्छाहीन; शांत; बिना रंगका। पु० वह व्यक्ति जिसने आसक्ति आदिका परित्याग कर दिया है; मोह या जैन महात्मा। -**विष-वि०** साफ, शुद्ध, निर्मल। -**ब्रीह-वि०** निर्लज्ज। -**बंध-वि०** निःशंक, निर्भय। -**शोक-वि०** शोकरहित, वतशोक। पु० अशोक वृक्ष। -**सूय-पु०** जनेक। -**हृद-वि०** इच्छारहित। -**हिरण्य-वि०** जिसके पास सुवर्णपात्र न हो।

वीटक-पु० [सं०] कपूर और चंदनका चूर्ण रखनेका पात्र; पिरि हुई जमीन, बाड़ा।
वीतन-पु० [सं०] कूकने दोनों पार्श्व।
वीताभि(स्त्र)-वि० [सं०] जिसकी ज्वाला, लपट समाप्त हो गयी हो।
वीति-खी० [सं०] दावत; गति; कांति; पार्थक्य; प्रजनन; योग; सफाई करना। पु० बीडा। -**दोत्र-पु०** अग्नि; सूर्य। -**दक्षिता,-** **प्रिया-खी०** स्वाहा।
वीतिका-खी० [सं०] मुकैटी; नीलिका।
वीती(तिन्)-पु० [सं०] एक कृषि।
वीतोत्तर-वि० [सं०] निम्नतर।
वीधि, वीधी-खी० [सं०] पंक्ति, कतार; दोहका चक्र; बुद्धदोहका रास्ता; बाजार; दुकान; चित्रोंकी कतार; नक्षत्रोंके अवस्थानका एक भाग; सूर्यका मार्ग; मकानमें सामनेका छज्जा; दृश्य काव्यका एक भेद जिसमें एक ही अंक, एक दो पात्र और विषय श्रृंगारप्रधान होता है और पात्र आकाश-आपतके रूपमें बोलता है।
वीथिका-खी० [सं०] पंक्ति; मड़क; चित्रोंकी पंक्ति; चित्रांकित दीवार या पट्ट; छज्जा; दृश्य काव्यका एक भेद (दे० 'वीधी')।
वीथ्यंग-पु० [सं०] वीथीका एक अंग (ना०)।
वीथ-पु० [सं०] आकाश, वायु, अग्नि। वि० शुद्ध, स्वच्छ।
वीनाह-पु० [सं०] कुर्छेका जंगला या डकन।
वीनाही(हिन्)-पु० [सं०] कुर्छा।
वीप-वि० [सं०] जलहीन।
वीपा-खी० [सं०] विजली।
वीप्सा-खी० [सं०] व्याप्ति; कार्यका नेरतयं सूचित करनेके लिए शब्दकी आवृत्ति, पुनरुक्ति; एक शब्दालंकार जहाँ आदर, आश्चर्य आदिका भाव प्रकट करनेके लिए एक शब्द कई बार कहा जाय।
वीरधर-पु० [सं०] मोर, मयूर; जंगली जानवरोंके साथ होनेवाली लड़ाई-चमड़ेकी फुटूही।
वीर-वि० [सं०] बहादुर, जवांमर्द; शूर; शक्तिशाली; बड़ा-बड़ा, श्रेष्ठ। पु० योद्धा; एक रस (जिसके चार भेद हैं-दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और बुद्धवीर); अभिनेता; अग्नि; यक्षाग्नि; पुत्र, पति; अजुन वृक्ष; जैन; करवीर वृक्ष; विष्णु; सरकडा; काली मिर्च; कौजी; खस, उशीर-मूल; श्रृंगी विप, पुष्करमूल; आलूक; वाराही कंद; बाय बिडंग; एक असुर, धृतराष्ट्रका पुत्र; भारद्वाजका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; * आई। खी० दे० 'वीर' (खी०)। -**करा-खी०** एक नदी। -**कर्म(न्)-पु०** बीरतापूर्ण कार्य। -**कर्मो(मन्)-वि०** बीरचित कर्म करनेवाला। -**काम-वि०** पु० पुत्रका इच्छुक, पुत्रैषी। -**कीट-पु०** तुच्छ सैनिक। -**कुक्षि-खी०** वीर पुत्र पैदा करनेवाली स्त्री; पुत्र जननेवाली स्त्री। -**केसरी(रिन्)-, केसरी(रिन्)-वि०** बीरोंमें सिद्धके समान पराक्रमी। -**सुरिका-खी०** कटार। -**गति-खी०** बुद्धमें प्राणत होनेपर मिलनेवाली गति, स्वर्ग। -**गोष-पु०** बीरोंका कुल। -**गोही-खी०** बीरोंका आपसका वार्तालाप। -**चक्र-पु०** एक तांत्रिक चक्र; बीरोंकी सेना;

विष्णु । -**चक्रवर्त्त**(चक्रवर्त्त)-पुं० विष्णु । -**चर्चा**-**की**०
वीरतापूर्ण, साहसिक कार्य । -**जगज-वि**० वीर उत्पन्न
करनेवाला । -**जगजी**-**की**० वीर उत्पन्न करनेवाली जी ।
-**जयप्रिया**-**की**० सैनिकोंका वह नृत्य जो युद्धमें जाते
समय या विजय-प्राप्तिके बाद होता है; नृत्य । -**तह**-
पुं० विलांतर वृक्ष; अर्जुन वृक्ष; भिलावा; कोकिलाक्ष
वृक्ष; सरकंवा । -**साधक**-पुं० विधारा । -**सृण**-पुं०
सरकंवा । -**हु**-पुं० अर्जुन वृक्ष । -**धम्बा**(धम्बा)-पुं०
कामदेव । -**माध-वि**० जिसका सहायक वीर हो ।
-**पह**-पुं० एक प्रकारका सैनिक वस्त्र (ललाटपर पह-
ननेका) । -**पक्षी**-**की**० वीरकी भार्या । -**पञ्चा**-**की**०
विजया । -**पक्षी**-**की**० एक कंद । -**पूर्ण**-पुं० सुरपूर्ण ।
-**पाण**, -**पाणक**-पुं० एक पेय जो युद्धमें जाते समय
या युद्धमें सैनिक पीते थे । -**पान**, -**पानक**-पुं० दे०
'वीरपान' । -**पुष्प**-पुं० एक पौधा । -**पुष्पी**-**की**०
सिंदूरपुष्पी; सहदेव । -**प्रजाविनी**, -**प्रजावती**-**की**०
दे० 'वीरजननी' । -**प्रमोक्ष**-पुं० एक तीर्थ । -**प्रसवा**, -
प्रसविनी, -**प्रसू**-**की**० दे० 'वीरजननी' । -**बाहु**-पुं०
विष्णु; वृतराष्ट्रका एक पुत्र, रावणका एक पुत्र; एक
वानर । -**मह**-पुं० योद्धा । -**मज्ज**-पुं० अश्वमेधका
बोधा; लस; शिवकी उडासे उत्पन्न एक वीर; श्रेष्ठ
वीर । -**मज्जक**-पुं० उशीर, लस । -**भार्या**-**की**०
वीरपत्नी । -**भुक्ति**-**की**० वीरभूमि(बंगाल)का प्राचीन
नाम । -**भस्त्र**-पुं० एक जाति । -**मर्दन**-पुं० एक
दानव । -**मर्दक**, -**मर्दक**-पुं० युद्धका नगाड़ा ।
-**भासा**(तु)-**की**० वीरजननी । -**मानी**(निज्)-
वि० अपनेको वीर समझनेवाला । -**मार्ग**-पुं०
स्वर्ग । -**मुद्रिका**-**की**० पेरकी नीचकी उंगलीका
छल्ला । -**योगवह**-वि० वीरोंका वर्णन करनेवाला ।
-**रज**(स्)-पुं० सिंदूर । -**रस**-पुं० एक काम्यरस;
वीरताका भाव । -**राघव**-पुं० राम । -**रेणु**-पुं०
भीमसेन । -**लक्षित**-पुं० वीरके कार्य करनेका ढंग; एक
वृत्त । -**लोक**-पुं० स्वर्ग; वीर लोग । -**वत्सा**-**की**०
वीरमाता । -**वल्ली**-**की**० एक लता, देवदात्री ।
-**वाक्य**-पुं० वीरताबोधक वाक्य । -**बाह**-पुं० वीरता-
जन्य कीर्ति । -**बाह**-पुं० रथ । -**विक्रम**-पुं० एक
ताल (संगीत) । -**विप्रवक्**-पुं० युद्धसे भग्न लेकर हवन
करनेवाला । -**वृक्ष**-पुं० सारों; विलांतर वृक्ष; देवधान्य,
महाशक्ति; भिलावा; अर्जुन वृक्ष; शालका पेड़ । -**वेतस**-
पुं० अमरवैत । -**व्यूह**-पुं० एक तरहका व्यूह । -**व्रत**-
वि० व्रतस्वरूप, व्रतगत । पुं० वीरता; मनु और छमना-
का पुत्र । -**शङ्कु**-पुं० बाण । -**सध**, -**साधन**-पुं०,
-**साध्या**-**की**० वीरोंके सोनेका स्थान, रणक्षेत्र; बाणोंकी
शय्या । -**शाक**-पुं० बहुधा । -**शैव**-पुं० एक
प्रकारके शैव । -**श्रेष्ठ**-पुं० अद्वितीय वीर । -**सम-**
न्वित-वि० वीरोंसे युक्त । -**सू**-**की**० वीरमाता, वीर-
जननी । -**सेव**-पुं० राजा नरुके पिता; एक क्षत्रिय;
आक, आक्ष, उछारा । -**ऊ**, -**ऊ**-**ऊ** सुख-पुं० राजा
नरु । -**सैन्ध**-पुं० कछुआ । -**स्कंध**-पुं० मैला ।
-**स्व**-पुं० यक्षका वलिपशु (?) । -**स्वान**-पुं०

साधकोंका एक आसन, वीरासन; स्वर्ग । -**हत्या**-**की**०
नरहत्या; पुत्रहत्या । -**हा**(हृत्)-पुं० विष्णु; वह
अक्षिहोत्री ब्राह्मण जिसकी अग्नि आरुह्य आदिके कारण
मुक्त जाय । वि० मनुष्यों या शत्रुओंका वध करनेवाला ।
-**होत्र**-पुं० विष्णु-स्मित एक प्रदेश ।
वीरक-पुं० [सं०] श्वेत करवीर; साधारण योद्धा ।
वीरचक्रवर्-पुं० [सं०] विष्णु ।
वीरण-पुं० [सं०] एक प्रजापति; उशीर, लस ।
वीरणक-पुं० [सं०] एक नाग ।
वीरणी-**की**० [सं०] तिरछी चितवन; नीची भूमि, गहरी
जगह; वीरणकी पुत्री और चाक्षुषकी माता ।
वीरतर-वि० [सं०] अधिक वीर । पुं० बड़ा वीर; बाण;
लस ।
वीरवती-**की**० [सं०] वह स्त्री जिसका पति और पुत्र
जीवित हो; मांसीरिणी लता ।
वीरा-**की**० [सं०] वह स्त्री जिसका पिता और पुत्र जीवित
हो; वीर-भार्या; पत्नी; माता; मादक पेय, मदिरा; एक
श्रुति (संगीत); सुरा नामक गंधद्रव्य; एलवालुक; क्षीर-
काकोली; केलेका पेड़; दुग्धिका; विदारी; मछल; क्षीर-
विदारी, महाशतावरी; काकोली; माक्षी; क्षतिविषा; शीशम;
एक नदी ।
वीराचारी(रिज्)-पुं० [सं०] वाममार्गियोंका एक भेद जो
महादिमें देवताओंकी कल्पना करते हैं ।
वीराहु-पुं० [सं०] अर्जुन वृक्ष ।
वीरान-वि० [फा०] उज्जाड़ हुआ, जनहीन; तथाह, वर-
नाह । पुं० बंजर ।
वीराना-पुं० [फा०] उज्जाड़ जगह; जंगल । -**वर्सी**-
वि० जंगलमें रहनेवाला ।
वीरानी-**की**० तवाही, बरबादी, वीरान हो जाना ।
वीराम्ब-पुं० [सं०] अमरवैतस ।
वीराम्ब-पुं० [सं०] आरुक् नामक ओषधि ।
वीरार्धसन-पुं० [सं०] युद्धमें खतरका स्थान; युद्धभूमि-
पहरा देना; स्वयं आधा ।
वीराष्ट्र-पुं० [सं०] कार्तिकेयका एक अनुचर ।
वीरासन-पुं० [सं०] आसनका एक प्रकार; एक छुदना
टेककर बैठना; युद्धभूमि; खुली जगहमें सोना; पहराका
स्थान ।
वीरिण-पुं० [सं०] कसर जमीन ।
वीरिणी-**की**० [सं०] वीरणकी एक पुत्री, अक्षिनी ।
वीर्य(व्)-**की**० [सं०] लता; शाखा, टहनी; काट देनेपर
पुनः बढ़ जानेवाला पौधा; छुप ।
वीर्या-**की**० [सं०] दे० 'विरट' ।
वीरेंद्र-पुं० [सं०] वीरोंका प्रधान ।
वीरेंद्र-**की**० [सं०] एक योगिनी ।
वीरेश, **वीरेश्वर**-पुं० [सं०] महादेव; बहुत बड़ा योद्धा ।
वीरोज्ज-पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो यज्ञादिमें आहुति
देनेमें कारगराही करता हो ।
वीरोपजीविक-पुं० [सं०] अक्षिहोत्रका बहाना कर दान
द्वारा जीविका चलायेवाला ब्राह्मण ।
वीर्य-पुं० [सं०] वीरता, पौरव्य; शक्ति, बल; पुंस्त्व;

शरीरको एक धातु, शुक्र, रेत; साहस; (जीववृद्धी) प्रभाव-
कारिता; विष; कांति, दीप्ति; भोज; पौरोका बीज; गौरव,
महत्त्व; सार तत्त्व । - कर-पु० मन्त्रा । - काम-वि०
पुस्तक वाहनेवाला । - कृत-वि० गौरवसे किया हुआ ।
- कृत-वि० पौषपके कार्य करनेवाला । - ज-पु० पुत्र ।
- धर-पु० ब्रह्म दीपका क्षत्रियवर्ग । - धन-वि० नीरता
द्वारा जीत । - पारमिता-स्त्री० छः सिद्धिओंमेंसे एक,
शक्तिका नरमोत्कर्ष (बी०) । - प्रपात-पु० शुक्रपात,
वीर्यका क्षरण । - वाही (विन्)-वि० बीज उत्पन्न
करनेवाला । - विभूति-स्त्री० शक्तिकी अभिव्यक्ति ।
विरहित-वि० शक्तिहीन । - वृद्धिकर-वि० वीर्य बढ़ाने-
वाला । पु० बाजीकरण, कामोद्दीपक औषधादि । - शास्त्री-
(स्त्रिन्)-वि० शक्तिशाली, पराक्रमी । - शुल्क-पु०
विवाह आदिके शिष्ट कोर्षे शक्तिशाली शर्त । वि० शक्तिसे
बलपर प्राप्त या जीत । - स्वपन्न वि० शक्तिशाली । -
हानि-स्त्री० हानता, शक्तिहीनता । - हारी (रिन्)-पु०
एक दानव । - हीन-वि० शक्तिहीन; कायर; हीन;
जिसमें बीज न हो ।

वीरवान् (बन्)-वि० [सं०] बलवान्, शक्तिशाली; पुष्ट ।
वीर्यातदाय-पु० [सं०] स्वस्थ होते हुए भी मनुष्योंको शक्ति-
हीन करनेवाला दुष्कर्म (जै०) ।

वीर्या-स्त्री० [सं०] शक्ति; पुस्त्व; एक नागकन्या ।

वीर्यावान्-पु० [सं०] गर्भाधान ।

वीर्याम्वित-वि० [सं०] शक्तिशाली ।

वीर्यावदान-पु० [सं०] शक्ति द्वारा कार्यका संपादन ।

वीर्यावधूत-वि० [सं०] शक्तिमें पराजित ।

वीर्यध-पु० [सं०] दे० 'विषय' ।

वीर्यधिक-पु० [सं०] बहूँगी होनेवाला; फूटकर चीनें
बेचनेवाला, विसाती ।

वीर्याह-पु० [सं०] व्याह, शादी ।

वीर्यित-वि० [सं०] पीना हुआ ।

वीर्य-पु० [सं०] नृत्यका एक भेद ।

वीर्यार-पु० [सं०] मन्दिर, मठ (बौ०, जै०) ।

वृकञ्ज-पु० [अ०] बटित होना, प्रकट होना; (पक्षीका)
नीचे उतरना ।

वृकञ्ज-पु० घटना; वारिदात; झगड़ा, मारपीट ।

वृकञ्ज-पु० [अ०] जालना, वाकिल होना, हान; बुझि ।

वृञ्ज-पु० [अ०] नमाजसे पहले यथाविधि हाथ-पाँव और
सिर धोना । सु०-बीला या शिकल होना-हिन्दुमत
हार जाना, सकल शिथिल हो जाना ।

वृञ्ज-पु० [अ०] होना, अस्तित्व; जीवन; अभिव्यक्ति;
व्यष्टिप्राप्ति । - वैवृञ्ज-पु० अस्तित्वहीन वस्तु, स्वप्न या
कल्पना-जगतकी वस्तुमें ।

वृञ्जित-वि० [सं०] हुआ हुआ, निम्न ।

वृञ्जना-अ० क्रि० उराना, समारा होना (वि०) ।

वृञ्ज-पु० [अ०] वारिद होना, उतरना, आना; पहुँचना,
पधारना ।

वृञ्ज-वि० [सं०] चुनने, पसंद करनेका इच्छुक ।

वृञ्ज-पु० [अ०] ध्वता, मजबूती; भरोसा ।

वृञ्ज-पु० [अ०] पहुँचना; मिलना; हासिल, प्राप्ति । -

कञ्ज-पु० कर्जके रूप्यका वापस मिलना । - बाह्यी-
स्त्री० वह रकम जो प्राप्त न हुई हो; रहा हुआ रूपया
बचल करना ।

वृञ्जली-वि० बचल करने योग्य । स्त्री० वह रकम जिसे
बचल करना हो ।

वृञ्ज-वि० [सं०] चुना, पसंद किया हुआ ।

वृञ्ज-पु० [सं०] भटा; बीड़ी, डेंडी; डठल; स्तनका अगला
भाग, नुजुक; पका रखनेकी तिपारी आदि । - तुंबी-स्त्री०
एक तरहकी मोल लोकी । - फल-पु० बैंगन, भंटा ।

- यमक-पु० यमकालकारका एक भेद ।

वृञ्जक-पु० [सं०] डठल ।

वृञ्जक-स्त्री० [सं०] बैंगन ।

वृञ्जकी-स्त्री० [सं०] भटा, बैंगन ।

वृञ्जिका-स्त्री० [सं०] छोटा डठल ।

वृञ्जिता-स्त्री० [सं०] कड़का ।

वृञ्ज-पु० [सं०] राशि, समूह, वृद्ध; गुच्छा; एक वृद्ध;
भी करोड़की संख्या; सम्मिलित गान; गल्ला अर्जुद । वि०
वृद्धसंयुक्त । - गायक-पु० कई गायकोंके साथ गाने-
वाला ।

वृञ्ज-स्त्री० [सं०] तुलसी; राधा । - वन-पु० गोकुलके
पासका एक वन; तुलसीका पौधा लगानेका चतुरा ।

वृञ्जक-पु० [सं०] परगाछा ।

वृञ्ज-पु० [सं०] देवता । वि० दे० 'वृञ्जारक' ।

वृञ्जारक-पु० [सं०] श्रेष्ठ जन; नायक; देवता; धृतराष्ट्रका
एक पुत्र । वि० श्रेष्ठ; सुन्दर, मनोह ।

वृञ्जारक-पु० [सं०] वृद्धजन ।

वृञ्जवनेश, वृञ्जवनेश्वर-पु० [सं०] कृष्ण ।

वृञ्जवनेश्वरी-स्त्री० [सं०] राधा ।

वृञ्जी (विन्)-वि० [सं०] समूहवाला ।

वृञ्ज-वि० [सं०] पुष्ट करनेवाला, मोटा करनेवाला । पु०
पौष्टिक पदार्थ; पुष्ट करनेकी क्रिया; एक तरहकी मिठाई;
हाथीका चिम्पाइना; दाख; असंगध; भूमिकुम्पाई । -
वन्नि-स्त्री० वस्तिका एक प्रकार ।

वृञ्जित-वि० [सं०] पुष्ट किया हुआ । पु० हाथीकी चिम्पाइ ।

वृक-पु० [सं०] भेड़िया; गीदक; उल्लू; कौआ; चोर; वज्र;
क्षत्रिय; चद्रमा; सूर्य; एक वृद्ध; अगस्तका वृक्ष; गंधा-
बिरोजा; एक असुर; कृष्णका एक पुत्र; मय्यदेशवर्ती एक
जनपद । - कर्मा (मन्)-वि० भेड़ियेकी तरह काम
करनेवाला । - गर्त-पु० एक जनपद । - र्वत-पु० एक
राक्षस, कुम्भकर्णका असुर । - र्वत-पु० कुत्ता । - र्वीसि
-पु० कृष्णका एक पुत्र । - र्वेव-पु० वसुदेवका एक पुत्र ।
- र्वेवा, - र्वेवी-स्त्री० देवकी, देवकीकी कन्या, वसुदेव-
पत्नी । - र्वेव-पु० अनेक सुगन्धित द्रव्योंके योगसे बना
धूप; तारपीन, सरल वृक्षका निर्वास । - र्वेवक-पु० एक
पौधा । - र्वेव-पु० गीदक । - र्वेवक-पु० भाऊ ।

गीदक । - जोरव-पु० एक तरहका जानवर । - निवृञ्जि
-पु० कृष्णका एक पुत्र । - प्रेञ्जी (स्त्रिन्)-वि० भेड़िये-
की तरह किसी चीजकी ओर देखनेवाला । - र्व-पु०

अधिरवका एक पुत्र (म० या०) । - वाळा-स्त्री० दरवाजे-
के पास लगायी जानेवाली लकड़ी । - र्वल्ली-माहिष्मती

नामकी नगरी ।

बुझल-पु० [सं०] बन्धन-बन्ध (बी०) ।

बुझका-खी० [सं०] एक जाती ।

बुझा-खी० [सं०] पाटा, अंबछा लता; एक प्राचीन परिमाण ।

बुझाक्षी-खी० [सं०] विवृट ।

बुझाखिव-पु० [सं०] एक कवि ।

बुझाखिका-खी० [सं०] एक खट्टा नीव ।

बुझायु-वि० [सं०] मेडियेकेने स्वभाववाला, हिंस्र । पु० जंगली कुत्ता; बोर ।

बुझाराति, बुझारि-पु० [सं०] कुत्ता ।

बुझाभक्ति-पु० [सं०] एक गोपकार कवि ।

बुझास्थ-पु० [सं०] कृष्णका एक पुत्र ।

बुझी-खी० [सं०] मेडियेकी मादा; शृगाली; पाठा ।

बुझोदर-पु० [सं०] यौमसेन; ब्रह्मा. शिवका एक अनुचर-वर्ग ।

बुझ, बुझक-पु० [सं०] गुरमा ।

बुझा-खी० [सं०] हृदय ।

बुझन-वि० [सं०] छिन्न ।

बुझ-वि० [सं०] टेठा हुआ; फैलाया हुआ. साफ किया हुआ ।

बुझ-पु० [सं०] पेड़; विटप, कोई बड़ा ध्रुप, पौधा, वनस्पति; बंधबुझ, कुरसीनामा; उरीपक पदार्थ; कुटज; कफन (बी०) । -कंड-पु० विदारीकंद । -कुम्हट-पु० जंगली मुर्गा । -कोटर-पु० पेड़का खोहर । -खंड-पु० कुज । -भूट-पु० पक्षी । -बर-पु० बंडर । -च्छाय-पु० कुज । -च्छाया-खी० वृक्षों छाया । -ज-वि० लकड़ीका बना हुआ । -तक्षक-पु० लकड़हारा । -दुल, -वर्ण-पु० वृक्षका पत्ता । -धूप-पु० मरल, चीबका पेड़ । -नाथ, -नाथक, -पाक-पु० बड़का पेड़ । -निघोस-पु० पेड़से निकलनेवाला रस, गोंद । -पाल-पु० जंगली शाल; जगलका रसक । -प्रतिष्ठा-खी० पुण्यफलकी प्राप्तिके लिए पेड़ लगाना । -अज्ञा-खी० परमात्मा, वदा, वंदाक । -अवन-पु० वृक्षकोटर । -भिद, -भिद-खी० कुल्हाड़ी, खजानी आदि । -मेरी(विद)-पु० कुल्हाड़ी, बट्टा आदि । -अकैटिका-खी० गिलहरी । -माजूर-पु० एक तरहका जानवर । -मूख-पु० पेड़की जड़ । -मूखिक-वि० पेड़की जड़से संबंध रखनेवाला । -मूख, -पु० जलनेतस । -राज-पु० पारिजात, परजाता । -राद(ब्)-पु० वटवृक्ष । -रहा-खी० परमात्मा, वंदाक; अमरवेलि, जतुका लता; विदारीकंद । -रोपक, -रोपयिता(रु)-पु० वृक्ष लगानेवाला । -रोपण-पु० वृक्ष लगानेकी क्रिया । -वाटिका, -वाटी-खी० उपवन, बाग । -श-पु० गिरगिट । -शाथिक-पु० लंगूर । -शाथिका-खी० गिलहरी । -संकट-पु० बने पेड़ोंके बीनकी पग-बंदी । -सारक-पु० गुमा, द्रोणपुष्पी । -सेचन-पु० वृक्षमें पानी देना, सिंचना । -स्नेह-पु० पेड़का निर्वास, गोंद ।

बुझक-पु० [सं०] छोटा वृक्ष; कुटज; उरीपक पदार्थ ।

बुझाभि-पु० [सं०] पेड़की जड़ ।

बुझावन-पु० [सं०] कुल्हाड़ी; बसला, पियालका पेड़; अद्वय वृक्ष; मधुमन्थीका छत्ता, मधुच्छत्र ।

बुझावनी-खी० [सं०] विदारीकंद; वदा, वंदाक ।

बुझाविनी-खी० [सं०] बंदा ।

बुझाचिरुहक, बुझाचिरुहक-पु० [सं०] आलिंगनका एक प्रकार ।

बुझाचिरुडि-खी० [सं०] लताका वृक्षमें लिपटना; आलिंगनका एक प्रकार ।

बुझामय-पु० [सं०] लाख ।

बुझाम्ब-पु० [सं०] हमली; अमका; एक खटाई; चुक, अमलबैत ।

बुझासुर्वेद-पु० [सं०] वृक्षोंके रोग और चिकित्सा-संबंधी शास्त्र ।

बुझाह्री-खी० [सं०] महामेदा ।

बुझालय-पु० [सं०] चिकित्सा ।

बुझावास-पु० [सं०] वृक्षकोटरमें रहनेवाला तपस्वी; पक्षी ।

बुझाभवी(विद)-पु० [सं०] एक तरहका छोटा उल्लू ।

बुझोस्थ-वि० [सं०] वृक्षपर उत्पन्न होनेवाला ।

बुझोपल-पु० [सं०] कथिकार ।

बुझोका(कम्)-पु० [सं०] वनमानुस ।

बुझ-पु० [सं०] पेड़का फल ।

बुझ-पु० दे० 'ब्रज' ।

बुझन-पु० [सं०] निपटारा, निराकरण; पाप; सकट; बेरी दुई जमीन, चरगाह आदि; आकाश; शक्ति; बुद्ध; बाल; बुधराले बाल; कुटिलता, छल; नीचता । वि० टेठा, कुटिल ।

बुझन्य-वि० [सं०] ग्राममें रहनेवाला, मरल (न्यक्ति) ।

बुझि-खी० [सं०] ब्रज. मिथिला ।

बुझिन-पु० [सं०] पाप, दुःख, कष्ट; बाल; बुधराले बाल; बुद्ध जन; रक्त चर्म । वि० कुटिल, टेठा; बुद्ध, पापी ।

बुझ्य-वि० [सं०] पुमाया, मोक्ष जानेवाला ।

बुझ-वि० [सं०] वरण किया, चुना हुआ, ढका हुआ; छिपा हुआ; धेरा हुआ; स्वीकृत, प्रार्थित, नियुक्त; दूषित किया हुआ, खराब किया हुआ, नेवित; गोल । पु० धन । -पत्रा-खी० पुत्रप्राप्ती लता ।

बुझाक्ष-पु० [सं०] गुरगा ।

बुझिकर-वि० [सं०] घेरनेवाला । पु० विककत वृक्ष ।

बुझि-खी० [सं०] वरण, चुनाय; छिपाना; बाचना; प्रार्थना; घेरने, ढकनेका उपकरण; नियुक्ति, नियुक्त करना ।

बुझ-वि० [सं०] जिसका अस्तित्व रहा हो; बटित; पूरा किया हुआ; निष्पन्न, किया हुआ; गत, व्यतीत; मोलाकार; मृत; स्मर, वड; अवीन;...से म्युत्पन्न; प्रसिद्ध; ढका हुआ, आवृत; मुड़ा हुआ । पु० कच्छप; घटना; इतिहास; वृत्तांत; समाचार; पेशा; जीविका; आचरण, बालचलन; सुकर्म; सिद्धि नियम; छंद; एक टुण; वस्तुलकार मंदिर; परिवर्तन; एक नाम; एक तरहका छंद; वह वस्तुलकार क्षेत्र जिसकी सीमा केंद्रसे सर्वत्र बराबर दूरीपर हो, मंडल; परिधि । -ककईटी-खी० खरबूजा ।

-कोष्ठा-क्षी० देवताकी लता । -**कंड**-पु० वृत्तका की भज । -**गंधि**,-**गंधी**(**चिन्**)-पु० सानुप्रास, समासयुक्त गद्य जो पद्य जैसा हो । -**गुह**-पु० गौहका, दीर्घनाल । -**वृद्ध**-वि० विसका चूषाकरण संस्कार हो चुका हो । वि० मेहरावदार (सरोखा) । -**वेष्टा**-क्षी० रहन-सहन, आचरण । -**बौद्ध**-वि० दे० 'वृत्तचूड' । -**ज**-वि० रीति-रवाज जाननेवाला । -**तंडुल**-पु० दाननाल । -**तुंड**,-**बक्स**-वि० गोल मुँहवाला । -**पञ्चा**-क्षी० एक लता । -**परिणाह**-पु० वृत्तका वेरा, परिधि । -**पर्णी**-क्षी० पाठा; बड़ी शण्डपुष्पी । -**पुष्प**-पु० कदम्ब; सिरिस; बानीर; कुञ्जक; मुद्गर । -**पूरण**-पु० छंदकी पूर्ति करना । -**फल**-पु० अमर; बेर; कैय; लाल चिचवा; तरुज; खरबूजा; करंज; काली मिर्च । -**फला**-क्षी० अंजना; जैन; ककयी ककरी । -**बंच**-पु० छंदोबद्ध रचना । -**बीज**-पु० मिठी; लोविता । -**बीजका**-क्षी० पांडुर-फली; अरहर, आदकी । -**बीजा**-क्षी० नादकी, अरहर । -**भंग**-पु० छंदोभंग; आचरण भ्रष्ट । -**भोजन**-पु० गहिनी नामका साग । -**मल्लिका**-क्षी० सफेद आक; त्रिपुरमल्लिका । -**पुष्क**,-**शाक्ती**(**चिन्**)-वि० मन्दाचारी । -**शास्त्र**-वि० भनुवैदका ज्ञाता, शास्त्रविद्या जाननेवाला । -**क्षारी**(**चिन्**)-वि० अपने कामकी प्रशंसा करनेवाला; मन्दाचारके लिए प्रशंसित । पु० क्षत्रिय । -**संकेत**-वि० जो अपनी स्वीकृति दे चुका हो । -**संपन्न**,-**स्थ**-वि० दे० 'वृत्तयुक्त' । -**साही**(**चिन्**)-वि० प्रथा नष्ट करनेवाला; नीच, कमीना । -**हीन**-वि० आचरणहीन ।

वृत्तक-पु० [म०] छंद; बौद्ध; जैन; गवका एक प्रकार जो सरल होता है, पर शब्दयोजना कुछ कुछ छद्म जैसी होती है ।

वृत्तांगी-क्षी० [स०] प्रियगु ।

वृत्तत-पु० [स०] अवसर; पटना; समाचार; विवरण; वर्णन; आख्यान; विषय; प्रकार, किस्म; विधि; ढंग; अवस्था; समग्रता; विश्राम; धर्म, स्वभाव; ग्रंथका अध्याय । वि० एकांत, एकाकी । -**वृत्ती**(**चिन्**)-वि० जिनमें कार्य होते हुए देखा हो ।

वृत्ता-क्षी० [स०] क्षिप्रिष्टा; रेणुका; मांसरोहिणी; महा-कोषातकी; प्रियगु ।

वृत्तानुवर्ती(**चिन्**)-वि० [स०] शुद्धाचारी; रीति-नीति-का पालन करनेवाला ।

वृत्तानुसारी(**चिन्**)-वि० [स०] विहित कार्य करनेवाला ।

वृत्तार्थ-पु० [स०] वृत्तका अर्थभाग ।

वृत्ति-क्षी० [स०] अस्तित्व; रहना; मनकी अवस्था; हालत; कार्य; व्यापार; तरीका, ढंग; पेशा; स्वभाव; रहन-सहन (समासांतमें); जीविका; पारिश्रमिक; कार्यका कारण; सम्मानपूर्ण बर्ताव; व्याख्या, कारिका; चक्र खाना; कुदकना; चक्र या वृत्तकी परिधि; शब्द-शक्ति (अभिधा आदि); रचनाशैली (कैशिकी, भारती, सत्त्वती, आरमटी); सहायतायें दिया जानेवाला धन; विचारसरणी; आयेय; एक अवस्था; प्रचलन; अनुप्रासका एक भेद, दे० 'द्वयनुप्रास'; रत्नकी पत्ती; तुक । -**क**-वि० जीविका

प्रदान करनेवाला । -**कर्मित**-वि० जीविकाभावे कारण कष्टग्रस्त । -**कार**,-**कृद्**-पु० सूत्रपर वृत्ति नामक व्याख्याका लेखक । -**क्षीज**-वि० दे० 'वृत्तिकर्मित' । -**कृद्**-पु० जीविकारहित होना । -**दास्ता**(**च**)-वि०, पु० पालन करनेवाला । -**निबंधन**-पु० जीविकाका साधन । -**निरोध**-पु० कार्यमें उपस्थित होनेवाली बाधा । -**भंग**,-**वैकथ्य**,-**ह्रास**-पु० जीविका-हानि । -**मूल**-पु० जीविकाकी व्यवस्था, जीविकाका आधार । -**कृशना**-क्षी० रक्तकी एक ली । -**स्थ**-वि० जो किसी अवस्थामें हो या कोई पेशा या काम करता हो; अच्छे आचरणका । पु० गिरगिट । -**हंता**(**च**), -**हा**(**हन्**)-वि० जीविकाका साधन नष्ट करनेवाला । -**हंतु**-पु० जीविकाका नाश ।

वृत्तेवार्क-पु० [स०] खरनूना ।

वृत्तनुप्रास-पु० [स०] अनुप्रास अलंकारका एक भेद जहाँ एक या अनेक वर्णोंकी समानता कई बार दिखायी जाय ।

वृत्तुपाव-पु० [स०] जीविकाका साधन ।

वृत्तुपरोध-पु० [स०] जीविकामें बाधा पड़ना ।

वृत्थ-वि० [स०] निरुपयोगी; व्यर्थ; व्यर्थके योग्य; वेरा जाने योग्य; रखा जाने योग्य ।

वृद्ध-पु० [स०] अथकारका मूर्त रूप एक दानव जिसे इदने मारा था; बादल; अथकार; शत्रु; ध्वनि; चक्र; इंद्र; एक पर्वत; पर्वत; धन; पत्थर । -**खाद**-पु० इद्र; वृद्धस्पति । -**घ्न**-पु० इद्र । -**घ्नी**-क्षी० एक नदी । -**वृद्ध**-पु० बुढ़ । -**वृद्ध**(**ह**), -**वृद्ध**(**ह**), -**नाशन**,-**रिद्ध**,-**वैरी**(**चिन्**), -**साधु**,-**हंता**(**च**), -**हा**(**हन्**)-पु० इद्र । -**भोजन**-पु० गह्वर नामक शाक । -**शंकु**-पु० प्रस्तर-स्तम्भ ।

वृथारि-पु० [स०] इंद्र ।

वृथा-अ० [स०] बेकार, बेमतलब, निष्प्रयोजन; मूर्खतासे, मूर्खसे । वि० अनुचित; शूद्र; निरर्थक, निरूपयोगी ।

-**कथा**-क्षी० रापराय । -**कर्म**(**च**)-पु० निष्प्रयोजन या मनोरंजनके लिए किया जानेवाला काम । -**घास**-पु० बेमतलब मारना या हत्या करना । -**जन्म**(**च**)-पु० निरर्थक जन्म । -**दान**-पु० अपात्रको दिया हुआ दान । -**पक्ष**-वि० केवल अपने लिए पकाया हुआ (खाना जो जैसे-तैसे तैयार कर लिया जाता है) । -**पक्षित**-वि० दे० 'वृथा-वृद्ध' । -**प्रज्ञा**-क्षी० वह ली जिसने बेकार ही पुत्र उत्पन्न किया हो । -**प्रतिज्ञा**-वि० बिना समझ-बूझ, बोझी प्रतिज्ञा करनेवाला । -**मति**-वि० मूर्ख । -**मांस**-पु० वह मांस जो देवताओं या पितरोंको अर्पित करनेके लिए नहीं, सिर्फ अपने लिए हो । -**हिंसा**-वि० जिसका कोई वास्तविक कारण न हो । -**छिन्नी**(**चिन्**)-वि० अधिकारी न होते हुए भी साम्प्रदायिक विद्व धारण करनेवाला । -**वाक्**(**च**)-क्षी० शूद्रों कात । -**वादी**(**चिन्**)-वि० शूद्र बोलनेवाला । -**वृद्ध**-वि० जो व्यर्थ ही बुढ़ हो गया हो; वयोवृद्ध होने हुए भी मूर्ख हो । -**श्रम**-पु० वह श्रम जिसका कोई उपयोग न हो ।

वृथोक-वि० [म०] जो बेकार ही कहा गया हो ।

दुधोत्पन्न-वि० [सं०] जो केवल ही जनमा हो ।
दुधोवक-पु० [सं०] वह जल जो उचित मार्गमें न बहकर
 बर-बर बका रह रहा हो ।
दुधोद्यम-वि० [सं०] केवल मेहनत करनेवाला ।
दुद्ध-वि० [सं०] बड़ा हुआ; पूरा बड़ा हुआ; बूढ़ा, अधिक
 अवस्थाका; बड़ा; बहुत; विद्वान्; शैष्य वा सम्मानित;
 राशीभूत । पु० बूढ़ा आदमी; सम्मानित व्यक्ति; ऋषि;
 वंशज; शैलज नामक गणधर्म्य; वह शब्द जिसके प्रथम
 स्वरकी वृद्धि हुई हो (आ, ऐ, औ); अस्सी वर्षका हाथी ।
 -कूट-पु० रंगुदी, हिंगोटा पेठ । -काक-पु० द्रोण-
 काक । -काल-पु० बुढ़ापा । -कावेरी-स्त्री० एक नदी ।
 -कृच्छ्र-पु० बूढ़े व्यक्तियों द्वारा किया जानेवाला एक
 व्रत; एक कृच्छ्र रोग । -केशव-पु० सर्वस्वी एक मूर्ति ।
 -कोश-पु० बहुत अमीर आदमी । -क्रम-पु० बूढ़
 व्यक्तिका पद वा दरजा । -गंगा-स्त्री० एक नदी, बड़ी
 गंगा । -गर्भा-स्त्री० वह स्त्री जिसका गर्भ अधिक समयका
 हो गया हो । -गोनस-पु० एक सप । -सिका-स्त्री०
 पादा । -वार-वारक-वारक-पु० वीरताका, विपरा ।
 -धूप-पु० सिरिस; सरलाका पेठ । -धूमा-स्त्री० किशोरा ।
 -नाभि-वि० जिसकी नाभि उभर हो, तुदिल, लोढ़ल ।
 -परासार-पु० एक धर्मशास्त्र-प्रणेता । -प्रधान-
 प्रपितामह-पु० परदादाका पिता । -प्रमातामह-
 पु० परानानाका पिता । -बछा-स्त्री० एक धूप, ककड़ी,
 महावन । -बृहस्पति-पु० एक धर्मशास्त्रकार ।
 -बौधायन-पु० एक धर्मशास्त्रकार । -भाव-पु०
 बुढ़ापा । -मत्त-पु० प्राचीन ऋषियोंका मत । -मनु-
 पु० एक धर्मशास्त्रकार । -याज्ञवल्क्य-पु० एक धर्म-
 शास्त्रकार । -धुवली-स्त्री० कुदनी; दाई, धात्री ।
 -धोपित्त-स्त्री० बूढ़ी स्त्री । -राज-पु० अमलनैन ।
 -वशिष्ठ-पु० एक धर्मशास्त्रकार । -वासिनी-स्त्री०
 म्नाही । -बाह्यन-पु० आमका पेठ । -विभीतक-पु०
 अमर । -विष्णु-पु० एक धर्मशास्त्रकार । -वीरवा-
 स्त्री० पुरानी रीतियोंका बंधन । -वृष्णीव-वि० बहुत
 शक्तिशाली । -वेग-वि० प्रचंड वेगवाला । -सीली-
 (लिन)-वि० जिसका स्वभाव बूढ़ोंका-सा हो । -अववा-
 (वस्)-पु० ब्रह्म. एक मुनि । -आवक-पु० कापा-
 लिक । -संच-पु० बूढ़ों, युवों, पलितोंकी सभा, समिति ।
 -सुवक-पु० रईया गाला; इद्रतल, बुढ़ियाका सुत ।
 -सेवी (विन)-वि० बूढ़ोंका आदर करनेवाला ।
 -हारीत-पु० एक धर्मशास्त्रकार ।
दुद्ध-वि० [सं०] अधिक अवस्थाका; बूढ़ा । पु० बूढ़
 व्यक्ति; आलस्य, कमा ।
दुद्धागुलि-स्त्री०, दुद्धागुह-पु० [सं०] अँगूठा (पैर तथा
 हाथका) ।
दुद्धात-पु० [सं०] सम्मान्य पद वा व्यक्ति ।
दुद्धा-वि० स्त्री० [सं०] बुढ़िया, बुढ़ी; वरज । स्त्री०
 अँगूठा; महाभाविका; बूढ़ी स्त्री ।
दुद्धावक-पु० [सं०] एक तीर्थ ।
दुद्धार्क-पु० [सं०] बूढ़ता हुआ सर्व; मध्याह्न ।
दुद्धावस्था-स्त्री० [सं०] बुढ़ापा ।

दुद्धावन-पु० [सं०] सम्वास ।
दुद्धि-स्त्री० [सं०] बढती; बाढ़; प्रगति; अन्नकलमका बढना;
 धन-संपत्तिका बढना; अम्युदय; सफलता; संपत्ति; ब्याज,
 सड़; राशि; समूह; सूरसोरी; लाभ, मुनाफा; अन्नकोशका
 बढना; शोष; अ, इ, उ आदिका आ, ऐ, औ आदि रूप
 ग्रहण करना (व्या०); जलका बढना; अष्टवर्गकी एक
 ओषधि; जननाशोच; एक योग (ज्यो०); छेदन; सपत्तिका
 अपवर्तन, हरण । -कर-वि० वृद्धि करनेवाला । -कर्म-
 (वृ)-पु० नांदीमुखप्राद । -जीवक-वि० सड़से
 निर्वाह करनेवाला । -जीवन-वि० दे० 'वृद्धि-जीवक' ।
 पु० दे० 'वृद्धि-जीविका' । -जीविका-स्त्री० सड़से
 जीवन-निर्वाह करना । -इ-वि० अम्युदय करनेवाला,
 बढानेवाला । पु० जीवक, शूकरवह । -दाग्री-स्त्री० एक
 पोषा । -पन्न-पु० चौरनका एक ओजार । -आह-
 पु० नांदीमुखप्राद ।
दुद्धिका-स्त्री० [सं०] वृद्धि नामकी ओषधि; अकंपुष्पी,
 ज्वेत अपराजिता ।
दुद्धिमान (मत्त)-वि० [सं०] बड़ा हुआ; धनी; उन्नति-
 शील ।
**दुद्ध्याजीव, दुद्ध्याजीवी (विन), दुद्ध्युपजीवी-
 (विन)-वि०** [सं०] सड़से जीविका चलानेवाला ।
दुद्ध्युदय-वि० [सं०] जिसके उदयसे लाभ ही
 लाभ हो ।
दुधसान-पु० [सं०] मनुष्य ।
दुधसानु-पु० [सं०] मनुष्य; पत्ता, कर्म, कृति ।
दुधु-पु० [सं०] एक प्राचीन सूत्रकार ।
दुध्व-वि० [सं०] बढाने योग्य ।
दुध्व-वि० [सं०] कटा हुआ. नष्ट किया हुआ । पु० बटा
 हुआ अन्न, डकका ।
दुध-पु० [सं०] अन्न, चूड़ा, अदरक ।
दुध्रा-स्त्री० [सं०] एक ओषधि ।
दुध्न-पु० [सं०] विच्छ ।
दुध्निक-पु० [सं०] विच्छ; एक राशि; मार्गशीर्ष मास
 एक रीजदार बीज; गोबरका बीज, कमखजूरा; केकड़ा,
 मदन वृक्ष । -पन्ना-स्त्री० पूतिका, पोष । -विषापहा-
 स्त्री० नकुलकद. रास्ना ।
दुध्निकर्णी-स्त्री० [सं०] मूसकानी; आसुरकणी ।
दुध्निका-स्त्री० [सं०] विच्छ नामकी घास; ग्रंथिपर्णी,
 ज्वेत पुनर्नवा ।
दुध्निकास्त्री-स्त्री० [सं०] एक धूप, नामदत्तिका ।
दुध्निकेश-पु० [सं०] वृध्निक राशियत देवता, गुध ग्रह ।
दुध्नपत्नी, दुध्नपर्णी-स्त्री० [सं०] मेघधनी; वृध्निकास्त्री ।
दुध्निक-पु० [सं०] एक ओषधि ।
दुध्निक, दुध्निक-पु० [सं०] ज्वेत पुनर्नवा ।
दुध-पु० [सं०] बैल, साँब; एक राशि; वह जो अपने वर्गमें
 तर्बत्रे हो (प्रायः समासात्ममें); मजबूत, बड़ा-कड़ा
 आदमी (कामशास्त्रके अनुसार चार प्रकारके, पुरुषोंमें
 एक); बैरी, शत्रु; चूड़ा; शिवका नदी; नैतिकता; पुण्यकर्म,
 कर्म; कामदेव; सर्व. विष्णु; एक ओषधि; मुख्य पासा;
 मोरका पर; शिव; शुक्र; जल; मंदिरका एक विशेष

आकार; एक पर्वत; चंद्रमाका एक अथ; स्कंदका एक अनुचर । -कर्मिका, -कर्मी-क्षी- सुदर्शना लता ।
 -कर्मो(मंत्र)-वि० बैलकी तरह काम करनेवाला ।
 -केतन-पु० शिव । -केतु-पु० शिव; रक्त पुनर्नवा ।
 -कृत्य-पु० इंद्र । -क्षायि-वि० कुंडलचारी । -गंधा-क्षी- कस्तूरी । -श-पु० शिव । -चक्र-पु० कृषि-मयवी कलाफल जाननेका एक चक्र जिसमें बैलके विभिन्न अंगोंमें नक्षत्रादि रसे जाते हैं । -वंत, -ईश, -ईशक, -ईशकक-पु० विद्याल । -द्वीप-पु० एक द्वीप । -धर-पु० शिव । -ध्वज-पु० शिव; गणेश; धर्मोत्सा । -ध्वजा-क्षी- दुर्गा । -ध्वजि-क्षी- नागरमुस्ता । -नायी(दिव)-वि० बैलकी तरह आवाज करनेवाला । -नाशन-पु० विडंबा; विष्णु । -पति-पु० शिव; छोटा हुआ सौंद; पद, नपुंसक । -पत्रिका-क्षी- वन्तात्री । -पर्णी-क्षी- मृसाकानी; सुदर्शना लता । -पर्वी(वर्च)-पु० विष्णु; शिव; एक दानव; एक राजर्षि; एक बंदर; जलपात्र, धृगार; कर्मक । -पुण्य-पु० एक साग । -प्रिय-पु० विष्णु । -भासा-क्षी- अमरावती । -भान-पु० राधाका पिता । -भानु-पु० वृषका-भय; दे० 'वृषभान' । -०जा, -०मिनी, -०सुता-क्षी- राधा । -मन्तु-वि० नीर, साहसी । -मूल-पु० भस्मेकी नड । -रवि-पु० वृषभानु । -राजकेतन-पु० शिव । -लक्षणा-क्षी- मरदान्ती लडकी । -लोचन-पु० शिव । -लोचन-पु० चूहा । -वासी(सिन्)-वि० वृष पर्वतपर रहनेवाले (शिव) । -वाह-पु० वृषकी सवारी करना । -वाहन-पु० शिव । -शत्रु-पु० विष्णु । -श्रील-पु० वृषल । -षंड-पु० एक प्रवरकार ऋषि । -सातु-पु० मनुष्य; शत्रु । -साहवा-क्षी- एक नदी । -साहवा-क्षी- एक नदी । -मूली(किन्)-पु० भित । -सेन-पु० कर्णका एक पुत्र; दसवें मनुका एक पुत्र । -स्कंध-वि० बैलकी तरह मजबूत कंधावाला । पु० शिव ।

वृषक-पु० [स०] सौंई भवभक्त; आमाका एक भेद । अश्वत्था, सुबलका पुत्र; भिलावाँ, चूहा, दुरालभा ।
 वृषण-वि० [स०] सिंचन करनेवाला; उपजाऊ बनानेवाला । पु० अंशकौश; अंड; शिव; कालीवैद्यका एक पुत्र ।
 -कष्ट-क्षी- अशकौशका भण ।
 वृषणभ-पु० [स०] एक वैदिक राजा; इंद्रका घोड़ा; एक गन्ध ।

वृषभ-पु० [स०] बैल, सौंई; नर जानवर; वह जो अपने वगमें सर्वश्रेष्ठ हो (समासांतमें); वृष राशि; एक ओषधि; कपप; वैदर्भी रीतिका एक भेद (सा०); हाथीका कान; कर्णरत्न; एक अमुर; गिरिजका एक पहाड़; एक मुहूर्त; मनुकी दस पुनोमेंसे एक; वर्तमान अवसरिणीका प्रथम अर्ध (जै०) । -केतु, -ध्वज-पु० शिव । -गति-पु० शिव । -पुत्र-पु० दे० 'वृषभपुत्र' । -ध्वजा-क्षी- बड़ी दंती । -पल्लव-पु० अहसा । -जान-पु० बैलगाड़ी । -वीथि-क्षी- शुकके मार्गके नौ भागोंमेंसे एक । -स्कंध-वि० चौड़े और बड़ कंधावाला ।

वृषभक-पु० [स०] शिव ।

वृषभा-क्षी [स०] एक नदी; मधा, पूर्वी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।

वृषभाक्ष-पु० [स०] विष्णु । वि० बैल जैसी ओंखवाला ।
 वृषभाक्षी-क्षी [स०] इनासन, इंद्रवाणी लता ।

वृषभाद्रि-पु० [स०] एक पर्वत ।

वृषमी-क्षी [स०] विषवा; केनोच ।

वृषभेक्षण-पु० [स०] विष्णु ।

वृषभ-पु० [स०] आश्रय, पनाह ।

वृषल-पु० [स०] शूद्र; नर्तक; अथ; बैल; गुजन; जाति-च्युत माण्डव, क्षत्रिय या वैश्य; अधार्मिक व्यक्ति; चंद्रशेखरीय; बड़ी पिप्पली । -पाचक-पु० शूद्रके लिए भोजन बनानेवाला । -पाचक-पु० शूद्रके लिए सद्य करनेवाला ।
 वृषलक-पु० [स०] तुच्छ शूद्र ।

वृषली-क्षी [स०] शूद्रा; अविवाहित रजस्वला कन्या; वह स्त्री जिसे रजस्त्राव हो रहा हो; वध्या स्त्री; वह स्त्री जिसे मरा बच्चा पैदा हुआ हो । -पति-पु० शूद्र स्त्रीका पति । -पुत्र-पु० शूद्रका पुत्र । -केनपीत-वि० जिसने शूद्राका लुभन किया हो । -सेवन-पु० शूद्राका सहवास ।

वृषस्थंती-क्षी [स०] कामुक स्त्री, मस्त गाय ।

वृषाक-पु० [स०] शिव; धर्मोत्सा मिलावाँ, पद, क्षीव; मोर । -ज-पु० डमर ।

वृषाचन-पु० [स०] शिव ।

वृषांड-पु० [स०] एक अमुर ।

वृषांतक-पु० [स०] विष्णु ।

वृषा-क्षी [स०] गौ, मृसाकानी; केवांच; दतिका, उदुवर-पणी; बड़ी दंती; माकडेगनी; असगंध ।
 वृषा(पन्न)-पु० [स०] सौंई; वृष राशि; वह जो अपने कर्णका प्रधान हो; अथ; दुःख, शोक, वेदनाका अज्ञान, इंद्र; कर्ण; अग्नि, मोम ।

वृषाकपायी-क्षी [स०] लक्ष्मी; गौरी; शची; स्वाहा; उषा; इंद्र-माता; क्षतावर; जीवती ।

वृषाकपि-पु० [स०] सूर्य; अश्वि; विष्णु; शिव; इंद्र ।

वृषाकर-पु० [स०] उखड़ ।

वृषाकृति, वृषाक्ष-पु० [स०] विष्णु ।

वृषाण-पु० [स०] शिवका एक अनुचर ।

वृषाणक-पु० [स०] शिव; शिवका एक अनुचर ।

वृषाणी-क्षी [स०] एक अष्टवर्णाय ओषधि, कपमक ।

वृषावन्ती-क्षी [स०] इनासन, इंद्रवाणी ।

वृषावर्ध-पु० [स०] शिविका एक पुत्र (मा०) ।

वृषादित-पु० दे० 'वृषादित्य' ।

वृषादित्य-पु० [स०] वृष(श्रेष्ठ)की संक्रांतिके सूर्य ।

वृषाद्रि-पु० [स०] एक पहाड़ (देरल) ।

वृषाद्र-पु० [स०] पौष्टिक आहार ।

वृषाचन-पु० [स०] शिव; गौरवा पक्षी, चटक ।

वृषारणी, वृषाजिता-क्षी [स०] गंगा ।

वृषारव-पु० [स०] कर्कसी स्वरवाला एक जंतु; नगाका आदि बजानेकी लक्ष्मी ।

वृषावाह-पु० [स०] एक तरहका जंगली अश्व या चालक ।

वृषाक्षी-पु० [स०] दे० 'वृषल' ।

बुधसुर-पु० [सं०] एक असुर, भस्मासुर ।
बुधाहार-पु० [सं०] बुधोंका आहार करनेवाला, विलास ।
बुधाही (विश्व)-पु० [सं०] विष्णु ।
बुधी (विश्व)-पु० [सं०] यक्ष ।
बुधेन्द्र-पु० [सं०] अज्घा सौम्य, वैल ।
बुधोत्सर्ग-पु० [सं०] एक धार्मिक कृत्य, मृत जनको नाम-
 पर चकते दागकर सीक छोड़ना ।
बुधोत्साह, बुधोदर-पु० [सं०] विष्णु ।
बुद्ध-वि० [सं०] बरसा हुआ; वर्षाके रूपमें गिरा हुआ;
 जिसने वर्षा की हो ।
बुद्धि-की० [सं०] वर्षा, मेघसे जलविद्वुओंका गिरना;
 वर्षाकी तरह किसी चीजका बहुत बड़ी संख्या या परि-
 माणमें गिरना; शक्ती । -**कदर-वि०** बुद्धि करनेवाला ।
 -**काम-वि०** वर्षाका इच्छुक । -**कामना-की०** वर्षाकी
 इच्छा । -**काल-पु०** बरसात, प्रावृत् । -**ज्मी-की०**
 छोटी इलाकची । -**जीवन-वि०** (जमीन) जो खेतीके लिए
 वर्षापर निर्भर हो, देवमातृक । पु० चातक । -**पात,**
 -**संपात-पु०** वर्षाका होना । -**भू-पु०** मेढक । -**भाव**
 -**पु०** वर्षा मापनेका यंत्र । -**वैकुल-पु०** अतिवर्षण या
 अवर्षण ।
बुध्वानु-पु० [सं०] वर्षाका जल ।
बुध्वि-वि० [सं०] कोषी; क्रुद्ध; पाण्ड; नास्तिक, धर्म-
 विरोधी; प्रचंड । पु० मेघ; सौंर; प्रकाश-रश्मि; बाधु; शिव;
 विष्णु; इंद्र; अग्नि; वायव । -**गर्भ-पु०** कृष्ण । -**पाल-**
 पु० गहिरिया । -**वरेण्य-पु०** कृष्ण । -**बुद्ध-पु०**
 बादलोंमें भेद व्यक्त ।
बुध्मिक-पु० [सं०] एक ऋषि ।
बुध्म्य-पु० [सं०] बौद्ध, पुंस्त्व ।
बुध्म्य-वि० [सं०] पुंस्त्व बढ़ानेवाला; कामोदीपक, वाजी-
 कर । पु० शिव; माघ, उरद; कृष्ण; भौवला; सृणाल ।
 -**कदा-की०** विदारीकद । -**गंधा-की०** वृद्धदारक;
 अजात्री; अतिवला । -**गंधिका-की०** अतिवला । -**गंधी**
 -**की०** मूलाकानी । -**पर्णी-की०** विदारीकद । -**कक**
 -**की०** आमलकी । -**वह्निका,-वह्नी-की०** विदारी-
 कद ।
बुध्या-की० [सं०] कर्मि जोषि; भूम्यामलकी; केनैच;
 अतिवला; सतावर; विदारी; बड़ी दंती ।
बुध्वानु-पु० [सं०] महाबानु नामक शाक ।
बुध्वकमेध-पु० [सं०] जवंती ।
बुध्विष-पु० [सं०] कलपुरु, विजौरा नीव ।
बुध्वल-पु० [सं०] अक्षरीट ।
बुध्वलफरी-की० [सं०] सफरी मछली ।
बुध्वलक-पु० [सं०] पिगड, शिंगवा मछली ।
बुध्वलपुर्णी-की० [सं०] सप्त । -**सप्त** महाभालपुर्णी ।
बुध्विषी-की० [सं०] सेव ।
बुध्वीरक-पु० [सं०] गंगैरका ।
बुध्वीर्वती, बुध्वीवा-की० [सं०] इहव जीवैतिष्क, बड़ी
 जीवती ।
बुध्वलका-की० [सं०] वक्राशका एक मेढ ।
बुध्विका-की० [सं०] बुध्वी; उत्तरीय वक्र ।

बुध्वी-की० [सं०] दे० 'बुध्वी' ।
बुध्व-वि० [सं०] बका, महावृ; भारी । -**कंद-पु०**
 विष्णुकंद; गाजर । -**कालशाक-पु०** पुनर्नवा । -**कास**
 -**पु०** खड्ड, खगवा । -**कुक्षि-वि०** तोरक । -**कोशा-**
 तकी-**की०** नेमुआ; तरौह । -**कव्रिका-की०** छुहरा ।
 -**साक-पु०** शीताक वृक्ष, हिताक । -**सिका-की०**
 छोटा पाठा । -**सुख-पु०** कौस । -**स्वक्(व)-पु०**
 ग्रहनाशन वृक्ष, छतिवन । -**स्वच-पु०** नीम । -**पंच-**
मूख-पु० वेल्, सोनापाठा, गंभारी, पोंडर और गनि-
 यारीका एक वर्ग । -**पञ्च-पु०** वधुआ; पठानी लोष,
 हस्तिकंद । -**पञ्चा,-पञ्चिका-की०** त्रिपणिका; काम-
 मर्द । -**पर्ण-पु०** पठानी लोष । -**पर्णी-की०** बड़ी
 बनसर्ह । -**पाटलि-पु०** भट्ठा । -**पाद-पु०** बका
 पेक । -**पारेवत-पु०** महापारेवत । -**पाली (विश्व)-**
 पु० काशी नीरी, बनजीरक । -**पौख-पु०** पहाड़ी अल-
 रोट, महापीछ । -**पुष्प-पु०** केला; पेठा । -**पुष्पा-**
 -**की०** बनसर्ह । -**पुष्पी-की०** सनई । -**फल-पु०**
 कुम्हका; कटहल; जासुन; बिचका । -**फला-की०** लोषी,
 कद्दू; तितलौकी; महेंद्रवारणी; महाजंजु, बका जासुन,
 पेठा, सफेद कुम्हका ।
बुध्व-बुध्व'का समासगत रूप । -अर्ग-पु० हाथी ।
 -**अमल-पु०** रजाकर, कमरका । -**एला-की०**
 बड़ी इलाकची । -**गुह-पु०** काश्च देश । -**गोल**
 -**पु०** तरबूज । -**दंती-की०** बड़ी दंती । -**दल-पु०**
 पट्टिकालोभ; छतिवन; हिताक वृक्ष; लाजवंती । -**दका-**
 -**की०** लजावू । -**द्रोणी-की०** एक परिमाण । -**धाम्य-**
 पु० उबार, यवनाल । -**धव-पु०** बका धेर । -**बल-**
 पु० महालांगल । -**बका-की०** सहदेर; पठानी लोष,
 लाजवंती । -**बीज-पु०** अमका । -**अंजी-की०** प्राय-
 माणा कता । -**अह्रिका-की०** हुगा । -**आनु-पु०**
 अग्नि; सूर्य; चित्रक । -**रघ-पु०** यक्षपान्न; मंत्रविशेष; इंद्र;
 सामवेदका एक अक्ष । विश्व बहुत बड़े रक्खावा । -**रावी**
 (विश्व)-पु० छद्र लकड़ । -**बर्ण-पु०** सोनामल्ली ।
 -**बलक,-बलकल-पु०** पट्टिकालोभ; छतिवन । -**बलकी-**
 -**की०** करेला । -**बात-पु०** देवधाम्य, अहमरीहर ।
 -**बाकणी-की०** महेंद्रवारणी । -**बीज-पु०** अमका ।
बुध्व-बुध्व'का समासगत रूप । -नख-पु० अजुन;
 बाहु; एक तरहका बका नरसल । -**नका-की०** विराट-
 राजके यहाँ अभावतास करते समय अजुनका नाम ।
 -**नाल-पु०** बका नरसल । -**निच-पु०** बकावन ।
 -**नरिच,-नरीच-पु०** काशी मिर्च ।
बुध्वलोषी-की० [सं०] कुलफा नामका साग ।
बुध्वपति-पु० [सं०] दे० 'बुध्वपति' ।
बैक-पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्राचीन जनपद ।
बैकद-पु० [सं०] दक्षिण देशका एक पवित्र पर्वत जिसकी
 चौटीपर विष्णुका मंदिर है । -**मिदि-पु०** बैकद नामक
 पर्वत ।
बैकदायक, बैकदात्रि-पु० [सं०] दे० 'बैकद' ।
बैकदेश, बैकदेश्वर-पु० [सं०] विष्णु (बैकदस्थ मूर्ति) ।
बैबर-पु० [सं०] रूपका गर्व ।

वे-सर्व- 'व' का बहु- १.

वेग-पु० [सं०] एक मछली, आकुर; विदूषक; युवा; जौहरी ।

वेग-पु० [सं०] अन्धी तरह देखना, देख-भाल ।

वेग-पु० [सं०] तीव्र प्रवृत्ति; प्रयत्नता; प्रवाह; धारा; संभव; रेत, झुका; मल-मूत्रके निकलनेकी प्रवृत्ति शक्ति; संसार (विचारिका); स्पर्श, जलती, क्षीयता; बाणकी गति; प्रवाद प्रणव; आंतरिक भावकी बाह्य अभिव्यक्ति, अनु-भाव; आनंद, प्रसन्नता; क्षीम; भावातिरेक; रोगका व्याक-मण; उद्यम; वृद्धि; महात्मीतिम्पती; लाल इवास्न; तेज, बाहु आदिमें पाया जानेवाला एक गुण (स्वा०) ।

—स-वि० तेज जाने या बहनेवाला । —शा- की० नदी । —प-वि० तेजीसे मारनेवाला । —ई-पु० हाथी । —घारण-पु० मल-मूत्रका वेग रोकना ।

—नाशन-पु० इलेप्ता, कत । —परिहार-पु० रोगकी उग्रताका कम होना । —हो-पु० गतिमें बाधा रचना, रोक; कणज । —बाहिनी-की० गंगा; बाण; एक प्राचीन नदी । —बाहरी(विभु)-वि० तेजीसे बहने, उबने या जानेवाला । —विघात-पु० मलका वेग रोकना ।

—विधारण-पु० दे० 'वेग-रोध' । —विरोधी(विभु)-की० गतिमें बाधक होनेवाला; कलत्र करनेवाला । —हृष्टि-वि० घोर, तेज, सुसलभार वर्षा । —संपन्न-वि० वेगवाला, तेज । —सर-पु० कसर ।

वेगवती-की० [सं०] एक नदी; एक ओपधि; एक वृत्त; एक विधाधरी । वि० की० वेगवाली ।

वेगवाहू(बह)-वि० [सं०] धुक्क; तीव्र, उग्र; वेगयुक्त; तेज चलनेवाला । पु० नीता; एक असुर; एक विधाधर; कृष्णका एक पुत्र; विष्णु ।

वेगा-की० [सं०] महात्मीतिम्पती ।

वेगाघात-पु० [सं०] दे० 'वेगविधारण' ।

वेगानिल-पु० [सं०] प्रचंड बाहु, प्रचंडज ।

वेगावसरण-पु० [सं०] तेजीसे नीचे आना ।

वेगित-वि० [सं०] वेगयुक्त; धुक्क; तेज; किना हुआ ।

वेगिनी-की० [सं०] नदी; एक विशेष आकारकी नाव ।

वेगी(मिन्न)-वि० [सं०] वेगयुक्त, तेज; उग्र । पु० बाज पक्षी, हरकारा । —(गि)हरिण-पु० एक मृग, श्रीकारी ।

वेगोद्व-वि० [सं०] जिसका बहुत तेज उत्तर हो (जैसे विषका) ।

वेग-की० [सं०] मजदूरी, पारिश्रमिक; मूल्य ।

वेजानी-की० [सं०] लोमराजी ।

वेड-पु० [सं०] पीछे रहना ।

वेडा-की० [सं०] बैलकी बल्ली ।

वेटी-की० [सं०] नाव ।

वेटीनरी-वि० [सं०] पालतू पशुओंके रोगोंसे संभव रखनेवाला । —अस्पताल-पु० पशु-चिकित्सालय, 'विटीनरी हॉस्पिटल' ।

वेद-पु० [सं०] यज्ञमें प्रयुक्त होनेवाला स्वाहा अंसा एक श्रव ।

वेड-पु० [सं०] एक तरहका चंदन ।

वेडा-की० [सं०] नाव, वेडा ।

वेदसिद्ध-की० [सं०] उबकी पीछी मरी हुई रोगी, वेदई ।

वेण-पु० [सं०] एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो शानेका पेशा करती थी; एक सर्वप्रथी राजा जिसे क्षत्रियोंसे अपाचारी होनेके कारण मार डाला था; नरसत्का क्षात्र करनेवाला । —बोधि-की० एक कला ।

वेणवी(विभु)-वि० [सं०] वेणुवाला । पु० शिव ।

वेणा-की० [सं०] खस; कृष्णानी एक सहायक नदी ।

वेणि-की० [सं०] चौदी गंधना; बालोंकी छटकती हुई चौदी (प्रायः प्रवत्स्यतपतिका आदिका चिह्न); जल-प्रवाह; दो या अधिक नदियोंका संगम; गंगा, यमुना और सरस्वतीका संगम; एक नदी; देववाली । —बंघ-पु० बालोंकी चौदी ।

—भाघ-पु० प्रवाह्य देवता विशेष । —वेधनी-की० जलोपा, जोक । —वेधिनी-की० कंबी ।

वेणिक-पु० [सं०] एक जनपद ।

वेणिका-की० [सं०] बालोंकी चौदी; अभिष्टित प्रवाह; नरसत्का वेडा ।

वेणिनी-की० [सं०] चौदीवाली की ।

वेणी-की० [सं०] बालोंकी चौदी; धारा देवता; एक नदी; मेघी, मेक; बंध, पुल । —ग-मूलक-पु० कस ।

—का-पु० प्रवाहमें बाल बढवानेका एक संस्कार । —संवरण-संहारण-संहार-पु० चौदी गंधना, जूषा बंधना । —स्फंघ-पु० एक नाग ।

वेणी(विभु)-पु० [सं०] एक नाग ।

वेणीर-पु० [सं०] गरिष्ठ वृद्ध; नीस ।

वेणु-पु० [सं०] बौंस; नरसत्क; बौंसुरी; एक यादव नरसत्क; एक पर्वत; एक नदी; राजा वेण । —ककर-पु० कठिब; कमेर (?) । —कर-पु० बौंसुरी बजानेवाला । —गुल्ल-जाल-पु० बौंसका छुरमुट । —जंघ-पु० एक मुनि ।

—ज-पु० बौंसका चावल; काली मिर्च । वि० बौंससे उत्पन्न (जैसे अग्नि) । —वृक्ष-पु० एक प्राचीन वृक्ष । —वृक्ष-पु० बौंसका फट्टा । —दारी(विभु)-वि० बौंस फाटनेवाला । पु० एक दानव । —प-पु० बौंसुरी बजानेवाला । —विश्लेष-पु० बौंसकी छाल । —विभुसि-पु० ईस । —वृक्षा-की० एक तांकि देवी । —व-पु० एक प्राचीन जनपद । —पन्न-पु० बौंसका पत्ता ।

—पन्नक-पु० एक तरहका सौप । —पत्रिका-पत्री-की० विद्युपणी, वरापणी । —पुर-पु० एक नगर । —बीज-पु० बौंसका चावल । —मंडक-पु० कुशादीपका एक बंध ।

—मुद्रा-की० उंगलियोंकी एक विशेष मुद्रा (सं०) । —वध-पु० बौंसका चावल । —वधि-की० बौंसकी छडी । —वन-पु० बौंसका वन; एक जंगल । —वाह-वाहक-पु० बौंसुरी बजानेवाला । —वाह-वाह-पु० बौंसुरी बजाना । —विद्व-पु० बौंसका फट्टा ।

—बीजाधरा-की० स्वंदकी एक मातृका । —बैद-वि० बौंसके फट्टोंका बना हुना । —शक्या-की० बौंसकी काट । —ह-पु० बडका एक वंशज । —हो-पु० धृक्केतुका एक पुत्र ।

वेणुक-पु० [सं०] बौंसुरी; बौंसकी मुठियावाला एक तरहका दंड (हाथीकी बलानेके लिए); पैना, चाबुक; एक जनपद ।

वैष्णव-वैद [सं०] विष्णु के फलवाला एक ब्रह्म, कौलके वस्तीवाला एक तरहका देव (हाथीकी चमत्तिका) ।

वैष्णवीय-वि० [सं०] वैष्णवसंबंधी ।

वैष्णवीय-वैद [सं०] वह स्याम जहाँ सौंदर्य अधिक उपजे ।

वैष्णव-पु० [सं०] एक ओषधि ।

वैष्णव-पु० [सं०] कावे मित्र ।

वैष्णव-वैद [सं०] एक नदी ।

वैष्णव-वि० [सं०] सौंदर्यका बना हुआ ।

वैष्णव-मन्त्र [सं०] एक पर्वत; ज्योतिष्मान्ता एक पुत्र; वैष्णव द्वारा शासित एक वर्ष । वि० सौंदर्यका बना हुआ ।

वैतल-पु० [सं०] हाथी ।

वैतल-वैद [सं०] दुर्गाका एक रूप ।

वैतल-पु० [सं०] दे० 'वैतल' ।

वैत-पु० [सं०] वैत, वैत ।

वैतन-पु० [सं०] नियत समयपर, प्रायः महीने-महीने दिया जानेवाला पारिश्रमिक, तनख्वाह; वृत्ति; जीविका; चोरी । -कल्पना-वैतन नियत करना (कौ०) । -काकातिपासन-पु० वैतन देनेमें देर करना (कौ०) । -जीवी (वि०)-वि० वैतनमें अपना बिजौह करनेवाला; वैतन लेकर काम करनेवाला । -दान-पु० पारिश्रमिक देना । -नाश-पु० वैतन या मजदूरी की जघ्नी । -मुक्त (ज्)-, भोगी (वि०)-पु० नौकर, कर्मचारी; वैतन लेकर काम करनेवाला, वैतनिक कर्मचारी ।

वैतनादान-पु० [सं०] वैतन न नुकसान ।

वैतनी (वि०) [सं०] वैतन, वृत्ति पानेवाला ।

वैतस-पु० [सं०] वैतः एक तरहका नीबू; अमि । -शृङ्ग-पु० वैतका बना हुआ मछल । -पत्र-पु० वैतका पत्ता; चौर-पासका एक औजार जो वैतके पत्तों की शृंखला होता था । -परिक्षिप्त-वि० वैतमें विरा हुआ ।

वैतस-पु० [सं०] एक जनपद ।

वैतसाय-पु० [सं०] अम्बवैतस ।

वैतसिनी-वैद [सं०] एक पुराणीक नदी ।

वैतसी-वैद [सं०] वैत दे० 'वैतन-पत्र' ।

वैत-वैद [सं०] वैतन ।

वैतल-पु० [सं०] वैत (विशेषकर जिसका श्वपर अधिकार हो); शिवका एक योगिपति; दारपाळ, छपप छटका एक मेद । -कर्म-वि० वैतलके कर्म जानेवाला । -ग्रह-पु० एक प्रकारका प्रेतावेश । -जन्म-वैद-वैद स्वदेवी एक मातृका । -ग्रह-पु० विक्रमादित्यके दरबारके नौ रत्नोंमेंसे एक । -साधन-पु० साधना द्वारा वैतलकी वशमें करना । -सिद्धि-वैद-वैतलकी अलौकिक शक्ति (कौ०) ।

वैतलका, वैतली-वैद [सं०] दुर्गा ।

वैतलकाय-पु० [सं०] आसनका एक प्रकार ।

वैतल (वृ०) [सं०] आत्मकार, दाता; अनुभव करनेवाला । पु० ऋषि जिसे आत्मा-परमात्माका ज्ञान हो; प्राप्त करनेवाला; विवाहमें प्राप्त करनेवाला, पति ।

वैत-पु० [सं०] वैत; बंडा; दारपाळका डंड । -करीर-पु० वैतकी नदी काँपल । -कार-पु० वैतका वतमु करने-

वाला । -कूट-पु० हिमालयकी एक चोटी । -गंगा-वैद-वैद हिमालयकी एक नदी । -ग्रहण-पु० दारपाळका काम । -दंडिक-पु० दारपाळ । -खर-धार-पु० दारपाळ; छमीरदार । -धारी (वि०)-पु० रसका नौकर । -पाणि, हस्त-पु० छमीरदार । -खर-पु० दे० 'वैत-पत्र' । -वृत्ता-वैद-वैद वसति । -वृद्धि-वैद-वैद छमी । -छता-वैद-वैद वैतकी छमी । -ह्रा (हृत्)-पु० बंद ।

वैतल-पु० [सं०] सरपट ।

वैतलीय-वि० [सं०] वैतपूर्ण ।

वैतवती-वैद [सं०] एक नदी; दारपाळिका ।

वैतवात, वैतमिषात-पु० [सं०] वैत रुमाना, वैतकी छमीसे मारना ।

वैतवत्-पु० [सं०] दे० 'वैतसाम्' ।

वैतवती-वैद [सं०] एक नदी ।

वैतसव-पु० [सं०] वैतकी कुरसी या वैतकी कुरसीनुमा छीली ।

वैतसुर-पु० [सं०] एक पुराणीक असुर राजा जिसे हृदने मारा था ।

वैतल-पु० [सं०] दारपाळ एक जनपद ।

वैतली (वि०) [सं०] दारपाळ; भासाबरदार, चोमदार । वि० जिसके पास वैत हो ।

वैद-पु० [सं०] ज्ञान; यथार्थ ज्ञान; हिंदुओंके आदि धर्म ग्रंथ (पहले ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद-वे ही तीन थे, पीछे अथर्ववेद भी मिलाया गया); विष्णु, ब्रह्मा एक अक्ष, व्याख्या, कारिका; एक छंद प्राप्ति; विज्ञा; चारकी सख्या, कुशका पूजा; अनुमति । -कर्ता (वृ०)-पु० वैदका रच-यिता; स्वयं; विष्णु, शिव, बर-बभ्रूकी आशीर्वाद देनेवाले गुरुजन । -कार-पु० वैदका रचयिता । -कारण-पु० विष्णु । -कुशल-वि० वैदका । -कौलेय-पु० शिव । -गंगा-वैद-वैद दक्षिण भारतकी एक नदी । -गत-वि० जो चौथे स्थानपर हो । -गर्भ-वि० वैदोंमें पूर्ण । पु० ब्रह्मा; ब्रह्मणः विष्णु । -गर्भ-वैद-वैद सर-स्वती । गर्भी-वैद-पु० वैदोंका गृह अर्थ । -गाय-पु० एक ऋषि । -गुप्त-पु० पराशरपुत्र कृष्ण । -गुप्ति-वैद (ब्रह्मणों द्वारा) वैदोंकी रक्षा । -गुह्य-पु० विष्णु । -गोच-पु० वैदपाठकी व्याप्ति । -जननी-वैद-वैद गायत्री । -ज-वि० वैदोंका जानकार । -तत्त्व-पु० वैदोंका रहस्य, मुख्य अमिषाव । -तारप-पु० वैदोंका यथार्थ अर्थ । -त्रय-पु०, त्रयी-वैद-वैद ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदका समाहार । -दक्षिणा-वैद-वैद पढ़ानेकी दक्षिणा या शुल्क । -दक्षिण-पु० वैदमें उल्लिखित होना । -द्वीप (वि०)-वि० वैद । -वृत्त-वि० चार पक्षोंवाला । -वृत्त-पु० वैदका अभ्यापन । -वृष्टि-पु० वाजसनेयी संहिताका महीभरकृत भाष्य । -वृष्टि-वि० वैदाशुभोदित । -धारण-पु० वैदोंकी स्तुतिमें रक्षना, याद रक्षना । -ध्वनि-वैद-वैद, नाद-पु० दे० 'वैद-वोष' । -मिद-पु० वैदोंमें अविश्वास करनेवाला, नास्तिक, बौद्ध, जैन । -मिद-वैद-वैदोंमें अविश्वास । -मिद (वि०)-पु० दे० 'वैदमिद' । -मिद-पु०

ब्राह्मण । -**वसिष्ठ**(तु)-वि०, पु० वेद पढ़ने वा उसका पाठ करनेवाला । -**वध**,-**वधी**(विन्)-पु० वेदका मार्ग । -**पाठ**-पु० वेदोंका पाठ करना । -**पाठक**,-**पाठी**(दिन्)-वि०, पु० वेदका पाठ करनेवाला । -**पारण**-वि० वेदह । पु० वेदह ब्राह्मण । -**पुण्य**-पु० वेदपाठ करनेका पुण्य । -**प्रदान**-पु० दे० 'वेद-दान' । -**प्राची**(विन्)-पु० वह व्यक्ति जो सार्वजनिक रूपसे वेदोंकी शिक्षा देता है । -**फल**-पु० वेदपाठसे होनेवाला पुण्य । -**बाहु**-पु० मनुष्यके अर्धन सत कर्णियोंमेंसे एक; कृष्णका एक पुत्र; पुण्यस्वका एक पुत्र । -**बाह्य**-पु० वेद में विश्वास न करनेवाला; वेदविरुद्ध । -**बीज**-पु० कृष्ण । -**ब्रह्मचर्य**-पु० वेदपाठ करनेकी अवस्था । -**मंत्र**-पु० वेदके मंत्र; एक जनपद । -**माता**(तु)-स्त्री० सरस्वती; मायवी; दुर्गा । -**मातृका**-स्त्री० सावित्री । -**मुच**-पु० एक अक्षर । -**मूर्ति**-पु० वेदह ब्राह्मण; सूर्य । -**मूक**-वि० जिसका आधार वेद ही । -**बह्व**-पु० वेदाध्ययन आदि; वैदिक यज्ञ । -**रक्षण**-पु० वेदोंकी रक्षा (जो ब्राह्मणोंका कर्तव्य है) । -**रहस्य**-पु० उपनिषद् । -**वचन**-पु० वेदमें आये हुए वचन-या मंत्र । -**वचन**-पु० व्याकरण । -**वाच्य**-पु० वेदका वाक्य; पूर्णतः प्रामाणिक वाक्य, अलङ्घनीय बात । -**वाच्**-पु० वेदोंके संबंधमें होनेवाली वृत्ति । -**वादी**(दिन्)-वि० वेदह । -**वास**-पु० ब्राह्मण । -**बाह**-वि० वेदह, वेदपरायण । -**बाह्व**-पु० सूर्य । -**बाह्य**-वि० दे० 'वेद-बाह्य' । -**चिकुरी**(विन्)-वि० धन लेकर वेद पढ़ानेवाला । -**विद्**-वि० वेदह । पु० विष्णु; वेदह ब्राह्मण । -**विहित**-वि० वेदानुमोदित । -**वैनाशिका**-स्त्री० एक नदी । -**व्यास**-पु० दे० 'कृष्ण दैपायन' । -**व्रत**-पु० वेदोंका स्वाध्यायी । -**व्रती**(तिन्)-वि० वेदाध्ययनका व्रत रखनेवाला । -**शिर**-पु० एक अक्ष (पु०); कृताश्रयका पुत्र । (भा०) । -**शिरा**(रस्)-पु० मार्कण्डेयका पुत्र, मार्गवोका मूल पुत्र । -**श्रीर्न**-पु० एक पहाड़ । -**श्री**-पु० एक ऋषि । -**श्रुत**-पु० एक देववर्ग । -**व्रत**-स्त्री० वेदपाठ; एक नदी । -**सम्प्रसार**-पु० वैदिक कर्मोंका त्याग । -**सम्मत**-वि० वेदानुमोदित । -**सम्मित**-वि० वेदके सम्मान महत्त्वका वेदानुमोदित । -**सार**-पु० विष्णु । -**स्थिता**,-**स्थिति**,-**स्थिती**-स्त्री० एक नदी । -**हीन**-वि० जिसमें वेदोंका ज्ञान न हो ।
वेदक-वि० [सं०] ज्ञाननेवाला; बौद्धमें जानेवाला ।
वेदव-पु०, **वेदवा**-स्त्री [सं०] ज्ञान; अनुभूति, पीडा, दुःख; प्राप्ति; संपत्ति; विवाह; भेंट, उपहार; शूद्राका उच्चतर वर्णके पुरुषसे विवाह; अज्ञान ।
वेदवी-स्त्री [सं०] स्त्रवा ।
वेदवीच-वि० [सं०] पीडा, कष्ट देनेवाला; ज्ञानने योग्य; ज्ञानने योग्य ।
वेदमुष्य-पु० [सं०] एक तरहका कीड़ा, एक तरहका पक्षिदार खड्गमल ।
वेदविता(तु)-वि०, पु० [सं०] ज्ञानने, अनुभव करनेवाला ।
वेदांग-पु० [सं०] वेदोंके अंग, वेदोंके अंगस्वरूप कुछ अंग

जो वेदमें मौजूद उच्चारण, अर्थ समझने आदिमें सहायक होते हैं (रमको संख्या ६ है-शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, ज्योतिष और व्याकरण) ।

वेदांग-पु० [सं०] ब्रह्मविद्या (उपनिषद् और अरण्यकके अतिप्रमाण विनियम आत्मा, परमात्मा और अवयवका निरूपण किया गया है); छः वर्णोंमेंसे एक (रसमें ब्रह्मकी ही पारमार्थिक सत्ता कहा है और जीव और अणु अतिरिक्त पदार्थ नहीं माने गये हैं) । -**ग**-वि० वेदह ; पु० वेदांत दर्शनका अनुयायी । -**ज्ञ**-वि० वेदांत ज्ञाननेवाला । -**वादी**(विन्)-वि० वेदांत दर्शन माननेवाला । -**विद्**, **वेदी**(विन्)-वि० वेदांतका ज्ञानकार । -**स्व**-पु० व्यासकृत ब्रह्मसूत्र ।

वेदांती(विन्)-वि० [सं०] वेदांतका पंडित, ब्रह्मवादी ।
वेदाग्रणी-स्त्री [सं०] सरस्वती ।
वेदात्मा(त्वन)-पु० [सं०] विष्णु; सूर्य ।
वेदादि-पु० [सं०] प्रणव, ओम् । -**बीज**,-**वर्ण**-पु० प्रणव, ओम् ।

वेदाधिगम-पु० [सं०] वेदोंका अध्ययन ।
वेदाधिदेव-पु० [सं०] ब्रह्मा ।
वेदाधिप, **वेदाधिपति**-पु० [सं०] वेदोंके अधिपति ब्रह्म (जो ऋक्, यजु, साम और अथर्वके क्रमशः इष्टरूपित, श्रुत, मंगल और बुध हैं); विष्णु ।
वेदाध्यक्ष-पु० [सं०] विष्णु ।
वेदाध्ययन-पु० [सं०] वेदोंका अध्ययन ।
वेदाध्यापक-पु० [सं०] वेदका अध्यापन करनेवाला, आचार्य ।

वेदाध्यायी(विन्)-वि० [सं०] वेदोंका पाठ करनेवाला ।
वेदानुवचन-पु० [सं०] वेदपाठ, वेद-वचन ।
वेदासि-स्त्री [सं०] वेदकी प्राप्ति ।
वेदाह-पु० [सं०] मिरमिट ।
वेदाधर्म-पु० [सं०] एक तीर्थ ।
वेदाध-वि० [सं०] वार कोनोंवाला ।
वेदाध्या-स्त्री [सं०] एक नदी ।
वेदि-पु० [सं०] विद्वान्, ऋषि; आचार्य । स्त्री० दे० 'वेदी' । -**करण**-पु० वेदी तैयार करना । -**जा**-स्त्री० द्रोपदी । -**पुरीच**-पु० वेदीकी टीली मिट्टी । -**भाजन**-पु० वेदीके बरतने काम देनेवाला स्थान । -**मध्या**-वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी कमर वेदी जैसी हो । -**मान**,-**विमान**-पु० वेदीके छिप जगहकी पैनाह । -**ओषि**,-**ओषी**-स्त्री० वेदीका कटिप्रवेश जैसा माग । -**संस्था**-स्त्री० दे० 'वेदिजा' ।

वेदिक-पु० [सं०] आसन, चौकी ।
वेदिका-स्त्री [सं०] वेदी, यज्ञभूमि; धार्मिक कुलोंके छिप बनाया हुआ छोटा चतुर्तरा; आँगनमें बना हुआ सुला मंडप; लतामंडप; आसन ।
वेदित-वि० [सं०] निवेदित, द्युचित; देखा हुआ ।
वेदितव्य-वि० [सं०] ज्ञातव्य, ज्ञानने योग्य ।
वेदित्वा(तु)-वि० [सं०] ज्ञाननेवाला; चतुर; विद्वान् ।
वेदी-स्त्री [सं०] यज्ञ इत्यादिके छिप तैयार किया हुआ स्थान; मंदिर वा प्रासादके प्रांगणमें बना हुआ चतुष्कोण

दवाय वा मंत्रपः सुहर करनेकी बेखुडी; सरस्वती; केंद्र-
लियोंकी एक मुद्रा; भूभाग; ज्ञान, विज्ञाना कीर वस्तु
रखनेका आधार; बंधन।

बेकी(विश्व)-वि० [सं०] विद्वान्; ज्ञाता; अनुभव करने-
वाला; विवाह करनेवाला; दूषित करनेवाला। पु० ब्रह्म;
ज्ञानेवाला; आचार्य; विद्वान् ब्राह्मण; एक पौषा, बंधन।

बेकीश-पु० [सं०] ब्रह्मा।

बेकीक-वि० [सं०] ज्ञाता; पानेवाला।

बेकीकर-पु० [सं०] ब्रह्मा।

बेकीक-वि० [सं०] वेदोक्तिलिखित, वेदानुमोदित।

बेकीक-पु० [सं०] सूर्य।

बेकीकित-वि० [सं०] वेदलिखित।

बेकीकक-पु० [सं०] वेदांग।

बेकीकनिक-की० [सं०] एक उपनिषद्।

बेकीक-वि० [सं०] छेदने योग्य।

बेकी(विश्व)-वि० [सं०] छेदने वा निशाना मारनेवाला।

बेकी-वि० [सं०] जानने, समझने योग्य; कथनीय, कहने
योग्य; बतलाने योग्य; स्तुत्या प्राप्त करने योग्य; विवाह
करने योग्य।

बेकी-पु० [सं०] बेचना, छेद करना; कुत्ताना; आहत
करना; छिद्र, विश्व; सुदूर; गहरेकी गहराई; समयका एक
मान; निशाना मारना; धोखा; एक रोग; धूर्य, ध्रुव आदि-

का स्थान निश्चित करना; किसी ब्रह्मा दूसरे ब्रह्मके
सामने पहुँचना; छेकछाक; रसोका मिश्रण; पारेकी एक
क्रिया। -गुरु-पु० एक रास। -मुक्क-पु० कपूर।

-मुक्क-पु० हल्दीका पौषा। -मुक्का-की० कस्तूरी।
-झाऊ-की० वह स्थान जहाँ बेंगोकी सहायतासे प्रहो
आदिकी गतिका पर्यवेक्षण किया जाता है।

बेकी-वि० [सं०] छेद करनेवाला, छेदनेवाला (रस्मों
आदिको); धाव करनेवाला; प्रभावित करनेवाला। पु०
कपूर; चंदन; अन्धवेतस; एक नरक (जिसमें बाण नाने-
वाले जाते हैं); पनिया; सैन्धव नमक; बान्धक, बालमें लगा
हुआ धान।

बेकी-पु० [सं०] छेदनेकी क्रिया; (बाणसे) निशाना
मारना; प्रवेश; जनन; गहराई; गहाना, आहत करना।

बेकी-की० [सं०] (रस्ममें) छेद करनेकी तेज नोक-
वाली बरगी।

बेकी-की० [सं०] रस्ममें छेद करनेकी बरगी; हाथीका
मंडक।

बेकी-वि० [सं०] छेदा जाने योग्य, सेदनीय।
बेकी-पु० [सं०] हाथके मंगुटेकी जड़के पासका भाग,
मंगुटमूल, मालवीय।

बेकी(विश्व)-पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु; शिव; धूर्य; धर्म;
पति; ब्रह्म; हरिश्चन्द्रके पिता।

बेकी-पु० [सं०] दे० 'बेकीका'।
बेकी-वि० [सं०] छेदा हुआ, बिह।
बेकी-की० [सं०] बेंगो; बेकिना।
बेकी(विश्व)-वि० [सं०] बेध करनेवाला, छेद करने-
वाला; निशाना मारनेवाला। पु० अन्धवेतस।
बेकी-वि० [सं०] बेधन करने योग्य; स्थानका निश्चय या

पर्यवेक्षण करने योग्य। पु० निशाना, कवच।

बेकी-की० [सं०] एक संगीतवाद्य।

बेकी-पु० [सं०] बेण नामक रागा; प्रभावपति।

बेकी-की० [सं०] दक्षिण भारतकी एक नदी, बेना।

बेकी-पु० [सं०] केंपकी, केंप। -वरीत-वि० कंपन-
प्रस। -मुक्क-वि० कंधाधमान।

बेकी-पु० [सं०] कौपना, कंधन; वातरोग। वि० कौपने-
वाला, जो कौप रोग; कौपानेवाला।

बेकी-वि० [सं०] कथित।

बेकी, बेकी(मन्त्र)-पु० [सं०] करवा, वापदद।

बेकी-पु० [सं०] जुलाहा।

बेकी-पु० [सं०] खरीद; केसर; अंदा; मुख।

बेकी-पु० [सं०] कपूर।

बेकी-पु० [सं०] बेरका फल; नीच वा संकर जातिका
आदमी।

बेकी-की० [सं०] (वेत आदिका बना हुआ) परिधान
वा कपडा।

बेकी-पु० [सं०] उपवन; कुंज; एक बड़ी संख्या (सौ०);
आमका पेड़। -अ-पु० कवचा, नमकीन और नरपरा
खाद। वि० कवचा; नमकीन; नरपरा।

बेकी-पु० [सं०] शूद्र और क्षत्रियोंसे प्राप्त रूपमें उत्पन्न
स्तान। -

बेकी-की० [सं०] सीमा, मर्यादा; कासला; समुद्र और
खलकी सीमा; तट, कूल; समुद्रतट; समुद्रकी लहर; समय;
समयका मान, बँदा या पहर; कवच; अन्धकाश; तरंग;
प्रवाह; बाणी; रोग; सूर्यकाल; भोजनका समय; भोजन;
कहरहित शत्रु; मच्छा; बुझकी की; राग, आसक्ति। -कूल-
पु० समुद्रतट; तटस्थ देश। -अ-अ-सकिल-पु०
आरका जल। -अ-अ-पु० भरणकाळमें होनेवाला अ-अ-
-तट-पु० समुद्रतट। -अ-अ-पु० एक पक्षी, भारंज।
-अ-अ-पु० समुद्रतट। -बि-अ-पु० एक तरङ्गका राग्या-
धिकारी। -बि-अ-सिनी-की० देवता। -बी-अ-की०
तटसे उफरानेवाली लहर। -बी-अ-वि० अतमय या
समयके पहले होनेवाला।

बेकी-वि० [सं०] विनय।

बेकी-वि० [सं०] कितारेके ऊपरसे बहनेवाला।

बेकी-पु० [सं०] समुद्रतटवर्ती पर्वत।

बेकी-वि० [सं०] दिन-रातके अन्धमाशका अधिपति।

बेकी-वि० [सं०] दे० 'बेकी-अ'।

बेकी-वि० [सं०] एक योत्रकार ऋषि।

बेकी-वि० [सं०] दे० 'बेकी-अ'।

बेकी-की० [सं०] समुद्रतटवर्ती देश।

बेकी-वि० [सं०] सौरमण्डल का भाग।

बेकी-वि० [सं०] दे० 'बेकी-अ'।

बेकी-पु० [सं०] एक ब्रह्म, वीरतट।

बेकी-पु० [सं०] वनन; कंपन; विडंग; एक नगर, बेकी-पु०।

-गिरिका-की० विनय। अ-अ-अ-पु० विनय।

बेकी-पु० [सं०] गयना; कंध; (बेकीका) लोटना। (तरंगों-
का) छड़कना; बेकन; गुस्मापुंज।

बेकी-की० [सं०] एक तरङ्गकी दूध; काली मिर्च।

बेहरी-खी० [सं०] माला दूब; कृष्ण विभारा ।

बेहलक-पु० [सं०] लपट ।

बेहि-खी० [सं०] कृता ।

बेहिका, बेहिकाव्या-खी० [सं०] वृक्षविशेष ।

बेहिर-वि० [सं०] क्षंपित; झुका हुआ, वक्र; लिपटा हुआ । पु० क्षंपन; गमन; घोकना लोटना ।

बेहिरक-पु० [सं०] एक सौप ।

बेहरी-खी० [सं०] दे० 'बेहि' ।

बेहसत-पु० [सं०] छोटा तालाब; अग्नि ।

बेहा-पु० [सं०] प्रवेश; पहुँच; मकान; चकला, वेदवाक्य; वेदवाक्य वर्तय; कार-वार; वैद्य और उद्योगी पुत्र; सेमा; पारिश्रमिक; बाना । -दान-पु० दे० 'बेपदान' । -धर, -धारी (वि०) -वि० दूसरेका बाना धारण करनेवाला । -भगिनी-खी० सरस्वती । -भाव-पु० वेदवाक्यी पद्धति । -भूषा-खी० पहनावा, पोशाक । -बुवसी, -बोविय, -बधू, -बनिता-खी० वेदवा । -बास-पु० चकला । -खी, -खा-खी० वेदवा । मु० (किसीका) -धारण करना-किसीकी पोशाक आदिकी नकल करना ।

बेहाक-वि० [सं०] प्रवेश करनेवाला । पु० घर ।

बेहान-पु० [सं०] प्रवेश करना; मकान ।

बेहानी-खी० [सं०] क्योदी, पौरी ।

बेहार-पु० [सं०] खबर ।

बेहावार-पु० [सं०] दे० 'बेसवार' ।

बेहासत, बेहास-पु० [सं०] छोटा तालाब ।

बेहिक-पु० [सं०] हाथकी कारीगरी, शिल्पविधा ।

बेहिका-खी० [सं०] प्रवेश ।

बेहरी (वि०) -वि० [सं०] प्रवेश करनेवाला ।

बेहरीजाता-खी० [सं०] एक कृता, पुत्रदात्री ।

बेहम (ब) -पु० [सं०] घर, मकान । -कर्म (ब) -पु०

गृहनिर्माण । -कलिंग, -कुलिंग-पु० गौरवा, चटक ।

-कूल-पु० चिक्का । -चटक-पु० गौरैयाका एक

भेद । -धूस-पु० एक पौधा । -नकुल-पु० छतुर ।

-पुरोबक-पु० सैध लगाकर चोरी करनेवाला (की०) ।

-भू-खी० मकान बनाने योग्य ज्ञान । -बास-पु०

गयनागार । -स्थणा-खी० वरका मुख्य स्तंभ ।

बेहमांस-पु० [सं०] जंतु; पुर, जानानखाना ।

बेहमादीपिक-पु० [सं०] कर्मों आग लगानेवाला (की०) ।

बेहव-पु० [सं०] वेदवाका घर; निकटवर्ती या अजीन

भूभाग; वेदवाहृषि । -कामिनी, -खी-खी० वेदवा ।

बेहवागना-खी० [सं०] पुंस्त्वकी० ।

बेहवा-खी० [सं०] नाच-गान तथा कसबसे जीविका

कमानेवाली बी, गणिका; पादा; एक वृक्ष । -गामक-

पु० कामवासनाकी रुचिके विषय गणिकाके पास जाना ।

-गामी (वि०) -पु० रंजीवान । -गृह-पु० चकला ।

-चटक-पु० वेदवा पहुँचानेवाला दलाल । -जव-

पु० वेदवासभू । -समाश्रय-पु० वेदवाक्य । -एव-

पु० वेदवाकी योगके लिए दी जानेवाली रकम । -वसि-

पु० वेदवाका पति, जार । -पुत्र-पु० वेदवाका पुत्र,

अवैध पुत्र । -बास-पु० वेदवाक्य । -बुसि-खी०

कसब कमाना, धन लेकर परपुरुषोंसे प्रेममेल करना ।

-बेहम (ब) -पु० वेदवाक्य ।

बेहवाचार्य-पु० [सं०] रंजीका दलाल, भंडुआ; पीठमर्द, वेदवाहं रखनेवाला ।

बेहवाचस-वि० [सं०] जो निर्वाहके लिए वेदवापर निर्भर हो ।

बेहवाक्य-पु० [सं०] वेदवाका निवासस्थान ।

बेहवाश्रय-पु० [सं०] वेदवाक्य ।

बेहव-पु० [सं०] खबर ।

बेव-पु० [सं०] वेद; नेपथ्य, रंगमंचके पीछे वेव-रचना-

का स्थान; वेदवाक्य; कर्म; वरला हुआ भेस । -कार-

पु० बैठन, बैठन । -दाव-पु० सर्वसुखी । -धर-वि०

दूसरेका भेस धारण करनेवाला । -धारी (वि०) -वि० दे० 'वेवधारी'; दोगी । -अ-वि० संदरतापूर्वक अलंकृत ।

बेवण-पु० [सं०] कासमर्द क्षुप; सेवा ।

बेवणा-खी० [सं०] रतियवा ।

बेववार-पु० [सं०] दे० 'बेसवार' ।

बेविका-खी० [सं०] चमेरी ।

बेवी (वि०) -वि० [सं०] भेस बनानेवाला ।

बेवक-पु० [सं०] बलिपशुओंका गला घोटनेकी फैसली ।

बेव-पु० [सं०] वेरा; फैसली; दाँतका गबड़ा; गोंद; धूपका

पेव; गद्दा; आकाश; पगरी । -बंश-पु० एक तरहका

बाँस; रंजवश । -सार-पु० धूप; गंधाबिरोना ।

बेवक-पु० [सं०] वेरा, दीवार, परकीदा; पेठा; पगरी;

छाल; आवरण; गोंद; धूप । वि० बेरनेवाला ।

बेवकापय-पु० [सं०] एक शिवस्थान (पु०) ।

बेवठन-पु० [सं०] वेरना, लपेटना; लपेटनेवाली कीच;

बेठन; पगरी; पट्टी; बंधा; मुकुट; चहारदीवारी; आवरण,

खोल; कर्णकुहर; एक अस्त्र; नृत्यकी एक मुद्रा; यज्ञस्तंभमें

लपेटे हुए रस्सी; गुग्गुलु; प्रहण करना । -बेवक-पु०

एक रतिवध ।

बेवठनक-पु० [सं०] एक रतिवध ।

बेवठीक, बेवठ्य-वि० [सं०] वेरने, लपटने योग्य ।

बेव-खी० [सं०] हरीतकी ।

बेवठि-वि० [सं०] वेरा हुआ; लपेटा हुआ; बकाष्ठावित;

रोका हुआ, रुका; रेंटा हुआ (रस्सीकी तरह) । पु० नृत्य-

की एक मुद्रा; वेरना; लपेटना; एक रतिवध; पगरी ।

बेव-पु० [सं०] जल ।

बेव-वि० [सं०] जिसने भेस बरला है (अभिनेताके

रूपमें) । पु० भय; कर्म; पगरी; पट्टी; जल ।

बेसन-पु० [सं०] चने आदिकी दालसे तैयार किया हुआ

आटा, दिव्दलचूर्ण, बेसन ।

बेसर-पु० [सं०] खबर, अवतर ।

बेसवार-पु० [सं०] पिसा हुआ मसाला; पिते हुए मांसमें

शुक्र, दूत और विचं मिलाकर तैयार किया हुआ एक

अभ्यन ।

बेस-पु० [अ०] पश्चिम ।

बेसकोट-पु० [अ०] फतुही, जाकेट ।

बेह-खी० [सं०] बंधा बा बह माय जिसका गर्भ गिर

जाय ।

बेहारस-पु० [सं०] एक तरहकी निषिद्ध आत्महत्या(जै०) ।
 बेहार-पु० [सं०] भारतका एक प्रांत (राज्य)-बिहार ।
 बैकि-पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।
 बैद्वि-पु० [सं०] एक बुद्धमिष प्राचीन जाति ।
 बैध्व-वि० [सं०] विध्यपर्वत-संबंधी ।
 बैशाखिक-वि० [सं०] बीसमें खरीदा हुआ ।
 बैश्व-वि० दो । अ० [सं०] एक निक्षयबोधक शब्द ।
 बैकंक-पु० [सं०] एक पर्वत ।
 बैकंकत-वि० [सं०] विककतका बना हुआ । पु० दे० 'विककत' ।
 बैकक्ष-पु० [सं०] जनैकेके ढगपर पहना हुआ हार, उत्तरीय ।
 बैकक्षक, बैकक्षिक-पु० [सं०] जनैकेकी तरह पहना हुआ हार ।
 बैकटिक-पु० [सं०] जोहरी, रत्नपरीक्षक ।
 बैकट्य-पु० [सं०] विकटता; विशालता; भीषणता ।
 बैकटिक-पु० [सं०] जोहरी, मणिहार ।
 बैकथिक-वि०, पु० [सं०] बड़-बड़कर बानें कहनेवाला, जोग मारनेवाला ।
 बैकरंज-पु० [सं०] एक तरहका सोंप ।
 बैकर्ण-पु० [सं०] बात्स्य मुनि ।
 बैकर्णायन-पु० [सं०] बात्स्यका वंशधर ।
 बैकर्त-पु० [सं०] बलिपशुका वध करनेवाला; बलिपशुका एक विशेष भाग, कटि (१) ।
 बैकर्तद-वि० [सं०] सूर्यसंबंधी । पु० सूर्यका पुत्र, कर्ण; सुग्रीव । -कुल-पु० सूर्यवंश ।
 बैकर्म-पु० [सं०] बात्स्य मुनि; दुष्कर्म ।
 बैकल्प-पु० [सं०] अनिश्चयता, विकल्पता ।
 बैकल्पिक-वि० [सं०] वैच्छिक; सदिग्ध, अनिश्चित ।
 बैकल्प-पु० [सं०] विकलता; क्षोभ, उत्तेजना; दोष, वृद्धि; न्यूनता; पशुता; निर्बलता, शक्तिहीनता; अनस्तित्व ।
 बैकावध-पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि ।
 बैकारिक-वि० [सं०] विकार-सम्बन्धी; विकृत, निगडा हुआ; परिवर्तनशील; परिवर्तित । पु० विकार; भावावेश ।
 -काल-पु० ऋणके निर्माणमें लगनेवाला समय । -बंध-पु० बंधनके तीन भेदोंमेंसे एक (सां०) ।
 बैकार्य-पु० [सं०] परिवर्तनशीलता; परिवर्तन, विकार ।
 बैकाल-पु० [सं०] अपराध; मथ्या ।
 बैकालिक-वि० [सं०] संख्या-संबंधी; मथ्या समय होनेवाला । पु० संख्याकालकी प्रार्थना; भ्याह्न ।
 बैकालीन-वि० [सं०] दे० 'वैकालिक' ।
 बैकिर-वि० [सं०] टपकाकर छाना हुआ । -बारि-पु० टपकाकर छाना हुआ जल ।
 बैकुण्ठ-पु० [सं०] इंद्र; विष्णु; तुलसी; विष्णुलोक; स्वर्ग; अन्नक; एक वैष्णव; एक ताल (संगीत) । -गति-स्त्री-विष्णुलोकमें जाना । -चतुर्दशी-स्त्री-कापिक-शुद्धा चतुर्दशी । -पुरी-स्त्री-विष्णुका नगर । -बुधम, -लोक-पु० विष्णुलोक ।
 बैकुण्ठीय-वि० [सं०] वैकुण्ठ-सम्बन्धी ।
 बैकुण्ठ-वि० [सं०] विकृत, विकारप्रस्त; विकारजन्य;

परिवर्तित; परिवर्तनशील; विकारी । पु० अहंकार, अहंभाव; परिवर्तन, विकार, रूपविकृत; विकृत अवस्था; शृणा; बीभत्स रस; शत्रुता; उद्वेग; संकट-सूचक घटना या लक्षण । -उच्चर-पु० एक तरहका ऋतुविपरीत उच्चर । -विचर-पु० क्लेश; दुरवस्था ।
 वैकुण्ठिक-वि० [सं०] विकृत, परिवर्तित; विकारशील; विकार-संबन्धी (सां०) ।
 वैकुण्ठ-पु० [सं०] परिवर्तन, विकार; अपकर्ष; दुरवस्था; उद्वेग; बीभत्स ।
 वैक्रम-वि० [सं०] विक्रम-सम्बन्धी; शक्ति-संबन्धी ।
 वैक्रमीय-वि० [सं०] विक्रमका; विक्रम-सम्बन्धी (सत्त्व) ।
 वैक्रांत-पु० [सं०] एक ऋषि, चुम्बी ।
 वैक्रिय-वि० [सं०] विकारजन्य; विकारशील, विकारी, परिवर्तनशील ।
 वैक्रुष्य, वैक्रुष्य-पु० [सं०] विकलता, व्याकुलता; पीडा; शोक; अस्तव्यस्तता ।
 वैखरी-स्त्री-वि० [सं०] कंठसे उच्चार्यमाण ग्वरविशेष; वाक्-शक्ति; वाग्देवी, सरस्वती ।
 वैखान-पु० [सं०] विष्णु ।
 वैखानस-वि० [सं०] वानप्रस्थ आश्रम-सम्बन्धी । पु० वान-प्रस्थ, तपस्वी ।
 वैखानसि-पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि ।
 वैखानसीयोपनिषद्-स्त्री-वि० [सं०] एक उपनिषद् ।
 वैखारक-वि० [सं०] चरपटा और नमकीन । पु० ऐसा स्वाद ।
 वैगविक-पु० [सं०] गंधक ।
 वैगविका-स्त्री-वि० [सं०] एक पौधा ।
 वैगनेट-स्त्री-वि० [सं०] एक तरहकी चौपड़िया घोंगड़ाई जिसका ऊपरका परदा समेटा जा सकता है ।
 वैगलेय-पु० [सं०] एक प्रेतवर्ग ।
 वैगुण्य-पु० [सं०] गुणका अभाव, गुणराहित्य; अच्छे गुणोंका अभाव; दोष, वृद्धि; गुण या धर्मकी निम्नता, हीनता; अकुशलता ।
 वैगविक-वि० [सं०] शरीर-संबन्धी, शारीरिक ।
 वैघटिक-पु० [सं०] जोहरी ।
 वैघसिक-वि० [सं०] जूठन खानेवाला ।
 वैघास्य-पु० [सं०] घात करने, मार डालने लायक ।
 वैघास्य-पु० [सं०] चातुर्य कुशलता ।
 वैकिन्ध-पु० [सं०] मनकी अस्तव्यस्तता; गम; अन्यमन-स्कृता; संघाहीनता ।
 वैचित्र-पु० [सं०] विचित्रता । -बीर्य-पु० शूद्रराष्ट्र, पांडु और विदुर । -बीर्यक-वि० विचित्रवीर्य-संबन्धी ।
 वैचिन्ध-पु० [सं०] विचित्रता, अनोखापन; मिश्रता; भेद, अंतर; सुंदरता; जाड्य; गम; नेराध्य ।
 वैच्युत-पु० [सं०] एक ऋषि ।
 वैच्युति-स्त्री-वि० [सं०] विकलता; पतन ।
 वैच्यव-पु० [सं०] गर्भका अंतिम मास । वि० ब्रजनन-संबन्धी ।
 वैच्यव-पु० [सं०] प्लात, निर्जनता ।
 वैच्यव-पु० [सं०] इंद्रासाद; वर; इंद्र; स्कंद; एक

पर्वत; जगणी, अशिमं वृक्ष; ध्वजा; रंजकी ध्वजा; सातों स्वर्गसे ऊपर स्थित एक लोक (जै०) ।

वैजयंतिक-वि० [सं०] हंढावरदार, हंढा उठानेवाला ।

वैजयंतिका-खी० [सं०] पताका, हंढा; एक तरहका मुक्ताहार; अशिमं; जयंती वृक्ष ।

वैजयंती-खी० [सं०] हंढा; विजय; विजयमाला; जानुतक लटकनेवाली पाँच रंगोंकी एक तरहकी माळा; विष्णुकी माळा; जयंती वृक्ष; अशिमं ।

वैजयिक-वि० [सं०] विजय-संघर्षी; विजयदायक; विजय-मुक्त ।

वैजयी(विज्)-वि० [सं०] दे० 'वैजयिक' ।

वैजयन-पु० [सं०] वैदिक शास्त्रा-विशेषको प्रवर्तक एक ऋषि ।

वैजान्त्य-पु० [सं०] विजातीयता; वर्ग-भिन्नता, वर्ण या जातिकी भिन्नता; वैविध्य; जातिसे धृक् किया जाना; लपटता ।

वैजिक-वि० [सं०] दे० 'वैजिक' ।

वैज्ञानिक-पु० [सं०] विज्ञानका पंडित । वि० विज्ञान-मन्त्री ।

वैडाल-वि० [सं०] दे० 'वैडाल' ।

वैदूर्य-पु० [सं०] एक रत्न, वैदूर्य; एक पर्वत । वि० वैदूर्य-निर्मित । -कांति-वि० जिसमें वैदूर्य मणि जैभी चमक हो । -प्रभ-पु० एक नाम । -मणि-पु० इस नामका रत्न । -शिखर-पु० एक पर्वत ।

वैण-पु० [सं०] बौद्धका काम करनेवाला, बौद्ध; एक नाम ।

वैणव-वि० [सं०] बौद्धका बना हुआ; बौद्धमें उत्पन्न; जब या अन्नका बना हुआ; बौद्धी-संघर्षी । पु० बौद्धी; अन्न-चारीका रंज; बौद्ध, बौद्धका काम करनेवाला; माहिष्यसे उत्पन्न माहाणकी पुत्र; बौद्धका चावल; वैष्णु नदीसे प्राप्त मोना; कुशदीपका एक वर्ष ।

वैणविक-पु० [सं०] बौद्धी बजानेवाला, वैष्णवादक ।

वैणवी-खी० [सं०] बौद्धीचन ।

वैणवी(विज्)-वि० [सं०] बौद्धीवाला । पु० शिव ।

वैणावत-पु० [सं०] धनुर् ।

वैणिक-पु० [सं०] बीणा बजानेवाला; मल्लकी गंध ।

वैणुक-पु० [सं०] बौद्धी बजानेवाला; एक तरहका हाथीका अकुक्ष जो बौद्धका नोकदार टुकड़ा होता है ।

वैणुकीय-वि० [सं०] वैष्णु-संघर्षी ।

वैणुकेय-वि० [सं०] बौद्ध-संघर्षी ।

वैणुय-पु० [सं०] वैदकी एक शाखा ।

वैण्य-पु० [सं०] वैणका पुत्र, पृथु ।

वैतंरिक-वि० [सं०] विंताका, झगडा करनेवाला; तर्कापिय; विंता-संघर्षी । पु० व्यर्थका झगडा करनेवाला ।

वैतंकी(विज्)-पु० [सं०] एक ऋषि ।

वैतंसिक-पु० [सं०] श्रेष्ठिया; मांसप्रेमिता; पक्षियों आदिको फँसानेकी क्रिया ।

वैतत्य-पु० [सं०] फैलाव, विस्तार ।

वैतप्य-पु० [सं०] मिथ्यात्व, असत्यता ।

वैतमिक-वि० [सं०] वेतन या मजदूरी लेकर काम करने-

वाला । पु० मजदूर; वेतन लेकर काम करनेवाला कर्मचारी ।

वैतरण-वि० [सं०] नदी पार करनेका इच्छुक; वैतरणी नामकी नदी पार करनेवाला (साधन) ।

वैतरिधि, वैतरणी-खी० [सं०] एक पौराणिक नदी (कहते हैं कि यह धूम्री और बमलोकके बीचमें है और इसमें धून, अग्नि, बाढ़ आदि अरे हैं और जल गरम है । पापी इसमें बहुत दिन दुःख-भोग करते हैं किन्तु पुण्यात्मा सद्य ही पार कर जाते हैं); इस नदीको पार करनेवाली नाव (जो माहाणकी दी जाती है); उड़ीसाकी एक पवित्र नदी ।

वैतस-वि० [सं०] वैत-संघर्षी; वैत जैसा (प्रबल झगुके सामने झुक जाना) । पु० वैतकी बनी हुई ठीकरी; पुन-वैदिय; अमलवैत ।

वैतसी वृषि-खी० [सं०] वैतकी तरह झुक जानेकी आदत, नम्रताकी प्रवृत्ति ।

वैतसेन-पु० [सं०] वीतसेनाका पुत्र, राजा पुरकार ।

वैतस्त, वैतस्थ-वि० [सं०] वितस्ता नदी-संघर्षी, वितस्ता-से प्राप्त ।

वैतसिक-वि० [सं०] एक बालिष्ठ हंढा (बाण) ।

वैताल-पु० [सं०] एक पर्वत ।

वैतान-वि० [सं०] यह संघर्षी; पवित्र । पु० तबू; एक यह-संघर्षी विधि; यज्ञका हवि ।

वैतानिक-वि० [सं०] वैतान नामक यह-विधि संघर्षी; यह-संघर्षी; पवित्र (जैसे अग्नि) । पु० श्रौत होम; अग्नि-होत्रकी अग्नि ।

वैताल-वि० [सं०] वैतालका; वैताल-संघर्षी । पु० दे० 'वैताल'; स्तुतिपाठक ।

वैतालिक-पु० [सं०] ऋषेदकी एक शाखाके प्रवर्तक ऋषि ।

वैतालिक-पु० [सं०] स्तुतिपाठक, स्तुति-पाठ करके राजाओंको सबेरे बजानेवाला; वैतालका उपासक या अनु-चर; बाजीगर; वह जो तालमें न गाता हो (?) ; जौलठ कला; ओमेंमें किसी एकका हान । -व्रत-पु० स्तुतिपाठका कार्य ।

वैताली(किन्)-पु० [सं०] स्कंदका एक अनुचर ।

वैतालीय-पु० [सं०] एक वर्णवृत्त । वि० वैताल-संघर्षी ।

वैतुष्य-पु० [सं०] भूतिका निकाला जाना ।

वैतुष्य-पु० [सं०] प्यास बुझाना; इच्छासे रहित होना, उदासीनता ।

वैतपात्न-वि० [सं०] कुमेर-संघर्षी ।

वैत्रक-वि० [सं०] वैतदार ।

वैत्रकीय-वि० [सं०] वैत या छड़ी-संघर्षी ।

वैत्रासुर-पु० [सं०] एक असुर ।

वैट्-पु० [सं०] विद्वान् व्यक्ति; विद ऋषिके वंशज । पु०

वैष । वि० विद्वान् संघर्षी; विद्वान् ।

वैट्का-पु० चिकित्सा शास्त्र ।

वैट्क्य, वैट्क्य-पु० [सं०] दक्षता; चतुरता; पांडित्य; धूर्तता; सौंदर्य; रसिकता; उपस्थित बुद्धि ।

वैट्क्य-खी० [सं०] दे० 'वैट्क्य' ।

वैट्स-वि० [सं०] जानकार ।

वैद्यूत-पु० [सं०] एक साम ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] विदूर्ज-संबंधी; वायुपट्ट । पु० विदूर्जनरेश; दमयंतीके पिता भीम; रुक्मिणीके पिता भीष्मक; मयूकेका फोका; वायुपट्टता ।

वैदूर्जक-वि० [सं०] विदूर्ज-संबंधी । पु० विदूर्ज-निवासी ।

वैदूर्जी-श्री० [सं०] विदूर्जकी राजकुमारी; अगस्त्य-पत्नी; दमयंती; रुक्मिणी; एक रीति जिसमें मायुके-स्वजनक बर्णोंका प्रयोग किया जाता है (सा०); विदूर्जकी राजधानी, कुंठिन ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] बौंसके पट्टे वा बेंतका बना हुआ । पु० दिदलाभ; एक विवैला कीका; एक तरहकी पीठी; बेंतकी बनी हुई रुकिया; सन्मासियोंका मिह्यापात्र ।

वैदूर्तिक-वि० [सं०] वैदांत जाननेवाला ।

वैदूर्तिक-पु० [सं०] एक तरहका साक्षिप्रातिक ज्वर ।

वैदूर्तिक-वि० [सं०] वेद-संबंधी; जो वेदके अनुकूल हो, वेदविहित; पवित्र; वेदज्ञ । पु० वेदज्ञ ब्राह्मण; वेदवचन ।

-कर्म(रु)-पु० वेदविहित कर्म । -पात्र-पु० वह जिसे वेदका बहुत बोधा हान हो ।

वैदूर्जिका-श्री० [सं०] वनजामुन ।

वैदूर्जिक-वि० [सं०] विदिशा नगर-संबंधी । पु० विदिशा-नरेश; विदिशा-निवासी; विदिशा नदीके तटपर अवस्थित एक नगर ।

वैदूर्जिक-पु० [सं०] विदिशाके रासका एक प्राचीन नगर ।

वैदूर्जिक-पु० [सं०] विदूर्जका भाव या सिद्धांत ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] विदूर्ज नामके बेंतका बना हुआ । पु० बेंतकी जड़ ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] पंडित, विद्वान् ।

वैदूर्जी-श्री० [सं०] विद्वता; विमान ।

वैदूर्ज्य-पु० [सं०] विद्वता, पांडित्य ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] विदूर्जसे प्राप्त या लाया हुआ । पु० एक रत्न, लहसुनिवा ।

वैदूर्जिक-वि० [सं०] विदेशका; विदेश-संबंधी । पु० दूसरे देशका व्यक्ति, विदेशी । -नीति-श्री० किसी राष्ट्रकी परराष्ट्र या अन्य राष्ट्रोके साथ बरती जानेवाली नीति । -व्यापार-पु० किसी देशका अन्य देशोंके साथ होनेवाला व्यापार ।

वैदूर्ज्य-वि० [सं०] विदेशीय । पु० विदेशी होनेका भाव । -साम्य-पु० विदेशी माक (श्री०) ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] विदेह देश-संबंधी; सुंदर आकृतिवाला । पु० विदेह-नरेश; एक वर्णसंकर जाति, वैदवासे उत्पन्न शूद्रका या ब्राह्मणसे उत्पन्न वैश्यका पुत्र; बणिक्; अंत-पुर-का सेवक ।

वैदूर्ज-पु० [सं०] बणिक्, व्यापारी; विदेह जातिकका व्यक्ति । -व्यजन-पु० व्यापारीके नेत्रमें रहनेवाला गुप्तचर (श्री०) ।

वैदूर्जिक-पु० [सं०] विदेह जातिकका व्यक्ति; बणिक् ।

वैदूर्जी-श्री० [सं०] विदेहकी राजकुमारी; विशेषतः सीता; रोचना; पिप्पली; वैदेह जातिकी श्री; विदेह देशकी गाय ।

वैदूर्ज-वि० [सं०] वेद-संबंधी; वेदविहित; मायुर्द-संबंधी । पु० विद्वान्; वेदज्ञ व्यक्ति; आयुर्वेदका शास्त्रा, चिकित्सक; एक कवि; जातिविशेष; इम जातिकका व्यक्ति; अश्वस ।

-किमा-श्री० चिकित्सा करनेका पेशा । -बाध-पु०

शिव; धन्वंतरि; विशारदा एक तीर्थे बहोई इस नामका शिव-लिङ्ग है । -बंशु-पु० आरगवण वृक्ष । -माता(रु)-

श्री० वासक, अश्वस; वैष्णवी माता । -मानी(विष्)-

वि० अपनेको वैष्ण माननेवाला । -राज-पु० धन्वंतरि; शार्ङ्गचरके पिता; श्रेष्ठ वैष्ण । -राष्ट्र(रु)-पु० धन्वं-

तरि । -विद्या-श्री० चिकित्साशास्त्र । -शास्त्र-पु० चिकित्सा-संघकी ग्रंथ या विद्या । -सिद्धी-श्री० अश्वस ।

वैद्यक-पु० [सं०] चिकित्सक; चिकित्साशास्त्र । वि० चिकित्सा-संबंधी ।

वैद्या-श्री० [सं०] काकोली; वैष्णवी श्री; श्री वैष्ण ।

वैद्याचर-वि० [सं०] विद्याधर-संबंधी ।

वैद्यावृत्त्य-वि० [सं०] लुहरदा, फुलक (बोकका उलट) ।

वैद्यत-वि० [सं०] विजलीका; विजली-संबंधी । पु० वपु-भ्यान्का एक पुत्र; विजलीकी अग्नि; वैद्युत द्वारा शासित एक वर्ष ।

वैद्योत-वि० [सं०] ब्रह्म ।

वैद्युम-वि० [सं०] विद्रुम, मृगेका ।

वैद्य-वि० [सं०] विधि-संगत, विहित; जायज, कानूनके सुताविक ।

वैद्यमिक-वि० [सं०] जो धर्मसंगत न हो, अविहित ।

वैद्यम्य-पु० [सं०] असमानता, अंतर; धर्म या गुणकी भिन्नता; कर्तव्यकी भिन्नता; वैपरीत्य; अवैधता; नास्तिकता ।

वैद्य-पु० [सं०] विपु-चंद्रमाका पुत्र, वृष ।

वैद्यवैद्य-पु० [सं०] विषवाक्, विषवाके गर्भसे उत्पन्न पुत्र ।

वैद्यव्य-पु० [सं०] रंकापा । -लक्षणेपेता-श्री० वैद्यव्य-के चिह्नोंसे युक्त कन्या (जो विवाहके अवस्य मानी जाती है) । -वेणी-श्री० विषवाकी कन्या ।

वैद्यस-पु० [सं०] वैद्यसका पुत्र, राजा हरिश्चंद्र । वि० भाग्यजात; ब्रह्मा द्वारा रचित ।

वैद्यतकि-पु० [सं०] दे० 'वैधाप' ।

वैद्यत्र-वि० [सं०] ब्रह्मासे उत्पन्न । पु० विधाताके पुत्र, सनत्कुमार ।

वैद्यात्री-श्री० [सं०] माझी लता ।

वैद्यात्रिक-वि० [सं०] विधान संबंधी; विधानानुकूल ।

वैद्यिक-वि० [सं०] दे० 'वैध' ।

वैद्युरी-श्री० [सं०] विपति; वैद्यकी प्रतिकूलता ।

वैद्युर्व-पु० [सं०] विधुरता; विशेषतः अविदमानता; कात-रता; नेराद्वय; कष्ट, कंषन; क्षोभ ।

वैद्युमग्री-श्री० [सं०] शास्त्र देशका एक प्राचीन नगर ।

वैद्युत-पु० [सं०] विद्युत्तिका वंशज; एक ब्रह्म (म्यारहवें मन्वंतर); दे० 'वैद्युति' । -वासिष्ठ-पु० एक साम ।

वैद्युति-श्री० [सं०] चंद्र और सूर्यकी विशेष स्थिति, सप्ता-हंस योगोंसे एक जो अष्टाव माला जाता है (ज्यो०) ।

वैद्युत्य-पु० [सं०] दे० 'वैद्युति' ।

वैद्येय-वि० [सं०] विधि-संबंधी; विहित; मूल्य । पु० मूल्य आदमी; वाक्पत्यका एक शिष्य ।

वैद्यत-पु० [सं०] यमका एक द्वारपाल ।

वैद्य-वि० [सं०] वैद्य-संबंधी; विहित; मूल्य । पु० मूल्य ।

वैद्यतक-पु० [सं०] एक प्राचीन पात्र जिसमें धी रखते या

जिससे यज्ञाग्नि आदिमें भी बालते थे ।

वैनतेय-पु० [सं०] गरुड; अरुण, गरुडका एक पुत्र ।

वैनतेयी-स्त्री० [सं०] एक वैदिक शाखा ।

वैनत्य-वि० [सं०] विनम्र, विनयशील ।

वैनवी-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी ।

वैमश्वर-पु० [सं०] एक गोत्रकार कृषि; एक वैदिक शाखा ।

वैनथिक-वि० [सं०] विनय, शिष्टता, अनुशासन संबंधी; नैतिकताका पालन करानेवाला; अपराध-संबंधी अपसरी द्वारा किया हुआ; युद्धके अभ्यासमें काम आनेवाला । पु० युद्धाभ्यासमें काम आनेवाला रथ, युद्ध-रथ ।

वैनायक-वि० [सं०] विनायक, गणेश-संबंधी । पु० एक दानवधर्म ।

वैनाविक-पु० [सं०] बौद्ध दर्शन-विशेष; इस दर्शनका अनुयायी, बौद्ध ।

वैनाशिक-वि० [सं०] विनाश-संबंधी; नश्वर; विनाशमें बिनाश करनेवाला; विनाश करनेवाला; अधीन, परतंत्र । पु० बौद्ध दर्शन; बौद्ध; मकड़ा; ज्योतिषी; दास; अधीनस्थ व्यक्ति; जन्मनक्षत्रमें तेरहवाँ नक्षत्र ।-**तंत्र**,-**समय**-पु० बौद्ध दर्शन ।

वैनीतक-पु० [सं०] एक नरहकी पालकी जिसे दोनेके छिप करै कहार होने हैं और बारी-बारीमें बदलते रहते हैं; राहन्का साधन (कहार, घोडा आदि) ।

वैनेय-पु० [सं०] शुद्ध यजुर्वेदकी एक शाखा; धर्मका शिक्षार्थी । वि० जिसे धार्मिक शिक्षा देनी है ।

वैन्य-पु० [सं०] वेनपुत्र, पृथु ।

वैपचमिक-पु० [सं०] अभिषेकका ।

वैपथक-वि० [सं०] विपथ, कुमार्ग-संबंधी ।

वैपरीत्य-पु० [सं०] विपरीत होनेका भाव, प्रतिकूलता; अमंगल ।-**लज्जालु**-पु०, स्त्री० एक नरहका लज्जालु पौधा ।

वैपश्चित-पु० [सं०] तार्क्ष्य कृषि ।

वैपश्चित-वि० [सं०] बुद्धिमान्-संबंधी । पु० तार्क्ष्य कृषि ।

वैपादिक-वि० [सं०] पादत्रणसे पीकित ।

वैपादिका-स्त्री० [सं०] एक तरहका कुछ रोग ।

वैपारी-पु० दे० 'व्यापार' ।

वैपारी-पु० दे० 'व्यापारी' ।

वैपित्र-वि० [सं०] एक ही माता, पर भिन्न पिताओंसे उत्पन्न (संताने) ।

वैपुस्व-पु० [सं०] प्रानुर्ध्व, अधिकता; विशालता ।

वैप्रोताख्य-पु० [सं०] नृत्यका एक प्रकार ।

वैप्लव-पु० [सं०] आव्रण मांस ।

वैकस्य-पु० [सं०] विकलता; निरर्थकता, उपयोगरहित्य ।

वैषाध-पु० [सं०] अन्य वृक्षकी फोफर निकला हुआ पीपल ।-**प्रभुस्य**-वि० जिसे फोफर पीपलका पेड़ निकला है ।

वैषुध-वि० [सं०] देवता-संबंधी ।

वैषोधिक-पु० [सं०] रातका पहरेदार; वह पहरेदार जो भंडा बजाकर जगता है; स्तुतिपाठ द्वारा राजाकी जमाने-वाला व्यक्ति, स्तुतिपाठक ।

वैसंहि-पु० [सं०] एक गोत्रकार कृषि ।

वैमव-पु० [सं०] शक्ति; अलौकिक शक्ति; ऐश्वर्य; गौरवान्वित पद; महता ।-**शाकी**(किन्)-वि० वैमव-विशिष्ट; ऐश्वर्यवाला ।

वैमविक-वि० [सं०] समर्थ, कार्यक्षम ।

वैमाविक-पु० [सं०] कृष्यभ्रम ।

वैमाजन-वि० [सं०] जो कई सभ्यतासे विभक्त हो ।

वैमाजिज-पु० [सं०] विभाजन; वितरण ।

वैमासिक-वि० [सं०] ऊपा-संबंधी ।

वैमार-पु० [सं०] एक पर्वत, वैहार (राजगृहके पास) ।

वैमावर-वि० [सं०] रात्रि-संबंधी; रातका ।

वैमाथिक-वि० [सं०] वैकल्पिक; पु० विभाषा (एक बौद्ध संप्रदाय)का अनुयायी ।

वैमाथ्य-पु० [सं०] विस्तृत व्याख्या ।

वैमिन्ध्य-पु० [सं०] विभिन्नता ।

वैमीत, **वैमीतक**-वि० [सं०] विभीतक, बहरेकेका बना हुआ ।

वैभूतिक-वि० [सं०] विभूति-संबंधी ।

वैभोज-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति ।

वैभ-पु० [सं०] विष्णुलोक ।

वैभ्राज-पु० [सं०] विश्वकप्तेन; एक लोक; एक पर्वत; एक देवोद्यान; देवोद्यानस्थ सरोवर; एक अरण्य ।

वैभ्राजक-पु० [सं०] एक देवोद्यान ।

वैमत्थ-पु० [सं०] मतभेद, कूट; नापसंदी; छुट्ट यजुर्वेद-की एक शाखा ।

वैमनस्य-पु० [सं०] अन्यमनस्कता, लिखता, उठासी; अस्वप्नता; वैर ।

वैमल्य-पु० [सं०] निर्मलता, स्वच्छता, विमुक्तता ।

वैमात्र, **वैमात्रेय**-वि० [सं०] सीतेला । पु० मोतेला भाई ।

वैमात्रक-पु० [सं०] सीतेला भाई ।

वैमात्रा, **वैमात्री**, **वैमात्रेयी**-स्त्री० [सं०] सीतेली बहन ।

वैमानिक-वि० [सं०] विमानमें उत्पन्न; विमान-संबंधी । पु० विमानारोही; गगनपर्यटक; एक तीर्थ; स्वर्गस्थ जीव (जै०) ।

वैमित्रा-स्त्री० [सं०] स्कंदकी सान माताओंमेंसे एक ।

वैमुक्त-पु० [सं०] मुक्ति, मोक्ष । वि० मुक्त ।

वैमुल्य-पु० [सं०] पलायन; ह्वण; विरक्ति; विमुलता ।

वैमूढक-पु० [सं०] झींझी पोशाकमें पुरुषोंका नृत्य ।

वैमूल्य-पु० [सं०] मूल्यकी भिन्नता ।

वैमूध-पु० [सं०] इद्र । वि० इद्रापित ।

वैमूच्य-वि० [सं०] दे० 'वैमूध'; रणदह (?) ।

वैमैय-पु० [सं०] विनिमय, बदला ।

वैम्व-पु० [सं०] गोत्रकार कृषि ।

वैम्विक-वि० [सं०] व्यक्तित्व ।

वैवध, **वैवध्व**-पु० [सं०] व्यध्रता, व्याकुलता, पवकादृश; तहीनता ।

वैवधिकरथ-पु० [सं०] भिन्न स्थानोंमें होनेका भाव ।

वैवधक-पु० [सं०] एक जाति (म० भा०) ।

वैवध्व-पु० [सं०] व्यर्थता; अनुत्प्रादकता ।

वैवक्ष्य-पु० [सं०] एक साम ।

वैचक्षण-वि० [सं०] व्यसन-संबंधी ।

वैचा-प्र० एक प्रत्यय = बाला (कोई काम करनेवाला-करवैया) ।

वैचाकरण-पु० [सं०] व्याकरण जाननेवाला । वि० व्याकरण-संबंधी । -पाक्ष-वि० जिसे व्याकरणका अच्छा ज्ञान न हो । -भार्य-वि० जिसकी स्त्री व्याकरण जानती हो ।

वैचाक्य-वि० [सं०] व्याख्या-संबंधी; व्याख्यायुक्त । पु० व्याख्या ।

वैवाग्र-वि० [सं०] व्याग्र-संबंधी; व्याग्र जैसा; व्याग्र-चर्म से आवृत । पु० व्याग्र-चर्म से ढकी हुई गाड़ी । -परिच्छद-वि० व्याग्र-चर्म से आवृत ।

वैवाग्रय-वि० [सं०] व्याग्र जैसा (वैदनेकी मुद्रा, आसन) । पु० एक आसन; व्याग्रकी अवस्था ।

वैवाक्य-पु० [सं०] धृष्टता; शिल्पज्ञता; अविनय; उज्जुपन ।

वैवाक्य-पु० [सं०] यति-सेवा (जै०) ।

वैवास-वि० [सं०] व्यासका; व्यास-संबंधी ।

वैवासकि-वि० [सं०] व्यासके वक्ष, गोत्रमें उत्पन्न ।

वैवासिक-वि० [सं०] व्यासनिर्मित । पु० व्यासका पुत्र ।

वैवास्क-पु० [सं०] एक आचार्य ।

वैवृष्ट-वि० [सं०] तबके होनेवाला ।

वैरकर-वि० [सं०] शत्रुता दिखलानेवाला ।

वैरसिक-वि० [सं०] जितेन्द्रिय; विरागार्थ ।

वैरहेय-वि० [सं०] एक गोत्रकार कृषि ।

वैरभ, वैरभक-पु० [सं०] एक तरहकी बाहु ।

वैर-पु० [सं०] विरोध, शत्रुता, दुश्मनी; घृणा; शीर्ष; हत्याके लिए दंडस्वरूप दिया जानेवाला धन । -कर,-कार,-कारक-वि० शत्रुता पैदा करनेवाला । -करण,-करण-पु० दुश्मनीका कारण । -कारी(रिद्ध),-कृत्-वि० शत्रुता । -खंबी(विन्)-वि० शत्रुता नष्ट करनेवाला । -निर्वासन-पु०,-वातना-खी० वैरप्रतिशोध । -पुरुष-पु० शत्रु । -प्रतिक्रिया-खी०,-प्रतीकार-पु० वैर-प्रतिशोध । -प्रतिप्रोचन-पु० शत्रुतासे छुटकारा । -प्रतिचाचन-पु० दे० 'वैर-निर्वातन' । -भाव-पु० शत्रुता । -रक्षी(खिन्)-वि० शत्रुताका निवारण करनेवाला । -विमुक्ति,-मुक्ति-खी० वैरका वदल । -व्रत-पु० शत्रुताका व्रत, प्रतिज्ञा । -साचन-पु० वैरका कारण या उद्देश ।

वैरक-पु० [सं०] शत्रुता ।

वैरक-पु० [सं०] वैराग्य, विरक्ति, उदासीनता ।

वैरय-पु० [सं०] ज्योतिष्मान्का पुत्र; उसके द्वारा शासित एक वर्ष ।

वैरमण-पु० [सं०] वेदाध्ययनकी समाप्ति ।

वैरस्य-पु० [सं०] विरलता, न्यूनता ।

वैरस, वैरस्य-पु० [सं०] विरलता; अनिच्छा, इच्छा न होना, अक्षि ।

वैरसेनि-पु० [सं०] राजा नष्ट ।

वैरागिक-वि० [सं०] विरक्त ।

वैरागी-खी० [सं०] एक रागिनी ।

वैरागी(गिह)-पु० [सं०] एक वैष्णव मंत्राध्य, उदासी ।

वि० विषयकी इच्छासे रहित, विरक्त उदासीन ।

वैराग्य-पु० [सं०] रंग बदलना, विवर्ण होना; विषय-वास्ता और सांसारिक संबंधोंसे मगका उचट जाना, विरक्ति, उदासीनता ।

वैराज-वि० [सं०] मन्त्रा-संबंधी । पु० पुरुष, परमात्मा; मन्त्रा; अनु; कथन नामके एक वैदिक कृषि; मन्त्रार्थसर्व कथ्य; एक देवर्गा; एक पितृवर्ग; वैराज्य ।

वैराजक-पु० [सं०] उन्नीसवाँ कथ्य ।

वैराज्य-पु० [सं०] दो राजाओंका संयुक्त शासन, दुराज; ऐसे शासनवाला देश; विदेशी शासन; विस्तृत साम्राज्य ।

वैराट-वि० [सं०] विराट(मत्स्य-नरेश)-संबंधी; विस्तृत । पु० वीरबहूटी; एक कुनगा; एक राजा; एक विदेश राग या उस रंगकी वस्तु; एक देश । -राज-पु० मत्स्य-नरेश ।

वैराटक-पु० [सं०] एक विवेका कंद; विशाक अनुर ।

वैराज्या-खी० [सं०] दे० 'वैरीज्या' ।

वैरातक-पु० [सं०] अर्जुन वृक्ष ।

वैरावित-पु० [सं०] शत्रुता ।

वैरिच-वि० [सं०] मन्त्रा-संबंधी ।

वैरिच्य-पु० [सं०] मन्त्राके पुत्र ।

वैरि-पु० [सं०] वैरी, दुश्मन ।

वैरिण-पु० [सं०] शत्रुता ।

वैरी(रिद्ध)-वि० [सं०] शत्रुतापूर्ण । पु० शत्रु; योद्धा ।

वैरूप-पु० [सं०] एक साम; एक गोत्रकार कृषि; एक पितृवर्ग । वि० विरूप साम-सम्बन्धी ।

वैरूपाक्ष-पु० [सं०] विरूपाक्षका मंथन; एक मन्त्र ।

वैरूप्य-पु० [सं०] विरूपता; विकृति; कुरूपता; रूप-भिन्नता ।

वैरेकीच-वि० [सं०] विरेचक ।

वैरेचन, वैरेचनिक-वि० [सं०] विरेचन-संबंधी ।

वैरोचन-वि० [सं०] व्यंज-संबंधी; विरोचनमें उत्पन्न । पु० सूर्यका एक पुत्र; विष्णुका एक पुत्र; अधिका एक पुत्र, विरोचनका पुत्र, बलि; एक समाधि; एक ध्यानी बुद्ध; एक सिद्ध-वर्ग; एक लोक (बी०) । -विकेसन-पु० पाना ।

-सुहृत्-पु० दिनका एक सुहृत् । -रश्मि-प्रतिमंडित-पु० एक लोक (बी०) ।

वैरोचनि-पु० [सं०] बलि; एक बुद्ध; सूर्यका एक पुत्र; अनिका एक पुत्र ।

वैरोचि-पु० [सं०] बलिका पुत्र; बाण; बलि ।

वैरोज्या-खी० [सं०] सोलह विधादेवियोंमेंसे एक (जैन) ।

वैरोद्धार-पु० [सं०] वैर-परिशोध ।

वैरोचक, वैरोचिक-वि० [सं०] अनुकूल न पकनेवाला (आहार) ।

वैल-वि० [सं०] विक, विवर-संबंधी; विकल रहनेवाला । पु० विक, यौद्ध, वैल (?) । -स्थान-पु० शव गाकनेका स्थान ।

वैलसी*-खी० ओलती, ओरी-'आनंद वन कितहूँ किनि वरसी ये वरनी वैलसीया' ।

वैलक्षण्य-पु० [सं०] विचित्रता; विविधता; अंतर ।

वैलक्ष्य-पु० [सं०] विह्वलभाव; वैपरीत्य; अस्वाभाविकता; वैचित्र्य; लज्जा ।

वैशिख्य-पु० [सं०] परिचायक विहङ्गा अभ्यास ।
 वैश्वोम्य-पु० [सं०] क्रम-वैपरीत्य, विपरीतता ।
 वैद्य-पु० [सं०] विद्य, वैद्यका कला ।
 वैद्यक्षिक-वि० [सं०] जिसे कहना अभिप्रेत हो ।
 वैद्यधिक-पु० [सं०] आरवाहक; फेरी करके माल बेचने-
 वाला; गह्रा भापि बेचनेवाला; दूत, संवादवाहक ।
 वैद्यर्ष-पु० दे० 'वैद्यर्ष' ।
 वैद्यार्थिक-पु० [सं०] वह जो जातिच्युत कर दिया
 गया हो ।
 वैद्यर्ष-पु० [सं०] विवर्णता, रंग बदल जाना; मालिन्य;
 सौन्दर्योभाव; भ्रष्टता; जातिच्युति ।
 वैद्यर्ष-पु० [सं०] पहिले से समान घूमना ।
 वैद्यर्ष-पु० [सं०] विवशता; आत्मनियन्त्रणका अभाव ।
 वैद्यस्व-वि० [सं०] सूर्य-संबंधी; यम-संबंधी; मनु-संबंधी ।
 पु० यम; मनु; शनि प्रश्न; एक रुद्र; सातवें मन्वन्तर; ११क
 तीर्थ । -कुम्भ-पु० मोगरा चावल ।
 वैद्यम्बरी-स्त्री [सं०] दक्षिण दिशा; सूर्यकी एक पुत्री;
 यमी; यमुना ।
 वैद्यम्बरीय-वि० [सं०] मनु वैद्यम्बत-संबंधी ।
 वैद्याह-वि० [सं०] विवाह-संबंधी ।
 वैद्याहिक-वि० [सं०] विवाह-संबंधी । पु० विवाह-संबंधी
 नैयारी, विवाहोत्सव; विवाह; विवाहके कारण होनेवाला
 सवध; कन्या या वरका दत्तशूर ।
 वैद्याह-वि० [सं०] विवाह-संबंधी; विवाह द्वारा संबद्ध ।
 पु० विवाह-संस्कार ।
 वैद्यिष्य-पु० [सं०] 'मे मुक्ति ।
 वैद्युत-पु० [सं०] उदात्त स्वरेका क्रम ।
 वैद्यपायन-पु० [सं०] वैद्यपायनके शिष्य (हन्होंने जन-
 मेत्रयको महाभारतकी कथा सुनायी थी); एक प्राचीन
 ऋषि ।
 वैद्यशक्त्या-स्त्री [सं०] सरस्वती ।
 वैद्यश-पु० [सं०] विशदना, निर्मलता; कानि; स्पष्टता;
 मफेदी ।
 वैशाली-स्त्री [सं०] बसुदेवकी एक पत्नी; एक नगरी,
 वैशाली ।
 वैशाल्य-पु० [सं०] (गर्भमारके) कष्टमे मुक्ति ।
 वैशस-वि० [सं०] घातक, विनाशकारी । पु० खड-खड
 करना; बध; शुद्ध; कष्ट; संकट; बर्बदी; नरक; एक नरक ।
 वैशस्य-पु० [सं०] अधिकार; शासन; शास्त्रादित्य । वि०
 शस्त्रहीन ।
 वैशाख-पु० [सं०] चार्द वर्षका एक मास जो चैत्रके बाद
 पड़ता है; मंथन-रंड; बाण चलाते समयकी एक मुद्रा ।
 वि० वैशाख मास-संबंधी । -जंद्म-पु० गथा (गो) -
 रज्जु-स्त्री० मालीकी-रस्ती ।
 वैशास्त्री-स्त्री [सं०] वैशाखकी पूर्णिमा; रक्त पुनर्नवा;
 बसुदेवकी एक पत्नी ।
 वैशास्त्री(विश्व)-पु० [सं०] हाथीके अगले पैरका एक
 विशेष भाग ।
 वैशास्त्री-स्त्री [सं०] बरसखी बरातके आगमन तथा
 कन्यादानकी रत्न शुक्र होनेके बीच जनबामेई जाकर बर-

को देखने और उसे सम्मानित करनेकी रीति ।
 वैशाख्य-पु० [सं०] एक मुनि ।
 वैशारद्-वि० [सं०] अनुभवो, कुशल, विद्वान् । पु०
 प्रगाढ़ साहित्य ।
 वैशारद्य-पु० [सं०] दक्षता, पांडित्य; बुद्धि; बुद्धिकी
 स्पष्टता या स्वच्छता; भाषाबुद्धि का आत्मविश्वास ।
 वैशाल-पु० [सं०] विशाला नामक स्थानके राजा ।
 वैशालक, वैशालिक-वि० [सं०] वैशाली-संबंधी ।
 वैशालाक्ष-पु० [सं०] शिवरचित एक शास्त्र ।
 वैशाली-स्त्री [सं०] विशाल नामक राजा द्वारा स्थापित
 एक नगर जहाँ महावीर बर्द्धमानका जन्म हुआ था;
 विशाल नामक राजाकी पुत्री; बसुदेवकी एक पत्नी ।
 वैशास्त्रीय-पु० [सं०] महावीर बर्द्धमान ।
 वैशाख्य-पु० [सं०] विशाल-बंधोत्पन्न मन्त्रक ।
 वैशिक-वि० [सं०] वैद्यवागीमी; वैद्यवागुपिते संबंध रखने-
 वाला । पु० वैद्यवृत्ति; तीन प्रकारके नायकोंमेंमे एक
 (जो वैद्यवागुपिते संबंध रखता है) ।
 वैशिक्य-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति ।
 वैशिष्ट-पु० [सं०] विशिष्टता, विशेषता; अंतर ।
 वैशिष्ट्य-पु० [सं०] विशेष धर्ममे युक्त होना, विशेषता,
 अन्तर; श्रेष्ठता ।
 वैशीयुध-पु० [सं०] वैश्यका पुत्र ।
 वैशेषिक-वि० [सं०] विशेषतायुक्त; श्रेष्ठ; विशेष विषय
 संबंधी; वैशेषिक दर्शन-संबंधी । पु० कणाद-प्रवर्तित एक
 दर्शन जिसमें तत्त्वोंका विवेचन किया गया है; इस
 दर्शनका अनुयायी ।
 वैशेष्य-पु० [सं०] विशेषता; प्राधान्य ।
 वैशिमक-वि० [सं०] संकानमें रहनेवाला ।
 वैश्य-पु० [सं०] रिजगतिमें तीमरा और त्रिणिम वर्ण
 (जिसका पेशा कृषि, वाणिज्य आदि है) । वि० वैश्य जाति
 संबंधी । -कर्म(त्र)-पु० वैश्यका पेशा-कृषि, वाणिज्य
 आदि । -ध्वंसी(सिन्)-वि० वैश्योंका नाश करने-
 वाला । -भद्रा-स्त्री० एक देवी (गो) । -धञ्ज-पु०
 वैश्य द्वारा किया जानेवाला घस । -इत्त-वि० वैश्योंपर
 निर्वाहके लिए अवलंबित । -कृत्ति-स्त्री० वैश्यका पेशा ।
 -सव-पु० एक वस्त्र । -स्त्रोम-पु० एक प्रकार का वस्त्र ।
 वैश्या-स्त्री [सं०] वैश्यकी स्त्री; इन्दी; एक देवी (गो) ।
 वैश्रमक-वि० [सं०] जाग्रत करनेवाला; विद्यमान । पु०
 एक देवीवान ।
 वैश्रवण-पु० [सं०] कुबेर; रावण; चोदहर्षो मुहूर्त । वि०
 कुबेर संबंधी ।
 वैश्रवणायुध-पु० [सं०] रावण ।
 वैश्रवणायुध-पु० [सं०] कुबेरपुरी; बटवृक्ष ।
 वैश्रवणापास, वैश्रवणीय-पु० [सं०] बटवृक्ष ।
 वैश्य-वि० [सं०] विश्वदेव-संबंधी । पु० एक मन्त्र, उत्तरा-
 पादा ।
 वैश्वजनीन-वि० [सं०] विद्वत्, दुनियाभरके लोगोंसे संबंध
 रखनेवाला; समस्त विश्वके जनोंका कल्याण साधक ।
 वैश्वदेव-वि० [सं०] सब देवोंसे संबंध रखनेवाला । पु०
 विश्वदेवके उद्देश्यसे किया हुआ होम, यज्ञ; एक प्रकार;

उत्तरावादा नक्षत्र ।

वैश्वदेवत, वैश्वदेवत-पु० [सं०] उत्तरावादा नक्षत्र त्रिमये
अधिपति विश्वदेव कहे जाते हैं ।

वैश्वदेविक, वैश्वदेव्य-वि० [सं०] विश्वदेव-सम्बन्धी ।

वैश्वमनस-पु० [सं०] एक साम ।

वैश्वयुग-पु० [सं०] बृहस्पतिके पाँच सबत्सरोका
समाहार ।

वैश्वरूप-वि० [सं०] बहुतसे रूपोंवाला; विभिन्न प्रकारका ।
पु० विश्व ।

वैश्वरूप्य-वि० [सं०] दे० 'वैश्वरूप' । पु० बहुरूपता;
विभिन्नता ।

वैश्वानर-वि० [सं०] अग्नि-सम्बन्धी । पु० अग्नि; जठराग्नि,
पित्त; चेतन; एक दैत्य; चित्रक वृक्ष । -पथ, -मार्ग-
पु० चंद्रवीथीका एक भाग । -मुख-वि० अग्नि जिसका
मुख हो (शिख) । -विद्यार-श्री० एक उपनिषद् ।

वैश्वानरी-श्री० [सं०] दे० 'वैश्वानर-पथ' ।

वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक-वि० [सं०] विश्वामित्र-सम्बन्धी ।

वैश्वामित्रिक-वि० [सं०] विश्वस्तोत्र, विश्वम्न ।

वैश्वी-श्री० [सं०] उत्तरावादा नक्षत्र ।

वैश्व-पु० [सं०] अस्मानता; परिवर्तन ।

वैश्व-पु० [सं०] विश्वमता; समतल न होना; अनुपात-
राहित्य; कठिनाई; मकट; कठोरता; अनौचित्य; मूल;
एककीपन ।

वैश्विक-वि० [सं०] विश्व-सम्बन्धी; प्रदेश, भूभाग-सम्बन्धी;
सम्बन्धी, विश्वक (समाप्त) । पु० कामी, लंघ ।

वैश्वत-पु० [सं०] विपुव (संक्रान्ति); कैद, मध्य । वि०
मध्यवर्ती; विपुव रेखा-सम्बन्धी ।

वैश्वतीय-वि० [सं०] दे० 'वैश्वत' ।

वैष्क-पु० [सं०] दे० 'वैष्क' ।

वैष्किर-वि० [सं०] जिसमें वैष्किर, पक्षी आदि हों (छुट,
समूह); वेगनेसे तैयार किया हुआ (शोरवा आदि) । पु०
पक्षु; पक्षी ।

वैष्टम-पु० [सं०] एक साम ।

वैष्टिक-पु० [सं०] वह जिससे जमीनर जवरदस्ती काम
ले, बेगार करनेवाला ।

वैष्टुत, वैष्टुम-पु० [सं०] होमका भस्म ।

वैष्ट-पु० [सं०] भुवन; विष्णु; स्वर्ग; वायु ।

वैष्णव-वि० [सं०] विष्णु-सम्बन्धी; विष्णुकी पूजनेवाला । पु०
विष्णुकी उपासना, आराधना करनेवाला; एक धार्मिक
संप्रदाय (जिसमें विष्णुकी उपासना की जाती है) । -
स्थानक-पु० रंगमंचपर लगे रंग भरना (ना०) ।

वैष्णवाचार-पु० [सं०] वैष्णवोंका आचार-विचार ।

वैष्णवी-श्री० [सं०] वैष्णव-संप्रदायकी श्री; विष्णुकी शक्ति;
दुर्गा और मनसा; अपराजिता; शतावरी; तुलसी; अवण
नक्षत्र; होम-भस्म; मूर्च्छनाका एक भेद ।

वैष्णव्य-वि० [सं०] विष्णु-सम्बन्धी ।

वैसर्गिक-वि० [सं०] स्थान्य, विसर्जनीय ।

वैसर्जन्य-पु० [सं०] विसर्जन करना; यज्ञकी बलि; विसर्ज-
नीय वस्तु ।

वैसर्ज्य-वि० [सं०] विसर्प रोगसे ग्रस्त । पु० विसर्प रोग ।

वैसा-वि० उस तरहका । अ० उस प्रकार; उतना ।

वैसारद्व-पु० [सं०] विषमता, असमानता; अंतर ।

वैसारिण-पु० [सं०] मत्स्य ।

वैसृचन-पु० [सं०] पुरुषका श्रीका शर्ट करना (ना०) ।

वैसे-अ० उस प्रकारसे; वी ।

वैस्तारिक-वि० [सं०] विस्तृत, लंबा-चौड़ा; विस्तार-
सम्बन्धी ।

वैस्पृष्य-पु० [सं०] स्पृष्टता ।

वैस्वर्-वि० [सं०] स्वरसे वंचित करनेवाला । पु० स्वरसे
वंचित होना; स्वर-विकृति ।

वैर्हग-वि० [सं०] पक्षी-सम्बन्धी ।

वैर्हग-वि० [सं०] पक्षी-सम्बन्धी ।

वैर्हावस-वि० [सं०] आकाशमें विचरण करनेवाला;
आकाशस्थ; वायु-सम्बन्धी । पु० देवता; एक ह्रील ।

वैर्हार-पु० [सं०] सगंधका एक पर्वत ।

वैर्हारिक-पु० [सं०] विहारके लिए काममें आनेवाला ।

वैर्हावै-वि० [सं०] जिसके साथ मजाक किया जा सके
(साला आदि) । पु० हँसी-मजाक, परिहास ।

वैर्हाली-श्री० [सं०] आमेड ।

वैर्हासिक-पु० [सं०] विदूषक; अभिनेता । वि० हँमाने-
वाला ।

वैर्हल-पु० [सं०] विकलता; निर्बलता, अशक्तता ।

वैर्ह-पु० [सं०] वृत्त ।

वैर्ह-अ० तरक, ओर -'मूर स्थाम कालीपर नितन
अवत व्रजकी वैर्ह'-सुद ।

वैर्हण-पु० [सं०] एक स्थान; उम स्थानके निवासी ।

वैर्ह-वि० दे० 'वैर्ह' ।

वैर्ह-पु० [सं०] किसी व्यक्तिके निर्वाचनके लिए दिया
जानेवाला मत ।

वैर्ह-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसे वैर्ह, सम्मति देनेका
अधिकार प्राप्त हो । -विष्ट-श्री० मगदाताओंकी स्त्री ।

वैर्ह-श्री० [सं०] दासी ।

वैर्हिंग-श्री० [सं०] मतदान; मतग्रहण ।

वैर्ह-पु० [सं०] सुगरी ।

वैर्हमा-सं० [सं०] फैलाना, पसारना ।

वैर्ह-पु० [सं०] गोनस सर्प; एक मछली ।

वैर्ह-श्री० [सं०] एणका चौथा भाग ।

वैर्ह-वि० [सं०] विवाहित । पु० कर्दब; दे० 'वैर्ह' ।

वैर्हना-सं० [सं०] दे० 'वैर्हना' -'वैर्ह' काला कपड़ा
नांव धराई मत'-साक्षी ।

वैर्हव्य-वि० [सं०] सद्यनीय; ले जाये जाने योग्य, बाध;
पूरा किये जाने योग्य ।

वैर्हव्या-श्री० [सं०] वह कन्या जिसका विवाह होने-
वाला हो ।

वैर्हा-श्री० [सं०] ऋषभक नामकी ओषधि ।

वैर्हा(हू)-पु० [सं०] होने, ले जानेवाला; नायक, नेता;
पति; सौह; सारथि ।

वैर्ह-पु० [सं०] बीरमें रहनेवाली श्रीका लक्षका ।

वैर्ह-पु० [सं०] सुनिविष्ट ।

वैर्ह-वि० [सं०] आर्द्र, गौका ।

बोद्ध, बोद्ध-पु० उद्धर ।

बोद्धार-पु० [मं०] मुरदासिणी, कंकुड ।

बोद्धाह-पु० [सं०] एक मछली, बोभारी ।

बोद्धदेव-पु० [सं०] संस्कृतके एक प्राचीन विद्वान् ।

बोद्ध-की० अंत; तरक ।

बोद्धक, बोद्धक-पु० [सं०] लेखक ।

बोद्ध-पु० [सं०] कुरका पोषा वा फूल ।

बोद्ध-पु० [सं०] बोरी धान ।

बोद्धान-पु० [सं०] एक विशेष रंगका पोषा ।

बोद्ध-पु० [सं०] एक गंध द्रव्य, रसगंध ।

बोद्धाह-पु० [सं०] एक विशेष प्रकारका अन्न (दुग्ध और अवाल छोटा होता है) ।

बोद्धव्य-पु० बोद्धि, जहाज ।

बोद्धि-पु० [सं०] जहाज, पोत, बड़ी नाव ।

बोद्ध-वि० [सं०] दे० 'बोद्ध' ।

बोद्ध-अ० [मं०] इतिहासके समय उच्चारण किया जाने वाला एक शब्द या मंत्र, बद्ध ।

बोद्ध-पु० [सं०] अनियंत्रित, निरकुश ।

बोद्ध-वि० [सं०] शरीर-हीन; चक्रहीन; विकलांग; खज, लंगड़ा; अल्पबलित । पु० विकलांग व्यक्ति; मेढक; गाल-परके काले धब्बे; एक रस; इस्पात; ताना ।

बोद्ध-वि० [मं०] जिसमें अंगारे, अग्नि न हो ।

बोद्धार्थ-पु० [सं०] व्यञ्जना-शक्तिके द्वारा प्राप्त अर्थ, नकेतितार्थ (सा०) ।

बोद्धिता-की० [सं०] विकलागता ।

बोद्धी(मिन्)-वि० [सं०] विकलाग ।

बोद्धगुल-पु० [सं०] अंगुलका साठवाँ माग ।

बोद्धगुल-पु० [सं०] एक गुग्गुलु ।

बोद्ध-वि० [मं०] व्यञ्जनामृत्ति द्वारा बोधित, संकेतित ।

पु० संकेतितार्थ, गुद्गार्थ; चिह्नाने, नीचा दिखाने आदिके उद्देश्यसे कहे गये विपरीतार्थ-बोधक शब्द, ताना । -चित्र-पु० [मं०] वह चित्र जो किसी व्यक्ति आदिकी लक्ष्यकर मजाक उड़ानेके लिए बनाया गया हो, 'कार्डन' ।

बोद्धोक्ति-की० [सं०] गूढ़ भाषा; वह उक्ति जिसमें व्यर्थ्य हो ।

बोद्धक-वि० [सं०] प्रकट करनेवाला, प्रकाशक; व्यर्थका संकेत करनेवाला । पु० आंतरिक भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा, अभिनय; संकेत; व्यञ्जना शक्ति द्वारा अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द ।

बोद्ध-पु० [सं०] प्रकट करना, प्रकाशन; स्वरहीन वर्ण, चिह्न; छद्मवेष, उपलब्ध; परविह, परिचायक विह, तारुण्यबोधक चिह्न; डाढ़ी-थूँड; अंग; भोजन-सामग्री, मसाले आदि; दिन; कलिपञ्चुका संस्कार; पका हुआ भोजन (रोकचाल); पक्षा (भोजनका विकृत रूप); दे० 'व्यञ्जना' (सा०); गुग्गुलु; गुग्गुलुमंडल । -कार-पु० भोजन बनानेवाला । -साक्षिका-की० (मिन्) (होटल आदिमें) परीसे जा सकने योग्य व्यञ्जनोक्ती सूची, अभिज्ञी, व्यञ्जिका । -संक्षिप्त-की० व्यञ्जन बर्णोक्ता संयोग । -हारिका-की० एक चुटैल जो विवाहिता कन्याका बनाया हुआ स्वाद्यपदार्थ (किसी-किसीके मतमें

भगल वाक) हरण कर लेती है ।

बोद्ध-की० [सं०] तीन प्रकारकी शब्दशक्तियोंमेंसे एक जो अभिधा और लक्षणाके विरत हो जानेपर संकेतितार्थ प्रकट करती है; व्यक्त करनेकी क्रिया । -कृत्-की० व्यञ्जपूर्ण भाषा लिखनेकी शैली; व्यञ्जना-शक्ति ।

बोद्धनिका-की० दे० 'व्यञ्जनतालिका' ।

बोद्धिनी-की० [सं०] (मिन्) (होटलमें तैयार) व्यञ्जनोक्ता समूह (जैसे कमलिनी=कमल-समूह; दे० 'व्यञ्जन-तालिका') ।

बोद्धित-वि० [सं०] प्रत्यक्ष, प्रकट किया हुआ; चिह्नित; संकेतित ।

बोद्ध-वि० [सं०] दूरवर्ती, दूरस्थ ।

बोद्ध-पु० [सं०] एक तरहके पिशाच और यक्ष (जै०); अवकाश; अंतराभाव ।

बोद्ध-पु० [सं०] सिद्धिका और विप्रनितिका पुत्र ।

बोद्ध-पु० [सं०] पहाड़ ।

बोद्ध-वि० [सं०] वक्रहीन, नष्ट ।

बोद्ध-वि० [सं०] बोधे कर्षोवाला । पु० एक दैत्य जिमें इन्द्रने मारा था, दे० 'बोद्ध' ।

बोद्ध-पु० [सं०] भूत, छली आदमी; बाजीगर ।

बोद्ध-पु० [सं०] धोखा देना, ठगना; बितरण ।

बोद्ध-वि० [सं०] बचिन, जो छका गया हो, प्रतारित ।

बोद्ध-पु० [सं०] परदा करनेवाला, दकनेवाला ।

बोद्ध-वि० [सं०] प्रकट; विकसित; प्रत्यक्ष, स्पष्ट, इत्यर्थ;

निर्दिष्ट; शांत; चतुर, विद्वान्; उष्ण । पु० दीक्षित साधु; विद्वान् मनुष्य; विष्णु; स्यारह गणार्थियोंमेंसे एक (जै०);

अव्यक्तका व्यक्त, स्फूर्त रूप (सा०) । -कृत्-पु०

सार्वजनिक कार्य । -गणित-पु० अंकगणित । -वाधा-

की० विपक्षी; स्वर्णयुक्तिक; नीली अपराजिता । -सारक-

वि० चमकीले सितारोंवाला । -हृद्यार्थ-वि० प्रत्यक्ष-

दर्श (सा०) । -मुक्क-वि० सारे इष्ट पदार्थोंका

अक्षण करनेवाला (काल) । -हासि-की० हास राशि ।

-रूप-पु० विष्णु । -लक्ष्मा(क्षम)-वि० प्रकट

निर्द्धारण । -लक्ष्य-वि० जिसमें अधिक नमक पड़ा

हो । -वाक्(च)-की० स्पष्ट वचन । -विक्रम-

वि० शक्ति प्रकट करनेवाला ।

बोद्ध-की० [सं०] व्यक्त, प्रकट होनेकी क्रिया; प्रकट रूप; स्पष्टता; लिग (व्या०); अंतर करना; वास्तविक प्रकृति ।

पु० व्यष्टि, जन (जाति या समष्टिका उलटा) । -गत-

वि० एक व्यक्तिका, अपना; निजी ।

बोद्ध-पु० [मं०] व्यक्तिकी विशेषता, गुण; वह

विशेषता जो किसी व्यक्तिमें असामान्य रूपसे पायी जाय ।

बोद्धीकरण-पु० [सं०] व्यक्त, प्रकट करनेकी क्रिया ।

बोद्धीकृत-वि० [सं०] प्रकट किया हुआ ।

बोद्धीभूत-वि० [सं०] जो प्रकट हो गया हो ।

बोद्ध-वि० [सं०] हतबुद्धि, व्याकुल, परेशान, घबराया हुआ; डरा हुआ । सलज्ज, व्यस्त; असिर; गतिशील

(जैसे चक्र) । पु० विष्णु । -प्रना(नस्)-वि० घबराया

हुआ । -हस्त-वि० जिसके हाथ किसी काममें लगे हो ।

बोद्ध-पु० [सं०] पक्षा ।

व्यञ्जन-पु० [स०] पक्षा झलना; पंक्षा; पंखेको काम आनेवाला ताक-पटादि । -**किया**-**खी**० पंक्षा झलनेकी किया । -**खामर**-पु० पंखेको रूपमें काम आनेवाली चंदरी गायकी पूँछ ।

व्यञ्जनक-पु० [स०] पंक्षा ।

व्यञ्जनी(**निन्**)-पु० [स०] वह पशु जिसकी पूँछ जेवर बनानेके काम आती है ।

व्यहंबक, **व्यहंबन**-पु० [स०] परंठका पेड़ ।

व्यह-पु० [स०] दे० 'व्याहि' ।

व्यतिकर-वि० [स०] अम्योन्य, परस्पर अनुवर्ती; व्यापक; सलज्ज । पु० संयोग; मिलन; मिश्रण; सबंध; मंषर्क; बाधा; घटना; अवसर; संकेत; अम्योन्य संबंध; विनिमय; परिवर्तन; वैपरीत्य; नाश, अंत; व्यसन ।

व्यतिकरित-वि० [स०] मिश्रित; संयुक्त किया हुआ ।

व्यतिकर्ण-वि० [स०] मिश्रित; बिलेरा हुआ, गड्ढा-मड्ढा ।

व्यतिकृत-वि० [स०] व्याप्त ।

व्यतिक्रम-पु० [स०] घातना, गुजरना (समय); उल्लंघन, उपेक्षा; रीति-भंग; पाप; क्रम-विपर्यय; संकट; बाधा ।

व्यतिक्रमण-पु० [स०] क्रमभंग करना; पाप करना, भ्रष्टाई करना ।

व्यतिक्रमी(**मिन्**)-वि० [स०] पापी, अपराधी ।

व्यतिक्रांत-वि० [स०] भंग किया हुआ; उल्लंघित; विपर्यय; विताया हुआ । पु० अतिक्रमण, पाप ।

व्यतिक्रांति-**खी**० [स०] पाप करना; भ्रष्टाई करना ।

व्यतिशेष-पु० [म०] अङ्क-बङ्कल; वितरा, कष्टासुनी, झगडा ।

व्यतिगत-वि० [स०] बीता हुआ, गुजरा हुआ (समय) ।

व्यतिचार-पु० [स०] पापाचरण, दुष्कर्म ।

व्यतिपात-पु० [स०] बन्धक आदि मर्चाईस योगोमेमें एक ।

व्यतिभिन्न-वि० [म०] अभेद रूपमें संयुक्त ।

व्यतिभेद-पु० [स०] युगपत् स्फोट होना; व्याप्ति, प्रवेश ।

व्यतिमूढ-वि० [स०] बहुत धनबाधा हुआ ।

व्यतिपात-वि० [म०] बीता, गुजरा हुआ ।

व्यतिरिक्त-वि० [म०] अतिशय, बहुत अधिक; पृथक्, भिन्न; से मुक्त, रहित; रीका हुआ; अपवाद किया हुआ । अ० सिवा, अलगा, छोड़कर ।

व्यतिरिक्त-पु० [स०] उदनेका एक प्रकार ।

व्यतिरेक-पु० [स०] भेद, अंतर, पार्थक्य; अमान, राहित्य, अतिक्रमण; अमंष-रूप पदार्थ (अमंषका उलटा-व्या०); एक तरफकी व्याप्ति (व्या०); तुलनामें वैपरीत्य दिखलाना; एक का व्यालंकार जहाँ उपमानकी अपेक्षा उपमेयकी अधिकता कही जाय ।

व्यतिरेकी(**किन्**)-वि० [स०] अतिक्रमण करनेवाला; पदार्थोंमें विशेषता उत्पन्न करनेवाला, अंतर दिखानेवाला; भिन्न; विपरीत; अमाधारमक ।

व्यतिरेचन-पु० [स०] तुलनामें अंतर दिखलाना ।

व्यतिरोचित-वि० [म०] निष्कासित; वेदसल किया हुआ ।

व्यतिर्लकी(**चिन्**)-वि० [म०] तिरने, फिसलनेवाला ।

व्यतिव्यस्त-वि० [म०] अस्त-व्यस्त ।

व्यतिर्यग-पु० [म०] परस्पर मिलना, संयोग; आपसका

संबंध; लगाव-बन्धाव; मिश्रत; विनिमय; अभिद्योषण; एक साथ बाँधना ।

व्यतिषक-वि० [स०] परस्पर मिठा हुआ; आसक्त; ओतप्रोत; विनमें अंतर्विबाध हुआ हो ।

व्यतिहार, **व्यतीहार**-पु० [स०] विनिमय, बदला; गाली-गलौज; मारपीट ।

व्यतीकार-पु० [स०] मिश्रत; दे० 'व्यतिकर' ।

व्यतीत-वि० [स०] बीता हुआ, गत; प्रस्थित; मृत; त्यक्त; उपेक्षित; लापरवाह । -**काल**-वि० जिसका समय गुजर गया हो; असामयिक; अनवसर ।

व्यतीतना०-अ० कि० व्यतीत होना, बीतना, गुजरना ।

व्यतीपात-पु० [स०] दे० 'व्यतिपात'; भारी उपद्रव, उन्पात; अन्यादर; धनिष्ठा, आर्द्रा आदि नक्षत्रोंमें चंद्रमाके रहनेपर रविवारकी पड़नेवाली अमावस्या ।

व्यत्यथ-पु० [स०] व्यतिक्रम; विपर्यय, वैपरीत्य; विनिमय, परिवर्तन; विरोध; बाधा । -**वा**-वि० विपरीत दिशामें गमन करनेवाला ।

व्यत्यस्त-वि० [स०] विपरीत क्रममें रखा हुआ; विपरीत; अस्मंगत; इत प्रकार रखी हुई (दो वस्तुएँ) जिनमें एक दूसरीकी काटती हो ।

व्यत्यास-पु० [स०] दे० 'व्यत्यय' ।

व्यथक-वि० [स०] पीडा देनेवाला; प्रलत करनेवाला ।

व्यथन-वि० [स०] दुःख करनेवाला; चढे जक; कष्ट देनेवाला । पु० पीडा, व्यथा; कंपन; परिवर्तन (स्वरका); कष्टानुभूति; कष्ट देना; छेदना ।

व्यथयिता(**नृ**)-वि० [स०] पीडा देनेवाला; दह देनेवाला ।

व्यथा-**खी**० [स०] पीडा, दुःख; तकलीफ; डर, शका; क्षति; बेचैनी; रोक । -**क**-वि० कष्टदायक ।

व्यथाकुल-वि० [स०] कष्टग्रस्त, व्यथित ।

व्यथाक्रांत-वि० [स०] दे० 'व्यथित' ।

व्यथानुर-वि० [स०] दे० 'व्यथित' ।

व्यथाम्वित-वि० [स०] व्यथित, व्यथाकुल ।

व्यथित-वि० [स०] पीकित, दुःखित; बरा हुआ ।

व्यथी(**चिन्**)-वि० [म०] व्यथित, कष्टग्रस्त ।

व्यथ-पु० [स०] भेदन; छेदना; चोट करना; आहत करना; जाघात, बार ।

व्यथन-पु० [स०] वेधना; विद करना; आनेट । वि० विद करनेवाला ।

व्यथा-**खी**० [स०] रक्त-भरण, रक्त-पात ।

व्यथिकरण-वि० [स०] जिसका आधार भिन्न हो; दूसरे कारकसे संबद्ध (व्या०) । पु० भिन्न आधारपर होना ।

व्यथिक्षेप-पु० [स०] निंदा, शिकायत; भर्त्सना ।

व्यथ्य-वि० [स०] छेदने, भेदन करने योग्य । पु० धनुषकी डोरी, प्रत्यंचा; निशाना, लक्ष्य ।

व्यथ्य-पु० [स०] कुपय, बुरी लक्ष्म; मार्गका मध्य ।

व्यथुबाध-पु० [स०] दूरतक जानेवाली ऊँची आवाज; जोरकी गूँज ।

व्यपकर्ष-पु० [स०] अपवाद ।

व्यपकृष्ट-वि० [म०] हटाया हुआ, निकालकर अलग किया हुआ ।

व्यपगत-वि० [सं०] गया हुआ, प्रसिद्ध, ... से गिरा हुआ; वंचित, रहित। -**रक्षित-वि०** जिसकी किरणें विहीन हो गयी हों।

व्यपगम-पु० [सं०] प्रस्थान; लोप; (समय) बीतना।

व्यपगम्य-वि० [सं०] निर्लज्ज; धृष्ट।

व्यपविष्ट-वि० [सं०] निर्दिष्ट; दिखलाया हुआ; दूचित; बहाना बनाया हुआ; छला हुआ।

व्यपवैश-पु० [सं०] स्वयना; निर्देश; नाम; अल्क; उपाधि; कुल; जाति; ख्याति; दौब; छल; बहाना, छिपाव; व्याख्या (ज्ञे०)।

व्यपवैशक-वि० [सं०] नाम-निर्देश करनेवाला।

व्यपवैशी (सिञ्ज)-वि० [सं०] अल्क, उपाधिवाला; स्वक; परामर्शके अनुसार चलनेवाला।

व्यपवेष्ट-वि० [सं०] जिसका निर्देश करना हो; निष्।

व्यपवेष्टा (ष्टृ)-वि० [सं०] निर्देश करनेवाला; छठी।

व्यपनय-पु० [सं०] त्याग; हटाना, दूर करना; विनाश।

व्यपनयन-पु० [सं०] छोड़ देना, विसर्जन, त्याग।

व्यपनीत-वि० [सं०] हटाया हुआ, दूरीकृत।

व्यपनुति-स्त्री० [सं०] त्याग, दूरीकरण।

व्यपमूर्खा (भञ्ज)-वि० [सं०] बिना सिरका।

व्यपरोपण-पु० [सं०] उन्मूलन; काटना; तोड़ लेना; दूर करना, निष्कासन; आवात पड़वाना।

व्यपवर्ग-पु० [सं०] पार्थक्य; विभाग; अंतर; अत (त्रि०)।

व्यपवर्जन-पु० [सं०] परित्याग, छोड़ देना; दे देना; हटाना।

व्यपवर्जन-पु० [सं०] लौटना; वापस होना।

व्यपवृत्त-वि० [सं०] पृथक् किया हुआ; विभक्त।

व्यपसारण-पु० [सं०] अगाना, निकाल बाहर करना।

व्यपाकृत-वि० [सं०] मे मुक्त, रहित।

व्यपाकृति-स्त्री० [सं०] अपक्षय; अन्धकार; निवारण, दूरीकरण।

व्यपाय-पु० [सं०] विराम, अंत।

व्यपाश्रय-वि० [सं०] जिसका कोई सहारा न हो, स्वावलंबी। पु० गमन; अंत, विराम; आसन; आश्रयस्थान, सहारा; आशा।

व्यपाश्रित-वि० [सं०] जिसने आश्रय ग्रहण किया हो।

व्यपेक्ष-वि० [सं०] आशाशुक्त; उत्सुक; सावधान।

व्यपेक्षा-स्त्री० [सं०] आशा; ध्यान देना, खयाल रखना; आपसका संबंध; प्रयोग।

व्यपेक्षित-वि० [सं०] जिसकी आशा की गयी हो; जिसपर ध्यान दिया गया हो, परस्पर संबद्ध; प्रयुक्त।

व्यपेत-वि० [सं०] जो अलग हो गया हो; गया हुआ; जिसका अंत हो गया हो; विपरीत। -**कर्मण्य-वि०** निष्णात। -**छण-वि०** निर्देय। -**क्षैर्-वि०** अधीर।

-**भय-अधी-वि०** निस्कीक। -**भय-वि०** गर्वहीन।

-**हर्ष-वि०** अपसन्न।

व्यपौष्ट-वि० [सं०] हटाया हुआ, दूर किया हुआ; विकट, विपरीत; प्रकट किया हुआ, दिखलाया हुआ।

व्यपौष्ट-पु० [सं०] निवारण; नाश; अस्वीकार; बहारा।

व्यपौष्ट-वि० [सं०] अस्वीकार्य।

व्यपिचरण-पु० [सं०] संदेह, अनिश्चय।

व्यपिचार-पु० [सं०] सत्पथका परित्याग, कुमार्ग-गमन; पाप, दुराचार, दुष्कर्म; अनुचित यौन संबंध; नियमका अपवाद; गलत ठक, एक ठकी छोड़कर दूसरेका सहारा लेना; गलत हेतु, साध्याहेतु हेतु (न्या०)। -**कृष्-वि०** अनुचित यौन संबंध करनेवाला।

व्यपिचारिणी-वि० स्त्री० [सं०] युष्मती, कुलटा; स्त्रिर न रहनेवाली (पुष्टि)।

व्यपिचारी (रिञ्ज)-वि० [सं०] कुमार्गगामी; दुश्चरित्र; अनुचित यौन संबंध करनेवाला; जो स्त्रिर न रहे, अस्वायी; संग करनेवाला, उत्सवण करनेवाला; निगम-विषय; कई गीण अर्थवाला (शब्द)। पु० कोई अस्वायी पदार्थ। -**(रि)आश-पु०** सचारी भाव, एक प्रकारके भाव जो स्थायी न रहकर सभी रसोंमें म्हायकके रूपमें सचरण करते हैं (आचार्योंने इनकी सख्या तैत्तिरीय या चौतीस मानी है-निर्वेद, ग्लानि, शंका, अवस्था, मद, श्रम, आरुच्य, हैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, धृति, श्रोत्रा, चपलता, हर्ष, आवेग, जडता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, क्षुप्त, विषेष, अमर्ष, अवहित्थ, उग्रता, मति, उपालंन, व्याधि, उन्माद, मरण, नास, वितर्क। -सा०)।

व्यपिमान-पु० [सं०] गलत धारणा; अंत दृष्टिकोण।

व्यपिहास-पु० [सं०] परिहास, उपहास।

व्यपिचार-पु० [सं०] दुष्कर्म; अपराध; परिवर्तन।

व्यपि-वि० [सं०] मेघरहित।

व्यपि-वि० [सं०] अम्लसे रहित।

व्यप-पु० [सं०] क्षय, लोप, नाश; धन आदिका किसी काममें लगना, खर्च (आयका उलटा); त्याग; लग्नसे वारहवों स्थान; एक संस्तर; रुपया-पैसा; एक नाग।

-**कह-वि०** रुपया देनेवाला। -**करण-करणक-पु०** वेतन बढ़ानेवाला कर्मचारी। -**गत-गुण-वि०** सब खर्च कर डालनेवाला। -**गृह-पु०** लग्नसे वारहवों स्थान। -**प्राकमुख-वि०** कज्ज। -**भवन-स्थान-पु०** दे० 'व्यव-गृह'। -**शाली (सिद्ध)-शालि-वि०** अपव्ययी। -**सह-वि०** रिक्त न होनेवाला (कोश)।

-**सहिष्णु-वि०** धनकी हानि बर्दाश्त करनेवाला।

व्यपक-वि० [सं०] खर्च करनेवाला; रुपया देनेवाला।

व्यवमान-वि० [सं०] अपव्ययी।

व्यपित-वि० [सं०] खर्च, व्यय किया हुआ।

व्ययी (यिद्ध)-वि० [सं०] खर्च करनेवाला; क्षय होनेवाला।

व्ययी-वि० [सं०] अलरहित; उरपीत।

व्ययी-वि० [सं०] निरूपयोगी, बेकार; निष्फल; संपत्तिहीन, धनहीन; बेहक; बेमानी; असंगत। अ० घोड़ी, बिना मत-उत्तरे, नाटक। -**नामक-नामा (भञ्ज)-वि०** जिसमें नामके अनुसूय गुण न हों। -**यक्ष-वि०** विकल्पयत्न; जिसका प्रयत्न बेकार हो।

व्ययीक-वि० [सं०] निष्फल, निरर्थक।

व्ययीक-वि० [सं०] असत्य; अभिय; कटकर; अनुचित, अकार्य; अपरिचित; वैलक्ष्य; असत्य नहीं। पु० नागर; विट; अभिय वस्तु; दुष्प्रकार; अपराध; कामज

अपराध; छल, करेब; मिथ्यात्व; वैपरीत्य; अभ्रियता; कष्टकारिता, दुराई। -निष्कास-पु० शोकोच्छ्वास।

व्यवकलन-पु० [सं०] पार्थक्य, जुदाई; एक सस्यामंसे दूसरी सस्या घटाना, बाकी, घटाव।

व्यवकलित-वि० [सं०] विद्योमित; होमित; व्यवकलन किया हुआ, घटाया हुआ। पु० दे० 'व्यवकलन'।

व्यवकलित-श्री० [सं०] मिश्रण।

व्यवकीर्ण-वि० [सं०] मिश्रित; 'मे भरा हुआ; फैलाया हुआ।

व्यवकीर्ण-पु० [सं०] गाली-गलौज; निंदा, अपशब्द, गाली।

व्यवशाल-वि० [मं०] निमग्न, गोता लगाया हुआ।

व्यवशाली-वि० [सं०] नीचे लाया हुआ; झुकाया हुआ।

व्यवशिष्ट-वि० [सं०] काटकर अलग किया हुआ; पृथक् किया हुआ; विभक्त; मिश्र; विशेषित; बाधित।

व्यवच्छेद-पु० [सं०] काटकर अलग करना; विभाजन; शब्दच्छेद; पृथक्त्व; पृथक् करना; अलग दिखलाना; निश्चय; (बाण आदि) चलाना; छुटकारा; विशेषता दिखलाना; पुस्तकका अध्याय या खंड। -विद्या-श्री० शरीर-रचना-विज्ञान।

व्यवच्छेदक-वि० [सं०] भिन्न करनेवाला, विशेषता दिखलानेवाला, अलग करनेवाला।

व्यवदात-वि० [सं०] साफ; चमकीला।

व्यवदान-पु० [सं०] शुक्ति, संस्कार, सफाई।

व्यवदीर्घ-वि० [मं०] लटित, ओं टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; हतभुक्ति।

व्यवदा-श्री० [सं०] वह जो बीचमें आ पड़े, व्यवधान; परदा, आवरण; छिपाव।

व्यवधाता(तु)-वि० [सं०] पृथक् करनेवाला, बीचमें आ पड़नेवाला; परदा करनेवाला, आग करनेवाला।

व्यवधान-पु० [सं०] बीचमें पड़नेवाली वस्तु; बाधा; ओटमें हो जाना; आवरण, परदा; पार्थक्य, विभाग; अत, समाप्ति; अवकाश।

व्यवधावक-वि० [सं०] परदा करनेवाला, ओटमें करनेवाला; ढकनेवाला; खलल डालनेवाला, बाधक।

व्यवधारण-पु० [सं०] निर्धारण, विशेष लक्षण वा व्याख्या; ठीक-ठीक निश्चय करना।

व्यवधि-श्री० [सं०] छिपाना, ओटमें करना, बीचमें पड़ना।

व्यवधृत-वि० [सं०] उदासीन, विरक्त।

व्यवभासित-वि० [सं०] आलोचित किया हुआ।

व्यवकीर्ण-वि० [सं०] देखा हुआ।

व्यवसाय-पु० [सं०] गिरना; गिर जाना (पृथक् हो जाना)।

व्यवसर्ग-पु० [सं०] मुक्त करना, छुटकारा; वितरण, बाँटना; देना; परिस्थान।

व्यवसाय-पु० [सं०] प्रयत्न, प्रयास, उद्योग; अभिप्राय; संकल्प; व्यापार, कारबार; कर्म; प्रथम अनुभूति; अवस्था; कौशल; छल; कोई पेशा करना; आचरण; रीति; विष्णु; शिव; धर्मका एक पुत्र; जीविका; उचित। -बुद्धि-वि०

वृद्धिर्नय। -वर्ती(तिष्ठ)-वि० वृद्धिश्चक्रे साध काम करनेवाला।

व्यवसायात्मक-वि० [सं०] संकल्प; उत्साहसे पूर्ण।

व्यवसायात्मिका-वि० श्री० [सं०] दे० 'व्यवसायात्मक'।

-बुद्धि-श्री० निश्चयात्मिका बुद्धि।

व्यवसायी(विन्)-वि० [सं०] उस्ताही, उधमी, परिशमी; वृद्धसंकल्प; अव्यवसायी; कोई काम करता हुआ; किसी पेशेमें लगा हुआ। पु० व्यापारी; कारबार करनेवाला; सिन्धी।

व्यवसित-वि० [सं०] जिसके लिए प्रयत्न, उद्योग किया गया हो; आरंभ किया हुआ; जिसके लिए निश्चय या संकल्प किया गया हो; कृतसंकल्प; आभोजित; प्रयत्न, उद्यम करनेवाला; उत्साही; छला हुआ, बंचित; हताश-पूरा किया हुआ। पु० छल; निश्चय, संकल्प।

व्यवसिति-श्री० [सं०] संकल्प, निश्चय।

व्यवस्था-श्री० [सं०] प्रबंध, इंतजाम; आधिक्य अंतर; एक स्थानपर रहना, स्थिरता; वृद्धता, अव्यवसाय; निश्चित मीमा; विधान; अवस्था, स्थिति; अवसर, सार्त; वस्तुओं की स्थिति या क्रम, उन्हें करीनेसे रखना; पार्थक्य। -पत्र-पु० किसी विषयका लिखित शास्त्रीय विधान; दस्तावेज।

व्यवस्थाता(तु)-वि०, पु० [मं०] निश्चय करनेवाला; किसी विषयपर व्यवस्था देनेवाला; प्रबंधक।

व्यवस्थान-पु० [सं०] प्रबंध; निश्चय; विधान; स्थिरता; वृद्धता; अव्यवसाय; पार्थक्य; अवस्था, विष्णु। -प्रज्ञप्ति-श्री० एक बहुत बड़ी सस्या (शौ०)।

व्यवस्थापक-पु० [मं०] प्रबंध करनेवाला; करीनेमें रखनेवाला; निश्चय करनेवाला; किसी विषयपर व्यवस्था देनेवाला; व्यवस्थापिका सभाका सदस्य।

व्यवस्थापन-पु० [मं०] व्यवस्था करना; विधिपूर्वक रखना; निश्चय करना, निर्धारण, विधानका निर्देशन; रखना।

व्यवस्थापनीय-वि० [मं०] व्यवस्थापन करने योग्य।

व्यवस्थापिका सभा-श्री० [मं०] विधान बनानेवाली वह सभा जिसके अधिकतर सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित किये गये होते हैं।

व्यवस्थापित-वि० [सं०] जिसकी व्यवस्था की गयी हो; विधिपूर्वक रखा या रखवाया हुआ; नियमित।

व्यवस्थाप्य-वि० [मं०] जिसका विधान, निश्चय करना हो। पु० व्यवस्थित किये जानेकी स्थिति।

व्यवस्थित-वि० [सं०] ठीक ढालमें किया हुआ, विधिपूर्वक रखा हुआ; व्यवृद्ध; स्थित; निश्चित; निर्णयित; विधान द्वारा निर्दिष्ट; अवलंबित, आधृत जो ठहरा हो; अधिकारी; वर्तमान। -विभाषा-श्री० निश्चित विकल्प (व्या०)। -विषय-वि० जिसका क्षेत्र सीमित हो।

व्यवस्थिति-श्री० [सं०] अलग रखा जाना, भेद किया जाना; ठहरना, रहना; लगा रहना, अव्यवसाय; निश्चित नियम।

व्यवहार-पु० [सं०] मुकदमा लड़ना; मुकदमेकी पेशी।

व्यवहारां(तु)-वि० [सं०] कारबार करनेवाला; रीति-

नीतिका पालन करनेवाला । पु० किसी कारबारका प्रबंधक या मंचालक; विचारपति; मुकदमा लड़नेवाला; बादी; माफी; वैय्य ।

व्यवहार-पु० [सं०] कार्य; अनिवार्य कार्य; आचरण; बर्ताव; प्रयोग; कारबार; पेशा; व्यापार; महाजनी; बिषय; भाजरी; रीति; प्रथा; रिवाज; शर्त; पण; स्थिति; विवाद; मुकदमा; मुकदमेका कारण; मुकदमेका विचार; दंड; कारबार मंचालनेकी योग्यता; औचित्य (विधानके विचार-मे); संबंध; पद; छत्र; एक वृक्ष । -**ज**-वि० दुनियाके तीर-सरीकोंका जानकार; अपना कारबार संभालने योग्य, बालिग; मुकदमेकी कारबारमें ममझनेवाला । -**रत्न**-पु० आचारशास्त्र । -**द्वर्शन**-पु० मुकदमेकी जाँच, मुकदमेका विचार । -**इसा**-स्त्री० जीवनकी साधारण स्थिति । -**द्रष्टा**(दृ)-पु० विचारपति । -**पद**-पु० व्यवहार, मुकदमेका विषय । -**बाद**-पु० मुकदमेके चार चरणों-पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष, क्रियापाठ और निर्णयपाठ-मेंमे कोई; निर्णयपाठ । -**प्राप्त**-वि० जिसकी अवस्था सोलह वर्षमें अधिक हो गयी हो, बालिग । -**मातृका**-स्त्री० मुकदमे-की कारबारमें; न्याय-कार्यमें संबंध रखनेवाला कोई विषय । -**मार्ग**-पु० मुकदमेकी कारबारका क्रम, व्यवहार-विषय । -**लक्षण**-पु० मुकदमेकी जाँच-सूचकी विशेषता । -**विधि**-स्त्री० व्यवहारका विधान, न्यायशास्त्र । -**विषय**, -**स्थान**-पु० मुकदमेका विषय । -**शास्त्र**-पु० वह शास्त्र जिसमें विवाद-मन्थनी बातोंका विवेचन किया गया हो । -**सिद्धि**-स्त्री० धर्मशास्त्रके अनुसार मुकदमका निर्णय । -**न्याय**-स्त्री० मुकदमेके विचारसे गतव रखनेवाली कारबार ।

व्यवहारक-पु० [सं०] व्यापारी ।

व्यवहारार्थ-पु० [सं०] शीतानी और चौजदारीके कानून ।
व्यवहारार्थ-पु० [सं०] मुकदमेकी कारबारका कोई हिस्सा ।

व्यवहारामिश्र-वि० [सं०] अमिश्रित, त्रिमके खिलाफ मुकदमा दायर किया गया हो ।

व्यवहारार्थी(विन्)-पु० [सं०] बादी, मुदर ।

व्यवहारासन-पु० [सं०] न्यायासन, विचारालय ।

व्यवहारास्पद-पु० [सं०] करिबाद, नालिश ।

व्यवहारिक-वि० [सं०] कारबार-संबंधी; कारबारमें लगा हुआ; कानून-संबंधी; मुकदमेबाज; प्रचलित, व्यवहारमें आनेवाला । -**जीब**-पु० हानिमय कोष (बैंक) ।

व्यवहारिका-स्त्री० [सं०] रीति-रिवाज; शास्त्र; दंडुरी ।

व्यवहारी(रिन्)-वि० [सं०] कारबारमें लगा हुआ; मुकदमा लड़नेवाला; प्रचलित, जो व्यवहारमें आता हो ।
व्यवहारी-वि० [सं०] व्यवहारके योग्य, काममें लाने योग्य; करने योग्य; जिसके साथ व्यवहार किया जा सके, जिसका साथ किया जा सके; प्रचलित; प्रयोगमें लाने योग्य; मुकदमेके लायक (बिषय) । पु० खजाना ।

व्यवहित-वि० [सं०] अलगा रखा हुआ, किसी वस्तुके द्वारा पृथक् किया हुआ; रोका हुआ, बाधित; आधुन, पड़ा किया हुआ, छिपाया हुआ; दूरकी; जिसका लगातार संबंध न हो; दूरा किया हुआ, संघादित; उपेक्षित, छोड़ा

हुआ; विरोधी, सल्ला करनेवाला; नीचा दिखाया हुआ ।

व्यवहित-वि० [सं०] आचरित, अनुष्ठित; व्यवहार या प्रयोगमें लाया हुआ । पु० व्यापार; संपर्क ।

व्यवहिति-स्त्री० [सं०] आचरण, कार्य; संपर्क; व्यापार; मुकदमा; शांत; अकवाइ ।

व्यवहार-पु० [सं०] भाषा; पार्थक्य; न्यायि, प्रवेश; परिवर्तन; मैथुन; लंपटता, कामुकता; आवृत्त करना; कोप; अवकाश; प्रकाश, कति, तेज; बेबाई ।

व्यवहारी(विन्)-वि० [सं०] पृथक् करनेवाला, बीचमें आनेवाला; व्याप्त होनेवाला, व्यापक; कामुक; गुलनेवाला । पु० लपट; कामोदीपक पदार्थ ।

व्यवेत-वि० [सं०] पृथक् किया हुआ (बीचमें अक्षर आदि रखकर); भिन्न ।

व्यसन-वि० [सं०] भोजनमें परहेज, उपवास करनेवाला ।

व्यष्टक-पु० [सं०] काली मरसों, राई ।

व्यष्टका-स्त्री० [सं०] कृष्णपक्षकी प्रतिपदा ।

व्यष्टि-स्त्री० [सं०] प्राप्ति; सफलता; एक होनेका भाव; ममहिका एक स्वतंत्र अंश । -**बाद**-पु० व्यष्टिकी स्वतंत्र सत्ता तथा अधिकार माननेका सिद्धांत ।

व्यष्ट-पु० [सं०] ताँवा ।

व्यसन-पु० [सं०] निकालना; पृथक् करना, अंग करना; हानि; नाश; पराजय; खामी, घुटि; सकट, विपत्ति; दुर्भाग्य; (सूचिका) अस्त होना; पाप, दुराचरण; दुरी आदत, लत; संलक्षता; बहुत ज्यादा आदी होना; दंड; अयोग्यता; निष्फल प्रयत्न; बाध; व्यष्टि, एकता; त्रिष विषय । -**काल**-पु० सकटका समय, दुर्दिन । -**प्राहारी**(रिन्)-वि० कट देनेवाला; (शत्रुके) कमजोर अंगपर वार करनेवाला । -**प्राप्ति**-स्त्री० दुर्दिन आना । -**ब्रह्मचारी**(रिन्)-पु० साथ-साथ दुःख भोगनेवाला । -**महार्णव**-पु० विपत्तिका मागर । -**रक्षी**(किन्)-वि० संकटसे बचानेवाला । -**बागुरा**-स्त्री० सकटका जाल । -**संस्थित**-वि० किसी व्यसनमें संलग्न रहनेवाला ।

व्यसनाकाल-वि० [सं०] संकटप्रसूत ।

व्यसनागम-पु० [सं०] दुर्दिनका आना ।

व्यसनातिभार-पु० [सं०] बहुत बड़ी विपत्ति । वि० विपत्तिके भारमें दबा हुआ ।

व्यसनाभय-पु० [सं०] संकटका गुजर जाना ।

व्यसनाविश्रुत, **व्यसनाप्युत**-वि० [सं०] संकटमें पड़ा हुआ, विपदप्रसूत ।

व्यसनार्त-वि० [सं०] संकटापन्न ।

व्यसनी(रिन्)-वि० [सं०] जिसे किसी विषयका बहुत शोक हो; विषयासक्त; किसी बुरी चीजका आदी; पापी; बदनसीध लगनेके साथ परिश्रम करनेवाला, किसी कार्यमें जी-जानसे लगा हुआ ।

व्यसनोत्सव-पु० [सं०] वानोत्सव, शैरबीचक ।

व्यसनोद्य-पु० [सं०] दुर्दिनका आना ।

व्यसि-वि० [सं०] खहरोना ।

व्यसु-वि० [सं०] निजीब, शृत ।

व्यस्त-वि० [सं०] फैला हुआ, उछाला हुआ; तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ; हटाया हुआ; निकाला हुआ,

पृक् किया हुआ; व्यष्टि रूपमें ग्रहण किया हुआ; समास-रहित (व्या०); विभिन्न; वक्तावा हुआ; ध्रुव; जो क्रममें न हो, जो ठीक हास्यमें न हो; उल्टा हुआ; व्यास; लिखित; कार्यादिमें संलग्न, उलझा हुआ; परिवर्तित । -केश-वि० जिसके बाल बिखरे हों । -व्यास-वि० ऊपर-छावक; सिमटा हुआ (विस्तर आदि) । -पद्-पु० अदाकृतमें दिखा हुआ मङ्गक वयान, प्रस्थारोप; समास-रहित पद (व्या०) । -कृति-वि० (शब्द) जिसका वास्तविक अर्थ बदल दिया गया हो ।

व्यस्तार-पु० [सं०] मस्त हाथीके मस्तकमें दानका बहना, मरलाव ।

व्यस्तक-वि० [सं०] अस्थिहीन ।

व्यह(न्), व्यह-वि० [सं०] एक ही दिन न होकर भिन्न दिवसोंपर होनेवाला ।

व्याकरण-पु० [सं०] वह विद्या जिसके द्वारा भाषाके शब्दों, उनके रूपों, प्रयोगों आदिका ज्ञान होता है; भेद, अंतर; व्याख्या; प्रकाशन; अविवक्षाणी (बौ०); निर्माण, रचना; धनुष्की टंकार । -प्रक्रिया-स्त्री० शब्द-व्युत्पत्ति । -सिद्ध-वि० जो व्याकरणके नियमके अनुसार हो ।

व्याकरणक-पु० [सं०] गुरा व्याकरण ।

व्याकरणोत्तर-पु० [सं०] शिव ।

व्याकर्ता(र्तृ)-पु० [सं०] लक्षा, परमेश्वर; व्याख्याकार ।

व्याकर्षण-पु० [सं०] आकृष्ट करना, छुमाना ।

व्याकार-पु० [सं०] रूप-परिवर्तन; विकार, अविकृति ।

व्याकीर्ण-वि० [सं०] फैलाया, बिखेरा हुआ; अस्त-व्यस्त; व्याकुल, ध्रुव । पु० अस्त-व्यस्तता; गडबड ।

व्याकुलित-वि० [सं०] मुका हुआ, सिकुचा हुआ; बक, कुटिल ।

व्याकुल-वि० [सं०] वक्तावा हुआ, हतनुद्धि; व्यग्र; भीत; अभिभूत; किसी काममें लगा हुआ; तेजीसे इधर-उधर चलाता हुआ, कपित (जैसे विषय) । -चित्त-चैता(तस्), -मनस-मना(नस्), -हृदय-वि० जिसका दिल बहुत वक्तावा हुआ हो, व्यग्र । -सूर्चज-वि० जिसके बाल बिखरे हों । -लोचन-वि० जिसकी दृष्टि मंद हो गयी हो ।

व्याकुलत्वा(व्यन्त्र)-वि० [सं०] दे० 'व्याकुल चित्त' ।

व्याकुलित-वि० [सं०] वक्तावा हुआ; भीत । -खेलज-मना(नस्), -हृदय-वि० डरा हुआ; वक्तावा हुआ; अभिभूत ।

व्याकुलेश्विष-वि० [सं०] दे० 'व्याकुल-चित्त' ।

व्याकृत-पु० [सं०] मानसिक कष्ट; अफसोस ।

व्याकृति-स्त्री० [सं०] छल, कपट; गुरी नीयत ।

व्याकृत-वि० [सं०] पृक्-पृथक् किया हुआ; मकट किया हुआ; विद्वेषण किया हुआ, जिसकी व्याख्या की गयी हो; रूपांतरित, परिवर्तित, विकृत ।

व्याकृति-स्त्री० [सं०] पार्थक्य, भेद, अंतर; विद्वेषण; व्याख्या; रूप-परिवर्तन; व्याकरण ।

व्याकोच-वि० [सं०] झिजा हुआ, विकसित ।

व्याकोच-पु० [सं०] छहन, विरोध ।

व्याकोक्ष, व्याकोच-वि० [सं०] विकासप्राप्त, पूर्णतः

विकसित, प्रकृष्ट ।

व्याकोष-पु० [सं०] गाड़ी देना, भरसना करना; चिह्नाना ।

व्याक्षिप्त-वि० [सं०] फैलाया हुआ; मरा हुआ; हतनुद्धि, रौराव ।

व्याक्षेप-पु० [सं०] वक्तावट; अस्त-व्यस्तता; बाधा; क्लेश; मत्संज्ञा ।

व्याक्षेपी(विन्)-वि० [सं०] दूर करनेवाला; हटानेवाला ।

व्याक्षोभ-पु० [सं०] क्षोभ, मानसिक अशांति ।

व्याख्या-स्त्री० [सं०] कठिन पदादिका अर्थ स्पष्ट करने-वाला विवरण, टीका; वर्णन । -गम्य-वि० व्याख्याके जरिये समझा जानेवाला । पु० अस्पष्ट बयान । -व्यान-पु० व्याख्यान-भवन; विद्यालय । -स्वर-पु० मध्यम स्वर (न कँचा, न नीचा) ।

व्याख्यात-वि० [सं०] जिसकी व्याख्या, टीका की गयी हो; वर्णित; कथित; प्रामुत (?) ।

व्याख्यातव्य-वि० [सं०] व्याख्या करने योग्य, जिसकी व्याख्या करनी हो ।

व्याख्याता(न्)-वि०, पु० [सं०] व्याख्या करनेवाला; भाषण करनेवाला ।

व्याख्यान-पु० [सं०] टीका करना, व्याख्या करना; समता द्वारा स्मरण दिलाना; वर्णन; भाषण, वक्तृता ।

-शास्त्र-स्त्री० व्याख्यान, भाषणके लिए बना हुआ व्यान; विद्यालय ।

व्याख्येय-वि० [सं०] व्याख्या करने, समझाने लायक ।

व्याख्येय-पु० [सं०] राखनेकी क्रिया, व्यवर्णन; ग्रथन, आलोचन ।

व्याख्येय-वि० [सं०] रगडा हुआ, मथित, आलोकित ।

व्याचात-वि० [सं०] चोट, आपत्त, पराजय; क्षोभ; झल्लर; बाधा, विघ्न; (दो कथनोंका) परस्पर विरोध; एक काव्यात्मिक जहाँ एक व्यक्ति द्वारा जिन उपायसे जो कार्य किया जाय, वहाँ अन्य व्यक्ति द्वारा उसी उपायसे उसको विपरीत किया जाय अथवा जहाँ परस्पर विरोधिनी क्रियाओं द्वारा एक ही कार्यकी सिद्धि होना दिखलाया जाय; सत्ताईस योगोंमेंसे एक (योग) ।

व्याचातक, व्याचाती(सिद्ध)-वि० [सं०] आपात करने-वाला; विरोध, प्रतिरोध करनेवाला; बाधक ।

व्याचासिम-पु० [सं०] घातक आघात लगनेपर भोजन-त्यागसे तत्काल होनेवाली मृत्यु ।

व्याचारण-पु० [सं०] छिन्नकना, छेदा देना ।

व्याचारित-वि० [सं०] जिसपर घी, तेलका छेदा दिया गया हो ।

व्याचुदन-पु० [सं०] लौटना, वापस होना ।

व्याचुद्ध-वि० [सं०] पूँजता हुआ, शब्दावसान ।

व्याचूर्णित-वि० [सं०] चक्कर खाया हुआ; लुढ़का हुआ ।

व्याघ्र-पु० [सं०] एक हिंस्र जंतु, बाघ; (समासांतमें विशेषण रूपमें प्रयुक्त) सर्वश्रेष्ठ, प्रधान; रक्त परंश; करंज; एक राक्षस । -तिरि-पु० एक दुराणिक पर्वत । -ग्रीव-पु० एक जनपद । -चंडा-चंडी-स्त्री० एक लता, किंकिणी । -चर्म(न्)-पु० शक्की साल । -लक्ष-पु० परशु वृक्ष । -चंद्र-पु० एक पुष्प । -नक्ष-

पु० बाघका नख या पंजा; नखी नामक गंधद्रव्य; बाघके नखका क्षत; एक कंद । -**नखक**-पु० एक गंधद्रव्य; एक प्रकारका नखक्षत । -**नखी**-खी० नखी नामक गंधद्रव्य । -**नायक**-पु० शृगाल । -**पद्**-पु० एक पौधा । -**पद्**-वि० बाघके-से पैरोंवाला । एक पौधा । -**पात्**-(**रु**)-पु० विस्कंत; एक मुनि । वि० दे० 'व्याघ्रपद्' । -**पाद्**-पु० विस्कंत । वि० बाघके-से पैरोंवाला । -**पादपी**-खी० विस्कंत । -**पुच्छ**-**पुच्छक**-पु० बाघकी पूँछ; दरंड । -**पुष्प**-पु० नख नामक गंधद्रव्य । -**मुख**-पु० एक पहाड़; एक जनपद; विलाव । वि० बाघ जैसे मुखवाला; (मकान) जिसका सामनेका भाग चौड़ा और पीछेका संकरा हो; गोमुखका उल्टा (ऐसा मकान अमंगलकारी माना जाता है) । -**रूपा**-खी० कप्याकर्णदी । -**लोम**(**रु**)-पु० शेरके बाल; मुँहपरके बाल, मूँछ । -**वक्त्र**-वि० बाघके-से मुखवाला । पु० बिटाल; शिवका एक गण । -**व्या**(**व्य**)-पु० व्याघ्र जैसा कुत्ता । -**मेघक**-पु० शृगाल । -**हस्त**-पु० रक्त दरंड ।
व्याघ्राक्ष-पु० [सं०] स्कंदका एक अनुचर; एक राक्षस पु० । वि० बाघकी-सी आँखोंवाला ।
व्याघ्राट-पु० [सं०] लवा पक्षी ।
व्याघ्राण-पु० [सं०] संरक्षक की क्रिया ।
व्याघ्राद्वनी, **व्याघ्राद्विनी**-खी० [सं०] निवृत्ता ।
व्याघ्रायुध-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य; नख ।
व्याघ्रास्थ-पु० [सं०] पैरों; शेरका मुख । वि० शेरके-ने मुखवाला ।
व्याघ्रास्था-खी० [सं०] एक शैव देवी ।
व्याघ्री-खी० [सं०] बाघिन; कंटकारी; एक तरहकी कौड़ी; एक गंधद्रव्य; नखी; एक शैव देवी ।
व्याज-पु० [सं०] छल, धोखा, फरेब; बहाना; कौशल, धूर्तता; दुष्टता । -**खेद**-पु० बनायी मकान । -**गुरु**-पु० कपनेसे गुरु जान पड़नेवाला, नकली गुरु । -**तपोधन**-पु० नकली तपस्वी । -**निद्रा**-खी० स्तुतिकी ओटमे निद्रा; एक काव्यालंकार जहाँ किसीकी मृत्तिमें बस्तुतः निद्रा ही प्रकट हो अथवा जहाँ एककी निद्रा करनेसे किसी अन्यकी निद्रा प्रकट हो । -**निद्रित**-वि० सोनेका बहाना करनेवाला । -**व्यवहार**-पु० कौशलपूर्ण, धूर्ततापूर्ण व्यवहार । -**सखी**-खी० भक्तकी सहेली । -**सुख**-वि० दे० 'व्याजनिद्रित' । -**स्तुति**-खी० निद्राके बहाने मृत्ति; एक काव्यालंकार जहाँ देखनेमें तो किसीकी निद्रा की जाय किंतु समझनेपर वह स्तुति प्रकट हो अथवा जहाँ किसी एककी बकाई करनेसे अन्यकी बकाई जान पड़े । -**हस्त**-वि० धोखा देकर मारा हुआ ।
व्याजानिग्रह-पु० [सं०] बनाटी राय ।
व्याजालुप-पु० [सं०] बरखा हुआ, नकली नाम ।
व्याजिज्ञ-वि० [सं०] झुका हुआ, कुटिल ।
व्याजी-खी० [सं०] लौकिके बाद कुछ दे देना, धनुआ ।
व्याजोक्ति-खी० [सं०] छलपूर्ण बात; एक काव्यालंकार जहाँ प्रकट होती हुई वस्तुका कपटमें बहाना आदि बनाकर, गोपन किया जाय ।
व्याह-पु० [सं०] (व्याघ्रादि) शिकारी जानवर; सर्प; लाल,

दुष्ट; इंद्र । वि० देवी; दुराई करनेवाला ।
व्याहायुध-पु० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य ।
व्याहि-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध वैयाकरण ।
व्यास-वि० [सं०] खोला हुआ, फैलाया हुआ (मुखके लिए) । पु० खोला वा फैलाया हुआ मुख ।
व्याचानन, **व्याचास्थ**-वि० [सं०] जिसका मुख खुला हो ।
व्याच्युक्षी-खी० [सं०] जलक्रीड़ा; खेलमें एक दूसरेपर पानी उछालना ।
व्यादान-पु० [सं०] खोलने, फैलानेकी क्रिया ।
व्यादित-वि० [सं०] खोला, फैलाया हुआ ।
व्यादित-पु० [सं०] विष्णु ।
व्यादिष्ट-वि० [सं०] निर्दिष्ट; आदिष्ट; व्याख्यात; पहले ही कहा हुआ ।
व्यादीर्घ-वि० [सं०] फैलाया हुआ ।
व्यादीर्घास्थ-पु० [सं०] सिंह ।
व्यादेश-पु० [सं०] विशेष आदेश ।
व्याध-पु० [सं०] शिकार द्वारा जीविका चलानेवाली एक संकर जाति; वह देश करनेवाला आदमी, बहेलिया; नीच वा कमीना आदमी । -**गति**-खी० बहेलियेकी (जानवरोंकी झुलानेकी) मोली । -**भ्रति**-पु० हिरन ।
व्याधक-पु० [सं०] शिकारी, बहेलिया ।
व्याधाम, **व्याधाव**-पु० [सं०] (इंद्रका) वज्र ।
व्याधि-खी० [सं०] पीड़ा; रोग; कुष्ठ; कष्ट पहुँचानेवाला व्यक्ति वा वस्तु (ज०) कुष्ठ; एक सचारी भाव; विद्योगादि-के कारण अवराधिका उत्पन्न होना (सा०) । -**कर**-वि० रोग उत्पन्न करनेवाला, अस्वास्थ्यकर । -**खल**-पु० व्याघ्रनल नामक गंधद्रव्य । -**ग्रस्त**-वि० रोग-ग्रस्त, रण, बीमार । -**घात**, **घातक**, **खिद्य**-पु० आरवध वृक्ष । -**व्य**-वि० रोगनाशक । पु० आरवध । -**निग्रह**-पु० रोगका दबाया जाना । -**निर्जब**-खी० रोगका दमन । -**पीडित**-वि० रोगग्रस्त । -**बहुल**-वि० प्रायः रोगोंका शिकार होनेवाला (ग्रामादि) । -**भय** पु० रोगका भय । -**मंदिर**-पु० शरीर । -**पुक्त**-वि० रण्य । -**रहित**-वि० रोगमुक्त, निरोग । -**रिपु**-पु० आरवध; एक प्रकारका आरवध । -**विपरीत**-वि० जो रोगके प्रतिकूल पड़े । पु० रोगके विपरीत प्रभाव उत्पन्न करनेवाली दवा । -**समुद्देशीय**-वि० रोगका स्वरूप बतलानेवाला । -**स्नान**-पु० शरीर । -**हंता**(**रु**)-वि० दे० 'व्याधिघ्न' । पु० वाराही कंद; आरवध । -**हर**-वि० रोगनाशक ।
व्याधिघ्न-वि० [सं०] रोगग्रस्त, रण्य ।
व्याधी-खी० रोग ।
व्याधी(**घिन्**)-वि० [सं०] भेदन करनेवाला; जहाँ शिकारी प्रायः जाते हैं; रोगग्रस्त ।
व्याधूत-वि० [सं०] कंपनयुक्त; कंपित ।
व्याघ्मातक-पु० [सं०] कृष्ण हुआ शव ।
व्याघ्र-पु० [सं०] शिव । वि० भेदन करने योग्य (शिरा आदि) ।
व्याघ्रार्त-वि० [सं०] रोगग्रस्त ।
व्याघ्रपक्षमन-पु० [सं०] रोगमुक्त करना ।

व्यान-पु० [सं०] शरीरत्वं पाँच बाहुओंमेंसे एक जो सारे शरीरमें व्याप्त रहती है। -**व्या०** स्त्री० व्यान बाहु देने-वाली शक्ति। -**व्या०** वि० व्यान बाहुको कायम रखने-वाला।

व्यानत-वि० [सं०] झुका हुआ, जिसका सिर जमीनकी ओर झुका हो। पु० एक प्रकारका रतिबंध। -**करण-पु०** एक रतिबंध।

व्यानद्ध-वि० [सं०] पररपर संबद्ध।

व्यानञ्ज-वि० [सं०] झुका हुआ, नत।

व्यापक-वि० [सं०] दूरतक, सर्वत्र फैला हुआ, जो किसी चीजके सारे विस्तारमें हो; आच्छादक; जिसमें वहसके सारे विचारणीय विषयोंका अंतर्भाव हो; जो एक भावने किसीमें हमेशा रहता हो; जो व्याप्यने अधिक विस्तृत हो (व्या०)। पु० वह गुण जो पदार्थमें हमेशा रहे (व्या०)। -**व्यास-पु०** एक तरहका तांत्रिक अंगव्यास।

व्यापक-स्त्री० व्यापकता-‘मधुकरके पठये ते तुम्हरी व्यापक न्यून परो’-सूर।

व्यापसि-स्त्री० [सं०] संकटमें पकना; असफलता; हानि; बरबादी; मृत्यु; किसी अक्षरका लोप या उसकी जगह दूसरे अक्षरका आना।

व्यापद्-स्त्री० [सं०] मकट, दुर्दिन; नाश; मृत्यु।

व्यापन-पु० [सं०] सर्वत्र फैलना, भरना, व्याप्त होना, आच्छादन करना, ढकना।

व्यापना-अ० कि० व्याप्त होना।

व्यापनीय-वि० [सं०] व्याप्त करने योग्य।

व्यापन्न-वि० [सं०] संकटग्रस्त; नष्ट; मृत; क्षुप्त; परिवर्तित (स्वरादिके आगमके कारण-व्या०)।

व्यापाद्-पु० [सं०] नाश, बरबादी; मृत्यु; जुरी नीयन, द्वेषयुक्ति; उस पापोंमेंसे एक (बी०)।

व्यापादक-वि० [सं०] नाशकारी; धातक (जैसे रोग)।

व्यापादन-पु० [सं०] अपकारविता; बध; नाश, बरबादी।

व्यापादनीय, व्यापाद्य-वि० [सं०] नष्ट, बध करने योग्य।

व्यापादित-वि० [सं०] नष्ट किया हुआ, ध्वस्त; हन, मारित; दौहवित्त।

व्यापार-पु० [सं०] कार्य, काम; क्रिया; कारबार, पेशा; बर्तनिय; प्रवीण; अभ्यास; उद्योग; प्रभाव; सहायता करना; किसी बातमें दखल देना।

व्यापारक-वि० [सं०] व्यापारका, व्यापार करनेवाला।

व्यापारण-पु० [सं०] किसी कार्यमें नियोजित करना।

व्यापारिक-वि० [सं०] व्यापार-संबंधी।

व्यापारित-वि० [सं०] काममें लगाया हुआ; किसी व्यान-पर रखा या जमाया हुआ।

व्यापारी-वि० व्यापार-संबंधी।

व्यापारी(विन्)-पु० [सं०] काम करनेवाला; रोक्मारी, व्यवसायी; अभ्यास करनेवाला। वि० किसी व्यवसाय या कार्यमें लगा हुआ।

व्यापित-वि० [सं०] व्याप्त कराया हुआ।

व्यापी(विन्)-वि० [सं०] व्याप्त होनेवाला; सर्वत्र फैलने-वाला; आच्छादक। पु० विष्णु; व्याप्त होनेवाला पदार्थ।

व्यापीत-वि० [सं०] गहरे पीले रंगका।

व्यापुत-वि० [सं०] कार्यदिमें संलग्न; रखा हुआ; जमाया हुआ। पु० मंत्री; उच्च कर्मचारी।

व्यापृति-स्त्री० [सं०] कार्य; व्यवसाय; उद्योग, क्रिया; पेशा; अभ्यास।

व्याप्त-वि० [सं०] पूरित; भरा हुआ; आच्छादित; समा-क्रांत; स्थापित; परिवर्तित; प्राप्त; ढकनेवाला; अंतर्भूत; प्रसिद्ध; फैला हुआ; नित्य साथ रहनेवाला।

व्याप्ति-स्त्री० [सं०] व्याप्त होनेका भाव; एक पदार्थमें दूसरेका पूर्णतः मिल जाना; नित्य साहचर्य; विश्वजनीन नियम; पूर्णता; प्राप्ति; व्यापकता; आठ ऐश्वर्योंमेंसे एक।

-कर्मा(मन्त्र)-वि० जिसका काम प्राप्त करना हो।

-ब्रह्म-पु० विशेष बातोंके आधारपर विश्वजनीन नियम-का निर्धारण (व्या०)। -**ज्ञान-पु०** नित्य सहचर या व्याप्त पदार्थका ज्ञान (व्या०)। -**निश्चय-पु०** नित्य सहचर या व्याप्त पदार्थका निश्चय करना। -**लक्षण-पु०** नित्य साहचर्यका चिह्न या प्रमाण।

व्याप्य-वि० [सं०] व्यापनीय, व्याप्त होने योग्य। पु० साधन, हेतु (व्या०); एक औपधि।

व्याबाध-पु० [सं०] रोग।

व्याभ्र-वि० [सं०] खणित, जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो।

व्याभाषण-पु० [सं०] बोलनेका ढंग।

व्याभुग्न-वि० [सं०] झुका हुआ।

व्याभुक्षी-स्त्री० [सं०] दे० ‘व्याभुक्षी’।

व्यास, व्यासन-पु० [सं०] लंबाईकी एक माप (बाथोंकी अगल-बगल पूरा फैलानेपर उँगलियोंके सिरोंतककी लंबाई)।

व्यासर्क, व्यासर्च-पु० [सं०] अधीरता; रगड़कर मिटाना।

व्यामिश्र-वि० [सं०] एक साथ मिला हुआ; विभिन्न प्रकारका; ‘से युक्त; क्षुब्ध, अन्यमनस्क’। -**व्यूह-पु०** वह व्यूह जिसमें पैदल, रथदल आदि चारों तरहके दल मिले हों। -**सिद्धि-स्त्री०** पक्ष-विषय दोनोंका अपने अनुकूल होना (की०)।

व्यामूढ-वि० [सं०] बहुत धक्काया हुआ।

व्यामृष्ट-वि० [सं०] रगड़कर मिटाया हुआ।

व्यामोक्ष-पु० [सं०] छुटकारा; मुक्ति।

व्यामोह-पु० [सं०] अज्ञान; धक्कापट्ट।

व्यावत्त-वि० [सं०] फैलाया हुआ; फैला हुआ, अन्यस्त; मशगूल, कार्यदिमें संलग्न; षट्; शक्तिशाली; अतिशय; गहरा। -**पाती(तिन्)-वि०** दूरतक दौड़नेवाला (जैसे अश्व)।

व्यावत्त-पु० [सं०] पेशियोंका विकास।

व्यावाम-पु० [सं०] फैलाना; कसरत; अभ्यास; ठीक अभ्यास या शिक्षण (रोग); लंबाईकी एक भाग; दुर्गम मार्ग; कठिनाई; आयास; ह्रास; श्रम; व्यापार, काम; गुरुकी नैवारी; फौजकी कवायद। -**कर्त्तव्य-वि०** व्यावामके कारण जो दुःख हो गया हो। -**श्रुति-शास्त्र-स्त्री०** व्यावाम करनेका व्यान। -**बुद्ध-पु०** आमने-सामनेकी लड़ाई। -**शील-वि०** कसरती।

व्याधामिक-वि० [सं०] व्याधाम-संबंधी।

व्याचामी (मिन्) - वि० [सं०] व्याचाम, कसरत करने-वाला, कसरती; परिधमी ।

व्यायुक् - वि० [सं०] भाग जानेवाला; वच निकलनेवाला ।

व्यायुध - वि० [सं०] सज्जहीन ।

व्यायोग - पु० [सं०] एक प्रकारका रूपक जो एक ही अंशका और बीररसप्रधान होता है ।

व्यायोक्ति - वि० [सं०] खुली दुई, दीली (पट्टी) ।

व्यारोध - पु० [सं०] क्रोध ।

व्यार्त - वि० [सं०] कष्टप्रस्त, दुःखी ।

व्याकंठ - वि० [सं०] नीचे लटकता हुआ । पु० रक्त परब ।

व्यालंबी (विष्) - वि० [मं०] लटका हुआ ।

व्याल - वि० [सं०] शठ, दुष्ट; बुरा; निष्ठुर; जंगली; भयंकर । पु० दुष्ट हाथी; शिख जल, आपद्; सर्प; सिंह; बाघ; चीता; राजा; उग; विष्णु; एक वृत्त; नाटकी मल्ला । - कदज, - लज्ज, - नल - पु० व्याघ्रनल नामक गधद्रव्य । - गर्वा - ली० नाकुली । - प्राह, - प्राही - पु० एक जनपद । - जिह्वा - ली० महासमग । - हंहु, - दंहुक - पु० गोखरु । - पत्रा - ली० एबोरु । - पाणि, - प्रहरण, - बल, - बल - पु० दे० 'व्यालनख' । - सुग - पु० सुंसार जानवर, हिंस जलु । - रूप - पु० शिव ।

सूदन - पु० गण्ड ।

व्यालक - पु० [मं०] दुष्ट हाथी; शिकारी जानवर; सर्प ।

व्यालाद् - पु० [मं०] सर्प खानेवाला, गण्ड ।

व्यालायुध - पु० [मं०] दे० 'व्यालनख' ।

व्यालि - पु० [सं०] एक वैयाकरण, व्याटि ।

व्यालिक - पु० [सं०] मेंपेरा ।

व्याली (किन्) - पु० [सं०] शिव ।

व्यालीद - पु० [सं०] सर्पदंशका एक प्रकार (दाँतके चिह्न) , पर रक्त न निकला हो ।

व्यालीन - वि० [सं०] साथ चिपका हुआ, धना ।

व्यालुस - पु० [सं०] सर्पदंशका एक प्रकार (दाँत गये हो और रक्त भी निकला हो) ।

व्यालुद् - पु० दे० 'व्यालु' ।

व्यालुन - वि० [सं०] कटा हुआ, छिन्न ।

व्यालोल - वि० [मं०] चकर खाना हुआ; अस्थिर, नचल; क्षिप्त ।

व्यावकलन - पु० [सं०] दे० 'व्यवकलन' ।

व्यावकोशी - ली० [सं०] माली गलौज ।

व्यावचोरी - ली० [सं०] आपसकी चोरी ।

व्यावभाषी - ली० [सं०] माली-गलौज ।

व्यावर्ग - पु० [सं०] विभाजन; विभाग ।

व्यावर्त - पु० [सं०] चकर खाना; परिवर्तित करना; घुमकना; निषेधित करना; नामिकटक, उभरी हुई नामि; चक्रमर्द ।

व्यावर्तक - वि० [सं०] अलग करनेवाला, हटानेवाला; मर; अंतर करनेवाला; चकर खाने, खिलातेवाला ।

व्यावर्तन - पु० [सं०] पराङ्मुख होना; निवारण; अलग करना; मर्पङ्कली; लौटना, मुड़ना; चकर खाना; परिवर्तित करना ।

व्यावर्तित - वि० [सं०] मोड़ा, मोड़ाया हुआ, चकर खिलाया हुआ; बदला हुआ ।

व्यावर्तित - वि० [सं०] झोंकेके साथ चलता हुआ ।

व्यावहारिक - वि० [सं०] साधारण जीवन, व्यवहार, कार्य-संबंधी; प्रचलित; वास्तविक; मिलनसार; मुकदमा-संबंधी; व्यवहारमें आने लायक । पु० मंत्री; कारबार, व्यापार; विचारपति । - कृष्ण - पु० व्यवसाय आदिके लिए किया हुआ कण ।

व्यावहारी - ली० [सं०] आदान-प्रदान, परस्परहरण ।

व्यावहार्य - वि० [सं०] योग्य; सक्षम; जो जीर्ण-शीर्ण न हो ।

व्यावहासी - ली० [सं०] परस्पर संसारा ।

व्यावाच - पु० [मं०] दे० 'व्यावाच' ।

व्याविद्ध - वि० [सं०] क्षिप्त; चकर खाना हुआ; विकृत किया हुआ; प्रविष्ट किया हुआ ।

व्याविध - वि० [सं०] विभिन्न प्रकारका ।

व्यावृत्त - वि० [सं०] खुला हुआ, अनावृत्त; उका हुआ, परता किया हुआ; हटाया हुआ, पृथक् किया हुआ; अपवाद किया हुआ ।

व्यावृत्ति - ली० [सं०] आवृत्त करना; ठकना; पृथक् करना, छोटना; अनावृत्त करना (?) ।

व्यावृत्त - ली० [मं०] भेद, अंतर; प्राधान्य; विराट् । - काम - वि० प्राधान्य प्राप्त करनेका इच्छुक ।

व्यावृत्त - वि० [सं०] हटा हुआ; अलग किया हुआ, छाँटा हुआ; अविविधमान; चकर खाना हुआ; परिवर्तित; विरत; विभक्त; भिन्न; तोड़ा-चरीड़ा हुआ, छोटा हुआ; अलगगत; मुक्त, गत, लुप्त; पसद किया हुआ; बेरा हुआ; प्रशस्तित ।

- गति - वि० जिसकी चाल मद हो गयी हो । - चेता - (तस्) - वि० जिसका मन फिर गया हो । - देह - वि० जिसका शरीर फट गया हो (पश्चात्) ।

व्यावृत्ति - ली० [सं०] मुह मोड़ना, घेरना; पीछेकी ओर लटकाना; घुमाना (नित्रादि); आहृति; छुटकारा, मुक्ति; चित्त होना, छोड़ दिया जाना; हटाया जाना, अन्विकार किया जाना; भेद, अंतर, पार्थक्य, भिन्नता; स्पष्टता, विराम, अन्त; एक प्रकारका यश; ठकना, प्रशंसा, स्तुति; खडन; पसद; अविविधमानता ।

व्यावृत्ति - ली० [सं०] विदिशा ।

व्यावृत्त - वि० [सं०] दूसरेका सहारा ग्रहण करनेवाला । पु० साहाय्य, सहारा ।

व्यासंग - पु० [सं०] वनिष्ठ संपर्क; अत्यधिक आसक्ति; प्रबल इच्छा; भक्ति, अध्यवसायपूर्ण अध्ययन, मनोयोग; पार्थक्य, विलगाव; वषडाहट; योग, जोड़ ।

व्यासंगी (मिन्) - वि० [सं०] अत्यधिक आसक्त; मनोयोगपूर्वक सल्लाह देनेवाला ।

व्यास - पु० [सं०] पार्थक्य; अंगोंमें विभाग करना; समस्त पदके अंगोंकी अलग-अलग करना; मिश्र पदार्थ आदिका विश्लेषण; चौकाई; कैंदसे होकर परिधि के दोनों छोरों-तककी दूरी; विस्तार; विस्तृत विवरण; एक उच्चारण-दोष; संकलन करना; संकलनकर्ता; एक मुनि, कृष्णद्वैपायन (वे सत्यवतीके गर्भसे पराशरसे उत्पन्न हुए थे । पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर नियोग द्वारा इन्होंने उत्पन्न हुए थे ।

इन्दीने वेदोंका सर्वमान रूपोंमें सकलन किया और महा-
भारत, वेदांतसूत्र तथा १८ पुराणोंकी रचना की।
रामायण, महाभारत आदिके कथाएं लोगोंको सुनानेवाला
माझण, कथावाचक; सौ एक वचनका श्रुत् । -कूट-
पु० महाभारतमें आये हुए कूट-कोक; वे कूट-कोक जो
रामने माझवान् परंपर रचते समय मनबहकावके किए
रचे थे । -गीता-श्री० कर्मपुराणका एक अध्याय ।
-सीर्य, -वसि, -राज-पु० एक तीर्थ । -देव-पु०
बादरायण, कृष्णदेवायन । -पूजा-श्री० पुन और व्यास-
की पूजा जो आषाढी पूर्णिमाको होती है । -माता(पु),
-सू-श्री० सत्यवती । -मूर्ति-पु० शिव । -बन-पु०
एक पवित्र वन । -समास-पु० बदना-भटना, विस्तार-
सक्षेप । -सरोवर-पु० महाभारतके एक सरोवर जिसमें
दुर्गोषन बुढ़के रूपमें जाकर छिपा था । -सूत्र-पु०
महासूत्र । -खाली-श्री० एक खान । -स्मृति-श्री०
एक स्मृतिग्रंथ ।

व्यासक-वि० [सं०] अत्यधिक आसक्त; सबद्ध; संलग्न;
आकिर्णित; विद्युक्त; अनासक्त; हतबुद्धि, व्याकुल ।

व्यासारण्य-पु० [सं०] दे० 'व्यास-वन' ।

व्यासार्य-पु० [सं०] केंद्रसे परिचितकी दूरी ।

व्यासप्रकाश-पु० [सं०] कथावाचकका आसन ।

व्यासिद्ध-पु० [सं०] निषिद्ध; नजित (याक) ।

व्यासीय-वि० [सं०] व्यास-संबंधी; व्यासका ।

व्यासेष-पु० [सं०] निषेध; वर्जन; रोक; प्रतिबंध ।

व्याहंतव्य-वि० [सं०] उल्लंघनीय, अतिक्रमण करने योग्य ।

व्याहृत-वि० [सं०] चोट पहुँचाया हुआ; जिसे बाधा
पहुँचायी गयी हो; निवारित; निषिद्ध; विफल किया हुआ,
हताश; व्यर्थ; परस्पर विरोधी; बर्बादया हुआ; डरा हुआ ।

व्याहृतायता-श्री० [सं०] एक रचना-दोष जहाँ पूर्व-
कथित बात उत्तरकथनसे विगड़ जाय-पहलेके उत्तरमें
हीनता आ जाय ।

व्याहृति-श्री० [सं०] बाधा डालना; परस्पर विरोध, विरुद्ध
पवना (व्या०) ।

व्याहनस्य-वि० [सं०] बहुत अश्लील ।

व्याहरण-पु० [सं०] उक्ति, कथन, उच्चारण ।

व्याहार-पु० [सं०] स्वर, ध्वनि; वाक्य; वचन; बार्ता-
लाप; (पक्षियोंका) कण्ठ्य; मजाक, परिहास (ना०) ।

व्याहृत-वि० [सं०] कथित; जिसने कोई बात कही है;
खाया हुआ । पु० मोलना; बार्तालाप करना; निर्देश;
अपेक्ष स्वर (पक्षियों आदिका) । -सर्वेश-पु० मंदिर-
बाहक ।

व्याहृति-श्री० [सं०] उक्ति; कथन; श्रु; श्रुव; आदि
सप्तलोकाल्पक मंत्र (किसी-किसीके मतसे इसके आरंभिक
तीन मंत्र) जिनका अर्थ संख्या करते समय किया जाता है ।

व्युद्ध-पु० [सं०] तर करना, गीला करना ।

व्युद्धरण-पु० [सं०] अतिक्रमण, उल्लंघन ।

व्युद्धिनि-श्री० [सं०] उन्मूलन, विनाश ।

व्युद्धिच-वि० [सं०] उन्मूलित, विगड़ ।

व्युद्धेता(पु)-वि०, पु० [सं०] विनाशक ।

व्युद्धे-पु० [सं०] दे० 'व्युद्धिनि' ।

व्युत्-वि० [सं०] दे० 'व्युत्' ।

व्युत्ति-श्री० [सं०] गुनना; सीना; गुननेकी मजदूरी ।

व्युत्कम-पु० [सं०] सन्मार्गका त्याग; अतिक्रमण; व्यति-
क्रम, क्रमभंग; अव्यवस्था; अपराध; श्रुत् ।

व्युत्क्रमण-पु० [सं०] मार्गत्याग; अलग होना; उल्लंघन ।

व्युत्काल-वि० [सं०] उल्लंघित, अतिक्रान्त; प्रस्थित, गत;
उपेक्षित; मित्र दिशामें जानेवाला । -जीवित-वि०

निर्जीव, मृत । -जर्म-वि० कर्तव्यकी उपेक्षा करनेवाला ।

-रजा(जस्)-वि० कलुषरहित, निष्पाप; वासनाहीन ।

-वर्त्सा(वर्त्स)-वि० जिसने सन्मार्गका त्याग कर
दिया हो ।

व्युत्काला-श्री० [सं०] एक तरहकी पहेली ।

व्युत्त-वि० [सं०] आर्द्र, तर किया हुआ ।

व्युत्थान-पु० [सं०] सचेष्टता, सक्रियता; विरोधमें उठना;
बाधा डालना; स्वेच्छापूर्वक कार्य करना; कर्तव्यकी उपेक्षा;

समाधिका अंत (मो०); नृत्यका एक प्रकार; उठनेमें प्रवृत्त
करना (हाथीकी); खंडन, विरोध करना; बधयता स्वीकार

करना, नीचा देखना, दबना ।

व्युत्थापित-वि० [सं०] उठनेमें प्रवृत्त किया हुआ; जगाया
हुआ ।

व्युत्थित-वि० [सं०] अस्थिरबुद्धि; अत्यधिक क्षुब्ध; कर्तव्य-
पथसे विचलित ।

व्युत्पत्ति-श्री० [सं०] उत्पत्ति; मूल, उद्गम; श्रमका मूल
रूप; वाद, विवाद; दक्षता; प्रगाढ़ पांडित्य; स्वर-विभक्ता ।

-रहित-वि० जिसका मूल रूप अज्ञात हो ।

व्युत्पन्न-वि० [सं०] उत्पन्न, मूल रूपसे बनाया हुआ;
जिसकी व्युत्पत्ति की गयी हो; पुरा किया हुआ; पूर्ण

पंडित ।

व्युत्पादक-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला, अन्धकी व्युत्पत्ति
करनेवाला ।

व्युत्पादन-पु० [सं०] व्युत्पत्ति, मूल रूपकी व्याख्या;
शिक्षण ।

व्युत्पाद्य-वि० [सं०] जिनकी वा जिसके मूल रूपकी
व्याख्या की जा सके ।

व्युत्सर्ग-पु० [सं०] त्याग, विरक्ति; शरीरके मोहका
त्याग (जै०) ।

व्युत्सेक-पु० [सं०] चारों ओर जल छिड़कना ।

व्युद्ध, व्युद्ध-वि० [सं०] जलहीन ।

व्युद्धस्त-वि० [सं०] फैका, हटाया हुआ; बिखेरा हुआ;
अस्वीकृत ।

व्युद्वास-पु० [सं०] फैकना; परिखाग; अस्वीकार; निषेध;
उपेक्षा; नाश; बध (शत्रुका); विराम, अंत ।

व्युद्धित-वि० [सं०] जिसपर विवाद, बहस की गयी हो ।

व्युद्धिच-वि० [सं०] गंदा किया हुआ; मिखावटी ।

व्युत्पकार-पु० [सं०] कर्तव्यादिका पूर्ण रूपसे पालन
करना ।

व्युत्पदेश-पु० [सं०] बहाना; ठगो ।

व्युत्पद्म-वि० [सं०] दुर्दिनसे अज्ञात न होनेवाला; जो
आगव्यके कौरमें न पड़े ।

व्युत्पत्ति-श्री० [सं०] पुनर्ग्रन्थ ।

व्युपसर्त-वि० [सं०] जो रुक गया हो, बंद हो गया हो ।

व्युपसर्त-पु० [सं०] बाधा; विराम, अंत ।

व्युपवीत-वि० [सं०] यथोपवीतहीन ।

व्युपवास-पु० [सं०] अशान्ति; विरामका न होना; पूर्ण रूपमें विराम ।

व्युत्स-वि० [सं०] विखेरा हुआ, छितराया हुआ; मुक्ति, कटा हुआ । -**केस-वि०** जिसने बाल कटवाये हैं; जिसके बाल बिखरे हैं । पु० रुद्र; अधि । -**जटाकलाप-वि०** जिसको जटा बिखरी हो ।

व्युत्थित-वि० [सं०] धरते अनुपस्थित; बसाया हुआ, आबाद । पु० सबेरा ।

व्युत्थ-पु० [सं०] तड़का, प्रमात; दिन; फल, परिणाम । वि० जला, दग्ध; प्रमातीभूत; प्रकाशयुक्त; रहा हुआ; गुजरा हुआ ।

व्युत्थि-क्री० [सं०] परिणाम, फल; सौंदर्य; समृद्धि; अन्तु-दव; प्रशंसा, स्तुति; सबेरा, प्रमात; हर आठवें दिन भोजन करना ।

व्यूक-पु० [सं०] एक जनपद ।

व्यूह-वि० [सं०] फैला हुआ; विकसित; बढ़; व्यवस्थित; व्यूहबद्ध; जिसका स्थान परिवर्तित हो गया हो; विवाहित; वंश, विशाल । -**कंडक-वि०** जिमने कवच धारण किया हो, मकड़ ।

व्यूहि-क्री० [सं०] विधिपूर्वक रखना, सजावट; व्यूह ।

व्यूहोरहक-वि० [सं०] चौकै मोनेवाला ।

व्यूहोर-वि० [म०] जिसकी जॉर्ष मांसल हो ।

व्यूत-वि० [सं०] हुना हुआ; बराबर किया हुआ (भागवि) ।

व्यूति-क्री० [सं०] दे० 'व्युति' ।

व्यूत्थी-क्री० [सं०] बड़े धनवाली गाय आदि ।

व्यूह-पु० [सं०] यथास्थान, विधिपूर्वक रखना; सैनिकोंको वृद्धभूमिमें उपयुक्त स्थानपर रखना; अलग करना, विभाग करना; स्थान-परिवर्तन; अस्त-व्यस्त करना; विरुद्ध आस्था; अध्याय; रचना; समूह; शरीर; आस-प्रस्थास; अग; तर्क । -**पार्थिव-व्यूह-पु०** सेनाका पृष्ठभाग । -**संग-भेद-पु०** सैनिकोंका यथास्थान न रहना, सेनाका छित-भिन्न होना । -**मति-पु०** एक देवपुत्र । -**रचना-क्री०** सैनिकोंको यथास्थान रखना । -**राज-पु०** सर्वोत्तम वृह; एक वीधिसत्त्व; एक समाधि ।

व्यूहक-पु० [सं०] रूप ।

व्यूहम-पु० [सं०] व्यूह-रचना, सैनिकोंको विशेष स्थितिमें रखना; शरीरके अंगोंकी बनावट; स्थानपरिवर्तन; विकास (प्रणका) । वि० अलग करनेवाला; स्थानप्रह करनेवाला (शिव) ।

व्यूहित-वि० [सं०] व्यूहबद्ध ।

व्यूह-वि० [सं०] संपत्तिसे वंचित, दुर्भाग्यग्रस्त; विफल; मंदीय; अपराधी ।

व्यूधि-क्री० [सं०] अवनति; दुर्भाग्य, संकट ।

व्यूका(कस्)-वि० [सं०] अलग रहनेवाला ।

व्यूकार-पु० [सं०] लोहार ।

व्यूम(म)-पु० [सं०] आकाश; अक्काश; शरीरस्थ वायु;

जल; अन्नक; सूर्यमंदिर; एक कभी संख्या । (गौ०); कल्याण; एक एकाह; एक प्रजापति; विष्णु । -**केस-केसी-वि०** [सं०] शिव । -**गंगा-क्री०** आकाशगंगा ।

ग-गामी(मिन्)-वि० गगनचारी । पु० देवता आदि । -**गमनीविधा-क्री०** आकाशमें जपनेकी विधा ।

गुण-पु० शब्द । -**चर-वि०** गगनचारी । पु० तारा श्रृंखला । -**फारी(विह्)-वि०** दे० 'व्योम-ग' । पु० पक्षी; देवता; सत; ब्राह्मण; आकाशोप पिक । -**देव-पु०** शिव । -**धारण-पु०** पारा (?) । -**धूम-पु०** बादल ।

ध्वनि-क्री० आकाशसे आनेवाली आवाज । -**नासिका-क्री०** भारती पक्षी । -**पंचक-पु०** शरीरके पाँच छिद्र ।

पाह-पु० विष्णु । -**पुष्प-पु०** अंसमय वस्तु । -**मंजर-मंजल-पु०** शंका, पताका । -**माध-वि०** गगननुषी । -**मुद्र-पु०** हवाका तेज झोका । -**धुरा-पु०** चंद्रमाके दस अश्वमेसे एक । -**पान-पु०** बाहुयान, विमान । -**रक्ष-पु०** सूर्य । -**वर्त्म(वृ)-पु०** आकाश-मार्ग । -**बली-क्री०** अमरवेल । -**सम्ब-पु०** दे० 'व्योम-ध्वनि' । -**संभवा-क्री०** चित्तकवरी गाय । -**सद-पु०** देवता; गंधर्व; प्रेत । -**सरिता-क्री०** [हि०] आकाशगंगा । -**सरित्-क्री०** आकाशगंगा । -**खली-क्री०** पृथ्वी, भूमि ।

व्योमक-पु० [सं०] एक तरहका आभूषण (गौ०) ।

व्योमाक्य-पु० [सं०] अन्नक; मूल कारण ।

व्योमाधिप-पु० [सं०] शिव ।

व्योमाम-पु० [सं०] बुद्ध ।

व्योमारि-पु० [सं०] एक विद्वदेव ।

व्योमी(मिन्)-पु० [सं०] चंद्रमाके दस अश्वमेसे एक ।

व्योमोदक-पु० [सं०] वर्षाका जल ।

व्योमिक-पु० [सं०] आकाश-सम्बन्धी ।

व्योष-पु० [सं०] भिकुट-सोट, पीपल और मिर्चका समाहार ।

व्रज-पु० [सं०] मार्ग, सङ्क; गमन, भ्रमण; समूह; छुंड; गोस्थान, गोष्ठ; विश्रामस्थल; बादल; मधुराके पासका एक स्थान; गोपोंकी बस्ती । -**किशोर-नाथ-पु०** कृष्ण ।

व्रजप्र-पु० पशुओंकी गणना । -**भावा-क्री०** मधुरा आदिकी तरह बोली जानेवाली एक बोली जो कई सौ वर्षोंतक हिंदी काव्यकी मुख्य भाषा रही है । -**भू-वि०** ब्रजमें जन्म । पु० कर्दवका एक भेद । क्री० व्रजभूमि ।

मंदल-पु० व्रजका क्षेत्र । -**मोहन-राज-वर्-वल्हम-पु०** कृष्ण । -**बुबली-रामा-वधू-धनिता-सुंदरी-क्री०** [सं०] गोपिका । -**लाल-पु०** [हि०] कृष्ण ।

व्रजक-पु० [सं०] भ्रमण करनेवाला सन्ध्यासी ।

व्रजव-पु० [सं०] गमन, भ्रमण; देशत्याग; अजानीदका एक पुत्र ।

व्रजस्वति-पु० [सं०] कृष्ण ।

व्रजानाम-पु० [सं०] गोष्ठ ।

व्रजानावा-क्री० [सं०] व्रजकी रहनेवाली स्त्री; गोपी ।

व्रजाजिह-पु० [सं०] गोष्ठ ।

व्रजावाय-पु० [सं०] ग्वालोंकी बस्ती ।

अक्षित-वि० [सं०] गया हुआ, प्रस्थित । पु० गमन, भ्रमण ।

अक्षी(विभू)-वि० [सं०] कुण्डके रूपमें एकत्र ।

अक्षेष्टः, अक्षेष्टः, अक्षेष्ट-पु० [सं०] कृष्ण ।

अक्षौक(कल्)-पु० [सं०] गोप ।

अक्षव-वि० [सं०] गोष्ठ-संवेधी ।

अक्षय-क्षी० [सं०] भ्रमण; गति; सन्वासीके रूपमें भ्रमण करना; कृन्, आक्रमण; भेगी, बर्ग; बर्गिकरण; समूह; रंग-भूमि ।

अक्ष-पु० [सं०] फोड़ा; घाव, जस्म; विद्रधि; अक्षुब्ध;

भिद्र, रोष (निर्जीव पदाभिमं) । -कारी(विभू)-वि०

आहत करनेवाला । -कृत्-वि० भ्रणकारी; क्षयप्रस्त ।

पु० भिखारी । -केतुष्पी-क्षी० दुग्धफेनी नाम क्षुप ।

-ग्रंथि-क्षी० फोड़ेकी गँठ । -क्षितक-पु० जराह,

सर्जन, फोड़ेका उपचार करनेवाला । -क्षिता-क्षी०

गोरकसुंघी । -क्षिट्(व्)-वि० भ्रण अच्छा करनेवाला ।

पु० प्राक्षणवटिका । -धूपन-पु० फोड़ेमें धुआँ देना,

फोड़ेका बाण्योपचार । -पट्ट-पट्टक-पु०, -पट्टिका-

क्षी० फोड़ेपर बाँधी जानेवाली मट्टी । -भृत्-वि०

आहत, जिसे घाव लगा हो । -युक्त-वि० जिसे घाव

लगा हो । -शेषण-वि०, पु० दे० 'भ्रण-विरोपण' ।

-वास्तु-पु० फोड़ेकी जगह, वह स्थान जहाँ फोड़ा

सकता है । -विरोपण-वि० जस्म भरनेवाला । पु०

घावका भरना । -सोचन-पु० घावकी सफाई । -सोपी

(विभू)-वि० फोड़ेके कारण क्षीण होनेवाला । -संरोहण

-पु० घावका भरना । -ह-वि० फोड़ा दूर करनेवाला ।

पु० परह । -हृ-क्षी० गुडुनी । -हृत्-पु० कल्हिकारी ।

भ्रमण-पु० [सं०] भेदन, छेद करना ।

भ्रणायाम-पु० [सं०] भ्रणजन्म पीडा; एक असाध्य रोग

(आ०वे०) ।

भ्रणारि-पु० [सं०] शूल नामक गणद्रव्य; अगस्त्यका पेड़ ।

भ्रणालाव-पु० [सं०] फोड़ेसे पूय आदिका बहना ।

भ्रणित-वि० [सं०] जिसे घाव लगा हो, आहत; जिसे भ्रण

हुआ हो । -हृद्य-वि० मर्यादित ।

भ्रणिक-वि० [सं०] क्षतिग्रस्त (वृक्ष) ।

भ्रणी(विभू)-वि० [सं०] जिसे भ्रण हुआ हो; आहत ।

पु० ऐसा व्यक्ति ।

भ्रणीय-वि० [सं०] भ्रण-संवेधी ।

भ्रण्य-वि० [सं०] फोड़ेमें कामदायक ।

भ्रत-पु० [सं०] धार्मिक कृत्य, धार्मिक अनुष्ठान, नियम,

संयम आदि; पुण्यके विचारसे उपवास करना; प्रतिष्ठा;

भक्तिवा विषय; जीवन-वापनका रंग; आदेश, विधि,

विधान; कर्म; योजना; मङ्गल; एक ही तरहका पदार्थ

सामा; दुग्धाहार । -भ्रह्मण-पु० कोई धार्मिक कार्य

करनेका संकल्प करना; सन्वाप्त लेना । -चर्चा-क्षी०

धार्मिक अनुष्ठान, व्रत रखना । -चारी(विभू)-वि०

धार्मिक अनुष्ठानमें संलग्न; व्रत करनेवाला । -हंशी

(विभू)-वि० दूध-भारणका व्रत पालन करनेवाला ।

-हास-पु० व्रतके उपलक्ष्यमें दिया जानेवाला दान ।

-घर-वि० व्रत धारण करनेवाला । -धारण-पु०

धार्मिक अनुष्ठान पूरा करना । -पष्ट-पु० भाई-शुद्ध

पक्ष । -पारण-पु०, -पारणा-क्षी० व्रत, उपवासकी

समाप्ति । -प्रतिष्ठा-क्षी० स्वेच्छासे कोई धार्मिक अनु-

ष्ठान करना । -अंग-पु० व्रत, प्रतिष्ठाका संक्षिप्त हो

जाना । -भिष्ठा-क्षी० यक्षोपधीत-संस्कारके समय योगी

जानेवाली भिष्ठा । -रुचि-वि० व्रतमें आनंद मानने-

वाला । -सुस-वि० जिसने अपना व्रत मंग कर दिया

है । -कोप, -कोषन-पु० व्रत-भंग । -विसर्ग-पु०

अनुष्ठानकी समाप्ति । -विसर्जन-पु० व्रत समाप्त

करना । -वैकल्य-पु० व्रतका पूरा न होना । -संग्रह-

पु० कोई व्रत ग्रहण करना; रीक्षा । -संपादन-पु०

धार्मिक अनुष्ठान पूरा करना । -संरक्षण-पु० व्रतका

पालन । -समापन-पु० व्रतकी पूर्ति । -व्य-वि०

जिसने व्रत धारण किया है । पु० व्रतधारी । -व्यात-

वि० जिसने व्रत पूरा करनेपर कान किया है । -व्यासक-

वि० जिसने व्रतधारीका व्रत पूरा कर लिया है; दे० 'व्रत-

जात' । -व्यान-पु० व्रतके बादका कान । -ह्रावि-

क्षी० व्रतका परित्याग ।

व्रतक-पु० [सं०] धार्मिक अनुष्ठान ।

व्रतति, व्रतती-क्षी० [सं०] लिपटनेवाली कृता; फैलाव,

विस्तार । -वलय-पु० कमनकी तरह लिपटनेवाली कृता ।

व्रताचरण-पु० [सं०] किसी व्रतका पालन ।

व्रताचारी(विभू)-वि०, पु० [सं०] व्रताचरण करनेवाला ।

व्रतादान-पु० [सं०] व्रत धारण करना ।

व्रतादेश-पु० [सं०] उपनयन, यक्षोपधीत-संस्कार ।

व्रतादेशन-पु० [सं०] उपनयन संस्कारके बाद व्रतधारी-

को दिया जानेवाला वेदका उपदेश ।

व्रतापत्ति-क्षी० [सं०] धार्मिक कृत्य या व्रतका परित्याग ।

व्रतिक-पु० [सं०] व्रताचारी ।

व्रतिनी-क्षी० [सं०] साधुनी ।

व्रती(विभू)-वि० [सं०] व्रतका अनुष्ठान करनेवाला;

धर्माचारी । पु० व्रतधारी; सन्वासी; यजमान; एक मुनि ।

व्रतेश-पु० [सं०] शिव ।

व्रतोपमथन-पु० [सं०] उपनयन-संस्कार ।

व्रतोपवास-पु० [सं०] व्रतके लिप किया जानेवाला उप-

वास ।

व्रतोपायन-पु० [सं०] धार्मिक अनुष्ठान आरंभ करना,

व्रतारंभ ।

व्रतोपोह-पु० [सं०] एक साम ।

व्रत्य-वि० [सं०] व्रताचारी; व्रतके उपयुक्त । पु० व्रतो-

पवासके उपयुक्त आहार; व्रतधारी ।

व्रत्य-पु० [सं०] दे० 'व्रत' ।

व्रतन-वि० [सं०] काटनेवाला; जो काट सके । पु० छोटी

आरी; सुनारोंकी छेनी; वृक्षका छेदन करनेपर उससे बहने-

वाला रस; छेदन ।

व्रत(व्)-पु० [सं०] दे० 'व्रत(न्)' ।

व्रतट, व्रतट-क्षी० एक अपभ्रंश भाषा जो पहले सिंधमें

बोली जाती थी, पैशाचिक भाषाका एक भेद ।

व्रत-पु० [सं०] गमन, गति; दल, समूह (वै०); पालतू

सुर्मा वा कुत्ता । -पत्ति-पु० दमनायक ।

व्रति-क्षी० [सं०] नृपान, आँधी ।

प्रायिक-पु० [सं०] सम्पादितियों द्वारा किया जानेवाला एक प्रकारका उपवास जिसमें वे केवल दूधपर रहते हैं।

प्रात-पु० [सं०] समूह, दल, झुंड, विवाहोत्सवमें सम्मिलित होनेवाले लोग; अनुप्य; जाति-व्युत्पन्न ब्राह्मणकी संतान, व्यापायि; शारीरिक भ्रम; दैनिक भ्रम, मजदूरी।—**जाति-खी०** झुंड बनाकर चलनेवाली जाति।—**जीवन-वि०** मजदूरीसे जीविका चलानेवाला।—**वसि-पु०** संस्कार अवधूत।

प्रायिक-पु० [सं०] एक धार्मिक अनुष्ठान।

प्रातीन-वि० [सं०] मजदूरी करके जीविका चलानेवाला; पुढरिसे जीविका चलानेवाला, जराबमपेशा; संघजीवी।

प्राप्य-पु० [सं०] संस्कारहीन, जातिव्युत्पन्न द्विज; शूद्र और क्षत्रियासे उत्पन्न एक मंकर जाति; नीच आदमी। वि० महाप्रात-संघर्षी।—**गण्य-पु०** खानाबदोश, भ्रमणकारी जाति या वर्ग।—**गृह्य-पु०** वह जो अपनेकी प्राप्य कहता हो।—**वह्य-पु०** एक प्रकारका यज्ञ।—**वाजक-पु०** प्राप्यके लिए यज्ञ करनेवाला।—**श्रोत्र-पु०** यज्ञ-विशेष (जो संस्कार न करनेके कारण छिने हुए अधिकार प्राप्त करनेके लिए किया जाता था)।

प्रीति-पु० [सं०] लज्जा।

प्रीतन-पु० [सं०] अपकर्ष; शर्म, लज्जा; नम्रता।

प्रीति-खी० [सं०] लज्जा; सकोच; नम्रता।

प्रीतान्त, प्रीतिनिवृत्त-वि० [सं०] लज्जित; विनात।

प्रीतित-वि० [सं०] लज्जित; विनीत। पु० लज्जा; विनय।

प्रीतस्-वि० [सं०] दे० 'प्रीति'।

प्रीति-पु० [सं०] चावल; चावलका दाना; बरसातमें

पकनेवाला धान; कीर अन्न; धानका खेत।—**कंक-कांचन-पु०** मसर।—**द्रोण-पु०** एक द्रोण चावल।

पार्थिका, पार्थी-खी० शाकपर्णा।—**भेद, रायिक-पु०** चेमा।—**सुख-पु०** चावलके दाने जैसा एक शक (जा० वे०)।—**वाच-पु०** धानकी बोआई।—**वापी-वि०** धान बोनेवाला।—**वेला-खी०** धान काटनेका समय।—**वेष्ट-पु०** एक बढ़िया धान, शाकि प्राप्य।

प्रीति, प्रीति-वि० [सं०] धानवाला; धान उत्पन्न करनेवाला।

प्रीति-वि० [सं०] (वह खेत) जिसमें धान बोया गया हो।

प्रीति-पु० [सं०] चावलका पूमा। (प्रा०)।

प्रीतिगार-पु० [सं०] चावल आदि रखनेका गोदाम, भण्डार।

प्रीतिप्रवण-पु० [सं०] धानका भौंगीगा।

प्रीति-खी० [सं०] धानका खेत।

प्रीति-वि० [सं०] हुआ हुआ, निमग्न; भटका हुआ, भूला हुआ (बंगलमें)।

प्रीति-वि० [सं०] चावलका बना हुआ।

प्रीति-वि० [सं०] धानके साथ उपजाया हुआ।

प्रीति-वि० [सं०] धान बोने योग्य; धानके साथ बोया हुआ; चावलका बना हुआ। पु० धानका खेत।

प्रीति-वि० [सं०] कुचला हुआ; गत; समाका हुआ।

प्रीति-पु० [सं०] जाळ, फंदा, फँसरी।—**हल-वि०** फँसरी लगाकर मारा हुआ।

प्रीति-पु० [सं०] दे० 'प्रीति'।

श

श-देवनागरी वर्णमालाका तीसवाँ और क-मवर्गका प्रथम व्यंजन वर्ण। उच्चारण-स्थान तांतु।

शंक-खी० शंका, संदेह।

शंकन-पु० [सं०] भय उत्पन्न करना।

शंकना-अ० कि० संदेह करना; धरना।

शंकीय-वि० [सं०] जिनके संबंधमें शंका करनेकी गुंजाइश हो, शंकायोग्य।

शंकर-पु० [सं०] शिव; शंकराचार्य; एक छंद; एक राग; भामसेनी कपूर; दे० 'मकर'। वि० कल्याणकारी, शुभकर।—**किंकर-पु०** शिवका भक्त।—**शूर-पु०** एक तरहका विशेषा सपं।—**जटा-खी०** पिठवनका एक भद्र; सागू; जटाधारी।—**साक-पु०** एक ताल (संगीत)।

शयि-पु० शीतर पक्षी; कर्तृका द्रोणपुष्पी।—**मय-पु०** एक तरहका कीड़ा।—**शुक्र-पु०** पारा।—**शैल-पु०** कैलास पर्वत।—**शुक्र-पु०** हिमालय।

शंकरा-खी० [सं०] पार्वती; एक राग; मंजिष्ठा; शमी वृक्ष। वि० खी० मंगल करनेवाली।

शंकराचारी-पु० शंकरमतका अनुयायी।

शंकराचार्य-पु० [सं०] अद्वैतवादके प्रवर्तक प्रसिद्ध दार्शनिक। (पि० ईशाक आठवीं शतीके अंत तथा नववीं शतीके आरम्भमें विद्यमान थे। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र', 'श्रीमद्भगव-

द्गीता' तथा 'उपनिषदों'का भाष्य किया। बौद्धोंका स्रजन कर वैदिक धर्मका पुनः प्रचार-प्रसार किया। भारतके चारों कोनोंपर चार पीठ स्थापित किये, जिनके नाम हैं—वदरिकाभ्रम, करवीर-पीठ, शारका-पीठ तथा शारदापीठ।)

शंकराभरण-पु० [सं०] एक राग।

शंकरालय-पु० [सं०] कैलास पर्वत।

शंकरावास-पु० [सं०] एक तरहका कपूर; कैलास।

शंकराह्व-खी० [सं०] शमी वृक्ष।

शंकरी-खी० [सं०] पार्वती; मजीठ; शमी वृक्ष; एक रागिनी। वि० खी० मंगल करनेवाली।

शंकर्य-पु० [सं०] विष्णु; रोहिणीका पुत्र।

शंकव-पु० [सं०] सज्जुची मछली।

शंका-खी० [सं०] संशय; भय; एक संचारी भाव।

अनक-वि० शंका उत्पन्न करनेवाला।—**निवारण-पु०** संशयका दूर होना या दूर किया जाना।—**निवृत्ति-खी०** दे० 'शंका-निवारण'।—**शंकु-पु०** भयका कंटक।

शखि-वि० शंका करना जिसका स्वभाव हो, जो प्रायः शंका किया करता हो।—**समाधान-पु०** शंकाका निराकरण; शंका और समाधान।

संकित-वि० [सं०] शंकायुक्त; भीत। पु० चौरक नामक गंधद्रव्य।—**मका(नस्)-वि०** संशयालु; डरपीक।

-वर्ण, -वर्णक-पुं चोर ।
शंकी(किन्)-वि [सं०] संख्यातु; डरपोक ।
शंकु-पुं [सं०] भाला; कील; लुंटी; बाणकी नोक; दूँठ;
 पाप, अपराध; विष; बौबी; पत्थरी नसीका बाल; किंग;
 राक्षस; संस; शिव; कामदेव; शाक वृक्ष; नखी नामक
 गंधद्रव्य; एक प्रकारका खभा; एक मछली; 'शंक'की
 संस्थाका नाम; बारह अंगुलीका एक नाप; सूर्य, दीपकी
 छाया नापनेके लिए काष्ठदिकी निर्मित बारह अंगुलीकी
 नुकीली मापक वस्तु; प्राचीन कालका एक बाजा । -**कर्ण**,
 -**श्रवण**-वि० नोकदार कानोंवाला । पुं गहवा । -
कर्ण(गिन्)-पुं महादेव । -**रक्त**-**वृक्ष**-सालूका
 पेड़ । -**पुच्छ**-पुं भौरेका डंक । -**फणी(विन्)-पुं**
 एक जलचर । -**मुख**-पुं मूक; प्राह । -**मुखी**-
 स्त्री० जौक ।
शंकुक-पुं [सं०] छोटी लुंटी ।
शंकुचि-स्त्री० [सं०] संकुची मछली ।
शंकुर-वि० [सं०] डरावना, भयानक ।
शंकुका-स्त्री० [सं०] छुप्रायी काटनेका औजार, सरोता ।
शंकोच-पुं, **शंकोचि-स्त्री०** [सं०] शंकु मल्ल; संकुची
 मछली ।
शंक्च-वि० [सं०] शंका, संदेह करने योग्य ।
शंख-पुं [सं०] समुद्रमें पैग होनेवाला एक जंतुका खोल
 या घर जो परपर-सा कड़ा और सकेद होता है (देख
 इतका भल बनाकर औषधके काममें लाते हैं । शंख बड़ा
 पवित्र और श्रुत माना जाता है तथा पूजन, बुद्ध आदिके
 अवसरोंपर बजाया जाता है); सौ पथकी संस्था; कुबेरकी
 एक निधि; बुद्धका नगाड़ा; एक द्रौप; शंखाक्षर (जो विष्णु
 द्वारा मारा गया); छप्पय छद्रका एक भेद; दबक इतका
 एक भेद; ललाट; हाथीके दोनों दौनोंके बीचका भाग;
 कुंजरकी एक निधि; एक दैत्य; एक स्तुतिकार (लिखितका
 भार); विराटराजका पुत्र । वि० सौ पथ । -**कर्ण**-पुं
 शिबका एक अनुचर । -**कार**, -**कारक**, -**दारक**-पुं
 एक जाति जो शंखकी चीजें बनाती है । -**कुसुम**-पुं
 शंखपुष्पी; श्वेत अपराजिता । -**कूट**-पुं एक नाम ।
 -**क्षीर**-पुं अमंजव बात । -**चरी**, -**चर्ची**-स्त्री० (ललाट-
 का) चंद्रमका टीका । -**चूष**-पुं एक असुर जो कृष्ण
 द्वारा मारा गया । -**ज**-पुं शंसते निकल बड़ा मोती
 जो कपोतके अंतेके समान होता है । -**द्राव**, -**द्रावक**-
 पुं आयुर्वेदके अनुसार एक रस जिसमें शंख गल जाता
 है; एक औषध-विशेष । -**चर**-पुं विष्णु; कृष्ण । -
चरा-स्त्री० हिलमोचिका । -**ध्मा**-पुं शंखवादक ।
 -**वख**-पुं, -**मखा**, -**नखी**-स्त्री० छोटा शंख, घोषा;
 नखी नामक गंधद्रव्य । -**नाभि**-स्त्री० एक तरहका
 शंख । -**नाभी**-स्त्री० एक घोषा । -**नाम्मी**-स्त्री०
 शंखपुष्पी । -**नारी**-स्त्री० एक वर्णद्वय जिसे सोमराजी
 भी कहते हैं । -**पछीस**-पुं [हिं०] एक देवेदार क्षत्रिय
 पदार्थ । -**पति**, -**धृत्**-पुं विष्णु । -**पाक**-पुं एक
 तरहका सर्प; सूर्य । -**पुषिका**, -**पुष्पी**-स्त्री० एक छुप
 जिसे प्रायः धीमन् ऋतुमें घोसकर पीते हैं (बह शीतल तथा
 बुद्धि और स्वरस्यक है) । -**प्रख**-पुं चंद्रमाका

कलंक । -**आलिनी**-स्त्री० शंखपुष्पी । -**मुख**-पुं
 पडिवाल । -**मुख**-पुं मुली । -**पुषिका**-स्त्री०
 जूही । -**लिखित**-पुं न्यायी राजा; शंख और लिखित
 नामक दो स्तुतिकार । वि० निवेद्य । -**वास**-पुं
 मत्स्यकीषा । -**विष**-पुं संख्या । -**मुक्तिका**-स्त्री०
 सीप । -**खन**-पुं शंखचिनि । **मु** -**बडना**-
 सकलता मिलना । -**बडना**-सकलता मिलनेपर आज्ञा
 करना ; (व्यं०) असफल होनेपर पछताना, वकनक करना
 आदि । -**कूकना**-बुद्धकी घोषणा करना; देश, व्यक्ति,
 जातिमें जागरण, उत्साह आदिकी भावना भरना ।
शंखक-पुं [सं०] शंख; शंखका बना कड़ा; ललाट; एक
 निधि; एक शिरोरोग ।
शंखनक-पुं [सं०] छोटा शंख ।
शंखस-पुं [सं०] शंखवल्लय ।
शंखावर-पुं [सं०] ललाट ।
शंखाव्य-पुं [सं०] वृद्धस्त्री ।
शंखालु, **शंखालुक**-पुं [सं०] मनेंद्र शंकरद्वय ।
शंखावर्त-पुं [सं०] अनुवावर्त, भगदर रोगका एक
 प्रकार ।
शंखासुर-पुं [सं०] ब्रह्माके बहोसे वेद सुराकर समुद्रमें
 छिपानेवाला एक राक्षस (इसीकी मारनेके लिए विष्णुने
 मत्स्यावनागर किया था); मुर राक्षसका पिता ।
शंखाङ्का-स्त्री० [मं०] शंखपुष्पी ।
शंखिका-स्त्री० [सं०] चौरपुष्पी ।
शंखिनिका-स्त्री० [सं०] ग्रंथिपर्णा ।
शंखिनी-स्त्री० [सं०] कामशास्त्रके अनुसार स्त्रियोंके चार
 भेदोंमें एक; बौद्धों द्वारा मानी जानेवाली एक शक्ति
 (देवी), एक प्रकारकी अप्सरा, एक वनोपधि, चौरपुष्पी,
 मुखनाश । -**डंकिनी**-स्त्री० उन्मादका एक भेद ।
 -**फल**-पुं शिरीष वृक्ष । -**वास**-पुं आखेट वृक्ष ।
शंखी(खिन्)-पुं [मं०] विष्णु; समुद्र । वि० शंखका
 काम करनेवाला; शंख बनानेवाला, जिनके पाम एक
 शंखकी निधि हो; शंखवाला ।
शंखोदरी-स्त्री० [सं०] वृद्धविशेष ।
शंगरी-पुं एक प्रकारका वृक्ष ।
शंगरफ-पुं [फा०] इंगूर, शिगरफ । वि० शिगरफके
 रगका, लाल ।
शंजरफ-पुं [फा०] इंगूर ।
शंड-पुं [सं०] सूर्य व्यक्ति हिंजरा ।
शंड-पुं [सं०] सौंभ; एक दैत्य; नपुंसक; पथ आदिका
 समूह; पागल व्यक्ति; अंतःपुरका परिचारक; दही ।
शंडामर्क-पुं [सं०] शंड और मर्क नामक दैत्य ।
शंडीक-पुं [सं०] एक कवि जिनके नामपर 'शंडिल्य'
 गीत चलता है ।
शंड-पुं [सं०] राजाके अंतःपुरमें स्त्रियोंका रक्षक; नपुंसक;
 बंध्य वृद्ध; सौंभ । वि० उन्मत्त ।
शंतनु-पुं [सं०] भीष्मके पिता (इन्हें गंगा और सत्यवती
 नामकी दो रानियाँ थीं । पहलीसे भीष्म उत्पन्न हुए थे
 और दूसरीसे विचित्रवीर्य तथा विश्रगद) । -**सुख**-पुं
 भीष्म ।

शंखा-खी० [सं०] विजली, विप्लव; सेखल ।
 शंषाक, शंषाल-पु० [सं०] आरम्भ ।
 शंष-पु० [सं०] ईद्रका वज्र; मूसरके सिरेपर लगी लोहेकी गहारीकी डंगकी वस्तु जिससे जल आदि कूटनेमें सुविधा होती है; कमरमें पहनी जानेवाली लोहेकी सिकरी; लंबाई की एक माप; एक असुर; अनुलोम कर्ण, दुबारा की गयी जोतार । वि० भाग्यशाली; सुखी; दरिद्र; भाग्यहीन ।
 शंषर-पु० [सं०] जल; बाढल; विश्र; धन; बुद्ध; जल; योद्धाका एक विशेष जल; सैवविशेष; एक जिन; एक राक्षस; एक प्रकारकी मछली; सावर मृग; चित्रक वृक्ष; लोभ वृक्ष; अर्जुन वृक्ष; एक पशुका नाम । वि० श्रेष्ठ, उत्कृष्ट ।
 -कंद-पु० बाराहीकंद । -ज्व-पु० प्रवृत्त । -चंदन-पु० एक चंदन । -द्वारण, -रिपु, -सूदन-पु० कामदेव (प्रवृत्त) । -ह्व (ह्व) -पु० ईद्र ।
 शंषरारि-पु० [सं०] प्रवृत्त ।
 शंषरी-खी० [सं०] आसुपर्णी लता; माया; जादूगरनी ।
 -शंषा-खी० वनतुलसी ।
 शंषल-पु० [सं०] तट; यात्राके लिए भोज्य पदार्थ, पाथेय; मत्सर, ईर्ष्या, डाह ।
 शंषली-खी० [सं०] कुटनी ।
 शंषा-पु० [सं०] शनिवार ।
 शंषु, शंषुक, शंषुक-पु० [सं०] घोषा ।
 शंषुकावर्त-पु० [सं०] अगंदर रौंगका एक प्रकार ।
 शंषुक-पु० [सं०] घोषा; शल्य; हाथीके कुंभका अंतिम भाग; हाथीकी सूँठकी नोक; एक दैत्य; वेता युगमें गमराज्यमें बसा एक शूद्र तपस्वी (शूद्र होनेके कारण स्वकीय मर्यादामें एक ब्राह्मणपुत्र अकाल ही मर गया, अतः रामने इसका वध किया और ब्राह्मणका मृतपुत्र पुनः जीवित हुआ) । -पुष्पी-खी० शलपुष्पी ।
 शंषुका-खी० [सं०] सीपी; घोषा ।
 शंष-पु० [सं०] प्रमत्त व्यक्ति; ईद्रका वज्र; मूसरकी मापी ।
 शंषली-खी० [सं०] कुटनी ।
 शंषु-पु० [सं०] शिव; व्याघ्र रुद्रोंमें प्रधान रुद्र; ब्रह्मा; कवि; विष्णु; बुद्ध; सिद्ध व्यक्ति; सफेद आकृता वृक्ष; एक वर्षावृत्त । वि० समुत्क्रियकारक । -तनय, -संवन, -सुत-पु० कार्तिकेय; मणेश । -तेज (स्), -बीज-पु० पारा । -मिया-खी० दुर्गा; आमलकी । -भूषण-पु० चंद्रमा । -खी-पु० कैलास, शिवलोक । -बल्लभ-पु० श्वेत कमल ।
 शंष-पु० [सं०] दे० 'शंष' ।
 शंष-पु०, शंषा-खी० [सं०] प्रशंसा; इच्छा; मंगल-कामना; वर्णन; कथन; प्रतिज्ञा ।
 शंषन-पु० [सं०] प्रशंसा करना; वर्णन करना; पाठ करना ।
 शंसित-वि० [सं०] निश्चित; स्तुत; कथित; हण्डित; जिसपर सूटा घोष लगाया गया हो ।
 शंसी (सिख)-वि० [सं०] (शायः समाप्तांतमें) प्रशंसा करने, कहनेवाला; अभिव्यक्त ।
 शंसा (शु)-पु० [सं०] चारण; संघाटक ।

शंस्य-वि० [सं०] तारीफके लायक; अनिच्छित; कथित ।
 श-पु० [सं०] कल्याण, मंगल; सौख्य; सहायि; शास्त्र; शिव; शल्य; काटनेवाला । वि० शुभ ।
 शकर-पु० दे० 'शुकर' । -द्वार-वि० कामका डंग जाननेवाला, लचीलाद्वार ।
 शक, शक-पु० [अ०] सिंह, सहाय; शंका; श्रान्ति (पुनः, होना) ।
 शक-पु० [सं०] प्राचीन कालमें शकद्वीप (मध्य एशिया)में रहनेवाली एक समृद्ध जाति (इसकी उत्पत्ति पुराणोंमें वर्णित सर्वबंधी राजा नरियंतसे मानी जाती है) इस जातिवाले अपनेको देवपुत्र कहते थे । ईसासे दं. सी. वर्ष पूर्व भारतके मथुरा और महाराष्ट्र प्रदेशोंपर इस जातिका शासन १९० वर्षोंतक रहा । प्रसिद्ध सम्राट् कनिष्क इसी जातिके थे; तातार देशके निवासी, तातारी; शकोका एक राजा । -संबद्ध-पु० इसकी सत्के ७८ वर्ष पीछे महाराज शाकिवाहन द्वारा प्रवर्तित एक संवत् ।
 शक-वि० [अ०] फटा हुआ, दरार पड़ा हुआ ।
 शकट-पु० [सं०] गाड़ी जिमें पशु अथवा मनुष्य खींचे, छकड़ा, सम्राट्; बैलगाड़ी; गाड़ीका घोड़ा; गाड़ीपर कड़ा घोड़ा जो दो हजार पलोंके बराबर होता है; एक व्यूह; शरीर; तिमिर नामका वृक्ष; धक्का पेश; एक राक्षस जिम्मा वध कृष्णने किया था; रोहिणी नक्षत्र । -भिद्-पु० विष्णु । -बिल-पु० एक जलपक्षी । -व्यूह-पु० शकटके आकारमें रचित व्यूह, सैन्यरचना । -ह्व (ह्व) -पु० कृष्ण ।
 शकटार-पु० [सं०] नदवशीय अंतिम सम्राट् महानदका प्रधान मंत्री जिमें अपनी ओर करके चाणक्यने नदबंधका नाश किया; एक शिकारी पक्षी ।
 शकटारि-पु० [सं०] शकटासुरका वध करनेवाले कृष्ण ।
 शकटासुर-पु० [सं०] शकट नामक राक्षस (इमें कसने कृष्णको मारनेके लिए गोकुल भेजा था किंतु यह स्वयं ही कृष्ण द्वारा मारा गया) ।
 शकटाह्व-खी० [सं०] रोहिणी नक्षत्र ।
 शकटिका, शकटी-खी० [सं०] छोटी बैलगाड़ी; घोषा-गाड़ी; वर्षोंके खेलनेकी छोटी गाड़ी ।
 शकट-पु० मचान ।
 शकर-पु० [सं०] चीनी, शर्करा, बूरा । -कंद-पु० मोटी मूलीकी शलका एक कंद जो काफ़ी मोटा होता है और जिसे उबाला व भुनकर खाते हैं । -झोरा-पु० लंबी चौंचाळा एक पक्षी जो मोटी चीजोंको बड़ी हचिसे खाता है । वि० मोटी चीजें, तर माल खानेवाला । -छाबा-पु०, -छाबाखी-खी० मोटी नौद सोना । -ज्ञान-वि० मथुरावासी । -पारा, -पाका-पु० एक तरहका मीठा (वानकीन) पकवान । -बाखाम-पु० लुत्तानी । -रंखी-खी० मिर्चोंमें से जानेवाली मायूकी अनवज या विगाड़ । -लब-वि० मोठे होठोंवाला; (अ०) माच्छ । -सम्बद्ध-खी० सफेद, पक्षी चीनी । सु०-से सुँध भरना-सुघरवरी सुनानेवालेको मिठाई खिलाना ।
 शकरी-वि० शकरका; शकरके रंगका । पु० एक तरहका फलमा ।

शकल-पु० [सं०] चमका; छिलका, छाल; खंड, टुकड़ा; (मछलीका) चोखा; मनुस्मृतिमें उल्लिखित एक देश।
शकल-की० दे० 'शकु'। -सूरस-की० मुखाकृति, रूप (-से मजा आदमी जान पड़ना)।

शकलित-वि० [सं०] खंड-खंड किया हुआ।

शकली (चिह्न)-पु० [सं०] शकलवाला मत्स्य, चोखोंदार मछली।

शकलितक-पु० [सं०] शक लोगोंके देशके बाहर निकाल देनेवाला, विक्रमादित्य।

शकल्य-पु० [सं०] शकसदृश।

शकार-पु० [सं०] राजाकी अन्धा पत्नीका भार्य, अन्दा-भ्राता (संस्कृत-नाटकोंमें इसका चरित्र मद, भूलता, अधिमान, कुलहीनता इत्यादि दोषोंसे युक्त दिखाया गया है)।

शकारि-पु० [सं०] दे० 'शकातक'।

शकील-वि० [अ०] सुंदर, रूपवान्। [की० 'शकीला']।
शकुंत-पु० [सं०] चिहिया; भास पक्षी; नीलकंठ; एक कीड़ा।

शकुंतक-पु० [सं०] एक छोटी चिहिया; पक्षी।

शकुंतला-की० [सं०] मेनका और विश्वामित्रके सहवाससे उत्पन्न तथा कृष्ण ऋषि द्वारा पाकित-पोषित कन्या, दुष्प्रत-की पत्नी तथा उनके पुत्र भरतकी माता; कालिदासका एक प्रसिद्ध नाटक।

शकुंति-पु० [सं०] पक्षी।

शकुंतिका-की० [सं०] चिहिया; एक चिहिया; हाथुर या टिड्डी।

शकुन-पु० [सं०] विशिष्ट पशु, पक्षी, व्यक्ति, वस्तु, व्यापारके देखने, अनुमाने, होने आदिसे भिन्ननेवाली श्रुति, अनुमानकी पूर्व-सूचना, सगुन; शुभ पक्षी, शुभ अवसरपर होनेवाले, मंगल-कार्यमें नाये जानेवाले गीत; पक्षी; गृध्र नामक पक्षी, गिद्ध। -ज्ञ-वि० शकुन जाननेवाला। -ज्ञा-की० छिपकली। -ज्ञान-पु० शकुनकी जानकारी। -ह्वार-पु० यात्रा आदिके अवसरोंपर श्रुति-अनुमान होने प्रकाशके शकुनोंका होना। -शास्त्र-पु० वह शास्त्र जिसमें शकुनके शुभाशुभ होने तथा उसके फलोंका विचार किया गया हो। सु०-जानना, जाना-विवाह आदि शुभ अवसरोंपर मंगलसूचक वस्तुओंका जाना, जाना।

-कला-श्रुति अवसरोंपर मंगलके लिए कार्य करना। -देखना, -जिज्ञासना, -विचारना-कोई कार्य करनेके पूर्व ज्योतिष आदि साधनों द्वारा श्रुति विधि और सुहृत् अथवा उस (कार्य)के शुभाशुभ फल जानना।
शकुनक-पु० [सं०] पक्षी।
शकुनाह्वार-वि० [सं०] चिहियों द्वारा लाया हुआ। पु० एक तरहका चावल।

शकुनाह्वार-पु० [सं०] एक तरहका चावल; एक मछली।

शकुनि-पु० [सं०] पक्षी, चिहिया; गिद्ध; बिल, चीक; युग; एक नाग; एक दैत्य; गांधारराज शुबला पुत्र जो दुर्वाषका भाग्य और महाभारतके कारणभूत उसके कुमोका प्रधान भेदक था। -ग्रह-पु० एक वाक्य। -प्रथा-की० चिहियोंके पानी पीनेका आन या पात्र। -वार-पु० पक्षियोंका ककरवा; युगका नाँव देना।

शकुनिका-की० [सं०] मादा पक्षी; स्वंदकी एक वास्तुका।
शकुनी-की० [सं०] इयामा चिहिया; मादा गौरिया; पुराणीक एक पूतना जो बच्चोंके लिए बहुत ही कष्ट मानी गयी है; समुद्रके उल्लेखानुसार बालकोंका एक ग्रह।
शकुनी (चिह्न)-वि०, पु० [सं०] सगुनी, सगुन विचारने-वाला, शकुनवत्।

शकुल-पु० [सं०] लोरी मछली। -ग्रह-पु० एक मछली।

शकुलग्रह-पु० [सं०] श्वेत दूर्वा; गंध दूर्वा, गाँवर दूध।

शकुलाक्षा; शकुलाक्षी-की० [सं०] सफेद दूध; गाँवर दूध।

शकुलाक्षी-की० [सं०] एक ओषधि, चक्रांगी।

शकुलार्धक-पु० [सं०] गहूँ मछली।

शकुली-की० [सं०] दे० 'शकुल'।

शकुल-पु० [सं०] विद्या; जानवरका मक। -करि-पु० बत्स, बछ्वा। -करी-की० बत्सतरी, बछिया। -ह्वार-पु० गुदा। -पिंड, -पिंडक-पु० गोबरका पिंड।

शकर-की० दे० 'शकर'। पु० [सं०] बैल।

शकरि-पु० [सं०] बैल।

शकरी-वि० [का०] यीठा, शर्करायुक्त।

शकरी-की० [सं०] मेखला; एक पुरानी नदी; वर्णवृत्तका एक मंद; अपवित्र जातिकी बी; उमंगी।

शकी-वि० शक करनेवाला, शकाशील।

शक्त-वि० [सं०] शक्तिमान्, धनी; समर्थ; अर्थबोधक, बलुर; पट्ट; मधुरभाषी।

शक्तव-पु० [सं०] सत्त्व।

शक्ति-की० [सं०] बल, सामर्थ्य; क्षमता, योग्यता; बल; प्रभाव; एक तरहका भाग्य; लौग; तलवार; तंत्रमतवापित किसी पीठकी सृष्टि, पालन, प्रलय आदि सामर्थ्यसे युक्त अधिष्ठात्री देवी; युगा; कक्षी; गौरी; ईश्वर-शक्ति (माया, प्रकृति); देव-शक्ति (वैष्णवी, रौद्री इ०); राज-शक्ति (प्रभु, मंत्र, उस्ताइ); शब्द-शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना); रचना-शक्ति, कवित्व-शक्ति; बला राष्ट्र या राज्य; भग। -कुंठन-पु० शक्तिका कुंठित हो जाना, लरम पड़ना।

-ग्रह-पु० शब्द-शक्ति-ज्ञान, शब्दकी अर्थबोधक शक्तिकी जानकारी; शिव; कांतिकेव। वि० शक्तिप्राहक; माया धारण करनेवाला। -ग्राहक-वि० शब्दार्थका निश्चय करनेवाला। पु० कांतिकेव। -ग्रथ-पु० राम्यकी तीन शक्तियों (दे० 'शक्ति')। -घर-पु० स्वामी कांतिकेव; मातावरदार। वि० शक्ति धारण करनेवाला। -ध्वज-वि० शक्ति-लक्षधारी। पु० स्वामी कांतिकेव। -ध्वज-पु० सतपन्न इक्षु। -वाणि-पु० स्वामी कांतिकेव। वि० शक्ति-लक्षधारी। -पूजक-पु० शक्तिका उपासक, शाक, तात्तिक। -पूजा-की० शक्तिकी उपासना। -पूर्व-पु० परास्तर। -शुद्ध-पु० स्वामी कांतिकेव। -वाणी (चिह्न) वि०, पु० शक्तिका उपासक। -वैकल्य-पु० शक्तिका नाश। -ह-वि० शक्तिमान्, बलवान्। -संपन्न-पु० शक्तिसाली, बलवान्। -हीन-वि० निर्बल, सामर्थ्य-रहित। -होसिक-पु० मातावरदार। सु०-वैकल्य-किसी विषयमें किसीके बल, सामर्थ्य इत्यादिका परिचय मिलना। -रक्षणा-किसी काव्यके करनेमें समर्थ होना।

-कन्या, -कन्याना-एक प्रभाव इत्यादिका प्रकीर्ण होना, करना।

शक्तिमत्ता-की०, शक्तिमत्त्व-पु० [सं०] शक्तिवुक्त होनेका भाव।

शक्ती-की० एक मासिक छंद।

शक्तु-पु० [सं०] दे० 'शक्त'।

शक्तुक-पु० [सं०] एक विष।

शक्तु, शक्तु-वि० [सं०] प्रियंवद।

शक्त्य-वि० [सं०] होने योग्य, साम्य, समर्थ। -प्रतीकार-वि० जिसका प्रतिकार हो सके।

शक्त्यर्थ-पु० [सं०] शक्तकी अभिधा छक्तिसे श्रेय अर्थ।

शक्त-पु० [सं०] इंद्र; शिव; ज्योत्षा नक्षत्र; उल्क; अर्जुन वृक्ष; कुटज वृक्ष; इंद्रजी; रणका चौथा भेद; चौदहवीं सख्या (चौदह इंद्र होनेके कारण)। -काष्ठ-पु०

इंद्रवृक्ष। -काष्ठ-की० पूर्व दिशा। -केतु-पु०

उद्भव। -गोप, -गोपक-पु० इंद्रगोप, शीरवृद्धी।

-काप-पु० इंद्रवृक्ष। -ज, -जास-पु० कौआ।

-आ-की० इनासन कृता। -आक्ष-पु० इंद्रजाक।

-जित्-पु० मेघनाद। -इंती(तिव्)-पु० मेरावत।

-दास, -दुम-पु० देवदास। -दिक(श)-की० पूर्व

दिशा। -दैवत-पु० ज्योत्षा नक्षत्र। -नंदन-पु०

अर्जुन। -पर्याय-पु० कुटज वृक्ष। -पादप-पु० कुटज

वृक्ष; देवदास। -पुर-पु०, -पुरी-की० अमरावती।

-पुष्पा, -पुष्पिका, -पुष्पी-की० अग्निशिक्षा वृक्ष।

-प्रस्थ-पु० इंद्रप्रस्थ, भारतका एक प्राचीन नगर।

-बीज-पु० इंद्रजी। -अग्रज, -सुवज, -छोक, -

वास-पु० स्वर्ग। -मिह-पु० मेघनाद। -भूजवा, -

वल्ली-की० इंद्रवासणी। -भृक्ष, -वृक्ष-पु० कुटज।

-माता(रु)-की० इंद्रकी माता; भार्गी। -मूर्त्ति-

(अर्जुन)-पु० बाँधी। -वाहन-पु० मेघ। -वास्ती-

(शिव)-पु० कुटज। -वासा-की० यक्षवासा। -

शिर(स्)-पु० बाँधी। -सारथि-पु० मातलि। -

सुत-पु० जयंत; शक्ति; अर्जुन। -सुधा-की० कुंदरु।

-सृष्टा-की० हरीतकी।

शक्ताव्य-पु० [सं०] उल्क।

शक्ताणी-की० [सं०] शक्ती, इंद्राणी।

शक्ताव्यज-पु० [सं०] जयंत; अर्जुन।

शक्तावन-पु० [सं०] कुटज; मंग।

शक्ति-पु० [सं०] वज्र; परवत; हाथी; बादल।

शक्त-वि० [सं०] प्रियंवद। की० [अ०] रूप, आकृति;

बेहरा; नक्षत्रा, वनावट दंग; अंदाज; उपाय, वय (निक-

लना, निकालना); देखा-गणितकी कीर्ति आकृति। - (के)-

मिसाखी-की० नन्दा। शु० (अपनी)-तो देखो

(देखिये)-अपनी योग्यता, अपनी सामर्थ्य तो देखो

(अधिकार चोष्टपर व्यर्थ)। -दिक्षाना-मिलना, सामने

आना। -देखते रह जाना-देखा करना-वकित,

मुग्ध हो जाना। -न विज्ञाना-न मिलना, मुँह

ठिपाना। -एकदम-रूप, आकार ग्रहण करना।

-पहचानना-घरतसे पहचानना; बेहरा वा घूरत देख-

र शीलस्वभाव जान लेना (मैं बोरकी शक्तसे पहचानता

हूँ)। -बगना-शक्त विभावना; अशुंदर बन जाना।

-विगतबुधा-बेहरेकी अशुंदर कर लेना वा कर देना;

पीठकर मुँहकी बुधा देना।

शक्कर-पु० [सं०] सोप।

शक्ती-की० [सं०] उँगकी; मुद्रिका; गाव; मेखका।

शक्ता(कम्)-पु० [सं०] हाथी।

शक्त्व-पु० [अ०] मानवदेह; व्यक्ति, आवदी।

शक्ती-वि० एक आवदीका, वैयक्तिक। -शुक्लत-

की० एकत्र राख।

शक्तीवत्त-की० वैयक्तिक विशेषतायें; व्यक्तिवत्।

शक्ता-पु० [अ०] काम; धंसा; मनवहलाव; मनवान्का

ध्यान। शु० -करना-किसी, खासकर खाने-पीने,

हुका पीने आदिके, काममें लगना।

शक्ता-पु० [फा०] मृगाक, गीदक।

शक्ती-पु० दे० 'शक्तु'; विवाह पक्षा होनेकी रस्म; तिथक।

शक्ती-पु० दे० 'शिव'।

शक्ति, शक्ती-की० [सं०] इंद्राणी; वल; क्रियाशक्ति;

वाणी, वाचशक्ति; पवित्र कर्म; प्रज्ञा; सतावर। -पति-

पु० इंद्र।

सज्ज-पु० [अ०] पेश, तनेदार वृक्ष।

सज्ज-पु० [अ०] वंशवृक्ष।

सद-वि० [सं०] अन्क, खड़ा। पु० खड़ाई; तेजाव।

सदा-की० [सं०] जदा; सिंहकेसर, शेरका अयाक।

सदि, सदी-की० [सं०] कचूर; अमावस्य; कपूरकचरी;

नेत्रवाला।

शहक-पु० [सं०] जल और धीमे सना हुआ चाबकका

वृण।

शह-वि० [सं०] घृत्, छकी। पु० छलिया; आकसी

आवदी; सुख; नकली प्रेम प्रकट करनेवाला नायक;

मध्यस्थ; धतुरा; सफेद सरसे; केसर; तगर; कोहा।

-की, -कुक्षि, -अस्ति-वि० दुष्ट बुद्धिवाला।

शहता-की०, शहव-पु० [सं०] शहका भाव, कर्म

अथवा धर्म।

शहता-की० [सं०] अवज्ञा।

शज-पु० [सं०] सनका क्षुप; भग। -कंद-पु० चर्मका

नामक द्रव्य। -चंडिका-की० क्षणपुष्पी। -वर्षी-

की० अशनपर्णी। -पुष्पिका, -पुष्पी-की० वनसनई;

अहर। -सूत्र-पु० कुश आदिकी बनी पवित्री।

शक्ता, शक्ताव्य-पु० [सं०] अमलनास।

शक्ति-की० [सं०] क्षणपुष्पी।

शक्ती-पु० [सं०] सोन नदीके मध्यका पुलिन; गंगा और

सरयूके बीचका स्थल, दोआबा।

सत-पु० [सं०] लौकी संख्या। वि० सौ; असंख्य।

-कर्मा(सं)-पु० छानि ग्रहका नाम। -कुंत-कुंद-

पु० करवीर, सफेद कनेर। -कुंज-पु० सफेद कनेर;

एक पहाड़ जहाँसे सोना निकलता है। -कुलीहक-पु०

एक तरहका कठिन आवरणवाला जीव। -कुसुमा-

की० सोप। -कोटि-पु० इंद्रका वज्र; बीरा; सौ

करोड़की संख्या। वि० सौ करोड़। -कृत्त-पु० इंद्र; बड़

जिम्मे सौ यज्ञ किये हो। -खंड-पु० सोना, सुवर्ण।

-गु-वि० लो गायिका मासिक । -ग्रंथि-खी० दू ।
 -घ्नी-खी० पत्थरमें छोड़ेकी छोलेकी गायक बनाना
 गया चार ठाक कथा प्राचीन शब्द; एक बारमें लो
 आदमियोंकी मारनेवाला अक्ष (या तोप ?) इधिकाणी;
 करजका पेड़; एक प्राणवातक गल्बरीग । -छद्द-पु०
 लो पंजाबियोंका कमल; कठफोडवा पक्षी । -छटा-खी०
 सतावर । -छिह्ण-पु० शिव । -छारा-पु० छतभिया
 नामक लोधीसर्व नक्षत्र (इसके अधिष्ठाना वरुण है । इसकी
 आकृति मंडलाकार है और इसमें लो तारे हैं । यह
 लोभीमुख माना जाता है) । -हंसिका-खी० नागदंती ।
 -हल-पु० कमल । -हला-खी० छतपथी । -हु-
 खी० पंजाबकी पाँच नदियोंमेंसे एक, सतलज नदी ।
 -घा-खी० दूर्वा । अ० दे० क्रममें । -घासा(मच)-
 पु० विष्णु । -घार-पु० इन्द्रका वज्र । -घन-पु०
 एक सरक । -घुति-पु० इन्द्र; ब्रह्मा; स्वर्ग । -वेत्रिका-
 खी० सतावर । -पत्र-पु० कमल; मयूर; सारस; कठ-
 फोडवा; लोता; लोतेकी जातिका एक पक्षी । -निघास-
 पु० ब्रह्मा । -पन्नक-पु० कठफोडवा; एक विपैका
 कीड़ा; एक पर्वत । -पन्ना-खी० दूर्वा । -पत्री-खी०
 सेवती; छफेद गुलाब । -पथप्राज्ञ-पु० महर्षि वाह-
 वन्स्यकृत एक प्रसिद्ध 'प्राज्ञ' जो शुद्ध यजुर्वेदके अंत-
 र्गम आता है । -पथिक-वि० बहुतसे मत्तोंकी मानने-
 वाला । -पद्-पु० कनकचूरा, गोजर । -पद्मक-
 पु० लोतिपके अनुसार लो कोशिकाका एक चक्र (इसमें
 नक्षत्रोंका ज्ञान किया जाता है) । -पवी-खी० दे०
 'शतपद' । -पद्म-पु० इवेत कमल । -परिवार-पु०
 एक समाधि । -पर्वो(र्व)-पु० बौद्ध; ईसाका एक
 प्रकार । खी० दूर्वा; बचा; भार्यपत्नी; कोबागर पूर्णिमा;
 कड़का । -पर्विका-खी० दूब; जौ । -पादिका-खी०
 दे० 'शतपद'; काकोली । -पाद्-पु० दे० 'शतपद' ।
 -पुत्री-खी० सतपुतिया । -पुष्पा-पुष्पिका-प्रसूना-
 खी० लोभाका साग; एक विशेष क्षुप, लीफ । -प्रास-
 पु० करवीर । -बाहु-पु० एक राक्षस; एक प्रकारका
 कीड़ा; वैक्रमतके अनुसार मारका पुत्र । -मिष-पु०,
 -मिषा-खी० दे० 'शततारा' । -भीरु-खी० मलिका ।
 -मल-पु० इद्र; उल्लू । -मम्बु-वि० महाकोपी ।
 पु० इद्र; उल्लू । -मयूख-पु० चंद्रमा । -मार्ज-
 पु० मलकारक । -मूला-खी० दूर्वा; बचा; सतावर ।
 -मूहिका-खी० इवन्ती । -मूली-खी० सतावरी;
 बचा; तालमूली । -महिक-पु० लो लोभाका हार ।
 -रूपा-खी० ब्रह्माकी कन्या तथा परमी; स्वार्थशुच
 मनुकी माता; विष्णुपुराणके अनुसार स्वायम्भुव मनुकी
 परमी । -बाधन-पु० लो (शुद्धसंस्कृत) बाणोंका एक
 साथ बजना । -बार्षिक-वि० लो वर्षोपर होनेवाला ।
 -बार्षिकी-वि० खी० लो वर्षोंमें होनेवाली; लो वर्ष-
 व्यापिनी । खी० लो वर्षपर होनेवाला उत्सव । -बीर-
 पु० विष्णु । -बीर्य-खी० इवेत दूर्वा । -बेरी(चिन्)-
 पु० अम्बवेतस; चुका । -बासाका-खी० छतरी, छत्र ।
 -बीर्य-पु० विष्णु । -सुता-खी० सतावर । -इया-
 खी० दिवली; वज्र ।

शतक-वि० [सं०] लोकी संख्यासे संवत् । पु० प्रायः
 एक ही प्रकार जन्मा एक ही व्यक्तिको लो वस्तुओं,
 रचनाओं आदिका संग्रह (जैसे-शृंगारशतक); शरी,
 शताब्दि; विष्णु ।
 शतबा-अ० [सं०] लो प्रकारसे । खी० दे० 'शत'में ।
 शतरंज-पु०, खी० [अ०] एक प्रसिद्ध खेल जिसमें सुन्दरे
 बादशाह, वजीर, हाथी, घोड़ा, प्यादे आदि होते हैं
 (संस्कृत चतुरंग, या फारसी शतरंजका विकृत रूप) ।
 -का नक्षत्रा-शतरंजके कुछ मोहरोंकी ऐसी पाक
 जिससे विपक्षीको मात दी जा सके । -बाज-पु० शतरंज
 खेलनेवाला । -बाजरी-खी० शतरंज खेलना ।
 शतरंजी-खी० रंग-बिरंगी वा शतरंजके सामानोंकी लो पुना-
 बट्वाकी मोटी चादर जो दरी आदिके ऊपर बिछाई जाती
 है; रंग-बिरंगी दरी; शतरंज खेलनेकी बिसात । पु० शत-
 रंजवाज । -बाज-पु० शतरंजी नुननेवाला ।
 शतशः(शस्)-अ० [सं०] लोकेकें प्रकारसे ।
 शतांग-पु० [सं०] तिनिस वृक्ष; रथ; एक राक्षस । वि० लो
 अंगोंवाला ।
 शतशुल-पु० [सं०] ताल वृक्ष ।
 शतास्त-पु० [सं०] लोवें हिस्सा ।
 शताब्दी-खी० [सं०] राशि; पार्वती, दुर्गा; लोका ।
 शतानन्द-पु० [सं०] राजा जनकके राजपुरोहित; कृष्ण;
 ब्रह्मा; विष्णु; विष्णुका रथ; गौतम मुनि ।
 शतानक-पु० [सं०] इन्द्राज्ञ, सरयट ।
 शतानन-पु० [सं०] लोफक, बेल ।
 शतानना-खी० [सं०] एक देश ।
 शतानीक-पु० [सं०] वृद्ध; श्वशुर; व्यासके शिष्य एक
 मुनि; जनमेजयके पुत्र और सहजानीकके पिता; राजा
 सुदासके पुत्र; नकुलके पुत्र; एक राक्षस ।
 शताब्द-पु०, शताब्दी-खी० [अ०] शती, लो सालोंकी
 अवधि ।
 शतामच-पु० [सं०] इद्र ।
 शताबु(स्)-वि० [सं०] लो वर्षोंकी आयुवाला ।
 शताबुध-वि० [सं०] लो आयुध धारण करनेवाला ।
 शतार-पु० [सं०] वज्र; सुदर्शन चक्र ।
 शतारक-पु० [सं०] एक तरहका कुछ रोग ।
 शतारुच-पु०, शतारुचि-खी० [सं०] 'शतारक' ।
 शतावधान-पु० [सं०] मनोयोगपूर्वक बिना छुटिके लो
 अथवा बहुतसे कामोंको एक साथ करनेवाला व्यक्ति;
 शतावधानका कार्य ।
 शतावधानी(चिन्)-पु० [सं०] राधेवद्र; शतावधान ।
 शतावधानी-खी० शतावधानका कार्य ।
 शतावर-खी० सतावर, सफेद मूसली ।
 शतावरी-खी० [सं०] सतावर; शरी, कवूर; शक्ती ।
 शतावर्त-पु० [सं०] विष्णु; शिव ।
 शतावर्ती(सिंघ)-पु० [सं०] विष्णु ।
 शताह्वना-खी० [सं०] लोभा; सतावर; लीफ ।
 शताह्वा-खी० [सं०] शतावरी; लोका अन्नमोदा ।
 शतिका-वि० [सं०] लोभाका; लोसे सपका; लोमें सरीखा
 चुका ।

शली-श्री० [सं०] शीका संग्रह (जैसे-‘आर्थासंग्रहणी’); शरी, शताब्दी ।

शलेर-पु० [सं०] शङ्ख; हिंसा; थोट ।

शलीवर-पु० [सं०] शिव; शिवका एक गण; एक अक्ष-मंत्र ।

शाल्य-वि० [सं०] दे० ‘शक्ति’ ।

शक्ति-पु० [सं०] हाथी; बल ।

शकुज्य-वि० [सं०] शकुकी जीतनेवाला । पु० एक पर्वत ।

शकु-पु० [सं०] बैरी; दुश्मन । -बात, -घाती (वि०) -वि० शकुईता । -घ्न-वि० शकुनाशक । पु० सुमित्रासे उत्पन्न दशरथके पुत्र । -खिन्-वि० शकुकी जीतनेवाला ।

-दमन, -निबर्हण-वि० शकुनाशक । -भंग-श्री०

मूँज । -मर्दन-पु० शकुन । -विग्रह-पु० शकुका आक्रमण । -विनाशान-पु० शिव । -साह, -साह-

वि० शकुका सामना करनेवाला । -हंता (शु)-वि० दे० ‘शकुबा’ ।

-हा (हन्)-वि० शकुकी मारनेवाला ।

शकुता-श्री०, शकुप्य-पु० [सं०] दुश्मनी, वैर ।

शकुताई-श्री० शकुता ।

शम्बरी-श्री० [सं०] रात्रि ।

शब्-पु० [सं०] खाद्य शक्ति (फल, मूल इ०); कर ।

शब्द-पु० [सं०] छिलके या भूरी सहित अक्ष ।

शब्दी-वि० [अ०] कठिन; नीज, बहुत जोरका ।

शब्-पु० [अ०] किसी अक्षरको दो बार पढ़ना, द्वित्व, गद्योद; आवाजको जोर देना । - (ब, -हो) मद्-पु० धूमधाम; जोर, तेजी (-से तारीक करना) ।

शहाद्-पु० [अ०] आदि जातिका एक प्रतापी सम्राट् जिसने सुदार्केका दावा किया और विहिदके नमूनेपर अरम-उद्यान (बाग़े अरम) बनवाया, पर उसके दरबानेपर कदम रखते ही मौतका शिकार हुआ ।

शदि-पु० [सं०] हाथी; बादल; अर्जुन । श्री० विजयी; भिन्नी ।

शक्षु-वि० [सं०] चलनेवाला; नष्ट होनेवाला; गिरानेवाला । पु० विष्णु ।

शन-पु० [सं०] शांति; मीनारुचन; शण ।

शनकाबलि-श्री० [सं०] शनपिपली ।

शनपर्णी-श्री० [सं०] कड़की ।

शनघा-वि० [का०] सुननेवाला । -ई-श्री० सुनवाई ।

शनाकृत-श्री० [का०] पहचान; परिचय; भले-बुरे, सखे-शुटेका भेद समझनेकी शक्ति, परस्म । सु०-करना-पहचाना ।

शनावर-वि० [का०] तैरनेवाला, तैराक ।

शनाघरी-श्री० तैरना; तैराकी ।

शनास-वि० [का०] पहचाननेवाला, विवेक करनेवाला (समासमें व्यवहृत-हकशनास-हककी पहचानने, हकनाहकका विवेक करनेवाला ।)

शनासा-वि० [का०] पहचानने, परखनेवाला । -ई-श्री० जान-पहचान, परिचय ।

शनि-पु० [सं०] भवभ्रष्टोंमेंसे सातवाँ ग्रह; सप्ताहका अंतिम दिन, शनिवार; शिव; सर्वपुत्र । -चक्र-पु० शुभाशुभ

शाननेका एक चक्र (चक्रो०) । -ज-पु० काली भिन्नी ।

-प्रदीप-पु० वह प्रदीप जो पक्षी नवोदशी शनिवारके

दिन पकनेपर मनाया जाय । -प्रक्षु-श्री० छाया ।

-प्रिय-पु० नीलम । -रुह-पु० ‘शनि ग्रहका बाह्य; मैला । -वार, -बासर-पु० शुक्रवारके बादका दिन ।

शनिग्रह-पु० शनि ।

शनीय-वि० [का०] सुना हुआ । श्री० सुननेकी क्रिया, श्रवण । -नी-वि० सुनने योग्य ।

शनीया-वि० [का०] सुना हुआ, श्रुत ।

शनैः-अ० [सं०] धीरे, चुपचाप; क्रमशः; उत्तरोत्तर; मुला-वर्धमानसे । -प्रमेह-पु० प्रमेह रोगका एक प्रकार ।

-शनैः-अ० धीरे-धीरे, क्रमशः ।

शनैर्मह-पु० [सं०] दे० ‘शनैःप्रमेह’ ।

शनैश्चर-पु० [सं०] दे० ‘शनि’ । वि० धीरे चलनेवाला ।

शाक-वि० [सं०] मुर्छाया हुआ, क्षीण ।

शाकाह-पु० [का०] वह मसक जिसके सपारे तैरते या तैरनेका अभ्यास करते हैं ।

शप-पु० [सं०] शप; शपथ । वि० [का०] वेज, द्रुत ।

-शप-श्री० वेत, कमची या तलवार मारनेकी आवाज; कुत्ता आदिके चाटनेसे होनेवाली चपड़-चपड़की आवाज ।

अ० जल्दीसे, शपशप । -से-जल्दीसे ।

शपथ-श्री० [सं०] सौम्य, कसम; शप; प्रणिष्ठा (वरना, नेना) । -पत्र-पु० हलफनामा ।

शपथ-पु० [सं०] शपथ; दुर्वचन, गाली ।

शपाशप-श्री०, अ० दे० ‘शपशप’ ।

शप्-पु० [सं०] उलूक नामक एक वास; शपग्रस्त व्यक्ति । वि० अमिश्रापग्रस्त; अस्तित्व ।

शफ-पु० [सं०] छुर; पक्षी जड़; नली ।

शफक-श्री० [अ०] स्योदयके पूर्व और स्यास्तके पीछे क्षितिजपर प्रकट होनेवाली लाली (अधिकतर संध्याकी मालीके लिए प्रयुक्त); सांध्य राग । -का टुकड़ा-अति सुंदर । सु०-कूलना-शफकका प्रकट होना ।

शफकत-श्री० [अ०] अनुग्रह; दया; प्रेम ।

शफकाल-पु० [का०] एक तरहका फल, सतालू ।

शफर-पु० [सं०] पीछी मछली ।

शफराधिप-पु० [सं०] हिलसा नामकी मछली ।

शफरी-श्री० [सं०] दे० ‘शफट’ ।

शफा-श्री० [अ०] शरीरता, स्वास्थ्य । -झाना-पु० अस्पताल, चिकित्सालय ।

शफाकृत-श्री० [अ०] पाप क्षमा कर देनेकी सिफारिश; सिफारिश । -शर-पु० शफाकृत करनेवाला ।

शफाक-वि० [अ०] शफाकृत करनेवाला; शफाका हक रखनेवाला ।

शफाक-वि० [अ०] अनुग्रहकर्ता; हनदद; ध्याता ।

शफोह-श्री० [सं०] गायके फटे छुर जैसी जंघाओंवाली स्त्री ।

शफक्राक-वि० [अ०] अति स्वच्छ; पारदर्शी ।

शब्-श्री० [का०] रात । -कोर-वि० जिसे रातकी

विश्रांति न दे । -कोरी-श्री० रतीश, निशान्ता ।

-खन-पु० रातमें असाधन शब्दपर किया जानेवाला

हमला। -**इबानी**-**खी**० वह कहानी जो दास्तानगो रूपमें नींद लानेके लिए सुनाये। -**इबानी**-**खी**० रातको सोते समय पढ़नेके कपड़े। -**निर्व**-**वि**० रातको फिरने वा पहरा देनेवाला। पु० चौकीदार; कोतवाल; चीर; चंद्रमा। -**गीर**-**वि**० जो रातको जगाता रहे। पु० पिछली रातका सफर; क्षीपूर। -**गूल**-**वि**० रातके रंगका, काला। -**बराड़ा**, -**बिराड़ा**-**पु**० एक लाल जो रातमें अधिक चमकता है। -**ताब**-**वि**० रातको चमकनेवाला। पु० रातकी रोशनी; जुगनू; चंद्रमा; दीपक; कांछी बिली। -**नम**-**खी**० ओस। [मु० -**का रोना**-ओसका गिरना।] -**बख़ैर**-(पद) रात सकल राते (समेरे कोई काम करनेका विचार होनेपर बोलते हैं)। **खी**० रातकी बिना होनेके समयका अविवादन। -**बास**-**वि**० रातमें टिकनेवाला। -**बेदार**-**वि**० जो रातभर जगता रहे; रातको जागकर भगवद्भजन करनेवाला। -**बेदारी**-**खी**० रातको जागते रहना। -**मेराज**-**खी**० २६-२७ रजबके चौथी रात जब मुसलमानोंके विश्वासानुसार मुहम्मदने आसमानपर जाकर खुदमे साक्षात्कार किया। -**रंग**-**वि**० (रातके रंगका) स्वाह। पु० स्वाह रंगका धोका। -**रौ**-**वि**० रातको चलनेवाला, रात्रिचर। पु० चीर; चौकीदार; कोतवाल। -**(बे) हुंज़ार**-**खी**० वह रात जो किसीकी (विकल) प्रतीक्षामें कटे। -**उम्मीद**-**खी**० मिलन-रात्रि। -**औबल**-**खी**० (मिलनकी प्रथम रात्रि), सुहाय-रात। -**क़द्द**-**खी**० मुसलमानोंके विश्वासानुसार एक अनि पवित्र रात (अध्यात्मिक मनसे, रम-जानकी २७वीं रात)। -**शाम**-**खी**० विद्योपकी रात। -**गस्त**-**वि**० रातको फिरने, गस्त करनेवाला। **खी**० रातमें फिरना, भ्रमण करना। -**तार**, -**तारीक**-**खी**० अंधेरी रात। -**बरात**-**खी**० शवान महीनेकी १५वीं रात (मुसलमानोंके विश्वासानुसार इस रातमें आयुका हिसाब और रोजी बँटनेका काम होता है। हिंदुस्तानी मुसलमान आतिशबाजी छोड़ते और दुल्लुगोंका फातिहा करके हल्का-रोटी बँटते हैं)। -**का चाँद**-शवानका महीना। -**महताब**, -**मार**-**खी**० चँदीना रात। -**बसाल**-**खी**० मिलनरात्रि; वह रात जिसमें कोई सिद्ध पुरुष शरीर छोड़े। -**बस्त**-**खी**० मिलनरात्रि; वह रात जिसमें प्रेमीका प्रेमिकासे मिलन हो। -**साह्राद**-**खी**० मुहर्रमकी नवी रात जिसके समरे इमाम हुसैनकी शहादत हुई। -**(को)रोज़**-**अ**० रात-दिन, हर वक्त। **शब्दका**-**पु**० [अ०] तारोंका बना जाल; कबूतर फँमानेका तिकीना जाल जो लकड़ीमें बँधा हुआ होता है। **शब्दनम**-**खी**० [फा०] दे० 'शब्द'में; सफेद रंगका एक निहायत नारीक कपड़ा। **शब्दनरी**-**खी**० [फा०] वह कपड़ा जो ओससे बचनेके लिए छपरछपर तान दते हैं; मसहरा। **शब्द**-**पु**० [सं०] दक्षिण भारतकी एक पहाड़ी और अस्त-व्युत्पत्ति; जंगली मनुष्य; शिव; एक प्रसिद्ध योमांसक; बाघ; जल। -**कंद**-**पु**० एक मीठा कंद। -**चंदन**-**पु**० एक चंदन जो द्रवैतरण वर्णका होता है। **शब्दरक**-**पु**० [सं०] जंगली आदमी।

शबरी-**खी**० [सं०] शबर जातिकी नारी; रामायणमें बणित शबर जातिकी एक रामभक्त नारी। **शबल**-**वि**० [सं०] विविध रंगोंवाला; कई रंगोंमें अंकित; विभिन्न भावोंमें विभक्त; अनुकूल, किसी वस्तुकी नकलपर बना हुआ। पु० विभिन्न प्रकारका रंग; जल। -**चेतन**, -**हृदय**-**वि**० पीका, संताप आदिसे अश्रित, व्यथ। **शबला**-**खी**० [सं०] चितकरी माय; कामधेनु। **शबलिका**-**खी**० [सं०] एक तरहकी चिटिया। **शबली**-**खी**० [सं०] दे० 'शबला'। **शबाबा**-**वि**० [फा०] रातका। अ० रातको। पु० रातका खाना, कपड़े या मजदूरी; रातकी बची हुई रोटी। -**रोज़**-**अ**० रात-दिन, हर वक्त। **शबाब**-**पु**० [अ०] जवानी, बीससे चाहीस वरसतककी उम्र; चंदतीका जमाना। **मु**० -**फट पड़ना**-जवानीका जोरपर होना, पूरी तरह खिल उठना। **शबाहल**-**खी**० [अ०] रूप, आकृति; समानता, समरूपता। **शबिलान**-**पु**० [फा०] (राजा-बादशाहके) सोनेका कमरा; अंतःपुर; परलगा; मसजिदमें वह स्थान जहाँ रातको इबादत करते हैं। **शबीना**-**वि**० [फा०] रातका; राती। **शबीह**-**खी**० [अ०] रूपमय; चित्र, अनुरूप चित्र (छोचना, लिखना)। **शब्द**-**पु**० [सं०] आकाशमें किसी भी प्रकारसे उत्पन्न शब्द जो वायुतरंग द्वारा कानोंक आकर सुनाई पड़े अथवा पढ़ सके [शब्दके दो प्रकार हैं-वर्णात्मक तथा ध्वन्यात्मक। वाग्वचनमें उत्पन्न शब्द वर्णात्मक हैं और गाल, वृद्धादिमें उत्पन्न शब्द ध्वन्यात्मक। वर्णात्मक शब्दके भी दो प्रकार हैं-व्यक्त (साथक), अव्यक्त (निरर्थक); निर्विभक्तिक नाम जो धर्ममय द्वारा निर्मित और साथक हो; ध्वनि, आवाज; आप-वचन, आप पुरुष द्वारा व्यक्त ज्ञान, शिक्षा आदिको भातें। -**कार**, -**कारी** (**रिद**)-**वि**० शब्द करनेवाला। -**कोश**, -**कोष**-**पु**० वह ग्रंथ जिसमें शब्दोंके सम्बन्ध वर्ण-विन्यास, अर्थ, प्रयोग, पर्याय आदि हों, अभिधान। -**शत**-**वि**० शब्दमें निहित। -**ग्राह**-**पु**० अवर्णद्वय, कान। **वि**० शब्द-ग्राहक, शब्द पकड़नेवाला। -**ग्राम**-**पु**० शब्द-समूह। -**चानुर्व**-**पु**० शब्द-प्रयोगकी कला, चातुरी, बोलनेके ढंगकी निपुणता। -**चित्र**-**पु**० एक शब्दालंकार जहाँ छंद-रचनामें ऐसे वर्ण रसे जावें जिनके द्वारा विशेष-विशेष विन्यासमें विशेष चित्र बन जाय; साहित्यरचनाका एक नवीन प्रकार जिसमें शब्दों द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति आदिका रूप खड़ा किया जाता है, 'स्केच'। -**खोर**-**पु**० दूसरेकी रचनाके शब्द उड़ाकर अपनी कविता, लेखादिमें प्रयोग करनेवाला। -**कूट**-**पु**० नृत्यका एक प्रकार। -**पति**-**पु**० कबनेभरकी स्वामी या राजा। -**पाती** (**सिध**)-**वि**० केवल शब्दके आधारपर निशाना लगानेवाला। -**प्रमाण**-**पु**० मौखिक प्रमाण; आप्रमाण। -**बोध**-**पु**० मौखिक साक्षादिते प्राप्त ज्ञान। -**ब्रह्म** (**रु**)-**पु**० वेद; शब्दरूप में ब्रह्मज्ञान; स्फोट नामक शब्दका एक गुण। -**भेद**-**पु**० व्याकरणमें अपने कार्य, स्थिति, संबंध आदिके आधार

पर किया गया शब्दोंका वह विभाजन जिससे विश्व होता है कि कोई शब्द संज्ञा है या सर्वनाम, क्रिया या अव्यय, इत्यादि (शब्दोंके आठ भेद वे हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबन्धसूचक, अव्यय, मयोपसर्ग, विस्मयादिबोधक)। —**मेघी (विष्णु)**—पु० दे० 'शब्दमेघी'। —**महेश्वर**—पु० शिव (कहा जाता है कि पाणिनिने अपना व्याकरण महेश्वरकी आज्ञासे लिखा था। यह भी कहा जाता है कि पाणिनिके व्याकरणके आरंभिक जोरह सूत्र महेश्वर (शिव)के रचे हैं, अतः वे 'महेश्वरसूत्र' कहलाते हैं। इन्हीं कारणोंसे शिवका यह नाम पड़ा)। —**योगि**—श्री० धातु; शब्दका उत्पत्तिस्थान। —**विद्या**—श्री० शब्दज्ञान, व्याकरण। —**विरोध**—पु० केवल शब्द-द्वारा किया जानेवाला विरोध। —**वृत्ति**—श्री० शब्दका कार्य (सा०)। —**वेची (विष्णु)**—पु० वह व्यक्ति जो केवल शब्द मुनकर बिना देखे ही लक्ष्यपर बाण मारे; एक प्रकारका बाण; अर्जुन; दशरथ। —**शक्ति**—श्री० शब्दकी विशेष अर्थबोधक शक्ति (यह तीन प्रकारकी होती है—अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)। —**शास्त्र**—पु० व्याकरण। —**श्लेष**—पु० किसी शब्दका दो या दोसे अधिक अर्थोंमें प्रयुक्त होना। —**संज्ञह**—पु० शब्दोंका चयन; शब्दकोष। —**सम्भव**—पु० बाध। —**साधन**—पु० शब्दोंकी व्युत्पत्ति, स्थानर आदि दिखानेवाला व्याकरणका भाग। —**सौंदर्य**—पु० दे० 'शब्दसौंदर्य'। —**सौकर्य**—पु० शब्दोंके उच्चारण-की सरलता; सुगमता, सुखसुख। —**सौष्टव**—पु० रचना-शैलीके शब्दोंका सौंदर्य, किसी शब्दयोजनाकी सुदरता। —**हीन**—पु० अप्रचलित शब्दका प्रयोग। वि० ध्वनि-रहित।

शब्दन—वि० [सं०] शब्द करनेवाला। शब्द करना; शब्द, ध्वनि; आवाज।

शब्दज्ञा (शास्त्र)—अ० [सं०] (किसीके लिखे या कहे गये) प्रत्येक शब्दके अनुसार, उसका ठीक-ठीक अनुसरण करते हुए।

शब्दाक्षर—पु० [सं०] ओंश्च, प्रणव।

शब्दाक्षय—वि० [सं०] जिसका औरमें उच्चारण किया जा सके।

शब्दादर्शक—पु० [सं०] अनावश्यक रूपसे और बिना प्रसंग विद्वत्ताके ज्ञापनार्थ बड़े-बड़े शब्दोंका प्रयोग जिससे भावामिश्रयुक्तिकी कमी हो, शब्दोंका कटाघोष। शब्दजाल।

शब्दातिग—पु० [सं०] विष्णु।

शब्दातीत—वि० [सं०] जिसका शब्दों द्वारा वर्णन न हो सके, वर्णनातीत। पु० ईश्वर।

शब्दाधिष्ठान—पु० [सं०] कान, श्रवणेंद्रिय।

शब्दाध्याहार—पु० [सं०] वाक्यगत संपूर्ण अर्थकी प्राप्तिके लिए उसमें आवश्यक शब्दोंका समावेश करना।

शब्दानुकरण—पु०, **शब्दानुकृति**—श्री० [सं०] शब्दका अनुकरण।

शब्दानुसासन—पु० [सं०] व्याकरण।

शब्दापमान—वि० [सं०] शब्द करता हुआ, शब्दकारी।

शब्दार्थ—पु० [सं०] शब्दका अर्थ या अभिप्राय।

शब्दार्थकार—पु० [सं०] वह अर्थकार जिसमें रचनाका

चमत्कार वा मायुर्व विशिष्ट शब्दों अथवा वर्णोंके प्रयोगपर निर्भर करता है, उनके अर्थपर नहीं।

शब्दाद्य—वि० [सं०] शब्दकारी।

शब्दाद्यक्षी—श्री० [सं०] किसी कथन या रचनामें प्रयुक्त शब्द-समूह।

शब्दित—वि० [सं०] ध्वनित; वादित; आहूत; जिसकी व्याख्या की गयी हो; आम तौरपर ज्ञानवा हुआ। पु० श्रोत।

शब्देन्द्रिय—श्री० [सं०] कान।

शब्द—पु० [सं०] शक्ति; मानसिक स्थिरता; मुक्ति; अंतःकरण और मनका संयम; बहिरिन्द्रियका संयम; सभी सांसारिक कार्योंमें निवृत्ति; श्रांत रसका स्थायी भाव; उपचार; दाय। —**पर**, —**प्रधान**—वि० शांत। —**लोक**—पु० शान्तिके, स्वर्ग।

शमई—वि० शमाका; शमाके रंगका। —**रंग**—पु० स्याही मायक हरा रंग।

शमक—वि० [सं०] शान करनेवाला; मुलह करनेवाला।

शमय—पु० [सं०] शान्ति; मनकी शान्ति; मंत्रदाता।

शमन—पु० [सं०] शान्ति; शान करना; दुःखाना; दूर करना; दवाना; यक्षके लिए पशु-चलि; क्रिमा; समाप्ति; आघातकर्म; यम, एक मृग; कलाय; चवानेकी जिवा। वि० निवारक, निवारण करनेवाला, दूर करनेवाला। —**न्यसा (सु)**—श्री० बमकी बहिन, यमुना।

शमी—श्री० [सं०] राशि। —**षट्**—पु० निशाचर।

शमल—पु० [सं०] विद्या; पाप; अपवित्रता; विपत्ति, दुर्भाग्य।

शमला—पु० [अ०] शाल जो कंधेपर ढाली या सिरसे बाँधी जाय; एक खास तरहकी पगड़ी जिसे पुराने बकील गाउनके ऊपर पहना करते थे; पगड़ीका मिरा, तुरा।

शमशाद्—पु० [का०] एक लबा, सुंदर वृक्ष जो सरोका एक भेद है और लक्ष्मीकी कवितामें नायिकाके कतका उपमान है।

शमशीर, शमशेर—श्री० [का०] तलवार; बीचसे छुकी हुई तलवार। (मूल रूप शमशेर—शम—नाम्न, शेर—सिंह)।

—**का खेत**—रणक्षेत्र। —**ज्व**—वि० तलवार चलाने या मारनेवाला। —**जनी**—श्री० तलवारकी लड़ाई। —**दम**—वि० तलवारकी बाढ़ रखने, तलवारकी काट करनेवाला। —**(शेर)जंग**—पु० वीरसूचक पदवी। —**बकल**—वि० खड्गस्त। —**बहादुर**—वि० खड्गीर, तलवारका धनी।

शमात्मक—पु० [सं०] मानसिक शान्तिका नाशक, कामदेव।

शमा—श्री० [अ० 'शमअ'] मोम; मोमबत्ती; दीप।

—**ए-अनुमन**, —**महकिल**—वि० जिससे महकिलकी शोभा हो। —**ए-काफ़री**—श्री० सफेद मोमबत्ती। —**ए-जामोश**—श्री० हुआ हुआ दीप। —**ए-मज़ार**—श्री० मजारका दीप।

—**ए-सहरी**—श्री० प्रभातका, जल्दी बुझनेवाला दीप। —**दान**—पु० वह चीज जिसमें मोमबत्ती लगाकर जलाते हैं; दीपक। —**रुझ**, —**रुझसार**, —**रु**—वि० सुंदर; जिसका मुखमेंडल दीप्तियान् हो। —**व परवाना**—पु० दीपक और पतंग; (सा०) प्रेमी और प्रेमापन्न।

शमि—श्री० [सं०] शिवा नामक धान्य; सफेद कीकर

नामक वृक्ष । पु० वृक्ष । -पञ्च-पु० कञ्जाल नामक वृक्षा ।

-पञ्चा-श्री० दे० 'शमिपत्र' । -रोह-पु० शिव ।

शमिका-श्री० [सं०] शमीका पेड़ ।

शमित-वि० [सं०] जिसका शमन किया गया हो। शांत ।

शमिर-पु० [सं०] शमीसी जातिका छोटा पेड़; छोटा शमी वृक्ष ।

शमी-श्री० [सं०] एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसकी लकड़ीके भीतर विशेष आग होती है जो रगनेपर निकलती है); शिवा; बागुलि । -शर्म-पु० अग्नि; पुरोहित-वर्गका आक्षण । -जालि-श्री० एक दिवक, कलाय । -धान, -धान्य-पु० मसूर, मूँग आदि । -पञ्चा-श्री० पानीमें उरपन्न होनेवाली लज्जावती लता ।

शमी(मिन्)-वि० [सं०] शांत; आत्मसंयमी ।

शमीक-पु० [सं०] एक कृषि जिनके गलेमें तपस्या करते समय राजा परीक्षितने मरा सर्प बांध दिया था ।

शमीर-पु० [सं०] दे० 'शमिर' ।

शम्भा-श्री० दे० 'शम्भा' ।

शम्भ-पु० [अ०] हरिश्चन्द्र; तसवीहमें लगानेका कुँदना ।

शम्भी-वि० सर्व-संबंधी, सौर । श्री० छमाही तनखाह (शाही जमानेमें हर छ महीनेपर मिला करती थी) । -साक-पु० सौर वर्ष ।

शर्मन्-वि० [सं०] बहुत सोनेवाला ।

शर्मन्क-पु० [सं०] गिरगिट ।

शर्ष-पु० [सं०] शय्या; निद्रा; सोप; ढाँध; हाथ; श्राप; भस्मेना । वि० सोनेवाला (समासांतमें) ।

शयत्-पु० [सं०] निद्राशील व्यक्ति; चंद्रमा (?) ।

शयन्-वि० [सं०] सोया हुआ । पु० मृत्यु; एक तरहका सोप, अजगर; शूकर; मछली ।

शयन-पु० [सं०] निद्रा; शय्या; मैथुन, नारी-सहवास ।

-आरती-श्री० रात्रिमें देवताओंकी सुलाते समय की जानेवाली आरती । -कक्ष-शूद्र-पु० सोनेका घर, शयनागार । -पाक्षिका-श्री० शय्याकी रक्षिका ।

-कोचिनी-श्री० अगहन वदी एकादशी । -शूमि-श्री० सोनेका स्थान । -अंदि-पु० दे० 'शयन-कक्ष' ।

-रत्न-पु० शय्या सजाना । -वास(स्)-पु० सोनेके समय पहने जानेवाले वस्त्र । -स्थान-पु० दे० 'शयन-भूमि' ।

शयनागार-पु० [सं०] दे० 'शयनकक्ष' ।

शयनीय-वि० [सं०] शयन करने योग्य । पु० शय्या ।

शयनैकादशी-श्री० [सं०] हरिशमनी एकादशी जो आषाढ़ मासके शुद्ध पक्षमें पड़ती है ।

शयार्ह-पु० [सं०] एक जनपद ।

शयार्हक-पु० [सं०] गिरगिट ।

शयानक-पु० [सं०] गिरगिट; एक प्रकारका सर्प, अजगर ।

शयालु-वि० [सं०] निद्राशील; सोया हुआ । पु० अजगर; कुशा; गीदड़ ।

शयित-पु० [सं०] निद्रा । वि० निद्रित, मोया हुआ; लेटा हुआ ।

शयिसा(श्)-पु० [सं०] सोनेवाला ।

शयु, शयुन-पु० [सं०] भारी सोप, अजगर ।

शय्या-श्री० [सं०] सेज, पलंग, खाट; विस्तर । -काक-पु० सोनेका सम्य । -गत-वि० पर्यन्तपर सोया हुआ; अत्यन्तताके कारण खाटपर पड़ा हुआ, बीमार । -गृह-पु० शयनागार । -दान-पु० श्रुतकर्मके अंतर्गत भेत-शांतिके लिए एकादशाह तथा द्वादशाहकी महापात्र या पुरोहितको दिया जानेवाला पलंग, बिछावन आदिका दान, सेजिवादान । -पाल, -पालक-पु० राजाके शयनगृहका प्रबन्धक ।

शय्याप्यङ्ग-पु० [सं०] दे० 'शय्यापाल' ।

शरङ-पु० [सं०] पक्षी; गिरगिट; चतुष्पद; छलिया; लंपट; एक आभूषण ।

शर-पु० [सं०] बाण; शरपत्र, सरपत; सरकंडा; खस; हिंसा; चित्ता; 'पौर्वकी संख्या; दक्षिणार, दहीकी मलाई; जल । -कौंड-पु० सरकंडा । -कार-पु० बाण बनाने-वाला । -शुक्ल-पु० सरकंडा । -घात-पु० तीरदाजी । -ज-पु० मक्खन; कापिकेय । -जम्बा(म्भन्)-पु० कापिकेय । -जाल, -जालक-पु० बाणोंका समूह । -तल्प, -पंजर-पु० बाण-शय्या । -दुर्दिन-पु० बाणवर्षा । -क्षि-पु० नरकज्ञ । -पंख-पु० जवासा । -पट्टा-पु० एक शस्त्र । -पर्णी-श्री० एक क्षुप । पुंस्त्व-पु० तीरमें लगा पंख जिससे वह अधिक वेगमें जाकर चोट करता है; सरफोका नामक वनोपधि; सुश्रुतमें वर्णित एक वंश । -पुंस्त्व-श्री० दे० 'शरपुंख' । -अंग-पु० एक कृषि । -भू-पु० कापिकेय । -भेद-पु० बाणका जन्म । -मसल-पु० कमनेत; एक पक्षी । -पंथक-पु० लिखित तावपत्रोंकी नाधनेकी डोरी । -वनीज-पु० दे० 'शरभू' । -बाणि-पु० शराभ्र; बाण चलाकर जीविका कमानेवाला व्यक्ति; शरजीवी; पदाति । -शरण-पु० दाक । -वृष्टि-श्री० बाणोंकी वर्षा । पु० एक मत्स्यान् । -शय्या-श्री० गिरगिट प्रातः योद्धाके लिए निर्मित बाणोंकी शय्या । -संज्ञान-पु० बाण द्वारा लक्ष्य-माथन, निशाना लगाना ।

शर-पु० [अ०] दे० 'शर' ।

शरभ-श्री० [अ०] सीधी राह; वह सीधी राह जो ईश्वरने बनायी और बंदोंके लिए बतायी हो; इसलामी भ्रमशास्त्र, शरीरगत । -शुद्धमयी-श्री० इसलामी कानून ।

शरई-वि० शरभके अनुकूल । -दाही-श्री० एक मुट्ठी और दो अंगुल लंबी दाही । -पाजामा-पु० वह पाजामा जो टखनोंमें ढँका हो । -सादी-श्री० बिना धूमधाम, गाने-बाजेका स्थाह ।

शरशा-पु० [अ०] वह घोड़ा जिसका सारा शरीर बादामी रंगका हो ।

शरशा-श्री० मधुमक्खी (कविप्रि०) ।

शरशङ्ख-पु० [सं०] शरद् ऋतुका चंद्रमा ।

शरशङ्ख चहोपाध्याय-पु० अपने समयके सर्वश्रेष्ठ बंगला औपन्यासिक (१८७६-१९३८) । -रत्नार्प-देवदास, चरित्रहीन, श्रीकांत आदि ।

शरशङ्खिका-श्री० [सं०] शरद् ऋतुकी चाँदनी ।

शरज्ज्योत्स्ना-श्री० [सं०] शरद् ऋतुकी चाँदनी ।

शरट-पु० [सं०] गिरगिट; कुसुंभका साग ।

शरण-श्री० [सं०] आश्रय; वर; रक्षाका स्थान । पु०
अपीन व्यक्ति; रक्षक; वध । -रु- -दासा(रु)-, -प्रद-
वि० आश्रयदाता, रक्षक ।

शरणा-श्री० [सं०] प्रसारणी कृता ।

शरणागत-वि० [सं०] शरणमें आया हुआ ।

शरणागति-श्री० [सं०] रक्षाके लिए शरणमें जाना ।

शरणापन्न-वि० [सं०] दे० 'शरणागत' ।

शरणाधीन(विन्)-वि० [सं०] शरण चाहनेवाला, अपनी
रक्षाका अधिकारी ।

शरणापन्न-वि० [सं०] शरणापन्न ।

शरणि-श्री० [सं०] मार्ग; पृथ्वी; पक्ति, अवली; हवन,
हिंसा ।

शरणी-श्री० [सं०] पथ; पृथ्वी; अवली, पंक्ति; इंद्रकी पुत्री
जयंती; जयंती कृता; प्रसारणी कृता । * वि० श्री० शरण
देनेवाली ।

शरण्य-वि० [सं०] रक्षाके योग्य, शरण देने योग्य; दुःखी
या अस्वस्थ; शरण देनेवाला; शरणागतका रक्षक । पु०
आश्रय-स्थान; रक्षा; शिव ।

शरण्य-श्री० [सं०] दुर्गा ।

शरण्यु-पु० [सं०] पालक, रक्षक; बाबु; बाहल ।

शरता-श्री० बाण चलातेकी विधा, तीरंदाजी (कविमि०) ।

शरत्-श्री० [सं०] एक ऋतुका नाम जो कारसे काटिक
तक रहती है; वस्त्र, वर्ष । -कामी(मिन्)-पु० कुता ।

-काल-पु० शरत् ऋतुकी अवधि, कार और काटिकका
महीना । -पद्म-पु० श्वेत कमल । -पर्ब(ज)-पु०

कार महीनेकी पूर्णिमा, कोजागरी पूर्णिमा । -पुष्प-पु०
आहुत्य । -पूर्णमा-श्री० दे० 'शरत्पर्ब' ।

शरदंत-पु० [सं०] शरत् ऋतुका अंत, हेमंत ऋतु ।

शरद्-श्री० दे० 'शरत्' ।

शरदा-श्री० [सं०] शरत् ऋतु; साल ।

शरदिंदु-पु० दे० 'शरच्चंद्र' ।

शरदिज-वि० [सं०] जिसकी उत्पत्ति शरत् ऋतुमें हो ।

शरदुज्ज्व-पु० [सं०] वृष्टपत्र नामका साग ।

शरदन-पु० [सं०] शरत्कालीन बादल ।

शरन्मुख-पु० [सं०] शरत् ऋतुका आरंभ ।

शरम्मघ-पु० [सं०] दे० 'शरदन' ।

शरक्र-पु० [अ०] वर्षाई; श्रेष्ठता; श्रुती; भलाई; मान,
प्रतिष्ठा । -साध-वि० सम्मान पानेवाला । -(क्रं)

शिवमत, मुक्तान्तिमत-पु० सेवाका सम्मान । मु० -
ले जाना-बढ़ जाना ।

शरवत-पु० [अ०] पेय; पेयकी वह मात्रा जो एक बारमें
पी ली जाय; फूल, फूल या औषधिका अर्द्ध जो चीनी या

मिसरीमें पका लिया जाय; शकर, खीर आदिकी पानीमें
घोलकर प्रस्तुत किया हुआ पेय, रस । -पिलाई-श्री०

शरत पिलानेकी रस्यका नेत्र । -(ले)बीवार-पु० शर-
वतरूप (शरतवत सरीखा मधुर, रुचि-शांतिकर) दर्शन ।

मु०-पिलाना-भ्याहणे पहले या पीछे बरातियोंकी शर-
वत पिलाना (एक रसम)-के प्यासेपर निकाह कर या

पढ़ा देना-बिना कुछ खर्च किये भ्याह कर देना ।

शरवती-वि० शरवतके रंगका; रसदार, सरस । पु० ब्रह्मका

पीला रंग जिसमें योही सुखी भी हो; मलमलसे मिश्रता-
जुलता एक निहायत नारीक और नदिया कपड़ा; एक
तरहका कपूर; चकोतरा नीव । -चौक-पु० शरवती
रंगका कपड़ा जिसे नगीनेके नीचे रखते हैं । -नीव-पु०
पीठा नीव, चकोतरा । -क्राकस्त-पु० फाकसेका एक
भेद जो कुछ बड़ा और खट-नीला होता है ।

शरवान-पु० अगिवाधास ।

शरम-पु० [सं०] हाथीका बच्चा; अंड; सिंहसे भी बलवान्
एक कल्पित पशु जिसे 'अष्टपाद' (आठ पैरोंवाला) कहते
हैं; टिड्डी; टिड्डी; एक वर्णवृष्ट; दोहेका एक भेद; एक
कथि-वृक्ष ।

शरभा-श्री० [सं०] वह कन्या जो अंगोंके शुष्क होनेके
कारण बिवाहके अयोग्य हो; एक काष्ठवृक्ष ।

शरम-श्री० दे० 'शर्म' (फा०) ।

शरमाक-वि० दे० 'शरमीला' ।

शरमाना-स० क्रि० लक्षित करना । अ० क्रि० लक्षित
होना ।

शरमाक-वि० दे० 'शरमीला' (असाधु) ।

शरमाशरमी-अ० शर्मकी बजहसे ।

शरमिदगी-श्री० दे० 'शर्मिदगी' ।

शरमिदा-वि० दे० 'शर्मिदा' ।

शरमीला-वि० लजापूर, लजाशील ।

शरबु, शरबू-श्री० [सं०] दे० 'सरबू' ।

शरर-पु० [अ०] चिनगारी ।

शररु-वि० [सं०] दे० 'सररु'; कुटिल ।

शररुल-पु० [सं०] जल ।

शरभ्य-पु० [सं०] तीरका निशाना बननेवाला व्यक्ति;
बाणका लक्ष्य ।

शरह-श्री० [अ०] खोलकर कहना; वर्णन; व्याख्या; दर,
भाष । -बंदी-श्री० आबोंकी तालिका । -मुबहबब-
वि० जिसकी मातृगुजारी सुविधित हो, अतः जिसमें इच्छा

की संभावना न हो । -खगान-श्री० खगानकी दर । -
सूद-श्री० व्याजकी दर ।

शराकत-श्री० [अ०] हिस्सेदारी, साझा । -नामा-पु०
वह पत्र जिसमें हिस्सेदारीकी शर्तें लिखी हैं ।

शराटि, शराटिका, शरादि, शराति-श्री० [सं०] एक
चिकित्सा जो प्रायः जबके निकट रहती है, टिट्ठिम, कुररी ।

शरापना-स०-क्रि० श्राप देना ।

शराफ-पु० दे० 'शराफ' ।

शराकत-श्री० [अ०] शरीफ होना, अलमनसी; भद्रता;
कुबीनता । -पनाह-वि० शरीफोंकी आश्रय देनेवाला
(मातहत अफसरोंके लिए परवानोंमें लिखा जाता है) ।

-पैशा-वि० उच्च वंशका ।

शराफा-पु० दे० 'शराफ' ।

शराफी-श्री० दे० 'शराफी' ।

शराब-श्री० [अ०] पेय; मद्य । -खाना-पु० शराबकी
दुकान, मदिरालय । -झोर-पु० दे० 'शराबखाना' ।

-झोरी-श्री० दे० 'शराबखाना' । -झराव-पु०

शराबी, मद्यव्यसनी । -झबारी-श्री० शराब पीनेका
व्यसन । -झड़ा-वि० मत्तवाला । - (बे)तहूर-श्री०

विहितमें मिलनेवाली पवित्र शराव । सु० - का शरीर
खलना-पानगोष्ठीमें सम्मिलित लोगोंका व्यालेपर प्याला
खाकी करना, पीनेवालोंके प्यालोंका भरा और खाली
किया जाना ।

शरासी-वि०, पु० शराव पीनेवाला, मद्यप्यसनी ।

शराबोर-वि० भोगा हुआ, निरकुल गीला ।

शराबुध-पु० [सं०] धनुष् ।

शरावत-खी० [अ०] शरीर (दृष्ट) होनेका भाव, पात्रीपन,
शैतानियत ।

शरादि, शरारी, शराखि-खी० [सं०] शरादि, दिष्टिम
पक्षी । -(री)मुखी-खी० एक प्राचीन कैचीनुमा ।
ओजार ।

शराह-वि० [सं०] हानिकर; चोट पहुँचानेवाला । पु०
हानिकारक जीव ।

शराहोप-पु० [सं०] धनुष्, कमल ।

शराव-पु० [सं०] जलकी रक्षा करनेवाला सृत्पात्र; एक
प्रकारका मिट्टीका बरतन; तश्तरी; बाल; बैलौकी एक तील
जो चौसठ तोलेकी होती है ।

शरावक-पु० [सं०] डकन ।

शरावती-खी० [सं०] बाणगंगा; एक प्राचीन नगरी जहाँ
रुबने अपनी राजधानी बनायी थी ।

शराबर-पु० [सं०] डाल; तूणीर ।

शरावरण-पु० [सं०] डाल ।

शराबाप-पु० [सं०] धनुष् ; तूणीर ।

शराबिका-खी० [सं०] एक तरहकी कुसी जो भीतर गहरी
होती है ।

शराब्य-पु० [सं०] तूणीर, तरकाश ।

शरास-पु० [सं०] धनुष् ।

शरासन-पु० [सं०] धनुष् ।

शरास्य-पु० [सं०] धनुष् ।

शरिष्ठ-वि० दे० 'श्रेष्ठ' ।

शरी(विज्)-वि० [सं०] बाणयुक्त ।

शरीरत-खी० [अ०] सुटाके बनाये हुए कानून; मजहबी
कानून; न्याय । -(से)मुहम्मदी-खी० मुहम्मदके
चलाये हुए कानून ।

शरीक-वि० [अ०] शिरका रखनेवाला, मिला हुआ,
शामिल; साथी; जोशेदार; साथ देनेवाला । -(के)-
हाकसा-वि० सभामें उपस्थित (जन) । -जुर्म-वि०
अपराधमें साथ देने, सहायता करनेवाला । -वर्द्ध-वि०
संस्कृतमें साथ देनेवाला । -राय-वि० सहमत, एकराय ।
-हाल-वि० दुःख-सुखमें साथ देनेवाला ।

शरीक-वि० [अ०] मला, नेका; कुलीन, ऊँचे धरानेका;
प्रतिष्ठित; पवित्र (अन्य शब्दसे युक्त हौकर सम्मानका
अर्थ प्रकट करता है-'कुरानशरीक', 'मकाशरीक' । पु०
मला मानस, कुलीन, प्रतिष्ठित जन; मक्केके शासककी
पदवी । -खानदान-वि० ऊँचे धरानेका कुलीन । -
जाहा-पु० शरीफका बेटा; कुलीन जन । -जाही-खी०
शरीफकी बेटा; कुलीन खी ।

शरीका-पु० एक फल, भीताफल (इसका छिलका गोल
और उमरे हुए छोटे-छोटे खंभोंमें बना होता है, इमका

धूरा मीठा तथा सुपेद और खोतरे काले बीजोंमें लिपटा
रहता है) इस फलका वृक्ष ।

शरीर-वि० [अ०] दृष्ट, नदखट, पाजी । पु० [सं०] अस्थि,
मांस, मज्जा आदिसे निर्मित स्वरूप, जलचर, नमचर
जीवोंके सम्पूर्ण अंगोंका समुच्चय (यही स्थूल शरीर कहलाता
है । भारतीय दर्शन-ग्रन्थोंमें सूक्ष्म अथवा किम शरीरका
भी वर्णन है, जो पुष्टि, अहंकार, मन, पंच शान्तिद्वय, पंच
कर्मेन्द्रिय तथा पंच तन्मात्रसे निर्मित मान्य जाता है) । -

कर्ता(री),-कृत्-पु० पिता । -प्रहण-पु० शरीर
भारण करना । -ज-पु० कामदेव; काम-वासना; पुत्र;
रोग । -स्वाग-पु० मृत्यु । -दंड-पु० शारीरिक दंड;
शरीरको कष्ट देना । -दैव-पु० शरीरका कोई भाग,
शरीरावशेष (द्रव्यका) । -निपात-पु० मर जाना । -

पतन-पु० शरीरका क्रमशः जीर्ण होना; मृत्यु । -पाक
-पु० शरीरका धीरे-धीरे दुर्बल होते जाना । -पात-पु०
मृत्यु । -प्रभव-पु० पिता । -बंध-पु० देहबन्ध,
शरीरका बाना । -बंधक-पु० ओम्, प्रणिभू । -मृत्-
पु० वह जिसने शरीर धारण किया है, शरीरधारी; आत्मा,
विष्णु । -मेव-पु० शरीरका (आत्मामें) पृथक् होना,
मृत्यु । -यष्टि-खी० पतका बटन । -यात्रा-खी०

जीवन-रक्षणके साधन; जीवन-वर्धनकी वस्तुएँ; जीवन ।
-रक्षक-पु० आक्रमण आदिमें राजा, अमीर-उमरा
आदिके शरीरकी रक्षा करनेवाला व्यक्ति, अंगरक्षक ।
-विज्ञान-पु० दे० 'शरीर-शास्त्र' । -वृत्ति-खी०

शरीर-रक्षाके लिए व्यापार, नौकरी इ०, जीविका ।
-वैकल्य-पु० अस्वस्थता । -शास्त्र-पु० शरीरके
बाहरी-भीतरी अवयवोंकी रचना, क्रिया आदिकी विवेचना
करनेवाला शास्त्र, शरीर-विज्ञान । -गोधन-पु० शरीर-
का मल निकालनेवाला पदार्थ । -संपत्ति-खी० अच्छा
स्वास्थ्य । -संबंध-पु० विवाह-सम्बन्ध । -संस्कार-
पु० शरीरको पवित्र, शुद्ध करनेवाले वेदविहित सोलह

संस्कार; शरीरके सौंदर्यके लिए उमकी सफाई, उसका
शृंगार; शरीर-शुद्धि । -साध-पु० शरीरकी शक्ति । -
स्थ-वि० शरीरमें रहनेवाला । -स्थान-पु० शरीर-
संभवी मित्रांत । -स्थिति-खी० दे० 'शरीर-वृत्ति' ।

शरीरक-पु० [मं०] शरीर; कणु शरीर; आत्मा ।
शरीरांत-पु० [मं०] मृत्यु, देहावसान; बाल ।

शरीरांतर-पु० [सं०] दूसरा शरीर; शरीरका भीतरी भाग ।
शरीरार्पण-पु० [सं०] (प्रायः) सत्कायके लिए शरीरके
स्वास्थ्यस्वास्थ्यपर ध्यान दिये बिना उममें जुट जाना;
सत्कायके लिए जीवनार्पण ।

शरीरावरण-पु० [मं०] चमड़ा; शरीर ढकनेकी वस्तु,
बेढन; डाल ।

शरीरास्थि-खी० [मं०] कंकाल ।
शरीरी(विज्)-वि० [सं०] शरीरधारी; जीवित । पु०
मनुष्य; वह जो शरीरमें रहता हो, आत्मा; प्राणी ।

शर-पु० [मं०] बाण; हथियार; इंद्रका वज्र; क्रोध; हिंसा;
विष्णु; बाण चला देनेका अभ्यास । वि० जीर्ण; मृद्धम;
पतला ।

शरेज-पु० [मं०]- कार्तिकेय ।

शरेह-पु० [सं०] आमका पेज । • वि० श्रेष्ठ ।

शर्क-पु० [अ०] पूरव ।

शर्कर-पु० [सं०] चीनी; बाहुकाकण; कंकड़; एक प्रकारका जीव जो जलमें पैदा होता है; एक तरहका ढोल । वि० कणदार । -कंद-पु० शकरकंद । -जा-खी० मिल्नी ।

शर्करक-पु० [सं०] मीठा नीच ।

शर्करा-खी० [सं०] शर्करा, रबादार चीनी; बाहुकाकण; कंकड़; उपरक; ठीकरा; खंड, टुकड़ा; पथरी रोम । -धेनु-खी० दानके लिए शर्करा की बनी गाय । -प्रभा-खी० एक नरक (वै०) । -प्रमेह-पु० मधुमेह रोग । -ससमी-खी० वैशाख-शुक्ला सप्तमीकी पहनेवाला एक पर्व (इस दिन स्वर्णोत्थ देवके सम्युक्त चीनीभरा कलश रखकर उनकी पूजा की जाती है) ।

शर्कराचल-पु० [सं०] दानके लिए चीनीका कृत्रिम पहाड़ ।

शर्कराबुंद-पु० [सं०] एक तरहका अमृद (आ० वै०) ।

शर्कराल-वि० [सं०] (आधी) जिसमें कंकड़ी मरी हो ।

शर्करासब-पु० [सं०] चीनीमें बनी शराब ।

शर्करिक, शर्करिल-वि० [सं०] शर्करालुक्त; कंकड़भरा ।

शर्करी-खी० [म०] मरिता; जेलनी; (पर्वतकी) जंजला; एक वर्णिक छद्म ।

शर्करी(रिन्)-वि० [म०] पथरी रोगमें ग्रस्त ।

शर्करीय-वि० [सं०] शर्करा-संबंधी ।

शर्करोदक-पु० [सं०] चीनीका शरबन ।

शर्क्री-वि० पूरवाय ।

शर्ट-खी० [अ०] कुर्ते जैसा ऊर्ध्वार्धमें पहननेका एक मिठा हुआ वस्त्र, कमीज ।

शर्त-खी० [अ०] प्रतिष्ठा, किसी मधि-समझौतेकी अंगभूत प्रतिष्ठा; वह बात जिसपर किसी बातका होना, किया जाना, कायम रहना अवलंबित हो; वस्तु या कार्यविशेषके लिए अनिवार्य वस्तु; कैद, पानदी; दौड़, बाजी । -बंद-वि० शर्तसे बंधा हुआ; प्रतिष्ठापर लिखकर नियम अवधि-नक काम करनेकी बंधा हुआ (ममदूर), 'गिरमिटिया' । मु० -बंदकर सोना-बहुत देरनक सोना, बड़ी लंबी नींद लेना । -बंदना, बॉंधना-बाजी लगाना । (किसी बातकी)-होना-किसी बातके लिए अनिवार्य, अत्यावश्यक होना । -बंद है-इस शर्तपर ।

शर्तिया, शर्तीया-वि० अचूक, पक्का (-इलाज) । अ० शर्त बदकर ।

शर्ती-वि० किसी शर्त, प्रतिष्ठापर आश्रित । अ० दे० 'शर्तिया' ।

शर्धजह-वि० [सं०] बांध पैदा करनेवाला । पु० एक तरहकी दाढ़ या सेस ।

शर्ध-पु० [सं०] शक्ति; सेना; अपान बायुका त्याग ।

शर्धन-पु० [सं०] अपान बायुका त्याग करना ।

शर्वत-पु० दे० 'शरवत' ।

शर्वती-वि० दे० 'शरवती' ।

शर्म-खी० [फा०] लज्जा, हया; इज्जत, लाज (रखना, रहना); खयाल, लिहाज । -शाह-पु०, खी० मोपनीय नग; भग । -शी-वि० शर्मिदा, लज्जालुक्त । -शक-

वि० लज्जानेलायक, लज्जानक । -सार-वि० शर्मिदा, लज्जिन; लज्जावान् । -(में) हजूर, -हजुरी-खी० सामने होनेका लिहाज, मफीज, आँखकी लाज । मु०-आना-लाज लयना । -करना-लज्जित होना; लिहाज करना । -की बात-लज्जानक कार्य । -खाना-लज्जा अनुभव करना । -से गठरी हो जाना-(दुल्हिनका) लाजके मारे सिकुडकर गठरी-सा बन जाना, जमीनमें गड़ जाना । शर्म(श्)-पु० [सं०] सुख; गृह (वै०); आश्रय; आशी-बंधन; रक्षा । वि० सुखी; संपन्न । -द्-वि० आनंद-दायक । पु० विष्णु ।

शर्मर-पु० [सं०] एक तरहकी पोशाक ।

शर्मा(र्म)-पु० [सं०] ब्राह्मणवर्णबोधक उपाधि । वि० प्रसन्न, सुखी ।

शर्माक, शर्माख-वि० लज्जाशील, शर्मील ।

शर्माना-सं० कि०, अ० कि० दे० 'शरमाना' ।

शर्माशर्मा-अ० लज्जावश, संकीचवश ।

शर्मिदगी-खी० [फा०] शर्मिदा होना । मु०-उठाना-लज्जित होना ।

शर्मिदा-वि० [फा०] लज्जित, लज्जाया हुआ ।

शर्मिदा-खी० [सं०] राजा यथातिकी छोटी रानी, डैत्य-राज हृषपर्वकी कन्या और देवयानीकी सखी ।

शर्मिसार-वि० [फा०] लज्जिन, शर्मिदा ।

शर्मिरी-खी० शर्मिदगीका भाव ।

शर्मी(र्मिन्)-वि० [सं०] सुखी, भाग्यशाली ।

शर्मीला-वि० लज्जाशील ।

शर्मा-खी० [सं०] रात्रि; अँसुकी; बाण (वै०) ।

शर्माति-पु० [सं०] वैवस्वत मनुके पुत्र ।

शर्-पु०, खी० शरारत, शरणा, फमाद; बुराई ।

शरौक़ुसाव-पु० शरणा-फसाद ।

शर्व-पु० [सं०] शिव; विष्णु । पत्नी-खी० पार्वती ।

-पर्वत-पु० कैलास ।

शर्वर-पु० [सं०] कदर, कामदेव; अंधकार; संध्याकाल ।

शर्वरी-खी० [सं०] संध्याकाल; रात्रि; हल्दी; खी० पु० एक संवत्सर । -कर-पु० चंद्रमा; विष्णु (?) । -नाथ-पु० चंद्रमा । -पति-पु० चंद्रमा; शिव ।

शर्वरीस, शर्वरीश्वर-पु० [म०] चंद्रमा ।

शर्वला, शर्वली-खी० [सं०] तीमर अक्ष ।

शर्वानी-खी० [सं०] शिव-पत्नी, पार्वती ।

शर्शरीक-पु० [सं०] खल; हिसका; आग; अश्व । वि० दुष्ट, बाजी ।

शर्शव-पु० [म०] लवण-विशेष; राजा, लोकपाल ।

शर्शव-खी० [सं०] पातालकावची ।

शरक-पु० [सं०] कुंत नामक अक्ष; साहोका कौटा; शृंगी; ऊँट; मक्का; कंसका एक मर्त्य कंसका एक मंत्री शल्य-राज; एक इक्षु । वि० [अ०] दे० 'शह' ।

शरक-पु० [सं०] मकड़ा; एक पक्षी ।

शरलाम-पु० [फा०] एक कंदशाक जिसकी जड़ तरकारी, अचार आदिके रूपमें और पत्ते सागकी तरह खाये जाते हैं ।

शरकजम-पु० [फा०] दे० 'शरकज' ।

शकजमी-वि० शकजमसे मिलता-जुलता । -**जॉर्ज**-
ली० बही-बही जॉर्ज ।

शकजम-पु० [सं०] पतंग, फलिंगा; टिड्डी; छप्पय छदका
एक भेद; एक अक्षर । (साहित्यमें शकज (पतंग)की प्रेमीका
प्रतीक माना गया है ।)

शकल-पु० [सं०] साही; शक्की-जोम, साहीका कौटा ।

-**चंबु**-पु० साहीके कौटेकी कलम ।

शकली-**ली०** [सं०] साहीका कौटा; छोटी साही ।

शकलभूत-पु० [सं०] जुयका भूत, वैमान खेलाही;
बहेलिया ।

शलाका-**ली०** [सं०] किसी भाग, लकड़ी आदिकी बनी
सलाई, सीख; छुरमा क्कानेकी सलाई; कोड़े, बाव आदिकी
गहारा नापनेवाली डाकटरी सलाई; छातेकी सीखी;
पासा; बाण; माला; चित्रकारकी कूँची, लूनी; सलखें; मदन
इक्ष; अँलुवा; उँगली; साही; शारिका नामक पक्षी; हड्डी ।
-**पुरुष**-पु० जैनोंके तिरसठ देवपुरुष ।

शलाक-पु० [सं०] एक शकट परिमाण, दो हजार पल्लोंका,
गायिका एक मोस ।

शलाकु-पु० [सं०] मूलविशेष, एक कंद; बेल । वि० अपक,
कच्चा ।

शलाकुर-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद जिसमें प्रसिद्ध
वैयाकरण पाणिनि रहते थे ।

शलाकौलि-पु० [सं०] ऊँट ।

शलाकु-पु० [सं०] एक पंथदम्ब ।

शली-**ली०** [सं०] साही नामक जंतु जिसके शरीरभरमें
कौंटे होने हैं ।

शल्लका-पु० कमरतकका एक पहनावा ।

शल्ल-पु० [सं०] वल्कल, वृक्षकी छाल; मछलीकी चोई;
छिलका; लह, डुकबा ।

शल्लक-पु० [सं०] दे० 'शल्ल' ।

शल्लली(खिल)-पु० [सं०] मछली ।

शल्लकी(खिल)-पु० [सं०] मछली ।

शल्लपादा, शल्लपणिक्का-**ली०** [सं०] दे० 'शल्लपादा' ।

शल्लमलि-पु०, शल्लमली-**ली०** [सं०] शल्लमली नामक
पक्ष, सेमलका वृक्ष ।

शल्ल-पु० [सं०] कौल, खँटी; कौटा; शलाका; बाण;
माला; डाकटरका चौर-फाक करनेका औजार; विष;
दुर्बलक; पाप; सकट; अस्थि; सीमा; शरीरकुपित वात,
पित्त, कफादि तथा शरीरके बाहरसे प्रविष्ट कौटा, लीसा
आदि वस्तुएँ जिनसे शरीरमें असह्य पीडा होती है; मदन
वृक्ष; विल्व वृक्ष; क्रोध; खेर; टट्टी; बाक; साही जानवर;
एक मछली; छप्पयका एक भेद; मद्र देशके राजा; बांडुकी
द्वितीय पत्नी मांडीके मार, नकुल और सहदेवके मामा ।
-**कंड**-पु० साही । -**कर्ता**(**रु**)-पु० जराब, सर्जन,
चौर-फाक द्वारा चिकित्सा करनेवाला, शल्य-चिकित्सक,
बाणनिर्माता । -**क्रिया**-**ली०** शल्य अथवा शल्य-
चिकित्सा; शल्य निकालनेकी क्रिया । -**ज्ञान**, -**संज्ञ**-
पु० शल्यशास्त्र-संबंधी आयुर्वेदीय ग्रंथ, सुश्रुतमें वर्णित
आठ संज्ञोंमेंसे एक संज्ञ जिसमें चौर-फाकके शकों आदिका
वर्णन है । -**दा**, -**पणिका**, -**पर्णी**-**ली०** मेदा नामक

जोषधि । -**वीक्षित**-वि० बाणादिसे अस्मी । -**मोत**-
वि० जिसके शरीरमें बाण घुसा हो । -**कोम**(**रु**)-पु०

साहीका कौटा । -**विषा**-**ली०** शरीरकी चौर-फाककर
उसे निर्दोष, नीरोग करनेका पांडित्य, सर्जरी । -**शास्त्र**-
पु० शरीरोपचारविधिकी वह पद्धति जिसके द्वारा शरीरके
कोरे आदिकी चौर-फाककर उसे नीरोग किया जाता है;
वह शास्त्र जिसमें शल्यचिकित्साका वर्णन हो । -**अल्लस**-
पु० शरीरसे शल्य निकालना । -**हृत्**-पु० सर्जन ।

शल्लक-पु० [सं०] माला; कौटा; मदन वृक्ष; साही ।

शल्ल-**ली०** [सं०] मेदा नामक जोषधि; नागबली लता;

विकृत नामक वृक्ष; एक तरहका नृत्य ।

शल्लारि-पु० [सं०] शल्यराजकी मारनेवाले दुश्चिर ।

शल्लारण-पु० [सं०] शरीरमें गड़े कौंटे, बाण आदिकी
निकालनेका कार्य ।

शल्लारण-पु० [सं०] दे० 'शल्लारण' ।

शल्लार-पु० [सं०] दे० 'शल्लारण' ।

शल्ल-पु० [सं०] त्वचा; वल्कल, पेक्षी छाल; मेदक । वि०
[अ०] जो हिलाना-डुलाना न जा सके; धका-मौंदा
मु० -**हो जाना**-थककर चूर हो जाना, (हाथ-पाँवका)
हिलाने लायक न रहना ।

शल्ल-पु० [सं०] सलईका पक्ष; दे० 'शल्ल'; साही ।

शल्लकी-**ली०** [सं०] साही; मलई । -**ब्रह्म**, **रस**-पु०
सिद्धक, शिलारस ।

शल्ली-**ली०** [सं०] सलई; साही नामक जंतु ।

शल्ल-पु० [सं०] शल्यदेश ।

शल्ल-पु० [सं०] लाश, मृत शरीर; पानी । -**कर्म**(**रु**)-
पु० दाह-संस्कार । -**काम्य**-पु० कुत्ता । -**कुव**-पु०

कृष्ण । -**बृह**, -**दाह**-पु० मृत शरीर जलानेकी क्रिया ।
-० **स्नान**-पु० इमशान । -**भस्म**(**रु**)-पु० जले

भुदोंकी राख । -**मंदिर**-पु० इमशान । -**दान**, -**रथ**-
पु० इमशानतक जब ले जानेके लिए बौन, लकड़ी आदि-
की बनी बरथी, टिकडी । -**शयन**-पु० इमशान
-**शिथिका**-**ली०** अरथी । -**समाधि**-**ली०** शवकी
भूमि अथवा जलमें रखने, डालनेका संस्कार । -**साधन**-
पु० इमशानमें सावर बैठकर मंत्र जपानेकी तंत्रशास्त्रीय
क्रिया, साधना ।

शल्ल-**ली०** [सं०] निष्प्राणत्व, निश्चेष्टता, मुद्रांपन ।

शल्ल-पु० [सं०] दे० 'शल्ल' । -**लोभ**-पु० सफेद लोभ ।

शल्ल-**ली०** दे० 'शल्ल' ।

शल्ल-वि०, पु० [सं०] दे० 'शल्ल' ।

शल्लित-वि० [सं०] मिथित ।

शल्ल-**ली०** [सं०] दे० 'शल्ल' ।

शल्लान-पु० [सं०] पथिक, राही; मार्ग; इमशान ।

शल्ल-**ली०** [सं०] चिताकी अग्नि ।

शल्लारण-पु० [सं०] कृष्ण ।

शल्ल-पु० [सं०] गला-पचा अन्न; अल्लस अन्न; शवमांस ।

शल्ल-वि० [सं०] शवसंबंधी । पु० शवकी अस्थिदि क्रियाके
लिए ले जाते समयका कुल ।

शल्ल-पु० [अ०] चिबरी सक्का दसवाँ महीना ।

शल्ल-पु० [सं०] अक्षक, करगोश, करवा; चंद्रांछन,

चरिका भन्ना; कोम वृक्ष; शैल गंधर्व; कामशास्त्रीक
पुरुषके चार प्रकारोंमेंसे एक प्रकार (शश पुरुष खुदभाषी,
मुशील, कोमल शरीरवाला, झुकेझ, सकलगुणनिधान
और सलभाषी होता है)। -**बासक**, -**बासी** (शिव) -
पुं० बाज पक्षी। -**बह**-पुं० चंद्रमा; कपूर। -**मुखी**-
की० चंद्रवदनी। -**झींझि**-पुं० शिव। -**प्लुतक**-
पुं० नखसत। -**भृत्**-पुं० चंद्रमा। -**लक्षण**-पुं०
चंद्रमा। -**कांछन**-पुं० चंद्रमा; कपूर। -**विदु**-पुं०
विष्णु; राजा विश्वरथका पुत्र; चंद्रमा। -**विषाण**, -
भृश-पुं० आकाशकुसुम, अमंभव वात। -**सिंधिका**-
की० जीवंती। -**स्वकी**-की० गंगा और यमुनाके बीच-
का क्षेत्र। -**हा** (हृत्)-पुं० बाज।

शश-वि० [फा०] पाँच और एक, छ। पुं० ६ की संख्या।
-**ज्वाभा**-वि० ६ कमरोंवाला (मकान)। पुं० एक साज।
-**द्व**-पुं० बीसरके खेलमें एक धर जहाँ जाकर गोटी
बंद हो जाती है और खेलनेवाला निरुपाय हो जाता
है। वि० (क०) चकित, हैरान (रहना, होना)।
-**पंज**, -**(शशो)पंज**-पुं० सोचविचार, आगापीछा,
उपेक्षुन ('...में पड़ना)। -**पहक**, -**पहलू**-वि०
छ कोनोंवाला, षट्कोण। -**माही**-वि० हर छ महीनेमें
होनेवाला (परीक्षा इ०), छमाही। की० छ महीनेका
मय। -**रोरू**-पुं० सुसलमानोंके विवासानुसार
सृष्टिकी उत्पत्तिके छ दिन। -**साका**-वि० छ बरसोंका।
शशक-पुं० [सं०] खरहा। -**विषाण**-पुं० अमंभव
वात।

शशांक-पुं० [सं०] चंद्रमा; कपूर। -**कांत**-वि० चंद्रमा
जैसा मुदर। -**ज-दे०** 'शशांक-सुत'। -**मुकुट**, -**शेखर**
-पुं० शिव। -**शत्रु**-पुं० राहु। -**सुत**-पुं० चंद्रमाका
पुत्र, पुत्र ग्रह।

शशांकित-वि० [सं०] शशकके चिह्नवाला (चंद्रमा)।
शशांकीपक्ष-पुं० [सं०] चंद्रकांत मणि।
शशाङ्गुलि, **शशाङ्गुली**-की० [सं०] कबूची ककरी।
शशा-पुं० दे० 'शश'।
शशाङ्ग, **शशाङ्गन**-पुं० [सं०] बाज नामक चिकिया।
शशिक-पुं० दे० 'शशी'।

शशी (शिव)-पुं० [सं०] चंद्रमा; कपूर; एककी संख्या;
गणका दूसरा भेद; छप्पय छंदका एक भेद। -**(सि)कर**
-पुं० चंद्रमाकी किरण। -**कला**-की० चक्रकला; चंद्रमा-
का अंश; एक वर्णवृत्त (चार जगण, एक सगण) जिसे 'मणि-
गण' और 'शरय' भी कहते हैं। -**कांत**-पुं० चंद्रकांत
मणि; कुसुम। -**केतु**-पुं० बुध। -**खंड**-पुं० चंद्रमाकी
कला। -**गुह्यार**-की० सुलेठी। -**ग्रह**-पुं० चंद्रग्रहण।
-**ज-सख**, -पुं० बुध ग्रह। -**सिंधि**-की० पूर्णिमा।
-**धर**-पुं० शिव। -**पर्ण**-पुं० परबल। -**पुत्र**-पुं०
पुत्र ग्रह। -**पौषक**-पुं० शुक्र पक्ष। -**प्रभ**-वि० जो
चंद्रमाके सप्ता प्रभासे सुफट हो। पुं० मोती; कुसुम। -
प्रभा-की० चंद्रनी। -**प्रिच**-पुं० मोती। -**प्रिया**-
की० मणार्लो नक्षत्र जिनमें पुराणोंने चंद्रमाकी पत्निर्वा
गना है। -**भाक**, -**भूषण**, -**भृत्**-पुं० शिव। -**मंडक**
-पुं० चंद्रमंडक, चंद्रमाका घेरा। -**मणि**-पुं० चंद्रकांत

मणि। -**मुख**-वि० चंद्रमाके समान मुखवाला। [की०
'शशियुखी']। -**मौखि**-पुं० शिव। -**रस**-पुं० दुधा,
अमृत। -**रेखा**-की० चंद्रकला। -**रेखा**-चंद्ररेखा,
एक वर्णवृत्त; गुडची। -**वदना**-की० एक वर्णवृत्त।
वि० की० शशियुखी। -**वाटिका**-की० गदहपूरना,
पुनर्नवा। -**सिखमाणि**, -**शेखर**-पुं० शिव। -**शौचक**
-पुं० कृष्ण पक्ष। -**सुत**-पुं० बुध। -**हीरा**-पुं० [वि०]
चंद्रकांत मणि।

शशिसाका-की० शीशमहल।

शशीस-पुं० [सं०] शिव।

शशब्-अ० [सं०] हमेसा, पुनः पुनः।

शशकुक-पुं० [सं०] करंज।

शशकुलि, **शशकुली**, **शरकुली**-की० [सं०] कानका छेद;
कानकी एक बीमारी; एक पकाव, पूरी; मीब; सौरी मछली;
करंज।

शश्य, **शस्य**-पुं० [सं०] नववृण; प्रतिभाक्षय; वृश्म (?)।

शसन-पुं० [सं०] बहनेके अनंतरपर की गयी पञ्चबलि;
हत्या; बलि।

शसा-पुं० खरहा।

शसि, **शसी**-पुं० चंद्रमा।

शस्-पुं० [सं०] कल्याण; सुख; उत्तमता; मामलिकता;
शरीर; अगुलित्वाण। वि० कल्याणशुक्ल; जिसकी तारीक
की गयी हो, प्रसन्न, प्रशंसित; कहा गया, बार-बार कहा
गया; उत्तम; आहत।

शसाक-पुं० [सं०] अगुलित्वाण।

शसि-की० [सं०] प्रसन्न; स्तुति, स्तोत्र।

शश-पुं० [सं०] इथियार; हाथमें रखकर प्रयोगमें लाया
जानेवाला इथियार, तलवार आदि; औजार; स्तोत्र;
कथन; कविता आदिका पाठ; कोहा। -**कर्म** (श्रु)-पुं०
फोड़े आदिके चूरने-फाड़नेका काम। -**कार**, -**कारक**-
पुं० शश-निर्माता। -**केतु**-पुं० दे० 'शशाक्ष'।
-**कोच**-पुं० शश रखनेका खाना, स्थान। -**तद**-
पुं० महामदन वृक्ष। -**क्रिया**-की० फोड़े आदिकी
चूरने-फाड़नेका काम। -**क्षार**-पुं० सोहागा।
-**शुह**-पुं० जहाँ अनेक प्रकारके शश रखे जाते हों,
शशागार। -**ग्रह**-पुं० बुध। -**चात**-पुं० तक्षमा-
का आधात। -**चिकित्सा**-की० शश द्वारा उपचार,
सर्जरी। -**चूर्ण**-पुं० कोहेका चूरा। -**जीवी** (विजु)-
वि० बुध की जिसकी जीविका हो। -**त्याग**-पुं० इथि-
वार टाक देना, शस्यत्याग। -**चर**, -**धारी** (रिचु), -**भृत्**-
पुं० योद्धा, सैनिक। वि० शश धारण करनेवाला।
-**भ्यास**-पुं० शशोंका परिचय। -**पाणि**-पुं०, वि०
दे० 'शशपट'। -**पुत**-वि० शशों द्वारा रणभूमिमें निहत
होनेके कारण जो पवित्र हो गया हो। -**प्रहार**-पुं०
शशकी चोट या आघात। -**माख**-पुं० सिकलीगर।
-**बार्स**-वि० दे० 'शशजीवी'। -**विद्या**-की० शश
चलानेका ज्ञान, कौशल; चतुर्बेद। -**वृत्ति**-वि० जिसकी
जीविका शश चलायेपर ही आश्रित हो। -**शाखा**-की०
शशगृह, शशागार। -**शाख**-पुं० दे० 'शशविधा'।
-**हृत**-वि० शश द्वारा मारा गया (आरमी, जानवर

आदि)। -**हस्त**-वि० अक्षपारी।
शस्त्रांग-**की०** [सं०] एक तरहका चूक।
शस्त्रावृत-**पु०** [सं०] शस्त्रकेतु, पूर्वमें उचित होनेवाला एक प्रकारका केंद्र जिसके दिखाई देनेपर महामारी फैलती है; कोहा।
शस्त्रामार-**पु०** [सं०] दे० 'शस्त्रगृह'।
शस्त्राजीव-**वि०** [सं०] दे० 'शस्त्रजीवी'।
शस्त्राभ्यास-**पु०** [सं०] युद्धकलाका अभ्यास।
शस्त्रायस-**पु०** [सं०] कोहा, इस्पात।
शस्त्राक्ष-**पु०** [सं०] शस्त्र और अक्ष, हाथमें लेकर और फेंककर मारनेके इशियार।
शस्त्री-**की०** [सं०] छोटा शस्त्र, छुरी।
शस्त्री(किम्)-**वि०** [सं०] शस्त्रपारी, शस्त्रसे सुसज्जित।
पु० सैनिक।
शस्त्रोपजीवी(विद्)-**वि०** [सं०] दे० 'शस्त्रजीवी'।
शस्त्र-**वि०** [सं०] प्रशंसनीय; श्रेष्ठ, बलिया; काटकर गिराने योग्य। **पु०** नवी पास; फस्तक; अक्ष, धान्य; इत्यादिसे निकला हुआ फल, फूल आदि; योग्यता, गुण। -**क्षेत्र**-**पु०** अनाजका क्षेत्र। -**ध्वी**-**की०** चोरपुष्पी। -**ध्वली**-**(सिद्ध)**-**पु०** दूधका पेष। **वि०** धान्यका नाश करनेवाला। -**पाक्ष**, **शस्त्राक्ष**-**पु०** खेतकी रखवाली करनेवाला। -**अक्षक**-**वि०** अनाज खानेवाला। -**अक्षरी**-**की०** गेहूँ आदिकी नवी बाक, कणिका। -**आरी(विद्)**-**पु०** एक तरहका बड़ा चूरा। -**बैद्य**-**पु०** कृषिशाल। -**शास्त्री(किम्)**, **संपन्न**-**वि०** धान्यसे परिपूर्ण। -**संपद्**-**की०** धान्यकी बहुलता। -**संवर**-**पु०** शालका वृक्ष, साधुका पेष। -**संवा(र)**, **ह्रा(वन्)**-**वि०** फस्तक नष्ट करनेवाला। **पु०** एक दैत्य।
शस्त्रक-**पु०** [सं०] तलवार; एक रत्न।
शस्त्राधार-**पु०** [सं०] अक्ष रखनेका आसन, खलिहान।
शस्त्राक्ष-**पु०** [सं०] शमी वृक्षका एक भेद।
शाईशा, शाईशाह-**पु०** [फा०] राजाओंका राजा, सम्राट्।
शाईशाही-**की०** शाईशाहका भाव वा कार्य; शाही रंगढंग; शाईशाहका पद। **वि०** शाही ढंगका, राजसी।
शाह-**पु०** [फा०] (शाहका लघु रूप) बादशाह; मदद; हिमावत; उकसाना, उभारना; शतरंजमें बादशाहकी दी गयी किस्म; पतंगकी धीरे-धीरे डीर पिलानेकी क्रिया, दोल। -**आह**-**पु०** दे० 'शाहकार'। -**कारा**-**की०** बदचलन, बदचलन की। -**आह**-**की०** शतरंजके बादशाहकी जाण जो कोई और सुधार न रह जानेपर चली जाती है। -**आह**-**पु०** शाहका पैदा, राजकुमार। -**आही**-**की०** शाहकी बेटी, राजकुमारी। -**आह**-**वि०** अति बली। -**आही**-**की०** बलवान् होना; नकरदली। -**आह**-**पु०** दे० 'शाहतरा'। -**आह**-**पु०** पाटनके नीचे दी जानेवाली बड़ी कमी। **हल**-**पु०** एक प्रसिद्ध पेष और उसका फल जो पकनेपर काफी मीठा होता है। -**आही**-**की०** दे० 'शाहमशी'। -**आह**-**पु०** पक्षीके डेनेका सम्ये बड़ा पर। (**मु०** -**आहवा**-**पक्षीका** डेनेकी फैलाकर औरसे पिलाना कि साराव और कमजोर पर शय जायें)। -**आह**-**पु०** बड़ा बाज; बड़ी जातिका

बाज। -**आह**-**पु०** विवाहकी प्रायः सभी रस्मोंमें बरके साथ रहनेवाला छोटा लफ्फा जो आम तौरसे उसका छोटा भाई होता है। -**आह**-**की०** आह देह और काफी गर्दनवाला मुकुट। -**आह**-**की०** शतरंजमें बादशाहकी ऐसी जगह किस्म देना कि उसके चक्केके लिए कोई घर न रह जाय और मात हो जाय; (**आ०**) निश्चय, चुप कर देनेवाली बात। (**मु०** -**आह**-**निश्चय**, चुप कर देना)। -**आह**-**की०** दे० 'शाहग'। -**आह**-**की०** शतरंजमें बादशाहकी रुख (हाथी)की गह। -**आह**-**की०** बादशाहकी ऐमे घरमें रखना जिससे रुखी गह पड़े; सामनेकी खेत। -**आह**-**पु०** कुशल वीक्षवार। -**आह**-**की०** अन्धी वीक्षवार। **मु०** -**आह**-**रुखने**-**आह**-**की०** उकसाना, उभारना; शतरंजमें बादशाहकी किस्म देना, पतंगकी डीर पिलाना, डीक देना।
शाह-**पु०** [अ०] किम्बिद लाली फिरे हुए पीले वा सफेद रंगका मीठा झीरा जो मधुमक्खियों और कुछ अन्य कीमती द्रास संगृहीत पुष्परसका रूपांतर होता है, मधु। **वि०** अति मधुर। -**की** छुरी-मीठा छुरी; जवानका मीठा, दिक्का खोटा। -**की** मक्खी-मधुमक्खी; कोभी और पीछा न छोड़नेवाला आदमी। **मु०** (जवानमें)-**मुकुटा**-मीठासे भर जाना। (**काममें**)-**मुकुटा**-अति मधुर; सुकर बचन बोलना। -**मुकुटा**कर अलग हो जाना-मुकुटा मुकुटा भाप अलग हो जाना, दूरमें तमाशा देखना। -**मुकुटा**कर आटना-निरर्थक चीजकी बल्यसे रखे रहना।
शाह-**की०** [फा०] नफीरी। **पु०** दे० 'शाह'।
शाहनाई-**की०** [फा०] मुँहसे फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा, नफीरी; दे० 'शाहनाई'।
शाहर-**पु०** [फा०] नगर। -**आह**-**वि०** शहरनरभी, घर-घरकी खबर रखनेवाला। -**आह**, **गिर्ह**-**वि०** शहरमें भूमनेवाला, पतरील। -**आह**-**पु०** शहरका रहनेवाला, शहरी। -**आह**-**की०** परकोटा, नगरके रक्षार्थ बनायी हुई जवारदीवारी। -**आह**-**पु०** जेल-खाना; कैदी। -**आह**-**वि०** निर्वासित (करना, होना)। -**आह**-**अ०** पकते दूसरे और दूसरेसे तीसरे शहर-तक; जगह-जगह। -**आह**-**पु०** शहरका रहनेवाला, शहरी। -**आह**-**पु०** बादशाह; समकालीन बादशाहोंमें प्रमुख। -**आह**-**की०** बादशाही; शाहाना दब-दबा। -**आह**-**पु०** अंधेरनगरी, वह स्थान जहाँ न्याय न हो। **मु०** -**की** शाह-घर-घरकी खबर रखनेवाली की।
शाहवा-**की०** [अ०] कामना; योग्यता; संयोग वा मैजुनकी इच्छा। -**आह**-**वि०** कामुक, ऐशवास। -**आह**-**की०** ऐशाशी, कामुकता।
शाहवा-**की०** [अ०] गवाही, साक्ष्य; सुदाकी राजमें शाही होना; धर्ममुद्दमें लड़ते हुए दारा जाना; बंध। -**आह**-**पु०** वह पुस्तक जिसमें इमाम हुसैनकी शहादतका वर्णन हो; कपड़ेपर लिखा हुआ शाहवातका कलमा जिसे मुसलमान शुद्धने कफनमें रख देते हैं।

शङ्खान्ता-वि० [फा०] ('शङ्खान्ता'का लघु रूप) राजसी, राजोचित; सुंदर, बढिया। पु० दूल्हेको पहनाया जाने-वाला काल जोषा; ब्याहका एक गीत; एक गत; संपूर्ण जातिका एक राग। -**कान्हाङ्का-पु०** कान्हाङ्का रागका एक भेद। -**जोषा-पु०** दूल्हेका सुख जोषा; सुख जोषा। -**बक-पु०** शङ्खका वक्ता; सुभाषना समक।
शङ्खानी-वि० **खी०** दे० 'शङ्खाना'। -**चुबियाँ-खी०** काल रंगको सुंदर चुबियाँ। -**मँहरी-खी०** गहरे रंगवाली मँहरी।

शङ्खाव-पु० [फा०] गह्रा काल रंग; कुसुमको भिभोर निकाला जानेवाला गह्रा काल रंग।

शङ्खावी-वि० शङ्खावको रंगका, काल। **खी०** एक तरहको सुख महतावी।

शङ्खावुरीयागोरी-पु० गजनीका शासक जिसने ११९३ ई० में महाराज पृथ्वीराजको हराकर विदुस्तानमें लप्चे अर्थमें मुसलिम साम्राज्यको नीचे ढाढो।

शङ्खी-खी० शङ्खवाही; मिठाई।

शङ्खीव-वि० [अ०] जो खुदाकी राहमें धर्मको लिए लड़ते हुए मारा जाय; हत, कतल किया हुआ; अपनेको बलि, कुर्बान कर देनेवाला। -**(दे) करबला-पु०** इमाम हुमेन। -**मर्द-पु०** वह ब्यक्ति जो खुदाकी राहमें, धर्मको नामपर लड़ते हुए मारा हो; योधा।

शङ्खीदी-वि० शङ्खीव होनेको तैयार; काल। -**जम्बा-पु०** शङ्खीव होनेको तैयार जनोका जम्बा। -**तरबूज-पु०** तरबूजकी एक बढिया किस्म जिसको छिलकेतक सुख होते हैं।

शङ्खा-पु० [अ०] चौकीदार, कोतवाल; फसलकी रखा-बाली करनेवाला; ग्लान वसूल करनेवाला सरकारी कर्म-चारी।

शङ्खार्ह-खी० बंदोबस्त; कोतवालका काम; रक्षण; चौकी-दारी।

शङ्कर-पु० [सं०] शंकराचार्यको मत, संप्रदायका अनु-वादी; ब्रह्म, बैल, बरपा, सौंभ; आश्री नक्षत्र जिसको अभिपति शंकर हैं; एक छंद। **वि०** शिव-सम्बंधी; शंकरा-चार्य-सम्बंधी।

शङ्करि-पु० [सं०] कालिकेय; गणेश; आग।

शङ्करी-खी० [सं०] शिवसूत्र; शंकरमिश्रका मान्य।

शङ्कुषी-खी० [सं०] शङ्कुषो मछली।

शङ्ख-पु० [सं०] शङ्ख-ध्वनि। **वि०** शङ्ख-निमित्त, शङ्ख-का; शङ्ख-सम्बंधी।

शङ्खावन-पु० [सं०] एक ऋषि जिन्होंने गृध्र और श्रौत यज्ञ तथा कौशोतकी ब्राह्मण और उपनिषद्का निर्माण किया।

शङ्खारि-पु० [सं०] शङ्खका व्यापार करनेवाली एक जाति।

शङ्खिक-वि० [सं०] शङ्खनिमित्त; शङ्ख-सम्बंधी। पु० शङ्खारि जाति; शङ्खदायक।

शङ्ख-वि० [सं०] दे० 'शङ्ख'।

शङ्खुछा-खी० [सं०] मुंछा।

शङ्खी-खी० [सं०] शङ्खका एक भेद।

शङ्खकी-खी० [सं०] एक जानवर।

शङ्खिक-पु० [सं०] गिरगिट जैसा एक जंतु, सोंफा।

शङ्खिष्य-पु० [सं०] एक गोत्रप्रबंधक ऋषि जिन्होंने एक स्तुतिग्रंथका निर्माण किया; एक गोत्रका नाम; उक्त गोत्रमें जयन्त ब्यक्ति; वैष्णव पक्ष; अश्विका एक रूप या प्रकार।

शान्त-वि० [सं०] शांतिपुत्र; मौन, चुप; निःशब्द, सुन-सान; धीर, स्थिरमन, अवचल, अनुद्विगशील; शांत, बका हुआ; स्थित, बका हुआ; शमित, मिटा हुआ; संतुष्ट; जीवनको लक्ष्मणोंसे हीन, मृत; सांसारिकतासे निवृत्त; इन्द्रियोको दमित करने या जीतनेवाला; पूत; शुभ; उत्साहहीन, अग्रयजशील, शिथिल; बसमें किया हुआ; शिष्ट, सौम्य प्रकृतिवाला, विनम्र; समाप्त, बुझा हुआ; कोषादिसे निवृत्त, मनोविकारहीन, स्वस्थमनः; किसी घटना, किसी बात, किसी मनोभाव आदिसे प्रभावित न होनेवाला। पु० साहित्यशास्त्र-वर्णित नौ रसोंमेंसे एक रस (इसका स्थायी भाव 'निर्वेद' है); जितेंद्रिय योगी, विरामी; तुष्टीकरण। -**क्रोध-वि०** जिसका क्रोध शांत हो गया है। -**गुण-वि०** सूत। -**वेला(तत्त्व)-वि०** स्थिरमन। -**मना(मत्त्व)-वि०** जिसका मन शांत हो। -**रस-पु०** एक काव्यरस, दे० 'शांत'।

शांतव-पु० [सं०] शांतनुको पुत्र, भीष्म।

शांतनु-पु० [सं०] प्रतीपको पुत्र, भीष्मको पिता (वे बंदा-बंशी ये और हापर युगमें हुए थे); कर्कटी, ककड़ी; एक कदम।

शांता-खी० [सं०] दशरथकी कन्या जिसे भंगराज सोम-पादने गौद किया और जो श्रींगी ऋषिको ब्याहो गयी थी।

शांति-खी० [सं०] निःशब्दता, सुनापन; धीरता, मनकी स्थिरता, अनुद्विगशीलता; साधना, तपस्वी; काम, क्रोध, रोग, पीडा, अहि, ताप आदिका शमन; आराम, चैन, सुख; सुख; जितेंद्रियता; शिष्टता, सौम्यता; कोषादि मनोविकारोंसे निवृत्त, मनको स्वस्थता, सांसारिकतासे विराम; विराम; दोषसे बरी होना; क्षुधा-पुष्टि; सुरक्षा; दुर्गा; सोभाग्य; युद्धादिका एक जाना या न होना; अनिष्ट, असंगत आदिका पूजा, व्रत, यज्ञ आदि द्वारा शमन (जैसे प्राह-शांति आदि)। -**कर-कारी(विज्)-वि०** शांति करने, कानेवाला। -**कर्म(वृ)-कारी-पु०** दे० 'शांति'। -**कलक-पु०** शांतिके लिए स्थापित कलश।

काव्य-वि० शांतिका इच्छुक। पु० शांतिकी इच्छा। -**गृह-पु०** वक्त्रके अंतमें शांति-जलसे स्नान करनेका घर; विश्रामगृह। -**बद-पु०** दे० 'शांतिकलश'। -**बलक-सखिल-पु०** बल, पूजा आदिमें सुख, शांतिदायक मंत्र-पुत अवशिष्ट जल। -**वृ-वाता(वृ)-दायक-दायी(विज्)-वि०** शांति देनेवाला। -**निकेतन-पु०** शांति-पुत्र, शांतिदायक गृह, स्थान; विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा बंगाल प्रांतके बोलपुर नामक स्थानमें स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय स्वातिप्राप्त विद्यासंस्था। -**वर्ष(वृ)-पु०** 'महाभारत'का बारहवाँ वर्ष (इसमें युद्धकी विभीषिकासे तप्त बुधिछिके मनकी शांतिके लिए वान, उपदेश आदिके प्रसंग वर्णित हैं)। -**पात्र-पु०** बल, पूजा आदिके अव-

मरीपर ग्रह, अमंगल आदिको शांति के लिए जलकुण्ड पान । -प्रद-वि० शांतिदायक । -प्रिब-वि० (बह व्यक्ति) जिसे शांति प्रिब हो, शांतिका अमिकापी । -अंग-पु० शांतिनाश, उपद्रवका होना; शासन, अनुशासन आदिका न माना जाना, विघ्नोत्पादन । -रक्षक-पु० अमन कायम रखनेवाला । -रक्षा-स्त्री० उपद्रव-निवारण । -वाचन-पु० प्रेतवाचा, रोग आदिकी शांति के लिए वच, पूजा आदिके अवसरोंपर मंत्र-पाठ । -सद्य- (न)-पु० दे० 'शांतिगृह' । -स्थापन-पु० अमन कायम करना । -होम-पु० अमंगल आदिके निवारणार्थ होम, वध आदि ।

शांति-वि० [सं०] शांति-संबंधी; शांतिकर । पु० विपद, अमंगल, दुष्ट प्रधातके निवारणार्थ होनेवाला पूजापाठ, वध इत्यादि कर्म, शांतिकर्म ।

शांतिमय-वि० [सं०] शांतियुक्त, शांतिपूर्ण; शांतियुक्त-युक्त; निर्मित्र ।

शांति-स्त्री० [सं०] ब्राह्मणपत्निका ।

शांति-पु० [सं०] जांबवतीसे उत्पन्न कृष्णका पुत्र ।

शांति-वि० [सं०] शंवर धृग-संबंधी; शंवर राक्षस-संबंधी । पु० लोचका पेड़ ।

शांति-पु० [सं०] द्रैजालिक, जादूगर ।

शांति-स्त्री० [सं०] इंद्रजाल, मायाविद्या, जादू (शंवर देवसे इसका निर्माण किया था, अतः इसे 'शांति' कहते हैं); द्रैजालिका, जादूगरनी ।

शांति-वि० [सं०] चंदनका एक प्रकार; लोच; मृत्पाकानी कला ।

शांति-पु० [सं०] शांति, मंस-व्यवसायी ।

शांति-पु० [सं०] शैवा ।

शांति-पु० [सं०] दे० 'सोमर' ।

शांति-वि० [सं०] शत्रु-संबंधी । पु० शत्रुका पुत्र; शत्रुका उपासक, शीघ्र; कपूर; गुरुल; विष्णुका एक प्रकार; शिव-मलीका पौधा; दैवदाह वृक्ष ।

शांति-स्त्री० [सं०] पार्वती, दुर्गा; नीली वृष; ब्रह्मरथ ।

शांति-स्त्री० [सं०] शिष्टता, सत्यता; विनय; अमनमत्ता ।

शांति-वि० [सं०] शिष्ट, सभ्य, विनीत, सुनील; सीमा, शरारत न करनेवाला (-शोका) । -छाँ-पु० दक्षिणा सुवेदार जिसने औरंगजेबकी आजासे शिवाजीपर चढ़ाई की और उनके हाथों पायल होकर भाग गया ।

शांति-पु० [सं०] वज्रभा ।

शांति-स्त्री० [सं०] दुर्गा; सोमरी (सोमर) नामक नगर ।

शांति-स्त्री० [सं०] सोमर झीलसे उत्पन्न । पु० सोमर नमक ।

शांति-पु० [सं०] खाद्य जड़, कंठल, पपी, फूल, फल आदि जो प्रायः ज्वाल, पकाकर खाये जाते हैं, साग, तरकारी; एक वृक्ष, सागौनका पेड़; शरीर वृक्ष; शाक-दीप; शाकराज शास्त्रिवाचन द्वारा प्रवर्तित संग्रह; एक राजा वरु, शक्ति, जीवट । वि० शक जातिसे संबद्ध; शक राजा संबंधी । -कलंबक-पु० प्याज; कड़सुन । -काल-पु० शक संबद्ध । -कुम्भिका-स्त्री० इमली । -सह-पु० सागौनका पेड़ । -वीक्षा-स्त्री० केवल शाक

खाकर रहना । -द्वीप-पु० दे० एक द्वीप । -पञ्च-पु० मुद्गमर साग; मुद्गमरका परिमाण । -पञ्च-पु० शिशु वृक्ष, सहजजनका पेड़ । -वालेष-पु० ब्रह्मपटि । -अक्ष-पु० वह व्यक्ति जो शाक ही खाता है, मांस न खाता हो । वि० केवल शाक खानेवाला । -योग्य-पु० धान्यक, भनिया । -राज-पु० वास्तुक, वजुआ । -वल्ली-स्त्री० कला, करंज । -बाट-बाटक-पु०, -वाटिका-स्त्री० सम्जीकी बाड़ी । -विद्वक-पु० वेल्का पेड़ । -विद्वक, -विद्वक-वाताकु, भंडा, बैगन । -वीर-पु० वास्तुक शाक, वजुआ; जीवशाक; गदहपूरना । -वृक्ष-पु० सागौनका पेड़ । -शाकट, -शाकिन-पु० शाकका सेत । -अष्ट-पु० दे० 'शाकवीर' । -अष्टा-स्त्री० जीवती; दोषी धूप; बैगन; पेठा ।

शाकट-वि० [सं०] शकट-संबंधी; गाड़ीपर कदा हुआ था जाता हुआ । पु० गाड़ीमें जुता पशु; गाड़ीमें जाती हुई वस्तु; श्लेष्मांतक वृक्ष; धव वृक्ष; सेत । -शोतिका-स्त्री० पोयका पौधा ।

शाकट-पु० [सं०] शकटारमज; आठ प्राचीन वैद्या-करणोंमेंसे एक जिसका उल्लेख पाणिनि तथा वात्सने प्राय- किया है ।

शाकटिक-वि० [सं०] दे० 'शकट' ।

शाकटीन-पु० [सं०] बीस तुलाकी एक लौह; गाड़ीमें कड़ी हुई वस्तु । वि० दे० 'शकट' ।

शाकटी-स्त्री० [सं०] दे० 'शाकटी' ।

शाकल-वि० [सं०] शकल या दुमरेसे संबद्ध । पु० जम्बेद-की एक शाखा; इस शाखाके अनुयायी (प्रायः बहुवचन); एक द्वीपका नाम; हवन-सामग्री ।

शाकलिक, शाकली (स्त्रि)-पु० [सं०] मछली ।

शाकलिक-वि० [सं०] शकल-संबंधी, दृक्से या अशमे संबंध रखनेवाला, शाकल ।

शाकल्य-पु० [सं०] पाणिनि द्वारा उल्लिखित एक वैद्या-करण (कहा जाता है कि इन्होंने ही पहले-पहल जम्बेदका पर-पाठ व्यवस्थित किया था) ।

शाकल्य-पु० [सं०] काली मिर्च ।

शाका-स्त्री० [सं०] हरीतकी, हड़ ।

शाकाम्ब-पु० [सं०] वृक्षाम्ब; इमली । -मेद-पु० जुक या चूक ।

शाकारी-स्त्री० प्राकृत भाषाका एक निम्न रूप, प्रकार ।

शाकाहक, शाकाहमी-स्त्री० [सं०] कार्मुकके कृष्ण पक्षमें पक्षनेवाली अष्टमी (इस तिथिकी पितरोंकी तुष्टिके लिए शाकदान किया जाता है) ।

शाकासन-वि० [सं०] शाकाहारी ।

शाकाहार-पु० [सं०] पत्र, फूल, फल, अन्न आदि खाद्य पदार्थ अथवा इनका भोजन ।

शाकाहारी (स्त्रि)-वि०, पु० [सं०] दे० 'शाकमज्ञ' ।

शाकिन-पु० [सं०] सेत, शाकट ।

शाकिनी-स्त्री० [सं०] शाकयुक्त स्त्री, साग शैवी हुई जमीन; दुर्गाकी एक अनुवती ।

शाकिर-वि० [अ०] शुक करनेवाला, कुदध; संतोष करनेवाला ।

शाकी-वि० [अ०] शिवायत करनेवाला; फरियाद करनेवाला ।

शाकुंतल, शाकुंतलेय-वि० [सं०] शकुंतल-संबंधी । पु० शकुंतलसे संबद्ध कालिदासकृत 'अभिज्ञान शाकुंतल' नाटक; शाकुंतलका पुत्र भरत ।

शाकुंतिक-पु० [सं०] विश्वामर, बहेलिया ।

शाकुन-वि० [सं०] पक्षियों-संबंधी; पक्षियोंका; शकुन- (सयुज) संबंधी । पु० पक्षी आदिके रूप, लक्षण आदि देखकर मनुष्यके शुभाशुभका विश्लेष्य करानेवाला शास्त्र; सयुज बतानेवाला; पक्षी पकड़नेवाला ।

शाकुनिक-पु० [सं०] विश्वामर, बहेलिया, ब्याव; सयुज बनानेवाला, शकुनक; शकुन-विचार ।

शाकुनेय-पु० [सं०] छोटा उल्हू; वृकासुर । वि० पक्षि-संबंधी ।

शाकुलिक-पु० [सं०] महाह, मछुवा; मछलियोंका ढेर । वि० मछली-संबंधी ।

शाकेय-पु० [सं०] ईस्का एक प्रकार ।

शाकील-पु० [सं०] एक कला ।

शाकर-पु० [सं०] दे० 'शाकर' ।

शाक-वि० [सं०] शक्ति-संबंधी । पु० वह जो शक्तिकी उपामना करना हो, दुर्गा, काली आदि देवियोंका उपामक; नृममप्रदायमें दीक्षित (शाक्तोंके अनेक संप्रदाय हैं । ये प्रायः वाममार्गी होते हैं और अपने संप्रदायमें विहित मंत्र, मांस आदिकी अप्राप्ति नहीं मानते । नारीको ये शक्तिका प्रतीक मानने हैं और उसको पूजा और उसके नयनमें रत रहते हैं) ।

शाकागम-पु० [सं०] शाक तंत्र, तंत्र-शास्त्र ।

शाक्तिक-पु० [सं०] शाक, शक्तिका उपासक; शक्ति, भाला नामक हथियार रखने, चलनेवाला व्यक्ति । वि० शाक्त-मन्त्रन्वी ।

शाक्तीक-पु० [सं०] शक्ति, भाला धारण करनेवाला सैनिक, भालाबंदार । वि० भाला-संबंधी ।

शाक्य, शाक्य-पु० [सं०] शक्तिकी उपासना करनेवाला व्यक्ति ।

शाक्य-पु० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रियकुल जिसमें गौतम- बुद्ध उत्पन्न हुए थे; बुद्धदेव; बुद्धके पिता शुद्धोदन; बौद्ध मिथु । -बैकुं-पुंगव-पु० बुद्ध । -पुत्रीय-पु० बौद्ध मिथु । -मिथु-मिथु-पु० बौद्ध सन्यासी ।

-मुनि-सिंह-पु० बुद्धदेव ।

शाक-वि० [सं०] शाक, ईंद्र-संबंधी; ईंद्रादित । पु० इन्द्रदेव के लिए दिया गया हवि आदि; ज्येष्ठ नक्षत्र ।

शाकी-स्त्री [सं०] ईंद्रपत्नी; शाक-नुस्व पराक्रमवाली दुर्गा ।

शाकर-पु० [सं०] वृष, बैल; एक रीति या संस्कार ।

शाख-पु० [सं०] कार्तिकेय; करंज ।

शाख-स्त्री [का०] शाखा, डाली; पौधेकी कलम; सँग; नदी या नहरकी मुख्य धारासे निकली हुई छोटी धारा; ंकः; सँकः; अंश; (का०) बंश; कमानकी लकड़ी; एक पकवान जो मैसरे खमीरमें शकर मिलाकर बनाया जाता है । -ख-पु० छोटी शाख; सुहमत, मिथ्वारोप ।

-०बंदी-स्त्री० पेड़में कलम लगाना; सुहमत लगाना ।

-दरशाख-वि० दूरतक फैला हुआ, शाखा-प्रशाखाओं-वाला । -सार-पु० शाखाप्रचुर शृंगोंका झुरमुट । वि० बहुत-सी शाखाओंवाला । - (उ०) दरिया-स्त्री० नदीकी छोटी धारा जो मुख्य धारासे अलग होकर दूसरी ओर बहती जाय । मु० -निकलना-टहनी निकलना; सँग पैदा होना; ऐव निकलना; नवी बात पैदा होना । -निकलना-टहनी निकलना; ऐव निकलना, मुका-चीनी करना; नवी बात पैदा करना । -लगाना-टहनी लगाना; पल लगाना; ऐव होना ।

शाखसामा-पु० [का० 'शाखसामा'] झगडा, बहस; पक्ष, दोष; बातका पक्ष; ईरानमें फकीरोंका एक धिका जो अपने आपको वायल कर लेनेकी धमकी देकर लोगोंसे पैसे लेता है ।

शाखा-स्त्री० [सं०] विटप, पेड़की डाल; बाहु; शरीराव-यव; ग्रंथपरिच्छेद, अध्याय; पक्षान्तर, प्रतिपक्ष; किसी वस्तु आदिका अंग, भाग, भेद; किसी दर्शन, शास्त्र आदि-का भेद, संप्रदाय (स्कूल); वेदकी संविधानोंकी पदपाठ और स्वरकी दृष्टिमें व्यवस्थित करनेवाले किसी ऋषिके नामपर उसके बंधजों अथवा शिष्यों द्वारा परंपराके रूपमें उलगाया जानेवाला संप्रदाय । -कंद-पु० धूरका पेड़ । -कार्यालय-पु० किसी व्यापारिक संस्था या अन्य संस्थाका वह छोटा कार्यालय जो प्रधान कार्यालयके सात-हन या उसके नियंत्रणमें हो । -चंद्रमण-पु० एक टालसे दूसरी टालपर कूटना; हाथमें लिये एक कामको पूरा किये बिना ही दूसरा काम करने लगना, कोई कार्य अव्यवस्थित रूपसे करना । -चंद्रभाषा-पु० अवास्त-विक वस्तु, घटना आदिकी सत्य मान लेनेके अवसरपर कही जानेवाली एक उक्ति (किसी विशेष स्थानसे देखनेपर काल होता है कि चंद्र वृक्षको शाखापर ही है, मगर स्थिति ऐसी होती नहीं । इसी स्थितिमें आधारपर वह उक्ति बनी है) । -कंद-पु० अपनी शाखाके प्रति विश्वासघात करनेवाला साक्षण । -नगर-भगरक-पु० उपनगर ।

-विक्त-पु० हाथ-पैरमें जलन पैदा करनेवाला एक रोग । -पुर-पु०, -पुरी-स्त्री० दे० 'शाखानगर' । -सूर-पु० वृक्ष । -सुर-पु० वानर; गिलहरी । -रंड-पु० अन्यशास्त्रक, वेदकी अपनी शाखाको छोड़कर दूसरेकी शाखाका अध्ययन । -रध्या-स्त्री० बड़ी सफकने निकली हुई छोटी सफक । -बात-पु० एक प्रकारका वातरोग ।

-शिका-स्त्री० पेड़की डालसे निकलकर जमीनकी ओर बढ़नेवाली जटा (यह जमीनमें पंखसर करी स्वतंत्र पेड़का रूप भी धारण कर लेता है; जैसे बटवृक्षकी जटा, बरोह) ।

शाखा-पु० [का०] टहनी, शाखा; सँग; सँगकी शाखा प्याला; वह लकड़ी जिसमें अपराधीका सिर और हाथ ठेकर उमें दंड देते हैं । वि० (समासमें) शाखोंवाला (पञ्चशाखा) ।

शाखा-स्त्री० [सं०] हमली ।

शाखा-पु० [सं०] वानर वृक्ष, जलमें उत्पन्न होनेवाला जंतु ।

शाखी (शिव)-वि० [सं०] शाखाओंवाला । पु० वृक्ष;

वेद; वेदकी किसी शाखाका अधिकारी, अनुयायी।

शास्त्रोच्चार-पु० [सं०] विवाह-भट्टमें पाणि-ग्रहणके अवसरपर वर तथा कन्या-पक्षके पुरोहितों द्वारा अपने-अपने यजमानकी कुलीनताके ज्ञापनार्थ उनकी वशावलीका बखान।

शास्त्रोदक-पु० [सं०] सिंदूरका पेक।

शास्त्र-वि० [सं०] शास्त्रा-संबंधी; शास्त्राके सत्त्व।

शागिर्द-पु० [फा०] गुरुमें विद्या या शिक्षा प्राप्त करनेवाला, विद्यार्थी, शिष्य। -वेशा-पु० किसी दफ्तर या विभागके (मातहत) कर्मचारियोंकी समष्टि, अथवा, नौकर-चाकर; नौकर-चाकरके रहनेके मकान जो बंगलों आदिमें एक कमरे या पास ही बना दिये जाते हैं।

शागिर्दानी-वि० [फा०] शिष्योन्वित, शागिर्दकी तरह। पु० गुरुदक्षिणा।

शागिर्दी-खी० शागिर्द होना, शिष्यता। **मु०** -करना-शागिर्द बनकर सीखना, शिष्य होना।

शाधि-पु० [सं०] जौकी दक्षिणा। वि० प्रबल; प्रमिष्ट।

शाङ्ग-वि० [अ०] दुर्जन, कमयाव, अनोखा। - (जो) आदिह-अ० कभी-कभी, यदा-कदा।

शाट, शाटक-पु० [सं०] कपड़ेका डुकड़ा; बख, पोशाक।

शाटिका, शाटी-खी० [सं०] साड़ी; बख।

शाज्याचन-पु० [सं०] एक मुनि; यहकर्मके दोषकी शांति-के लिए किया गया एक होम।

शाज्य-पु० [सं०] शठता; छद्म; छप।

शाङ्खल-पु० [सं०] दे० 'शाङ्ख'।

शाण-पु० [सं०] सान, एक प्रकारका कृत्रिम पत्थर जिसपर रंगबिरंग इथियार, औजार आदिकी चार तेज की जाती है; सन(शण)का बना बख; कसौटी; चार भाशेकी एक तौल; करपत्र, आरा। वि० सनका बना हुआ।

शाणक-पु० [सं०] सनका बना बख।

शाणजीव-पु० [सं०] शाणपर काम करके अपनी जीविका चलावेवाला व्यक्ति, इथियारों, औजारों आदिकी सफाई, उन्हें तेज करनेवाला व्यक्ति, अस्त्र-मार्जक।

शाणास्त्रा(स्मन्)-पु० [सं०] मान धरनेका पत्थर; कसौटी।

शाणि-खी० [सं०] पट्टझुल, पट्टा।

शाणित-वि० [सं०] जो तेज या तीक्ष्ण किया गया हो; सान रखा हुआ; कसौटीपर कसा हुआ।

शाणी-खी० [सं०] सनके रेशोंमें बना बख; टाट; तंदु; छिद्रमय बख, फटी पोशाक; उपनयन संस्कारके अवसरपर प्रक्षारकी ओर पवनसेके लिए दिया जानेवाला सनका बना बख; सान; कसौटी; आरा; चार भाशेकी तौल; हाथों और औखोंसे किया जानेवाला हथार।

शाणोपल-पु० [सं०] सान धरनेका पत्थर।

शात-वि० [सं०] निश्चित, तेज किया हुआ; पतला; दुबला, कमचौर; पतित; सुंदर, मुसी; दीप्तिशाली। पु० बट्टा; सुख; आनंद, प्रसन्नता। - **भीड-पु०** अधिकता पुष्पका एक भेद। - **ल-खी०** चर्मकषा नामक वृक्ष, दे० 'सातल'।

शातकर्मि-पु० [सं०] एक कर्मि।

शातकर्म-पु० [सं०] कंचन; बट्टा; करवीर वृक्ष।

शातकौम-वि० [सं०] स्वर्णनिर्मित। पु० स्वर्ण।

शातकलश-पु० [सं०] इंद्रधनुः।

शासन-पु० [सं०] तीक्ष्ण, तेज करना; गिरवाना; कटवाना; पातन; काटना, उच्छेदन, विभाजन; क्षीण होना; मुर-हाना, नष्ट होना।

शातपत्रक-पु०, शातपत्रकी-खी० [सं०] ज्योत्स्ना, चंद्रप्रकाश।

शातभिच-वि० [सं०] शतभिषा नक्षत्रमें उत्पन्न।

शातधीर-पु० [सं०] एक तरहकी मस्जिदा, मदनमार्ग।

शातबाहन-पु० [सं०] दे० 'शाकिबाहन'।

शासातप-पु० [सं०] 'स्थिति' निर्माता एक कर्मि।

शातिर-वि० [अ०] बालक, काहूँ। पु० चोर, गठ-कतरा; पनका चोर; शतरंज खेलनेवाला।

शातोदरी-खी० [सं०] क्षीण कटिवाली औरत।

शाश्व-वि० [सं०] शशुता, दुरमनी, शशुसमूह, दुरमनोका गिरोह। वि० शशु-संबंधी।

शाद्-पु० [सं०] नयी, हरी घास, तुण, दूध; कीचड़। वि० [फा०] प्रसन्न, हर्षयुक्त; पूर्ण; भरा हुआ। - **काम-वि०** नफल; समृद्ध। - **कामी-खी०** सफलता; समृद्धि; खुशी। - **बाश-पु०** खुश रही। - **माश-वि०** सुप्र, प्रमत्त।

शादा-खी० [सं०] रंज।

शादाब-वि० [फा०] सींचा हुआ, सुसिक्त; हरा-भरा।

शादाबी-खी० [फा०] सुसिक्त, हरा-भरा होना।

शादिबाना-पु० [फा०] व्याहमें बजायी जानेवाली नौबत; सुधीका बाजा; व्याह या सुधीके मौकोंपर गाया जानेवाला गीत; बजावा; किसानों द्वारा शारीके अवसरपर जमींदारकी दी जानेवाली रकम।

शादी-खी० [फा०] खुशी; हर्षोत्सव; व्याह; जम्होत्सव (खी०)। - **मर्रा-खी०** हर्षोत्सवमें होनेवाली मृत्यु। वि० हर्षोत्सवमें मरनेवाला। **मु०** - **रखाना-वि०** व्याहका सामान, आयोजन करना।

शादूल-वि० [सं०] नयी, हरी घाससे युक्त, नवतृणबहुल, नवतृणाच्छादित; हरा। पु० वासका मैदान, हरित भूमि, गोचारणभूमि।

शादूलाम-पु० [सं०] एक हरा फोका।

शान-पु० [सं०] शाण; निकष, कसौटी। - **पाद्-पु०** चंदन रंगबनेका पत्थर; पारिश्रज पर्वत।

शान-खी० [फा०] गौरव, बखणन; दबदबा; ताकत, कुदरत (सुदाकी शान); प्रतिष्ठा (शान घटना); ठाट; ठसक, आन, अंदाज; रूप, शक्त; अवसर। - **शुमाव-पु०** दे० 'सानशुमान'। - **दूर-वि०** शमवाला, अथकता, मध्य, सुंदर। - **खीक-खी०** ठाट-पाट। - **(ले)नज़ल-खी०** कुरानकी किसी आयतके उत्तरनेका अवसर। **मु०** - **बर-सना-गौरव**, दबदबा प्रकट होना। (किसीकी) - **में-के** विषयमें (की शानमें गुस्ताकी करना)। - **में बहा** लगना - प्रतिष्ठा घटना, हेरी होना।

शाना-पु० [फा०] मोड़ा, कंधा; मोड़ेकी हड्डी; कंधी, जुलाहोंका कंधा। **मु०** - **शानसे शाना छिकना** - भारी

मीक, धम्म-यक्षा होना ।

शारीक-वि० शानदार, रोषवाला ।

शाप-पु० [सं०] 'अमुकका दुरा हो' ऐसी दुरी भावना व्यक्त करना, आक्रोश, बदमाश; छूठी कसम जिसका दुष्परिणाम शापका-सा हो; जली-कटी दुनाना । -प्रस्त-वि० अभिशप्त । -अवर-पु० शुद्धजनोंके अभिशापके कारण आवा हुआ अवर (इस अवरके विषयमें ऐसा माना जाता है कि इसकी सत्यता मुक्तमोक्षी ही प्रमाणित कर सकते हैं) । -निवृत्ति-को० शापसे मुक्ति । -प्रद-वि० शाप देनेवाला । -मुक्त-वि० अभिशप्त होकर बादमें जो किसी कारणवश उससे मुक्त हो गया हो । -मुक्ति-को०, -मोक्ष-पु० शापसे मुक्त होना ।

शापटिक-पु० [सं०] मोर पक्षी ।

शापवाक-सं० कि० दे० 'मापना' ।

शापांत-पु० [सं०] शापकी समाप्ति ।

शापांशु-पु० [सं०] वह जल जिसे हाथमें लेकर शाप दिया जाय, शापोदक (प्राचीन कालमें शाप देनेकी यही पद्धति मिलती है) ।

शापावसान-पु० [सं०] दे० 'शापात' ।

शापाञ्ज-पु० [सं०] वह जिसका शाप ही अन्त हो, कृपि ।

शापित-वि० [सं०] जिसे शाप दिया गया हो, अभिशप्त; जिमें शाप दिलाया गया हो ।

शापोत्सर्ग-पु० [सं०] शाप देनेकी क्रिया; शापका कथन ।

शापोद्धार-पु० शापमें छूटना, शापके प्रभावमें बच जाना, शाप मुक्ति ।

शाफरुकि-पु० [मं०] मछली भारनेवाला व्यक्ति, मछुआ, मछाल ।

शाक्रा-पु० [फा०] रईमी बत्ती जो दवामें भिगेकर जलमें नन्द रखी जाय; आँखके ऊपर रखा जानेवाला रईका फाया; सायुनकी बत्ती जो पाखाना लानेके लिए गुहामें रखी जाती है ।

शाक्री-वि० [अ०] शिफा, आरोग्य देनेवाला; शास्त्रना देनेवाला ।

शाक्री-वि० [अ० 'शाक्रिज'] शक्राजित करनेवाला; सिफारिश करनेवाला ।

शाबर-वि० [सं०] शबर-संबंधी; जगली, क्रूर; नीच । पु० अश्वारथ, वल्ली; पाप; दुष्टता; बदमाशी; लौह वृक्ष; शबर युगका चमड़ा; ताबा; एक तरहका चंदन; अंधेरा । -भाष्य-पु० भीमांसासूत्रपर किया गया शबर स्वामीका भाष्य । -मेवाक्ष-पु० तौबा ।

शाबरिका-को० [सं०] एक प्रकारकी मोटी और लंबी जौक जो प्रायः भैंसीकी लगती है, भैंसहिया जौक, सबरी जौक ।

शाबरी-को० [सं०] शबर जातिकी भाषा; प्राकृत भाषाका एक निम्न प्रकार जो पहाड़ी और जंगली जानियों द्वारा बोली जाती थी ।

शाबल्य-पु० [सं०] शबलता, कई रंगों वा वस्तुओंका मेल ।

शाबस्ती-को० [सं०] एक प्राचीन नगर ।

शाबाश-अ० [फा० 'शाहबाश'का लघु रूप] खुश रहो; वाहवा; साधु-माधु । को० साधुवाद (देना) ।

शाबाशी-को० सराहना, साधुवाद ।

शाब्द-वि० [सं०] शब्द-संबंधी; शब्दमय; शब्दपर ही आश्रित ('आर्थ'का उलटा); शब्दादंबरसे युक्त (व्याख्यान, लौकी); मौखिक । पु० वैयाकरण । -बोध-पु० वाक्यमें प्रयुक्त शब्दोंके अर्थका शोध (व्याख्यानके अनुसार इसे वाक्यमें प्रयुक्त पद (शब्द)के अर्थके ज्ञानमें उत्पन्न ज्ञान कहते हैं) । इसका करण पदज्ञान है और इसका कारण पदशक्तिज्ञान । इस प्रकार वाक्यगत योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति द्वारा तात्पर्यज्ञान शब्दबोध है । -व्यंजना-को० वाक्यमें प्रयुक्त शब्दविशेषके आधारपर हुई व्यंजना (मा०) ।

शाब्दिक-वि०, पु० [सं०] दे० 'शब्द' ।

शाब्दी-को० [सं०] सरस्वती, भारती । वि०, को० दे० 'शब्द' । -व्यंजना-को० दे० 'शब्द-व्यंजना' ।

शाम-पु० अरबके उत्तरमें अवस्थित एक देश, जिसकी राजधानी दक्षिण ई, सीरिया; * इयास । वि० [सं०] शम, शांति-संबंधी । को० [फा०] सर्वात्मका समय, मंध्या; (छा०) अतस्तक (शामे) जबानी, शामे जिवनी ।

-(मे) अवच-को० लखनऊकी शाम (वहाँकी शामकी चहल-पहल प्रसिद्ध है) । मु० -का फूलना-सर्वात्मकालमें पक्षिमी क्षितिजपर लालीका छिटकना, शफक फूलना । -की सुबह करना-सारी रात जागकर बिताना, नभेरा कर देना । -सुबह करना या लंगाना-टाल-मटोल करना ।

शामस-को० [अ०] दुर्भाग्य, कमबस्ती; सुसीधत । -जवा-वि० सुसीधतका मारा हुआ । -(ते)-आमाक-पु० कर्मफल, कियेकी मना । मु० -आना-बुरे दिन आना, दुर्दवकी मेरणा होना, कमबस्ती आना । -का मारा-जिसकी शामत आयी हो, अमला, दुर्दशाग्रस्त । -की मार-दुर्भाग्य, कमबस्ती । -(किसीपर)-सवार होना-दे० 'शामत आना' ।

शामसी-वि० शामतका मारा, अभागा ।

शामन-पु० [सं०] शमन; शांति; मारण; बलि; हत्या; अतः यम ।

शामनी-को० [मं०] दक्षिण दिशा (यम जिसके देवता या स्वामी हैं) ।

शामिन्न-पु० [सं०] बलिमें निमित्त पशुकी वृषमें बौधना; यक्षमें पशुबलि, हिंसा; बलि-पशुका मांस पकानेकी अग्नि; वह मांस पकानेका स्थान; यक्ष; यक्षपान्न; पातक मार, चोट । वि० बलि चढानेवालेसे संबद्ध ।

शामिनावा-पु० [फा०] बवा और साधारणतः चारों ओर खुला हुआ तंबू ।

शामिल-वि० [अ०] मिला हुआ; एकट्ठा । -मिसिल-वि० मुकदमेके कागजातके साथ नत्थी किया हुआ । -हाल-वि० दुःख-सुखका साथी, छरीके हाल ।

शामिकात-को० सामेकी जायदाद, अनेक हिस्सेदारोंकी संयुक्त संपत्ति; हिस्सेदारी (यम महाल शामिनाम है) ।

शामिलाती-वि० संयुक्त ।

शामी-वि० शाम देशके बारेमें, शाम देश-संबंधी या शाम देशका । पु० शाम कर देनेवाला । को० छरी या ओजार

आदिकी रक्षाके लिए उसपर पहनाया जानेवाला छोटे, पीतल आदिका छेला । -कबाब-पु० एक तरहका कनाब ।

श्यामीन-पु० [सं०] मस; यद्यपि प्रयुक्त होनेवाली करछी, सुबा ।

श्यामीक-पु० [सं०] मस ।

श्यामीकी-की० [सं०] माला ।

श्याम्य-पु० [सं०] शमता, शमत्व; शांति; आनृत्य, भाईपन । वि० शांति-संबंधी ।

श्याब-पु० [सं०] लेटना; सोना ।

श्यायक-पु० [सं०] बाण; तलवार ।

श्यायक-वि० [अ०] शोक करनेवाला; हच्छुक, चाहने-वाला ।

श्यायद्-अ० [फा०] कदाचित्; संभवतः ।

श्याबर-पु० [अ०] शेर कहनेवाला, कवि ।

श्याबरा-की० [अ०] कवि, कवयित्री ।

श्याबराजा-वि० कविसुलभ; कविका-सा; कवित्वमय; अतिरजित ।

श्याबरी-की० शेर कहना; कविकर्म; कविता; अतिरचना ।

श्याबी-वि० [सा०] योग्य, अनुरूप ।

श्याबा-वि० [अ०] प्रकट; विशासित; प्रकाशित (पुस्तक आदि) । सु० -कबवा-प्रकाशित करना ।

श्यायिक-पु० [सं०] श्याबा-रचनाका जानकार, श्याबा-रचना द्वारा अपनी जीविका चलावेवाला ।

श्यायिका-की० [सं०] शयन, निद्रा ।

श्यायित-वि० [सं०] सोया, छेदा हुआ; झुलाया, छेदाया हुआ; गिरा, पड़ा हुआ, पतित ।

श्यायि(विद्)-वि० [सं०] सोने, छेदनेवाला ।

श्यारंग-पु० [सं०] दे० 'सारंग' (समस्त शब्दोंके लिए भी) ।

श्यारंगी-की० [सं०] दे० 'सारंगी' ।

श्यारंवर-पु० [सं०] जनपद-विशेष ।

श्यार-वि० [सं०] कर्तृवर्ण, चितकनरा, विभिन्न वर्णयुक्त; पीला । पु० चितकनरा रंग; हरा रंग; बाजु; पासा; शतरंजका गोहरा; हिसनकिया, चोट पहुँचाना ।

श्यारमिक-वि० [सं०] शरण चाहनेवाला । पु० शरण-गतका रखक व्यक्ती (?) ।

श्यारम्-वि० [सं०] शरत्कालमें उत्पन्न; शरत्कालसे मसङ्ग; बाष्पिक, वर्ष-सम्बंधी; नवीन; अभिनव, ताजा; विनम्र, लज्जाशील । पु० शरत्काल; वर्ष; ध्वन कमल; बकुल वृक्ष; कास; हरी, पीली मृगा; शरत्कालमें उत्पन्न होनेवाला अन्न; शरत्कालमें अधिकतर होनेवाला एक रोग; शरत्कालकी धूप । -चंद्र-पु० शरत् ऋतुका चंद्रमा जो वर्षोंके बाद इस ऋतुमें आकाशके साफ रहनेके कारण विशेष उज्ज्वल और आकाशदायक होता है । -ज्योत्स्ना-की० शरत् ऋतुकी चाँदीनी जो उज्ज्वलता और जीनलताके लिए प्रसिद्ध है । -निशा-की० शरत् ऋतुकी राग जो शीतल और आह्लादायक होती है । -पूणिमा-की० कोजावर, अभिनवपूणिमा, शरदपूनी । -मेघ-पु० शरत् ऋतुका बादल जो जलहीन और भेन होता है । -यामिनी,-

शरत्ति,-शरवरी-की० दे० 'शरदनिशा' । -सखी(विद्)-पु० दे० 'शरदचंद्र' ।

शारवक-पु० [सं०] एक तरहका दर्भ ।

शारदाबा-की० [सं०] सरस्वती ।

शारदा-की० [सं०] सरस्वती; दुर्गा; एक प्रकारकी बीणा; माछी; सारिवा, श्यामा कता ।

शारदिक-पु० [सं०] शरत् ऋतुकी धूप; इस ऋतुमें होने-वाला रोग; इस ऋतुमें किया जानेवाला श्राद्ध; बाष्पिक श्राद्ध ।

शारदी-की० [सं०] कोजावर पूणिमा; सप्तपर्ण; तोय-पिप्ली, जलपीपल । वि० की० शरत् ऋतु-संबंधी ।

शारदी(विद्)-वि० [सं०] शरत्काल-संबंधी ।

शारदीय-वि० [सं०] शरत् ऋतु-संबंधी ।

शारदा-वि० [सं०] शारदीय, शरत् ऋतु-सम्बंधी । पु० शरत्में होनेवाला अन्न ।

शारद्वत-पु० [सं०] कृपाचार्य (मं० भा०); गौतम ।

शारि-पु० [सं०] जुआ खेलनेका सामान, पासेकी गोड; शतरंजकी गोटी; छोटा गेंद । की० शारिका, मैना । शायकी झूल; कपट; निंदा; एक गान । -बह-कल-कलक-पु० बिसात जिसपर शतरंज, चौसर आदिके मुहरे बिछाकर खेलते हैं । -पुत्र-पु० गौतमके दो प्रधान शिष्योंमेंसे एक । -श्रृंग-पु० एक तरहका पासा ।

शारिका-की० [सं०] मैना पक्षी; बीणा आदिका वादन-साजिक (सारंगी आदि) बाधोंकी बजानेकी धनुषकी तरह-की कमान; शतरंजकी गोटी; शतरंज आदि खेलका दुर्गा । -कवच-पु० यामल तन्त्रीक दुर्गाका एक कवच ।

शारित-वि० [सं०] रंगिन, रंग-विरंगा ।

शारिवा-की० [सं०] दे० 'सारिवा' ।

शारी-की० [सं०] मैना, कुआ; शतरंजकी गोड; गेंद ।

शारीर-वि० [सं०] शरीर-सम्बंधी, शरीरमें मसङ्ग; शरीर-में उत्पन्न, देहज । पु० शरीरस्थित जीवात्मा, आत्मा; मल; धूप, बैल, साँस; शरीररचनाशास्त्र; शरीरका ढँचा ।

-तत्त्व-पु० शारीरिक तत्त्वों, अवयवों, रचना, अंतर्बाह्य क्रिया आदिके विवेचनमें सश्रुति विज्ञान । -विद्या-की०, -विज्ञान-पु० शारीरिक जीवनिर्माण, उत्पत्ति-संबंधी शास्त्र, शरीररचना, किया आदि-संबंधी विज्ञान, शरीर-शास्त्र । -शास्त्र-पु० दे० 'शारीरतत्त्व', 'शारीरविद्या' ।

शारीरक-पु० [सं०] देह-सम्बंधी; देहज । पु० आत्मा । -आयुष्य-पु० शरत्कार्यकृत अष्टसूत्रका आयुष्य । -सूत्र-पु० वेदव्यामकृत वेदातसूत्र ।

शारीरकीय-वि० [सं०] दे० 'शारीरक' ।

शारीरिक-वि० [सं०] दे० 'शारीरक' ।

शारक-वि० [सं०] हिसक, चोट पहुँचानेवाला; दुष्ट, शरारती, शरीर ।

शार्क-पु० [सं०] शर्करा; [अं०] एक बड़ी मछली जिसका तेज जीपषके रूपमें प्रयुक्त होता है ।

शार्कक-पु० [सं०] शर्करापिंड; दग्धकेन, दूधका हाग; मलाई ।

शार्कर-वि० [सं०] शर्करानिर्मित, चीनीका या चीनीमें बना हुआ; शर्करायुक्त; रबीला, रवेदार; कंकरीला । पु०

जुही; दुग्धकेन; कंकरीला खान; कोषका पेक्ष ।

शाक्य, शाक्य, शाक्यीय-वि० [सं०] कंकरीला ।

शाक्य-वि० [सं०] शृंग-संघर्षी; सींगका बना हुआ; धनुष ।

पु० धनुष; विष्णुका धनुष; आदी । -धन्वा(धन्व), -धारी(रिन्), -पाणि, -शूर-पु० विष्णु; धनुषर सेनिक ।

शाक्य, शाक्य-पु० [सं०] एक तरहका पक्षी ।

शाक्य-श्री० [सं०] महाकरंज ।

शाक्यधनुष-पु० [सं०] दे० 'शाक्यधन्वा' ।

शाक्यी(रिन्)-पु० [सं०] 'शाक्यधन्वा' ।

शाक्यूल-पु० दे० 'शाक्यूल' ।

शाक्यूल-पु० [सं०] व्याघ्र, बाघ; सीता; शरम पशु; एक राक्षस; पक्षि-विशेष; चित्रक वृक्ष; रोहा छदका एक भेद । वि० भेद (सौमिक शब्दके उत्तरपदमें, जैसे-नर-शाक्यूल) । -कलित, -कलित, -विक्रीकलित-पु० वर्णवृत्त-विशेष ।

शाक्य-वि० [सं०] शिव-सम्बन्धी ।

शाक्य-वि० [सं०] शर्वरी, रात्रि-संघर्षी, निशाकाकीन; घानक, दुष्टतापूर्ण । पु० अथतमसु, अत्यधिक अंधकार ।

शाक्य-वि० [सं०] रात्रि-संघर्षी ।

शाक्यी-श्री० [सं०] रात्रि ।

शाक्यी(रिन्)-पु० [सं०] चौतीसवाँ संवत्सर ।

शाक्यकायन-पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्र, नदी । -

ज्ञा-श्री० शाक्यकायनकी पुत्री सत्यवती, व्यास माता ।

शाक्य-पु० [सं०] पाणिनि ।

शाल-पु० [सं०] साक्ष, समुद्रका पेश; वृक्ष; मत्स्यविशेष; गेरा, पहाड़ीधारी; राजा शालिवाहन । -शाल-पु० गच्छी नदीके किनारे बसा एक ग्राम, कैणवोंका तीर्थ; तलप्रवाहसे घिरी, गोली, चिकनी, दयामर्षण पत्थरको घिसाक शिम्पर चक्रका चिह्न रहता है (जिसे उपवीन कहते हैं) और जो विष्णुके रूपमें पूजा जाती है । -गिरि-पु० एक पर्वतका नाम (पु०) । -शिला-श्री० शालग्राम-का पटिया । -ज-वि० शाल वृक्षसे उत्पन्न । पु० शाल वृक्षका रस, गोद या राल; शाल मत्स्य । -निवास, -रम-पु० मर्जर-रस, शालका गोद; शाल वृक्ष । -पत्रा-श्री० जिम पेशके पत्ते शाल वृक्षके पत्तोंके समान हों, सरिवन वृक्ष । -पर्जिका-श्री० मुरा गंधद्रव्य, एकांगी ओषधि । -पर्णी-श्री० दे० 'शालपर्णी' । -अंशिका-श्री० काष्ठपुच्छिका, कण्ठपुत्तली; वेश्वा । -अंजी-श्री० कण्ठपुत्तली । -बेष्ट-पु० शालका रस, राह, गोद । -सार-पु० बका पेश; हाँपा; शालका गोद ।

शाल-श्री० शस्य, एक तरहकी बरछी (कविप्रि०) । [फा०] अनी या देशमी चादर; कश्मीरमें बननेवाली दुबके बालों-की चादर । -होत्र-पु० शालपर बेल-बूटे बनानेवाला । -बाक-पु० शाल बुननेवाला । श्री० एक तरहका मुल्ल देशकी कपडा । -बाक्री-श्री० शाल बुननेका काम । वि० शालवाफका ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालक-पु० [सं०] एक राग; विदूषक; पट्टा । शालक-वि० [सं०] शालक-संघर्षी । शालक-पु० [सं०] कोष वृक्ष । शालकी-श्री० [सं०] पुतली ।

शालाचि-पु० [सं०] एक शाक ।

शाला-श्री० [सं०] गृह; खान; मकानका एक हिस्सा; गृहांग; पेशकी बनी, प्रधान डाढ़ । कर्म(श्रु)-पु० गृहनिर्माण । -शुल-पु० घरका द्वार; एक तरहका चाबल । -शुल-पु० शृंगाल, सियार; कुसा । -शुल-पु० कुसा; बिल्ली; बंदर; बिरन; गोदक ।

शालाक-पु० [सं०] पाणिनि ।

शालाकी(किन्)-पु० [सं०] शस्य-चिकित्सक, अक्ष-वैद्य; नाथ; बरछी धारण करनेवाला ।

शालाक्य-पु० [सं०] आयुर्वेदके शस्य-चिकित्सा-संघर्षी एक शाखा जिसमें गर्दनके ऊपरकी इद्रियोकी चिकित्सा-का विवेचन है; एक इद्रियोका शस्य-चिकित्सक । -संज्ञ, -शाक्य-पु० गर्दनके ऊपरकी चिकित्सा-संघर्षी विषा ।

शालाजिर-पु० [सं०] मिट्टीका प्याला, कसोरा ।

शालातुरीच-पु० [सं०] पाणिनि (यि शालातुर नामक ग्राममें उत्पन्न हुए थे, इसी कारण इनका यह नाम पड़ा) ।

शालानी-श्री० [सं०] बिहारी, शालपर्णी ।

शालार-पु० [सं०] हस्तिना; दीवारमें गभी मूर्तियों, सीढ़ी, सोपान; पञ्च-पञ्च, चित्रिका पित्रा ।

शालि-पु० [सं०] चाबल; जड़हन चाबल, जिसका पौधा रोपा जाता है, यह देवता श्रुतमें होता है; गंधमाजरी, मुक्तविलास, जिसकी नामसे एक प्रकारकी कस्तूरी निकलती है । -कण-पु० चाबलका दाना । गोपी-श्री० लेत, विशेषतः धानके लेतकी रखवाली करनेवाली श्री । -शूर्ण-पु० चाबलका आटा । धान-पु० [हिं०] वामपरी चाबल, अगहनरी चाबल । -पर्जिका-श्री० एकांगी नामक एक ओषधि । -पर्णी-श्री० माष-पर्णी । -पिष्ट-पु० चाबलका आटा; स्फटिक, बिल्लौर । -बाहन-पु० शक-सम्बन्धी प्रवर्तक शक जातीय एक प्रसिद्ध राजा । -होत्र-पु० घोडा; अश्वशाल-प्रवर्तक एक राजा, अश्वशालके लेखकका नाम । -होत्री(किन्)-पु० घोडोंका चिकित्सक; घोडा ।

शालिक-पु० [सं०] जुलाहा; कारीगरोंका गोब; एक तरहका कर, टैक्स । वि० अवन-संघर्षी; शाल-संघर्षी ।

शालिका-श्री० [सं०] आरिका; विदारिका कंध; शाल-पर्णी; आधार, व्यान; गृह ।

शालिनी-श्री० [सं०] एक वर्णवृत्त; गृहिणी, गृह-स्वामिनी । वि० श्री० दे० 'शाली (किन्)' ।

शाली-श्री० [सं०] काला जीरा; भेरी ।

शाली(किन्)-वि० [सं०] सुक, सजित (समासमें); शाला-संघर्षी ।

शालीन-वि० [सं०] शाला-संघर्षी; अशुद्ध, विनम्र; लज्जा-शील; सुशील; समान; दुष्ट; धनी । पु० गृहस्वामी ।

शालीनता-श्री० [सं०] विनम्रता; लज्जा ।

शालीना-श्री० [सं०] मित्रेया ।

शालीय-वि० [सं०] शाला-संघर्षी ।

शालु-पु० [सं०] कुमुद आदिकी जड़, मत्स्य; जातीयक; कषाय द्रव्य; चोरक ओषधि; मैदक ।

शालुक-पु० [सं०] कमल आदिकी जड़ ।

शालुक-पु० [सं०] मसीक; जातिफल; मैदक ।

शास्त्र-पुं० [सं०] मंत्रक।

शास्त्र-पुं० [सं०] वह क्षेत्र जिसमें शास्त्रि भान पैदा हो; सौक्य। वि० शास्त्रा तथा शास्त्र बुद्ध-संबंधी।

शास्त्रोत्तरीय-पुं० [सं०] दे० 'शास्त्रोत्तरीय'।

शास्त्रमल-पुं० [सं०] शास्त्रमली, सेमलका पेड़; शास्त्रमली वृक्षका गोंद; पृथ्वीके सात खंडोंमेंसे एक खंड।

शास्त्रमल-पुं०, स्त्री० [सं०] नरकविधोष (पुं०); दे० 'शास्त्रमल'। - पत्रक-पुं० सप्तच्छद वृक्ष। - रत्न-पुं० गरुड।

शास्त्रमलिक-पुं० [सं०] रोषितक वृक्ष; घटिया किमका शास्त्रमलिक वृक्ष।

शास्त्रमलिकी-स्त्री० [सं०] सेमलका पेड़।

शास्त्रमली-स्त्री० [सं०] शास्त्रमल, सेमलका पेड़; पाताळ-की एक नदी; एक नरक। - फलक-पुं० सुश्रुतीक काठकी पट्टी जिसपर रसकर चीर-काटके औषधोंकी धार तेज की जाती थी। - वेष्ट-वेष्टक-पुं० सेमलका निर्यास।

शास्त्रमली(सिन्धु)-पुं० [सं०] गरुड।

शास्त्र-पुं० [सं०] मेरु प्रदेशके राजा; उत्तर भारतका एक प्राचीन प्रदेश।

शास्त्र-पुं० [सं०] शिशु, विशेषतः पशु-पक्षीका शिशु, शाबक, बच्चा; भूरा रंग। वि० शाब-संबंधी; मृत्युके कारण कपण (मज्जोच ४०); भूरे रंगका।

शाबक-पुं० [सं०] पशु-पक्षीका बच्चा।

शाबर-वि, पुं० [सं०] दे० 'शाबर'। - भेदाक्ष-पुं० दे० 'शाबरभेदाक्ष'।

शाबरी-स्त्री० [सं०] केनांव, शूकशिबी।

शाश्वत-वि० [सं०] नित्य, निरंतर; सततस्थायी; मव। पुं० वेदव्यास; शिव; सूर्य; स्वर्ग; नित्यता, नैरंतर्य।

शाश्वतिक-वि० [सं०] दे० 'शाश्वत'।

शाश्वती-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

शाश्वकुल-वि० [सं०] मांसप्रक्षक; मत्स्यभक्षी।

शाश्वकुलिक-पुं० [सं०] सैकी हुई रोटियोंका ढेर।

शासक-पुं० [सं०] राजा, शासन करनेवाला व्यक्ति; शासनकर्ता, शास्त्रा; राज्य-शासनका संचालक, व्यवस्थापक, हाकिम; दंड देनेवाला व्यक्ति; वह हाकिम जिसे दंड देनेका अधिकार हो। - मंडली-स्त्री०, - बर्ग-पुं० राज्यके विभिन्न विभागके संचालकों, हाकिमोंका संघ, समूह।

शासन-पुं० [सं०] किसी सरकार द्वारा किसी व्यक्ति, जाति, नगर, प्रांत, देशके नियंत्रण, संचालन, हुक्मतका कार्य; आज्ञा, हुक्म; राज्यदेश, सरकारी हुक्म; किसीके कार्याधिकार देखरेख, निर्वहन, नियंत्रण; अनुशासन; इंद्रियोंका नियंत्रण; किसीकी बशमें रखना; कामज, ताम्र-पट्ट आदिपर लिखित दान आदि; लिखित शर्त, प्रतिज्ञा, समझौता आदि; राजा द्वारा दी गयी भूमि; स्थिति, शास्त्र; शास्त्र, दंड। - कर्ता(रुं)-पुं० शासक। संज्ञ-पुं० राज्यशासनप्रणाली, रीति, पद्धति। - वृक्ष-वि० राजाशाका उल्लेख करनेवाला। - वर-पुं० दे० 'शासन-वर'। - पत्र-पुं० राज्यदेशपत्र, राजाज्ञापत्र, सरकारी

हुक्मनामा, फरमान; ताम्रपत्रादिपर खुदी भूमि-दानादि-संबंधी राजवाज्ञा। - प्रणाली-स्त्री० शासनकी विधि या पद्धति। - व्यवस्था-स्त्री० शासन-संबंधी प्रबंध, शासन-प्रणाली। - वर, - वारक, - वारी(सिन्धु)-पुं० राजदूत, राजाज्ञावाहक।

शासनोत्तरीय, शासनाधीन-वि० [सं०] जो शासनमें, शासनके भीतर हो; अधिकृत; बलीभूत।

शासनातिवृत्ति-स्त्री० [सं०] राजाज्ञा आदिका उल्लंघन। शासनी-स्त्री० [सं०] भर्त्सोपदेश करनेवाली स्त्री।

शासनीय-वि० [सं०] शासन या नियंत्रणके योग्य; दंडनीय।

शासित-वि० [सं०] जिसका शासन किया गया हो, दंडित।

शासिता(रुं)-वि० [सं०] शासन करनेवाला; दंड देने-वाला।

शासी(सिन्धु)-पुं० [सं०] शासक (यह भौगिक शब्दके उत्तरपदके रूपमें आता है)।

शास्त्रा(रुं)-पुं० [सं०] शासक; राजा; शिक्षक, गुरु, पिता; बुद्ध; जिन; बौद्धों और जैनियोंका देवतुल्य उपदेष्टा।

शास्त्रि-स्त्री० [सं०] शासन; आज्ञा; दंड; शासनका विज्ञ। राजदंड।

शास्त्र-पुं० [सं०] आदेश; धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला आदि-संबंधी ग्रंथ जिनके द्वारा मानव-समाज तथा जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंकी स्थिति और रक्षाओं प्रत्यक्ष या परोक्षरूपसे शिक्षा मिलनी है; ज्ञान; सिद्धांत; ज्ञानकी कोई शाखा। - कार, - कृत्-पुं० शास्त्र-निर्माता; शास्त्रकर्ता कवि। - कोविद्-वि० शास्त्रोंका विशेष-ज्ञान रखनेवाला। - गंध-पुं० साधारण रूपमें पढ़नेवाला। - ज्ञान(रुं)-पुं० व्याकरण जो शास्त्रोंके अध्ययनके लिए नेत्र (परम आवश्यक वस्तु) है। - चर्चा-स्त्री० शास्त्रका अध्ययन, मनन, अनुशीलन, शास्त्रपर विचार-विमर्श। - चारण-पुं० शास्त्रका प्रचारक, शास्त्रज्ञाता, शास्त्रदर्शी। - ज्ञ-वि०, पुं० शास्त्रज्ञाता, शास्त्रका जाननेवाला। - स्वस्व-पुं० शास्त्रोक्त तत्त्व, सत्य; धार्मिक ग्रंथोंमें वर्णित आचार, व्यवहार आदि-संबंधी तार्किक नियम। - ० ज्ञ-वि० शास्त्रतत्त्वका जानकार। - ज्ञान-पुं० शास्त्रकी जानकारी। - वृत्ती(सिन्धु)-वि० जिसने शास्त्र देखा, सुना है, शास्त्रका जानकार, शास्त्रज्ञ। - वृष्टि-वि० जिसकी दृष्टि शास्त्रपर विशेष रहती हो, जो शास्त्रानुसार हो व्यवहार करता हो; शास्त्रवेत्ता। स्त्री० शास्त्रीय दृष्टि, विचार। - प्रवक्ता(रुं), - वक्ता(रुं)-पुं० शास्त्रोपदेशक; आचार, व्यवहार आदिके संबंधमें शास्त्रपर दृष्टि रखते हुए निर्णय देनेवाला, घोषणा करनेवाला व्यक्ति। - प्रसंग-पुं० शास्त्रका विषय; किसी धार्मिक प्रश्न या धार्मिक ग्रंथोंके विषयपर होनेवाला विवाद। - ज्ञप्ति-वि० शास्त्रज्ञ। - ज्ञप्ति-वि० जो शास्त्रसम्मान न हो। - विद्, - विद्-वि० शास्त्रज्ञ। - विद्यावान-पुं०, - विविधि-स्त्री० आचार, व्यवहार-संबंधी शास्त्रोंका आदेश, अनुशासन। - विदुषः-वि० जो शास्त्राध्ययन न करता हो; शास्त्रोंसे जिसे विद

हो। -विस्तृत-वि० जिसका विधान शास्त्रमें न हो, शास्त्राविहित, अशास्त्रीय; अवैध। -विहित-वि० शास्त्रानुमेरित, शास्त्र-सम्मत। -व्युत्पत्ति-की० धर्मग्रंथोंका परिचय, शास्त्रनैपुण्य। -शिखरी(चित्र)-पु० शास्त्रज्ञान द्वारा जीविका चलानेवाला; कर्मचर; कर्मचरनिवासी; भूमि। -संसार, -सम्मत-वि० दे० 'शास्त्र-विहित'। -सिद्ध-वि० शास्त्र द्वारा प्रमाणित; शास्त्रानुसृत।

शास्त्राचरण-पु० [सं०] शास्त्रादेशका पालन; शास्त्रका अभ्ययन, मनन, अनुशीलन।

शास्त्रादित्य-वि० [सं०] शास्त्र न माननेवाला।

शास्त्रानुमोदित-वि० [सं०] दे० 'शास्त्र-विहित'।

शास्त्रानुपरीक्षक-पु० [सं०] शास्त्रका अभ्ययन, मनन।

शास्त्रानुष्ठान-पु० [सं०] शास्त्रके आदेशोंका पालन।

शास्त्रार्थ-पु० [सं०] शास्त्रका अर्थ, तात्पर्य, अभिप्राय; वाद-विवाद (जो शास्त्रके अर्थ, ज्ञानके सहारे होता है)।

शास्त्रिक-वि० [सं०] शास्त्रज्ञ।

शास्त्री(चित्र)-वि० [सं०] शास्त्रका जानकार, शास्त्रज्ञ। पु० वह व्यक्ति जिसने शास्त्रका पढ़ा ज्ञान कर लिया है, शास्त्रका पूर्ण अधिकारी, विद्वान्, पंडित; परीक्षामें उत्तीर्ण होनेपर प्राप्त होनेवाली एक उपाधि।

शास्त्रीय-वि० [सं०] शास्त्र-सम्बंधी; शास्त्र-सम्मत, शास्त्रानुमोदित; वैज्ञानिक।

शास्त्रोक्त-वि० [सं०] शास्त्र द्वारा कथित; शास्त्रविहित, वैध।

शास्त्र-वि० [सं०] शासन-योग्य; शिक्षणीय; दंडनीय।

शाहशाह-पु० शाहोंका शाह, सम्राट्, राजाधिराज।

शाहशाही-की० शाहशाह, राजाधिराजका पद या कार्य।

शाह-पु० [फा०] स्वामी; राजा, बादशाह; मुसलमान पक्षीरोंकी पदवी; ताज और गंजीकेका एक पत्ता; शतरंजका एक मोहरा। (कर्मभारय समाप्तमें बड़ा प्रधान, श्रेष्ठका अर्थ देता है-'शाहकार', 'शाहगम' इ०)। -कार-पु० किसी कलाकारकी मन्त्रमें अच्छी कृति। -कर्ण-वि० शाहोंकी तरह, बहुत अधिक, खर्च करनेवाला।

-गाम-पु० घोड़ेकी एक अच्छी चाल। -ज़ादा-पु० बादशाहका बेटा, राजकुमारी। -ज़ी-पु० मुसलमान फकीरोंकी पदवी। -तरा-पु० पितृपाप। -तीर-पु० दे० 'जबतीर'। -दूत-पु० दे० 'दाहदूत'। -दरा-पु० गाँव या बस्ती जो शाही महल या किलेके नीचे या सामने हो; दिल्लीके पास बमुनाके उस पार बसा हुआ एक कस्बा। -दुरिया-पु० (मुसलमान) जियों द्वारा कथित एक जिन या पिशाच। -हाना-पु० नौका कीज; बड़ा मोती। -दाक-पु० मूष (सरायकी जमशेदका दिया हुआ नाम, अर्ध-जोषध-गम)। -बर्ही-की० बादशाहके बैठनेकी जगह; बहु-मूष आसन; राज्यमहलके शरीरके आगेका वह स्थान जहाँ बैठकर सुगल बादशाह प्रजाकी दर्शन दिया करते हैं; दाखानके अंदर बना हुआ छोटे दरवाजा ऊँचा। -हाना-पु० फरदीसीरहित फारसी भाषाका मूलिक औरसप्रधान महाकाव्य जिसमें ईरानके पुराने

बादशाहोंका वृत्त और उनके युद्धों का वर्णन है; बादशाहोंका इतिहास। -पर-पु० पक्षीके देनेका सबसे बड़ा पर, शहर। -परसंद-पु० एक तरहकी दाढ़; एक बड़ा पक्षी। -बंदूद-पु० देशविशेषका प्रधान बंदरगाह।

-बल्लूत-पु० बल्लूतका एक भेद जो बहुत मोटा होता है। -बाज़-पु० बड़ा बाज जिससे बादशाह चिबियोंका शिकार करते थे। वि० राजसी, राजोचित। -बाज़-पु० दे० 'शहबाज़'। -बैस-की० कसीदे या मजकका मन्त्रमें अच्छा शेर। -मात-की० दे० 'शहमात'।

-सुहरा-पु० सौपका मणि। -हवा-की० गलेसे होकर जानेवाली बड़ी रग। -राह-की० राजमार्ग, चौड़ा और आम रास्ता। -बार-वि० बादशाहोंके लायक; बहुत बढ़िया, बहुमूल्य। -स्वार-पु० दे० 'शहस्वार'।

-साहब-पु० दे० 'शाहजी'। -हैजर्ही-पु० सुगल-बंकाका एक सम्राट्, अकबरका पोता (१५९३-१६६६ ई०) जिसने गजमहल बनवाया था; दुनियाका बादशाह, विश्वसम्राट्। -हैगदा-पु० राजा और रंक, बादशाह और फकीर।

शाहाना-वि० [फा०] बादशाहके लायक, राजसी, राजोचित; बहुत बढ़िया। पु० शाहानी चून्कियोंका जोड़ा।

-खोबा-पु० सूँठेकी पहनाया जानेवाला सुनई जोड़ा; सुनई पीसाक। -मिजाज-पु० राजसी, नालुक मिजाज।

शाहिद-पु० [ज०] शाहमत देनेवाला, नवाह; देखने वाला। वि० सुदर, प्यारा, भावुक।

शाही-पु० [फा०] एक शिकारी चिबिया; [तु०] तराजूकी काँची।

शाही-वि० [फा०] बादशाहका; शाहाना। की० बादशाहत, राज्य। -ज़माना-पु० भारतीय इतिहासका मुसलिम राज्यकाल।

शिगरक-पु० ईशुर।

शिगरकी-वि० ईशुर जैसा लाल।

शिघण-पु० [सं०] नाकका मूक; दाढ़ी।

शिघाण-पु० [सं०] कौंच, शीशेका पात्र; फेन, गाज; लौहमल, जोहेका मुरचा, जग; नासिकामल; कफ, स्लेष्म; दाढ़ी।

शिघाणक-पु० [सं०] नासिकामल; कफ, स्लेष्म।

शिघाणी(चित्र)-पु० [सं०] नाक।

शिघित-वि० [सं०] दंष्ट्रा हुआ।

शिजंजिका-की० [सं०] कटिबंध, कपडकी।

शिज-पु० [सं०] शनकार (गडनौकी)।

शिजज-पु० [सं०] कंगन, कपडकी, सुपूर आदि आभूषणोंकी पहननेवालोंके लङ्घने, फिरने आदिसे उत्पन्न शनकार; धातुसंबंधी तथा इनसे बनी वस्तुओंके शिल्लने, डुलने, धंसित होने आदिसे उत्पन्न ध्वनि, जाबाज; शकार।

शिजा-की० [सं०] शिजज; प्रत्यंचा, धनुषकी डोरी। -कटा-की० धनुषकी डोरी।

शिजित-वि० [सं०] संकुत, शनकुनाता हुआ, ध्वनि करता हुआ; बजता हुआ। पु० शंकार, ध्वनि ('सानेन')।

शिजिनी-की० [सं०] प्रत्यंचा; धनुषकी डोरी; दूधुर।

शिजी(चित्र)-वि० [सं०] अलंकारोंकी ध्वनिसे युक्त; मधुर

जनि करनेवाला ।

शिव-पु० [सं०] चक्रमर्द, चक्रवर्कका चौथा; दे० 'शिव' ।

शिवा-श्री० [सं०] छीमी; सेम ।

शिवि-श्री० [सं०] दे० 'शिव' । -जा-श्री० छीमीमें उत्पन्न होनेवाला दो दलयुक्त अक्ष । -वर्णिका; -वर्णी-श्री० मुद्रवर्णी ।

शिविक-पु० [सं०] कुण्ण मुद्र, काळी मूँग ।

शिविका-श्री० [सं०] छीमी; सेम ।

शिविनी-श्री० [सं०] वयामा पक्षी; सेम ।

शिवी-श्री० [सं०] छीमी; सेम; मुद्रवर्णी; केवर्च, कपि-कच्छु । -धाम्ब-पु० द्विदलाक्ष । -फल-पु० आडुल्ल ।

शिव-पु० [सं०] एक फलवृक्ष ।

शिवापा-श्री० [सं०] शिशु वृक्ष, शीशमका पेड़; अशोक वृक्ष ।

शिशुपा-श्री० दे० 'शिशुपा' ।

शिशुमार-पु० [सं०] दे० 'शिशुमार' ।

शि-पु० [सं०] मगल; सचकि; शांति; शिव ।

शिवार-पु० [अ०] तौर; तरीका; बाल, शील (ममासमें) ।

शिकजबीव-पु० दे० 'स्किजबीन' ।

शिकजा-पु० [फा०] यंत्रणा देनेका यंत्र जिसमें पुराने जमानेमें अपराधियोंके हाँ-पंथि देकर दवा दिये जाते थे; एक यंत्र जिसमें जिल्दलाज किताने दवाकर फन्ने काटते हैं; वही दवानेकी कला; कोण्डू; (का०) यंत्रणा; पकड़, दबाव ।

शु० -(जे)में लौंचना-यंत्रणा देना; कठोर दंड देना ।

शिक-श्री० [अ०] बस्तुका बर्तन; बाल; बैल आदिका एक ओरका बौद्ध; एक ओरका भाग, जामिन; खड; देशका विभाग जो एक तहसीलदारके मातहत हो । -द्वार-पु० तहसीलदार ।

शिकम-श्री० [फा०] सिलवट, सिकुचन । वि० (समासमें) तोबनेवाला (वृत्तशिकन, दिलशिकन) ।

शिकम-पु० [फा०] पेट । -परवर-वि० पेट पालनेवाला, पेट । -सेर-वि० जिसका पेट भरा हुआ हो; तुम । शु०

-सेर होकर खाना-पेट भरकर खाना ।

शिकमी-वि० [फा०] पेटका; पैदाइशी; भीतरी (शिकमी शरीर) । पु० वह काष्ठकार जो असल काष्ठकारसे जमीन लेकर जोते-जोते ।

शिकरम-पु० एक तरहकी योगाग्री ।

शिकरा-पु० [फा०] एक शिकारी पक्षी जो बाजमें कुछ छोटा होता है । शु० -पालना-बोस अपने सिर लेना ।

शिकवा-पु० [फा०] शिकायत ।

शिकव-श्री० [फा०] हार, मात (खाना, देना, पाना);

टूट-फूट (शिकस्तन=टूटना) । -शी-श्री० टूट-फूट ।

-फास-श्री० पक्षी या गहरी हार । -बंघ-पु० एक तरहका छछा जो टूटना और बंद हो जाता है ।

शिकला-वि० [फा०] टूटा हुआ, भग्न; वसीट (शिकलवट) ।

-छातिर; -दिल-वि० शिक, सहायक । -जबीस-वि०, पु० वसीट लिखनेवाला । -पर; -बाजू-वि० अशफ, असहाय । -हाऊ-वि० फटेहाल, गरीब; परीक्षान ।

शिकायत-श्री० [अ०] दोषकथन, गिला, निंदा, बुराई;

दुखड़ा; रोग, पीड़ा (पेटकी शिकायत); दोष माननेका कारण, शिकायतकी वजह । शु०-करना-शिका करना, दुखड़ा रीना, बुराई करना; उल्लाहना देना; पीड़ा बताना । (सिरदर्दी शिकायत करना) ।

शिकायती-वि० शिकायत करनेवाला; जिसमें शिकायत हो (किट्टी) ।

शिकार-पु० [अ०] आलेख; पशु-पक्षियोंको (कीड़ा या आहारके लिए) मारना; मारा हुआ पशु-पक्षी या उसका मांस; लूटका माल; दलाल, बेइया, बाजू आदिके फंदेमें आया हुआ आदमी । -गाइ-पु०, श्री० शिकार खेलनेकी जगह; जंगल, रमना; जंगलमें बना हुआ वह मंच जिसपर बैठकर शेर, बनेले खूबर आदिका शिकार किया जाता है । -बंद-पु० वह तसमा जो घोंघेकी बुनके पास चारजामेके पीछे शिकार या दूसरी जरूरी चीज बाँध लेनेके लिए लगा होता है । -की टहरी-छोटीसी टट्टी जिसपर पास बिछाकर बदेहिये अपने साथ रखते हैं । शु०-करना-आलेख करना; फंदेमें फँसना; मुट्टीमें करना । -खेलना-आलेख करना । (किस्तीका)-होना-फंदेमें फँसना; किसी रोग, दुर्घटना आदिसे मरना या पीकित होना; किमीके रोषादिकी बलि होना ।

शिकारा-पु० कदमारी दंगकी लंबी नाव जिसके बीचमें मायादार बैठनेका स्थान होता है ।

शिकारी-वि०, पु० शिकार करनेवाला व्याप । -कुला-पु० शिकार पकड़नेवाला, शिकारमें सहायक, कुला । -जानवर-पु० वह जानवर जो आहारके लिए दूसरे पशुओंका शिकार करता है ।

शिकाल-पु० [अ०] एक या तीन मफेद टोंगोंवाला बोटा जो ऐसी माना जाता है ।

शिकोह-पु० [फा०] डर, भय, दे० 'मुकोह' ।

शिकु-वि० [सं०] निठला, बेकार, आलसी ।

शिक्य-पु० [म०] मधुमक्खीके छत्तेका मोम, मधुमंभव, मधुशेष ।

शिक्य-पु०, शिक्या-श्री० [सं०] छीका, सिकहर, रम्मीकी जातीमें दीया जानेवाला बौद्ध; रम्मीकी जातीमें रखा सामान; तुलसी कीरी ।

शिकियत-वि० [सं०] सिकहरपर रखा हुआ ।

शिक्षक-पु० [म०] शिक्षा देनेवाला; अध्यापक, गुरु; सीखनेवाला ।

शिक्षण-पु० [सं०] शिक्षा देनेका काम; शिक्षा लेनेका काम, शिक्षाप्राप्ति, ज्ञानप्राप्ति । -कला-श्री० पढ़ानेकी कला ।

शिक्षणीय-वि० [मं०] शिक्षाके योग्य, शिक्षा देने लायक; पढ़ाने योग्य ।

शिक्षमाण-पु० [सं०] विद्यार्थी, छात्र ।

शिक्षा-श्री० [सं०] व्यवस्थित रूपसे किसी शिक्षा संस्थामें या शिक्षक, गुरु आदिमें ज्ञान या विद्याकी प्राप्ति; वारिदिक तथा मानसिक शक्तियोंका विकास; प्रशिक्षण, ट्रेनिंग (जैसे-'व्यायाम-शिक्षा') : उपदेश; सबक, दंड (अर्थ०); विद्या, विज्ञान, कला (जैसे-'संगीत-शिक्षा', 'रंग-शिक्षा') ; वेदके षडंगोंमेंसे एक अथ जिसमें षेडमंगोंके

सञ्चारणकी विवेचना है; सञ्चारण-विज्ञान, 'कोनेटिक्स' (जैसे- 'पाणिनीय शिक्षा') विनम्रता; श्योनाक वृक्ष।
 -**कर-पु०** शिक्षकः व्यास मुनि। वि० शिक्षा देनेवाला।
 -**गुरु-पु०** शिक्षकः ज्ञानदाता गुरु, 'दीक्षागुरु'का विभक्ति।
 -**ईश-पु०** सबके तौरपर दिया हुआ ईश।
 -**श्रीक्षा-श्री०** शिक्षा, उपदेश आदि द्वारा किसीका बौद्धिक, चारित्रिक, मानसिक आदि विकास। -**वर-पु०** ईश। -**पद्धति-श्री०** शिक्षा देनेका ढंग। -**परिषद्-श्री०** वैदिक शिक्षाके अध्ययन-अध्यापनके लिए तत्कालीन शिक्षालय जहाँ उसके अधिकारी किसी विशेष व्यक्ति की शिक्षा-पद्धति चलती थी और जो उसीके नामसे प्रसिद्ध होता था; किसी विद्यापीठ (विश्वविद्यालय)के अध्यापकों तथा अन्य शिक्षा-विशेषज्ञों की वृद्ध परिषद् जो पाठ्यक्रम, शिक्षणनीति आदिका निर्णय करती है। -**प्रणाली-श्री०** दे० 'शिक्षा-पद्धति'। -**प्रद-वि०** शिक्षादायक। -**मन्त्री (त्रिन्)-पु०** शिक्षा-विभागका सर्वोच्च अधिकारी। -**विभाग-पु०** शिक्षाकी व्यवस्था तथा उसके सँभालनेके निमित्त बना विभाग। -**वृत्त-पु०** गार्हस्थ्य धर्मेका एक प्रमुख भग (वृत्त)। -**शक्ति-श्री०** शिक्षा-ग्रहणकी शक्ति, पढ़नेका माहा। -**शास्त्र-पु०** शिक्षावैशेषिका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

शिक्षाक्षेप-पु० [सं०] केशवदास द्वारा वर्णित एक अलंकार।

शिक्षार्थी (पितृ)-पु० [सं०] शिक्षाप्राप्तिके लिए इच्छुक व्यक्ति, विद्यार्थी, छात्र।

शिक्षालय-पु० [सं०] विद्यालय, स्कूल, कालिज।

शिक्षित-वि० [सं०] शिक्षावुक्त; अधीत; मेधावी, निपुण; विनीत; पालन; विद्वान्, विद्वत्; आधुनिक शिक्षादीक्षा-मग्न (ला०)।

शिक्षिताक्षर-पु० [सं०] शिक्षक; छात्र; लेखक, मुद्रारि।

शिक्षितायुध-वि० [सं०] शस्त्रादिके संचालनमें निपुण।

शिक्षाङ्ग, शिक्षाङ्क-पु० [सं०] चोटी, कर्लंगा, गिस्ता; मयूरपुच्छ; काकपक्ष; काकुल।

शिक्षाङ्किक-पु० [सं०] मुर्गा, कुक्कुट।

शिक्षाङ्किका-श्री० [सं०] गिस्ता।

शिक्षाङ्किनी-वि०, श्री० [सं०] शिक्षाङ्किका। श्री० मोरनी; यक्षिका, जूही; गुंजा, गुंघची; राजा दुपदकी कन्या।

शिक्षाङ्गी (त्रिन्)-वि० [सं०] शिक्षावुक्त। पु० मोर; मोरकी पूँछ; मुर्गा; स्वर्णयक्षिका; गुंघची; वाण; विष्णु; शिव; वृद्धस्वति; दुपदका पुत्र जो श्रीरूपमें उत्पन्न हुआ था मगर तपस्या द्वारा एक यक्षसे अपने श्रीरूपको बदलकर पुरुष हो गया था (महाभारत-युद्धमें अर्जुनने इसे भीष्मसे लड़नेके लिए सामने खड़ा कर उनकी आहत कर युद्धसे सदाके लिए सामने खड़ा कर उनकी आहत कर युद्धसे सदाके लिए विरत कर दिया था। यह अंतमें अश्वत्थामा द्वारा मरा गया)।

शिक्षा-श्री० शिक्षा ('नखशिक्षा'में प्रयुक्त)।

शिक्षर-पु० [सं०] पर्वताग्र, पहाड़का सबसे ऊँचा भाग, शिखर, ऊँचा मकानका सबसे ऊँचा हिस्सा, मुड़ेर; मटिरका

सर्वोच्च भाग, कलश, कँगुरा; वृक्षका सबसे ऊपरी हिस्सा, सिरा; तलवारकी नोक; किसी भी वस्तुका सिरा, अग्रभाग, उसकी चोटी, नोक आदि; शिक्षा; पके अनारदानेकी आनाबाजा माणिक्य या एक रत्न; पुलक; शुष्क टण्ण, सूखा तिनका; काष्ठ, काँच, शरीरमें कंधेके नीचेकी खाली जगह; कुंदकली; जूही। -**शिक्षिणी-श्री०** दुर्गा; पार्वती।
शिक्षरण-पु० दहीमें चीनी, केसर आदि मिश्रकर तैयार किया गया पेय वा लेख पदार्थ।

शिक्षरा-श्री० [सं०] मुर्गा।

शिक्षरिणी-श्री० [सं०] नारीरत्न, उत्तम वर्णकी नारी; एक स्वादिष्ट लेख वा पेय पदार्थ, मीखंड; रोमाञ्चकी जो बड़ा-बूझसे चलकर नामित जाती है; मछिका; नवमछिका, नेवाकी; ब्राह्मणविशेष, किशगिरी; मुर्गा; एक वर्णवृत्त। वि० श्री० शिक्षरवाली, शिक्षरयुक्ता।

शिक्षरी (रिन्)-वि० [सं०] शिक्षरयुक्त। पु० पर्वत; पहाड़ी किला; वृक्ष; अपामार्ग, चिचका; बंटाक; कुंदकल; कर्कट-श्री, काककाशिमी; याचनाल, ज्वार; शिक्षरान।

शिक्षाकोहित-पु० [सं०] कुकरमुत्ता।

शिक्षाङ्क-पु० [सं०] काकपक्ष।

शिक्षा-श्री० [सं०] चूषा, चोटी, नुटिया; अधिष्ठाता, आगकी लपट; दीयेकी लौ; प्रकाशकी किरण; मोर, मुर्गा आदिके सिरपरकी कर्लंगा; वृक्ष, पोशाकका सिरा; किसी वस्तुकी नोक वा नुकीला सिरा; पैरके पंजाका अगला हिस्सा; पैरकी जटायुक्त जङ्घ; पैर (विशेषरूपसे जब पकड़ते हुए)की शाखा; स्वाभी, नेना, प्रधान, पुरुषरत्न; कामज्वर; एक वर्णवृत्त; दे० 'शिक्षर'। -**कङ्क-पु०** शलजम्ब; गुंजन।

-**तह-पु०** रांपाथार, दीवट। -**धर-पु०** मयूर; मजु-पोष। वि० नुकीला; चोटीवाला। -**धार-धारक-पु०** मोर। वि० चूषाधारी। -**वास-पु०** चोटी; बड़ी नुटिया। -**पित्त-पु०** हाथ तथा पैरकी उँगलियोंमें सृजन और जलन पैदा करनेवाला एक रोग। -**बंघ-पु०** बालका गुच्छा। -**बंघन-पु०** नुटिया बाँधना। -**मजि-पु०** सिरपर पहननेका रत्न। -**भूक-पु०** गाजर; शलजम्ब; पेसा कद जिसके ऊपर पत्तियोंका समूह हो। -**बह-पु०** पनस वृक्ष, कटहलका पेड़। -**वृक्ष-पु०** दे० 'शिक्षा-तह'। -**वृद्धि-श्री०** प्रति दिन बढ़नेवाला व्याज। -**सूत्र-पु०** नुटिया और जनेक ओ दिनोंके चिह्न हैं।

शिक्षाभरण-पु० [सं०] शिरोभूषण।

शिक्षाङ्ग-पु० [सं०] मयूरशिक्षा, मोरकी कर्लंगा।

शिक्षावती-श्री० [सं०] मुर्गा।

शिक्षावर्त-पु० [सं०] एक यक्ष।

शिक्षावृक्ष-पु० [सं०] मयूर। वि० शिक्षावुक्त।

शिक्षावृक्षा-श्री० [सं०] मयूरशिक्षा वृक्ष।

शिक्षावृक्षी-श्री० [सं०] मयूरी, मोरनी।

शिक्षावात्स (वत्)-वि० [सं०] शिक्षावुक्त; ज्वालवुक्त। पु० दीपक; अधि; चित्रक वृक्ष; केतु प्रभ; पुच्छल तारा।

शिक्षि-पु० [सं०] मयूर; तामस मन्यतरके ईश; कामदैव; अधि।

शिक्षिनी-श्री० [सं०] मोरनी; मुर्गा; जटायुकी पोषा। वि० श्री० शिक्षावाली।

शिवलीङ्ग-पु० [सं०] तितुक वृक्ष, तेंदुका पेड़; आबनुसका पेड़।

शिवली (शिव) -वि० [सं०] शिखायुक्त, शिखावाला; मुनीना; अभिमानी। पु० गौर, मयूर; कुम्भकट; बैल; घोड़ा; अश्वि; दीपक, दीवा; राधा; पर्वत; वृक्ष; विषक वृक्ष; अजगोदा; सतावर; मेथिका, मेथो; केतु प्रहका नाम; आच्छाण; धार्मिक मिश्र, मिश्रापर जीवन-विवाह करने-वाला साधु; तीनकी संख्या (क्योंकि अग्नि तीन प्रकारकी होती है)। - (कि) कंड, -प्रोच-वि० मयूरके कंड जैसा। पु० तुरध, तुमिवा। -कण-पु० आगकी चिन-गारी। -ज्वज-पु० भूम, धुआँ; मयूरध्वज राजा; कापिकेय। -विष्क-पुष्क-पु० मोरकी पूँछ, दम। -प्रिच-पु० बननेर, लघुबंदर। -भू-पु० स्कंद। -मंडक-पु० बरुण वृक्ष। -मोदा-की० मोरकी आनंद देनेवाली वस्तु, अजगोदा। -चूप-पु० शीकारी द्रुम। -बर्दक-पु० कुम्भा, गोल लोकी। बाह्व-पु० कापिकेय। शिखा-की० अधिष्ठाता, आगकी लपट; मोरके शिरकी कलंगी। -श्रव-पु० एक धिरज जिसके शरीरपर चित्ते होते हैं। -सेखर-पु० मोरकी कलंगी।

शिवलीखर-पु० [सं०] स्वामी कापिकेय। -मास-पु० कापिक मास।

शिवाना-पु० [फा०] बीरा; दरार; झरी; नरकुल आदि की लेखनीके बीचोबीच दिवा जानेवाला बीरा। -बार-वि० जिसमें शिमाक, दरार हो। सु०-देना-कलमकी बीरना; नखर लगावा।

शिवार, शिवाक, शिवाक-पु० [फा०] गीदक, मृगाल। शिवगुजरी-की० शिपुता होना, प्रफुल्लता; प्रसन्नता; हराभरा होना।

शिवगुजरी-वि० [फा०] शिवा हुआ, प्रफुल्ल; प्रसन्न; हरा भरा। -वैशाखी-वि० हंसमुख, प्रसन्नविध।

शिवगुजा-पु० [फा०] कली; अनोखी बात; चुटकुला। सु०-शिखाना-कोई अनोखी बात करना; सगका उठाना। -खोबना-सगका-फसाद सगका करनेवाली बात कहना, करना।

शिव-पु० [सं०] साग; सहजजनका पेड़। -ज-पु० सहजन।

शिव-वि० [सं०] तेज किया हुआ, सान परा हुआ; दुबला-पतला, क्षीण, कुश; कमजोर, दुर्बल; * सफेद। पु० विश्वामित्रका एक पुत्र। -बार-वि० तेज धारवाला। -शुक-पु० यव, जौ; गेहूँ।

शिवदु-की० [सं०] शतद्रु, सतज नदी; मोरद।

शिवाम-पु० [सं०] कौदा।

शिवामल-पु० [सं०] सीताफल, झरीका।

शिवाम-म० [फा०] जलद, झटपट। वि० जलबाज, तेज। -कार-वि० जलबाज, उतावला।

शिवानी-की० जल्दी; उतावली, धवराहट।

शिवि-वि० [सं०] सफेद; काला। पु० भूर्ज वृक्ष। -कंड-पु० मोर; दाखल पक्षी; चातक; शिव। -कंडक-वि० श्याम कंडवाला। -कुंभ-पु० काबीर वृक्ष। -केस-

पु० स्कंदका एक अनुचर। -बंदन-पु० कस्तूरी। -बार-पु० शाक-विशेष। -च्छद-पक्ष-पु० हंस। -मास-पु० वर्ष। -रक्ष-पु० मीरम। -वास- (सस्)-पु० बलराम। -सार-सारक-पु० सिद्ध वृक्ष, तेंदुका पेड़।

शिविच्छ-वि० [सं०] डीला; विन बंधा, सुखा हुआ; सुस्त, जल्दी-जल्दी काम न करनेवाला, आलसी; भ्रमसे बका हुआ; (आलसे) गिरा, टूटा हुआ; बिना पूरे श्वाभका, जिसके कुछ छूट हो गयी हो; बिना पूरी पार्यदीके जिसका पाठन हो, पूरी साधनानीसे जिसका पाठन न हो। पु० डीला बंधन; आलस्य, सुस्ती। -प्रयत्न-वि० जिसका प्रयत्न डीला पड़ गया हो -बक-वि० जिसकी ताकत कम पड़ गयी हो। -सस्-वि० जिसका धन क्षीण हो गया हो। -शक्ति-वि० दे० 'शिविकल'। -समाधि-वि० जिसकी समाधि बंध हो गयी हो।

शिविलता-की० [सं०] डीलापन; सुस्ती, आलस्य; आति; छूट देना, पूरा श्वाभ न डालना; निबमका पालन करानेपर पूरा ध्यान न देना; काव्य-रचना, वाक्य-रचना आदिमें दोषके कारण नुस्तीका न होना; तर्क आदि की अपुष्टता।

शिविछाई-की० शिविलता।

शिविछाना-म० कि० डीला पड़ना, मर पड़ना, धकना।

शिविचित-वि० [सं०] जो दक्ष हो गया हो, जो डीला हो गया हो।

शिविलीकरण-पु० [सं०] शिविल करनेकी क्रिया, डीला करनेका काम।

शिविलीकृत-वि० [सं०] शिविल किया हुआ, डीला किया हुआ।

शिविलीभूत-वि० [सं०] दे० 'शिविलित'।

शिवित-की० [अ०] कठिनार्थ; कष्ट, तीव्रता; कठोरता; अधिकता, प्रबलता (शारिकी, जाड़ेकी शिवत)। -का-जोरका, तीव्र (शिवतका मुखार)।

शिवारुत-की० [फा०] दे० 'शिवारुत'।

शिवि-पु० [सं०] बादलोंके पक्षका एक वीर; वरुणके एक पुत्रका नाम। -बाहु-पु० एक नदी। -वास-पु० एक पर्वत।

शिविविष्ट-वि० [सं०] दे० 'शिविविष्ट'।

शिवि-पु० [सं०] प्रकाशकी किरण; जल। की० नमहा, त्वक्, खाल। -विष्ट-वि० किरणाच्छादित, किरणोंसे ढका हुआ; गंजी खोपरीवाला; दुश्मन। पु० कौकी; गंजी खोपरीवाला आदमी; शिव; विष्णु; शिवनामप्रच्छन्न-विहीन पुत्र।

शिव-पु० [सं०] हिमालय पर्वतके एक सरोवरका नाम। शिव-की० [सं०] शिव सरोवरसे निकली एक नदीका नाम जिसके तटपर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है; शिव-क्षान।

शिव-पु० [सं०] दे० 'शिव'।

शिवर-पु० सिपर, डाल।

शिव-की० [सं०] पेशकी रेशेदार जड़; भसीक, कमलकी जड़; जड़; बल्ली; लना; शतपुष्पा; मासिका, जटामासी;

नदी; शिरा; माता, माँ; कोहरी मार, कोहरी चोट करने की क्रिया । -**कंठ**-पु० पथमूल, कमलकी जड़, बसंत ।
-**धर**-पु० शाखा । -**रुह**-पु० बटवृक्ष ।

शिरा-**खी**० [ख०] स्वास्थ, आरोग्य, रोगसे मुक्ति (दिना, पाना) । -**श्राना**-पु० चिकित्सालय, अस्पताल ।

शिराक-पु० [सं०] दे० 'शिराकंद' ।

शिवि-पु० [सं०] 'शिवि' ।

शिविका-**खी**० [सं०] दे० 'शिविका' ।

शिराही-**खी**० [सं०] पंयुवहारिणी ।

शिरःकपाली-पु० [सं०] नरकपालधारी मन्वासी, कापालिक सन्नामी ।

शिरःकुंतन-पु० [सं०] शिरच्छेद ।

शिरःखंड-पु० [सं०] मस्तक, कपालकी हड्डी ।

शिरःपट्ट-पु० [सं०] पगड़ी ।

शिरःपीडा-**खी**० [सं०] शिरदर्द; शिरदर्दका रोग ।

शिरःफल-पु० [सं०] नारियल ।

शिरःशूल-पु० [सं०] दे० 'शिरःपीडा' ।

शिरःस्थ-पु० [सं०] मुखिया; नेता; नाडी ।

शिर-पु० [सं०] शिर; पिप्पलीमूल; शय्या; अजगर ।

-**ज**-पु० बाल, केश । -**प्राण**-पु० दे० 'शिराज्ञा' ।

-**पैच**-पु० [हिं०] दे० 'मिरपैच' । -**कूल**-पु० [हिं०]

मांसमूल नामक आभूषण । **शिर**-पु० [हिं०] मरदार, अप्र व्यक्त ।

शिर(स्)-पु० [सं०] शिर; खोपड़ी; पर्वतकी चोटी,

शिरः; पेशका शिरा, वृक्षाग्र; किसी वस्तुका सर्वोच्च भाग;

मेनाका अगला भाग; नायक, मुखिया, प्रधान; पिप्पली-

मूल; पिपारमूल; जिह्वा, शय्या; अजगर ।

शिरकत-**खी**० [अ०] शामिल, शरीक होना; साक्षा;

योग । -**नामा**-पु० वह द्रव्यावेज जिसमें साक्षी शरीर

लिखी हो ।

शिरकती-वि० साक्षी; समुक्त ।

शिराशिर, शिरसिरुह-पु० [सं०] दे० 'शिरज' ।

शिरःखंड-पु० [सं०] शिव ।

शिरःखंड, शिरःखंडन-पु० [सं०] शिर काटना ।

शिरस्क-पु० [सं०] पगड़ी; शिराज्ञा ।

शिरस्का-**खी**० [सं०] पाकड़ी ।

शिरात्पापी (पितृ)-पु० हाथी ।

शिरः, शिराज्ञा-पु० [सं०] कोहरी टोप, जो मुखके

अगमरोपर अक्ष-शक्तिसे शिरके रक्षाएँ पहना जाता है ।

शिरस्थ-पु० [सं०] दे० 'शिरःस्थ' ।

शिरस्थ-वि० [सं०] शिरका, शिरपर स्थित । पु० स्वच्छ

केश ।

शिरहन-पु० शिरहाना; तकिया ।

शिरा-**खी**० [सं०] खूनकी नाडी; रक्तनद्या नाडी । -**ग्रह**

-पु० गलेकी रक्त-नाडियोंको काटा कर देनेवाला एक

प्रकारका वातरोग । -**आल**-पु० खूनकी नसोंका समूह;

आँखका एक रोग । -**वज्र**-पु० शिलाक वृक्ष; पिप्पल

वृक्ष; कपिल वृक्ष । -**पीडिका**-**खी**० एक नेत्ररोग जिसमें

पुतलीके पास फुँसी निकल आती है; बहुभूजके रोगियोंकी

निकलनेवाली वातक फुँसी, प्रमेह-पीडिका । -**प्रहर्ष**-पु०

आँखका एक रोग । -**मूल**-पु० नामि । -**वृक्ष**-पु०

धीसा । -**हर्ष**-पु० शिरा, नाडीका क्षनक्षाना; एक

नेत्र-रोग ।

शिराकत-**खी**० दे० 'शिरकत' । -**नामा**-पु० दे० 'शिर-

कतनामा' ।

शिराकती-वि० साक्षीका, समुक्त । -**कारवार**-पु० साक्षी-

का कारवार ।

शिराल-वि० [सं०] शिरा-संबंधी; शिरायुक्त, शिराबहुल ।

पु० कमरख, कमरंग ।

शिरालक-पु० [सं०] अस्त्रिभग वृक्ष ।

शिरि-पु० [सं०] तलवार; बाण; हिंसक, जानसे मार

हालनेवाला व्यक्ति; सक्रम, कर्त्तव्य, हिंसा ।

शिरिष; शिरिषक-पु० [सं०] अति कोमल फूलोंवाला एक

वृक्ष, सिरिस ।

शिरोगद्-पु० [सं०] शिरका रोग ।

शिरोगृह; शिरोगेह-पु० [सं०] समस्त ऊपरका घर, चंद्र-

नाला । -**गीरव**-पु० शिरका भागीपन ।

शिरोग्रह-पु० [सं०] शिरदर्द ।

शिरोज-पु० [सं०] बाल ।

शिरोदाम(न)-पु० [सं०] पगड़ी, सुरेठा, साफा ।

शिरोगुह-पु० [सं०] शिरदर्द ।

शिरोचरा-**खी**० [सं०] धोना ।

शिरोचाम(न)-पु० [सं०] शिरहाना ।

शिरोचार्य-वि० [सं०] शिरपर धारण करने योग्य, साठर

स्वीकार करने योग्य, अतिशय मान्य ।

शिरोधि-**खी**० [सं०] गारदन जिसके आधारपर शिर

टिका है ।

शिरोपाव-पु० दे० 'शिरोपाव' ।

शिरोग्रहण-पु० [सं०] शिरपर पहननेका आभूषण (जैसे-

कर्णौ, टीका, सोतफूल आदि); श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोग्रहण-पु० [सं०] शिरमें लेल मालिश करना ।

शिरोगमि-पु० [सं०] मस्तकपर धारण करनेका रत्न,

शिरोरत्न, चूड़ामणि; श्रेष्ठ पुरुष । वि० सर्वश्रेष्ठ ।

शिरोगर्मा(मन्)-पु० [सं०] शुक, सभर ।

शिरोगाली(लिन्)-पु० [सं०] मुंडनालधारी शिव ।

शिरोरत्न-पु० [सं०] दे० 'शिरोगमि' ।

शिरोगजा-**खी**० [सं०] सप्तपण वृक्ष; शिरदर्द, मस्तकपीडा ।

शिरोग्रह-पु० [सं०] शिरके बाल ।

शिरोगी-पु० [सं०] शिरदर्द, मस्तकपीडा ।

शिरोगर्ती(सिन्)-वि० [सं०] प्रधान, मुखिया, नायकके

रूपमें रहनेवाला । पु० प्रधान, मुखिया, नायक; किसी

संस्था, विभाग, सेना आदिका प्रधान ।

शिरोगल्ली-**खी**० [सं०] मयूरशिरा; मयूरके शिरकी

कर्णौ ।

शिरोगली-**खी**० [सं०] शिरदर्दका एक प्रकारका तैलो-

पचार ।

शिरोगृह-पु० [सं०] मरिच । -**क**-पु० रक्त अपा-

मार्ग, काल चिन्मय ।

शिरोगेह, शिरोगेहन-पु० [सं०] शिरोगदाम, पगड़ी,

सुरेठा ।

शिरोहर्ष-पुं० [सं०] एक नेत्र-रोग ।

शिरोहारी(रिन्)-पुं० [सं०] मुंढमालहारी शिव ।

शिर्य-पुं० [अ०] सुत्रके साथ किसी औरकी शरीक जानना, श्वद्वारे द्वैतभावना रखना ।

शिल्प-पुं० [सं०] कवि; जुलाहा ।

शिल्प-को० शिल्पा; दे० 'शिल्प' । पुं० [सं०] उद्य, शिल्पा, शिल्पहारी, खेत कट जानेके पश्चात् उसमेंसे शेष अन्न या अवशेषी चीजनेकी किया; जीवनोपायविशेष । -रत्ति-वि० उद्य वृत्तिसे संतुष्ट । -वृत्ति-वि० उद्यमें निर्वाह करनेवाला ।

शिल्पक, शिल्पक-को० नकद, रोकड़ ।

शिल्पगर्भज-पुं० [सं०] पाषाणभेदन ।

शिल्पाजनी-को० [सं०] कालाजनी नामक पेड़; काली कपास ।

शिल्पांत-पुं० [सं०] अदमंत वृक्ष ।

शिल्पा-को० [सं०] पत्थर; पत्थरकी पट्टिया, पट्टी, गोंट; चट्टान; चक्षुषा नीचेका पादा; द्वारके नीचेका काठ; वस्त्रका सिरा, शिरोभाग; मर्मशिला, मेजस्तिक; कपूर; शिलाजीत; गेरू; उद्य वृत्ति; शिरा । -कर्म-को० सलईका पेड़ । -कुह-कुहक-पुं० पत्थर काटने, तोड़नेकी छेनी । -कुसुम-पुं० एक गंधद्रव्य, शैलेय । -क्षार-पुं० चूना । -चन-वि० पत्थर जैसा कठिन । -चक-पुं० पत्थरपर बना हुआ चक्र । -चय-पुं० पर्वत । -ज-पुं० शिलाजीत; कोषा; पेद्रोक । -जल-पुं० शिलाजीत; गेरू । -जिह्व-पुं० श्लेष्मके तापसे तपी शिलाजोसे निकला काला रस जो वैषकके अनुसार पुष्टिकारक माना गया है (इसका सेवन प्रायः जाँबेके दिनोंमें किया जाता है) । -जीत-पुं० [हिं०] दे० 'शिलाजित्' ।

-लक-पुं० पत्थरका ऊपरी भाग, शिला, पाषाण-पृष्ठ । -लु-पुं० शैलेय गंधद्रव्य । -दान-पुं० पुराणोक्त एक दान जिसमें ब्राह्मणकी शालग्रामकी बटिया दी जाती है । -धातु-को० खनिजा; पीले रंगका गेरू । -विर्चास-पुं० दे० 'शिलाजित्' । -व्यास-पुं० (अवनादिकी नीपका पत्थर रखना । -पट्ट-पट्टक-पुं० कोई चीज पीसनेके लिए शिलाखंड, पत्थर; बैठनेके लिए शिलाखंड, पत्थरकी चौकी; पत्थरका टुकड़ा, चट्टान । -पुत्र-पुत्रक-पुं० किसी वस्तुकी पीसनेवाला थोड़ा लंबा और मोटा पत्थर, लोहा । -पुष्प-प्रसुल-पुं० दे० 'शिलाकुसुम' ।

-पेश-पुं० चक्की । -प्रतिकृति-को० प्रस्तरमूर्ति । -प्रमोक्ष-पुं० युद्धमें पत्थर फेंकने या लुढ़कानेकी किया । -कलक-पुं० शिलापट्टक, पत्थरकी पट्टिया । -बंघ-पुं० पत्थरका बना परकोटा, फिलेकी चहारदीवारी । -अव-पुं० शिलाजीत; शैलेय । -अष्ट-पुं० पत्थरकी काटने, तोड़नेका औजार, छेनी, टॉकी; पाषाणभेदी पीसा । -अल-पुं० शिलाजीत । -रस-पुं० शैलेय नामक गंधद्रव्य । -रोपण-पुं० दे० 'शिलान्यास' । -किपि-को० लेख-पुं० सम्राट्, धर्माचार्य आदि विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किसी वस्तुके प्रसार, प्रमाण, स्थापित आदिके लिए पत्थरपर खोदवाया अनुशासन, आदेश, दान आदि । -वक्कल-पुं०, -वक्कला, -वक्का-को० औप-

विशेष । -वृद्धि-को० पत्थरसहित वृद्धि; उपलब्धि । -वेष्म(वृ)-पुं० गुफा; पत्थरका बना निवास । -व्याधि-को० शिलाजल, शिलाजीत । -सार-पुं० लोहा । -श्वेद-पुं० शिलाजीत । -हरि-पुं० शालग्रामकी बटिया, मूर्ति ।

शिलाटक-पुं० [सं०] अदारी; छिद्र; विल; चहारदीवारी, घेरा ।

शिलावज-पुं० [सं०] लोहा ।

शिलास्मिका-को० [सं०] किसी वस्तु, विशेषतः धातुकी गलानेका पात्र, गलानेकी चरिया ।

शिलाव-पुं० [सं०] शिलाका भाव या धर्म, पत्थरपण ।

शिलावृत्त-पुं० [सं०] सम्राट् हर्षवर्धन ।

शिलावु-पुं० [सं०] गलेकी एक व्याधि (?) ।

शिलारंभा-को० [सं०] काष्ठकटकी ।

शिलाही(किन्)-पुं० [सं०] एक प्राचीन नाट्यशास्त्री ।

शिलासन-पुं० [सं०] पत्थरका आसन, पत्थरकी बना चौकी आदि; शैलेय गंधद्रव्य ।

शिलाहारी(रिन्)-वि०, पुं० [सं०] उद्य वृत्तिवाला, शिल्पाके सहारे जीवनयापन करनेवाला ।

शिलाह, शिलाह्व-पुं० [सं०] शिलाजल ।

शिलिंग-पुं० [अ०] इंग्लैण्डमें प्रचलित चाँदीका एक सिक्का जिसका मूल्य लगभग बारह आने होता है ।

शिल्पि-पुं० [सं०] एक प्रकारकी मछली ।

शिलि-पुं० [सं०] भूर्जपत्र वृक्ष । स्त्री० दरवाजेमें नीचेका काठ, देहली ।

शिलीघ्र-पुं० [मं०] कटकी-कुसुम, केलेका फूल; करका, ओका, पत्थर; एक प्रकारकी मछली, शिलिड मछली, कुकुरमुत्ता ।

शिलीघ्रक-पुं० [सं०] गोमयच्छत्रिका, गोबरछत्ता, कुकुरमुत्ता ।

शिलीघ्री-को० [सं०] वृत्तिका, मिट्टी, केंचुआ; एक नरहकी विधिया ।

शिली-को० [सं०] दरवाजेमें चौखटकी नीचेकी लकड़ी, देहरी; मर्मशरीर; भाला; बाण; मंडकी; केंचुआ । -मुख-पुं० अमरा; युद्ध; बाण; मुख ।

शिलीप-पुं० [मं०] स्लीप, पादस्पर्श, नीलपर्व रोग ।

शिल्प-पुं० [सं०] एक प्राचीन नाट्यशास्त्री; वेल्का पेड़ ।

शिलेय-वि० [सं०] शिलासंबंधी; पक्कीला । पुं० शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजीत ।

शिलीछ-पुं० [सं०] सिक तथा उछट्टि ।

शिलोछी(छिल)-वि० [मं०] उद्य वृत्तिसे निर्वाह करनेवाला ।

शिलोच-पुं० [सं०] पहाड़, पर्वत; बड़ी चट्टान ।

शिलोच-पुं० [सं०] शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजीत ।

शिलोज-पुं० [सं०] शैलेय गंधद्रव्य; एक प्रकारका चंदन, पीला चंदन; सोना ।

शिलोजेव-पुं० [सं०] पाषाणभेदन ।

शिलोका(कस्)-पुं० [सं०] गड्ढा ।

शिल्प-पुं० [सं०] कला आदि कर्म (शास्त्रासनमें चौखट कलाई मिलायी है), दुनर, कारीगरी; लुबा; दक्षता; हस्त-

कर्म; रूप, आकृति; निर्माण, सृष्टि; धार्मिक कृत्य, अनुष्ठान । -**कर**-पु० दे० 'शिवपकर' । -**कला**-**खी**-दस्तकारीका कौशल, हुनरकी दक्षता । -**कार**, -**कारक**, -**कारी**(**रिप**)-पु० शिल्पी, कारीगर । -**कौशल**-पु० शिल्पकला, शिल्पचातुर्य । -**गृह**, -**गोह**-पु० कारीगरोंके काम करनेका स्थान, कारखाना । -**जीवी**(**विप**)-पु० कारीगरोंका काम करके जीवन-यापन करनेवाला व्यक्ति, शिल्पी । -**प्रजापति**-पु० विश्वकर्मा जो सभी शिल्पोंके अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं । -**बन्ध**-पु० शिल्पके काममें जानेवाले औजार, कल, मशीन । -**लिपि**-**खी**-पत्थर आदिपर अक्षर खोदना । -**विद्या**-**खी**-बस्तु-निर्माण-पद्धतिका ज्ञान, चीजोंको बनानेके ङगकी जानकारी । -**विद्यालय**-पु० शिल्प-शिक्षाके लिए स्थान, शिल्प-शिक्षाका स्कूल । -**शाळा**-**खी**-शिल्प-विद्यालय; शिल्प-संबंधी काम करनेका स्थान या घर, शिल्पगृह, कारखाना । -**शाख**-पु० वह शाख, विधा, ग्रंथ जिसमें शिल्प-संबंधी निर्माणका ज्ञान, विवेचन हो, शिल्प-विद्या, शिल्प-विज्ञान ।

शिल्पक-पु० [सं०] एक प्रकारका नाटक जिसमें इन्द्रजाल तथा अर्धरात्म-संबंधी बातोंका वर्णन रहता है ।

शिल्पाजीवी(**विप**)-पु० [सं०] दे० 'शिल्पजीवी' ।

शिल्पाख-पु० [सं०] शिल्पगृह ।

शिल्पिक-पु० [सं०] शिल्पी; दस्तकारी; बंधकी कला; शिल्पक नामक नाटक । वि० हाथ-संबंधी; वंश संबंधी ।

शिल्पी(**शिल्प**)-पु० [सं०] शिल्पकार, कारीगर । वि० शिल्प-संबंधी; कलाकुशल; शिल्पकर्ता । -(**विप**)**शाखा**-**खी**-शिल्पशाखा ।

शिवकर-वि० [सं०] दे० 'शिवकर' । पु० एक बालग्रह ।

शिवलिका-**खी**-[सं०] गुलदावरी ।

शिव-पु० [मं०] महादेव, महेश, हिंदुओंके तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति)मेंसे एक जिनका कार्य सृष्टिसंहार है (इसी कार्यके कारण हमें 'रुद्र' भी कहा जाता है; शिवकी प्रतिष्ठा 'रुद्र'के रूपमें वेदोंमें भी मिलती है); मंगल, कल्याण; सुख; वेद; लिंग; अर्द्ध ब्रह्म; मोक्ष; जल; सैषा नमक; फिटकरी; सुहागा; समुद्रजलमें बना नमक; बाह्य; पारद, पारा; गुग्गुलु, गुग्गुलु; काळा धूरा; पुंडरीक वृक्ष; नील ग्रह, भगलकारी ग्रह; विष्णुआदि सत्ताईस योगोंमेंसे योगोंमेंसे पञ्च बाँधनेका ब्रूटा; स्वार; नीलकंठ पक्षी; एक छद्म । वि० भगलकारी, शुभावह; सुखी । -**कर**-वि० भगलकारी; सुखकर । पु० एक जिन । -**कर्णी**-**खी**-रुद्रकी एक मारुका । -**कांची**-**खी**-दक्षिण भारतस्थित जैनोका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान (कांची सप्तपुरीमेंसे एक पुरी है, शिव तथा विष्णुकाजी जिसके दो खड हैं) । -**कांता**-**खी**-पार्वती, दुर्गा । -**कारिणी**-**खी**-दुर्गा । -**कारी**(**विप**)-वि० दे० 'शिवकर' । -**कीर्तन**-पु० शिवकी स्तुति; शिवका स्तुतिकर्ता, शैव; विष्णु; शिवका स्तुतिकर्ता शृंगी । -**केसर**-पु० एक गुल्म । -**गति**-पु० जैनोके एक अर्हत् । वि० सुखी; सपुद्ग । -**गिरि**-पु० नीलास पर्वत । -**धर्मज**-पु० मंगल ग्रह । -**चतुर्दशी**-**खी**-शिवरात्रिका व्रत जो कात्यायनकृष्ण चतुर्दशीकी पकटा

है । -**जा**-**खी**-शिवलिंगी कला । -**ज**-वि० शुभका ज्ञान रखनेवाला; शिवकी पूजा करनेवाला । -**ज्ञा**-**खी**-शिवोपासिका; शुभ शकुन जाननेवाली नारी । -**ज्ञाव**-पु० शुभाशुभका बोधक शास्त्र । -**ज्ञाति**-**खी**-कल्याण, शुभ । वि० जिसका अंत कल्याणमय हो । -**तीर्थ**-पु० शिवका प्रमुख तीर्थ काशीपुरी । -**तेज**(**स्**)-पु० पारद, पारा । -**दृष्ट**-पु० शिव द्वारा विष्णुको दिवा गया सुरार्जनचक्र । -**द्वार**-पु० देवदार वृक्ष । -**दिक्**(**स्**)-**विद्या**-**खी**-ईशान नामक कोण । (उपदिष्टा) जिसके देवता शिव हैं । -**दुस्तिका**-**खी**-मारुका-विशेष । -**दुती**-**खी**-दुर्गा; योगिनी-विशेष । -**दैव**-पु० आद्री नक्षत्र जिसके अधिष्ठातृदेव शिव हैं । -**दुम**-पु० देवका पेड़ । -**द्विष्ट**-**खी**-केतकी (केतकी को 'शिवद्विष्ट' इसलिए कहा गया कि इसे शिवपर वदना निषिद्ध है) । -**धाम**-**खी**-पारा; मोर्यस्थ मणि । -**धामि**-पु० शिवलिंगविशेष, जो मन्त्री शिवलिंगोंमें विशिष्ट माना जाता है । -**नारायणी**(**गिन्**)-पु० हिंदू धर्मगत एक संप्रदाय । -**निर्माच**-पु० शिवापित बस्तु, शिवपूजनका मामग्री, शिवभोग आदि; अग्राध बस्तु । -**पुत्र**-पु० जैनोके मतानुसार उनका स्वर्गस्थल; काशीपुरी । -**पुराण**-पु० दैवपुराण जिसमें शिवमाहात्म्यका वर्णन है (अपने मनके प्रचारके लिए यह शिवरचित कहा जाता है) । -**पुरी**-**खी**-काशीपुरी, बारानसी, बनारस । -**पुव्य**-पु० मदार । -**प्रिच**-वि० जो शिवको प्रिय हो । पु० रुद्राक्ष; रफटिक; धूरा; क्लिपत्र; बक वृक्ष । -**प्रिया**-**खी**-दुर्गा । -**प्रीति**-**खी**-विभववृक्ष । -**बीज**-पु० पारा । -**भक्त**-पु० शैव । -**भक्ति**-**खी**-शिवकी पूजा, अर्चना । -**भगवत**-पु० शैव । -**भल्लक**-पु० अर्जुन वृक्ष । -**मल्लिका**-**खी**-बन्क वृक्ष । -**मल्ली**-**खी**-बक वृक्ष । -**मौलिसुता**-**खी**-गंगा । -**रस**-पु० उबले चावलका पानी । -**रानि**-**खी**-दे० 'शिवचतुर्दशी' । -**रानी**-[वि०] **खी**-पार्वती । -**रिगा**-पु० मिट्टी, पत्थरकी शिवकी लिंगमूर्ति, पिंडी । -**रिगि**(**गिन्**)-पु० शिवलिंगकी पूजा करनेवाला । -**खोक**-पु० वह लोक जहाँ शिव निवास करते हैं, कैलास । -**बल्लभ**-पु० आभ वृक्ष । -**बल्लभा**-**खी**-गतपत्री, मेवती; सफेद गुलाब; दुर्गा, पार्वती । -**बल्लिका**-**बल्ली**-**खी**-लिंगिनी । -**बाह्य**-पु० नंदी बैल । -**बीर्य**-पु० पारा । -**बृषभ**-पु० नंदी बैल । -**भोस्वर**-पु० बक वृक्ष; धूरा; शिव-मस्तक; शिवका त्रिशूल, चक्रम । -**सावुज**-पु० दे० 'शिवता'; मोक्ष । -**सुंदरी**-**खी**-दुर्गा ।

शिवक-पु० [सं०] कील; गाय आदि पशुओंके शरीरको सुखलनेके लिए गड़ा ब्रूटा; शिवमूर्ति ।

शिवता-**खी**, **शिवव**-पु० [सं०] शिवपद, शिवसाधुव्यय; अमरता; मोक्ष ।

शिवांक-पु० [सं०] बक वृक्ष; अमरत्व वृक्ष ।

शिवा-**खी**-[सं०] शिवकी पत्नी, पार्वती, दुर्गा; स्यारिन, श्यामी; मुक्ति; कल्याणी नारी, मान्यशालिनी स्त्री; बुद्धिशक्तिविशेष; हर, हरतीकी आमलकी, औबला;

हरिद्रा, हस्ती; शमी वृक्ष; श्यामा लता; दूर्वा, नील दूर्वा; गोरोचन । -**वृत्त**-पु० औषधके काममें लानेके लिए बना हुआ एक प्रकारका पेय । -**प्रिय**-पु० बकरा, लसी जिसके बलिदानसे दुर्गा संतुष्ट तथा प्रसन्न होती है । -**कला**-**जी०** शमी वृक्ष । -**बलि**-**जी०** दुर्गाको दी जाने जानेवाली बलि (तंत्रशास्त्रानुसार दुर्गाको दी जानेवाली मांसादिकी बलि) । -**वृत्त**-पु० शृगाल-ध्वनि, गीदककी आवाज (इसकी गीली द्वारा यात्रा आदिका शकुन विचारा जाता है) । -**विद्या**-**जी०** गीदककी गीलीसे शकुनका विचार करनेकी विद्या । -**स्मृति**-**जी०** जवंतीका पेड़ ।

शिवाङ्ग-पु० [सं०] रक्षाक्ष ।

शिवाजी-पु० एक प्रसिद्ध महाराष्ट्र विजेता (यि महाराष्ट्र राज्यके संस्थापक तथा मुगल साम्राज्यके परम शत्रु थे) अपने प्रताप और युद्ध-कौशलके बलपर ये सामान्य सैनिकसे राजा हो गये। गौ और ब्राह्मण-सेवाको वे अपना परम ध्येय मानते थे । राज्यस्थापनाके बाद उन्होंने क्षत्रपतिकी उपाधि ग्रहण की । इनके पिताका नाम शाहजी भोंसला था और गुरुका नाम समर्थ गुरु रामदास । इनका जन्म सन् १६२७ में हुआ और मृत्यु सन् १६८० में) ।

शिवात्मक-पु० [सं०] सैषा नमक ।

शिवादेशक-पु० [सं०] भविष्यद्वक्ता ।

शिवाजी-**जी०** [सं०] शिवकी पत्नी, पार्वती, दुर्गा; जवंतीका पेड़ ।

शिवापीड-पु० [सं०] वक वृक्ष ।

शिवायस्य-पु० [सं०] शिवालय ।

शिवाराति-पु० [सं०] कुशा (शिवा-शृगाली); कामदेव ।

शिवालय-पु० [सं०] वह मंदिर जिसमें शिवमूर्ति, शिव-लिंग स्थापित हो; रक्त तुलसी, लाल तुलसी; दमस्तान ।

शिवाका-पु० शिवालय ।

शिवाङ्ग-पु० [सं०] श्वार, शृगाल ।

शिवाङ्गव-पु० [सं०] एक वृक्ष ।

शिवाङ्ग-पु० [सं०] पारा; वटवृक्ष; आक ।

शिवाङ्ग-**जी०** [सं०] रजजटा ।

शिवि-पु० [सं०] एक प्रसिद्ध भर्मात्मा राजा (यि उशीनगरके पुत्र थे; पुराणोंमें ये जीव-दया और दान-शीलताके लिए प्रसिद्ध हैं; बालरूप ईश्वर द्वारा कपोतरूप अम्बिका उसके मांसलक्षणां पीछा कराकर देवताओंने इनकी दानशीलताकी परीक्षा की थी जिसमें ये अपने सारे शरीरका मांस बाणकी देनेके लिए उद्यत होकर खरे उतरे थे); हिरण्य पशु, शिकारी जानवर; भूज वृक्ष ।

शिविका-**जी०** [सं०] डोली, पालकी; अरधी; चतुरा; कुंवरका एक अङ्ग ।

शिविपिष्ट-पु० [सं०] शंकर, महादेव ।

शिविर-पु० [सं०] सेनाके लिए विश्रामस्थल, सेना-निवेश; तंबू, लेमा; दुर्ग, किला । *

शिवीरथ-पु० [सं०] शिविका ।

शिवेसर-वि० [सं०] अमंगल, अशुभ ।

शिवेश-पु० [सं०] श्वार ।

शिवेष्ट-पु० [सं०] वक वृक्ष; वेल् ।

शिवैष्ट-**जी०** [सं०] दूर्वा ।

शिवापविषद-**जी०** [सं०] एक उपनिषद् ।

शिशिर-पु० [सं०] छ मनुष्योंमेंसे एक मनुष्य जो माघ और फाल्गुनमें पक्षी है; ओस, हिम; शीत, शीतकाण्ड; एक अक्ष; द्वादश दीपका एक वर्ष । वि० शीतल । -**कर**, -**किरण**-पु०, -**दीपति**-पु० चंद्रमा । -**काल**, -**समय**-पु० जात्रेकी मनुष्य, शिशिर मनुष्य । -**ध्व**-पु० अग्नि । -**मधुसूत**, -**रश्मि**-पु० चंद्रमा ।

शिशिरता-**जी०** [सं०] शिशिरका भाव, शीतका भाव ।

शिशिरांत-पु० [सं०] शिशिर मनुष्य समाप्त होनेपर आनेवाली मनुष्य, वसंत मनुष्य ।

शिशिराङ्ग-पु० [सं०] चंद्रमा ।

शिशिराक्षी-पु० [सं०] एक पर्वत ।

शिशिरालय-पु० [सं०] वसंत ।

शिशिरित-वि० [सं०] ठंडा किया हुआ ।

शिशु-पु० [सं०] नवजातसे लेकर लगभग आठ वर्षतककी उम्रका बालक; बालक; बच्चा; जानवरों, पक्षियों आदिका बच्चा, श्यामक; छात्र; स्कंद । **कृष्ण**-पु० शिशुचंद्रायण-व्रत जिसमें चार पिंड (घ्रास) प्राप्त और चार पिंड सायंकाल खाकर व्रत रखा जाता है (इने स्वयं चंद्रायण भी कहते हैं) । -**गंधा**-**जी०** एक प्रकारकी मल्लिका । -**गृह**-पु० दे० 'शिशुशाळा' । -**चंद्रायण**-पु० दे० 'शिशु कृष्ण' । -**नाग**-पु० बाघीका बच्चा; संपका बच्चा; एक प्रकारका राक्षस; मगधका एक प्राचीन राजा । -**नामा**(**मन्**)-पु० ऊँट । -**पाल**-पु० चेदि(वर्तमान बुद्धलखर)का एक प्रसिद्ध राजा (इनके पिताका नाम दमवीर था; इने कृष्णने मारा था) । -**निबूद्व**-पु० कृष्ण । -**बध**-पु० महाकवि माधवचित्त धर्म महाकाव्य जिसमें कृष्ण द्वारा शिशुपालके मारे जानेकी कथा वर्णित है । -**हा**(**हन्**)-पु० कृष्ण जिन्होंने शिशुपालको मारा था । -**पालक**-पु० शिशुपाल; कलिकदम्ब, नीमका पेड़ । वि० बच्चोंकी पालनेवाला । -**प्रिय**-पु० कुमुद; शीत, चोटा । -**मार**-पु० सैम नामका जलजीव; सूँसकी आकृतिका लारा-मंडल-विशेष । -**चक्र**-पु० सौर मंडल । -**बाहक**, -**बाहक**-पु० बनेला, बंगली बकरा । -**शाला**-**जी०** वह कमरा, भवन या स्थान जहाँ प्राणियोंकी देखरेखमें, छोटे बच्चे रहते हैं ।

शिशु-पु० [सं०] सैम नामका जलजीव; सूँसकी आकृतिकी एक मछली; धिंव, जलमर्ष जो बिजलीन होता है; एक पेड़ ।

शिशुता-**जी०** [सं०] लक्षकपन, बचपन ।

शिशुताई-**जी०** दे० 'शिशुता' ।

शिशुत्व-पु० [सं०] दे० 'शिशुता' ।

शिशुपथ-पु० बचपन, लक्षकपन ।

शिशुल-पु० [सं०] दे० 'शिशु' ।

शिव-पु० [सं०] पुरुषकी जननेंद्रिय, पुरुषका उपस्थ । -**देव**-पु० कामुक व्यक्तित्व ।

शिवनोदर-वि० [सं०] दे० 'शिवनोदरपरायण' ।

शिवनोदरपरायण-वि० [सं०] कामुक और उदरभरि, लपट और पैट ।

शिवनोदरवाद्य-पु० [सं०] वह वाद, मत जिसका संबंध

अनन्यद्विज और उदरसे हो; फायरका काम-सिद्धांत तथा माक्सका समाजवाद (व्यं०) ।

शिष्य—पुं० शिष्य । स्त्री० सीख, शिक्षा, नेक सलाह; चोटी, चुटिया ।

शिष्यरी—पुं० चिचका । वि० शिखरसंपन्न, शिखरवाला ।

शिष्या—स्त्री० शिक्षा ।

शिषि—शिष्य ।

शिषी—मोर ।

शिष्ट—वि० [मं०] सभ्य; शिक्षा-दीक्षा द्वारा संस्कृत, सम्यग् समाजमें रहने योग्य; आधुनिक लोकाचार, व्यवहार आदि-में पढ़, सुशील; शांत; बुद्धिमान्; धीर; विनीत; नीति-मान्; प्रभाव; उच्च कौटिका, श्रेष्ठ; बर्गोभूत, आस्थाधीन; अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ; आविष्ट । पुं० मंत्रदाता, सलाहकार, किसी समाजके सदस्य, सभ्य, पार्षद; श्रेष्ठ व्यक्ति; चतुर मनुष्य । —**प्रयोग**—पुं० शिष्टों द्वारा व्यवहारमें लाया जाना । —**संज्ञक**—पुं० किसी संस्था, राज्य आदि द्वारा चुना गया अधिकार प्राप्त कुछ व्यक्तियोंका समूह जो दूसरी संस्था, दूसरे राज्यमें किसी कार्यके उद्देश्य-से जाय, 'मिशन' । —**सभा**—स्त्री० शिष्ट-परिषद्, राज्य-परिषद् । —**समाज**—पुं० सभ्य-समाज । —**सम्मेल**—वि० शिष्टों द्वारा अनुमोदित ।

शिष्टता—स्त्री०, **शिष्टत्व**—पुं० [सं०] शिष्ट होनेका भाव, कर्म आदि; मलमनसाइन, सौमन्य, सभ्यता ।

शिष्टाचार—पुं० [मं०] शिष्ट व्यक्तियोंका आचार, व्यवहार, मराचार; विनम्रता; किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार आचरण, 'कारमैक्लिटी' । वि० शिष्टतापूर्वक आचरण करनेवाला ।

शिष्टाचारी (रिज्)—वि० [सं०] शिष्ट आचरण करनेवाला, सदाचारी; विनम्र; किसी समाज, मन्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार आचरण करनेवाला ।

शिष्टादिष्ट—वि० [सं०] जो शिष्टोंकी मान्य हो ।

शिष्टि—स्त्री० [सं०] शासन; आज्ञा, आदेश; दंड, परिष्कार, मार्गन, सुधार; सहायता ।

शिष्य—वि० [सं०] शिक्षणीय; उपदेश; शासनयोग्य । पुं० छात्र, विद्यार्थी; (शिक्षकसे शिक्षा प्राप्त करनेवाला वा धार्मिक गुरुमें मंत्र लेनेवाला) चेला; गुरुकुलमें रहकर विद्या अध्ण करनेवाला व्यक्ति; शिष्य; हिंसा । —**परंपरा**—स्त्री० किसी गुरुसंप्रदायकी परंपरित शिष्यमण्डली । —**शिष्टि**—स्त्री० छात्रकी मस्तना ।

शिष्यता—स्त्री०, **शिष्यत्व**—पुं० [सं०] शिष्य होनेका भाव, कर्म आदि ।

शिख—स्त्री० [सं०] सीख, निशाना; मछली पकड़नेका कौशल; वह अंगुलिमान वा अंगुष्ठताना जिसे दरजी या मीरदाज डँगलीमें पहनते हैं ।

शिख, शिखक—पुं० [सं०] शिखारस ।

शी—स्त्री० [सं०] निद्रा; शांति ।

शीशा—पुं० [अ०] सुसज्जमानोंके दो बड़े संप्रदायोंसे एक जो मुसलमानोंके बाद अलीकी ही शिक्षापत्रका हकदार और उनके पछलेके तीन खलीफाओंकी अपाहारक मानता है ।

शीकर—पुं० [मं०] बाघुरित जलकण, फुहार; जलकण;

तुषार; बाघु; सरल नामक वृक्ष या उसका गोंद ।

शीघ्र—अ० [सं०] शिघ्र, आघु, अविलंब, तत्पर, त्वरित, अल्प, तुरत, शृष्टपट । पुं० दंती नामक वृक्ष; प्रयोजन (व्यो०); बाघु । —**कारी (रिज्)**—वि० तुरत काम करनेवाला; तुरत असर करनेवाला (भोजन, औषध आदि) । पुं० सप्रिपात अर्थात् एक भेद । —**कृत्**—वि० तेजीसे काम करनेवाला । —**कोपी (रिज्)**—वि० जल्द क्रुद्ध हो उठनेवाला, निरवस्था । —**ग**—वि० दूतगामी । पुं० वायु; मूय; खरगोश । —**गमन**, **गामी (रिज्)**—वि० दे० 'शीघ्रग' । —**चेतन**—पुं० कुपकुर, कुत्ता । वि० दूत चेतनावुक्त । —**जन्मा (म्यन्)**—पुं० एक प्रकारका करंज, कौटाकरंज । —**जीर्ण**—पुं० चोलाका साग । —**पतन**—पुं० नारीसंयोग करते समय धीरका शीघ्र स्खलन, गिरना । —**पुष्प**—पुं० अमस्तका पेड़ । —**बुद्धि**—वि० कुशाग्रबुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धिवाला । —**बोध**—वि० जो जल्द समझमें आ जाय । —**बाध**—पुं० तेज गति । वि० तेज जानेवाला । —**बेची (रिज्)**—वि० निशानेपर तुरत तीर चलावेवाला, दुश्मन बाध चलावेवाला, लघुहस्त ।

शीघ्रता—स्त्री०, **शीघ्रत्व**—पुं० [सं०] अविलंबत्व, जल्दी, शिघ्रता, कुर्ती ।

शीघ्रा—स्त्री० [सं०] दंती वृक्ष ।

शीघ्रिव—वि० [सं०] तेज, तीव्र । पुं० विष्णु; शिव; विक्षिप्तका लक्ष्मण ।

शीघ्री (रिज्)—वि० [मं०] शीघ्रकारी; शीघ्रगामी; तुरत उच्चारण करनेवाला ।

शीघ्रीव—वि० [सं०] तेज, तीव्र ।

शीघ्र—पुं० [सं०] शीघ्रता, जल्दी, तेजी ।

शीत—वि० [मं०] शीतल; आरुह्ययुक्त; निद्रालु । पुं० शीतकाल जो अगहन, पूस, माघ तीन महीनोंका होता है; जाड़ा, ठंडक, शीतलता; सरदी, लुकाव; जल; तुषार; वेतस वृक्ष; बहुवारक वृक्ष; अशानपणी; नीमका पेड़; कपूर; पपेट, पिचपापका । —**कटिबंध**—पुं० भूमण्डलके उत्तरी तथा दक्षिणी अंशोंके दो कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखाके ३६½ अंश उत्तर तथा इतने ही अंश दक्षिणसे शुरू होकर भूवर्गदेशांतक फैले हैं (शीतप्रभाव देश इन्हीं कटिबंधोंमें हैं जहाँ वसंत ऋतुमें कुछ कम और अन्य ऋतुओंमें अत्यधिक सर्दी पड़ती है) । —**कण**—पुं० जीरा । —**कर**—पुं० हिमकर, चंद्रमा; कपूर । वि० शीतल हाथीवाला; शीतल करनेवाला । —**कषाय**—पुं० कुटा हुआ द्रव्यफलक, काशीष आदिका कषाय जो उनके छ-गुने जलमें रातभर भोगे रहनेसे प्रस्तुत होता है । —**काक**—पुं० जाड़ेका मौसिम जो अगहन, पूस और माघमें पड़ता है, हेमंत और शिशिर ऋतु; अगहन और पूस महीनोंमें पड़नेवाली हेमंत ऋतु । —**काकीन**—वि० शीतकाल-संबंधी; शीतकालमें होनेवाला । —**किरण**—पुं० चंद्रमा । —**कुंभ**—पुं० करबीर, कवेर । —**कुंभिका**—**कुंभी**—स्त्री० शीतली, जलकुंभी नामक जलजला । —**कुंभिका**—स्त्री० बरिवारा नामक पौधा जो बिना बोये ही ईश्वरके नेतृत्वमें पैदा होता है (इसकी परिधि और जब औषधके काममें आती है) । —**कृच्छ्र**, **कृच्छ्रक**—पुं० एक ऋत ।

-क्षार-पुं श्वेत रङ्ग, साफ किया हुआ सोहागा ।
 -श्व-पुं श्वेत चंदन । -श्व-पुं सक्षिपात ज्वर-
 विशेष । -गु-पुं चंद्रमा । -चंपक-पुं दर्पण, आईना;
 दीपक । -पञ्चाश-पुं बटुछत्र जिसकी छाया शीतल होती
 है । -ज्वर-पुं जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जुड़ी,
 जड़वा खुलार, अंतरिया खुलार जो कुछ दिनोंके अंतरपर
 आता है, मलेरिया खुलार । -हृत्-पुं शीतल वायु या
 जलका शीतोंके कमजोर होनेपर लगना (बर्द उत्पन्न
 करना); एक रंतरीय (आवे०) । -दंतिका-स्त्री नाग-
 दंती कृता । -दीपित-पुं चंद्रमा । -दूर्वा-स्त्री
 शीतकालीन दूर्वा; श्वेत दूर्वा, सफेद दूब । -दीप्य-पुं
 सफेद जोरा । -सुति-पुं चंद्रमा । -चंक-पुं छुरा
 र, स्फिरिट । -पत्रा-स्त्री श्वेत लाजवंती पौधा ।
 -पर्णी-स्त्री कर्कपुष्पिका । -पल्लवा-स्त्री भूमि-
 जल । -पाकिनी-स्त्री काकोली नामकी अद्वर्णाव
 ओषधि; महासमगा । -पाकी-स्त्री गुंजा, पुँचची; दे०
 'शीतपाकिनी' । -पित्त-पुं रात और पिचके कुपित
 होनेमे ज्वरग्रस्त हुआ एक चर्मरोग (इसमें शरीरमें चकत्ते
 निकल आते हैं और अव्यक्त पीड़ा और जलन होती
 है), रक्तपित्त, जुकपित्त । -पाणि-वि० ठंडे हाथों या
 किण्वोवाला । -पुष्प-पुं शरीर शुद्ध । -पुष्पक-
 पुं मदारका पेड़; शैलेय, छटोला । -पुष्पा, -पुष्पी-
 स्त्री अतिरक्ता । -पुस्तना-स्त्री एक बालग्रह । -प्राधान्य
 -वि० (बह स्थान) जहाँ शीतका प्राधान्य हो; (बह वस्तु)
 जिसमें शीतगुणका आधिक्य, प्राधान्य हो । -प्रभ-पुं
 कपूर । -प्रिय-पुं पद, पित्तपापका । -फक-पुं
 गूलर; कठगूलर । -बका-स्त्री शीतपुष्पा, महासमगा ।
 -आनु-पुं हिमकर, चंद्रमा । -मीर-स्त्री मलिका ।
 वि० शीतसे बरनेवाला । -मीरक-वि० दे० 'शीतमीर' ।
 पुं एक तरहका धान; काकी मिर्छी । -मंजरी-स्त्री
 शेकाली, हरसिंगार । -मधुसूत, -मरीचि-पुं चंद्रमा;
 कपूर । -मूलक-पुं उशीर, लस । वि० ठंडी जड़-
 वाला । -मेह-पुं प्रमेह रोगविशेष । -मेही (वि०)-
 वि० शीतमेहसे ग्रस्त । -रस्य-पुं दीपक । -रश्मि-
 पुं चंद्रमा; कपूर । -रस-पुं ईसके कच्चे रससे प्रस्तुत
 मद्यविशेष । -रुक् (चू) । -रुचि-पुं चंद्रमा । -रुह-
 पुं श्वेत कमल । -रु-वि० दे० क्रममें । -वक्क-पुं
 गूलरका पेड़ । -बल्लभ-पुं पित्तपापका । -बल्ली-
 स्त्री नौली दूब । -बीर्य-वि० जिसका प्रभाव
 ठंडक लानेवाला हो । पुं पाषाणमेदन; पाकक;
 पित्तपापका; पचकाग्र; बचा; नौली दूब । -बीर्यक-पुं
 पाकका पेड़ । -शिख-पुं सेंधा नमक; सोहागा; शैलेय
 गंधद्रव्य; सीक; रुमी रुद्ध । -शिवा-स्त्री रुमी रुद्ध;
 सीक । -शूक-पुं यव, जौ । -सह-पुं पीछे नामक
 पेड़ । वि० शीत सहन करनेवाला । -सह्य-स्त्री एक
 फूल, नौल सिंधुवार, नीलिका, शेफालिका; बासंती कृता ।
 -स्पर्श-वि० जो छूनेमें ठंडा हो, ठंडक पहुँचानेवाला ।
 शीतक-वि० [सं०] ठंडा । पुं ठंडी वस्तु; शीतकाल;
 बालसी, दीर्घवृत्ती व्यक्ति; निश्चित मनुष्य; विष्णु ।
 शीतल-वि० [सं०] शीतगुणयुक्त, ठंडा; सौम्य, सद्गु;

ज्ञात, ठंडे दिमागवाला; संतुष्ट, आनंदित । पुं शीत
 चंदन; शैलेय; पुष्पकालीन, कसीस; कमल, पद्म; वीरग-
 मूल; अशनपर्णी; चंपक; एक प्रकारका कपूर; राल; मोती;
 चंद्रमा; ताड़पीन; ठंडक, शैत्य, शीतलता; प्रतियोग ।
 -श्रीबी-स्त्री [हिं०] एक प्रकारका मसाला, कबाब-
 चीनी । -च्छद-पुं चंपक रुद्ध । -जल-पुं कमल ।
 -पाटी-स्त्री [हिं०] बेंतकी आतिते एक पेड़के छिलकेसे
 निर्मित एक प्रकारकी पतली और चिकनी चटाई । -प्रह-
 पुं चंदन । वि० ठंडक पहुँचानेवाला । -वात-पुं
 शीतल समीरण । -वातक-पुं अशनपर्णी ।
 शीतलक-पुं [सं०] श्वेत कमल; मक्कक, मरुका ।
 शीतलता-स्त्री [सं०] शैत्य, ठंडापन, ठंडक; शीतल
 होनेका मास, गुण आदि; जड़ता ।
 शीतलताई-स्त्री दे० 'शीतलता' ।
 शीतलत्व-स्त्री [सं०] दे० 'शीतलता' ।
 शीतला-स्त्री [सं०] एक विस्फोटक रोग जो बसत और
 ग्रीष्म ऋतुओंमें अधिक होता है (बह छूतकी बीमारी
 है; इसे चेचक या वस्तरीय भी कहते हैं); इस रोगकी
 अधिष्ठातृ देवियों जो सात हैं और संबंधसे बहिन हैं;
 शीतली रुद्ध; कुंडुभिनी रुद्ध; आरामशीतला; बानू । -पूजा
 -स्त्री शीतला देवीकी पूजा । -बाह्य-पुं गधा । -
 बही-स्त्री को माघ शुद्धा षष्ठी, इस तिथिको शीतलाका पूजा
 होती है ।
 शीतलाहमी-स्त्री [सं०] चैत्र-कृष्णसे लेकर आषाढ़ कृष्ण
 तक चार मासोंके कृष्ण-पक्षमें होनेवाली अष्टमी (इस दिन
 शीतलाकी पूजा होती है और बासी पकाव खाया जाता है;
 उस दिनको बहूदा, बसिऔरा भी कहते हैं) ।
 शीतली-स्त्री [सं०] अलमें पैदा होनेवाला एक पौधा,
 शीतकुमी; चेचक रोग ।
 शीतांग-पुं [सं०] शीत सक्षिपात ।
 शीतांगी-स्त्री [सं०] हंसपक्षी ।
 शीतांगु-पुं [सं०] दुग्धी वास ।
 शीतांगु-पुं [सं०] चंद्रमा; कपूर ।
 शीताकुल-वि० [सं०] ठंडसे व्याकुल; जाकेसे ठिठुरा हुआ ।
 शीतालप-पुं [सं०] जाड़ा और गर्मी । -त्र-पुं छाता ।
 शीतात्-पुं [सं०] मसूरोके पक जाने या उबनेमें ज़ण
 हो जानेका रोग, पावरिया ।
 शीताग्नि-पुं [सं०] हिमवान् पर्वत, हिमालय पर्वत ।
 शीताबला-स्त्री [सं०] महासमगा ।
 शीताभ-पुं [सं०] चंद्रमा; कपूर ।
 शीतार्त-वि० [सं०] दे० 'शीताकुल' ।
 शीतार्द्र-वि० [सं०] ओसमें गीला; शीतार्त ।
 शीतास्तु-वि० [सं०] शीतार्त, शीतसे पीड़ित; शीतसे
 कोपता हुआ ।
 शीताश्मा (श्मत्)-पुं [सं०] चंद्रकांत मणि ।
 शीतिका, शीतिमा (मन्)-स्त्री [सं०] ठंडक ।
 शीतीभाव-पुं [सं०] ठंडापन, शीतलत्व; मोक्ष, छुटकारा ।
 शीतेतर-वि० [सं०] कण्य ।
 शीतीचम-पुं [सं०] जड़ ।
 शीतोष्ण-वि० [सं०] ठंडा और गरम ।

शरीकार-पु० [सं०] रसिकालम् संशोध्य स्त्री द्वारा की गयी अव्यक्त, अस्पष्ट ध्वनि, रसिकालम् स्त्री द्वारा 'शो-सी' करनेकी क्रिया ।

शरीच-वि० [सं०] ठंडा करने योग्य; जोते जाने योग्य ।

शरीपु-पु० [सं०] मूँके पने रस द्वारा प्रस्तुत मद्य, सिद्ध ।

शरीष-पु० सिद्ध शरावकी मद्यक; बहुल द्रव्य । -प-वि०, पु० मद्यप ।

शीत-वि० [सं०] जमा हुआ, धनीयुत । पु० अजगर; जड़, मूल्य; [अ०] भरवी-कारसा वर्णमाळाका एक वर्ष जो देवनागरीके तालव्य 'श'का काम करता है । मु० -काक बुद्धस्त न होना-उच्चारण शुद्ध, अव्यक्तित न होना । -के शब्दके 'श'का शुद्ध उच्चारण न कर सकना ।

शीकर-वि० [सं०] आनंदप्रद; मनोहर ।

शीकालिका-खी० [सं०] शीफालिका ।

शीमर-पु० [सं०] शीकर, जलकी कुहार । वि० शीफर, आनंददायक ।

शीम्य-पु० [मं०] शिव; बल ।

शीर-पु० [सं०] अजगर; [फा०] दूध, क्षीर । -श्रिस-मं० एक देवक दवा । -क्षीर-वि० दे० 'शीरकवार' ।

श्रीभार-वि० दूधपीता (बच्चा) । -गर्म-वि० थोडा गरम, कुनकुना । -शिरंज-खी० क्षीर । -माल-पु० या दैकर पकायी हुई खमीरा रोटी जिसे पकाते समय दूधका छोटा देते हैं । -रं मादर-पु० मीका दूध । वि० हल्ला, जायज (ला०) । -सुरी-पु० चमगादड़ ।

श्रीशकर-पु० दूध और शर्करा; एक रेशमी कपड़ा; [फा०] दूध-चीनीकी तरह परस्पर घुल-मिल जानेवाली चीजें; परस्पर अतिशय स्नेह रखनेवाले (मित्र-प्रेमी) । मु० -० हो जाना-घुल मिल जाना; अतिशय स्नेह होना ।

शीरी-पु० [फा०] चागनो, किबाम; किसी चीजको घोट-छानकर प्रस्तुत किया हुआ पेय (शादामका शीरी) ।

शीरा-पु० दे० 'शीरी' ।

शीराज-पु० [फा०] ईरानका एक प्रसिद्ध नगर ।

शीराज्ञा-पु० [फा०] कितारक। जुजबरीके बंद जो पुदतेके दोनों ओर लगा दिये जाते हैं; पुस्तक और पुठुँपर की जानेवाली सिलाई; [फा०] प्रवध; शृङ्खला । -बंद-वि० (पुस्तक) जिसकी सिलाई (रखबंदी हुई) मुकी हो । मु० -बँधना-कितारके जुजबरी सिलाई होना; बिल्ली हुई चीजोंका इकट्ठा, शृङ्खलित किया जाना । -बिलरना-विश्रलित हो जाना, बिगड़ जाना ।

शीराज्ञी-वि० [फा०] शीराजका । पु० शीराजका रहने-वाला; कबूतरका एक सेह ।

शीरी-वि० [फा०] मीठा, मधुर; प्यारा, प्रिय । खी० फरादकी प्रेयसी । -कलाम, -जबान-वि० मधुरभाषी, सुंदर भाषा बोलनेवाला । -बबाम-वि० मधुरभाषी । -बबामी-खी० मधुरभाषण, मीठा बोलना ।

शीरी(रिक्)-पु० [सं०] हरिदत्त ।

शीरीवी-खी० [फा०] मिठास; मिठाई (बढ़ाना, बँदना) ।

शीरी-वि० [सं०] कुम्हलाया हुआ; सका-गला, नष्ट; टूटा-

पूटा, विभवे-विभवे हुआ; छितराया हुआ, विकीर्ण; कुश; शुष्क । पु० एक गंधद्रव्य, स्त्रीयोगक । -काय-वि० कुश शरीरवाला । -हूँत-वि० जिसके दाँत मिर गये हों । -हल-पु० नीम । -माळा-खी० दे० 'शीर्णमाला' । -पन्न-पु० कणिकार वृक्ष, कनियारीका पेड़; पट्टिकालोध, पठानी कीच; नीम । -पर्ण-पु० कुम्हलाया हुआ पत्ता; नीमका पेड़ । -पाद-पु० वम (पुराणोंमें लिखा है कि वमकी बिसाताके आपसे उनके पैर कूड़ा हो गये थे) । -पुष्पिका, -पुष्पी-खी० सौँफ । -माळा-खी० पृथिनपर्णी, पिठवन । -हूँत-पु० हिनवाना, तरबूज, बूढ़टोल ।

शीर्णता-खी०, **शीर्णः-पु०** [सं०] शीर्ण होनेका भाव या धर्म ।

शीर्णाग्नि-पु० [सं०] यम ।

शीर्णि, शीर्त्ति-खी० [सं०] नष्ट-भ्रष्ट करनेकी क्रिया ।

शीर्त्ति-वि० [सं०] हानि करनेवाला; हिसाकारी; जंगली ।

शीर्ष-पु० [सं०] मिर; मस्तक, माथा, ललाट; किसी वस्तुका सिरा, सबसे ऊपरी हिस्सा; कृष्णागुरु; एक वास; एक पर्वत । -बासी(सिन्धु)-वि० सिर काटनेवाला । पु० अहाद । -छेद, -छेदय-पु० सिर काटनेकी क्रिया, मस्तकच्छेदन । -छेदिक, -छेदक-वि० बध्य, डालने योग्य । -श्राण-पु० शिरकाण । -पट, -पटक-पु० शिरमें बाँधनेका कपड़ा, पगड़ी, साफा आदि । -रक्ष, -रक्षण-पु० शिरकाण । -चर्त्तन-पु० अभियुक्त या नवाकथिन दोनोंके निर्दोष सिद्ध होनेपर अभियोग चलाने-वाले द्वारा दंड भोगनेकी स्वीकृति देना । -विदु-पु० मिरका सबसे ऊपरी न्याय; मोर्तियार्थि । -वेदना-व्यथा, -खी०, -शोक-पु० शिरदर्द, मस्तकपीडा । -स्व-वि० शीर्षस्थानीय, चौटीका, प्रधान । -स्थान-पु० माथा; मिर; सर्वोच्च न्याय । -श्वानीय-वि० मूर्ख, सर्वोच्च, प्रधान, श्रेष्ठ ।

शीर्षक-पु० [मं०] शिरः मस्तक; सिरा; शिरकी रक्षा करनेवाली वस्तु (जैसे-शिरकाण, लोहेका टोप आदि); शिरकी हड्डी; शिरास्त्रि; निर्णय, फैसला; पगड़ी, टोपी, साफा आदि शिरपर देनेकी वस्तु; शिरमें लपेटनेकी माळा; किसी निबंध, ग्रंथ आदिके विषयका परिचायक शब्द, शब्दमयूह जो शिर(निबंध, ग्रंथ आदि)के ऊपर रखा जाता है, किर्तिश; राहु ग्रह; पर्वतक ।

शीर्षव्य-पु० [सं०] शिरकाण; साफ, सुलझे सिरके बाल; पगड़ी, साफा आदि शिरमें बाँधनेकी वस्तु, शिरकी ओरका हिस्सा । वि० श्रेष्ठ ।

शीर्षव्य-पु० [सं०] मिश्रुन, सिंहा, कन्या, तुल्ला, वृद्धि, कुंभ, मीनकी दिया गया नाम ।

शीर्ष-पु० [मं०] चरित्र, चाकचलन; मनकी स्थायी वृत्ति, स्वभाव; सद्वृत्ति, शुद्ध चरित्र; सत्स्वभाव; रागद्वेष-विहीनता, तटस्थ व्यवहार; संकीर्ण प्रकृति, सुनिपत; अजगर; सौंदर्य । वि० प्रवृत्त, उन्मुख; स्वभाववाला; (समासमें) । -व्याम-पु० सद्वृत्तिका व्याम । -घारी(सिन्धु)-वि० शीर्ष धारण करनेवाला । पु० शिव । -अंग-किसी किशोरी वा युवतीके साथ अनुचित छेड़-

छात्र; बलकार। —**बंचना**-**की** किसीके आचरणके संबंधमें बोझा होना। —**बंजित**-**वि** दुर्बल। —**बुद्ध**-**वि** सदाचारी। **सु**-**सोचना**-बेसुरीबत होना, निःसंकोच हो रिमायत, दया आवि न करना। (**बौद्धोंमें**) —**न होना**-बेसुरीबत होना, क्रूरताका व्यवहार करना। —**निमाना**-**किसीके** द्वारा अपना अनिष्ट होनेपर भी पूर्वकी भाँति ही उसके साथ सदृशपूर्वक व्यवहार करना; सत्त्वभावकी न छोड़ना। —**सर जाना**-संकोच, सद्भाव, सदृश आदिका किसी व्यक्तिसे निकल जाना, दुर्बल होना; बेसुरीबत होना। —**रखना**-सुरीबत न छोड़ना, सद्व्यवहार रखना, करना।

श्रीलोक-**पु** [सं०] कर्ममूल।

श्रीलोक-**पु** [सं०] अन्त्यास; विवेचना; प्रवर्तन; धारण करना, प्रवण करना।

श्रीलोकान्(**बल**)-**वि** [सं०] अच्छे शील वा आचरण-वाला; सुशील, नेकचलन।

श्रीलोक-**वि** [सं०] अभ्यस्त; धारण किया हुआ; दक्ष; शक्ति; उपित; निमित्त। **पु** अभ्यास।

श्रीली(**किन्**)-**वि** [सं०] शीलवान्, सदाचारी; अव्यस्त।

श्रीलोक-**पु** [सं०] शैलेय; शैवाल, मेवार।

श्रीवा(**बन्**)-**पु** [सं०] अजगर।

श्रीवा-**पु** [सं०] सि। —**कुल**-**पु** एक शिरोभूषण।

श्रीश-**पु** 'श्रीश'का केवल समासमें व्यवहृत रूप। —**पुनिल**-**पु** शीशे जैसा नाजुक, बरासी ठेससे टूट जानेवाला हिल। —**पुसाह**-**पु** रेतवरी। —**वर**-**पु** शीशेकी चीजें बनानेवाला। —**महल**-**पु** वह कमरा जहाँ अन्न जिसमें हर तरफ दीशे जड़े हों। —**का कुला**-**पु** शीशेकाया हुआ कुपा; पावला आदमी।

श्रीशम-**पु** एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुसी आदि बनानेके काम आती है, शिथिल।

श्रीश-**पु** [का०] कौच; आरना; कौचकी सुराही, बोटल। —**आकास**-**पु** रोशनीका नाज-समान; हान-कानून। —**बाज**-**पु** शीशेकी विभिन्न अंगोंपर रखकर नाचनेवाला; बाजीगर। —**बाशा**-**वि** अति सुकुमार।

सु-(**शे**)में उतारना-भूत-भैरवकी शीशे-बोतलमें उतार लेना; ब्रह्ममें कर लेना।

श्रीशी-**की** शीशेका छोटा पात्र जिसमें दवा आदि रखी जाय।

श्रीश-**पु** [अ०] आदमका तीसरा नेत्र जिसे मुसलमान अपना पैगंबर मानते हैं।

शुंग-**पु** [सं०] वटवृक्ष; आभातक वृक्ष, आमरैका पेड़; शुक, अजका टूँड; प्राचीन भारतका एक ब्राह्मण राजवंश (इस वंशमें पुष्पमित्र नामक प्रसिद्ध सेनापति हुआ जो अपने पीढ़से मौर्ववंशके राजाकी मारकर स्वयं सिंहासनपर बैठा तथा शुंगराजकी स्थापनाकी)।

शुंगा-**की** [सं०] पंखटी वृक्ष, पकड़ीका पेड़; कलकी नदीमें पंखुरियोंका रक्षक हरा दहन; अन्न आदिका शुक, टूँड। —**कर्म**(**शु**)-**पु** पुष्पन संस्कार।

शुगी(**गिन्**)-**पु** [सं०] वृक्षवृक्ष; वटवृक्ष।

शुंठि, **शुंठी**-**की** [सं०] शुष्कार्द्रक, सूखा अदरक, सोंठ।

शुंठ-**पु** [सं०] जवान हाथीके गंडस्वक, कनपटीसे बहनेवाला मद; दान; हाथीकी सूँड़। —**रोह**-**पु** मृत्पु।

शुंठक-**पु** [सं०] सराव उतारनेवाला, शौचिक; रणभेरी, बुदबेणु; एक रणयान।

शुंठा-**की** [सं०] हाथीकी सूँड़; मरिचा, सुरा; मधुपान-गृह; वेव्या; कुटनी; कमलनाल। —**ईह**-**पु** हाथीकी सूँड़। —**पान**-**पु** मधुपान।

शुंठार-**पु** [सं०] शुंठक; नये हाथीकी सूँड़; साठ सालका हाथी।

शुंठाल-**पु** [सं०] हाथी।

शुंठिका-**की** [सं०] लहरी, गलेका कौआ, बंटी, बाँटी; ग्रंथिकी सृजन; दे० 'शुंठा'।

शुंठी-**की** [सं०] हस्तिशुबी वृक्ष; ग्रंथिकी सृजन।

शुंठी(**विन्**)-**पु** [सं०] शौचिक, मधु वेचनेवाला; हाथी।

—(**वि**)**शुंठिका**-**की** छट्टार।

शुभ-**पु** [सं०] एक दानव जो गंधेकी पुत्र और प्रह्लादका पीत्र था (यह दुर्गा द्वारा मारा गया था)। —**भासिनी**, —**नासिनी**, —**मधनी**, —**मर्विनी**, —**हननी**-**की** दुर्गा।

—**निशुभ**-**पु** शुभ और निशुभ। —**पुर**-**पु**, —**पुरी**-**की** एक नगर, आधुनिक संमलपुर।

शुंभार-**पु** [सं०] संत नामक जलजंतु।

शुकर-**पु** [अ०] हान; बुद्धि; दग, मलका। —**द्वर**-**वि** जिसे कामका दंग जाता हो, तमोज्वार।

शुक-**पु** [सं०] सुम्मा, तोना; बख; पोदाक; बखालक बखला छोर; भिरखण; भिरमें बंधनेकी पतली, साफा आदि; व्यास मुनिके पुत्र; शुकदेव; शिरीष वृक्ष; ग्रंथिपण; शोणक वृक्ष; लोप; एक पौराणिक अन्न।

—**कर्णी**-**की** एक पौधेका एक। —**कीट**-**पु** हरे रंगवाला एक फलिया जो वषां और जलरु कृत्तुओंमें अधिक दिखाई पड़ता है। —**कूट**-**पु** दो लोखोंके बीच लटकायी हुई माला। —**च्छद्**-**पु** ग्रंथिपण; सुम्मेका पर; तेजपत्ता। —**जिह्वा**-**की** सुभाठोंकीका पौधा। —**तरु**-**पु** सिरसका पेड़। —**तुंड**-**पु** सुम्मेकी चोंच; हाथीकी एक मुद्रा। —**तुंडी**-**की** दे० 'शुकजिह्वा'। —**देव**-**पु** कृष्णद्वैपायन वेदव्यासके पुत्र-शुकीके रूपमें पृथ्वीपर भ्रमण करती स्वर्गकी अप्सरा द्रुताची तथा व्यासके सहवासमें इनका जन्म हुआ, इसीलिए ये 'शुक' कहलाये। कहा जाता है कि इनको 'भागवत पुराण'के रूपमें महाराज परीक्षितको उनकी श्रुत्युक्त पूर्व धर्मोपदेश दिया था। ये परमेश्वरी और निरक्त थे। ये रमाके सौंदर्यसे भी नहीं प्रभावित हुए और उसे उपदेश दिया। —**नुम**-**पु** दे० 'शुकतर'। —**नलिका**-**म्याय**-**पु** लोमवश फंसनेकी रीति (पक्षी फंसनेकी छासा लगी नलिकी, नलिका कमाकर उसके पास चारा रख देते हैं; सुम्मा (या पक्षी) चारेके लोभसे नलिकीपर बैठता है और उसके पंजे छासमें फंस जाते हैं। लोमवश फंसनेकी इसी क्रियाके आधारपर यह ग्याय बना)। —**नामा**(**मन्**)-**पु** दे० 'शुकजिह्वा'।

—**नाशन**-**पु** वदुन्न, चकवैकका पौधा। —**नास**-**पु** दयोनाक वृक्ष; बाणभट्टकी 'कार्दरी'में आवे 'तारापीट'के

मंजीका नाम । वि० तोतेकी चोंच जैसी नाकवाला । -
नासिका-श्री० सुमेली ठोरीकीसी नाक । -पुच्छ-पु०
सुमेली पूँछ; गंधक । -पुच्छक-पु० ग्रंथिपर्ण । -पुष्प
-पु० स्त्रीगंध; शिरीष वृक्ष । -प्रिच-पु० शिरीष वृक्ष;
कमरल । -मिया-श्री० जंग, जामुन । -कल-पु०
मदारका पेड़, अर्क वृक्ष; सेमल । -बहूँ-पु० गंधद्रव्य-
विशेष । -बल्लभ-पु० दाहिम, अनार । -बाक्(च)
-वि० तोतेकीसी बोलीवाला । -बाह-बाहन-पु०
कामदेव जिसका बाहन शुक्र माना गया है । -डिबा-
शिबी-श्री० केजोंच, कपिकच्छु ।

शुक्राख्या-श्री० [सं०] सुआठोंकीका पौधा ।

शुक्रावन-पु० [सं०] दाहिम, अनार ।

शुक्रानवा-श्री० [सं०] दे० 'शुक्रास्या' ।

शुक्रायन-पु० [सं०] बुद्ध; अर्हत ।

शुकी-श्री० [सं०] सुगी ।

शुकेह-पु० [सं०] सिरिसका पेड़ ।

शुकोवर-पु० [सं०] ताकीशपन ।

शुकोह-पु० [फा०] दबदबा, प्रताप; आतंक (दाराशुकोह) ।

शुक्का-पु० [अ०] शही परमान, राजाशा; वह लिखित
पत्रा जो बड़े अधिकारी द्वारा छोटे अधिकारियों दी जाय;
वह कपड़ा जो अलममें बँधते हैं ।

शुक-वि० [म०] साफ; चमकदार, पवित्र; सयुक्त; अम्ल,
मट्टा; निष्ठुरा; कठोर; निर्जन । पु० मांस; काजिका, कौमी;
वह पशु जो कुछ दिन रखी रहनेके कारण खट्टी हो गयी
हो; निरका; खटाई; द्रव्यविशेष; खट्टापन; वमिष्ठाका एक
पुत्र, कठोर शब्द ।

शुक्रा-श्री० [सं०] मुक्तिका ।

शुक्ति-श्री० [सं०] सीपी, सुतुही नामक जलजीव; सुतुही
नामक जलजंतुका कड़ा खोल (वैध इसका मस बनाकर
औषधके काममें भी लाते हैं); शंस; शखनख, छोटा शस,
नखी गंधद्रव्य; कपालखंड; अथावर्त, घोड़ेकी छाती(गरदन)
पर बाणोंकी भीरी; एक नेत्ररोग; अशं रोग, नवासीर; दो
कर्प या चार तोलके बराबर एक तौल । -कर्ण-वि०
नीप रंगे कानोंवाला । पु० एक नागदैत्य । -खलति-
वि० बिलकुल गवा । -ज-पु० मोती । -पत्र-पर्व-
पु० मसपर्ण वृक्ष, छतिवनका पेड़ । -पुट-पु-पेशी-
श्री० सीपका खोल, सुतुही । -बीज-मणि-पु० मोती ।
-वधू-श्री० सीपी; सीपीके भीतर रहनेवाला कीटा ।
-स्पर्श-पु० मोतीपरका भस्मा ।

शुक्ति-पु० [सं०] एक नेत्ररोग ।

शुक्तिका-श्री० [सं०] सीप; मुक्तिका, चूका साग ।

शुकपुत्र-पु० [सं०] मोती ।

शुक-पु० [सं०] वीर्य, बीज, रेत; सार, तत्त्व; बल, शक्ति;
"क मयः शुक्रवा; सप्ताहका छठा दिन (वह शुक्र ग्रहका
योग्य दिन माना जाता है); शुक्राचार्य, वैद्यगुरु;
अग्नि; ज्येष्ठ मास; चित्रक वृक्ष; एक नेत्ररोग, फूली;
शुद्ध सोम; एक योग (योग); प्रथम तीन व्याहृतिवाँ-
पार, सुभ; स्वर्; नसिष्ठाका एक पुत्र; तीसरे मनुका
"क पुत्र; चमकीलापन; सस्फूर्ति; सुना । वि० चमकीला;
भन, उज्ज्वल; विशुद्ध । -कर-पु० मज्जा (इमोते वीर्य

बनाता है) । वि० वीर्यवर्द्धक । -कृष्ण-पु० 'स्वाक', मूत्र-
कृष्ण । -ज-पु० पुत्र; एक देवकी (जै०) । -व-पु०
गैहूँ । -दोष-पु० बीर्यके दोषके कारण बुद्धि मयसकता । -
प्रमेह-पु० वीर्यक्षीणता (वह रोग माना गया है) । -
शुक्(ब)-पु० मयूर, मोर । -सू-पु० मज्जा । -
मेह-पु० दे० 'शुक्रमेह' । -ख-वि० शुक्रसंबंधी; वीर्य-
वृद्धि करनेवाला । -छा-श्री० उच्छाट । -बार-बासर
-पु० सप्ताहका छठा दिन । -शिष्य-पु० शुक्राचार्यके
शिष्य, वैद्य, राक्षस । -स्वभ-पु० बहुत दिनोक्त मज्जा-
वर्धय रखनेके कारण उत्पन्न एक रोग, नपुंसकताका एक
भेद, ध्वजभंग ।

शुक्र-पु० [अ०] कृतज्ञताप्रकाश, उपकार मानना, ईश्वरके
उपकारीकी बराबरी । -गुप्ता-वि० एहसान माननेवाला,
शुक्र अदा करनेवाला । -गुप्तारी-श्री० कृतज्ञता प्रकट
करना । मु० -करना-(खुदाकी) एहसान मानना;
भगवान्‌के कियेपर संतुष्ट, प्रसन्न रहना । -बजा खाना-
कृतज्ञता प्रकाश करना । -है-खुदाका शुक्र है, भगवान्‌-
का पाम अनुग्रह है ।

शुक्रांग-पु० [म०] मोर पक्षी ।

शुक्रा-श्री० [सं०] बराकोचन ।

शुक्राचार्य-पु० [सं०] एक कवि जो श्रुतिके पुत्र और
राक्षसोंके गुरु थे (पुराणोंमें कहा गया है कि दैत्यराज बलि-
की वामनकी पृथ्वीदान देनेसे रोकनेके लिए थे कमंडलुकी
दीर्घीमें जा बैठे; इन्होंने सोचा कि ऐसा करनेमें न जल
निकलेगा और न दानका संकल्प होगा, मगर जल निकास-
लनेके लिए सीकसे टोंटी साफ करनेमें इनकी एक आँसू
फूट गयी, वे काने ही गये; (इसीलिए कानेकी शुक्राचार्य
कहते हैं) ।

शुक्रावा-पु० [फा०] वह रक्तम जो बकील या पेशकारको
मुकदमा जीतनेके बाद, मेहनतानेके अतिरिक्त दी जाय ।

शुक्रिच-वि० [सं०] दे० 'शुक्रल' । पु० चमक ।

शुक्रिया, शुक्रीया-पु० [फा०] कृतज्ञताप्रकाश, उपकार
मानना (करना, अदा करना) । अ० धन्यवाद ।

शुक्र-वि० [सं०] श्वेत, सफेद, शुभ्र; शुद्ध । पु० रजत,
चाँदी; ताजा नवनीत, ममलन; श्वेत वर्ण, शुभ्र वर्ण;
शुद्ध पक्ष, उजाला पाव; शुद्ध नामक योग जिसमें शुभ
कार्य करनेका विधान है (योग); चूका; वैशाख मास; एक
सत्त्व; कुट्ट पुष्पा; श्वेत कोष; धव वृक्ष; आँखके सफेद
अंगमें होनेवाला एक रोग; श्वेत परट वृक्ष; शिव; विष्णु;
नामधर्मीकी एक उपाधि । -कंड-कंडक-पु० दातृह
पक्षी, पनडुब्बी चिरिया, जलकाक । -कंद-पु० मरिच-
कंद; श्वेतकंद; अतिविष । -कंडा-श्री० अतिविषा,
सफेद अतीस । -कंडीट-पु० सफेद केकवा । -कन्दा-
(मंथ)-वि० शुक्रमशील । -कुह-पु० सफेद कोठ ।
-क्षीरा-श्री० काकोली । -कुच-पु० सिंघाका नामक
जल-फल । -धातु-श्री० खरिया मिट्टी । -पक्ष-पु०
महीनेके दो भागोंमेंसे वह भाग जिसमें चंद्रमाकी कला
प्रतिदिन बढ़ती है और रात उल्लेख होना जाता है ।
-पुष्प-पु० छत्रक, कुट्ट; मरुबक, मरुआ । -पुष्पा-श्री०
नागर्दती; जीतकुंभी; कुंड । -पुष्पी-श्री० नागदती ।

—पृष्ठक-पु० सिद्धक वृक्ष । —फल-पु० मदार । —फला-
—ली० मदार; क्षमी । —फेन-पु० समुद्रफेन नामक
औषध । —बल-पु० एक जिन देव । —मंजरी-ली०
सफेद निगुंड़ी । —मंजल-पु० काली पुतलीके अतिरिक्त
औसका सफेद अंश । —मेह-पु० प्रमेह रोगका एक
प्रकार । —बन्धुस्-पु० यन्त्रदेवके दो भागोंमेंसे एक ।
—रोहित-पु० सफेद और लाल रंग; श्वेत रोहित वृक्ष;
श्वेत रोहित मछली । —वायस-पु० बगला पक्षी; श्वेत
काक । —वृत्त-वि० सदाचारी । —शाख-पु० श्वेतशाख
वृक्ष; गिरिनिव ।

शुद्धक-पु० [सं०] शुद्ध पक्ष; श्वेत वर्ण । वि० श्वेत ।
शुद्धक-वि० [सं०] श्वेत ।
शुद्धांग-पु० [सं०] मोर ।
शुद्धांग-ली० [सं०] शोफालिका ।
शुद्धांगी-ली० [सं०] शोफालिका ।
शुद्धा-ली० [सं०] सरस्वती; शर्करा; काकोली; बिदारी;
सुधी, सेंदुब; श्वेत वर्णवाली स्त्री ।
शुद्धाचार-वि० [सं०] शुद्ध आचरणवाला ।
शुद्धापांग-पु० [मं०] मयूर ।
शुद्धाम्ब-पु० [सं०] अम्ब, चुम्बिका झाक ।
शुद्धार्क-पु० [सं०] सफेद मदार ।
शुद्धार्क (वृ)-पु० [सं०] आँवोंके सफेद अंशमें होनेवाला
एक रोग ।

शुद्धिमा (मय्)-ली० [सं०] श्वेतत; ।
शुद्धोपला-ली० [सं०] रवादार चीनी ।
शुद्धोदन-पु० [सं०] अरवा चावल ।
शुद्धि-ली० [सं०] वायु; नेत्र, प्रकाश; अग्नि ।
शुद्धाल-पु० [अ०] दे० 'शुगल' ।
शुग्गुन-पु० दे० 'शकुन' ।
शुद्ध-ली० [सं०] शोक, सोच, दुःख ।
शुद्धि-वि० [सं०] पवित्र, शुद्ध; अनुग्रहत, निर्दोष,
निरपराधी; निर्मल, नाफ; निष्कपट, निश्छल, शुद्धहृदय;
श्वेत, उज्जला; चमकदार, वैदीप्यमान । पु० अग्नि;
सौराग्नि, सूर्यकी अग्नि; सूर्य; चन्द्र; शुद्ध; ज्येष्ठ; आषाढ़;
प्रायश्चित्त; श्वेत वर्ण; शृंगार; शिव; कार्तिकेय; माङ्गल्य;
चित्रक; वृक्ष; अर्ध वृक्ष, मदारका पेड़; शुद्धाचरण, सदा-
चार; प्रकाश-रश्मि; मन्त्रा मंत्री, ईमानदार सलाहकार,
सच्चा मित्र; अन्तर्मात्रके समर्थका होम । ली० पवित्रता,
सफाई । —कर्मा (मैय्)-वि० पवित्र कर्म करनेवाला,
अच्छे काम करनेवाला । —मुस-पु० पीपलका पेड़,
अमरव वृक्ष । —प्रणी-ली० आचमन । —मल्लिका-
ली० नवमल्लिका, नेपाड़ीका फूल । —रोषि(स्)-
पु० चद्र । —वाक् (व्)-पु० एक पक्षी । —व्रत-वि०
पवित्र संकल्प करनेवाला, अच्छे कामका बीड़ा उठाने-
वाला । —अवा(वस्)-पु० विष्णु; एक प्रजापति ।
—रिमत-वि० शुद्ध वास्तव्युक्त; निश्छल हँसी ईसनेवाला ।

शुद्धि(स्)-ली० [सं०] दीप्ति, प्रकाश ।
शुद्धिकापुष्प-पु० [सं०] केतकी, केवड़ा ।
शुद्धिता-ली०, शुद्धि-पु० [मं०] श्रुतिका भाव; पवि-
त्रता ।

शुद्धिमा(मय्)-वि० [सं०] वैदीप्यमान, प्रकाशयुक्त ।
शुद्धि(विन्)-वि० [सं०] दे० 'शुद्धि' ।
शुद्धा-वि० [अ०] नीर, बहादुर ।
शुद्धावत-ली० [अ०] नीरत्व, बहादुरी ।
शुद्धीर-पु० [सं०] नीर ।
शुद्धीरता-ली० [सं०] वीरता ।
शुद्धीर्ष-पु० [सं०] दे० 'शुद्धीरता' ।
शुद्धिः, शुद्धि-ली० [सं०] शतद्रु नदी, सतलज नदी ।
शुद्ध-पु० [का०] ऊँट । —कीमा-वि० ऊँटकी तरह बैर
रखने और बदला लेनेवाला, जिसका कीमा, द्वेष कभी
न निकले । —ज्ञाना-पु० ऊँटोंका अस्तबल, उद्ग्रहाला ।
—शामना-पु० बेमा नाज-नखरा; कपट । —वाय-
पु० एक चौपाया जिसकी गर्दन ऊँटकी-सी और सूर
बैलका-सा होता है, जिराफा । —माळ-ली० छोटी
तोप जो ऊँटकी पीठपर लाठी और उसीपरले चलाई
जाती है । —मुरा-पु० एक विशालकाय पक्षी जिसकी
गर्दन ऊँटकी तरह लंबी होती है और जो पर होते
हुए भी उड़ नहीं सकता । —सवार-पु० सैनीसवार ।
शुद्धनी-ली० [का०] मवितव्यता, आगे होनेवाली मान,
होनहार; आत्मिक दुर्घटना । वि० होनेवाला, होनहार ।
शुद्धा-वि० [का०] जो हो या चीन चुका हो (समासमें-
पासशुद्धा, रजिद्धाशुद्धा) ।

शुद्ध-वि० [सं०] पवित्र; निर्मल, साफ; निर्दोष; सही,
ठीक; श्वेत, सफेद; चमकीला; बिना मिलावटका, सधा,
असली; साफ, निर्मल किया हुआ; निश्छल, केवल,
अद्वितीय; अधिकारप्राप्त; नेत्र किया हुआ; अनुनासिक,
निष्पाप; निष्कलक । पु० मैथा नमक; काली मिर्च;
शुद्धात्मा; कोई शुद्ध वस्तु; शिव । —कर्मा (मैय्)-वि०
शुद्ध कार्य करनेवाला; पवित्र । —अंच-पु० गधा । —अद्ध-
पु० चतुष्पद । —वृत्त-वि० दे० 'शुद्धवृत्त'; शुद्ध हाथी दाँत-
का बना । —वृत्-वि० सफेद दाँतीवाला । —घी,-
शुद्धि-प्रति-वि० शुद्ध विचारोंवाला, मन्त्रा, ईमान-
दार । —पक्ष-पु० शुद्ध पक्ष । —प्रतिमास-पु० एक
समाधि । —मांस-पु० बिगिष्ट दगमें पकाया हुआ मांस
(आ०वे०) । —मुख-पु० अच्छी तरह सिलखाया हुआ
घोड़ा । —वैश्य-वि० निर्दोष बगला । —वहिका-
ली० शुद्धची, शुद्ध । —व्यूह-पु० व्यूहका एक प्रकार
जिम्मे अगले भागमें हाथी, मध्यमें तीजगामी घोड़े और
पक्षमें मत्त गज होते हैं । —शुद्ध-पु० आँखोंकी पुतलीका
एक तरहका विकार । —हार-पु० एक शीर्षक मोती-
वाला हार । —हृदय-वि० जिसका हृदय पवित्र हो ।

शुद्धता-ली०, शुद्धत्व-पु० [सं०] शुद्ध होनेका भाव ।
शुद्धाव-पु० [सं०] अंतःपुर, रनिवास । —चारी (विन्)-
—पालक, —रक्षक-पु० अतःपुररक्षक ।

शुद्धाता-ली० [सं०] राजपक्षी, रानी ।
शुद्धा-ली० [सं०] इंद्रजी ।
शुद्धात्मा(मय्)-पु० [मं०] प्रिय । वि० पवित्र, शुद्ध,
साफ हृदयवाला ।

शुद्धापदशुद्धि-ली० [सं०] अपद्वुति अलंकारका एक भेद,
जहाँ वाम्त्विक उपमेयका निषेध करके उपमानकी स्थापना

की जाय ।

सुभाशय-वि० [सं०] साफ हृदयवाला ।

शुद्धि-क्री० [सं०] शुद्ध करनेकी क्रिया, मार्जन; पवित्रता; चमक; कांति; सफाई; परिशोध; सच्चाई; निर्दोषता; रिहाई; मुधार; न्यक्कलन, बुरा कर्म करने, दूसरे धर्ममें परिवर्तित होने आदिके कारण अशुद्ध, अपवित्र हुए व्यक्तिको शुद्ध करते समयका संस्कार (वैदिक धर्म); पुर्ण । -**कर-वि०** पवित्र करनेवाला । -**कृत्-पु०** धोबी । -**पत्र-पु०** वह पत्र, सूची, लिस्ट जिसमें (प्रायः) शब्द या अर्थ सही, शुद्ध करके रखे गये हों ('शुद्धिपत्र' प्रायः गलत छपी किताबोंके अन्तमें लगाया जाता है); शुद्धिके पश्चात् धर्म-शास्त्र पंडितों द्वारा शुद्धि या प्रायश्चित्तके प्रमाणरूप दिया गया व्यवस्थापत्र ।

शुद्धोदय-पु० [सं०] शुद्धके पिता त्रिनकी राजधानी कापिलवस्तु की ।

शुद्धयशुद्धि-क्री० [सं०] शुद्ध और अशुद्धका भाव ।

शुनक्षोपः, शुनक्षोप-पु० [मं०] एक ऋषि जो वैदिक ऋषि अजीतके सँकेले पुत्र थे ('यितरेव ब्राह्मण'में इनकी कथा इस प्रकारकी मिलती है—मिस्तान महााराज हरिश्चंद्रने मेनोती मामी कि पुत्र होनेपर मैं उसे वरुणदेवकी बलि चढ़ा दूँगा। उन्हें रोहित नामक पुत्र हुआ, परंतु उन्होंने अपनी प्रतिष्ठाकी पूर्ति नहीं की, उसे ठारले गये। राजाके वरुण द्वारा पीकित किये जानेपर रोहितने अजीतको भी साथे देकर बलिके लिए शुनक्षोपको खरीदा। यूपमें बाँधे जानेपर शुनक्षोपने विष्णु, इंद्र आदि देवताओंकी स्तुति की और इन देवताओंकी कृपासे वे सत्यमे वच गये। करुणा से ही विष्णुमित्रने शुनक्षोपको अपने पुत्रके रूपमें ग्रहण कर लिया और उनका नाम देवरथ रखा। पुराणोंमें भी इनके विषयमें इस प्रकारकी कई कथाएँ मिलती हैं १); कुत्सेका किंग ।

शुन-पु० [सं०] कुत्ता ।

शुनक-पु० [सं०] कुत्ता; कुत्सेका पिछा; भृगुवंशके एक गोत्रप्रत्येक ऋषि । -**चंचुका-क्री०** चंचु शाक, चंच नामक साग । -**चिह्नी-क्री०** एक साग, बसुआ ।

शुनासीरः, शुनासीर-पु० [सं०] दो वैदिक देवता जिनकी कृपासे अन्नकी उत्पत्ति और रक्षा होती है (उन दोनों देवता थे माने गये हैं—बायु और आश्रित, इंद्र और वायु या इंद्र और सूर्य); इंद्र; उत्कृ ।

शुभि-पु० [सं०] कुत्ता ।

शुनी-क्री० [सं०] कुकुरी, कुतिया; कुभांकी ।

शुनीर-पु० [सं०] कुकुरीसमूह, कुतियाँका समूह ।

शुन्य-वि० [सं०] खाली, रिक्त । पु० शून्य; कुतियोंका समूह ।

शुबहा-पु० [अ०] भ्रम, धोखा, संदेह ।

शुभंकर-वि० [सं०] मंगलकारी, कल्याणकर ।

शुभंकर-वि० क्री० [सं०] मंगलकारिणी । क्री० पार्वती, दुर्गा ।

शुभंजु-वि० [सं०] मंगलान्वित ।

शुभ-वि० [सं०] मंगलमय, कल्याणकर; शुद्ध; अनुकूल; अच्छा; चमकीला; सुंदर; भाग्यशाली; वैदह । पु० मंगल,

कल्याण; सुख; एक सुगंधित लकड़ी; पक्काठ, पटुमकाठ; एक आभूषण; जल; विष्कामादि सप्ताहम योगोंमेंसे तेहसवाँ योग (ज्यो०) । -**कथ-वि०** अच्छी बातें कहनेवाला ।

-**कर-वि०** कल्याणकारी, मंगलकारक । -**करी-वि०**

क्री० मंगलकारिणी । क्री० पार्वती । -**कर्म(शु)-पु०**

सत्कर्म । -**कर्म(मंजु)-वि०** अच्छा कर्म करनेवाला ।

पु० स्वरंका एक अनुसर । -**काम-वि०** कल्याण चाहने-

वाला । -**कृत्-वि०** दे० 'शुभकर' । -**गंधक-पु०**

एक गंधद्रव्य, गोल । -**ग-वि०** सुंदर; भाग्यवान् । -**गा-**

-**क्री०** गान्तिका नाम । -**ग्रह-पु०** मंगलकारी, अनुकूल

ग्रह, सौम्य ग्रह जो वे हैं—शुक्र, शुक्र, अपापयुक्त शुभ

और अर्द्धाधिक चंद्र । -**क्षितक-वि०** किसीकी भलाई

चाहनेवाला, हितैषी । -**क्षति-क्री०** कल्याण, अम्युद्ध ।

-**वर्ती-क्री०** सुंदर दाँतोंवाली क्री० । -**द-पु०** अवस्थ

वृद्ध । वि० मंगलप्रद । -**दर्श-दर्शन-वि०** सुंदर

जिसके दर्शनेमें मंगल हो, जिसका मुँह देखनेसे शुभ

शकुन हो । -**दायी(विन्)-वि०** मंगलप्रद । -**दृष्टि-**

-**वि०** दे० 'शुभदर्श' । -**नामा-क्री०** शुद्ध पक्षकी पंचमी,

दशमी और पूर्णिमा । -**पत्रिका-क्री०** शाकपत्री । -**प्रह-**

-**वि०** कल्याणकारी । -**लक्षण-वि०** अच्छे लक्षणोंवाला ।

-**लभ-पु०** शुभ सुदृष्ट, मंगल वही । -**वासन-पु०**

सुखको सुगंधित करनेवाला द्रव्य । -**विमलगर्भ-पु०**

एक बोधिसत्त्व । -**शंसी(सिन्ध)-वि०** मंगलकी सूचना

देनेवाला । -**सकुन-पु०** मंगल शकुनवाला पक्षी ।

-**सूचक-वि०** मंगलकी सूचना देनेवाला । -**सूचन-**

-**पु०**, -**सूचना-क्री०** मंगलवापन, मंगलसूचना । -**स्वली-**

-**क्री०** मंगलभूमि; यक्षस्वली ।

सुभांग-वि० [सं०] सुंदर ।

सुभांगी-वि० क्री० [सं०] सुंदरी (नारी) । क्री० काम-

देवकी पत्नी रति; कुदेरकी पत्नी ।

सुभांगी(विन्)-वि० [मं०] दे० 'शुभांग' ।

सुभांजन-पु० [सं०] गोभांजन वृक्ष ।

सुभा-क्री० [सं०] ओभा, सौंदर्य; दांति, कांति; कामना,

इच्छा; वशकोन्मन; गोरीचन; गभी; प्रियतु; द्रव्य दूबा;

देवसमा । पु० दे० 'सुबहा' ।

सुभाकांक्षी(विन्)-वि० [सं०] हितैषी, हितेच्छु ।

सुभाक्ष-पु० [सं०] जिह ।

सुभागमम-पु० [सं०] मंगलप्रद आगमन, सुख आगमन ।

सुभागुहाय-वि० [सं०] मांगलिक कर्म ।

सुभाग्वित-वि० [सं०] मंगलयुक्त ।

सुभापांगा-क्री० [सं०] सुंदर क्री० ।

सुभापाह-वि० [सं०] मंगलकारी ।

सुभाषीवाह-पु० [सं०] मंगलकारी, मंगलसूचक आशी-

बंचन ।

सुभाशीष-पु० दे० 'शुभाशीषद' ।

सुभाशुभ-वि० [सं०] शुभ और अशुभ, भला और बुरा ।

सुभिका-क्री० [सं०] पुष्पहार ।

सुभेक्षण-वि० [सं०] सुंदर नेत्रोंवाला ।

सुभोदय-वि० [सं०] भाग्यशाली ।

सुख-वि० [सं०] उल्लसल; देवीद्यमान, चमकीला; सफेद ।

पु० इक्षैत वर्ण, सफेद रंग; चंदन; अमरक, अबरक; सेवा नमक; सौदी; कसीस; खस; स्वर्ग। -**कर**-पु० (रहेत किरणोवाला) चंद्रमा; कपूर। -**इंती**-**खी**० सुदंती; पुष्पदंत दिव्यजकी मार्या। -**आनु**-पु० चंद्रमा। -**रसिम**-पु० चंद्रमा।

मुअता-**खी**० [सं०] उज्ज्वलता, सफेदी; दीप्ति।

मुआंशु-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर।

मुआ-**खी**० [सं०] गंगानदी; स्फटिक; फिटविरा; वध-लेचन।

मुआलु-पु० [सं०] महिष कंद; इक्षेताक्ष।

मुअि-पु० [सं०] मद्रास; सूर्य।

मुअिका-**खी**० [सं०] मधुसर्करा।

मुआर-पु० [फा०] जय, आतंक; गिनती; तलमीना। वि० गिननेवाला (समासमें)। -**कुनिदा**-पु० गणना करनेवाला; निश्चय कपरीकी सख्या, अंश (ग०)। -**दाना**-पु० तसलीहमें हर सी दानोंके बाद रहनेवाला बड़ा दाना। -**नवीस**-पु० गिनती लिखने, हिसाब करनेवाला।

मु-**मैं** न रहना, -**मैं** न होना-बेशुमार, संख्याहीन होना; बिल्कुल मामूली, नहना होना। -**मैं** न जाना-कुछ न समझना, नितांत उपेक्षणीय मानना।

मुमारी-**खी**० [फा०] गिननेकी क्रिया (समासमें)।

मुमाक-पु० [ज०] बायाँ हाथ; उत्तर दिशा। -**क**-**रुबा**-वि० (मकान) जिसका सामना उत्तरी ओर हो। **मुमाखी**-वि० उत्तरका, उत्तरी। -**अमरीका**-पु० उत्तरी अमरीका। -**सरकार**-**खी**० मद्रास राज्यका एक विभाग, उत्तरी सरकार।

मुस्ता-पु० शीरवा।

मुसआस-**खी**० [ज०] 'शुस'का बहु० (हिंदीमें एकवचनमें प्रयुक्त), आरम।

मुस-पु० [ज०] शुसम आरम, इश्ता; उठान।

मुस्क-पु० [सं०] कर, महसूल जो राज्य द्वारा वाद, मार्ग आदिपर लिया जाता है; राज्य द्वारा लिया जानेवाला कर; आवेदनपत्र देने, पढ़ने आदिका कर, फीस (जैसे-प्रवेशमुस्क आदि); कन्याके माता-पिता द्वारा बरके माता-पितासे अथवा स्वयं बरने कन्या देनेके बदले लिया हुआ द्रव्य; दहेज; स्त्री-धनका भेट (जैसे-मगिनो-मुस्क); समीपके बटले दिया गया द्रव्य; प्राज्ञ भन-मृत्यु, कीमत; लाभ। -**आहक**, -**माही**(**हिस्**)-पु० मुस्क एकत्र करनेवाला। -**व**-पु० विवाहके लिए मुस्क देनेवाला। -**साखा**-**खी**० मुस्क जमा करनेकी जगह। -**खान**-पु० मुस्कशाळा; वह स्थान जिसका उपयोग करनेपर फीस देनी पड़े।

मुस्कअय्यस-पु० [सं०] चुंगीका जल्यस।

मुस्क, **मुस्क**-पु० [सं०] तौबा; रस्ती; आचार; निबम; यश-कर्म; जलसाभिष्य। -**ज**-पु० पीतल।

मुस्क-पु० [सं०] रस्ती; तौबा।

मुस्वारि-पु० [सं०] गंधक।

मुअ-**खी**० [सं०] बच्चेकी सेवा करनेवाली माता।

मुअक-वि० [सं०] सेवा-कार्य करनेवाला; आवाकारी।
पु० नौकर, दास।

मुअूषण-पु० [सं०] सेवा करनेकी क्रिया, परिचर्या; आशा-पावन; कर्तव्यनिष्ठा; सुननेकी इच्छा।

मुअूषा-**खी**० [सं०] सेवा-दहल; (बच्चेका) पावन-पीपम; खिदमतगारी; स्वास्थ्यकी देखरेख, परिचर्या; कथन; सुननेकी इच्छा। -**प्रवाखी**-**खी**० रोगीकी दायोचित सेवाका ङग, निबम।

मुअूषिता(**र**), **मुअूषी**(**वि**)-वि० [सं०] आवाकारी।

मुअूषु-वि० [सं०] सेवा करनेकी उत्सुक; आवाहनकर्ता; सुननेका अभिलाषी।

मुअ-पु०, **मुअी**-**खी** [सं०] सुखना; विवर, विल।

मुअि-**खी**० [सं०] शोष, सुखना; विवर, विल; सुरास; ताँपके जहरीले दाँतका सुरास; बल।

मुअिर-वि० [सं०] विवरयुक्त, सुरासोंसे भरा हुआ। पु० विवर, छेद; बंड़ी आदि मुँहसे फूँककर बजाये जानेवाले बाने; वायुमंडल, आकाश; अभि; चूहा।

मुअिरा-**खी**० [सं०] नदी; नली नामक गंधद्रव्य।

मुअिल-पु० [सं०] बाघ।

मुअक-वि० [सं०] सुखा, अनार्द्र, जिसमें गीलापन न हो। शीथ; नीरस, कठिन, दिमागकी धकानेवाला (जैसे-मुअक कार्य); समाजके सुख-दुःखपर ध्यान न रखनेवाला, हृदय-हीन (जैसे-मुअक व्यक्ति); निष्प्रयोजन, निस्सार; रिक्त; जिसका कोई कारण न हो; कठोर। -**कह**-पु० ऐमा कह जिसका कोई कारण न हो। -**कास**-पु० सुखा खोसी। -**गर्भ**-पु० एक स्त्री-रोग जिसमें वान-दीपबन्ध गर्भ सुख जाता है। -**शीमय**-पु० कड़ी। -**कर्चन**-पु० निरर्थक बात। -**तर्क**-पु० बेकार बहस। -**तोय**-वि० (तालाब, नाला आदि) जिसका जल सूख गया हो। [**खी**० 'मुअकतोया'।] -**कदिस**-पु० ऐसा रोना जिसमें ओंस न निकलने हो। -**रेवती**-**खी**० एक बालग्रह। -**कृष**-पु० धव हल। -**अण**-पु० वह धाव जो सूख गया हो, अच्छा हो गया हो, भरा, पूजा पाव।

मुअक-वि० [सं०] सुखा हुआ; क्षीण।

मुअका-**खी**० [म०] नीरसता, सुखापन; कठिनता; हृदय-हीनता; व्यर्थता।

मुअक-वि० [सं०] मांसभक्षी। पु० सूखा मांस; मांस।

मुअली-**खी**० [सं०] सूखा मांस; मांस।

मुअकांग-वि० [म०] जिसका शरीर सूख गया हो, दुबला-पतला। पु० धव वृक्ष।

मुअकांगी-**खी**० [म०] मोषिका, मोह; बलहीन जातिकी एक चिड़िया।

मुअार्ज, **मुअार्जक**-पु० [सं०] सोंद, झुंडी।

मुअ-पु० [सं०] सूर्य, सूरज; आग; शक्ति।

मुअ-पु० [सं०] सूर्य; अभि; वायु; लौ, लपट; दीप्ति, तेज; पराक्रम; पक्षी; शक्ति।

मुअा(**मव**)-पु० [सं०] शौर्य; दीप्ति, तेज; अभि; चित्रक वृक्ष।

मुअा-पु० [ज०] 'शहीद'का बहु०; गुदा; बदमाश, बदचलन। -**पव**, -**पता**-पु० गुर्जर, बदमाशी।

मुअरत-**खी**० [ज०] स्वाति, प्रसिद्धि, पक्षी; नेकनामी; बदनामी (दिना, पाना, होना)।

शुद्धरा-पु० [ज०] दे० 'शुद्धरत्न' ।

शुद्ध-पु० [सं०] किसी वस्तुका चिकना, सुकीला अग्र-भाग; जो आदिकी मालका सुकीला हिस्सा, टूँड; कीनोका सुकीला रोवा; दाढ़ी; शिखा; दवा; शोक, गम; जल-मलमें पैदा होनेवाला जहरीला कीड़ा; एक अन्न; किंग-बर्षक शुद्धभान औषधोंके प्रयोगसे होनेवाला रोग ।
-कीट-कीटक-पु० सुकीले रोवोंवाला एक कीड़ा ।
-ज-पु० जवासार । -तृण-पु० सुकड़ी नामकी घास जो निर्मल पशुओंके लिए बलवर्धक होती है । -घाव-पु० टूँडवाले अनाज (जैसे औ आदि) । -पत्र-पु० विषहीन सर्प । -पाक्य-पु० जवासार । -पिंडि, -पिंडी, -शिवा, -शिविका, -शिवी-की० केवौच, कपि-कच्छु । -हूँत-पु० एक विषैला कीड़ा ।

शुद्धक-पु० [सं०] टूँड; बर्षाका; रस एक प्रकारका जो जैसा अन्न; दवा ।

शुद्धर-पु० [सं०] बाराह, सुद्धर नामक पशु । -कंद-पु० बाराही कंद । -क्षेत्र-पु० सुद्धर खेत, सोरों नामक तोमरान्न । -दंष्ट्र, -दंष्ट्रक-पु० गुदप्रवाह, सुद्धरदाह नामक रोग । -पादिका-की० कोलशिवा; मेमकी फली ।

शुद्धराकांता-की० [सं०] बाराहकांता ।

शुद्धरी-की० [सं०] सुद्धरी, बाराही; बराहकांता ।

शुद्धरेह-पु० [सं०] मुस्ता, मोथा; कसेर ।

शुद्धल-पु० [सं०] अविलय घोड़ा, भटकनेवाला घोड़ा ।

शुद्धवती-की० [सं०] केवौच, कपिकच्छु ।

शुद्धा-की० [सं०] दे० 'शुद्धवती' ।

शुद्धास-पु० [सं०] सिरिस ।

शुद्धाव्य-पु० [सं०] शुद्धगुण ।

शुद्धी(किन्)-वि० [सं०] टूँडदार ।

शुद्धल-पु० [सं०] एक मछली; एक सुगंधित तृण ।

शुद्धी०-की० सुई ।

शुद्धि-की० [सं०] बुद्धि, बढ़ती । -पूर्ण-पु० आरम्भ वृद्ध, अमलतासका पेड़ ।

शुद्ध-पु० [सं०] वैदिक भाषों द्वारा निर्धारित वर्णव्यवस्था-म चतुर्ध्व वर्ण, सबसे निम्न वर्ण जिसका कर्तव्य अन्य तीन वर्णोंकी सेवा है (इस वर्णकी उत्पत्ति ब्रह्माके पैरोंसे मानी गयी है); अद्भुत, हरिजन; निम्न कौटिका व्यक्ति ।

-कव्य-वि० शुद्धसे मिलता-जुलता । -कृत्य-धर्म-पु० शुद्धका कर्तव्य । -अभ्या(भ्यन्)-वि० शुद्धसे उत्पन्न । -मित्र-पु० पलांडु, प्यात्र । -प्रेष्य-पु० शुद्धकी परिचर्या, सेवा करनेवाला ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य । -ओजी(विद्य)-वि० शुद्धके घर खानेवाला ।

-याजक-पु० शुद्धके लिए वस्त्र करनेवाला । -योनि-की० शुद्धाकी कोख । -बुद्धि-की० शुद्धका पेड़ा । -सेवन-पु०, -सेवा-की० शुद्धकी परिचर्या या नौकरी करना ।

शुद्धक-पु० [सं०] 'शुद्धकटिक' नाटकके रचयिता प्रसिद्ध कवि और राजा ।

शुद्धा-की० [सं०] शुद्ध वर्णकी की । -परिणयन, -वेदन-पु० शुद्धसे विवाह करना । -आर्ष-पु० वह निमकी पत्नी शुद्धा हो । -वेदी(विद्य)-पु० शुद्धसे

विवाह करनेवाला वस्त्र वर्णका व्यक्ति । -सुत-पु० किसी भी वर्णके सहवास द्वारा शुद्धाके वर्णसे उत्पन्न पुत्र ।

शुद्धाणी-की० [सं०] शुद्धकी की, शुद्धी ।

शुद्धाव्य-पु० [सं०] शुद्ध वर्णके स्वामीका अन्न; शुद्ध वर्णके स्वाधीन प्राप्त जीविका ।

शुद्धास्ता-की० [सं०] विमंगु वृक्ष ।

शुद्धी-की० [सं०] शुद्धाणी, शुद्धकी की ।

शुद्धीवृक्ष-पु० [सं०] वह जल जो शुद्धके स्पर्शसे अपवित्र हो गया हो ।

शुद्ध-वि० [सं०] शुद्ध; कृपा हुआ, रोगके कारण सृज हुआ; वदित, बढ़ा हुआ ।

शुद्धा-की० [सं०] बंदी, अपोजिहिका; प्राणिपशुत्वान्त; शुद्धस्वीके वे स्थान या वस्तुएँ जहाँ या जिससे छोटे-छोटे जीवोंकी बला होनेकी संभावना रहती है (वे स्थान या वस्तुएँ ये हैं-अग्निस्थल (चूल्हा), चक्की, श्राद्ध, अन्नस्थल, जलपात्र) ।

शुद्ध्य-वि० [सं०] अमंपूर्ण, रिक्त, खाली; निर्जन; तुच्छ; हीन, रहित (जैसे-ज्ञानशुद्ध्य); अर्धहीन; निराकार; उदात्त । पु० रिक्ता; अभावसूचक चिह्न, विदुः निर्जन स्थान; खाली जगह; आकाश; अभाव; अन्न; एक कर्ण-भूषण, कर्णकूल । -कर्ण-पु० कर्णकूलसे अर्णकृत कान ।

-वर्म-पु० एक फल, पपीता । वि० निस्तार । -इष्टि-की० लघ्वहीन, उदात्त इष्टि । -पथ-पु० आकाश; निर्जन मार्ग । -पदवी-की० ब्रह्मरूप । -पाल-पु० स्थानापन्न व्यक्ति; प्रतिशासक (रीजेंट) । -बहरी-की० [हि०] एक रोग जिसमें शरीरका कोई भाग संवेदनशून्य हो जाता है ।

-मध्य-वि० (वह वस्तु) जिसका भीतर हिस्सा खाली हो (नल, नलिका, नरकट आदि) । -मनस्क, -मना (मस्)-वि० अन्यमनस्क, अग्नचेता, कोई काम करते, किनीकी बान सुनते हुए भी मनकी दूसरी ओर लगाये रखनेवाला । -मूल-वि० जिसका आधार अजिहित हो (मेना) । -बाह्य-पु० वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव, ईश्वर आदिकी सत्ता स्वीकार नहीं करता; बौद्ध दर्शन; नास्तिकता । -बाही(विन्)-पु० बौद्ध; नास्तिक ।

-इह-पु० सोना । -इत्ता-वि० जिसका हाथ खाली हो ।

-हृदय-वि० शून्यमनस्क; मुले दिलवाला; जिसके मनमें किसी तरहका संदेह न हो ।

शुद्धता-की०, **शुद्धत्व-पु०** शून्य होनेका भाव ।

शुद्ध्या-की० [सं०] नली, नलिका, पोला नरकट; महा-कंटकिनी, रजुही, धूर, सेंडूङ्ग; ध्व्या, नौस ली ।

शुप-पु० दे० 'शुप' ।

शुम-वि० [ज०] मनहूस; कजूस, सूम । -कदम्-वि० चौपटचरण, मनहूस ।

शुमी-की० मनहूसी, अभावापन ।

शूरगम-पु० [सं०] एक समाधि; एक बोधिसत्त्व ।

शूर-वि० [सं०] शौर्यशाली, वीर; शक्ति-संपन्न । पु० शौर्य-वान् या वीर व्यक्ति; धर्म; सिद्ध; शूरज; कुत्ता; मुर्गा;

विजय वृक्ष; साल वृक्ष; अर्क, मदारका पेड़; लिकुच, लकड़; मयूर; कृष्णके पितामह । -कीट-पु० कमजोर योद्धा ।

-पुत्रा-की० अग्नि । -भू-भूमि-की० उपसेनकी

एक कन्या ।-भागी (विश्व)-वि० अपनी वीरतापर कर्म करानेवाला, अपनी वीरताके विषयमें लंघी-वीही हाँकनेवाला ।-बागी-वर-पु० विश्व ।-बिष्ठा-की० दुःख-विधा ।-बीर-पु० वीर व्यक्ति, योद्धा ।-क्लोक-पु० वीरोंके शौर्यपूर्ण कार्योंकी स्तुति, प्रशंसा, कहानी ।-सेन-पु० मयुरा और उसके आस-पासका प्रदेश; कृष्णके वीरतावाक्य नाम जो शूरसेन प्रदेशके राजा थे ।-सेनप-पु० शूरोंकी सेनाके पातक, रक्षक, कालिकेव ।-सेना-की० मयुरा ।

शूरज-पु० [सं०] एक ब्रमीकंद, मूरज, ओछ, श्वोनाक, शोणकका पेड़ ।

शूरजोद्भुज-पु० [सं०] हरित्रांग पक्षी ।

शूरता-की०, शूरत्व-पु० [सं०] शूर होनेका भाव, वीरता ।

शूरसाईं-की० दे० 'शूरता' ।

शूरभूम्य-वि० [सं०] शूर न होते हुए भी जो स्वर्ध ही अपनेको शूर मानता हो, शूरमानी ।

शूर-की० [सं०] ओषधिविशेष । * पु० शूर, योद्धा; सय, रवि ।

शूरिद्युग-पु० [सं०] कवचपट्ट ।

शूर्प-पु० [सं०] अन्न साफ करने, पछोड़नेके लिए सोक, नरुके छिलके आदिका बना पात्र, घुप; दो द्रोणका एक प्रमाण ।-कर्ण-पु० वह जिसके कान घुपके सज्ज हो-हाथी; गणेश ।-जन्मा-जन्मी-की० रावणकी रविन जिसने रामके रूपपर मोहित हो दंडकारण्यमें जा वनसे विदाहका प्रस्ताव किया और एकपत्नीव्रत रामने हसपर संकेत कर कहमण द्वारा उसे नाककान-विहीन करा दिया ।-मक्षा-की० [हिं०] दे० 'शूर्पणखा' ।-पर्णी-की० क्षितीविशेष, वनमूँग, वनवर्द ।-बास-पु० घुपके हिलानेसे उत्पन्न हवा ।-सुति-पु० शूर्पकर्म, हाथी ।

शूर्पक-पु० [सं०] कामदेवका शत्रु एक राक्षस ।

शूर्पकारसि, शूर्पकारि-पु० [सं०] कामदेव ।

शूर्पी-की० [सं०] छोटा घुप; शूर्पणखा; एक सिलौना ।

शूर्म-पु०, शूर्मि, शूर्मिका, शूर्मी-की० [सं०] लोह-प्रतिमा, लोहेकी मूर्ति; निहार ।

शूल-पु० [सं०] शरीरगत वातप्रकोपजन्य एक वेदना-रोग (यह अधिकतर रेटमें होता है । इस रोगके होनेपर ऐसा अनुभव होता है कि कोई बार-बार कौटास चुनो रहा है); वेदना, व्यथा; पीड़ा; गठिया; शूल तुलसीका लोहेका कौटा; विशूल; शिवका विशूल; एक शूल, भण्डा, माला; प्राचीन कालमें शूर्युद्ध देनेका एक औजार, सूली; मांस भूननेका कौटा, सीखना; वेतन, ध्वज, हाथा; शूर्यु; नीलविषके अनुसार विष्कम्भ आदि सप्ताईस योगोंमेंसे नवौं योग ।-शाल-पु० शिव ।-श्रंथि-की० माला नामक दृष्ट ।-श्रद्धा-श्रद्धा (हिन्दु)-पु० शिव ।-शालज-पु० एक अनुवेदीय ओषध, मूत्र, लौहकिट्ट ।-ज्ज-पु० तुंडर वृक्ष । वि० पीडाका नाश करनेवाला, वेदनाहर ।-ज्जनी-की० नरसह जैसा एक पौधा सज्जी मिट्टी (?) ।-हिंद (पु०) पु० हिंदु, हाँग ।-जम्बा (जम्ब) -जम्ब-पु० शिवा-जम्ब, -जम्बरी-की० दुगाँ ।-जारी (विश्व)-

पु० शिव ।-जम्ब (पु०) -पु० शिव ।-जामान-पु० लैव-जल कवच; कई ओषधियोंकी मिलाकर बना हुआ एक चूर्ण जो शूल रोगमें खाया जाता है (आ० वे०) ।-नाशिली-की० हाँग ।-जम्बी-की० शूल नामक घास ।-जामि-पु० शिव ।-जामि-पु० दे० 'शूलजामि' ।-जोत-पु० एक नरक ।-जम्ब-पु० शिव ।-जम्ब-पु० ताकमखाना ।-जम्ब-पु० परंठ वृक्ष ।-जम्बी-की० बरानी, जम्बान ।-जम्ब-पु० पुष्करमूल ।-जम्ब-वि० शूल धारण करनेवाला । पु० शिव ।-जम्ब-पु० हाँग ।-जम्ब-जम्ब-शूल चुमानेकी सी पीडाका औषा ।-जैमा-तीव्र व्याधा उत्पन्न करना ।

शूलक-पु० [सं०] दुर्मिनीत घोडा, भवकनेवाला, अश्विक घोडा ।

शूलना-ज० कि० शूलकी भाँति गडना; पीडा उत्पन्न करना ।

शूलक-वि० [सं०] जिसपर शिवके विशूलकी छाप हो ।

शूला-की० [सं०] सूली; वेदना ।

शूलाकृत-पु० [सं०] लोहेकी सलालपर भूना गया मांस ।

शूलारि-पु० [सं०] हंगुली ।

शूलि-वि० [सं०] कुतभाटी । पु० शिव । की० सूली ।

शूलिक-पु० [सं०] कबाब; शूकर; दुग्गा; शूलपर चढ़ानेवाला; शास्त्र और शूरासे उत्पन्न संतान । वि० शूल धारण करनेवाला; सीखनेपर भूना हुआ ।

शूलिका-की० [सं०] सलाल जिनमें मांस गोदकर भूनते हैं ।

शूलिन-पु० [सं०] बरगदका पेड़ ।

शूलिनी-की० [सं०] दुग्गा ।

शूली-की० [सं०] एक प्रकारकी घास, शम्पनी; शूल, तीव्र वेदना; दे० 'सूली' ।

शूली (विश्व)-वि० [सं०] शूल धारण करनेवाला; शम्प रोगसे पीडित । पु० शिव; मालावरदार; बरहा ।

शूलोत्था, शूलोत्था-की० [सं०] एक लता, सीमराजी ।

शूलवि-वि० [सं०] शूलमें खोसकर पकाया हुआ; सूली देने योग्य । पु० कबाब ।-पाक-मांस-पु० कबाब ।

शूलल-पु० [सं०] शूलल, सिक्कर, सिक्की; हाथीका पैर बाँधनेकी लोहेकी जजीर, निगड, पादबन्धन; लोहेकी सिक्कर, वेडी; बंधन; कमरमें पहननेका एक गडना, करवनी; नापनेकी जजीरा; परंपरा, सिलमिला ।-बद्ध-वि० जंजीर या बेडीमें जकड़ा हुआ ।

शूललक-पु० [सं०] ऊँ, उँट; हाथी सज्ज जानवरोंके पैरोंकी बाँधनेके लिए काठकी बनी एक प्रकारकी बेडी जिनमें वे भाग न सकें; दे० 'शूलल' ।

शूललता-की० [सं०] कमिकता, शूललबद्धता ।

शूलल-की० [सं०] परंपरा, क्रम; कौटिकम, रेणी, कमरकी पेटी जिससे पुरुष अपनी धोती आदि बाँधते हैं, कमरबंद; दे० 'शूलल' ।-बद्ध-वि० कमचुक्त, शूललित ।

शूललित-वि० [सं०] सिक्कीमें जकड़ा हुआ; बँधा हुआ; कमचुक्त ।

शूलली-की० [सं०] कौलिकाश, ताकमखाना ।

शृंग-पु० [सं०] पर्वतशिखर, पहाड़ी की चोटी, छात्रा; मकान, मंदिर आदिका ऊपरी हिस्सा; सँगा; ऊपरी भाग; कोटि, सिरा; चर्मभाकी नोक, शशिबिषाण; मजदूर; बाणकी नोक; सींग; सींगका या अन्य वस्तुओंका बना सींगके आकारका फूँकेनेसे बजनेवाला बाजा, सिंघा, बिषाण; शृंगी कवि, श्रम्य-शृंग की दशरथके जामाता थे; प्रयुक्त, अपिचार, शासन, प्रधानता; उत्कर्ष, अशुद्धता; कामोद्रेक; चिह्न; स्तन; पिचकारी; कमल; कूर्मशीर्षक वृक्ष; उत्तम; एक प्रकारका म्यूह; जीवक नामक औषधि-शूल । वि० नुकीला; तीक्ष्ण । -कंद-पु० शृंगाटक, सिंघावा । -कूट-पु० एक पर्वत । -गिरि-पु० शृंगकूट । -प्राहिस्ताम्बा-पु० मरकहे साँझका एक सींग एकत्र केनेपर दूसरा सींग भी आसानीसे पकड़ा जा सकता है, इसी तथ्यके आधारपर यह न्याय बना है; इसका तात्पर्य यह है कि किसी दुष्कर कार्यका कुछ हिस्सा हो जानेपर उसका शेष भाग भी मंजब हो जाता है । -ज-पु० अशुद्ध चंदन, अगर; बाण । वि० शृंगसे उत्पन्न । -खर-पु० पर्वत । -पुर-पु० दे० 'शृंगपुर' । -प्रहारी(रिन्)-वि० सींगसे मारनेवाला, नाग चलावेवाला । -प्रिष-पु० शिष । -शूल-पु० सिंघावा । -श्रीही (हिन्)-पु० चंपक, चपा । -बाध-पु० बगानेका सींग । -मिष-पु० कुण्ठ । -बेर-पु० एक नाग; अदरक; एक नगर, शृंगवेरपुर । -बेरक-पु० आटी; सोंठ । -बेरपुर-पु० प्राचीन उत्तर कोसलकी सीमाके बाहर, आधुनिक इलाहाबाद जिलेका गंगातटपर स्थित सिंगरौर नामक स्थान (यह निपादराज शुद्धकी राजधानी थी; राम यहाँसे सुगन्धकी विदा कर बन चले गये थे) । -बेश्रमशूलक-पु० शुरुआत । -वेरिका-श्री० गोभी । -खुल्ल-सिंघा बाजा ।

शृंगक-पु० [सं०] सिंघा बाजा; सींग जैसी नुकीली चीज; पिचकारी; चंद्रशृंग, शशिबीटि, शशिबिषाण; जीवक वृक्ष ।

शृंगला-श्री० [सं०] अजशृंगी ।

शृंगबान् (बन्)-वि० [सं०] शृंगयुक्त । पु० पहाड़; एक पौराणिक पर्वत ।

शृंगाट-पु० [सं०] सिंघावा; सिंघावेका पीषा; चतुष्पद, चौरस्ता, चौराहा; कामाख्या, आधुनिक ढाकाका एक पर्वत ।

शृंगमटक-पु० [सं०] सिंघावा; सिंघावेका पीषा; प्राचीन समयका सिंघावेके आकारका मांस, आलू आदि द्वारा प्रस्तुत एक खाद्य पदार्थ, चाप, समोसा; तीन चोटियोंवाला पर्वत; चौरस्ता; दरवाजा ।

शृंगार-पु० [सं०] साहित्यशास्त्रके नौ रसोंमेंसे एक प्रधान रस । (इसे रसरज कहते हैं जिसका कारण इसकी न्यापकता है, अर्थात् जीवन्तके दो प्रधान पक्षों संयोग तथा वियोग दोनोंका इसकी पहुँच है । इसीसे इसके दो भेद माने गये हैं-संयोगशृंगार और वियोग वा विरलंभ-शृंगार । इसके रसरज कहे जानेका एक कारण यह भी है कि इसमें रसके सभी अवयव-विभाव, अनुभाव और श्चारी प्रायः सभी भेदों सहित प्राप्त होते हैं; इसका वर्ण श्याम और इसके देवता कृष्ण माने गये हैं । साहित्य-दर्पणके अनुसार पुरुषमें स्त्रीके साथ और स्त्रीमें पुरुषके

साथ संयोगकी रतिक्रीड़ा आदि मूलक स्वरुपाकी शृंगार कहते हैं); सुरत, संयोग, सहवास; सौंदर्यके प्रत्ययनों द्वारा की या पुरुष-शरीरका नवान-सजाव; किसी वस्तुका सजाव; शोभाकी वस्तु; हाथीके शरीरपर बनाये गये सेंदुरके निशानों लौंग; अदरक; काकागुह; सिंदूर; चूर्ण । -वर्ष-पु० प्रेमका वर्ष । -वेष्टा-श्री०, -वेष्टित-पु० कामवेष्टा; संयोग वेष्टा, अनुरक्ति प्रकट करना । -जम्मा(जम्ब)-पु० कामदेव । -छारी(रिन्)-वि० अलंकृत (हाथी) । -आवित-पु० कामवाती, प्रेमावाप; प्रणयकथा । -भूषण-पु० सिंदूर । -बोनि-पु० कामदेव । -रख-पु० साहित्यशास्त्रमें वर्णित नौ रसोंमेंसे एक रस । -लज्जा-श्री० प्रेमसे उत्पन्न लज्जा । -वेष्ट-पु० रमणीय, आकर्षक; सुंदर वेशभूषा जिससे धारण कर प्रेमी अपने प्रियसे मिलनेके लिए जाता है । -सहाय-पु० प्रेम-व्यापारमें सहायक व्यक्ति, नर्मसचिव । -हाट-श्री० [वि०] वेश्याओंके बैठनेका बाजार; वेश्याओंके ठहरनेका स्थान ।

शृंगारक-पु० [सं०] प्रेम; सिंदूर । वि० सींगवाला ।

शृंगारण-पु० [सं०] सजानेकी क्रिया; शृंगारवेष्टा; प्रेम-प्रदर्शन ।

शृंगारना-सं० कि० सजाना, भूषित करना, सँभारना ।

शृंगारिक-वि० [सं०] शृंगारसे संबंध रखनेवाला; शृंगारका ।

शृंगारिणी-श्री० [सं०] खूब नवान-सजाव करनेवाली नारी ।

शृंगारित-वि० [सं०] सजाना हुआ; सजा हुआ; सिंदूरने रंगा हुआ; सुन्दर, प्रेमाभिभूत ।

शृंगारिवा-पु० शृंगार करनेवाला; बहुवचन ।

शृंगारी(रिन्)-वि० [सं०] शृंगारकी वृत्तिसे युक्त; शृंगारिक; सिंदूरने रंगा हुआ । पु० कामुक, प्रेमी व्यक्ति; सुपारीका पैस; शाणिक्य, मानिक; सुंदर वेशभूषा वा नवान-ठना व्यक्ति; नवान-सजाव; पानके पीने लगाना; हाथी ।

शृंगारु-श्री० [सं०] सिंघावा ।

शृंगालिका, शृंगाली-श्री० [सं०] विदालेक ।

शृंगाङ्क-पु०, शृंगाङ्क-श्री० [सं०] जीवक नामक औषधि मूल; सिंघावा ।

शृंगी-श्री० [सं०] सिंघी मछली; आभूषण बनानेका सोना; * सीमोंवाला पशु ।

शृंगिक-पु० [सं०] एक प्रकारका विष, सिंघिया विष ।

शृंगिका-श्री० [सं०] बिषाण, सिंगी बाजा; अतिविषा, अतीस ।

शृंगिण-पु० [सं०] जंगली भेड़, मेढा । वि० सींगवाला ।

शृंगिणी-श्री० [सं०] गाय; इलेभन्ती वृक्ष; मल्लिकाका पीषा; ज्योतिष्मती कला ।

शृंगी-श्री० [सं०] सिंघी नामक मछली; गहना बनानेके लिए सोना; विष; अतिविषा, अतीस; कपय औषध; कर्कट-शृंगी, काकशासिनी; डूझ, पाकड़; बट । -कनक-पु० गहना बनानेके लिए सुवर्ण ।

शृंगी(गिन्)-वि० [सं०] शृंगयुक्त; दाँतोंवाला (हाथी) । पु० पर्वत; वृक्ष; हाथी; भेड़, मेढ़ा; वृक्ष; समीपके पुत्र एक कवि (इन्हींके शास्त्रे परीक्षितकी तक्षकमें रेंसा था जिसमें उनकी मृत्यु हुई); सिंघा बाजा; शिब; शिष्यका एक गण ।

—(शि)सिरि-पु० एक पहाड़ जिसपर शंभी कविने सपत्नी की थी।

शुंगरी-पु० [सं०] एक स्थान जो मैसूर राज्यमें है (कम्प-शुंगका जन्म यहीं हुआ था। संकराचार्य द्वारा भारतवर्षके चारों कोनोंमें स्थापित चार मठोंमेंसे एक यहाँ भी स्थापित है)।

शुंगोष्णीक-पु० [सं०] सिंह।

शुंगाल-पु० [सं०] शृगाल।

शुंग-पु० शृगाल।

शृगाल-पु० [सं०] सियार; कृष्ण; चरवाहा; एक राक्षस; बरगोह, दुष्ट, भूत या निर्दय व्यक्ति (विशेषणके ढंगके ये सभी अर्थ काव्यार्थिक हैं)। —कंडक-पु० सत्त्वानासी, भस्मोष्ण काँटेदार पौधा। —कोलि-पु० सुन्नकोलि वृक्ष; कंकु। —घंटी-श्री० सालमखाना। —जंजू-श्री० तर-बूजा बरका फल। —बोधि-पु० शृगालकी बोधिमैं जन्म लेना। —रूप-पु० शिव। —विष्णु-श्री० पृथिवीपत्नी।

शृगालिका-श्री० [सं०] मादा सियार, सियार; कोमरी; भूमिकुम्भांड; छोटा सियार; ब्राससे पलायन।

शृगाली-श्री० [सं०] सियारकी मादा; विदारीकद; कोकिल; सालमखाना; अयसे पलायन, डरके कारण भागना।

शृगि-श्री० [सं०] अंकुश; प्रतोड, पैना।

शृग-वि० [सं०] खोला हुआ, पका हुआ। पु० काड़ा; खोला हुआ दूध। —पाक-वि० अच्छी तरह पकाया हुआ। —खीर-वि० उमालकर ठंडा किया हुआ।

शृङ्ग-वि० [सं०] नीचेकी ओर गरीरसे झिझासित (जैसे नपान बाण); आर्द्र।

शृङ्ग-पु० [सं०] नृत्ति, सनझ; मछड़ा।

शेक्सपियर, विलियम-पु० अंग्रेजीके एक महान् कवि और नाटककार। इन्होंने ३५ नाटक लिखे हैं, जिनमेंसे कुछ ये हैं—जुलियस सीजर, मैकबेथ, अन्तेड ऑफ बेनिज, हैमलेट (१५६४-१६१६)।

शेख-वि० बाकी; समाप्त। पु० समाप्ति; बाकी।

शेख-पु० दे० 'शैख'; मुसलमानोंकी चार जातियाँ (शेख, सैयद, मुगल और पठान)मेंसे एक। —का बकरा-शेख-सदोके नामपर बलि किया जानेवाला बकरा। —खिन्नी-पु० एक कविपत्र मूल जिसकी मूलताकी अनेक कहानियाँ जनसाधारणमें प्रसिद्ध हैं; बकी-बकी हवासे बोलनाएँ बनानेवाला व्यक्ति। —० का मगसूना-हवाएँ बोलना। —हॉर्न-हॉर्न-पु० नृत्ति रोकनेका एक टोडका, कपड़ेका गुब्बा जिसे कमरमें गमटी बाँधकर दृष्टिमें छकरीके सभारे खड़ा कर देते हैं। —सहो-पु० अपट शिवाँमें पूजित एक पीर या जिन।

शेखरा-पु० शेखका वेदा (तिरस्कारसे)।

शेखर-पु० [सं०] शिरोभूषण, किरीट, मुकुट आदि; सिरपर लपेटे हुए माथा; पर्यंत-शिखर, शृंग, चोटी; गीतका भूष-विशेष; अपने वर्ग, समूहका श्रेष्ठ व्यक्ति वा कस्तु (समासके अन्तमें); टयणका पंचकौं भेद, लजुशेखर; शैव; शिष्टपुरुष।

शेखरापीठयोजन-पु० [सं०] कुलोंमें सिर या सिरके बाळ सजानेकी क्रिया (यह चौसठ कलाओंमेंसे एक कला मानी गयी है)।

शेखरि-वि० [सं०] जो शिरोभूषणका काम दे; शिरो-भूषणपुरुष।

शेखरी-श्री० [सं०] बंदा।

शेखावत-पु० राजपूतोंका एक उपभेद।

शेखी-श्री० धर्म; डींग। —खोर-वि० दे० 'शेखीवान'।

—बाङ्ग-वि० डींग मारनेवाला, दुनकी लेनेवाला। —शान-श्री० शेखी और शान, धर्म, प्रेष्ठ। शुभ-किरकिरी होना, —सड़ना-धर्मक चूर होना; हलका, लथिल होना। —बघारना-डींग मारना, अपने मुँह अपनी बर्बाद करना।

शेष-पु० [सं०] शेष; शेष; शेष, दुम।

शेषाल-पु० [सं०] सेवार।

शेष-पु० [सं०] दे० 'शेष'।

शेषालि, शेषालिका, शेषाली-श्री० [सं०] निर्मुंडा, नौलिका, नौक सिन्धुवारका पौधा।

शेषुनी-श्री० [सं०] नृत्ति।

शेखर-पु० [अ०] आग; किसी सीमित (लिमिटेड) व्यापारिक संस्थामें छापी पूँजीके निर्धारित हिस्से जिनमेंसे कुछ उन्हें खरीदने परते हैं जो उसमें सम्मिलित होना चाहें। —होखर-पु० अनेक व्यक्तियोंके सम्मित धन या पूँजीमें संचालित किसी कपनी, कारखाने, बैंक आदिका (शेखर) हिस्सेदार।

शेर-पु० [अ०] गजलके दो चरण; पक्ष; [का०] बाघ व्याघ्र; सिंह; [का०] वीर पुंगव; निबर व्यक्ति। [श्री०; 'शेरनी'।] —अक्रान्त-वि० शेरकी गिरावे, पछाड़नेवाला; वीर, साहसी। —० खौ-पु० नूरबहाँके पूर्वपति अलीकुली बेगकी अम्बरसे मिली हुई पदवी। —दरवाजा-पु० वह द्वार वा फाटक जिसके दोनों ओर शेरकी प्रतिमा बनी हो, सिंहद्वार। —दहौ-वि० शेरकेसे मुँहवाला (कबू); (मकान) जो सामने अधिक और पीछे कम चौड़ा हो। पु० शेरकी शङ्ख जो होनों, परनालों आविपर बना देते हैं; एक तरह का असा। श्री० एक तरहकी बंदूक।

—० कबा-पु० वह कबा जिसकी पुष्टियोंकी शक्ल शेरके मुँहकीसी होती है। —दिल-वि० वीर, निबर। —नुमा-वि० शेरकी शङ्खवाला। —पंजा-पु० एक डबिवार, बघनखा। —बकरी-श्री० लकड़ोंका एक खेल। —बच्छा-पु० शेरका बच्चा; एक तरहकी छोटी बंदूक। वि० वीर, साहसी। —बखर-पु० सिंह। —मह-वि० वीर, निबर, पुरुषसिंह। —मादा-श्री० शेरनी। —का काज-भग छाननेकी साधी। —का नाछुम-बघनखा, बाघका जख जो बच्चोंके गलेमें उन्हें कुदृष्टिसे बचानेके लिए पहनाया जाता है। —का बाळ-शेरकी मुँहका बाळ जो बिप है (कहा जाता है कि इमे खानेमें कलेजा कटकर गिर पकता है)। —की झाला-बिली। शुभ-करना-होसला बढ़ा देना, निबर बना देना। —का मुँह छल-सना-शेरकी मारनेके बाद उसकी मुँहकी जख देना (शिकारी ऐसा किया करते हैं)। —की मजहूर घूरना-कोपमदी दृष्टिमें देखना। —की बोली बोलना-(का०) के करना। —के मुँहमें खाना-जान-जोसिमवाँ स्थानमें जाना। —के मुँहसे शिकार लेना-जबरदस्ती

कोई चीज छीन लेना। -बकरीका एक घाट पानी पीना-शुद्ध न्यायका राज्य होना; छोटे-बड़े सबके साथ एकसाथ व्यवहार होना। -होना-होसला बढना; प्रबल होना; अधिक होना (नमक शेर होना-दिन्नी)।

शेरबानी-श्री० एक तरहका आधुनिक ढंगका अंगरखा।

शेरू-पु० शस्त्र, बरछी (कवित्रि०)।

शेरु-पु० [सं०] बड़वार शूद्र; वनमेथी।

शेरुका-पु० [सं०] किसीबा; वनमेथी; लोष।

शेरुका-श्री० [सं०] वनमेथी।

शेष-पु० [सं०] लिंग; मर्प; नाग; ऊँचाई; निधि; संपत्ति, संपदा; मछली; सुख; अम्लि। -शि-पु० निधि; कुनेरकी नौ निधियोंमें एक।

शेषक-पु० [सं०] शैवाल, मेवार।

शेषलिनी-श्री० [सं०] नदी (विशेषतः मेवारबाली नदी)।

शेषा-श्री० [सं०] लिंगका रूप वा लिंग। पु० [फा०] तोर-तरीका, ढग।

शेषाल-पु० [सं०] मेवार।

शेषाली-श्री० [सं०] एक तरहकी जटामासी।

शेष-वि० [सं०] बचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट; छोड़ा हुआ; उच्छिष्ट; ममास। पु० स्वीकृत वस्तुगो अतिरिक्त वस्तु; कामकी नीजके अलावा बची चीज; भागकी बाकी (ग०); किसी बड़ी सख्यामेंसे किसी छोटी संख्याको घटानेके पश्चात् बची संख्या; अवशेष-फल (ग०); कथनका छोड़ा हुआ अंश; बच; नाश, ध्वंस; मरण, अग; प्रसाद; अनंत नामक मर्पराज जिमें सहस्र फल हैं और जो विष्णुका प्रथमस्वप्न, श्रया है। (पु०); लक्ष्मण; सकर्षण, बलराम; हाथी; भगवान् विष्णुकी दूसरी मूर्ति जिमें 'काल' कहते हैं; ईश्वर, अनंत; शेषशयन-प्रकार; टगणका पाँचवाँ भद्र; ऽपयका पचीमर्वा भद्र। -कारित-वि० अमूरा। -काल-पु० मरणकाल, द्यूयक्षण। -जाति-श्री० शेषकी मिलाने, तुलना करनेका कार्य (ग०)। -धर-पु० शिव। -नाग-पु० मर्पराज शेष। -भूषण-पु० विष्णु (?)। -भोजन-पु० उच्छिष्ट-भक्षण। -राज-पु० एक वर्णवृत्त, विपुल्लेखा। -रात्रि-श्री० रात्रिका अंतिम प्रहर, पिछली रात। -शयन, -स्वाधी (विन्)-पु० विष्णु।

शेषक-पु० [सं०] शेषनाग।

शेषरू-पु० दे० 'शेखर'।

शेषव-पु० [सं०] अनुमानका एक भद्र, कार्य द्वारा कारणका निश्चय (न्या०)।

शेषांश-पु० [सं०] बचा भाग, अंतिम भाग।

शेषा-श्री० [सं०] किसी उपास्य, देवताको अर्पित माला या भोग जिमें पूजाके बाद उपासको, पूजकों, भक्तोंमें बाँटने है, प्रसाद।

शेषाश्रया-श्री० [सं०] उदापा।

शेषादि-पु० [सं०] शेषनाग।

शेषोक्त-वि० [सं०] सबके या सब कुछ कह लेनेके बाद अवमें कहा हुआ; सबके अंतमें किया हुआ।

शैष्य-वि० [सं०] छोड़ देने वा उपेक्षा करने योग्य।

शै-श्री० [अ०] चीज, वस्तु; बात; बढती, बरकत।

शैष्य-वि० [सं०] छोकेपर लटकाया हुआ; मुकीला।

शैष्य-पु० [सं०] शिक्षाशास्त्र (ध्वनिशास्त्र) पढ़नेवाला विद्यार्थी ('शिक्षा'का हान हो जानेपर वेदाध्ययन किया जाता है); नौसिख्खा आदमी (हा०)। वि० जो शिक्षा वा नियमके अनुसार हो।

शैक्षिक-पु० [सं०] 'शिक्षा'शास्त्रमें प्रवीण, शिक्षाशास्त्रका जानकार। वि० शिक्षा-संबंधी।

शैष्य-पु० [सं०] पाठित्य; नैपुण्य, पटुता।

शैष्य-पु० [सं०] नीच ब्राह्मणकी सतान (सू०)।

शैष्य-पु० [अ०] शूद्र; गृहजन; भयंशास्त्र, धार्मिक साहित्यका पंडित; खानकाह या दरगाहका खलीफा; महत; अरब करीलोंका सरदार; मुसलमानोंकी चार जातियोंमेंसे एक। - (छे)वक्त्र-वि० अपने समयका सबसे बड़ा विद्वान्।

शैखरिक्त, शैखरेव-पु० [सं०] अपामार्ग, बिचड़ा।

शैखिव-वि० [सं०] मयूर संबंधी।

शैखलहसलाम-पु० [अ०] मुसलिम-जगत्का सर्वम बड़ा धर्माचार्य वा धार्मिक नेता।

शैष्य-वि० [सं०] मुकीला।

शैष्य-पु० [सं०] सहिष्णुता बीज।

शैष्य, शैष्य-पु० [सं०] शीघ्रता, तेजी।

शैतान-पु० [अ०] कुरानके अनुसार अमाजील जिन जो बड़ा पक्षित था और फिरिस्तोंको पढ़ाया करता था, पर आदमकी मित्रता करनेकी खुदाकी आज्ञाका अर्हकारवश पात्वन न करनेके कारण स्वर्गसे निकाला गया और तबसे वह आदमकी सनान मनुष्य जातिकी सम्मार्गसे बहकानेका काम करने लगा, इबलीस; भेत, पिशाच। वि० बहकानेवाला; नटखट; दुष्ट; उपद्रव खड़ा करनेवाला।

-सूरत-वि० शैतानकी शङ्का, पिशाचरूप।

-का बण्णा-मारी दुष्ट, खुराफाती आदमी। -का लश्कर-नटखट लश्कोंका समूह। -की आँस-बहुत लगी चीज; वह चीज जिसका सिलसिला बहुत दूर तक चला जाय; लंबी कथा। -की झांझा-दुष्ट, कलह करनेवाली श्री। -की डोर-मकरीके जालेका तार जो अमसर रास्तेमें उबता रहता और आँखमें पड़ जाता है।

मु०-डरना-कोष सांत होना; डर्राँ या उपद्रवकी प्रवृत्ति या हठका दूर होना। -के कान काटना-शैतानीमें शैतानसे बढ जाना। - (सिरवर)बढ़ना वा सवार होना-गुस्ता चढ़ना; शरारत, बुराईपर आमादा होना; जिद चढ़ना।

शैतानी-वि० शैतानका। श्री० शैतानका काम; शरारत, दुष्टता। -लश्कर-पु० दे० 'शैतानका लश्कर'।

-हरकत-श्री० दुष्टता, शरारत।

शैष्य-पु० [सं०] शीतलता, सर्दी।

शैषिकिक-वि० [सं०] दीला; आलसी।

शैषिक-पु० [सं०] शिथिलता; सुलसी; दीलापन।

शैदा-वि० [फा०] प्रेममें पागल हो जाने, दुष्ट-दुष्ट लो

देनेवाला।

शैष्य-पु० [सं०] कृष्णका सारवि मास्यकि।

शैष्य-पु० [सं०] शिथिके वंशज।

शैलीयकः, शैलेयकः-पु० [सं०] नीलसिंही ।

शैल-वि० [सं०] शिला-संबन्धी; पथरीला; पथर जैसा कठोर । पु० पर्वत, पहाड़; बड़ा पथर या शिला; शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजतु; बॉक्साइट; बैठनेका घन ढंग; सातकी संख्या । -कंपी(विण्)-पु० स्फोटका एक अनुवर । -कटक-पु० पहाड़की ढाल या उसका पार्श्व । -कम्पा-कुमारी-श्री० गिरिजा; पार्वती, शिव-पत्नी । -कूट-पु० पहाड़की चोटी । -गंगा-श्री० गोवर्धन पर्वतकी एक नदी । -गंध-पु० शायर चंदन । -गर्भाङ्ग-श्री० एक ओषध द्रव्य, शिलावल्का । -गुरु-पु० हिमालय । -ज-जात-पु० शैलेय । -जन-पु० पहाड़ी आदमी । -जा-श्री० पार्वती, दुर्गा; सैहजी; गजपिप्पली । -जाता-श्री० गजपिप्पली; काली मिर्च । -तटी-श्री० पहाड़की बाड़ी । -तनवा-दुहिता(रु)-श्री० पार्वती । -धन्वा-स्वप्न-पु० शिव । -धर-पु० गोवर्धनभारी कृष्ण । -धातुज-पु० शिलाजतु । -नदिनी-श्री० गिरिजा, पार्वती । -निर्वास-पु० शिलाजीत । -पति-पु० पहाड़ोंका स्वामी हिमवान् पर्वत, सर्वोच्च पर्वत हिमालय । -पत्र-पु० बिन्व वृक्ष, बेलका पेड़ । -पुत्री-श्री० पार्वती; गंगा जिसका उद्गम हिमालय पहाड़ है । -पुष्प-पु० शिलाजतु । -प्रतिमा-श्री० प्रसन्नमूर्ति । -बाछा-श्री० निमंती । -बीज-पु० भिलाव । -भिषि-श्री० पथरको तराशने, तोड़ने आदिका औजार; छेनी, टॉकी । -भेद-पु० पाषाणभेदन, पथरफोड़ । -मल्ली-श्री० कोरिया । -मृग-पु० जंगली बकरा । -रंज-पु० गुफा, गहर । -राज-पु० हिमालय । -सुता-श्री० पार्वती, दुर्गा; गंगा नदी । -राट्(ञ)-पु० हिमालय । -वक्का-श्री० शिलावल्का । -बीज-पु० मल्लासक वृक्ष, भिलाव । -शिरः-भ्रंश-शोकर-पु० पहाड़की चोटी । -शिविर-पु० समुद्र (इंद्र द्वारा पर्वतोंके आक्रांत होनेपर कुछ पर्वत-विष्य आदि-समुद्रमें छिप गये, इसीसे यह शब्द समुद्रका शीतक हुआ-पु०) । -संधि-श्री० बाड़ी, दर्रा । -संभव-पु० शैलज; शिलाजतु । -संभूत-पु० गेरु । -सार-वि० शैलके समान अचल; दृढ़ । -सुता-श्री० गिरिजा; ज्योतिष्मती ।

शैलक-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य, शैलज, गूगुल; शिलाजतु ।

शैलमग-पु० [सं०] पर्वतका पार्श्व ।

शैलाव्य-पु० [सं०] शिलाजतु; शैलेय नामक गंधद्रव्य ।

शैलाग्र-पु० [सं०] पर्वत-शिखर ।

शैलाट-पु० [सं०] पर्वत-निवासी, किरात; सिंह; देवल; शुक्र काच, स्फटिक ।

शैलादि-पु० [सं०] नदी ।

शैलाधारा-श्री० [सं०] पृथ्वी ।

शैलाधिप, शैलाधिराज-पु० [सं०] हिमालय ।

शैलाम-पु० [सं०] एक विधेदेव ।

शैलाकी(किङ्क)-पु० [सं०] नट, अभिनेता; नर्तक ।

शैलासा-श्री० [सं०] पार्वती ।

शैलाङ्ग-पु० [सं०] शिलाजतु ।

शैलिक-पु० [सं०] शिलाजतु ।

शैलिक्य-पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसका शैल, आचार गति, निदिश हो, पार्श्वी; ऐसा व्यक्ति जिसके मन और बाणीमें एकता न हो, सर्वस्वी ।

शैली-श्री० [सं०] किसी कामके करनेका ढंग, तरीका, रीति, पद्धति; साहित्य, कला आदिकी रचना, अभिव्यक्तिकी रीति; इनकी रचना, अभिव्यक्तिका कौशल; सदाचार, सचरित्र; पथरकी मूर्ति; काट्टिय । -कार-पु० साहित्य, कला आदिकी विशिष्ट, आकर्षक शैलीका निर्माण करनेवाला व्यक्ति ।

शैल्य-पु० [सं०] नट, अभिनेता; नर्तक; तालधारक, संगीतमंडलीका प्रधान; गंधबोंका नेता; धूर्त, शैतान; बेलका पेड़ ।

शैल्यिक-पु० [सं०] अभिनय द्वारा जीवननिर्वाह करने वाला व्यक्ति, नट ।

शैल्यिकी-श्री० [सं०] शैल्य जातिकी श्री, शैल्यपत्नी, नदी ।

शैल्य-पु० [सं०] हिमालय । -जा-श्री० गंगा ।

-दुहिता(रु)-सुता-श्री० पार्वती; गंगा । -स्थ-पु० भूजं वृक्ष ।

शैलेय-वि० [सं०] शैल-सम्बन्धी; शैलसे उत्पन्न; पथरीला, पहाड़ सरसक अवल; पथरके समान कठिन । पु० शैल न नामक गंधद्रव्य; शिलाजतु; तालपर्णी; मंधव, मेधा नमक; सिंह; मधुकर ।

शैलेयक-पु० [सं०] शैलेय ।

शैलेयी-श्री० [सं०] पार्वती ।

शैलीत्रया-श्री० [सं०] शुद्ध पाषाणभेद ।

शैल्य-वि० [सं०] शिला-संबन्धी; पथरीला; पथर मा कड़ा । पु० कड़ाहन, कठोरता ।

शैय-वि० [सं०] शिवका या शिवसे संबंध रखनेवाला । पु० शिव-संबन्धी संप्रदाय, मत, दर्शनका अनुयायी; शिवोपासक, शिव-भक्त; हिंदू धर्मके तीन प्रमुख संप्रदायों-वैष्णव, शैव, शाक्त-मेंसे एक संप्रदाय (इसमें शिवको सब देवताओंमें प्रधान माना जाता है और सृष्टिकर्ता, पालक और संहारकरूप स्वीकार कर उनकी पूजाकी जाती है । पूजा शिव-लिंगकी होती है । शैव ललाटपर त्रिपुंड्र, सरीरमें सस्र और गलेमें रुद्राक्षकी माला धारण करते हैं); शैवरा; शिवपुराण; कल्याण; वसुक्त नामक पौधा; पाशुपतास्त्र; धतूरा; आचार या पूजाका एक भेद । -पत्र-पु० बेलका पेड़ । -मल्लिका-श्री० लिंगिनी ।

शैयक-पु० [सं०] पक्काठ; सेवार ।

शैयकिनी-श्री० [सं०] नदी, सरिता ।

शैयल-पु० [सं०] सेवार ।

शैय्य-पु० [सं०] कृष्णके चार घोड़ोंमेंसे एक; घोड़ा; पांशुकी सेनाका एक यूप । वि० शिव-संबन्धी ।

शैय्या-श्री० [सं०] राजा हरिश्चंद्रकी पत्नी ।

शैयव-पु० [सं०] शिष्टाकी अवस्था, बचपन, शिशु-वृत्ति । वि० शिशु-संबन्धी ।

शैशिर-वि० [सं०] शिशिर ऋतु-संबन्धी; शिशिर ऋतुमें

उत्पन्न । पुं इयाम चटक, काजी गौरवा नामक चिबिवा;
इयाम वातक ।

शिशुनाग-वि० [सं०] रामा शिशुनागके वस्त्रसे सवद्ध
या उसमें उत्पन्न ।

शोक-पु० [सं०] श्रेष्ठ वस्तु अथवा प्रिय व्यक्ति (बंधु-
बंधन)के विदोष, आश्रिते मनमें बार-बार उठनेवाली
व्यथा, मनःपीडा (साहित्यशास्त्रमें शोक करण रसका
स्वावी भाव है) । -**कथित-वि०** शोकसे व्याकुल ।

-**कारक-वि०** शोकदायक, पीडा देनेवाला । -**ज्व-**
नाश-पु० अशोकका पेड़ । -**नाशान-वि०** शोक दूर
करनेवाला । -**परायण-वि०** शोकसे ग्रस्त, पीडाभि-
भूत । -**परिच्छुल-वि०** शोकाभिभूत । -**विह्वल-**
विह्वल-वि० शोकाकुल । -**संसप्त-वि०** गममें जडा
हुआ, शोक-पीडित । -**सूचक-वि०** शोककी सूचना
देनेवाला, शोक-प्रकाशक । -**स्थान-पु०** शोकका कारण
-**हर-वि०** शोकहर्ता । पुं एक मात्रिक छंदका नाम ।

-**हारी-श्री०** वनवर्धिका ।

शोकाकुल-वि० [सं०] शोकमें विह्वल, व्याकुल ।

शोकातुर-वि० [सं०] शोकसे छटपटानेवाला, शोकसे
विह्वल ।

शोकापनोद्-पु० [सं०] शोकका निवारण ।

शोकाभिभूत-वि० [सं०] शोकमें ग्रस्त, पीडित, गममें
बद्धवास ।

शोकारि-पु० [सं०] कष्ट वृक्ष ।

शोकार्त-वि० [सं०] शोकके कारण दीन-हीन बना हुआ,
शोकके कारण जिसकी अवस्था काशिक हो गयी हो ।

शोकाविष्ट-वि० [सं०] शोकग्रस्त, शोकका आतंक जित-
पर छा गया हो ।

शोकावेग-पु० [सं०] गमका दौर, बार-बार शोककी
तीव्र अनुभूतिका होना ।

शोकी-श्री० [सं०] राजि, रजनी ।

शोकी(किन्)-वि० [सं०] शोकपूर्ण, रजोगममें भरा
हुआ; अत्यंत उदास ।

शोकोपहत-वि० [सं०] गमका मारा ।

शोत्र-वि० [का०] डीठ; चचल; नटखट, तेज, गहरा
(रंग) ।

शोघ्री-श्री० डिठाई; चचलता; नटखटपन; (रंगका)
गहरापन ।

शोच-पु० [सं०] चित्त; शोक; दुःख, पीडा ।

शोचन-पु० [सं०] शोच करनेकी क्रिया; रजोगम, चित्ता ।

शोचनीय-वि० [सं०] चिन्त, चित्तनीय, शोच्य; जिसे
देखकर पीडा, रंज हो, रग, रंज करने लायक ।

शोचि(सु)-श्री० [सं०] दीप्ति, प्रभा, प्रकाश; लौ ।

शोचिष्केश-पु० [सं०] अग्नि; चित्रक वृक्ष ।

शोच्य-वि० [सं०] शोचनीय; चित्तनीय; दयनीय ।

शोटीर्य-पु० [सं०] शीरता, पुरुषार्थ, पराक्रम ।

शोठ-वि० [सं०] मुख; नीच, दुष्ट, बदमाश; धूर्त; पापी;
आलसी, अहंसी । पुं मुख; व्यक्ति; खल; आलसी आदमी ।

शोण-वि० [सं०] लाल; लालिमायुक्त; पीडा-सा । पुं
लाल रंग; लालिमा, लाली; रश्मि, रक्त, लहू; सिंदूर

मंगल ग्रह; अग्नि; लाल ईंस; एक प्रकारका शोणक;
चित्रक; लोहिताक्ष; सोन नदी जो गोंधवानासे निकलकर

पटनाके पास बंगामें मिला है; एक समुद्रका नाम, लाल
सागर । -**गिरि-पु०** मगधका एक पहाड़ । -**हिंदिका-**

श्री० रक्त मैरैय । -**हिंदी-श्री०** कुशवक; कंटकिनी ।

-**पत्र-पु०** रक्त पुनर्नवा । -**पद्म, पद्मक-लाल** कमल,
रक्त पद्म । -**पुष्पक-पु०** कोविदारका पेड़ । वि० लाल

फूलसे युक्त । -**पुष्पी-श्री०** सिंदूरपुष्पी । -**भद्र-पु०**
सोन नदी । -**मणि, रत्न-पु०** पद्मराग मणि, लाल,
मानिक । -**संभव-पु०** पिप्पलीमूल ।

शोणक-पु० [सं०] शोणाक वृक्ष ।

शोणाशु-पु० [सं०] एक तरहका बादल जो प्रलयके समय
दिखाई देता है ।

शोणा-श्री० [सं०] सोन नदी; लाल रंगकी वस्तु;
श्वोनाक वृक्ष ।

शोणाक-पु० [सं०] शोणा, चुकनास, श्वोनाक वृक्ष ।

शोणास्मा(स्मन्)-पु० [मं०] दे० 'शोणोपल' ।

शोणित-वि० [सं०] लाल, रक्त वर्णवाला । पुं रक्त,
खून, लहू; कुंकुम; जाफरान । -**चंदन-पु०** लाल

चंदन । -**प-वि०** रश्मि पीनेवाला । -**पूर-पु०** बाणा-
सुरकी राजधानी । शांसी जिलेमें 'गानपुर' नामसे प्रसिद्ध ।

-**मेही(हिन्)-वि०** जिसे सूजके साथ रक्त आता हो ।

-**शर्करा-श्री०** मधुशर्करा ।

शोणितार्ध-पु० [सं०] पलकका एक रोग ।

शोणितार्य-पु० [सं०] कुंकुम; केसर, जाफरान ।

शोणितोपल-पु० [सं०] माणिक्य, मानिक, लाल ।

शोणिमा(मन्)-श्री० [सं०] लालिमा ।

शोणी-श्री० [सं०] लाल कमलके रंगके समान रंगवाली श्री ।

शोणोपल-पु० [सं०] दे० 'शोणितोपल' ।

शोथ-पु० [सं०] सूजन; बात, पित्त, कफमेंसे किसी एक-
के कुपित होनेपर शरीरके किसी अवयवके सूजनेका रोग ।

-**ज्व-वि०** दे० 'शोथजित्' । -**ज्वी-श्री०** पुनर्नवा,
गदहपूरना; शल्लपणी । -**ज्व-पु०** मिलाई, मल्ला-
तक । वि० शोथ दूर करनेवाला । -**ज्विष्ठ-पु०** पुनर्नवा ।

-**रोग-पु०** हाथ-पैर आदिमें सूजन होनेका रोग ।

-**हृत्-पु०** मल्लातक, मिलाई । वि० दे० 'शोथप्र' ।

शोथक-पु० [सं०] शोथ; मुरदासग ।

शोथारि-पु० [सं०] गदहपूरना ।

शोथव्य-वि० [सं०] शुद्ध करने योग्य ।

शोथ-पु० [सं०] शुद्धि, सफाई; गलतकी सही, शुद्ध
करनेकी क्रिया, संस्कार; चुकाना, अढ़ा करना (जैसे-
क्षणशोध आदि); प्रतिकार, परिशोध; शोध, अनुसंधान ।

-**पत्र-पु०** शुद्धिपत्र ।

शोथक-पु० [सं०] शुद्धिकर्ता, सफाई करनेवाला व्यक्ति;
वृद्धि शुद्ध करनेवाला व्यक्ति; खोजी, अन्वेषक; वह संस्था
जिसे घटानेसे वर्गवृद्ध निकल जाय (ग०); एक तरहकी
मिट्टी, कंकड़ । वि० शुद्ध करनेवाला ।

शोधन-वि० [सं०] शुद्धिकारक, साफ करनेवाला । पुं
निर्दोषीकरण, शुद्धीकरण; सशोधन, सही करनेकी क्रिया;
परिष्करण, मार्जन करने, साफ करनेका कार्य (जैसे-

प्रेम आदिका शोधन); कण-परिशोधन, कण नुकाये-की किया; प्रतिशोध; अन्वेषण, खोज करनेका कार्य; धातु-निर्दोषीकरण, धातुकी औषधरूपमें प्रयोगके लिए उसे शुद्ध करनेकी किया (आ०वे०); किसी शुभ कार्यके लिए विधित-अविधित मास, दिन आदिके विचार करनेकी किया (ज्यो०); पाप, अपराध आदिसे मुक्ति, प्रायश्चित्त; आचरण, चरित्र-शुद्धिके लिए दंड देनेका कार्य; शरीर-शुद्धिके लिए विरेचन; सफाई आदिके लिए वस्तुओंका बटाना, अपनयन; भाष्यमेंसे भावकको घटाना (ग०); कंकड़; मल, विष्टा; कसीस; निबूक, नीबू।

शोधनक-पु० [सं०] प्राचीन-कालीन द्रव-न्यायालयका एक अधिकारी।

शोधना-स० कि० शुद्ध करना; गलतको सही करना; साफ करना, परिष्कार करना; खोज करना; धातुकी औषधरूपमें प्रयोगके लिए शुद्ध करना (आ०वे०); किसी शुभ कार्यके लिए मास, तिथि आदिका विचार करना (ज्यो०)।

शोधनी-खी० [सं०] भाजनी, झाड़ू; ताम्रबल्ली; नीली।
-**बीज**-पु० अमालकी।

शोधनीय-वि० [सं०] शोधनके योग्य, शोध्य।

शोधनाना-स० कि० शोधक कार्य कराना; साफ कराना; ठीक कराना; खोज कराना।

शोधा-पु० सोना-चौदी शुद्ध करनेवाला व्यक्ति।

शोधित-वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ, शुद्धीकृत; सही किया हुआ, सुधारा हुआ; मांजित, साफ किया हुआ; नुकाया हुआ; अन्वेषित; अपनीत।

शोध्या-पु० शोधक, शुद्ध करनेवाला।

शोध्य-वि० [सं०] शोधनीय। पु० अपनेपर लगाये गये अभियोगके विषयमें सफाई देनेवाला व्यक्ति, अभियुक्त।

शोफ-पु० [सं०] शीथ, सूजन; अर्बुद। -**ज्नी-खी०** शालपर्णी; रक्त पुनर्नवा, लाल गदहपूरना। -**जिह्व-पु०** महातक वृक्ष, मिलावर्तिका पेड़। -**नाशन-पु०** नील वृक्ष; रक्त पुनर्नवा। वि० सूजन दूर करनेवाला।

-**हारी(विश्व)-पु०** वनवर्षरी।

शोकारि-पु० [सं०] हस्तिकर्द।

शोफित-वि० [सं०] जिसमें सूजन हो।

शोबदा-पु० [अ०] जादू या ईश्वरालका काम, हाथकी सफाईका काम, कतन; बाजीगरी; छल, धोखा। -**शरः-बाज**-वि० शोबदा करनेवाला, बाजीगर; छलिया।

शोबा-पु० [अ०] टुकड़ा, विभाग; शाखा; विभागकी शाखा।

शोभ-वि० [सं०] सुंदर; दीप्तिमान्। पु० कांति (ममासमें); एक देववर्ग; * शोभा। -**कृद्-वि०** सुंदर बनानेवाला। पु० एक संवत्सर।

शोभक-वि० [सं०] सुंदर; कांतिमान्।

शोभय-वि० [सं०] दीप्तिमान्; सुंदर, मनोहर; मंगल, शुभ; सज्जित। पु० दीप्ति; सौंदर्य; अलंकार, मंडन; शुभ; पद्म, कमल; ग्रह; विष्णुस आदि सत्तासैंस योगोंमेंसे पौंचवीं योग; शिवसिंहिका नामक साधिका छंद।

शोभनक-पु० [सं०] शोभाजन वृक्ष, सज्जिनका पेड़।

शोभना-खी० [सं०] हरिद्रा, हल्दी; गोरोचना; सुंदर खी। * अ० कि० सोहना, शोभा देना, शोभित होना।

शोभाजन-पु० [सं०] शोभनक वृक्ष, सज्जिनका पेड़।

शोभा-खी० [सं०] प्रभा, कांति, चमक; (शारीरिक तथा प्राकृतिक) सौंदर्य, छवि; काम्यगत दस गुणोंमेंसे एक; एक काम्यालंकार (यह अलंकार तद् होता है जब काम्य-गुणकी वृद्धि न कर किसी अन्य गुणके अधीन हो जाता है); एक वर्णवृत्त; हरिद्रा, हल्दी; गोरोचना। -**कर-वि०** सौंदर्य उत्पन्न करनेवाला। -**धृष्ट-वि०** शोभा धारण करनेवाला, सुंदर। -**शूभ्यः-हीन-वि०** असुंदर, सौंदर्यरहित।

शोभाकर-पु० [सं०] सौंदर्य-समूह; अत्यंत सुंदर व्यक्ति। वि० दे० 'शोभा' में।

शोभान्वित-वि० [सं०] सौंदर्यपूर्ण, छविमय।

शोभासय-वि० [म०] सौंदर्ययुक्त।

शोभायमान-वि० [सं०] जो देखनेमें सुंदर लगता हो।

शोभित-वि० [सं०] शोभायुक्त, शोभान्वित; नक्किम; विराजमान।

शोभिनी-वि० खी० [सं०] शोभा देनेवाली, सुंदरी।

शोभी(विश्व)-वि० [सं०] दीप्तिमान्, कांतिमान्; शोभा देनेवाला, सुंदर।

शोर-पु० [फा०] हल्ला, कोलाहल (करना; मचना; मचाना); धूम, प्रसिद्धि; खारी नमक; ऊसर जमीन, उन्माद। वि० खारी; बुरा, अशुभ। -**गुरु-पु०** हल्ला।

-**बकूल-वि०** अमागा। -**बकली-खी०** दुर्भाग्य, बद-नसीबी। -**(रे)ज्वामत-पु०** प्रलयका कोलाहल। -**(री)शर-पु०** कोलाहल, दगा, हंगामा।

शोरया, शोरया-पु० [फा०] नरकाग्री, मौम आदिक। रस्ता। -**(वे)शर-वि०** रंमंशर।

शोरा-पु० [फा०] एक क्षार जो वायुद बनाने, पानी ठंडा करने आदिके काममें आता है। -**पुस्त-वि०** उदद, सरकस; लकड़ा। -**पुस्ती-खी०** उर्ध्वता; क्षय-कालपन। -**(रे)की पुस्तकी-अति** गौरवर्ण युवती। **मु०**

-**(रे)में झालना-पानीकी सुराहीको** नमक और शोरा मिले हुए पानीमें रखकर ठंडा करना।

शोरिया-खी० [फा०] शोर-गुल, कोलाहल; उपद्रव, विद्रुप; नमकीनपन।

शोला-पु० [अ०] जामकी लपट; अंज।

शोली-खी० [सं०] वनहरिद्रा।

शोसा-पु० [फा०] छोटा टुकड़ा, रेजा; मोनेका डला फारसी-अरबी अक्षरोंके नीचे लगाया जानेवाला चिह्न।

फारसी-अरबीके 'स', 'श' आदिके सिरेपर निकली हुई नोक या दाँत; (का०) अनोखी बात, झगड़ा उठानेवाली बात। **मु०** -**खोचना-अनोखी** या झगड़ा खड़ा करने-वाली बात कहना।

शोष-पु० [सं०] शुष्कता, सूखापन; सूखनेका भाव या किया; क्षीण होने, दुबले-पतले होने, सुरक्षानेका भाव

यक्ष्मा रोगका एक प्रकार जिसमें आदमी क्षीण और पोन्हा जाता है; मुलंडी रोम। -**झ-पु०** वनप्यात्र।

-**संभव-पु०** पिपलीमूल। -**हा(हन्)-पु०** अपामार्ग।

शोचक-वि०, पु० [सं०] शोषण करनेवाला, सोखनेवाला; सुखानेवाला; चूसनेवाला; क्षीण करनेवाला ।

शोषण-पु० [सं०] सोखनेकी क्रिया; सुखानेकी क्रिया, चूसनेकी क्रिया; रस, स्नेहसे रहित करना; क्षीण करनेकी क्रिया; किसीके अमसे या व्यापार आदिसे अनुचित लाभ उठाना; सोंठ; श्वेताक वृक्ष; मदनका एक बाण; अग्नि ।

शोषणीय-वि० [सं०] शोषणके योग्य ।

शोषितव्य-वि० [सं०] शोषण योग्य ।

शोषिता (तु)-वि०, पु० शोषण करनेवाला ।

शोषापहा-स्त्री० [सं०] क्षीतनक; सुकेठी ।

शोषित-वि० [सं०] सोखा हुआ; सुखाया हुआ; क्षीण किया हुआ; क्षय किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

शोषी(विद्य)-वि० [सं०] शोषण करनेवाला ।

शोषु-पु० [सं०] व्यास ।

शोषदा-पु० दे० 'शुद्धदा' । -पत्र-दे० 'शुद्धापत्र' ।

शोहरत-स्त्री० [अ०] प्रसिद्धि, ख्याति; धूम, जोरदार स्वर ।

शोहरा-पु० [अ०] दे० 'शोहरत' ।

शौगेय-पु० [म०] गरक, द्येन, वाजपत्नी ।

शौह-वि० [सं०] मर; मृतवाला। मर घीनेका आदी, शराही; दक्ष, कुशल, चतुर ।

शौहता-स्त्री० [सं०] मरणा; दक्षता, कुशलता, चातुर्य ।

शौहा-स्त्री० [सं०] मदिरा ।

शौडिक-पु० [सं०] प्राचीन कालकी जातिविशेष जो मर प्रस्तुत कर इसका व्यापार करनी थी (पराशरपद्धति-ने शौडिकको उत्पत्ति माथिक माता और कैवल्य पितामे मानी है) ।

शौडिकी, शौडिनी-स्त्री० [सं०] शौडिक जातिकी स्त्री ।

शौडी-पु० [सं०] गजपिपली; चम्प; कटमी; मेघपत्ति ।

शौडी(विद्य)-पु० [सं०] शौडिक, मरविशेता ।

शौडीर-वि० [सं०] अर्धकारी, धमडी, गर्वाभिन; उद्द ।

शौडीर्य-पु० [सं०] गर्व, धर्मत ।

शौजाल, शौजाल-पु० [अ०] मुसलमानोंका दसवाँ चांद्र मास जिसकी पहली तारीखको ईद मनायी जाती है ।

शौक-पु० [सं०] शुकगण, सुगोंका समूह, एक रतिबंध; शौक मचना ।

शौक-पु० [अ०] प्रवल इच्छा, चाह; रुचि; वसका, व्यवसाय; उत्साह; धुन । **शु०** -करना-भोग करना (उका मिगरेट आदि देते समय 'शौक कीजिये' कहते हैं) । -**परांना**-इच्छाका तीव्र होना । -**से**-रुचिपूर्वक; सुशील; निस्संकोच ।

शौकत-स्त्री० [फा०] बल, शक्ति; प्रताप, दबदबा; गौरव, मान; बंद ।

शौकर, शौकर्य-पु० [सं०] दे० 'शुकरक्षेत्र' ।

शौकरी-स्त्री० [सं०] बाराही कद ।

शौक्रिया-अ० दे० 'शौक्रिया' ।

शौक्रीन-वि० शौक-चाह, रुचि रखनेवाला; वनाक-मिगार-का शौक रखनेवाला, छेला; समाश्रयीन ।

शौक्रीनी-स्त्री० शौक्रीन होना ।

शौक्रिया-अ० शौकसे, शौक होनेसे; दिल-बहालावके शिव ।

शौक-वि० [सं०] अम्ल, तेजावी; सीपीका बना हुआ ।

शौक्रिक-वि० [सं०] सीपीसे उत्पन्न; मोती-संबंधी; अम्ल । पु० मोती ।

शौक्रिकेय, शौक्रिय-पु० [सं०] मुक्ता ।

शौक्र-वि० [सं०] शुक्र ग्रहसंबंधी; वीर्यसंबंधी ।

शौक्रिकेय-पु० [सं०] एक तरहका विष ।

शौक्य-पु० [सं०] शुद्धता, उज्ज्वलता, सुकेठी ।

शौच-पु० [सं०] शुद्धि, पवित्रता, शुचिता; किसी निकट-संबंधीकी मृत्यु होनेपर लोक-व्यवहारके अनुसार निश्चित समयपर शौरकर्म आदि कराकर शुद्ध होना; प्रतःकालीन नैमित्तिक कर्म द्वारा शुद्धि; मरुत्याग द्वारा शरीर-शुद्धि, बाखाने जाना; मनु-कथित धर्मके दस लक्षणमेंसे पाँचवाँ लक्षण; योग-शास्त्रोक्त पंच नियमोंमेंसे (शौच, स्तोत्र, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान) पहला । -**कर्म** (त्र)-पु० लोक-व्यवहार और शास्त्रानुसार शुद्धिकी क्रिया । -**कृप**-पु० संदास । -**गृह**-पु० पाखानेकी कोठरी आदि ।

-**विधि**-स्त्री० शुद्ध होने, शुद्धि-क्रियाको पद्धति, रीति ।

शौचक-वि० [सं०] शुद्ध, पवित्र । पु० शुद्धता ।

शौचागार-पु० [सं०] शौचगृह ।

शौचाचार-पु० [सं०] दे० 'शौच-कर्म' ।

शौचिक-पु० [सं०] पवित्र, शुद्ध करनेवाला व्यक्ति; एक वर्गमेंकर जाति ।

शौचेय-पु० [सं०] पोथी, रजक ।

शौटीर-वि० [सं०] गर्वयुक्त, गर्वाला; उदार । पु० वीर, योद्धा; स्वाधी, सम्पत्ती ।

शौटीरता-स्त्री०, **शौटीर्य**-पु० [सं०] वीरता; पराक्रम; स्वाग; गर्व ।

शौत-स्त्री० शौत ।

शौदोहनि-पु० [सं०] शुद्धोदनके पुत्र गौतम शुद्ध ।

शौद्र-वि० [सं०] शूद्र जाति-संबंधी । पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्णके पुरुष तथा शूद्र वर्णकी स्त्रियाँ उत्पन्न पुत्र ।

शौघ-वि० शुद्ध, निर्मल, पूर, पवित्र । * स्त्री० सुधि (धर) ।

शौधिका-स्त्री० [सं०] रक्त कंदू, लाल कुन्तु ।

शौन-पु० [सं०] वध-स्वक, कसाईखानेमें रखा मांस ।

शौनक-पु० [सं०] एक ऋषि जो ऋग्वेदप्रातिशाख्य तथा अन्य कई ग्रंथोंके रचयिता माने जाते हैं (ये नैमिशारण्य-में रहते थे और एक बार इन्होंने बारह वर्षोंतक चलने-वाला व्रत किया था) ।

शौनिक-पु० [सं०] मांसविशेता, कसाई; बहेलिया, वधिक, शिकारी; सुगया, शिकार । वि० श्वान या आखेट संबंधी ।

शौभ-पु० [सं०] देवता; शुभाक, सुपारी; हरिश्चंद्रपुर, ज्योमचारिपुर (प्र०) ।

शौभनेय-पु० [सं०] सुंदर स्त्रीका पुत्र । वि० सुंदर वस्तु-संबंधी ।

शौभांजन-पु० [सं०] दे० 'शोभांजन' ।

शौभिक-पु० [सं०] शूद्रजातिक, जाहूँदार; वधिक, चिबी-मार; यक्षसंघ ।

शौभेय-वि० [सं०] शुभ वस्तु या व्यक्ति-संबंधी । पु०

एक लक्ष्मण जाति ।

शौरसेन-पु० [सं०] शूरसेनका राज्य, आधुनिक मंत्र-मंडल (इसकी राजधानी शूरसेन-मथुरा थी) ।

शौरसेनिका-स्त्री० [सं०] दे० 'शौरसेनी' ।

शौरसेनी-स्त्री० [सं०] प्राचीन कालमें शौरसेन प्रदेशमें (मथुराके आस-पास) बोली जानेवाली प्राकृत भाषा; प्राचीन कालमें उक्त प्रदेशमें व्यवहृत अपभ्रंश भाषा (स्वही बोली हिंदीके निर्माणमें उक्त प्राकृत तथा अपभ्रंशका बहुत हाथ है) ।

शौरि-पु० [सं०] वसुदेव; कृष्ण; बलदेव, दानि ग्रह ।

-श्रिय-पु० हीरा । **-रत्न-पु०** नीलम ।

शौर्य, शौर्यिक-वि० [सं०] युव-सम्बन्धी; युवसे नापा हुआ ।

शौर्य-पु० [सं०] शूरता, वीरता; पराक्रम; आरम्भही नामक नाट्यवृत्ति जिसका उपयोग वीर और अद्भुत रतोंके अभिनयमें होता है ।

शौल-पु० [सं०] हल्का एक भाग ।

शौल्क-वि० [सं०] शुल्क-सम्बन्धी । पु० दे० 'शौल्किक' ।

शौल्किक-वि० [सं०] शुल्क-सम्बन्धी; मांस-मछली खाने-वाला । पु० कर वसूल करनेवाला; शुल्क, कर, महसूल, देवस उतारनेकी व्यवस्था करनेवाला अफसर, शुल्काध्यक्ष, शुल्काधिकारी ।

शौल्किकेय-पु० [सं०] विष्णुका एक भेद ।

शौल्क-पु० [सं०] शुल्कका साग; चौक ।

शौल्विक, शौल्विक-पु० [सं०] तबिका काम करनेवाला, तबिका बतन बनानेवाला, कसेरा; एक जाति ।

शौष-वि० [सं०] कुत्ता-सम्बन्धी; आगामी कल-सम्बन्धी । पु० कुत्तोंका झुंड; कुत्तेका स्वभाव ।

शौष-वि० [सं०] कुत्ता-सम्बन्धी; कुत्तेके गुण, स्वभावसे संयुक्त । पु० कुत्तोंका झुंड; कुत्तेकी ओलाद; कुत्तेका स्वभाव ।

शौषवित्त-वि० [सं०] आगामी कल-सम्बन्धी; आगामी कलसक ठिकनेवाला, खराब न होनेवाला ।

शौषापद-वि० [सं०] श्वापद-सम्बन्धी, वन-पशु-सम्बन्धी; जंगली ।

शौष्कल-वि० [सं०] मांसमक्षी; मछलीका मांस खाने-वाला । पु० मांसका मूत्र; मांसका विक्रेता ।

शौहर-पु० [फा०] प्रति, स्वामी, खातिर ।

इनुष्टि-स्त्री० [सं०] गला नापनेका एक छोटो परिमाण ।

इम(न्)-पु० [सं०] मुखा; शरीर; शव, सत देह ।

इमशान-पु० [सं०] शवदाह-स्थान, मसान, मरपट ।

-कालिका, -काली-स्त्री० इमशान-निवासिनी काली जिनकी अर्चना मद्य, मांसका प्रयोग कर और नये शरीर की जाती है (तं०) । **-गोचर-वि०** इमशानमें धूमने-वाला । **-निलय-पु०** शिव । **-निवासी(सिन्धु)-पु०** शिव; भूत; प्रेत । वि० इमशानमें रहनेवाला । **-पक्षि-पु०** शिव । **-पाल-पु०** चांडाल, डोम चौधरी । **-माह(न्)-पु०** शिव । **-औरबी-स्त्री०** इमशानमें रहनेवाली देवियाँ (तं०) । **-वर्ली(सिन्धु)-पु०** दे० 'इमशानवासी' ।

-बाट-पु० इमशानका वेरा । **-बासिनी-स्त्री०** कालिका, काली । **-वासी(सिन्धु)-पु०** भूत; प्रेत; शिव;

डोम चौधरी, चांडाल । **-वेताल-पु०** एक प्रकारकी भूतयोनि जिसमें पक्कर जीव इमशानमें रहते और बहाने; मुर्दे गादि खाते हैं । **-वेडमा(इमन्)-पु०** शिव; भूत; प्रेत । **-बैराग्य-पु०** इमशानमें जानेपर संसारकी अनि-वृत्ता देखनेसे उत्पन्न क्षणिक वा अस्थायी वैराग्य । **-खल-पु०** प्राचीन कालमें इमशान-स्थित खदिरकी लकड़ी या लोहेकी शाली जिसपर बैठकर अपराधीकी मृत्युदंड देने थे । **-साधन-पु०** तांत्रिकोंके अनुसार इमशानमें मुर्देको छातीपर बैठकर किसी सिद्धिके लिए अर्घ्य रात्रिमें मंत्र-साधना करना (यह साधना विशेषतः आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और आश्विनमें की जाती है) ।

इमशानालय-पु० [सं०] मरपट, प्रेतभूमि ।

इमशानिक-वि० [सं०] इमशानमें रहनेवाला (पक्षी आदि) ।

इमन्धु-पु० [सं०] दाढ़ी-मूँछ । **-कर-पु०** डाढ़ी बनाने-वाला, नाई । **-कर्म(न्)-पु०** शौर कर्म । **-धर, -धारी(सिन्धु)-वि०** दाढ़ी रखनेवाला । **-मुल्ली-स्त्री०** दाढ़ी-मूँछवाली औरत । **-वर्षक-पु०** नाई, नापित । **-शेखर-पु०** नारिकेल वृक्ष, नारियलका पेड़ ।

इमभ्रूल-वि० [सं०] दाढ़ी-मूँछवाला, इमशुधारी ।

इमीलन-पु० [सं०] ओंख मुल्लकाना, नयन-निमीलन ।

इमीलित-पु० [सं०] पलक मारना, पलकका गिरना, नयननिमीलन, निमेष । वि० पलक मारा हुआ ।

इयान-वि० [सं०] गत; जो जमकर गाढ़ा हो गया हो, गाढ़ा; सिकुड़ा हुआ, घुसा । पु० घुआँ ।

इयाम-वि० [सं०] काला, मौला; काला और नीला मिश्रित; गाढ़ा हरा । पु० कृष्ण (इयामवर्ण होनेके कारण इनका यह नाम पड़ा); काला रंग; गाढ़ा हरा रंग, काला और नीला मिश्रित रंग, मेघ, बादल; कोयल, कोकिल; प्रयागका प्रसिद्ध बटवृक्ष जो यमुनाके किनारे है; वृद्ध-दारक; पीन्ड वृक्ष; दौनेका पीषा; गन्धन; इयामक, सीता चावल; धनूरा; काली मिर्च. समुद्री नमक । **-कंड-पु०** शिव, नीलकण्ठ पक्षी, मयूर, मोर । **-कंडा-स्त्री०** जति-विषा, अतीस । **-कर्ण-वि०** काने कानोंवाला । पु० वह घोड़ा जिसका सारा शरीर ध्वेत और केवल कान काले हों (यह सुलक्षण है और अभ्येयके उपयुक्त माना जाता है) ।

-कांडा, -प्रंथि-स्त्री० गंधद्वारा । **-चटक-पु०, -चूषा-स्त्री०** इयामा पक्षी । **-और-पु०** [हि०] एक प्रकारका अगहनिया धान, काला जीरा । **-टीका-पु०** [हि०] दिठोना । **-तीर-पु०** [हि०] एक पक्षी जो प्रायः पहाड़ी प्रदेशोंमें मिलता है । **-पह-पु०** विद्यालयोंकी प्रत्येक कक्षामें रहनेवाला वह काला लट्ठा जिसपर खरियाँ मिट्टीसे लिखकर अध्यापक गणित आदिके प्रश्न विद्यार्थियोंको समझाता है । **-पत्र-पु०** तमाल वृक्ष । **-पत्रा-स्त्री०** जंबू वृक्ष, जासुमका पेड़ । **-पर्ण-पु०** शिरीष वृक्ष, सिरिसका पेड़ । **-पूरबी-पु०** एक संस्तर राग । **-भूषण-पु०** काली मिर्च । **-मंजरी-स्त्री०** एक प्रकारकी काली मिट्टी जिसका उपयोग वैष्णव शिल्पक लक्ष्मणके लिए करते हैं (यह पुरीके आस-पास पायी जाती है) । **-कडा-स्त्री०** साविका । **-बल्ली-स्त्री०** काली मिर्च । **-बर्म(न्)-**

पु० एक प्रकारका नेत्र-रोग । -शर-पु० श्यामलेख ।
-शबक-पु० यमके द्वारपर पहरा देनेवाले दो कुते ।
-शाकि-पु० काला धान, रमकजरवा धान, दखिनहवीं धान । -सार-पु० काले खेरका पेड़ । -सुंदर-पु० कृष्ण; एक वृक्ष ।

श्यामक-पु० [सं०] सौंनों चावल; रोहिण तृण; शरके एक पुत्र, बसुदेवके भाई (भा०) । वि० काला ।

श्यामता-श्री० [सं०] श्याम, काला होनेका मान, काला-पन ।

श्यामल-वि० [सं०] श्याम वर्णवाला । पु० काला रंग; अमर; पीपलका पेड़; काली मिर्च; पूतिका । -शुभा-श्री० गुंजा, गुँघनी ।

श्यामलता-श्री० [सं०] श्यामता ।

श्यामला-श्री० [मं०] पार्वती, अम्बगंगा; कटमी; जम्बू, जामुन; कस्तूरी ।

श्यामलिका-श्री० [सं०] नीली ।

श्यामलित-वि० [सं०] काला, धूमिल किया हुआ ।

श्यामलिमा(मन)-श्री० [सं०] कालापन, श्यामता ।

श्यामलेख-पु० [सं०] काली रेखा, कजरवा रेखा ।

श्यामांग-पु० [सं०] शुभ ग्रह । वि० काले शरीरवाला ।

श्यामा-श्री० [मं०] श्याम, कृष्णकी पत्नी राधा, काली, कालिका देवी; पार्वती; श्याम वर्णकी श्री; बौद्धसंघाया युवती; सुंदरी नारी, तृणी श्री जिसे सतान न दुष्ट हो, अप्रयत्नांगना; तपे हुए सोनेके रंगकी युवती जो सर्वांग शीतमें सुखोष्ण और शीतमें सुखशीतल होती है; श्यामा नामकी त्रिविधा, कृष्ण मारिका; गाय; यमुना; (अधकार-मयी) राशि. छाया; कृष्ण सारिका; त्रियंगु; बाहुनि; कृष्ण त्रिशुलिका; नीलिका; गुग्गुलु; सोमलता; युद्धा; गुह्यनी; कस्तूरी; बटपत्री; बंदा; नील पुनर्नवा; पिप्पली; हल्दी; हरिद्रा; नील दूब; तुलसी; पद्मबीज; शिशपा ।

श्यामाक-पु० [सं०] सौंनों चावल ।

श्यामाप्रसाद मुखोपाध्याय-पु० बंगालके अर्थमंत्री, हिंदू महासभाके अध्यक्ष तथा स्वतंत्रभारतकी केंद्रीय सरकारके उद्योगमंत्री (१९५० में) । अखिल भारतीय जनसभ (राज-नीतिक दल) के संस्थापक । कश्मीरमें नजरबंदीकी हालतमें मृत्यु (१९०१-१९५३) ।

श्यामिका-श्री० [सं०] कालापन, श्यामता; अवविभ्रता; खोटापन; मलिनता; मैल (करतन आदिका) ।

श्यामित-वि० [सं०] काला किया हुआ ।

श्यामेख-पु० [सं०] काले रंगकी रेखा, श्यामलेख ।

श्याल-पु० [सं०] साठा, पत्नीका भाई; * मृगाल, सियार ।

श्यालक-पु० [सं०] श्याल, साठा ।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली-श्री० [मं०] साठी, पत्नीकी मगनी ।

श्याव-वि० [सं०] कपिश, काला और पीला मिला हुआ । पु० कपिश रंग । -सैक-पु० आज वृक्ष, आमका पेड़ ।

-ईल-पु० प्रकाशित; काले रंगवाले दाँत । वि० काले रंगके दाँतोवाला । -ईलक-वि० काले रंगके दाँतोवाला ।

-वर्त(व)-पु० आँखका एक रोग ।

श्यावास्थ-वि० [सं०] कपिश रंगके सुखवाला ।

श्वेत-वि० [सं०] श्वेत, सफेद, शुद्ध । पु० शुद्ध वर्ण । -कोलक-पु० एक मछली, सफर नामक मछली ।

श्वेनपाता-श्री० [सं०] बाज पक्षी द्वारा पक्षियोंका शिकार कराना; शृंगरा ।

श्वेन-पु० [सं०] बाज पक्षी; हिंसा; पांडुर वर्ण, पीला रंग; दोहेका एक भेद । वि० पीले रंगका । -करण-पु० बाजकी भाँति झपटकर किसी काममें लगना, बाजकी भाँति तीव्रता और निश्चयतापूर्वक कोई काम करना; उत्साह-पन । -घंटा-श्री० दंती वृक्ष । -क्षित-पु० अग्नि-विशेष । -क्षित-पु० बाजकी रक्षा करने, पालनेवाला व्यक्ति, श्वेनजीवी । -जीवी(विन)-पु० बाज पक्षी और उसे बेचकर जीवन-निर्वाह करनेवाला व्यक्ति । -ध्यू-पु० दहध्यूका एक प्रकार जिसमें पक्ष तथा कक्षके सैनिकोंकी स्थिर रखकर उरत्यके (मामनेके) सैनिकोंको आगे बढ़ाया जाता है ।

श्वेनिका-श्री [सं०] एक वर्णवृत्त जिसका नाम 'श्वेनी' भी है; मादा बाज ।

श्वेनी-श्री० [सं०] दे० 'श्वेनिका' ।

श्वेनपात-वि० [सं०] बाज उड़ानेके योग्य (स्थान) ।

श्वेनपाता-श्री० [मं०] बाजके द्वारा पक्षियोंका शिकार करना; शृंगरा ।

श्वेन-वि० [सं०] बाज-संबंधी ।

श्वेनिक-पु० [सं०] एक प्रकार ।

श्वेनेय-पु० [सं०] नडाया ।

श्वोनाक, श्वोनाक-पु० [सं०] एक वृक्ष; सोना पाड़ा ।

श्वोरा-पु० [कज्ञ०] लोहेका छछा और नुकीला लोहा लगा तब तानने, लठानेका बौंस ।

अंध-पु० [सं०] ढीला करना; शिथिल करना; मुक्त करना; ढीलापन, शिथिलता; बाँधना; (मुक्त करनेवाला) विष्णु ।

अंधन-पु० [सं०] ढीला करना, खोलना; मुक्त करना, नुकसान पहुँचाना; मार डालना; नष्ट कर देना; बाँधना ।

अंधित-वि० [सं०] ढीला; मुक्त; सबद्ध, एक साथ बाँधा हुआ; नुकसान पहुँचाया हुआ; बंध किया हुआ; विनष्ट; हथित, प्रसन्न ।

अधन-पु० [सं०] ढीला या शिथिल करनेकी क्रिया, शिथिलीकरण; बाँधना; खोलना; मुक्त करना; बार-बार खुदा करना; प्रयत्न, प्रयास; बंध ।

अध्वान-वि० [सं०] अद्यावत् ।

अद्ध-वि० [सं०] विश्वास करनेवाला, अद्यावत् । पु० अद्धा ।

अद्धा-श्री० [सं०] प्रेम और भक्तियुक्त पुरुषभाव; मंत्रास्वय, विश्वास; आदर; छुक्ति, पवित्रता; स्तुति, कामना; दोहड़, गर्भवती स्त्रीकी इच्छा; किसी धर्म, संप्रदाय, शास्त्र, दर्शन आदिमें आस्था, पूर्ण विश्वास; पविष्टता; मनःशान्ति, मनकी प्रसन्नता; प्रजापतिकी पुत्री; आदित्य, सूर्यकी कन्या; दक्षकी पुत्री और धर्मकी पत्नी (मं० भा०) कामकी माता (मार्कंडेयपुराण); कर्दमकी कन्या और वैवस्वत मनुकी पत्नी (भा०) ।

अद्यावत्-वि० [सं०] अद्यावत्; कामनायुक्त । श्री० किसी

वस्तुकी कामना करनेवाली मणिणी स्त्री, दोहदवती ।

अष्टावाम् (वर्) - वि० [सं०] अष्टावुक्त ।

अष्टास्पर्ध्व - वि० [सं०] अष्टाका पात्र, अष्टा करने योग्य, भद्रव ।

अष्टौष - वि० [सं०] प्रेम और भक्तिके योग्य, पूजनीय, विद्वत्पत्नीय, अष्टाभाजन ।

अपण - पु०, अपणा - स्त्री० उवाकनेकी क्रिया ।

अपित - वि० [सं०] बिना घी, तेल इले पकाया हुआ, उवाका हुआ । पु० उवाका हुआ मांस ।

अपिता - स्त्री० [सं०] माता; कौजी ।

अश्र - पु० [सं०] परिश्रम, मेहनत, प्रयत्न, प्रवास, दौड़-धूप; भाति, थकान, कष्ट; व्यायाम, कवायद; तप; शास्त्राभ्यास; स्वेद; साहित्यशास्त्रीक एक सचारी भाव । - **कण** - पु० शारीरिक श्रम, परिश्रम, मेहनत करनेमें निकली पसीनेकी बुँदें । - **कर** - वि० क्लृप्तिकारक । - **कृत** - वि० श्रममें थका हुआ । - **ध्व** - वि० थकान दूर करनेवाला । - **जल** - पु० प्रस्वेद, पसीना । - **जिव्** - वि० [हिं०] श्रममें न थकनेवाला । **जीवी (जिव्)** - वि० शारीरिक तथा बौद्धिक परिश्रम कर जीविका चलानेवाला ।

पु० मेहनतकश, मजदूर । - **दान** - पु० सट्टक, विद्यालय, कुर्सी आदि बनाने तथा सार्वजनिक हितके अन्य कार्य करनेके लिए कोई पारिश्रमिक न लेकर स्वेच्छामें अपने श्रमका दान करना, निर्मोगकार्यमें सहयोग देना । - **प्रमुख** - पु० दे० 'कोरमैन' । - **अंजिनी** - स्त्री० जागबल्ली लता । - **मोहित** - वि० श्रमके कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो । - **बारि**, - **विदु** - पु० प्रस्वेद, स्वेद, पसीना । - **विमयन** - वि० क्लृप्ति दूर करनेवाला । - **विभाग** - पु० कामका बंटवारा, किसी कामकी पूर्ण करनेके लिए उसके विभिन्न अंगोंकी विभिन्न व्यक्तियोंके निम्न कर, बँट देना (अर्थशास्त्र), अर्थिकोंके हितानि संबंधी मामलोंकी देख-रेख करनेवाला सरकारी मुद्रकमा । - **स्तीकर**, - **स्तीकर** - पु० श्रमजल, पसीना, प्रस्वेद-विदु । - **शील** - वि० परिश्रमी ।

- **साध्व** - वि० जो (काम) परिश्रम, दौड़-धूप, प्रयत्नसे पूर्ण, प्राप्त, श्रम ही मके, परिश्रमसे होने, सचनेवाला । - **सहिष्णु** - वि० मेहनती । - **स्थान** - पु० श्रम करनेका स्थान; कारखाना ।

अमण - पु० [सं०] श्रम; बौद्ध सन्नासी, बौद्ध भिक्षु । वि० श्रम करनेवाला; नीच, नंगा ।

अमणक - पु० [सं०] बौद्ध या जैन सन्नासी ।

अमणा - स्त्री० [सं०] जटामासी; मुंडी; सुदरी स्त्री; सुदर्शना जोषि; भिक्षुणी, मेहनती स्त्री ।

अमणी - स्त्री० [सं०] बौद्ध सन्नासी ।

अमिक - पु० [सं०] शारीरिक श्रम कर रोजी कमानेवाला, मेहनतकश, मजदूर । - **संघ** - पु० दे० 'श्रमसंघ' (परिशिष्ट १) ।

अमित - वि० परिश्रम करनेका हुआ ।

असी (मिर्) - पु० [सं०] परिश्रमी व्यक्ति । वि० मेहनती ।

अश्र, **अश्रवण** - पु० [सं०] आश्रय ।

अश्र - पु० [सं०] काम; शब्द; विमुक्तका वर्ण; स्नाय, शरण; यश ।

अश्र (श्र) - पु० [सं०] कान; यश; धन; स्तुति; स्तुत्यकार्य ।

अश्रवण - पु० [सं०] अश्रवणद्वय, कर्ण, कान; सुननेकी क्रिया; कर्णद्वयज्ञान, कानमें सुनकर हुआ ज्ञान; नौ प्रकारका भक्तियोंमें एक जिसके अनुसार भक्त भगवान्के नाम, रूप, गुण, लीला आदिका श्रवण करता है; अध्ययन, सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान; यश, कीर्ति; धन; अंभता-पसका पुत्र जो माता-पिताका अनन्य भक्त था (आनेट करने समय अनजानमें दशरथने इसका वध किया था, इसपर अंधने उन्हें पुत्र-वियोगमें भरनेका शाप दिया था); मत्तार्हस नक्षत्रोंमें बाईसवाँ नक्षत्र (इसमें तीन तारे होते हैं); बहना, टपकना, शरण, रसना । - **कातरता** - सुननेकी उत्सुकता । **गोचर** - वि० जो सुनाई पकनेवाला हो, श्रवणप्रत्यक्ष । - **द्रावरी** - स्त्री० बामन-दादजी जो भादों मासके शुद्ध पक्षमें पकती हैं, (इमें बामनावतारका दिन मानते हैं-पु०) । - **पद्य** - पु० सुननेकी शक्तिमें युक्त श्रवणद्वय, कान । - **परुष** - वि० जो कानोंके लिए बड़े हो, कर्णकटु । - **पाक्षि**, - **पाली** - स्त्री० कानकी लकरी । - **पुटक** - पु० कर्णरंध । - **पूरक**, - **भूषण** - पु० कर्णकुल आदि कानके गहने । - **प्रत्यक्ष** - वि० श्रवण-गोचर । - **विद्या** - स्त्री० वह विद्या जो कानमें सुनकर ग्रहण की जाती हो । - **विदुर** - पु० कानका छेद ।

- **विषय** - पु० श्रवणद्वयकी सीमामें आनेवाला विषय, श्रवणगोचर वस्तु, व्यापार आदि । - **शीर्षिका** - स्त्री० श्रवणद्वय । - **हारी (रिज)** - वि० कानोंवा प्रिय लगनेवाला ।

अश्रवण - स्त्री० [सं०] एक नक्षत्र; दे० 'अश्रवण'; मुटुरिका, मुंडी ।

अश्रवणभास - पु० [सं०] श्रवणपथ ।

अश्रवणद्वय - स्त्री० [सं०] निविणी; जलभालार ।

अश्रणी - स्त्री० [सं०] महामुंडी, मुट्टरी ।

अश्रणीय - वि० [सं०] श्रवण योग्य, सुनने योग्य ।

अश्रवणद्वय - स्त्री० [सं०] सुननेकी शक्ति; कान ।

अश्रणीद्वर - पु० [सं०] कान ।

अश्रवण - पु० कान; सुनना ।

अश्रवण - अ० क्रि० बहना, टपकना, चूना । म० क्रि० बहाना, गिराना, टपकाना, चुभाना ।

अश्रवण - पु० [सं०] यश, नाम; नामवरीका काम ।

अश्रित - वि० श्रित, टपका हुआ, बहा हुआ ।

अश्रिष्टा - स्त्री० [सं०] धनिष्ठा नामक नक्षत्र । - **ज**, - **भू** - पु० बुध ग्रह ।

अश्रव - वि० [सं०] सुनने योग्य । - **काव्य** - इन्द्रियप्रत्यक्षकी दृष्टिमें मारनीय माहित्यशास्त्र द्वारा निर्धारित काव्यके दो भेदों-दृश्य, श्रव्य-मेंसे एक (श्रव्य काव्य सुना जाता है, इसका अभिनय नहीं होता) ।

अश्रित - वि० [सं०] अमयुक्त, अतिलुक्त, थका हुआ; दात; अपनी इन्द्रियोंकी वशमें करनेवाला, जितेंद्रिय । पु० तपस्वी । - **चित**, - **अता (नस्)** - **हृदय** - वि० क्लिप्त, विपण्ण । - **संघात**, - **संघात** - पु० थके हुएकी आसन आदि देकर आराम पहुँचाना ।

अश्रित - स्त्री० [सं०] थकान; श्रम; लेद ।

श्रावण-वि० [सं०] पक, पका हुआ; सूना हुआ; घृत, दूध, जंक आदिमें बिना डाले पकाया हुआ; तर । पु० उबाला हुआ था ।

श्रावण-श्री० [सं०] यवागू, कौजी ।

श्राद्ध-वि० [सं०] अद्राद्युक्त । पु० शास्त्रविहित पितृ-कर्म, शास्त्र तथा लोक-विधिसे अनुसार पितरोंका किया-कर्म; पितरोंकी प्रसन्नताके लिए अद्रा-पूर्वक दिया जानेवाला अन्न, वस्त्र आदिका दान; विश्वास । -**कर्ता**(श्री), -**कृत**-पु० श्राद्धकर्म करनेवाला । -**कर्म**(श्री)-पु०, -**किया**-श्री० श्राद्धके सिलसिलेमें होनेवाले (शास्त्रीक, लोक-न्यायकारके) काम । -**दिन**-पु० वार्षिक श्राद्धका दिन, किसी व्यक्तिके मरनेकी तिथि जिस तिथिकी वर्षमें एक बार उसके लिए श्राद्धकर्म किया जाता है । -**देव**, -**देवता** पु० श्राद्ध-कर्मके अवसरपर पूजे जानेवाले कोई देवता; यम; सत्ताके गर्भसे उत्पन्न विषस्वातृके पुत्र, वैवस्वत मनु; वैवस्वतमनुके पिता विवस्वान्; ब्राह्मण । -**पक्ष**-पु० कारका कृष्ण पक्ष जिसे पितृ-पक्ष भी कहते हैं । -**भुक्त**(श्री), -**भोक्ता**(श्री)-पु० पितर । -**शाक**-पु० काल-श्राद्ध । -**सूतक**-पु० श्राद्धमें खिलाये-फिलानेके लिए प्रस्तुत खाद्य पदार्थ । **सु०** -**श्राद्ध करना**-कोई काम चोपट कर देना; बुरे ढंगसे करना (भ्यं०) ।

श्राद्धिक-वि० [सं०] श्राद्ध-संबंधी । पु० श्राद्धभोक्ता, श्राद्ध-म दी गयी वस्तुका उपयोग करनेवाला; श्राद्ध-संबंधी वस्तु ।

श्राद्धी(श्री)-पु० [सं०] श्राद्ध-भोक्ता ।

श्राद्धीय-वि० [सं०] श्राद्ध-सम्बन्धी ।

श्राप*-पु० शाप ।

श्रापी(श्री)-पु० [सं०] पाचक, सूचकार ।

श्राप्-पु० [सं०] समय; महीना, मास; मरप, अस्वायी छाजन ।

श्राग्नेय, श्राग्नेयक-पु० [सं०] नया भिक्षु (शौ०) ।

श्राय-पु० [सं०] आश्रय, शरण; मंका ।

श्रावन्ती-श्री [सं०] धर्मपुरी; कालीमिचं ।

श्राव-पु० [सं०] सुननेकी क्रिया, श्रवण; बहनेकी क्रिया ।

श्रावक-वि० [सं०] सुननेवाला । पु० बौद्ध भिक्षु; जैन-सम्प्रदायी; शिष्य; दूरध्वनि; कौवा ।

श्रावण*-पु० है० 'श्रावक' ।

श्रावणी-पु० जैन ।

श्रावण-पु० [सं०] चांद्र वर्षके बारह महीनोंमें पाँचवाँ या वर्षाकालमें आपातके बाद पड़ता है; अग्नेद्विषयाद्या श्रावण; पार्ष्व; श्रावण नामक मन्त्र-पितृभक्त बालक । वि० अग्नेद्विष्य-संबन्धी, श्रावण नक्षत्रमें उत्पन्न । -**प्रत्यक्ष**-पु० अग्नेद्विष्य द्वारा किया गया प्रत्यक्ष, उक्त इद्विष्य द्वारा प्राप्त ज्ञान ।

श्रावणा-श्री० [सं०] दध्याली वृक्ष ।

श्रावणिक-पु० [सं०] चांद्र श्रावण मास । वि० श्रावण नाम संबंधी ।

श्रावणिका-श्री० [सं०] ओषधि विशेष ।

श्रावणी-श्री० [सं०] चांद्र श्रावण मासकी पूर्णिमा; रक्षा-पूजनका स्वीकार, सलौनी । दध्याली; मुंडी ।

श्रावण*-पु० गिराने, बहानेकी क्रिया ।

श्रावणा*-सं० कि० बहाना, टपकाना ।

श्रावस्त-पु० [सं०] राजा श्रावकके पुत्र (इन्होंने ही श्रावस्ती नगरी बसायी थी) ।

श्रावस्ति, श्रावस्ती-श्री० [सं०] उत्तर कोसलस्थित लव-की पुरी, रामायणमें इसे 'धरावती' कहा गया है । इसे 'धर्मपत्तन' और 'धर्मपुरी' भी कहते हैं । (अब यहाँ 'संवेत-महेत' है जो उत्तरी अवधमें है । यह बौद्धोंके लिए तीर्थतुल्य है, क्योंकि कुछ दिनोत्तक बुढ़ने यहाँ निवास किया था) ।

श्रावा-श्री० [सं०] मरि ।

श्रावित-वि० [सं०] सुनाया गया; कथित ।

श्राविता(श्री)-पु० [सं०] सुननेवाला ।

श्राविष्ट-वि० [सं०] श्राविष्टा नक्षत्र-सम्बन्धी ।

श्रावी(श्री)-पु० [सं०] सच्ची । वि० सुननेवाला ।

श्राव्य-वि० [सं०] सुनने योग्य; घोषित करने योग्य; सूचित किये जाने योग्य ।

श्रावित-वि० [सं०] आश्रित; सेवित; पका हुआ; रक्षित ।

श्रावित्वा(श्री)-वि० [सं०] आश्रयदाता; सेवक ।

श्राति-श्री० [सं०] आश्रय, सहारा ।

श्राव*-श्री० कल्याण, अभ्युदय ।

श्राव्यमव्य-वि० [सं०] अपनेकी योग्य माननेवाला; धमडी ।

श्रावा-श्री० [सं०] आधार, विष्णुकी पत्नी ।

श्री-श्री० [सं०] शोभा, सौंदर्य; संपद, संपत्ति; विभूति, ज्ञान-शोका; राजोचित गौरव, वेश-विन्यास, वेश-रचना; सजावट; प्रभा; कीर्ति, यश; इन्द्रि; सिद्धि; विष्णुकी पत्नी, लक्ष्मी; मरुत्वती, वाणी; त्रिवर्ग धर्म, अर्थ, काम; प्रकार, उपकरण, साधन; अधिकार; कृद्धि नामक ओषधि; लक्ष्य; सरल वृक्ष; कमल; चित्त वृक्ष; श्वेत चंदन; पकाना; एक तरहका मिल्क; बैठी; चट्टमाकी बारहवीं कला । पु० रागविशेष; वैष्णवोंका निर्वाही समुदाय; आदर्श-सूचक शब्द जो प्रायः व्यक्तियोंके नामके पूर्व लगाया जाता है; एक एकाक्षर वृत्त । वि० मिश्रित; योग्य; सुदृढ़ । -**कंठ**-पु० शिष्य; महाकवि भवभूतिक नामांतर; एक राग; कुजजांगल नामक भूभाग । -**० पदार्थ**-पु० भवभूति । -**० सत्त्वा**-पु० कुनेर । -**कंठ**-श्री० बंध्या कठोटी । -**कर**-पु० विष्णु; रक्तोष्णल, लाल कमल । वि० कल्याण-कारक । -**करण**-पु० लेखनी, कलम; कोसलकी प्राचीन राजधानी । -**कांत**-पु० कमलापति, विष्णु । -**काम**-वि० यश चाहनेवाला । -**कारी**(श्री)-पु० एक प्रकारका वृक्ष । -**कीर्ति**-श्री० नामका एक भेद (संगीत) । -**कृष्ण**-पु० व्रतविशेष । -**कृष्ण**-पु० बासुदेव ।

-**क्षेत्र**-पु० जगन्नाथपुरी । -**खंड**-पु० चन्द्रन; सिंहरन, एक पेय पदार्थ । -**शौल**-पु० मलयाचल । -**गणेश**-पु० आरम । -**शद्विष**-पु० अठारह उपरूपकोमेंसे एक ।

-**शर्मा**-पु० विष्णु; नलवा; राजाका शयनागार ।

-**प्राह**-पु० पक्षियोंके पानी पीनेका स्थान, पक्षिपानीय-स्थान । -**चन**-पु० नृद्ध; दधि, दही । -**चक्र**-पु० त्रिपुर-

सुखीकी पूजाके लिए एक यंत्र-विशेष (नं०); पृथ्वीका वृत्त; इन्द्रके रथका चक्र । -**चंदन**-पु० चन्द्रनका एक

मेद । -ज-पु० कामदेव; शांश । -टंक-पु० राग-विशेष । -सह-पु० सालका पेश । -सल-पु० एक नरक । -साह-पु० हिताल । -सेजा(अस्)-पु० बुद्ध । -द-पु० कुबेर । वि० शोभादायक; भीषण । -व्यसित-पु० विष्णु । -वामा(मन्)-पु० कृष्णके एक सखा; सुदामा । -वृम-पु० श्री वृक्ष । -धर-पु० विष्णु; 'श्रीमद्भागवत' आदि वैष्णव पुराणोंका प्रसिद्ध टीकाकार; एक तीर्थकर । वि० शोभायुक्त । -धाम (ध) पु० लक्ष्मीके रहनेका स्थान, कमल । -नवन-पु० लक्ष्मी-पुत्र, कामदेव; मगीतमें एक नाल । -नगर-पु० कश्यपकी राजधानी । -माध-पु० विष्णु । -निकेत-पु० कमल; सरलनिधो; सोना; वैकुण्ठ । -निकेतन-पु० सरल-निवास; लक्ष्मीका वासस्थान; वैकुण्ठ; विष्णु । -नितंबा-श्री० राधा । -मिथि-पु० विष्णु । -निवास पु० विष्णु; लक्ष्मीका निवासस्थान; विष्णुलोक, वैकुण्ठ । -पंचमी-श्री० वसनपंचमी जो माघ-शुद्धा पंचमीको पड़ती है । -पति-पु० लक्ष्मीपति, विष्णु; राजा; नृपति । -पथ-पु० राजमार्ग । -परी-श्री० महिला । -पद्म-पु० कृष्ण । -पर्ण-पु० कमल; अधिमथ वृक्ष । -पर्णिका-श्री० कट्फल वृक्ष । -पर्णी-श्री० यमारी वृक्ष; कट्फल वृक्ष; शास्मली वृक्ष; इटवृक्ष; अधिमथ वृक्ष । -पा-वि० सप्तदिकी रक्षा करनेवाला । -पिष्ट-पु० सरल वृक्षका रस, गौंद, गंधाविरीज । -पुत्र-पु० कामदेव; इंद्रका पौत्र; पौत्र; चन्द्रमा । -पुष्प-पु० लवण; पद्मकाष्ठ; श्वेत कमल । -प्रद-वि० कल्याणकारक । -प्रसून-पु० कंबल । -प्रिय-पु० हरताल । -फल-पु० विस्व वृक्ष, बेल्का पेश; राजादनी वृक्ष; खिरनीका पेश; लक्ष्मीकी कृपाका फल, धन, द्रव्य; नारियल । -फल-श्री० नीली; सुदर कारवेली । -फलिफा-श्री० सुदर कारवेली; मधानीली वृक्ष । -फली-श्री० आमलकी, ऑखला; नीली । -बंधु-पु० अमृत । -भक्ष-पु० मधुपर्क । -भद्रा-श्री० भद्रमुखक । -भ्राता (भृ)-पु० चंद्रमा; पौत्र (समुद्र-मंथनके समय श्री-लक्ष्मीके साथ उपपन्न होनेके कारण ये उनके भ्राता कहलाते हैं) । -मंजरी-श्री० तुलसी । -मंद पु० धनका धमंड । -मलापहा-श्री० तंबाकू, धूम्रपत्र । -मस्तक-पु० रसीन, लहसुन । -माळ-पु० विष्णुकी माला; मलेका एक आभूषण । -मुख-पु० शोभायुक्त आनन, मुख; कालचक्रका सातवाँ बर्ण; पत्रमें छिद्रित 'स्वस्ति' आदि वाचक शब्द; रवि, सै (केदार) । -मूर्ति-श्री० विष्णु या लक्ष्मीकी प्रतिमा; प्रतिमा । -मुक्त-मुक्त-वि० लक्ष्मीवान्; सौंदर्यपूर्ण; आदर-सूचनार्थ (जीवित) पुरुषोंके नामके पूर्व लगाया जानेवाला विशेषण । -रंश-पु० विष्णु; तालका एक मेद (स्पीत) । -रहण-पु० मेरु राश्यांतर्गत एक तीर्थस्थान जहाँ 'रंतस्वामी' का मंदिर है । -रमण-पु० विष्णु; एक संकर राग । -रवण-पु० विष्णु । -रस-पु० तारपीन; रजन, गंधाविरीज । -राग-पु० रागविशेष । -राम-पु० दशरथ-पुत्र तथा सीतापति राम । -नवमी-श्री० चैत्र-शुद्धा नवमी (यह रामकी जन्म-तिथि मानी जाती है) । -लता-श्री० महाज्योतिष्मती; बड़ी माल्लकंगनी । -बत्स-पु०

विष्णु; विष्णुके बहस्यकपर दाहिनी ओर सफेद बालोंकी मेढरी, यह भंगुटेमरकी मानी जाती है । घुघुके द्वारा विष्णुके बहस्यक कात मारे जानेका यह चिह्न है; अर्धतोंका एक ध्वज; सुरंग, सेंपका एक मेद । -धारी (विष्), -धृद, -लक्ष्मा(कमन्), -कांजन-पु० विष्णु । -बत्सक, बत्सकी(किन्)-पु० एक प्रकारका पौधा जिसकी छातीपर सफेद बालोंकी मेढरी होती है । -बत्साक-पु० विष्णु । -बर-पु० विष्णु । -बराह-पु० बराहावतार धारण करनेवाले विष्णु । -बर्हान, -बर्धन-पु० शिव । -बत्सक-पु० विष्णु; जो व्यक्ति लक्ष्मीका प्रिय है, धनी व्यक्ति । -बत्सकी-श्री० एक प्रकारकी कंकडधान लता; महिलाका एक मेद । -बाटी-श्री० एक प्रकारकी नागबली । -बारक-पु० सितावर नामक शाक । -बास-पु० विष्णु; शिव; कमल; सरल वृक्षका रस, तारपीनका तेल । -बासा(सख्)-पु० तारपीन । -बिद्या-श्री० एक महाविद्या, त्रिपुरसुंदरी (तं०) । -बृह-पु० अश्वत्थ वृक्ष; विस्व वृक्ष; पौत्रेकी छातीपरकी सफेद बालोंकी एक प्रकारकी मेढरी । -बृहक-पु० पौत्रेकी छातीपरकी सफेद बालोंकी एक प्रकारकी मेढरी । -बृद्धि-श्री० नोषिवृक्षकी एक देवी । -बेष्ट, -बेष्टक-पु० तारपीन; रजन । -वैष्णव-पु० रामायुज; विशिष्टाद्वैत संप्रदायके वैष्णव । -संज्ञ-पु० लंग, कृष्ण । -संपदा-श्री० कृद्धि नामक ओषधि । -सदा-श्री० [हिं०] रात्रि । -समाध-पु० एक राग । -सहोदर-पु० (समुद्र-मंथनमें लक्ष्मीके साथ उदयपन्न होनेवाला) चन्द्रमा । -सूफ-पु० एक वैदिक वस्त्रका नाम । -हृष्ट-पु० सिलहट नामक एक नगर । -हृत्-वि० सौंदर्यहीन; कांतिहीन । -हरि-पु० विष्णु । -हर्ष-पु० संस्कृतके प्रसिद्ध महाकाव्य 'नैषधीयचरितम्'के रचयिता । -हृत्स्नि-श्री० नागवती नामक वृक्ष; खर्च-मुखीका पौधा । श्रीमंत-वि० धनी, लक्ष्मीवान्; सौंदर्य-शाली । पु० एक शिरोभूषण । श्रीमती-श्री० [मं०] राधिका; स्त्रियोंके नामके पूर्व जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द; पुरुषोंके नामके पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाये जानेवाले 'श्रीमान्' शब्दका स्त्रीलिंग रूप जिसमें उनकी पत्नीका बोध होता है; पत्नी । श्रीमान् (मन्)-वि० [मं०] शोभायुक्त; धनी, संपत्ति-शाली, संपन्न, मोक्षशाली । पु० विष्णु; शिव; कुवेर; तिलक वृक्ष; पीपलका पेश; पुरुषोंके नामके पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जानेवाला शब्द । श्रील-वि० [सं०] लक्ष्मीवान्; शोभायुक्त; जो अश्लील न हो । श्रीवंत-वि० श्रीमान्, श्रीमान् । श्रीस-पु० [सं०] लक्ष्मीपति विष्णु । सुखाह-पु० [सं०] विकृत वृक्ष । अमिका-श्री० [सं०] सज्जिकाक्षार, सज्जीखार । शुभ-वि० [सं०] शुभा हुआ, आकर्षित; विमुक्त, प्रसिद्ध, विख्यात; शांति । पु० परम्परासे सुनकर रक्षित वेद; शास्त्र; श्रवणका विषय । -काम-वि० वेदादिके ज्ञानका इच्छुक ।

—कीर्ति—स्त्री० जनकके सार्व कुशध्वजकी कथा जिसका विवाह सप्तपत्नीसे हुआ था। वि० कीर्तियुक्त; जिसकी कीर्ति सुनी गयी हो। पु० अनुनका एक पुत्र। —केबली—(विन)—पु० जैन अर्हंतका एक वर्ग। —देवी—स्त्री० बाणी, सरस्वती। —धर—पु० कान। वि० सुनकर स्मरण रखनेवाला। —निगदी(विन्)—वि० किसी बात, मजमून आदिको एक बार सुनकर व्योका त्यों कह देनेवाला। —निष्कय—पु० शिक्षायुक्त। —पूर्व—वि० पहले सुना हुआ, पूर्वश्रुत। —विज्ञ—वि० वेद, शास्त्रका पंडित। —विस्त—वि० वैदिक शास्त्रका धनी, वेदका पंडित। —वृद्ध—वि० विद्वान्। —शील—वि० जिसका शील, सदाचार विशुद्ध, प्रसिद्ध हो। पु० विद्या, ज्ञान और सदाचरण। —अवा(वस्)—स्त्री० शिशुपालके पिता। —अवानुज—पु० ज्ञानि ग्रह। —ओणी—स्त्री० द्रवनी। श्रुताद्यन—पु० [सं०] ब्रह्मवाद।

श्रुताध्ययन—पु० [सं०] वेदका अध्ययन।

श्रुतान्वित—वि० [सं०] वेदश्रु, वेदका ज्ञान, ज्ञानकार; शास्त्रज्ञ।

श्रुतायु—पु० [सं०] एक; सर्ववशीय नरेश।

श्रुतार्थ—पु० [सं०] सुनी हुई या जवानी बड़ी हुई बात।

श्रुति—स्त्री० [सं०] सुननेकी क्रिया; कान; श्रवण, ध्वनि; वेद; ज्ञान; बात; बातचीत; किंवदंती, जनश्रुति; अवगमन; नरेश; नरकी मर्यादा; अनुप्रासका एक प्रकार; एक स्वरमे दूसरे स्वरपर जाने समझका अर्थगत सूक्ष्म स्वरान्तर (मगान); मर्मकोण जिसुजकी कर्णरेखा, माननेकी रेखा। —कट—पु० मीप; तपस्या। —कटु—हुट्ट—वि० कर्णकटु, कानोंकी खटकने, कठोर लगनेवाला। पु० एक काव्य-दोष जो कर्णकटु बणों, 'ट' वर्ण आदिके प्रयोगसे आ जाता है। —कथित—वि० वेदोंमे कहा गया या बताया गया। —कीर्ति—स्त्री० दे० 'श्रुतकीर्ति'। —गम्य—शोचर—वि० जो सुना या मने, श्रवणद्विषया; श्रुत, सुना हुआ। —बीषिका—स्त्री० धर्मशास्त्र। —धर—वि० वेदक सुनकर स्मरण रखनेवाला, श्रवणमात्रसे अभ्यास करनेवाला; वेदज्ञ; शास्त्रज्ञ; भननेवाला। —निगदी(विन्)—वि० 'श्रुतिनिगदी'। —निदर्शन—पु० वेदका आदेश, वेदका दर्शन। —पथ—पु० कर्ण-कुहर, श्रवणद्विषया मार्ग; वेदमार्ग, वेद-विहित पथ। —पुट—पु० कर्णरंध्र। —प्रमाण—पु० वेदका प्रमाण, वेदकी प्रतीति। —प्रसावन—वि० दे० 'श्रुतिमयुर'। —प्रासाव्य—पु० वेदकी प्रमाणिकता, वेदकी स्वीकृति। —माल—पु० श्रुतानुन, ब्रह्मा। —मंडल—पु० कानका बाहरी ढाँचा। —मयुर—वि० कानकी मीठा लगनेवाला, कर्ण-सुख। —मुख—पु० ब्रह्मा। —मूल—पु० कर्णमूल, कानकी जड़; वेदका मूल पाठ, वेद-संहिता। —मूलक—वि० वेदके आधारपर स्थित, वेदश्रुत। —रंजक—वि० कानोंकी आनंददायक, कर्ण-मयुर। —वर्जित—वि० बहिर्ग, बहिर्; जो वेद द्वारा विहित न हो; जो वेदश्रुत नहीं। —विहर—पु० कर्णकुहर। —विषय—पु० श्रवणद्विषया विषय, श्रवण, ध्वनि; वेदगत विषय, वेदवर्णित वस्तु। —वैष—पु० कर्णवैष संस्कार, कर्णवेदन। —सागर—पु० विष्णु। —सुख—वि० कानोंके लिए सुख। पु०

श्रवणद्विषया द्वारा प्राप्त आनंद, संगीत आदि द्वारा मिली कर्ण-तृप्ति। —० कर, ००—वि० कर्णमयुर, श्रवणानंद-दायक। —स्फोट—पु० साहित्यगत ज्वर, मियादी बुखार-के अंतर्मे कानकी जड़में होनेवाला फोड़ा जो प्रायः प्राण-धातक होता है; कानकी जड़ या इसके भीतरका फोड़ा। —स्फोट—स्त्री० कर्ण-स्फोटा कला। —स्फुटि—स्त्री० वेद और धर्मशास्त्र। —हर, हारी (विन्)—वि० श्रवणद्विषया आकृष्ट करनेवाला (जैसे—संगीत आदि)।

श्रुत्य—वि० [सं०] श्रवणीय, सुना जाने योग्य; विश्रुत, विख्यात। पु० नामकरीका काम।

श्रुत्यनुप्रास—पु० [सं०] अनुप्रासका एक भेद जिसमें सुस-के एक ही व्यंजनमे उच्चरित होनेवाले व्यंजनोंकी कई बार आवृत्ति हो।

श्रव—पु० [सं०] यज्ञ, याग; सुवा।

श्रुवा—स्त्री० [सं०] सुवा; सूवा। —बृह—पु० विवर्कत वृक्ष।

श्रवमाण—वि० [सं०] जो सुना जाय; सुना जाता हुआ; प्रसिद्ध।

श्रेटी, श्रेष्ठी—स्त्री० [सं०] जिस जातीय द्रव्योंकी मिलानेके लिए गणनागणेश (लीलावती), संख्या आदिकी नियमित वृद्धि या इसका मास (ग०)। —फल—पु० श्रेष्ठीका योग, जोड़। —श्रवणहार—२० श्रेष्ठी-गणनाका एक ढंग (लीला-वती)।

श्रेणि—स्त्री० [सं०] विच्छेद-रहित पंक्ति, श्रृङ्खला; रेखा; समूह, संघ, दल, वर्ग; एक ही व्यापार, शिष्टकार्य आदि करनेवालोंका सघटन, संघ; जल-पात्र, बाल्टी। —बद्ध—वि० पंक्तिबद्ध।

श्रेणिक—पु० [सं०] सामनेका दौल।

श्रेणिका—स्त्री० [सं०] तबू; एक वृत्त।

श्रेणी—स्त्री० [सं०] दे० 'श्रेणि'। —धर्म—पु० किसी संप्रदाय, वर्ग, दल आदिके नियम; व्यापारिवर्गकी गति, इसका नियम। —पाद—पु० श्रेणी-प्रधान राक्ष, जनपद। —प्रमाण—पु० किसी श्रेणीके नियमोंकी मानकर चलनेवाला व्यापारी, शिल्पी। —बंध—पु० पंक्ति बनाना। —बद्ध—वि० एक पंक्तिमे स्थित; एक श्रृंखलामे बंधा हुआ; दलबद्ध। —भुक्त—वि० श्रेणीके बीच आया, मिला हुआ, श्रेणीबद्ध।

श्रेणीकरण—पु० [सं०] क्रमसे सजाने, लगानेका कार्य, वर्गीकरण।

श्रेणीकृत—वि० [सं०] क्रमसे लगाया हुआ, वर्गीकृत।

श्रेय (स्)—पु० [सं०] धर्म; सुक्ति (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अर्थात् चतुर्वर्गकी भी श्रेय कहा गया है); शुभ, मंगल; शुभ अवसर, यश; सुख, पुण्य (श्रेयान्)। वि० अपेक्षाकृत अच्छा, बेहतर; श्रेष्ठ; उत्पुङ्गव हितकर, मंगलमय।

श्रेयसी—स्त्री० [सं०] हरिणकी, हरि; पाठा; शिष्यपत्नी; राक्षसी। वि० स्त्री० मंगलमयी।

श्रेयस्कर—वि० [सं०] मंगलकारी, कल्याणकर। [स्त्री० 'श्रेयस्करी']।

श्रेष्ठ—वि० [सं०] सबसे अच्छा, अति उत्तम, उत्कृष्ट; सर्व-प्रधान; वयमें सबसे बड़ा, श्रेष्ठ; अत्यंत प्रिय। पु० गायका दूध; ब्राह्मण; राजा; विष्णु; शिव; कुबेर। —काष्ठ—पु०

शाक वृक्ष, सागौनका पेड़ ।

श्रेष्ठा-स्त्री० [स०] (सौदर्य, शील आदिमें) उत्तम नारी, स्वरूपनिनी; मेधा ओषधि ।

श्रेष्ठस्त्व-पु० [सं०] शुक्लत्व; हमली ।

श्रेष्ठभ्रम-पु० [सं०] गृहस्वाभ्रम (हस आश्रमको श्रेष्ठ हस-लिय कहा गया कि हममें रहकर तीनों आश्रमोंका पावन-पोषण हो सकता है); गृहस्थ ।

श्रेष्ठी (शिव)-पु० [सं०] व्यापारियों, व्यवसायियों, बनिनों-का प्रधान; सेठ; अत्यंत धनी व्यक्ति ।

श्रेष्ठा-वि० [सं०] पटु, लँगड़ा । पु० एक रोग; * शोण, लहू ।

श्रेष्ठा-स्त्री० [सं०] माँस; कांजिक, काँजी; अरुण नक्षत्र ।

श्रेष्ठा-स्त्री० [सं०] कठि, कमर; नितंब; मार्ग । -तट-पु० नितंबको डाल । -देश-पु० नितंबवाला क्षेत्र ।

-फल-फलक-पु० कठि-प्रदेश । -विश्व-पु० गोल नितंब; कमर-पट्टा । -सूत्र-पु० मेखला; कमरमें लट-कती हुई तलवार आदिका बंधन ।

श्रेष्ठीका, श्रेष्ठीका-स्त्री० [सं०] नितंब ।

श्रेष्ठीका-पु० दे० 'श्रेष्ठा' ।

श्रेष्ठी-स्त्री० [सं०] दे० 'श्रेष्ठा'; मध्यभाग । -फल-पु० नितंब । -भार-पु० नितंबोंका भार । -सूत्र-पु० करधनी ।

श्रेष्ठःआपत्ति-स्त्री० [सं०] साधकका निर्वाणके श्रोतमें पड़ जाना, निवर्णेष्यक साधककी प्रथमावस्था जिसमें उसके सांसारिक माया-मोह-बंधन कम होने लगते हैं (श्री०) ।

श्रेष्ठ(स्)-पु० [सं०] कर्ण, कान, अरुणेश्वर; इन्द्रिय (जिनके मार्गसे शरीरके मूल तथा आत्मा-निकलती है); हाथीकी सूँठ; नदीकी धारा, लोत ।

श्रेष्ठस्त्व-वि० [सं०] अरुणीय, अरुण, जो सुना जाय, सुनने योग्य ।

श्रेष्ठा(स्)-वि०, पु० [सं०] अरुणकर्ता, सुननेवाला ।

श्रेष्ठ-पु० [सं०] कर्ण, कान, अरुणेश्वर; वेद, श्रुति; वेद-विषयक नेपथ्य । -कांता-स्त्री० एक पौधा जो दवाके काम आता है । -पदवी-स्त्री० अरुणक्षेत्र । -वचानुस-वि० श्रुतिप्रिय । -पाक्षि-स्त्री० कानकी लहरी ।

-पेश-वि० कानों द्वारा प्रवर्ण करने योग्य, अरुणीय । -भार्य-बल्लभ(स्)-पु० अरुणपथ । -मूल-पु० कर्ण-मूल । -सुख-वि०, पु० दे० 'श्रुतिसुख' । -हीन-वि० बहुरा ।

श्रेष्ठविष-वि० [सं०] वेदक, वेदाध्ययनकर्ता । पु० वेदक शास्त्रण, वेदाध्ययन करनेवाला शास्त्रण; शास्त्राणोंकी एक शाखा ।

श्रेष्ठविषा-स्त्री० [सं०] श्रेष्ठविषका धर्म ।

श्रेष्ठी-पु० दे० 'श्रेष्ठविष' ।

श्रेष्ठ-पु० दे० 'श्रेष्ठ' ।

श्रेष्ठित-पु० दे० 'श्रेष्ठित' ।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] अरुण, कर्ण-संबंधी, वेद, श्रुति-संबंधी; वेदोक्त, वेदसम्मत; वरुण-संबंधी । पु० वरुण (जो तीन प्रकारकी होती है-पार्ष्णिक, वायव्यीय तथा दक्षिण) ।

-कर्म(स्)-पु० वैदिक कृत्य । -कर्म(स्)-पु० उप-

नयन संस्कार । -भार्य-पु० कर्णपथ । -सूत्र-पु० कृत्य नामक वेदांगका कर्मकांड-संबंधी निर्देशग्रंथ ।

श्रेष्ठभ्रम-पु० [सं०] अश्रुतवाका पुत्र, सिंहापाल ।

श्रेष्ठ-पु० [सं०] कर्ण, कान; श्रेष्ठियकर्म ।

श्रेष्ठ-पु० दे० 'अरुण' ।

श्रेष्ठ-पु० [सं०] कमल ।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] अरुण या महीन; विकृण, विकन; कोमल, नरम; मधुर; मनोहर, सुंदर; सखा । -स्वक-

(स्)-पु० अरुणतक वृक्ष; सुंदर वल्कल । -पत्रक-पु० आननस । -वादी(विश्व)-वि० मधुरभाषी ।

श्रेष्ठक-वि० [सं०] श्लक्ष्ण । पु० पूगफल, सुपारी ।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] शिथिल, ढीला; ढीला किया हुआ; छूटा हुआ, बिखरी हुआ (जैसे-बाल); दुर्बल ।

श्रेष्ठार्थ-वि० [सं०] जिसके अंग ढीले या शिथिल हो गये हों ।

श्रेष्ठान-पु० [सं०] (अपनी) प्रशंसा, तारीफ करना चापलूसी करना । वि० आत्मप्रशंसी ।

श्रेष्ठानीय-वि० [सं०] श्रेष्ठ, प्रशंसनीय ।

श्रेष्ठार्थ-स्त्री० [सं०] प्रशंसा; चापलूसी; आत्म-प्रशंसा, आत्मगुण-कथन; अभिलाष; परिचर्या ।

श्रेष्ठित-वि० [सं०] प्रशंसित ।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] श्लक्ष्णानीय, प्रशस्त ।

श्रेष्ठ-पु० [सं०] लंपट; शून्य; आश्रित व्यक्ति; ज्योतिष ।

श्रेष्ठ-स्त्री० [सं०] आश्रित; सधोग ।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] आश्रित, परिश्रित, सम्मिलित, संयुक्त; श्रेष्ठयुक्त; द्वयर्थक, अनेकार्थक । -रूपक-पु० वह अनेकार्थक जहाँ श्रेष्ठ शब्द द्वारा रूपका विधान किया गया हो । -वर्त्म(स्)-पु० पलकोंका चिपकना ।

श्रेष्ठि-स्त्री० [सं०] आश्रित; मदाव, लगाव ।

श्रेष्ठोक्ति-स्त्री० [सं०] द्वयर्थक बात ।

श्रेष्ठिपद-पु० [सं०] पैर फूलनेका रोग, फोमपाँव, हाथी-पाँव । -प्रथम-पु० आरंभ वृक्ष ।

श्रेष्ठिपदपद-पु० [सं०] पुत्रजीवका पेड़ ।

श्रेष्ठिपदी(विश्व)-वि० [सं०] फोमपाँवका रोगी ।

श्रेष्ठि-वि० [सं०] जो अश्लील न हो; श्रेष्ठ समाजमें दिखाये या पढ़े जाने योग्य, सम्बोधित; श्रेष्ठ; शोभायुक्त; लक्ष्मीवान ।

श्रेष्ठ-पु० [सं०] आश्रित; संयोग; लगाव; एक शब्दा-लंकार जिसमें एक शब्दके कई अर्थों द्वारा काव्यमें चमत्कार उत्पन्न होता, किया जाता है ।

श्रेष्ठोक्ति-स्त्री० [सं०] दे० 'श्रेष्ठोक्ति' ।

श्रेष्ठोपमा-स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार ।

श्रेष्ठी(विश्व)-वि० [सं०] आश्रित करनेवाला ।

श्रेष्ठ-श्लेष्य-श्लेष्य(भ्यन्त)का समासगत रूप । -जन-पु० केतकी; जूही । -ध्या-स्त्री० मलिका; केतकी । वि० स्त्री० कफका नाश करनेवाली । -ध्या-स्त्री० मलिका; श्रेष्ठोपमा; विकट-जो ठो, पीपर और मिर्च । -ध्या-वि० श्लेष्यसे उत्पन्न । -ध्या-पु० कृष्ण । -ध्या-पु० कटफल वृक्ष । वि० कफनाशक । -ध्या-वि० कफ नष्ट करनेवाला ।

श्लेष्यक-पु० [सं०] दे० 'श्लेष्या' ।
श्लेष्यन-वि० [सं०] कफ-संबंधी; कफवाला ।
श्लेष्यनार-खी० [सं०] एक पौधा ।
श्लेष्यल-वि० [सं०] श्लेष्यायुक्त । पु० लिटोरेका पेड़ ।
श्लेष्यालक-पु० [सं०] लिटोरेका पेड़, बहुवार वृक्ष ।
श्लेष्या(व्यव)-पु० [सं०] कफ, बलगम ।
श्लेष्यास, **श्लेष्यालक**-पु० [सं०] बहुवार वृक्ष ।
श्लेष्यिक-वि० [सं०] श्लेष्या, कफ-संबंधी; श्लेष्या उत्पन्न करनेवाला, कफ पैदा करनेवाला ।
श्लेष्यी(शिल्प)-पु० [सं०] गंधाविरोधा ।
श्लोक-पु० [सं०] यश, कीर्ति (जैसे-पुण्यश्लोक); प्रशंसा या प्रशंसाका विषय; संस्कृतका (प्रशंसात्मक) पद्य; संस्कृतका अनुष्टुप् छंद । -**कार**-पु० श्लोक ब्रजनेवाला ।
-बद्ध-वि० छंदीबद्ध ।
श्लोष-पु० [सं०] लंका आदमी ।
श्वः(श्वन्)-पु० [सं०] आगामी कल ।
श्व-‘श्व(शन्)’का समस्त पदोंमें व्यवहृत रूप । -**कंटक**-पु० त्रास और शूद्रासे उत्पन्न मतान । -**क्रीडी(शिल्प)**-पु० (लेलाडी) कुत्तोंकी पालनेवाला व्यक्ति ।
-गणिक-पु० शिकारी; कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति ।
-ग्रह-पु० कुत्ते पकड़नेवाला; बखीकी त्रास देनेवाला एक अनुर । -**जीविका**-खी० गुलामी, दासता ।
-ईश्वर-पु० गोक्षुर, गोक्षुरक; गोखरका पौधा । -**ईश्वर**-खी० कुत्तेकी दाढ़; गोक्षुरक; गोखरका पौधा । -**चूर्त**-पु० श्वाल, खार । -**नर**-पु० कमीना; आदमी, नीच व्यक्ति । -**पक्(श्)**, -**पक्**, -**पाक**-पु० चांउल; वधिक, फाँसी देनेवाला; कुत्तेका मांस पकाने, खानेवाला ।
-पति-पु० कुत्तोंका मालिक, कुत्ते पालनेवाला ।
-पद्-पु० कुत्तेका पैर; कुत्तेके पदचिह्न जैसा निशान ।
-पामन-पु० पपरी नामक पौधा । -**पुच्छ**-पु० कुत्तेकी पूँछ; बिच्छू । -**पुच्छा**-खी० पिठवन । -**फल**-पु० बीजपूर नामक नौद; बीजपूर वृक्ष । -**फल्क**-पु० अमरके पिया । -**मीह**-पु० (कुत्तेमें करनेवाला) र्यार, गाला । -**वृत्ति**-खी० (कुत्तेकी समान) पराधीन वृत्ति, मेवा, नौकरी; कुत्तेकी भाँति जूठन खाने, चाटनेवाली वृत्ति; पराश्रित रहनेकी आदत । -**ध्यात्र**-पु० हिल पशु; चीता; बाघ । -**सुत**, -**सुन**-पु० कुकरीया । -**हन्(इन्)**-पु० शिकारी ।
शक-पु० [सं०] भेषिया ।
शन्न-पु० [सं०] छेद, दरार ।
शय, **शयन**-पु० [सं०] झुजन; झुकि, स्तब्धि ।
शयधु-पु० [सं०] झुजन, शोध ।
शयी-खी० [सं०] रोग ।
शयुर, **शयुरक**-पु० [सं०] मसुर-पति या पत्नीका पिता ।
शयुर्य-पु० [सं०] शयुरका पुत्र, पति या पत्नीका भाई-देवर; साला ।
शभू-खी० [सं०] पति या पत्नीकी माता-साम ।
शमन-पु० [सं०] सौंल लेना; हॉफना; आह भरना; निःश्वास; पवन, वायु, मदन वृक्ष; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था । -**ईश्व**-पु० बाकका छेद ।

शसनाशन-पु० [सं०] (हवा ही आहार है जिसका) मीप, सर्प ।
शसनश्वर-पु० [सं०] अजुन वृक्ष ।
शसनोत्सुक-पु० [सं०] सर्प ।
शसान-वि० [सं०] जीवित ।
शसित-पु० [सं०] श्वास; आह । वि० श्वास निकालने, ग्रहण करनेवाला; श्वासयुक्त; जीवित; आह भरनेवाला ।
शसन-वि० [सं०] आगामी कल-संबंधी; भविष्य-संबंधी ।
[खी० ‘शसनी’] पु० आगामी कल; भविष्य ।
शस्त्र-वि० [सं०] दे० ‘शस्तन’ ।
शा(शन्)-पु० [सं०] कुत्ता ।
शागणिक-पु० [सं०] कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति, कुत्ता पालकर जीवन-निर्वाह करनेवाला व्यक्ति ।
शाग्र-पु० [सं०] कुत्तेकी दम ।
शागिक-पु० [सं०] शिकारी; कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति ।
शाद्-पु० [सं०] दे० ‘शपाक’ ।
शान-पु० [सं०] कुक्षुर, कुत्ता; दोहेका एक प्रकार; छप्पसका एक प्रकार । -**शिल्पिक**-खी० बहुधा साग ।
-निद्रा-खी० कुक्षुर-निद्रिया, कुत्तेकी नींद, कुत्तेकी भाँति पुरत खुल जानेवाली नींद, गादी नहीं, इलकी नींद । -**बैलरी**-खी० कुत्तेका गुराना ।
शानी-खी० [सं०] कुतिया ।
शापद्-वि० [सं०] बगली, बर्बर; डरावना, भयकर ।
 पु० हिल पशु (जैसे-श्वार्थ, चीता आदि) ।
शाबित्, **शाबिद्**, **शाबिष्**-पु० [सं०] श्वव, लाठी ।
शाध-पु० [सं०] शैव (जिनका बाहन कुत्ता है) ।
शास-पु० [सं०] नाकसे प्राणवायु, ताजी हवा शरीरके भीतर ले जाने तथा भीतरसे दूषित वायु निकालनेका कार्य, सौंल, शसित; आश; हॉफनेकी क्रिया; वायु; श्वास; दमा नामक रोग । -**कष्ट**-पु० सौंल लेने और निकालनेकी तकलीफ (‘श्वास-कष्ट’का प्रयोग प्रसंगत: ‘दमा’ रोगके लिए भी होता है) । -**कास**-पु० श्वासयुक्त कास रोग, श्वासजनित खाँसी, दमा । -**क्रिया**-खी० श्वास-ग्रहण और श्वागका कार्य । -**कुठार**-पु० श्वास रोगकी एक औषध (आंवें) । -**धारण**-पु० दम रोकनेका काम, कुंभक प्राणायाम । -**प्रश्वास**-पु० सौंल लेना और निकालना । -**धारण**-पु० प्राणायाम । -**रोध**-पु० सौंल लेनेकी क्रियाको रंद रखना; श्वासका रुक होना, दम घुटना । -**हिल**-खी० एक प्रकारकी चिचकी । -**हीन**-वि० मृत । -**हेति**-खी० गादी नींद (जिसमें श्वास, दमा थोड़े समयके लिए रुक जाता है) ।
शासा-खी० सौंल ।
शासावि-पु० [सं०] पुष्करमूल ।
शासी(सिन्)-पु० [सं०] वायु; श्वास लेनेवाला प्राणी ।
शासोच्छ्वास-पु० [सं०] वैद्यपूर्वक सौंल लेना और बाहर निकालना ।
शित-वि० [सं०] श्वेत, सफेद । पु० श्वेतता, सफेदी ।
शिति-खी० [सं०] श्वेतता, सफेदी ।
शित्य, **शित्य**-वि० [सं०] श्वेत जैसा, सफेदी लिये हुए ।

चित्र-पु० [सं०] इवेत कुड, सफेद कोद । -**झी-झी०** पीतपर्णी, रुधिराक्षी । -**झर-वि०** कुडनाशक ।

चित्रा (त्रिभु) -**वि०** [सं०] इवेत कुड-संबंधी; सफेद कोद-वाला । पु० इवेत कुडका रीपी ।

इवेत-वि० [सं०] सफेद, उज्ज्वल, उज्जला; वेधम्बेका, निष्कलंक; गौर, गोरा (इसे-इवेत जाति) । पु० शुद्ध वर्ण, सफेद रंग (वैद्यानिकोंका मत है कि इवेतवर्णमें सारी वर्ण अंतर्भुक्त हैं। सूर्यकी किरणें इवेत हैं। किंतु इनमें सारी रंग मिलते हैं); चांदी, रूपा; कौडी, कपर्दक; शंख। इवेत वन, सफेद बादल, शुक्ल ग्रह; एक दीप; पर्वतविशेष; जीवक नामक औषधि; सफेद जीरा; शिबका एक अवतार; एक राजा । -**कंटकारी-झी०** इवेत वर्णके पुष्पमे युक्त कंटकारी । -**कंव-पु०** प्याज । -**कंदा-झी०** अतिविषा, अतीस । -**कपोत-पु०** एक तरहका चूहा; एक सर्प । -**कल्प-पु०** कल्पविशेष । -**कांडा-झी०** सफेद रंगकी दूब । -**काक-पु०** मफेद कौआ-कोई अनहोनीसी बात । -**कापोती-झी०** एक पौधा ।

-**किमिही-झी०** शतपत्रा । -**कुंजर-पु०** इद्रका ऐरावत हाथी; सफेद हाथी । -**कुलि-पु०** एक मछली । -**कुड-पु०** सफेद कोद । -**कृष्ण-झी०** एक विषल कौआ । -**केतु-पु०** उदर; केतु ग्रह; एक कवि । -**केस-पु०** एक शिशु; पका बाल, सफेद बाल । -**कोल-पु०** शफर नामक मत्स्य । -**क्षार-पु०** खोरा । -**गज-पु०** दे० 'इवेत-कुंजर' । -**गरुड-गरुड-पु०** (सफेद पंखों-वाला) इंस । -**गुंजा-झी०** सफेद रंगकी पुष्पची ।

-**बंदा-झी०** नामवती । -**चंदन-पु०** सफेद चंदन । -**चरण-पु०** एक पक्षी । -**चिकिका-चिल्ली-झी०** एक साग । -**चक्र-पु०** सफेद छाता । वि० सफेद छत्रवाला । -**चक्र-पु०** इंस; वनतुलसी । -**जीरक-पु०** सफेद जीरा । -**टंकक-टंकक-पु०** सारा सोहमा ।

-**दूवा-झी०** सफेद दूब । -**दुति-पु०** चंद्रमा । -**हुम-पु०** वरुण वृक्षका एक भेद । -**द्विप-पु०** दे० 'इवेत-कुंजर' । -**द्वीप-पु०** चंद्रद्वीप; वैकुण्ठ नामक विष्णु-आम; दूरीपका 'हाइट आइसलेव' । -**धातु-झी०** खकिया मिट्टी; सफेद रंगकी धातु । -**धामा- (मन्)-पु०** चंद्रमा; कपूर; समुद्रफेन; अपामार्ग; अपराजिता ।

-**नील-पु०** बादल । -**पटल-पु०** जस्ता । -**पन्न-पु०** इंस; किसी बातों, संधि-चर्चा आदिके अंतमें उसमें तय हुई बातोंकी (लखित) घोषणा (राजनीति) ।

-**रथ-पु०** मझा (इवेतपन्न, हंस त्रिनका रथ-वाहन है) । -**पर्णा-झी०** वारिपर्णा । -**पर्णास-पु०** इवेत तुलसी । -**पाद-पु०** शिबका एक गण । -**पिंग-पु०** सिंह । -**पिंगल-पु०** सिंह; महादेव । -**पिंगलक-पु०** सिंह । -**पुष्प-पु०** सिंधुवार वृक्ष; सफेद फूल ।

-**पुष्पक-पु०** कर्कोर वृक्ष । वि० इवेत पुष्पवाला । -**पुष्पा-झी०** घोषावती; नामवंती; मृगवती । -**पुष्पिका-झी०** पुनदात्री लता; महाशयपुष्पिका । -**प्रवर-पु०** प्रदरका एक भेद जिममें जननेंद्रियसे मफेद रंगका स्राव होता है (नारी रोग) । -**प्रसर-पु०** इवेत मर्मर, सफेद संगमर्मर । -**बर्बर-पु०** एक प्रकारका चंदन ।

-**बिंदुका-झी०** सफेद बम्बोवाली (भतः विवाहके अयोग्य) लकड़ी । -**बुद्धा-झी०** वनतिता । -**बंदा-झी०** इवेत अपराजिता । -**भानु-पु०** चाँद, चंद्रमा ।

-**बिष्णु-पु०** इवेत वल्लभारी मन्मासी । -**मुर्खा-पु०** मझाका एक अवतार । -**मंडक-पु०** एक तरहका सर्प । -**मंथारक-पु०** सफेद आक । -**मज्ज-पु०** मोथा । -**मयूख-पु०** चंद्रमा । -**मरिच-पु०** सविजनका बीया; सफेद मिर्च । -**माळ-पु०** धूस, धुआँ; बादल, मेघ । -**मूळ-पु०, -मूला-झी०** पुनर्नवाका एक भेद । -**रंजन-पु०** सीसक, सीसा नामक धातु ।

-**रक्क-पु०** पाटल वर्ण, गुलानी रंग । -**रथ-पु०** शुक्ल नामक ग्रह । -**रज-पु०** मझा । -**राजी-झी०** चंचेहा, चिचिवा । -**रोचि(स्)-पु०** चंद्र, चाँद । -**रोहित-पु०** गरुड; एक प्रकारका पौधा जिसका फूल इवेत और फल लाल होता है । -**खोत्र-पु०** पट्टिका लोभ, पठानी लोभ । -**बक्क-पु०** स्फंरका एक अनुचर । -**बन्धा-झी०** शुद्ध वत्सा, सफेद वत्स; अतीस, अतिविषा ।

-**बकल-पु०** गूलरका पेड़ । -**बाजी (जिज)-पु०** चंद्रमा; सफेद घोड़ा; अर्जुन, कपूर । -**बाराह-पु०** एक कल्प । -**बासा (सस्)-पु०** इवेत वल्लभारी मन्मासी । -**बाह-पु०** इंस; अर्जुन । -**बाहन-पु०** अर्जुन; इद्र; शिबका एक रूप; चंद्र; कपूर; मकर ।

-**बाही (हिन्)-पु०** अर्जुन । -**बुख-पु०** वरुण वृक्ष । -**हुंग-हुंग-पु०** बब, जौ । -**शूरण-पु०** वनमूरन; एक प्रकारकी तरकारी । -**सर्प-पु०** वरुण वृक्ष; सफेद सर्प । -**सार-पु०** खदिर, खैर । -**सुरसा-झी०** शुद्ध जेफालिका । -**स्पर्धा-झी०** अपराजिता । -**इच-पु०** इद्रका उर्वर-अवा घोड़ा; सफेद घोड़ा; अर्जुन; इद्र ।

-**इली (सिन्)-पु०** इद्रका ऐरावत हाथी ।

इवेतक-पु० [सं०] रत्न, चाँदी; बराटक, कौडी; एक मर्पराजका नाम । वि० इवेत गुणयुक्त, सफेद-सा ।

इवेतांग-वि० [सं०] त्रिमके शरीरका रंग सफेद हो, गौरवर्णका, गौराग ।

इवेतांबर-पु० [सं०] इवेत, मफेद वस्त्र; जैनोंके एक प्रमुख संप्रदायका नाम (इमरे प्रमुख संप्रदायका नाम 'द्विगंबर' है) ।

इवेतालु-पु० [सं०] दे० 'इवेत-मयूख' ।

इवेता-वि० झी० [सं०] शुद्ध, इवेत वर्ण, सफेद रंग-वाली । झी० शरीरका नृतीय स्वरूप, शरीरके चमकैकी नीमरी गह; बराटिका, कौडी; काष्ठपाटला; शालिनी; अतिविषा, अनीम; सितापराजिता; इवेत कंटकारी, पाषाण-भेदिनी; इवेत दूबी; वंशलोचन; मिस्री; शिला-बल्लक; इवेत बृहती; रफटी, फिटकिरी; अभिनी एक जिह्वा ।

इवेताक्ष-पु० [सं०] सोम लताका एक भेद ।

इवेताम-वि० [सं०] इवेत कांतिसे संयुक्त ।

इवेतामिक, इवेताम्बी-झी० [सं०] इमली ।

इवेताम्ब-पु० [सं०] शुद्धार्क वृक्ष ।

इवेताभि(स्)-पु० [सं०] चंद्रमा ।

इवेतावर-पु० [सं०] सितार शाल ।

इवेतालु-पु० [सं०] मणिष्कंद ।

श्वेताश्व-पु० [सं०] अश्विन ।

श्वेताश्वतर-पु० [सं०] एक उपनिषद्का नाम; कृष्ण यजुर्वेदकी एक शाखाका नाम ।

श्वेताह्वा-की० [सं०] श्वेत पाटला ।

श्वेतिका-की० [सं०] लोह ।

श्वेतित-वि० [सं०] सफेद किया हुआ ।

श्वेतिमा(सम्)-की० [सं०] श्वेतता, शुभ्रता, शुद्धता, सफेदी ।

श्वेतोदर-पु० [सं०] कुबेर; एक सर्प; एक पर्वत ।

श्वेतोद्दी-की० [सं०] इन्द्रपत्नी, इन्द्राणी, शची ।

श्वेथ-पु० [सं०] श्वेत कुष्ठ ।

श्वेत्थ-पु० [सं०] शुभ्रता, श्वेतता, सफेदी; श्वेत कुष्ठ ।

श्वेत्त्र, श्वेत्थ-पु० [सं०] श्वेत कुष्ठ ।

व

व-नागरी वर्णमालाका इकतीसवौं और ऊष्मवर्गका दूसरा व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारणस्थान मूढा है, इसलिए इसे मूढव्यंज्य व कहते हैं । हिंदी-भाषामें संस्कृतभाषाके विपरीत इसका उच्चारणस्थान मूढा न रहकर तालु रह गया है, अतः हममें 'व'का काम 'श'की ध्वनि दे देती है । प्रब और अवधीमें यह ध्वनि 'ख'के रूपमें परिवर्तित हो गयी है ।

वंजव-पु० आलिंगन, मिलन (?) ।

वंड-पु० [सं०] वेल, लौह; नपुंसक, हिजड़ा; देर, राशि; मसूर, छुंड; भैंसों आदिका छुंड; एक नाग; पद्म-समूह ।

वंडक-पु० [सं०] नपुंसक, हिजड़ा ।

वंडाली-की० [सं०] नालाब, ताल; बटचलन औरत, व्यवहारिणी; तेलका एक मान, छटौं ।

वंड-पु० [सं०] नपुंसक, छौब; झोब लिंग; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । -तिल-पु० कण्ठ्य तिल; (ला०) निकम्मा आदमी । -योनि-की० दे० 'पंडोयोनि' । -वेध-वि० नपुंसकके वेधमें रहनेवाला ।

वंडा-की० [सं०] उरुष जैमी प्रवृत्तिवाली स्त्री, मरदानी औरत ।

वंडिता-की० [सं०] दे० 'वंडोयोनि' ।

वंडोयोनि-की० [सं०] वह स्त्री जिसमें नारीत्व न हो, न तो स्तनोंका विकास हुआ हो और न रजःस्राव होता हो ।

व-पु० [सं०] कच, केश, बाल; स्वर्ग; बुद्धिमान्, विद्वान् व्यक्ति; हिद्रा; अंत; शेष, बची वस्तु; हान हानि; हानि, ध्वंस; चुचुक; स्वर्ग; मोक्ष, गर्भविमोक्षण; गर्भस्राव; श्रृण; सङ्घिष्णुता, धैर्य । वि० विह, विद्वान्, बुद्धिमान्; श्रेष्ठ, उत्तम ।

वट-छकी संख्या । -वट-पु० सोलहो शृंगार ।

वट(वृ)-वि० [सं०] छः; पाँच और एक । -कर्म-वि० छः कानोंवाला; छः कानों द्वारा सुना गया ऐसी बातके संबंधमें प्रयुक्त जिसे कहने-सुननेवालेके अतिरिक्त तीसरेने भी सुना हो । पु० एक तरबूकी बीणा जिसमें छः धुँदियाँ होती हैं । -कर्म(वृ)-पु० ब्राह्मणोंके छः कर्तव्य (अभ्यसन, अभ्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतियोग); ब्राह्मणोंके निर्वाह-संरक्षी छः कर्म (उंड, प्रतिग्रह, शिक्षा, वाणिज्य, कृषि और पशुपालन); छः तांत्रिक कर्म (मारण, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण, जाति और विदूषण); बौद्ध-संरक्षी छः कर्म (पौती, वस्ती, नेती, वाटक, नीलिक और कपालमाती) । -कर्म(मंत्र)-पु० शास्त्र-निहित षट्कर्म करनेवाला ब्राह्मण; तांत्रिक । -कल-वि० छः कला टिकनेवाला । -कल-की० ब्राह्मणका

एक मंद (संगीत) । -कूटा-की० शैरवीका एक रूप ।

-कोज-वि० (वह क्षेत्र) जिसमें छः कोण हों; छपहत्तर । पु० इंद्रका वज्र; धीरा; लघुसे छठा स्थान; एक वर्ष (सं०) । -खंड-वि० जिसमें छः भाग हों । -खक-पु० शरीरके भीतर सुपुष्पा नाडीके मध्यस्थित अति सूक्ष्म कमलाकार छः चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आह्वा); मंडयंत्र । -चरण-वि० छः पैरोंवाला । पु० अमर; जूँ; टिड्डी । -चित्ति-चित्तिक-वि० जिसमें छः परतें हों । -तर्जनी-की० बह्दर्शन ।

-ताळ-पु० एक ताल (संगीत) । -तिका-की० माघ-कृष्णा एकादशी । -पत्र-वि० छः पत्तोंवाला । -पद्-वि० छः पैरोंवाला । पु० छः पैरोंवाला प्राणी; अमर;

किलनी; छः पदोंवाला छद । -अज्य-पु० कामदेवका पतुव ।

-अमित्र-पु० नागकेशर; कमल । -पद्, -पट्टिका-की० प्राकृत छंदोंका एक वर्ग । -पद्दी-वि० की० छः पैरोंवाली । की० अमरी; किलनी; छः चरणों-वाला छद । -पाद्-वि० छः पैरोंवाला । पु० अमर ।

-प्रह-वि० चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष), लोकार्थ और तत्त्वार्थका हाथा । पु० लंपट, कामुक; नेक पक्षी । -रस-पु० दे० 'वट्स' । -रस-पु० दे० 'पट्टा' । -रिपु-पु० दे० 'पट्टरिपु' । -साक्ष-पु०

वेदकी प्रमाण मानकर चलनेवाले छः हिंदू-दर्शन (व्यास, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा और वैशेषिक) । -शास्त्री(खिन्)-पु० वह जो छः हिंदू-दर्शनोंका हाथा हो ।

वट्ट-वि० [सं०] छःगुना; छःमें खरीदा हुआ; छठी बार होने या किया जानेवाला । पु० छःकी सख्या;

छका समाहार; काम, मंद आदि छः विकारोंका समाहार । -मासिक-वि० छःमासके लिए ठेके आदिपर लिया हुआ । -संपत्ति-की० धन, धर्म, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान-वे छः वृत्तियाँ ।

वट्टव्यतिथि-पु० [सं०] आज वृक्ष (जहाँ अमर अतिथि-के रूपमें रसप्रदणार्थ जाता है); चंपाका पेड़ ।

वट्टव्यवर्धन-पु० [सं०] (अमरके लिए आनंदवर्धक) अशोक वृक्ष या किंकिरात ।

वह-वर्णका समासगत रूप । -अंग-वि० छः अंगों-वाला । पु० छठा भाग; शरीरके छः अवयव (शिर, पद, दो हाथ और दो पैर); वेदके छः अंग (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, व्याकरण, ज्योतिष); नायसे प्राप्त छः पदार्थ (सूत्र, गोमय, क्षीर, मर्षि, दधि और रोचन); किर्ती छः वस्तुओंका समाहार; छोटा गोखर । -अंगि

वि० छठों अंशोंकी जोतनेवाला । पु० विष्णु । -०बृष-
पु० चीनी, गोइत, मनु, गुरुगुल, अमृष काष्ठ और इनेत
अंदनके मिश्रणसे बनीके समान बनाकर सुखाया हुआ
धूप । -०समन्वागत-पु० बुद्ध । -अंविनी-की० सारे
अंशोंसे पूर्ण सेवा । -अंशि-पु० अमर । -अक्षरी-की०
रामानुज संन्यायका मुख्य ग्रंथ । -अक्षरी-पु० मत्स्य ।
-अग्नि-की० कर्मकांडसंपंधी छः प्रकारकी अग्नि
(गाईपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सम्वाग्नि, आबसध्य
और औपासनाग्नि) । -अभिज्ञ-पु० बुद्ध । -अर्च-
पु० छः पथोंका समूह । -अक्ष-पु० एक योग (ज्यो०) ।
-अक्ष-पु० छः दिनोंका समय । -आत्मा(त्मन्)-
वि० छः प्रकारके स्वरूपोंवाला (अधिके लिए प्रयुक्त) ।
-आत्म-वि० छः मुखोंवाला । पु० कालिकेय ।
-आत्म्या-पु० छः तंत्र । -आवसतन-पु० छः
इंद्रियोंके छः स्थान । वि० विज्ञान, क्षिति, जल, पावक,
गगन और सरीर-इन छः अवयवोंसे युक्त । -०अवृक्ष-
पु० बुद्ध । -अवृ-वि० छः कोणोंवाला । -ऊषण-
पु० पीपल, काली मिर्च, लोह, पिपरायू, चम्य और
नीला-ये छः कड़ु मसाले । -अस्तु-की० छः कर्तुएँ ।
-अवा-की० गया, गयाधुर, गायत्री, गवागज, गवा-
दिल और गदाधर जो मुक्तिदायक माने गये हैं ।
-अवीच-वि० छः तैलोंसे खींचा जानेवाला । -गुण-
वि० छयुना; छः गुणोंसे युक्त । पु० परराष्ट्रनीतिकी सफलताके लिए राजा द्वारा व्यवहार में छः उपाय-संधि,
विग्रह, धान (व्याह), आसन (विराम), द्वैधीभाव और
संभव; छः गुणोंका समाहार । -अर्थ-पु० एक तरहका
करम; मोठी वच (१) -अर्थ-की० वचा; इनेत
वचा; शरीर; महाकरंज । -अर्थि-की० पिपलीमूल ।
-अर्थिन्वा-की० सटी । -अ-पु० भारतीय संगीतके सप्तक-
का प्रथम और कुछके अनुसार चतुर्थ स्वर (वह नाम
पड़नेका कारण इसका जिह्वा, दंत, तालु आदि छः अंशोंसे
उत्पन्न होता है । वह मयूरके शब्दसे मिलता है और
इसका संकेत 'सा' है); प्रज्ञाका सोलहवाँ कल्प । -वर्षान-
पु० वटशाक, सांख्य, योग आदि हिंदुओंके छः दर्शन ।
वि० इन दर्शनोंका ज्ञान । -वर्षानी-[वि०] पु० दे०
'वटशाकी' । -विंशु-दे० 'वटविंदु' । -सुज-वि० छः
भुजाओंवाला । पु० छः भुजाओंका क्षेत्र । -सुजा-की०
दुर्गा; खरदूजा । -अंश-पु० दूरमिसंधि, किसी व्यक्तिके
अनजानमें उसके अनिष्टसाधनके उपाय करना, साजिश ।
-अश्व-पु० योगाम्नासमें प्रयुक्त छः तरीके । -अशि-
पु० शिलाजडु । -रस-वि० छः प्रकारके स्वादोंवाला ।
पु० छः प्रकारके स्वाद-मीठा, नमकीन, कड़वा, तीखा,
कसैला और खट्टा । -रसासव-पु० लसीका । -राग-
पु० नैरव, मलार, श्री, द्विरील, माळकीस और दीपक-
ये छः राग; हांसद, खेड़ा । -रिपु-पु० काम, क्रोध,
लोभ, मर, मोह और मत्सर-ये चारविकार । -रेखा-
की० खरदूजा । -खवण-पु० सैषव, सामुद्र आदि छः
प्रकारके नमक । -वक्त्र-वक्त्र-वि० छः मुखोंवाला ।
पु० स्पर्श । -वर्ण-पु० छः रंगों आदिका समाहार;
चंद्रिपु; पाँच ज्ञानेंद्रियों और मन । -०वक्ष-वि० जो

पहिरणोंके बंधमें हो । -विंशु-पु० विष्णु; एक प्रकारका
कीड़ा जिसकी पीठपर छः विंदियों रहती हैं; एक प्रसिद्ध
तेल (आ० दे०) । -विकार-पु० शरीरपारी (जीव)के
छः विकार-उत्पत्ति, वृद्धि, गत्याकला, जीवन, वार्धक्य
और मृत्यु । -विच-वि० छः प्रकारका ।

वर्धा-अ० [सं०] छः प्रकारसे ।

वष्-वष्का समासगत रूप । -वाचीक-पु० एक
तरहका वृक्षाकार चक्र (व्यो०) । -वाग्नि, वाग्निक-
वि० छः नाभियोंवाला (पहिया) । -असत्त्वापक-पु०
शंकराचार्य । -आस-पु० छः मास । -आसिक-
वि० अर्धवार्षिक । -आस्य-पु० छः मासका समय । वि०
छः मासका । -आस्य-वि० छः मुखोंवाला । पु० स्त्व;
एक बोधिसत्व । -मुखा-की० खरदूजा ।

वर्षपी-की० [सं०] खंजनकी जातिकी एक छोटी चिड़िया ।

वह-वि० [सं०] साठवाँ (समाप्तमें) ।

वष्टि-की० [सं०] साठकी संख्या । वि० साठ । -भावा-
पु० शिव । -अस-पु० साठकी अवस्थामें हुआ होनेवाला
हाथी (जब उसके गंडस्थलसे मद-काव होता है) । -छता-
की० अमरमारी नामका छता । -वर्षी(विंशु)-वि०
साठ वरसकी अवस्थाका । -वासरज-पु० साठी धान ।
-शास्ति-पु० साठी धान । -हावण-वि० साठ वर्षका ।
पु० साठ वर्षका काल; माठ वर्षका पट्टा हाथी; साठी
धान । -हृद-पु० एक तीर्थ ।

वष्टि-वि० [सं०] साठ (रथों आदिमें) खरीदा हुआ ।
पु० साठ दिनोंमें तैयार होनेवाला एक धान, माठी;
साठकी संख्या ।

वष्टिका-की० [सं०] साठी धान ।

वष्टिक-वि० [सं०] जिसमें साठी धान बोया गया हो;
माठी धान बोने योग्य । पु० वह भेत जिसमें वह धान
बोया गया हो ।

वष्ट्यंशक-पु० [सं०] एक ग्रंथ जिसमें नक्षत्रोंके सहारे
जहाजकी स्थिति निर्धारित की जाती है ।

वष्ट-वि० [सं०] छठा । -काल-पु० छठा बीजनकाल ।
-काकोपवास-पु० एक व्रत जिसमें हर तीसरे दिन
शामको भोजन करते हैं । -अक्ष-वि० तीसरे दिन
शामको खानेवाला । पु० छठा भोजन ।

वष्टक-वि० [सं०] छठा ।

वष्टांस-पु० [सं०] छठा भाग, विशेषकर अच्छा वह छठा
भाग जो राजस्वके रूपमें दिया जाता था । -वृष्टि-पु०
वह राजा जो करके रूपमें मिले हुए अन्नके वष्टांससे अपना
काम चलाता है ।

वष्टिका-की० [सं०] षष्ठी; बच्चोंके जन्मसे छठा दिन ।

वष्टी-की० [सं०] षष्ठीकी छठी तिथि; संतातोपपत्तिके दिनमें
छठा दिन, छठ्ठी; कायावनी (दुर्गाका एक नाम) त्रिनकी
बच्चेके कल्याणके लिए छठ्ठीकी पूजा होती है; संभव-
कारणकी विमर्शिता इंद्रेणा । -आव्य-वि० जिसने छठा
विवाह किया हो । -अपुत्र-पु० तपुव्रत समाप्तका
एक वेद जिसमें पूर्ववत् संस्काररूपकी विमर्शिता, षष्ठीमें
होता है (जैसे-विवाहव्य) । -पूजन-पु०, पूजा-की०
प्रत्येक छठे दिन होनेवाली षष्ठी देवीकी पूजा । -विश्व-

पुं स्कंद । -व्रत-पुं व्रतविशेष । -समास-पुं दे० 'पद्मोत्पल' ।

वचन-पुं [सं०] छटा भाग ।

वहसानु-पुं [सं०] यशः मोर, मयूर ।

वाङ्-पुं [सं०] शिव ।

वाङ्म-पुं [सं०] नपुंसकता, ङीबता ।

वाङ्मौलिक-वि० [सं०] छः तहोंमें लिपटा हुआ ।

वाङ्मौलिक-वि० [सं०] जिसका छः गीदियोंसे संबंध हो ।

वाङ्म-पुं [सं०] गान; रस; रागकी एक जाति जिसमें केवल छः स्वर आते हैं; मिठाई ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] बहुगुणसमुच्चय, छः गुणोंका समूह; राजनीतिमें व्यवहार्य छः अंग, कर्म, दे० 'वङ्गुण'; किसी सत्त्वकी छःसे गुणा करनेपर प्राप्त गुणनफल । -प्रयोग-पुं राजनीतिके छः अंगोंका प्रयोग । -वेदी (विन्)-वि० राजनीतिके छः अंगोंका शाता । -संयुक्त-वि० राजनीतिके छः अंगोंसे युक्त ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] जिसमें छः प्रकारके स्वाद हों ।

वाङ्गुष्ठिक-वि० [सं०] पाँचों इन्द्रियों और मनसे संबंध रखनेवाला ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] काविकेय (जिनका पालन छः माताओंने किया था) ।

वाङ्गुष्ठिक-वि० [सं०] छमाही; छः महीनेका । पुं श्रुत्युक्ते छः महीने पक्षार होनेवाला श्रुतक-श्राद्ध ।

वाङ्गुष्ठ-पुं मंद्रमे नीचेका एक बनावटी सप्तक (संगीत) ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] साठ बरसकी अवस्थाका ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] षष्ठ, छटा (भाग) ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] छटा-संबंधी; जिसकी छठे (अध्याय)में व्याख्या की गयी हो । पुं चार मासका एक व्रत जिसमें दूधके साथ केवल हर छठे दिन भोजन किया जाता है ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] कायिक व्यक्तिके विट; वेदवा रखनेवाला पुरुष ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] प्रसव ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] छः दौतीवाला ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] छः दौतीवाला । पुं छः दौतीवाला बैल ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलहवाँ ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह । पुं सोलहकी संख्या ।

-कल-वि० सोलह अंशोंवाला । -कल-खी-चंद्रमाकी सोलह कलाएँ (अंश)-अमृता, मानग, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, सखिनी, चंद्रिका, काति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा और पूर्णामृता-जो यथातिथि षट्शी-५८वीं रहती है । -शब्द-पुं पंच शान्तिद्वियों, पंच कर्मद्वियों, पंचभूत और एक मनका समूह । -दान-पुं श्राद्ध आदिके अवसरपर दिये सोलह वस्तुएँ-भूमि, आसन, गाय, सोना, चाँदी, पानी, कपडा, दीपक, जल, पान, छत्र, सुगंधि, फूलमाला, फल, सेज और सजावटें । -पक्ष-शायी (विन्)-वि० सोलह पक्ष निदवेष्ट रहनेवाला । पुं मंदर । -पूजन-पुं दे० 'सोडशीपचार' । -भुक्ता-खी-दुग्धा । -वेदित-वि० सोलह वर्गोंमें विभक्त । -मातृका-खी-गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति,

तुष्टि, मातरः और आत्मदेवता-वे सोलह देवियाँ ।

-विधि-वि० सोलह प्रकारका । -शृंगार-पुं साज-सज्जाके सोलह अंग, संपूर्ण शृंगार (उपवन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, वाद्य सज्जाना, अंजन लगाना, सिंदूर मरना, महाभार लगाना, मालपर लिखक बनाना, ठोड़ीपर लिख बनाना, मेहंदी रचाना, सुगंधित द्रव्योंका प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पधार पहनना, पान खाना, जोष्ट रंगना और मिस्ती लगाना) । -संस्कार-पुं वेद, शास्त्रविहित वर्माधानसे लेकर श्राद्धतकके सोलह संस्कार (दे० संस्कार) ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह अंगोंवाला । पुं सोलहकी संख्या, १६ ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह अंगों, मांगों, प्रकारोंवाला ।

पुं सोलह प्रकारके गणद्रव्योंसे तैयार किया हुआ धूप ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह अंगुल अर्जवाला ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] कर्कट, केकड़ा ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] शुक ग्रह ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह गुणोंवाली आत्मा ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह आरोंवाला (पहिवा); सोलह पंखियोंवाला । पुं एक तरहका कमल ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] शुक ग्रह ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] शंख ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह कोनोंवाला घर (हुं००) ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] सोलह दिन चलनेवाला उपवास आदि व्रत ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह अंगों, प्रकारोंवाला; सोलहसे संबंध रखनेवाला ।

वाङ्गुष्ठ-खी-वि० [सं०] एक तौल ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] एक तौल, पल ।

वाङ्गुष्ठ-खी-वि० [सं०] दस या बारह महाविद्याओंमें एक; सोलह वर्षकी स्त्री, तरुणी; प्रेतकर्मविशेष ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] सोलह भागोंवाला (स्तोत्रादि) ।

पुं एक तरहका सोमपात्र ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] एक प्राचीन तौल ।

वाङ्गुष्ठ-पुं [सं०] देवपूजनके सोलह अंग (आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परि-क्रमा और बंदना) ।

वाङ्गुष्ठ-अं [सं०] छः प्रकारसे । -श्राद्ध-पुं मंत्र पढ़ते हुए शरीर-स्पर्शके छः प्रकार (तं०) । -भुक्त-पुं स्कंद ।

-विहित-वि० छः भागोंवाला ।

वाङ्गुष्ठ-वि० [सं०] पुं दे० 'वाङ्गुष्ठ' ।

हीन-पुं [सं०] श्रुक्नेकी क्रिया; श्रुक्, लार ।

हीन-वि० [सं०] श्रुक्ना हुआ ।

हीन-खी-वि० [सं०] श्रुक्नेकी क्रिया ।

श्रुक्-पुं [सं०] श्रुक्ना ।

श्रुक्-पुं [सं०] श्रुक्ना ।

श्रुक्-वि० [सं०] श्रुक्नेवाला ।

श्रुक्-वि० [सं०] श्रुक्नेवाला ।

श्रुक्-खी-वि० [सं०] श्रुक्नेकी क्रिया ।

स

स-देवनागरी वर्णमालाका बत्तीसवौं और ऊप्य वर्णका तीसरा अर्थजनवर्ण । इसका उच्चारणम्यान रंत है इसलिङ्ग इसे दंत्य स कहते हैं ।

सं-उप० [सं०] 'स्य'का सभिगत रूप ।

संइतवार्-स० कि० जोड़ना, बदोरेना; सुरक्षित रखना; सहेजना; लोपना, पोतना ।

संउपना*—स० कि० दे० 'सो'पना ।

संक*—स्त्री० शंका, डर; अम ।

संकट—वि० [सं०] घनीभूत, संकीर्ण, तंग; घना; दुर्गम; खतरनाक; ...से पूर्ण, भरा हुआ । पु० तंग रास्ता; दर्रा; कठिनाई; खतरा; विपत्ति, मुसीबत; भीड़ । —कटुर्थी—स्त्री० माघ-कृष्णा चतुर्थी । —नाशान—वि० कट दूर करनेवाला । —मुख—वि० जिसका मुँह तंग हो । —भोचन—पु० इन्सानकी एक काशीत्य मूर्ति । वि० दे० 'मकट-नाशन' । —स्थ—वि० विपद्ग्रस्त ।

संकटा—स्त्री० [सं०] बनारसमें प्रसिद्ध एक देवी; आठ योगिनियोंमेंसे एक (शेष सात ये हैं—मंगला, पिङ्गला, धन्या, अमरी, भद्रिका, उष्का और सिद्धि—ज्यो०) ।

संकटाक्ष—पु० [सं०] धन वृद्ध । वि० कटाक्षसहित (?) ।

संकटापन्न—वि० [सं०] विपद्ग्रस्त, कष्टमें पड़ा हुआ ।

संकटी(विद्)—वि० [सं०] जो संकटमें पड़ा हो ।

संकटीचीर्ण—वि० [सं०] जो संकटमें पार हो गया हो ।

संकट*—पु० दे० 'संकेत' ।

संकथन—पु० [सं०] वर्णन करना; वार्ता ।

संकथा—स्त्री० [सं०] वर्णन; बातचीत ।

संकथित—वि० [सं०] वर्णित, कथित ।

संकना*—अ० कि० डरना; शंका, संदेह करना ।

संकर—पु० [सं०] मिश्रण; योग, एकमें मिलना; दो जातियोंका मिश्रण; अंतर्जातीय संबंधसे उत्पन्न संगान; एक ही वाक्यमें दो या अधिक अर्थकारोंका मिश्रण (सा०); वह वस्तु जो स्पर्शसे मंदा हो जाय; गोबर; कूड़ा; आगके जलनेका शब्द । —ज—वि० मिश्र जातिसे उत्पन्न । —आत, —आति, —आसीच—वि० दे० 'संकरज' ।

संकर*—पु० दे० 'शंकर' । [स्त्री० 'सकरी'] । —घरनी—स्त्री० पार्वती ।

संकरक—वि० [सं०] मिलाने, मिश्रण करनेवाला ।

संकरा—पु० एक राग ।

संकरा—वि० तंग, संकीर्ण । पु० संकट । स्त्री० सिकरी, जंजीर । मु०—(रे)में पड़ना—कष्टमें पड़ना ।

संकराना—सं० कि० तंग, सङ्कुचित, संकीर्ण करना ।

संकराश्च—पु० [सं०] सखर ।

संकरित—वि० [सं०] मिला हुआ, मिश्रित ।

संकरिया—पु० एक प्रकारका हाथी ।

संकरी(विद्)—वि० [सं०] दोगला; मिश्र; अवैध संबंध रखनेवाला ।

संकरीकरण—पु० [सं०] मिलाना; जातिका अवैध मिश्रण; नौ प्रकारके पापोंमेंसे एक (जो जैसे आगके बक्से होता है) ।

संकर्ष—पु० [सं०] पासमें खींच लाना ।

संकर्षण—पु० [सं०] खींचकर निकालना; संयोगका साधन; पास लाना; जोतना; छोटा करना; बलराम; एक रुद्र; निगार्क द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय । —विद्या—स्त्री० एक स्त्रीके पेटसे बच्चा निकालकर दूसरी स्त्रीके पेटमें रखनेकी विद्या ।

संकर्षी(विद्)—वि० [सं०] खींचकर मिलानेवाला; छोटा करनेवाला ।

संकल—पु० [सं०] एकत्र करना; राशि, ढेर; योग; जोड़ (ग०) । । स्त्री० संकल, जंजीर; जानवरोंकी बाँधनेका सिक्का ।

संकलन—पु० [सं०] एकत्रीकरण; संपर्क, संबंध; योग; मिलन; जोड़ (ग०); अच्छे विषयोंको चुनकर एकत्र करना; इस ढंगमें बना हुआ ग्रंथ ।

संकलना—स्त्री० [सं०] एकत्र करना; मिलाना, जोड़ना ।

संकल्प*—पु० दे० 'संकल्प' ।

संकल्पना*—स० कि० संकल्प करना, निश्चय करना, दानादि धार्मिक कृत्य करनेका निश्चय या प्रणिष्ठा करना । अ० कि० इरादा करना ।

संकला—पु० शकटीप । स्त्री० [सं०] जोड़ना, मिलाना; एकत्र करना ।

संकलित—वि० [सं०] राशीकृत, एकत्रीकृत; योग किया हुआ, मिलाया हुआ; गृहीत; जोड़ा हुआ (ग०) । पु० जोड़ (ग०) ।

संकलुष—पु० [सं०] सशेषता, अशुद्धता ।

संकल्प—पु० [सं०] इच्छा; निश्चय; प्रयोजन, उद्देश्य; नीयत; विचार, कल्पना; मन; कोई धार्मिक कृत्य करनेकी प्रतिष्ठा; धार्मिक कृत्यसे फलकी आशा; सगी होनेकी इच्छा; संनोधारणके माथ धार्मिक कृत्य करनेकी प्रणिष्ठा करना । —जम्मा(म्सद्)—वि० इच्छासे उत्पन्न । पु० कामदेव । —जुति—वि० इच्छा द्वारा प्रेरित । —अव—वि०, पु० दे० 'संकल्पजन्मा' । —योति—वि० इच्छा जिनका मूल हो । पु० प्रणय; कामदेव । —रूप—वि० जो इच्छाके अनुष्य हो । —संपत्ति—स्त्री० इच्छापूर्ति । —संभव—वि० इच्छा जिसका आधार हो । पु० प्रणय; कामदेव । —सिद्धि—स्त्री० इच्छाशक्ति द्वारा उद्देश्यकी पूर्ति ।

संकल्पक—वि० [म०] संकल्प करनेवाला; विचार करनेवाला ।

संकल्पना—स० कि०, अ० कि० दे० 'संकल्पना' ।

संकल्पा—स्त्री० [सं०] दक्षकी एक कन्या; धर्मकी पत्नी ।

संकल्पारम्भक—वि० [सं०] जिसमें संकल्प या प्रतिष्ठा हो ।

संकल्पित—वि० [सं०] जिसका संकल्प, निश्चय किया गया हो; जिसकी कल्पना की गयी हो; कल्पित ।

संकट—पु० दे० 'संकट' ।

संकलुष—वि० [सं०] अमिश्र, चंचल; अनिश्चित; संश्रिध; भुरा, दुष्ट; निर्बल ।

संका*—स्त्री० शंका, डर ।

संकावा—अ० कि० शक्ति होना, करना ।

संकार—पु० [सं०] कृपा; आगके जलनेका शब्द; † संकेत ।

—कूट—पु० कृपका डेर ।

संकारना—अ० कि० संकेत, इतारा करना ।

संकारी—खी० [सं०] वह लकड़ी जिसका कौमार्य अभी-

अभी भंग हुआ हो, नयी दुलहिन ।

संकाश—वि० [सं०] दृश्य, सरस (समासमें); निकटवर्ती ।

अ० निकट, पास । पु० पकोस; उपस्थिति; कांति, वृत्ति ।

संकाश—वि०, पु० दे० 'संकाश' ।

संकिङ्क—पु० [सं०] लड़ा ।

संकीर्ण—वि० [सं०] ।

संकीर्ण—वि० [सं०] मिलाया हुआ; मिश्रित; संकुच्य;

मिलावटी; विह्वल; भरा हुआ; तग; संकुचित; फैलाया,

विलेरा हुआ; अस्पष्ट; दान बहाता हुआ, मल्ल (हाथी) ।

पु० मकर जातिका व्यक्ति; मिश्र राग; मल्ल हाथी; संकट;

एक प्रकारकी गद्यशैली । —जाति, —बोधि—वि० वर्ण-

भेद । —वैरि—पु० मृत्युका एक प्रकार । —बुद्ध—पु०

विभिन्न प्रकारके अल-शस्त्रोंसे लड़ा जानेवाला युद्ध ।

संकीर्णता—खी० [सं०] तंगी; छुद्रता; व्यक्तिकम

(शब्दोंका) ।

संकीर्ण—खी० [सं०] एक प्रकारकी पहेली ।

संकीर्तन—पु० [सं०] सम्यक् वर्णन; प्रशंसा; स्तुति; देवता-

के नामका जप, गुणगान आदि ।

संकीर्तित—वि० [सं०] सम्यक् रूपसे वर्णित; प्रशंसित;

स्तुत ।

संकुचित—वि० [सं०] झुका हुआ; बक, कुटिल ।

संकु—पु० [सं०] छिद्र (?) ; बछड़ा ।

संकुचन—पु० [सं०] सिकुटना, संकुचित होना; एक

बाल रोग ।

संकुचना—अ० कि० दे० 'संकुचना' ।

संकुचाना—अ० कि०, स० कि० 'संकुचाना' ।

संकुचित—वि० [सं०] सिकुड़ा हुआ; तग; बंद; नग ।

संकुचित—वि० [सं०] क्रुद्ध; उत्तेजित ।

संकुल—वि० [सं०] घना; प्रचंड; वषकाया हुआ; बाधित;

भरा हुआ; संकीर्ण; असंगत; जटिल । पु० भीड़, मजमा;

हुंफ; युद्ध; अंसगत वाक्य, परस्पर विरोधी कथन; कष्ट,

दुःख ।

संकुलता—खी० [सं०] परिपूर्णता; गड़बड़; जटिलता;

माधपन ।

संकुलित—वि० [सं०] भरा हुआ, पूरित (ममासमे); अल-

व्यस्त; वषकाया हुआ ।

संकुश—पु० [सं०] एक मछली, संकु ।

संकुशित—पु० [सं०] चक्रवाककी बोली ।

संकुति—वि० [सं०] एकत्र करनेवाला; व्यवस्थित करने-

वाला; तैयार करनेवाला । खी० वृत्त-विशेष । पु०

एक साम ।

संकुच—वि० [सं०] काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ;

विंघा हुआ ।

संकुष्ट—वि० [सं०] खींचकर नजदीक लाया हुआ; एक

माध किया हुआ ।

संकेत—पु० [सं०] अभिप्रायसूचक अंगचिह्न, इंगित, इशारा;

चिह्न; ठहराव; प्रेमी-प्रेमिकाका आपसका ठहराव; प्रेमी-

प्रेमिकाके मिलनेका निर्दिष्ट स्थान; शर्त । —केतन—पु०,

—निकेतन, —निकेतन—पु० प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका

स्थान । —भूमि—खी०, —स्थल, —स्थान—पु० दे०

'संकेत-केतन' । —मिक्षित—वि० आपसके ठहरावसे

मिला हुआ । —बाष्प—पु० वह विशेष शब्द जो स्व-

पक्षका परिचायक चिह्न हो । —हेतु—पु० मिलनेका

प्रयोजन ।

संकेत—वि० दे० 'संकेत' ।

संकेतक—पु० [सं०] ठहराव; मिलन-स्थान; संकेत करने-

वाला प्रेमिक ।

संकेतन—पु० [सं०] आपसका ठहराव, निश्चय मिलन-

स्थान ।

संकेतना—अ० कि० सकट, विपत्तिमें डालना । अ० कि०

संकुचित होना—'कैवल संकेता; कुमुदिनि फूली'—प० ।

संकेतित—वि० [सं०] ठहराया हुआ, निश्चित; आश्रित;

इशारा किया हुआ ।

संकेतना—अ० कि० समेटना, बंद करना, खींचकर इकट्ठा

करना ।

संकोच—पु० [सं०] सिकुटना; बंद होना, सुंदना (नेत्रका);

लज्जा; भय; संक्षेप; सूचना (अलङ्कारका); बंधन; एक

मछली; कमी; केसर; हिचक; एक अलङ्कार जिसमें किसी

वस्तुका प्रतिक्षण सकोच दिखाया जाता हो; एक असुर ।

—कारी (रिन्)—वि० झुकनेवाला, विनम्र; शरमाने-

वाला । —पक्षक—पु० पौधोंका एक रोग जिसमें उनके

पत्ते सिकुड़ जाते हैं । —पिप्पुन—पु० केसर । —रेखा-

खी० झुरी, सिलवट ।

संकोचक—वि० [सं०] संकुचित करनेवाला ।

संकोचन—पु० [सं०] सिकुड़ना; एक पहाड़ । वि० सकोच

करनेवाला; सिकुड़नेवाला ।

संकोचना—अ० कि० संकुचित करना । अ० कि० संकोच

करना ।

संकोचनी—खी० [सं०] लज्जा ।

संकोचित—पु० [सं०] युद्धका एक ढंग ।

संकोची (चिह्न)—वि० [सं०] संकुचित होनेवाला

(पुष्पादि); सिकुड़नेवाला; लज्जनेवाला ।

संकोपना—अ० कि० क्रोध करना ।

संकट—पु० [सं०] शब्द करना; रोना-चिहाना; युद्ध ।

संकटन—पु० [सं०] इन्द्र; मनुष्यत्पका एक पुत्र; सम्यक्

अंदन; युद्ध । —नंदन—पु० अर्जुन; बालि ।

संक्रम—पु० [सं०] साथ जाना; गमन; भ्रमण; प्रगति;

संक्रमण; सर्व या नक्षत्रकी बोधी; तंत रास्ता; दुर्गम मार्ग;

कठिनाईसे आगे बढ़ सकना; पुल; सेतु; घाट; उद्देश्यपूर्ति-

का साधन; तारेका दृटना; स्वदेवका एक अनुचर ।

संक्रमण—पु० [सं०] गमन; भ्रमण; मिलन; संयोग; प्रवेश;

आरम; राक्षसमें सर्वका प्रवेश, संक्रांति; सर्वके उत्तरायण

होनेका दिन; परलोकवासा, मृत्यु; पार करनेका साधन,

एक स्थिति या अवस्थासे दूसरीमें प्रवेश; इत्यांतरण ।

संक्रमणका—खी० [सं०] प्रकीट, 'नैलरी' ।

संक्रान्त-वि० [सं०] पहुँचाया, प्रवेश कराया हुआ; परिवर्तित किया हुआ।

संक्रान्ति(सु)-वि०, पु० [सं०] सक्रमण करनेवाला; जानेवाला; गमन करनेवाला; प्रवेश करनेवाला।

संक्रान्ति-वि० [सं०] गत, गुजारा हुआ; प्रविष्ट; स्वानांतरित; प्राप्त; गृहीत; प्रतिफलित; प्रतिविवृत; चित्रित, भंकित; संक्रांतियुक्त। पु० पतिते प्राप्त स्त्रीकी संपत्ति; क्रमावस्थ।

संक्रान्ति-स्त्री [सं०] साथ गमन; मिलन; एक बिंदुमें दूसरे विदुतकका मार्ग; सूर्य या किसी ग्रहका एक राशिसे दूसरी राशिमें प्रवेश करना; हस्तांतरण; प्रतिविवृत; अंकन; शुरूमें शिष्योंका विद्याग्रहण। -चक्र-पु० एक नक्षत्रांकित चक्र जिससे शुभाशुभ फल जाना जाता है (ज्यो०)।

संक्राम-पु० [सं०] गुजरना; कठिनाईसे गमन करना; दुर्गम मार्ग।

संक्रामक-वि० [सं०] एकसे दूसरेमें सक्रमण करनेवाला; छूत आदिमें फैलनेवाला (रोग)।

संक्रान्त-वि० [सं०] हस्तांतरित किया हुआ; दूसरेकी बतलाया हुआ।

संक्रामी(मिष्ट)-वि० [सं०] सक्रमण करनेवाला, फैलनेवाला; मयक द्वारा फैलनेवाला; हस्तांतरित होनेवाला।

संक्राष्ट-पु० [सं०] क्रीडा, खेल, परिहास; एक साम।

संक्राष्ट-पु० [सं०] क्रीडा करना, खेल, परिहास करना; साथ खेलना।

संक्राष्टित-वि० [सं०] खेला, क्रीडा किया हुआ। पु० रथकी धरधारक।

संक्राष्ट-वि० [सं०] बहुत ज्यादा नाराज।

संक्राष्ट-पु० संक्रांति, सक्रमण-‘काह पुष्प न पावयत वैमंषि-संक्रांति’-वि०।

संक्राष्ट-पु० [सं०] साथ-साथ चिलाना, जोरसे दण्ड करना; क्रोधमें चिलाना।

संक्राष्ट-वि० [सं०] बिलकुल गीला, तर-बतर।

संक्राष्ट-वि० [सं०] कुचला हुआ; जिसपर धम्मा आदि पड़ गया हो (जैसे अन्धा आश्रमा); कठिनाइयोंमें पूर्ण।

-कर्मा(संक्राष्ट)-वि० जिसे हर एक काममें कठिनाई होती हो।

संक्राष्ट-पु० [सं०] अत्यधिक आदरता; गर्माधानके बाद प्रथम मासमें स्थापित होनेवाला रम जिसमें भ्रूणके आरंभिक रूपका निर्माण होता है।

संक्राष्ट-पु० [सं०] कष्ट, पीडा। -निर्वाण-पु० पीडामें छुटकारा।

संक्राष्ट-पु० [सं०] कष्ट देना।

संक्राष्ट-पु० [सं०] विनाश, बरबादी; अन; लोप; प्रलय; एक मरुत्वान्।

संक्राष्ट-पु० [सं०] माथ मिलकर बहना; दो नदियोंका संगम।

संक्राष्ट-पु० [सं०] बह जल जो धोने, नहानेके काम आये; धोना।

संक्राष्ट-स्त्री [सं०] धोना; स्नान।

संक्राष्ट-वि० [सं०] फैला हुआ; राशिकृत; छोटा किया

हुआ; घटाया हुआ; झुकाया; गृहीत; तगा; छोटा; संवत।

-दैर्घ्य-वि० जिसकी लंबाई घटाई गयी हो। -लिपि-स्त्री लिखनेकी एक प्रणाली जिसमें विशेष ध्वनिबोधके लिए छोटे-छोटे चिह्न निश्चित रखते हैं, ‘शार्टहैंड राइटिंग’।

संक्राष्ट-स्त्री [सं०] कुछ ग्रहकी सात गतिवर्धोंमें एक (ज्यो०)।

संक्राष्ट-स्त्री [सं०] फेंकना; ठोस करना; धरना; घात लगाना; एक प्रकारकी आरम्भ, आवाक एकएक परिवर्तन (ना०)।

संक्राष्टीकरण-पु० [सं०] किसी कथा, विषय आदिको मक्षिप्त करना, संक्षेपण।

संक्षेप-पु० [सं०] फेंकना; भेजना; हरण; नष्ट करना; ठोस करना; घटाना; छोटा रूप; दूसरेके कार्यमें सहायता देना; ठोस करनेका साधन; संग्रहस्ती। -बोध-पु० विस्तारमें कहना आवश्यक होनेपर संक्षेपमें कहकर दुबोध बनाना (सा०)।

संक्षेपक, संक्षेप(सु)-वि०, पु० [सं०] फेंकनेवाला; नष्ट करनेवाला; संक्षेप करने या छोटा रूप देनेवाला।

संक्षेपण-पु० [सं०] फेंकना; बंदीरना; मक्षिप्त करना। छोटा करना; छेकर चल देना।

संक्षेपतः(सु)-अ० [सं०] संक्षेपमें, थोड़ेमें।

संक्षेपतया-अ० [सं०] दे० ‘संक्षेपतः’।

संक्षोभ-पु० [सं०] तेज धक्का, उत्तेजन; वृषण, अश्रु व्यस्तता, उलट-पलट; गर्व, घमास।

संख-पु० दे० ‘संख’। -नारी-स्त्री० एक ८४।

संखलुही-स्त्री दे० ‘अंशुपुष्पी’।

संखार-वि० -वर्गीका हरथा।

संखार-पु० एक पक्षी।

संखिया-पु० एक बहुत तेज विष जो ण उपधान् न, ण उपधानका अम।

संख्य-पु० [सं०] युद्ध, मयर्ष। वि० दे० ‘संख्येय’।

संख्यक-वि० [सं०] संख्यावाला (ममासागन)।

संख्या-स्त्री [सं०] गणना, गिनती, शुमार; अंक; तादात; योग; विचारणा; प्रज्ञा, बुद्धि; तरिका; आख्या; नाम; एक विशेष संख्या (बी०), किले गये पत्रों या सामयिक पत्रादिपर दिया गया क्रमांक; किसी सामयिक पत्रादिकी विनिष्ट संख्या या क्रमांकवाली प्रति। -पद-पु० अंक।

-परिस्थक-वि० असंख्य, अनगिनत। -अंगलक्षि-स्त्री० बरमगौंका उत्पन्न। -लिपि-स्त्री० लिखनेकी एक प्रणाली जिसमें अक्षरोंकी जगह अंक रखते हैं। -धाचक-वि० संख्याका ध्वजक। पु० अंक। -शब्द-पु० अंक।

-समापन-पु० शिव।

संख्याक-वि० [सं०] दे० ‘संख्यक’।

संख्यात-वि० [सं०] गिना हुआ, शुमार किया हुआ। विचारित। पु० गिनती, संख्या; राशि, समूह।

संख्यात-स्त्री [सं०] संख्याके महा? बनी हुई एक तरहकी पहेली।

संख्यातिग-वि० [सं०] दे० ‘संख्यातीज’।

संख्यातीज-वि० [सं०] अगणित, वैशुमार।

संख्यान-पु० [सं०] गणना, शुमार; राशि, संख्या; माप

देसा ज्ञाना, नजर आना ।

संख्यावाच्य(वद्)-वि० [सं०] संख्यावाला; ममभ्रदार, बुधिमाम् । पु० विद्वान् व्यक्ति ।

संख्येय-वि० [सं०] गणनीय, जो गिना जा सके; अगणित नहीं; विचारणीय ।

संग-पु० [सं०] मिलन; साथ होना, योग; दो नदियोंका मिलना, संगम; समर्ग; स्पर्श, संपर्क; मैत्री; माध; आसक्ति; विषयवाचना; युद्ध; बाधा । अ० [हिं०] साथ, सहित । कर-वि० आसक्तिजनक । -**त्याग**-पु० विरक्ति । -**रहित**,-**वर्जित**-वि० आसक्तिरहित । -**विषयुक्ति**-खी० विषयानुरागमे पृथक् होना । -**साध**-पु० [हिं०] मैत्री, दोस्ती । **सु०** -**करना**-माध होना; दोस्ती करना । -**छोड़ना**-साध छोड़ना । -**जाना**-माध जाना, इमराह होना । -**लग्न लेना**-माध हो लेना; स्वाहमस्वाह साथ हो जाना, पीछा करना । -**लेना**-साध ले चलना । -**सोना**-सहवास करना । -**होना**-माध होना, इमराह होना ।

संग-पु० [का०] पत्थर, चट्टान । -**अंशज**-पु० टेल-बॉम किलेकी दीवारमें शत्रुपर पत्थर फेंकनेके लिए बने हुए छेद; इन छेदोंमें शत्रुपर पत्थर फेंकनेवाला । -**आसिया**-पु० नक्कीका पत्थर । -**ज्वारा**-पु० एक तरहका कड़ा पत्थर । -**ज्वार**-पु० शत्रुसंगी । -**चक्र**-मात्र-पु० एक तरहका पत्थर जिसपर चोट लगनेमें भाग निकलती है । -**चीनी**-पु० एक तरहका पत्थर । -**जराह**-पु० एक तरहका सफेद चिकना पत्थर । -**तराजू**-पु० तराजूका बाट । -**तराश**-पु० पत्थरका काम करनेवाला । -**दान**,-**दाना**-पु० परिरका रोश । -**दिल**-वि० निर्दय, बेरहम । -**दिली**-खी० रेहमी, निर्दयता । -**पुस्त**-पु० कठुआ । -**फर्श**-पु० पत्थरका फर्श । -**बसरी**-पु० भस्ममें पाया जानेवाला एक तरहका पत्थर । -**बार**-वि० पत्थर फेंकनेवाला । पु० पथरीली जमीन । -**बारान**-पु० पत्थरीकी बोटार । -**मरमर**,-**मर्मर**-पु० एक तरहका सफेद पत्थर जो इमारतोंमें लगाया जाता है । -**मुरदार**-पु० मुरदासंख । -**भूसा**-पु० एक तरहका काला पत्थर । -**यशव**-पु० एक तरहका कोमती पत्थर । -**रेजा**-पु० पत्थरकी गिट्टी । -**लजवा**-पु० एक तरहका पत्थर जो हिस्सामें काँपता है । -**लाज**-पु० पथरीली जमीन । वि० कठिन, मुश्किल । -**साज**-पु० छापेका पत्थर दुरुस्त करनेवाला । -**सार**-पु० एक तरहकी सजा, पत्थर मारकर मार डालना । वि० पत्थर मारनेवाला । -**सारी**-खी० दे० 'संगसार' । -**सुख**-पु० एक तरहका काल पत्थर । -**सुलेमानी**-पु० एक तरहका पत्थर जो काला और सफेद होता है । -**(ने) असवद्**-पु० वह काला पत्थर जो काबाकी दीवारमें लगा है । -**आसिख**-पु० चकमाक । -**पा**-पु० पैरका मेल साफ करनेका पत्थर, शॉव । -**मजरा**-पु० कममें लगा हुआ वह पत्थर जिसपर मृत व्यक्तिका नाम आदि अंकित हो । -**मसावा** पु० पथरी । -**माही**-पु० एक सफेद पत्थर जो मछलीके भस्ममें निकलता है । -**बहद्**-पु० एक तरहका पत्थर जो

दवाके काम आता है । -**राह**-पु० रास्तेपर पड़ा हुआ पत्थर जिसमें आने-जानेवालोंको कट हो । -**सितारा**-पु० एक तरहका पत्थर जिसमें छोटे-छोटे सितारे चमकते हैं । -**सुरमा**-पु० एक तरहका काला पत्थर जिसमें सुरमा बनाये हैं ।

संग-खी० दे० 'संग'-'विवे संग सौ कोरि ठार करेजा'-सुजा ।

संगठन-पु० दे० 'संगठन' ।

संगठित-वि० दे० 'संगठित' ।

संगणिका-खी० [सं०] सुंदर वार्ता; समाज, दुनिया ।

संगत-वि० [सं०] मिला हुआ, युक्त; एकत्रीभूत; संयोग-रत्न; विवाहित; उपयुक्त, मौजू; ठीक तरहसे बैठने, खप जानेवाला; सिकुड़ा हुआ, संकुचित । खी० मेल, मिलन; मैथुन; साथ; मैत्री; तर्कसंगत भागी; आसक्ति; गाने आदिके साथ बाजा बजाना (हिं०); उदासी साधुओंका मठ (हिं०) । -**गात्र**-वि० जिसका बदन सिकुड़ा हो । -**संधि**-खी० मैत्रीके बाद होनेवाली सुलह; मैत्रीके आधारपर हुई संधि; समय-कुसमय एक-ही रहनेवाली संधि । **सु०** -**करना**-गानेवालेके साथ कोई बाध बजाना ।

संगतार-पु० [का०] सतरा ।

संगतार्थ-वि० [सं०] उपयुक्त अर्थवाला । पु० उपयुक्त अर्थ ।

संगति-खी० [सं०] मिलन, योग; साथ; साथ; संपर्क, समर्ग; मैथुन; मिलनेके लिए जाना; सामन्त्य; उप-युक्तता, मौजू होना; संयोग, रसिकाक; हान; हानवृद्धिके लिए प्रयास करना; अधिकरणके बीच अवयवोंमेंसे एक (वे०) । **संगतिया**, **संगती**-पु० साथी; गाने आदिके साथ बाजा बजानेवाला ।

संगथ-पु० [सं०] सपर्य, युद्ध ।

संगथा-खी० [सं०] दो नदियोंका संगम ।

संगम-पु० [सं०] मिलन, संयोग; साथ, संगति; संपर्क, स्पर्श; मैथुन; नदियोंका मिलन; उपयुक्तता; युद्ध, युका-बका; (ग्रहोंका) योग । -**साधवत्**-पु० मैथुनके ममयकी धबझाट ।

संगमक-वि० [सं०] मार्ग दिखलानेवाला ।

संगमन-पु० [सं०] मेल, मिलन; यम ।

संगमर-पु० बेंखोकी एक उपजाति ।

संगमित-वि० [सं०] मिलाया, मयुक्त किया हुआ ।

संगर-पु० [का०] खेत या बागके चारों ओर बनायी जानेवाली कौंटोंकी बाड़; दीवार जो लुआँके मोकेपर बनायी जाती है; मोरचा; खाई; [सं०] सपर्य, युद्ध; रजामंदी, ठह-राव, वाद; अंगीकार; सौदा; क्षम; अक्षय; विष; आपत्; संकट; शमीका फल । -**क्षम**-वि० युद्धमें मिथने योग्य । -**क्ष**-वि० युद्धमें सलग्न ।

संगरथ-पु० [सं०] सौदा, करार; रजामंदी ।

संगरा-पु० बाँसका टुकड़ा जिससे पेगाराज पत्थर उठाते हैं; कुपेके टुकड़का वह छेद जिसमें पंथ लगा रहता है ।

संगराम-पु० दे० 'संग्राम' ।

संगरासिख-पु० तोंबिका मेल जिससे बिजान बनाते हैं ।

संगर्हा-पु० एक तरहका रेशम ।

संगव-पु० [सं०] प्रातःस्नानके तीन सुवर्त बादका समय

जो दिने के पाँच भागोंमें दूसरा है और जब गाय दुहने के बाद बरने के लिए ले जाती जाती है।—**काख**-पु०, -**बेडा**-**खी**० दोहने के लिए गायों के एकत्र होनेका समय।

संगविनी-**खी**० [सं०] वह स्थान जहाँ गायें दुहने के लिए एकत्र की जाती हैं।

संगसी-**खी**० दे० 'सैसी'।

संगाखी-पु० साथ रहनेवाला, साथी, संगी; दोस्त।

संगावण-पु० [सं०] साथ-साथ गाना वा स्तुति करना।

संगाव-पु० [सं०] बार्तालाप; बाद।

संगिनी-**खी**० [सं०] साथ रहनेवाली, साथिन; पत्नी।

संगिलान-पु० [का०] पथरीला प्रदेश।

संगी-वि० [का०] पथरका, संगीन। पु० एक तरहका रेखमी कपड़ा।

संगी(वि०)-वि० [सं०] चिपकने, साथ लगनेवाला; संपर्कमें आनेवाला; आदी० आसक्त; कायुक; अविच्छिन्न। पु० साथी; दोस्त।

संगीत-वि० [सं०] साथ मिलकर गाया हुआ। पु० वह गाना जिसमें कई आदमी मिलकर गायें; वाद्यों के साथ गाया जानेवाला गाना; नृत्य, वाद्य और गीतका समाहार; नृत्य और वाद्य के साथ गानेकी कला।—**वेष्टम**(श्रु)-पु०, -**काका**-**खी**० संगीत-भवन।—**व्यापुत**-वि० संगीतरत।—**विद्या**-**खी**० वह विद्या जिसमें संगीत-संबंधी विषयोंका निरूपण हो।—**शास्त्र**-पु० संगीतविद्या।—**सहायिनी**-**खी**० साथ गानेवाली स्त्री।

संगीतक-पु० [सं०] वाद्यमेल 'कन्सर्ट'; गान, नृत्य और वाद्य द्वारा कौनोंका रंजन।

संगीतज्ञ-पु० [सं०] संगीत विद्याका ज्ञाता, गायक वा वादक।

संगीति-**खी**० [सं०] बार्तालाप; संगीत; संगीतकला; आर्था छंदका एक भेद; बौद्धोंकी धर्मसभा।

संगीन-वि० [का०] पथरका, पथरका बना हुआ; संयत, कठोर; मजबूत। **खी**०, पु० एक तरहका नोकदार हथियार जो बहुतपर चढ़ाया जाता है।—**जुर्म**-पु० ऐसा अपराध जो कठिन दण्ड के योग्य हो।—**विष्**-वि० दे० 'संगविष्'।

—**विष्नी**-**खी**० बेरखमी।

संगीनी-**खी**० मजबूती; दोस्तपन।

संगीर्ण-वि० [सं०] हल्कार किया हुआ; वादना किया हुआ।

संगुण-वि० [सं०] गुणित (समासमें)।

संगुप्त-वि० [सं०] अजी-भौति छिपाया हुआ; सुरक्षित। पु० एक युद्ध।

संगुप्ति-**खी**० [सं०] सुरक्षा; छिपाव।

संगुह-वि० [सं०] सुरक्षित; छिपाया हुआ; संक्षिप्त; संयुक्त; एकत्र, राशीकृत (अब जो रेखाओंसे घेर दिया जाता है)।

संगुहीत-वि० [सं०] संग्रह किया हुआ, एकत्र किया हुआ; जकड़ा हुआ; संयत किया हुआ, शासित; प्राप्त, स्वीकार किया हुआ; संक्षिप्त किया हुआ।—**राष्ट्र**-वि० (वह राजा) जिसका राज्य सुरक्षित हो।

संगुहीता-पु० दे० 'संगुहीता'।

संगुहीति-**खी**० [सं०] जानबूझी आदिको निकालने, सिंख-लानेकी क्रिया।

संगीतरा-पु० संतरा।

संगीपत्र-पु० [सं०] छिपाना। वि० छिपानेवाला।

संगीपनीव-वि० [सं०] छिपाने लायक।

संग्रभन-पु० [म०] एक साथ बौधना।

संग्रधन-पु० [सं०] एक साथ बौधना; एक साथ बौधकर भरण्यत करना।

संग्रसन-पु० [सं०] खा जाना, चट कर जाना; अधिक खाना; दबोचना।

संग्रह-पु० [सं०] एकत्रना; मुट्ठी बौधना; रक्षण; (भोजन, औषध आदि) ग्रहण करना; समर्थन करना, अपनाना; जमा करना, एकत्र करना, शासन, नियंत्रण करना; राशी करना; संयोग; जैतर्भाव; (ग्रंथादिका) मकलन; संक्षिप्त, छोटा रूप; बोध; स्तुति; आचार-गृह; एक साथ इकट्ठा की हुई वस्तुएँ; प्रयत्न; उल्लेख; गौरव; कल्याण (लोकसंग्रह); उच्चता; वेद्य; भवनरत्न प्रशिक्ष अथवा छोटा सेना; कीडनदता; विवाह; समा; मैथुन; शिव; सरलक; धारणा।—**कार**-पु० संकलनकर्ता।—**ग्रहणी**-**खी**० संग्रहणी।—**वस्तु**-**खी**० संग्रह के योग्य, लोकप्रिय वस्तु।—**इलीक**-पु० वह इलीक जिसमें पूर्वकथनका उपसंहार किया गया हो।

संग्रहण-पु० [सं०] ग्रहण करनेकी क्रिया; प्राप्त करना; संकलन करना, एकत्र करना; (रक्षादि) ग्रहना; पूर्णल्लेख; नियंत्रण करना; अपनी ओर कर लेना; मैथुन; व्यभिचार; स्त्री के व्रजित अंगोंका स्पर्श, नारीका अपहरण; आशा करना।

संग्रहणी-**खी**० [सं०] अतीमारका एक रूप प्रियमें खाना बिना पचे ही मलके रूपमें निकल जाता है।

संग्रहणीय-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; (औषधके रूपमें) मेहन करने योग्य; नियंत्रणके योग्य; एकत्र करने योग्य।

संग्रहना-सं० कि० संग्रह, संव्य करना; अपनाना।

संग्रहालव-पु० [सं०] वह स्थान जहाँ विशेष प्रकारकी वस्तुओंका संग्रह किया गया हो।

संग्रही(वि०)-पु० [सं०] संग्रह, जमा करनेवाला; प्राप्त करनेवाला।

संग्रहीता(श्रु)-वि० [म०] एकत्र, संग्रह करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; अपनानेवाला। पु० मारवि।

संग्राम-पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई।—**कर्म**(श्रु)-पु० युद्ध-कर्म, भिर्त।—**जित्**-वि० युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला।—**तुल**-**खी**० युद्धके रूपमें अभिनरीक्षा।—**तूर्व** पु० युद्धपट्ट।—**पटह**-पु० युद्धमें बजाया जानेवाला नगाड़ा।—**भूमि**-**खी**० समरभूमि, युद्धक्षेत्र।—**स्यु**-**खी**० बोरपाति।

संग्रामांगण-पु० [सं०] युद्धक्षेत्र, लड़ाईका मैदान।

संग्रामार्थी(सिंह)-वि० [सं०] युद्धेच्छु।

संग्रामी(मि०)-वि० [सं०] युद्धरत।

संग्राह-पु० [सं०] एकत्रना, ग्रहण करना; बलात् पकड़ना; मुट्ठी बौधना; मुक्ता; डालका दस्ता।

संग्राहक-पु० [सं०] एकत्र, संग्रह, जमा करनेवाला; संकलनकर्ता; मारवि। वि० एकत्र करनेवाला; कब्ज करनेवाला, कविन; अपनी ओर खींचनेवाला।

संघाती (विभ्) - वि० [सं०] एकत्र करनेवाला; कत्र करने-वाला; अपने साथ करने, अपनानेवाला । पु० कुटब वृक्ष ।
संघात - वि० [सं०] संग्रह, एकत्र करने योग्य; रोकने योग्य; (किसी पदपर) नियुक्त करने योग्य; अपनाने योग्य; हृदयंगम करने योग्य ।

संघ - पु० [सं०] समूह, झुंड, दल, मंडली; विशेष उद्देश्यसे एक साथ रहनेवाले व्यक्तियोंका समूह; समाज; विशेष-उद्देश्यकी पूर्ति के लिए बना हुआ संघटना; बौद्ध भिक्षुओं आदिका समूह; प्राचीन भारतमें प्रचलित एक प्रकारका प्रजातंत्र; मठ; बनिष्ठ संपर्क । - **घाती (विभ्)** - वि० झुंडमें चलनेवाला । पु० मछली । - **जीवी (विभ्)** - वि० दल बनाकर रहनेवाला । पु० मजदूर । - **पति** - पु० दलनायक । - **पुरुष** - पु० बौद्ध संघका परिचारक । - **पुष्पी** - स्त्री० धातकी, धव वृक्ष । - **शेव** - पु० मंथमें फूट डालना जो पौंच अक्षम्य अपराधोंमें गिना जाता है (शौ०) । - **शेवक** - वि० सपमें फूट डालनेवाला (शौ०) । - **हृत्ति** - स्त्री० माघ मिल्नेकी हृत्ति, दलमें रहने या काम करनेका भाव ।

संघक - पु० [सं०] समूह ।

संघट - वि० [सं०] रासीकृत, ढेर लगाया हुआ । पु० राशि; * लगना; संयोग । (हिंदीमें संघटके अर्थमें भी प्रयुक्त होता है) ।

संघटन - पु० [सं०] संयोग; मेल; [हिं०] निर्माण, रचना, व्यवस्थित करनेका कार्य, गठन; मग्नन; कार्यविशेषकी सिद्धि के लिए निर्मित कोई मंथा ।

संघटना - स्त्री [सं०] मिलाना, संयुक्त करना; स्वरो या ग्रन्थोका संयोग ।

संघटित - वि० [सं०] एकत्रीभूत; बाधित (संगीत); [हिं०] कार्यविशेष के लिए परस्पर संबद्ध; व्यवस्थित ।

संघट्ट - पु० [सं०] संघर्ष; मुठभेड़, धिक्कत; स्पर्धा; आघात, चोट; संयोग; आलिंगन; दूतीकी सहायतासे नायक-नायिकाका मिलन । - **घट्ट** - पु० एक वक्र जिसके पहारे कुछ के लिए उपयुक्त समयका निश्चय किया जाता है (ज्यो०) । - **घटित** - पु० बाजी, दार्व ।

संघटन - पु०, **संघट्टना** - स्त्री [सं०] संघर्षण; टक्कर; घनिष्ठ संपर्क; दी पक्षबालोंकी भिड़ंत, युद्धमगुल्य ।

संघट्टा - स्त्री [सं०] लता, बेल ।

संघटित - वि० [सं०] घटित; माँडा, गुँथा हुआ; एकत्रीकृत; परिचाहित ।

संघाती - पु० साथी ।

संघर्ष - स० किं० संघार, नाश करना; बघ करना ।

संघर्ष - पु० [सं०] दो जीवोंका आपसमें रगड़ खाना; होड़; स्पर्धा; द्वेष; कामोत्तेजना; धीरे-धीरे छुड़कना, रंगना, संघर्ष । - **घाती (विभ्)** - वि० स्पर्धा, द्वेष करनेवाला ।

संघर्षण - पु० [सं०] रगड़ खाने या रगड़नेकी क्रिया; रगड़ने, मलनेके साथ भलेभाकी वस्तु, उषटन आदि ।

संघर्षा - स्त्री [सं०] तरल काष्ठ ।

संघर्षी (विभ्) - वि० [सं०] रगड़नेवाला; स्पर्धा, द्वेष करनेवाला ।

संघस - पु० [सं०] साव्य पदार्थ ।

संघाट - पु० [सं०] काष्ठ-खंडोंका जोड़ मिलाना; दाक्षकृत्य, बड़का काम; पात्र; दलमें रहनेवाला (?) ।

संघाटि, **संघाटी** - स्त्री [सं०] बौद्ध भिक्षुओंका वस्त्र, पोकर ।

संघाटिका - स्त्री [सं०] युग्म, जोड़ा; किसीकी एक पुरानी पोशाक; कुटनी; प्राण; जलकंटक, सिंघावा ।

संघाणक - पु० [सं०] नाकसे निकलनेवाला कफ ।

संघास - पु० संग, साथ । अ० संग या साथमें - 'धुओं उठे मुझ सीस सेंघास' - प० ।

संघात - पु० [सं०] आघात; बघ; बंद करना (घार) ; धुड़; ठोस, घनीभूत करना; संयोग; समूह, झुंड; राशि; साथ बाना करनेवालोंका दल; कारों; श्रेष्ठा; अस्त्र; शरीर; घनता; प्रचंडता; एक ही दृष्टमें रचित कव्य; समास (व्या०); चलनेका एक विशेष ढंग (ना०); एक नरक । - **कठिन** - वि० जो मिल्कर ठोस हो गया हो । - **घाती (विभ्)** - वि० दलमें रहनेवाला । - **घ** - वि० बात, पित्र और कफके बिकारसे उत्पन्न, साज्जिपातिक । - **घाति** - स्त्री० सोभा; शतपुष्पा, सौक । - **घात** - पु० एक प्रकारका आधिसौतिक रोग । - **विहारी (विभ्)** - पु० बुद्ध । - **शिक्षा** - स्त्री० परधर जैसा कठिन पदार्थ; बहुत कड़ा पत्थर ।

संघातक - पु० [सं०] साथ रहनेवालोंका पृथक् होना ।

वि० वातक; नाशक ।

संघासन - पु० [सं०] बघ करना; नाश करना ।

संघातिका - स्त्री [सं०] अरणिगी लकड़ी जिसे रगड़कर आग उत्पन्न करते हैं ।

संघासी - पु० साथ देनेवाला, साथी; दोस्त ।

संघासी (विभ्) - वि० [सं०] वातक, प्राणहार ।

संघासी - पु० दे० 'संघाती' ।

संघाधिप - पु० [सं०] संघका प्रधान (जै०) ।

संघार - पु० दे० 'संघार' ।

संघारवा - स० किं० मघार, नाश करना; बघ करना ।

संघाराम - पु० [सं०] बौद्ध भिक्षुओंके रहनेका स्थान, विहार ।

संघारसीध - पु० [सं०] वे पाप जिनके लिए संघसे कुछ दिनोंतक निकासनेका दंड दिया जाता था (शौ०) ।

संघुषित - वि० [सं०] ध्वनित; घोषित । पु० ध्वनि; शोर, विहाट ।

संघुष्ट - वि० [सं०] ध्वनित, पुत्रायमान; घोषित; विक्रमार्थ प्रस्तुत । पु० ध्वनि, आवाज ।

संघुष्ट - वि० [सं०] रगड़ खाया हुआ; रगड़ा हुआ ।

संघेरवा - स० किं० रस्तीसे एक गायके दाँवें पैरकी दूसरी गायके दाँवें पैरके साथ बाँधना ।

संघेरा - पु० दो गायोंके पैरोंको एकमें बाँधनेकी रस्ती ।

संघेका - पु० साथी; मित्र ।

संघोच - पु० [सं०] जोरका शब्द; बोध, व्याखीकी वस्ती ।

संघोचिनी - स्त्री [सं०] एक प्रेतवर्ग ।

संघ - पु० [सं०] ग्रंथ-लेखनके काम आनेवाले पत्रोंका संग्रह; * एकत्र करना; रक्षण; कुशल शांति । - **कर** -

वि० संघ करनेवाला, कंजल ।

संज्ञक-पु० [सं०] सौचा; संवय करनेवाला (वि०) ।
संज्ञकित-वि० [सं०] अर्चनेमें पड़ा हुआ; भीत, कंपित ।
संज्ञक-पु० [सं०] कवि; आचार्य; पुरोहित ।
संज्ञक-पु० [सं०] प्रसारक; ढग; दुष्ट; ढगी, घोड़ा ।
संज्ञक-स० कि० जमा करना, बटोरना; रखा, देखना ल करना ।
संज्ञक-पु० [सं०] एकत्र करना; मांवार, राशि, डेर; बड़ी हँसि या परिमाण; जोड़, संधि ।
संज्ञक-पु० [सं०] एकत्र करनेकी क्रिया, डेर लगाना; जले हुए शवकी अस्थिमें एकत्र करना ।
संज्ञक-वि० [सं०] संग्रह करनेवाला ।
संज्ञकी(वि०)-वि० [सं०] सच्य करनेवाला; कजस, कुपण; धनवान् ।
संज्ञक-पु० [सं०] रास्ता, मार्ग; तय रास्ता; गमन; एक राशिसे दूसरी राशिमें संक्रमण; पुनः प्रवेशद्वार; शरीर; वध; विकास, प्रगति; साथी ।
संज्ञक-पु० [सं०] गमन; भ्रमण; गति; भ्रमण; पार करना; गतिमान् करना; प्रयोगमें लाना, फैलाना ।
संज्ञक-अ० कि० चलना, फिरना; फैलना; पहुँचना । म० कि० चलाना ।
संज्ञक-पु० [सं०] चवानेकी क्रिया ।
संज्ञक-वि० [सं०] कंपित, झिलता हुआ; घूमता हुआ । पु० संचर नमक । -**मादी**-की० धमनी ।
संज्ञक-पु० [सं०] झिलना, काँपना; घूमना ।
संज्ञक-पु० [सं०] दवेन, बाज; शिकर ।
संज्ञक-पु० [सं०] एक यज्ञ जिसमें सोम एकत्र किया जाता था ।
संज्ञक-पु० [सं०] गमन; भ्रमण; सर्वका दूसरी राशिमें प्रवेश; रोग-संक्रमण; मार्ग, रास्ता; (का०) ढग; जीवन-व्यापार; कठिन यात्रा; गुप्तचरोंका एक मेद; कष्ट; कठिनाई; नेदुष्य; बड़ाया देना; सर्पमणि । -**जीवी**(वि०)-वि० खानबदोश; शरणापन्न । -**पद्य**-पु० टहलनेका स्थान । -**व्याधि**-की० एक संक्रामक रोग ।
संज्ञक-वि० [सं०] ले जाने, चलाने, फैलानेवाला । पु० नायक; बड़ाया देनेवाला; बक्ता; रक्षकका एक अनुचर ।
संज्ञक-पु० [सं०] नवदीक लाना या ले जाना; मिलाना, जोड़ना; संवाद कहना ।
संज्ञक-की० [सं०] एक देवी (गौ०) ।
संज्ञक-स० कि० फैलाना; प्रवेश कराना; उपपन्न करना; प्रयोगमें लाना ।
संज्ञक(वि०)-पु० [सं०] नायक, नेता ।
संज्ञक-की० [सं०] कुटुंबी; दूती; बह दासी जिसके पास रुपयेपैसेका हिसाब रहता है; नाक; प्राण; कुण्डल, जोड़ा ।
संज्ञक-की० [सं०] हंसपरी कता; ठाल लजाऊ । वि० संतरण करनेवाली; चकने-फिरने या ढोलनेवाली ।
संज्ञक-वि० [सं०] गतिमान् किया हुआ, चलाया हुआ; उकसाया हुआ, जिसे बड़ाया दिया गया हो; नम्रकृत किया हुआ (रोग) । पु० अपने स्वामीके विचारों-

को कार्यान्वित करनेवाला व्यक्ति ।
संज्ञक(वि०)-वि० [सं०] गतिशील, चक; भ्रमणकारी; एकसे दूसरेमें संक्रमण करनेवाला, संक्रामक (रोग); चढ़ने-उतरनेवाला (स्वर); प्रवेश करनेवाला; साथ आने, मिलने-वाला; संक्रम; क्षणस्थायी; अस्थिर; गतिमान् करनेवाला; दुर्गम; जानुबंशिक । पु० गंधद्रव्य, दूध या घृषके जलनेसे उठा हुआ पुष्प; बासु; एक प्रकारके भाव जो तैत्तिरीय या तैत्तिरीय माने जाते हैं और स्थायी भावकी पुष्ट कर विहीन हो जाते हैं, दे० 'व्यभिचारी भाव' (सा०); गीतके चार चरणोंमेंसे तीसरा; अस्थिरता, क्षणस्थायित्व ।
संज्ञक-पु० [सं०] कंधन; चलना ।
संज्ञक-पु० [सं०] संवाहन करनेवाला, गति प्रदान करनेवाला; कारखाने आदिके ठीकने चलते रहने, कायम रहनेका प्रबंध करनेवाला ।
संज्ञक-पु० [सं०] चलाना, गति देना; नियंत्रण ।
संज्ञक-की० [सं०] युंजा ।
संज्ञक-पु० [सं०] चित्त; विचारणा ।
संज्ञक-वि० [सं०] सुविचारित; अभिप्रेत; निश्चित ।
संज्ञक-वि० [सं०] इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, डेर लगाया हुआ; बना (जैसे जंगल); ...से युक्त; गिन; हुआ; जिसमें बाधा पड़ी हो, अभ्यास किया हुआ ।
संज्ञक(वि०)-वि० [सं०] पूर्वजन्मके वे कर्म जिनका फलभोग नहीं हुआ है; यद्वाग्नि सचिव करनेके बाद किया जाने-वाला कर्म ।
संज्ञक-की० [सं०] एक वनस्पति ।
संज्ञक-की० [सं०] एकत्र करने, जमा करनेकी क्रिया, गह लगाना; शतपथनाक्षणका नवीं खट ।
संज्ञक-की० [सं०] सृष्टिकर्ण नामक लना ।
संज्ञक-पु० [सं०] कारिका, व्याख्या ।
संज्ञक-पु० [सं०] दुकने-दुकने करना, चूर करना ।
संज्ञक-वि० [सं०] दुकने-दुकने किया हुआ, चूर किया हुआ ।
संज्ञक-वि० [सं०] मन्वय करने, एकत्र करने योग्य ।
संज्ञक-पु० [सं०] एक देवपुत्र (गौ०) ।
संज्ञक-पु० [सं०] बड़ाया देना, उद्योजित करना ।
संज्ञक-की० [सं०] उद्योग या उद्योजित करनेवाला पदार्थ; उद्योजित करना; प्रेरणा ।
संज्ञक-वि० [सं०] प्रेरित; आदिष्ट ।
संज्ञक-वि० [सं०] पूर्णतः दका हुआ; छिपा हुआ; अज्ञात ।
संज्ञक-पु० [सं०] उद्योग (प्रवृत्तके मोक्षके दस भेदोंमेंसे एक) ।
संज्ञक-पु० [सं०] छिपाना ।
संज्ञक-की० [सं०] लवचा, छाह ।
संज्ञक-की० [सं०] नाश, बर्बादी ।
संज्ञक-वि० [सं०] काटकर दुकने-दुकने किया हुआ ।
संज्ञक-पु० [सं०] काटना, विभाजन करना; हटाना, दूर करना ।
संज्ञक-पु० [सं०] शिव, ब्रह्मा । वि० [का०] लीकनेवाला (ममासमें) ।
संज्ञक-पु० [सं०] बंधन; संवृत्त ।

संजनन-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला। पु० उत्पादन; रचना; प्रगति।

संजनित-वि० [सं०] उत्पादित; रचित।

संजनी-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन हथियार जिसमें बंध करते थे।

संजम-पु० दे० 'संयम'।

संजमना-स० कि० संयमित, व्यवस्थित करना-‘पलटि-पट संजमत केसनि शृङ्खल भग ओंछि’-वन०।

संजमी-वि० दे० 'संयमी'।

संजय-स्त्री० [सं०] विजय। पु० एक प्रकारका ब्यूह; धृतराष्ट्रका एक सारथि जो उन्हें युद्धका समाचार सुनावा करता था; धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

संजद-पु० [फा०] बादशाह, सम्राट्।

संजद-पु० [सं०] बार्तालाप; गपराप; शोरगुल, होहल्ला।

संजवन-पु० [सं०] अंगन बनानेवाले चार मकानोंका समाहार; मार्गदर्शक स्तम्भ।

संजा-स्त्री० [सं०] छागी, बकरी। पु० [फा०] तराजू; वजन; पासंग।

संजात-वि० [सं०] उत्पन्न; व्यक्त; व्यतीत (समय आदि)।
-कोष-पु० कूट। -कौतुक-वि० चकित। -निद्रा-प्रलम्ब-वि० जिसकी नींद समाप्त हो गयी हो। -निर्वैद्य-वि० विरक्त। -कज-वि० लजित। -बेवशु-वि० कपित।

संजाफ-पु० [फा०] हाथिया, गोट; एक तरहका कपडा जिसकी गोट लगाते हैं।

संजाफरी-वि० हाथियादार, (कपडा) जिसमें किनारी लगी हो। -संजा-पु० वह गजा जिसकी चेंदियापर ही बाल हों।

संजाब-पु० [फा०] नेबलेकी जातिका एक जानवर या उसकी छाल जिससे पीस्तीन बनाते हैं; * एक तरहका घोडा।

संजावन-पु० [सं०] गरम धूपमें जामन डालना।

संजी-स्त्री० [फा०] वजन करना (समासमें)।

संजीदगी-स्त्री० सजीदा होना; गाम्भीर्य, समझदारी, शिष्टता।

संजीदा-वि० [फा०] तुला हुआ, गाम्भीर्ययुक्त; शिष्ट, समझदार।

संजीव-पु० [सं०] साथ पुनरुज्जीवित करना; पुनः जीवित करनेवाला (समासमें); एक नरक। वि० जीवित।

-कण-पु० पुनः जीवित करना। -कहणी-स्त्री० पुनर्जीवित करनेकी विद्या; एक कल्पित वृत्ति।

संजीवक-वि० [सं०] साथ जीने, रहनेवाला; पुनर्जीवित करनेवाला।

संजीवन-पु० [सं०] साथ जीना, रहना; पुनर्जीवित करना; एक नरक; दे० 'संजवन'; जाहार; एक वृत्ति। वि० जीवनाक्षि देनेवाला।

संजीवनी-स्त्री० [सं०] मृतको जीवित करनेवाली एक कल्पित औषधि; एक औषधि, हस्ती। वि० स्त्री० जीवन देनेवाली। -विद्या-स्त्री० मृत व्यक्तिकी त्रिलोकी एक अल्पिण विद्या।

संजीवित-वि० [सं०] पुनर्जीवित किया हुआ।

संजीवी(विष)-वि० [सं०] मृतको जीवित करनेवाला।

संजुका-वि० दे० 'संयुक्त'।

संजुग-पु० युद्ध, संग्राम।

संजुल-वि० मिटा हुआ, सहित।

संजुल-स्त्री० एक छंद।

संजुह-वि० [सं०] ... से मरा हुआ, आबाद।

संजुल-वि० तैयार, सज्ज; सावधान।

संजोह-अ० सग, साथमें। पू० कि० एकट्ठा कर, जुटाकर।

संजोहक-वि० एकट्ठा किया हुआ; सज्जित।

संजोउ-पु० संयोग; तैयारी-‘अबहीं नेमाहि करो संजोउ’-प०; सामग्री।

संजोग-पु० दे० 'संयोग'।

संजोगिता-स्त्री० जयचंदकी कन्या जिसका पृथ्वीराजने हरण किया था।

संजोगिनी-स्त्री० दे० 'संयोगिनी'।

संजोगी-पु० तीतर रखनेके लिए साथ जुड़े हुए पिंजरे; * वह प्रसन्न जो अपनी प्रियाके साथ हो। * वि० दे० 'संयोगी'।

संजोना-स० कि० सजाना; एकन करना; पूरा करना; सचित करना।

संजोबना-स० कि० दे० 'संजोना'।

संजोबल-वि० संजा हुआ; सज्ज; सैन्यादिविशिष्ट।

संजोबार्-पु० सजावट; जमाद।

संजोही-पु० बाना कसनेका हथ्था जिसपर राख लगा रहता है।

संज-वि० [सं०] जिसके घुड़ने चलते समय आपसमें टकराते हों; नामवाला; पूर्ण जानकारी; होशमें आया हुआ। पु० एक तरहका पीला सुगंधित काष्ठ।

संजक-वि० [सं०] नामवाला (समासमें)।

संजवन-पु० [सं०] बलिपशुका (मछा दवाकर) बंध करना; छल करना, धोखा देना; सूचित करना।

संजस्त-वि० [सं०] सूचित किया हुआ; बलि चढ़ाया हुआ।

संजसि-स्त्री० [सं०] बंध करना; सूचित करना।

संज्ञा-स्त्री० [सं०] बोध, ज्ञान; होश; प्रज्ञा; संकेत, इंगित; नाम; वह शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु आदिका नाम हो (व्या०); गायत्रीमंत्र; एक श्री सख्या (श्री०); सूर्यकी स्त्री जो विश्वकर्मकी पुत्री थी। -करण-पु० नाम रखना। -धुणी-स्त्री० धनुना। -सुस-पु० जनि। -हीन-वि० बेहोश।

संज्ञास्त-वि० [सं०] अच्छी तरह जाना, समझा हुआ।

संज्ञान-पु० [सं०] बोध, ज्ञान; सम्यक् अनुमति; संकेत(?)।

संज्ञावन-पु० [सं०] सूचित करना; बतलाना, सिखलाना; बंध।

संज्ञावाक्(वद)-[सं०] होशदार; नामयुक्त।

संज्ञिष-स्त्री० [सं०] नाम, आख्या।

संज्ञित-वि० [सं०] सूचित, संकेत द्वारा ज्ञातया हुआ; अभिहित।

संज्ञी(ज्ञिष)-वि० [सं०] चेतन, मज्ञान; नामधारी।

संतापना*—सं कि० पीडा, कष्ट देना ।

संतापित-वि० [सं०] तपाया हुआ, झुलसा हुआ; पीड़ित ।

संतापी(पितृ)-वि० [सं०] कष्टकारक, दुःखद ।

संताप्य-वि० [सं०] तपाने, जलाने योग्य; कष्ट, दुःख देने योग्य ।

संति-की० [सं०] अंत, विनाश; दान ।

संती*—अ० दारो; † बहसेलें ।

संतुलन-पु० [सं०] आपेक्षिक तौल बराबर होना वा रखना ।

संतुलित-वि० [सं०] जिनमें सतुलन हो, जिन (दो देशों, पक्षों, राक्षियों, बस्तुओं आदि) का भार, बल, फैलाव आदि बराबर रखा गया हो ।

संतुष्ट-वि० [सं०] जिसे संतोष हो गया हो; तृप्त; * से प्रसन्न; राजी, राजमंद ।

संतुष्टि-की० [सं०] सतुष्ट होनेका भाव; तृप्ति, ब्रष्टापूति; प्रसन्नता ।

संतोष*—पु० जो मिले उसीसे तुष्ट रहनेका भाव ।

संतोषी*—वि० दे० 'संतोषी' ।

संतोष-पु० [सं०] जो मिले उसीसे प्रमत्त रहनेका भाव; तृप्ति; प्रसन्नता; अंगुठा और तर्जनी ।

संतोषक-वि० [सं०] सतुष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला ।

संतोषण-पु० [सं०] सतुष्ट, प्रसन्न करनेकी क्रिया ।

संतोषणा*—सं० क्रि० सतुष्ट करना । अ० कि० सतुष्ट होना ।

संतोषित-वि० [सं०] संतुष्ट, प्रसन्न किया हुआ; * सतुष्ट ।

संतोषी(पितृ)-वि० [सं०] संतुष्ट रहनेवाला; मज करनेवाला ।

संतोष्य-वि० [सं०] संतोष करने योग्य ।

संस्थक-वि० [सं०] परिस्थक; * में रहित, वनित ।

संस्थजन-पु० [सं०] परिस्थाय करनेकी क्रिया ।

संस्थाय-पु० [सं०] परिस्थाय ।

संश्रुत-वि० [सं०] बहुत बरा हुआ, भयमे काँपना हुआ ।
—गोचर-वि० जिसे देखनेसे भय हो ।

संश्रान-पु० [सं०] रक्षण, उद्धार ।

संश्रास-पु० [सं०] भय, आतंक ।

संश्रासन-पु० [सं०] कराना, नस्त करना ।

संश्रासित-वि० [सं०] डरवाया हुआ ।

संश्री-पु० दे० 'संतरी' ।

संश्वरा-की० [सं०] जलदबाजी, शीघ्रता ।

संथा-की० पाठ, सबक ।

संवंध-पु० [सं०] संबंध; चिमटी; एक नरक; स्वरके उच्चारणमें ओठों वा दंतपक्षियोंकी आपसमें मिलना; शरीरके वे अंग जिसमें पकड़नेका काम किया जाता है (अंगुठा आदि); पुस्तकका बांध वा अन्धाय; एक एकाह ।

संवंधक-पु० [सं०] चिमटी; संबंध ।

संवंधिका-की० [सं०] संकसी; चिमटी; (चोंचसे) काटनेकी क्रिया ।

संवंधित-वि० [सं०] कबंधयुक्त । पु० मुद्राह्व ।

संदा-पु० छेद, विच्छेद; * दबाव; समंदन—'महा आधार मनक सुक संदके'—पद्य ० ।

संदर्प-पु० [सं०] गर्व, घमंड ।

संदर्भ-पु० [सं०] विरोधा; एक साथ बांधना; पुनरा; संकलन करना; व्यवस्थित करना; साहित्यिक रचना; निर्बंध आदि; संबंध-निर्वाह; लेख, पुस्तक आदिमें आया हुआ प्रसंग जिसका उल्लेख हो । अर्थ-प्रकाशक ग्रंथ ।

—विच्छेद-वि० जिसमें संबंधका निर्वाह न हुआ हो ।

—सुद्ध-वि० जिसमें संबंधका अच्छा निर्वाह हुआ हो ।

—सुद्धि-की० संबंध-निर्वाहकी स्पष्टता ।

संदर्श-पु० [सं०] दृश्य ।

संदर्शन-पु० [सं०] अच्छी तरह देखना; टकटकी लगाकर देखना; पर्यवेक्षण, विचार; नजर; परस्पर मिलन; सूरत; दिखलानेकी क्रिया । —क्षीप-पु० एक दीप । —पथ-पु० दृष्टिपथ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संदर्शित-वि० [सं०] दिखलाया हुआ ।

संघी-खी [सं०] आसंदी, खाट, पलग ।

संघीपक-वि० [सं०] उदीपक ।

संघीपन-पु० [सं०] उदीपन; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; एक ऋषि, कृष्णके गुरु । वि० उदीप्त करनेवाला ।

संघीपनी-खी [सं०] पंचम स्वरकी एक श्रुति (संगीत) ।

संघीपित-वि० उदीप्त; जलवाया हुआ ।

संघीस-वि० [सं०] उदीप्त; प्रवर्धित; उत्तेजित किया हुआ, उत्कसाया हुआ ।

संघीप्य-पु० [सं०] मयूरशिक्षा वृक्ष । वि० उदीपनके योग्य ।

संघुष्ट-वि० [सं०] क्लृप्तित किया हुआ, खराब किया हुआ; दुष्ट, कमीना ।

संघूक-पु० [अ०] लकड़ी वा लोहेका बकस जो कपड़े आदि रखनेके काम आता है; वह लंबा बकस जिसमें मुरदे डफन करनेके लिए ले जाते हैं, ताबूत ।

संघूक्या-पु० छोटा संघूक ।

संघूक्यी-खी० छोटा संघूकना ।

संघूक्यी-खी० छोटा संघूक ।

संघूक्यी-वि० संघूककी शक्का । -क्या-खी० सीधी सुरी हुई कम ।

संघूक्य-पु० दे० 'संघूक' ।

संघूर-पु० दे० 'सिंदूर' ।

संघूषण-पु० [सं०] फलित करना, गवा करना, खराब करना ।

संघूषित-वि० [सं०] खराब किया हुआ; जिसकी हालत और खराब हो गयी हो (रोग); निरिधित ।

संघृष्ट-वि० [सं०] जैसा देख पड़नेवाला ।

संघृष्ट-वि० [सं०] अच्छी तरह देखा हुआ; पहले ही जाना हुआ ।

संघृष्टा(गृष्ट)-वि० [सं०] शकी, संदेहकी प्रवृत्तवाला ।

संघृष्ट-पु० [सं०] सवाद; आदेश; भेंट, उपहार; एक मिठाई-1-सिर, -वाक्(व्)-खी० सवाद । -वाहक, -हर, -हारक, -हारी(विस्)-पु० सवादवाहक ।

संघृष्टक-पु० [सं०] सवाद ।

संघृष्टा-पु० सवाद, खबर ।

संघृष्टी(शिव)-पु० [सं०] दूत, संदेशवाहक ।

संघृष्ट-पु० दे० 'संदेश' ।

संघृष्टा-पु० दे० 'संदेश' ।

संघृष्टा-पु० दे० 'संदेश' ।

संघृष्टी-पु० दे० 'संदेशी' ।

संघृष्ट-पु० [सं०] शक, अनिश्चय; खतरा; एक अर्थालकार जहाँ किसी वस्तुके सम्बंधमें साक्ष्यके कारण अन्य वस्तु होनेका संदेह हो और वह दूर न होकर बना रहे । -शंघ-खी० संदेहकी शक, शंका संदेह । -शंघवन-पु० संदेहका निवारण । -शंघी(विस्)-वि० संदेह उत्पन्न करनेवाला । -शंघी-खी० संदेहका शक, कुछ निश्चय न हो सकना, द्विविधा । -शंघवन-पु० संदेह दूर करनेकी क्रिया ।

संघृष्टक-वि० [सं०] संदेहपूर्ण, संदिग्ध ।

संघृष्टी(विस्)-वि० [सं०] संदेहयुक्त ।

संघीक-पु० [सं०] एक आभूषण, कनकल ।

संघीह-पु० [सं०] दुहना, साथ दुहना; सारा दूध (सारे दुधका); राशि; प्राचुर्य ।

संघीव-पु० [सं०] पलायन; गूँधनेकी क्रिया (?) ।

संघीव-पु० [सं०] पलायन; दौड़नेका स्थान; चाल, गति ।

संघी-वि० [सं०] धारण करनेवाला; संयुक्त । पु० योग; संबंध; संधि ।

संघना-अ० कि० मिलना, संयुक्त होना ।

संघा-खी० [सं०] योग, मेल, साथ; बनिष्ठ संबंध; बाद, प्रतिष्ठा; अवस्था; सीमा; स्थिरता; संहि; सुरा आदि चुलाना; किसी हालतका बना रहना; अविप्राय ।

-आधित, -आध्व, -वचन-पु० अस्पष्ट कथन (?) ।

संघाता(सं)-पु० [सं०] विष्णु; शिव ।

संघान-पु० [सं०] मिलाना, जोड़ना; योग; संधि; सवदन; मिश्रण; सुधार; निशाना लगाना; लक्ष्य-एक पंथ औ एक संघाना-प०; ध्यान; दिशा; संमालना; मदिरा चुलाना; एक मदिरा; पीनेकी इच्छा उत्तेजित करनेवाली चटपटी चीजें; अचार आदि बनाना; सीमा; धावका भरना; मेथी, दोस्ती; अनुभूति, कौजी; कासा; सोराष्ट्र; अन्वेषण । -कसा(सं)-वि० जोड़नेवाला, मिलानेवाला । -ताल, -भाह-पु० एक ताल (संगीत) ।

संघानना-सं० कि० बाण चढ़ाना, निशाना लगाना; चलानेके लिए कोई अस्त्र ठोक करना ।

संघाना-पु० अचार-पुति संघाने आये वसति'-प० ।

संघानिका-खी० [सं०] एक तरहका अचार ।

संघानित-वि० [सं०] जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ; बद्ध ।

संघानिनी-खी० [सं०] योग ।

संघानी-खी० [सं०] मिश्रण; शराब चुलाना, कौसा आदि डालनेका कारखाना. शराबकी भट्टी; एक तरहका बेगन ।

संघानी(विस्)-वि० [सं०] निशाना लगानेमें कुशल । पु० शराब चुलानेवाला; मिलाने, बाँधनेवाला ।

संघापगमन-पु० [सं०] निवृत्त शत्रुके मथि करके दूसरे-पर आक्रमण करना ।

संघारण-पु०, संघारण-खी० [सं०] रोकना, धारण करना; आवरण करना; सहन करना; शरीरम्बास ।

संघारणीय-वि० [सं०] धारण करने या जीवित करने योग्य ।

संघार्य-वि० [सं०] धारण या सहन करने योग्य; निवारणके योग्य; (जोकर) रखने योग्य ।

संधि-खी० [सं०] सयोग, मेल, मध्य; समझौता; दोस्ती; झुलझ; शरीरका जोड़; दुग्ग, छेद, दरार; संधः विभाग, पार्थक्य; मग; संबन्धन; एक तरहका वर्ण-विकास; संहिता; अवकाश, विराम; परिवर्तनकाळ; झुग अवसर; युगांत-काळ; कलाजी; नाटककी पाँचों अवस्थाओंकी मिलानेवाले खल, मुख्यसंधि आदि; तारण्य, कैदी आदि अवस्थाओंका योग । -कुसल-वि० मैत्री-स्थापनमें चतुर । -कुसुमा-खी० एक फूलदार पौधा, सिसंधि । -गुप्त-पु० शत्रुपर छापा मारनेके लिए सैनिकोंके छिपकर बैठनेका स्थान (?) । -गुह्य-पु० मनुष्यकी छुपा छुपा । -ग्रंथि-खी० वह ग्रंथि जो दो अंगोंके जोड़पर

सित हो। -**बीर**,-**बीर**,-**सर्वर**-पु० सेंब जमाकर बीर करनेवाला। -**छेद**,-**छेद**-पु० सेंब मारना; संधिकी शर्तें तोड़नेवाला (?)। -**छेद**-पु० दे० 'संधि-बीर'। -**ज**-पु० मरिदा; गौंदाका फोड़ा। वि० जुलानेसे प्राप्त; संधिद्वारा उत्पन्न (व्या०)। -**जीवक**-वि०, पु० शिखीको पुरवसे मिलाकर जीविका अर्जन करनेवाला। -**खडी**-**खी**० **संधिखल**-'सोमा स्वयंसेवी संधितये किनौ'-पन०। -**खूब**-पु० संधि; सुख तोड़ देना। -**प्रच्छादन**-पु० स्वरसाधनकी एक रीति (संगीत)। -**प्रबंधन**-पु० दे० 'संधि-बंधन'। -**बंध**-पु० भुरेबंध; नल; सिरा; घूना; सोमेट। -**बंधन**-पु० नल, सिरा, बंधनी। -**बंध**-पु० संधिकी शर्तें तोड़ देना; किसी जोड़का संबंध छूट जाना। -**अमन**-पु० एक रोग जिसमें जोड़ोंमें पीड़ा रहती है। -**मुक्त**-वि० जो छटक गया हो (जोड़)। पु० दे० 'संधि-मंग'। -**मुक्ति**-**खी**० किसी जोड़का संबंध छूट जाना। -**रंधका**-**खी**० सुरंग, सेंब। -**राश**-पु० सिद्ध; संध्याकी कालिमा। -**खा**-**खी**० सेंब, दरार; सुरंग; गड्ढा; मरिदा; नदी। -**विग्रहक**,-**विग्रहिक**-पु० संधि और युद्धका निर्णायक मंत्री। -**विच्छेदन**-वि० मंधिकी शर्तें करनेमें कुशल। -**विच्छेद**-पु० समझौता तोड़ना या टूटना; व्याकरणके संधिगत शब्दोंको अलग-अलग करना। -**विद्ध**-पु० एक रोग (मनमें हाव-पैरके जोड़ोंमें खजल और पीड़ा रहती है)। -**वेखा**-**खी**० संध्या; वह समय जिसमें दो समयोंका मेल हो। -**खल**-पु० आमवात। -**सितासित**-पु० एक नेत्ररोग। -**हरक**-पु० दे० 'संधि-बीर'।

संधिक-पु० [सं०] जोर; एक तरहका ज्वर।
संधिका-**खी**० [सं०] शराब जुलाना।
संधि-पु० [सं०] एक तरहका ज्वर।
संधित-वि० [सं०] युक्त; आवद्ध; मिलाया हुआ; रखा हुआ (जैसे-भनुपूर बाण); जिसने सुख की है। पु० अवार; मरिदा; सोमतेके कारण अलग हुए वालोंको बाँधना।
संधिनी-**खी**० [सं०] पार स्नाती हुई या पार स्नानी हुई गाय; दूध देनेवाली हालकी ही गायिन गाय; केसमय, दूसरे दिन दूध देनेवाली गाय।
संधी(**सिन्**)-पु० [सं०] वह मंत्री जो संधि श्यादिका कार्य करता है।
संधुक्षण-वि० [सं०] उदीपक, उत्तेजक। पु० उदीप्त करना, उत्तेजित करना।
संधुक्षित-वि० [सं०] उदीप्त, उत्तेजित।
संधेय-वि० [सं०] जोड़ने, मिलाने योग्य; ज्ञात करने योग्य, राजी करने योग्य।
संध्यंग-पु० [सं०] मुखसंधि आदि संधियोंके अंग (ना०)।
संध्य-वि० [सं०] संधि-संबंधी; सहितापर आधृत; जिसकी संधि होनेवाली हो; विचारमें प्रवृत्त।
संध्यार्ज-पु० [सं०] दो राशियोंका मध्यवर्ती नक्षत्र।
संध्यात, **संध्याधक**-पु० [सं०] युग-संधि।
संध्या-**खी**० [सं०] योग, मेल; सुख, दुःखारी या आमका वह समय जब दिनके भागोंका मेल होता है; इन समयोंपर किये जानेवाले धार्मिक कृत्य; वे युगोंके बीचका

समय; संधि; बादा, ठहराव; सीमा; विचारणा एक मूल; एक नयी दिनका कोई भाग; मर्यादी पुनी; धर्मकी स्त्री; संघाव। -**कार्य**-पु० संध्योपासव। -**काक्षिक**-वि० संध्याकार-संबंधी। -**माटी**(**सिन्**)-पु० शिव। -**पुष्पी**-**खी**० चमेरी; जायफल। -**बद्ध**-पु० निष्ठा-वर। -**रत्न**-पु० आमकी कालिमा; आमकी भाभा जानेवाला राग (शाम-कसबाण); सिद्ध। वि० जिसकी कालिमा संध्या-कारकी सी हो। -**बंधन**-पु० संध्योपासन।

संध्याचक-पु० [सं०] एक पहाड़, अस्ताचल।
संध्याराम-पु० [सं०] गङ्गा।
संध्यासन-पु० [सं०] पारपरिक सवसे शत्रुपक्षका दुर्बल हो जाना।
संध्योपासन-पु० [सं०] संध्याके समय की जानेवाली पूजा आदि।
संध्यान-वि० [सं०] स्वर उत्पन्न करनेवाला (पवन)।
संध्यास-पु० [सं०] दे० 'सन्धास'।
संध्यासी(**सिन्**)-पु० [सं०] दे० 'सन्धासी'।
संपन्न-वि० [सं०] अच्छी तरह उगाया, पकाया हुआ; पका हुआ; जिसकी मरनेकी अवस्था हो गयी हो।
संपत्ति-**खी**० दे० 'संपत्ति'।
संपत्-'संपद'का समागत रूप। -**कुमार**-पु० विष्णुकी एक मूर्ति। -**प्रदा**-**खी**० बैरकी एक मूर्ति; एक बीड़ देवी।
संपत्ति-**खी**० [सं०] अश्वत्थ, सद्युधि; ऐश्वर्य; धन, जायदाद; सफलता, सिद्धि; बहुतायत, प्राप्ति; लाभ; अस्तिव; अच्छी अवस्था; सामंजस्य, अनुकूलता; एक जड़ी; एक कला। -**दाय**-पु० धन-संपत्तिका दान।
संपत्तीय-पु० [सं०] तर्पण-विशेष।
संपद्-वि० [सं०] संपन्न। पु० पैरोंकी बराबर या साथ रखकर खड़ा होना।
संपदा-**खी**० धन-संपत्ति, ऐश्वर्य।
संपरी(**सिन्**)-पु० [सं०] अशोकका एक पेज।
संपद्-**खी**० [सं०] सफलता, सिद्धि; सफलताकी स्थिति; उद्देश्य-प्राप्ति; सामग्र्य; संपत्ति, धन; सद्युधि; अश्वत्थ; दय; सौभाग्य; पूर्णता; बाहुव्य; कोश, खजाना; सद्युगोंकी वृद्धि; अलंकरण; सही ढंग; सुकाहार, गौरव; सौंदर्य; कांति; एक ओषधि, वृद्धि। -**बर**-पु० राजा। -**बसु**-पु० सुर्वेकी सात प्रमुख रश्मियोंमेंसे एक।
संपन्न-वि० [सं०] उत्पत्तिशील; धनी; भाग्यवान्; कृतकाम; साधित, पूरा किया हुआ; पूर्ण; पूर्णतः विकसित; प्राप्त, लब्ध; सही; से युक्त; आमकार; जो हुआ हो; घटित। पु० शिव; धन, संपत्ति; सुखादु भोजन। -**क्रम**-पु० एक समाधि। -**क्षीरा**-वि० **खी**० अच्छा दूध देनेवाली।
संपराय-पु० [सं०] सृष्टि; अनादिकालगत अस्तित्व; संपर्क; युद्ध; मकट; मविष्य।
संपरायक, **संपरायिक**-पु० [सं०] युद्ध, मित्रत, मुनेनेह।
संपरित-वि० [सं०] मरणशील; मृत।
संपर्क-पु० [सं०] मिश्रण; सयोग, मिलना; स्पर्श, मैथुन; जोष, योग; संगति।

संयम-पु० [सं०] विद्युत्करण ।

संयम-की० [सं०] विजली; साथ पान करना ।

संयम-वि० [सं०] अच्छी तरह तर्क करनेवाला, तर्क; पूर्ण; संयत; अथवा । परिचायक होना; अच्छी तरह पकना; आरम्भ वृद्ध ।

संयम-पु० [सं०] पकना; उबालकर मुलायम करना;

पीसा (सिककर) मुलायम करना ।

संयम-पु० [सं०] विद्युत्की बड़ी हुई बुझासे किसी रेखा-का मिलना; तबुवा ।

संयम-पु० [सं०] क्रम-बद्ध पाठ ।

संयम-वि० [सं०] जो साथ पड़ा जाय ।

संयम-पु० [सं०] एक साथ गिरना या मिलना; मिश्रत, उत्कर; पतन; पक्षियोंकी उड़ानका एक दंग; विविधोका उतरना; (राणका) चलना; गमन; हटाना जाना; (संग-छट; संगम; मिलनस्थान; वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरीसे मिले या काटकर आगे बढ़ जाय; बुझका एक दंग; घटित होना; गड़बड़ा पुनः । -पाठ-पु० क्रमबद्धी कुशलता ।

संयम-पु० [सं०] एक पौराणिक पक्षी जो गड़बड़ा अथवा पुनः और जटायुका बड़ा भाई था; एक राक्षसका नाम; एक बंदरका नाम ।

संयम-पु० [सं०] एक पौराणिक पक्षी, सपाति ।

संयम-वि० [सं०] एक संग बूढ़ने, झपटनेवाला; एक साथ उड़नेवाला; उड़नेमें होइ करनेवाला । पु० एक पौराणिक पक्षी, सपाति; एक राक्षस ।

संयम-पु० [सं०] कार्यसाधन; प्राप्ति ।

संयम-वि० [सं०] पूरा करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला; उत्पन्न करनेवाला; प्राप्त करनेवाला । पु० वह व्यक्ति जो दूसरेकी रचना छुट कर प्रकाशनके योग्य बनाता वा सामयिक, दैनिक आदि पत्रका संपादन-संचालन करता है ।

संयम-वि० [सं०] संपादक-संबंधी; संपादकका । पु० संपादकका लिखा लेख या टिप्पणी ।

संयम-पु० [सं०] पूरा करना; प्रस्तुत करना; क्रम आदि ठीक करना; प्रभावि शुरु कर प्रकाशनके योग्य बनाना; सामयिक वा दैनिक पत्र विषय आदिकी दृष्टिमें ठीक करना और उसका संचालन करना । -कला-की० पत्र, पुस्तकें आदि संपादित करनेकी विधि कला ।

संयम-सं० कि० पूरा करना, ठीक करना-विधि अथ संपति संपादक-रपु० ।

संयम-वि० [सं०] पूरा करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला; उत्पन्न करनेवाला ।

संयम-वि० [सं०] निष्पन्न, पूरा किया हुआ; प्रस्तुत, तैयार किया हुआ; ठीक कर प्रकाशनके योग्य बनाया हुआ (संपादि) ।

संयम-वि० [सं०] उपयुक्त; पूरा करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला ।

संयम-वि० [सं०] राशीकृत, मिश्रित ।

संयम-वि० [सं०] कुचला हुआ; चूर किया हुआ, पीसा हुआ; नष्ट किया हुआ ।

संयम-पु० [सं०] दवाना; निवेशना; कट देना; छुट

करना; जाने बढ़ना, चलना ।

संयम-पु० [सं०] दवाना; निवेशना; प्रेषण; दंड, छुट करना; कट देना; एक उच्चारण-रीथ ।

संयम-की० [सं०] कट, दंड ।

संयम-वि० [सं०] दवाना हुआ; निवेश हुआ; प्रस्त ।

संयम-की० [सं०] साथ पीना, गोठमें पान करना ।

संयम-पु० [सं०] कटोरे जैसी कोई वस्तु; धोना; नजलि; रसादि फूंकनेका मिश्रीका बना हुआ पात्र; रत्न-मंजूषा; गोलाई; कुरवक पुष्प; एक तरहका रतिबंध; बाकी, उपार; पुष्पकोष; पुष्प । ० वि० बंद ।

संयम-पु० [सं०] आवरण; गोल मंजूषा; एक रतिबंध ।

संयम-वि० [सं०] आभूषणपूर्ण मंजूषा ।

संयम-की० [सं०] प्याली, छोटी कटोरी या तश्तरी (जिसमें चंदन, अक्षत आदि रखते हैं) ।

संयम-पु० [सं०] बहुत अधिक सम्मान करना ।

संयम-वि० [सं०] बहुत आदरणीय ।

संयम-पु० [सं०] पूर्णतः शुद्ध होनेकी क्रिया, पूर्ण शुद्धि ।

संयम-वि० [सं०] अच्छी तरह (पेट) भर लेनेवाला ।

संयम-पु० [सं०] भ्रम भर लेना; अच्छी तरह पेट भर लेना ।

संयम-वि० [सं०] पूरे तौरसे भरा हुआ, युक्त, भरा-पूरा। सारा; अव्यक्त, अतिशय; पूरा किया हुआ, मंगल । पु० रामकी एक जाति जिसमें सातों स्वर लगते हैं; एक, संजन जिससे शकुनका काम लेते हैं; आकाश तन्त्र, ईश्वर ।

-काम-वि० जिससे भरा हुआ; जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो । -कालीन-वि० पूरे या उचित समयपर होनेवाला । -पुच्छ-वि० पूछ फैलानेवाला (मीर) ।

-मूर्च्छा-की० युद्धका एक दंग । -लक्षण-वि० पूर्ण सत्यक । -विद्य-वि० विद्यासे पूर्ण । -रुद्ध-वि० जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो ।

संयम-वि० [सं०] संपूर्णतः, संपूर्णतया-अ० [सं०] पूर्ण रूपसे, अच्छी तरह ।

संयम-की० [सं०] एक एकादशी ।

संयम-वि० [सं०] मिश्रित, मिश्र हुआ, संयुक्त; संयत, संपर्कमें आया हुआ; पूर्ण, भरा हुआ; खचित ।

संयम-वि० [सं०] जिससे प्रयत्न किये गये हों, पूछ-ताछ की गयी हो ।

संयम-पु० सौंप पकड़ने, पालने या सौंपका तमाशा दिखानेवाला ।

संयम-पु० [सं०] पीसनेकी क्रिया ।

संयम-की० दे० 'संपाति'-'संपे देखि न हविष्ये विपति देखि ना रोह'-कवीर; संघा, विजली ।

संयम-पु० सौंपका बन्हा ।

संयम-पु० सौंप पकड़नेवाला ।

संयम-वि० [सं०] पोषण किया हुआ, पालित ।

संयम-वि० [सं०] पालन-पोषणके योग्य ।

संयम-वि० [सं०] मिश्रित, मिश्र हुआ ।

संयम-वि० [सं०] वर्णित; अभिविष्ट ।

संयम-वि० [सं०] धिक्पूर्वक स्नान करनेवाला; । पु० एक प्रकारका सम्नामी ।

संप्रज्ञाकरण-पु० [सं०] बो-बहा के जाना, बचप्रकृत्य; मछी
भँति घोना, स्नान करना; पूरी शुद्धि; पूर्ण शुद्धि ।

संप्रज्ञाकली-कौ० [सं०] जीविकाविशेष (बो०) ।

संप्रभुमित-वि० [सं०] विशेष रूपसे शुभ्य । -मानस-
वि० व्याकुल, मयबाधा हुआ ।

संप्रभाजित-पु० [सं०] जोरकी चिन्ताहट (बो०) ।

संप्रज्ञात-वि० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ । -बोयी-
(गिद्द)-पु० वह योगी जिसका विषय-बोध बना हुआ
हो । -समाधि-कौ० समाधिका एक भेद जिसमें विषयों-
का बोध बना रहता है ।

संप्रवर्णित-वि० [सं०] लूच जलता हुआ ।

संप्रणाद-पु० [सं०] ध्वनि, आवाज ।

संप्रणादित-वि० [सं०] ध्वनित किया हुआ, गुंजावा हुआ ।

संप्रणेता(ह)-पु० [सं०] नायक, नेता; शासक;
विचारपति ।

संप्रसूदन-वि० [सं०] भेदन, छेदन करनेवाला, विदारक ।

संप्रस्तापय-पु० [सं०] तप्त करना, जलाना; कष्ट देना,
उत्पीड़न; एक नरक ।

संप्रति-अ० [सं०] मुकाबलेमें, सामने; ठीक डगसे; ठीक
समयपर; ठीक-ठीक; अब इस काल, वर्तमान समयमें । पु०
एक ग्रेन अर्द्ध (५१ बी अस्तपिणिके चौबीसवें) । -विद्-
वि० नेत्रक वर्तमान समयनेवाला, जो आगेकी बात, अविष्य
न समझ सके ।

संप्रतिनिवित-वि० [सं०] त्रिमका खूब स्वागत, आचमन
द्वारे हो ।

संप्रतिपत्ति-कौ० [सं०] गति, पहुँच; प्राप्ति, लाभ; सही
प्राप्त, ठीक समय; प्रत्युत्पन्नमतित्व; स्वीकृति; मतेष्य;
ऽपत्ति; विशेष प्रकारका उत्तर-स्वीकार या अस्वीकार
(मुकदमेमें); आक्रमण; सहयोग; पूरा करना ।

संप्रतिपन्न-वि० [सं०] पहुँचा हुआ; स्वीकार किया हुआ;
मयन्न, पूरा किया हुआ ।

संप्रतिपादन-पु० [सं०] प्राप्त कराना; देना; " पर नियुक्त
करना ।

संप्रतिप्राण-पु० [सं०] प्राण बाधु ।

संप्रतिरोधक-पु० [सं०] पूरी रोक; केंद्र; बाधा ।

संप्रसीत-वि० [सं०] लौटा हुआ; जिसे पूरा विश्वास हो
गया हो; कृतसंकल्प; ज्ञात; प्रसिद्ध; विनम्र ।

संप्रसीति-कौ० [सं०] पूर्ण विश्वास; पूर्ण ज्ञान; विनय,
विनम्रता ।

संप्रसि-कौ० [सं०] पूर्ण रूपसे दे देना; हस्तांतरित
करना ।

संप्रत्यय-पु० [सं०] स्वीकृति, अंगीकरण; वद विश्वास;
वधाधर्मेय; आधना; धारणा ।

संप्रदातय-पु० [सं०] हथकड़ी नरकोमेंसे एक ।

संप्रदान-पु० [सं०] देना, प्रदान करना, हस्तांतरित करना;
शिक्षा, शिक्षण; देना; ब्याह देना; दान; भेंट; चंदा;
पुण्य कारक (ब्या०) ।

संप्रदानीय-पु० [सं०] भेंट, नजर; चंदा ।

संप्रदाय-पु० [सं०] देनेवाला, नजर करनेवाला; गुरु-
परंपरासे प्राप्त मंत्र, सिखात आदि; परंपरागत विश्वास

वा प्रथा; विशेष धार्मिक मत; किसी मतके अनुयायियोंका
समुह । -प्राप्त-वि० परंपराप्राप्त । -बाध-पु० केवल

अपने संप्रदायकी ही विशेष महत्त्व देना और अन्य संप्रदाय-
वालोंसे दूरे करना । -बाधू (विद्)-वह कष्टर विचारों-
वाला व्यक्ति जो केवल अपने संप्रदायकी मेढता प्रदान करे
तथा अन्य संप्रदायवालोंको दूरे समझे । -विगम-वि०
परंपराका अभाव । -विद्-वि० परंपरागत विचारों या
प्रथाओंका जानकार ।

संप्रदायी (विद्)-वि० [सं०] पूरा करनेवाला, संपादन
करनेवाला; देनेवाला । पु० किसी विशेष धार्मिक मतका
माननेवाला, किसी संप्रदायका अनुयायी ।

संप्रदिष्ट-वि० [सं०] स्पष्ट रूपसे निर्देश किया हुआ;
विशेष रूपमें ज्ञात, अभिहित ।

संप्रधान-पु० [सं०] विचार; निश्चय ।

संप्रधारण-पु० [सं०] विचार; निर्णय; उचित-अनुचित
होनेका निश्चय करना ।

संप्रपद्य-पु० [सं०] प्रमण, पर्वटन ।

संप्रपद्य-वि० [सं०] पहुँचा हुआ; "से युक्त; प्रसिद्ध ।

संप्रभय-वि० [सं०] शिक-मित्र, जो तितर-बितर हो गया
हो (मैत्र्य०) ।

संप्रसिद्ध-वि० [सं०] फटा हुआ, विदीर्ण; मस्त, दान बहाता
हुआ (हाथी) ।

संप्रमत्त-वि० [सं०] उत्तेजित, मस्त (हाथी); बहुत
कायरबाह ।

संप्रमापण-पु० [सं०] वध ।

संप्रमार्ग-पु० [सं०] मार्जन ।

संप्रमुक्षित-वि० [सं०] शीर्षस्थानीय, प्रधान ।

संप्रमोद-पु० [सं०] अतिशय आनंद ।

संप्रमोच-पु० [सं०] हानि; नाश ।

संप्रमोह-पु० [सं०] विमृदता, अमाहोद ।

संप्रयाण-पु० [सं०] प्रत्यान, गमन, कूच ।

संप्रयुक्त-वि० [सं०] जोता हुआ; संबद्ध; युक्त; संपर्कमें
आया हुआ; मैथुनरत; मिखा हुआ, मुकाबला करता
हुआ; सल्ला; दत्तचित्त; आशङ्क; निर्भर; प्रेरित; प्रयोगमें
लाया हुआ; आदी ।

संप्रयुक्त-वि० [सं०] सहयोग करनेवाला ।

संप्रयुद्ध-वि० [सं०] युद्धरत ।

संप्रयोग-पु० [सं०] जोड़ना, नाथना; संबन्ध, योग, मेल;
संपर्क; समागम; मैथुन, रति; चंद्रमा और राशिका योग;
क्रमबद्ध व्यवस्था; आपसका संबन्ध; हस्तेमाल, प्रयोग;
जादू ।

संप्रयोगी (गिद्द)-वि० [सं०] जोड़ने, मिलानेवाला;
कामी । पु० जादूगर; जोड़नेवाला; लंपट ।

संप्रयोजन-पु० [सं०] जोड़ना, मिलाना, एकत्र करना ।

संप्रयोक्षित-वि० [सं०] जोड़ा हुआ, संबद्ध किया हुआ;
प्रयोगमें लाया हुआ; प्रस्तुत किया हुआ; उपयुक्त ।

संप्रवर्द्धन-पु० [सं०] वार्तालाप करना, बातचीत; कथो-
पकथन ।

संप्रवर्तक-पु० [सं०] चालू, जारी करनेवाला; आगे
बढ़ानेवाला; निर्माण करनेवाला ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] वास्तु करना, जादी करना; सीमातमै इतस्ततः गमन करना ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] ठीक, व्यवस्थित करनेवाला ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] कनक भरा; अमिच्छक कनक ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] प्ररिक्त, आगे बढ़ा हुआ; वर्तमान, उपस्थित; प्रस्तुत, जो विस्तृत पास हो; आरम्भ; गत, व्यतीत; संलग्न ।

संज्ञकसंज्ञा-की० [सं०] प्रकट होना, घटित होना; उपस्थिति, विद्यमानता; संलग्नता, आसक्ति ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] सुत; पुत्र ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] जौन, पूछताछ ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] विनम्रता; शिष्टता ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] शिष्ट; नम्र, विनयी ।

संज्ञकसंज्ञा-की० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] पूर्ण शांति (निद्रावस्थाकी मानसिक शांति); अनुग्रह; धीरता, संमीरता; विश्वास; आस्था ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] शांत करनेवाला ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] आभूषण, श्रृंगारका साधन; पूरा करना, संयोजन करना ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] विस्तार करना; वृ, वृ, र, लका इ, उ, क, न्ये परिवर्तन (व्या०) ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] अच्छी तरह पकाया हुआ ।

संज्ञकसंज्ञा-की० [सं०] सफलता; सौभाग्य ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] आगे बढ़ना, कूच ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] कामोद्योजक । पु० प्रोत्साहन (दे०) ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] हनन; मारकाट, विघ्नता; युद्ध; गमन, गति ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] जोरकी हँसी; किलीपर हँसना, चिन्तना ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] फेंका, फेला हुआ ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] अच्छी तरह प्राप्त; जिसने प्राप्त किया है, पहुँचा हुआ; प्रस्तुत (काल); उत्पन्न; घटित । -बीज -वि० शक्ति, युवा । -विद्य -वि० जिसने पूरी विद्या प्राप्त कर ली है ।

संज्ञकसंज्ञा-की० [सं०] पहुँच; उदय; सम्यक् प्राप्ति, लाभ ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] गुप्त, प्रमत्त किया हुआ ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] पूर्ण रूपसे गुप्त, प्रसन्न ।

संज्ञकसंज्ञा-की० [सं०] पूर्ण गुप्त, प्रसन्नता; प्रेम; सद्भावना; मैत्री ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दर्शक ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] भली भौति देखना; निरीक्षण, जाँच करना ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] भोजना; कामसे छुटाना, अलग करना ।

संज्ञकसंज्ञा-की० [सं०] एक घृतकर्म (जो श्रुत्युक्ते बारहवें दिन होता है) ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] आह्वान, आमंत्रण; आदेश (कालिककी दिवा जानेवाला); भोजना; भोजोत्सगी ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] संबोधित; कथित, बोधित ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० सं० अभिषेक, सिन्धन; मंदिरादिकी योजना ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] धावन, बाढ़; बनी राशि; पुंजीयवन; जोरगुल, बौहछा (युद्ध आरिका); जलमें डूबा रहना; नष्ट होना, अंत ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] ...में स्नात; जलध्रावित ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] फलपूर्ण; बीजपूर्ण । पु० दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] भेज ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] पूर्णतः विकसित ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] कुछ व्यक्तियोंका आपसमें भिन्न जाना; कदाशुनी; विमर्शके तरह भेदोंमेंसे एक (दो भाषोंमें कदाशुनी-ना०); आरमटीके चार भेदोंमेंसे एक (ना०) ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] योग; मेल; साथ; रिश्ता, नाता; विवाह; मैत्री; 'अभ्युक्तता, औचित्य; अभ्युदय, उन्नति; रिश्तेदार; मित्र; द्रव्य; एक प्रकारकी विपत्ति या उपद्रव; सिद्धान्तका हवाला; छटा कारक (व्या०) वि० समर्थ; उपयुक्त । -वर्जित-अ० एक रचनादोष-द्वयका अन्वय ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] संबंधी, विषयक; उपयुक्त, योग्य । पु० रक्त या विवाहका संबंध; मैत्री; मित्र; रिश्तेदार; विवाहके द्वारा होनेवाली संधि ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] संबंध व्यापित करनेवाला ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] अतिशयोक्ति अलंकारका भेदविशेष जहाँ अन्वयभेदे संबंध दिखलाकर अतिशयोक्ति की जाय ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] ... में संबंध; संबंध रखनेवाला; प्रसंग, प्रकरण, विषयका; जिसका विवाह आदिके कारण संबंध हो; सहयोगसंपन्न । पु० वह जिनके साथ विवाहके कारण संबंध हो; समर्थ; रिश्तेदार, नातेदार । - (वि)-

संज्ञकसंज्ञा-वि० रिश्तेदारोंमें विभक्त । -शब्द-पु० संबंध प्रकट करनेवाला शब्द ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा'; जल ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] साथ जुड़ा या बंधा हुआ; मलग्न संबंधी, विषयक; अर्थ-संबंध रखनेवाला; युक्त, विशिष्ट, संवन्ध; बंद । -वर्च-वि० जिसमें गर्वका भाव हो, गर्व-युक्त ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] मेघ, पुरु; एक तरहका हिरन; एक दैत्य जिसे प्रचन्नने मारा था; एक पर्वत; निर्व्यग्रण, रोक; जल; एक धार्मिक अनुष्ठान; दे० 'शब्द' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-पु० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संज्ञकसंज्ञा-वि० [सं०] दे० 'संज्ञकसंज्ञा' ।

संघी-स्त्री० क्ली० ।

संघुक्-पु० बोधा ।

संघुज्-वि० [सं०] पूर्णतः जाग्रतः शान्तिः, चतुर, बुद्धिमान्, पूर्णतः ज्ञात । पु० बुद्धिः जिन ।

संघुद्धि-स्त्री० [सं०] पूर्ण-बोध या ज्ञानः; पूरी चेतना; दूरान्तरा; अपनी बात सुनाना; संघोधन कारण या उसकी विमर्शिता (व्या०); उपाधि ।

संघुल-पु० दे० 'संघुल' ।

संघोध-पु० [सं०] पूर्ण ज्ञान, संघुक् बोध; समझाना, बतलाना; दादस; भेजना; फैलना; नाश, नरवादी ।

संघोधन-पु० [सं०] ज्ञाना; बतलाना, समझाना; संघो-धित करना; संघोधन करनेमें प्रयुक्त की जानेवाली उपाधि; वह शब्द जिससे किसीके पुकारने या उससे कुछ कहनेकी बात सुनि हो; आठवों कारण (व्या०); जानना समझना; आकाश आसिन (ना०) ।

संघोधना-सं० कि० संघाना देना; समझाना ।

संघोधि-स्त्री० [सं०] पूर्ण ज्ञान (शौ०) ।

संघोधित-वि० [सं०] चित्तया हुआ; जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो; बोध कराया हुआ ।

संघोध्य-वि० [म०] जिसे बतलाया, समझाया जाय; जिससे संघोधित किया जाय ।

संघोसा-पु० [का०] दे० 'समोसा' ।

संभक्त-वि० [म०] विभक्त, भेदा हुआ; उपभोग करनेवाला; भाग लेनेवाला; भक्ति-भाव रखनेवाला, श्रद्धालु ।

संभक्ति-स्त्री० [म०] विभाग; हिस्सा देना; उपभोग करना; भक्ति करना; पूजा करना ।

संभक्ष-पु० [म०] साथ खाना; साथ-पदार्थ । वि० भोजी, खानेवाला (सामयमे) ।

संभन्-वि० [म०] छिन्न-भिन्न, टूटा-फूटा; पराभूत; अम-कल । पु० शिव ।

संभर-वि० [सं०] भरण, पोषण करनेवाला । पु० संभर शील और निकटवर्ती भूभाग ।

संभरण-पु० [म०] पालन, पोषण; साथ रखना, रचना; तैयारी; समूह ।

संभरणी-स्त्री० [म०] एक यक्षपति, सोम-पति ।

संभरना-अ० कि० दे० 'संमलना' ।

संभरवै, संभरेश्वर-पु० धृष्टीराज ।

संभल-पु० [सं०] घटक; कुट्टना; विवाहाधीन पुरुष; स्वान-विशेष जहाँ कलिक अवतार होनेवाला है ।

संभलना-अ० कि० अपनी विगडती हुई स्थिति ठीक कर लेना; बकना, धमना; काटने रहना; सावधान होना; धिक्का रहना; स्वस्थ होना; जोड़ आदिसे बचाव करना ।

संभला-पु० विगडकर झुथरी हुई फल ।

संभली-स्त्री० [सं०] दूती, कुट्टनी ।

संभ-पु० [सं०] अन्न, उत्पत्ति; अस्तित्व; होना, पटित होना; उत्पत्ति और पोषण; कारण, हेतु, मूल; मिलन, संयोग; भेदना; क्षमता, योग्यता; अंतः; संभावना; संकेत; अपाव; संगति; उपयुक्तता; समानता (एक तरहका प्रमाण); परिचय; नाश; एक जोर (शौ०) । वतमान अव-पिणीके तीसरे अर्ध । वि० जिसकी सत्ता हो; जो हो ।

-वाच-पु० वतमान अवसर्पिणीके तीसरे अर्ध ।

संभवतः(तस्)-अ० [सं०] संभव है, हो सकता है ।

संभवन-पु० [म०] उत्पन्न होनेकी क्रिया; भूत होना; पटित होना ।

संभवना-अ० कि० पैदा करना, उत्पन्न करना । अ० कि० पैदा होना; हो सकना, संभव होना ।

संभवनीय-वि० [सं०] मुमकिन, हो सकनेवाला ।

संभविष्णु-पु० [सं०] जनक, उत्पादक, स्रष्टा ।

संभवी(विन्)-वि० [सं०] हो सकनेवाला, मुमकिन ।

संभव्य-पु० [सं०] कथित, कैय । वि० हो सकनेवाला, उत्पादक ।

संभार-पु० [म०] इकट्ठा, एकत्र करना; तैयारी; साज-सामान, उपकरण; संपत्ति; पूर्णता; समूह; परिमाण; अवि-श्रयता, आश्रय; पालन-पोषण । -श्रील-वि० जिसमें आवश्यक वस्तुएँ रखनेका गुण हो ।

संभार-पु० [म०] रोक-थाम; देख-भाल -'सूदास प्रभु अपने जनकी काहे न करत संभार'-सूर; पालन-पोषण; होश; तैयारी -'भलो विचार कियो नरनायक, करतु यह संभार'-रघुराज ।

संभारना-अ० [म०] देख-भाल; स्मरण करना -'यह भूति बोधी नारि कंकरी, अपनी बचन संभारी'-सूर ।

संभाराधिप-पु० [सं०] राजकीय पदाधीन, तोषाखानेका अफसर ।

संभारी(विन्)-वि० [सं०] से पूर्ण, भरा हुआ ।

संभार्य-वि० [सं०] विभिन्न जागोंमें निमित्त या संपटित किया जानेवाला; उपयोगके योग्य बनाया जानेवाला; पालनके योग्य, आश्रित ।

संभाल-स्त्री० देख-भाल; व्यवस्था; प्रबंध; चेत, होश; पोषणादिका मार ।

संभालना-अ० कि० रोक-थाम करना; देखना, सहाय देना; रक्षा करना; पालन करना; प्रवर्ण करना; काबूमें रखना; सहायता देना; प्रबंध करना; सहेजना; भार उठाना; अपनेको जम्त करना, संयत करना ।

संभाला-पु० भरनेके पहलेकी चेतनावस्था ।

संभालू-पु० श्वेत सिंधुवार ।

संभावन-वि० [सं०] किसीके प्रति आदर-भाव रखने-वाला । पु० एकत्र करना; मिलन; पूजा-सत्कार, आदर-भाव; कल्पना, अनुमान; उपयुक्तता; योग्यता; प्रसिद्धि, ख्याति; विचारणा; मुमकिन होना; संदेह; प्रेम; एक कान्या-लंकार जहाँ किसी एक बातके होनेपर दूसरेके होनेकी संभावना वर्णित की जाय ।

संभावना-स्त्री० [सं०] दे० 'सभावन' ।

संभावनीय-वि० [सं०] पूज्य, सामान्य; कल्पनाके योग्य; जिसकी संभावना हो, मुमकिन; भाग लेने योग्य ।

संभावित-वि० [सं०] सम्मानित, आश्रित; स्वामिनी; प्रस्तुत किया हुआ; सुश्रुत; विचारित; कथित; उपयुक्त; मुमकिन; उत्पादित, प्राप्त; तुष्ट । पु० कल्पना ।

संभावितव्य-वि० [सं०] दे० 'सभावनीय' ।

संभाव्य-वि० [सं०] आदरणीय, सम्मान्य; विचारणीय; मुमकिन; उपयुक्त; योग्य । पु० मनुका एक पुत्र; उप-

युक्ता; योग्यता ।

संभाव-पु० [स०] बातचीत, करार, वार्ता; प्रहरीका संकेत-शब्द; अभिवादन; यौन-संबंध ।

संभाषण-पु० [स०] बातचीत; प्रहरीका संकेतशब्द; मैथुन, रति । -**विपुण-वि०** वार्तालाप करनेमें कुशल ।

संभाषणीय-वि० [स०] बातचीत करने योग्य ।

संभाषा-स्त्री० [स०] दे० 'संभाषण' ।

संभाषित-वि० [स०] मली-भीति कहा हुआ; जिससे बात की जा चुकी हो । पु० वार्तालाप ।

संभाषी(विन्)-वि० [स०] बात कबनेवाला; वार्तालाप करनेवाला ।

संभाष्य-वि० [स०] बात करने योग्य ।

संभिज-वि० [स०] शिज-भिज; बिल्कुल टूटा हुआ; धुंभ; परित्यक्त; सिकुचा हुआ; युक्त; मिला हुआ; सपर्यमें आया हुआ; ठोस, कसा हुआ, गंठा हुआ; विकसित । पु० शिब ।

-**प्रलाप-पु०** श्वर-उपरकी निरर्थक बात (जो बौद्धोंके अनुसार एक पाप है) । -**प्रक्षापिक-वि०** निरर्थक बात बोलनेवाला । -**बुद्धि-वि०** जिसकी बुद्धिका हास हो गया है । -**मर्षाव-वि०** जिसने मर्षादा मंग कर दी है ।

-**बुद्ध-वि०** जिसने सदाचारका परिखाग कर दिया है । -**सर्वांग-वि०** जिसने अपना सारा अंग सिकोड़ लिया है (जैसे-कछुवा) ।

संभीत-वि० [स०] बहुत उरा हुआ ।

संभु-वि० [स०] * से उत्पन्न; * से निर्मित । पु० जनक, पिता; एक वृत्त; * दे० 'संभु' ।

संभुक्त-वि० [स०] खाया हुआ, उपभोग किया हुआ; प्रयोगमें लाया हुआ; अतिक्रांत ।

संभुज-वि० [स०] पूरे तौरसे झुका हुआ ।

संभूत-वि० [स०] उत्पन्न; * से निर्मित, रचित, मे मिला हुआ, युक्त, संपन्न; उपयुक्त; सश्रम सामान; * मे परिणत । -**विजय-पु०** धुतकेवली नामके बौद्ध ।

संभूति-स्त्री० [स०] जन्म, उत्पत्ति; वाद, वृद्धि; विभूति, शक्ति; उपयुक्तता; सयोग; दक्षकी एक कन्या । -**विजय-पु०** दे० 'संभूत-विजय' ।

संभूय-अ० [०] साथ होकर या आपसमें मिलकर; साथमें । -**कारी(विन्)-वि०** सद्योगी, साथमें कारवार करनेवाला । -**क्रम-पु०** थोक मालकी खरीद-विक्री (की०) । -**गमन-वाच-पु०** सबका मिलकर आक्रमण करना; साथ मिलकर जाना । -**समुत्थान-पु०** साथेका कारवार; कारवारमें साझेदारी ।

संभूयासन-पु० [स०] शत्रुमें मेळकर और उसे उदासीन ममझकर बैठ जाना ।

संभूत-वि० [स०] एकत्र किया हुआ, केंद्रित; तैयार किया हुआ; युक्त, संहित; रखा, जमा किया हुआ; प्राप्त; पूर्ण, सारा; नीत, बाधित; प्राकृत; उत्पादित; भरा हुआ; सम्मानित, पूजित; उच्च (व्यक्ति) । पु० बीखनेकी भावना ।

-**बल-वि०** जिसने सेना एकत्र की है । -**भुक्त-वि०** विदार, दुर्दिमाद । -**संभाष-वि०** जिसने किसी कामके छिपे तूरी तैयारी कर ली है । -**स्वैव-वि०** प्रेयसे युक्त ।

संभूतग-वि० [स०] जिसके शरीरका अच्छा पोषण हुआ

हो; जिसका शरीर किसी चीजसे आशुत हो ।

संभूतार्थ-वि० [स०] जिसने काफी धन एकत्र कर लिया है ।

संभूति-स्त्री० [स०] संग्रह; राशि, समूह; साज-सामान, तैयारी; आधिक्य; पूर्णता; पालन-पोषण; रक्षा ।

संभूय-वि० [स०] अच्छी तरह भूना हुआ; सुखाया हुआ; तुलुका कराया ।

संभेद-पु० [स०] टूटना; भिदना; ढीला होना; अलग होकर गिरना, विभोग, पार्थक्य; फूट पैदा करना (समु-पक्षमें); प्रकार, किस्म; एकरूपता; योग, मिलन; संसर्ग; नदियोंका मिलना, संगम; नदीका समुद्र आदिमें गिरना, विकसित होना, छिड़ना ।

संभेद-पु० [स०] छेदना; तोड़ना; विदारण; जुटाना, मिश्रण ।

संभेद-वि० [स०] भेदन करने योग्य; छेदने योग्य; संपर्क-में लाने, मिश्राने योग्य ।

संभोका(क्व)-पु० [स०] खानेवाला, उपभोग करने-वाला, भोगनेवाला ।

संभोग-पु० [स०] उपभोग; किसी चीजमें आनंद लेना; रति, मैथुन; श्वगार रसका एक भेद; संयोग-श्वगार; उपयोग, कर्मा, लंपट; गन्धकुम्भका एक विशेष भाग ।

-**काय-पु०** तुड़के गीन शरीरमेंसे एक । -**क्षम-वि०** उपभोगके उपयुक्त । -**वेद-पु०** वेदवा या रत्नेर्ला-का वर ।

संभोगी(विन्)-वि० [स०] कायुक, उपभोग करनेवाला; व्यवहारमें लानेवाला । पु० लपट, कामी पुरुष ।

संभोग्य-वि० [स०] भोग करने योग्य; काममें लाने योग्य, व्यवहार्य ।

संभोज-पु० [स०] भोजन ।

संभोजक-पु० [स०] खानेवाला, स्वाद देनेवाला; खाना परसनेवाला ।

संभोजन-पु० [स०] बहुनोंके साथ खाना; भोज, दावन; भोजन ।

संभोजनी-स्त्री० [स०] साथ खाना ।

संभोजनीय-वि० [स०] खिलाने योग्य; खाने योग्य ।

संभोज्य-वि० [स०] खाने योग्य; खिलाने योग्य; जिसके साथ खाया जा सके ।

संभ्रम-पु० [स०] चकर खाना; उतावली, जलराजी, हलचल; चक्काहट, व्याकुलता; उत्साह, उन्मग; श्रद्धा, सम्मान; भूल, गलती; शोभा, सीदर्थ; शिषके गणविशेष; ज्ञान; होइहा; शोर । वि० धुंभ; घूमता, नाचता हुआ (जैसे नेत्र) । * अ० उतावलीमें । -**उत्कृष्ट-वि०** व्याकुलता, उतावलीके कारण धुंभ या उत्तेजित । -**भुव-वि०** चक्काया हुआ, व्याकुल ।

संभ्रात-वि० [स०] चकर खाया हुआ; चक्काया हुआ; धुंभ, उत्तेजित; तेज, त्वरामय, स्फुटित; समहत ।

-**जय-वि०** जिसके आदमी चक्काये हुए हों । पु० आदरणीय व्यक्ति । -**मना(नस्)-वि०** जिसका मन चक्का गया हो ।

संभ्राति-स्त्री० [स०] चक्काहट उतावली; चक्काहट ।

संज्ञासूचिका-७०-७० कि० कोमित, सोमप्रमान होना ।

संज्ञासूचिका-७०-७० [सं०] रोकने, निर्वन्धन करनेवाला; शासक, नेता ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] बंधा हुआ, बद्ध; रोकता, दबाता हुआ; बंद ।

संज्ञा-७० [सं०] कंकाल, अस्थिपंजर ।

संज्ञा-वि० [सं०] रोकता हुआ, दमित; संयमी, जितेंद्रिय; बद्ध, कैद किया हुआ; बंद किया हुआ; व्यवस्थित किया हुआ; उषत; सीमित । पु० यति; शिव । -वेत्ता (वत्), -मत्ता (वत्)-वि० जिसका मन, चित्तवृत्ति नियंत्रित हो । -प्राण-वि० जिसका आस निर्वन्धनमें हो, प्राणा-याम करनेवाला । -मुक्त, -वाक् (व्)-वि० मितयासी, बहुत कम बोलनेवाला ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] ब्रह्मांजलि ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जिसकी आँखें मुंदी हों ।

संज्ञासूचिका (सम्बन्ध)-वि० [सं०] दे० 'संघतचेता' ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] मिताहारी ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] नपथक्याँ, निरोध, सवमान ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जितेंद्रिय ।

संज्ञा-वि० [सं०] मज्जक; अविच्छिन्न, अविरोध । की० करार, ठहराव; मिलाने, जोड़नेका माधन; नियत स्थान; लड़ाई, युद्ध; एक तरहकी ईंट ।

संज्ञा-वि० [सं०] उषत, सज्जक; सावधान, सतर्क ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] मौन ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] राजा ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] सर्वकी मात रक्षितोंमेंसे एक । वि० धनी ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जो भिय है उनको आपसमें मिलाने-वाला ।

संज्ञा-७० [सं०] रोक, निग्रह, निवन्धन; इंद्रियनिग्रह; बंधना बंद करना (निग्रह); ध्यान, धारणा और समाधि (योग); प्रयत्न, उद्योग; दमन; नाश; प्रलय; धार्मिक अनुष्ठान वा व्रत; तपस्या; अनुष्ठान, दूसरोंके प्रति सद्भाव, तपस्या आरम्भ करनेके पूर्व किया जानेवाला धार्मिक कृत्य; पुरी बस्तुओंसे परहेज ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] संयम, निग्रह करनेवाला ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] निग्रह, दमन; आत्मनिग्रह; बंधना, गड़बड़ना; खींचना; कैद करना; यमपुरी, संयमनी; चार मकानोंसे बनेवाला प्रांगण; आत्मनिग्रह करनेवाला व्यक्ति । वि० दे० 'संयमक' ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] दे० 'संयमिनी' ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] नियंत्रित, रोकता हुआ, दमन किया हुआ; बंधा हुआ; कारावद्ध; पकड़ा हुआ; रोक रखा हुआ; धार्मिक प्रवृत्तिवाला; पकड़ किया हुआ । पु० (स्वरका) निर्वन्धन ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] काशी यमपुरी ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] निग्रह, निरोध करनेवाला; आत्मनिग्रही, जितेंद्रिय; बंधा हुआ । पु० शासक; वति; रुचि ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] निर्वन्धन, दमन करने योग्य ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] साथ गया हुआ; पहुँचा हुआ; ज्ञाता हुआ ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] नमुष्णका एक पुत्र ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] साथ-साथ यात्रा करना; समुद्रयात्रा ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] सींचा; साथ जाना; यात्रा; प्रस्थान; गाड़ी, वाहन; शवबहन ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] संयम ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] दूध और चीसे योगसे आटेका बना हुआ एक तरहका पकवान, गोक्षिवा ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] संयुक्त; संवद्ध; संबंधी; गुणवात् । पु० संबंधी संयोग ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जुड़ा, मिला हुआ; संवद्ध; संबंधी; ...में विवाहित; रखा, जड़ा हुआ; संपन्न, अन्वित, सहित; किसी कामकी संयुक्त रूपसे करनेवाला (-संपादक) । कुटुंब, -परिवार-७० वह कुटुंब जिसमें माता-पिता, चाचा-बानी, भाई-भगीजे आदि मिश्रकर साथ-साथ रहते हों ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] एक छंद; एक कृता, आवर्तकी; जय-चंदकी लक्ष्मी संजोगिता ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] युद्ध; भिन्न; संयोग, मेल । -शोधक-७० मामूली संबंध । -सूचक (सूचक)-७० युद्धका ज्ञाता मोरवा ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] दे० 'संयुक्त' । पु० एक वृत्त ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] मिलन, मेल; वनिष्ठ संपर्क; मिश्रण; संबंध, वैदेशिकोंके चौबीस गुणोंमेंसे एक; मैथुन; प्रेमी-प्रेमिकाका मिलन; विवाहजन्य संबंध; संघटन; युक्त, अन्वित होना; वह संधि जो सामान्य उद्देश्यकी पूर्तिके लिए दो राजाओंमें होती है; मत्तैव्य; किसी कार्यमें सल्लभ होना; व्यवजन बणोंका मेल; दो आकाशीय पिण्डोंका योग (ज्योतिः); जोड़; योगफल; इष्टफल; शिव; शृंगार रसका एक भेद, संयोग (सा०) । -सूचक-७० अनित्य संबंधीका धारण्य (न्या०) । -संज्ञ-७० विवाह-संबंधी मंत्र । -विच्छेद-वि० जो साथ-साथ न खाये जा सकें, नाथ-साथ खानेसे रोग उत्पन्न करनेवाले (खाद्य-पदार्थ) ।

-शृंगार-शृंगार रसका वह भेद जिसमें प्रेमियोंके मिलन आदि-संबंधी बातोंका वर्णन होता है । -संधि-वि० आक्रमणके बाद सामान्य उद्देश्यसे की जानेवाली संधि ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] वह स्त्री जो अपने पति या प्रिय-तमके साथ हो, विधिविनी न हो ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] मिलनेवाला; जो संपर्क, संस्पर्शमें हो, जिसका पक्षिष्ठ संबंध हो; प्रियासे युक्त; विवाहित ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जोड़ने, मिलानेवाला; वदित करने-वाला; शब्दों या वाक्योंको जोड़नेवाला (सूचक) । पु० सजा, समिति आदिकी बैठकका आयोजन करनेवाला ।

संज्ञासूचिका-७० [सं०] जोड़ना, जोड़ने, मिलानेकी क्रिया; सांसारिक संबंधमें बंधनेवाला, सत्यतिका कारण; मैथुन ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] दे० 'संयोग' ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जोड़ा, मिलाया हुआ ।

संज्ञासूचिका-वि० [सं०] जोड़ने, मिलाने योग्य ।

संशोधन-पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई । -कटक-पु० एक बख ।
संशोभा-सं० कि० दे० 'संशोभा' ।
संश्रवण-वि० [सं०] आनन्ददायक । पु० मनका रंजन करना ।
संश्रम-पु० [सं०] प्रयत्न; उतावली, आतुरता; उमता; उत्तेजन; जोश; लकट इच्छा; क्रोध, गुस्सा; फोफेका शोध और जलन; धर्मद, दर्प; प्रगाढ़ता, घनता; आक्रमणकी प्रवृत्ति, युद्धवेग; आरंभ; एक भस्म । -ताञ्ज-वि० क्रोधसे लाल । -हृत्(हृ)-वि० जिसकी भाँसे क्रोधसे लाल हो गयी हो । -पक्ष-वि० जो गुस्सेकी वजहसे बहुत क्रोध हो गया हो । -रस-वि० क्रोधान्वित । -वेग-पु० क्रोधका जोर ।
संश्रमी(मिन्)-वि० [सं०] जलन और शोधयुक्त (फोफा); क्रुद्ध; धर्मवी ।
संश्रम-वि० [सं०] रेंवा हुआ; लाल; क्रोधाभिभूत; अनुरक्त; सुंदर, मनोहर ।
संश्रम-पु० [सं०] रक्षा, देख-भाल ।
संश्रमक-वि०, पु० [सं०] रक्षा करनेवाला; देख-भाल, निरीक्षण करनेवाला; पालक; आश्रयदाता ।
संश्रमकता-स्त्री० [सं०] संश्रम होनेका भाव, संश्रमका कार्य ।
संश्रमण-पु० [सं०] रक्षा करनेकी किया, हिफाजत; निरीक्षण; प्रतिबंध ।
संश्रमणीय-वि० [सं०] रक्षा करने योग्य; सुरक्षित रखने योग्य ।
संश्रित-वि० [सं०] सुरक्षित; अच्छी तरह बचाया हुआ; बचाकर रखा हुआ ।
संश्रितव्य-वि० [सं०] संश्रम करने योग्य ।
संश्रितो(सिन्)-वि० [सं०] जिसने रक्षन किया है ।
संश्रितो(सिन्)-वि० [सं०] देख-भाल, संश्रम करनेवाला ।
संश्रव्य-वि० [सं०] रक्षणयोग्य, देख-भाल करने योग्य ।
संश्रव्य-वि० [सं०] उत्तेजित; क्रुद्ध; वर्धित; सूजा हुआ; अभिभूत; परस्पर गुह्यत, जो परस्पर हाथ मिलाये हों ।
संश्रसी-स्त्री० मछली फँसानेकी कँटिया, बँसी ।
संश्राप-पु० [सं०] कालिमा; क्रोध; उमता; अनुरक्ति ।
संश्राप-वि० [सं०] पूरा किया हुआ, संपन्न; प्राप्त ।
संश्रापक-वि०, पु० [सं०] ध्यान, पूजा करनेवाला ।
संश्रापण-पु० [सं०] प्रसन्न करना; पूजा आदिके द्वारा तुष्ट करना; ध्यान; नारा; कँची आवाज ।
संश्रापित-वि० [सं०] पूजा आदिके द्वारा तुष्ट किया हुआ ।
संश्राप्य-वि० [सं०] तुष्ट करने योग्य; ध्यान द्वारा प्राप्त करने योग्य ।
संश्राप्य-पु० [सं०] कोलाहल, होहला, बहुलका मिलकर जोर मचाना ।
संश्राप्यो(सिन्)-वि० [सं०] जोर मचानेवाला, कोलाहल करनेवाला ।
संश्राप्य-पु० [सं०] प्यारसे नाटना (जैसे गाय बल्लेकी नाटती है) ।
संश्रव्य-वि० [सं०] जो ठुकरे-ठुकरे हो गया हो, छिन्न-भिन्न ।

संश्रव्य-पु० [सं०] पीका, दर्द ।
संश्रव्य-वि० [सं०] रोक हुआ, बाधित; भरा हुआ; रुका हुआ; वेष्टित, थिरा हुआ; रंध; अवरोध, जिसपर वेरा डाला गया हो; रुका हुआ, आवृत्त; अस्वीकृत । -वेष्ट-वि० जिसकी चेष्टा, गति रोक दी गयी हो । -प्रजनन-वि० जो संतान उत्पन्न करनेसे रोक दिया गया हो ।
संश्रित-वि० [सं०] चिन्ता हुआ; क्रुद्ध ।
संश्रव्य-वि० [सं०] अंकुरित भरा हुआ (पात्र); फूटकर निकला हुआ, प्रकट, व्यक्त; जिसकी जब रुद्ध हो गयी हो; प्रौढ, पृष्ट । -व्य-वि० जिसका घाव भर गया हो ।
संश्रव्य-पु० [सं०] दाढ़ मारकर रोना ।
संश्रव्य-पु० [सं०] बाधा, रोक; अवरोध, बेरा; बधन, मंजला आदि; बंध करना, कैद; प्रतिबंध; शक्ति, बुराई; दमन; नाश; क्षेपण, फेंकना ।
संश्रव्य-पु० [सं०] बाधा डालना, रोकना; दमन करना; कैद करना ।
संश्रव्य-वि० [सं०] संश्रम, रोक-छेक करने योग्य ।
संश्रव्य-वि० [सं०] रोकने-छेकने योग्य; कैद करने योग्य ।
संश्रव्य-पु० [सं०] पीना, पेश लगाना; धाव भरना ।
संश्रव्य-वि० [सं०] जमाया हुआ; रोया हुआ, लगाया हुआ ।
संश्रव्य-वि० [सं०] जमाने, लगाने, रोपने लायक ।
संश्रव्य-वि० [सं०] लिप्त, लेप किया हुआ ।
संश्रव्य-पु० [सं०] जमाना, बढकर ऊपर छाना; धावका भरना; फूटकर निकलना, व्यक्त होना ।
संश्रव्य-पु० [सं०] (पीना) लगाना, रोपना, जमाना बढकर ऊपर छाना; धावका भरना । वि० भरने, सूझने-बाँका ।
संश्रव्य-पु० [सं०] (ममय) व्यतीत होना ।
संश्रव्य-वि० [सं०] व्यतीत, गत (समय) ।
संश्रव्य-पु० [सं०] विशेष चिह्न द्वारा भेद स्पष्ट करना पहचानना ।
संश्रव्य-वि० [सं०] पहचाना हुआ; लक्षणमें जाना हुआ ।
संश्रव्य-वि० [सं०] पहचाने जाने योग्य; लक्षित होने योग्य । -क्रमव्य-पु० व्यंग्यका एक भेद जिसमें वाच्यार्थके व्यंग्यार्थके निकटनेका क्रम लक्षित हो जाता है (सा०) ।
संश्रव्य-वि० [सं०] सदा, बिलकुल लगा हुआ, विपरीत; हुआ; संबद्ध; यकी, नीन; जो दस्त-बदस्त लड़ रहे हों ।
संश्रव्य-पु० [सं०] गणशय; प्रलाप ।
संश्रव्य-वि० [सं०] बात करने योग्य, शिष्ट, मद्र ।
संश्रव्य-वि० [सं०] गृहीत; प्राप्त ।
संश्रव्य-पु० [सं०] बैठना; चिकियोंका नीचे उतरना; छेटना-भिदा; विच्छिन्न होना; प्रलय ।
संश्रव्य-पु० [सं०] चिकियोंका नीचे उतरना; छेटना; निर्दा; विच्छिन्न होना; प्रलय; चिपकना; साथ लगना ।
संश्राप-पु० [सं०] वाताप, गणशय; अपनै आप बकना या यशबाना (पूर्वतुरागकी एक दशा); आपसका या युवाताप; आभेगदहिन कथोपकथन (ना०) ।

संविधान-पु० [सं०] एक ही जैसे कपड़े पहनना ।
संबाह-पु० [सं०] के जानेवाला; आकाशके सात भागोंमेंसे तीसरेमें चलनेवाली-बायु; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक ।
संबाह-पु० [सं०] के जाना; नेटाल करना; दिखाना, प्रदर्शित करना ।
संबाह-वि० समान, समस्त-‘हैसी आटा लूँ मैं सोना सैंसैं सरीर’-कबीर ।
संबाह-पु० [सं०] बात करनेका तरीका ।
संबाहिका-की० [सं०] सिपाया ।
संबाह-पु० [सं०] बातालाप; बहस; वाद-विवाद; खिन्न, खराब; सहमति, स्वीकृति; ठहराव; दावा, मामला ।
-दाता(रु)-पु० समाचार भेजनेवाला ।
संबाह-वि०, पु० [सं०] राजी होनेवाला, सहमत होनेवाला; बात करनेवाला; बाह बजानेवाला ।
संबाह-पु० [सं०] राजी होना; बातालाप करना; एक-राय होना; बजाना ।
संबाहिका-की० [सं०] कीड़ा; नींदी ।
संबाहिक-वि० [सं०] बातालापमें प्रवृत्त किया हुआ, राजी किया हुआ ।
संबाहिका-की० [सं०] समानता, तुल्यता ।
संबाहिकी(विन्)-वि० [सं०] बात करनेवाला; बजानेवाला; सहमत होनेवाला; सहस, समान । पु० संगीतमें वह स्वर जिसका वादीमें मेक हो और जो राग-विशेषमें वादीसे कमपर अन्य स्वरोंसे अधिक महत्त्व रखता हो ।
संबाह-पु० [सं०] डकना, छिपाना, बंद करना; छुपारण-में कंठका संकुचन; बाधा; संरक्षण; व्यवस्थित करना; हास; रचना; समाचार ।
संबाह-पु० [सं०] रोकना, हटाना; मना करना; छिपाना ।
संबाहनीच-वि० [सं०] डकने, छिपाने योग्य; निवारण करने योग्य ।
संबाहना-सं० कि० सुसज्जित करना, सजाना; ठीक करना, तरतीबसे रखना; सँभालना ।
संबाहिक-वि० [सं०] हटाया हुआ; बारित; टका, छिपाया हुआ ।
संबाह-वि० [सं०] हटाने, दूर रखने योग्य; मना करने योग्य; डकने, छिपाने योग्य ।
संबाहवृत्त-वि० [सं०] सहमत होनेवाला, राजी होनेवाला ।
संबाह-पु० [सं०] साथ बसना; मैथुन; मिलना-जुलना; समाज; बस्ती; रहनेका स्थान; समा; सेल आदिका सार्वजनिक स्थान ।
संबाहिक-वि० [सं०] सुगंधसे वासा हुआ, सुगंधित बनाया हुआ; सुगन्धयुक्त (जैसे सॉस) ।
संबाहिकी(सिन्)-वि० [सं०] साथ रहने, बसनेवाला;...में बसने, रहनेवाला ।
संबाह-पु० [सं०] डोना, के जाना; बदन दवाना, मुझी लगाना; बदन दवानेवाला नौकर; पण्य-स्थान; धारक; मनोरंजन आदिके काम आनेवाला उपवन, ‘पार्क’; सात बायुओंमेंसे एक ।
संबाह-पु० [सं०] मुझी लगानेवाला, बदन दवानेवाला

नौकर; के जानेवाला । वि० गति प्रदान करनेवाला, चलानेवाला ।
संबाह-पु० [सं०] के जाना, डोना; बदन दवाना; (बादलोंका) गमन ।
संबाहिक-वि० [सं०] डोना हुआ; पहुँचाया हुआ; बकाया हुआ; जिसका बदन दवाया गया हो, भिते मुझी लगाने गयी हो ।
संबाहिकी(विन्)-वि० [सं०] के जानेवाला; चलानेवाला; बदन दवानेवाला ।
संबाह-वि० [सं०] छोड़े जाने योग्य; दिखाने, प्रकट करने योग्य; मालिश करने, मुझी लगाने योग्य ।
संबाहिक-वि० [सं०] छोटकर अलग किया हुआ, प्रवेश किया हुआ ।
संबाहिक-वि० [सं०] डरा हुआ, उद्बिग्न, व्याकुल, घुबल; इतर उतर चकर लगाना हुआ । -मानस-वि० हल-बुद्धि ।
संबाहिक-वि० [सं०] अच्छी जानकारी रखनेवाला, अभिज्ञ ।
संबाहिक-वि० [सं०] सर्वज्ञात, सर्वसम्पत् ।
संबाहिक-पु० [सं०] सम्पत् शान; स्वीकृति, सहमति ।
-भूत-वि० जो सबको घात हो गया हो ।
संबाहिक-वि० [सं०] नेतन, सजान । पु० करार, ठहराव ।
संबाहिक-की० [सं०] दे० ‘संबिद’ । -पञ्च-पु० संविधान, सुखनामा ।
संबाहिक-की० [सं०] बुद्धि, प्रज्ञा; चेतना; प्रतिपत्ति मतैक्य, सहमति; स्मृति ।
संबाहिक-वि० [सं०] नेतन, सजान । पु० करार, ठहराव ।
संबाहिक-की० [सं०] इकरार, ठहराव; भाग या गौत्रिक; पोषा । -मंजरी-की० गौत्रिका फूल ।
संबाहिक-वि० [सं०] जाननेवाला, ममज्ञादार; सामंजस्य-पूर्ण ।
संबाहिक-वि० [सं०] जाना, समझा हुआ; स्वीकार किया हुआ, माना हुआ; प्रसिद्ध; हँदकर निकाला हुआ; मतैक्य-से निश्चित किया हुआ; उपदेश या परामर्श दिया हुआ; करार किया हुआ ।
संबाहिक-की० [सं०] प्रज्ञा; चेतना; अनुभूति; बोध, ज्ञान, करार, ठहराव; स्वीकृति; प्रज्ञा; बुद्ध, लक्ष्मी; सुखकी लक्ष्मी; प्रवृत्ति संकेतचिह्न; नाम, संज्ञा; संकेत; तोरण; सहायुक्ति; बातालाप; भाग; समाधि; संकेतस्थल, मिथनस्थान; योजना; वृत्त, हाल; प्राप्ति; संपत्ति ।
-बाह-पु० यूरोपका एक सिक्का, वैष्णववाद ।
-व्यतिक्रम-पु० बाधे या समक्षोक्ता पालन न होना ।
संबाहिक-की० [सं०] योजना; प्रबंध, तैयारी; जीवन-वापनका ढंग ।
संबाहिकी(रु)-पु० [सं०] प्रबंधक; लडा ।
संबाहिक-पु० [सं०] व्यवस्था, प्रबंध, आवोजन; संघान्त; रचना; योजना; तरीका; कथा-वस्तुमें घटनाओंकी व्यवस्था या विधान करना; (दे० परिशिष्ट १ में) ।
संबाहिक-पु० [सं०] कार्य करनेकी विशेष विधि; जीवन-वापनकी विशेष विधि; कथा-वस्तुकी घटनाओंका विधान; नाटककी कथा-वस्तु; कोई विविध कार्य; असाधारण घटना ।

संविधि-खी० [सं०] व्यवस्था, तैयारी।
 संविधेय-वि० [सं०] जिसकी व्यवस्था की जाय; करणीय, प्रबंध-योग्य।
 संविधक-वि० [सं०] बौद्ध, पृथक् किया हुआ; दिया हुआ; सुबोध।
 संविधका (कृ०)-वि० [सं०] दूसरेके साथ हिस्सा बँटाने-वाला।
 संविधजन-पु० [सं०] बौद्ध; हिस्सा लेना।
 संविधाय-पु० [सं०] बौद्ध, बँटवारा; हिस्सा।
 संविभागी (गि०)-पु० [सं०] साक्षीदार; भाग लेनेवाला।
 संविधान्य-वि० [सं०] समझे जाने योग्य।
 संविमर्द्-पु० [सं०] भीषण युद्ध; वह सपर्यं जिसमें बहुत रक्तपात हो।
 संविधा-खी० [सं०] अतिविधा, अतीत।
 संविह-वि० [सं०] पहुँचा, प्रवेश किया हुआ; लेटा हुआ, सोया हुआ; बैठा हुआ; बसा-छाड़ित।
 संविहित-वि० [सं०] जिसकी व्यवस्था या देख-भाल की गयी हो।
 संवीक्षण-पु० [सं०] चारों तरफ देखना; तन्नाश करना; गौरमें देखना।
 संवीत-वि० [सं०] ढका हुआ; छिपाया हुआ; बसा-छाड़ित; भलकन; कबचयुक्त; परिवेष्टित; रुद्ध; अदृश्य; गुप्त; अन्तर्दृष्ट किया हुआ; लपेटा हुआ, अभिभूत। पु० बन्ध; निज; द्वैत फटनी।
 संवीती (ति०)-वि० [सं०] उपवीतपारी।
 संवृक्त-वि० [सं०] छोना हुआ; खाया, सन्ध किया हुआ; नष्ट किया हुआ।
 संवृत्त-वि० [सं०] ढका हुआ, छिपा हुआ; गुप्त; बंद; घिरा हुआ; रक्षित; 'से युक्त; अलग रखा हुआ; दबाया हुआ; ऋद्ध; अपष्ट, मंद किया हुआ; जो तटस्थ, अलग हो गया हो; हरण किया हुआ। पु० एकान या गुप्त स्थान; उच्चारणका एक प्रकार; एक तरहका बँध; वनप्रदेश। -कोष्ठ-वि० जिमें कब्ज हो। -कर्म-वि० जो अपनी योजना गुप्त रखना हो। पु० गुप्त मन्त्रणा। -संवाच्य-वि० छिपाने योग्य बातकी प्रकट न करनेवाला।
 संवृत्ति-खी० [सं०] बंद करना, ढकना, छिपाना; गुप्त रखना; ढोंग; बाधा; गुप्त अभिप्राय, अभिसंधि।
 संवृत्त-वि० [सं०] पास आया हुआ; धटित; जो हुआ हो; जो पूर्ण हुआ हो (अभिलाष आदि); एकत्र किया हुआ, गठीकृत; गत, बीता हुआ; ढका हुआ; 'मे युक्त। पु० वरुण; एक नाग।
 संवृत्ति-खी० [सं०] होना, धटित होना; पूर्ति, सिद्धि; सम्मिलित अधिकार।
 संवृद्ध-वि० [सं०] पूरा बढ़ा हुआ; उन्नति करना हुआ; जो बढ़कर बड़ा, लंबा, ऊँचा हो गया हो।
 संवृद्धि-खी० [सं०] बढ़ती, अम्युदय; शक्ति।
 संवेश-पु० [सं०] तीव्र उत्तेजना, क्षोभ; भय; तीव्र वेग; तीव्रता; जोर; उमरता, प्रवृत्तता; शीघ्रता, आतुरता; बैचैन करनेवाली चीज।
 संवेश-पु० [सं०] ध्वज, उद्दिष्ट करना; डराना, सभ्य

देना; उत्तेजित, धुम्ध करना।
 संवेश-पु० [सं०] बोध, ज्ञान; अनुभूति।
 संवेद्य-पु०, संवेदना-खी० [सं०] ज्ञान; अनुभूति; ज्ञाना, सूचित करना; प्रकट करना।
 संवेदनीय-वि० [सं०] अनुभव करने योग्य; बोध, ज्ञान करने योग्य।
 संवेदित-वि० [सं०] अनुभव किया हुआ; बोध कराया हुआ, ज्ञाताया हुआ।
 संवेश-वि० [सं०] समझने योग्य; अनुभवगम्य, अनुभव करने योग्य; ज्ञान, प्रकट करने योग्य। पु० नदियोंका संगम; एक तीर्थ।
 संवेश-पु० [सं०] निकट आना; प्रवेश; आराम करना; सोना; स्वप्न; शयनागार; आसन, कुरसी आदि; मैथुन; एक रतिबंध।
 संवेशक-पु० [सं०] जमा करने, बढोतने, व्यवस्थित करने-वाला (मामान आदि); सोनेमें सहायता करनेवाला।
 संवेशन-पु० [सं०] बैठना; बैठना, सोना; आसन; प्रवेश करना; रति, संयोग। वि० बैठनेमें प्रवृत्त करनेवाला।
 संवेशी (ति०)-वि० [सं०] बैठने, सोनेवाला।
 संवेश्य-वि० [सं०] बैठने, बैठने योग्य; प्रवेश योग्य।
 संवेश-पु० [सं०] 'से आगत होना; आच्छादन, बैठन।
 संवेश्य-पु० [सं०] ढकना; लपेटना; धरना; लपेटनेका कपडा; बैठन।
 संव्यवहरण-पु० [सं०] कारवारमें तरकी करना।
 संव्यवहार-पु० [सं०] आपसका व्यवहार; वाणिज्य-व्यापार; कारवार; कर्तव्य; संपर्क; मामला; प्रयोग, हस्तेमाल; प्रचलित शब्द।
 संव्याध-पु० [सं०] बँध युद्ध; लड़ाई।
 संव्यान-पु० [सं०] कपडा; उत्तरीय वस्त्र; आच्छादन; आवरण।
 संव्याध-पु० [सं०] वस्त्र; ओढ़ना।
 संज्ञात-पु० [सं०] भूम्य, सुद्ध।
 संशंसा-खी० [सं०] प्रशंसा, स्तुति, तारीफ।
 संशस्त-वि० [सं०] शापग्रस्त; वचनबद्ध।
 संशस्तक-पु० [सं०] अततक युद्ध करने और दूसरोंको भागनेसे रोकनेकी शपथ खानेवाला योद्धा; चुना हुआ योद्धा; सहयोद्धा; किसीकी सारनेकी शपथ खानेवाला पद्धत्यंकर।
 संशब्द-पु० [सं०] ललकार; वचन; उल्लेख, जिक्र; हवाला; प्रशंसा।
 संशब्दन-पु० [सं०] ध्वनि या शब्द उत्पन्न करना; प्रशंसा करना; पुकारना; हवाला देना।
 संशय-पु० [सं०] पूरी शक्ति; संतुष्टि, इच्छादिका न रहना।
 संशय-पु० [सं०] स्थिर करना; शांत करना; नष्ट, दूर करना; निवृत्त करना; शांतिकारक औषध।
 संशय-पु० [सं०] सोने या आराम करनेके लिए बैठना; अभिध्वज, हिचका; संदेह; खतरा, सन्देह, कठिनाई; संभावना। -कर-वि० खतरनाक। -गत-वि० खतरमें पड़ा हुआ। -शब्द-पु० संदेह-निवारण। -शब्दी-

संशवाक्षेप-संश्रित

(विन्) -वि० मदेह दूर करनेवाला । -सम्-पु० न्यायकी चौरीस जातियोंमें से एक । -म्ब-वि० जो संदिग्धान्स्थानों में हो, संदेहयुक्त ।

संशवाक्षेप-पु० [सं०] संदेहका निवारण; एक काव्यात्मकार ।

संशवात्मक-वि० [सं०] संदेहपूर्ण, अनिश्चित ।

संशवात्मा(स्मन्)-वि०, पु० [सं०] शक्ती, अविश्वाम्नी, संदेहवादी ।

संशयान-वि० [सं०] दे० 'संशयालु' ।

संशयापन्न-वि० [सं०] संदेहपूर्ण, अनिश्चित ।

संशयालु-वि० [सं०] संदेहशील ।

संशयावह-वि० [सं०] खतरनाक ।

संशयित-वि० [सं०] मशयमें पड़ा हुआ; मदिग्धः जो निरापद न हो ।

संशयिता(तु)-पु० [सं०] अविश्वासी, मशय करनेवाला ।

संशयी(विन्)-वि० [सं०] मशय, संदेह करनेवाला, शक्ती ।

संशयोच्छेदी(विन्)-वि० [सं०] मदेह दूर करनेवाला ।

संशयोपमा-स्त्री० [सं०] उपमाका एक प्रकार जिसमें मदेहके रूपमें सादृश्यका कथन हो ।

संशयोपेत-वि० [सं०] मदेहयुक्त ।

संशय-पु० [सं०] मोहना; विद्वरण करना; चूर करना ।

संशरण-पु० [सं०] शरणमें जाना (?) ; युद्धारम्भ, आक्रमण; अंग करना; चूर करना ।

संशारक-वि० [सं०] मर्दन, दलन करनेवाला; भंग करनेवाला ।

संशामन-पु० [सं०] सुशासन; आदेश, आज्ञा ।

संशित-वि० [सं०] तेज किया हुआ, मान चढ़ाना; तेज; नुकीला; तैयार, उद्यत, हृदमकल्प, काम पूरा करनेमें तेज; व्यापित; कठोर । -वाक्(त्)-वि० कठोर भाषा बोलनेवाला । -व्रत-वि० कथाईके साथ अपना व्रत पूरा करनेवाला ।

संशितात्मा(स्मन्)-वि० [सं०] जिसमें हृदयमकल्प लिया है ।

संशिति-स्त्री० [सं०] बहुत तेज करना, मान चढ़ाना ।

संशिष्ट-वि० [सं०] बचा हुआ ।

संशील-वि० [सं०] जीतमें जमा हुआ; जो ठटा हो चुका हो ।

संशीति-स्त्री० [सं०] संदेह, अनिश्चय ।

संशीलन-पु० [सं०] नियमित रूपमें अभ्यास करना; किसी कामकी आदतन करना; मर्मण ।

संशुद्ध-वि० [सं०] पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, विशुद्ध; चमकाया, पालिश किया हुआ; जुमसे बरी किया हुआ; जिसने प्रायश्चित आदिके द्वारा अपनेको निर्दोष बना लिया है; परीक्षित; चुकता किया हुआ । -किस्मिन्-वि० जो पापमुक्त हो चुका हो ।

संशुद्धि-स्त्री० [सं०] पूरी सफाई; शुद्धीकरण; मार्जन; सुधार; कण परिशोध; विशुद्धता, पवित्रता ।

संशुष्क-वि० [सं०] बिलकुल सूखा हुआ; सुरक्षाया हुआ; नीरस; शुष्क हृदयवाला, अरसिक ।

संशून-वि० [सं०] बहुत सजा हुआ ।

संशुशी-स्त्री० [सं०] वह गाय जिसके सींग और मुँह हों ।

संशोधक-वि० [सं०] सुधारनेवाला; परिष्कार करनेवाला ।

संशोधन-वि० [सं०] विशुद्ध करनेवाला, शुद्ध करनेवाला (वात, पिप्पादिका) । पु० शुद्धीकरण करनेका साधन; अदायगी; सुधारना; संस्कार करनेवाला ।

संशोधित-वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ; मधुर बना दिया हुआ ।

संशोधी(विन्)-वि० [सं०] सुधारने, साफ करने में संशोध्य-वि० [सं०] सुधारने, साफ करने योग्य सुधार, साफ किया जाय; नुकाने योग्य ।

संशोभित-वि० [सं०] अलंकृत; सौ से शीत ।

संशोष-पु० [सं०] अच्छी तरह सुखा देना; सोखना ।

संशोषण-पु० [सं०] मोखना; सुखाना । वि० मोखनेवाला ।

संशोषणीय-वि० [सं०] मोखने योग्य ।

संशोषित-वि० [सं०] सोखा हुआ; सुखाया हुआ ।

संशोषी(विन्)-वि० [सं०] मोखनेवाला ।

संशोष्य-वि० [सं०] मोखने, सुखाने योग्य ।

संश्रत्-पु० [सं०] दे० 'सन्त' ।

संश्रयान-वि० [सं०] संकुचित, मिकुटा हुआ, जमा हुआ ।

संश्रय-पु० [सं०] मयोग, सेन, मपक, मयक लेना, शरणमें जाना, आश्रय ग्रहण करना, परमपरायणताके लिए की जानेवाली सधि; आश्रयस्थान, विश्रामस्थल; निवासस्थान, 'र' मर्मक, आमरण यव; उद्देश्य; एक प्रजापति ।

संश्रयण-पु० [सं०] शरण लेना, महाराज से ससक्ति ।

संश्रयणीय-वि० [सं०] सहारा, शरण लेने योग्य ।

संश्रयी(विन्)-वि० [सं०] महाराज, शरण लेनेवाला पु० नौकर ।

संश्रव-पु० [सं०] मनन; अशीकार; प्रतिज्ञा । वि० पढ़नेवाला ।

संश्रव(म्)-पु० [सं०] गौरव, ख्याति ।

संश्रवण-पु० [सं०] कान देना, सुनना; श्रवण, प्रतिज्ञा, करार करना, अशीकार करना ।

संश्रवित-वि० [सं०] बहुत श्रवण हुआ ।

संश्राव-पु० [सं०] ध्यानमें सुनना; स्वीकार करना ।

संश्रावक-पु० [सं०] सुननेवाला; शिष्य ।

संश्रावयिता(तु)-पु० [सं०] सुनानेवाला, शिष्यावाला ।

संश्रावित-वि० [सं०] जोरसे बोलकर सुनाया हुआ ।

संश्राव्य-वि० [सं०] सुनाई पढ़नेवाला; सुनानेवाला ।

संश्रित-वि० [सं०] संयुक्त; किसीके सहारे पकड़ा परावर्तनी; छिपटा, विपक्वा हुआ; शरणमें न ।

मानमें ठहरा हुआ; आश्रित; आदी; निहित; गृहीत; प्रयुक्त, व्यवस्थित; अंगीकृत; संबंधी, विषयक। पु० नौकर; श्रावित व्यक्ति।

हुत-वि० [सं०] सुना हुआ; पटा हुआ; वादा किया हुआ; अंगीकृत।

कल्ल-वि० [सं०] आर्कशित; मिला हुआ; जुड़ा हुआ; प्रिय, मेलन; सबद्ध; अस्पष्ट, जिसके विषयमें स्पष्ट रूपमें कुछ निश्चय न हो सके;...से युक्त। पु० एक सहकर्म; सटप; राशि, समूह। -कर्म(न्)-पु० ऐसा कर्म जिसके भला-बुरा होनेका निश्चय न हो सके। -कर्म(मन्)-वि० जो भले-बुरेका विवेक न कर सके। -गरीरकारी(विन्)-वि० साध-साध रहनेवाले।

क्लेश-पु० [सं०] संयोग; संबंध; मंथि, जोड़; आश्रित; धन, तमसा।

कल्लेप-पु० [सं०] जुटाना, मिलाना; संलक्ष करना, अमाना भंडार करना; बाँधने, जोड़नेवाली चीज।

कल्लेपना-स्त्री० [सं०] दे० 'संलक्षेप'।

कल्लेप-वि० [सं०] जोड़ा, मिलाया हुआ; सबद्ध प्रिय हुआ आर्कशित।

कल्लेप(विन्)-वि० [म०] जोड़ने, मिलानेवाला; प्रयत्न करनेवाला।

कल्ल-पु० [सं०] जादूगर, बार्तागम; जादूगरी, धोखा; धन।

कल्ल-वि० [सं०] मधोम, मधु।

कल्लेप(विन्)-वि० [सं०] साथ लगनेवाला; निकट मग्न; बानेवाला।

कल्ल-वि० दे० 'संशय'; † वरकल।

कल्ल-पु० दे० 'संशय'।

कल्ल-वि० [सं०] लगा हुआ, मिला हुआ, सबद्ध; मिश्रित; वि० हुआ; शत्रुके रूपमें; निषकनेवाला; अस्पष्ट (वाणी); प्रसन्न, मेलन, लीन; विषयासक्त; अनुरक्त; 'मे' युक्त, प्रसन्न, मिष्टवर्ती; घना, ठोस; लगातार, अविराम; मग्न। -वेता(सस्),-मना(नस्)-वि० जिसका मन किसी विषयपर जमा हुआ हो। -पुग-वि० जूएमें सेना हुआ। -सामंत-पु० वह सामन जिसकी जमीन नदी ओर हो।

कल्लेप-स्त्री० [सं०] घनिष्ठ-सम्बन्ध; माथ बोधना; घनिष्ठता, प्रिय, भावमत्त; प्रवृत्ति।

कल्लेप-वि० उपजाऊ; लाभदायक; भरकतवाला।

कल्लेप-वि० [सं०] साथ लगनेवाला; हिचकनेवाला; प्रयत्नवाला; तैयार होनेवाला।

कल्लेप-स्त्री० [सं०] समा; न्यायालय; न्याय, कल्लेप-मना चौबीस दिन चलनेवाला एक यज्ञ; समूह, गण। वि० साथ बैठनेवाला; बहमें भाग लेनेवाला।

कल्लेप-पु० [सं०] शिष्टता, विषण्णता।

कल्लेप-पु० [सं०] प्राप्ति।

कल्लेप-वि० [सं०] हवा बहने या पानी बौलनेमें समान;... होना।

कल्लेप-पु० दे० 'संशय'।

कल्लेप-वि० [सं०] गमन, अगम, जन्म और पुनर्जन्म,

पार्थिव जीवन; सेनाकी सहाय यात्रा; युद्धारंभ; राजमार्ग; नगर-द्वारके पासका पथिकालय।

संसर्ग-पु० [सं०] संयोग, मेल; मिश्रण; संबंध; संपर्क; साथ; मैथुन; घनिष्ठता; अस्सम्बन्धता; शरीरकी दो धातुओंका रोगकारक योग; सामीप्य; वस्तुओं आदिका सामान्य सम्बन्ध; वह बिंदु जहाँ दो रेखाएँ कटती हैं; अवधि; समवाय। -ज-वि० संपर्कमें उत्पन्न। -दोष-पु० दुरे साधका दुरा कर्म। -विद्या-स्त्री० मिलने-जुलनेकी कला; समाज विज्ञान।

संसर्गाभाव-पु० [सं०] संबंधका अभाव; अभावके दो भेदोंमेंसे एक-किसी वस्तुमें संबंध रखनेवालेका अभाव (न्या०)।

संसर्ग-स्त्री० [सं०] बुद्धि, सफाई (आ०वे०)।

संसर्ग(विन्)-वि० [सं०] मिला हुआ, युक्त; संबद्ध; 'मे' युक्त; रूढ़तारा होनेपर भी संबंधियों के साथ रहने-वाला; परिवर्तित, टेढ़ी-मेढ़ी। पु० साथी, मित्र।

संसर्जन-पु० [सं०] मिलना; संयोग होना; अपनों ओर करना; राजी या तुष्ट करना; परिश्रम; निकालना, बाहर करना; बुद्धि, सफाई।

संसर्ग-पु० [सं०] रंगना; धीरे-धीरे चलना; क्षय प्राप्त-वाले वर्धमें होनेवाला अधिक साम।

संसर्ग-पु० [सं०] रंगना; धीरे-धीरे चलना; अचानक आक्रमण करना।

संसर्ग(विन्)-वि० [म०] रंगनेवाला; धीरे-धीरे चलने, सिकसनेवाला; निरने, उतरानेवाला; पहुँचने, फैलने-वाला।

संसह-वि० [सं०] समान, मुकाबलेका।

संसा-पु० दे० 'संशय'; † संहता।

संसा-पु० [सं०] गोष्ठी, सभा।

संसादन-पु० [सं०] साथ रखना, तरतीबसे रखना।

संसादित-वि० [सं०] इकट्ठा किया हुआ; सजाया हुआ, क्रमबद्ध, तरतीबसे रखा हुआ।

संसाधक-वि० [सं०] पूरा, सिद्ध करनेवाला; जीतने, वशमें करनेवाला।

संसाधन-पु० [सं०] पूरा करना; अच्छी तरह करना; तैयारी; बशीभूत करना।

संसाधनीय-वि० [सं०] पूरा करने योग्य; वशमें करने योग्य।

संसाध्य-वि० [सं०] पूरा करने योग्य; प्राप्त करने योग्य; जीतने योग्य।

संसार-पु० [म०] आवागमन; संसृति, जन्म-मरण; दुनिया; मायाजाल, लौकिक प्रपञ्च; मत्स्यलोक; गृहस्थी-विद्वत्क्षेत्र (?) ; मनुष्य (ला०)। -गमन-पु० जन्म-मरण, आवागमन। -गुरु-पु० कामदेव; जगद्गुरु।

-चक्र-पु० भवचक्र, संसृति। -सिलक-पु० एक तरहका चाकर। -पथ-पु० भय, क्षियोंकी जननेंद्रिय।

-पदवी, -सरणि-स्त्री० संसारका मार्ग; भय। -बंधन-पु० सांसारिक बंधन। -भाव-पु० संसारकी दुःख-मय मानना। -मार्ग-पु० संसारका मार्ग; क्षियोंकी जननेंद्रिय। -मोक्ष-पु० ममनिमें छुटकारा। -मोक्ष-पु०

पु० संसृतिसे छुटकारा । वि० अवर्धनसे जुवानेवाला ।
 -वाचा-स्त्री० संसारमें रहना; जीवन बिताना; निदयी ।
 -वर्जित-वि० भौतिक संपासे शुक्त । -वर्म(रु)-
 पु० दे० 'संसारमार्ग' । -संग-पु० संसारके प्रति
 आसक्ति । -सारथि-पु० संसार-मार्गका भारथि; शिव ।
 -सुख-पु० भौतिक सुख ।

संसारण-पु० [सं०] चलना; गति प्रदान करना ।

संसारि(रिह)-वि० [सं०] दूर-दूर जानेवाला, दूरतक
 व्याप्त होनेवाला (जैसे बुद्धि); आवागमन करनेवाला;
 लौकिक; भौतिक; दुनियादार; संसारकी भाषामें किन्तु जीव
 वा व्यक्ति; दुनियामें रहनेवाला; व्यवहार-कुशल । पु०
 जीवधारी; जीवात्मा ।

संसिक्त-वि० [सं०] तर किया हुआ, सींचा हुआ; छिन्न
 काव किया हुआ ।

संसिद्ध-वि० [सं०] अच्छी तरह निष्पन्न किया हुआ;
 प्राप्त; पक्कर तैयार (भोजन); किया हुआ; अच्छा किया
 हुआ (रोगादि); उन्नत, तैयार; कुल-संस्कार; संसुष्ट; चतुर,
 कुशल; जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो, सुख ।

संसिद्धि-स्त्री० [सं०] कार्यका सम्यक् संपादन, सकलता;
 मोक्ष, अंतिम फल; निश्चित मत; पक्कर तैयार होना
 (भोजन); स्वभाव, धर्म; मत्त स्त्री, प्रमदा ।

संसी-स्त्री० दे० 'मैसी' ।

संसुप्त-वि० [सं०] गाढ़ी नींदमें सोया हुआ ।

संसूचक-वि० [सं०] स्पष्ट रूपमें दिखलाने, बतलानेवाला;
 भेद खोलनेवाला; अर्त्तना करनेवाला ।

संसूचन-पु० [सं०] प्रकट करना; दिखलाना; कहना;
 अर्त्तना करना; संकेत करना; भेद खोलना ।

संसूचित-वि० [सं०] प्रकट किया हुआ; दिखलाया हुआ;
 बोधा-कटकारा हुआ; सूचित कराया हुआ, जनाया हुआ ।

संसूची(शिव)-वि० [सं०] दे० 'संसूचक' ।

संसूच्य-वि० [सं०] जताने, प्रकट करने योग्य; दिखलाने
 योग्य; अर्त्तना करने योग्य; भेद प्रकट करने योग्य ।

संसृति-स्त्री० [सं०] आवागमन, जन्म-मरणकी परंपरा;
 मातृत्व, प्रवाह; सगति; संसार ।

संसृष्ट-वि० [सं०] सहजगत, एक साथ उपपन्न (जैसे पशु-
 शावक) मिला हुआ, संयुक्त; मिश्रित, अतर्मित, सम्मिश्रित;
 बहुत परिचित, जिसके साथ घनिष्ठता हो; (रोगादिते)
 आक्रांत; विभिन्न प्रकारका (मला-मुरा); पूरा किया हुआ,
 संपन्न; समन आदिके द्वारा शुद्ध किया हुआ; स्वच्छ बन्म
 धारण किया हुआ; निर्मित, रचित; एकट्ठा किया हुआ;
 बंटवारेके बाद आपसमें मिले हुए (भारं आदि) । पु० एक
 पुराणोक्त पर्वत; निकट संबंध; मैत्री । -कर्मा(मंत्र)-वि०
 जिसके कर्म विभिन्न प्रकार-अले-सुरे दोनों प्रकार-के
 हो । -आश-पु० निकट-संबंध, घनिष्ठता । -रूप-वि०
 मिलावटी । -होम-पु० (अग्नि और सूर्यकी) एकमे ही
 दो जानेवाली आहुति ।

संसृष्टता-स्त्री०, संसृष्टत्व-पु० [सं०] संयोग; मिश्रण;
 बंटवारेके बाद फिर एकमें मिल जाना ।

संसृष्टि-स्त्री० [सं०] साथ-साथ होनेवाली उत्पत्ति; संयोग,
 मेल; मेल-जोल; एकत्रीकरण; मिश्रण, रचना; मांशेदानी-

एक परिवारमें रहना; राशि, समूह; एक ही वाक्यमें दो
 वा अधिक अर्थकारकी योजना (सा०) ।

संसृष्टी(ष्टि)-पु० [सं०] बंटवारेके बाद फिर आपसमें
 मिले हुए संबंधी; छासेदार ।

संसेक-पु० [सं०] छिन्नकाव, सिंचन ।

संसेवन-पु० [सं०] सेवा करना; व्यवहारमें लाना; संपर्क
 रखना ।

संसेवा-स्त्री० [सं०] सेवा; व्यवहार, उपयोग; हाजिरी;
 पूजा-मत्कार; प्रवृत्ति, मुकाव ।

संसेवित-वि० [सं०] जिसकी भली भाँति सेवा की गयी
 हो; अच्छी तरह व्यवहारमें लाया हुआ ।

संसेविता(रु)-वि० [सं०] व्यवहार, उपयोगमें लाने-
 वाला ।

संसेवी(वित्र)-वि० [सं०] सेवा-टहल करनेवाला; पूजा-
 सात्कार करनेवाला ।

संसेव्य-वि० [सं०] सेवा, पूजा करने योग्य; व्यवहार,
 उपयोगमें लाने योग्य ।

संसी-पु० वास, प्राण (वि०) ।

संस्करण-पु० [सं०] साथ रखना; तैयार करना; कमबख्त
 करना; शुद्ध करना; परिष्कृत करना; शून्य-मस्कार
 करना; दिजातियोक विधि संस्कार करना; पुस्तकादिका एक
 बारका मुद्रण ।

संस्कर्तव्य-वि० [सं०] व्यवस्थित, तैयार करने योग्य-
 परिष्कार करने योग्य ।

संस्कर्ता(रु)-वि०, पु० [सं०] शुद्ध करनेवाला; मस्कार
 करनेवाला; भोजन तैयार करनेवाला; छाप टारनेवाला
 (जै०) ।

संस्कार-पु० [सं०] साथ रखना; व्यवस्थित करना;
 मजाना; पूरा करना; मुबारना; शुद्धि, सफाई; भोजन
 तैयार करना; भातकी चीजें भोजनकर चमकाना; पौधों,
 जानवरों आदिका पालन-पोषण; स्नान करना; मानसिक
 शिक्षा; सम्पत्ति, वाक्यों आदिकी शुद्धता; पवित्रीकरण;
 पापादिका प्रक्षालन करनेवाले यष्टादि कृत्य; दिजातियोक
 शास्त्रविहित कृत्य (जो सतुके अनुसार बारह और कुछ
 लोगोंके अनुसार मोनह हैं । बारह संस्कार ये हैं-गर्भा-
 धान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण,
 श्रमप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, केशान, समावर्तन और
 विवाह । अन्य बार संस्कार ये हैं-कर्मवेध, विचारन,
 वेदारम तथा अत्येष्टि । कुछ लोगोंने बागप्रत्य तथा
 मन्वायामाश्रमकी भी संस्कारोंमें गिनया है जो ठीक नहीं
 मान पड़ता; अत्येष्टि किया; शुद्ध करनेवाला कोई कृत्य;
 स्मरण-शक्ति; मनपर पड़ी हुई छाप; पूर्वजन्मकी कृत्योंकी
 वासना; बाह्य जगत् विषयक कल्पना, अंतिमूलक विश्वास,
 धारणा; भोजनकर चमकानेके काम आनेवाला पत्थर या
 शीशें । -कर्ता(रु)-पु० संस्कार करनेवाला मायण ।
 -ज-वि० संस्कारमें उत्पन्न । -नाम(रु)-पु० संस्कार-
 के समय रखा हुआ नाम । -वृत्त-वि० संस्कार द्वारा
 विशुद्ध किया हुआ; शिक्षा आदिके द्वारा परिष्कृत । -
 रहित-वर्जित-वि० दे० 'संस्कार-हीन' । -विशिष्ट-
 वि० पाक-किया द्वारा बढिया बनाया हुआ । -संपन्न-

वि० सुशिक्षित । —हीन-वि० जिसके संस्कार न हुए हों । पु० द्विजातिका वह व्यक्ति जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, व्रात्य ।

संस्कारक-वि० [सं०] सुधारनेवाला; तैयार करनेवाला; शुद्ध करनेवाला; मनपर छाप डालनेवाला; स्थायिक रूपमें या पाकके काममें आनेवाला ।

संस्कारवायु(वर्)-वि० [सं०] जिसका सुधार किया गया हो; सुदर; जिसके मनपर छाप पड़ी हो ।

संस्काराधिकारी(विन्)-वि० [सं०] जिने संस्कार करने या करानेका अधिकार प्राप्त हो ।

संस्कारी(विन्)-वि० [सं०] अच्छे संस्कारवाला ।

संस्कार्य-वि० [सं०] तैयार, पूरा करने योग्य; जिसकी शुद्धि, सफाई की जाय; जिसके मनपर छाप डाली जाय ।

संस्कृत-वि० [सं०] सुरचित, सुनिर्मित; पूरा किया हुआ; पकाकर तैयार किया हुआ (मोजन); सुधारा हुआ, परिष्कृत किया हुआ; संस्कार द्वारा शुद्ध, पवित्र किया हुआ; विवाहित; उत्तम; अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ । पु०

द्विजातिका वह व्यक्ति जिसका शुद्धि-संस्कार हो चुका हो; विद्वान्; नियमानुसार बना हुआ शब्द; धार्मिक प्रथा ।

श्री० भारतीय आर्थिकी प्राचीन साहित्यिक भाषा (जो वैदिक भाषाके बाद प्रयोगमें आयी थी) ।

संस्कृति-श्री० [सं०] पूरा करना, शुद्धि; सुधार, परिष्कार; निर्माण; पवित्रीकरण; सजावट; निश्चय; उद्योग, आचरण-गन परंपरा, मन्यता; २४ अक्षरोंके वर्णवृत्त ।

संस्कृत्य-श्री० [सं०] तैयार करना; निर्माण; शुद्धि-संस्कार; व्यव-संस्कार ।

संस्खलन-पु० [सं०] गिरना; भूल-चूक करना ।

संस्खलित-वि० [सं०] गिरा हुआ; भूला-चूका हुआ । पु० भूल-चूक ।

संस्तंभ-पु० [सं०] हट, हटनापूर्ण विरोध; मद्दारा, टेक; उमाना, हट करना; रुकावट, विराम; निश्चेष्टता; रुकना ।

संस्तंभन-वि० [सं०] रोकनेवाला; रुक कर देनेवाला । पु० रोकनेवाली दवा; रुक जाना; रोक देना; मद्दारा देना ।

संस्तंभनीय-वि० [सं०] सहारा देने योग्य; हट करने योग्य; मोत्साहित करने योग्य; रोकने जाने योग्य ।

संस्तमित-वि० [सं०] जिने सहारा दिया गया हो; जो निश्चेष्ट हो गया हो; पक्षाघातग्रस्त ।

संस्तंभी(विन्)-वि० [सं०] रोकनेवाला; (खतरेका) निवारण करनेवाला ।

संस्तब्ध-वि० [सं०] जिने सहारा दिया गया हो; रुका हुआ; जकीभूत, निश्चेष्ट ।

संस्तर-पु० [सं०] तह, परत; वृणक्षम्या; विस्तर, पलम, (फलों आदिकी) फैलायी हुई राशि; विमेरना, फैलाना; आच्छादन; प्रचार (विधान आदिकी); यज्ञ या यज्ञका आयोजन ।

संस्तप-पु० [सं०] प्रशंसा, स्तुति; उल्लेख; मेल-जोल, पतिव्रता । —प्रीति-श्री० परिकल्प-व्यय प्रेम ।

संस्तुत-वि० [सं०] प्रशंसित, स्तुति की गयी हो; परिगणित; मद्दश, मिलता-जुलता; सामंजस्ययुक्त; परिचित, धनिष्ठ; अभिप्रेत, लक्ष्य ।

संस्तुतक-वि० [सं०] शिष्ट, मद्र (बी०) ।

संस्तुति-श्री० [सं०] प्रशंसा, स्तुति; आवाभिव्यक्तिकी एक आत्यधिकारिक शैली ।

संस्तृप-पु० [सं०] कृपेका ढेर ।

संस्तृत-वि० [सं०] विछाया; फैलाया हुआ, ऊपर में डका हुआ ।

संस्तवान-पु० [सं०] जमाना; ठोस, कडा होना (अज्ञातिका) । वि० जमा हुआ, जमकर ठोस, कडा पडा हुआ ।

संस्त्याच-पु० [सं०] राशि, समूह, ढेर; फैलाव, प्रसार; निवासस्थान, मकान; धनिष्ठता; मिश्री या परिवर्तितका वार्तालाप ।

संस्त्य-वि० [सं०] में स्थित, ठहरा हुआ; पालन; स्थिर; पर अवलंबित; में युक्त; कुछ ही कालतक टिकनेवाला नष्ट; स्त, सामान, पूर्ण; व्यक्त । पु० निवासी. पक्षीमी; अपने देशका रहनेवाला भेटिया ।

संस्त्या-श्री० [सं०] ठहरना, रहना, मना; समिति; समूह, मंडली; स्थिति, अवस्था; पेशा; रहन-सहनका बंधा हुआ तरीका; चिरकालमें चली आनेवाली कोई सामाजिक परंपरा या प्रथा (जैसे विवाह)कृति, विधि, नियम; सदाचार; अत, पूर्ति, ठहराव, विराम, नाश, प्रलय; साक्ष्य; राजकीय आवा; एक प्रकारका सोमयज्ञ; सत्य; अभिव्यक्ति; आकृति; रूप; धर्म; स्वभाव; बंध; शब्द-संस्कार; गुप्तचरवर्ग । —कृत-वि० निर्धारित, निश्चित । —जप-पु० यज्ञके अंतमें होनेवाला पाठ ।

संस्त्यागार-पु० [सं०] मनासवन, विधान बनावेवाली ममाका स्थान ।

संस्त्याध्यक्ष-पु० [सं०] व्यापारका प्रधान अधिकारी, व्यापाराध्यक्ष (की०) ।

संस्त्यान-वि० [सं०] ठहरनेवाला; सटश, मानिद । पु० ठहरना, रहना, स्थिति; (खुदमें) स्थिर रहना; सत्ता, अस्तित्व, जीवन; पालन (आज्ञा आदिकी); निवासस्थान, बस्ती; सार्वजनिक स्थान (नगरस्थ); आकृति; सौंदर्य, कांति; चिह्न; विशेषक चिह्न; रोगका लक्षण; स्वभाव; अवस्था; समूह; ढेर; अत, समाप्ति; सत्यु; निर्माण; सामीप्य; परोस; चतुष्पथ, चौराहा; ढोका; साहित्यादिकी उन्नतिके लिए स्थापित संस्था ।

संस्थापक-पु० [सं०] स्थापित करनेवाला (संस्था, मौल-पाल्य आदि); रूप, आकृति प्रदान करनेवाला, चीनी

आदिकी मूर्तियाँ बनानेवाला; मत आदिका प्रवर्तक।

संस्थापन-पु० [म०] एकत्र करना; निश्चित करना; खड़ा करना, निर्माण करना; स्थापित करना; रूप प्रदान करना; कोई नयी बात जारी करना; निर्वाचित करना; नियम; विधान।

संस्थापना-खी० [स०] रोकना, निर्वाचित करना; प्रोत्साहित करना; शांत करनेका साधन।

संस्थापनीय-वि० [स०] स्थापित करने योग्य।

संस्थापित-वि० [स०] एकत्र किया हुआ; ढेर लगाया हुआ; जमाया हुआ; स्थापित किया हुआ; खड़ा किया हुआ; बनाया हुआ; प्रवर्तित; रीका हुआ, निर्वाचित।

संस्थाप्य-वि० [स०] रत्न, जमाये जाने योग्य; पूरा करने योग्य (जैसे यष्ट); आराम पहुँचानेवाली वस्तिके द्वारा उपचार करने योग्य (आ० वे०)।

संस्थित-वि० [म०] खड़ा; ठहरा हुआ; युद्धमें डटा हुआ; 'पर बैठना, ठेका हुआ; रखा हुआ; पड़ा हुआ; जो पड़ा रहने दिया गया हो (सोजन); टिकाऊ; भावी; समान, सट्टा; एकत्र किया हुआ, राशीकृत; जमाया, स्थापित किया हुआ; प्रवृत्त; आधृत; दक्ष, कुशल; प्रस्थित; समाप्त, पूरा किया हुआ; नष्ट; मृत; स्थिर; रूप प्रदान किया हुआ; लगा हुआ, आसन्न। पु० आचरण; आकृति।

संस्थिति-खी० [स०] साथ होना, ठहरना; खड़ा, टिका रहना; दृढ़ता; 'पर बैठना, बैठना; सामीप्य, सन्निकटता; निवास-स्थान; राशि, ढेर; एक ही अवस्थामें रहना; अवस्था, स्थिति; रोक, निर्वाचन; मृत्यु; अंत; प्रलय; आकृति; स्वभाव, धर्म; वैधी व्यवस्था; कञ्ज, कोष्ठबद्धता।

संस्पर्श, **संस्पर्श**-वि० [म०] प्रतियोगिता, होश; ईर्ष्या। **संस्पर्शी**(विन), **संस्पर्शी**(विन)-वि० [म०] प्रतियोगी, होश करनेवाला; ईर्ष्या करनेवाला।

संस्पर्श-पु० [स०] छू जाना; संपर्क, सलग्न; संयोग, मेल; मिश्रण; प्रभाविन होना; विषयके संयोगसे इन्द्रियोंका संवेदन।

संस्पर्शन-पु० [स०] छुना; संपर्क; मिश्रण।

संस्पर्शी-खी० [स०] एक सुगन्धित पौधा, जनी।

संस्पर्शी(विन)-वि० [म०] स्पर्श करने, छूनेवाला; संपर्कमें आनेवाला।

संस्पृष्ट-वि० [स०] छुआ हुआ; संपर्कमें लाया हुआ; संयुक्त; मिला हुआ, मिश्रित; आसन्न; प्रभावित; पहुँचा हुआ, प्राप्त। -**मैथुना**-खी० अपनीत बालिका (विवाहके अयोग्य)।

संस्पर्श-पु० [स०] मेश; बावरल (?)।

संस्पृष्ट-वि० [स०] छुला हुआ, फटा हुआ; विकसित; छिला हुआ।

संस्फोट, **संस्फोट**-पु० [स०] युद्ध, लड़ाई।

संस्मरण-पु० [स०] स्मरण, याद करनेकी क्रिया; नाम लेना, जपना; संस्कारसे उत्पन्न ज्ञान; स्मृतिके आधारपर किसी विषय या व्यक्तिके संबंधमें लिखित लेख या ग्रंथ।

संस्मरणीय-वि० [स०] याद करने योग्य; नाम जपने योग्य; जिसकी केवल याद रह गयी हो, गत, मृत; महत्त्वपूर्ण।

संस्मारक-पु० [स०] स्मरण करानेवाला; किसी व्यक्तिकी स्मृतिमें निमित्त बनने, स्तंभ, स्था आदि। वि० याद दिलानेवाला।

संस्मारक-पु० [स०] याद दिलाना; गिनना (चौपायोंको)।

संस्मारित-वि० [स०] स्मरण कराया हुआ; याद किया हुआ।

संस्पृष्ट-वि० [स०] याद किया हुआ; आदिष्ट; विहित; अभिहित।

संस्पृष्टि-खी० [स०] पूर्ण स्मृति, याद।

संस्पृष्ट-वि० [स०] साथ सिला हुआ; ओतप्रोत; अभेद्य रूपमें संबद्ध।

संस्त्रय-पु० [म०] बहाव, क्षरण, रिसना; धारा, प्रवाह; बहता हुआ पानी; किसी वस्तुका बन्ना हुआ अंश; एक तरहका पिछदान।

संस्त्रयण-पु० [स०] बहना; चूना (गर्भ-संस्त्रयण-गर्भपात)।

संस्त्रय(द्यु)-पु० [म०] युद्धमें प्रवृत्त होनेवाला; भाग लेनेवाला; आयोजन करनेवाला; निर्माण करनेवाला मिश्रण करनेवाला।

संस्त्रय-पु० [म०] बहाव, प्रवाह; पृथ आदिक। जमा होना (आ० वे०); किसी वृत्तका अवशिष्टांश, तत्पश्चात् पत्र, प्रकारका पिछदान।

संस्त्रयण-[म०] बहाना; बहना; उपकन; चूना।

संस्त्रयित-वि० [स०] बहा हुआ, बहाया हुआ; टपटा, चुना हुआ।

संस्त्रय-वि० [म०] बहाने योग्य; जो बहाया, टपकाया जाय।

संस्वार-पु० [म०] साथ-साथ शब्द करना।

संस्वेद-पु० [म०] पसीना। -**ज**-वि० पसीनेमें उत्पन्न (जुँ आदि)।

संस्वेदी(विन)-वि० [म०] जिमके बदनसे पसीना निकल रहा हो।

संहता(तु)-वि०, पु० [म०] बंध करनेवाला, जोड़ने, मिला देनेवाला।

संहत-वि० [स०] जुड़ा हुआ, संयुक्त, मिलित; साथ रहनेवाला; ठोस, कड़ा; घना; दृढ़; दृष्टा-कष्टा; मिश्र (स्वर, गंध आदि); आहत; बंद; एकमत; एकद्व। -**कुलीन**-वि० संयुक्त परिवारका; ऐसे परिवारका जिसके साथ निरन्तर संबंध हो। -**जानु**, **जानुक**-वि० जिसके घुटने आपसमें टकराते हों, लगन-जानुक। -**तल**-पु० अंजलिके रूपमें मिले हुए दोनों हाथ। -**पत्रिका**-खी० सोभा। -**बल**-पु० संप्रति सेना (की०)। -**भू**-वि० जिसकी भौंह सिकुड़ी हो। -**मृति**-वि० बड़ा-कट्टा, भजवृत्त। -**समी**-खी० वह खी जिसके सन एक दूसरेके बहुत नजदीक हों। -**दक्ष**-खी० परस्पर हाथ मिलाये हों।

संहत-पु० [स०] अंजलि।

संहतान-वि० [स०] दृढ़काय, दृढ़पुष्ट; एक दूसरेमें लगा हुआ (जैसे पर्वत)।

संहताब्जि-वि० [स०] बढ़ाजलि, करबद्ध।

संहताब्ज-पु० [स०] एक अभि, पदमाज।

संहति-खी० [म०] दृढ़ संबंध; पक्का, मेल; संधि; संयोग;

वनर, ठोसपन; सार्मजस्य; समूह, राशि, ढेर; पिङ्ग; बल, शक्ति; शरीर; सम्मिलित प्रयत्न ।—**शास्त्री(किन्)**—वि० बना ।

संहनन-वि० [म०] ठोस, दृढ; ठोस करनेवाला; वध करनेवाला; नष्ट करनेवाला । पु० संवद्ध करना, जोड़ना; घना, ठोस करना; वध करना; बधना; बलवत्ता; अनुकृता, मेरु; सार्मजस्य; देह; कवच; मालिश ।

संहरण-पु० [सं०] संग्रह करना, बटोरना; एक साथ बाँधना, गुँथना (केश); ग्रहण करना, पकड़ना; लौटा लेना (मंत्रसे बाण आदि); सकुचित करना; रोकना; नाश, ध्वंस करना; प्रलय ।

संहरना-अ० कि० नष्ट, विनष्ट होना । म० कि० नष्ट करना ।

संहर्तव्य-वि० [सं०] एकत्र करने योग्य; पूर्व अवस्थामें लाने योग्य; नष्ट करने योग्य ।

संहर्ता(र्तृ)-वि०, पु० [सं०] संग्रह करनेवाला, एकत्र करनेवाला; लगान बघल करनेवाला कर्मचारी—‘राज्यकी उगाड़ीके लिए संहर्ता आये’—कुण० । नाश करनेवाला; वध करनेवाला ।

संहर्ष-पु० [सं०] रोमांच (आनंद आदिसे); प्रसन्नता, हर्ष; कामोत्तेजन; प्रतियोगिता; ईर्ष्या; वायु; सपर्षण, रगड़ ।

संहर्षण-पु० [सं०] पुलकित होना (हर्ष आदिसे), प्रसन्न होना; प्रतियोगिता, स्पर्धा । वि० पुलकित करनेवाला ।

संहर्षित-वि० [म०] रोमांचित, पुलकित ।

संहर्षी(र्षिन्)-वि० [सं०] पुलकित, प्रसन्न होनेवाला; स्पर्धी, ईर्ष्या करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला ।

संहवन-पु० [सं०] माध-माध हवन करना; चार मकानोंका वर्गाकार समूह ।

संहत-पु० [सं०] समूह, मघात; एक नरक; शिवका एक अनुचर ।

संहार-पु० [सं०] सधिका शक्तियों भंग करना ।

संहार-पु० [सं०] नजदीक लाना; बटोरना, एकत्र करना; मार, संक्षेप; सकोच; (हाथीका) मुँह अंदरकी ओर ले जाना; बाँधना, गूथना (हाल); (मंत्रबलसे) छोटा हुआ बाण लौटाना; नाश; प्रलय; नाश करनेवाला (नाटक या नाटकके किसी अंकका) अंत; एक नरक; रोक लेना; समूह, मण्डली; एक उच्चारण-दीर्घ; कुशलता; अभ्यास; एक असुर ।

—**कारी(रिन्)**—वि० प्रलय करनेवाला; नाश करनेवाला ।

—**काल-पु०** प्रलयकाल । —**मैरव-पु०** मैरवके आठ रूपोंमें एक । —**मुद्रा-स्त्री०** तांत्रिक पूजाकी एक मुद्रा, विसर्जन-मुद्रा ।

संहारक-वि०, पु० [सं०] एकत्र करनेवाला; सकुचित, संक्षिप्त करनेवाला; नाश करनेवाला ।

संहारना-अ० कि० नाश करना; वध करना ।

संहारिक-वि० [सं०] सबका नाश करनेवाला ।

संहारी(रिन्)-वि० [सं०] नाश करनेवाला ।

संहार्य-वि० [सं०] बटोरने, संग्रह करने योग्य; हटाने, उतारने योग्य; लौ नीयमान हो, ले जाया जाय; निशरणीय, रोकने योग्य; बधकाये जाने योग्य; जिसका वध हो ।

संहित-वि० [सं०] साथ रखा हुआ, मिळाना हुआ, संयुक्त किया हुआ; एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ; संकलित; मंत्रध रखनेवाला; युक्त, अन्वित; त्रयाया हुआ; रचित; जिसका क्रमभंग न हुआ हो (शब्द-समूह); अनुकूल, सुवाचिक; जिसमें मैत्री हो, मेली । —**पुस्तिका-स्त्री०** सीमा; धनिया ।

संहिता-स्त्री० [सं०] संयोग, मेल; संधि (व्या०); संग्रह, संकलन; गद्य आदिका वह संकलन जिसका क्रम आदि ठीक किया गया हो; मनु आदि द्वारा रचित धर्म-शास्त्र; वेदोंका मंत्रभाग; विद्वत्को सचरित रखनेवाली शक्ति; दे० परिशिष्ट १ में भी । —**कार-पु०** संहिताकी रचना करनेवाला । —**पाठ-पु०** वेदका क्रमबद्ध मंत्र ।

संहिति-स्त्री० [सं०] एक साथ रखना; संबंध ।

संहृति-स्त्री० [सं०] साथ-साथ पुकारना; शोर-शुल ।

संहृत-वि० [सं०] सकुचित वा संक्षिप्त किया हुआ; एकत्र किया हुआ; संग्रह किया हुआ, पकड़ा हुआ; रोकड़ा हुआ, निवारित; नष्ट किया हुआ; इरण किया हुआ ।

संहृति-स्त्री० [सं०] सकोच, संक्षेप; सार, नाश; प्रलय; अंत, समाप्ति; रोक; पकड़ना, संग्रह; संचय, संग्रह, एकत्रीकरण; इरण ।

संहृति-वि० [सं०] प्रसन्न; जड़, गतिहीन, निश्चेष्ट ।

संहृष्ट-वि० [सं०] रोमांचयुक्त (आनंद आदिसे); प्रसन्न; सहा (रोम); स्पर्धा भावसे उदीप्त; प्रज्वलित । —**मना- (नम्)**—वि० प्रसन्नचित्त । —**बद्ध-वि०** जिसका मुख प्रसन्नतासे चमक रहा हो ।

संहृष्टी(रिन्)-वि० [सं०] सहा, उत्तेजित (क्षिप्त) ।

संह्राद्-पु० [सं०] कोलाहल, हडा-गुला; एक राक्षस ।

संह्राव-पु० [सं०] कोलाहल, शोर करना, चिहाना ।

संह्रीण-वि० [सं०] लजित, शर्मिदा; नष्ट ।

संह्राद्-पु० [सं०] एक प्रकारका आनंद ।

संह्रादी(विन्)-वि० [सं०] प्रसन्नचित्त ।

स-पु० [सं०] विष्णु; सर्प; शिव; पक्षी; बाघ; बद्ध मां;

जीवारमा; चित्तन; हान; दीप्ति; यात्रीकी सड़क; बाड़ा, नेरा; बद्ध स्वरका सूत्रक अक्षर (मगीन); समणका संक्षिप्त रूप । उप० यह शब्दोंके आरंभमें आकर सद् (सरोष), समान (सजाति, सयोग), बड़ी (सर्पिण) आदि अर्थोंका बोध करता है ।

सशावत्-स्त्री० [अ०] सौभाग्य; नेकी, भलाई । —**संद-वि०** भला; आशाकारी, (बशोकी) नेवा करनेवाला (बेटा, भतीजा आदि); सौभाग्यशाली । —**संदी-स्त्री०** भला, आशा-वाल्क होना, गुरुजन-भक्ति ।

सह-अ० साथ, से । प्र० करण और अपादानकी विभक्ति ।

सहअना-पु० दे० ‘सहिजन’ ।

सहना-स्त्री० नासद, नाथीका त्रण ।

सहना-स्त्री० सेना, फौज ।

सहयो-स्त्री० मदेली, सखी ।

सहवरा-पु० सेवार ।

सह-स्त्री० बढती, बुद्धि, बरकत; * सरस्वती नदी; सखी; [अ०] दी०-वृष; कोशिश, यत्न । —**सिक्कारिण-स्त्री०**

दौध-पू; कहना-सुनना, कोशिश-सिफारिश ।

सर्दंडा-पु० एक पेश ।

सर्दंड-वि० [अ०] शुभ, अला, मागलिक ।

सर्दंड-पु० सारस ।

सर्दंड-प्र० सों, से ।

सडका-पु० शिकार, माउज ।

सडता-स्त्री० सीत ।

सडतेला-वि० सौनेला ।

सडरा-पु० दे० 'शउर' ।

सकंदूर-पु० गोह जैसा एक जीव ।

सकंदक-वि० [स०] कौटुंबिक, कैंटीला; कष्टदायक, खतरनाक । पु० करंड हल; सिवार ।

सकंपन-वि० [स०] कंपनयुक्त; जो भूकंपके साथ हो ।

सक-स्त्री० शक्ति; बल, सामर्थ्य । † पु० शक, मदेह; * साका, धाक; मर्यादा स्थापित करना ।

सकट-पु० शकट, मगगड, छकड़ा । वि० [स०] घुरा; नीच । पु० शास्त्रोद हल ।

सकटाक-पु० [स०] अशुद्ध अन्न ।

सकडी-स्त्री० सिकड़ी ।

सकत-स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य; वैभव । अ० यथाशक्ति, भरसक ।

सकता-स्त्री० शक्ति, बल, नाकम, सामर्थ्य । पु० [अ०] मुच्छा रोग; किसी शब्दके घट-बढ़ जानेसे शेरका वजन बिगड़ जाना ।-(ते) का आलस-विस्मय, विमृष्टता ।

सकती-स्त्री० शक्ति, बल, सामर्थ्य; एक अन्न, शक्ति; मएनी, जबरदस्ती-कवि कियित और जो अकती सकती नहीं हैं पर कीजिये जू-कवि० को० ।

सकना-भू० कि० समर्थ होना; योग्य होना; मभव होना, सुमकिन होना ।

सकपक-स्त्री० हिचक, घबड़ाहट ।

सकपकाना-अ० कि० हिचकना, आगा-पीछा करना; चकित होना; छद्मा आदिके कारण घबड़ाहटमें पड़ जाना, धिलना ।

सकर-वि० [म०] हस्तयुक्त; खंडवाला (हाथी); किरणों-वाला; कर लगाने योग्य । † स्त्री० शकर । -कंद-पु०, -कंदी-स्त्री० शकरकंद । -कना-पु० शकरकंद । -खंडी-स्त्री० खंड, शकर । -पाला-पु० एक तरहका चौकीर मिठाई या ममकीन; इस शक्लकी मिलाई; एक कापुली नीच ।

सकरणक-वि० [म०] (शरीरके किसी) अंग द्वारा संवाहित ।

सकरना-अ० कि० स्वीकार किया जाना, कबूल जाना ।

सकरा-वि० तंग, संकीर्ण; जूठा । पु० जूठन ।

सकरिया-स्त्री० लाल शकरकंद, रताछ ।

सकरंड-पु० एक हल ।

सकलम-वि० [स०] कोमलचित्त, करुणाशील, दयायुक्त ।

सकर्ण-वि० [स०] कानोवाला; सुननेवाला ।-प्राबु-वि० कानोतक टका हुआ ।

सकर्तक-वि० [म०] माधनयुक्त ।

सकर्मक-वि० [म०] प्रभावकारी; कोई काम करनेवाला; जो कर्मके साथ हो, (बढ़ किया) जिम्मा प्रभाव कर्तापर

न पश्कर दूसरेपर पड़े (व्या०) ।-क्रिया-स्त्री० वह किया जिसका प्रभाव कर्मपर पड़े (व्या०) ।

सकर्म(में)-वि० [म०] दे० 'सकर्मक'; एक ही या एक जैसा काम करनेवाला ।

सकल-वि० [स०] सब, समस्त, सब अंगोंमें युक्त; मौक्तिक जगत्से प्रभावित (जीव); मंद और मधुर स्वरवाला; व्याज देनेवाला; सारी कलाओंसे पूर्ण (चंद्रमा) । पु० प्रत्येक, वस्तु; पुरुष और प्रकृति; पशु; रोहित तृण ।-कामदुष-वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला ।-अननी-स्त्री० मन्वकी माता; प्रकृति ।-प्रिय-वि० जो मन्वकी अच्छा लगे । पु० चना ।-खर्-वि० जो हलका कर रहे हों । पु० कलह ।-सिद्धि-स्त्री० मन्व विषयोंमें सफलता । वि० जिसे पूरी सिद्धि प्राप्त हो गयी हो ।-० द्वा-स्त्री० एक ढेरवी (त०) ।

सकलखोरा-पु० दे० 'अकरखोरा' ।

सकलात-पु० रजार्द, दुलाई; मंद, उपहार ।

सकलाती-वि० अति उत्तम, बढ़िया; मल्लमलका ।

सकलाचार-पु० [म०] शिव ।

सकलेंदु-पु० [म०] पूर्ण चंद्र ।-मुख-वि० पूर्ण चंद्र जैसा मुखवाला ।

सकलेखर-पु० [स०] विष्णु ।

संकल्प-वि० [म०] यज्ञ-सवधी कुलोंमें युक्त । पु० शिव ।

सकपाय-वि० [स०] वासनाभिभूत (वि०) ।

सकसकाना-अ० कि० बहुत डरना ।

सकसना-अ० कि० अयमीन होना; अश्मना ।

सकसाना-अ० अयमीन होना; डर मानना । म० कि० अटसाना ।

सका-पु० दे० 'मक्का' ।

सकाकुल-पु० एक कद, अवर, आनाकर । एक मंदः 'क' तरहकी मिसरी ।-मिसरी-स्त्री० अक्षरमें बनी हुई मिसरी । सकाकोल-पु० [स०] एक नरक (?) । वि० काकोल नामक नरकमें युक्त ।

सकाना-अ० कि० जफा करना, उगना; हिचकना ।

सकास-वि० [स०] कामनायुक्त, इच्छुक, लब्धकाम, नृप काम; कामी, कामवासनायुक्त, फलाकांक्षामें कार्य करनेवाला, प्रेमी, प्रेम करनेवाला ।-निर्जरा-स्त्री० शक्तिमान् होकर भी शत्रुको क्षमा कर देनेकी वृत्ति (अ०) ।

सकामा-वि० स्त्री० [म०] कामपीडिता ।

सकामारि-पु० [स०] कामियोंके शत्रु, शिव ।

सकार-पु० [म०] 'म' अक्षर या वमशी ध्वनि; मगण । वि० मक्रिय; फुनील; उत्साही ।

सकारना-म० कि० स्वीकार करना, मजूर करना; मान लेना; हुंड़ीपर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकार कर लेना ।

सकारा-पु० हुंड़ी सकारने और ममय बढ़ानेके लिए लिये जानेवाला धन; * सवेरा ।

सकारे, सकारे-अ० तबके, सवेरे-बाँग देह नित सौंझ सकारे-छत्रप्रकाश; ठीक समयपर; कुछ जल्दी ।

सकाल-वि० [म०] समयविधि । अ० ठीक, समयपर; तबके ।

सकालस-स्त्री० [म०] मारीपन, बोझ; क्लिष्टता ।

सकास-पु० [सं०] सामीप्य; निकटता; परोक्ष; उपस्थिति ।
वि० जो दिखाई देता हो, समीपवर्ती, उपस्थित । अ० पास
समीप ।

सकलना*-अ० कि० सकुचित होना; किसलना; हो
सकना; इकट्ठा होना, बढना ।

सकील-पु० [मं०] वह पुरुष जो यौन निर्बलताके कारण
अपनी स्त्रीको स्वयं संगीग करनेके पहले परपुरुषके पास
भेजता है ।

सक्तील-वि० [अ०] भारी, बोझल, दुष्पाच्य; छिष्ट (शब्द,
भाषा) ।

सकुक्षि-वि० [सं०] एक ही कोखमें उत्पन्न, सहोदर ।

सकुच*-स्त्री० सकोच, लज्जा ।

सकुचना*-अ० कि० लज्जा करना, लज्जित होना; संकु-
चित होना, मुँदना, संपुटित होना ।

सकुचार्ह*-स्त्री० संकोच, शरमिरगी, डबा ।

सकुचाना*-अ० कि० संकोच करना । म० कि० सिको-
चना; सकुचित, लज्जित करना ।

सकुची-स्त्री० लची और कटी पृथ्वाली चर्काके पाटकी
दाबली एक मछली ।

सकुचीला:-वि० सकोची, अर्मात्मा ।

सकुचीली-स्त्री० लाजवती, लज्जान् ।

सकुचोर्ह*:-वि० संकोचशील ।

सकुचनार्:-अ० कि० दे० 'सिकुचना' ।

सकुन*-पु० दे० 'शकुन', शकुन ।

सकुनी*-पु० दुर्घोषनका मामा, शकुनि । स्त्री० पक्षी;
बिल ।

सकुपना*-अ० कि० क्रोध करना ।

सकुण्ड-पु० [सं०] दे० 'सकुण्ड' ।

सकुल-वि० [मं०] सपरिवार; उत्तम कुलका, कुलीन; एक
ही परिवारका । पु० नेबला; रिश्तेदार; एक मछली, सौरी ।
-अ-वि० एक ही परिवारमें उत्पन्न ।

सकुला-पु० भिक्षुओंका नेना ।

सकुलादनी-स्त्री० [मं०] कुटुंबी; सहाराष्ट्री लना ।

सकुली-स्त्री० [सं०] सौरी मछली ।

सकुल्य-वि० [मं०] भगोत्र (मीनरीमें आठवां पीढ़ीतक-
का) । पु० एक ही कुलका, पर दूरका सन्धवी ।

सकुतरा-पु० अमीकोके पूर्वान्तके पामका एक टापू ।

सकुनत-स्त्री० दे० 'सकुनत' ।

सकुनती-वि० दे० 'सकुनती' ।

सकुन्-अ० [सं०] एक बार; किसी समय; फौरन, तत्काल;
माथ; सर्वदा । स्त्री० विद्या ।-प्रज-पु० काक; सिंह ।-

प्रजा-स्त्री० वंशपात्र; शेरनी ।-प्रस्ता-प्रस्तिका-
स्त्री० एक बार बच्चा जननेवाली माय; वह स्त्री जिसने
केवल एक बच्चा उत्पन्न किया है ।-फला-स्त्री० केला ।

-स्व-वि० स्त्री० एक बार या तत्काल बच्चा देनेवाली ।

-स्नानी (विस्)-वि० सिर्फ एक बार स्नान करनेवाला ।

सकुन्-अ० [सं०] 'सकुन्त'का समासगत रूप ।-आगामी
-(मिन्)-पु० बीबीका नार श्रेणियोंमें दूसरी श्रेणी

(जिमें एक बार पुनर्जन्म होनेके बाद मोक्ष प्राप्त हो
जाता है) ।-आच्छिन्न-वि० जो एक ही बारमें कटक

जलग हो गया ।-आहूत-वि० जिसका वृद्ध किरतोंमें न
चुकाकर एकमुस्त चुकाया गया हो ।-गति-स्त्री०
संभावना मात्र ।-गर्भ-पु० खम्बर ।-गर्भा-स्त्री०
एक ही बार गर्भवती होनेवाली स्त्री ।-वीर-पु० वीर
नामक वृक्ष ।

सकुण्डा-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी ।

सकुपण-वि० [मं०] दुःखी, दोन ।

सकुत*-पु० संकेत, इशारा; प्रेमी-प्रेमिकाका मिलनस्थल;

कष्ट, संकट; [सं०] एक आदित्य । † वि० संकीर्ण, तंग ।

सकेतना*-अ० कि० संपुटित होना, संकुचित होना ।

सकेरना*-सं० कि० इकट्ठा करना, समेटना; बँट करना ।

सकेलगा*-पु० वृद्धविशेष ।

सकेलना*-सं० कि० इकट्ठा, जमा करना ।

सकेला-पु० एक तरहका लोहा । स्त्री० इम लोहेकी बनी
तलवार ।

सकेश-वि० [सं०] बालोंवाला; झुराका ।

सकैतव-वि० [सं०] छणी, कपटी । पु० छन्न करनेवाला
व्यक्ति, धूर्त ।

सकोच*-पु० दे० 'संकोच' ।

सकोचना-सं० दे० 'सिकोचना' ।

सकोतरा-पु० दे० 'चकोतरा' ।

सकोपना*-अ० कि० क्रोध करना ।

सकोपित*-वि० क्रुद्ध, नाराज ।

सकोरना*-म० कि० सिकोचना ।

सकोरा-पु० कटोरी जैसा मिट्टीका एक बरतन, कनोरा ।

सकरी-स्त्री० एक छद्म ।

सक्का-पु० [फा०] पनमरा, भिन्ती; एक पक्षी ।-(इक्के)
की बाइशाही-दो-चार दिनकी हुक्मत (निजाय नामके
भिन्तीने हुमायूँको बचनेसे बचाकर इनाममें २॥ दिनकी
बाइशाही पायी और इस बीच राज्यमें चमकेका सिका
चलाया था) ।

सक्त-वि० [सं०] प्रवृत्त, लीन; आसक्त; सलग्न, सदा हुआ;
बद्ध हुआ; मीठा हुआ, संवंध रखनेवाला; सावधान;

बाधित ।-चक्र-पु० शक्तिशाली राष्ट्रोंमें घिरा हुआ राष्ट्र ।

-हिद्(स्),-वैर-वि० शत्रुतामें प्रवृत्त ।-मूत्र-वि०

जिमें कठिनाईके माथ थोषा-थोषा पेशाव उतरे ।-सामंत

-पु० ग्रामसमूहका ताखुबेदार ।

सक्त्य-वि० [सं०] जो पीसा जाय, सत्त् बनाया जाय
(अन्न) ।

सक्ति*-स्त्री० दे० 'शक्ति'; [सं०] लिपटना (विशोंका);
मपक; सवध; आत्मिक ।

सक्तु-पु० [सं०] भूने हुए अन्नका पिसान, सत्त् (विशेष-
कर ओका) ।-कार-कारक-पु० सत्त् बनाने, बेचने-
वाला ।-खानी-स्त्री० सत्त् रखनेका पात्र ।-पिंडी-

स्त्री० सत्त्का बना हुआ छोटा पिंड ।-फला,-फली-

स्त्री० शमी वृक्ष ।-मिश्र-वि० मत्त मिठा हुआ ।-होम

-पु० सत्त्का पिटदान ।

सक्तुक-पु० [सं०] सत्त्; एक वामस्पतिक विध ।

सक्तुल-वि० [सं०] जिसमें सत्त् मिला हो ।

सक्थि-स्त्री० [सं०] जंघा; इड्डि; गाड़ीका लट्टा ।

सकथी-क्री० दे० 'सविथ'।

सकृ०-पु० 'शक्र'। -चतु-पु० इन्द्रपुत्र। -सरोवर-पु० ब्रजस्य इन्द्रकुण्ड।

सकृत्-वि० [सं०] एकमत।

सकारि०-पु० इन्द्रका शत्रु, मेघनाद।

सकिय-वि० [सं०] क्रियायुक्त; कुटीक्षा; अभ्रमशील।

सक्षान-वि० [सं०] सावकाश; बाधुरसत; विजयी।

सक्षम-वि० [सं०] क्षमता-युक्त, शक्तिशाली, समर्थ; क्षमायुक्त।

सक्षर-वि० [सं०] लघणयुक्त।

सख-पु० [सं०] सखा (समासात्मक); खदिरका एक भेद।

सखती-वि० दे० 'सकृत्'।

सखती-क्री० दे० 'सखती'।

सखर-वि० खरा, चौखरा; तेज, उग्र-सखर मुकोमल मजु-रामा०।

सखर-पु० [सं०] एक राक्षस।

सखरच, सखरज-वि० खुलकर अमीरीकी तरह खर्च करनेवाला, शाहखर्च।

सखरणी-पु० दे० 'शिखरन'।

सखरस-पु० मनस्वन।

सखरा-वि० खारा; निखराका लज्जा। पु० कथी रमोई।

सखरी-क्री० कथी रमोई (ढाल-मात आदि)।

सखसा-पु० दे० 'शकस'।

सखसावनी-पु० आरामकुर्ती; पलंग; पालकी।

सखा(क्षि)-पु० [सं०] साथी, संगी; मित्र; सहचर, सहयोगी; नायकका सहचर (ना०); साह। - (क्षि)पूर्व-वि० जो पहले मित्र था। -आव-पु० मैत्री, घनिष्ठता।

-विग्रह-पु० आपसकी लड़ाई।

सखा, सखावत-क्री० [अ०] सखी होना, उदारता, दान-शीलता।

सखिता-क्री०, सखित्व-पु० [म०] मैत्री, दोस्ती।

सखिल-वि० [सं०] मैत्रीपूर्ण।

सखी-क्री० [सं०] सहचरी, सहैली; नायिकाकी मंटेकी (ना०); एक छंद। -आव-पु० अपनेकी उपास्य देवकी पत्नी माननेका भाव। -संप्रदाय-पु० वैष्णवोंका एक प्रदाय जिसमें भक्त अपनेकी उपास्य देवकी स्त्री मानना है।

सखी-वि० [अ०] दाता, दानशील, उदार।

सखुआ-पु० दे० 'साख'।

सखुन-पु० दे० 'सुखन'।

सखोल-पु० [म०] एक प्राचीन स्थान।

सकृत्-वि० [अ०] कथा, कठोर; दृढ़; कठिन; तीखा, तेज (सकृत् धृष्ट); भारी (सकृत् मुष्टिकल); सखती करनेवाला, कठोरहृदय। * क्री० कठिनाई, विपत्ति-मुश्किल परी अब सखत-सुजान। -कलामी-क्री० बटजबानी, कबजे, लोखे बचन कहना। -गरीर-वि० मामान्य दोषपर भी कभी सजा देनेवाला; जालिम। -गरीर-क्री० कठोरता, सखती। -घड़ी-क्री० कष्ट, कठिनाईका काल। -ज्वाब-वि० कटुभाषी, बदबजान। -ज्वाबीन-क्री० मुष्टिकलदोष, काफियेवाणी तरह। -जान-वि० निर्दय;

विसकी जान मुष्टिकलसे निकले; (का०) बेहवाईसे जीनेवाला। -झिज-वि० कठोरहृदय, निर्दय। -पंजा-वि० लोभी। -बाजू-वि० बलवान्। -भिज्ञाज-वि० कोधी। -मुष्टिकल-क्री० भारी कठिनाई। वि० अति कठिन। -लगाम-वि० मुँहजोर, सरकश (घोड़ा)। -सुख-पु० बुरा-मला, शिबकी, भर्त्सना (कहना, सुनना)। सखी-क्री० कथापन; कठोरता; दृढ़ता; कष्ट, कठिनाई; अर्थकष्ट, नंगी; जुलूम, कठोर व्यवहार। मु० सखितर्पण उठाना, सखती उठाना-जुलूम बरदाश्त करना; मुनीशत सेलना। -से-कष्ट, कठिनाईसे (सखीसे दिन गुजारना)-से पेश आना-कहाँ करना, कठोर, निर्दयताका व्यवहार करना।

सख-पु० [सं०] सखापन; मैत्री, दोस्ती, सीहार्द; ईश्वरकी सखा मानकर उपासना करनेका भाव (वैष्णव); समा-नता; मित्र। -विसर्जन-पु० मैत्री-भग।

सख्यता-क्री० मैत्री, दोस्ती (असाधु)।

संगच-वि० [सं०] गंधयुक्त; खुशबूदार; उसी गंधका; अनिमाणी। पु० हाथि, संघधी।

सग-वि० 'साग'का समासगत लघु रूप। -पहती, पहिली,

-पैती-क्री० साग मिलाकर पकायी हुई दाढ़। -भसा-पु० साग मिलाकर पकाया हुआ भात।

सग-वि० सगा, अपना।

सग-पु० [का०] कुत्ता। -ज्ञादा-पु० कुत्तेका बन्ध (गाली)। -बच्चा-पु० पिछा। -बाग-पु० कुत्तेका रखवाला। -बानी-क्री० कुत्तेकी रखवाली। - (गे)-बाजारी-पु० लाबारिम कुत्ता।

सगधी-क्री० छोटा सगध।

सगण-वि० [सं०] ढल या मेनामे युक्त। पु० शिव-छंदःशामका एक गण निम्नमें दो लघुके बाद एक गुरु मात्रा होती है।

सगती-वि० [सं०] शक्ति, सामर्थ्य।

सगन-पु० सगण (पिगल); शकुन।

सगनौती-क्री० शकुन विचारना।

सगपन-पु० दे० 'समापन'।

सगवग-वि० आर्द्र, नर, मराधोर; द्रविण; भीत। अ० जल्दीमे।

सगवगना-अ० कि० आग्रह होना, उद्वेग होना।

सगवगाना-अ० कि० मकपकाना, धक्का जाना; हिलना-डुलना; नर होना; सगधोर होना।

सगवगसा-पु० साग मिलाकर पकाया हुआ भात।

सगर-वि० [सं०] विषयुक्त। पु० एक अहंत्; एक स्व-गंधी राजा जिनके साठ हजार पुत्र थे (कहा जाता है कि ये सभी लड़के अश्वमेध यज्ञके घोड़ेकी नलाशमे पातान् पढ़ने जहाँ वे कपिलधर चोरीका लांछन लगानेके कारण उनके क्रोधानलमें भस्म हो गये और कई पीढ़ियोंके बाद अगिरयने गंगाका प्रवाह वहाँ तक उनका उद्धार किया)।

सगरा-पु० मागर; गाला-वि० 'काहे के बाबुल मगर खोदावेउ'-गीत।

सगरा-वि० मध, ममल। पु० गालाव; झील।

समर्थ-वि० [सं०] सगा, सहोदर (भाई); जिसके पते अभी खुले न हों (पौधा) । पु० सगा भाई ।
समर्थ-स्त्री [सं०] गर्भवती स्त्री; मगी बहन ।
सगर्भ-वि० [सं०] सभोदर । पु० सहोदर भाई ।
सगल-वि० सकल, सब ।
सगलगी-स्त्री सगापन, अपनापन दिखाना; सुशा-मद, चापवृत्ती ।
सगवती-स्त्री दे० 'सगौती' ।
सगवारा-पु० गाँवके पासकी उममे संवद्ध भूमि ।
सगा-वि० एक माँ-बापसे उत्पन्न, सहोदर; निकट संबंधी ।
-पत्र-पु० आत्मीयतापूर्ण संबंध, सगा होनेका भाव ।
सगाई-स्त्री मैंगनी, विवाहका ठहराव, नाता, रिश्ता; निश्चय या परिरक्ताका एक तरहका विवाह या विवाह जैसा संबंध ।
सगाबी-स्त्री एक तरहका नेवला; ऊँटविलाव ।
सगारत-स्त्री सगापन ।
सगीर-वि० [अ०] छोटा; कमउम्र; अदना । -**सिन-वि०** छोटी उम्रका । -**(से) कबीर-पु०** छोटे बच्चे ।
सगुण-वि० [सं०] व्यायुक्त; गुणवान्, सद्गुणसंपन्न; भौतिका; साहसिक गुणोमे युक्त (स्थान) । पु० सत्त्व, रज, तममे युक्त ब्रह्म; ईश्वरके सगुण रूपकी उपासना करनेवाला संप्रदाय-विशेष ।
सगुणा (गिन्)-वि० [सं०] सद्गुणोंपुं युक्त, धार्मिक ।
सगुणोपासना-स्त्री [सं०] साकार ब्रह्मकी उपासना ।
सगुन-पु० शुकुन । वि०, पु० दे० 'सगुण' ।
सगुनाना-अ० कि० शुकुन विचारना, शुकुन बनलाना ।
सगुनिया-पु० शुकुनका विचार करनेवाला ।
सगुनीती-स्त्री शुकुन विचारने, निकालनेकी क्रिया ।
सगुरा-स्त्री जिसने गुरुसे दीक्षा ली हो ।
सगृह-वि० [सं०] सपरिवार, घर-गृहस्थीवाला ।
सगोत्र-वि० पु० दे० 'सगोत्र' ।
सगौती-वि० एक ही गोत्रका । पु० एक ही गोत्रके लोग, भाईवध ।
सगोत्र-वि० [सं०] एक ही गोत्रका । पु० एक ही गोत्रका व्यक्ति, नपण, पिंडदान आदि साथ करनेवाला व्यक्ति, एक ही कुलका व्यक्ति; दूरका संबंधी; वंश, स्थानाना ।
सगौतीमर-पु० सलगौन, झाल वृक्ष ।
सगौती-स्त्री खानेका गोष्ठ, कलिया ।
सगग-पु० सामान होनेकी गायी या ठेला जिसे आदमी खींचते हैं ।
सगिध, सगिधित-स्त्री [सं०] एक साथ भोजन करना, सहभोजन ।
सगह-वि० [सं०] ध्वजियालीसे पूर्ण (नदी); गृहाटिसे घना; प्रसन्न (चंद्रमा) ।
सघन-वि० [सं०] घना, गहना; ठोस; मेघाच्छन्न ।
सघनता-स्त्री [सं०] निविधता ।
सघकी-वि० स्त्री सग, सारी ।
सघ्नक-वि० [सं०] जिसपर चंद्रमा जैसे जुड़े हों ।
सघ-पु० सखी मात । वि० सत्य, ज्योकी त्यों (कहीं, देभी, सुनी बात); [सं०] संबद्ध; पूना-सत्कार करनेवाला ।

-सुख-अ० [हि०] वस्तुतः, यथार्थमे, निस्संदेह ।
सचकित-वि० [सं०] आश्चर्यमे पड़ा हुआ, विस्मित; भयमे काँपता हुआ ।
सचक-वि० [सं०] पहिचोना; सचकयुक्त; ससैन्य ।
सचकी (किन्)-पु० [सं०] सारवि ।
सचन-पु० [सं०] सेवा-टहल । वि० जो सहायता, सेवा करनेका उद्यम रहे ।
सचना-अ० कि० पूरा करना-‘बहु कुछ शोणित सों भरे पितृ-तर्पणादि किया सची’-रामचंद्रिका; सजाना; जमा करना, षटोर्गना । अ० कि० प्रसन्न होना ।
सचर-पु० [सं०] सफेद कटसरैया । * वि० सचल, चलायमान, जगमग ।
सचरना-अ० कि० फैलना; प्रचलित होना; प्रसिद्ध होना; प्रवेश करना ।
सचराचर-वि० [सं०] जिसमें स्थावर-जगम सभी हों । पु० विश्व ।
सचल-वि० [सं०] चलनेकी शक्तसे युक्त, जगमग । पु० जंगम पदार्थ ।
सचलता-स्त्री [सं०] गतिशीलता ।
सचल लवण-पु० साँवर नमक ।
सचाई-स्त्री सलता; ईमानदारी; वास्तविकता ।
सचान-पु० बाध, दयेन ।
सचराना-अ० कि० फैलाना, संचारित करना ।
सचार-वि० [सं०] बहुत सुंदर ।
सचावटी-स्त्री सचाई ।
सचित-वि० [सं०] चिंतयुक्त, चिंतित ।
सचि-पु० [सं०] मित्र; मैत्री, घनिष्ठता । स्त्री० इंद्र-पत्नी ।
सचिक्कण-वि० [सं०] बहुत चिकना ।
सचिक्कन-वि० दे० 'सचिक्कण' ।
सचिद-वि० [सं०] ज्ञान, चेतनायुक्त ।
सचिक-पु० [सं०] चितन, मनन ।
सचित्त-वि० [सं०] बुद्धिमान्, प्रज्ञा-विशिष्ट; सावधान; जिसका ध्यान किसी एक विषयपर हो ।
सचित्र-वि० [सं०] चित्रोंसे युक्त; चित्रित ।
सचिक्क-वि० [सं०] क्लिब-चक्षुः; क्षीन-बटि ।
सचिध-पु० [सं०] साथी, मित्र; भत्री, अमात्य, बजीर; काला धतूरा ।
सचिवता-स्त्री, **सचिवत्व-पु०** [सं०] संचित, बजौरत ।
सचिवालय-पु० [सं०] एक तरहका कमल रोग; विसर्प ।
सची-स्त्री [सं०] दे० 'सची'; अगर । -**नंदन-सुत-पु०** जयत; चैतन्यदेव ।
ससु-पु० सुख, आनंद; प्रसन्नता ।
ससेत-वि० चेतनाविशिष्ट; समझदार; सावधान, सतर्क ।
ससेतन-वि० [सं०] चेतनायुक्त; समझदार, सजान; सावधान । पु० सजान प्राणी ।
ससेता (सस्)-वि० [सं०] समझदार; एकमत ।
ससेती-स्त्री सतर्कता, सावधानी ।
ससेल, ससेल-वि० [सं०] बसा-छादित बसयुक्त ।
ससेष्ट-वि० [सं०] चेष्टाशील; चेष्टा करनेवाला । पु० आमका पेड़ ।

सचरित, सचरित्र-वि० [मं०] अच्छे चरित्रका, सदा-
चार्यो। पु० अच्छा आचरण, सदाचारियोंका वृत्त।

सचर्या-को० [सं०] उत्तम आचरण, सदाचार।

सच्चा-वि० सच बोलनेवाला; ईमानदार; बराबर; विशुद्ध;
ठीक। -ई-को०, -पन-पु० सत्यता; ईमानदारी।

-इट-को० सच्चापन, सचाई (क्र०)।

सच्चाक-पु० [सं०] अदरकका पना।

सच्चार-पु० [सं०] अच्छा गुप्तचर; संपत्तिका रक्षक।

सच्चार-को० [सं०] हलदी।

सचिकन-वि० दे० 'सचिकण'।

सचिद्-पु० [सं०] ब्रह्म जो सत् और विद्से युक्त है।

सचिदानन्द-पु० [मं०] मत्, चिद्, आनन्दस्वरूप ब्रह्म।

सचिन्मय-वि० [सं०] सत् और चैतन्य स्वरूप, मत् और
चैतन्यसे युक्त।

सच्छब्द-वि० दे० 'सच्छब्द'।

सच्छब्द-वि० वायल।

सच्छाव-वि० [सं०] छायादार; सुंदर रंगोवाला, चमक-
दार; एक ही रंगका।

सच्छास्त्र-पु० [सं०] अच्छा सिद्धांत-ग्रन्थ।

सच्छिद्र-वि० [सं०] छेददार; सरोवर।

सच्छी-पु० को० दे० 'साक्षी'।

सच्छील-पु० [सं०] सदाचार। वि० शीलवान्, उदार-
भाव।

सच्छ्लोक-वि० [सं०] जिसका अच्छा नाम हो।

सच्च्युति-वि० [सं०] स्थूलनयुक्त। को० सदल यात्रा (?)।

मच्छब्द-वि० सपरिकर।

सज्जबाल-वि० [सं०] एकमय, कीचड़दार।

सज-को० सजना, सजवट; रूप, आकृति; शोभा; † एक
वृक्ष। -दार-वि० सुशौल, अच्छी आकृतिका, सुंदर।
-पञ्च, -बज-को० सजावट, बनावट-धारा; ठाटपाट।

सजग-वि० सतर्क, सावधान, होशियार।

सजर्गा-पु० दे० 'महिजन'।

सजग-पु० [मं०] एक ही परिवारके आदमी, संधी; पति,
प्रियतम; सज्जन। वि० जनयुक्त; मनुष्योंमें बसा हुआ।

सजगपद्-वि० [मं०] एक ही देशके (व्यक्ति)।

सजना-अ० क्रि० वस्त्राभूषणमें अलंकृत होना; उत्तम
लवना, फवना, भला जान पड़ना; बुद्धादिके लिए तैयार
होना। स० क्रि० धारण करना; सजाना, व्यवस्थित
करना। पु० सहजिन; † प्रियतम।

सजनी-को० सखी, सहेली।

सजनीय-वि० [सं०] प्रसिद्ध, ख्यात (?)।

सजनु-वि० [सं०] एक साथ उत्पन्न।

सजप-पु० [सं०] यतियोंका एक भेद।

सजक-वि० [सं०] जलयुक्त, नीमा हुआ; अक्षुपूर्ण आव-
रा, चमकदार। -नयन-वि० जिसके नेत्र अक्षुपूर्ण हैं।

सजला-वि० मँसलेमें छोटा, सँसला। वि० को० [सं०]
जलसे युक्त।

सजबधा-पु० सजावट, तैयारी-‘बहुतन अस गढ कीन्ह
सजवना’-पं०।

सजवाई-को० सजानेकी क्रिया या पारिश्रमिक।

सजवाना-स० क्रि० किसीकी सजनेके काममें प्रवृत्त
करना।

सजा-को० [का०] बदला; अपराधका बदला; दंड;
जुर्माना। -पूनीत-को० प्राणदंड, फौसीकी सजा।

-बाप्रता-वि० दंडप्राप्त, दंडित। -बाब-वि० सजा
पानेवाला, दंडका अधिकारी। -बाब-वि० योग्य अधि-
कारी; शुभ; सुफल देनेवाला (हीना)। -बाब-वि०
दंड पाने योग्य, दंडनीय-‘फकत इस सजाके सजावार है
हम’। सु० -का सजा मिलना-कियेका फल मिलना।

सजाह-को० सजा, दंड।

सजाई-को० सजानेकी क्रिया; सजानेकी मजदूरी।

सजागर-वि० [सं०] जागरूक; सावधान, सतर्क।

सजात-वि० [सं०] साथ उत्पन्न, एक ही समय उत्पन्न;
संबंधियोंमें युक्त। -काम-वि० संबंधियोंपर शानम
करनेका इच्छुक।

सजाति-वि० [सं०] एक ही जाति या वर्गका; एक जैमा।
पु० एक ही जातिके पुरुष और स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र।

सजातीय-वि० [सं०] दे० 'सजाति'।

सजात्व-पु० [मं०] आरत्व, मवध, रिहना। वि०
सजातीय।

सजान-वि० मशान, जानकार।

सजाना-म० क्रि० संवारना, सुसज्जित करना; व्यवस्थित
करना।

सजानि-वि० [मं०] सपत्नीक।

सजाय-वि० [मं०] मपत्नीक, विवाहित। * स्त्री० दे०
'सजा'।

सजार, सजाह-पु० शय्यक, माई।

सजाल-वि० [मं०] अयालवार, धंमरयुक्त।

सजाव-पु० शहीका एक प्रकार (थह दूध मूत्र खौलाकर
बिना मलाई निकाले जमाया जाता है); सजावट।

सजावट-को० अलंकरण, सज्जा; शोभा; तैयारी।

सजावज-पु० अलंकरण; तैयार, सुसज्जित करना।

सजावज-पु० [सं०] मालगुजारी या मरकारी रूपका
बसूल करनेवाला; दारोगा।

सजावली-को० सजावलका पद या काम।

सजिवा-पु० दे० 'महिजन'।

सजीड-वि० दे० 'सजीव'।

सजीला-वि० सजधज्जाला, सजधज्जमें रहनेवाला, छेला
मुदोल, सुंदर।

सजीव-वि० [सं०] सप्राण, प्राणयुक्त, जीविन; ज्यायुक्त।
पु० प्राणी।

सजीवता-को० [सं०] सजीव होनेका भाव।

सजीवन-पु० सजीवनी वृद्धी। -वृद्धी-को० रुद्रवती।

-मूर, -मूल-पु० सजीवनी वृद्धी।

सजीवनी-को० दे० 'सजीवन'। -मंत्र-पु० मृतकको
जिंदाबनाकर कल्पित मन्त्र; कार्यसाधक उपाय।

सजीह-पु० [का०] प्रकृति, स्वभाव; मिजाज।

सजु(ब, स)-वि० [मं०] प्रिय; साथ रहनेवाला। पु०
मित्र; साथी।

सजुग-वि० दे० 'सजग'।

सङ्गता-स्त्री० एक छंद ।
 सङ्गरी-स्त्री० एक मिठाई ।
 सजोना-अ० कि० भंगार कटाना, सज्जित करना; तैयारी करना, सामान आदि ठीक करना ।
 सजोवस-वि० दे० 'सँजोव' ।
 सजोव-वि० [सं०] समान प्रीतिवाले; मेलन-काम करने-वाले ।
 सजोवण-पु० [सं०] माथ-माथ आनंदोपभोग करना; पुरानी प्रीति ।
 सज-वि० [सं०] सजा हुआ; तैयार; सज्जित होने से युक्त; दे० 'सज्य' । -कर्म(श्)-पु० सजने, तैयार होनेकी क्रिया; धनुष चढ़ाना ।
 सज्जन-पु० [सं०] लज्जकाना; शौधना; सज्जना; हाथी आदिको बसादिते सज्जित करना; तैयारी करना; हथियारोंसे लैस होना; बाट, विशेषकर सीढ़ीदार; पहरे-दार; तैयारी; कुलीन व्यक्ति; भला जादमी; भिय-यक्ति ।
 सज्जनता-स्त्री० [सं०] सौजन्य, भलमसी ।
 सज्जनताई-स्त्री० दे० 'सज्जनता' ।
 सज्जना-स्त्री० [सं०] सज्जावट; तैयारी; राजा आदिकी सवारीके लिए हाथीको सज्जाना ।
 सज्जा-स्त्री० [सं०] पोशाक, सजावट; सज-सामान; कौजी मामान, कवच आदि; [हिं०] शय्या ।
 सज्जाद-वि० [अ०] मिजदा करनेवाला, पूजक, उपासक ।
 सज्जादा-पु० [अ०] नमाज पढ़नेका आसन, जानमात्र; किसी माधु-मनकी गंधी । -नशी-वि० गरीबर (ककीर, भट्ठन) ।
 सज्जित-वि० [सं०] सजा हुआ, अलंकृत; मामान आदिते युक्त, तैयार; हथियारोंसे लैस ।
 सज्जी-स्त्री० एक प्रकारकी क्षारयुक्त मिट्टी । -खार-पु० सज्जी । -बूटी-स्त्री० एक क्षुप जिसमें सज्जीखार बनाते हैं ।
 सज्जता-स्त्री० एक वृक्ष ।
 सज्ज-वि० [सं०] अच्छे लोगोंकी भिय; सुखकर ।
 सज्जान-वि० [सं०] शान्तयुक्त; बुद्धिमान्, समझदार ।
 सज्य-वि० [सं०] उपायुक्त (धनुष) ।
 सज्या-स्त्री० शय्या ।
 सज्योस्त्रा-स्त्री० [सं०] चाँदनी रात ।
 सज्जिदारी-पु० हिस्सेदार ।
 सज्जिदारी-स्त्री० साक्षा, साक्षीदारी ।
 सज्जिया-पु० हिस्सेदार; साक्षा ।
 सटकार-वि० [सं०] प्रसिद्ध, ख्यात ।
 सट-पु० [सं०] दे० 'सटा'; आक्षेप पिता और भति माता-में उत्पन्न व्यक्ति ।
 सटक-स्त्री० लचनेवाली पतली छसी; लबा; मुकनेवाला नंगा; चुपकेसे चल देनेकी क्रिया ।
 सटकना-अ० कि० धीरेसे खिसक जाना । सं० कि० नाज निकालनेके लिए बाँट पीटना ।
 सटकाना-सं० कि० छकी आदिते मारना; 'गुच्छु' ध्वनि उत्पन्न करते हुए हुका पीना ।

सटकार-स्त्री० सटकानेकी क्रिया; सटकारना; गी आदिको हॉकना ।
 सटकारना-सं० कि० छकी आदिते मारना; सटकारना ।
 सटकारा-वि० चिकना और लंबा ।
 सटकारी-स्त्री० पतली, लचीली छकी ।
 सटका-पु० हापट, दौड़ । मु०-जानना-तेजीसे जाना ।
 सटना-अ० कि० दो वस्तुओंका एक साथ लग जाना; चिपकना; साप होना; मैथुन होना; † काठी-छंटे आदिमें मार-पीट होना ।
 सटपट-स्त्री० हिचकिचाहट, संकीच; द्विषिषा ।
 सटपटाना-अ० कि० संकीच करना, हिचकिचाना; बीचका होना; दब जाना; 'सटपट' शब्द करना ।
 सटर-पटर-वि० तुच्छ; बहुत मामूली । स्त्री० शंखट, 'बखेबा; जदनी चीज ।
 सट-सट-अ० 'सट-सट' शब्द करते हुए; जल्द, फौरन ।
 सटाक-पु० [सं०] सिंह ।
 सटा-स्त्री० [सं०] साधुओंकी भट; शेरका अवाक; सूरका बाक; करी; नृका; कर्ली, शिख ।
 सटाक-पु० 'सट'की ध्वनि ।
 सटाकी-स्त्री० पैनेके सिरेपर बँधी हुई चमकेकी पट्टी ।
 सटान-स्त्री० सटनेकी क्रिया; जोड़ ।
 सटाना-सं० कि० जोड़ना, मिलायना; चिपकाना ।
 सटाल-वि० [सं०] अवालवाला; ...ने युक्त वा पूर्ण । पु० सिंह ।
 सटाल-पु० [सं०] कथा फल ।
 सटि-स्त्री० [सं०] शटी, कचूर ।
 सटिका, सटी-स्त्री० [सं०] जंगली कचूर ।
 सटिकल-वि० घटिया ।
 सटिया-स्त्री० सोने-चाँदीकी चूड़ी; सिंदूर भरनेकी चाँदीकी शलाका; पहरायन रचना; * छड़ी, सौटी ।
 सटीक-वि० [सं०] टीका, व्याख्यासे युक्त; बिल्कुल ठीक (हिं०) ।
 सटोरिया-पु० दे० 'मट्टिया' ।
 सट-पु० [सं०] दरवाजेकी चौखटमें दोनों पाशोंमें लगायी जानेवाली लकड़ियों ।
 सटक-पु० [सं०] प्राकृत भाषामें रचित एक उपरूपक; जीरा मिला हुआ तक ।
 सट्टा-पु० इकारानामा; बाजार । -बट्टा-पु० मेल-जोल; छलपूर्ण उपाय (लड़ाना) । - (दे) बाज़-पु० अधिक लाभकी आशासे जोखिम उठाते हुए भी जीविका सौदा करनेवाला । -बाज़ी-स्त्री० सट्टाबाजका काम ।
 सट्टी-स्त्री० किसी एक चीजका बाजार । मु०-अपमाना-शोरगुल करना । -लगावना-चौजे अस्त-व्यस्त करना ।
 सट्टा-स्त्री० [सं०] एक तरहका पक्षी; एक वाय यंत्र (संगीत) ।
 सट-दे० 'सॉटि'-'किहिंगो इट के सट-हानि लई'-धन ० ।
 सट-वि०, पु० दे० 'शट' । -सा-स्त्री० शठता; मूर्खता ।
 सट्टा-स्त्री० दे० 'शठता' ।
 सटि-स्त्री० [सं०] कचूर ।

सट्टिबाना-अ० कि० साठ वर्षकी अवस्थाका होना; दृढ होना; शरीरकयके कारण मानसिक शक्तिका हास होना ।
सठेरा-पु० सनका विना छालका ढंढल, सनई, सखई ।
सठेरा-पु० दे० 'सो'ठेरा' ।

सबक-झी० मनुष्यों, सवारियों आदिके गमनागमनके योग्य बना हुआ चौथा मार्ग; मार्ग, रास्ता ।
सबका-पु० सटका ।

सबक-झी० सबनेकी किया ।
सबना-अ० कि० किसी चीजका गलना, संयोजक तत्वोंका अलग-अलग हो जाना; घुरी हालतमें रहना ।

सबसठ-वि० साठसे मात अधिक । पु० साठ और सातकी सख्या, ९७ ।

सबसी-झी० दे० 'संबसी' ।

सबाँ-पु० बच्चा देनेपर गायोंकी सिलायी जानेवाली एक तरहकी दवा ।

सबाँई-झी० दे० 'सबाँय' ।

सबाक-झी० पतली छड़ी आदि सटकारनेकी आवाज; श्रोत्रता ।

सबान-झी० सबनेकी किया ।

सबाना-स० कि० किसी चीजकी सबनेमें प्रवृत्त करना; घुरी हालतमें रहना ।

सबायँ-झी० सही हुई चीजसे निकलनेवाली दुर्गंध ।

सबाव-पु० सबनेकी किया या स्थिति ।

सबासब-अ० 'सब-सब'की ध्वनिके साथ ।

सबिबल-वि० सड़ा, गला हुआ; खराब, रदी; नीच, तुच्छ ।

सब-पु० [सं०] दे० 'शुण' । -तूल-पु० सनके नेत्रे । -

सुन्न-पु० सनकी रस्ती ।

सतंन-वि० [सं०] तद्रात्रिक, ड्रात ।

सत-वि० सत्य, यथार्थ । पु० सचार्थ, यथार्थता; सत्य, किसी पदार्थका सार, मूल तत्व; जीवशक्ति । -कार-पु० आदर-सम्मान । -गुरु-पु० अच्छा गुरु; परमात्मा ।

-जीत-पु० सत्यजित् । -जुग-पु० सत्यजुग । -आब-पु० आब-पु० सद्भाव । -युग-पु० सत्यजुग । -बंती-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

सत-वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । -कोन-वि० सात कोनोंवाला । -गँडिया-झी० एक वनस्पति जो तत्कारी बनानेके काम आती है । -दंता-वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । -पतिया-झी० एक तरहकी तरौंध; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्रुणी । -पुतिया-झी० एक तरहकी तरौंध । -परी-झी० सती, पतिव्रता । -संग-पु०, -संगति-झी० अच्छी संगति । -संगी-वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । सु० -पर कदना-सती होना । -पर रहना-पातिव्रत्यका पालन करना ।

सत-वि० सौ० । -दुल-पु० शनदल, कमल । -पत्र-पु० कमल । -परबारी-पु० बंस । -मल-पु० द्र ।

-मूली-झी० शतमूली, सतबर ।

महीनेपर हुई हो; गर्मस्थितिके सातवें मासमें होनेवाला उत्सव । -रंग-वि० सात रंगोंवाला । -रंगा-वि० सात रंगोंवाला । पु० रत्नयुग । -कबा-वि० सात लक्षियोंवाला (हार) । -कली, -करी-झी० सात लक्षियोंका हार । -सई-झी० पात सौ पत्तोंवाला ग्रंथ ।

सतकाइना-स० कि० और-सम्मान करना ।

सतत-वि० [सं०] अविच्छिन्न (समासमें) । अ० हमेशा, सर्वदा । -ग, -गति-पु० वायु । -ज्वर-पु० हमेशा बना रहनेवाला ज्वर । -दुर्गत-वि० हमेशा कष्टमें रहनेवाला । -छुति-वि० जो हमेशा खटसंकष्ट हो । -मानस-वि० हमेशा किसी ओर मन प्रवृत्त करनेवाला । -बायी (विन्)-वि० सततगतिशील; क्षय-शील । -शाकी (विन्)-वि० हमेशा अध्ययन करनेवाला । -समितभियुक्त-पु० एक बोधिसत्त्व । -स्पर्दन-वि० हमेशा स्पर्दन करनेवाला ।

सततक-वि० [सं०] दिनमें दो बार होनेवाला (ज्वर) ।

सततामिबोग-पु० [म०] हमेशा किसी काममें लगा रहना ।

सतति-वि० [सं०] अविच्छिन्न ।

सतत्व-पु० [सं०] स्वभाव, प्रकृति । वि० सत्यका ज्ञान-कार ।

सतनज-पु० सात तरहके अनामोंका मिश्रण ।

सतनी-झी० सप्तपर्णा, छतिवन; एक ऊँचा पेड़ ।

सतनु-वि० [सं०] शरीरवाला; शरीरयुक्त ।

सतबरबा-पु० एक नेपाली वृक्ष जिसमें कागज बनाया जाता है ।

सतमसा-झी० [म०] एक नदी ।

सतमस्क-वि० [सं०] अंधकाराच्छन्न ।

सतरंज-पु०, झी० दे० 'शतरंज' ।

सतरंजी-झी० दे० 'शतरंजी' ।

सतर-वि० बक, डेढ़ा, कुटिल; बड़। झी० [अ०] पक्ति, लकीर । -बंदी-झी० इम तरह लिखना कि ऊपर-नीचे लकीर खींचनेमें अक्षरोंकी मापाने, मरकज आदि कंटे नहीं ।

सतर-पु० [अ०] छिपाना; झी० या पुरुषका गोपनीय स्नान, गुहाग; परदा । -पोश-वि० (बहू चीज) जिससे तन ढाँके, लज्जा-निवारण करें । -पोशी-झी० तन ढाँकना, लज्जा-निवारण ।

सतरकी-झी० सतरहवें दिन किया जानेवाला मृतक कर्म ।

सतरह-वि०, पु० दे० 'सतरह' ।

सतराना-अ० कि० कोप, गुस्सा करना, कुदना, विगडना ।

सतराइट-झी० कोप, रोष ।

सतरी-झी० सर्पट्टा नामकी ओपधि ।

सगरीह-वि० कोपयुक्त; कोपवृत्तक -'मतराई' मोहन नदी बुरे दुराये नेह'-मनिराम ।

सतक-वि० [म०] तर्कयुक्त, तर्कपूर्ण; तर्ककुशल, विवेक-शील; संवेदन, सावधान ।

सतकता-झी० [सं०] सावधानी, होशियारी ।

सतर्पना-स० कि० अच्छी तरह संतुष्ट, पूज करना ।

सतर्ष-वि० [सं०] नृपति, ध्यामा ।

सतल-वि० [सं०] तल्युक्त; वैदेवाला ।

सतलज-स्त्री० पंजाबकी एक नदी, अतद् ।

सतह-स्त्री० [अ०] बस्तुका ऊपरी भाग; तल; वह बस्तु जिसमें ऊँचाई-चौड़ाई भर हो। गहराई न हो (गं०); जलका ऊपरी भाग; फर्श; छत । —(हे) आब-स्त्री० नदी आदि-के जलका ऊपरी भाग । —झमीव-स्त्री० पृथ्वीतल ।

सतहत्तर-वि० सत्तरसे सान अधिक । पु० सत्तरसे सान अधिककी संख्या, ७७ ।

सतही-वि० सतहका, ऊपरी; जिसमें गहराई न हो ।

सताह-पु० रघ-‘कोउ तुरग चडि, कोउ मगग चडि, कोउ सताग चडि भाये’-रघुराज ।

सतानंद-पु० [सं०] गौगमके पुत्र जो राजा जनकके पुरोहित थे, शतानन्द ।

सताना-म० कि० पीड़ित करना, कष्ट देना; परेशान करना ।

सतार-पु० [मं०] ग्यारहवाँ स्वर (जै०) । वि० गाराओमें युक्त ।

सतारक-पु० [सं०] कुष्ठ रोगका एक भेद ।

सतारू-पु० ३० ‘मनारू’ ।

सतारू-पु० दे० ‘मनारू’ ।

सताबना-स० कि० दे० ‘मनाना’ ।

सतावर-स्त्री० एक बेल जो झाड़दार होती है और दवाके काम आती है; शतावर ।

सतायी-वि० अन्धोमें सान अधिक । पु० सतायीकी मग्या; ८७ ।

सति-स्त्री० दान; अन्न, नाश । * वि०, पु० दे० ‘सत्य’ ।

सतिमा-स्त्री० सौतेली माँ ।

सतिचन-पु० सतपण, छतिचन ।

सती-स्त्री० [सं०] मायवी, पतिव्रता स्त्री; पतिके शवके साथ जल जानेवाली स्त्री; माता पशु; सन्ध्यामिनी; एक नरहकी सुगन्धि मिट्टी; विश्वामित्रकी स्त्री; दुर्गा; अगिराकी एक स्त्री; दक्षकी एक कन्या; एक वृत्त । —खीरा-पु० [हिं०] किसी सतीके स्मारकके रूपमें बना हुआ चतुर्तरा ।

—दोषोष्माद्-पु० मगीके प्रति दुष्ट भाव प्रदर्शित करनेके कारण कियोंकी होनेवाला उष्माद् रोग । —पुत्र-पु० मायवी कीका पुत्र । —व्रत-पु० पतिव्रत । —व्रता-स्त्री० पतिव्रता स्त्री । —सर(म्)-पु० कदमीरकी एक शील । सु० —होना-पतिके शवके साथ जल मरना; किसीके पीछे परेशान होना, मर मिटना ।

सती-पु० सत्यका अनुयायी-‘राजा रंक, जती सती, करत सोई ब्यवहार’-रामकल्या ।

सतीक-पु० [सं०] जल ।

सतीव-पु० [मं०] सती होनेका भाव, पातिव्रत्य ।

—हरण-पु० सतीव नष्ट करना ।

सतीव-वि० [मं०] यथार्थ, वास्तविक । पु० मटरका एक भेद, कलाय; बाँस; जल ।

सतीवक-पु० [सं०] मटरका एक भेद, कलाय ।

सतीपव-पु० दे० ‘सतीव’ ।

सतीर्य-वि० [सं०] तीर्थयुक्त । पु० सहाय्याधी, माथ

अध्वजन करनेवाले ब्रह्मचारी शिव ।

सतीर्य-पु० [सं०] सहाय्याधी, साथ पदनेवाले ब्रह्मचारी ।

सतीर्य-पु० [सं०] बाँस; वायु; कलाय ।

सतीर्यक-पु० [सं०] कलाय ।

सतीर्य-स्त्री० [मं०] कलायका एक भेद ।

सतुआ-पु० मुने हुए अन्नका चूर्ण, सक्त, सत्त । —संक्रांति-स्त्री० वैषकी संक्रांति (जिस दिन सचके दान और भोजनका विधान है) । —सोंठ-स्त्री० एक तरहकी सोंठ ।

सतुआन-स्त्री०, पु० दे० ‘सतुआ-संक्रांति’ ।

सतुप-वि० [सं०] भूमीवाला । पु० तुषयुक्त अन्न ।

सतुप-पु० [फा०] खमा, स्तंभ ।

सतुना-पु० बाजके झपटनेका एक ढंग ।

सतुट(व), सतुप, सतुण्या-वि० [सं०] ध्यामा, धृष्टुक ।

सतेजा(जस्)-वि० [मं०] कात्तिकुक्त; जीव-शक्ति-संपन्न ।

सतेर-पु० [सं०] भूमी ।

सतेरक-पु० [सं०] शत, मोसिम ।

सतेस-स्त्री० कुरती, श्रितात ।

सतोखना-म० कि० मतीय देना; दादम दिखाना; मनुष्य करना ।

सतोखनी-पु० दे० ‘सत्खण्ण’ ।

सतोखणी-वि० [सं०] सत्खण्णसे युक्त ।

सतोदर-पु० दे० ‘शतोदर’ ।

सतौलार-पु० प्रसवके सानवे दिन किया जानेवाला प्रसूताका खान ।

सतौसर-पु० सान लकियोंका हार ।

सत्-वि० [सं०] सत्तायुक्त; वर्तमान, विद्यमान; ब्यवार्थ, सत्य; व्याधी; मला, धार्मिक; पवित्र; उच्च, उत्तम; उचित; सम्मान्य; विद्वान्, चतुर; सुदर; धीर । पु० मत, मज्जन, धार्मिक व्याक्ति; वह जिसका अस्तित्व हो; यथार्थता, सत्य; ब्रह्म । —कथा-स्त्री० अच्छी बातों या कथा । —कदंब-पु० कदंबका एक भेद; कैलिकदंब । —करण-पु० मत्कार करना; अंत्येष्टि किया । —कर्तव्य-वि० जिसका सम्मान करना हो । —कर्ता(तुँ)-वि० अच्छा काम करनेवाला; हितैषी; मत्कार करनेवाला । पु० विष्णु । —कर्म(ज्)-पु० नेक काम, पुण्य कर्म; वेदविहित कर्म; मत्कार; अर्थहि; प्रायश्चित्त । —कर्मा(संज्)-वि० अच्छा काम करनेवाला । —कला-स्त्री० ललित कला । —कवि-पु० उत्तम कवि; सुकवि । —कांचनार-पु० रत्नकांचन वृक्ष । —काट-पु० बाज; चील । —कायवटि-स्त्री० शत्रुके बाद आत्मा, शरीर आदिकी सत्ताका भ्रांत निदान (नौ०) । —कार-पु० आदर-सम्मान, आवभगत; आतिथ्य; देखभाल; पूर्व, उत्सव; दाबत । —कार्य-वि० सम्मानके योग्य; जिसकी अर्थेष्टि की जाय । पु० कारणमें कार्यका निहित रहना (सं०); अच्छा काम । —बाद्-पु० कारणके अभावमें कार्यकी उत्पत्ति न माननेका निश्चांत । —किष्कु-पु० चार फुटकी एक प्राचीन माप ।

—कीर्ति-स्त्री० सुप्रश, अच्छी कीर्ति । वि० जिसका अच्छा नाम फैला हो । —कुल-पु० उत्तम कुल । वि० कुलीन, सर्वप्रजात । —कुलीन-वि० अच्छे वंशका ।

-कृत-वि० अच्छी तरह किया हुआ; पूजित; सम्मानित; जिसकी आवश्यकता की गयी हो; जिसका अच्छा स्वागत किया गया हो। पु० शिष्य; सम्मान; आतिथ्य; पुण्य कार्य। -कृति-स्त्री० अच्छा कर्म करना, पुण्य; सद्व्यवहार; आदर-सत्कार। -क्रिय-वि० अच्छा कर्म करनेवाला। -क्रिया-स्त्री० नेक काम, पुण्य; व्यवस्थित करना; व्याख्या; आतिथ्य; सौजन्य; संस्कार; श्रुतकर्म। -पत्र-पु० कुसुद आदिका नया पत्र। -पथ-पु० सुमार्ग, अच्छी सड़क; सदाचार; शास्त्रविहित सिद्धांत। -पथीन-वि० सुमार्गपर जानेवाला। -परिग्रह-पु० अच्छे, योग्य व्यक्तियों दान ग्रहण करना। -पशु-पु० बलि के उपयुक्त पशु। -पात्र-पु० योग्य व्यक्ति, वह व्यक्ति जो कोई चीज पाने के योग्य हो। -पर्व-पु० योग्य व्यक्तियों प्रति उदारताका वर्ताव। -पर्वी(विन्)-वि० पात्रताका विचार कर दान आदि देनेवाला। -पुत्र-पु० योग्य पुत्र; वह पुत्र जो पिताके निमित्त विहित कर्म करे। -पुरुष-पु० भला आदमी, मज्जन। -पुण्य-पु० अच्छा, पुष्कल विकसित पुण्य। -प्रतिग्रह-पु० दे० 'मत्परिग्रह'। -प्रतिपक्ष-वि० जिसके विपक्षमें समकक्ष देतु भी हो। पु० हेत्वाभासके पक्ष-प्रकारोंमें एक (न्या०)। -प्रमुदित-स्त्री० आठ सिद्धियोंमें एक (सां०)। -फल-वि० अच्छे फलवाला। पु० अनार। -संकल्प-वि० अच्छे अभिप्रायवाला, नेक-नीयत। -संग-पु०, -संगति-स्त्री० अच्छे आदमियोंका साथ। -संसर्ग-पु० दे० 'सत्संग'। -सच्चिदान-समागम-पु० दे० 'सत्संग'। -साहाय-पु० अच्छा मित्र। वि० जिसके मित्र नेक हों। -सार-वि० जो अच्छा रमदार हो। पु० एक वृक्ष कवि; चित्रकार।

सत्त-पु० सत्त्व, सारभाग, रस; तत्त्व; सत्त्व; सतीत्य।

सत्तम-वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ; परम पूज्य।

सत्तमी-स्त्री० सत्तमी।

सत्त-वि० साठसे दस अधिक। पु० सत्तरकी संख्या, ७०।

सत्तरह-वि० दससे सात अधिक। पु० सत्तरहकी संख्या, १७।

सत्ता-पु० सात वृष्टियोंका ताक्षका सत्ता। स्त्री० [मं०] अस्तित्व; यथार्थता; जातिका एक प्रकार (वि०); उत्तमता; अधिकार, प्रभुत्व (वि०)। -चारी(विन्)-वि० जिसके हाथमें शासनसत्ता हो। -शास्त्र-पु० वह शास्त्र जिसमें मूल सत्ताका विवेचन हो (शास्त्रार्थ दर्शन)। -सामान्यत्व-पु० अनेक रूपोंमें किसी सामान्य द्रव्यका अस्तित्व।

सत्ताहस, सत्ताहस-वि० बीसमें सात अधिक। पु० सत्ताहसकी संख्या, २७।

सत्तानवे-वि० नब्बेसे सात अधिक। पु० सत्तानवेकी संख्या, ९७।

सत्तार-पु० [मं०] परदा बालनेवाला, दीप बालनेवाला; ईश्वर।

सत्तावन-वि० पचाससे सात अधिक। पु० सत्तावनकी संख्या, ५७।

सत्तासी-वि० अस्सीसे सात अधिक। पु० सत्तासीकी

संख्या, ८७।

सत्ति-स्त्री० शक्ति।

सत्तू-पु० समुद्र, मुने हुए अन्न (जौ, चने)का भाटा।

सु० -बाँधकर पीछे बंधना-किसीके विरुद्ध निरंतर चेष्टाशील रहना; पूरी तैयारीसे किसी काममें लगना।

सत्त्व-पु० [सं०] सोमयज्ञ जो साधारणतः तेरहसे सौ दिनोंतक चलता था; यज्ञ; होम, दानादि; उदारता; पुण्य, धर्म; मकान; आच्छादन; बस्त्र; संपत्ति; जंगल; तालाब; छल, बोलखाना; छद्मवेश; आश्रयस्थान, पनाह; वह स्थान जहाँ दरिद्रोंकी खाना बाँटा जाता है, रुंगर; दो बड़े अवकाशोंके बीच किसी मंस्याका लगातार चलनेवाला कार्यकाल। -गृह-पु० यज्ञ-भवन; आश्रय-स्थान, निकट समय या स्थान। -परिवेषण-पु० बस्त्रोंके अवसरपर ओढ़नादिका वितरण। -फल-पु० सोम-यज्ञका फल। -वृक्ष-वि० सत्त्व यज्ञका फल देनेवाला। -दाग-पु० सोम-यज्ञ। -वसति, -शाखा-स्त्री० दे० 'पत्त-गृह'। -सत्त्व(व)-पु० दे० 'सत्त्व-गृह'।

सत्त्वागार-पु० [सं०] दे० 'सत्त्व-शाला'।

सत्त्वापभ्रम-पु० [सं०] आश्रय-स्थान।

सत्त्वायण-पु० [सं०] यहाँका लगाना चलनेवाला क्रम।

सत्त्वाह(इन्)-पु० [मं०] ईश्वर।

सत्त्व-पु० [सं०] वह जो प्रायः यज्ञ करता हो; हाथी; बादल।

सत्त्व(विन्)-पु० [सं०] यज्ञकर्ता; विदेशस्थ राजा; यज्ञका निरीक्षण करनेवाला, जमा; वह जो छत्रवंशमें हो। वि० जयशील।

सत्त्व-पु० [सं०] अस्तित्व; सहजात प्रकृति, स्वभाव; धर्म, गुण; आत्मनस्त्व, चैतन्य; प्राण वायु, जीवन; भ्रम, पदार्थ; धन; मूल तत्त्व, वायु आदि, सार; प्राणी, जीव धारी; प्रेत; पापिकता; मत्त्व, यथार्थता; शक्ति, जीवशक्ति; बुद्धि, समझदारी; विशेषता; प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक जो सर्वोच्च है (सां०); सत्ता। -कर्ता(विन्)-पु० प्राणियों का स्रष्टा। -गुण-पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक, विशुद्धताका गुण। -गुणी(विन्)-वि० सत्त्व गुणवाला। -धाम(व)-पु० विष्णु। -पति-पु० जीवधारियोंका स्वामी। -प्रधान-वि० सत्त्वगुणी। -भारत-पु० ज्ञान। -लक्षणा-स्त्री० गर्भके लक्षणोंमें युक्त स्त्री। -लोक-पु० जीवलोक। -विद्वत्त्व-पु० वेतनाकी हानि। -विहित-वि० प्राकृतिक; सत्त्वगुणी। -शाली(विन्)-वि० उत्तमारी, साहसी। -शरील-वि० सत्त्व गुणी। -संपन्न-वि० सत्त्वगुणयुक्त; धीर, शांतचित्त। -संलब्ध-पु० प्रकृत्य; शक्तिका नाश। -संलुब्धि-स्त्री० स्वभावकी विधुद्धता, स्वरापन। -सार-पु० शक्तिके सार; असंसारण साहस। -व्य-वि० वृद्ध; संप्राण-मशक; आत्मस्त्व, अपनी प्रकृतिमें स्थित; सत्त्वगुणविशिष्ट उत्तम।

सत्त्वक-पु० [सं०] प्रेतात्मा।

सत्त्वमेजव-वि० [सं०] जीवधारियोंकी कृति करनेवाला।

सत्त्वबाध(बन्ध)-वि० [सं०] जीवित, जिसका अस्तित्व हो। सत्त्वयुक्त; पुण्यात्मा; माहुरी।

सत्त्वात्मा (स्वप्न) - वि० [सं०] सत्त्वगुणवाला ।
सत्त्वाधिक - वि० [सं०] अच्छे स्वभावका; मात्मी ।
सत्त्वोद्देश - पु० [सं०] सत्त्वकृतिका अतिरेक होना; उत्साह, साहस ।
सत्त्वकार - पु० [सं०] सत्त्व करना; बाधा पूरा करना, ममझौतेकी छतें पूरी करना; बाढ़े, ठेकेका काम पूरा करनेके लिए जमानतेके रूपमें पेशगी दी जानेवाली रकम ।
सत्त्वभरा - स्त्री० [सं०] एक नदी ।
सत्त्व - वि० [सं०] सच, यथार्थ; यथातथ्य; ईमानदार; विश्वस्त; निष्ठा; पुण्यात्मा; खरा, सच्चा । पु० मङ्गलोक; पीपलका पेड़; रामचंद्र; विष्णु; नंदीमुखश्राद्धका देवता; सच्ची बात; सच्चाई, यथार्थता; लघव; विशुद्धता, खरापन; अच्छाई; पारमार्थिक सत्ता; शपथ; वाता; कृतयुग, मत्स्य-युग; प्रमाणिक सिद्धांत; जल; ब्रह्म; नवीं कल्प; एक विश्व-देव; एक व्यास; मन्वंतरके मात कृषिगोमेंसे एक; एक दिव्याक्ष; सात व्याहृतिगोमेंसे एक । - **काम** - वि० मत्स्यका प्रेमी । - **कीर्ति** - पु० अक्षर पदा जानेवाला एक मंत्र; मंत्रमे जलया जानेवाला एक अक्ष । - **कुटु** - वि० नचिन कार्य करनेवाला । - **केतु** - पु० एक पुत्र । - **किंवा** - स्त्री० शपथ; प्रतिज्ञा, वादा (पी०) । - **प्रंथी (विन्)** - वि० गोंठ देकर ठीक तरहमें बाँधनेवाला । - **ज्ज** - वि० प्रतिज्ञा भंग करनेवाला । - **जिति** - स्त्री० मत्स्यी विजय । - **जिह्व** - पु० तीसरे मन्वंतरका इन्द्र; एक दानव; एक यक्ष । - **ज्ज** - वि० मत्स्यका जानकार । - **तपा (पस्)** - पु० एक कृषि । - **दुर्धर्षी (सिन्)** - वि० सत्त्वात्म्यका विवेक करनेवाला । पु० तेरहवें मन्वंतरका एक कृषि । - **हक (स्)** - वि० दे० 'मायदक्ष' । - **घन** - वि० सत्स्यकी ही सर्वस्व माननेवाला, परम सत्यवादी । - **धर्म** - पु० शाश्वत सत्य, तेरहवें मनुका एक पुत्र । वि० जिनके आदेश सत्य हैं । - **पथ** - पु० शाश्वत सत्यका मार्ग । - **धृति** - वि० परम सत्यवादी । पु० एक कृषि । - **नामा (मन्)** - वि० जिसका नाम मही हो । - **नारायण** - पु० एक देवता (जो बंगालमें सत्त्वपीर कहे जाते हैं) । - **निष्ठ** - वि० सत्यपर निष्ठा रखनेवाला, सत्यका प्रेमी । - **नेत्र** - पु० एक कृषि (अत्रि-पुत्र) । - **पर** - वि० ईमानदार, सत्त्वा । - **पारमिता** - स्त्री० सत्स्यकी सिद्धि (बी०) । - **पाल** - पु० एक मुनि । - **पूत** - वि० सत्य द्वारा विशुद्ध किया हुआ । - **प्रतिष्ठ** - वि० वादेका पक्का, बचनका पालन करनेवाला । - **प्रतिश्रव** - वि० बचनका लच्छा । - **प्रतिष्ठान** - मूल - वि० सत्यपर आधारित । - **फल** - पु० बैल, भौकल । - **बंघ** - वि० सत्यवादी । - **आमा** - स्त्री० राजाजितकी एक कन्या और कृष्णकी भाई पक्षिगोमेंसे एक । - **आरत** - पु० व्यास । - **मेरी (दिन्)** - वि० बचन भंग करनेवाला । - **मेधा (पस्)** - वि० सत्त्व प्रज्ञावाला (विष्णु) । - **युग** - पु० चार युगोंमेंसे पहला, कृतयुग । - **बुगाद्या** - स्त्री० वैशाख-शुक्ल तृतीया (जिस दिन कृतयुगका आरंभ माना जाता है) । - **युगी** - वि० [हिं०] सत्त्वयुगका; बहुत नेक; बहुत पुराना । - **यौवन** - पु० विधावर । - **रत** - वि० सत्यपरायण । पु० व्यास । - **रथ** - पु० एक विदर्भ नरेश । - **रथा** - स्त्री० विशांककी पत्नी । - **रूप** - वि० विषय-

नीय । - **छोक** - पु० सबसे ऊपरका लोक, मङ्गलोक । - **बका (पस्)** - वि० सत्यवादी । - **बचन** - पु० सत्य आपण; वादा, प्रतिज्ञा । वि० सत्यवादी । - **बधा (पस्)** - पु० कृषि । वि० सत्यवादी । - **बद्वन** - पु० सत्य आपण । - **बद्ध** - वि० सत्य होलनेवाला । पु० सत्य बात । - **बसु** - पु० विजयेदेवोंका एक वर्ग । - **बाक** - पु० सत्य होलना । - **बाक (स्)** - स्त्री० सत्य वचन । पु० कृषि; एक अक्ष-मंत्र; कौशा; मनु चाक्षुषका एक पुत्र; मनु सावि-र्गिका एक पुत्र । वि० सत्यवादी । - **बाक्य** - पु० सत्य वचन । - **बाक्य** - वि० सत्यवादी । - **बाद** - पु० वाता, प्रतिज्ञा । - **बादिनी** - स्त्री० दाहाणीकी एक मूर्ति; रोषि हृषीकी एक देवी । - **बादी (विन्)** - वि० स्पष्टवचन । पु० कौशिक । - **बाह्व** - वि० मत्स्यका बचन करनेवाला (स्वप्न) । - **विक्रम** - वि० जिनमें सत्त्व की बीरता हो । - **वृत्त** - पु० सदाचार । वि० सदाचारी । - **वृत्ति** - स्त्री० सत्त्वका आचरण । - **व्यवस्था** - स्त्री० सत्त्वका निश्चय । - **व्रत** - वि० सत्त्वका जल रखनेवाला । पु० सत्त्वपालनका व्रत; एक प्राचीन नरेश; मनु वैवस्वत; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । - **शपथ** - वि० जिसकी शपथ वा शपथ पूरा हो । - **शील** - **शीली (विन्)** - वि० सत्यपरायण । - **आवण** - पु० शपथग्रहण । - **संकल्प** - वि० धृष्टसंकल्प । - **संकाश** - वि० जो सत्य जान पड़े । - **संगार** - वि० अपने बचनका पालन करनेवाला । पु० कुबेर । - **संध** - वि० बचन पूरा करनेवाला, सत्यसंकल्प । - **संधा** - स्त्री० द्रौपदी । - **संरक्षण** - पु० बचन पालन करना । - **संख्य** - पु० बचन, प्रतिज्ञा । - **संहित** - वि० वादेका पक्का । - **साक्षी (विन्)** - पु० विश्वस्त गवाह । - **सार** - वि० पूर्णतः सत्य । - **स्व** - वि० अपने बचनपर टिकनेवाला । - **स्वप्न** - वि० जिसके स्वप्न सत्य होते हैं ।

सत्त्वक - वि० [सं०] दे० 'सत्य' । पु० मनु रैवतका एक पुत्र; कृष्णका भद्रामे उत्पन्न एक पुत्र; सौदेका हकरार ।
सत्त्वतः (सत्स्) - अ० [सं०] मन्मथ, दरभसल, वस्तुतः ।
सत्त्वता - स्त्री० [सं०] सच्चाई, वास्तविकता; नित्यता ।
सत्त्ववती - स्त्री० [सं०] पराशरकी पत्नी और व्यासकी माता मात्स्यगंधा; नारदकी पत्नी; ऋषीकशीकी पत्नी, एक नदी । - **सुत** - पु० व्यास ।
सत्त्ववाच (वस्) - वि० [सं०] सत्यसे युक्त, सत्त्वा । पु० एक अक्ष-मंत्र; मनु रैवतका एक पुत्र; मनु चाक्षुषका एक पुत्र; सावित्रीके पति ।
सत्त्वा - स्त्री० [सं०] सत्त्वार्थ; एक शक्ति; सीता; व्यास-जननी, सत्यवादी; सत्यधामा; धर्मकी एक कन्या ।
सत्त्वाकृति - स्त्री० [सं०] मोदेका हकरार करना; पेशगी देना ।
सत्त्वानि - पु० [सं०] अवस्थ कृषि ।
सत्त्वाग्रह - पु० [सं०] सत्त्वके लिए आग्रह (सत्य पक्षके लिए कष्ट आदि भेलते हुए लक्ष्यकी प्राप्तिका उद्योग करना) ।
सत्त्वाग्रही (विन्) - वि० [सं०] उद्देश्य-पूर्तिके लिए सत्त्वा-ग्रहका सहारा लेनेवाला ।
सत्त्वात्मक - वि० [सं०] सत्य जिसका सार हो ।

सत्याम्ब-पु० [सं०] सत्या या सत्यभामाका पुत्र ।
सत्याम्बा (सम्ब) -वि० [सं०] सत्यपरायण । पु० मत्स्य-
बादी व्यक्ति ।

सत्यानास-पु० सर्वनाश, वरबादी ।
सत्यानासी-वि० सत्यानास, सर्वनाश करनेवाला; अभागा,
भागहीन । की० भयभीत, धनोभ ।

सत्यानुरक्त-वि० [सं०] सत्यवादी, मत्स्यभक्त ।
सत्यानुरक्त-वि० [सं०] जिसमें सच और झूठका मेल हो;
जो ऊपरसे सत्य जान पड़े, पर असत्यमें झूठा हो । पु०
सच और झूठ; व्यापार ।

सत्यापन-पु० [सं०] सत्यकी जाँच-पड़ताल; सत्य-आपण
या सत्यका पालन; सौदेका इकरार ।

सत्यापना-की० [सं०] सौदेका इकरार ।
सत्याभिधान-वि० [सं०] सत्यभाषी ।

सत्याकापी (पितृ)-वि० [सं०] सत्यवादी ।
सत्याबादी-की० [सं०] कृष्ण बसुदेवकी एक शाखा ।

सत्येतर-पु० [सं०] वह जो सत्यसे भिन्न हो, असत्यता ।
सत्योत्तर-पु० [सं०] सच्ची भावकी स्वीकृति; इकबाल,
अपराध स्वीकार करना ।

सत्योक्त-वि० [सं०] सत्यवादी ।
सत्योपपादन-पु० [सं०] एक फलदार पेड़ ।

सत्त्व-पु० दे० 'सत्त्व' ।
सत्त्व-वि० [सं०] कज्जाशील, सकौन्धी; विनम्र ।

सत्त्व-वि०, पु० दे० 'सत्त्व' ।
सत्त्वहीन-की० धृष्टके बाद १२वें दिनका कृत्य ।

सत्त्वजित-पु० [सं०] सत्यभामाका पिता ।
सत्त्वजिती-की० [सं०] सत्त्वजितकी पुत्री, सत्यभामा ।

सत्त्वजिद-पु० [सं०] सत्यभामाका पिता; एक प्रकार ।
सत्त्व-पु० दे० 'सत्त्व' । -वन, -हन-पु० दे० 'सत्त्व' ।

सत्त्व-पु० दे० 'सत्त्व' ।
सत्त्व-वि० [सं०] तेज, कुर्ताला । अ० शीघ्र, फौरन ।

सत्त्व-पु० अथ, भूमि, पृथ्वी ।
सत्त्वहीन-की० दे० 'माधरी' ।

सत्त्विया-पु० शीवार, कलश आदिपर अंकित किया
जानेवाला एक मांगलिक चिह्न, स्वस्तिक [५५] ।

सत्त्वकार-वि० [सं०] जिसके मुँहमें बोलते समय थूक
निकले । पु० बातके साथ थूक निकलना ।

सत्त्वजन-पु० [सं०] एक अजन जो पीतलके अस्त्रमें तैयार
किया जाता है, कुसुमाञ्जन ।

सत्त्व-वि० [सं०] अच्छे जलवाला; दंभी, धमडी ।
सत्त्व-वि० [सं०] तेज चोंचवाला । पु० केकड़ा ।

-बदन-पु० बगलका एक भेद, कंक पक्षी ।
सत्त्वक-पु० [सं०] केकड़ा ।

सत्त्व-पु० [सं०] वृक्षका फल; एक प्रकार; धृतराष्ट्रका एक
पुत्र । *की० आदित्य, देव । * अ० सत्त्व, तुरत । *
वि० ताजा-सद माखन साजी दधि मीठो मधुमेवा
पकना-सुर; नया, हालका; [फा०] सौ, शत; बहुत,
सौ-सौ । -आकर्षी-अ० शत-शत साधुवाद, बन्ध-बन्ध ।
-चाक-वि० बहुत जगहसे फटा हुआ । -चिरता-
पु० लकड़ी या इँटीका खंभा जिसपर बहुत-से दीपक जलाये

जाते हैं । -पा-पु० कनकनूर । -पारा-वि० सतधा
विभक्त, खंड-खंड । -वर्ग-पु० गंदेका फूल । -झुंक-
झंवरकी बहुत-बहुत बन्धबाद है । -साह-पु० सौ साल,
शती । -साह-वि० सौ सालका । -हा-वि० मैकड़ों,
कई सौ ।

सद(स)-पु० [सं०] निवास-स्थान; समा ।
सर्व-अ० दे० 'सदा' ।

सर्व-पु० दे० 'सदका'; [सं०] पूर्णाङ्ग, वह अन्न जिसकी
भूमी न निकाली गयी हो ।

सर्व-पु० [अ०] वह चीज जो खुदाके नामपर फकीरो-
की दी जाय, खैरत; वह चीज जो किसीपर बाकर
दान की जाय या चौराहेपर रख दी जाय; अनुग्रह,
प्रसाद (यह सब ' ' का सदका है) । - (के) का-
सदका किया हुआ, बारा हुआ (' ' का कोना, विराग,
मुलमुल इ०) । -का कौणा-वह कौणा जो किसीपर
बारकर छोड़ दिया जाय; (ला०) काला-कछड़ा आदमी ।

-का गुड्डा-दे० 'सदकेका पुतला' । -का चौराहा-
वह चौराहा जहाँ सदकेकी चीजें रखी जायें । -का
पुतला-वह पुतला जो मदकेकी चीजोंके साथ चौराहे-
पर रख दिया जाता है । -की गुडिया-सदकेका पुतला ।

(ला०) कुरूप की जिसकी कुरूपता शृंगारमें भी न
जाय । -में-प्रमाद, अनुग्रहमें; सदका करके, बारकर
(मदकेमें छोड़ना) । सु० - (के) उदारना-कीर्ति-नीति
किसीके सिरके चारो ओर घुमाकर किसीकी देना या
चौराहेपर रख आना । -करना-निछावर करना,
वारना; (की०) बूढ़ेमें डालना ('उन हाथोंके मदके
करके जो मेरे बच्चेपर चले') । -जाना-वारी जाना,
निछावर होना । -में छोड़ना-बारकर छोड़ना (किमी
विशेषाकी) । -होना-निछावर होना, वारी जाना ।

सद-वि० [सं०] विनैकशील ।
सदक्षिण-वि० [सं०] जिमें भेद दी गयी हो; दक्षिणायुक्त ।

सदन-पु० [सं०] निवामस्थान, घर, मकान; क्षीण होना,
छात होना, शिथिल होना; त्रल; यक्षभवन; यमका
निवामस्थान; बैठना, आसन; एक भक्त कसाई ।

सदना-अ० कि० रसना; नाबके छेड़ते पानी आना ।
सदनि-पु० [सं०] जल ।

सदनुग्रह-पु० [सं०] अच्छे लोगपर कृपा करना ।
सद्वृत्त-की० [अ०] सीधी ।

सदमा-पु० [अ०] बका, आघात; चोट; दिलपर लगने
वाली चोट, दुःख, शोकका आघात; हावि, मुकसान ।

सु० -ठठना-दुःख, हृदयपर हुए आघातकी सह
लेना । -पहुँचना-चोट लगना; मुकसान पहुँचना ।

सद्व-वि० [सं०] दयालु, रहमदिल । -हृदय-वि०
रहमदिल, कीमलचित्त ।

सद्व-वि० [सं०] बरा हुआ । पु० एक असुर ।
सद्व-पु० दे० 'सद' । -असीन-पु० वह अधिकारी
जो जके मातहत हो । -आका-पु० मातहत जज,
'सबज' । -आही-पु० मुसलमान खिमीका माना
हुआ एक जिन । -दीवान-पु० शाही खजानेका प्रधान
अधिकारी । -दीवानी-अदालत-की० हाईकोर्ट ।

-**बाजार**-पु० छावनीका बसा बाजार । -**बोर्ड**-पु० मालका सवोष विभाग । -**मालमुआर**-पु० वह आदमी जो सीधे सरकारकी मालमुआरी अदा करे ।

सवरी-**खी**० बिना आस्तीनकी बिरजई, कटुदी ।

सदर्थ-पु० [सं०] अमल, साध्य, मुख्य विषय, प्रकरण । वि० धनी, मालदार ।

सदर्थना-सं० क्रि० समर्थन, पुष्टि करना ।

सदर्प-वि० [सं०] घसींही । अ० दर्प-पूर्वक ।

सदश-वि० [सं०] किनारीदार ।

सदसत्-वि० [सं०] यथार्थ और अवधार्य; अला और बुरा । पु० वह जिसका अस्तित्व हो और वह जिसका न हो; नवी और छूटी बात, मचाई-मुठारी; अच्छाई-बुराई ।

सदसप्रियेक-पु० [सं०] अने-बुरेकी पहचान ।

सदसि-अ० [सं०] सभामें । * पु० गृह; सभा ।

सदस्य-पु० [सं०] विधिदशी, यज्ञका विधान देखनेवाला; किसी मन्त्रा, मन्त्राजमे संबध रखनेवाला व्यक्ति, मन्त्र्य, मन्त्रालय, पंच ।

सदस्यता-**खी**० [सं०] सदस्यकी स्थिति या भाव ।

सदा-अ० [सं०] निरन्तर, हमेशा; निरन्तर । -**कांता**-**खी**० एक नदी । -**कारी (सिन्)**-वि० जो हमेशा सक्रिय रहे; दे० क्रममें । -**कावहा**-वि० हमेशा प्रवाहित रहनेवाला । -**कुसुम**-पु० धातकी । -**गति**-वि० जो हमेशा गतियुक्त रहे । पु० वायु; सूर्य; अक्षा; निर्वाण मोक्ष ।

-**शत्रु**-पु० परद । -**तोषा**-**खी**० एलापर्णी; करतोया नदी; वह नदी जिसमें बराबर जल या धारा रहे । -**दान**-पु० दान बहानेवाला (हाथी); घेरावत; गणेश; दान-शालता । वि० हमेशा दान देनेवाला; हमेशा दान बहानेवाला (हाथी) । -**नर्त**-वि० हमेशा नाचनेवाला ।

पु० खजन पक्षी । -**निरामया**-**खी**० एक नदी । -**नीर-बहा**:-**नीरा**-**खी**० करतोया नदी; वह नदी जिसमें बराबर जल या धारा रहे । -**परिभूत**-पु० एक बोधिमन्त्र । -**पर्ण**-वि० जिसमें हमेशा पतियाँ रहे । -**पुष्प**-वि० हमेशा फूलनेवाला । पु० नारियल; कुंद; मदर ।

-**पुष्पी**-**खी**० रक्ताक; एक तरबूकी चमेली । -**प्रसूदित**-पु० आठ मिथियोंमेंसे एक (सां०) । -**प्रसून**-वि० हमेशा फूलनेवाला । पु० कुंद; रोहितक, मदर । -**फरा**-वि० दे० 'मदाफल' । -**फल**-वि० हमेशा फलनेवाला ।

पु० देल; कटहल; नारियल; गूलर; एक नीबू । -**फला**:-**फली**-**खी**० जपाकुसुम; एक तरबूका बैंगन । -**वर्त**-पु० [हिं०] दे० 'मदावर्त' । -**बहार**-पु० [हिं०] एक फूल । वि० हमेशा फूलनेवाला; जिसमें हमेशा पतियाँ रहे । -**अन्ना**-**खी**० गंमारी वृक्ष । -**अव**-वि० निरन्तर, अविच्छिन्न । -**अव्य**-वि० जो हमेशा विद्यमान हो; सावधान । -**अम**-वि० हमेशा अमण करनेवाला । -**खंडक**-पत्रक-पु० श्वेत पुनर्नवा । -**अस**-वि० हमेशा भोजमें, मत्तवाला रहनेवाला; हमेशा दान बहानेवाला (हाथी) ।

-**मद**-वि० जो मारे सुशीके पागल हो गया हो; हमेशा नशेमें रहनेवाला; हमेशा घमड आदिमें चूर रहनेवाला; हमेशा दान बहानेवाला (हाथी) । पु० गणेश । -**मुदित**-पु० एक सिद्धि । -**योगी (सिन्)**-वि० हमेशा योगाभ्यास

करनेवाला । पु० विष्णु । -**ख**-पु० मेल । -**बरादायक**-पु० समाधिका एक मेल । -**वर्त**-पु० [हिं०] हमेशा अन्न बाँटनेका व्रत; ऐसा अन्न । -**वर्ती**-वि०, पु० [हिं०] हमेशा अन्न वितरण करनेवाला दानी । -**बुद्ध**-वि० हमेशा उचित करनेवाला । -**सिद्ध**-वि० जो सदा दयालु रहे; जो हमेशा प्रसन्न या उन्नतिशील रहे । पु० शिव ।

-**सुहागिन**-वि०, **खी**० [हिं०] जो हमेशा सुहागिन बनी रहे । **खी**० मिदूरपुष्पी; एक छोटी चिकिया; **खी**-वेशमें रहनेवाले एक तरबूकी फकीर; वैद्य ।

सदा-**खी**० [अ०] ध्वनि, आवाज; प्रतिध्वनि; आहट; फकीरके माँगनेकी आवाज; पुकार, रट । **ख**०-**देना**:-**लगाना**-**फकीरका** आवाज लगाना; पुकारना । -**बुलंद करना**-आवाज उठाना; नारा लगाना ।

मदाकृत-**खी**० [अ०] सचाई; खरापन; तसदीक ।

सदाकारी (सिन्)-वि० [सं०] अच्छी आकृतिवाला; दे० 'सदा'में ।

सदागम-पु० [सं०] मन्त्रजन्मका आगमन; उत्तम सिद्धांत, मन्त्र शास्त्र ।

सदाचरण-पु० [सं०] सदव्यवहार, अच्छा चाल-चलन ।

सदाचार-पु० [सं०] अच्छा चाल-चलन अच्छा व्यवहार, अच्छा तौर-तरीका ।

सदाचारी (सिन्)-वि० [सं०] अच्छे चाल-चलनवाला, सुकर्मी ।

सदातन-वि० [सं०] जो हमेशा जारी रहे । पु० विष्णु ।

सदात्मा (समन्)-वि० [सं०] अच्छे स्वभावका, नेक ।

सदान्व-वि० [सं०] हमेशा आनन्दमें रहनेवाला; हमेशा आनंद देनेवाला । पु० हमेशा रहनेवाला आनंद; शिव; विष्णु ।

सदाप-वि० [सं०] अच्छे जलवाला ।

सदामर्थ-वि० [सं०] अधीर; अशांत; उन्मुक्त ।

सदार-वि० [सं०] मपत्नीक ।

सदारत-**खी**० [अ०] सद्का पद, मन्त्रापत्ति ।

मदाशय-वि० [सं०] उदारोपदेश, ऊँचे विचारका ।

सदाश्रित-वि० [सं०] हमेशा दूसरेके आश्रयमें रहनेवाला, परावली ।

सदिया-**खी**० भूरे रंगकी मुनियाँ ।

सदी-**खी**० [का०] सौ सालका काल, शताब्दी; सैकड़ा ।

सदुक्ति-**खी**० [सं०] अच्छे शब्द । वि० अच्छे शब्दोंसे युक्त ।

सदुपदेश-पु० [सं०] उत्तम शिक्षा; अच्छी मन्त्रा ।

सदुपयोग-पु० [सं०] अच्छा उपयोग, अच्छे काममें लगाया जाना ।

सद्व-पु० शार्दूल, सिंह ।

सद्व-पु० [सं०] एक मिठाई ।

सद्व (श)-वि० [सं०] दे० 'सद्व' ।

सद्व-वि० [सं०] ममान, मरदा; उनी मरतवेका; उप-युक्त, योग्य ।

सद्व-वि० [सं०] समान, एक पैसा; उचित; उपयुक्त, योग्य । -**क्षम**-वि० समान सद्विधुतावाला । -**सिद्धि**-अव-पु० ममान वस्तुकी पहचानमें भ्रम होना । -**वृत्ति**

—वि० एक ही जैसी वृत्तिवाला । —झी-झी० समान जातिकी पत्नी । —स्ववच-पु० निवत समवचर होनेवाली बचकन ।

सद्वचन-झी० [सं०] समानता, एकरूपता ।

सर्वविक-वि० [सं०] रागीके साथ ।

सर्वेश-वि० [सं०] देशबाळा, जिसके पास देश हो; एक ही देशका; पक्कीसी । पु० पक्की ।

सर्वेश-वि० [सं०] देवयुक्त । अ० शरीरके साथ, बिना शरीर छोड़े ।

सर्वैकरस-वि० [सं०] जिसकी हमेशा एक ही इच्छा रहे; मदा एक रस रहनेवाला ।

सर्वैव-अ० [सं०] सर्वदा, हमेशा ही ।

सर्वोगत-वि० [सं०] सभीमें गया हुआ, सभीमें उपस्थित ।

सर्वोद्गृह-पु० [सं०] ममाश्रयन; राजदरबार ।

सर्वोच-वि० [सं०] दोषयुक्त, आपत्तिजनक; दोषी, अपराधी; रात्रियुक्त ।

सर्वोचक-वि० [सं०] दोषयुक्त, दोषदार ।

सद्-‘मत्’का ममागत रूप । —गति-झी० अच्छी दशा; मोक्ष प्राप्ति; अच्छे आदमियोंका तीरतरीका ।

—गव-पु० अच्छा गौँ । —गुण-वि० अच्छे गुणोंसे युक्त । पु० अच्छा गुण; मञ्जनता । —गुरु-पु० अच्छा गुरु, धर्मगुरु । —ग्रन्थ-पु० उत्तम ग्रन्थ; सन्मार्गकी ओर प्रवृत्त करनेवाला ग्रन्थ । —ग्रह-पु० शुभ ग्रह ।

वि० सत्य और ईमानदारीकी ओर प्रवृत्त । —घन-पु० अच्छी संपत्ति, अच्छा धन । —धर्म-पु० अच्छा नियम; अच्छा न्याय; नीति या जैन धर्मके लिए प्रयुक्त नाम ।

—जी-वि० बुद्धिमान् । —ज्यापी (विन्) —वि० मत्स्यका चितन करनेवाला । —ब्राह्मण-पु० कुलीन ब्राह्मण ।

—आम्र-पु० अच्छा आम्र, सौभाग्य । —आव-पु० अस्तित्व, सत्ता; पदार्थादिकी वास्तविक स्थिति; नेक मित्राजी; सज्जनता; दयालुता । —अ० श्री-झी० एक देवी । —भूत-वि० जो वस्तुतः सत्य या अच्छा हो ।

—भूत्व-पु० अच्छा नौकर । —युक्ति-झी० अच्छा तर्क; अच्छा उपाय । —युक्ती-झी० साध्वी स्त्री ।

—वंचा-पु० अच्छा गौँस; अच्छा कुल । वि० कुलीन । —जात-वि० अच्छे कुलमें उत्पन्न । —वत्सल-वि० सज्जनपर अनुग्रह करनेवाला । —वत्सल-पु० प्राम ।

—वस्तु-झी० अच्छी चीज; अच्छा काम; अच्छा कथानक । —बाखी (विन्) —पु० अच्छा घोड़ा । —बाखी (विन्) —वि० सत्यवादी । —बात्सी-झी० अच्छी बार्ना; अच्छा समाचार । —विगर्हित-वि० सज्जनों द्वारा निरित । —विद्य-वि० बहुभूत । —वृक्ष-पु० सुंदर बरुंठाकार आकृति; सदाचार । वि० सदाचारयुक्त; अच्छे छंदोंवाला । —वृत्ति-झी० सद्व्यवहार, सदाचार ।

सह-अ० शीघ्र, तुरंत । † वि० ताजा, टटका (सह पानी) । • पु० स्रष्टा, ध्वनि; [का०] रोकना । झी० रोक; दीवार । —(हे)-राह-वि० रोक, प्रतिबंध लगानेवाला (बनाना, होना) । —(हे)-रोहूँ-वि० रोकना ।

कौत्सी दीवार जो कहा जाता है कि सिंदूरने नागार और चीनके बीच, उत्तरकी अस्थायी जातियोंका हमलः

रोकनेके लिए, बनवायी थी; (हा०) अति बड़ और टिकाऊ वस्तु ।

सह(वृ)-पु० [सं०] मकान, निवास-स्थान; ठहरनेका स्थान; वेषशाला; देशालय; वेदी; आसन; युद्ध, संघर्ष; जल; पृथ्वी और आकाश ।

सहा(घन)-वि० [सं०] रहनेवाला, बसनेवाला ।

सहिनी-झी० [सं०] हवेली, महल ।

सह(घस्)-अ० [सं०] आज ही; उसी दिन; तत्क्षण, फौरन; तेजीसे; हालमें ही, कुछ ही काल पूर्व, अभी-अभी । —(घः)कृत-वि० जो तुरंत, उसी समय किया गया हो । —कृत-वि० जो तुरत काटा गया हो ।

—कृत-वि० जो उसी दिन कांता और पुना गया हो । —कृत-वि० उमी दिन खरीदा हुआ । पु० एक एकाह । —कृत-पु० ताजा घाव । —पर्युचित-वि० एक दिन पहलेका । —पाक-वि० जिसका फल तुरत देख पड़े ।

—पासी (विन्) —वि० जल्द गिरनेवाला । —प्रक्षालक-पु० वह व्यक्ति जो तुरंत काममें लानेके लिए अन्नकी सफाई करे, जमान कर सके । —प्रज्ञाकर-वि० तुरत समझ पैदा करनेवाला । —प्रस्ता-झी० बड़ (झी) जिसने अभी-अभी प्रसन्न किया है । —प्राणकर-वि० तुरत शक्ति बढ़ानेवाला । —प्राणहर-वि० तुरत शक्तिका नाश करनेवाला । —फल-वि० जिसका फल तुरंत देख पड़े । —क्षतिकर-वि० जल्द नाकत बढ़ानेवाला । —मुद्धि-झी०, —क्षौच-पु० तुरत की जानेवाली शुद्धि । —क्षौच-वि० जल्द सृजन पैदा करनेवाला ।

—क्षौचा-झी० केराच । —आखी (विन्) —वि० जिसने अभी-अभी धाद किया है । —स्नात-वि० तुरतका नहाया हुआ । —स्नेह-पु० जल्द स्निग्ध करना ।

सह-अ० दे० ‘सह’ । पु० [सं०] शिवका एक रूप ।

सहशिख-वि० [सं०] नरनका काटा या काटकर अलग किया हुआ ।

सहसक-वि० [सं०] वर्तमान कालका, उसी समयका, नया, ताजा ।

सहस्त-वि० [सं०] ताजा, नया; उसी समयका ।

सहोजात-वि० [सं०] जो अभी उत्पन्न हुआ हो । पु० शिवका एक रूप; हालका उत्पन्न बछड़ा ।

सहोजाता-झी० [सं०] वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो ।

सहोबल-वि० [सं०] तुरत बल बढ़ानेवाला । —कर-वि० शीघ्र शक्ति बढ़ानेवाला ।

सहोभावी (विन्) —वि० [सं०] हालका उत्पन्न । पु० हालका पैदा हुआ बछड़ा ।

सहोमन्तु-वि० [सं०] शीघ्र क्रोध उत्पन्न करनेवाला ।

सहोदत-वि० [सं०] जो अभी मरा हो ।

सहोत्रण-पु० [सं०] ताजा घाव ।

सहोदत-वि० [सं०] जो अभी आहत या हत हुआ हो ।

सह-पु० [अ०] छानी, सीना; सर्वोच्च स्थान; शीर्षमान, उपपदस्थ जनके बैठनेका स्थान; प्रधान अधिकारीके रहनेका स्थान; सरर मुकाम, सभापति; मकानका सहन-नामनेका स्थल । अ० ऊपर (सुंदरता मर) । —अदालत-

स्त्री० सर्वोच्च ग्यायालय । - (त्रि) आङ्गम-पु० वजीरे
आङ्गम, प्रधान मंत्री; प्रधान जज । - आळा-पु० दे०
'सदर-आळा' । - नक्षीन-वि० गदीपर बैठनेवाला । पु०
समापति । - मजलिस-पु० समायपति, गौर मजलिस ।
- मुकाम-पु० राजधानी; विभागाविशेषके प्रधान अधिकारीके रहनेका स्थान ।
सङ्ख्य-वि० [सं०] इत्ययुक्त; सुनहला ।
मन्त्रि-पु० [सं०] हाथी; पर्वत; भेड़ा ।
सङ्गी-स्त्री० दे० 'सदरी' ।
सङ्ग-वि० [सं०] बैठने या आराम करनेवाला; जानेवाला ।
महद्व-वि० [सं०] झगडाव; मुकदमेबाज ।
महद्वी-स्त्री० [सं०] उल्लरस्थकी एक कन्या और अधिकारी
पत्नी ।
सख-वि० [सं०] धनी; धनयुक्त । पु० सम्मिश्रित धन,
मामाम्य धन ।
सखना-अ० कि० काम पूरा होना, कार्य सिद्ध होना;
मैमलना; अपने अनुकूल होना; वीरों आदिका लीखकर
कामके लायक होना, निकलना; अभ्यस्त होना; साधा
जाना, नापा जाना; निशाना ठीक होना; † खर्च या
ममास हो जाना ।
मखर-पु० ऊपरी ओठ ।
मखर्म-वि० [सं०] एक ही धर्म या सम्भावना; एक ही
नियमके अन्तर आनेवाला, समान, सहज; पुण्यात्मा, सच्चा;
एक ही जैसे कर्तव्यवाला; एक ही (समान) संप्रदाय वा
जातिका । पु० एक ही (समान) गुण वा व्यवहार । -
चारिणी-स्त्री० पत्नी ।
मधर्म-वि० [सं०] दे० 'सधर्म' ।
मधर्मा (मन्)-पु० [म०] समान धर्मयुक्त ।
मधर्मिणी-स्त्री० [म०] पत्नी; भार्या ।
मधर्मि (मिन्)-वि० [सं०] समान धर्मा अनुयायी ।
मधवा-स्त्री० [सं०] सुहागिन, सौभाग्यवती ।
मधाना-सं० कि० साधनेके काममें दूसरेको प्रवृत्त करना ।
सधावर-पु० सातवें महीनेमें गर्भवती स्त्रीको दिया जाने
वाला उपहार ।
मधि-पु० [सं०] अधि ।
मधि(स्)-पु० [सं०] वृषभ, बैल ।
मधुस-वि० [सं०] धुंसे भरा या ढका हुआ । - वर्णा-
स्त्री० अधिकारी सात जिह्वाओंमेंसे एक ।
मधुमक-वि० [सं०] धुँसोदार ।
मधुञ्ज-वि० [सं०] कृष्ण-वर्णका । - वर्णा-स्त्री० दे०
'मधुसर्वा' ।
मघोर, सघोरा-पु० दे० 'सघावर' ।
मघीष्ठी-स्त्री० [सं०] सखी, सहेली ।
मघीष्ठीन-वि० [सं०] साथ रहनेवाला; समान उद्देश्य-
वाला ।
मर्जस-पु० [सं०] काण्व कवि ।
मर्गका-पु० सच्चाटा ।
मर्गद-पु० [सं०] दे० 'समंदन' ।
मर्मवज-पु० [सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक ।
मव-वि० स्तम्भ । * प्र० करणकी विभक्ति । पु० एक

पौधा जिसकी छालमें रस्मी आदि बनाने हैं; दे० 'सन्';
[सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक; लाभ, प्राप्ति;
आहार; हाथीका कान फटकाना; घंटापाटल वृक्ष । -
पर्णी-स्त्री० असनपर्णी ।
सन-स्त्री० किमी चीजके हवामें ठेजीसे चलनेसे उत्पन्न
शब्द । - सन-स्त्री० हवाकी आवाज, सनसनाहट; किसी
चीजके हवामें चलनेकी लगातार आवाज; नलवार चलने
की आवाज ।
मनस-स्त्री० [सं०] कारीगरी; दुनर; पेशा; अर्ककार
(सां०) । - मर-पु० कारीगर; पेशावर ।
सबई-स्त्री० समका एक भेद ।
सनक-पु० [सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक । स्त्री०
[हिं०] धुन, झोंक; लम्प, दीवानगी, पागलपन । सु० -
आना-पागल होना । - खदना, - खदर होना-धुन
सवार होना । - खेना-पागलपनका कोई काम करना ।
सनकमा-अ० कि० उन्मत्त, पागल, झकी होना ।
सनकाना-सं० कि० किसीका पागल बनाना ।
मनकारना-सं० कि० इशारा करना; इशारेसे बुझाना-
'सनकारे सेवक सकल, चक्रे स्वर्गि रस पाइ'-रामा०;
किसी कामके लिए संकेत करना ।
सनकियावा-सं० कि० संकेत करना; पागल बनाना ।
अ० कि० पागल होना ।
सनत्-पु० [सं०] ब्रह्मा । - कुमार-पु० ब्रह्माके चार
मानस पुत्रोंमेंसे एक; जैनोंके बारह चक्रवर्तियोंमेंसे एक;
वीरनकी-सी अवस्था बनाये रखनेवाला कोई सत; तीसरा
धर्म (जै०) । - ज-पु० एक देववर्ग (जै०) । - सुजास
-पु० ब्रह्माके सात मानस पुत्रोंमेंसे एक ।
मनत्ता-पु० रेशमके कीड़े पालनेका पेड़ ।
सनद-स्त्री० [अ०] वह जिसपर पीठ टेकी जाय, तक्तिया-
गाह; प्रमाण; प्रमाणपत्र, सर्टिफिकेट; अनुमति-पत्र; तम-
स्तुक, किताब; काबी या सुफतीकी मुहर । वि० प्रामाणिक;
प्रमाणरूप; यरोसा करने योग्य । - बाप्रता-वि० जिसके
पास सनद वा प्रमाणपत्र हो । सु० - मरदाना-
अरोसा करना, प्रमाणमें सामने रखना । - जानना-
सही, प्रामाणिक मानना ।
सनदी-वि० प्रामाणिक; सनदवापता । * स्त्री० हाल,
वृत्ति ।
सखना-अ० कि० जलके योगमें बुनाईका एकमें
मिलना; लपपेठ होना; लिप्त होना, पगना ।
सननी-स्त्री० पानीमें साना हुआ भूसा, सानी ।
सनस-पु० [अ०] बुत, मूर्ति; (ला०) प्रेमपात्र, माशुक ।
- कर्वा, - झापा-पु० संरिह, बुतखाना ।
सनमान-पु० दे० 'सम्मान' ।
सनमानना-सं० कि० आदर, सम्कार करना ।
सखमुख-अ० दे० 'सम्मुख' ।
सनमनाना-अ० कि० गतिशील पदार्थमें हवा लगने,
हवा चलने वा पानी उबलने आदिसे 'सन-सन' शब्द
उत्पन्न होना ।
सनसनाहट-स्त्री० हवा चलने, कीरे घनेमें पानी पकने,
जलके उबलने आदिसे उत्पन्न 'सन-सन' की आवाज ।

समसनी-खी० सुनसुनी०; भव, आश्रय आदिके कारण उपपन्न स्तम्भता; सङ्घाटा; खलुवकी; समसनादट।

समहकी-खी० मुसलमानोंके काममें आनेवाला वही तबतरी जैसा मिट्टीका एक बरतन।

समहाना०-पु० खटाई आदिके पानीसे भरा हुआ बरतन जिसमें जूटे बरतन मौजनेके पहले डाले जाते हैं।

सना-अ० [सं०] नित्य, सर्वदा। पु० [अ०] प्रशंसा, स्तुति। -रुबो-वि० प्रशंसक, स्तुति करनेवाला।

सनाख-पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

सनासन-वि० [सं०] नित्य; अनादि; सुनिश्चल, स्थायी; प्राचीन। पु० प्रज्ञा; विष्णु; क्षिप्र; पितरोंका अतिथि; प्रज्ञाका एक मानस पुत्र। -धर्म-पु० प्राचीन धर्म; परंपरागत धर्म (जो साधारण हिंदू जनतामें प्रचलित है)। -पुरुष-पु० विष्णु; आदि पुरुष।

सनासनसम-पु० [सं०] विष्णु।

सनातनी-वि० सनातनधर्मका अनुयायी; बहुत पुराना। खी० [मं०] लक्ष्मी; दुर्गा; मरुतनी।

सनात्-अ० [सं०] नित्य, सर्वदा।

सनाथ-वि० [सं०] व्याप्तियुक्त, जिसका कोई रक्षक हो; जनार्दन (ममा आदि); ... द्वारा अधिष्ठित; ... से युक्त * कृतकृत्य - 'जो कदापि मोहि मारिहै तो पुनि होव मनाथ'-रामाय०; सफल - 'अवे मखि जैन मनाथ बनारे'-सूर। सु० -करना-आश्रय देना।

सनाथा-खी० [सं०] वह खी जिसका पति जीवित हो, जीवद्रव्यका।

सनाथ-पु० [सं०] सगा भाई; सगा सवधी।

सनाथि-वि० [सं०] नाभियुक्त; समान केंद्रवाले (जैसे पथिवीके आरे); सङ्घोष, सगा; सपिंड; समान, मधु। पु० सगा भाई; मातृवर्षी पीडितकका सवधी।

सनाथ-पु० [सं०] एक ही वंशका मातृवर्षी पीडितकका सवधी।

सनामक, सनामा(मन्)-वि० [सं०] समान, एक ही नामका।

सनाथ-खी० एक पौधा जिसकी पत्तियों रेंचक होती हैं, सोनामुखी।

सनासन-अ० 'सनासन' शब्दके साथ; नेत्रजी।

सनाह-पु० कवच, बल्लर।

सनि-पु० [सं०] पूजा; दान; प्रार्थना, विनय; * दे० 'शनि'। खी० प्राप्ति; दिशा।

सनिकार-वि० [सं०] अपमानजनक (जैसे दण्ड)।

सनिग्रह-वि० [सं०] मृददार।

सनित-वि० साना, मिठाया हुआ, मिश्रित; [मं०] स्वीकृत; प्राप्त, लब्ध।

सनिद्र-वि० [सं०] सोया हुआ; निद्रायुक्त।

सनियम-वि० [सं०] नियमित; जो धर्मानुष्ठान कर रहा हो।

सनिया-पु० रेसमी घटका या छोटी पोती - 'सनिया पहकर ही चौकेमें जाता था'-शुनाहीका देवता।

सनिरूप-वि० [सं०] निष्ठुर, कठोर, बेरहम।

सनिरिक्तेय-वि० [सं०] कदापि न।

सनिष्ठिव, सनिष्ठिव-वि० [मं०] थूक मिला हुआ। पु० वह शब्द जिसका उच्चारण करते समय थूक निकला हो।

सनी-खी० [सं०] सविनय प्रार्थना; दिशा; हाथीका कान फटपटाना; कांति, दोसि; गौरी।

सनीकर-पु० दे० 'सनेश्वर'।

सनीचरी-खी० शनिकी दशा।

सनीह, सनील-वि० [सं०] जो एक ही बोलैलमें रहने हो; साथ रहनेवाले; संबंधी, समीपी। अ० सनिकट। पु० सामीप्य, नैकट्य; पड़ोस।

सनेस, सनेसा-पु० दे० 'संदेश'।

सनेह-पु० दे० 'स्नेह'।

सनेहिया-पु० दे० 'सनेही'।

सनेही-वि० स्नेही, प्रेमी। पु० प्रेम करनेवाला।

सने-सने-अ० दे० 'शने-शने'।

सनीवर-पु० [अ०] चीइका पेड़।

सन्-पु० [अ०] साल, संवत्। -ईसवी-पु० ईसाशकोंका संवत् जो ईसाके जन्मदिनसे चलता है। -हाल-पु० वर्तमान संवत्। -हिजरी-पु० मुसलमानोंका सन् जिसका आरंभ बुधम्बरके मकैसे हजरत करनैकी तिथिसे हुआ है। - (वे) जुलूम-पु० किसी राजाके राज्यारोपित तिथिमें चलनेवाला संवत्।

सन्-वि० नय आदिसे स्तम्भ, स्तम्भित; [मं०] सिवः हुआ; मद; गतिहीन; निःशक्त; बैठा हुआ; क्षीण; नष्ट; विषण्ण; निकटस्थ; गम, प्रस्थित। पु० पियाल वृक्ष, नाश, हानि; अल्प परिमाण। -कंड-वि० जिसका गला १५ गया हो। -जिह्व-वि० मोन। -खी-वि० विषण्ण। -सरीर-वि० जिसका शरीर धक गया हो। -हृय-वि० क्षिप्त।

सन्क-वि० [सं०] खर्व, नाटा, छोटे कटका। पु० पियाल वृक्ष। -हु-हु-पु० पियाल वृक्ष।

सन्कस-वि० [सं०] झुका हुआ, भिक्का हुआ, क्षिप्त।

सन्कसि-खी० [सं०] झुकना; आदरपूर्वक प्रणाम करना विनम्रता; एक वक्त्र, ध्वनि, शब्द, सनकी प्रवृत्ति; कृपा; दृष्टि; दक्षकी एक पुत्री।

सन्क-वि० [मं०] कसकर बंधा हुआ; कठिणक; बल्लरवत् युद्धके लिए तैयार, व्याप्त; मे संपन्न, युक्त; धानक, सल्लभ, आसन्नर्था; विकामोन्मुख; मोहक।

सन्क-पु० [सं०] मजह, राशि; परिमाण; ताड़ाद; पृष्ठ भाग; मेनाका वृष्टभाग।

सन्कचन-पु० [सं०] पास लाना; सन्नद्ध करना।

सन्कहन-पु० [सं०] तैयार होना, सन्नद्ध होना; युद्धके लिए प्रसुत होना; तैयारी करना; कमकर बोधना; उद्योग-प्रयास करना।

सन्कहा-पु० निलम्बता, नीरवता; निर्वनता; स्तम्भता, लुप्पी; हवा चलनेका शब्द; मनमनाहट। वि० निज नौरथ। सु०-खीकना-आरना-विलकुल लुप हो जाना। -धीतना-उदानीमें बच कटना। - (दे)का-मनसल आवाजके साथ बहनेवाला। - के साथ, -से-तेजीसे। - मैं जाना-स्संभित हो जाना, चुप रह जाना।

सन्कम्म(ज)-पु० [सं०] क्षुद्र नाम।

सक्राह—पु० [सं०] इधिवारसे सैस होना, युद्धके छिप तैयार होना; युद्ध जैसी तैयारी; कबच ।

सक्राह—पु० [सं०] युद्धका बायी ।

सक्रि—खी० [सं०] उदामी, विषण्णता; नैराश्य ।

सक्रिट—अ० [सं०] पाम, नवदीक ।

सक्रिर्ष—पु० [सं०] निकट कल्ला; मामीप्य; उपस्थिति; मन्थ; इद्रियका विषयमे संस्थ (न्या०) ।

सक्रिर्षण—पु० [सं०] दे० 'सक्रिर्ष' ।

सक्रिकाश—वि० [सं०]...जैसे रूपवाला, सिरुता-जुलता, समान ।

सम्बिकीर्ण—वि० [सं०] पूरा-पूरा फीला हुआ ।

सम्बिकृष्ट—वि० [सं०] पाम लाया हुआ; निकट, पामका । पु० सामीप्य ।

सम्बिलोत्ता(जु)—पु० [सं०] संथ, भेणीका कोषाध्यक्ष ।

सम्बिचय—पु० [सं०] राशि करना, ढेर लगाना; अंभार; रजद ।

सम्बिताल—पु० [सं०] एक ताल (सगीत) ।

सम्बिध—पु० [सं०] माजिध्य, सामीप्य ।

सम्बिधाता(नृ)—पु० [सं०] पाम लानेवाला; जमा करने-वाला; चोरीका माल लेनेवाला; अदालतमे लोपोको ले जानेवाला अफमर; पाम रखनेवाला ।

सम्बिधान—पु०, सम्बिधि—खी० [सं०] माध, पास रखना; सामीप्य; गोचरता; आधार; अपने पाम रखना; योग. जमा करना; इद्रिय विषय ।

सम्बिपात—[सं०] गिरना; उतरना; मिलना, संगम; टकरा, मिश्रण; मेल, योग; समूह, राशि; पट्टेच; नाग, पित्त और कफ त्रय उबर जो भक्षण होता है; एक ताल (सगीत) ।

सम्बिबंध—पु० [सं०] दृढतापूर्वक बांधना, संवध, लग, लगाव; प्रभावकारिता ।

सम्बिबद्ध—वि० [सं०] दृढतापूर्वक बंधा हुआ; मजद, मजलस; अवलंबित; आवृत्त ।

सम्बिभ—वि० [सं०] समान, मजद ।

सम्बिभूत—वि० [सं०] पूर्णतः गुप्त रखा हुआ; छिपाया हुआ; चतुर, शिष्ट ।

सम्बिभगत—वि० [सं०] पूरे तौरमे डबा हुआ, गुप्त ।

सम्बिभिन्न—पु० [सं०] अच्छा कारण, अच्छे लोभोका विता; गुप्त शकुल ।

सम्बिबंधता(सु)—वि०, पु० [सं०] शामन, निबंधन करने-वाला, डटने-डपटनेवाला ।

सम्बियोग—पु० [सं०] संवध; संयोग; आमर्क; नियुक्ति; आदेश ।

सम्बिकृष्ट—वि० [सं०] रोका हुआ; दबाया हुआ; बकड़ा किया हुआ, एक जगह बंदोरा हुआ (जैसे अग्नि); मरा हुआ । —सुद—पु० बौद्धवदता ।

सम्बिरोध—पु० [सं०] रोक, बाधा; दमन; कैद; तंगी, मकीणता; संकीर्ण मार्ग ।

सम्बिवास—पु० [सं०] साथ रहना; बसना; बौसल ।

सम्बिबिद्ध—वि० [सं०] साथ बैठना हुआ; एकत्रीभूत; लीन; समाया हुआ, प्रविष्ट; आसन्नवर्ती, निकटस्थ; जिनमे पभाव

वाला हो ।

सम्बिबुद्ध—वि० [सं०] छोटा हुआ; बका हुआ; दडा हुआ ।
सम्बिबुद्धि—खी० [सं०] लौटना; हटना; रुकना; रोक-थाम ।

सम्बिबेश—पु० [सं०] प्रवेश करना; साथ बैठना; धकन होना; आसन; बैठने, रहनेका स्थान; आधार; समूह, मंडली; संयोग; मामीप्य; रूप, आकृति; कुटीर, वास-स्थान; उचित स्थानपर बैठाना; रखना, जमाना; नगर आदिके पासका वह मैदान जहाँ मनोरजन, श्वाबास आदिके किए लोग एकत्र होते हैं; छाव; रचना, निर्माण ।

सम्बिबेशन—पुन [सं०] बैठाना; रखना; जमाना; जकना; मृत्ति स्थापित करना; वासस्थान; व्यवस्था ।

सम्बिबेक्षित—वि० [सं०] प्रविष्ट कराया हुआ; बैठाया, जमाया हुआ; ठहराया हुआ; लौपा हुआ; स्थापित किया हुआ ।

सम्बिसर्ग—पु० [सं०] अच्छा स्वभाव, उदारशयता ।

सम्बिहित—वि० [सं०] पास रखा हुआ; निकटस्थ, आसन्न; उपस्थित; रखा, जमाया हुआ, ठहराया हुआ; उबल, तैयार; ठहरा हुआ, स्थित । पु० सामीप्य; एक विशेष अग्नि ।

सम्बी—खी० सनकी जातिका एक पौधा ।

सम्बोद्ध—पु० [सं०] पशुओं आदिको भगाना, हँकना; प्रेरित करना ।

सम्बवसन—पु० [सं०] स्वाग, अलग करना; सासारिक विषयोंका त्याग; जमा करना, सौपना; रखना, भरना ।

सम्बवस्त—वि० [सं०] अलग किया हुआ, छोटा हुआ; बिरक; रखा हुआ; जमा किया हुआ; सौपा हुआ; ठहराया हुआ ।

सम्बवास—पु० [सं०] छोड़ना, परित्याग; बिरकि; हिंदुओंका चतुर्थाश्रम; धरोहर; पण, दंड, बाजी; शरीरत्याग, श्रुयु; जटामासी; ठहराव, शर्त; एक तरहका मुच्छरीण ।

—प्रहज—पु० चतुर्थाश्रममे प्रवेश करना । —पल्ली—खी० मन्वासीको कुटिया ।

सम्ब्यासी(सिन्)—वि० [सं०] त्याग करनेवाला; पृथक् करनेवाला; मोजनका त्याग करनेवाला, त्यक्ताहार । पु० चतुर्थाश्रममे प्रविष्ट ब्राह्मण; किसीके पास जमा करनेवाला ।

सम्बर्गल—पु० [सं०] अच्छा और शुभ कृत्य ।

सम्बग्नि—पु० [सं०] विशुद्ध रत्न ।

सम्भाव—वि० [सं०] जिसका अस्तित्व माना भर जाय । पु० आराम ।

सम्मान—पु० दे० 'सम्मान'; [सं०] सज्जनोंका आदर-सत्कार ।

सम्मानना—सं० क्रि० दे० 'सम्मानना' ।

सम्मार्ग—पु० [सं०] सुमार्ग, सुपथ । —बोधी(विद्)—वि० धर्मपूर्वक बुद्ध करनेवाला । —स्थ—वि० सुमार्ग-पर चलनेवाला ।

सम्मार्यालोकन—पु० [सं०] सुमार्गका अनुसरण ।

सम्मुख—अ० दे० 'सम्मुख' ।

सम्भाव—पु० दे० 'सम्भाव' ।

सम्बन्धी-पुं० दे० 'सम्बन्धी'।

सम्बन्धी-की० पेटमें होनेवाला कँजुबा; बेलेका फूल।

सम्बन्ध-वि० [सं०] डेनोवाला; पंखदार (बाण); पक्षवाला, जिसका दो पक्षोंमेंसे कोई एक पक्ष हो; एक ही (समान) पक्षका; मित्रों, सहायकोंसे युक्त; पक्षजातीय; समान, संज्ञा (ज्ञा०); जिसमें साध्य वा अनुमानका विषय हो। पुं० मित्र, सहायक; समर्थक। सजातीय व्यक्ति; वह पक्षांत जिसमें साध्य हो।

सम्बन्धक-वि० [सं०] पंखदार।

सम्बन्धी-वि० दे० 'सम्बन्ध'।

सम्बन्धक-वि०, पुं० दे० 'सम्बन्ध'।

सम्बन्धी-पुं० सफेद कचनार; एक तरहका टाट; एक तरह की पेटारी।

सम्बन्धी-की० [सं०] चौखटकी पादबंध्य गोनो लकड़ियाँ।

सम्बन्धी-अ० दे० 'सम्बन्ध'।

सम्बन्धी-वि० [सं०] झंझेसे युक्त।

सम्बन्धी-वि० [सं०] शत्रुताका याव रक्खनेवाला, वैरी। पुं० शत्रु, दुश्मन। -जिल्-वि० शत्रुओंकी जीतनेवाला।

-कूण-वि० शत्रुओंकी नष्ट करनेवाला। -नाश-पुं० शत्रुका नाश। -बलसूदन-वि० शत्रुका बल नष्ट करनेवाला। -हृदि-की० शत्रुओंकी हृदि। -जी-की० शत्रुकी विजय।

सम्बन्धी-पुं० [सं०] एक तरहका ठोस बॉम।

सम्बन्धी-की० [सं०] सौत।

सम्बन्धी-वि० [सं०] पक्षोंके साथ।

सम्बन्धी-वि० [सं०] पंखदार।

सम्बन्धीकरण-पुं० [सं०] बाणसे इस प्रकार आहत करना कि पंख अंदर चला जाय; बहुत अधिक कट देना।

सम्बन्धीकृत-वि० [सं०] जो शतना वायक हुआ हो कि बरनमें बाण पंखत घुस गया हो। पुं० आहत मृगदि।

सम्बन्धीकृति-की० [सं०] बहुत अधिक कट।

सम्बन्धी-की० दे० 'शाय'।

सम्बन्धी-अ० [सं०] क्षीप्र, तत्काल, तुरत।

सम्बन्धी-पुं० दे० 'स्वप्न'।

सम्बन्धी-पुं० दे० 'स्वप्न'। सु० -होना-अप्राप्त होना, मिल न सकना।

सम्बन्धी-पुं० [सं०] एक बड़ी सख्या।

सम्बन्धी, सम्बन्धी-पुं० नाचनेवाली वंश्याके साथ साज बजानेवाला।

सम्बन्धी-अ० कि० पार लगना, पूरा होना, हो सकना; † स्नान करना; नहाना (पुश्केल)।

सम्बन्धी-वि० स्वरूप, छतमें युक्त-अपरत ठौर तहाँ अपरत जाइ कैसे-वन०।

सम्बन्धी-सं० कि० पूरा करना, खतम करना, पार लगाना; † नहाना, स्नान कराना।

सम्बन्धी, सम्बन्धी-वि० [सं०] अनुचरोंमें युक्त, सदलक।

सम्बन्धी-वि० [सं०] नैबारीके साथ; दूकनकके साथ।

सम्बन्धी-वि० [सं०] दे० 'सम्बन्धी'।

सम्बन्धी-वि० [सं०] परिवारके सदस्योंके साथ।

सम्बन्धी-वि० [सं०] उपकरण बहता हुआ; उपकरण भरा हुआ।

सम्बन्धी-वि० [सं०] मसलेंदार (बना हुआ भोजन)।

सम्बन्धी-वि० [सं०] पतियोंसे युक्त।

सम्बन्धी-की० [सं०] पूजा; सत्कार; सेवा-उद्धार।

सम्बन्धी-वि० [सं०] पशुओंके साथ; पशु-वर्णित सब।

सम्बन्धी-वि० चौरस, समचर, जो ऊप-खामक न हो।

सम्बन्धी-पुं० तेजी, झोंक; हापट; दीक।

सम्बन्धी-वि० [सं०] चरण-सहित; चतुर्पाश बढ़ाया हुआ; चतुर्पाशयुक्त, समा (समासांतमें-जैसे सप्ताहलक-समा लाक)। -पीठ-वि० पैर रखनेकी चौकीके साथ। -झरख

-पुं० एक तरकी मछली।

सम्बन्धी-पुं० [सं०] सामान्य पितरोंकी पिंड देनेवाला; छ पुष्ट कपरसे छ पुष्ट जीवनेकका संबंधी।

सम्बन्धीकरण-पुं० [सं०] भाइविभेद जिसमें वृत्तकी पिंड-दान द्वारा पितरोंके साथ मिठाते हैं, किसीकी सपिंड होनेका अधिकार प्रदान करना।

सम्बन्धी-वि० [सं०] पीकायुक्त।

सम्बन्धी-पुं० [सं०] नेनुबा।

सम्बन्धी-की० [सं०] सङ्घान; महभोज।

सम्बन्धी-की० [सं०] कटह; लोकी।

सम्बन्धी-वि० [सं०] रोमांचयुक्त।

सम्बन्धी-पुं० अच्छा, कुलका नाम बढानेवाला पुत्र।

सम्बन्धी-की० मयूत होनेका आव; अच्छे पुत्रकी माना।

सम्बन्धी-वि० सफेद, श्वेत।

सम्बन्धी-की० दे० 'सफेदी'।

सम्बन्धी-वि० [का०] दे० 'सफेद'।

सम्बन्धी-पुं० दे० 'संपेता'।

सम्बन्धी, सम्बन्धी-पुं० पोषा, सौंपका छोटा बच्चा।

सम्बन्धी-वि० [सं०] छम्में एक अधिक। पुं० सानका संख्या। -ज्जि-पुं० दे० 'सप्तति'। -कून्-पुं० एक विद्वेदेव। -कोण-पुं० मान रेखाओंमें घिरा हुआ क्षेत्र। वि० सात कोणोंवाला (क्षेत्र)। -गंग-पुं० एक स्थान जहाँ गया साग धाराओंमें बहती है। -गुण-वि०

साग गुना। -गोदावरी-की० एक नदी। -ग्रही-की० सात ग्रहोंकी एक राक्षिमें स्थिति। -छद्-पुं० विशालत्वक नामक वृक्ष। -जिह्वा-वि० सात जिह्वाओंवाला। पुं० अग्नि। -ज्वाला-पुं० अग्नि। -संति-

संज्ञ-वि० सात तारोंवाला। -दृष्ट-वि० सत्तर। -दृष्टक-वि० जिसमें सत्तर मम्मिलित हो। -दिन-

दिवस-पुं० मसाह। -दीधिति-पुं० अग्नि। -द्वीप-पुं० पृथ्वीके सातों खंड। वि० मत्त दीपमय (एकी)।

-धातु-वि० मान धातुओंवाला (शरीर)। पुं० चंद्रमाके दस अर्धोंमेंसे एक। की० शरीरके सात तत्त्व-पित्त, रक्त, मांस, वसा, अस्थि, अज्जा और शुक्र। -धातुक-

वि० मात तत्त्वोंसे युक्त। -धाम्ब-पुं० मात अर्धोंका मिश्रण (पूजादिके निमित्त)। -नक्षत्र-की० चिह्न। फंसानेका केश। -नादिका-की० सिंहा। -नाडी-

क-पुं० वर्षी-सक एक एक जो सात टेंडी रेखाओंमें बसना है। -नामा-की० आदित्यभक्ता, दुर्लभ नामक

सीवा । -**पद्म**-वि० मात पत्नीवाला; सात घोड़ोंसे खींचा जानेवाला । पु० सूर्य; मोतिवा (फूल); छतिवन । -**पद्**-वि० मात पत्नीवाला । -**पद्मी**-स्त्री० विवाहकी एक विधि जिसमें अधिकी सात बार परिक्रमा की जाती है; संधि पक्षी करनेके लिए अधिकी सात बार परिक्रमा करना । -**पद्मा**-स्त्री० विवाहकी एक रस जिसमें लोढ़ा पूजनको कहा जाता है । -**पराक**-पु० एक प्रकारकी तपश्चर्या । -**पर्ण**-**पक्षाक्ष**-वि० मात पत्नीवाला । पु० छतिवन । -**पर्णक**-पु० छतिवन । -**पर्णी**-स्त्री० लज्जा; छतिवनका फूल; एक मिठाई । -**पाताल**-पु० मात अश्वी-लोक-अतल, वितल, सुतल, रमानल, तलातल, महातल और पाताल । -**पुत्री**-स्त्री० एक तरङ्गी सुरंग, सतर-पुनिया । -**पुरी**-स्त्री० मान पुरिया-अयोध्या, मधुवा, माया, काशी, कांची, ज्वनिका और शारका-जो मोक्ष देनेवाली मानी जाती है । -**पुरुष**-वि० मान पुरमा लंबा । -**प्रकृति**-स्त्री० राज्यके मात अंग-राजा, मंत्री, मित्र, कोश, राहु, दुर्ग और सेना । -**बाह्य**-पु० बाह्यक राज्य । -**बोध्यंगकुसुमाक्ष**-पु० बुद्ध । -**भंगिनच**-पु० स्वाहादके तर्कके सात अंग (जै०) । -**अंगी**(विष्णु)-पु० स्वाहादके माननेवाले जैन । -**अह**-पु० शरीर; गुना, नेवारी । -**अध्वन**-पु० ऊपरके मात लोक, दे० 'मत्तलोक' । -**भूम**-वि० मान मजिहोवाला । -**भूमि**-स्त्री० रसानल । -**भूमिमय**-वि० दे० 'मत्तभूम' । -**भूमिक**-**भौन**-वि० सतमजिवा । -**भंज**-पु० अग्नि । -**भरीधि**-वि० मात किरणोवाला । पु० अग्नि । -**महाभाग**-पु० विष्णु । -**मातृका**-स्त्री० विवाह आदिमें पूजी जानेवाली सात माताओंका वर्ग । -**मास्य**-वि० मान मानका (बच्चा) । -**भुक्तिका**-स्त्री० कुछ धर्म-कृत्योंके अवसरपर एकत्र की जानेवाली सात स्थानोंकी मिट्टी । -**भय**-वि० मान स्वर्गवाला । -**रक्त**-पु० लाल रगवाले शरीरके मात अंग-हथेली, तलवा, नख, अँगुली, कोण, जीभ, ओठ और तालु । -**रात्र**-पु० मान रातोंका काल, मगहा । -**रात्रक**-वि० मान रातोंका चलनेवाला । -**रात्र**-पु० गुरुका एक पुत्र । -**राशिक**-पु० वैराशिक जैनी गणितकी एक क्रिया जिसमें मान राशियाँ होती हैं । -**रुचि**-वि० मात किरणोवाला । पु० अग्नि । -**छा**-स्त्री० सातवा; चमेडी, नवमालिका; रीठा; धुवा, धुपची । -**छोक**-पु० सातों लोक-भूलोक, भुवलोक, स्वलोक, महलोक, जनलोक, तपोलोक और मत्तलोक । -**लोकमय**-वि० सातोंलोक धारण करनेवाले (विष्णु) । -**छोकी**-स्त्री० पृथ्वीके मात खंड, संपूर्ण पृथ्वी । -**बल्य**-वि० सात रत्नोवाला (रत्न) । -**बर्ष**-पु० मानकाका समाहार । -**बर्ष**-वि० सात वर्षोंके अवस्थाका । -**बादी**(विष्णु)-पु० दे० 'मत्तमंगी' । -**बिंहा**-वि० सत्कार्य । -**विवाह**-पु० एक दृष्ट । -**विच**-वि० सात प्रकारका । -**वस्त**-वि० मान सी । -**वासी**-स्त्री० मात मौका मयूह; मात मौ पणोंका संध । -**शालक**-पु० विवाहका शुभ मुहूर्त-युक्त एक वक्र । -**शिवा**-स्त्री० मातानी । -**शीर्ष**-वि० सात सिरोंवाला । पु० विष्णु । -**सक्षि**-वि० सात घोड़ोंसे युक्त रथवाला । पु० सूर्य । -**समाधिपरिष्कार**

वाचक-पु० बुद्ध । -**समुद्रोत्त**-वि० जिसका विसार मात समुद्रोत्त हो (पृथ्वी) । -**सागर**-पु० एक क्षिप । -**दान**-पु० एक प्रकारका दान जिसमें सात पात्रोंमें मात तरबकी चीजें भरकर देते हैं । -**सामरक**-पु० दे० 'मत्तसामरदान' । -**सिरा**-स्त्री० पान, तंबू । -**स्व**-स्त्री० सात बच्चोंकी भौं । -**स्वर्ण**-स्त्री० एक नदी । -**स्वर**-पु० संगीतका सप्तक । -**हृष**-पु० दे० 'सत्सा' । -**सप्तक**-वि० [सं०] सात; जिसमें सात हों; सातवाँ । पु० सातका समग्र; संगीतके मात स्वरी-षट्च, ऋषभ, गान्धर, मध्यम, पचम, धैवत, निषाद-का समाहार । -**सप्तकी**-स्त्री० [सं०] (विद्योका) कटिबंध, कांची । -**सप्तसि**-वि० [सं०] सप्तर । -**सप्तम**-वि० [सं०] सातवाँ । -**सप्तमी**-स्त्री० [सं०] पक्षकी सातवीं तिथि; अधिकरण कारककी विमर्श (ध्या०) । -**सप्तसि**-पु० [सं०] मात कथियों-शतपथब्राह्मणके अनुसार-गौतम, मत्तदाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि; महाभारतके अनुसार-मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ-का मंडल; सात ताराओंका एक मंडल । -**ज**-पु० दृष्टव्य । -**सप्तम**-वि० [सं०] सात अंगोंवाला । पु० दे० 'सप्त-प्रकृति' । -**सप्तोष्ठ**-वि० [सं०] सात किरणोंवाला । पु० अग्नि । -**पुंसाव**-पु० शनि ग्रह । -**सप्तला**(स्वप्)-पु० [सं०] मत्त । -**सप्तसि**(स्व)-वि० [सं०] मात जिह्वाओंवाला; जिसकी नजर या शक्त बुरी हो । पु० अग्नि; शनि ग्रह; विषक दृष्ट । -**सप्तार्णव**-पु० [सं०] सातों समुद्र । वि० मात समुद्रोंसे घिरा हुआ । -**सप्ताल**-पु० [सं०] शफताल, सताल । -**सप्तध**-पु० [सं०] सप्तभुज क्षेत्र । -**सप्तार्णव**-पु० [सं०] सूर्य (सात घोड़ोंवाले रथके कारण) । -**सप्ताह**-पु० [सं०] सात दिनकी अवधि, हफ्ता; सात दिन तक चलनेवाला यज्ञादि । -**सप्ताह**-स्त्री० [सं०] एक घोषा, सप्तला । -**सप्रकारक**-वि० [सं०] जिसमें व्योरीका विवरण हो । -**सप्रज**-वि० [सं०] बाल-बच्चोंमें युक्त । -**सप्रज**-वि० [सं०] प्रजावान्, बुद्धिमान् । -**सप्रतिभय**-वि० [सं०] क्षतरनाक; अनिश्चित । -**सप्रम**-वि० [सं०] समान कांतिवाला; कांतियुक्त । -**सप्रमाण**-वि० [सं०] प्रमाणयुक्त; प्रामाणिक, ठीका विधान जिसमें पक्षमें हो; जो वैध अधिकारी हो । -**सप्रसय**-वि० [सं०] एक ही मूलसे उत्पन्न । -**सप्रसवा**-वि० स्त्री० [सं०] बच्चोंवाली; गर्भवती । -**सप्तार्णव**-स्त्री० [अ०] सप्तार्णवा (व्यवहार, उद्योग आदिकी चीजें); प्राप्ति, पूर्ति, रसद । -**आफिस**-पु० पूर्णिकार्यालय । -**डिपार्टमेंट**-पु० पूर्तिविभाग । -**मफ**-पु० दे० 'शक' । -**सक्र**-स्त्री० [अ०] पॉत, परा; नम्राज पदनेवालोंकी पॉत; पॉत बांधनेकी जगह; फर्श; बोरिया, चट्टी । -**आरा-**

वि० मुद्रक के लिए सैनिकों को पंक्तिबद्ध करनेवाला; मुद्रकें डबकर सफ़रनेवाला; बहाई करनेवाला । -दूर-वि० सफ़रों को तोकनेवाला; बीर, बोझा, पु० अलौकिक परबु । -बंदी-ली० परा सजाना, पीत बांधना । -बल्ला-वि० पंक्तिबद्ध । -शिक्षक-वि० सैन्य तोकनेवाला; बीर; रनबाँजुरा । - (कै) मासम-ली० बह फर्जें त्रिमपर मानाकी मज-किसमें मातम करनेवाले बैठें (मुसल०) । मु० -डखट देना-सैनिकोंकी पंक्ति को छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कर देना । सफ़रें साफ़ कर देना-सैन्यपंक्तिवोका सफ़ाया कर देना ।

सफ़रगोल-पु० दे० 'हसबगोल' ।

सफ़रताल्ल-पु० एक फल-वृक्ष, आह ।

सफ़र-पु० [सं०] दे० 'सफरी' ।

सफ़र-पु० [अ०] हिजरी सन्का दूसरा महीना जिसे मुसलमान कियौं मनुहुम समझती हैं; शहरसे बाहर जाना; यात्रा; खानगी, कूच । -खर्च-पु० सफ़रका खर्च, मार्गव्यय । -जामा-पु० भ्रमणवृत्तान्त ।

सफ़रजल-पु० [अ०] बिही ।

सफ़रजली-वि० जिसमें सफ़रजलका योग हो ।

सफ़रदाई-पु० दे० 'सफरदाई' ।

सफ़रमैना-पु० [अ० मैरमैल] सेनाके वे कर्मचारी जो पौजके आगे जाकर खाई, रास्ता आदि तैयार करते हैं ।

सफ़रा-पु० [अ०] पित्त ।

सफ़राही-वि० पैसिक, पित्तकृत । -मिज़ाज-पु० पित्त-प्रधान प्रकृति ।

सफरी-ली० [सं०] एक तरहकी छोटी चमकीली मछल ।

सफरी-वि० सफ़रका; यात्रा-सम्बन्धी; यात्राके उपयुक्त । पु० मुसाफिर, यात्री; अमरुद-सफरी, सेब, छुहारे, पिस्ता जे तद्वद् नाम-मूर । ली० राहसर्व । -आम-पु० अमरुद ।

सफ़ल-वि० [सं०] फलवाला, फलपुक्त; फल उत्पन्न करनेवाला; कृतकार्य, कामयाब; सार्वक; अत्युत्तम, बधिया नहीं ।

सफ़लक-वि० [सं०] डालमे युक्त ।

सफ़लता-ली० [सं०] कामयाबी; पूरा होनेका भाव, पूर्णता; सार्थकता ।

सफ़ला-ली० [सं०] पौष-कृष्णा एकादशी ।

सफ़लित-वि० दे० 'सफलभूत' ।

सफ़लीकरण-पु० [सं०] सफ़ल करना; सिद्ध, पूर्ण करना ।

सफ़लीभूत-वि० [सं०] कामयाब; जो सिद्ध, पूर्ण हो ।

सफ़लोद्भव-पु० [सं०] शिव ।

सफ़लोद्बर्ह-वि० [सं०] जिसमें अभिव्यम्में सफ़लताकी आशा हो ।

सफ़हा-पु० [अ०] पन्ने या वरकका एक पार्श्व, पृष्ठ; (का०) चौड़ाई; विस्तार । - (हृष्ट) हस्ती-पु० (का०) दुनिया, इहलोक । मु० -०से उठ जाना-मर जाना ।

सफ़ा-ली० [अ०] सफ़ाई; निर्मलता; चमक; सफ़ाके पासकी एक पहाड़ी । वि० दे० 'साफ' । -हूँ-ली० दे० क्रममें । -कट-वि० विलकुल साफ, मैदान, जिसपर कोई पेड़-पौधा न हो; अच्छी तरह मुँहा हुआ (मिर) ।

-०मैदान-पु० चबैल मैदान जिसमें कोई पेड़ पौधा न हो । मु० -कर देना-साफ़ कर देना, कुछ रहने न देना, पूरी तरह मूस देना; काट-पोछ जाना । -कहना-खरी, बेलग कहना ।

सफ़ाई-ली० साफ़ होना, स्वच्छता; झाड़-पोछ; मेल-गदगीका दूर किया जाना; चमक; चिकनाहट; छुरदरा पनका न रहना; मरलता; हृदय-शुद्धि; नेकनीयती, मचाई, खरापन; हिमाशका चुकता हो जाना; मेल, सुलह (मफा हो जाना); ममासि; तबाही, बरबादी; दीपसे मुक्ति; अभियुक्तका बचाव, उसकी निदोषता मित्र करनेके लिए पेश की जानेवाली गवाही इ०, अभियुक्तपक्ष (-का गवाह, वकील); कुरती, चतुराई (-का हाथ); (का०) निर्जलता । -का गवाह-बह गवाह जो अभियुक्तकी सफ़ाईमें पेश किया जाय । -का बकील-अभियुक्तपक्षका वकील । -का हाथ-तलवारकी वह चोट जो त्रिम अग या चीजपर पड़े उसकी साफ़ की हुकमे कर दे । मु० -कर देना-साफ़ कर देना, चुकता कर देना; चट कर जाना; ममास कर देना । -हो जाना-मेल, चुकना, सफ़ाया हो जाना ।

सफ़ाया-पु० समासि; नाश; संहार । मु० -कर देना-खत्म कर देना, मिटा देना; सबको मार डालना ।

सफ़ीया-पु० किताब; बही; नोटबुक; सनन ।

सफ़ीर-ली० विविधोंकी आवाज; सीटी; अथावा ।

सफ़ीर-पु० [अ०] दूत, राजदूत ।

सफ़ीर-ली० दे० 'सफरी' (सिटी, आवाज) ।

सफ़र-पु० [अ०] चूर्ण; चूर्णरूप औषध. चूर्न ।

सफ़ेद-वि० [फा०] उजला, श्वेत; गोरा; कोरा, मादा (कागज) । ली० गजोंकी आठ नाजियोंमेंसे एक । -कोह-पु० अफगानिस्तानका एक पहाड़ । -दुआ-पु० श्वेत-कुछ । -फलका-पु० वह कच्चा जिसका रंग सफ़ेद-पोट काला और दुम तथा टेने कुछ काले कुछ सफ़ेद हो । -पोख-वि० सफ़ेद कपड़े पहननेवाला; भला आदमी; जो अमीर न होते हुए भी मले आहमियोंको तरह रहे, शिष्ट किंतु अल्पवित्त (जन) । -मिह्री-ली० खबिया मिह्री । -सुहरा-पु० एक तरहकी सीप ।

रेख-वि० जिसकी दाढ़ी सफ़ेद हो गयी हो, बूढ़ा । - (हो) गिराह-पु० मला-चुरा, बनाना-विगाडना ।

-०का इस्तिबार-बनाने-विगाडने. सब कुछ करनेका अधिकार, सर्वाधिकार । मु० -पक जाना-(मय, रोग आदिसे) बेहरेका रंग उड़ जाना, पोषा पड़ जाना ।

सफ़ेदा-पु० एक तरहका आम; एक पेड़ जिसका थड़ सफ़ेद होता है; एक तरहका खरबूजा; सुबहका उजाला; जस्तेसे बनाया जानेवाला एक सफ़ेद रंग जिससे लोह, लकड़ी आदिकी रंगारी की जाती है; सफ़ेद चमड़ा ।

सफ़ेदी-ली० सफ़ेद होना, श्वेतता; मुँहपर छगानेका सफ़ेद पाउडर; सफ़ेद रमका लाव; सीपरी; चुनेकी पुतई (करना, होना); सफ़ेदका उजाला । मु० -आना-उदापा आना, बालोंका सफ़ेद होना ।

सफ़ेन-वि० [सं०] फेनयुक्त । -पुंज-वि० घने फेनमे आच्छादित (जैसे समुद्र) ।

मयसाह-पु० दे० 'सफताह'।

मयफाह-वि० [अ०] करकमी, जालिम, निर्दय।

मयफाकी-स्त्री० करता, निर्दयता, लुब्ध।

सम्बन्ध, सम्बन्धक-वि० [सं०] जिसके लिए कोई जमानत दी गयी हो।

सम्बन्ध-वि० [सं०] जिसके साथ निकट-सम्बन्ध हो; मित्रयुक्त; एक ही वंशका। पु० संतपी, रिश्तेदार।

मय-वि० कुल; समस्त; सारा; संपूर्ण; [अं०] छोटा, गौण (समासमें)। -हूँस्फेटर-पु० छोटा हस्फेटर। -ओवर-सीयर-पु० नायब ओवरसीयर। जज-पु० छोटा जज, मदरआला। डिबीजन-पु० जिलेका एक भाग, विभाग, तहसील।

डिबीजनल-वि० मय डिबीजनल। -पोष्ट आफिस-पु० मुफ्तमेलका डाकखाना। -रजिस्टार-पु० नायब रजिस्टार।

मयज-पु० [अं०] पाठ, पुस्तकका उतना अंश जितना एक दिनमें पुरसे पढ़ा जाय; शिक्षा, मीस; वह ढङ जो चेतावनीका काम दे (दिना, मिलना)। मु० -पढ़ाना-शिक्षा देना; पढ़ी पढ़ाना, बहकाना। -लेना-पढ़ना; शिक्षा लेना। -मिलाना-शिक्षा देना।

मयकृत-स्त्री० [अं०] दूसरेमें आगे बढना; बढकर होना, बनना। मु० -करना-आगे बढ जाना; पहल करना।

-ले जाना-आगे बढ जाना, (अपनी) श्रेष्ठता स्थापित करना।

मयज-वि० दे० 'मयज'।

मयद-पु० शब्द; किसी महात्माकी बानी, भजन आदि।

मयब-पु० [अं०] कारण, उपादान कारण, हेतु; दलील। अ० नी बजबन्, 'के कारण।

सम्बर-पु० दे० 'मय'। * वि० दे० 'मयल'।

सम्बर-पु० सब, कुल, सारा।

सम्बरी-स्त्री० जमीन, दीवार आदि खोलनेका एक औजार; * दे० 'जबरी'।

मयल-वि० [सं०] सशक्त, बलवान्, सेनायुक्त। पु० बलिष्ठा एक पुत्र (सात ऋषियोंमेंसे एक); [अं०] मोतिया-बिंद; अनाजकी बाल।

मयलि-वि० [सं०] राजकरमें युक्त; बलिके साथ। पु० गोडुल्लिका, सावकाह (जब बलि-बढ़ायी जाती है)।

सबा-स्त्री० [अं०] पूर्वी पवन, दूरसे पच्छिमको बहने-वाली हवा। -झरना-दम-वि० बायुवर्गसे जाने-वाला, बहुत तेज होइनेवाला (बोझ)।

सबात-स्त्री० [अं०] खिरता, स्थायित्व; बढता।

सबाध-वि० [सं०] कष्टदायक; हानिकारक।

सबार, सबाहा-पु० दे० 'सबेरा'।

सबार, सबारै-अ० जल्द, झीझ।

सबाप-वि० [सं०] अश्रुयुक्त; क्रंदन करता हुआ।

सबापक-वि० [सं०] जिसमेंसे माक निकलती हो।

मयिदु-पु० [सं०] एक पर्वत। वि० बिंदुयुक्त।

मयीह-स्त्री० शयीह, छवि, चित्र-जतुर चित्तरे तुष सवी लिखत न हिय ठहराव'-रसनिधि।

मयीह-वि० [सं०] बीजयुक्त; जिसमें बीज हो।

सवील-स्त्री० [अं०] रास्ता; उपाय-वचै न बड़ी सवील

ह चील वीसुआ मयि'-वि०; बसीला; वह स्थान जहाँ लोगोंको पानी, शरबन आदि पिलाया जाय, प्याऊ; ढंग, तरीका।

सवीह-स्त्री० दे० 'शयीह'। वि० [अं०] मोरा-चिट्टा।

सबू-पु० दे० 'सुबू'। [फा०]।

सबूत-पु० दे० 'सुबूत'।

सबूर-वि० [अं०] मज करनेवाला; क्षमाशील।

सबूरा-पु० बेवा (मुमलमान) जिवीकी काम-बासना तृप्त करनेका माधन-रूप काष्ठ या चर्मका ढङ।

सबूस-पु० [फा०] भूमी, चोकर; मिरपर जमनेवाली कमी।

सबूह-स्त्री० [अं०] वह शराब जो सुबह पी जाय।

सबूही-स्त्री० सबेरे पी जानेवाली शराब; शराबकी मोतल।

सबेरा-पु० दे० 'नबेरा'।

सबज-वि० [फा०] हरा, कच्चा; हरा-भरा। -कबूत-वि० जिनके कदम, पैर, अंगलकर माने जाते हैं, मनहूस। -कदमी-स्त्री० अमायलिक होना, मनहूसी।

-चोखा-पु० (छा०) मग। -परी-स्त्री० 'अमानत'-लिखित इंद (इंद्र)महाकी नायिका जो पुष्पफामपर आसिक हुई थी; (छा०) शराब; सुदर हरी चीज।

-पा-वि० अमागा, मनहूस। -पुल-पु० आसमान। -पोष-वि० जो जगज रंगकी पोदाक पहने हो।

-फोखा-पु० एक तरहका कबूतर जिसके हरे पंखोंके बीचमें सफेद पर होते हैं। -बकूत-वि० लोभाग्रहाणी।

-कदमी-स्त्री० सुखनभीवी, लोभाग्र। -सबूली-स्त्री० हरी सबली। -मुली-पु० हरे रंगका कबूतर।

-बार-पु० वह मुरगी जिसके सिरपर चोटी होती है।

मु० -बाश दिलावा-उमनेके लिए छूटी आशाएँ दिलाना, धोखा देना। -होना-हरा-भरा होना, फलना-फूलना।

सबजा-पु० [फा०] हरी घास, हरियाली; पत्ता; नील-कट; वह बोझ जिसकी सफेदीमें स्याह रंगकी झलक हो।

दादी-बैठके उगनेसे चेहरेपर प्रकट होनेवाली हरियाली; कानका एक गहना; एक तरहका आम; एक तरहका खर-बूजा; मग। -झार-पु० वह स्थान जहाँ हरी-हरी घासों, बनस्पतियोंका बाहुल्य हो। -वेधेयाना-पु० अपने आप या अर्थानमें उगनेवाला पोष। मु० -जाना-कचेलोंपर दादीके बाल उगने लगना।

सबजी-स्त्री० हरा रंग; हरियाली; साग-पात, हरी तरकारी; मंग। -झरोख-पु० भाग-तरकारी बेचनेवाला।

-मंडी-स्त्री० वह जगह जहाँ साग-तरकारी और ताजा फल विकते हैं।

सबजेद-पु० [अं०] प्रजा; विषय। -बदस-कमिटी-स्त्री० विषयसमिति, विषयनिर्वाचीनी समिति।

सब्त-पु० [अं०] लेख। मु० -करवा-लिखना।

सज-पु० [अं०] सज्जन, बदांस्त; पैय; पीकितकी आहवा अतर जो उत्पीककर परे; तसही। मु० -खाना-धीरज बरना, कल पकना। -करना-सज्जन करना; लुब्धकी लुपबाप सज लेना; ठहरना, पैय रखना; आशा स्थाप

देना । -की सिक छाती या दिलपर रखना-जुपचाप धर्यपूर्वक सहा लेना । -देवा- (ईश्वरका) सहनेकी शक्ति देना; धीरज बंधाना । -पक्षपा- पीकित या दुखियाकी भावका अन्तर होना, समके बदलेमें अत्याचारीको ईश्वरसे दंड मिलना ।

समासक-वि० [सं०] ब्रह्मा (पुरोहित)के साथ; ब्रह्मा (देवता)-के साथ; ब्रह्मछोकेके साथ ।

समासकचर्च-पु० [सं०] सहाभ्यसन ।

समासकारी (विष्)-पु० [सं०] सहाध्यायी; वेदकी एक ही (समान) शाखा पढ़नेवाले; समान दुःखमें ग्रस्त व्यक्ति; साथी; एक जैसे व्यक्ति ।

समंग-वि० [सं०] खटबुक्त । -श्लेष-पु० श्लेषका एक प्रकार जो सम्पर्क खट करनेपर बनना है ।

समक्ष-वि० [सं०] सहभोजी ।

समय-वि० [सं०] ठरा हुआ, मययुक्त; स्तरनाक ।

समर्थता-की० [सं०] वह की जिनका पति जीवित हो, मथवा ।

समस्मा (स्मस्)-वि० [सं०] जो भस् लगाये हो । - (स्म) द्विज-पु० पाशुपत या शेष सम्न्वासी ।

सभा-की० [सं०] योही, मजलिस; परिषद्, समिति; ममास्थल, समाभवन; न्यायालय; दरबार; धृतशाला; पक्षिकालय, अतिथिशाला; भोजनशाला; वह स्थान जहाँ लोग प्रायः आते-जाते हों; कार्य-विशेषके लिए स्थापित संस्था । -कार-पु० समा-भवनका निर्माता; समा करने-वाला । -व-वि० सभामें जानेवाला; दे० क्रममें ।

-मल-वि० जो न्यायालयमें उपस्थित हो । -गृह-पु० समा-भवन । -चातुर्य-पु० समा, समाजमें बोलने, व्यवहार करनेकी चतुरता । -नायक-पति-पु० सभाका अध्यक्ष; जुपका अङ्गा चलानेवाला । -परिषद्-की० समिति आदिका अधिवेशन । -पर्व(त्र)-पु० महाभारतका दूसरा खंड जिसमें धृतराजिका कर्णन है ।

-पाल-पु० सार्वजनिक भवन वा समाभवनका निरीक्षक । -पूजा-की० (प्रस्तावनामें) दर्शकोंके प्रति सम्मानप्रदर्शन (मा०) । -प्रवेशन-पु० न्यायालयमें प्रवेश करना । -मंडन-पु० समा-भवनकी सजावट ।

-योग्य-वि० समाजके उपयुक्त । -वसाकर-वि० सभाकी प्रभावित करनेवाला । -वी(विज्)-पु० जुपका अङ्गा चलानेवाला । -सद्, सद्-पु० सदस्य; जूरिका सदस्य, अदालतकी पंचायतका सदस्य ।

समाज-वि० [सं०] जिसका हिस्सा हो; सामान्य; सार्वजनिक; दे० 'सभा'में ।

समाज-वि० [सं०] भाग्यशाली; सुंदर ।

समाज-वि० [सं०] भाग्यशाली ।

समाचार-पु० [सं०] समाजका रीति-रिवाज; अदालतका तरीका ।

समाज-पु० [सं०] आचर-सत्कार करना; स्वागत करना; शिक्षा, नम्रता दिखाना (मिलने-जुलनेमें), मिलन-सारी । वि० पात्रयुक्त ।

समाज-वि० [सं०] सम्मानित, आचर; तुष्ट, प्रभाव; प्रशंसित ।

समाज-वि० [सं०] सम्मान करने, प्रशंसा करने योग्य ।

समाज-की० [सं०] पूर्णता; भाग्यव्य; अभ्युदय ।

समाज-वि० [सं०] सपत्नीक ।

समाज-पु० [सं०] शिव ।

समिक, समीक-पु० [सं०] जुभा खेलानेवाला, जुपका अङ्गा चलानेवाला ।

समीति-वि० [सं०] मययुक्त, डरपोक ।

समेय-वि० [सं०] समोचित; विद्वान्; शिष्ट ।

समोचित-वि० [सं०] समाके योग्य । पु० विद्वान् ब्राह्मण; शिक्षित व्यक्ति ।

सम्भ-वि० [सं०] समाका; समासे संबद्ध; समाके योग्य; शिष्ट, सत्कृत; नम्र; विश्वस्त । पु० समासद; पंच, न्याय करनेवाला; जुभा खेलानेवाला; कुलीन व्यक्ति; जुभा खेलानेवाला; मृत्य, पंचाग्निधर्मसे एक ।

सम्भता-की०, सम्भत्व-पु० [सं०] मम्य होनेका भाव, सदस्यता; शिष्टता, नम्रता, मद्रता; कुलीनता ।

सम्भेतर-वि० [सं०] उजड़, बेधकर ।

समंक-वि० [सं०] समान चिह्न धारण करनेवाला । पु० कमल नष्ट करनेवाला एक जानवर ।

समंग-वि० [सं०] समी अंगोंसे युक्त; पूर्ण । पु० पंच, खेल ।

समंगल-वि० [सं०] मंगलमय, मंगलकारक, शुभ ।

समंगा-की० [सं०] मजिह; लगजुह; बराहक्रान्ता, बाला ।

समंगिनी-की० [सं०] बोधि तस्की एक देवी ।

समंगी (गिज्)-वि० [सं०] जिनके समी अंग पूर्ण हो; मभी आवश्यक साधनोंसे युक्त ।

समंजस-वि० [सं०] उचित, उपयुक्त; ठीक, समीचीन; मगत, स्पष्ट; नैक; अभ्यस्त; अनुभवी; स्वस्थ; उत्तम । पु० नीतिव्य, उपयुक्तता; मवार्थ; सगति, यथार्थता; ठीक प्रमाण ।

समंज-पु० [सं०] गंभीर, योग्य; तरकारीवाले फल (?) ।

समंज-वि० [सं०] सपूर्ण, समग्र; सार्वत्रिक । पु० सीमा, हद । -कुसुम-पु० एक देवपुत्र । -वर्ष-पु० एक पुष्प; एक देवपुत्र । -चारित्र्यमति-पु० एक नीतिव्य ।

-दर्शी (शिंज्)-पु० एक बुद्ध । -दुग्धा-की० स्तुही वृक्ष । -नेत्र-पु० एक नीतिव्य । -पंचक-पु० कुक्षेत्र; कुक्षेत्र एक तीर्थ । -प्रभ-पु० एक पुष्प; एक नीतिव्य । -प्रभास-पु० एक बुद्ध । -प्रसादिक-पु० एक नीतिव्य ।

प्रसादिक-वि० जो सर्वत्र सहायता करनेके लिए प्रस्तुत हो । -भद्र-वि० जो पूर्णतः शुभ हो । पु० एक बुद्ध या जिन; एक नीतिव्य । -भुक्- (ज्)-पु० अग्नि । -रक्षि-पु० एक नीतिव्य ।

-विकीकित-की० एक बौद्ध लोक ।

समंज-पु० [सं०] एक देश; उस देशके निवासी ।

समंजालोक-पु० [सं०] समाधिका एक प्रकार ।

समंजालोकि-पु० [सं०] एक नीतिव्य ।

समंज-वि० [सं०] वैदिक मंत्रोंसे युक्त ।

समंज-वि० [सं०] वैदिक मंत्रोंसे युक्त; जादू जानने-वाला ।

समन्वित-वि० [सं०] मंत्रियोंसे युक्त ।

समन्व-पुं० [फा०] गायत्री रंगका घोड़ा जिसका अयाल, दुम और जॉय वा पंख और जॉयके वाक म्याह हों; (अच्छी नस्लका) घोड़ा ।

समन्वर-पुं० [फा०] एक कल्पित जंतु जो फारसी कवि-समयके अनुसार अग्निकुंडमें जप्यमान होता और उससे बाहर निकलकर तुरंत मर जाता है; * सद्युद्ध ।

समन्वकार-पुं० [सं०] सार्वभौमिक अध्यक्ष ।

सम-वि० [सं०] एक ही, अभिन्न; सदाश, एकसा; बराबर; चौरस, हमबार; जूम, जो दोसे पूरा-पूरा बँट जाय, विभक्त नहीं; पक्षपातरहित, निष्पक्ष; ईमानदार, सच्चा; माधु, नेक; मामूली, साधारण; कमीना; सीधा; उपयुक्त, सुविधाजनक; उदासीन, विरक्त; सब; समग्र । पुं० वृष, कर्क आदि सम संख्यापर पकनेवाली राशियाँ; चौरस मैदान; एक काव्यालंकार (?) जहाँ दो वस्तुओंमें वधा-योग्य संबंधका होना दिखाया जाय या (२) जहाँ कारणके साथ कार्यका सास्त्व्य हो अथवा (३) जिसके लिए प्रयत्न किया जाय, उसकी सिद्धि बिना अविष्टके ही होना वंशित किया जाय; तालका एक अंग, संगीतमें वह स्वरान जहाँ लयकी समाप्ति और तालका आरम्भ होता है; वर्ग-मूल निकाशनेकी क्रियामें राशिके ऊपर ही जानेवाली रेखा; वह बिंदु जिसपर मध्याह्नरेखा विपुल रेखासे मिलती है; तृणाग्नि; जिन; धर्मका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; साहज्य, समानता; अच्छी दशा; * दे० 'सम' ।

* स्त्री० समता, बराबरी । -कक्ष-वि० समान वजनका, बराबरीका । -कन्या-स्त्री० उपयुक्त कन्या, विवाहके योग्य कन्या । -कर-वि० उचित रूपमें कर लगानेवाला; दे० क्रममें । -कर्ण-पुं० शिव; बुद्ध; समान कर्णोवाला क्षेत्र (ज्या०) । -कर्मा(मंत्र)-वि० समान पंजा करनेवाला । -काक-पुं० एक ही समय वा क्षण ।

-काकीन-वि० एक समयमें रहने वा होनेवाला ।

-कीण-वि० बराबर कीणीवाला (क्षेत्र) । पुं० वह कीण जो १० अंशका हो । -कोर-पुं० सर्प । -क्रम-वि०

जिनके कदम बराबर दूरीपर पड़ें । -क्रिय-वि० एक नैसा कार्य करनेवाला । -क्षेत्र-पुं० नक्षत्रोंकी एक विशेष स्थिति । -क्षाल-पुं० पनके रूपमें की गयी सुदाई । -गंध-वि० समान गंधवाला । स्त्री० बराबर रहनेवाली गंध । -गंधक-पुं० एक ही जैसे पदार्थोंसे बना हुआ धूप । -गंधिक-वि० समान गंधवाला । पुं०

खस । -गंधवाल-पुं० वृक्ष । -चतुरश्र, -चतुरस्र-वि०

जिसके चारों कोण बराबर हों । पुं० वर्गक्षेत्र (ज्या०) । -चतुर्भुज-पुं० वह क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ

बराबर हों । (ज्या०) । -चतुर्कोण-वि० जिसके चारों कोण बराबर हों (ज्या०) । -चर-वि० एक-भा व्यवहार

या आचरण रखनेवाला । -चिर-वि० भीर, शांत; उदासीन; जिसके विचार एक ही विषयपर केंद्रित हों ।

-चेता(तत्त्व)-वि० दे० 'समचित्त' । -च्छेद-वि०

छेदना । -च्छेदन-वि० जिसके हर समान हों (ग०) । -जाति,

-जातीय-वि० समान जाति वा वर्गका । -ज्ञा-स्त्री०

स्थिति, सुपक्ष । -स्त-वि० एक ही तटपर बसे हुए

(देश) । -तल-वि० चौरस, हमबार । -तीर्थक-वि०

ऊपरतक, किनारेतक भरा हुआ । -तुला-स्त्री० समान

मूल्य । -तुलित-वि० बराबर वजनका । -तोल-वि०

समान तोल, मध्यमका । -तोलन-पुं० समान

करना; तराजूके पक्षोंको बराबर करना । -त्रय-पुं०

तीन द्रव्यों-शर्करा, नागरमोषा और हरेका सम परि-

माण । -त्रिभुज-वि० जिसकी तीनों भुजाएँ समान

हों । पुं० ऐसा क्षेत्र (ज्या०) । -विद(वृ)-वि० समान

चमकीला वा छंदर । -वैद-वि० जिसके दाँत बराबर

हों । -वर्धन-वि० एकरूप, एक जैसी शकलवाला; एक

नजरसे देखनेवाला । -दर्शी(सिन्धु)-वि० सबको

एक भा देखने-समझनेवाला । -दुग्ध-वि० कृपातु, काश्-

णिक । -दृक्(सु)-वि० दे० 'समदर्शी' । -दृष्टि-वि०

दे० 'समदर्शी' । स्त्री० सबको एक नजरसे देखनेकी क्रिया ।

-देश-पुं० हमबार मैदान । -धृति-वि० समान कांति-

युक्त । -द्वादशाब्द, -द्वादशाक्ष-पुं० बारह समान

भुजाओंवाला क्षेत्र (ज्या०) । -द्विभुज-पुं० वह चतुर्भुज

जिसकी आसने-सामनेकी भुजाएँ बराबर हों । -द्विभुज-

वि० जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों । पुं० ऐसा चतुर्भुज ।

-धर्मा(मंत्र)-वि० एक जैसे स्वभावका । -धृत्त-

वि० जिसका वजन बराबर किया गया हो; के बराबर ।

-नाम(त्र)-पुं० वही वा ममान नाम, पर्याय ।

-निदानबन-वि० मानापमानके प्रति उदासीन ।

-पद्-पुं० बाण चलानेके समय धरे होनेका एक

दंग; एक रतिबंध । -पाव-पुं० दे० 'समपद'; नृत्यकी

एक गति; समान चरणोंवाला छंद । -प्रभ-वि० समान

कांतिवाला । -बुद्धि-वि० सुख-दुःखादि एक-भा समझने-

वाला, उदासीन । स्त्री० वह बुद्धि जो किसी हास्यमें

निचलित न हो । -आग-पुं० बराबर हिस्सा । वि०

बराबर हिस्सा पानेवाला । -भूमि-स्त्री० हमबार

जमीन । -मति-वि० धीरे, शांत । -मात्र-वि० बरा-

बर परिमाणका; बराबर मात्राओंवाला (छंद) । -दंष्ट्रि-

वि० जिसका रंग सर्वत्र एक-सा हो । -दंड-स्त्री० गह-

राई आदि नापनेकी रेखा (ग०) । -दत्त-पुं० एक रतिबंध ।

-दय-पुं० एक रतिबंध । -वर्ण-वि० एक ही रंगका; एक

ही जातिका । -वर्ती(सिन्धु)-वि० किसीके प्रति पक्ष-

पात न दिखानेवाला; एक-सा व्यवहार करनेवाला; समान

दूरीपर स्थित । पुं० यम । -विभाज्य-पुं० बराबर हिस्सों

में संप्रतिष्ठा बँटवारा । -विषम-पुं० वह जमीन जो

ऊबड़-खाबड़ हो । वि० ऊबड़-खाबड़ । -वीर्य-वि० बराबर

बलवाला । -वृत्त-पुं० बराबर चरणोंवाला छंद । वि०

बराबर गोलाईवाला । -वृत्ति-स्त्री० धीरता, मनकी

स्थिरता । वि० धीर, गंभीर । -वेध-पुं० मध्य या औसत

गहराई । -वेध-पुं० एक जैसी पोशाक । -व्यूह-पुं० एक

प्रकारका ब्यूह । -शङ्कु-पुं० मध्याह्न । -शशी(सिन्धु)-

पु० समान श्रुतीवाचा चंद्रमा ।-हीतोष्ण-वि० (स्थान) जहाँ सर्दी-गर्मीकी भाभा बराबर रहे, न अधिक उष्णता हो, न शीत ।-०कटिबंध-पु० ध्रुवीके वे भाग जो उत्तरमें कर्क रेखासे उत्तर वृत्तक और दक्षिणमें मकर रेखासे दक्षिण वृत्तक परते है (यहाँ सर्दी-गर्मी समान रूपमें रहती हैं) ।-हील-वि० एक ही जैसे स्वभाव या आचरणका ।-श्रुति-वि० ममान अवकाश-वाचा ।-श्रेणी-स्त्री० सीधी रेखा ।-संख्यात-वि० बराबर संख्यावाला ।-संधि-स्त्री० बराबरकी शर्तपर होनेवाली मुल्लह; पूरी सहायता करनेकी शर्तके साथ होनेवाली संधि (क्षी०) ।-संस्थान-पु० एक योगासन ।-समयवर्ती(सिन्धु)-वि० युगपत् होनेवाला, साथ-साथ होनेवाला ।-सिद्धांत-वि० ममान उद्देश्य लेकर चलनेवाला ।-सुसि-स्त्री० ममान या सामान्य निद्रा (कल्पका अंत और निद्राका प्रलय) ।-सूत्र-स्त्री०-वि० एक ही व्यासपर स्थित ।-स्थ-वि० ममान, संशय; चौरस; उन्नतिशील ।-स्थल-पु० चौरस जमीन ।-स्थली-स्त्री० गंगा-यमुनाके बीचका भूभाग, अंतर्देश, दोआब ।-स्थान-पु० योगका एक आसन ।

सम, सम्म-पु० [अ०] विष, जहर ।-(स्मे)कृतिक-पु० घातक विष ।

समञ्ज-पु० [अ०] कान ।-छरासी-स्त्री० बक-बक करके खोपकी चटनना (बक्ता विनयवश अपने कथन, निवेदनके लिए कहता है, शब्दार्थ-कान छीलना) ।

समकर-वि० [सं०] समुद्री जंतुओंने पूर्ण; दे० 'सम'मे ।

समपन्न-वि० [सं०] एक ही समय या साथ जानेवाला; गमनकर्ता; हुका हुआ ।

समक्ष-वि० [सं०] जो आँखोंके सम्मुख हो, गोचर, उपस्थित । अ० सामने ।-दृष्ट-वि० आँखोंसे देखना; आँखों देखा प्रमाण, चक्षुर्मिल गवाहका बयान ।

समक्षता-स्त्री० [सं०] गोचरता, दृश्य होनेका भाव ।

समसा-पु० अ० गोंद ।-अरबी-पु० बटुका गोंद ।

समसा-वि० समग्र, पूरा, सब ।

समग्र-वि० [सं०] सब, पूरा ।-जी-वि० सर्वश्रेष्ठ ।

-मक्षजशील-वि० सब कुछ मक्षण करनेवाला ।-

शक्ति-वि० सारी शक्तिवीसे युक्त ।-संचद्-वि० सब प्रकारके सुखसे युक्त ।

समम्रेदु-पु० [सं०] पूर्ण चंद्र ।

समज-पु० [सं०] जंगल; पशुओं, पक्षियोंका झुंड; मूल-मंडली; ह्रद ।

समज्जा-स्त्री० [सं०] मिलन-स्थान, समा आदिका स्थान; समा; गोष्ठी; नामबरी, स्वाति ।

समज्ञ-स्त्री० बुद्धि, प्रज्ञा; ख्यात, विचार ।-द्वार-वि० बुद्धिमान् ।

समज्ञान-अ० कि० जान लेना; विचारना । स० कि० किसी बातकी जान लेना । समज्ञ-बुद्धकर-जान-बुद्धकर । सु० समज्ञ रक्षना-खयाल करना, जान लेना (चेतावनी) ।-लेना-बटका लेना; ममज्ञता करना; जान लेना ।

समज्ञावा-स० कि० बोध, ज्ञान कराना, जतलाना ।

समज्ञावा; समज्ञावा-पु० समज्ञने, समज्ञानेका भाव ।

समज्ञावा-पु० दोनों पक्षों द्वारा संधिकी शर्तोंकी स्वीकृति, राजीनामा, मेह ।

समता-स्त्री०, समत्व-पु० [सं०] चौरस होनेका भाव; साध्य, बराबरी, अनुकंपता; निष्पक्षता; धीरता; उदारता; अनिग्रहा; पूर्णता; साधारणता ।

समताई-स्त्री० समता; बराबरी ।

समतिक्रम-पु० [सं०] उल्लंघन; उपेक्षा ।

समतल-वि० ममान, सच्छ-‘सुजन क प्रेम हेम समतल’-विद्या० ।

समर्थ-वि० समर्थ ।

समर्थ-वि० दे० ‘समर्थ’ ।

समव-वि० [सं०] मतवाला; मस्त (हाथी); प्रसन्न ।

समद्व-पु० [सं०] युद्ध; * भेंट, नजर, उपहार । वि० प्रेमोन्मत्त; धतूरेके पीधेसे युक्त ।

समद्वाना-अ० कि० भेंटना, मिलना । स० कि० भेंट, नजर करना; सौपना; भ्वाहमे देना-‘दुहिता समदौ सुख पाइ अबै’-रामचंद्रिका; आनर्बसे मनाना ।

समद्वाना-अ० कि० सौपना, सुपुर्द करना; रखना धरना ।

समधिक-वि० [सं०] बहुत अधिक, अतिशय; माधारणमें बहुत ज्यादा, असाधारण ।

समधिगत-वि० [सं०] पास गया हुआ ।

समधिगम-पु० [सं०] अभी आँति सम्पन्नता, अनुगम करना ।

समधिगमन-पु० [सं०] बढ़ जाना, आगे निकल जाना ।

समधियाव, समधियाना-पु० पुत्र या पुत्रीकी मसुराल ।

समधी-पु० पुत्रका या पुत्रीका मसुर ।

समधीत-वि० [सं०] अच्छी तरह पढ़ा हुआ, अभ्यसन किया हुआ ।

समधुर-वि० [सं०] मीठा ।

समधुरा-स्त्री० [सं०] अंगूर ।

समधीरा-पु० विवाहकी एक ररम जिसमें ममधी परस्पर मिलते हैं ।

समध्व-वि० [सं०] साथ यात्रा करनेवाला ।

समनंतर-वि० [सं०] सदा हुआ, विच्छिन्न बगलका ।

समन-पु० यम; [अ० ‘ममन्त’] प्रतिवादी या गवाहको अदालतमें हाजिर होनेके लिए उसकी ओरने भेजी जानेवाली लिखित सूचना; [अ०] दाम, मोल, बेचीकी कीमत । स्त्री० [फा०] चमेली ।-अंदास; -पैकर-वि० चमेलीकी लताकी तरह सुंदर, सुकुमार देखवाला ।

समनीक-पु० [सं०] युद्ध ।

समनुकीर्तन-पु० [सं०] बृह बढकर प्रशंसा करना ।

समनुज्ञा-स्त्री० [सं०] अनुमति ।

समनुज्ञात-वि० [सं०] पूर्णतः स्वीकृत; जिसे अधिकार दिया गया हो; जिने जानेकी आज्ञा दी गयी हो; अनुगृहीत ।

समनुज्ञान-पु० [सं०] पूर्ण स्वीकृति, अनुमति ।

समन्वय-वि० [सं०] आसक्त, प्रणयाविष्ट ।

समन्वय-प० [सं०] नियमित क्रम; संबद्ध फल, काय

कारण संबंधका निर्वाह; संयोग; मेल, पटरी ।

समन्वित-वि० [सं०] संयुक्त; स्वाभाविक रूपमें क्रमबद्ध; अनुगत; 'मे युक्तः' द्वारा प्रभावित; जिसका मेल बैठाना गया हो ।

समन्वयन-पु० दे० 'समर्पण' ।

समन्विस्तुत-वि० [सं०] परिप्लावित; अभिभूत; द्रस्त, ग्रहणयुक्त (जैसे चंद्र) ।

समन्विद्याहार-पु० [सं०] साध वर्णन करना; साध, संगति; प्रसिद्ध अर्थवाले शब्दका साक्षिष्य ।

समन्विद्यान-वि० [सं०] पूर्णतः जमा हुआ ।

समन्विसरण-पु० [सं०] किसी ओर बढना; प्राप्तिके लिए प्रयत्न करना ।

समन्विहरण-पु० [सं०] हरण करना, ले लेना; आवृत्ति, बार-बार करना या होना ।

समन्विहार-पु० [सं०] ग्रहण, हरण; आधिक्य; आवृत्ति ।

समन्विहार-पु० [सं०] साध लाना; साध, साक्षिष्य ।

समय-पु० [सं०] काल; वक्त; अवसर; पुरस्ततः उपयुक्त काल; कति समय; अर्ध; ठहराव; प्रथा; विहिताचार; कवि-नमय; समझौता; नियम; आदेश; उपदेश; संकटकी स्थिति; श्राप; प्रतिष्ठा; संकेत; सीमा, हड; मित्रांत, सफलता; अमुदय; कष्टकी समाप्ति (जा०); मर्कट; भाषण, व्याख्यान । -**काल**-वि० प्रतिष्ठा, ठहरावका इच्छुक । -**कार**-पु० समय नियत करनेवाला; संकेत । -**क्रिया**-वि० समय नियत करना; दिव्य परीक्षाकी तैयारी; आपन-में व्यवहारके लिए नियम बनाना । -**च्युति**-स्त्री० सोका-युक्त जामा, अवसर हाथमें निकल जाना । -**ज्ञ**-वि० समयका हान रखनेवाला । -**धर्म**-पु० प्रतिष्ठा-संबंधी कर्तव्य । -**पद**-पु० समझौतेका विषय । -**परिरक्षण**-पु० समझौतेका पालन । -**बंधन**-वि० प्रतिष्ठाबद्ध । पु० प्रतिष्ठाका बंधन । -**मेव**-पु० प्रतिष्ठा अंग करना ।

-**विद्या**-स्त्री० कलिन उद्योतिष । -**विपरीत**-वि० वादेके खिलाफ; बाना पुरान करनेवाला । -**वेला**-स्त्री० काल-परिमाण, अवधि । -**व्यभिचार**-पु० प्रतिष्ठा-भंग । -**व्यभिचारी (विज्)**-वि० प्रनिष्ठा भंग करने-वाला ।

समयाचार-पु० [सं०] प्रचलित व्यवहार ।

समयाधुपुति-पु० [सं०] वह समय जब न सृज इष्टि-योग्य हो और न तारे दिखाई देते हों, संध्या ।

समयानंद-पु० [सं०] एक शैल (त०) ।

समयानुवर्ती (सिन्)-वि० [सं०] प्रचलित रीतिके अनु-सार चलनेवाला ।

समयोचित-वि० [सं०] अवसरके उपयुक्त ।

स्मर-पु० [ज०] फल, सेवा; सत्कर्मका सुफल; * स्मर, मनोज; [सं०] युद्ध, लड़ाई । -**कर्म (ज्)**-पु० युद्ध-कर्म, लड़नेका कार्य । -**क्षिति**, -**भू**, -**भूमि**, -**वसुधा**-स्त्री० युद्धक्षेत्र । -**पोत**-पु० युद्धपोत, रणपोत । -**मर्द**-पु० शिवा । -**मूर्धा (र्ध)**-पु० युद्धका अगला मोरचा ।

-**विजयी (विज्)**-वि० युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला । -**व्यसनी (विज्)**-वि० युद्धमय । -**क्षायी (विज्)**-वि० वीरगति प्राप्त करनेवाला । -**क्षिर (स्)**-पु० दे०

'समरमूर्धा' । -**शूर**-पु० युद्धमें वीरता प्रकट करनेवाला व्यक्ति । -**स्त्रीना**-स्त्री० युद्धभूमि ।

समरक्रंद-पु० तुर्किस्तानका एक इतिहासप्रसिद्ध नगर जो अमीर तैमूरकी राजधानी था और अब उजबक (सोवियत) प्रजातंत्रके अंतर्गत है; उजबक प्रजातंत्रका एक सभा ।

समरक्रंदी-वि० समरक्रंदका । -**सबाज्ञा**-पु० सृष्ट-मृच्छी दावत ।

समरस्थ-वि० दे० 'समर्थ' ।

समरथ-वि० दे० 'ममर्थ' ।

समरांगण-पु० [सं०] युद्धभूमि ।

समरा-पु० [ज०] नतीजा, फल; बदला ।

समराख्य-पु० [सं०] एक ताल (संगीत) ।

समरागम-पु० [सं०] युद्ध छिपना ।

समराजिर-पु० [सं०] युद्धक्षेत्र ।

समराना-स० कि० पहनाना, सजाना-**आभूषन** मय जवाकके समरार्थे-अष्टछाप ।

समरोचित-वि० [सं०] युद्ध ई उपयुक्त (जैसे हाथी) ।

समरोद्धेश-पु० [सं०] युद्धक्षेत्र ।

समरोधत-वि० [सं०] युद्धके लिए तैयार ।

समर्थ-वि० [सं०] सस्ता, कम दामोका ।

समर्थक-वि०, पु० [सं०] पूजा करनेवाला ।

समर्थन-पु० [सं०] अच्छी तरह अर्चन, पूजन करना; आदर-सत्कार करना ।

समर्थना-स्त्री० [ज०] दे० 'ममर्थन' ।

समर्थ-वि० [सं०] कष्टग्रस्त, पीड़ित; आहत; याचित, प्राथित ।

समर्थ-वि० [सं०] बलवान्, सशक्त; योग्य; उपयुक्त; प्रशस्त; उपयुक्त बनाया हुआ, तैयार किया हुआ; समानार्थक; अर्थतः संबद्ध; समान या उपयुक्त उद्देश्य रखने-वाला; व्याकरणकी दृष्टिसे समान स्थितिका । पु० भाव-पूर्ण, महत्त्वका शब्द; योग्यता; बोधगम्यता; हित ।

समर्थक-वि० [सं०] योग्य; संभालनेवाला; प्रमाणित करनेवाला; समर्थन करनेवाला, पुष्टि करनेवाला, ताईद करनेवाला ।

समर्थता-स्त्री०, **समर्थत्व**-पु० [सं०] योग्यता, सामर्थ्य, शक्ति; अर्थाधिकी अमिश्रता ।

समर्थन-पु० [सं०] पुष्टि करना, ताईद करना; विवेचन, विचार करना; अंतर दूर कर सामर्थ्य स्थापित करना, विचारका अंत करना; पक्ष ग्रहण करना; किसी वस्तुके औचित्यानीचित्यका निर्णय करना; आपत्ति; सामर्थ्य, शक्ति; उत्साह; योग्यता; अध्यवसाय ।

समर्थना-स्त्री० [सं०] आत्मरक्षण; अनुरोध; असंभव बातके लिए हठ करना; दे० 'समर्थन' ।

समर्थनीय-वि० [सं०] समर्थन करने योग्य; प्रमाणित करने योग्य; निश्चित करने योग्य ।

समर्थित-वि० [सं०] विवेचित, विचारित, निर्णीत; निश्चित, जिसका सकल्य किया गया हो; जिसकी पुष्टि या ताईद की गयी हो; प्रमाणित; सामर्थ्ययुक्त, योग्य ।

समर्थ-वि० [सं०] दे० 'समर्थनीय' ।

समर्थक, **समर्थक**-वि० [सं०] दूर देनेवाला (दिब, क्षति

आदि); समृद्ध, उन्नत करनेवाला ।
समर्पक-वि० [सं०] समर्पण करनेवाला ।
समर्पण-पु० [सं०] सौपना, देना; भेंट करना; अर्पणना, दत्त करना; पात्रोंको आपसकी अर्पणा (ना०) ।
समर्पना*-स० क्रि० सौपना, समर्पण करना ।
समर्पयिता(तृ)-वि० [सं०] समर्पण करनेवाला, देनेवाला, सौपनेवाला ।
समर्पित-वि० [सं०] समर्पण किया हुआ, दिया हुआ, भोपा हुआ; निक्षिप्त; रखा या जमाया हुआ; प्रत्यर्पित; से भरा हुआ, पूर्ण ।
समर्प्य-वि० [सं०] समर्पणीय, समर्पण करने योग्य ।
समर्पाद-वि० [सं०] परिमित, सीमित; निकट; सन्निरत, औचित्यकी सीमाके अंदर रहनेवाला; शिष्ट, विनम्र ।
समर्हण-पु० [सं०] सम्मान, आदर; उपलोकन, आदरपूर्वक दी जानेवाली भेंट ।
समर्लंकृत-वि० [सं०] श्रव मजा हुआ, अलंकारादिसे पूर्णतः विभूषित ।
समल-वि० [सं०] मलयुक्त, गदा; अशुद्ध; पापी । पु० मल, विद्या; एक अक्षर ।
समबकार-पु० [सं०] रूपकका एक भेद जिसमें तीन अंक होते हैं और देवाक्षरोंके वीरतापूर्ण कार्याका उल्लेख होता है ।
समबच्छन्न-वि० [सं०] पूर्णतः आवृत, बिलकुल ढका हुआ ।
समबतार-पु० [सं०] उतार; नदी आदिमें उतरनेकी सीढ़ी, घाट, सीप ।
समबत्त-वि० [सं०] काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।
समबधान-पु० [सं०] पूर्ण मनोयोग; तैयारी; मिलना, एकत्र होना ।
समबर्णोपधान-पु० [सं०] बढिया मालमें घटिया मिलाना (कौ०) ।
समबद्धान-वि० [सं०] बर्धा, नष्ट ।
समबसरण-पु० [सं०] सभा, गोष्ठी; उतरनेका स्थान; जिनका अवतार; उद्देश्य (कौ०) ।
समबस्कंद-पु० [सं०] दुर्गप्राचीर, परकोटा ।
समबस्त्रा-स्त्री० [सं०] शिर आवस्त्रा; समान आवस्त्रा; अवस्त्रा ।
समबन्धित-वि० [सं०] ठहरा हुआ, स्थिर; दृढ़; तैयार, उन्नत; जो किसी स्थानपर हो ।
समबहार-पु० [सं०] राशि; परिमाण; आधिक्य, प्रानुर्थ; मिश्रण ।
समबास-वि० [सं०] लब्ध, प्राप्त ।
समबासि-स्त्री० [सं०] कृषि, प्राप्ति ।
समबाय-पु० [सं०] संयोग, मेल; राशि, समूह, एकत्र होना; घनिष्ठ संबंध; अनेक संबंध, नित्य संबंध (जैसे-पराधी और शुण, वंशी और अंगका-वैशे०); निवमानुसार गठित वह व्यापारिक संस्था जिसमें कई हिस्सेदारोंकी पूँजी लगी हो, जिनमें अपने हिस्सेकी पूँजीके अनुसार ऊमांश पानेका हक होता है । -संबंध-पु० नित्य संबंध ।
समबावन-पु० [सं०] संपर्क स्थापित होना, संयोग होना,

मिलना ।
समबायिक-वि० [सं०] जिसके साथ समबाय-संबंध हो ।
समबायी(विन्)-वि० [सं०] घनिष्ठ रूपमें संबद्ध; जिसके साथ अनेक संबंध हो, नित्य संबंधी; राशिमय; बहुल । पु० हिस्सेदार; अंग, अवयव । -**(वि)कारण**-पु० वह कारण जो धनकून किया जा सके, अतर्हित हो, उपादान कारण (वैशे०) ।
समबेक्षित-वि० [सं०] विवेचित, विचारित ।
समवेत-वि० [सं०] संयुक्त, मिला हुआ; नित्य रूपमें संबद्ध; अंतर्भूत; जमा किया हुआ । पु० नित्य रूपमें संबद्ध होनेकी अवस्था ।
समष्टि-स्त्री० [सं०] सामूहिकता, संपूर्णता; समवेत सत्ता (वि०); एक जैसे अंगोंका समूह, व्यवस्था उलटा ।
समष्टिल-पु० [सं०] एक बंटीला पोषा, कौकुआ; गंहीर, पोय ।
समष्टिला-स्त्री० [सं०] समष्टिल, गंहीर साग; सूरन ।
समष्टीला-स्त्री० [सं०] दे० 'समष्टिल' ।
समसन-पु० [सं०] संयुक्त करना, जोड़ना; मक्षिप्त करना, संकुचित करना; ममासका रूप देना ।
समसर*-स्त्री० बराबरी-प्रीतम रूप कनाकके भगवत की नाहि'-रतन० ।
समसेर-स्त्री० शमसेर, तलवार ।
समस्त-वि० [सं०] जोडा हुआ, संयुक्त किया हुआ ममासके रूपमें परिणत; सब, समग्र, सपूर्ण; मक्षिप्त किया हुआ; सबमें व्याप्त (वि०) । पु० समबाय, सभी अंगोंका योग, समष्टि । -**घाता**(तृ)-पु० सबका पालन करने-कला (विष्णु) । -**विषयिक**-वि० सारे देशमें समने-वाला ।
समस्य-वि० [सं०] संयुक्त करने योग्य; ममासका रूप देने योग्य; पूर्ण करने योग्य ।
समस्या-स्त्री० [सं०] संयोग, मेल; साथ रहना; पृथक् करनेके लिए दिया जानेवाला छंदका अनिम चरण या चरणांश; कठिन विषय, टेढ़ा मामला, जटिल प्रश्न । -**पूर्वि**-स्त्री० छंदके चरण या चरणांशके आधारपर उभे अंतमें रखते हुए छंदकी पूर्ति करना ।
सर्मा-पु० समय; ऋतु; जमाना, मौका; बहार; दृश्य, नजारा; रौनक, चमक-दमक । **सु०-बैधना**-रंग जमाना गाने या नाचने लोगोंका प्रभावित होना । -**बदल जाना**-स्थिति बदल जाना । -**बैधना**-रंग जमाना ।
सर्मात-पु० [सं०] पड़ोसी; वर्षका अंत ।
सर्मातक-पु० [सं०] कामदेव ।
सर्मात-पु० [सं०] समान भाग । वि० समान भागवाला ।
सर्मातक-वि० [सं०] समान भाग पानेवाला ।
सर्मातक-वि० [सं०] समान भागवाला; समान भाग पानेवाला ।
सर्मात-वि० [सं०] समान भाग पानेवाला ।
सर्मात-वि० [सं०] मांसयुक्त; मांसल ।
सर्मातमीना-स्त्री० [सं०] हर साल बच्चा देनेवाली गाय ।
सर्मा-पु० दे० 'सर्मा'; [अ०] आकाश, आसमान । स्त्री० [सं०] वर्ष, वर्षास्त्र, साक ।

समाश-पु० [अ०] राग सुनना; राग सुननेमें होनेवाली तहीनता ।

समाश-खी० [अ०] सुनना; श्रवणशक्ति; सुकदमेंकी सुनवाई; विचार । -के **बाबिल**-सुनने लायक, विचार करने योग्य (मुकदमा) ।

समाई-खी० मनानेका भाव; सामर्थ्य । वि० [अ०] सुना हुआ, भुनिकर आशित (शब्द) जिसे अहलेखवान बोलते हैं (उनमें सुना गया हो), पर किसी नियममें व्युत्पन्न न हो (ज्या०) ।

समाड-पु० गुंजाइश, निर्वाह ।

समाकर्षण-पु० [सं०] अपनी ओर खींचना ।

समाकर्षी (पिन्)-वि० [सं०] अपनी ओर खींचने, आकृष्ट करनेवाला; दूरतक फैलनेवाला; मृग्य क्लेशनेवाला । पु० दूरतक फैलनेवाली खुशबू ।

समाकार-वि० [सं०] एक ही आकारका, एकरूप ।

समाकुचित-वि० [म०] समाप्त किया हुआ, रीका हुआ (मापण) ।

समाकुल-वि० [सं०] अस्थिर व्यवस्था, गवराया हुआ, बढ-हवाना; "से भरा हुआ," में पूर्ण ।

समाक्षि-वि० [सं०] मधुयुक्त ।

समाख्या-खी० [म०] नामवरी, प्रसिद्धि, ख्याति; नाम, मन्ना, व्याख्या ।

समाख्यात-वि० [म०] गिना हुआ, गुमार किया हुआ; प्रसिद्ध, ख्यात; पूर्ण रूपमें वर्णित, बोधित; अनिश्चित ।

समाख्यान-पु० [म०] नाम लेना; वर्णन; व्याख्या ।

समागत-वि० [म०] पहुँचा हुआ; लौटा हुआ; आकर मिला हुआ; जो मधुक्त अवस्थामें हो ।

समागता-खी० [सं०] एक तरहकी पहेली जिसका अर्थ मंथिके द्वारा छिपा दिया जाता है ।

समागति-खी० [म०] आकर मिलना, योग, पहुँचना; एक जैसी अवस्था ।

समागम-पु० [म०] मेट, मिलन; मिश्रण; साथ, संगति; आना, आगमन; (ग्रहोंका) योग; संघ, समूह, मधुन ।

समागलित-वि० [सं०] गिरा हुआ, पतित ।

समागाढ-वि० [सं०] अत्यंत गाढा, बहुत घना, गुजान ।

समाघात-पु० [सं०] युद्ध; वध ।

समाघ्राण-पु० [सं०] अच्छी तरह सूँघना ।

समाघ्रात-वि० [सं०] अच्छी तरह सूँघा हुआ ।

समाच्छ्रण-पु० [सं०] अच्छी तरह कहना; निवरण देना; निरूपण करना ।

समाचयन-पु० [सं०] सचय, चयन, संग्रह करना, एकत्र करना ।

समाचरण-पु० [सं०] अस्थास करना; पूरा करना; व्यवहार करना ।

समाचरित-वि० [सं०] सम्यक् रूपमें आचरण किया हुआ; व्यवहृत ।

समाचार-पु० [सं०] व्यवहार, आचरण; सम्यक् या समान आचरण; रीति; प्रथा; कृतान्त, सवाद, खबर; निवरण । -**पत्र-पु०** वह कागज जिसमें देश-विदेशकी खबरे छपी रहती हैं, अखबार । -**प्रसारण-पु०** [सं०]

आकाशवाणी द्वारा समाचारोंका प्रसारित किया जाना ।

समाचीर्ण-वि० [म०] व्यवहन, आचरित, पूरा किया हुआ ।

समाचेष्टित-वि० [म०] जिसके लिए चेष्टा की गयी हो; व्यवहृत, आचरित । पु० अगमगी; व्यवहार, आचरण ।

समाश-पु० [म०] मिलना, एकत्र होना; समूह; संघ, दल; समा, समिति; आधिक्य; समान कार्य करनेवालोंका समूह; विशेष उद्देश्यकी पूर्ति के लिए संघटित संस्था; ग्रहोंका एक योग; हाथी । -**बाद-पु०** यह सिद्धांत कि उत्पादनके समस्त साधनोंपर समाजका अधिकार हो और उत्पन्न होनेवाली मपत्तिका यथासंभव, समान रूपसे वितरण हो । -**बाकी (विन)**-वि० समाज-बादका सिद्धांत माननेवाला । -**शास्त्र-पु०** मनुष्यकी सामाजिक प्राणी मानकर समाजके प्रति उसके कर्तव्यों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र । -**सन्निवेशन-पु०**

समाजके उपयुक्त ध्यान, समा-भवन । -**सेवक-पु०** समाजके हितके लिए कार्य करनेवाला । -**सेवा-खी०**

समाजका हित-साधन । -**मेवी (विन)**-वि०, पु० समाज सेवा करनेवाला ।

समाजत-खी० [अ०] सुशामद; अनुनय (मिश्रत-समाजत) ।

समाजी-पु० सपरदा; आर्यसमाजके सिद्धांतोंकी माननेवाला ।

समाश्रय-वि० [सं०] जिसे आश्रय दी गयी हो, आदिष्ट ।

समाश्रय-खी० [सं०] ख्याति, प्रसिद्धि; नाम, संज्ञा ।

समाश्रय-वि० [सं०] जाना हुआ; माना हुआ ।

समाश्रय-वि० [म०] फैलाया हुआ; ताना हुआ (धनुष); निरंतर, अविच्छिन्न ।

समाश्रय (न)-खी० [सं०] माताके समान मान्य स्त्री; विमाता ।

समाश्रय-वि० [सं०] यात्रयुक्त ।

समाश्रय-वि० [सं०] गृहीत; प्राप्त ।

समाश्रय-वि० [सं०] विशेष आदर, प्रतिष्ठा, सम्कार ।

समाश्रयणीय-वि० [सं०] विशेष आदर करने योग्य, सम्मान्य ।

समादान-पु० [म०] पूर्ण रूपमें ग्रहण करना; अपनेपर लेना; आरम्भ करना; निश्चय, सकल्प; उपयुक्त दान आदि प्राप्त करना; जैनोंका नियमकर्म; * दे० 'शमादान' ।

समादापन-पु० [सं०] उमकाना, बढावा देना ।

समादात-वि० [सं०] भ्रष्ट, सम्मानित ।

समादेश-वि० [सं०] ग्रहण करने योग्य; श्राव्य करने योग्य; आदर करने योग्य ।

समादेश-पु० [सं०] आज्ञा, आदेश, निर्देश ।

समादित-वि० दे० 'समादात' ।

समाधा-खी० [सं०] दे० 'समाधान' ।

समाधान-पु० [म०] मिलाना, साथ करना; मेल बैठाना; सावधानता; ओत्सुक्य; ध्यान; समाधि; संदेहनिवारण, निराकरण; प्रगाढ़ता; भीरता; स्थिरता; प्रतिपादन; सहायता होना, अंगीकार करना; सुख संघिका एक अंग, बीज-स्वापन (वह घटना जिम्मे कथानककी उत्पत्ति होती है

(-ना०) ।

समाधानना—स० कि० सतोष, समाधान करना; मानना देना ।

समाधि—स्त्री० [म०] साथ रखना, मिलाना, गरदनका जोड़ या उसकी एक विशेष स्थिति; एक जगह जमाना; योगका अंतिम अंग—मनकी ब्रह्मपर केंद्रित करना; मनो-योग; तपस्या; मतभेद दूर करना; मौन; अगीकार, स्वीकृति; प्रतिष्ठा; परिशोध; पूरा करना; अध्यवसाय; अन्वय बातके लिए प्रयत्न करना; (दुर्मिक्षमे) अन्न जमा करना; वह मकान आदि जो शव-स्वल्पपर बनाया जाता है; एक अर्थात्-लकार जिसमें अन्य कारणोंके योगमें कार्य-सिद्धि वर्णित होती है; वृत्ति(शैली)का एक गुण; सहारा; नियम; इन्द्रिय-नियंत्रण, मत्तरहवाँ कल्प । —क्षेत्र—स्थल—पु० वह स्थान जहाँ माधुओं आदिको गाढ़ते हैं । —गर्भ—पु० एक बोधिसत्त्व । —दृशा—स्त्री० ध्यानमें ब्रह्मसाक्षात्कारकी अवस्था । —निष्ठ—वि० समाधिस्थ । —अंग—पु० बाधा पड़नेके कारण समाधि, ध्यानका भंग होना । —भृत्—वि० समाधिमें लीन । —भेद—पु० दे० 'समाधिभंग' । —ओक्ष—पु० संधि अंग करना (कौ०) । —समानता—स्त्री० समाधिका एक प्रकार (बौ०) । —स्थ—वि० समाधिमें स्थित ।

समाधित—वि० [स०] तुष्ट, प्राप्त किया हुआ; जिसने समाधि लगायी या छोड़ी (?) ।

समाधी(चिन्)—वि० [म०] समाधिस्थ ।

समाधूत—वि० [म०] भगाया हुआ, निरन्तर-बिन्तर किया हुआ ।

समाधेय—वि० [म०] समाधान करने योग्य; व्यवस्थित करने योग्य; निर्देश करने योग्य; अंगीकार करने योग्य ।

समाध्मात—वि० [म०] क्रुंकर फुलाया हुआ; गवित ।

समान—वि० [म०] तुल्य, मरुण, एकत्वा, बराबर, आकार, उन्न, पद आदिका; नैक, भला; माधुग्य; सम्मानित; क्रोधयुक्त; समान परिमाणका; एक ही स्थानमें उच्चारण किया जानेवाला (स्वर, अक्षर); बीचका । पु० बराबरीका साथी; शरीरस्थ पाँच प्राणवायुओंमेंसे एक जो नाभिके खातमें रहती है और पाचनके लिए आवश्यक है; एक ही रवानसे धीले जानेवाले अक्षर । —करण—वि० एक ही उच्चारण-स्थानवाला (स्वर) । —कर्तृक—वि० जिनका कर्त्ता एक ही (समान) हो (व्या०) । —कर्म(चु)—पु० एक ही काम; एक ही कर्म (व्या०) । —कर्मक—वि० जिनका कर्म एक ही (समान) हो (व्या०); एक ही तरहका काम करनेवाले । —कारक—वि० मयकी एक तैमा कर देने-वाला (काल) । —काल—कालीन—वि० मम-सामयिक, एक ही समय होनेवाले । —गति—वि० आपसमें एकमत होनेवाले । —गोत्र—वि० सगोत्र, एक ही वंशका । —ग्रामीय—वि० एक ही ग्राममें रहनेवाले । —जन—पु० समान पदवाला व्यक्ति; एक ही वंशका व्यक्ति । —जन्मा-जन्म—वि० जिनका उत्पत्तिस्थान एक ही; एक उन्नत, हमउन्न । —जातीय—वि० एक ही वर्णका । —संज्ञ—वि० जिनका काम समान हो, एक ही काम करनेवाले । —तैमा(जस्)—वि० समान कति या गौरववाला । —दुःख—वि० सहानुभूति दिखानेवाला ।

—देवत, —देवस्थ—वि० एक ही देवता-संबंधी । —धर्मा- (मन्)—वि० एक ही जैसे गुणवाला (हे) । —नामा- (मन्)—वि० समान नामवाला, नामराम्नी । —विधन—वि० एक ही परिणामवाले । —प्रेमा(मन्)—वि० एक-मा प्रेम करनेवाला । —मान—वि० जिसे बराबरीका सम्मान प्राप्त हो । —यम—पु० स्वरका बही उच्च भ्राम (संगीत) । —योमि—वि० एक ही योनि, स्थानसे उत्पन्न । —रुचि—वि० एक-ही रुचिवाला । —रूप—वि० एक ही रंग, ग्रह-वाले । —व्यस्क—वि० हमउन्न । —वर्चस्—वि० वैभी ही कांतिवाला । —वर्ण—वि० एक-में रमवाले; एक ही स्वर वर्णवाले । —व्यन—वि० समान वस्त्र धारण करने-वाले । —विद्य—वि० समकक्ष विद्वान् । —शब्दा—स्त्री० एक तरहकी पहेली । —शील—वि० एक जैसे स्वभाव वाले । —संस्थ—वि० बराबर सत्त्वावाला । —सखिल—वि० दे० 'मानोदक' । —स्थान—पु० मध्य-स्थान । वि० जो एक जैसे स्थानपर हो ।

समानता—स्त्री०, **समानत्व**—पु० [स०] तुल्यता, सादृश्य बराबरी ।

समानवन—पु० [स०] एकत्र करना; आदर-पूर्वक ले आना ।

समानर्चि—वि० [म०] एक ही ऋषिके व्रत या गोत्रसे उत्पन्न ।

समानांतर—वि० [स०] (रेखाएँ आदि) जो नियत नामान अंतरपर रहे; माध-साध चलने, काम करनेवाला । —सगः नातर सरकारा ।

समाना—अ० कि० अंतर आना; अदना । स० [ब्र०] अदना, भरना ।

समानाधिकरण—वि० [म०] समान कारण विभक्ति-युक्त; एक ही श्रेणीका; जिनका आधार एक ही पदार्थ हो (वैज्ञ०); जो समान स्थानपर हो । पु० एक ही कारण की विभक्तिमें युक्त होना; समान श्रेणी; समान आधार आदि ।

समानाधिकार—पु० [म०] जातीय गुण; बराबरीका अधिकार ।

समानार्थ—वि० [स०] जिनका उद्देश्य एक हो; एक अर्थ वाले (शब्द) ।

समानार्थक—वि० [म०] एक ही अर्थ रखनेवाले (शब्द) ।

समानिका—स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त ।

समानोदक—वि० [म०] साथ तर्पण करनेवाले (स्वारहवामं योदहवी पीदीनक, एक ही पूर्वजवाले—सातवंतकके सवर्धमानोदक होनेके साथ संपिंड भा होते हैं) ।

समानोदय—वि० [म०] एक गर्भमें उत्पन्न, महोदर । पु० सगा भाई ।

समानोपमा—स्त्री० [म०] उपमाका एक प्रकार जिसमें उच्चारणकी दृष्टिमें एक ही शब्द भिन्न प्रकारमें खंड करने-पर भिन्न अर्थोंका बोधक होता है ।

समाप—पु० [म०] देवताको नैवेद्य आदि चढ़ाना, देव-यजन ।

समापक—वि० [स०] समाप्त, पूर्ण करनेवाला ।

समापतित—वि० [स०] भाया हुआ; वटित ।

समापत्ति-ली० [सं०] मिलन; संयोगसे भेंट हो जाना; संयोग, मीका; मूल रूप प्रदर्शन करना; पूर्ति, समाप्ति; वदम होना; ध्यानका एक अंग । -हृह-वि० जो संयोगसे नजर आ गया हो ।

समापन-पु० [सं०] पूर्ण, समाप्त करना; प्राप्ति; बध करना; प्रथका सह या अन्त्याव; समापि ।

समापनीय-वि० [सं०] समाप्त करने योग्य; बध करने योग्य, बध्य ।

समापन-वि० [सं०] प्राप्त; पठित; आया हुआ; पूरा किया हुआ; सुविष्ट, हाता; ...से युक्त; कष्टप्रस्त; निहत् । पु० समाप्ति, पूर्ति; अन्त, मृत्यु ।

समापादन-पु० [सं०] पूरा करना, मूल रूप प्रदान करना ।

समापिका-ली० [म०] वाक्य-पूर्तिके निमित्त प्रानेवाली किया (व्या०) ।

समापित-वि० [सं०] समाप्त, पूर्ण किया हुआ ।

समापी (विद्य)-वि० [सं०] भ्रमाप्त करनेवाला ।

समापूर्ण-वि० [सं०] पूर्णतः भरा हुआ; समग्र, सपूर्ण ।

समाप्त-वि० [म०] पूरा किया हुआ; चतुर, बुद्धिमान् ।

-प्राय-वि० लगभग समाप्त । भूयिष्ठ-वि० लगभग पूरा किया हुआ । -लभ-पु० एक बड़ी संख्या (बौ०) ।

-शिष्ट-वि० जिनका अध्ययन पूरा हो गया हो ।

-मन्य-पु० एक ही दगमें लकनेवाली सेना ।

समास्त-पु० [सं०] स्वामी, पति ।

समाप्ति-ली० [म०] अन्त, पूर्ति, पूर्ण होना; पूरा प्राप्ति (विचारिकी); शरीरकी पञ्च-प्राप्ति, विभिन्न तत्त्वोंमें मिल जाना; विवादका अन्त करना, अन्त दूर करना ।

समाप्तिक-वि० [सं०] अन्तिम, त्रिमये अन्त हो; जिसने कोई काम पूरा किया है । पु० समाप्त करनेवाला; वह जिसने वेदाध्ययन समाप्त किया है ।

समाप्य-वि० [म०] समाप्त, पूरा करने योग्य ।

समाप्यायित-वि० [सं०] पोषित, अनुप्राणित ।

समाप्य, समाप्य-पु० [सं०] गोता लगाना, नहाना ।

समाप्युत्त-वि० [सं०] प्रापित; ... से भरा हुआ; स्वात ।

समाभाषण-पु० [म०] वार्तालाप ।

समाज्ञात-वि० [सं०] बार-बार कहा हुआ; (बात) जो परपराके रूपमें चली आती हो; वर्णित । पु० वर्णन, कथन ।

समाग्नाज-पु० [सं०] स्मृतिके आधारपर आहुति करना; वर्णन ।

समाग्नाय-पु० [सं०] परंपरासे प्राप्त होना; परंपरागत वचनों आदिका संग्रह, शास्त्र; वर्णन; समूह, संग्रह; शिख; महार, प्रलय ।

समाग्नायिक-पु० [सं०] शास्त्र; शास्त्रविषयक ।

समाय-पु० [सं०] आममन ।

समायत-वि० [सं०] कैलाया हुआ ।

समायत-वि० [सं०] अवलंबित, किमीके सहारे टिका हुआ ।

समायाह-वि० [म०] निकट आया हुआ; लौटा हुआ ।

समायी (विद्य)-वि० [म०] साथ होनेवाला ।

समायुक्त-वि० [सं०] जोड़ा हुआ; तैयार किया हुआ; नियुक्त; संपर्कमें लाया हुआ; ...से युक्त; दत्तचित्त ।

समायुक्त-वि० [सं०] एकत्र किया हुआ; संयुक्त किया हुआ; ...से युक्त ।

समायोग-पु० [सं०] संयोग, संबंध; तैयारी; युक्त करना (धनुषसे बाण); निशाना ठीक करना; राशि; समूह; हेतु; उद्देश्य; बहुत आदमियोंका एकत्र होना ।

समारंभ-पु० [म०] आरंभ; उद्यम, साहसपूर्ण कार्य; माहत्मिक कार्यकी भावना; अंगराग ।

समारंभ-पु० [सं०] प्रवृत्ति करना; आरंभ करना; आह्वान; अंगराग लगाना ।

समारंभ-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ; जिसने कार्य-रंभ किया है; घटित ।

समारंभ-वि० [सं०] आरंभ करने योग्य ।

समारंभ-पु० [सं०] तृप्त, प्रसन्न करना; प्रसन्न करनेका साधन; सेवा-दहल, आराधना ।

समाकट-पु० [सं०] जो चढ़ा हो; जो चढ़ा गया हो; जिसने अंगीकार लिया है; बढ़ा हुआ; भरा हुआ (वाद्य) ।

समारोप-पु० [म०] ऊपर रखना; चढ़ाना (धनुष); म्यानांतरण ।

समारोपक-वि० [सं०] उपजानेवाला; बढ़ानेवाला ।

समारोपण-पु० [म०] आरोप करना; म्यानांतरण; चढ़ाना (धनुष) ।

समारोपित-वि० [सं०] चढ़ाया हुआ; ताना हुआ (धनुष); रखा हुआ; म्यानांतरित ।

समारोह-पु० [सं०] आरोह, चढ़ना; (किसी बातपर) राजी होना; धूमधाम ।

समारोहण-पु० [सं०] चढ़ने, सवार होनेकी क्रिया; बढ़ना (बालोंका); यज्ञाग्निका स्थानपरिवर्तन करना ।

समार्थ-वि० [म०] समान, एक अर्थका ।

समार्थक-वि० [सं०] समान, एक ही अर्थवाला ।

समार्थी (विद्य)-वि० [म०] बराबरी करनेकी इच्छा रखनेवाला ।

समालंब-पु० [सं०] रोहित नृण ।

समालंबन-पु० [म०] (किसीका) सहारा लेना ।

समालंबित-वि० [सं०] किसीके सहारेपर टिका हुआ, अवलंबित; मल्लभ ।

समालंबिनी-ली० [सं०] नृण-विशेष ।

समालंबी (विद्य)-वि० [सं०] दूसरेके सहारे टिकनेवाला, परालंबी, आश्रय ग्रहण करनेवाला । पु० भृत्य ।

समालंब-पु० [सं०] ग्रहण करना; बलि-पशुको (बधके लिए) ग्रहण करना; अंगराग ।

समालंबन-पु० [सं०] अंगराग लगाना; ग्रहण करना, छूना; बलिपशुको बधके लिए ग्रहण करना ।

समालंब्य-वि० [सं०] गोचर ।

समालंब्य-वि० [सं०] गृहीत; संपर्कमें आया हुआ ।

समालंबन-पु० [सं०] अंगराग ।

समाहाप-पु० [सं०] वार्तालाप, बात-नात ।

समाक्षिप्त-पु० [सं०] प्रगाढ़ आश्रित ।

समाक्षिप्त-वि० [म०] भली भाँति लिप्त, पुता हुआ ।

समाधी-की [सं०] कूलोंका गुच्छा; गुच्छदस्ता ।
समाकोक-पु० [सं०] देखना, निरीक्षण करना ।
समाकोकन-पु० [सं०] निरीक्षण करना; मनन करना; परीक्षण करना ।
समाकोकी(किन्)-वि० [सं०] अच्छी तरह देखनेवाला; मनन करनेवाला ।
समाकोच-पु० [सं०] कथोपकथन, वार्तालाप ।
समाकोचक-पु० [सं०] किसी वस्तुकी सम्यक् परीक्षा करनेवाला; किसी पदार्थके गुण-दोष आदिका सम्यक् विवेचन करनेवाला; किसी कृति, रचना, ग्रन्थ आदिके गुण, दोष, महत्त्व आदिका प्रतिपादन करनेवाला ।
समाकोचन-पु० [सं०] समाकोचना ।
समाकोचना-की [सं०] अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना; किसी वस्तु, कृति, व्यक्ति आदिके गुण-दोषका सम्यक् विचार करना; गुण-दोषका विचार प्रस्तुत करनेवाला निर्वच, ग्रन्थ आदि, आलोचना ।
समाकोची(विन्)-पु० [सं०] गुण-दोषकी परीक्षा, विचार करनेवाला, समाकोचक ।
समाकर्जन-पु० [सं०] आकृष्ट करना, अपनी ओर करना, अपने वशमें करना ।
समाकर्मित-वि० [सं०] झुकाया हुआ । -**केतु-वि०** जिसने अपना शंका झुका दिया है ।
समाकर्त-पु० [सं०] बापस होना, लौटना; विष्णु ।
समाकर्तन-पु० [सं०] लौटना, बापस होना; अध्ययन पूर्ण करनेके बाद प्रकाशकारीका घर लौटना; इस अन्वयपर होनेवाला संस्कार । -**संस्कार-पु०** अध्ययन समाप्त होने, विद्यार्थीके स्नातक बन जानेपर किया जानेवाला उत्सवादि ।
समाकर्तनीय-वि० [सं०] समाकर्तन-मन्वथ, समाकर्तन-के योग्य ।
समाकर्तमान, समाकर्ती(सिन्)-वि० [सं०] गुरुकुलसे लौटनेवाला ।
समावह-वि० [सं०] उत्पन्न, प्रस्तुत करनेवाला; कारण बननेवाला (आन्वे०) ।
समावाय-पु० [सं०] सर्वथ, साथ; अनेक सर्वथ; समूह, राशि ।
समावास-पु० [सं०] निवास स्थान; टिकनेका स्थान; शिविर, पकान ।
समावासित-पु० [सं०] बसाया, ठहराया हुआ ।
-कटक-वि० जिसमें सेनाका पकान रहता दिया है ।
समाविन्न-वि० [सं०] क्षुब्ध; भीत; कंपित ।
समाविद्ध-वि० [सं०] क्षुब्ध; कपित; क्षीण; संवटित (?) ।
समाविष्ट-वि० [सं०] पूर्णतः प्रविष्ट, व्याप्त; गूँझित, प्रस्त; प्रेषाविष्ट; ...से युक्त; अच्छी तरह मिश्रलाया हुआ; आसीन, उपविष्ट; एकाग्रचित्त; जिसका समावेश कर लिया गया हो, जो मिला लिया गया हो ।
समावी-वि० [अ०] आसमानी; द्वैविध, (जैसे) समावी आक्रमण ।
समावृत्त-वि० [सं०] घिरा हुआ; ढका हुआ; छिपाया हुआ; रहित; रीका हुआ; अलग हटाया हुआ; आक्षेप ।

समावृत्त-वि० [सं०] छोटा हुआ; अन्वयन समाप्त कर गुरुकुलसे लौटा हुआ; पूरा किया हुआ । पु० वह विद्यार्थी जो अध्ययन समाप्त कर लौटा हो ।
समावृत्तक-पु० [सं०] अध्ययन समाप्त कर लौटा हुआ महत्त्वचारी, स्नातक ।
समावृत्ति-की [सं०] दे० 'समावर्तन'; समाप्ति ।
समावेश-पु० [सं०] प्रवेश; साथ रहना; मिश्रण, एकत्र होना; अंतर्भाव, शामिल होना; प्रेषावेश; व्याप्त होना, साथ-साथ होना या घटित होना; भाषावेश; मेलन; मनोनिवेश ।
समावेशन-पु० [सं०] प्रवेश; अधिकारमें करना; विवाह-का संपन्न होना ।
समावेशित-वि० [सं०] जिसका प्रवेश कराया गया हो; साथ किया हुआ; रखा, जमा हुआ; व्याप्त कराया हुआ, गढ़ करारा हुआ ।
समाश-पु० [सं०] औन्नत्य ।
समाशय-पु० [सं०] आश्रय चाहना, सहारा, शरण, पनाह; आश्रयस्थान; निवासस्थान, भवन ।
समाश्रित-वि० [सं०] सम्यक् रूपमें आश्रित, जिसमें आश्रय ग्रहण किया है; अवलंबित; एकत्रीभूत; अधिष्ठित बसा हुआ; सहारेपर टिका हुआ । पु० सेवक; वह व्यक्ति जो भरण-पोषणके लिए दूसरेपर अवलंबित हो ।
समाश्रित-वि० [सं०] सम्यक् रूपमें आश्रित; सलक्ष ।
समाश्रय-पु० [सं०] प्रगाढ़ आश्रयन ।
समाश्रय-वि० [सं०] जिने जीमें जो आया हो; तमः/ही हो गयी हो, दाटस रेंच गया हो; प्रोत्साहित; विश्वासपूर्ण ।
समाश्रय-पु० [सं०] जीमें जो आना, तसली होना, दाटस बंधना; विश्वास, भरोसा; प्रोत्साहन ।
समाश्रयन-पु० [सं०] दाटस बंधना; उत्साह बढ़ाना ।
समासंग-पु० [सं०] मिश्रन; लगाव; किसीकी कोई काम मौपना ।
समासंजन-पु० [सं०] संयुक्त करना, मिलाना; किसीपर जड़ना या रखना; संपर्क, सवध, सयोग ।
समास-पु० [सं०] योग, मेल; समबंधन; अंतर दूर कर विवादका निपटारा करना; सवध; साथ रहना; समूह; पूर्णांश; संधि; संक्षिप्त करना; संक्षेप-कवि सब वरिष्ठ समास बहाने-रामा०, दो या अधिक पदोंकी मिलाकर एक पदका रूप देना (व्या०); समस्था; छंदका चरण (जिसकी पुष्टि करनी हो) । -**प्रायः-बहुल-वि०** जिसमें समासोंकी बहुलता हो ।
समासक्त-वि० [सं०] सलक्ष, प्रकृत; संयुक्त; अनुरक्त; पहुँचा हुआ, प्राप्त; ...द्वारा प्रभावित ।
समासक्ति-स्त्री [सं०] योग, मेल; संबंध; अनुराग समावेश, अंतर्भाव ।
समासति-की [सं०] नैकट्य, सामीप्य ।
समासन-पु० [सं०] समतल भूमिपर बैठना; साथ बैठना ।
समासक्त-वि० [सं०] पहुँचा हुआ, प्राप्त; निकटवर्ती-पासका ।
समास्य-वि० [सं०] समान और असमान ।
समासर्जन-पु० [सं०] परित्राया करना; दे देना ।

ममासवाच (बन्ध) - वि० [म०] ममामयुक्त । पु० नूनका चेह ।

ममासाधन - पु० [स०] पाम पर्वचना; मिलना; पूरा करना ।

ममासादित - वि० [स०] आहत; प्राप्त; निकटत्व ।

ममासार्थ - पु० [म०] ममरथा (छन्दो पृथिके लिष्ट दी जानेवाली) ।

ममासीन - वि० [स०] मम्यक प्रकारसे बैठा हुआ; माथ बैठा हुआ ।

ममासोक्ति - स्त्री० [म०] एक अर्थालंकार जहाँ विशेष शब्द-रचनाके कारण प्रस्तुतसे अप्रस्तुतका भाव हो ।

ममास्था - स्त्री० [स०] माथ बैठना; मुत्तकान, भेट ।

ममाहरण - पु० [म०] सयुक्त करना; एकत्र करना; राशीकरण ।

ममाहर्ता (र्तृ) - वि० [स०] मिलाने, जमा करनेवाला । पु० (कर आदिका) समाहर्ता । - (र्तृ) पुरुष - पु० ममाहर्ताका कर्मचारी, कारकुन ।

ममाहार - पु० [म०] ग्रहण, जोड़; मिलना; मसूह; राशि; ग्रन्थों या वाक्योंका योग; इह ममामका एक भेद (जिसमें दो पद आपनमें मिलकर वर्णके बोधक होते हैं); मर्षण; विषयोंमें इष्टियोंको प्रथक् करना ।

ममाहित - वि० [स०] माथ किया हुआ, एकत्र किया हुआ, निपटारा किया हुआ, तै किया हुआ; प्राप्त; प्रवृत्त, मीन; पूरा किया हुआ; व्यवस्थित; सुपुर्त किया हुआ, दबाया हुआ (स्वर); स्थापित, प्रातिपादित; स्वीकृत; मरण, अनुरूप, मामजस्ययुक्त । पु० पुण्यात्मा व्यक्ति, साधु; एकाग्रचित्तता, अभिनिवेश । - **धी** - वि० आराधनामें मीन । - **मति** - वि० जिनका मन किसी विषयपर एकाग्र है । - **मना (नस्)** - वि० जिनका मन किसी विषयमें मीन हो ।

ममाहृत - वि० [स०] बुलाया या एकत्र किया हुआ; लकड़ारा हुआ ।

ममाह्व - पु० [म०] चुनौती, ललकार । वि० हमनाम, नामरानी ।

ममाह्वय - पु० [स०] चुनौती; युद्ध, सपर्य; द्वंद्वयुद्ध, प्रोत्साहके लिए जानवरोंकी लड़ाना; जानवरोंकी लड़ाईपर बाजी लगाना; नाम, सहा ।

ममाह्व - स्त्री० [स०] गोजह्व; नाम ।

ममाह्वता (तृ) - वि० [म०] आह्वान करनेवाला; ललकारने, चुनौती देनेवाला ।

ममाह्वन - पु० [स०] सम्यक् प्रकारसे आह्वान करना; चुनौती देना; जानवरोंकी लड़ाईपर बाजी रखना ।

ममिधन - पु० [स०] (अग्नि) जलाना, सुलगाना; ईधन, लकड़ी ।

ममिक - पु० [स०] भाला, बरछा ।

ममित - वि० [स०] मिला हुआ; एकत्रीभूत; सयुक्त; निरतर; समानांतर; अंशोक्त, स्वीकृत; पूरा किया हुआ; मापा हुआ; ... के समान ।

ममिता - स्त्री० [स०] गेहूँका आटा ।

ममिनिजय - वि० [स०] युद्धविजेता; ममाभिजेता । पु०

यम; विष्णु ।

समिति - स्त्री० [म०] मिलना, एकत्र होना; ममा; विशेष कायके लिये गठित योद्धेमें आदमियोंकी ममा; झुंड; युद्ध; माय्य, माधय; आचारपद्धति (ज्ञेय); इलकापन लाना, नरम बनाना । - **मर्दन** - वि० युद्धमें छक्के छुड़ानेवाला । - **झाडी (लिन्)** - वि० गीर, बहादुर ।

- **शोभन** - वि० युद्धमें जिसकी प्रमुखता हो ।

समिग - स्त्री० [स०] युद्ध; दे० 'समिध' । - **कलाप** - पु० लकड़ीका गट्टा । **काष्ठ** - पु० लकड़ी, जलावन ।

- **पाथ** - पु० अग्नि । - **पूछ** - पु० लकड़ीका गट्टा ।

समिध - पु० [स०] युद्ध; अग्नि; आहुति ।

समिदाधान - पु० [स०] अश्विकुण्डमें ईधन डालना ।

समिद्ध - वि० [स०] जलाया हुआ, प्रज्वलित; उत्तेजित ।

- **द्वर्ष** - वि० वर्णमें उत्तेजित । - **होम** - पु० आहुति ।

समिध - पु० [म०] अग्नि; ईधन ।

समिधा, समिधि - स्त्री० यज्ञीय लकड़ी ।

समिध् - स्त्री० [स०] ईधन; यज्ञीय लकड़ी ।

समिध् - पु० [स०] वायु; शिव ।

समिध्र - वि० [स०] मिलनेवाला, मिश्रित होनेवाला ।

समीक - पु० [म०] युद्ध ।

समीकरण - पु० [म०] समान, बराबर करना; समानीकरण; ज्ञान राशिकी सहायतामें अज्ञात राशि निकालनेकी एक क्रिया (ग०); जमीन बराबर करनेका बहा बैलन, 'गेकर' ।

समीकार - पु० [स०] ज्ञात राशिसे सहारे अज्ञात राशि निकालनेकी क्रिया (ग०) ।

समीकृत - वि० [स०] समान, बराबर किया हुआ, अनुकृत; योग किया हुआ ।

समीकृति - स्त्री० [म०] बराबर करना; तौलना ।

समीक्रिया - स्त्री० [स०] समान करनेकी क्रिया; ज्ञात राशिसे अज्ञात राशि निकालनेकी क्रिया (ग०) ।

समीक्ष - पु० [स०] विचार, विवेचन; पूरा ज्ञान; पूरी जाँच, पूर्ण परीक्षा; साक्ष्य शास्त्र ।

समीक्षक - वि०, पु० [म०] सम्यक् रूपमें देखनेवाला; समालोचक ।

समीक्षण - पु० [स०] देखना; अन्वेषण; जाँच, परीक्षा; समालोचना ।

समीक्षा - स्त्री० [स०] सम्यक् परीक्षा, समालोचना; देखनेकी इच्छा; दृष्टिपात; राय, सम्मति; प्रज्ञा; अन्वेषण, अनुमान, प्रयत्न; भीमांसा शास्त्र; पुरुष, प्रकृति आदि तत्त्व ।

समीक्ष्य - वि० [स०] समीक्षा करने योग्य । पु० सांख्य दर्शन । - **कारी (विन्)**, - **वादी (विन्)** - वि० अच्छी तरह समझ-बूझकर काम करनेवाला ।

समीच - पु० [स०] समुद्र ।

समीचक - पु० [स०] मैथुन, मंथोय ।

समीची - स्त्री० [स०] प्रशंसा, स्तुति; द्यूगी, हिरनी ।

समीचीन - वि० [स०] संगत, उचित; ठीक, यथार्थ; न्याय्य ।

समीचीनता - स्त्री०, **समीचीनत्व** - [स०] मंगति, संगत होना, औचित्य; यथार्थता ।

समुत्पवन-पु० [सं०] मूत्र ऊपर उठना; आरोह; प्रवलय करना ।

समुत्पत्ति-स्त्री० [सं०] पैदाइश; मूल; वंशित होना ।

समुत्पल्ल-वि० [सं०] उद्भूत; धतित ।

समुत्परिवर्धिम-पु० [सं०] विकीत वस्तुमें चालाकीमें दूसरी चीज मिटा देना (कौ०) ।

समुत्पाट-पु० [सं०] उन्मूलन; ध्वक् करना ।

समुत्पात-पु० [सं०] संकटस्थक उपद्रव ।

समुत्पिच, समुत्पिचल-वि० [सं०] बहुत धक्काया हुआ, हतबुद्धि । पु० वह सेना जो धक्काघटमें अस्त-व्यस्त हो गयी हो; धक्काघट ।

समुत्सम्भ-वि० [सं०] नह-विनह, ध्वस्त ।

समुत्सर्ग-पु० [सं०] परित्याग, हटाना, छोड़ना; अल-त्याग ।

समुत्साराण-पु० [सं०] भगाना; पीछा करना; शिकार करना ।

समुत्सुक-वि० [सं०] अधीर, विशेष इच्छुक, उत्कण्ठित; जोकांक्षित ।

समुत्सेध-पु० [सं०] ऊँचाई; मोटापन; घनता ।

समुत्थन-वि० [सं०] किनारेके ऊपर उठा हुआ; जो उप-कर बहनेकी अवस्थामें हो ।

समुद्-वि० [सं०] प्रसन्नतायुक्त । अ० प्रसन्नतापूर्वक ।

* पु० समुद्र । -लहर* -पु० एक कपडा ।

समुद्भूत-वि० [सं०] खींचकर ऊपर लाया हुआ (जैसे कुएंमें पानी), ऊपर उठाया या फेंका हुआ ।

समुद्भव-पु० [सं०] (सर्वका) ऊपर आना, उदित होना; विकास; उत्थान; अभ्युदय; राशि, समूह; समुदाय; मधोम; कर, लगान; चेटा; युद्ध; दिन; किसी प्रहका उदय; उन्नत; पूर्णांश; शरीरके तन्मोका ममाहार (कौ०); एक मत्त्व (कौ०); उत्पादक उत ।

समुद्भूत-वि० [सं०] गहराईमें खींचकर ऊपर लाया हुआ ।

समुदागम-पु० [सं०] पूर्ण ज्ञान (कौ०) ।

समुदाचार-पु० [सं०] स्वागत-स्तरकार; मत्प्रयोग; मदा-चार; संपर्क; अभिवादन; अभिप्राय; प्रयोजन, नीयत ।

समुदाय-पु० [सं०] समोम; समूह; राशि; पूर्णांश; शरीर-के तन्मोका समाहार; एक नक्षत्र; युद्ध; मेनाका पृष्ठ भाग; रक्षित सेना ।

समुदायि*-पु० समूह, झुंड ।

समुदाय*-पु० समूह, झुंड, राशि ।

समुद्रित-वि० [सं०] ऊपर उठा हुआ; ऊँचा; उत्पन्न, धतित; एकत्रीभूत संयुक्त; से युक्त, अग्निन; जिससे बात की गयी हो; जो किसी विषयपर सहमत हो; प्रचलित ।

समुदीरण-पु० [सं०] भाषण; उच्चारण; पाठ ।

समुद्र-वि० [सं०] ऊपर उठनेवाला; पूर्णतः प्राप्त होनेवाला; उन्नतदार; शहतीरदार । पु० छटका एक प्रकार; गमकका एक अंग; कलीकी नोक; गोल मज्जा; उन्नतदार मनुक, संपुटक ।

समुद्रक-पु० [सं०] गोल सद्क, सपुटक; एक प्रकारका छट ।

समुद्र-वि० [सं०] उत्पन्न; उदित ।

समुद्र-पु० [सं०] ऊपर जाना, उत्थान; उत्पत्ति ।

समुद्रार-पु० [सं०] सम्यक् कथन; उत्तोलन, उठाना; वहुत ज्यादा कै होना ।

समुद्रिण-पु० [सं०] वसन; वमित पदार्थ; ऊपर उठाना ।

समुद्रीत-वि० [सं०] अच्छी तरह गाया हुआ; ऊँचे स्वरसे गाया हुआ । पु० ऊँचे स्वरमें गाया हुआ गीत ।

समुद्रिण-वि० [सं०] वमित; उत्तोलित; कथित ।

समुद्रिष्ठ-वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह निर्देश किया गया हो; प्रदर्शित; जिसकी व्याख्या की गयी हो; अभिहित ।

समुद्रेश-पु० [सं०] पूरी व्याख्या या विवरण; सिद्धांत; अभिप्राय; निर्देश ।

समुद्रत-वि० [सं०] ऊपर उठा या उठाया हुआ; उत्ते-जित; धमधमें फूला हुआ; उमड़; ऊँचा; परिवर्धित ।

समुद्रण-पु० [सं०] ऊपर उठाना; खींचकर निकालना, उबार करना; हटाना, दूर करना; उन्मूलन; (अपना हिस्सा) अलग कर लेना; बानाज, धमधमें निकला हुआ अन्न ।

समुद्रता(र्त)-वि०, पु० [सं०] उठानेवाला, उबार करनेवाला; उन्मूलन करनेवाला ।

समुद्रार-पु० [सं०] दे० 'समुद्रण' ।

समुद्रत-वि० [सं०] उठाया हुआ; बचाया, उबार किया हुआ; वमित; हटाया हुआ; अलग किया हुआ, विभक्त; गृहीत; उन्नत, उमड़ ।

समुद्रोचन-पु० [सं०] पूर्णतः जाग्रत करना; होशमें लाना; पुनरुज्जीवित करना ।

समुद्रव-पु० [सं०] उत्पत्ति; पुनरुज्जीवन; उपनयनके समय होमके लिए जलायी जानेवाली अग्नि ।

समुद्भूत-वि० [सं०] उत्पन्न ।

समुद्भूति-स्त्री० [सं०] उत्पत्ति, पैदाइश ।

समुद्भेद-पु० [सं०] फोफकर निकलना; प्रकट होना; बाढ़, प्रगति; विकास ।

समुद्यत-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; प्रवृत्त; तैयार; लगा हुआ, प्रवृत्त ।

समुद्यम-पु० [सं०] ऊपर उठाना; प्रवलय, उधोग; आरम्भ; तैयारी; आक्रमण ।

समुद्योग-पु० [सं०] पूरी तैयारी; चेटा; प्रयोग; (बहुतसे कारणोंका) एक साथ हो जाना ।

समुद्र-वि० [सं०] सुद्रायुक्त, सुद्राकित । पु० सागर; शिव; चारकी सम्बन्ध; (ला०) गुण आदिका बहुत बड़ा परिमाण (समासमें) । -कटक-पु० पोत । -कक-पु० समुद्रका फेन । -कांभी-स्त्री० समुद्रकी मेखला, पृथ्वी । -कांता-स्त्री० नदी; पृष्ठा । -कुक्षि-स्त्री० समुद्रका तट । -ग-वि समुद्रकी ओर जानेवाला; समुद्रीय कार्य करनेवाला । पु० नाविक; समुद्री व्यापारी । -गमन-पु० समुद्रयात्रा । -शा-स्त्री० नदी । -गामी(मिन्)-वि० समुद्रमें जाने या समुद्री व्यापार करनेवाला ।

-गुप्त-पु० गुप्तवशका एक पराक्रमी राजा । -गृह-पु० गरमीके दिनोंके लिए जन्म बना हुआ भवन;

स्नानागार । **सुसुक्त**-पु० अगस्त्य ऋषि । -**अ**-वि० समुद्रसे प्राप्त था उसमें उपपन्न । पु० भूंगा, मोती आदि । -**झावा**-पु० [हि०] समुद्रका फेन । -**खट**, -**सीर**-पु० समुद्रका किनारा । -**सीरीय**-वि० समुद्र-तटवासी । -**द्विपला**, -**पक्षी**-खी० नदी । -**नवमीत**, -**नवमीतक**-पु० चंद्रमा; अमृत । -**नेमि**, -**नेमी**-खी० पृथ्वी । -**पात**-पु० [हि०] एक लता । -**फल**-पु० एक वृक्ष या उसका फल । -**कैम**-पु० समुद्रका ज्ञाया । -**अच**-वि० समुद्रमें उपपन्न । -**मंजूकी**-खी० सीपी । -**मथन**-पु० समुद्रका विलोडन; एक दैत्य । -**महिषी**-खी० गंगा । -**माक्षिनी**, -**मेखला**-खी० पृथ्वी । -**वात्रा**-खी० समुद्री सफर । -**वाव**-पु० समुद्रयात्रा; पोत । -**वायी**(**विर**)-वि०, पु० दे० 'समुद्रग' । -**वोचित**-खी० नदी । -**रसना**-खी० पृथ्वी । -**रुचण**-पु० समुद्रजलमें निकलनेवाला नमक । -**बहुभा**, -**वसना**-खी० पृथ्वी । -**बहि**-पु० बहवानल । -**वासी**(**सिन्**)-वि० समुद्रके पास रहनेवाला । -**वेला**-खी० समुद्रकी तरंग । -**व्यवहारी**(**सिन्**) वि० समुद्री वाणिज्य करनेवाला । -**शुक्ति**-खी० समुद्री सीपी । -**शोच**-पु० एक पौधा । -**मार**-पु० मोती । -**सुभगा**-खी० गंगा ।

समुद्रांत-पु० [सं०] समुद्रतट; जायफल । वि० समुद्रतक पहुँचनेवाला; समुद्रमें गिरनेवाला ।

समुद्रांता-खी० [सं०] पृथ्वी; जवासा; पक्षा; कपास; दुरालभा ।

समुद्रांश-खी० [सं०] पृथ्वी ।

समुद्रा-खी० [सं०] शरीर; शरीर वृक्ष ।

समुद्रानिसारिणी-खी० [सं०] समुद्रकी सहचरी (एक कल्पित देवता) ।

समुद्रावणा-खी० [सं०] नदी ।

समुद्राह-पु० [सं०] मेघवध; एक बहुत बड़ा मत्स्य, तिमिगिह; कुमीर, मगर ।

समुद्राधी-खी० [सं०] नदी ।

समुद्रावरणा-खी० [सं०] पृथ्वी ।

समुद्रावरोहण-पु० [सं०] समाधिक एक प्रकार ।

समुद्रिष-वि० [सं०] समुद्रका; समुद्र-संबंधी; समुद्रसे उत्पन्न । पु० एक वृक्ष ।

समुद्री-वि० समुद्रका; समुद्र-संबंधी; समुद्रकी ओरसे आनेवाली (हवा); समुद्रपर की जानेवाली (यात्रा); नौकल-संबंधी ।

समुद्रीय-वि० [सं०] समुद्रका; समुद्र-संबंधी ।

समुद्रोन्मादन-पु० [सं०] स्फटिका एक अनुचर ।

समुद्रय-वि० [सं०] दे० 'समुद्रीय' ।

समुद्रह-वि० [सं०] ऊपर उठानेवाला; ऊपर-नीचे जानेवाला ।

समुद्राह-पु० [सं०] विवाह; ऊपर उठाना ।

समुद्रग-पु० [सं०] वनगाहट; भय, प्रास ।

समुन्म-वि० [सं०] मार्द्र, तर, गीला ।

समुन्मत्त-वि० [सं०] ऊपर उठाया हुआ; विशेष रूपसे उन्नत; ऊँचा; गौरवान्वित; धमड़ी; आगे निकला हुआ; खरा, बेकीस । पु० एक प्रकारका मत्स्य ।

समुन्मत्ति-खी० [सं०] ऊपर उठाना; ऊँचाई, उच्छता; गौरव; उच्च पद; प्राधान्य; उन्नति, समृद्धि; धर्मद ।

समुन्मन्-वि० [सं०] कर्षणवत्, ऊपर रेंधा हुआ; ऊपर उठाया हुआ; फूला हुआ; पूर्ण; धर्मवीर; पंडितमन्य; समुद्रभूत; बंधनमुक्त; प्रधान ।

समुन्मन्म-पु० [सं०] उठाना, उन्नत करना ।

समुन्मन्व-पु० [सं०] प्राप्ति; निष्कर्ष; अनुमान; घटना ।

समुन्मन्थन-पु० [सं०] उन्नत करना; प्राप्ति, लाभ (?) ।

समुन्माह-पु० [सं०] एक साथ होनेवाला गर्जन या चिंताहट ।

समुन्मीत-वि० [सं०] उन्नत किया हुआ ।

समुन्मीक्षित-वि० [सं०] खोला हुआ; फैलाया हुआ, प्रक्षिप्त ।

समुन्मूलन-पु० [सं०] जड़में उखाड़ देना, निर्मूलन ।

समुपकरण-पु० [सं०] सामग्री, सामान ।

समुपक्रम-पु० [सं०] आरम्भ. उपचार, चिकित्सा; आरम्भ ।

समुपगम-पु० [सं०] निकट जाना; संपर्क ।

समुपचार-पु० [सं०] ध्यान देना; आदर, सम्मान ।

समुपवृत्त-वि० [सं०] आकाश, रौद्रा हुआ ।

समुपनयन-पु० [सं०] नजदीक ले जाना ।

समुपन्यस्त-वि० [सं०] पूर्णतः वर्णिन ।

समुपभोग-पु० [सं०] भोग करना; स्थान, मैथुन ।

समुपयुक्त-वि० [सं०] उपयोगमें लाया हुआ; लाया हुआ विशेष रूपसे उपयुक्त ।

समुपवेश-पु० [सं०] अन्धरी तरह बैठना; अभ्यर्थना ।

समुपवेशन-पु० [सं०] निवास-स्थान, मकान; बैठाना, आसन ।

समुपस्था-खी०, **समुपस्थान**-पु० [सं०] निकट जाना, पहुँच; मामूली; बंदिता होना; घटना ।

समुपस्थित-वि० [सं०] उपस्थित, आया हुआ; आसीन, प्रकट; जो आरम्भ हो गया हो; सामयिक; तैयार; निश्चय किया हुआ; प्राप्त ।

समुपस्थिति-खी० [सं०] दे० 'समुपस्थान' ।

समुपह्व-पु० [सं०] बहुतोंको एक साथ दिया जानेवाला निमंत्रण; होम, यज्ञ आदिमें देवताओंका आवाहन करना ।

समुपह्व-पु० [सं०] गुप्त स्थान; छिपनेका स्थान ।

समुपपात-वि० [सं०] प्राप्त गया हुआ; पहुँचा हुआ, प्राप्त ।

समुपार्जन-पु० [सं०] विशेष रूपसे प्राप्त करना; एक नाथ प्राप्त होना ।

समुपेन-वि० [सं०] प्राप्त आया हुआ; एकत्रीभूत; पहुँचा हुआ; 'मे' युक्त आवाह किया हुआ ।

समुपोह-वि० [सं०] उठा हुआ, ऊपर गया हुआ; बढ़ा हुआ; प्राप्त लाया हुआ; आरम्भ; प्रदत्त; रोकड़ा हुआ ।

समुपोहक-वि० [सं०] उपवास करनेवाला ।

समुपस्थित-वि० [सं०] सुदर, चमकदार; कीर्णरत ।

समुपस्थान-पु० [सं०] सम्यक् कान्ति; विशेष आनन्द, उमंग, कीर्ति; ग्रंथका परिच्छेद ।

समुपस्थेख-पु० [सं०] नागों और भूमि की ओर (पर आदिमें), उत्पन्न, उन्मूलन ।

समुहा--वि० आगे, सामनेका । अ० आगे, सामने ।
समुहाना--अ० कि० सामने आना, होना ।
समुही--अ० दे० 'समुह' ।
समुह--अ० सामने ।
समुवा--वि० सपूर्ण, समग्र, पूरा ।
समूह--वि० [सं०] एकत्र किया हुआ; राशीकृत; आवृत; अवस्थित; शोषित; कुटिल; विवाहित; नील; सचो बात, जो दुरंत पैदा हुआ हो; इमित; सहित; युक्त; संगत ।
समू--पु० [सं०] दे० 'समूह' । * वि०, अ० दे० 'समूह' ।
समूहः, समूहक--पु० [सं०] सागर हिरज ।
समूह--वि० [सं०] जड़वाला, मूलयुक्त; मकारण । अ० जड़से, मूलसहित ।
समूह--पु० [सं०] ढेर, राशि; झुंड; समुदाय; समाज, बर्ग । -**कार्य-**-पु० समाज या वर्गविशेषका कार्य । -**क्षारक-**, -**गंध-**-पु० गंधविलाव । -**हितवादी(विद्यु)-**-वि० लोक, जनकल्याणमें निरत ।
समूहन--वि० [सं०] बहारनेवाला; एकत्र करनेवाला । पु० बहारनेकी क्रिया; बंदोनेकी क्रिया; शर-संधान; राशि, ढेर ।
समूहनी--स्त्री० [सं०] सम्माननी, श्राव् ।
समूह--पु० [सं०] यज्ञाग्नि; यज्ञाग्नि रखनेके लिए बना हुआ स्थान । वि० सम्यक् रूपमें तर्क करने योग्य, बहारने योग्य ।
समूह--वि० [सं०] उन्नतिशील, भाग्यशाली, प्रसन्न; धनी, मालदार; विशेष रूपमें युक्त या संपन्न; बहुल; समग्र; फलवान; स्वर्ग बड़ा हुआ ।
समूहि--स्त्री० [सं०] बढ़ती, उन्नति; अभ्युदय; धन; बाहुल्य; सामर्थ्य, शक्ति; प्राप्ताभ्य । -**करण-**-पु० उन्नतिका मापन । -**काम-**-वि० अभ्युदयका इच्छुक । -**समय-**-पु० अभ्युदय या संपन्नताका समय ।
समूही(विद्यु)--पु० [सं०] भरा-पूरा, संपन्न; उन्नतिशील ।
समेटना--स० कि० बंदोरेना, इकट्ठा करना (बिखरी चीजें); तड़ करके रखना (जाजिम आदि); अमीकार करना ।
समेटी--स्त्री० [सं०] स्फटिकी एक मालिका ।
समेत--अ० साथ । वि० [सं०] मिला हुआ, एकत्र, संयुक्त । नजदीक आया हुआ; 'मे युक्त; भिन्न हुआ; मड़मत । पु० दे० 'समेत' । -**साय-**-वि० मोहप्रस्त ।
समेखित--वि० [सं०] बहुत बड़ा हुआ; शक्तिशाली; संयुक्त ।
समै, समैबा--पु० समय ।
समै--पु० समय ।
समोखना--स० कि० हाकीयमें कहना ।
समोदक--वि० [सं०] जिसमें आधा पानी हो । पु० मट्टा, गोल ।
समोना--स० कि० मिलाना; † समन्वय करना, पट्टी या गेल बैठाना -'अपक के खंडसे दूसरे खंडकी समोनेके लिए'-सूत्र० । * स० कि० मिलावा, अनुरक्त होना ।
समोय--अ० अनुरक्त होकर -'वनमाली कहाँ भी समोय नये'-धन० ।
समोसा--पु० सिंघाईकी शक्करका एक नमकीन एकवान ।
समोह--पु० [सं०] लड़ाई, युक्त ।
समो--पु० समय ।

समोहिवा--वि० सयबरकर, बमउन्न ।
सम्--उप० [सं०] वह शब्दोंके पूर्व आकर साथ, पूर्णता, आधिक्य, समीप्य, अच्छाई आदिका बोधन करता है ।
सम्मंत्रण--पु० [सं०] राय लेना, मंत्रणा करना ।
सम्मंत्रणीय--वि० [सं०] राय लेने योग्य; नमस्कार करने योग्य ।
सम्मंत्रव्य--वि० [सं०] मंत्रणा करने योग्य; विचार करने योग्य ।
सम्मंत्रित--वि० [सं०] सुविचारित ।
सम्मग्न--वि० [सं०] अच्छी तरह डूबा हुआ, निमग्न, गंत ।
सम्मत्--वि० [सं०] एक ही रायका, सहमत; माना हुआ; विचारित; प्रसिद्ध; सम्मानित; प्रिय; जिते अनुमति या अधिकार दिया गया हो । पु० मनु सावर्णका एक पुत्र; राय, सम्मति, धारणा; अनुमति; स्वीकृति ।
सम्मति--स्त्री० [सं०] सहमति; स्वीकृति; राय, मत; आदर, सम्मान; इच्छा; आत्मज्ञान; प्रेम, सद्भाव; आदेश; एक नदी । वि० एक ही रायका, सहमत ।
सम्मथ--वि० [सं०] उन्मथ, नष्टमें चूर; आनदमें बिह्वल; मस्त, दान बहाना हुआ (हाथी) ।
सम्मथ--वि० [सं०] अव्यधिक प्रसन्न । पु० प्रसन्नता, सुगी; एक बड़ा मत्स्य; एक ऋषि ।
सम्मथी(विद्यु)--वि० [सं०] उन्नतित; प्रसन्न ।
सम्मन--पु० [सं०] 'सम्मत्' । अचलतकी ओरसे प्रतिवादी या गवाहकी नियत तिथिपर उपस्थित होनेके लिए भेजी जानेवाली लिखित सूचना या आदेश ।
सम्मर्द--पु० [सं०] रगड़ना, संघर्षण; विवाद, झगड़ा; दबाव; रौंदना, कुचलना; मुकाबला; युद्ध; मीझ ।
सम्मर्दन--पु० [सं०] रगड़नेकी क्रिया, संघर्षण; मर्दन करना, रौंदना । पु० वासुदेवका एक पुत्र; विद्याधरीका एक राजा ।
सम्मर्दी(विद्यु)--वि० [सं०] मर्दन करनेवाला, दबाने, रौंदनेवाला; रगड़नेवाला ।
सम्मर्शन--पु० [सं०] सहलाना ।
सम्मर्शी(विद्यु)--वि० [सं०] विचार करनेवाला ।
सम्मर्थ--पु० [सं०] वैय; सविष्णुता ।
सम्मा--स्त्री० [सं०] समानता (समस्या, आकार आदिकी); एक वृत्त ।
सम्माता(ह)--वि० [सं०] नाप-जोख करनेवाला; सगा; जिनकी माता साष्णी हो (?) ।
सम्मानुर--वि० [सं०] जिनकी माता साष्णी हो । पु० सती माताका पुत्र ।
सम्माव--पु० [सं०] उन्माद; उन्मत्तता, मद ।
सम्मान--पु० [सं०] इज्जत, आदर, प्रतिष्ठा; मापना; तुलना करना; मान ।
सम्मानन--पु० [सं०] पूजन, आदर करना; सिखलाना, बतलाना ।
सम्मानना--स्त्री० [सं०] दे० 'सम्मानन' । * स० कि० आदर करना ।
सम्माननीय--वि० [सं०] दे० 'सम्मान्य' ।

सम्मानित-वि० [सं०] पूजित, आदृत ।

सम्माननी (विभू) - वि० [सं०] जिसमें सम्मानका भाव हो।

सम्मान्य-वि० [सं०] आदरणीय, आदरके योग्य ।

सम्भार्य—पु० [सं०] प्रक्षालन; साफ करना; (लकड़ी आदिका बोझ बाँधनेके लिए बनायी जानेवाली) तृणकी रस्सी, गतार ।

सम्मानार्थक-पु० [सं०] मेहतर; शाह । वि० माफ करने-
वाला ।

सम्भार्य-पुं० [सं०] झाडना-बहारना, साफ करना;
स्नानादि (मूर्तिका); सुबा साफ करनेके काम जानेवाला
दर्भका मुट्ठा; उसकन; बाली साफ करते ममय निकला
हुवा उज्जिष्ट; झाड़ू ।

सम्भार्यनी-स्त्री० [सं०] शाक० ।

मम्मार्जित-वि० [मं०] अच्छी तरह शाका-बुद्धारा या
भाफ किया हुआ; हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ ।

सम्प्राप्ति-स्त्री० [सं०] सफाई, मार्जन ।

सम्मित-वि० [सं०] मापा हुआ; समान भाव, परिमाण आदिका; सन्ना, एक जैसा, अनुरूप; "से युक्त; "के निमित्त। पु० एक पौराणिक योनि; बसिठका एक पुत्र; फासला।

सम्मिति—खी० [सं०] बराबरी, तुलना करना; महत्वा-
काक्षा ।

सम्मियात-ली० [अ०] 'सम्म'का बहु०, जहरीली बीजे,
विषद्रव्य ।

सम्मिलन-पु० [स०] मिलना, एकत्र होना ।

सम्मिलित-वि० [स०] साथ मिला हुआ, युक्त; एकत्र ।

सम्मिश्र-वि० [सं०] आपसमें मिला हुआ, मिश्रित; सबद्ध; युक्त, संपन्न ।

सम्मिश्रण-पु० [सं०] मिलानेकी क्रिया, मिलावट ।

सम्मिश्रित-वि० [सं०] मिलाया हुआ, एक मास किया हुआ, मिलावटी ।

सम्मिश्र-पु० [सं०] इन्द्र ।

सम्मीयत-ली० [अ०] जहरीलापन, विवाकता ।

सम्मीलन-पुं [सं] (पुष्पादिका) सकुचित होना, मुंदना; ढक लेना; पूर्ण ग्रहण, खमास; सक्रियताका अंत होना ।

सम्मीलित-वि० [सं०] जिसने ओखें धड़ कर ली हैं, सुप्त ।
-प्रस-प० रक्त पुनर्नवा ।

संमुख-वि० [स०] जो सामने हो, जो आँखोंके सामने मौजूद हो; भिड़नेवाला; अभिमुख, की ओर प्रवृत्त; अनुकूल; किसी बातपर तुला हुआ; उपयुक्त । ज० सामने, समक्ष ।

सम्मुखी(स्त्रिणु)-पु० [मं०] आईना; वह जो सामने हो ।

सम्मुखीन-वि० [सं०] सामनेका; अनुकूल; शुभ ।

सम्मुख-वि० [सं०] भटका हुआ; धनकाया हुआ, हत-
बुद्धि; झंवर ।

सम्बन्ध-वि० [सं०] मरवाया हुआ, हतभुक्ति; सहाहीन; मूल्य, हानहीन; राशीकृत; अस्त्यस्तः तेजीसे उपपन्न; भग्न, टूटा हुआ । -चेता(तत्त्व)-वि० जिमका दिमाग ठिकाने न हो, हतभुक्ति । -पीठिका-स्त्री० एक शिष्टन-रोग । -हृत्पथ-वि० व्याकुल, उद्विग्नमन ।

संस्कृत-श्री० [सं०] एक तरहकी पहेली ।

सम्मुख्य-पु० [सं०] बना होना; बदना; फैलना । -ज-
पु० तुण, घास ।

सम्पूर्ण-पु० [सं०] घना होने, बढ़ने, फैलनेकी क्रिया;
मूर्च्छा, बेहोशी; ऊँचाई; पूर्ण व्याप्ति ।

सम्पूर्णनोज्ञ-पु० [सं०] मछली या अन्य जलचर जन्तु ।
सम्पूर्णित-वि० [सं०] घनीभूत; बेहोश; प्रतिफलित
(जैसे किरण); मिलाया हुआ (स्वर) ।

सम्भूत-वि० [सं०] बिलकुल निर्जीव, मरा हुआ ।

सम्बुद्ध-वि० [सं०] मूत्र शोका-वहारा, साफ किया हुआ,
छाना हुआ ।

सम्मेध-पु० [सं०] बादल-वर्षाका मौसिम ।

सम्मेल, सम्मेल-पु० [सं०] एक पर्वत ।

सन्मेलन-पु० [स०] आपसमें मिलना, एकत्र होना; समा
आदि; मिश्रण; मेक ।

सम्मोचित-वि० [मं०] मुक्त किया हुआ ।

सम्भोद-पु० [स०] प्रीतिः प्रसन्नता, सुखी; गद्य ।

सम्मोह-पु० [सं०] घबराहट, व्याकुलता; मूर्च्छा, सदा
हीनता; अद्यान, मूर्खता; निमोहन, वशीकरण; हो हला.
मद्यम; एक विशेष ग्रन्थयोग (ज्यो०) ।

सम्प्रोहक-वि० [सं०] बेहोश, संहाहीन करनेवाला
मग्ध, वशमें करनेवाला ।

सम्मोहन-वि० [स०] दे० 'सम्मोहक' । पु० मुग्ध करन।
बहकाना; कामदेवका एक बाण; एक पौराणिक अस्त्र ।

सम्सोदनी-स्त्री० [स०] एक तरहकी माया ।

मम्मोहित-वि० [सं०] मुग्ध, वशमे किया हुआ; बेहोश किया हुआ; घबराहटमें डाला हुआ ।

सम्प्राज-५० साम्राज्य

सम्पद्य्(च्, म्यच्)-वि० [सञ्] साध जनिनाल; ठींग, मही; उपयुक्त; उचित; मनोकूल; प्रिय; धकरूप; जो एक परिष्कृत हो (जैसे पदविद्य); नपुर्ण, समग्र। अ० वं. साध; अच्छी तरह; उचित रूपमें; ठीक-ठीक; सम्मानपूर्वक. पूनात; स्पष्टतः । - (क्) कर्मसात्-पु० मत्कर्म (जै०) । -चारित्र्य-पु० सदाचार, रत्नचर्मसे एक (जै०) । -पाठ-पु० श्रुत उच्चारण । -प्रणिधान-पु० प्रगा; समाधि । -प्रयोग-पु० उचित प्रयोग । -प्रवृत्ति-की० (द्विचोका) उत्पत्ति कार्य । -प्रहाण-पु० उर्ध्व प्रयत्न । -संज्ञान-पु० सही विज्ञान (जै०) । -संशुद्ध-वि० जिसे पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो (बुद्ध) । -संशुद्धि-की०-संशोधन-पु० पूर्ण ज्ञान, पूर्ण प्रकाश । -समाधि-की० ठीक समाधि । -स्थिति-की० साध रक्षा । स्थिति-की० मही याद ।

सम्यक्वाचकोष्ठ-प० [स०] ठीक समझ ।

सदस्यगाजीब-५० [स०] उपयुक्त रहन-सहन ।

सम्बन्ध-सम्बन्धका सम्यक्संगत रूप। -वात-वि-
पवित्रात्मा। -गमन-पुं० साधु जाना। -गोसा(वृ)-
पुं० सभा श्रवक। -ज्ञान-पुं० सही ज्ञान। -ईदन
पुं० उक्ति वा यैष दंड देना। -दर्शन-पुं० सही ज्ञान।
रत्नत्रयमेंसे एक (जै०)। वि० अंतर्दृष्टिसे युक्त। -दर्शी-
(शिल्पि), -दृक्(श)-वि० दे० 'सम्यग्दर्शन'। -शोध

पु० सही शान । -**वर्तमान**-वि० जो अपना कर्तव्य करना जाता है । -**वाक्(व)**-स्त्री० उच्चिन् भाषण । -**विजयी(विज्)**-वि० प्रिते पूर्ण विजय प्राप्त हो । -**वृत्ति**-स्त्री० कर्तव्यका समुचित पालन ।

सम्माना*-पु० दे० 'शामिबाना' ।

सम्मीची-स्त्री० [सं०] प्रशंसा, स्तुति; वृत्ति ।

मन्त्रध*-वि० समर्थ ।

मन्त्राज्ञी-स्त्री० [सं०] सन्नाहकी पत्नी; साक्षात्त्वके ज्ञानमन्त्रका संचालन करनेवाली स्त्री ।

मन्त्राद्(ञ)-पु० [सं०] वह जिसका शासन और राजाओं-पर हो, राजेश्वर (जिसने राजसूय धेय किया है) ।

मन्त्रलना-अ० कि० दे० 'संभलना' ।

मन्त्र-पु० [सं०] वचन; विश्वामित्रका एक पुत्र; * नेत्रनेकी क्रिया, सोनेकी क्रिया; वित्तर ।

मन्त्र*-स्त्री० मैत्र्य, मैना-तट कालिंदी नहीं विमल, करि मुकाम नृपराज । मन्त्र मन्त्र मार्गम भर, मूर जु आवे माज'-रासो ।

मन्त्र*-वि० सकल, मन्त्र ।

मन्त्रान*-पु० मन्त्रहारी, बुद्धिमान् । वि० अनुर । -**ध**, -**पन**-पु० चतुराई ।

मन्त्रा-वि० प्राप्त-व्यसक, प्रौढ अवस्थाका; बुद्धिमान् ; नात्मक, धूर्त । पु० वृद्ध-जन, बच्चा-बूढ़ा आदमी; नवरदार, मुखिया; भोजन, झाड़-फूँक करनेवाला; इकीम । -**चारी**-स्त्री० गाँवके मुखियाका रखम ।

मन्त्रध-वि० [सं०] एक ही वर्ग या श्रेणीका । पु० वह जो समान समूह या वक्ता हो ।

मन्त्रो-वि० [सं०] एक ही कोखमे उत्पन्न, निकटसम्बन्धी । पु० मगा भाई; द्रष्टा; सरोता ।

मन्त्रोनीयपथ-पु० [सं०] शैलीका मार्ग ।

मन्त्र-पु० [सं०] चतुष्टय; एक नरहका विरम; पक्षी । वि० रगदार; सानुनासिक ।

मन्त्रजाम-पु० [क्रा०] कामका मनीजा; पूत; प्रवच, तैयारी (करना, होना) ।

मन्त्र-पु० [सं०] पक्षी; गिरगिट; लपट; दुष्ट व्यक्ति; एक आभूषण ।

मन्त्र-संस्कृतका समासगत रूप । -**काक**-पु० हंस । -**काकी**-स्त्री हसी । -**मित्र**-पु० एक जनीय पक्षी ।

मन्त्र-वि० [सं०] चलनेवाला, गतिशील; रेवक । पु० गमन, गति; बाण; दहीका धक्का; नमक; डार; रस्ती; जलप्रपात; त्रल; ताल; तालाब; लघु मात्रा (छंज); बाहु । -**ज**-पु० गाना मनखन । -**पत्रिका**-स्त्री० कमलका नया पत्ता; कमलिनी । -**संमन्त्र**-पु० तिथार, धूर ।

मन्त्र-पु० [क्रा०] सिर; चोटी, शीर्ष भाग; आदि, आरंभ; शीर्षका सरदार (सरपंच); किनारा; ताश, गयीफिका कोई बच्चा पत्ता (हक्का, बादशाह इ०); हरादा; प्रेम; मोन, उत्पत्तिस्थान । -**अजाम**-पु० दे० 'सरजाम' ।

अफराज्ञ-वि० ऊँचे पदपर आसीन, महिमान्वित; धमडी । -**अफराज्ञी**-स्त्री० बह्वचन; धमड । -**करवा**-वि० सरदार, मुखिया । -**कर्दवी**-स्त्री० सरदारी ।

कश-वि० उर्ध्व; जो किसीसे न दबे; बागी ।

कशी-स्त्री० उर्ध्वता; विद्रोह । -**कार**-स्त्री० दे० 'क्रममें' । -**कोश**-वि० सिर कुचलनेवाला; दंड देने-वाला । पु० तोपखाना । -**कोबा**-पु० भारी गदा ।

कोबी-स्त्री० सिर कुचलना; दंड, गोशमाकी । -**झल**-पु० किरायानामा; वह कामज जिसपर नौकरीकी तारीख-की याददाहन लिखी जाय । -**झना**-वि० सरदार, मुखिया । -**गर्मी**-वि० रुठ, रुद्ध; घमंडी; व्रत ।

गरामी-स्त्री० मिरका भारी होना; सुमार; रोष । -**गरोह**-पु० सरदार; नेता, मुखिया । -**गर्म**-वि० मुस्तैद, उत्साही; उत्साह और परिश्रमसे काम करनेवाला ।

गर्मी-स्त्री० मुस्तैदी; उत्साह; दिलसे और पूरी शक्तिके साथ प्रयत्न करना । गुजश्न-स्त्री० गुजरा हुआ हाल, वृत्त, घटना । -**गोशी**-स्त्री० कानाफूनी; चुपकी, बुराई ।

गर्मा-पु० चरमेका उद्गम । -**जन्मीन**-स्त्री० देश, मुल्क; राज्य । -**जोर**-वि० सरकश, अवज्ञाकारी ।

जोश-पु० उतावला खाया हुआ शौरवा, शराब आदि । वि० (का०) बढ़िया, सारूप । -**जराश**-पु० नारी; सिर मुँहने-वाला । -**ज्ञाज**-पु० दे० 'सिरताज' । -**द्वस**-पु० अर्धशुद्ध; हेतुकारक । -**द्वरद्वी**-स्त्री० देवोपर लगाया जानेवाला कर । -**द्व**-पु० सिरका दर्द; व्यथा, कष्ट ।

दार-पु० मुखिया, नेता; मैनापति; सिखोंकी पत्नी । -**दारी**-स्त्री० सरदारकी पत्नी; प्रतिष्ठित सिख महिला ।

दारी-स्त्री० सरदारका पद । -**नविस्त**-स्त्री० कपाल-लेख, भाग्य । -**नाम**-वि० नामी, महार ।

नामा-पु० चिट्ठी पानेवालेका पता जो चिट्ठीके ऊपर या कार्रममें लिखा जाता है, प्रशस्ति । -**निरू**-वि० नतशिर; औंधे मुँहवाला; कजित । -**पंच**-पु० प्रधान पंच, पंचोका मुखिया । -**परस्त**-वि० संरक्षक; सहायक; वली । -**परस्ती**-स्त्री० संरक्षण; सहायता । -**पंच**, -**पंच**-पु० पगड़ीके ऊपर लगानेका एक गहना; एक तरहका गोटा । -**पोश**-पु० ढकना; खानपोश; (का०) गुप्त भाग, भेद । -**क्राराज**-वि० जिसका सिर ऊँचा हो; जिसे बड़ाई मिली हो; सम्मानित; धमडी । (मु० -० करना, -० क्ररमाना-बड़ाई देना, सम्मानित करना; कृपाय करना ।) -**क्राराज्ञी**-स्त्री० दरजेकी ऊँचाई; बड़ाई ।

क्ररोश-वि० जान देनेकी तैयार; जानपर खेलनेवाला, निडर । -**क्ररोशी**-स्त्री० जान देनेकी तैयार होना; वीरता । -**बसुह**-वि० मुहर किया हुआ, मुहरबंद ।

बरक-वि० जो जान हथेलीपर लिये हो, मरनेकी तैयार । -**बरहना**-वि० जो नंगे सिर हो । -**बरावुर्दा**-वि० मुखिया, प्रमुख । -**बराह**-वि० प्रबंधकारी; कारिदा ।

-० **कार**-पु० प्रबंधक; जिलेदारोंका अफसर । -० **कारी**-स्त्री० सरबराहकारका पद । -**बराही**-स्त्री० प्रबंध ।

बसर-अ० बराबर; सोलहों आने, सरापर । -**बाज**-वि० जानपर खेलनेवाला; निडर । -**बार**-पु० छोटी गठरी जो बोलके ऊपर रखी जाय । -**बुलंद**-वि० जिसका सिर ऊँचा हो; उच्चपदस्थ; प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

बुलंदी-स्त्री० ऊँचा पद; सम्मान । -**मस्त**-वि० मतवाला, शराबके लथेमें चूर । -**मस्ती**-स्त्री० मत्ता, मस्ती । -**माबा**-पु० दे० 'क्रममें' । -**ब(रो)**-पु० अ०

मिरसे परेतक, नख-शिक्ष । पु० सर्वांग । (सु० -० की मुखवर न होना-वेसुध, बदहवास होना ।) -ब्रह्म-पु० मुखपुष्ट, पुस्तका पढ़ना पत्ता । -ब(री)सामान-पु० सामान, असबाब । -छुमारी-झी० सिरोंकी गिनती, महुमछुमारी । -सबज-वि० हरा-भरा, कलहाता; फलता-फूलता । (सु० -० होना-सफल होना ।) -सबजी-झी० सरसज होना । -हंग-पु० सेना-नायक; पहलवान; सैनिक; बौद्ध । वि० उद्द; किन्तीसे न दबनेवाला । -हंगी-झी० सरहग होना; उद्दता; कलहापन । -हङ्-हङ्-झी० बह खान जहाँ कोई देश समाप्त होता हो । -हृदी-वि० सीमा-सम्बन्धी; सर-हृदका । -र(रे) हृज्जालस-अ० भरी कचहरीमें, हाकिम-के सामने । -कोह-पु० पहाड़ी चोटी । -दरबार-अ० सुल्लमसुल्ला, भरे दरबारमें । -दस्त-अ० अमी, फिलहाल । -दीवार-पु० दीवारका ऊपरी भाग । -झी-अ० नये सिरसे । -बाजार-अ० खुले खजाने, मक्के सामने । -बाम-पु० कोठा, अटारी । -बाली-पु० मिरहाना । -राह-अ० रास्तेके मिरपर, रास्तेमें । -लङ्कर-पु० मेनापति । -शाय-अ० ग्रामके शुरूमें, मंथना होते ही । -परी-पु० मलाई । सु० -करना-आरंभ करना (क०); (फिला, सुधिम) जीतना, फतह करना; हराना; दबाना; काबूमें कर लेना; दगाना, छोड़ना (तोप-बंदूक); ताश, मंजीफेमें खिलाबीका येमा पत्ता डालना जिसपर दूसरे खिलाड़ियोंको बजा पत्ता डालना पड़े । -होना-आरंभ होना (क०); फतह होना; दगा, छोडा जाना (तोप-बंदूक) ।
सर-पु० बाण; शिता-‘ककनूँ पेखि ईम भर माना’-प०, मरकंडा-‘मसि मूठी मागर जल भोजे, सर दी लागि जरे’-सूर । झी० माणा । -घर-पु० तरकस । -पंजर-पु० बाणोंका पित्रङ्ग । -बंभी-पु० कमनैत ।
सर(स)-पु० [सं०] झील, ताल, जलाशय; जल ।
सरह-झी० सरपनका एक भेद ।
सरकंडा-पु० एक सरपत जिममें गोंटें होती हैं ।
सरक-पु० [सं०] पथिकोंकी लगानार पंक्ति; काफिला, कारवाँ; ताल, झील; रज; मरकना; आकाश; मरिचा; सुरापान; पानपात्र; सुरा-वितरण; एक तीर्थ । वि० गति-शील । * झी० सुमार; वेदना-‘प्रेम सरक मक्के उर मने’-धन० ।
सरकना-अ० कि० जमीनसे सटे हुए आगे बढ़ना; रेंगना, खिसकना; हट जाना; काम चलना; ममयका टल जाना ।
सरकहूँ, सरहूँ-झी० एक तरहका सरकनेवाला फटा, जिसे किसी चीजपर डालकर खींचनेमें बह उमे जकड़ ले (धूँदेल०; सरकबौंधी, भोजपुरी) ।
सरका-पु० [अ०] चोरी । -बिलजज-पु० बाका ।
सरकार-झी० [फा०] राजदरबार; राज्य, हुकूमत; शासन-प्रबंध; शासक-मंडल; अधिकारी; रिवाजत । पु० प्रांतका एक विभाग; जिहा (मुगलराज्यप्रबंध); माहिक; घुरका माहिक; प्रबंधकारी; बंकेका संवीधन, हुजूर । -अंग्रेजी-झी० अंग्रेजी हुकूमत, ब्रिटिश राज । -कंपनी-झी० ईस्टइंडिया कंपनी । -दरबार-पु० राजदरबार, कचहरी ।

सु० -० करना, -० बढ़ना-कचहरीमें नाछिना-फरिथाउ करना । -विखाना-(क०) नाछिना करना ।
सरकार, बह(अदु)नाथ-पु० इतिहासके प्रसिद्ध प्राध्यापक तथा लेखक । आपकी इतिहास संबंधी रचनाओंमें औरंगजेब तथा शिवाजी-विषयक ग्रंथ विशेष महत्त्वके हैं (१८७०-१९५८) ।
सरकारी-वि० सरकारका, राजकीय; दफतरका; माहिकका । -अहलकार, मुलाजिम-पु० राजकर्मचारी । -आमदनी-झी० राज्यकी आय, राजस्व । -कागज़-पु० स्थापका कागज; प्रामिसरी नोट । -काम-पु० सरकारका काम, दफतरका काम । -सॉफ-पु० नख-मुधारके लिए राज्यकी ओरसे रखा जानेवाला नख; (ला०) व्याभिचारी, लपट ।
सरग-पु० स्वर्ग । -सिख-झी० अप्सरा ।
सरगम-पु० स्वरोंके आरोह-अवरोहका क्रम (मंगीन) ।
सरगही-झी० दे० ‘महरगही’ ।
सरगुन-वि० दे० ‘मगुन’ ।
सरगुनिया-पु० बह जो मगुणोपायक हो ।
सरघा-झी० [सं०] मधुमक्खी; बड़ी जातिकी मधुमक्खी ।
सरजना-अ० कि० सृष्टि करना, बनाना, निर्माण करना ।
सरजना, सरजस्व, सरजा(जस्)-झी० [म०] कनू-मनी झी ।
सरजा-पु० मिह; मरदार; शिवाजीकी उपाधि ।
सरजीव-वि० मजीब, जीववाला-‘सरजीव कदरि निजीव पूजहि अंतकाल की भारी’-कथौर ।
सरजीवन-वि० जीविन करनेवाला; हरा-भरा, जरमन ।
सरट-पु० [सं०] गिरगिट; बावु ।
सरटि-पु० [सं०] बावु; बाढल ।
सरटु-पु० [म०] गिरगिट ।
सरट-पु० [सं०] बावु; बाढल, गिरगिट; मधुमक्खी ।
सरण-पु० [सं०] गमन, मरकना, खिसकना; लोहकिट्ट । वि० युद्धमें मबड । -मार्ग-पु० गमन करनेवाला मार्ग ।
सरणा-झी० [सं०] लता; प्रसारणी; प्रिवृता; गमन ।
सरणि, सरणी-झी० [म०] मार्ग, रास्ता; प्रमार; व्यवस्था; तरीका; मीथी या लगानार पंक्ति; पगडटी गलेका एक रोग ।
सरणु-पु० [सं०] बावु; बाढल; जल; वसन; अग्नि, यम ।
सरताल-पु० [अ०] बैकना; कर्कराशि; दुष्ट व्रण, ‘कैमर’ ।
सरता-सरता-पु० बेंगरी; हिस्सा-बाँट । सु० -करना-एक दूसरेकी सहायतासे काम चलाना ।
सरतारा-वि० निश्चित, बाफुरसत, सावकास-‘बंद भं । हरगोविंदजी तबमें जमदूत फिर सरतारे’-गुलब ।
सरख-वि० [सं०] यमनशील । पु० वृज, बागा ।
सरखि-झी० [सं०] एक हाथकी माप ।
सरख-वि० [सं०] रघुयुक्त । पु० रघातोही सैनिक ।
सरख-वि० दे० ‘सर्द’ । * झी० सरत श्रुत ।
सरखई-वि० दे० ‘मरई’ ।
सरखर-अ० औसतना; एक सिरसे ।
सरखई-पु० दरगाजेका बाजू । अ० दे० ‘मरदर’ ।
सरखा-पु० दे० ‘सर्द’ ।

सरदाय (द्रव) - पु० [सं०] नीतम मुनि ।
 सरघन* - वि० धनी, अमीर - 'जो निर्धन मरघन के जाई आगे बैठा पीठ फिराई' - कबीर ।
 सरबा* - स्त्री० अन्धः; शक्ति ।
 सरब* - स्त्री० दे० 'शरण' ।
 सरबदीप* - पु० स्वर्णदीप, सिद्ध, लंका ।
 सरना - अ० कि० मरकना; काम चलना, पूरा पकना; * सफना; नीत जाना, पूरा हो जाना - 'सुनहु कस तेरी आलु सन्यो' - घर; कटना ।
 सरनी* - स्त्री० रास्ता, मार्ग ।
 सरप* - पु० सर्प, साँप ।
 सरपट - स्त्री० चौकड़ी सरसे तेज चाल जिसमें घोड़ा अगले पैरोंकी एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है । वि० सपाट । अ० सरपट चालमें ।
 सरपत - पु० कुशकी जातिका एक वृण ।
 सरपि* - पु० सर्पि, धी ।
 सरफराता* - अ० कि० ध्वम होना, धराना ।
 सरफा - पु० दे० 'सर्फा' ।
 सरफोका - पु० सरकड़ा ।
 सरब* - वि० दे० 'सर्व' - बिबापी - वि० सर्वव्यापक ।
 सरबचरि* - अ० सर्वत्र - '...मो मुलना सरबचरि गाजा' - कबीर ।
 सरबदा* - अ० सर्वदा, हमेशा ।
 सरबर* - स्त्री० दे० 'सरबर' ।
 सरबरना* - अ० कि० उपमा देना ।
 सरबस* - पु० सर्वस, मधु कुछ ।
 सरबोर* - वि० दे० 'सराबोर' ।
 सरभक - पु० [सं०] अन्नका एक कीट ।
 सरभस - वि० [सं०] तेज; उम; प्रसन्न; भावाविष्ट ।
 सरम* - स्त्री० लज्जा ।
 सरमद् - वि० [अ०] सदा रहनेवाला, नित्य, कायम; मस्त ।
 सरमा - पु० [फा०] जाबेका मौसिम, शीतकाल । स्त्री० [म०] देवताओंकी कुतिया; देवशुनी (कहा जाता है, यह चार ओँखोंवाले यमके कुत्तेकी जननी थी); कुतिया; कश्यप मुनिकी एक स्त्री; गंधर्वराज शैलपकी एक कन्या और विभीषणकी स्त्री । - पुत्र, - सुत - पु० कुत्ता ।
 सरमाई - वि० जाबेका । स्त्री० जाबेके कपड़े, जबाब ।
 सरमागमज - पु० [सं०] कुत्ता ।
 सरमाबा - पु० [फा०] पूँजी, मूलधन । - दार - पु० पूँजी-पति; धनी । - दारी - स्त्री० सरमायाधार होना ।
 सरयार् - पु० एक मोटा कुआरी धान; सारो ।
 सरयू - पु० [सं०] बायु । स्त्री० दे० 'सरयू' ।
 सरयू - स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध नदी जिसके तटपर अयोध्या स्थित है, घाघरा ।
 सरर - पु० ताना ठीक करनेके छिद्र लगायी जानेवाली रेश या सरकड़ेकी पतली छड़ी ।
 सरराना* - अ० कि० हवाके तेज चलने या किमी वस्तुकी गतिमें 'सर-सर' शब्द उत्पन्न होना ।
 सररु - वि० [सं०] सीधा, जो बक न हो; प्रसारित; सही, ठीक; सरा, ईमानदार, निश्छल, सीधे स्वभावका; यथार्थ,

सरदाय (द्रव) - सरसरी

असली; आसान, सुकर । पु० चीकका पेय; अमिन; एक दुग्ध; गंधाविरोजा; एक बड़ी संख्या (नी०) । - कटु - पु० किरौजी । - काट - पु० चीककी लकड़ी । - लृण - पु० शूलण । - द्रव - निर्वास - पु० गंधाविरोजा । - पुंठी - स्त्री० पठिना मछली । - बायिनी - स्त्री० वह पोधा जिसका तना सीधा हो । - बापी (विष्) - वि० सीधे जानेवाला । - रस - पु० दे० 'सरलद्रव' । - रस्य - पु० दे० 'सरलद्रव' ।
 सरकता - स्त्री० [सं०] सीधापन; खरापन, ईमानदारी, निष्कपटता, सिबाई; आसानी; सादगी ।
 सरलाय - पु० [सं०] दे० 'सरलद्रव' ।
 सरला - स्त्री० [सं०] चीकका पेय; त्रिपुटा, मोतिपा; एक नदी; काली तुलसी; निसोष ।
 सरलित - वि० [सं०] सीधा किया हुआ; सीधा ।
 सरलीकरण - पु० [सं०] कठिन विषयको आसान बना देना; किसी जटिल या कठिन भिन्नको सरल रूपमें परिणत कर देना (ग०) ।
 सरब - वि० [सं०] सम्भाव्यमान । * पु० दे० 'सराब' ।
 सरवत - स्त्री० [अ०] मालदारी, भनाऊवता ।
 सरवती - स्त्री० [सं०] वितस्ता नदी ।
 सरबन* - पु० दे० 'भ्रमण'; 'अवण' ।
 सरबनी* - स्त्री० सुमरनी ।
 सरबर - पु० [फा०] सरदार, अफसर; * सरोवर । * स्त्री० बराबरी ।
 सरबरी* - स्त्री० बराबरी, स्पकाँ ।
 सरवरिया - वि० सरवृषार, मरवारका । पु० वह ब्राह्मण जो सरवृषारका हो ।
 सरवरी - स्त्री० सरदारी ।
 सरवाक - पु० संपुट; प्याला, कसोरा, दीया ।
 सरवाना - पु० खेमा, तबू ।
 सरवार - पु० सरवृषारका भूखंड ।
 सरव्य - पु० [सं०] शरव्य, क्षव्य ।
 सरसक - पु० [फा०] सरसो, सर्प ।
 सरम - वि० [सं०] रसयुक्त, रसीला; स्वादिष्ट, जायकेदार; आर्द्र, शीला; पसीनेसे तरबतर; प्रेमासक्त; नया, ताजा; सुंदर, मोहक; रसपूर्ण (काव्य) । पु० सरोवर ।
 सरमई - स्त्री० सरसो जैसे फलके दाने; * सरस्ती (नदी, देवी); सरसता, ताजगी ।
 सरमठ - वि० साठ और सात । पु० सरसठकी संख्या, ९७ ।
 सरमना* - अ० कि० रसयुक्त होना; पनपना, इरा-भरा होना, लहलहाना; शोभा देना; भावाविष्ट होना; जलयुक्त होना ।
 सर-सर - पु० हवाके चलने या साँप आदिके रंगनेका शब्द । अ० 'सर-सर' ध्वनिके साथ । वि० [सं०] शंतस्ततः अग्रण करनेवाला । स्त्री० [अ०] तेज हवा; औंधी ।
 सरसराना - अ० कि० 'सर-सर' आवाज होना; हवाका तेजीसे चलना; साँप आदिका रंगना ।
 सरसराइट - स्त्री० हवा, साँप आदिके चलनेका शब्द; सरसराइट ।
 सरसरी - वि० जन्दी या रबारवीक, लापरवाहीमें किया जानेवाला, चल्ता (काम) । अ० जन्दीमें, बिना अधिक

लोच-विचारे, चलते तोरपर, बिना बारीकीसे देखे-समझे ।
सी० मायेपर पहननेका एक गहना; खफीफा अशकलत; प्रत्येक शब्द या वर्णके पहले 'स' लगाकर रचित सांकेतिक भाषा (सि०) । - **सङ्ग्रहीकृत** - पु० बिना तद्धकीकातके दुबम देनेका अधिकार । - **सङ्ग्रहीकृत** - सी० वह जोच या तद्धकीकात जिसमें पूरी शहासत न लिखी जाय । - **नज़र** - सी० दे० 'सरसरी निगाह' । - **नाकिश** - सी० खफीफा अशकलतमें की जानेवाली नाकिश । - **निगाह** - सी० चलती निगाह । - **तोरपर** - मोटे तोरपर ।
सरस्वा - सी० [सं०] देवते शिष्टता ।
सरसाई - सी० सरसता; आशियन; सुंदरता ।
सरसाना - सं० कि० हरा-भरा करना; रसपूर्ण करना । अ० कि० दे० 'सरसना' ।
सरसिक, **सरसीक** - पु० [सं०] सरस पक्षी ।
सरसिका - सी० [सं०] बावली; छोटा ताल, सरोवर; हिणुपत्ती ।
सरसिक - पु० [सं०] कमल । बि० तालमें उत्पन्न, उसमें रहनेवाला । - **सोति** - पु० नद्या ।
सरसिख - पु० [सं०] कमल । बि० सरोवरमें उत्पन्न । - **संयु** - पु० मृदे ।
सरसी - सी० [सं०] छोटा ताल, तलैया; बावली; एक वृत्त । - **ज** - पु० कमल । - **रुह** - पु० कमल; सात्त पक्षी ।
सरसुति - सी० सरस्वती ।
सरसेटना - सं० कि० फटकार बतलाना, खोटी-खरी सुनाना ।
सरसी - सी० एक तेलहन, सपप ।
सरसीई - वि० सरस बनाया हुआ, रमयुक्त ।
सरस्वती - सी० [सं०] एक प्रसिद्ध नदी (वेदोंमें जिस सरस्वती नदीका वर्णन है उसका निश्चय नहीं हो पाया है कि वह कौन-सी नदी है । बादके साहित्यमें उल्लिखित सरस्वती नदी बीचमें छुट होकर नीचे-नीचे गंगामें मिली कही जाती है; विद्यादेवी जो ब्रह्माकी पत्नी मानी जाती है; देवबाणी; बाणी, शब्द, स्वर; विद्या; दुर्गा, गाय; गौडोंकी एक देवी; नदी; सोम लता; ज्योतिष्मती लता; माछी लता; खौरन, पत्तम ली; एक छद; एक मिश्रराग; दशनाभी सन्ध्यासिधौमेंसे एककी उपाधि; मनुपत्नी; जल-शयोसे पूर्ण भूभाग । - **कंठाभरण** - पु० सस्कृतका एक प्रसिद्ध अलंकारग्रंथ; एक ताल (सगीत) । - **पूजन** - पु०, - **पूजा** - सी० सरस्वतीके जन्मदिनके उपलक्ष्यमें होनेवाली पूजा जो मार्ग-शुक्ला पंचमीकी होती है । - **प्रयोग** - पु० नाट्यिकीका एक प्रयोग । - **विनयान** - पु० वह ज्ञान जहाँ सरस्वती नदी छुट होती है ।
सरस्वाम् (स्वैत्) - वि० [सं०] अलमुक्त; रसीला; स्वादिष्ट; सुंदर; भावुक; रस प्राप्त करनेवाला । पु० मसृष्ट; नव; एक नदी; मेला ।
सरहंश - पु० सेनापति; कीतवाल ।
सरह - पु० शालम, पतंग ।
सरहज - सी० गालेकी ली ।
सरहटी - सी० एक पीया, नकुलकंद ।
सरहना - पु० मछलीकी चोई ।

सरहर - पु० सरपत ।
सरहरा - वि० ऊपरकी सीधे बड़ा हुआ (वेक), लंबोतरा; चिकना, जिसपर हाथ-पैर न जमे ।
सरहरी - सी० सरपत जैसा एक वृण; सफाई ।
सरहिद् - पु० यमुना और सतलुजके बीचका भूभाग ।
सरगाँ - सी० लोहेका मोटा छड़ जिसपर पीटकर लोहेका बरतन आदि बनाते हैं ।
सरा - सी० [सं०] निर्धार; प्रमाण लता; * बिता । ली० [का०] वर; मुमाकिरखाना, धर्मशाला ।
सराई - सी० कमोरा, दीया; † मलाई; सरकटेकी पतली लकी छड़ी; पाजामा; * ठडक ।
सराग - पु० मीखवा, शलाका - 'विरह मरागन्धि भूँत भोस' - प०; कुलावेके बीचकी लकड़ी । बि० [सं०] रग-वाला, रगदार; लाखमें रंगा हुआ; प्रेमाविष्ट; सुंदर ।
मराजाम - पु० मामान, माममी ।
मराच - पु० दे० 'म्राद' ।
सराना - म० कि० संपादित कराना, पूरा कराना ।
सराप - पु० दे० 'शाय' ।
सरापना - म० कि० शाप देना, बुरा मशाल कहना ।
मरापा - म० [का०] मिरने परतक, मपूर्ण । पु० मर्बांग, नख-शिल; वह पण जिसमें नख-शिलका वर्णन हो । - **नाज़** - वि० जिसमें नाज़-नखरे भरे हो । - **शराहन** - वि० शरासनमें भरा हुआ ।
मराफ - पु० [अ० 'मराफ' रूपसे, गहने इत्यादिका जेन देन करनेवाला; मोने-चौरीके गहने, बरतन आदि बेचने वाला; भीत्र नेकर नोट, रूपसे आदिके बदनमें छोट सिक्के देनेवाला । - **खाना** - पु० बक, कोठी ।
मराफा - पु० मराफी; मराफोंका बाजार, बक, कोठी ।
मराफी - सी० सराफका पंथा; भीत्र, भुनाई; कोठीबाना लिपि । - **पारखा** - पु० हुंदा, रेक । **सु** - **करना** - रूप पंमे परखना; सराफका काम करना ।
सराफ़ील - पु० [अ०] दे० 'इसराफ़ील' ।
सराव - पु० [अ०] रेनोके मैदानपर खड़ेकी किरमें पड़ने होनेवाली जलकी झालि, वृगमरीचिका; धोखा, झालि । † ली० दे० 'शराव' ।
सराबोर - वि० नरबनर, अन्धरी तरह भोगा हुआ ।
सराय - सी० [का०] दे० 'सरा' । - **सराफ़ानी** - ली० दुनिया । - **का कुत्ता** - (का०) अति लोभी ।
सराव - पु० [सं०] दकन; बाली; शराव; एक विवेल कोश । बि० शब्दायमान । * पु० प्याला, मधुपात्र, कसोरा; दीया; चौसठ नोलेकी तील । - **संपुट** - पु० दवा फूँकनेके लिए दो कनौरीको मिलाकर बनाया जाने वाला पात्र ।
सरावग - पु० दे० 'सरावगी' ।
सरावगी - पु० जैनमतानुयायी, जैन-धर्मपर विश्वास करनेवाला ।
सरावगी - पु० पटेला, रंगा ।
सराविका - सी० एक तरहका कोश ।
सराव - पु० भूमी - 'कहो कौन पं कदो जाह कन बडु । सराम पछोरी' - सू ।

सरासन*—पुं धनुष्, कमल ।
 सरासर—अ० इस सिरेमे उस सिरेतक, मोल्लहों आने, पूर्णतया । वि० [म०] इनस्तनः भ्रमण करनेवाला ।
 सरासरी—वि०, अ० दे० 'मरसरी' । स्त्री० जल्दी; आसानी; अनुमान ।
 सराह*—स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, बहाई ।
 सराहत—स्त्री० [अ०] खोलकर कहना, व्याख्या । —खे—खोलकर, विस्तारपूर्वक (कहना) ।
 सराहना—म० कि० प्रशंसा, स्तुति, बहाई करना । स्त्री० तारीफ, बहाई ।
 सराहनीय—वि० प्रशंसनीय, उत्तम ।
 सराहु—वि० [स०] ग्रहण लगा हुआ, राहुग्रस्त (चंद्र) ।
 सरि—स्त्री० [म०] अरना, जलप्रपात; दिशा; * नदी; लड़, माला; बराबरी, समता । * वि० तुल्य, मृदु । * अ० नक, पर्यंत—'आफ सरि राजा पर रहा'—प० ।
 सरिक—वि० [म०] जानेवाला ।
 सरिका—स्त्री० [स०] गमन, प्रस्थान; हिंदुपत्नी; जानेवाली स्त्री; मोनिबोकी लड़ी ।
 सरिगम—पुं० दे० 'मरगम' ।
 सरित—वि० [म०] आरावाहिक (भाषण) । * स्त्री० नदी ।
 सरितापति—पुं० [स०] समुद्र; वायुकी संग्रहा ।
 सरितावरा—स्त्री० [म०] गंगा ।
 सरिता—स्त्री० नदी, धारा ।
 सरित्—स्त्री० [म०] नदी; मूत्र, डोरी; दुर्गा । —कफ—पुं० नदीका फेन । —पति—पुं० समुद्र । —मुत—पुं० भाँस । —सुरंगा—स्त्री० जलप्रपाती ।
 सरित्त*—स्त्री० सरिता, नदी ।
 सरित्वात् (म्बत्)—पुं० [म०] समुद्र ।
 सरित्धिपति—पुं० [म०] समुद्र ।
 सरित्धिनी*—स्त्री० हर कमलपर जमींदारकी गी जानेवाली नंद ।
 सरित्नुभय—पुं० [स०] नदीके दोनों तट ।
 सरित्—'सरित्'का समासगत रूप । —ईप—पुं० गम्बका एक पुत्र । —अर्ता (र्तु)—पुं० समुद्र; नारकी संग्रहा । —बरा—स्त्री० गंगा ।
 सरिन्नाय—पुं० [स०] समुद्र ।
 सरिन्मुख—पुं० [म०] नदीका मुहाना ।
 सरिमा (म्ब), सरिमा (म्ब)—पुं० [म०] वायु । स्त्री० गति, गमन ।
 सरिया*—पुं० मरकटा; पतला छड़ ।
 सरियाला—स० कि० तरतीबसे रखना, व्यवस्थित करना; ब्योकर ठोक तरहमे रखना ।
 सरिब—पुं० [स०] जल, सलिल ।
 सरिवन—पुं० एक ओषधि, शालपर्ण ।
 सरिवर, सरिवरि*—स्त्री० बराबरी, समता ।
 सरिस्क—पुं० [फा०] बिंदु; अश्रुबिंदु, बौद्ध ।
 सरिस्त—स्त्री० [फा०] सट्टि; बनावट; प्रकृति, स्वभाव ।
 सरिस्ता—पुं० [फा०] दफतर, महकमा; कचहरी; रीति; उपाय । —दार—पुं० दफतरका प्रधान; माल और दीवानी दफतरीका एक विशेष कर्मचारी । —दारी—स्त्री० सरिस्ता-

दाराका पद या कार्य ।
 सरिष*—पुं० [म०] मयघं, मरमों ।
 सरिम*—वि० समान, तुल्य, बराबर ।
 सरी—स्त्री० [म०] छोटा मरोवर; मोता, अरना ।
 सरीका*—वि० दे० 'शरीक' ।
 सरीकत*—स्त्री० दे० 'शिरकत' ।
 सरीकता*—स्त्री० साम्रा, शिरकत ।
 सरीखा—वि० समान, सदृश ।
 सरीफा—पुं० दे० 'शरीफ' ।
 सरीर*—पुं० दे० 'शरीर' [अ०] तरुण, राजगद्दी । स्त्री० कमलके कागजपर चलनेसे (लिखनेसे) होनेवाली आवाज । —आरा—वि० तख्तपर बैठनेवाला, सिंहासनासीन ।
 सरीमूय—वि० [म०] रेंगनेवाला । पुं० रेंगनेवाला, कीड़ा, माँष आदि; विष्णु ।
 सरीह—वि० [अ०] प्रकट, खुला हुआ; स्पष्ट ।
 सरीहन—अ० लुभे तौरपर ।
 सरु—वि० [म०] पतला, छोटा । पुं० तलवारकी मूट; बाण ।
 सरुक् (व्)—वि० [स०] शोभायमान, कांतियुक्त ।
 सरुक् (ज्)—वि० [म०] समान कष्टमे प्रसन्न; कष्टग्रस्त, रोगी ।
 सरुज—वि० [स०] रोगयुक्त, रोगी ।
 सरुट् (प्)—वि० [स०] क्रुद्ध, कुपित ।
 सरुहना*—अ० कि० सुधरना; अच्छा, ठीक होना ।
 सरुहाना*—स० कि० अच्छा, चंगा करना ।
 सरूप—वि० [स०] साकार, रूपवाला; एक ही रूपका; समान, तुल्य, एकसा; मृदुर; समान स्वरवाला । * पुं० दे० 'म्बरूप' ।
 सरूपता—स्त्री०, सरूपत्व—पुं० [स०] तुल्यरूपता, मादृश्य, मुक्तिका एक प्रकार, अक्षरूप हो जाना ।
 सरूपा—स्त्री० [म०] मृतकी स्त्री और वहीकी माता ।
 सरूपी (पिन)—वि० [म०] समान रूपका, तुल्यरूप ।
 सरुज—पुं० दे० 'सुरज' ।
 सरुख*—वि० उन्नमे वृष्टा और चालाक; समान—'हैमि-हैसि पृछहि सखी सरुखी'—प० ।
 सरुखना—म० कि० सहेजना, संभालनेके लिए प्रवृत्त करना ।
 सरुखा*—वि० दे० 'सरुख' ।
 सरुश—पुं० [फा०] एक लम्बदार पदार्थ जो पशुओंके चमचे आदिमे तैयार किया जाता है । वि० लम्बदार, थिपकने-वाला ।
 सरुस—पुं० दे० 'मरेश' ।
 सरुट*—स्त्री० कपड़ोंकी मिलकट, सिकुवन ।
 सरी—पुं० बजझाक, एक सुंदर, सुखीले पेड़ जो सीधा बढ़ता और ऊपरकी ओर गावदूम होता है (यह उर्दू-फारसी कवितामे कट या सुंदर देह-यष्टिका उपमान माना गया है) ।
 सरोई—पुं० एक ऊँचा पेड़ ।
 सरोकार—पुं० [फा०] लगाव, वास्ता, प्रयोजन ।
 सरोकारी—वि० [फा०] सरोकार रखनेवाला ।
 सरोज—वि० [स०] ताल आदिमें उपज । पुं० कमल;

सर्वज्ञ-वि० सर्वज्ञे रंगका, हरपन विदे हुए पीला ।
 सर्वज्ञ-पु० खरबूजेका एक भेद जो बड़िया और अधिक मीठा होता है ।
 सर्वज्ञ-पु० [सं०] ठंडा पानी या बरफ रखनेकी जगह, मर्दखाना; तबखाना ।
 सर्वज्ञ-पु० [फा०] वह कम जो कोई अपने जीवनकाल में ही खोदवा लेवे ।
 सर्वज्ञ-पु० दे० 'सरदार' ।
 सर्वज्ञ-की० ठंडा, जाड़ा; बाड़ेका मौसिम; जुकाम; जूही ।
 -गर्म-की० जाड़ा-गर्म । सु०-खाना-ठंड लगना; ठंडमे कष्ट पाना । -गर्ममीमे बचाना-ठंडे-गर्म मौसिम या हवासे बचाना ।
 सर्वज्ञ-पु० [सं०] रंगना, मरकना; कुटिल गति; प्रवाह; गमन; सौंप; नागकेशर; अश्लेषा नक्षत्र; म्लेच्छोंकी एक जाति; एक रुद्र; एक राक्षस । -कंकालिका-कंकाली-की० विषाणवा नामक औषधि । -काल-पु० गरुड । -कोटर-पु० सौंपका बिल । -गंधा-की० गंध-नकुली । -गति-की० बक गति । -गृह-पु० सौंपका बिल । -जाति-की० सर्पक्षी । -चक्र-चक्रक-पु० कुकुरमुत्ता, छत्रक । -सु०-पु० सर्पककालीका एक भेद ।
 -नृ०-पु० नकुलकंद । -हंसी-की० मित्रली पीपल, मंझली । -हंसी-की० गोरक्षी नागवली । -दंती-की० नागदंती । -हंसी-पु० सौंपका विषदंत; दंती । -हंसी-की० वृश्चिकाली; दंती । -हंसी-की० अज-धृती । -हंसी-की० अथवा बकदंती । -हंसी-पु० सर्वदंत । -हंसी-पु० मयूर । -धारक-पु० सौंप एक बनेवाला, सेंपेरा । -नामा-की० सर्पककालीका एक भेद । -निर्मोक्ष-पु० केंचुली । -नेत्रा-की० गंधना-कुली, सर्पक्षी । -वति-पु० जेधनाग । -पुष्पी-की० नागदंती । -प्रिय-पु० चंदन वृक्ष । -पुष्पी-की० नागदंती । -प्रिय-पु० चंदन वृक्ष । -फण-पु० सौंपका कैला हुआ मस्तक । -ज-पु० सौंपका मणि । -फण-पु० अफीम । -बंछ-पु० पेचीदा नाल । -बलि-की० सर्पोंको दिया जानेवाला भेदेवादि । -बलि-की० [वि०] नामवली, पान । -अक्षक-पु० मयूर; नकुलकंद । -भुक्त-पु०-पु० मयूर; मारम; एक बड़ा नाप; नकुलकंद । -भुक्त-की० धृष्टी । -अभि-पु० सर्पके सिरपर पाया जानेवाला मणि । -माखा-की०-एक तरहकी सर्पककाली । -अक्ष-आग-पु० सर्पोंके नाशका वह जो जलमेजयने किया था । -राज-पु० बासुकि । -लता-बल्ली-की० नागवली । -विद्-वि० जिसे सर्पोंका ज्ञान हो । पु० सेंपेरा । -विद्या-की० सर्प-सर्पधी विद्या; सर्पोंको एक करने आदिकी विद्या । -विह्व-पु० सौंपका बिल । -वेष्ट-पु० सर्पविद्या । -व्यापादन-पु० नाप मारना; सर्प द्वारा मारा जाना । ब्यूह-पु० एक तरहका सेनाका ब्यूह । -सौंप-पु० हाथकी एक मुद्रा; एक तरहकी ईंट । वि० सर्पकेसे सिरवाला । -सत्त्व-पु० दे० 'सर्पयज्ञ' । -सत्त्व-पु० जनमेजय । -सत्त्व-की० सर्पककालीका एक भेद । -सत्त्व-पु० एक विशेष प्रकारका ब्यूह (कौ०) । -सुगंधा,-

सुगंधिका-की० सर्पगंधा । -हा(हृन्)-पु० नेवला; गरुड । -हृन्-पु० चंदनका एक भेद ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] रंगनेकी विद्या; धीरेसे खिसकना; टेढ़ा चलना; बाणका जमीनके पासमे डमके समानांतर चलना ।
 सर्पगंधी-की० [सं०] सैहली; नाकुली ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] गरुडका एक पुत्र ।
 सर्पगंध-की० [सं०] सौंपिन; फणिलता ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] रुद्राक्ष; सर्पक्षी ।
 सर्पगंधी-की० [सं०] गंधनाकली, गंधिनी; शंखिनी; सपिण्डी; सरहटी; इतने अपराजिता ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] नागकेशर; महिषकंद ।
 सर्पगंधी-की० [सं०] राखा; नकुलकंद ।
 सर्पगंध-वि० [सं०] सौंपसे मिलता हुआ, सौंप जैसा ।
 सर्पगंधि-पु० [सं०] दे० 'सर्पगंध' ।
 सर्पगंधि-पु० [सं०] गरुड; नेवला; मोर ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] सौंपके रहनेका स्थान; बामी; चंदन ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] मोर; गरुड ।
 सर्पगंध-वि० [सं०] सौंप जैसा मुखवाला । पु० एक राक्षस ।
 सर्पगंधा-की० [सं०] एक योगिनी ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] हतसमुद्र ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] धी; एक ऋषि । -मंड-पु० दे० 'सर्पगंध' ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] धी । -[सं०] समुद्र-पु० दे० 'सर्पगंध' ।
 सर्पगंध-की० [सं०] छोटा सौंप; एक नदी ।
 सर्पगंधी-की० [सं०] सौंपिन; एक लता, भुजगी ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] वास्तविक सर्पगंध, वह सर्पगंध जिसमें उमका विह्व हो ।
 सर्पगंधि-पु० [सं०] हतमागर ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] पिचलाये हुए पीका फेन ।
 सर्पगंधी-पु० [सं०] ऐसे प्रमेहमे प्रसक्त व्यक्ति जिसमें पेशाब धी जैसा होता है ।
 सर्पगंध-वि० [सं०] सौंपका-ना ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] हत ।
 सर्पगंधिका-वि० [सं०] धीका मरनवान ।
 सर्पगंध-पु० धी ।
 सर्पगंध-वि० [सं०] रंगने, धीरे-धीरे चलनेवाला ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] दे० 'सर्पगंध' ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] बासुकि ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] चंदन ।
 सर्पगंध-पु० [सं०] उन्मादका एक प्रकार जिसमें मनुष्य सौंप जैसा आचरण करता है ।
 सर्पगंध-पु० [फा०] फजूल खर्च, अपव्यय; [अ०] खर्च करना; बसर करना; बिताना । की० व्याकरणका वह विभाग जिसमें शब्दोंके भेद, रूपांतर, वृत्तपत्ति आदिको विवरण रहता है; मीलोंकी गरदान । -बहो,-(क्री) नहो-की० व्याकरण-शास्त्र । सु०-होना-खर्च होना; बिताना ।
 सर्पगंध-पु० [अ०] खर्च; अपव्यय; कंजसी, खर्चमें लगी

करना (का०) ।

सर्वा-वि० व्याकरण जाननेवाला, वैसाकरण ।

सर्वस-पु० दे० 'सर्वस' ।

सर्व-पु० [सं०] गमन, गति; आकाश; स्वर्ग; ३ श्री० दे० 'सर्व' ।

सर्वा-पु० गराबीकी पुरी ।

सर्वा-पु० [अ०] मोना-चौदो आदि परखनेवाला; दे० 'मोना' ।

सर्वा-पु० दे० 'मोना' ।

सर्वा-पु० दे० 'सर्वा' ।

सर्वक-वि० [सं०] सबको पीकित करनेवाला, निर्दय । पु० दुष्ट व्यक्ति; पाप ।

सर्वदम, सर्वदमन-पु० [सं०] सकुनलका पुत्र, भरत ।

सर्वस-वि० [सं०] सबका भरण-पोषण करनेवाला ।

सर्वसह-वि० [सं०] सब कुछ सहन करनेवाला ।

सर्वसहा-श्री० [सं०] दूधी ।

सर्वहर-वि० [सं०] सब कुछ ले जानेवाला ।

सर्व-वि० [सं०] सब, समस्त, समग्र, कुल । पु० शिव; विष्णु; एक मुनि; एक जनपद; जल । -कर-पु० शिव ।

-कतां(र्तु) पु० जहा । -कमं(सु) पु० सब प्रकारके काम । -कमां(संयु) पु० शिव । -कर्मिण-वि०

सब काम करनेवाला । -कचन-वि० साक्षिम सोनेका ।

-काम-वि० सब इच्छा रखनेवाला; सब तरहकी इच्छा पूरी करनेवाला । पु० शिव; एक अर्हत् । -काम-वि०

इच्छासुख गमन करनेवाला । -क-वि० सारी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला । पु० शिव । -क-वि० सारी अभिलाषाएँ पूरी करनेवाला । -क-पु० शिव ।

-कामिक-वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला; जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हो । -कामी(मिन्)-वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला; स्वच्छापूर्वक काम करनेवाला;

जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हो । -काम्य-वि० मन्त्रि; जिसकी हर एक व्यक्ति इच्छा करे । -कारी(रिन्)-वि०

सब कुछ करनेवाला या करनेमें समर्थ । पु० सबका निर्माता । -काक-अ० मर्वा, हमेरा । -प्रसाद-पु० शिव । -काळीन-वि० सब काका । -कृत-वि०

मनोत्पादक । -कृष्ण-वि० बहुत काला । -केसरी(मिन्)-पु० अभिनेता, नट । -केसर-पु० बकुल, मौलमिरी । -क-पु० सबका नाश, प्रलय । -क-पु० एक क्षार, महाक्षार । -क-वि० सबमें रहनेवाला । -क-वि० जिसमें हर तरहकी रंध हो । पु० कपूर, कबील, अयुध, कुकुम, लवंग और चातुर्वर्तिक

(नागकेशर, इलायची, तेजपाण और दारुचीनी)का समूह । -क-वि० दे० 'मर्वा' । -क-वि० सब जगह जानेवाला, सर्वव्यापक । पु० जहा; आत्मा; शिव;

जल; भीमसेनका एक पुत्र । -क-पु० रेह । -क-वि० सर्वव्यापक । -क-श्री० भिंयु । -कामी(मिन्)-वि० दे० 'सर्वग' । -क-वि०, क-वि० पिप्पलीमुल ।

-क-वि० सब कुछ एक ही बार सा जानेवाला । -क-श्री० नागदमनी । -क-वि० सब सा जानेवाला । पु० सप्ताम ग्रहण । -क-श्री० एक

तांत्रिक देवी (श्री०) । -क-वि० पूर्णतः चमकना बना हुआ; सब तरहके चमकोंका बना हुआ । -क-वि०

(रिन्)-वि० व्यापक । पु० शिव । -क-वि० त्रिदशजन्म सबको बधमें करनेवाला । -क-वि० त्रिदशजन्म (आ०३०) । -क-पु० प्रत्येक व्यक्ति । -क-वि० एक ओषधि, कछि । -क-वि० मरने संबंध रखनेवाला, सार्वजनिक । -क-वि० सबके हितका ।

-क-श्री० पूर्ण विजय । -क-श्री० एक पीथा, देवकली; खिचोका एक पर्व जो मार्गशीर्षमें होता था । -क-वि० सबको जीतनेवाला, अजेय; सबसे बड़ा हुआ; तीनों बाहुओंको बधमें करनेवाला (आ०३०) ।

पु० सृष्टु; एक एकाह; एक संवत्सर । -क-वि० जिसके पिता, पितामह और भ्रातामह जीवित हो ।

-क-वि० सब कुछ जाननेवाला । पु० ईश्वर; देवता; नृप; जर्जर; शिव । -क-श्री० दुर्गा; एक योगिनी । -क-वि० सर्वज्ञ । -क-वि० सर्वज्ञ । -क-वि० सर्वज्ञ ।

-क-वि० सब मित्रांत; वह जिसने सब तंत्रोंका अभ्युपेक्षा है । वि० सर्वज्ञात्मक । -क-वि० सारा लोभकार दूर करनेवाला (पु०) । -क-वि० सबको तप्त करनेवाला । पु० कामदेव; सूर्य (पु०) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

-क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) । -क-वि० काकमात्रा; भद्राक्षी । -क-वि० काकमात्रा (विष्णु) ।

मार्गपर कैला ही; हर दिनार्थ जानेवाला । -**बा-वि०** मय कुछ पीनेवाला; मयकी रक्षा करनेवाला । **बी०** बलिकी पत्नी । -**पाचक-पु०** सुरागा । -**पारसच-वि०** बिल्कुल लोहेका बना हुआ । -**पार्वस्युख-पु०** शिव । -**पाकक-वि०** सबका पालन, रक्षण करनेवाला । -**पाषाण-वि०** मयकी पवित्र करनेवाला । पु० शिव । -**पुजित-वि०** सबके द्वारा पूजित । पु० शिव । -**पूत-वि०** पूर्णतः शुद्ध । -**पूज-वि०** विमर्के पास मय कुछ हो । -**पूछा-ली०** यज्ञ-विशेष । -**प्रत्यक्ष-वि०** जो सबके सामने हो । -**प्रद-वि०** मय कुछ देनेवाला । -**प्रभु-पु०** सबका स्वामी । -**प्राप्ति-ली०** सब कुछकी प्राप्ति । -**प्रिय-वि०** जो मयको प्रिय हो; जिसे मय प्रिय हो । -**बंधविमोचन-वि०** मयी बंधनोंसे मुक्त करनेवाला । पु० शिव । -**बल-पु०** एक बली सख्या (बौ०) । -**बाहु-पु०** गुरु करनेका एक ढग । -**बीज-पु०** मयका बीज या मूल । -**भक्ष-वि०** मय कुछ खानेवाला । -**भक्षा-ली०** बकरी । -**भक्षी(शिव)-वि०** मय कुछ खानेवाला । पु० अग्नि । -**अयंकर-वि०** मयको भीत करनेवाला । -**अवोऽय-पु०** सूर्य । -**आव-पु०** पूरी मत्ता; पूरी आत्मा; पूर्ण मतोष । -**अकर-पु०** शिव । -**आवन-वि०** मनोपादक । पु० शिव । -**भूत-वि०** जो मय जगह हो । पु० मारे जीव । -**गुहाशय-वि०** जो मयके हृदयमें रहे । -**पिता-मह-पु०** मया । -**अदर-पु०** शिव । -**हित-पु०** मय जीवोंकी भलाई । -**भूमिक-पु०** आरचीनी । -**भूत-वि०** मयका पोषण करनेवाला । -**भोग-पु०** धन, मेजा आदिसे मयायता देनेवाला मित्र (बौ०) । -**सह-वि०** मय कायोंमें ममथ, उपयोगी । -**भोगी(शिव)-वि०** मय मयका भोग करनेवाला; मय कुछ खानेवाला । -**भोगीन-भोग-वि०** मयके लिए लाभदायक, मयके भोगके योग्य । -**भंगल-वि०** मयके लिए शुभ । -**अंगला-ली०** दुर्गा; लक्ष्मी । -**मला-पगल-पु०** एक मयाधि । -**अहाह(हृत्)-वि०** मयसे यथा । -**आस्ताद-वि०** मय तरहका माम खानेवाला । -**मृत्प-पु०** कोई छोटा मिट्टा; कीडी । -**मृषक-पु०** मय कुछ सुराने, हरण करनेवाला, मयमय । -**मेज-पु०** मार्वाजनिक यथा; एक मयमय जो दम दिन चलता था; प्रत्येक यथा; एक उपनिषद् । -**अंशी(शिव)-वि०** मय यथा, ओजारीसे युक्त । -**भोगी(शिव)-पु०** शिव । -**रक्षण-वि०** सबसे रक्षा करनेवाला । -**रक्षी(शिव)-वि०** मयकी रक्षा करनेवाला । -**रत्नक-पु०** नौ निषिद्धोंमेंसे एक (त्रे०) । -**रत्ना-ली०** एक अति (संगीत) । -**रस-पु०** सब प्रकारका रस; लक्षण; धना; मय तरहके स्वादिष्ट भोजन; एक संगीतवाच । वि० सब रसोंसे युक्त; विद्वान् । -**रसा-ली०** भानकी लाजाका मोंद । -**रसोत्थम-पु०** नयक । -**रास-पु०** धना; एक नय (संगीत) । -**रूप-वि०** मय रूप ग्रहण करनेवाला । पु० एक मयाधि । -**रूपी(शिव)-वि०** दे० 'मर्वक' । -**लक्षण-पु०** मारे शुभ विह । -**कक्षित-पु०** शिव । -**काकस-पु०** शिव ।

-**क्षिप-वि०** जो सब किशोंमें हो (विशेषण) । -**क्षिपी(शिव)-वि०** बाहरी लक्षण रखनेवाला, दोंगी । -**खोक-पु०** मारा सतार; समी कीग । -**कुट-०** भूत-पु० शिव । -**गुरु-पु०** विष्णु । -**पितामह-पु०** मया । -**अभाषि-पु०** शिव । -**अमोचर-पु०** शिव; विष्णु । -**लोकेष्ट-पु०** विष्णु; शिव । -**लोकेष्टर-पु०** विष्णु; मया । -**लोचना-ली०** गंधनाकुली । -**लोह-वि०** पूर्ण रूपसे काल । पु० लोहेका बाण; मय धातुर । -**लोहित-वि०** बिल्कुल काल । -**लोह-पु०** लोहेका बाण; तर्बा । -**वर्णिका-ली०** गंधारी युद्ध । -**वर्णी(शिव)-वि०** विभिन्न प्रकारका । -**वल्कल-वि०** जो सबको प्रिय हो । -**वल्कल-ली०** असली नारी, व्यभिचारिणी । -**वागीश्वरेश्वर-पु०** विष्णु । -**वातसह-वि०** मय तरहकी हवा बर्दाश्त करनेवाला (पोत) । -**वादी(शिव)-पु०** शिव । -**दे(वि)सम्मत-वि०** जिसे मयने मान लिया हो । -**वास-वासी(शिव)-पु०** शिव । -**वासक-वि०** पूर्णतः वसाच्छादित । -**विक्रयी(शिव)-वि०** मय तरहकी वस्तुमें बेचनेवाला । -**विल्कल-विप्रह-पु०** शिव । -**विज्ञान-पु०** हर एक विषयका ज्ञान । वि० सब विषयोंका ज्ञाता । -**विज्ञानी(शिव)-वि०** दे० 'मर्वविद्वान्' । -**विद्व-वि०** सर्वज्ञ । पु० ईश्वर । **ली०** ओम् । -**विद्य-वि०** मारी विद्यार्थे जाननेवाला, सर्वज्ञ । -**विद्याश-पु०** सर्वज्ञाश । -**विश्वंसी(शिव)-वि०** मयका विपदास करनेवाला । -**विषय-वि०** मय विषयोंसे मयमय रखनेवाला, साधारण । -**वीर-वि०** बहुतसे पुत्रोंवाला । -**जित्-वि०** सब शीरोकी जीतनेवाला । -**वीर्य-वि०** सारी शक्तियोंसे युक्त । -**वेत्ता(सु)-वि०** सर्वज्ञ । -**वेत्त-वि०** पूर्ण मानवान् ; मय वेदोंका ज्ञाता । पु० चारों वेदोंकी जाननेवाला ज्ञातज्ञ । -**वेदस-वि०** (यथा) जिसमें सारी मपत्ति दान कर दी जाय; सारी मपत्ति दान करनेवाला । पु० मारी मपत्ति । -**वेदसी(शिव)-वि०** सारी मपत्ति दान करनेवाला । -**वेदा(द्व)-पु०** यथातमें सारी मपत्ति दान कर देनेवाला व्यक्ति । -**वेदी(शिव)-वि०** सर्वज्ञ । -**वेदी(शिव)-वि०** अविनेता, नद । -**वैनाशिक-वि०** सबको नष्टकर माननेवाला । पु० वैद । -**व्यापक-वि०** सबमें रहनेवाला । -**व्यापी(शिव)-वि०** दे० 'सर्वव्यापक' । पु० ईश्वर; एक रुद्र । -**वांका-ली०** प्रत्येक व्यक्तिके प्रति संवेद । -**शक्-शक्तिमात्र(मृ)-वि०** मय कुछ करनेकी शक्तिसे युक्त । पु० ईश्वर । -**सक्ती(शिव)-वि०** भारे शक्तोंसे युक्त । -**सारी-वि०** सबसे तेज । -**शुभ-वि०** बिल्कुल रिक्त; सबको अस्तित्वरहित माननेवाला । -**वादी(शिव)-पु०** शब्दवादका अनुयायी । -**दूर-पु०** एक बोधिमय । -**आप्य-वि०** सबके सुनने योग्य । -**अ-वि०** (मेमरी) आदर ध्वित करनेवाला एक विशेषण जिमका प्रयोग अनेक व्यक्तिवाका नाम एक साथ आनेपर वन सबके लिए सामूहिक रूपमें केवल एक बार, आरम्भमें किया जाता है । -**अष्ट-वि०** सर्वोत्तम । -**इवेता-ली०** एक विधेला कीडा; एक ओषधि ।

-संगद-पु० एक तरहका जल तैयार होनेवाला धान, साठी। -संज्ञा-खी० एक बंधी संज्ञा। -संज्ञ-वि० सब वस्तुओंसे युक्त। -संभव-पु० सबका मूल। -संख्या-वि० सर्वव्यापक। -संख्याण-वि० सब रूपोंवाला। -संहार-वि० सर्वनाश करनेवाला। पु० काल; नाश, प्रलय। -संहारी(विन्)-वि० सबका नाश करनेवाला। -सम्बन्धन, -सम्बन्ध-पु० पूरी सेना एकत्र करना; पूर्ण शक्तीकरण। -समसा-खी० सबके साथ समानता, निःपक्षता। -समाहार-वि० सबका नाश करनेवाला। -सम्पत्ति-वि० सब मद्रत्नोंकी राय जिसके पक्षमें हो, सब सदत्नोंको जो मान्य हो। -सम्पत्ति-खी० सब (सदत्नों)की स्वीकृति या राय। -सर-पु० मुँहमें होनेवाला एक तरहका ग्रन्थ। -सह-वि० सब कुछ सहन करनेवाला; सहनशील। पु० गुप्त्युल। -सहा-खी० पवने। -सार्प्रत-पु० सर्वव्यापकता। -साक्षी(विन्)-वि० सब कुछ देखनेवाला। पु० ईश्वर; बापु; अतिन। -साध-वि० जिसमें सब कुछ लीन हो। -साधन-वि० सब कुछ मित्र करनेवाला। पु० शिव; भगवत्पुत्र। -साधारण-पु० साधारण लोग, जनता। वि० सामान्य। -सामान्य-वि० जो सबमें पाया जाय। -सारंग-पु० एक नाय। -सार-पु० सबका सार भाग। -साह-वि० सब कुछ सहन करनेवाला। -सिद्धा-खी० चौथी, नवाँ और चौदहवीं तिथियाँ। -सिद्धार्थ-वि० जिसकी मारी इच्छाएँ पूरी हो गयी हो। -सिद्धि-खी० सारी इच्छाओंकी पूर्ति; पूर्ण प्रमाण; पूर्ण परिणाम; बेसका पैस। -सुख-वि० जो सबको आसानीसे प्राप्त हो सके। -सौवर्ण-वि० पूर्णतः सोनेका। -सोम-पु० एक, एकाह। -स्व-पु० सब कुछ, मारी संपत्ति; सर्वोद। -०वृद्ध, ०हरण, ०हार-पु० मारी संपत्तिका हरण। -०वृद्धि-वि० जिसमें मारी संपत्ति दान कर दी जाय (यय)। -०वृद्धि-खी० सब कुछ देकर की जानेवाली सधि। -स्वामी(विन्)-वि० सबका मालिक। -स्वार-पु० एक एकाह। -स्त्री(विन्)-पु० एक वर्णसरकर जाति (नापित पिता और ग्राहिनि मातासे उत्पन्न)। -हर-वि० सब कुछ हरण कर लेनेवाला; मारी संपत्तिका उत्तगपिकारी; सब कुछ नष्ट करनेवाला। पु० काल; यम; मर्त्य। -हरण, -हार-पु० सारी संपत्तिका हरण। -हारा-वि० निम्न। पु० समाजका निम्नतम श्रमिक वर्ग (आ०)। -हारी(विन्)-वि० सब कुछ हरण करनेवाला। पु० एक प्रेत। -हास्य-वि० सबके द्वारा उपहास्य, हेय। -हित-वि० सबके लिए लाभदायक। पु० शान्त्यनुति, बुद्ध; मित्र। -०कर्म(वृ)-पु० मार्वाजनिक उत्पन्न (की०)। सर्व-पु० [का०] दे० 'सर्व'। -अव्यय-वि० सर्वोत्तम श्रेणीका देवता। -आज्ञा-पु० सर्वोत्तम एक भेद जो विश्वकुल सीधा होता है। -अज्ञ, -कामत-वि० सर्वोत्तमे कदवाला। सु०-० उडना-वि० कीमे सम्मानके लिए जका हो जाना। सर्वक-वि० [सं०] सब, समग्र। सर्वसत्(सत्)-अ० [सं०] चारों ओर, सर्वत्र; सब प्रकारसे;

सब तरफसे; पूर्णतः। -पाणिपाद-वि० जिसके हाथ-पैर सर्वत्र हों। -सुभा-खी० मियपु वृक्ष। सर्वसत्(सत्)(वृ)-वि० [सं०] जिसकी दृष्टि सर्वत्र हो। सर्वसत्-वि० सर्वतःका समासगत रूप। -गामी(विन्)-वि० सभी दिशाओंमें जानेवाला। -विह-वि० सब ओर फैला हुआ। -वार-वि० जिसकी सब तरफ तेज धार हो। -पुर-वि० जो सर्वत्र शीघ्र-स्थानीय हो। -भद्र-वि० जो सब प्रकारसे कल्याणकर हो; जिसके सारे सिर, मुँह आदिके वाल मुँह हों। पु० बह वर्णकार मंदिर या प्रामाद जिसमें चारों तरफ द्वार हों; एक तरहका म्यूह; विष्णुका रथ; बौस; नीम; एक तरहका चित्रकाम्य; (पूजाके समय) बेदी ठेंकनेके बख्तर बनाया जानेवाला एक चिह्न; एक तरहकी पहेली जिसमें शब्दों और खंडोंके अलग-अलग अर्थ ग्रहण किये जाते हैं; एक पर्वत; एक अरण्या; एक गंधद्रव्य; योगका एक आसन; वह मकान जिसमें चारों ओर छज्जा हो; दे० 'सर्वगोभद्रचक्र'; एक देवकानन; सिर, मुँह आदिका मुँहाया जाना। -० चक्र-पु० एक वर्णकार चक्र जो शुभाशुभ फल जाननेके लिए बनाया जाना है। -भद्रकण्ठ-पु० अगदरमें लगा हुआ चौकोर-चोरा; एक विशेष रूपका मंदिर। -भद्रा-खी० अर्ध-नेत्री, नटी; नर्तकी; गभारी। -अद्रिका-खी० गभारी। -आष-पु० सर्वत्र होना। -आवेन-अ० सब प्रकारसे, पूर्णतः। -भोगी(विन्)-पु० अभिषेक, पक्षोत्तिवों आदिमें रक्षा करनेवाला वंशवर्ती मित्र। -मुक्त-वि० जिसका मुह चारों ओर हो; पूर्ण; असीम। पु० एक तरहका म्यूह शिव; ब्रह्मा; ब्रह्म; आराम; ब्राह्मण; अग्नि; आकाश; स्वर्ग; जल। -वृत्त-वि० सर्वव्यापक। सर्वत्र-अ० [सं०] सब जगह; हर वक्त, हमेशा। -ग-वि० सब जगह जानेवाला; सर्वव्यापक। पु० बापु; मनुका एक पुत्र; भीममेनका एक पुत्र। -गत-वि० मनु जगह पहुँचा हुआ, पूर्ण। -गामी(विन्)-वि० सब जगह जानेवाला। पु० बापु। -गव-पु० सर्वव्यापि। सर्वत्रापि-वि० [सं०] सब जगह पहुँचनेवाला। सर्वथा-अ० [सं०] हर तरहमें; पूर्णतः; विश्वकुल; अत्यन्त; हमेशा। सर्वथा-अ० [सं०] हमेशा, सदा, हर समय। सर्वत्री-खी० दे० 'शर्वत्री'। सर्वरीस-पु० दे० 'शर्वरीस'। सर्वला-खी० [सं०] तोमर। सर्वली-खी० [सं०] लघु तोमर। सर्वशः(सत्)-अ० [सं०] पूर्णतः; सब तरफसे; सब प्रकारसे; सर्वत्र। सर्वस-पु० सर्वस, सब कुछ। सर्वांग-पु० [सं०] मारा शरीर; सब वेदोंका; संपूर्ण अंग, अवयव; शिव। -पूर्व-वि० सब तरहसे पूर्ण। -रूप-पु० शिव। -सुंदर-वि० जिसके सब अंग सुंदर हों; बहुत सुंदर। सर्वांगिक-वि० [सं०] जो सब अंगोंके लिए हो (आम) वण)। सर्वांगीण-वि० [सं०] सब अंगोंमें व्याप्त होनेवाला; २

वेदांगीमे संवध रखनेवाला ।
मर्वात-पु० [मं०] हर एकता अंत । -कृन्-वि० मरका
 अन् करनेवाला ।
मर्वातक-वि० [सं०] सबका जन् करनेवाला ।
मर्वातरस्थ-वि० [सं०] जो सबके अंदर हो ।
मर्वातरात्मा (स्वप्न)-पु० [सं०] ईश्वर ।
मर्वातवासी (मित्र)-पु० [सं०] ईश्वर ।
मर्वात्थ-पु० [सं०] चारों चरणोंमें समान अत्याश्रयवाला
 पद ।
मर्वाह-पु० [सं०] इन्द्राक्ष । वि० मरको देखनेवाला ।
मर्वाही-स्त्री० [मं०] दुड़ी घास ।
मर्वालय-पु० [सं०] पारा ।
मर्वाजीब-वि० [सं०] मरको जीवका देनेवाला ।
मर्वाणी-स्त्री० [सं०] पार्वती, दुर्गा ।
मर्वातिथि-वि० [मं०] मरका आतिथ्य करनेवाला, मेह-
 मानदार ।
मर्वातिशायी (मित्र)-वि० [सं०] मरमे बट जानेवाला ।
मर्वातोद्यपरिमह-पु० [सं०] शिब ।
मर्वात्मा (स्वप्न)-पु० [मं०] समस्त, संपूर्ण विश्वकी
 भाग्मा, ब्रह्मा; शिव; जिन. अर्हन् ।
मर्वाह-वि० [मं०] ओरोके मरह ।
मर्वाधिक-वि० [सं०] मरमे बढ़ा हुआ ।
मर्वाधिकार-पु० [सं०] पुरा अग्निधार; मरका निरीक्षण
 करनेवा अधिकार ।
मर्वाधिकारी (रिन्)-पु० [मं०] मारे अधिकार रखने-
 वाला; श्वाभ्य; निरीक्षक; अध्वक्ष ।
मर्वाधिपत्य-पु० [मं०] वह आधिपत्य या प्रभुता जो
 मरपर हो ।
मर्वाध्वक्ष-पु० [मं०] मरका श्वाभ्य, निरीक्षण करने-
 वाला ।
मर्वानुकारिणी-स्त्री० [मं०] शालपर्णी ।
मर्वानुकारी (रिन्)-वि० [मं०] मरका अनुकरण, नकल
 करनेवाला ।
मर्वानुभू-वि० [मं०] मरकी अनुभूति करनेवाला ।
मर्वानुभूति-स्त्री० [मं०] व्यापक अनुभूति; ज्वेल मिश्रता ।
 पु० इम नामके दो अर्हन् ।
मर्वाग्न-पु० [मं०] मर नरहका स्वाध पदार्थ । -भक्षक,
 -भोजी (जिन्)-वि० ट्रे० 'सर्वाग्नी' ।
मर्वाग्नीन-वि० [मं०] हर नरहका स्वाध-पदार्थ खाने-
 वाला ।
मर्वाग्न्य-वि० [सं०] पूर्णतः मिश्र ।
मर्वापरस्थ-पु० [मं०] मोक्ष ।
मर्वाभिभू-पु० [सं०] एक बुद्ध ।
मर्वाभिर्लक्ष (किन्)-वि० [सं०] सबपर शक करने-
 वाला ।
मर्वाभिर्लक्षक-वि०, पु० [सं०] सबको धोखा देनेवाला ।
मर्वाभिर्लक्षी (चिन्)-वि० [सं०] सबको धोखा देनेवाला;
 योगी; परमिदक । पु० सबकी निंदा करनेवाला ।
मर्वाभिसार-पु० [सं०] पूरी मेनके माघ आक्रमण या
 युद्धयात्रा ।

मर्वात-सर्वापाधि

मर्वामात्थ-पु० [मं०] एक परिवार, घरमे रहनेवाले नौकर
 आदि मर लोग ।
मर्वायनी-स्त्री० [मं०] मरेंद्र निरीब ।
सर्वाद्य-वि० [मं०] पूर्णतः लोभका बना हुआ ।
मर्वाद्युध-पु० [सं०] शिव ।
मर्वाद्ययक-वि० [मं०] सिर्फ जंगली चीजें खाकर रहने-
 वाला ।
सर्वाद्य-पु० [मं०] मारे पदार्थ, मारे विषय; एक मुहूर्त ।
 -कर्ता (नृ)-पु० मर चीजोंका निर्माण करनेवाला ।
 -कुशल-वि० मरवी विषयोंमें दक्ष । -धितक-पु०
 सबका निरीक्षण करनेवाला । -स्वाधक-वि० दे० 'मर्वाध-
 साधन' । -स्वाधन-वि० मर कुछ पुरा करनेवाला । पु०
 सब कुछ मिश्र करनेका साधन । -स्वाधिका-स्त्री० दुर्गा ।
 -सिद्ध-वि० जिसके सारे उद्देश्य पूर्ण हो गये हों । पु०
 गौतम बुद्ध । -सिद्धि-स्त्री० मारे उद्देश्योंकी पूर्ति ।
 पु० एक देववर्ग (जै०) ।
सर्वाध्यानुवाधिनी-स्त्री० [सं०] दुर्गा ।
सर्वालोककर-पु० [मं०] एक तरहकी समाधि ।
मर्वाधमर-पु० [सं०] अर्द्ध रात्रि ।
मर्वाधसु-पु० [मं०] मरकी एक किरण ।
मर्वाधाल, **मर्वाधाली (मिन्)**-वि० [मं०] जिसका मर
 जगह निवास हो ।
मर्वाधश-पु० [मं०] मरका आश्रय, आधार; शिव ।
मर्वासी (मिन्)-वि० [सं०] मरबझी ।
मर्वाध्य-पु० [मं०] मर नरहकी चीजें खाना ।
मर्वाध्रय-वि० [सं०] मरको आश्रय देनेवाला । पु० शिव ।
मर्वालिवाद्-पु० [सं०] समस्त वस्तुओंकी मरका वास्तव
 मानना (वैभाषिक बौद्ध सिद्धांतके चार भेदोंमेंमे एक जो
 गौतमपुत्र राहुल द्वारा प्रवर्तित माना जाता है) ।
सर्वाभिवादी (दिन्)-वि०, पु० [सं०] मर्वालिवाद्का
 अनुयायी ।
मर्वाध-वि० [मं०] मर हथियारोंमें लैम ।
मर्वाध-स्त्री० [मं०] मोलब विद्यादेवियोंमें एक (जै०) ।
मर्वाध-स्त्री० [अ०] नौकरी; सेवा ।
मर्वाध-वि० [सं०] मरमे सबध रखनेवाला; मरको लिए
 उपयुक्त ।
सर्व-पु० [अ०] जमीनकी पैमाइश; पैमाइशका मरकमा ।
सर्वेश्वर-पु० [अ०] जमीनकी पैमाइश करनेवाला, अमीन ।
सर्वेश, **सर्वेश्वर**-पु० [सं०] मरका स्वामी, मालिक;
 चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; शिव; ईश्वर ।
सर्वेश्वरी-वि० जिसे किसी मामलेमें सब कुछ करनेका
 अधिकार हो, पूर्णाधिकारी; प्रधान कर्ताधर्ता ।
सर्वोत्तम-वि० [सं०] सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ ।
सर्वोद्य-पु० [सं०] सब लोगोंके आर्थिक, नैतिक, सामा-
 धिक उत्थानके लिए चलाया गया स्वतंत्र भारतका एक
 आंदोलन ।
सर्वाधिकारी (रिन्)-वि० [सं०] मरका उपकार, महायता
 करनेवाला ।
सर्वाधिर-अ० [सं०] मरमे ऊपर या बढकर ।
सर्वाधि-स्त्री० [सं०] सर्व सामान्य गुण ।

फल मानकर अकवरने उसका पुकारनेका नाम उन्हींके नामपर सखीम रखा था। -साही-खी० दिल्लीमें बननेवाली एक तरबूकी सुदर, सुलायम जूती।

सखीक-वि० [सं०] क्रीडाशौक। अ० लीलापूर्वक। -राज-गामी(मिथु)-पु० एक पुत्र।

सखीस-वि० [अ०] आसन; चलती, छिट शब्दावलीसे रहित (भाषा); समतल। -ज्ञाबाब-खी० सरल, सुबोध भाषा। -गोई-खी० छिट शब्दावलीमें रहित शेर कहना।

सखर-पु० दे० मुखक।

सखरा-पु० पूरी आस्तीनका कमरतकका पहनावा, शल्का।

सखन-पु० [सं०] छोटे परोपजीवी कीट, जै आदि।

सखना-वि० दे० 'सलोना'।

सखनी-खी० चुकिका नामक माग।

सखनो-पु० दे० 'सलोना'।

सखेक-पु० [सं०] एक आदिस्थ।

सखेप-वि० [सं०] तैलीय पदार्थोंसे युक्त।

सखेमसाही-खी० दे० 'सलीमशाही'।

सखेस-वि० [सं०] अभी, खंडोंमें युक्त, संपूर्ण।

सखैना-म० कि० काटकर ठीक करना, मालना।

सखैया-खी० सरई।

सखैला-वि० पिच्छिल, किसलूनवाला, चिकना।

सखोक-वि० [सं०] के साथ या एक ही, समान लोक-में रहना; मुक्तिका एक प्रकार, मालीक्य।

सखोट-खी० दे० 'मिलवट'।

सखोतर-पु० पशुओं, विशेषतः अश्वोंका चिकित्साशास्त्र।

सखोतरी-पु० पशुओं, विशेषतः अश्वोंका चिकित्सक।

सखोन-वि० दे० 'सलोना'।

सखोना-वि० लवणयुक्त, नमकीन; लावण्यमय, सुदर।

-पन-पु० लावण्य, सौंदर्य।

सखोनो-पु० श्रावण पूर्णिमाको होनेवाला एक त्योहार, रक्षाबंधन।

सखोहित-वि० [सं०] एक ही, समान रक्तवा; गाढा लगा रंगा हुआ।

सखीमा-वि० दे० 'सलोना'।

सख्तमत-खी० [अ०] राज्य, बादशाहन; हुकुमन, अमरुशारी; प्रबंध। सु० -जमना, -बैठना-अधिकार स्थापित होना; प्रबंध ठीक होना।

सख-पु० एक वृक्ष, मरु।

सखकी-खी० [सं०] मल्लका पत्र।

सखकण्ठीय-पु० [सं०] एक तीर्थ।

सखदय-पु० [सं०] अच्छा निशाना; अच्छा उद्देश्य।

सखना-म० कि० सालना, दुस्त देना।

सखमा-पु०, खी० एक मोटा कपडा, गजी, गाँ।

सखाह-खी० दे० 'स्पन्हा'।

सखी-खी० मल्लका पत्र।

सख्खा-पु० चमड़ेकी डोरी।

सखेअला-खी० (अज्यपद) बाहबाह, कथा कहना, सुमानजलाह (मुसलम)।

सखोक-पु० [सं०] भद्र पुत्र, सुजन।

सख-पु० दे० 'शख'।

सखशा-खी० [सं०] एक पीषा।

सख-पु० [सं०] सोमरस निचोकर निकालना; यक्ष; तर्पण; स्रव; चंद्रमा; सतति; पुष्परस; उत्पादक; अकवन, जल; * अश्व।

सखगाता-खी० दे० 'सौमगत'।

सखजा-खी० [सं०] अजगंधा।

सखत, सखति-खी० दे० 'सोत'।

सखत्प-वि० [सं०] ओ बछड़ेके साथ है; सतानयुक्त।

सखधुक-वि० [सं०] सपत्नीक।

सखब-पु० [सं०] सोमरस निचोकर निकालना; यक्ष; सोमरम्भा पान तथा तर्पण; यक्ष-स्नान; प्रभव; देना, गोनापाठा; अभि; मृगका एक पुत्र; (रोहित मन्वंतरके) बशिष्ठाका एक पुत्र; स्वधुव मनुका एक पुत्र। वि० बन युक्त। -कर्म(ज्)-पु० यक्षकार्य, तर्पण। -काल-पु० तर्पणकाल। -क्रम-पु० यक्षकर्मोंका क्रम। -मुख-पु० यक्षारभ। -संस्था-खी० यक्षांत।

सखनीय-वि० [म०] सोमतर्पण-संबंधी। -पशु-पु० बलिपशु। -पात्र-पु० सोमपात्र।

सखपुत्र-वि० [म०] मशरीर, मृत।

सखवस, सखवस्क-वि० [म०] समवयस्क, हृमउन्न।

सखवा(वन्)-खी० [सं०] महेली, मल्ली; वयस्था। पु० वयस्थ, सखा। वि० समवयस्क।

सखर-पु० [सं०] जल; शिव।

सखर्ण-वि० [म०] समान रंगका, समान रूपका; समान जातिका; समान वर्गका (स्वा०); पु० ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय भ्राताओं मतान. माद्विष्य (अधोतिषमें जीविका-खानेवाला)।

सखर्णन-पु० [म०] भिक्षाओं समान हरबाले भिक्षाओंके रूपन लाना (ग०)।

सखर्णा-खी० [म०] युद्धकी पत्नी, छाया। वि० खी० दे० 'सवर्ण'।

सखर-वि० [सं०] अच्छे गुणोंमें युक्त।

सखहा-खी० [सं०] भिष्टता, निमोष।

सखोता-पु० दे० 'स्वोता'।

सखा-वि० चतुर्थांशमें युक्त (एक या कोई एक)।

सखाई-वि० चतुर्थांशयुक्त एक, सखा; बड़-चढ़कर। खी० मूद लेनेका एक प्रकार जिसमें मूद धन अपने चतुर्थांशमें युक्त हो जाता है; बयपुर नरेशोंकी उपाधि; मूलसंस्थानका एक रोग।

सखाकृ चित्र-पु० [सं०] रजतपट्टपर दिखावा जानेवाला वह चित्र जिसमें पानोंके बोलने, गाने आदिकी आवाज भी सुनाई दे, बोल्डट।

सखागी-पु० सुहावा।

सखाती-खी० स्वांगी नक्षत्र -'सुरास प्रभु प्रामर्श गरमद देके वंद सखाती'-मूर०।

संवाद-पुं० दे० 'स्वाद' ।

संवादिक, संवादिक-वि० स्वाद देनेवाला, स्वादिष्ट ।

संवादिक-पुं०, स्त्री० [फा०] 'संवादिक' का बहु०, घटनाएँ, वृत्त । -उत्सरी-स्त्री० जीवनवर्तित, जीवनवृत्तांत ।

-विचार-पुं० वृत्तलेखक; अस्वरानवीन ।

संवाद-पुं० [अ०] बदला; सुख; सत्कर्मका (परलोकमें मिलनेवाला) फल । सु० -कमाना-पुण्य सच्य करना, सत्कर्म करना । -बहुधावा-दूसरेकी पुण्यफल देना ।

संवादा-वि० संवादाना, बदकर, अधिक ।

संवाद-पुं० [फा०] घोड़े, हाथी, ऊँट आदिपर चढ़ा हुआ व्यक्ति, आरोही; अवरोही; अवरोही सैनिक; पुल्लिङ्गा सिपाही जो घोड़ेपर सवार होकर काम करे । वि० सवारी (गाड़ी, मोटर आदि) पर बैठना हुआ, (ला०) मस्त, नशेमें चूर । * अ० मदेरे, जस्त ।

संवादाना-स० क्रि० संवादाना; सुचारना ।

संवादा-पुं० प्रातःकाल, सवेरा ।

संवारी-स्त्री० सवार होनेकी क्रिया; वह चीज जिसपर सवार हों (घोड़ा, गाड़ी, पालकी इ०); सवार; लुप्त (निकलना); कुत्नीका एक पंथ । -का पावजामा-वह पावजामा जिसकी काट जोधेके पासमें मेहराबदार हो । सु०

-आना-(संवारीपर) पधारना । -कमाना,-गाँटना-विपक्षीकी संवारी (पंथ)में बँधना; आसनतले खाना । -देना-संवारीका काम देना । -लगाना-संवारीका लगाया जाना । -लगाना-बोली, पालकी इत्यादिकी सवार होनेके लिए ज्योर्डामें रखना । -लेना-संवारीका काम लेना, सवार होना ।

संवार, संवारी-अ० जफ, भीष्म-'पुरम' बन्ने अवधी फिर आये गोरम बंधि संवारी'-मूर मदेरे ।

संवाल-पुं० [अ० 'संवाल' मँगना; मँग; पृष्ठना; प्रश्न; याचना; भिक्षाकी याचना (फकीरका संवाल); प्रार्थना, निवेदन; अर्ज; नालिदा, करियाद; गणितका प्रश्न; मन्त्र । -खानी-स्त्री० दे० 'संवालखानी' । -खानी-स्त्री० अदालतमें दखौस्तोकी पदना । -जवाब-पुं० प्रश्नोत्तर; बहस; जिरह । सु० -करना-पृष्ठना; जाँचके लिए कोई बात पृष्ठना; मँगना; याचना करना । -कुछ, जवाब कुछ-प्रश्नमें संवद उत्तर देना, पृष्टा कुछ और नाथ, बताना कुछ और । -हालना-प्रार्थना-याचना करना ।

-दीगर, जवाब दीगर-दे० 'सवाल कुछ, जवाब कुछ' । -देना-अर्ज या दखौस्त देना; हल करनेके लिए गणितका प्रश्न या कोई मसला देना । -बनाना-परीक्षामें पृष्ठनेके लिए प्रश्न तैयार करना ।

संवाल-पुं० [अ०] 'सवाल'का बहुव० ।

संवालिवा-वि० जिसमें संवाल ही, जिसमें कोई बात पृष्टी गयी हो (सुमेल) ।

संवाली-वि० मँगानेवाला । पुं० मरसिया पढ़नेवाला ।

संविद्वय, संविद्वयक-वि० [सं०] इच्छाधीन, विकल्प-युक्त, संदिग्ध; (ज्ञाता और ज्ञेयका) अंतर माननेवाला, निर्णय न कर पानेके कारण दोनोंकी माननेवाला, संशय-वादी । पुं० समाधिका एक प्रकार; ज्ञाना और ज्ञेयके अंतरका ज्ञान (वे०) ।

संविचार-वि० [सं०] परिवर्तनयुक्त; जिसके भावोंमें परिवर्तन हो गया हो या भावोंका उन्मेष हुआ हो; जो सङ्ग रहा हो (खाद्य पदार्थ आदि) ।

संविभाषा-वि० [सं०] विकल्पित, प्रकृत; कावियुक्त; विस्तृत ।

संविग्रह-वि० [सं०] शरीरयुक्त, मूर्त; अर्थायुक्त; दमानी; संवर्धित, युद्धमें संलग्न ।

संविचार-वि० [सं०] जिसका विचार किया जाता हो ।

अ० विचारपूर्वक । पुं० संविकल्प समाधिका एक भेद ।

संविज्ञान-वि० [सं०] विवेकशील, समझदार । अ० विज्ञान सहित ।

संविद्वाल-अ-पुं० [सं०] हँसी उत्पन्न करनेवाला एक प्रकारका मजाक (नाट) ।

संविद्वर्क-वि० [सं०] विचारवान् । पुं० संविकल्प समाधिका एक भेद ।

संविता(तु)-पुं० [सं०] सर्व; अकनन; लोकसहा; शिव; इन्द्र; अष्टाईस व्यासोंमें एक; बारहवीं संख्या । वि० उत्पन्न करनेवाला । - (तु)जन्य-पुत्र-सुत-पुं० दानि, यमादि । -देवत, देवत-पुं० इल नक्षत्र । -फल-पुं० एक पुराणीक पर्वत ।

संविद्वल-वि० [सं०] सर्व-संबंधी, सार ।

संविद्व-पुं० [सं०] उत्पत्तिका माधन या कारण ।

संविद्विय-वि० [सं०] दे० 'संविद्वल' ।

संविद्वी-स्त्री० [सं०] माता; प्राप्ति; गाय ।

संविद्व-वि० [सं०] एक ही, समान विषयका अभ्ययन करनेवाला; विद्वान्, विद्वान्विद्व ।

संविद्व-वि० [सं०] समान, एक ही वर्गका; आसक्त, निकट पुं० सामीप्य । अ० विधिपूर्वक, नियमानुसार ।

संविधि-वि० [सं०] विधियुक्त । अ० विधिके अनुसार ।

संविनय-वि० [सं०] विनययुक्त, शिष्टादापूर्ण; विनम्र । अ० विनयपूर्वक । -अवज्ञा-स्त्री (अभ्यायपूर्ण) मुलकी कानूनकी अवमानना ।

संविभाळ-पुं० [सं०] नखी नामक गुधद्रव्य ।

संविभास-पुं० [सं०] मात स्वर्णमें से एक ।

संविभ्रम-वि० [सं०] क्रीडायुक्त; विलासयुक्त, प्रणय-चेष्टायुक्त ।

संविमर्श-वि० [सं०] दे० 'संवितर्क' ।

संविद्वल-वि० [सं०] दे० 'संविभ्रम' ।

संविद्वल-वि० [सं०] संकायक ।

संविशेष-वि० [सं०] विशेष गुणोंसे युक्त; असाधारण; श्रेष्ठ; अंतर करनेवाला ।

संविशेषक-वि० [सं०] विशेषता छाननेवाले गुणसे युक्त । पुं० विशेष गुण ।

संविद्वय-वि० [सं०] अंतरंग, वनिष्ठ (मित्र) ।

संविद्व-वि० [सं०] विषयुक्त; विषाक्त । पुं० एक नरक ।

संविद्व-अ० [सं०] ज्योतिरेके माध, तपस्वीलवार ।

संविद्वय-वि० [सं०] आश्चर्ययुक्त, चकित; सदेहपूर्ण ।

अ० विस्मयके माध ।

संवीर-वि० [सं०] अनुयायियोंसे युक्त ।

संवीर्य-वि० [सं०] समान शक्तिमें युक्त; शक्तिप्राही ।

सवीर्षा-खी० [सं०] शस्यती ।
सहृदिक-वि० [सं०] सहके साथ, जिसका सह मिले ।
सहृदिक-वि० [सं०] बंधोसे युक्त ।
सवेग-वि० [सं०] समान-वेगवाला; वेगशील, उग्र । अ० वेगपूर्वक ।
सवेताह-वि० [मं०] वेताल द्वारा अभिभूत (श्वे) ।
सवेच-वि० [सं०] आमत्र, निकट । पु० सामीप्य ।
सवेरा-पु० सुशोध्य-काल, प्रातःकाल ।
सवेरे-अ० प्रातःकाल, तर्के ।
सवेष्ट-वि० [सं०] अलकृत, विभूषित; निकट, पामका ।
सवेष्टीय-पु० [सं०] एक साम ।
सवेष्ट-वि० [सं०] वस्त्राभूषणसे सजा हुआ ।
सवेष्टन-वि० [सं०] पगड़ीके साथ (मिर) ।
सवैवा-पु० मवासरेका बाद; मवाका पहाका; एक छंद; मवाही ।
सवैलक्ष्य-वि० [मं०] अस्वाभाविक, बनाबटी; लज्जित ।
 -स्मित-पु० बनाबटी हँसी ।
सव्य-वि० [सं०] बायाँ; दक्षिणी; प्रतिकूल; दाहिना ।
 पु० विष्णु; अनेक; ग्रहणके दस प्रकारोंमेंसे एक; किमी व्यक्तिको धृत्युके समय जलायी जानेवाली अग्नि । -**सारी- (वि०)**-पु० अर्जुन; अर्जुन वृक्ष । -**जानु-पु०** युद्धका एक दिन । -**बाहु-पु०** बायें हाथसे लड़नेका एक ढंग ।
 -**साधी (वि०)**-पु० अर्जुन (दोनों हाथोंसे एक जैसे वेगसे बाण चला देनेके कारण); कृष्ण; अर्जुन वृक्ष ।
सव्यध-वि० [सं०] व्यवधाने प्रत्य; प्रोक्तान्वित ।
सव्यपेक्ष-वि० [सं०] 'मे सबद्ध; पर अवलम्बित ।
सव्यनिवार-पु० [सं०] हेत्वाभामके पांच भेदोंमेंसे एक (म्या०) ।
सव्यांत-पु० [सं०] लड़नेका एक ढंग ।
सव्याज-वि० [सं०] कपटी; धूर्त ।
सव्यापार-वि० [सं०] कार्यलक्ष, वाकार, बेकार नहीं ।
सव्येतर-वि० [मं०] दाहिना ।
सव्येष्ट, सव्येष्टा (पु०)-पु० [सं०] मारवि ।
सव्यण-वि० [सं०] व्रणवाला; घायल; मदीय । -**सुक्र-पु०** अँसकी स्फेदीमें होनेवाला एक रोग ।
सव्यती (वि०)-वि० [मं०] ममान ढंगसे काम करनेवाला; एक ही रीति-रिवाजवाला ।
सव्यीह-वि० [सं०] लज्जायुक्त; लज्जित ।
सशंक-वि० [सं०] शंकायुक्त; शंकिता; भीरु, डरपोक ।
सशंकना*-अ० [सं०] डरना; शंकिता होना ।
सशक्तिक-वि० [सं०] बलशाली ।
सशक्त-वि० [सं०] शब्दयुक्त; शक्तिन; शोरगुलसे भरा हुआ; बोधित ।
सशसन-वि० [सं०] जो पाममें स्थित हो, पकोम्का, आसन्नवर्ती ।
सशरीर-वि० [मं०] शरीरयुक्त, मृग; जलियुक्त । अ० शरीरके साथ ।
सशसक-वि० [मं०] छिन्नेदार; चोईदार । पु० एक तरह की मछली ।
सशस्य-वि० [मं०] कँटीला; कौंटे, बाण वा आत्मेमें विधा

हुआ; (का०) कष्टप्रस्त; कष्टकर । पु० भाव । -**मय-पु०** कौंटे आदिका बाध ।
सशशी-पु० काला जीरा (?) ।
सशस्य-वि० [सं०] अश्वधाला; जिसमें अश्व उत्पन्न हो ।
सशस्य-खी० [सं०] नागंती ।
सशक्त-वि० [सं०] शक्त या शक्तोंसे युक्त, शक्त-मन्त्रित जिसमें शक्तोंका प्रयोग हुआ हो ।
सशक्त-पु० [सं०] आदी, अदरक ।
सशाल-वि० [सं०] घामसे भरा या ढका हुआ ।
सशक्त-वि० [सं०] चमकवाला ।
सशक्त-वि० [सं०] डूँकवाला । पु० ईश्वरमें विश्वास करने वाला, आस्तिक ।
सशेष-वि० [सं०] जिसमें शेष वा बाकी रहे, जो पूर्ण रिक न हुआ हो; अधूरा ।
सशोष-वि० [सं०] मृदा हुआ । -**पाक-पु०** एक तरह का नेत्ररोग ।
सशब्द-वि० [सं०] दादीवाला । खी० दादीवाली स्त्री ।
सशब्द-वि० [मं०] विश्वस्त; मन्था ।
सशब्द-वि० [मं०] बका हुआ, कृत; श्रमयुक्त । अ० श्रमपूर्वक ।
सश्रीक-वि० [सं०] मनुष्यशाली, आश्वयान्; सुतर ।
सश्रीक-वि० [सं०] (वह बोझ) जिसके भीम, भँवरी हो ।
सश्लेष-वि० [सं०] श्लेषयुक्त, दोहरे अर्थवाला ।
सशाल-वि० [मं०] आसयुक्त, जीवित ।
ससंकेत-वि० [मं०] जिसके भाव कोई गुप्त समझा हुआ हो ।
ससंग-वि० [सं०] सबद्ध, संलग्न ।
ससंततिक-वि० [सं०] मतानयुक्त ।
ससंदेह-वि० [सं०] संदेहयुक्त । पु० एक काव्यालंकार, संदेहार्थकार ।
ससंध्य-वि० [मं०] संध्या-संध्या ।
ससंपद्, ससंपद्-वि० [सं०] मनुष्य, मुन्नी ।
ससंभ्रम-वि० [सं०] क्षुब्ध, चक्काया हुआ । अ० शीघ्रता, चक्काहटसे; मादर ।
ससंभ्रम-वि० [सं०] क्रुद्ध, क्रुपित ।
ससंबाह-वि० [मं०] एकमत ।
ससंविद्-वि० [मं०] जिसके साथ कोई ठहराव हुआ हो ।
ससंज्ञाय-वि० [सं०] संदेहयुक्त; अनिश्चित, अस्पष्ट । पु० 'संदिग्धता' नामक काव्यदोष ।
ससं-पु० चंद्रमा; शशक; शस्य, धान्य । -**धर-धर-पु०** चंद्रमा ।
ससक*-पु० शशक, खरहा । * खी० सिमक ।
ससकना*-अ० [सं०] दिल चक्कना, चक्कना, झिझकना ।
ससंब-वि० [सं०] शक्ति या साहसयुक्त; जीवित पूर्ण ।
ससन्ना-खी० [सं०] गर्भवती, गर्भिणी स्त्री ।
ससन-पु० [सं०] वक्ष्ययुक्त वध ।
ससना, ससना*-अ० [सं०] 'ससकना' - 'ससक' चित्तें मुख रख समानो - बसत भँवरी ।
ससरना*-अ० [सं०] सरना ।

मसहाय-वि० [स०] माधियों आदिके माय ।
 मसा-पु० शशक; खीरा ।
 मसाध्वस-वि० [स०] भययुक्त, डरा हुआ । अ० भय-
 महित ।
 मसार्थ-अ० [स०] कारवाँके माथ । वि० माल लदा हुआ
 (योग) ।
 मसि-पु० चंद्रमा; धान्य । -चर-पु० चंद्रमा । -रिपु
 -पु० दिन-‘मसिरिपु बरम मरिपु युगवर, हरिपु किये
 किरै धात’-स० । -हर-पु० चंद्रमा । * स्त्री० त्रिशिर
 क्रतु-‘कहि नारि पीय विन कामिनी रिति मसिहर किम
 त्रीत्रियर’-रासो ।
 ममित-वि० [स०] शर्करायुक्त ।
 ममिद्ध-पु० [म०] शाल, मर्त्रका पेड़ (?) ।
 ममी-पु० चंद्रमा ।
 ममील-वि० मुशील, घीलसपत्र ।
 मसुर-पु० दे० ‘भसुर’ । वि० [म०] देवताओंके नाय,
 मरिचके माथ; नरोत्तम चूर, बदमस्त ।
 मसुरा-पु० मसुर; एक गान्धी; †(लक्ष्मीकी) ममुराल ।
 मसुरार, मसुरारि-स्त्री० दे० ‘ममुराल’ ।
 मसुराल-स्त्री० पति या पत्नीके विनाका घर ।
 ममन, ममन्व-वि० [स०] मेनके माय ।
 मम्बर-वि० [म०] पत्नीके बिस्तरके माय ।
 मस्ता-वि० अक्षय मृत्युका, जिमका मृत्यु घट गया हो,
 मदा, नो आसानीसे मिल सके; घटिया । -माल-पु०
 ‘रिया माक । -समय-पु० सस्तीका जमाना । सु० -
 झटना; मस्ते झटना-अथाहा खच्च आदिगी जगह थोडे-
 में ही काम चल जाना । -लगा देना-मस्ता बेचना ।
 मस्तावा-अ० कि० मस्ता हो जाना । म० कि० दाम
 कम करना ।
 मस्ती-स्त्री० मस्तापन, मदी, मेहगीका न होना ।
 मस्तीक-वि० [म०] स्त्री; पत्नीमहित; विवाहित ।
 मस्तेह-वि० [स०] तैलयुक्त; प्रेमपूर्ण ।
 मस्तुह-वि० [म०] इच्छुक, स्वादिष्टमद ।
 मस्तुर-वि० [म०] स्फुरण, स्पन्दयुक्त; जीवित ।
 मसय-वि० [म०] घमडी ।
 मसित-वि० [म०] जो मुस्करा रहा हो, अन्वहाम-
 युक्त ।
 मस्य-पु० [स०] धान्य; किमी पौधेका फल; शक्कर; मद्गुण;
 एक कीमती पत्थर । -केशी-स्त्री० मल्लेकी खरीद ।
 -क्षेत्र-पु० अनाज बोनेका क्षेत्र । -पाल-रक्षक-पु०
 लेनका रखवाला । -प्रह-वि० उपजाऊ । -अंजरी-स्त्री०
 अनाजकी बाल । -भारी(रिज)-पु० एक तरहका बड़ा
 चूहा । -भाली(रिज)-वि० धान्यपूर्ण (जैसे पृथ्वी) ।
 -बेद-पु० कृषिशाल । -भाडी(रिज)-वि० धान्य-
 पूर्ण । -सीर्षक-पु० दे० ‘सर्वमजरी’ । -सूक-पु०
 जो आदिका टूट । -संबर-पु० साक रुझ । -संबरण-
 पु० अशक्य रुझ । -हंता(रु)-पु० कृषि नष्ट करने-
 वाला एक दैत्य । -हा(रुज)-वि० धान्य नष्ट करने-
 वाला । पु० दे० ‘सत्यहंता’ ।
 मस्यक-वि० [म०] मद्गुणसंपन्न । पु० लुब्धक; हथियार;

एक बहुमूल्य पत्थर ।

मस्था-स्त्री० [म०] गनिवारी, अरनी ।

मस्वेदा-स्त्री० [स०] वह कन्या जिमका हालमें ही वौमार्थ
 भग हुआ हो, दूषिता कन्या ।

सहैगा-वि० मस्ता, ‘सहैगा’का बलदा ।

सहैहुक-पु० [स०] मांसका रसा, शोरवा ।

सह-अ० [म०] साथ, महित; साथ-साथ, युगपत् । वि०
 सहन करनेवाला; धीर; समर्थ; सक्षम; पराभव करने-
 वाला । पु० मार्गशीर्ष; एक अग्नि; शक्ति, सामर्थ्य; शिव;
 मनुका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; माद्रीसे उत्पन्न
 कृष्णका एक पुत्र; पांडवकुलपुत्र; मुकाबला । -करण-
 पु० साथ काम करना । -कर्ता(रु)-पु० साथ काम
 करनेवाला; सहायक । -कार-पु० साथ काम करणा,
 सहायता देना; एक तरहका सुगंधित आम; आमकी
 मजरी; आमका रस । -०भूमिका-स्त्री० एक खेल ।
 -कारी(रिज)-वि० साथ काम करनेवाला । पु०
 सहायक कार्यकर्ता । -कृत्-वि० सहायता देनेवाला ।

-गमन-पु० साथ जाना; सती होना । -गवन्-पु०
 दे० ‘महगमन’ । -गामिनी-स्त्री० सती होनेवाली
 स्त्री; पत्नी । -गामी(रिज)-वि० साथ जानेवाला । -

-गौन-पु० दे० ‘महगमन’ । -चर-वि० साथ चलने या
 रहनेवाला; सहज । पु० माथो, मित्र; पति अनुचर, मेवक;

प्रतिबधक; सिंटी; जामिन । -चरण-पु० साथ जाना,
 साथ रहना । -चरा-स्त्री० नील सिंटी । -चरित-वि०

साथ रहनेवाला; एक जातीस; सगन । -चरी-स्त्री०
 पीत सिंटी; सखी; पत्नी । -चार-पु० सामंजस्य, मगति,
 सन्धध; सहचर; हेतुके साथ साथका रहना । -०उपाधि-

लक्षणा-स्त्री० लक्षणका एक प्रकार जिसमें साथ रहने-
 वाली वस्तुमें व्यक्ति आदिका बोध हो जाता है (न्या०) ।

-चारिणी-स्त्री० सखी; पत्नी । -ज-वि० साथ-साथ
 या एक ही समय उत्पन्न; जन्मजात; प्राकृतिक; आमत

‘कसा रहनेवाला; माधारण; आसान । पु० सगा भाई,
 स्वभाव; जन्मलग्नमें गीसरा स्थान; जीवमुक्ति । -०कृति

-पु० मोना । -०कृत्व-पु० जन्मजात नपुंसकता ।
 -०जम्मा(ममरु)-वि० यमज; सहोदर । -०धार्मिक-

वि० जो स्वभावमें ही सच्चा वा ईमानदार हो । -०बंध-
 पु०[वि०] गौधीय वैष्णव संप्रदायका एक वर्ग । -०मलिन-

वि० जो स्वभावमें ही गंदा हो । -०मित्र-पु० रुभावसे
 ही मित्र (भाजा आदि) । -०वत्सल-वि० कोमलचित्त ।

-०शत्रु-पु० दे० ‘सहजारि’ । -०सुहृद्-पु० वह जो
 प्रकृता मित्र हो । -जम्मा(ममरु)-वि० जन्मना

प्राप्त; लुब्धक; सहोदर । पु० यमज । -जाह-वि० एक
 साथ उत्पन्न; एक ही समय उत्पन्न, समवयस्क; प्राकृतिक;

लुब्धक (बच्चे); सहोदर । -जावि-वि० सपत्नीक ।
 -जीवी(रिज)-वि० साथ रहनेवाला । -बंध-वि०

ससैन्य । -दान-पु० साथ-साथ तर्पणादि करना; बहुतेसे
 देवताओंके लिए साथ-साथ किया जानेवाला होमादि ।

-हार-वि० सखीक; विवाहित । -दीक्षिती(रिज)-
 वि० साथ दीक्षा लेनेवाले । -देव-पु० माद्रीसे उत्पन्न
 पांडुके चौथे पुत्र; जरासंधका एक पुत्र; एक ऋषि;

मुद्रासका एक पुत्र । -देवा-स्त्री० दंडोत्पल; बला; सह-
देव; शारिवा; संपाक्षी; म्रिययु; नील; देवकी पुत्री और
वसुदेवकी पत्नी । -देवी-स्त्री० संपाक्षी पीत दंडोत्पला;
बलाका एक भेद; शारिवा, सहदेव; म्रिययु; सहदेवकी
पत्नी । -धर्म-पु० सामान्य धर्म या कर्त्तव्य । -० चर-
वि० समान कर्त्तव्योंका पालन करनेवाला । -० क्षण-
पु० पतिके साथ कर्त्तव्योंका पालन करना । -० चरी-
स्त्री० पत्नी । -० चारिणी-स्त्री० पत्नी । -० चारी-
(चिन्)-वि० साथ साथ कर्त्तव्योंका पालन करनेवाला
-धर्मिणी-स्त्री० पत्नी । -धर्मी(चिन्)-वि० समान
कर्त्तव्योंवाला; समान धर्मवाला । -धाम्य-वि० धाम्य-
युक्त । -नर्तन-नृत्य-पु० साथ नाचना । -निर्वाप-
पु० साथ साथ किया जानेवाला होमादि । -निवासी
(चिन्)-वि० साथ रहनेवाला । -पंथा-पथी(चिन्)-
पु० साथ यात्रा करनेवाला, हमराही । -पति-पु०
महा । -पत्नीक-वि० सपरनीक, सखीक । -पांशुकिक,
पांशुकीही(चिन्)-पु० लैंगोटिया दोल । -पाडी-
(ठिन्)-पु० साथ पढ़नेवाला । -पान-पानक-
पु० साथ पान करना । -पिंडित्वा-स्त्री० माथ-साथ
पिंडदान करना । -प्रथायी(चिन्)-प्रस्थायी(चिन्)-
पु० दे० 'सहपथा' । -आर्य-वि० सखीक । -आश-
पु० (को-परिचर्येस) दे० 'सहजस्तिवका सिद्धांत' । -
आशी(चिन्)-वि० सबद । पु० मित्र; सहचर; सहायक ।
-भुक्(ञ्)-वि० साथ खानेवाला । -भू-वि० सहज,
प्राकृतिक । -भूत-वि० संबद्ध, संयुक्त । -ओज-पु०
(विभिन्न जातियों, भेदियोंके) बहुतेरे आदमियोंका एक
माथ बैठकर भोजन करना । -ओजन-पु० मित्रों आदिके
साथ भोजन करना । -ओजी(चिन्)-पु० माथ भोजन
करनेवाला । -अत-वि० जिसका मत दूसरेमें मिलता
हो । -अना(नस)-वि० दुःखितपूर्ण । -अरण-पु०
मही होना, महगमन । -मातृक-वि० माताके साथ ।
-आन-वि० धर्मशी । -मुता-स्त्री० वह स्त्री जो
सती हो गयी हो । -यायी(चिन्)-पु० दे० 'सहपथा' ।
-योग-पु० साथ मिलकर काम करना; सहायता । -
योगी(चिन्)-वि०, पु० सहयोग करनेवाला; मदद-
गार; साथ काम करनेवाला या माथ प्रकाशित होनेवाला ।
-रसा-स्त्री० मुद्रपत्नी, वनस्पति । -लंणी-पु०
साथी; हमराही । -लोकवापु-पु० पृथ्वी । -वर्ती-
(चिन्)-वि० माथ रहनेवाला । -वसति-स्त्री०
साथ बसना, रहना । -वाच्य-वि० जो साथ कथित
हो । -वाच-पु० कथोपकथन; वादविवाद । -वास-
पु० साथ रहना; समीप, मैथुन । -वास्तिक, वासी-
(चिन्)-पु० साथ बसनेवाला; परोसी; साथी ।
-वीर्य-पु० ताका मशखन । -अत-वि० ममान
कर्त्तव्यवाला । -अता-स्त्री० पत्नी । -आश-वि० माथ
सोनेवाला । -अश्या-स्त्री० साथ मोना । -शिष्ट-वि०
जिसे साथ-साथ शिक्षा दी गयी हो । -संज्ञा-वि०
साथ-साथ उत्पन्न । -संभव-वि० साथ-साथ उत्पन्न,
सहज । -संवाच-पु० वार्तालाप । -संवास-पु० माथ
रहना । -संवेग-वि० बहुत उत्तेजित । -संसर्ग-पु०

शारीरिक संपर्क । -सिद्ध-वि० प्राकृतिक, सहज ।
-स्थ-वि० माथ रहनेवाला । पु० मित्र, साथी । -स्थित
वि० जो माथ हो ।
सह(स्)-पु० [सं०] शक्ति; बल, विजय; प्रचंडता;
कांति; जल; मार्गशीर्ष ।
सह अस्तिवका सिद्धांत-पु० (मिमिषल ऑफको-एन्जि-
स्टेंस) वह राजनीतिक सिद्धांत जो यह स्वीकार करता है
कि विभिन्न प्रकारकी प्रणालियोंसे शासित और विभिन्न
प्रकारके सिद्धांतोंमें अनुप्राणित राज एक-दूसरेके माथ
शासितपूर्वक रह सकते हैं, सहभावका सिद्धांत ।
सहक-वि० [मं०] धीर, सहिष्णु; क्षमाशील ।
सहजान-पु० दे० 'सहिजन' ।
सहजोपहृष्ट(स्)-वि० [सं०] जन्माप ।
सहजाधिनाय-पु० [मं०] जन्मकुहलीके नीमरे स्थानका
अभिपति ग्रह (ज्यो०) ।
सहजारी-पु० [सं०] वह जो प्रकृत्या शयु हो (जिमें
संपत्ति आदिके संबंधमें सगर्ग होनेकी संभावना हो, जमें
मौलिया या चचेरा भाई) ।
सहजार्थ-पु० [सं०] बचामीरका एक प्रकार (जिमें मनुष्य
अदरकी ओर होता है) ।
सहजिया-पु० सहज पंथका अनुयायी ।
सहजिह-पु० [मं०] जन्मकुहलीके नीमरे स्थानका अभिपति
ग्रह (ज्यो०) ।
सहजोत्तर-वि० [मं०] जो प्राकृतिक, जन्मजात न हो ।
सहजै-अ० मरलगापूर्वक, आत्मान्मि, अनायास ।
सहजोदाम्नीन-वि० [सं०] जो प्रकृत्या मित्र या शत्रु न
हो, साधारण रूपमें परिचित ।
सहज-पु० दे० 'सहज' । † वि० मस्ता ।
सहजरा-पु० [मं०] पितापुत्र ।
सहजा-स्त्री० [सं०] दे० 'सहज' । † वि० मस्ता ।
सहजाना-अ० कि० सृजमाना, एकान मिटाना; † मरना
होना ।
सहजुत-पु० दे० 'सहजुत' ।
सहज-पु० [सं०] माथ होनेका भाव; तलमेल ।
सहजह्या-स्त्री० दे० 'सहजह्ये' ।
सहजानी-स्त्री०, चिह्न निजाना ।
सहजुत-पु० दे० 'सहजुत' ।
सहजह्ये-स्त्री० एक वनोपधि ।
सहज-वि० [मं०] सहिष्णु, धीर; क्षमाशील; शक्तिसाली
पु० सहिष्णुता; सहनेकी क्रिया; क्षमा । -ह्रीक-वि०
सहिष्णु; धीर; सतोषी ।
सहन-पु० [अ०] अंगन; खुली हुई समतल भूमि; बं-
वाक; एक बहिया देशकी कपडा । -ह्री-स्त्री० दालानकी
बगलमें बनाया हुआ छोटा मकान या सहन । -द्वार-
वि० (मकान) जिसमें अंगन हो ।
सहनक-स्त्री० [अ०] 'सहन' (बड़ा बालक)का अस्वार्थक,
रिकाबी, धाकी; कातिमाक्षी निवाजकी रिकाबी (सुमल्ल) ।
सु० -से उठ जाना-सतीत्यसे च्युत हो जाना, मरिये-
की श्रेणीसे बाहर हो जाना ।
सहनभंडार-पु० बनराशि, खजाना ।

सहना-स० कि० शेरना, सहन करना, बर्दाश्त करना; एक भीमना; भार ग्रहण करना।

सहनाई*—स्त्री० दे० 'सहनाई'।

सहनायन—स्त्री० सहनाई बनानेवाली।

सहनीय—वि० [सं०] सहने योग्य, बर्दाश्त करने लायक; क्षमाके योग्य।

सहबाळा—पु० दे० 'सहबाळा'।

सहम—पु० [का०] हर, मय। —नाक—वि० टरावना, भयङ्कर।

सहमना—अ० कि० हरना; शंका मानना; धरा जाना।

सहमाना—स० कि० हराना; धक्काहटमें डालना।

सह—पु० जादू, डोना, मिहोर; * शहर; [सं०] एक दानव; [अ०] मोर, मृगोदयमें पहलेका काल। —गाही—स्त्री० वह हल्का भोजन जो रमजानके दिनोंमें रोजा रखनेवाले मुसलमान कुछ रात रहने कर लेते हैं (हिंदू क्रियां भी हरनालिका और जीवपुत्रिका त्रयोंमें पहले महरगाही (मरगाही) खाती हैं)। —शाह,—द्वम—अ० तबके, मोरमें।

सहरना—अ० कि० दे० 'मिहरना'।

सहरा—पु० [अ०] जंगल, वीहक वन; रेगिस्तान। —ए—आज्ञम—पु० अफीकाका विशाल रेगिस्तान, महारा मरुभूमि। —गर्द,—नबिर्द—वि० जंगलोंमें फिरने, भटकनेवाला; सुनाफिर। —गर्दी,—नबिर्दी—स्त्री० जंगलोंमें फिरना, वनमें बिचरना। —जर्दी—पु० वनवासी, तपस्वी।

सहराई—वि० जगली, वन्य।

सहराणा*—स० कि० दे० 'महलाना'। अ० कि० मिहरना; हरना।

सहरि—पु० [सं०] सूर्य; मॉड।

सहरिया—पु० एक तरहका गेहूँ।

सहरी—स्त्री० शफरी मछली, म्पिरी; [अ०] दे० 'महरगाही'। वि० प्रान्तकालीन।

सहरण—पु० [सं०] चंडमाका एक धोडा।

सहल—वि० [अ०] गरम, सहजमें होनेवाला, आसान। —इनकार—वि० सुल, डीला, आलसी। —इनकारी—स्त्री० मुस्ती, हिलाई, आलस्य।

सहलाना—स० कि० धीरे धीरे मरना या हाथ फेरना, सहलाना; गुदगुदाना। अ० कि० गुदगुदी मान्य होना। सहलवा—पु० एक तेलहन।

सहस्र—वि० [मं०] हामयुक्त, हेमता हुआ; * दे० 'महस्र'। —कर,—किरण,—गो*—पु० सूर्य। —जीम,—फण,—फन,—बदन,—सुल,—बदन,—स्त्रीम—पु० शेषनाग। —थल,—पञ्च—पु० कमल।

सहसा—अ० [सं०] अचानक, एकाएक; प्रचंड वेगमें; हठात्; मुस्कराहटके साथ। —हह—पु० गौद लिया हुआ पुत्र, वरका पुत्र। वि० अचानक, हठात् देख पडा हुआ।

सहसाक्षि, सहसाक्षी*—पु० सहसाक्ष, इन्द्र।

सहसाज—पु० [मं०] मयूर; यक्ष। वि० सहजशील।

सहसामज*—पु० शेषनाग।

सहसाजु—पु० [मं०] मोर, मयूर; यक्ष। वि० सहजशील, क्षमायुक्त।

सहस्र—वि० [मं०] हस्तयुक्त; हथियार चक्रानेमें कुशल।

सहस्र—पु० [सं०] पौव मास। —चंद—पु० शीतकालीन चंद्रमा।

सहस्र—वि० [सं०] दस सौ, हजार। पु० हजारकी संख्या। —कर,—किरण—पु० सूर्य। —काँडा—स्त्री० श्वेत दूर्वा। —केतु—वि० हजार झंझोवाला। —गु—वि० हजार गायोवाला; हजार किरणोवाला; हजार नेत्रोवाला। पु० सूर्य; इंद्र। —गुण—वि० हजार गुना। —घाती—(तिव्)—वि० एक हजारको मारनेवाला। पु० एक युद्ध-यंत्र। —चक्षु (९)—वि० हजार नेत्रोवाला। पु० इंद्र। —चरण—वि० हजार चरणोवाला। पु० विष्णु। —चित्त—पु० विष्णु। —जलधार—पु० एक पर्वत। —जिह्व—वि० हजार योद्धाओंको जीतनेवाला। पु० विष्णु; कृष्णका एक पुत्र; कस्तूरी। —जिह्व—वि० हजार जीमोवाला। पु० शेषनाग (?)। —जी—वि० हजार व्यक्तियोंका नेतृत्व करनेवाला। पु० भीष्म। —दंष्ट्र—पु० पाठीन मछली।

दंष्ट्री (द्विज्)—पु० एक तरहकी मछली, बोदाक मत्स्य। —द्व—वि० हजार गौधें देनेवाला; बहुत बड़ा दानी। पु० शिव। —दक्षिण—पु० यक्षविद्येय। —दल—पु० क्षतदल। —दीप्ति—पु० सूर्य। —हृक्ष (१)—पु० इंद्र; विष्णु। —धामा (मन्)—पु० सूर्य। —धार—वि०

हजार धाराओंवाला; हजार धाराओंमें बहनेवाला; हजार धारोवाला। पु० विष्णुका चक्र। —धारा—स्त्री० देवताओं आदिके आनके लिए बना हुआ हजार छिद्रोंवाला पात्र, एक तरहका हजारा। —धी—वि० बहुत चतुर।

—धील—वि० हजार बार धोया हुआ। —नयन,—नेत्र—पु० विष्णु; इंद्र। —नाम (नृ)—पु० विष्णु या किसी देवता के हजार नामोंवाला स्तोत्र। —नामा (मन्)—वि० हजार नामोंवाला। पु० विष्णु; शिव; अम्बुवेत।

—पत्ति—पु० हजार गौधोंका शमक या स्वाती। —पत्र—पु० कमल; एक पर्वत। —परम—वि० हजारमें सबसे बड़ा हुआ। —पर्ण—पु० वाण; एक वृक्ष। —पर्वा—स्त्री० श्वेत दूर्वा। —पाद (द्व)—पु० पुरुष; विष्णु; शिव; मछा; एक कृषि। —पाद—पु० सूर्य; विष्णु; एक तरहका जलपक्षी, कारंड। —बाहु—पु० कार्तवीर्य;

बाणाक्षर; शिव; स्कंदका एक अनुचर। —शुद्धि—वि० बहुत चतुर। —भक्त—पु० एक त्योहार जिसमें हजारों आदमी शिलयें जाते हैं। —भागवती—स्त्री० देवीकी एक मूर्ति। —आनु—वि० हजार किरणोवाला। पु० सूर्य। —भिद्व (द्व)—पु० कस्तूरी; अम्बुवेत। —भुज—पु० विष्णु; एक गणर्व। वि० हजार भुजाओंवाला।

—भुजा—स्त्री० दुर्गा, महालक्ष्मी (महिषासुरका वध करनेवाली)। —भरीषि—पु० सूर्य। —मूर्ति—पु० विष्णु। —मूर्ध—पु० विष्णु। —मूर्धा (मूर्ध्)—पु० विष्णु; शिव।

—मुलिका,—मुली—स्त्री० काँचपत्ती; सुद्रपत्ती; मूषिकपत्ती; बनी अतावर। —मौलि—पु० विष्णु। —बाकी (मिन्)—वि० हजार (गावों) की प्राप्ति के वध करानेवाला।

—मुग—पु० हजार युगोंका काल। —हस्मि—पु० सूर्य। —हृक्ष (२)—पु० सूर्य। —रोम (द्व)—पु० कमल। —लोचन—पु० इंद्र; विष्णु। —वक्त्र—वि० हजार मुखों-

—भास-वि० हानिकास, सुख-दुःखमें एकसा रहने-वाला ।

सहाई-वि० [सं०] स्नेहयुक्त ।

सहाय्य-पु० छुन वर्ष (व्यो०); आदी, विवाहके दिन ।

सहायक-पु० [फ्रा० 'सहायूल'] लटकन, साहुल (दीवारकी निहाई सापनेका साधन) ।

सहिजन, सहिजन-पु० एक वृक्ष, सोमांजन ।

सहिदोकी-वि० सखी ।

सहिजाणी-वि० दे० 'सहिदानी' ।

सहित-वि० [सं०] सहन किया हुआ; सैमाणा हुआ; हितकर; युक्त । अ० साथ, समेन । -कुंभक-पु० प्राणा-वायका एक प्रकार ।

सहितम्ब-वि० [सं०] सहने योग्य ।

सहिता(रु)-वि० [सं०] सहन करनेवाला, सहनशील ।

सहित-पु० [सं०] सहिष्णुता, सहनशीलता; वैद्य ।

सहिधी-वि० सखी ।

सहिदान-पु० परिचान, चिह्न ।

सहिदानी-वि० निशान, परिचान, परिचय-चिह्न, -'दोमि राम तुमकई सहिदानी'-रामा० ।

सहिवाला-पु० दे० 'सहवाला' ।

सहिर-पु० [सं०] पर्वत ।

सहिष्णु-वि० [सं०] सहनेवाला, सहनशील । पु० विष्णु, एक ऋषि ।

सहिष्णुता-वि०, सहिष्णुत्व-पु० [सं०] सहनशीलता, तितिक्षा; क्षमा ।

सही-वि० दे० 'सहीह' । श्री० इत्यादि; * मखी । अ० निश्चयपूर्वक । -सकामस्त-वि० नीरीम, स्वल्प; दोष-रहित; निरापद ।

सहीका-पु० [अ०] पुस्तक; मासिकादि पत्र, रिताला; धर्मग्रंथ; पत्र, चिट्ठी । -(क्र०)आसमान्नी-पु० इन्द्र-हानी किताब, ईश्वरमदत धर्मग्रंथ ।

सहीह-वि० [अ०] स्वल्प; दोषरहित; ठीक, दुकला; पूरा, अखंड । श्री० दस्तखत, निशान; तपदीक; वह हदीस जिसका प्रमाण पूर्णतः मान्य हो; वह पुस्तक जिसमें सही हदीसें लिखी हों । -सकामस्त-वि० दे० 'सहीसलामन' । -सकामि-वि० पूरा, ज्योंका त्यों; सही-सलामत ।

सहीहुलमजल-वि० [अ०] जिसकी अङ्ग दुरुस्त हो ।

सहीहुलमसब-वि० [अ०] जिसका नमब (कुल) निरोप हो ।

सहीहुलमिजाज-वि० [अ०] स्वल्प; जिसका मिजाज दुरुस्त हो ।

सहै-अ० माममें, समुच्छिन्न तरफ, ओर ।

सहुरि-पु० [सं०] सूर्य । श्री० पृथ्वी; अग्नि ।

सहूक-वि० [अ०] मरमो; आसानी ।

सहूकित-वि० [अ०] दे० 'सहूकत' ।

सहृदय-वि० [सं०] कीमलचित्त; दयालु; सच्चा; ममह-दार; प्रसन्नमाना; रसिक । पु० विद्वान् व्यक्ति; वह जो गुण पहचाने; रसका अनुभव करनेवाला व्यक्ति ।

सहृदयता-वि० [सं०] दयालुता, करुणा; चित्तकी कीम-लता; रसज्ञता ।

सहृदय-वि० [सं०] संदिग्ध, आपत्तिजनक । पु० आपत्तिजनक साथ प्रदार्थ ।

सहैजा-पु० जामन, जावन ।

सहैजना-सं० कि० सैमाळना; जाँचना; कोई चीज मचेत, मावधान करके सौपना ।

सहैद-पु० दे० 'सहेत' ।

सहैदी-वि०, श्री० अमिसारिणी-'दीति मई मिति ईति सुत्रान न देहि कयों पीठि जो दीति सहैदी'-धन० [सहेत=संकेतस्थल] ।

सहैल-पु० मेमी-मेमिकाके मिलनेका निश्चित स्थान, संकेतस्थल ।

सहैल-वि० [सं०] कारणयुक्त, युक्तियुक्त । अ० हेतुसहित ।

सहैल-वि० [सं०] सकारण, सोई हथ ।

सहैल-वि० [सं०] क्रीडायुक्त; लपारवाह । † पु० जमी-दारको अन्तर्गते बेगार आदिके रूपमें मिलनेवाली सहायता ।

सहैली-वि० सखी, मदेकी ।

सहैली-वि० साथ, संग रहनेवाली श्री; मखी, साथिन; दूती, मेधिका ।

सहैया-पु० सहने, बरदाश्त करनेवाला; * सहायक, मददगार ।

सहोभी-वि० सखी ।

सहोक्ति-वि० [सं०] साथ बोलना; एक अवयवकार जहाँ संग, सहिन आदि पदोंका प्रयोग करते हुए एक ही कामके साथ अन्य किन्तनी ही बातोंका हीना मनोरंजक रंगमें वर्णित किया जाय ।

सहोदज-पु० [सं०] मुनियोंकी पर्णकुटी (जो कमी-कमी उनके साथ जला ही जाती है) ।

सहोद-वि० [सं०] जो बीरीके मालके साथ पकड़ा गया हो । पु० ऐसा चोर; बारह प्रकारके पुनोंमेंसे एक (जो विवाहके पूर्वके गर्मसे उत्पन्न हुआ हो) ।

सहोद-वि० [सं०] सहज ।

सहोदक-वि० [सं०] दे० 'समानोदक' ।

सहोदर-वि० [सं०] मगा, एक मातासे उत्पन्न; एक जैसा । पु० मगा भाई ।

सहोपमा-वि० [सं०] उपमाका एक प्रकार (सा०) ।

सहोर-पु० साधु, संन; मिहोर, शास्त्रोद । वि० [सं०] उत्तम, बढ़िया ।

सहोबल-पु० [सं०] निष्ठुरता, दौरातन्य ।

सहा-वि० [सं०] जो सहा जा सके; सहन करनेमें समर्थ; मुकाबला करनेमें समर्थ; सहिष्णुता; प्रिय, सुमधुर । पु० सहायि-भेणी; आरोग्य; सहायता; उपयुक्तता ।

-कर्म(रु)-पु० सहायता । -बासिरी-वि० दुर्गा ।

सहात्मजा-वि० [सं०] कावेरी नदी ।

सहात्रि-पु० [सं०] बंवाई प्रांतकी एक पर्वतभेणी जो समुद्रतलके समीप स्थित है ।

सह-पु० [सं०] पर्वत ।

सह-पु० [अ०] भूल-भूक; प्रमाद ।

सह-अ० [अ०] भूलसे, गळतीसे ।

सहै-पु० स्वामी, मालिक; ईश्वर; पति; मुसलमान

फरिद ।

सौकर्य-स्त्री० जंजीर, सौकर्य पैरका एक गहना, मौकड़ा ।

सौकर्य-पुं० पैरका एक गहना ।

सौकर्य-वि० [सं०] वृत्त करनेमें कुशल ।

सौकर्य-पुं० [सं०] वार्तालाप ।

सौकर्य-पुं० संकट, कष्ट । स्त्री० जंजीर, मौकड़ा । वि०

सौकर्य, संग; कष्टयुक्त ।

सौकर्य-पुं० कष्ट-सौकर्य सौकर्य मनमुल्ल होत तोरे ।-रामचन्द्रिका; † मौकड़ा । वि० संग ।

सौकर्य-वि० [सं०] वर्णसंकर ।

सौकर्य-पुं० [सं०] मिश्रण, मिलावट, संकरता ।

सौकर्य-वि० [सं०] जोड़नेसे बढ़ा हुआ ।

सौकर्य-स्त्री० मंजुला, जंजीर ।

सौकर्य-वि० [सं०] कल्पनाप्रसूत, कल्पनापर आधारित ।

सौकर्य-पुं० [सं०] (जनकके भाई) कुलाश्वजकी राज-धानी ।

सौकर्य-स्त्री० [सं०] दे० 'सांकाश्य' ।

सौकर्य-स्त्री० दांसाडुकी ।

सौकर्य-वि० [सं०] संकेत संबंधी, संकेतवाला; व्यवहार-सिद्ध ।

सौकर्य-पुं० [सं०] ठहराव, निश्वस (प्रेमिका आदिसे माध) ।

सौकर्य-वि० [सं०] सक्रमण करनेवाला, संक्रामक ।

सौकर्य-वि० [सं०] संक्षिप्त, संकुचित, छोटा किया हुआ ।

सौकर्य-वि० [सं०] संस्था-संबंधी; गणना करनेवाला; विचार, विवेक करनेवाला । पुं० छः दर्शनोंमेंसे एक त्रिसंकेतों का कथित रूप है (इसमें प्रकृति ही सारे विश्वका मूल और पुरुष द्रष्टा माना गया है; वह ईश्वरकी सृष्टिका रचयिता और संचालक न स्वीकार कर आत्माके शेष चौबीस तत्वोंमें पार्थक्यके सम्यक् ज्ञानकी ही मोक्षका साधन मानता है); इस दर्शनका अनुयायी; शिव ।

-प्रसाद, सुख्य-पुं० शिव ।

सौकर्य-पुं० [सं०] एक आचार्य (हर्षने सांख्यायन कामसूत्र और कण्वदेके सांख्यायन ब्राह्मणकी रचना की) ।

सौकर्य-वि० [सं०] अंगयुक्त; प्रत्येक अवयवमें पूर्ण; छः अंगोंसे युक्त । -श्लाघि-वि० ह्रांत, बका हुआ । -ज-वि० बाळोंसे ढका हुआ, केशपूर्ण ।

सौकर्य-स्त्री० बरछी; कुर्छमें पानीका सोता झोझनेका एक औजार; भारी बोझ छटानेका ढंका ।

सौकर्य-वि० [सं०] संगति-संबंधी; सामाजिक । पुं० अस्तिवि; अजनबी; वह जो किसी कारवारके सिलसिलेमें आया हो ।

सौकर्य-पुं० [सं०] मेल, योग, मंगम ।

सौकर्य-स्त्री० एक रंग ।

सौकर्य-स्त्री० बरछी-चने तिसावर आयसु मांसी । गडि कर सिद्धिपाल बर सौगा-रामां; जुएपर गासीवानके बैठनेका स्थान; चीजें रखनेके लिए एकमें नीचे लगी हुई जाती ।

सौकर्य-स्त्री० [सं०] गुंजा, गुंथनी ।

सौकर्य-वि० [सं०] अंगों, उपारों और अवलंबियोंमें युक्त; अंगोंसे युक्त, पूर्ण ।

सौकर्य-वि० [सं०] समझ करनेवाला, समझकुशल ।

सौकर्य-वि० [सं०] युद्ध-संबंधी, वीर्यविक । पुं० सेना-पति । -गुण-पुं० राजाके वीर्यविक गुण । -परिचय-पुं० युद्धके उपकरण ।

सौकर्य-स्त्री० [सं०] दूती, कुटनी; संयोग, मैथुन; जोड़ा; एक पैर ।

सौकर्य-पुं० [सं०] दल, मूष, समूह (?) ।

सौकर्य-वि० [सं०] दल-संबंधी; मारात्मक, हनन-कारक । पुं० जन्ममक्षत्रसे सोलहवाँ नक्षत्र ।

सौकर्य-वि० [सं०] (विशुद्धों आदिके) संघ-संबंधी ।

सौकर्य-वि० ठीक, सत्य । पुं० सही बात ।

सौकर्य-पुं० सौकर्य लक्षण ।

सौकर्य-वि० सत्यवादी ।

सौकर्य-पुं० वह हाँवा जिसमें कोई गीली चीज भरकर खास धकलती चीज डालते हैं; छोटा नमूना; कपड़े आदि-पर कूल आदि छापनेका लकड़ीका ढंका । * वि० सच्चा ।

-(चे)में ढंका-सुदीर, सुदर ।

सौकर्य-वि० [सं०] जंगम ।

सौकर्य-पुं० सौचा बनानेवाला; सौचमें कोई चीज डालनेवाला ।

सौकर्य-वि० सच्चा-‘एक मनेही मौचिनी केमल कोमल पातु’-विनय० ।

सौकर्य-पुं० एक तरहका पान । स्त्री० छपाईका एक प्रकार जिसमें पंक्तिवाँ बेंचे रखी जाती हैं ।

सौकर्य-पुं० [मं०] गिरगिट । वि० रगवाला; जो विशुद्ध न हो ।

सौकर्य-स्त्री० मध्या, मायकाल ।

सौकर्य-पुं० एक हलमें दिनभरमें जुन चानेवाली भूमि ।

सौकर्य-पुं० दे० ‘माज्ञा’ ।

सौकर्य-स्त्री० अंतरिमें देवसूर्यके सामने चौक पूरने जैसी की जानेवाली फूलोंकी मन्त्रावट (यह सजावट विशेषकर विष्णुपक्षमें द्वायकी ही की जाती है) ।

सौकर्य-स्त्री० छड़ी, कोड़ा; छड़ीकी चोटका दाग; रक्त पुनर्नवा ।

सौकर्य-पुं० ढंका; ईंध ।

सौकर्य-पुं० दुग्धी पीटनेवाला ।

सौकर्य-स्त्री० पतली छड़ी, बामकी कमची, कैना; * मेल-जोल; बटला, प्रतिकार ।

सौकर्य-पुं० सौटा; ईंध; अब पीटनेका ढंका; मरकटा; मेल, योग । -सौट-स्त्री० हेल-मेल; गुप्त-संबंध; दुरभिसंधि, माजिज ।

सौकर्य-पुं० कि० एकसे रहना ।

सौकर्य, सौट-स्त्री० पूँची, धन ‘बाम्हन तहवाँ लेइका सौटि सौटि सुटि ओर’-प० ।

सौकर्य-वि० [सं०] अंबयुक्त, जो बधिया न किया गया हो ।

सौकर्य-पुं० वृत्तकी स्मृतिमें दागकर छोड़ा हुआ वृत्त; वह वृत्त या घोड़ा जो बधिया न कर जोड़ खिलानेके लिए

पाका गया हो। वि० शक्तिशाली, मोटा-माटा; आभारा, छपर। **सु०**-की तरह घूमना-आजारी और बेफिक्रीसे घूमते फिरना। -की तरह बकरना-जोरसे चिहाना।
सौंझनी-खी० (नेत्र चालवाली) डेंडनी।
सौंझा-पु० गिरगिटकी जातिका एक जंतु जिसका तेल टवाके काम आता है।
सौंझिया-पु० तेज रफतारवाला ऊँट; सौंझनीका स्वार।
सौंत्त-वि० दे० 'शान्त'; [सं०] अंतयुक्त; प्रसन्न।
सौंत्तविक-वि० [सं०] संनवि प्रधान करनेवाला।
सौंत्तपन-पु० [सं०] एक तरहका तप या त्रन। -कुच्छ-पु० दे० 'सांत्तपन'।
सौंत्तर-वि० [सं०] अंतर या अवकाशयुक्त; शीला।
सौंत्ताविक-वि० [सं०] फैलनेवाला (जैसे वृद्ध); मगान-संबंधी; संतान वृद्ध-संबंधी।
सौंत्तापिक-वि० [सं०] ताप पहुँचानेवाला; तप्त करनेमें समर्थ; कष्ट देनेवाला।
सौंत्ति-खी० दे० 'शान्ति'।
सौंत्त-पु० [सं०] दे० 'सांत्तन'। -बाद्-पु० दारम वैधानेवाली बात।
सौंत्वन-पु० [सं०] दादम बंधाना; तसली; तुष्ट करनेका माधन; तुष्ट करनेवाले शब्द-अभिवादन तथा कुशल-वाता।
सौंत्तना-खी० [सं०] दे० 'सांत्तन'।
सौंत्तित-वि० [सं०] तुष्ट किया हुआ, दादम बंधाया हुआ, आश्रय।
सौंथरी-खी० दे० 'साथरी'।
सौंथा-पु० चमका कूटनेका एक औजार।
सौंथी-खी० करघेमें लगनेवाली एक लकड़ी; तानेके सुतोंका नीचे-ऊपर होना।
सौंथ, **सौंथा**-पु० दे० 'ठेंगुर'।
सौंथीपनि-पु० [सं०] एक मुनि जो कृष्ण और बलरामके गुरु थे (कहा जाता है कि उनके पुत्रको एचजन नामक एक दानवने पकड़कर जलके अंदर रखा था और कृष्णने गुफाछिपाके रूपमें उस दानवको मारकर उनके पुत्रको लौटाया था)।
सौंथिक-वि० [सं०] तत्काल प्रत्यक्ष होनेवाला, प्रत्यक्ष; नास्त्विक। -**भ्याय**-पु० एक भ्याय जिसका प्रयोग पहले जैसा दृश्य देखनेमें उसकी रमृति होनेपर किया जाता है।
सौंथ-वि० [सं०] बना, ठस, गफ; मोटा; एकमें मिला हुआ; छट-पुष्ट; अतिशय, अत्यधिक; प्रचंड, स्निग्ध; चिकना; कोमल; सुंदर, प्रिय। पु० राशि, झुंड; जंगल। -**कुड्डल**-वि० कुड्डलमें पका हुआ, चबित। -**रवक**-वि० मोटे आकार, छालवाला। -**पुण्य**-पु० बहेका। -**प्रसादमेह**-पु० मधुमेह रोगका एक भेद। -**सणि**-पु० एक क्षति। -**सूत्र**-वि० जिसका पेशाव गाढा और बिपविषा हो। -**मेह**-पु० प्रमेहका एक भेद, मात्र-प्रसादमेह। -**स्निग्ध**-वि० गाढा और लसदार। -**स्पष्ट**-वि० जो छूनेमें बिपविषा हो।
सौंथ-वि० [सं०] संधि, ओष-संबंधी; जो ओषध हो।

सौंथ-पु० निशाना, लक्ष्य।

सौंथना-सं० कि० निशाना लगाना-‘करगल नाप शरिर सर सौंथा’-रामाय०; सिद्ध करना; साधना; सामना, मिलाना, मूचना-‘नेहिमेंह विप्रमांस खल सौंथा’-रामाय०।

सौंथिक-पु० [सं०] संधि करनेवाला; शौधिक, कलाक।

सौंथिविग्रहिक-पु० [सं०] संधि, अर्थात् युद्धका निश्चय करनेवाला मंत्री।

सौंथिवेली-खी० [सं०] संध्याकालमें फूलनेवाली बेल।

सौंथ-वि० [सं०] प्रातःकाल वा संध्या-संबंधी। -**कुसुमा**-खी० प्रायकी फूलनेवाला पौधा या वृक्ष। -**मोजन**-पु० व्याह।

सौंथ-पु० घेठके बल रेंगनेवाला एक प्रसिद्ध विषैला कीड़ा, सर्प। -**चरण**-पु० शिव। **सु०**-दतारना-सौंथका जहर दूर करना। -**कलेंज** या **झातीपर** लोटना-बहुत ब्याकुल होना; भारी मदमा पहुँचना। -**का पौव**

देखना-असमय बातके लिए प्रयत्न करना। -**का बहा**-डुट, जालिम। -**की तरह जमीन पकटना**-

जरा भी न हिलना। -**की तरह फन झाड़ या मारकर**

रह जाना-वज्र न चलना, प्रयत्नमें विफल होना।

-**कीलना**-मंत्र द्वारा हाँपकी काटनेमें रोकना। -**की-सी कँधुली झाड़ना या डालना**-साफ-सुथरा होना;

आरोग्य लाभ करना। -**के मुँहमें**-स्वप्नमें। -**खेखाना**

-भ्रमके बलसे सौंथ पकड़ना। -**छड़छड़की गति या**

वृत्ता-विचित्रकी स्थिति। -**छहराना**-सौंथकी तरह

आचरण करना, बहुत ब्याकुल होना; इधामें जलना।

-**सा लोटना**-बहुत ब्याकुल होना। -**सूँच जाना**-

सौंथका काटना या काटनेमें मर जाना। -**से खेलना**-

खतरनाक आदमीमें मेल-मिलाप करना।

सौंथिक-वि० [सं०] संपत्ति-संबंधी, आर्थिक।

सौंथ-वि० [सं०] संपत्ति-संबंधी; ‘के उपकरण-संबंधी।

सौंथिक-वि० [सं०] विलासमय जीवन व्यतीत करने-

वाला।

सौंथराव-वि० [सं०] युद्ध-संबंधी; पारलौकिक। पु०

सपथ; परलोक; परलोककी प्राप्तिका साधन; परवर्ती जीवन-

के संबंधमें पूछताछ करना; अनिदस्य; संकट; संकटमें

साथ देनेवाला व्यक्ति।

सौंथरावण-पु० [सं०] वह जो परलोक में त्राय (वृत्त्यु)।

सौंथराविक-वि० [सं०] युद्ध-संबंधी, यौद्धिक; पारलौकिक;

संकटमें सहायता करनेवाला। पु० युद्ध; युद्ध-रथ। -**कहय**

-पु० एक प्रकारका वृक्ष।

सौंथा-पु० सियापा।

सौंथाविक-वि० [सं०] प्रयातोत्पादक।

सौंथिन-खी० सपिणी, सौंथकी मादा; घोड़े, बैलके शरीर-

परकी एक तरहकी औरी जो तुरी मानी जाती है; † वह

गाय जो बराबर जीम निकाला करती हो।

सौंथिया-पु० सापके रगसे मिलता हुआ रग।

सौंथ-वि० [सं०] उपयुक्त; उचित; सामयिक; ठीक

वर्तमानकाल-संबंधी। अ० जब; तत्काल, अभी; उपयुक्त

रूपमें। -**काल**-पु० वर्तमान काल।

सांख्यिक-वि० [सं०] आधुनिक, वर्तमानकाल संबंधी; उपयुक्त, ठीक।

सांख्यिक-वि० [सं०] परंपरा-संबंधी; संप्रदाय संबंधी; किसी संप्रदायसे संबंध रखनेवाला।

सांख्यिकता-की० [सं०] सांख्यिक होनेका भाव; केवल अपने संप्रदायका रित चालना और दूसरे संप्रदायके विरुद्धी उपेक्षा करनेकी तैयार रहना।

सांख्यिक-वि० [सं०] संबंध-विषयक, संबंध-जन्य। पु० विवाह-जन्य संबंध; ऐसी बात जो विवाह द्वारा संबन्ध लोगोंमें होती है; साला (?)।

सांख-पु० [सं०] जांबवतीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र; शिव। -**पुर-पु०** चंद्रभागाके तटपर स्थित एक प्राचीन नगर। -**पुराण-पु०** एक उपपुराण। -**पुरी-की०** दे० 'सांखपुर'।

सांख-पु० संबल, पाथेब; [सं०] सांभर हिरन; सांभर जमक।

सांखरी-की० [सं०] माया, जादूगरी; जादूगरनी।

सांख्यिक-पु० [सं०] रात्रिका दूस्तरा याम।

सांभर-पु० [सं०] मंभर शीलसे प्राप्त लवण।

सांभर-पु० रात्रपुलानेकी एक झील; दे० 'सांभर'; एक तरहका हिरन; * संबल, पाथेब-‘सांभर मोह गाँठि जो होई’-प०।

सांभरी-की० [सं०] रक्त कोष्ठ; संभावना।

सांभाष्य-पु० [सं०] वार्तालाप, समापण।

सांभुहो-अ० सामने।

सांभजन-वि० [सं०] संभजन-संबन्धी।

सांभाषिक-पु० [सं०] समुद्री व्यापार करनेवाला, पोत-विक्रि; वान; तक्का, सखेरा।

सांभुग-वि० [सं०] युद्ध-संबन्धी।

सांभुगीन-वि० [सं०] युद्ध-संबन्धी; रणकुलज। पु० बहुत बड़ा बौद्ध; रणकुलज व्यक्ति।

सांभविण-पु० [सं०] शोर-शुल, हो-हड़ा।

सांभक-पु० एक अन्न, साँबो।

सांभल-पु० एक राग; * बौद्ध।

सांभलसर-वि० [सं०] वार्षिक। पु० गणक, ज्योतिषी, पंचांग बनानेवाला; चांद्रमास। -**रथ-पु०** वर्स।

सांभलसरक-वि० [सं०] एक वर्षपर दिया जानेवाला (फण)। पु० गणक, ज्योतिषी।

सांभलसरिक-वि० [सं०] वार्षिक; वार्षिक सङ्घ-संबन्धी। पु० गणक। -**आह-पु०** हर साल किया जानेवाला आह।

सांभलसरी-की० [सं०] सूर्यके एक साल बाद होनेवाला आह।

सांभलसरी-वि० [सं०] दे० 'सांभलसर'।

सांभरी-वि० साँबल।

सांभलसाँही-की० सांभलपान।

सांभला-वि० श्याम वर्णका। पु० कृष्ण; पति; प्रेमी। -**पन-पु०** श्यामता।

सांभलिया-वि० श्याम रंगका। पु० कृष्ण; पति; प्रेमी।

सांभो-पु० केना जैसा एक करक।

सांभाषिक-वि० [सं०] (बोलचालमें) प्रचलित, व्यवहारमें

आनेवाला; विवादप्रसू। पु० नैयायिक।

सांभि-पु० [सं०] एकमस्य।

सांभिक-वि० [सं०] आत्मक, मिथ्या।

सांभ्यवहारिक-वि० [सं०] प्रचलित, जो व्यवहारमें आता हो। पु० सामने व्यापार करनेवाला व्यक्ति।

सांभ-वि० [सं०] हिस्सेवाला।

सांभिक-पु० [सं०] संविध्य; खतरनाक; संदेह करने-वाला। पु० संविध्य वा खतरनाक काम।

सांस-की० नाक या मुँहसे अंदर खींची और बाहर निकाली जानेवाली हवा; शुवाश्वास; पुरस्त; दम; हवा निकलनेका छेद। **मु०** -**अंदरकी अंदर, बाहरकी बाहर रह जाना**-असते सत्त्व रह जाना। -**उल्लखना**-हॉफना, सांस फूटना। -**उड़ना**-दम बटना। -**उड़ती चक्का**-आसक्त्युक्त होना। -**ऊपरकी चक्का**-आसक्त्युक्त होना। -**ऊपरकी चक्का**-बहुत व्यस्त होना; सोम बटना। -**का झुमार होना**-दे० 'मांस चिना'।

-**खींचना**-थोरेसे सांस लेना; दम साधना। -**गिनना**-आसक्त्युक्त होना सांस देखकर हालतका निश्चय करना। -**चक्का**-हॉफना, सांस फूटना। -**चक्का**-दम साधना, मुँहा बन जाना। -**चक्का**-त्रिद होना।

-**छोचना**-सांस बाहर निकालना। -**टूटना**-नामक; निमित्त रूपमें न चलना। -**उड़कर न लेना**-माल पचा जाना और पना न लगने देना। -**तक न लेना**-विलकुल मोन रहना, कुछ न सोलना। -**देखना**-शोमारीकी हालतमें सांस देखकर मरणामश आदि होनेका निश्चय करना। -**न निकालना**-नुप रहना। -**न लेना**-फौरन मर जाना। -**फूटना**-दम बन जाना, हॉफना। -**भरना**-ऊपरका दम लेना, हाफना; आह भरना। -**रहते**-जीते जी। -**छकना**-दम बढ़ होना; मांस लेनेमें तकलीफ होना। -**लेना**-नाम फेकनेमें ले जाना और बाहर निकालना; आह भरना; दम लेना, रुक जाना, सुस्ता लेना। (**उलटी**)-**लेना**-बकी तकलीफमें होना। -**लेनेकी फुरसत**-थोड़ी भी फुरसत। -**लेनेमें अड़ना**-सांस रुकना, मरणसन्न होना।

सांसत-की० मांस रुकने जैसी तकलीफ; बहुत बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बसेका। -**चर-पु०** कालकोठरी, नेलके अंदर वह छोटी-सी कोठरी जिसमें वेद तनहाईकी मन्त्रावाला आठमी अंकेले रखा जाना है (इसमें हवा और प्रकाश बहुत कम आता है और यैदीका किमीसे संबंध नहीं रहता)।

सांसति-की० दे० 'सांसन'।

सांसना-अ० मांस रुकने जैसी तकलीफ; बहुत बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बसेका। -**चर-पु०** कालकोठरी, नेलके अंदर वह छोटी-सी कोठरी जिसमें वेद तनहाईकी मन्त्रावाला आठमी अंकेले रखा जाना है (इसमें हवा और प्रकाश बहुत कम आता है और यैदीका किमीसे संबंध नहीं रहता)।

सांसति-की० दे० 'सांसन'।

सांसना-अ० मांस रुकने जैसी तकलीफ; बहुत बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बसेका। -**चर-पु०** कालकोठरी, नेलके अंदर वह छोटी-सी कोठरी जिसमें वेद तनहाईकी मन्त्रावाला आठमी अंकेले रखा जाना है (इसमें हवा और प्रकाश बहुत कम आता है और यैदीका किमीसे संबंध नहीं रहता)।

सांसति-की० दे० 'सांसन'।

सांसना-अ० मांस रुकने जैसी तकलीफ; बहुत बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बसेका। -**चर-पु०** कालकोठरी, नेलके अंदर वह छोटी-सी कोठरी जिसमें वेद तनहाईकी मन्त्रावाला आठमी अंकेले रखा जाना है (इसमें हवा और प्रकाश बहुत कम आता है और यैदीका किमीसे संबंध नहीं रहता)।

सांसति-की० दे० 'सांसन'।

सांसना-अ० मांस रुकने जैसी तकलीफ; बहुत बड़ा कष्ट; यंत्रणा; बसेका। -**चर-पु०** कालकोठरी, नेलके अंदर वह छोटी-सी कोठरी जिसमें वेद तनहाईकी मन्त्रावाला आठमी अंकेले रखा जाना है (इसमें हवा और प्रकाश बहुत कम आता है और यैदीका किमीसे संबंध नहीं रहता)।

सांस्कारिक-वि० [सं०] संस्कार-संबंधी; अत्येष्टि या अन्य संस्कारोंके लिए आवश्यक ।

सांस्कृतिक-वि० [सं०] संस्कृति-संबंधी ।

सांख्यनिक-वि०, पु० [सं०] समान-देशीय, एक ही देश-के निवासी ।

सांख्यविण-पु० [सं०] भारा, प्रवाह ।

सांख्य-पु० [सं०] संबंध, योग ।

सांख्यनिक-वि० [सं०] शरीर-संबंधी, शारीरिक, वैदिक ।

मा-पु० सप्तमके प्रथम स्वर-‘षड्ज’का सांकेतिक रूप ।

अ० सप्तश, समान, जैमा; एक मानसूचक शब्द (कारण) में यह ‘सौ’ और ‘आस’ का संक्षिप्त रूप है और तुल्य आदि अर्थोंका ही चोत्कर्ष है । **खी** [सं०] लक्ष्मी; प्रायः ।

माश्वत-**खी** [अ०] दाईं घड़ीका काल, पंटा; क्षण, पल; घड़ी; नियत काल ।

माह्स-**खी** [अ०] विज्ञान; रसायन, भौतिक, आधुनिक आदि विज्ञान ।

माह्क-पु० दे० ‘शायक’; संघातकाल ।

माह्क-**खी** [अ० ‘माश्वत’] पल, छन; मुहूर्त, लग्न, (तलना, देखना, विचारना इ०) ।

माह्नबोर्ड-पु० [अ०] व्यक्ति, हुकान, मंशा आदिके नाम और पतेका सूचक पट, तस्ला नामपट ।

माह्वान-पु० दे० ‘माववान’ ।

माह्व-वि० [अ०] दे० ‘सावम’ ।

साह्व-पु० दे० ‘साह’ ।

माह्व-पु० दे० ‘साधर’ ।

साह्व-पु० दे० ‘साई’ ।

माह्व-**खी** वह धन जो गाने बजाने या इस तरहके काम करनेवालोंकी नियत समयपर काम करनेके लिए अग्रिम दिया जाता है, ब्याज; † किसानोंकी आपमकी सहायता । **वि०** [अ०] मर्त (कोशिश) करनेवाला; दौड़-धूप करनेवाला ।

माह्व-पु० घोड़ेकी देखभाल करनेवाला नौकर ।

साह्वसी-**खी** सार्धमा काम ।

माह्व-पु० दे० ‘माह्व’ ।

माह्वज-पु० बं जानवर गिनका शिकार किया जाय-‘कीन्हेसि साहज मारन रहई’-प० ।

साह्व-पु० [अ०] दक्षिण दिशा ।

साकंभरी-**खी** दे० ‘शाकंभरी’ ।

साक-पु० [सं०] तरकारीके रूपमें खाया जानेवाला पौध का पत्ता, माग; सागौन । * **खी** मास; धाक ।

साक-**खी** [अ०] पिंढली; पेड़का नना; पौधका टटल ।

साकवेरि-**खी** मेहरी ।

साकट-पु० शाकमत माननेवाला, मज, मास आदिका संवन करनेवाला, नियुक्त; खल ।

साकट-पु० दे० ‘माकट’ ।

साकश-**खी** शक्ति ।

माकन-**खी** माक्रीकी खी, हुका, जराब आदि पिन्ना-वाली खी ।

माकर-वि० संकरा, तग । **खी** माँकल ।

साकल-पु० स्यालकोटका पुराना नाम । † **खी** दे०

‘साँकल’ ।

साकन्ध-पु० दे० ‘शाकन्ध’; [सं०] ममप्रता, संपूर्णता ।

-**बचन**-पु० पूरा पाठ ।

साकबरी-पु० बैल ।

माकाक्ष-वि० [सं०] इच्छायुक्त, इच्छुक; जिसके लि पुरक आवश्यक हो ।

साका-पु० शाका, सब्ज; रोव, दबदबा; नामबरी; कीर्ति-सारक । * पु०, खी० इच्छा, चाह-‘आजु माह पूजी वह माका’-प० । **खी** -चलना-रोव माना जाना । -**खलना**-दबदबा कायम करना ।

साकार-वि० [सं०] आकारयुक्त, रूपविभिन्न, मूर्त, स्थूल; अच्छे आकारका, सुंदर । पु० ईश्वरका सगुण रूप ।

साकारोपासना-**खी** [सं०] ईश्वरके सगुण रूपकी उपासना ।

साकित-वि० [अ०] नुप; निश्चेष्ट, गतिहीन ।

साकित-वि० [अ०] गिरानेवाला; गिरा हुआ; त्यक्त; नष्ट, तुप्त (हीना) ।

साकिन-वि० [अ०] गतिहीन । पु० हलवर्ग; रहनेवाला, निवासी । -**हाल**-वर्तमान निवासी (वर्तमान निवास बतानेके लिए कहते हैं) ।

साक्षी-पु० [अ०] पानी पिलानेवाला; द्वारा पिलानेवाला; हुआ पिलानेवाला (उद्) ।

माकुच-पु० [सं०] सक्की मछली ।

माकुच-पु० [सं०] वृक्षविशेष, अंघ्रिफल ।

माकुच-वि० [सं०] सार्धक, अर्धगर्भ; सामिप्राय; क्रोधा-युक्त । -**सिख**, -**हसित**-पु० सामिप्राय मद हाम; प्रणयमूलक हाम और चितवन ।

माकेत, **साकेत**-पु० [सं०] अधोध्या ।

साकेत-वि० [सं०] अधोध्या-निवासी ।

साकोटक-पु० दे० ‘शाखोट’ ।

माकनुक-पु० [सं०] भूना हुआ जौ; जौका सत्; एक विष । **वि०** मत्-संबंधी ।

माक्ष-वि० [सं०] नैत्रयुक्त; जपमालासे युक्त ।

माक्षर-वि० [सं०] पदा-लिखा, शिक्षित ।

साक्षरता-**खी** [सं०] पढ़े-लिखे होनेका भाव । -**आँखो-लज**-पु० लोगोंको साक्षर बनानेके लिए आरंभ किया गया अभियान ।

माक्षार-अ० [सं०] आँखोंके सामने, प्रत्यक्ष; स्पष्टतः; वस्तुतः, सीधे । -**कर**, -**कारी** (विन)-वि० प्रत्यक्ष, गोचर करनेवाला; मिलनेवाला । -**करण**-पु० आँखोंके सामने रखनेकी क्रिया; अनुभूति; किसी बालका तात्कालिक कारण । -**कल** (हँ)-वि० मज-कुछ देखनेवाला । -**कार**-पु० ज्ञान, अनुभूति; मिलन, देखादेखी । -**कृत**-वि० प्रत्यक्ष; गोचर कराया हुआ ।

साक्षाद्दृष्ट-वि० [सं०] (अपनी) आँखोंसे देखा हुआ ।

साक्षिता-**खी**, **साक्षित्व**-पु० [सं०] गवाही, प्रमाण ।

साक्षिमान् **आधि**-**खी** [सं०] यथाशक्ति सामने, बिना लिखा-पढ़ीके, गिरवी रखा हुआ माल ।

साक्षी-**खी** गवाही, गवाहका बयान ।

साक्षी (शिव)-वि० [सं०] (अपनी) आँखोंसे देखनेवाला,

चदमदीद-पु० अहम्; चदमदीद गवाह । - (कि) हैच-
पु० परस्पर विरोधी बयान (व्यवहार) । - परीक्षण-पु०,
-परीक्षा-स्त्री० गवाहकी परीक्षा, जिरह । - प्रत्यय-
पु० चदमदीद गवाहका बयान । - प्रश्न-पु० जिरह ।
-भावित-वि० चदमदीद गवाहके बयानसे साधित ।
-भूत-वि० जिसने स्वयं देखा हो । पु० विष्णु । - भात्र-
पु० अहम् । - लक्षण-वि० प्रमाणसे सिद्ध ।

साक्षेप-वि० [मं०] आपत्तिजनक, आशेषात्मक; जिसमें
व्यंग्य, ताना हो ।

साक्ष्य-वि० [मं०] 'को गोचर । पु० गवाही; प्रमाण ।
साक्ष्य-पु० गवाही; गवाह । स्त्री० रोच, दबदबा; लेन-देन-
सन्धी रमवार या प्रमिष्ठ; * शाली; जाति या वंशका भाग
या जग ।

साक्षना* -म० क्रि० गवाही, साक्षी देना ।

साक्षर* -वि० दे० 'साक्षर' ।

साक्षा* -स्त्री० शाखा, टाकी; जाति या वंशका अंग; चक्षी-
का पुरा ।

साक्षिण्य-पु० [सं०] मित्रता, दोस्ती ।

साक्षी-पु० गवाह-'तुम सति होहु तराशन साक्षी'-प०;
प०; * बृह । स्त्री० गवाही; (करीर आदिके) गान-विराम-
विषयक पद ।

साक्ष-पु० शालका पेड़, मखुआ ।

साक्षेय-वि० [सं०] मित्र-संबंधी; मिलनसार ।

साक्षोच्चार-साक्षोच्चारण* -पु० गोत्रोच्चार ।

साक्षोट-पु० दे० 'शाक्षोट' ।

साक्षुत-स्त्री० [फा०] बनावट; डोल, झबल; बनावी हुई
वात ।

साक्षुता-वि० [फा०] बनावट हुआ; नकली । - परदाक्षुता
वि० बनावट, सेवारा हुआ; किंवा हुआ ।

साक्ष्य-पु० [सं०] मैत्री, दोस्ती ।

साग-पु० आज्ञाके रूपसे खाखी जानेवाली पत्तियाँ, शाक;
तरकारी । - पात-पु० साग-भाजी; कूड़ा-मुवा ओतन ।

सु० -० यमसूना-इकीर यमसूना ।

सागम-वि० [मं०] ईमानदारीसे प्राप्त किंवा हुआ, वैध
विधिसे प्राप्त ।

सागरगम-वि० [सं०] दे० 'सागरग' ।

सागर-पु० [सं०] समुद्र (कह; जाना है कि राजा मगरके
नामपर इसका नाम सागर पड़ा); मरोवर; चार या
मानकी संख्या; एक बहुत बड़ी सम्पत्ति; (रम पत्र):

सम्पत्तिमयीका बरोविशेष; गान उन्मत्तिणीके नीमरे अहं
(जै०); एक नाम; मगर राजाके पुत्र; एक वृक्ष; (दा०)
बहुत बड़ी राशि या पुंज । वि० समुद्र-सवधी । - गंभीर-

पु० सभाषिका एक प्रकार । - ग-गम-गामी (सिन्धु)
-वि० समुद्रमें जानेवाला । - गा-स्त्री० नदी; गंगा ।

-० सुत-पु० भीष्म । - ज-पु० समुद्र लवण । - अक्ष-
-पु० समुद्रफेन । - चरा-स्त्री० पृथ्वी । - धीर-चेता-

(तत्त्व)-वि० जिसका मन सागरकी तरह शांत और
गंभीर हो । - नेमि-नेमी-स्त्री० पृथ्वी । - पर्यंत-

अ० समुद्रतक, आमसुद्र । - लवण-पु० नौकासमन;
समुद्र लवण । - मति-पु० एक बोधिमत्त्व । - सुद्रा-

स्त्री० सभाषिका एक प्रकार । - मेखला-स्त्री० पृथ्वी ।
- लिपि-स्त्री० एक प्रकारकी प्राचीन लिपि । - बरचर-

पु० महासागर । - वाली (सिन्धु)-वि० समुद्रतटपर
रहनेवाला । - व्यूहगर्भ-पु० एक बोधिमत्त्व । - क्षय-

वि० समुद्रमें नौनेवाला । पु० विष्णु । - सुकि-स्त्री०
समुद्री सीप । - सुत-पु० चंद्रमा ।

सागर-पु० [फा०] प्याला; शराबका प्याला । कसा-
वि० शराब पीनेवाला ।

सागरक-पु० [मं०] एक जनपद ।

सागरीत-पु० [सं०] समुद्रतट ।

सागरीतगत-वि० [सं०] समुद्रमें रहनेवाला ।

सागरीता-स्त्री० [मं०] पृथ्वी ।
सागरीचरा-स्त्री० [मं०] पृथ्वी ।

सागरानुकूल-वि० [मं०] समुद्रतटपर स्थित ।

सागरापांग-वि० [सं०] समुद्रबंधित ।

सागरालय-वि० [मं०] समुद्रमें रहनेवाला । पु० वरुण ।

सागरावर्त-पु० [सं०] क्षात्री, उपसागर ।

सागरेचर-पु० [सं०] एक तीर्थ ।

सागरोत्थ-पु० [मं०] समुद्रलवण ।

सागरोद्धार-पु० [सं०] उच्चार ।

सागरीपम-पु० [सं०] एक बड़ी सम्पत्ति (१०) । वि०
सागरके समान ।

सागवन, सागवान-प० दे० 'मार्गान' ।

साग-पु० [अ० 'सीनो'] ताक्षकी जातिकी एक पेड़ जिसमें
ननेके अंदरके पदार्थमें मागुदाने बनाये जाने हैं । - दाना-
पु० मागुके तनेके अन्दरका भाग पीमकर बनाया हुआ
दाना ।

सागो-पु० दे० 'साग' ।

सागीन-पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी में ज, कुरमा आदि
बनानेके काम आती हैं ।

साक्षि-वि० [मं०] अग्निवृत्त, यशस्विन मरक्षिण रखने-
वाला ।

साक्षिक-वि० [सं०] यज्ञाग्नि रखनेवाला अग्निमें मगड़;
अक्षि द्वारा साक्षीकृत । पु० यशाग्नि रखनेवाला गृहस्थ,
अक्षिहोत्री ।

साक्ष-वि० [मं०] गमय, सं अधिक, काजिल ।

साक्षक-स्त्री० [तु०] व्याहकी एक रस जिसमें व्याहके
एक दिन पहले बरके धरने कन्याके लिष्ट कपड़े, मैहरी,
मैंन, मिठाईयाँ आदि डेजते हैं (सुसल०) ।

साक्षरी-स्त्री० [मं०] एक रागिनी ।

साक्षि-अ० [सं०] तिरटे, टेढ़े । - वाटिका-स्त्री० बनेत
पुनर्नवा । - विखोक्त-पु० तिरछी धितवन ।

साक्षिण्य-पु० [सं०] मैत्रित्व; शान्तन; मैत्री; महायता ।

साक्षिवाक्षेप-पु० [मं०] आपत्तिगर्भ स्वीकृति (सा०) ।

साक्षी कुम्हवा-पु० अनुआ, पेठा ।

साक्षीकृत-वि० [सं०] वक्रोक्त, निरछा ।

साक्षीन-वि० [मं०] बगलमें आनेवाला ।

साङ्ग-पु० दे० 'मा' । वि० [मं०] पूर्वोद्भाद्रपदायुक्त; *
महश ।

साङ्ग-पु० [फा०] सामग्री, सामान; सभासदकी सामग्री;

समनेका साज; धानके साथ बराबे जानेवाले वाजे (मारंगी, तबला इ०); घोड़ेकी सवारिके लिए तैयार करने वा सजानेका सामान (जीन, काठी, लहाम इ०); युद्धसामग्री; आयुध; मेखजोल; अनुकूलता; सुरीका मेल; सावित्र, सौंदर्य। वि० (केवल मयामय) बनानेवाला (कारसाज, रंगमाज); बनाया हुआ (सुदामाज, दस्तसाज-हाथका बनाया हुआ)। -**मार**-वि० अनुकूल; उपयुक्त। -**बाज**-पु० सावित्र, सौंदर्य। -**सामाज**-(**जो**) **सामाज**-पु० (वस्तु वा कार्यविशेषके लिए) आवश्यक सामग्री; सामान, चीज, वस्तु। -**का परदा**-सारंगी, मिनार आदिका वह पुरजा जिसमें कोई विशेष स्वर बजाया जाय। **सु०** -**करना**-मेल करना; सावित्र करना। -**छेड़ना**-माज बजाना।

साजक-पु० [मं०] बाजरा (?)।

साजगिरी-स्त्री० सपूर्ण सात्विका एक राग।

साजव, **साजरा**-पु० वृक्षविशेष।

साजन-पु० प्रेमी; पति, भ्राता; सजन, सुजन; ईश्वर।

साजवा-स० क्रि० सजाना, सुमजित करना; तैयार करना। * पु० साजन।

साजा-वि० सुंदर-ये सुत कौनके सोभहि माजे-राम चंद्रिका; अच्छा; माफ।

साजाव-पु० [मं०] ज्ञाति या वर्गकी सम्मानना, मह-कायपता।

साजिद-पु० [का०] साज बजानेवाला (मारगिया, तबली इ०)।

साजिद-वि० [अ०] मित्रता करनेवाला, बदना करनेवाला।

साजिद-स्त्री० [सं०] मेल ओल; अवहित वा अपराधरूप कार्यमें गुप्त सहयोग; ऐसे कार्यके लिए की जानेवाली गुप्त भ्रमण, चक्र।

साजिदगी-वि० साजिद करनेवाला, चकी।

साजुज-पु० दे० 'सायुज'।

साक्षा-पु० शिरकत, हिम्मेदारी; पत्नी। -**(छे)दार**-पु० दे० 'माजी'। -**दारी**-स्त्री० माझेदार होना, हिस्सेदारी।

साक्षी-पु० हिस्सेदार; जिसकी पत्नी हो।

साठ-स्त्री० छड़ी; छड़ीकी चोटका दाग। -**मार**-पु० साधियोंके लहानेवाला।

साठक-पु० एक छंद; * भूमी, छिलका; तुच्छ वस्तु।

साठन-पु० [अ० 'सेटिन'] एक बढिया रेशमी कपड़ा।

साठना-स० क्रि० मिलाना, जोड़ना; विपकाना।

साठन-पु० बदला।

साठी-स्त्री० छड़ी, कमली; धनभंग; सामान; † गदहपूजा; * बदला।

साठप-वि० [सं०] धर्ममें फूला हुआ; गरजता हुआ (जैसे बादल)।

साठ-वि० पचाससे दस अधिक। पु० साठकी सम्ख्या, ६०। * स्त्री० पूँजी। -**जाठ**-वि० जिसकी पूँजी जठ हो गयी हो, बन्धीन; रसहीन, रुखा; छिन्न-भिन्न।

साठसाठी-स्त्री० दे० 'साठेसाठी'।

साठ-वि० साठ वर्षकी अवस्थाका। पु० साठी धान; ऊँच; लबा-चोड़ा लेत; एक मधुमक्खी।

साठी-पु० एक धान जो बहुत ऊँच तैयार होता है।

साह-वि० [मं०] नोक या टुकनाका।

साही-स्त्री० शिबोंकी पीती; साड़ी।

साहसाही-स्त्री० दे० 'सादेसाही'।

साही-स्त्री० असाधमें बोधी जानेवाली फसल; मलाई; साहका निर्यास; † साही।

साहू-पु० पत्नीकी बहनका पति।

साहू-वि० आधेके साथ। -**साही**-स्त्री० शनि ग्रहकी एक अनिष्टकर स्थिति। **सु०** -**साही जाना वा चढ़ना**-विपत्तिग्रस्त होना।

साह-वि० छः और एक; [सं०] प्रदत्त; विनष्ट, ध्वस्त।

पु० आनंद, प्रसन्नता; [हिं०] सातकी संख्या, ७।

-**पाँच**-पु० चालाकी, चालबाजी; दगा; बहाना; तकरार। (**सु०** -**अन जानना**-ओला-आला होना -

छलाना-दुश्चयन, नकरार करना)। -**पूती**-स्त्री० दे०

'मनुपुतिवा'। -**केरी**-स्त्री० सप्तपदी। -**आई**-स्त्री०

दे० 'सप्तभवा'। **सु०** -**की नाक कटना**-सारे परि-

वारका बदनाम होना। -**घर भील मँगना**-दर-

दर मँगना। -**घार होकर निकलना**-साथ पदाबंधा

बिना पचे दस्त होकर निकलना। -**परदे लगना**-

परदेमें रहना (उस लोकके लिए प्रयुक्त जो अमीर होने-

पर परदेमें रहने लगी हो)। -**परहींमें रखना**-छिपा-

कर रखना; बड़ी सावधानीमें रखना। -**शाजाभीकी**

साक्षी देना-फिती बातकी मचाईपर जोर देना।

-**समुंदर पार**-बहुत दूर। -**सीक** बनाना-छठीकी

एक रस्म। -**(सौं) भुल जाना**-होनाबसा खो देना।

सासत्य-पु० [मं०] नैरतय; अविच्छिन्नता; व्यापार।

सासला-स्त्री० [सं०] बूढ़का एक भेद।

सासवाहन-पु० [सं०] शासिवाहन नामक राजा।

सासा-स्त्री० शाति-रुम रुम सासा भइ सरमें मिटि गई फेरा केरी-मोरा।

सासि-स्त्री० [सं०] देना; भेंट; दान; प्राप्ति; सहायता; नाश, ध्वंस; अंत, समाप्ति; तीव्र वेदना; विराम; संपत्ति; * दंड, शास्ति।

सासिक, **सासिक**-वि० दे० 'सासिक'।

सासीन-पु० [मं०] मटरका एक प्रकार।

सासीनक, **सासीलक**-पु० [सं०] दे० 'सासीन'।

साख-वि० [सं०] सत्त्वगुण-सम्बन्धी।

सासिक-वि० [सं०] यथायथ; सत्य, प्राकृतिक; सत्त्वगुण-

युक्त, ईमानदार, नेक; शक्तिशाली; सत्त्वगुण-सम्बन्धी;

सत्त्वगुणप्रधान; भावजन्य। पु० एक भाव (अनुभाव)

जिसमें सत्य, स्वेद, रोमांच, स्वरमग, वय, वैषम्य, अश्रु

और प्रलय-ये आठ प्रकारके भगविकार होते हैं (सा०)-

इन अष्ट-विकारोंका प्रदर्शन करनेवाला अभिनय; ब्रह्मा;

ब्रह्म; ब्राह्मण; प्रजापतिकी आठवीं सृष्टि।

सासिकी-स्त्री० [सं०] दुर्गा; दुर्गाकी एक तरहकी पूजा।

सास्य(इ)-वि० [सं०] अपनेसे युक्त।

सासक-वि० [सं०] अपनेसे युक्त।

साधकीकृत-वि० [सं०] जो किसी बातका अभ्यस्त, आदी हो गया हो।

साध्य-वि० [सं०] प्रकृतिके अनुकूल, स्वास्थकर। पु० प्रकृतिके अनुकूल होनेका भाव; साकप्य; अनुकूल आहार आदि; अभ्यास।

साध्य-पु० [सं०] एक यादव योद्धा जो कृष्णका सारथि था और महाभारतमें पांडवोंकी ओरसे लड़ा था।

साध्यकी-पु० दे० 'साध्यकि'।

साध्यवृत्-पु० [सं०] मरस्वती तथा अन्य देवताओंके निमित्त किया जानेवाला होम।

साध्यवत्, साध्यवत्तेय-पु० [सं०] सत्यवतीके पुत्र, वैद-व्यास।

साधव-पु० गणक।

साम्राजित-पु० [सं०] सम्राजितका वंशज; राजा क्षता-नीक।

साम्राजिनी-स्त्री० [सं०] सत्यभामा।

साय-वि० दे० 'साय'।

सायवत्-वि० [सं०] सात्वत्संबंधी। पु० सत्वलोकका राजा (कृष्ण, बलदेव आदि); यादव; कृष्णका भक्त; एक वर्ण-संस्कार जाति (जातिव्युत्पन्न वैश्य और ऐसी स्त्रीसे उत्पन्न मत्तान जो पहले क्षत्रियकी परनी रही हो)।

सायवती-स्त्री० [सं०] सुभद्रा; शिशुपालकी माँ, दे० 'सात्वतीवृत्ति'। -**पुत्र-पु०** शिशुपाल। -**वृत्ति-स्त्री०** चार नाटकीय वृत्तियोंमेंसे एक जिसका वीर, अद्भुत, रौद्र आदि रसोंमें प्रयोग होता है।

सायवत्-पु० [सं०] कृष्णका अनुयायी; यादव।

सायिक-वि०, पु० दे० 'सायिक'।

साय-पु० सग, रेल मेक; साथी। अ० सहित; से; विरुद्ध; प्रति; इतरा। -**साय-अ०** एक साथ (चलना, रहना आदि)। **मु०-करना-संपर्कमें** रहना, पास रहना। -**का खेला-लंगोठिया** यार, बचपनका साथी। -**को-बड़** जिससे रोटी लगाकर खाया जाय (सरकारी आदि)। -**कोया-साथसे** बचिन होना। -**बसीटना-जव-रदस्ती** शरीक करना। -**छटना-साथियोंसे** अलग होना, विरुक्त होना; दोस्ती छटना। -**देना-निवाहना**; सहा-यता देना; शरीक होना; साथ यात्रा करना। -**निब-हना-निवाह** होना। -**रहना-सग** रहना। -**लग-लेना-शरीक** हो जाना। -**लगा रहना-पीछा न छोड़ना**। -**लेकर दूबना-अपने** साथ दूसरेका भी नुकसान करना। -**सुकाना, खोना-किसी** एक विस्तरेपर दूसरेके निकट सोना; हमविस्तर होना, सह-वास करना। -**सोकर मुँह छिपाना-बनिष्ठता** होने-पर भी संकोच करना। -**ही-सिवा, अलगा**। -**ही साथ-एक साथ**। -**होना-शरीक** होना।

सायवै०-पु० क्लर, कुशासन।

सायरा०-पु० दे० 'सायरी'।

सायरी०-स्त्री० कुश आदिकी चटाई।

सायी-पु० वह जो साथ रहता हो, मित्र, दोस्त; सहायक। **साय-पु०** [सं०] विषाद; क्रांति; क्षीणता; क्षय, नाश; पीडा; स्वच्छता, विमुक्तता; शरण; गति; [अ०] अरबी

वर्णमालाका एक वर्ण; किसी बातको ठीक मानने, सत्य करने या स्वीकार करनेका चिह्न। **वि०** भला, भद्र, शुभ, मांगलिक। **मु०-करना-सही** मानना, स्वीकृति प्रदान करना।

सायरी-स्त्री० [फा०] सादापन, बनावटका अभाव; मर-लता; मोलापन।

साय-पु० [सं०] हाँत होना; क्रांति; नाश; क्रांत करना; व्यवस्थित करना (पात्रादि); पात्र; थाली; मकान, सदन।

सायनी-स्त्री० [सं०] क्रांति; क्षय; कटुकी।

साय-वि० [सं०] आदर प्रदर्शित करनेवाला; आदरयुक्त। अ० आदरके साथ।

सादा-वि० [फा०] बिना सजावट, बिना काम, बिना गोदे, किनारीका; जिसमें बनावट न हो; कोरा, बिना किसी हुआ (कागज); मरकटहृदय, मोला; बालुस, बेमेल; जिसपर टिक या स्टांप न लगा हो। -**कपड़ा-पु०** वह वस्त्र जिसपर काम न हो या जिसका रंग जोख न हो। -**कागज-पु०** कोरा कागज; वह कागज जिसपर स्टांप न लगाया गया हो। -**कार-पु०** मोने-चोरीपर बढ़िया काम बनावे-वाला (सुनार)। -**कारी-स्त्री०** मायाकारका काम।

-**विल-वि०** सरलचित्त, मीठा। -**पग-पु०** मादगी।

-**मिजाव-वि०** जिसके मिजाजमें बनावट न हो।

-**मिजाजी-स्त्री०** मरलता, मादगी। -**लोह-वि०** सीधा, मोला, बूढ़।

सादाव-पु० [अ०] संवद जाति या वंश।

सादासिब-वि० [म०] मदा शिव-मार्थ।

सादि-वि० [म०] आरभ्युक्त। पु० मारवि; योद्धा; विपणन व्यक्ति; वायु।

साधिक-वि० [अ०] मन्धा; ठीक, दुबल। -**मु०-आना-पिड़** होना, पठिन होना।

सादित-वि० [म०] बैठाना हुआ; पिपाटिन। शरण प्राप्त कराया हुआ; ममाम किया हुआ, क्षीण किया हुआ, ज्ञान किया हुआ।

सादिर-वि० [अ०] बाहर निकलनेवाला; जाँच किया हुआ (करना, होना)।

सादी-स्त्री० एक चिड़िया (यह लाल जानकी, भूरे रंगकी, छोटी-सी डोनी है; बिना पीठवाली पूरी; पतंगकी बीर, जिसपर मोश न हो; दे० 'शारी')। पु० कारमीका यदास्ती कवि और मुल्किनी-बोर्ली आदिका रचविता; शैख मुमलिकुदीन शीराजी। **स्त्री०** दे० 'मादा'। **वि०**

-**धुराक-स्त्री०** बिना विधि-समाप्ति, पठनी-अचारकी गुराक। -**जुबान-स्त्री०** वह भाषा जिसमें बनावट या बनावटी छिष्टता न हो।

सादी (वि०)-वि० [सं०] बैठा हुआ; क्रांत करनेवाला, नष्ट करनेवाला। पु० अथारीही; गभारीही; रथारीही, मारवि।

सादीमव-वि० [म०] पीडाग्रस्त।

सादुर०-पु० मित्र; हिंसक जीव।

सादव-पु० [सं०] ममानता, तुल्यता; बराबरी; तुलना, प्रतिधृति।

साधन-वि० [म०] पूरा, संपूर्ण।

साधकत्व-वि० [सं०] शीघ्र होनेवाला, जिसमें विलंब न हो।
साधक-पु० [सं०] भिक्षुक।

साध-वि० अच्छा, भला, उत्तम। * पु० महात्मा, साधु; मज्जन; योगी। **स्त्री०** कामना, इच्छा; गर्भके सातवें मासमें होनेवाला एक उत्सव।

साधक-वि० [सं०] सिद्ध करनेवाला; संपन्न, पूरा करनेवाला; समर्थ, योग्य; कुशल; भंगबलसे मिद्ध करनेवाला; सहायता देनेवाला; उपयोगी। पु० सहायक; साधन; कुशल व्यक्ति (विशेषकर जादूमें); आरामक, तपस्वी; योगी। -**वर्ति-स्त्री०** जादूकी बत्ती, पलौना।

साधकता-स्त्री० [सं०] उपयुक्तता; उपयोगिता।

साधकत्व-पु० [सं०] जादू, बाजीगरी, सिद्धि।

साधका-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

साधन-वि० [सं०] सिद्ध, पूरा करनेवाला। पु० पूरा करना; मिद्धि; उद्देश्यप्राप्ति; जरिया, बसोला; कारण; कर्णकारक (न्या०); औजार; सामग्री; पदार्थ, द्रव्य; मंत्र; सहायता; प्रमाण; उपाय; हेतु (न्या०); मोहन, वशीकरण; नीरोम करना; मारण; लुप्टीकरण; गमन, प्रस्थान; अनुगमन; तपश्चर्या; मन्त्रादि सिद्ध करना; मोक्षप्राप्ति; धातु शोधन, औषण-निर्माण; ऋण आदिकी प्राप्तिके लिए आरंभ निकालना (स्वव्यवहार); शरीरका कोई अवयव; शिष्टन; धन; सर्पच मैत्री; लाभ; हस्तक सत्कार। -**क्षम-वि०** जिसके लिए प्रमाण हो। -**चतुष्टय-पु०** चार प्रकारके प्रमाण। -**निर्देश-पु०** प्रमाण प्रस्तुत करना (स्वव्यवहार)। -**पत्र-पु०** लिखित प्रमाण। -**हार-वि०** मिद्ध करनेवाला; मिद्ध होने योग्य।

साधनक-पु० [सं०] जरिया, उपकरण।

साधनता-स्त्री०, साधनत्व-पु० [सं०] उद्देश्यपूर्वकता जरिया होने; मिद्ध करनेकी क्रिया; मिद्धकी अवस्था।

साधना-स्त्री० [सं०] कार्य-मिद्धि; आराधना, उपासना; लुप्टीकरण। स० कि० मिद्ध करना, पूरा करना; अभ्यास करना; शुद्ध करना; ठीक करना; इकट्ठा करना; निशाना लगाना; बशमें करना - 'अब लुगि तुमहि न काहु माया' - रामा०; जाँच करना; नापना; प्रमाणित करना; * सहन करना - 'साधे भूखन पिशासन है, नाहनके निदते' - भूषण।

साधनी-स्त्री० जमीन बराबर करनेका लोह या लकड़ीका औजार।

साधनीय-वि० [सं०] सिद्ध करने योग्य; निर्माण करने योग्य (शब्द); प्राप्त करने योग्य (जैसे ज्ञान); प्रमाणित करने योग्य।

साधयत्नी-स्त्री० [सं०] उपासना करनेवाली।

साधयितव्य-वि० [सं०] साधने, सिद्ध करने योग्य।

साधयिता(तु)-पु० [सं०] सिद्ध, पूरा करनेवाला; साधक।

साधयिक-पु० [सं०] समान धर्मका अनुयायी।

साधय्य-पु० [सं०] धर्म, स्वभाव, पद, कर्तव्य आदिके एक या समान होनेका भाव।

साधय्य*-पु० दे० 'साधय्य'।

साधा*-पु० साध, उकटाना - 'साधा तन हेरिय' - धन०।

साधार-वि० [सं०] जिनका आधार हो, जो किसीपर टिका हो।

साधारण-वि० [सं०] निर्विशेष, सामूहिक; स्थान, समान; सामान्य, औकिक; आसान, सरल; मिला-जुला; एकाधिक विषयोंमें सबद्ध, अनैकान्तिक (न्या०); नीचका। पु० एक संवत्सर; वह जो सबमें हो; वह नियम जो सर्वत्र लागू हो; जाति या वर्गका सामान्य धर्म। -**गोधार-पु०** एक विकृत स्वर (संगीत)। -**देश-पु०** मामूली देश; जगह, दलदल आदिवाला देश। -**धर्म-पु०** सबमें पाया जानेवाला धर्म; सार्वजनिक कर्तव्य (अहिंसा, सत्य आदि); प्रजनन-कार्य। -**स्त्री-स्त्री०** देवता।

साधारणतः(तत्त्व)-ज० [सं०] आम तौरपर; प्रायः।

साधारणतया-ज० [सं०] दे० 'साधारणतः'।

साधारणता-स्त्री०, साधारणत्व-पु० [सं०] सामान्य, सार्वजनिक होनेका भाव; सममिलित हित।

साधारणी-स्त्री० [सं०] लाली; बालिका बहन (दहनी)।

साधारणीकरण-पु० [सं०] दे० 'विभाजन' (सा०)।

साधारण्य-पु० [सं०] दे० 'साधारणता'।

साधारित-वि० [सं०] जिसे सहारा दिया गया हो, समर्थित।

साधिका-वि० स्त्री० [सं०] मिद्ध करनेवाली। स्त्री० माद्री नीर।

साधित-वि० [सं०] सिद्ध, पूरा किया हुआ; बसमें किया हुआ; प्रमाणित; प्राप्त; दक्षित; दापित; शोधित (कृपादि); छोड़ा हुआ, वालित (बाण)।

साधिबास-वि० [सं०] सुगंधित।

साधी(विन्)-वि० [सं०] सिद्ध करनेवाला (समासमें)।

साधु-वि० [सं०] बढ़िया, उत्तम; पूर्ण; उपयुक्त, ठीक; धार्मिक, धर्मपरायण; दयालु; शुद्ध; प्रिय; कुलीन; शिष्ट। पु० सच्चा या नेक आदमी; सत; मुनि; जिन; जोहरी।

महाजनी करनेवाला, कुसीदक; व्यापारी; दमनक; बहन बृक्ष। -**कारी(विन्)-वि०** ठीक तरहसे काम करनेवाला, दक्ष, चतुर; उत्तम कार्य करनेवाला। -**कृत-वि०** उचित रूपमें किया हुआ। -**कृत्य-पु०** क्षतिपूर्ति; काम। -**अ-वि०** सदर्शनान। -**जास-वि०** सुदर।

-**दर्शन-वि०** सुदर; विचारणीय। -**दर्शी(सिन्)-वि०** विवेकी। -**देवी-स्त्री०** मास। -**धी-स्त्री०** सदबुद्धि; अच्छा स्वभाव; मास। वि० अच्छे स्वभावका; चतुर।

-**ध्वनि-स्त्री०** साधुवाद। -**पद-पु०** सम्मार्ग। -**पुण्य-पु०** सुदर कृष्ण; लक्षण। -**फल-वि०** अच्छा फल देनेवाला। -**अचन-पु०** कुटी। -**भाव-पु०** अच्छा स्वभाव, दयालुता। -**मत-वि०** मुविचारित। -**वाद-पु०** शाबाशी देना। -**वादी(विन्)-वि०** उचित कहनेवाला; प्रशंसा करनेवाला। -**बाह-पु०** अच्छा सिखलाया हुआ घोड़ा। -**बाही(विन्)-वि०** अच्छी तरह (माफी) सोचनेवाला; अच्छे बोधेवाला। पु० अच्छा घोड़ा।

-**बृक्ष-पु०** कदंब; वरुण वृक्ष। -**बृत्त-वि०** खूब गोला; सदाचारी; अच्छे स्वभावका। पु० सदाचार; ईमानदारी।

-**हृत्ति-स्त्री०** अच्छा पदार्थ; अच्छी कारिका; धर्मानुष्ठान आदि। वि० दे० 'साधुहृत्ति'। -**वेप-वि०** वस्त्राभूषित।

-**शब्द-पु०** साधुवाद, प्रशंसा। -**शील-वि०** धर्मोत्तम। -**शुद्ध-वि०** बहुत मर्दत। -**संसर्ग-पु०** मत्संगति।

—सम्मत-वि० अष्टे व्यक्तियोंको सम्मत् । —साधु-अ० साधारी; धर्म-धर ।

साधु-पु० [सं०] एक नीच जाति; कदब; वरुण वृक्ष ।

साधुता-स्त्री०, साधुत्व-पु० [मं०] मज्जनता; नैकी; सरलता; विष्णुभक्ता, पवित्रता; सचारी ।

साधुसती-स्त्री० [मं०] एक तांत्रिक देवी; वेपितरसौकी एक भेणी ।

साधुसम्मत-वि० [सं०] अपनेको धर्मात्मा माननेवाला ।

साधू-पु० दे० 'साधु' ।

साधूक्त-वि० [मं०] सगुरुओं द्वारा कथित ।

साधुत-पु० [मं०] दुकान; सयूरोका झुंड; छाता; कन्य बोधी ।

साधो-पु० दे० साधु (मशेधनमें) ।

साध्य-वि० [सं०] सिद्ध होने योग्य; पूरा किये जाने योग्य; प्रवीणमें लाये जाने योग्य; मरुल; प्राप्य; प्रमाणित करने योग्य; निष्पाद्य; बशमें करने योग्य; अच्छा करने योग्य (रोग); बन्ध; शोचनीय । पु० एक देवत्व; देवता; एक मन्त्र; सिद्धि; पति; वह जिससे प्रमाणित करना हो; सत्सर्वत ओमोंमेंसे एक (स्वी०); अनुमेय पक्ष । —पक्ष-पु० वह पक्ष जिसे प्रमाणित करना हो (व्यवहार) । —सम्मत-पु० एक तरहका हेतु जिसे प्रमाणित करना पड़े । —साधन-पु० हेतु (न्या०) । —सिद्धि-स्त्री० जिसे करना है उसका सहायन; निष्पत्ति ।

साध्यता-स्त्री० [मं०] शक्यता; (रोगका) अच्छा किये जानेकी क्षितिमें होना ।

साध्यर्थि-पु० [सं०] शिव ।

साध्यवसाना, साध्यवसानिका-स्त्री० [सं०] पूर्वोक्त विषयका अन्य (विषयी)के साथ अवैदधान करानेवाली लक्षणा (ना०) ।

साध्यवसाय-वि० [सं०] जिसका अर्थ ऊपरमें ग्रहण किया जाय (सा०) ।

साध्यवान् (बन्ध)-पु० [सं०] वह पक्ष जिसपर अपना बाध प्रमाणित करनेका भार हो (व्यवहार), वह जिसमें अनुमेय हो ।

साध्यवस-पु० [सं०] क्षोभ, भय, श्रम, धनहाट; बनावटी भय (ना०) । —विष्णुत-वि० अवामिभूत ।

साध्याचार-पु० [सं०] साधुओंका आचार; शिष्टाचार, अद्वैतित कार्य ।

साध्वी-स्त्री० [सं०] पतिव्रता स्त्री०; धर्मपरायणा स्त्री; एक मूल, मेरा ।

सार्नद्-वि० [सं०] आनंदयुक्त, प्रसन्न । पु० मोलह प्रकारके प्रेक्षकोंमेंसे एक; गुच्छवरज; समाधिका एक प्रकार । अ० आनंदपूर्वक, सुखीके साथ ।

सार्नद्वाद्-पु० [सं०] आनंदके उदकेने निकले हुए औष ।

सार्नद्-पु० [सं०] एक तीर्थ ।

सान-पु० पत्थरकी वह चक्री जिसपर उरुरता, कैंची आदिकी भार तेज की जाती है (चढाना, देना, भरना) । † स्त्री० आन । —गुमान-पु० सुराग; निशान; ल्हास; इशारा । मानना-सं० कि० गैहना, मोंहना; दारीक करना, भागी बनाना; लपटना ।

सानक-वि० [सं०] नम्रियुक्त; कृतिका नक्षत्रयुक्त । पु० शाल वृक्षका निवास ।

सानसि-पु० [सं०] मौन, सवर्ण ।

सानाध्य-पु० [सं०] सहायता, मदद ।

सानिका, सानेविका, सानेवी-स्त्री० [सं०] बड़ी ।

सानिवा-पु० [अ०] पर, क्षण ।

सानी-स्त्री० पशुओंका पानीमें माना हुआ चारा; गायीके पहियेमें लगाया जानेवाला मिट्टक; बैनरीके भिन्नाये हुए कई तरहके साधपदार्थ (व्यवह); † सनई । वि० [अ०] दूम्तरा; जोरका; समता करनेवाला ।

सानु-पु० [मं०] पहाडकी चोटी, शृंग; पहाडके ऊपरकी चौरस भूमि; अँसुआ; पहाड; जंगल; सबक; सतह; करारा; छोर, सिरा; मुनि; विश्वा; प्रमत्तन; सूर्य । —अ-पु० प्रपोंढरीक; तुङ्ग वृक्ष । —प्रस्थ-पु० एक बानर । —मानक-पु० प्रपोंढरीक । —रह-वि० पहाडपर उपजानेवाला (जैसे जंगल) ।

सानुकंष-वि० [सं०] दयालु, कोमलचित्त ।

सानुक-वि० [मं०] औ ऊपरकी ओर उठा हो; गर्भिन ।

सानुकूल-वि० [सं०] दे० 'अनुकूल' ।

सानुकूल्य-पु० [सं०] कृपा; न्यायता ।

सानुक्रीश-वि० [सं०] दयालु; करुणाशाल ।

सानुत्र-वि० [सं०] अनुत्र, छोटे भारमें युक्त । पु० दे० 'मानुत्र' ।

सानुनय-वि० [सं०] विनयशाल, टिष्ट । अ० विनय-पूर्वक ।

सानुनासिक-वि० [सं०] जिस (अक्षर)के उच्चारणमें नासिका योग्य हो; नासिके योगमें गाने या बोलनेवाला ।

सानुप्राप्त-वि० [सं०] अनुप्राप्तयुक्त ।

सानुप्लव-वि० [सं०] जो अनुयायियोंके भाध हो ।

सानुर्बध-वि० [सं०] जिसका मन्ध विच्छिन्न न हुआ हो, क्रमबद्ध, परिणामयुक्त; जो अपनी वस्तुओंमें युक्त हो ।

सानुमान् (सव)-पु० [मं०] पर्वत ।

सानुष्टि-पु० [मं०] एक गोत्रप्रवर्तक काष्ठ ।

सानेरमा-वि० [अ०] बनानेवाला, निभानेवाला, मल्ट ।

सान्मत्-पु० [मं०] एक साम ।

सान्मत्त्व-वि० [सं०] प्राकृतिक प्रवृत्ति-सम्बन्ध ।

सान्महानिक-वि० [सं०] कवच-धारण करनेवाला; युद्धार्थ प्रभुत्त होनेके लिए प्रोत्साहित करनेवाला । पु० कवच-धारी मैत्रिक ।

सान्माद्य-पु० [मं०] डबनके काममें आनेवाला अभिमन्त्रित घन, होमके लिए विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ घी ।

—कुंभी-स्त्री० उक्त घी रखनेका मरतवान । —वात्र-पु० साधाय रखनेका वात्र ।

सान्मासिक-पु० [सं०] सन्मासी; वसति ।

सान्माहिक-वि० [सं०] दे० 'साहहानिक' ।

साहित्य-पु० [मं०] सामीप्य; सन्निकटता; मुक्तिका एक प्रकार ।

साहित्यपाठिक-वि० [सं०] अटल, पेचीला, विषम; क्रिदोप-अन्य (विषय रोम) ।

साहित्यपाठिका-स्त्री० [सं०] एक विशेषत्र योनि रोग ।

साम्प्रदायिक-पुं० [सं०] साधु की ओका पुत्र ।

साम्प्रदायिक-वि० [सं०] बानुवंशिक; वंशजों के साथ; संकुल; अर्थगर्भ; समान कार्य करनेवाला ।

सापक्ष-पुं० दे० 'साक्ष' ।

सापक्ष-वि० [सं०] सीत-संबंधी या सीते में उत्पन्न । पुं० नीतौली संज्ञा ।

सापक्ष-पुं० [सं०] नीतौली आपसकी होश या दुश्मनी; शत्रुता ।

सापक्ष-वि० [सं०] सीतेला ।

सापक्ष-पुं० [सं०] सपत्नीभाव, सीतपन; सीतेलापन; सीतका पुत्र; सीतेला भाई; शत्रुता; प्रतिद्वंद्वी, शत्रु ।

सापक्ष-वि० [सं०] प्रतिद्वंद्विता; शत्रुता ।

सापक्ष-वि० [सं०] लज्जित, संकुचित ।

सापन-पुं० एक रोग जिसमें सिरके बाल गिर जाते हैं ।

सापना-सं० क्रि० शाप देना; कोसना । * पुं० स्वप्न- 'सापनेमें बिछुरे हरि हरि हरि हरं हरिनीरग रोवै'-भाबलिक ।

सापना-वि० [सं०] अपवादयुक्त, जिसमें अपवाद हो नके ।

सापाय-वि० [सं०] शत्रु में मिदनेवाला; खनरे में बरा हुआ ।

सापिण्य-पुं० [सं०] सापटना, सापट होनेका भाव ।

सापेक्ष-वि० [सं०] जिसमें किमांकी अपेक्षा हो, जो दूसरे पर अवलंबित हो ।

साप्ततन्त्र-पुं० [सं०] एक प्राचीन भाषिक मंत्रदाय ।

साप्तपद-वि० [सं०] सप्तपदी संबंधी, सप्तपदीपर आधृत । पुं० सप्तपदी; मैत्री, घनिष्ठता ।

साप्तपदी-वि०, पुं० [सं०] दे० 'सामपद' ।

साप्तपुरुष, साप्तपुरुष-वि० [सं०] सात पीढ़ियों तक विस्तृत ।

साप्तमिक-वि० [सं०] सप्तमी तिथि-संबंधी; सप्तम कारक-संबंधी ।

साप्ताहिक-वि० [सं०] सप्ताह-संबंधी; सप्ताहभरका; हर सप्ताह, एक सप्ताहके अन्तरमें होने या निकलनेवाला । पुं० नियत दिनपर हर हफ्ते निकलनेवाला समाचारपत्र ।

साक्ष-वि० [सं०] जिसमें मूल न हो, स्पष्ट, निर्मल, उल्लसल; वैशाल; वैषय, निर्दोष; साक्षि, शुद्ध; पवित्र; स्पष्ट; खुला हुआ; पदने, सुनने, समझनेमें आसान (लिखावट, आवाज); जिसमें मूल, बुराई न हो, बिना छल-कपटका; पक्का, दोढ़का; समतल, बराबर; जिसमें कोई पैच-पाच न हो (बात, मामला); जिसमें मफाई हो (मेजा हुआ) । अ० खुले तौरपर (साफ कहना); पूरे तौरपर (साफ छिपना); मफाईमें, कुशलपूर्वक (उशाना, निकल जाना, ह०); स्पष्ट रूपमें (साफ देखना) । -**हृत्कार**-पुं० स्पष्ट, दोढ़का इनकार । -**गो-वि०** स्पष्टभाषी । -**गोहृ-वि०** स्पष्टवादिता । -**जवाब-पुं०** दोढ़क जवाब । वि० दोढ़क जवाब देनेवाला । -**दिल-वि०** जिसके दिलमें छल-कपट, बे-भराई न हो । -**दीक्षा-वि०** ढीठा; निर्लज्ज । -**बात-वि०** दोढ़क बात । -**साक्ष-अ०** खुले तौरपर, स्पष्टतः ।

मु०-करना-सफाई करना; भोना, मोजना; मछ दूर करना; फिरने छिलना, कटी-कुटी छिस्वावटकी ठीक करके छिलना; समतल, मैदान बनाना (जंगल); विभ-बाधा दूर करना, खोखला (रास्ता); नुकाना, निषादावा (हिंसा); कुछ बाकी न छोड़ना, सब उठा ले जाना (चोरोंमें घर साफ कर दिया); सब खा-पी डालना; मार डालना; सबको खतम कर देना, किसीकी जीवित न छोड़ना (हैजेने घरके घर साफ कर दिये); अन्धास पक्का करना (हाथ साफ करना) । -**कहना-खरी**, बेलाग कहना, सधी बात बिना कुछ बटाये छिपाये कहना; सुलकर, स्पष्ट रूपमें कहना । -**छटना-बेदाग** छटना, निर्दोष सिद्ध होकर रिहाई पाना । -**बचना-बाल-बाल** बचना, तनिक भी आँच न जाना । -**बनना-पाक** माफ बनना, सचाई, माधुनाका ढोंग करना । -**बोखना-उच्चारण** और उहना ठीक होना, शुद्ध प्रवाहके साथ बोलना । -**मैदान पाना-कोई** विभ-बाधा न होना; एकांत मिलना । -**होना-साफ** किया जाना ।

साफ-पुं० [सं०] कलयुक्त होनेका भाव; उपयोगिता; लाभ; सफलता ।

साक्षा-पुं० एक तरहकी पगरी जो कुछ अधिक ऊंची होती है, सुरेठा; वह कपड़ा जो इस काममें लाया जाय ।

-पानी-पुं० (पुरततके साथ) निम्नके पहननेके कपड़ोंमें साबुन लगाकर सुखनेकी डाल देना और फिर नहाना ।

मु०-हैना-शिकारी जानवरोंकी इसलिये भूखा रखना कि वे शिकारपर ज्यादा तेजीसे दृष्टि; कत्तरकी अधिक ऊँचे उड़नेके लिए भूखा रखना ।

साक्षि-वि० [सं०] मफ करनेवाला । पुं० दुबला बोरा ।

साक्षी-वि० छाननेका कपड़ा, खासकर वह कपड़ा जिसमें अंग छाने जाय; गोजेकी चिलमके नीचे लपेटनेका कपड़ा; वह कपड़ा जिससे बाबरची देग आदि पकककर चूल्हेसे उतारते हैं । -**नामा-पुं०** राजीनामा ।

साक्षी-वि० साक्ष ।

साक्ष-पुं० दे० 'साक्ष' ।

साक्ष-पुं० एक मंत्र जो शिवका बनाया माना जाता है; सोमर हिरन या उसका चमड़ा; सेंदुह; मिट्टी आदि खोदनेका स्थानी जैसा एक औजार, सबरी ।

साक्ष-पुं० आका, बरछी, सबरी ।

साक्षी-अ० दे० 'शाबास' ।

साक्ष-वि० [सं०] अस्त-व्यस्त; अस्त-व्यस्त ।

साक्षि-वि० [सं०] पिछला, पीछा हुआ, गत । -**दस्तूर-अ०** पुराने दस्तूर, रीतिके अनुसार, यथापूर्व । -**मे-अ०** अतीतकालमें, पहले ।

साक्षिका-पुं० [सं०] वास्ता, मरोकार; काम (पढ़ना, होना) ।

साक्षि-वि० [सं०] स्थिर; दृढ़; सिद्ध; प्रमाणित; साबूत, अखंड, मजबूत । पुं० अचल तारा । -**क्रद्ध-वि०** दृढ़; वचन, निश्चयपर दृढ़ रहनेवाला । -**क्रद्धी-वि०** साक्षि-वि० ।

सावि-वि० [अ०] सत्र करनेवाला, सत्रन करनेवाला ।
साधु-पु० दे० 'साधु' ।
साधुनामा-पु० दे० 'साधुनामा' ।
साधु-वि० अर्द्ध, समूह ।
साधु-पु० [अ०] कास्टिक सोडा, सजी, तेल आदिके योगसे प्रस्तुत एक प्रसाधन जिसे पानीमें रगड़नेसे फेन निकलता और खरी, कपड़े आदि साफ करनेके काम आता है । -**साधु-खी-खी** साधु बनानेका धवा । -**का** **साधु-साधु** काटनेका तार; (का०) अक्षि, अनासक ।
साधु-खी-खी [सं०] द्राक्षा, दाख ।
साम-अ० [सं०] आमारके साथ, एहसान प्रकट करते हुए ।
सामिप्राध-वि० [सं०] अभिप्राययुक्त; विशेष अर्थयुक्त; अपने निश्चयपर दृढ़; विशेष प्रयोजनवाला ।
सामिमान-वि० [सं०] गर्वीला, घमडी । अ० घमडके साथ ।
साम्य-वि० [सं०] ईर्ष्यालु, डाह करनेवाला । अ० ईर्ष्या; ईषपूर्वक ।
सामंजस-पु० [सं०] औचित्य; संगति; अनुकूलता; उपयुक्तता; विरोध, विभक्तता न होना, मेल ।
सामंज-वि० [सं०] सीमावर्ती, पड़ोसी; सार्वभौम । पु० पड़ोसी; पड़ोसका राजा; कर देनेवाला राजा; मांडलिक, बहा जमींदार; योद्धा; नायक; पड़ोस । -**पड़ोस** पड़ोसके राजाओंका मंडल । -**ज-वि०** करद नरेशमें उपपन्न (सुतरा) । -**भारती-खी** एक मिम राग । -**बासी(सिन्धु)** -वि० सीमापर रहनेवाला । पु० पड़ोसी । -**सारंग-**पु० सारंग रागका एक मंद ।
सामंती-खी -खी सामंतीकी शक्ति, पद; [सं०] एक रागिनी ।
सामंतिव-पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि ।
सामंतेवर-पु० [सं०] सम्राट्, राजेश्वर ।
साम-पु० एशियाका एक देश, स्वाम । [अ०] नूहका बड़ा बेटा (अरब, यहूदी, मिस्री आदि इसीकी सत्तान माने जाते हैं) । वि० [सं०] जो अच्छी तरह पचा न हो; * श्याम, काले रंगका - 'जमुना साम भई तेहि शारा' - प० । † **खी** दे० 'शाम'; शामी ।
साम(रु) -पु० [सं०] चार वेदोंमेंसे एक; वेदके गेय मंत्र; स्तुतिमंत्र; श्रांत करना; दृष्ट करना; राजाके चार उपायोंमें एक (कह-सुनकर अपनी ओर कर लेना); मधुर बचन; कौमलता, नरमीयत्त । -**कारी(सिन्धु)** -वि० दादरु वैधानेवाला, श्रांत करनेवाला; मधुरभाषी । पु० सामका निर्माता; एक तरहका सामगान । -**ग-**पु० सामवेदी ब्राह्मण; विष्णु । -**गर्थ-**पु० विष्णु । -**गान-**पु० सामका गायक; सामका गान । -० **प्रिय-**पु० शिव । -**गाय-**गीत-पु० सामका गान । -**गायक-**पु० सामवेदी ब्राह्मण । -**गाथी(सिन्धु)** -वि०, पु० साम गानेवाला । -**ज-**जात-वि० सामसे उत्पन्न; साम उपायमें उत्पन्न । पु० हाथी । -**जय-**पु० सौंद, इरें और मिलायका ममाहार । -**जय-खी** सामगानकी ध्वनि । -**निचन-**पु० सामका प्रतिम बाव । -**बोवि-**वि० साममें उपाय । पु० हाथी; ब्रह्मा । -**प्रयोग-**पु०

मीठे भोज्योंका प्रयोग । -**बाध-**पु० मीठे बचन ।
-विद्-वि० सामवेदका शास्त्रा । -**विम-**पु० सामगान करनेवाला ब्राह्मण । -**वेद-**पु० तीसरा वेद । -**वेदी(सिन्धु)** -पु० सामवेद जाननेवाला ब्राह्मण । -**ब्रह्मा(वस्)** -पु० साधुवस्त्रका एक विष्णु । -**साध-**वि० जो मेलमें सिद्ध किया जा सके । -**साखी-वि०**, पु० राजनीतिज्ञ । -**सावित्री-खी** एक सावित्री मंत्र ।
सामक-पु० मूर्त; [सं०] मूल धन; साम नदानीका पत्थर । वि० सामवेद-सम्बन्धी ।
सामग्री-खी [सं०] आवश्यक वस्तुओंका समूह, सामान, माल-असबाध; प्रयोजन-सम्बन्धी वस्तुएँ, उपकरण; साधन ।
सामग्र्य-पु० [सं०] समुदायत्व; संपूर्णता; ओजार; संभार, कोष; दलबल; माल-असबाध ।
सामत-खी-खी शासत, विगति, बदकिस्मती । पु० सामत ।
सामय-पु० समयियोंका आपसमें मिलना (एक रस) - 'सामय देखि देव अनुरागे' - रामा ।
सामना-पु० मुकाबला; भेंट; लड़ाई, मिशन, मुठभेड़; किसी चीजका अगला हिस्सा, मोहरा; उपलासी, घृष्टता ।
सामनी-खी [सं०] पशुओंकी बाँधनेकी रस्ती ।
सामने-अ० आगे; मुकाबलेमें; रुबरु; मौजूदगीमें; सीधे ।
मु० -**आना-**मुकाबलेमें आना; रुबरु होना; मुँह दिखाना; दिखाई देना । -**करना-**मुकाबलेमें लामा, पेश करना; आगे करना । -**का-**भागका, मौजूदगीका, अपना देखा हुआ । -**की चोट-खुनी** दुई चोट । -**की बात-**मौजूदगीका हाल । -**पड़ना-**रोककर खड़ा होना, मथोगमें मिल जाना । -**से उठ आना-**मौजूदगीमें न रहना, घर जाना । -**होना-**रुबरु होना; परदा न करना; मुकाबला करना; लड़नेकी तैयारी होना; घृष्टतापूर्वक बर्ताव करना ।
सामन्य-पु० [सं०] सामवेदी ब्राह्मण, सामगानमें कुशल शक्ति । वि० सामगानमें कुशल; सैमीपण, अनुकूल ।
सामयिक-वि० [सं०] समयोचित, समयके विचारमें उपयुक्त; समय-सम्बन्धी; वर्तमानकाल सम्बन्धी, एकमत; जो ठहरावके मुनाबिक हो; ठीक समयपर होनेवाला; अस्थायी; नियत समयपर होनेवाला । -**पत्र-**पु० नियत समयपर प्रकाशित होनेवाले पत्र या पत्रिकाएँ; मुकदमेकी शामिल पैरवीके लिए (बहुतेका) लिखा जानेवाला इकरारनामा ।
सामर-पु० समर । * वि० श्याम रंगका; [सं०] देवयुक्त समर-सम्बन्धी ।
सामरथी-खी दे० 'सामर्थ्य' ।
सामरिक-वि० [सं०] युद्ध-सम्बन्धी; समरका ।
सामरिकता-खी [सं०] युद्धकायोंमें लड़न रहना, लड़ाई-मिर्बाई ।
सामरेव-वि० [सं०] समर-सम्बन्धी ।
सामर्थ्य-पु० [सं०] सत्ती; सत्तापन ।
सामर्थी-खी दे० 'सामर्थ्य' ।
सामर्थी-वि० शक्तिमान्, सामर्थ्ययुक्त, बलवान्, पराक्रमी-काय करनेकी शक्ति रखनेवाला ।
सामर्थ्य-पु०, खी [सं०] शक्ति, बल, क्षमता; उद्देश्य की ममानता; भावकी ममानता; उपयुक्तता, औचित्य-

ग्रन्थकी अर्थशक्ति; लाभ; धन । -हीन-वि० अकिहीन, निर्बल ।

सामवायिक-वि० [स०] समूह, दल-संघी; अंगभ सवध-विषयक । पु० संघी; दलका प्रधान । -राज्य-पु० बुद्ध-अयमे आत्मरक्षाधर्मै मयी करनेवाला राज्य (की०) ।

सामस्त-पु० [सं०] सम्भरचलाका सिद्धांत । * वि० दे० 'समान' ।

सामस्त्य-पु० [सं०] समग्रता, संपूर्णता ।

सामहि, सामहि-अ० सामने, समक्ष ।

सामी, सामा-पु० [सं०] मीर्वा; मामान । स्त्री० दौल, प्रबध ।

सामीय-पु० [सं०] सामवेदका अंग ।

सामाजिक-वि० [सं०] समाज-सम्बन्धी; समाजसे सर्वध रखनेवाला; सहृदय । पु० मन्दय; द्रोक्त ।

सामान-पु० [फा०] असबाब, चीज-वस्तु; किन्नी कार्यके लिए आवश्यक, माधनरूप वस्तुएँ, सामग्री । - (ने) खंग-पु० बुद्ध-नामग्री, हरबा-विवार । -सक्र-पु० यात्राके लिए आवश्यक वस्तुएँ । **मु०-करना-नैवारी करना**, आवश्यक चीजें जुटाना । -**बनना-मामान होना**, प्रबध या नैवारी होना ।

सामानग्रामिक-वि० [सं०] एक गाँवका रहनेवाला ।

सामानदान-पु० [फा०] (मीटर आदिमें फीटकी ओर बनी) मामान रखनेकी जगह ।

सामानदेशिक-वि० [सं०] एक गाँवसे मसह ।

सामानाधिकरण्य-पु० [सं०] समान स्थितिमें होना; समान पद या कार्य; एक ही कर्मसे सबध होनेकी स्थिति या एक ही कारकमें होना (व्या०) ।

सामानिक-वि० [सं०] जो पदमें किमकी समान हो ।

सामान्य-वि० [सं०] माधारण, मामूली; समान; औसत दरनेका; तुच्छ, अदना, महत्त्वहीन; सपूर्ण, समग्र । पु० माध्य, समानता; मानमिक साम्य; मध्यकी अवस्था, माव्योमता; समग्रता, संपूर्णता; सर्वमें पाया जानेवाला गुण या चिह्न; सार्वजनिक कार्य; प्रकार, भेद अनुरूपता, माधारण कथन या मित्रात; एक अर्थात्कार जहाँ दी या अधिक वस्तुओंका पृथक अस्तित्व होत हुए भी एकरूपता, समानता आदिके कारण भेद न जान पड़े । -**छल्ल-पु०** वाक्छल्लका एक भेद (प्रतिपादीके कथनकी बहुत व्यापक बना देना) । -**ज्वर-पु०** मामूली हुसर ।

-**ज्ञान-पु०** सामान्य या माधारण धर्मका ज्ञान, लोक, विषयक साधारण बातोंका ज्ञान । -**मायिका-स्त्री०** दे० 'सामान्यवृत्ति' । -**पक्ष-पु०** मध्य स्थिति । -**अविष्य-पु०** अविष्यत् कालका एक भेद जिसमें अविष्यमें होनेवाली क्रियाका साधारण रूप रहता है (व्या०) ।

-**भूत-पु०** भूत कालका एक भेद जिसमें भूतकालकी क्रियाका साधारण रूप रहता है, कोई विशेषता नहीं होती (व्या०) । -**कक्ष-पु०** वह चिह्न जो जातिभर-में पाया जाय । -**लक्षणा-स्त्री०** तीन अलौकिकों (सन्नि-कषों)मेंसे एक (व्या०) । -**बचन-वि०** सामान्य धर्मका शेषक । पु० वस्तुवाचक शब्द । -**वृत्ति-स्त्री०** वैश्या । -**वर्तमान-पु०** वर्तमान कालका एक भेद जिसमें क्रियाका वर्तमान कालमें होना दिखलाया जाता है (व्या०) ।

-**विधि-स्त्री०** आदेशका साधारण रूप जिसमें कोई विशेष बात, अपवाद आदि न हो । -**साम्य-पु०** सामान्य अधिकार; साधारण राजाहा, निर्देश ।

सामान्यतः(तस्य), सामान्यतया-अ० [सं०] साधारणतः; आम, मामूली तीरसे ।

सामान्यतोष्ट-पु० [सं०] एक तरहका अनुमान जो न तो कारणसे कार्यके रूपमें निकाला गया हो और न कार्यमें कारणके रूपमें; कार्य-कारण-संबन्धसे मिक साधर्म्य ।

सामान्या-स्त्री० [सं०] वारागना, वैश्या ।

सामाविक-पु० [सं०] मभपर समान भाव रखते हुए एकांतमें आत्मन्तितन करना (त्रै०) । वि० मायामय, मावायुक्त ।

सामाधय-पु० [सं०] वह मकान जिसके पश्चिम ओर मार्ग हो ।

सामासिक-वि० [सं०] सामूहिक; सक्षिप्त, समास-संबन्धी (व्या०); मिश्रित । पु० समस्त पद ।

सामि-स्त्री० [सं०] निंदा । अ० समग्रसे पहले, अग्रो अवस्थामें; अशतः । -**कृत-वि०** जो अशतः किया गया हो । -**पीत-वि०** आभा पिया हुआ । -**भुक्त-वि०** आभा खाया हुआ । -**संस्थित-वि०** अर्द्धकृत ।

सामिक-पु० [सं०] बलिपशुकी अभिममित करना; हृष्ट ।

सामित-वि० [सं०] गेहूँका आटा मिलाया हुआ; गेहूँके आटेका बना हुआ ।

सामित्य-पु० [सं०] समितिका भाव । वि० समिति-संबन्धी ।

सामिधेन-वि० [सं०] यक्षान्ति-सम्बन्धी; यक्षकी अग्नि जलानेसे सबध रखनेवाला ।

सामिधेनी-स्त्री० [सं०] यथाग्नि जलाने या उसमें समित् टालनेका एक मंत्र; समित् ।

सामिधेन्य-वि० [सं०] दे० 'सामिधेन' ।

सामिधाना-पु० दे० 'सामिधाना' ।

सामिली-वि० दे० 'शामिल' ।

सामिध-वि० [सं०] मासयुक्त । -**श्राद्ध-पु०** वह श्राद्ध त्रिममें मासका उपयोग हो ।

सामी-पु० दे० 'सामी' । † स्त्री० छकी या औजार आदिकी रक्षाके लिए उसपर पहनाया जानेवाला लोहे, धोतल आदिका छला ।

सामीची-स्त्री० [सं०] बदना, स्तुति; मन्त्रता, शिष्टता । -**करणीय-वि०** मन्त्रता-पूर्वक अभिवादन करने योग्य ।

सामीचीन्य-पु० [सं०] औचित्य, उपयुक्तता ।

सामीप्य-पु० [सं०] निकटता, समीपता; पक्षोस; मुक्तिका एक भेद; पक्षोसी ।

सामीरण, सामीर्य-वि० [सं०] समीर-सम्बन्धी ।

सामुक्षि-स्त्री० दे० 'समक्ष' ।

सामुदायिक-वि० [सं०] समुदाय-सम्बन्धी; सामूहिक । पु० जन्मके समय चद्रमा त्रिम नक्षत्रमें होँ उससे अठारहवाँ नक्षत्र ।

सामुद्र-पु० [सं०] खातयुक्त संधि (जैसे कक्ष आदि); खानेके पहले और पीछे खाया जानेवाली दवा ।

सामुद्र-वि० [सं०] समुद्रजन्य; समुद्र-सम्बन्धी । पु० नाविक; मासुद्रिक व्यापार करनेवाला; कर्ण और वैश्यासे

उत्पन्न संतान; एक तरहका मच्छर; समुद्रलवण; समुद्र-फेन; देहविह्व; मारियल; एक विशेष ममयकी वर्षाका-जन। -**ज-वि०** दे० 'सामुद्रविह्व'। -**विष्णुट**-पु० समुद्रतटवामी; एक जनपद। -**बंभु**-पु० चंद्रमा। -**विह्व**-वि० देहविह्वोका शाता। -**स्थलक**-पु० समुद्रके पामका भूभाग।

सामुद्रिक-पु० [सं०] समुद्रलवण; देहविह्वोके शुभाशुभ होनेका विचार करनेवाला ग्रंथ या व्यक्ति।

सामुद्रिक-वि० [सं०] देहविह्व संबंधी; समुद्रजन्य। पु० सामुद्रिक; वह विषा जिनके सहारे देह चिकोका ज्ञान प्राप्त किया जाता है; साविक।

सामुह्यो-अ० सामने।

सामुह्य-अ० सामने।

सामुना-खी० [सं०] एक तरहका काला हिरन जो लगभग देड़ हाथ लंबा होता है।

सामुहिक-वि० [सं०] समूह-संबंधी; समूहमें एकत्र; पक्षितक।

सामुद्राय-पु० [सं०] अभ्युदय, उत्पत्ति; वैभव।

सामोद्-वि० [सं०] आनंदयुक्त, प्रसन्न; सुगन्धि। अ० आमोदपूर्वक।

सामोद्भव-पु० [सं०] बाधो।

सामोषकार, सामोषाध-पु० [सं०] नरम उपाय काममें लाना।

सामोपनिषद्-खी० [सं०] एक उपनिषद्।

साम्न-वि० [सं०] साम-मन्त्रोंसे संबंध रखनेवाला।

साम्नी-खी० [सं०] छकका एक भेद; पशुओंकी बांधनेकी रस्ती।

साम्मन्थ-पु० [सं०] सहमति, सम्मत होनेका भाव।

सामुखी-खी० [सं०] सायंकालतक रहनेवाली तिथि।

सामुल्लूख-पु० [मं०] उपस्थिति, विद्यमानता, अनुग्रह, कृपा; देखभाल।

साम्य-पु० [सं०] माद्वय, समानता; सामजस्य; उदा-नीनता, निष्पक्षता; बहिकोणकी एकरूपता। -**संज्ञ**-पु० साम्यवादके सिद्धांतानुसार चलनेवाली शासन-प्रणाली। -**वाद**-पु० मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धांत जिसका उद्देश्य ऐसे वर्गहीन समाजकी स्थापना है जिसमें संपत्तिपर समाजका समान अधिकार हो और व्यक्तिसे शक्तिपर काम लेकर उसकी मारी आवश्यकताएं पूर्ण की जाय। -**वादी (दिश)**-वि० साम्यवादका सिद्धांत माननेवाला।

साम्बावस्था-खी०, **साम्बावस्थान**-पु० [सं०] प्रकृतिके तीनों गुणों-सत्व, रज और तम-की समावस्था।

साम्राज्य-पु० [सं०] सार्वभौम सत्ता; पूर्ण प्रभुता; आधिपत्य; प्राधान्य; बाहुल्य; शासनाधीन बहुत बड़ा क्षेत्र जिसमें कई देश हों। -**कृत**-वि० साम्राज्यका शासन करनेवाला। -**लक्ष्मी**-खी० साम्राज्यकी अधिष्ठात्री देवी (तं०)। -**वाद**-पु० एक राष्ट्रका दूसरेकी अधिकारमें लंकार करते अपने हितका साधन बनानेका सिद्धांत। -**वादी (दिश)**-वि० साम्राज्यवादका अनुयायी।

साम्राजिकर्तव्य-पु० [सं०] जवाबि नामक गणद्वय।

साम्राजिज-पु० [सं०] महापारेवत।

साम्बना-पु० दे० 'भामना'।

साम्बेनो-अ० दे० 'सामने'।

साम्बरी-पु० दे० 'सामर'।

सार्च-'मायर्च'का समासगत रूप। -**काल**-पु० शामका वक्त। अ० शामके वक्त। -**कालिक**-**कालीय**-वि० सध्याकाल-संबंधी। -**गृह**-वि० जहाँ मध्याह्न दो बजे घर बना लेने, ठहर जानेवाला। -**क्षति**-खी० सायंकालका होम। -**निवास**-पु० सायंकालका विश्रामगृह।

-**पोष**-पु० भ्याह्न। -**प्रातः (तस्)**-अ० सुबह शाम। -**भोजन**-पु० भ्याह्न। -**संध्या**-खी० गोपूजि, मद्र प्रकाश; सायंकालीन उपामना; वह देवी जिसकी उपामना संध्यासमय की जाय। -**देवता**-खी० मरखनी।

-**होम**-पु० सध्या समय किया जानेवाला होम।

सायंतन-वि० [सं०] सायंकाल-संबंधी। -**महिका**-खी० शामकी किलनेवाली चमेकी। -**समय**-पु० मायकाल।

सायंस-पु० दे० 'साहन'।

साय-पु० [मं०] अन्न, समासि, अवमान; दिनका अन्न-मान, मध्याह्न; बाण।

सायक-पु० [मं०] बाण; स्रह; पौचकी सख्या (कामदेवके पौच बाणोंने); आकाशका विस्तार; गमशर; एक हस्त, * मायकाल। -**पुंख**-पु० बाणका पतवाला भाग।

-**पुंखा**-खी० शरपुखा, मरकीका।

सायण-पु० [सं०] वैशाखी चैतन्यी शानाश्वीके एक धर्म मित्र विद्वान् जिन्होंने वेदोंका भाग किया (ये सायणके पुत्र और विष्णु मंत्रा तथा अक्षरानन्दके शिष्य थे)।

-**वाद**-पु० आचार्य सायण द्वारा प्रवर्तित मत।

सायणीय-वि० [मं०] सायण संबंधी। प० सायणजन ग्रव।

सायत-खी० दे० 'सायन'।

सायन-पु० दे० 'सायण'। वि० [मं०] अयनाद अथाः क्रांतवृत्त और नाडीवृत्तोंके समानमे वृत्त (मूल्यकी स्थिति)।

सायबान-पु० [फा०] वह छपर या कपडा आदिका परदा जो घूंघ या वषामे बचावके लिए मकान या क्षीमेके आगे लगा किया गया हो।

सायम-वि० [अ०] गेता रहनेवाला।

सायमधिषाय-पु० [मं०] आदिश्वन-शुक्रा पंचमीको किया जानेवाला दुगोंका श्रृंगार।

सायमदान, सायमाज्ञा-पु० [मं०] सायंकालका भोजन।

सायमाहुति-खी० [मं०] सायंकालीन होम।

सायम्-अ० [मं०] मध्याह्न समय, शामके वक्त। -**अंजन**-पु० स्नान; स्नान। -**अंज**-पु० सायंकाल प्रयुक्त होनेवाला मंत्र।

सायर्-पु० सागर-'नैन नीर मय सायर् भरे'-प०; पटेला, हेया। वि० [अ०] मीर करनेवाला, भ्रमणकारी; अनियत, अस्थायी। पु० महल, सुगी। -**स्रव्य**-पु० ऊटकर खने, अनिश्चित, असाधारण खन।

सायल-वि०, पु० [अ०] सवाल करनेवाला; चाहनेवाला; प्रार्थी, अर्थां देनेवाला; वाचना करनेवाला।

साया-पु० माकीके नीचे पहननेकी चौकरी जैसी एक

पेशाका: [का०] छाया, छाँह; परछाई; (का०) आश्रय, संरक्षण; सुहृवतका अमर; जिन, परीकी सवारी, प्रेतवाधा; चित्र या फोटोका छाया दिखानेवाला भाग । -**दार-**वि० छायायुक्त, छाँहवाला । **सु०-उठना-संरक्षक** मर जाना । -**उठरना-छायाका कपरसे नीचे आना;** प्रेतवाधा दूर होना । -**पड़ना-छाँह पड़ना;** सुहृवतका असर होना । -**होना-जिन, परीका असर, प्रेतवाधा होना ।** -**(ये)की तरह साथ या साथ-साथ फिरना, होना-हर वक्त साथ ल्यो रहना, छनभरके लिए सी बिलग न होना ।** -**मैं आना-जिन, परी आदिका भ्रमर पड़ जाना, प्रेतवाधा होना ।** -**मे बचकर चलना-बहुत दूर रहना, अमर न पड़ने देना ।** -**से भागना-भयकना; सामीप्यसे डरना; सफरत करना ।**

सायबाह-पु० [सं०] मध्या, शाम ।

सायिका-खी० [सं०] क्रमस्थिति; कटाज ।

सायी(विष्)-पु० [सं०] अशारीही ।

सायुज्य-पु० [सं०] प्रेमा सयोग जिसमें कोई भेद न रहे, एकमें मिल जाना, एकत्व; मुक्तिका एक भेद जिसमें जीवात्मा परमात्मासे लीन हो जाना है; एकरूपता, साहचर्य ।

मारंग-वि० [सं०] नानावर्ण, रवेवाला, रजित; * सुंदर, मर्म । **पु०** विभिन्न वर्ण; विजयगुण; युग-‘मारंग प्रीति करी तो नादसौं सनमुख बान मधो’-सूर; मिह; हाथी; अमर; कौयल; खजुर; लवा पक्षी; मयूर; राजहम; चातक; मधुमक्खी; एक वृक्ष; एक राग; बादल; वृक्ष; छाया; बन्ध; बाल; शंख; शिब; कामदेव; पृथ्वी; कमल; कपूर; धनुष; विष्णुका धनुष; चंदन; एक वाद्य, मारंगी; आनुपण-मुवर्ण; पृथ्वी; रात्रि; प्रकाश; शीति; शोभा; रत्न; शय; सरोवर; समुद्र, जल; कपोत; स्तन; वायम, हाथ-नक्षत्र; हल; मेढक; आकाश; अजन; बिछल; मर्प; चंद्रमा । -**चर-पु०** शीशा (?) । -**ज-पु०** हिरन । -**रहरी-वि०** खी० वृगनयनी । -**नट-पु०** एक मकर राग । -**नाथ-पु०** मारनाथका प्राचीन नाम । -**पाणि-पु०** विष्णु । -**पानिध-पु०** विष्णु । -**कोचना-वि०** खी० वृगनयनी । -**साबल-वि०** चित्र-विचित्र (अश्व) । -**हर-पु०** शार्ङ्गधर, विष्णु । -**हार-पु०** योगिवीका एक भेद ।

मारंग-खी० एक ही लकड़ीकी बनी हुई डोंगी; एक तरहकी बड़ी नाव; एक रागिनी ।

मारंग-वि० खी० [सं०] वृगनयनी ।

मारंगिक-पु० [सं०] बरेलिया, चिरीमार; एक वर्णवृत्त ।

मारंगिका-खी० [सं०] सारंगिक, बरेलियेकी खी; मारंगी ।

मारंगिबा-पु० मारंगी बजानेवाला ।

मारंगी-खी० [सं०] एक प्रसिद्ध तबला; चित्रमृग; एक वृत्त; एक रागिनी ।

मारंग-पु० [सं०] मौषका अंश ।

मारंग-पु० [सं०] क्रीडपूर्ण बालांग, गरमागरम रहस ।

मार-वि० [सं०] मुख्य; सर्वोत्तम; वास्तविक; हठ; शक्ति-शाली; पूर्णतः प्रमाणित; दूर बरनेवाला, नाशक; जिसमें

आरे हों । **पु०** मूल भाग; सत; मज्जा; मृदा; यथार्थ भाग; मथितार्थ; निर्यास, गोंद; शक्ति, बल; शौर्य; साहस; दृढ़ता; संपत्ति; अमृत; ताजा मक्खन; बाहु; सादो; रोग; पुण्य; श्रेष्ठता; शतरज्जा मोहरा; पौना; वनशाय; हृदय; जल; उपयुक्तता; औचित्य; जंगल; हस्पात, लोहा-‘मुए चामकी सोंते मार मम हो जाय’; अस्थि, मज्जा आदि शरीरज्य आठ (कुछके मतसे नार) पदार्थ; मूत्र, महश्च; गोबर; गोशाला; नतीजा, फल; दुहनेके बाद तुरत औठा हुआ दूध; चिरीजीका पेश; अनारका वृक्ष; अंग, काढा; नीयका पौधा; गमन, गति; विस्तार, फैलाव; एक वृत्त; एक अर्थालंकार जहाँ वर्णित वस्तुओंका चर-रोच उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाया जाय; † साला; * मैमाल, मेवा-‘करिहै मास समुद्र सम सारा’-रामानुज; इतिवार; शय्य; धैर्य-‘... कपि की पुकार कोज भरत न मार है’-भू०; शय्या; मैना । * खी० संदेश, खबर-‘मलकत छोड़ि चले मधुबनको फिरिके लई न मार’-भू०; होश-हवाम । -**खदिर-पु०** एक तरहका फल । -**गंध-पु०** चंदन । -**ग-वि०** छट-पुष्ट, बलवान् । -**गर्भ-गर्भित-वि०** तत्त्वपूर्ण । -**गात्र-वि०** सबल अंगोंवाला । -**गुण-पु०** मुख्य गुण या धर्म । -**ग्राही(हिन्)-वि०** किसी वस्तुका मुख्य तत्त्व ग्रहण करनेवाला । -**ग्रीष्-पु०** शिव । -**ज-पु०** नवनीत । -**नंदुल-पु०** बोधा उबाला हुआ मांस चावल । -**तर-पु०** फेंकना पेश । -**दुर्ग(सिन्)-वि०** अच्छी या तत्त्वकी बातें देखने-ममग्रनेवाला । -**दा-खी०** मरस्वती; दुर्गा । **वि०** खी० मार देनेवाली । -**सुंदरी-खी०** दुर्गा । -**दार-पु०** वह लकड़ी जो कभी ही या जिसमें हीर उवादा हो । -**हुम-पु०** अधिक हीर या कड़ी लकड़ीवाला वृक्ष; खदिर वृक्ष । -**घाता(ग)-पु०** शिव । -**घाम्य-पु०** बड़िया चावल; अच्छा अन्न । -**पत्र-वि०** कड़ी पत्तियोंवाला (वृक्ष) । -**पद-पु०** विश्विकी ज. तिका एक पक्षी । -**पर्णी-खी०** शालपर्णी । -**पाक-पु०** एक विधेय फल । -**पाक्व-पु०** भामन वृक्ष । -**फल-पु०** जंबीरी नीबू । -**बंघका-खी०** मैथी । -**अंश-पु०** शक्तिका नाश । **वि०** शक्तिरहित । -**भोड-पु०** बहुमूल्य व्यापारिक वस्तुएँ; अङ्गुलिम पात्र (जैसे वृगनाभि); कोश खजाना । -**भुक्(ज)-वि०** किसी वस्तुका मुख्य भाग खा जानेवाला । **पु०** अग्नि (लोहा खा जानेके कारण) । -**भुत-वि०** जो सर्वश्रेष्ठ हो, सर्वोत्तम । **पु०** मुख्य या सर्वश्रेष्ठ वस्तु । -**भुत-वि०** सर्वोत्तम पदार्थ होने या चुन लेनेवाला । -**भंडूक-पु०** एक तरहका मेढक । -**महन्-वि०** बहुत अत्यवान् । -**मार्गण-पु०** तत्त्व ढूँढना; मज्जाको तलाश करना । -**मिति-पु०** वेद । -**मुषिका-खी०** देवशाली । -**मोघ-वि०** अच्छे बोझानोंसे युक्त । -**रूप-वि०** भवोत्तम, मुख्य । -**खोह-पु०** हस्पात । -**वर्ग-पु०** वे वृक्ष जिनमें निर्यास निकलता है । -**वर्जित-वि०** निःशार; नीरस । -**वस्तु-खी०** मूलवान् या महत्त्वपूर्ण वस्तु । -**विद्व-वि०** किसी चीजका मुख्य या तत्त्व जाननेवाला । -**शस्य-पु०** इवेत खदिर । -**शून्ध-**

वि० निःसारः निकम्मा । - सैष्व-पु० सेवा नमक ।
 सार-प्र० [फ०] (संशयपक्षे युक्त होकर विशेषण बनाता है) मिलता-जुलता, समस्त (आकसार) ; भरा हुआ, प्रचुर (कोहसार) ; स्थान (नमकसार) ; रखनेवाला, मासिक (समसार) । पु० छंद । - बार-पु० उँटहारा ।
 सारा-श्री० शाला; पशुशाला, ढोर भौंपनेकी जगह- 'पशुओंको सारमें बौंपनेकेबाद उन्होंने सारा हटात सुनाया' -शृंग० । पु० बख ।
 सारक-वि० [सं०] विरेचक, दस्तावर; पूर्ण । पु० त्रयपाल, जमालगोदा ।
 सारक्षा-वि० लुब्ध, समान ।
 सारध-पु० [सं०] मधु ।
 सारजेंट-पु० [ज०] मुखसवार सिपाहियोंका जमादार ।
 सारज-वि० [सं०] चकाने या बहानेवाला; फटा हुआ; (जिनके सिरपर बालोंके पाँच गुच्छे हों) । पु० एक गंधद्रव्य; अतीसार; आक्रांतक हृक्ष, अमबा; भद्रपला; गंधप्रसारिणी; रावणका एक मंत्री; कृष्णका एक भाई; घरकी ओर ले चलना; मट्टा (जिसमें चतुर्धास जल हो) ।
 सारजा-श्री० [सं०] पारे आदिका एक तरहका संस्कार ।
 सारणि-श्री० [सं०] छोटी नदी; थारा; प्रणाली; धानीका नल; प्रसारिणी; पुनर्नवा ।
 सारणिक-पु० [सं०] पथिक, यात्री । वि० यात्रा करने-वाला । - झ-पु० जुटेरा, डाकू ।
 सारणी-श्री० [सं०] प्रसारिणी; क्षुद्र नदी; जल-प्रणाली; तालिका; प्रहयनि बतलानेवाला ग्रंथ ।
 सारणेया-पु० [सं०] एक पर्वत ।
 सारसः(सस्य)-अ० [सं०] बनके अनुसार; जोर लगाकर ।
 सारयि-पु० [सं०] रथ चलावेवाला, सूत; नायक; सागर; सभुद्र; साक्षी, सहायक ।
 सारथ्य-पु० [सं०] रथचालन, रथ हाँकना; सवारी साहाय्य ।
 सारथ-श्री० दे० 'शारदा' । वि० दे० 'शारद' ।
 सारदी-श्री० [सं०] जलपीयल । * वि० शारदीय ।
 सारवृक्ष-पु० दे० 'शार्दू' ।
 सारवा-स० कि० दूर करना, निकालना; पोछना, साफ करना; पूरा करना- 'पर उपकारी सब जीवनके माते काब'-सुंद०; लगाना; काटना- 'जानहि राम तिलक नेहि सारा'-रामा०; दुस्त करना; सँभालना; सुन्दर बनाना, चकाना ।
 सारवाथ-पु० बनारसके उत्तर-पूर्व, लगभग तीन मील-पर स्थित एक स्थान जो सैद्धोंका प्रसिद्ध तीर्थ है ।
 सारमादा-पु० दे० 'आरमादा' ।
 सारमेघ-पु० [सं०] सरमाक्षी संतान, कुचा (विशेषकर बमके चार ओँखोंवाले दो कुचोंमेंसे एक); शफलका एक पुत्र, अमरका भाई । - गणाधिप-पु० कुंभर । - चिकित्सा-श्री० कुचेके काटनेका उपचार ।
 सारमेघाद्य-पु० [सं०] कुचेका यौवन; एक नरक (जिसमें पापियोंकी बमके कुचे जा जाते हैं) ।
 सारमेघी-श्री० [सं०] कुनिवा ।
 सारस्य-पु० [सं०] सरलता; सचाई, ईमानदारी ।

सारस-वि० [सं०] सरसू नदी-संबंधी ।
 सारसती-श्री० [सं०] एक वृत्त; समाधिका एक प्रकार । वि० श्री० दे० 'सारवान्' ।
 सारवान्(वस्य)-वि० [सं०] कठिन, दोस्त; धृद, मजबूत; पोषक; मूल्यवान् ; रसदार; जिसमेंसे निवास निकले; उपजाऊ ।
 सारसव-पु० [सं०] कमरबंद, करपनी; फौजी कमरपट्टी; उरकाण ।
 सारस-वि० [सं०] गालाब-संबंधी; चिल्लानेवाला; सारस पक्षी-संबंधी । पु० ईसकी नातिका एक लंबी टँगोवाला पक्षी; हंस; पक्षी; चंद्रमा; कमल; कमरबंद, करपनी; गव्वका एक पुत्र; छप्य छंदका एक भेद; झील आदिका जल; एक ताल (संगीत) । - मिथा-श्री० सारसी ।
 सारसक-पु० [सं०] सारम ।
 सारसाक्ष-पु० [सं०] एक तरहका लाल (रत्न) ।
 सारसाक्षी-श्री० [सं०] पक्ष-लोचनवा ।
 सारसिका-श्री० [सं०] मारसी ।
 सारमी-श्री० [सं०] सारमकी मादा, आया छंदका एक भेद ।
 सारसुता-श्री० समुद्रा ।
 सारसुती-श्री० दे० 'सरस्वती' ।
 सारस्य-पु० [सं०] पुकार, चिल्लाहट, जलप्राचुर्य; मर-सुता ।
 सारस्व-वि० [सं०] सरस्वती (देवी या नदी)-संबंधी, मारस्वत ऋषि-संबंधी; मारस्वत देश संबंधी, बाम्नी, विद्वान् । पु० सरस्वती तटवर्ती देशविशेष; एक ऋषि (जिनकी उत्पत्ति सरस्वती नदीमें मानी जाती है); सार-स्वत देशके निवासी; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; बिस्वदट; ब्रह्माका बारहवाँ दिन या कल्प; मरस्वती-पूजा-संबंधी एक विशेष कृत्य; वाणी; बामिस्ता । - कल्प-पु० सर-स्वती-पूजा-संबंधी कृत्य-विशेष । - जल-पु० सरस्वतीके निमित्त किया जानेवाला जल-विशेष ।
 सारस्वतोत्सव-पु० [सं०] सरस्वती-पूजनका समारोह ।
 सारस्वत्य-वि० [सं०] सरस्वती-संबंधी ।
 सारांस(स)-पु० [सं०] नीबूका रस; निचोकर निकाला हुआ रस ।
 सारांस-पु० [म०] सार, निचोड़; सतीजा; तात्पर्य, सार्थ-तार्थ; उपमहार ।
 सारा-वि० पूरा, संपूर्ण, समस्त । * पु० दे० 'माला' ।
 श्री० [सं०] दूध; कुस; कृष्ण विश्वना; धूर; केल; शातला; ताकिसपत्र ।
 सारादाय-पु० [सं०] सबोंसमकी जुन लेना ।
 सारापहार-पु० [सं०] सारपदार्थ या धनका अपहरण ।
 सारास्य-पु० [सं०] धामिन; जैमिनी नीबू ।
 साराथी(थिन्)-वि० [सं०] किसी चीजसे लाभ उठाने का इच्छुक ।
 सारा-पु० [सं०] तिलका पोषा ।
 सारावती, सारावली-श्री० [सं०] एक छंद ।
 सारि-पु०, श्री० [सं०] जलरंज वा धामेक्षी नदी- 'आम-फिरि-फिरि सारसी उथी चौपड़की सारि'-कबीर । श्री०

मैना; * सारंगीकी खूँदी (?); पौसा-‘बैठि कुँवरि मव गेलहि मारी’-प० । -कलक-पु० विसात ।

सार्वर्त्त-खी० मैना ।

सारिक-पु० [सं०] दे० ‘सारिका’; एक मुनि ।

सारिका-खी० [सं०] मैना पक्षी; चाँदालबीणा; तंतवाण का पुल जैना वध हिस्सा जिसपर नार टिके रहते हैं, कोरिया; इती । -सुख-पु० एक विषैला कीड़ा ।

मारिखा-वि० दे० ‘सरीखा’ ।

मारिणी-खी० [सं०] सहदेव; दुराकभा; कपिल सिंहापा; प्रसारिणी; रक्त पुनर्नवा; कपास; सोता, जल-धारा, जल-प्रणाली । वि०, खी० दे० ‘सारी(रिन्)’ ।

मारिब-पु० [सं०] साठोकी जातिका एक धान ।

मारिबा-खी० [सं०] अनंतमूल; काला अनंतमूल । -इव-पु० अनंतमूल और दद्यामा लता ।

मारी-खी० [सं०] सारिका, मैना; सलगा; भ्रूंगमिया; गोदी; पौसा; † साड़ी, मलाई; साली; * साबी । -क्रीडा-खी० शतरंज जैसा खेल ।

मारी(रिन्)-वि० [सं०] गमन करनेवाला, पीछा करने-वाला; ‘‘‘का सारभाग धारण करनेवाला ।

मारुष्य-पु० [सं०] एकरूप होनेका भाव; रूप-सादृश्य, एकरूपता; मुक्तिका एक प्रकार; रूपसा दृश्यजन्य अर्थमें किया जानेवाला वर्णव (क्रोधादि) ।

मारो-पु० *क अगहलिया धान; साला-‘श्रीको अनुज, बिष्णुकी गारी’ । * खी० दे० ‘सारिका’ ।

मारोदक-पु० [सं०] अनंतमूलका रस ।

मारोपा-खी० [सं०] लक्षणका एक प्रकार जिसमें एक पदार्थमें दूसरेका आरोप किया जाता है (मा०) ।

मारोदिक, सारोदिक-पु० [सं०] एक विष ।

मारो-खी० मैना ।

मारोड, मारोड-वि० [सं०] जिसमें कोई रोक लगी हो, रोकवाला ।

मारोड-वि० [सं०] सुगाह-सम्बन्धी ।

मारोड-पु० [सं०] लडा, मृत्ति करनेवाला ।

मारोड-पु० दे० ‘सारोड’ ।

मारो-पु० [सं०] सजिका, सज्जी; राह (?) ।

मार्य-वि० [सं०] अर्धयुक्त, अभिप्राययुक्त; उद्देश्यमय; समानार्थी; उपयोगी; धनी, मालदार । पु० धनी आदमी; कारवों, वणिक्समूह; जंतुसव; जनममूह; समूह, झुंड; सूर्यवासी; व्यापारिक भाग (कौ०); व्यापारी । -अ-वि० कारवोंकी गठ करनेवाला । पु० डाकू । -ज-वि० कारवोंमें पला हुआ, पाठनू (हाथी आदि) । -खर-पु० वणिक्समूहका नायक । -घरि-पु० कारवोंका मुखिया । -पाठ-पु० कारवोंका रक्षक । -धू-पु० कारवोंका नेता । -बाह-पु० दे० ‘सार्धधू’; सौदागर; एक बोधिसत्त्व । -बाह-पु० दे० ‘सार्धधू’ । -संख-वि० मालदार । -हा(हू)-वि० कारवोंकी गठ करने-वाला । पु० डाकू । -हीन-वि० त्रिलका कारवोंमें भाग छूट गया हो ।

सार्वर्त्त-वि० [सं०] अर्धपूर्ण; उपयोगी; लाभदायक; महत्त्वपूर्ण ।

सार्वर्त्त-खी० [सं०] महत्त्व; उपयोगिता ।

सार्वर्त्त(वर्त्त)-वि० [सं०] अर्धयुक्त; भाविप्राय; वने दलवाला ।

सार्वर्त्तवाह-पु० [सं०] मालकी रवानगी (कौ०) ।

सार्वर्त्त-वि० [सं०] कारवोंके साथ यात्रा करनेवाला । पु० सफरका साथी; सौदागर ।

सार्वर्त्त-पु० रथ चढ़ानेवाला, मारवि ।

सार्वर्त्त-पु० दे० ‘सार्धर्त्त’ ।

सार्वर्त्त, सार्वर्त्त-वि० [सं०] आधेके साथ पूर्ण (संख्या) । अ० संचित, माध ।

सार्वर्त्त-वि० [सं०] नम, गीला, मीठा हुआ ।

सार्वर्त्त, सार्वर्त्त-वि० [सं०] मर्ध-संबन्धी । पु० अर्धनेवा नक्षत्र ।

मार्वर्त्त, सार्वर्त्त-वि० [सं०] दृढ-संबन्धी; धीमे बनावटा हुआ; दृढयुक्त ।

सार्वर्त्त-पु० [सं०] एक तरहका नमक ।

सार्वर्त्त-वि० [सं०] मर्धसे संबंध रखनेवाला, आम; सबके लिए उपयुक्त । पु० कोई बुद्ध या भिन ।

सार्वर्त्तमर्त्त-वि० [सं०] सब कामोंके लिए उपयुक्त ।

सार्वर्त्तमर्त्त-वि० [सं०] मारे मनोरथ पूर्ण करनेवाला ।

मार्वर्त्तमर्त्त-पु० [सं०] सारी अमिताभार्थकी पूर्ति ।

सार्वर्त्तमर्त्त-वि० [सं०] मर्धसे प्रभावकारी ।

मार्वर्त्तकाल-वि० [सं०] मनी समयमें होनेवाला (जैने-विवाद) ।

सार्वर्त्तकालिक-वि० [सं०] सब समयोंके लिए उपयुक्त; सब काल-संबन्धी ।

सार्वर्त्तगण-पु० [सं०] नीनावाली जमीन ।

मार्वर्त्तगुणिक-वि० [सं०] मर्ध अच्छे गुणोंसे युक्त ।

मार्वर्त्तजनिक, सार्वर्त्तजनिक-वि० [सं०] मर्धसे संबंध रखने-वाला; सबके लिए उपयुक्त ।

सार्वर्त्तजम्ब-वि० [सं०] आम, मर्धसे संबंध रखनेवाला ।

सार्वर्त्तज, सार्वर्त्तज-पु० [सं०] सबलता ।

मार्वर्त्तत्रिक-वि० [सं०] सब स्थानोंसे सबत्र रखनेवाला; सब स्थानों या अवस्थाओंमें लागू होनेवाला ।

सार्वर्त्तदेशिक-वि० [सं०] मर्ध देशोंसे संबद्ध ।

सार्वर्त्तनामिक-वि० [सं०] सर्वनाम-संबन्धी (व्या०) ।

सार्वर्त्तनीतिक-वि० [सं०] मर्ध भूतों, जीवोंसे संबंध रखनेवाला ।

सार्वर्त्तभूमि-वि० [सं०] मारी भूमि-संबन्धी; सारी पृथ्वीका शासन करनेवाला; विश्वविख्यात; मनकी मारी अवस्थाओंमें संबंध रखनेवाला । पु० चक्रवर्ती राजा, मन्नाडू; कुंदेरका हाथी (उत्तरका दिग्गज); विश्वका साम्राज्य । -गृह, -अवध-पु० सम्राट्का प्रासाद ।

सार्वर्त्तभूमिक-वि० [सं०] सारी पृथ्वीपर फैला हुआ ।

सार्वर्त्तयज्ञिक-वि० [सं०] सब प्रकारके यज्ञोंमें संबंध रखनेवाला ।

सार्वर्त्तरात्रिक-वि० [सं०] मारी रात टिकनेवाला (दीपक आदि) ।

सार्वर्त्तराष्ट्रिय, -सार्वराष्ट्रीय-वि० [सं०] मर्ध राष्ट्रोसे संबंध रखनेवाला ।

साधेय-पु० [सं०] मयूरिका, अवष्टा, शाक्ति धानका जेत ।
साधेया-स्त्री० [सं०] लौक ।
साधेयगुग्गुलु-पु० गुग्गुलुका गोंद, राल ।
साधोप-पु० [सं०] समानके साध अन्तका उसी लोकमें रहना, मुक्तिका एक प्रकार ।
साधोहित-पु० [सं०] रक्त द्वारा सपन्न व्यक्ति ।
साधमली-पु० शास्मली, मेमल ।
साध्व-पु० [सं०] एक देशः उस देशका निवासी; एक देश जिससे विष्णुने मारा था । वि० साध्व देश-संबंधी ।
-हा(हव)-पु० विष्णु ।
साध्विक-पु० [सं०] मैना पक्षी ।
साध्वेय-वि० [सं०] साध्व-संबंधी । पु० साध्व देश-निवासी ।
साधैकरना-पु० एक नरहका घोड़ा, हयामकर्ण ।
साधंत-पु० दे० 'सामंत' ।
साध-पु० दे० 'साधु'; [मं०] सोमनर्पण ।
साधक-पु० बौद्ध या जैन मन्त्रासी; [सं०] शावक, जानवरका ४था । वि० उत्पादक, जन्म देनेवाला ।
साधकाश-वि० [सं०] जिसमें अवकाश, उरसत हो, बाफुर-मन । अ० पुरस्तमे, मौकेमें । पु० अवकाश ।
साधचेल-वि० तत्क, साधधान ।
साधचेली-स्त्री० मनकला, होशियारी ।
साधज-पु० 'साउज' ।
साधज-वि० [मं०] छुणा करनेवाला ।
साधगिक-पु० साधन साम ।
साधन-पु० स्तौतिपाडाहः उर्वा ।
साधद्य-वि० [मं०] निव, आपत्तिजनक । पु० तीन योग-शक्तियोंमेंसे एक (शेष दो निरवय और युद्ध है) ।
साधधान-वि० [मं०] मयेन, मनक, सखरदार ।
साधधानता-स्त्री० [सं०] मतरता, होशियारी ।
साधधानी-स्त्री० साधधानता, मत्कर्ता, होशियारी ।
साधधि-वि० [मं०] जिसकी अवधि, सीमा निश्चित कर दी गयी हो । -**आधि**-स्त्री० नियम समयके अदर झुटा नी जानेवाली गिरवी ।
साधन-वि० [सं०] सदन-यज्ञ-संबंधी । पु० वज्रमान; सोमयज्ञकी समाप्ति; वृणः; तीस और दिनोका महीना; पूरा दिन और रात, मूर्धोदयमें मूर्धोस्तनका समय; एक प्रकारका वर्ष; [हिं०] आपादके बादका महीना, आषाढ; सावनमें गाया जानेवाला एक नरहका लोचगोल, कनली; * समूह; प्राच्य, आधिव्य । -**साम**-पु० तीस दिनोका और मास । -**वर्ष**-पु० लगभग ३६० दिनोका वर्ष ।
साधनी-पु० भादोंमें होनेवाला एक धान । स्त्री० वर्षपक्ष-में वर्षके बहो सावनमें भेजी जानेवाली सौगान; सावनमें गाया जानेवाला लोकगीत ।
साधर-पु० [मं०] दोष, अपराध; पाप; लोभ वृद्ध; [हिं०] शिवहृत एक मंत्र; एक रुद्र; सूरपेकी पार ठीक करनेका एक औजार ।
साधरक-पु० [सं०] सफेद लोह ।
साधरण-वि० [सं०] ठका हुआ, बंद किया हुआ; अर्थात्

या ताका लमाया हुआ ।
साधरणी-स्त्री० जैन यतियोंकी बुहारी ।
साधरिका-स्त्री० [सं०] एक नरहकी जोंक ।
साधर्ण-वि० [सं०] समान रंग या जातिवालेसे संबंध रखनेवाला । पु० आठवें मनु; एक ऋषि । -**लक्ष्य**-पु० वर्ष ।
साधर्णक-पु० [मं०] एक मनु ।
साधर्णि-पु० [सं०] एक ऋषि; एक मनु जो सवर्णासे उत्पन्न सर्वके पुत्र थे ।
साधर्णिक-वि० [मं०] उमी जातिमें संबंध रखनेवाला; मनु साधर्ण-संबंधी ।
साधर्ण्य-पु० [मं०] रंग या जातिकी समानता; आठवें मनुका युग या मन्वन्तर ।
साधलेप-वि० [सं०] घमंडी, गर्वाला ।
साधलोष-वि० [मं०] जिसका कुछ अंश बाकी बचा हो; अपूर्ण, अधूरा । पु० दोष, बचा हुआ अंश । -**जीवित**-वि० जिसका जीवन अभी समाप्त न हुआ हो, जिसकी आयु बची हो । -**बंधन**-वि० जिसका बंधन अभी बना हुआ हो ।
साधधंध-वि० [सं०] घमंडी; रोबदार; साधसी; धड; साधर्ण्य । पु० बहू मकान जिसके उत्तर-दक्षिण सफेकें हों ।
साधहित-वि० [सं०] साधधान ।
साधहेल-वि० [सं०] उपेक्षा या छुणा करनेवाला ।
साधौ-पु० दे० 'सौव' ।
साधिका-स्त्री० [मं०] धात्री ।
साधित्र-वि० [सं०] सर्व-संबंधी; सर्वमें उत्पन्न; सर्ववश-संबंधी; कर्ण-संबंधी; गायत्रीमें युक्त । पु० सूर्य; भ्रूण, गर्भ, ब्राह्मण; शिव; कर्ण; वसु; एक अग्नि; दसवीं कण्ठ; मेरुकी एक चोटी; एक होम. यशोवर्षानमस्कार; यशोप-वीन; हस्त नक्षत्र ।
साधित्रिका-स्त्री० [सं०] एक शक्ति ।
साधित्रि-स्त्री० [सं०] सर्व-संबंधी एक वेदमंत्र, गायत्री; उपनयनमस्कार; ब्रह्माकी पत्नी; पार्वती; अश्वपत्तिकी पुत्री और मत्स्यबान्की पत्नी (जिसने अपने सतीत्वके बलसे अपने पतिको बमराजके हाथमें छुड़ाया था); दक्षकी पुत्री और धर्मकी पत्नी; कश्यपकी पत्नी; धारानरेश भोजकी पत्नी; अष्टावक्रकी एक पुत्री, यमुना नदी; सरस्वती नदी; प्रकाशकी किरण; सूर्यरश्मि; अनामिका (जंगली) । -**तीर्थ**-पु० एक तीर्थ । -**पतित**, -**परिग्रह**-वि० जिसका उचित समयपर उपनयनमस्कार न हुआ हो । पु० ऐसा व्यक्ति । -**पुत्र**-पु० क्षत्रियोंकी एक उपजाति । -**मत्त**, -**मत्तक**-पु० पत्तिकी दीर्घायुके लिए ज्येष्ठकी अमावस्याकी रखा जानेवाला हिंदू स्त्रियोंका एक व्रत । -**सूत्र**-पु० यशोपवीत ।
साधित्रेय-पु० [सं०] वस ।
साधिष्कार-वि० [मं०] प्रकट; अपने गुण, शक्ति आदिका प्रदर्शन करनेवाला, घमंडी ।
साधेरी-स्त्री० [सं०] एक रागिनी ।
साधक-वि० [सं०] आशंकायुक्त, बरा हुआ । अ० आशंका-पूर्णक ।

साहस-वि० [सं०] ह्म्युक्त; आशान्वित ।
 साहस्यदृक्-पु० [सं०] छिपकली, ज्योती ।
 साधक-पु० [सं०] कर्मक ।
 साधक्य-वि० [सं०] आश्रयजनक; चकित । अ० आश्रयके साथ । -कर्म-वि० विविध आचरणवाला ।
 साध, साह-वि० [सं०] जिसमें कोण हो; अधुपूर्ण ।
 साधु-वि० [सं०] अधुपूर्ण, रोता हुआ ।
 साधुधी-क्री० [सं०] साम ।
 साधत-वि० दे० 'साधत' ।
 साध्याग-वि० [सं०] आठ अंगोंसे युक्त । -प्रणाम-पु० आठ अंगों (सिर, हाथ, पैर, आँख, जाँघ, हृदय, वचन और मन) के योगसे किया जानेवाला प्रणाम । -योग-पु० यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान और समाधि-इन आठों अंगोंवाला योग ।
 सास-क्री० पति या पत्नीकी माना । वि० [सं०] जिसके पास कमान हो ।
 सासव-क्री० मौनत, कष्ट ।
 सासित-क्री० ईद, सजा, शानन-मानति करि पुनि करहि पसाक-रामा० ।
 सासन-पु० दे० 'शासन' ।
 सासनलेट-पु० एक मफेट जाळीदार कपडा ।
 सासना-क्री० दे० 'शानन'; मौनत, कष्ट ।
 सासरा-पु० समुद्राल ।
 सासा-क्री० सहाय, सदैव; स्वाम ।
 सासान-पु० ईरानके सामानी राजवंशका मूल पुरुष ।
 सासानी-पु० [फा०] ईरानका एक राजवंश ।
 सासु-वि० [सं०] प्राणयुक्त । * क्री० साम ।
 सासुरी-पु० समुद्राल, समुद्र ।
 सासुसु-वि० [सं०] बाणयुक्त ।
 सासुव-वि० [सं०] ईश्वर । अ० ईश्यापूर्वक ।
 सासिव-वि० [सं०] अस्त्रियुक्त । -सासिव-पु० कौना ।
 -बच-पु० अस्त्रिवाले जीवका बच ।
 सासना-क्री० [सं०] गाय-बैलका गलकबल ।
 सासित-पु० [सं०] शुद्ध मत्स्यकी विषयीभूत भावना ।
 सासाधन-पु० [सं०] निर्वाणप्राप्तिकी बीजक अवस्थाओं-मेंसे दूसरी (जै०) ।
 साह-पु० सुजन; साहकार; महाजन; देहलीजका बाजू, चौकटके आधारपर लगनेवाले आमनेसामनेके रतम; † दे० 'साह' । वि० [सं०] सकलतापूर्वक प्रतिरोध करनेवाला; दमन करनेवाला । -कुलकुल-क्री० [हिं०] एक तरहकी लंबी पूँछवाली सफेद बुलबुल ।
 साहक्य-पु० [सं०] सहगमन, सहचरता; साथ रहना, साथ, संगति ।
 साहसिक-वि० [सं०] सहजात, स्वाभाविक । -घन-पु० येतन, विजय आदिमें प्राप्त धन ।
 साहन-पु० [सं०] सहन करनेमें प्रवृत्त करना; सहन ।
 साहमी-क्री० साथी; धारिण; सेना-आये निसावर साहनी साजि-रघुराज; प्रथम ।
 साहव-पु० [अ०] मित्र; साथ; माहिक, स्वामी; हाकिम, सरदार; ईश्वर (संत कवि); आदरणीय व्यक्तिका संबोधन;

नाम या पदवीके साथ व्यवहृत 'ओ'का समानार्थक शब्द; प्रीतिपन; अमेज या अमेजी दगसे रहनेवाला हिंदुस्तानी अफसर । वि० बाबा, रखनेवाला (साहबे हस्म, साहबे जायदाद) । -कुराम-पु० अमीर तैमूरकी पदवी । -झावा-पु० बड़े आदमीका देटा; संबोध्य जनका देटा (ला०) अलख, अनुभवहीन नवयुवक । -पन-पु० नासमझी । -बहादुर-पु० अमेज अफसर; साहबी बंगमे रहनेवाला हिंदुस्तानी अफसर । -सला-सल-क्री० परस्पर अभिवादन, सलाम-बंदगी; सामान्य परिचय । -सानी-पु० शाहजहाँकी पदवी । -(-) आलम-पु० मुगल बादशाहोंकी पदवी । -ईसाफ-वि० म्यायशील । -हूम-वि० विद्वान् । -कमाल-वि० सिद्ध, आत्मद्रष्टा । -किताब-पु० वह पैगबर जिसपर इल्लामी किताब उतरी हो । -खाना-पु० परका माहिक, मेजबान । -शरफ-वि० गरजमंद, शर्पी । -जबान-वि० भाषा-विशेषका पठित, जवानदान । -जावदाद-वि० जगह-जमीनवाला, संपत्तिशाली । -सदबीर-वि० चतुर, क्वायकुशल; नीतिज्ञ । -साज-साजोसफ़-पु० बादशाह । -दिमाश-वि० यमदी । -दिल-वि० बुद्धिमान्, शानी, खुदायनाम ।
 साहबान-पु० [अ०] 'साहब'का बहुवचन ।
 साहबाना-वि० साहबका; साहबी ।
 साहबी-वि० साहबका; साहब जैसा (सा० डा०) । कौ० साहबपन, अफसरी; (सल-सा०) हुकुमत, माहिकी; ईश्वरत्व, ऊँचा पद; एक मरहका अंगर; एक धारीदार कपडा । सु० -करना-अफसरी शान दिखाना ।
 साहबीयत-क्री० माहबी 'वाल-डाल, अंशजोंकी नकल ।
 साहब-वि० [सं०] महनेमें प्रवृत्त करनेवाला ।
 साहस-वि० [सं०] उतावली करनेवाला, जल्दबाज । पु० उग्रता, प्रचंडता; निष्ठुरता, खरीबन; हिंमत, किसी अमाधारण कार्यमें घटनापूर्वक प्रवृत्त होनेकी वृत्ति, जीवद; जल्दबाजी; औद्यत्य; दृढ़, जुमना; बलात्कार; लूट, अपहरण; परस्त्रीगमन; शत्रुता; पाकयककी श्रमि । -करण-पु० प्रचंडता; वलप्रयोग । -कारी(रिज)-वि० औद्यत्यपूर्वक कार्य करनेवाला; हिंमत करनेवाला । -लौछन-वि० निमग्न माहम परिचायक चिह्नके रूपमें हो ।
 साहसांक-पु० [सं०] राजा विक्रमादित्यका एक नाम ।
 साहसायबसापी(विज)-वि० [सं०] अविवेकपूर्वक या उतावलीमें काम करनेवाला ।
 साहसिक-वि० [सं०] हिंमतवर, दिलेर; निर्भीक; उदत; अविवेकी; निष्ठुर, अत्याचारी; परुषवादी; मिथ्यावादी; बहुत अधिक बोर लगानेवाला; दंडात्मक । पु० हिंमत-वर आदमी; डाकू, लुटेरा; सतराजक आठमी; परस्त्री-गामी, लफ्ट ।
 साहसिक्य-पु० [सं०] औद्यत्य; प्रचंडता ।
 साहसी(सिज)-वि० [सं०] प्रचंड; पराक्रमी; हिंमत-वर; निष्ठुर; उदत ।
 साहसैकरसिक-वि० [सं०] उदत; निष्ठुर; अत्याचार करनेपर तुला हुआ ।

साहज-वि० [सं०] हजार-संबंधी; एक हजारवाला; एक हजारमें खरीदा हुआ; हजार पीछे दिया जानेवाला (सूद आदि); हजारगुना। पु० एक हजार सैनिकोंकी टुकड़ी; एक हजारका समूह। -**बृहिक**-पु० लोक-विशेष (नौ०)।

साहजक-वि० [सं०] जिसमें कोई चीज एक हजार हो। पु० एक हजारका समूह; एक तीर्थ।
साहजवेधी(विश्व)-पु० [सं०] कस्तूरी।
साहजाल-पु० [सं०] एक एकाह।
साहजाल-पु० [सं०] एक एकाह।
साहजिक-वि० [सं०] सहज-संबंधी। पु० हजारवों हिस्सा।

साहायक-पु० [सं०] सहायता, मदद; मैत्री; मित्र-मंडली; सहायक सेना।

साहाय्य-पु० [सं०] सहायता, मदद; मैत्री, साथ; सहाय्य साथ देना (ना०)। -**कर**-वि० सहायता देनेवाला, मददगार।

साहिब-पु० राजा; भला आदमी।

साहिबी-स्त्री० [सं०] साहिब।

साहित्य-पु० [सं०] साथ, संयोग, मेल; वाक्यमें पदोंका साहित्य-संघ; गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना; लिपिबद्ध विचार, ज्ञान आदि; ग्रंथोंका समूह, वाङ्मय; काव्य-शास्त्र; हितवृत्त होनेका भाव। -**वर्षण**-पु० विश्वनाथ कविगण-कृत साहित्य-शास्त्रका एक प्रसिद्ध ग्रंथ। -**शास्त्र**-पु० साहित्यके विभिन्न अंगों-रस, अलंकार आदि-का विवेचन या विवेचनारम्भक ग्रंथ।

साहित्यिक-वि० [सं०] साहित्य-संबंधी। पु० साहित्य-सेवी, साहित्यकार (असाध)।

साहिनी-स्त्री० दे० 'साहीनी'।

साहिब-पु० [अ०] दे० 'साहब'।

साहिबी-स्त्री० दे० 'साहिबी'-'ले तिलोककी साहिबी ठी धतूरी फूल'-मस्तिष्क।

साहियाँ-पु० दे० 'साही'।

साहिर-पु० [अ०] सेह-जादू करनेवाला।

साहिरी-स्त्री० जादूगरी।

साहिल-पु० [अ०] समुद्र या नदीका किनारा। † स्त्री० दे० 'साही'।

साहिली-स्त्री० एक काले रंगकी चिड़िया।

साही-स्त्री० एक छोटा (बिस्लीमें कुछ बहा) जानवर जिसका सारा शरीर तेज लंबे कोंटोंसे भरा रहता है और जो जमीनमें घोंद बनाकर रहता है। वि० दे० 'साही'।

साहु-पु० भला आदमी, मज्जन; महाजन; बनिषोंका आदरपूर्ण संबोधन।

साहुल-पु० राजगीरोंका एक आला जिसमें दीवारकी नीध जौनी जाती है।

साहु-पु० दे० 'साहु'।

साहूकार-पु० बड़ा व्यापारी, बनावट महाजन।

साहूकारा-पु० रुपयोंके लेन-देनका काम; साहूकारोंकी बस्ती; बाजार। वि० साहूकारोंका।

साहूकारी-स्त्री० साहूकारका काम, महाजनी।

साहब-पु० दे० 'साहब'।

साहू-स्त्री० भुजार्प, बाजू। अ० मामले, सम्मुख।

सिद्ध-अ० दे० 'स्तो'।

सिकना-अ० क्रि० सेका जाना (ऑवर); पकना।

सिकोना-पु० [अ०] एक वृक्ष जिसके रसमें कुनैन बनाते हैं।

सिंगा-पु० दे० 'सींग'।

सिंगा-पु० बासुर आदि रखनेका सींगका बना बर्तन।

सिंगरफ-पु० ईशुर।

सिंगरफी-वि० सिंगरफका बना हुआ।

सिंगरी-स्त्री० एक मछली।

सिंगरी-पु० प्राचीन शृंगवेरपुरका वर्तमान नाम।

सिंगल-पु० दे० 'सिंगल'। † वि० दे० 'सिंगल'।

सिंगा-पु० कुँकर बजाया जानेवाला एक बाजा, मृग, रणमिंगा।

सिंगार, **सिंगार**-पु० शृंगार, सजावट; सजबज; शृंगार रम। -**दान**-पु० प्रसाधन रखनेका छोटा संवृक। -**मेज़**

-स्त्री० वह आईनेदार मेज़ जिसके सामने बैठकर शृंगार किया जाता है। -**हाट**-स्त्री० वेश्याओंका वास्तवान, चक्का। -**हार**-पु० हरसिंगार नामक पुष्पवृक्ष।

सिंगारना-स० क्रि० शृंगार करना, सँवारना, सजाना।

सिंगारिषा-पु० मूर्तिका शृंगार करनेवाला।

सिंगारी-पु० दे० 'सिंगारिया'।

सिंगाली-पु० दे० एक पहाड़ी बकरा।

सिंगाला-वि० भीगोवाला।

सिंगासन-पु० दे० 'सिंहासन'।

सिंगिया-पु० एक विष जो एक पौधेका मूल है और सूखने-पर सींगकी शक्का होता है।

सिंगिल-वि० [अ०] अकेला, अविवाहित; एक।

सिंगी-स्त्री० स्त्री लयानेकी नली, एक तरहकी साँगोवाली मछली; बोंबोंका एक ऐव। पु० सींगका बना बाजा; संगी; एक कपड़ा। -**मोहरा**-पु० सिंगिया विष।

सिंगीटी-स्त्री० तेल आदि रखनेका सींगका पात्र; सिंदूर आदि रखनेकी पिटारी; बैलके सींगका गहना।

सिंच-पु० दे० 'सिंह'।

सिंचण-पु० [म०] लोहेका सुरचा; नाकमें निकला हुआ प्रलेप्सा, रेंद।

सिंचल-पु० दे० 'सिंहल'।

सिंचली-वि० दे० 'सिंहली'।

सिंचा-पु० दे० 'सिंगा'।

सिंचावा-पु० पानीमें पैदा होनेवाला एक तिकोना फल; सिंचावेके आकारकी एक मिठाई और एक नमकीन; तिकोनी सिंचावे; एक तरहकी आग्निशबाजी; † मुनारोंका एक औजार; एक चिड़िया।

सिंचावी-स्त्री० सिंचावा पैदा करनेका छोटा तालाव।

सिंचाण-पु० [सं०] दे० 'सिंचण'।

सिंचाणक-पु० [सं०] दे० 'सिंचण'।

सिंचासन-पु० दे० 'सिंहासन'।

सिंचिणी-स्त्री० [सं०] नासिका।

सिचिनी-† स्त्री० शेगनी।

सिंधिया-पुं सिंधिया नामक विष ।
सिंधी-स्त्री सिंधी मछली; मीठ ।
सिंधेडा-पुं शेरका बच्चा ।
सिन्ध-पुं [सं०] मीचना, खेत, पैस आदिमें पानी डालना; छिन्नकाव करना ।
सिन्धना-अ० क्रि० सींचा जाना ।
सिन्धाई-स्त्री सींचनेका काम; सींचनेकी उन्नत ।
सिंचाना-स० क्रि० किसीकी सींचनेमें प्रवृत्त करना ।
सिंचित-वि० [सं०] सींचा हुआ ।
सिंचिता-स्त्री [सं०] पिपली ।
सिंचनी-स्त्री दे० 'सिंचाई' ।
सिञा-स्त्री [सं०] गहनोंके बिलने आदिमें उत्पन्न प्रकार ।
सिञित-पुं [सं०] दे० 'सिञा' (प्रकार) ।
सिन्धिकेट-पुं [अ०] किसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए बनी हुई व्यापारिक संस्थाओंकी समिति। मिनेटकी प्रवच-समिति ।
सिद्ध-पुं स्वदन, रथ ।
सिद्ध-पुं [सं०] सिद्धवार ।
सिद्धिया-वि० दे० 'सिद्धिया' ।
सिद्धरी-स्त्री वस्तुकी आतिका एक छोटा पेड़ ।
सिद्धवार-पुं [सं०] एक वृक्ष, निर्गुदी; इस वृक्षका फल ।
सिद्ध-पुं [सं०] एक वृक्ष; एक लाल चूर्ण जिसमें खिलो मोंग भरती है । -**कारण**-पुं सीता धातु । -**तिलक**-पुं मिट्टीका चिह्न; हाथी । -**तिलका**-स्त्री सधवा स्त्री (जिसकी मोंग सिद्धसे भरी रहती है) । -**दान**-पुं विवाहकी एक रस्स जिसमें बर बन्धुकी मोंगमें सिद्ध लगाता है । -**पुष्पी**-स्त्री वीरपुष्पी, सिद्धिया । -**रस**-पुं पारेमें बना हुआ एक रस । -**बंदन**, -**बंदन**-पुं दे० 'मिद्धवान' ।
सिद्धिका-स्त्री [सं०] सिद्ध नामक लाल द्रव्य ।
सिद्धिरि-वि० [सं०] लाल रंगा हुआ ।
सिद्धिया-वि० सिद्धरके रंगका । स्त्री मिद्धपुष्पी, सदासुहागिन ।
सिद्धी-वि० सिद्धरके रंगका । स्त्री [सं०] रीचनी; मिद्धपुष्पी; बातकी; लाल कपड़ा ।
सिद्धोरा-पुं मिद्ध रखनेकी लकड़ीकी छिविया ।
सिंध-पुं पाकिस्तानका एक प्रांत। स्त्री एक प्रसिद्ध नदी; एक रागिनी ।
सिंधवा-वि० पुं दे० 'सिंध' ।
सिंधवी-स्त्री एक मिश्र रागिनी ।
सिंधी-वि० मिंध देशका । पुं इस देशका रहनेवाला; एक तरहका घोड़ा । स्त्री इस देशकी भाषा ।
सिंधु-पुं [सं०] मागर, समुद्र; एक प्रसिद्ध नदी; इस नदीके आम-पासका देश; हाथीकी मुँहमें निकलनेवाला पानी; गजमद, दान; हाथी; वरुण; संकेत मोहागा; सिंधुवार वृक्ष; एक राग; ओठकी आर्द्रता; सिंधु देशका निवासी; नद; चारकी या सातकी मरुया; विष्णु; एक नाग । स्त्री नदी; मालवाकी एक नदी । -**कम्पा**-स्त्री लक्ष्मी । -**कफ**-पुं समुद्रफेन । -**कर**-पुं एक तरहका लोहागा । -**खेल**-पुं सिंधु प्रदेश । -**ज**-वि० समुद्र या सिंध

देहमें उत्पन्न; जलीव । पुं संधा नमक; पारा; लोहागा; शंख । -**जम्भ**(**ज**)-पुं संधा नमक । -**जा**-स्त्री लक्ष्मी; सीप । -**जम्मा**(**जम्भ**)-वि० समुद्र या सिंध देशमें उत्पन्न । पुं चंद्रमा । -**जात**-पुं सिंधी घोड़ा; मोती । -**खरखंभव**-पुं मोहागा । -**देश**-पुं मिंध देश । -**नंदन**-पुं चंद्रमा । -**नाथ**-पुं सागर । -**पति**-पुं जयवध; समुद्र । -**पर्णी**-स्त्री गंभारी वृक्ष । -**पिब**-पुं अगस्त्य कवि । -**पुत्र**-पुं चंद्रमा; तैदूकी आतिका एक वृक्ष । -**पुकिट**-पुं एक जनपद । -**पुष्प**-पुं शंख; कंदन; बकुल । -**प्रसूत**-पुं संधा नमक । -**मंथ**-पुं समुद्रमंथन; पर्वत । -**ज**-संधा नमक । -**माता**(**त**)-स्त्री नदियोंकी माता, मरुभूमी नदी । -**मुख**-पुं नदीका मुहाना । -**राज**-पुं समुद्र; जयवध । -**राव**-पुं मिंधुवार । -**रुताग्र**-पुं मोंगा । -**खण**-पुं संधा नमक । -**बार**-पुं सिंधु, निर्गुदी; मिंधी घोड़ा । -**बारित**-पुं मिंधुवार । -**बासी**(**मिन्**)-पुं मिंध देशका रहनेवाला । -**विष**-पुं समुद्रसे निकला विष, कालकूट । -**वृष**-पुं विष्णु । -**वेषण**-पुं गंभारी वृक्ष । -**शयन**-पुं विष्णु । -**संगम**-पुं नदीका मुहाना । -**संभवा**-स्त्री फिटकिरी । -**सर्ज**-पुं माल वृक्ष । -**सहा**-स्त्री मिंधुवार । -**सुत**, -**सुनु**-पुं जालंधर नामक राक्षस । -**सुता**-स्त्री लक्ष्मी; सीप । -**सुत**-पुं मोगी । -**मारीकर**-पुं एक जनपद ।

सिंधु-वि० [सं०] समुद्रीय, मिंधमें उत्पन्न । पुं मिंधुवार ।
सिंधुवा-स्त्री [सं०] मालवराजकी एक भाय ।
सिंधुर-पुं [सं०] हाथी आठकी मरुया । -**हेवी**(**विन्**)-पुं मिंध । -**मणि**-पुं गजमुक्ता । -**बंदन**-पुं गणेश, गजानन ।
सिंधुरागिनी-वि० स्त्री [सं०] रात्रागिनी, हथिनीकी भी नामवाणी ।
सिंधु-पुं [सं०] राजा मोहन पित्त ।
सिंधुर-पुं [सं०] चंद्रमा, संधा नमक ।
सिंधुव, **सिंधुप**-पुं [सं०] संधा नमक ।
सिंधुरा-पुं सपूर्ण आतिका एक राग ।
सिंधुरी-स्त्री एक रागिनी ।
सिंधोरा-पुं लक्ष्मीका बना हुआ हुआ मिद्धवार ।
सिंधोरी-स्त्री सेंद्र रखनेकी छोटी छिविया ।
सिंध-पुं [सं०] दे० 'सिंध' ।
सिंधा-स्त्री [सं०] दे० 'सिंधा'; नक्षी ।
सिंधिया-स्त्री [सं०] दे० 'सिंधिया' ।
सिंधी-स्त्री [सं०] दे० 'सिंधी' ।
सिंधाल-पुं मिद्धवार वृक्ष ।
सिंधप-पुं शीशमका वृक्ष ।
सिंधपा-स्त्री शीशमका पेड़ ।
सिंह-पुं [सं०] केमरी, धूम्र, शेर; बाह्य राशिधामन एक राशि; (ममासमें) अपने वर्णका सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, एक विशेष आकार-प्रकारका मंदिर या प्रामाद; रक्त शिश, काल महिजन; एक राग; वर्तमान अक्षयिणीके चौबीस अष्टका चिह्न; रथके बैलोंके निरका एक वृषण; एक

पौराणिक पक्षी; बैकट पर्वत; कृष्णाका एक पुत्र; एक तरहके जैन माधु । -**कर्णी**-**स्त्री** बाण चलाने समय दाहिने हाथकी एक विशेष स्थिति । **कर्मा**(**जैन**)-**वि०** सिंह जैसा पराक्रमी । -**केतु**-**पु०** एक शेषिमास्य । -**केलि**-**पु०** एक बोधिसत्व (मंजुश्री) । -**केसर**-**पु०** सिंहका अवाल, कंठपरके लगे बाल; बकुल; एक तरहकी मिठाई । -**ग**-**पु०** शिव । -**ग्रीव**-**वि०** सिंहकी भी गरदनवाला । -**घोष**-**पु०** एक बुद्ध । -**घिश्रा**-**स्त्री** माधवणी । -**छदा**-**स्त्री** दंत दूषा । -**तल**-**पु०** अंजलि । -**ताल**-**तालाक**-**पु०** दे० 'मिहल' । -**नुह**-**पु०** एक मछली; मेहुँव । -**नुहक**-**पु०** एक मछली । -**वृह**-**पु०** एक तरहका बाण; शिब; एक असुर । -**द्वर्प**-**वि०** सिंहकी तरह गर्बाला । -**द्वार**-**पु०** (सिंहकी मूर्तिवाला) प्रामाद आदिका प्रवाल द्वार, मर दरवाजा । -**द्वीप**-**पु०** एक टापू । -**ध्वज**-**पु०** एक बुद्ध । -**ध्ववि**-**स्त्री** सिंहका गर्जन; सिंहका भा गर्जन; ललकार, रणनाद । -**नंदन**-**पु०** एक नाल (संगीत) । -**नर्वा**(**हिन्दू**)-**वि०** सिंहकी तरह गरजनेवाला । -**नाह**-**पु०** सिंहका गर्जन; बुद्ध, ध्वनि, ललकार; जोर देकर कोई बात कहना; लौह पिंडालीका पाठ; एक पक्षी; एक वृत्त; एक नाल (मगीन); शिव; एक असुर; रावणका एक पुत्र । -**नाहक**-**पु०** सिंहका गर्जन; रणनाद; मिथा शब्द । -**नादिका**-**स्त्री** दुरालभा; जवामा । -**नादी**(**हिन्दू**)-**वि०** सिंह जैसा गरजनेवाला । **पु०** एक बोधिसत्व । -**पद्मा**-**स्त्री** माधवणी । -**पर्णी**-**स्त्री** वामक । -**पिप्पली**-**स्त्री** मेहली । -**पुच्छिका**-**पुष्पी**-**स्त्री** विनयपणिका । -**पुच्छी**-**स्त्री** विनयपणिका; पृथिवी; माधवणी । -**पुरुष**-**पु०** जैनियोंके जो वासुदेवोंमेंसे एक । -**पौर**-**पु०** [हि०] मिहदार । -**प्रगर्जन**-**वि०** सिंहकी तरह गरजनेवाला । -**प्रगर्जित**-**पु०** मिहगर्जन । -**प्रणाह**-**पु०** रणनाद, ललकार । -**मल**-**पु०** एक तरहका पीतल, पंचलौह । -**मावा**-**स्त्री** अमजन्म सिंहका रूप । -**मुख**-**वि०** सिंहके मुखवाला । **पु०** शिवका एक अनुचर । -**मुखी**-**स्त्री** वामक; कृष्ण मित्रवार; खारी मिट्टी; माधवणी । -**याना**-**स्त्री** दुर्गा । -**रधा**-**स्त्री** दुर्गा । -**रव**-**पु०** सिंहका गर्जन । -**लघ्न**-**पु०** सिंह राशिका लग्न । -**लील**-**पु०** एक नाल(संगीत); एक तरहका रतिर्ष । -**बक्त्र**-**पु०** एक राक्षस; सिंहका मुख; एक नगर । -**बम्प**-**पु०** एक नाग । -**बहना**-**स्त्री** दे० 'मिहमुखी' । -**बल्लभा**-**स्त्री** वामक । -**बाह**-**बाही**(**हिन्दू**)-**वि०** मिहपर सवारी करनेवाला । -**बाहन**-**वि०** मिहपर सवारी करनेवाला । **पु०** शिव । -**बाहना**-**बाहिनी**-**स्त्री** दुर्गा । -**विक्रम**-**पु०** एक ताल (संगीत); चंद्रगुप्त नरेश; बोध । -**विक्रान्त**-**वि०** सिंह जैसा पराक्रमी । **पु०** घोषा; सिंहकी गर्ज; एक वृत्त । -**व्यसि**-**व्यासी**(**मिह**)-**वि०** सिंहकी भी बालवाला । -**विक्रीह**-**पु०** एक वृत्त । -**विक्रीहित**-**पु०** एक वृत्त; एक ताल; सभाषिका एक प्रकार; एक बोधिसत्व । -**विर्जित**-**पु०** समाधिका एक प्रकार (गौ०) । -**विक्ता**-**स्त्री** माधवणी । -**विष्कर्मित**-**पु०** एक तरहकी समाधि । -**विह्वर**-**पु०** सिंहासन । -**हुता**-

स्त्री माधवणी । -**शाव**-**शिशु**-**पु०** सिंहका बच्चा । -**खंडनन**-**वि०** सिंह जैसे रूपवाला, सुंदर और बलिष्ठ अंगोंवाला । **पु०** सिंहका वध । -**स्कंध**-**वि०** सिंहके-से कंधोंवाला । -**स्व**-**पु०** सिंह राशिमें स्थित बृहस्पति; उस समय होनेवाला एक वर्ष । -**हनु**-**वि०** सिंहकी-सी गड़वाला । **पु०** गौतमके पितामह ।
मिहनी-**स्त्री** शेरनी, सिंहकी मादा, एक वृत्त ।
सिंहल-**पु०** [सं०] भारतके दक्षिण स्थित एक द्वीप, लंका (शायद यहाँ सिंह बहुत अधिक होते थे); इस द्वीपका निवासी; दीन; पीतल; छाल; सिंहल । -**द्वीप**-**पु०** स्वर्णद्वीप, लंका । -**द्वीपी**(**पिह**)-**वि०** सिंहल-संबंधी; सिंहलका । -**स्व**-**वि०** सिंहलमें स्थित या वहाँ रहनेवाला । -**स्वा**-**स्त्री** सिंहलवासीनी; सिंहली ।
सिंहलक-**पु०** [सं०] सिंहल द्वीप, पीतल; द्वारकीनी । [दे० सिंहल द्वीप-संबंधी ।
सिंहलगुली-**स्त्री** [सं०] पृथिवीपत्नी ।
सिंहला-**स्त्री** [सं०] सिंहल द्वीप । -**स्थान**-**पु०** एक तरहका ताड़ वृक्ष ।
सिंहली-**वि०** सिंहल द्वीप-संबंधी; सिंहलका । **स्त्री** एक तरहकी पिपली; सिंहलकी माया । -**पीपल**-**स्त्री** सिंहली पिपली ।
सिहा-**स्त्री** [सं०] नाडी नामक पौधा; कटकारी; वनभंडा ।
सिहावल-**पु०** [सं०] एक पर्वत ।
सिहावल-**पु०** [सं०] नाकका सल, रेंड; लोहेका मुर्चा ।
सिहाणक-**पु०** [सं०] नाकका मल ।
सिहावन-**पु०** [सं०] कृष्ण मिथुवार; वामक ।
सिहारहार-**पु०** हरमिहार ।
सिहाली-**स्त्री** सिंहली पीपल ।
सिहावलोक-**पु०** [सं०] एक प्रकारका वृत्त ।
सिहावलोकन-**पु०** [सं०] सिंहका आगे बढ़ते हुए पीछेकी ओर मुड़कर देखना; आगे बढ़ते हुए पीछेकी बातोंपर रहिपात कर लेना (न्या०); छंदकी रचनाका एक प्रकार जिसमें दूसरा चरण पहले चरणके अंतिम शब्दोंमें प्रारंभ होता है ।
सिहावलोकित-**पु०** [सं०] दे० 'सिहावलोकन' ।
सिहामन-**पु०** [सं०] राजा, देवता आदिका आसन; एक रतिवध; कमलपत्राकार देवतासन । -**वध**-**पु०** मनुष्या-कृति एक वक्त्र जिसमें नक्षत्रोंके नाम भरे जाते हैं (ज्यो०) । -**व्रव**-**पु०** ज्योतिष-संबंधी एक चक्र । -**अष्ट**-**वि०** गर्भमें उतारा हुआ, राज्यस्थित । -**रण**-**पु०** गद्दी प्राप्त करनेके लिए होनेवाला युद्ध । -**स्व**-**वि०** तत्त्वतः शीन ।
सिहाच-**पु०** [सं०] एक पौराणिक अस्त्र ।
सिहास्य-**वि०** [सं०] सिंहके-से सुखवाला । **पु०** एक तरहकी मछली; वासक; कचनार; हाथोंकी एक मुद्रा ।
सिहास्या-**स्त्री** [सं०] अम्बा ।
सिंहिका-**स्त्री** [सं०] कश्यपकी पत्नी और राहुकी माता; दाहाविणीकी एक मूर्ति; बह कन्या जिसके पुटने आपसमें टकराते हैं और तत्किए विवाहके अनुरोध हो; वासक; कटकारी; वनभंडा । -**सवध**-**पु०** -**सुत**-**पु०** -**सुत**-**पु०** राहु ।

सिंहिकेय-पु० [सं०] सिंहिकापुत्र, राहु ।
सिंहिनी-स्त्री० [सं०] एक देवी (बी०); * खेरनी, सिंहनी ।
सिंहरी-स्त्री० [सं०] खेरनी, राहुकी माता, सिंहिका; नमः अक्षस्य; भूहरि; सिंघा नामक बाजा; नाडीशाक; कंटकारी; भडा; मुद्रपर्णी । -छता-स्त्री० बहनी ।
सिंहेश्वरी-स्त्री० [सं०] दुर्गा ।
सिंहोच्च-पु० संदुर्घ, चूर ।
सिंहोदरी-वि० स्त्री० [सं०] सिंहके समान कटिबाली ।
सिंहोद्धता, सिंहोद्धता-स्त्री० [सं०] एक वृत्त ।
सिंघनि-स्त्री० सिंघाई ।
सिंघरा-वि० ठडा किया हुआ, ठडा-‘मिजरे बदन सखि गये कैसे’-रामा० । पु० छाया; † गीदड़ ।
सिंघाना-सं० कि० दे० ‘मिछाना’ ।
सिंधार-पु० गीदड़ ।
सिंकजबीन-स्त्री० [फा०] नौबूके रम या मिरकेका पफा हुआ सरत ।
सिंकजा-पु० दे० ‘शिंकजा’ ।
सिंकद्वी-पु० सुप्रसिद्ध यूनानी विजेता जो मकदूनिया-नरेश फिलिप्स (फैलपस)का बेटा था और जिन्मे मिक्र, ईरान, अफगानिस्तान और हिंदुस्तानमें तक्षशिला तथा सिंधुई इस पारका कुछ भाग भी जीत लिया था ।
सिंकद्वी-पु० रेकका सिमलल ।
सिंकद्वी-वि० मिंकदरका । स्त्री० घोसेका डोकर खाना ।
सिंकटा-पु० मिट्टीके बर्तन या खपड़ेका छोटा टुकड़ा ।
सिंकटी-स्त्री० मिट्टीके बरतन आदिका बहुत छोटा टुकड़ा ।
सिंकड़ी-स्त्री० मॉफल, जंजीर; जंजीर जैसा गलेका एक गहना; करघनी; जंजीर जैसी, एकमें एक मूँब मिलाकर कसी हुई, उनचन ।
सिंकल-स्त्री० बाळ ।
सिंकता-स्त्री० [सं०] बलुई जमीन, बाळकायुक्त भूमि, बाळ; शर्करा; लोणिका शाक; अमरी, पथरी (रींग) ।
सिंकताबाळ(बाळ)-वि० [सं०] दे० ‘सिंकतामय’ ।
सिंकतिल-वि० [सं०] रेगीला, बाळकामय ।
सिंकनीचर-वि० [सं०] दे० ‘सिंकतिल’ ।
सिंकसर-पु० [अ० ‘सिंक्रेटरी’] संसला, व्यवस्था कार्य-निर्वाहक मंत्री ।
सिंकर-पु० मृगाल-‘सिंकर खान दुर पथ निहारै’-बीजक । स्त्री० जंजीर ।
सिंकरवारी-पु० क्षत्रियोंकी एक उपजाति ।
सिंकरी-स्त्री० दे० ‘सिंकरी’ ।
सिंकली-स्त्री० हथियार मोजकर तेज करना । -शब्द-पु० दे० ‘सिंकलींगर’ । -शर-पु० हथियार तेज करने-वाला; चमक जानेवाला ।

सिंकहर-पु० छंका ।
सिंकहरा-पु० दे० ‘सिंकहर’ ।
सिंकहुती, सिंकहुली-स्त्री० मूँज आदिकी बनी छोटी डलिया ।
सिंकार-पु० दे० ‘सिंकार’ ।
सिंकारी-वि०, पु० दे० ‘सिंकारी’ ।
सिंकुबन-स्त्री० मिंकुबनेकी क्रिया, सकोच; मिंकुबनेका चिह्न, शिकन ।
सिंकुबना-अ० कि० संकुचित होना, बटोरना, मिमटना; तग होना; शिकन पकना ।
सिंकुरना-अ० कि० दे० ‘सिंकुबना’ ।
सिंकोबना-अ० कि० संकुचित करना; बटोरना, मिमटना; मंग, सकीर्ण करना ।
सिंकोरना-अ० कि० ‘सिंकोबना’ ।
सिंकोरा-पु० कसोरा ।
सिंकोली-स्त्री० नेत, बॉस आदिकी बनी हुई डलिया ।
सिंकोरी-वि० गर्वाका; पराक्रमी, धीर ।
सिंकव-पु० जंजीर; मिंकबी ।
सिंकर-पु० दे० ‘सिंकव’ ।
सिंका-पु० [अ०] ठप्पा, छाप; मुद्रा; रूपया; वह ठप्पा जिससे रुपये आदि अंकित करते हैं, पदक । -ज्ञान-पु० मिन्के डालनेवाला । पु०-बखाना-(अपना) मिक्का जारी करना । -जमाना, -बैठाना-रीस-नाम कायम होना, अधिकार स्थापित होना । -जमाना, -बैठाना-रीस-नाम कायम करना, अधिकार स्थापित करना ।
सिंकी-स्त्री० छोटा मिक्का; अठ्ठा; चबूती ।
सिंक्क-पु० शुक्र नानकका चलाया हुआ एक मप्रदाय, इस संप्रदायका अनुयायी ।
सिंक-वि० [सं०] मींचा हुआ; गीला, मीमा हुआ गमित (?)
सिंकता-स्त्री० [सं०] मींचे जानेकी क्रिया या भाव ।
सिंकि-स्त्री० [सं०] मींचनेकी क्रिया; निःसारण; धार पेंकना ।
सिंक्क-पु० [सं०] मोम, मधुच्छिद्य; मॉङ निकाला हुआ भात; भातका पिंड या द्राम; लोड़ी; मोनिबोका शुष्का (जिसका बजन एक चरण हो) ।
सिंक्क-पु० [सं०] दे० ‘सिंक्क’ ।
सिंक्क-पु० [सं०] दे० ‘सिंक्क’ ।
सिंक्क-पु० [सं०] काँच; स्फटिक ।
सिंक्क-पु० मोरकी पूंछ ।
सिंक्की-पु० दे० ‘सिंक्की’ ।
सिंक्क-पु० दे० ‘सिंक्क’; शिंक्क । * स्त्री० शिक्षा, उप-देता; चोटी ।
सिंक्कना-सं० कि० मोखना ।
सिंक्कर-पु० दे० ‘सिंक्कर’; मुकुट; मिंकहर ।
सिंक्करन-स्त्री० चीनी, गरी, बैसर आदिके योगमें बना हुआ दहीका पेय ।
सिंक्कना-सं० कि० सिंक्कना ।
सिंक्कना-अ० कि० सिंक्कना ।
सिंक्का-स्त्री० दे० ‘सिंक्का’ ।

सिखावना-स० कि० शिक्षा देना, पढ़ाना, बताना; साधना, दंड देना ।

सिखावन-पु० शिक्षा, उपदेश; शिक्षणकार्य ।

सिखावन-स्त्री० शिक्षा, उपदेश, नसीहत ।

सिखावना-स० कि० दे० 'सिखाना' ।

सिखिर-पु० शिखर; जैनोंका एक तीर्थ, पारसनाथ पहाड़ ।

सिखी-पु० मुग्धा; मीर ।

सिगता-स्त्री० दे० 'सिक्ता' ।

सिगमल-पु० [अ०] रेखमाश्रीके आने-जानेका सूचक चिह्न-विशेष, सिमंदरा; संकेत ।

सिगार-पु० [अ०] छुटपन, बावब । -सिग-वि० छोटी उम्रका, कमसिन । -सिनी-स्त्री० बचपन, छुटार ।

सिगारा-वि० संपूर्ण, सब ।

सिगरेट-पु०, स्त्री० [अ०] धूम्रपानके लिए कागजमें गंधाक लपेटकर बनायी हुई एक तरहकी बत्ती ।

सिगरी, सिगरी-वि० दे० 'सिगरा' ।

सिगार-पु० [अ०] नुसद ।

सिगोन-स्त्री० लाल रंग मिली मिट्टी जो नालोंके आस-पास मिलती है ।

सिक्क-पु० [सं०] कपड़ा; बन्ध; फटा-पुराना कपड़ा ।

सिक्कान-पु० बाज चिकिया ।

सिखाना-स० कि० दे० 'सिखाना' ।

सिक्कक-पु० शिक्षा देनेवाला; दंड देनेवाला -'माहिनके सिक्कक सिपाहिनके पातसाह'-भू० ।

सिक्का-स्त्री० दे० 'शिक्षा' ।

सिक्का-पु० [अ०] माथा टेकना; खुदके आगे मिर झुकाना; मुसलमानोंकी उपपाननाका एक अंग जिगमें माथा, नाक, कुहनिवाँ, घुटने और पोंबोंकी उँगलियाँ जमीनपर लगानी हैं । -शाह-पु०, स्त्री० उपपानना-स्त्र ।

सिजली-वि० सुंदर, अच्छा, सुपर ।

सिजिल्लान-पु० अफगानिस्तानका एक प्रदेश जो ईरानके पूर्वमें पड़ता है ।

सिज्वा-स्त्री० शम्बा ।

सिहना-अ० कि० ओचपर पकना, सिहाया जाना ।

सिहाना-स० कि० आचपर पकाना, रोचना, शरीरकी कष्ट-मय स्थितिमें रहना; बरतन बनानेके लिए मिट्टी तैयार करना; (चमड़ा) पकाना ।

सिहकिनी-स्त्री० किंवा अंदरसे बंद करनेके लिए उममें लगा हुआ छोटा-सा छक, चटखनी ।

सिहपिटा-अ० कि० हब जाना; अथ खाना; मद पड जाना; सत्त्व हो जाना ।

सिटी-पु०, स्त्री० [अ०] बड़ा शहर ।

सिही-स्त्री० बंद-चटकर बाँते करना, बाचालना । मु०-गुम होना; -भूल जाना-घबराकर नुप हो जाना, मिटपिटा जाना ।

सिही-स्त्री० दे० 'सीडी' ।

सिडाई-स्त्री० पीकापन ।

सिक्-स्त्री० पागलपन, दीवानगी, खन्त, मनक; धुन । -पन, -पना-पु० दे० 'सिक्' । -बिक्का, -बिक्का-वि०

मूर्ख, बेअक; पागल, मनकी । मु०-सवार होना-सनक सवार होना ।

सिखी-वि० सनकी, पागल; मनमोही ।

सिखर-पु० [अ० 'सिखर'] इसी समूह नवों महीमा ।

सिख-वि० [सं०] श्वेत, सफेद; चमकीला; विशुद्ध, निर्मल; बन्ध; परिवेष्टित; बात; समाप्त । पु० सफेद रंग; शुद्ध पक्ष; शुभ ग्रह; शुकाचार्य; बाण; चौदी; चंदन; मूली; शर्करा; स्कंदका एक अनुवर । -कंटकारिका, -कंट-स्त्री० श्वेत कंटकारी । -कंट-वि० सफेद गरदनवाला । पु० चातक, दाल्युह; * दे० क्रममें । -कटमी-स्त्री० एक वृक्ष । -कमल-पु० उनका कमल । -कर-पु० चंद्रमा; कपूर । -कर्णिक-कर्णी-स्त्री० वासक । -कमा- (मन्त्र)-वि० जिसके कर्म पवित्र हों । -काच-पु० हल्की शोभा; बिल्ली, स्फटिक । -कुंजर-पु० हंस; इंडका हाथी, ऐरावत; सफेद हाथी । वि० सफेद हाथीपर सवारी करनेवाला । -कुंमी-स्त्री० सफेद पोंडर ।

-क्षर-पु० एक तरहका सोहागा । -कुट्टा-स्त्री० श्वेत कंटकारी । -खंड-पु० मिसरीका डंका । -गुंजा-स्त्री० सफेद पुंयकी । -चिह्न-पु० एक तरहकी मछली, खैरा मछली, बालकागड़ । -छन्न-पु० राजछन्न; श्वेत छत्र । -छन्ना, -छन्नी-स्त्री० शतपुष्पा, सौक; सोबा ।

-छत्रित-वि० श्वेत छत्रयुक्त; राजचिह्नयुक्त । -छब्-वि० सफेद पत्रोंवाला; सफेद पखोंवाला । पु० हंस; मछिनका एक प्रकार । -छब्बा-स्त्री० श्वेत दूर्वा । -जा-स्त्री० मधुशर्करा । -तुरग-पु० अर्जुन । -बर्ज-पु० श्वेत दूर्वा । -दीक्षित-पु० चंद्रमा । -दीप्य-पु० श्वेत नीरक, सफेद जीरा । -दूर्वा-स्त्री० श्वेत दूर्वा । -हु-पु० शुक्लवर्ण वृक्ष; मोटर-विशेष । -हुम-पु० शुक्लवर्ण वृक्ष; अर्जुन; मोटर-विशेष । -त्रिज-पु० हम । -चातु-स्त्री० श्वेत खनिज द्रव्य; खनिजा मिट्टी ।

-पक्ष-पु० उज्जला पक्ष; सफेद पक्ष; हम । -पच्छ-पु० हम; शुद्ध पक्ष । -पक्ष-पु० श्वेत कमल । -पर्णी-स्त्री० अर्कपुष्पिका । -पाटलिका-स्त्री० शुद्ध पाटला, सफेद पोंडर । -पुंला-स्त्री० श्वेत शरपुला । -पुंढरीक-पु० श्वेत कमल । -पुष्प-पु० केवदी मोथा; तगर वृक्ष; श्वेत रोहित; कौम । -पुष्पा-स्त्री० मछिका; बला; कंधी नामका पोषा । -पुष्पिका-स्त्री० एक प्रकारका कुष्ठ, फूल । -पुष्पी-स्त्री० श्वेत अपराजिता; केवदी मोथा; कौंस; नागदंती; नागवल्ली । -प्रम-वि० सफेद । पु० चौदी । -भानु-पु० चंद्रमा । -मणि-पु० स्फटिक ।

-मना (नस्) -वि० पवित्र हृदयवाला । -मरिच-स्त्री० सफेद मिर्च । -माच-पु० राजमाष, लोबिया । -यामिनी-स्त्री० चौन्नी रात; चंद्रिका । -रंज-पु० कपूर । -रंजव-वि० पीला । पु० पीला रंग । -रस्मि-पु० चंद्रमा । -राग-पु० चौदी । -रुचि-वि० सफेद रमका । पु० चंद्रमा । -लता-स्त्री० अमृतवल्ली । -लक्ष्म-पु० लहसुन । -बराह-पु० श्वेत बराह ।

-पानी-स्त्री० पृथ्वी । -वर्णा-स्त्री० क्षीरिणी । -वर्षाभू-पु० पुनर्नवा । -बल्लरी-स्त्री० कटवासुन । -बल्लरीज-पु० श्वेत गरिच । -वाजी (जिन्)-पु०

अर्जुन । -वार, -वारक-पु० दे० 'सितसार' । -वारण-पु० दे० 'सित-कुजर' । -शावका-ली० इवेत शर-पुंखा । -सिचिक-पु० गेहूँका एक भेद । -शिब-पु० तैषा नमक; शमी वृक्ष । -शुक-पु० जो । -शूरधर-पु० बनसुरन, सफेद ओल । -शुंगी-ली० अतिविष । -ससि-पु० अर्जुन । -सर्षप-पु० मफेद मरसी । -सायका-ली० इवेत शरपुंखा । -सार, -सारक-पु० शालिच शाक । -सिधु-पु० क्षीरमागर । ली० मया नदी । -सिंहरी-ली० इवेत कंटकारी । -सिद्धार्थ, -सिद्धार्थक-पु० सफेद सरसों । -सुपाँ-ली० डुरडुर ।

सितकण्ड-पु० शिव; दे० 'मित'में ।

सितजाग्रक-पु० [म०] कलमी आम ।

सितता-ली० [म०] इवेतता, मफेदी ।

सितम-पु० [फा०] जुलम, अन्याय, उत्पीडन; अपेक्ष; गजब । -ईजाद-वि० अन्यायकी नीबें डालनेवाला; बहुत बड़ा जालिम । -कषा, -ज़दा, -रसीदा-वि० जुलम सन्नेवाला, उत्पीडित । -गार, -गार-वि० जालिम, अन्यायी, अत्याचारी । -ज़रीक-वि० हास्य-विनोदके परदेमें जुलम, अन्याय करनेवाला; जिसके हैमी-मजानमें शोखी-शरारत मिली हो । -ज़रीकरी-ली० हैंमी-मजानके परदेमें जुलम करना । सु० -हाना-जुलम, भारी अन्याय करना, गजब करना । -तौबना-अन्याय, अत्याचार करना ।

सितली-ली० पीछा आदिकी हाकतमें निकलनेवाला पत्तीना ।

सितह-ली० दे० 'सतह' ।

सिता-पु० [फा०] खान, निवासस्थान; देश; वह स्थान जहाँ किसी चीजका अधिकार हो । वि० लेनेवाला, पकड़नेवाला, छीननेवाला ।

सिताक-पु० [सं०] बालकागड़ नामक मत्स्य । वि० इवेन चिह्नवाला ।

सितांग-पु० [सं०] इवेत रोहित; कपूर; शिव; बंला । वि० इवेत अगोंवाला ।

सितांबर-वि० [सं०] इवेत वस्त्रधारी । पु० एक तरहके जैन साधु, इवेतावर ।

सिताबुज, सितामोज-पु० [म०] इवेत पक्ष ।

सिताबु-पु० [सं०] कपूर; चद्रमा । वि० इवेन किरणोंवाला ।

सिताबुक-वि० [सं०] इवेत वस्त्रधारी, सफेदपोश ।

सिता-ली० [सं०] शर्करा; मिमरी; चंद्रिका, चाँदनी- 'सरत-सिता-सी जाकी साधना है बिकसी'-कलस०; शुक पक्ष; सुंदरी; सुरा; इवेन दुर्वा; मसिलका, इवेत कंटकारी; बकुची; बिहारी; कुटुंबिनी, पिगा; त्रायमाणा; अषराजिना; गल्ल; आठ देवियोंमेंसे एक (शै०); तेजनी; अकंपुष्पी; सिहली पीपल; आश्रातक; गीरीचन; वृद्धि लता; रजत; पुनर्नवा; मुरा । -खंड-पु० मधुजात शर्करा; मिमरीका ठका । -कषा-ली० इवेत दुर्वा ।

सिताइश-ली० [फा०] रतुनि, मराइना, प्रशंसा । -गर-वि० प्रशंसा करनेवाला । -गरी-ली० प्रशंसन ।

सिताक्य-पु० [म०] सफेद धिन ।

सिताक्या-ली० [सं०] इवेत दुर्वा ।

सिताग्र-पु० [सं०] कंटक ।

सिताजाबी-ली० [सं०] इवेत जोरक ।

सितातपत्र, सितातपवारण-पु० [सं०] इवेत छत्र (राज-चिह्न) ।

सिताधि-पु० [सं०] शर्कराका पूर्वस्वरूप, शुद्ध ।

सितामन-वि० [सं०] इवेत मुखवाला । पु० गमक; शिवका एक अनुचर ।

सितापंग-पु० [म०] मयूर, मोर ।

सिताब-अ० उरत, झटपट । ली० शीघ्रता- 'ताते वीक न बोह काम यह है सिताबकी'-सुजान ।

सिताबी-अ० दे० 'सिताब' । ली० शीघ्रता; चाँदनी ।

सिताब्ज-पु० [म०] इवेत पक्ष ।

सिताभ-पु० [म०] कपूर; शर्करा (?) । वि० इवेन आभा-वाला ।

सिताभा-ली० [सं०] एक छुप, तका ।

सिताभ्र-पु० [सं०] मफेद बादल; कपूर ।

सिताभ्रक-पु० [सं०] कपूर ।

सितामोषा-ली० [म०] सितकुंभी, इवेन पादक ।

सितापुष्प-पु० [सं०] एक मछली ।

सितार-पु० एक प्रसिद्ध तंत्रवाला । -बाज़-वि०, पु० मितार बजानेवाला । -बाज़ी-ली० मितार बजाना ।

मितारा-पु० [फा० 'मतारा'] तारा, नक्षत्र; (ला०) भाग्य; चाँदी-सोनेके पत्तरकी टिकली जो दीपी, जूने आदिपर लगायी जाती है, चमकी; आतिशराजी; चद्रकी दीपीका गोल और सफेद भाग; कुछ थोड़ेके माथेपर पाया जानेवाला सफेद निशान जो अंगुष्ठमें दक जाय (यह चिह्न अशुभ माना जाता है); * मितार । -चद्रम-वि० मितारे जैसी आँखोंवाला । -दूँ-पु० ज्योतिषी । -पेशानी-वि० (पीछा) जिसके माथेपर सितारा हो । -शानास, -शुमार-पु० ज्योतिषी । -शानामी-ली० ज्योतिष विद्या । - (रे)हिंद-पु० एक संपाधि जो अग्नेय सरकारकी ओरम भम्मानाथ दी जानी थी । सु० -गर्दिक्षमें होना-दुर्भाग्यके दिन होना । -चमकना-भाग्य जगना, बरती-चदतीके दिन होना । -बुलंद होना-सीमाय-काल होना । -भारी होना-दुर्दिनका आना ।

सितारिया-पु० सितार बजानेवाला ।

सितार्क-पु० [सं०] इवेत अर्क ।

सितार्जक-पु० [सं०] इवेन तुरसी ।

सितालक, सितारक-पु० [सं०] सफेद मटार ।

सितालि-वि० [सं०] इवेन पक्षिधोषाळा । -कटभी-ली० इवेन कटभी वृक्ष ।

सितालिका-ली० [सं०] सीपा, सितुही ।

सिताबा-ली० एक बरसाती पीछा, सफेदछा ।

सिताबमेदी-पु० एक पीछा जो दवाके काम आता है ।

सिताबर-पु० [सं०] एक साग, सुसना ।

सिताबरी-ली० [म०] बाकुपी ।

सिताब-पु० [म०] अर्जुन; चद्रमा ।

सितामित-वि० [म०] सफेद और काळा; अलू और बरा । पु० बलदेव; शुक और शनि; प्रयाग । -रोम-

पु० एक नेत्ररोग ।

सितसुता-खी० [सं०] सोमराजी, बकुची; गंगा और यमुना ।

सिताह्वय-पु० [सं०] शुक प्रश्न; इवेत रोहित; श्वेत शिग्र; इवेत तुलसी ।

सिति-वि० [सं०] बौध्नेवाला; दे० 'शिति' (समाम यी) ।

सितिसमा (मन्)-खी० [सं०] इवेता, सफेदी ।

सितुई; सितुही-खी० सुतही, सीपी ।

सितुदा-वि० [का०] सराहा हुआ, प्रसन्न; प्रशंसनीय, नेक । -कार-वि० नेक काम करनेवाला ।

सितुन-पु० [का०] स्वभा, स्तम्भ; पीलपाया, धूनी ।

सितेखु-पु० [सं०] ऊलका एक मंद ।

सितेत्तर-वि० [सं०] इवेनसे भिन्न, काला । पु० एक तरह-का काला धान; कुक्षी । -शति-पु० अग्नि ।

सितोपल-पु० [सं०] मफेद कमल ।

सितोदर-पु० [सं०] कुबेर ।

सितोदरा-खी० [सं०] एक तरहकी कौपी ।

सितोज्ज्व-पु० [सं०] चदन । वि० चीनीका; चीनीमे बना हुआ ।

सितोपल-पु० [सं०] विष्णोर, स्फटिक; खरिया, कठिनी, दुड़ी ।

सितोपला-खी [सं०] चीनी, शकर; मिल्की ।

सितोष्णवारण-पु० [सं०] इवेन छत्र ।

सिथिल-वि० दे० 'शियिल' ।

सिद्धा-पु० दे० 'मदका' ।

सिद्धना-सं० कि० कष्ट पहुँचाना, मीदना-'दिलीपसिद्धो मिदत है'-भू० ।

सिद्धरी-खी० तीन दरवाजोंवाला दालान ।

सिद्धामा-पु० दे० 'भीद्रामा' ।

सिद्धिक-खी० दे० 'सिद्धक' । वि० सत्ता ।

सिद्धीसी-अ० शीघ्रतापूर्वक-'देवो यह संदेस, सिद्धोमी लौटियो'-सत्यना० ।

सिद्ध-खी० [अ०] सवाई, निष्कपट भाव, दिलकी मफाई ।

सिद्धुंड-पु० [सं०] ब्राह्मण पिता और पराजका मातासे उत्पन्न सनान ।

सिद्धीक-वि० [अ०] बहुत मन्दा ।

सिद्ध-वि० [सं०] पूरा किया हुआ; प्राप्त, कम्प; निश्चित; प्रमाणित; दृढ़, पक्का (निश्चय); मत्त माना हुआ; निर्णित, जिसका फैसला हो गया हो (व्यवहार); चुकाया हुआ; पकाया हुआ (भोजन); पका हुआ (फलादि); अच्छी तरह तैयार किया हुआ-'मंदिर सिद्ध करवायो'-अष्टछाप; प्रसूत (स्वया); पराभूत; बशीकृत (मंशादि डार); दक्ष, विशेषज्ञ; शुद्ध किया हुआ (मपथ्या आदिमे); मुक्त; अलौकिक शक्तिले सपन्न; भूमोत्था; पवित्र; अमर; प्रसिद्ध; दीप्तिमान्; ठीक घटा हुआ । पु० सत या योगी जिसे सिद्ध प्राप्त हो गयी हो; कृषि; एक देवयोजिन; जादूगर; मुकदमा, व्यवहार; एक योग (ज्यो०); गुह्य; जिन; काला धूत; चौबीसकी संख्या; सेवा नमक; बाजीगरी; अलौकिक शक्ति; काला सिद्धवार; पीली सरसों । -कज्जल-पु० जादू-का काजल । -कज्ज-वि० जिनकी इच्छाएं पूरी हो गयी

हैं । -कामेश्वरी-खी० दुर्गाकी पंच मूर्तिमेंसे एक ।

-कारी (रिज)-वि० शाकानुसार आवरण करनेवाला ।

-कावै-वि० कृतकार्य, सफल । -क्षेत्र-पु० सिद्धोंका

स्नान; वह स्नान जहाँ योग आदिकी जड़ सिद्ध होती है; बंदक बनका एक भाग । -खंड-पु० एक तरहकी शर्करा । -शंशा-खी० मंदाकिनी, स्वर्गंगा । -शति-खी० सिद्धिदायक कर्म (ज्यो०) । -गुटिका-खी० एक मंत्र-सिद्ध वटिका जिसे मुँहमें रखनेपर मनुष्य अदृश्य हो सकता है । -ग्रह-पु० उन्माद उत्पन्न करनेवाला एक ग्रह या ग्रेत; उन्मादका एक भेद । -जल-पु० पकाया हुआ पानी; भाँज । -सायस-पु० अलौकिक शक्तिशुक्त साधु । -द्वर्धन-पु० जीवन्मुक्त संतोंके दर्शन । -देव-पु० शिव । -द्वय-पु० जादूकी चीज । -घातु-खी० पारा । -जर-पु० देवता; वह व्यक्ति जिसे सिद्ध प्राप्त हो गयी हो । -जाय-पु० महादेव । -जामक-पु० अश्मंतक । -पछ-पु० किसी प्रतिष्ठाका वह पक्ष जो प्रमाणित हो गया है । -पच-पु० अंतरिक्ष । -पात्र-पु० स्तंभका एक अनुकरण । -पीठ-पु० दे० 'सिद्धक्षेत्र' । -पुर-पु० -पुरी-खी० एक पौराणिक नगर (जो कुछके मतसे पृथ्वीके उत्तरी मरेपर और कुछके मतसे पातालमें स्थित है) ।

-पुरुष-पु० वह व्यक्ति जिसे योगादिमें सिद्ध प्राप्त हो गयी हो । -पुष्प-पु० करवीर, कनेर । -प्रयोजन-पु० मफेद या पीली सरसों । -प्राय-पु० जो कर्तव्य-करीब सिद्ध हो चुका हो । -भूमि-खी० दे० 'सिद्धक्षेत्र' ।

-मंत्र-पु० सिद्धिप्राप्त मंत्र । -मत्त-पु० सिद्ध व्यक्तियों-का विचार । -सनीयस-पु० कर्मभास । -मातृका-

खी० एक देवी; एक लिपि । -मानस-वि० जिसका मन पूर्णतः सतुष्ट हो । -मोदक-पु० तबराजोद्धव शर्करा,

यवासशर्करा । -वात्रिक-पु० दे० 'सिद्धिवात्रिक' (अमायु) । -वामल-पु० एक तंत्र । -योग-पु०

ज्योतिषका एक योग । -योगिनी-खी० ममता देवी; जादूगरनी । -योगी (गिह)-पु० शिव । -रत्न-

वि० जिनके पास जादूका रत्न हो । -रत्न-पु० पारा; वह जिनमे पारा सिद्ध कर लिया है; कोमियागर ।

-रुंड-पु० जादूकी छड़ी । -रमायन-पु० दीर्घांशु

बनानेवाला रम । -रुद्ध-वि० जिसने निशाना ठीक-ठीक

लगाया है; जिसका निशाना न चूके । -रुद्धी-खी०

रुद्धमीकी एक मूर्ति । -होकर-पु० सिद्धोंका ठीक ।

-वट्टी-खी० एक देवी । -वस्ति-खी० जादूकी वस्ती ।

-वस्ति-खी० तेल आदिकी पिचकारी (पनिमा) ।

-विद्या-खी० एक महाविद्या । -विनायक-पु० गणेश

की एक मूर्ति । -शास्त्रार्थ-पु० तत्रविशेष । -शिक्षा-

खी० कपरके लोकका एक स्नान (ज्यो०) । -संकल्प-वि०

जिनका संकल्प पूरा हो गया हो । -संबंध-वि० जिसके

संबंधी प्रसिद्ध हैं । -सरित-खी० गंगा; आकाशगंगा ।

-सखिल-पु० दे० 'सिद्धजल' । -साधन-पु० सफेद

या पीली सरसों; सिद्धिकी प्राप्तिके लिए तांत्रिक आदि

क्रियाओंका माधन; इन क्रयोंमें काम आनेवाले पदार्थ;

प्रमाणितको प्रमाणित करना । -साधित-वि० जिसने

व्यक्तिमाका अनुभव अध्ययन द्वारा प्राप्त न कर व्यवहार-

से प्राप्त किया है।—**साध्य**-वि० जिसने किया जानेवाला काम पूरा कर लिया है; प्रमाणित। पु० एक मंत्र; प्रदक्षित प्रमाण।—**सारस्वत**-वि० जिसने सरस्वती सिद्ध हो।—**सिद्ध**-पु० मंदाकिनी, स्वर्गंगा।—**सुसिद्ध**-वि० बहुत अधिक प्रभावशाली। पु० एक मंत्र।—**सेव**-पु० कार्यालय।—**सेवित**-पु० श्रेय वा शिक्षा एक रूप, बहुकर्मैव।—**स्वाधी**-स्त्री० सिद्ध पुरुषकी बुद्धि जिससे श्रृङ्खानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है।—**हस्त**-वि० जिसका हाथ भेजा हो, दक्ष, कार्यकुशल।—**हेम**(ह)-पु० खरा, शुद्ध सोना।

सिद्ध-पु० [सं०] सिद्धवार; साल हस्त; एक वृत्।
सिद्धा-स्त्री०, **सिद्धत्व**-पु० [सं०] सिद्ध होनेका भाव; सिद्धि; पूर्णता; प्रमाणिकता।
सिद्धांगना-स्त्री० [सं०] सिद्ध जातिके देवीकी स्त्री; वह स्त्री जिसने सिद्धि प्राप्त हो गयी हो।
सिद्धाञ्जन-पु० [सं०] एक अञ्जन (कहा जाता है इसके प्रयोगसे भ्रूयमकी चोखे दिखाई देने लगती हैं)।
सिद्धांत-पु० [सं०] अंतिम उद्देश्य या अभिप्राय; पूर्व-पक्षके खंडनके बाद सिद्ध मत; निश्चित मत जिसका मन्थके रूपमें ग्रहण किया जाय, उत्कृष्ट; पक्की राय; निर्धारित मतके आधारपर निश्चित शास्त्रीय ग्रंथ।—**कोटि**-स्त्री० तर्कका वह स्थल वा बिंदु जो निर्णायक हो।—**कौमुदी**-स्त्री० भट्टोजिदीक्षित-रचित संस्कृत व्याकरणका एक प्रसिद्ध ग्रंथ।—**क्ष**-वि० सिद्धांत जाननेवाला, तत्त्वज्ञ।—**चर्मागम**-पु० परंपरागत नियम।—**पक्ष**-पु० तर्क-संगत पक्ष।—**बाद**-पु० मतवाद।

सिद्धांताचार-पु० [सं०] तांत्रिकोंका आचार-विशेष; इस आचारका पालन करनेवाला व्यक्ति।

सिद्धांतिल-वि० [सं०] सत्य प्रमाणित किया हुआ, तर्क द्वारा निर्णित।

सिद्धांती(सिन्)-पु० [सं०] आपत्तियोंका निराकरण कर अनुमानकी स्थापना करनेवाला; मीमांसक; वह जो सिद्धांत-ग्रंथोंका जानकार हो।

सिद्धांतीय-वि० [सं०] सिद्धांत-सम्बन्धी।

सिद्धांता-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

सिद्धा-स्त्री० [सं०] एक योगिनी; ऋद्धि; सिद्ध नामक देववर्गकी स्त्री।

सिद्धाई-स्त्री० सिद्धकी अवस्था।

सिद्धाक्ष-वि० [सं०] जिसकी आँखोंका पालन होता हो।

सिद्धाक्ष-पु० [सं०] एक अक्ष।

सिद्धापना-स्त्री० [सं०] दे० 'सिद्धसिंधु'।

सिद्धाविका-स्त्री० [सं०] चौबीस देवियोंमेंसे एक जो अर्धनग्नका अवेश कार्यान्वित करती है।

सिद्धारि-पु० [सं०] एक तांत्रिक मंत्र।

सिद्धार्थ-वि० [सं०] जिसकी कामनाएं पूरी हो गयी हों, सफलमनोरथ; कष्टमत्त छे जानेवाला; जिसका अभिप्राय हात हो। पु० वीर्य बुद्ध; एक मारपुत्र; रक्दका एक अनुचर; महावीरके पिता; दशरथका एक मंत्री; सफेद या पीली सरसी; प्रसिद्धार्थ; बड़ी बुद्ध; एक संवत्सर; वह मकान जिसमें पूर्व और दक्षिणकी ओर चने कमरे हों।—**कारी**

(रिन्)-पु० शिप।—**ससि**-पु० एक बोधिसत्व।—

सामी(विन्)-वि० अपनेकी सफलमनोरथ माननेवाला।
सिद्धार्थक-पु० [सं०] सफेद सरसी; एक महाक्षम।

सिद्धार्थी-स्त्री० [सं०] सफेद सरसी; बड़ी बुद्ध; साठ संवत्सरोंमेंसे एक; वर्तमान जन्मसंयोगके चौथे अर्धदशमी माता।

सिद्धासन-पु० [सं०] एक योगासन जिसमें बायें पैरका तलवा गुदा और धिन्मके बीचमें और दाहिना पैर धिन्मके ऊपर रखकर भ्रमचप्पर दृष्टि जगते हुए ध्यान करते हैं।

सिद्धि-स्त्री० [सं०] गर्भकी पूर्ति; सफलता; अभ्युदय; निष्पत्ति; अनुमान; निश्चय; (कृष्णका) परिशोध; पाक-क्रिया; प्रचनका हस्त; पूर्ण शुद्धि; अणिमा, गरिमा आदि अलौकिक शक्तियाँ (दे० 'अटसिद्धि'); दक्षता, निपुणता; सुपरिणाम; मोक्ष; प्रज्ञा; लोच; जादूकी लक्ष्मण; योगका एक प्रकार; दुर्गा; पूर्ण ज्ञान; काम; लक्ष्यवैध; आरोग्य-काम; प्रयोगमें आना (नियम); स्पष्ट होना; एक ही व्यक्तिमें विभिन्न गुणोंका समावेश (मा०); ऋद्धि नामक ओषधि; एक क्षुत्ति (संगीत); दक्षकी एक कन्या; गणेशकी एक पत्नी; मेधासिन्धी; भग; छपयका एक भेद। पु०

सिध।—**कर**-वि० मफल बनानेवाला; समृद्ध वर्तन वाला।—**कादक**-वि० लक्ष्यप्राप्ति करानेवाला; प्रभाव-

कर।—**कारण**-पु० मुक्तिका साधन।—**कारी**(रिन्)-

वि० किसी बातकी मिद्धि करानेवाला।—**ज्ञान**-पु०

मिद्धांतीका ज्ञान।—**द**-वि० मोक्ष देनेवाला; मिद्धि देनेवाला। पु० बहुकर्मैव; पुत्रजीव बुद्ध।—**द्वर्षी**-

(सिन्)-वि० भविष्यमें मिद्धि देनेवाला; आगेका

स्वितिका ज्ञान रखनेवाला।—**दाता**(ह)-पु० गणेश।

—**दात्री**-स्त्री० दुर्गाका एक रूप।—**प्रद**-वि० मिद्धि देनेवाला।—**भूमि**-स्त्री० वह स्थान जहाँ सिद्धि जन्म

मिले।—**जार्ग**-पु० सिद्धलोकमें पहुँचानेवाला रास्ता।

—**वात्रिक**-पु० मिद्धिके प्राप्तिके लिए वात्रा करनेवाला

व्यक्ति।—**योग**-पु० ग्रहोंका एक शुभ योग; योग-

शक्तिका प्रयोग।—**योगिनी**-स्त्री० योगिनीका एक

भेद।—**योग्य**-वि० सिद्धिके लिए आवश्यक।—**रम्य**-

पु० दे० 'मिद्धरम'।—**राज**-पु० एक पर्वत।—**काम**-

पु० सिद्धिके प्राप्ति।—**कर्ष**-स्त्री० जादूकी बत्ती।

—**वाद**-पु० ज्ञानगोष्ठी।—**विष्य**-पु० सिद्धिप्राप्तिके

मार्गमें आनेवाली बाधा।—**विनायक**-पु० गणेशकी

एक मूर्ति।—**सायक**-पु० सफेद सरसी; दमनका।

—**स्वान**-पु० तीर्थस्नान; मोक्षप्राप्तिका स्थान; चिकित्सा-

ग्रथका उपचारस्थल।

सिद्धिक-पु० [सं०] सिद्धि, अलौकिक शक्ति।

सिद्धि-स्त्री० [सं०] क्षुद्र पिपीकिका, छोटी चोंटी।

सिद्धीश्वर-पु० [सं०] महादेव; एक तीर्थ।

सिद्धेश्वर-पु० [सं०] योगिगुरु; शिव; गुरुद्वारा; एक

पर्वत।

सिद्धेश्वरी-स्त्री० [सं०] देवीविशेष।

सिद्धीदक-पु० [सं०] कांजी; एक तीर्थ।

सिद्धीच-पु० [सं०] (मात्रिक) गुरुकर्मविशेष (नारद,

काश्यप, शंभु, भार्गव और कुलकौशिक) ।

सिध-वि० दे० 'सिद्ध' ।

सिधरी-खी० एक मछली ।

मिषाई-खी० सरलता, संभाषण ।

मिषाना-अ० क्रि० चला जाना, प्रस्थान करना; आना - 'तब कर जोरि कछो कोशकपति हे प्रभु भले मिषाचो' - रघुराज ।

सिधारना-अ० क्रि० जाना, प्रस्थान करना; बिदा, रवाना होना; मर जाना । * स० क्रि० सुधारना ।

सिधि-खी० दे० 'मिहि' । - गुटका-पु० दे० 'मिद्ध-गुटिका' ।

मिध्व-वि० [स०] नफेद दागोंवाला; द्रवत कुछसे प्रसक्त; भीषे जानेवाला । पु० कुछके अठारह भेदोंमेंसे एक महा-कुष्ठ; द्रवत कुष्ठ ।

सिध्व(स्)-पु० [स०] कुछके अठारह भेदोंमेंसे एक-कुष्ठ कुष्ठ । - पुष्पिका-खी० किलाम, सेबुआ ।

मिध्वल-वि० [स०] सेबुआ रोगी ।

सिध्वला-खी० [स०] बूझी मछली; एक तरहका कुष्ठ ।

सिध्वान्(बन्)-वि० [स०] जिसे सेबुआ हुआ हो ।

सिध्व-खी० [स०] कुछका दाग; कुष्ठ रोग ।

सिध्व-पु० [स०] पुष्प नक्षत्र ।

सिध्व-वि० [स०] माधु, प्रभावकारी, मफल; रक्षा करने-वाला । पु० वृक्ष ।

सिध्वक-पु० [स०] वृक्षविशेष ।

सिध्वक-खी० [स०] वृक्षविशेष । - बन्-पु० एक देवी-पान ।

सिन्-पु० [स०] शरीर; परिधान, पोशाक; ग्राम; कुम्भी । वि० सफेद; काना, एकाक्ष ।

सिन्, सिन्न-पु० [अ०] उन्न, बय । - रसीदा-वि० बूदा । - (ने)शङ्कर-पु० समझ आनेको उन्न, बोधना-रय । - सु० - को पङ्क्तिना-मयाना होना । - से उत्तर जाना - जवानी डलने लगना ।

सिनक-खी० नाकका मल, रेट ।

सिनकना-स० क्रि० नाँवके शौकेमें नाकका मल निकालना, छिनकना ।

सिमान-पु० [फा०] माला; मालिका फल; तीरकी नोक ।

सिनि-पु० क्षत्रियोंकी एक प्राचीन शाखा; एक वादवशीर, मालकिका पिता ।

मिनी-खी० [स०] गौर वर्णकी खी ।

सिनीपति-पु० एक वादवशीर ।

सिनीवाली-खी० [स०] एक वैदिक देवी (गर्भ-प्रसव या प्रतिपदाकी अधिष्ठात्री देवी); शुद्ध पलकी प्रतिपदा; दुर्गा; एक नदी; अंगिराकी एक कन्या ।

सिमेत-खी० [अ०] विश्वविद्यालयकी प्रबंध समिति ।

सिमेता-पु० [अ०] चलचित्र, छायाचित्र; वह स्थान जहाँ चलचित्र प्रदर्शित किये जायें । - हाइस-पु० सिनेमाघर ।

मित्री-खी० मिठाई; छुशीमें देवताकी चढ़ाकर प्रसाद-के रूपमें बाँटी जानेवाली मिठाई ।

सिधर-खी० [फा०] ढाल, फटी; रोक; (ला०) पनाह;

मददगार । - दारी-खी० रखन, हिफाजत करना, रख-वाली । मु० - डाल या कँक देना-हथियार डाल देना, हार मान लेना । - डूँहपर लेना-हिफाजतके लिए डाल उठाना ।

सिपरा-खी० दे० 'सिप्रा' ।

सिपह- 'सिपाह' का लघु रूप । - गरी-खी० सिपाहीका काम या पेशा, सैनिकवृत्ति । - दार-पु० सेनानायक । - सालार-पु० सेनापति ।

सिपाई-पु० दे० 'सिपाही' ।

सिपाहरी-खी० दे० 'सिपाही' ।

सिपाहरी-खी० [फा०] दे० 'सिपाही' ।

सिपाहरी-खी० [फा०] दे० 'सिपाही' ।

सिपाह-पु० बॉस आदिका बना हुआ ऋड्ड डॉचा या माघन जिसे अड़ानेके लिए गाड़ीमें आगे लगाते हैं ।

सिपास-पु० [फा०] मराहना, बढाई; कृतघातप्रकाश । - नामा-पु० अनिन्दनपत्र ।

सिपाह-पु० [फा०] सेना, फौज (हिंदीमें खी० भी- 'मद-मंद भावत मलिकी मियाह मै'-रत्नगि) । गरी-खी० सिपाहीका काम या पेशा; सैनिकवृत्ति । - सालार-दे० 'सिपाहसालार' ।

सिपाहिया-वि० [फा०] सिपाहियों-या, सैनिकोंवित (-टाट) ।

सिपाही-पु० [फा०] सैनिक; योद्धा; कास्टेबल; चबराही ।

मिपुर्द-वि० [फा०] मीषा हुआ, हवाले किया हुआ । - गी-खी० सिपुर्द करनेका भाव; तहवील, हिरासत (-में लेना) । - नामा-पु० मिपुर्द करनेका लेख, मम-पंणपत्र । मु० - करना-मीपना, हवाले करना; हिरा-मममें देना ।

सिप्पर-खी० दे० 'मिपर' ।

मिप्पा-पु० मीषका अर्धांश; डब; निशाना; एक तरहकी छोटी तोप; मतलब; काम निकालनेका उपाय, ढौल, टिप्पम; धाक । मु० - जमाना-भूमिका बँधना, ढौल खड़ा करना । - मिद्धना-खड़ना-मीका मिलना, उपाय लग जाना । - मिधाना-खड़ाना-टिप्पम जमाना, तदवीर करना । - मारना-लगाना-निशाना लगाना; फँदा लगाना, बाल डालना ।

सिप-पु० [स०] चंद्रमा; पत्थाना, स्वेद; एक झील ।

सिप्रा-खी० [स०] क्षियोंका कटिबंध; अंस; एक झील; उज्जैनके पासकी एक नदी ।

सिफल-खी० [अ०] गुण, विशेषता; लक्षण; विशेषणपद ।

वि० (समासमें) तुल्य, सरस (गुणसिफत-मेखिये जैसे स्वाभाविक) ।

सिफर-पु० [अ०] बिंदु, शून्य । वि० मूल्यरहित ।

सिफली-खी० कमीनापन, नीचता ।

सिफला-वि० [अ०] कमीना, नीच, झूठ, छिछोरा । -

झ, मिझाज-वि० नीचप्रकृति । - नजाज-परवर-

वि० कमीनोंकी बढाने, कमीनोंपर अनुग्रह करनेवाला ।

- पज-पु० मोछापन, नीचता ।

सिफली-वि० [अ०] नीचेका, निचला । - अमल-पु०

वह अंग जिसमें सैतान या प्रेतात्माओंसे सहायता ली जाय ।

सिक्का-की० दे० 'सिका' ।

सिक्कात-की० [अ०] 'सिकत'का बहु० । -(ते) ज्ञाती-की० सञ्जन गुण ।

सिक्काती-वि० [अ०] गुणसे सख्त; शिक्षा, जम्प्यास आदि-मे प्राप्त; उपाधिकृत, जो महज न हो ।

सिक्कात-की० [अ०] सक्तीर(दूत) का पद या काम, दूतत्व; एक राक्षस दूसरेको भेजा हुआ प्रतिनिधिमण्डल ।
ज्ञाना-पु० दूतावास, राजदूतका दफ्तर ।

सिक्कारिश्-की० [फा०] किसीके विषयमें अलार्हकी बात कहना, किसीका कोई काम करनेके लिए दूसरेसे कहना; किमीमें किसी पद, कार्य हत्यादिको योग्यता बताना; सुशामन; जरीया (क०) ।-नामा-पु० सिक्कारिशी विष्टी ।
सिक्कारिशी-वि० जिसमें किसीको सिक्कारिश् की गयी हो; सिक्कारिश् करनेवाला ।-दददू-पु० वह आदमी जो योग्यताके बिना, महज मर्-सिक्कारिश् या चापवृत्तीमें कोई पद या जाय ।

सिक्काह-पु० [फा०] मिट्टीका बरतन; ठीकरा ।

सिक्काहा-पु० [सं०] मिट्टीका बरतन; ठीकरा; खपड़ा ।
-पोह-वि० खपरेलकी छाजनवाला ।

सिक्काक-की० दे० 'शिविका' ।

सिमस्त-पु० दे० 'मीमस्त' ।

सिम-वि० [सं०] प्रत्येक; मन; ममग्र, संपूर्ण ।

सिमई-की० सिवई ।

सिमट-की० सिमटनेकी क्रिया ।

सिमटना-अ० कि० सिकुटना, संकुचित होना; मिकुटन पड़ना; एकत्र होना, बटुरना; लजित हो जाना, महमना; अंजाम होना ।

सिमर-पु० मेमर-चंदन भरम सिमर आक्मिन मालि रहल हिय कौट-विधा० ।

सिमरना-अ० कि० दे० स्मरण, याद करना ।

सिमल-पु० हलका जुआ; नृपकी श्रृंखी ।

सिमरगोहा-पु० एक तरहकी मेहराब ।

सिमरन-पु० स्मरण, याद करनेकी क्रिया ।

सिमसिमाना-अ० कि० ठंडा माच्छ होना, कुछ-कुछ नमीका होना ।

सिमाना-पु० हद, सीमाना । अ० कि० दे० 'मिलाना' ।

सिमिटना-अ० कि० दे० 'मिमटना' ।

सिखुति-की० दे० 'स्थिति' ।

सिमेटना-अ० कि० दे० 'मिमेटना' ।

सिम-की० [अ०] दिशा, ओर, जानिय ।

सिब-की० सीता ।

सिबना-अ० कि० सर्वजन करना, बनाना, उत्पन्न करना; † मीना ।

सिबरा-वि० शीतल, ठंडा; कसा । पु० छाया; † सिवार ।

सिबराई-की० शीतलता, ठंडक ।

सिबरासा-अ० कि० शीतल, ठंडा होना ।

सिबह-वि० [फा०] दे० 'सियाह' ।-कार,-ज्ञान,-क्राम,-बफ्त-वि० दे० 'सियाह' में ।-ज्ञाना-पु० उजवा हुआ घर; कैदखाना ।

सिवा-की०-सीता, जानकी ।

सिवावत-की० [अ०] मरदारी, बहाई; राग्य; सैवद जाति ।

सिवावा-वि० दे० 'सवाना' । म० कि० दे० 'मिलाना' ।

सिवापा-पु० सिवोंका एकत्र होकर कुछ दिनोंतक मातम मनाना (पंजाब आदिका एक रिवाज); मातम ।

सिवारा-पु० गीदड़, ग्याह ।-काठी-की० अमलतास ।

सिवारा-पु० एक तरहका लकड़ीका फावड़ा जिससे जुनी हुई जमीन बराबर करते हैं; दे० 'सियाला' ।

सिवाक-पु० ग्याल, गीदड़ ।

सियाळा-पु० जाड़ेका मौसम ।

सियाळापोका-पु० लोनी मिट्टीवाली दीवारमें पाया जानेवाला एक छोटा कीड़ा ।

सिवाली-वि० जाड़ेके मौसमका; जाड़ेमें होनेवाली (फसल) । की० एक तरहका विदारी बर ।

सिवावद-पु०, सिवावची-की० खलिबानमें माधुओ आदिके लिए निकाला हुआ अन्नका अन्न ।

सिवासन-की० [अ०] देशरक्षा; राज्यप्रबंध; राजकाज; नड; शास्त्र; दबदबा; भय; मारपीट ।-दूई-वि० राज-नीतिज्ञ; शासनपटु ।

सिवासी-वि० राज्यप्रबंध या राजकाजमें मगड़; राज-नीतिक ।

सिवाह-वि० [फा०] काला, ड्याम; अशुभ ।-कार-वि० बदकार, दुराचारी; अत्याचारी ।-कारी-की० बदकारी; पाप; जुल्म ।-गोहा-पु० एक द्विज जंतु जिसके कान कांटे होते हैं, बनबिलाव ।-खई-वि० काली अल्लोबान, बेमुरीवत, बेवफा ।-ज्ञान-वि० बदज्ञान, जिसका ज्ञान जन्मी पड़े ।-ताब-वि० जिसकी सिवाहोंमें चमक । पु० नीला फौलाड़ ।-दाना-पु० काला तिल; धनियाँ सीफका फूल ।-दिल-वि० बेमुरीवत; निर्दय ।-पुस्त-पु० एक तरहका कश्तर ।-पोश-वि० काले रंगके कप पहननेवाला; शोक या मातम मनानेवाला । [सु०-होना-मातम मनाना ।]-क्राम-वि० काला, कृष्ण-काय ।-बफ्त-वि० अमगा ।-बफ्ती-की० दुर्भाग्य, बदनमीची ।-बातिन-वि० खोटे दिलका ।-मस्त-वि० बरमस्त, शराबके नशेमें चूर ।-मस्ती-की० सियाहमस्त होना ।-रू-वि० काला; जलील ।-सफेद-पु० अलार्ह बुराई । [सु०-करना-जो चाहना नो करना ।-का मालिक होना-सर्वाधिकारी होना ।] सु० (कामाज) ।-करना-लिखना; बहुत लिखना ।

सिवाहस-की० [अ०] प्रमथ; पर्यटन, सैर करना ।

सिवाहा-पु० [फा०] वह रोजनामचा जिसमें रोजका आमदनी-खर्च लिखा जाय; वह बही जिसमें लगान या माछगुजारीकी बयली लिखी जाय ।-बसी-पु० सिवाहा लिखनेवाला; रजिस्टरमें आहार्य लिखनेवाला । सु०-करना-सियाहमें लिख लेना ।-होना-सियाहेन लिखा जाना, रजिस्टरमें दर्ज होना ।

सिवाही-की० काकापना; इवामता; काकिमा, कालिख; अंधकार; रोशनाई, ससि; दोष ।-बदा-शेख-पु० स्वाही सोखनेवाला कायब, सोखता, 'ब्लाटिंग पेपर' । सु०

—**दौड़ना**—(मुँहपर) मियाही छा जाना ।
सिर-पु० [सं०] पिप्लोमूल; [हिं०] मनुष्य तथा अन्य जानवरोंका गरदनके ऊपरका हिस्सा; खोपड़ी, कपाल; किन्नी चीजका ऊपरका हिस्सा; चोटी; आरज; किनारा; सरदार; दियाग । —**कटा**—[वि०] जिसका सिर कटा हो; दूसरोंका सिर काटनेवाला, अपकारी । —**खप-वि०** सिर खपानेवाला, मेहनती; बहादुर, दिग्ग । —**खपी-की०** मिरतौड़ कीशिश, जान लगाकर मेहनत करना । —**खिल्ल-पु०** बरामशर्करा । —**गिरी-की०** मुगेंकी शिखा; पक्षियोंकी शिखा । —**चंद-पु०** हाथीके मस्तकका एक अर्धचंद्राकार भूषण । —**चढ़ा-वि०** मुँहलगा, लीठ । —**ताज-पु०** मरदार; मालिका; खियोंका एक मिरका गहना; एक तरहका नकाब; पति, शोहर । —**प्राण-पु०** दे० 'शिरप्राण' । —**द्वार-पु०** दे० 'मरदार' । —**द्वारी-की०** दे० 'मरदारी' । —**हुआली-की०** ल्यामके साथका एक साज । —**नामा-पु०** पत्रपर लिखा जानेवाला पना; लेखात्रिका शीर्षक । —**नेत-पु०** सिरकी पगड़ी—'दे नेही मत डगमग' बॉपि प्रीति-मिरने'—रत्न नज़ारा; क्षत्रियोंकी एक उपजाति या शाखा । —**पाँच-पाव-पु०** दे० 'मिरीपाव' । —**पाँच-पेच-पु०** पगड़ी; पगड़ीके ऊपरका छोटा कपड़ा; पगड़ीपर बॉपनेका एक गहना । —**पोख-पु०** मिरका आवरण । —**फूल-पु०** खियोंका एक शिगेभूषण । —**फटा, चंद-पु०** पगड़ी । —**बंदी-की०** माथेपरका एक गहना । —**बोझी-की०** पाटनके काममें आनेवाला पतला बॉस । —**मग़ज़न-पु०** माथापच्छी । —**मजि-पु०** शिरोमणि । —**मुँहा-पु०** जिसके मिरके बाव मुँहे नों; निगोड़ा (की०) । —**मौर-पु०** दे० 'मिरगाज' । **रह-पु०** दे० 'शिरोरु' । —**हाना-पु०** सायका वह हिस्सा ज़िबर मिर रहना है । **मु०**—**अलग करना**—मिर काटना । —**ऑखों-पर, ऑखोंसे**—स्वाकार है, शौकमें । —**ऑखोंपर बिठाना या बैठाना**—बहुत इज्जत करना । —**ऑखों पर रखना**—बड़ी आदरगत करना । —**आखोंपर होना**—मृगीमें स्वीकार होना । **आना**—मिरपर बार करना; प्रेमाविष्ट होना; किसीके पीछे पड़ना, शगबना । —**आ बनना**—इलजाम लगाना, मुसीबत आना । —**उकसाना** मिर ऊँचा करना; दगा-फसाद करना; बगवान करना । —**उठाकर चलना**—इतराना, गरूर करना । —**उठाना**—फुसेत, सॉस, अक्कास पाना; विरोध, मुकाबला करना; उपद्रव, फसाद करना; लज्जित न होना, बगार ताकना, अक्क दिखाना, घमट करना; प्रतिष्ठा, आरमसमानमें रहना । —**उठानेकी फुरसत नहीं**—जरा भी अवकाश नहीं । —**उठाने नहीं देना**—जरा भी फुरसत नहीं देना, हर दम कायमें जोते रहता है । —**उष जाना, उड़ना**—मिर कट जाना । —**उड़ाना, उतारना**—मिर काटना । —**ऊँचा करना**—आरमसमानपूर्वक रहना । (किसीका) —**ऊँचा करना**—प्रतिष्ठा देना । —**अँधाना**—सिर नीचा करना । —**कटना**—मिरमें क्षत होना; जानमें मारा जाना । —**कड़मपर रखना**—बाँवपर मिर रखना, मिश्रत करना, इज्जत करना । —**करना**—जिम्मेवार बनाना;

लकाना-बिठाना; जबरदस्ती देना; चोटी गूँथना; लश आदिकी बाजी जीतना । —**कलम करना**—सिर काटना । —**कहाँ कोहूँ, कहाँ लताश कहे ?**—काइना—मसहूर होना । —**का न पाँवका**—वेमिर-पैरका, ऊल-जलूल । —**का पसीना पॉवकी आना या पॉवपर बहना**—बहुत ज्यादा मेहनत करना । —**का बॉस उतरना**—किसी कामसे फुरसत पाना । —**का बौझ उतारना, टालना**—या **हालना**—लापरवाहीसे काम करना । —**का बवाल होना**—दुमर होना, जोका बंजाल होना । —**की आक़त टलना**—मुसीबत दूर होना । —**की क्रसम या नौ**—अपथका एक प्रकार (देना, खाना) । —**की टली जानपर आयी**—एक तरफ संकट टला, दूसरी तरफमें आया । —**की सुख न पॉवकी बुच-कुल हीश नहीं, लापरवाह** । —**के जोर-पूरी** कीशिशमें । —**के बल**—सिरके मशारे, अदबके साथ (चलना, जाना) । —**के साथ है**—जानके साथ है । —**कोरे उस्तुरेसे मुँहना**—गुनाई करना; जलील करना; मव कुछ छट लेना । —**खपाना**—किसी काममें बहुत माथापच्छी करना । —**खाना**—अर्थकी बातोंसे परेशान करना; जोर मचाना । —**खाली करना**—बेकार माथापच्छी करना; बकसक करना । —**खीराना**—तूल पकड़ना, मरफकी करना; मिर एक तरफ कर लेना । —**खुजलाना, खुजाना**—शामन आना, मार खानेकी जी चाहना (ब्यर्थ) । —**खुजलाने या खुजानेकी फुरसत या मुहलत नहीं**—जरा भी अवकाश नहीं । —**खोलना**—मिर उचाड़ना; शाल फैलाना; किसी कबी चीजमें मारकर सिर फोड़ना । —**गँजा करना**—इतना मारना कि मिरपर बाल न रह जायें; कंगाल कर देना । —**गाड़ी पैर पहिया करना**—बहुत कठिन परिश्रम करना । —**गाछा मुँह बाला**—मिर मफेद, पर चेहरपर जवानोंकी शल्लक; बुढ़ापेमें जवानोंकी रस्यो करना । —**गिरना**—मिर कटना; सिर झुकना । —**गिराना**—मिर तनमें अलग करना । —**गूँथना**—चोटी करना, बाल काइना (औरतोंके) । —**घुटनोंमें देना**—लिश होना; लज्जित होना । —**घूमना, चकराना**—मिरमें दर्द होना; चकर आना; बेहोशी होना; पागल हो जाना । —**चढ़कर**—निडर होकर; खुद छेख्खानी करके । —**० बोलना**—अपने आप भेद खुलाना; भूतप्रेत आदिके आवेगमें रोगीका बकसक करना । —**० मरना**—किसीके ऊपर प्राण देना, किसीकी अपनी मृत्युका कारण बनाना । —**० खड़ना**—लकाई लेना; बग़मखाह छेख्खानी करना । —**चढ़ना**—बार, मुसाहब बनना । —**चढ़ाकर पटकना**—आदर देकर अपमानित करना । —**चढ़ाना**—आदरका भाव दिखाना; मनबद, गुस्ताख बनाना; देवी-देवताकी बलि देना । —**चल्ला जाना**—मोत होना, मरना । —**चिकटना**—मिरके बालोंका चिकट जाना । —**चिकटाना**—मिरके बालोंको चिकटनेकी स्थितिमें करना । —**धीरना**—सिर जस्मी करना; लड़ना, विद करना; जबरदस्ती करना । —**जामा**—सिर कटना; किसीके जिम्मे पड़ना । —**जोड़कर बैठना**—मंत्र-परामर्शके लिए पाम पाम बैठना । —**जोड़ना**—मिर

मिलाना; एकन होना; मेक होना; राय करना; बहयन करना । -**झाड़ मुँह पहाड़**-जंगली, बहसियाना । -**झुका**-सिर नीचा होना (लज्जा, पराजय आदिसे) । -**झुकाना**-नमस्कार करना; लज्जासे गर्दन नीची करना; नुपचाय स्वीकार करना । -**डकराकर भर जाना**-इच्छा पूरी न होनेकी स्थितिमें ही दुःखमय अंत होना; म्यर्थ होना होना । -**डकराना**-सिरमें टकर लगाना; बहुत अधिक श्रम करना; सिर फोड़ना । -**टीका होना**-कामका किसीपर मुनहसर होना । -**टूटना**-भिर बायर होना, सिर फट जाना । -**हाकना**-किसीके ऊपर थोपना, मत्से मदना । -**हाँकना**-सिरपर कपड़ा ढाल लेना । -**तनसे उतारना**-तराशना-भिर काटना । -**तोड़कर लेना**-बलपूर्वक कोई चीज ले लेना । -**तोड़ कोशिश करना**-बेहद कोशिश करना । -**तोड़ना**-सिर फोड़ना; बहुत मारना-पीटना; बर्षमें करना । -**थकना**-किसीको इतने ज्यादा समझाना; किसी काममें बहुत ज्यादा दिमाग लगाना । -**थामकर बैठ जाना** या **बैठना**-शोक, क्षेम, आघात आदिसे वेगसे भिर पकबर बैठ जाना । -**थाम लेना**-कोई चुरी खबर सुनकर या कोई चोट पहुँचानेवाली बात होनेपर भिर पकड़ लेना । -**थुप जाना**-जिम्मे पड़ना; इलजाम लगना । -**थोपना**-किसीके जिम्मे करना; इलजाम लगाना । -**दबाना**, **दाबना**-सिरकी मालिश करना; पराजित करना । -**दिखाना**-जुँप निकलवाना । -**दीवारोंसे टकराना**-बहुत ज्यादा धक्का मारना । -**दुखना**-सिरमें दर्द होना । -**दुखाना**-सिरमें दर्द पैदा करना; सिर फिटाना; परेशान करना । -**दे-दे मारना**, **-दे मारना**-सिर पीटना (शोकादिमें) । -**देना**-प्राण निछावर करना, जान देना । -**धरना**-आदर-ममानपूर्वक स्वीकार करना; जिम्मे लगाना; इलजाम लगाना । -**धुनना**-शोक, पदचाप आदिसे वेगसे सिर पीटना; मातम करना, शोक करना; पछताना । -**धोना**-सिरके बालोंको खली, मिट्टी वगैरह डालकर पानीसे साफ करना (खि०) । -**नंगा करना**-सिर खोलना; बेइज्जत करना । -**न उठाने देना**-द्रमभरकी मुद्रा न देना, काममें लगाये रखना; मरकशी न करने देना; मोलनेकी फुरत न देना । -**न पॉक**, **-न पैर**-बेतुका, बेतरतीब, क्रमहीन । -**नवाना**-नमस्कार करना; दौन बनना । -**मर्ही उठा सकना**-उपकारके भारसे आँख नहीं मिका सकना । -**मिकालना**-पानी या किसी चीजमेंसे सिर बाहर करना, प्रकट होना; सरकी करना । -**मिथुराना**-लज्जासे भिर नीचा करना; हुताष्ट रहना । -**मीथा करना**-लज्जित करना; उदास होना । -**मीथा होना**-पराजित होना; लज्जित होना; गंध संवित होना । -**पकबकर बैठना**-शोकावेगसे मौन होकर बैठना; लेव और पश्चात्तापके निष्ठ प्रकट करना । -**पकबकर रह जाना**-अत्यंत दुःख और आश्चर्यकी स्थितिमें होना । -**पकबकर रोना**-सिरपर हाथ भरके रोना । -**पचाना**-सौच-विचार करनेमें होना होना । -**पटकना**-बहुत परिश्रम करना; भिर फोड़ना;

विठमिलाना; सिर धुनना, पछताना; नाराज होना; धक्काना । -**पचना**-जिम्मे पड़ना; हिस्सेमें आना; मजबूरीका सौदा होना । -**पकेका सौदा**-जिम्मे पड़ेका मामला, मजबूरीका सौदा । -**पर-बहुत निकट**, पास । -**पर अजल** या **मोतका खेलना** या **ईसना**-दृष्ट्युक्त लक्षण दिखाई देना । -**पर अहसान करना**-अहसानमद बनाना । -**पर अहसान भर जाना** या **रखना**-किसीको कृतज्ञ बनाना । -**पर अहसान होना**-किसीका उपकार होना । -**पर आँखें न होना**-अन्ध न होना । -**पर आ चढ़ना**-पीछे पर जाना, छातीपर आ मौजूद होना । -**पर आ खाना**-बहुत समीप आ जाना, थोड़े ही दिन और रह जाना । -**पर आना**-बहुत पास आ जाना । -**पर आ पड़ना**-जिम्मे पड़ना; अपने ऊपर बसित होना । -**पर आ पहुँचना**-सम्पिक्त आना । -**पर आकृत जाना** या **पड़ना**-विपत्ति आना । -**पर आरे चढ़ना**-अत्यंत संकटकी स्थिति होना । -**पर आसमान उठाना**-बहुत शीर-गुल मचाना । -**पर आसमान टूटना**-बहुत बर्ष विपत्ति आना; दैवी कोप होना । -**पर उठाना**, **-पर उठा लेना**-बहुत ऊँचमें; शीर-गुल करना (परकी सिरपर उठा लेना) । -**पर उठा ले जाना**-सिरपर रखकर ले जाना; मरकर साव ले जाना । -**पर ककन बाँधना**-मरनेके लिए तैयार रहना । -**पर कयामत टूटना**-मुसीबत, विपत्ति आना । -**पर कयामत बरपा करना**-मुसीबत लाना शीर, हगामा करना । -**पर काली हाँसी रखना**-जर मिदा होना (खि०) । -**पर कुरान उठाना**-कुरानकी कसम खाना । -**पर कुरान रखना**-कुरानकी कसम देना । -**पर कोई न होना**-कोई मददगार या मरस्सक न होना । -**पर कोई दुलना**-दुमरेकी जलानेके नि, कोई काम करना; एक पक्षीके रहते दूसरी शादी करना । -**पर खड़ा होना**-सामने रहना; मन्त्रिकट होना; बेअ दबीमे खड़ा होना । -**पर झाक उठाना** या **हालना**-शोक करना । -**पर जून चढ़ना**, **-पर जून खवार होना**-किसी इत्यारेपर हत्याका आवेश आना, हत्या करनेका लक्षण प्रकट होना । -**पर जून लेना**, **-पर जून होना**-कालका जिम्मेवार होना । -**पर खेलना**-प्रेतका सिरपर आकर बातें करना, निकट होना, सिरपर आना; जान जोखिममें डालना । -**पर गठरी रखना**-सिरपर शोश रखना; जिम्मेदारी डालना । -**पर चिकित्सा चढ़ना**-सिरहाने पर्वकी आवाज, शीरगुल होना । -**पर चढ़ना**-मुँह लगाना । -**पर चढ़ाना**-इज्जत करना; मनबद करना; बढ़ावा देना, मुँहल्ल करना । -**पर चढ़ा रहना**-पीछे लगा रहना । -**पर चिखाना**-पाम आकर शीर करना, -**पर छन उठा लेना**-बहुत हता-गुस्ता करना; चिखाना । -**पर छप्पर रखना**-बड़ा भार सिरपर रखना, शोश डालना, जिम्मे देना; दबाव डालना; इलजाम लगाना । -**पर जून चढ़ना**-पागलपन मचाना होना; धुन, त्रि होना । -**पर अहानभरका बेका उठा लेना**-बड़ा झगड़ा मोल लेना; बूतेसे बाहर काम ले बैठना । -**पर जिन खेलना**-अभुआना, प्रेतके आवेशमें

अंगोंका अस्वाभाविक परिचालन और प्रलाप करना।
 -पर खिन चढ़ना-भूत-प्रेतका सिरपर आना। -पर खिन सवार होना-भूत-प्रेतका सिरपर आना; जिद, हठ होना। -पर खूँ न रहना-चेत न होना, होश न होना। -पर टीका होना-किसी कामकी सफलता किसीपर निर्भर होना; किसी तरहकी नामवरीका ताज होना; प्रतिष्ठा, सम्मान पाना। -पर टूटना-सिरपर मारकर तोड़ा जाना। -ढालना-सिर ढालना, मथे मड़ना। -पर ढोल बजाना-शोर-गुल करना; चिलाना। -पर धाली फिरना-सजमा, भीड़-भाड़ होना। -पर धरना-मथे मड़ना, उत्तरदायी ठहरना; सिरपर पड़ना। -पर नक्काशा बजाना-इगामा, शोर-गुल होना। -पर न रहना-किसी बड़े-बूढ़े, अविभावक, मरदमारका मर जाना। -पर पड़ना-मथे होना, जिम्मे होना। -पर पत्थर होना-बड़ी तकलीफसे ज़िदगी बिताना, अत्यधिक कष्ट सहना; बहुत मेहनत करना। -पर पहाड़ गिरना-मुसीबत आ पड़ना। -पर पहाड़ गिरना-मुनीबत डालना। -पर पाँवका जूता टूटना-जूतोंमें किसीकी इनना पीटा जाना कि जूता टूट जाय। -पर पाँव रखकर उड़ जाना-बहुत जल्द भाग जाना। -पर पाँव रखना-बहुत जल्द भाग जाना; उद्वेगताका व्यवहार करना। -पर पृथ्वी उठाना-बहुत उत्पत्त करना; बहुत परिश्रमका काम करना। -पर पैच पड़ना-मुसीबत आना। -पर बनना-मुनीबतमें फमना। -पर बला आना-संकट आना। -पर बला लागना-सिरपर बिपत्ति लाना। -पर बाल होना-बोलनेकी ताकत होना, मज़ाल होना। -पर बिडाना या बैडाना-सम्मानपूर्वक पाम बैठाना; बहुत इज्जत करना। -पर बोल पड़ना-अवसानमय होना; चितित होना; जिम्मेवारी पड़ना। -पर बोल लेना- जिम्मेवारी लेना, भार लेना। -पर बोलना-मनबलमें सोंपकाटे रोगीका सोंपकी ओरसे बोलना, बात करना। -पर भार लेना-उत्तरदायित्व लेना। -पर भूत सवार होना-बदहवास होना; पागल होना; किसी बातकी धुन होना; सिरपर भूत-प्रेतका आना। -पर मिट्टी ढालना-शोक करना। -पर मौतका खेलना-मौत आना, मौत सवार होना। -पर रखना-आदरार्थ कोई चीज सिरपर रखना; आदर देना, प्रतिष्ठित करना; पदोन्नति करना। -पर रख लेना-सिरपर बठाना। -पर रहना-पास रहना; प्रतिष्ठित होना। -पर लगाना-सिरपर पील या जूता मारना। -पर लावकर ले जाना-मरते समय सिरपर पापका भार ले जाना। -पर लाहना-किसीके जिम्मे ढालना। -पर लिखे फिरना-सिरपर रखकर घूमना; बहुत दौड़-धूप, परिश्रम करना। -पर ले जाकर लफा कर देना-रुक्क, सामने हाज़िर कर देना, लफा कर देना। -पर ले जाना-कोई मार डेना; कोई चीज अपनी देखरेखमें ले जाना। -पर लेना-सिरपर उठाना, रखना; अपने जिम्मे रखना। -पर बारना-कोई चीज किसीके सिरके चारों ओर घुमाकर निहावर करना, बाँट देना। -पर सैतान चढ़ना,

सवार होना-पुराप्रद, हठ होना; क्रोध चढ़ना; पापकी प्रवृत्ति होना। -पर समीचर सवार होना-मुसीबत आना। -पर सजेदी आना-बुढ़ापा आना। -पर सवार करना-धृष्ट करना, मनकड़ करना। -पर सवार रहना-धृष्ट होना; साथ रखना; साथ न छोड़ना; कड़ासे निगरानी करना। -पर सवार होना-भूत-प्रेतका साथ, प्रभाव होना; किसी बातकी धुन होना। -पर सहना-बर्दाश्त करना। -पर साथी रखना-किसीका अविभावकत्व करना; कृपा रखना। -पर साथी रहना-अविभावक, मरपरस्तका होना। -पर साथी होना-अविभावकका जीवित रहना। -पर सींग होना-कोई विशेषता, खूबी होना। -परसे निकलना-सिर-हानिमें निकलना, पाससे निकलना। -परसे बारना-कोई चीज संगल-कामनासे किसीके सिरके चारों ओर केरकर बाँट देना। -पर सीधा चढ़ना-किसी चीजकी धुन होना, खम्त होना। -पर हाथ धरने रोना-पछ-ताना, अफसोस करना; शोकाकुल होना। -पर हाथ धरना-अविभावक, मरपरस्त होना। -पर हाथ फेरना-धीरज, दिलासा देना; प्यार करना। -पर होना-महायक, समर्थक होना; जिम्मे पड़ना; बोधे दिनकी अवधि दूर जाना, बहुत निकट आ पड़ना। -पाँव न होना-सिलसिला न होना, बैदगा होना। -पाँवपर धरना-पैरों पड़ना, दीनता प्रकट करना। -पीटके रोना-रोते समय दुःखातिरेकेसे सिर पीटना। -पीटना-क्रोध, शोक, दुःखके आवेगमें सिरपर प्रहार करना। -पैर न होना-आदि और अंगका न होना। -पैर होना-आदि-अंग होना। -फट जाना-सिर फूटना, सिरपर गहरी चोट लगना (लाठी आदिमें)। -फटा जाता है-फटा पड़ता है-सिर और अँगोंमें अत्यधिक पीड़ा होनेकी स्थिति। -फिर जाना-विभाग परेशान होना; चक्कर आना। -फिरना-अकल न रहना; दिमागमें किन्नर होना; पागल होना। -फिराना-बकवाससे श्रोताके सिरमें दर्द पैदा करना। -फूटना-सिरका धातल होना; (पत्थर, हँट, लाठी आदिकी चोटसे)। -फेरना-कहा न मानना, सरकशी करना। -फोड़ना-सिर दे मारना, पत्थर, हँट आदिसे सिरको जुटीला करना; ईर्ष्या या शोकके आवेगमें अपने आपकी स्थिति करना। -फोड़े ढालना-सिर फोड़नेके लिए तैयार हो जाना। -बक-बक कर खा जाना-बकते-बकते सिर खा जाना, बक-बकते परेशान कर देना। -बाँधना-सिरका निशाना बाँधना (पट्टेवाज); सिरके बाल बँधना (झिं०); राग इस तरह लेना कि चलते समय घोड़ेका सिर सीधा रहे, दायें या बायें न हो। (किसीके)-बीतना-सिरपर पड़ना। -बेगार होना-किसीके जिम्मे ऐसा काम होना जो उसे नागवार हो। -बेचना-जान खतरमें डालना (फौजकी नौकरी करनेके विषयमें)। -भारी होना-सिरमें पीड़ा होना, जुकाम आदिके कारण सिरका भारी जान पड़ना। -भिजाना-सिर चक्करना। -महाज्ञान करना-किसी काममें तरदुद करना; बकवास करना। -मटकाना-वाने या व्यर्थसे सिर ढिकाना। -मड़ना-मलपूर्वक

किसीके जिम्मे लगाना । - **मारसे फिरना**-फिर टकराते फिरना; कठिनाइयोंसे जान-बूझकर उलझना । - **मारना**-समझाते-समझाते बैरान होना; नीचे-बिचारनेमें बैरान होना; अत्यधिक परिश्रम करना; चिहाना । - **मुँहचा देना**-विषय खीका सिर मुँहा देना (महाराल); एक मजा । - **मुँहाते ही ओले पड़ना**-आरंभमें ही बिग-वाधा पड़ना । - **मुँहाना**-बाल बुदना; माधु हो जाना । - **मुँहना**-सिरके बाल उतारना । - **मुँहा जाना**-एक मजा । - **में आग लगना तलुबमें बुझना**-अत्यधिक क्रोध, कोपके आवेगमें आना । - **में खाक ढालना**-मानम करना । - **में खूबास समाना**-गहर होना; सिरमें दर्द उठना । - **में तेल पड़ना**-श्वगर, केस विन्यामके लिए बालोंमें तेल डाला जाना । - **में दर्द उठना या होना**-सिरमें पीडा होना । - **में धमक होना**-सिर भारी होना, गरम होना, दर्द होना । - **में बाल होना**-मार खाने, सेलनेकी ताकत होना । - **में सफेदी आना**-बाल नफेद होना, बुदना आना । - **में सौदा होना**-पुन, खपत होना । - **में हवा भरना**-पुन ममाना । - **ईगना**-फिर फौडना, लड़-झुझान करना । - **रहना**-किसीके पीछे पड़ना; रात दिन परिश्रम करना, जिंदा रहना; जिम्मे रहना । - **लगना**-इलजाम आना । - **लगाना**-किसीके जिम्मे करना । - **लड़ना**-सिरसे सिरका टकरा जाना । - **लड़ाना**-सिरसे सिर टकराना । - **लेना**-जिम्मे लेना । - **ब तनकी तैर होना**-खबरदार होना । - **सकंद होना**-बुदा होना, सिरके बाल पड़ना । - **सका मत रहे**-जिंदा रहे, जीवित रहे । - **सलामत है**-जीवित है, है । - **सहारा रहना**-प्रतिष्ठा होना, मरदाही प्राप्त होना । - **सहारा होना**-किसीपर किसी कामका निर्भर होना । - **सहलाना**-मिलपर हाथ फेरना, प्यार, खुशामद करना । - **सहलाये मेजा खाये**-दीप्त दनकर डानि पहुँचाना । - **घुसाना**-बालोंकी नमी दूर करना (खि०) । - **से आसेब उतारना**-क्रोध, भय, श्रम न रहना । - **से आसेब उतारना**-भय, श्रम, क्रोध दूर करना । - **से उतारना**-सिरसे वारना । - **से ऊढ़म तक बलार्ह लेना**-सारे शरीरकी बलार्ह लेना । - **से ककून बाँधना**-मरनेके लिए तैयार होना । - **से किनारा करना**-जान देना, मारना । - **से कुर्छा खोदना**-बहुत परिश्रमसे काम करना; दुस्साध्य, असंभव काम करना । - **से खेल जाना**-मरनेके लिए तैयार हो जाना; बड़ी दिलेरीका काम करना । - **से खेलना**-सिरपर भूत प्रेत आना । - **से गुज़र जाना**, - **से गुज़रना**-पानीका डुबाव होना; मर जाना, जीवन समाप्त होना । - **से खलना**-बहुत आदर-सम्मान करना; सिरके बल चलना । - **से जाना**-सिरके बल जाना, बहुत आदर-भावमें किसीके लिए जाना । - **से झिज उतारना**-क्रोध भीमा करना; भय दूर करना । - **से जोड़ना**-सिर मिलाया; एकत्र होना, मिलकर बैठना; एका करना; बड़बुन करना । - **से टलना**-पीछा छूटना । - **से ढालना**-पीछा छुड़ाना । - **से सिनका उतारना**-जरा सा उतकार करना । - **से सिनका उतारनेका अहसान मानना**-पीछेमें उपकारके

लिए कृतज्ञ होना । - **से तोड़ना**-सिरपर मारकर तोड़ना; अपना सिर मारकर किसी चीजको टुकड़े-टुकड़े करना । - **से पटक जाना**-बाधम कर जाना; अकस्मात् किसीके जिम्मे ढालना । - **से पहाड़ ढालना**-सिरमें मुसीबत डालना । - **से पाँवतक**-आदिमें अतक; ऊपरसे नीचे-तक, तमाम । - **से पानी ऊपर होना या गुज़रना**-किसी बातका हदयक पहुँच जाना; असल हो जाना । - **से पैदा होना**-सिरकी ओरसे बच्चेका पैदा होना । - **से पैरतक**-आदिमें अंततक; ऊपरसे नीचेतक । - **आग लगना**-अत्यधिक क्रोध बढना । - **से फिरना**-सिरपर निमार होना, सिरके निर्ध फिरना । - **से बला टलना**-विपत्ति दूर होना । - **से बला ढालना**-मन लगाकर काम न करना; किसी अभिय प्रसंगमें जान छुड़ाना । - **से बेगार ढालना**-बेदिलीमें काम करना । - **से बोझ उतारना**-निश्चिन्ता, बेफिकी होना; ससद दूर होना । - **से बोझ उतारना**-बोझ ढालना; किसी भार और दायित्वमें मुक्ति प्राप्त करना । - **से बोझ बाँधना**-नाहक खर्च अपने जिम्मे लेना । - **से मारना**-नामुदा होकर कोई चीज किसीको लौटाना; बेदिलीमें कोई चीज देना; सिरपर मारना; फेंक देना; निगम टकराना । - **से लगाना**-आदर, प्यार करना । - **से बबाल उतारना**-किसी गजबमें निहट होना । - **से वारना**-सिरपरमें निसार करना, निहावर करना । - **से माया उठना**-अभिभावक, गुरुजनका देहवसान होना । - **से माया उतारना**-जिन, परो आदिका अमर दूर होना । - **(किसीके)**-**से मेहरा बाँधना**-आगे; अधिक मरकम या यज्ञ प्राप्त करना । - **से हाज़िर होना**-बिकीना-पीछा लिए सड़प तैयार होना । - **से होश जाना**-अकूर रहना, ववडा जाना । - **हथेलीपर धरना**, **रम्बना**, **लिये फिरना**, **लेना**-बहादुरी जान देनेके लिए तैयार रहना, जान-बुझकर दिलेरीमें मोतक मामला करना । - **हथेलीपर रहना**, **होना**-जान डेरेकी नैयाग रहना । - **हाज़िर है**-(किसी कामके निष्प सड़प तैयार होना । - **हाथपर रम्बना**-मरनेके लिए तैयार होना । - **हिलना**-सिर काँपना (बुझाये; कारण या स्वीकार-अस्वीकारके मायमे) । - **हिलाना**-सिरको ऊपर-नीचे या अग-वगल हिलाना (प्रधाना, स्वीकृति, असवीकृति, आदिकों सूचनाके लिए) । - **किसीका किसीके**-होना-पीछा न छोड़ना, पीछा करना; बार-बार किसी चीजका आग्रह करके परेशान करना; उलझ पड़ना, झगडा करना । - **(किसीके)**-**होना**-ऊपर पड़ना, जिम्मे होना (दीप आदि) । - **(किसी बातके)**-होना-समझ लेना, नाइ लेना ।

सिर-पु० [अ० 'सिर'] भेद, रक्ष्य, राज । सु०-की बात कहना-भेद प्रकट करना । - **होना**-रक्ष्य होना ।

सिरई-खी० सिरहानेकी पाटी ।

सिरका-पु० [फा०] धूपमें सजाकर समीर उड़ाया हुआ ईस, अगूर आदिका रम । - **कशा**-पु० अर्क खींचनेका एक यंत्र । - **पेशानी**-वि० सिरकी स्त्रीकी चढ़ी रहे ।

सिरकी-खी० मरकडा, सरहरी; सरकनेकी यन्त्री हुई टट्टी ।

सिरावा—पु० बोरोकी एक जाति ।
सिरावक—पु० छटिकरी, बनानेवाला ।
सिरावक—पु० निर्माण, छटि करना । -हार-पु० कतार, निर्माता, अन्ध ।
सिरावना—स० कि० छत्पन्न करना, रचना, बनाना; संवय करना । **खी** छटि, रचना ।
सिरावित—वि० रचा हुआ, छट ।
सिरावाव—पु० कादतकार; माछपुजार ।
सिरासी—खी० लगान, जमा ।
सिरावा—पु० ओसाते ममय हवा करके भूखी उठानेका कपडा ।
सिरावा—पु० जमींदारकी मीरका प्रबंध करनेवाला कारिदा; सिवार ।
सिरस—पु० दे० 'शिरिष' ।
सिरसा—पु० दे० 'सिरस' ।
सिरहावा—पु० दे० 'सिर' में ।
सिरां—पु० [सं०] रक ।
सिराई—खी० शीतलता—'आनंद वन बुल्लाप सेंटिय कोजे कृपा-सिराई'—घन० ।
सिरा—पु० अंतका भाग, छोर; शुरुका भाग; ऊपरका भाग; अगला भाग; नोक । -**(र)**का—परले दरजेका ।
सिरा—खी० [म०] रक्तनलिका, धमनी, नाडी, नाडी जैसा जन्मका मंग सोता, जलकी मन्तीर्ण प्रणाली; नदीकी तरह एक-दुसरेको काटनेवाली रेखाएं; डोल । -**जाल**—पु० नावियोंका जाल; आँखकी वैशिकाली (यूकम धमनियों)का जोड़ । -**घर**—पु० पीपलका वृक्ष; एक तरहका खम्बर । -**प्रवर्ध**—पु० दे० 'सिरार्ध' । -**मूल**—पु० नाभि । -**मोक्ष**—पु० रक्तमोक्षण, फमद कोलवाना । -**घुष**—पु० सीसा । -**बेध**, -**बोधन**, -**व्यध**, -**व्यधन**—पु० दे० 'मिरामोक्ष' । -**हर्ष**—पु० नावियोंका पुलक; आँखके डोरीकी लालीका बढ़ जाना ।
सिराज—पु० [अ०] दीपक, द्यौ ।
सिराजी—पु० शीराजका घोडा ।
सिरात—खी० [अ०] रास्ता, सबक; सुमरमानोंके विश्वासा-नुसार कयामतके दिन दोजब(नरक)पर बनाया जाने-वाला पुल (जो बालके अधिक बारीक और तलवारसे अधिक तीक्ष्ण होया और जिसपरसे सभीको गुजरना होगा—पुष्पात्मा आसानीसे पार हो जायेंगे, पर पापी फट-कटकर दोजबमें गिरते जायेंगे) ।
सिराना—अ० कि० ठंडा होना; शीतना, समाप्त होना—'बदचिंह सिमरी रैन सिरानी'—ब्रजानि; दूर होना; वत्साह बीका पक्षमा; शांत होना, हार मान लेना; † अक्कास मिलना । स० कि० ठंडा करना; पानीमें डुबाना—'तुलसी औंढके परे नगी सिरावत मोरे'—तुलसी०; क्षम करना; विसाना ।
सिरावत—खी० [अ०] घुसना, प्रवेश; जकम करना ।
सिराववा—स० कि० दे० 'सिरावना' ।
सिराव—वि० [सं०] अधिक या बड़ी मर्तों वा रेडोवाका । पु० एक जनपद; कमरका फल ।
सिरावक—पु० [सं०] एक अंगूर ।

सिराख—खी० [सं०] एक पौधा ।
सिराखी—खी० बोरोकी कलमी ।
सिरालु—वि० [म०] दे० 'निराल' ।
सिरावन—पु० हँगा, पाटा, पटेला । वि० ठंडा या दूर करनेवाला—'जीव-विभावन ताव-निरावन ई, रमय वन आनंद छावो'—घन० ।
सिरावना—स० कि० दे० 'निराना' ।
सिरिख—पु० दे० 'मिरस' ।
सिरिपारी—खी० सुसनाका माग ।
सिरिस्ता—पु० दे० 'सरिस्ता' (ममास जी) ।
सिरिस—पु० शीरीष वृक्ष, जिसका फल अत्यंत कोमल होता है—'मिरिस सुमन कत बेधिष हीरा'—रामा० ।
सिरी—खी० [म०] डरकी; करवा (ई); छांगकी; कक्षकी; ऐदवई; शोमा, मोदई; रोकी; सिरका एक गहना । -**पंचमी**—खी० बसंत पंचमी ।
सिरीस—पु० दे० 'मिरस' ।
मिरोपाव—पु० [सं०] आँखकी एक बीमारी जिसमें डोरीकी लाली बहुत बढ़ जाती है ।
मिरोवा—पु० वषा रखनेका रस्नीका मेंढरा, ईंडुरी, बिहवा ।
मिरोपाव—पु० दे० 'मिरोपाव' ।
मिरोपाव—पु० मिरसे पैरतकका पहनावा जो बादशाह या राजाकी ओरसे मम्मानार्थ मिलता था, खिलतत ।
मिरोमणि—पु० दे० 'शिमोमणि' ।
सिरोरुह—पु० दे० 'शिरोरुह' ।
सिरोही—पु० तलवारके छिप प्रमिद्ध (राजपूतानाका) एक स्थान । खी० तलवार; † एक निशिया ।
सिरा—पु० दे० 'मिरका' ।
सिरा—वि० [अ०] खालिम; अकेला; केवल । अ० केवल, मन्त्र ।
सिरी—वि० दे० 'सिरी' ।
सिल—खी० शिला, चट्टान; ममाला आदि पीसनेकी पत्थरकी चौकीर पटिया; इमारतमें लगानेकी गद्दी हुई पटिया; पूनी बनानेकी काठकी पटरी । पु० उछ हूति; बल्लुकी जातिका एक पेड़ । -**खड़ी**, -**खरी**—खी० एक चिकना पत्थर, जो बरतन बनानेके काम आता है; खरिया मिट्टी । -**चोहनी**—खी० बिवाहकी एक रस्स । -**फोवा**—पु० पत्थरचूड़ नामका पौधा । -**बड़ा**—पु० सिल और कोदिया । -**बट**—पु० सिल; सिल और बट्टा । खी० दे० क्रममें । -**हार**, -**हारा**—पु० उछ हूतिवाला ।
सिल—पु० [अ०] कसरोग, तपेदिक ।
सिलक—पु० भागा । खी० कतार; लड़ी ।
सिलकी—पु० रेल, त्रीफल ।
सिलगावा—अ० कि० दे० 'सुलगना' ।
सिलप—पु० दे० 'सिल्व' ।
सिलपची—खी० दे० 'सिलमची' ।
सिलपट—वि० चौरस, बराबर; साफ, चौपट; चिसा हुआ । पु० नप्यल, चट्टी ।
सिलपची—खी० दे० 'सिलमची' ।
सिलबट—खी० शिकन, सिकुडन । पु० दे० 'मिल' में ।

सिखवाचा - स० कि० सोनेका काम कराना ।

सिखसिखा - *वि० आर्द्र, चिकना, सिलहिला - 'येमी सिल-
सिले ओप सुंदर कपोलनकी खिसिख सिलिख परे दीडि
जिन परते' - सुंदर । पु० [अ०] कबी, पंखला; बेसी; पंक्ति;
क्रम, तरतीब; वेश; कुत्सीनामा; कयाब, संभव (जोडना);
तरीफना, निकालना इ० । - ए-कोह-पु० पर्वतमाळा ।
- ए-साफीम - पु० शिक्षाक्रम । - बंदी - खी० कतारबंदी;
तरतीब । - (ले)बार - वि० क्रमयुक्त, तरतीबवार । मु०
- सिलकना - आरंभ होना, राखना खुलना । - सिलकना
- संभव जोडना ।

सिलह-पु० [अ०] हथियार, आयुध । - खाना-पु०
अस्त्रागार । - पोखा-वि० हथियारांसे लैस, शस्त्रसज्जित ।
सिलहट-पु० आनामका एक नगर; एक अगहजी थान;
मिलहटमें होनेवाली नारणी ।

सिलहटिया-वि० सिलहटका । † खी० एक तरहकी नाव ।
सिलहिला-वि० पंक्ष आदिके कारण चिकना, जिल्पर परे
फिसले, बिच्छळ ।

सिलही† - खी० एक चिडिया ।

सिका-पु० [अ०] इनाम; बदला; * फसल कटनेके बाद
मेळमें गिरे हुए दाने; उंछ धुसि; फटकनेके लिए रखा हुआ
गन्नेका ढेर । * खी० दे० 'शिला' । - जीत-पु० दे०
'शिलानुज' । - बाक-पु० दे० क्रममें । - हस-पु०
सिंहक वृक्ष; उसका निवास । - बट-पु० दे० क्रममें ।
- सार-पु० लोहा । - हर-पु० दे० 'सिलहार' ।

सिकाई - खी० सोनेका काम वा सज्ज्या; भीयन, टोंका
सोनेका ढंग ।

सिकाना - स० कि० दे० 'सिखवाना'; * दे० 'मिगाना' ।

सिकाबाक-पु० पथरफूल, शेरुज ।

सिकाबी-वि० सैलानी; गीला, नम ।

सिकाम-पु० मलाम, प्रणाम (मीरा) ।

सिकावट-पु० पथर काटनेवाला, सगतारा ।

सिकाह-पु० [अ०] हथियार, आयुध । - खाना-पु०
शस्त्रागार । - पोखा-बंद-वि० हथियारबंद । - साज-
पु० शस्त्र बनानेवाला ।

सिकाही-पु० सैनिक, सिपाही ।

सिकिप-पु० शिल्प, कारीगरी ।

सिलिपट, मिलीपट-पु० [अ० 'रहीपर'] लकड़ी आदिकी
बह पटिया जिसपर देह बिछावी जाती है ।

सिलिया-खी० मकान बनानेके काम आनेवाला एक तरह
का पत्थर ।

सिलियार, सिलियारा-पु० दे० 'सिलहार' ।

सिलसिलिक-पु० [सं०] निवास, गोंद, लामा ।

सिलीअ-पु० दे० 'शिलीअ' ।

सिलीमुख-पु० दे० 'शिलीमुख' ।

सिलेफ्ट कमिटी-खी० [अ०] जुने हुए कुछ नदर्योंकी
समिति (जिसका काम किसी विषयपर विचार करना और
निर्णय देना है), प्रवर समिति ।

सिलेट-खी० दे० 'सेट' ।

सिलोख-पु० एक पर्वत जो रामकी जनकपुरकी बाग्यां
सामें मिला था ।

सिलौट, सिलौटा-पु० सिल; सिल और बट्टा ।

सिलौटी-खी० भाँग आदि धीमेकी छोटी सिल ।

सिलक-पु० [अ०] रेखम; रेखावी वस्त्र । खी० [अ०] धामा;
कबी; पंक्ति । - बंदी - खी० मालगुबारीकी दैनिक आयका
हिसाब जिसकी गणनाके अंतमें जोकते हैं । - (रुके)गीहर,
- झरेबारीद् - खी० मोसियोंकी लकी ।

सिल्व-पु० दे० 'सिल्व' ।

सिल्व-पु० [अ०] दे० 'सिल' [अ०] ।

सिल्वी-खी० [म०] शस्त्री, सलवाई पेव ।

सिल्व-पु० कटनेके बाद खेतमें गिरे हुए दाने; खलियानमें
गिरा हुआ अन्न; ओसानेके बाद लगा हुआ भूतिका बह डेर
जिसमें कुछ दाने भी हों ।

सिल्वी-खी० उत्तुरा आदि तेज करनेका पत्थर; † लकड़ी-
का बह मोटा और कुछ लंबा कुंदा जिसे चौरकार तल्ले
आदि निकालते हैं; पत्थरकी पटिया; फटके जानेवाले
अनाज वा भूतिका ढेर ।

सिल्व-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य; मिलारस वृक्ष । - भूमिका
- खी० सिलारस वृक्ष । - सार-पु० मिलारस नामक
गंधद्रव्य ।

सिल्वक-पु० [सं०] मिलारस नामक गंधद्रव्य ।

सिल्वकी-खी० [म०] वह वृक्ष जिसमें मिलारस निकलता
है ।

सिल्व-पु० दे० 'सिल्व' । - सिल्व-पु० दे० 'सिल्विंग' ।
- सिल्वी-खी० एक लता जिसमें फल और फल ढबाने
काम आते हैं ।

सिल्वई-खी० आटे वा मैदेके सुसाये हुए लच्छे जिन्हें धीम
तलनेके बाद लीकने साथ दूधमें पकाकर खाते हैं ।

सिल्वक-पु० [सं०] दरजी; सोनेवाला ।

सिल्वर-पु० [म०] हाथी ।

सिल्वर-पु० [म०] वस्त्र, कपडा; शीक ।

सिल्व-अ० [अ०] अलगा, छोड़कर, अतिरिक्त । वि०
अधिक, बढा हुआ । * खी० पाबंजी; शृंगाली ।

सिल्व-अ० दे० 'सिल्व' ।

सिल्वई† - खी० दे० 'सिल्वई' ।

सिल्वान-पु० सीमांत, सरहद; गाँवकी सीमावर्ती भूमि ।

सिल्व-अ०, वि० दे० 'सिल्व' । † पु० नियत बस्तीके
ऊपरकी आमदनी ।

सिल्वर-पु० एक जलोव पोथा, शेवाक ।

सिल्वक-पु० दे० 'सिल्वर' ।

सिल्वका-पु० शिवालय, शिवका मंदिर ।

सिल्वली-पु० हल्के रंगका पधा ।

सिल्वि-पु० दे० 'सिल्वि' ।

सिल्विका-खी० दे० 'सिल्विका' ।

सिल्विर-पु० दे० 'सिल्विर' ।

सिल्विल-वि० [अ०] नागरिक, मुल्की; सभ्य, मह । -

सिल्वोवीटिपंस-पु० सविनय अवस्था । - प्रोसीअर
कोड-पु० ज्वालादीवाली, ज्वाय-विधान । - सार-पु०
गृहपुत्र । - सल्व-पु० सिलेका सबसे बड़ा सरकारी
बानर । - सल्वि-खी० देश-शासन-संबंधी पद ।

सिल्विलियन-पु० [अ०] आसन और प्रबंध-विभाग-

का कर्मचारी ।

सिधैर्षी-सी० दे० 'सिधै' ।

सिधः, सिध्य-पु० दे० 'सिध्य' ।

सिद्ध-सी० बसीकी बोरी । वि० दे० 'सिद्ध' ।

सिस्स-पु० दे० 'सिधु' - 'वरनचरके लखनकी मिस ज्यों बिरसत नैन'-रतनहजारा ।

मिसकना-अ० कि० भीतर ही भीतर रोना, मूककर न रोना; सिसकी भरना; उल्टे साँस लेना; व्याकुल होना; गरसना ।

मिसकारना-अ० कि० मुँहमे सीदीकी-सी आवाज निकालना; शोकार करना । स० कि० (कुत्तोंको) आक्रमण करनेके लिए बढ़ावा देना, लड़कारना ।

मिसकारी-सी० मुँहमे निकली हुई सीदीकी-सी आवाज; लड़कारनेकी क्रिया; शोकार ।

मिसकी-सी० मिसकनेकी आवाज; शोकार ।

मिसिद्धा-सी० [सं०] सिचनकी इच्छा ।

सिसिधु-वि० [सं०] सिचनका इच्छुक ।

मिसिधैर्षी-सी० मछलीकी गंध, बिमार्य ।

मिसिर-पु० दे० 'सिसिर' ।

मिसु-पु० दे० 'सिधु' । -ता-सी० बचपन, शैशव । -पाल-पु० दे० 'सिधुपाल' । -मार-पु० दे० 'सिधुमार' । -चक्र-पु० दे० 'सिधुमार-चक्र' ।

मिसुद्धा-सी० [सं०] सृष्टि, निर्माणकी इच्छा ।

मिसुद्ध-वि० [सं०] सृष्टि, निर्माण करनेका इच्छुक; बहानेका इच्छुक ।

मिसोदिवा-पु० मीसोद-निवासी गृहणीत राजपूतोंकी विशेष शाखा (राणा कुंभा, मर्गा, प्रभाप आदि इतिहास-प्रसिद्ध पुरुष हमी शाखामें हुए थे) ।

मिस्टि-सी० दे० 'सृष्टि' ।

मिस्न-पु० दे० 'सिध' ।

मिस्व-पु० दे० 'सिध्य' ।

मिहड़ा-पु० तीन सरहदोंका मिलन-ब्वल ।

मिहर्ष-पु० [सं०] जहूँसा ।

मिहरन-सी० मिहरनेकी क्रिया, कंपन ।

मिहरना-अ० कि० कौपना; ठठसे कौपना; भयभीत होना; हलक जाना; रोमांच होना ।

मिहरा-पु० दे० 'सेहरा' ।

मिहराना-म० कि० कौपना; सरदीसे कौपना; भयभीत करना; महराना । अ० कि० महराना; दे० 'मिहराना' ।

मिहरावक, मिहलावक-पु० जाओ, ठठ ।

मिहरी-सी० कौपकैपी; शीतजन्म कंय; भय; रोमांच; लूँकी दुस्वार ।

मिहकाना-अ० कि० ठठा होना; न्यदी खाना; ठंड पड़ना ।

मिहकी-सी० शीतली लता ।

मिहान-पु० कौहमक, मँहूर ।

मिहाना-अ० कि० ईश्या, हसद करना; ललचना; देखकर प्रसन्न होना; मुग्ध होना । म० कि० ईश्या या तुष्णाकी दृष्टिसे देखना- 'देख सकल सूरपतिहि मिहानी'-रामा०; प्रशंसा करना ।

मिहारना-अ० कि० हँदना; हँदकर लाना ।

मिहिकना-अ० कि० मूखना (फसल आदिको) ।

मिहिटि-सी० सृष्टि- 'ओ तेहि प्रीति सिहिटि उपराजी'-प० ।

सिद्ध-पु० [सं०] स्तुही, सेहुँद ।

सिद्धा-पु० मूहर, सेहुँद ।

सिहोर-पु० दे० 'मिहो' ।

सिह, सिहक-पु० [सं०] दे० 'सिह', 'सिहक' ।

सिहकी, सिह्की-सी० [सं०] दे० 'सिहकी' ।

मीक-सी० मूँजकी जातिके एक तुणकी तीली जिसकी आड़ बनाते हैं; किसी चासका लंबा पतला छठल; नामके पहननेकी कील ।

मीकर-पु० मीकका वृत्ता ।

मीका-पु० पेड़-पौधोंको बहुत पतली टहनियाँ । दे० 'छींका' ।

मीकिया-वि० मीकी-मा पतला । पु० एक भारीदार कपड़ा । -बहलवान-पु० बहुत दुबला-पतला आदमी जो अपने आपको बही समझे (ग्यंग्य) ।

मींग-पु० गाय, बैल, भैंसे, गेदे, हिरन आदिके सिरके दोनों ओर निकली हुई कड़ी तुकीकी शाखा जैसी चीज जिससे वे दूसरे प्राणियोंपर आघात करते हैं, शृंग, बिषाण; सींगका बना हुआ बाजा, सींगी । मु० -कड़ा या तुक्कर बलूँमें मिथना-बूँदा या बही उम्रका होकर भी बच्चोंके-में काम करना, उनकी सुधबत करना । -मिक्कना- (ला०) सनक ताना । -रूँछ मिश्रा देना-बलि दीन बन जाना । -मारना- (सींगवाले पशुको) सींगसे मारना । -खमाना-खान, मौका मिलना, ठिकाना दिखाने देना (जहाँ सींग समाये वहाँ चले जाओ) । (सिर-पर वा सिरमें)-होना-कोई विशेषता, कोई विशेष चिह्न होना (ज्या बेवकूफके गिरमें सींग होते हैं ?) ।

सींगका-पु० सींगका बना हुआ चीजा जिसमें बारूद रखते हैं, बारूददान; सींगी ।

सींगना-सं० कि० सींगके जरिये भोरीके पशुको पहचान करना ।

सींगरी-सी० एक तरहकी फली ।

सींगी-सी० हिरनके सींगका बना हुआ बाजा, सुराखदार सींग जिसे शरीरपर लगाकर खराब धून निकालते हैं; एक तरहकी मछली । मु० -लंगाना-सींग लगाकर रक चुसना ।

सींच-सी सींचनेकी क्रिया, सिंचाई ।

सींचना-सं० कि० पेड़-पौधोंकी पानी देना, सिंचाई करना; तर करना; छिड़कना ।

सींची-सी० सींचनेका समय ।

सीई, सीई-सी० सीमा, हद्द । मु० -कौबना,-खरवा-जोर-जबरदस्ती करना, कष्ट पहुँचाना ।

सी-अ० 'सा'का कौलिंग रूप; सव्य, समान । सी० पीकाकी या आनंदकी आत्यंतिक अनुभूति होने या सरदी ज्यनेपर मुँहमे भिक्कनेवाली आवाज, सीकार ।

सी० आई० डी०-पु० [अ०] क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट, गुप्तचर-विभाग; गुप्तचर (कि०), खुफिया पुलिस ।

सीड-पु० दे० 'शीत' ।

सीकषा-पु० दे० 'सीलषा' ।

सीकर-पु० [स०] पानीका छीटा, जलकण, शशकर; स्वेद-विदुः • गोदक-सीकर स्नान कागका मोचन तनकी यहै बकाई-बीजक । • खी० सिकरी, बंजीर ।

सीकल-पु० दे० 'सैकल', मिकली; • डालका पका हुआ आम ।

सीकस-पु० ऊमर, बजर भूमि ।

सीका-पु० सिरपर पहननेका सीनेका एक गहना; दे० 'छीक' ।

सीकाकाई-खी० एक वृक्ष जिसकी फलियोंका श्राग बाल लकनेके काम आता है ।

सीकुरा-पु० दे० 'शुक' ।

सीक-खी० सिखावन, शिक्षा; सलाह । मु०-लेना-शिक्षा, उपदेश ग्रहण करना ।

सीझ-खी० [फा०] लोहेकी सलाख या छड़ जिनपर कबाब भूतते है; छाया; छड़के आकारकी लकड़ी जिससे गोरियोंका मुँह बाँधते है । -छा-पु० छोटी सीख । -पा-वि० विछले पाँवोंपर सखा होनेवाला (बोहा) । -का कबाब-वह कबाब जो कोमेको पीसकर सीखपर बनाया जाय । मु०-पा होना-गोरेका जलफ होना, बहुत नाराज होना । •

सीखव-पु० सिखावन, सीख ।

सीखना-स० कि० किमी विषयका ज्ञान प्राप्त करना, पढ़ना; कित्ती हुनर या कलाकी शिक्षा प्राप्त करना, अभ्यास करना (सितार सीखना); शिक्षा ग्रहण करना, अनुभव प्राप्त करना (आजमी कुछ खोकर सीखता है) ।

सीखा-पढ़ा-वि० शिक्षित, जानकार; चतुर ।

सीखा-सिखाया-वि० शिक्षित, कुशल; किमी कला या हुनरका जानकार ।

सीषा-पु० [अ०] साँचा; विभाग; क्रियाका रूप (काल, पुरुष, प्रयोग आदिकी दृष्टिसे); शीशोंका निकाह ।

सीच-खी० हाल (?) -'पहुँचै तब कहैगें वही देखकी सीच । अवही कहा तत्तागिये बेड़ी पावन बीच'-माखी ।

सीज-खी० दे० 'सीस' ।

सीखना-अ० कि० दे० 'सीखना' ।

सीस-खी० सीसने, पकनेकी क्रिया, पकाव ।

सीसना-अ० कि० आग और पानीकी सहायतासे पकना, पककर नरम होना; गलना -'रबिसन नीर पखान मोनै पै सीसै नहँ'-रहस्य-चमकेका मिश्रणमे नरम, चिकना होना; पगना; कष्ट पाना; तपस्या करना; ठंड खाना; पसेव निकलना; रिसना; प्राण होनेकी स्थितिमे होना (जैसे स्याज आदि); कलाका मुगताया जाना ।

सीट-खी० [अ०] बैठक, आसन; एक आदमीके बैठनेकी जगह; रेल, छाती आदिमें उठना स्थान की एक आदमीकी बैठनेके लिए मिलता है; किसी सभा, मंडल इत्यादिके सदस्यका स्थान (हरिजननों की मंत्रिमंडलमें दो सीटें मिली हैं); जीट, रीग । -पटौंग-खी० डींग, बहक ।

सीटस-अ० कि० जीट हकिना, डींग मारना ।

सीटी-खी० दोनों होठोंकी सिफोइकर बीचमे बसा निका

लनेसे पैदा होनेवाली सुरीली आवाज; छोटा बाजा बिसे मुँहसे फूँकनेसे इस तरहकी आवाज निकलती है। बाजे, इंसन आदिसे निकला हुआ सीटी जैसा शब्द । -बाजा-पु० सीटी बजानेवाला । मु०-बैसा-सीटी बजाना; सीटी बजाकर कोई संकेत करना; रेलका सुकनेके पहले इंसनमें लगे हुए यंत्रसे सीटीकी सी आवाज निकालना ।

सीड-खी० दे० 'सीडी' ।

सीटनारा-पु० ब्याह आदिमें स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला अदलील गीत, गाली ।

सीटनी-खी० दे० 'सीटना' ।

सीटा-वि० फीका, बेमवा । -पन-पु० नीरसता, फीकापन, बेमजा होना ।

सीटी-खी० रव चूम या निकाह लिये जानेपर बचा हुआ फोक या फुज्जा; साररहित वस्तु । वि०, खी० दे० 'सीटा' ।

सीह-खी० दे० 'सील' ।

सीदी-खी० ऊँचे स्थानपर पहुँचनेके लिए बना हुआ लकड़ी, पत्थर, लोहे आदिके डंठों या पावोंका सिलसिला, जीना, भिसेनी; उन्नति-क्रम । -का डंढा-लकड़ी या सोंसकी सीढ़ीका हर एक पावा, सोपान । मु०-सीदी चढ़ना-क्रमशः ऊपर उठना, उन्नति करना ।

सीत-पु० दे० 'शीत' । -कर-पु० बंदम । -पकड़-पु० हाथियोंकी होनेवाला एक शीतजन्य रोग ।

सीतल-वि० दे० 'शीतल' । -चीनी-खी० दे० 'शीतलचीनी' । -पाटी-खी० एक तरहकी चटाई जो बहुत बढिया और चिकनी होती है; एक तरहका धारीदार कपड़ा । -हुकमी-खी० सच ।

सीतला-खी० दे० 'शीतला' । -माई-खी० शीतला देवी । -मुँहदगा-वि० जिनके मुँहपर चेचकके दाग हों, चेचक । -का खाखा-दूध पीना बहा (जिनके चेचककी बलि होनेका पहलू बहुत डर रहता था) ।

सीता-खी० [मं०] हलके फालसे भरतीमें बननेवाली रेखा, कूच; जोनी हुई ब्रमीन; कृषिकर्म; फाल; कृषिकी अभिप्रायी देवी; मीरपूज्य जनकजी कन्या जो रामकी स्वाही गयी; स्वर्गमाकी चार भाराओमेंमे एक; उमा; लक्ष्मी; यशिरा; कलही पौषा; पालाखमाकी; एक हस्त-सीतापूज्य द्वारा एकत्र अन्न; विदेहकी एक नदी (जी०) ।

-कुंड-पु० अष्टमुद्राकी पहली (विष्णुचक्रपर)का एक छरना जिसका जल आरोधकर माना जाता है (इम नामके छरने और कुंड मुंगर, भागलपुर, चंपारन आदिमें भी है) । -गोसा(चु)-पु० जुताईकी रक्षा करनेवाला ।

-आनि, नाच, पसि-पु० रामचंद्र । -ब्रह्म-पु० सेतीके बीजार । -खर-पु० बलराम । -बलभीखर-पु० व्रतविशेष । -फल-पु० शरीफा; कुम्हड़ा । -बल-पु० जुताईके अवसरपर किया जानेवाला यज्ञ । -रमण-पु० रामचंद्र । -बलन, सीत-पु० दे० 'सीतारमण' ।

-छोड़-छोड़-पु० जुते हुए खेतका देखा । -बट-पु० प्रयाग और विश्वकृष्ण बीच एक स्थान जहाँ वटवृक्षों नीचे राम वनयात्रामें ठहरे थे । -बन-पु० एक तीर्थ-स्थान । -बर, बलभ-पु० रामचंद्र । -सती-खी०

सीता जैसी सती । -स्वयंवर-पु० सीताका स्वयंवर, भनुपयश । -हरण-पु० सीताका रावण द्वारा अपहरण । सीतावध-पु० [सं०] कवि-संबन्धी जुरमाना, फितानपर होनेवाला जुरमाना (की०) ।

सीतावध-पु० [सं०] राजाकी सीरका प्रणय करनेवाला कर्मचारी ।

सीताहार-पु० [सं०] एक पौधा ।

सीतीनक, सीतीलक-पु० [सं०] मटर; दाल ।

सीतोदा-स्त्री० [सं०] विदेहकी एक नदी (जै०) ।

सीतार-पु०, सीमकृति-स्त्री० [म०] 'सी-मो'को ध्वनि; मिसकी ।

सीन्ध-वि० [सं०] जुता हुआ (लेप) । पु० धान्य, धान ।

सीध-पु० सिक्क, भात, पके हुए चावलका दाना ।

सीधि-पु० दे० 'सीध' ।

सीद्-पु० [सं०] दे० 'कुसीद' ।

सीदना-अ० क्ति० कट पाना ।

सीदी-पु० सीदियाका रहनेवाला, शक ।

सीध-पु० [सं०] आलस्य, सुस्ती ।

सीध-स्त्री० सीधा होनेका भाव, ठीक सामनेकी दिशा; कजुना; निशाना, गिल । सु० -बौधना-निशाना बंधना; दागदेख डालना । -में-ठीक सामने ।

सीधा-पु० भोजनकी अमिष्ठ, कच्ची मामजी (चावल, दाल, आटा आदि) जो किसीको पकाकर खानेके लिए या दानरूपमें दी जाय । वि० जो ठीक सामनेकी ओर या किसी एक ही दिशामें गया हो, जिम्में देहापन या घुमाव न हो, मरल, कजु; खड़ा, जो शरीर, फमाशी, लकाका न हो, भला; जिम्में घँट, अकड़, वनावट आदि न हो, भोला-भाला, बिना छक्के-पंजेका; सुखा, माफ, बिना पंच-पैचका (माथा जबाब), आमान (काम); जो कटहा, मकहान न हो (बैल, घोड़ा), नम्र, विनीत; दाहिना (सीधा हाथ) । अ० ठीक सामने; बिना मुड़े; बिना और कहीं गये या रुके (सीधा गरका रास्ता लिया) । -उलटा-अ० दे० 'उलटा-सीधा' । -दिन-पु० अच्छा दिन, सुदिन । -पन-पु० निषाद; भोगपन । -सादा, -साधा-वि० भोला-भाला, सरलस्वभाव । -तीर-सा-अ० बिलकुल सीधा, ठीक सामने (सीधा तीर-सा गया) । सु० -आना-सामनेसे आना; सामना करना, भिड़ना (दिल्ली) । -करना-बकना, कुटिलता, घँट, अकड़ दूर करना, सीधी राहपर लाना, ठीक-थोकर ठीक करना, निशाना बंधनेके लिए तीर, बंदूकको लक्ष्यके सामने करना । -जब्तमें जाना-बिना शाप-पुण्यका विचार हुए सीधे स्वर्ग जाना । -होना-सीधा किया जाना, घँट, कुटिलता आदि दूर होना; आमाश्व होना; महर-वान होना ।

सीधी-वि०, स्त्री० दे० 'सीधा' । -जौल-स्त्री० दाहनी ओल; कृपादृष्टि । -सरह-अ० भलमनसीसे, सिधाईसे । -नजर-मिगाह-स्त्री० कृपादृष्टि, प्रसन्नतापूर्वक दृष्टि । -बात-स्त्री० सुली, साफ बात, आसानीसे समझमें आनेवाली बात । -राह-स्त्री० मलाईका रास्ता, सरथ । -लकीर-स्त्री० सरल रेखा । सु० -उँलखिर्नी धी नहीं

निकलता-नरभीसे काम नहीं चलता । -सुनामा-स्त्री०-स्त्री कबना; सुली गालियाँ देना ।

सीधु-पु० [सं०] मद्य; ईश्वरके पकाये हुए रसने बनायी हुई शराब; (ला०) अमृत । -गंध-पु० मौलसिरी । -ध-वि० मद्यप । -पर्णी-स्त्री० बंधारी । -पान-पु० मद्यपान । -पुष्प-कदंब; मौलसिरी । -पुष्पी-स्त्री० धव वृक्ष, धातकी । -रस-पु० आमका पेड़ । -वृक्ष-पु० बृहत्, सुली । -संख-पु० मौलसिरी ।

सीधे-अ० ठीक सामने, बिना मुड़े-मुड़े; बिना और कहीं गये या रुके; सिधाईसे; नरमी, भलमनसीसे । मुँह-अ० शिष्टता, भलमनसीसे (सीधेमुँह बात न करना) । -से-भलमनसीसे, सिधाईसे ।

सीध-पु० [सं०] युदा, मलद्वार ।

सीन-पु० [अ०] हृदय, नज्जारा; नाटकका कोई परदा, गर्भाक; नाटक या कहानीमें वर्णित घटनाओंके घटित होनेका स्थान, घटनास्थल । सीनरी-स्त्री० रंग-मन्त्री मजाबटका सामान ।

सीनरी-स्त्री० [अ०] स्थानविशेषके प्राकृतिक हृदय; रंग-मन्त्री सजावटका सामान ।

सीना-सं० क्ति० खड़े या खड़े किये हुए छेदीसे तागा निकालकर कपड़े, दाढ़, चमड़े आदिके टुकड़ोंको ओढ़ना, टाँका मारना, सिलाई करना । -पिरीना-सं० क्ति० सिलाई-युनाईका काम करना । पु० सिलाईका काम ।

सीना-पु० [फा०] छाती । -चाक-वि० अग्नहृदय, क्षिप्र । -जून-वि० छापी पीटनेवाला । -ज़मी-वि० छापी पीटना । -ज़ोर-वि० बली, जबरदस्ती । -ज़ोरी-स्त्री० जबरदस्ती, धीगा-धींगी । -तोड़-पु० कुद्नीका एक पैच । -बंदू-पु० अंगिया; थोड़ेको पेटी जो तंगके ऊपर कसी जाती है; वह कपड़ा जो बच्चोंकी छातीपर इसलिये बंध देते हैं कि राल उपकनेसे और कपड़े खराब न हों; रुईदार फलुडी या बारकट । -बसीना-वि० (विधा, मज इ०) जो बापने बेटे, पुरुने शिष्यको पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुप्त रूपसे मिलता आया हो । अ० उक्त क्रम या रीतसे; मुकाबलेमें, सामने । साज़-वि० नाफ दिलका, खरा । -सिपर-वि० बुझमें बड़ा रहनेवाला । (मु० -रहना, -होना-सुनरेकी जगहमें बटक खरा रहना; आफतो, आधातोंकी छापीपर लेना) । -सिचाह-वि० खोटे दिलका, मिथाहदिल । -(रै) का उभार-छातियों या स्तनका उभर आना । -की तैयारी-छातीका भराव, छातीपर काफी माम होना । मु० -पर गुल खाना-मेघसीके छल्लेकी गरम करके छातीको दागना । -पर पथर रखना-दे० 'छाती' के साथ । पर सॉप छोटना-दे० 'छाती' के साथ । -पर हाथ मारना-छाती पीटना । -में जगह देना-प्यार करना; सम्मान करना । -में सौँस समाना-हाँफना बढ़ होना, श्वासि मिलना ।

सीनिबर-वि० [अ०] उन्न या पदमे बसा, 'जूनियर' का उलटा ।

सीनी-स्त्री० [फा०] तौरे, पीतल या किसी और धातुका धालीकी शकलका बड़ा बरतन ।

सीनेट-सी० [स०] दे० 'सिनेट'।

सीप-पु०, स्त्री० झंझ, धोपे आदिकी जातिकी एक जलचर प्राणी जिसका शरीर किततीनुमा दोहरे खोलके भीतर छिपा होता है और जिसके समुद्रमें पाये जानेवाले भेदके अंदर मोती पैदा होता है, शुक्ति; हम कोशिका किशती-नुमा, कड़ा खोल जिसके अंदर आदि बनाते हैं और जिसका भस्म दवाके काम आता है। -ज०, -सुत०-पु० मोती।

सीप-[स०] तर्पण आदिमें व्यवहृत लवोनरा जलपत्र।

सीपति०-पु० दे० 'श्रीपति'।

सीपर०-स्त्री० दे० 'मीपर'।

सीपारा-पु० [फा०] कुरानके तीस भागोंमेंसे एक।

सीपिज०-पु० मोती।

सीपी-स्त्री० दे० 'सीप'। सु०-सा मुँह निकल आना-इतना दुख हो जाना कि चेहरेकी हड्डियाँ निकल आये।

सीपी०-स्त्री० 'सी-पी' का शब्द, सीफार।

सीमंज-पु० [स०] मिरमें सिकाली बुंद मोग; हद, सीमा-रेखा; सीमंतोन्नयन संस्कार; इन्द्रियोक्त जोड़, अस्थि-संघात। -करण-पु० मोग काटना। -मणि-पु० चूड़ामणि।

सीमंतक-पु० [स०] मोग काटना; मिर्दूर; ईशुर; नरका-बाम; मान नरकोंमेंसे एकका अधिपति (जै०); लाल रक्तका एक भेद।

सीमंतनी-स्त्री० दे० 'सीमन्तिनी'।

सीमंतित-वि० [म०] जिसके मोग मिटाई गयी हो।

सीमंतिनी-स्त्री० [स०] नारी।

सीमंतोन्नयन-पु० [म०] दिनोंके लिए बिगिन बारह संस्कारोंमेंसे एक, जो गर्भवतीको गर्भके चौध, छठे या आठवें महीने करना होता है।

सीम-स्त्री० [फा०] चाँदी। -अंदास, -तब-वि० गौरा-चिट्ठा; सुंदर। कृष्ण-पु० गारकश; चोरा। -गर-पु० सुनार। -गै-वि० चाँदीके रंगका।

सीम०-स्त्री० दे० 'सीमा'। सु०-काँड़ना, चरना-दे० 'सी' के साथ। -चोपना-हद बनाना, दूसरेकी हदमें घुसकर उसकी जमीनपर कब्जा करना।

सीमक-पु० [म०] सीमा।

सीमल०-पु० सेमल।

सीमांत-पु० [स०] हद, सीमा; सिमाना, सीमावर्ती स्थान। -पूजन-पु० सीमाकी पूजा; गौबकी सीमापर आनेपर की जानेवाली बरकी पूजा। -प्रदेश-पु० सर-हदी इलाका; दो देशोंके बीचका भूभाग। -बंध-पु० आचरण-संबंधी मर्यादा। -खेना-स्त्री० अतिम छोर।

सीमांतर-पु० [स०] गौबकी सीमा।

सीमा-पु० [स०] हद; सिमाना; खेत, गौब आदिकी सीमापरका बंध या मोक; सीमाचिह्न; बंध; किनारा, कूल; क्षितिज; खोपकी आदिका जोड़; आचारकी मर्यादा; चरम बिंदु; खेत; घोवाका पुष्टभाग; अंडकोश। -कर्वक-पु० गौबकी सीमापर खेती करनेवाला। -कृषाज-वि० सीमाचिह्नके किनारे हल चरानेवाला। -गिरि-पु० सीमावर्ती पहाड़। -निश्चय-पु० व्यवहार द्वारा

सीमाका निर्धारण। -पाख-पु० सीमाकी रक्षा करने-वाला। -बंध-पु० आचारशास्त्र। -बाह-वि० जिसकी सीमा बंध गयी हो, परिमित। -क्षिा-पु०-सीमा-चिह्न। -बाह-पु० सीमा-संबंधी झगडा। -निर्धारण-पु० दे० 'सीमानिश्चय'। -निर्वाह-पु० सीमा-संबंधी मुकदमा। -वृक्ष-पु० सीमाचिह्नका काम देनेवाला वृक्ष। -संधि-स्त्री० दो सीमाओंका मेल। -संतु-पु० सीमापरका बंध आदि।

सीमा(मन्)-स्त्री० [स०] दे० 'सीमा' (ऊपर)। -म-क्षिा-पु० सीमापरका चिह्न, हदका निशान।

सीमातिक्रमण-पु० [म०] सीमोत्तलपन।

सीमातिक्रमणोत्सव-पु० [स०] सीमा पार करने समयका उत्सव (युद्धयात्रा आदिमें)।

सीमाधिप-पु० [स०] सीमा-रक्षक; पड़ोसी राजा।

सीमापहारी(विन्)-वि० [स०] सीमाका निशान गायक करनेवाला।

सीमाव-पु० [फा०] पारा।

सीमाबी-वि० पारके रंगका।

सीमावरोध-पु० [स०] हदबंदी, सीमा स्थिर करना व. होना (कौ०)।

सीमिक-पु० [स०] चाँदी या चाँदी रंग का कोरा, शमक एक वृक्ष, बिलौटा।

सीमिका-स्त्री० [म०] दीमक, चाँदी।

सीमिचा-पु० [फा०] इद्रजालविद्या, परकायप्रेषविद्या।

सीमी-वि० चाँदीका, रत्न-निर्मित।

सीमीक-पु० [म०] वृक्षविशेष।

सीमुरा-पु० [फा०] एक कृषिप विद्यालकाय पक्षी।

सीमेंट-पु० [अ०] एक पत्थरका विशेष प्रकारमें तैयार किया हुआ चूर्ण जो पत्थरपर आदि करनेके काम आता है।

सीमोल्डन-पु० [म०] सीमा पार करना।

सीर०-स्त्री० सीना।

सीरन०-स्त्री० सिलार, सिलारिका जाड़।

सीररा०-वि० दे० 'सियरा'।

सीर-पु० [म०] हल; हलम जोना जानेवाला बैल; मय, आक। -घर-पु० बलराम। -ध्वज-पु० राजा जनक (जि वन पुत्रकी कामनामें सबके लिए भूमिकी जोत रंग थे तो हलके बैलने सीताकी उत्पत्ति हुई); बलराम। -पाणि, -स्तु-पु० बलराम। -बोस-पु० बैलदो हलमें जोतना, जुआठना, जुआठे हुए बैलोंकी जोड़ी। -बाह, -बाहक-पु० हल जोतनेवाला, हलबाह। सीर-स्त्री० वह जमीन जिमें जमींदार खुद जोतना हो और जिसमें उसे कुछ खास हक शामिल हो। पु० रत्न नलिका। * वि० ठंडा, शीतल। सु०-करना-जमींदारका किसी जमीनकी खुद जोतना, काबल करना। -खुलवावा-फट खुलवाना। -में-एकत्र, साथ, एकमें। -में होना-जमींदारकी अपनी जोत, काबलमें होना।

सीरक-वि० ठंडा-‘मोह करी जमी मिटे हृदयको दाद पर उर सीरक’-सू०।

सीरक-पु० [म०] हल; मय; सूर्य; सूर्य।

सीरस, सीरस—पु० दे० 'शीर्ष'।

सीरस-खी [अ०] गुण, स्वभाव; शील, चरित्र; जीवन-चरित्र।

सीरस-अ० [अ०] मीतरकी छद्म, विचारमें।

सीरसी—खी०—दे० 'सीरीनी'।

सीरा—पु० दे० 'शीरी'; सिरहाना। खी० [मं०] एक पुराणीक नदी। * वि० ठंढा; शान।

सीरायुध—पु० [सं०] बलराम।

सीरियल—पु० [अ०] कहानी, लेख, पुस्तक जो किसी पत्रिकाके कई अंकोंमें या कई जिल्दोंमें मुद्रित हो; सिनेमाने कई भागोंमें दिखाया जानेवाला खेल।

सीरी (रिज)—पु० [सं०] हलधर, बलराम।

सीरीज़—खी० [अ०] श्रेणी, माला, क्रम; मिलमिला।

सीरुच—पु० [सं०] एक तरहकी मछली।

सीरु—पु० दे० 'शील'।—बंस, बान-वि० सुशील।

सीरु—खी० जमीनकी नमी, मोह; सँछें निकलते समयके छोटे-छोटे बाल, ममे। पु० चूड़ियाँ मुटौल करनेका एक आला।—का कूँड़ा—सुलझानेकी एक रस जिससे किसीकी मम भीननेपर क्षिप्त कृपेमें मेहँडे रसकर निवाज दिलाती है।

सीरु—पु० [मं०] हल, [अ०] मुहर, ठप्पा; एक समुद्री जड़। **सु०**—मुहर होना—किसी चीजका मुहरबन्द किया जाना।

सीला—पु० बॉटम अर्थात् टुल टाने जो फलक कटेनेके बाद रोममें पड़े रह जाते हैं, शिल; ऐसे टानोंको चुनकर निबाँह करनेकी कृति, उछाड़ि। वि० लम, जिममें मोल हो।

सील—खी० दे० 'सीमा'।

सीबक—पु० म० नीनेवाला।

सीवन—खी० [मं०] मिलाव; सूचीकर्म; टाका; मिलाइका जोड़; सधि।

सीवनी—खी० [मं०] सूँडे; लिमंगणिते बीचोबीच गुदातक जानेवाली रेखा; बीचोबीच गुदामें नीचेका भाग।

सीवी—खी० दे० 'मीची'।

सीव—वि० [मं०] मीने योग्य।

सीस—पु० [मं०] सीमा।—ज-पु० मिर्द।—पत्र, पत्रक—सीमा।

सीस—पु० मिर, शीर्ष।—साज—पु० वह टोपी जिससे शिकारके लिए पाले हुए बाज आदिका मिर, ऑल टैककर रखी जाती है और शिकारके बल खोली जाती है, कुलह।

सीसा—पु० दे० 'शिरस्त्राण'।—कूल—पु० मिरपर पहननेका एक गहना।

सीसमहल—पु० वह कमरा या महान जिसकी दीवारोंपर हर जगह शीशा जड़ा हो।

सीसक—पु० [सं०] सीसा।

सीस—पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी दरवाजा, टेबुल, कुर्सी आदि बनानेके काम आती है।

सीसर—पु० [सं०] एक पौराणिक धान जो भरभका पति था।

सीसा—पु० एक प्रसिद्ध मूल धातु जिसकी चादरें, गोखियाँ आदि बनती और जिसका सस औषधरूपमें भी काममें

लावा जाता है; * शीशा।

सीसी—खी० 'सी मी'की आवाज; * शीशी।

सीसी—खी०—पु० सीसम।

सीसोपचानु—खी० [सं०] रंगुर।

सीसोदिया, सीसोदिया—पु० दे० 'सिसोदिया'।

सीसान—पु० [फा०] ईरानके दक्षिणमें अवस्थित एक देश जो हस्तमका जन्मस्थान और जमीर था।

सीसोप्राण—पु० [अ०] भूकप-सूचक यंत्र।

सीह—खी० पथ। * पु० 'सिंह'।

सीहगोम—पु० दे० 'सिवाहगोश'।

सीहुँव—पु० [सं०] बृहत्, रस्तुही।

सै—अ० दे० 'सो'।

सुँख—पु० एक तरहके साधु।

सुरावंश—पु० अंतिम मौर्य सम्राट् बृहद्रथके मनापति पुत्र-मित्र द्वारा सस्थापित राजवंश।

सुँघनी—खी० यँघनेकी चीज; नंगाङ्के पचेका बारीक चूर्ण, नाम।

सुँघाना—म० क्रि० किसीको नाकके पास कोई चीज इस उद्देश्यसे लगाना कि वह उसका गंध ग्रहण करे, आश्राण करना।

सुँठि—खी० दे० 'मुठि'।

सुँड—पु० दे० 'सुह'।—**सुसुँड**—पु० हाथी।

सुँडा—खी० सुँड। † पु० लददू गंधकी पीठपर रखनेका गद्दा।

सुँडाल—पु० हाथी।

सुँडाली—खी० एक तरहकी मछली।

सुँह—पु० [सं०] रामदलका एक वानर; एक दैत्य, निरुद्धका पुत्र और उपसुद्धका भाई; विष्णु।

सुँदर—वि० [सं०] जो आँखोंको अच्छा लगे, सुस्पष्ट, सुवस्त्र, शोभन; मला, अच्छा। पु० कामदेव; एक देव; एक नाग; लकड़ा एक पर्वत।—**कई**—पु० रामायणका एक कांड, सुंदर डठल।—**बन**—पु० बंगालके दक्खिनमें समुद्रतटपर फैला वनखंड।

सुँदरता—खी०, **सुँदरत्व**—पु० [सं०] सौंदर्य, सुवस्त्रगी।

सुँदरताई—खी० दे० 'सुंदरता'।

सुँदरवती—खी० [सं०] एक नदी।

सुँदरभूम्य—वि० [सं०] अपनेकी सुंदर माननेवाला।

सुँदराई—खी० सुंदरता—महाज सुंदराईपर राई लान बारनी—दास।

सुँदरापा—पु० सुंदरता।

सुँदरी—खी० शिवा-इसराजमें लगे हुए लोहके छल्ले जो विभिन्न समयोंके अंतर्गत विशेष म्दरोंके स्थान होते हैं। वि०, खी० [सं०] रूपवती। खी० सुंदर खी; त्रिपुर-सुंदरी देवी; वृक्षविशेष; अफसकी एक कन्या; वैशानरकी एक कन्या; मात्स्यवाङ्की पत्नी; एक योगिनी; सवैया छंद; एक वर्णवृत्त; हलदी।—**सँदिर**—पु० अतःपुर।

सुँदरेवर—पु० [मं०] शिवकी एक मूर्ति।

सुँदोवसुँद—पु० [मं०] निरुद्ध दैत्यके दो बेटे जो तिलोत्तमा अम्बराकी पत्नी बनानेके लिए आपसमें ही लड़ मरे।

सुँदोवन—पु० [सं०] अच्छा भाग।

सुँवाई—खी० सौभाग्य।

सुंवावट-खी० दे० 'सुंवाई'।

सुंघिया-खी० एक तरहकी क्वार।

सुंघुंड-पु० [सं०] कर्पूरक।

सुंवा-पु० पत्थर तोड़नेका एक भारी औजार; तोपका गज; झंड़ी।

सुंवी-खी० छोहमें छेद करनेकी छेनी।

सुंखल-पु० [फा०] एक सुगंधित घास जो फारसी-उर्दू कवितामें सुंदर सुंघराले केशका उपमान मानी गयी है, बालछत्र। - (ले) कमी-पु० बालछत्रका एक भेद।

-हिंदी-पु० बालछत्र।

सुंखला-पु० [फा०] गेहूं या नौकी बाल।

सुंज-पु० [सं०] एक देश; उस देशके निवासी; * दे० 'शुंम'।

सुंभा-पु० दे० 'सुभा'।

सु-उप० [सं०] शब्दोंके साथ जुड़कर वह सुंदर (सुदर्शन), उत्तम (सुगंध), अधिक, अतिशय (सुबोध), सहज, अन्याय (सुकर, सुलभ), भलीभाँति, पूरे तौरपर (सुजीर्ण, सुमेवित, सुशासित) आदि अर्थोंका बोध करता है। पु० पूजा; अनुमति; कृच्छ्र; समृद्धि; कष्ट; सुंदरता, आनंद; वि० अच्छा; भला; सम्मानार्ह। सर्व * दे० 'सो'। * अ० तुनीया, पचमी और पछी विभक्ति।

सुअ-पु० पुत्र।

सुअटा-पु० शुक, तोता।

सुअन-पु० बैठा, पुत्र।

सुअनजई-पु० एक फूल, सोनजई।

सुअना-पु० शुक, तोता। * अ० कि० उत्पन्न होना, जनमना; उदय होना।

सुअर-पु० दे० 'सुअर'। -दस्ता-वि० जिसके दाँत सुअर-केमे हो। पु० वह दाँथी जिसके दाँत जमीनकी ओर झुके हुए हों।

सुअवसर-पु० अच्छा अवसर, मौका।

सुआ-पु० तोता, शुक। पु० बही सुई, मूजा।

सुआड-वि० बही आयुवाला, दीर्घायु।

सुआद-पु० स्वाद।

सुआन-पु० दे० 'इवान'।

सुआमी-पु० दे० 'स्वामी'।

सुआर-पु० दे० 'सुआर'। -लागें परसन निपुन सुआरा'। -रामा०।

सुआरव-वि० मधुर ध्वनि करनेवाला, सुरीला।

सुआसन-पु० सुंदर, बढ़िया आसन।

सुआसिन, सुआसिनी-खी० सुभागिन स्त्री; परोमिन।

सुआहिल-पु० तलवारका एक हाथ।

सुई-खी० दे० 'सुई'।

सुकंकाव(वत्)-पु० [सं०] एक पर्वत।

सुकंदका-खी० [सं०] घटकुमारी; पिंडलज्वर।

सुकंद-वि० [सं०] अच्छे गलेवाला, सुरीला। पु० सुग्रीव।

सुकंद-पु० [सं०] सुखली, कटुरोग।

सुकंद-पु० [सं०] कसेरू; प्याज।

सुकंदक-पु० [सं०] प्याज; बाराहीकंद; धरणीकंद; एक जनपद।

सुकंद-खी० [सं०] बंध्याकंदकी; कल्याणकंद।

सुकंदी(विष्)-पु० [सं०] वरन, ओल।

सुक-पु० दे० शुक्र। -देव-पु० दे० 'सुकदेव'। -नासा-वि० जिसकी नाक तोतेकी ठौर जैसी तुकीही हो।

सुक-पु० [सं०] एक भंत्रकार कृषि।

सुकबाबा-अ० कि० दे० 'सुकुबाना'।

सुकट्ट-पु० [सं०] सिरसका पेश। वि० बहुत कटु।

सुकडवा-अ० कि० सिमटना, फैलावका घटना; ठिठुरना; शिकन पड़ना।

सुकना-अ० कि० मूखना, सुख जाना-'सुकत सरोवर मचम कीच तलफत धीन तन'-रासी।

सुकन्यक, सुकन्याक-वि० [सं०] सुंदर कन्यावाला।

सुकन्या-खी० [सं०] च्यवन कृषिकी पत्नी जो महाराज शर्वातिकी कन्या थी; अच्छी कन्या।

सुकपर्दा-वि०, खी० [सं०] सुंदर चौटीवाली (खी०)।

सुकमारा-वि० दे० 'सुकुमार'।

सुकर-वि० [सं०] जो आसानीसे किया जा सके, सहज-साध्य, सरल; जो आसानीसे काटमें किया जा सके (घोडा, गाव)। पु० दान; परोपकार; भीषा घोडा।

सुकरा-खी० [सं०] सीधी गाय।

सुकरात-पु० [अ०] प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो मफला नून (प्लेटो)का गुरु था।

सुकराना-पु० दे० 'सुकाना'।

सुकरित-वि० भन्दा, अच्छा। पु० दे० 'सुकृत'।

सुकरीदार-पु० एक तरहका द्वार।

सुकर्णक-पु० [सं०] हस्तिजड़। वि० सुंदर कानोंवाला।

सुकर्णिका-खी० [सं०] मूमाकानी; महाबला।

सुकर्णी-खी० [सं०] इद्रवाण्यी।

सुकर्म-पु० [सं०] एक वैद्यवर्ग।

सुकर्म(संघ)-वि० [सं०] सम्मर्म करनेवाला, पुण्यशाली, दमकुशल। पु० विश्वकमा, कुशल कारीगर; फलित ज्योतिषके २७ योगोंमें एक।

सुकर्म-वि० अच्छा काम करनेवाला; अच्छे कर्मोंवाला, पुण्यात्मा, मदाचारी।

सुकल-वि० [सं०] जो अपने धनका दान और भोगमें अच्छा उपयोग करे; * दे० 'सुल'।

सुकल्पित-वि० [सं०] सुसंज्ञित, हथिधारोसे लैम।

सुकलाना-अ० कि० चकित होना।

सुकवि-पु० [सं०] अच्छा कवि।

सुकह-वि० [सं०] बहुत कष्टकर; खतरनाक (रोग)।

सुकांड-वि० [सं०] मुंदर कांड, गने या पोरवाला। पु० करैलेकी लता।

सुकाहिका-खी० [सं०] काशीरुलता; करेला।

सुकाही(विष्)-वि० [सं०] सुंदर कांडवाला; व्यवस्थितके साथ जुड़ा हुआ। पु० भोरा।

सुकांत-वि० [सं०] बहुत सुंदर।

सुकाज-पु० अच्छा काम, सुकर्म।

सुकाना-अ० कि० दे० 'सुखाना'।

सुकानी, सुखानी-पु० मझाह, मीझी। [अ० सुकान-पगवार]।

सुकाम-वि० [सं०] अच्छी कामनाओंवाला । -इ-वि० कामनार्थे पूरी करनेवाला ।
सुकामा-खी० [सं०] नायमाणा लता ।
सुकाष्ठ-पु० [सं०] अच्छा समय; वह वर्ष या काल जिसमें अन्न खूब उपजा हो, सुमिक्ष ।
सुकासी (किन्)-पु० [सं०] वितरोंका एक गण ।
सुकासुका-खी० [सं०] षोडी नामक क्षुप ।
सुकाबना-म० कि० दे० 'सुखाना' ।
सुकाशन-वि० [सं०] खूब चमकनेवाला, बहुत दीप्तिमान् ।
सुकाड-वि० [सं०] अच्छी लकड़ीवाला । पु० काडाघि ।
सुकाडक-पु० [सं०] देवदार । वि० अच्छी लकड़ीवाला ।
सुकाडा-खी० [सं०] जंगली डेल, काडकडली; कट्डी ।
सुकिञ्ज-पु० दे० 'सुकुन' ।
सुकिवा* -खी० स्वकीया नाविका ।
सुकी* -खी० तोतेकी मादा, सुण्णी ।
सुकीड* -खी० स्वकीया नाविका ।
सुकीर्ति-खी० [सं०] सुशय, नेकनामी । वि० अच्छी कीर्तिवाला ।
सुकुडल-पु० [सं०] धनराष्ट्रका एक पुत्र ।
सुकुड-पु० [सं०] राल ।
सुकुडक-पु० [सं०] प्याज ।
सुकुडन-पु० [सं०] बर्रर नामक पौधा, बहुते तुलसी ।
सुकुआर* -वि० दे० 'सुकुमार' ।
सुकुट-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
सुकुट्य-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
सुकुनना-अ० कि० दे० 'सुकुनना' ।
सुकुति* -खी० दे० 'शुक्ति' ।
सुकुमार-वि० [सं०] कोमल; बहुत ना नुक, कोमल अंगोंवाला; चिकना । पु० सुदर, कोमलाग बालक या किशोर; शैलका एक भेद; माबी; वनचपा; काव्यका एक गुण; एक दैत्य; एक नाग । -बन-पु० एक कल्पित वन जो सुमेरु पर्वतके नीचे माना जाता है ।
सुकुमारक-पु० [सं०] नमालपत्र; तेजपत्र; धान, शालि; सुदर बालक; शैल; दाबवान्का एक लङ्का; कानका एक विशेष भाग । वि० कोमलांग ।
सुकुमारता-खी०, सुकुमारत्व-पु० [सं०] कोमलता; सुदृढता; नजाकत ।
सुकुमारा-खी० [सं०] जाती; नवमलिका; कदली; पूजा; मालती; एक नदी ।
सुकुमारिक-वि० [सं०] दे० 'सुकुम्य' ।
सुकुमारिका-खी० [सं०] केलेका पेड़ ।
सुकुमारी-वि० खी० [सं०] कोमलांगी । खी० कोमलांगी बालिका; नवमलिका ।
सुकुनना* -अ० कि० दे० 'सुकुनना' ।
सुकुर्कर-पु० [सं०] एक बालग्रह ।
सुकुल-पु० [सं०] मर्दश । विन कुलीन; * सुकुल । -अ, -जम्मा (भरण)-वि० सदाशजात । -वेद-पु० [हि०] एक वृक्ष ।
सुकुलीन-वि० [सं०] दे० 'सुकुलज' ।
सुकुर्वर, सुकुवार* -वि० दे० 'सुकुमार' ।

सुकुमुमा-खी० [सं०] स्कंदकी एक मातृका ।
सुकुत-पु० [अ०] मौन, खामोशी ।
सुकून-पु० [अ०] ठहराव, विराम; शांति; आराम; साविन (सररहित) वर्णका चिह्न ।
सुकूनत-खी० [अ०] निवास, रहाइश ।
सुकूनती-वि० रहनेका, रहाइशी (सु०) मकान ।
सुकुर्कर-पु० [सं०] एक बालग्रह ।
सुकुल-पु० [सं०] पुण्य, सत्कर्म; दान; दया; पारितोषिक; भोग्य । वि० शुभ, सुविहित; भाग्यवान्; * ठीक तरहसे किया हुआ; पूर्ण रूपसे किया हुआ; सुनिमित्त; जिसके साथ सदैव व्यवहार किया गया हो । -कर्म (न)-पु० पुण्यकर्म । -भाक् (जु)-वि० गुणवान् । -अस-पु० व्रतविशेष ।
सुकुतात्मा (सन्)-वि० [सं०] सदिचारशील, धर्मात्मा ।
सुकुतार्थ-वि० [सं०] सफलमनोरथ ।
सुकुति-खी० [सं०] सत्कर्म, पुण्य, मंगल । वि० धर्मात्मा । पु० मनु रचारीषिका एक पुत्र; दसवें मन्वन्तरके सात ऋषियोंमें एक; धनुका एक पुत्र ।
सुकुली (तिन्)-वि० [सं०] धार्मिक, पुण्यवान्; भाग्यवाली; बुद्धिमान् । पु० दसवें मन्वन्तरके एक ऋषिका नाम ।
सुकुल-वि० [सं०] पुण्यवान्, धार्मिक, सुकली; बुद्धिमान्; विद्वान्; भाग्यवाली; बहुत यश करनेवाला । पु० कुशल कार्यकर्ता; स्वर्ग ।
सुकुल्य-पु० [सं०] सत्कर्म, पुण्य ।
सुकुल-पु० [सं०] एक आदित्य । वि० उदाराशय ।
सुकुल-पु० [सं०] चित्रकेतु राजाका नाम; मगरका एक पुत्र; ताड़का राक्षसीका बाप । -सुता-खी० ताड़का राक्षनी ।
सुकेश-वि० [सं०] सुदर बालोंवाला । पु० एक राक्षस ।
सुकेशर, सुकेसर-पु० [सं०] विरोजा नौडू, बीजपूर; दो प्रकारके वृक्ष; मिह ।
सुकेशा-वि० खी० [सं०] सुदर बालोंवाली (खी०) ।
सुकेशि-पु० [सं०] एक राक्षस जिसके मात्स्यवान् आदि पुत्रोंसे राक्षसीका वंश चलना माना जाता है ।
सुकेशी-वि० [सं०] खी० सुदर केशवाली (खी०) । खी० एक अप्सरा; एक सुरांगना । -भार्य-वि० जिसकी लीके बाल बहुत सुदर हों ।
सुकेशी (शिन्)-वि० [सं०] दे० 'सुकेश' ।
सुकोली-खी० [सं०] क्षीरकाकोली ।
सुकोशक-पु० [सं०] कोपात्र, कोसम ।
सुकोसला-खी० [सं०] एक प्राचीन नगरी ।
सुकोशा-खी० [सं०] एक तरहकी तरौरी ।
सुकुहि-पु० [सं०] शुष्क चंदन ।
सुकान-पु० [अ०] पतवार; नाव; 'साकिन'का बहु०, रहनेवाले ।
सुकल-पु० दे० 'सुल' ।
सुक-पु० [सं०] एक तरहकी कौजी ।
सुका-खी० [सं०] इमली ।
सुकि०-खी० दे० 'शुक्ति' । पु० [सं०] एक पर्वत ।
सुक* -पु० दे० 'शुक्र' ।

सुखदुःख-पु० [सं०] खर्यः सोमः अग्निः शिवः इन्द्रः मित्रा-
वरुणः । वि० मत्तकर्म करनेवाला ।

सुखमत्स्य-खी० [सं०] प्रजा, बुद्धि, दक्षता ।

सुखय-पु० [सं०] अच्छा मौदा ।

सुखित-पु० दे० 'सुखित' ।

सुखीदा-खी० [सं०] एक अम्तर ।

सुख-वि० दे० 'शुख' ।

सुखन-वि० [सं०] विस्तृत राज्यवाला; अच्छा सामन
करनेवाला; नलधाम, शक्तिशाली ।

सुखव-पु० [सं०] उत्तम वस्त्रशाला ।

सुखम-वि० दे० 'सुखम्' ।

सुखिति-खी० [सं०] निवास, आश्रयका उत्तम, सुरक्षित
स्थान ।

सुखेत्र-पु० [सं०] उत्तम क्षेत्र. वह मकान जिसमें तीन
ओर (दक्षिण, पश्चिम और उत्तर) दालान हों; हममें
मनुका एक पुत्र । वि० उत्तम क्षेत्रोंवाला; अच्छी कीखमें
उत्पन्न ।

सुखेम(स्)-पु० [सं०] जल ।

सुखंकर-वि० [सं०] दे० 'सुखकर'; मुकर ।

सुखंकरी-खी० [सं०] जीवंती । वि० खी० मुलकरी ।

सुखंमुय-पु० [सं०] शिवका एक अक्ष, शिवलक्ष्मण ।

सुखंदी-खी० बच्चोंकी होनेवाला एक रोग, सुखा रोग ।

वि० दुबला, क्षीण ।

सुखंद-वि० सुख देनेवाला, सुखद ।

सुख-पु० [सं०] वह अनुभूति जो तन-मनको भाये, अनु-
कूल हो; कामनाकी पूर्तिसे होनेवाला आनंद; आराम;
आसानी; चैन; आमीद; अभ्युदय; कल्याण; सुविधा;
स्वर्ग; जल; आरोग्य; वृद्धि नामक ओषधि । वि० प्रसन्न;
सुख; अनुकूल, प्रिय; उपयुक्त । -आमन-पु० [सं०]
पालकी । -कंद-वि० सुख देनेवाला । -कंदन-
वि० दे० 'सुखकंद' । -कंदर-वि० जो सुखका धाम,
सुखका आकर है । -कर-वि० आनंददायक; मुकर,
मरल । पु० राम । -करण-वि० मुखोत्पादक ।

-करन-वि० दे० 'मुखकरण' । -कार, -कारक, -
कारी(वि), -कृत-वि० सुखदायक । -किया-खी०
सुख देना; सरल कार्य; सुखदायक कार्य । -गंध-वि०
सुगंधित । -ग-वि० सुखपूर्वक जानेवाला । -गम, -
गम्य-वि० सुगम, जिसपर आसानीसे गमन किया जा
सके । -ग्राह्य-वि० जो आसानीसे ग्रहण किया जा
सके; सुवीध । -घाम्य-वि० जिसका आसानीसे हनन
किया जा सके । -चर-वि० आरामसे जानेवाला ।

-चार-पु० बटिया घोडा । -खिच-पु० मानसिक
शक्ति । -छाया-वि० सुखकर छाया देनेवाला ।

-छोछा-वि० आसानीसे बेधने या नष्ट करने योग्य ।

-जमक-वि० सुख देने, उपजानेवाला । -जमनी-

वि०, खी० सुख देने, उपजानेवाला । -जात-वि० सुखी;

सुखपूर्वक उत्पन्न । पु० आनंददायक पदार्थ । -ज-

वि० सुखका छाया । -बरन-वि० सुखधाम; सुख

देनेवाला । -लख-पु० [सं०] चमकेला वह उकहा

जिमं जूतेके अंदर रखते हैं । -खर-पु० सुखल्ल,

सुखका स्थान । -द-वि० सुख देनेवाला, आनंददायक ।

पु० विष्णु; एक पितृवर्ग; एक नाल (संगीत); विष्णुका

निवास-स्थान; प्रसन्नोपका एक वर्ष । -भारी-वि०

प्रशंसनीय । -दुखिर्चा-वि० सुखदायक । -दा-वि०

खी० सुख देनेवाली । खी० अम्तरा; गंगा नदी; शमी

वृक्ष; एक वृत्त । -दाहू-वि०, खी० दे० 'सुख-

दायिनी' । -दाई-वि० दे० 'सुखदायी' । -दास-

वि० दे० 'सुखदाता' । -दाता(स्)-वि० सुखदायक,

आनंददायक । -दान-वि० सुखदाता । -दानी-

वि० [सं०] सुख देनेवाला । खी० एक वृत्त । -दाय,

-दायी-वि० दे० 'सुखदाता' । -दायक-वि० दे०

'सुखदाता' । -दायिनी-वि० खी० सुख देनेवाली ।

खी० रोहिणी स्थान । -दायी(विन्)-वि० सुख देने-

वाला । -दाय-वि० सुख देनेवाला । -दामा-

पु० एक बटिया धान । -दुःख-पु० आगम और कष्ट;

आनंद और शोक । -दृश्य-वि० प्रियदर्शन । -द्वैती-

-द्वैती-वि० खी० सुख देनेवाली । -द्वैन-वि०

सुख देनेवाला । -दोहा, -दोहा-खी० वह गाय जो

आसानीसे दुही जा सके । -धाम(स्)-पु० सुखका

घर, वैकुण्ठ । वि० [सं०] सुखदायक, सुखी । -पर-

वि० आरामनलव । -पाल-पु० [सं०] एक तरहकी

पालकी । -पेय-वि० पीनेमें आनंददायक या आम्रम ।

-प्रणाद-वि० मधुर शब्द करनेवाला । -प्रतीक्ष-

-वि० सुखकी प्रतीक्षा, आशा करनेवाला । -प्रत्यर्था

(विन्)-वि० सुखका विरोधी । -प्रद-वि० सुख,

आनंददायक । -प्रबोधक-वि० सुबोध । -प्रबोध-

-वि० आसानीसे कथन होनेवाला (जैसे वृक्ष) । -प्रजन-

-पु० कुशल-प्रजन । -प्रसव, -प्रसवन-पु० सुखसे शान्ति

वाला प्रसव । -प्रमदा-वि० खी० आराममें, बिना

कष्टके बसा जननेवाली (खी० गाय इ०) । -प्राप्त-

-वि० सुखी; आसानीमें मिला हुआ । -प्राप्त्य-वि०

आसानीसे प्राप्त होनेवाला । -बंधन-वि० बिला-

प्रिय । -बद्ध-वि० मुरद । -बुद्धि-खी० मरल ज्ञान ।

-बोध-पु० सुखको अनुभूति, मरल ज्ञान । -अंज-

-पु० मण्डप भित्ति । -अक्षिकाकार-पु० हलवाट ।

-भाक् (स्), -भागी(गिन्)-वि० सुखी, मृग

भोगनेवाला । -भुक्(स्)-वि० सुखी; भोगवान ।

-भोग-वि० त्रिभुजा भेदन, नाश आसानीमें किया

जा सके । -भोग-पु० सुख भोगना । -भोगी-

(गिन्)-वि० सुखका भोग करनेवाला । -भोग्य-

-वि० जिसका आसानीसे भोग किया जा सके (जैसे धन) ।

-भोजन-पु० स्वादिष्ट भोजन । -भद्र-वि० आनंद-

दायक भद्र लानेवाला । -मामी(गिन्) वि० मृग

माननेवाला; किसी चीजमें सुख समझनेवाला; हर हालत-

में सुख माननेवाला । -मोहा-खी० शलकी वृक्ष ।

-रात्रि, -रात्रिका-खी० दिवालीकी रात; सुहागरातः

शान और आनंददायक रात । -राशि-वि० जो सुखकी

राशि, भटार है । -रस, -रसी-वि० दे० 'सुम-

गन्धि' । -लक्ष्य-वि० जो आसानीमें लक्षित हो सके,

ग्रहवाना जा सके । -लख-वि० जो आसानीमें मिल

मके। -**छिप्या**-**खी** मुखकी दृष्ट। -**वर्च**(स्) -**वर्चक**-**पु** सजीसार। -**वह**-**वि** आमाजीसे वहन करने योग्य। -**बाद्**-**पु** इन्द्रिय-मुख, दरीरमुख ही जीवनकी सार्थकता है-वह मन। -**बायी**(विन्)-**वि** उक्त मनकी माननेवाला। -**बास**-**पु** आनन्द-दायक स्थान; तरबूज। -**बासन**-**पु** मुखबामन। -**विहार**-**पु** आरामकी भ्रिदगी। **वि** आरामसे भ्रिदगी बितानेवाला। -**बेदन्**-**पु** मुखकी अनुभूति। -**शयन**-**पु** आरामसे मीना। -**शयित**-**वि** पर आरामसे सोया हुआ। -**शक्या**-**खी** आरामदेह वल्लभादि; आरामकी नंद। -**शांति**-**खी** मुख और शांति, सुख-चैन। -**शापी**(विन्)-**वि** आरामसे मोनेवाला। -**श्रव**-**श्राव्य**, -**भूति**-**वि** भूतिमय, कानोंकी प्रिय लगनेवाली (ध्वनि, धोल)। -**संग**-**पु** सुखासक्ति। -**संगी**(विन्)-**वि** सुखमें आनक्ति रखनेवाला। -**संदुहा**, -**संदोहा**-**खी** दे० 'मुखदोहा'। -**संपत्ति**-**खी** मूल और ऐश्वर्य, मन-धनका सुख और धन संपत्ति। -**मखिल**-**पु** कुनकुना या गरम पानी। -**म्यार**-**पु** सुखका समुद्र; एक ग्रह जो भगवतके दशम स्कंधका हिंदी अनुवाद है। -**म्यधन**-**पु** मुख प्राप्त करनेका जरिया। -**म्यध**-**वि** जो आमाजीमें हो या किया जा सके, सहज; आमाजीमें दूर होनेवाला (रंग)। -**म्यार**-**पु** मोक्ष। -**सुसि**-**खी**, -**म्याप**-**पु** मुखकी नंद। -**मेचक**-**पु** एक नाग। -**मेव**-**वि** मुखमें मेवन, भोग करने योग्य; मलभ। -**सौभाग्य**-**पु** सुख और सौभाग्य, मुख-चैन और धन-मान। -**स्पर्श**-**वि** तिमका स्पर्श मृक्ष हो। -**स्वच्छंदता**-**खी** मुख और आजादी, बेचक्री। **स्वप्न**-**पु** सुखमय जीवनकी वृत्तपना। -**हल**-**वि** तिमका हाथ मुलायम हो। -**की नंद**-**वह** नंद जिसमें स्वल्प न पड़े, आरामकी नंद। **सु**-**वेखना**-आराम पाना। -**फरमाना**-आराम करना। -**मानना**-किमी परिस्थितिमें आराम मानना। -**लूटना**-मनोपयोग करना।

सुखक-**वि** दे० 'सुख'।

सुखता-**खी**, **सुखत्व**-**पु** [म०] आगम, चैन; आनंद; अश्रुद्वय।

सुखन-**पु** [अ०] वान, वचन, बातचोत; उक्ति; कौल; कविता; पद्यरचना। -**खी**-**वि** छिद्रान्वेधी; श्वरकी उपर लगानेवाला। -**खीनी**-**खी** छिद्रान्वेषण, ऐवजोई। -**तकिया**-**पु** वह शयन, वाक्यखंड या लघुवाक्य जो पार्थक होते हुए निरर्थक होता है और जिसे कुछ लोग आदतके कारण, वाक्यके बीचमें, अन्तर आगेकी बात झट मोच न सकनेपर कहा करते हैं ('क्या नाम है', 'जो है सो' इ०), अवलंबन। -**खी**-**वि** कवि, सुवक्ता, सुलेखक। -**दानी**-**खी** जवानदानी; शायरी। -**परवर**-**वि** अपनी बातका पालन करनेवाला। -**क्रुहम**-**वि** बुद्धिमत्; काव्यरसिक। -**क्रुहमी**-**खी** बुद्धिमान्; काव्यमर्मज्ञता। -**सनास**-**वि** बातकी तहतक पहुँचनेवाला। -**साज**-**वि** बात बनानेवाला; बोखेबाज।

सुखना-**अ०** कि० दे० 'सुखना'।

सुखनीय-**वि** [म०] आनन्ददायक।

सुखमन-**खी** दे० 'सुपुम्ना'।

सुखमा-**खी** एक वर्णभूष; दे० 'सुषमा'।

सुखयिता(विन्)-**वि** [स०] प्रसन्न करनेवाला।

सुखवत-**खी** सुखी, प्रसन्न; सुखद।

सुखवती-**खी** [स०] बुद्ध अमिताभका स्वर्ग। **वि** **खी** दे० 'सुखवती'।

सुखवती-**पु** सुखनके लिए धूपमें ढाला हुआ अनाज; मुखनेसे चीखकी तीक्ष्ण होनेवाली कमी; गीली लिखावट सुखानेके लिए ढाली जानेवाली रेत।

सुखा-**पु** सुख।

सुखवान(वत्)-**वि** [स०] सुखी।

सुखवार-**वि** सुखी, प्रसन्न।

सुखात-**वि** [स०] जिमका अंत, परिणाम सुखमय हो; मैत्रीपूर्ण; सुखवा नाश करनेवाला। **नाटक**-**पु** नाटक-का एक प्रकार जिसका अंत सुखमय होता है, 'कामेटी'।

सुखातु-**पु** [म०] दे० 'मुखमहिल'।

सुखा-**खी** [स०] वक्त्रपुरी; पुण्य; एक मूर्च्छना (सगीत); शिवकी नौ गतिव्योमेंसे एक।

सुखाकर-**पु** [स०] एक लोक (सौ)।

सुखाग-**पु** [म०] स्वागत।

सुखाजात-**पु** [स०] शिव।

सुखाधार-**पु** [म०] स्वर्ग। **वि** सुखका आधार, आश्रय-रूप।

सुखाना-**स०** कि० तरी, गीलापन दूर करना; गीली चीख-को सुख करना। **अ०** कि० दे० 'सुखना'।

सुखानुभव-**पु** [स०] सुखकी अनुभूति।

सुखाप-**वि** [म०] सुखपूर्वक प्राप्य।

सुखापन्न-**वि** [स०] जिसे सुख प्राप्त हो।

सुखायत, **सुखायन**-**पु** [स०] आमाजीसे कादूमें आने-वाला, सिखाया-मथाया हुआ घोड़ा।

सुखारा, **सुखारी**-**वि** सुखी, सुखमय।

सुखार्थी(विन्)-**वि** [स०] सुख चाहनेवाला।

सुखाळा-**वि** आनन्ददायक।

सुखालुका-**खी** [स०] जीवतीका एक प्रकार।

सुखालोक-**वि** [स०] सुरद, मनोहर।

सुखावती-**खी** [स०] बौद्ध आगममें माना हुआ एक स्वर्ग। -**देव**-**पु** अमिताभ।

सुखावतीधर-**पु** [स०] एक बुद्ध, अमिताभ।

सुखावह-**वि** [स०] सुखजनक, सुखद।

सुखाश-**पु** [स०] खादिष्ट भोजन; वरुण; तरबूज।

सुखाशक-**पु** [स०] तरबूज।

सुखासा-**खी** [स०] सुखकी उन्मीद।

सुखाशय-**वि** [स०] सुखद।

सुखासक-**वि** [स०] सुखमें लीन। **पु** 'शिव'।

सुखासन-**पु** [म०] सुखद आसन. वह आसन जिसपर बैठनेमें आराम मिले; पद्मामय; पालकी।

सुखासिका-**खी** [स०] आराम, चैन; स्वास्थ्य।

सुखासीन-**वि** [स०] सुखसे बैठा हुआ।

सुखिन्ना-वि० दे० 'सुखिन्ना' ।

सुखित-पु० [सं०] आनंद, सुख । वि० * सुखी, प्रसन्न किया हुआ; सखा हुआ, शुभक ।

सुखिता-स्त्री०, सुखित-पु० [सं०] दे० 'सुखिता' ।

सुखिन्ना-वि० दे० 'सुखी' ।

सुखिर-पु० सौपका तिल ।

सुखी(विभू)-वि० [सं०] सुखयुक्त, जिसे सुख प्राप्त हो, जिसकी जिंदगी आरामसे कट रही हो; प्रसन्न; जिसे खाने-पीने, अपये-पैसेका सुख प्राप्त हो, सुसाहाय । पु० यति ।

सुखीनां-पु० एक चिकिया ।

सुखन-पु० [अ०] दे० 'सुखन' ।

सुखेतर-पु० [सं०] वह जो सुखसे भिन्न हो, कष्ट । वि० जो सुखी न हो, भाग्यहीन ।

सुखेन-पु० 'सुखेण' । अ० [सं०] सुखपूर्वक ।

सुखेष्ट-पु० [सं०] शिव ।

सुखैषित-वि० [सं०] सुखमें पला हुआ ।

सुखैना-वि० सुखदायी ।

सुखैषी(विभू)-वि० [सं०] सुख चाहनेवाला ।

सुखोचित-वि० [सं०] सुखका आदी ।

सुखोत्सव-पु० [सं०] आनन्दोत्सव, उछाव-वधाव; पति; स्वामी ।

सुखोदक-पु० [सं०] दे० 'सुख-सलिल' ।

सुखोदक-पु० [सं०] सुखका उदय; सुखप्राप्ति; एक मादक पेय; वर्ष (भूखंड) विशेष । वि० जिसका परिणाम सुखद हो ।

सुखोदक-वि० [सं०] जिनका परिणाम सुखद हो ।

सुखोद्य-वि० [सं०] जिसका उच्चारण आसानीसे, सुखसे हो सके ।

सुखोपाय-पु० [सं०] सरल साधन । वि० सुलभ ।

सुखोजिक-पु० [सं०] सखीखार ।

सुखोष्ण-वि० [सं०] कुनकुना । पु० कुनकुना पत्र ।

सुख-पु० सुख ।

सुख-वि० [सं०] सुख-सम्बंधी ।

सुखमात-वि० [सं०] सुप्रसिद्ध ।

सुख्याति-स्त्री० [सं०] प्रसिद्ध, नामवरी ।

सुगंध-वि० [सं०] सुखबूदर, सुंदर गंधवाला । स्त्री० अच्छी गंध, सुवास, सुशब्द । पु० तुंडुर; एक पर्वत; भ्यापारी, वणिक्; नील कमल; चंदन; ग्रंथिपर्ण; कटुतृण; पत्राग; गंधतृण; सुंदर जीरक; चना; भूतृण; गंधणोकुला; राल; लाल सहिजन; वासमती चावल; कसेर; एक बीजा; एक तीर्थ । -केसर-पु० लाल सहिजन । -कीकला-स्त्री० एक गंधद्रव्य । -गंधक-पु० गंधक । -गंधा-स्त्री० दासहरिद्रा । -गण-पु० कपूर, कस्तूरी, अगर आदि सुगंधित द्रव्योंका गण वा वर्ग । -गंधी-स्त्री० गंधपलायिनी । -तृण-पु० रुसा पास । -तैलनिर्वास-पु० जवादि नामक गंधद्रव्य ।

-व्रज-पु० चंदन, बज और नागकेसर । -त्रिफला-स्त्री० जायफल, लौग और इलायची । -नाकुली-स्त्री० राकाका एक भेद । -पत्रा-स्त्री० रुद्रजटा; शतवरी;

वृहती; सुंदर दुराक्षमा; अपराजिता; बला; विधारा ।

-पत्री-स्त्री० जावित्री; रुद्रजटा । -मिवंगु-स्त्री० गंध-विवंगु । -कल-पु० कंकाल । -बाळा-स्त्री० एक सुगंधयुक्त बनीवर्षि जो ज्वर, अतिसार, रक्तविकार आदि-बीजका है । -भूतृण-पु० रुसा पास, गंधतृण । -मुख-पु० एक मोषिसत्त्व । -मुखा-स्त्री० कस्तूरी । -मूत्र-पतन-पु० मुखकविका । -मूत्र-पु० लवली फल ।

-मूला-स्त्री० खलकमल; राका; मौला; कपूरकचरी; हरफारेबी । -मूली-स्त्री० कपूरकचरी । -मुषिका-स्त्री० छट्टंदर । -रोहिण-पु० रोहिण तृण । -वक्कल-पु० दारचीनी । -बैरजाव-पु० रोहिण तृण । -शाखि-पु० वासमती चावल । -मदक-पु० जायफल, शीतल-चीनी, लौग, इलायची, कपूर और सुपारी-इन छ सुगंधित द्रव्योंका समाहार । -मार-पु० सागौनका पेड़ ।

सुगंधक-पु० [सं०] साठी चावल; नागरी; लाल तुलसी; गंधक; नागर्जक; ककोटक; भरणीकंद; द्रोणपुष्पी ।

सुगंधन-पु० [सं०] जीरा ।

सुगंधरा-पु० एक फूल ।

सुगंधा-स्त्री० [सं०] राका; कपूरकचरी; रुद्रजटा पीला जूही; तुलसी; सल्फर; मौला; स्याह जीरा; बकुची; वध्या ककोटकी; नवमलिका, माधवी; स्वर्णमुषिका; नाकुली, सूरका; गंधकोकिला; पलवातुक; गगापत्री, विजौगा नीच अनंतमूल; नील मिषुवार; मेघनी ।

सुगंधाव-वि० [सं०] जिनमें काफ़ी सुगंध हो ।

सुगंधाव-स्त्री० [सं०] विपूरमलिका; नाममती चावल ।

सुगंधार-पु० [सं०] शिव ।

सुगंधि-वि० [सं०] सुंदर गंधवाला; सुशब्दर; पुण्याना, धमेपरायण । स्त्री० अच्छी गंध, सुवास । पु० परमात्मनः, एक तरहका आम; मिह; कमेर; चंदन; पलवातुक, गंधतृण; विपलमूल, धनिया; मोधा । -कुसुमा-पु० सुशब्दर फूल; पीत बदरी । -कुसुमा-स्त्री० पद्मा । -कृत-पु० शिलारस । -तेज-पु० रोहिण तृण । -त्रिकला-स्त्री० जायफल, सुपारी और लौगका समाहार । -पुष्प-पु० सुशब्दर फूल; केलिकदंब । -कल-पु० शीतलचीनी । -माता(ग)-स्त्री० पृथ्वी । -मुक्त-पु० एक तरहका मोधा । -मूत्रपतन-पु० गंधमाज । -मूल-पु० मूला, उशीर । -मुषिका-स्त्री० छट्टंदर ।

सुगंधिक-वि० [सं०] सुगंधयुक्त । पु० खस; पुष्करमूल; मोधा; महाशालि, वासमती चावल; गंधक; पुत्राग; कृष्ण जीरक, पलवातुक; गौरमुवर्ण; सुरपर्ण; शिलारस; कपित्थ; सिंह, हवैत पत्र ।

सुगंधिका-स्त्री० [सं०] कस्तूरी; केवला; श्वेत सारिवा ।

सुगंधित-वि० [सं०] सुगंधयुक्त, सुशब्दर ।

सुगंधिता-स्त्री० [सं०] मोरम, सुशब्द ।

सुगंधिनी-स्त्री० [सं०] आरामशीलता प्राक; पीली केतकी ।

सुगंधी(विभू)-वि० [सं०] सुगंधयुक्त, सुशब्दर । पु० सुगंधयुक्त ।

सुग-वि० [सं०] सुंदर गंधवाला; सुगायक; सुगम, सुलभ; सुगंध । पु० विद्या; सुख; सुगम ।

सुसठन-**की०** सुंदर गठन, गढ़ना; अंगसौष्टव ।
सुगठित-**वि०** सुंदर गठन, गढ़नवाला; कमा हुआ; अंग-सौष्टवयुक्त ।
सुगणक-**वि०** [म०] अच्छा व्योमिषी ।
सुगणा-**ब्धी०** [सं०] स्कंदकी एक मातृका ।
सुगण्-**वि०** [सं०] अच्छा गणक, हिंसाही; जो आसानीसे मिना जाय ।
सुगत-**वि०** [म०] सद्गतिप्राप्त; सुंदर गति या चालवाला; * मरल, आसन्न-‘मेरे जान ब्रह्मकी विचारिणी सुगत है’-वेनी । पु० बुद्ध भगवान्; नौद । -शासन-पु० नौदसिद्धांत ।
सुगतावतन, सुगतालय-**पु०** [सं०] बौद्धमंदिर, बौद्ध-विहार ।
सुगति-**की०** [सं०] सप्रति; कल्याण; सुख; सुरक्षित आश्रयस्थान; एक वृत्त । **वि०** सुंदरगति या स्थितिवाला (जैसे तारा) । पु० एक अर्हत् ।
सुगता-**पु०** नौता; सविजन ।
सुगमस्त्रि-**वि०** [म०] दीप्तिमान्; कुशल शायीवाला (वृद्ध) ।
सुगम-**वि०** [सं०] सहजमे जाने या पाने योग्य; आसन्न, सुबोध । पु० एक दानव ।
सुगमता-**ब्धी०** [म०] सुगम होना, आसानी ।
सुगम्य-**वि०** [सं०] दे० ‘सुगम’ ।
सुगर-**पु०** [सं०] मिर्द्र । * **वि०** लकड़; मृष; चतुर ।
सुगर्भक-**पु०** [सं०] लोहा ।
सुगर्भ-**पु०** सुमीव ।
सुगहन-**वि०** [सं०] जति घना; निषिद्ध ।
सुगहना-**की०** [सं०] यक्षस्थानकी अश्वघादिकी नजरसे बचानेके लिए खड़ीकी गयी बाड़ या घेरा ।
सुगहनावृत्ति-**की०** [सं०] दे० ‘सुगहना’ ।
सुगाव-**वि०** [सं०] जिसकी थाह सहजमें मिल सके, कम गहरी, अगाधका उलटा; जो आसानीसे पार किया जा सके ।
सुगाना-**अ०** कि० क्रुद्ध होना; विस्म होना । स० कि० शक करना ।
सुगीत-**पु०** दे० ‘सुगीतिका’; [म०] सुंदरगान । **वि०** अच्छी तरह गाया हुआ ।
सुगीति-**की०** [सं०] अच्छा गान; आवा छत्रका एक भेद ।
सुगीतिका-**की०** [सं०] एक वृत्त ।
सुगीध-**पु०** [सं०] एक ऋषि ।
सुगुंडा-**की०** [सं०] दृणपनी ।
सुगुप्त-**वि०** [सं०] अच्छी तरह छिपाया हुआ, जो बहुत गुप्त रखा गया हो । -**आँख**-**वि०** धरके वग्ननोंकी अच्छी देखभाल करनेवाला । -**लेख**-**पु०** अत्यंत गुप्त पत्र; ऐसे अक्षरों वा चिह्नोंमें लिखा हुआ पत्र जिसे पाने-वालेके सिवा और कोई न समझ सके ।
सुगुप्ता-**की०** [सं०] केवच ।
सुगुरा-**वि०** जिसका शुक अच्छा हो ।
सुगृह-**वि०** [सं०] सत्पुत्र ।
सुगृह-**पु०** [सं०] सुंदर गृह बना पक्षी ।

सुगृही-**की०** [सं०] प्रसुप्त अस्तिका एक पक्षी ।
सुगृही(वि०)-**वि०** [सं०] सुंदर परवाला; सुंदर नीर-वाला ।
सुगृहीत-**वि०** [सं०] अच्छी तरह पकड़ा हुआ; अच्छी तरह समझा हुआ; प्रातःस्मरणाय । -**नामा(मन्)**-**वि०** जिसका नाम सवेरे कल्याणकी कामनासे लिया जाय, प्रातःस्मरणाय ।
सुगोष्ठा-**की०** [सं०] किचरी ।
सुगोष्ठा-**की०** चोली ।
सुगीतम-**पु०** [सं०] गीतम बुद्ध ।
सुग्रा-**पु०** दे० ‘शुक’ । -**पंखी**-**पु०** एक तरहका भान । -**साँव**-**पु०** साँपका एक भेद ।
सुग्धि-**वि०** [सं०] सुंदर गाँठवाला । पु० चोरक नानक गधद्रव्य; पिप्पलीमूल ।
सुग्रह-**वि०** [सं०] बड़िया मूढवाला; सुलभ; सुबोध । पु० अच्छा ग्रह ।
सुग्रीव-**पु०** [सं०] किष्किभाका बानर राजा जो बालिका छोटा गाय था और जिसने राक्षसे रुद्रनेमें अपनी सेना सहित रामकी सहायता की; विष्णु वा कृष्णके चार बौनोंमें से एक; हंस; शिव, इन्द्र; वर्तमान अवसर्पिणीके नवें अर्हत्-के पिता; बोर; जलशय्य; एक पर्वत; पातालका एक नाग; एक प्रकारका मृदप; एक अन्न; शंख; शुभ-निशुंभका दूत जो भगवतीके पात व्याहका सवेसा लेकर गया था । **वि०** सुंदर मरदनवाला ।
सुग्रीवा-**की०** [सं०] एक अमरा ।
सुग्रीवाग्रज-**पु०** [सं०] बालि ।
सुग्रीवी-**की०** [सं०] दक्षकी एक कन्या और कश्यपकी की जिससे पीली, ऊँटी आदिकी उत्पत्ति हुई ।
सुग्रीवेश-**पु०** [सं०] रामचंद्र ।
सुगृह-**वि०** [सं०] बहुत बड़ा हुआ ।
सुघट-**वि०** [सं०] सुघट, सुढौल ।
सुघटित-**वि०** [सं०] जिसका डौल, बनावट, गठन, सुंदर हो, सुढौल, सुवीजित ।
सुघटित-**वि०** [सं०] दशाकर वा पीटकर ध्रुव चौरस, सम-तल किया हुआ ।
सुघट-**वि०** जिसकी बनावट सुंदर हो, सुढौल; किसी कार्य-में कुशल, चतुर, इत्तमद । -**ता**-**की०**, -**पन**-**पु०** सुंदरता; कुशलता ।
सुघटई-**की०** सुघटपन, सुंदरता; निपुणता ।
सुघटई-**की०**, **सुघटपा**-**पु०** सुघटपन, सुंदरता; कुशलता, हव ।
सुघट्टी-**की०** अच्छी, शुभ पक्षी ।
सुघर-**वि०** दे० ‘सुघट’ । -**ता**-**की०**, -**पन**-**पु०** दे० ‘सुघटपन’ ।
सुघरई-**की०** सुघटपन ।
सुघरई-**की०** दे० ‘सुघटई’ । -**कान्हवा**-**पु०** एक राग । -**दोही**-**की०** एक रागिनी ।
सुघरी-**की०** दे० ‘सुघट्टी’ । **वि०** की० दे० ‘सुघट’ ।
सुघोष-**पु०** [सं०] मधुर ध्वनि; नकुलका श्रवण; एक बुद्ध ।
वि० जिसकी आवाज मीठी हो; ऊँची आवाज करनेवाला ।

सुबोधक-पु० [सं०] एक बाध (संजीत) ।
 सुबोधका-की० [सं०] मराचंजु नामक झाक ।
 सुबोधन-पु० [सं०] बकम, रक्तसार ।
 सुबोध-पु० [सं०] एक इक्ष्वाकुमशीय राजा; एक देव-गंधर्व;
 एक बोधिसत्व ।
 सुबोध-की० [सं०] समाधििका एक प्रकार ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबुधि' ।
 सुबोध (सु) -वि० [सं०] सुंदर औखौवाला (शिव);
 अच्छी निगाहवाला; बुद्धिमान्, विवेकी । पु० गूरका
 पेव; बुद्धिमान व्यक्ति ।
 सुबोधा-सं० कि० जोषना, संभव करना-कहि रहीम
 परकाज दिन संपति सुबोधि सुबान-रहीम ।
 सुबोधित-वि० [सं०] उत्तम रूपमें किया हुआ; सदाचारी ।
 पु० सदाचार; अच्छा चालचलन; गुण ।
 सुबोधिता-की० [सं०] पतिव्रता की ।
 सुबोधित-वि० [सं०] सदाचारी, नेकचलन । पु० सदाचार ।
 सुबोधिता-की० [सं०] पतिव्रता की; धनिया ।
 सुबोध (मं०)-पु० [सं०] भोजन । वि० सुंदर बल्कल
 वा बर्मवाला ।
 सुबा-की० ज्ञान, चेष्टना; विचार । वि० निर्मल (?) ।
 सुबा-सं० कि० मोचनेकी क्रिया दूसरेसे कराना; ध्यान
 आकृष्ट करना; चिंतना, समझाना ।
 सुबा-की० दे० 'सुबाक' । वि० दे० 'सुबाह' ।
 सुबा-की० [मं०] इषत्ककी एक कन्या ।
 सुबाह-वि० [सं०] अति चार, सुंदर, मनोहर । पु०
 रविमणौसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र । -वसना-की०
 सुंदर दाँतवाली की । -रूप-वि० सुंदर रूपवाला । -
 रदन-वि० सुंदर स्वरवाला । -रूपमें-सुंदर रीतिसे ।
 सुबाह-की० अच्छी चाल, सदाचार, 'कुचाल'का
 उलटा ।
 सुबाही-वि० अच्छे चाल-चलनवाला, नेकचलन ।
 सुबाह-पु० सुबाहा; वचना, सुभाष ।
 सुबोधित-पु० [सं०] गंभीर चिंतन, महारा सोच-विचार ।
 सुबोधित-वि० [सं०] अली मौति लोचा-विचार हुआ ।
 सुबोधितार्थ-पु० [सं०] मारका एक पुत्र (मौ०) ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबुधि' । की० वृद्ध । -कर्म-वि० दे०
 'सुबोधकर्म' । -मंत-वि० शुद्ध आचरणवाला, पाक-
 माफ ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबुधि' ।
 सुबोध-की० सुबोधिता ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबुधि' ।
 सुबोध-वि० [सं०] स्थिरचित्त; चित्तानिष्ठ; इष्ये-वैमल्ले
 सुखी; संपन्न ।
 सुबोधिता-की० [सं०] सुबोध होना, समझाना,
 निश्चितता ।
 सुबोध-वि० [सं०] विभिन्न प्रकारका; विभिन्न रंगोंका । पु०
 एक नाम । -बीजा-की० नायविषय ।
 सुबोधक-वि० [मं०] विभिन्न रंगोंवाला । पु० सुगंधी;
 चोखल साँप; एक जसुर ।
 सुबोध-की० [सं०] निमिटा, कृत नामकी ककड़ी ।

सुबोध-वि० [सं०] पुराना; पिरसायी । पु० दीर्घकाक ।
 सुबोध (सु) -पु० [सं०] देवता ।
 सुबोध-की० दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-की० [सं०] दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-की० [सं०] इषयी ।
 सुबोध-की० [सं०] चिमडा; सैंसी; कैंची (?) ।
 सुबोध-वि० साधना; संचेत ।
 सुबोध (सु) -वि० [सं०] सुंदर चित्तवाला; उदारामय;
 बुद्धिमान् । पु० प्रवेताका एक पुत्र ।
 सुबोध-वि० [सं०] अली मौति बकाच्छाहित ।
 सुबोध-पु० [सं०] सुंदर बक, बड़िया कपका । वि० जो
 बड़िया कपका पहने हो ।
 सुबोध-पु० [सं०] एक बुद्ध ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-पु० [मं०] शिव ।
 सुबोध, सुबोध-की० [सं०] सतलज नदी ।
 सुबोध-वि० [सं०] सुंदर पपीवाला ।
 सुबोध-वि० दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-वि० [मं०] अच्छी चमकवाला (रत्न); अच्छा,
 छायावाला (वृक्ष) ।
 सुबोध-वि० स्वच्छ ।
 सुबोध-वि० [सं०] सुंदर जोंपावाला ।
 सुबोध-वि० [सं०] सुंदर जधनों (जूतकों)वाला; जिमक;
 अत अच्छा हो ।
 सुबोध-पु० [सं०] सज्जन, भला आदमी; * सज्जन ।
 सुबोधिता-की० [सं०] भद्रता, भलमनसी ।
 सुबोध-की० [सं०] 'मेजनी' कर्त गह कापकेको साऽरा
 और ऊपर सुंमे बारीक काम करके बनाया हुआ चिरीन
 पलंगपर बिछानेकी एक तरहकी मोटी, रंगीन चादर ।
 सुबोध (मं०)-वि० [मं०] सत्कृतमें उत्पन्न, कुलीन,
 विवाहित की०-पुत्रमें उत्पन्न, विहितजन्मा ।
 सुबोध-की० [मं०] बहुत बड़ी विजय । वि० आत्मानो;
 जीते जाने योग्य ।
 सुबोध-वि० [मं०] सुंदर जलवाला । पु० सुंदर जल,
 कमल ।
 सुबोध-वि० की० [मं०] जहाँ जलकी बहुमायन हों; नद-
 बहला ।
 सुबोध-पु० [मं०] सपहता, गंभीर, उत्कटा आदिमें प-
 नाक्य ।
 सुबोध-पु० दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-पु० दे० 'सुबोध' ।
 सुबोध-वि० [सं०] सुंदर, मनोहर; प्रकाशमान ।
 सुबोध-वि० [सं०] अच्छा वडा हुआ; सुजन्मा, ^{अच्छा}
 सुंदर । पु० धतराका एक पुत्र; भरतका एक पुत्र । -
 रिपु-पु० बुधिर ।
 सुबोध-पु० [सं०] भीदर्थ, कौति ।
 सुबोध-की० [मं०] शांति धान्य ।
 सुबोध-वि० की० [मं०] कुलीना; सुंदरी । की० एक
 किमान बालिका जिन्से भगवान् बुद्धकी बुद्ध-प्रति

बाद खेर खिलायी थी; सुकरी; गोपीचंदन ।
सुवासि-क्री० [सं०] अच्छी जाति । वि० अच्छी जाति, जम्बवाला, कुलीन, कुजातिका उच्छा ।
सुवासिवा-वि० दे० 'सुवासि'; * अपनी जातिका, सभातीय ।
सुवासीय-वि० [सं०] अच्छी जातिका ।
सुजान-वि० चतुर; हानी, सुविद्या; प्रवीण । पु० प्रेमी; प्रभु । -ता-क्री० सुजान होना ।
सुजानी-वि० दे० 'सुजान' ।
सुजासि-वि० [सं०] जिसके बहुतसे आर्य, बहनें या रिश्तेदार हों ।
सुजिह्व-वि० [सं०] सुंदर जीमवाला; मधुरभाषी । पु० अग्नि ।
सुजीर्ण-वि० [सं०] अच्छी तरह पचा हुआ (अन्न); जीर्ण-शीर्ण; क्षीण ।
सुजीवंशी-क्री० [सं०] स्वर्णजीवंशी ।
सुजीवित-पु० [सं०] सुखी जीवन । वि० सुखपूर्वक जीने-वाला ।
सुजेष-वि० [सं०] आदानीसे जीतने योग्य ।
सुजोग-पु० दे० 'सुयोग' ।
सुजोधन-पु० दे० 'सुयोधन' ।
सुजोह-वि० सहजोर, बलवान्; बड, पावदार ।
सुज-वि० [सं०] सुविद्या; पंडित ।
सुज्ञान-वि० [सं०] हानी; सुबोध । पु० अच्छा हान ।
सुज्येष्ठ-पु० [सं०] सुगंधशी महाराज अक्षिमित्रका पुत्र ।
सुज्ञाना-सं० कि० दिखाना, बताना, सूचना देना । अ० कि० दिखाई देना, सूझ पड़ना ।
सुज्ञाह-पु० सुज्ञानको किया; सुज्ञाथी हुई बान, तजवीज; मलाह ।
सुदंठ-वि० [सं०] तेज, कर्कश (शब्द) ।
सुदकुना-क्री० बंसीकी बेल ।
सुदकुना-अ० कि० चुपकेसे निकल जाना; सिफुडना । * सं० कि० चाबुक लगाना; निगल जाना ।
सुद-वि० दे० 'सुदि' ।
सुदहर-पु० अच्छा ठौर, स्थान ।
सुदर-वि० सुशील ।
सुदि-वि० सुंदर, अच्छा । अ० अति, बहुत ज्यादा- 'ना मुठि लीनी, ना मुठि छोटी'-पं०; पूरा-पूरा ।
सुदोना-वि० अच्छा, सुंदर ।
सुदक-क्री० सुदकनेकी किया या भाव ।
सुदकुना-सं० कि० किसी तरह पदार्थको नाककी राह, सोंसके साथ भीतर खींचना, नास लेना; नाकके मलकी ऊपरकी ओर खींचना, चढ़ाना; पी जाना, उदरस्थ करना ।
सुदसुद-क्री० हुका पीनेसे निकलनेवाली आवाज ।
सुदसुदामा-सं० कि० (हुका आदि) इस तरह पीना कि 'सुद-सुद'की आवाज निकले ।
सुधीय, सुधीयक-पु० [सं०] पक्षियोंका सख्त गतिसे उड़ना ।
सुदकुना-सं० कि० दे० 'सुदकुना' ।

सुशील-वि० सुंदर शील, बनावटवाला, सुधंद । -पं० -पु० सुशील, सुंदरता ।
सुईय-पु० अच्छा, सुंदर दग । वि० सुंदर, सुवर्ण; अच्छे स्वभावका ।
सुहर-वि० प्रसन्न, अनुकूल, अनुग्रहके भावने युक्त; सुशील ।
सुहार-वि० सुशील, सुंदर- 'तेहि पांछे मिथिलेश गृह कन्वा मरै सुहार'-राम सा० ।
सुतंत-वि० दे० स्वतंत्र ।
सुतंतर-वि० दे० स्वतंत्र ।
सुतंतु-पु० [सं०] विष्णु ।
सुतंत्र-वि० [सं०] निर्यातक; अच्छी सेनावाला; * दे० 'स्वतंत्र' । * अ० स्वतंत्रतापूर्वक, आजादीसे ।
सुतंत्रि-वि० [सं०] जो बीणके मेरुमें हो (गान); सुस्वर, तालबसे युक्त; तंत्रवाचमें कुशल ।
सुतंभर-पु० [सं०] एक कवि, आत्रेय ।
सुत-वि० [सं०] उत्पन्न, पैदा किया हुआ; निचोकर निकास हुआ (वि०) । पु० बैठा, पुत्र; राजा; जन्म-लग्नसे पाचवों स्थान: दसवें अनुका एक पुत्र; सोमरस (वि०) । -जीवक-पु० पुत्र-जीवक शृङ्ख । -दा-वि० क्री० पुत्र देनेवाली । क्री० पुत्रदा कता; एक देवी । -पादिका, -पादुका-क्री० हंसपदी कता । -पेय-पु० सोमपान । -बाग-पु० पुत्रकी कामनासे किया जानेवाला यज्ञ, पुत्रेष्टि । -वस्तु-वि० ब्राम्हण प्रेमसे युक्त । पु० ऐसा पिता । -बस्करा-क्री० मात पुत्रोंकी माता । -अेजी-क्री० भूमाकानी । -सुत-पु० पीत्र । -सोम-पु० सोमका तर्पण करनेवाला; सोमसेनका एक पुत्र । -सोमा-क्री० कृष्णकी एक पत्नी । -स्थान-पु० जन्म-लग्नसे पाचवों स्थान । -द्विपुत्रयोग-पु० एक विवाह-संघर्षी योग ।
सुतवा-पु० नाथुनकी बगलमें निकलनेवाला चमडेका, पतला, छोटा डुलका ।
सुतचार-पु० सुचार, निरंतर ।
सुतनय, सुतनुज-वि० [सं०] सुंदर संतानोंवाला ।
सुतजा-पु० सुतन । अ० कि० सोना । वि० बहुत सोने-वाला ।
सुतनी-क्री० सुतनी, कियोंका ढोला पाचजामा ।
सुतनु-वि० [सं०] सुंदर शरीरवाला; बहुत ही नाजुक, दुबला-पतला । पु० एक गंधर्व; उग्रसेनका एक पुत्र; एक बंदर । क्री० दे० 'सुतनु' ।
सुतनु-क्री० [सं०] सुंदर क्री, कोमलंगी; अमरकी पत्नी; उग्रसेनकी एक कन्या; बहुदेवकी एक उपपत्नी ।
सुतप(स्)-पु० [सं०] तपस्वियों ।
सुतपा(पस्)-वि० [सं०] महा तपस्वी; अतिशय ताप-युक्त । पु० वह जो तपस्या करता हो, मुनि; सूर्य ।
सुतर-पु० दे० 'सुतुर' । -नाक-क्री० दे० 'सुतुर-नाक' । -संधार-पु० दे० 'सुतुरसंधार' ।
सुतरण-वि० [सं०] जिसे आसानीसे पार किया जा सके (नदी) ।
सुसारी(शब्द)-अ० [सं०] और भी; अतिशय; अतः, इस-

लिपि; किमहुना ।

सुतरा-पु० दे० 'सुतरा' ।

सुतरी-की० सुतरी । † दे० 'सुतरी'; सुतारी ।

सुतकारी-की० [सं०] देवदासी कला ।

सुतर्दन-पु० [सं०] क्रीमक ।

सुतक-पु० [सं०] नीचेके सात लोकोमेंसे एक; वही इमारतका आधार ।

सुतली-की० सन या पटसनके रोशने बटकर बनायी हुई बोरी जिससे खाट डुनते और दूसरे काम लेते हैं ।

सुतवाना-स० कि० सोनेमें प्रवृत्त करना ।

सुतवान् (वर्) -वि० [सं०] पुत्रीवाला । पु० लकड़का बाप ।

सुतहर, सुतहार-पु० शिल्पी; बढ़ई ।

सुतहर-पु० मीपी; सुतका व्यापार करनेवाला । वि० सुत-संबंधी ।

सुतही-की० सीपी ।

सुता-की० [सं०] लकड़ी, बेटी; दुराकला । -दान-पु० कन्यादान । -पति-पु० दामाद । -पुत्र-सुत-पु० नाती । -भाव-की० पुत्रीका भाव ।

सुतास्मज-पु० [सं०] पौष; नाती ।

सुताव-वि० [सं०] सुत्तर, सुतीका ।

सुतामा-स० कि० दे० 'सुलामा' ।

सुतार-पु० बढ़ई, शिल्पी; † सुभीता, अनुकूल अवसर; [सं०] एक गणद्वय; एक आचार्य । वि० [सं०] बहुत चमकीला; अत्युच्च; जिसकी आँखोंकी पुतलियाँ सुंदर हों; * बहुत अच्छा ।

सुतारका-की० [सं०] बौद्धोंकी उन चौबीस देवियोंमेंसे एक जो चौबीस अर्हतोंके आदेशोंकी कायोंवित करती है ।

सुतारा-की० [सं०] नौ तुष्टियोंमेंसे एक (सां०); अष्ट-सिद्धियोंमेंसे एक (सां०); एक अप्सरा; अफल्कीकी एक कन्या ।

सुतारी-की० जूता सीनेका मूला; बढ़ईगिरी ।

सुतार्थी (विन्) -वि० [सं०] संतानका अग्रिवापी ।

सुताक-पु० [सं०] तालका एक भेद (संगीत) ।

सुताली-की० मोथियोंका सूना ।

सुतितिडा, सुतिसिद्धी-की० [सं०] हमली ।

सुतित-वि० [सं०] बहुत सीता । पु० पित्रपापका ।

सुतितक-पु० [सं०] विरायता; पित्रपापका; पारिमद्र ।

सुतिका-की० [सं०] कोशात्की, तुरई; शल्लकी ।

सुतिन-की० सुंदर की ।

सुतिनी-की० [सं०] बेटेवाली की, पुत्रवाली ।

सुतिचा-की० भली की; † गलेमें पहननेका एक गहना, हँसली ।

सुतिहार-पु० सुतार, शिल्पी ।

सुती (विन्) -वि० [सं०] जिसके पैदा हो, पुत्रवान् ।

सुतीक्षण-पु० आराध्यके आई । वि० दे० 'सुतीक्षण' ।

सुतीक्षण-वि० [सं०] अति तीक्ष्ण । पु० अमरस्य मुनिके आई जो बमवासमें रामसे मिले थे; सच्चिजन । -दक्ष-पु० शिव ।

सुतीक्षणक-पु० [सं०] सुष्कक रुक, मोरवा ।

सुतीक्षणका-की० [सं०] सरसी ।

सुतीक्षण, सुतीक्षणक-वि०, पु० दे० 'सुतीक्षण' ।

सुतीर्ष-वि० [सं०] जो आसानीसे पार किया जा सके । पु० अच्छा मार्ग; पवित्र स्थानसक; पूज्य वस्तु; अच्छा आचार्य; शिव । -राट् (श्) -पु० एक पर्यंत ।

सुतुंग-वि० [सं०] बहुत ऊँचा, अत्युच्च । पु० नारियलका पेड़; ग्रहका लम्बाई ।

सुतुंगी-की० सीपी; वह सीपी जिससे पोस्तने अजीम सुरचते है ।

सुतु-पु० [का०] दे० 'सितु' ।

सुत-पु० [का०] चौपाया, विशेषकर लादनेके काम जानेवाला चौपाया (घोड़ा, गधा, खच्चर, बैल) ।

सुतेकर-पु० [सं०] लोमकी तैयारीके समय मंत्रपाठ करने-वाला, कालिक (दे०) ।

सुतेजन-पु० [सं०] तेज नोकवाला बाण; धामिजका पेड़ । वि० तीक्ष्ण, तुकीला ।

सुतेजा (अस्) -वि० [म०] तेजमें लुप्त । पु० अतीत कल्पके दसवें अर्हत् (जै०); आदिस्थमका, मुरदुर ।

सुतेजित-वि० [सं०] दे० 'सुतेजन' ।

सुतेला-की० [सं०] महाज्योतिष्मती ।

सुतोपचि-की० [सं०] पुत्रजन्म ।

सुतोच, सुतोचन-वि० [म०] जो जन्म ही मृष्ट, प्रसन्न हो जाय ।

सुधना-पु० सुधना ।

सुध-पु० [सं०] मोमनिष्पीडन-विधम ।

सुधवा-की० [सं०] सीमनिष्पीडन; मोमतरपण; प्रसव ।

सुधामा-की० [सं०] धृत्वा ।

सुधामा (मन्) -पु० [सं०] इन्द्र; तेरहवें मन्त्रतरका एक देवर्गा; रक्षक, शासक ।

सुधना-पु० पाजामा ।

सुधनिया-की० सुधनी, टीका पाजामा ।

सुधनी-की० जियोंके पहननेका टीका पाजामा; एक कद, पिछान् ।

सुधरा-वि० साफ, स्वच्छ; परिष्कृत; निर्दोष (सुधरा मजक) । -पन-पु० स्वच्छता, सफाई; परिष्कार ।

- (रे) शाही-पु० नामके शिष्य सुधराशाहका चलाया हुआ पंथ; इस पंथका अनुयायी ।

सुधराई-की० सुधरापन ।

सुधरी-वि० की० दे० 'सुधरा' । -ज्ञान-की० माफ जवान, परिष्कृत भावा ।

सुध-पु० [सं०] बेत ।

सुधिका-की० [सं०] गोरक्षी नामक घोषा ।

सुधस-वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाला । पु० अच्छा दाँत; नट; नर्तक; एक समाधि ।

सुधता-की० [सं०] एक अप्सरा ।

सुधकी-की० [सं०] पश्चिमोत्तर (बायब) दिशाकी दिक्करीणी ।

सुध-वि० [सं०] जो आसानीसे पराभूत किया जा सके । सुधसित-वि० [सं०] अच्छी तरह रंज किया हुआ; शाक-मुक्त; बहुत पना ।

सुवर्द्ध-वि० [सं०] बृद्ध या सुदूर दौतीवाला । पु० कृष्णका एक पुत्र; एक राक्षस; शंकरका एक पुत्र ।

सुदक्षिण-वि० [सं०] बहुत कुशल; नम्र; सच्चा; खरा; बहुत उदार, दक्षिणा देनेवाला । पु० एक कंभोजनरेश; पीडकका एक पुत्र ।

सुदक्षिणा-स्त्री [सं०] दिक्षीपत्री पत्नी; कृष्णकी एक पत्नी ।

सुदन्विका-स्त्री [सं०] दम्भा नामक वीधा ।

सुदक्षिण*-पु० दे० 'सुदक्षिण' ।

सुदृती-वि० [सं०] सुदूर दौतीवाली (स्त्री) ।

सुदृष्ट-वि० [सं०] सुदूर दौतीवाला ।

सुदृम-वि० [सं०] दे० 'सुदर्म' ।

सुदमब-पु० [सं०] आश्व ब्रह्म (?) ।

सुदूरसन-पु० दे० 'सुदूरसन' । -**वाग्नि**-पु० दे० 'सुवर्द्धनपाणि' ।

सुदुर्भा-स्त्री [सं०] इक्षुदुर्भा ।

सुदुर्श-वि० [सं०] जो देखनेमें सुदूर हो; जो आसानीसे देखा जा नके ।

सुदुर्धक-पु० [सं०] एक समाधि ।

सुदुर्शन-वि० [सं०] प्रियदर्शन, सुन्दर; जिसका सङ्ग्रहमें दर्शन हो नके, सुख्य । पु० गृध्र; मछली; शिव; विष्णुका चक्र; मात्स्य; एक तरहकी गीत-रचना; अग्निका एक पुत्र; एक विद्याधर, एक मुनि; कोई कुक्ष; एक नाग; नौ वर्ण-देवोंमेंसे एक (जै०); वर्तमान अवस्थाधिकी अठारहवें अर्धसूके पिता; एक मालवा-नरेश; एक उज्जयिनी-नरेश; एक पाटलिपुत्र-नरेश; अञ्जनका एक पुत्र; इषीचिका एक पुत्र; अजमीरका एक पुत्र; भरतका एक पुत्र; मेरु पर्वत; एक दीप; सन्धासिधौका छः गाँठोंवाला दंड; इक्षुरी, अमरावती; एक तीर्थ; जामुन; मदनमस्त; सीमबल्ली । -**चक्र**-पु० विष्णुका चक्र । -**चूर्ण**-पु० आमुर्देका एक योग जो अरकी प्रसिद्ध औषध है । -**द्वीप**-पु० जंबूद्वीप । -**वाग्नि**-पु० विष्णु ।

सुदुर्शना-वि० स्त्री [सं०] सुदरी, रमणीय रूपवाली । स्त्री सुंदर नारी; आश्वा; सीमबल्ली लता; चाँदनी रान; एक तरहकी मटिरा; पक्षसरोवर; दुर्योधनकी एक पुत्री; जामुनका पेड़; अमरावती ।

सुदुर्शनी-स्त्री [सं०] अमरावती, इक्षुरी । वि० स्त्री सुदरी ।

सुदृक-पु० [सं०] मोरद; मुवकुन्द; अच्छी मेना । वि० अच्छे पड़ोसाका ।

सुदृका-स्त्री [सं०] साक्षपणी; तक्षणी नामक वीधा ।

सुदृष्ट-वि० [सं०] अतिशय ज्ञात; दृष्ट सभाया हुआ (जैसे वीधा) । पु० साक्ष्य मुनिका एक शिष्य; एक समाधि ।

सुदाम-पु० [सं०] कृष्णका एक सखा; एक जनपद ।

सुदामब-पु० [सं०] राजा जनकका एक मंत्री; एक दिव्याक्ष ।

सुदामा-स्त्री [सं०] स्कंदकी एक मातृका; उत्तर भारतकी एक नदी ।

सुदामा(मह)-पु० [सं०] बादल; एक पर्वत; शेरान्त;

समुद्र; कृष्णका एक सहापाठी जो उनकी कृपासे क्षणभरमें अति दूरिसे देखवैशाली हो गया; कृष्णका एक गोप सखा; एक गंधर्व; कंसका एक भाली; एक जनपद । वि० खूब दान करनेवाली ।

सुदाम-पु० [सं०] उत्तम दान; ब्राह्मणोंकी व्रतमिक्षास्वरूप दिवा जानेवाला धन; उपनयनकार्त्तमें ब्राह्मचारीको दी जानेवाली भिक्षा; कन्यादानकार्त्तमें जामाता आदिकी दिवा जानेवाला दान; इस प्रकारका दान करनेवाला (माता, पिता आदि) ।

सुदार-पु० [सं०] अच्छा काष्ठ; देवदार; विषयश्रेणीका एक पर्वत, पारिधान पर्वत ।

सुदास्त्र-वि० [सं०] बहुत शीघ्र । पु० एक दिव्याक्ष ।

सुदास्त्र*-पु० दे० 'सुदामन' ।

सुदास-पु० [सं०] त्रिवेदासका पुत्र और त्रिस्तुका राजा त्रिस्तुका कश्यपमें योद्धाके रूपमें उल्लेख हुआ है; काष्ठ-पर्णका पुत्र; व्यवसका पुत्र; इक्षुदुर्धका एक पुत्र; एक जन-पद; स्वामिभक्त, सेवापरायण दास ।

सुदि-स्त्री [सं०] शुद्ध पक्ष ।

सुदिद(ह)-वि० [सं०] चमकीला; चमकाया हुआ, तेज (जैसे दाँत) ।

सुदिन-पु० [सं०] अच्छा दिन, शुभ दिन; सुखके दिन; सौभाग्यकाल ।

सुदिनाह-पु० [सं०] प्रशस्त दिन; पुण्य दिन ।

सुदिबस-पु० [सं०] प्रशस्त दिन ।

सुदिब-वि० [सं०] बहुत चमकीला, अति दीप्तिमान् ।

सुदी-स्त्री [सं०] शुद्ध पक्ष ।

सुदीक्षा-स्त्री [सं०] लक्ष्मी ।

सुदीप्ति-पु० [सं०] आगरिस-गोनीय एक ज्ञापि । वि० बहुत चमकीला (जै०) । स्त्री सुदीप्ति (दे०) ।

सुदीपति*-स्त्री दे० 'सुदीप्ति' ।

सुदीप्त-वि० [सं०] अति दीप्तिमान्, खूब चमकता हुआ ।

सुदीप्ति-स्त्री [सं०] तेज रोशनी या चमक ।

सुदीर्घ-वि० [सं०] बहुत लंबा (दिश, काष्ठ); सुविस्तृत । -**धर्मा**-[सं०] अनन्यपणी । -**जीवफला**-स्त्री एक तरहकी ककरी । -**फलका**, -**फलिका**-स्त्री एक तरहका भटा । -**फडा**-[सं०] कनरी ।

सुदीर्घा-वि० स्त्री [सं०] बहुत लंबी । स्त्री चीना-कंदी ।

सुदुःख-पु० [सं०] बहुत अधिक कष्ट या शोक । वि० बहुत कष्टकर; बहुत कठिन ।

सुदुःखित-वि० [सं०] बहुत व्यथित या शोकाश्रित ।

सुदुःख-वि० [सं०] जो सुननेमें बहुत बुरा या अमिय हो ।

सुदुःख-वि० [सं०] जिसका सघन करना कठिन हो ।

सुदुःख-वि० [सं०] बहुत बर्दिया कपड़ेका बना हुआ ।

सुदुःखा-स्त्री [सं०] दुःख, अधिक दूध देनेवाली गाय ।

सुदुःखावर-वि० [सं०] बहुत दुष्ट, दुरे चाल-चलकाल ।

सुदुर्जब-वि० [सं०] जिसे विभित करना बहुत कठिन हो । पु० एक तरहकी व्यूह-रचना ।

सुदुर्जवा-स्त्री [सं०] सिद्धिकी दम्प अवस्थाओंमेंसे एक (दे०) ।

सुदुर्-सुबधाना

१५२२

सुदुर्-वि० [स०] जिसे बचाना बहुत कठिन हो।

सुदुर्बल, सुदुर्बल-वि० [स०] जिसे देखकर भयान करना कठिन हो; अभिप्राय-दर्शन।

सुदुर्भाग-वि० [स०] भाग्यहीन।

सुदुर्मित्र-वि० [स०] जिसे दोषना बहुत कठिन हो।

सुदुर्मर्ष-वि० [स०] जिसे सबन करना बहुत कठिन हो।

सुदुर्लभ-वि० [स०] अति दुर्लभ, जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो; बहुत नायाब।

सुदुर्बल-वि० [स०] जिसका उत्तर देना बहुत कठिन हो।

सुदुर्विद, सुदुर्बेद-वि० [म०] जो जल्द समझमें न आवे, दुर्गोप।

सुदुर्धर-वि० [स०] जो बड़ी कठिनाईसे किया जा सके; दुर्गम।

सुदुष्कर-वि० [स०] अति कष्टसाध्य, बहुत ही कठिन।

सुदुष्प्राप-वि० [स०] जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो।

सुदुस्तर, सुदुस्तार-वि० [स०] जिसे पार करना बहुत कठिन हो।

सुदुस्सज-वि० [म०] जिसका स्थापन करना बहुत कठिन हो।

सुदूर-पु० [अ०] जारी होना, निकलना; पहुँचना। अ० [स०] अति दूर, बहुत दूर। वि० बहुत दूरका। -पराहृत-वि० विरहस्त; जिसका निराकरण पहले ही हो चुका हो। -पूर्व-पु० अति पूर्वके देश, चीन, जापान इत्यादि।

सुदूर(श्)-वि० [स०] सुंदर औरों या लक्षण बढि-वाला; सुंदर। पु० एक देववर्ग (गो०)। स्त्री० सुंदर और।

सुदृढ-वि० [स०] बहुत मजबूत; सुरक्षित। -लक्ष्य-स्त्री० गंभारी।

सुदृष्टि-वि० [स०] अच्छी निगाहवाला। पु० निद्र। स्त्री० पैनी दृष्टि।

सुदृष्ट-पु० [स०] सुदृष्टि परत।

सुदेव-पु० [स०] अच्छा या सच्चा देवता; मीठाशील नायक; वह आक्षण जिसने दमयंतीके कहनेसे लक्ष्मी पता लगाया था; काशीका एक राजा जो हर्षश्चक्र पुत्र था; एक काश्यप; एक विदर्भनरेश; विष्णुका एक पुत्र; देवकका एक पुत्र।

सुदेवा-स्त्री० [स०] अरिहंकी पत्नी; आगेगी।

सुदेवी-स्त्री० [स०] नामिकी पत्नी और ऋषमकी माता।

सुदेव्य-पु० [स०] भले या श्रेष्ठ देवोंका समुदाय (दे०)।

सुदेव्य पु० [स०] उपयुक्त स्थाव; अच्छा; सुंदर देश। * वि० सुंदर।

सुदेविक-पु० [स०] अच्छा पथ-प्रदर्शक।

सुदेव्य-पु० [स०] हविष्यपीठे उपरक्त कुण्डका एक पुत्र; अमरमंथकका एक दयाक पुत्र; एक प्राचीन जनपद; एक पुराणिक पर्वत।

सुदेव्या-स्त्री० [स०] बलिकी पत्नी; विराट्की पत्नी।

सुदेव्य-स्त्री० [स०] दे० 'सुदेव्या'।

सुदेव्य-पु० अच्छा स्थाव; स्वदेश। वि० अच्छा, सुंदर।

सुदेवी-वि० दे० 'सुदेवी'।

सुदेव-स्त्री० [स०] सुंदर देव। वि० सुंदर।

सुदेव-पु० [स०] सुंदर अष्ट, सौभाग्य; अच्छा संयोग।

सुदीर्घी, सुदीर्घा-स्त्री० [स०] अधिक दूध देनेवाली गाय।

सुदीर्घा, सुदीर्घा-वि० स्त्री० [स०] जो आसानीसे दुग्दी जा सके।

सुदीर्घा-अ० शीघ्रत-पूर्वक।

सुदी-पु० [अ०] कष्ट मूल को आँतोंमें बिपक जाता है और मलाबोधका कारण होता है।

सुदी-स्त्री० दे० 'सुदी'।

सुद-वि० दे० 'सुद'।

सुदी-अ० साथ, ममेत।

सुदि-स्त्री० दे० 'सुदि'; दे० 'सुप'।

सुदित-वि० [स०] खूब चमकीला।

सुदुम्न-पु० [स०] वैवस्वत मनुका एक पुत्र हव (छापनव) कुछ कालकी स्थिति स्त्री हो जानेपर इसके गर्भसे पुस्करवाकी उत्पत्ति हुई।

सुदृष्ट(धृ)-वि० [स०] अच्छी, पैनी दृष्टिवाला।

सुदृष्टि-वि० [स०] अच्छे दाँतोंवाला।

सुदृष्टिजानन-वि० [म०] जिसके सुँहमें अच्छे दाँत हो।

सुधर्मा-पु० अच्छा इग।

सुध-स्त्री० वाद; होश; चेतन स्वर। * वि० शुद्ध। -सुध-स्त्री० होश-दवास्त, चेतन (न रहना)। -अना-वि० 'होशवाला, सचेत। सुध-दिलाना-वाद दिलाना। -न रहना-वास्त, होश न रहना। -विसरना-वाद न रहना, होश न रहना। -लेना-कोन-स्वर लेना; वाद करना।

सुधन-वि० [म०] अति धनी, बहुत पैसवाला (दे०)। प० धिरप्यासका एक पुत्र।

सुधना-अ० कि० शुद्ध होना, ठीक किया जाना।

सुधसु (स्)-पु० [म०] सदैवतया मातीके गर्भसे उत्पन्न कुस्का एक पुत्र; गौतम बुद्धके एक पूर्वज।

सुधन्वा (म्वन्)-वि० [स०] जिसका धनुष बहुत बढिया हो; धनुर्विद्यामें कुशल। पु० एक वर्णसंकर जाति (वैश्य); विष्णु; एक आंगरिम; वैराजका एक पुत्र और पूर्वदिशाका दिग्पाल; कुस्का एक पुत्र; शेषनाग; विश्वकर्मा; विदुर।

सुधन्वाचार्य-पु० [स०] एक वर्णसंकर जाति, सुधन्वा।

सुधर-पु० [स०] एक अर्ध (जै०)।

सुधरवा-अ० कि० दुबस्त होना, दोष या विकृति दूर होना, बिगड़े हुएका बनना।

सुधरवाना-स० कि० सुधार करना।

सुधराई-स्त्री० सुधार; सुधारनेकी जरूरत।

सुधर्म-पु० [स०] सुंदर, उत्तम धर्म, न्याय, कर्तव्य, चौबीसवें तीर्थंकर महावीरके दस शिष्योंमेंसे एक; किशोरीका एक अधिपति; एक देववर्ग।

सुधर्मा-स्त्री० [स०] देवसभा।

सुधर्मा (मध)-वि० [स०] स्वधर्मपालक, धर्मनिष्ठ। पु० कुंडवपालक, गृध्रपाल; सुधिय; एक राजा-नरेश; देव-सभा; एक विश्वेदेव; एक जैन।

सुधर्मा-वि० धर्मनिष्ठ। स्त्री० [स०] देवसभा।

सुधवाना-स० कि० दे० 'सुधरवाना'।

सुधा-अ० साध, समेत ।

सुधांग-पु० [सं०] चंद्रमा ।

सुधाङ्ग-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर । -ज, -रज-पु० मेरी ।

सुधा-की० [सं०] अमृत; मकरंद; रक्त रस; दूध; जल; शहर; गंगा; विजली; इन्धनी; विष; आमला; हड्डि; दूधक; सरिवन; मिलीय; सूरा; चूना; सफेदी; रंदा; कर; एक रुद्री पत्नी; एक वृत्त; वधू; पुत्री । -कंद-पु० कौषक । -कर-पु० चूना, सफेदी करनेवाला; राज । -क्षार-पु० चूनेका क्षार । -क्षालित-वि० सफेदी किया हुआ ।

-रोह-पु० चंद्रमा । -घट-पु० चंद्रमा । -जीवी-वि० सफेदी करनेवाला, राज । -दीक्षित-पु० चंद्रमा । -द्रव-पु० अमृतोपम पेष; चूनेका बोल, कलई । -हर-पु० चंद्रमा; दे० क्रममें । -चबल-वि० सफेदी किया हुआ; चूनेमा सफेद । -चबलित-वि० सफेदी किया हुआ । -ग्राम-पु० [हि०] चंद्रमा ।

-धामा(मन्)-पु० चंद्रमा । -धी०-वि० सुधावाला; सुधानुष्य । -धीव-वि० सफेदी किया हुआ । -निधि-पु० चंद्रमा; मसुदा; एक वृत्त । -पच(न्)-पु० दूधका दूध । -पाणि-पु० धन्वतरि । -पाषाण-पु० सफेद लकी, खडिया । -पूर-पु० अमृतकी धारा । -मबन-पु० चूना

पुना हुआ मकान; पंचम मुहूर्ते । -मिति-की० सफेदी की हुई श्रेणार । -मुक्(ज्)-, -भोजी(विज्)-पु० अमृतपान करनेवाला, देवता । -मृत्ति-पु० चंद्रमा; वधू; कपूर । -मृत्पुत्र-पु० चंद्रमा । -मूली-की० मालमिमरी । -मोचक-पु० कपूर; दवासाकर्ता; वमलीचन । -०ज-पु० तवरात्रोटव खट । -बोधि-पु० चंद्रमा । -रक्षि-पु० चंद्रमा । -रत्न-पु० अमृत; दूध ।

वि० सुधा-सा स्यादिति । -बर्ष-पु०, -वृष्टि-की० अमृतकी वर्षा । -वर्षी(विज्)-वि० अमृत वर्मानेवाला । पु० मक्का; चंद्रमा; एक वृक्ष । -सर्करा-की० खडिया, सफेद लकी । -सुज-वि० सफेदी किया हुआ । -अवा-की० दे० 'सुधाववा' (भतापु) । ० पु० अमृत वरसानेवाला ।

-सवध-पु० चंद्रमा । -सागर, -मिथु-पु० सुधाका समुद्र । -सिक्त-वि० सुधासे सींचा हुआ, सुधामे तर । -सित-वि० अमृत या चूने जैसा सफेद । -सु-पु० चंद्रमा । -सुति-पु० चंद्रमा; कमल; वधू । -सेक-पु० अमृतसे सींचना । -स्पर्शी(विज्)-वि० अमृतमे स्पर्श ।

करनेवाला, बहुत मधुर (वचन) । -सबा-की० छोटी नीम, कीवा; रक्षणी वृद्धि । -हर, -हर्ता(र्ज्), -हृन्-पु० सवट । -हृद्-पु० सुधा-सरोवर ।

सुधाई-की० दे० 'सिधार्थ' । **सुधाकर**-पु० [सं०] चंद्रमा । **सुधासागर**-वि० [सं०] सुधायुक्त करनेवाला ।

सुधातु-की० [सं०] सोना । वि० धनी । -दक्षिण-वि० जिसे दक्षमें बहुत अधिक दक्षिणा मिले; बहुत अधिक दक्षिणा देनेवाला (?) ।

सुधाधर-वि० [सं०] जिसके अवरमे अमृत हो । पु० * 'सुधार्थ' । **सुधाधार**-पु० [सं०] अमृतपान; चंद्रमा ।

सुधाभा-स० कि० सुध कराना, धार दिखाना; ठीक कराना; ठीक कराना । **सुधामय**-वि० [सं०] अमृतपूर्ण; चूनेका बना हुआ । पु० प्रासाद ।

सुधामा(मन्)-पु० [सं०] चंद्रमा; एक कवि; एक देववर्ण; एक पर्वत । **सुधाव**-पु० [सं०] आराम, सुख ।

सुधार-पु० दोष दूर करने वा होनेका भाव; संस्कार, दस्ताव । वि० अच्छी वार या नौकवाला (वाण आदि) । **सुधारक**-पु० सुधार करनेवाला; सुधारका आंदोलन करनेवाला ।

सुधारना-च० कि० दोष, वृद्धि दूर करना, दुरुस्त करना, संस्कार करना । **सुधारा**-वि० सीधा, ओला । **सुधावदात**-वि० [सं०] 'दे० सुधावक' । पु० एक पर्वत । **सुधावस**-पु० [सं०] चंद्रमा । **सुधावासा**-की० [सं०] खीरा ।

सुधि-की० दे० 'सुध' । **सुधित**-वि० [सं०] सुधयित्वा ठीक तरहसे तैयार किया हुआ (भोजन); सुधानुष्य; कड़वपर भावा हुआ; तुला हुआ; खदार, दवातु (वि०) ।

सुधिति-की० [सं०] कुहवा । **सुधी**-पु० [सं०] पंडित, बुद्धिमान व्यक्ति । की० सुहर उक्ति; सुबुद्धि । वि० सुदर बुद्धिवाला, सुबुद्धितुल ।

सुधीर-वि० [सं०] हृद, पैरंका । **सुधुपक**-पु० [सं०] एक गंधद्रव्य, ओषध ।

सुधुष्य-पु० [सं०] स्वादु नामक गंधद्रव्य । **सुधुष्यवर्ण**-की० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक ।

सुधोजव-पु० [सं०] धन्वतरि । **सुधोजवा**-की० [सं०] इरीलीकी हड्डी ।

सुधोत-वि० [सं०] अच्छी तरह तुला, साफ किया हुआ; चमकाया हुआ ।

सुधुपास्थ-पु० [सं०] परमेश्वर; राजासादका एक प्रकार; कृष्णका एक अनुचर; बलदेवका मूसल ।

सुधुपास्था-की० [सं०] की; उमा; उमाकी एक सहेली; एक रंग ।

सुधुव-वि० [सं०] अच्छी तरह प्रसक्त करनेवाला । पु० कृष्णका एक पार्षद; बलदेवका मूसल; बारह प्रकारके राजसवनोंमेंसे एक; एक देवपुत्र; विश्वकर्मा-निर्मित मूसल या गदा; एक गौड आवक ।

सुधुवद-पु० [सं०] शिवका एक गण । **सुधुवन**-पु० [सं०] कृष्णका एक पुत्र ।

सुधुवा-की० [सं०] उमा; उमाकी एक सखी; नारी; दुधंतके पुत्र असत्की पत्नी; सारंगभौमकी पत्नी; बाहुकी माता; प्रतीककी पत्नी; एक नदी; चेरिके राजा सुधावुकी बहिन; गोरोचना, कृष्णकी एक पत्नी; अक्षपत्री; एक तिथि; मफेद गाय ।

सुधुविनी-की० [सं०] एक पशुवाक; आराम-शीतला; एक वर्णवृक्ष । **सुधु**-वि० मज । -बहरी-की० एक तरहका फुट रोग

जिसमें वण-लक सुन्न हो जाता है। (चिकोदी काठने वा दस तरहकी कोरें हरकत करनेपर उसमें कोई तकलीफ नहीं होती)।

सुनकातर-पु० एक तरहका सौप।

सुनकिरवा-पु० एक कीड़ा जिसकी पर पत्रेके रंगके होते हैं, जुनुनू; * एक गौबा (?)।

सुनकन्न-पु० [सं०] उषम नक्षत्र; एक नरेश (मस्देवका पुत्र); तिरमिन्नका एक पुत्र।

सुनकन्न-की० [सं०] कर्ममासकी दूसरी रात्रि; स्कन्दकी एक मातृका।

सुनगुन-की० हलकी, अस्पष्ट चर्चा; कानाफूसी; उकती हुई खबर; दोह (पाना, मिलना)।

सुनव-वि० [सं०] बहुत झुका हुआ। * की० दे० 'सुन्नत'।

सुनति-वि० [सं०] एक दैत्य। की० दे० 'सुन्न'।

सुनवा-सं० कि० श्वमेन्द्रियसे सुन्नका ग्रहण करना, कानों-में आवाज मानस करना; ध्यान देना; सुरा-भला सहना, फटकारा जाना (एक कहाने, दस सुनोगे); मुकुन्दमा सुनना। सु०-सुना सुनावा-दूसरीके सुनेसे सुना हुआ, जो ओंको देखा न हो।-सुनी-अनसुनी करना-वात सुनकर भी ऊपर ध्यान न देना।

सुनका-की० ज्योतिषका एक बीज (जिसमें नृपके अतिरिक्त और कोई ग्रह चंद्रमाके मुकाबलेमें गौण स्थानपर रहे)।

सुनबहारा-वि० जो वात सुनकर भी न मननेका बहाना करे, तरह दे जाय (जिहली)।

सुनबहारी-की० दे० 'सुन'के साथ।

सुनव-पु० [म०] सुनीति; सहाचार; कृतका एक पुत्र; परिपुत्रका एक पुत्र; खनित्रका भाई; एक जनपद।

सुनवच-वि० [सं०] सुंदर आँखोंवाला, सुलोचन। पु० विन।

सुनवचा-वि० की० [सं०] सुलोचना। की० नारी; रामा जनककी पत्नी।

सुनरिया, सुनरी-की० सुदरी।

सुनई-वि० [सं०] बहुत वर्जन करनेवाला।

सुनबाई-की० श्रवण; मुकुन्द या करियारका सुना जाना।

सुनवैया-पु० सुननेवाला; * सुनानेवाला।

सुनस-वि० [सं०] सुंदर नाकवाला।

सुनसान-वि० निर्जन, अनधुन्य; बीरान। पु० सभाटा।

सुनहारा, सुनहला-वि० सोनेके रंगका।

सुनहा-पु० धान, कुत्ता-'सुनहा भेदै कुजर असवारा'-कवीर।

सुनाई-की० दे० 'सुनबाई'।

सुनाकुल, सुनाकुल-पु० [सं०] कर्पूरक।

सुनाद-वि० [सं०] सुंदर ध्वनिवाला, सुस्वर। पु० शंख; सुंदर ध्वनि।

सुनादक-पु० [सं०] शंख।

सुनावा-सं० कि०-किसीके सामने, किसीको संबोधित करके कुछ कहना; दूसरेकी श्रवण कराना; बताना; खरी-

दोदी कहना, फटकारना।

सुनावी-की० दे० 'सुनावनी'।

सुनाव-वि० [सं०] सुंदर नागिवाला; बहिया घूमाका। पु० चक्र; मैनाक पर्वत; पर्वत; धुनराट्टका एक पुत्र; वज्रनामका एक भाई।

सुनावक-पु० [सं०] दे० 'सुनाव'।

सुनावा-की० [सं०] कदमी।

सुनावि-वि० [सं०] सुंदर नागिवाला (दे०)।

सुनाव(र)-पु० [सं०] नेकनामी, कीर्ति, यश।-हावशी-की० मार्गशीर्षकी शुक्ल द्वादशी।

सुनामा(मन्)-वि० [सं०] सुंदर नामवाला; कीर्ति-वाली। पु० कंसका एक भाई; स्कंदका एक पार्षद; एक दैत्य; वैतसेवका एक पुत्र।

सुनाम्मी-की० [सं०] देवकी एक पुत्री और बसुदेवकी पत्नी।

सुनार-पु० सोने-चाँदीके गहने गढ़नेवाला, स्वर्णकार; [सं०] कुतियाका दूध; सौपका अडा; गौरवा पक्षी।

सुनारी-की० सुनारका काम; सुनारकी की।

सुनाक-वि० [सं०] सुंदर नाकवाला। पु० लाल कमल।

सुनालक-पु० [सं०] वक्रपुत्र वृक्ष, अमरा।

सुनावनी-की० परदेशसे किसी स्वजन-संबंधी सुनुका-समाचार आना; ऐसा समाचार मिलनेपर किमा जाने वाला स्नान आदि।

सुनावीर-पु० [सं०] दे० 'सुनावीर'।

सुवास-वि० [सं०] दे० 'सुनम'।

सुवास-की० [सं०] सुंदर नाक; काननामा।

सुनासिक-वि० [सं०] सुंदर नाकवाला।

सुनासिका-की० [म०] मुंदर नाक; कौआठोड़ी।

सुनावीर-पु० [म०] हड़; एक देववर्मा।

सुनाहक-अ० दे० 'नाहक'।

सुनिग्रह-वि० [सं०] अच्छी तरह नियमित; जिनपर आसानीसे नियंत्रण किया जा सके।

सुनिग्र-वि० [सं०] गाढी मॉदमें सोया हुआ।

सुनिग्र-वि० [सं०] सुस्वर; सुंदर शब्द करनेवाला।

सुनिग्र-वि० [म०] जिनका आसानीसे विनियम हो जाय।

सुनिग्र-वि० [सं०] अच्छी तरह साथ रखा हुआ; सयन।

सुनिग्र-पु० [सं०] मुंदर नियम; सुव्यवस्था।

सुनिग्र-पु० [सं०] अच्छा रेंचक, जुलाब; एक तरहका बलिष्कर्म।

सुनिग्र-की० [सं०] जियनी वृक्ष।

सुनिग्र-पु० [सं०] पक्का निश्चय; सुंदर निश्चय।

सुनिग्र-वि० [सं०] अचल। पु० शिव।

सुनिग्र-वि० [सं०] अली आँति निश्चित, पक्का। पु० कोई वृक्ष।

सुनिग्र, सुनिग्र-पु० [सं०] एक सय, सुसन।

सुनिग्र-वि० [सं०] बहुत गंवाया, गलाया हुआ; अच्छी तरह पकाया हुआ।

सुनिग्र-पु० [म०] बहिया तलवार।

सुनीच-वि० [सं०] अनि नीच; किसी राशिके विशेष

अशमे पहुँचा हुआ; (ग्रह) ।
सुनीत-वि० [सं०] शिष्ट, विनीत । पु० भद्रता; इक्षिता; अष्टी नीति; एक पौराणिक राजा (सुबलका पुत्र) ।
सुनीति-स्त्री० [सं०] सुंदर नीति; भुवका माता । वि० सुंदर नीतिविशिष्ट । पु० शिव ।
सुनीध-वि० [सं०] धर्मशील । पु० ब्राह्मण; शिशुपाल; कृष्णका एक पुत्र; सुष्णका एक पुत्र; सुबलका एक पुत्र; एक दानव ।
सुनीधा-स्त्री० [सं०] गृह्युकी पुत्री, अगपत्नी ।
सुनील-वि० [सं०] गहरा नीला । पु० अनारका पेड़; कामजक ।
सुनीलक-पु० [सं०] नीलम; काला भंगरा; नीलासन, अनन वृक्ष ।
सुनीला-स्त्री० [सं०] अलम्बी, नीली विष्णुकान्ता; जरीटी मृग ।
सुनु-पु० [सं०] जल ।
सुनेत्र-वि० [सं०] सुंदर आँखोंवाला । पु० मारका एक पुत्र (बी०); धृतराष्ट्रका एक पुत्र; चक्रवाक ।
सुनेत्रा-स्त्री० [सं०] माध्यमे मानी हुई नी प्रकारकी नृक्षिओंमेंसे एक । वि० स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली ।
सुनेया-पु० सुननेवाला ।
सुनोची-पु० एक तरहका पेड़ा ।
सुनी-स्त्री० [सं०] अष्टी नौका । वि० अष्टी नौकाओं-वाला । पु० जल ।
सुन-पु० शब्द, मन्त्र । वि० निर्जीव, जड़वत्, मन्दन-रहित ।
सुन्नत-स्त्री० [अ०] राह; रीति, दम्बर; वह रास्ता या यात्रापथ जिसपर मुहम्मद और उनके प्रमुख साथी-पहलेके बार खलीफा-सले हो; खतना, मुसलमानी । -
(ने)आवाह-स्त्री० बाप डाँकेका राज्या, रीति ।
सुन्नसान-वि० दे० 'सुनसान' ।
सुन्ना-पु० शब्द, निगर ।
सुन्नी-पु० [अ०] मुसलमानोंका एक फिर्का ।
सुपंख-वि० [सं०] सुंदर पखोंवाला; सुंदर नीलवाला ।
सुपंथ-पु० [सं०] 'सुपथाः' उत्तम मार्ग; मन्मार्ग ।
सुपक-वि० दे० 'सुपक' ।
सुपक-वि० [सं०] अष्टी तरह पका हुआ । पु० एक मृगयुक्त काम ।
सुपक्ष-वि० [सं०] सुंदर पखोंवाला ।
सुपक्षा(मन्)-वि० [सं०] सुंदर पखोंवाला ।
सुपच-पु० दे० 'सुपच' ।
सुपट-पु० [सं०] सुंदर बल । वि० सुंदर बलोंवाला ।
सुपठ-वि० [सं०] जो आमानिमें पढ़ा जा सके ।
सुपत-वि० जिसकी अष्टी प्रतिष्ठा हो, प्रतिष्ठित ।
सुपत्त्र-पु० [सं०] तेजपत्ता; हिमोद; आदित्यपत्र; पलि-वाह सृण; एक पौराणिक पक्षी । वि० सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पखोंवाला; सुंदर परमे युक्त (बाण); सुंदर यान-वाला ।
सुपत्त्रा-पु० [सं०] शिशु, सहजिन ।
सुपत्रा-स्त्री० [सं०] रुद्रजटा; शतावरी; पालक; शमी;

शालपर्णी ।
सुपत्रिका-स्त्री० [सं०] त्रतुका ।
सुपत्रित-वि० [सं०] अच्छे पत्रमें युक्त (बाण) ।
सुपत्नी-स्त्री० [सं०] गंगापत्नी ।
सुपत्नी(स्त्रिन्)-वि० [सं०] दे० 'सुपत्रित' ।
सुपथ-पु० दे० 'सुपथ' ।
सुपथ-पु० [सं०] अच्छा रास्ता; सम्मार्ग, मदनार; एक वृक्ष । वि० सुंदर मार्गवाला; * चौरस ।
सुपथी(स्त्रिन्)-वि० [सं०] सम्मार्गयुक्त । पु० सम्मार्ग ।
सुपथ्य-वि० [सं०] बहुत हितकर; बहुत स्वास्थ्यकर ।
 पु० गेसा आहार; अच्छा मार्ग; आम (?) ।
सुपथ्या-स्त्री० [सं०] वडा या मफेद वडुआ; छोटा या लाल वडुआ ।
सुपद्-पु० अच्छा पद, शब्द । वि० सुंदर पैरोंवाला; शीघ्रगामी; † वाजिब ।
सुपद्-वि० [सं०] सुंदर पैरोंवाला ।
सुपद्मा-स्त्री० [सं०] वडा ।
सुपन, **सुपना**-पु० दे० 'स्वप्न' ।
सुपनामा-म० कि० सपना दिखाना । अ० कि० स्वप्न देखना ।
सुपरण, **सुपरन**-दे० 'सुपर्ण' ।
सुपरमनुरिता-स्त्री० [सं०] एक गीठ देवी ।
सुपरायल-पु० [अ०] बाणजके तावकी एक नाप (२० × २० इंच) ।
सुपरवाहजर-पु० [अ०] निरीक्षण करनेवाला ।
सुपरस-पु० दे० 'स्वप्न' ।
सुपरिटेन्डेंट-पु० [अ०] अधीक्षक, निगरानी करनेवाला ।
-पुलिस-पु० पुलिस कप्तान, जिल्हा प्रधान पुलिस-अफसर ।
सुपर्ण-वि० [सं०] सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पखोंवाला । पु० सुंदर पत्ता; देवगर्भव; गरुड, कोई वडा शिकारी पक्षी, किरण; अश्व; मुर्गा; एक तरहकी व्यूहरचना; नागकेसर; अमलताम; अतरिक्षका एक पुत्र; एक पर्वत, एक मी नीन वैदिक मंत्रोंकी एक शाखा । -**कुमार**-पु० एक जैन देवता । -**केतु**-पु० गरुडवदन, विष्णु । -**बातु**-पु० एक दैत्य । -**राज**-पु० गरुड । -**बात**-पु० गरुडके पखोंमें क्षुब्ध वायु । -**सद्**-वि० सुपर्णपर बैठने या नटनेवाला । पु० विष्णु ।
सुपर्णक-वि० [सं०] सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पखोंवाला । पु० गरुड या कोई दिव्य पक्षी; आरगव वृक्ष, अमलतास; सप्तच्छद वृक्ष, सप्तपर्ण ।
सुपर्णाङ्ग-पु० [सं०] सुनमें उत्पन्न शूद्राका पुत्र ।
सुपर्णा-स्त्री० [सं०] कमलिनी; गरुडकी माता; एक नदी ।
सुपर्णाख्य-पु० [सं०] नागकेशर ।
सुपर्णिका-स्त्री० [सं०] स्वर्णजीवती; पलाशी; शालपर्णी, सरिवन; रेणुका ।
सुपर्णी-स्त्री० [सं०] कमलिनी; गरुडकी माता, मादा चिड़िया; अग्नि की सात जिह्वाओंमेंसे एक; राजि; पलाशी; रेणुका; कद्रुक साथ उल्लिखित एक देवी जो छंदोंकी माता मानी जाती है । -**सनय**-पु० गरुड ।

सुपर्णा(निच)-पु० [सं०] गरुड ।

सुपर्णय-पु० [सं०] गरुड ।

सुपर्वा-स्त्री० [सं०] श्वेत द्वां ।

सुपर्वा(बन्ध)-वि० [सं०] सुंदर गाँठों या पोरोंवाला; सुंदर पर्वों, अध्यायोंवाला (ग्रंथ); बहुप्रशंसित । पु० ध्रुम काल; रेत; बॉम; बाण; धूम, धुआँ; देवता ।

सुपवित्र-पु० [सं०] एक वृक्ष ।

सुपश्चात्-अ० [मं०] बड़ी रात गये ।

सुपाकिनी-स्त्री० [मं०] आँवा इन्दी ।

सुपाक्य-पु० [सं०] सात्वर नयक ।

सुपाठ्य-वि० [सं०] दे० 'सुपठ' ।

सुपात्र-पु० [सं०] सुंदर पात्र; योग्य व्यक्ति (जो दानादि-का अधिकारी हो) । वि० योग्य, अधिकारी ।

सुपाद्-वि० [मं०] सुंदर पैरोवाला ।

सुपान-वि० [मं०] जो सुखमें पिया जा सके, पान योग्य ।

सुपार-वि० [सं०] जो आमानोंमें पार किया जा सके; जो जन्म गुजर जाय (जैसे बर्षों); मफलताकी ओर ले जानेवाला । -क्षत्र-वि० अपने राज्यको जन्म पार करनेवाला (बर्षण) । -श-वि० अच्छी तरह पार जानेवाला । पु० शाक्य मुनि ।

सुपाण-वि० [मं०] जिसका पाठ या अध्ययन करना आसान हो ।

सुपारा-स्त्री० [मं०] जो प्रकाशकी तुल्यमेंमें एक (सां०) ।

सुपारी-स्त्री० नाशियलकी जातिका एक पेड़; इस पेड़का फल जो पानके माद या अलगमें मुख-मुद्रिणें लिये खाया जाता है, छागिया, डली; शिशनाय नाम । सु०-लगना -सुपारीके टुकड़ेका गलेमें अटक, जाना या अटकने जैसा प्रतीत होना (इसमें कली-कमी बड़ी बे-जोनी और गमी मह-सूस होनी है) ।

सुपाह्व-पु० [मं०] सुंदर पादबंध; वर्तमान अवसर्पिणीके मातृवै तैय्यकर या अर्हत् (जै०); पादबद्धा पेड़; सपाति (गिर)का पुत्र; एक पर्वत; राजद्रव्य (गर्दभाइ)का पेड़; एक पौराणिक पक्षी (जो मंत्राणिका पुत्र था); एक राजसम; रुक्मरथका एक पुत्र; भृतायुका एक पुत्र; ध्वनेमिका एक पुत्र । वि० सुंदर पादबंधवाला ।

सुपाह्वक-पु० [मं०] गर्दभाइ वृक्ष; धिरकका एक पुत्र; भृतायुका एक पुत्र; भावी उत्सर्पिणीके तीमरे अर्हत् (जै०) ।

सुपास-पु० आराम, सुभीता ।

सुपासी-वि० सुख, आराम देनेवाला; सुखी -'तुलसी वसि ढरपुरी राम त्रपु जो सबी चरै सुपासी'-विनय० ।

सुपिंगला-स्त्री० [सं०] जीवती; ज्योतिष्मती ।

सुपीडन-पु० [सं०] मालिन्य; जोसे दखाना ।

सुपीत-पु० [सं०] गजर; पौचर्नो मुहूर्त (बौ०); पीत चंदन । वि० अच्छी तरह पिया हुआ; गहरी पीला ।

सुपीन-वि० [सं०] बहुत पीटा ।

सुपीबा(बन्ध)-वि० [सं०] अच्छी तरह पान करनेवाला ।

सुपुंख-वि० [सं०] अच्छी तरह पल लगाना हुआ (बाण) ।

सुपुंखी-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति सुपुंख हो ।

सुपुट-पु० [सं०] कोलकांड; विष्णुकुंड । वि० सुंदर नयनों-

वाला ।

सुपुटा-स्त्री० [सं०] सेवनी ।

सुपुत्र-पु० [सं०] नायक बेटा, मयूत; जीवक वृक्ष । वि० अच्छे पुत्रोंवाला ।

सुपुत्रिका-वि०, स्त्री० [सं०] अच्छे पुत्रोंवाली । स्त्री० जतुका, पपड़ी ।

सुपुत्र-पु० [सं०] हृद दुर्ग ।

सुपुत्र-पु० [सं०] अला आदमी; सुंदर पुत्र ।

सुपुर्द-वि० दे० 'सिपुर्द' ।

सुपुष्करा-स्त्री० [सं०] खलपञ्चिनी ।

सुपुण्य-पु० [सं०] भौग; आहुत्य; प्रपौडरीक; पराम-

पीपल; सुचकुंद; शरदृत; मिरिम; देवदार; पारिमद्र-तूल; हरिद्र; राजनगणी; ध्वन अर्क; ब्रह्मदास; स्त्री-रज । वि० सुंदर फूलोंवाला ।

सुपुण्य-पु० [सं०] मिरिम; गर्दभाट; राजनगणी; ध्वन अर्क; हरिद्र; सुचकुंद ।

सुपुण्या-स्त्री० [मं०] गुमा; तुरई; सौक; सेवनी ।

सुपुत्पिका-स्त्री० [मं०] मौक; मोया, पाटला; श्रीर्णदा-विधाराका एक नद ।

सुपुथी-स्त्री० [सं०] भौक; मोया, कल्या; गुमा; विधार-ध्वन अपराजिता ।

सुपुन-पु० दे० 'मपुन' । वि० [मं०] अर्पुन, पवित्र ।

सुपुती-स्त्री० दे० 'मपुती' ।

सुपूर-वि० [मं०] आमानोंमें अर; आग्नेय; अन्धक मर-अरनेवाला । पु० बिजौरा नीप ।

सुपूरक-पु० [मं०] बकपुष्प वृक्ष बीन्गूर, बिनीरा मीद

सुपेत, सुपेद-वि० मफेद ।

सुपेती-स्त्री० दे० 'मफेदी' ।

सुपेदी-स्त्री० मीरक; र. शिं; दे० 'मफेद' ।

सुपेली-स्त्री० छोटा मूष ।

सुपेश-पु० [मं०] बागीक बुना हुआ कपड़ा ।

सुपेदा-पु० दे० 'मफेद' ।

सुपोष-वि० [मं०] जिसमें पालन-पोषणमें कोई कठिनाय न हो ।

मुस-वि० [मं०] मित्रिय, मोया हुआ; मोनेके लिए मेटा हुआ (पर मोया न हो); नुस; मुँदा हुआ, संकुचित (अं० पुष); नभिकय, बेकार; मुस, अधिकसिध (शक्ति) । पु० गारी नोट; काले मीनेवाला मयून । -घातक-वि० मोये हुपकी हत्या करनेवाला, हत्यारा । -धन-पु० एक रासम । वि० दे० 'सुसधानक' । -च्युत-वि० जिस नोट आ गयी हो । -जन-पु० सोया हुआ व्यक्ति; आधा रात । -ज्ञान-विज्ञान-पु० स्वप्न देखना; स्वप्न-स्वप्न(व)-वि० मूक, निश्चेष्ट । -प्रभु-वि० मोकर जागा हुआ । -प्रकपित-पु० (स्वप्नबन्ध्यां) बरीना । -मस-वि० सुख, संताहीन, निश्चेष्ट । -माली(सिन्ध)-पु० नेहर्वा करप ; -शाक्य-पु० स्वप्नबन्ध्यां निकले हुए शब्द । -विग्रह-वि० मोया हुआ; जो निहाली तरह देख पड़े (कृष्ण) । -विनिद्रक-वि० जाग्रत होनेवाला । -स्व-वि० मोया हुआ ।

सुसङ्ग-पु० [सं०] निद्रा ।

सुसङ्गा-स्त्री०, **सुसङ्ग**-पु० [सं०] निद्रित होनेका भाव; नींद; निद्रवेष्टा (अगच्छी) ।

सुसङ्गा-पु० [सं०] वह अंग जो मूत्र, निद्रवेष्ट ही गया हो ।
सुसि-स्त्री० [सं०] नींद, ऊँच; सपना; मूत्र ही जाना; विधास; लापरवाही ।

सुसोपिषत्-वि० [मं०] मोकर उठा हुआ ।

सुमकेत-वि० [मं०] बहुत मावधान; विचारवान्, बुद्धिमान् ।

सुमचार-वि० [मं०] ठीक रास्तेपर जानेवाला; अच्छा देख पड़नेवाला ।

सुमचेता(तत्त्व)-वि० [मं०] प्रति बुद्धिमान् ।

सुमज-वि० [मं०] अधिक या अच्छी समझनेवाला ।

सुमजा(जम्)-वि० [सं०] दे० 'मूत्र' (दे०) ।

सुमजात-वि० [सं०] बहुतमी संगानोवाला ।

सुमज्ज-वि० [मं०] बहुत बुद्धिमान् ।

सुमज्ञान-वि० [सं०] जिसका आत्मानोमें ज्ञान ही जाय ।

सुमतर-वि० [सं०] आत्मानोमें पार करने योग्य (नदी) ।

सुमर्त-पु० [मं०] अच्छी समझ, प्रौढ़ विचार ।

सुमर्तन-पु० [सं०] एक राजा ।

सुमत्तार-वि० [सं०] आत्मानोमें पार ले जानेवाला (पोत) ।

सुमतिकर-वि० [मं०] जिसका आत्मानोमें प्रतिकार किया जा सके ।

सुमतिष्ठ-वि० [मं०] अपनी प्रतिष्ठापर हट रहनेवाला । पु० एक दानव ।

सुमतिपक्ष-वि० [मं०] धार्मिक जीवन व्यतीत करनेवाला, मठाचारी ।

सुमतिभ-वि० [मं०] सुंदर या ताम्ररूप प्रणिभावाला ।

सुमतिभा-स्त्री० [मं०] सुंदर प्रतिभा; मंदिरा ।

सुमतिष्ठ-वि० [मं०] हृदयापूर्वक स्थित रहनेवाला; अच्छी प्रतिष्ठावाला; सुमतिष्ठ; सुंदर पैरोंवाला । पु० एक नरहकी व्यूहचक्रा; एक तरहकी समाधि ।

सुमतिष्ठा-स्त्री० [सं०] सुंदर प्रतिष्ठा; प्रमिद्धि; सुनि आदिकी स्थापना, अच्छी, टिकाऊ स्थिति; अभिषेक; एक वर्णवृत्त; स्कंदकी एक मानुका ।

सुमतिष्ठित-वि० [मं०] सुंदर प्रतिष्ठायुक्त, सुमतिष्ठ; हृदयापूर्वक स्थित; अच्छी तरह स्थापित किया हुआ; अच्छी शक्तमें रहनेवाला; सुंदर पैरोंवाला । पु० एक समाधि; गल्लर; एक देवपुत्र ।-**सुमत्त**-पु० एक समाधि ।-**सुमत्त**-पु० एक बोधिसत्व ।

सुमतिष्ठितासन-पु० [सं०] समाधिका एक प्रकार ।

सुमतिष्ठात-वि० [मं०] अच्छी तरह स्नान किया हुआ; किसी विषयका अच्छा ज्ञानकार; जिसकी मूर्त छान-बीन की गयी हो, सुनिश्चित ।

सुमतीक-वि० [मं०] सुंदर अंगोंवाला, रूपवान् ; ईमानदार । पु० शिव; कामदेव; ईशान कोणका दिव्याज; एक यक्ष ।

सुमतीकिनी-स्त्री० [मं०] ईशान कीर्णवं, दिव्याज मयनीकी पत्नी ।

सुमदर्श-वि० [सं०] देखनेमें सुंदर, रूपवान् ।

सुमदीहा-वि० स्त्री० [सं०] आत्मानोसे दूरी जानेवाली (गाय) ।

सुमदृष्ट-वि० [मं०] आत्मानोसे क्षतिग्रस्त या पराभूत करने योग्य ।

सुमदुष्ट-वि० [मं०] जिसे बहुत अधिक बोध हो गया हो । पु० एक शाक्य-नरेश ।

सुमज-वि० [सं०] सुंदर प्रभाव; दीप्तिशाली; सुंदर । पु० शास्त्रकी दीपके अंतर्गत एक वर्ष; एक देवपुत्र; एक दानव; त्रैलोक्यके नौ बली (विजो)मेंसे एक ।

सुमभा-स्त्री० [मं०] सुंदर प्रभा, दीप्ति; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; स्कंदकी एक मानुका; एक मुरागना; मात सरस्वतियोगोंमेंसे एक ।

सुमभान-पु० [सं०] सुंदर प्रभात, सुमयुक्त प्रातःकाल; प्रातःकालीन स्नान । वि० प्रातःकाल द्वारा प्रकाशित ।

सुमभासा-स्त्री० [मं०] वह राम जिसका सबैरा सुंदर हो । भागवतमें उल्लिखित एक नदी ।

सुमभाष-पु० [सं०] बहुत बड़ी शक्ति; सर्वज्ञात्मिका ।

सुमभव-वि० [सं०] आत्मानोमें मापे जाने योग्य ।

सुमभाष-वि० [सं०] बहुत बड़े आकारका ।

सुमयुक्त-वि० [मं०] ठीक तरहसे चलाया हुआ; सुंदर ढंगसे पाठ किया हुआ; (कपट) जिसकी योजना खूब सोच-विचारकर बनायी गयी हो; सुमयुक्त; सुव्यवस्थित ।-**शर**-पु० अच्छा नीरंदाज ।

सुमयोग-पु० [मं०] अच्छे ढंगमें काममें लाया जाना, सुप्रबंध; दक्षता; पविष्ट संपर्क । वि० जो ठीक तरह चलाया गया हो; जिसका अभिनय करना आसान हो (नाटक) ।-**विशिष्ट**-पु० अच्छा तीरंदाज ।

सुमयोगा-स्त्री० [मं०] एक नदी ।

सुमलंभ-वि० [मं०] सुख, जो सहजमें मिल जाय; जिसे आत्मानोसे पोसा दिया जा सके ।

सुमलाप-पु० [सं०] अच्छा भाषण, वाग्मिता ।

सुमवेदित-वि० [सं०] अच्छी तरह जनाया हुआ ।

सुमशस्त-वि० [सं०] बहुप्रशंसित; बहुत प्रसिद्ध ।

सुमश्म-पु० [सं०] कुशल-क्षेम पूछना ।

सुमसन्न-वि० [मं०] बहुत सुख; बहुत साफ (जैसे जल), बहुत चमकीला (जैसे बैहरा); बहुत अनुकूल या कृपासु । पु० कुबेर ।

सुमसन्नक-पु० [मं०] कृपाजनक, गरजन, जगली बर्बरी ।

सुमसरा-स्त्री० [सं०] गंधप्रसारिणी लता ।

सुमसव-पु० [सं०] आत्मानोसे, बिना कष्टके होनेवाला प्रभव ।

सुममाद-पु० [सं०] कृपासुता, सुमसन्नता; शिव; विष्णु; स्कंदका एक अनुचर; एक अमुर । वि० सुमसन्न; जो आत्मानोमें प्रसन्न किया जा सके ।

सुमसादक-वि० [सं०] दे० 'सुप्रसाद' ।

सुमसादा-स्त्री० [सं०] स्कंदकी एक मानुका ।

सुमसारा स्त्री० [सं०] दे० 'सुप्रसरा' ।

सुमसिद्ध-वि० [मं०] अति पसिद्ध, खूब भगवद्गुरु ।

सुमस्-स्त्री० [मं०] वह स्त्री जिसे प्रभवसे आत्मानो ही ।

सुभाहत-वि० [सं०] प्रामीण, अशिश ।

सुभाप, सुभाप्य-वि० [सं०] सुलभ ।

सुप्रिय-वि० [सं०] अतिप्रिय । पु० एक गधर्न ।

सुप्रिया-वि० स्त्री० [सं०] बहुत प्यारी । स्त्री० एक अप्सरा; एक छंद; प्रिय पत्नी ।

सुप्रोम-वि० [अ०] सबमें ऊंचा, बड़ा । -कोर्ट-पु०, स्त्री० सर्वोच्च न्यायालय; ईस्ट इंडिया कंपनीके राज्यकालमें कलकत्तामें स्थापित प्रधान न्यायालय ।

सुफल-पु० [सं०] सुंदर फल; अनार; छोटा जमलतास; बेर, कैदा; मृग, बीजपूर । वि० सुंदर फलोंसे युक्त; सुंदर फलवाला (खड़ादि); सफल (वि०) ।

सुफलक-पु० दे० 'द्वयफलक' । -सुत-पु० अक्षर ।

सुफला-वि० स्त्री० [म०] सुंदर फलवाली; फलवती । स्त्री० इद्रवाक्यो; सुनका; केली; गंगारो; कुम्हड़ा ।

सुफुल-वि० [सं०] सुंदर फलोंवाला ।

सुफेद-वि० दे० 'मफेद' ।

सुफेदी-स्त्री० दे० 'मफेदी' ।

सुफेन-पु० [सं०] समुद्रफेन ।

सुबंस-वि० [म०] सुप्र विभक्तियुक्त, प्रथमसे मसमीतककी विभक्तियोंमें युक्त (अन्ध) । -पद्-पु० कारक विभक्तियुक्त शब्द ।

सुबंघ-पु० [सं०] निम्न । वि० अच्छी तरह बंधा हुआ ।

सुबंघन-विशोचन-पु० [सं०] शिव ।

सुबंघु-पु० [सं०] अच्छा भार; एक बौद्ध नाटककार और कवि । वि० बनिष्ठ रूपमें सबद्ध ।

सुबन्धु-वि० [म०] गहरा भूरा, भूम्बर ।

सुबन्ध-पु० मुभट ।

सुबनर-पु० सोना, सुवर्ण; अच्छा रंग; सुंदर अक्षर ।

सुबल-वि० [सं०] अति बली । पु० निम्न; शकुनिका पिता; कृष्णका एक सत्त्व; एक दिव्य पक्षी (वैजयंतीका पुत्र); सुमनिका एक पुत्र; मनु मौल्यका एक पुत्र । -पुत्र-पु० शकुनि । -पुत्र-पु० कौटिल्यका एक नगर ।

सुबस-वि० अच्छी तरह बसा हुआ; स्वाधीन । * अ० स्वेच्छापूर्वक, आज्ञाहीन; के कारण ।

सुबह-स्त्री० [अ० 'सुबह'] सवेरा, भोर, प्रातःकाल । -खेज-वि० तबके उठनेवाला; पूजापाठ करनेवाला, भक्त । -खेजा-खेजिया-पु० वह भोर जो सुमाकिरीसे पहले जागकर उनका माल असबाब चुरा लेता है ।

-द्वम-अ० गजरदम, मुहंभरे । -सवेरे-अ० तबके । -सुबह-अ० बहुत सवेरे, तबके । -का तारा, -का सितारा-शुक्र ग्रह । -का मफेद-पी फटनेके समयका उजाला । -मे शामतक-सारे दिन । सु० -

उठकर हाथ देखना-सवेरे औस सुकते ही अपने दोनों हाथोंकी रेखाएँ देखना, जिसमें किसी मनहूसका मुँह देखनेसे अनिष्ट होनेका डर न रहे । -कर देना-रात गुजार देना । -का निकला शामको आना-आवारागर्दी करना । -की पूछी, शामकी कहना-बदहवास होना । -शाम करना-थालमटील, आजकल करना । -शाम होना-थालमटील किया जाना, आजकल होना । -हो)शाम करना-होना-दे०

'सुबह-शाम करना, होना' ।

सुबहान-अ० दे० 'सुबहान' ।

सुबांघव-पु० [सं०] अच्छा निम्न; शिव ।

सुबाह-वि० [सं०] बालको जैसा । पु० अच्छा लड़का; एक देवता; एक उपनिषद् ।

सुबाहिल-वि० [सं०] बिलकुल बच्चों जैसा, मूर्ख ।

सुबास-स्त्री० दे० 'सुगंध' ।

सुबासना-स्त्री० सुगंध । म० कि० सुवासित करना ।

सुबासिक, सुबासित-वि० दे० 'सुवासित' ।

सुबाहु-पु० [सं०] एक राक्षस जो मारीचका भार्य था और उसके साथ विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न करने हुए राम-लक्ष्मणसे पराजित हुआ; एक नागामुर; स्कंदका एक पार्षद; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; शकुनिका एक पुत्र; एक वैपितस्व; एक बानर । वि० सुंदर या बलवान् बाहोंवाला । * स्त्री० मेना, फीज । -शत्रु-पु० गम ।

सुबिला-पु० सुमीता, सुविधा ।

सुबीज-पु० [म०] अच्छा बीज; लसलस; शिव । वि० सुंदर या अच्छे बीजोवाला ।

सुबीता-पु० दे० 'सुमीता' ।

सुबुक-वि० [फा०] हलका; नाजुक, नेत्र, चुल्हा, * स्तर ।

-दस्त-वि० फुरनीमें काम करनेवाला; लघुहस्त-दस्ता-स्त्री० हाथकी फुरती, हस्त-लाघव । -दोहा-वि० जिसके कचेने बोझ उतर गया हो; आरमुक्त, क्लृप्त, कर्तव्यभार भादिने मुक्त, निश्चिन्त । -दोही-स्त्री० हलका, कुलका, भारमुक्त होना । -रंदा-पु० एक औजार जिसमें बरतनोंकी कोर छीलने दे । -रस्तार-वि० नेत्र चलनेवाला, द्रुतगामी । सु० -होना-हलका, होना-लज्जित होना; ठेड़ी होना ।

सुबुकी-स्त्री० हल्कापन; नेत्रों, हठों, अग्रिमता ।

सुबुद्धि-स्त्री० [म०] अच्छी, मंद बुद्धि । वि० अन्ध, बुद्धिवाला, बुद्धिमान् ।

सुब-स्त्री० दे० 'सुबह' । पु० [फा०] धका, मटका; शर, का मटका । -चा-पु० छोटा मटका ।

सुबत्त-पु० [अ०] प्रमाण; साक्ष्यसे सिद्ध ।

सुबोध-वि० [म०] जो सबप्रभे ममज्ञसे आशय, भावान् । पु० सुंदर ज्ञान ।

सुबहाण्य-पु० [सं०] कार्तिकेय; शिव; विष्णु; उद्दामाद्ये गीत महायज्ञोमेंसे एक; दक्षिण भारतका एक जिला । -क्षेत्र-स्त्री०-पु० दक्षिण कनाडा जिलेमें अवस्थित एक तीर्थ ।

सुबहावासुदेव-पु० [म०] ब्रह्मरूप वसुदेव-पुत्र, कृष्ण ।

सुबह-स्त्री० [अ०] सुबह, सवेरा, भोर । -गाह, -द्वम-अ० तबके, बहुत सवेरे । - (खे)काजिब-स्त्री० भोरका वह उजाला जिसके बाद, कुछ देरके लिए, फिर अँधरा हो जाता है । -पीरी-स्त्री० बुद पेका आरम ।

-बवारस-स्त्री० इनारमका सवेरा (काशीमें सवेरे पाठोपर, खासकर चित्रोंके स्नानार्थ जानेमें अधिक चहल पहर होती है) । -सादिक-स्त्री० सुयोदयमें पहल पूर्वाय क्षितिजपर उठित होनेवाला प्रकाश; उपज्वाल ।

सुब्बान-अ० [म०] सुराको पाकीमें याद करना; पाक परमेयर। -**अल्लाह**-पाक है अल्लाह; पाकीमें याद करना है अल्लाहकी; धन्य है ईश्वर। (किसी अद्भुत, अनूठी या अति सुंदर वस्तुको देखकर सराहनाके भावमें बोलते हैं। बोल-चालमें अधिकतर 'सुमान' और 'समान' अल्लाह बोलते हैं)। -**तेरी कुदरत**-धन्य है तेरी कुदरत की (हीनरकी बोलीका अनुकरण; आश्चर्य प्रकट करनेके लिए या श्रंग्रहमें बोलते हैं)।

सुब्बानी-वि० ईश्वरीय।

सुसंग-वि० [स०] जो आसानीमें टूट जाय, तुनुक। पु० नारियलका पेड़।

सुसंत-वि० शोभित।

सुभ-पु० [स०] शुभ ग्रह। * वि० दे० 'शुभ'।

सुभक्ष-पु० [स०] बढ़िया भोजन।

सुभय-वि० [स०] भाग्यवान्; सुदर, प्रिय; नाजुक; पतला; उपयुक्त। पु० शिव; मोहामा; च्चपा; अशोक; लाल कटसरैया; शिलापुष्प; गंधपाषाण; मुबलका एक पुत्र; सौभाग्य; सौभाग्यजनक कर्म (त्रै०)। -**मानी (निन्)**-वि० अपनेको सुंदर या भाग्यशाली मानने-वाला।

सुभगमन्य-वि० [म०] दे० 'सुभगमनी'।

सुभगा-वि० स्त्री० [म०] सदरी; सुहागिन। स्त्री० पति-प्रिया, पतिकी प्यारी स्त्री, (दुर्गाके प्रतीकके रूपमें पूजी जानेवाली) पंचवटीया कुमारी; एक रागिनी; हस्ती; कस्तूरी; वनमालिका; स्कंदकी एक मानुका, कैवर्ती; शाल-पर्णी; नील दुर्वा; तुलसी; प्रियंवद; सुवर्णकदली। -**तनय**, -**सुत**-पु० पतिकी प्यारी स्त्रीमें उत्पन्न पुत्र।

सुभगावन्दनाय-पु० [म०] एक व्रत (त०)।

सुभगाह्वया-स्त्री० [स०] कैवर्ती; हरिद्रा; तुलसी; नील दुर्वा; सुवर्णकदली; सरिवन।

सुभगा-वि० दे० 'सुभग'।

* **सुभट**-पु० [म०] रणकुशल योद्धा।

सुभटवर्न-पु० दे० 'सुभट'।

सुभट्ट-पु० नामी योद्धा; [स०] बहुत बड़ा पंडित।

सुभद्र-वि० [म०] अति शुभ, अति मांगलिक। पु० विष्णु; मनस्कुमार; वसुदेवका एक पुत्र, कृष्णका एक पुत्र; इधमत्रिहका एक पुत्र; एक वर्णन; सुभद्र द्वारा शासित प्रक्षेत्रीका एक वर्ण; कल्याण; सौभाग्य।

सुभद्रक-पु० [म०] देवराथ (त्रिमपर मंत्रिका जुनुम निकालते हैं); बेलका वृक्ष; एक वृक्ष।

सुभद्रा-स्त्री० [म०] कृष्णकी बहिन विष्णु अर्जुनने हरण कर्के व्याह किया और त्रिसते अभिमन्युकी उत्पत्ति हुई; मंगीतकी एक श्रुति; एक पीठस्था देवी, बलिकी एक पुत्री; अनिरुद्धकी पत्नी; एक पुराणोक्त गौ; मरिचन; गमारी; हनुमदा। -**पूर्वज**-पु० कृष्ण।

सुभद्राणी-स्त्री० [स०] त्रायमाण्य लता।

सुभद्रिका-स्त्री० [स०] कृष्णकी छोटी बहिन; एक वर्ण-वृक्ष; वैद्या; त्रायमाण्य लता।

सुभद्रेश-पु० [म०] अर्जुन।

सुभर-वि० [म०] घना; प्रसन्न; जिसका आसानीमें बहने

या प्रयोग किया जा सके; अच्छी तरह धन्यस्त; सुपोष; अच्छी तरह भरा हुआ, सुपुट-सिर ली पायें सुमर गिउ छोटी'-प०; * सुभ्र-मानसरोवर सुभर जल, हंसा केकि कराहि'-कबीर।

सुभब-पु० [स०] ६० संवत्सरोमेंसे अंतिम; इक्ष्वाकु-वंशका एक राजा। वि० उत्तमव्रजमा।

सुभाजन-पु० [म०] मणिजन।

सुभा-स्त्री० अमृत; शोभा, छवि; हङ्ग; परली।

सुभाह-पु० दे० 'स्वभाव'। * अ० दे० 'स्वभावतः'।

सुभाउ-पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभाग-वि० [म०] भाग्यवान्; धनी (वै०)। * पु० सौभाग्य।

सुभागी-वि० भाग्यवाद्।

सुभागीन-वि० सौभाग्यशाली।

सुभाग्य-वि० अति भाग्यशाली। * पु० दे० 'सौभाग्य'।

सुभान-अ० दे० 'सुब्बान'। -**अल्ला**-दे० 'सुब्बान अल्लाह'।

सुभाना-अ० कि० सुहाना, शोभित होना।

सुभानु-वि० [म०] सुंदर दीप्तिवत्। पु० कृष्णका एक पुत्र; मत्तहवाँ संवत्सर।

सुभाय-पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभायक-वि० दे० 'स्वभाविक'।

सुभाव-पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभावित-वि० [स०] अच्छी तरह भित्त, भावित किया हुआ।

सुभापचंद्र वसु-पु० 'नेनाजी', जन्म ०३ जनवरी, १८७७; १९२० में आई० सी० एस० के पदमे इस्तीफा देकर आप असहयोग आंदोलनमे सम्मिलित हो गये। ब्रिटिश सरकार आपसे बहुत भय खाती थी। इसीमे आपको ११ बार जेलको हवा खानी पड़ी। द्वितीय महा-समरके समय आप वेश बदलकर देशके बाहर चले गये और वहाँ आपने भारतको स्वतंत्रताके लिए 'आजाद-हिंद मेना'का संघटन किया। 'दिल्ली चलो' आपका नारा था। जापानके पतनके बाद मर्च १९४५ में त्रिमान-दण्डनामें आपको धरुस हुई।

सुभाषण-पु० [स०] सुंदर भाषण; सुबुधानका एक पुत्र।

सुभाषित-वि० [स०] सुंदर रूपमें कथित; वाम्नी, सुंदर भाषण करनेवाला। पु० सुंदर, कवित्वमय उक्ति, सूक्ति; एक वृद्ध।

सुभाषी (पिन्)-वि० [स०] सुंदर भाषण करनेवाला, मुबक्ता।

सुभास-वि० [स०] सुंदर भास, दीप्तिवाला। पु० एक दानव, सुधन्वाका एक पुत्र।

सुभास्वर-वि० [स०] सूत्र चमकनेवाला, दीप्तिमान्। पु० पितरीका एक वर्ण।

सुभिक्ष-पु० [स०] भिक्षा या लज्जकी सुलभता; वह काल जब देशमें लज्जकी बहुतायत हो, भिक्षा सुलभ हो, सुकाल।

सुभिक्षा-स्त्री० [म०] धातुपुष्पिका, धौका फूल।

सुभी-वि० स्त्री० शुभकारिणी।

सुभीता-पु० आसानी; सुयोग; आराम।

सुभीम-वि० [सं०] अति बराबरा। [स्त्री० 'सुभीमा'।]
पु० एक दैत्य।

सुभीमा-स्त्री० [सं०] कृष्णकी एक पत्नी।

सुभीरक, सुभीरव-पु० [सं०] पलाशका पेड़।

सुभीरक-पु० [सं०] चोटी।

सुभुज-वि० [सं०] सुंदर सुभाओंवाला।

सुभृति-स्त्री० [सं०] भगल; सट्टि।

सुभृतिक-पु० [सं०] बेलका पेड़।

सुभूम-पु० [सं०] जैनोंके आठवें चक्रवर्ती कांतवीर्य।

सुभूमि-स्त्री० [सं०] अच्छा स्थान। पु० उग्रसेनका एक पुत्र। -व-पु० उग्रसेनका एक पुत्र।

सुभूमिक-पु०, सुभूमिका-स्त्री० [सं०] सरस्वती नदीके किनारे अवस्थित एक प्राचीन जनपद।

सुभूषण-वि० [सं०] अच्छी तरह अलंकृत। पु० दे० 'सुभूमिप'।

सुभूषित-वि० [सं०] सुंदर रूपसे भूषित, खूब सजाया, सँवारा हुआ।

सुभृत्-वि० [सं०] सुरक्षित; अच्छी तरह दिया हुआ; जिसपर अधिक भार लगा हो।

सुभृश-वि० [सं०] अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

सुभृक्ष-पु० [सं०] अच्छी मिठाई।

सुभोग्य-वि० [सं०] अच्छी तरह भोगने योग्य।

सुभोज-पु० [सं०] इच्छा भर खाना।

सुभौटी-स्त्री० शोभा।

सुभीम-पु० [सं०] एक जैन चक्रवर्ती, कांतवीर्यका पुत्र।

सुभ्र-वि० दे० 'सुभ्र'।

सुभ्र, सुभ्र-वि० [सं०] सुंदर औराला। स्त्री० सुंदरी नारी; स्कंदकी एक मातृका।

सुमंगल-वि० [सं०] अति मंगलकारी, अति शुभ; यशोमं पूर्ण; सदाचारी। पु० शुभ वस्तु; एक विष।

सुमंगला-स्त्री० [सं०] एक पौराणिक नदी; स्कंदकी एक मातृका। एक अम्परा; मकबा वास।

सुमंगली-स्त्री० कन्यापक्षके पुरोहितकी दी जानेवाली सिद्धदानकी दक्षिणा।

सुमंगा-स्त्री० [सं०] एक पुराणीक नदी।

सुमंत-पु० दे० 'सुमंत्र'।

सुमंत-पु० [सं०] वेदव्यासका एक शिष्य; जड़का एक पुत्र; मैत्रीभाव।

सुमंत्र-पु० [सं०] दशरथका मंत्री और मारिचि जो बनको जाते समय रामकी रथपर बैठकर नगरसे बाहर ले गया; बाइब गीतम नामक भाचार्य; अनरीक्षका एक पुत्र; अर्थ-मंत्री; सुंदर मंत्र, अच्छी सलाह; दे० 'सुमंत्रक'। वि० अच्छी सलाह माननेवाला। -ज्ञ-वि० धर्मग्रंथोंका अच्छा ज्ञान रखनेवाला।

सुमंत्रक-पु० [सं०] कल्मिका बड़ा भारी।

सुमंत्रित-वि० [सं०] जिसे अच्छी सलाह दी गयी हो; जिसकी योजना सुदृढतापूर्वक बनायी गयी हो। पु० अच्छी सलाह।

सुमंती(विष्)-वि० [सं०] अच्छे मंत्रीवाला।

सुमंथन-पु० मंदराचल।

सुमंद-वि० [सं०] बहुत सुल। -बुद्धि-वि० मंद बुद्धि-वाला; हतोत्साह।

सुमंदरा-पु० दे० 'सुमंद'।

सुमंदा-स्त्री० [सं०] शक्तिविशेष।

सुमंद्र-पु० [सं०] बर्णवृत्तविशेष।

सुम-पु० [सं०] कूल-'युव समीप सुम दीन दोह धरि पद कियो प्रभाव'-रघुराज; चंद्रमा; आकाश; कपूर [फा०] घोड़े या गधेका सुर जो बीचमें फटा नहीं होता। -खारा-पु० वह घोड़ा जिसकी एक आँखकी पुतली खराब हो गयी हो। -तराश-पु० घोड़ेके सुर काटनेका औजार। -फटा-पु० घोड़ेके सुरमें होनेवाला एक रोग। -सुलका-वि० जिसका सुर मूख गया हो (घोड़ा)। पु० सुर सुखनेका रोग।

सुमस-वि० [सं०] अच्छे यशोंवाला। पु० आनंदोत्सव।

सुमगाधा-स्त्री० [सं०] अनाथपिंडिककी एक कन्या।

सुमणि-वि० [सं०] रत्नालंकृत। पु० स्कंदका एक अनुचर।

सुमत-वि० [सं०] सुंदर ज्ञानमें युक्त। * स्त्री० दे० 'सुमति'।

सुमसिंजय-पु० [सं०] विष्णु।

सुमति-वि० [सं०] बहुत चतुर। स्त्री० अच्छी बुद्धि या स्वभाव, उदारभावना; देवानुग्रह; देन, अनुग्रह; सुमति, स्तुति; इच्छा; स्मरणकी पत्नी जो माठ हजार पुत्रोंका जननी कही जाती है, विष्णुयशस्वीकी पत्नी और कल्मिका माता; ऋतुकी एक कन्या; मेल, एका; मैना। पु० एक दैत्य; एक मार्गव; मनु मार्गव, अमर्गत एक ऋषि; एक आश्रय; क्षत्रका एक पुत्र या शिष्य; भरतका एक पुत्र; मोमदत्तका एक पुत्र; मृगवत्सका एक पुत्र; जनमेजयका एक पुत्र; नृगका एक पुत्र; हर्षनका एक पुत्र; विदूरथका एक पुत्र; राव अवमर्षिणीके सेरहबैं या वर्नमानके पाँच अर्हन्। -मेक-पु० हल्का एक नाग। -मेणु-पु० एक नाग।

सुमद-वि० [सं०] मनवाला। पु० रामकी वानगी मैनाका एक नायक।

सुमदन-पु० [सं०] आमका पेट।

सुमदुम-वि० स्थूलकाय, मोंदवाला, मोटा।

सुमधुर-वि० [सं०] अति मधुर; बहुत नाजुक; सुंदर गाने-वाला। पु० जीवशाक; मधुर वचन।

सुमध्वमा, सुमध्या-वि० स्त्री० [सं०] पतली कमरवाली (स्त्री)।

सुमनः-'सुमनस्'का मयामयत रूप। -पत्र-पु०, -पत्रिका-स्त्री० जातीयिका, जातित्री। -फल-पु० जातीयफल, आयफल; कैयका पेड़।

सुमन-पु० [सं०] गेहूँ; चूरा; बोधि वृक्षके चार देवताओंमें एक; एक नागदेव। वि० मनोहर, सुंदर।

सुमन(स्)-पु० [सं०] पुष्प; * देवता। -चाप-पु० [हि०] कामदेव। -झाक-पु० [हि०] पुष्पहार।

-राज-पु० इंद्र।

सुमनस-पु० देवता; पुष्प। वि० सुंदर मनवाला, प्रसन्न।

सुमनस्क-वि० [सं०] प्रसन्नचित्त।

सुमना-स्त्री० [सं०] चमेरी; मेकनी; कबरी गाय; धर्मकी

पत्नी; केकय नरेशकी एक कन्या ।

सुमना(नस्)—पु० [म०] देवता; नेक आदमी; गेहूँ; करंजका एक भेद, पृथिकरंज; नखचारी; निभ; एक दानव; हर्षद्वका एक पुत्र; एक पर्वत, वृक्ष । वि० उगाराशय; मंजुह ।

सुमनासुख—वि० [सं०] प्रसन्नवदन ।

सुमनास्य—पु० [सं०] एक नागदैत्य ।

सुमनित*—वि० सुंदर मणि या मणियोंमें युक्त ।

सुमनोक्तस, सुमनोक्त्य—पु० [सं०] स्वर्ग ।

सुमनोद्घोष—पु० [सं०] एक वृक्ष ।

सुमनोदाम(न्)—पु० [मं०] पुष्पाहार ।

सुमनोभर—वि० [मं०] पुष्पालङ्कृत ।

सुमनोमुख—पु० [मं०] एक नागदैत्य ।

सुमनोरज(स्)—स्त्री० [मं०] पराग ।

सुमन्धु—वि० [सं०] अतिक्रोधी । पु० एक देवगधर्ष ।

सुमर—पु० [मं०] बाहु; सरल सृष्टि ।

सुमरन*—पु० दे० 'स्मरण'; स्त्री० सुमरनी ।

सुमरना*—म० कि० स्मरण करना, ध्यान करना; जपना ।

सुमरनी—स्त्री० २० दासोंकी जपमाला ।

सुमरीधिका—स्त्री० [मं०] माध्यमे मानी हुई पौव बाण नृसिंहोर्मिमें एक ।

सुमर्मग—वि० [मं०] समागतक पुम जानेवाला (बाण) ।

सुमह्लिक—पु० [मं०] एक प्राचीन जनपद ।

सुमहाकपि—पु० [मं०] एक दैत्य ।

सुमहास्य—वि० [मं०] बहुत ज्यादा बरबादी करनेवाला ।

सुमात्रा—पु० मलयदीपपुत्रके अंगमन एक द्वीप ।

सुमानस्य—वि० [मं०] अच्छे मनवाला, नेकमिजाज ।

सुमानिका—स्त्री० [मं०] एक वर्णहस्त ।

सुमाती(विन्)—वि० [मं०] बहुत अभिमान करनेवाला, स्वामिनी ।

सुमाध—वि० [मं०] बहुत चतुर; मायायुक्त । पु० अमुरीका एक राजा; एक विद्याधर ।

सुमार—पु० दे० 'सुमार' । * वि० सुना हुआ ।

सुमार—पु० [सं०] अच्छी राह; सुपथ ।

सुमास्त्वं—वि० [मं०] बहुत छोटा; बारीक ।

सुमाल—पु० [सं०] प्राचीन कालका एक जनपद ।

सुमालिनी—स्त्री० [मं०] एक वर्णहस्त; एक गधर्ष ।

सुमाली—पु० अश्लीकाके पूर्वी किनारेपर बसनेवाली एक भरर जाति ।—**हैड**—पु० अश्लीकाके पूर्वी किनारेपर (असितिनियाके पूर्व) अवस्थित एक देश ।

सुमाली(लिन्)—पु० [मं०] एक राक्षस जिम्मी कन्या कैकमीके गर्भमें रावण, कुम्भकर्ण आदिकी उत्पत्ति हुई; एक वातर ।

सुमाश्वक—पु० [सं०] एक पुराणोक्त पर्वत ।

सुमाश्लि—स्त्री० [सं०] फूलोंका हार ।

सुमित्र—पु० [सं०] अच्छा दोस्त, सन्मित्र; कृष्णका एक पुत्र; मौराष्ट्रका एक राजा जिससे डाढके कथनानुसार मेवाड़के राणा-वंशकी उत्पत्ति हुई; शङ्खाकु-वंशके अंतिम राजा मुरथका पुत्र; एक मिथिला-नरेश; एक मगध-नरेश; गदका एक पुत्र; एक दानव । वि० अच्छे मित्रोंवाला ।—**भू**—

सुमना(नस्)—सुमेध

पु० वर्तमान अवस्थाधीनके २० वें अर्धत (जै०); मगरका एक नाम (चक्रवर्तिकी रूपमें) ।

सुमित्रा—स्त्री० [सं०] दशरथकी मैत्रेयी रानी जो लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता थी; मार्कण्डेयकी माता; एक यक्षिणी ।

—**तनय**,—**नन्दन**,—**भू**—पु० लक्ष्मण और शत्रुघ्न ।

सुमित्रानन्दन पंत—पु० (जन्म सं० १९५७) खड़ीबोलीके विशेष अध्ययनशील एवं स्वतंत्र चिंतनवाले कवि जिन्हें प्रकृतिके सूक्ष्म व्यापारोंका अच्छा ज्ञान है । पल्लव, वीणा, गुजन आदि काव्य तथा परी, ब्रौहा, ज्योत्स्ना आदि नाटक भी लिखे हैं ।

सुमित्र्य—वि० [मं०] अच्छे मित्रोंवाला (जै०) ।

सुमिरवा—पु० दे० 'स्मरण' ।

सुमिरना—म० कि० दे० 'सुमरना' ।

सुमिरनिया*—स्त्री० दे० 'सुमरनी' ।

सुमिरनी—स्त्री० दे० 'सुमरनी' ।

सुमुख—वि० [मं०] सुंदर मुखवाला; सुंदर, मनोह्र; प्रसन्न; कृपाळु; अच्छी नोकवाला (जैसे बाण); अच्छे द्वारवाला ।

पु० सुंदर मुख; शिव; गणेश; गरुडका एक पुत्र; द्रोणका एक पुत्र; विद्वान् व्यक्ति; एक नागदैत्य; एक ऋषि; एक वानर; एक पक्षी; एक शाक; वनवर्षरी; सफेद तुलसी; गरुड़; नखक्षत; मयनका एक प्रकार ।—**सू**—पु० गरुड़ ।

सुमुखा—वि० स्त्री० [मं०] सुंदर मुखवाली । स्त्री० सुंदरी स्त्री ।

सुमुखी—वि० स्त्री० [सं०] सुंदर मुखवाली । स्त्री० सुंदरी स्त्री; आईना; एक सूछेना (सगीन); एक वृक्ष; एक अम्परा; शङ्खपुष्पी; नील अपराजिता ।

सुमुष्टि, सुमुष्टिका—स्त्री० [मं०] विषमुष्टि नामक ध्रुप, वक्राग्र ।

सुमूर्ति—पु० [सं०] शिवका एक गण ।

सुमूल—पु० [सं०] अच्छा मूल; सफेद सहजिन । वि० अच्छी, मजबूत जड़वाला ।

सुमूलक—पु० [मं०] गाजर ।

सुमुला—स्त्री० [सं०] शालपर्णी; पृथिनपणी ।

सुमुग—पु० [सं०] वह स्थान जहाँ शिकारवाले जानवरोंकी अधिकता हो ।

सुसुत, सुसुति*—स्त्री० दे० 'सुति' ।

सुमेखल—पु० [सं०] सूँड़ । वि० सुंदर मेखलायुक्त ।

सुमेध—पु० [सं०] एक पर्वत ।

सुमेध*—वि० दे० 'सुमेधा' ।

सुमेधा—स्त्री० [सं०] उद्योतिष्मती, मालवंगनी ।

सुमेधा(धस्)—वि० [सं०] सुंदर मेधा, बुद्धिवाला, सुदृढ़ि । पु० पितरोंका एक गण; चाक्षुष मन्वंतरके एक ऋषि; पंचवैव मन्वंतरका एक देववर्ष ।

सुमेर—पु० गंगाजल रखनेका पात्र; दे० 'सुमेर' ।

सुमेरु—पु० [सं०] एक पर्वत जो पुराणोंके अनुसार इक्ष्वाकु-वर्षमें अवस्थित है और सोनेका बना हुआ है, स्वर्णगिरि; उत्तर ध्रुव; जपमालाके बीचका बड़ा दाना; एक वर्णवृक्ष; शिव; एक विद्याधर । वि० आयुध; उत्तम ।—**जा**—स्त्री० सुमेरुसे निकलनेवाली एक नदी ।—**वृत्त**—पु० उत्तरी ध्रुवसे २३½ अक्षांशपर स्थित रेखा ।—**समुद्र**—पु० उत्तर सागर ।

सुम्-पु० दे० 'सुख' ।

सुम्मीत - श्री० सुनारोंका एक औजार ।

सुबं०-अ० दे० 'स्वयम्' । -वर०-पु० दे० 'स्वयवर' ।

सुसंश्रित-वि० [स०] सुवक्त्रः मंथतः आत्मनिग्रही,
जितेंद्रिय ।

सुयज्ञ-पु० [सं०] रुचि प्रज्ञापनिका एक पुत्र; भुवका एक पुत्र; सुदर, उत्तम बग्न; वसिष्ठका एक पुत्र; उशीनरोंका एक राजा । वि० सुदर, सफल यह करनेवाला ।

सुवशा-स्त्री० [म०] प्रप्रेतचित्तके एक वंशज, महाभौमकी पत्नी ।

सुखत-वि० [म०] मुनियन्त्रित, सयत; आत्मनिग्रही ।

सयम-पु० [स०] देवनाओंका एक गण ।

मयमा-ली० [म०] प्रियगु लता ।

सयवस-प० [स०] अक्की घास; भक्का चरागाह ।

सयज्ञ(स)-प० [सं०] मन्दर यज्ञ, मकीति ।

सुयशा-स्त्री० [नं०] द्विबोद्धामकी पत्नी; परीक्षितका एक पत्नी ।

सयश(शय) - वि० [म०] सुदर यशवाला ।

संयोजक-प० [सि०] मनु गैवतका एक पुत्र ।

समाप्ति-प० [म०] नक्षत्रका एक पत्र ।

सङ्ग्रह-प० [सि०] एक देवपत्नः एक देवगणः ।

सुषामुन-पु० [मं०] राजप्रासादः एकः नरहका बादलः
विष्णुः एक नरेशः एक पर्वतः ।

सुयुक्ति-स्त्री० [मं०] सुंदर युक्ति, अच्छी दलील, अच्छा उपाय ।

मन्त्र-प० सिं०। अक्षरी तरह लडा हभा यदः धर्मयदः ।

संयोग-प० [सं०] संदर शोभाः बद्धिवा मौका ।

सामयिक-वि० [सं०] अति शीघ्र, बहुत लघुक ।

सुयोग्य-३० [मं०] आनि बा०
सुयोग्य-३० [मं०] आनि बा०

सुदरं-ति० [सं०] सुदर रंगबाहा, सुशरंग; मुदर । पु०
 सुदरं रागः शिशिरः नारंगी; वक्म, पनंग । स्त्री० संप; सनानके नीचे खोदकर बनाया हुआ गुप्त मार्ग; जमीनके नीचे खोदकर बनायी हुई नाली जिससे बाढ़द विछाडकर किलेकी रीबार, चट्टान आदि उठोये है (आ०) ।
 -द-पु० पनंग, वक्म । -धातु-स्त्री० गेरु । -पुलि-स्त्री० नारंगीका पनग । -युक् (ज्) -पु० मेघ मारने वाला ।

सुरग-खी० जमीन या समुद्रमें गूँघा जानेवाला बासुद आदिसे भरा गोला जिसका स्पर्श होनेपर विस्फोट होता है और ज्वाला आदि नष्ट हो जाते हैं। वि० लाख रगका।
-‘सुरग गुलाब कदम औ कूजा’-पं०; * मरस; स्वच्छ।
पं० लाख या लाखी रगका धोड़ा।

सरंगा-खी० [मं०] कैवर्तिका; सेंध ।

सरंगिका-झी० [सं०] पोरक साग; मफेट मकोय; मर्वा ।

सुरंगी-खी० [सं०] कौआढोठी; मुखताना चंपा; आलका
पेठ; लाल सहजन ।

सरंजन-पु० [सं०] सुपारीका पेक ।

सरंधक, सरंध-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।

सुर-पु० [सं०] देवता; देवमूर्ति; सर्व; मुनि; पंडित;
३३ श्री संख्या । -कंठ* -प० इन्द्र । -कर्मि* इन्द्राणां ।

भी० गंगा -करी(रिन्)-पु० देवताओंका हाथी,
पेरावत । कानन-पु० देवोपान । -कामिनी-स्त्री०
अम्परा । -काह-पु० देवताओंके शिष्यी, विश्वकर्मा ।
-काकुंक्ष-पु० रक्षपुत्र । -काय-पु० देवताओंके
निमित्त किया जानेवाला कार्य । -काष्ठ-पु० देवदार ।
-कुरु-पु० देवमंदिर । -कृत-वि० देवताओंका किया
दृष्टा । -कृता-स्त्री० गृहणी । -कृत-पु० विद्याभित्रका
एक पुत्र । -केतु-पु० इन्द्रकी ध्वजा; इन्द्र । -खंडनिका-
स्त्री० एक तरहकी बीणा । -गंध-पु० एक तरहका फूल ।
-गण-पु० पेरावन । -गण-पु० देवसमूह । -गति-
स्त्री० देवताके रूपमें जन्म लेना; दैवीगति (?) । -गर्भ-
पु० देव मंतान । -गाय-स्त्री० [हिं०] कामधेनु ।
-गायक-गायन-पु० गधर्ष । -गिरि-पु० मेरु ।
-गुरु-पु० बृहस्पति; बृहस्पति ग्रह । -दिवस-पु०
सुवर्णचिह्नार । -गुरु-पु० दे० 'सुरकुल' । -गीता-
स्त्री० कामधेनु । -ग्रामणी-पु० देवताओंके नेता, इन्द्र ।
-चाप-पु० इन्द्रपुत्र । -जन-पु० देववर्ग; दे० ऋषयः ।
-ज्येष्ठ-पु० ब्रह्मा । -तर्गिणी-स्त्री० गंगा नदी ।
-तह-पु० कल्प वृक्ष । -तात-पु० कश्यप; इन्द्र । -नृग
-पु० मृत्युञ्जय । -तोषक-पु० कोमल मणि । वि० देव-
ताओंको प्रमत्त करनेवाला । -त्राण-व्राता(न्)-पु०
विष्णु; इन्द्र । -व्राह-पु० देवदास । -दीपिका-स्त्री०
प्राकाशगंगा । -सुंदरी-स्त्री० देवपत्नी; तुलसी । -देवी-
स्त्री० योगमाया । -दोषी-पु० दे० 'सुरक्षि' । -दु-
पु० सुरक्ष । -द्रुम-पु० कल्पवृक्ष; देववन, वृक्ष
समूह; देवदास । -द्रिद(श्)-पु० सुरदेवी, अरर
राक्ष । -द्विप-पु० देवस्थली, पेरावन; एक दिशा ।
-धनु(स्)-पु० इन्द्रपुत्र । -धाम(श्)-पु०
स्वर्ग । (सु०)-सिधारना-मर आना । -धुनी
स्त्री० गंगा । -धूप-पु० गाल । -धेनु-स्त्री० कामधेनु ।
-ध्वज-पु० इन्द्रध्वज । -नंदा-स्त्री० एक नदी ।
-नगर-पु० स्वर्ग । -नदी-स्त्री० गंगा । -नाथ-
नाथक-पु० इन्द्र । -नारी-स्त्री० देवागनी । -नाल-
पु० एक तरहका बड़ा नरमाल । -नाह-पु० दे० 'मर-
नाथ' । -निर्झाम-स्त्री० गंगा । -निर्वाध-पु० तेज-
पत्र । -निर्झरिणी-स्त्री० आकाशगंगा । -निलय-
पु० मेरु पर्वत । -प-पु० दे० 'सुरपति' । -पति-पु०
इन्द्र; शिव । -पशु-पु० बृहस्पति । -पाप-पु०
इन्द्रपुत्र । -पतय-पु० अर्जुन; जयन । -पत्र-पु०
आकाश, छायापत्र । -पत्र-पु० [हिं०] मृत्युञ्जय ।
-पर्ण-पु० एक मास, मासीपर्ण; देवपर्ण । -पणिक-
पु० मृत्युञ्जय । -पणिका-स्त्री० पुत्राग । -पर्णी-स्त्री०
पलाशी । -पर्वत-पु० मेरु पर्वत । -पांशुका-स्त्री०
अम्परा । -पादप-पु० कल्प वृक्ष । -पाल-पालक-
पु० इन्द्र । -पुत्राग-पु० एक तरहका पुत्राग । -पुर-
पु० अमरावती; स्वर्ग । -केतु-पु० इन्द्र । -पुरी-स्त्री०
अमरावती । -पुरोवा(धस्)-पु० बृहस्पति । -
पुण्य-पु० स्वर्गवा पुण्य । -प्रतिष्ठा-स्त्री० देवप्रतिमा-
की स्थापना । -प्रवीर-पु० एक योद्धा । -प्रिय-पु०
इन्द्र; बृहस्पति; अमरस्य वृक्ष; एक योद्धा; एक पर्वत । वि०

की देवताओंको शिव ही। -मिषा-की० जाती, चबेली; स्वर्गकरकी; अम्परा। -बाका-की० दर्शनगा। -बुल-पु० दे० 'सुरवृक्ष'। -बेक-की० [हि०] कल्प कृता। -अवन-पु० देवमंदिर। -भान-पु० इंद्र; सूर्य। -मिषक (बु) -पु० अभिनीकुमार। -अरी-की० देवताका भय; दे० क्रममें। -अप-पु० [हि०] इंद्र; विष्णु। -अप-पु० देवत्व प्राप्त होना। -अरु-पु० देवदार; कल्प वृक्ष। -अप-पु० १००८ दानोंका चार हाथ लंबा मुक्ताहार। -ओरा-पु० देवताओंका भोग्य, अमृत। -ओन-पु० दे० 'सुर-अवन'। -मंडक-पु० देवमंडक; एक राजा। -मंडलिका-की० दे० 'सुरसडनिका'। -मंरी (मिन्) -पु० वृक्षवृत्ति। -मंदिर-पु० देवताका मंदिर, देवालय। -मणि-पु० चिंतामणि। -मुचिका-की० गोपीचंद्रन। -मेदा-की० महामेदा। -मरु-पु० विष्णु। -बाल-पु० देवराय। -बुधति, -बोधि-की० अम्परा। -राह-पु० इंद्र; विष्णु। -राज-पु० इंद्र। -गुरु, -मंमरी (मिन्) -पु० वृक्षवृत्ति। -गुरु-पु० पारिजात। -भारासन-पु० इंद्र-धनुर्। -राह (बु) -पु० दे० 'सुरराज'। -राय, -राव-पु० दे० 'सुरराज'। -रिपु-पु० देवराज, राक्षस, दानव। -रुल-पु० कल्प वृक्ष। -लता-की० महाच्योतिष्मती लता। -ला-की० गंगा; एक नदी। -लायिका-की० कमी। -लोक-पु० स्वर्ग, देवलोक। -भारज-पु० देवलोकका राज्य। -सुंदरी-की० अम्परा; दुर्गा। -वपु-पु० देवगाना। -बन-पु० देवोद्यान। -बर-पु० इंद्र। -वर्म (बु) -पु० आकाश। -बलभा-की० सफेद दूध। -बली-की० तुलसी। -बाणी-की० देवबाणी। संस्कृत -वास-पु० स्वर्ग। -बाहिनी-की० आकाश-गंगा। -विटप, -वृक्ष-पु० कल्प वृक्ष। -विट्टिद (बु), -वैरी (मिन्) -पु० देवताओंको कष्ट अमुर। -विलासिनी-की० अम्परा। -वीवी-की० नक्षत्रवीची, नक्षत्रोंका मार्ग। -वीर-पु० इंद्र। -बेला-की० एक नदी। -बेध (बु) -पु० स्वर्ग; देवालय। -वैद्य-पु० अभिनी-कुमार। -सातु-पु० अमुर। -भ्रा (बु) -पु० शिव। -सवनी-की० विष्णु-शयनी एकादशी। -शास्त्री (मिन्) -पु० कल्प वृक्ष। -शिवनी (मिन्) -पु० विश्वकर्मा। -ओह-पु० वह जो देवताओंमें श्रेष्ठ ही; विष्णु; शिव; गणेश; इंद्र; धर्म। -ओह-की० जाकी। -श्वेता-की० एक तरफकी सफेद छोटी छिपकली; बमनी (?)। -संघ-पु० देवमंडली। -संभवा-की० आदित्मज्ञा, दुरदुर। -सख-पु० इंद्र; गधर्व। -सख-पु० देवताओंमें श्रेष्ठ, विष्णु। -सव, मय (बु) -पु० स्वर्ग; देवालय। -समिति-की० देवमंडली। -समिध-की० देवदार। -सर-पु० मानसरोवर। * की० दे० 'सुरसि'। -सुखा-की० सरयू नदी। -सवि, -सरी-की० गंगा; मोहावरी। -सरिता-की० [हि०] दे० 'सुरसि'। -सरिद-की० गंगा। -सुत-पु० भीष्म। -सर्वक-पु० देवसर्वप। -साई-पु० इंद्र; विष्णु; शिव। -साक-वि० देवताओंको साधने-वाला, सुरपीठक। -साहक-पु० देवताओंको स्वामी,

विष्णु; इंद्र। -सिपु-की० गंगा, मंदाकिनी। -सुंदर-पु० सुंदर देवता। वि० देवता जैसा सुंदर। -सुंदरी-की० अम्परा; दुर्गा; एक योगिनी। -सुरभी-की० कामधेनु। -सेन-पु० देवताओंको सेनापति, कामिकेय। -सेवा-की० देवताओंकी मेना। -सैवा-पु० दे० 'सुरसि'। -सैनी-की० दे० 'सुरसवनी'। -स्वंध-पु० एक दानव। -की-की० अम्परा। -स्वाम-पु० देवलोक। -स्वर्वासी-की० आकाशगंगा। -सोतसिनी-की० गंगा। -स्वामी (मिन्) -पु० इंद्र; विष्णु; शिव। सुर-पु० स्वर, बाजा। -कली-की० एक रागिनी। -कुदाव-पु० स्वर-परिवर्तन द्वारा भोला देना। -टीप-की० स्वरलाप। -साम-की० स्वरका आलाप; दे० क्रममें। -ताक-पु० स्वर और ताक। -वार-वि० सुरीला। -कौकताक-पु० ताकका एक प्रकार। -बह-पु० सितार जैसा एक बाजा। -मंश-पु० दे० 'स्वरभ'। -सिंगार-पु० एक बाजा। सु-मिलाना-आवाज मिलाना; स्वर्गों में करन। सुरसप्त-की० [अ०] तेजी, कुरगी; बध्नी। सुरक-पु० नाकपर बनाया हुआ मालेकी शङ्कक तिकक। की० दे० 'मुक्क'। सुरकना-म० कि० दे० 'सुवकना'। सुरक-वि० [म०] गाढा रंगा हुआ; गाढा लाल; बहुत प्रभावित; अनुरक्त; बहुत सुंदर। सुरक-पु० [सं०] सोनलक; कोशम; एक प्रकारका नाम। सुरक्ष-पु० [सं०] एक मुनि; एक पर्वत। सुरक्षण-पु० [सं०] सम्यक् रक्षण। सुरक्षा-की० [सं०] सम्यक्, समुचित रक्षा। सुरक्षित-वि० [सं०] मज्जी मंति, अच्छी तरह रक्षित। सुरक्षी (मिन्) -पु० [सं०] अच्छा रक्षक या अभिसाधक। सुरक्ष-वि० [सं०] जिसकी आसानीमें रक्षा की जा सके। सुरक्ष-वि० दे० 'सुर्वा'। -रु-वि० दे० 'सुर्वा'। सुरक्षा-वि०, पु० दे० 'सुर्वा'। सुरक्षा-पु० दे० 'सुर्वा'। सुरक्षिवा-की० एक चित्रिया जिसका सिर, गरदन और पीठ लाल रंगकी होती है। सुरक्षी-की० दे० 'सुर्वा'। सुरग-पु० दे० 'स्वर्ग'। सुरक्षण-पु० दे० 'सुरक्षण'। सुरक्षाक-पु० [सं०] कटहल। सुरज-पु० सूर्य। सुरजन-पु० सुजन, नेक आदमी; दे० 'सुर'में। वि० चतुर। सुरजा-की० [सं०] एक नदी; एक अम्परा। सुरजा (बु) -वि० [सं०] परागसे भरा हुआ। सुरजन-की० दे० 'सुलजन'। सुरक्षाना-ज० कि० दे० 'सुलक्षाना'। सुरक्षाना-स० कि० दे० 'सुलक्षाना'। सुरक्षाना-स० कि० दे० 'सुलक्षाना'। सुरत-की० भ्रान, याद। पु० [सं०] समोग, कामकीड़ा। वि० क्रीडाशील; अति अनुरक्त। -केलि, -क्रीडा-की०

कामकीर्ण । -सुरता-गोपना-की० रतिविह्वल विधाने-
वाली नायिका । -सुरता-की० सुरत-जनित विविधता,
व्यापक । -साकी-की० दूती; सिरमें लपेटनेकी माका ।
-ससंवा-पु० कामकीर्णमें आसक्ति । -संवा-पु० एक
तरङ्गका रतिबंध । -संवा-पु० एक तरङ्गका रतिबंध ।
-सुविह्वल-वि० रतिक्रीडामें मसला हुआ । -रंगी (गिह्व)
-वि० कामकीर्णमें आसक्ति । -वाररात्रि-की० संयोग-
रात्रि । -विशेष-पु० एक रतिबंध । -संवा-वि० संयोग-
में संलग्न ।

सुरता-की० [सं०] देवत्व; सुरतमूढ; एक अप्सरा; पत्नी;
* ध्यान; होस । पु० ममापि लगानेवाला, ध्यान करने-
वाला; ओता-कथता, बकता, सुरता सोई-कवीर ।
सुरता-पु० दे० 'सुरतान' दे० 'सुर' [सं०] में ।
सुरति-की० [सं०] रति, कामकीर्ण, विहार । -गोपना-
की० दे० 'सुरत-गोपना' । -रंवा-पु० रतिक्रीडाके समय
गहनों के बजनेकी आवाज । -विचित्रा-की० मध्या
नायिकाके चार भेटोंमेंसे एक (अन्य तीन भेट ये हैं-
आरुढयौवना, प्रादुर्भूतमनोमया, प्रगल्भयचना) ।

सुरतिबंध-वि० कामविह्वल ।
सुरती-की० तवाङ्का सुखाया हुआ पत्ता ।
सुरवा-वि० [सं०] अच्छे रत्नोंवाला; सर्वश्रेष्ठ । पु० सुवर्ण;
लाक आदि अच्छे रत्न ।
सुरवा-पु० [सं०] मंदर रवा; एक चंद्रवंशीय राजा जिसने
लक्षवर्ष द्वारा दुर्गाकी आराधना की थी; कुशदीपके अंत-
र्गत एक वर्ष; एक पर्वण; द्रुपका एक पुत्र; जनमेजयका
एक पुत्र; अतिरथका एक पुत्र । वि० अच्छे रथवाला,
मंदर रथविशिष्ट ।
सुरवा-की० [सं०] एक अप्सरा; एक पुराणवर्णित नदी ।
सुरवाकार-पु० [सं०] एक वर्ष, भूखंड, देश ।
सुरवाकी-की० एक पौधा जिसकी जड़की छालसे रंग
बनाते हैं ।

सुरमि-वि० [सं०] सुगंधित, सुसुंदर; प्रिय, मनोरम;
प्रसिद्ध; सुदिमान्, विद्वान्; नेक, धार्मिक; सद्भावपूर्ण ।
पु० सुगंधित द्रव्य; जायफल; आलनिर्वास, घृता; चंपक
वृक्ष; शमी वृक्ष; कंदर्ब वृक्ष; एक सुगंधित गुण, रोहिण
गुण; वसंत ऋतु; वैज भास; वक्रस्तु रथापित करनेके
समय अलसकी जानेवाली अग्नि; मीलसिरी; गंधक; सीमा
गंधक; कणगुग्गुल । की० सुगंधि, सुवास; सल्लकी;
स्वर्णकी एक मातृका; एक पौराणिक गाय जो गोत्रासिनी
माता मानी जाती है; गाय; पृथ्वी; तुलसी; वनमल्लिका;
मट्टि; सुरा; रुद्रवटा; एलवाङ्क । -कंदर-पु० एक
पर्वत । -काता-की० नेवारी । -गंध-की० सुगन्ध ।
वि० सुसुंदर; पु० तेजपत्र । -गंध-की० चमेकी ।
-गंधि-वि० सुसुंदर । -गंधी (गिह्व)-की० सुसुं-
दार । -गंध-पु० सुसुं गिलावा हुआ घृता, 'पाकवर' ।
-कंदर-पु० कैव; सुगंधित घास । -तनक-पु०
पु० देल । -तनका-की० गाय । -विह्वल-की०
जायफल, सुगंधी और शैव । -वक्र (वृ)-पु० वृद्धेज,
बड़ी-कलायकी । -दाक, -दाक-पु० सरल वृक्ष । -
पत्रा-की० मंडु वृक्ष; राजवंश । -काय-पु० कामदेव ।

-अंजरी-की० श्वेत तुलसी । -वास-पु० वसंत ऋतु;
वैज भास । -सुख-पु० वसंतका आरंभ । -कंदर-पु०
तुलसी, दारवीनी । -संवा-पु० वसंत ऋतु । -
संवा-वि० सुगंधित दार पहननेवाला । -काता-की०
सल्लकी ।

सुरमि-की० [सं०] स्वर्णकंदली, सीनकेला ।
सुरमित-वि० [सं०] सुगंधित किया हुआ, वासा हुआ;
प्रसिद्ध किया हुआ ।

सुरमिमात्र (मद्र)-वि० [मं०] सुगंधित । पु० अग्नि ।
सुरमी-की० [सं०] सुसुंदर; गाय; गोमाता; सखी; कौब;
वनतुलसी; रुद्रवटा; सुरमासी; रासना; पशुवा; पौव
साग; सुगंधित धान । -गंध-पु० तेजपत्र । -गंध-
सुत-पु० वैज; सीं । -पशु-पु० एक महाभारतीक
नगर । -पत्रा-की० राजवंश । -पुर-पु० बोलीक ।
-सुख-पु० गोमंत्र । -रसा-की० श्वलकी वृक्ष ।
-रुद्र-पु० देवदार ।

सुरमई-वि० सुरमेके रंगका, हलका नीला । पु० सुरमेके
रंगसे मिलता-जुलता रंग; इस रंगका कपूर । की०
हलके काले रंगकी एक विधिया । -कंदर-की० मरमा
लगानेकी सलाई ।

सुरमई-पु० मरमा लगानेकी सलाई ।
सुरमा-पु० [का०] एक खनिज पदार्थ जिसका वागीक
चूर्ण ओलोंमें अंजनके रूपमें लगाया जाना है; अंजन ।
वि० बहुत बारीक (करना, होनाके साथ) । -कदा-वि०
मरमा लगानेवाला । पु० मरमा लगानेकी सलाई । -
दास-पु०, -दामी-की० सुरमा रसनेकी विधिया ।
-संकेत-पु० एक खनिज द्रव्य जो ओलोंकी नखन
आदिमें काम जाना है । - (मद्र) सुरमैमान या मुलै-
माची-पु० वह सुरमा जिसे ओंजनेने (मुसलमानोंके
विश्वासानुसार) भूल-प्रेत, शरा धन आदि दिखाई देने
लगाते हैं । - (से) का बोरा-ओलोंके अंदर स्थिती हुई
सुरमेकी लकीर । - की कंदर-पैलिक । सु-करना,
-जाना-बहुत वागीक करना, सुरमे-मा कर देना ।
-काता- (का०) गुण हो जाना (सुरमा कानेसे जवान
बैठ जाती है) ।

सुरमै-वि०, पु० दे० 'सुरमई' ।
सुरम्य-वि० [सं०] अग्नि रमणीय, मनोहर ।
सुरवर्ष-पु० [सं०] रत्न; शिव ।
सुरसि-पु० [सं०] देववि ।
सुरसा-की० [सं०] एक नदी; गंगा नदी ।
सुरसा-की० मंदर कीर्ण ।
सुरवर्षा-पु० एकल नीम या सरकंडा ।
सुरवा-की० दे० 'सुवा' । पु० दे० 'शोरवा' ।
सुरवाची-की० सुवर्णके रहनेका वाक् ।
सुरवाक-पु० पायजामा; मेहरा ।
सुरस-वि० [सं०] मंदर रसतुल्य, रसीला; सुखाद; मधुर;
सुंदर । पु० नील; सुख, दारवीनी; गंधपुण; तुलसी;
सिपुवा; मोचरम; तेजपत्र; एक अज्ञात; एक पर्वत;
घृता ।

सुरसती-की० 'सरस्वती' ।

सुरसा-श्री० [सं०] समुद्र लीवकर लंका जाते समय इनुमान्का रास्ता रोकनेवाली एक नागमाता; एक राक्षसी; तुलसी; रातना; मिथेया; शीफ; ब्राह्मी, महाशतावरी; सिंधुवार; बार्ताकी; कंटकारी; सफेद बूढ़ी; ध्वेत विहृता; पीठ; एक पृष्ठ; एक रागिनी; बहकी एक कन्या; कदाचित्की एक कन्या; एक अस्त्रा; दुर्गा; एक नदी ।

सुरसाग्र-पु० [सं०] सिंधुवारकी एक संवरी ।

सुरसाग्रज-पु० [सं०] श्वेत तुलसी ।

सुरसाग्रणी-श्री० [सं०] सफेद तुलसी ।

सुरसाच्छ-पु० [सं०] श्वेत तुलसीका पत्ता ।

सुरसाविधर्ग-पु० [मं०] आशुवैदर्भ नवीषधियोंका एक विशेष वर्ग जो श्वास, श्वासी, कृमि आदिका नाशक माना जाता है ।

सुरसाह-पु० [सं०] सुरसा, सिंधुद्वी, बृहती, तुलसी, ब्राह्मी, कंटकारी, पुनर्वा, मुनिम-इन आठ औषधियोंका समाहार ।

सुरसुराज-ज० कि० कीर्णका रंगका; सुजली होना ।

सुरसुराह-श्री० सुजली; सुरसुरानेका पाव ।

सुरसुरी-श्री० सुरसुराहः छिन्दर नामकी आतिशयाजी; काल रंगका एक कीड़ा जो अनाजमें लगता है; एक कीड़ा जिसके काटनेसे जलन होती है । * सुरसुरी, गया ।

सुरहना-ज० कि० (वाक् आदिका) भर जाना, सख्त जाना - 'सुरकी धार देहवन् आषी' - छत्रप्रकाश ।

सुरहरा-वि० जिसमें 'सुर-सुर'की आवाज निकलती हो ।

सुरहिन-श्री० दे० 'सुरही' ।

सुरही-श्री० गाय; चमरी गाय; एक घास; दे० 'सौरही' ।

सुरहुरी-श्री० पानी, भरी आदिका लाघ-नलिकामें बजाय श्रामनलिकामें चढ़ जाना या उमसे होनेवाली महेदना ।

सुरहीनी-पु० पुष्पागकी जातिका एक पेड़ ।

सुरांगना-श्री० [सं०] देवपत्नी, अम्परा ।

सुरा-श्री० [सं०] सद्य, शराव; जल; पानपात्र; सोम ।

-कर्म(श्)-पु० सुरा द्वारा किया जानेवाला एक संस्कार ।

-कार-पु० शराव जुआनेवाला, कलाक ।

-कुंभ-घट-पु० शराव रखनेका मटका या घड़ा, मद्यपात्र ।

-सूह-पु० मदिरालव ।

-ग्रह-पु० पानपात्र; मद्यपात्र ।

-जीवी(श्चि)-पु० कलाक ।

-दृष्टि-श्री० मदिरालव; शराव रखनेका चर्मपात्र ।

-धर-पु० एक अमुर ।

-ध्वज-पु० मद्यपात्रका चिह्न जो मनुके अनुमान मद्यके मलकपर गर्म कोहेंस हाथ दिया जाना चाहिये; मदिरालवके द्वारापर लगाया जानेवाला सड़ा ।

-ध-वि० सुरापान करनेवाला, शरावी; चतुर; सुदूर ।

पु० मदिराघटक ।

-पात्र-पान-पु० शराव पीना; मद्यपानके समय खायी जानेवाली चाट, गन्धक; पूर्वी भारतका निवासी (सुरापानके कारण) ।

-पी(सिच)-वि० दे० 'सुराप' ; शरावियोंको रखनेवाला ।

-पीत-वि० जिसने मद्यपान किया है ।

-पीह-पु० मद्यपात्र ।

-प्रिच-वि० जिसने मद्य पिया है ।

-ककि-वि० जिसने मदिराका तर्पण दिया जाय ।

-बीज-पु० शराव बनानेके काम आनेवाला एक पदार्थ; मद्यकेन ।

-जीह-पु० दे० 'सुरा-

पात्र' ।

-भाष, -मंढ-पु० (खमीर पैदा होनेपर)

शरावके ऊपर उठ जानेवाला फेन, मद्यकेन ।

-आजन्-पु० मदिरा रखने या पीनेका पात्र ।

-अच-वि० मद्य, मस, शरावके नशेमें चूर ।

-मद-पु० शरावका मस ।

-सुख-वि० जिसके मुखमें शराव हो ।

पु० एक नागा-सुर ।

-मेह-पु० प्रमेह रोगका एक भेद ।

-मेही(श्चि)-वि० सुरामेहका रोगी ।

-वारि-पु० मदिरा; सुराभि ।

-वृत्त-पु० सूर्य ।

-संशान-पु० शराव जुआना ।

-समुद्र-पु० दे० 'सुराभि' ।

-सार-पु० मद्यका मार, 'सिचिद' ; 'अलकोहल' ।

सुराई-श्री० शरवा, बहादुरी ।

सुराकर-पु० [सं०] शरावकी मट्टी; आरिषट्का पेड़ ।

सुराख-पु० दे० 'सुराख' ; सुराग ।

सुराग-पु० दे० 'सुराग' ; [सं०] प्रगाढ़ भ्रम; अन्धता रंग; अन्धता राग ।

सुरा-पु० [मं०] खोज; निशान; पद-चिह्न ।

-रस्य-पु० पता लगानेवाला, खोजी; अमृत ।

-रसानी-श्री० खोज, नकाश ।

सुरागाध-श्री० एक तरङ्गकी जगली गाय जिसकी पूँछके बालका चंभर बनाते हैं ।

सुरागार-पु० [सं०] शराखाना; देवालख ।

सुरागी-पु० खोजी; आसक्त सुखधिर ।

सुराग्र-पु० [सं०] (सुराके पहले उत्पन्न) अमृत ।

सुराग्र-पु० [सं०] ब्रह्मस्वति ।

सुराज-पु० अन्धता राज्य; स्वराज्य ।

सुराजक-पु० [सं०] भेंगरा ।

सुराजा(ज)-पु० [सं०] अन्धता राजा ।

सुराजिका-श्री० [सं०] छिपकली ।

सुराजी-पु० स्वराज्य चाहनेवाला, स्वतंत्रताके आदीकनमें भाग लेनेवाला ।

सुराजीव-पु० [सं०] विष्णु; कलाक ।

सुराजीवी(श्चि)-पु० [सं०] कलाक ।

सुराज्य-पु० [सं०] सुदूर, प्रजापत्य राज्य; † दे० 'स्वराज्य' ।

सुराधी-श्री० अनाजकी शर्के पीटनेका ढंढा ।

सुराधि-पु० [सं०] सुमेरु रस ।

सुराधम-पु० [सं०] अमय, निकट देवता ।

सुराधानी-श्री० [सं०] शराव रखनेका छोटा बड़ा ।

सुराधिच, सुराधीश-पु० [सं०] ईश ।

सुराध्वज-पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु (ह्रस्वा); शिव ।

सुराधक-पु० [सं०] देवपट्टह ।

सुराानीक-पु० [सं०] देवसेना ।

सुरापगा-श्री० [सं०] गंगा ।

सुराधि-पु० [सं०] सुराका समुद्र, पुराणोक्त समुद्र-विशेष ।

सुराध-पु० अन्धता, मेह राजा ।

सुराधुच-पु० [सं०] देवाक्ष ।

सुरारवि-श्री० [सं०] देवमाता, अदिति ।

सुरारि-पु० [सं०] दिवताओंका शत्रु अमुर, राक्षस एक रोगकारक दैत्य; बौद्धकी क्षनकार ।

-ध, -ईता(श्)-

पु० असुरोंका नाश करनेवाले, विष्णु । -हा(हव)-
पु० शिव ।

सुराही-**खी** एक बरसाती घास ।

सुराह-**पु०** [सं०] देवपूजा ।

सुराह-**पु०** [सं०] देवताओंको सतानेवाला, असुर ।

सुराह-**पु०** [सं०] हरिचंदन; सुवर्ण; केसर ।

सुराह-**पु०** [सं०] वैजवंती; बरबरक ।

सुराह-**पु०** [सं०] राल ।

सुराह-**पु०** [सं०] स्वर्ग; मेरु; देवालय; मदिरालय ।

सुराह-**पु०** [सं०] सातका नायकी कला ।

सुराह-**पु०** [सं०] सुंदर ध्वनि ।

सुराह-**पु०** [सं०] स्वरका आरोह-अवरोह; सुरालापन ।

सुराह-**पु०** [सं०] दे० 'सुरावनि' ।

सुराह-**पु०** [सं०] अदिनि; ध्वनि ।

सुराह-**पु०** [सं०] सुमेरु; स्वर्ग; देवालय ।

सुराह-**पु०** [सं०] मेरु पर्वत ।

सुराह-**पु०** [सं०] पश्चिम भारतका एक प्रदेश, आधुनिक
पूरत; दशरथका एक मंत्री । वि० अष्टे राज्यवाला ।

-**ज**-वि० सुराहमें उत्पन्न । पु० गोपीचंदन; काली मृग;
लाल कुक्षी; एक विष । -**जा**-**खी** गोपीचंदन ।

सुराह-**पु०** [सं०] किरकरी ।

सुराह-**पु०** [सं०] एक तरबका तीक्ष्ण भासव ।

सुराह-**पु०** [सं०] सुर और असुर । -**गुरु**-**पु०** शिव;
कश्यप । -**विमर्द**-**पु०** देवताओं और असुरोंका संघर्ष ।

सुराह-**पु०** [सं०] देवालय ।

सुराह-**पु०** [सं०] लंबी गरदन और तग मुँहका वरतन
जिसमें पहले शराब रखते थे, पर अब अधिकतर पानी रखने
के काम आता है; सुराहीकी शक्कल कपडा जिते अगरले
आदिकी दोनों बगलोंके नीचे सुंदरताके लिए लगाते हैं;
जैचेका चिकमके नीचे रखनेवाला हिस्सा; बाजू आदि
गहनोंमें नीचे लटकनेवाले घुलमें लगाया जानेवाला
(सुराहीकी शक्कल) टुकड़ा । वि० लंबा और सुझनुया,
सुराहीदार । -**दार**-वि० सुराहीकी शक्कल । -**भारवृष**
-**खी** लंबी और सुंदर गरदन । -**मुँह**-**पु०** सुराही-
नुमा मुँहकी बहुरा पाजेबमें लगाये जाते हैं । -**जुमा**
-वि० सुराहीकी शक्कल ।

सुराह-**पु०** [सं०] देवदास; मयवक; हरिद्र वृक्ष ।

सुराह-**पु०** [सं०] देवदास; लगाविषय ।

सुरि-**पु०** [सं०] बहुत बड़ा बनी ।

सुरिवाक्ता-**पु०** शीत ।

सुरी-**खी** [सं०] देवागना-‘नरी किलरी आसुरी ठुरी
रहत सिरनाय’-कविप्रिया ।

सुरी-**खी** ठुरी ।

सुरीका-वि० मधुर स्वरवाला ।

सुरंग-**पु०** [सं०] शीमांजना; दे० 'सुरंग' । -**बुक्(ब)**-
पु० सेंध लगा देनेवाला चोर ।

सुरंग-**खी** [सं०] सुरंग, सेंध आदि ।

सुरंग-**पु०** [सं०] दे० 'सुरंग' ।

सुरंग-**खी** [सं०] एक प्राचीन नदी ।

सुरंग-**पु०** [सं०] किलका वसा अच्छा हो, प्रसन्न; दे० 'सुरंग' ।

-**क**-वि० दे० 'सुरंग' ।

सुरंग-**खी** [सं०] सुरंग, संस्कृत रुचि; सुंदर प्रकाश;
सुरीति; राधा सतानपादकी पत्नी, भुवकी सौतेली माँ ।

वि० सुंदर रुचिवाला । पु० एक यक्ष; एक संघर्ष राजा ।

सुरंग-**वि०** [सं०] बहुत बीमार । * पु० दे० 'सुरंग' ।

-**मुखी**-**खी** दे० 'सुरंग' ।

सुरंग-**खी** [सं०] सतलज नदी ।

सुरंग-**पु०** दे० 'सुरंग' ।

सुरंग-**वि०** [सं०] अच्छा शहवाला, सुंदर; विद्वान् ।
पु० शिव; दूत; एक असुर; तामस मन्वंतरका एक देव-
र्ग; पलासपीपल; * स्वरूप ।

सुरंग-**वि०** [सं०] अच्छा आकृतिका, सुंदर ।

सुरंग-**वि०** [सं०] रूपवती, सुंदरी । **खी** भार्या;
सरिबन; सेवती; बेल; एक अम्तरा; एक नागकन्या; एक
पौराणिक नौ ।

सुरंग-**पु०** [सं०] आनंद; इच्छा, सुख; नशा, सुमार;
मातृकता । -**खेच**-वि० नशा पैदा करनेवाला,
मादक । **सु** -**गठना**-**अमना**-**हलका** नन्हा बीना,
आँखोंमें नशेकी सुई आना ।

सुरंग-**पु०** [सं०] खबर, गर्दनाथ ।

सुरंग-**पु०** [सं०] देवराज, इन्द्र; एक कूट, ओक । -**कं**-
पु० काटनेवाला ओक । -**शोष**-पु० बीरबहुटी । -**खाप**-
पु० इद्रधनुष । -**जिह**-पु० (इंद्रकी जीतनेवाला) गदद ।

-**दुख**-पु० दुःखपति । -**साक्षा**-**खी** एक किलरी ।

-**लुप्त**-पु० इंद्रजित, निरका गवापन । -**लोक**-पु०

इंद्रकी । -**ब्रह्मा**-**खी** एक वर्णवृत्त ।

सुरंग-**पु०** [सं०] काटनेवाला ओक ।

सुरंग-**पु०** [सं०] बर्तनी-पु० (१८६८ में १९२५)-प्रसिद्ध
राष्ट्रवादी नेता तथा मशहूर वक्ता; बगभगको रद करानेमें
इनका बड़ा हाथ था ।

सुरंग-**पु०** [सं०] इद्राणी ।

सुरंग-**खी** [सं०] एक किलरी ।

सुरंग-**वि०** [सं०] सुंदर रेखाएं बनानेवाला ।

सुरंग-**खी** [सं०] सुंदर रेखा; सुख-सुखक रेखा ।

सुरंग-**पु०** [सं०] दुःखपति; दुःखपति ग्रह । -**बुग**-
पु० दुःखपतिका पौत्र बधौका काक ।

सुरंग-**खी** [सं०] तुलसी; ग्राही ।

सुरंग-**पु०** [सं०] बमरेणु । **खी** सप्त सरस्वतिवोंमें पं-
गित एक नदी; विवस्वन्की पत्नी । -**पुष्प**-**पु०** एक
संघर्ष राजा ।

सुरंग-**पु०** [सं०] असुर ।

सुरंग-**पु०** [सं०] अति नीचवाक्, अति पराक्रमी ।

सुरंग-**पु०** सैंध ।

सुरंग-**खी** [सं०] दे० 'सुरंग' ।

सुरंग-**वि०** [सं०] सुंदर जावाजवाला, सुरीला । पु० देव-
हस्ती; दीन ।

सुरंग-**पु०** [सं०] एक तरबकी सुराही, रामभूष ।

सुरंग-**पु०** [सं०] देवराज; इंद्र; विष्णु; शिव; एक देवता;
एक अति । -**लोक**-पु० इंद्रलोक ।

सुरंग-**खी** [सं०] दुर्गा ।

सुरेश्वर-पु० [सं०] ब्रह्मा; शिव; एक मूढ़ ईश्वर ।
सुरेश्वराचार्य-पु० [सं०] मदन मिश्रका गंकराचार्यकी शिष्यता और सम्प्रदाय-प्रवर्तक बाटका नाम ।
सुरेश्वरी-स्त्री [सं०] दुर्गा; स्वर्गमा; लक्ष्मी; राधा ।
सुरेश-पु० [सं०] सुरपुत्राभिः वही मौलसिरी; क्लृप्त्यः; साल ।
सुरेश्वर-पु० [सं०] बाल; बाल-निर्वास ।
सुरेश्वर-स्त्री [सं०] माता ।
सुरेश्वर-पु० दे० 'सुरेश' ।
सुरै-स्त्री एक हानिकर वास । [सं०] बहुत भारी ।
सुरैत-स्त्री रत्नेकी । -वाल, -वाला-पु० सुरैतके पेटसे जनमा हुआ लड़का ।
सुरैतिन-स्त्री दे० 'सुरैत' ।
सुरैवा-पु० [अ०] कृष्णशक्तिमें रहनेवाले मान लक्षणोंका समुदाय ।
सुरोच-पु० [सं०] यक्षबाहु द्वारा प्राप्त एक वर्षा; यक्षबाहुका एक पुत्र ।
सुरोचना-स्त्री [सं०] कांसिकेयकी एक मातृका ।
सुरोचि-वि० सुन्दर ।
सुरोचि(स्)-पु० [सं०] वसिष्ठका एक पुत्र ।
सुरोत्तम-पु० [सं०] गये, इन्द्र; त्रिभुज; सुराफेन । वि० देवताओंमें श्रेष्ठ ।
सुरोत्तम-स्त्री [सं०] एक अप्सरा ।
सुरोत्तर-पु० [सं०] चंदन ।
सुरोद-पु० मरोद; [सं०] सुराका मसुद्र; [फा०] गान, गीत । -नवाङ्ग-पु० गवैया ।
सुरोबा(यस्)-पु० [सं०] एक योगप्रवर्तक ऋषि ।
सुरोपम-वि० [सं०] देवतत्त्व ।
सुरोपवाम-पु० [सं०] मरिचापात्र ।
सुरोमा(र)-वि० [सं०] सुन्दर रोमोवाला । पु० एक नागासुर ।
सुरोचन-पु० [सं०] एक देव-सेनापति ।
सुरौक(स्)-पु० [सं०] स्वयं; देवालय ।
सुर्र-वि० [फा०] लाल । स्त्री० चूचकी, रस्सी; गंजीफेका एक खेल । -दाना-पु० एक बूटी । -पोश-वि० जो लाल कपड़े पहने हो । -रू-वि० जिसका मुँह लाल हो; मफल, यक्ष्मा; प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला । -रूई-स्त्री० सफलता; सम्मान, प्रतिष्ठा । -सक्रोद-वि०, पु० दे० 'सुरोक्रोद' । -सर, -सार-पु० एक विशिष्टा जिसका सिर लाल होता है; (ला०) इरानी । -(खैँ)-सक्रोद-वि० जिसकी गौराईमें सुन्नी मिळी हो; सुन्दर । पु० सुन्नी मिळी हुई गौराई; (ला०) सोना-चोरी । **सु०** -होना-दे० 'काल होना' ।
सुर्र-पु० लाल रंग; लाल रंगका कटुतर; घोड़ेका एक रंग; एक तरहका आम; अँसपर होनेवाली सुर्खी ।
सुर्रवि-पु० [फा०] चकवाक, चकवा-चकवी । -का पर-अनीसी बात, सास-लूरी (हलमियोंमें लगाये जानेके कारण) । **सु०** -० लगा होना-कोई अनीसी बात, कोई कास लूरी होना ।
सुर्र-स्त्री [सं०] लाल रंग; लाल साड़ी; शीर्षक; ईंटोंका

चूरा जो ईंटोंकी गुहाई और फाई बनानेकी काम जाता है । -सावक-वि० जिसमें हल्की काल रंगत हो ।
सु० -कायम करना-शीर्षक लगाना ।
सुर्र-वि० समझदार ।
सुर्र-स्त्री [सं०] 'सुर्र' ।
सुर्रक, सुर्रकी-पु० दे० 'सुर्रकी' ।
सुर्रचित-वि० [सं०] जिसमें स्थान, उपवास कराया गया हो ।
सुर्र-वि० [सं०] शुभ लक्षणोंवाला; भाग्यवान् ।
सुर्रक्षण-वि० [सं०] सुन्दर वा शुभ लक्षणोंवाला; भाग्य-शाली । पु० सुन्दर वा शुभ लक्षण; परीक्षण ।
सुर्रक्षणा-वि० स्त्री० [सं०] सुन्दर वा शुभ लक्षणोंवाली । स्त्री० उमाकी एक सखी; कृष्णकी एक पत्नी ।
सुर्रक्षणी-वि० स्त्री० दे० 'सुर्रक्षणा' ।
सुर्रक्षित-वि० [सं०] सुपरीक्षित; सुनिश्चित ।
सुर्रग-अ० निष्कट, पास ।
सुर्रगान-स्त्री सुलगनेकी क्रिया ।
सुर्रगाना-अ० कि० (लकरी, उपले आदिका) भाग एक-बना, जलने लगना; (तंबाकू आदिका) चुर्खी देने लगना, पीने लायक होना; (ला०) श्वायें जलना; कुड़ना ।
सुर्रगाना-सं० कि० भाग जलाना; अक्षकाना; क्षण-उकलाना; (तंबाकू आदि) पीने लायक बनाना ।
सुर्रगन-वि० [सं०] 'मे' खटापूर्वक लगा हुआ, नहींन । पु० शुभ सुहृत् ।
सुर्रगन-वि०, पु० दे० 'सुर्रक्षण' ।
सुर्रगनी-वि० स्त्री० दे० 'सुर्रक्षणा' ।
सुर्रक-वि० देखनेमें सुन्दर ।
सुर्रक्षण-स्त्री सुलगनेकी क्रिया, सुलगान ।
सुर्रक्षणा-अ० कि० शुष्की, उलझी हुई टोर आदिका सुलगना; ममेलिका हल होना, उलझन, पेचीदगीका दूर होना ।
सुर्रक्षणा-सं० कि० शुष्की खोलना, उलझन दूर करना; हल करना, पेचीदगी दूर करना ।
सुर्रक्षान-पु० सुलगनेका भाव; निश्चय ।
सुर्रकटा-वि० भीषा, 'उलटा'का उलटा ।
सुर्रकान-पु० [अ०] बादशाह; हिंदुस्तानके तुर्क बाद-शाहों और तुर्कोंके मन्त्रालयोंकी पदवी ।
सुर्रकाना-स्त्री [अ०] मलिका; सुलगानकी पत्नी वा स्त्री । -चंपा-पु० एक पेड़, पुष्पाव ।
सुर्रकानी-वि० सुलगानका, झाड़ी । स्त्री० राज्य, बाद-शाही । -बानात-स्त्री० एक तरहकी बहुत बढ़िया और मोटी बानात । -सुर्रक-स्त्री० सुलगानका एक भेद जिसकी चोटी स्वाह और पर सुर्खी-मायल होती है ।
सुर्रक-वि० लचीला; नाजुक ।
सुर्रक-पु० बिना तवा रले भरा हुआ तंबाकू; सोबेकी तरह भरकर पिया जानेवाला तंबाकू; परस । - (कै)-बाज-वि० गौश, परस पीनेवाला ।
सुर्रक-वि० [सं०] जो आसानीसे मिल जाय, सुलभ, आसान; (किन्नीके किये) स्वाभाविक, समुचित; उपयोगी ।

पु० अग्निहोत्रकी अग्नि । -कोष-वि० जो आसानीसे भस्काया, कुपित किया जा सके ।
सुखना-की० [सं०] बंदकास्त्री एक ब्रह्मवादिनी महिला; तुलसी; माधवणी; बेला ।
सुखन्य-वि० [सं०] जो आसानीसे प्राप्त हो सके ।
सुखलिक-पु० [सं०] एक वर्णसंस्कार जाति ।
सुखलित-वि० [सं०] अति कलित; सुंदर; क्रीडानीक; बहुत प्रसन्न ।
सुखलण-वि० [सं०] उपयुक्त मात्रा में नमक मिलाया हुआ ।
सुखह-की० [अ०] मेल, परस्पर अनुकूलता; लड़ाई या झगड़े बाद किया जानेवाला मेल, समझौता । -कुल-वि० सन्धे साय मेल रखनेवाला, जो किसीके साथ शत्रुभाव न रहे । की० सन्धे साय मेल, मैत्री रखना । -नामा-पु० वह कागज जिसमें मूल्य हो जानेकी बात या उसकी धातें लिखी गयी हों, राजीनामा, संविषय ।
सुखाका-सं० कि० छेद करना; † सोने-चाँदीकी तपाकर परखना ।
सुखाना-अ० कि० दे० 'सुखाना' ।
सुखाका-सं० कि० किसीकी सोने या नेटलेमें प्रवृत्त करना ।
सुखाय-वि० [सं०] दे० 'सुखय' ।
सुखानी(मिन्)-पु० [सं०] एक कवि ।
सुखाह-की० दे० 'सुखह' ।
सुखिप-वि० स्वल्प ।
सुखिपि-की० [सं०] उत्तम, स्पष्ट कवि ।
सुखलित-वि० [सं०] जो क्रीडा या आनंदमें इधर-उधर घूम रहा हो; बहुत क्षतिग्रस्त ।
सुखल-पु० तीसरा आय, तिहाई ।
सुख-वि० [सं०] अच्छी तरह काटनेवाला ।
सुखल-पु० [अ०] वर्णाश्र, व्यवहार, आचरण; नेकी, मर्यादा; मेल; सुहृद्भाव (सुखकसे रहना); श्वशुरसामीप्यकी इच्छा, भगवान्की पानेकी प्रवृत्ति ।
सुखल-वि० [सं०] शुभ रेखाओंवाला; शुभ रेखाओं वनानेवाला । पु० सुंदर लेख ।
सुखलक-पु० [सं०] सुंदर अक्षर लिखनेवाला, सुशनवीस; सुंदर लेख, निबंध लिखनेवाला ।
सुखेमा-पु० दे० 'सुखेमान' ।
सुखेमान-पु० [फा०] ताकदका बेटा; बहुविधोंका तीसरा बादशाह जिम्मे वरुणकर्म ज्योतिषा निर्माण कराया और जिसकी गणना विश्वके सबसे बड़े मनीषियोंमें की जाती है ।
सुखेमान-वि० 'सुखेमानका; सुखेमानसे सबद्ध । की० सुखेमानका पर । पु० एक दोरगा, बहुमूल्य पत्थर । -बनक-पु० एक प्रसिद्ध पाक कूर्प । -सुरमा-पु० एक करामाती सुरमा (कहा जाता है कि इसे लगाने पर निवास दिखार देते हैं) ।
सुखीक-पु० [सं०] स्वर्ग ।
सुखीचन-वि० [सं०] सुंदर अँखियोंवाला । पु० विरल; चकीर; रहस्यमयी पिता; श्वशुराह्वा एक पुत्र; एक वैश्य; एक पुत्र ।
सुखीचन-वि० की० [सं०] सुंदर अँखियोंवाली । की०

मेघनादकी पत्नी जो वासुकि नागकी कन्या थी; एक अप्सरा; एक यक्षिणी ।
सुखीचनी-वि० की० दे० 'सुखीचन' ।
सुखीचन-वि० [सं०] सुंदर रौमों या बालोंवाला ।
सुखीचनी-की० [सं०] जटामांसी ।
सुखीमन-वि० [सं०] दे० 'सुखीम' ।
सुखीमन-की० [सं०] कामजवा; जटामांसी ।
सुखीमा-की० [सं०] ताजबली; मांसरोषिणी ।
सुखीमा(मन्)-वि० [सं०] दे० 'सुखीम' ।
सुखीक-वि० [सं०] बहुत इच्छुक ।
सुखीह-पु० [सं०] एक तरहका बड़िया लोहा ।
सुखीह-पु० [सं०] पीतल ।
सुखीहित-वि० [सं०] गहरा लाल । पु० सुंदर काल रंग ।
सुखीहिता-की० [सं०] अधिकी सत जिह्वानोंमेंसे एक ।
सुखीही(विन्)-पु० [सं०] एक कवि ।
सुखस-पु० दे० 'सुखस' ।
सुखस-पु० [सं०] बहुदेवका एक पुत्र; सुंदर वज्र । -कोष-वि० बसुंरीकी तरह मधुर स्वरवाला ।
सुखसेख-पु० [सं०] एक तरहका ऊल ।
सुखस-पु० दे० 'सुखस' ।
सुख-पु० पुत्र ।
सुखका-वि०-पु० [सं०] सुंदर वक्ता, वाग्मी ।
सुखचन-वि० [सं०] सुंदर मुखवाला, सुमुख; अच्छे स्वरोंवाला । पु० सुंदर मुख; अच्छा उच्चारण; शिव; स्कंदका एक पार्श्व; बनलुकी, बनबंदी ।
सुखका-की० [सं०] विजया और विभीषणकी माता ।
सुखका(सस्)-वि० [सं०] सुंदर, बीसी छातीवाला ।
सुखच-वि० [सं०] जो आसानीसे कहा जा सके ।
सुखचन-पु० [सं०] सुंदर वक्ता । वि० सुखका; मधुरभाषी ।
सुखचनी-वि० की० मधुरभाषिणी । की० [सं०] एक देवी ।
सुखका-की० [सं०] एक वक्ता ।
सुखका(सस्)-वि० [सं०] वाग्मी, सुखका ।
सुखका-वि० [सं०] सुंदर वक्तावाला । पु० इन्द्र ।
सुखका-पु० दे० 'सुखका' ।
सुखका-की० [सं०] एक दिवकुमांसी ।
सुखचन-वि० [सं०] सुंदर मुखवाला । पु० एक वीर, सुमुख, बनबंदी ।
सुखचना-वि० की० [सं०] सुमुखी । की० एक वृत्त ।
सुखच-पु० [सं०] यक्ष; अग्नि; चंद्रमा; * पुत्र; पुण्य, मृगन-देवता; पंडित । * वि० अच्छे मनवाला ।
सुखका-पु० नौता ।
सुखगारा-पु० दे० 'सुखन' ।
सुखपु(स्)-की० [सं०] एक अप्सरा । वि० श्वशुर शरीरवाला ।
सुखवा-की० [सं०] वह जिसमें स्त्री-पुरुष दोनोंके चिह्न हो; प्रीति की ।
सुखचन-पु० सोना, सुवर्ण ।
सुखर्ष-वि० [सं०] अच्छे स्वाद-समाजवाला ।
सुखर्षक, **सुखर्षिक**-पु० [सं०] सखी ।
सुखर्षक-पु० [सं०] एक देश; काला नमक; शिव ।

सुवर्चल-की० [सं०] दसवीं पक्षी; माक्षी; जलसी; आनित्यमत्ता, दुःख; दुर्लभकी कूल ।
सुवर्चल-पु० [सं०] शिव । वि० दीप्तिमान् ।
सुवर्चसी (सिन्) -पु० [सं०] शिव; सखी ।
सुवर्चस्क-वि० [सं०] कांतिमान्, दीप्तिमान् ।
सुवर्चा (चल) -वि० [सं०] सुंदर तेजसे युक्त, तेजस्वी ।
 पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; गवक्षका एक पुत्र; स्कंदका एक पार्श्व; दसवें मनुका एक पुत्र ।
सुवर्चिका-की० [सं०] सखी; जतुका लता ।
सुवर्ची (चिन्) -पु० [सं०] सखी ।
सुवर्चिका-की० [सं०] जतुका लता ।
सुवर्च-वि० [सं०] अच्छे रंगका; पीला, सुनहरा; चमकीला; सोनेका बना हुआ; अच्छी जातिका; प्रसिद्ध ।
 पु० अच्छा रंग; अच्छी जाति; सोना; एक वस्त्र; शिव; धनुरा; सोनेका सिक्का; मोठह मांझी सोनेकी एक तीर्थ; धन, दौलत; हरिचंदन; एक तरहका गेरू, स्वर्णगैरिक; नामदेसर; एक वृत्त; दशरथका एक मंत्री; एक देवगर्भव; एक कद, सुवर्णालु; अंतरिक्षका एक पुत्र; कण-गुग्गुलु; एक पौधा, गौर मुवर्ण; स्वरका शुद्ध उच्चारण; एक तीर्थ; एक लोक । -कदली-की० चंपाकेला । -कमल-पु० रत्न-कमल । -कनरी-की० एक वृक्ष । -कर्ता (रु), -कार, -कृत्-पु० सुनार । -कष-पु० सोनेकी एक तील जो रवे मांझीकी होमा थी । -केमकी-की० लाल केतकी । -केश-पु० एक नागासुर (बौ०) । -क्षीरी-की० एक पौधा, स्वर्णक्षीरी । -गणित-पु० अक-गणितका अग्रविशेष; सोनेकी तील और शुद्धिका हिसाब । -गर्भ-वि० जिसमें सोना भरा हो । पु० एक बोधिमत्त्व । -गर्भा-वि० की० सोनेकी खानोवाली, स्वर्णप्रसवा (भूमि) । -गिरि-पु० एक पर्वत (जो राजगृहमें है) । -गैरिक-पु० लाल गेरू । -गोत्र-पु० एक राज्य (बौ०) । -ग्रंथि-की० सोना रखनेकी थैली । -ज्य-पु० रौंसा । -चंपक-पु० पीला चंपक । -चक्रवर्ती (सिन्)-पु० राजा । -चूच-पु० गरुडका एक पुत्र; एक पक्षी । -चूल्-पु० एक पक्षी । औचित्य-पु० एक वर्णसंकर जाति जो सोनेका व्यापार करती थी । -ज्योति (स्)-वि० सुनहरा; कतिवाला । -सिलका-की० ज्योतिष्मती लता । -दुग्धी-की० स्वर्णक्षीरी । -द्वीप-पु० सुमाथा टापू । -धेनु-की० दानके लिए निमित्त सोनेकी गाय । -नकुली-की० महाज्योतिष्मती । -पक्ष-वि० सोनेके पक्षोवाला । पु० गरुड । -पत्र-पु० एक तरहका पक्षी । -पद्म-पु० लाल कमल । -पद्मा-की० स्वर्गमा । -पार्श्व-पु० एक जनपद । -पाक्षिका-की० एक तरहका स्वर्णपक्ष । -पिंजर-वि० सोनेकी तरह पीला । -पुष्प-पु० राजतरुणी, वही सेवती । वि० सुनहले फूलोवाला । -पुष्पित-वि० सुवर्णसे भरा-पूरा । -पुष्पी-की० एक तरहका पौधा । -पुष्ट-वि० जिसकी मत्तह सोने की हो, जिसपर सोनेका पत्तर चढ़ाया गया हो । -प्रक्षिमा-की० सोनेकी मृत्ति । -प्रभास-पु० एक वस्त्र (बौ०) । -प्रसर, -प्रसव-पु० धलवातुक । -कला-की० चंपाकेला । -विन्दु-पु० बिन्दु; शिवकी एक मूर्ति ।

-मांड, -मांडक-पु० रत्नमय । -यू-की० उत्तर-पूर्वका एक देश । -भूमि-की० सुमाथा टापू; स्वर्णमां भूमि । -माक्षिक-पु० सोनामयकी । -माक्षिका-की० एक देवी । -माच, -माचक-पु० एक प्राचीन मान जो बारह धानका होता था । -मित्र-पु० सुमाथा । -मुक्षरी-की० एक नदी-मेदिनी-की० स्वर्णके रूपमें पृथ्वी । -मोखा-की० चंपाकेला । -पृथिका, -पृथी-की० सोनजड़ी । -रंभा-की० चंपाकेला । -रूप्यक-वि० जहाँ सोने-चांदीकी बहुतान हो । पु० एक टापू । -रेखा-की० रौंचोके पहाड़ोसे निकलकर बंगालकी खाड़ीमें गिरनेवाली एक नदी । -रेता (हस्)-पु० शिव । -रोमा (मन्)-वि० सुनहरे रोमोंवाला । पु० मेघ । -रुता-की० ज्योतिष्मती लता । -रेखा-की० (कमोटीपरकी) सोनेकी लकीर । -वणिक् (ज्)-पु० एक वर्णमकर जाति जो सोनेका व्यापार करती थी । -वर्ण-वि० सुनहरा । पु० बिन्दु । -वर्णा-की० हल्दी । -वृषभ-पु० भेटस्वरूप देनेके लिए बना हुआ सोनेका बेल । -सिलेखर-पु० एक तीर्थ । -सेखर-पु० एक प्राचीन नगर । -झी-की० आसामकी एक नदी । -झीबी (चिन्)-पु० सजबका एक पुत्र । -सिद्ध-पु० वह जो इंद्रजाल बा जादूसे सोना बना या प्राप्त कर ले । -सुत्र-पु० सोनेकी सिकड़ी । -स्नेच-पु० सोनेकी चोरी (पंच महापातकोंमेंसे एक) । -स्तेवी (चिन्)-पु० सोना चुरानेवाला । -स्थान-पु० एक जनपद; सुमाथा । -हकि-पु० एक वृक्ष ।
सुवर्णक-वि० [सं०] सुंदर रंगका; सुनहरा । पु० पीतल; सुवर्णकष; सोना; सीमा; स्वर्णक्षीरी; आरम्यध ।
सुवर्णा-की० [सं०] जड़िकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; इन्द्राज्जकी पीली जो सुवर्णकी पक्षी थी; हर्षा; काका अगर; बला; स्वर्णक्षीरी; इन्द्रावन; तितलीकी । वि० की० दे० 'सुवर्ण' ।
सुवर्णाकर-पु० [सं०] सोनेकी लान ।
सुवर्णाक्ष-पु० [सं०] शिव ।
सुवर्णाक्ष-पु० [सं०] नामदेसर; धनुरा ।
सुवर्णाम-पु० [सं०] शलपदका एक पुत्र; राजावर्त मणि । वि० सुनहरा ।
सुवर्णार-पु० [सं०] कचनार ।
सुवर्णालु-पु० [सं०] एक कंद ।
सुवर्णाङ्गा-की० [सं०] सोनजड़ी ।
सुवर्णिका-की० (सं०) पीली जीवती ।
सुवर्णिस-वि० [सं०] दे० 'स्वर्णिस' ।
सुवर्णी-की० [सं०] मूसकानी ।
सुवर्णित-वि० [सं०] खूब सुमाथा बा गोला किया हुआ; सुव्यवस्थित ।
सुवर्णु-वि० [सं०] खूब गोला । पु० तरबूज ।
सुवर्मा (मन्)-वि० [सं०] उत्तम बर्मे (कवच)से युक्त । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।
सुवर्चा-की० [मं०] अच्छी बर्णों; मलिका, मोतिया ।
सुवर्हरी-की० [सं०] पुत्रदात्री लता ।
सुवर्हि-की० [सं०] सोमराजी । -अ-पु० कंद; मृगा ।

सुबद्धिका-सुविनीत

सुबद्धिका-**खी०** [सं०] सोमराजी; जनुका ।
सुबद्धी-**खी०** [सं०] रीमराजी; कटुकी; पुत्रदात्री ।
सुबद्ध-**वि०** [सं०] जो आसानीसे बसने दिया जा सके ।
सुबद्धत-**पु०** [सं०] चैत्रपूणिमा; सुंदर वसंतकाल; मदनोत्सव ।
सुबद्धतक-**पु०** [सं०] मदनोत्सव; नेवारी ।
सुबद्ध-**वि०** जो अपने अधिकारमें हो ।
सुबद्धा-**खी०** [मं०] एक नदी । **वि०** **खी०** सुंदर बख्शो-वाली ।
सुबद्ध-**वि०** [सं०] सुखमें बहने करने योग्य; धीर; अच्छी तरह बहने करनेवाला । **पु०** वायुका एक मेर ।
सुबद्धा-**खी०** [सं०] शेफालिका; रातना; गोधापदी; एला-पणी; शल्लकी; जिह्वा; कद्रवटा; हसपदी; मंधनाकुली; मुशली; नील सिंधुवार; बीणा ।
सुबद्धा-**पु०** दे० 'स्वर्णा' ।
सुबद्ध-**वि०** [सं०] जिसने अच्छी तरह बसने दिया है । (जो जिससे चूसा हुआ एक निकाल दिया गया है) ।
सुबद्ध-**पु०** सुया, तोता ।
सुबद्ध-**वि०** [सं०] मधुरभाषी, वाग्मी । **पु०** सुंदर वाक्य ।
सुबद्धी(मिन्)-**वि०** [सं०] सुबद्धा ।
सुबद्ध-**वि०** [मं०] आसानीसे पढ़े जाने योग्य ।
सुबद्धी(जिन्)-**वि०** [सं०] पक्षमें सुसज्जित (बाण) ।
सुबद्ध-**पु०** [सं०] सुंदर संगीत ।
सुबद्धा-**सं०** कि० दे० 'सुलाना' ।
सुबद्धा-**खी०** [सं०] रामगंगा नदी ।
सुबद्ध-**पु०** [सं०] सुंदर दिन; सुपकार, रसोदय ।
सुबद्धा-**खी०** [सं०] सुंदर बातों; सुन संवाद; कृष्णकी एक पत्नी ।
सुबद्ध-**पु०** [मं०] दे० 'सवाल' । **वि०** [सं०] (नह हाकी) जिसकी पूँछपर सुंदर दाक हो ।
सुबद्धा-**खी०** [मं०] एक कला ।
सुबद्ध-**खी०** [सं०] सुंदर बास, सुगंध । **पु०** सुंदर आवास; शिव; एक वर्णवृत्त । -**कुमार**, -**कुमारक**-**पु०** कदम्बका एक पुत्र ।
सुबासक-**पु०** [सं०] नरवृक्ष ।
सुबासन-**पु०** [सं०] दमकें सम्वतर्क एक देववर्ग ।
सुबासरा-**खी०** [सं०] हिलमोचिका ।
सुबासा(सत्)-**वि०** [मं०] सुंदर बख्शोंमें युक्त; सुंदर पंखोंसे युक्त (बाण) ।
सुबासिका-**वि०** **खी०** [सं०] सुगंधित करनेवाली, सुवास देनेवाली ।
सुबासित-**वि०** [सं०] सुवासयुक्त, सुगंधित ।
सुबासिन-**खी०** दे० 'सुबासिन' ।
सुबासिनी-**खी०** [सं०] पिताके घरमें रहनेवाली सुवती; सुगंधित; मद्र सुवधा कीके छिए प्रयोगमें आनेवाला एक बादर-युक्त अश्व ।
सुबासी(सिन्)-**वि०** [मं०] आराममें या बहुत अच्छे मकानमें रहनेवाला ।
सुबासु-**खी०** [सं०] मरहटी खुंकी एक नदी, स्वान । **पु०** एक नदीके आस-पासका प्रदेश; हल प्रदेशके रहनेवाले ।

सुबाह-**वि०** [सं०] जो आसानीसे बहने दिया जा सके; अच्छे बोहोवाला । **पु०** अच्छा बोहा; खंदका एक पार्षद ।
सुबाहन-**पु०** [सं०] एक मुनि ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] अति शूर, पराक्रमी, महावीर; सुंदर गतिवाला । **पु०** अच्छी शक्ति, पराक्रम ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] दे० 'सुबिक्क' । **पु०** बोहा, वीर; शीर्ष, वीरता ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] मीर, कायर; अस्मिरचित ।
सुबिक्क-**वि०** [मं०] बहुत प्रसिद्ध ।
सुबिगुण-**वि०** [सं०] सब गुणोंमें हीन; दुष्ट ।
सुबिग्रह-**वि०** [सं०] सुंदर देहवाला, रूपवान् ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] सुंदर, सुधम विचार; सुंदर स्थाव ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] मछी भोंति सोवा-विचारा हुआ ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] जिसकी अच्छी तरह खोज की गयी हो; मुपरीक्षित ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] बिबेकशील; चतुर; जिसे जानना समझना आसान हो ।
सुबिक्क-**वि०** [मं०] जो आसानीसे निस्कारा जा सके ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] जो आसानीसे जाना-मसमा न सके । **पु०** शिव ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] सुगम; उत्तमशील । **पु०** सुपन, क्वाण; अम्युदय ।
सुबिक्क-**वि०** [मं०] अच्छी तरह फैला हुआ (जैसे जाल) ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] विष्णुकी एक मूर्ति ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] बहुत धनी, बड़ा मालदार । **पु०** समृद्धि ।
सुबिक्क-**पु०** [मं०] एक देवता ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] अतःपुरका कमेचारी या रक्षक; मोक्ष; राजा; तिलक वृक्ष ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] बहुत चालाक, काश्ची ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] बहुत सत्यपान; उदार । **पु०** कृपा, अनुग्रह; परिवार; धन-व्यपत्ति; शान ।
सुबिक्क(न्)-**पु०** [मं०] राजा ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] एक प्राचीन जाति ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] अतःपुरका रक्षक; अंतःपुर ।
सुबिक्क-**खी०** [मं०] विवाहिता की ।
सुबिक्क-**खी०** [मं०] चतुर, गुणवती की ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] अच्छी तरह विदित, ज्ञान ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] विद्वान् या चतुर व्यक्ति । **वि०** विद्वान् ।
सुबिक्क-**वि०** [मं०] बड़ा विद्वान्, सुपंडित ।
सुबिक्क-**पु०** [मं०] एक अश्व ।
सुबिक्क-**वि०** [मं०] अच्छी किस्म, प्रकीर्णक; शीलवान् ।
सुबिक्क-**खी०** दे० 'सुमीता' ।
सुबिक्क-**पु०** [सं०] अच्छी व्यवस्था । **वि०** सुव्यवस्थित ।
सुबिक्क-**पु०** [मं०] वर्तमान अवस्थाकी नये अर्था (जै०) । **खी०** अच्छा निबम वा आदेश ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] सुशिक्षित; अनुशासित ।
सुबिक्क-**वि०** [सं०] अति विनीत; अच्छी तरह सिखाया-मया हुआ (यौद्धा व्यक्ति) ।

सुविधीता-स्त्री० [सं०] आसानीसे दूरी जानेवाली गाय ।
सुविधेय-वि० [सं०] जिसे शिक्षित करना आसान हो ।
सुविधिन-वि० [सं०] जगतीसे बरा हुआ । पु० अच्छा बन ।
सुविधीय-वि० [सं०] बहुत अर्थकर ।
सुविधु-पु० [सं०] एक नरेश जो विजुका पुत्र था ।
सुविरल-वि० [सं०] सभी वामनाओंसे मुक्त ।
सुविधिक-वि० [सं०] जो बिल्कुल अलग हो, अकेला; निर्गति ।
सुविषाक-वि० [सं०] बहुत बड़ा । पु० एक असुर ।
सुविषाका-स्त्री० [सं०] स्वर्द्धी एक मातृका ।
सुविशुद्ध-वि० [सं०] पूर्णतः स्वच्छ । पु० एक लोक (सौ०) ।
सुविषाण-वि० [सं०] बड़े दाँतोंवाला (हाथी) ।
सुविहंसी (विश्व)-वि० [सं०] अच्छी तरह संभालने, पालन करनेवाला । पु० शिव ।
सुविस्तार-पु० [सं०] बहुत अधिक फैलाव, बहुतायत, प्राप्ति । वि० बहुत विस्तृत, बड़ा; बहुत अधिक; बहुत तेज या उग्र ।
सुविस्मय-वि० [सं०] बहुत चकित ।
सुविस्मित-वि० [सं०] दे० 'सुविस्मय'; बहुत आश्चर्य-जनक ।
सुविहित-वि० [सं०] अच्छी तरह किया हुआ; अच्छी तरह रखा हुआ; सुव्यवस्थित; से मयज ।
सुवीज-पु०, वि० [सं०] दे० 'सुवीज' ।
सुवीधीय-पु० [सं०] प्रासादमें प्रवेश करनेका द्वार-विशेष ।
सुवीर-वि० [सं०] बहुत बहावीर, योद्धा; बहुतसे वीरों, पुत्रों आदिवाला । पु० रुद्र; शिव; एकवीर वृक्ष; बैरका पेड़; क्षत्रिमानुका एक पुत्र; शिविका एक पुत्र; देवप्रवाका एक पुत्र । -ज-पु० सुरमा ।
सुवीरक-पु० [सं०] बैर; सुरमा ।
सुवीरात्मक-पु० [सं०] कौंजी ।
सुवीर्य-पु० [सं०] अति वीर्यवान्, पराक्रमी । पु० बैरका फल ।
सुवीर्या-स्त्री० [सं०] वनकपास; बड़ी मतावर; नाई हाँग ।
सुवृत्त-वि० [सं०] सचरित्र, नेक; शुभ गोल; अच्छे छन्दमें रचित । पु० सुंदर वृत्त, चरित्र; सुख; कल्याण ।
सुवृत्ता-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा; किशमिश; मेवती; शतपत्नी; एक वृत्त ।
सुवृत्ति-स्त्री० [सं०] सुंदर वृत्ति, जीविका; सुंदर आचरण, सदाचार; संवत्स, पवित्रताका जीवन; ब्रह्मचर्य ।
सुवृद्ध-वि० [सं०] बजि वृद्ध; अति प्राचीन । पु० दक्षिणी दिग्गज ।
सुवैग-वि० [सं०] तेज गतिवाला ।
सुवैशा-स्त्री० [सं०] महास्त्रीतिष्ठती ।
सुवैषा-स्त्री० [सं०] एक नदी ।
सुवैद-वि० [सं०] धर्मधर्मोंका विशेषण; सुख ।
सुवैल-पु० [सं०] लंकाका विजुट पर्वत जिसपर रामजी मगाने पड़ा सिद्धा था । वि० शांत; बहुत सुका हुआ; २०-क

प्रगत, नम्र ।

सुवैश-सुवैष-वि० [सं०] सुंदर वेशयुक्त; सुंदर कपड़े पहने हुए; सुंदर; सजीवा । पु० ध्वंशित, सफेद ईश; बढिया पोशाक ।
सुवैशी (विश्व)-सुवैषी (विश्व)-वि० [सं०] सुंदर वेशयुक्त ।
सुवैषित-वि० दे० 'सुवैश' ।
सुवैस-वि० दे० 'सुवैश' । पु० सुंदर वेश ।
सुवैसक-वि० सुंदर ।
सुवैषा-पु० सोनेवाला ।
सुवैषक-वि० [सं०] साक; चमकदार; बहुत स्पष्ट; प्रकट ।
सुवैषस्था-स्त्री० [सं०] सुंदर व्यवस्था, सुप्रबंध, सुवी-जना ।
सुवैषस्थित-वि० [सं०] सुंदर व्यवस्थायुक्त ।
सुवैष्य-वि० [सं०] तितर-वितर, छिन्न-भिन्न (जैसे मेना) ।
सुवैष्य-पु० [सं०] शिखांत-बावय; शक्ति ।
सुवैष्य-वि० [सं०] सुंदर व्रतधारी; धृतासे व्रतका पालन करनेवाला, धर्ममिश्र, सौधा, सधा हुआ (शेषा आदि) । पु० ग्रामवारी; एक प्रजापति; स्वर्द्धी एक अनुचर; बर्तमान अवसर्पिणीके बीसवें अर्द्ध; भावी अवसर्पिणीके ग्यारहवें अर्द्ध; उद्योगरका एक पुत्र; रौप्य मनुका एक पुत्र; प्रियजनका एक पुत्र ।
सुवैष्य-वि० [सं०] सुंदर व्रतधारी; साध्वी । स्त्री० दक्षकी एक पुत्री; वर्तमान कल्पके पद्मवर्ध अर्द्धकी माता; कपूरकचरी; मोषी गाय; पतिव्रता स्त्री; एक अप्सरा ।
सुवैष्य-वि० [सं०] प्रगल्भनीय; शीर्षिमान्; प्रख्यात; शुभाकाक्षी ।
सुवैष्यी (विश्व)-वि० [सं०] मंगलाकाक्षी; मंगलमात्री ।
सुवैष्य-वि० [सं०] सुसाध्व, आमान, सरल ।
सुवैष्य-वि० [सं०] सख्य, ममर्थ ।
सुवैष्य-वि० [सं०] दे० 'सुवैष्य' ।
सुवैष्य-वि० [सं०] सुख, मधुर स्वरयुक्त (जैसे बाँसुरी) ।
सुवैष्य-वि० [सं०] शरण देनेवाला । पु० शिव ।
सुवैष्य-वि० [सं०] सुंदर श्रीरवाला ।
सुवैष्य (मन्त्र)-वि० [सं०] बहुत सुखी । पु० एक असुर; एक मनुका पुत्र; एक वैशालि; एक काण्व; तेरहवें मन्त्र-नरका एक देववर्ग ।
सुवैष्य-पु० [सं०] मेरका पेड़ ।
सुवैष्य-स्त्री० [सं०] कारवेल्ह, करेल; कृष्ण बीरक; करज ।
सुवैष्य-वि० [सं०] अति शांत, त्रिभुमें बरा भी क्षोभ न हो (जैसे जल); प्रशान्त ।
सुवैष्य-स्त्री० [सं०] राजा शशिध्वजकी पत्नी ।
सुवैष्य-स्त्री० [सं०] पूर्ण शांति । पु० तीसरे मन्वन्तरके रुद्र; शानिका एक पुत्र; अजमीडका एक पुत्र ।
सुवैष्य-पु० [सं०] अक्षरक; तडुलीय, चौलाई; चंबु, चंच; मिठी ।
सुवैष्य-पु० [सं०] ताजा अक्षरक ।
सुवैष्य-पु० [सं०] सुंदर शासन, उत्तम राज-प्रबंध, सुराज्य ।
सुवैष्य-वि० [सं०] अच्छी अति शान्ति; सुनिर्व्यथित ।

सुशास्त्र-वि० [सं०] जिसपर आत्मानोमे शासन या नियंत्रण किया जा सके ।

सुशिक्षिका-स्त्री० [सं०] एक पौधा, शिथीका एक भेद ।

सुशिक्षित-वि० [सं०] सुशिक्षाप्राप्त, जिसने अच्छी शिक्षा पायी हो; अच्छी तरह सपाबा, सिखाया हुआ (पौधा आदि) ।

सुशिक्ष-पु० [सं०] अग्नि । वि० सुंदर शिक्षा, चौटीवाला; अच्छी लौवाला (जैसे रोपक) ।

सुशिक्षा-स्त्री० [सं०] मोरकी शिक्षा; सुर्गेकी कलगी ।

सुशिर(रस्)-पु० [सं०] मुँहमे फूँककर बजानेका बाजा (बाँसुरी आदि) ।

सुशिरा(स्)-वि० [सं०] सुंदर सिरवाला ।

सुसिंह-वि० [सं०] सुशासित । पु० विश्वस्त मन्त्री ।

सुसीत-वि० [सं०] बहुत ठंडा । पु० पीला चंदन; पाकड़; ठढक ।

सुसीतल-वि० [सं०] अति शीतल । पु० गंधमृग; सफेद चंदन; नागदमनो; ठढक ।

सुसीतका-स्त्री० [सं०] ककरी; खीरा ।

सुसीता-स्त्री० [सं०] शनपत्री, मेवती; रथलकमल ।

सुसीम-वि० [सं०] शीतल; छेदने, बैठने लायक । पु० शीतलता । -काम-वि० बहुत आसक्त ।

सुशील-वि० [सं०] सुंदर शीलवाला, सत्स्वभाव; सच्चा रिश्ता; विनीत; सीधा । पु० कुंजीयका एक पुष्प; अच्छा स्वभाव ।

सुशीलता-स्त्री० [सं०] सच्चरित्रता; विनम्रता; सीधापन ।

सुशीला-स्त्री० [सं०] सुदामाकी पत्नी; यमकी पत्नी; कृष्णकी आठ परदानियोंमें एक; राधाकी एक सहेली । वि० स्त्री० दे० 'सुशील' ।

सुसीविका-स्त्री० [सं०] बाराहीचंद ।

सुसुम-वि० [सं०] बहुत सुंदर; मंगलमय (दिक्क); बहुत नेक (काम) ।

सुसुग्ग-वि० [सं०] सुंदर सींगोवाला । पु० शृंगा कवि ।

सुसुग्गर-वि० [सं०] अच्छी तरह अलंकृत ।

सुसोण-वि० [सं०] गहरा काल ।

सुसोमन-वि० [सं०] अति सुंदर, सुहावना ।

सुसोमित-वि० [सं०] अति शोभायुक्त, जो बहुत मज्जा-फनता हो ।

सुस्रम-पु० [सं०] धर्मका एक पुत्र ।

सुस्रम-वि० [सं०] सुनने योग्य ।

सुस्रवा(वस्)-पु० [सं०] एक प्रजापति; एक नगा-मुर; एक कवि । वि० प्रसिद्ध; प्रमत्तापूर्वक सुननेवाला, दगाडू ।

सुस्राध्य-वि० [सं०] जो सुननेमें अच्छा लगे, श्रुतिबधुर ।

सुस्री-वि० [सं०] अति सुंदर, शोभन; अति धनी । स्त्री० शिवोंके नामके पूर्व आदर-मृत्युनाथ जगाया जानेवाला शम्भु ।

सुस्रीक-वि० [सं०] सुंदर ली-युक्त ।

सुस्रीका-स्त्री० [सं०] सऊई ।

सुसुत-वि० [सं०] अच्छी तरह सुना हुआ; प्रसन्नतापूर्वक सुना हुआ; बहुत प्रसिद्ध; वेदक । पु० आयुर्वेदके अति

प्राचीन और स्तम्भूत आचार्य जो विश्वामित्रके पुत्र कहे जाते हैं और जिनका ग्रंथ सुसुतसंहिता आयुर्वेदकी दृष्ट-मन्त्रीके अंतर्गत है; सुसुतसंहिता । -संहिता-स्त्री० सुसुत-रचित प्रसिद्ध चिकित्साग्रंथ ।

सुसुम-पु० [सं०] धर्मका एक पुत्र ।

सुसुम्मा-स्त्री० दे० 'सुसुम्मा' ।

सुसुम्मा-स्त्री० दे० 'सुसुम्मा' ।

सुसुम्मा-स्त्री० [सं०] एक नदी ।

सुसुम्मा-वि० [सं०] स्त्री० [सं०] सुंदर निर्वर्णवाली । स्त्री० एक देवी ।

सुसिंह-वि० [सं०] मजबूतीमें जुड़ा, मिला हुआ, दृढ भावने संयुक्त; बहुत स्पष्ट वा बोधगम्य ।

सुसुलेष-पु० [सं०] घनिष्ठ संबंध; प्रगाढ़ आत्मियता ।

सुसुलोच-वि० [सं०] पुण्यशाली; सुप्रसिद्ध ।

सुसुलोच-वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध । पु० प्रिय शम्भु, प्रशंसा ।

सुसंधि-पु० [सं०] माधाताका एक पुत्र; प्रसन्नताका एक पुत्र ।

सुसंध-पु० सुख ।

सुसंधा(घन)-पु० [सं०] एक कवि ।

सुसन्म-वि० [सं०] अति मम; सुंदर; सुशील; बोधगम्य । पु० सुंदर वर्ष ।

सुसन्म-पु० [सं०] कामचक्रके दो आरे (जै०) । सुसन्मना-स्त्री० दे० 'सुसुम्मा' ।

सुसन्मनि-स्त्री० दे० 'सुसुम्मा' ।

सुसन्मा-स्त्री० [सं०] परम शोभा, अनिशय सुंदरता; एक बर्गवृत्त; कालचक्रका एक आरा (जै०); एक सुरागन एक पौधा । -हाली(लिन्)-वि० अति सुंदर ।

सुसन्मिल-वि० [सं०] सुसमायुक्त ।

सुसन्मी-पु० [सं०] कृष्ण जीरक; जीरक; करेला; धँ कारवेल्क ।

सुषा-स्त्री० [सं०] कृष्ण जीरक ।

सुषाड-पु० [सं०] शिव ।

सुषाना-सं० कि० सुखाना । अ० कि० सुखना ।

सुषारा-वि० दे० 'सुषारा' ।

सुषि-स्त्री० [सं०] छेद । पु० नल ।

सुषिक-वि० [सं०] ठंडा । पु० ठढक ।

सुषिक-वि० [सं०] अच्छी तरह मोँचा हुआ ।

सुषिम-वि०, पु० [सं०] दे० 'सुषीम' ।

सुषिर-वि० [सं०] छेदवाला, मृदास्तर, खोखला; मा० काश; विलपित (उच्चारण) । पु० बॉम; पैत; काठ; चूड़ा; छेद; अग्नि; फूँककर बजाना जानेवाला बाजा (संगीत), लौंग; वायुमण्डल; काष्ठ । -च्छेद्-पु० एक तरहकी बाँसुरी । -विचर-पु० (सोप आदिका) विक ।

सुषिरा-स्त्री० [सं०] नदी; एक सुगंधित छाल ।

सुषीम-वि० [सं०] सुंदर; शीतल । पु० चंद्रकाल मर्ग; एक तरहका सोंप; ठढक ।

सुसुस-वि० [सं०] गहरी नींदमें सोया हुआ । पु० सुपुता बच्चा ।

सुसुप्ति-स्त्री० [सं०] गहरी नींद; सत्त्वप्रधान अज्ञान-

आनन्दमय कीर्ष ।

सुसुप्त, सुसुप्त-वि० [स०] सोनेका इच्छुक, जिसे नींद लग रही हो ।

सुसुप्ता-स्त्री [स०] सोनेकी इच्छा ।

सुसुम्न, सुसुम्न-पु० [स०] सूर्यकी सात मुख्य रश्मियों-मेंसे एक ।

सुसुम्ना, सुसुम्ना-स्त्री [स०] रक्षा और पिंगला नाड़ियों-के बीचमें स्थित एक नाड़ी; आयुर्वेदके अनुसार नाभिके मध्यमें स्थित एक प्रधान नाड़ी ।

सुषेज-वि० [स०] दिग्भास्ववाला (कृष्ण, इन्द्र) । पु० विष्णु; एक गंधर्व; एक यक्ष; एक नागासुर; एक विद्या-धर; वरुणका एक पुत्र; एक वानर जो सुमीरिका चिकित्सक था; दूसरे मतका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; सुर-सेनका एक नरेश; परीक्षितका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; वसुदेवका एक पुत्र; शबरका एक पुत्र; करीदा; वैन ।

सुषेयिका-स्त्री [स०] कृष्ण मित्रता ।

सुषेयी-स्त्री [स०] मित्र ।

सुषोपति, सुषोप्ति-स्त्री दे० 'सुषुप्ति' ।

सुषोमा-स्त्री [स०] भागवतमें उल्लिखित एक नदी ।

सुष्ट-वि० भला, नेक ।

सुष्टु-अ० [स०] अतिशय, सुंदर रीतिमें; ठीक-ठीक ।

सुष्टुता-स्त्री [स०] सुंदरता; कल्याण, अशुद्ध ।

सुष्टम-पु० [स०] रस्सी ।

सुष्टम्ना-स्त्री दे० 'सुसुम्ना' ।

सुर्मकट-वि० [स०] हडतापूर्वक बंद किया हुआ; जिसको बंधाया करना कठिन हो । पु० कठिनार्थ; कठिन काम ।

सुर्मक्षेप-पु० [स०] शिव ।

सुर्मंग-पु० [स०] अच्छी सुहृत्त, सत्संग । वि० जिसके साथ रहा जाय; भिय ।

सुर्मंगल-वि० [स०] बहुत उचित, युक्त ।

सुर्मंगति-स्त्री [स०] अच्छी सुहृत्त; अच्छा मेल ।

सुर्मंगम-पु० [स०] अच्छी समा; अच्छा समासक ।

सुर्मन्त्र-वि० [स०] अपने वचनका पालन करनेवाला ।

सुर्मन्त्रि-पु० [स०] दे० 'सुर्मन्त्रि' ।

सुर्मन्त्र(ह)-स्त्री [स०] अति मनुष्य, मीमांसा ।

सुर्मन्त्र-वि० [स०] अति मन्त्र, जिसके पास ब्येष्ट बन-मपति हो ।

सुर्मभाव्य-पु० [स०] रंजन मनुका एक पुत्र । वि० जिसके होनेकी अधिक सम्भावना हो ।

सुर्मस्कृत-वि० [स०] सुंदर स्कारयुक्त; मन्त्री औंति स्कारा किया हुआ; छतादि द्वारा मन्त्री औंति पकाया हुआ ।

सुस-स्त्री स्वसा, वहिन ।

सुसकना-अ० कि० दे० 'सिसकना' ।

सुसञ्चित-वि० [स०] अच्छी तरह सजा या मजजा हुआ ।

सुसत्तामा-अ० कि० दे० 'सुसत्ता' ।

सुसत्त्व-वि० [स०] दृढ़; नहादुर ।

सुसत्त्वा-स्त्री [स०] राजा जनककी एक पत्नी ।

सुसन, सुसना-पु०, सुसनी-स्त्री एक माय, विच्छन्नक ।

सुसभेय-वि० [स०] सभाकुशल ।

सुसम-वि० [स०] लूब औरस; विकला; सुटील ।

सुसमच-पु० [स०] अच्छा समय, सुकाल ।

सुसमा-स्त्री दे० 'सुपमा' ।

सुसर-पु० पति या पत्नीका पिता, श्वसुर ।

सुसरा-पु० दे० 'सुसर' ।

सुसरा, सुसरा-स्त्री दे० 'ससुराल' ।

सुसराक-स्त्री दे० 'ससुराक' ।

सुसरित्-स्त्री [स०] गंगा ।

सुसलिक-वि० [स०] अच्छे जसवाला ।

सुसह-वि० [स०] जिसका सरलतामें सहन किया जा सके; सहनशील । पु० शिव ।

सुसहाय-वि० [स०] अच्छे माथी या सहायकनाला ।

सुसा-स्त्री दे० 'स्वसा' । पु० एक विविधा ।

सुसाधन-वि० [स०] जो आमानीमें प्रमाणित किया जा सके ।

सुसाधित-वि० [स०] अच्छी तरह सिखलाया हुआ; अच्छी तरह पकाया या तैयार किया हुआ ।

सुसाध्य-वि० [स०] जिसका मापन सहज हो, सुलसाध्य, जो आसानीमें नियंत्रणमें रखा जा सके; आसान ।

सुसाना-अ० कि० सिसकना, सिमकी भरना ।

सुसायटी-स्त्री दे० 'सोसायटी' ।

सुसार-वि० [स०] अति सारयुक्त । पु० नीलम; लाल खैर ।

सुसारना-अ० कि० समझाना, समझाकर कहना-
"दीजो नहि सुसार उरहनों मधि मधि ममहाय"-सू० ।
सुसारबाध(वत्)-वि० [स०] दे० 'सुसार' । पु० स्फटिक ।

सुसिकता-स्त्री [स०] अच्छी वास्तुका; शकर ।

सुसिक-वि० [स०] दे० 'सुसिक' ।

सुसिद्ध-वि० [स०] अच्छी तरह पका या पकाया हुआ; जिसे अच्छी सिद्धि प्राप्त हो ।

सुसिद्धि-स्त्री [स०] एक अर्थालंकार जहाँ एक मनुष्यके परिश्रम करने तथा उसका फल किसी दूसरेको मिलनेका वर्णन हो ।

सुसिर-पु० [स०] एक दंतारोग ।

सुसीम-वि० [स०] अच्छी सीमाओवाला; सुंदर सीमात-युक्त । पु० बिंदुमारका एक पुत्र ।

सुसीमा-स्त्री [स०] अच्छी सीमा; छटे आईतकी माता ।

सुसुकना-अ० कि० सिमकना ।

सुसुषी-स्त्री दे० 'सुसुषी' ।

सुसुषि-स्त्री दे० 'सुसुप्ति' ।

सुसुषिमा-स्त्री [स०] चमेरी ।

सुसुप्त-वि० [स०] अति सुप्त; नाजुक; तीक्ष्ण (जैसे बुद्धि); जो अल्प समयमें न आवे । पु० परमाणु । -पद्म-स्त्री जटामोक्षी ।

सुसुप्तेस-पु० [स०] विष्णु ।

सुसुप्त-वि० [स०] अच्छी तरह पकाया हुआ; बहुत तप्त ।

सुसेव-पु० दे० 'सुपेव' ।

सुसेव्य-वि० [स०] सेवा करने योग्य; आमानीमें अनु-धावन करने योग्य (मार्ग) ।

सुसैन्यी-श्री० [सं०] अच्छी सिंघी घोड़ी ।
सुसौमग-पु० [सं०] दाम्पत्य सुख ।
सुस्कंदन-पु० [सं०] एक सुगंधित पौधा ।
सुस्कंध-वि० [सं०] अच्छे बंठलवाला । -मार-पु० दे० 'स्कंधमार' ।
सुस्त-वि० [फा०] ढीला; कमजोर; आकसी; भीमा; मद-हुकि; उदास, उतरा हुआ (बेहतर) । -कद्व-वि० भीमा चलनेवाला । -पॉर-पु० स्त्रीध नामके जंतुका एक भेद । -शय-वि० नादान । -रीछ-पु० पहाड़ीमें पाया जानेवाला एक नरहका रीछ ।
सुखना, सुस्तनी-वि० श्री० [सं०] सुंदर सनो-वाली (श्री) ।
सुखाई-श्री० सुखी ।
सुखाना-श्री० नि० थकावट दूर करना, आराम करना ।
सुखी-श्री० ठिकठाई; कमजोरी; आलस्य; पुरुषेन्द्रियकी शिथिलता । **सु०** -उदाहरण-तोड़ना-जंगल में लेना ।
सुस्तुत-पु० [सं०] सुपादर्वका एक पुत्र ।
सुस्तैन-पु० दे० 'स्वस्त्यन' ।
सुस्थ-वि० [सं०] सुखपूर्वक स्थित; स्वस्थ; सुखी; उन्नति-शील । -कद्व-वि० जो कड़ीबकरीय अच्छा हो ।
-चित्त, मानस-वि० प्रसन्नचित्त; सुखी ।
सुखयता-श्री० [सं०] आरोग्य, स्वास्थ्य; सुख; प्रमत्तता ।
सुख्य-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
सुखावती-श्री० [सं०] एक रागिनी ।
सुखित-वि० [सं०] अच्छी तरह स्थित, धृद; स्वस्थ; सुखी; निरौष; आरोग्यवान्; सीधा-सादा । **पु०** वह इमारत जिसके चारों ओर चौकिया बनी हों; चौकीका एक ग्रह (शास्त्रिहोय ?) । -मना(नस्)-वि० प्रसन्नचित्त; सुखी; सजुत ।
सुस्थितमन्य-वि० [सं०] अपनेको सुसाहाय मानने-वाला ।
सुस्थिति-श्री० [सं०] सुंदर, सुखकी स्थिति; अभ्युदय; मंगल; सुख; स्वास्थ्य ।
सुस्थिर-वि० [सं०] अधिक स्थिर, लंब रहने; शांत ।
-बीचन-वि० जिसकी युवावस्था बराबर बनी रहे ।
सुस्थिरमन्य-वि० [सं०] अपनेको लंब स्थिर मानने-वाला ।
सुस्थिरा-श्री० [सं०] एक शिरा या धमनी ।
सुस्तपु-पु० [सं०] वज्रमान ।
सुस्ना-श्री० [सं०] लेमारी ।
सुस्नात-वि० [सं०] जिसने यक्षोपरांत ज्ञान किया हो; अच्छी तरह ज्ञान किया हुआ ।
सुस्तिग्धा-श्री० [सं०] एक छता ।
सुस्वर्ष-वि० [सं०] छत्रमें बहुत अच्छा मातृज होनेवाला, सुलायम, कौयल ।
सुस्कीर-वि० [सं०] बहुत उन्नतिशील ।
सुस्मिन्-वि० [सं०] सुंदर, मधुर स्वास्त्विक, सुस्करता हुआ, हंसमुख ।
सुस्मिता-श्री० [सं०] हंसमुख श्री ।
सुस्मय-वि० [सं०] सुंदर हार पहननेवाला ।

सुखीता-श्री० [सं०] पुराणमें उल्लिखित एक नदी ।
सुख्य-पु० [सं०] एक विदुषी ।
सुख्य-श्री० [सं०] अभ्युदय, कल्याण ।
सुख्यन-वि० [सं०] सुंदर धनिवाला; सुरीला; जोरका (सम्र) । **पु०** मंथ; सुंदर स्वर ।
सुख्यन-पु० [सं०] शिव ।
सुख्य-पु० [सं०] शुभ स्वप्न; शिव ।
सुख्य-वि० [सं०] सुमधुर स्वरवाला; सुरीला; जोरका (सम्र) । **पु०** मधुर सम्र; संस; गवक्षका एक पुत्र ।
सुखांत-वि० [सं०] अच्छे या प्रसन्न मनवाला ।
सुखाद-वि० [सं०] अच्छे स्वादका, जायकेदार; मीठा । **पु०** अच्छा स्वाद ।
सुखादु-वि० [सं०] दे० 'सुखाद' । -तोय-वि० मीठे जलवाला ।
सुखाप-पु० [सं०] प्रगल्भ निहा ।
सुखि-वि० [सं०] लंब अच्छी तरह पकाया हुआ ।
सुहृग-वि० दे० 'सुहृग' ।
सुहृग-वि० मरल, मुगम ।
सुहृगा-वि० मरला, मरगाका उल्हा ।
सुहृग-वि० सुंदर, सुहावना ।
सुहृनी-श्री० दे० 'सुहृनी' ।
सुहृ-वि० [सं०] सुंदर दुर्गावाला । **पु०** एक अमुर ।
सुहृ-श्री० [सं०] सग, साथ; मिश्रता; साथ उठना-बैठना; जलसा, गोष्ठी; महवात, मैथुन । -बाप्रता-वि० जो अच्छी सगतका लाभ उठा सका हो; शिष्ट ।
-का असर-संगतिका गुण, साथका असर । **सु०** -उठाना-किसीकी मृदुल्यमें रहकर कुछ भीखना; पान रहना । -विगडना-अनवन हो जाना, मिश्रता भंग हो जाना ।
सुहृ-वि० [सं०] साथ उठने-बैठनेवाला; मैत्रीभाव रखने-वाला ।
सुहृ-पु० [सं०] एक अमुर ।
सुहृ-पु० [फा०] रस्तमका वेदा जो उम्मीके हाथों मारा गया ।
सुहृ-पु० दे० 'सुहृल' । **वि०** [सं०] अच्छे हलवाला ।
सुहृ-पु० एक राग, मृदा ।
सुहृ(स्)-वि० [सं०] सुंदर हृदि देनेवाला, धार्मिक । **पु०** एक आंगिरस; सुमन्युका एक पुत्र ।
सुहृ-श्री० दे० 'सुहृ' ।
सुहृसावन-वि० [सं०] हंसमुख ।
सुहृ-वि० [सं०] सुंदर हाथोवाला; कुशलहस्त; सुशि-क्षित । **पु०** धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।
सुहृ(स्तिव)-पु० [सं०] एक जैन आचार्य ।
सुहृ-पु० [सं०] एक कवि । **वि०** कुशलहस्त ।
सुहा-पु० काळ नामकी विधिया ।
सुहाग-पु० सुहागिन होनेकी अवस्था, सौभाग्य, अविवात, ब्याहमें गाया जानेवाला मांगलिक गीत; वे मृदुल्यकेपं जो सुहागिन श्री पहिनीती हैं; वह कृपया जो ब्याहमें समय दूल्हा पहिनीता हैं; एक तरहका हज; प्यार, सुहृ-प्रणय-चेष्टा (अपना सुहाग अपने पास रखो) । -श्री०-श्री०-

की० न्याहके गीत जो दूल्हेके घरमें दुल्हिनके रूप-
गुणके बखानमें गाये जाते हैं। -विदारा-पु०, -विदारी
-की० गहनों और शृंगारसामग्रीका हिस्सा जो दूल्हेकी
ओरसे दुल्हिनकी दिया जाता है। -पुष्प-पु०, -
पुष्पा-की० गीट आदि लगाकर कागजकी बनायी हुई
सुंदर पुष्पिया जिसमें सुगंधित वस्तुएँ रखकर दुल्हिनके
छिप भेजी जाती हैं। -सरी-वि० की० सुख-सौभाग्य-
सुख, सुखी। -रास-की० दूल्हे-दुल्हिनके मिठनकी
पहली रात। -मेज-की० बरातका पक्ष जिसपर
दूल्हा-दुल्हिन सोते हैं। सु० -उजबना-विषया होना।
-उजबना-पतिके घरनेपर पत्नीके शरीरमें सुहागकी
चीजों(चूषियों, सिंदूर आदि)का उतारा जाना; विषया
होना। -अनाना-सौभाग्य, महिषातीका कामना करना।
सुहागन, सुहागिन-की० वह स्त्री जिसका पति जीता
हो, सखी, सौभाग्यवती।

सुहागा-पु० एक क्षारद्रव्य जो सोना गलाने और दवाके
काम आता है; † लकड़ीका आला जिसमें किसान खेतके
ढेले तोड़ते हैं।

सुहागिनि, सुहागिनी, सुहागिल-की० दे० 'सुहा-
गिन'।

सुहागी-पु० भाग्यवान् पुरुष।

सुहाता-वि० सखने लायक।

सुहाना-अ० कि० शोभित होना, सुंदर लगना, फनना;
माना, पसंद आना। वि० सुंदर, सुहावना।

सुहाया-वि० सुहावना।

सुहारी-की० सादी पूरी।

सुहाक-पु० एक नमकीन पकवान जो मंदिरों में मान्य देकर
बनाया जाता है।

सुहाली-की० दे० 'सुहारी'।

सुहाव-वि० दे० 'सुहावना'। पु० सुंदर हाव।

सुहावता-वि० सुहावना।

सुहावन-वि० दे० 'सुहावना'।

सुहावना-वि० सुंदर; भला लगनेवाला। -एन-पु०
सुंदरता।

सुहाबला-वि० दे० 'सुहावना'।

सुहास-पु० [सं०] सुंदर, खुद हास। वि० सुंदर, खुद
हासयुक्त।

सुहासिनी-वि० की० [सं०] सुंदर हन्नी हंसनेवाली,
मधुर मुस्कानयुक्त (स्त्री)।

सुहासी(सिख)-वि० (सं०) सुंदर शामयुक्त, हँसता
हुआ।

सुहसि-वि० [सं०] विहित; तुम; अति उपयुक्त; हितकर,
स्नेही। पु० लसि; प्रानुर्य।

सुहिसा-की० [सं०] अधिकारी सात जिह्वाओंमेंसे एक;
रक्षक।

सुही-वि० की० लाल-सुही माल इाल रूप गुन न
पर गये-वन०।

सुहूँ-वि० पूरा, ठीक, शुद्ध-कहियँ गौ समै कहियँ न
सुहूँ-वन०।

सुहृद-वि० [सं०] सुंदर, स्नेहयुक्त हृदयवाला। पु०

मित्र; कुंठलीमें लपकते चौथा स्थान। -स्वाय-पु०
मित्रका परित्याग। -प्राप्ति-की० मित्रकी प्राप्ति।

सुहृत्ता-की० [सं०] मैत्री, दोस्ती।

सुहृत्-पु० [सं०] दे० 'सुहृत्ता'।

सुहृद-पु० [सं०] मित्र; मित्र। -हृद(ह)-वि०
मित्रकी शानि पहुंचानेवाला।

सुहृद-वि० [सं०] सुंदर हृदयवाला; स्नेही।

सुहृद्-वि०, पु० [सं०] दे० 'सुहृद्'। -बल-पु० मित्र-
(राजा)की सेना। -मेघ-पु० मित्रका पथक् होना।

-बाकब-पु० सद्भावपूर्ण सम्मति।

सुहृद-पु० दे० 'सुहृद्'।

सुहृदरा-वि० दे० 'सुहृद्'।

सुहृदा-वि० सुहावना; सुंदर। पु० मंगलगीत; * प्रिय-
जन।

सुहृद-पु० [अ०] एक तारा।

सुहोता(ह)-पु० [सं०] अच्छा होता; अनुम्युका एक
पुत्र; वितथका एक पुत्र।

सुहोत्र-पु० [सं०] एक ऋषि, सहदेवका पुत्र; वितथका
पुत्र; भरतवंशीय अनुम्युका एक पुत्र; मुषन्मका एक पुत्र;
एक दैत्य; एक वानर।

सुहा, सुहाक-पु० [सं०] बंगालके पच्छिममें अवस्थित
एक प्राचीन जनपद; उस जनपदका निवासी; एक बवन
जाति।

सूँ-अ० दे० 'जो'।

सूँस-पु० दे० 'सूँ'।

सूँबना-स० कि० नाकसे गंध ग्रहण करना, नास लेना;
(ला०) बहुत कम खाना; (संपका) बँसना।

सूँबा-पु० मिट्टी सेकर जमीनके अन्दरकी चीजें बतलाने-
वाला; सूँबर शिकारकी टोह लगानेवाला; मेदिवा,
जासूस।

सूँब-की० हाथीकी रतमाकार नाक जो नीचे लटकती रहती
है, शूँब।

सूँहाल-पु० सुहाल, हाथी।

सूँबि-की० दे० 'सूँ'।

सूँरी-की० फसलोंमें लगनेवाला एक कीड़ा। पु० कलालों-
का एक भेद।

सूँरी-की० सजी।

सूँस-पु० चार-पाँच हाथ लंबा एक जलजलु जो नदीकी
धारामें कभी-कभी बहैया नेता हुआ सा देख पकता है।

सूँह-अ० सामने।

सूँ-वि० [सं०] उत्पन्न करनेवाला (समासांतमें)। स्त्री०
प्रसव; माता; [फा०] दिशा, तरफ, जानिब।

सुहृद-पु० एक जानवर जिसके पाखू और जंगली दो
भेद होते हैं, पाखू मैलाखोर और जंगली बहुत बलवान्
तथा हिंस होता है। -बिबान-की० प्रतिवर्ष बचा
जनेवाली स्त्री; बहुत बचे जनना। -सुखी-की० एक
तरहकी ज्वार। -का बखर-हरामजादा (माली)।

सुअरी-की० शूफरी; (ला०) बहुत बन्धीकी सी।

सूँबा-पु० बरी सूँ; * तोता, मुक।

सूँह-की० लोहेका भारीक, नोकदार तार जिसमें एक

सिरेएके छेदमें तागा डालकर कपवा छोते है, सूची; सूएके आकारका छिद्ररहित कौटा जिससे बुनाई, जाली-बनाने आदिका काम करते हैं; तराजूका कौटा; वही, कुतुबनुमा आदिका कौटा; अनाज; कपास आदिका कुंमुआ। -बोरा-पु० मालखंमकी एक कसरत। -का काज-सूईसे बनाये हुए बेल-बूटे। -का नाका-सूईका छेद। सु०-का काबका वा आला बना देना-जरा-सी बातकी बहुत तूल दे देना। -के बाकेसे ऊँट निकालना-अनहोनी बात कर दिखाना। -पिरोना-सूईके छेदमें तागा डालना। सूईकी जाज पिरोना-बहुत कंजुमी करना (खि०)।

सूक्त-पु० [सं०] बाण; बाहु; कमल; तदका एक पुत्रः दे० 'सूक्त'। -उना सूक्त जस नखनख माह'। -प०।

सूक्तना-अ० क्रि० दे० 'सूक्तन'।

सूक्त-पु० [सं०] सुअर, शूकर; एक तरबका बिरज; कुम्हार; एक मछली; मफेद चावल; एक नरक। -कंद-पु० बराहीकंद। -क्षेत्र-पु० एक पुराना गीर्धस्थान। -क्षेत्र-पु० दे० 'सूक्तक्षेत्र'। -सूक्त-पु० सुअरके रहनेका भाषा, खोमार। -ईह-ईहक-पु० एक दुरा-रोग। -नखन-पु० लकड़ीमें किया जानेवाला एक तरबका छेद। -पादिका-खी० कोलशिबी; बेनीच। -प्रेवसी-खी० ध्वनीका एक नाम (बराहावतर दाग उकार होनेके कारण)। -सूक्त-पु० एक नरक।

सूक्त-पु० [सं०] एक तरबका धान।

सूक्तकांता-खी० [सं०] बराहकाता।

सूक्तकांता-खी० [सं०] औंकाका एक रोग।

सूक्तारवा-खी० [सं०] एक बौद्ध देवी।

सूक्तारवा-पु० [सं०] मंत्रिपणी।

सूक्तिक-पु० [सं०] एक वीणा।

सूक्तिका-खी० [सं०] एक पक्षी।

सूक्ती-खी० [सं०] मादा सुअर, सूअरी; बराही देवी; बराही कंद; बराहाकांता; एक पक्षी; शहतीरपरकी छोटी खेमिया।

सूक्ते-पु० [सं०] कंदेक; एक चित्रिया।

सूक्ता-पु० खपेयाका खुनुयास वा उसकी सुनिव करनेवाली सूकी रेखा, चबत्री; मूला, अवर्षण। वि० सुखा, सुष्क।

सूक्ती-खी० शिथल।

सूक्त-वि० [सं०] सुंदर रीतिमें कथित; सुंदर उक्तिविशिष्ट (वाक्य)। पु० वेदका मंत्र वा स्तोत्रा सुंदर रूपन। -सूक्ती-वि० अच्छी बात वा सम्पत्तिके अनुसार चलने-वाला। -दुर्सी (सिन्धु)-पु० मंत्रब्रह्म, वेदमन्त्रोंका रचयिता। -ब्रह्म (बृ)-पु० दे० 'सूक्तब्रह्म'। -आक (अ)-वि० जिसके लिए वेदमंत्र हो। -वाक-पु० महाविशेष; मंत्रपाठ। -वाक्य-पु० सूक्ति।

सूक्ता-खी० [सं०] सारिका, मैना।

सूक्ति-खी० [सं०] सुंदर उक्ति; चमत्कारपूर्ण वाक्य, पद।

सूक्तिक-पु० [सं०] कौशिका एक प्रकार।

सूक्तिक-खी० [सं०] मंत्रपाठ।

सूक्तम-वि० दे० 'सूक्तम्'।

सूक्त-वि० [सं०] बहुत बारीक; बहुत छोटा; अणुरूप;

तहतक पहुँचनेवाली, बारीक बातोंकी देखने-समझनेमें समर्थ (चुष्टि, बुद्धि); रोमरूपसे प्रवेश करनेवाली (औषध) कठिनाईसे समझमें आने, ग्रहण करने योग्य; बिल्कुल ठीक; पूर्ण; महत्त्वहीन, तुच्छ। पु० अणु; परमात्मा; शिव; अध्यात्म; कपट, कैतव्य; एक अर्थसंकेतकार जहाँ दूसरेका किया हुआ कोई सूक्ष्म कृत्य देखकर संतीतसे उसका उत्तर देना वा समाधान कर देना दिखावा जाय; रीठा; निर्मली; छपारी; सूक्ष्मता; तीन योग शक्तियोंमें एक (शेष दो निरवय और नावय हैं); बारीक भागा; दंतिका खोलका; मन्त्रा; बुना हुआ देशम; एक दानध। -कुशाकफा, -कृष्णकफा-खी० मध्यम अंगु वृक्ष, कठजामुन। -कोण-पु० न्यून कोण। -चंडिका-खी० सनई। -चक्र-पु० एक तरबका चक्र। -चंद्रक-पु० लससास, पीलेका शाना। -चंद्रका-खी० धूना; पिपली। -चंद्र-पु० एक रसने वाला कीड़ा। -चंद्रकर्म-पु० सुवर्दीन, अर्थीक्षण-वंश। -दुर्सी (सिन्धु), -बुद्धि-वि० बहुत बुद्धिमान्। -बुल-पु० सरसों। -बुला-खी० दुरालभा। -बुल-पु० काठका पतला तल्ला। -बुह-खी० सूक्ष्म शरीर। -बुह-वि० सूक्ष्म शरीरवाला। पु० परमाणु। -बुल-पु० विष्णु। -बुल-पु० धनिया; वनजीरक, देवमर्ष, लघुवह, मृत्पण; वनबर्षी; एक लाल ईश, कुकभीर; बबूल; दुरालभा। माघ; अर्धपत्र। -पत्रक-पु० पर्वट, वनबर्षी। -पत्रा-खी० बृहती, दुरालभा; वन्ध, रत्न, अपराजिता; वनजामुन; शतमूली। -पत्रिका-खी० मौक, शतावरी; लघुमाक्षी; छोटी पोथ, दुरालभा; आकाशमानी। -पत्री-खी० सनावर; आकाशमानी। -पर्णी-खी० शतपुष्पी, सनई; बिपारी; बृहती। -पर्णी-खी० रामदुः रामतुलसी। -पाद-वि० बहुत छोटे पैरोंवाला। -पिप्पली-खी० वनपिप्पली। -पुष्पा-खी० मनई पुष्पी-खी० वनपिप्पली, दाखिनी। -कल-पु० छिन्नेश मधुसूदन। -कला-खी० मूल्यामलकी। -बबूर-पु० -बबूरी-खी० शरबरी, अरबरी। -बीज-पु० पोर। दाना। -बुद्धि, -मति-खी० बारीक बातोंकी समझ, समझनेवाली, तहकी पहुँचनेवाली बुद्धि। वि० ऐसी बुद्धि वासा, नीधनुबुद्धि। -भूत-पु० शुद्ध, अपवीकृत भूत (आकाशादि)। -मक्षिक-पु० मशक, मच्छर। -मान-पु० सूक्ष्म तौल; नाप वा गणना, बह मान जिसमें सूक्ष्म अंतर भी मासूम किया जा सके। -सूखा-खी० जयनी माक्षी। -कोभक-पु० मुक्तिकी ओरह अवस्थाभोग, दमभी। -बल्ली-खी० ताम्रबल्ली; अनुका लता; कारवे, करेडा। -शरीर-पु० जीवका ओगशरीर, पंच प्राण, पंच कान्द्रिय, पंच तन्मात्र और मन-बुद्धि-इन १७ अवयवोंवाला। -शरीर-खी० रेत, बाहुका। -शाल-पु० जालवर्त। -शालि-पु० सोंठों धान। -बदुस्वर-पु० परकीमें रहनेवाली जूँ, पक्षमयूक। -स्फोट-पु० एक तरबका कुछ रोग।

सूक्ष्मा-खी० [सं०] सूक्ष्मा, सूक्ष्म; छोटी इलायची; सूफली; रेत; कलगी; सूक्ष्म जड़ामांसी; बिष्णुकी नौ शक्तियोंमें एक। वि० खी० दे० 'सूक्ष्म'।

सूक्तमात्र-वि० [सं०] तीव्रवृद्धि।

सूक्ष्मात्मा (सूक्ष्म) - पु० [सं०] शिव ।

सूक्ष्मेक्षिका - स्त्री० [सं०] मृदम, नीच दृष्टि ।

सूक्ष्मेक्षक - स्त्री० [सं०] छोटी रत्नावली ।

सूक्ष्म - वि० सूक्ष्म हुआ, सूक्ष्म ।

सूक्ष्मा - अ० कि० जल्दीन होना; तरी या गीलापनका न रह जाना; रमणीय होना; दुबला होना; दरना; नष्ट होना; कष्ट पत्र जाना । **सूक्ष्मकर काँटा हो जाना** - बहुत दुबला हो जाना । **सूक्ष्म जाना** - मृत्र, स्तम्भ हो जाना (''सुनकर मर गया) ।

सूक्ष्मा - वि० नया दुष्ट, सूक्ष्म, रमणीय; निस्तेज, उदास; तेजहरहित; निरा; बेमुदीरन (मूला आदमी); कोरा, दो टुक । पु० अवर्णन, अकाल (-पङ्कना); बघोंका एक रोग जिसमें उनकी देह मखली और हड्डियाँ, खामकर शीदकी हड्डी नरम होनी जानी है; नटी किनारेकी सखी जमीन; सुष्ठु नवाकू; भोग । **जवाब** - पु० मफा, दो-टुक इनकार । - **(स्त्री) सुजली** - स्त्री० वह सुजली जिसमें रहने निकलकर पकते नहीं, केवल सुजली होती है ।

- **तनखाह** - स्त्री० वह बेटन जिसके माथ मोहन, अछा या ऊपरी आसन्नी न हो । - **तरकारी** - स्त्री० बिना रसेकी तरकारी । - **(स्त्री) टुकड़े** - पु० रोटीके मये टुकड़े, मरीचका मोहन । **सू०** - टालना - कोरा जवाब देना । - **पञ्चना** - पानी न भरना, अकाल पङ्कना । - **कणवा** - मखा गेग होना, दुबला हो जाना । - **घाट उतरना** - बर्त्तन रहना ।

- **(स्त्री) मुनाना** - माफ जवाब देना, दो-टुक इनकार करना । - **(स्त्री) घाटी** उतारना - बर्त्तन रखना ।

- **टुकड़ोंपर कौए उड़ाना** - छोटीसी तनखाहपर जलील करना । - **धानोंपर पानी पङ्कना** - नेराइयकी दशमं मनोकामना पूरी होना ।

सूक्ष्म - वि० दे० 'सूक्ष्म' ।

सूक्ष्म - पु० [सं०] दमोदर, कुलका अंशुवा ।

सूक्ष्म - वि० [सं०] मचना देनेवाला, अतानेवाला, पापक; भेद बानेवाला । पु० मीनेवाला, दरजी; मूँह चुगल खोर; भेदिया; शिक्षक; वर्णन करनेवाला; नाटकका मर-पार; बुद्ध; सिद्ध; पिशाच; कृत्ता; कीमा; किन्ही; मोरों धान; खल, दुष्ट । - **बाक्य** - पु० भेदियेकी बतायी हुई बात ।

सूचना - पु० [सं०] सूचित करना, जगाना, ज्ञापन; छेदनेकी क्रिया; भेद खोलना; संकेत करना, इशारेसे बतलाना; वर्णन करना; आसूली करना; दृष्टना करना; पीठ पडुवाना; बार डालना; मृगधि फैलाना (?) ।

सूचना - स्त्री० [सं०] बताने, जतानेकी क्रिया; कुछ बताने, जतानेके लिए कही, लिखी गयी बात, श्लिषा; संकेत; विज्ञापन; अभिनय; दृष्टि; रंथन; व्यपन; हिंसा । अ० कि० प्रकट करना व्यक्त करना । - **पट्ट** - पु० (नोटिस बोर्ड) लकड़ी कीहे आदिका वह पटल जिसपर आवश्यक सूचनाएं लिख दी जायें या लिखकर बिपका दी जायें । - **पत्र** - पु० वह पत्र या लेख जिसमें कोई सूचना हो, श्लालानामा, श्लितहार ।

सूचनीय - वि० [सं०] सूचना करने, बताने, जताने योग्य ।

सूचा - स्त्री० [सं०] छेदन; संकेत; भेद लेना; छेकनेवाली

वस्तु । • वि० शुद्ध, साफ; संभाव्युक्त, होश-हवासमें ।

सूचि - स्त्री० [सं०] मूँह या छेद करनेका कोई आला; किसी लोकदार चीजकी नोक; दमोदर; सितकनी; कट-परा; सेनाका एक मूँह, ग्रंथके विषयोंकी ताहिका; स्तूप; अभिनय; एक तरहका रतिबंध; दृष्टि; वेदयासे उत्पन्न निषादका पुत्र; सप बनानेवाला; एक तरहका नृत्य; मकेत; केतकी । - **सूहक** - पु० मूँह रखनेकी खोली । - **पत्र** - पु० दे० 'सूचीपत्र' । - **पत्रक** - पु० सितार शक; एक तरहका ऊख । - **पुष्प** - पु० केतक, पुष्प, केवडा । - **सिद्ध** - वि० मूँह जैसी नोकमें विमक्त (कलीका मिरा) । - **भेद्य** - वि० मूँहसे भेदन करने योग्य; बहुत बना (जैसे अंधकार) । - **मलिका** - स्त्री० नेवारी । - **रहस्य** - पु० नेवला । - **रोमा (मन)** - वि० मूँह जैसे तुकीले रोमी-वाला । पु० शूकर । - **बदन** - पु० नेवला; मच्छर । - **सालि** - पु० एक तरहका धान । - **सिखा** - स्त्री० मूँहकी नोक । - **सूत्र** - पु० मीनेका तागा ।

सूचिक - पु० [सं०] सिनार करनेवाला; दरजी ।

सूचिका - स्त्री० [सं०] मूँह; हाथीकी मूँह; केतक; एक अम्परा । - **धर** - पु० हाथी । - **मुख** - वि० नुकीले मूँह-वाला । पु० प्रस ।

सूचित - वि० [सं०] बताया, जताया हुआ; प्रापित; कहा इशारेमें बताया हुआ; छेद किया हुआ; पूर्णतः उपयुक्त ।

सूचितव्य - वि० [सं०] दे० 'सूच्य' ।

सूचिनी - स्त्री० [सं०] सूँह; रात्रि ।

सूचिवाच (वच) - वि० [सं०] नुकीला । पु० गहक ।

सूची - स्त्री० [सं०] दे० 'सूचि'; माषिक छेदकी सुडता, मस्य आदि जौंचनेको एक रीति । - **कटाह-व्याघ्र** - पु० एक न्याय जिसका प्रयोग सरल और कठिन दो प्रकारके कामोंमें पड़े सरल काम करनेके मन्थमें किया जाता है । - **कर्म (सू)** - पु० मीनेका काम, सिलाई । - **मुँह** - पु० मच्छर । - **पत्र** - पु० सितार । - **पत्र** - पु० वह पत्र या पुस्तक जिसमें पुस्तकी या और किसी चीजकी नामावली, विषय, दाम आदि बताते हुए दी गयी हो; एक तरहका ऊख; सितार । - **पत्रक** - पु० दे० 'सूचीपत्रक' । - **पत्रा** - स्त्री० गटदुर्वा । - **पत्र** - पु० एक प्रकारकी मूँह-रचना । - **पास** - पु० सूँहका छेद । - **पुष्प** - पु० दे० 'सूचिपु' । - **प्रोत्त** - वि० (सूँह) जिसमें तागा डाला गया हो । - **भेद्य** - वि० दे० 'सूचिभेद्य' । - **मुख** - पु० सूँहकी नोक; एक नरक; सितकुश; हीरा; पत्थी, मच्छर या हम तरहका डेंसेनेवाला कोई कीट; हाथीकी एक मुँहा । वि० सूँह जैसी चीन आदिवाला; सूँह जैसा तीक्ष्ण; तग, मकीर्ण । - **रोमा (मन)** - वि० पु०, दे० 'सूचिरोमा' । - **बक्त्र** - वि० सूँह जैसे सुलवाला; बहुत तग, सकीर्ण । पु० स्तंभका एक अनुचर; एक असुर । - **बक्त्रा** - स्त्री० बहुत मकीर्ण बीनी जो मैयुनके योग्य न हो । - **बाचकर्म (सू)** - पु० सोने और नुननेकी कला । - **व्यूह** - पु० एक तरहकी मूँह-रचना । - **सूत्र** - पु० सोनेका तागा ।

सूची (विश्व) - वि० [सं०] छेदनेवाला; जतानेवाला; भेद प्रकट करनेवाला; भेद लेनेवाला । पु० भेदिया ।

सूचीक-पु० [सं०] दैसनेवाला कीका (मच्छर आदि) ।
 सूचम-वि० दे० 'सूच' ।
 सूच्य-वि० [सं०] सूचनाके योग्य; ध्वन्य (१) ।
 सूच्यप्र-पु० [सं०] सूचीके नोक; (भा० सूचीके नोक बरा-
 बर, बहुत योभी-सी कोई चीज); कोई । -विह-वि० सूच-
 मे छेदा हुआ । -स्तम्-पु० मीनार । -स्थूलक-पु०
 एक मृग, उल्ल ।
 सूच्यकार-वि० [सं०] सूचकेने आकारका ।
 सूच्यार्थ-पु० [सं०] सूच्यार्थ ।
 सूच्यस्थ-पु० [सं०] चूहा; मच्छर; हाथोंकी एक मुद्रा ।
 वि० सूचै जैसे मुँहवाला ।
 सूच्यार-पु० [सं०] सितार शक ।
 सूच्य, सूचिम-वि० दे० 'सूच' ।
 सूच-की० सूच; † सूचन ।
 सूचन-की० सूचनेका भाव या स्थिति, बरम, शोष ।
 सूचना-अ० कि० किसी अंगका फूल आना, बरम या शोष
 होना । सु० सूजा-फुला-जो मुँह फुलाने हो, लफा ।
 सूचनी-की० दे० 'सूचनी' ।
 सूजा-पु० बही सूच या इन तरहका कोई आला ।
 सूजाक-पु० [का०] एक रोग जिसमें पेशाबमें जलन और
 शिथलमें पीका होती है ।
 सूजी-की० गेहूँका रवेदार आटा जो हलका आदि बनानेके
 काम आता है; * सूई । * पु० दरजी, सूचिक ।
 सूख-की० सूखनेका भाव; निगाह; उपज, कल्पना; कोई
 नयी या दूरकी बात मोचना । -बूझ-की० मोचने-
 समझनेकी शक्ति, बुद्धि ।
 सूखना-अ० कि० दिखाई देना; दिमाग या ध्यानमें आना;
 * छुट्टी पाना ।
 सूट-पु० [अ०] पूरा (अंशही) पहनावा, कोट, पतलन
 आदि । -केस-पु० पहननेके कपड़े रखनेका बरम ।
 सूद-की० सूँढ़ ।
 सूत-पु० सूँढ़, रेशम आदिका बारीक तार, कच्चा धागा,
 मूत्र; धागा, डोरा; लकड़ी या पत्थरपर निशान डालनेकी
 डोरी; इत तरह वाला हुआ निशान; एक नाप, तसका
 १६ बी भाग; लहसुनिबापरकी रेखा; * करपनी; बच्चोंके
 गलेका रंग; * बहुत थोड़ेमें कहा हुआ बहुलायक वाक्य,
 पुत्र । * वि० अच्छा, भला -घार-पु० सूँढ़ । -लह-
 पु० रहँड । सु० -धरना-बाँधना-लकड़ी आदिपर
 मूत्रसे निशान डालना ।
 सूख-पु० [सं०] रस हाँकनेवाला; रस हाँकनेका काम करने-
 वाली एक बर्णसंकर जाति; बंदी, भाट; पुराणकी कथा
 कहनेवाला; न्यासके शिष्य लोमहर्षण मुनि; सर्व; वरुण;
 पन्न । वि० उत्पन्न, प्रसूत; प्रेरित । -कर्म(ज)-पु०
 र चक्रमेका काम । -ग्रामणी-पु० गाँवका मुखिया ।
 -ज-पु० सारथिका पुत्र; कर्ण । -तमय-पु० कर्ण ।
 -ब्रह्म-पु० उग्रमया । -बुद्ध-पु० सारथिका पुत्र;
 सारथि; कर्ण; श्रीचक्र । -पुत्रक-पु० कर्ण । -राष्ट्र(ज)-
 पु० पारा । -बन्ना-की० एक कच्चा देनेके बाद कच्चा न
 देनेवाली भाष । -सख-पु० एक रकाह बह ।
 सूखक-पु० [सं०] जन्म; जन्मका अशौच, जननाशौच;

अशौच; धारा; बाधा । -गोह-पु० प्रसूति गृह । -भोजन
 -पु० जन्म-संबंधी भोज ।
 सूतका-की० [सं०] दे० 'मृतिका' । -सूह-पु० दे०
 'सूतिकागृह' ।
 सूतकाव-पु० [सं०] वह भोज्य पदार्थ जो संतानकी
 उत्पत्तिके कारण अनुग्रह हो गया हो। सूतकीके घरका
 खाद्यपदार्थ ।
 सूतकाशौच-पु० [सं०] संतान-जन्मके कारण लगनेवाला
 अशौच ।
 सूतकी(किम्)-वि० [सं०] जिससे संतानोत्पत्तिके कारण
 अशौच लगा हो ।
 सूतता-की० [सं०] सूत, सारथीका काम ।
 सूतता-अ० कि० दे० 'सोता' । पु० दे० 'सुपना' ।
 सूतरी-की० दे० 'सूतली' ।
 सूता-पु० सूत; एक तरहका रेशम; । अफीम काछनेकी
 मीची । की० [सं०] जच्चा, प्रसूता ।
 सूति-की० [सं०] जन्म, प्रसव; संतान; सिलाई; सोम-
 निषीदन; मोमरस निकालनेका स्थान; उदयम; कमलकी
 पैदावार । पु० हस्त; विद्याभित्तका एक पुत्र । -काल-
 पु० प्रसवकाल । -सूह-पु० सूतिकागृह, जच्चास्थान ।
 -मास्त-बास्त-पु० प्रसववेदना । -मास-पु० वह
 महीना जिसमें कच्चा पैदा हुआ हो, प्रसवमास । -रोग-
 पु० दे० 'मृतिकारोग' ।
 सूतिका-की० [सं०] वह स्त्री जिसमें तुरत या हाथमें ह।
 कच्चा जना हो, नवप्रसूता, जच्चा; सद्यःप्रसूता मी । -शब्द
 पु० दे० 'मृतिकारोग' । -सूह-गोह-अवय-पु०
 जच्चास्थान, मीरी । -मास्त-पु० दे० 'मृतिमास्त' ।
 -रोग-पु० प्रमत्ताको आहार बिहारके दोषमें होनेवाला
 रोग । -पट्टी-की० छडाके दिन मृतिकागृहमें पृथी जाने-
 वाली एक देवी; छडी ।
 सूतिकागार, सूतिकावास-पु० [सं०] जच्चास्थान ।
 सूतिग-पु० दे० 'मृतक' ।
 सूती-की० मीची; [सं०] मृतकी पत्नी । वि० [हि०]
 मृतका, मृतका बना हुआ । -कपडा-पु० मृतका बना
 हुआ कपडा । -माल-पु० सूतकी बनी हुई चीजे ।
 सूतीगृह-पु० [सं०] दे० 'मृतिगृह' ।
 सूतीघर-पु० मृतिकालार ।
 सूतीमास-पु० [सं०] दे० 'मृतिमास' ।
 सूतार-पु० [सं०] मृतिकारो, सौत्कार ।
 सूतर-वि० [सं०] बहुत बड़ा हुआ; धुर उत्तर । पु० उचित
 उत्तर, माकूल जवाब ।
 सूतार-पु० [सं०] अच्छा उपान; अच्छा प्रवक्त । वि०
 चतुर ।
 सूतार-पु० [सं०] शराब पीचना, सुरासपान ।
 सूतकावली-की० [सं०] एक नदी ।
 सूत-पु० [सं०] सोमनिषीदनका समय ।
 सूत्या-की० [सं०] बहोचर-स्थान; सोमका इस निकालना;
 सोमरसपान ।
 सूत्याशौच-पु० [सं०] जननाशौच ।
 सूच-पु० [सं०] सूत, तंतु; सागा; भाग्यकी राशि; बहवन्,

जनेक; कठपुतली नवानेकी बीरी; रेशा; व्यवस्था; नियम; योजना; छोटा, अर्धमर्ग वाक्य जिसमें दर्शनादि शास्त्रीकी रचना हुई है; ऐसे वाक्योंमें रचित मूल ग्रंथ (कव्यग्रन्थ, गुणग्रन्थ इ०); कारणही कारण, निमित्त; (हिं०) जरिया, द्विती स्वना-समाचारके मिलनेका आन (विश्वसनीय सूत्रों); एक वृक्ष । -कंठ-पु० आसण; कन्तर; पेंतुकी; खंजन । -करण-पु० सूत्रवाक्यका निर्माण । -कर्ता- (हूँ)-पु० सूत्रग्रंथका रचयिता । -कर्म(व)-पु० बदर; मेमारका काम; जुलाहेका काम । -कृत्-पु० बदर; राज । -कार-पु० सूत्र रचनेवाला; बदर; सूत्र कागजनेवाला; जुलाहा । -कृत्-पु० दे० 'सूत्रकार' । -कोष, -कोणक-पु० डमर । -कोश-पु० सूत्रकी भटी । -क्रीडा-की० सूत्रका एक खेल जिसकी गणना ६४ कलाओंमें है । -गणिका-की० जुलाहोंका एक छबी जैसा उपकरण । -ग्रंथ-पु० मूलरूपमें रचित (मूल) ग्रंथ । -ग्रह-वि० सूत्र ग्रहण करनेवाला । -आल-पु० सूत्रका बना हुआ जान । -संतु-पु० सूत्र, नार; अथर्वसाय । -तुलसी-की० तलका । -दरिद्र-वि० जिसकी बुनावटमें कम सूत्र लगाया गया हो, सीना । -धर-वि० सूत्र धारण करनेवाला । पु० मूल व्यक्ति; दे० 'मूलधार' । -धार-पु० नाट्यशालाका व्यवस्थापक या प्रधान नट; इन्द्र; बदर । -एक-पु० (नाटकका) मूलधार; मेमार; शिष्यी । -पत्रकर, -पत्री(स्त्रिन्)-वि० जिसका भाग या पत्ता पत्ता बनाया जा सके । -पत्री-वि० की० सूत्र जैसे पतले पैरावाली । -पात-पु० कार्यका भारभ; माथवाले सूत्रमें माथनका कार्य । -पिटक-पु० बौद्धग्रंथ त्रिपिटकका प्रथम खंड । -पुष्प-पु० कवाय । -प्रोत्त-वि० सूत्रसे बह (जैसे पुत्तलिका) । -बद्ध-वि० सूत्ररूपमें लिखित, रचित । -निवृ-पु० दरजी । -सूत्र-पु० नाटकका मूलधार । -अथर्वधृ-पु० यक्षधृ, धूना । -बर्त-पु० सूत्रका बना जान; करपा; डरकी । -ला-की० तलका । -बाप-पु० पुननेका कार्य । -विद्व-वि० सूत्रज्ञ । -बीणा-की० बीणाका एक भेद जिसमें तारकी जगह सूत्र लगे होते थे, काबुकी । -वेष्ट-पु० पुननेकी क्रिया; डरकी । -शास्त्र-पु० शरीर । -शास्त्रा-की० सूत्र कातने, एकत्र करनेका कारखाना (की०) । -संग्रह-पु० सूत्रोंका संग्रह; बागडोर धामनेवाला । -स्थान-पु० सूत्रगत प्रथम आन या परिच्छेद ।

सूत्रक-पु० [सं०] नागा, पागा, मोहेके तारोंका कवच (की०) ।

सूत्रय-पु० [सं०] सूत्ररूपमें रचना; सूत्ररूपमें नत्थी करना; सिलसिलेसे सजाना ।

सूत्रवी-वि० सूत्र रचनेवाला ।

सूत्रवाचकमार्त-पु० [सं०] कथा सुननेका कारखाना (की०) ।

सूत्राय-पु० [सं०] बहिया कॉमा ।

सूत्रांत-पु० [सं०] बौद्ध सूत्र ।

सूत्रांतक-वि० [सं०] बौद्ध सूत्रोंका शाना ।

सूत्राभ्या(स्य)-पु० [सं०] जीवाभ्या; एक प्रकारकी बहुत

सूत्र वातु ।

सूत्राभ्यक्ष-पु० [सं०] वक्ष-व्यापारका अभ्यक्ष ।

सूत्रामा(मन्)-पु० [सं०] इन्द्र ।

सूत्राक्षी-की० [सं०] हार ।

सूत्रिका-की० [सं०] सेवर; हार, माला ।

सूत्रित-वि० [सं०] नत्थी किया हुआ; सिलसिलेसे ब्याया हुआ; सूत्ररूपमें कथित ।

सूत्री(स्त्रिन्)-वि० [सं०] सूत्र-विशिष्ट । पु० कौआ (नाटक-का) मूलधार ।

सूत्रीय-वि० [सं०] सूत्र-संबन्धी ।

सूत्रोत्त-वि० [सं०] सूत्रमें नत्थी किया हुआ ।

सूत्रन, सूत्रना-पु० दे० 'सूचना' ।

सूत्रनी-की० कियेके पहननेका पात्रागम ।

सूत्रार-पु० बदर, शिष्यी ।

सूद्र-पु० [सं०] हनन, बध; भयजन; रसोद्वेग; रसा; कुर्मा; सरना; सारथिका काम; मटरकी दाह; पंक; दोष, पाप; कोष वृक्ष; बालना, चुलाना; कश्मीरका एक मूलग ।

-कर्म(व)-पु० रसोद्वेगका काम । -शास्त्रा-पु० रसोद्वेग । -शास्त्र-पु० पाकविद्या ।

सूद्र-पु० [फा०] लाम, नफा; व्याज; मलाई । -झोर, झुवार-पु० सूद्र लेनेवाला, व्याजसे जीविका चलनेवाला । -झोरी-की० सूद्र लेना, व्याज-बट्टेका रोजगार । -दरसूद्र-पु० वह व्याज जो मूल और व्याज दोनोंकी जोड़कर लगाया जाय, चक्रवृद्धि व्याज ।

सूद्रक-वि० [सं०] मारने, नष्ट करनेवाला ।

सूदन-पु० [म०] हनन, बध; फैकना; भगीकार करना; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि ('सुजान-चरित्र'के रचयिता) ।

वि० हनन, नाश करनेवाला (रिपुसूदन, मधुसूदन); प्रिय ।

सूचना-सं० कि० हनन करना, नष्ट करना ।

सूत्राभ्यक्ष-पु० [सं०] पाकशालाका अभ्यक्ष ।

सूद्रि, सूद्री (स्त्रिन्)-वि० [म०] ऊपरसे बहनेवाला ।

सूद्रित-वि० [सं०] आह्वन; हत; नष्ट किया हुआ ।

सूद्रिता(त्)-वि० [सं०] दे० 'सूद्रक' ।

सूद्री-वि० (रकम) जिसपर व्याज मिलता हो । सु०-कलाना-सूद्रपर रूपया देना ।

सूद्री-पु० दे० 'सूद्र' ।

सूद्र-वि० दे० 'सूद्रा'; शुद्ध । की० सीध । अ० सीधमें ।

सूद्रना-अ० कि० सत्य होना; सफल होना ।

सूद्ररा-वि० दे० 'सूद्रा' ।

सूद्रा-वि० निष्कपट, मोला-वाला; सीध; जो बक न हो; जो उलझ न हो । सु०-सहना-सूद्री बात कहना ।

सूद्रि सुनाना-वि० सूद्री बात कहना ।

सूद्रे-अ० सीधमें । -सूद्र-दोहक ।

सूद्र-वि० दे० 'सूद्रा'; दे० 'सूद्रा'; रहित । -साव-वि० दे० 'सुनसान' ।

सूद्र-वि० [सं०] जनमा हुआ; जल; खिला हुआ; रिक्त, खाली । पु० प्रमथ; कली; फूल; फल; पुत्र । -शर-पु० कामदेव ।

सूद्रा-वि० खाली, सून्, अनशील । पु० एकांत स्थान ।

-सूत्र-पुं० सूत्रा कृत्वा, सूत्रता । सु०-कृत्वा-उच्चार, उच्चार कृत्वा ।
सूत्रा-की० [सं०] कृत्वा, पुत्री; पशुओं आदिका वच कृत्वा; मांसिकृत्य; चोट पहुँचाना; वच करवा; सूत्रका कृत्वा; कमरबंद; मलमसिर्षका शोध; मलसूत्रा; प्रकाश-रसिध; नदी; हाथीको सूत्र; हाथीको अंकुशका दस्ता; वरको उन पाँच वस्तुओं (पूजा, चक्री, ओखली, बर और हाथ) में से कोई जिनसे जीवहिसासी संभावना हो; तत्काश होनेवाली वस्तु । -**सूत्र-पुं०** भरती उक्त पाँच वस्तुओंसे होनेवाली हिंसाका दोष ।
सूत्रिक-सूत्री (विभ्)-पुं० [सं०] व्यास; भाँस वेवने-वाला ।
सूत्र-पुं० [सं०] वेदा; बन्धा; नाती; छोटा भाई; सूत्र; आक; प्रेरणा करनेवाला (दे०); एक वैदिक कवि । की० दे० 'सू' ।
सूत्र-की० [सं०] वेदा ।
सूत्र-वि० [सं०] सत्य और प्रिय; प्रिय; सद्भावपूर्ण; शुभ । पुं० सत्य और प्रिय नामक (वे०); कल्याणकारिता ।
सूत्रा-की० [सं०] दयालुता; सद्भाव; सत्य और सद्भाव-पूर्ण वचन; धर्मको कृपा और कृपासाधकी पक्षी; सत्यकी अर्थिप्राप्ति देवी; एक अक्षर; उत्तम गान; ऊँचा; आहार ।
सूत्राद्, सूत्राद्-वि० [सं०] दे० 'सौम्य' ।
सूत्र-पुं० [सं०] पक्षी हुई दाक; रसा, जल; मसाला; वर-तन; रसोदवा; बाण । -**कूर्वा (हं)**, -**काश**, -**कृत्**-पुं० रसोदवा, पाचक । -**काशी**-पुं० दे० 'सूत्रकार' । -**वशि**-वि० जिसमें बहुत कम मसाला पका हो । -**धूपक**, -**धूपक**-पुं० हींग । -**धूर्त**-की० सुप्रणाली, वनमूल । -**रस**-पुं० रसका जायका । -**शाका**-पुं० पाकशाका । -**जेष्ठ**-पुं० मूल । -**संयुक्त**-वि० मसाला मिलाया हुआ । -**स्थान**-पुं० पाकशाका ।
सूत्र-पुं० अनाज पछोरनेका बीसके छिन्ने, लीक आदिका बना पान, छाज । -**सूत्रा**-की० सुप्रणाली नामको राक्षसी जो रावणकी बहन थी । -**सूत्रा**-पुं० एक तरहका घृण जो हरनेका भी काम देता है ।
सूत्र-पुं० रसोदवा ।
सूत्र-पुं० दे० 'अपच' ।
सूत्र-वि० [सं०] दयालु; बन्द नीरीम किया हुआ ।
सूत्र-वि० [सं०] जो आसानीसे संयुक्त हो जाय ।
सूत्रार्थ, सूत्रार्थ-वि० [सं०] जिसमें महानेके लिए अच्छी सीधियाँ बनी हों ।
सूत्रार्थ-पुं० [सं०] हींग ।
सूत्रार्थ-पुं० सूत्र, छाज ।
सूत्रिक-पुं० [सं०] सूत्रकार, रसोदवा ।
सूत्रिक-वि० [सं०] दे० 'सूत्र' ।
सूत्रोद्ग-पुं० [सं०] दाह-भ्रात ।
सूत्र-वि० [सं०] रसा बनानेके योग्य । पुं० रसाधार खाद्य पदार्थ ।
सूत्र-पुं० [अ०] ऊन; ककमका रेखा; दवालयें वाला; आनेवाला कपड़ा; धातमें सरा जानेवाला कपड़ा; मोटा बुननेका धागा ।

सूत्रा-पुं० [का०] पीरको सुलझ; सूत्रका छेद ।
सूत्रिका-पुं० [अ०] सुलझाना साधुओंका एक संप्रदाय ।
सूत्रिवादा-वि० सूत्रियों जैसा, सादा ।
सूत्री-वि० [का०] उनी कपड़े पहननेवाला; संत; सवित्र । पुं० संसारकी आसक्तिसे मुक्त होकर ईश्वरप्राप्तिके साधना करनेवाला; सूत्रिया संप्रदायका अनुयायी । -**प्रवाह**-वि० सूत्रियोंके-से विचार रखनेवाला ।
सूत्र-पुं० [अ०] राज्यका विभाग जिसमें कई जिले शामिल हों, प्रदेश, प्रांत; सूत्रेश्वर । -**(वे)सूत्र-पुं०** सूत्रका शासक, गवर्नर; फौजका एक छोटा अफसर । -**मेजर**-पुं० फौजका एक अफसर । -**सूत्री-की०** सूत्र-दारका पद या कार्य ।
सूत्र-वि० दे० 'सूत्र' ।
सूत्र-वि० कंठस्व, कृपण । पुं० [सं०] जल; दूध; आकाश ।
सूत्र-वि० सूत्र ।
सूत्री-पुं० एक वेद जिसकी कवचीमें मेरु, कुशा आदि बनाते हैं ।
सूत्र-पुं० [सं०] सोमनिःपीडन; यज्ञ ।
सूत्रा-की० [का०] एक ओषधि । -**सूत्रा**-की० कवची सूत्रान । -**सूत्री**-की० भीठी सूत्रान ।
सूत्र-वि० अथा । पुं० मरदास । -**सूत्र**-पुं० ब्रजभाषा और कृष्णकाम्यके सर्वश्रेष्ठ कवि (सुप्रसिद्ध कृष्णकाम्य सूत्रागारके रचयिता वे ही थे और अकबरके शासनकालमें वर्तमान थे); (का०) अथान्वयिक । -**सूत्र**-पुं० मरदास रचित कृष्णलोकका वर्णन करनेवाला एक वृहत् गीतिकाव्य ।
सूत्र-वि० दे० 'सूत्र' । पुं० शक; कृष्णके पितामह; सूत्र शूर रंगका घोड़ा । -**सूत्र**-पुं० वसुदेव । -**ज**-पुं० शूरवीरका लश्करा । -**सूत्र**-पुं० दे० 'शूरवीर' । -**सर्व**-पुं० बोर सरदार; युद्धमन्त्रि । -**सेन**-पुं० दे० 'शूरसेन' । -**सूत्र**-पुं० मथुरा नगरी ।
सूत्र-पुं० [सं०] सूत्र; आक; वर्तमान कल्पके मत्तरहने करव कुंभके पिता; विद्वान्, व्यक्त, आचार्य । -**सूत्र**-पुं० मूल, ओल । -**काश**-पुं० सूत्रकांत मणि । -**कृत्**-पुं० विश्वामित्रका एक पुत्र । -**सूत्रा**-वि० सूत्रकी तरह बमकनेवाला । -**ज**-पुं० ज्ञानि; सुधीव; वम; कर्म; दे० क्रममें । -**ज**-की० वसुना । -**सूत्र**-पुं० सुधीव ज्ञानि; कर्म । -**सूत्री**-वि०-पुं० दे० 'सूत्रमुक्ती' । -**सूत्रीमन्त्रि**-पुं० सूत्रकांतमणि । -**सूत्र**-की० रात्रि (सं०) । -**सूत्र**-पुं० दे० 'सूत्र' । -**सूत्र**-की० वसुना । -**सूत्र**-पुं० सूत्रका सारवि, अन्न ।
सूत्र-पुं० [अ०] तुरही, नरसिंहा; वह तुरही जिसे सुसलमानोंके विश्वासानुसार, कमावतके दिन, सरकारी नामका फिरोजा हुंजैया; [का०] जाक रंग; वस्त्र; अफगानिस्तान का एक नगर; एक अफगान जाति ।
सूत्र-पुं० सूत्र; एक तरहका मोरना; सरदास, दे० 'सूत्र' [सं०] में । -**सूत्री**-की० सूत्रकन्या, वसुना । -**सूत्री**-पुं० दे० 'सूत्रवंशी' । -**सूत्र**-पुं० एक तरहकी गिरहरी । -**सूत्री**-पुं० दे० 'सूत्रमुक्ती' । -**सूत्र**-पुं० सुधीव । -**सूत्र**-की० वसुना । -**सूत्र**-की० शिरमा या दीपक

दिक्षामा—अति शुभान् या इक्षिमान्को कुछ बनाना-
सिद्धिदा; अति प्रसिद्ध पुष्पका परिचय देना । -**पर**
धूम्रवा—**पर धूम्र कंकणा**—नितात निर्दोष जवपर
लौह्य लगाकर सुंदर लांछित होना ।

सूर्य-पु० [सं०] सूर्य, जमीकंद, ओल ।

सूरत-वि० [सं०] हृवाह, अनुशुभ; शांत । पु० भारतका
एक प्रसिद्ध नगर । * **खी०** सरण, याद; सुभ; [अ०]
पुरानका एक अम्बाय; रूप, शकल; चित्र; सुंदरता; भेष;
हालत; स्थिति; उपाय, दब; दंग, नौत; लक्षण, रंग-दंग;
बस्तुका बाधा रूप, कपरी हालत । -**आशावा**—वि०
शकल पहचाननेवाला, मामूली ज्ञान-पहचानवाला । -
आसावाई—**खी०** ज्ञान-पहचान, अन्तःपरिचय । -**गर्**-
पु० चित्रकार, मूर्तिकार । -**गरी**—**खी०** चित्रकारी । -
द्वार—वि० सुंदर, रूपवान् । -**परस्त**—वि० रूपकी पूजा
करनेवाला; केवल रूप देखनेवाला, जाहिर-परस्त । -
रूपक—**हाल**—**खी०** रूप । - **बाका**—वि० सुंदर,
रूपवान् । -**सीरत**—**खी०** रूप-गुण । -**ह्राम**—वि० जो
ऊपर अल्प और नीचे दुरा हो, जिसकी सूरतमें थोड़ा
हो । - **(ते)** **हाक**—**खी०** स्थिति, वर्तमान अवस्था । **सु०**
-**दिक्षामा**—शकल दिक्षामा, सामने आना । -**बहार**
जाना—उपाय सुझाना । -**मिकल आना**—अधिक सुंदर
हो जाना; उपाय सुझाना । -**पर हाह**—**नौरना**—अति-
शय धुणके कारण शङ्क न देखना, शय न लेना (वि०) ।
-**बदलना**—भेष बदलना; हालत बदलना । -**बनामा**
—शकल बनाना; चेहरेमें कोई भाव प्रकट करना; मुँह
विद्वाना; चित्र बनाना; रूपरेखा बनाना । -**बिगबना**—
शकल भूरी हो जाना; अवस्था बिगडना । -**बिगाडना**—
शकल खराब कर देना; चेहरेमें दोष; अवसन्ना प्रकट
करना । -**से बैहार होना**—अतिशय घृणा वा रोष होना,
देखना भी नञ्च न होना ।

सूरता—**खी०** [नं०] सज्जमें डूबी जानेवाली, मोपी गाय;
* बीरता ।

सूरताई—**खी०** बीरता ।

सूरति—**खी०** शकल, रूप; याद, सरण ।

सूरन—पु० एक कंद शाक, सूर्य, जमीकंद ।

सूरपनका—**खी०** 'शार्पणखा' ।

सूरवार—पु० पाजामा ।

सूरमा—पु० बहादुर, बौद्ध, शूरवीर । -**पन**—पु०
बीरता ।

सूरमा—पु० दे० 'सूरमा' ।

सूर—पु० अनाजका एक बीजा; * अंश मनुष्य; [अ०]
पुरानका कोई अम्बाय, सूरत । - **(रूप)** **हलकास**—पु०
पुरानका एक विशेष अम्बाय जिसे सुमलमान कियो
प्रेमोपेक्ष मानकर व्याहमें दूधसे पढ़वाती है ।

सुराह—पु० [का०] छेद । -**द्वार**—वि० जिसमें छेद हो ।

सुरि—पु० [सं०] सूर्य; पंडित; अतिशय पूजा करनेवाला;
छुण; जैनाचार्यकी उपाधि ('मक्तिना सुरि'); बृहस्पति
(देवाचार्य और ग्रह भी) ।

सूरी—**खी०** [सं०] सूर्यपत्नी; कुंभी; राई; पंडिता; * शूली;
बरछा । वि० [का०] दूर जातिका । पु० भारतका एक

मुसलिम राजवंश जो शेरशाहसे चला और जिसने १५२०
से १५५६ ई० तक राज्य किया ।

सूरी (रिच)—वि० [सं०] विद्वान् । पु० विद्वान् व्यक्त ।

सूक—पु० दे० 'सूर्य' ।

सूरमा—पु० दे० 'सूरमा' ।

सूर्य—पु० [सं०] अनादर ।

सूर्य—पु० [सं०] सूर्य, चंद्र ।

सूर्य—पु० [सं०] दे० 'सूर्य' । -**नञ्च**—**खी०** [हि०] दे०
'सूर्यनञ्च' ।

सूरि, सूरि—**खी०** [सं०] लोह-प्रतिमा (जिसे तप्त करके
व्यापारिकी जलते थे); गृहस्तंभ; कांति; व्याका; पानी-
का तल ।

सूर्य—पु० [सं०] सौर-मंडलका प्रधान पिंड या तारा
जिसकी पृथ्वी और मङ्गलके दूसरे ग्रह प्रदक्षिणा किया
करते हैं और जो पृथ्वीकी प्रकाश और उष्णता दिखनेका
साधन और उसके कणुकमका कारण है, आदित्य, रवि,
मानु; जाक; १° की संख्या; बहिका एक पुत्र; एक
दानव । -**कमल**—पु० गुरुमुखीका फूल । -**कर**—पु०
नर्यकिरण । -**करोडवल**—वि० सूर्यकी किरणें पकनेमें
प्रकाशित । -**कांत**—पु० एक तरहका प्वाटिक जिससे
सूर्यके सामने करनेसे जीव निकलती है, आतशी छोड़ा;
स्फटिक; एक पुष्प, आदित्यपर्णा । -**कांति**—**खी०** सूर्य-
की दीप्ति, चमक; तिलका फूल; एक पुष्प । -**काल**—पु०
दिन । -**कालानलक**—पु० शुभाशुभ फल जाननेका
एक चक्र (ज्यो०) । -**काल**—पु० एक गाल (संगीत);
एक जनपद । -**क्षय**—पु० सूर्य-मंडल । -**गर्भ**—पु०
एक बोधिसत्त्व । -**ग्रह**—पु० सूर्य; नर्यग्रहण; राहु और
केतु; धरेंका पैरा । -**ग्रहण**—पु० चंद्रमाकी छाया पड़नेसे
सूर्य-बिंबका छिप जाना (गैरगणि मत्से राहु या केतु
द्वारा सूर्यका ग्राम) । -**जलु (स)**—पु० एक राक्षस ।
-**ज**—पु० दे० 'सूर्य-तनय' । -**जा**—**खी०** दे० 'सूर्य',
तनय' । -**तनय**—पु० शनि; यम; तावणि मनु; रवेत;
सुमीष; कर्ण । -**तनवा**—**खी०** यमुना । -**तपा (पस्)**—
पु० एक मुनि । -**तापिनी**—**खी०** एक उपनिषद् ।
-**तीर्थ**—पु० एक तीर्थ । -**तेज (स)**—पु० सूर्यका तेज,
धूप । -**रक्ष (स)**—वि० सूर्यकी ओर देखनेवाला ।
-**देव**—पु० सूर्य भगवान् । -**देवत्व**—वि० जिसका देवता
सूर्य हो । -**धन**—वि० जिसकी धन्यामें सूर्यका चिह्न हो ।
-**पताकी (किध)**—पु० शिव । -**नंदन**—पु० दे०
'नर्य-सनय' । -**नक्षत्र**—पु० वह नक्षत्र जिसमें सूर्य हो ।
-**नगर**—पु० कश्मीरका एक प्राचीन नगर, कश्मीरकी
राजधानी । -**नास**—पु० एक दानव । -**नारायण**—
पु० सूर्य भगवान् । -**नैत्र**—पु० गरुडका एक पुत्र । -**पक्ष**—
वि० नर्यतापसे पका हुआ; स्वयं पक । -**पति**—पु० सूर्य
देवता । -**पत्नी**—**खी०** संज्ञा; छाया । -**पत्न**—पु०
आदित्यभक्त; अर्क; अर्कपत्नी । -**पर्णी**—**खी०** अर्कपत्नी;
माषपर्णा । -**पर्व (स)**—पु० सूर्यके नवी रात्रिमें प्रवेश
या सूर्यग्रहण आदिका पुष्पकाण । -**पाव**—पु० सूर्यकी
किरण । -**पुत्र**—पु० वरुण; शनि; यम; अधिनीकुमार;
सुधीष; कर्ण । -**पुत्री**—**खी०** यमुना; विजली । -**पुर**—

पु० दे० 'सूर्यसगर' । -पुराण-पु० सूर्यके माहात्म्यका वर्णन करनेवाला ग्रन्थ विशेष । -प्रवृत्ति-पु० समाधि-का एक प्रकार । -प्रभ-वि० सूर्यके समान प्रकाशित, प्रभाशुक्त । पु० एक समाधि; एक नौबिसत्त्व; एक नाया-सुर; कृष्णकी एक पत्नी लक्ष्मणाका प्रसाद; एक मरेज । -प्रभव-वि० सूर्यसे उत्पन्न । -प्रभातेजा(अस्)-पु० समाधिका एक प्रकार । -प्रशिष्य-पु० रात्रा जनक । -फणिष्ण-पु० कलित ज्योतिषका एक ऋजु जिसमें कार्य-विशेषमें शुभाशुभका ज्ञान प्राप्त करते हैं । -विष-पु० सूर्यका महल । -अ-वि० सूर्य जैसा दीप्तिमान् । -अक्त-अक्तक-वि० सूर्योपासक । पु० गुलदुपहरिया । -अक्ता-की० आदित्यभक्ता, दुरदुर । -आगा-की० एक नदी । -आनु-पु० एक बरस; एक राजा । -आट- (अ)-वि० सूर्य जैसा कांतिमान् । -आला(रु)-पु० बेरावत । -अटल-पु० सूर्यका घेरा; एक गंधर्व । -अधि-पु० सूर्यकांत मणि; एक फूल । -आल-पु० शिव । -सुखी (सिख)-पु० पीछे रगका एक बड़ा फूल जो सूर्यकी गतिके साथ ऊपर उठता और नीचे झुकता है । -अंज-पु० सूर्योपासनामें व्यवहृत सूर्यका चित्र वा प्रतिमा; सूर्यके वेषमें काम जानेवाला एक यन्त्र । -रश्मि-की० सूर्यकी किरणें । -रक्त(रु)-की० सूर्यका प्रकाश । -कला-की० आदित्यभक्ता, दुरदुर । -कोक-पु० सूर्यका लोक, सौर-भुवन । -बंश-पु० भारतवर्षके दो प्रमुखतम राजवंशों मेंसे एक जिसकी उत्पत्ति वैवस्वत मनुके पुत्र शक्राकुने मानी जाती है, शक्राकुवंश । -बंशी-वि० [वि०] नर्यवंशका । पु० सूर्यवंशमें उत्पन्न पुत्र । -बंश-वि० सूर्यवंशका । -बन-पु० एक वन । -बरलोचन-पु० समाधिका एक प्रकार । -बर्चा(बर्च)-वि० सूर्यसदृश; तेजोमयित । पु० एक ऋषि; एक देवगंधर्व । -बर्मा(अंश)-पु० त्रिलोका एक महाभारतकालीन राजा । -बल्लभा-की० रक्षिणी; आदित्यभक्ता । -बल्ली-की० अर्कपुष्पिका; क्षीरकाकोली । -बार-पु० रविवार । -बिकाली(सिख)-वि० सूर्यके प्रकट होनेपर खिलनेवाला । -विष्ण-पु० विष्णु । -विलोकन-पु० बचनेके चार महीनेका हीनेपर छठे बाहर ले जाकर सूर्यदर्शन करानेकी रस्म । -बुद्ध-पु० आका; अंधाबुद्धी । -बेष्म(रु)-पु० सूर्यवंशका । -अस्-पु० सूर्यकी प्रसन्नताके छिपे रविवारको किया जानेवाला ज्ञत; ज्योतिषमें एक ऋजु । -लानु-पु० एक राक्षस । -सिष्य-पु० याज्ञवल्क्य । -सिष्योत्पासी(सिख)-पु० जनक । -सोमा-की० सूर्यका प्रकाश; एक फूल । -अ-पु० एक विश्वेदेव । -संक्रम, संक्रमण-पु०, संक्रांति-की० सूर्यका वृत्तसे राशिमें प्रवेश । -संज्ञ-पु० एक तरहका आळी केसर; रंगि; आका । -सदृश-पु० लीला-वज (को०) । -साम(रु)-पु० कुछ सामोंके नाम । -सारथि-पु० अरुण । -साधर्मि-पु० एक यन्त्र । -सावित्र-पु० एक विश्वेदेव । -सिद्धांत-पु० आस्कराचार्य-रचित गणित ज्योतिषका एक प्रसिद्ध ग्रंथ । -सुत-पु० रुनि; सुयोग; कर्ण; वन । -सूक-पु० कज्जिका एक द्रव्य । -सूत-पु० सूर्यका सारथि, अरुण ।

-सुति-की०, -स्तोत्र-पु० वह स्तुति जो सूर्यके प्रति हो । -सुत-पु० एक एकादश ग्रह । -हृदय-सूर्यका एक स्तन ।

सूर्यक-वि० [मं०] सूर्यसदृश ।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराशा'-पु० (सं० १९५३-सं० २०१८) छायावादी कवियोंकी हृदयबीमें आपका स्थान है । काव्यमें मुक्त छंद और संगीतपरकता आपकी विशेष देन है । रचनाएँ-काव्य-परिमल, गीतिका, सुखसीरास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, वेला, मये पते, अपरा; वपन्यास-अपरा, अलका, निरुपमा आदि; कहानी संग्रह छिछो, सुकुलकी बीबी आदि; आलोचनात्मक निबंध संग्रह-प्रबंध प्रतिभा, रवींद्रकविता कानन आदि; रेखा-चित्र-कुली योद, बिल्केसुर बकरिहा; जीवनिर्वा-राणा-प्रताप, प्रकाश आदि ।

सूर्यार्क-पु० [सं०] वह नक्षत्र जिसमें सूर्य हो ।

सूर्याशु-पु० [सं०] सूर्यके किरण ।

सूर्या-की० [सं०] सूर्यकी परनी संज्ञा; इंद्रवारुणी; नव-विवाहित की० ।

सूर्यार्क-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।

सूर्याशु-वि० [सं०] सूर्य जिसकी ओर हो; सूर्य अर्क-ओरोंवाला । पु० विष्णु; एक राजा; एक बानर ।

सूर्यार्ण-की० [सं०] सूर्यपत्नी, छाया ।

सूर्यास्त-पु० [सं०] षष्ठ ।

सूर्यास्तज-पु० [सं०] रुनि; कर्ण; सूर्योदय; वन ।

सूर्याग्नि-पु० [सं०] एक पर्वत ।

सूर्यापाव-पु० [सं०] सूर्योदय ।

सूर्यापीड-पु० [सं०] परीक्षितका एक पुत्र ।

सूर्यार्ध-पु० [सं०] सूर्यकी भक्तिपूर्वक दिया जानेवाली अर्घ्य ।

सूर्यालोक-पु० [सं०] सूरजकी रोगनी; षष्ठ ।

सूर्यावर्त-पु० [सं०] दुरदुरका पोषा; सुबर्चला, गज-पिंपली; अर्द्धकपाकी, आधामांगी; समाधिका एक प्रकार ।

सूर्यावर्मा-की० [सं०] आदित्यभक्ता, दुरदुर ।

सूर्यास्मा(हमरु)-पु० [सं०] सूर्यकांत मणि ।

सूर्याश्व-पु० [सं०] सूर्यका घोडा ।

सूर्यास्त-पु० [सं०] सूरजका डूबना; सूरजके डूबनेका समय, मध्या ।

सूर्याह-वि० [मं०] सूर्यसदृश । पु० नौषा; अकवत, महेंद्रवाकणी ।

सूर्येदुसंगम-पु० [सं०] सूर्य-चंद्रमाका मिलन, अमावास्या ।

सूर्योद-वि० [सं०] अस्त होते हुए सूर्य द्वारा छाया दूधरा । पु० सूर्योदकावर्णमें जानेवाला अतिथि ।

सूर्योत्थान-पु० [सं०] सूर्योदय ।

सूर्योदय-पु० [सं०] सूरजका उगना; सूरजके उगनेका समय, सवेरा । -सिरि-पु० उदयाचल ।

सूर्योदयन-पु० [सं०] सूर्योदय ।

सूर्योत्थान-पु० [सं०] सूर्यवन नामका टीर्थ ।

सूर्योपनिषद्-की० [सं०] एक उपनिषद् ।

सूर्योपस्थान-पु० [सं०] सूर्योपस्थानके समय की जानेवाली सूर्यकी एक विशेष उपासना ।

सुर्घोपासक-पु० [म०] सुर्घकी उपासना करनेवाला, सुर्घपूजक ।

सुर्घोपासना-स्त्री० [स०] सुर्घदेवकी पूजा, आराधना ।

शूल*-पु० दे० 'शूल'; मालाका पुकरा । -**धर**-पु० दे० 'शूलधर' । -**धारी**-पु० दे० 'शूलधारी' । -**पानि**-पु० दे० 'शूलपानि' ।

सुलना*-अ० क्रि० दुलना, चुभना, ब्यथित होना । म० क्रि० भालेसे छेदना; दुःख देना-'मधुकर कछत मेंदेशो सुलहु'-मर ।

सुली-स्त्री० लोहेका मुकीला छड़ हलाकर प्राणदंड देनेका एक प्रकार । * पु० दे० 'शुली' ।

सुवना*-अ० बहना, लवना । पु० सुग्गा, तोता ।

सुवरा*-पु० दे० 'सुर' ।

सुवा-पु० सुग्गा ।

सुस-पु० एक जलजल, शिशुमार । स्त्री० [अ०] सुलेठी; [फा०] एक जल, गोह ।

सुसमार-पु० सँस । स्त्री० [फा०] गोह ।

सुसि*-पु० दे० 'सुम' ।

सुहा-पु० एक तरहका गहरा लाल रंग, एक मकर राग । [व०] लाल । -**काव्हा**-पु० एक मकर राग । -**टोही**-स्त्री० एक रागिनी । -**बिलावल**-पु० एक मकर राग ।

-**ध्याम**-पु० एक मकर राग ।

सुहा-वि० स्त्री० दे० 'सुहा' । स्त्री० मालिमा ।

सुखला*-स्त्री० दे० 'सुखला' ।

सुग्ग*-पु० चोटी, मित्रा, कमूरा; मांग; शृंग बाजा ।

-**बेर**-पु० अदरक; सौत । -**पुर***-पु० 'शृंगवेगपुर' ।

सुग्गी*-पु० दे० 'शृंग' ।

सुजय-पु० [स०] एक जनपद, मनुका एक पुत्र ।

सुजयी, **सुजरी**-स्त्री० [म०] यजमानकी दो पत्नियाँ ।

सुक्क*-स्त्री० [म०] कंड रोग, सुजलीकी बीमारी ।

सुक-पु० [स०] बाघ, हवा; कमल, बाण, नीर; वज्र । * माला ।

सुकास*-पु० दे० 'शुमाल' ।

सुक, **सुक**-पु० [स०] ओष्ठका प्रात भाग ।

सुक(न), **सुक(न)**-पु० [म०] दे० 'सुक' ।

सुक्कर्णा, **सुक्किणी**, **सुक्कणी**, **सुक्किर्णा**-स्त्री० [स०] दे० 'सुक' ।

सुक(र), **सुक(र)**-पु० [स०] दे० 'सुक' ।

सुक्था-स्त्री० [स०] जोक ।

सुग्ग-पु० [स०] मित्रिपाल, एक प्रकारका बगडा, माला, बाण; * माला ।

सुगाल-पु० [स०] गीदड़; एक वृक्ष; एक दंत; दुष्ट, धूर्त, घुरे स्वभावका या कड़ुभायी मनुष्य; कायर आदमी; करवीरपुरका राजा बासुदेव । -**कंठक**-पु० मत्तानामकी पोथा, भस्मौक । -**कोलि**-पु० एक तरहका बेर ।

-**घंटी**-स्त्री० तालमस्त्राना । -**जंजु**-पु० तरबूज; बेरका फल । -**रूप**-पु० शिव । -**बद्ध**-पु० एक असुर ।

-**वास्तुक**-पु० एक तरहका खुवा । -**विमा**, **हुंता**-स्त्री० पक्षिपणी, पिठवन ।

सुगालिका-स्त्री० [स०] गीदड़ी; लोमड़ी; पलायन; दगा;

विदारी कंद ।

सुविनी-स्त्री० [स०] गीदड़ी ।

सुगाली-स्त्री० [स०] गीदड़ी; लोमड़ी; पलायन; दगा; कोकिलाक्ष; विदारी कंद ।

सुविनी*-स्त्री० दे० 'सुविनी' ।

सुजक*-पु० सटा, रचनेवाला ।

सुजन*-पु० दे० 'सर्जन' । -**शीलता**-स्त्री० रचना-शक्ति । -**हार**-पु० सटा, मृष्टिकता ।

सुजना*-म० क्रि० रचना, बनाना, उत्पन्न करना ।

सुजय-पु० [म०] एक पक्षी ।

सुजवा-स्त्री० [स०] नील मक्षिका ।

सुजिकाक्षर-पु० [स०] मंत्रिकाक्षर, मन्त्रीक्षर ।

सुज्य-वि० [म०] छोड़ने योग्य; उत्पन्न करने योग्य ।

सुनि-पु० [स०] शत्रु; चंद्रमा । स्त्री० हाथीका अकुश ।

सुनिक-पु० [स०] अकुश ।

सुनिका-स्त्री० [म०] दे० 'सुणीका' ।

सुणी-स्त्री० [म०] हंसिया; हाथीका अकुश ।

सुणीक-पु० [स०] बाघ; अग्नि; वज्र; मत्त व्यक्ति ।

सुणीका-स्त्री० [स०] लाला, लार ।

सुत-वि० [स०] गन, विचलित; विसका हुआ । पु० गमन, पलायन ।

सुता-स्त्री० [म०] गमन, पलायन ।

सुति-स्त्री० [म०] निर्माण; जन्म; गमन; मरकना; मार्ग; चोट पहुँचाना ।

सुत्वर-वि० [स०] गमनशील ।

सुत्वरी-स्त्री० [म०] धारा; नदी; माता ।

सुत्वा(**स्वव**)-पु० [म०] लडा, प्रजापति; विनय, मरकना; बुद्धि ।

सुत्वर-पु० [स०] मय ।

सुत्वाक-पु० [स०] बाघ; अग्नि; वनाग्नि; हिरन; इहका वज्र, मयेंभल; एक तरहका गिरगिट, गोह । स्त्री० नदी; धारा ।

सुप-पु० [स०] चंद्रमा; एक अमर ।

सुपाट-पु० [स०] फूलके नीचेकी छोटी पत्ती ।

सुपाटिका-स्त्री० [स०] पक्षीकी चोंच ।

सुपाटी-स्त्री० [स०] एक माप, जूग; कौम; मिलावटी धातु, पुस्तिका ।

सुस-वि० [स०] मरका हुआ; फिसलकर निकला हुआ ।

सुप्मा(**मक्**)-पु० [स०] शिशु; मय; मन्वाणी ।

सुप्र-वि० [स०] चिकना, पिच्छल । पु० चंद्रमा; मधु ।

सुप्रा-स्त्री० [स०] सिप्रा नामक भारतकी प्रसिद्ध नदी ।

सुसर-पु० [म०] एक पशु; बालशृंग; एक असुर । वि० गमनशील ।

सुमल-पु० [म०] एक अमर ।

सुष्ट-वि० [म०] निर्मित, बनाया हुआ; युक्त; लय, त्यागा हुआ; फेंका हुआ; मज्जित, बिभूषित; संपन्न, से युक्त; तुला हुआ; प्रसन्न; निश्चित । -**मास्त**-वि० उदर-बाधु निकालनेवाला । -**सुष्टुरीष**-वि० पेशाब और दस्त लानेवाला ।

सृष्टि-स्त्री० [स०] परित्याग; निर्माण; निर्मिति; जगत् ,

ममार्थ; प्रकृति; मसारकी उत्पत्ति; संसारके बनानेकी क्रिया; समूह; पदार्थका भाषाभाष; दानशीलता; एक नरहकी इंड; गभारी। पु० उग्रसेनका एक पुत्र। -कर्ता-
(ई)-पु० ब्रह्मा। -कृत्-पु० सृष्टि करनेवाला; ईश्वर; ब्रह्मा; पितृपापदा। -दा-स्त्री० एक ओपवि, गर्भदात्री।
-पक्ष-पु० एक मंत्रशक्ति। -प्रदा-स्त्री० पुत्रदा या गर्भदात्री नामक छुप। -विज्ञान-शास्त्र-पु० सृष्टिकी रचना आदिकी सीमासा करनेवाला शास्त्र, विज्ञान।

सूच्यन्तर-पु० [सं०] अंतर्जातीय विवाहमे उत्पन्न मतान।

सैक-स्त्री० मैकनेकी क्रिया।

सैकना-स० क्रि० आगपर पकाना; गरम करना।

सैगर-पु० एक पौधा; बल्लकी छीमी; एक धान; राज-पूतोंका एक भेद।

सैगरा-पु० बारी चीज (लकड़ी, पत्थर आदि) लटकाकर ले जानेका ढाहा।

सैठ-स्त्री० दूधकी धार। पु० [अ०] मुशब्द; मुगधिपूर्ण द्रव्य।

सैटर-पु० [अ०] केंद्रविन्दु या स्थान।

सैटल-वि० [अ०] मुख्य, केंद्रीय।

सैठा-पु० सरकहेका निचला भाग; छप्पर छानेका एक नुण।

सैठ-पु० मुनारोंके काम आनेवाला एक खनिज द्रव्य।

सैत-स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिमे कुछ रूपया-पैसा न लगना। -सैत-अ० सुपत्तमें, बिना दाम दिये; नाहक।

-का-जिममें, किए कुछ देना न पडा हो। -मै-मुपममें।

सैतना-स० क्रि० मैभाळकर रखना; पकत्र करना, बढोरना; समेटना।

सैति, सैती-स्त्री० दे० 'सत्'। प्र० करण और अपा-दानकी विभक्ति।

सैथा-पु० दे० 'मैठा'।

सैथी-स्त्री० दाक्ति, बरछी।

सैदुर-पु० सिद्ध।

सैदुरा-वि० दे० 'मैदुरिया'।

सैदुरिया-पु० लाल फूलोंवाला एक पौधा। वि० सिद्धके रगका। -आम-पु० एक आम जो पकनेपर कुछ लाल होता है।

सैदुरी-वि० दे० 'सैदुरिया'। स्त्री० लाल रंगकी गाय।

सैदुरि-वि० [सं०] इन्द्रिययुक्त, मजबूत; पुसबलुक।

सैव-स्त्री० वह छेद जो चौर दीवार तोड़कर बनाते हैं, सुरंग।

सैचनार-स० क्रि० मैष लगाना।

सैधा-पु० सिंधु नदीके पासमे निकलनेवाला एक खनिज नमक।

सैधिया-वि० सैष लगानेवाला। पु० एक मराठा राज-वंश; † पेईटा, फूट।

सैधी-स्त्री० खजूर; खजूरकी सराव, फूट, पेईटा।

सैधुआर-पु० एक मांसाहारी जंतु।

सैमल-पु० शामल, सैमल।

सैवई-स्त्री० मैदेमे बनाये हुए खतके-मे छच्छे। पु० -

पूरना, -बटना-हथेलियोंमे वक्कर सेवई बनाना।

सैवर-पु० दे० 'सैमल'।

सैसर-पु० [अ०] बह सरकारी कर्मचारी जो पत्र, पुस्तक, फिल्म, नाटक और मैना-संबंधी सूचनाओंका परीक्षण कर आपत्ति-जनक अंश निकाल देता है; वक्तेजक और आपत्ति-जनक अंशोंका परीक्षण।

सैसस-पु० [अ०] जन्मगणना, महुंमशुमारी।

सैहा-स्त्री० दे० 'मैह'।

सैहा-पु० कुंआ खोदनेवाला।

सैहुआ-पु० एक तरहका चर्मरोग जिसमें चमड़ेपर सफेद सा धब्बा हो जाता है।

सैहुब-पु० रसुबी, मूहर।

से-प्र० करण कारक और अपादान कारकका चिह्न।

वि० 'मा'का बहुवचन, समान, तुल्य। सर्व० 'सो' या 'जे'का अवधि बहुवचन रूप, 'रे' स्त्री० [सं०] मैषा, टहल, कामदेव-पत्नी।

मेई-स्त्री० काठका एक बरतन जिसमें भनाज नापते हैं।

मेठ-पु० मैष नामका फल।

मेकंड-पु० [अ०] कालका एक बहुत छोटा परिमाण, मिनिटका साठवाँ हिस्सा। वि० दूसरा।

मेक-पु० [सं०] मांघनेकी क्रिया; छिचकाव, आर्द्र करना अभिपक्ष; नर्पण; खाव; नहानेके काम आनेवाला फुडारा, शुक्रवात; किसी तरह पदार्थकी बूंद; नैलमर्दन, एक प्राचीन जनपद। -पात्र, -आजल-पु० पानी आनेका बरतन, दोल। -मिश्राक-पु० दही मिला दूध खाद्य-पदार्थ।

मेकवा-पु० पैना, बादल।

मेकिस-वि० [सं०] सीधा हुआ; गलाकर शक्का हुआ (जैसे लोहा)। पु० मूली।

मेकुवा-पु० हल्का-रथोंका दौड़ा।

मेकव्य-वि० [सं०] माघने योग्य; गाया, नर मि, जानेवाला।

मेका(कू)-वि० [सं०] मांघनेवाला। पु० वह मि माघनेका काम करे; पानी लगानेवाला; पनि।

मेकस-पु० [सं०] सींचनेका पात्र, बाल्टी।

मेकैटरियट-पु० [अ०] शासन-व्यवस्था करनेवाले मंत्रि-उपरिवाक्य; मन्त्रिवाक्य।

मेकैटरी-पु० [अ०] मैत्री; किसी सत्त्वा, सधनके वांन मन्त्रालनके लिए उत्तरदायी व्यक्ति (जैसे सोशलिस्टपाटी; मेकैटरी); किसीके मिजी कार्य, पक्षव्यवहार, व्यवस्था; महापत्ता करनेवाला; शासन-व्यवस्थाके किसी विभागके उच्च अधिकारी।

मेकसाज-पु० [अ०] विभाग।

मेकस-पु० रोपनाय; बचा हुआ अंस; अंत, समाप्ति; दे० 'मेक'।

मेकस-पु० दे० 'मेसर'।

मेकासल-पु० राजपूनोंकी एक उपशाखा।

मेका-स्त्री० दे० 'शेकी'।

मेगा-पु० [सं०] कैकनेक; बन्ना।

मेगा-पु० दे० 'सीया'।

सेमुन+पु० दे० 'सामने'।

सेच-पु० [सं०] सिंचाई, छिष्काव।

सेचक-पु० [सं०] बागल। वि० सींचनेवाला।

सेचन-पु० [सं०] सिंचाई, छिष्काव; अभिषेक; स्वाध; नहानेका कुहारा; डलाई (कोई आदिकी); बाल्टी; पानी उलीचनेका पात्र। -झट-पु० सींचनेका बरतन।

सेचनक-पु० [सं०] नहानेका कुहारा; अभिषेक।

सेचनी-स्त्री० [सं०] डोल, बाल्टी।

सेचनीय-वि० [सं०] सींचने, छिष्काव करने योग्य।

सेचित-वि० [सं०] सींचा, नर किया हुआ; छिष्काव किया हुआ।

सेच्य-वि० [सं०] दे० 'सेचनीय'।

सेज-स्त्री० शय्या, बिस्तर। -पाख-पु० राजाके शयनागारका पहरेदार।

सेजवृद्ध-वि०, पु० [का०] दे० 'तेरह'।

सेजवृद्धम-वि० [का०] तेरहवाँ।

सेजविषा-स्त्री० दे० 'सेज'।

सेजिया+स्त्री० दे० 'सेज'।

सेज्या-स्त्री० दे० 'सेज'।

सेज्यावि०-पु० मझादि श्रेणी।

सेज्या-अ० कि० पृथक् होना, अलग होना।

सेट-पु० [म०] एक पुरानी तोल या मान; [अ०] एक ही तरहकी कई चीजोंका समूह।

सेटना-म० कि० मानना, समझना, कुछ महत्त्व समझना।

सेटिलसेट-पु० [अ०] जमीनकी पैमाइश करके लगान नय करना, बंदाबस्त; उपनिवृत्त।

सेट्ट-पु० [म०] एक फल, तरबूज या पेड़।

सेट्ट-पु० महाजन, बड़ा माहका; व्यापारी; धनी आदमी; मुनार। [स्त्री० 'सेटानी']।

सेटन+पु० झाड़ू।

सेठा+पु० दे० 'से'।

सेठा+पु० एक तरहका अर्धहा धान।

सेठा-पु० दे० 'मैठा'; * नाकका मेल -' ओखिमै गोहर नाकमै सेठो'-मुदरदाम।

सेत-वि० इतैत, मफेद। -कुल्ली-पु० एक नाग-कुल।

-दीप-पु० इतैत दीप। -दुति-पु० चद्रमा।

सेत-पु० सेतु, पुल। -बंघ-पु० दे० 'सेतुबंध'।

सेतवारी-म० कि० दे० 'मैतवा'।

सेतवारी-पु० अथवा काष्ठनेकी करली।

सेतव्य-वि० [सं०] साथ बंधने योग्य।

सेतिका-स्त्री० [सं०] अथवा।

सेती-प्र० से।

सेमु-पु० [सं०] मेक; बाँध; पुल; बंधन; पहाड़परका तग रास्ता; मर्यादा, लोमा; रोक; निश्चित नियम; प्रणव, ओष; कारिका, टीका; वरुण वृक्ष; द्रुमुका एक पुत्र, वंशका एक पुत्र; वह मकान जिसकी छतकी धरनें कोलोमें तड़ ही गयी हों। * वि० इतैत। -कर-पु० पुल आदिका निर्माण करनेवाला। -कर्म(वृ)-पु० पुल आदिके निर्माणका काम। -ज-पु० दक्षिणापथका एक

खंड। -पति-पु० रामनर (मश्रा)के राजाओंको बंधागत उपाधि। -पथ-पु० पहाड़ी, दुर्गम स्थानोंमें जानेवाला मार्ग। -प्रद-पु० कृष्ण। -बंध-पु० बाँध, पुल आदिका निर्माण; रामके लंका जानेके लिए समुद्रपर नल-नीलका बनाया हुआ पुल; पुल; नहर (को०)। -बंधन-पु० पुष्पाका निर्माण; बाँध; पुल; सीमापरकी मेड़ आदि। -मेसा(सु)-पु० बाँध, पुल आदि तोड़नेवाला। -मेद-पु० बाँध, पुल आदिका टूटना। -मेदी(विष्)-वि० मीमा नष्ट करनेवाला; बाधक; दूर करनेवाला, देती वृक्ष। -वृक्ष-पु० वरुण वृक्ष। -झेल-पु० मीमाका काम देनेवाला पर्वत।

सेमुक-पु० [सं०] बाँध; पुल; वरुण वृक्ष। * अ० सामने, सम्मुख।

सेमुवा-पु० मत्त।

सेम-पु० [म०] बंधन; जबीर; निगट. बेदी।

सेमिया-पु० नेत्रचिकित्सक।

सेव-पु० दे० 'स्वेद'-'हरि औष सारे अंग मेंदमें रहे है डूबि'-कलम। -ज-पु० स्वेदजन्य कीट।

सेवरा-पु० तीन हाँगेवाला ढालान।

सेविका(वस्)-वि० [सं०] वैठा हुआ।

सेवक-पु० [सं०] एक प्राचीन राजा।

सेव्य-वि० [सं०] निवारण करने योग्य।

सेव-वि० [म०] इताने, दूर करनेवाला। पु० निषेध।

सेवक-वि० [सं०] निवारक, प्रतिरोधक।

सेवा-स्त्री० [सं०] माही नामक जंतु।

सेन-वि० [सं०] स्वामियुक्त, मनाथ; आश्रित। पु० शरीर;

वैवाजतीय बगालियोंकी उपाधि; दिगंबर जैन माधुओंका एक भेद; * इतैत, बाज पक्षी -'इतै गव कौच बिलोकि मेन तब हौँ आपने तनकी'-विनय०। स्त्री० मेनाका ममासगन रूप; * मेना। -कुल-बंध-पु० बगालका एक राजवंश। -खिल्-वि० मेनाकी विजित करनेवाला।

पु० कृष्णका एक पुत्र; कुमायका एक पुत्र; विशदका एक पुत्र। स्त्री० एक अप्सरा। -पथ-पति-पु० मेना-नायक। -स्वेद-पु० शवरका एक पुत्र। -हा (हव)-पु० शवरका एक पुत्र।

सेनक-पु० [म०] शवरका एक पुत्र; एक वैवाकरण।

सेनांग-पु० [सं०] मेनाका-पैरल, डाढी, घोड़ा और रथ-मेसे कोई अंग; मेनाका कोई भाग, टुकड़ी। -पति-पु० टुकड़ीका नायक।

सेना-स्त्री० [सं०] रणशिक्षा-ग्राम और मशाल व्यक्तियोंका दल, वाहिनी, फौज; शक्ति, आला; इद्राणी; इंद्रका वज्र, फौजकी एक बहुत छोटी टुकड़ी जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल सैनिक होते थे; वेदशास्त्रोंकी प्राचीन उपाधि; वर्तमान अवस्थिणिके तीसरे अर्द्ध शतकी माता। -कृष्ण-पु० मेनाका पार्श्व। -कर्म(वृ)-पु० मेनाका प्रबंध या नेतृत्व। -कृष्ण-पु० शिव।

-गोष-पु० एक तरहका सैनिक अधिकारी। -खर-पु० सैनिक, सिपाही। -द्वार-पु० [हि०] सेनानायक; सैनिक। -मायक-पु० सेनापति। -मी-पु० सेना-नायक; काश्मिर; एक अद्र; शवरका एक पुत्र; पुत्रराष्ट्रका

एक पुत्र; एक तरहका पति। -**पति**-पु० सिपहसालार; काफिकेय; शिव; धतराष्ट्रका एक पुत्र; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि। -० **पति**-पु० प्रधान सेनापति। -**परिच्छद**-वि० सेनामे धारा हुआ। -**पाल**-पु० सेनानायक। -**पुष्ट**-पु० सेनाका वृद्धभाग। -**प्रणेत**(**पु**)-पु० सेनानायक। -**अंग**-पु० सेनाका पितर-वितर हो जाना। -**अच्छ**-पु० फौजी रसद और बेगार (को०)। -**मुख**-पु० सेनाका अग्रभाग; फौजकी एक टुकड़ी जिसमें ३ वा ९ हाथी, ३ वा ९ रथ, ९ वा २० घोड़े और १५ वा ४५ सैनिक होते थे; नगरद्वारतक जानेवाला दवा हुआ रास्ता; नगर-द्वारके सामने बना हुआ बाँध। -**योग**-पु० फौजकी तैयारी, फौजी सामान। -**रक्ष**-पु० प्रहरी, सतरी। -**वास**-पु० शिविर; फौजकी छावनी। -**बाह**-पु० सेनानायक। -**प्युह**-पु० सैनिकोंकी विशेष स्थानोंपर स्थापना। -**समुच्च**-पु० सैनिकोंका एक जगह एकत्र होना; एकत्र सेना। -**ख**-पु० सैनिक। -**स्थान**-पु० शिविर; छावनी। -**हा**(**हन्**)-पु० शहरका एक पुत्र, सेनहा।

सेनाग्र-पु० [म०] सेनाका अग्रभाग हिस्सा।

सेनाजोद, सेनाजीवी (विष्)-पु० [म०] सैनिक कार्योंमें जीविका प्राप्त करनेवाला।

सेनाधिकारी (रिन्)-पु० [म०] सेनानायक, फौजी अफसर।

सेनाधिनाथ-पु० [म०] सेनाका प्रधान।

सेनाधिप, सेनाधिपति-पु० [स०] सेनापति।

सेनाधीश-पु० [स०] सेनापति।

सेनाध्यक्ष-पु० [स०] सेनापति।

सेनाभिगोष्ठा (रु)-पु० [म०] सेनाका रक्षक।

सेनिक-खी० श्रेणी, पक्षि।

सेनिका-खी० माछा बाज; एक छद्म।

सेनी-पु० मछड़ेबडा अमानवामकालीन नाम। खी० रकाबी; नकाशीदार छोटी थाली; * श्रेणी; सीढ़ी; * माछा बाज।

सेनुरा-पु० सिद्धर।

सेफ-पु० [म०] शिष्ट।

सेक-पु० [म०] एक तरहका लोहेका मजबूत मृदक जिसमें रुपये तथा बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं, तिजोरी।

सेकाकिता-खी० दे० 'सेकाकिता'।

सेब-पु० [का०] एक प्रसिद्ध फल और उमका पेड़।

सेम्ब-पु० [स०] ठंडक, शीतलता। वि० ठंडा, शीतल।

सेमसिका, सेमसली-खी० [स०] मफेट गुलाब, सेबती।

सेम-खी० एक फली जो तरकारीके काम जाती है, शिमी।

सेमई-वि० हल्के मज्ज रंगका। पु० ऐसा रंग। * खी० सेमई।

सेमर-पु० शास्त्रालि, सेमल; * टल्लल।

सेमल-पु० एक बड़ा वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं और फलोंमें हई निकलती है। -**सुयल**-पु० सेमलकी जड़। -**सकंद**-पु० सेमलका एक अंग।

सेमा-पु० बघी सेम।

सेमिटिक-पु० नृवंश-शास्त्रके अनुसार एक मानव-वंश जिसमें अरब, यहूदी, मिस्री और सीरियन जातियोंकी गणना है। वि० रोम से उत्पन्न (जातियों)।

सेमीकोलन-पु० [म०] एक विराम-चिह्न, अर्ध विराम(;)।

सेबन-पु० [स०] विषवाभिन्नका एक पुत्र।

सेर-पु० [स०] चीलह छट्ठीकी एक लौक; * सेर, व्यास; * एक कान। * खी० एक मछली। -**साहि**-पु० सेरशाह जिनमें हुनायूँकी परास्त कर दिल्लीका शासन प्राप्त किया था।

सेर-वि० [का०] भरा हुआ; तुप्त, संतुष्ट, जिने किसी चीजकी चाह न हो; बहुत, प्रचुर (सेर हासिल)। -**चस्म**-वि० संतुष्ट, नृणागरहित; उदार, दानशील। -**चक्षी**-खी० संतुष्टता; चाह, नृणाका अभाव।

सेरवा-पु० ओमात समय भूसा उड़ानेका कपड़ा; दे० 'सेरा'; टीवालीके प्रातःकाल सूट पीटनेकी प्रथा।

सेरवावा-म० कि० दे० 'सेराना'।

सेरहा-खी० फलकी उपजपर लगनेवाला एक कर।

सेरा-पु० खाटकी मिरकी औरकी पाटी; वह जमीन जिसकी सिंचाई हो चुकी हो।

सेराना-म० कि० ठंड * करना; नृप्त करना; बहा देना। अ० कि० ठंडा होना; तुप्त होना; समाप्त होना. मरना। * पु० सिरहाना।

सेराह-वि० [का०] अच्छी तरह सींचा हुआ, तर; बर-भरा, मकुल। -**हासिल**-वि० जिसमें बहुत लाभ हो, उपजाऊ, वरमेज (जमीन)। **मु०**-होना-नष्ट होना; मर भर जाना; ऊब जाना।

सेराबी-खी० सुमिन होना, मिचान; हरा-भरा होना।

सेराल-पु० [म०] हलका पीलापन। वि० हलका पीला।

सेराह-पु० [स०] दूधके रगवा पीछा।

सेरी-खी० [का०] तुप्ति; जी भर जाना; ऊब जाना. * रास्ता, मार्ग-'वा मेरी माधू गया मो नौ राखी मुँडि'-माखी।

सेरीना-खी० अग्रामीसे जमादारकी मिलनेवाला भनाज या चारेका अंग।

सेर-वि० [स०] जकड़ने, बाँधनेवाला।

सेरहाह-पु० [स०] माथेपर दागवाला मफेट धोड़ा।

सेर्रा-पु० छिमेकीका पेड़, लहटोरा।

सेर्य-वि० [स०] ईर्ष्यामें भरा हुआ। अ० ईर्ष्यापूर्वक।

सेल-पु० मींग, माला; * पानी बलीचनेका काठका बर-नन; हलमें लगी हुई बीज गिरानेकी मछी। * खी० माला, बडी।

सेलखड़ी-खी० दे० 'मिलखड़ी'।

सेलम-पु० [स०] लुटेरा।

सेलवा-म० कि० 'सेल्हना'।

सेला-पु० देहकी बाहर वा साफा (वर आदि); उम्मा चावल।

सेलिया-पु० धोरेकी एक जाति। खी० बिती।

सेलिस-पु० [म०] एक मफेट हिरन।

सेली-खी० बरछी; छोटी चादर; सूत आदिकी योगियोंका बडी; छिमेकी एक गहना; एक मछली।

सेखु-पु० [सं०] किसीका; एक बड़ी सम्पत्ति (बौ०) ।

सेखु, सेखा, सेवह*-पु० माला, बरछा ।

सेवहना*-अ० क्रि० चल् बम्पना, भर जाना ।

सेवहर-पु० नस ।

सेवहा-पु० एक अगहनिया धान; † रेशमी चादर या माफा ।

सेवही-खी० छोटी चादर; सूत, ऊन आदिकी माला ।

सेवै*-पु० एक ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ीसे आलमारी आदि बनाते हैं ।

सेवैई-खी० दे० 'सेवै'; चारेके काम आनेवाली एक घास ।

सेवैही*-खी० एक धान ।

सेवंत-पु० एक राग ।

सेवैर*-पु० दे० 'सेयल' ।

सेव-पु० बेमनसे बमनेवाला सत या होरी जैसा पतला या कुछ मोटा एकवान जो नमकीन या मोठा होता है; दे० 'सेव'; [सं०] दे० 'सेवन' ।

सेवक-वि० [सं०] सेवा, पूजा, सम्मान करनेवाला; अभ्यास करनेवाला; प्रयोगमें लानेवाला; आश्रित । पु० नौकर, परिचारक; आश्रित व्यक्ति; भक्त, आराधक; मीनेवाला; बौरा ।

सेवकाई-खी० सेवा, टहल, परिचया ।

सेवकालु-पु० [मं०] एक पोषा, दुग्धपेया ।

सेवकी*-खी० नौकरानी, दासी ।

सेवग*-पु० दे० 'सेवक' ।

सेववा-पु० जैन माधुओंका एक भेद; भेदेका बना एक नमकीन एकवान ।

सेवति*-खी० दे० 'स्वाति' ।

सेवती-खी० [सं०] एक फूल, मफेंद गुलाब ।

सेवदाना-पु० सोवाधीनके दाने ।

सेवधि-पु० [मं०] दे० 'शेवधि' ।

सेवन-पु० [सं०] सेवा, टहल; पूजन, उपासना, भक्ति; अभ्यास; व्यवहार; वास करना; मैदुन; शोधना; सीना; टँका लगाना; बौरा; † चारेके काम आनेवाली एक घास ।

सेवना-सं० क्रि० सेवा करना । खी० [सं०] आराधना ।

सेवनी-खी० [सं०] मूई; मीवन; मीवन जैसा शरीरके किसी अंगका योग (मस्तकमें पोंच, जीभमें एक और भित्तमें एक-कुल सात); नूरी; * दाम्नी ।

सेवनी(निव)-पु० [सं०] हलवाहा (?) ।

सेवनीय-वि० [सं०] आराध्य, पूज्य; व्यवहाय; सेव्य, सेवा योग्य; सीने योग्य ।

सेवर-पु० दे० 'शवर'; * सेमल-'विनु सत जय सेवरकर पूजा'-पं० । † वि० कय पका हुआ (मिट्टीका बरतन) ।

सेवरा-पु० दे० 'सेववा' ।

सेवरी-खी० दे० 'शवरी' ।

सेवर्ला-पु० ब्याहकी एक रस्म जिसमें दूजा आरणीकी धालीसे सिर छुलाता है ।

सेवर्बि-खी० [सं०] अंजलिमें कोई वस्तु रखकर किसीकी भक्तिपूर्वक अर्पित करना; अंजलिपत्र होकर भक्तिपूर्वक प्रणाम करना ।

सेवा-खी० परिचयी, खिदमत; पूजा, आराधना;

प्रयोग; उपभोग; समोग; व्यवसन, आसक्ति; आश्रयण; रक्षण; चाटुकारिता । -**काकु**-पु० सेवके समय स्वरका परिवर्तन करना (कमी जोरसे, कभी धीमे, कभी जोरसे और कभी अफसोसके साथ नोकना) । -**जन**-पु० नौकर, सेवक । -**टहल**-खी० [हिं०] खिदमत, शुश्रूषा । -**दक्ष** वि० सेवा करनेमें कुशल । -**धर्म**-पु० सेवा-संबंधी कर्तव्य । -**बंधारी**-खी० [हिं०], पूजा, उपासना, आराधना । -**बुद्**-वि० सेवा, आराधनामें संलग्न । -**बिला**-सिनी-खी० सेविका, दासी । -**बृत्ति**-खी० सेवा द्वारा प्राप्त जीविका, नौकरी । -**व्यवहार**-पु० सेवाकार्य ।

सेवाती*-खी० दे० 'स्वाति' ।

सेवाभिरत-वि० [सं०] सेवामें लीन; सेवामें आनंद माननेवाला ।

सेवाबा-अ० अलगा, भिदा । वि० अधिक ।

सेवार-पु० दे० 'सिवार' ।

सेवारा*-पु० दे० 'सेववा' ।

सेवाख-पु० दे० 'सिवार' ।

सेवाबलंब-वि० [सं०] जो दूसरोंकी सेवापर अवलंबित हो । **सेविग्स बैंक**-पु० [अं०] छोटी रकमें व्याजपर लेनेवाला बैंक (हाकधरोमें ऐसे बैंक होते हैं) ।

सेवि-पु० [मं०] बेर; सेव (शावट फारसीके 'सेव'से) ।

* वि० पूज्य, आराध्य; पूजित ।

सेविका-खी० [सं०] दासी, परिचारिका; सेवार्थ ।

सेवित-वि० [मं०] जिसकी सेवा की गयी हो; पूजित; प्रयुक्त; उपयुक्त; आश्रित;... ये युक्त, सपन्न । पु० दे० 'सेवि' । -**सम्यक्**-वि० व्यवनी, कामी ।

सेवितव्य-वि० [सं०] बमने, रहने योग्य; प्रयोगमें लाने योग्य; रक्षा करने योग्य; सीने योग्य ।

सेविता-खी० [सं०] सेवा; आश्रय; आराधन ।

सेविता(तु)-वि० [सं०] पूजक; अनुमरण करनेवाला । पु० नौकर, सेवक ।

सेवी(विनु)-वि० [मं०] सेवा करनेवाला; आराधक, उपासक; (समानातमें) समोग, उपभोग करनेवाला; आदी ।

सेवुम-वि० दे० 'सैवुम' ।

सेव्य-वि० [सं०] सेवा करने योग्य; आराध्य, पूज्य; व्यवहारमें लाने योग्य; रक्षणीय; अध्ययनके योग्य; सचित करने योग्य । पु० स्वामी; वीरगमूल, स्वस; अन्वय वृक्ष, पीपल; विजल वृक्ष; कामजक; गौरैया; एक प्रकारका मध; रक्त चदन; समुद्री नमक; दहीका लूब जमा हुआ बीचका हिस्सा; जल । -**सेवक**-पु० स्वामी और सेवक । -**आव**-पु० उपास्यको स्वामी मानकर सेवक के समान अपना आचरण रखना ।

सेव्या-खी० [सं०] दूसरे पेड़ोंपर लगनेवाला एक पोषा, बौदा; अंबला; एक जगली धान ।

सेवान-पु० [अ०] पार्लमेंट, न्यायालय आदि संस्थाओंकी निश्चित अवधि; कुछ समयतक निरंतर चाद रहनेवाली बैठक; स्कूल, कॉलेजकी लगातार पढ़ाईकी अवधि; दौरा अदाखत । -**कोर्ट**-पु० नूरी, असेसर आदिकी सहायतासे हला आदि भारी अभियोगोंपर विचार करनेवाली अदाखत । -**जज**-पु० दौरा जज । **सु**-सिपुर्द

करना-अभियुक्त, अभियोगको सेवान जचके पास भेजना ।
 -सिपुई होना-अभियोग विचारके लिए दौग जचके पास भेजा जाना ।
 सेधर-वि० [सं०] ईश्वरकी सत्ता माननेवाला (दर्शन-वे न्याय और योग है); ईश्वरयुक्त ।
 सेध-पु० दे० 'शेध'; दे० 'सेला' ।
 सेधु; सेधुक्त-वि० [सं०] बाणयुक्त ।
 सेस-पु० दे० 'शेध' । -नाय-पु० सेधनाय । -ईग-पु० सफेद रंग ।
 सेसर-पु० ताशका एक खेल; जाल ।
 सेसरिया-वि० जाल करनेवाला, जालिया ।
 सेह-पु० दे० 'सेहा' । वि० [फा०] नीन (समासादिमें) ।
 -झाना-पु० तिम्रजिला सकान । -हजारी-स्त्री० मुसलमानोंके शासन-कालमें दरबारियोंको दी जानेवाली एक उपाधि (ऐसे लोग तीन हजार सैनिक रख सकते थे) ।
 सेहत-स्त्री० [अ० 'मिहहत'] स्वास्थ्य, आरोग्य; रोग-मुक्ति; शुद्धि; सही, ठीक होना; निर्दोष होना । -झाना-पु० पाखाना, शौचालय । -नामा-पु० शुद्धिपत्र; तदुक्तकी प्रमाणपत्र । -बहला-वि० आरोग्यप्रद ।
 -बाब-वि० सेहत पानेवाला, बीमारीसे उठनेवाला ।
 स्त्री० आरोग्यवाला । मु०-पाना-आरोग्यलाभ करना, रोगमुक्त होना ।
 सेहयना-सं० कि० झाड़-बुहार, लीप-वीगकर साक सुधरा बनाना ।
 सेहरा-पु० वे फूलों या मोटे आदिकी लश्चियों जो दूधे और दुधिनके सिरपर बाँधी जाती हैं और मुँहपर लटकती रहती हैं; वह गाना जो सेहरा बाँधनेके समय गाया जाता है; कम्बके तान्पर रखी जानेवाली फूलकी माळा । -बैचाई-स्त्री० सेहरा बाँधनेका नेम जो वह नोईको मिलता है । मु०-बाँधना-सेहरा सिरपर रखा जाना; दूधवा बनाया जाना; कामका श्रेय दिया जाना । - (रे) जलवेकी-विवाहिता (स्त्री) । -के कूल मिलना-विवाहका समय आना ।
 सेहरी-स्त्री० एक तरहकी मछली, सहरी ।
 सेहव-पु० गेहूँका एक रोग ।
 सेहा-पु० दे० 'सेहा' ।
 सेहियान-पु० खलियान साक करनेकी सुहारी ।
 सेहरी-स्त्री० दे० 'साही' ।
 सेहूँला-पु० दे० 'सेहुँला' ।
 सेहूँव-पु० दे० 'मिहुँव' ।
 सेहुँव-पु०, सेहुँवा-स्त्री० [सं०] स्तुही, बृद्ध ।
 सेह-पु० [अ०] जादू, मोना; मन्त्र; ईश्वरजाल । -बयाव-वि० जिसकी बागोंमें मोहनी बी, सुंदर, ललित पराबली भोजनेवाला । -साज्ञ-वि० जादूगर । -साज्ञी-स्त्री० जादूगरी ।
 सैगर-पु० बटूकी फली ।
 सैलना-सं० कि० दे० 'सैतना' ।
 सैलासीस-वि० काजीस और सात । पु० सैलासीसकी संख्या, ४७ ।
 सैलीस-वि० तीस और सात । पु० सैलीसकी संख्या, ३७ ।

सैधी-स्त्री० माता, शक्ति-ईश्वरीय स्त्री जव सैधी देवन कहा कनो'-हर ।
 सैधुर-वि० [सं०] सिद्धी, सिद्धके रमवाला; सिद्धसे रमा हुआ ।
 सैधव-वि० [सं०] सिधु प्रदेशका; सिधु, समुद्र-संबंधी; सिधुमें उत्पन्न; समुद्रमें उत्पन्न । पु० सिधनरेश; सिधु-प्रदेशके निवासी; एक प्रकारका कवण, सेंधा नमक; सिधु प्रदेशका घोड़ा, सिंधी घोड़ा । -सिधव, -वन-पु० सेंधा नमकका टीका । -चूर्ण-पु० चूर्ण किया हुआ सेंधा नमक । -पति-पु० सिध-नरेश; जयद्रथ ।
 सैधवक-वि० [सं०] सिध-निवासियोंमें सर्वप्रथम रहनेवाला । पु० सिधका कोई तुच्छ निवासी ।
 सैधवायन-पु० [सं०] एक कवि उनके वंशज ।
 सैधवारण्य-पु० [सं०] सिधका जंगली भूभाग ।
 सैधवी-स्त्री० [सं०] एक रागिनी ।
 सैधी-स्त्री० [सं०] ताड़ आदिका मादक रस, ताड़ी ।
 सैध-स्त्री० दे० 'सिंधवी' ।
 सैधु-पु० [अ०] बिकनेवाली चीजका समूह ।
 सैधली-पु० शास्त्रिक, मेल ।
 सैयों-पु० दे० 'सैयों' ।
 सैवर-पु० दे० 'सावर' ।
 सैवार-पु० सैवाल ।
 सैह-वि० [सं०] सिह-संबंधी; मिहका; मिह रंग । अ० दे० 'सौह' ।
 सैहरी-स्त्री० बछी, छोटा बछी ।
 सैहल-वि० [सं०] मिहल द्वीप-संबंधी; मिहलका; मिहल द्वीपमें उत्पन्न ।
 सैहली-स्त्री० [सं०] मिहपिपली ।
 सैहात्रिक-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति ।
 सैहिक-वि० [सं०] मिहकी औनि, मिहतुल्य । पु० मिहिकाका पुत्र, राहु ।
 सैहिकेय-वि० [सं०] मिहिकामे उत्पन्न । पु० मिहिकाकी सतान (एक दानववर्ग); राहु ।
 सैहुव-पु० सेहुव ।
 सै-वि०, पु० दे० 'सौ' । स्त्री० शक्ति, नाकन; मार; बुद्धि; बदती ।
 सैकंड-पु० बटूकी जातिका एक पेड़ ।
 सैकवा-पु० सौ ।
 सैकवे-अ० प्रतिशत, फीसदी, सौ पीछे ।
 सैकत-वि० [सं०] सिकतामय, बाहुसे भरा, रेतीला; बाहुकासे बना । पु० बाहुकामय तट; रेतीला किनारा; एक ऋषिवंश ।
 सैकतिक-वि० [सं०] सिकतामय तट-संबंधी, संदेहात्-संशयनीवी । पु० संकलमय; सम्मयस्त व्यक्ति, सम्मत्वासी ।
 सैकसी (सिक्)-वि० [सं०] बाहुकामय तटयुक्त; बाहुका-मय ।
 सैकसेह-पु० [सं०] अदरक ।
 सैकवत-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
 सैकल-पु० [अ०] सफाई, जिहा; हथियारोंकी यांत्रिक चमकाना-शर-पु० जिहा करनेवाला, सिकलीगर; सान

परनेवाला ।

सेना—पु० कोटहसे गन्नेका रम निकाऊनेका घरे जैसा एक पाम; कटकर आबी हुई फसलकी राशि; एक सी पूछे ।
सेनब—वि० [सं०] सिन्हावर विभेद; एकता-विशिष्ट । पु० सोनपीतल ।

सेनब—वि० [सं०] शर्करासुक्त, चीनी मिठाया हुआ ।
सेनस्य—पु० [अ०] कपरी जर्मनीकी एक जाति जो ईसाकी पाँचवीं-छठीं सदीमें ईंग्लैण्डपर कब्जा कर वहाँ बस गयी ।

सेजन—पु० दे० 'सहिनन' ।

सेतब—वि० [सं०] सेतु-संबंधी । पु० एक आचार्य ।

सेतवाहिनी—स्त्री० [सं०] बाहुदा नामकी नदी ।

सेवी—स्त्री० छोटा बरछा, माला ।

सेद—पु० दे० 'सैयद'; [अ०]; शिकार; शिकारका जानकर । —गाह—पु०, स्त्री० शिकारगाह । —(रे) हरम—पु० हरमके जानवर जिनका शिकार करना हराम है ।

सेदानी—स्त्री० दे० 'सैयदानी' ।

सेदांतिक—वि० [सं०] सिद्धांत-संबंधी सिद्धांतल । पु० सिद्धांत जाननेवाला व्यक्त ।

सेधक—वि० [सं०] सिद्धककी लकड़ीका बना हुआ ।

सेधिक—पु० [सं०] वृक्षविशेष ।

सेन—स्त्री० मकैत, इशारा; निशान, परिचायक चिह्न; * मेना । * पु० शयन; बाज पक्षी । —पति—पु० सेनापति । —ओग—पु० शयनकालका भोग, नैवेद्य ।

सेनका—पु० दे० 'सनहकी' ।

सेना—पु० [अ०] शामका एक पर्वत जिसपर मूसको ईश्वर-साक्षात्कार होनेकी बात कही जाती है । * स्त्री० फौज, सेना । पु० सन्नेत । —पति—पु० सेनानायक ।

सेनानीक—वि० [सं०] सैन्यमुख-सम्बधी, सेनाके अगले भागमें संबंध रखनेवाला ।

सेनान्य—पु० [सं०] सेनापतिव्य ।

सेनापत्य—वि० [सं०] सेनापति-संबंधी । पु० सेनापतिका कार्य, सेनापतिव्य ।

सैनिक—वि० [सं०] सेना-संबंधी, फौजी । पु० सिपाही, योद्धा; प्रहरी, मंतरी; व्यवहक सेना; प्राशिवपके लिए नियुक्त व्यक्ति; शंबरका एक पुत्र । —बाद—पु० युद्धका समर्थन करनेवाला सिद्धांत ।

सैनिकता—स्त्री० [सं०] सैनिक जीवन; युद्ध ।

सैनिका—स्त्री० एक छंद ।

सैनिटरी—वि० [अ०] सार्वजनिक स्वास्थ्यके रक्षण और अभिवृद्धिमें संबंध रखनेवाला ।

सैनित्तान—पु० [अ०] स्वास्थ्यरक्षणविज्ञान ।

सेवी—स्त्री० भेणी, पंक्ति; दे० 'सेना' । पु० नापित, नाई ।

सेनेटोरियस—पु० [अ०] स्वास्थ्य-सुधारके लिए उपयुक्त स्थान, स्वास्थ्य निवास ।

सेनेय—वि० युद्ध करने योग्य ।

सेनेषा, सेनेस—पु० सेनापति, सिपहसालार ।

सेन्य—वि० [सं०] सेना-संबंधी । पु० सेना; सैनिक, सिपाही; रक्षक, प्रहरी, संतरी; शिविर । —कक्ष—पु० सेनाका पाखंड । —क्षोभ—पु० सेनाका विद्रोह । —बातकर—वि० सेनाका ध्वंस करनेवाला । —नायक—पु० सेनापति ।

—विशेषाभूषि—स्त्री० सेनाके ठहरने, पड़ाव डालनेका स्थान । —पति—बाह—पु० सेनापति । —पुठ—पु० सेनाका पिछला भाग । —मुख—सेनाका अग्रका भाग ।

—बास—पु० शिविर; सेनाका पड़ाव । —व्यपदेश—पु० सेनाका बुलावा । —सिर (स्)—पु० फौजका अगला हिस्सा, सेनाका अग्र भाग । —सजा—स्त्री० सेना वा युद्धकी सेवारी । —हंता(स्)—पु० शंबरका एक पुत्र ।

सैन्याधिपति, सैन्याध्यक्ष—पु० [सं०] सेनाध्यक्ष, सेनानायक ।

सैन्योपवेशन—पु० [सं०] सेनाका पड़ाव डालना ।

सैक्र—स्त्री० [अ०] तलवार । —ज्ञान—वि० जिसकी वाणीमें असर हो; जिसका आशीर्वाद सत्य हो । —बान—पु० वह परतला जिसमें तलवार छटकाते हैं ।

सैक्रा—पु० [फा०] जिल्दमाजोंका एक औजार जिससे वे कागज काटते हैं ।

सैकी—वि० तिरछा, टेढ़ा ।

सैकी—स्त्री० [अ०] तसहीह; एक दुआ (सु०) ।

सैमतिक—पु० [मं०] सिंदूर (सीमत, मोंग भरनेके कारण) ।

सैयद—पु० [अ०] नेता, सरदार; इमाम; फातमासे उत्पन्न अलीका वंश; इस वंशका जन । —ज्ञावा—पु० सैयदका बेटा । —ज्ञारी—स्त्री० सैयदकी बेटी । —की गाय—सैयद सालारके नामपर जबही जानेवाली गाय ।

सैयदा—स्त्री० सैयद स्त्री; सैयदकी पत्नी ।

सैयदानी—स्त्री० सैयद स्त्री; सैयदकी पत्नी ।

सैयदुश्शुहदा—पु० [अ०] इमाम हुसैन (शहीदोंके सरदार) ।

सैयों—पु० पति, बालिका; स्वामी ।

सैया—स्त्री० शय्या, बिस्तर ।

सैयाद—पु० [अ०] बेलिवा, चिड़ीमार; शिकारी; मनुष्य ।

सैयार—वि० [अ०] अग्रगण्य । पु० ग्रह ।

सैयारा—पु० [अ०] न्यूयेंकी परिक्रमा करनेवाला तारा, ग्रह ।

सैयाल—वि० [अ०] बहनेवाला, तरल । पु० तरल पदार्थ ।

सैयाह—पु० [अ०] सिंहावत करनेवाला, घुमकड़ा; पर्यटक ।

सैयाही—स्त्री० अग्रगण्य, सैर-सपाटा ।

सैरंश—पु० [सं०] एक तरहका निम्न भेणीका या घरका काम करनेवाला नौकर; दम्पु और अधोग्रीवमें उत्पन्न एक मंकर जाति ।

सैरंशिका—स्त्री० [सं०] दाम्नी, नौकरानी ।

सैरंश्री—स्त्री० [सं०] अतः-पुरखी दाम्नी; अज्ञातवासमें विराट-नरेशके अतः-पुरखे काम करते समय द्रौपदीका नाम; दूसरे-के घरमें जाकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्री ।

सैर—स्त्री० [अ०] अग्रगण्य; मनबहलानेके लिए किया जानेवाला अग्रगण्य; किसी रमणीय स्थानमें जाकर खाना-पीना, गाना-बजाना; हँस; तमाशा; (का०) मनोरंजनके लिए किसी पुस्तकके पढ़ना, उलट-पुलटकर देखना । —गाह—पु०, स्त्री० मीरकी जगह, रमणीय स्थान; वह कदल जिसमें कागजके हाथी-घोड़ोंकी छाया चमकी हुई दिखाई देती है । —सपाटा—पु० मनबहलाने वा मृदुर हँस देखनेके लिए धमना । —(रो) शिकार—पु० सैर और

शिकारमें कालयापन करना ।
सैरिच-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति ।
सैरिध-पु० [सं०] दे० 'सैरंध'; एक जाति ।
सैरिंध्री-स्त्री० [सं०] दे० 'सैरंध्री' ।
सैरि-पु० [सं०] सांत्तिक मांस; एक प्राचीन जाति ।
सैरिक-वि० [सं०] हल-संबंधी । पु० हलमें जुतनेवाला
 बैल; हलवाह; आकाश ।
सैरिभ-पु० [सं०] मयिष, भैंसा; स्वर्ग; आकाश ।
सैरीय; **सैरीयक**-पु० [सं०] छिटी ।
सैरेय; **सैरेयक**-पु० [सं०] छिटी; छिटीका पुष्प ।
सैर्य-पु० [सं०] एक तृण, अश्ववाल (बै०) ।
सैल-स्त्री०, पु० [अ०] पानीका बहाव, जलधारा; बाढ़ ।
 * पु० दे० 'सैल' । स्त्री० दे० 'सैर'; सौंग-जबकि समर
 मह सैल उछावै'-छन्दप्रकाश । -**कुमारी**-जा.-**तनवा**;
 -**सुता**-स्त्री० पार्वती ।
सैलरा-पु० [सं०] लुटेरा ।
सैलवेशन आर्य-स्त्री० [अ०] मुक्तिफौज, एक सामाजिक
 सचटन जिम्मा उद्देश्य जनताकी धार्मिक और नैतिक
 उन्नति है ।
सैला-पु० लकड़ीका नीचा हुआ टुकड़ा; छेद आदिमें भरने-
 का पदार्थ; जुएके निरेपर लगायी जानेवाली लूटी; डंठलसे
 दाने हलानेका डब्बा; पतवारका दस्ता ।
सैलाकजा-स्त्री० पार्वती ।
सैलानी-वि० सैर करनेका शौकीन, घुमक्कड़; मनमौजी ।
सैलाब-पु० [फा०] बाढ़, पानीका चढ़ाव । -**स्त्री**-स्त्री०
 गिलमची ।
सैलाबा-पु० पानीमें डूबी हुई फसल ।
सैलाबी-वि० बाढ़-संबंधी । स्त्री० डडक, तरी; वह जमीन
 जो नदीकी बाढ़में सींची गयी हो ।
सैली-स्त्री० छोटा मैला, चैली ।
सैल्ल-पु० दे० 'सैल्ल' ।
सैल्लन-पु० [अ०] बड़े अफसरों आदिके मफरके लिए
 खाम तौरसे सजा हुआ रेलका डब्बा; जहाजका मुख्य
 कमरा; नाचघर; नार्दकी दुकान; अंग्रेजी जराबकी दुकान ।
सैव-पु० दे० 'सैव' ।
सैवल-पु० दे० 'सैवाल' ।
सैवलिनी-स्त्री० दे० 'सैवलिनी' ।
सैवाल-पु० [सं०] दे० 'सैवाल' ।
सैवुम-वि० [फा०] तीमरा । पु० मृग जनका तीरा ।
सैव्य-पु० दे० 'सैव्य' ।
सैस; **सैसक**-वि० [सं०] मीमा-संबंधी, मीमेका बना ।
सैसव-पु० दे० 'सैशव' ।
सैसवता-स्त्री० दे० 'सैशव' ।
सैसिकत-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
सैसिरिध-पु० [सं०] दे० 'सैसिकत' ।
सैह-वि० [फा०] तीन । -**करर**-अ० तिबारा, तीमरी
 बार । -**गुना**-वि० तिगुना । -**शोशा**-वि० शिकोना ।
 -**चंद**-वि० तिगुना । -**दुरा**-पु० तीन दरवाजोंवाला
 दाराना; मेहराबदार तीन दरवाजे । -**दरी**-स्त्री० तीन
 दरवाजोंवाला छोटा कमरा । -**पहर**-पु० तीसरे पहरका

वक्त । -**पहरी**-स्त्री० तिबहरी, तीसरा पहर (क्षि०) ।
 -**पहल**-वि० तिपहल । -**पहलू**-वि० तिपहल । पु०
 एक तरहका तीर । -**पाई**-स्त्री०, -**पाया**-पु० तिपाई ।
 -**फसला**-वि० (खेत) जिसमें तीन फसलें उपजें; सालमें
 तीन बार फलनेवाला । -**बंदी**-पु० वह तिपाही जो
 हर साल राजकर वसूल करनेके लिए रखा जाता था ।
 स्त्री० किस्त या तनखाह जो हर तीसरे महीने अदा की
 जाय । -**बारा**-अ० तीसरी बार । -**मंजिला**-वि० तीन
 मंजिलोंवाला (मकान) । -**माही**-वि० तीसरे महीने या
 हर तीन महीनेपर होनेवाला । स्त्री० तीन महीनेका काल,
 वरमका चौथाई; तीन महीनेपर मिलनेवाली हफ्ता,
 तनखाह इत्यादि । -**रोज़ा**-वि० तीन दिन बना रहने-
 वाला; तीसरे दिन निकलनेवाला (पत्र) । -**हॉबा**-पु०
 मंगलवार । -**साखा**-वि० तीन सालका, त्रैवार्षिक ।
 -**हुरा**-पु० तीन गोंधोंकी तरहदे मिलनेके न्यानपर
 बनाया हुआ चबूतरा या खंभा ।
सैहथी-स्त्री० शक्ति, माला, बरछी, संधी ।
सैहारा-पु० पानी आदि ढालनेका मिट्टीका पात्र ।
सैही-स्त्री० छोटा मेवा ।
सौ-प्र० करण तथा अपादान कारकोंका चिह्न, 'ॐ' ।
 वि० मरहट, तुल्य । अ० सम्मुख, सामने; साथ, सहित
 संग । स्त्री० मोह, श्रवण । सर्व० मी, वह ।
सौच-पु० दे० 'सौच' ।
सौचर नमक-पु० सौचयन, काफ़ा नमक ।
सौज-स्त्री० दे० 'सौ' 'ज' ।
सौज-स्त्री० ज़मीनकी मालेदारीकी व्यवस्था; मांजदारी ।
सौटा-पु० लाठी, डंडा; सौंग धोतनेके काममें आनेवाला
 डंडा, भंगपोंटना; एक पौधा, लोबिया । -**बरदार**-पु०
 बलमबरदार, अमाबरदार जो राजा, मरदार, अमा
 आदिकी स्ववरीके आगे-आगे चलता है । पु० -**चलना**-
 लक्ष्मी, मोटेमें भारपीट होना । -**खलना**, **जमाना**-
 मोटेसे, लनफ़ीमे मारना ।
सौंड-स्त्री० मूछा अदरक, शुटी । -**मिट्टी**-स्त्री० एक
 तरहकी काली मिट्टी ।
सौंठीरा-पु० जवाको दिया जानेवाला मुक या चीनीमें
 योगमें मोठ, मेवा आदि मिलाकर बनाया हुआ पत्र
 पुष्टिकारक मोटक ।
सौंध-पु० दे० 'सौंधा', † दे० 'सौंधा' । वि० दे०
 'सौंधा' ।
सौंधा-वि० सुगंधित, सुवासित, सुशब्दात् । पु० बाल,
 केश माफ़ करने, धोनेके काम आनेवाला एक सुगंधित
 द्रव्य, मसाला; तपी जमीन, मिट्टी, धूलपर पानी पड़नेमें
 उठी गंध; अन्न भूतने समय उठी सुगंध; मईक, सुगंध ।
सौंधिया-पु० एक तृण, रोहिण ।
सौंधी-पु० एक बढिया धान ।
सौंधु-वि० सौंधा ।
सौंधना-अ० कि० दे० 'सौंधना' (डिंढी, मेरठके आमपात्र
 इस रूपका प्रयोग अधिक होता है) ।
सौंधनिवा-पु० नाकका एक गहना ।
सौंह-स्त्री० दे० 'सौंह' । अ० सामने ।

सौंदर्य-शौक-अ० दे० 'सौंदर्य' ।

सौंदर्य-शौक-अ० दे० 'सौंदर्य' ।

सौ-सर्व० वद् । * वि० समान, सीमा । अ० इमलिय, अतः । स्त्री० [मं०] पार्वती ।

सौन्दर्य-वि० [सं०] में वह (वही) है (रसका तात्पर्य यह है कि 'मे' ब्रह्म है; यह वेदांत दर्शनका वाक्य है जिसमें यह माना जाता है कि इस ब्रह्मात्मपरम ब्रह्म व्याप्त है और जो कुछ है सब ब्रह्म ही है, जीव भी ब्रह्म ही है, पर जागृतिक मायाके आवरणके कारण अपने (ब्रह्म) रूपको पहचान नहीं पाता; जब उक्त आवरण हट जाता है तब वह ब्रह्म ही हो जाता है) ।

सौन्दर्य-वि० [मं०] दे० 'सौन्दर्य' ।

सौन्दर्य-अ० दे० 'सौन्दर्य' ।

सौन्दर्य-पु० एक साग जिसकी पत्तियाँ बहुत महीन होती हैं और फूल गुच्छेदार होते हैं ।

सौंदर्य-अ० वही । अ० इसलिय । * स्त्री० वह नीचो जमीन जहाँ पानी रुका रह जाय ।

सौंदर्य-पु० दे० 'सौंदर्य' ।

सौंदर्य-पु० कालापन किये हुए स्फेद रसका वैष्णव; † एक नरहका धान 'नो नदीके किनारे रेतीली जमीनमें बोया जाता है ।

सौंदर्य-अ० दे० शोक करना । मं० दे० मोहना ।

सौंदर्य-वि० सौंदर्य, सौंदर्य, शोकवृत्त ।

सौंदर्य-वि०, पु० शोषक; आर्द्रता दूर करनेवाला; रस चूस लेनेवाला; नख हारण करनेवाला ।

सौंदर्य-पु० स्थायी मोक्ष ।

सौंदर्य-पु० दे० 'सौंदर्य' ।

सौंदर्य-सं० दे० कोई तरल पदार्थ या किसी पदार्थका रस ग्रहण या ग्रहण कर लेना ।

सौंदर्य-पु० शौच-शुद्ध करनेवाला; वह व्यक्ति जिसपर किसी देवताका आदेश होता है ।

सौंदर्य-स्त्री० शौच-शुद्ध; सौंदर्यकी क्रिया; किसी वस्तुको सौंदर्य या शौचनेकी मजदूरी ।

सौंदर्य-स्त्री० [फा०] जलन । मु०-होना-जलन, नष्ट, बेकार होना ।

सौंदर्य-वि० [फा०] जलने या जलानेके योग्य ।

सौंदर्य-वि० [फा०] जला हुआ, दग्ध; क्षिप्त, विषादयुक्त; प्रेमी, आशिक । पु० नुस्त्रा हुआ कोषला जिसमें जल्दी काग लग जाती है; [हि०] जातिव, स्वाहीमोक्ष; वास्तु-में रंगा हुआ कपड़ा जिसमें चकमकमे जल्दी आग लग जाती है ।

सौंदर्य-स्त्री० दे० 'सौंदर्य' ।

सौंदर्य-पु० शोक, किसीके मरनेपर दुःखकी अभिव्यक्ति, विलाप ।

सौंदर्य-वि० स्त्री० शोक करनेवाली, शोकान्वित (स्त्री) ।

सौंदर्य-वि० शोक करनेवाला । † अ० दे० मोचनेमें परेशान होना, उदास होना ।

सौंदर्य-पु० मोचनेकी क्रिया, विचारनेका भाव; शोक, किसी प्रियके मरनेपर दुःखका प्रकटीकरण; शिवा; पश्चात्ताप, कोई बुरा काम कर बालनेका पछतावा । -विचार-

पु० किसी विषयका विवेचन, गौर ।

सौंदर्य-सं० दे० विचार करना, किसी विषय, बात आदिकी विवेचना करना । अ० दे० शोक, दुःख करना; चिन्ता करना; पछतावा ।

सौंदर्य-सं० दे० किसीकी मोचनेमें प्रवृत्त करना; विचार करवाना, दिखलाना ।

सौंदर्य-वि० [सं०] प्रसन्न; ठीला; उच्छ्वासयुक्त; हाँफता हुआ । अ० उच्छ्वासपूर्वक, आत्मकी सीस लेते हुए ।

सौंदर्य-स्त्री० स्त्री, सूजन; सौज, सामग्री, सामान ।

सौंदर्य-पु० [फा०] जलन; मनस्ताप, वेदना; मरसिया-खानीका एक ढंग; वे शेर जिन्हें मरसियापूर्वक रूपके साथ पढ़ते हैं । -सूज-पु० करण स्वरमें मरसिया पढ़नेवाला । -खानी-स्त्री० इस ढंगसे मरसिया पढ़ना ।

-जो गुदा-पु० करण रसके उत्प्रेषक भाव; करण रसकी व्यञ्जना ।

सौंदर्य-स्त्री० [फा०] सू-देहि हित सुमनन गौरि ते छेदन मोचन जात-रत्नन । -कारी-स्त्री० सूँकारी ।

सौंदर्य-स्त्री० [फा०] दे० 'सूजनी' ।

सौंदर्य-वि० [फा०] जलनेवाला; दुःखद; करुणाजनक ।

सौंदर्य-पु० दे० 'सूजक' ।

सौंदर्य-स्त्री० [फा०] जलन; व्यथा, वेदना; सूजन ।

सौंदर्य-वि० जो देठा न हो, सरल, सीधा । अ० सीधे ।

सौंदर्य-वि० सीधा, सरल; सखा । † अ० मामदे ।

सौंदर्य-पु० दे० 'सौंदर्य'; * तोता ।

सौंदर्य-स्त्री० दे० 'सौंदर्य' ।

सौंदर्य-पु० [अ०] सज्जमे रागव्यनिक क्रिया द्वारा तैयार किया हुआ एक क्षार, सज्जिकाक्षार । -बाटर-पु० सज्जिकाक्षारके योगमें बनाया जानेवाला एक प्रकारका पाचक खाद्य जल जिसे गैसकी सहायतामें बोटलमें भरकर रखते हैं ।

सौंदर्य-वि० [मं०] सहन किया हुआ; सहिष्णु, धीर ।

सौंदर्य-वि० दे० दुःख, बेवकूफ, भौंड़ ।

सौंदर्य-वि० [मं०] सहन करने योग्य, क्षम्य ।

सौंदर्य-वि० [मं०] सहिष्णु, क्षमाशील; शक्तिशाली, सह्य ।

सौंदर्य-वि० [मं०] जिसने सहन किया है ।

सौंदर्य-वि० लाल, रक्तवर्णका ।

सौंदर्य-पु० दे० 'सौंदर्य' ।

सौंदर्य-पु० नदी, नाले, झरने आदिका उद्गम स्थान; अरना; नदी, नाले आदिकी शाखा; मूल, मूल स्थान (ला०) ।

सौंदर्य-वि० [सं०] बच्चे उत्पन्न करनेवाला ।

सौंदर्य-वि० स्त्री० छोटा सोता ।

सौंदर्य-वि० जिसमें सोत या सोतेका पानी आता हो (रूप) ।

सौंदर्य-स्त्री० सोत; धारा; जलकी शाखा; * स्वाती नक्षत्र ।

सौंदर्य-वि० [सं०] प्रबल इच्छामें युक्त, लालसाभरा; पक्ष्वापाययुक्त; शोकान्वित ।

सौंदर्य-वि० [सं०] कपित ।

सौंदर्य-वि० [सं०] इच्छुक, लालाचिन, उत्कण्ठित ।

मोक्ष-वि० [सं०] उन्नत, उन्नतिशील; उत्तम ।

सोसरपणव्यवहार-पु० [सं०] बाद-विवादमें विजिताकी विजितसे मित्रेवाली ठहरावी हुई रकम ।

सोसास-वि० [सं०] अति, अधिक; अतिशयोक्तिपूर्ण, बढ़ा-बढ़ाकर कहा गया; व्यंग्यात्मक, व्यंग्यपूर्ण । पु० सशब्द हँसी, अट्टहास; प्रिय वाक्य; व्यंग्यवाक्य, प्रत्येक वाक्य; व्याजस्तुति ।

सोस्वरा-वि० [सं०] स्निग्ध, विषण्ण ।

सोस्वच-वि० [सं०] उत्सवयुक्त, उछाहभरा; आनंदित । अ० उत्सव, उत्साहपूर्वक ।

सोस्तुक्त-वि० [सं०] उत्सुकतापूर्ण; जिज्ञासायुक्त; शोका-न्वित । अ० उत्सुकतापूर्वक ।

मोस्तेक-वि० [सं०] धर्मही, अधिमात्री ।

मोस्तेक-वि० [सं०] जैबा ।

सोथ-पु० शोध, दृष्टन ।

सोवकुंभ-पु० [सं०] पितरोंके उद्देश्यसे किया जानेवाला एक यज्ञ ।

सोव्य-वि० [सं०] सूर सखि, भ्रात्रके साथ; (आकाशीय पिंडोंके) उदयसे संबंध रखनेवाला; जिसका मिलमिला जारी रहे ।

मोदर-वि० [सं०] सगा, एक उदरसे सम्पन्न । पु० सगा भाई ।

मोदरी-वि० [सं०] सखी बहिन ।

मोदरी-वि० [सं०] सोदर, सौदर, सोदर-संबंधी ।

मोदर-वि० [सं०] कगूरेवाला; परिणामयुक्त; गानके पूरकसे युक्त । पु० गानका अंतिम पूरक ।

मोदर-वि०, पु० [सं०] सौदर ।

सोचम-वि० [सं०] जो बुद्धके छिप तैयार हो; सचेष्ट ।

सोचोम-वि० [सं०] उद्योगयुक्त, उद्योगशील, प्रयत्न करनेवाला; खतरनाक (रोग) ।

सोद्वेग-वि० [सं०] घबड़ाया हुआ, उद्वेगशील; व्याकुल । अ० उद्वेगपूर्वक ।

सोच-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति; अ० अनुसंधान, अनुशीलन, खोज; हालना, खोज-खबर; सुधार; होश-हवास, सुख-बुध-‘आनंद मगन भये मग होलत कछु न सोच सरीर’-सूर; किसी व्यक्तिसे कृप आदि लेकर उसे चुकानेकी क्रिया ।

मोचक-पु० दे० ‘शोधक’ ।

सोचन-पु० अनुसंधान करनेकी क्रिया, खोज करनेका काम; सुधारने, ठीक करनेका काम; अदा करने, चुकाने का काम ।

सोचना-स० कि० अनुसंधान, अनुशीलन करना; ठेंदना, खोजना; छुट्टि दूर करना, गलती, दुस्सत करना, सोचोषन करना; कृप आदि चुकाना, अदा करना; किसी वस्तुकी गंदगी दूर करना, सफाई करना; गणना करना, विचार देना (जन्मपत्री आदि); औषधके लिए धातु(सारा, सोना आदि)की सफाई करना ।

सोचवाना-स० कि० ठेंदवाना, खोज कराना; ठीक कराना; साफ करवाना ।

सोचाना-स० कि० दे० ‘सोचवाना’ ।

सोने-पु० गंगाकी एक प्रसिद्ध सहायक नदी जो दानापुर-के पास उसमें मिलती है, शोण; सोना; ‘सोना’का समासगत रूप; एक जलपक्षी । * वि० लाल ।-किरवा-पु० दे० ‘मुनकिरवा’ ।-कीकर-पु० एक बड़ा वृक्ष ।-केछा-पु० चंपाकेछा ।-गेरु-पु० मोनगेरु ।-चंपा-पु० पीछा, सोनेके रंगका चंपा ।-चिरी-की० नरतकी, नटी ।-जरद, जरद, जरद-की० सोनझड़ी, स्वर्णयुष्मिका ।-जूही-की० जूहीका एक प्रकार जो पीछा होता है, स्वर्णयुष्मिका ।-दंडुकी-की० एक तरहकी चिकिया ।-अर-पु० सोन नदी ।-रास-पु० पका हुआ धान ।-हार-पु० एक समुद्री पक्षी ।

सोनबाना-वि० सोनेका, मुनहला ।

सोनह-पु० [सं०] लहमज ।

सोनहला-वि० सोनेके रंग और चमकका, स्वर्णम ।

सोनह-पु० कुत्तेकी जातिका एक जगली पशु जो बाघको भी मार डालता है ।

सोना-पु० पीछे रंगकी एक बहुमुख्य धातु जो विदोष रूपमें आभूषण आदि बनानेके काम आती है और मम्म कर्मके दवाके रूपमें हस्तेमाल की जाती है; (ला०) वटिया और बहुमुख्य वस्तु, श्रेष्ठ व्यक्ति आदि; एक तरहका वस्त्र; एक वृक्ष ।-गेरु-पु० गेरुका एक भेद ।-चौड़ी-भी ।-माल, धन, दौलत ।-पाठा-पु० एक ऊँचा वृक्ष ।-पेट-पु० सोनेकी खान ।-कूल-पु० एक क्षुद्र ।-मच्छी-वि०-माली-की० एक स्निग्ध द्रव्य जिसेमें मोनेका कुछ अंश होता है और जो औषधके काममें भी आता है, एक तरहका रेशमका कीड़ा ।-मुल्ली-पु० सनाथ ।

सु०-कसना-मोना जीवना, परखना ।-कसना-सोनेको परखना ।-चढ़ना-किसी चीजपर मोनेका मुलम्मा होना ।-चढ़ाना-किसी चीजपर मोनेका मुलम्मा करवाना ।-चढ़ाना-किसी चीजपर मोनेका मुलम्मा करना ।-लेकर मिट्टी(नक) न देना-देहना करना, नादेहना होना ।-(ने)का घर मिट्टी हो जाना-बना-बनाया घर मिट जाना, बनी गृहली विगड़ जाना ।-का पानी-मोनेका मुलम्मा ।-की चिकिया-मालदार आदमी; अमीर आदमी ।-उड़ जाना, हाथमें उड़ या निकल जाना-मालदार आदमीका चंगुलमें निकल जाना; सुखसरका निकल जाना ।-मिलना-हाथ जाना या लगना-किसी बहुमुख्य वस्तुका मिलना ।-किसी मालदार आदमीका काममें आना ।-के बरार सोलना-कीर्त मायूखी कीमतकी भी चीज तोलमें एकदम ठीक देना जैसा सोमा तोलनेमें किया जाता है, कम कीमतकी चीज भी अधिक कीमतकी चीजकी भाँति तोलना ।-के मल्ल उठाना-बहुत बनबाया होना ।-के मोल-बहुमुख्य ।-में घुस लगना-असंभव बातका होना ।-में सुगंध होना-किसी वस्तु या व्यक्तिमें एक अच्छाईके साथ दूसरी अच्छाईके मिल जानेसे उसकी शोभा या प्रतिष्ठाका बढ़ जाना ।-में सुहावा-गलत सोनेमें सुहावा मिला देनेसे उसका रंग निखर जाना है; किसी वस्तु अथवा व्यक्तिका उत्तम, बेहतर होना ।-में कड़े रहना या होना-बहुत गढ़ने पड़ने रहना ।

पु० इंद्र^१ - पञ्च-पु० तुणविशेष, दर्भ । -पव्-पु० एक लोक; एक तीर्थ । -परिग्रहण, -पर्याप्तान्-पु० सोमरस निचोड़नेका कपड़ा । -पर्व(न्)-पु० सोमोत्सवका समय । -पा-वि० सोमरस पीनेवाला । पु० सोमयज्ञ; यज्ञ करनेवाला; एक पितृवर्ग (विशेषकर ब्राह्मणोंका); ब्राह्मण । -पात्र-पु० सोमरस रखनेका पात्र । -पान-पु० सोमरस पीना । -पायी(विन्)-वि० सोमरस पीनेवाला । -पाल-पु० सोमरसक; सोम-विक्रेता; गंधर्व (रसक होनेके कारण) । -पिती-स्त्री [हि०] पिता चदन रखनेका पात्र । -पीति-स्त्री सोमका पान; सोमयज्ञ । -पीसी(विन्)-वि० सोमपान करनेवाला । -पीथ-पु० सोमपान । -पीथी(विन्)-वि० सोमपान करनेवाला । -पुत्र-पु० पुत्र ग्रह । -पुर-पु० सोमनगर; पादलिपुत्रका एक प्राचीन नाम । -पुरुष-पु० सोमका सेवक; सोमपाल । -पुष्ट-वि० सोम धारण करनेवाला (पर्वत) । -पेव-पु० सोमयज्ञ; सोमतर्पण । -प्रदोष-पु० सोमवारकी किया जानेवाला विशेष प्रदोष-व्रत । -प्रभ-वि० चंद्रमा जैसा कांतिमान् । -प्रधाक-पु० सोमयज्ञकी धौषणा करनेवाला । -बंधु-पु० कुमुद; मृद; पुत्र । -बेल-स्त्री [हि०] गुलचंदनी । -भक्ष-पु० सोमपान । -भवा-स्त्री नर्मदा नदी । -भू-पु० पुत्र; एक विमराज, चौथे कृष्ण वामदेव । वि० चंद्रवशी; सोममे उत्पन्न । -भृत्-वि० सोम लानेवाला । -भोजन-पु० गरुडका एक पुत्र; सोमपान । -भक्ष-पु० सोमयज्ञ । -भृत्-पु० सोमपानमें होनेवाला नष्ट । -भृत्-पु० एक तरहका वृक्ष जिसमें सोमपान किया जाता था । -भार-पु० सोमयज्ञ; एक त्रैलोक्यिक यज्ञ जिसमें सोमपान होता था । -बाजी(विन्)-वि०, पु० सोमतर्पण करनेवाला । -बोगी(विन्)-वि० जो चंद्रमाके योगमें हो । -बोनि-पु० देवता; ब्राह्मण; एक सुप्रसिद्ध चवन । -रक्ष-पु० सोमपाल । -रस-पु० सोमलताका रस । -रसोन्नव-पु० दूध । -राग-पु० राग-विशेष (संगीत) । -राज-पु० चंद्रमा । -सुत-पु० पुत्र ग्रह । -राजिका-स्त्री सोमराजी । -राजी-स्त्री वाकुची; चंद्रशंख; एक वृक्ष । -राजी(विन्)-पु० वाकुची । -राज्य-पु० चंद्रलोक । -राष्ट्र-पु० एक प्राचीन जनपद । -रोग-पु० प्रमेह जैसा क्रियाका एक रोग । -लता-स्त्री सोम नामकी लता, सोमवल्ली; गोदावरी नदी । -लसिका-स्त्री गुह्यची; सोमलता । -लस-वि० सोम पुता हुआ । पु० एक सोमपात्र । -लोक-पु० चंद्रलोक । -वंश-पु० चंद्रवध; सुषिहर । -वंशीय, वंश्य-वि० चंद्रवध-संबंधी; चंद्रवंशोत्पन्न । -वत्-वि० चंद्रमा जैसा । -वर्षा(वत्स)-पु० एक विश्वदेव । एक गंधर्व । वि० सोम जैसी कांतिमान् । -वल्ल-पु० श्वेत खदिर; कट्फल, कायफल; करज; रीठाकरज; बर्बर । -वल्लरि-वल्लरी-स्त्री सोमलता; नाक्षी । -वल्लिका-स्त्री सोमलता; सोमराजी । -वल्ली-स्त्री गुह्यची; सोमलता; सोमराजी; पाताळमादकी; ब्राह्मी; सुप्रसन्न; लोकावरज; गजपिप्पली; वनकापीस । -बामी(विन्)-वि० सोम वमन करनेवाला । पु० वह ऋषि जिसने

बहुत सोमपान कर लिया है । -वाक्व्य-पु० एक ऋषिवंश । -वार, -वासर-पु० रविवारकी बादका दिन, चंद्रवार । -वारी-स्त्री [हि०] सोमवती अमावस्या । वि० सोमवार-सवधी । -विकसी(विन्)-वि०, पु० सोम वैचनेवाला । -वीथी-स्त्री चंद्रमाका पथ । -वीथ-वि० सोम जैसा शक्तिशाली । -वृक्ष-पु० बटुक वृक्ष; श्वेत खदिर । -वृक्ष-वि० सोमपानसे जिसकी शक्ति बढ़ी हो । -वेष-पु० एक मुनि । -वत्-पु० सोम-प्रदोष व्रत; एक नाम । -शकला-स्त्री एक तरहकी ककड़ी, शशाङ्गुली । -संज्ञ-पु० कपूर । -संस्था-स्त्री सोमयज्ञका आरंभिक रूप । -सखिल-पु० सोमरस । -मव-पु० एक यज्ञकृत्य, सोमनिष्पीडन । -सवन-पु० वह जिसमें सोमरस निचोड़ा जाय । -सार-पु० श्वेत खदिर; बर्बर । -सिधु-पु० विष्णु । -सिद्धांत-पु० एक बुद्ध; शैवोंका एक तांत्रिक मत । -सिद्धांती-वि०-पु० सोम-मिथ्याताका अनुयायी । -सुंदर-वि० चंद्रमा जैसा सुंदर । -सुत-पु० पुत्र ग्रह । -सुता-स्त्री नर्मदा नदी । -सुति, -सुत्वा-स्त्री सोम-निष्पीडन । -सुत्-पु० यज्ञमें सोमरस निकालनेवाला; सोमरस चढ़ानेवाला कर्त्तिक । -सुत्वा(वन्)-वि०, पु० यज्ञमें सोमरस चढ़ानेवाला । -सूक-पु० सोम-सवधी क्रान्ति । -सूत्र-पु० शिवस्मिगके स्नानका जल निकालनेकी नाडी । -प्रवृत्ति-वि० शिवस्मिगकी इस तरह परिकल्पना कि नाडी लोपनी न पड़े । -संन-पु० श्वरका एक पुत्र । -हार, -हारी(विन्)-वि० सोमवती निष्पीडन या हरण करनेवाला ।

सोमक-पु० [मं०] एक ऋषि; ऋष्यका एक पुत्र, एक देश या जाति; द्रपद-वृक्ष; मध्वदेवका एक पुत्र; क्षिप्रिका नामक रोग ।

सोमकेश्वर-पु० [मं०] सोम देशका राजा; एक राजर्षि ।

सोमन्व-पु० एक अन्न ।

सोमनस-पु० दे० 'सोमनस्य' ।

सोमवती अमावास्या-स्त्री [मं०] सोमवारकी पड़नेवाली अमावास्या ।

सोमवान्(वत्)-वि० [मं०] सोमयुक्त; चंद्रमायुक्त ।

सोमार्ण-पु० [सं०] सोमयज्ञका अर्घ ।

सोमांशक-पु० [मं०] चंद्रमाका अंश ।

सोमांशु-पु० [सं०] सोमलताका डंठल या अक्षुर; चंद्रकिरण; सोमयज्ञका अर्घ ।

सोमा-स्त्री [मं०] सोमलता; एक अप्सरा; एक नदी ।

सोमा(मन्)-पु० [सं०] सोमयज्ञ करनेवाला; चंद्रमा; यज्ञोपकरण; सोमका निष्पीडन करनेवाला (वै०) ।

सोमाम्ब-पु० [सं०] रक्त पथ ।

सोमाव-वि० [सं०] सोम खानेवाले ।

सोमावार-पु० [सं०] एक तरहके पितर ।

सोमापि-पु० [सं०] सवदेवका एक पुत्र ।

सोमास-वि० [सं०] चंद्रमा जैसा कांतिमान् ।

सोमासा-स्त्री [सं०] चंद्रकिण, चंद्रावली ।

सोमाभिष्व-पु० [सं०] सोमका रस चुकाना ।

सोमापन-पु० [सं०] २७ दिनोंका एक व्रत ।

सोमार्थि(स्)—पु० [सं०] एक देवमासाद ।
सोमार्थी(विभ्)—वि० [सं०] सोमका इच्छुक ।
सोमार्थबारी(विभ्), सोमार्थबारी(विभ्)—पु० [सं०] शिव ।
सोमार्थबारी(विभ्), सोमार्थबारी(विभ्)—पु० [सं०] दे० 'सोमार्थबारी' ।
सोमार्थ—वि० [सं०] सोम पानेका अधिकारी ।
सोमाल—वि० [सं०] कोमल; रत्नमय, चिकना ।
सोमालक—पु० [सं०] पुष्कराज ।
सोमावली—स्त्री० [सं०] चंद्रमाकी माता ।
सोमाश्रम—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ ।
सोमाश्रयाचण—पु० [सं०] एक तीर्थस्थान ।
सोमाहमी—स्त्री० [सं०] सोमवारकी पत्न्येवाकी अहमी ।
सोमाह्न—पु० [सं०] एक अन्न जिमका संबंध सोम, चंद्रमा-
 ने माना जाता है ।
सोमाह—पु० [सं०] चंद्रवार, सोमवार ।
सोमाहुति—स्त्री० [सं०] सोमयज्ञ ।
सोमाह्वा—स्त्री० [सं०] सोम लता ।
सोमी(मिभ्)—वि० [सं०] सोमवाला; सोमयज्ञ करनेवाला;
 सोम द्वारा अनुप्राणित ।
सोम्यीय—वि० [सं०] सोम-सम्बंधी ।
सोमेज्या—स्त्री० [सं०] सोमयज्ञ ।
सोमेखर—पु० [सं०] दे० 'सोमनाथ'; सोम द्वारा काशी-
 में स्थापित एक शिवलिंग; कृष्ण; एक देवता ।
सोमोज्ज्व—वि० [सं०] चंद्रमाने उपपन्न । पु० कृष्ण ।
सोमोज्ज्वा—स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी ।
सोम्य—वि० [सं०] सोम-सम्बंधी; सोमके योग्य; सोमकी
 आहुति देनेवाला; सोम जैमा; सुलायम, कोमल, वृद्धक ।
सोम्य—स्त्री० बही । वि० बंसा ।
सोम्य—वि० [सं०] तीमरा ।
सोमा—पु० दे० 'सोभा' ।
सोरजामा—पु० दे० 'मरजान' ।
सोर—पु० [सं०] वक्र गति; * सोरगुरु, कोलाहल;
 खगति । † स्त्री० मूल, जक; * सौरी ।
सोरड—पु० दे० 'सौरड' ।
सोरठ—पु० भारतका एक प्रांत भीराष्ट्र; एक रागिनी ।
 —मस्कार—पु० एक राग ।
सोरठा—पु० एक मात्रिक छंद ।
सोरठी—स्त्री० एक रागिनी ।
सोरण—वि० [सं०] कसैला, मीठा, खड़ा और नमकीन ।
 पु० ऐसा स्वाद ।
सोरना—पु० सुरज, भोल ।
सोरबा—पु० दे० 'सौरबा' ।
सोरह—वि०, पु० दे० 'सोह' ।
सोरही—स्त्री० सोहह बिस्ती कौड़ियोंसे गंला जानेवाला
 एक प्रकारका जुआ; उक्त प्रकारका जुआ खेलनेके निमित्त
 एकत्र सोहह बिस्ती कौड़ियां ।
सोरा—पु० दे० 'सोरा' ।
सोराधाम—पु० [सं०] मांसका शोरा जिसमें नमक न
 पड़ा हो ।

सोराहिक—वि०, पु० दे० 'सोराहिक' ।
सोर्जन्म—वि० [सं०] जिसकी भर्त्ताके बीचमें भैरवी हो ।
सोर्मि, सोर्मिक—वि० [सं०] तरंगयुक्त ।
सोर्ककी—पु० क्षत्रियोका एक राजवंश जिसका राज्य
 गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना आदिमें था ।
सोर्क—वि० [सं०] शीतल, ठंडा; कसैला, खड़ा और तीता ।
 पु० ठंडक; कसैला, खड़ा और तीता स्वाद; [अं०] जूतेका
 तस्का ।
सोर्कपील—वि० निरंधक, बेकार ।
सोर्क—वि० पंद्रह और एक । पु० सोर्ककी संख्या, १६ ।
 —नहँ—वि० सोर्क नखोवाला (दाधी) । —**सिमार**—
 पु० दे० 'बोडश-संगम' । —(हँ)आने—विलकुल,
 पूर्णतः ।
सोर्कही—स्त्री० दे० 'सोर्कही' ।
सोर्का—पु० दलदली भूमिमें उगनेवाला एक हाक जिसकी
 सीधी और मजबूत छलियोंके छिलकेमें सोला हैट
 बनता है ।
सोर्काना—सं० कि० दे० 'सुल्काना' ।
सोर्किक—वि० [सं०] ठंडा । पु० ठंडक ।
सोर्कस—वि० [सं०] उत्साहयुक्त, आनन्दमय । अं०
 उत्साहके साथ ।
सोर्कुंड—पु० [सं०] व्यंग, ताना, चुटकी । वि० व्यंगपूर्ण ।
 —भाषण,—आवित,—बचन—पु० व्यंगपूर्ण वाक्य ।
सोर्कुंडन—पु०, वि० [सं०] दे० 'सोर्कुंड' ।
सोर्कुंडीकि—स्त्री० [सं०] व्यंगपूर्ण वाक्य ।
सोर्क—पु० शिकारका जानवर आदि ।
सोर्क—पु० वृत्तिगृह, सौरी ।
सोर्क—पु० सोनेकी किंवा ।
सोर्कना—अं० कि० दे० 'सोना' ।
सोर्कना—स्त्री० सोनेका कमरा, शयनगार ।
सोर्करी—स्त्री० सौरी ।
सोर्बा—पु० दे० 'सोभा' ।
सोर्बाक—पु० [सं०] सोहागा ।
सोर्बाना—सं० कि० दे० 'सुल्काना' ।
सोर्बारी—पु० पंद्रह मात्राओंका एक ताल (संगीत) ।
सोर्बाल—वि० [सं०] धूसर, धुंके रंगका । पु० धुंके रंग ।
सोर्बियत—पु० [रूसी] रूसके किमी जिनकी वह सभा
 जो मजदूरों और सिपाहियोंके चुने हुए प्रतिनिधियोंसे
 बनी हो; रूसका आधुनिक प्रजातंत्र ।
सोर्बेबा—पु० सोनेवाला ।
सोर्बल—वि० [अं०] सामाजिक; मिलनसार ।
सोर्बलिङ्ग—पु० [अं०] दे० 'समाजवाद' ।
सोर्बलिस्ट—वि० [अं०] समाजवादी । पु० वह जो समाज-
 वादका अनुयायी हो ।
सोर्ब—वि० [सं०] सारी मिट्टी मिला हुआ ।
सोर्क—वि०, पु० दे० 'सोर्क' ।
सोर्क—पु० दे० 'सोर्क' ।
सोर्कना—सं० कि० दे० 'सोर्कना' ।
सोर्बु, सोर्बु—वि० सुखा डालनेवाला ।
सोर्बीय—वि० [सं०] पगड़ीवाला । पु० वह मकान जिसमें

सौचा*-वि० सुगंधित; रुचिकर। पु० सुगन्ध; वालोंमें लगायेका एक सुगंधित मसाला।

सौम्यवस्त्री*-स्त्री० दे० 'सौमा-मवस्त्री'।

सौनी*-पु० सोनी, सुनार।

सौपना*-म० हि० (कोई वस्तु आदि) किसीके जिम्मे, सौंपर् करना; सहेजना।

सौक*-स्त्री० सोए जैसा एक वेषा जिनका फल दवा और मसालेके काम आता है, शतपुष्पा।

सौकिचा, सौकी*-वि० (खाद्यपदार्थ वा पेय) जिसमें सौफ-का योग हो। स्त्री० सौफके योगमें बनी हुई शराब; वह बांधी जिनको मुग्तोमें सौफका अर्क पड़ा हो।

सौमरि*-पु० एक प्राचीन ऋषि, सोमरि (जिनहोंने माधवाको पंचाम कन्याओंमें विवाह किया था)।

सौर*-स्त्री० चार-तेन पायें पसारिये जैसी लांबी सौर।
† पु० संतानोत्पत्तिके दमयें तिन फेके वा मोटे ज्ञानेवाले मिष्टीके नाम।

सौरि*-स्त्री० दशमलना, सौवलापन।

सौरिना*-म० हि० स्मरण करना, याद करना-‘लरिकाहे-के सौरियन चोर-मिहिचनी केल’-मनिराम; मुमिरन करना। अ० हि० दे० ‘संभरना’।

सौरि*-वि० इयामल, सौबला।

सौमं*-वि० कुल, समस्त; बहुत बड़ा।

सौह*-स्त्री० कमल, शपथ। अ० नामने, रुचक।

सौहन*-पु० एक औजार।

सौही*-स्त्री० एक प्रकारका अन्न। अ० सामने।

सौ*-वि० लम्बे और दम, शन; बहुत। पु० सौकी मस्या, १००। * अ० मा। **सु०**-की एक बात-बहुत ही उचित बात, सर्वमान्य बात। -के मवाये करना-पत्नीम प्रतिशत लाभ करना। -के मवाये होना-पत्नीम प्रतिशत लाभ होना। -कोस भागना-दूर रहना, अलग रहना। -छिपाये-चाहे किसी तरह भी गोप्य रखे; छिपे छिपाये। -जतन करना-बहुत प्रयत्न करना, बहुत कोशिश करना। -जानसे-पूरे दिलमें, पूर्णतः।

-० आशिक होना-अत्यंत सुख होना। -० कुर्बान होना,-० किरा होना-अत्यंत सुख होना। -तरह-का-भिन्न-भिन्न रंगका, विभिन्न प्रकारका। -दो सौमें-बहुतमें (सि कुछ-छोटकेके अर्थमें)। -पचास-कई, अनेक। -पर सौ-शत-प्रतिशत, सौ को सटी। -बात सुनाना-बुरा-भला कहना, जानत मलामत करना।

-मनका-बहुत भारी। -में एक-बहुत कम। -में-कहना-बिना हिचकिनाहटके खुले गौरमें किसी बातको कहना। -सुनाना-बहुत गालियाँ देना, बहुत बुरा-भला कहना। -सौ कोस (दूर) भागना-करीब, निकट न आना, बहुत दूर भागना। -सौ कोस नज़र न आना-कहीं दिखाई न देना, कहीं पता न लगना।

-सौ चक्के पानी पचना-बहुत लज्जित होना। -सौ नाम धरना-अनेक पुटियाँ निकालना, बहुत मुक्ता-पानी करना। -सौ पछटे लेना, सौ फेरे करना-किसी जगहका बार-बार चक्कर लगाना। -सौ बक लागना-बहुत पैस खाना। -सौ मनके बाँध होना-

उर, धक्काहटके कारण चल न सकना। -हाथका कलेजा हो जाना-प्रमत्तताके कारण अत्यंत उन्मादित होना। -हाथकी ज़बान होना-चटोर होना।

सौक*-वि० एक सौ। स्त्री० सपत्नी, सौत। † पु० दे० ‘शौक’।

सौकर, सौकरक*-वि० [म०] सुकर-संबंधी; वाराहावतार- (विष्णु)संबंधी। पु० इस नामका तीर्थ। -सौथ*-पु० एक तीर्थ जहाँ विष्णुकी (वाराहावतारमें) पूजा होती है।

सौकरायण*-पु० [म०] शिकार; एक आचार्य।

सौकरिक*-पु० [म०] मकरका शिकार करनेवाला व्यक्ति; शिकारी, बहेलिया, व्याप; मुक़ता व्यापारी।

सौकरीय*-वि० [म०] मकर-संबंधी।

सौकर्य*-पु० [म०] मकरपन; सुकरता, आसानी; माध्यता; दक्षता।

सौकीना*-वि० दे० ‘शौकीन’।

सौकीनी*-स्त्री० दे० ‘शौकीनी’।

सौकुमारक*-पु० [म०] दे० ‘सौकुमार्य’।

सौकुमार्य*-पु० [म०] मुकुमारता, कोमलता, सुभावमयता; यौवन। वि० कोमल।

सौकृत्य*-पु० [म०] धार्मिक कृत्य करनेका भाव, मुक़ति।

सौकिक*-वि० [स०] मुक्त-संबंधी।

सौहमक*-वि० [म०] मधम क्षेत्र।

सौहम्य*-पु० [स०] मधमता, वारीकी।

सौख*-पु० [म०] मुक्तका भाव; * शौक। -यानिक-पु० यानाकी मफलताकी कामना करनेवाला भट्टिजन।

-रात्रिक-पु० रात्रि सुखमें व्यर्था होनेका हास पृष्ठने-वाला। -शयिक-पु० शयन सुखमें व्यर्था होनेका हास पृष्ठने-वाला। -शायिक-पु० सुखपूर्वक होनेका हाल पृष्ठनेवाला। -सुस्तिक-पु० दे० ‘सौख्यशायिक’; रतुति पाठ द्वारा जगानेवाला बड़ी।

सौख्य*-वि० [म०] मुखाधी, सुख चाहनेवाला; सुख-संबंधी; आनंद-दायक।

सौखीन*-वि० दे० ‘शौकीन’।

सौखीय*-वि० [स०] सुख-संबंधी, आनंददायक।

सौख्य*-पु० [स०] सुख, आनंद; कल्याण। -द-हाथी- (विष्णु)-वि० सुख देनेवाला, आनंददायक। -दायक-वि० सुखद। पु० सौग।

सौगंध*-स्त्री० कमल, शपथ।

सौगंध*-स्त्री० शपथ। वि० [स०] सुगंधित, सुशब्दार।

पु० अक्षर; मुग्धि; सुवास, सुशब्द; एक तुण, कसुण।

सौगंधक*-पु० [स०] नील कमल।

सौगंधिक*-वि० [स०] सुगन्धयुक्त, सुशब्दार। पु० सुगन्ध, इत्र, तेल आदिका व्यवसायी, वर्षा; नीलोत्पल; श्वेत कमल; पञ्चराग मणि; गंधक; एक प्रकारकी सुगंधित घास; एक अन्नकृमि; एक पर्वत; एक नृप, कसृण; एक तरहका अग्राग; एक तरहका नपुंसक जिमें योनिमें गंधमें उद्भि-पन होता है। -बन-पु० पशोकी घनी राशि; एक तीर्थ।

सौगंधिका*-स्त्री० [स०] कुबेर-नगरकी नदी; एक तरहकी पत्थिनी।

सौगंधिपत्रक*-पु० [स०] श्वेत बर्वरी।

सौगंध्य*-पु० [स०] सुवास, सुशब्द।

सौगत-वि० [मं०] सुगत-संबंधी; सुगतमगकी मानने-वाला । पु० बौद्ध, शैववादी; पृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

सौगतिक-पु० [मं०] बौद्ध; बौद्ध भिक्षु, अनीश्वरवादी, नास्तिक; नास्तिकता, अनीश्वरवाद ।

सौगम्य-पु० [सं०] सुगमता; सुविधा ।

सौगरिवा-पु० क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

सौगात-स्त्री० [फा०] भेंट, उपहार, तुहफा ।

सौगाती-वि० उपहारों देने योग्य; बढ़िया, उत्तम ।

सौघा-वि० सस्ता, महँगाका उलटा ।

सौच-पु० दे० 'सौच' ।

सौचि, **सौचिक**-पु० [मं०] सूची; सूईका काम करके निर्वाह करनेवाला व्यक्ति, दर्जी ।

सौचिक्य-पु० [सं०] दर्जीका काम ।

सौचीक-पु० [सं०] एक तरहकी यज्ञाग्नि ।

सौज-स्त्री० दे० 'सौज' ।

सौजना-अ० कि० शोभा देना, सजना ।

सौजस्य-पु० [सं०] सुजन होनेका भाव, सुजनता, मत्तनता, मत्तमनसी; उदारताशयता ।

सौजस्यता-स्त्री० दे० 'सौजस्य' (असाधु) ।

सौजस्क, **सौजा**(अस्)-वि० [मं०] ओजवाला, शक्तिशाली ।

सौजा-पु० आयेत योग्य पशुपक्षी ।

सौष-पु० दे० 'सौष' ।

सौषि-स्त्री० शय्या-‘डरमन भया दयालका सुखि गई सुख सौषि’-माझी ।

सौत-स्त्री० पतिकी दूसरी पत्नी, म्पत्नी । वि० [सं०] वृत्त, सारथि-संबंधी ।

सौतन, **सौतनि**-स्त्री० मौन ।

सौति-स्त्री० सौत । पु० [सं०] (मृतपालिन) कर्ण ।

सौतिन-स्त्री० सौत ।

सौतिषा डाढ़-स्त्री० दो नौतीमें होनेवाली ईंध्या, द्वेष्टादि ।

सौतुक, **सौतुक**, **सौतुक**-अ०, पु० दे० 'सौतुक'-‘सौतुक तो सपनी भयो सपनी सौतुक रूप’-मनिराम ।

सौतेका-वि० सौत-संबंधी, जिसका संबंध सौतमें ही; सौतसे उत्पन्न (मौतेला भाई) ।

सौत्व-वि० [सं०] सृष्ट, सारथि-संबंधी; मोम-गिण्डीहन-संबंधी । पु० सारथिका कार्य ।

सौत्र-वि० [सं०] सूत्र-संबंधी; सूत्रका बना हुआ; सूत्रमें कथित । पु० ब्राह्मण ।

सौत्रालिक-पु० [सं०] बौद्ध मतकी चार प्रमुख शाखाओंमें से एक (यह ‘अनुमान’-प्रधान शाखा है) ।

सौत्रामण-वि० [सं०] ईंद्र-संबंधी । पु० एक तरहका एकाह यज्ञ । -चतुस्र-पु० इन्द्रपुत्र ।

सौत्रामणिक-वि० [सं०] सौत्रामणीमें उपस्थित या प्रयुक्त ।

सौत्रामणी-स्त्री० [सं०] एक यज्ञ जो ईंद्रको प्रसन्न करनेके लिए किया जाता था; पूर्व दिशा ।

सौत्रि-पु० [सं०] जुगाडा ।

सौत्रिक-पु० [सं०] जुगाडा; बनी हुई वस्तु ।

सौत्र्य-वि० [सं०] सहीदर भाई या बहिन-संबंधी । पु०

आशुत्व ।

सौदा-पु० [फा०] खरीद-बेची; वाणिज्य; बह चीज जो बाजारसे खरीदी जाय; क्रय-विक्रयकी वस्तु, माल । -**वार**-पु० व्यापारी, तिजारात करनेवाला । -० **बपचा**-पु० व्यापारीका बेटा, बणिक्पुत्र । -० **बपची**-स्त्री० व्यापारीकी बेटी । -**वरी**-स्त्री० सोदागरका काम, व्यापार, तिजारात । वि० निजारी । -० **आळ**-पु० तिजारीती माल, बिक्रीके लिए इकट्ठा किया हुआ माल । -**बही**-स्त्री० खरीद-बेची लिखनेकी वही । -**सुलक**, **सुलुक**-पु० बाजारमें खरीदी जानेवाली चीजें । **सु**-**पटना**-खरीद-बेचीका मामला तै होना, आव या दाम ठीक होना । -**पटाना**-मोल-भाव करके शाय तै करना । -**होना**-सौदा पट जाना ।

सौदा-पु० [अ०] बूनानी चिकित्साशास्त्रमें माने हुए चार क्लिस्ती(शोची)में से एक जिसका रंग स्याह माना गया है; उन्माद, मनक; प्रेम, इश्क । **सु**-**उल्लना**-सनक मवार होना । -**होना**-खल्ल, उन्माद होना; प्रेम होना ।

सौदाई-वि० धातुक, सनकी; खल्लो; प्रेमी, आशिक ।

सौदामनी-स्त्री० [मं०] विधवा; मालाकार विधवा; पेंरा-वन (गज)की पत्नी; एक राशिनोका नाम; कश्यप और चित्तारीकी एक पुत्री, एक अम्बर; हाहा नामक गंधर्वाका एक कन्या; एक यक्षिणी; सुदामा पर्वतका एक खट ।

सौदामनीव-वि० [मं०] बिजलीके समान; चिन्मयी मन्त्री ।

सौदामिनी-स्त्री० [मं०] दे० 'सौदामनी' ।

सौदामिनीव-वि० [मं०] दे० 'सौदामनीव' ।

सौदाम्नी-स्त्री० [मं०] दे० 'सौदामनी' ।

सौदाधिक-पु० [मं०] बिवाहके अवसरपर माता-पिता नव मंत्रियोंमें कन्याको मिलनेवाला धन (जिमपर विधानन कन्याका अधिकार होता है; दहेज) । वि० दहेज-संबंधी ।

सौदावी-वि० गैदावा, सौदा कृत (—मंत्र) ; निम्न सौदाकी प्रधानता हो (—मित्राक्ष) ।

सौदास-पु० [मं०] एक सर्व्ववशीय नरेश जो मगर-तेरहवीं पीढ़ीमें हुए थे ।

सौदेव-पु० [मं०] राजा दिशोदास जो सुदेवके पुत्र और काशीके ग्रामक थे ।

सौधुमि-पु० [सं०] सुधुमनके वंशज (अरत-शोधित) ।

सौध-वि० [रा०] सुधा-संबंधी; सुधायुक्त; चूना (मुदी) पुना हुआ, पल्लवर किया हुआ । पु० चूना पुना निवास; घर; महल, प्रासाद; चूना; दुधिया पत्थर, दुग्धवापाण, चर्चि; एक रत्न । -**कार**-पु० सौधनिर्माण करनेवाला व्यक्ति, राज, राजगीर, मेमार । -**तक**-पु० महलका नीचेका तलाक । -**सौकि**, **सौकर**-पु० प्रामाद या कंगूरेका सिरा ।

सौध-पु० [सं०] परावतु संबंधका एक पुत्र ।

सौधम्य-पु० [सं०] एक संस्कार नाति; सुधम्यके पुत्र ।

सौधर्म-पु० [सं०] एक देव-भिषास (जै०) । -**ज**-पु० एक देवर्ग (जै०) ।

सौधर्म-पु० [सं०] सुधर्म होनेका भाव, साधुता, मत्तमनसी; सुधर्मपरायणता ।

सीबाकर-वि० [सं०] चंद्रमा-संबंधी, चांद्र ।
 सीबातर-पु० [सं०] ब्राह्मण और मुअकंडीने उपव्रत संतान ।
 सीबातर-पु० [सं०] नाटकके चौदह भागोंमेंसे एक ।
 सीबाख-पु० [सं०] शिवमंदिर ।
 सीबंद-पु० [सं०] बलरामका मूलक ।
 सीनंदी(विद्रु)-पु० [सं०] बलराम ।
 सीन-वि० [सं०] पशुवधालय-संबंधी । पु० बृचक; बृचक द्वारा प्रस्तुत विक्रयार्थ ताजा मांस । * ज० सामने ।
 -घन्ध-पु० जानी बुद्धमनी । -पाल-वि० जिसके यहाँ बृचक रह्यो हो ।
 सीनक-पु० एक ऋषि, सीनक ।
 सीनन-खी० दे० 'सी'दन' ।
 सीना-पु० दे० 'सी'ना ।
 सीनाय-पु० [सं०] मुनायके अनुयायी, वैवाकरणोंको एक शाखा ।
 सीनिक-खी० स्वर्णकान्ति-आनन ममान छवि-छाँहपे छिपैये सीनिक-घन० ।
 सीनिक-पु० [सं०] पशु-पक्षियोंका माँस बेचनेवाला व्यक्ति-कसाई, बृचक; व्याप ।
 सीनीतेय-पु० [सं०] सुनीतिके पुत्र, भ्रूव ।
 सीपना-स० कि० दे० 'सी'पना ।
 सीपण-वि० [सं०] मुपण-गर्भक-संबंधी; मुपण जेसा ।
 पु० एक वेदमंत्र; भरकत; सौंद; गरुडपुराण; गरुडका एक अक्ष । -केतव-वि० विष्णु-संबंधी । -जल-पु० मन्वाभियोंका व्रतविशेष ।
 सीपणी-खी० [सं०] एक तरहकी लता, पातालगावकी लता ।
 सीपण्य-पु० [सं०] सुपणिके पुत्र गरुड; गायत्री आदि छंद ।
 सीपण्य-वि० [सं०] दे० 'सीपण' । पु० मुपण (गरुड या राज)की लक्ष्म्या या स्वभावा ।
 सीपस्तंवि-पु० [सं०] एक गौत्रप्रवर्तक ऋषि ।
 सीपाक-पु० [सं०] एक वर्णमकर जाति ।
 सीपिक-वि० [सं०] रसा मिलाया हुआ; सूत-संबंधी ।
 सीसिक-वि० [सं०] शयन-संबंधी । पु० रात्रिबुद्ध, सोते हुए पर किया जानेवाला आक्रमण । -चर्व(वृ)-पु० महाभारतका दशमो पर्व (जिसमें अश्वत्थामा आदि के रात्रिमें पांडवोंके शिविरपर आक्रमण करनेका वर्णन है) ।
 सीप्रजास्त्व-पु० [सं०] अच्छी संतामोंका होना ।
 सीप्रसीक-वि० [सं०] मुप्रसीक नामक दिग्गज-संबंधी; हाथी-संबंधी ।
 सीक-खी० दे० 'सी'क' ।
 सीकिया-खी० पुरानी कसा धास ।
 सीकियाना-वि० सुकियाना; सीकियाना ।
 सीकर-पु० सुवर्ण-'राबरकी छवि बरनी कैसे । सीबरको पर सोहत जैसे ।'-घन० ।
 सीबक, सीबलक-पु० [सं०] सुबलका पुत्र सकुनि ।
 सीबकी-खी० [सं०] सुबलकी पुत्री तथा धृतराष्ट्रकी पत्नी गांधारी ।
 सीबलेय-पु० [सं०] सकुनि ।

सीबलेयी-खी० [सं०] सुबलकी पुत्री गांधारी ।
 सीबल्य-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
 सीबिया-खी० [सं०] एक तरहकी बुलबुल ।
 सीबीर-पु० दे० 'सीबीर' ।
 सीब-पु० [सं०] हरिश्चंद्रका हवाई नगर; एक गाँव; सीमोका राजा; दाल्बोका एक नगर ।
 सीभिक-पु० [सं०] द्रुपद ।
 सीभय-पु० [सं०] सुभग होनेका भाव, सौंदर्य; अच्छा भाव्य, सीमाय्य; आनंद, प्रसन्नता; कल्याण; समृद्धि; धन-सौलत । वि० सुभग बृहत्ते उत्पन्न था बना हुआ ।
 सीभय-वि० [सं०] मुभद्रा-संबंधी । पु० सुभद्राके पुत्र अभिमन्यु; एक तीर्थ ।
 सीभयेव-पु० [सं०] मुभद्रा-पुत्र अभिमन्यु; विभीतक वृक्ष, बंदरा ।
 सीभर-वि० [सं०] सीभरि कवि-संबंधी । पु० एक वैदिक कवि ।
 सीभरि-पु० [सं०] एक मुनि जिन्होंने मांभाताका पंचम कन्वामोंसे विवाह किया था ।
 सीभाजन-पु० [सं०] सहजिन ।
 सीभागिनी-खी० सीभाग्यवती स्त्री, मधवा ।
 सीभागिनेय-पु० [सं०] ज्येष्ठा (सबसे प्रिय) पत्नीका पुत्र; सम्मानित मानाका पुत्र ।
 सीभाग्य-पु० [सं०] अच्छा भाव्य, सुश-किस्मती; कल्याण; समृद्धि; सफलता; सौंदर्य; प्रेम; आनंद; शुभ-कामना; मुहाय, अहिवात; सिद्ध; सुहावा; एक पीथा ज्योतिषका एक योग; एक व्रत । -विह्व-पु० अच्छे भाग्यका चिह्न; अहिवातका चिह्न (जैसे सिद्ध जाति) ।
 -सुत-पु० वह राजा जो विवाहमें वर द्वारा कन्याके गलेमें बाँधा जाता है । -सूतीया-खी० हरितालिका, तीव्र । -फल-वि० त्रिमका फल आनंददायक हो ।
 -अंजरी-खी० एक सुरांगना । -अंजन-पु० हरताल ।
 -मद-पु० आनंद या सौंदर्यजन्य मद । -विलोपी-
 (विद्रु)-वि० सीभाग्य, सौंदर्य नष्ट करनेवाला । -जल, -जलचक्र-पु० काश्यप-शुक्रा तृतीयको होनेवाला एक व्रत ।
 सीभाग्यवती-खी० [सं०] मधवा, सुहागिन ।
 सीभाग्यवान(वत्)-वि० [सं०] भाग्यशाली, सुख-किस्मत ।
 सीभासिक-वि० [सं०] कान्तिमान् ।
 सीभासिलिक(रत्न)-पु० [सं०] एक तरहका रत्न ।
 सीभिक-पु० [सं०] सीबागर, जादूगर ।
 सीभिक-वि० [सं०] सुकाल, सुभिक्ष होनेवाला । पु० यहाँकी होनेवाला एक तरहका उदररुल ।
 सीभिक-पु० [सं०] सुकाल, सुभिक्ष ।
 सीभेय-पु० [सं०] सीभके निवासी ।
 सीभेय-वि० [सं०] जिसमें अच्छी ओषधियाँ हों ।
 सीभ्राज-पु० [सं०] भाइयोंकी आपसकी प्रीति, सुभ्रातृत्व, भावप ।
 सीमंगल्य-पु० [सं०] कल्याण, समृद्धि; मांगलिक पदार्थ ।
 सीमंत्रिण-वि० [सं०] अच्छे मंत्रीवाला ।

सौम-पु० [अ०] रोजा । वि० [स०] सोम(चंद्रमा वा लता)संबंधी; * दे० 'सौम्य' -**कृतव**-पु० एक साम ।
-**पौष**-पु० एक साम ।

सौमवृत्ति-पु० [स०] सोमदत्तका पुत्र, जयद्रथ ।

सौमन-पु० [स०] एक दिव्यात्मा ।

सौमनस-वि० [स०] सुमन, पुष्प-संबंधी; अनुकूल वेद-नीय, मन तथा कर्म बाह्य इन्द्रियोक्तो अच्छा लगनेवाला, स्विकार । पु० आनंद; सौम्य; कृपा, दया; एक अच्छा नाम; कर्ममास, सावनमासकी आठवीं तिथि; पश्चिमका दिग्मज; एक पर्वत; जायफल; एक अच्छाहार ।

सौमनसा-स्त्री० [स०] ज्ञानीपत्नी, जावित्री; एक नदी ।

सौमनसावनी-पु० [स०] जावित्री, आतीपत्नी ।

सौमनसी-स्त्री० [स०] कर्ममास, सावनमासकी पाँचवीं रात ।

सौमनस्व-वि० [स०] आकाशकारक, आनंददायक । पु० तुष्टि, प्रमत्तता; विवेक; प्रकटीपका एक वर्ष; आश्र आदिमें पुरोहितकी मंजलिमें फूल देना ।

सौमनस्यावनी-स्त्री० [स०] मालती फूलकी कच्ची ।

सौमना-स्त्री० [म०] फूल; एक दिव्यात्मा ।

सौमायन-पु० [म०] सोमपुत्र, पुत्र ।

सौमिक-वि० [स०] सोमरस संबंधी; सोमरस द्वारा किया जानेवाला (यज्ञ); सोमयज्ञ-संबंधी; चंद्र संबंधी; चांद्रायण ग्रह करनेवाला । पु० सोमरसका पात्र ।

सौमिकी-स्त्री० [म०] सोममिथीजनका कृत्य; एक वृक्ष ।

सौमित्र-पु० [स०] मैत्री, मित्रता, दोस्ती; सुमित्राके पुत्र अरुमण; सन्तुल्य; इन नामके कई नाम ।

सौमित्रा-स्त्री० [म०] दे० 'सुमित्रा' ।

सौमित्रि-पु० [स०] सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण, सन्तुल्य; एक आचार्य ।

सौमित्रिय-वि० [म०] सौमित्र-संबंधी ।

सौमिलिक-पु० [म०] एक पदार्थ; मिथुओंका एक तरहका दंड (शे०) ।

सौमी-स्त्री० चांदनी ।

सौमुक्य-पु० [स०] मुमुक्षुता, मुलहर्ष; प्रमत्तता ।

सौमेचक-पु० [म०] मोना ।

सौमेधिक-वि० [म०] दिव्य ज्ञानविशिष्ट; सोमन मेधा-संबंधी । पु० दिव्य ज्ञानसंपन्न व्यक्ति; सिद्ध, कवि ।

सौमेरव-वि० [म०] सुमेरु पर्वत-संबंधी । पु० इलाहूत; मोना ।

सौमेरुक-वि० [म०] सुमेरु-संबंधी; सुमेरुमें प्राप्त । पु० मोना ।

सौम्य-वि० [स०] सोम(चंद्रमा वा सोमलता)-संबंधी; सोमके गुणोंसे युक्त; सुंदर, रमणीय, मिय, सुदुल, कोमल; स्निग्ध; शांत; उत्तरी; आगलिक, शुभ(नक्षत्र, पक्षी आदि); कातिमान्; प्रसन्न । पु० पुत्र; माझणके संबंधनकी उपाधि; माझण; और्दुवर वृक्ष; वह रस जो लगी दल्लके रूपमें लाल न हुआ हो; अशिरस; पृथ्वीके नौ खडोंमेंसे एक; शुभ ग्रह; सोमपायी माझण; एक कृच्छ्र; सोमवृक्ष; आराधक, उपासक; शुभ नामक वैदिक कवि; बायाँ हाथ; बखलपुष्पा नीचेसे पदार्थों हाथ; मार्गशीर्ष मास; तैत्तिल्यवी

सवत्सर; एक पितृवर्ग; ज्योतिषका सातवाँ ध्रुव; सौम्यम्; सुगंधिरा नक्षत्र; बायाँ आँख; पाँचवाँ मुहूर्त; करका मध्य भाग; एक दिव्यात्मा; आकाशमें होनेवाला एक तरहका शकुन । -**कृच्छ्र**-पु० पाँच दिनोंका एक व्रत जिसमें पहले पाँच दिन क्रमशः खली, माँस, तम, जल और सप्त खाते थे और छठे दिन उपवास करते थे । -**गंधा**, -**गंधी**-स्त्री० मेवती । -**गिरि**-पु० एक पर्वत । -**गोल**-पु० उत्तरी गोलार्द्ध । -**ग्रह**-पु० शुभ ग्रह । -**ज्वर**-पु० ज्वरका एक प्रकार जिसमें कभी-कभी ज्वर हो आता है । -**दर्शन**-वि० देखनेमें भला । -**धातु**-स्त्री० कंठमा । -**नामा**(**मन्त्र**)-वि० जिसका नाम सुननेमें अच्छा भाव्य हो । -**प्रभाव**-वि० सुदुल स्वभावका । -**मुख**-वि० सुंदर मुखवाला । -**रूप**-वि० के प्रति अच्छा वर्तान करनेवाला । -**वपु**(**स्**)-जिसकी आकृति भरी भाव्य हो । -**बार**, -**बासर**-पु० वृषवार । -**शिक्षा**-स्त्री० वृष्टिविधेय । -**क्षी**-वि० आनंददायक सोदयवाला ।

सौम्यता-स्त्री०, **सौम्यत्व**-पु० [म०] ग्नित्वता; मार्दव उदारता; मोदय ।

सौम्या-स्त्री० [स०] दुर्गा; मोक्षी; बायाँ छटका एक भद्र, महेंद्रवाक्य; रुद्र नदा; महाज्योतिष्मती, मरिचपत्नी; शुद्ध, आलपनी; माया; झोटी; मलिका; वृणागिरा नक्षत्र; उन्मत्त नामका पाँच तारोंका समूह ।

सौम्याकृति-वि० [म०] सुंदर आकृतिवाला ।

सौम्यी-स्त्री० [स०] चंद्रिका, चांदनी ।

सौम्यव्य-पु० [म०] वासकी बहुतायत, गुणमात्र्य ।

सौर-स्त्री० आदर; मोक्षी मछली । वि० [म०] सृष्टिमवधा करनेसे उपपन्न; सुधारण, उपशोषामक; सूर्यकी गतिका अनुसरण करनेवाला; देवना-संबंधी, मदिरा-संबंधी । पु० मय्यकी पूजा करनेवाला व्यक्ति; ज्ञान ग्रह; योग्यो कर्प, सौर दिन; सौर मास; धनिया; तुलुक् वृक्ष; यम; नव संबंधी वैदिक मंत्रोंका समूह; दाहिनी आँख; एक मास ।

-**कण**-पु० सूर्यापानके विध किया हुआ कण । -**ग्रीव**-पु० एक प्राचीन देश । -**ज**-पु० तुलुक् वृक्ष; धनिया; दे० क्रममें । -**शीर्ष**-पु० नीधविशेष । -**विज**, -**विजस**-पु० एक नवोदयमें दूसरे ज्योतिष्यकका समय । -**द्रोणि**-स्त्री० छोटा ताल । -**प्री**-स्त्री० एक तरहका मारवाला बाजा । -**जक**-पु० रविवारको किया जानेवाला एक व्रत । -**पत**-पु० सूर्यका उपासक । -**परिकर**-पु० सौर जगत् । -**सुवन**-पु० दे० 'सुवेद्यो' । -**भ्राम**-पु० सूर्यसंक्रांतिके अनुसार होनेवाला महाना । -**लोक**-पु० दे० 'सूर्यलोक' । -**वर्ष**, -**संवत्सर**-पु० सूर्यसंक्रांतिके अनुसार होनेवाला वर्ष । -**संहिता**-स्त्री०, -**सिद्धान्त**-पु० ज्योतिषके सिद्धांतग्रह । -**लूक**-पु० सूर्य-संबंधी युक्त । -**सैवध**-पु० सूर्योत्थ ।

सौर-पु० [अ०] बैल; वृषादि ।

सौरक-पु० दे० 'सौर्य'; दे० 'सौर' में ।

सौरण-वि० [स०] सूर्य-संबंधी ।

सौरस-वि० [स०] सूर्य-संबंधी; केलि-क्रियासे संबंध । पु० सुरत, रति; मंद समीर ।

सौरव-पु० [स०] रतिमुख; ... में सुख ।

सौरभ-पुं० [सं०] बोधा, नीर ।

सौरभ-वि० [सं०] सुगन्धित, सुशब्दार; सुरभि (गाय)से उत्पन्न । पुं० सुगन्धि, सुशब्द; कैतर; बलिया; सोच नामक गंधद्रव्य; मधुगंध; आम; सुंदर; एक साम । -बाह-पुं० पवन ।

सौरभक-पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त ।

सौरभिल-वि० [सं०] मौरमयुक्त, सुगन्धयुक्त, सुशब्दार ।

सौरभी-स्त्री० [सं०] गाय; सुरभि नामकी गायत्री पुत्री ।

सौरभेय-वि० [सं०] सुरभि-संबन्धी । पुं० सुरभि-वाकसे उत्पन्न वृष, बैल; पशुओंका झुंड ।

सौरभेयक-पुं० [सं०] वृष, सौँध ।

सौरभेयी-स्त्री० [सं०] गौ, गाय; एक जम्बरा ।

सौरभ्य-पुं० [मं०] सुवास, सुशब्द; मनोमता, मौढ्य; मशारणा; प्रसिद्धि; कुबेर । -इ-पुं० एक गंधद्रव्य ।

सौरस-वि० [सं०] मुरमा नामक पीयेसे बना हुआ । पुं० नमकीन रसा; बालका कीड़ा, जू; मुरमाकी मंजान ।

सौरसा-स्त्री० [सं०] पहाड़ी बेर ।

सौरसेन-पुं० [मं०] दे० 'शूरसेन'; 'शौरमेन' ।

सौरसेय-पुं० [मं०] काश्मिरेय, स्कंद ।

सौरसैख-वि० [मं०] मुरमिपु, गंगा-संबन्धी । पुं० दे० 'सौर'मे ।

सौरस्य-पुं० [सं०] मुरम होनेका भाव; सुरमा ।

सौराज्य-पुं० [सं०] भुराज्य, अच्छा जामन ।

सौराटी-स्त्री० [मं०] एक रागिनी ।

सौराव-पुं० [मं०] नमकीन मुरमा ।

सौराष्ट्र-वि० [सं०] मराठ, मौर-सम्बन्धी । पुं० मराठ देश, काठियावाड़ तथा गुजरातका पुराना नाम; मराठ देशका निवासी; कुंदुर नामक गंधद्रव्य; कौसा; एक वर्णवृत्त । -नगर-पुं० सूरत । -सुलिका-स्त्री० मराठ देशकी एक नरहकी मिट्टी जो सुगन्धित होती है, गोपीचंद्रन ।

सौराष्ट्रक-वि० [मं०] सौराष्ट्र के निवासी; पंचलौह; एक तरहका विष । वि० मराठ-संबन्धी ।

सौराष्ट्रा-स्त्री० [मं०] तुवरी; गोपीचंद्रन ।

सौराष्ट्रिक-वि० [मं०] सौराष्ट्र प्रदेशमें संबंध । पुं० एक विष; मराठ-निवासी; कौसा ।

सौराष्ट्री-स्त्री० [मं०] गोपीचंद्रन ।

सौराष्ट्रेय-वि० [मं०] मराठ-संबन्धी; मराठका ।

सौराख-पुं० [मं०] एक दिव्य अस्त्र ।

सौरिष्ठ-पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।

सौरि-पुं० [सं०] शनि; असन वृद्ध; आदित्यभक्ता; एक स्थान; दक्षिणकी एक जाति; * दे० 'सौरि' । -रत्न-पुं० कोकम ।

सौरिक-वि० [सं०] स्वर्ण-संबन्धी; मरिचका; मरिचासंबन्धी । पुं० शनि; स्वर्ण ।

सौरी-स्त्री० सृतिगृह, मकरी मछली; [सं०] सूर्यपत्नी; कुरुकी माता, वैवस्वती; गाय; आदित्यभक्ता ।

सौरिच-वि० [सं०] सूर्य-संबन्धी । पुं० एक वृक्ष जिसका मियांस विषैला होता है ।

सौरिध, **सौरिधक**-पुं० [सं०] श्वेतसिंधी ।

सौर्य-वि० [सं०] सूर्य-संबन्धी । पुं० सूर्यका पुत्र, शनि; वर्ष;

हिमालयके हय नामके दो किलर; एक नगर । -टूट-पुं० एक साम ।

सौर्यमय-वि० [सं०] सूर्यकी प्रभासे मंत्रब रखनेवाला ।

सौर्यी(विंज)-पुं० [सं०] हिमालय ।

सौर्योदधिक-वि० [सं०] सूर्योदय-संबन्धी ।

सौर्यक-वि०, पुं० दे० 'सौर्यचल' ।

सौर्यकी-पुं० दे० 'सौर्यकी' ।

सौर्य, सौर्या-पुं० राजकीरोंका एक भाऊ, साहुल ।

सौर्यक्षण-पुं० [सं०] सुरक्षण होनेका भाव, सुरक्षणता ।

सौर्यभ्य-पुं० [सं०] सुलभ होनेका भाव, सुलभता ।

सौर्यिक-पुं० [सं०] तौबेका काम करनेवाला व्यक्ति, ठेकेदार, नावकुट्टक ।

सौर्य-वि० [सं०] अपने वा अपनी संपत्तिमें संबंध रखनेवाला; स्वर्ण-संबन्धी । पुं० आदिश, जामन ।

सौर्यर-वि० [सं०] स्वर-संबन्धी ।

सौर्यचल-वि० [सं०] सुवर्ण देश-संबन्धी या वहाँ उत्पन्न होनेवाला । पुं० सौर्य नमक; सज्जिकासार ।

सौर्यचला-स्त्री० [सं०] रत्नकी पत्नी ।

सौर्यचंस-वि० [सं०] चमकदार, काश्मिरी ।

सौर्यर्ण-वि० [सं०] सुवर्णका, स्वर्ण-निर्मित; एक सुवर्णकर्म बजनका । पुं० एक कर्मर मोना; मोनेकी बाली; सोना । -पर्ण-वि० सुनहले पक्षीवाला । -मेदिनी-स्त्री० प्रियंगु । -हृदय-पुं० चौड़ी (?)का मंडप ।

सौर्यर्णिक-पुं० [सं०] मुनार । वि० एक सुवर्णका वा एक सुवर्णमर ।

सौर्यर्णिका-स्त्री० [सं०] एक विषैला कीड़ा ।

सौर्यर्ण्य-पुं० [सं०] सुंदर, नाजा रंग; मोना होनेका भाव; स्वर्णका शुद्ध वर्णधारण ।

सौर्यरज्य-पुं० [सं०] बुद्धी (दे०) ।

सौर्यस्तिक-वि० [सं०] स्वस्ति-संबन्धी, आशीर्वादप्रद । पुं० पुरोहित ।

सौर्याभ्याधिक-वि० [सं०] स्वाध्यायी ।

सौर्यास-पुं० [सं०] तुलसीका एक भेद जो सुगन्धित होता है ।

सौर्यासिनी-स्त्री० [सं०] दे० 'सुवासिनी' ।

सौर्यास्य-वि० [सं०] अच्छे स्थानपर निर्मित या वास्तु-संबन्धी विशेषतासे युक्त (गृह) ।

सौरिध, सौरिधस्त, सौरिधस्तक-पुं० [सं०] अतःपुर-रक्षक, निवासकी रखावाली करनेवाला व्यक्ति, कचुकी ।

सौवीर-पुं० [मं०] नदरीफल, बेर; कर्जोविशेष जो जोसे बनायी जाती है; सिंधु नदीके पासका एक प्रदेश; इस प्रदेशके निवासी; इस देशका राजा; सुरमा । -पाण-पुं० बाह्यीक देशका निवासी (जोकी कौबी पीनेके कारण) । -भक्त-वि० सौवीरोंसे बना हुआ । -राज-पुं० मोवीरनरेश । -सार-पुं० स्रोतोजन, सुरमा ।

सौवीरक-पुं० [सं०] सौवीर नामक स्थान या वहाँका निवासी; कौर्ज अथवा सौवीर; जवद्वध; बेरका पेड़; जोकी कौबी ।

सौवीरजन-पुं० [सं०] सुरमा ।

सौवीरर-स्त्री० [सं०] एक तरहकी मूर्च्छना (मगीत) ।

सौवीरसङ्क-पु० [सं०] बौधो बौवी ।
 सौवीरिका-खी० [सं०] रेका पेव ।
 सौवीरी-खी० [सं०] दे० 'सौवीर'; सौवीरकी राजकुमारी ।
 सौवीर्य-पु० [सं०] बहुत बली बौरता; सौवीर-बोरके ।
 सौवीर्या-खी० [सं०] सौवीरकी राजकुमारी ।
 सौवस्य-पु० [सं०] निहा, भक्ति, आत्माकरिता ।
 सौवस्य-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।
 सौवस्य-पु० [सं०] अच्छी छाति या सुष्टि ।
 सौवीर्य-पु० [सं०] सुशीलता, सदाचार ।
 सौवस्य-पु० [सं०] सुकीर्ति, स्वाति; दीवकी होम; री-
 साम; सुमवाके वंशज । वि० वसरी ।
 सौविय-पु० [सं०] सौमव्य; सप्तदि ।
 सौव्य-वि० [सं०] सुभूत-रचित । पु० सुभूतका वंशज ।
 सौविर-पु० [सं०] एक दरोगा; स्वरवाह ।
 सौविर्य-पु० [सं०] धोलपन, खोलपन ।
 सौवस्य-पु० [सं०] एक सुवैरधिम ।
 सौव्य-पु० [सं०] वचमता; सौदर्य, सुबोलपन; दक्षता,
 चातुर्य; तेजी; शरीर या नृत्यकी एक मुद्रा; आत्मविभास;
 नाटकका एक अंग; आचिष्य ।
 सौवस्य-खी० [सं०] लाली लिये नीले रंगका एक कूक
 जो उर्-फारसी कवितामें जवानका उपमान है ।
 सौवनी-वि० सौवनके रंगका, लाली लिये नीला । पु०
 लाली लिये नीला रंग; आसमावी रंगका चोका ।
 सौसुराह-पु० [सं०] एक तरहका मलकट ।
 सौस्वित्य-पु० [सं०] अच्छी स्थिति या स्थानपर होना-
 प्रहोका शुभ स्थानपर होना ।
 सौस्व-पु० [सं०] कल्याण ।
 सौस्मासिक-वि० [सं०] लान मगलकारी होनेके मन्त्रमें
 पुछनेवाला ।
 सौस्वर्च-पु० [सं०] सुस्वरा, सुरीलापन ।
 सौर्ह-खी० कमन, उपय । अ० मम्सुल, समझ, मामने ।
 सौहर्ह-पु० दे० 'सौहर्' ।
 सौहर्ह-पु० [सं०] हदबकी सरलता; सज्जाव; मैत्री;
 मित्रका पुत्र । -मित्रि-पु० राम । -व्यञ्जक-वि०
 मैत्रीभावकी छिपा न रख सकनेवाला ।
 सौहर्ह-पु० [सं०] मैत्री, दोस्ती ।
 सौहिर्य-पु० [सं०] हसि, संतुष्टि; पूर्णता; मनोहरता,
 हृदय-आदिता ।
 सौहर्ह-अ० सामने, मम्सुल । [पु० एक तरहकी रेगी;
 एक औजार ।
 सौहर्ह-वि० [सं०] मित्र-संरधी; मित्रका । पु० मित्र; एक
 प्राचीन जाति; प्रेम, मैत्री (समासमें); रुचि (समासमें) ।
 सौहर्ह-पु० [सं०] प्रगाढ़ मैत्री ।
 सौहर्ह्य, सौहर्ह-पु० [सं०] मैत्री, दोस्ती ।
 स्कंधा(धु)-वि० [सं०] कूदनेवाला, छलंग मारनेवाला ।
 स्कंध-पु० [सं०] क्षरण, बहना; माझ, प्वंस; पारा; उछ-
 लना; उछलनेवाली चीज; कार्तिकेय शिव; शरीर;
 राजा; नदीतट; पतुर व्यक्ति; एक शास्त्र । -गुह्य-
 पु० गुप्तशका एक प्रसिद्ध सन्नाह । -शुक्-पु० शिव ।
 -मह-पु० एक बालग्रह । -जन्मनी-खी० पार्वती ।

-विह-पु० विष्णु । -शुक्-पु० चेरके किए प्रसक्त
 छिह नाम । -पुर-पु० एक पुराका नगर । -पुसज-
 पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक । -मास(धु)-खी० दुर्गा,
 पार्वती । -विज्ञास्य-पु० शिव । -बडी-खी० चैत्र-
 शुद्धा वशी; इस दिन होनेवाला जय; कार्तिक या अमहान
 सुदी बडी ।
 स्कंध-पु० [सं०] कूदने उछलनेवाला व्यक्ति; सैनिक;
 एक वृत्त ।
 स्कंध-पु० [सं०] क्षरण, बहना; स्थलन, पात; रेचन;
 गमन; शोषण; रक्तका जमाना या डंक पड़नेवाला जमाना ।
 स्कंधास्य-पु० [सं०] पारा ।
 स्कंधास्य-पु० [सं०] एक बालग्रह जिसमें मूच्छा
 होती है ।
 स्कंधास्यारी(विह)-वि० [सं०] स्कंधापसार रोगसे
 ग्रस्त ।
 स्कंधित-वि० [सं०] क्षरित, बहा हुआ; पतित; गमन-
 शील ।
 स्कंधी(विह)-वि० [सं०] क्षरित होनेवाला, बहनेवाला;
 पतनशील; उछलने, कूदनेवाला; जमनेवाला; स्फुटित
 होनेवाला ।
 स्कंधेधरतीर्ष-पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ ।
 स्कंधोपनिषद्-खी० [सं०] एक उपनिषद् ।
 स्कंधोल-वि० [सं०] शीतल, ठंडा । पु० ठण्डक ।
 स्कंध-पु० [सं०] कथा, पीठका ऊपरी भाग; पेशका तना-
 भीठी काम; विद्या आदिका कोई विभाग; ग्रन्थका अन्त्य;
 मेनाका कोई अंग या भाग; मेनाका व्यूह; समूह, झुट
 पांवी हानदियोंके विषय; जीवनेके पांच तत्त्व-रूप, वैदना,
 म्हा, संस्कार और विद्यान (बी०); रिह (वै०); आर्मा
 छदका एक भेद; राजा; अभिषेकके अवसरपर काम आने-
 वाले छत्र, उत्कृष्ट कलश आदि उपकरण; सुनि; आवाय
 युद्ध; समझौता; एक पक्षी; आरवाहक बेलोंके कुकुद्की
 ऊंचाईका समानता; एक नागानुर; मक्क; मार्ग ।
 -आप-पु० बर्गी । -अ-वि० कंधेसे उत्पन्न होनेवाला ।
 पु० ऐसा वृक्ष-शालकी; बटवृक्ष । -सह-पु० नारियल-
 का पेड़ । -देश-पु० कंधेका भाग तना; हाथीके कंधेके
 पामका वह भाग जहाँ महावन बैठता है । -वध-पु०
 पगडडी । -परिनिर्वाण-पु० शरीरके स्पर्शों(पाँचों
 तत्वों)का पूर्ण लोप या नाश (बी०) । -पाह-पु० एक
 पर्वत । -पीह-पु० अंसफलक, कंधेकी हड्डी । -प्रदेश-
 पु० दे० 'स्कंध-देश' । -फल-पु० नारियल; गूहर;
 बेलका पेड़ । -बधना-खी० मयुरिका, लीफ । -बीज-
 पु० वट जैसे वृक्ष जिनके स्पर्शसे शाखा निकलकर वृक्षका
 रूप धारण कर लेती है । -मणि-पु० एक तरहका रत्ना-
 कज, तावीज । -मल्लक-पु० कंक पक्षी । -मार-
 पु० चार मारोंमेंसे एक (बी०) । -सह-पु० बटवृक्ष ।
 -बह-बाह-बाहक-पु० कंधेपर भार बहन करने-
 वाला (वै० भावि) । -बाह-वि० जो कंधेपर बोया
 जाय । -बाह्या-खी० पेशकी मुख्य शाखा । -शिर-
 (स्)-पु० कनकलक । -अह-पु० मेता ।
 स्कंधक-पु० [सं०] एक तरहका आर्मा छत्र ।

स्कांधा-स्त्री० [सं०] शाखा, डाल; कटा।
 स्कंधाक्ष-पुं० [सं०] स्कंधका एक अनुचर।
 स्कंधानि-स्त्री० [सं०] कुं वैष्ठी आग।
 स्कंधानल-पुं० [सं०] दे० 'स्कंधानि'।
 स्कंधाधार-पुं० [सं०] राजाका शिविर; राजधानी; सेना;
 सैन्यस्थिति; व्यापारियोंके ठहरनेका स्थान।
 स्कंधिक-पुं० [सं०] कंधेपर भार ढोनेवाला बैल।
 स्कंधी(धनु)-वि० [सं०] स्कंधयुक्त, जिममें तना हो।
 पुं० दृष्ट।
 स्कंधेमुख-वि० [सं०] जिमका मुँह कंधेपर हो। पुं०
 स्कंधका एक अनुचर।
 स्कंधोशीधी-स्त्री० [सं०] दृष्टी छंदका एक भेद।
 स्कंधोपनेत्र-पुं० [सं०] शांति बनाये रखनेके लिए की
 जनिवाली एक तरहकी संधि। वि० जो कंधेपर ढोया
 जाय।
 स्कंध-वि० [सं०] कंधेका; कंधेसे संबद्ध।
 स्कंध-पुं० [सं०] खंभा, टेक, सहारा; पुरुष; परमेश्वर।
 स्कंधन-पुं० [सं०] खंभा; अवलंबन, टेक।
 स्कन्ध-वि० [सं०] च्युत, गिरा हुआ; क्षरित; गत; विकल;
 शुष्क। -भाग-वि० जिसका हिस्सा नष्ट हो गया हो।
 स्कन्ध-वि० [सं०] सहारा दिया हुआ; रोका हुआ।
 स्कन्धन-पुं० [सं०] शब्द।
 स्कन्ध-वि० [सं०] स्कन्ध-संबंधी। पुं० स्वतंत्रपुराण।
 स्कान्ड-पुं० [अ०] गुप्तचर, निरीक्षकोंका संघ; बालचर।
 स्कान्ट, स्वर बास्कर-पुं० अंग्रेजीके एक प्रसिद्ध कवि तथा
 मशहूर उपन्यासकार। 'बिकरली', 'आइवन हो', 'केनिल-
 वर्थ' आदि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं।
 स्कालर-पुं० [अ०] छात्र, विद्यार्थी; विद्वान्, पंडित।
 -शिप-स्त्री० छात्रवृत्ति; पाठित्य।
 स्क्रीम-पुं०, स्त्री० [अ०] बीजना; मन्थना; कल्पना।
 स्कूल-पुं० [अ०] पाठशाला, अध्यापनका स्थान; वह
 स्थान जहाँ प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा दी जाती हो;
 विशिष्ट विचारधारा। -टीचर, -मास्टर-पुं० स्कूलका
 शिक्षक।
 स्कूली-वि० स्कूलका।
 स्कॉटिका-स्त्री० [सं०] एक पक्षी।
 स्कू-पुं० [अ०] एक तरहकी क्षील जिसमें सिरपर चूबियों
 बनी होती हैं, पैंच।
 स्कान्द-पुं० [अ०] अथारोही सैन्यदल; जंगी बेरेका एक
 दल।
 स्कान्दर, स्कैन्डर-पुं० [अ०] बर्ग; वह चौकीर स्थान
 जिसके चतुर्दिक् मकान हों।
 स्कान्द-पुं० [सं०] धीरना, फाकना, विदारण; वध; कट
 देना, उत्पीड़न; स्पर्ध, हड़ता।
 स्कल-पुं० [सं०] छुड़कना, गिरना।
 स्कलझाव-वि० [सं०] बोलनेमें झूठ करनेवाला; झूठ-
 लनेवाला।
 स्कलन-पुं० [सं०] पतन; मार्गसे विचलित होना; लड़-
 कपाना; धरभराहट; झूठ करना; गलती; विकलता;
 झकझाट; घुना, क्षरण, भाग; टहरा; वर्षण, संघर्ष;

बंकिता होना।

स्कलम्पसि-वि० [सं०] अस्थिरमति, कमजोर दिमागका।
 स्कलित-वि० [सं०] लुढ़का हुआ, गिरा हुआ, पतित;
 लक्ष्मणावा हुआ, विचलित; अस्थिर; शुम्भ; मत्त; हक-
 काता हुआ; झूठ करनेवाला; क्षरित, टपका हुआ; विकल;
 रोका हुआ, बाधित; धक्काया हुआ; गत; अचूरा, अपूर्ण।
 पुं० क्षरण, आव; लक्ष्मणाहट; झूठ; विकलता; विचलन;
 दीप; पाप; छल-कपट; युद्धमें छलका सहारा लेना; हानि,
 क्षति। -गति-वि० जो चलनेमें लक्ष्मणावा हो।

-बीर्व-वि० जिसकी वीरगा काम न दे सकी हो।

स्कॉप-पुं० [अ०] पक्षी खिलापदी करने या अजीर्णावा
 लिखनेका कामज; शकसानेका टिकट; छाप, मोहर।

स्काइल-स्त्री० [अ०] पड़ति; शैली।

स्टाक-पुं० [अ०] बिक्रीका माल; साझेदारोंमें
 लगायी हुई पूँजी; सरकारी कामजमें म्याजपर लगाया
 हुआ धन; सरकारी कणकी हुंडी; रसद; गोदाम।
 -एक्सचेंज-पुं० स्टाक, शेयर खरीदने, बेचनेका मकान,
 बाड़ा, स्थान; दलालोंकी सभा। -ब्रोकर-पुं० दूसरोंके
 लिए खरीद-बिक्रीका काम करनेवाला दलाल।

स्टाक-पुं० [अ०] एक ही संवदन, संस्थामें काम करने-
 वालोंका समूह (जैसे स्कूल स्टाफ); फौजी अफसरोंका
 समूह। -अफसर-पुं० सेना, सेनाके अफसरोंका
 अफसर।

स्टाल-पुं० [अ०] छोटी दुकान (प्रदर्शनी आदिमें लगायी
 जानेवाली); रंगालयका स्थानविशेष।

स्टालिन(जोसेफ)-पुं० (१८७९-१९५३) सोवियत रूसका
 राजनेता; कम्युनिस्टपार्टीकी कार्यसमितिके महारंजी १९१९
 से; रूसकी मोघिबत सरकारके प्रमुख सदस्य।

स्टीलिंग-स्त्री० [अ०] सिलार। -मशीन-स्त्री० किताब
 सीनेकी मशीन।

स्टीम-पुं० [अ०] भाप। -इंजिन-पुं० भापके जोरसे
 चलनेवाला इंजिन। जुं० -भरना-जोश देना, उत्सा-
 हित करना।

स्टीमर-पुं० [अ०] भापसे चलनेवाला छोटा जहाज।

स्टुडेंट-पुं० [अ०] छात्र, विद्यार्थी।

स्टूक-पुं० [अ०] तीन या चार पायोंकी कुर्नीनुमा छोटी
 चौकी, तिपाई।

स्टेज-पुं० [अ०] रंगमंच; मंच। -मैनेजर-पुं० रंगमंच-
 का व्यवस्थापक।

स्टेट-पुं० [अ०] स्वतंत्र राष्ट्र, जनसमाज; शासन-कारिक;
 संघराज्य या उसका कोई ऐसा प्रांत या प्रदेश जिसकी
 अपनी विधानसभा और मंत्रिमंडल हो; देशी राज्य
 (मिटिश भारतका); बड़ी जमींदारी।

स्टेशन-पुं० [सं०] रेलगादियोंके ठहरनेका स्थान जहाँ
 यात्री उतरते और चढ़ते हैं; रिक्शे, मोटर आदि सवा-
 रियोंके ठहरनेका स्थान; कार्यविशेषके लिए लोगोंकी
 निवृत्ति और निवासका स्थान (जैसे-पुलिस स्टेशन)।

-मास्टर-पुं० रेलवे स्टेशनका प्रधान अधिकारी।

स्टैंडर्ड-पुं० [अ०] निर्णय, अंशतादिका नियत मान।
 वि० आदर्श; अंशताके नियत मानका।

सैबिंग-वि० [अ०] स्थायी । -**कमिटी-खी०** दे० 'स्वायी समिति' । -**कौंसल-पु०** सरकारकी ओरसे चलाये जानेवाले मुकदमेमें ऐडवोकेट-जनरलकी सहायता देनेवाला ऐडवोकेट । -**मैटर-पु०** कंघोब किया हुआ बह सेख आदि जो एक बार छाप लेनेके बाद अबिम्बमें फिर कभी छापनेके लिए रोक रखा गया हो ।

सैब्यू-पु० [अ०] मृति, प्रतिमा ।

स्टोइक-पु० [अ०] विषयविरागी व्यक्ति; यूनानका एक दार्शनिक संप्रदाय ।

स्ट्राइक-पु० [अ०] हड़ताल ।

स्ट्रीट-खी० [अ०] शहरके अंदरकी छोटी मण्डक ।

स्ट्रेट-पु० [अ०] जलमयसमथ ।

स्तंभ-पु० [म०] एक प्राचीन बाजा जो चमड़ा मढ़ा हुआ होता था ।

स्तंभ-पु० [सं०] शुल्भ, प्रकाशरहित पोषा-सिंघी आदि; तृणारिका गुच्छ; झुरझुर; हाथी बाँधनेका भूँटा, खंभा, स्तम्भ; जड़ता, स्तम्भ; पर्वत; हड्ड । -**करि-वि०** गुच्छा बनानेवाला । पु० अन्न; धान । -**कार-वि०** गुच्छा बनानेवाला । -**घन-पु०** घासका गुच्छ नष्ट करनेके काम आनेवाला एक औजार-सुरपा या कुदाल; हँसिया; तिन्नी धान एकत्र करनेकी टोकरी । -**घास-पु०** घास या नाज काटना । -**घन-वि०** घास आदिका गुच्छा नष्ट करनेवाला । पु० दे० 'स्तम्भपन' । -**चूर-वि०** खी० एक पुरी, ताज्जलित । -**चलु-वि०** पु० घास निकालनेपर किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य । -**हनन-पु०**, -**हननी-खी०** दे० 'स्तम्भपन' ।

स्तंभक-पु० [सं०] गुच्छा; नकलिकनी नामक पोषा ।

स्तंभी-वि० [सं०] गुच्छेदार । पु० सुरपा ।

स्तम्भरम-पु० [सं०] हाथी ।

स्तम्भरमासुर-पु० [सं०] एक असुर, गजमासुर ।

स्तंभ-पु० [सं०] गतिहीनता; सञ्चारीनता, जड़ता (जो एक सात्विक भाव है); रोक, बाधा; दमन, नियन्त्रण; खम्भा; पेड़का तना; सहारा, टेक; मन्त्रमले किसी शक्ति या अनुभूतिका दमन; भरना; एक ऋषि । -**कर-वि०** बाधा डालनेवाला, रोकनेवाला; जड़ता लानेवाला । पु० बेरा, दण्टी; वेष्टन । -**कारण-पु०** बाधाका कारण । -**तीर्थ-पु०** एक प्राचीन तीर्थ । -**पूजा-खी०** विवाह आदिके अवसरपर मन्त्रके स्तंभोन्मी पूजा । -**मित्र-पु०** एक ऋषि । -**धृषि-खी०** योगका एक अंग जिसमें प्राण-निरोध किया जाता है ।

स्तंभक-वि० [सं०] रोकनेवाला; कन्ध करनेवाला; बीच रोकनेवाला । पु० खंभा; शिवका एक अनुचर ।

स्तंभकी-खी० [सं०] एक देवी ।

स्तंभकी-वि० [सं०] चर्ममण्डित एक प्राचीन बाजा ।

स्तम्भ-वि० [सं०] जड़ बना देनेवाला; रोकनेवाला; कन्ध करनेवाला । पु० कामदेवका एक भाग; स्तंभका रूप देना; सहारा देना, मजबूत करना; कसा चबना; जकीकरण; कसा करनेका साधन; (अश्रुआदिके द्वारा) किसीकी शक्ति कुंठित करना; एक, बीच आदिका साध आदि

रोकना; बीच रोकनेवाली दवा; शांत करना ।

स्तंभकी-खी० [सं०] एक तरहका जादू ।

स्तम्भनीय-वि० [सं०] रोके या दब किये जाने योग्य; भारक या रोधक औषध प्रयुक्त करने योग्य ।

स्तम्भि-पु० [सं०] सामर ।

स्तम्भिका-खी० [सं०] छोटा स्तम्भ; कुर्सी आदिका पाया ।

स्तम्भित-वि० [सं०] स्थिर किया हुआ, दब किया हुआ; जमीनृत, स्तम्भ; जमीनृत; रोका हुआ; दबाया हुआ; भरा हुआ । -**वाष्पवृत्ति-वि०** अश्वपात रोकनेवाला ।

स्तम्भितासु-वि० [सं०] जिसने अँधुओंका बहना रोक दिया है ।

स्तम्भिनी-खी० [सं०] एक तत्त्व, क्षिति ।

स्तम्भी-वि० [सं०] खम्भोंसे युक्त; सहारा देनेवाला; धर्ममें फूला हुआ; रोकनेवाला, रोधक । पु० समुद्र ।

स्तम्भोन्मी-वि० [सं०] खम्भोंमें खोदकर बनाया हुआ (चित्र, प्रतिमा आदि) ।

स्तम्भ-वि० [सं०] दे० 'स्तम्भपन' ।

स्तम्भपन-वि० [म०] स्तन-पान करनेवाला । पु० शिशु; बछड़ा । [खी० 'स्तम्भपना', 'स्तम्भपनी' ।]

स्तन-पु० [सं०] किसीका अगविरोध, कुन; मादा पशुक; धन; चुलुक, देपनी; स्तन जैसे पानके ऊपरकी छोटी खैटी । -**कलश-कुंभ-पु०** बरुडा जैसा स्तन । -**कौल-पु०** स्तनका एक रोग, धनेली । **कुंभ-पु०** एक प्राचीन तीर्थ । -**कुहमल-पु०**, **मीका कुच** । -**कोटि-खी०** चुलुक । -**कोरक-पु०** बली जैसा स्तन । -**ग्रह-पु०** स्तनपान । -**चुलुक-पु०** देपनी । -**लट-पु०** स्तनका आगे निकला हुआ भाग । -**स्थान-पु०** स्तनपानका स्थान । -**दायी-खी०** स्तनपान करानेवाली । -**दुपे-वि०** स्तन स्वीकार न करनेवाला । -**प-वि०** स्तनपान करनेवाला । पु० दुधपूजा करना । -**पतन-पु०** स्तनका टीला पडना, लटकना । -**पाता-वि०** दे० 'स्तनप' । -**पान-पु०** स्तनका दूध पीना । -**पावक-वि०** दे० 'स्तनप' । -**पावी-वि०** दे० 'स्तनप' ।

पोषिक-पु० एक प्राचीन जनपद । -**बाल-पु०** एक जनपद । -**भर-पु०** धीन पयोधर; खी जैसे सलनेवाला पुरुष । -**भर-पु०** एक तरहका रत्नबंध । -**भंडल-पु०** स्तनका घेरा । -**मध्य-चुलुक**; स्तनोंके बीचकी जगह । -**मुख-पु०** देपनी । -**मूल-पु०** स्तनका जड़का भाग । -**बोषिक-बोषिक-पु०** दे० 'स्तनपोषिक' ।

रोग-पु० स्तन-संबंधी रोग । -**रोहित-पु०** स्तनके ऊपरका एक विशेष भाग । -**विग्रुधि-खी०** धनेली ।

हृष-पु० चुलुक, देपनी । -**पेषु-पु०** स्तनका छिन्ना । -**सिखा-खी०** देपनी । -**शोष-पु०** स्तन सूखनेका एक रोग ।

स्तम्भ-पु० [सं०] दहाक (शेरकी); गन्धकाइट ।

स्तम्भ-पु० [सं०] वर्जन, दहाक (शेरकी) ।

स्तम्भ-पु० [सं०] ध्वनि; मेघसन्ध; कराहना ।

स्तम्भ-पु० [सं०] मेघा; सुस्तक; मेघध्वनि; विपुल; वृक्ष; रोग । -**शोष-वि०** मेघमज्जनकी तरह जोरदार ।

स्तम्भ-पु० [सं०] स्तनोंके बीचका भाग; हृदय, वैषम्य-

का एक स्तनवर्ती कृच्छ्रण ।

स्तनीशुक्र-पु० [सं०] स्तन बाँधने, ढकनेका कपड़ा ।

स्तनाग्र-पु० [सं०] डेपनी, धनुक ।

स्तनाशुब्ध-वि० [सं०] दूध पीनेवाला ।

स्तनाशुज-वि० [सं०] दूध पिलानेवाला (प्राणी) ।

स्तनाभोग-पु० [सं०] स्तनकी पुठता; स्तनका बेरा; स्त्री जैसे स्तनीवाला पुच्छ ।

स्तनावरण, **स्तनोत्तरीय**-पु० [सं०] स्तन ढकनेका कपड़ा ।

स्तनित-वि० [सं०] गर्भित, ध्वनित, शब्दायमान । पु० मेघनिधौष; ताली बजानेका शब्द; शब्द; टंकीर ।

—**कुमार**-पु० एक देववर्ग (दे०) । —**फल**-पु० विकटक वृक्ष । —**समय**-पु० मेघगर्जनका समय ।

स्तनी (निज)-वि० [सं०] स्तनवाला (एक प्रकारके रूप-विकृतियाने बोनेके लिए प्रयुक्त) ।

स्तन्य-वि० [सं०] जो स्तनमें हो । पु० दूध । —**जनन**-वि० दूधकी वृद्धि करनेवाला । —**स्वाग**-पु० बच्चेका स्तनपान छोड़ना । —**द**-वि० दूध उत्पन्न करनेवाला ।

—**दा**-वि० स्त्री० जिसके स्तनमें दूध निकले । —**दान**-पु० स्तनपान कराना; स्तनमें दूध देना । —**घ**-वि० स्तनपान करनेवाला । पु० दुधमुहों बच्चा । —**पान**-पु० स्तनका दूध पीना; शोषकाल ।

—**पायी (विज)**, —**भुक् (ज)**-वि० दूध-पीना । —**शोग**-पु० माताके दूधके बिकारमें होनेवाला रोग ।

स्तन्या-स्त्री० [सं०] कलमी शाक ।

स्तनक-पु० [सं०] गुच्छ; फूलोंका गुच्छा, गुल्मस्ता; मोरकी पुँछका पंख; समूह; रेशमका झन्डा । —**खंड**-पु० एक कदशाक । —**फल**-पु० फलविशेष ।

स्तनकाक्षित-वि० [सं०] फूलोंसे ढका हुआ ।

स्तनकित-वि० [सं०] फूलोंसे भरा हुआ ।

स्तनक-वि० [सं०] स्थिर, दृढ़; सहारा दिया हुआ; कड़ा; जमीन; गतिहीन; संज्ञाहीन; जमीन; धर्मही; धीमा, मुल; हठी; निष्ठुर; जमाया हुआ; रोका हुआ, रुका; मोटा, स्थूल; भरा । पु० वशीका मंद स्वरवाला छेद ।

—**घात्र**-वि० जो अपने अंगोंको कड़ा किये हो । —**सोच**-वि० जिसका पानी जम गया हो (जलाशय) । —**हृष्टि**, —**नयन**-वि० जिसकी पलकें न गिर रही हों, टकटकी बंद गयी हो । —**पाद्**-वि० जिसके पैर गतिहीन हो गये हों । —**बाहु**-वि० जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों । —**अस्ति**-वि० मंदबुद्धि, जिसकी बुद्धि कुंठित हो । —**मेघ**-वि० जिसका शिदन जड़ हो गया हो, नपुंसक । —**रोमकूप**-वि० जिसके रोमछिद्र बंद हो गये हों । —**रोमा**(अव्य)-पु० सुअर । वि० स्तंभित होमयुक्त । —**कोच**-वि० जिसकी पलकें न गिरे (देखना) । —**बपु**(सु)-वि० जिसका शरीर निश्चेष्ट हो गया हो । —**सक्थि**-वि० जिसके ऊर निश्चेष्ट हों, कैमका । —**संभार**-पु० एक राक्षस । —**हनु**-वि० जिसके जख्मोंमें गति न हो ।

स्तनक-स्त्री०, **स्तनक**-पु० [सं०] जत्रता, कड़ापन; स्थिरता; निश्चेष्टता, रपंदनहीनता; धर्मक ।

स्तनकाक्ष-वि० [सं०] दे० 'स्तन्यवृष्टि' ।

स्तनिक-स्त्री० [सं०] जत्रता; स्थिरता, निश्चलता; दृढ़ता; रपंदनहीनता ।

स्तनोद्य-वि० [सं०] दे० 'स्तन्योद्य' ।

स्तन-पु० [सं०] छाग या मेघ ।

स्तनिक-स्त्री० [सं०] जत्रता ।

स्तन-वि० [सं०] फैलनेवाला, ढकनेवाला । पु० कोई फैली हुई चीज; तब; कालविशेषमें पड़ी हुई भूमिकी परत; मतह; झग्या, पलम; मान ।

स्तन-पु० [सं०] कैलना, विद्याना, बिलेरना (विशेष-कर यक्षपुत्र); टीबाराका पलस्तर करना ।

स्तनणीय, **स्तन**-वि० [सं०] बिलेरने, फैलाने योग्य; विद्याने योग्य ।

स्तनिका(अव्य), **स्तनिका**(अव्य)-पु० [सं०] तप; मेज ।

स्तनी-स्त्री० [सं०] पुंसा; वाष्प; बहिया; बाँझ गाय ।

स्तन-पु० [सं०] शत्रु; वैरी ।

स्तन-पु० [सं०] प्रसंसा, स्तुति; स्तोत्र; एक पदार्थ । —**कणिका**-स्त्री० लाख आदिका बना हुआ कुंदल ।

स्तनक-पु० [सं०] स्तुति; स्तुतिपाठक, बंदी; फूलोंका गुच्छा, गुल्मस्ता; समूह; अध्याय, परिच्छेद । वि० स्तुति करनेवाला ।

स्तनकित-वि० [सं०] फूलों या फूलोंके गुच्छोंसे भरा हुआ ।

स्तनक-पु० [सं०] स्तुति करना; स्तोत्र ।

स्तननीय, **स्तन्य**-वि० [सं०] स्तुतिके योग्य ।

स्तनरक-पु० [सं०] आबरक; दूढ़ी, बेरा, 'रिनि' ।

स्तनिक-पु० [सं०] सामगायक ।

स्तनित, **स्तन्य**-वि० [सं०] दे० 'स्तननीय' ।

स्तनिका(सु)-पु० [सं०] स्तुतिपाठक ।

स्तनिक-पु० [सं०] दृढ़ ।

स्ताच-वि० [सं०] छिछला ।

स्तावु-पु० [सं०] चोर, छुटेरा ।

स्ताच-पु० [सं०] स्तुति; स्तुतिपाठक ।

स्ताचक-वि० [सं०] स्तुति करनेवाला । पु० स्तुतिपाठक, बंदी ।

स्ताच-वि० [सं०] दे० 'स्तननीय' ।

स्तनिक-पु० [सं०] दे० 'स्तनिक' ।

स्तनिक-पु० [सं०] गुच्छ; समुद्र; बाघा ।

स्तनिक-स्त्री० [सं०] गुच्छा ।

स्तमित-वि० [सं०] गोला, आर्द्र; स्थिर, निश्चल; निश्चेष्ट; शांत; कोमल; प्रसन्न; बंद । पु० आर्द्रता; गतिहीनता, निश्चलता । —**जब**-वि० धीरे-धीरे आगे बढ़नेवाला । —**जब**-वि० जिसे टकटकी लग गयी हो ।

—**प्रवाह**-वि० बहुत धीमी गतिसे बढ़नेवाला । —**बाहु**-स्त्री० शांत हवा । —**स्थित**-वि० जो बिना हिले-डुले खड़ा हो ।

स्तमित-पु० [सं०] गतिहीनता, निश्चलता ।

स्तनिका-स्त्री० [सं०] वह जल जिसमें प्रवाह न हो, एक ही स्थानपर रुका हुआ पानी ।

स्तनी-स्त्री० [सं०] सुलस, मंद ।

स्तीमित-वि० [सं०] आर्द्र, गीला ।
 स्तीर्ण-वि० [सं०] छितराया, बिखेरा, फैलाया हुआ ।
 पु० शिबका एक वैश्य अनुचर ।
 स्तीर्वि-पु० [सं०] नमः, स्मरि; एक तृण; अश्वयुव; त्रक;
 रंज; शरीर; भय ।
 स्तुक्-पु० [सं०] केशगुच्छ; संतान ।
 स्तुका-स्त्री [सं०] केशगुच्छ; कनरी; बैलके मीनोंके बीच-
 का बालिका गुच्छा; अण्ड ।
 स्तुत-वि० [सं०] जिसकी स्तुति की गयी हो, प्रशंसित;
 क्षरित, बहा हुआ, रिमा हुआ । पु० शिब; स्तुति, प्रशंसा ।
 -स्तोम-वि० जिसको स्तुति की गयी हो, प्रशंसित ।
 स्तुति-स्त्री [सं०] गुणगान, प्रशंसा; स्तोत्र; चातुकारिता;
 दुर्गा । -गीत-पु० स्तोत्र । -गीतक-पु० प्रशंसात्मक
 गीत । -पद-पु० प्रशंसाका विषय । -पाठक-पु०
 स्तुतिका पाठ करनेवाला, बही । -मित्र-वि० प्रशंसा-
 का इच्छुक । -अर्थ-पु० प्रशंसात्मक गीत । -बचन;-
 वाद्-पु० प्रशंसात्मक बचन, गुणानुवाद । -वादक-
 पु० प्रशंसा करनेवाला; मुँहदेखी बोलनेवाला । -व्रत-
 पु० स्तुतिपाठक, बही । -सत्त्व-पु० प्रशंसात्मक गुण ।
 -श्रीक-वि० गुणगानमें कुशल ।
 स्तुत्य-वि० [सं०] स्तवनीय, प्रशंसीय । -व्रत-पु०
 शिष्यव्रताका एक पुत्र; उसको द्वारा सासित एक वर्ष ।
 स्तुत्या-स्त्री [सं०] एक गणद्रव्य, नली; गोपीचंदन ।
 स्तुनक-पु० [सं०] छाया, बकरा ।
 स्तुन्य-पु० [सं०] एक अग्नि; बकरा ।
 स्तुच-पु० [सं०] बौद्धके स्तिका एक विशेष भाग ।
 स्तुवि-पु० [सं०] स्तुति करनेवाला; उपासक; बह ।
 स्तुप-पु० [सं०] केशगुच्छ; सिखरा; डेर, राशि; मिट्टी,
 ईंट आदिसे बना बूढ़, विशेषकर बौद्धोंका (बुद्धके अवशिष्ट
 विश्व रखनेके लिये); मकानकी मुख्य चरन; चिता; शक्ति ।
 -पुष्ट-पु० कच्छप । -विषय-अर्थक-पु० लुपका
 घेरा । -भेदक-पु० स्तूप नष्ट करनेवाला ।
 स्तु-पु० [सं०] तारा ।
 स्तुत-वि० [सं०] दका हुआ, फैलाया हुआ ।
 स्तुति-स्त्री [सं०] देवताकी क्रिया; फैलाना; फैलाय;
 आच्छादान, बह ।
 स्तेन-पु० [सं०] चोर; छुटेरा; चोर नामक गणद्रव्य; चोरी ।
 -शिग्रह-पु० चोरीका दमन । -हृदय-पु० मृतिमान्
 चोर, पक्का चोर ।
 स्तेम-पु० [सं०] आर्द्रता, गीलापन ।
 स्तेब-पु० [सं०] चोरी; रहजनी; चोरी गयी हुई या चोरी
 जाने योग्य वस्तु; छिपायी हुई या गोप्य वस्तु । -कृत्-
 पु० चोर । -कृत्-पु० एक पेड़, तेजवृक्ष ।
 स्तेवी(विष्)-पु० [सं०] चोर; चूरा; छुनार ।
 स्तेन, स्तेन्य-पु० [सं०] चोरी; चोर ।
 स्तेमित्य-पु० [सं०] जड़ता; निरपेक्षता ।
 ओक-वि० [सं०] छोटा, छट्ट; कुष्ठ; अल्प; नीच । पु०
 अकर्मि; चातक; चिन्मी; एक काष्ठमान, सात बार साँस
 लेनेमें लगनेवाला काष्ठ (ते०) । -काव-वि० छोटे
 कदका । -नज-वि० कुछ-कुछ हुका हुआ ।

स्तोकक-पु० [सं०] चातक, पपीहा; एक विष, वस्त्रनाम,
 वस्त्रनाम ।
 स्तोतव्य-वि० [सं०] स्तुत्य ।
 स्तोता (तु)-वि० [सं०] प्रार्थना, स्तुति करनेवाला । पु०
 विष्णु ।
 स्तोत्र-पु० [सं०] स्तुति; स्तुत्यात्मक श्लोक; श्लोकबद्ध
 स्तुतिपरक ग्रंथ । -कारी(रिक्)-वि० स्तोत्रका पाठ
 करनेवाला ।
 स्तोत्रार्ह-वि० [सं०] स्तुत्य ।
 स्तोत्रिण, स्तोत्री-वि० [सं०] स्तोत्रका; स्तोत्र-संबंधी ।
 स्तोत्रिया-स्त्री [सं०] स्तोत्रका पद्य ।
 स्तोम-पु० [सं०] रोकना, बाधा देना; विराम; रोक;
 निरोधता; अवमानना, अवहेतना; स्तुति; सामवेदका एक
 भाग; सन्निविष्ट वस्तु ।
 स्तोभित-वि० [सं०] स्तुत; त्रय-त्रयकार किया हुआ ।
 स्तोम-पु० [सं०] स्तुति, गुणगान; यश; यशकला;
 मोम-नर्पण; सोमदिवस; समूह, राशि; बही राशि; मिर;
 धन-दौलत; अश्व; लोहकी नौकवाली छड़ी; एक तरहकी ईंट,
 मकान आदिपर देना; दम धमंतर वा ४० हाथकी एक
 माप । वि० दक, टेढ़ा । -क्षार-पु० साउन । -विनि-
 स्त्री-स्त्री स्तोम नामकी ईंटोंका लुना जाना ।
 स्तोमाचन-पु० [सं०] यज्ञका बलिपशु ।
 स्तोमीय-वि० [सं०] स्तोम-संबंधी ।
 स्तोम्य-वि० [सं०] स्तुतिके योग्य ।
 स्तोपिक-पु० [सं०] बुद्ध-द्रव्य, स्तूपमें रखे हुए दत्त, अश्व
 आदि अवशिष्ट पदार्थ; गौड़ वा जैन माधुओं द्वारा धारण
 की जानेवाली मार्जनी ।
 स्तोम-वि० [सं०] स्तोम-संबंधी; सुशीके नारे लगाने-
 वाला ।
 स्तोमिक-वि० [सं०] स्तोमयुक्त ।
 स्त्वान-वि० [सं०] राशीभूत, जमा हुआ; धनीभूत, ठाम,
 कठिन; कोमल; स्निग्ध; शुद्ध करनेवाला । पु० धनत्व-
 भिन्धता; अमृत; आकस्य, मुत्ती; अकर्मण्यता; दाम्भ-
 प्रतिजिह्वि ।
 स्वार्थि-स्त्री [सं०] एक प्रकारकी निद्रा त्रिमय मनुष्य
 सोना हुआ भी काम करना है (ते०) ।
 स्वार्थ-पु० [सं०] एकत्र होना, भीड़ लगाना ।
 स्वेष-पु० [सं०] चोर; अमृत ।
 स्वैव-पु० [सं०] चोर ।
 स्वैवस्मभ्य-वि० [सं०] अपनेकी स्त्री मानने, समझने-
 वाला ।
 स्वीजिब-स्त्री [सं०] दोनि ।
 स्त्री-स्त्री [सं०] औरत (शरीर रचना, स्वभाव आदिकी
 विशेषताओंके कारण स्त्रियोंके चार भेद थे हैं-पथिया,
 विभिणी, संक्षिणी, हस्तिनी); पत्नी; माता पशु, मर्कट
 चोंडी, दीमक; प्रियंयु; एक वृत्त । -करण-पु० यौन-
 संबंध, मैथुन । -काम-वि० स्त्रीका इच्छुक; कन्या
 संतापका अमिकापी । पु० स्त्री या पत्नीकी इच्छा ।
 -काव-पु० स्त्रीकी दृष्टि । -कितव-पु० स्त्रियोंकी
 बहनाये वा छकनेवाला आदमी । -कृत्-पु० यौन-

संभव; मैयुन । वि० कीका किया हुआ । -कुसुम-पु० रजःशाय । -कोश-पु० खंजर, कटार । -क्षीर-पु० भोरतका दूध; माताका दूध । -क्षेत्र-पु० नारी अर्थात् समसंख्यक (दुमरी, चौथी आदि) राशियाँ । -ग-वि० संयोग करनेवाला; परकीयामी । -गमन-पु० संयोग, रतिक्रिया । -गामी-की० दुधार गाय । -गुरु-की० दीक्षा या मंत्र देनेवाली स्त्री या पुरोहितानी । -ग्रह-पु० दे० 'क्षीमेन' । -ग्राही (हिन्) -वि० कीका संरक्षक बननेवाला (व्यवहार) । -बासक, -प्य-वि० किसी की या पक्षीकी हत्या करनेवाला । -घोष-पु० नक्का, सवेरा, प्रत्युष । -चंचल-वि० शिवोंके पीछे लगनेवाला, लंपट । -चरित्र-पु० शिवोंके कायं । -चित्तहारी (विन्) -वि० शिवोंका मन हरण करनेवाला । पु० प्रोत्साजन, संहिजन । -चिह्न-पु० योगिनि; स्त्री-संबंधी कोई चिह्न । -चौर-पु० व्यवसिचारी । -जन-पु० क्षीजित । -जननी-की० निर्गं कन्याएँ उत्पन्न करनेवाली स्त्री । -जाति-की० क्षीवर्ग । -जित-वि० स्त्रीके बशमें रहनेवाला, जनमुदी । -सातुकरोग-पु० एक तरका रोग । -देहार्थ-पु० शिव । -हिद् (व्) -देवी (विन्) -पु० शिवोंमें देव करनेवाला, रमणी-देवी । -धन-पु० वह धन या संपत्ति जिसपर स्त्रीका ही अधिकार हो (जैसे दहेज आदि) । -धर्म-पु० शिवोंका कर्तव्य; स्त्री-संबंधी विधान; मैयुन, ममोग; रजःशाय । -धर्मिणी-की० ऋतुमती स्त्री । -ध्वज-पु० पति; पुरुष । -धूर्त-पु० दे० 'क्षी-कितव' । -ध्वज-पु० हाथी; मादा पशु । वि० स्त्रीके चिह्नोत्तं युक्त । -नाथ-वि० स्त्री जिसकी स्वामिनी हो । -नामा (अव्) -वि० स्त्रीवाचक नामवाला । -निबंधन-पु० गृहिणीका कायं । -निर्जित-वि० दे० 'क्षीजित' । -पण्योपजीवी (विन्) -पु० वेदयाद रसकर जीविका चलावेवाला । -पर-वि० कामी, लपट । -पुंयोग-पु० स्त्री और पुरुषका संयोग । -पुंस-पु० जो स्त्री पुरुष दोनों है । -रुक्मिणी-की० मरती कीरत । -रुमिती (विन्) -वि० स्त्रीपुरुष दोनोंके चिह्नोत्तं युक्त । -पुर-पु० शिवोंके रहनेका स्थान, अंतःपुर । -पूर्व-वि० दे० 'क्षीजित'; दे० 'क्षी-पूर्वक' । -पूर्वक, -पूर्वी (विन्) -वि० जो पूर्व जन्ममें की था । -प्रह-वि० स्त्री जेनी मुक्तिवाला । -प्रसंग-पु० संयोग । -प्रसू-की० दे० 'क्षी-जननी' । -प्रिय-वि० शिवोंकी प्यारा । पु० नाम; अजीक । -मेक्षा-की० शिवोंको दिखानेका खेल-तमाशा । -बच-पु० रतिकार्य, मैयुन । -बाध्य-वि० स्त्रीसे परेशान किया जानेवाला । -बुद्धि-की० स्त्रीकी बुद्धि । -भव-पु० नारीत्व, स्त्रीत्व । -भूषण-पु० केवडा । -भोग-पु० मैयुन । -भंत्र-पु० स्त्रीकी राव; 'साहा'से अंत होनेवाला मंत्र । -भण्य-पु० शिवोंका समाज । -भानी (विन्) -वि० अपनेकी स्त्री माननेवाला । पु० मौल्य-सनुका एक पुत्र । -भाषा-की० शिवोंका छल-कपट । -मुख्य-पु० अपराधुतका पाप; बकुल; अजीक । -भंत्र-पु० पुरुषकी यंत्रक मानी जानेवाली स्त्री । -हंजव-पु० पाल । -हज (स) -

पु० रजःशाय । -हज-पु० वचन स्त्री; कदनी । -राग्य-पु० शिवों द्वारा शासित एक महामारतोक्त प्रदेश । -राशि-की० दे० 'क्षीमेन' । -रोग-पु० शिवोंके विशेष रोग । -रुपट-वि० स्त्रीका इच्छुक, कामी । -लक्षण-पु० स्त्री-संबंधी कोई चिह्न । -खिग-पु० जन-नंदित्व, बोनि; स्त्री-नोषक किम (व्या०) । -क्षील-वि० दे० 'क्षी-लपट' । -क्षीव-पु० स्त्रीकी प्राप्तिकी चाह । -क्षत्र-वि० स्त्री द्वारा शासित । पु० स्त्रीकी अर्पणता । -वक्ष्य-वि० दे० 'क्षीवक्ष' । -वार-पु० सोम, बुध और शुक्रवार । -वास-पु० विमोद । -वास (स) -पु० रतिक्रियाके समय पहननेका वस्त्र । -बाह-पु० एक प्राचीन जनपद । -विजित-वि० दे० 'क्षीजित' । -वित्त-पु० पत्नीमें प्राप्त होनेवाला धन । -विशेष-वि० स्त्रीके बशमें रहनेवाला । -विद्योग-पु० पत्नीसे पृथक् होना । -विषय-पु० मैयुन । -वृत्त-वि० शिवोंसे बिरा हुआ, शिवोंसे सेवित । -ध्वज-पु० स्त्री होनेके चिह्न-स्तन आदि । -कुत्ता-वि० स्त्री (वह कन्या) जो तथ्य हो गयी हो । -क्षय-पु० बोनि । -वृत्त-पु० अपनी पत्नीके सिवा दूसरी स्त्रीकी कामना करनेका व्रत, एक पत्नीव्रत । -क्षेप-वि० जिसमें केवल शिवों बच रही हों । -शौंड-वि० कामी । -संग-पु० शिवोंके साथ संपर्क; संयोग । -संप्रहण-पु० किसी स्त्रीका बलात् आत्मियन या भोग करना । -संज्ञ-वि० ऐमे नामवाली जिसका अंत स्त्री-वाचक शब्दसे होता हो । -संयोग-पु० मैयुन । -संसर्ग-पु० शिवोंका संपर्क; मैयुन । -संस्थान-वि० स्त्रीकी आकृतिवाला । -सख-वि० स्त्रीसे युक्त । -सख-पु० शिवोंकी सभा । -समागम-पु० मैयुन । -सुख-पु० संयोग; शोभाजन । -सेवक-पु० संयोग, मैयुन । -सेवा-की० शिवोंके प्रति भासक्ति । -स्वभाव-पु० शिवोंकी प्रकृति; स्त्रीता । -हरण-पु० बलात् स्त्रीका हरण कर ले जाना । -हारी (विन्) -पु० स्त्रीका बलात् हरण करनेवाला पुरुष ।

कीटा-की०, कीर-पु० [सं०] स्त्री होनेका भाव, नारीत्व; पत्नीत्व; नारीसुलभ कोमलता, दुर्बलता आदि । कीमन्मन्-वि० [सं०] दे० 'क्षियमन्मन्' । स्त्रैव-वि० [सं०] स्त्री-संबंधी; शिवोंके योग्य, नारीसुलभ; स्त्री द्वारा शासित । पु० स्त्रीत्व, नारीत्व; स्त्री-स्वभाव; नारीवर्ग; नारीसुलभ कोमलता या दीर्घत्व । स्त्रैवाजक-पु० [सं०] स्त्री-राज्यका निवासी । स्व्यगार-पु० [सं०] अंतःपुर । स्व्यभ्यक्ष-पु० [सं०] अंतःपुरका निरोक्षक । स्व्यनुक्ष-वि० [सं०] बहनेके बाद पैदा होनेवाला । स्व्यभिगमन-पु० [सं०] संयोग; बलात्कार । स्व्याख्या-पु० [सं०] प्रियंशु लता । स्व्याजीव-पु० [सं०] अपनी या दूसरी शिवोंसे वेदया-वृत्ति काकर रोजी कमानेवाला । सर्वविह-पु० [सं०] अनाहत भूमि; यक्षके लिए साफ और चौरस की हुई चौकोर जमीन; मीमा; देलंका ढेर; एक ऋषि; खंजर भूमि । -श-वि० बिना स्थिर भूमिपर जानेवाला । -क्षय्या-की० अनाहत भूमिपर सोना

(अतः कारण) -शाचिका-क्षी० दे० 'स्वच्छिद्य'।
 -शाची(विष्)-वि०, पु० विना विस्तारके जमीनपर सोनेवाला। -संवेदन-पु० दे० 'स्वच्छिद्य'। -
 स्थित-पु० वृद्धेति।
 स्वच्छिद्य-पु० [सं०] रौद्रावका एक पुत्र।
 स्वच्छिद्यस्य-वि०, पु० [सं०] दे० 'स्वच्छिद्य'।
 स्व-वि० [सं०] (समाप्त) ठहरा हुआ, स्थित; उपस्थित; संलग्न, रत; रहनेवाला। पु० स्वल्, स्थान। -पति-पु० राजा; शासक; सित्पी; वधैर; मेमार, राज; सारथि; वृद्ध-पति-यज्ञ करनेवाला; अंत-पुर-रक्षक; कुबेर; वृद्धवृत्ति। वि० मुख्य, प्रधान।
 स्वकर-पु० [सं०] दे० 'स्वगर'।
 स्वकित-वि० वका हुआ, छांत।
 स्वय-वि० [सं०] छली, धूर्त; बेईमान; निर्लज्ज; काप-बाह। पु० स्वल्, वृद्ध व्यक्ति।
 स्वयम्वा-क्षी० [सं०] पृथ्वी।
 स्वयम्वा-पु० [सं०] छजन, आवृत करना, ढकना; छिपाना; अपराध; समिति आदिकी कारबाई स्वयम्वा करना (आ०)।
 स्वयम्वा-वि० [सं०] एक वधव्यय, नगर।
 स्वयम्वा-पु० दे० 'स्वयम्वा'।
 स्वयम्वा-क्षी० [सं०] पानदान, पनदम्बा; अंगुठे आदिके दिनेपर बाँधनेकी एक तरहकी पट्टी; वेड्या; पान बनाकर देनेकी नौकरी।
 स्वयम्वा-वि० [सं०] ढका हुआ, आवृत; छिपाया हुआ; नंद किया हुआ (जैसे दरवाजा); अवकट, रौद्रा हुआ; कुछ समयके लिए मुलतवी किया हुआ।
 स्वयम्वा-क्षी० [सं०] पनदम्बा।
 स्वयम्वा-पु० [सं०] कृषक।
 स्वयम्वा-क्षी० [सं०] मोहोके बीचका स्थान।
 स्वयम्वा-वि० [सं०] कृषकाला; विषय, ऊन-सावध; संकटग्रस्त, विषय; पीडामें नत। पु० कृषक; विषय स्थान; आत्मा। -गत-वि० विषय स्थानमें रहनेवाला; कृषक संबंधी।
 स्वयम्वा-वि० [सं०] ऊन-सावध किया हुआ, विषय बनाया हुआ।
 स्वयम्वा-पु० [सं०] दद और मृत्ती भूमि; किनारा, कछार; धरती; स्थान; मैदान; भूभाग; ठहरनेका स्थान; वृद्ध; विषय (विचार आदिका); पुस्तकका अध्याय; (ग्रंथका) पाठ; संक्षेप; प्राप्ताधी छत; परिस्थिति, व्यवसाय; मल्लक।
 -कट-पु० एक पौधा, जंगली मृग, वनजोल्। -कमल-पु०, -कमलिनी-क्षी० स्थलपर होनेवाला एक पुष्प, स्थलपत्र। -काशी-क्षी० दुर्गाकी एक अनुचरी। -कुमुद-पु० करवीर। -ग-वि० भूमिपर रहनेवाला (जीव), स्थलपर। -गत-वि० मृत्ती परतीपर गया या छोड़ा हुआ। -पर, -वारी(विष्)-वि० जमीनपर रहनेवाला (प्राणी)। -पुष्प-वि० किसी स्थान या पदमें निरा या हटया हुआ। -ज-वि० जमीनपर पैदा होनेवाला; स्थल-भारंगे जानेवाले मालपर कमानेवाला (कर)। -जा-क्षी० मुलेठी। -दुर्ग-पु० मैदानका किता।

-देवता-पु० स्थानीय देवता। -मलिनी-क्षी० दे० 'स्थलकमलिनी'। -मीरज-पु० स्थलपत्र। -पक्ष-पु० शुष्क भूमिपर स्थित नगर। -पक्ष-पु० लुहरी रास्ता। -भोग-पु० उत्तम मार्गयुक्त भूभाग। -पक्ष-पु० मानकचू; स्थलकमल; छनपत्र; तमालक। -पक्षिनी-क्षी० दे० 'स्थलकमलिनी'। -पिंडा-क्षी० पिंडकजूर। -पुष्पा-क्षी० संक्षेप नामक क्षुद्र। -मंडा-क्षी० वन-मंडा। -मंडरी-क्षी० अपामार्ग। -मंड-पु० करीदा। -भार्ग-पु० लुहरी रास्ता। -कुद-पु० भूभागपर चलनेवाली लड़ाई। -बोधी(विष्)-पु० स्थलपर लड़नेवाला घोड़ा। -वृद्धा-क्षी० स्थलकमलिनी। -वल्(मृ)-पु० दे० 'स्थल-वल्'। -विग्रह-पु० दे० 'स्थलपुद्ग'। -विहंग-विहंगम-पु० स्थलपर रहनेवाले पक्षी। -वेतस-पु० स्थलपर होनेवाला वन। -वृद्धि-क्षी० भूमिकी सफाई। -वृद्धा-पु० गोक्षर। -वृद्धा-पु० क्षी० गोक्षरक। -सीमा(मन्)-क्षी० देन वा भूभागकी हद। -स्थ-वि० भूमिपर स्थित।
 स्थलांतर-पु० [सं०] दूसरा स्थान।
 स्थला-क्षी० [सं०] मृत्ती जमीन; अन्वी की हई मृत्वा जमीन।
 स्थलारविष्-पु० [सं०] स्थलकमल।
 स्थलाकट-वि० [मं०] जो भूमिपर उतरकर खड़ा हो (धारुद आदिका उलटा)।
 स्थली-क्षी० [सं०] शुष्क भूमि; प्राकृतिक भूमि (जैसे वनवा उपलका, शरीरका कोई निकला हुआ, प्रमुख भाग)।
 -देवता-पु० स्थानीय देवता, ग्रामदेवता। -शाची(विष्)-वि०, पु० दे० 'स्वच्छिद्य'।
 स्थलीय-वि० [सं०] स्थल, भूमि-संबंधी; स्थानीय; विज्ञे। स्थिति या नियम-संबंधी।
 स्थलेजाल-वि० [सं०] धरणीपर उत्पन्न होनेवाला। पु० मुलेठी।
 स्थलेकट-क्षी० [मं०] पीकुआर; दम्बा वृद्ध।
 स्थलेकट-वि० [मं०] भूमिपर मोनेवाला। पु० ऐला जाव (बाराह आदि)।
 स्थलीका(कस्)-पु० [सं०] स्थलचारी जीव।
 स्थल-पु० [सं०] छाग (?)।
 स्थलि-पु० [मं०] बोरा, बैला; स्वयं; जुलाहा; अग्नि। कोटी या कोटीका शरीर; चक्र वस्तु; फल।
 स्थलिका-क्षी० [सं०] पत्र तरहकी मक्खी (?)।
 स्थलिर-वि० [सं०] दद, स्थिर, अचल; वृद्ध; प्राचीन, आदरणीय। पु० वृद्ध व्यक्ति वृद्धा; वृद्ध भिक्षु; एक शैल संभ्रात; शैलेव; विभारा। -द्वार-पु० विभारा।
 स्थलिरता-क्षी० [सं०] वृद्धत्व।
 स्थलिरा-क्षी० [सं०] महावकी; वृद्धी क्षी०।
 स्थलिरापु(स्)-वि० [सं०] जो बहुत बृद्ध हो गया हो।
 स्थलित-वि० [सं०] बहुत स्थूल; बहुत बली।
 स्थलित-वि० [सं०] अतः कारण अनावृत भूमिपर सोनेवाला।
 स्थाली-वि० दे० 'स्थाली'।
 स्थाली-पु० [सं०] शव; शिष्या एक अनुचर।

स्थागर-वि० [सं०] स्थागर, तगरका बना हुआ ।

स्थानज-वि० [सं०] वृक्षके तनेसे बना या उत्पन्न ।

स्थानवीथ-वि० [सं०] स्थाणु, शिब-सम्बन्धी ।

स्थाणु-वि० [सं०] दृढ, स्थिर, अचल । पुं० शिव; स्तम्भ, स्तम्भा; श्रृंग; धूपचौकी काटो; एक तरहका भाता; दौमक-का बिल; औषक नामक गंधद्रव्य; ऐष्का दूँठ; हल्का एक भाग; ग्यारह बटोमेंसे एक; एक प्रजापति; एक नग-सुर; एक राक्षस; कोई अचल वस्तु; एक तरहका बैठनेका ढंग । -कर्णी-क्षी० महेंद्रवाकणी लना । -च्छेद्-पुं० वृक्षका तना काटकर अलग करनेवाला व्यक्ति । -तीर्थ-पुं० धानेश्वरका प्राचीन नाम । -विक्र(स्)-क्षी० उत्तर-पूर्व दिशा । -भूत-वि० जो ऐस्कके दूँठकी तरह गतिहीन हो गया हो । -भ्रम-पुं० भ्रमबद्ध स्थाणुको और कुछ समझ लेना । -रोग-पुं० धोरेका एक रोग । -बट-पुं० एक प्राचीन तीर्थ ।

स्थाण्वीश्वर-पुं० [सं०] धानेश्वरका एक शिवलिंग, धानेश्वर नामका नगर ।

स्थातव्य-वि० [सं०] ठहरने योग्य, रहने योग्य ।

स्थाता(स्)-वि० [सं०] स्थिर या स्थिर रहनेवाला; दृढ, अचल ।

स्थान-पुं० [सं०] स्थित होने, ठहरने, रहनेकी क्रिया; टिकाव, ठहराव; स्थिर होना; स्थिति, अवस्था; जगह; पद, ओहदा; मन्थ; रहनेकी जगह, घर; देहा, भूभाग; नगर; अश्वर; विषय; कारण; उपयुक्त अवसर; वर्णके उच्चारणकी जगह; पवित्र जगह, मंदिर आदि; बंदी; नगरस्थ प्रांगण; मृत्युके बाद कर्मानुसार प्राप्त होनेवाला लोक; युद्धमें आक्रमणका सामना करनेकी दृढ़ता; उदासीनता; राज्यके मुख्य अंग-सेना आदि; साधन; ग्रन्थका अध्याय; अवकाश; योग्यता; एवज; शालिकी स्थिति; दुर्ग; शान्तिस्थ, स्वर्गके स्थानकी भाषा (संगीत); रूप, आकृति; अभिनय-गत चरित्र; गंधर्वाका एक राजा । -चञ्चला-क्षी० बर्दरी । -चित्तक-पुं० सेनाके शिविके लिए स्थानकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी । -च्युत-वि० स्थानभ्रष्ट, अपने स्थानसे गिरा हुआ; अपने पदमें हटाया हुआ, पद-च्युत । -म्याग-पुं० निवास-स्थानका म्याग, पदकी हानि । -शासा(स्)-वि० किसीके लिए विशेष स्थान पर रहनेका निर्देश करनेवाला । -वीस-वि० स्थान-विशेषपर रहनेके कारणे अश्रुम । -पति-पुं० स्थानका अधिकारी; विचार आदिका अध्यक्ष । -पात-पुं० (दूसरे-के) स्थानपर कब्जा करना । -पाक-पुं० स्थान-विशेषका रक्षक या प्रधान निरीक्षक; प्रहरी, चौकीदार । -प्रच्युत-वि० दे० 'स्थानच्युत' । -प्राप्ति-क्षी० किसी स्थान या पदका मिलना । -अंग-पुं० किसी स्थानकी बगोदी या पतल । -भूमि-क्षी० निवास-स्थान, गृह, इलाका, मकान । -अंश-पुं० स्थान या पदकी हानि । -अंश-वि० दे० 'स्थानच्युत' । -आश्रय-पुं० किसी स्थानका गौरव या देवता आदिके कारण प्राप्त महत्त्व । -अग-पुं० कच्छप, मगर आदि जलजंतु जो स्थान-विशेषपर बार-बार आते रहते हैं । -क्षीण-पुं० वस्तुओंकी सुरक्षाके लिए उपयुक्त स्थान या उपाय काममें लाना । -रक्षक-

पुं० दे० 'स्थान-पाक' । -विद्-वि० जिसे स्थानविशेष, स्थानीय बातोंका अच्छा ज्ञान हो । -विभास-पुं० स्थानोंका बँटवारा, विशेष-विशेष स्थानपर रखा जाना । -वीरासन-पुं० आसनका एक प्रकार । -स्थ-वि० एक ही स्थानपर स्थित, अचल ।

स्थानक-पुं० [सं०] जगह, ठौर; पद, ओहदा, मरतबा; बाण चलाते समयकी शरीरकी मुद्रा; मृत्युकी एक मुद्रा; नाटकीय व्यापारका एक विशेष स्थल; आलवा, धाला; शराबकी सतहपर उठा हुआ फेन ।

स्थानांग-पुं० [सं०] जैन धर्मशास्त्रका तीसरा अंग ।

स्थानांतर-पुं० [सं०] भिन्न, दूसरा स्थान । -गत-वि० जो अन्यत्र चला गया हो ।

स्थानांतरित-वि० [सं०] एक स्थानसे दूसरे स्थानपर किया हुआ; जिसका तबादला हो गया हो ।

स्थानाधिकार-पुं० [मं०] देवालय आदिका तीसरा अंग ।

स्थानाधिपति-पुं० [सं०] दे० 'स्थानपति' ।

स्थानाध्यक्ष-पुं० [सं०] स्थानविशेषका रक्षक या शासक ।

स्थानापति-क्षी० [सं०] किसी व्यक्ति या वस्तुका स्थान ग्रहण करना; पदजमें काम करना ।

स्थानापन्न-वि० [मं०] दूसरेकी जगह अस्थायी रूपसे काम करनेके लिए नियुक्त ।

स्थानाध्य-पुं० [सं०] खड़े होनेकी जगह, आधार ।

स्थानासेच-पुं० [सं०] किसी व्यक्तिको किसी स्थानपर कैद करना या रोक रखना ।

स्थानिक-वि० [सं०] स्थानविशेषसे सम्बद्ध, स्थानीय । पुं० स्थानविशेषका रक्षक या शासक; देवालयका व्यवस्थापक; राजस्व-संग्राहक ।

स्थानी(निव)-वि० [सं०] स्थानवाला, (उच्च) पदस्थ; स्थायी, जो उपयुक्त स्थानपर हो, उपयुक्त, मौजूद ।

स्थानीय-वि० [सं०] स्थानविशेष-सम्बद्ध रहनेवाला; स्थान-विशेषके लिए उपयुक्त । पुं० नगर; कसबा; बाठ मौ गाँवोंके बीच स्थित दुर्ग ।

स्थानेश्वर-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ, धानेश्वर; स्थाना-ध्यक्ष ।

स्थापक-वि० [सं०] स्थापित करनेवाला; खड़ा करनेवाला; स्थिर करनेवाला । पुं० मूर्तिकी स्थापना करनेवाला; कोई सम्पत्ति स्थापित करनेवाला; किसीके पास कुछ जमा करने-वाला; सृजनाका स्थापक (ना०) ।

स्थापत्य-पुं० [सं०] अंतःपुरका रक्षक; किसी भूभागके शासकका पद; मयन-निर्माण; वास्तुविद्या । -कला-क्षी० वास्तुविद्या । -वेद्-पुं० एक उपवेद, वास्तुशास्त्र ।

स्थापन-पुं० [सं०] खड़ा करना, स्थित करना; स्थिर करना; जमाना; स्थापित करना (संस्था आदि); निर्देशन, रंगमंचकी व्यवस्था; धारण; निवासस्थान; गर्भाधान संस्कार; पुसवन; प्रतिपादन; लटकाना; अंगोंकी सशक्त करना; जीवनवृद्धि या उसका उपाय; रक्तस्राव रोकनेका उपाय; परिप्राप्ता; पारोकी एक क्रिया । -निक्षेप-पुं० अर्द्धप्री प्रतिमाका पुत्रन । -वृत्ति-वि० जो शक्ति बढ़ाती जानिकी अवस्थामें न रह गया हो ।

स्थापना-क्षी० [सं०] रखना, जमाना, स्थापित करना;

संमालना; पकत्र करना; सरक्षण करना; निश्चित नियम, नियमित क्रम; प्रतिपादन; रंगमंचकी व्यवस्था, निर्देशन।
—स्वस्थ-पु० प्रतिमार्गमें व्यक्ति आदिका आरोप (जै०)।

स्थापनिका-वि० [सं०] गोदात्ममें जमा किया हुआ।

स्थापनी-स्त्री० [सं०] पाठा।

स्थापनीय-वि० [सं०] स्थापित करने योग्य; रखने, पालन करने योग्य (कुत्ता, आदि); शक्तिवर्द्धक बोधपत्रे उपचार करने योग्य।

स्थापयितव्य-वि० [सं०] किसी स्थानपर स्थापित करने, रखने योग्य; नियंत्रण रखने योग्य।

स्थापयिता(तृ)-वि० [सं०] स्थापित करनेवाला, संस्थापक।

स्थापित-वि० [सं०] जिसकी स्थापना की गयी हो; जमाया हुआ; कायम किया हुआ, प्रतिष्ठित किया हुआ; सुरक्षित; निर्देशित; निश्चित किया हुआ; किसी कार्यपर नियुक्त; विवाहित; व्यवस्थित; दृढ़, स्थिर।

स्थापी(पिबू)-पु० [सं०] मूर्तिका निर्माण या उन्मूलकी स्थापना करनेवाला।

स्थाप्य-वि० [सं०] स्थापित करने योग्य (मूर्ति आदि); रचे जाने योग्य; किसी पदपर नियुक्त किये जाने योग्य; किसी स्थानपर बंद किये जाने योग्य; पालने योग्य (जानवर); नियंत्रित करने योग्य। पु० भरोहर; देवप्रतिमा।

स्थाप्यापहरण, **स्थाप्याहरण**-पु० [सं०] अमानवकी खानान्त, भरोहरकी वस्तु हथप कर जाना।

स्थाम(नृ)-पु० [सं०] शक्ति, मामर्थ्य; स्थान; घोड़ेकी स्थितिनाइट।

स्थाव-पु० [सं०] आधार, पात्र; दे० 'स्थाम'।

स्थावा-स्त्री० [सं०] बरती।

स्थायिक-वि० [सं०] टिकनेवाला, बना रहनेवाला; विषयल।

स्थायिका-स्त्री० [सं०] खड़े होनेकी क्रिया।

स्थापिता-स्त्री०, **स्थापित्व**-पु० [सं०] बने रहनेका भाव; टिकाव, ठहराव; दृढ़ता, स्थिरता।

स्थापी(पिबू)-वि० [सं०] स्थितियुक्त; ठहरने, टिकनेवाला, बना रहनेवाला; विशेष स्थितिमें रहनेवाला, विषयल के रूपवाला; किसी स्थानमें रहनेवाला, लघ्वस्वाधी। पु० गीतका वह चरण जो बार-बार गाया जाता है, टेक, झुनक। -**(वि)भाष**-पु० भाषका एक प्रकार जो मनमें बना रहता है और परिपाक होनेपर रसावस्थामें परिणत होता है (रति, हास, क्रोध, शोक, जुगुप्सा, विस्मय, मय उत्साह और निर्वेद)। -**समिति**-स्त्री० जुने हुए सदस्योंकी वह समिति जो अगले अधिवेशनतक सब कामोंका प्रवन्ध करती है।

स्थापुल-वि० [सं०] दृढ़; स्थिर; जो ठहरनेवाला हो वा जिसमें ठहरनेकी प्रवृत्ति हो; रहनेवाला (समाप्तमें)। पु० गौका मुखिया, ग्रामाध्यक्ष।

स्थाक-पु० [सं०] धाक, कठोरा, बटलोई आदि पात्र, कोई भीजनपात्र; दौलत खोकर। मस्केका भीतरी भाग (?)।
—**रूप**-पु० पाक-पात्रकी आकृति।

स्थाक-पु० [सं०] पीठकी एक हड्डी।

स्थाकपथ-वि० [सं०] जिसका स्वरूपमार्गसे जमाव

हुआ हो।

स्थाकपथिक-वि० [सं०] व्यवहारमार्गमें यात्रा करनेवाला; दे० 'स्थलपथ'।

स्थाकिक-पु० [सं०] मलकी दुग्ध। वि० मलकी तरह बहव करनेवाला।

स्थाकिका-स्त्री० [सं०] एक तरहकी मक्खी।

स्थाकी-स्त्री० [सं०] मिट्टीके बने हुए पाकपात्र-हंडी, कनाही आदि; सोमरस तैयार करनेके काम जानेवाला एक तरहका पात्र; पाटला वृक्ष। -**ग्रह**-पु० पाकपात्रसे कछीभर निकाला हुआ पदार्थ। -**दरण**-पु० पात्रका मंग होना। -**द्रुम**-पु० बेहिया पीपल, नंदी वृक्ष। -**एक**-वि० स्थालीमें उबाला हुआ। -**पर्णी**-स्त्री० शालिपर्णी। -**पाक**-पु० होमके लिए दूधमें पकाया हुआ जी या चावल। वि० दे० 'स्थाली-पाकीय'। -**पाकीय**-वि० स्थालीपाक नामक चक्र-संघी। -**पूरीय**-पु० पाकपात्रमें जमा वा बचा हुआ मेल वा तरौल। -**पुलाक**-पु० स्थालीमें पकाया हुआ चावल। -**भ्याव**-पु० एक चावलकी परीक्षासे सारेका पता लग जानेकी तरह अंशक आधारपर अंशोंके संबंधमें अनुमान करना। -**बिल**-पु० पाकपात्रका भीतरका हिस्सा। -**बिलीय**, **बिल्य**-वि० पाकपात्रमें पकाने योग्य। -**वृक्ष**-पु० दे० 'स्थालीद्रुम'।

स्थाकी(किबू)-वि० [सं०] स्थालवाला, पात्रयुक्त।

स्थावर-वि० [सं०] गतिहीन; अचल; स्थायी; निश्चित, विविध; बानस्पतिक; अचल संपत्ति-सम्बन्धी। पु० पर्वत; कोई गतिहीन वा निश्चित पदार्थ (पत्थर, वृक्ष आदि)।
स्थायित्व, **अचल संपत्ति** वा **वस्तु**; धनसंग्रह, वधायन अस्थावर वस्तुएं (आभूषण आदि जिनमें वैचला उनिग नहीं होता)। -**कल्प**-पु० सुदृष्टिबन्धी एक विशेष वस्तु (बी०)। -**कल्याणक**-पु० लकड़ीकी चीजें। -**गुरुल**-पु० एक बानस्पतिक विष। -**तीर्थ**-पु० (स्थिर जलवाला) एक प्राचीन तीर्थ। -**राज**-पु० हिमालय। -**कन्या**-स्त्री० पार्वती।

स्थावराकृति-वि० [सं०] वृक्षकी आकृति।

स्थावरादि-पु० [सं०] अल्पनाम नामक विष।

स्थाविर-पु० [सं०] दृढ़ावस्था (७० से ९० वर्षकी अवस्था)। वि० मोटा; दृढ़।

स्थासक-पु० [सं०] शरीरमें अगारवा, सुगन्धित द्रव्य लगाना; पानी वा किसी तरह पदार्थका तुलमुला; घोड़ेके पात्रमें लगा हुआ तुलमुलेके आकारका गहना; चंदन आदि से बना हुआ विष।

स्थासु-पु० [सं०] सारीरिक बल।

स्थासु-वि० [सं०] स्थिर; अचल; स्थायी, टिकाक; मजबूत। पु० वृक्ष।

स्थिक-पु० [सं०] कटिप्रदेश, निजब।

स्थित-वि० [सं०] खड़ा; ठहरा हुआ, टिका हुआ; रहता हुआ; पठित; किसी स्थानपर रखा वा नियुक्त किया हुआ; किसी नियम, आदेश आदिका पालन करनेमें रत; रीका हुआ, बारित; खरा हुआ, बसाया हुआ; स्थिर, दृढ़; कृत-संकल्प; विशिष्ट; कीर; कर्मज-परायण; सच्चा, पुण्यात्मा; भक्तिवाका पालन करनेवाला; प्रस्तुत; स्वीकृत; अवलंबित;

आसीन । पु० चुपचाप खड़ा रहना; ठहरना, रहना; खड़ा होनेका तत्प्राप्त; अव्यवसायपूर्वक सत्कर्ममें लगा रहना । -धी-वि० स्थिरबुद्धि, धीर । -वाक्य-पु० कौनका कभी होकर प्राकृतमें घाट करना (ना०) । -ब्रह्म-वि० जो संपत्ती, आत्मसंतुष्ट, धीर, स्थिरबुद्धि और निष्काम हो । -प्रेमा (अन्)-पु० विस्मयित मित्र । -बुद्धि-पु० बुद्धिविशेष । -संचिद्-वि० प्रतिष्ठाका पालन करनेवाला ।

स्थिति-की० [सं०] रहना; ठहरना; निवास; रुकना; चुपचाप खड़ा रहना; अवस्था; व्यवहार, प्रकृति; स्थायित्व; कर्तव्यपरायणता; अनुशासनका पालन; पद, मोहदा; निर्माह; जीवनका बना रहना; आयु; विराम; कल्याण; सामंजस्य; विधि, आदेश; जीवनकी तीन अवस्थाओंमेंसे एक; निर्णय; गतिरीय; मर्यादा; ब्रह्मणकी अवधि; किसी न्यायपर कानूनांतर बने रहना; पृथ्वी; दृढ विश्वास; प्रथा; ठहरनेका स्थान; जड़ता; निश्चलता; रूप, आकृति; कार्यविधि; अवसर । -कर्ता (र्तृ)-वि० स्थायित्व प्रदान करनेवाला । -ह-वि० मर्यादाको खराब रखनेवाला । -द्वैश-पु० निवास-स्थान । -पालन-पु० स्थायित्व बनाये रहना । -प्रद-वि० दृढ़ता या स्थायित्व प्रदान करनेवाला । -निष्-वि० मर्यादा मंग करनेवाला । -स्थापक-वि० पूर्ण अवस्था प्रदान करनेवाला (पुण०) । -स्थापकत्व-पु० लचीलापन ।

स्थितिमान् (अन्)-वि० [सं०] जिसमें दृढ़ता या धीरता हो; स्थायी; धार्मिक ।

स्थिर-वि० [सं०] दृढ़; गतिहीन; अचल; स्थायी; शांत; धीर; जडा हुआ; आचारमती; निवृत; विस्मय; निश्चित; कठिन, ठोस; बली; उग्र; कृतमंकल्प; कठोरहृदय । पु० देव; ब्रह्म; धर्म; धर्म; सौख्य; शिव; काश्चित्तेय; मोक्ष; हृदय, सिंह, कुंभ और बुद्धिक राक्षसियाँ; शनि ग्रह; एक वृत्त; एक अक्षमण; स्कंदका एक अनुचर; ज्योतिषका एक योग; दृढ़ता । -कर्मा (मन्त्र)-वि० अव्यवसायी । -गंध-वि० बहुत देरतक टिकनेवाली गंधवाला । पु० चंपक । -गंधा-की० पाटला; केतकी । -गति-पु० शनि । -चक्र-पु० मंडुश्री नामक जिन । -चित्त-वेत्ता (तत्त्व)-वि० स्थिरबुद्धि । -छद्म-पु० भ्रूणधर्म । -छाया-पु० छायावह, सदाबहार पेड़; वृक्ष । -निष्ठ-पु० मछली । -जीवित-वि० जिम्मेकी आयु लंबी रही हो । -जीविता-की० शास्मली वृक्ष । -जीवी (विन्)-वि० दीर्घायु । -हृद्-पु० मर्प; विष्णु (बाराह रूप); ध्वनि । -धी-वि० जिसकी बुद्धि स्थिर हो । -धन-पु० हिताल । -पद-वि० दृढ़भूल । -पुष्प-पु० चंपक; मौलसिरी । -पुष्पी (पिप्प)-पु० चंपक; बकुल; तिलपुष्पी । -प्रसिद्ध-वि० दृढ़प्रसिद्ध, अपने बचनका पालन करनेवाला । -प्रसिद्ध-वि० दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध करनेवाला । -प्रसिद्धा-की० निश्चित निवासरथान । -प्रेमा (अन्)-वि० जिसका प्रेम टिकाऊ हो । -फला-की० कुण्मादी । -बुद्धि-वि० दृढ़चित्त । पु० एक अक्षर । -मति-की० स्थिरबुद्धि । वि० स्थिर बुद्धिवाला । -मद्-वि० इतना नशीला कि उसका असर बना रहे; जो मेरे

नशेमें हो । पु० मक्कर । -मदा (मन्त्र)-वि० स्थिरचित्त । -मोहि-पु० छायातर, सदाबहार पेड़ । -मोहन-पु० विधापर; विरहस्थायी लाक्षण्य । -रंदा-की० नील । -रागा-की० दाहद्विद्रा । -रुचि-वि० स्थिर जौल्लोवाला; जिससे ठंडकी लग गयी हो । -बाह् (हृ)-वि० जिसकी वाक्ता विश्वास किया जाय । -विक्रम-वि० दृढ़तापूर्वक कर्म बढ़ानेवाला । -धी-वि० बनी रहनेवाली समुद्रिका । -संगर-वि० वाक्ता धनी । -संस्कृत-वि० पूर्णरूपमें संस्कृत । -साधनक-पु० सिंघवार वृक्ष । -सार-पु० सामीन । -सौहृद्-वि० जिसकी मैत्री स्थिर हो । पु० मैत्रीकी स्थिरता । -स्थायी (विन्)-वि० दृढ़तापूर्वक ठहरने, टिकनेवाला ।

स्थिरक-पु० [सं०] सागौन ।

स्थिरता-की०, स्थिरत्व-पु० [सं०] स्थिर होनेका भाव, दृढ़ता; अचलता; कठोरता; स्थायित्व; धीरता, शांति ।

स्थिरांशुप, स्थिरांशु-पु० [सं०] हिताल वृक्ष ।

स्थिरा-की० [सं०] स्थैर्ययुक्त स्त्री; पृथ्वी; शाकपणी; काकोली; शास्मिक वृक्ष; बनमृग; मूषाकर्णी, मासपणी ।

स्थिराधात-वि० [सं०] आधात सधन करनेमें दृढ़; जो जल्द खोदा न जा सके ।

स्थिरात्मा (मन्त्र)-वि० [सं०] दृढ़चित्त ।

स्थिरानुराग-पु० [सं०] सच्चा प्रेम । वि० जिसका प्रेम स्थिर हो ।

स्थिरापाव-वि० [सं०] क्षयशील ।

स्थिरासु (सु)-वि० [सं०] दीर्घजीवी । पु० शास्मिक वृक्ष ।

स्थिराकर-पु० [सं०] स्थिर करना; दृढ़ करना; समर्थन, पुष्टि । वि० दृढ़ करनेवाला ।

स्थिराकार-पु० [सं०] समर्थन, पुष्टि ।

स्थुरी (रिन्)-पु० [सं०] दे० 'स्थोरी' ।

स्थुल-पु० [सं०] एक तरहका लघा तन्त्र ।

स्थूल-पु० [सं०] विद्यामित्रका एक पुत्र; एक वृक्ष; स्तम्भ ।

-कर्म-पु० एक कवि ।

स्थूणा-की० [सं०] स्तम्भ; गृहस्तंभ; धरन; लौहप्रतिमा; निहार्य; पेकका तना; एक तरहका रोग । -कर्म-पु० एक तरहका व्यूह; एक वृक्ष; एक रोगग्रह; एक तरहका वाण । -गर्त-पु० खमा गाड़नेके छिप बनाया हुआ गद्दा । -पक्ष-पु० एक तरहका व्यूह । -भार-पु० धरनका बोझ । -राज-पु० मुख्य स्तम्भ । -विरोहण-पु० काष्ठस्तम्भसे अंकुरका निकलना ।

स्थूणीय, स्थूल-वि० [सं०] स्तंभ-संबंधी ।

स्थूल-पु० [सं०] चंद्रमा; प्रकाश ।

स्थूर-पु० [सं०] सौंख्य मनुष्य ।

स्थूरिका-की० [सं०] सौंख्य याचका नभना ।

स्थूरी (सिन्)-पु० [सं०] आर होनेवाला अव्यय वा वेल ।

स्थूरीवृद्ध-पु० [सं०] वह बोधा जो अभी सवारी करनेके काम न आया हो ।

स्थूल-वि० [सं०] बड़ा; पीन; मोटा; घना; बली; विषम, जो समतल न हो; मूर्ख, मंदबुद्धि; सुलभ; (व्याख्या या विवरण) जो बारीकी या ब्योरेके साथ न देकर मोटे तौर-

दिया गया हो; भौतिक। पुं कदहल; राक्षि, समूहः
तन्तु; कूट, पर्वतशिखर; शिपका एक अनुचर; मट्टा; विष्णु;
मिथुन; एक तरहका कदंब; कनकमयोका; शरीरकी सातवीं
स्थान; मोचर पदार्थ; ईश। -कंशु-पुं एक भक्ष, बरक
धान्य। -कंदक-पुं एक तरहका मूल, कानकचूर।
-कंदकिका-स्त्री शास्त्रिक वृक्ष। -कंदकल-पुं कद-
हल। -कंदटा-स्त्री बृहती, बनभंडा। -कंद-विं वने
कंदवाला। पुं लाल लहसुन; ओल, सूरन; बनओल;
हस्तिकंद। -कंदुक-पुं कच्चा। -कन्या-स्त्री स्थूल-
जीरक, मंगरेला। -कण-पुं एक कवि। -काच-
विं मोटे शरीरवाला। -काद्यागि-स्त्री स्तंभाग्रि।
-कुमुद-पुं मफेद कनेर। -केस-पुं एक कवि।
-क्षेड-क्षेड-पुं बाण। -ग्रंथि-पुं कुलजन।
-ग्रंथि-विं मोटी गरदनवाला। -चंचु-पुं महापंचु
नामक शाक। -चंपक-पुं मफेद चंपा। -चाप-पुं
धनकी। -चूड-विं जिसके भिरपर बालके बने-बने
गुच्छे हों। पुं किरान। -चंघा-स्त्री जो ममिधामोमेंसे
एक। -चिह्न-विं मोटी जीमवाला। पुं एक भूत।
जीरक-पुं मंगरेला। -तंदुल-पुं एक तरहका
मोटा चावल। -ताल-पुं हिताल। -तिंदुक-पुं
आबनूस। -तिका-स्त्री दानहल्दी। -तौमरी-
(विं)-विं मोटे बरहेवाला। -तच्छा-स्त्री काश्मरी,
गंभारी। -दंड-पुं एक तरहका वक्रा नरसल, देवनल।
-द्वर्ज-पुं मूँज। -द्वर्जक(धंत्र)-पुं मृकमदधंके
वक्र (धूमकी स्थूल रूप देनेवाला)। -दूखा-स्त्री
प्रतकुमारी। -देही(हिन्)-विं स्थूल शरीरवाला।
-धी-विं मूँस, मडुडि। -नाल-पुं देवनल, स्थूल-
दंड। -नास, वासिक-पुं मूँस। -नीक-पुं
बाज पक्षी। -पट-पुं मोटा कपड़ा। विं मोटे कपड़े
धारण करनेवाला। -पट-पुं कपाम; मोटा कपड़ा।
-पट्टक-पुं मोटा वस्त्र। -पत्र-पुं दीना; छपिवन।
-पर्णी-स्त्री छतिवन। -पाद-विं मोटे बा मजे
हुए पैरवाला। पुं बाथी; श्लेषर रोमसे घन्य नर्तक।
-पिंडा-स्त्री पिंडलजूर। -पुष्प-पुं वक्र वृक्ष;
शंडुक धूप, गुलमलमल। -पुष्पा-स्त्री पर्वतजात अप-
राधिता। -पुष्पी-स्त्री वनशिल्पा। -प्रपंच-पुं
मृष्टि, विश्व। -प्रियसु-पुं केना धान्य। -फल-
पुं शास्त्रिक वृक्ष; वक्रा मोड़; खेले आदिका मोटे तौरपर
निकाला हुआ फल। -फला-स्त्री शणपुष्पी; शान्मलि।
-बुद्धि-विं मंदबुद्धि, मूँस। -मग्न-पुं अनु-
केवलियोदे; छ भेरोमेंसे एक (जीं)। -भुज-पुं एक
विबाधर। -भूत-पुं आकाशादि पंच तत्त्व। -भंजरी-
स्त्री अपामार्ग। -भय-विं जो बीचमें मोटा हो।
-भरिच-स्त्री कनाचचीना, कबील। -भाष-पुं
मोटाभोटी हिसाब। -भूक-पुं एक एक तरहकी मूँजी।
-रोमा(मच)-विं मोटे बालीवाला। -लछा, -
लक्ष-विं उदार; बुद्धिमान्, विद्वान्; लाभ-दानि
दीनोंका ध्याम रखनेवाला; लापरवाहीमे निशाना
लगातेवाला। -लक्षिता-स्त्री उदारता; पक्षित्व।
-वर्मकृत्-पुं प्राणयथिका, आरंभी। -वस्त्रक

-पुं रक्त कोष। -बालुका-स्त्री एक नदी।
-विषय-पुं भौतिक पदार्थ। -बृहत्कल-पुं मदन-
फल। -बैदेही-स्त्री मजपिपली। -शंखा-स्त्री
बही बोनिवासी स्त्री। -शर-पुं एक तरहका नरसल,
रामशर। -शरीर-विं पंचतत्त्वनिर्मित शरीर। विं
बड़े शरीरवाला। -शरक-विं बही धोईबोवाला (जैसे
मल्ल्य)। -शाकिनी-स्त्री एक शाक। -शाट,-
शाटक-पुं मोटा वस्त्र। -शादिका, -शादी-स्त्री
दे० 'स्थूलशाट'। -शाकि-पुं एक मोटा धान।
-शिखी-स्त्री सफेद सेम। -शिर(स्)-पुं वक्रा
शिर या चोटी। -शिरा(स्)-पुं एक कवि; एक
राक्षस; एक यक्ष। विं बड़े शिरवाला। -शिरिका-
स्त्री भुद्रपिपीलिका। -क्षरण-पुं एक तरहका वक्रा
ओल। -शोक-विं बहुत मजा हुआ। -बद्ध-
पुं बनें। -व्याक-पुं एक तबका नरसल, रामशर।
-मिक्त-पुं एक तीर्थ। -सुरण-पुं दे० 'स्थूल
सुरण'। -स्वंध-पुं लट्ठक, बकल। -हम-पुं
हाथीकी मूँज। विं मोटी भुजावाला।
स्थूलक-पुं [मं] एक मृग। विं मोटा, स्थूल।
स्थूलका-स्त्री [मं] आबाइलदी।
स्थूलता-स्त्री, स्थूलक-पुं [मं] मोटापन; वक्रा धाने
का भाव; मूर्खता।
स्थूलता-पुं [सं] एक तरहका चावल। विं बड़े
शरीरवाला (जैसे मल्ल्य)।
स्थूलता-पुं [मं] बही भौत।
स्थूलता-स्त्री [मं] गंधपत्रा।
स्थूल-स्त्री [मं] गजपिपली; 'शंख', बड़ी इन्द्रा-
कक्षी।
स्थूलक-पुं [मं] एक कवि; क राक्षस।
स्थूलका-स्त्री [मं] वेणुवटि, शोमका टडा।
स्थूलक-पुं [सं] कलमी आम।
स्थूलक-पुं [मं] मौव।
स्थूली(लिङ्)-पुं [मं] जंड।
स्थूलक-विं [मं] जिसकी कच्छाएं बहुत बड़ी हुई हों।
स्थूलक-पुं [मं] वक्रा मृत्त।
स्थूलका-स्त्री [मं] बही कलायची।
स्थूलक-पुं [मं] मुंहासा; हाथीकी मध्यम गति
पर्वतखंड ओ गिरकर ऊबड़-खाबड़ बंध जैसा बन गया
हो, मंडोपक; अपूर्णता; हाथीके दाँतका रंग।
स्थूलक-विं [मं] तोड़वाला।
स्थूल(मन्)-पुं [सं] वृद्धता, स्थिरता।
स्थूल-विं [सं] रमे, स्थापित किये जाने योग्य; निष्ठा।
स्थूल-पुं [सं] स्थिरता; वृद्धता; पैरों; श्रानि; वनता-
कटोरता; स्थापित। -कर, -कृत्-विं स्थिरता, वृद्धता
प्रदान करनेवाला।
स्थूल-स्त्री [मं] जडाप्रपर लदा हुआ माल।
स्थूल(विङ्)-पुं [सं] दे० 'स्थौरी'।
स्थूलक, स्थूलनेषक-पुं [सं] ग्रंथिपण नामक गंधद्रव्य-
गाजर।

स्त्रीर-पु० [सं०] इन्द्रा; शक्ति, बल; बोधे, गंधे आदिपर लानेका पूरा बोध ।

स्त्रीरी(रिन्)-पु० [सं०] भारवाहक अथ वा बल; मज्ज-वृत्त बोधा ।

स्त्रीरुल्लस्य-पु० [सं०] उदारता ।

स्त्रीरुल्य-पु० [सं०] स्थूलता; भारीपन, वृद्धि की भेदता ।

स्त्रीरन-पु० [सं०] नहलाना । वि० ज्ञान करानेवाला; ज्ञानके काममें आनेवाला ।

स्त्रीरपित-वि० [सं०] नहलाया हुआ, ज्ञान कराया हुआ ।

स्त्रीर-पु० [सं०] ज्ञान ।

स्त्रीर-पु० [सं०] धारण, चुना, रिसना ।

स्त्रीरसा-स्त्री० [सं०] नहलाना; पेसी ।

स्त्री-वि० [सं०] (समासमें) ज्ञान (जैसे घृतज्ञा) ।

स्त्रीज्ञा-वि० [सं०] नहलाया हुआ । पु० वह त्रिमका वेदाध्ययन पूरा हो गया हो, ज्ञानक । -**वद्व्य-वि०** ज्ञानके बाद पढ़ना जानेवाला । -**ब्रत-वि०** दे० 'ज्ञानक व्रती' ।

स्त्रीज्ञातक-पु० [सं०] वह ब्राह्मण जो वेदाध्ययन समाप्त करनेके अनंतर ज्ञान कर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करे; वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक उद्देश्यसे मिथु बन गया हो; किसी विश्वविद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर तपाधि प्राप्त करनेवाला व्यक्ति । -**जन्त-पु०** ज्ञानकके कर्तव्य । वि० दे० 'ज्ञानकव्रती' । -**ब्रती(निवृ)-वि०** स्त्रीज्ञातकके कर्तव्योंका पालन करनेवाला ।

स्त्रीज्ञातव्य-वि० [सं०] स्नान कराने योग्य ।

स्नान-पु० [सं०] जलमें मारे शरीरको धोना; धूप, बाजु आदि मेंवन; तलकी महाबनाने धोकर शुद्ध करना; मन्त्रको नहलाना; नहानेके काम आनेवाला पदार्थ (जल आदि) । -**कलश-कुंभ-पु०** वह घटा जिसमें नहानेका पानी हो । -**गृह-पु०** नहानेका कमरा । -**घर-पु०** [सं०] वह कोठरी या कोठरीनुमा स्थान जहाँ स्नान करनेकी व्यवस्था हो (बाथरूम, बेडिंगरूम) । -**तीर्थ-पु०** वह स्थान जहाँ धार्मिक स्नान किया जाय । -**नृण-पु०** कुश । -**द्रोणी-स्त्री०** नहानेका पात्र, 'टब' । -**बात्रा-स्त्री०** अंग पूर्णमाकी होनेवाली विष्णु(जगन्नाथ)की तल-यात्रा । -**बस्त्र-वास्त(स्)-पु०** स्नानका वस्त्र, गीला वस्त्र । -**वेस्त्र(स्)-पु०** स्नानगृह । -**शास्त्रा-स्त्री०** स्नानागार । -**शील-वि०** ज्ञानप्रेमी (विशेषकर तीर्थमें स्नान करनेका) ।

स्नानांजु-पु० [सं०] स्नान करनेका त्रल ।

स्नानागार-पु० [सं०] दे० 'स्नानगृह' ।

स्नानी(निवृ)-वि० [सं०] स्नान करनेवाला ।

स्नानीय-वि० [सं०] नहाने योग्य; जिससे नहलाया जा सके । पु० स्नानमें काम आनेवाली चीज । -**बस्त्र-पु०** नहानेका कपड़ा ।

स्नानोदक-पु० [सं०] दे० 'स्नानांजु' ।

स्नापक-पु० [सं०] स्नान करानेवाला सेवक ।

स्नापन-पु० [सं०] नहलाना ।

स्नापित-वि० [सं०] नहलाया हुआ ।

स्नापयिक-वि० [सं०] स्नायु-संबंधी ।

स्नायवीय-पु० [सं०] कर्मेन्द्रिय (बाध, ऑय आदि) ।

स्नायी(विनृ)-वि० [सं०] स्नान करनेवाला ।

स्नायु-स्त्री० [सं०] रग, नाडी; पेसी; धनुषकी डोरी ।

पु० एक रोग जिसमें अंगोंके छोरपर चर्मफोड़ होता है ।

-**पास्त-बंध-पु०** मय्या । -**सर्मे(स्)-पु०** स्नायुओंका संक्षिप्पक । -**रज्जु-पु०** शरीर । -**रोग-पु०** नष्ट-करा रोग । -**शूल-पु०** स्नायुमें होनेवाली वेदना ।

-**स्थंद्-पु०** नष्टका चलना ।

स्नायुक-पु० [सं०] एक तरहका परोपजीवी कीट; स्नायु नामक रोग ।

स्नाय्वर्मे(स्)-पु० [सं०] ओंखका एक रोग जिसमें स्फेद आगपर अर्बुद निकल जाता है ।

स्नाय-वि० [सं०] जम, रग; पेसी ।

स्निग्ध-वि० [सं०] तेल लगा हुआ; लसदार, निपकने-वाला; चिकना; आर्द्र, ठंडा करनेवाला; लैलीय पदार्थसे उपचरित; अनुरक्त; दयालु; मृदुल; मृदर, प्रिय; घना; स्थिर (जैसे दधि) । पु० मित्र, प्रेमी; रक्त परंद; सरल वृक्ष; तेल; मोम; प्रकाश, कानि; घनाता । -**कंदा-स्त्री०** बटनी नामक पौधा । -**च्छद्-पु०** वटवृक्ष । -**च्छदा-स्त्री०** बंरका पेड़ । -**जन-पु०** प्रिय व्यक्ति । -**जीरक-पु०** ईसबगोल । -**संदुल-पु०** माछी चावल । -**त्याग-पु०** प्रिय व्यक्तिका त्याग । -**दल-पु०** गुच्छकरज ।

-**दाह-पु०** मरु वृक्ष; देवदारु । -**दधि-वि०** दूधकी लगाकर देखनेवाला । -**निर्मल-पु०** कोसा । -**पत्रक-पु०** गुच्छकरज; आवर्तकी; घृतकरज; गजर तृण ।

-**पत्रा-स्त्री०** वेर; पालक; कादमरी । -**पर्णी-स्त्री०** मूवा; अश्विपर्णी । -**पिंडीतक-पु०** एक तरहका मदन वृक्ष । -**फला-स्त्री०** नाकुली । -**बीज-पु०** ईसबगोल ।

-**मज्जक-पु०** बादाम । -**सुत्र-पु०** एक तरहकी सूँट ।

-**राजि-पु०** एक तरहका माप । -**वर्ण-वि०** वमकीड़े

रंगका ।

स्निघा-स्त्री० [सं०] मध्या; मेदा; चिकित्त ।

स्नीह-वि० [सं०] कोमल, मृदुल; अनुरक्त ।

स्नीहा-स्त्री० [सं०] नाकका मल, रेंद ।

स्तु-स्त्री० [सं०] दे० 'स्नायु' ।

स्तुक्(ह)-स्त्री० [सं०] स्तुही, धूँड़ । वि० बमन करने-वाला । **च्छद्-पु०** क्षीरकंदुकी वृक्ष ।

स्तुत-वि० [सं०] स्तुति, रिमा हुआ ।

स्तुपा-स्त्री० [सं०] पुत्रवधू; धूँड़ । -**श-वि०** पुत्रवधूने

अवैध संबंध रखनेवाला ।

स्तुहा, स्तुहि, स्तुही-स्त्री० [सं०] धूँड़ । -**क्षीर-पु०** धूँड़का दूध । -**बीज-पु०** धूँड़का बीज ।

स्नेह-वि० [सं०] नहलाने योग्य ।

स्नेह-पु० [सं०] प्रेम, सुहृत्त्वतः कोमलता; दयालुता; तेल; मलाई आदि चिकने पदार्थ; वसा, मेला आदि

शरीरके रमवाले पदार्थ; आर्द्रता; एक राग । -**कर-पु०** शाक वृक्ष । -**कसा(स्)-वि०** प्रेम, प्यार करनेवाला ।

-**कुंभ, घट-पु०** तेल रखनेका औंदा आदि । -**केसरी(रिन्)-पु०** परंद । -**गर्भ-पु०** तिल । -**गुणित-वि०** प्रेमविशिष्ट । -**गृह-वि०** प्रेमके कारण त्रिमका दिख

भारी हो।—**प्री-स्त्री-स्त्री** एक पोषा।—**स्नेह-पुं** प्रेममें
अंतर पचना।—**हिद(प)-विं** तेल न पसंद करने-
वाला।—**पक-विं** तेलमें तला हुआ।—**पात्र-पुं**
प्रेमका पात्र, व्यापार व्यक्ति; तेलका बरतन।—**पान-पुं**
दवाके रूपमें तेल पीना।—**पिंडीतक-पुं** मैनफल।
—**पूर-पुं** तिल।—**प्रकृति-स्त्री-पुं** प्रेम।—**प्रसर-**
प्रकष-पुं प्रेमका प्रवाह।—**प्रिय-पुं** दीपक। विं
जिसे तेल अधिक प्रिय हो।—**फल-पुं** तिल।—**बंध-**
पुं प्रेमका बंधन।—**बद्ध-विं** प्रेमवृत्ति में बंधा हुआ।
—**बीज-पुं** विरोधी।—**भंग-पुं** प्रेमका भंग हो
जाना।—**भांड-पुं** तेल रखनेका बरतन।—**भू-पुं**
इच्छा।—**भूमि-स्त्री-पुं** तेल, बसा आदि देनेवाले पदार्थ;
प्रेमकी वस्तु।—**भुल्य-पुं** तेल।—**रंग-पुं** तिल।
—**रसन-पुं** मुख।—**रेकभू-पुं** चंद्रमा।—**बर-पुं**
बसा।—**बर्ति-स्त्री-पुं** बोझका एक रोग।—**बर्ति-स्त्री-पुं**
तेलका दमिमा।—**बिह-पुं** देवदाह।—**विमर्दित-विं**
जिसके शरीरमें तेल मला गया हो।—**व्यक्ति-स्त्री-पुं** प्रेम
प्रकट करना।—**संभाव-पुं** प्रेमालाप।—**संस्कृत-विं**
तेल का धीमे बनाया हुआ।—**सार-पुं** मज्जा। विं
जिसका मुख्य अंग तेल हो।

स्नेहक-विं [सं] प्रेम करनेवाला, प्रेमी; दयालु।

स्नेह-पुं [सं] तैलमर्दन; तैलयुक्त होना; उबटन;
चिकनाहट; इच्छा; मगलन; प्रेमाविष्ट होना; शिब।
विं तैलमर्दन करनेवाला; चिकनापन कानेवाला; नष्ट
करनेवाला।

स्नेहणीय-विं [सं] तेल लगाने योग्य; प्रेम करने
योग्य।

स्नेहक-विं [सं] प्रेमपूर्ण; कोमल हृदय।

स्नेहवर्ती-स्त्री [सं] मेढा नामक ओषधि।

स्नेहोक्त-पुं [सं] प्रेमका विह्वल।

स्नेहा(हृद)-पुं [सं] मित्र; चंद्रमा; एक नेत्र।

स्नेहाकुल-विं [सं] प्रेमसे विह्वल।

स्नेहाकृत-पुं [सं] प्रेमका भाव या अनुभूति।

स्नेहाक-विं [सं] तैलकृष; चिकनाया हुआ।

स्नेहाश; स्नेहासय-पुं [सं] दीपक।

स्नेहित-विं [सं] जिससे प्रेम किया गया हो; दयालु;
प्रेमी; व्याप किया हुआ; तेल लगाया हुआ। पुं मित्र,
प्रिय व्यक्ति।

स्नेही(हिन्)-विं [सं] प्रेमयुक्त; तैलयुक्त। पुं मित्र;
तेल मखनेवाला; चिकना।

स्नेह-पुं [सं] एक तरहका रोग; चंद्रमा।

स्नेहीयम-पुं [सं] तिलका तेल।

स्नेह-विं [सं] स्नेह, प्रेम करने योग्य; तेल लगाने,
चिकनाने योग्य।

स्नेह्य-पुं [सं] चिकनापन, तैलयुक्तता; कोमलता;
अनुभाविता।

स्नेहिक-विं [सं] चिकना; रोगमदार।

स्पर्क-पुं [सं] बहुसे छेदी और देशोंवाला एक मुका-
बम पदार्थ जो पानी ग्रहण कर लेता और ठानेपर
निकाल देता है, सुरदायादल।

स्पर्क-पुं [सं] कंपन; प्रस्फुरण, फटकना; गति।

स्पर्क-पुं [सं] कंपन; हिलना; विस्फुरण, फटकना;
अनकमें जीवका स्फुरण; तीव्र गति; एक दृष्ट।

स्पर्शित-विं [सं] कंघायमान, कंघेता हुआ; गतिशील
किया हुआ; गया हुआ। पुं स्पर्दन, फटकना; कंपन।

स्पर्शनी-स्त्री [सं] कतुमती स्त्री; बराबर दूष देने-
वाली प्राय।

स्पर्दी(विन्)-विं [सं] कंपन, स्फुरणयुक्त, हिलने या
कंपनेवाला।

स्पर्दोलिका-स्त्री [सं] झूलने हुए आगे-पीछे जानेकी
क्रिया (जैसे झूलनेवाला)।

स्पर्-पुं [सं] एक साम।

स्पर्शिता(तु)-विं [सं] कष्ट, दुःख देनेवाला (शत्रु,
रोगादि)।

स्पर्क-स्पर्क-विं [सं] होश करनेवाला; ईर्ष्या करने
वाला।

स्पर्शन, स्पर्शन-पुं [सं] होश; ईर्ष्या।

स्पर्शनीय स्पर्शनीय-विं [सं] स्पर्श करने योग्य;
अभिलषणीय।

स्पर्श, स्पर्श-स्त्री [सं] होश, प्रतियोगिता; ईर्ष्या,
होमला, अभिलाषा; की बराबरी; तुलनी।

स्पर्शी(विन्), स्पर्शी(धिन्)-विं [सं] होश, पति
योगिता करनेवाला; ईर्ष्यालु; घमडी।

स्पर्श-पुं [सं] छूना, स्पर्क, सपर्ध, मुदावल; सपर्ध-
ज्ञान; स्वनाका विषय; छूनेमें होनेवाला ज्ञान (नाप
आदिका); प्रभाव, रोग; 'क'में 'म' तकके वर्ण; दान; भेट-
वातु; आकाश, एक रातबंध, जासूस; ग्रहणकी गत्याका
आरंभ।—**कोण-पुं** परिधिमें किसी बिंदुपर किसी
सीधी रेखाका सपर्ध होनेमें बननेवाला कोण।—**क्रिष्ट-**
विं जिसका स्पर्श कष्टदायक हो।—**क्षम-विं** जिसका
स्पर्श किया जा सके, स्पर्शयोग्य।—**ज-विं** स्पर्शमें
उपलब्ध होनेवाला।—**जन्य-विं** दे० 'स्पर्शन'।—**तन्मात्र**
-पुं वह तत्त्व जिसका स्पर्शमें ज्ञान हो।—**दिशा-**
स्त्री ग्रहणमें छायाके स्पर्शकी दिशा।—**द्वेष-पुं** स्पर्श-
में तीव्र प्रभावित होनेका शृंग।—**द्वेष-पुं** पारम
पत्यर।—**ग्रहण-पुं** सोना।—**रसिक-विं** कामुक।
—**रेखा-स्त्री** परिधिमें किसी बिंदुकी छूनेवाली रेखा।
—**लज्जा-स्त्री** लज्जा।—**वक्ष-स्त्री** एक शोक देवी।
—**वर्ग-पुं** 'क'में 'म' तकके वर्ण।—**विहार-पुं** सुविधा-
जनक, सुखद अस्तित्व।—**बेध-विं** स्पर्शके द्वारा
जिसका ज्ञान हो।—**छुहा-स्त्री** शतशृली।—**संकोच-**
पुं लज्जा।—**संकोची(विन्)-पुं** शिवा।

संघाती(विन्)-विं संकामक। पुं एक रोगका
एक भेद।—**सुख-विं** जिसका स्पर्श आनंददायक हो।

स्वान-पुं ग्रहण आरंभ होनेके समयका स्नान।

स्पर्ध-पुं भेटक।—**ह्रावि-स्त्री** स्वनाके स्पर्शमें
संबेदन ग्रहण करनेकी शक्तिका नष्ट हो जाना।

स्पर्क-विं [सं] छूनेवाला; अनुभव करनेवाला।

स्पर्शन-विं [सं] छूनेवाला; हाथ लगानेवाला; प्रभावित
करनेवाला। पुं छूनेकी क्रिया; स्पर्शजन्य संबेदन;

स्पर्शद्विषः शानः बाधु ।

स्पर्शवक-पु० [म०] वह जो छुनेका काम करे, स्वचा ।

स्पर्शना-स्त्री० [म०] स्पर्श-शक्ति ।

स्पर्शनीच-वि० [सं०] छुने योग्य ।

स्पर्शनेत्रिय-स्त्री० [सं०] स्पर्शकी इन्द्रिय, स्वचा ।

स्पर्शबाधु(बन्धु)-वि० [सं०] जिसका स्पर्श ही मके; कोमल; छुनेमें आनन्ददायक ।

स्पर्शा-स्त्री० [सं०] कुलटा, पुंश्वन्त्री ।

स्पर्शाक्षयक-वि० [सं०] संक्रामक ।

स्पर्शाङ्ग-वि० [सं०] स्पर्शदानमें रहित, मवेदन-शून्य ।

स्पर्शार्जवा-स्त्री० [म०] जप्तरा ।

स्पर्शासन-पु० [सं०] एक देववर्ग ।

स्पर्शासह, स्पर्शासहिष्णु-वि० [सं०] जो स्पर्श सहन न कर सके ।

स्पर्शास्पर्श-पु० [म०] छुनछात, छुने वा न छुनेका विचार ।

स्पर्शिक-वि० [म०] जिसका स्पर्शमें शान हो । पु० बाधु ।

स्पर्शिता(तु)-वि० [म०] स्पर्श करनेवाला ।

स्पर्शा(शिशु)-वि० [सं०] छुनेवाला; प्रवेश करनेवाला । (ममासांतमें) ।

स्पर्शद्विष-स्त्री० [म०] स्पर्शका शान या यह शान प्राप्त करनेवाली इन्द्रिय ।

स्पर्शोवल-पु० [म०] पारम पावर ।

स्पर्शा(स्पर्श)-पु० [म०] शरीरकी अस्नव्यमनता, रोग । वि० स्पर्श करनेवाला ।

स्पर्श-पु० [म०] गुप्तवर, जायस; युद्ध; पुरस्कारके उद्देश्य-व तगनी जानबरोमें लड़नेवाला, रेमा युद्ध ।

स्पर्श-वि० [म०] जो माफ-नाफ देखा जा सके; व्यक्त; प्रत्यक्ष; बोधगम्य; मरुत, मोषा (बकका उलटा); वास्तविक, मध्य; सही; विकसित; माफ-साफ देखनेवाला ।

-कथय-पु० कथनका एक प्रकार जिसमें कथित वाक्य ज्योंका त्यों कहा जाना है ।-शर्मा-स्त्री० वह स्त्री जिसमें गममें चिह्न माफ देख पड़े ।-सारक-वि० साफ दिखाई देनेवाले तारोंवाला (आकाश) ।-प्रतिपक्षि-स्त्री० स्पष्ट ज्ञान वा निश्चय ।-भाषी(विष्)-, बक्ता(कृष्)-, वादी(विष्)-वि० माफ-साफ कहनेवाला ।

रपहाक्षर-वि० [सं०] जिसका अक्षरशः स्पष्ट उच्चारण किया गया हो ।

स्पष्टार्थ-वि० [सं०] जिसका अर्थ साफ, सुबोध हो । पु० साफ अर्थ ।

स्पष्टीकरण-पु० [सं०] किसी बातको सुबोध करके सम-ज्ञाना, स्पष्ट करना ।

स्पष्टीकृत-वि० [सं०] स्पष्ट किया हुआ ।

स्पष्टी-पु० [म०] गुप्तवर, भेदिया; खुलिया पुलिस ।

स्पष्टार्थ-वि० [म०] जिसका स्पर्शमें ज्ञान हो ।

स्फिरिट-स्त्री० [म०] आत्मा; प्रेतात्मा; यूसुम शरीर; साहस, जीवशक्ति; सुरासार, उग्र सुरा ।

स्फीकर-पु० [म०] बक्त; अर्सेबली, कौसिलका अध्यक्ष, व्यवस्थासमाका अध्यक्ष; लाई-समाका अध्यक्ष (मिटेन) ।

स्फीच-स्त्री० [म०] कथन, भाषण; वाक्शक्ति ।

स्फीच-स्त्री० [म०] गति, चाल ।

स्फुल्ल-स्त्री० [सं०] दे० 'वृक्षा' ।

स्फुल्ल-वि० [सं०] रक्षित; प्राप्त; विजित ।

स्फुल्ल-वि० [सं०] अपनेकी किसी चीजमें मुक्त करनेवाला, हटानेवाला; प्राप्त करनेवाला । स्त्री० एक तरहकी ईंट ।

स्फुल्ल-वि० [सं०] छुनेवाला; पहुँचनेवाला । पु० स्पर्श; संपर्क ।

स्फुल्ल-स्त्री० [सं०] बुद्धिगतातिनी ।

स्फुरी-स्त्री० [सं०] कटकारी ।

स्फुर्य-वि० [म०] छुने लायक; अधिकृत करने योग्य ।

स्फुर्या-स्त्री० [सं०] नौ मभिषाओमेंसे एक ।

स्फुट-वि० [म०] छुआ हुआ; प्रभावित; छूकर नापाक किया हुआ; उच्चारणायोगिक पूर्ण स्पर्शमें बना हुआ । पु० 'कृते' 'मृतके' बर्णोंके उच्चारणमें होनेवाला आभ्यन्तर प्रयत्न ।-मैथुन-वि० मैथुनके कारण जिसकी पवित्रता नष्ट हो गयी हो ।-रोदुनिका-स्त्री० कज्राळ ।

स्फुटक-पु० [सं०] अलिगमका एक प्रकार ।

स्फुटस्फुट-पु०, स्फुटस्फुटि-स्त्री० [सं०] गुआछून, स्पर्शास्पर्श, परस्पर स्पर्शन ।

स्फुटि-स्त्री० [म०] स्पर्श; संपर्क ।

स्फुटिका-स्त्री० [म०] शरीरके विभिन्न अंगोंका स्पर्श (प्राप्यघटनमें) ।

स्फुटी(टिप्प)-वि० [म०] स्पर्श करनेवाला, जिसमें स्पर्श किया है ।

स्फुटण-पु० [सं०] किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए इच्छा वा प्रयत्न करना ।

स्फुटणीय-वि० [म०] जिसमें लिए स्फुट की जाय, अभिलषणीय; ईर्ष्या करने योग्य; रमणीय, मोहक ।-शोभ-वि० जिसका सौंदर्य ईर्ष्याका कारण हो ।

स्फुटवालु-वि० [सं०] इच्छा करनेवाला, अभिलाषी; ईर्ष्यालु ।

स्फुटा-स्त्री० [म०] अभिलाषा; धर्मानुकूल पदार्थकी प्राप्ति की कामना (न्याय); ईर्ष्या ।

स्फुटालु-वि० [म०] दे० 'स्फुटवालु' ।

स्फुटित-वि० [म०] जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गयी हो, जो ईर्ष्याका विषय हो ।

स्फुटी(टिप्प)-वि० [म०] ईर्ष्यालु, अभिलाषी; ईर्ष्या करनेवाला ।

स्फुल्ल-वि० [सं०] बांछनीय । पु० विजौरी नौक ।

स्फेक-वि० [म०] विशेष, खास; अन्वधारण; जो विशेष व्यक्ति या अवसरके निमित्त हो । स्त्री० विशेष व्यक्ति वा कार्यके लिए चलनेवाली ड्रेन ।

स्फेकलिट-पु० [म०] विशेष ।

स्फेक्य-वि० [सं०] छुने, हाथ लगाने योग्य; जिसका स्पर्शमें ज्ञान प्राप्त किया जाय ; पु० स्पर्श ।

स्फेका(टिप्प)-वि० [सं०] छुनेवाला । पु० रोग ।

स्फिया-स्त्री० [म०] स्थिति-स्थापक गुणसे युक्त लोहेकी कमान ।-द्वार-वि० कमानोदार ।

स्फिचुमलिक्रम-पु० [म०] प्रेरणा; अभ्यात्मविधा ।

स्फुट-पु० [म०] अस्मिन् वा संधिर्माग ठीक करनेके

लिप उतपर बाँधी जानेवाली ककनीकी पट्टी ।
स्फट-पु० [सं०] 'फट'-फटकी भावि; सौंपका फन; रवा ।
स्फटा-की० [सं०] सौंपका फन; फिटकिरी ।
स्फटिक-पु० [सं०] बिलौर; खूबकांत मणि; कपूर; फिटकिरी । -**कुम्भ-पु०** बिलौरकी बोवार । -**पात्र-पु०** बिलौरका पात्र । -**प्रभ-वि०** स्फटिक जैसा चमकीला; पारदर्शी । -**मिष्टि-की०** दे० 'स्फटिककुम्भ' । -**मणि-पु०**, -**शिला-की०** बिलौर पत्थर । -**बिच-पु०** बाह्य मोच नामक बिच । -**सिखरी(रिक्)-पु०** कैलास पर्वत । -**स्फंस-पु०** बिलौरका खंवा । -**हर्म्य-पु०** बिलौरका बना हुआ मासाद ।
स्फटिका-की० [सं०] फिटकिरी; कपूर ।
स्फटिकाव्या-की० [सं०] फिटकिरी ।
स्फटिकाकल-पु० [सं०] कैलास पर्वत ।
स्फटिकास्मा(लम्ब)-पु० [सं०] बिलौर ।
स्फटिकाग्नि-पु० [सं०] कैलास पर्वत । -**मिष-पु०** कपूर ।
स्फटिकाग्र-पु० [सं०] कपूर ।
स्फटिकारि, स्फटिकारिका, स्फटिकारी-की० [सं०] फिटकिरी ।
स्फटिकाव्या(श्मन्)-पु० [सं०] बिलौर पत्थर ।
स्फटिकी-की० [सं०] फिटकिरी ।
स्फटिकोपम-पु० [सं०] कपूर; जन्मा धातु; चंद्रकांत मणि ।
स्फटिकोपल-पु० [सं०] बिलौर (?) ।
स्फटित-वि० [सं०] बिटोण ।
स्फटी-की० [सं०] फिटकिरी ।
स्फटन-पु० [सं०] कौपना; फटकना; प्रवेश करना ।
स्फटाक-पु० [सं०] बिलौर; जलकी बूँद ।
स्फटाकी-की० [सं०] फिटकिरी ।
स्फटिक-पु० [सं०] स्फटिक । वि० बिलौरका । -**सौष-पु०** बिलौरनिर्मित मासाद ।
स्फाटिकोपल-पु० [सं०] बिलौर ।
स्फाटित-वि० [सं०] फाड़ा हुआ, बिटोर्ण किया हुआ ।
स्फाटीक-पु० [सं०] बिलौर ।
स्फात-वि० [सं०] बड़ा हुआ, परिबृद्ध; फूला हुआ ।
स्फाति-की० [सं०] बुझि; बढती ।
स्फार-वि० [सं०] बड़ा; बड़ा हुआ; विकट; बना; कँचा (स्तर); कैला हुआ; बहुत, प्रचुर । पु० बुझि; बढा; आघात; (लोहेमें पड़ी हुई) फुटकी; कंपन, फटकना; प्राचुर्य; व्यक्त होना; टँकोर; अर्जुन वा इम तरह निकली हुई कोई चीज ।
स्फारण-पु० [सं०] स्फुरण, कंपन ।
स्फारित-वि० [सं०] फैलाया हुआ ।
स्फाल-पु० [सं०] कंपन, स्फुरण ।
स्फालन-पु० [सं०] शिलाना, कौपाना; फटफटाना; थप-थपाना; कंपन ।
स्फिक्(व)-की० [सं०] निरव, चूतक । -**खाव-पु०** एक रोग ।
स्फिक्वातक, स्फिक्वातयक-पु० [सं०] कटफल ।

स्फिक्वातक-वि० [सं०] चूतकतक पट्टे चमकीला ।
स्फिर-वि० [सं०] विशाल; बहुत, प्रचुर ।
स्फीत-वि० [सं०] बड़ा हुआ; बना; मोटा; फूला हुआ; सफल; सभृद्ध; बहुत अधिक; प्रसन्न; शुद्ध; पैतृक रोगसे ग्रस्त । -**निर्लंका-की०** निरंतिनी ।
स्फीति-की० [सं०] बुझि; प्राचुर्य; सभृद्धि, जम्बुद्वीप ।
स्फुट-वि० [सं०] फटा हुआ; खिला हुआ, विकसित, व्यक्त; प्रकट; स्पष्ट; प्रवेत; चमकीला; प्रथित; कैला हुआ; अत्युच्च (स्तर); प्रत्यक्ष, सत्य; असाधारण;... दे० तुक या पूर्ण; संशोधित; फुटकर । पु० सौंपका फन । -**चंद्र-तारक-वि०** चंद्रमा ताराओंसे प्रकाशित । -**तार-वि०** जिसमें तारे स्पष्ट दिखाई देते हों । -**त्वक्-की०** महाज्मोतिष्मती । -**ध्वनि-पु०** सफेद पंडुक । -**पुंडरीक-पु०** (हृदयका) खिला हुआ कमल । -**पौरुष-वि०** जिसने अपनी शक्ति प्रकट की है । -**फल-पु०** तुंडुरु, त्रिभुजका क्षेत्रफल; किसी गणितका फल । -**फेन-शक्ति-वि०** जो फेनराशिमें चमकीला देख पड़ता हो । -**बंधनी-की०** दे० 'स्फुटवल्गनी' । -**ईशिणी-की०** कलाविशेष । -**वक्ता(वन्)-वि०** स्पष्टवक्ता । -**वक्कलि-की०** जोतिर्मानी । -**सूर्यमति-की०** सूर्यकी स्पष्ट चाल ।
स्फुटन-पु० [सं०] फटना, बिटोर्ण होना; विकसित होना, (गोशैका) चटकना ।
स्फुटा-की० [सं०] सौंपका फन ।
स्फुटि, स्फुटी-की० [सं०] बिटोर्ण, एक फल, फूट ।
स्फुटिका-की० [सं०] छोटा टुकड़ा ।
स्फुटित-वि० [सं०] फटा हुआ; बिगड़ा हुआ; स्पष्ट किया हुआ; नष्ट किया हुआ; परिश्रमिण । -**कौटिल्यन-प०** अश्विभंगका एक प्रकार । -**चरण-वि०** निमके पैर फेले हों ।
स्फुटीकरण-पु० [सं०] प्रकट, स्पष्ट करना; ठीक करना, सुधारना ।
स्फुत्तर-पु० [सं०] आय ।
स्फुत्कार-पु० [सं०] फुफकार ।
स्फुर-पु० [सं०] स्फुरण, कंपन; बुझि, डाल; 'फुर'-'फुर' करना ।
स्फुरण-पु० [सं०] कौपना, शिलाना फटकना (अग) । फुटकर व्यक्त होना; चमकना; मनमें एकाएक जाना ।
स्फुरणा-की० [सं०] अंगोंका फटकना ।
स्फुरति-की० दे० 'स्फुति' ।
स्फुरदुष्का-की० [सं०] उल्कापिंड ।
स्फुरदोष्ट, स्फुरदोष्टक-वि० [सं०] जिसके ओठ फट-कते हों ।
स्फुरद्विच-की० [सं०] कैली हुई मंथ ।
स्फुरवा-ज० कि० शिलाना; बजकना; व्यक्त होना; प्रकाशित होना ।
स्फुरित-वि० [सं०] स्फुरण, स्पंदनयुक्त, कंपित; अस्ति; चमकता हुआ; बड़ा हुआ; व्यक्त, प्रकट । पु० स्फुरण, कंपन; मातृसिद्ध उच्च-पुण्य; चमक; कान्ति; एकाएक प्रकट होना ।

स्फूर्तना, स्फूर्तना-**स्त्री** स्फूर्ति; किसी बातका अचानक ध्यान होना; स्मरण; देख पड़ना; प्रकाशित होना।
स्फुर-**पुं** [सं०] लेना, तबू।-**मंजरी**-**स्त्री** डुलडुल।
स्फुरन-**पुं** [सं०] कंपन, स्फुरण।
स्फुरिग-**पुं** [सं०] अग्निकण, चिनकारी।
स्फुरिगक-**पुं** [सं०] अधिकण।
स्फुरिगिनी-**स्त्री** [सं०] दे० 'स्फुरिग'।
स्फुरिगिनी-**स्त्री** [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।
स्फुरिगी (गिर)-**वि०** [सं०] स्फुरिगीवाला, अग्निसंज्ञित चिनगारियाँ निकलती हैं।
स्फुरित-**वि०** [सं०] फैलाया हुआ; भूला हुआ।
स्फूर्ज-**पुं** [सं०] बादलोंकी गड़गड़ाहट; झड़का भञ्ज; एकाएक स्फोट होना; नायकनायिकाका प्रथम मिलन जिसमें आनंदके साथ भय मिला होता है; स्फूर्जक नामक पौधा; एक राक्षस।
स्फूर्जक-**पुं** [सं०] एक वृक्ष, तिदुक, तेंदू; सोनापाटा।
स्फूर्जु-**पुं** [सं०] विजलीकी गड़गड़ाहट; एक नाग, चीकई।
स्फूर्जन-**पुं** [सं०] तिदुक, तेंदू; गड़गड़ाहट; स्फोट।
स्फूर्जित-**वि०** [सं०] गरजित; गरजनेवाला। **पुं** बादलोंकी गड़गड़ाहट।
स्फूर्ण-**वि०** [सं०] दे० 'स्फूर्णित'; गरजा हुआ।
स्फूर्त-**वि०** [सं०] कपित; जिसकी अचानक स्मृति हुई हो।
स्फूर्ति-**स्त्री** [सं०] कपन, स्फुरण; उछलना; आनन्दिक आवेश, उत्तेजना; डींग, धक्का; विकसित होना; व्यक्त, प्रकट होना; मनमें प्रकट होना; काव्यकी प्रेरणा; तेजी, फुरती।-**कारक**-**वि०** फुरती लातेवाला।
स्फूर्तिमाद (अव)-**वि०** [सं०] कपनयुक्त; कोमलचित।
पुं शिवका आराधक।
स्फोट-**पुं** [सं०] फटकर निकलना; फैलना; (किसी बातका) प्रकट हो जाना; फोड़ना; अर्थात्; डकड़ना, छोटा खंड; फटना; शब्दके अणुसे मनमें उपज होनेवाला भाव; नित्य शब्द (मीमांसा)।-**बीजक**,-**हेतुक**-**पुं** भिलाई।-**लता**-**स्त्री** एक लता, वनफोड़।-**बाद**-**पुं** नित्य शब्दकी संसारका कारण माननेका सिद्धांत।
स्फोटक-**पुं** [सं०] कीड़ा; कुत्ती; अलातक। **वि०** फट पड़नेवाला (बम, आदि)।
स्फोटन-**पुं** [सं०] काटना, विदारण करना; व्यक्त करना, अचानक फट पड़ना; परस्पर मिले हुए व्यक्तियोंका अलग-अलग उच्चारण; अनाज फटकना; उँगलियों चटकाना; प्रणवीषा; शिव; (हाथ) हिलाना।
स्फोटनी-**स्त्री** [सं०] बरना।
स्फोटा-**स्त्री** [सं०] सौंपका फन; हाथ हिलाना; लफेट अनंतमूल।
स्फोटावन-**पुं** [सं०] मुनिविशेष।
स्फोटिक-**पुं** [सं०] पत्थर, जमीन तोड़ना, फोड़ना।
स्फोटिका-**स्त्री** [सं०] कीड़ा; हाथुथिका नामक पक्षी।
स्फोटिल-**वि०** [सं०] जिसका स्फोट किया गया हो; प्रकटित। **वि०** फटना।-**नवन**-**वि०** जिसकी आँखें फोड़ दी गयी हैं।

स्फोटिनी-**स्त्री** [सं०] कर्कटी, कम्भी।
स्फोरण-**पुं** [सं०] दे० 'स्फुरण'।
स्मदस, **कीवड** **मार्वाक**-**पुं** दक्षिण अफ्रीकाके प्रधान मंत्री। वे एक प्रसिद्ध मेनारपति तथा राजनेता थे। (१८७०-१९५०)।
स्मय-**पुं** [सं०] आश्चर्य; गर्व, वमंड; हान।-**दान**-**पुं** दमयय दान।-**नुषि**-**स्त्री** गर्व चूर करना।
स्मयन-**पुं** [सं०] मंद हास, मुसकान।
स्मयी (विष्)-**वि०** [सं०] मंद हासयुक्त, मुसकानेवाला।
स्मर-**वि०** [सं०] स्मरण करनेवाला। **पुं** स्मृति, स्मरण; प्रेम, प्रणय; कामदेव; एक राग।-**कथा**-**स्त्री** प्रणयालाप, प्रेमवार्ता।-**कर्म (र)**-**पुं** कामकृतापूर्ण ध्येयहार।
कार-**वि०** कामोदीपक।-**कूपक**-**पुं**,-**कूपिका**-**स्त्री** मग।-**गुह**-**पुं** विष्णु।-**गृह**-**पुं** मग।-**चंद्र**,-**चक्र**-**पुं** एक रतिवध।-**छत्र**-**पुं** भग-शिखिका।-**ज्वर**-**पुं** कामज्वर, कामजन्य ताप।-**क्ष्मा**-**स्त्री** शरीरकी कामजन्य अवस्था (असौष्ठव, ताप, पांडुता, कुशाग, अस्थि, अधृति, अनालन, तन्मयता, उन्माद जोर मरण)।-**दहन**-**पुं** शिव।-**हाथी (विष्)**,
श्रीपन-**वि०** कामोदीपक।-**दुर्मद**-**वि०** प्रेमप्रसक्त।-**ज्वज**-**पुं** एक बाध (संगीत); पुरुषेन्द्रिय; भय; एक पौराणिक मत्स्य (जो कामदेवका चिह्न है)।-**ज्वला**-**स्त्री** नौदनी रात।-**जिपुण**-**वि०** कामकलायें प्रवीण।
प्रीकित-**वि०** कामदेवका सहाय्य हुआ।-**प्रीचा**-**स्त्री** रति।-**बाणपंक्ति**-**स्त्री** कामदेवके पाँच बाणोंका समूह।-**भासित**-**वि०** कामोदीप, कामतप्त।-**भू**-**वि०** कामज।-**मंदिर**-**पुं** योनि।-**मुद (र)**-**पुं** शिव।-**मोह**-**पुं** कामजन्य संज्ञाहीनता।-**रुद्ध (ज)**-**स्त्री** कामजन्य रोग।-**लेख**-**पुं** प्रेमपत्र।-**लेखनी**-**स्त्री** आरिका, मैना।-**बधू**-**स्त्री** कामदेवकी स्त्री।-**बल्लभ**-**पुं** अनिरुद्ध।-**वीथिका**-**स्त्री** वेष्टा।-**वृद्धि**-**स्त्री** एक पौधा (जिसका बीज कामोदीपक होता है)।-**क्षत्रु**-**पुं** शिव।-**शबर**-**पुं** बर्बर प्रेम।-**शर**-**पुं** कामदेवके बाण।-**शासन**-**पुं** शिव।-**शास्त्र**-**पुं** कामशास्त्र।-**सख**-**पुं** कतुराज; चंद्रमा।-**सह**-**वि०** कामोदीपन करनेमें समर्थ।-**स्तंभ**-**पुं** शिखर, पुरुषेन्द्रिय।-**स्मरा**-**स्त्री** सेवती।-**स्मयी**-**पुं** गर्दभ।-**हर**-**पुं** शिव।
स्मरण-**पुं** [सं०] स्मृति, याद; चिंता; स्मृतिशक्ति; स्मृतिके आधारपर हस्तारित होना; देवताके नामका जप (मत्तिका एक प्रकार); खेदपूर्ण स्मृति; एक अर्थालंकार जहाँ पहले देखी हुई किसी वस्तुके समान अन्य वस्तुके देखने, मनमेंसे उसका स्मरण हो आवे।-**पत्र**,-**पत्रक**-**पुं** याद दिलानेके लिए लिखा हुआ पत्र।-**पदवी**-**स्त्री** वस्तु।-**भू**-**पुं** कामदेव।-**शक्ति**-**स्त्री** याद रखनेकी शक्ति।
स्मरणापवर्तपर्यक-**पुं** [सं०] कच्छप।
स्मरणासक्ति-**स्त्री** [सं०] ईश्वरके मरणमें होनेवाली आसक्ति।

स्मरणी-खी० [स०] जप करनेकी माला, मुमिरनी ।

स्मरणीय-वि० [स०] स्मरण करने योग्य ।

स्मरणा-स० क्रि० याद करना ।

स्मरानुक्त-पु० [स०] नक्ष; प्रणवी, कामानुर व्यक्तिः
प्लिग (?) ।

स्मराच-वि० [स०] कामाध ।

स्मराकुल, स्मराकुलित-वि० [स०] कामरोगमें ग्रस्त,
कामविह्वल ।

स्मराकृष्ट-वि० [स०] प्रेमाभिभूत ।

स्मरागार-पु० [स०] दे० 'स्मरगृह' ।

स्मरानुर-वि० [स०] कामानुर ।

स्मराधिवास-पु० [स०] अशोक वृक्ष ।

स्मराश्र-पु० [स०] एक तरहका आम, राजाश्र ।

स्मरारि-पु० [स०] शिव ।

स्मरार्त-वि० [स०] काममग्न ।

स्मरासव-पु० [स०] लाला रस ।

स्मरोन्मुक्त-वि० [स०] कामानुर ।

स्मरोदीपक-वि० [स०] कामोदीपक । पु० एक तरहका
केलतैल ।

स्मरोन्माद-पु० [स०] काममद ।

स्मरोपकरण-पु० [स०] मुगधित द्रव्य आदि काम-सम्बन्धी
वस्तुएँ ।

स्मर्य-पु० दे० 'स्मरण' ।

स्मर्यन्-वि० [स०] स्मरणके योग्य; जिसको केवल स्मृति
योग रह गयी हो ।

स्मर्यो(र्तु)-वि० [स०] याद करने, रखनेवाला । पु०
आचार्य ।

स्मर्य-वि० [स०] स्मरणीय ।

स्मशान, स्मशान-पु० दे० 'ब्रमशान' ।

स्मारक-वि० [स०] याद दिलानेवाला । पु० किसीका
स्मृति-रक्षाके अभिप्रायमें संस्थापित स्तम्भा, भवन, स्तूप
आदि ।

स्मारण-पु० [स०] याद दिखाना; फिरमें गिनना, गिनकी
गौच करना ।

स्मारणी-खी० [स०] माझी लता ।

स्मारित-पु० [स०] स्मरण होनेपर वादी द्वारा स्वपक्षका
समर्थन करनेके लिए प्रमाहित साक्षी । वि० स्मरण दिलाया
हुआ ।

स्मारी(रिन्)-वि० [स०] स्मरण रखनेवाला, याद
दिलानेवाला ।

स्मार्त-वि० [स०] स्मृति-सम्बन्धी; जो स्मृतिमें हो; स्मृतिके
आधारपर बना हुआ, स्मृतिविहित, वैध; स्मृतिकी मानने-
वाला; गृह-सम्बन्धी (जैसे अग्नि) । पु० स्मृतिविहित कर्म;
स्मृतियोंके अनुसार चलनेवाला एक संप्रदाय; इस संप्रदायका
अनुयायी; स्मृतियोंका शाला ब्राह्मण । -कर्म(र्तु)-
पु० स्मृतिविहित कर्म । -काण्ड-पु० वह काण्ड जवतक
स्मृति बनी रह सके । (कड़के मतमें मौ वगे) । -पंडित
-पु० स्मृतियोंका शाला ब्राह्मण ।

स्मातिक-वि० [स०] जो स्मृतिशास्त्रपर आधारित हो ।

स्मार्य-वि० [स०] स्मरण करने योग्य ।

स्माक काज कोर्ट-पु० [स०] छोटी अदालत, अदालत
खलीफा ।

स्मित-पु० [स०] मर हास, मुसकान । वि० सिला हुआ;
मुसकाता हुआ । -हसि-खी० हँसमुख या सुंदर खी ।

-पूर्व-वि० मदहामुक्त । -मुख-वि० हँसमुख ।

-वाक्(च)-वि० मुसकताहटके साथ बोलनेवाला ।

-शाखी(रिन्)-वि० मदहामुक्त ।

स्मिति-खी० [स०] मदहाम; हास ।

स्मितोञ्जव-वि० [स०] हँसते हुए (नेत्र) ।

स्मृत-वि० [स०] स्मरण किया हुआ; संलक्षित; स्मृति
विहित । ए० एक प्रजापति; सरण, बाद । -मान-वि०
जिसका केवल स्मरण किया गया हो ।

स्मृति-खी० [स०] स्मरण, याद; चित्तम; एक संचार।
भाव; धर्मशास्त्र; अद्वारहकी सत्त्वा; एक वृत्त; इच्छा ।

-कार-पु० स्मृतिका निर्माता । -कारक-वि० स्मरण-
शक्ति बढ़ानेवाला । पु० ऐसी दवा । -कारी(रिन्)-
वि० स्मृति आश्रित करनेवाला । -जात-पु० कामदेव ।

-लक्ष-पु० धर्मशास्त्र । -द-वि० स्मृति पट करनेवाला ।

-पद्य, -वर्म(र्तु)-पु० स्मृतिका विषय । -पाठक-
पु० धर्मशास्त्री, विधानज्ञ व्यक्ति । -प्रत्यवमर्श-पु०

स्मृति बनाये रखनेकी शक्ति । -भू-पु० कामदेव ।
अंश-पु० स्मृतिका नष्ट हो जाना, याद न रहना; ज्ञान

न रहना । -शेष, -क्षेप-पु० क्षणिक विस्मरण ।

-वर्चनी-खी० माझी । -विद-वि० धर्मशास्त्रज्ञ ।

-विनय-पु० कर्त्तव्यका स्मरण दिलाते हुए भर्त्सना;
करना । -विभ्रम-पु० स्पष्ट स्मरण न होना; स्मृति

भ्रम । -विरह-वि० शास्त्रविरह । -शास्त्र-पु० धर्म
शास्त्र । -शेष-वि० जिसकी केवल स्मृति रह गयी हो।

गन, गृह । -हौधियर-पु० स्मरणशक्तिकी दुर्बलता ।

-संस्कार-पु० स्मृतिजन्य छाप । -स्मर्य-वि० धर्म
शास्त्रविहित । -साध्व-वि० शास्त्र द्वारा प्रमाणित करने

योग्य । -मिद-वि० शास्त्रविहित । -हिला-आ दख-
पुष्पी । -हीन-वि० जो स्मरण न रख सके, विस्मरण

शील । -हेतु-पु० स्मृतिका कारण; मनपर पड़ी दृष्टि
छाप ।

स्मृतिक-पु० [स०] जल ।

स्मृतिमान्(मान)-वि० [स०] स्मृतिविशिष्ट; चिन्तावान ।

स्मृत्यपेत-वि० [स०] विस्मृत; शास्त्रविरह ।

स्मृत्युक्त-वि० [स०] शास्त्रविहित ।

स्मेर-वि० [स०] मदहामसयुक्त; विक्रान्त; गंभीर; प्रत्यक्ष ।

-मुख-वि० हँसमुख । -विकिर-पु० मद्य ।

स्वयं-पु० [स०] रिसना, चूना, टपकना, लान; प्रवाहित
होना; पसीना निकलना; गलना, पानी होना; एक नैव-

रोम; चंद्रमा; तीव्र गति; रस ।

स्वयंक-पु० [स०] तैदृका पेश ।

स्वयं-वि० [स०] ऐजीस जानेवाला (जैसे रथ); बहने-
वाला; रिसनेवाला; गलनेवाला । पु० रथ; युद्धरथ; एक

जलमय; वायु; गत उत्सर्पिकी २३ वे अर्द्ध; तीव्र गति
वा प्रवाह; लान; जल; तिमिर वृक्ष; तिष्ठक वृक्ष । -हुम

-पु० तिमिर वृक्ष (लकड़ीमें पहिया बनानेके कारण) ।

-इहनि-स्त्री० रथके चलनेकी आवाज ।

स्वंधवाक्य-वि० [सं०] रथारूढ़ ।

स्वंधवारोह-पु० [म०] रथारु चढकर बुद्ध करनेवाला योद्धा, रथी ।

स्वंधवाह्वय-पु० [सं०] दे० 'स्यन्दनद्रुम' ।

स्वंधवि-पु० [सं०] तिनिष्ठ वृक्ष ।

स्वंधनिका-स्त्री० [सं०] लारकी बूँद; सोता, छोटी नदी ।

स्वंधनी-स्त्री० [म०] लार, लाला; भ्रूजनिका ।

स्वंधिता(तु)-वि० [म०] तेज दौड़नेवाला ।

स्वंधिनी-स्त्री० [सं०] लाला; एक माथ टो बछड़े डेनेवाली गाय ।

स्वंधी(विभ्र)-वि० [म०] स्राव करनेवाला, रिमनेवाला; प्रवाहित होनेवाला; तेज जानेवाला ।

स्वंधीलिका-स्त्री० [सं०] झूलनेकी क्रिया या झुल्ला ।

स्वंध-पु० [म०] तेज गति, वेग ।

स्वंध-वि० [सं०] रिमा हुआ, टपका हुआ; रिमनेवाला (जलादि) ।

स्वमंतक-पु० [म०] एक प्रसिद्ध मणि (जो मन्त्रात्रित्तको सुरेश और अनन्त कृष्णको जन्मबान्से मिला था । कहा जाता है कि हमने रोज मोना देने और संस्कारों में रखा करनेकी शक्ति थी) ।

स्वमंतपंचक-पु० [म०] एक तीर्थ (कहा जाता है कि यहाँ परछुरामने पितरोंका तपन रक्तसे किया था) ।

स्वमिक-पु० [म०] बौली, बल्मीक; एक वृक्ष; बादल; ममय ।

स्वमीक-पु० [सं०] बौली, बल्मीक; ममय; बादल; जल; एक प्राचीन राजवंश ।

स्वमीका-स्त्री० [म०] नीलका पौधा; एक कीड़ा ।

स्वाह्-अ० [म०] कदाचित्, साधत ।

स्वाहाद्-पु० [म०] जनोंका संशयवाद, अनेकातवाद ।

स्वाहादिक, स्वाहादी(विभ्र)-पु० [म०] स्वाहादका अनुयायी, जैन ।

स्वान-वि० दे० 'स्वाना' । -प, -पत, -पन-पु० चतुरता, चालाकी ।

स्वाना-वि० चतुर, होशियार; धूर्त; शक्ति, प्रौढ़ । पु० बहादुरा; ओश्रा; नरदार, मुखिया; हकीम । -खारी-स्त्री० गौँबके मुखियाको मिलनेवाला रसम । -वन-पु० शक्ति होनेकी अवस्था, युवावस्था; होशियारी, चालाकी; धूर्तता ।

स्वापा-पु० दे० 'सिवापा' । झु० -छाना-बकना-कदन-कंदन होना; झुनसान, उजाल होना ।

स्वावास-अ० दे० 'स्वावास' ।

स्वाम-पु० वरमाके पूरव स्थित एक देश; * दे० 'स्वाम' । * वि० दे० 'स्वाम' । -करन-पु० दे० 'स्वामकर्ण' ।

-ता*, -लाई*-स्त्री० दे० 'स्वामता' ।

स्वामक-पु० बहुदेवके एक भाई, स्वामक ।

स्वामक-वि० दे० 'स्वामल' । -ता-स्त्री० स्वामलता, लोचनपन ।

स्वामक्षिया-पु० कृष्ण ।

स्वामा-स्त्री० दे० 'स्वामा' ।

स्वार-पु० गीदह, सिवार । -कॉटा-पु० सत्यावामी ।

-जन-पु० अरथोक आदमी । -पन-पु० मृगालकी-सी आदत । -काटी-स्त्री० अमलताम ।

स्वारी-स्त्री० मृगाली, गीदही; † कातिक-भगइनमें तैयार होनेवाली फसल, खरीफ (बुँदेल) ।

स्वाह-पु० स्वार; [सं०] साला, दयाल । -कॉटा-पु० [हि०] स्वारकॉटा ।

स्वाहक-पु० [सं०] साला ।

स्वाहिका-स्त्री० [सं०] पत्नीकी छोटी बहन, साली ।

स्वाहिया-पु० गीदह, सिवार ।

स्वाली-स्त्री० [सं०] साली ।

स्वाली-पु० ओदनी, चादर, साहू ।

स्वावाह-पु० सावज, शिकार ।

स्वाह-वि० [का०] दे० 'सिवाह' (समाप्त भी) । -कॉटा-पु० एक कैंटीका पौधा । -गोखर-पु० दे० 'सिवाह-गोश' । -खीर-पु० काला जोरा । -ताह-पु० वह घोड़ा जिसका नाख काला हो (यह अशुभ माना जाता है) ।

स्वाहा-पु० दे० 'मियाहा' ।

स्वाही-स्त्री० साही नामक जानवर; [का०] कालापन; अंधेरा; कालिख; काजल; रोजनार्थ; दाग; दोष, ऐह ।

-कट-पु० सोस्ता । -खान-पु० दबात । -साह-पु० स्वाही बनानेवाला । -सोख-पु० सोखा, 'स्लाटिंग पेर' । झु० -जाना-उम्र डलना । -खीरना-स्वाही छा जाना । -घो जाना-धूमिल या दोष दूर होना । -छगना-कालिख पुत जाना, बदनाम होना ।

-छगाना-सुँह काला करना, बदनाम करना ।

स्वुबक-पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद ।

स्वू-स्त्री० [सं०] सूत, धागा ।

स्वूत-वि० [सं०] सिया हुआ; हुआ हुआ; मिटा हुआ । पु० मोटे कपड़ेकी बैली; बीरा ।

स्वूति-स्त्री० [सं०] मिलाई; चुनाव; सगन; बैला ।

स्वूत्व-पु० [सं०] प्रसन्नता, आनंद ।

स्वून-पु० [सं०] बीरा, बैला; प्रकाश-रश्मि, किरण; सूर्य ।

स्वूना-स्त्री० [सं०] किरण; कमरबंद ।

स्वूम-पु० [सं०] जल; किरण; आनंद ।

स्वूमक-पु० [सं०] आनंद ।

स्वी, स्वी-अ० सक्षित; नजदीक, पास ।

स्वोत-पु० [सं०] बीरा, बैला ।

स्वोती-स्त्री० दे० 'स्वेती' ।

स्वोन-वि० [सं०] सुंदर; प्रिय; झुम, मंगलकारक । पु० किरण; सूर्य; बीरा, बैला; आनंद ।

स्वोनाक-पु० [सं०] एक वृक्ष, सोनापाड़ा ।

स्वोनाग-पु० स्वोनाक ।

स्वंग-पु० दे० 'श्रंग' ।

स्वंग-पु० [सं०] पतन; क्षयन, सोना ।

स्वंग-वि० [सं०] दस्तावर, रेजक; ढीला करनेवाला । पु० गिरने या गिरनेकी क्रिया; ढीला करना; गर्मपात; दस्तावर धराई या दवा ।

अंसित-वि० [सं०] गिराया हुआ; ढीला किया हुआ ।

कॉस्मिनी-स्त्री० [सं०] एक योनिरोग । -कल-पु० एक वृक्ष, शिरीष ।

कॉसी(सिन्धु)-वि० [सं०] किसलने, गिरनेवाला; लट-कनेवाला; धीला पड़नेवाला; पाल होनेवाला (गर्म) । पु० पीछे वृक्ष; सुपारीका पेड़ ।

कक-स्त्री० दे० 'कक्' ।

कक्(ञ्)-स्त्री० [सं०] पुष्पहार (विशेषकर सिरपर बाँधनेका); माला; एक वृक्ष; एक योग (ज्यो०) ।

कग-स्त्री० दे० 'कक्' ।

कगाल-पु० गीदड़ ।

कग्यु-पु० [सं०] मालाके रूपमें लिखित भव ।

कग्यम(ञ्)-पु० [सं०] पुष्पहारका डोरा ।

कगधर-वि० [सं०] पुष्पहार धारण करनेवाला ।

कगधरा-स्त्री० [सं०] एक वृक्ष; एक देवी (बौ०) ।

कगवान्(वत्)-वि० [सं०] माला-युक्त ।

कगिषणी-स्त्री० [सं०] एक वर्षावृत्त; एक देवी ।

कगवी(निबन्ध)-वि० [सं०] मालाविशिष्ट ।

कज-पु० [सं०] एक विद्मदेव । स्त्री० माया ।

कज्जन-पु० सृष्टि, मर्जन ।

कज्जना-सं० कि० रचना, बनाया, निमाण करना ।

कज्जा-स्त्री० [सं०] रस्ती ।

कज्जा(ज्वन्)-पु० [सं०] मालाकार, माली, प्रजापति ।

कज्जा-स्त्री० दे० 'ज्जा' ।

कज्ज-स्त्री० [सं०] अजान बायुका रथाग ।

कज्ज-पु० श्रम, मेहनत ।

कजित-वि० अमित, बका हुआ, क्रांत ।

कजंती-स्त्री० [सं०] त्रलप्रवाह; नदी; एक वृक्ष; यकृद्-प्रदेश ।

कज-पु० [सं०] क्षरण, खाव; निर्हार; प्रवाह; धारा; मूत्र; * अवण । -ज्ज-पु० मेला; बाजार ।

कजण-पु० [सं०] वहना, प्रवाहित होना; गर्भपात; प्रसवेद; मूत्र; कान ।

कजत्-वि० [सं०] चूता हुआ; बहता हुआ । -सोषा-स्त्री० कर्दही नामक पौधा । -पाणिपादा-स्त्री० वह स्त्री जिसके हाथ-पैर आर्द्र रहते हैं । -स्वेदजल-वि० पसीनेसे तर-बतर ।

कजज्जर्जी-स्त्री० [सं०] वह स्त्री या कोइ मात्रा पशु जिमका गर्भ गिर गया हो ।

कजज-पु० दे० 'प्रवण' ।

कजजा-सं० कि० टपकना, चूना; गिरना । सं० कि० बहाना, टपकाना; गिराना ।

कजा-स्त्री० [सं०] मूर्खा; जीवती ।

कज्ज-वि० [सं०] सर्वन करने योग्य ।

कज्ज(ष्ट)-वि० [सं०] खाव करनेवाला; निर्माता, रच-यिता । पु० सृष्टिका निर्माण करनेवाला, ज्ञाता; शिव; विष्णु ।

कज्ज-पु० [सं०] दे० 'ज्जा' ।

कस्त-वि० [सं०] खुल, पतित; धीला पड़ा हुआ; हिलता हुआ; लटकता हुआ; रँझा हुआ (जैसे नेत्र); अकण किया हुआ, विच्छिन्न । -क-वि० हिलती हुई दृक्-

वाला । -वा-वि० जिसका शरीर ढीला पड़ गया हो । -मुच-वि० जिसका अङ्गकोष्ठ हिल रहा हो । -कञ्च-वि० जिसके कपि झुक गये हों; लज्जित । -हस्त-वि० जिसने पकड़ छोड़ी कर दी हो ।

कस्त-पु० [सं०] आसन; सोफा ।

कस्ति-स्त्री० [सं०] गिरना; लटकना; ढीला पड़ना ।

काच-पु० दे० 'काड' ।

काप-पु० दे० 'शाप' ।

कापित-वि० दे० 'शापग्रस्त' ।

काच-पु० [सं०] बहाव, क्षरण; टपकना, रिसना; गर्भ-पात; निवास ।

कावक-वि० [सं०] बहाने, खाव करानेवाला । पु० काली-भिर्वा ।

कावण-वि० [सं०] बहानेवाला, खाव करानेवाला; पात करानेवाला ।

कावणी-स्त्री० [सं०] कज्ज नामकी ओषधि ।

कावनी-स्त्री० दे० 'भावणी' ।

कावित-वि० [सं०] खाव कराया हुआ ।

कावी(सिन्धु)-वि० [सं०] बहानेवाला; टपकानेवाला; चूकानेवाला ।

काव-वि० [सं०] खाव कराने योग्य ।

काव-पु० दे० 'भ्रम' ।

कावज-पु० मर्जन, सृष्टि, रचना ।

काव-स्त्री० धी, मगल, व-वाण ।

काव(ञ्)-स्त्री० [सं०] यथाश्रमे धी आलस्येति । पलाश या खदिरकी लकड़ीकी बनी हुई म्वा ।

कावज-पु० [सं०] अग्नि ।

काव-पु० [सं०] विककृत वृक्ष ।

काव-पु० [सं०] एक प्राचीन नगर ।

काविका-स्त्री० [सं०] मन्त्री ।

काव-स्त्री० [सं०] मन्त्री ।

काव-वि० [सं०] बहा हुआ, क्षरण; जो रिसकर खाली हो गया हो; * दे० 'भ्रम' । -जल-वि० त्रिमका पानी बह गया हो ।

काव-स्त्री० [सं०] हिटुपत्नी ।

काव-स्त्री० [सं०] बहाव; क्षरण; निवास; बोन, प्रवाह-देदीके चारों ओर खाली जानेवाली देसा; * दे० 'भूति' ।

-कीर्ति-स्त्री० 'भूतिकीर्ति' । -काव-पु० विष्णु ।

काव-पु० [सं०] एक तरहकी छोटी म्वा । -क-पु० विककृत वृक्ष । -काव-पु० म्वाका वस्ता ।

-प्रवृत्त-पु० मारा अपने किन्हीं रक्त लेना । -हस्त-पु० शिव । -कोय-पु० कुबसे दी हुई आहुति ।

काव-स्त्री० [सं०] धोकी आहुति बालनेकी करछी । (लकड़ीकी बनी); शककी; मूर्वा । -क-पु० विककृत वृक्ष ।

का-स्त्री० [सं०] खाव; निर्हार, क्षरण ।

का-स्त्री० दे० 'श्रेणी' ।

कोल-पु० [सं०] बाटा, सोता । -वर्षाव-पु० (यमुना नदीमें उत्पन्न) झरना या बंजव ।

कोल(स्)-पु० [सं०] जलप्रवाह, धारा; नदी; तीर

वेद; शरीरस्थ पोषण पहुँचानेवाले मार्ग; शरीरके रेशे
(जो पुरुषोंमें नौ और स्त्रियोंमें ग्यारह होते हैं); नरग;
जल; ज्ञानेंद्रिय; हाथीकी सूँठ; बंझपरंपरा।

स्रोतभाषासि, स्रोतापसि-स्त्री० [स०] (निर्वाणकी) नदी-
में प्रवेश करना-निर्वाणके पथपर अग्रसर होना (बौ०) ।

मोतजापन्न-वि० [सं०] जो (निर्वाणकी) नदीमें प्रवेश कर चुका है-जो निर्वाणके पथपर अग्रसर हो चुका है।

श्वोतईश-पु० [सं०] ममुद्र ।

स्त्रोतस्थ-पु० [सं०] शिव; चोर ।

ज्योतस्वती, ज्योतस्विनी - स्त्री० [सं०] नदी ।

स्रोताः-५० द्वे० 'श्रोता' ।

स्वोर्तोऽजन (स्वोर्तोऽजन) - पु० [मं०] मुरमा ।

ज्योत्सोज-पु० [सं०] सुरमा ।

स्वोत्तोजव-पु० [नं०] धाराका वेग ।

स्रोतोद्भव-पु० [मं०] द्वे० 'स्रोतोज' ।

स्रोतोन्दीभव-पु० [मं०] 'स्रोतोन्जन' ।

श्रोतोनुगत (श्रोतोऽनुगत) - पु० [म०] एक प्रकारकी समाधि ।

स्वोत्तरं-पु० [म०] काशीकी मुद्रिका छिद्र ।

स्त्रोतोवहा-स्त्री० [सं०] नदी ।

श्लोक-पु० द्वे० 'श्रवण' ।

न्योनित्त०-पृ० ३० 'शोणित' ।

स्वौम्भत-पु० [म०] एक म।म

સૌજ્ઞિકા-સી० [મં०] મણ્વી ।

स्वीत-पु० [सं०] एक माम ।

स्वीटिक-पु० [मं०] सीप ।

श्रीतोषह-वि० [स०] नदी-मार्ग ।

स्त्रीनः-प० दे० 'श्रवण' ।

स्वीड-वि० [मं०] स्रवा-संबन्धी; यज्ञ-संबन्धी ।

दृक्छा (ओ लेख आदि लिखनेके लिए नैवार किया जाता है)।

स्लीपर—पुं० [अं० 'स्लिपर'] एसीकी ओर मुकी हुई जूती; लकड़ीका चौबौर लंबा टुकड़ा (जो रेलकी पटरियोंके नीचे बिछाते हैं) ।

श्लोक—स्त्री० [अं०] बर्फ पर धिमदती हुई जलमेवाली एक तरहकी गाथी ।

मोटे-सी० [३०] एक तरह के काले पत्थर की चौकोर पट्टी जो लिखने के काम आती है।

स्थो-वि० [अ०] सुस्त, मदयतिमे चलनेवाला ।

સ્વર્ગ-વિ० [સં०] અષ્ટમે અંગોવાલા । પૃ० આલિંગન ।

स्वयंजन-प० [सं०] आलिगन करना।

सर्वत-वि० [सं०] जिसका अंत अगच्छा हो; शुभ, मंगलकारी।

स्वः-पु० [मं०] 'स्वर्'का ममास्मत् रूप । -पति-पु०
स्वर्गपति । -पथ-पु० मृग्य । -पाठ-पु० स्वर्गकी

देखभाल करनेवाला । -पूछ-पु० कई सामोंके नाम ।
-सद-प० देवता । -सरिता-स्त्री० [हि०] इ० 'स्वः'

स्व-पुं० [सिं०] कुटुम्ब, आत्मीय जन, सन्धी; आत्मा; विष्णु; धन, संपत्ति; धन राशि (ग०) । वि० आत्मीय, अपना; सहजात, स्वाभाविक; अपनी जाति या वर्गका ।
 -कर्मण-पुं० बापु । -कंठबाह-स्त्री० एक नदी । -करण-पुं० किसी स्त्रीमे विवाह करना; स्वत्व वस्तु । -आवाह-पुं० स्वत्व प्रमाणित किये किना किसी वस्तुपर अधिकार करना । -विष्णुहृत्-वि० भिसपर किसीका न्यक्तम अधिकार न हो । -कर्म(न्)-पुं० अपने कर्म, पेशा, कर्तव्य आदि । -कृत्-पुं० स्वत्व रूपमे काम करनेवाला कारीगर । -कर्म(िन्)-वि० स्वाधी, खुद गरज । -कामी(मित्र्)-वि० अपने मनके मुताबिक चलनेवाला; स्वाधी । -कार्य-पुं० अपना काम या कर्तव्य । -काळ-पुं० उपयुक्त समय । -कुल-पुं० अपना वंश । वि० अपने वंशका । -कृष्ण-पुं० मछली । -कृन्व-वि० अपने कुलका । -कृत-वि० अपना किया हुआ । पुं० अपना कर्म । -क्षत्र-वि० भिममे जन्मजात शक्ति हो; स्वाधीन । -क्षालनशौचालय-पुं० (स्नाना हैट्रिन) वह पेखाना जिये साफ करनेके छिए मेहनतकी आवश्यकता न हो, जो पानी गिरा देनेमे अपने आप माफ हो जाय । -शय-वि० आत्मीय; अपने प्रति कथिन । आप आप ही आप (कहना) । -कषण-पुं० किसी पापका बोलकर अपना शिर इस प्रकार ध्वस्त करना जैसे दूसरे उसे मनुने न हो (ना०) । -गति-स्त्री० एक इत्त । -गुप्त-वि० आत्मरक्षित । -गुप्ता-स्त्री० शक्तिमती, कैलाश, ललाट । -गृह्-पुं० अपना घर; एक पक्षी । -गोष-वि० अपनी रक्षा करनेवाला । -ग्रह-पुं० एक बालक । -वृत्-वि० अपने आप चलनेवाला । -चित्काल-पुं० स्वतंत्र सिध्दी । -चर्च-पुं० अपनी इच्छा या पसंद; स्फंद । वि० अपनी इच्छाके अनुसार चलनेवाला, अनियंत्रित, स्वाधीन; आपसे आप उगा हुआ, जंगली । -चर, -चारी(रिन्)-वि० अपनी इच्छामे चलनेवाला, आजाद । -चारिणी-स्त्री० वेश्या । -भ्रष्ट-पुं० अपनी इच्छामे मरनेको शक्ति । -वर्द्धता-स्त्री० स्वतंत्रता, आजादी । -ज-वि० जो अपनेमे उत्पन्न हुआ हो । पुं० पुत्र; प्रत्येक; रक्त । -जन-पुं० आत्मीय जन; सन्धी । -गंघी(धित्)-वि० जिसके नाथ दूरका सबब हो । -जनी-स्त्री० मन्त्री; सहेली । -जम्मा(स्मृ)-वि० जो आप ही आप उत्पन्न हुआ हो । -जा-स्त्री० पुत्री । -जात-वि० अपनेसे उत्पन्न । पुं० पुत्र । -जाति-स्त्री० अपनी जाति या वर्ग । वि० अपने वर्गका । -गृह(ष्)-पुं० कुत्ता । -जातीय, -जात्य-वि० अपनी जाति या वर्गका । -जित-वि० आत्मविश्रद्धी, जितैदिय । -जाति-स्त्री० अपनी जाति या वर्ग । पुं० सन्धी । -तंत्र, -तंत्री(मित्र्)-वि० स्वाधीन, आजाद; बालिय । -तंत्रता-स्त्री० स्वाधीनता, आजादी । -त्र-वि० आत्मरक्षी । पुं० अंधा व्यक्ति । -दान-पुं० अपनी संपत्तिका दान । -दार-पुं० अपनी पत्नी । -गामी(मित्र्)-वि० केवल अपनी पत्नीसे सन्ध रखनेवाला । -निरत-वि० कीपरायण । -हक(क्ष)-वि० आत्मदस्ती । -वैष्ट-पुं० जम्भुधूमि,

जो अपनी स्वाभाविक अवस्थामें हो; तंदुल्ल, नीरोग; स्त्रिचित्त; संतुष्ट; सुखी; स्वाधीन; आत्मनिर्भर।
 -**चित्त**-वि० जिसके मनमें किसी तरहका विकार न हो। -**चुल्ल**-पु० स्वस्थ व्यक्तिता लपवार; स्वास्व-रक्षाके नियम। -**चित्त**-वि० स्वाधीन। -**स्वच्छ**-पु० एक पितृवर्ग। -**हृत्ता**(हृ)-पु० आत्महत्या करनेवाला।
 -**हृत्त**-पु० मंगलिका हरण। -**हृत्त**-पु० अपना हाथ; हस्ताक्षर। -**हृत्तिका**-स्त्री० कुराल। -**हृत्त**-वि० अपने लिए लाभदायक। पु० अपना हिन।
स्वच्छ-वि० [सं०] अपना, निजी। पु० अपना सर्वधी, मित्र; अपनी संपत्ति।
स्वच्छीय-वि० [सं०] अपना, निजी; अपने परिवारका। पु० मित्र; अपने लोग।
स्वच्छीया-स्त्री० [सं०] अपनी पत्नी।
स्वच्छ-वि० [सं०] अच्छी तरह क्लिप्त।
स्वच्छ-वि० [सं०] सुंदर धुरीवाला; पूर्ण अर्गोवाला; सुंदर जेम्सोवाला; * हे० 'स्वच्छ'। पु० सुंदर धुरीवाला रथ; एक दार्ति।
स्वच्छ-वि० [सं०] निर्मल; पवित्र; सफेद; स्पष्ट; निश्छल, मुंदर; स्वस्थ। पु० विप्लव; मोती; बेरका पेड़; सोने और चांदीका मिश्रण; स्वर्णमाक्षिक; रौप्यमाक्षिक; गटिका।
 -**स्वच्छ**-पु० शरीरकी सफेद भात। -**चातुक**-पु० सोने और चांदीका मिश्रण। -**पत्र**-पु० अन्नक। -**भाव**-पु० पारदक्षिता। -**अग्नि**-पु० तिलोर। -**चातुक**-पु० एक उपधातु, विमल।
स्वच्छक-वि० [सं०] बहुत साफ या चमकीला (जैसे कपड़े)।
स्वच्छता-स्त्री०, **स्वच्छत्व**-पु० [सं०] सफाई, निर्मलता; विमुक्तता।
स्वच्छता-सं० क्रि० माफ करना।
स्वच्छा-स्त्री० [सं०] श्वेत द्रवी।
स्वच्छी-वि० 'स्वच्छ'।
स्वः(स्व)-अ० [सं०] आप ही, अपनेमें। -**प्रमाण**, -**सिद्ध**-वि० स्वयं सिद्ध, स्वयं प्रत्यक्ष।
स्वतोविरोधी(विज)-वि० [सं०] अपना ही विरोध करनेवाला।
स्वत्व-पु० [सं०] अपना भाव; स्वतंत्रता; अधिकार, स्वाभिव। -**निवृत्ति**-स्त्री० अधिकारका न रहना।
 -**बोधन**-पु० स्वाभित्वका प्रमाण। -**हानि**-पु० अधिकारका न रहना। -**हेतु**-पु० स्वाभित्वका कारण या आधार।
स्वाभाविकारी(विज)-पु० [सं०] स्वामी, मालिक।
स्वदन-पु० [सं०] आश्वासन, खाना; लेह, चाटना।
स्वदित-वि० [सं०] आश्वासित, चला हुआ, खाया हुआ।
स्वधा-अ० [सं०] पितरोंके उद्देश्यमें हवि देते समय उच्चारण करनेका एक शब्द। स्त्री० अपनी प्रकृति, स्वभाव; अपनी इच्छा, हवि; पितरोंकी दी जानेवाली हवि; पितरोंकी दिया जानेवाला अन्न; भोजन, साध; हवि; अपना भाग; आह, मृतककर्म; माया। -**कर**-वि० पितरोंकी हवि देनेवाला। -**कर**-पु० स्वधा शब्दका

उच्चारण। -**विज**-पु० अग्नि; पितर; पितृभौक; काला तिक। -**मुक्(ज)**, -**भोली(विज)**-पु० पितर; देवता।

स्वधाविष-पु० [सं०] अग्नि।

स्वधादान-पु० [सं०] पितर।

स्वधिति, **स्वधिति**-स्त्री० [सं०] कुल्हाड़ी; वज्र; भारी।

-**हैतिक**-पु० परशु धारण करनेवाला सैनिक।

स्वधिष्ठान-वि० [सं०] जो अच्छी स्थिति, अच्छी जगहपर हो (युद्ध, रथ)।

स्वधिष्ठित-वि० [सं०] जो ठहरने वा रहनेके लिए अच्छा हो; अच्छी तरह सिलकाया-सजाया हुआ (जैसे हाथी)।

स्वधीत-वि० [सं०] जिसका अच्छी तरह पाठ किया गया हो; अच्छी तरह अध्ययन किया हुआ। पु० अच्छी तरह पढ़ा हुआ विषय।

स्वर्नदा-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

स्वन्न-पु० [सं०] ध्वनि, शब्द; एक अग्नि। वि० कुरा शब्द करनेवाला। -**चाक**-पु० एक तरहका रतिवध।

स्वनि-पु० [सं०] ध्वनि, शब्द; अग्नि।

स्वन्निक-वि० [सं०] शब्द करनेवाला।

स्वन्नित-वि० [सं०] शक्तिन, ध्वनित। पु० शब्द; गर्जन; बादलोंकी गर्जना।

स्वनिताह्वय-पु० [सं०] तंदुलीय, चौलाईका साग।

स्वनीस्साह-पु० [सं०] गंगा।

स्वन्न-पु० [सं०] अच्छा आहार।

स्वपच-पु० हे० 'हवपच'।

स्वपच-पु० [सं०] नींद; स्वप्न; संज्ञाहीनता (स्वच्छी)।

स्वपना-पु० स्वप्न।

स्वपनीय, **स्वप्न्य**-वि० [सं०] सोने योग्य।

स्वप्न-पु० [सं०] निद्रा; अर्द्ध सुप्तावस्थामें जाग्रत मनका व्यापार-विशेष, स्वप्न, सपना; आलस्य; सुस्ती; कंचो कल्पना, कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करनेका विचार। -**कर**-वि० निद्रा लानेवाला। -**कल्प**-वि० स्वप्न जैसा।

-**काम**-वि० सोनेका इच्छुक। -**कृत्**-वि० निद्रा लानेवाला। पु० सुनिषण्णक नामक शाक, सुसना।

-**गत**-वि० जो सो गया हो। -**गृह**-पु० क्षयनागर।

-**ज**-वि० नींदमें उत्पन्न। पु० स्वप्न। -**ज्ञान**-पु०

स्वप्नमें होनेवाली अनुभूति। -**तंतिता**-स्त्री० निद्राछूटा

में उत्पन्न शैथिल्य। -**दर्शन**, -**निदर्शन**, -**संदर्शन**-

पु० स्वप्न देखना। -**दृक्(हृ)**-वि० स्वप्न देखने-

वाला। -**दोष**-पु० स्वप्नावस्थामें होनेवाला श्लक्ष्णता।

-**धीगम्य**-वि० निद्रा जैसी अवस्थामें अनुभूत होने-

वाला। -**निकेतन**-पु० क्षयनागर। -**प्रपंच**-पु०

स्वप्नमें प्रकट होनेवाला संसार। -**भाक्(ज)**-वि०

स्वप्न देखता हुआ, सोता हुआ। -**भाष्य**, **भाष्यक**-

पु० स्वप्न पूरा करनेवाला एक मंत्र। -**छन्द**-वि०

स्वप्नमें प्राप्त, स्वप्नमें रह। -**विकार**-पु० स्वप्नकृत

परिवर्तन। -**विचारी(विज)**-वि० स्वप्नका विचार

करनेवाला। पु० स्वप्नशास्त्री। -**विनश्वर**-वि० स्वप्न

जैसा क्षणभंगुर। -**विपरीय**-पु० सोनेका समय लट्ट

देना। -**हृत्त**-वि० स्वप्नमें पठित होनेवाला। -**लील**-

वि० निद्राह। -साह-वि० स्वप्नमे जीन। -सृष्टि-
की० स्वप्नका निर्माण। -स्वाय-पु० स्वप्नमागार।
स्वप्नक(ञ्) -वि० [सं०] निद्राह, निद्रित।
स्वप्नांत-पु० [सं०] निद्रा वा स्वप्नकी अवस्था; स्वप्नका
अंत।
स्वप्नांतर-पु० [सं०] दे० 'स्वप्नांत'। -गन्त-वि० स्वप्न-
में गति।
स्वप्नांतिक-पु० [सं०] स्वप्नांतिक चेतना।
स्वप्नादेश-पु० [सं०] स्वप्नका दिया हुआ आदेश।
स्वप्नावाक्य-सं० कि० स्वप्न दिखाना।
स्वप्नालु-वि० [सं०] निद्राह।
स्वप्नावस्था-की० [सं०] स्वप्नकी अवस्था (जीवनके लिए
प्रयुक्त)।
स्वप्निक-वि० [सं०] सुप्त; स्वप्नका।
स्वप्नोपम-वि० [सं०] स्वप्नसुप्त।
स्वप्नरत्न-पु० सुवर्ण, सोना।
स्वप्नाविक-वि० दे० 'स्वप्नाविक'।
स्वप्नेक-पु० [सं०] संवत्सर, वर्ष।
स्वयं-'स्वयम्'का समासगत रूप। -कृत-वि० आत्मकृत,
अपना किया हुआ; प्राकृतिक; गोद लिया हुआ। -कृती-
(वि०) -वि० प्रकृत्या काम करनेवाला। -कृष्ट-वि०
सुद जोता हुआ। -गुप्त-की० शक्तिशक्तिका, केजीव।
-ग्रह-ग्रहण-पु० बलात् ग्रहण कर लेना। -ग्राह-
पु० बलात् ग्रहण कर लेना; स्वयं चुन लेना। वि० स्वयं
चुन लेनेवाला। -दान-पु० सेवा द्वारा स्वतः सहा-
यता पहुँचाना (की०)। -हाल-वि० जो आपसे आप
उत्पन्न हुआ हो। -ज्योति(स्) -वि० जो आप ही
आप प्रकाशित हो। पु० परमेश्वर। -वृत्त-वि० जिससे
अपनेकी स्वयं दे दिया है। पु० वह लक्ष्य जो दूसरेका
दृष्टक पुन बन गया है। -दान-पु० स्वेच्छामूलक
दान (कन्याका विवाहमें)। -वृत्त-पु० स्वयं अपना
दृष्टक करनेवाला नायक। -वृत्ती-की० अपना दृष्टक
आप ही करनेवाली नायिका। -वृत्त-वि० जो
स्वयं प्रकट हो। -वैव-पु० प्रत्यक्ष देवता। -पतित-
वि० जो आप ही आप गिरा हो। -पाकी(किन्) -
वि० स्वयं अपना भोजन बनानेवाला। -पाठ-पु० मूल
पाठ। -प्रकाश-वि० जो सुद प्रकाशित हो। -प्रकाश-
मान-वि० दे० 'स्वयंप्रकाश'। -प्रमथित-वि० जो
आप ही आप जल रहा हो। -प्रमथ-वि० जो आप
ही आप चमक रहा हो। पु० भावी उत्सर्पणिके चौवे
अक्षर। -प्रभा-की० एक अस्तार; मयकी एक कन्या।
-प्रभु-वि० जो स्वयं शक्तिशाली हो; जो सुद अपना
मालिक हो। -प्रभाज-वि० जो स्वयं प्रमाणित हो,
जिसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता न हो। -प्रस्तुत-
वि० स्वयं प्रशंसित। -कल-वि० जो आप ही अपना
फल हो। -सु-पु० ज्ञान। -सुच-पु० आदि मनु;
ज्ञान; शिव। -सुहा-की० दूतपत्र। -सू-वि० जो
स्वयं उत्पन्न हुआ हो; मुख्यवंधी। पु० ज्ञान; विष्णु;
शिव; बुद्ध; आदि बुद्ध; काल; कृष्ण बाहुदेव (दे०); काम-
देव; व्यास; शिष्यका राज; अंतरिक्ष; माचण्णी; तिमिनी;

* स्वयंमुख। -सूत-वि० जो आप ही आप उत्पन्न
हुआ हो। -सूत-वि० जो स्वयं पोषित हुआ हो, अन्य
द्वारा नहीं। -सूति, -सूती(मिन्) -वि० स्वयं चमक
खानेवाला। -सूत-वि० जिसकी प्राकृतिक वृत्तु बुद्धि
हो; जो स्वेच्छासे मरा हो। -सूत-वि० जो आप
ही पीका पक गया हो, मुरझा गया हो। -वान-पु०
स्वयं आक्रमणका आरंभ करना। -वह-पु० उपस्थित
विवाहाभियोगसे कन्याका स्वयं पतिका चुन लेना; ऐमे
करणकी सभा वा उत्सव। -० पति-पु० स्वयंवरमें
चुना हुआ पति। -० विवाह-पु० स्वयंवरकी विधिमें
होनेवाला विवाह, स्मृतिधर्मों आज्ञा माने हुए भाठ
प्रकारके व्याहीमेंमे एक। -वह-पु० पतिका चुनाव।
-वहविधि-की० स्वयं पतिका चुनाव करनेवाली कन्या।
-वह-की० पतिका स्वयं करण, चुनाव करनेवाली कन्या,
पतिवरा। -वह-वि० स्वाधीन। -वह-वि० स्वयं
चलनेवाला (यंत्रादि); स्वयं अपनेकी धारण करनेवाला।
-वादिदोष-पु० न्यायालयमें सूझी बात दुबाराके
अपराध। -वादी(विन्) -वि० जिरहमें सूझी बात दुद
रानेवाला। -विकीर्त-वि० जिससे खुद अपनेकी बेंता
हो। -विकीर्त-वि० जो आप ही आप (दुमरेमें) गान
हो गया हो। -विकीर्त-वि० जो आप ही आप गिरा
हो। -वृत्त-वि० आप ही आप पका हुआ। -वृत्त-
वि० प्रकृत्या तबमें अच्छा (गिरा)। -स्वयं-पु० आप
आप होनेवाला (वैवाहिक) संबंध। -सिद्ध-वि० जिसमें
गिर प्रमाणकी आवश्यकता न हो; जो स्वयं अपनेमें पूर्ण
हो (लोक)। -सेवक-पु० बिना चेतन लिये स्वेच्छा
सेवा करनेवाला। -सेविका-की० स्त्री स्वयंसेवक।
-हारिका, -हारी-की० दुःख और निर्मोहिकी एक कन्या
जो निलका नेल, केसरका रंग आदि धरण कर लेती थी।
-होता(ह) -पु० स्वयं बल करनेवाला।
स्वयंमथित-वि० [सं०] सुद प्राप्त किया हुआ।
स्वयंमजित-वि० [सं०] सुद उपार्जित किया हुआ (पत्न)।
स्वयंमथीर्ष-पु० [सं०] पृथ्वीकी मगधपर आपसे आप
फटी हुई दरार।
स्वयंमागत-वि० [सं०] आपसे आप आया हुआ; बिना
कहे किसी बातमें दखल देनेवाला।
स्वयंमाहृत-वि० [सं०] स्वयं काया हुआ। -ओजी-
(विन्) -वि० अपना ही काया हुआ खानेवाला।
स्वयंमिथिचमोचन-पु० [सं०] आपसे आप मुझका पान
होना।
स्वयंमिथर-पु० [सं०] वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो;
परमेश्वर।
स्वयंमिथिलक्षक-वि० [सं०] स्वयं अपने प्रयत्नसे प्राप्त।
स्वयंमुक्ति-पु० [सं०] वह गवाह जो आप ही-बिना
कहे-गवाही दे।
स्वयंमुञ्चक-वि० [सं०] जो स्वयं दीप्तिमान् हो।
स्वयंमुदित-वि० [सं०] जिसका आपसे आप उदय हुआ हो।
स्वयंमुहादित-वि० [सं०] जो आप ही आप सुख गया
हो (दरवाजा)।
स्वयंमुपगत-वि० [सं०] स्वेच्छासे दासता स्वीकार

करनेवाला।

स्वयमुपस्थित-वि० [सं०] जो आप ही, अपनी इच्छासे आया हो।

स्वयमुपागत-वि० [सं०] रवेच्छासे आया हुआ। पु० वह लक्षका जो स्वयं गीत लिये जानेकी कोहे।

स्वयमुपेत-वि० [सं०] अपनी इच्छासे आया हुआ।

स्वयमेव-अ० [सं०] स्वयं ही, अपने आप।

स्वयम्-अ० [सं०] खुद, आप, अपने आप, अपनेतरफ, स्वयं; अकेले।

स्वर-पु० [सं०] आवाज; कंठस्वनि; वह वर्ण जिसका पूरा उच्चारण अन्य वर्णकी सहायताके बिना हो सके (स्वा०); संगीतके सात सुरों-षड्ज, ऋषभ आदिमेंमें कोई; वास; मातृकी संस्था; उच्चारणमें स्पंदनकी मात्रा (उदात्त, अनुदात्त और स्वरित); खराटा; *स्वर; आकाश; विष्णु। -कंप्-पु० स्वरका हिलना। -कर-वि० आवाज खोलने, सुरीली बनानेवाला; स्वर उत्पन्न करनेवाला।

-क्षय-पु० स्वरकी हानि। -गुप्ति-स्त्री स्वरकी गभीरता। -ध्राम-पु० संगीतके मातो स्वरोंका क्रम, स्वर-ममक, सरगम। -प्र-पु० गलेका एक रोग। -चिह्न-पु० शीमुरीका स्वरवाला छेद। -द्वीप-वि० स्वरके बिचारमें अशुभ। -नारी(विन्)-पु० मुँहमें फँककर बजानेका बाजा। -नाभि-पु० फूँककर बजानेका एक प्राचीन वाद्य। -पत्तन-पु० नामदेह। -परिचर्ण-पु० स्वरका परिवर्तन। -पाल-पु० शब्दके उच्चारणमें किसी अक्षरपर कुछ रुक जाना। -पुरजय-पु० रोषका एक पुत्र। -प्रधान-वि० (राग) जिसमें स्वरकी ही प्रधानता हो, नालकी नहीं। -बद्ध-वि० गाल-स्वरमें बंधा हुआ (गाना)। -ब्रह्म(न्)-पु० वेदादि ग्रन्थ। -अंग-पु० गले या आवाजका बँट जाना; गलेका एक रोग। -अंगी(गिन्)-वि० स्वरभग रोगमें पीड़ित। पु० एक पक्षी। -आव-पु० अगस्त्यालनके बिना केवल स्वरोंमें मनके आँसोंका प्रकाशन। -मेघ-पु० स्वरभग; आवाजका बँट जाना; उच्चारणमें लाया जानेवाला अंतर; संगीतके स्वरका अंतर। -मंचनृत्त-पु० नृत्यका एक प्रकार। -मंडल-पु०, -मंडलिका-स्त्री एक तरहकी बीणा। -मात्रा-स्त्री उच्चारणकी मात्रा। -भोग-पु० शब्द, ध्वनि। -लहरी-स्त्री स्वरोंकी लहर, तरंग। -कासिका-स्त्री बशी। -किपि-स्त्री संगीतके स्वरोंकी छिन्ननेकी किपि या रीति, रागविशेषमें प्रयुक्त स्वर, ताक, लय, मात्रा हत्यादि बतानेवाले चिह्नोंका समूह; ऐसे चिह्नोंकी सहायतामें प्रस्तुत पाठ। -बाही(हृच्)-वि० (बाजा) जो केवल स्वर निकाल सके, ताल आदि नहीं। -विकार-पु० आवाजका विगड़ जाना। -विज्ञान-पु० स्वरोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान, स्वरतत्त्व। -वेकी(चिन्)-पु० दे० 'शब्द-वेकी'। -साध-पु० दे० 'स्वरविज्ञान'। -शुद्ध-वि० मात्रा आदिको दृष्टिसे शुद्ध (स्वर)। -शुल्य-वि० बेसुरा। -संक्रम-पु० सुरोंके उतार-चढ़ावका क्रम (संगीत)। -संयति-स्त्री सुरोंका मेल। -संयम-पु० दे० 'स्वर-संयम'। -संयि-स्त्री स्वरवर्णों या स्वरांत और स्वरादि

पदोंमें होनेवाली संयि। -संयद्-स्त्री स्वरोंका मेल, सुर (संगीत)। -संयद्-वि० सुरीला, जिसमें स्वरोंका मेल हो। -ससक-पु० संगीतके सात स्वरोंका समूह। -समुद्ग-पु० प्राचीन कालका एक नावा। -साव-पु० स्वरभग। -साधन-पु० विभिन्न ससकोंके स्वरोंकी ठीक-ठीक निकालनेका अभ्यास करना। -हा(हृच्)-पु० दे० 'स्वरच'। सु० -उत्तरमा-स्वरका धीमा पकना। -कधाना-स्वर ऊंचा करना। -निकाशना-स्वर उत्पन्न करना। -भरमा-एक ही स्वरको देरतक निकालना; एक ही स्वर बजाकर बजानेवालेके स्वरको प्रति करना। -मिथाना-किसीके स्वरके मेलमें स्वर निकालना। -साधना-मनसके स्वरोंका अभ्यास करना।

स्वरध्व-स्त्री [सं०] वक्षु नद।

स्वरग-पु० 'स्वर्ग'।

स्वरतिक्रम-पु० [सं०] स्वरोंको लौकिक वैकुण्ठ पहुँचाना।

स्वराधीत-पु० [सं०] मेघ।

स्वरांत-वि० [सं०] स्वरमें अन होनेवाला; जिसका अंतिम अक्षर स्वरित हो।

स्वरांतर-पु० [सं०] दो स्वरोंके उच्चारणके बीचका अन्वयांतर।

स्वरांश-पु० [सं०] आधा या चौथाई स्वर (संगीत); सप्तमांश।

स्वरा-स्त्री [सं०] ब्रह्माकी स्त्रेष्ठा पत्नी, मायत्रीकी सपत्नी।

स्वरापगा-स्त्री [सं०] स्वर्गगा।

स्वरारूढ-वि० [सं०] स्वर्गपर चढ़ा हुआ।

स्वरालु-पु० [सं०] बवा।

स्वराष्टक-पु० [सं०] एक सत्तर राग।

स्वरशिख-पु० [सं०] औषधी, तुफान।

स्वरित-वि० [सं०] स्वरयुक्त; ध्वनित; उच्चारित। पु० उदात्त-अनुदात्तके बीचका, मध्यम स्वर।

स्वर-पु० [सं०] यक्ष; यक्षके मन्त्रका एक भग्न; मृगलक्ष; सूर्यरश्मि; बज्र; बाण; एक तरहका चिह्न। -ओचन-पु० यक्षरूपका नीचेसे तीमरे और ऊपरमें पदबर्ष हाथ-वाला बाण।

स्वर(स्)-पु० [सं०] बज।

स्वरेणु-स्त्री [सं०] सूर्यकी पत्नी, सप्ता।

स्वरोच्-पु० दे० 'सरोच्'।

स्वरोद्व-पु० [सं०] स्वरका उदय, उत्पत्ति; ह्वासमेदसे शुभाशुभ फल जाननेकी विद्या। वि० जिसके बाद स्वर हो।

स्वरोपचात-पु० [सं०] स्वरभय।

स्वर-पु० [सं०] स्वर्ग; आकाश; तीन व्याहृतिमेंसे एक; सूर्यके ऊपरका या सूर्य और भूवर्षके बीचका स्थान; कांति, दीप्ति; ब्रह्म; शिव। -शंगा-स्त्री गंगाकी स्वर्गमें बहनेवाली धारा, मंदाकिनी। -श-पु० दे० क्रममें। -शणिका-स्त्री अस्तर। -शत-वि० श्रुत। -शति-स्त्री, -शमन-पु० मृत्यु, स्वर्ग जाना। -शा-स्त्री दे० 'स्वर्गगा'। -गिरि-पु० छमेक। -जिह्व-पु० एक तरहका यक्ष। वि० स्वर्गपर विजय प्राप्त करनेवाला। -ज्योति(स्)-वि० स्वर्गकी ज्योतिसे

चमकनेवाला । पु० एक साम । -जयी-**की** मंदाकिनी; वृषिकाली; एक नदी, सितगंगा । -जीस-वि० स्वर्ग पहुँचाना हुआ । -हंती (सिद्ध)-पु० स्वर्गहस्ती । -इ-वि० स्वर्ग देनेवाला । -पुनी-**की** मंदाकिनी । -पेनु-**की** कामधेनु । -नवरी-**की** अमरावती । -नवी-दे० 'स्वर्ग' । -नवन-पु० स्वर्ग के जाना । -पति-पु० इंद्र । -आनु-पु० राहु । -आनव-पु० एक रत्न । -आनु-पु० राहु; एक कदवप; कृष्णका एक पुत्र । -सुद्व-पु० सूर्य । -अग्नि-पु० सूर्य । -बास-पु० मृत । -बासा(र)-वि० जो मर रहा हो । -बास-पु० मरण । -बोधि-**की** अमरा । -कोक-पु० स्वर्ग; मेरु; देवता । -बप्-**की** अमरा । -बापी-**की** मंदाकिनी । -बाहिनी-**की** मंदाकिनी । -बेधा-**की** अमरा । -वैद्य-पु० अश्विनिकुमार ।

स्वर्ग-वि० [सं०] देवलोक जानेवाला । पु० हिंदुओंके माने हुए अथर्वके सात लोकोंमेंसे तीसरा जिसका विस्तार स्वर्गलोकसे भुवनेलोकतक है और जहाँ पुण्य कर्म करनेवाले देव-स्वर्गके अनंतर जाकर दुःख-कल्प रहित सुखका भोग करते हैं, देवलोक; अमरावती; अतिसुंदर, सुखद, स्वर्गके समान करनेवाला स्थान; आकाश (हि०); * देवर । -काम-वि० स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाला । -गंगा-**की** मंदाकिनी । -गस-वि० स्वर्ग गया हुआ, मृत । -गति-**की** -गमन-पु० स्वर्गकी यात्रा करना, मरण । -गामी(सिद्ध)-वि० स्वर्ग गमन करनेवाला । -गिरि-पु० मेरु पर्वत । -गुप्त-वि० स्वर्गमें गिरा हुआ । -जिह्व-वि० स्वर्गकी जीतनेवाला । -जीवी-**(विद्ध)**-वि० स्वर्गमें रहनेवाला । -सरणिणी-**की** मंदाकिनी । -तह-पु० कदवृक्ष । -तर्-पु० स्वर्ग-प्राप्तिको वक्तव्य । -इ-**हायक**-वि० स्वर्ग प्रदान करनेवाला । -हार-पु० स्वर्गका दरवाजा; एक तीर्थ; शिव । -जाम(न)-पु० स्वर्गलोक । -पेनु-**की** कामधेनु । -नवी-**की** आकाशयगा । -पति-पु० इंद्र । -पय-पु० छायापय । -पद्-पु० एक तीर्थ । -पर-वि० स्वर्गका अभिलाषी । -पुरी-**की** अमरावती । -पुण्य-पु० लौग । -प्रह्व-वि० दे० 'स्वर्ग' । -अर्ता(रु)-पु० स्वर्गपति; इंद्र । -अग्नि-**की** एक प्राचीन जनपद । -मंदाकिनी-**की** स्वर्गगा । -मार्ग-पु० छयापय; एक तीर्थ । -दाय-वि० स्वर्ग जाने या ले जानेवाला । पु० स्वर्गका मार्ग । -बोधि-**की** स्वर्गका कारण या माधन । -काम-पु० स्वर्गकी प्राप्ति; मृत्यु । -कोक-पु० देवलोक । -कोकेश-पु० इंद्र; सार । -बप्-**की** अमरा । -बापी-**की** आकाशवाणी । -बास-पु० स्वर्गमें निवास करना; मरना । [सु० -**होना**-मरना ।]

-मासी(सिद्ध)-वि० स्वर्गमें निवास करनेवाला; मृत । -मी-**की** स्वर्गका वैभव । -संक्रम-पु० स्वर्गका योग । -संपादय-पु० स्वर्गकी प्राप्ति । -सद्-पु० देवता । -सरिहरा-**की** मंदाकिनी । -साधव-पु० स्वर्गप्राप्तिके साधन । -हार-पु० एक तार (संगीत) । -सुख-पु० स्वर्गमें प्राप्त होनेवाला सुख । -जी-**की**

अमरा । -इव-वि० स्वर्गमें स्थित, मृत । -स्थित-वि० दे० 'स्वर्ग' ।

स्वर्गायना-**की** [सं०] मंदाकिनी, स्वर्गगा ।

स्वर्गायिका-वि० [सं०] स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाला ।

स्वर्गाह्व-वि० [सं०] स्वर्ग गया हुआ ।

स्वर्गारोहण-पु० [सं०] स्वर्गकी ओर आरोहण करना; स्वर्गगमन, मरना ।

स्वर्गार्गल-पु० [सं०] स्वर्गका फाटक ।

स्वर्गावास-पु० [सं०] स्वर्गमें निवास करना ।

स्वर्गिक-वि० स्वर्गीय ।

स्वर्गी(मिन्)-वि० [सं०] स्वर्ग-संबंधी; स्वर्गीय; स्वर्गकी जानेवाला; स्वर्गगायी, मृत । पु० देवता । -**(मिं)मिरि**-पु० मेरु । -बप्-**की** -**की** अमरा ।

स्वर्गीय-वि० [सं०] स्वर्गका; अलौकिक; स्वर्गवासी, मृत ।

स्वर्गीका(कत्)-पु० [सं०] देवता ।

स्वर्ग-वि० [सं०] स्वर्ग दिलाने, स्वर्गकी प्राप्ति करानेवाला; स्वर्ग-संबंधी ।

स्वर्जि-**की** [सं०] मर्जी; शोग । -हार-पु० सारी-सार ।

स्वर्जिक-पु० [सं०] मर्जी; शोरा ।

स्वर्जिका-**की** [सं०] मर्जी । -हार-पु० सारी-सार ।

स्वर्जी(मिन्)-पु० [सं०] मर्जी; शोग ।

स्वर्ण-पु० [सं०] अग्नि विशेष; मोना नामकी धातु मोनेका सिक्का; एक तरबका मेरु; गौरसुवर्ण नामक शाक; भर्तृ; नागकेसर । -कद्-पु० धना । -इण-पु० कलतुगुल । -कजिका-**की** मोनेका कण । -कदली-पु० मोनकेला । -कमल-पु० रत्नपत्र । -काय-पु० गुरु । वि० मोने मेंमा देहवाला । -कार-कारक-पु० सुनार । -कट-पु० हिमालयकी एक पौड़ी । -कृत्-पु० सुनार । -केतकी-**की** पीले रंगका केतकी । -क्षीरशिका-**की** -**क्षीरी**-**की** सत्वानामी । -कोस-पु० एक नद । -गणपति-पु० गणेशका एक रूप । -गर्माच्छ-पु० हिमालयकी एक पौड़ी । -गिरि-पु० एक पर्वत, सुमेरु । -गैरि-पु० एक तरबका पीला मेरु । -ग्रीव-पु० स्कंदका एक अनुचर । -ग्रीवा-**की** नाटक शैलीके पूर्व मान्ये निकली हुई एक नदी । -गूढ-**गूढक**-पु० नीलकण्ठ मुग्धा । -गूढ-पु० दे० 'सुवर्णगूढ' । -ह-पु० रंगा । वि० सोनेसे उत्पन्न । -जवंती-**की** (नीलवन जुगिनी) किसी संरगकी स्थापना या विभीषण, शासन, विवाहित जीवन आदिके पचासवें वर्षका उत्सव । -जासिका-**की** -**जाति**-**की** पीली चमेरी । -जीर्णशिका-**की** -**जीर्णी**-**की** -**की** पीत जीर्णी । -जीवी(विण)-पु० सुनार । -जुही-**की** [हि०] पीली जुही । -तीर्थ-पु० एक प्राचीन तीर्थ । -इ-वि० सोना देनेवाला । -इ-**की** वृषिकाली । -इमा-**की** एक देवी । -ईषिति-पु० अग्नि । -दुग्धा-**की** -**दुग्धी**-**की** सत्वा-नासी । -हु-पु० आरव्य । -ह्रीव-पु० सुमाना होत । -बास-**की** स्तोमा; पीले रंगका मेरु । -बाव-पु० एक अक्षयिन; शाकधामका एक प्रकार । -विज-पु० पीले

रंगका गेरू । - **पक्ष**-पु० गरुड । - **पत्र**-पु० सोनेका पत्र । - **पत्री**-स्त्री० मनाय । - **पथा**-स्त्री० मंठाकिनी । - **पर्णी**-स्त्री० पीत जीवंती । - **पाठक**-पु० टंकन, मुद्रागा । - **पारेवत**-पु० एक तरहका फलवृक्ष । - **पुंख**-वि० सोनेके पंखवाला (राण) । पु० मंठा बाण । - **पुरी**-स्त्री० लंका । - **पुष्प**-पु० आरवध; चंपक; कीकर; कथिय; पेठा । - **पुष्पा**-स्त्री० कलिकारी; स्वर्णली; सताला; स्वर्णकेतकी । - **पुष्पिका**-स्त्री० पीली चमेरी । - **पुष्पी**-स्त्री० आरवध; स्वर्णकेतकी । - **प्रतिमा**-स्त्री० सोनेकी मूर्ति । - **प्रस्थ**-पु० जूड़ीपका एक उपद्रीप । - **फक**-पु० भूरा । - **फला**-स्त्री० पीत रसा, चपाकेला । - **बंध**, - **बंधक**-पु० सोना गिरवी रखना । - **बिंदु**, - **बिंदु**-पु० बिण्णु; एक नीध; सोनेका बूँदका । - **बीज**-पु० धनरखा बीज । - **भाक**(**ज**)-पु० मयविशेष । - **भूमि**-स्त्री० श्रीमं पञ्च स्थान; दारवांती । - **भूमिका**-स्त्री० अवरक । - **भूषण**-पु० पीला गेरू; आरवध । - **भृंगार**-पु० पीत भृंगरात्र; मर्णपात्र । - **भंडन**-पु० पीला गेरू । - **महा**-स्त्री० एक नदी । - **साक्षिक**-पु० एक उपधातु, सोनामक्की । - **माता**(**रु**)-स्त्री० एक पीधा; एक नदी । - **मुखी**-स्त्री० मनाय । - **मुद्रा**-स्त्री० सोनेका सिक्का । - **मूक**-पु० एक पर्वत । - **मुषिका**-स्त्री० एक पीधा । - **मुरा**-पु० मल-मसृष्टिका ममय । - **यूयिका**, - **यूयी**-स्त्री० पीली जूबी । - **रंभा**-स्त्री० चपाकेला । - **जयंती**-स्त्री० किमीके शासन, विवाहित जीवन आदि के वा किमी सत्वा के जीवनकालके पचास वर्ष पुरे होनेपर मनाया जाने वाला उत्सव, 'गोल्डन जुबिली' । - **राग**, - **राज**-पु० उर्वेत कमल । - **रीति**-स्त्री० सोने के रंसा पीतल, राजधानल । - **रेखा**-स्त्री० सोनेकी लकीर (कमौटीपरकी); एक नदी । - **रेना**(**तस्**)-वि० सुनहले रीजोंवाला (सूर्य) । - **रोमा**(**मन्**)-पु० एक सर्ववशी राजा । - **लता**-स्त्री० ज्योतिष्मती; स्वर्णजीवनी । - **लाभ**-पु० स्वर्णकी प्राप्ति; एक अत्य-मंत्र । - **वंग**-पु० एक तरहका रौंगेका भस्म । - **वज्र**-पु० एक तरहका रूपान । - **बणिक**(**ज**)-पु० मर्णक; सोनेका व्यापारी । - **वर्ण**-वि० सोनेके रंगका । पु० बल्ली; हरताल; पीला गेरू; कण-गुगुलु; दारुहल्ली । - **वर्णाक**-पु० मुरदासग । - **वर्णा**-स्त्री० हरिद्रा; दारुहल्ली । - **वर्णाभा**-स्त्री० जीवंती । - **वल्कल**-वि० सुनहले छिलकेवाला । पु० रवोनाक । - **वल्ली**-स्त्री० रक्तफला; पीत जीवंती; स्वर्णली । - **विषय**-स्त्री० सोना बनानेकी विद्या, कोमियागरी । - **सिख**-पु० नीलकंठ । - **सुषिका**-स्त्री० स्वर्णदीपका सोना । - **श्रंग**-वि० सोनेके शोभावाला । - **श्रंगि**(**गिन्**)-पु० एक पर्वत । - **शेफालिका**-स्त्री० आरवध; पीत शेफालिका, पीला सिंधुवार । - **श्लेख**-पु० एक पर्वत । - **सु**-वि० सोमा उत्पन्न करनेवाला (त्रैसे पर्वत) । - **द्वय**-वि० सोनेमें जड़ा हुआ । - **हाकि**-पु० आरवध ।

स्वर्णक-पु०[सं०] एक वृक्ष; सोना । वि० सोनेका, सुनहला ।

स्वर्णली-पु०[सं०] स्वर्णपुष्पा ।

स्वर्णांग-पु०[सं०] आरवध ।

स्वर्णाकर-पु०[सं०] सोनेकी खान ।

स्वर्णाग्नि-पु०[सं०] मेरु; उड़ीसाका सुवनेश्वर तीर्थ ।

स्वर्णाम-पु०[सं०] हरताल । वि० सोनेके रंगका ।

स्वर्णारि-पु०[सं०] गंधका सीसा ।

स्वर्णालु-पु०[सं०] स्वर्णली ।

स्वर्णाङ्गा-स्त्री०[सं०] स्वर्णक्षीरी ।

स्वर्णिका-स्त्री०[सं०] धनिया ।

स्वर्णिम-वि०[सं०] सोनेका; सुनहला ।

स्वर्णली-स्त्री०[सं०] स्वर्णपुष्पा ।

स्वर्णोपधातु-स्त्री०[सं०] सोनामक्की ।

स्वर्हण-पु०[सं०] अत्यधिक सम्मान ।

स्वर्हत्-वि०[सं०] बहुत अधिक सम्मान्य ।

स्वरूप-वि०[सं०] बहुत थोड़ा, अत्यल्प; बहुत छोटा;

तुच्छ; सक्षिप्त । पु० नखी नामक गंधद्रव्य (?) । - **कंक**-

पु० नीलका एक मेद । - **कंद**-पु० कंठ । - **केशरी**

(**रिन्**)-पु० कचनार । - **केशी**(**सिन्**)-वि० जिसे

बहुत कम बाल हों । पु० भूतकेश नामक पीधा ।

- **कटक**-पु० गौरवा । - **जंबुक**-पु० लोमड़ी । - **संज्ञ**-

वि० जिसके खर या अन्धाय बहुत छोटे हों, संक्षेपमें

लिखा हुआ । - **सह**-पु० केसुक । - **दक्ष**(**श**), -

दष्टि-वि० अदृग्दर्शी । - **देहा**-स्त्री० बहुत छोटे कदकी

लक्षकी (विवाहके अयोग्य) । - **नख**-पु० नखी नामक

गंधद्रव्य । - **पत्रक**-पु० पहाड़ी महुआ, गोरशाक । -

पर्णी-स्त्री० मेदा नामकी ओषधि । - **फला**-स्त्री० अप-

राजिमा । - **बल**-वि० कमजोर, दुर्बल । - **आधी**

(**विन्**)-वि० कम बोलनेवाला, मितभाषी । - **रूपा**-

स्त्री० शणपुष्पी । - **वर्तुल**-पु० मटर । - **वल्कला**-स्त्री०

नेत्रवल । - **विटप**-पु० केसुक । - **विरामज्वर**-पु०

बह अव्र जो बीच-बीचमें कम पड़ जाता हो । - **विषय**-

पु० मामूली बात; बहुत छोटा अश । - **व्यक्तितंत्र**-पु०

चंद्र लोभीका शासन, 'ओलिगाकी' । - **व्यय**-पु० बहुत

कम खर्च । वि० कृपण । - **व्रीह**-वि० बहुत कम लज्जा-

वाला, निर्लज्ज । - **शब्दा**-स्त्री० शणपुष्पी । - **क्षरीर**-

वि० बहुत छोटे कदका, छिगना । - **श्रमला**-पु० रोहित

मृग, बनगोहा । - **स्मृति**-वि० जिसे बहुत कम याद रहे ।

स्वल्पक-वि०[सं०] बहुत कम; बहुत छोटा ।

स्वल्पगुणिक-स्त्री०[सं०] कनिष्ठिका, कानी उँगली ।

स्वल्पांतर-वि०[सं०] बहुत कम अंतरवाला ।

स्वल्पायु(**स्**)-वि०[सं०] अल्पजीवी ।

स्वल्पाहार-वि०[सं०] थोड़ा खानेवाला । पु० थोड़ा

आहार ।

स्वल्पिष्ठ-वि०[सं०] थोड़ेसे थोड़ा; अत्यंत अल्प; छोटेसे

छोटा ।

स्वल्पेच्छ-वि०[सं०] जिसकी इच्छाएँ बहुत कम हों,

मत्तोषी ।

स्वल्पग्रह-वि०[सं०] जिसका आसानीसे नियंत्रण किया

जा सके, जो आसानीसे रोका जा सके ।

स्वल्पस्वल्प-वि०[सं०] अच्छी तरह टँका हुआ ।

स्ववरन-पु० सुवर्ण ।

स्वच्छाश्रम-वि० [सं०] पूर्णतः निष्कपटः बहुत सच्चा, ईमानदार ।

स्वच्छुर-पु० दे० 'श्वसुर' ।

स्वसर-पु० [सं०] सरः पोसला; दिन ।

स्वसा(स)-श्री० [सं०] रहित ।

स्वसित-वि० [सं०] बहुत काला ।

स्वसुर-पु० दे० 'श्वसुर' ।

स्वसुराश्रम-श्री० दे० 'सुराश्रम' ।

स्वस्ति-अ० [सं०] 'कल्याण हो' इस अर्थका आशीर्वाद; दान-स्वीकारका संज्ञा । श्री० कल्याण; ब्रह्माकी एक पत्नी ।

—**कर-पु०** एक योगिकार ऋषि । —**कर्म(श्)-पु०**

कल्याण करना । —**कार-पु०** स्वस्तिका उच्चारण करने-

वाला बंदी; कल्याण करना । —**कृष्-वि०** कल्याण

करनेवाला (शिव) । —**ह-वि०** कल्याण देनेवाला (शिव) ।

—**देवी-श्री०** एक देवी (जो बाजुकी पत्नी मानी जाती

है) । **पाठ-पु०** 'स्वस्तिसः' आदि मंत्रका पाठ ।

—**पुर-पु०** एक तीर्थ । —**आश्र-पु०** शिव । —**मुक्त-वि०**

जिसके मुखपर स्वस्ति शब्द हो । पु० पत्र (जो 'स्वस्ति' से

आरंभ होता है); ब्राह्मण; स्तुतिपाठक । —**बचन-पु०**

स्वस्ति शब्दका उच्चारण । —**बाचन-पु०** आशीर्वाद;

आशीर्वाद देनेवाला व्यक्ति । —**बाचन-वाचनक-पु०**

यज्ञ वा मंगलकार्य आरंभ करते समय किया जानेवाला

एक धार्मिक कृत्य; ऐसे अवसरपर ब्राह्मणकी दो जाने-

वाली दक्षिणा आदि । —**बाचनिक-वि०** आशीर्वाद

देनेवाला, कल्याण मनानेवाला । पु० दे० 'स्वस्तिवाचन' ।

—**बाच्य-पु०** आशीर्वाद । वि० जिससे स्वस्ति-बचनके

पाठके लिए कहा जाय । —**अ-पत्रके** आरंभमें लिखा

जानेवाला मंगल-मूलक शब्द ।

स्वस्तिक-पु० [सं०] चारोंका एक प्रकार (जो स्वस्ति-पाठ करता है); कोई मंगलद्रव्य; एक मंगलचिह्न जो शरीर वा किसी पदार्थपर बनाया जाता है (झं); हाथों-

को सीनेपर इस चिह्नके रूपमें रखना; इस चिह्नकी शकल-

की पट्टी; एक विशेष आकारका वाली; एक तरहका पिष्टक;

चौरैठेसे बना हुआ त्रिभुजाकार चिह्न; वह मकान जिसमें

पश्चिम एक ओर पूरब दो वाला हो; नष्टशल्य निका-

लनेका एक प्राचीन यंत्र; सितार शक; लहसुन; मुर्गा;

लपट; स्फंदका एक अनुवाद; एक नागासुर; एक दानव;

एक योगासन; सौंपके कनकरकी रेखा; एक तरहकी

प्राचीन नौका; शरीरका एक शुभ चिह्न; त्रिभुजाकार

मुकुटमणि । —**कर्म-वि०** जिसके कानपर स्वस्तिक चिह्न

बना हो । —**हाम-पु०** हाथोंकी सीनेपर स्वस्तिकके

रूपमें रखना । —**बंज-पु०** नष्टशल्य निकालनेका एक

प्राचीन यंत्र ।

स्वस्तिका-श्री० स्वस्तिक नामक मंगलचिह्न; [सं०] यन्त्रकी ।

स्वस्तिकाह्वय-पु० [सं०] चौकीका साग ।

स्वस्तिसती-श्री० [सं०] स्फंदकी एक मातृका । वि०

श्री० कल्याणी ।

स्वस्तिमात्र(मन्त्र)-वि० [सं०] सुखी, सौमन्ययुक्त ।

स्वस्तेव-पु० दे० 'स्वस्त्ययन' ।

स्वस्त्वक्षर-पु० [सं०] किसी बातके लिए कुतूहला प्रकट करना ।

स्वस्त्वचन-पु० [सं०] कृत्य-विशेषके आरंभमें विष्णुसंति-की कामनासे किया जानेवाला मंत्रोच्चार वा प्रात्यक्षित-विधान; तन्त्रप्रियासिका साधन; किसी मांगलिक कृत्यमें जाते समय दक्षके अंगे-आंगे ले जाया जानेवाला जल, पूर्ण कलश; दान स्वीकारके बाद ब्राह्मणका आशीर्वाद देना । वि० मंगलकारक ।

स्वस्त्वाम्रेव-पु० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि ।

स्वस्तीय, स्वस्तेव-पु० [सं०] रहितका वेदा, भानज ।

स्वस्तीया, स्वस्तेवी-श्री० [सं०] रहितकी वेदी, भानजी ।

स्वहाना-अ० क्रि० दे० 'सुहाना' ।

स्वाकिक-पु० [सं०] ढोल बजानेवाला ।

स्वांग-पु० [सं०] अपना ही अंग । —**अंग-पु०** अपने

ही अंगकी पहुँचनेवाली चोट आदि । —**सीत-वि०**

जिसके सारे अंग सीतल हो गये हों ।

स्वांग-पु० हंसी-मजाक वा भोखा देनेके लिए बनाया

हुआ दूसरेका रूप; हंसी-मजाकका गेल-मगशा; होर्म;

आदिर निकासा जानेवाला हास्यजनक वेषभूषणलः

जुद्ध; करतब; जो न हो वैसे होनेका दृष्ट अन्विष्टा;

करना । **मु०**—बनाया, भरना—रूप धरना, भेष बनाना;

जकल करना । —**खाना-दे०** 'स्वांग भरना' ।

स्वांगाना-स० क्रि० स्वांग बनाना ।

स्वांगी-पु० ढोंगी, स्वांग करनेवाला, अनेक रूप धारण

करनेवाला व्यक्ति । वि० रूप बनानेवाला ।

स्वांगव्यव-पु० [म०] हाथ जोड़ना (प्रार्थनाके लिए) ।

स्वांसमुखाव-म० देवल अन्य कामके मन प्रसन्न करने-

की बहलानेके लिए, किसी अन्य कामके लिए नहीं ।

स्वांस-पु० [सं०] अपना अंत, मृत्यु; अपना राज्य, हृदय,

अंतःकरण, गह्वर । वि० अभित, ध्वनित । —**ज-प**

प्रेम, प्रणय; काम । —**स्थ-वि०** उदयस्थ ।

स्वांस-पु०, श्री० दे० 'सांस' ।

स्वांस-पु० दे० 'सांस' ।

स्वाकार-पु० [सं०] स्वभाव । वि० जिसका अपना

रूप हो ।

स्वाक्षपाव-पु० [सं०] न्याय दर्शनका अनुयायी ।

स्वाक्षर-पु० [सं०] दस्तखत, हस्ताक्षर, सही । —**युक्त-**

वि० जिसपर दस्तखत किया गया हो ।

स्वाक्षरित-वि० [सं०] दस्ताक्षर किया हुआ ।

स्वागत-पु० [सं०] किसीके आगमनपर कुशल प्रश्न

आदिके द्वारा दर्पमकान, अगवाणी; एक नुस्ख । वि०

स्वयं आया हुआ; वैध कपायोंसे प्राप्त (बनाये) ।

—**कारिणीसमिति-** **समिति-श्री०** किसी समा, समे-

कर्म आनेवाके प्रतिनिधियों, दंडकीकी टिकाने, सिलाने-

पिलानेका प्रबंध करनेवाली स्वामीय समिति । —**कारि-**

(सिद्ध)-**वि०** स्वागत करनेवाला । —**पत्तिका-श्री०**

दे० 'अगतपत्तिका' । —**प्रक्ष-पु०** मिलनेपर स्वास्थादि-

के संबंधमें पूछना । —**आपण-पु०** स्वागत समितिके

अध्यक्षका माण । —**बचन-पु०** किसीके आनेपर

'स्वागत' शब्दका कथन ।

स्वागत-स्त्री० [सं०] एक वृत्त ।
 स्वागतिक-वि०, पु० [सं०] स्वागतकर्ता ।
 स्वागत-पु० [सं०] स्वागत, शुभागमन; अभिनन्दन ।
 स्वाक्ख-पु० [सं०] अच्छा वाक्खल्लन । वि० अच्छे वाक्ख-वल्लनवाला ।
 स्वाधीन-वि० [सं०] जिसने अच्छी तरह जलका आचमन किया है ।
 स्वाच्छेद-पु० [सं०] स्वच्छेदता, निर्वन्त्रणका अभाव, निर्वकुशता ।
 स्वाजम्ब-पु० [सं०] स्वजनता, संबंध ।
 स्वाजीव, स्वाजीव-वि० [सं०] आसानीसे जीविका प्रदान करनेवाला ।
 स्वाज्जकर-वि० [सं०] अमानुस धनी बनानेवाला ।
 स्वात्तम्ब-पु० [सं०] आजादी, स्वतंत्रता । -संश्राम-पु० आजादीकी लड़ाई, स्वाधीनता प्राप्ति-संग्राम ।
 -मित्र, -प्रेमी (मित्र)-वि० स्वतंत्रताका प्रेमी, आजादी-पसंद ।
 स्वात्त-स्त्री० दे० 'स्वाति' ।
 स्वाति-स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे १५ वीं जो शुभ माना गया है (कवि-समयके अनुसार) रातक इस्में ही होनेवाली वर्षाका जल पीता है और वही जल सीपके मण्डमें पहुँचकर मोती और बॉसमे बदलेचन बनता है; यही एक पत्नी; तलवार । वि० स्वाति नक्षत्रमें उत्पन्न । -कारी-स्त्री० एक कृषि-देवी । -गिरि-स्त्री० एक नागकन्या । -पंथ, -पथ-पु० आकाशमार्ग । -विंदु-पु० भ्राति नक्षत्रमें बरसनेवाले जलको बूँद । -मुख-पु० एक समाधि; एक किन्नर । -मुखा-स्त्री० एक नागकन्या ।
 -योग-पु० आपादके शुद्ध पक्षमें स्वाति नक्षत्रका चंद्रमाके साथ योग । -मुत्त, -मुत्त-पु० मोती ।
 स्वाती-स्त्री० [सं०] दे० 'स्वाति' ।
 स्वाद्-पु० [सं०] कुछ खाने-पीनेसे जीभको होनेवाला रमानुभव, जायका, लज्जत; मत्रा; (काव्यगत) सौंदर्य; * वाद, इच्छा । मु० -खाना-दे० 'मत्रा खाना' ।
 स्वादक-पु० [सं०] स्वाद चखनेवाला; राजा आदिकी पाकशालामें इस कामपर नियुक्त कर्मचारी ।
 स्वादन-पु० [सं०] स्वाद लेना, चखना; रस लेना (कविता आदिको); जायकेदार बनाना ।
 स्वादनीय-वि० [सं०] जायकेदार; स्वाद लेने योग्य ।
 स्वाद्व-पु० [सं०] रुचिकर स्वाद ।
 स्वादित-वि० [सं०] खसा हुआ, जिसका स्वाद लिखा गया हो; जायकेदार बनाया हुआ; प्रसन्न किया हुआ ।
 स्वादिमा (मन्)-स्त्री० [सं०] सुस्वादुता; माधुर्य ।
 स्वादिष्ट-वि० दे० 'स्वादित' ।
 स्वादिष्ट-वि० [सं०] अतिशय स्वाद, बहुत ही जायकेदार ।
 स्वादी (विन्)-वि० [सं०] स्वाद लेनेवाला ।
 स्वादीक-वि० स्वादिष्ट, जायकेदार, सुस्वादु ।
 स्वादु-वि० [सं०] स्वादयुक्त, जायकेदार; रुचिकर; मीठा; सुंदर; वि० पु० मधुर रस; युक्त; जीवक; बेर; अगर; महुआ; दूध; पिनाह; सेंधा नमक । स्त्री० हास । -कंट, -कंटक-पु० विंकृत; विंकटक वृक्ष; गोखरू । -कंठ-पु०

शुईकुम्हका; सफेद पिनाह; कैमुक । -कंठक-पु० कैमुक ।
 कंठा-स्त्री० विदारीकंद । -कर-पु० एक संकर जाति ।
 -काम-वि० मीठा पसंद करनेवाला । -कार-वि० जायकेदार बनानेवाला । -कोषातकी-स्त्री० तरोई ।
 -खंड-पु० युक्त मीठी चीजका टुकड़ा । -गंध-पु० रक्त शोभाजन । -गंधा-स्त्री० रक्त शोभाजन; भूमि-कुम्पांड । -गंधि-स्त्री० रक्त शोभाजन । -ठिक-पु० पीठ फल । -०फल-पु० नीबूका पेड़ । -धम्बा (स्वद)-पु० कामदेव । -घटोलिका-स्त्री० परबलकी बेल । -पर्णी-स्त्री० दुग्धिका । -पाक-वि० पकाने या पवानेमें अच्छा । -०फल-स्त्री० मकोय । -पाका-स्त्री० काकमाची । -पाकी (किन्)-वि० दे० 'स्वादु-पाक' । -पिंहा-स्त्री० पिंझनूर । -पुष्प-पु०, -पुष्पी-स्त्री० कटमी । -फळ-पु० बेरका फल; कोरै मीठा फल । -फळा-स्त्री० बेरका पेड़; खजूका पेड़; कैलेका पेड़; मुनका । -बीज-पु० पीपलका पेड़ । -अजा- (अज)-पु० परंतीय पीठ । -मस्तका-स्त्री० खजूका पेड़ । -मोसी-स्त्री० काकोली । -माषी-स्त्री० माष-पर्णी । -मुस्ता-स्त्री० एक जलीय लता । -मूल-पु० गाजर । -युक्त-वि० मधुरतापूर्ण । -योगी (मित्र)-वि० स्वादयुक्त, मीठा । -रस-वि० जायकेदार । -रसा-स्त्री० मदिरा; द्राक्षा; काकोली, आजातक; सतावरी; बूँद ।
 -लता-स्त्री० विदारीकंद । -लुंगी-स्त्री० मीठा नीबू ।
 -बारि-पु० मीठे जलका समुद्र । वि० मीठे जलवाला ।
 -विचेकी (विन्)-वि० स्वादका विवेक करनेवाला, स्वादका अंतर स्पष्ट करनेवाला । -कुंडी-स्त्री० श्वेत कटमी । -खुद्द-पु० सेंधा नमक; सामुद्रलवण ।
 स्वादुका-स्त्री० [सं०] नागदंती ।
 स्वादुल-पु० [सं०] क्षीरपूर्या ।
 स्वादिष्टिक-वि० [सं०] स्वदेश-संबंधी ।
 स्वाध-वि० [सं०] स्वाद लेने योग्य; जायकेदार ।
 स्वाद्व-पु० [सं०] स्वादिष्ट स्वाध, पकवान ।
 स्वाद्वल-पु० [सं०] अनारका पेड़; नारंगीका पेड़ ।
 स्वाही-स्त्री० [सं०] दास; खजूका पेड़; फूट ।
 स्वाधिकार-पु० [सं०] अपना अधिकार या पद; अपना कर्तव्य ।
 स्वाधिघ्न-पु० [सं०] हठयोगमें माने हुए छः चक्रोंमेंसे दूसरा जिसका स्थान शिखमूल और रूप चंद्रक कमलका माना जाता है; अपना स्थान ।
 स्वाधीन-वि० [सं०] जो अपने ही अधीन हो, दूसरेके नहीं, स्वतंत्र; आजाद; जो अपने वशमें हो; स्वच्छंद, किसीका अंकुश, दाब न माननेवाला । -पतिका, -अर्तुका-स्त्री० पतिका अपने वशमें रखनेवाली नायिका ।
 मु० -करना-सौपना, हवाले करना; स्वतंत्र करना ।
 स्वाधीनता-स्त्री० [सं०] स्वतंत्रता, आजादी । -प्रेम-पु० स्वातंत्र्य प्रियता, आजादीका प्रेम ।
 स्वाधीनी-दे० 'स्वाधीनता' ।
 स्वाध्याय-पु० [सं०] आधुतिपूर्वक वेदाध्ययन; शाखा-ध्ययन; वेद; अध्ययन; वह दिन जब अध्ययनके बाद वेदपाठ आरंभ होता है ।

स्वाध्यायवाच (बन्ध) - वि० [सं०] स्वाध्यायविशिष्ट; वेदका पाठ करनेवाला ।

स्वाध्यायार्थी (विन्) - पु० [सं०] वह विद्यार्थी जो अध्य-
यनकालमें अपनी जीविका मुर कमालेका पक्ष करे ।

स्वाध्यायी (विन्) - वि० [सं०] वेदपाठ करनेवाला । पु०
वेदपाठ करनेवाला व्यक्ति; अध्ययनशील; व्यापारी ।

स्वान - पु० [सं०] शब्द, ध्वनि; वक्त्रवाह (रथादिकी);
* दे० 'स्वान' ।

स्वाना - सं० क्रि० दे० 'सुलाना'

स्वानुभव - पु०, स्वानुभूति - स्त्री० [सं०] अपना अनुभव ।

स्वानुरूप - वि० [सं०] अपने अनुरूप, योग्य; सहज,
स्वाभाविक ।

स्वाप - पु० [सं०] नींद; स्वप्न, तंद्रा; स्वप्नोपान, मुञ्च ही
जाना । - स्वप्नव - पु० निद्रासुप्ता ।

स्वापक - वि० [सं०] निद्रा करनेवाला ।

स्वापतेय - पु० [सं०] धन, मंपति; अपनी मंपति ।

स्वापद् - पु० [सं०] दे० 'श्वापद' ।

स्वापन - पु० [सं०] सुलाना, नींद लाना; मग्नबलमें चालित
एक अल्प जितके प्रभावसे शत्रुबल तो जाता था; नींद
लानेवाली दवा । वि० नींद लानेवाला ।

स्वापराध - पु० [सं०] अपने प्रति अपराध ।

स्वापी (विन्) - वि० [सं०] नींद लानेवाला ।

स्वाप्त - वि० [सं०] बहुत अधिक; सुकुशल; विश्रुत; स्वयं
प्राप्त किया हुआ ।

स्वाप्त - वि० [सं०] स्वप्न संबंधी; निद्रा-संबंधी ।

स्वाभाव - पु० [सं०] अपना अनसिद्ध ।

स्वाभाविक - वि० [सं०] स्वाभावसे उत्पन्न, स्वाभावसिद्ध,
प्राकृतिक; वैदादशी । पु० बौद्धोंका एक मप्रदाय । -
वर्णन - पु० यथार्थ, बनावट या अत्युक्ति रहित वर्णन ।

-व्याधि - स्त्री० स्वाभावसे प्राप्त व्याधि - जैसे भूख-ध्याम,
जरा-मृत्यु इत्यादि ।

स्वाभाविकेतर - वि० [सं०] जो स्वाभाविक न हो, अमाक-
निक ।

स्वाभाव्य - वि० [सं०] जिसका अस्तित्व आपसे आप हो
(विष्णु) । पु० स्वाभाविक स्थिति, स्वाभाविकता; निजी
विशेषता ।

स्वाभाव्य - वि० [सं०] बहुत दीप्तिमान् ।

स्वाभिमान - पु० [सं०] अपनी प्रतिष्ठाका अभिमान, आत्म-
मग्गान ।

स्वाभील - वि० [सं०] प्रसन्न, शीघ्र ।

स्वामि - पु० दे० 'स्वामी' ।

स्वामित्व - पु० स्वामित्व ।

स्वामिन् - स्त्री०, स्वामित्व - पु० [सं०] मालिकपन,
प्रभुत्व; राज्य ।

स्वामिन - स्त्री० दे० 'स्वामिनी' ।

स्वामिनी - स्त्री० [मं०] मालिकिनी; प्रभुकी पत्नी; राधिका
(वृद्धम-संप्रदाय) ।

स्वामी (विन्) - वि० [सं०] जिसे स्वत्व प्राप्त हो । पु०
मालिक, प्रभु; नरेश; पति; बौद्ध; गुरु, आचार्य; घरका
मुखिया; विद्वान्, प्राक्कण; सम्पात्ता; कार्तिकेय; ईश्वर;

विष्णु; शिव; वात्स्यायन; महर्ष; सेनानायक; गत
उत्सृपिणीके ग्यारहवें अर्धन; देवमूर्ति या देवालय । -
(मि) कार्तिकेय - पु० कार्तिकेय; एक ताल (संगीत) ।

-कार्य - पु० राजा या मालिकका कार्य । - कार्यार्थी
(विन्) - वि० मालिकका फायदा चाहनेवाला । - कुमार

- पु० कार्तिकेय । - जंजी (विन्) - पु० परशुराम ।

- जमक - पु० पतिका पिना, इन्धु । - अक्ष - वि०

स्वामीमें अति रखनेवाला, बफादार (नौकर) । - अक्षि -

स्त्री० स्वामीके प्रति भक्तिभाव, बफादारी । - अक्षरक -

पु० उत्तम स्वामी । - आश - पु० स्वामित्व, स्वामीका

भाव । - अक्ष - वि० स्वामीसे प्राप्त; स्वामी या पतिपर

निर्भर । - बास्वस्व - पु० प्रभु या पतिके प्रति प्रेम ।

- मज्जाव - पु० स्वामीका अस्तित्व; स्वामीकी अच्छाई ।

- सेवा - स्त्री० स्वामीकी इच्छा; पतिका आदर-सम्मान ।

स्वाम्याव - वि० [मं०] परपरागत ।

स्वाम्य - पु० [सं०] प्रभुत्व, मालिकी; स्वत्व; ज्ञानना-

धिकार । - कारण - पु० प्रभुत्वका कारण ।

स्वाम्युपकारक - वि० [सं०] मालिकका हित करनेवाला ।
पु० धोषा ।

स्वाधुभव - पु० [मं०] प्रथम मनु जिनको उत्पत्ति स्वयं
ब्रह्माके हाथसे अंगमें मानी जाती है; अवि; नारद. एक
शैवर्ण्य । वि० स्वयंभुसम्बन्धी; मनु. स्वाधुभव मन्त्री ।

- मनुपिता (पु) - पु० ब्रह्मा ।

स्वाधुवर्षी - स्त्री० [सं०] माक्षी ।

स्वाधुवर्ष - पु० [मं०] स्वाधुवर्ष ।

स्वावत्त - वि० [मं०] जो अपने ही अधीन. अपने हा अर्ध
कारमें हो, जिसपर दूसरेका ज्ञानन-निष्पन्न न हो
- ज्ञानन - पु० लोकप्रतिनिधियों द्वारा परिवर्तित
ज्ञानन; स्थानिक ज्ञानन (जिला बोर्ड आदिका) ।

स्वार - पु० [मं०] गोरका धारा; मेघध्वनि, स्वरित स्वर.

* सवार । वि० स्वार-सम्बन्धी ।

स्वारक्ष - वि० [सं०] आत्मानसे रक्षा करने योग्य ।

स्वारक्ष - पु० स्वार्थ, अपना फायदा, अपना काम । वि०
सिद्ध, मफल, कृतार्थ ।

स्वारक्षी - वि० स्वार्थ, अपना लाभ देखनेवाला, लुरगर्न ।

स्वारक्षिक - वि० [सं०] स्वारक्षयुक्त, सहज माधुर्ययुक्त
(काव्यादि); प्राकृतिक, स्वाभाविक ।

स्वारक्ष - पु० [सं०] सहज, स्वाभाविक रस, मिठास,
लुब्ध; स्वाभाविकता ।

स्वाराज्य - पु० [मं०] स्वाधीन राज्य; इंदुका राज्य, स्वार्थ-
लोक; ब्रह्मके माथ साहस्य वा अम्रेत ।

स्वाराज्य - पु० [सं०] ब्रह्म ।

स्वारी - स्त्री० दे० 'सवारी' ।

स्वारक्ष - वि० [सं०] अच्छी सवारी करनेवाला; (घोडा)
जिसपर अच्छी तरह सवारी की गयी है ।

स्वारीविषय - पु० [सं०] स्वरोविषयके पुत्र दूसरे मनु । वि०
स्वारीविषय मनु-संबन्धी ।

स्वामित्व - वि० [मं०] अपना कमाया हुआ ।

स्वार्थ - पु० [सं०] (स्वयंका) अपना अर्थ, वाच्यार्थ; अपना
पन; अपना मतलब, बरज, प्रयोजन, अपना लाभ ।

वि० अपना ही मतलब देखनेवाला; बाच्चापर्ववाला; जिसका कोई निजी उद्देश्य हो; मकल।-**स्वाग**-पु० अपने स्वाध, अपने लाभका स्वाग, आत्मन्याय।-**स्वाधी**-(वि०)-वि० स्वार्थका स्वाग करनेवाला।-**पंडित**-वि० स्वार्थसाधनमें बहुत।-**पद**,-**परायण**-वि० जिमें अपने ही स्वार्थकी चिंता ही, जो अपना ही मतलब देखे, सुदुर्गर्ब।-**परता**,-**परायणता**-**जी०** स्वार्थीपन, सुदुर्गर्बी।-**प्रयत्न**-पु० अपने लाभकी योजना वा उपाय।-**भाक्(ज)**-वि० अपना कारबार देखनेवाला।-**अंतर्पर**-वि० अपने हितके लिए धातक।-**क्षिप्त**-वि० स्वार्थसाधनके लिए लालायिन रहनेवाला।-**विघात**-पु० अपने स्वार्थ, कार्य, प्रयोजनकी हानि।-**संपादन**-पु० दे० 'स्वाध-साधन'।-**साधक**-वि० अपना मतलब निकालनेवाला।-**सत्तन**-पु० अपनी गरज, मतलब निकालना, प्रयोजनकी पूर्ति।-**सत्तन**-वि० अपना मतलब निकालनेपर तुला डुबा।-**सिद्धि**-**जी०** प्रयोजनकी पूर्ति, काम निकालना।
स्वार्थाच-वि० [सं०] जो स्वार्थचिन्ता, स्वार्थसाधनमें अंधा हो गया हो, जो केवल अपना मतलब देखे, दूसरेकी हानि और लाभका भ्रमाल न करे।
स्वार्थमिश्रवात-पु० [सं०] स्वार्थसिद्धिके उद्देश्यमें माध किया हुआ आदमी।
स्वार्थिक-वि० [सं०] बाच्चापर्वयुक्त; जिसका अपना कोई प्रयोजन हो; अपने धनमें किया हुआ।
स्वार्थी(वि०)-वि० [सं०] जो अपना ही मतलब देखे, सुदुर्गर्ब।
स्वार्थोपपत्ति-**जी०** [सं०] प्रयोजनकी निधि।
भ्वाळ-पु० दे० 'सवाल'।
भ्वाळक्षण, **भ्वाळस्थ**-वि० [सं०] जिसकी मरलतामें पहचान हो जाय।
भ्वाळक्षण-पु० [सं०] स्वभाव, विशेषता, खासीयन।
भ्वाळप-वि० [सं०] बहुत छोटा; बहुत मोटा; बहुत कम।
 पु० छोटापन; कमी, अल्पता।
भ्वाचना-[सं०] कि० सुलाना-'जागि-जागि स्वागत हो'-बन०।
भ्वाचमामन-पु०, **भ्वाचमामना**-**जी०** [सं०] आत्म-भर्त्सना।
भ्वाचल्लन-पु० [सं०] अपना ही भरोसा करना, दूसरेसे सहायता न लेना।
भ्वाचल्लकी(वि०)-वि० [सं०] अपने ही बलपर काम करनेवाला, दूसरेका भरोसा न रखने, दूसरेमें सहायता न लेनेवाला।
भ्वाअच-पु० [सं०] अपने भरोसे रहना। वि० विचारणीय विषयसे संबंध रखनेवाला।
भ्वाअत-वि० [सं०] स्वावलंबी।
भ्वाअ-पु०, **भ्वाअ**-पु०, **जी०** दे० 'अत'।
भ्वाअ-पु० [सं०] स्वस्वता, आरोग्य; संतोष, चित्का शांत, निरद्विग्न होना।-**कर**,-**प्रद**-वि० स्वास्थ्य देनेवाला।-**अर्थ**-पु० स्वास्थ्यका विग्रह जाना।-**रक्षा**-**जी०** स्वास्थ्य, तंदुल्लकी रक्षा।-**विज्ञान**-पु०

स्वास्थ्यके नियम-सिद्धांत, स्वास्थ्य कैसे बना रह सकता और विग्रहा है, वह बतातेवाला शास्त्र।-**विभाग**-पु० राज्य, म्युनिसिपल बोर्ड आदिका जन-स्वास्थ्यकी रक्षाका प्रयत्न करनेवाला महकमा।-**हानि**-**जी०** स्वास्थ्यका नाश, तंदुल्लकी विषय जाना।

स्वाहा-**जी०** [सं०] अग्निकी पत्नी। अ० हविर्दानके समय उच्चारण किया जानेवाला एक शब्द।-**करण**-पु० स्वाहाका उच्चारण करते हुए हवि देना।-**कार**-पु० 'स्वाहा' शब्दका उच्चारण।-**कृति**,-**कृती**-**जी०** दे० 'स्वाहाकरण'।-**कृत्**-पु० यज्ञकर्ता।-**पति**,-**प्रिय**,-**बल्लभ**-पु० अग्नि।-**सुहृ(ज)**-पु० देवता।-**वन**-पु० एक जंगल।**सु०**,-**करना**-कूंक डालना, नष्ट कर देना।-**होना**-नष्ट होना।

स्वाहार-वि० [सं०] जो आसानीसे प्राप्त हो जाय। पु० अच्छा स्वाधपदार्थ।

स्वाहाई-वि० [सं०] स्वाहाके योग्य; हवि पानेके योग्य।
स्वाहाशन-पु० [सं०] देवता।

स्वाह्य-पु० [सं०] स्तब्ध।

स्विदित-वि० [सं०] जिसे पत्नीना निकला या निकल रहा हो; पिघला हुआ।

स्विन्न-वि० [सं०] पत्नीनेमें नष्ट; डबला हुआ, मीझा हुआ; पित्त।

स्विष्ट-वि० [सं०] बांछित; प्रिय; सुपूजित, सुसम्मानित।

स्वीकरण-पु० [सं०] स्वीकार करना, ग्रहण करना, अपनाना; मानना; वचन देना; पक्षी-रूपमें ग्रहण करना।
स्वीकरणीय, **स्वीकर्तव्य**-वि० [सं०] स्वीकारके योग्य।

स्वीकर्ता(त)-वि० [सं०] स्वीकार करनेवाला।

स्वीकार-पु० [सं०] अंगीकार; अपनानेकी क्रिया, अपना कर लेना; ग्रहण; पक्षी-रूपमें ग्रहण; मानना, कबूल करना; वचन, स्वरकार।-**ग्रह**-पु० बाकेजनी, जर्बर्त्सी ले लेना।-**पत्र**-पु० दानपत्र'।-**रहित**-वि० जिनके लिए स्वीकृति न हो।

स्वीकारना-म० कि० स्वीकार करना; ग्रहण करना।

स्वीकारोक्ति-**जी०** [सं०] अपना अपराध स्वीकार करना।

स्वीकार्य-वि० [सं०] स्वीकार करने योग्य।

स्वीकृच्छ्र-पु० [सं०] एक व्रत (इसमें तीन-तीन दिनतक गोमूत्र, गोबर और जौकी लपसी खाकर रहा जाता है)।
स्वीकृत-वि० [सं०] स्वीकार किया हुआ, माना, अपनाया हुआ; बाद किया हुआ।

स्वीकृति-**जी०** [सं०] स्वीकार, मजूरी; अपनाना, अपने अधिकारमें लेना।

स्वीच-वि० [सं०] अपना; स्वकीय। पु० आत्मीय, स्वजन।
स्वीचा-**जी०** [सं०] पतिमें अनुराग रखनेवाली, पतिव्रता स्त्री; स्वकीया।

स्वीचाक्षर-पु० [सं०] हस्ताक्षर, सहो।

स्वे-वि० दे० 'स्व'।

स्वेच्छा-**जी०** [सं०] अपनी श्रेष्ठा, मरजी।-**चार**-पु० दे० क्रममें।-**चारी(वि०)**-वि० दे० क्रममें।-**अरज**-पु०, वि० दे० 'स्वेच्छा-मृत्यु'।-**मृत्यु**-**जी०**

अपनी इच्छासे मरना । पु० जीव्यपितामह । वि० अपनी इच्छासे मरनेवाला, स्वेच्छामरणका अधिकारी । -स्वेवक-पु० दे० 'स्वयं-सेवक' । -सैनिक-पु० अवैयक्तिक सिपाही, अकसर ।

स्वेच्छाचार-पु० [सं०] मनमाना आचरण, जो मनमें आये वह करना, निरंकुशता ।

स्वेच्छाचारिता-स्त्री [सं०] निरंकुशता, अपनी मन-मानी करनेका भाव ।

स्वेच्छाचारी(रिक्)-वि० [सं०] मनमाने आचरण करनेवाला, निरंकुश, वषेच्छाचारी; नियम-कानूनका बधन न माननेवाला (शासक) ।

स्वेच्छोपहार-पु० [सं०] (क्रोमिष्ट) स्वेच्छामे शानमे या उपहार में दो गयी वस्तु ।

स्वेत-वि० दे० 'स्वेत' ।

स्वेव-पु० [सं०] पत्नीना; भाप; गरमी; पत्नीना कानेका साधन । वृषक-पु० ठंडी हवा । -चिह्न-वि० रश्मि दूर करनेवाला, ठंडा करनेवाला । -ज-वि० पत्नीसे उत्पन्न होनेवाला; ताप या भापसे उत्पन्न होनेवाला । पु० स्वेदसे उत्पन्न होनेवाले जीव-संयमक आदि । -०क्षाक-पु० छत्रक । -जल-पु० पत्नीना । -०कल-पु०, -०कलिका-स्त्री० पत्नीके बूँद । -मास-पु० बाप ।

-विदु-पु० पत्नीके बूँद । -मासा(रु)-स्त्री० पचे हुए खाद्य-पदार्थसे उत्पन्न रस, अन्नरस । -लेख-पु० स्वेदविदु । -वारि-पु० दे० 'वैद्वजल' । -विप्रट-

(रु)-पु० स्वेदविदु ।

स्वेदक-वि० [सं०] पत्नीना कानेवाला । पु० कानिलौह । स्वेदन-पु० [सं०] पत्नीना निकलना; स्वेदन-वन्न; पारेका शोधन; श्लेष्मा; बफारा देना । वि० पत्नीना लानेवाला ।

स्वेदनिका-स्त्री० [सं०] तवा; देगनी; धमका; पाकडाना । स्वेदनी-स्त्री० [सं०] तवा; कड़ाही ।

स्वेदांशु-पु० [सं०] स्वेदजल ।

स्वेदाचन-पु० [सं०] पत्नीना निकलनेका मार्ग, रोमकूप । स्वेदित-वि० [सं०] जिसे पत्नीना हुआ हो, स्वेदयुक्त, बफारा दिया हुआ; जिसका पत्नीना निकाला गया हो ।

स्वेदी(रिक्)-वि० [सं०] स्वेदयुक्त; पत्नीना लानेवाला । स्वेदीदक, स्वेदीदक-पु० [सं०] स्वेदजल ।

स्वेदीदम-पु० [सं०] पत्नीनेका निकलना । स्वेद-वि० [सं०] स्वेदीदपादक माधनसे उपचार करने

वायु ।

स्वेष्ट-वि० [सं०] अपनेको प्रिय ।

स्वेष्ट-मर्ब-सो हो, बही ।

स्वैर-वि० [सं०] मनमाना आचरण करनेवाला, निरंकुश, स्वच्छं, स्वेच्छाचारी; सुस्त, मंद; ढीला; धीरे-धीरे, मन-कंठापूर्वक चलनेवाला, ऐच्छिक । पु० मनमानी, स्वच्छ-दत्ता; वषेच्छा विहार । -कथा-स्त्री० अवाधित वार्तालाप, ककाम । -गत-वि० ऐच्छिक, स्वच्छं भ्रमण करने-वाला । पु० ऐच्छिक गमन, स्वच्छं भ्रमण । -गति-वि० दे० 'स्वैर-गत' । स्त्री० स्वेच्छापूर्वक भ्रमण करना ।

-चारिणी-वि० स्त्री० मनमाना आचरण करनेवाली, व्यभिचारिणी (स्त्री) । -चारी(रिक्)-वि० मनमाने काम करनेवाला, स्वतंत्र । -बली(रिक्)-वि० इच्छानु-सार काम करनेवाला । -विहारी(रिक्)-वि० इच्छानु-सार भ्रमण करनेवाला । -वृत्त-वि० दे० 'स्वैरवर्ता' । -वृत्ति-वि० दे० 'स्वैरवर्ता' । स्त्री० मनमानी, स्वच्छ-दत्ता । -वृत्त-वि० उदासीन रहनेवाला ।

स्वैरता, स्वैरिता-स्त्री० [सं०] मनमानी, स्वच्छदत्ता । स्वैर-पु० [सं०] एक राधा, ज्योतिमानका पुत्र; स्वैर-पु द्वारा शासित एक वर्ष ।

स्वैराचार-वि० [सं०] स्वेच्छाचारी । पु० स्वेच्छाचार । स्वैराचारी(रिक्)-वि० [सं०] स्वेच्छाचारी, निरंकुश ।

स्वैराकाप-पु० [सं०] दे० 'स्वैरकथा' । स्वैराहार-पु० [सं०] वषेच्छा आहार, पदार्थ आहार ।

स्वैरिणी-स्त्री० [सं०] दे० 'स्वैरिणी' । स्वैरिणी-स्त्री० [सं०] कुशला, व्यभिचारिणी; चण-गादक (?) ।

स्वैरी(रिक्)-वि० [सं०] इच्छानुसार घूमने या दान करनेवाला, निरंकुश, स्वच्छं ।

स्वोद्य-वि० [सं०] अपनेमे उत्पन्न; स्वाभाविक । स्वोद्य-पु० [सं०] किसी आकाशीय पिण्डका विशेष स्थान पर उदित होना ।

स्वोपधि-पु० [सं०] अवलम्ब । स्वोपाशित-वि० [सं०] अपना कमाया हुआ, स्वयमर्जित ।

स्वोरस-पु० [सं०] तेलीय पदार्थ; निकर पर पीसनेके बा; उसमें लगा हुआ (उस पदार्थका) अंश या तलछट ।

स्वोवशीय-पु० [सं०] मुख; मुखकि (विशेषकर भाषी जीवनमें) ।

ह

ह-नागरी वर्णमालाका तृतीयवाँ और ऊष्मवर्णका अगिम व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान कंठ है ।

हंक-स्त्री० हॉक, पुकार; ललकार; बड़ाव । हँकना-अ० कि० हुकारना; गला फाड़कर चिलाना; सोंह आदिका जोरसे शोरना ।

हँकना, स्त्री० हँकना-पु० हँकनेकी क्रिया । हुं-देना, अरना, मारना-बहुत जोर-जोरसे जोर देनेका वार हँकना ।

हकनी-स्त्री० पैलोक्री हँकनेका एक तरहका ढंका

जिसमें एक कील लगी रहती है, पैना; हँकनेकी क्रिया ।

हँकरना-अ० कि० दे० 'हँकना' । स० कि० बुलवाना, बुला मंगना ।

हँकरना-अ० कि० बुलाना, पुकारना; बुलवाना ।

हँकराव, हँकरावा-पु० बुलाना, आमंत्रण, निमंत्रण, पुकारने, बुलानेकी क्रिया ।

हँकवा-पु० जोरके शिकारमें जोर-शुक्र मचा, बाजा आदि बजाकर उमे मचानेके निकट जाना जिसमें शिकारी उसका शिकार कर सके ।

हँकवाना-स० कि० चौपायोंको किसीके द्वारा हटवाना, भगवाना; (रखें; बैलगाड़ी आदिकी किसीके द्वारा) चलवाना; किसीसे किसीको पुकारवाना, बुलवाना।

हँकवैया-पु० हँकनेवाला व्यक्ति।

हँकार-स्त्री० हँक, पुकार; ललकार। **सु०**-**देना**,-**मारना**-ललकारना; पुकारना।

हँकार्-स्त्री० चौपायोंको हँकनेकी क्रिया; बैलगाड़ी आदिके हँकनेका काम; हँकनेका पारिश्रमिक।

हँकाना-म० कि० हँकवाना; हँकाना।

हँकार-स्त्री० वह ललकार जो बुद्ध, लकार्-रक्षणके अवसरों पर सुनी जाती है, हुंकार; * अहंकार, धमंड।

हँकार-स्त्री० ललकार; किसीके पुकारने, संबोधन करनेकी ऊँची आवाज, पुकार। **सु०**-**देना**-पुकारना।

-पड़ना,-**लगाना**-पुलाने, संबोधन करनेकी क्रियाका होना, पुकार या चिताइत मचना।

हँकारना-स० कि० ललकारना; ऊँचे स्वरमें बुलाना, पुकारना, संबोधन करना; पाम बुलाना, निकट आनेके लिए कहना। **अ०** कि० हुंकारना, हुंकार करना।

हँकारा-पु० बुलाना; आमंत्रण, निमन्त्रण; पुकार, बुलवानेकी क्रिया।

हँकारी*-वि० अहकारी, धमंडी।

हंगामा-पु० [फा०] मारपीट, दुल्लह, हला-गुल्ला, हलबल, उपद्रव।

हंजा-स्त्री० [म०] बेरी, मेबिका (ना०)।

हंजि-स्त्री० [म०] छीक।

हंजिका-स्त्री० [म०] दानी, परिचारिका; भामा।

हंटर-पु० एक तरहका चापुक जो लंबा होता है, कोका।

सु०-**जमाना**,-**लगाना**-हंटर मारना।

हंजना-अ० कि० घूमना, फिरना; बेमेलव घूमना। **म०** कि० चीजोंको उलट-पलटकर ढेंटना।

हंजल-पु० दे० 'हंडिल'।

हंजा-पु० पानी इत्यादि रखनेका नौबे या पीतलका बना धड़े जैसा बड़ा पात्र। स्त्री० [म०] मिट्टीका बहुत बड़ा पात्र; निम्न जातिकी स्त्री, दासी आदि।

हंडिका-स्त्री० [म०] बटलोई जैसी आकृतिवाला मिट्टीका बरतन, होरी। **-सुत**-पु० मिट्टीका छोटा बरतन।

हँकिया-स्त्री० एक प्रकारका मिट्टीका बरतन; हंडिकाके ढंगका छोटीका पात्र जो झोमके लिए राखीके कमरेमें अथवा विवाह आदिके अवसरोंपर छममें लटकाया जाता है; एक तरहकी शराब जो जो, चावल आदिसे बनायी जाती है। **सु०**-**पकाना**-मोजन पकानेके लिए हंडीमें पानी आदि डालकर आगपर रखना। **-ढागना**-मोजन बनाना।

हंडी-स्त्री० [स०] दे० 'हंडिका'।

हंत-अ० [म०] हथ, खेद, विशाद, अनुकंपा, आश्चर्यादिकी एक शब्द। **-कार**-पु० 'हंत' शब्द; अनिधिकी दिया जानेवाला अन्न।

हंतव्य-वि० [स०] बध्य, हननके योग्य, मार डालने योग्य; उल्लंघनीय; खंडनीय, अप्रमेय।

हंता(व)-(स०) मार डालनेवाला, विनाशक; डाकू।

-(व)सुख-पु० एक मालग्राह।

हंतु-पु० [स०] हनन; मृत्यु; बल। **-काम**-वि० वधेच्छु। **-अना(नम्)**-(वि०) जिसकी वध करनेकी नीयत हो।

हंतोकि-स्त्री० [स०] 'हंत' शब्दका प्रयोग, हंतकार; सभामुक्ति, कथना।

हंती-वि० स्त्री० [स०] वध करनेवाली।

हंतीरी*-स्त्री० हथेली।

हंतीरा-पु० दे० 'हथोरा'।

हंतीरी-स्त्री० दे० 'हथोरी'।

हँकनि*-स्त्री० हँकनेकी क्रिया।

हँबा, **हंभा**-स्त्री० [म०] बल आदिका रमाना। **-रव**-पु० रमौनेका शब्द, गोघ्वनि।

हंस-पु० [स०] बड़ी-बड़ी झोलोंमें रहनेवाला एक मफेद जलपक्षी (भान-मेरमे इमके रंगमें मिश्रता भी होती है और कविसमयके अनुसार यह रूपसे पानी अलग कर देता है); ब्रह्मा; आत्मा; जीवात्मा; पंच प्राणवासुओंमें एक; सूर्य; शिव; विष्णु; कामदेव; सम्न्वासियोंका एक भेद; अलौकिक गुणोंमें युक्त मनुष्य; लोभारिहिन नरेश; अथ; उत्तम मारवाहक बैल या भैंसा; पर्वत; विशेष आकृतिका मंदिर; एक मन्त्र; चौड़ी; ट्रेष, ईश्वरी ईश्वरी-देशमें रहित व्यक्ति; दो प्रकारके वृक्ष; एक ताल (संगीत); दीश्वगुरु, आचार्य; एक देवगर्भव; ब्रह्माका एक पुत्र; वासुदेवका एक पुत्र; जरासभका एक सेनानायक; एक पर्वत; चंद्रमाका एक अंश; एक तरहका नृत्य; ब्रह्मदीप-निवासी ब्राह्मण; अग्रणी व्यक्ति या वस्तु। **-कांसा**-स्त्री० हंसी। **-कांसीतनव**-पु० भैंसा। **-कीलक**-पु० एक रतिवध। **-कूट**-पु० हिमालयकी एक चोटी; ककुर, डिह्रा। **-रा**-पु० ब्रह्मा। **-गति**-स्त्री० हंसकी सी मोहक गति; ब्रह्मप्राप्ति; एक वृत्त। **-गङ्गा**-स्त्री० सधुरभाषिणी स्त्री। **-गमव**-पु० हंसकी चाल।

-गमना-स्त्री० एक सुरागना। **-गर्म**-पु० रत्नविशेष।

-गामिनी-स्त्री० हंसकी-सी गतिवाली स्त्री; ब्रह्माणी।

-वृष-पु० एक वृक्ष। **-चौपद**-पु० [हि०] पारसोंमें

खेला जानेवाला एक पुराना खेल। **-च्छत्र**-पु० मोड़।

-ज-पु० स्वेदका एक अनुचर; धमेराज, कर्ण आदि।

-जा-स्त्री० सयंपुत्री, यमुना। **-आसीष**-वि० हम

बर्गका (पक्षी)। **-तूल**-पु०,-**तूलिका**-स्त्री० हमके

मुलायम पर। **-दाहज**-पु० अंगुर। **-द्वार**-पु०

मानम झोले पासकी एक बाड़ी। **-द्वीप**-पु० एक

टापू। **-नाद**-पु० इसध्वनि, हंसका कहरव। **-नादिनी**-

वि० स्त्री० सधुरभाषिणी। स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद

(पतली कमर, बड़े नितंब, गजकी चाल और कोयलके

स्वरवाली), सुंदर स्त्री। **-नारी(दिव)**-वि० हंस जैसी

ध्वनि करनेवाला। **-नाभ**-पु० एक पर्वत। **-नीलक**-

पु० दे० 'हंसकीलक'। **-पक्ष**-पु० हाथोंकी एक विशेष

स्थिति। **-पथ**-पु० एक जनपद। **-पद**-पु० हमका

पैर (चिह्न); एक तौल, कर्ष। **-परिका**-स्त्री० दुर्धनकी

पहली पत्नी। **-परी**-स्त्री० गोपापटी नामकी लता;

एक वृक्ष; एक अप्सरा। **-पाद**-पु० हंसका पैर; ईश्वर;

सिद्ध; पारा । -पादिका-खी० हंसपदी नामक कला ।
-पारी-खी० हंसपदी नामक कला । -प्रपतन-पु०
एक तीर्थ । -बीज-पु० हंसका अंश । -मंगला-
खी० एक सकर राशिनी । -माका-खी० हंसपक्षि;
एक तरहकी बतख; एक वृत्त । -माका-खी० मावपणी ।
-मुल्ल-वि० हंसकी बोंब जैसा बना हुआ । -बाज-
पु० हंसकी सवारी या वान खींचनेके काममें जाता ।
वि० हंस जिसका वान हो । -बुल्ल-वि० हंस द्वारा
खींचा जानेवाला (महाका रथ) । -रथ-पु० मक्का ।
-रथ-पु० हंसका कलरव । -राज-पु० वडा हंस;
एक दूती । -रथ-पु० हंस-रथ । -रोय-पु० दे०
'हस्तुल' । -किपि-खी० एक तरहकी किपि । -खीक-
पु० एक नाक (संगीत) । -कोमदा-पु० काथीस ।
-कोहक-पु० पीतल । -बंस-पु० सूर्यवंश । -बषक-
पु० स्कंदका एक अनुचर । -बाह-वि० हंसकी सवारी
करनेवाला । -बाह-पु० मक्का । -विक्रान्तगामिना-
खी० हंस जैसी नाक । -अंणी-खी० हंसपक्षि । -सुता
-खी० यमुना नदी ।

हंसक-पु० [सं०] हंस पक्षी; पैरोंमें पहननेका नृषण,
नूपुर, बिछिया आदि ।

हंसन-खी० हंसनेकी क्रिया; हंसनेका दग ।

हंसना-अ० कि० खुले मुँहसे बेगपूर्वक हँसनाजिन निका-
लना; प्रसन्न होना; खुशी मनाना; मजाक करना; अच्छा
देख पड़ना, रीनकरा जान पड़ना । * म० कि० उप-
हास करना । हंसता चेहरा, हंसता मुँह-पु० प्रसन्न
मुख । हंसतामुखी-वि० प्रसन्नवदन । मु० हंसकर
बात उठाना-किमी बातकी अनान्वयिक समझकर उसपर
ध्यान न देना । हंसते-बोलते-मजाक करतेकरते,
दिल्लीगोमे । हंसते-हंसते-हंस-हंसकर, बहुत हंसते
हुए । * पेटमें बल पड़ जाना-अधिक हँसनेके कारण
पेटमें एक प्रकारकी घंठन होने लगना । * छोट जाना-
बहुत हंसते हुए लोटपोट होने लगना । हंस देना-हंसने
लगना । हंसना-बोलना-दिल्लीगो, मजाक करना;
प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करना । हंस पड़ना-हंस देना ।
हंस-बोलकर बसर करना-प्रसन्नतापूर्वक जीबन-निर्वाह
करना । हंस-बोल लेना-प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करना,
हँसी-खुशीसे बातचीत करना ।

हंसनि-खी० दे० 'हंसन' ।

हंसनी-खी० मादा हंस, हमी ।

हंसमुख-वि० प्रसन्न, प्रफुल्लवदन, हंसते चेहरेवाला;
दिल्लीगोवाज, विनोदी ।

हंसकी-खी० गलेके नीचेकी एक हड्डी; खिवोका एक गहना
जो गलेमें पहना जाता है ।

हंसपदी-खी० [सं०] हंसपदी कला; दुध्यतकी प्रथम पक्षी ।

हंसाग्रि-पु० [सं०] ईगुर ।

हंसाङ्ग-वि० [सं०] दवेन ।

हंसाई-खी० ठंडा, हसी; मिठा, बदनामी; उपहास ।

हंसाधिकार-खी० [सं०] सरस्वती ।

हंसाभा-स० कि० किमीको हाथीमुख्य करना, हंसनेमें
प्रवृत्त करना; खुस करना । मु० हंसा मारना-बहुत

हंसाना ।

हंसाभिर-पु० [सं०] चौदी ।

हंसाभ-खी० हंसी, हंसाई ।

हंसाक-वि० [सं०] हंसपर सवार । पु० मक्का ।

हंसाक-खी० [सं०] सरस्वती ।

हंसाखि-खी० [सं०] एक माविक छंद ।

हंसावली-खी० [सं०] हंस-भोगी ।

हंसाव-पु० [सं०] हाथीकी एक विशेष स्थिति ।

हंसिका-खी० [मं०] हसी ।

हंसिनी-खी० हंसी; [सं०] चलनेका एक विशेष रंग ।

हंसिया-पु० कोहेका एक धनुषाकार औजार जिसमें फसल,
तरकारी आदि काटते हैं ।

हंसिर-पु० [सं०] एक तरहका वृद्ध ।

हंसी-खी० [सं०] मादा हंस; एक वर्णवृत्त ।

हंसी-खी० हंसनेकी क्रिया, हास; मजाक, दिल्लीगो; उप-
हास; बदनामी; लेक, आसान काम । -खेल-पु० दिल्लीगो
और खेल, आसान काम । -ठोखी-खी० हंसी-मजाक,
दिल्लीगो । मु०-उठाना-किमीका मजाक होना; किमीका
बनाया जाना । -उठाना-किमीको बनाना, किमीको
मद करना । -छुटना-तेजीमें हंसी मारना । -जब्त कर
लेना-हंसी रोक लेना । -मानना-मामूल्य या आमान
काम या बात समझना । -में उठ जाना-में उठना-
किमी कामका मजाक या दिल्लीगोमें टप मारना । -मे
उठा देना-मे उठाना-किमी कामको दिल्लीगोमें टप
देना । -में टालना-किमी बुरी बातकी गंभीरतापूर्वक
ग्रहण न करना, किमीकी बुरी हरकतपर गौर न कर हँस-
कर सहन कर देना । -में फूल खपना-किमीका हँसना
(हंसनेकी क्रिया) अच्छा लगना । -में ले जाना
किमी बातको मजाक बना देना । -में ले लेना-किमी
बातकी गंभीरतापूर्वक ग्रहण न करना । -समझना-
आमान बात या काम मानना, खवाक, परवाह न
करना । -सुझना-हास्य, विनोद, मजाक करनेकी
प्रवृत्ति होना ।

हंसुकी-खी० दे० 'हंसनी' ।

हंसीक-वि० हंसनेवाला, विनोदप्रिय, विनोदी, दिल्लीगो-
वाज ।

हंसोर-वि० दे० 'हंसो' ।

हंसोई, हंसोई-वि० हास्ययुक्त; मजाकभरा, परिहास
पूर्ण; हंसनेकी प्रवृत्तिवाला, जो स्वभावसे ही हंसनेवाला हो ।

ह-पु० [सं०] सिक्का एक विग्रह, नकुलीश; बल; आकाश;
स्वर्ग; रक्त; शून्य, सिफर; च्यान; बारण; श्रुम, मगल;
भय; ज्ञान; चंद्रमा; विष्णु; बुद्ध; अद्वय; धर्म; चिकित्सक;
रोमाच; कारण, हेतु; पापहरण; सतीपचारण; सुख; हास;
मक्का; आनंद; अल; रत्नकान्ति; आह्वान; वीणाका स्वर;
नियोग; क्षेत्र; निग्रह; मिठा; प्रसिद्धि; सुझना । वि० नष्ट
करनेवाला; हटानेवाला; निवारण करनेवाला । अ०
अवयव ही, निरन्तरपूर्वक आदि अर्थोंको द्योतन करनेमें
किय प्रयुक्त होता है ।

हई-पु० हथी, जवाराही, बुकमबाक । खी० आइनयें,
अन्ना ।

हर्ष—अ० कि० दे० 'ही' । सर्व० दे० 'ही' ।

हर्षा—पु० आश्चर्य, शोक आदिके अवसरोपर हृदयके सहसा धक्का उठनेकी क्रिया, धक्का दे० हक । —**हर्ष**—वि० चकित, विस्मित । —**हर्षक**—वि० इनकावक्का ।

हर्ष, हर्षक—पु० [अ०] मत्स्य, सचाई; उचित पक्ष; ईश्वर, सुरा; स्वत्व; अधिकार; दावा; कर्ज; कर्तव्य; नेमा; दस्तरी; बदला, मुआवजा (नमस्का हक) । वि० ठीक, दुरुस्त, मही; न्याय्य; प्राप्य । —**आसाहृष**—पु० पड़ोसीकी जमीन पर रास्ता आदि पानेका अधिकार । —**गो**—वि० मय बोलनेवाला, न्यायकी बात कहनेवाला । —**तलहरी**—खी० हक पाना; बेहमाफी; नुकसान । —**ताला**—पु० महिमाशाली ईश्वर, परमेश्वर । —**दार**—वि० हकवाला, अधिकारी । पु० उत्तर प्रदेशमें कानूनीकारोंका एक वर्ग जिन्हें अपनी जमीनपर मौकसी हक हासिल होता है । —**उम्मीदवार**—पु० वह उम्मीदवार जो किसी चीजका या उममें हिस्सा पानेका अधिकारी भी हो । —**नाहक**—पु० हक और नाहक, न्याय-अन्याय, मत्स्य-अमत्स्य । अ० जबरदस्ती, व्यर्थ । —**परस्त**—वि० ईश्वरभक्त; मन्यभक्त, मत्स्य; न्यायशील । —**परस्ती**—खी० हकपरस्त होना । —**बजानिब**—वि० ठीक, दुरुस्त, न्याय्य । —**मौकसी**—पु० आनुशक्तिक अधिकार । —**रसी**—खी० न्याय पाना, न्याय मिलना । —**शक्रा**—पु० दे० 'हकमुक्ता' । —**मुक्ता**—पु० अपनी जायदादमें लगी हुई जायदादकी दमरोंमें पहले खरीदनेका हक । —**(हक्के) नमक**—पु० नमस्का हक, किमीका नमक खानेमें उमके प्रति होनेवाला कर्तव्य (हक अदा करना) । —**मालिकाना**—पु० मालिकका हक । **मु० (किमी चीजका)**—अदा करना—फर्ज पूरा करना, जैसा चाहिये उम तरह करना (नौकरीका हक अदा करना) । —**को पहुँचना**—न्याय पाना; मत्स्यकी पा लेना । —**पर लब्धना**—हकके लिए, न्यायके लिए लड़ना । —**पर होना**—न्यायका पक्ष लेना, न्याय्य अधिकारका आग्रह करना । —**मारना**—नेम आदि न देना । **(किसीके)**—**में**—विषयमें; पक्षमें; 'के लिए' । —**काँटे बोना**—पुराई करना ।

हकबकाना—अ० कि० रतभित होना, औचक गड़ जाना, हकवाक्का हो जाना ।

हकला—वि० हकलानेवाला, रुक-रुककर बोलने, एक ही अक्षर या शब्द कई बार कहनेवाला । —**पन**—पु० दे० 'हकलाहट' ।

हकलाना—अ० कि० वायमंत्र, विशेषतः त्रिहाके दोषके कारण रुक-रुककर बोलना ।

हकलाहट—खी० हकलानेका भाव; हकलानेका दोष ।

हकलाहारी—वि० हकला, हकलानेवाला ।

हकार—पु० [सं०] 'ह'की ध्वनि वा 'ह' वर्ण ।

हकारत—खी० [अ०] हकपावन, तुच्छता । **मु०**—की नज़र या निगाहसे देखना—तुच्छ समझना, हेय मानना ।

हकीकत—खी० [अ०] वस्तुका स्वरूप; असलीयत, यथार्थता; सचाई, सच बात; हाकत; हाक; हर्षात; शब्दका असली, अभिव्यर्थार्थम् व्यवहार; हैसियत, विसात (उसकी

वया हकीकत है) । **मु०**—**खुल जाना**—असलीयत जाहिर हो जाना, सत्यका प्रकट हो जाना । —**में**—दूरअसल, मयमुय, वस्तुतः ।

हकीकत—अ० [अ०] हकीकतमें, वस्तुतः ।

हकीमी—वि० [अ०] अमली; सचा; मगा (—भाई, बहिन); अभिप्रेय (अर्थ) ।

हकीम—पु० [अ०] शानी; बुद्धिमान; यूनानी चिकित्साशास्त्रका पंडित, तबीब ।

हकीमी—खी० हकीमका काम, पेशा; यूनानी चिकित्साशास्त्र । **वि०** हकीमका (—इलाज) ।

हकीयत, **हक्कीयत**—खी० [अ०] हक, अधिकार, हक-दारी; मिलकियत, जायदाद, (—जमींदारी) ।

हकीर—वि० [अ०] छोटा; तुच्छ ।

हकक—पु० [अ०] 'हक'का बहुवचन ।

हक—पु० [सं०] हाथीकी दुकानेका शब्द, गजाशान ।

हका—खी० [सं०] उल्लू पक्षी ।

हकाक—पु० [अ०] नग जड़नेवाला, नगीनामात्र; मुहर खोदनेवाला ।

हक्कानियत—खी० [अ०] हकानो होना, अभ्यास; मचाई ।

हक्कानी—वि० [अ०] हकमें मर्बू रखनेवाला, ईश्वर-विषयक; ईश्वरप्रामुख्य ।

हक्काबक्का—वि० स्तंभित, पबकाना हुआ, भौचक, चकित (अप्रत्याशित घटना आदिके कारण) ।

हकार—पु० [मं०] आवाहन, पुकार ।

हकाहक—पु० [सं०] चुनौती, ललकार ।

हक्कमुहसिक—पु० [अ०] वह हक जो नवरदारको माल-शुजारी अदा करनेके बदलेमें मिलता है ।

हक्कलवकीन—पु० [अ०] किनी बानकी मित्रके अनुभवसे जानना, अनुभवजन्य ज्ञान ।

हगनहटी—खी० मुदा; शीच करने, पाखाना जानेका स्थान, शौचालय । **मु०**—**मच्छाना**—बार-बार शीच जाना ।

हगना—अ० कि० शीच करना, पाखाना फिरना; (ला०) अत्यधिक मात्रामें देना (जैसे—आत्रकल उनका रोजगार रूपया हग रहा है), (ला०) धमकी, डर, दबावके कारण विषय होकर किमीको कोई चीज दे देना (जैसे—काल खानेपर वे चुराची चीजें हग देंगे) । **वि०** हगनेवाला; अधिक हगनेवाला । **मु०** **हग भरना** या **मारना**—मलका वेग सँभाल न सकनेके कारण तुरत उमें त्याग देना; बहुत डर जाना; कोई वस्तु बहुत गद्दी कर देना ।

हगनेटी, **हगनेटी**—खी० दे० 'हगनहटी' ।

हगाना—सं० पाखाना फिरना; इस क्रियामें सहायता देना । **मु०** **हगा मारना**—बहुत धका देना; परेशान करना । —**लेना**—जबरदस्ती बसल करना या लेना ।

हगास—खी० हगनेकी आवश्यकताका अनुभव, शीच जानेकी इच्छा, पाखानेकी हाजत । **मु०**—**लगना**—शीच मालूम पड़ना ।

हगोका—वि० बार-बार शीच जानेवाला ।

हगान, **हगू**—वि० हगोश ।

हचक—खी० धका, शौका, सटका । —**मु०** **खाना**—सटका

लगना, नीचे-ऊपर, आगे-पीछे हिलना-खेलना ।

हचकना-अ० कि० ऊपर-नीचे, आगे-पीछे हिलना-खेलना, शीर्षसे अधर-उपर होना । स० कि० झोका देना, हिलना-डुलना; (ला०) जोरमें मारना । **मु०** हचक देना-जोरमें मारना ।

हचका-पु० दे० 'हचक' ।

हचकाना-स० कि० झोकसे हिलाना-डुलाना ।

हचकीला-वि० झोकसे, तेजीमें हिलने-डुलनेवाला ।

हचकोला-पु० हचक, हचका ।

हचना*-अ० कि० किसी कामके करनेमें अमयंत्रम होना; हर्नहीं करना, हिचकना ।

हज-पु० दे० 'हजत' ।

हज, हज्ज-पु० [अ०] मुख, तुफ़; लाभ (उठाना, पाना) ।

हजम-पु० [अ०] मोटाई; आकार (किताबका ह०) ।

हजम-पु० [अ०] पाचन-क्रिया, तहलील; खपान, गवन, चोरी । **मु०**-कर जाना; करना-पचाना, तहलील करना; गवन कर लेना, मार मारना । -होना-पचना; गवनका प्रकट न होना ।

हजर-पु० [अ०] पत्थर ।-(रे) असचद-पु० वह कांठा पत्थर जो काबेदी दीवारमें लगा हुआ है ।

हज़र-पु० [अ०] एक स्थानमें स्थिति, अवस्थान, 'मफर'-का उलटा ।

हज़रत-पु० [अ०] समीपता, हुज़ूर; दरबार; सम्मान-मूलक सम्बोधन, जनाब, महोदय; (ला०) मुहम्मद । वि० दुष्ट, खोटा; चालबाज; शराबत करनेवाला ।-**सखामत**-पु० बादशाह, नवाब आदिका सम्बोधन; (ला०) बादशाह ।-**पसंद**-वि० जो बादशाहकी पसंद आये ।

हजाम-पु० दे० 'हजाम' ।

हजामत-खी० [अ०] सिर भूँटना, क्षीर; मफ़ाई; दुर्दशा ।

मु०-बनना-सिर ग़ुंका जाना; ठगा, मूटा जाना ।-**बनाना**-मिर भूँटना; ठगना, मूटना ।

हज़ार-वि० [फा०] दस सौ; अनेक, अनगिनत । पु० हजारकी संख्या । अ० कितना ही, हरचद । -**हा**-वि० पहलो; बहुत, बेहद; अनगिनत । **मु०**-जानमे-बड़े लोकमें । -**मै**-बहुत लोगोंके सामने ।

हज़ारा-पु० [फा०] चौबारा; छिककाके काम आनेवाली एक बाख़्शी जिसमें बहुतमें छेदोंवाला नज़ लगा रहता है; बहुतमें पटलोंवाला फुल; एक आग्निशत्राजी ।

हज़ारी-वि० हज़ारसे संबंध रखनेवाला । पु० हज़ार आठ-मियोंका सरदार; हज़ार आठमियोंकी पक़्दर; पैदा-पुत्र; शाही जमानेका एक ओहदा । -**बज़ारी**-वि० माधाराज लोगोंमें बैठनेवाला; कमीना ।

हज़ारी-वि० दे० 'हज़ारा' । **मु०**-बड़े पानी बह जाना-बहुत लज्जित होना । -**मै**-बहुतोंमें; सुख-सुखा ।

हज़म-पु० [अ०] जमघट, सीधभास; नीह करना ।

हज़र-पु० दे० 'हुज़ूर' ।

हज़री-खी०, पु० दे० 'हुज़री' ।

हजी-खी० अंगोक्ति; निंदा ।

हज-पु० [अ०] संकल्प करना; नियत कालपर काबेके दर्शन और प्रदक्षिणा करना; मक्केकी यात्रा । -(उल्ले)-**अकबर**-पु० अधिक पुण्यजनक हज, ज़ुमेंको किया जानेवाला हज ।

हजाम-पु० [अ०] पछने लगनेवाला; हजामत बनाने-वाला, नाई ।

हजामी-खी० हजामका पंथा ।

हट-पु० दे० 'हठ' । -**पर्णि**-पु०, -**पर्णी**-खी० दीवाल ।

हटक-खी० मना करनेकी क्रिया, बर्जन; चौपाथीकी हटाने, हॉकनेकी क्रिया । -**मु०**-मानना-रोकनेपर किसी कामको न करना ।

हटकनी-खी० दे० 'हटक'; चौपाथीकी हॉकनेकी लाठी ।

हटकना*-स० कि० बरजना, मना करना, रोकना, कट-ने किसीकी बिरत करना, हटाना; चौपाथीकी किसी ओर जानेसे रोककर दूसरी ओर मोड़ना, हकना । अ० कि० पक्षास्पद होना, हिचकिचाना ।

हटका*-पु० दरवाजे आदिकी मुलने, हटनेमें रोकनेके लिए लगायी हुई चीज़; अंगल, ब्योड़ा ।

हटसार*-पु० आलका वृत्त । *खी० सिलमिला; टकटकी- 'वह रूपकी राशि लखी तबने मन्वी ओगिनके हटसार तरे'-बना०; † हटनाल ।

हटताल*-खी० किसी कर, अन्वय अन्वयानर आदिने विरोधमें दुकानोंमें गाने लगाकर खगो-बच, काम का आदि बंद कर देना, हड़ताल ।

हटना-अ० कि० किसी स्थानमें चर, भिसक, मन्कट, दूसरी जगह जाना; किसी पदमें हट जाना, पद-चला करना, किसी स्थानमें अवकाश, विश्राम ग्रहण करना, पीछे हटना, भागना; आलसी होना, काम न करना, जी नुतराना; किसी कामका आगेके लिए उल्ट जाना, वापस पर काम न रहना । * स० कि० हटकना । **मु०**-**बड़ना**-सुपकेमें भाग जाना, भिसक जाना, शर-उपर होना ।

हटबाल-पु० हाट, बाजारमें मामान लगाकर बेचनेवाला व्यक्ति, दुकानदार ।

हटवाई*-खी० बाजारका काम, मामान खरीदने-बेचने का काम, दुकानदारी; † हटवानेकी मजदूरी ।

हटवाना-स० कि० हटानेका काम दूसरेमें करवाना ।

हटवार*-पु० हाट, बाजारमें मामान बेचनेवाला स्थान, दुकानदार । † वि० हटानेवाला ।

हटवैया-वि० हटाने, हटवानेवाला ।

हटाना-स० कि० किसी वस्तु, व्यक्तिको एक स्थानमें दूसरे स्थानपर रखना, स्थानांतरित करना, स्थिसकाना, किसी बातपर ध्यान न देना, किसीकी महत्त्व न देना, उपेक्षा करना; खस करना, बंद करना, भिसकला, मोड़ना; खदेहना; किसी पद, नौकरीसे अलग करना ।

हटुवा*-पु० हाटवाला व्यक्ति, दुकानदार; गौलनेवाला ।

हटुई-खी० दुकानदारी ।

हटौली-पु० सीढ़ा, सामान, माल ।

हटौरी, हटौली*-खी० शरीरका कर्चा ।

हट-पु० [सि०] हाट, बाजार; मेला । -**चीरक**-१८

बाजारमें चोरी करनेवाला व्यक्ति, चैंडकटा, पाकेटमार ।
-वाहिनी-खी० बाजारमें बनी हुई पानी निकलनेकी नाली । **-बिहासिनी-खी०** बारांगना, वेड्या; एक प्रकारका गंधद्रव्य; हरिद्रा, हल्दी । **-वेड्याखी-खी०** हुकानोंकी पंक्ति ।

हटा कड़ा-वि० हट-पुष्ट, मोटा-ताजा; बलवान् ।

हटाप्यक्ष-पु० [सं०] बाजारका निरीक्षक ।

हट-पु० [सं०] बलात्कार, बलप्रयोग, जबरदस्ती; उर्ध्वाङ्गन; किसी बातपर अरे रहनेको प्रवृत्ति, दुराग्रह; हट प्रतिष्ठा; दायके दृष्टभागमें पहुँच जाना; एदनी । **-कर्म(ज)**

पु० बलप्रयोगका काम । **-कामुक-पु०** बहू खीकावी जो बलप्रयोगका सहारा ले । **-धर्म-पु०** सत्सामरसका विवेक किये बिना किसी बातको सत्य मानकर उत्पन्न हट करना । **-धर्म-खी०** [हि०] दे० 'हटधर्म' । **-धर्मि-पु०** **-धर्मी-खी०** शैवाल । **-योग-पु०** योगका एक प्रकार त्रिममें नेनी-धोती, आसन आदि क्रियाएँ करते और पाठक, धारणा, ध्यान आदिके द्वारा चित्तवृत्ति बाह्य विषयोंमें हटाकर अनुसृत्य करते हैं । **-धोरी(गिम्)-पु०** हटयोग करनेवाला व्यक्ति । **-बिधा-खी०** हटयोगकी विधा । **-बरील-वि०** हठी, जिदी ।

मु०-पकड़ना-जिद करना । **-माड़ना-हट** पकड़ना । **-में पड़ना-हट** करना; जिसके हट संकल्पका शिकार होना । **-रखना-किसीके** हट संकल्पकी पूर्ति करना । **-रोपना-हट** मारना ।

हठना-अ० कि० हट करना, जिद करना-किरहों न तुममें मान हट, हठिही न मागत दान'-सर ।

हठात्-अ० [सं०] हटपूर्वक; बलपूर्वक । **-कार-पु०** बलात्कार, जबरदस्ती ।

हठादेशी(शिशु)-वि० [सं०] किसीके निरुद्ध बलप्रयोगका उपाय बतलानेवाला ।

हठापात-वि० [सं०] अनिवाय ।

हठालु-पु० [सं०] कुम्भिका ।

हठाक्लेश-पु० [सं०] बलपूर्वक आरम्भन करना ।

हठिका-खी० [सं०] शोरगुल ।

हठी(डिन्)-वि० [सं०] हट करनेवाला, जिदी ।

हठीला-वि० हठी; मुटुमें हट, जमनेवाला नीर, धीर; हटसंकल्प ।

हड़-खी० हड़; एक गहना, लटकन; 'हाड़'का समासगत रूप । **-कप-पु०** बलका, आतक । **(मु०-अच्छना-आतक फैलना)** । **-कल-खी०** **-ओड़-पु०** एक लता जो चोटकी जगह लगायी जाती है । **-गिल्ल-गीला-पु०** बगलेकी जातिका एक पक्षी । **-फूटनी-खी०** हड्डियोंमें होनेवाला दर्द । **-फूटनी-खी०** चमगादड़ । **-कोड़-पु०** एक तरहकी विधि ।

हड़क-खी० पागल कुत्तेके काटनेसे उत्पन्न जलका भय, जलान्तका कोई वस्तु पानेकी उत्पन्न इच्छा ।

हड़कना-अ० कि० किसी वस्तुके लिए कालापित होना, तरमना ।

हड़का-पु० हड़कने, तरसनेका भाव, तरम ।

हड़काना-सं० कि० तरमाना; हनीत्साह करना; दूर हटा

देना; तंग करनेमें किसीको प्रवृत्त करना ।

हड़कावा-वि० उतावला; पागल (कुत्ता) ।

हड़लाक-खी० दे० 'हटलाक' ।

हड़ना-अ० कि० लौला जाना, लौलमें जावा जाना ।

हड़प-पु० खराक निगलना; भास एक ही बार निगल जाना; बिना चबाये निगल जाना; किसीका माल लेकर हजम कर जाना ।

हड़पना-सं० कि० किन्हीं वस्तुको अनुचित साधनों द्वारा कमी न देनेकी इच्छामें अपने अधिकारमें कर लेना, जबरदस्ती या चोरीमें किसी वस्तुको लेकर कमी न देना; जल्दी (और प्रायः अधिक) खाना; निगलना ।

हड़प्पा-पु० दे० 'हड़प'; वाली जो मर्द औरतोंको देते हैं; सिपका एक स्थान जहाँ बहुत प्राचीन जनपदके विश्व पाये गये हैं ।

हड़बड़-खी० किसी कारणवश घबराहटमें उत्पन्न जल्दबाजी, उतावली ।

हड़बड़ाना-अ० कि० हड़बड़ी, घबराहटमें कोई काम करना । **सं०** कि० जल्दी कार्य करनेके लिए किसीकी प्रेरित करना ।

हड़बड़िया-वि० हड़बड़ी मचानेवाली, जल्दबाज, उतावला ।

हड़बड़ी-खी० हड़बड़, जल्दबाजी, उतावली । **मु०-पड़ना-किसी** कामके लिए जल्दबाजी होना; घबराहट होना । **(पेटमें)-पड़ना-बहुत** घबराना । **-सघार-होना-किसी** कामको जल्दी करनेकी धुन होना ।

हड़हड़ाना-सं० कि० 'हड़-हड़' शब्द कम्पा; शीघ्र कार्य करनेके लिए किसीको प्रेरित करना । **अ०** कि० 'हड़-हड़' शब्द होना ।

हड़हा-वि० हाड़-संबंधी; अविशेष (व्यक्ति), जिसके शरीरमें हड्डी-हड्डी रह गयी हों, बहुत दुबला-पतला । **पु०** जगली बेल; किसीके पुरस्वीको मार डालनेवाला व्यक्ति ।

हड़ा-पु० एक प्रकारकी बटूक, पथरकला बटूक । **अ०** जेतने विक्रियोंकी उछानेका शब्द ।

हड़ाबरी, हड़ाबल-खी० हड्डियोंका डेर; अस्थिपंजर, ठठरी; अस्तिमात्र, हड्डियोंकी माला ।

हडि-पु० [सं०] काठकी बेड़ी; दे० 'हडिक' ।

हडिक-पु० [सं०] हाड़, लगानेवाली, मल उठानेवाली जाति, भगी आदि ।

हडिीला-वि० हड्डीवाला, अस्थिदेश (व्यक्ति), जिसके शरीरमें हड्डियाँ ही रह गयी हों, बहुत दुबला-पतला ।

हड्ड-पु० [सं०] अस्थि, हड्डी, हाड । **-ज-पु०** मज्जा ।

हड्डक-पु० [सं०] दे० 'हडिक' ।

हड्डा-पु० शिकरी जातिका एक कीड़ा जो लाल और उमसे कुछ बड़ा होता है ।

हड्डि, हड्डिक, हड्डिप-पु० [सं०] दे० 'हडिक' ।

हड्डी-खी० शरीरका वह कड़ा भाग जिससे उसका टाचा बनता है; (ला०) कुल, खानदान । **मु०-उच्छड़ना-हड्डियोंका** जोर खुल जाना । **-घड़ना-दुरी** तरह पीटना । **-गुड्डी लोड़ना-घोड़ना-दुरी** तरह पीटना ।

-चबावा-किसी वस्तुका अपाव होनेपर भी उसे जबर-

दस्ती प्राप्त करनेका प्रयत्न करना । -बोलना-हड्डी टटना । -से हड्डी बजाना-कटना, लफाई-लगाकर करना । -हड्डी घुसना-अशक्त व्यक्ति जबरदस्ती लेना, काम कराना आदि । हड्डियाँ दिखाई पड़ना या निकल आना-हड्डना दुबका हो जाना कि हड्डियाँ दिखाई देने लगे ।

हस्त-वि० [सं०] मार डाला हुआ; धावक किया हुआ; ताड़ित, पीटा हुआ; कोड़ा हुआ (जैसे नेत्र); तंग किया हुआ; विरहित; छला हुआ; विफलप्रयास, हताश, मग्न-हृदय; जिसमें बाधा डाली गयी हो; भ्रष्ट किया हुआ; ध्वस्त, विह्वल; गुणित; प्रस्त (कष्टमें); संपर्कमें आया हुआ (ज्यो०); निवन्मा; मदीय । पुं० वध, हनन; गुणा । -कंठक-वि० जिसके कंठे (शत्रु) नष्ट कर दिये गये हों । -किस्त्रिय-वि० जिसके पाप नष्ट हो गये हों । -चित्त-चेता(तत्त्व)-वि० वैसुध; वधबाया हुआ । -चेतव-वि० हतज्ञान । -प्याव-वि० जिसकी कांति क्षीण हो गयी हो । -जस्थित-पुं० निरवक वात । -जीवन-पुं० दुःखमय जीवन । -जीवित-पुं० दुःखी जीवन; जीवनमें निराश्रय । वि० जीवनमें निराशा; हताश । -ज्ञान-वि० संकाहीन, वैसुध । -ताप-वि० जिसकी गर्मी दूर हो गयी हो, ठंडा किया हुआ । -अप-वि० निर्लज्ज । -दैव-वि० हतभाग्य, भागहीन । -हिद् (ह्)-वि० जिसने अपने शत्रुओंका नाश कर दिया है । -जी-हुडि-वि० दे० 'हतचित' । -प्यांत-वि० अकारसे मुक्त । -पुत्र-वि० जिसके पुत्रकी हत्या की गयी हो । -प्रत्य-वि० दे० 'हतप्याव' । -प्रभाव-वि० जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो, अधिकारबंशित । -प्रमाद-वि० जिसकी लापरवाही दूर हो गयी हो । -प्राय-वि० जो करीब-करीब मार डाला गया हो । -बाधव-वि० संधिधोसे रहित । -भाग-भाग्य-वि० भाग्यहीन, बदकिस्मत । -आगी-वि० दे० 'हन-भाग' । -मति-वि० 'हतचित' । -माय-वि० गर्वहीन; अपमानित । -मानस-वि० दे० 'हतचित' । -मूर्ख-वि० बहुत अधिक मूर्ख । -मेधा(धस्)-वि० दे० 'हतचित' । -रथ-पुं० वह रथ जिसका मारथी और घोड़े मारे गये हों । -लक्षण-वि० हतभाग्य । -क्षि-वि० भाग्यहीन । -विनय-वि० जिसे शिष्टता आदिका ज्ञान न हो । -वीर्य-वि० जिसकी शक्ति नष्ट हो गयी हो । -हुत-वि० मदीय छत्रमाला । -वेग-वि० जिसका वेग नष्ट हो गया हो । -वीर्य-वि० निर्लज्ज । -शिष्ट-शेष-वि० जो जीवित बच गया हो । -शत्रु-वि० शत्रुहीन । -भी-वि० जिसका वैभव नष्ट हो गया हो । -स्वपद-वि० दे० 'हतशी' । -साध्व्य-वि० जिसका भय नष्ट हो गया हो । -क्षीक-वि० जिसने किसी क्षीका बच किया है; जिसकी स्त्री मार डाली गयी हो । -स्मर-पुं० शिव । -स्वर-वि० जिसका स्वर अंग हो गया हो । -हृदय-वि० अमनहृदय, हताश ।

हस्तक-वि० [सं०] जिमें चोट पहुँचायी गयी हो;...में प्रस्त (दुर्दैव आदिमें); दीन-दुःखी; पापी-अन सज्जनी

दुनो बल्लो, हस्तक मनोजहि दाप'-मतिराम । पुं० नीच व्यक्ति; नीच या कायर आदमी । स्त्री० [अ०] वैधव्यती, मानहानि, हेट्टी; वैधवी, धृष्टता । -हृज्जती-स्त्री० मानहानि, वैधव्यती ।

हस्ताव-सं० कि० ज्ञानमें मारना, बध करना; मारना-पीटना ।

हस्तावना-सं० कि० मरवा डालना; पिटवाना ।

हस्ता-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका सतीत्व संग किया गया हो; वह गयी-बीती कन्या जो विवाहके अवश्य समझी जाय । * अ० कि० बीनका भूतकाल-या ।

हताश-वि० [सं०] जिसका आश्रय नष्ट हो गया हो, अनाश्रय ।

हताशा-सं० कि० दे० 'हतावना' ।

हतारोह-वि० [सं०] (वह हाथी) जिसके आगेही मारे गये हों ।

हतावशेष-वि० [सं०] दे० 'हताशित' ।

हताश-वि० [सं०] जिसकी आशा नष्ट हो गयी हो, भूरा; दुःखी, दीन; फलहीन ।

हताश्रय-वि० [सं०] जिसका सहारा नष्ट हो गया हो, निराश्रय ।

हतावास-वि० [सं०] जिमें दिया हुआ आश्रयमन सफ़्त न हुआ हो, निराश ।

हताहत-वि० [सं०] मारे गये और बायल ।

हस्ति-स्त्री० [सं०] वध, नाश; आश्रय करना; अधार, हानि, विफलता; दोष, पैदा; गुणा ।

हने-अ० कि० 'हना'का बहुवचन ।

हनेक्षण-वि० [सं०] अंधा ।

हनी-अ० कि० दे० 'हना' ।

हनीज-वि० दे० 'हनीज' ।

हनीतर-वि० [सं०] निरुत्तर, जो कुछ प्रभाव न दे सके ।

हनीत्याह-वि० [सं०] जिसका उन्मत्ताह अंग हो गया हो ।

हनीप्राय-वि० [सं०] विफलप्रयत्न ।

हनीजा(अस्)-वि० [सं०] जिसका ओज नष्ट हो गया हो; वीर्यहीन-रहित ।

हस्तकमकदूर-अ० [अ०] यथादाकि, दानिभर ।

हस्त-पुं० हाथ ।

हस्ता-पुं० किसी वस्तुका वह भाग जो हाथमें पकड़ जाय या जिसपर हाथ रखा जाय, मूठ, दस्ता, कुरसीकी बाँही; दंड करने समय हाथके नीचे रखनेका पथर या डंड; पूजन आदिके अवसरोपर ऐसन आदिमें दीवार या भूमिपर बनाया जानेवाला हाथके प्रत्येक चिह्न; केनेका पीर; काल और पीले या भटमैले रंगमें मिश्रणसे बना एक असीधन रंग; कंसक बुनने समय उसकी पटिया ठोकनेका एक औजार; निवार बुनने-सत ठोकनेके काममें जानेवाला एक कंठीनुमा औजार; रेशमी वस्त्र बुननेके काममें जानेवाला एक औजार जो छनसे छटका रहता है; खेतकी मालीके पानीकी चार्गे और उलीचनेका एक औजार ।

हस्ताजर्जी-स्त्री० एक पोशा, हस्तशुद्धा ।

हस्ति-पुं० हाथी ।

हृथी-खी० औजार, हथियार आदिका दम्मा; गोमुखीके टंगकी पोथेका शरीर पोछनेकी उनी येही; कमरेका डुक्का जिसे छापते समय छोपी अपने हाथमें लगा लेते हैं; कड़ाहमें रखा ईस्का रस चलावनेकी लकड़ी; पुनार्थके कामका एक औजार।

हृथ्ये-अ० हाथमें। **मु०** -**चवना**-अनजाने अपने जिरोंकी पंजे, हाथमें आ जाना; उपयुक्त अवसरपर वशमें आना। -**लगाना**-हाथमें आना, मिलना।

हृथ्या-खी० [सं०] जानसे मारनेका काम, मर्दन, वध; हत्या करनेका पाप; बर्बाद; झगडा; बहुत दुवला-पतला या भीमार व्यक्ति आदि। **मु०** -**ठलना**-झंझट दूर होना। -**पहले बाँचना**-झगड़ेमें सब म्मापित करना। -**मोछ लेना**-हत्या पहले शोधना। -**मचारा होना**-मुत्ताकृति आदिमें हत्याकी प्रवृत्ति प्रकट होना, धन चटना। -**मिर मचना**-अपराधी ठहराना; लड़ाई-झगड़ेका काम सौंपना। -**मिर लगाना**-दे० 'हत्या सिर मचना'। -**मिर लेना**-पापका भागी होना।

हृथ्यारि-पु० दे० 'हृथ्यार'।

हृथ्यारा-पु० हृथा करनेवाला व्यक्ति, मृत्नी।

हृथ्यारिज-खी० हृथा करनेवाली स्त्री।

हृथ्यारी-खी० हृथा करनेवाली स्त्री, हृथ्यारिन; हृथ्याका पाप।

हृथ-पु० 'हाथ'का सामान्यत रूप; [सं०] चोट, आघात; वध; मृत्यु; हनाश मनुष्य। -**उचरा-पु०** दे० 'हृथ-वध'। -**उचारा-पु०** दिना लिखा-पढ़ीके किन्हींकी ओड़-भयके लिए कर्ज देना। -**कंढा-पु०** वटवृक्ष; धूर्तना करनेकी पद्धति; चतुराईकी चाल; किन्हीं कामके करनेमें हाथकी कुर्तार्थमें इस वृक्षसे चलाया कि कामकी गुप्त पद्धतिकी देखनेवाला भाँप न मके; किन्हीं कामके करनेमें हस्त-लाघव, हाथकी सफाई। (**मु०**-० **चलना**,-० **लगाना**-नालबानी कारगर होना। -० **विखाना**-हाथकी सफाईका प्रदर्शन करना; चालबाजीकी कला दिखाना।) -**कड़ी-खी०** कौहेका विशेष वंगका बना कड़ा जो कैदी या अपराधीको विवश करनेके लिए पहनाते हैं। (**मु०**-० **छालना**-हथकी पहनाना; दोषी करार देना। -० **पचना**-हथकीमें हाथकी बाँधा जाना; अपराधी माना जाना, दोषी ठहराया जाना।) -**कल-पु०** सूत या तार ऐठनेका सुनारीका एक औजार; पंचकस; कपड़ेकी दो डोरियाँ जिनमेंसे एकका छोर हथके ऊपरी भागमें बँधा रहता है और दूसरीका लगेमें। -**कोड़ा-पु०** कुन्तीका एक दाँव। -**छुट-वि०** जिसे तुरत उत्तेजित होकर मार बैठनेकी आदत हो। -**छोड़ा-वि०** दे० 'हृथलुट'। -**छूट-पु०** एक आतिशबाजी; हाथके पंजेके ऊपरी भाग-पर पहननेका खियोंका एक आवरण। -**केर-पु०** द्रव्य लेने-देनेवालेके हाथकी सफाई जिसमें छोटा या कम सिका दूसरे पक्षके जिन्मे पड़ जाता है; हस्तकीशल द्वारा किसी वस्तुकी गायब करनेकी क्रिया; प्यारसे शरीरपर हाथ फेरनेकी क्रिया; हथचकार। **वि०** हाथकी सफाईसे चीन्नेकी गायब करनेवाला, हथलपक। -**बँधी-पु०** खेतमें लगे मन्नेकी काटनेकी एक कुवाली। -**लपक-वि०**

औस बचाकर चुपकेसे चीन्नेकी गायब कर देनेवाला, हथकेर। -**लपका-वि०** लपका-वि० हथलपक। -**ली-खी०** चरलेकी मुठिया। -**लेबा-पु०** हाथकी हाथमें लेनेवाला व्यक्ति ('नानकेवा'की भीति); विवाहके अवसर पर कन्याका हाथ ग्रहण करनेका कृत्य; पाणि-ग्रहण। -**बॉस-पु०** नाव लेनेका सामान। -**सँकर**, -**मॉकड़**-**सॉकर**, -**मॉकल**, -**सॉकला**-पु० हथलूल-नामक गहना।

हथनाल-खी० हाथीपर चढ़नेवाली तोप।

हथनी-खी० हाथीकी मादा।

हथबॉसना-सं० कि० अधिकारमें करना-**हथबॉसहु** बोरहु तरनि कीजिय सादारीह'-रामा०; अधिकार करके हस्तेमाल करना; पहले-पहल प्रयोगमें लाना।

हथसार-खी० हाथियोंके रहनेका स्थान, हस्तिशाला, फोखाना।

हथारि-पु० प्येपन आदिमें बनाया हुवा पनेका चिह्न।

हथाहथी-अ० हाथीहाथ, जीप, जल्द।

हथिनी-खी० हाथीकी मादा।

हथिया-पु० हस्त नक्षत्र।

हथियाना-सं० कि० अपने अधिकारमें कर लेना; जबर-दस्ती किन्हींकी चीज ले लेना; हाथमें पकड़ना।

हथियार-पु० अस्त्र-शस्त्र; औजार। -**खर-पु०** अस्त्र-शस्त्र रखनेका बड़ा घर, शस्त्रागार। -**बंद-वि०** अस्त्र-शस्त्र धारण करनेवाला, सशस्त्र। **मु०**-० **उठाना**-बुद्धिके लिए प्रस्तुत होना। -**छालना**-लड़ाई बंद करना। -**बाँचना**, -**लगाना**-अस्त्र-शस्त्रसे सजित होना।

हथुई रोटी-खी० वह रोटी जो बेलनेमें न बेलकर हाथकी अँगुलियोंसे दबाकर चौड़ी की गयी हो।

हथेरा-पु० खेतमें पानी उलीचनेका हृथा।

हथेरी-खी० दे० 'हथेली'।

हथेली-खी० कलाईके आगेका चिकना और चौड़ा भाग, करतल; चरलेकी मुठिया। **मु०** -**का फफोला**-अत्यंत कोमल बस्तु जिम्मेके टूटनेका भय बराबर बना रहे। -**खुजलाना**-द्रव्यप्राप्तिका शकन होना; द्रव्य-प्राप्तिकी पूर्वमुचन मिलना। -**देना**, -**लगाना**-हाथका सहारा देना। -**पर जान रखना या लेना**-दे० 'हथेली-पर सर रखना, लेना'। -**पर जान होना**-जान जानेकी स्थितिमें होना। -**पर दूरी जमाना**-कोई काम करानेके लिए जल्दी मचाना। -**पर बाल जमाना**-किसीमें माहम, शक्तिका आना। -**पर सर रखना या लेना**-जान देनेके लिए तैयार रहना। -**पर सरसँ जमाना**-कोई कठिन काम कुतर्षि करना। -**पीटना**, -**बजाना**-ताली बजाना।

हथीवा-पु० दे० 'हथीवा'।

हथोरी-खी० हथेली।

हथौटी-खी० हस्तकीशल, काम करनेका अच्छा ढंग; किसी काममें हाथ लगाना। -**मु०**-**जमाना**, -**मँजना**, -**सबना**-हाथ २५४ सथ जाना, काम करनेका कौशल प्राप्त होना।

हथीवा-पु० बाहु, पंथर, इंट, नोहा आदि पीटने, ठोकने-

के काम आनेवाला कोईका एक औजार ।

हयोदी-सी० छोटा हथोड़ा ।

हथोड़ी-पु० दून्हे और दुकानिके हाथमें मिठाई देनेकी रस ।

हथवाना-स० कि० दे० 'हथिवा' ।

हथवार-पु० दे० 'हथिवार' ।

हथि-पु० दे० 'हाथी' ।

हद्-सी० [अ० 'हृद्' किनारा; सीमा. अतः औचित्यकी सीमा; इसलामी शरीरजतेके अनुसार दिया हुआ दण्ड; नियत स्थान । -हंद्दी-सी० हृद् बाँधना, सीमानिर्धारण । सु० -कर देना, करना-अति कर देना, औचित्यकी सीमा लूँध जाना । -से युज्जना-सीमाके पार हो जाना, बहुत बढ जाना; अति हो जाना । -से ज्यादा-अत्यधिक ।

हृदका-पु० धका, हृत्का-अति साय मग हृदका पताका करकराति अपार'-स्त्रयनारायण ।

हृदसना-अ० कि० भयमें सन्न हो जाना, डर बैठना ।

हृदीस-सी० [अ०] वात; नयी वात; सुहृद्मन्त्रके कर्मकलाप और वचनोंका समग्र जो कुरानमें अनुक्त विषयोंके लिए प्रमाण माना जाता है; वर्णन; इतिहास । सु० -समस्तना-विलकुल सच समस्तना, प्रमाण मानना ।

हृद्-सी० [अ०] दे० 'हृद्' । - (हृ) समाअत-सी० किसी शब्दके मुने जानेकी अवधि । सु० -ही जाना-मुनाईकी अवधि रीत जाना, नमादी हो जाना । (कोई) हृदोहिसाध न होना-वेदः, अत्यधिक हो जाना ।

हनन-पु० [सं०] बध करना, जानसे मार डालना, कल करना; चोट पहुँचाना, पीटना, मारना, ठोकना; गुणन; नगाडा आदि बजानेका डडा; एक कीड़ा । वि० बध करनेवाला । -हील-वि० खूनी स्वभावका, निष्ठुर ।

हनना-स० कि० बध करना, कल करना, जानसे मार डालना; मारना-बाँक नैन जनु हनहि कटारी-प०; पीटना, चोट पहुँचाना; ठोकना; लकड़ीसे पीटकर नगाडा आदि बजाना ।

हननीय-वि० [सं०] बध्य, मार डालने योग्य; मार खाने योग्य ।

हननी-वि० [अ०] सहा; मोमिन । पु० सुविधोका एक संप्रदाय ।

हनवाना-स० कि० मरवा डालना; मरवाना, पिटवाना-चोट पहुँचवाना, ठुकवाना; न मारना ।

हनाना-अ० कि० दे० 'नहाना' ।

हमितर्षत-पु० हनुमान् ।

हनील-पु० [सं०] देतकी ।

हनु-सी० [सं०] कपरी जवड़ा; दुह्नी; जीवनको क्षति पहुँचानेवाली वस्तु; अक्ष, हथियार; रोग; शत्रु; व्यक्ति-चारिणी स्त्री; वेष्टा । पु० एक पंकर जाति । -प्रह-स्व०-पु० घनुपृच्छकारका एक भेट जिनमें जवड़ा बैठ जाता है । -भेद-पु० जवड़ेका सुकना । -मूक-पु० जवड़ेकी जड़ । -मोक्ष-पु० जवड़ेका टीका पचना; जवड़ेका एक रोग । -संहति-सी०, -संहतन-पु० जवड़ा बैठनेका एक प्रकार । -स्वव-पु० जवड़ेमें निकलनेवाला स्वर ।

हनुका-सी० [सं०] जवड़ा ।

हनुमंत-पु० दे० 'हनुमान्' । -ठकी-सी० मालखंभकी एक कसरत ।

हनुमंती-सी० मालखंभकी एक कसरत ।

हनुमजर्षती-सी० [सं०] कर्पिक-कृष्णा चतुर्वशी वा चैत्र-पूर्णिमा जिसे हनुमान्का जन्मदिन मानते हैं ।

हनुमत्-पु० दे० 'हनुमान्' ।

हनुमान-पु० दे० 'हनुमान्' । -बैठक-सी० बैठक (कसरत)का एक प्रकार ।

हनुमान्(मत्)-पु० [सं०] सुभीकेके एक मंत्री (वे अंजनासे उत्पन्न पवनके पुत्र थे और वीर होनेके साथ ही दीव्य-कार्यमें भी बड़े कुशल थे । रामके तीर्थे अनन्य भक्त थे और सीताका पता लगाकर रावणपर उन्हें विजय दिखानेमें बड़े महायक सिद्ध हुए । हिंदू हने देवताके रूपमें पूजते हैं) । वि० जवड़ेवाला । -कवच-पु० हनुमान्की प्रमन्न करनेका एक मंत्र; हनुमान्की एक मूर्ति ।

हनुल-वि० [सं०] मजबूत डाढ़वाला ।

हनुव-पु० दे० 'हनुमान्' ।

हन्-सी० [सं०] दे० 'हनु' ।

हनुफाल-पु० एक वृत्त ।

हनुमान्(मत्)-पु० [सं०] दे० 'हनुमान्' ।

हनुप-पु० [सं०] दीव्य, राक्षस ।

हनोज-अ० [फा०] अभी, अभीमक ।

हवोह-पु० एक राग ।

हव-वि० [सं०] जिनमें मत्स्वराग किया है । प० मत्स्व, विद्वा ।

हव्यमान-वि० [सं०] हननीय, बध्य; मारा जाता हुआ ।

हव-पु० मजबूती और फुनीये दोनों होठोंको दवानेमें उत्पन्न शब्द । सु० -कर-जाना, करना-मुँहमें नाचकर छट्टे मिलाव जाना; नरन बट कर जाना, उड़ा जाना । हवप्राना-अ० कि० जल्दी-जल्दी भास लेना, हाँफना ।

हवुपा-सी० [सं०] पीपलके मोदेके आकारका एक फल जो बहुत काला होता है और दवाके काम आता है, ध्यातुनाशिनी ।

हव्या-पु० मुलायम भोजन; कौर; घृत । सु० -देना-खिलाना; घृत देना ।

हव्य-पु० अक्षीय । वि० पेट, अत्यधिक खानेवाला ।

हव्य-वि० [फा०] मात ।

हव्या-पु० [फा०] सहा ।

हवकनारी-सं० कि० किसी वस्तु-फल आदिको प्रदंन दौंगेमें काटकर खाना, चटसे काटना; किसी व्यक्तिको हापटकर दौंगेमें काटना ।

हवका-वि० बधंता; कुकूप ।

हवरहवर, हवरहवर-अ० जल्दी-जल्दी; हववर्षके साथ ।

हवरनारी-अ० कि० दे० 'हवकनारी' ।

हवरा, हवरा-पु० [अ०] हिंसायोजक देश, पूर्वी अफ्रीकाके अंगमंत एक देश ।

हवकन, हवकन-सी० हवशी स्त्री; कालीकछुटी स्त्री; शाही महककी चौकीदारी करनेवाली स्त्री ।

हवशी-पु० हवशका रहनेवाला; हवशी जातिका आदमी ।

वि० काकाकण्डा । -हलवा सोहन-पु० व्याह रंगका हलवा सोहन ।

हवाय-पु० [अ०] पानीका बुलबुला; शीशका गोला जिसे सजावटके लिए मकानमें लगाते हैं । -सा-बारीक, पतला; जरा-सा ।

हवायी-वि० हवाय जैसा । -आईना-पु० टट्टीके शीशेका आईना जिसमें दल न हो ।

हवाय-वि० [अ०] प्रेमी; दोस्त; प्यारा ।

हव्व-पु० दे० 'हवाय'; [अ०] हक्कका बहुवचन, गोलियाँ, बटिकाएँ ।

हवेली-क्री० दे० 'हवेली' ।

हव्व-पु० [अ०] गोली, बटिका; दाना, बीज ।

हव्वा-पु० अनाजका दाना; रन्धी; अत्यल्प मात्रा; (ला०) पैना-कौड़ी । -अर-रतीमर । -हक्का-पैना-पैसा, कौड़ी-कौड़ी ।

हव्वा-हव्वा-पु० बच्चोंका एक रोग जिसमें उनकी नाँस बहुत तेजीसे चलती है ।

हव्व-पु० [अ०] वैद, अकरोध; कैदखाना; हवाका बड़ हो जाना; ऊमर (वि०) । - (प्ले) दम-पु० भौमका स्कना; प्राणायाम; दमा । -बेजा-पु० नाजायज, गैरकानूनी कैद, किमीकी बर्दस्ती कहीं बंद कर देना ।

हम-सर्व० 'मैं'का बहुवचन रूप । * पु० अहकार, धमज-धमपनकी भावना । -ता*-क्री० अहकार ।

हम-अ० [फा०] समान, एक-सा; सग, माथ; आपसमें ।

-असर-वि० एक जैसे प्रभाववाला; समप्रवृत्ति । -उन्न-वि० समवयस्क । -क्रीम-वि० एक जातिका, सजातीका ।

-खाना-वि० एक ही घरमें रहनेवाला । -छवावा-वि० क्री० साथ सोनेवाला (पत्नी) । -जिम्-वि० एक-सा; एक ही पेनेका ।

-जोली-वि० एक ही उभका; वचनमें साथ लेखा हुआ । -वर्द-वि० (कष्ट, पीडा, दुःखमें) सहानुभूति रखनेवाला । -दर्वी-क्री० सहा-नुभूति, दर्दमंदी । -निवाला-वि० माथ खानेवाला ।

-पल्ला-वि० बराबरकी टकरा । -पेक्षा-वि० एक ही पेशा करनेवाला; साथ व्यवसाय करनेवाला, सहव्यवसायी ।

-विस्तर-वि० एक ही विस्तरपर सोनेवाला ।

-बिल्ली-क्री० एक ही विस्तरपर मोनेकी क्रिया, सह-शयन, समीप । -मज्जह-वि० समान धर्मको माननेवाला, सहधर्मी । -रकाब-वि० साथ-साथ सवारी करनेवाला ।

-राह-वि० साथ चलनेवाला । अ० माथमें । (सु० - करवा-किसीको कहीं जानेके लिए किसीके साथ कर देना । - होना-साथ जाना ।)

-राही-वि० सवगामी । -बतन-पु० एक ही देशका निवासी । -बार-वि० बराबर, चोरस; एक-सा । -सक्रर-वि० एक साथ यात्रा करनेवाला । -सबक-वि० साथ पढ़नेवाला ।

-सर-वि० बराबरका । -सरी-क्री० बराबरी । -साथा-पु० पड़ोसी । -सिन-वि० दे० 'हमजब' ।

हमजब-सर्व० दे० 'हम' ।

हमरा, हमरा-सर्व० दे० 'हमारा' (हमराके-हमकी; हमरीके-हमकी भी) ।

हमक-पु० [अ०] बोस; गर्भ; अण । - (के)हमाम-पु० हमरामका हमल, व्यभिचारमें स्थित गर्भ । सु० -गिराना -गर्भपात करना ।

हमला-पु० [अ०] आक्रमण, धावा, चढ़ाई; चोट, वार ।

-आवर(हमलावर)-वि०, पु० हमला करनेवाला, आक्रमणकारी ।

हमहमी-क्री० दे० 'हमाहमी' ।

हमाकत-क्री० [अ०] सूचना, नासमझी ।

हमाम-पु० दे० 'हम्माय' ।

हमावक-क्री० [अ०] परतला; गलेमें डालनेकी चीज; छोटे आकारका कुरान जिसे गलेमें डाल सकें; गलेमें पहननेका एक गहना, ड्रमल ।

हमार*-सर्व० दे० 'हमारा' ।

हमारा-सर्व० 'हम'का संवध कारकका रूप ।

हमाल-पु० दे० 'हम्माक' ।

हमाल-पु० 'आदमीकी चोटी' कहलानेवाला (सिंहल-लंका)का सर्वांग पवत ।

हमाहमी-क्री० अनेकके स्वीकारमें अपने स्वीकारके लिए दौड-धुप करना, स्वीकारायणता, अपने अहभावकी ही भागे फानेका यत्न । सु० -करना-स्वीकारायण होना, स्वीकार्य होना; अपने आहंकारकी तुष्टिके लिए यत्न करना, अपनी बात जबरदस्ती मनवानेका प्रयत्न करना ।

हमीर-पु० दे० 'हमीर' ।

हमें-सर्व० 'हम'का कर्म तथा सम्प्रदान कारकका रूप, हमको ।

हमेल-क्री० सोने या चाँदीके गोल मिठो या मिठके रूपमें गटे हुए धातुखंडोंमें कौड़ा लगाकर बनायी हुई माला ।

हमेव*-पु० अहकार, धर्म । सु० -हूटना-धमज धूर होना ।

हमेशा-अ० [फा०] सदैव ।

हमेस, हमेशा*-अ० दे० 'हमेशा' ।

हमें*-सर्व० दे० 'हमें' ।

हम्द-पु० [अ०] सुदाकी तारीक, ईश्वरस्तुति, ईश्वरकी महिमाका गान ।

हम्माय-पु० [अ०] स्नानका स्थान; गरम स्नानगार ।

-की लुगी-महानेकी लुगी; (ला०) वह चीज जो हर आदमीके काममें आवे ।

हम्मायी-पु० नहलानेवाला ।

हम्मार*-सर्व० दे० 'हमारा' ।

हम्माल-पु० [अ०] बौध उठानेवाला, मोटिया, कुली ।

हमीर-पु० रणभूमिकका एक वीर नरेश (चौदहवीं सदी) जो अलावदीन खिलजीसे युद्ध करते समय मारा गया; [मं०] एक संकर राग । -जट-पु० एक संकर राग ।

हथकच-पु० [सं०] सारथि; इंद्रका सारथि मातलि ।

हथंद्*-पु० अच्छा धोका, बड़ा धोका ।

हच-पु० [सं०] चोटक, घोड़ा; एक विशेष जातिका आदमी; सातकी संख्या; एक छंदका नाम; इन्द्र; धनु राशि ।

कर्म(च)-पु० घोड़ोंका हान । -कातरा, -कातरिका-क्री० एक पौधा । -कोविद्-वि०, पु० अय-

विद्या जाननेवाला। -**शंख**-पु० काचलवण, काला नमक। -**शंखा**-स्त्री० अजसोदा अभयगा। -**शङ्ख**-पु० शिव। -**शृङ्ग**-पु० पुष्पसार, अश्वशाला। -**श्रीव**-पु० विष्णुका एक रूप जो मधुर्वैद्यमते वेदोका उद्धार करनेके लिए ग्रहण किया गया था; एक दैत्य; एक तांत्रिक देवता। -**श्रियु**-पु० विष्णु। -**श्रद्धा**-स्त्री० दुर्गा। -**श्व**-पु० करवीर। -**चर्चा**-स्त्री० यथायथा भ्रमण। -**चट्टा**-स्त्री० अश्वदल। -**ज**-पु० घोड़ेका व्यापारी; मार्गस। -**जान**-पु० घोड़ेका जान। -**दानव**-पु० एक, दानव, केसी। -**द्विप**-पु० मैसा। -**नाल**-स्त्री० घोड़ेसे खींची जानेवाली तोप। -**निषेध**-पु० घोड़ेके टाण्डी आवाज। -**प**-पु० मार्गस। -**पुच्छिका**-पुच्छी-स्त्री० मायपण। -**प्रिय**-पु० जो; जई। -**प्रिया**-स्त्री० अश्वगधा; खजूरी। -**मार**-मारक-पु० करवीर, कनेर। -**मारण**-पु० कनेर; अश्वध्व, पीपल। -**मुख**-पु० देशविशेष (बी०)। -**मेघ**-पु० अश्वमेध। -**बाहन**-पु० मृगपुत्र, देवत; कुबेर। -**शंकर**-पु० रक्त काचन। -**विद्या**-पु० अश्वमेधवी विद्या। -**शाला**-स्त्री० पुष्पसार, अमलबल। -**शास्त्र**-पु०, -**शिक्षा**-स्त्री० घोड़ेकी शिक्षा देनेकी विद्या। -**शिर**-पु० घोड़ेका मिर; एक दिव्यात्मा। -**शिरा**-पु० विष्णु (हयग्रीवके रूपमें)। -**श्रीव**-पु०, -**श्रीव**-पु० घोड़ेके मिरवाला। पु० विष्णु। -**स्वर्ण**-पु० अश्वदल।

हवन-पु० [म०] वर्ष, माल; दूरी हुई गाड़ी या पालकी, कमीरथ।

हवना-स० कि० दे० 'हनना', काटना-'प्रम' बहु बार बाहु सिर हवे'-रामा०।

हवाम-पु० [म०] अनु राशि।

हवा-स्त्री० [म०] अश्वगंधा; [अ०] लज्जा, शन। -**हार**-वि० लाज-शर्मनाला, लज्जाशील। -**हारी**-स्त्री० हवा दार होना।

हवात-स्त्री० [अ०] जीवन, त्रिदगी; प्राण।

हवाभ्यक्ष-पु० [स०] अश्वपाल, घोड़ेका निरीक्षक।

हवानंद-पु० [स०] सुद, मृग।

हवानन-पु० [स०] हयग्रीव; हयग्रीवके रहनेकी जगह।

हवानमा-स्त्री० [स०] एक योगिनी।

हवायुर्वेद-पु० [स०] अश्वचिकित्सा-मयवी शास्त्र।

हवारि-पु० [स०] करवीर, कनेर।

हवारुद, **हवारोह**-पु० [स०] अश्वारोही।

हवालय-पु० [स०] अश्वशाला, अमलबल।

हवाक्षना-स्त्री० [स०] शलकी वृक्ष।

हवास्थ, **हवास्थव**-पु० [स०] विष्णु (हयग्रीवरूपमें)।

हवी-स्त्री० [स०] घोड़ी।

हवी-पु० [स०] अश्वारोही; घोड़ेवाला।

हवुवा-स्त्री० [स०] एक पौधा जो दवाके काम आता है, हवुवा (?)।

हवेह-पु० [स०] यव; जई।

हर-वि० [स०] हरण करनेवाला; दूर करनेवाला; नष्ट करनेवाला; लानेवाला; ले जानेवाला; ग्रहण करनेवाला;

आकृष्ट करनेवाला; हकदार; विभाजन करनेवाला; कष्टा करनेवाला। पु० शिव; अग्नि; गधा; माजक; शिखवा निशंक; ग्रहण; हरण करनेवाला; एक दानव; छप्पयका एक भेद। -**गिरि**-पु० कैलास पर्वत। -**गौरी**-स्त्री० शिवकी अर्ध-नारीस्वर मूर्ति। -**गुहामणि**-पु० शिवका शिरोरत्न; चंद्रमा। -**नेज**-पु० शिवका धर्म, पारद, पारा। -**दृग्मूर्ति**-पु० कामदेव। -**हार**-पु० [हिं०] हरिद्वार। -**नर्तक**-पु० एक वृत्त। -**नेत्र**-पु० शिवनेत्र; गीनकी संस्था। -**प्रिय**-पु० करवीर। -**बीज**-पु० शिवका धर्म; पारद, पारा। -**रूप**-पु० शिव। -**बल्लभ**-पु० तालका एक भेद (मंगीत)। -**बाहन**-पु० (शिवका बाहन) बैल। -**शंकर**-स्त्री० [हिं०] पाक और पीपलका संयुक्त वृक्ष जो धार्मिक दृष्टिमें पवित्र माना जाता है। -**शंगार**-स्त्री० एक रागिनी। -**शेखर**-स्त्री० गधा। -**सख**-पु० कुबेर। -**सुनु**-पु० कार्तिकेय; गणेश। -**हार**-पु० शेषनाग; मर्ष। -**हारा**-स्त्री० दाक्ष।

हर-वि० [फा०] प्रत्येक। -**गुरु**-वि० प्रत्येक। -**कर्मी**-अ० हर जगह। -**चंद्र**-अ० जिस कदर, कितना ही।

-**जाई**-वि० मारा-मारा फिरनेवाला; भावारागर्ष; म. जगह जानेवाला। वि० स्त्री० कुलटा (स्त्री)। -**मरह**-अ० हर हालतमें। -**दम**-अ० हमेशा। -**कर्म**-वि० हर एक फल भानने वाला। -**रोज**-अ० प्रतिदिन

हर-पु० दे० 'हल'। -**पुत्री**-स्त्री० हल्का पूजन जो किस्तान कालिकामें करते हैं। -**बाह**, -**बाहा**-पु० ५० जोगनेवाला। -**बाही**-स्त्री० हल्क जोगनेका काम मजदूरी।

हरई-हल्कापन-'जिन्हके परिभार पकार नहीं, अग मजि भरे तिनने हरई'-मन०।

हरई-अ० धीरे-धीरे, आहिंसेमें।

हरक-पु० [म०] ग्रहण करने, ले लेनेवाला; चोर, उग भाजक; लचनेवाली स्त्री लचवार; शिव (प्रलयकर रूप) वि० हरण करनेवाला।

हरकत-स्त्री० [अ०] हिलना-चोकना, गति, चंदा; हर (व्या०) वरसचक चिह्न, माथा (जंग, जबर, पेश); काम, पुरा काम, शरारत। **सु**-**करना**-हिलना; चलना; प्रस्थान करना (फोकाकर हलकत करना)। -**देना**-जबर, पेश लगाना।

हरकना-म० कि० रोकना, वर्जन करना। † अ० कि० भड़कना।

हरकत-स्त्री० [अ०] 'हरकत'का बहु०, माथा-जबर, पेश।

हरकार, **हरकाह**-पु० दूत, डाकिया, डाक देनेवाला।

हरकेस-पु० एक प्रकारका अगहनो भाज।

हरक-पु० दे० 'हर्ष'।

हरकना-अ० कि० प्रसन्न होना। खुश होना।

हरकना-अ० कि० दे० 'हरकना'। म० कि० करना, प्रसन्न करना।

हरविज्ञ-अ० [फा०] कमी, किसी हालतमें (नहीं)के म। प्रयुक्त)।

हरमिका-पु० दे० 'हरमिका'।

हरज-पु० [अ०] हानि, क्षति; देर, समय-नाश, काममें होनेवाली बकाबट (खरना, होना)।

हरज-पु० नुकसान; हरजाना; तावान; † संगतराशोंका एक बीजार।

हरजाना-पु० [फा०] नुकसानके बदलेमें दी जानेवाली रकम, क्षतिपूर्ति।

हरजेबरी-खी० एक श्राबी।

हरह-वि० हड़-पुष्ट, बड़ा-कड़ा।

हरदियारी-पु० रहेंटेके बैलोंको हँकनेवाला व्यक्ति।

हरदारी-पु० हर, हड़।

हरण-वि० [सं०] (समाप्तता) में लेनेवाला; दूर करनेवाला; धारण करनेवाला। पु० ह्राय, भुजा; नष्ट करना; दूर करना; ले लेना, छीन लेना; चुरा लेना; ले जाना या ले आना; प्रयास ले जाना; बंशित करना; विभाजन, भाग (गं०); उपनयन-भिक्षा; यौक्तिक श्रुत; वीर्य; स्वर्ण; कौडी; ज्वलता हुआ पानी; धोनेका चारा।

हरणि-खी० [सं०] जलप्रणाली; मृत्यु।

हरणीय-वि० [सं०] हरण करने योग्य; ले लेने, छीन लेने योग्य।

हरता-पु० दे० 'हर्ता'। -हरता-पु० बनाये-विगाड़ने-वाला; मर्त्यता; सर्वशक्तिमान्।

हरतार-खी० दे० 'हरताल'।

हरताल-खी० गथक और संक्षिप्ताके योगमें बना एक पीला खनिज द्रव्य। सु० -फेरना, -छगाना-किसी वने कामको बिगाड़ देना, नष्ट करना।

हरताल-वि० हरतालके रंगका। पु० हरतालका-सा रंग।

हरतार-खी० दे० 'हर्ता'।

हरदा-पु० फमलका एक रोग, नेहरी।

हरदिया-वि० हल्दीके रंगका, पीला। पु० पीले रंगका रोग।

हरदियादेव-पु० दे० 'हरदील'।

हरदी-खी० हल्दी।

हरदील-पु० ओझाके राजा जुझारसिंहके छोटे भाई जो वीरता और भ्रातृभक्तिके लिए बड़े प्रसिद्ध हैं (राजा जुझारसिंहने अपनी पत्नीके साथ अनुचित संबंध होनेके संदेहमें उसकी सतीत्व-परीक्षाके लिए उसीके हाथसे इन्हें विष खिलाकर इनका भत करा दिया)।

हरद्वार-पु० एक स्थानका नाम जहाँकी तलवार प्रसिद्ध है।

हरद्वानी-वि० हरद्वानका बना हुआ।

हरदा-सं० कि० हरण कर लेना, छीन लेना; दूर करना; आकृष्ट करना। अ० कि० हार जाना; परास्त होना; शिथिल पड़ जाना। * पु० मृग, हिरन।

हरवाकस-पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरवाक-पु० 'हिरण्यक'।

हरवी-खी० हिरण्यकी सारा।

हरवीदा-पु० हिरनका बच्चा।

हरपरेबरी-खी० एक डेटका जो ओरसे बर्ण करानेके लिए करती है।

हरपारी-पु० बड़ छोटा हम्मा जिसमें सुनार तराजू आदि

रक्ते हैं; पिचोरा।

हरक-पु० दे० 'हर्क'।

हरकारेबकी-खी० आँखोंके बराबर खट्टे फलोंवाला एक वृक्ष या उसका फल; कबूली।

हरकारेबकी-खी० दे० 'हरकारेबकी'।

हरकर-खी० दे० 'हरकर'। अ० हरकरके साथ उठा-वलीमें, जल्द-...तुर्ह मुनिबर हरकर आयो-रघुराज।

हरबारा-अ० कि० 'हरबारा'।

हरबा-पु० [अ०] युद्धका साधन, हथियार, भासुष। -हथियार-पु० अस्त्र-शस्त्र। सु० -[ले] हथियारले लैस होना-शस्त्रसज्ज हो जाना।

हरबाग-वि० मुंडा, लठ्ठपारी; मूट, मूर्ख। कुल्यवत्त्वा; अंधिर। -पु० अंधिर नगरे।

हरभूली-खी० धर्रेका एक प्रकार।

हरम-पु० [अ०] काबेकी चहारदीवारी, घेरा; अंतःपुर; विवाहिता स्त्री; रखेली बनायी हुई बंदी। -छाना, -सरा-पु० दनानखाना, अंतःपुर।

हरमजदगी-खी० हरामजादापन, दुष्टता, शरारत।

हरवाल-खी० 'हरियाली'।

हरवे-अ० दे० 'हरवे'।

हरवल-पु० विना व्याजके हलवाइको दिया हुआ द्रव्य; * पु० दे० 'हरवाल'।

हरवली-खी० सेनाका नेतृत्व; मालिकता पद, स्वामित्व।

हरवा-पु० दे० 'हार' वि० हलका।

हरवाना-अ० कि० 'हरववाना', जल्दी करना; हलका होना। सं० कि० 'हराना' और 'हराना'का प्रेरणार्थक रूप।

हरवाली-पु० एक वास, झरारी।

हरव-पु० दे० 'हर्ष'।

हरपना, हरसना-अ० कि० प्रसन्न होना।

हरपाना, हरसाना-अ० कि० प्रसन्न होना। म० कि० प्रसन्न करना।

हरवित-वि० दे० 'हर्षित'।

हरसिंगार-पु० एक फूल, राजता।

हरहटा-वि० दे० 'हरहा'।

हरहा-वि० हरान, परेशान करनेवाला, भागा फिरनेवाला (पशु)। पु० हलमें जुतनेवाला बैल; † नेकिया।

हरहाई-वि० खी० शरारती (गाय)।

हरास-पु०, खी० ज्वरांश, साधारण ज्वर, हारारत; थकावट।

हरा-वि० घास, पत्तीके रंगका, सम्य, हरित; अपक्का; विना सरा (पाक); तरौतावा; सुख, आनंदित, प्रफुल्ल।

पु० हरा रंग; चौपायोंका हरा चारा; * हार, माला।

खी० [सं०] हर, शिवकी पत्नी पार्वती। -पन-पु० हरा होनेका भाव। -अरा-वि० हरियालीसे भरा हुआ; ताजा, प्रसन्न, प्रफुल्ल। सु० -करना-आनंदित, हर्षित, प्रसन्न करना। -दिखाई पड़ना-सुखना-सुख, आशा आदिकी व्यर्थ कल्पना, अपने अज्ञानके कारण झूठी आशा बाँधना। -बास दिखाई पड़ना या सुखना-दे० 'हरा दिखाई पड़ना'।

हराई-वि० एक वा एकसे अधिक हलोंके एक फेरमें

जुन जानेवाली भूमि, बाह । सु०-कॉदना, -कानवा-
जुतारै या कूँह आरंभ करना ।

हरामत-पु० [सं०] रावण ।

हराना-स० कि० पु०, लकार-सगरे, प्रतिब्रंशिता आदिमें
शब्द, प्रतिब्रंश आदिमें परास्त करना, पछानना; भगाना ।

हराम-वि० [अ०] निषिद्ध, अविहित; धर्मशास्त्रमें
निषिद्ध; शरम (इसकामी धर्मशास्त्र)के विरुद्ध, हलालका

उलटा; स्वाभ्यः अग्रहः अपवित्र । पु० पापकर्म; व्यभि-
चार, बदकारी । -कार-पु० व्यभिचारी, बदकार ।

-कारी-स्त्री० व्यभिचार, बदकारी । -खोर-वि०

हरामकी चीजें खानेवाला; हरामका माल खानेवाला; घूस-
खोर; मुफ्तखोर; नमकहराम । -खोरी-स्त्री० हरामका

माल खाना, मुफ्तखोरी; घूसखोरी; नमकहरामी ।

-ज़ादा-पु० जारज, दोमला; दुष्ट, पाजी । वि० हरामके

गर्भसे उत्पन्न । -ज़ादी-स्त्री० दोमली, हरामके पेटमें

पैदा हुई स्त्री; दुष्टा, खोदी स्त्री । सु०-कर देना-कठिन,

दुःखद बना देना, नामुमकिन कर देना (-जीना,
खाना, मोना हरामकर देना) । -का खाना-विना

मेहनत किये खाना, मुफ्तखोरी करना । -का जना-
जो हराम, व्यभिचारके गर्भसे जनमा हो, हरामजाद ।

-का पिछा-का बचा-दोमला; दुष्ट । -का पैट-
व्यभिचार, अविहित मंत्रधर्मे रह जानेवाला गर्भ ।

-का माल-अधर्म, बेईमानीसे कमाया हुआ धन;
मुफ्तका माल । -की कमाई-अधर्म, बेईमानीसे कमाया

हुआ पैसा, पापकी कमाई । -की मौत मरना-जहर

खाकर मरना; आत्मघात करना । -होना-कठिन,
दुःखद, नामुमकिन होना; स्वाभ्य होना (रिजा हराम

होना) ।

हरामी-वि० हरामका जना; दुष्ट, पाजी । -पिछा-
पु० दे० 'हरामका पिछा' ।

हरारत-स्त्री० [अ०] गर्मी; हलका स्वर; (आ०) जोश,
क्रोध ।

हरावर-पु० दे० 'हरावर' ।

हरावरि-स्त्री० दे० 'हरावरि' ।

हरावर-पु० [तु०] सेनाका अग्रभाग; उग्रोका मुखिया ।

हरास-पु० हास; विषय, दुःख; नैराश्य-धनुष तारि

हरि सबकर हनेल हरास'-बरे रामा०; दुर्घटनाका भय,
आशंका; डर ।

हराहर-पु० दे० 'हराहर' । * स्त्री० छीना-जपटी-

'दिन होरी-खेलकी हराहर भरकी हो सु नौ'-धन० ।

हराहरि-स्त्री० थकावट, क्लृप्ति-'सुति अंग हराहरि

खोह गयी'-उत्तररामचरित ।

हरि-वि० [सं०] हरा; हरापन लिये पीला; पिंगल; कपिल;

पीत; दे जानेवाला, बहान करनेवाला (समाप्तानमें) । पु०

विष्णु; इंद्र (सिंह); शिव; मल्ला; वसु; सूर्य; चंद्रमा; अनुष्य;

प्रकाशकी किरण; अग्नि; वायु; सिंह; सिंह राशि; अश्व;

गोदक; इंद्रका घोड़ा; बंदर; वनमानुष; हंस; कोयल;

मेढक; सोंप; मोर-'हरि (बादल) गर्जन सुनि हरि (मेढक)

बोलेला, हरि (मेढक)के मन्त्र सुनि हरि (सोंप) चलेला,

हरि (मोर) बिचही मिलल, हरि हरिके लिलल, हरिके

प्रतापसे हरि चलेला'; तोता; पीला या पीलापन लिये

हरा रंग; कृष्ण; राम; मरुहरि; शुक्र; गन्धका एक पुत्र;

एक पर्वत; एक लोक; एक वर्ष, श्रावण; एक वर्षी संस्था

(बी०); तामसमन्वतरका एक देववर्ण । -कचा-स्त्री०

विष्णुके अवतारोंके चरित्रोंका वर्णन । -कर्म(श्)-
पु० यह । -कांस-वि० इद्रप्रिय; सिंह जैसा खुर ।

-कीर्तन-पु० हरि-विष्णुके अवतारों आदि-का गुण-

गान । -केसीय-पु० बगाल; बंगालनिवासी । वि०

बंगाल-संबंधी; बंगालमें रहनेवाला । -केश-वि० भूरे

बालोंवाला । पु० मूयके सात रश्मियोंमेंसे एक; शिव;

एक यक्ष । -कोता-स्त्री० विष्णुकांता लता । -खंड-
पु० मीरपंख-'कसुईक इत पग भारि सिधारी बरि हरिलट

सुवेस'-सू० । -शंख-पु० पीला चंदन । -गण-पु०

घोशोंका झुंड । -गिरि-पु० एक पर्वत । -गीला-स्त्री०

एक वृक्ष; वह मिष्टान्त जो नारायणने नारदकी

बनलाया था । -गीतिका-स्त्री० एक वृक्ष । -गृह-
पु० पुरीविशेष, एक अन्न; विष्णुमंदिर । -खंडन

-पु० पौन देववर्णोंमेंसे एक; एक चंदन; पीला

चंदन; पथपगण; केसर; चंदनी । -धर्म(न)-
पु० व्याघ्रधर्म । -चाप-पु० इंद्रधनुष । -ज-

-पु० क्षितिज । -जटा-स्त्री० एक राक्षसी । -जन

-पु० भगवान्का सेवक; अष्टम जातिका व्यक्ति (आ०);

-जान-पु० विष्णुवाहन, गन्ध । -ताल-पु० हरा

पन लिये पीले रंगका कबूतर; हराना । -तालक-पु०

दे० 'हरनाम'; बहन रंगना (अभिनयमें) । -तालिका-

स्त्री० दूब; भाद्र-शुक्ल तृतीया, त्रिम दिन शिवों नाचने;

पूर्व ममाती है । -ताली-स्त्री० तलवारका फल, रक्त

लता; दे० 'हरितालिका'; मालकंगनी; आकाश-रेखा; पद्म

मटल । -तुरंगम-तुरंग-पु० इंद्रका घोड़ा । -धर्म

-पु० एक तरहका हरा कुट । -दास-पु० विष्णुभक्त ।

-दिक्(श्)-स्त्री० इंद्रकी दिशा, पूरव दिशा ।

-दिन-दिवस-पु० एकदशी । -देव-पु० विष्णु,

श्रवणा नक्षत्र । -द्वेष-पु० नागकेसरचूर्ण; हरा रंग ।

-द्व-पु० वृक्ष; दाम्हरिद्रा । -द्वार-पु० इषीकेद्वारे

पामका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान । -द्वि(श्)-पु०

असुर । -धनुष-पु० इंद्रधनुष । -धाम(श्)-पु०

बैकुण्ठ । -नक्षत्र-पु० भवणा नक्षत्र । -मल-पु०

मिष्टका मल; बापके मलोंमें युक्त तबीयत जो बच्चोंको

पहनाया जाता है । -नार-पु० सर्पमणि । -नाथ

पु० इनुमान् । -नाम(श्)-पु० विष्णुका आख्यात

भगवान्का नाम । -नामा(मन्)-पु० मुद्र । -नेत्र-

वि० हरी या भूरी आँखोंवाला । पु० ध्वज पक्ष; विष्णुका

नेत्र; उल्लू; भूरी या हरी आँख । -पद्-पु० वैकुण्ठ; एक

वृक्ष; गणका एक प्रसिद्ध मंदिर । -पर्ण-वि० हरी

पत्तियोंवाला । पु० मूली । -पर्वत-पु० एक पहाड़ ।

-पिंडा-स्त्री० स्कंदकी एक मातृका । -सुर-पु० वैकुण्ठ ।

-पैशी-स्त्री० [हिं०] हरिदासका एक बाट । -प्रस्थ-

पु० इंद्रधनुष । -मिश्र-वि० विष्णुकी म्रिय । पु० कर्दव

बंधक; विष्णुपद; शंख; उद्योत; मूर्ध्नि; पातल आदमी

कवच; शिव; रक्त; या कृष्ण चंदन । -प्रिया-स्त्री०

लक्ष्मी; पृथ्वी; तुलसी; सुरा; मयु; द्वादशी । - मीसा-की० एक मुहूर्त । - बीज-पु० हरताल । - बोध-पु० विष्णुका जगरण । - बोधिनी-की० कापिक-शुद्धा एकदशी । - भक्त-पु० भगवान्का भक्त, हरिसेवक । - भक्ति-की० भगवान्की भक्ति । भद्र-पु० दे० हरिवास्तुक । - भाविणी, - भाविनी-की० भगवान्की भक्ति करनेवाली स्त्री । - भुक्त (बु)-पु० सर्व (मिष्टक खानेवाला) । - भंघ-पु० गणिकारिका; अधिमंघ; मटर; चना; एक प्रदेश । - भञ्ज-पु० चना । - भंघक-पु० चना । - भंघिर-पु० विष्णु-मंदिर । - भणि-पु० सर्पका भणि । - भेज-पु० अन्धमेघ; विष्णु । - बाल-पु० गरुड । - बोजन-पु० बोरे जोतना; वंश । - रोसा (मन्)-वि० जिसके शरीरपर सुंदर रंग हैं । - लोला-की० भगवानकी लोला; एक वृत्त । - लोचन-वि० भूरी आँखोंवाला । पु० केकड़ा उल्लू; एक रोगग्रह । - लोसा (मन्)-वि० भूरे बालोंवाला । - बंश; -पु० कृष्णका वंश; बंदरोंका वंश; एक प्रसिद्ध वंश जो महाभारतका परिशिष्ट में । - बर्ष-पु० जन्मदिनका एक वर्ष । - बल्लभा-की० लक्ष्मी; तुलसी; जया; अधिक मासकी कृष्ण एकादशी । - बालुक-पु० पलवास्तुक । - बाम-वि० पीत बल्लाधारी (विष्णु) । पु० अधरथ, पीपल । - बाम्बर-पु० एकादशी; रविवार । - बासुक-पु० दे० 'हरिवास्तुक' । - बाहन-पु० गरुड; इन्द्र; सूर्य । - बृष-पु० हरिवंश । - बाधन-पु० विष्णुका शयन । - बाधनी-की० आषाढ-शुद्धा एकादशी (विष्णुके मोनेका दिन) । - शर-पु० शिव । - इमधु-पु० शिरषाश्लका एक पुत्र । वि० भूरी दाढ़ीवाला । - मय-पु० गभर्व । - केज-पु० दमर्वे मनुका एक पुत्र; जैनोंके अनुसार भारतके दसवें चक्रवर्ती । - संकीर्तन-पु० विष्णुका गुणगायन । - सिद्धि-की० एक देवी । - सुत-पु० अर्जुन, प्रबुद्ध; जैनोंके अनुसार भारतके दसवें चक्रवर्ती । - सुनु-पु० अर्जुन । - सौरभ-पु० कस्तूरी । - हय-पु० इंद्रका घोड़ा; इन्द्र; सूर्य; स्वप्न; गणेश । - हर-पु० विष्णु और शिव; एक नदी । - भोज-पु० एक तीर्थस्थान जो सोनपुर (बिहार)में है और जहाँ कापिकी पूर्णिमाकी बहुत बड़ा मेला लगता है । - हृति-की० इद्रवधू । - हेति-की० इंद्रधनुष; विष्णुका चक्र । - हुति-पु० चक्रवाक ।

हरि-अ० धीरे । - हरि-अ० धीरे-धीरे, आहिरते-आहिरते ।

हरिभर-वि० हरा ।

हरिभरणा-अ० क्रि० हरा होना ।

हरिभरी-की० हरियाली, हरी वनस्पतिका देर, हरी बांस, हरे पेड़-पौधोंकी राशि; हरा रंग ।

हरिभावा-अ० क्रि० हरे रंगका होना; हरा होना; भवान का हरा होना; ताजा होना; आनंदित, प्रसन्न होना ।

हरिभाकी-की० दे० 'हरिभरी' ।

हरिक-पु० [सं०] भूरे रंगका घोड़ा; चोर; जुनाड़ी ।

हरिकारा-पु० दे० 'हरकार' ।

हरिचंद-पु० दे० 'हरिचंद्र' ।

हरिचार्ड-वि० की० दे० 'हरचार्ड' ।

हरिज-पु० [सं०] सूर्य, कुरंग, हिरन; शिव; विष्णु; स्वयं; नेवला; हंस; एक लोक; शिवका एक गण; एक नागासुर; पीलापन लिये सफेद रंग, पांडुवर्ण । वि० पीलापन लिये सफेद, भूरा, पांडु रंगका; हरा । - कलंक-पु० चंद्रमा । - चर्मे (चु)-पु० सूर्यछाला । - चामा (चु)-पु० चंद्रमा । - चयना, - चयनी, - नेत्रा-की० हरिण जैसी आँखोंवाली स्त्री । - नर्तक-पु० किन्नर । - प्लुता-की० एक अर्द्ध समवर्ण वृत्त । - छल्लण, - कोछन-पु० चंद्रमा । - लोचना-की० दे० 'हरिगनयनी' । - लोलाक्षी-की० हरिण जैसी चंचल आँखोंवाली स्त्री । - हृदय-वि०

हरिणके समान और हृदयवाला, मुनदिल ।

हरिणक-पु० [सं०] छोटा हिरन ।

हरिणांक-पु० [सं०] चंद्रमा ।

हरिणाक्ष-पु० [सं०] चंद्रमा ।

हरिणाक्षी-की० [सं०] दे० 'हरिगनयनी' ।

हरिणाधिप-पु० [सं०] सिंह ।

हरिणारि-पु० [सं०] सिंह ।

हरिणाच-पु० [सं०] बाघ ।

हरिणी-की० [सं०] मादा हरिण, स्त्री; हरिद्रा; हरा रंग; स्वर्णज्वरी, सोनजुही; मंत्रिष्ठा, मंत्री; छिद्योंके चार भंदोंमेंसे एक जिसे विभिन्न कहते हैं; तक्षणी, बुधली; सुंदरी स्त्री; एक वर्णवृत्त; स्वर्णप्रतिमा । - हस्ती, - नयना-की० भूमी जैसी नेत्रोंवाली स्त्री ।

हरिणेश-पु० [सं०] सिंह ।

हरित-वि० [सं०] हरा; ताजा; भूरा; पीला; गहरा नीला । पु० हरा रंग; भूरा रंग; इन रंगोंका पदार्थ; एक सुगंधित पौधा, श्लेष्मेयक; सिंह; कश्यपका एक पुत्र, यदुका एक पुत्र; युधनाथका एक पुत्र; रोहिताश्वका एक पुत्र; बारहवें मन्वतरका एक देववर्मा; मोना; सज्जी आदि; पांडु रोग; मथानक तुण । - कपिश-वि० पीलापन लिये भूरा । - गोमय-पु० ताजा गोबर । - छल्ल-वि० हरी पत्तियोंवाला । - चान्य-पु० कच्चा अन्न (जो अभी पका न हो) । - जेमी (मिचु)-वि० जिसके रथके पहिये सुवर्णके हैं (शिव) । - पत्रिका, - लता-की० पाची, मरकतपत्री । - प्रभ-वि० जिसका रंग पीला पड़ गया हो, पांडु । - भेषज-पु० कमला रोगकी दवा । - मणि-पु० मरकत । - शाक-पु० सिद्ध । - हरि-पु० स्वयं ।

हरितक-पु० [सं०] शाक; हरी घाम ।

हरितकी-की० दे० 'हरितकी' ।

हरिता-की० [सं०] दूबी; नीली दूब; हरिद्रा, हल्दी; कपिलद्राक्षा; जवंती; पात्री ।

हरितास्म (चु)-पु० [सं०] मरकत मणि, पत्ता; दूधिया ।

हरितास्मक-पु० [सं०] मरकत मणि ।

हरिताम्ब-वि० [सं०] पिगल वर्णके घोड़ेवाला (सूर्य) ।

हरितोपल-पु० [सं०] मरकत ।

हरिव-वि० [सं०] हरा; पीला; पिगल; हरा मिश्रित पीला । पु० हरा रंग; पीला रंग; पिगल वर्ण; सूर्यका एक घोड़ा; मरकत; विष्णु; सूर्य; सिंह; नृप; बास । की० हल्दी; दिशा; तुण; बास । - पत्ति-पु० दिक्पत्ति । - वर्ण-पु० मूली ।

लगाते हैं; वैष्णवादीका वह भाग जो मामनेकी ओर निकला रहता है।

हरिषा-पु० हरण करनेवाला; दूर करनेवाला।

हरीक, हरीका-पु० दे० 'हरिबल'।

हरीती-स्त्री० दे० 'हृत्पति'।

हर्ष-पु० दे० 'हरज'।

हर्षव्य-वि० [सं०] हरण करने योग्य।

हर्षा(री)-पु० [सं०] हरण करनेवाला; ले जानेवाला; नष्ट करनेवाला; लानेवाला; टाक; चोर; काटकर अलग करनेवाला; कर लगानेवाला (राजा); मृत्यु।

हर्ष-पु० [सं०] स्वयं प्रगाढ़ प्रेम।

हर्ष-पु० [अ०] अक्षर, वर्ण; शब्द, वाग (शिक्षायातका हर्ष); अन्वय, प्रत्यय (व्या०); दोष; ऐव। -**आवावा**-वि० अक्षर पढ़ानेवाला, नौसिखी। -**गीर**-वि० दोष निकालनेवाला, नुस्खाचीन। -**गीरी**-स्त्री० नुस्खाचीनी, छिद्रान्नेपण। -**हर्ष**-अ० अक्षर-अक्षर, अध-रक्षः। **मु०**-**आवा**-दोष लगाना। -**उठाना**-(वर्ण-मात्रा पढ़नेवालेका) एक-एक अक्षरको पढ़ाना और जोषकर पढ़ना। -**एकवृत्ता**-गलती एकवृत्ता; टोक, ग (वि०)। -**बनाना**-मुअर अक्षर लिखनेका अन्वय करना। छायेके पत्थरपर गलत वा अस्पष्ट किये हुए अक्षरोंको फिरसे ठीक करना। -**बैठाना**-छायेके अक्षर जोड़ना, कपोज करना। -**लाना**-दोष, लाछन लगाना।

हर्ष-पु० [अ०] कष्ट, मद्यम। -**गाह**-पु०, स्त्री० युद्ध-स्थल, रणभूमि।

हर्षा-पु० दे० 'हरिषा'।

हर्म(न)-पु० [म०] जैसा है।

हर्मिका-स्त्री० [सं०] स्तूपव्य ग्रीष्म-मवन।

हर्मिल-वि० [सं०] फैला हुआ, क्षिप्त; जला हुआ; नृत्त।

हर्मद-पु० [सं०] कच्छप; मृत्यु।

हर्म्य-पु० [म०] बहुत बड़ा मकान, गडल, प्रामाद; अशिक्षित; वृत्तान्त-स्थान, नरक। वि० मकानमें रहनेवाला। -**नल**-पु०-महलकी ऊपरकी मंजिल या छत। -**भाक्(ज)**-वि० महलमें रहनेवाला। -**बलभी**-स्त्री० दे० 'हर्म्यतल'। -**स्थल**-पु० दे० 'हर्म्यतल'।

हर्मककुल-वि० [सं०] घरेबशमें उत्पन्न (जिसका निह सिद्ध है)।

हर्म्य-वि० [सं०] भूरी ओलोंवाला। पु० निह; सिंह राशि; कुंजर; बंदर; एक रोगग्रह; शिव; एक असुर; पशुका एक पुत्र।

हर्म्य-पु० [सं०] बोझ; अश्वमेधके उपबन्ध पीडा।

हर्म्य-पु० [सं०] ईदका भूरे रंगका बोझ; ईद; शिव।

-**चाप**-पु० ईदपुत्र।

हर्षात्मा(सज्ज)-पु० [सं०] व्यास।

हर्ष-स्त्री०, **हर्षा**-पु०, **हर्ष**-स्त्री० हरीतकी। **मु०**-**हर्षा** लगे न किटकिरी और रंग थोखा होना-वेखचके काम बन जाना।

हर्षा-स्त्री० **हर्ष** जैसे दानोंवाला हाथका एक गहना; कंठके ओभोपरका दाना।

हर्ष-पु० [सं०] प्रिय या इष्ट वस्तु, व्यक्ति आदिके देखने, उनके विषयमें मनने, पढ़ने आदिमें उत्पन्न होनेवाला एक सुखारमक भाव, आनन्द, प्रमत्तता; रोमान, रीगदोका खडा होना; एक संवारी भाव (सा०); कामोत्तेजना; गहरी इच्छा; एक असुर; कुलका एक पुत्र; दे० 'हर्ष-वर्द्धन'। -**कर**, -**कारक**-वि० प्रसन्न करनेवाला। -**कीलक**-पु० एक रतिबंध। -**गह्वर**-वि० जिसकी आवाज आनन्दमें भरपूरी हुई हो, गह्वरकंठ। -**गर्भ**-वि० आनन्दमय। -**खरित**-पु० बाणभट्टरचित एक गवकाव्य जिसमें सम्राट् हर्षवर्द्धनका चरित वर्णित है। -**खल**-वि० आनन्दमें कौपता हुआ। -**ज**-वि० हर्षसे उत्पन्न। पु० झुक, वीर्य। -**जड**-वि० मारे सुशीके जडवत हो जानेवाला। -**क्षत्र**-पु० आनन्दपूर्वक दिया हुआ दान। -**दोहल**-पु० कामुक इच्छा। -**धारिका**-स्त्री० एक ताल (संगीत)। -**धनि**-स्त्री०, -**जाद**-पु० आनंदातिरेकमें की जानेवाली आवाज। -**निम्बन**, -**निम्बन**-पु० दे० 'हर्षनाद'। -**पुरी**-स्त्री० एक राग। -**भाक्(ज)**-वि० प्रसन्न। -**वर्द्धन**, -**वर्धन**-वि० हर्षको बढ़ानेवाला, आनन्दवर्धक। पु० विक्रमकी सातवीं जन्मि होनेवाले मारतके अंतिम सम्राट् (चीनी धात्री हुएन्माग इन्की) राजत्वकालमें आया था; ये स्वयं कवि थे और सुप्रसिद्ध मरुहकवि बाणभट्टकी अपनी राजसभा में रखा था। -**विचर्चन**-वि० आनंद बढ़ानेवाला। -**विह्वल**-वि० आनन्दविभोर। -**संपुट**-पु० एक प्रकारका रतिबंध। -**ममग्वित**-वि० आनन्दयुक्त। -**स्वन**-पु० आनन्दध्वनि।

हर्षक-वि० [सं०] आनन्ददायक, प्रसन्न करनेवाला। पु० एक पक्षत; चित्रयुक्तका एक पुत्र; मिश्रनाम-बंधका एक राजा।

हर्षण-वि० [सं०] आनन्ददायक, प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। पु० प्रसन्न होना; रोमांच होना; आनन्द; काम-देवके पाँच बाणोंमेंसे एक, आद्यविशेष; आद्यका एक देवता; ओसका एक रोग; एक योग (ज्यो०); शिवमो-त्तेजन।

हर्षणीय-वि० [सं०] आनन्ददायक।

हर्षना-अ० कि० आनन्दित होना, प्रसन्न होना।

हर्षमाण-वि० [सं०] हर्षयुक्त, प्रसन्न।

हर्षविपु-वि० [सं०] हर्षणशील, आनन्ददायक। पु० सोना; पुत्र।

हर्षकुल-वि० [सं०] आनन्दविह्वल।

हर्षातिसय-पु० [सं०] आनंदातिरेक।

हर्षाना-अ० कि० दे० 'हर्षना'। स० कि० आनंदित, प्रसन्न करना।

हर्षाजित, **हर्षाविह**-वि० [सं०] आनन्दयुक्त, प्रसन्न, सुख।

हर्षा-पु० [सं०] आनंदसे निकले हुए आँसू, आनंदाश्रु।

हर्षिणी-स्त्री० [सं०] विजया। -

हर्षित-वि० [सं०] आनंदादित, प्रसन्न; प्रसन्न किया हुआ; रोमांचित किया हुआ। पु० प्रसन्नता।

हर्षी(विं)-वि० [सं०] प्रसन्न; प्रसन्न करनेवाला।

हर्षिका-स्त्री [स०] हृषविशेष ।

हर्षक-वि० [स०] प्रमत्त करनेवाला ।

हर्षुक्त-वि० [स०] हर्षणशील, प्रमत्त करनेवाला । पु० हिमन; कामुक, प्रणयी ।

हर्षुला-स्त्री [स०] वह लक्ष्मी जिसके दाढ़ी हों (ऐसी लक्ष्मी विवाहके अयोग्य समझी जाती है) ।

हर्षोत्कर्ष-पु० [स०] हर्षका आतिशय, आनन्दानिरेक ।

हर्षोत्फुल्ल-वि० [स०] हर्षमें फूला हुआ । -लोचन-वि० जिसके नेत्र आनन्दमें खिले हुए हों ।

हर्षा-पु० दे० 'हरिम' ।

हर्षत-वि० [स०] जिसके अंतर्गत् स्वरहित ध्वजन वर्ण हों ।

हल-पु० [स०] धेनु जोतनेका एक औजार, कागल; भूमिमें एक माप; उत्तरका एक देश; बाधा, प्रतिषेध; कल्पता, महापन; एक नक्षत्रपुनः एक द्रव्य; पैरका एक निहा; द्रव्यता, विवाद । -**ककुद्**-पु० हलका वह भाग जिसके नीचेके हिस्सेमें फाल जड़ते हैं । -**गोलक**-पु० एक तरहका कोरा । -**ग्राही(हिन)**-वि० हल चलानेवाला । -**जीवी(विन्द)**-वि० हलके सवार जीविका चलावेवाला । -**जुता**-पु० [हि०] हल जोतनेवाला किमान, साधारण कुपक; गवार आदमी । -**बँह**-पु० हरिम । -**खर**-पु० बलराम । -**पत्ता**-पु० परिहत् । -**पाणि**-पु० बलराम । -**भूति**-पु० शकराचार्य ।

-**भूति**-स्त्री कृषिकर्म, किसानी । -**भूद**-पु० हलधर ।

-**भार्ग**-पु० जुगार्धमें बनी हुई लकीर, कँच । -**सुख**-पु० फाल । -**सुखी**-स्त्री एक वर्णवृत्त । -**रद्**-वि० हल जैसे दौतीवाला । -**राख**-पु० आहुत । -**बँस**-पु० हरिस । -**बाह**-पु० [हि०] हल जोतनेका काम करनेवाला । -**बाहा**-स्त्री भूमिमें एक प्राचीन माप ।

पु० [हि०] हलबाह । -**हति**-स्त्री जुगार्ध ।

हल-पु० [अ०] सुलना, सुलझाव; कटिनाईका दूर होना; सुलना; मणितकी प्रक्रिया, सवालका जवाब । सु० -

करना-सुलझाना; घेतना, पीसकर मलाना; सवालका जवाब निकालना, पहेली ब्रूना ।

हलकप-पु० दे० 'हलकप' ।

हलक-पु० [अ० 'हलक'] गला, कटा; गरदन । सु० -

ब्रह्म-खानेपीनेमें रोकटोक करनेवाला; शीलनेसे रोकनेवाला, वात-लाग पर रोकनेवाला (कि०) । -**तक**

अरना-हैम-वृत्तकर खाना । -**पर छुरी फेरना**-दे० 'गलेपर छुरी फेरना' । -**से उतरना**-गलेमें उतरना; मनमें बैठना ।

हलकही-स्त्री हलकापन; छोटापन; अप्रतिष्ठा ।

हलकन-स्त्री हलने-डुलनेकी क्रिया ।

हलकना-अ० कि० हिलना-डोलना, घानीका हिलकोरा मारना ।

हलका-वि० कम बजनवाला, जो भारी न हो; मात्रामें थोडा, कम; मामूली, कम मूल्यवाला; पतला, अधिक जल या अन्य तरल वस्तु मिला हुआ; कम साधातिक, जो (प्रकार) तेज या अधिक कष्ट न हो; मंद, मामूली; महीन, पतला, होना; एकदम सार्थी, छूँछा; ताजा,

यकानरहित, आंतिहीन; कमीचा, नीचा, ओछा; भिन्नित, अप्रतिष्ठित, कम परिश्रममें ही हो जानेवाला, सहज; अनुपचाक; जो गाढ़ा, गहरा, चटकीला न हो । पु०

जलका हिलकोरा, लहर; दे० 'हलका' । -**घन**-पु०

हलका होनेका भाव, भार न होना; तुच्छता, ओछापन; बुराई; कमीनापन; अपमान, बेइज्जती ।

सु० -**करना**-अपमानित करना । -**पचवा**-एक वस्तु,

अधिकदा दूसरी वस्तु, व्यक्तिके मुकाबलेमें नीचा, कमजोर, अनुपयुक्त आदि होना । -**बनना**-होना-

अप्रतिष्ठित बनना, होना; लज्जित होना; टुट्ठा, ओछा, कमीना समझा जाना । -**भारी होना**-थकावना, करना;

अपनेकी ओछा, तुच्छ बनाना ।

हलका-पु० [अ०] घेरा, मडल; वृत्ताकार वस्तु; मडली;

पटिया; पट्टिका कागस; लोहे या लकड़ीका गोल कूडा,

गोबों आदिका मडल जो किसी विशेष कामेजारी या अति

कारीका कार्यक्षेत्र हो; तुकना । -**(के)दार**-वि० घेरा-

दार; वृत्ताकार । सु० -**बाँधना**-घेरा डालना ।

हलकान-वि० दे० 'हलकान' ।

हलकाना-म० कि० हलका करना, किसी तरह बन्दूक

हिलाना-डुलाना, हलकोरना । अ० कि० हलका होना ।

हलकार-पु० दे० 'हलकार' ।

हलकारी-स्त्री कपडा रंगनेके पुं० लम्बा रंग पकाने

के लिये फिटकरी, नेत्राव अदि का पुट देनेकी क्रिया ।

एक विशेष प्रकारके रंगने किनारेपरकी छपाई

हलकोरा-पु० गलकी तरह, लहर, हिलोरा ।

हलचल-स्त्री किमी अल्प पटना; अवसर आदिमें उठा

मिथ होनेपर होनेवाला लड़ाई-प्रणय, भाग दौड़, छो-

पुल, मोड़-कोट आदि; अराजकता; उपद्रव, हलका

(नरक पड़ाईकी) अभिमान, हिलने डोलनेका रस ।

सु० -**डालना**-उपद्रव-प्रसक्त मनाना, अराजकता में

बन्धा उपद्रव करना । -**पचवा**-उपद्रव, अराजकता

होना । -**मचना**-दे० 'हलचल पटना' । -**मचना**-

दे० 'हलचल डालना' ।

हलका-पु० लहरका बार-बार उठना ।

हलदी-स्त्री हलदी; -**हात**-स्त्री विवाहकी एक रंग,

हलदी-वन्दना ।

हलदिया-पु० एक रंग जिसमें आँख और मारा शरीर

पीला पड़ जाता है, पीलिया रोग; एक प्रकारका विष ।

हलदी-स्त्री एक प्रकारका पीला जिसकी पीने रंगकी ज

मसाले, रंग और औषधके काममें आती है । सु० -**उठना**-

-नेल उठना-विवाहके कुछ दिन पहले घर और कन्या-

की हलदी और तेल मिला उठाने लगानेकी रस्म ।

-**का हाथ होना**-विवाह होना । -**खदना**-दे० 'हलदी

उठना' । -**लगाना**-विवाह होना । -**लगानाकर बैठना**-

कोई काम न करना; अपनेकी बहुत कुछ समझना ।

हलदी-स्त्री [स०] हरिद्रा, हलदी ।

हलका-अ० कि० हिलना, अस्थिर होना; घुसना, प्रविष्ट

होना ।

हलक-पु० [अ०] उपप, कसम । -**दूरी**-स्त्री शूरा

उपप लेना । -**मासा**-पु० लिखा हुआ हलकी बयान ।

मु०—डकाना,—डेना—कसम खाना, कुगन या गगाजल लेकर कहना । —देना—कसम खिलाना, कुरान या गंगा-जल उठवाना ।

हलका—अ० हलफकी रूपे, साधक-पूर्वक ।

हलफ—पु० लहर; ऊँची तरंग; तेज मीस । **मु०**—कलना—बहुत तेज सौम चलना (बच्चोंका हथ्वा डब्बा रोममें घुसना) । —भारना—ऊँची-ऊँची तरंगोंका पछाड़ खाना ।

हलफ्री—वि० हलफ लेकर कहा, दिया हुआ (बयान) ।

हलब—पु० [अ०] शामका एक नगर जहाँका चौथा पुराने समयमें प्रसिद्ध था ।

हलबल—खी० हलचल, खलबली ।

हलबलाना—अ० क्रि० घबडाना । म० क्रि० दूसरोंका घबडाहटमें डालना ।

हलबली—खी० दे० 'हलबल' ।

हलबी—वि० हलबका । पु० हलबका आँना, बड़िया मोटे डलका दीया ।

हलबी—पु० दे० 'हलबी' ।

हलभल—खी० दे० 'हलबल' ।

हलभली—खी० हलबल ।

हलरा—पु० दे० 'हलहा' ।

हलराना—म० क्रि० छोटे बच्चोंको हाथपर या गोदमें लेकर उन्हे प्यार करने, नष्ट कराने, मुलाने आदिके लिए हिलाना ।

हलबन—खी० वर्षम पहली बार जेवने हल में जानेकी रस्म ।

हलवा—पु० [अ०] एक मिठाई जो सूजी या आटेका धीम भूनकर पानी या दुधमें शकरके साथ पकानेमें बनता है, मोहनयोग; (ला०) नर और मुलामय बीज; बहुत आमान शम (हलवा समझना) । —सोहन—पु० धो-मैदेके योगमें बननेवाली एक मठाई मिठाई । **मु०**—निकल जाना—कचुमर निकल जाना; गल बन जाना । —निकाल देना—पीटकर गल बना देना । (अपने) हलवे मीठेमें काम होना—बेबल अपना मन्त्र, अपना मतलब देखना; दूसरेके हानि लाभकी परवाह न करना ।

हलवाई—पु० हलवा बनाने-बेचनेवाला, मिठाई बनाने-बेचनेवाला, मोदककार ।

हलवान—पु० [अ०] भेड़ या बकरीका बच्चा जो दुध पीना ही और घास न खाना ही, भैरवा; मुलायम गोश्ठ ।

हलहल—वि० [म०] हल जोतनेवाला ।

हलहल—अ० [सं०] प्रसन्ननाम्यक शब्द ।

हलहलाना—म० क्रि० घुमेहना; झटकेमें हिलाना, शक-भोरना; तरल पदार्थभरे पात्र या वस्तुकी झकझोरना, हिलाना । अ० क्रि० काँपना ।

हल्य—खी० [सं०] स्मृति; पृथ्वी; जल; मदिरा । अ० मस्तीकी संशोधित करनेका एक शब्द (ना०) ।

हलाक—पु० [अ०] मौत, काल; तबाही, बरबादी । वि० रल्लुक, साहिश्मद । **मु०**—होना—मरना; तबाह होना ।

हलाकत—खी० [अ०] दे० 'हलाक'; मेहनत, थकावट ।

हलाकानी—वि० हैरान, परेशान ।

हलाकानी—खी० हैरानी, परेशानी ।

हलाकी—खी० मौत; तबाही । वि० घातक ।

हलाकू—वि० बयिक, घातक । —छाई—पु० चगेन खींका पोत्र जो उसीके समान निर्दय और हत्याारा है ।

हलाना—म० क्रि० दे० 'हिलाना'; धमनाना ।

हलाम—पु० [म०] दे० 'हलाह' ।

हलामला—पु० निवटागा, तै-नामस; नलीजा, फल ।

हलामियोग—पु० [सं०] दे० 'हलवन' ।

हलामुध—पु० [सं०] बलराम ।

हलाल—वि० [अ०] 'हराम'का उलटा, विहित, जायज; शरअके अनुकूल; जिसका प्रयोज, भोग विहित हो । पु० धरई रीतिमें पशु-वध । —झोर—पु० मंजी, मेहतर । —झोरी—खी० हलालखोरका काम; हलालखोरकी स्त्री ।

मु०—करके खाना—मेहनत बरके, बदलेमें पूरा काम करके खाना । —करना—पशुका शरअकी विधिमें बध करना, बध करना; गला काटना; यज्ञा देना; बदलेमें पूरा काम कर देना, स्वकर्तव्यका पालन करना । —का—जायज, वैध (माना); हरामका उलटा । —की कमाई—ईमानदारी, मेहनतमें उमाया हुआ पैसा ।

हलाल—पु० [सं०] चित्रितध्व, चित्रकारा बोधा ।

हलाल—पु० [सं०] एक तरहका भीषण विष, कालकूट समुद्रमथनेमें प्राप्त एक अर्धकर विष; एक विषैला पौधा; एक सर्प, ब्रह्ममर्ष; एक तरहकी छिपकली, भ्रजना; बुद्ध-विशेष ।

हलि—पु० [सं०] बड़ा हल; जुगारकी लकौर, कुंड; कुपि ।

हलिक—पु० [सं०] हल चलानेवाला, हलवाहा; किसान; एक नागामुर ।

हलिङ्ग—पु० [म०] मिहका एक भेद ।

हलिनी—खी० [म०] लंगलिकी वृक्ष; हल-समूह ।

हलिभ—पु० [म०] एक बड़ी सग्या (बौ०) ।

हलिमा—खी० [म०] स्कन्दकी एक मातृका ।

हली—खी० [म०] कलिकारी वृक्ष ।

हली (लिज)—पु० [म०] दे० 'हलिक'; बलराम; एक कृषि । —(लि)मिष—पु० कदव । —मिया—खी० मदिरा ।

हलीन—पु० [सं०] शाक वृक्ष, केतकी ।

हलीम—पु० [सं०] वैतकी, [अ०] खुदाका एक नाम; मोटा जानवर; एक तरहका खाना (मु०) । वि० सहनशील, धीर ।

हलीमक—पु० [सं०] वैतकी; पांउ रोगका एक प्रकार; एक नागामुर ।

हलीशा, हलीषा—खी० [मं०] हरिम, हल डंट ।

हलुआ, हलुवारी—पु० दे० 'हलका' ।

हलुक, हलुका—वि० दे० 'हलका' ।

हलोर—खी० क्रिलोर, लहर ।

हलोरना—म० क्रि० जल अथवा अन्य तरल पदार्थको हाथमें या किसी चीजमें हिलाना, चंचल करना; खूब या अन्य पात्रमें अन्न अथवा दूसरी वस्तुओंकी रखकर उन्हीं रूप प्रकार पछोड़ना कि उनका खोखला अंश अलग हो जाय; बहुत मद्दलवनके साथ अधिक परिमाणमें द्रव्य प्राप्त करना (व्यय) ।

हलोरा—पु० दे० 'हलोरे' ।

हलू—पु० [म०] स्वरहीन व्यजन, निमुद्र व्यजन [ऐमे

हलक-हवा

स्वजनके नीचे एक विशेष विह () दिया जाता है।

हलक-पु० [अ०] दे० 'हलक'।

हलका-वि० दे० 'हलका'।

हलदी-स्त्री० दे० 'हलदी'। -हात-स्त्री० दे० 'हलदी-हात'।

हलदी-स्त्री० दे० 'हलदी'।

हलदी-वि० [स०] हल-सम्बन्धी; जोती हुई; जोतने योग्य (जमीन); विरूप, भरी, बहुरत। पु० जोतने योग्य स्वेत; जोती हुई जमीन; विरूपता, महापन।

हलदी-स्त्री० [स०] हलसमूह।

हलक-पु० [स०] रक्त कमल।

हलन-पु० [स०] सोते समय हिलना-डुलना, करवट बदलना।

हल्ला-पु० अनेक आदमियोंकी बातचीत, लड़ाई-झगड़े आदिसे हुई सम्मिलित स्वरध्वनि, शोर-गुल; ललकार; धावा, हमला। -गुल्ला-पु० शोर-गुल, कोलाहल। -मु० -कोलना-ललकारकर धावा करना। -अल्ला-शोर होना। -अल्लाना-शोर करना।

हल्लीस-पु० [स०] कियोंका भल्लाकार नृत्य जिसमें एक पुंल और कई स्त्रियाँ होती हैं; अठारह उपरूपकोंमेंसे एक जिसमें नृत्य-भानकी प्रधानता रहती है।

हल्लीसक-पु० [स०] कियोंका भल्लाकार नृत्य।

हल्लीष, **हल्लीस**-पु० [स०] दे० 'हल्लीस'।

हल्लीषक-पु० [स०] दे० 'हल्लीसक'।

हल्लीसक-पु० [स०] एक तरहका राजा (संगीत)।

हर्षण-पु० [स०] फूटके बरतनमें दही-आन खाना।

हव-पु० [स०] बह, होम; आह्वान; आशा; अग्नि या अग्निदेव; चुनौती, ललकार।

हवन-पु० [स०] अन्न पदकृति देवताके लिए अग्निमें आहुति देना, होम; अग्नि या अग्निदेव; हवनकुंड, हवा; होम करना।

हवनायु(स्)-पु० [स०] अग्नि।

हवनी-स्त्री० [स०] होमकुण्ड; हवा।

हवनीय-वि० [स०] हव्य, आहुतिके रूपमें दिये जाने योग्य। पु० होमकी वस्तु।

हवसक-वि० [अ०] मूर्ख, अहमक, भर्त्ता शक्लवाला।

हवलदार-पु० कौत्रका एक छोटा अफसर जिसके मातहत कुछ सिपाही होते हैं; बादशाही जमानेका एक कर्मचारी जो कर-संग्रह आदिका निरीक्षण करता था।

हवस-स्त्री० [अ०] हल्ला, चाह; उमंग; शौक; लालच; दिलीरी; खल्ल; झूठा प्रेम। -द्वार-वि० हल्लुक। मु०-

-उवा देना-लालसा, इच्छा छोट देना। -निकलना-

-होसना पूरा होना। -निकालना-उमंग पूरी करना।

-पकना-किसी इच्छाकी पूर्तिके लिए यत्न ही मन मंथरे बौंधना। -कुलना-उमंग शांत होना।

हवा-स्त्री० [अ०] एक तत्व जो भूमि-हलकी चारों ओरमें घेरे हुए है और कुछ गर्भा-विशेषकर आन्तरीजन और नाश्वरीजन-के मध्यमें बना है; समीर, वायु; सौम्य; गोचर; मृत्, मेतादि; लालच; साहस, अस्मान; पुनः सवाति; साक्षात् संबंधजन्य प्रभाव; जमाना; अफवाह; भ्रमना;

आर्ध्वरा (ला०) बहुत हलकी वस्तु। -झोरी-स्त्री० टहलना (वायुसेवन)। -झाह-वि० तितित्तु, झारें चाहनेवाला। -झाही-स्त्री० खैरखानी, मंगलकामना। -झीर-पु० हवाई बान (आतिशायी) धनानेवाला। -चहरी-स्त्री० हवामें चलनेवाली चहरी। -द्वार-वि० जहाँ हव हवा आती हो; खैरखाह। पु० अमीरोंके काम आनेवाली एक तरहकी सवारी जिमें कशर होते हैं। -पानी-पु० आनवाह। -बाज़-पु० वायुयानवाहक। -स्यार-वि० बहुत हलका; बारीक। मु०-उल्लङ्घना-बाजारमें साख न रहना। -उल्लाना-किसी समाचारका प्रसारित होना; अफवाह फैलना। -उल्लाना-झूठी बातका प्रचार करना, अफवाह फैलाना; गोज करना। -करना-पक्षा झलना; किसी वस्तुमें पक्षिका काम लेकर हवा उत्पन्न करना। -का कारखाना-मालखर चलनेवाला काम। -का गुज़र न होना-किसीकी रसाई न होना। -का रुज़ जानना-परिस्थिति समझना। -का रुज़ देना-जमानेका हाल समझकर काम करना। -का रुज़ बताना-परिस्थितिका आगमन पहले ही देना; परिस्थितिका हान कराना। -के बोरेपर आना-बहुत नज़ आना। -के बोरेपर मबार होना-बहुत जल्दी होना। -के बबूले फोड़ना-संन्यासी पुत्राव पकाना। -के मुँहपर जाना,-के हृदय जाना-हवाकी गतिमें दिशामें जाना; जमानेके मूलभूतिक चलना। -खाना-सुन्नी जगहमें टहलना, अमकल रहना, साकामयाग होना। (कहाँकी)-खाना-कहा जाना। -खिलाना-कर्मियों; अमकल बनाना; रहकाना, चकमा देना। (कहाँकी)-खिलाना-कहाँ भेजना। -गरम होना-हवामें गरमी आना; गरमबाजारी होना। -गौठमें वा मुहामें बौंधना-अममव कामके लिए प्रवृत्त करना। -गिरना-गैर हवाका मद ही जाना। -छोड़ना-अपानवायु छोड़ना, गोज करना। -देखना-जमानेकी हालत समझना। -देना-हवा करना; हवामें रखना; मुँहमें आग या और कोई चीज फूँकना; फसाद करना, कलुषोंको उड़ाना। -पकटना-पालका हवा घट्टन करना। -पर गिरह लगाना-चालाकी करना। -पलटना-हवाका गल्ल बदलना; परिस्थितिका परिवर्तन होना। -पीकर वा फौककर रहना-निराहार रहना (अवयव)। -पीटना-व्यर्थ ही कोई काम करना, ऐसा कोई काम करना जिसका कोई नतीजा न हो। -फिरना-दे० 'हवा पलटना'। -ढँकना-किसी वस्तुमें नेत्रोंके साथ हवाका बाहर निकलना। -बंदी करना-छोटी बातें महादूर करना, बदनाम करना; खयाली उलाव पकाना। -बँधना-हवाका रुक जाना। -बलाना-टालमटोल करना; टरका देना। -बल्लटना-दे० 'हवा पलटना'। -बाँधकर ज़ाबा-हवाकी उलटी ओर नाव खेना। -बाँधना-गम करना; धाक जमाना; डोँग मारना; बात बनाना। -बिगड़ना-वायुमलका दूषित होना; परिस्थिति खराब होना; किसी म्यानका रीति-रवाज बिगड़ जाना; साख नष्ट होना। -भर जाना-सुशीमे फूल जाना; धमट होना; मनका बदल जाना। -खगना-हवाका मिलना।

हवाका हरीरसे स्पष्ट होना; वात रोगमें अस्त होना; प्रेतादि होना; विमान फटना; प्रभावमें आना। (कहीं-कहीं)-**खारा**-किसी स्थानसे विशेष प्रेम होना। (किसीकी)-**खगना**-किसीके ससर्गका प्रभाव पड़ना; ससर्गजन्म दोष आना। -**से बावर्** करना-हवाकी तरह तेज दीकना; आप ही आप बहवना। -**से खबना**-झगडा करनेके लिए मौका ढूँढना; अकारण झगडा करना। -**ही जाना**-बहुत तेजीसे भागना; गायब हो जाना।

हवाई-वि० हवासे संबद्ध, वायु-संबंधी; हवाको चीरकर चरनेवाला; तीव्र गतिवाला; बालक; आबारा; डींग मारनेवाला; कवियन, व्यर्थ। स्त्री० एक तरहकी आतिश-बाजी, अविनयान; ऊपरी रुमरनी; बेहूदा बात, अफवाह; नकली वस्तु। -**अवा**-पु० वायुयानके उतरनेका स्थान। -**आँख**-स्त्री० वह आँख जो एक जगह न रहे। -**झिला**-अहक-पु० खयाली पलायन, मनोरंजन। -**झबर**-**बात**-स्त्री० अफवाह। -**जगड़ा**-पु० वायुयान। -**झाक**-स्त्री० वायुयानमें जानेवाली टाक। -**झर**-पु० उराने आदिके लिए म्पित वायु भरकर वा ऊपरकी ओर किया जानेवाला फँस। -**बंदूक**-स्त्री० नकली बंदूक। -**मार्ग**-**शान्ता**-पु० वायुयानके गमना-गमनका मार्ग। -**मुठभेद**-स्त्री० युद्ध, विमर्शकी भिन्नता। -**युद्ध**-पु०-**लडाई**-स्त्री० वायुयानोंसे लड़ी जानेवाली लडाई। -**इमला**-पु० वायुयानों द्वारा होनेवाला इमला। -**मु**-**उड़ना**-अफवाह फैलना; मुँह फट होना। -**उड़ाना**-अफवाह फैलाना। -**गुम** होना-अज्ञ, गायब होना, भिंटपिटाना। -**छोड़ना**-अनिशवाजी छोड़ना। -**होना**-वेहरेका रंग उड़ जाना। (वेहरे)-**छुँदप** हवाई-**उड़ना**-मुँहका विषम होना, वेहरेके रंगका फीका पड़ना।

हवाक-पु० समान्यार, स्वर; अवस्था, दशा; फल, परिणाम।

हवाकदार-पु० दे० 'हवलदार'।

हवाला-पु० [सं०] निपुर्दगी, दीपनेकी क्रिया; पता, निशान; पते या प्रमाणके लिए उल्लेख (देना)। **मु**-**देना**-पता-निशान देना, प्रमाणके लिए (पुस्तक, वृत्त आदिका) उल्लेख करना। -**छे**-**करना**-कन्नेमें देना, सौपना। -**पकना**-कन्नेमें, बन्नेमें आना।

हवालात-स्त्री० [अ०] पदमे, चौकीमें रखना, हिरासत, वह मकान जिसमें विचारपीन कैदी रखे जाते हैं।

हवालाती-वि० जो हवालातमें रखा गया हो, विचाराधीन हो। पु० विचाराधीन कैदी।

हवाली-पु० [अ०] आपराधका स्थान। -**अवाली**-पु० संगी-साथी।

हवास-पु० [अ०] 'हास'का बह, देखने, सुनने, चकने आदिको शक्तियाँ, पंचाङ्गानंदिय; मनकी शक्तियाँ (फलपना, विचार, स्मृति इ०); सवेदनका शक्ति; होस, सुष। -**बाकला**-वि० खम्बुलहवास, पकवाया हुआ, भीषक। **मु**-**उड़ना**-होस डिकाने न रहना।

हविष्मत्ता-स्त्री० [सं०] हवि तैयार करनेका स्थान।

हविःशेष-पु० [सं०] हविका बचा हुआ अंश।

हविःअवा(वत्)-पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

हवि (स्)-पु० [सं०] हवनीय द्रव्य, यज्ञ, हवनमें देवताओंके लिए अग्निमें छोड़ी जानेवाली आहुतिके द्रव्य; धी; जल; विष्णु; शिव; यज्ञ।

हवित्री-स्त्री० [सं०] हवनकुल।

हविरद्-वि० [सं०] हवि स्थानेवाला।

हविरसन-पु० [सं०] अग्नि; धीका भोजन; चित्रक वृक्ष।

हविराहुति-स्त्री० [सं०] हविका होम।

हविर्-'हवित्'का समासगत रूप। -**गंधा**-स्त्री० शमी। -**गुह**-**गोह**-पु० यज्ञमन्त्र। -**दान**-पु० हवि देनेकी क्रिया। -**धानी**-स्त्री० कामधेनु, सुरभि। -**धूम**-पु० होमजन्म धूम। -**निर्घपणपात्र**-पु० हवि देनेका पात्र। **भाक्(ञ्)**-वि० हवि ग्रहण करनेवाला। -**भुक्(ञ्)**-पु० अग्नि; क्षत्रियोके पितर; शिव आदि देवता। -**सू**-स्त्री० हवन-स्थान; पुलस्त्य-पत्नी। -**संध**-पु० गनिकारी। -**यज्ञ**-पु० एक साधारण यज्ञ विममें केवल धीकी आहुति ही जाती है। -**यात्री(जिन्)**-पु० पुरोहित। -**वर्ष**-पु० अश्वमेधा एक पुत्र और उनके द्वारा शासित एक वर्ष। -**हुति**-स्त्री० हविका होम करना।

हविष्पात्र-पु० [सं०] हवि रखनेका बरतन।

हविष्मती-स्त्री० [सं०] कामधेनु।

हविष्मत्(अव)-वि० [सं०] हवि देनेवाला। पु० एक आगिरम; एक देवधि; छटे मन्वतरके मान ऋषियोंमेंसे एक; एक पितृवर्ग।

हविष्यद्-पु० [सं०] विश्वामित्रका एक पुत्र।

हविष्य-वि० [सं०] हविके उपयुक्त या उनके लिए तैयार किया हुआ; हवि पानेके योग्य (जैसे शिव)। पु० हविका द्रव्य; धी; तिथी; धी मिला हुआ चावल। -**अव**-**भुक्(ञ्)**-वि० यज्ञसबषी पदार्थ (चावल, धी आदि) खानेवाला। -**शक्**-पु० यज्ञकी बची-खुबी वस्तुएँ।

हविष्वाह-पु० [सं०] यज्ञ आदिके अवसरपर खाने जानेवाले पवित्र पदार्थ।

हविष्वाशी(शिव)-वि० [सं०] दे० 'हविष्मुक'।

हविसा-स्त्री० दे० 'हवम'।

हवेली-स्त्री० [अ०] चहारदीवारीवाला मकान; बड़ा और पक्का मकान, महल।

हव्य-वि० [सं०] यज्ञमें आहुतिके रूपमें छोड़े जाने योग्य। पु० यज्ञमें किसी देवताके लिए दी जानेवाली आहुति; आहुति; घृत। -**कव**-पु० क्रमशः देवताओं तथा पितरोंकी दी जानेवाली आहुति। -**प**-पु० तेरहवें मन्वन्तरके सात ऋषियोंमेंसे एक। -**पाक**-पु० चक। -**भुक्(ञ्)**-पु० अग्नि। -**योनि**-पु० देवता। -**छेही(हिन्)**-पु० अग्नि। -**बाह**-**बाहन**-पु० अग्नि।

हव्याद्-वि० [सं०] हव्य खानेवाला।

हव्यास, **हव्यासन**-पु० [सं०] हुतासन, अग्नि।

हवास-पु० [अ०] नौकर-चाकर; दहलुओंकी भीड़।

हवमत-स्त्री० [सं०] नौकर-चाकर; दहलुओंकी भीड़;

लाव-कदकर; बहाई, गौरव; शान, दबदबा।

हसरा-पु० [सं०] जमीनमें सुरास करके रहनेवाला कीड़ा या जंतु।

हसरास-पु० [सं०] 'हसरा'का बहुत, छोटें छोटें कीड़े जो बरसातमें जमीनके अंदरमें निकल आते या पैदा हो जाते हैं।

हस्र-पु० [अ०] प्रलय, कयामत, कोलाहल; उपद्रव, आफत। **सु०-के वादेवर देना-पेमे** आदमीको कण देना जिसमें कभी बमूल होनेकी आशा न हो। -**हाना-आफत मचाना। -बरपा करना-ऊधम, उपद्रव मचाना। -बरपा होना-कोलाहल होना, उपद्रव मचाना। -में उठना-सुलझमानोंके बिदवामानुसार कयामतके दिन सुरोंका जिदा हांकर उठ बैठना।**

हसंतिका-स्त्री० [मं०] अंगूठी। **हसंती-स्त्री०** [मं०] अंगीठी, एक प्रकारकी मलिकाशाकिनी; एक नदी।

हस-पु० [सं०] हास; उपहास; खुशी। **हसद्-पु०** [अ०] दूसरेकी अच्छी हालत देखकर जल्जला, कीना, हाह, ईर्ष्या।

हस्यन-पु० [मं०] पैसनेकी क्रिया; मजक; म्हादक; एक अनुचर। **वि०** [अ०] भला, नेक; मुद्र; पु० अन्धोंके बड़े बड़ेका नाम। -**हुस्यन-पु०** अन्धोंके दोनो बंटे जो मुहम्मदके नाती थे।

हसनी-स्त्री० [मं०] अगारथानी, अंगीठी। -**अग्नि-पु०** अग्नि। **हसनीय-वि०** [सं०] हंसने योग्य, उपहास योग्य। **हसब-अ०** दे० 'हस्य'। **पु०** [अ०] कुलक्रम, वंश, नमूल।

नसब-पु० माना-पिनाका कुलक्रम, स्वाडानी मिल-मिला।

हसर-पु० दे० 'हस'। **हसरत-स्त्री०** [अ०] खेद, दुःख; वस्तुकी अप्रामिया दुःख; चाह; अरमान, लालसा। -**अरा-वि०** लालसाओमें अरा हुआ। **सु०-करना-इच्छा करना, चाहना। -टपकना-हसरत जाहिर होना। -निकलना-लालसा पूरी होना।**

-निकालना-अरमान निकालना। -बरसना-विषादकी व्यंजना होना; नैराश्य प्रकट होना। -बाझी रहना-लालसा रह जाना, अरमान पूरा न होना।

हमिका-स्त्री० [सं०] हँसी, हास; मजाका उपहास। **हसित-वि०** [सं०] हँसा या हँसता हुआ; जो हँसा है; विकसित; जो हँसा गया है। **पु०** हास्य; परिहास; काम देवका धनुष।

हसिता(ह)-वि० [मं०] हंसनेवाला। **हसिर-पु०** [सं०] चूहेका एक भेद।

हसीन-वि० [अ०] सुंदर, दुस्नवाला, प्यारा, सुभावना। **हसीली-वि०** सीधा।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

हस्त-पु० [सं०] शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ-कीसी अंगुली-की एक मांस; हाथीकी पूँछ; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौकसी; एक वृक्ष; शुक्ल, समूह (फैसला); छंदका चरण; बाहुदेवका एक पुत्र। **वि०** हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न।

-कमल-पु० हाथमें धारण किया हुआ कमल (सौभाग्य-सिद्धि)। **कमल-वि०** हाथमें धारण किया जानेवाला काम, दस्तकारी। -**कोइल-स्त्री०**

वर-कन्याके हाथमें भंगलसूत्र बाँधनेकी क्रिया। -**कोइल-पु०** हाथका काम करनेकी कुशलता। -**क्रिया-स्त्री०** दस्तकारी; हस्तमैयुज। -**क्षेप-पु०** दूसरी बात या काममें दखल देना, दस्तवाजी। -**ग-वि०** जो किसीके हाथ या अधिकारमें जानेवाला हो। -**गल-वि०** हाथमें आया हुआ, अधिकृत, प्राप्त। -**गामी(मिन्)-वि०** दे० 'हस्त'।

-गिरि-पु० एक पर्वत। -**ग्रह-पु०** हाथका ग्रहण, पाणिग्रहण, विवाह; किसी चीजमें हाथ लगाना।

-ग्राह-वि० हाथ पकड़नेवाला (पक्षी)। -**ग्राहक-वि०** शिष्टिकावनेवाला, आग्रह-पूर्वक याचना करनेवाला।

-वापस-पु० हस्तकौशल, हाथकी मफाई। -**वालन-पु०** हाथ हिलाना, हाथमें संकेत करना। -**ज्योडि-पु०** करज्योडि नामक वृक्ष। -**लल-पु०** हथेली। -**लाल-पु०** करताली। **ल-आप-पु०** अन्धारिमें हाथकी रक्षा के लिए धारण किया जानेवाला दस्तावा। -**दक्षिण-वि०** दाहिनी ओर स्थित; सही, ठीक। -**दीप-पु०** हाथकी लालटेन। -**दीप-पु०** नाप या लौमें ले करकेका दीप; हाथमें होनेवाली भूल। -**धारण-पु०** हाथ पकड़कर सारा देना; आग्रहपूर्वक निवेदन।

-पाणिग्रहण। -पूर्ण-पु० तावका एक प्रकार। -**पट-पु०** हाथ पेट। -**पुच्छ-पु०** कूड़ामें सारेका भाग। -**पृष्ठ-पु०** हथेलीका पृष्ठभाग। -**प्रद-वि०** सदा देनेवाला। -**प्राप्त-वि०** दृग्गम्य। -**प्राप्त-वि०** दे० 'पहुँचने योग्य'। -**विह-पु०** शरीरमें शक्तिशाली पद।

-अंश(मिन्),-अष्ट-वि० हाथसे फिमल, दुब, लो वच निकला हो। -**अग्नि-पु०** कलाईपर प्रकाशित होनेवाला रस। -**अधुन-पु०** प्रादुर्भाव होनेवाला।

-लन कर बीचपान करना। -योग-पु० हाथोंका प्रयोग या अभ्यास। -**रेखा-स्त्री०** हथेलीपर की रेखाएँ, जिनका आधारपर मुभाशुभ फल निकालते हैं। -**रोधी(मिन्)-पु०** शिव। -**लक्षण-पु०** हस्तरेखाओंका मुभाशुभ फल।

-लाघव-पु० हाथकी फुर्ती, हाथकी कुशलता; हाथकी मफाई, बाजीगरी। -**लिखित-वि०** हाथका लिखा हुआ (प्रवाद)। -**लिपि-स्त्री०** हाथकी लिखावट, हस्तलेख। -**लेख-पु०** हाथकी लिखावट, लिखाई। -**लेखन-पु०** हाथका लेख। -**वर्ती(मिन्)-वि०** जो हाथमें हो, शरीर। -**वातरक-पु०** हथेलीका एक रोग (हस्त कुमियाँ निकलती हैं)। -**बाप-पु०** हाथमें बाणोंकी बपा करना। -**वास-वि०** बायीं ओर स्थित; गलन।

-वासर-पु० हाथ पकड़ लेना, आधातका निवारण करना। -**विन्यास-पु०** हाथोंकी स्थिति। -**विषम-कारी(मिन्)-वि०** हाथकी कुशलतासे बाजी जीतनेवाला।

-वेद्य-पु० हाथका अंग। -**संज्ञा-स्त्री०** हाथका संज्ञा संवाहक-पु० हाथसे रंगवना, मालिश करना या दबाना। -**सिद्धि-स्त्री०** हाथमें किया जानेवाला काम हाथका अंग; परिमलिक, धृति। -**सूच-सूचक-पु०** विवाहके अवसरपर बाँधा जानेवाला मंगलवस्तु; विवाहके

पक्षे धारण किया जानेवाला हाथका गहना, वलय ।

-स्वस्तिक-पुं० हाथोंको स्वस्तिपक्षी समानमें रखना ।

-हाथै-वि० हाथमें ग्रहण किया जाने योग्य (पिंडादि) ।

हस्तक-पुं० [सं०] हाथ; एक हाथकी माप; हाथका सहारा; हाथोंकी स्थिति; ताल (संगीत); ताली; कर्नाल नामका बाजा; निम्न श्रेणीका मेखक ।

हस्तवान्(वत)-वि० [सं०] दृढ, दृढकुशल ।

हस्ताञ्जलि-स्त्री० [सं०] हाथोंका वह भस्म जिसमें वे गहराई बनाते हुए भस्म हो, करमपुष्ट ।

हस्तांतर-पुं० [सं०] दूसरा हाथ ।

हस्तांतरण-पुं० [सं०] दूसरेके हाथमें देना ।

हस्तांतरित-वि० [सं०] दूसरेके हाथमें दिया हुआ ।

हस्ता-स्त्री० [सं०] हस्त नक्षत्र ।

हस्ताक्षर-पुं० [सं०] दस्तखत, मही ।

हस्ताग्र-पुं० [सं०] हाथका अगला भाग, अग्रज्वा ।

हस्तादान-पुं० [सं०] हाथमें ग्रहण करना । वि० हाथमें ग्रहण करनेवाला ।

हस्ताभरण-पुं० [सं०] हाथका गहना; एक तरहका माप ।

हस्तामलक-पुं० [सं०] हाथमेंका अर्चना (जो बिलकल स्पष्ट और बोधगम्य होनेका मूलक है); प्रकारोंवालेचित्र एक देवताका प्रथ ।

हस्तारूढ-वि० [सं०] जो हाथपर हो, निकुल स्पष्ट ।

हस्तालंब, हस्तावलंब-पुं० [सं०] आश्रय, सहारा ।

हस्तावाप-पुं० [सं०] हस्तत्राण ।

हस्ताहन्ति-स्त्री० [सं०] हाथापाई ।

हस्ताहस्तिका-स्त्री० [सं०] गृह्यसंग्रही, दस्त-बदस्त गृहाई ।

हस्मिक-पुं० [सं०] हस्तिशेका अष्टः स्थितानेका हाथी; निम्न श्रेणीका मेखक ।

हस्मिनपुर, हस्मिनीपुर-पुं० [सं०] दे० 'हस्तिनापुर' ।

हस्तिनापुर-पुं० [सं०] पञ्चमशो गणेश हस्ती द्वारा निर्मित एक (प्राचीन) नगर जो वर्तमान दिल्लीमें लगभग ७० मील पूर्वोत्तर था ।

हस्तिनी-स्त्री० [सं०] गवयस्त्री, हस्तिनी; हट्टविलासिनी नामक गणद्रव्य; स्त्रियोंके चार मेढोर्ममें एक; हस्मिनापुर ।

हस्तिपक-पुं० [सं०] दे० 'घीलवान' ।

हस्ती-स्त्री० [सं०] जीविन, विद्यमान होनेका भाव, अस्तित्व । मु०-खोना-नष्ट होना, (किमीके) नाभो-निष्ठानका न रहना । -मिटना-नाश होना, संचार होना । -मिटाना-नष्ट, बरबाद करना । -होना-जीविन, विद्यमान रहना; महत्त्वका होना ।

हस्ती(स्तिन)-वि० [सं०] कर-युक्त; सुंदरवाला; कार्य-कुशल । पुं० हाथी; अश्वमोदा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; मृगेश (एक चंद्रवंशी नरेश)का एक पुत्र; कुसका एक पुत्र ।

-स्ति)कंड-पुं० एक तरहका बड़ा कर, हाथीकंड ।

-कक्ष-पुं० एक विशेषता कीका । -कक्ष-पुं० सिद्धांत ।

-कच्छ-पुं० एक नामासुर । -कर्ज, -कर्जक-पुं० महाकरज । -कर्णक-पुं० एक तरहकी दाल ।

-कर्ण-पुं० पर्यट वृक्ष; पलाश; कर्चू; शिवका एक गुण; एक तरहके गणेशदेवा; एक राक्षस; एक नामासुर ।

-कक्ष-पुं० धलाशुका एक मेढ । -कर्णक-पुं० एक तरहका किशुक ।

-कर्णिक-पुं० योगका एक आसन ।

-कोक्षि-स्त्री० एक तरहका बैर । -कोशासकी-स्त्री० तोरई । -गिरि-पुं० एक पर्वत; कांची नगर । -घात-पुं० हाथीका वध । -घोषा-स्त्री० वृहत् घोषा, बड़ी तोरई । -घोषापात्री-स्त्री० दे० 'हस्तिगोषा' । -घ्न-वि० हाथी मारनेमें मग्न । पुं० मनुष्य । -चार-पुं० हाथियोंके डरानेका एक व्यवहार । -चारिणी-स्त्री० महाकरज । -चारी(रिन्)-पुं० घीलवान । -आगरिक-पुं० हाथीकी वैष्णव-भाल करनेवाला व्यक्ति ।

-जिह्वा-स्त्री० एक विशेष शिरा । -जीवी(विन्)-पुं० घीलवान । -ज्वन-पुं० हाथी-जंत, शीतारमें सर्प वृद्ध पौष्टी; मृगी । -फल-स्त्री० पर्वस । -दंतक-पुं०, -दंती-का० मृगी । -द्वय-वि० हाथी जितना देना या का । -नख-पुं० हाथीका नाखून; पुरदारपर बना हुआ मिट्टीका दंड । -नासा-स्त्री० हाथीकी सूँट ।

-निषदन-पुं० एक आसन (योग) । -प-पुं० घीलवान; हाथीकी देव भाल करनेवाला; हस्त्यारोह । -पक्ष-पुं० दे० 'हस्तिवृद्ध' । -पट्ट-पुं० हाथीका रास्ता; एक नामासुर । -पणिका, -पणिनी-स्त्री० रात्रिकोषाकी, तोरई । -पर्णी-स्त्री० कर्कटी; मीरटा लता । -पादिका-स्त्री० एक जोषधि । -पाल, -पालक-पुं० घीलवान ।

-पिंड-पुं० एक नामासुर । -पिप्पली-स्त्री० गज-पिप्पली । -प्रमेह-पुं० प्रमेहका एक प्रकार । -बंध-पुं० हाथी फँसानेका बान । -भद्र-पुं० एक नामासुर ।

-भकर-पुं० जलहस्ती । -भद्र-पुं० हाथीके गडदाल में बहनेवाला रस, दान । -मह-पुं० गेरावत; गणेश, पानालका; आठवाँ नाम; शबक; राखका डेर, धूलकी वर्षा; पाला, हिम । -माया-स्त्री० एक जादू या मंत्र ।

-मुख-पुं० गणेश; एक ग्राह्य । -मेह-पुं० दे० 'हस्तिप्रमेह' । -मूष-पुं० हाथियोंका मुँह । -राज-पुं० बहुत बड़ा हाथी; हाथियोंके मुँहका मुखिया ।

-रोधक, -लोधक-पुं० लोभ वृक्ष । -रोहणक-पुं० महाकरज । -बन्ध-पुं० गणेश । -बाह-पुं० घीलवान; अंकुश । -विषाणी-स्त्री० कदली । -व्यूह-पुं० हाथियोंके बना एक तरहका गूँह जिसमें हाथी मध्य और पक्षमें रहते हैं । -झाका-स्त्री० गजगृह, कील-खाना । -झुंड-पुं० हाथीकी मूठ । -झुंडा, -झुंडी-स्त्री० एक पुत्र । -झ्यामाक-पुं० काला मातौ । -झोमा-स्त्री० एक नटी । -हस्त-पुं० हाथीकी सूँट ।

हस्ते-अ० हन्थे, द्वारा, मार्ग; [सं०] हाथमें । -करण-पुं० पाणिग्रहण, विवाह ।

हस्त्य-वि० [सं०] हाथ-संबंधी; हाथमें किया हुआ, हाथमें दिया हुआ ।

हस्त्यपवक्ष-पुं० [सं०] हस्तिशेका निरीक्षक ।

हस्त्यशन-पुं० [सं०] लोहानका घोषा ।

हस्त्याजीव-पुं० [सं०] हस्तिव्यवसायी; घीलवान ।

हस्त्यापुर्वेद-पुं० [सं०] हस्तिचिकित्सा-संबंधी शास्त्र ।

हस्त्यारोह-पुं० [सं०] हाथीपर बैठनेवाला व्यक्ति; महा-वन; घीलवान ।

हस्त्यारीही (विश्व) - पु० [सं०] हाथीका मवार । वि० हाथीपर सवारी करनेवाला ।

हस्त्यालुक - पु० [सं०] एक कंद ।

हस्त्य - अ० [अ०] अनुसार, सुताधिक । - (स्वै) जाचिता

-अ० आशिते, कानूनके अनुसार, यथानियम । - **त्रैल** -

अ० नीचे लिखे हुए व्योरेके अनुसार । - **मंसा** - अ०

(किसी दफाके) मंसा, अभिप्रायके अनुसार (कानून) ।

- **मामूल** - अ० गति, नियन्त्रियमके अनुसार, दस्तूरके

सुताधिक । - **हाल** - अ० स्थितिसे अनुरूप, यथायोग्य ।

- **हैसियत** - अ० अपनी हैसियत, अपने वित्तके अनुसार ।

हस्त्य - वि० [सं०] हँसने, मुसकरानेवाला; मूर्ख, अज्ञान ।

पु० [अ०] घेरना, शहाता करना; अवलंबन । **मु०** -

होना - अवलंबित होना (हस्तीपर बया हस्त है) ।

हहर - स्त्री० बबहादुर; डर, भय; बकपकाहट; प्रमत्तता-

मिश्रित हवबही; क्लृप्तप्री, सिहरन (शीत, भय आदिमें) ।

हहरना - अ० कि० उरना; चक्कि होना, किन्ती अलौकिक,

बस्तुकी देखकर चक्कपाना, दग होना; डरने काँपना;

परेशान होना - 'बरमि-बरमि हहरे सब बादर' - सूर;

शीतने काँपना; अतीव प्रमत्तता और उत्सुकतापूर्वक, किन्ती-

ने मिलना; किन्तीकी संपन्नता देखकर हैष्य करना,

सिंहाना । **मु०** - **हहरकर मिलना** - अत्यंत प्रसन्नता

तथा उत्सुकतापूर्वक किन्तीसे मिलना ।

हहरना - अ० कि० दे० 'हहरना' म० कि० चीन करना,

हराना, दहलाना ।

हहल - स्त्री० दे० 'हहर' । पु० [अ०] हलाहल विष ।

हहलना - अ० कि० दे० 'हहरना' ।

हहलाना - अ० कि०, स० कि० दे० 'हहरना' ।

हहब - पु० एक नरक (बी०) ।

हहा - स्त्री० हँसनेका शब्द; निरीरी । पु० [सं०] एव, गंधर्व ।

- **गति** - स्त्री० दृष्टा । **मु०** - **खाना** - बहुत गि-

गिबाना ।

हॉ - अ० स्वीकृति, विश्वास, आग्रहमत्तव्य, स्मृति आदिका

सूचक शब्द । स्त्री० स्वीकृति, स्वीकृति देने, 'हॉ' कहनेका

काये । - **हॉ** - अ० बर्जान करनेके लिए प्रयुक्त शब्द । **मु०** -

- **जी हॉजी करना** - चापलूसी करना, सुशामद करना ।

- **मैं हॉ मिलाता** - चापलूसी करना; बिना समझे

किन्तीकी स्वीकृति की ठीक मान लेना, सुशामद, भय

आदिके कारण बिना विचार किये ही दूसरे द्वारा स्वीकृत

बानकी ठीक करना । - **हॉ करना** - स्वीकृति देना, किन्ती

बस्तुके सही होनेकी बात मानना ।

हॉक - स्त्री० जोरमें बोलकर किन्तीकी पुकारनेकी क्रिया;

हुंकार, गर्जना, ललकार; युद्ध, प्रतिपोगिता आदिमें किन्ती-

की आगे बढ़नेके लिए दी गयी ललकार, बढावा; उद्धार,

सहायता, रक्षा आदिके लिए किन्ती नशक व्यक्ति या

देशका आह्वान । **मु०** - **देना**, - **मानना**, - **लगाना** -

किसी आवाजमें पुकारना, संबोधित करना ।

हॉकना - स० कि० झका, बेलगाकी आदि बाहनोंकी

चलाना; गाड़ीमें जुते घोड़ा, बैल आदि चौपायोंकी बाहुक

मारकर या जुंहेमें बोलकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर

करना; चौपायोंमें प्रायः किन्ती बस्तुकी रखाके लिए ऊँह

किसी स्थानसे हटाना; पंखा झलना; लंबी-चौड़ी बातें

करना, बढा-चढाकर बातें कहना; अत्यधिक दाम बताना;

उच्च स्तरसे बोलकर पुकारना, आह्वान करना; हॉक

लगाना, ललकारना । - **मु०** - **हॉक पुकारकर कहना** -

मर्बकी जनाकर कोई बात कहना ।

हॉका - पु० दे० 'हॉकवा'; * दे० 'हॉक' ।

हॉगर - पु० [सं०] एक बड़ी मछली ।

हॉगा - पु० ताकन, जोर, शारीरिक बल; बलप्रयोग । **मु०** -

- **करना** - विपरीत विरुद्ध बलप्रयोग करना । - **छटना** -

शारीरिक बल न रहना; शारीरिक बलमें अंतर पड़ना ।

हॉमी - स्त्री० मंजूरी, हामी, स्वीकृति । **मु०** - **भरना** -

मंजूर करना, स्वीकृति देना, हामी भरना ।

हॉवना - अ० कि० आवागमन करना । वि० आवागमन ।

हॉवी - स्त्री० दे० 'हॉवी' । **मु०** - **उबलना** - एकती हुई

चीजका उबलना; भारे मृत्तीके फुलना । - **चढ़ाना** - दे०

'हड़िया चढ़ाना' । - **पकना** - हॉवीमें रखी बस्तुओंका

आधिक कारण पकना; किन्ती वृद्धयुक्त रचना जाना; गण

लब्धना । (किन्तीके नामपर) - **फोड़ना** - किन्ती अग्रिय

व्यक्तिके पक्षे जानिए प्रमत्तता प्रकट करना ।

हॉता - वि० स्वयं, प्रोवा हुआ । हटाना हुआ; दूर (वि०

हुआ) ।

हॉत्र - पु० [सं०] मरण; एक राक्षस; युद्ध ।

हॉत्र - पु० [सं०] मरण ।

हॉपना, **हॉफना** - अ० कि० किन्ती प्रकारके शारीरिक श्रम

या रोगके कारण मोसकी गतिका तीव्र होना ।

हॉका - पु० टाँकनेकी क्रिया । **मु०** - **छटना** - कष्ट, शारी-

रिक श्रम करनेपर मूर्च्छा होफने लगना ।

हॉकी - स्त्री० दे० 'हॉकी' ।

हॉवीरी - स्त्री० [सं०] एक गमिनी ।

हॉम - वि० [सं०] हय-मर्बधी ।

हॉम - स्त्री० हंसी ।

हॉमना - अ० कि० दे० 'हॉमना' ।

हॉमल, **हॉमल** - पु० एक प्रकारका पीडा निमका रग

मेहँदीका-सा और चारों पैर कुछ काले रंगके होते हैं ।

हॉमी - स्त्री० हॉमनेकी क्रिया, हॉमी मजाक, हॉमी, परि-

हास; बढनामी, निंदा, उपहास ।

हॉमु - स्त्री० हंसी; हँसनी ।

हा - अ० [सं०] आनंद, शोक; श्रेष्ठ, कीर्ति, घणा, आश्चर्य,

कोष आदिका सूचक शब्द । - **हॉह** - अ० बड़े शोककी

अवस्थामें निकलनेवाला एक शब्द । - **हा** - पु०, अ० दे०

क्रममें ।

हा (हू) - वि० [सं०] गार उड़नेवाला, नष्ट करनेवाला

(समासांतमें) ।

हाहू - अ० दे० 'हाय' ।

हाहूजीवन - पु० [अ०] आह्वान ।

हाहूजीविषया - पु० [अ०] कुत्तोंकी होनेवाला एक रोग

जो इस रोगमें ग्रस्त कुत्तोंके काटनेपर मनुष्यों आदिकी भी

हो जाता है (इसमें जलमें भय होता है), अकार्तक ।

हाहूजन - पु० [अ०] शब्दोंका परस्पर संबंध दिखानेके

लिए उनके बीचमें रखा जानेवाला एक चिह्न (.) ।

हाइक-वि० दे० 'हायक' ।

हाई-ली० उंग, पड़ति, ढब; अवस्था परिस्थिति । वि० [अ०] ऊँचा; बड़ा । -**कोर्ट**-पु० उच्च न्यायालय, प्रवेश या राज्यकी सबसे बड़ी अदालत । -**स्कूल**-पु० वह अंगरेजी स्कूल जिसमें मैट्रिकतककी पढ़ाई होती है ।

हाउस-पु० [अ०] घर, निवास-स्थान; सभा; राजवंश ।

हाऊ-पु० छोटे बच्चोंकी हरबानेके लिए एक मनमर्त बरबाने जीवका नाम, अकार्ड, हीवा ।

हॉकर-पु० [अ०] फेरी बरके छोटी-मोटी बस्तुएँ बेचने-वाला व्यक्ति; घुम-घुमकर अन्नधार बेचनेवाला व्यक्ति ।

हाकल-पु० [मं०] एक मासिक छंद ।

हाकलिका-ली० [मं०] एक वर्णवृत्त ।

हाकली-ली० [मं०] एक वर्णवृत्त ।

हाकिमी-ली० [सं०] नायिकोंकी एक देवी ।

हाकिम-पु० [अ०] हुनम करनेवाला; हुकूमन करनेवाला, शासक; राजा; प्रधान अधिकारी; मासिक । -**(से)वाला** पु० प्रधान अधिकारी, बड़ा अफसर; (का०) ईश्वर ।

-**वज्रत**-पु० वर्तमान शासक; तत्कालीन राजा । -**के कुत्ते**-बटे अफसरके नौकर-चाकर जो बिना भेंट-पूजाके उनके पास न जाने दें ।

हाकिमाना-वि० हाकिमके वैसा अधिकारी योग्य । ; -**घम लहने** ()

हाकिमी-ली० हुकूमत, अफसरी । वि० शासन-मन्थनी ।

हॉकी-ली० [अ०] एक अंग्रेजी गेल् जिम्मे दें; उठने, बगारे गेल् नाम बढाते हुए शोक करते हैं ।

हाजत-ली० [अ०] आवश्यकता; अभाव; इच्छा, चाह; शोक आदिका वेग; हवालात । -**इबाह**-वि० मुहताज; प्रार्थना । -**ईश्वर**-वि० जिसे अभाव आवश्यकता ही; मुहताज; इच्छुक । -**इबा**-वि० हाजत पूरी करनेवाला ।

-**इराई-ली०** जरूरत पूरी करना, किसीका काम निकालना । **हु०** -**रक्षा करना**-हाजत पूरी करना; पासने जाना ।

हाजती-ली० वह बरतन जिसमें बीमार चारपाईपर पड़े-पड़े पेशाब कर ले; रातको अमीरीके फलके पास पेशाब करनेके लिए रखा जानेवाला बरतन । पु० फकीर; प्रार्थनी । वि० हाजतवाला; हवालाती ।

हाजमा-पु० [अ०] हजम करने, पचानेकी ताकत; पाचन । **हु०** -**खराब होना**; -**बिगड़ना**-पाचन क्रियाका ठीक तरहसे न होना, पाचन-शक्तिका ठीक तरहसे काम न करना ।

हाजिक-वि० [अ०] पढ़ित; कुशल, निपुण ।

हाजिम-वि० [अ०] हजम करने, पचानेवाला ।

हाजिर-वि० [अ०] जो सामने हो, उपस्थित, मौजूद; प्रस्तुत; तैयार । -**जवाब-वि०** जो बातका तुरत जवाब दे, जिसे बातका बहिया, बहावोय्व जवाब तुरत सुझ जाय । -**जवाबी-ली०** हाजिर जवाब होना, बातका तुरत बहिया जवाब नोच लेनेकी शक्ति । -**जामिन-पु०** वह जो किसी आदमीको अशक्तमे हाजिर कर देनेकी जिम्मेदारी ले । -**जामिनी-ली०** हाजिर जामिन होना; हाजिर कर देनेकी जिम्मेदारी । -**जाजिर-वि०**

मौजूद और देखनेवाला । -**बास-वि०** जो किसीके पास, किसीकी सेवामें बराबर रहे, हाजिरी बजानेवाला । -**बासी-ली०** हाजिरबाश होना, सनत उपस्थित; दरबारदारी । **हु०** -**में हुआत नहीं**-जो कुछ मौजूद है, बिना हीका-हुसुतके हाजिर है ।

हाजिराई-पु० ओझा; जादूगर ।

हाजिरात-ली० [फा०] अनेक प्रेतात्माओंका एक साथ आवाहन, जिन, भूत-प्रेत इत्यादिकी हाजिरीका जलसा (करना, होना) ।

हाजिरानी-पु० हाजिरात करनेवाला ।

हाजिरी-ली० उपस्थिति, मौजूदगी; हाजिरनाशी; सबरेका का खाना; अंग्रेजोंका नामना; वह खाना जो मुर्देके दफन किये जानेके बाद मृत जनके कुड़ियोंके लिए भेजा जाय (मुसल०) । **हु०** -**देना**-हाजिर होना, उपस्थितकी वचना देना । -**बजाना**-किसी बडे आदमीके पास बराबर रहना, दरबारदारी करना । -**खेना**-नाम पुकारकर छात्रों आदिकी उपस्थिति माहूम करना, छिन्ना ।

हाजिरीन-पु० [अ०] 'हाजिर'का बहु०, (समा आदिमें) उपस्थित जन ओहमडली । -**(से) जलसा**-पु० सामने उपस्थित जनसमाज ।

हाजी-पु० [अ०] हज करनेवाला; वह जो हज कर चुका हो ।

हाट-ली० बाजार; बाजार लगनेका दिन; दुकान । **हु०** -**करना**-दुकान करना, किसी बाजारमें दुकान खोलकर बेचना, खरीदना; बाजारमें मामान खरीदना । -**खोलना**-दुकान करना; दुकान लगाना । -**खदना**-बाजारमें बिकनेके लिए जाना । -**बाजार करना**-सोदा खरीदनेके लिए बाजार जाना । -**लगाना**-बाजार, दुकानमें बेचनेके लिए चीजोंका सज्जाया जाना ।

हाटक-वि० [सं०] स्वर्णनिर्मित, स्वर्णमय । पु० स्वर्ण, सोना; बत्तार; दुकानका किराया; एक देश । -**गिरि-पु०** तुमेर । -**पुर-पु०** (स्वर्णनिर्मित) लका । -**खोचन-पु०** हिरण्याक्ष ।

हाटकी-ली० [सं०] अथोछोकी एक नदी ।

हाटकीय-वि० [सं०] स्वर्णनिर्मित ।

हाटकेश, हाटकेवर-पु० [सं०] गोदावरी नदीके तटपर पूजित होनेवाला एक शिवलिंग ।

हाइ-पु० हड्डि; कुलीनता ।

हाका-पु० क्षयिज जातिकी एक शाखा; हड्डा ।

हाडिका-ली० [सं०] दे० 'हड्डिका' ।

हाफी-ली० ऊखल; † बरै, निर । पु० एक तरहका भगल; काग ।

हात-वि० [सं०] छोडा हुआ, परित्यक्त ।

हातक-वि० [सं०] छोड़ने, त्याग करने योग्य; पीछे छोड़े जाने योग्य ।

हाता-पु० दे० 'पहाता'; रोक । * वि० परित्यक्त; दूर; नाशक ।

हासिम-पु० [मं०] अरबके तै कभीलका एक सरदार जो दानशीलता और धरोपकार-परायणताका आदर्श सा माना जाना है । वि० अनि दानशील; अनि धरोपकारी; कुशल,

उत्तार। - ताई-पुं हाथिमा; हाथिमाईका किस्ता।
मुं - की कजपर कास मारना-दानशीलता या परोप-
कारमें हाथिमे बट जाना।

हाथु-पुं [सं] मृत्यु; सङ्कट।

हाथ-पुं [सं] येनन, पारिश्रमिक।

हाथ-पुं दे० 'हस्त'; वार करनेका ढग; नाश, कौड़ी
आदि खेलनेवालोंकी बारी, दाव; दस्ता, मूठ; कर्मचारी।

-कंडा-पुं दे० 'हथकंडा'। -तोड़-पुं कुचलीका
एक दाव। -पान-पुं पानके आकारका एक आभूषण
जो हाथके पड़ेके ऊपरी भागपर पहना जाता है। -फूल-
पुं हथेलीके ऊपरी भागपर पहननेका फूलके आकारका
एक गहना। -बाँह-क्री० एक तरहको कसरत। मुं

-आँखों से लगाना-बहुत आदर-सम्मान करना (कारी-
गरीकी प्रशंसा आदिके अवसरपर)। -आगे करना-किमी
बस्तुको लेने या देनेके लिए हाथ बढ़ाना। -आजमाना-

किमी कामके करनेमें अपनी कारीगरी, शक्ति आदिकी
आजमाइश करना। -आना-वशमें होना, अधिकारम
होना; कायदा होना। -उठा-उठाकर कोसना-

आमनामकी ओर हाथ करने हुए बहुत बड़बुआए देना।
-उठा-उठाकर दुआ देना-प्रसन्नतापूर्वक आकांक्षकी
ओर हाथ उठाकर आशीर्वाद देना। -उठाकर

देना-स्वेच्छामें किसीको कुछ देना; दान देना।
(किसीको)-उठाना-किमीका अभिवादन करना-

प्रणाम करना, नमस्कार करना। (किसीपर)-
उठाना-किमीको नाशित करना; मारना। -उठा

बैठना-किसीको मार बैठना; असहयोग कर देना, किमी
काममें सहायता देना रद्द करना। -उठा लेना-दे०
'हाथ उठा बैठना'। -उतरना-हाथ उखरना, हाथकी

हड्डीका स्थानांतरण होना। -ऊँचा करना-खंचीला होना;
किसीके लिए दुआ करना, किमीकी आशीर्वाद देना।

-ऊँचा रहना-खंचीला होना, देनेके काबिल रहना।
-ऊँचा होना-दानी होना; दानवृष्टिकी ओर उन्मुख
होना; खंचीला होना। -ओछा पचना-हाथकी पूरी

ताकतमें वार न होना। -ओठ लेना-दोनों हाथ बड़ुं
कौलाकर किसी चीजको लेना। -कट जाना-विवश हो

जाना, बेकाबू हो जाना; किमीको किमी कामके लिए
वचन देकर बंध जाना। -कटा देना-कटाना-कटा

लेना-दे० 'हाथ कट जाना'। -करना-ताश आदि
खेलमें बाजी जीतना। -कलस करना-पूरा हाथ काटना।

-कलस होना-पूरा हाथ कटना। -का छुटा-हथे-
पैमेके हाथलेमें, जेन देनमें जिसपर विश्वास न किया जाय,
वेईमान। -काट देना-विवश कर देना, बेकाबू कर

देना; किसी द्वारा किमीके लिए पत्र, वचन आदि दिलाकर
उमे विवश, बेकाबू कर देना। -का दिया-दान दिया
हुआ; दान ('हाथदिया' रूप से चलता है)। -कानीपर

रखना-(हाथमें कानोंकी छुकर) पनाह माँगना; किमी
कामको न करना, किसी कामके करनेमें इनकार कर देना,
किमी कामके करनेमें अपनेको बिल्कुल अव्योम्य दिख-
लाना। -का मौल-धनसंपन्न व्यक्तिके लिए अधिक
दवका भी बहुत थोका होना। -का सच्चा-अपने-पै-

के माथलेमें, जेन देनमें जिसपर विश्वास किया जाय,
ईमानदार। -की सफाई-शिवप, बाजीगरी आदिमें

हाथकी कारीगरी; लकड़ी-मिकाईमें वार करनेका अच्छा
अभ्यास। -के नीचे आना-किसीके पैरोंमें दबना,
पैसना, किमीके काबूमें होना। -को हाथ बज़र न

आना-पोर अंधकार होना। -खाना-वारकी चपेटमें
आना; वार खाना। -झाखी जाना-जुए आदिमें हाथ,
बाजीका न आना; वार चुकना, हमला नकामयाब होना;

सुक्ति, चालाकी, उपायका न लगना, न सफल होना।
-झाखी न होना-काममें व्यस्त रहना, कामसे कुर्बान
न मिलना। -झाखी होना-बिना पैसका हाना।

-झींषना-बिनी कामसे हट जाना, उसमें सक्तोय न
करना; इच्छा देना रद्द करना, आर्थिक सहायता रोकना।
-खुजलाना-इच्छाप्रामिकी पूर्वमचन मिलना; अथवा

त्रमाने, भयपक लगाने, पीटनेकी प्रवृत्ति होना। -खुलना
-दानोमुख होना-खंचीला होना; हाथका चलना; काम

देने लगना; हड़बुट होना। -खोखला-ठान करना
खूब खर्च करना; आशारी देना; तर्फी न रहने देना। -

गरदनमें डालना या देना-दे० 'गरदनमें हाथ देना'।
-गलना-हाथ छिड़ना, अत्यंत पीनमें हाथका न

पड जाना। -गलेमें डालना-समवयस्कके प्रति
प्रेम प्रकट करना; छोटेको प्यार करना। -जिम

जाना-बहुत परिश्रममें कोई (हाथका) काम बहुत
देरतक करना। -जड़ना-दे० 'हाथ आना'। -जम-

काना-ओरतीकी तरह हाथ उठा, हिलाकर शाने करना
ओरतीका हाथकी संवलिता देते कर हाथ छिमाना

नलवारकी स्थानमें स्थालकर हिलाना। -चलना
किमीके द्वारा कामका अचरी तरह किया जाना; निरंक

भारनेकी ओर अधिक पड़न होना। -चलाना किमी
कामकी शक्ती नालि करना; मानना। -चमना-दे०

हाथकी कारीगरीमें प्रभावित होकर उममें हाथोंका चमना
(चमना) देना होना नहीं, निरंक कहने का। -छुटा होना

-बेधक, मारनेकी आदत होना। -छुटना-मारने
लिए प्रवृत्त होना, मारनेके लिए हाथ उठाना; वैवाहिक

मवधका विच्छेद होना। -छोड़ना-मारना; वैवाहिक
मवध भंग करना। -जड़ना-नमाया लगाना, अथवा

मारना, प्रहार करना, मारना। -जमना-नमाया
अथवा पड़ना, प्रहार होना; किमी कामके करनेमें हाथका

अव्ययन होना, किसी व्यक्तिका किसी हस्तकीशलमें
निपुण, प्रवीण होना। -जमाना-दे० 'हाथ जड़ना'
किमी हस्तकीशलमें हाथोंको अव्ययन, निपुण कराने-

किमी हस्तकीशलमें कुशलता प्राप्त करना। -जाना-

हाथका किमी स्थानपर पहुंचना। -जुटा करना-

योधना खाना। -जोड़ देना-हार मान लेना; क्षमा

माँग लेना। -जोड़ना-प्रायः साक्षात्कार होनेपर दोनों

हाथोंको मिलाकर अभिवादन करना, नमस्कार, प्रणाम

करना; प्रार्थना, अनुमन्य, विलय करना; मारे रहने

किमीको हाथ बाँधकर क्षमायाचना करना, प्रार्थना

करना; मंत्रध विच्छेद करना (व्यय)। -झाड़कर

खड़ा हो जाना-प्रायः एक पैसा भी न होनेकी

बात करना। - **झाबकर जाना** - जुए आदिमें रुपया-पैसा हारकर खाली हाथ जाना। - **झाबना** - दे० 'हाथ झाबकर खवा होना'; तनावक धप्पक, पटाका मारना, प्रहार करना; मार-पीट, युद्धमें खुलकर अक्रान्त चलना। - **झुलाते जाना** - दे० 'हाथीलाने जाना'। - **झूठा पचना**, - **झूठा होना** - हाथ मुक्त होना, हाथका काम करनेके योग्य न रहना; बार खाली जाना। - **झूल जाना** - हाथ टूट जाना, हाथका हम तरह टूट जाना कि वह झूलने लगे। - **टंकना** - सडारना, सहयता लेना (प्रायः शारीरिक-हाथका)। - **टंकाना** - प्रायः शारीरिक (हाथका) सडारना, महायत्ना, अवलंब देना। - **डालना** - कोई काम भारब काना; किसी काममें दखल देना; दब्य आदि लुटना। - **डोलावे जाना** - धारार खाल जाना। - **तंग होना** - रुपये-पैसेकी कमी होना। - **तकना** - किसीके भरोने रहना, किसीपर अवलंब होना। - **दिलाना** - हस्त-रेखादिकी भूत, भविष्यके संबंधमें जानकारीके लिए हाथ-की रेखाएं दिखाना; पैरको नाकी दिखाना। - **देखना** - भूत, भविष्यकी बातोंको बतातेके लिए हस्तरेखा देखना; न डी देखना। - **देना** - महायत्ना देना, सहायक होना; बचन देना (बायबड होने समय लोग आपसमें हाथ मिला लेते हैं); धात्री लगाना; जुआ आदिके लेंके भाजी हारना; मागना, पीटना, रकमेंके लिए इशारा करना। - **धरना** - महारा देना, महायत्ना करना, रक्षा करना; किसीकी कोई काम करनेमें रोकना, मना करना, पाबिधिवन करना। - **धोकर पीछे पडना** - जी-जानमें किसी काममें (विशेषकर किसीका अनिष्ट करनेमें) जुट जाना। - **धोना**, - **धो बैठना** - खो देना, खो बैठना। (पुष्टपर) - **न धरने**, **न रखने देना** - बानीम न आना, किसीकी बात न मानना, अपनी बातपर हड रहना। - **पकड़ने पहुँचा पकड़ना** - थोड़ी-सी रिश्तायत या जानेमें ही बहुत हिलमिल जाना; बोझना महारा मिल जानेपर अधिक प्रामिका अवसर हँटना (दे० 'उत्पत्ति'के सु० ३)। - **पकड़ना** - दे० 'हाथ धरना'। - **पकड़की लाज करना**, - **पकड़की लाज रखना** - किसीकी बचन या आश्रय देकर उसका निर्बाह करना। - **पड़ जाना** - बिना परिश्रम, प्रयत्नके, यी ही किसी वस्तुका मिल जाना; चोरी हो जाना। - **पड़ना** - दे० 'ह.व. जाना'; लुप्त जाना। - **पथर लले दबना** - सकटमें पड़ना, किसीपर विपत्ति आ जाना; असहाय हो जाना, कुछ करने लायक न रह जाना; किसी भलते कामकी एकदम रोक देनेके लिए बाध्य, विवश होना। - **पर कुरान**, - **पर गंगाजल या गंगाजली रखना** - किसीकी कुरान, गंगाकी कसम खिलाना। - **पर तोता पालना** - अपने हाथके धाव, फीरे, फुंसीको अच्छा न होने देना; अपने हाथको चोटिल, जखमी करना। - **पर धरा रहना** - किसी वस्तुका किसीके लेंके लिए हाथपर होना, तैयार रहना। - **पर धरा हुआ होना** - किसी वस्तुका हर बत्त पास या तैयार रहना। - **पर माग खेळना** - जान जोखी टारना, मागकी संकटमें डालना। - **पर हाथ धरकर बैठ जाना** - निराश हो जाना। - **पर हाथ धरे बैठना या बैठे**

रहना - कुछ काम न करना; निरुधम होना, आलसी होना। - **पर हाथ मारना** - बायबड होना, प्रतिज्ञा करना; बाजी लगाना। - **पमारना** - याचना करना, माँगना; मिश्रा मँगना। - **पसारे जाना** - हस्त संसारसे बिना कुछ लिये परलोक जाना, हम जगमें खाली हाथी जाना। - **पाँव करनेमें होना** - हाथ-पाँवका काम करना, हाथ-पैरका काममें रहना। - **पाँवका जवाब देना**, - **पाँवका हारना** - बीमारी या बुद्धावस्थाके कारण हाथ-पाँवका काम न कर सकना, अस्वस्थता या बुद्धापके कारण शरीरका काम करनेके योग्य न रह जाना। - **पाँव चलना** - उद्योगी होना; शरीरमें शक्तिका रहना। - **पाँव चलाना** - उद्योग करना, कर्मशील होना। - **पाँव जोड़ना** - निपटिबडाना। - **पाँव झूठे पड़ जाना** - हाथ-पाँवका बेकाम हो जाना, काम करनेके योग्य न रह जाना। - **पाँव मंडे होना** - मरणासन्न होना; मृत्यु होना, मर जाना; अन्त्यन भीत होना, स्तब्ध होना, काठ मार जाना। - **पाँव तैयार होना** - व्यायाम द्वारा हाथ-पाँव वा शरीरका तदुत्कर्ष, पुष्ट होना। - **पाँव पुनना** - हाथ-पैरमें समनमाडट होना। - **पाँव निकालना** - शरीरको म्व मोटा-ताजा बनाना, अपनी सीमके बाहर होना; अधिकारमें अधिक व्याहना; शरारत, छेड़छाड़ करना। - **पाँव पटकना** - तथक्कडाना, छटपटाना। - **पाँव पीटना** - ब्यर्थ प्रयत्न करना; बेकारदे कोशिश करना। - **पाँव फूलना** - विपत्तिसे घबड़ा जाना। - **पाँव फैलाना** - उन्नति करना; कार्यक्षेत्र बढ़ाना। - **पाँव बचाना** - किसी कष्ट, खतरे आदिमें शरीरको बचाना। - **पाँव मारना** - नेत्रमें हाथ-पैर हिलाना, चलाना; म्व कोशिश करना, वह सहने हुए भी प्रयत्न करना; म्व काम करना; पीड़ा, शोक आदिमें तथक्कडाना, छटपटाना। - **पाँव रह जाना** - हाथ-पाँवका काम न करना, हाथ-पाँवका बेकार हो जाना। - **पाँव मैआलना** - हाथ-पाँवको यशम करना, रोकना। - **पाँव सीधे करना** - सीधा लेंडकर हाथ-पाँवको आराम देना। - **पाँव हारना** - निःशक्त होना; निराश होना; साहसहीन होना। - **पाँव हिलाना** - दे० 'हाथ-पाँव मारना'। - **पिले करना** - विवाह करना। - **फँकना** - जुए आदिके लेंके अपनी पारीपर कौडी, पाना आदि फेंकना। - **फेर देना** - किसी वस्तुको घुमा, उड़ा लेना। - **फेरना** - प्यार-में किसीकी पीठ या मिर सहलाना, लाह-प्यार करना; उड़ा लेना। - **फँलाना** - याचना करना। - **हँडाना** - महायत्ना देना, सहयोग करना। - **हँड होना** - दे० 'हाथ मग होना'। - **बचाना** - आक्रमण रोकना, बार बचाना। - **बड़ाना** - कोई वस्तु लेने, पकड़ने आदिके लिए हाथ आगे बढ़ाना, फँलाना; अपने अधिकार, हक, अपनी सीमायें अधिक माँगना, जाना। - **बाँधे खड़ा रहना**, - **बाँधे रहना** - हाथ जोड़े खड़ा रहना; सेवाभिमुख रहना, स्विदमतके लिए हर बत्त तैयार रहना। (किसीके) - **बिकना** या **निकाना** - किसीका कौत दास होना, विवश हो, किसीके कानेके अनुसार काम करना। - **बेचना** - म्व लेंकर किसीको कुछ देना। - **बैठना** -

दे० 'हाथ जमना'। -भरका कलेजा होना-बहुत लुप्त होना; लुप्त होने दिल्का बढ़ जाना। -भरकी जवाब होना-कड़वायी होना; गुस्ताख होना; साख पदार्थोंका लालची होना। -भरना-हाथ बचना, काम करते-करते हाथकी नाबियोंमें रक्त अधिक मात्रामें भर जाना। -भरा होना-धनवान्, दौलतमय होना; हाथमें किसी चीज (मेहँदी आदि)का लगा रहना। -भेजना-किसीके द्वारा कोई चीज भेजना। -भैजना-दे० 'हाथ जमना'। -भलना-पछताना, पश्चात्ताप करना। -भँजना-अभ्यास करना। -मारना-हाथ साफ करना; हाथपर हाथ मारना, बाजी लगाना; किसी वस्तुको सफाईसे जुरा लेना, गायब करना, हठपना; प्रायः अच्छा भोजन मिलनेपर खूब खाना; कुशलात्पूर्वक किसीपर इशियारका वार करना। (उलटा)-मारना-प्रत्याक्रमण करना, वारका जवाब वारते देना। -मिलाना-साक्षात्कार होनेपर अभिवादनके रूपमें आपसमें हाथ मिलाना (यह अंग्रेजी प्रथा है); कुदती लड़नेके पूर्व लड़नेवालेसे हाथ मिलाना; रोजगारियोंका आपसमें मौदा तै करना, झटपट-करीबत करना। -भँजना-दे० 'हाथ मलना'। -मुँहपर रख देना-बोलने न देना। -मँ करना-बलात् या प्रेमपूर्वक किसीको बशमें करना; अधिकार करना। -मँ जाना-किसीके अधिकारमें जाना, किसीके पास पहुँचना। -मँ डीकरा देना-किसीकी आधिक स्थिति खराब कर उसे गरीब, मिसखी बनाना। -मँ डीकरा लेना-मील भोगना, बहुत गरीब होना। -मँ दिल् रखना-अपने मनको बशमें रखना। -मँ पकना-दे० 'हाथ आना'। -मँ रखना-दे० 'हाथमें करना'। -मँ खाना-दे० 'हाथमें करना'। -मँ लेना-किसी कामका बिम्बा अपने ऊपर लेना, पकना। -मँ सवीयर आना-बहुत गरीब हो जाना। -मँ हाथ बाळना-हाथ पकटना। -मँ हाथ देना-पाणिग्रहण करना, ब्याह करना। -मँ हाथ होना-माथ-साथ होना; किसीके संरक्षण, सपरस्तीमें होना। -मँ हुनर होना-हाथकी कारीगरमें कानिब होना। -मँ होना-बशमें होना, अधिकारमें होना। -रँगना-कोई अकरोण्य कार्य कर बदनाम होना; हाथमें मेहँदी लगाना; वृन् लेना। -रखना-बेवकूफ बनाना। (किसीके निरपर)-रखना-किसीका रक्षक, प्रतिपालक होना। -रह जाना-काम करते-करते हाथ थक जाना। -रोकना-किसी कामके करनेमें अड़ना लगाना, किसी कामके करनेमें बाधा उपस्थित करना; काम करना बंद करना; किसीको मारते-मारते रकना; किसी कारणवश किसीको मारनेके छिप उठत होकर भी न मारना। -छगना-अधिकारमें जाना, मिळना; किसी चीजका किसीके हाथसे छू जाना, स्पर्श हो जाना; किसी कामका शुरू आरंभ होना; गणितके प्रश्नोंमें दह्राईकी संख्याका आगे जोड़नेके छिप बचना। -छगना-कोई काम आरंभ करना; किसी चीजकी समाप्ति। -छगाने कुम्हलावा-अभ्यास कोमल, निहायत नाजुक होना। -छगे मैका होना-किसी वस्तुका हतना चमकदार और स्वच्छ होना कि वह छूनेमानमें मेची हो

जाय। -छपकाना-हाथ बढ़ाना। -खमेटना-दे० 'हाथ खींचना'। -साधना-दे० 'हाथ आजमाना'; दे० 'हाथ मँजना'; दे० 'हाथ साफ करना'। (किसीपर)-साफ करना-किसीको मार बालना; हठपना; दे० 'हाथ मारना'। -सिरपर रखकर रोना-बहुत पछताना; परेशान होना। -सिरपर रखना-सिरकी कसम खाना। -मे काम निकलना-किसीके जरिये कोई काम होना; किसी कामका अनुभव होना। -से काम निकालना-किसीसे कोई काम कराना; किसीको किसी कामका अनुभव कराना। -से खोना-मिलती हुई वस्तु न लेना; किसी चीजका हाथसे निकल जाना। -से खाना-मे निकलना-हाथसे छूट, गिर जाना; किसीके काबू, बलके बाहर होना; अधिकारमें न रहना। -से दिल् खाना, -से दिल् किसखना-किसीपर मुग्ध, आशिक होना। -मे रख देना-हाथपर ही हुई कोई वस्तु जमीनपर रख देना। -हिलाले खाना-खाली हाथों खाना, बिना पैसा-कोई लिये खाना। -हिलाले खाना-बराबर खाते खाना। -होना-बश, अक्षितवार होना। -होई उचकना-मनुष्य या पशुका बहुत उछलना। -उछलना-खूब तक्पना; खूब कूदना। -कलेजा उछलना-अत्यंत उत्साहित होना; अत्यंत प्रसन्न होना। -दिल् बढ़ाना-बहुत हीमला, माहम बढ़ाना। -पलना-दे० 'हाथ बिकना'। -मे रखना-बंद प्याज पालना, रखना। (दोनों)-ममेटना-खूब धन धकड़ करना। -हाथ-एक हाथमें दूसरे हाथम, मुत्त, प्रीति। -हाथ उठाकर ले जाना-ऊपर ही ऊपर ले जाना। -हाथ उठ जाना, बिक जाना-नुरत, दम मारनेमें बिकना। -हाथ लेना-मनमें स्वागत करना, सम्मानपूर्वक आबखान करना।

हाथ-पु० इशियार आदिका इम्ता, मुठ्ठा। १० मीचनेका एक ओजार, हथ्या, रीदारपर पत्रमें गाली दुई ऐसनकी छाप।

हाथार्छी-खी० लेन-देन आदिमें धूर्तता करना।

हाथार्छी-खी० हाथके भिले हुए पजोके आकारकी निमगंत बनी हुई मरकटकी जव; औषधके काममें आनेवाला एक पौधा।

हाथपाई, हाथार्छी-खी० ऐसी सामान्य लडाइ जिममें लड़नेवाले एक दूसरेको हाथ-पैरके बलसे मारन, पटकते हैं, उठा-पटक।

हाथी-पु० हस्ती, एक सुँदर चौपाया जो बहुत बड़ा होता है और पालतू बनाकर सवारोंके काममें भी लाया जाता है (यह बहुत बुद्धिमान् और स्वाभिमत होता है); शतरंजका एक मोहरा। * खी० हाथका सहारा।

घाना-पु० हल्लिशाका, फीलखाना। -चक-पु० औषधके काम आनेवाला एक पौधा। -बौल-पु० हाथीके मुँहके बाहर निकले हुए गोल और लंबे दाँत जिन्से आभूषण, मजाबटके मामान आदि बनाये जाते हैं। -नाथ-खी० दे० 'गजनाथ'। -पौच-पु० पोरपाँव नामक रोग। -पीच-पु० दवाके काम आनेवाला एक पौधा। -बच-खी० तरकारीके काम आनेवाला

एक पीषा । -बाज-पु० महावत । मु० -पर काना-
बहुत बड़ा सम्मान प्राप्त करना; बहुत धनी होना । -पर
काना-बहुत सम्मान देना, करना । -बाँधना-
बहुत संपत्तिशाली होना, क्योंकि हाथी जैसे बहुमुख
पशुकी बहुत बड़े धनी व्यक्ति हो अपने पाम रख सकते
हैं । -सा होना-बहुत मोटा होना ।

हादसा-पु० दे० 'हादिना' ।

हादिस-वि० [अ०] नया; मिटनेवाला ।

हादिसा-पु० [अ०] दुर्घटना, विपद् ।

हान-पु० [म०] परित्याग; नुकसान; विकल्पा, वच
निकलना; शक्ति; अभाव; विराम । * स्त्री० हानि ।

हानव्य-वि० [म०] जो जवड़ेमें हो (हानि) ।

हानि-स्त्री० [म०] परित्याग; नुकसान; क्षति; विफलता;
अनस्तित्व, लोप; हास; उपेक्षा; क्षय; कमी; भ्रष्टि; बर्-
बादी । -कर, -कारक, -कारी (विद्), -कृत्-वि०
हानि पहुँचानेवाला, अपकारी । मु० -उठाना-घाटा
महना, नुकसान बढ़ावन करना ।

हानीय-वि० [म०] दे० 'हातव्य' ।

हानु-पु० [सं०] दाँत ।

हापन-पु० [मं०] परित्याग करनेके लिए बाध्य करता,
ठडाना; हास ।

हापुशिका, हापुशी-स्त्री० [म०] खजनका एक भेद ।

हाफिका-स्त्री० [म०] जूआ, जम्हाई ।

हाफिज-वि० [अ०] रीकाजग करनेवाला, रक्षक (सुदा-
हाफिज-ईश्वर रक्षक हैं) । पु० वह आदमी जिसे पूरा
जुरान कठ हो ।

हाफिज़ा-पु० [अ०] बाद रखनेकी शक्ति, धारणाशक्ति ।

हामिद्-वि० [अ०] नारीक, ईश्वरकी स्तुति, भगवान्का
गुणगान करनेवाला ।

हामिल-वि० [अ०] बोझ उठानेवाला; ले जानेवाला,
वाहक ।

हामिला-स्त्री० [अ०] गर्भवती स्त्री ।

हामी-स्त्री० स्वीकृति । वि० [अ०] हिमायत करनेवाला,
पृष्ठपोषक; सहायक । मु० -अरना-किसी कामकी करने-
की स्वीकृति देना, स्वीकार करना ।

हाय-अ० मानसिक और शारीरिक पीडा होनेपर मुखसे
निकलनेवाला शब्द । स्त्री० व्याधा, कष्ट; तकलीफ ।
-हाय-अ० दे० 'हाय' । स्त्री० दे० 'हाय' व्यस्तता,
परेशानी, धक्काहट । [मु० -कहरना-परेशान होना,
ब्यस्त रहना । -पबना-धक्काहटकी स्थितिमें होना,
धक्काना ।] मु० -करके रह जाना-निवृत्त होकर
शारीरिक या मानसिक पीडा सह लेना । -पबना-कष्ट
देनेवालेकी किसीकी दिये हुए कष्टका बुरा परिणाम
मिलना । -मारना-शोकादिमें हाव-हाव करना ।
-होना-किसीके सुख, दुःख आदिको देखकर पीडा
होना, राह होना ।

हाथन-पु० [सं०] संवत्सर, वर्ष; अग्निशिक्षा; धान्य-
विशेष, एक प्रकारका लाल चावल; परित्याग; गुजर
जाना ।

हाथनक-पु० [सं०] एक तरहका लाल चावल ।

हाथक-वि० [अ०] बीचमें जानेवाला, क्कावट डालने-
वाला, बाधक; * चौटेक, बाधक ।

हार-स्त्री० जीतका उल्टा, पराजय; असफलता । -जीत-
स्त्री० जय-पराजय । मु० -खाना-पराजित होना, हार
जाना । -देना-पराजित करना ।

हार-वि० [सं०] ले जानेवाला; हरण करनेवाला; चुराने-
वाला; (कर) बैठाने, लगाने, उगाड़नेवाला; मोहक; हर
(शिव)-संबंधी; विष्णु-संबंधी । पु० हरण; जम्बी; क्षय;
श्रुति; हानि; युद्ध; वाहक, भाजक, हर (ग०); माला;
मुक्तामाला; शुरुआत (छं०); विवीग । -गुटिका-स्त्री०
मालाका मोती या दाना । -फलक, -फलक-पु० पाँच
दिनोंकी माला । -बंध-पु० वह चित्रकाम्य जो हार-
के रूपमें रखा जाय । -भूरा-स्त्री० अंगूर । -भूषिक-
पु० एक श्रुति । -मुक्ता-स्त्री० मालाके मोती । -बट्टि-
स्त्री० माछाकी लकी । -छत्ता-स्त्री० दे० 'हारयटि' ।
-मिगार-पु० [हिं०] एक फूल, परजाता । -हारा-
स्त्री० एक तरहका अंगूर, कपिल झाका । -हुण-पु०
एक जनपद । -हूर-पु० मादक पेय, मद्य । -हूरा,-
-हुरिका-स्त्री० अंगूर ।

हारक-वि० [सं०] हरण, ग्रहण करनेवाला; चुरा या छुट
लेनेवाला; आकृष्ट करनेवाला; मोहक, सुहर । पु० बोर;
तुदेरा; ठग; दुष्ट; सख; जुआरी; भाजक (ग०); मोतियों-
की लकी; शस्त्रोद् बृक्ष; गधका एक भेद; एक विद्वान ।

हारणा-स्त्री० [सं०] हरण कराना ।

हारद्-वि० हृदय-संबंधी, हार्दिक ।

हारना-अ० क्रि० युद्ध, खेल, प्रतियोगिता, मुकदमे आदि-
में असफल, पराजित होना; धकना । सं० क्रि० खोना;
देना; त्यागना । मु० हारकर रह जाना-धकलर लुप
बैठ जाना ।

हारमोनियम-पु० [अ०] एक मद्धकुमुमा अंगरेजी बाजा
जिममें तीनों प्रकारके-मद्र, मध्य और तार सप्तकवाले
स्वर निकालनेके लिए पटरियाँ रहती हैं ।

हारला-पु० दे० 'हारिल' ।

हारवार-स्त्री० हकबकी, उतावली, जल्दबाजी ।

हारा-अ० 'बाला'-सूचक एक प्रत्यय । [स्त्री० 'हारी']

हारावलि, हारावली-स्त्री० [सं०] मोतियोंकी लकी ।

हारि-वि० [सं०] हविर्, मनोहर । पु० हार, पराजय,
जुगमें देव हारना; अधिकदल । * स्त्री० थकावट । -कंड-
पु० कोकिल । वि० मधुरभाषी; जिसके गानेमें मोतियोंकी
माला हो ।

हारिक-वि० [मं०] हरिके ममान । पु० एक प्राचीन
जनपद ।

हारिका-स्त्री० [सं०] एक वृत्त ।

हारिज-वि० [अ०] हरज करनेवाला; बाधक ।

हारिण-वि० [सं०] हरिण-संबंधी । पु० हरिणमास ।

हारिणाभा-स्त्री० [सं०] एक मूर्च्छना (मंजीत) ।

हारिणिक-पु० [मं०] हरिणको मार डालनेवाला, हरिण-
घाती, व्याध ।

हारित-वि० [सं०] हरण कराना हुआ; लाया हुआ; स्त्रीना
हुआ; नष्ट किया हुआ; वंशित; मुग्ध; परास्त; समपित ।

पु० हरा रंग; साधारण हवा (न बहुत तेज, न बहुत मंद); एक तरहका कवुतर; विदवाभिन्ना एक पुत्र; एक वृक्ष।

हारिक-पु० [सं०] हरी तरकारी, शाक।

हारिद्र-वि० [सं०] हलदीसे रंगा हुआ, पीला। पु० पीला रंग; कदव वृक्ष; एक बानस्पतिक विष; अरका एक प्रकार। -मेह-पु० दे० 'हरिद्रामेह'।

हारिल-पु० एक तरहका पक्षी।

हारी-स्त्री० [सं०] मोती; वदनाम लक्ष्मी (विवाहके अभ्योग्य)।

हारी (विष्)-वि० [सं०] हरण करनेवाला, अपहारक; बहन करनेवाला, बाहक; चोरी करने, लूट लेनेवाला; नाश करनेवाला; अस्त-व्यस्त करनेवाला, गड़बड़ करनेवाला; ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला; झट्टा करने, उगा-हनेवाला; मोहक, मनोहर; आनंदकारी, प्रमत्त करनेवाला। किमीसे बड़ जानेवाला; पछाहनेवाला; मोनियोंका हार धारण करनेवाला।

हारीस-पु० [सं०] चोर; डाठ; धूर्त; चोरी; ठगी; एक तरहका कवुतर; एक जनपद; एक स्थितिकार क्षत्रि। -बोध-पु० एक तरहका वृक्ष।

हारीसक-पु० [सं०] एक तरहका कवुतर।

हारिक-वि० [सं०] हरण करनेवाला; ग्रहण करनेवाला।

हारीक-पु० दे० 'हरावल'।

हार्य-वि० [सं०] ह्रदय-सम्बंधी। पु० प्रेम; दया, अभिप्राय, प्रयोजन।

हारिक-वि० [सं०] ह्रदय-सम्बंधी; आंतरिक, दिली।

हारिक-पु० [सं०] मैत्री, मोहार्द।

हारी (विष्)-वि० [सं०] स्नेहयुक्त, मधुर। पु० वह गो बहुत प्रिय हो।

हार्य-वि० [सं०] हरणयोग्य; ग्रहण करने योग्य, ग्रहणीय; बहन करने योग्य; हठाये जाने योग्य, विचलित करने योग्य; प्रभावित करने योग्य; अभिनय करने योग्य, अभिनेय; जो विभाजित किया जानेवाला हो; सुदृढ़, मोहक। पु० न्याय; विभीतक वृक्ष; भाव्य।

हार्य-स्त्री० [सं०] एक तरहका चंदन।

हार्य-वि० [सं०] गरम; गरमी करनेवाला।

हार-पु० [सं०] हल; बल्लाम; जालिवाहन नरेश; एक तरहका पक्षी। -भृत्-पु० बल्लाम।

हार-स्त्री० लकड़ीके पलियेपर चढ़ाया जानेवाला लोहका पट्टा; हिलना, कप; झोंका, झटका। -गोला-पु० गेंद।

-होल-पु० हिलना-डुलना; हलचल।

हार-पु० [अ०] वर्तमान काल; दशा, अवस्था; वृत्त, दशाका वर्णन, भक्तिभावभरी, ईश्वर प्रेमपरक कविता, गीत सुननेमें महत्त्वकी होनेवाली आत्मविरष्टि या आनंद-विलसना। * अ० हारमे; अनी; तुरत। -हारी-स्त्री० एक तरहका कर जो पहले बंगालमें व्याहके अवसरपर देना होता था। मु०-आना-ईश्वरप्रेमपरक रचना या गीत सुनकर सुखवृद्ध हो देना, आनंदविलस हो जाना। -का-योधे दिनोंका, कुछ ही दिन पहलेका। -की महकिल-वह प्रलम्बा विसर्पे हाल लानेवाली चीज गायी जाय। -गौर होना-दशा विग्रहना। -तबाह होना-

पुरा हाल होना। -में-योधे दिन पहले। -कावा-आत्मविस्मृति, आनंदविलसता उत्पन्न करना।

हॉल-पु० [अ०] बहुत बड़ा कमरा।

हालक-पु० [सं०] पीतहरित-पीलापन लिये भूरे रंगका-धोखा।

हालत-स्त्री० [अ०] दशा, अवस्था; वर्तमान आर्थिक दशा, मौजूदा दैसवत। मु०-गौर होना, -तबाह होना-दे० 'हाल गौर होना', 'हाल नबाह होना'।

हालना-अ० क्रि० हिलना-डोलना; कोपना; क्षमना। पु० एक जातीय उपाधि।

हालरा-पु० बच्चोंकी गोदमें लटक हिलाना; झटका, झोंका, पानीका झटका, लहर।

हालहाल-हालहाल-पु० [सं०] दे० 'हलहाल'।

हालहली-स्त्री० [सं०] मुरा, मदिरा।

हालहल-स्त्री० शोर-गुल, उपद्रव; उलटफेर, हलचल।

हालकि-अ० यद्यपि, योकि।

हाल-स्त्री० [सं०] मद्य, शराब।

हालाहोला-पु० दे० 'हालहोला'।

हालाल-पु० [फा०] 'हाल'का बहु०; दशाओंकी समष्टि; परिस्थिति; वत, समाचार।

हालहा-पु० [सं०] दे० 'हलहा'।

हालाहल-पु० [अ०] एक, विपरीत धोखा; झटका दड़-बना हुआ घातक विष; समुद्र; जलमें डूबा विष; एक, नर-को छिपकली; एक तरहका मकड़ा।

हालाहला-स्त्री० [सं०] अद्भुत मुक्किया, नृत्तिया।

हालाहली-स्त्री० [सं०] मदिरा।

हालाहली-स्त्री० दीघगा, लंबा। अ० दीर्घगात्र-जुद्धमें।

हालिक-वि० [सं०] वर्तनी। पु० हलवाक; कृ० क्लिमातः दल-न्यायनेवाला (जैम वैत); शास्त्रके कथन-कर्ता करनेवाला धर्षि, एक उदका नाम; कर्म; दल।

हालिनी-स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी बरी विभक्तिया। एगोमें रहती है।

हालिम-पु० अक्षर नामक घोषा जिम्मा कीज दबाके बोल आता है।

हाली-स्त्री० [सं०] छोटी मात्नी। वि० [अ०] वर्तमान कालका; मामयिक। पु० चलनसार सिक्का। अ० नगी, गत्ता। -झवाली-पु० मगी, सुखवती।

हाल-पु० [सं०] दौन।

हाली-पु० समुद्र।

हाल-पु० [अ०] चलने समय में आदि नायकके आदेश पाकर अथवा किसी कारणसे रुक जाना, ठहराव।

हाव-पु० [सं०] आह्वान, पुकार; किसीके हृदयमें श्रृंगार, प्रेमका भाव उदित होनेपर उनके हारा की गयी रवाना विक वेधारे जो पुरुषोंकी आकृष्ट करती है। -आव-पु० नाज-नसरा, शोचला।

हावक-पु० [सं०] आह्वान करने, पुकारनेवाला व्यक्ति। दुलिनको क्लाने, पुकारनेवाला आदमी (वे दूल्हा अनुसर होता है); यद्य करानेवाला।

हावन-पु० [फा०] कुरनेका करतन, खल। -दस्त-पु०

सल-बट्टा ।

हावनीय-पु० [स०] हवन करने ज्ञाने योग्य ।

हावरी-पु० एक तरहका पेड़ ।

हावका-बावका-वि० पागल, बिक्षित ।

हावहाव-स्त्री० किमी बरतुकी प्राप्त करनेकी मालचभरी आकुलता, हाही ।

हाही-वि० [अ०] घरेनेवाला; दवा रखनेवाला ।

हाही (विन्)-वि० [म०] हवि देनेवाला, हवन करनेवाला ।

हाशिया-पु० [अ०] गोट-किनारा; कोर; पन्ने या पृष्ठके बायीं ओरका (प्रायः सादा) किनारा; शाली कमाल, कालीन आदिके हाशियेपर बने हुए बेल-बूटे; हाशियेपर लिखित टीका, पुटनोट; टीकाकी टीका । -**आराह**-स्त्री० हाशिया बढाना । -**नशीन**-पु० अंगपास बैठनेवाले, सुराह । **मु०-चढाना**-गोट खोलना; टीका लिखना; अपनी ओरमें कुछ जोड़ना, बढाना, नमक-मिर्च लगाना । -**(रे) का गवाह**-बह गवाह जो किम्; दम्तावेजके हाशियेपर अपना नाम लिखे या मही बनावे ।

हास्य-पु० [म०] हसनेकी क्रिया, हसी; प्रमथना, खुशी; हास्य रम्का आधी भाव (मन)। उपहास, मजाक, मीठ-टिहगी; मिलना, विकास, चौप पटा करनेवाली मपेट्टी, धमक । -**कर**-वि० हसी उपपन्न करनेवाला । -**शील**-वि० हँसना ।

हासक-पु० [म०] मजाकिया, विद्रुपक, उन्मी ।

हास्य-वि० [म०] हसी उपपन्न करनेवाला, हसनेवाला । पु० हँसना ।

हास्यिक-पु० [म०] मजाकौटक, भाव मिलनेवाला ।

हास्यवती-स्त्री० [म०] नायिकीकी एक देवी ।

हासा(स्य)-पु० [स०] उन्मी ।

हासास्यद-पु० [म०] हँसोका विषय ।

हासिका-स्त्री० [म०] हास, हँसी, मजाक, ठट्टा ।

हासिक-वि० [अ०] हस्य (हास) करनेवाला; मलनेवाला ।

हासिक-वि० [अ०] जो कुछ बहा हो; जो कुछ हाथ लगा हो, लक्ष्य । पु० वस्तुका अवधारण; लाभ; उपज; नतीजा, निचोड़ । -**कलास**-पु० धानकी नतीजा, सुलाना, निचोड़ । -**जमा**-पु० योगफल, जोड़ । -**जवर**, -**जार्ब**-पु० गुणनफल । -**तकसीम**-पु० भागफल, लब्धि । -**तकरीक**-पु० पठानमें बचनेवाली मर्यादा, शेषफल । -**ममदर**-पु० क्रियामें बचनेवाली भाववाचक संज्ञा । **मु०-आना**-आगे जोड़ या लगे जानेके लिए बच रहना, हाथ लगना (स्वारथ दुना बाईमेके ठो, हाथ लगे हो) । -**करना**-पाना; कमाना; पैदा करना । -**होना**-लाभ होना; मिलना, हाथ लगना ।

हासी(सिक)-वि० [स०] हँसनेवाला; उपहास करनेवाला; चौप पैदा करनेवाली सफेदीवाला ।

हास्य-वि० [स०] हासमें बना हुआ । -**मुकुल**-पु० अंजलि ।

हासिक-वि० [म०] हाथी-संबंधी । पु० महावत, पीलवान; हाथीपर चढ़नेवाला व्यक्ति; हाथियोंका झुट, हस्ति-समूह ।

हास्तिदंत-वि० [म०] हाथीदातका बना हुआ ।

हास्तिन-पु० [म०] हस्तिनापुर । वि० हाथी-संबंधी, हस्ति-परिमाण सहस्र (जैसे पानी) । -**पुर**-पु० हस्तिनापुर ।

हास्य-वि० [स०] हँसने योग्य; उपहास्य; हास्यजनक । पु० हँसा; आनंद, प्रसन्नता; मजाक, टिहगी; एक रम (मा०) । -**कर**, -**शी**० हँसी उपपन्न करनेवाली वार्ता ।

-**कर**, -**कार**, -**कृत**, -**जनक**-वि० हास्योत्पादक, हँसी उपपन्न करनेवाला । -**कार्य**-पु० उपहास्य कार्य । -**कौतुक**-पु० हँसी मेल, हँसी-समाशा । -**पदवी**-स्त्री० टिहगी, मजाक । -**रम**-पु० एक काव्यरस जिम्मा आधी भाव हास है । -**रसात्मक**-वि० जिसमें मस्त्वम जो (काव्य) । -**रसिक**-वि० विनोदप्रिय; हास्यरम्का प्रेमी । -**हीन**-वि० जो हँसना न हो, विकाररहित ।

हास्यास्यद-पु० [स०] हास्यका आलंघन, हँसीका विषय, वह जिसे देखकर हँसी उत्पन्न हो; उपहासका विषय । **हास्योत्पादक**-वि० [स०] हास्य उत्पन्न करनेवाला । हा हंस-अ० [म०] शोकसूचक उद्गार । **हाहल**, **हाहाल**-पु० [म०] घातक विष ।

हाहव-पु० [म०] एक नरक ।

हाहा-पु० [स०] एक गधर्व, एक बट्टन की मर्यादा । अ० आश्चर्य, शोक आदिका सूचक एक शब्द । -**कार**-पु० रुदनकी उदा ध्वनि; युद्धका कोलाहल । -**रव**-पु० 'हाहा' करके विद्वानोंकी आवाज । -**हून**-पु० अग्रजन्म कोलाहल ।

हाहा-पु० सुलकर हसनेकी आवाज, अनुनय-विनय, गिरगिरानेकी आवाज । -**टीटी**-स्त्री० हँसी मजाक, हास्य-परिणाम, हँसी-ठट्टा । -**हीही**-दे० 'हाहा-टीटी' [मु० -**करना**-हँसी-ठट्टा करना । -**मचना**, -**होना**-हँसी-मजाक होना । -**हूहू**-पु० हँसी-ठट्टा । **मु०-करना**, -**खाना**-विगिराना । -**मचना**, -**होना**-हूहू स्त्री होना ।

हाहा(हस)-पु० [म०] एक गधर्व ।

हाही-स्त्री० किमी बरतुकी प्राप्तिके लिए व्यग्रता । **मु०-पकना**-किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए अत्यंत व्यग्र होना ।

हाहू-पु० ऊधम, हड़दंग, शोरगुल ।

हाहूबर-पु० जगली बेर, झडबेरी ।

हिकरना-अ० कि० धोड़ेका हिनहिनाना ।

हिकार-पु० [स०] 'हि' ध्वनि करनेकी क्रिया; रमानेका शब्द, बाधके कोनेका शब्द; बाध ।

हिकिया-स्त्री० [म०] रंजने आदिका शब्द ।

हिग-स्त्री० हाग । पु० [म०] एक प्राचीन जनपद ।

हिगनबेर-पु० हंडुदी, हिगोट ।

हिगलाची-स्त्री० [म०] एक यक्षिणी (दे०) ।

हिगलाज-स्त्री० दे० 'हिगुलाज' ।

हिगु-पु० [म०] एक वृक्ष जो मुलतान तथा खुरासामें विशेष रूपमें होता है; इस वृक्षके मूलका नियाँम, हींग; बंशपत्री । -**नायिका**-स्त्री० नाथीहिगु । -**नियाँस**-पु० निंब वृक्ष; हिगु वृक्षका नियाँस, मोद । -**पत्र**-पु० हंडुदी वृक्ष; हिगु वृक्षका पत्र । -**पत्री**-स्त्री० दे० 'हिगु-

पर्णी' - पर्णी-खी- बंजवणी । -सिराटिका, -
शिवाटिका-खी- बंजवणी ।

हिंदुक-पुं [सं०] हिंदु इश ।

हिंदुदी, हिंदुकी-खी- [सं०] बातांकी, बैगन ।

हिंदुक, हिंदुकि, हिंदुल-पुं [सं०] ईश्वर ।

हिंदुला-खी- [सं०] प्रदेशविशेष जो सिंध तथा बख्-
चिस्तानके मध्यमें है । -जा-खी- देवकी एक मूर्ति
जो हिंदुला प्रदेशमें है ।

हिंदुलिका-खी- [सं०] कठकारी ।

हिंदुज्वला-खी- [सं०] एक वाद्ययंत्र ।

हिंदुल-पुं [सं०] मधुसूक्त; हिजल ।

हिंदोट-पुं हिंदुपत्र, इंदुदी ।

हिंदुना-अ० कि० इच्छा करना, कामना करना, चाहना ।

हिंदु-खी- इच्छा ।

हिंदीर-पुं [सं०] हाथीका पैर बांधनेकी रस्सी या मीकड़,
हस्तिपादबंध ।

हिंदक-पुं दे० 'नाकीतरंग' । वि० अमणशील ।

हिंदन-पुं [सं०] अमण; संभोग; लेखन ।

हिंदिक-पुं [सं०] लम्बाचाय, ल्योनिषी ।

हिंदिर-पुं [सं०] दे० 'हिंदीर' ।

हिंदी-खी- [सं०] दुर्गा । -काल, -प्रियतम-पुं शिव ।

हिंदीर-पुं [सं०] समुद्रफेन; पुष्प, जल; वार्ताक; ज्वक;
वाणिम ।

हिंदुक-पुं [सं०] शिव ।

हिंदोरना-पुं दे० 'हिंदोला'-'हिंदोरनो' मांसे श्रृंखल
गोचलचंद-सूर । स० कि० दे० 'हिंदोलना' ।

हिंदोरा-पुं दे० 'हिंदोला' ।

हिंदोरी-खी- छोटा हिंदोला ।

हिंदोल-पुं हिंदोला; एक राग ।

हिंदोलना-पुं 'हिंदोला' । स० कि० आन्दोलित करना,
धँसलना ।

हिंदोला-पुं झुला; पालना; नीचे ऊपर चक्कर घानेवाला
एक तरहका झुला, चरखी ।

हिंदोली-खी- एक रागिनी ।

हिंदाल-पुं [सं०] छोटी त्रातिका एक जगली खजूर ।

हिंद-पुं [का०] भारतवर्ष, हिंदुस्तान (यह नाम 'सिंधु'-
का फारसी और परिवर्तित रूप है) ।

हिंदवी-खी- हिंदुस्तानकी भाषा (उर्दू-फारसी और कुछ
पुराने हिंदी-लेखकों द्वारा प्रयुक्त हिंदीका पुराना नाम) ।

हिंदी-वि० [का०] हिंद, हिंदुस्तानसे संबद्ध । पुं हिंद-
निवासी, भारतवर्षमें रहनेवाला । खी० भारतवर्षकी
राष्ट्रभाषा (जो उत्तर प्रदेश, बिहार आदिमें मुख्य रूपसे
बोली जाती है) । -देवेंद्र-पुं एक पीषा जो दबाके
काम आता है ।

हिंदुत्व-पुं हिंदू होनेका भाव या गुण; हिंदुओंके आचार-
विचार; हिंदूधर्मका भाव ।

हिंदुस्तान-पुं [का०] हिंदुओंका निवास-स्थान, भारत-
वर्ष; भारतवर्षका उत्तरी भाग जो गंगा तथा यमुनाके
झोजेके मध्यमें पड़ता है, जिसे प्राचीन समयमें अंगवेंद्र या
मध्य देश कहते थे ।

हिंदुस्तानी-वि० हिंदुस्तान-संबंधी । पुं० हिंदुस्तानमें
रहनेवाला व्यक्ति, भारतवासी । खी० हिंदुस्तानकी भाषा;
समाज, परिवार आदिमें नित्यप्रतिके व्यवहारमें आनेवाली
खड़ी बोलीका ऐसा व्यावहारिक रूप जिसमें अरबी, फारसी,
उर्दू, संस्कृत और अंगरेजीके भी प्रचलित तत्त्व तथा
तर्जुम शब्द हों; खड़ी बोली हिंदीका वह बनावटी रूप
जिसमें अरबी, फारसी, उर्दूके तत्त्व शब्दोंका बाहुल्य तथा
संस्कृत, हिंदी और अंगरेजी शब्दोंको विरलता हो ।

हिंदुस्तान-पुं दे० 'हिंदुस्तान' ।

हिंदू-पुं [का०] प्रत्यक्षतः या परोक्षतः वेदोंके विचारोंके
आधारपर बने आचार-व्यवहार, रीति-नीति, मन्माज-
व्यवस्था, धर्म आदिमें किसी न किसी रूपमें विश्वास करने
और उनपर चलनेवाला भारतीय । -पन-पुं दे०
'हिंदुत्व' ।

हिंदूकुश-पुं [का०] अफगानिस्तानके उत्तरमें स्थित एक
पर्वत-श्रेणी जो हिमालयसे मिली हुई है ।

हिंदोरना-स० कि० धँसलना ।

हिंदोल-पुं [सं०] झुला, हिंदोला; श्रावणके शुक्ल पक्ष
होनेवाला ढोलीसब, एक राग; भगवद्वाजा ।

हिंदोलक-पुं [सं०] झुला; पालना ।

हिंदोला-खी- [सं०] दे० 'हिंदोला' ।

हिंदोल्मान-पुं दे० 'हिंदुस्तान' ।

हिंदोल्मानी-वि०, पुं०, खी० दे० 'हिंदुस्तानी' ।

हिंदी-अ० यहाँ ।

हिंदी-पुं हिम ।

हिंदीर-पुं हिम ।

हिंद-खी- खी० पोतेके किनहिनानेकी आवाज, गिनहिना
हम ।

हिंदक-वि० [सं०] दिग्ग करनेवाला; दानक, पुं०
करनेवाला, हानिकर; शत्रुका करनेवाला । पुं० हिंद पशु,
खैर जानवर; शत्रु, तांत्रिक जादूगण ।

हिंदन-पुं [सं०] मारना; चोट पहुँचाना; मगाना; शत्रु ।

हिंदना-अ० कि० शोभना, गिनहिनाना । स० कि० मार
डालना; चोट पहुँचाना; मगाना; नुकसान पहुँचाना ।

खी० [सं०] मारने, चोट पहुँचानेकी क्रिया ।

हिंदनीय-वि० [सं०] हिन्दा करने योग्य; मार डालने
योग्य; बन्ध (जैसे पशु) ।

हिंद्या-खी- [सं०] धात, मारण; मारना; चोट या हानि
पहुँचाना; क्षति; नुस्त; चोरी । -कर्म(क)-पुं०
नुकसान पहुँचानेवाला काम, नुस्तका काम; नष्टप्रयोग
द्वारा मारण, नुस्तान आदि कार्य । -प्राप्ति(पिन्)-
पुं० जगली, खैर जानवर । -प्राय-वि० हानिकर-
प्राय । -रत, -रति-वि० नुस्त करनेमें आनंद मानने-
वाला । -विहार-वि० भूम-फिरकर नुस्त करनेमें आनंद
माननेवाला ।

हिंसारक-वि० [सं०] जिधमें हिंसा हो, हिंसायुक्त;
नुस्त करनेवाला, हानिकारक ।

हिंसाह-पुं [सं०] हिंस पशु; बाघ ।

हिंसाह-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला, हिंसक; हिंसारक
प्रवृत्ति, प्रकृतिवाला । पुं० हिंसाहील कुत्ता ।

हिंसासूक्त-पु० [म०] हिंसाशील कुत्ता, शिकारी कुत्ता; कटहा कुत्ता।

हिसित-वि० [म०] मारा हुआ; आहत; जिसे हानि या क्षति पहुँचायी गयी हो। पु० क्षति, नुकसान।

हिमिलम्ब-वि० [सं०] हिंसा-योग्य, मार डालने, पीटा पहुँचाने, चोट पहुँचाने योग्य।

हिंसीन-पु० [सं०] जगली, हिल पड्ड।

हिंसीर-वि० [म०] हानिकारक, बुराई करनेवाला; नाशक। पु० व्याघ्र; खग; बुराई करनेवाला व्यक्ति।

हिंस्य-वि० [सं०] वधय; मताये जाने योग्य।

हिंस्र-वि० [सं०] हानिकारक, बुराई करनेवाला; घातक; निष्ठुर, निर्धर; भयानक; जगली, खँसार। पु० दूसरोंके उत्पीड़नमें आनंद माननेवाला व्यक्ति; शिकारी जानवर; शिव; भीमसेन; निष्ठुरता, कठोरता। -**जंतु**, -**पशु**-पु० खँसार जानवर। -**पंथ**-पु० कट या क्षति पहुँचानेवाला आला, फंदा; एक अभिचार मंत्र।

हिंस्रक-पु० [सं०] हिंस्र पशु, भूखार जानवर।

हिंसा-स्त्री [सं०] अपकार करनेवाली स्त्री; मानी, तटा-मासी; पलायकी, काकादनी; शिवा; वसा।

हिंसिका-स्त्री [सं०] मातृओ अथवा डाकुओंकी नौक।

हिं-प्र० एक विभक्ति जो कई कारकों, विशेषकर कर्म और मंत्रदानमें प्रयुक्त होती थी। अ० प्र०।

हिज, **हिजा**-पु० वस्त्र, छाती; हृदय।

हिजाड, **हिजाब**-पु० हिम्मत, मादम।

हिक्मत-स्त्री [अ०] बुद्धिमान्, चतुराई; बुद्धि; चाल, युक्ति; निकृष्टाकाय, हकीमी। -**अमली**-स्त्री नीति, राजनीति; चतुराई; चाल, जोड़-नोड़।

हिक्मती-वि० नाकाक, जोड़-नोड़ लगानेवाला।

हिकलाना-अ० कि० दे० 'हकलाना'।

हिकायत-स्त्री [अ०] कहानी, किस्सा, वान।

हिकारत-स्त्री दे० 'हकारत'।

हिकल-पु० बीड भिक्षुओंका ढंङ।

हिक्का-स्त्री [सं०] हिचकी; हिचकीका रोग; अस्पष्ट ध्वनि; उत्सृक्त। -**बासी**(**हिच**)-वि० जिसमें हिचकीका रोग हो।

हिचिका-स्त्री [सं०] हिचकी; खराँटा।

हिक्की(**हिच**)-वि० [सं०] हिचकी रोगमें पीड़ित।

हिचक-स्त्री सफलतामें सदेह, सामर्थ्यहीनता आदिके कारण किसी कामके करनेमें सतका सकना; आगा पीछा करना, हिचकिचाहट, शिक्क।

हिचकना-अ० कि० कोई काम करनेसे पढ़ने, किसी आशका, अममर्थता आदिके कारण, कुछ सकना, आगा पीछा करना; हिचकी लेना।

हिचकिचास-अ० कि० मनका आगा पीछा करना।

हिचकिचाहट-स्त्री दे० 'हिचक'।

हिचकी-स्त्री दे० 'हिचक'।

हिचकी-स्त्री दे० 'हिक्का'; अत्यधिक रोगके बाद एक साथ तीन-चार बार जोर-जोरसे साँस लेनेकी क्रिया।
मु०-**बैच** **जामा**, -**छगना**-व्यादा रोगसे साँस रुकने लगना। **हिचकी** **लगना**-प्राणतकें समथ बाधुका मुकसे निकलनेके प्रयत्नके कारण उठर-उठरकर हिचकीका

आना; स्यूकके निकट होना। -**लेना**-रोग ममथ साँसका रुक सककर निकलना।

हिचर-मिचर, **हिचर-मिचर**-पु० हिचक; आलस्य, असमर्थता आदिके कारण किसी कामकी टालने, न करनेकी प्रवृत्ति, टालमटोल।

हिजड़ा-पु० नपुंसक, खोत्रा।

हिजरी-पु० [अ०] मुसलमानों सबके जो मुहम्मदके मकाने मदीना पलायन करनेकी तिथि-१५ जुलाई, मन् ६२२-में आरंभ होता है।

हिजाज-पु० [अ०] अरबका एक भाग।

हिजाब-पु० [अ०] परदा, ओट; लज्जा। **मु०**-**उठना**-परदा, रोक न रकना; निर्लज्ज हो जाना।

हिजा, **हिजल**-पु० [सं०] वृक्षविशेष।

हिज्जे-पु० [अ०] केमी शब्दमें आये हुए वर्णों तथा मात्राओंको अक्षर-अक्षरा कहना, वर्ण-विवृति, 'स्पेलिंग'।

मु०-**करना**-अक्षरोंको जोड़ना; किसी मामलेमें खादम-खाद इज्जते स्मिकालना। -**निकालना**-ढुकाई-ढुकाई करना; एगराज करना। -**पकड़ना**-गली निकालना।

हिज्र-पु० [अ०] बियोग, विरह, सुदारी।

हिटकना-स० कि० दे० 'हटकना'।

हिटलर, **एडोल्फ**-पु० १८८९-१९४५; जर्मनीका अधिनायक-चांसलर १९३३ में १९४५ तक।

हिडिब-पु० [सं०] एक विशालकाय राक्षस जिसे भीमने मारा था। -**जित**, -**हिट्**(**ट्**)-**निस्त्वन**, -**मिद्**, -**रिपु**-पु० भीम।

हिडिबा-स्त्री [सं०] एक राक्षसी ओ हिडिबकी बहन थी (इमने अपनेको सुंदर स्त्रीके रूपमें परिवर्तित कर भीमसे ब्याह किया। उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम पटोत्कच था)। -**पति**, -**रमण**-पु० भीम; हनुमान् (?)।

हिडोरा, **हिडोला**-पु० हिडोला।

हित-वि० [सं०] रखा हुआ; गृहीत, उपयुक्त; उचित, अच्छा; लाभदायक, उपयोगी; अनुकूल, स्वास्थ्यकर; सद्भावपूर्ण; प्रेषित; प्रेरित; प्रस्थित, गया हुआ; शुभ, मंगलकारक; निश्चित। पु० मित्र; संबन्ध; भलाई चाहनेवाला; लाभ, भलाई; उपयुक्त वस्तु; कल्याण, मंगल; सद्भाव, प्रेम। अ० [हिं०] 'के निमित्त, के लिए'। -**कर**-वि० मित्र सा व्यवहार करनेवाला, हितेच्छु; उपयोगी, लाभप्रद; आराधदेह, स्वास्थ्यवर्धक। -**कर्ता**(**तै**)-उपकार करनेवाला। पु० उपकारी व्यक्ति। -**काम**-वि० हितेच्छु, भंगलाक्षांशी। -**काम्या**-स्त्री दूसरेके लिए भंगलकामना। -**कारक**, -**कारी**(**रि**), -**कृत**-वि० दे० 'वितर'। -**चितक**-वि० किसीकी भलाईके लिए सोचने, विचारने, चिंतना करनेवाला। -**चितन**-पु० किसीकी भलाई, उपकारकी बात सोचना, किसीकी भलाई चाहना। -**प्रणी**-पु० गुप्तचर। -**प्रेप्सु**-वि० दे० 'वितकाम'। -**कुहि**-स्त्री मैत्रीपूर्ण भावना। वि० सद्भावनावाला। -**मित्र**-पु० उदार मित्र; भाई-बंध। वि० जिसके मित्र उदाराशय हों। -**बचन**, -**बाचन**-पु० मैत्रीपूर्ण परामर्श। -**बाकी**(**दिर**)-वि० भलाईकी बात कहनेवाला; सत्परायश देनेवाला।

हितक-पु० [सं०] बन्धा; पशुसाधक ।

हितला-की० [सं०] भलाई ।

हितवना०-अ० कि० हित, मित्र जैसा आचरण करना ।

हितवार०-पु० प्रेम, स्नेह-‘जुबत अंग परस्पर मनु जुग चंद करन हितवार’-सूर ।

हिता-की० [सं०] प्रणाली, नाली; शिराविशेष । -अंग-पु० मालीका अंग हो जाना ।

हिताई-की० संबंध, रिश्ता ।

हिताकांक्षी(चिन्)-वि० [सं०] भलाई चाहनेवाला ।

हितावासी(चिन्)-वि० [सं०] हितकर ।

हितावा०-अ० कि० मित्र सख्त होना, भलाई करनेवाला होना; प्रेमयुक्त होना, किलीकी ओर प्रेमकी दृष्टि होना; मिय लगना, अनुकूल मात्स्य पवना, अच्छा प्रतीत होना । -‘नवक बंधुके समये अहिता बाल हिताति’-मतिराम ।

हिताचीं(चिन्)-वि० [सं०] मंगलाकांक्षी, हितेच्छु ।

हिताचह-वि० [सं०] कल्याणकारी ।

हिताहित-पु० [सं०] भलाई-बुराई, मंगल-अमंगल; कामाकाश ।

हिती-वि० हितैषी, भलाई चाहनेवाला । पु० हितैषी व्यक्ति, मित्र, दोस्त ।

हितु, हितु०-पु० हितेच्छु व्यक्ति; मित्र, सखा, दोस्त; संबंधी ।

हितेच्छा-की० [सं०] हितकामना, किलीकी जन्मांक्षी इच्छा ।

हितेच्छु-वि० [सं०] भलाई चाहनेवाला, मंगलकामना करनेवाला ।

हितेष्णा-की० [सं०] हितेच्छा ।

हितेप्तिता-की० [सं०] हितैषी होनेका भाव, किमीकी हितकामनाकी कृति ।

हितेपी(चिन्)-वि० [सं०] हितेच्छु । पु० मित्र ।

हितोकि-की० [सं०] सत्परायण, अच्छी, नैक सल्लाह ।

हितोपदेश-पु० [सं०] हितकारी उपदेश, सत्परायण, नैक सल्लाह; विष्णुधर्मोक्त नीतिशास्त्र-संबंधी एक प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

हितौना०-अ० कि० दे० ‘हिताना’ ।

हिदायत-की० [अ०] मार्ग-प्रदर्शन, रहनुमाई; आदेश ।

-कामा-पु० हिदायती, आदेशों आदिकी किताब ।

हिदत-की० [अ०] तेजी, तीव्रता; गरमी ।

हिदकाना०-अ० कि० (घोड़ेका) हिन्दहिनाना ।

हिदली०-की० हीनता ।

हिदबाना-पु० तरबूज ।

हिदहिनाना-अ० कि० (घोड़ेका) हिंसना ।

हिदहिनाइट-पु० की० (घोड़ेके) हिंसनेकी आवाज ।

हिदा-की० [अ०] मेहँदी । -बंदी-की० युगकमानोंमें होनेवाली व्याहरी एक रस्स । -का चोर-हाथमें वह सफेद जगह नहीं मेहँदी न लगी हो (कि०) ।

हिदार्ह-वि० मेहँदीके रंगका । की० धोलापन छिद्र हुए छल्ले रंग होनेता; मानहानि । -काशर-पु० एक तरहका कावज ।

हिदाकृत-की० [अ०] रखा, रखवाली, निगरानी; बचाव ।

-सुद इस्तिबारी-की० आत्मरक्षा ।

हिदक-पु० [अ०] हिदाकृत, रखा । वि० कंठस्थ, बरखवान (करना, होना) । -सेहत-पु० स्वास्थ्यरक्षा ।

हिदुक-पु० [सं०] बीधा लक्ष, पाताल ।

हिदवा-पु० दे० ‘हम्वा’; दान, नजर । -नामा-पु० दानपत्र ।

हिमचला०-पु० दे० ‘हिमाचल’ ।

हिमच०-पु० दे० ‘हिमंत’ ।

हिम-वि० [सं०] ठंडा, शीतल । पु० वर्षा, पाला; शीत, ठंडक; जाड़ा; हिमंत काल; हिमालय पर्वत; चंदन; चंद्रमा; नवनीत, मक्खन; कपूर; मोती; पद्मकाष्ठ; कमल; रंग, रंगा; रात्रि; एक वर्ष, भूभाग । -उपल-पु० ओला, पातर । -अस्तु-की० जाड़ेका मौसिम, हिमंत काल । -कण-पु० ओसकी बूँदें; वर्षाके कण । -कर-पु० चंद्रमा; कपूर । वि० ठंडक लानेवाला । -तवच-पु० पुष मह । -किरण-पु० चंद्रमा । -कूट-पु० शिशिर काल; हिमालय पर्वत; हिमालयकी चोटी । -कंठ-पु० ओला । -मर्म-वि० बर्फमें अंग हुआ । -गिरि-पु० हिमालय पर्वत । -सुता-की० पार्वती । -गु-पु० चंद्रमा । -गृह-गृहक-पु० वह कमरा जो ठंडक लानेवाली चीजोंके जरिये ठंडा बनाया गया हो ।

-गौर-वि० बर्फ जैसा सफेद । -ज-वि० हिमवत; निवारण करनेवाला । -ज-पु० मैनाक पर्वत । वि० ठंडकमें उपपन्न; हिमालयमें उपपन्न । -जा-की० पार्वती, गिरि-सुता; शची; क्षीरिणी इश, खिरनीका पेड़ । -जवर-पु० कपूरके योगने बना हुआ तेल । -जीवित-पु० चंद्रमा । -गुर-पु० क्षीरिणी, खिरनी । -गुर्विन-पु० पाला । अनि ठंडक पकनेके कारण कष्टदायक दिन या मौसम । -गुति-पु० चंद्रमा । -गुद(र)-पु० दूध । -हुम-पु० महानिब वृक्ष । -चर-पु० हिमालय पर्वत । -जानु-पु० हिमालय पर्वत । -धामा(मन)-पु० चंद्रमा । -धस्त-वि० पांसेका मारा हुआ । -धस्त-पु० पांसेका पवना; ओलेका गिरना । -प्रस्थ-पु० हिमालय । -बालुक-बालुक-पु०-बालुका-बालुका-की० कपूर । -जानु-पु० चंद्रमा । -भूगु-पु० हिमालय पर्वत । -अवृक्ष-पु० चंद्रमा । -गुफ-पु० एक तरहका कपूर । -रश्मि-कचि-पु० चंद्रमा । -बारि-पु० ठंडा पानी । -बृष्टि-की० पाला पवना; ओले गिरना । -सर्करा-की० यवनाकसे निकली चीनी । -शिकारी(रिन्)-पु० हिमालय । -सिख-वि० बहुत ठंडा; जमा देनेवाला (शीत) । -सुम-वि० बर्फ जैसा सफेद । -सूक-पु० हिमालय पर्वत । -आ-की० पार्वती । -अच-अचन-पु० वर्षाका पिघलना । -संवात-पु०-संहति-की० बर्फका ढेर ।

सर(र)-पु० ठंडा पानी । -सुद-पु० चंद्रमा । -हामकृत-पु० अति । -हामक-पु० हिताल वृक्ष, कच्छका पेड़ ।

हिमच-पु० [सं०] विकसित वृक्ष ।

हिमर्तु-की० [सं०] हिमंत काल, जाड़ेका मौसिम ।

हिमचक-पु० [सं०] मोती ।

हिमचन्द्र(बन्धु)-पु० [सं०] हिमालय; कैलास । वि० बर्फाळा । -**(बन्धु)कृत्रि**-स्त्री० हिमालयकी स्त्री ।
-**चूर**-पु० हिमालयकी राजधानी, औषधिप्रस्थ । -
प्रभव-वि० हिमालयसे उत्पन्न । -**सुत**-पु० मैनाक ।
-**सुता**-स्त्री० पार्वती; गंगा ।

हिमांक-पु० [सं०] कपूर ।
हिमांत-पु० [सं०] जाकेके मौसमकी समाप्ति ।
हिमांतु, **हिमांत** (स्) -पु० [सं०] ठंडा पानी; ओस ।
हिमाक्ष-पु० [सं०] चंद्रमा; कपूर ।
हिमा-स्त्री० [सं०] हेमंत; छोटी श्वायची; रेणुका; अद्र-
मुखा; नागमुस्ता; दुग्धा; दुग्धा ।
हिमाक्षत-स्त्री० दे० 'हमाक्षत' ।
हिमागम-पु० [सं०] जाकेका आरंभ ।
हिमाक्ष-पु० [सं०] हिमालय पर्वत ।
हिमाक्षि-वि० [सं०] तुषारावृत्त ।
हिमाक्ष्य-पु० [सं०] जाकेका अंत ।
हिमाक्षि-पु० [सं०] हिमालय पहाड़ । -**जा**-स्त्री० गंगा;
पार्वती; खिरनी । -**समवा**-स्त्री० दुग्धा; गंगा ।
हिमानिल-पु० [सं०] सर्द हवा, बर्फाळी हवा ।
हिमानी-स्त्री० [सं०] हिम-समूह, पालेका समूह, ओसकण-
समूह; हिमशर्करा । -**विषय**-वि० बर्फ जैसा सफेद ।
हिमापह-पु० [सं०] अग्नि ।
हिमाप्य-पु० [सं०] नील कमल ।
हिमाभ-वि० [सं०] बर्फ जैसा ।
हिमाभ-पु० [सं०] कपूर ।
हिमामदस्ता-पु० दे० 'हमामदस्ता' ।
हिमावत-स्त्री० [अ०] तरकारी; मरद; रखवाली ।
हिमावती-वि० तरकारी करनेवाला, पक्ष ग्रहण करने-
वाला ।

हिमारति-पु० [सं०] सूर्य; अग्नि; अर्क वृक्ष; चित्रक वृक्ष ।
हिमारि-पु० [सं०] अग्नि ।
हिमारण-वि० [सं०] जो पालेमे भूरा-मा हो गया हो ।
हिमात-वि० [सं०] पालेमे ठिठुरा, जमा हुआ ।
हिमाक्ष-पु० [सं०] हिमालय ।
हिमालय-पु० [सं०] भारतवर्षकी उत्तरी सीमापर स्थित
एक पर्वतमाळा (सप्तकी चोटियाँ बहुत ऊँची-ऊँची हैं और
उनपर बराबर बर्फ जमी रहती है) । सबसे ऊँची चोटी
एवरेस्ट है जिसकी ऊँचाई २९,००२ फुट है और जो संसार-
की सबसे ऊँची चोटी है; दक्खि खिदि वृक्ष । -**सुता**-
स्त्री० पार्वती ।

हिमाक्ष-स्त्री० [सं०] भूम्यामली ।
हिमाक्षी-स्त्री० [सं०] स्वर्णक्षीरी ।
हिमाक्षि-वि० [सं०] बर्फसे ढका हुआ ।
हिमाक्ष-स्त्री० [सं०] स्वर्णजीवंती ।
हिमाक्षि-स्त्री० [सं०] हिमपात ।
हिमाक्ष-पु० [सं०] कपूर; बंबुटीपका एक बर्फ ।
हिमाक्ष-पु० [सं०] कपूर; कमल ।
हिमि-पु० दे० 'हिम' ।
हिमिका-स्त्री० [सं०] घाला, तुषार ।
हिमिल-वि० [सं०] जो बर्फमे परिणत हो गया हो ।

हिमेसु-वि० [सं०] हिमकलेशित, हिमात ।
हिमेस-पु० [सं०] हिमालय ।
हिमोचरा-स्त्री० [सं०] कपिद्राक्षा ।
हिमोत्पन्ना-स्त्री० [सं०] दे० 'हिमशर्करा' ।
हिमोज्जवा-स्त्री० [सं०] शरी; क्षीरिणी ।
हिमोक्ष-पु० [सं०] चंद्रमा ।
हिम्य-पु० [सं०] बृद्ध ग्रह ।
हिम्यत-स्त्री० [अ०] साहस; वीरता, बहादुरी; पौरव,
पराक्रम । **मु०** -**पञ्चना**-साहस होना । -**हारना**-पस्त
हो जाना, साहम छोड़ना, किसी कामके करनेमें साहम्का
न रह जाना ।
हिम्यती-वि० साहसी; बहादुर, वीर; पराक्रमी, पुत्रपार्थी ।
हिम्य-वि० [सं०] मर्द; बर्फीला; बर्फसे ढका हुआ ।
हिम्य-पु० हृद्, पृथ्व, मन; वक्षःस्थल, छाती, सीना ।
मु० -**हारना**-हिम्यत हारना, शारीरिक वा मानसिक
दृष्टिसे हक जाना ।

हिबरा-पु० दे० 'हिय' ।
हिबर्-अ० बर्ष ।
हिवा-पु० दे० 'हिय' । **मु०** -**जलना**-बहुत गुस्सा
होना । -**ठंडा होना**-कलेजा ठंडा होना, हृदय शीत
होना, सुख, आनंदका अनुभव होना । -**फटना**-कलेजा
फटना, शोक, दुःख, पीड़ाके अतिरेकका अनुभव होना ।
-**भर आना**-कल्याण होना, शोककातर होना, दुःखार्त
होना । -**भर लेना**-शोक, दुःख, पीड़ा आदिके कारण
करी सौम लेना; शोक, दुःख पीड़ा आदिकी अभिव्यक्ति
करना । -**शीतल होना**-दे० 'हिय ठंडा होना' ।
-**(वे)का अंधा**-भीतरी आँखोंसे होन, अज्ञान; मूर्ख,
बेवकूफ । -**की फटना**-सप-असदका विवेक न रहना,
ज्ञानका न रहना । -**पर पत्थर धरना**-सम कर लेना ।
-**में खोम-खा लगना**-कटेपर खोम लगनेकी तरह
मनमें बहुत पीका होना । -**खगना**-गलेमे लगना,
भेदना, आलिंगन करना ।

हिवाक्ष-पु० साहस । **मु०** -**खुलना**-बक्का खुलना,
साहम, बढाका आना । -**पञ्चना**-हिम्यन पञ्चना ।
हियैल-स्त्री० पछेली ।
हिरंयु-पु० [सं०] राइ ।
हिर-पु० [सं०] पट्टी; मेखला ।
हिरकना-अ० कि० किसी व्यक्ति वा वस्तुसे सटना,
चिपकना-“...कोड खिरकीमें कोड हिरकी किमारमें”-
रामरस ।

हिरकाना-अ० कि० निकट ले जाना, सटाना, रफाई
कराना ।
हिरयुगी-स्त्री० एक प्रकारकी नदिया कपास ।
हिरण-पु० [सं०] स्वर्ण; वीर्य, शुक्र; बराटक, क्षीरी; *
हिरन, घुग ।
हिरण्य-वि० [सं०] सोनेका, सोनेका बना; सुनहरा ।
पु० ब्रह्मा; एक ऋषि; अग्नीप्रका एक पुत्र; संसारके नौ
खंडोंमेंसे एक । -**कोष**-पु० सूक्ष्म शरीर, आत्माके सप्त
आवरणोंमेंसे एक जो अंतिम है ।
हिरण्य-पु० [सं०] सुवर्ण; स्वर्णपात्र; चाँदी; कोई बहुमूल्य

धातुः संपत्तिः शीघ्रः शुक्रः शीघ्रः एक मानः सित्य पदार्थः
धराः तेजः अमृतः हिरण्यवर्णः एक दैत्यः अश्विभ्राता
एक पुत्रः वि० स्वर्णनिमित्तः । -कण्ड-वि० सोनेके कण्ड-
वाला । -कण्ड-वि० सुनहला इतरबंद धारण करने-
वाला । -कर्ता(रुं)-पु० सुनार । -कवच-वि० सोनेके
कवचवाला । पु० शिव । -कसिपु-पु० कश्यप और
अदितिका पुत्र और प्रमिल अक्त प्रकाशका पिता जिसे
विष्णुने नरसिंहके रूपमें खंभेमें प्रकट होकर मारा था ।
-कामधेनु-स्त्री० स्वर्णनिमित्त कामधेनु (जिसका दान
सोल्ह महादानोंमें परिगणित है) । -कार-पु० सुनार ।
-कृत्य-पु० शिव । -कृत्य-पु० अभि । -केश-
वि० सोनेके बाँकीवाला । पु० विष्णु । -कादि-वि०
सोनेका कटा वा विलप लगावेवाला । -गर्भ-पु० ब्रह्मा
(सोनेके अडेसे कण्ठ होनेके कारण), विष्णुः सूक्ष्म शरीर
धारण करनेवाली आत्मा, मूषात्मा; एक किंग । वि०
ब्रह्मा-संघर्षी । -गर्भ-स्त्री० एक नदी । -ह-पु०
समुद्र । वि० सुवर्ण देनेवाला । -हा-स्त्री० पृथ्वी; एक
नदी । -नाभ-पु० मैनक पर्वत; विष्णु; एक तरहका
मकान जिसमें पूरव, पश्चिम और उत्तर बड़े-बड़े कमरे
हैं । -पर्वत-पु० एक पहाड़ । -पुर-पु० असुरोंका एक
आकाशीय नगर । -पुरुष-पु० स्वर्णनिमित्त पुरुष-
प्रतिमा । -पुष्पी-स्त्री० एक पौधा । -बाहु-पु० शिव;
मीन नदः एक नायासुर । -विह्व-पु० अभि; एक पत्थन;
एक तीर्थ । -माळी(किन्)-वि० सोनेकी माला धारण
करनेवाला । -रत्न-वि० सोनेकी करपती पहननेवाला ।
-रेता(तस्)-पु० अभि; स्वर्णः शिव; चित्रक वृक्ष;
बारह आदित्योंमें एक । वि० स्वर्णशीतवाला । -रोमा-
(मन्)-पु० एक लोकपाल (मरीचिके पुत्र); भीष्मक ।
-कोमा(मन्)-वि० चौद्वे मन्वन्तरके एक ऋषि ।
-वर्चस्-वि० सोनेकी सी कालिवाला । -वर्णा-स्त्री०
नदी । -वाह-पु० मीन नदः शिव । -वीर्य-पु०
अभि; मृद । -शकल-पु० सोनेका छोटा टुकड़ा ।
-श्व-पु० एक पर्वत । -शीघ्र-पु० एक पर्वत । -शीघ्री-
(विन्)-वि० सोना बमन करनेवाला (एक पक्षी) ।
-संकाश-वि० सोनेकी तरह चमकनेवाला । -सर-
(स्)-पु० एक तीर्थ । -स्थाल-पु० सोनेका कटोरा ।
-सू-स्त्री० सोनेकी माला वा सिकरी ।

हिरण्यक-पु० [सं०] स्वर्णकी इच्छा ।

हिरण्य-वि० [सं०] सोनेका (वै०) ।

हिरण्य-पु० [सं०] देवसंपत्ति, देवत्व; अणुभूषण ।

हिरण्या-स्त्री० [सं०] अभिवृद्धि एक मित्र ।

हिरण्याक्ष-पु० [सं०] हिरण्यकशिपुका यमज भाई जिसे
विष्णुने वराहका रूप धारण कर मारा था । -रिपु,-हर-
पु० विष्णु ।

हिरण्याश्व-पु० [सं०] मोल्ह महादानोंमें एक जिसमें
सोनेका घोड़ा दान किया जाता है । -रथ-पु० द्वासार्य
स्वर्णनिमित्त अथ और रथ (मोल्ह महादानोंमें एक) ।

हिरण्य-पु० दे० 'हृदय' ।

हिरदा-पु० हृदय ।

हिरदावल्-पु० सोनेके मीनेपरकी औरी जी अशुभ है ।

हिरण्य-पु० हरिण, वृष । -सुरी-स्त्री० एक बरसती
कता । सु०-हरी आवा-चंगत हो जाना, छुट हो जाना;
पुरत मागकर दूर हो जाना ।

हिरणाकुस-पु० दे० 'हिरण्यकशिपु' ।

हिरण्योटा-पु० भृगुनायक, हिरण्यका बच्चा ।

हिरण्य-स्त्री० [अ०] पेशा; हुनर; चालाकी, धूर्तता । -
बाज़-वि० चालाक, चालबाज़ ।

हिरण्यग्री, हिरमिग्री-स्त्री० [फा०] एक तरहकी लाल मिट्टी
जिसमें दीवार आदि रंगते हैं; एक तरहका लाल फूल
जिससे कपड़े रंगते हैं; एक रंग ।

हिरण्य-स्त्री० दे० 'हिरण्य' ।

हिरा-स्त्री० [सं०] सिरा ।

हिरास-पु० अफगानिस्तानकी सीमाके पासका एक स्थान ।

हिरानी-वि० हिरान्य-सम्बंधी । पु० एक तरहका घोड़ा (जो
हिरानमें होता है) ।

हिराना-अ० कि० सो जाना, छुट हो जाना, गायब हो
जाना; अस्तित्व न रह जाना, अभाव होना; सुप्त-सुप्त हो
देना, अपनेकी भूल जाना; सम्पन्न रह जाना; अत्यंत
आश्चर्यान्वित होना; नष्ट होना । म० कि० याद न रहना,
विस्मरण करना, भूलना; दुदवाना, खादकी गरजमें
आदि पशुओंकी खेतमें रखना ।

हिरावल्-पु० दे० 'हिरावल्' ।

हिरावल्-स्त्री० [फा०] हर, मय, दहशत, निराश्य, भःवृत्ती ।
वि० दे० 'हिराम्'-'यो कहि सुमन हिय है हिराम्'-
रामरमा ।

हिरावल्-स्त्री० [म०] निगरानी, पहरा; नजरबंदी रखना
जान । सु०-में करना, में लाना-हवालातमें रखना ।
हिराम्-वि० [फा०] भीत, डरा हुआ, प्रमद; निराश
मायुस ।

हिरावल्-पु० [म०] रक्त ।

हिरावल्-पु० दे० 'हिरावल्' ।

हिरावल्-स्त्री० [अ०] दे० 'हिरावल्' ।

हिरा-स्त्री० [अ०] मोम, लालच; नृणा, बवस । सु०-
करना, होना-लालच होना । छुटना-लालच होना ।
-विलाना,-देना-लालच देना ।

हिरा-वि० लालची ।

हिराहिरा-अ० दूसरोंको करने देखकर, देखा-देखी ।

हिरा-वि० लालची । -टह-पु० ऐसा लालची आदमी
जिसे दूसरोंकी देखा-देखी लालच आ जाय ।

हिरावल्-अ० कि० 'हिरावल्'; हिरावल्; भिमकन ।
म० कि० सिकोइना ।

हिरावल्-स्त्री० [अ०] हिरावल्-'सपनेमें लालच बहुत लयि
रोड़े अकुलाय । जागत हू पिय हिय लगी हिरावल् तऊ
न जाय ।'-मतिराम; भिमकनकी किता, भिमक; उर्बंग,
कहर-'जो बागों तो कीक नाका, रोके रहित न हिरावल्'
-धर ।

हिरावल्-पु० अल्फकी तरह, हिरावल् ।

हिरावल्-म० कि० 'अल्फकी तरंगित करना, पानीमें
कहर उठाना ।

हिरावल्-पु० दे० 'हिरावल्' । सु०-देना-पानीकी

बन्केसे हिलाना, तरंगित करना । -लेना-तरंगित होना ।

हिलग-खी० परचनेका भाव, मेलजोल; प्रेम ।

हिलगना-अ० कि० परचना; मेलजोल होना, हिरकना; उलझना, फँसना; पास आना ।

हिलगाना-स० कि० परचाना; मेलजोल कायम करना; फँसना, उलझाना; पास लाना ।

हिलना-अ० कि० अस्थिर होना, चंचल होना; किसी स्थानपर स्थिर, स्थित, जमी, अवस्थामे इधर-उधर होना;

किसी स्थानमे इधर-उधर जाना, डोलना, होना, कौपना; जलमे प्रविष्ट होना; परचना, परिवर्तित होना । **मु०**

हिल जाना-परच जाना । **हिलना-डोलना-चंचल होना;** धूमना-फिरना; काम धाम करना; उधम, प्रयत्न, कोशिश करना । -**मिलना-पुलना-मिलना**, एक हो जाना; भेंट मुलाकात करते रहना ।

हिलमोचि, हिलमोचिका, हिलमोची-खी० [स०] एक शाक ।

हिलसर-खी० एक तरहको मछली ।

हिलाना-स० कि० चंचल करना, अस्थिर करना, किसी चीजको इधर उधर करना, डोलाना; किसी वस्तु या व्यक्तिको किसी स्थानमे हटाना, स्थितिकाना; कौपना; जलमे प्रविष्ट कराना; परचाना; किसी वस्तुको ऊपर-नीचे, दायें-बायें ले जाना, डोलाना ।

हिलाल-पु० [अ०] नया चाँद; नया और आखिरी चाँद ।

हिलोर-खी० हिल्लोर, जल-नरंग ।

हिलोरना-म० कि० 'हिल्लोरना'; † दे० 'हिल्लोर' ।

हिलोरा-पु० हिलोर । **मु०** -लेना-हिलोरा लेना, तरंगित होना ।

हिलोक-पु० हिलोल, लहर ।

हिल्लोक-पु० [स०] लहर; मनकी तरंग; हिन्दु राग; एक प्रकारका रतिबंध; धुन, सनक ।

हिल्लला-खी० [म०] मृगकिरा नक्षत्रके सिरके पामके पाँच छोटे तारे ।

हिर्वा-पु० बर्फ; तुषार, पाला ।

हिर्बच्छा-पु० हिमाचल; पाला, हिम; बरफ ।

हिर्वा-पु० हिम, पाला । **मु०** -होना-बहुत शीतल होना ।

हिस, हिस्स-खी० [अ०] अनुभूति; किसी ज्ञानेन्द्रियके द्वारा जानना, संवेदन; गति, नेष्टा ।

हिस्ताब-पु० [अ०] विमती, गणना; किसी आर्थिक व्यवहारका निबण, लेन-देन, खरीद-बेची आदिका ब्योरा, लेखा; गणित विधा; गणितका प्रधान; भाव, निमित्त; नियम, रीति; हाक; दंग, तरीका; लेन-देन; राय, खयाल, समझ; कियायत । -**किताब-पु०** आर्थिक व्यवहारका ब्योरा, लेखा; लेन-देन; बही-खाता; (खा०) दंग, तरीका ।

-**घोर-पु०** वह जो हिमाव करदेमे कोई रकम दवा ले । -**हो-पु०** हिस्ताब जाननेवाला, गणितज्ञ । -**दार-पु०**

हिस्ताब रखनेवाला । -**बहरी-खी०** वह बही जिसमें आम-दनी खर्चका ब्योरा लिखा जाय । **मु०** -करना-देना-पावना समझना, जोड़ना; देना-पावना चुकता करना । -**चुकता करना-देना** चुका देना । -**तकब करना-हिस्ताब मँगना**, हिस्ताब मसहानि-को कहना । -**देना-हिस्ताब समझना** । -**न होना-बेहिस्ताब होना**, गिनती न होना । -**पर खदना-बही** या खातेमें लिखा जाना । -**पाक करना-देना** चुका देना । -**पूछना-हिस्ताब मँगना** । -**बेबाक करना-खातेमें कुछ बाकी न रहने देना** । -**बैठना-ब्योत** बैठना, सब कामों, आवश्यकताओंका उपाय निकाल जाना; मेल मिलना । -**साक करना-हिमाव चुकता करना** । -**से-अंदाजसे**, परिमित मात्रामे, कियायतमे (हिस्ताबसे खर्च करो, खली); कमसे, 'मात्रामे (जिस हिमावमे ज़र बटेगा)' : हिमावके मुताबिक । (**किसीके**) -**से-...** की दृष्टिमे, 'के बिचारते' । -**से चकना-नाए-तोलपर काम करना**; कियायतमे खर्च करना ।

हिस्ताबी-बि० हिमाव जाननेवाला; हिस्ताबसे चलनेवाला ।

हिसार-पु० [अ०] घेरा, इडाता; परकोटा; किला । **मु०** -करना-घेरु डालना । -**बाँधना-घेरा** डालना; चारों ओर मैनिकोंकी पाँव या कोई दूसरी रोक खड़ी कर देना ।

हिमिया-खी० ईर्ष्या-‘जो ऐसहि हिसिया करहि नर बिबेक अभिमान’-रामा०; किसीमे चढ़ा-ऊपर करनेकी भावना, ढोह ।

हिस्तेरिया-पु० [अ०] एक तरहका मूर्च्छा रोग जो विशेषतः स्त्रियोंकी होता है ।

हिस्सा-पु० [अ०] भाग, अंश, खूब; बँट्टा, बख़रा; विभाग; अंशाधिकार, माझा; अंग (जिनके किसी हिस्सेमे) ।

-**बख़रा-पु०** अंश, भाग । **[मु० -होना-बँटवारा होना]**, जायदालका हिस्सेदारोंमे बँट जाना । -**रखरी-अ०** हिस्सेके अनुसार, जितना जिसके हिस्सेमे आये ।

-**(रस्से)दार-पु०** अंशका अधिकारी, जिसका किसी मपत्ति या रोजगारमे हिस्सा हो, माझी । -**दारी-खी०** हिस्सेदार होना, माझा । **मु०** -लेना-शिरकत करना, भाग लेना । -**(रस्से)करना-बँटना** । -**में आना-बँट्टेमें पडना**, बँटवारेसे मिलना ।

हिदिनाना-अ० कि० दे० 'हिनदिनाना' ।

हींग-खी० दे० 'हिंग' ।

हीछना-अ० कि० इच्छा करना; चाहना; कामना करना ।

हीछा-खी० इच्छा, कामना ।

हीहना-स० कि० पेंचोकर गंदा करना (भोजन); बुझकना (बुदेल) ।

हीहाल-पु० [स०] हिताल वृक्ष ।

हीस-खी० घोड़ेका हिनहिनाहट ।

हीसना-अ० कि० घोड़ेका हिनहिनाना ।

हीही-खी० हँसनेसे उत्पन्न ध्वनि, शब्द ।

ही-अ० इसका प्रयोग मिश्रण, सीमा, कमी, अकेलापन, अनन्यता आदिके अन्वयोंपर होता है। सभी अवस्थाओंमें यह किसी बातपर जोर देने तथा मिश्रणके लिए ही प्रयुक्त मिश्रता है । पु० हिण, हदय । * अ० कि० थी ।

हीअ-पु० दे० 'हिय' ।

हीक-खी० एक प्रकारकी दुर्गंध जिसमे प्रायः 'मनली' जाती

है; हिचकी । सु० - झारना-बार-बार बुरी तरह कँकना, गंधाना ।

हीचनल-अ० कि० हिचकिचाना, किसी कामके करनेमें आना-पीछ देखना ।

हीछना-अ० कि० दे० 'ही छना' ।

हीछा-छो० दे० 'ही छा' ।

हीठना-अ० कि० जाना, निकट जाना, पास फटकना ।

हीच-वि० [स०] अधम, नीच; निच; गधा; रक्षित, वक्षित; परित्यक्त; निम्न कोटिका; जिसकी आर्थिक स्थिति बुरी हो; दीन; दबता हुआ, कमजोर; अनुपयुक्त; पद; मार्ग; स्थान आदिसे च्युत, भ्रष्ट; सदोष; अपूरा; क्षीण । पु० अत्यन्त गबाह, दोषपूर्ण साक्षी; व्यवस्थित, बढान; कमी, अभाव; अधम नायक (सा०) । -कर्म(अर्थ)-वि० धार्मिक दृष्टिमें विहित कर्मों-भाव, वधादि-को न करनेवाला; नीच काम करनेवाला । -कुल-वि० नीच कुलका, कर्मदित बरका । -कुल-पु० धुलकुल (?) ।

हीच-वि० जिसका स्वभाव खाली हो । -कल-वि० यक्ष न करनेवाला । -कल-पु० काम्य-संबंधी एक दोष जिसमें वर्णित विषयोंके क्रमका निर्वाह न हुआ हो ।

-चारित-वि० कदाचारी, बुरे आचरणका । -ज-वि० नीचकुलमें उत्पन्न । -जाति-वि० नीच जातिका; जाति-च्युत । -मायक-वि० जिसका नायक अधम हो (ना०) ।

-पक्ष-पु० नर्क द्वारा समक्षित न होनेवाला पक्ष, दलीलकी दृष्टिमें कमजोर पक्ष । वि० अरक्षित ।

-प्रतिष्ठ-वि० प्रतिष्ठाका पालन न करनेवाला । -बल-वि० निर्बल, कमजोर । -बाहु-पु० शिवका एक गण ।

-बुद्धि-अति-वि० बुद्धिहीन, बूढ़, मूर्ख । -मृष्य-वि० कम कीमतका । पु० अल्प मूल्य । -दान-पु० बौद्ध मतकी दो शाखाओंमें एक (दूसरी शाखाका नाम 'महायान' है-पहले हीनयानका ही प्रवर्तन हुआ और इसके अनुयायी बुद्धके वचनकी ही प्रमाण मानते हैं) । -घोर-वि० योगभ्रष्ट । -घोषि-वि० बुरे खानदानमें उत्पन्न, नीच जातिका । -हस-पु० काम्यगत एक दोष जो रसबिरोधी भावके प्रसंगकी नियोजनमें होता है । -रोमा(मज्ज)-वि० कंशहीन, रंजा । -वर्ग-वर्ण-पु० शुद्ध वर्ण; नीच जाति ।

वि० नीच जातिवा; शूद्रवर्णका । -बाह्-पु० दोषपूर्ण तर्क; विरोधी बात या दलील; कमजोर दलील; दोषी प्रमाण, साक्ष्य । -बाह्(विज्)-वि० परस्पर विरोधी बात कहनेवाला, (ऐसा व्यक्ति या वार्ता) जिसकी पूर्वापर कही बातें असंगत हों, विरुद्धार्थवादी; गुंता, झूठ ।

-धीर्य-वि० बलहीन, कमजोर । -सख्य-वि० नीचीसे मित्रता करनेवाला । -सेवा-छो० नीचोंकी दखल ।

हीच-पु० [अ०] काळ, अमाना । -ह्वात-पु० जीवन-काळ । अ० जीवनकाळमें, जीतेजी; जिंदगीमें । -ह्वाती-वि० जिसपर जिंदगीमें अधिकार रहे, जीवनकाष्ठीके लिए प्राप्त । -कास्तकार-पु० वह कादतकार जिसे अपनी बनीमपर जिंदगीमें कष्ट रक्खेका अधिकार हो ।

हीचक-वि० [स०]...से बंचित, रक्षित ।

हीनका-छो०, हीनका-पु० [स०] सदोषता; राहित्य,

अभाव; नीचता; बुराई ।

हीनका-वि० [स०] अंगहीन, विकलांग ।

हीनगी-छो० [स०] छोटी चोरी ।

हीनगु-वि० [स०] किरणरहित, अंधेरा ।

हीनार्थ-वि० [स०] जिसका प्रयोगन सिद्ध न हुआ हो ।

हीनित-वि० [स०]...से बंचित; ...से वियुक्त; घटाया हुआ ।

हीनोपमा-छो० [स०] उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें बनेकी उपमा छोटेसे दी जाय ।

हीच, हीचरा, हीचा-पु० दे० 'हिय' ।

हीर-पु० मार कष्ट, गूहा; धीर्य, क्षांतिक; [स०] एक रत्न, हीरा; वन; क्षिप; सिद्ध; सत्य; एक वृत्त; मोतिबोली माला ।

हीरक-पु० [स०] हीरा नामक रत्न। एक वृत्त । -जर्बली-छो० किसीके शासन, विवाहित जीवन आदिके साठमें वर्षका उत्सव; किसी मन्त्रा आदिकी स्थापनाका। माठवां वाविकोत्सव, 'दावमंड जुबिकी' ।

हीरा-पु० एक बहुमूल्य रत्न जो अत्यन्त कठिन और भेन कांतिवुक्त होता है, हीरक; (सा०) उत्तम व्यक्ति वा वस्तु । छो० [स०] लक्ष्मी; पिपीथिका; कादमरी; नैना-तुका (?) । -बाह्मी-पु० बहुत नैक आदमी, दल, मानुस । -कट-वि० हीरकी तरह बड़ा हुआ ।

-कसीय-पु० गंधके योगमें उत्पन्न कोहका विकार । -होपी-छो० विजयमालका गोत्र । -मन्त्री-पु० मन्त्र, बहिया धान । -मन्त्र-पु० कंककधामे वर्णित मोक्षके एक कवियन जाति । सु० -खान-आत्महत्या करनेमें विचारमें हीरेका कल वा सेना, ईश्वरमें जल देना ।

-चाटना-हीरा चाटकर मर जाना । - (रे)की कर्मा खाना वा चाटना-दे० 'हीरा खाना' ।

हीर-पु० [म०] धीर्य, शुक; [अ०] जूनेकी एबी, † पन, † का कीचड़ । छो० [का०] छोटी इलायची ।

हीरना-छो० [म०] क्षाति । * अ० कि० दे० 'हिलना' ।

हीर-पु० [अ०] बहाना, मकर, बनापट; बनीला, रीत-गार, काम; † कीचड़ । -ह्वाला-पु० दाकमटीक ।

- (ले)मर-बाह्-साह्-वि० बहाने बनानेवाला । -गरी-बाह्-साह्-वि० बहानेबारी, करेव ।

सु० -निकलना-उपाय निकल आना । -होना-बहाना होना; नोकर होना; कोशिश होना ।

हीरका-छो० ईश्वर; स्वर्ग ।

हीही-छो० जोरमें हँसनेकी ध्वनि, उच्च हास्य-ध्वनि, होना प्रदक्षिण करते हुए हँसना ।

हुँ-अ० मान करते समय बात सुनने वा उम बागकी स्वीकृतिका लयक शब्द; हाँ; * दे० 'हू' ।

हुँकना, हुँकरना-अ० कि० दे० 'हुँकारना' ।

हुँकार-पु० [स०] दस्युक्त होकर 'हुँ' शब्ध करना; गर्जना, लककार; सूखका गुराँदा; धनुष्की टेंडोर ।

हुँकारना-अ० कि० दस्युक्त होकर 'हुँ' शब्धका लघ्वारण करना; गर्जन करना; चिन्हावना । स० कि० बुद्ध, कर्माङ्ग सगरे, प्रमिथोमिता आदिमें अपने शत्रु, प्रतिद्वंद्वी आदिके लककारना ।

हुँकारी-छो० 'हुँ-हुँ' शब्ध द्वारा स्वीकृति सूचित करनेक

किया; बिकारी। **हुं**—भरना—कहानी सुनते समय 'हुं-हुं' शब्द द्वारा कहानी सुनते रहनेकी सूचना देना; किसी कामके लिए स्वीकृति देना।

हुंखत-पु० [स०] हुंकार; स्मरकी गुराण्ट; मेकमन; मंत्र; रंभाकेका शब्द।

हुंखति-खी० दे० 'हुंकार'।

हुंभिका-खी० [स०] एक राग।

हुंख-पु० [स०] व्याघ्र; मेढा; ग्रामशुकर; राक्षस; मूर्ख व्यक्ति; एक जनपद; नाजकी बाल।

हुंख-पु० [स०] शिवका एक गण; अगका निम्नेष्ट होना, लकवा मार जाना।

हुंखैस-पु० [स०] शिव।

हुंका-पु० बरकी ओरसे कन्याको दिया जानेवाला वन; देतके मालिकको ठेकेदारसे नियम परिमाणमें मिलनेवाला माल। **खी०** [स०] आगके चिटखनेका शब्द।

हुंकार-पु० मेढिया।

हुंकाव-पु० हुंकीकी दम्प्री; हुंकीकी टर।

हुंखि-खी० [स०] विहित भोजन।

हुंखिका-खी० [स०] दे० 'हुंकी'; मेढाके निवाहके लिए प्राचीन कालमें दिया जानेवाला आदेशपत्र।

हुंकी-खी० वह पत्र जो आपनमें सेन-सेन करनेवाले महाजन किसीकी कृपा दिखातेके लिए भेजते हैं, महा-जनी 'बैक'; कर्ज देनेका एक तरीका जिसमें महाजन मरकी रकम मूलमें पहले ही शामिल करके एक बार या कितन करके लेता है।—**बही-खी०** हुंकीको भूयो रखनेकी बही; वह बही जिसमेंमे हुंकी काटकर दी जाय। **हुं**—करना—हुंकी लिखना।—**खकी रखना**—किसी वजहसे हुंकीको सुननेसे रखना।—**पटना-हुंकी** के रुपयेका अदा होना।—**भेजना-हुंकी** द्वारा द्रव्य नुकता करना, अदा करना।—**मकारना-हुंकी**में छिपी रहकर देना स्वीकार करना।

हुँस, हुँसे-प्र० हिंदीके कारण तथा अपाठान कारकीकी विभक्ति, मे, डारा; (किसीकी) ओरसे; (किसीके) लिए, हेतु, वास्ते—'तुम हुँस मेंह गयेउ परदेसी'—प०।

हुं—अ० भी।

हुंजी-पु० गीदकीके बोलनेकी आवाज। † अ० बर्हा।

हुंभावा-अ० कि० गीदका 'हुंजी हुंजी' शब्द करके बोलना।

हुक-पु० [अ०] एक ओर मुड़ी कील, बँटिया जिसमें या जिससे कोई चीज फँसायी जाती है। † **खी०** गर्दन या पीठकी नमोका तनाव जिससे उस अवयवकी हिलाना-डुलाना सुविधक होता है और ऐसा करनेसे बिल्क होती है।

हुकरी-अ० कि० बार खाली जाना, निशाना चूकना।

हुकना-पु० [अ०] दबाकी बत्ती या पिचकारी जो पालना आनेके लिए दी जाय, बतित।

हुकरना-अ० कि० दे० 'हुंकरना'।

हुकरना-अ० कि०, म० कि० दे० 'हुंकरना'।

हुकमी-पु० दे० 'हुकम'।

हुकर-हुकर, हुंकर-हुंकर-खी० शारीरिक कमजोरी, अय,

जांझा आदिके कारण छत्रतिका तीव्र होना, कलेजेका बली-बली बचकना।

हुक-पु० [अ०] 'हक'का बहु०।

हुकमत-खी० [अ०] शासन, राज्य; अधिकार, प्रभुत्व।

हुं—**खलाना**—अधिकारका उपयोग करना; दूसरेपर हुकम चलाना।—**जलाना**—अधिकार, प्रभुत्वका प्रदर्शन करना।

हुका-दे० 'हुक्का'।—**तमाख-पु०** हुका पिलानेका संस्कार (करना, होना)।—**पानी-पु०** दे० 'हुक्का पानी'।

हुकना-पु० [अ०] तंबाकू पीनेका, नरकुली दौ नलियों और फरशीके योगमें प्रस्तुत वन, गुंथगुंथी; जबाहिरात रखनेकी विविधा।—**पानी-पु०** हुका पीने-पिलानेका व्यवहार, आति-पराद्रीका संवध। [**हुं**—**पिलाना**—आवगत करना।—**बंद करना**—बिरादरीसे खारिज कर देना, खान-पान बंद करना।]—**बरबार-पु०** हुका लेकर साथ चलनेवाला टहलू।—**बाज़-पु०** जो बहुत हुका पीने, मगारी, बानीगर। **हुं**—**ताआ करना**—फरशीका पानी बदलना और देवैकी तर करना।—**भरना**—चिलमपर तंबाकू और आग रखकर हुक्का तैयार करना।

हुकाम-पु० [अ०] 'हाकिम'का बहु०।

हुकम-पु० [अ०] आज्ञा, आदेश; फैसला; इरई फैसला, फतवा; इजाजत; हुकूमत, अधिकार; ताशका एक रंग, काला पान।—**क़तई-पु०** अनिम निर्णय।—**बग़री-पु०** वह आज्ञा जो सब बग़ह फ़िरावी जाय।—**दरमियानी-पु०** वह आज्ञा जो अंतिम निर्णय या क़तई हुकमके पहले दी जाय।—**नामा-पु०** आज्ञापत्र।—**बरबार-वि०** आज्ञापत्रक।—**बरबारी-खी०** आज्ञाका पालन, फरमा-नरदारी।—**शम-वि०** हुकम चलानेवाला; शासन करने-वाला।—**रानी-खी०** हुकूमत, शासन। **हुं**—**की**

तासीक—आज्ञापालन।—**खलना-हुकूमत** होना, अधि-कार होना।—**खलाना**—आज्ञा प्रचारित करना; हुकूमत करना।—**बजा खाना**—आज्ञा पालन करना।—**में होना**—आज्ञाधीन होना; अधिकारमें होना।—**खगाना**—पक्षी राय देना, फैसला करना।

हुकमी-वि० अपूक, खता न करनेवाला (—दबा); आज्ञा-धीन, जो हुकम मिले वह करनेवाला (—बदा)।—**बंदा-हुकमका** गुलाम।

हुचकी-खी० दे० 'हिचकी'।

हुजरा-पु० [अ०] कोठरी; उपामना करनेका कमरा।

हुजस-पु० [अ०] जनसमूह, भीड़।

हुज़ूर-पु० [अ०] हाज़िर होना, सामने आना, उपस्थिति; दरबार, इजलास; सम्मान्य जनका सरोधन, श्रीमन्, जनाबआली (मातहत कर्मचारी अपसरका तथा बकील-मुस्तार जज-कन्वेक्टर आदिका इती शब्दमें सरोधन करते हैं)।—**तहसील-खी०** स्तर तहसील।—**बाछा-पु०** (सरोधन) श्रीमन्, जनाबआली। (**किसीके**)—**में-दरबारमें**; सामने; मेगामें।

हुजूरी-खी० समीपना; हाज़िरी; शाही दरबार। **पु०** (राजा आदिका) खाम नौकर; दरबारी।

हुजत-**की०** [अ०] दलील; बहस; विचार, हक।
हुजती-**वि०** हुजत करनेवाला, हकवादी।
हुज-**पु०** [म०] मेघ; एक सुखाका वा बुझका उपकरण; चोरी के निवारणार्थ जमीन में गाढ़ा हुआ छोटेका कौटा; (रूपपर बना हुआ) मछ-मूच त्यागका स्थान; कपड़ा; [अ०] मोहर, रिश्ते आदिकी कमानीदार छाजन जो हथ्छा-नुसार चढ़ायी-उतारी जा सकती है; सिरका दकन (बर-साती आदिका)।
हुजकना-**अ०** कि० छोटे बच्चे अपने प्रिय व्यक्ति (जिससे वह हिला-मिला हो) के न मिलनेपर रोना, डरना, खाना-पीना छोड़ देना आदि।
हुजक-**पु०** विरहजनित पीडा (विशेषतः बच्चोंकी होने-वाली), दे० 'हुजुक'।
हुजकाना-**स०** कि० तफ्फाना, हुंखित करना।
हुजदंग, **हुजदंगा**-**पु०** ऊपम, उपद्रव, हुलस।
हुजुब-**पु०** [स०] भूना हुआ चिउड़ा।
हुइ-**पु०** [स०] मेघ।
हुइक-**पु०** दे० 'हुइक'।
हुइक-**पु०** [म०] एक गाथा जो डमरूकी लकड़का, पर आकारमें उसमें बका होना है; एक पक्षी, दालूह; भत-वाला आदमी; अर्णाल; मोहा जका हुआ डंढा, लोहबंदा।
हुइका-**की०** हुइकेकी ध्वनि।
हुइर-**पु०** [स०] हथमका शब्द; धमकी।
हुइ-**वि०** बेसुकर; मूढ़।
हुइक-**पु०** हुइक बाजा।
हुइ-**वि०** [स०] हवन किया हुआ; जिसके निमित्त हवन किया गया है। **पु०** शिव; हवन-सामग्री। * **अ०** कि० 'होना' का भूतकार, था। -**अच्छ**-**पु०** अग्नि। -**भुक्**-**(अ०)**-**पु०** अग्नि; चित्रक; एक तारा। -**अग्नि**-**की०** अग्निमार्ग, स्वाहा। -**ओका**-**(कृ०)**, -**ओजन**-**पु०** दे० 'हुजमक'। -**बह**-**पु०** अग्नि। -**शिष्ट**, -**सौच**-**पु०** हवन का बचा हुआ अंश। -**होम**-**पु०** वह आराधन क्रममें हवन किया है।
हुता-**अ०** कि० दे० 'हुत'।
हुताग्नि-**वि०** [स०] हवन करनेवाला; अग्निम हव्य डालनेवाला। **की०** हवनकी अग्नि, यज्ञाग्नि।
हुताव्या-**(सम०)**-**वि०** **पु०** [स०] (मार्टर) किमी अण्डे कार्यमें अपनेकी बलिकर देनेवाला, गहौड़।
हुतास्त-**पु०** [म०] अग्नि; तीनकी सख्या; चित्रक, हुल; भय, नास। -**हृति**-**की०** अग्नि के सहारे चलनेवाली जीविका। -**शाळा**-**की०** अग्निशाळा।
हुताशन-**पु०** [स०] अग्नि।
हुताशना-**की०** [स०] एक योगिनी।
हुताशनी-**की०** [स०] फाल्गुनी पूर्णिमा (जिस दिन होल्का-दहन होता है)।
हुति-**की०** [स०] होम, हवन। * **प्र०** करण और अपा-दानकी विभक्ति।
हुतो-**अ०** कि० दे० 'हुत'।
हुदकावा-**स०** कि० उमावना।
हुदना-**अ०** कि० आश्चर्यचकित होना, ठक रह जाना।

हुइ-**पु०** [अ०] कठफोका पक्षी।
हुइ-**पु०**, **की०** 'हइ'का बहु०; चारों ओरकी सीमा, चतुस्तीमा; चारों दिशाएँ।
हुन-**पु०** स्वर्ण, सोना; स्वर्णमुद्रा, सोनेका सिक्का। **मु०** -**बरसना**-**इत्यका** भाषित्व होना।
हुनवा-**स०** कि० हव्य-एन, वष आदि-अग्निमें डालना आहुति देना; वष करना, होम करना।
हुनर-**पु०** [फा०] कन, कारीगरी; हाथकी कारीगरी; खूबी; निपुणता; योग्यता। -**अंद्**-**वि०** हुनर जानने-वाला; गुणी; निपुण, कुशल। -**अंद्दी**-**की०** कारीगरी; कुशलता, निपुणता।
हुना, **हुना**-**पु०** दे० 'हुन'।
हुनाब-**पु०** [अ०] दे० 'हनाब'।
हुनाबी-**वि०** दे० 'हनाबी'।
हुन्व-**की०** [अ०] प्रेम, सुहृद्वत्; मित्रता; चाह।
हुन्हुलवतन, **हुन्हुवतन**-**की०** [म०] स्वदेशप्रेम, वननकी सुरम्भन।
हुमकना, **हुमगना**-**अ०** कि० उल्लसित होना, आनन्द-तिरकेसे उल्लसना-कूदना; छोटे बच्चोंका अलङ्कृतके माथ लम्बना, घुमकना; चोट करनेके लिए पैरवो फुताये उठाना तानना; पैरके पूरे जोरसे किमी वस्तुको ठेलना।
हुमसना, **हुमसावना**-**स०** कि० मनमें कामना, इच्छा; विचार आदि उठाना, हृदयके भावों, मनमें विचारोंको उत्तेजित करना; उठाना, खडा करना।
हुमा-**पु०** [फा०] एक कविपद पक्षी (बड़ा जाना ते नि, यह क्रमके सिरमें सुन्नर जाव बकरात्रा हो जाय; यह हमेशा उड़ता रहना है, हड्डियाँ खाना है और शिमीयें नहीं खाना)।
हुमाई-**वि०** हुमा-सवधी; नायबशाही।
हुमेल-**की०** शिबोंके गलेका एक गहना जो अशकयें खपेयी या डम आकारके मोटे-चोटीके लकड़ीदार टुकड़ोंमें कौटा जोड़कर और ऊन्हे लागोंमें गुँथकर पहननेके योग्य बनाया जाता है (पशुओंके गलेका भी यह गहना है)।
हुरकनी-**की०** बेइया।
हुरदंग, **हुरदंगा**-**पु०** दे० 'हुइदग'।
हुरमत-**की०** [अ०] इज्जत, आबरू; क्वाई, प्रतिष्ठा।
हुराका-**वि०** प्रतिष्ठित, इज्जतदार। -**मु०** -**उतारना**, -**लेना**-**आबरू** लेना; इज्जत विगाड़ना।
हुरमति-**की०** दे० 'हुरमत'। -**कहे** कबीर बाप राम राय, **हुरमति** राखहु मेरी'-कबीर।
हुरहुर-**पु०** एक बरसानी पीषा जिसके कर भेद होते हैं और जो दवाके भी काम आता है।
हुरहुरिया-**की०** एक चिकित्सा।
हुरिबक-**पु०** [स०] मिषाद और कबलीसे उत्पन्न एक संकर जाति।
हुरिडाई-**की०** डोली खेलनेवाली।
हुरिदार-**पु०** डोलीका राग-रंग करनेवाला, डोली खेलनेवाला।
हुइक-**पु०** [स०] (बाषीका) अकड़।
हुइमी-**की०** शुल्काका एक प्रकार।

हुरी-पु० [अ०] एक प्रकारकी बर्धनि ।

हुड-पु० [सं०] दोधारा छुरा । -मारुका-खी० लंबी कटार ।

हुडकना-अ० कि० बमन करना, बै. करना ।

हुडकी-खी० उलटी, बमन, कै ।

हुडना-अ० कि० काठी आदिका ठेला जाना ।

हुडसना-अ० कि० उल्लसित, आनंदित होना; स्फुरित होना, उमड़ना; * सोमित होना-‘हिये हुडमें बलमाक सुहाय’-रसविकास । *स० कि० उल्लसित करना ।

हुडसाना-स० कि० आनंदित करना । * अ० कि० दे० ‘हुलसना’ ।

हुडसी-खी० हुलाम, उल्लास, मनकी तरंग; गोस्वामी तुलसीदासकी माताका नाम (कुछ लोगोंके मनमें) ।

हुडहुड-पु० दे० ‘डुडड’ ।

हुडहुडी-खी० [सं०] आनंद-मगलके अवसरपर उभरित शिवीका अथवा शब्द ।

हुडामका-खी० [सं०] एक अक्ष ।

हुडाना-स० कि० दे० ‘हुलना’ ।

हुडस-पु० उल्लाम, मनकी उमंग, आनंदकी उठान; उत्साह । † खी० लुपनी । -दानी-खी० नम रखनेकी शिविया, नसदानी ।

हुडसी-वि० उल्लामपूर्ण, आनंदयुक्त; उत्साहपूर्ण ।

हुडिग-पु० [सं०] मध्यदेशका एक भाग ।

हुडिया-पु० [अ०] वैद्य; शस्त्र; नख-शिक्षा, मक्ख-सूत्रन का धोरा । -नामा-पु० शक्र मूरत आदिका विवरण-पत्र । सु०-कराना; लिखाना-भंगे या खोये हुए आदमीकी पहचान पुलिसमें लिखाना । -तंग होना-परेशानीमें पड़ना । -बसाना; बयान करना-शह मरतका डाल बनाना । -बिगाडना-बुरी हालत होना; गल बनना । -बिगाड देना; बिगाडना-मुहपर ऐसा मारना कि मूरत बिगड जाय ।

हुडिहुडी-खी० [सं०] भूकना; गर्जन; बिबाहके समय गाया जानेवाला गीत ।

हुड-पु० [सं०] मेघ ।

हुडका-पु० एक तरहका यंत्र ।

हुडका-खी० डुबनेके पूर्व नावका डगमगाना ।

हुड-पु० [सं०] मूलका एक प्रकार ।

हुडब-पु० शीर-गुल, हो-हन्ना; उत्पात, ऊधम; दगा-फसाव; गडबड ।

हुडस-पु० एक मात्रिक छंद ।

हुड-अ० किसीकी अकरणीय कार्य करने या करनेके प्रयत्न से विरत करनेके लिए छटकेसे मुँहमें निकलनेवाला एक शब्द; पछा-पछी आदिको भगानेका शब्द ।

हुडिबार-वि० दे० ‘होशियार’ ।

हुडैन-पु० [अ०] अलीके दुमरे बेटे जो करवालाके युद्धमें शहीद हुए । -बंद-पु० जंगलमें लुके हुए जानीके दो छल्ले जिन्हें सुसज्जमान शियाँ मुहरमने दिनोंमें बच्चोंको पहना देती हैं ।

हुडैकी-पु० एक तरहका चर्मपात्र; एक तरहका अंगूर; एक रागिनी । -काहवा-पु० एक राग ।

हुडन-पु० [अ०] मकार, खुरी; सुदरता, काव्य; होमा ।

-परस्त-वि० सौंदर्यकी पूजा करनेवाला, सौंदर्यमें मो ।

-परस्ती-खी० सौंदर्य-प्रेम, सौंदर्योपासना । -शिवस-

वि० सौंदर्योपासक । - (है) सुवादा-पु० सज्ज

सौंदर्य । -झब-पु० (किसीके विषयमें) अच्छा सुमान,

मद्दबन । -सलब-पु० किसी चीजको इशारेसे मँगाना,

खरदरीमें मँगाना । हुडनका आलस-खरदरीका जमाना ।

हुडबार-वि० दे० ‘होशियार’ ।

हुडब-पु० [सं०] एक नरक ।

हुड, हुड-पु० [सं०] एक गंधर्व ।

हु-अ० दे० ‘डु’; दे० ‘हू’ । अ० कि० उत्तम पुरुषके एक-बचनके साथ प्रयुक्त होनेवाला ‘होना’ क्रियाका वर्तमान-कालिक रूप । * सर्व० ही, मैं ।

हुकना-अ० कि० ‘हु’ शब्द करना, मुँकार करना, गर्जन करना; मानसिक या शारीरिक पीड़ासे जोर-जोरसे रोना, पीड़ाके कारण श्वाका रँमाना, रोटना, हुडकना ।

हुकार-पु० [सं०] दे० ‘हुकार’ ।

हुठ-वि० सदे तीन ।

हुठा-पु० माटे तीनका पहाड़ ।

हुड-खी० सिचाई आदि जैतीके कामोंमें किसानोंका आपसकी सहायता ।

हुँस-खी० किसीकी सकारण और अकारण भी कटुक्ति कहते रहनेकी क्रिया, अलंसा; ईर्ष्या, डाह; किसी भी प्रकार किसी वस्तुको पानेकी इच्छा; बुरी नजर ।

हुँसना-स० कि० बुरी नजरमें देखना, नजर लगाना । अ० कि० ईर्ष्या करना, जलना; कुदना, बुरा-भला कहना ।

हु-पु० [सं०] गीदकके बोलनेकी ध्वनि । * अ० भी । -रव-पु० गीदक ।

हुक-खी० सारु; पीडा; कसक; मानसिक पीडा; खटका ।

हुकना-अ० कि० पीडा होना, दर्द करना; सालना ।

हुटना-अ० कि० पिल्लु होना, पृथक् होना; बिगुल होना, मुँह मोड़ना-‘कालवन जंग ते नाहि हूख्यो’-सुजान० ।

हुठा-पु० अँगूठा; ठेंगा । सु०-देना-अँगूठा दिखाना ।

हुड-वि० हुड्डा, अनाड़ी, मूढ़; लापरवाह ।

हुण, हूण-पु० [सं०] एक स्वेच्छ जाति जिसने भारतकी पश्चिमीतर सीमापर कई बार आक्रमण किया था और जिमें एक बार बिक्रमादित्यने बुरी तरह हराया भी था; एक स्वर्णमुद्रा ।

हुत-वि० [सं०] जुलावा हुआ, आमंत्रित ।

हुति-खी० [सं०] आह्वान, आमंत्रण; ललकार; नाम, संज्ञा ।

हुतो-अ० दे० ‘हुति’ ।

हुहा-पु० पीडा, शूल; पका ।

हुनवा-स० कि० आगमें डालकर भूनना ।

हुबा-खी० उत्साह, विस्मय ।

हुडहू-वि० ज्योका स्थी, वैसा ही ।

हूय-पु० [सं०] आह्वान, जुलावा ।

हृ-हृ-**हृ** [अ०] विहित या स्वर्गलोककी स्त्री, अप्सरा; (आ०) परम सुंदरी, परी जैसी सुंदर स्त्री; * दे० 'हृक'।

—**का कथा**—बहुत सुंदर आदमी।

हृवा-**सं** कि० खेलना, ठेलना; चुभाया, गंजाया।

हृवृहृ-**पु०** [सं०] एक आति, हृषीकी एक जाति।

हृव-**पु०** छाठी आदिका छोर।

हृवर्ज-**पु०** [म०] वक्र गतिसे चलना, टेढ़ी चाल चलना; भ्रूयता करना।

हृवित्त(**वृ**)-**वि०** [सं०] टेढ़ी चाल चलनेवाला; कुटिल, भ्रूय।

हृव-**स्त्री** छाठीके हरे, तरवार, भाके आदिकी नोक तेजीसे कहीं गवाने, मोड़ने, झोकनेकी क्रिया; पीका, वेदना, शूल; वमन, वैकी प्रवृत्तिका होना; उलट-चलट; हठा-धुआ, शोर-गुल; आनंदस्थिति, सुखीमे उत्पन्न आवाज; प्रसन्नता, हर्ष; युद्ध आदिके हेतु आह्वान, ललकार; बहेकियेका विविधा फैसलेवाला लालसा लगा बोल।

हृवना-**सं** कि० दे० 'हृरना'।

हृवा-**पु०** हृवने, हृवनेकी क्रिया।

हृवा-**वि०** आहिल, जंगली, उजबु; आचार, व्यवहार आदि-संबंधी तीर-तरोकेमे अपरिचित, अज्ञात, अशिष्ट।

हृ-**स्त्री** युद्धकी ललकार; हुंकार, गर्जन।

हृ-**पु०** आगके जलनेका शब्द; [म०] दे० 'हुड'।

हृकथ-**वि०** [सं०] हृदयमें रहनेवाला। पु० कामदेव;

प्रेम।—**धीवित्त**-**वि०** कामपीडित।—**वर्चन**-**वि०** प्रेमवर्चन; कामोदीयक।

हृकृ-**पु०** [सं०] हृदयका शूल, कलेजेकी पेंठन।

हृकष-**पु०** [सं०] अंदरकी शुष्कता।

हृज-**वि०** [म०] हृदयसे उत्पन्न।

हृमिया, **हृमीया**-**स्त्री** [म०] मिटा; लज्जा, शीघ्रा, दया, अनुकंपा।

हृत-**वि०** [सं०] हरण किया हुआ; गृहीत; वहन किया हुआ, ले जाया गया हुआ; संविन; मुग्ध; म्लोक्त; विमक्त। पु० भाग, हिस्सा।—**चञ्च**-**वि०** चद्रमासे रहित (कुमुद)।—**ज्ञान**-**वि०** ज्ञानहीन।—**द्वार**-**वि०** पक्षी-रहित।—**द्रव्य**, **वित्त**-**वि०** संपत्तिमे संवित।—**प्रसाद**-**वि०** जिसकी शांति नष्ट हो गयी हो।—**भ्रान्त**-**वि०** बेसुध, लडाहीन।—**राज्य**-**वि०** राज्यमे वसित।—**बाध**(**सत्**)-**वि०** बलविरहित।—**मर्त्य**-**वि०** जिसका सब कुछ ले लिया या नष्ट कर दिया गया हो।

हृताधिकार-**वि०** [सं०] अधिकारसंविन, धनसुत।

हृति-**स्त्री** [सं०] अपहरण, ले लेने, छटनेकी क्रिया; ध्वंस, नाश।

हृ-**वि०** [सं०] (समास्तामें) हरण करनेवाला; प्रहरण करनेवाला; ले जानेवाला; आकृष्ट, मुग्ध करनेवाला। पु० 'हृ'का समासगत रूप।—**कष**-**पु०** दिलकी वषकन।—**कमल**-**पु०** योगमें माने हुए छः चक्रोंमेंसे एक जो हृदयके पास स्थित है।—**साध**-**पु०** हृदयकी जलन, मनोव्यथा।—**पंकज**, **पण्ड**-**पु०** कमलवत् हृदय।—**पिंड**-**पु०** सीनेके पास स्थित अंग-विशेष, हृदय।—**पीड**-**पु०** हृदयकी कष्ट देना।—**पीडा**-

स्त्री मनोव्यथा।—**पुंडरीक**, **पुण्डर**-**पु०** दे० 'हृत्पंकज'।—**प्रिष**-**वि०** हृदयकी प्रिय लगनेवाला।—**स्तब्ध**-**पु०** हृदयका निश्चेष्ट होना।—**स्थ**-**वि०** हृदयमें स्थित।

—**स्फोट**-**पु०** हृदयका विदीर्ण होना; मल हृदय।

हृवर्चयाम-**वि०** [सं०] मर्मस्पर्शी; सुंदर, मनोहर; हृदयगत; आकर्षक; आनंददायक; प्रिय; हृदयसे निकलनेवाला; उपयुक्त; बांछित। पु० उपयुक्त वचन।

हृव-**पु०** [सं०] बलके भीतर बायीं ओर स्थित मांसक। रक्तकोश जिसमें भरा शुद्ध रक्त नाभियों द्वारा सारे शरीरमें प्रवाहित होता है, दिल; छाती, सीना; मन; अंतःकरण; आरमा; नीरक्षीरविशैकिनी बुद्धि; ओमरी रक्षस्त्र किमी स्थानका भीतरी भाग जो प्रायः महत्त्वपूर्ण होता है; सार वस्तु, गन्ध, दूर; बहुत ही प्रिय, प्यारा; व्यक्ति।—**कष**-**पु०** दे० 'हृत्पंकज'।—**कषन**-**वि०**

हृदयको शुष्क करनेवाला।—**कम**-**पु०** दिलकी कमजोरी, वृजदिली।—**क्षोभ**-**पु०** मनकी अशांति।

—**मल**-**वि०** हृदय-मल, हार्दिक, आंतरिक; हृदयस्थित।—**प्रिष**-**स्त्री** हृदयकी नाँठ, दिलकी कट देनेवाली बाण।—**प्रह**-**पु०** कलेजेकी पेंठन।—**प्राह**-**पु०** रक्षक जान देना।—**प्राहक**-**वि०** दिलकी विश्वास कराने वाला।—**प्राही**(**हृव**)-**वि०** मनोहर; मनोरंजक।

—**चोर**, **चौर**-**पु०** हृदयका हरण करनेवाला व्यक्ति।—**चिह्न**-**वि०** हृदयका लेटन करनेवाला।—**ज**-**पु०**

पुन।—**ज**-**वि०** दिलकी बाण समझनेवाला; रक्षक जाननेवाला।—**ज्वर**-**पु०** दिलकी जलन।—**द्वारी**(**हृव**)-**वि०** हृदय करनेवाला।—**देव**-**पु०** हृदयका क्षेत्र।—**दौर्बल्य**-**पु०** दिलकी कमजोरी।—**द्रव**-**पु०** दिलका बहुत तेजीसे साथ धक्कना।—**निकेतन**-**पु०** मनोत्र, कामदेव।—**पीडा**-**स्त्री** दे० 'हृपीडा'।—**पुंडरीक**-**पु०** दे० 'हृत्पुंडरीक'।—**पुरुष**-**पु०** दिलकी धक्कन।—**प्रभाषी**(**हृव**)-**वि०** मनकी शुष्क करनेवाला; मुग्ध करनेवाला।—**प्रसाह**-**वि०** मगदिल, निष्ठुर।—**प्रिष**-**वि०** दिलकी प्यारा स्मृति।—**बंधन**-**वि०** मुग्ध करनेवाला।—**रोष**-**पु०** हृदयमें डीनेवाला रोग।—**लेख**-**पु०** ज्ञान; चिन्ता।—**लेख**-**वि०** आनंददायक।—**वक्ष**-**पु०** प्राणप्रिय व्यक्ति, प्रियजन।—**विद्वारक**-**वि०** हृदयको विदीर्ण करनेवाला, शोक, कष्ट आदि उत्पन्न करनेवाला।—**विच**-**वि०** हृदयका पीडन।—**वृत्ति**-**स्त्री** मनकी प्रवृत्ति।—**व्यथा**-**पु०** मानसिक पीडा।—**व्यथा**-**स्त्री** हृदय का रोग।—**व्यथ**-**पु०** दिलका कौटा; दिलका जलन।—**व्यथ**-**वि०** दे० 'हृदयहीन'।—**सौम्य**-**पु०** विपण्णता।—**सौम्य**-**वि०** दिलकी सुलझेवाला।—**संबद्ध**-**पु०** हृदयकी गतिका रुकना।—**संसर्ग**-**पु०** हृदयकी मेल।—**समिष्ट**-**वि०** सीनेके बापार जैसा।—**स्थ**-**वि०** जो हृदयमें स्थित हो; शरीरस्थ (जैसे कीटाणु)।—**स्थ**-**स्त्री**—**प्यास**-**पु०** वक्षःस्थल।—**स्फुट**(**हृ**)-**वि०** हृदयकी छुटनेवाला।—**स्पर्शी**(**हृव**)-**वि०** हृदयको प्रभावित करनेवाला।—**हारी**(**हृव**)-

वि० मनको सुस्थ करनेवाला । -हीन-वि० निर्दुरा; अरक्षित ।

हृदयवाक्(वृ)-वि० [सं] कोमलहृदय, दयालु ।

हृदयकाश-पु० [सं] हृदयका खात ।

हृदयात्मा(मन)-पु० [सं] कंक पक्षी ।

हृदयानुग-वि० [सं] हृदयको तुष्ट करनेवाला ।

हृदयामय-पु० [सं] हृदय ।

हृदयालु-वि० [सं] दे० 'हृदयवान्' ।

हृदयार्जक-वि० [सं] हृदय जीतनेवाला ।

हृदयिक, **हृदयी(विन)**-वि० [सं] दे० 'हृदयवान्' ।

हृदयेक, **हृदयेकर**-पु० [सं] पति; परम प्रिय व्यक्ति ।

हृदयेका, **हृदयेकरी**-स्त्री [सं] पत्नी ।

हृदयोन्मादिवी-स्त्री [सं] एक मति (मंगीत) । वि० स्त्री० मनको उन्मत्त या सुस्थ करनेवाली ।

हृदयमय-पु० [सं] हृदयका रोग ।

हृदयवर्त-पु० [सं] धोरेके भीनेपरको जेबरा ।

हृदिस्थ-वि० [सं] हृदयमें रहनेवाला ।

हृदिस्थ-वि० [सं] जो हृदयमें हो; प्रिय ।

हृदिमृक(त्)-वि० [सं] हृदयकी रज्ज करनेवाला, सुस्थकारी, सुंदर ।

हृदुल्लेख, **हृदुल्लेखा**-पु० [सं] हृदय वा पेटका रोग; मत्तली, वमन ।

हृद्-पु० [सं] दिल, मन, आत्मा; नीना; किसी पदार्थका भीनरी भाग, हीर । -श-वि० भीनेतक पहुँचनेवाला (जेने पानी) । -मान-वि० मनमें आया ।

हुआ; **हृदयस्थ**, **हृदय-सम्पत्ति**; बांछित; प्रिय; आनंददायक; अभिप्रेत । पु० अभिप्राय । -गद्-पु० हृदय ।

-गम-वि० हृदयमें प्रवेश करनेवाला । -गोक-पु० एक पर्वत । -ग्रंथ-पु० दे० 'हृदग्रन्थ' ।

-ग्रह-पु० कलेजेकी रेंडन । -घटन-पु० हृदयका एक रोग । -वाह्, -विवाह-पु० हृदयको जलन । -द्वेष-पु० हृदयका श्रेय; वक्षःस्थल । -द्वेष-पु० दिलका तेजीमें धक्कना । -द्वार-पु० हृदयका द्वार । -रुक्(ञ्)-

स्त्री० हृदयका रोग; हृदयका शूल । -रोग-पु० हृदयका रोग; शोक; भय; दे० क्रममें । -वैरी(विन)-पु० अर्जुन वृक्ष ।

-वर्तक-पु० जठर । -वर्ती(विन)-वि० हृदयस्थ । -व्यथा-स्त्री० मनोव्यथा; हृदयका दर्दन । -व्रण-पु० कलेजेका जस्म ।

हृद्य-वि० [सं] हार्दिक; प्रिय; बांछित; अनुकूल; आनंददायक; सुंदर, मनोहर; स्वादिष्ट; हृदयमें उत्पन्न । पु० दारवीनी; एक बशीकरण यंत्र; हृदि नामक औषधि; बेलका पेय; इवेत जीरक; हरी; मधुमे बनी हुई सराब; कैब ।

-शब्द-वि० सुगंधित, सुशुद्ध । पु० बेलका पेय; सुद्व जीरक; लौघर्षक लवण । -शब्दक-पु० लौघर्षक लवण । -शब्द-पु० सुद्व जीरक ।

हृद्यञ्ज-पु० [सं] चंद्रमा ।

हृद्योप-पु० [सं] कुंभ राशि; दे० 'हृद्' ।

हृदयास, **हृदयासक**-पु० [सं] हृदयकी धक्कन; हृदयकी ।

हृदयेक-पु० [सं] चिता; ज्ञान, समझ ।

हृषि-स्त्री० [सं] प्रसन्नता, आनंद; संतोष; रीति, कांति । पु० शूद्र बोम्बेवाला आदमी ।

हृषित-वि० [सं] प्रसन्न, आनंदित, उल्लासित; रोमांचित; ताजा; चकित; प्रतिहत, मोहरा; प्रणत; वमित, शस्त्रसज्ज; हताश ।

हृषीक-पु० [सं] इद्रिय । -नाथ-पु० विष्णु वा कृष्ण ।

हृषीकेत-पु० [सं] परमात्मा, इद्रियोंका स्वामी; सभी इद्रियोंका संचालक, मन; विष्णु वा कृष्ण; वर्षका दसवाँ महीना, पौष मास; एक तीर्थस्थान जो हरिद्वारके निकट है ।

हृषीकेतर-पु० [सं] विष्णु वा कृष्ण ।

हृषु-वि० [सं] प्रसन्न; शूद्र बोलनेवाला । पु० अधि; सूर्य; चंद्रमा ।

हृष्ट-वि० [सं] हृषित, प्रसन्न; रोमांचित; विस्मित; कड़ा, जिसमें लोचन हो; कुंठित । -चिच, -चेतन, -चेता(सत्)-वि० प्रसन्नचित । -हृष्टहृष्ट-वि० रोमांचित ।

-हृष्ट-वि० प्रसन्न और मनुह । -हृष्ट-वि० तगबा, हटा-कटा । -जना(जस्), -मानस-वि० प्रसन्नचित ।

-रोमा(मन्)-वि० रोमांचयुक्त । पु० एक अक्षर । -वदन-वि० प्रसन्न मुद्रावाला । -संकल्प-वि० प्रसन्न, मनुह । -हृष्ट-वि० प्रसन्नचित ।

हृष्टि-स्त्री० [सं] हर्ष, प्रसन्नता, आनंद; रोमांच; दर्प, गर्व । -होनि-पु० एक तरहका अर्धजीव पुरुष, ईर्ष्यक ।

हृष्टका-स्त्री० [सं] एक मूर्च्छना (मगीत) ।

हुँगा-पु० जोती हुई जमीन बराबर कारनेका पट्टा, पट्टा ।

हुँह-पु० धीरे-धीरे हँसनेकी ध्वनि; शिकशिकानेके एक निकलनेवाला शब्द । सु० -करना-शिकशिकाना; जो-हुँहरी करना ।

हुँह-अ० [सं] संशोधन, आह्वानके लिए प्रयुक्त शब्द; अवज्ञा, घृणा-युक्त शब्द । * ज० क्रि० ३ ।

हुँह-वि० बलवान् (पुरे अर्थमें), जबरदस्त; आशिष्ट, जाहिल; उज्जु; मजबूत शरीरवाला, तदुस्त ।

हुँहरी-स्त्री० जबरदस्ती बलात् कुछ करनेकी प्रवृत्ति; आशिष्टता, उज्जुपन ।

हुँहा-स्त्री० [सं] हिका; हिकी ।

हुँह-वि० [फा०] निकम्मा; फजूल, बेकार; अकिंचन, सुद, तुच्छ; निस्तस्त्र, सारहीन । पु० धोड़ीसी चीज ।

-हुँह-वि० कुछ न जाननेवाला, मूर्ख । -हानी-स्त्री० नादानी । -होच-वि० मामूली, अदना, घटिया; बेकाबद; निकम्मा । पु० तुच्छ व्यक्ति; मामूली हँसियनका आदमी; मामूली चीज ।

हुँहाज-पु० [अ०] दे० 'हिजाज' ।

हुँह-पु० सडेट, संकेत स्थल ।

हुँह-वि० कम; नीचा; गीन । ज० नीचे-हुँह दावि कपि माछु निसाचर'-रामा० । पु० [सं] क्षति; चोटा बाधा ।

हुँहा-वि० दे० 'हुँह' ।

हुँही-स्त्री० अप्रतिष्ठा, मानहानि, हीनता ।

हुँह-पु० [म०] उपेक्षा, अवमानना । -ज-पु० शोध; अप्रमत्तता ।

हेड-पु० [अं०] सिर; प्रधान व्यक्ति, सर्वोच्च अधिकारी।

-ऑफिस-पु० प्रधान कार्यालय। -क्वार्टर-पु० प्रधान व्यक्ति या सर्वोच्च अधिकारीका आवास, स्तर मुकाम। -मास्टर-पु० प्रधान अध्यापक।

हेडबुक-पु० [नं०] घोड़ेका व्यापारी।

हेडिंग-खी० [सं०] शीर्षक।

हेडी-खी० विक्रयार्थ घोड़ाबोका दल। पु० व्याप।

हेड-पु० हेड; प्रीति, प्रेम।

हेडि-खी० [मं०] अस्त्र; सुवैकिरण; आगकी लपट, की; प्रकाश, तेज; आवात, चोट; जलम; औजार; भेलुवा; एक अस्त्र।

हेडी-पु० प्रेमी, हित-मित्र; संबंधी।

हेड-पु० [सं०] कारण; लक्ष्य, मकसद; ऐसी घटना, काम आदि जिसके बिना कुछ दूसरी घटना, दूसरा काम न हो, मूल कारण, प्रथम कारण; एक अर्थोत्तरकार जहाँ कारणकी ही कार्यरूपमें वर्णित करते हैं; तर्क; दलील; तर्क-शास्त्र; व्यापक भाषक कारण, ऐसा कारण जो व्याप्ति, अन्व्याप्ति और अतिव्याप्ति नामक दोषोंसे दूषित न हो; * प्रेम। -दुष्ट-वि० जिसकी बात तर्कसंगत न हो।

-दुष्टि-खी० कारणकी परीक्षा। -दुष्टिक-वि० तर्क-प्रवर्त, तर्ककुशल। -मेड-पु० मध्यदुष्टका एक भेद (ज्यो०)। -मात्रसा-खी० केवल बहाना होना।

-मुक्त-वि० संस्कारण, साधार। -रूपक-पु० रूपकका एक प्रकार जो संस्कारण होता है। -लक्षण-पु० हेडकी विशेषताएँ। -बचव-पु० नर्कयुक्त बान। -बाद-पु० विवाद-हेडका उल्लेख। -बादी(विन्)-पु० नर्क करने-वाला, तार्किक; नास्तिक। -बिद्या-खी०, -शास्त्र-पु० तर्कशास्त्र। -दुग्ध-वि० हेडरहित, निराधार।

-हानि-खी० तर्कका न दिया जाना। -हिक-पु० एक बड़ी मछली (बी०)। -हेडमज्जाव-पु० कारण और कार्यका मवध। -हेडमज्झूल-पु० भूत कालका एक भेद जिसमें कारणरूप किया न होनेपर कार्यरूप कियाका न होना दिखलाया जाता है।

हेडक-वि० [सं०] कारणरूप होनेवाला, उत्पन्न करनेवाला (समासात्मक)। पु० कारण; तार्किक; शिवका एक भग; एक दुष्ट।

हेडुता-खी०, हेडुत्व-पु० [सं०] कारणका होना। हेडुमात्र(मद)-वि० [मं०] जो संस्कारण हो; नर्कयुक्त; साधार। पु० कार्य।

हेडुधेक्षा-खी० [सं०] उत्तमक्षा अर्थोत्तरकारका एक भेद जहाँ अहेडुकी हेडु मानकर उत्तमक्षा की जाय। हेडुपक्षेप, हेडुपन्थास-पु० [सं०] कारण देना, तर्क उपस्थित करना।

हेडुपमा-खी० [सं०] दे० 'हेडुधेक्षा'। हेडुव्यवस्था-पु० [सं०] हेडुका उल्लेख। हेडुव्यवस्थिति-खी० [सं०] एक अर्थोत्तरकार जिसमें प्रकृतके विषेयका हेडु व्यक्त रहता है।

हेडुवाभास-पु० [सं०] वह हेडु जो किसी कार्यका कारण तो न हो परंतु हेडुका आभासित हो, कुतर्क, हेडुदोष। हेडु-पु० दे० 'दिना'।

हेमंत-पु० [सं०] छः ऋतुओंमें एक जो मार्गशीर्ष और पौषमें पड़ती है। -वाय-पु० कविस्थ, कैप। -मेच-पु० जाड़ेका बादल। -समय-पु० जाड़ेका मौसम।

हेमंती-खी० [सं०] जाड़ेका मौसम।

हेम-पु० [सं०] दुर्बल; धूरा; काले या भूरे रंगका घोड़ा; एक स्वर्णमान, माछा; पुष्प ग्रह।

हेम(र)-पु० [सं०] सीता; जल; पात्र; विम; धूरा; केसरका फूल; पुष्प ग्रह। -कंवुक-पु० मवाक, मूँगा। -कल-पु० सीनेका कमरबंद। -कर-पु० शिव।

-करक-पु० स्वर्णपात्र। -कल(र)-पु० सुनार; एक पक्षी। -कलश-पु० (गुंवरपर लगायेकी) सोनेकी कलसी, स्वर्णनिर्मित श्यंकलश। -कालि-खी० दासपरदा।

वि० सीनेकीसी कातिवाला। -कार, -कारक-पु० सुनार। -कारिका-खी० एक पोषा। -किजलक-पु० नागकेसर। -कुंभ-पु० सीनेका कलश। -कूट-पु० हिमालयके उत्तरका एक पर्वत। -केतकी-खी० स्थं केतकी। -केलि-पु० अग्नि। -केस-पु० शिप।

-गंधिनी-खी० रेणुका नामक मधुद्वय। -गर्भ-पु० उत्तरका एक पर्वत। वि० त्रिमके अंदर मोना हो। -गिरि-पु० मेरु पर्वत। -गुह-पु० एक नामास्त्र।

-गौर-वि० सीने जैसा गौरवर्णयुक्त। पु० किर्किरात रुक, अशोक वृक्ष। प्र-पु० मीसा। -ग्री-खी० हल्दी। -घंघ्र-वि० सीनेके आँदले अलकून (जैम रथ)। पु० एक इध्वाकुर्वेशय रात्रा; एक रत्नाचार। -चक्र-वि०

सीनेके पडियोवाला। -चूरी (किचु)-वि० स्वर्णक्षिप्त युक्त। -ज-पु० रोम, रंगा। -जट-पु० किरानोंकी एक जाति। -जीवंनी-खी० एक पोषा। -जवाल-पु० अग्नि। -तक-पु० धूरा। -तार-पु० नृत्तिय।

-तल-पु० उत्तरका एक पहाड़ी प्रदेश। -तुका-खी० सीनेका तुलादान। -तूता-खी० एक अम्परा। -दुग्ध, -दुग्धक, -दुग्धी (गिधु)-पु० गूरर। -दुग्धा, -दुग्धी-खी० स्वर्णक्षीरी। -धन्वा (धन्व)-पु० व्या० ३० मनुका एक पुत्र। -धाम्य-पु० तिल। -धाम्यक-पु०

देड मायेका एक तेल। -धारण-पु० आठ पक्षों के तेल। -हेम-पु० एक यक्ष। -पर्वत-पु० सुमेरु पर्वत; (महादेवके लिए बना हुआ) सीनेका पर्वत।

-पुष्प-पु० चपा; अशोक-पुष्प; नागकेसर; अमलताम। -पुष्पक-पु० चपक-पुष्प; कीश्र। -पुष्टिका-खी० स्वर्णयुक्त। -पुष्पी-खी० संश्रिता; स्वर्णजीवंती; इ० वारुणी; स्वर्णली; सुखली; कंदकारी। -पुष्ट-वि० सीनेका मुलमा किया हुआ। -प्रतिमा-खी० सीनेकी मूर्ति।

-प्रथ-वि० सीनेकी कातिवाला। -फला-खी० स्वर्ण-कंदली। अक्का-खी० सीनेकी पैली। -माक्षिक-पु० एक उपधातु, सीतामयकी। -माका-खी० यमकी पत्नी। -माक्षिका-खी० सीनेका हार। -माक्षी(किचु)-वि०

सीनेका हार धारण करनेवाला; सीनेसे अलकून। पु० पर्व। -माया-खी० सीनेकी एक ली। -दूषिका-खी० स्वर्णयुक्त। -रामिनी-खी० धरिया। -रेणु-पु० जसरेणु। -रंज, -रंजक-पु० ३१ रों संवत्सर। -क-पु० स्वर्णकार; गिरमिट; कसीदी। -कला-खी०

स्वर्णजीवती। -वर्ण-वि० सोनेके रंगका। पु० गरुडका एक पुत्र; एक मुद्र। -बल-पु० मोती। -बल्ली-खी० स्वर्णजीवती। -बल-पु० विष्णु। -शिखा-खी०-क्षीत-पु० स्वर्णक्षीरी। -श्रृंग-पु० एक पर्वत। -हील-पु० एक पर्वत। -सागर-पु० एक पौधा। -सार-पु० तृतिवा। -सुता-खी० धारवा। -सूत्र-सूत्रक-पु० हारविशेष। -हस्तिरथ-पु० महादानविशेष (जिसमें सोनेका हस्तिरथ दिया जाना है)।

हेमक-पु० [सं०] स्वर्ण; स्वर्णत्वज; एक अरण्या; एक दैत्य। हेमांक-वि० [सं०] स्वर्णालकृत।

हेमांग-पु० [सं०] ब्रह्मा; विष्णु; गरुड; मित्र; सुमेरु; चंपक वृक्ष। वि० सुनहला।

हेमांगद-वि० [सं०] सोनेका विजायत पहननेवाला। पु० एक गंधर्व; एक कलिंगनरेश; वसुदेवका एक पुत्र।

हेमांगा-खी० [सं०] स्वर्णक्षीरी।

हेमांक, हेमांकक-पु० [सं०] ब्रह्माद।

हेमा-खी० [सं०] पृथ्वी; मुदर खी; एक अप्सरा; माधवी कला।

हेमा(मन्)-पु० [सं०] बुध ग्रह।

हेमाचल-पु० [सं०] दे० 'हेमपर्वत'।

हेमाच्य-वि० [सं०] मोनेमें भरा-पूरा।

हेमात्रि-पु० [सं०] मेरु। -जरङ्ग-पु० स्वर्णक्षीरी।

हेमात्रिका-पु० [सं०] स्वर्णक्षीरी।

हेमाम-वि० [सं०] सोने जैना चमकवाला।

हेमाल-पु० एक राग।

हेमाङ्ग-पु० [सं०] वनचपक; भूरा।

हेमाङ्गा-खी० [सं०] स्वर्णजीवती; स्वर्णक्षीरी।

हेमियानी-खी० रूपया रखनेकी धोबी।

हेम्न-पु० [सं०] बुध ग्रह।

हेम्ना-खी० [सं०] एक राग।

हेम्य-वि० [सं०] सोनेका; सुनहला।

हेय-वि० [सं०] लाज्या; लूरा, खराब; धडाधे जाने योग्य।

हेरंब-पु० [सं०] गणेश; भैंसा; शौर्यगर्जित, धीरोद्धत नायक; बुद्धविशेष। -जननी-खी० दुर्गा। -मंज-पु० गणेशका एक मंज। -हृद-पु० दक्षिणका एक प्राचीन भूभाग।

हेरंबक-पु० [सं०] एक प्राचीन जाति।

हेर-पु० [सं०] हरिद्रा, हल्दी; एक प्रकारका सुकुद; आसुरी माया। * खी० खोज, तराश।

हेरक-पु० [सं०] शिवका एक दैत्य-गण; गुप्तनर।

हेरसाक-सं० कि० किसी चीजको हँदना, नलाश करना, खोजना; देखना, निहारना; किसी वस्तुको विवेकपूर्वक देखना, परीक्षा करना, जाँच-पक्काल करना, परखना।

हु० -कैरसा-एक जगहकी चीज दूसरी जगह करना, उकड़-पकड़ करना, अटल-बदल करना, परिवर्तन करना।

हेरफेर-पु० परिवर्तन, उलट-पलटकी क्रिया; अटल-बदल करनेका काम, विनिमय; अद, अंतर, दूरी; टेढ़ी-सीधी बात, साफ-भाक, सीधे-सीधे बात न करनेकी क्रिया; चापवाजी। -कर-किसी-न-किसी तरह, घूम-फिरकर। हेरबावार्-सं० कि० पता लगवाना, खोजवाना; खोना।

हेरासाक-सं० कि० दे० 'हेरसाना'। अ० कि० गायब हो जाना, खो जाना; एकरम न रह जाना, अभाव हो जाना; अपनेकी भूल जाना, अपनी सुष-बुध खोना।

हेरा-फेरी-खी० हेर-फेर: उलट-पटल, बस्तुओंका यथा-स्थान न रह जाना, चीजोंका इधर-उधर होना।

हेरिक-पु० [सं०] भेंटिया, गुप्तनर।

हेरीक-खी० आह्वान, पुकार, गुहार। सु० -देना-गुहार लगाना, आह्वान करना।

हेरक-पु० [सं०] गणेश; जिवका एक गण; एक वीचिनस्व; नास्तिकोंका एक भेद।

हेरंकी-खी० [सं०] एक माग, हिलमोचिका।

हेल-पु० परिचय 'मेल'के माघ प्रयुक्त। -मेल-पु० मेल-जोल, घनिष्ठपः।

हेलक-पु० [सं०] एक प्राचीन तौल।

हेलन-पु० [सं०] अवहेलना, तिरस्कार; रक्ष-कीटा, किमोल।

हेलना-खी० [सं०] दे० 'हिलन'। * अ० कि० राग-रग मनाया, किलोल, कीटा करना; निश्चित रहना, परवाह न करना; (ज्ञानपर) खेलना; (जलमें) प्रवेश करना; हँसी-भासक करना। स० कि० अवहेलना, उपेक्षा करना, उच्छ्रित समझना; तैरना, हलकर पार करना।

हेलनीय-वि० [सं०] उपेक्षाके योग्य।

हेलया-अ० [सं०] खेल ही खेलमें, आसानीमें ('हेल'का करण कारकका रूप)।

हेला-पु० मेहतर; आह्वान, पुकार; उतारा-'जोर घाट है कीने देला'-छत्रण; आक्रमण, बाबा; ठेलनेकी क्रिया, धक्का; खेबा, खेप। खी० [सं०] तिरस्कार, अवज्ञा; अपमान; केलि, कीटा; चरित्रका; आनंद, प्रमत्तता; आसानी, सरलता; किसीमें सुरतकी बलवती इच्छा; एक सूच्छना (मगीत); सियोंका शृंगारसूचक व्यक्त हाव जो एक प्रकारका मत्सज अलंकार है।

हेलाल-पु० दे० 'हिलाल'।

हेलाबुलक-पु० [सं०] दे० 'हिडाबुलक'।

हेलि-पु० [सं०] सूर्य। खी० आलिंगन; रास्तेपर जाती हुई बरात।

हेलिक-पु० [सं०] सूर्य।

हलिन, हेलिनी-खी० मेहतरानी।

हेलीक-खी० सली; सहेली।

हेली-मेली-पु० [सं०] जिससे हेल-मेल हो, संगी-साथी।

हेल्य-पु० [अं०] तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

हेवंत-पु० दे० 'हेमत'।

हेवज-पु० [सं०] एक बौद्ध देवता।

हेवाक-पु० स० प्रबल इच्छा।

हेवाकस-वि० [सं०] तीव्र, प्रबल (इच्छा)।

हेवाकी(किच)-वि० [सं०] बहुत इच्छुका; जौन।

हेप, हेपिल-पु० [सं०] दिनदिनाइट।

हेपा-खी० [सं०] दे० 'हेप'।

हेपी(विच)-पु० [सं०] घोड़ा।

है-अ० कि० 'है'का बहुवचन रूप। अ० आश्चर्यमूलक शब्द; अस्वीकृति, निषेधमूलक शब्द।

हिंसा-वि० [अ०] लटकनेवाला । -**गार्जन-पु०** सूना थाप । -**विज-पु०** सूना पुल । -**कैव-पु०** वह कैव जो छतसे लटककर जकाया जाय ।

हिंसुक-वि० [सं०] हिंसुकसे संबद्ध, ईशुर-संबंधी; ईशुरके रंगका ।

हिंसुल-पु० [अ०] नोटिस, पर्चा ।

हिंसुली-पु० [अ०] चमड़ेका छोटा बक्स जिसमें प्रायः स्वापार, पदने-लिखने आदिके अस्वाभाविक सामान रखते हैं ।

हिंसल-पु० [अ०] मुठिया, दस्ता ।

हिंसा-स्त्री० एक रीथा जिसकी जड़ दवाके काम आती है ।

हे-प्र० कि० 'हीना'का वर्तमान कालका एकवचन रूप ।

* पु० हय, अयव, घोड़ा । -**हर-पु०** सुंदर, अच्छा घोड़ा ।

हेकड़-वि० दे० 'हेकड़' ।

हेकल-स्त्री० चौकीर, पानके तथा अन्य प्रकारके आकारके कड़े जंतरोंसे बना गलेमें पहननेका खियोंका एक गहना, हुमेक ।

हेङ्ग-पु० [अ०] मासिक रत्नजाल ।

हेङ्गा-पु० [अ०] संक्रामक माना जानेवाला एक रोग जिसमें कै और दस्त आते हैं; विपुचिका ।

हेड-पु० [अ०] अंतेजी टोप ।

हेडिच-वि० [सं०] हिडिच-संबंधी । पु० हिडिबाका पुत्र, धंदोरकच ।

हेडिचि-पु० [सं०] हिडिबाका पुत्र, धंदोरकच ।

हेडु-वि० [सं०] कारणरूप होनेवाला; हेतु-संबंधी, सहेतु, मकारण; हेतु, तर्क-संबंधी; तार्किक । पु० कारण; तार्किक; मीमांसक; नास्तिक; धार्मिक विषयोंमें उदार विचारोंवाला व्यक्ति; एक बुद्ध, शिवका एक गण ।

हेदर-पु० [अ०] डेर । -**अजी-पु०** दक्षिण भारतका एक प्रसिद्ध मुस्लिम शासक, टीपूका पिता ।

हेना-सं० कि० मारना, हनन करना ।

हेङ्ग-पु० [अ०] लेद, जफसोस । अ० बा, हंत, जफसोस ।

हेवल-स्त्री० [अ०] हर, मय, उबसत । -**जुहा-वि०** भीत, डरा हुआ । -**भाक-वि०** डरावना । -**सुखसाजी-स्त्री०** बादशाहका हर या कमाव । **मु०** -**छाना-हर** जाना । -**दिखाना-हरा** देना । -**अचकना-धववाहट** होना ।

हेमंत-वि० [सं०] हेमंत-संबंधी; जाड़ेमें उत्पन्न होनेवाला; जाड़ेके उपयुक्त । पु० हेमंत ऋतु ।

हेमंतिक-वि० [सं०] दे० 'हेमंत' । पु० शांति धान्य ।

हेम-वि० [सं०] हिम-संबंधी; हिमसे उत्पन्न; जाड़ेमें होनेवाला; गर्मसे ठंडा हुआ; हिमाक्ष-संबंधी; सोनेका रंग हुआ; सोनेके रंगका । पु० हिम, पाला; ओस; शिब; भुनिन, विरासत । -**मुद्रा-मुद्रिका-स्त्री०** सोनेका सिक्का । -**बहकल-वि०** सोनेका पत्तर बड़ा हुआ । -**सौल-पु०** एक पर्वत ।

हेमव-वि० [सं०] जाड़ेका, शीतकालीन; जाड़ेके उपयुक्त; सोनेका रंग हुआ । पु० हेमंत ऋतु; मार्गशीर्ष मास; शांति धान्य ।

हेमव-पु० [सं०] हेमंत ।

हेमवत-वि० [सं०] बर्फीला; हिमालय-संबंधी; हिमालय-पर उत्पन्न; हिमालयपर स्थित । पु० भारतवर्ष; एक प्रकारका विष; मोती; हिमालयके निवासी; एक तरहके दैत्य; गौरीका एक भेद । -**वर्ष-पु०** भारतवर्ष ।

हेमवतिक-पु० [सं०] हिमालयके निवासी ।

हेमवती-स्त्री० [सं०] हरीतकी; स्वर्णक्षीरी; श्वेत बचा; कपिलद्राक्षा; अतसी; रेणुका; धार्वती; गंगा; कौशिकी भावी ।

हेमा, हेमी-स्त्री० [सं०] पीत वृषिका ।

हेमंगवीर-पु० [सं०] एक दिनके वासी दूधके मयखनसे बना घी; ताजा घी; एक दिनका वासी मयखन ।

हेरं-वि० [मं०] गणेशका; गणेश-संबंधी । पु० गणपत्य संभ्रात ।

हेरच-वि० [मं०] स्वर्णमय, मोनेका रंग हुआ; स्वर्ण-बहन करनेवाला (नर); सोना देनेवाला (दाय) । -**बासा(सख)-वि०** सुनहला पंख लगा हुआ (बाण) ।

हेरचक-पु० [सं०] स्वर्णकार; स्वर्णनिधिका निरीक्षक; एक वर्ष (देश) ।

हेरचगर्भ-वि० [सं०] हिरण्यगर्भ-संबंधी ।

हेरचिक-पु० [सं०] स्वर्णकार ।

हेरत-स्त्री० [अ०] अचमा, विसय । -**अंगेज-वि०** विसयजनक । -**जुदा-वि०** चकित, विस्मित, भौचका ।

हेरान-वि० [अ०] चकित; इनबुद्धि, भौचका; भटकनेवाला; परेशान ।

हेरानी-स्त्री० विस्मय; परेशानी ।

हेरिक-पु० [सं०] चौर; गुप्तचर ।

हेवान-पु० [अ०] प्राणी; पशु, जानवर; (का०) मृग उज्जु, जंगली ।

हेवानात-पु० [अ०] 'हेवान'का बहुवचन ।

हेवानित-स्त्री० पशुमात्र, पशुमात्र; जंगलीपन ।

हेवानी-वि० जानवरका, पशुवत्; अमानुषिक ।

हेसबैस-पु० [अ०] बहस, विवाद ।

हेसिकत-स्त्री० [अ०] 'हैसियत' दंग, तौट; गंभीरता, मामूली; विमल; मालवत; आर्थिक गंभीरता; धन-व्ययति; दरजा, श्रेणी (अमीनकी हैसियत); धन-प्रतिष्ठा । -**हार-वि०** हैसियतवाला, जिसके पास पैसा या जायदाद हो ।

हेह-पु० [सं०] एक देश या बर्हिाका निवासी; बटुक; प्रचीन, कान्तीय, मह्वलार्जुन; एक पर्वत । -**राज-पु०** मह्वलार्जुन ।

हेहेव-पु० [सं०] अर्जुन कान्तीय ।

हेहे-अ० लोक, मेद, दुख आदिका मूक शब्द, हाय-हाय ।

ही-अ० कि० 'हीना'का संभावना-स्वक (बहुवचन) रूप ।

हीट-पु० मुंहके बाहरका ऊपर वा नीचेका भाग, ओष्ठ, वंतच्छद । **मु०** काटना, -**चकना-स्त्री०**, लोक आदिके आदेशमें दौरीमें हीटको काटना । -**काटना-की०** स्वादिष्ट पदार्थ अधिकसे अधिक खानेकी इच्छा करना किसी अच्छी चीजका स्वाद वांछ आना । -**विषकना-वि०** मजबूती भीटी चीजका भाग सुनसे ही उसे पाने

की प्रवृत्ति इच्छा होना। -बुसना-अवर (रस) पान करना। -मिलाना-जुवन करना। -सी सेना-मीन हो जाना। -मिलना-बैठना। **होनापर कड़ी** का बूझ बाढ़ आ जाना-बहुत बड़ी मुसीबतमें पड़ना।

होठक-वि० बड़े और मोटे होठोंवाला।

होटी-वि० कीटाणुनाशक।

हो-अ० कि० 'होना' का संभावनामूल्क (अन्य पुरुष, एकवचनका) रूप; * 'होना' का सामान्य भूत, वा। अ० संशोधनमें प्रयुक्त शब्द, हे।

होठक-पु० [अ० 'होठल'] द्रव्य डेकर यात्रियों तथा अन्य लोगोंके भी खाने, रहने, मनोरंजन आदिकी आपुनिक दृश्यावस्थाके लिये सुकृष्ट स्थान।

होठ-पु० [म०] बहा, मेला; नाव।

हो-अ० कि० विषयमें एक दूसरेसे बड़ जानेकी चाह और प्रयत्न, लाय-डाट, चढ़ा-ऊपरी, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्विष्टता, प्रतिबोधिता, किसी काममें हार-जीत होनेपर पूर्वनिश्चयके अनुसार किसीकी कुछ देने या उन्मये कुछ देनेकी प्रतीक्षा, वाजी, जर्न।

होहार(हू)-पु० [म०] चौर; कुंआरा, टाक।

होहाबादी-वि० दे० 'हो'।

होहाबादी-वि० दे० 'हो' अ० होक लगाकर।

होठ-वि० [सं०] नुराधा हुआ। पु० चोरीका माल।

होतक, **होतक्य**-पु०, **होतक्यता**-वि० होनेवाली बात, भविष्यवाणी, होनहार।

होतर-वि० होने योग्य।

होतक्य-वि० [सं०] हवन करने योग्य।

होता(हू)-वि० [म०] हवन करनेवाला। पु० मंत्र पढ़ते हुए बह-कुंडमें इन्ध्र डालनेवाला व्यक्ति, यज्ञकर्ता, यज्ञ करानेवाला पुरोहित; शिव; अग्नि। -**(हू)कर्म**(हू)-पु० होताका कार्य। -**कर्मस**-पु० होना द्वारा प्रयुक्त किये जानेवाले पात्र-सुधा आदि। -**प्रवर**-पु० होनाका चूनाव। -**वृद्ध**-पु० होनाके बैठनेका स्थान।

होतक-पु० [सं०] दे० 'होत्रक'।

होत्र-पु० [सं०] हवि, होम; हवन-सामग्री, धी आदि।

होत्रक-पु० [सं०] होताका सहायक।

होत्रा-वि० [सं०] यज्ञ; स्तुति।

होत्री-वि० [सं०] यज्ञमात्रके रूपमें शिवकी मूर्ति, शिवकी आठ मूर्तियोंमेंसे एक।

होत्री(त्रिब)-पु० [सं०] होता।

होत्रीय-वि० [सं०] होतासे संबंध रखनेवाला। पु० होता-यज्ञकर्ता पुरोहित; हवनगृह, यज्ञ-संघ।

होत्रा(त्रिब)-पु० [सं०] यज्ञकर्ता।

होत्राहार-वि० होनेवाला, अवश्यमेव होनेवाला; भविष्यके विश्वास, उत्कर्ष, सद्युक्ति आदिका आभास देनेवाला। पु०, वि० भविष्यवाणी, अवश्यमेव घटित होनेवाली घटना, बात आदि।

होत्रा-अ० कि० कायम, मौजूद, विद्यमान रहना; परिस्ति, अवस्था आदिमें परिवर्तन जाना, एक स्थितिसे दूसरी स्थितिमा आना, कुछसे कुछ होना; प्रसृत होना, पनपना; तैयार होना; किसी कार्यका पूरा होना, निमित्त

होना; सरीरमें किसी प्रकारकी व्याधिका होना; ममवका व्यतीत होना, दिन बीतना; किसी घटनाका घटित होना; उत्पन्न होना, पैदा होना; काम चलना, निकलना, किसी कामका हो जाना। (जो) हुआ सो हुआ-जो घटना वा बात हो चुकी उसके लिये चिंता करनेकी आवश्यकता नहीं; जो घटना वा बात हो चुकी उसे पुनः मविष्यमें न होने देना चाहिये, काम तो पूरा हुआ, अब फिर इसे करापि न करना चाहिये। तो क्या हुआ? -जाने दो, कोई परवाह नहीं (नहीं करना चाहते हो तो कोई परवाह नहीं)। हुआ-हुआ-किसीसे कोई काम न होनेपर कही जानेवाली उक्ति (स्वग्यहपमें प्रयुक्त होनेके कारण यह निषेधके रूपमें न होनेपर भी निषेधका अर्थ देता है); बहुत कुछ कह चुकनेपर किसीको मना करनेके लिये कही गयी बात। **हो जाना**-कहीं जाकर लौट आना; किसीके अंत-मुलाकाम करने जाना; मिलने जाना।

होकर-पामने, ममीपने, बीचने, मण्यसे। **होकर**-रहना-जबर होना, अवश्य घटित होना। **हो गुजरना**-घटनाका घटित होना; समाप्त होना। **हो चला**-समाप्तिके निकट आना; बहुत ही जाना। **हो चुकना**-समाप्त हो जाना, समाप्त हो जाना; खर्च हो जाना; मर जाना; किसी बात, वस्तु आदिका समाप्त हो चुक जाना, हट हो जाना। **हो जाना**-काम पूरा हो जाना, काम बन जाना; कहीं जाकर चला जाना; किसीसे मिलकर चला जाना; मर जाना; बन जाना, किसी भी क्षेत्रमें स्थितिका अच्छा हो जाना; (किसी कामका) कर्म हो जाना; कर्षार्थ संग्रह, मार-पीट हो जाना; कुछ लायक हो जाना; भूल-प्रतका प्रभाव पड़ जाना; भोजन आदिका तैयार हो जाना। **होते हुए**-दे० 'होकर'। **हो न हो**-कौन जाने (अनिश्चय सूचनाार्थ)। (**किसीका**) **होना**-किसीका प्रिय, प्रेमी, विश्वासपात्र, कुटुंबी, सेवक आदि होना। (**काखोंमें एक**) **होना**-किसीका अनेकमें श्रेष्ठ होना, अस्त उच्च कीटिका होना।

हो निकलना-होकर जाना, पासने जाना किसी जगह आ जाना। **होनेका**-होनेवाला। **होने लगना**-किसी कामका आरम्भ होना। **हो पड़ना**-अकस्मात् कुछ घटित हो जाना; अचानक संग्रहात्मक हो जाना। **हो बैठना**-हो जाना, बन पड़ जाना; कुछ हो जाना (बहा आदमी आदि); दे० 'हो पड़ना'। **हो रहना**-हो जाना, होना। (**कहींका**) **हो रहना**-कहींमें लौटनेमें बहुत देर लगना; कहींसे न लौटना। (**किसीका**) **हो रहना**-किसीका प्रिय वा प्रेमी हो जाना। **हो लेना**-हो चुकना, समाप्त होना; पूरा होना, पूर्ण रूपसे होना; कोई मार्ग ग्रहण कर लेना; किसी पक्षका हो जाना; साथ चलना; पैदा होना, उत्पन्न होना; कर्षार्थ संग्रह होना। (**पीछे**) **हो लेना**-पीछे पीछे जाना, चलना; किसीकी पैरवी करना। **हो सो हो**-चाहे जो कुछ हो (निश्चयार्थक)। **हो हवा चुकना**-हो चुकना। **हो होकर**-दे० 'होकर'।

होनिहार-वि०, पु० दे० 'होनहार'।

होनी-वि० होनहार।

होम-पु० [सं०] हवन, यज्ञ; मातृगणों द्वारा निर्व्व किया जानेवाला पंच महायज्ञोंमेंसे एक देख्यत। -**कर्म(ह)-पु०** यज्ञसंबंधी कर्त्तव्य या विधियाँ। -**कल्प-पु०** होम करनेकी विधि। -**काण्ड-पु०** यज्ञका समय। -**काही-की०** यज्ञाग्नि प्रज्वलित करनेकी फुंकनी। -**कुंड-पु०** हवन करनेके लिए बना हुआ कुंड। -**सर्ग-पु०** यज्ञका घोड़ा। -**दर्शी-की०** लूया। -**द्रव्य-पु०** हवनकी सामग्री, वी आदि। -**धान-पु०** यज्ञमवन। -**धाम्य-पु०** तिल। -**धूम-पु०** होमकी अग्निका धुआँ। -**धेनु-स्त्री०** हवनके लिए दूध देनेवाली गाय। -**भक्ष(ह)-पु०** हवनकी राख। -**भाह-पु०** हवनमें काम आनेवाले पात्र। -**यूप-पु०** यज्ञस्तंभ। -**वेडा-स्त्री०** होमकाष्ठ। -**शाखा-स्त्री०** यज्ञशाखा। **मु०** -**करते हाथ जलना-** किसीका उपकार करते (उपकार करनेवालेका) उपकार होना। -**कर देना-** बलिदान कर देना, उत्सर्ग कर देना; अग्निमें जला डालना; जलाकर नष्ट कर देना, नष्ट कर देना।

होमक-पु० [सं०] होता; होमक।

होमना-सं० कि० हवन करना; बलिदान करना; नष्ट करना।

होमर-पु० ग्रीक भाषाका प्राचीन कवि, जिसने 'इलियड' तथा 'ओडिसी' नामक महाकाव्योंकी रचना की थी (८५० ईसवी पूर्व)।

होमाग्नि-की०, **होमानल-पु०** [सं०] यज्ञाग्नि।

होमाहुनी-की० [सं०] दे० 'होम-धेनु'।

होमि-पु० [सं०] धृत; जल; अग्नि; चित्रक वृक्ष।

होमियोपैथ-पु० [सं०] होमियोपैथिक-पद्धतिके अनुसार चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति।

होमियोपैथिक-वि० [सं०] होमियोपैथीसम्बन्धी।

होमियोपैथी-की० [सं०] हनीमान द्वारा आविष्कृत एक चिकित्सा-पद्धति जिसमें प्रायः विषोष द्वारा रोग निवारण करते हैं।

होमी (मिन्)-पु० [सं०] होमकर्ता।

होमीय-वि० [सं०] होम-संबन्धी; हवनके उपयुक्त। -**द्रव्य-पु०** हवनके काम आनेवाले पदार्थ, धन आदि।

होमिचय-पु० [सं०] यज्ञकाष्ठ।

होम्य-वि० [सं०] दे० 'होमीय'। पु० घृत।

होर-वि० ठहरा, रुका हुआ। * पु० और, मार्ग।

होरसा-पु० रोटी बेलने या चंडन आदि पिसनेका पत्थर का बना चौका।

होरहारा-पु० चनेका फलदार बरा पौधा; आगपर भूना हुआ जो, चने आदिका हरा दाना।

होर-पु० दे० 'होल्क'। **की०** [सं०] ज्योतिष शास्त्रीक कव्य; दार्ढ्यकी; आशी राशि; होराशापक ऋषि; जन्म-पत्नी; जिह्वा, रक्षा। -**विद्व-वि०** जन्मपत्नी देखनेमें कुशल। -**शास्त्र-पु०** फलिता ज्योतिष।

होरिक, होरिकवा, होरिका-पु० शिशु; नवजात शिशु।

होदिहार-पु० होली खेलनेवाला।

होरी-की० दे० 'होली'; महाजपर माल मारने और उसपरसे उतारनेके काम आनेवाली बड़ी नाव।

होल्क-पु० [सं०] मटर, चने आदिकी आगपर भूनी हुई अणुकी फलियाँ।

होला-पु० दे० 'होल्क'। **की०** [सं०] होलीका त्योहार।

-**खेलना-पु०** काग खेलना।

होलाक-पु० [सं०] पसीना निकालनेका एक उपचार (जिसमें गरम राखकी सहायता लेते थे)।

होलाका-की० [सं०] वर्मनोत्पन्न, होलीका त्योहार; फाल्गुनकी पूर्णिमा।

होलाहक-पु० [सं०] होलीके पूर्वके आठ दिन जिनमें विवाह नहीं होता।

होलिका-की० [सं०] होलीका त्योहार; लकड़ी, पेश, वास-कूम आदिका ढेर जिसका दहन फाल्गुनकी पूर्णिमा की रातमें होना है; एक राक्षसी जो शिरपक्षकशिपुकी भगिनी थी।

होली-की० एक त्योहार; कपड़े आदिके ढेरका जला दिया जाना (छां०); एक प्रकारका गीत जो विशेष रूपसे होली के अवसरपर गाया जाना है; दे० 'होलिका'। **मु०** -**खेलना**-काग खेलना, एक दूसरेपर रंग आदि डालना।

होल्ड ऑल, होल्डाल-पु० [अ०] सफरके काम आनेवाला एक तरबूज जैसा जिसमें जल्दी कपड़े रम्बकर छेदनेके लिए बिस्तरकी तरह डाल लेने और चमने समय लपेटकर बटल की तरह बना लेने हैं।

होल्डर-पु० [अ०] लकड़ी आदिका बना अंगरेजी कलमका हाथसे पकड़ा जानेवाला अंग जिसके निचले भागमें निरन्गनी रहनी है; (बचनेके नारमें लगा हुआ वह साधन जिसमें बन्ध अटकाया जाना है)।

होश-पु० [फ्रा०] नीबकी अपनी मूला, जीवन रहनेका; ज्ञान, चेतना; सुधनुष, स्मरण; अवल, बुद्धि, भ्रमशः। -**मंद्-वि०** बुद्धिमान्, समझदार। -**मंद्-स्त्री०** बुद्धिमान्, समझदारी। -**बाळा-वि०** अनुभवी, समझदार। -**ह्वाल्-पु०** सुधनुष। **मु०** जाना-समझ आना। समझदार होना, स्मृत होना, अवल, बुद्धि आना। आपे में आना, चेतनायुक्त होना; स्मरण होना, खयाल आना। -**उड़ जाना-उठना-उड़ा देना-उठाना**-कदहोश हो जाना, गदहा जाना; आश्चर्यचकित हो जाना, हैरतमें आ जाना; अवल खोना। -**काफूर होना-दे०** 'होश उठ जाना'। -**खोना-दे०** 'होशमें बाहर होना'। -**गुम होना-होश उठना**। -**आता रहना-जाना-दे०** 'होश उठ जाना'। -**ठिकाने रहना-होश-रवास** दुबस्त रहना। -**ठिकाने होना**-अवल ठीक होना। -**हूँ होना-दे०** 'होश उठना'। -**दिलाना-स्मरण कराना**, याद दिलाना। -**न रहना**-लभ न रहना, होश उठ जाना; बेहोश हो जाना। -**न होना-होश-रवास** दुबस्त न होना। -**पकड़ना**-उमरमें वटना, सयाना होना; होशिवार होना। -**वैतरे होना-दे०** 'होश उठ जाना'। -**बाझला होना-दे०** 'होश उठ जाना'। -**बिखलना-दे०** 'होश उठ जाना'। -**मैं जाना**-ज्ञान प्राप्त करना, अवल हासिल करना; तबीन लौकना, व्यवहार लौकना; समझदार, होशिवार होना; आपेमें आना, संमत्तना। -**रक्षना-बुद्धिमान्**।

राजा नलका एक नाम । -**बाहुक**-वि० दे० 'हृस्व-बाहु' । -**भुक्ति**-वि० डिगना, छोटे कदका । -**भुल**-पु० लाल यज्ञा, रक्तेल । -**शास्त्राशिक**-पु० धुप, झाबी । -**सन्ना**-स्त्री० तंग दातान ।

हृस्वक-वि० [सं०] बहुत छोटा ।

हृस्वांग-वि० [सं०] बामन, बौना, डिगना । पु० जीवक नामक पौधा; बौना आदमी ।

हृस्वाशि-पु० [मं०] अर्क, मवारका पेड़ ।

हाद्-पु० [सं०] शब्द, ध्वनि; मेघगर्जन; एक नामासुर; शिरण्यकशिपुका एक पुत्र ।

हादिनी-स्त्री० [सं०] बिजली; इंद्रका वज्र; नदी; शल्लकी ।

हावी (विज)-वि० [मं०] शब्दमय, दाम्ब करनेवाला; गरजनेवाला ।

हास-पु० [सं०] क्षय, क्षीणता, भवनति; अभाव, कमी; शब्द, ध्वनि; छोटी ससवा ।

हासक-वि० [सं०] क्षय करनेवाला; कम करनेवाला ।

हासन-पु० [मं०] क्षीण करनेकी क्रिया; कम करनेका काम, घटाना ।

हासनीय-वि० [सं०] कम करने, घटाने योग्य ।

हाणिवा, द्विणीया-स्त्री० [मं०] दे० 'हणिवा' ।

हिस-वि० [सं०] हरण किया हुआ, लाया हुआ, नीत; लब्धित; विमक्त । पु० अंश ।

हिसि-स्त्री० [सं०] हति, हरण ।

ही-स्त्री० [सं०] लज्जा, जीडा, संकोच । -**जिह्व**-वि० लज्जाके बशीर्भूत, लज्जाशील, संकोची । -**वेष**-पु० एक बीड़ देवता । -**जारी (रिज)**-वि० लज्जा अनुभव करनेवाला, झरमील । -**निरास**-पु० लज्जाका परित्याग, निर्लज्जता । -**निषेध**-वि० विनयी, नष्ट । -**पद्**-पु० लज्जाका कारण । -**बल**-वि० अपि नष्ट, संकोची । -**भय**-पु० लज्जाका डर । -**मृद**-वि० लज्जामें पच-काया हुआ ।

हीक-पु० [सं०] नेचना ।

हीका-स्त्री० [सं०] लज्जा; संकोच; भय ।

हीकु-वि० [मं०] लज्जित; सलज्ज । पु० बिल्ली; लम्बा; रंगा, दीन ।

हील-वि० [मं०] लज्जित । -**मुल्ल**-वि० लज्जित

मुखवाला ।

हीलि-स्त्री० [सं०] लज्जा, संकोच ।

हीबेर, हीबेल, हीबेलक-पु० [सं०] एक मंधद्रव्य, वालक ।

हीप-पु० [मं०] लज्जित करनेकी क्रिया ।

हीपित-वि० [सं०] लज्जित किया हुआ ।

हीषा-स्त्री० [सं०] (कोपेकी) दिनहिनाहट ।

हीषित-वि० [मं०] दिनहिनाया हुआ । पु० दिनहिनाहट ।

हीपी (विज)-वि० [सं०] दिनहिमानेवाला ।

हीपुक-पु० [सं०] एक नरहकी कुशल ।

हुसि-स्त्री० [सं०] आनंद, प्रसन्नता ।

हुल-वि० [मं०] प्रसन्न, सतुष्ट ।

हुद्-पु० [सं०] गाजगी; प्रमत्तता, आनंद; शिरण्यकशिपुका एक पुत्र ।

हुद्क-वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला ।

हुद्द-पु० [सं०] आनंदित करनेकी क्रिया । वि० प्रमत्त करनेवाला ।

हुदित-वि० [सं०] आनंदित ।

हुदिवी-वि० स्त्री० [मं०] आनंद देनेवाली । स्त्री० १० 'हृदिनी'; एक शक्ति ।

हुदी (विज)-वि० [सं०] आनंदयुक्त; प्रमत्त करनेवाला; बहुत प्रसन्नवाला ।

हुका-स्त्री० [मं०] लज्जा ।

हुकु-वि०, पु० [मं०] दे० 'हीकु' ।

हुषा-स्त्री० [सं०] दे० 'हेषा' ।

हुलन-पु० [मं०] श्लोकना, लक्ष्मणा ।

हुली-अ० वहाँ ।

हुल-पु० [मं०] शोरगुल; पुकार, निकट बुलाना; न.दान ।

हुलक-वि० [मं०] पुकारनेवाला ।

हुयी (विज)-वि० [मं०] आह्वान करनेवाला; ललकारनेवाला ।

हुस्की-स्त्री० [अ०] एक प्रकारकी अंगरेजी शराब जो जी आठिमें बनायी जाती है ।

हेल-पु० [अ०] एक बहुत ही बड़ा समुद्री जंतु त्रिमका शिकार तेल, खरबी, हट्टी आदिके लिए किया जाता है ।

परिशिष्ट—१

पारिभाषिक शब्दोंकी व्याख्या

अ

अंकनी—खी० (पेंसिल) एक प्रकारकी लेखनी जो एकही या धातुके पोले रुबेमे टुकड़ेमें सीमे या विशेष प्रकारके मसालेकी सन्धार पैठाकर तैयार की जाती है, पेंसिल।

अंकपत्र—पु० (स्टॉप) निर्धारित मूल्यपर मिलनेवाला कामकाज टुकड़ा जो लिफाफे, अर्जी आदिपर लगाया जाता है, स्टॉप, टिकट।

अंकपत्रित—वि० (स्टॉप) (वह लिफाफा, पत्र या न्यायिक आवेदनपत्र) जिसपर अंकपत्र (स्टॉप) लगा हो।

अंकित मूल्य—पु० (फैरा वैल्यू) वह मूल्य जो किसी मुद्रा, ऋणक्षेत्र आदिपर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियोंमें या विशेष कारणोंमें घटना-बद्धता रहे।

अंकुरण—पु० (जर्मिनेशन) अंकुर निकलनेकी क्रिया; किसी वस्तुकी उत्पत्ति होना, शुरू होना।

अंकेक्षित लेखा—पु० (आडिटेड अकाउंट) वह लेखा या हिसाब जिसमें भाष-अध्यापिकों आदिकोंकी नॉन लेखा-परीक्षक द्वारा कर ली गयी हो।

अंगच्छेद—पु० (ऐंग्लिशन) दे० मूलमें।

अंगरक्षक—पु० (गार्डी-पाउ) दे० मूलमें।

अंगारक—पु० (कार्बन) एक अथाव्ययी मूल तत्व जो किनने की पदार्थोंमें पाया जाता है। कोयला इमीका उदाहरण है।

अंगुलीक—पु० (फिंगरमिड) उंगली या उंगलियोंका निशान।

अंतःक्षिप्त—वि० (इन्वेक्टेड) जो सूई द्वारा भीतर प्रविष्ट कराया गया हो।

अंतःक्षेप, अंतःक्षेपण—पु० (इन्वेक्शन) सूई द्वारा भीतर प्रवेश करानेका कार्य।

अंतरंकित, अंतर्लेखित—वि० (इन्फ्रामाइट) (वह वृत्तादि) जिसमें भीतर कोई आकृति (ट्रिकोनादि) बनायी या अंकित की गयी हो; जिसमें भीतर या जिसमें ऊपर कोई लेख, मूर्ति आदि अंकित की गयी हो।

अंतरंग सचिव—पु० (पाइवेट सेक्रेटरी) राष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधान मंत्री, आदिका वह सचिव जो उनके निजी या घरेलू मामलोंकी देखरेख करता है।

अंतरस्थापन—पु० (इंटरपोज) अपने आपको बीचमें डालने, स्थापित करनेकी क्रिया।

अंतरवाचन—पु० (सिलेक्शन) कई वस्तुओंमें अपनी पसंदके अनुसार पसंद करना; विभिन्न अभिव्यक्तियोंमें योग्यता आदिके अनुसार कुछ लोगोंका चुनाव करना। (निर्वाचन = इलेक्शन)।

अंतरागम—पु० (इन्फेन्नेस) जलराशि या जन-समूहका भीतर आना।

अंतराल राज्य—पु० (बफर स्टेट) दो देशोंकी सीमाओंके बीचमें पड़नेवाला वह स्वतंत्र राज्य जिसके कारण उन दोनोंमें प्रत्यक्ष संपर्ककी जीवन नहीं आने पाती।

अंतरिक्ष-विज्ञान—पु० (मीटिअरॉलॉजी) अंतरिक्षकी स्थिति, विशेषकर नौमिम, का विवेचन करनेवाला विज्ञान।

अंतर्गत वृत्त, अंतर्गुप्त—पु० (इन-सरकिल) किसी कजु-भुज क्षेत्रकी सब भुजाएँ जिसका स्पर्श करनी ही वह वृत्त।

अंतर्प्रत्यक्ष—वि० (इनक्वांक्ट) जो किसी विपत्ति, अपराध या कठिनाई आदिमें लिप्त या ग्रस्त हो गया हो।

अंतर्देशीय—वि० (इनलैंड) देशके भीतर होने या उसके भीतरी हिस्सेमें मगब रखनेवाला। —**जलपथ—पु०** (इनलैंड वाटरवेज) देशके भीतरके जलमार्ग। —**वाणिज्य—पु०** दे० 'अंतर्वाणिज्य'।

अंतर्ध्वंस—पु० (सेभटेज) असंतुष्ट कर्मियों द्वारा कल-कार-खाने, रेलपथों, पुर्णों आदिका जान-बूझकर किया गया विनाश, तोड़-फोड़।

अंतर्भाव—पु० (इन्क्लूजन) शामिल या समाविष्ट होना, किसी वस्तुका किसी दूसरीके भीतर आ जाना।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष—पु० (इटरनेशनल मनेटरी फंड) मनुक राष्ट्रसंघकी देखरेखमें आप्रान निधि जिसका कार्य सदस्य देशोंकी मुद्राओंके विनिमय-मूल्य स्थिर बनाने रखनेमें सहायता देना तथा विदेशी मुद्राओंकी कमी पड़ जानेपर प्रावधानमें अधिक मुद्राएँ निकालनेकी सुविधा प्रदान करना है।

अंतर्बस्तु—खी० (इन्टर्नल) किसी वस्तु, प्रलेख, पुस्तक आदिके भीतर जो कुछ हो, भीतरकी सामग्री आदि।

अंतर्वाणिज्य—पु० (इटरनल ट्रेड) देशके भीतरी भागोंमें होनेवाला वाणिज्य, आन्तरिक व्यापार।

अंतर्वाग्यिन करना—स० कि० (टु इंटर्न) क्षेत्रविशेषकी सीमाके भीतर रहनेकी पाध्य करना, स्थानबद्ध करना।

अंतर्वासी रोगी—पु० (इन-बोर पैशेंट) दे० 'प्रविष्ट रोगी'।

अतिमेथस्य—पु० (अडिस्टेडस) अनिम चेतावनी, अनिम बार यह कह देना कि इस अवधिके बाद हम न रुकेंगे, अवधिके भीतर यह बात न की गयी तो भयानक परिणाम होगा।

अंधाकुप—पु० (ब्लैकआउट) हवाई हमला होनेके समय या उसकी आशंका होते ही मार्गजनक स्थानोंकी बतियोंका जला दिया जाना या उन्हें हस्त तरफ ढक देना जिसमें बाहरमें, विशेषकर आममानमें, रोजनी दिखाई न पड़े,

विरागपुत्र ।

अंश-पुं० (पिप्पि) समकोण ९०° का माप ।

अंशदान-पुं० (काष्ठिभूषण) किसी कोष या सामान्य-निधि आदिमें अथवा देशकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक उन्नति आदिमें अन्य लोगोंकी तरह अपना भी दक्षिण अंश वा माप प्रदान करना; योगदान; वह रत्न या सहायता जो इस प्रकार प्रदत्त की जाय, अर्पण ।

अंशद्वैती-स्त्री० (स्टोक) किसी संस्था या निगम आदिमें विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लगायी गयी पूँजीके हिस्से ।

अंशधर-पुं० (मेवरहोस्वर) वह व्यक्ति जो किसी प्रमंजल या व्यापारिक सत्त्वा आदिमें लगायी जानेवाली पूँजीके एक वा एकधिक हिस्सोंका स्वामी हो, हिस्सेदार ।

अंशकित-वि० (मेडेड) दे० 'विष्काकित' ।

अकालक्षुब्ध-विचारणा-स्त्री० (हनक्वेरेड) अकालक्षुब्ध आदिमें सर्वपथमें की जानेवाली कानूनी जाँच पड़ताल ।

अकिंचन-बाह-पुं० (पांघर सूट) वह बाद या मामला जिसमें बादी या प्रतिवादीकी ओरसे वह कहा जाय कि मुकरनेके खर्चके लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है अतः सरकारकी ओरसे मुझे बर्फीक तथा आज्ञादयक व्यवस्था दिया जाय ।

अकुचित-वि० (अनक्लदिडेड) जो जोती-बोयी न गयी हो (भूमि) ।

अकुट्टर्वा भूमि-स्त्री० (ब्रिजिन माइल) वह भूमि जो पहले कभी जोती-बोयी न गयी हो ।

अकुहरी-स्त्री० (स्टेलिंग) हिउजे, बर्तनी ।

अतिचारक-वि० (फायर प्रूफ) अग्निका प्रभाव रोकने वाला; वह जो आगके संपर्कमें आनेपर भी न जले, मफलतापूर्वक उसके प्रभावका कारण कर सके ।

अतिसात्मक दृष्ट-पुं० (फायर ग्रेडर) किसी मकान आदिमें लगी हुई आग बुझानेका काम करनेके लिए संघटित प्रशिक्षित व्यक्तियोंका दल ।

अदमासी दृष्ट-पुं० (कारवर्क अलाक) भारतका एक राजनीतिक दल जिसकी संस्थापना नेताजी सुभाषचन्द्र बसुने की थी ।

अप्रजाधिकार-पुं० (ग्राइमोजेनोवर) अपने पिताका राज्य, संपत्ति आदि वरानाममें पानेका उद्देश्य पुत्रका अधिकार ।

अप्रसर-वि० (फरर) और आगेका, कहे हुएके बादका ।

अप्रसारण-पुं० (कारवर्क) दे० मूलमें ।

अप्रसारित-वि० (फरवर्क) (आवेदन पत्रादि) जो आगे (ऊँचे अधिकारीके पास) भेज दिया गया हो, जो आगे बढ़ा दिया गया हो ।

अग्रक्ष व्याक्ति-पुं० (परसोना मान् मेड) (किसी देशका) वह राजदूत, राजपुरुष या अन्य व्यक्ति जो (प्रायः किसी अन्य देशके) उच्चाधिकारियों आदिकी अग्रक्ष वा अग्रज्य जान पड़े ।

अग्रिम दैव-पुं० (रंमेस्ट मनी) किसी कार्य-विशेषमें खर्च करनेके लिए पहलेसे दिया गया धन, जिसका डिमांड आदेश किया जाय ।

अग्रिम धन-पुं० (रंमेस्ट) किसीके वेतन, कार्यके परि-

अधिक, वस्तुके मूल्यादिका वह अंश जो उसे नियत तिथिसे पहले ही वा वस्तु प्राप्त होनेके पूर्व ही दे दिया जाय ।

अग्नेय-पुं० (कारवर्क ग्राइस) आगे मिलने या लगाया जानेवाला मूल्य; बादमें देयी जानेवाली वस्तुका अभीसे लगाया जानेवाला मूल्य ।

अन्धालक-वि० (नॉन कंडक्टर) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदिका परिचालन न हो सके ।

अधिकारस्थ-वि० (इनक्वोरेबिल) जिसका करनेमें जिसके अच्छा होने, दूर होने, शांत होने, की आशा वा संभावना न हो ।

अचेतनक-पुं० (अनोस्चेडिक) चेतनाहीन, बेहोश बना देनेवाला पदार्थ (जैसे नकोरीकार्म) ।

अचेतनीकरण-पुं० (अनोस्चेडिक) अचेतन या बेहोश कर दिया जाना, चेतनाहीन हो जाना ।

अठपट्टी, अठपेजी-वि० (आवटेडो) (छपी हुई पुस्तक या फार्मेका वह आकार) जिसमें एक ही तरफ छपे हुए कागजमें आठ पृष्ठ किये गये हों ।

अनु-पुं० (मास्क्वेल) पदार्थका सबसे छोटा कण जो मौलिक वस्तुके गुण रखता है । -अन्य-पुं० (ऐटम) यमः एक अनिर्भाकारकारी वस्तु ।

अतारांकित प्रश्न-पुं० (अन स्टार्ड पंक्चर) विधानमंडल आदिके अधिवेशनमें प्रश्नोंतरके समग्र सूचा जानेवाला वह प्रश्न जिसमें तारांक लगाकर विभेद न किया गया हो और जिसका उत्तर मौखिक न देकर लिखित दिया जाय ।

अति-उत्पादन-पुं० (ओवर-प्रोडक्शन) उत्पन्न वा मागः अधिक मात्रामें पथ वस्तुओंका उत्पादन ।

अतिक्रमण-पुं० (एक्सीग्रैड) अपनी भूमि, अधिकार, कर्तव्य आदिकी सीमाका उल्लंघन कर दूसरेकी भूमि, अधिकार आदिकी सीमामें प्रवेश, कानून या सम्प्रदाय करना, सीमो-उल्लंघन (बायोइंजन) अधि आदिकी शोषण, अपात्यन या उत्पन्न ।

अतिचरण-पुं० (ट्रान्स्ग्रेसन) सीमा या अधिकारके बाहर जाना ।

अतिजीवन-पुं० (मरबाइवल) अन्य व्यक्तियों, प्रजातियों प्रथाओं आदिके समाप्त हो जानेके बाद भी किसी व्यक्ति, प्रजाति, प्रथा आदिका जीवित वा बना रहना ।

अतिजीवी-वि० (मरबाइवल) अन्य व्यक्तियों, प्रजातियों आदिके समाप्त हो जानेके बाद भी बना रहनेवाला, परिजीवी ।

अतिविग्रह-पुं० (ग्रेट-हाउस) अतिविधियों, अभ्यासगतोंके ठहरानेके लिए निर्धारित गृह, प्रदीक्षादि ।

अतिविश्रब्ध, अतिविश्रब्ध-पुं० (ग्रेट-हाउस) दे० 'अतिविग्रह' ।

अतिविश्रब्ध-स्त्री० (ग्रेट-हाउस) दे० 'अतिविग्रह' ।

अतिप्रजनन-पुं० (ओवर एंजुलेशन) किसी देश या क्षेत्र की आबादीका इतना अधिक बढ़ जाना कि उसके निवासी समुचित रूपमें निर्वाह करना कठिन हो गया हो ।

अतिरिक्त लाभ-पुं० (एक्सेस प्रॉफिट) साधारण या निर्दिष्ट अतिरिक्त लाभ ।

अवलीय-वि० (इंक्विरेट) जो किसी विशेष दलसे संबद्ध न हो; वह लोगोंने संबंध रखनेवाला जो किसी दल-विशेषमें शामिल न हो।

अवसाविक-वि० (अपटुहेट) बिलकुल आज्ञात्मकता, दाल-तकता; जिसमें बिलकुल शासकके तथ्य तथा भाँकने आदि आ गये हों; जो अभी-अभीनकने भूषाचारी, तीर-तरीकों आदिसे परिचित हो।

अवसर्प-पु० (वेटर) दे० मूलमें।

अधिककोण-पु० (ऑब्ज्यूअर पंगिल) एक समकोणमें बषा; किंतु दो समकोणोंसे छोटा, कोण।

अधिककोण त्रिभुज-पु० (आभटस पंगिल ट्राइपंगिल) वह त्रिभुज जिसका एक कोण अधिककोण हो।

अधि(क) प्रतिनिधित्व-पु० (रिप्रेजेंट) किसी अल्पसंख्यक संसदाय या वर्गको दिया जानेवाला उसकी मर्यादाके अनु-पातसे अधिक प्रतिनिधित्व।

अधिकर-पु० (सुपर टेक्स) अधिक आयकर या किसी विशेष अवस्थामें लगनेवाला अतिरिक्त कर।

अधिकरण-पु० (ट्रिब्यूनल) न्यायालय; राज्यका कोई मुख्य विभाग (जैसे नावधिकरण)।

अधिकर्मी-पु० (ओवरमीयर) कुछ लोगोपर निगरानी रखने हुए उन्हींके कामोंकी देखभाल करनेवाला अधिकारी।

अधिकारक्षेत्र-पु० (जूरिडिक्शन) किसी न्यायाधीश यादिके अधिकारकी सीमा या क्षेत्र।

अधिकारका अवक्रमण-पु० (डिवाय्जुशन ऑफ पावर) अधिकारका एक व्यक्ति या संस्थाके हाथमें दूसरेके हाथमें चला जाना या दे दिया जाना; अप्रयुक्त अधिकारोंका अंतिम हकदारको प्राप्त हो जाना।

अधिकारपत्र-पु० (चार्टर) अधिकार प्रदान करनेवाला वह लिखित प्रत्येक जो राज्य, राजा या प्रधान शासकसे प्राप्त हुआ हो।

अधिकारपृच्छा-खी० (की चारंटो) वह लिखित आदेश-पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति या निगमित संस्थामें पूछा जाय कि किन अधिकारोंके आधारपर उसकी ओरसे किसी पद या मनाधिकारका दावा किया जा रहा है।

अधिकारिका सेना-खी० (आरमी आफ आकुपेशन) जीते हुए देशपर तबतक अधिकार बनाये रखनेवाली सेना जबतक वहाँ नियमित शासनकी व्यवस्था कायम न हो जाय।

अधिकारिराज्य-पु० (अट्रोकेसी) वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था मुख्य रूपसे अधिकारियोंकी परंपरापर आश्रित हो; नौकरशाही; कर्मचारितंत्र।

अधिकृत राजक-पु० (चार्टर्ड अकाउंटेंट) हिसाब किताब की जाँच इत्यादिका काम मन्त्री अर्थात् जाननेवाला व्यक्ति जिसे उपयुक्त परीक्षाके बाद सरकारने हमका प्रमाणपत्र भिजा हो।

अधिकोष-पु० (रेक) दे० 'बैंक' मूलमें।

अधिकोषण कार्य (स्वापर)-पु० (वैकिंग बिजनेस) दूसरीका रुपया उभार करने, लोगोंको ऋण देने आदिका कारबार, कौड़ीबाजी, महाजनी।

अधिकोष-पु० (जुरिस्डिक्शन) दे० 'अधिकारक्षेत्र'।

अधिग्रहण-पु० (एक्जिजिशन) अधिकार या अधिवाचन द्वारा किसीकी संपत्ति आदि ले लेना।

अधिदेव-पु० (अकाउंस) वाग्ना-व्यय, भोजन-व्यय, मकान-दे, किराये आदिके संबंधमें वा किसी अतिरिक्त कामके लिए कर्मचारीको दी जानेवाली बंधी हुई रकम, भत्ता।

अधिनायक-पु० (डिरेक्टर) दे० 'मूलमें'। - **संघ-पु०** (डिरेक्टरशिप) एक व्यक्ति या व्यक्तिमूहका स्वेच्छापूर्ण शासन, जिसमें शामिल वर्गकी स्वीकृति लेने या इच्छा जाननेकी आवश्यकता न समझी जाय।

अधिनियम-पु० (अक्ट) विधानमंडल (अथवा राजा या प्रधान शासक) द्वारा पारित या स्वीकृत विधि।

अधिनियमन-पु० (इन्फ्रेंटमेंट) दे० 'विधायन'।

अधिनिर्वाचित करना-स० कि० (कोऑर्ट) किसी संस्थाके विद्यमान सदस्योंका अपने अधिकारमें किसी बाहरी व्यक्तिकी भी संस्थाका सदस्य निर्वाचित कर लेना।

अधिनिष्कासन-पु० (इविजिशन) विधि-विहित कार्यवाही द्वारा किसीकी भूमि, मकान आदिसे बाहर निकाल देना।

अधिपन्न-पु० (चार्टर) वह पत्र जिसमें किसीकी कोई काम करनेका अधिकार, अनुमति या आशा दी जाय, लिखित आदेशपत्र; किसीकी पकड़ने या उसका माल ज़ब्त करनेकी न्यायालयकी लिखित आज्ञा।

अधिपुरुष-पु० (बॉस) किसी संस्था आदिका प्रमुख अधि-कारी; अधिकारप्राप्त व्यक्ति।

अधिमार्-पु० (सरचार्ज) कर या शुल्कादिका वह अनि-रिक्त भार जो विशेष परिस्थितिमें वा विशेष कार्यके लिए किसीपर डाला जाय, निर्धारित परिमाणमें अधिक कर, शुल्क इत्यादि।

अधिमान-पु० (प्रिफरेंस) किसी वस्तु, देश, व्यक्ति आदि-को औरोंसे अधिक महत्त्व वा मान देना, बरीयता, पुरजोह।

अधिमाम्य-वि० (प्रेफरेंसिबल) जो औरोंसे अधिक अच्छा, महत्त्वपूर्ण या प्रयोजन करने योग्य हो अथवा समझा जाय।

अधिमाम्यता-खी० (प्रेफरेंस) अधिमाम्य होनेका भाव, बरीयता (राजकीय अधिमाम्यता = इंदौरियल प्रिफरेंस)।

अधिमूल्यपर-ख० (अवन्ड पार) निर्धारित वा अधिक मूल्यमें अधिक दामपर।

अधिवाचन-पु० (रेक्जिजिशन) किसी विशेष कार्यके लिए किसीको कोई चीज अधिकारपूर्वक मँगना या कोई काम करनेकी (लिखित) मँग करना; किसी समाने सदस्यों द्वारा सभाका अधिवेशन करनेकी लिखित मँग करना।

अधियुक्त-वि० (एंग्रॉबर्ड) दे० 'नियोजित'।

अधिवीक्षक, अधिवीज्यक-पु० (एड्जुडर) दे० 'नियो-जक'।

अधिवोजन-पु० (एंग्रॉबमेंट) दे० 'नियोजन'।

अधिवीज्यनालय-पु० (एंग्रॉबमेंट ऑफ़ी) दे० 'नियोज-नालय', काम-दिलाल दफ्तर।

अधिराज्य-पु० (ओमिनियन) स्वराज्यप्राप्त उपनिवेश, स्वतंत्र उपनिवेश।

अधिरौप-पु० (वाज) किराया, षंड आदिके रूपमें किसी पर अधिरौपिण की जानेवाली रकम ।

अधिकांश-पु० (रोमन) वह क्वाभाश जो किसी कार-साने अथवा व्यापारिक संस्थाके कायेकर्ताओं या हिस्सेदारोंको बेतन या साधारण कामांशके अनुरिक दिया जाय ।

अधिवक्ता-पु० (एक्सेकुटिव) न्यायालय आदिमें किसीके मामलेकी पैरवी करनेवाला ।

अधिवर्ष-पु० (स्लेप-ईयर) (अधिक दिन या अधिक मास-वाला वर्ष) वह खाद वर्ष जिसमें मूलमाम पकता हो; वह ईमबी मन् जिसमें फरवरी २९ दिनाका हो; वह सोर वर्ष जिसमें फास्तुन २१ दिनका हो ।

अधिवार-पु० (डीमन्डार्ड) एक देश, प्रांत या राज्यसे हटकर किसी दूसरे देश, प्रांतादिमें स्थायी रूपमें बस जाना ।

अधिवार्ता-पु० (कॉन्सुलर एजेंट) दूसरे देश या राज्यादिमें स्थायी रूपमें जा बसनेवाला । दे० मूलमें ।

अधिविषय-पु० (ओवर लूप) अधिकारी या बैंकमें किसीके काममें जितना रूपया जमा हो, उससे अधिककी हुंदी या बनावेस काटना या इस तरह काटी हुई हुंदी ।

अधिविज्ञक-पु० (रेक्टर) किसी विश्वविद्यालय, महाविद्यालय अथवा प्रधान; किसी विश्वविद्यालय प्रधान शिक्षक (स्कालर); मुख्याधिकाता ।

अधिव्यतिष्ठ-वि० (ओवरलूट) जो आवश्यकतामें अधिक ठंडा हो गया हो ।

अधिवृत्त-पु० (प्रोविडम) अकल या वास्तविक मूल्यमें अधिक की जानेवाली रकम या मुक्त; किसी मुद्राकी उससे अधिक मूल्यका मुद्रामें परिणत करनेपर अलगमें लिया जानेवाला मुक्त ।

अधिष्ठापन-पु० (स्टैब्लिश) विपुलवन, लापवन आदि-का बैठाना, स्थापित किया जाना ।

अधिसूचना-की० (नोटिफिकेशन) प्रहापन, अधिकृत सूचना, सरकार द्वारा प्रकाशित या सरकारी गजटमें छपी हुई सूचना ।

अधीक्षक-पु० (सुपरिण्डेंडेंट) किसी कार्यालय या विभाग-का वह प्रधान अधिकारी जो अपने अधीन काम करने-वाले समस्त कर्मचारियोंकी नियंत्राणी करे ।

अधीक्षण-पु० (सुपरिण्डेंडेंस) मातृजन कर्मचारियोंके काम-काजकी देखरेख करना ।

अधीन अधिकारी-पु० (सुबॉर्डिनेट आफिसर) किसी बड़े या मुख्य अधिकारीके नीचे काम करनेवाला अफसर, मातहत अफसर ।

अधीन न्यायालय-पु० (सुबॉर्डिनेट कोर्ट) वह छोटी अदालत जो किसी बड़ी अदालत (उच्च न्यायालय आदि)के मातहत या अधीन हो ।

अधीनीकरण-पु० (सम्पुगेसन) वशमें करने, जीतने या अधीनतामें लानेका कार्य ।

अध्याक्ष-पु० (चेयरमैन) किसी सभा, संस्था या नगर-पालिकाका प्रधान; (स्पीकर) संसद या विधानसभाके सदस्यों द्वारा चुना गया वह मुख्य अधिकारी जो उत्तकी

बैठकोंमें अध्यक्षता करे, विचारके समय शांतिमंग न होने दे तथा किसी प्रस्तावके पक्ष-विपक्षमें समसंरमक मत प्राप्त होनेपर अपना निर्णायक मत दे; प्रमुख । -पीड-पु० (चेयर) अध्यक्ष या प्रमुखके बैठनेकी कुर्सी या आसन । -डीपार्-की० (स्पीकर गैलरी) संसद या विधानसभाके अध्यक्षके पीछेकी वह दीर्घा जहाँ बैठकर विशिष्ट अतिथि-गण अथवा अध्यक्षसे अनुमतिप्राप्त विशिष्ट व्यक्ति समाजी काररवाई देखते तथा वक्ताओंके भाषणादि सुनते हैं ।

अध्ययनकक्ष-पु० (स्टडी) वह कमरा जहाँ लिखने-पढ़ने, अध्ययनादिका कार्य किया जाता हो ।

अध्यावेश-पु० (आडिमेंस) राज्यके अधिपति द्वारा जारी किया गया वह आधिकारिक आदेश जो किसी आकस्मिक या विशेष स्थितिमें थोड़े समयतक लागू हो और जो उक्त स्थितिमें न रहनेपर वापस ले लिया जाय या आवश्यकता बनी रहनेपर संसद या विधानसभा द्वारा अधिनियमके रूपमें स्वीकृत कर लिया जाय ।

अध्याहार-पु० (इम्फोरस) घटनाबकी आदिमें कोई निष्कर्ष निकालना, नथ्योंके आधारपर कुछ अनुमान लगाना, अनुमान ।

अध्वीकार करना-स० कि० (रिपुडियट) किसीकी सत्ता, प्रभाव या भाषा न मानना; कण, दायित्व आदिमें दग कार करना; किसीके कथन, आरोप आदिको न मानना ।

अनधिकृत-वि० (अन-अथॉराइज्ड) निम्नके पीछे सम्पूर्ण अधिकार न हो; जो अधिकारके बाहर हो (नैथा इ०) जो किसी अधिकारी व्यक्ति द्वारा दिया या जारी न किया गया हो (वक्तव्य, विवरण इ०) ।

अननुष्ठापित-वि० (डिन-अल्गाउट) (वह प्रस्तावादित) त-मभामें उपस्थापित करनेकी अनुज्ञा न दी गयी हो ।

अननुकष-वि० (इकोम्पेटिबल) जो रूप, व्यवहार आदिमें रहित अनुकष न हो, मेल न खाना हो ।

अनर्जित-वि० (अनअर्ज्ड) जिम्मा अर्जन न किया गया हो ।

अनर्हता-की० (डिस्कालिफिकेशन) किसी कार्य, पद आदिके योग्य न होनेका अव, अयोग्यता, नाकाबिलीयत ।

अनर्हिकरण-पु० (डिस्कालिफाई) किसीकी किसी कार्य, पद आदिके अयोग्य ठहराना ।

अनाक्रमण-सन्धि-की० (नॉन-ऐग्रेसशन पैक्ट) दो राष्ट्रांके बीच की गयी वह संधि जिसमें एक दूसरेके विरुद्ध सैनिक बलका प्रयोग न करने तथा सततद्वेष्ट या कृपका उपपन्न होनेपर आपसी बानधन अथवा वंशव्यवहार द्वारा उमें निपटानेकी बान स्वीकार की गयी हो ।

अनाकरण-पु० (डिस्त-ऑनर) छातेमें या शिक्षकमें धनकी कमी आदिके कारण) बनावेस (चेक), हुंदी वा प्राप्यक (चिक) का कृपया देनेमें इनकार करना ।

अनाधिकारिक-वि० (अन-अथॉराइज्ड) दे० 'अनधिकृत' । **अनाधिकारिक शिक्षक-की०** (नैकओवर) बिना विशेष आवासके, आसानीसे प्राप्त विज्ञान, अनायास-प्राप्त विज्ञान ।

अनाधरित करना-स० कि० (अनवीक) किसी प्रसिद्ध व्यक्तिकी मूर्ति या चित्रके ऊपर बसा हुआ आवरण हटाकर उसे कण्ठाके दर्शनाय स्वीकृत देना ।

अनावरण-पु० (अनवेरिण) किसी महापुरुषकी मूर्ति या चित्रको अनावरण करनेका कार्य या तत्संबंधी सार्वजनिक समारोह।

अनावर्त्तक, अनावर्त्ती-वि० (नान-रेवर्गिंग) जो बार-बार न हो, जो एक ही बार दिया जाय या किया जाय (अनु-दान, व्यय आदि)।

अनावासिक-वि० (नानोरेजिडेंट) कर्तव्य आदि-संबंधी शायित्यके क्षेत्रमें न रहनेवाला, अन्त्य निवास करनेवाला।

अनावासिकछात्र-पु० (डे स्कालर) वह छात्र जो विध-विधालयके बाहर, किसी निवृत्तवर्ती नगर या ग्राममें, रहते हुए केवल विद्या-अर्जनके लिए वहाँकी पढ़ाई आदिमें सम्मिलित होता हो।

अनासीन-वि० (अन्यूमेरेट) जिसे किसी कारणवश अपने स्थान, पद आदिमें हट जाना पड़ा हो, स्थानवर्धित।

अनाहृत प्रवेश-पु० (इंट्रान्स) बिना बुलाये किसीके घरमें प्रविष्ट हो जाना, किसीके मामलेमें जरूरत अपने आपको उपस्थित कर देना।

अभिपुत्र अभिक-पु० (अनसिन्ड लेबर, किसी कारखाने आदिमें काम करनेवाला वह अभिक जिसमें अपना काम करनेकी विशेष योग्यता, कुशलता न प्राप्त कर सका हो।

अस्त्रिवाय भरती-स्त्री० (कान्सक्रिप्शन) अन्व-मेना, त्रक सेना आदिमें सेवाके लिए अभिवाय या परमादेशक रूपसे भरती कर लिया जाना।

अनुकूलन-पु० (एडेप्टेशन) आवश्यक परिवर्तन कर अनुकूल बनाना; किसी कार्यादिके उपयुक्त बनाना।

अनुकूलित-वि० (एडेप्टेड) आवश्यक परिवर्तन करनेके बाद जो (स्थिति आदिमें) अनुकूल बना लिया गया हो।

अनुकूलिकरण-पु० (एडेप्टेशन) दे० 'अनुकूलन'।

अनुकूलिकाव्य-पु० (पैरोडी) किसी प्रसिद्ध कविकी कविताका ऐसा अनुकरण जिसमें शब्द-विन्यास एवं विचार परंपरा इस तरह बदल दी जाय कि उसमें पंक्तियोंमें हास्य-मिश्रित आनंदकी मूर्ति हो।

अनुग्रहकाल-पु० (टैज ऑफ ग्रेस) विभीषण दुष्ट या वीमा-की किल्लकी निर्धारित अवधि बीत जानेके बाद उसके पुन-गान या अदायगीके लिए अनुग्रहपूर्वक दिया गया अनि-रिक्त समय।

अनुग्रहकथन-पु० (प्रेलुडरी) दीर्घकालीन सेवाके, धनके अनुग्रहके रूपमें दिया जानेवाला धन, मेहोषहार।

अनुच्छेद-पु० (आर्टिकल; पैराग्राफ) किताब अधिनियम, विधान, नियमावली, संविधा आदिका वह विविध अंग या अंश जिसमें एक विषय और उसमें प्रविष्टों आदिका उल्लेख हो; लेख आदिका वह अंश जिसमें कोई एक बात कही गयी हो और जिसकी पक्षकी पक्ष आरम्भमें कुछ स्थान छोड़कर लिखी गयी हो।

अनुज्ञप्ति-स्त्री० (लाइसेंस) कोई वस्तु बेचने-खरीदने आदिकी अनुमति जो व्यक्ति शुल्क देनेपर सरकारमें प्राप्त की गयी हो। दे० 'अनुज्ञापत्र'।

अनुज्ञा-स्त्री० (परमिशन) वह अनुमति (या स्वीकृति) जो कोई काम करनेके लिए किसी अधिकारी या मान्य व्यक्ति द्वारा दी गयी हो। -**आरी**-पु० (लाइसेंसी) वह

व्यक्ति जिसे कोई वस्तु बेचने या कोई काम करनेके लिए (सरकारमें) अनुज्ञापत्र दिया गया हो, लाइसेंस। -**पत्र**-पु० (लाइसेंस) सरकारमें प्राप्त वह पत्र जिसमें किसी व्यक्तिको उचित शुल्क देनेपर कोई वस्तु बेचने-खरीदने या ऐसा ही कोई अन्य काम करनेकी अनुमति दी गयी हो।

अनुमोक्षण-पु० (प्रेडिफिकेशन) मनुष्य या प्रसक्त करना; कपवा पैना, भेंट आदि देकर किसीको अपने अनुकूल बनाना, परिपोषण।

अनुदेश-पु० (इन्स्ट्रक्शन) कोई काम करनेके लिए विशेष रूपमें समझाना या आदेश देना, हिदायत।

अनुमृष्टक-वि० (अन-डिस्चार्ज्ड) (वह कण) जिसका परि-पोषण न किया गया हो; (वह बंदी) जो कारागृहमें मुक्त न किया गया हो।

अनुपाती प्रतिनिधित्व-पु० दे० (प्रपोर्शनल रिप्रेजेंटेशन) 'अनुपातिक प्रतिनिधित्व'।

अनुपूरक-पु० (सप्लिमेंट) वह अंश जो छुटी हुई बात या कोई कमी पूरी करनेके लिए बादमें जोड़ा जाय। वि० (सप्लिमेंटरी) जो कमी रह गयी हो उसे पूरा करनेके लिए जो बादमें रखा जाय, जोड़ा जाय, प्रकाशित किया जाय, पूछा जाय। -**प्रश्न**-पु० कोई प्रश्न पूछनेके बाद छुटी हुई बात या उत्तरवही अन्य जानकारी प्राप्त करनेके लिए उम्मी मिलानेमें पूछा गया प्रश्न।

अनुपूरण-पु० (सप्लिमेंट) छूट, कमी आदि पूरी करनेके लिए बादमें कुछ बढ़ाना या मिलाना।

अनुपूरित-वि० (सप्लिमेंटेड) जो कोई कमी, छूट आदि पूरी करनेके लिए बादमें जोड़ा, रखा या प्रकाशित किया गया हो।

अनुबद्ध करना-स० कि० (टु एनेक्स) अतमें जोषना, साथमें रखना या मिला देना।

अनुबल-पु० (रेवरगाई) पीछे स्थित रक्षक सेना, पृष्ठ-रक्षक सेना।

अनुभवोक्ति-स्त्री० (मैक्सिम) अनुभवके आधारपर कही जानेवाली बात, कहावत आदि।

अनुभूतिवाद-पु० (एंपीरिजिज्म) पूर्वज्ञान वागों आदिपर नहीं, केवल अनुभव तथा परीक्षणविपर आश्रित तथ्यवाद।

अनुमोदन-पु० (ऐप्रैवल) किसीके कार्य, मत या प्रस्तावकी ठीक मानने हुए अपनी सख्तमति प्रकट करने या उसका समर्थन करनेकी क्रिया।

अनुमोदित-वि० (ऐप्रूव्ड) (कांय या प्रस्ताव) जिसका किसीने अनुमोदन किया हो या ठीक समझकर स्वीकार कर लिया हो।

अनुवाचक-पु० (कैनवैसर) माल खरीदनेके लिए दूसरीकी राजी करनेका प्रयत्न करनेवाला; मतदानके पास आकर उसे अपने पक्षमें मतदान करनेके लिए तैयार करनेवाला, मनप्राथी।

अनुवाचन-पु० (कैनवैसिंग) किसीकी समझा बुझाकर अपने पक्षमें करत हुए उसमें कोई काम करनेके लिए मन्त्रणापूर्वक कहना; पदपर नियुक्त करने, मत देने या माल खरीदनेकी स्वीकृति प्राप्त करनेका प्रयत्न करना, मनप्राथीना।

अनुशेषक-पु० (मिमीरैडम) शिक्षावर्गों, गोंगों आदिका संक्षेपमें स्पष्टीकरण करते हुए अधिकारियोंके समक्ष उपस्थित किया गया अनुशेषक।

अनुसंब-पु० (आंफसेट) बहुभुजके दो शीर्षोंके मिलावने वाली सरक रेखा (आधाररेखा) पर किसी अन्य शीर्षमें गिराया गया लंब।

अनुसंब खाता-पु० (संस्पंद अकाउंट) वह खाता जिसमें किसीकी दी गयी ऐसी रकम या रकमें अस्थायी रूपमें टाल दी जाती है जिनकी पक्की खातिरानी बादमें हिसाब प्राप्त होनेपर की जाय, उचित खाता, अमानत खाता।

अनुसंबन-पु० (संस्पंदन) दे० 'निलंबन'।

अनुसंधित-वि० (संस्पंदेड) दे० 'निलंबित', मुअत्तल।

अनुकृति-की० (फैक्सिमिलि) लेख, चित्र आदिकी ओकीलों प्रतिकृति या अनुकृति।

अनुलाभ-पु० (परकिजिट) दे० 'परिलम्ब'।

अनुकर्ता प्रस्ताव-पु० (सबसीक्ट मैशन) बाजमें जानेवाला या रखा जानेवाला प्रस्ताव।

अनुविभाग-पु० (मेक्शन) गुस्तकारिके मुख्य लक्षोंमेंसे किसी एकका छोटा विभाग; किसी ममान, मंत्रदाय या वर्गका वह खंड या समूह जिसकी अपनी अलग विशेषता, स्वार्थ, रीति-रिवाज आदि उपभेद; किसी कक्षाने विषयादिकी भिन्नताके कारण किये गये विभाग; किसी विकिरणक, निर्माणशाला आदिके पृथक्पृथक् हिस्से जिनमें अलग-अलग तरहका काम होता हो।

अनुवेक्षण-पु० (वीका) पारंप्रका निरीक्षण कर लेनेके बाद उसकी पीठपर किया हुआ वह लेख कि उसकी विषयवद् जीव की जा नुकी है और वातायों उसे लेकर आये वह सकता है।

अनुसंसा-की० (रेकॉमंडेशन) दे० 'अभिस्ताव'।

अनुसंसित-वि० (रेकॉमंडेड) जिसके संबंधमें अनुसमा या अभिस्ताव किया गया हो।

अनुसंधान-पु० (इन्वेस्टिगेशन) अच्छी तरह देख-सुनकर या जाँच-पड़ताल द्वारा बहुस्थितिका पता लगाना।

—लेख-पु० (मिमीरैड) स्वयं पता लगाकर बात की गयी बातों का सामग्रीके आधारपर किया गया लेख।

अनुसमर्थन-पु० (रैटिफिकेशन) (प्रतिनिधियों द्वारा) किये गये समझौते आदिका आत्मने-सविषय, संविदा-पत्रपर हस्ताक्षर आदि द्वारा-समर्थन या अभिपुष्टि।

अनुसंधित जाति-की० (इंट्यूइव कास्ट) अनुसंधानमें उल्लिखित या निर्दिष्ट जाति।

अनुसूची-की० (शेड्यूल) खानापूरी, कोष्ठक या व्यवस्थित सूचीके रूपमें दी गयी वह नामावली जो प्रायः किसी विवरण, नियमावली आदिके परिशिष्टकी तरह दी जाय।

अनुसमारक-पु० (रिमाइंडर) स्मरण दिलानेवाला पत्र (यु स्वरिक)।

अनुसमाखरण-पु० (सम्प्रकाशविग) किसी प्रलेख, आवेदनपत्रादिमें अपने हस्ताक्षर बदराना; किसी सिद्धांत या वक्तव्य आदिके संबंधमें अपनी स्वीकृति सूचित करनेके लिए हस्ताक्षर करना।

अनेकबाध-पु० (प्लूरलिज्म) जीवोंकी भी शुष्क और वास्तविक सत्ता माननेवाला दर्शन, जगत्में दोसे अधिक परम सत्ताओंमें विश्वास करनेका सिद्धांत।

अन्योलुटिव-की० (प्रोक्लूजिट) किसानों, ग्रामीणों आदिसे उचित मूल्यपर खाद्यान्न प्राप्त करना, गन्का-बन्की।

अन्वेषप्रजनन-पु० (क्रॉसबीडिंग) विभिन्न जातियों पशु-पौधोंके पारस्परिक संलग्न द्वारा अपादन कराना।

अन्वेषक प्रकाश-पु० (सर्वेलाइट) वह तेज प्रकाश जो अंधेरोंमें किसी भी दिशाकी ओर दूरतक इस आशयमें प्रक्षिप्त किया जाय कि उससे शत्रुके विमानों या उसकी गतिविधि आदिका अथवा भागते हुए या कहीं छिपे हुए जोर आदिका पता चल सके वा उस तरहकी सब चीजें साफ-साफ देखी जा सकें।

अन्वेषण-पु० (रिसर्च) लगातार परिश्रमपूर्वक छानबीन करते हुए ऐतिहासिक बातों तथा अन्य मन्थोंका पता लगाना, गवेषणा, शोध।

अपखंड-पु० (फ्रैगमेंट) किसी वस्तुका टूटा हुआ हिस्सा, बधूरा या अपूर्ण भाग; बिना या छुट वस्तुका बना हुआ अंश।

अपगमन-पु० (मिस्कीरिंग) (किसी पत्राधिक) भूलने अथवा चले जाना, निर्दिष्ट स्थानिके पास न पहुँचकर अन्य किसीके पास चले जाना।

अपचक्र-पु० (विश्रम सक्लि) (डलीको) आदिका। गेम; दुश्मक जिसमें दोष भरे चक्के हों तथा जिनमेंमें गड्ढर आसकना कठिन हो; विषय वृत्त।

अपचरण-पु० (डिस्पारिया) अपनी सीमा या अधिकारक्षेत्रमें आगे बढ़कर दूसरेकी गैसी सीमा या अधिकारक्षेत्रमें चले जाना जहाँ प्रवेश करना अनुचित हो, अनधिकार प्रवेश।

अपचारक, अपचारी-पु० (डिस्पार) दूसरेकी सीमा या अधिकारक्षेत्रमें अनधिकार प्रवेश करनेवाला।

अपजात-वि० (डिजेनरेट) जो जाति, वंश आदिके अष्ट गुणों या विशेषताओंमें रहित हो गया हो; जो जैसे वंश, परंपरा आदिसे मूलभित होकर छुट वा निच्छुट भेगीक। बन गया हो।

अपजनन-पु० (पेवकजन) अग ले जाना, किसी स्त्री, बालक आदिकी उसके पति या माता-पिताके पालने बड़ा कर अथवा ले जाना।

अपमानलेख-पु० (लाइरेक) वह लेख, वक्तव्य आदि जिनमें किसी व्यक्तिकी अप्रतिष्ठा, बदनामी या अपमान हो।

अपमानवचन-पु० (स्लैटर) किसीकी बदनामी फैलानेके लिए गयी हुई झूठी बात कहना वा सुनाना, निन्दावाणी।

अपमार्जन-पु० (डिलीशन) रद्द करने, मिटा देने या निकाश देनेकी किया।

अपमार्जित करना-म० कि० (डिलीट) (किसी लेख, वाक्य, शब्द इत्यादिमें कोई अंश) निकाश देना, मिटा देना या रद्द कर देना।

अपमिश्रण-पु० (एडुल्टरेशन) पी, दूध या अन्य किसी चीजमें दूधित अथवा पटिया वस्तुकी मिलावट करना।

अभिव्यक्ति-पु० (मिस्त्रोप्रियेशन) दे० 'व्यव्यक्ति'।

अपर न्यायाधीश-पु० (एडीशनल जज) अतिरिक्त वा दूसरा न्यायाधीश।

अपर सचिव-पु० (एडीशनल सेक्रेटरी) सचिवका बड़ा हुआ काम सँभालनेके लिए रखा गया अतिरिक्त सचिव।

अपराध नरहत्या-ली० (कलेक्टिव होमसाइट) ऐसी नरहत्या जो अपराध मानी जाय तथा जिसके लिए दण्डकी व्यवस्था हो।

अपराधलेखा-पु० (हिस्ट्री शीट) दे० 'वृत्तफलक'।

अपराधविज्ञान-पु० (क्रिमिनॉलजी) वह विज्ञान जिसमें अपराध करनेके प्रेरक कारणों तथा निवारक उपायोंका विवेचन हो।

अपराधशील-वि० (क्रिमिनल) जो अपराधोंकी ओर प्रवृत्त हो, जो अपराध करते रहनेका आदी हो (जैसे-अपराधशील जन-जातियाँ)।

अपराधस्वीकरण-पु० (कन्फेशन) पुराहित हत्यादिके मामले अपना अपराध या पाप स्वयं स्वीकार करना; वह कथन जिसमें अपना अपराध स्वीकार किया गया हो।

अपराधवर्तनीय-वि० (नॉन-ट्रांसफरबल) दे० 'अहस्तांतरणीय'।

अपराध-पु० (फ्रॉक्टिवरिंग) जनताको या सरकारकी विपत्तिमें अनुचित लाभ उठानेकी चेष्टा।

अपराध-पु० (राइटिंग आफ) कण या पावनेकी रकम वसूल होनेकी आशा न रह जानेपर उसे रद्द कर देना, बटुलाते डाल देना।

अपराध-पु० (डाइवर्जेंस) दूसरी ओर चला जाना, किसी विद्वत्से अलग हटने या जानेकी क्रिया।

अपराध-पु० (होमिंग) ग़दम अधिक दाम प्राप्त करनेकी गरजसे बड़ी संख्या या परिमाणमें वस्तुओंका ग्रहण करना।

अपराध-पु० (एक्सप्लेन) किसी स्थान, संस्था आदिमें वस्तुपूर्वक या नियममय आदिके कारण हटा दिया जाना।

अपराध-पु० (डीफेंशन) दे० 'विस्फीति'।

अपराध-पु० (फिडनैरिफ) रुपया पेंडने, स्थायित्व रखने आदिके उद्देश्यसे किसी बालक-बालिका या धनी व्यक्ति आदिकी वस्तुपूर्वक उठाकर ले जाना या गायब कर देना।

अपराध-पु० (ओपेनिंग) अपराध न देखे जा सकनेका गुण, अपराधकी होनेका भाव या गुण।

अपराध-पु० (एक्विवलेन्स) किसी दूसरेका माल या धन अनुचित रूपसे अपने अधिकारमें कर उस अपने काममें लाना; राबन।

अपराध-पु० (नॉन-वेलेबिल) (वह अपराध) जिसमें किसीके जायिन बनने या जमानत देनेकी तैयार होनेपर भी अपराधीके अन्तर्गत रूपमें रहा किये जानेकी गुवाहश न हो।

अपराध-पु० (इंडागरेट टैक्स) वह कर जो प्रत्यक्ष रूपसे न किया जाकर विवेक वस्तुओं आदिकी बड़ी हुई कीमतके रूपमें उद्योगोंकोसे उद्गृहीत किया जाय।

अपराध-पु० (इरिक्वैरेबिल) जो फिर प्राप्त या वसूल न किया जा सके।

अपराध-पु० (इन-आपरेटिव) जो कागू न हो; जो अपनी क्रिया न कर रहा हो; प्रभाव न डाल रहा हो।

अपराध-पु० (लीट ऑफ लेजर) वह प्रपञ्च जो खुद या बिना सिले पञ्चोंके रूपमें हो।

अपराध-पु० (लीट टूट) वह व्यापार जिसमें संरक्षक कर आदि लगाकर बाधा न डाली जाय, दे० 'सुक्त बाणिज्य'।

अपराध-पु० (सिफ कांक्ट) किसी देशके शासक या सेनापति आदि द्वारा दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि वह व्यक्ति गिरफ्तार न किया जाय और न इसे किसी तरहकी क्षति पहुँचायी जाय।

अपराध-पु० (प्राइम नंबर) वह संख्या जिसके गुणनखंड न हो सर्व (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ११ इत्यादि)।

अपराध-पु० (डिफिडिट एरिया) वह जिला या भूखण्ड जहाँ साक्षात् आदिकी कमी हो; कमीवाला क्षेत्र।

अपराध-पु० (एक्वेगेशन) किसीके सम्बन्धमें ऐसी बात कहना या ऐसा आरोप लगाना जिसके लिए कोई निश्चित प्रमाण न हो; इस प्रकार कही गयी बात या अप्रमाणित आरोप।

अपराध-पु० (एजेंसी) किसीकी ओरसे उसके प्रतिनिधि या अधिकारके रूपमें कार्य करना; अधिकारी (एजेंट) के कार्य करनेका स्थान।

अपराध-पु० (एजेंट) किसी व्यापारी, व्यापारिक संस्था या राज्यकी ओरसे प्रतिनिधिरूपमें काम करनेवाला या कमीशनपर माल बेचनेवाला व्यक्ति।

अपराध-पु० (एजेंट) जिसका अभिप्राय किया गया हो।

अपराध-पु० (एजेंशन) चुन कर लेना, (दूस्त्रके पुत्र, नियम, प्रथा आदिकी) अपना बना लेना या अपना कहकर स्वीकार करना, स्वीकार करना।

अपराध-पु० (रेकॉगनिशन) अस्तित्व स्वीकृति, मान्यता।

अपराध-पु० (रेकॉगनाइज्ड) पहचाना हुआ; जिसका अस्तित्व मान लिया गया हो; (सरकार द्वारा) जिसे मान्यता दे दी गयी हो।

अपराध-पु० (आइडेंटिफिकेशन) किसीकी देखकर या पत्रचानकर बतलाना कि वह अनुक्त व्यक्ति ही है।

अपराध-पु० (एनाउंसर) सूचना देने या बतानेवाला; रेडियोपर समानार सुनाने या कार्यक्रम आदि बतानेवाला, उद्घोषक।

अपराध-पु० (एनाउंसमेंट) कोई बात घोषित करना या बताना, संवाद आदि सुनाना-सूचित करना।

अपराध-पु० (एनोटेशन) किसी पुस्तकके कठिन स्थलोंका अर्थ स्पष्ट करनेके लिए जोड़े गये अंश या टीका।

अपराध-पु० (एनोटेटेड) अभिव्यक्तियोंमें सुक्त, सटीक।

अपराध-पु० (सम्प्रकारवर) किसी कामके लिए बहुतेरमें प्राप्त छावना-रूपमें कुछ धन देनेवाला; चंदा देनेवाला।

अपराध-पु० (सर्विक्रिप्शन) किसी कामके लिए विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिया हुआ धन, चंदा।

अपराध-पु० (एक्वेम ऑफ वेल्थ) किसी बड़े

अधिकारी, नेता आदिके आगमनपर उसमें सम्मान एवं प्रशंसा में पदा जानेवाला स्वागत-भाषण; मानचम।

अभिवाचीकरण-पु० (रैशनैलिजेशन आफ इडरट्री) दे० 'उद्योगसमीकरण'।

अभिनिर्णय-पु० (वर्किंग) किसी मामलेमें न्यायसम्य दारा दिया गया निर्णयामक मत; किसीके संबंधमें उद्यो-
पित या सृजित जनता, निर्वाचकों आदिका मत; अंतिम निर्णय।

अभिनिर्णायक-पु० (रेफरी) वह व्यक्ति जिससे दो पक्षोंके बीच कोई विवाद या झगडा उत्पन्न होनेपर निर्णय करने-
की प्रार्थना या अनुरोध किया जाय; दे० 'लेक-जज'।

अभिनिर्णयाधीन-वि० (सब-जुडिरी) जो अभिनिर्णयके लिए न्यायालयके पास भेज दिया गया हो और जिसपर अभी विचार हो रहा हो, विचाराधीन।

अभिविषय-पु० (एगोमेशन) दे० 'निराकरण'।

अभिव्यास-पु० (ले-आउट) किसी परिदृश्यना (प्लेन)के अनुसार गृह, उद्यान आदिका निर्माण, विस्तार, आदि करना।

अभिपुष्टि-स्त्री० (कानफर्मेशन) किसी कथन, बयान, संवाद आदिमें सत्यता पुनः स्वीकार कर उसे अधिक दृढ़ एवं विश्वसनीय बनाना; किसी वदपर किसीकी नियुक्तिका स्थायी और दृढ़ बना दिया जाना।-**स्वापेक्ष**-
वि० (सबजेक्ट टु कनफर्मेशन) अभिपुष्टि हो जानेपर ही जिसका होना निर्णय हो, अभिपुष्टिके बाद ही जो पक्ष समझी जाय।

अभिपूर्ति करना-स० क्रि० (इम्प्लेंट) टेके आदिकी जगहें पूरी करना, दिया हुआ वचन पूरा करना।

अभिमायी होना-अ० क्रि० (टु प्रिवेल) प्रभावयुक्त वा प्रभु होना, मान्य होना, वैकास समझा जाना।

अभिवाचना-स्त्री० (विमार्स) दृढताके साथ वा अधिकार-पूर्वक वाचना करना, मंत्र।

अभिवाचन-पु० (डिपेन) किसी निश्चिन् क्षेत्रमें या किसी विदेश लक्ष्यकी ओर किये गये सैनिक आक्रमणोंकी परंपरा; किसी लक्ष्यकी दृष्टिसे अथवा जनताकी किसी नीतिके पक्षमें प्रभावित करनेके लिए की जानेवाली मजदुर कार्रवाई।

अभिवृत्ति-स्त्री० (चार्ज) न्यायालयमें किसी व्यक्तिपर अपराध वा नियमविरोधी कार्य करनेका आरोप लगाना, अभिवोग।

अभिवोग-पु० (एक्जुजेशन) दे० मूलमें।

अभिचोपाधीन-वि० (अंडर ट्रायल) (वह व्यक्ति या बंदी) जिसका अभियोग अभी अदालतमें चला रहा हो।

अभियोजन-पु० (प्रोसिक्यूशन) किसीपर फौजदारी मामला चलानेका कार्य (विशेषतः पुलिस द्वारा)।-**कारी**-
पु० (प्रोसिक्यूटर) (पुलिसकी ओरसे) न्यायालयके सामने रखे गये फौजदारी मामलेका संवाचन करनेवाला।

अभिरक्षा-पु० (कस्टोडियन) सुरक्षाकी दृष्टिसे किसी वस्तु वा व्यक्तिको अपने अधिकार, देखरेख या संरक्षणमें रखने-
वाला; किसी संस्थाके अधिकारों आदिकी रक्षाका विशेष क्रम-
से ध्यान रखनेवाला।

अभिरक्षा-स्त्री० (कस्टोडी) (किसी वस्तु वा व्यक्तिको)

किसीके साथ वा किसीकी देखरेखमें सुरक्षित रूपसे रखा जाना।

अभिरक्षित-वि० (रेकोर्डेड) नियमित रूपसे रिकार्ड सुरक्षित रखा हुआ, अभिलेखके रूपमें लाया हुआ।

अभिलेख-पु० (रेकोर्ड) किसी सत्य, विषय वा कार्रवाई आदिके संबंधमें नियमित रूपमें लिखी हुई सब बातें; न्यायालयके कामकाजकी, वंश आदिमें रिकार्ड सुरक्षित रूपमें रखा गया गवाही, वादी-प्रतिवादी आदिका वक्तव्य वा न्यायाधीशका फैसला।-**न्यायालय**-पु० (कोर्ट ऑफ रेकोर्ड) राज्यके प्रधान अभिलेख विभागका वह न्यायालय जिसे लिपि-संबंधी वा ऐसी ही अन्य मूलों ठोक करनेका अधिकार होता है।-**वाक्य**-पु० (रेकार्डकीपर किसी न्यायालय, कार्यालय आदिके अभिलेखोंकी देखभाल करनेवाला कर्मचारी।

अभिलोपन करना-स० क्रि० (आम्बिटर्रेट) मिटा देना; उखा देना, नष्ट कर देना, कोई विह्वल या अवशेष न छोड़ना।

अभिवृक्षा-पु० (लीडर) न्यायालयमें किसीकी ओर-
मुकरनेकी पैरवी करनेवाला, बकील।

अभिवचन-पु० (प्लीडिंग) न्यायालयमें उपस्थित दि-
नादमें किसी पक्षका विधिक प्रतिनिधि बनकर उभरने का
बतनेमें प्रमाण, तर्क आदि देते हुए भाषण करना।

अभिसंध-स्त्री० (कनविक्शन) अदालत या पंचों द्वारा किसी व्यक्तिका अपराधी घोषित किया जाना, यह प्रत्यक्ष पित करना कि उसपर जो आरोप लगाया गया था वह प्रमाणित हो गया है।

अभिसंसित-वि० (कनविक्टेड) न्यायालयमें जिसका दावा होना प्रमाणित हो गया हो।

अभिसन्ध-वि० (कनविक्टेड) दे० 'अभिसंमन'; १५ मिह।

अभिसूच्य-पु० (एनलिस) (विधि, आह्वान (डिक्री) न्यायालयके निर्णय आदिको रद कर देना, समूल्य करना।
अभिसूच्यीकृत-वि० (एनलड) जो रद या संशुद्ध कर दिया गया हो (निर्णय, विधि आदि)।

अभिसंधी-पु० (एक्जामिनेशन) दे० 'सहापराधी'।

अभिवृत्ति-स्त्री० (सिबिटेड) किसी व्यापारिक वस्तु-
उत्पादन या पूर्ण आदिका एकाधिकार प्राप्त करने वा किसी अन्य सामान्य उद्देश्यकी निश्चित लिए स्थापित व्यापारिक संस्थाओंकी समिति; लेख, कहानियाँ आदि प्राप्त कर निषाधित पुरस्कारकी सूचीपर उभरने एक साथ कई समानांतर-पक्षों, मामलों आदिके प्रकाशित कराने वाली संस्था; 'मिनेट'की प्रवचन-समिति।

अभिसमय-पु० (कनवेंशन) (१) परस्पर सन्ध रखने वाले (राज, तार आदि) कतिपय विषयोंके संबंधमें किया गया विभिन्न राज्योंका समझौता; (२) बुद्धिमान देशोंके सैनिक अधिकारियोंका युद्धसमय आदि-संबंधी वह समझौता जो दोनों ओरके प्रतिनिधियोंकी बातचीत द्वारा किया जाय और जिसका पालन दोनोंके लिए पक्षी संधि के समान ही आवश्यक हो। (३) इस तरहका समझौता करनेके लिए होनेवाला उक्त राज्योंके प्रतिनिधियों-

मन्मथन; (४) कोई प्रथा या परिपाटी जो परंपरा में चल पड़ी हो और जो अलिखित होते हुए भी सबके लिए मान्य हो।

अभिसामयिक-वि० (कनवेंशनल) जो पहले से चली आनी हुई परंपरा या परिपाटीके अनुरूप हो।

अभिलुब्धता-पु० (इन्ट्रिन्सिक) कोई काम करनेके लिए विशेष रूपमें दी गयी विद्यारथता या आदेश।

अभिस्तम्भ-पु० (रेकमिंडेशन) किमीके पक्षमें अनुकूल प्रभाव डालनेके लिए या किमीकी प्रशंसा में कुछ कहना या लिखना; कोई सुझाव या सलाह देने हुए उसके पक्षमें अपना भाव प्रकट करना, मिफारिश।

अभिस्तम्भित-पु० (इम्फोर्स) विनय, सुनावा आदि जिसका दिया या चुकाया जाना निर्धारित अवधिक, अथवा कोई जाम जतं पूरी होने तक स्वीकृत रहता जाय।

अभिस्वाकषण-पु० (डिस्टिक्शन) पातालयत्र (मनके) की म्हायतार्थमे मथ या अर्थ चुनने, जम् शुरू करनेकी क्रिया।

अभिस्वाकषणी-स्त्री० (डिस्टिक्लरी) शराब या अर्थ चुनने का यंत्र, भट्टी या तर।

अभिहरण-पु० (डिस्टेस) कण, किराये आदि का बन्धोके लिए न्यायालयके आदेशमें किमीको जायदाद, जमीन आदि जम्भ कर लेना या नीलाम कर देना।—अधिपत्र-पु० अभिहरणके लिए त्रयी किया गया अधिपत्र (बारट)।

अभिहस्तारक-पु० (अमाइनमेंट) विमं भूमि, अधिकार आदिवा लिखित वैध रूपमें हस्ताक्षर करना; विमिके लिए कोई हिस्ता, कार्य आदि निर्धारित करना।

अभिहित परिषद-पु० (नामिनल काउन्सिल) कहने भरके लिए, नाममात्रकी, परिषद (कानून)।

अभिहित वृत्ती-स्त्री० (नामिनल कपिटल) कहने भरके लिए, नाममात्रकी, वृत्ती।

अभुक्त-वि० (अनफेड) त्रिम्मा उपयोग या सुगमन न किया गया हो।

अभ्यंश-पु० (कोडा) दे० 'वदितान', 'नियतान'।

अभ्यर्थी-पु० (कैंडिडेट) किसी पराक्षाम नठने या नौकरी आदिके लिए आवेदन-पत्र देनेवाला।

अभ्यर्पित-वि० (सर्वैड) वह सरकारी आदेश, आह्वान पत्रादि जो किमीको विविध अर्थ या मप्रदत्त कर दिया गया हो, तामीन।

अभ्युक्ति-स्त्री० (रिमार्क) आलोचना या व्यवहके डवपर कही गयी कोई बात; किसीके कथनपर या किमी विषयके सम्बन्धमें की गयी उक्ति।

अमस्तव्य व्यव-पु० (नोन-नोट्सवल एक्सपेडिचर) वह व्यय जिसके सम्बन्धमें (पारामाजके) सदस्योंकी मत देनेका अधिकार न हो।

अमात्य-पु० (डिस्टिमसल) किमी व्यवहार (मुकदमे), पुनर्मात्र-मार्थना, शाय आदिका अमात्य, न्यायालयमें अधिकारणीय, ठहरा दिया जाना।

अध्याय्यवास-पु० (मिसनरी) दे० 'मिथ्यानाम'।

अनुपमस्तस, अनुपमकिसि-स्त्री० (नान वेल्जिरेन्सी) किसी राष्ट्रका, कहनेके लिए मुझसे श्रेष्ठ, रहने हुए भी सुकमस्तस श्रुतलिख राष्ट्रकी स्थायता करते रहना।

अविस्मयिक-अवकाशग्रहण

अवोमार्ग-पु० (रेलंग) लोहेकी पटरियोंकी सिलसिलेमें बौद्ध बनाया हुआ मार्ग जिसपर यात्रियों या नामानकी डेनिवाली रेलगाडी दौकनी है, रेल-पथ।

अराज्यप्रित-वि० (नॉन-जस्टेड) (अधिकारी, कर्मचारी) जिसका नाम या त्रिम्मा पत्रवृत्ति, न्यानांतरण, छुट्टीपर जाने आदिके सम्बन्धमें कोई सूचना सरकारी समाचार-पत्रमें न छपती हो।

अर्धपतन-पु० (स्लप) दे० 'मूल्यापवात'।

अजिन छुट्टी-स्त्री० (अन्ट लीव) वह छुट्टी जिसे पानेका वह कर्मचारी अधिकारी माना जाता है जिसने निर्धारित समयतक काम करनेके बाद उसका अर्जन कर लिया हो।

अर्थापन-पु० (इंटरप्रेटेशन) अर्थ लगाना; विशेष ढंगमें समझना या समझाना; व्याख्या।

अर्द्धक-पु० (हार्डेक्लर) किमी कोण आदिको दो समान भागोंमें बँटनेवाली रेखा।

अर्द्धवृत्त-पु० (सेमिस्वरिक) वृत्तका आधा भाग जो व्यासके एक ओर था दूसरी ओर हो।

अर्द्धोत्तलित चक्र-पु० (हाकमास्ट पलैज) किसी महात्त्व्यकिके मरनेपर उसके सम्मानमें आधी नैनाईतक झुकाया हुआ राष्ट्रीय झंडा, अवधुका झंडा।

अर्हता-स्त्री० (क्वालिफिकेशन) किसी स्थान या पदके योग्य बनानेवाली विशिष्टता, गुणराशि या योग्यता।

अलग्नकसोप्य-वि० (नान-कैरेबिल) दे० 'अप्रतिमाप्य'।
अलग्नकर जोत-स्त्री० (अनएकॉनामिक होल्डिंग) किसी कानूनकार द्वारा जोती-जोती जानेवाली वह भूमि जिसकी उपर उसके परिवारके मरण-पोषणके लिए पर्याप्त न हो।

अल्पकालीन कृष्ण-पु० (शार्ट टर्म कोन) वह कृष्ण जो थोड़े ही समयके लिए लिया गया हो अतः जो शीघ्र ही (प्रायः ५-१० वर्षोंके भीतर) अदा कर दिया जाय।

अल्प ओषधीजना-स्त्री० (आस्टेटीडी रडीम) आवश्यक वस्तुओंका कम प्रयोग करने, कष्ट उठाने हुए थोड़ेमें पदार्थोंमें ही काम चला लेनेपर जोर देनेवाली योजना; मिनीप्रयोग-योजना, कष्ट-सहन-योजना।

अल्पवार्दी सदस्य-पु० (वैक्रेटर) दे० 'नवविद्याधी सदस्य'।

अल्पसूचित प्रश्न-पु० (शार्ट नोटिस क्वेश्चन) मसद् या विधानमन्त्रा आदिमें पूछा जानेवाला ऐसा प्रश्न जिसके लिए सामान्यमें कम सूचना दी गयी हो।

अल्पावकाश-पु० (रिसेस) विद्यालयों, न्यायालयों या खेल आदिमें बीचमें थोड़े समयके लिए जलपान या विश्रामके लिए मिलनेवाला अवकाश।

अल्पिष्ठ-वि० (मिनिमम) कममें कम; न्यूनतम।

अस्वीकरण-पु० (डिरेक्शन) अधिकार, प्रतिष्ठा, महत्त्व, शक्ति आदिका घट जाना या उन्ममें कमी हो जाना।

अवकरपात्र-पु०, अवकरी-स्त्री० (इन्डविन) हाइने-वदरनेमें निकला हुआ कूड़ा रलनेकी टोकरी (अवकर = कूड़ा)।

अवकाशग्रहण-पु० (रिटायरमेंट) नौकरी, सक्रिय सेवा, मार्मजनिक जीवन आदिमें विश्राम लेना, पृथक् हो जाना, निवृत्ति, विश्रामग्रहण।

अवकाश करना-स० क्रि० (खपसीड) पहले नियुक्त किये हुए किसी व्यक्ति के स्थानपर और किसीको नियुक्त करना। किसीका स्थान ग्रहण करना, अधिकार हासिल होना; अपने उच्चतर अधिकारमें (किसी आदेशादिको) स्थान बना देना।
अवकाश-पु० (रेसिपिएन्ट) वह अवशिष्ट पदार्थ जो छाया-पत्रादिको सहायतासे किसी द्रवके छाननेपर छाया-पत्रके ऊपर रह जाता है।

अवतरण-पु० (कोटेशन) किसीको कहे हुए शब्दों, मन्त्रों आदिको (उल्टे विराम-चिह्नोंके बीच) उद्धृत करना।
-चिह्न-पु० अवतरित अंशके टीका पहले तथा अन्तमें दिये जानेवाले उल्टे विराम-चिह्न।

अवतरणपथ-पु० (रनवे) वायुयानोंके लिए बना वह कक्षा-पथ जिसपर उड़ने, ऊपर उठनेके पूर्व या नीचे उतरनेके बाद, कुछ दूर तक चलना पड़ता है।

अवतरणभूमि-जी० (लैटिट प्राइन्ड) हवाई जहाजोंके लिए आकाशसे नीचे उतरनेका स्थान।

अवदान-पु० (कॉन्ट्रिब्यूशन) दे० 'अंशदान', योगदान।

अवद्या-जी० (निगमेट आफ ए सरकिल) वह जाकृति जो किसी जीवा और उस जीवाके एक औरके आपसमें घिरी हो।

अवधाता-पु० (केरटेकर) वह व्यक्ति जो असली मालिक की अधिकारतामें मकाल आदिको निगरानी करे।

अवधापत्री सरकार-जी० (केरटेकर गवर्नमेंट) वह सरकार जो निर्वाचन आदि होनेके बाद नयी सरकारके कार्यभार ग्रहण कर लेनेक शक्ति-अवस्थाकी निगरानी करती रहे।

अवधात-पु० (केयर, चार्ज) किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्यके देखभाल करने या उत्तर गवर रखनेका कार्य।

अवधातक अधिकारी-पु० (आफिसर इनचार्ज) वह अधिकारी जिसको देखभाल या अधीनतामें कोई कार्य अथवा कार्यस्थल हो।

अवधातक सरकार-जी० (केरटेकर गवर्नमेंट) दे० 'अवधापत्री सरकार'।

अवधारणा-जी० (कॉन्सेप्शन) मनमें किसी धारणा, कल्पना या विचारका उदय होना, बनना या स्थिर होना।

अवधान-पु० (कॉन्टेंट) अवस्था, अवमान; व्याव-व्यवस्थामें हस्तक्षेप या हस्तक्षेप अवधान; हस्तक्षेप, विधानमन्त्र आदिके आदेशोंकी अवस्था।

अवधुवन-पु० (अविद्युतयन्त्र) किसी सरकार द्वारा अन्य देश या देशोंकी मुद्राओंकी तुलनामें अपने देशकी मुद्राका मूल्य क्या दिया जाना, मुद्राका विनिमय-मूल्य या सापेक्ष मूल्य गिरा देना।

अवधुवनपर-अ० (विको पार) निर्धारित या अंकित मूल्यसे कम दामपर।

अवधुवन-वि० (माइनर) जो अभी कम उमरका, अध्यापक (१८ वर्षसे कमका) हो, नागरिक।

अवध-वि० (नक्षत्रियर) दत्ते, कौटि, शुण आदिमें होय या नीचा, दे० मूलमें। -**सूच-पु०** (जीवर हाउस) दे० 'निम्नसदन' वा अवराधार।

अवधारण-पु० (जीवर हाउस) संसद या विधानमंडलका

निम्नसदन-लोकसभा, कामंस सभा, प्रतिनिधिसभा, विधानसभा, इ०; प्रथम सदन।

अवरोधी-पु० (रनन्टेन्डर) दे० 'विसंवाहक'।

अवरोध-पु० (डिस्ट्रिक्ट) किसी आरोप या अभियोगसे मुक्त करना या होना।

अवशिष्ट शक्तियाँ-जी० (रेसिडुअरी पावर) किसी संविधान, आदिमें जिन शक्तियों वा अधिकारोंकी स्पष्ट रूपसे व्याख्या या चर्चा कर दी गयी हो उनके बाद बची हुई अन्य सब शक्तियाँ वा अधिकार।

अवसरग्रहण-पु० (रिटायरमेंट) दे० 'अवकाशग्रहण'।

अवसरप्राप्त-वि० (रिटायर्ड) नौकरीकी अवधि वा सेवा-काक समाप्त हो जानेपर कार्यसे दृष्टक होनेवाला, जिनमें नौकरी आदिसे अवकाश ग्रहण कर दिया हो।

अवसरवाद-पु० (अपॉर्यूनिज्म) प्रत्येक सुअवसरमें काम उठानेकी प्रवृत्ति या नीति।

अवसरवादी-वि० (अपॉर्यूनिस्ट) जो किसी स्थिर नीतिपर धन न रहकर प्रत्येक उपयुक्त अवसरसे पूरा-पूरा काम उठानेका प्रयत्न करे।

अवस्थान-पु० (स्टेशन) वाता-मार्ग तय करनेमें समस्त रेलगाड़ी, सप्त आदिके बीच-बीचमें कुछ समयक रुकनेकी जगह जहाँ यात्रियों वा मालके चढ़ने-उतरानेकी व्यवस्था हो, स्टेशन; वह स्थान जहाँ सैनिक या पुलिसके आड़मी रक्षा आदिको व्यवस्थाके लिए रुक गये हों वा रहते हों। (स्ट्रेज) दे० 'प्रक्रम'।

अवहार-पु० (रिवेंड) प्राध्व धन (महत्त्व आदि)का विवेक स्थितिमें कुछ अंश छोड़ दिया जाना, छूट।

अविधिक-वि० (इलीगल) विधि याने कानूनके विरुद्ध।

अविलंब-वि० (अर्बेट) जिनकी ओर तुरन्त ध्यान देने आवश्यक हो; जिनमें धन, पूरा करने, अंजने, पहुँचने आदिमें जल्दबंदी न किया जा सके।

अविलेख-वि० (रन सा-मूबिल) जो घुमे नहीं, अप्रचलनीय।

अविश्वास-प्रस्ताव-पु० (मोशन ऑफ नो-फाइनफिट्स) मंत्रिमंडल या उसके किसी सदस्य अथवा किसी सरकारी अध्यक्ष आदिमें विश्वास न रह जानेका प्रस्ताव अविश्वाससभा या उस संस्थामें पुरःस्थापित किया जाय।

अवैध-वि० (इलीगल) दे० मूलमें।

अवैधज्ञान-वि० (इलिजिट) अवैध रूपमें उत्पन्न वा प्राप्त (संज्ञान, आगमनी इ०)।

अवैधनिरोधन-पु० (रांगफुल कनफाइनमेंट) किसी व्यक्ति-को अवैध रूपमें रोक रखना, कमरे या घर आदिमें बंद कर देना।

अवैधप्रेषण-पु० (सर्गिज) चुगी आदिसे बचनेके लिए (कोई माल) अवैध रूपसे भेजना वा प्रेषण; अवहण (कौटिल्य)।

अवैधप्रेषण-पु० (इलीगल प्रेषिजिट) विधि वा कानूनके विरुद्ध किया जानेवाला व्यवहार वा आचरण।

अव्यवस्थित सोच-पु० (अनरेंडेट थैंकस) किसी कामके लिए निर्धारित या जमा किये हुए धनका वह अंश जो व्यय न किये जानेके कारण बच गया हो।

अवरोधितसोच-पु० (अनरिडीड थैंकस) किसी कण आदि

का यह बच्चा हुआ अंश जिसका मुगतान या अनायगी न हुई हो।

अणुगैस-सी० (ध्वरगैस) एक तरलकी जहरीली गैस जो आँखोंमें छगनेसे तेज जलन पैदा कर देती है जिससे आँख निकल पड़ते हैं और देखनेमें कठिनाई होती है (इसका प्रयोग पुलिस द्वारा खपड़रीमूलक भीड़ों, तितर-बितर करने और कभी-कभी युद्धमयलमें शत्रु-सेनाकी बाट रोकनेके लिए किया जाता है) ।

अव्ययशक्ति—खी० (हास्यपावर) उनको शक्ति जितनी प्रति
सेकंड ५५० पौड (= ६॥॥ मन) वजनको एक फुट ऊपर
उठानेको लिए आवश्यक श्रोमी है ।

अष्टभुज-पु० (अविद्यान) आठ भुजाओं या आठ बाँधों-
वाली आकृति ।

असंगतिप्रदर्शन-पु० (रिक्तस्थाने) प्रथमार्धमा। किंवा तर्क-
की असंगति दिखला देना।

अमर्यादी-वि० (टिमोनेण्ट)। मित्र म्ववाला, तिसमें भनि-
माध्य न हो।

असमयोचित—वि० (इनष्कपीडिएंट) जो समय-विशेष या स्थिति-विशेषकी देखते हुए उचित न हो।

असमर्थता-निवृत्तिवेतन—पृ० (इनवैलिडिटी पशन) गेय, दूरधन्व आदिपे, कारण किसी कर्मचारीके काम करनेमें स्थायी रूपमें असमर्थता होनेपर उसे भरण-पोषणके लिए मिलनेवाली रकम ।

अस्मांस्व—वि० (अनपार्तिमेटरी) सम्भवकी मर्कादा, बागवर्धि,
परंपरा आदिके प्रतिकूल; जो सम्प्रदे कहने या करने
गोश्व न हो, (अविष्ट) ।

अमाधारण राजवृत्त-पृ० (पंचमंडल एकमूला भाडिनरी)
विशेष अकसरपर या विशेष उद्देश्यमे भंजा गवा राजदम

अमेनिक-वि० (मिविल) देशः। समाजके शासन इत्यादि में मन्थन रखनेवाला (मैनिक्वाउमन्), कुस्को (कौर्ज नदी) । - **अव्यय-पु०** । मिविल एकमपेक्षितः । अमेनिक कार्यके लिष्ट होनेवाला अव्यय ।

असैनिकीकरण—सी० (इंमिग्रिजेशन) विभा. म्यान व
सेवा सैन्यविहीन कर दिया जाना ।

अस्तिमंत-पु० (दि हेतुः धनी या मयज व्यन्ति ।

अक्षनिर्माणशास्त्रा-खी० (आर्कनेस पर्वतरी) गोपे, गोन्हा
प्रासूत, वम आदि तैयार करणेका कारखाना ।

अस्थायी संधि-ली० आर्मीमन्त्रि। कुछ समाप्त है।
देनेके संबंधमें की गयी अस्थायी संधि।

अस्थिभंग-पु० (शैक्लर) गिर पड़ने, दोष लगने आदिसे
पारण तद्दीक्षा टट जाना ।

भ्रमण्टिक-वि० (एमाफर्म) जिमका चूर्ण चमकीला नम
सुरदरा न हो वरन चिकना जान परे ।

अहस्तक्षेप-जीति—स्त्री० (होमेज केयर। अथ-शान्तिथोक।
यह निष्ठा कि देखके अधिक मामलों-स्थापनादि)।

भाइसाँवरकरणीस—वि० (इतमकाइनेडिल) जिसके स्वामि

अहस्तांतरणविधि—वि० (नाम-संमन्त्रेणिक) जो हस्तांतरण

आ

आंकिक-पु० (स्ट्रिटस्वियन) दे० 'साख्यक' ।

आंदोलनसमिति-सी० (कमिटी ऑफ ऐक्शन) दे० 'संघर्ष-समिति' ।

आकरग्रन्थ-पु० (रेफरेंस बुक) द्वै० भूछमें, सदमग्रन्थ ।

आकारपत्र-पु० (कामे) दे० 'प्रपत्र' ।

आकस्मिकतानिधि-श्री० (कंठिनैसी कंठ) वह निधि या कोष जिसमेंसे अकस्मात् उपस्थित होनेवाली आवश्यकता आदि के लिए रुपया व्यय किया जा सके।

आकारविज्ञान-पु० (मॉरफोलॉजी) जीर्ण तथा पौधोंके
भागादिके अध्ययनका शास्त्र ।

आगम्या-स्त्री० (रिपोर्ट) दे० 'प्रतिवेदन' ।

आगणन-पु० (५६६/६०६) दे० 'प्राक्कलन'।

आगम-पु० (रेवेन्यू) दे० 'राजस्व' ।

आगृहीत-वि० (ज्ञान) जगा किसे हुए धनमेंसे पुनः
निकाला या लिया हुआ ।

આગૃહીતા, આગ્રાહક—પુ. (જાઅર) તમા કિયે હુ, થનમે
૨. કુછ બસ નિકાલનેવાલા ।

आचरणपंजी, आचरण-पुस्तक-की० (काष्ठचटुक्) वह पुस्तक (पंजी) जिसमें कर्मचारीके आचरण, व्यवहार, कर्तव्यपालन इत्यादिमें संबंध रखनेवाली बातें समय-समय पर लिखी जानी है।

आज्ञप्ति-सी० (दिकी) दीवानी मुकदमेमें न्यायालय द्वारा किसीके पक्षमें दिया गया निर्णय; किसी उच्चाधिकारी या परिषद् आदिका वह आदेश जो किसी व्यवस्था आदिके संबंधमें हो तथा जिसका मानना आवश्यक हो।

आन्तरिक-वि० (मिटमिक) अणु-संबंधी, अणुशक्ति-संबंधी ।

आतंकवाद-पु० (बार आफ नम्बर्) प्रचारादि द्वारा गेम
आतंक स्फुल्ल करना जिम्मे शत्रुपक्षका नैतिक साहस छिन्न
भिन्न हो जाय और उनकी युद्ध क्षमता क्षीण होने लगे ।

आतंकवादी-पु० (टेरास्ट) सरकारको तथा जनताको
दबाने, झुक्राने या प्रभावित करनेके लिए भयोप्यादक
उपायोंका सङ्ग्रह लेनेवाला ।

आतपस्नान-पु० (मन-बाधा) विवक्षा होकर धूपमें कुछ समय इस प्रकार बैठना या लेटना जिससे ममता क्षीरपर भुव्यकी किरणें पड़ें ।

आत्मभरित योजना - श्री० (सेन्सफोशियेन्सी प्लैन)
देशको, प्रदेशको मुख्य आवश्यक वस्तुओंको संवर्धन
स्वास्थ्य बनायेछी योजना ।

आदिष्ट धनादेश-पुं (आर्डर चेक) वह धनादेश जिसकी
पोटर पानेवालेको अर्थात् जिसके नाम वह जारी किया
गया हो उसे, पहलेसे हस्ताक्षर करना पड़ता है, तभी
उसका भुगतान किसी अन्य आदिष्ट आदमीके हाथ
किया जा सकता है।

आदेय-पु० (अनेपुम) वह धन जो हमें दूसरों से पावना हो या जो हमें अपनी संपत्ति-घर, भेज, कुरसी आदि-वेचनेमें प्राप्त हो सकता हो, परिमपत् ।

आदेशदेव-वि० (पेपेरिल डु आर्टर) (वह हुन्दी आवि)
जिम्मा रुपया किम्मीको देनेका आदेश प्राप्त होनेपर दिय
जाय ।

आलोकचित्रण—पु० (रनीशस्व) किसी व्यक्ति के नाम के विभिन्न शब्दों या शब्दों के आरंभ के अक्षर जो पूरे नाम के बदले (प्रायः संक्षिप्त हस्ताक्षर के रूप में) लिख दिये जाते हैं।

आलोकचित्रण—वि० (रनीशस्व) जिसपर पूरे हस्ताक्षर के बराबर नाम के आरंभ के अक्षर मात्र लिख दिये गये हों।

आधिकार्य—पु० (पॉनर) कोई वस्तु वा किसी व्यक्तिको किसी के पास भरोहर या जमानत के रूप में रखनेवाला (आवि = भरोहर)।

आधिकार्यिक—पु० (बंकर) किसी अधिकार (बंकर) का आधिकारिक, साजेदार, सत्तालक्ष आदि।

आधिकार्यी—पु० (पानी) वह जो कोई भरोहर या जमानतकी वस्तु अपने पास रखे।

आनन्द संविधान—पु० (फ्रेडरिक्स कांस्टि्यूशन) किसी राज्यका ऐसा संविधान जिसमें देश-कालकी आवश्यकता के अनुसार आसानीसे परिवर्तन किया जा सके।

आनुकम्बिक—वि० (ग्रैट्टेरेड) जिसमें अशोक के चिह्न बने हों; जिसमें कौन्-कोचे, कडिन-मरुका सिलसिला निबाहा गया हो, जो अनुक्रमसे हों; क्रमशः बर्द्धमान।

आनुपातिक प्रतिनिधित्व—पु० (प्रप्रॉर्जनल रिप्रेंटेशन) विधानसभा आदि के चुनावकी वह प्रणाली जिसके अनुसार सभी दलोंको, उन्हें प्राप्त हुए कुल मतों के अनुपात में, प्रतिनिधित्व दिये जानेकी व्यवस्था की जाती है।

आनुपूर्व्य—पु० (सक्सेशन) वस्तुओं या व्यक्तियोंका एक पहले, दूसरा बादमें, इस सिद्धिसे आना; सिलसिला, अनुक्रम।

आपराधवाचक—पु० (रिडीक बर्क) दुष्काण वा बड़, भू-पक्षि जैसे संकट के समय आतं और असहाय जनताकी सहायता के लिए आरंभ किया गया मार्गजनक निर्माण-कार्य।

आपृच्छा—जी० (रिफरेंस) दे० 'जननिर्देश'।

आपात—पु० (इमर्जेंसी) अकस्मात् आयी हुई मकड़की स्थिति, आकस्मिक आवश्यकता।

आपातिक—आपाती—वि० (इमर्जेंट) आकस्मिक आवश्यकताकी कारण उत्पन्न, आहत या सामने आनेवाला अथवा उसमें संबंध रखनेवाला।

आपेक्षिक ताप—पु० (स्पेसिफिक हीट) किसी वस्तुका तापक्रम एक अंश बढ़ाने के लिए जितने तापकी आवश्यकता हो और उसके समान मात्रा के पानीका तापक्रम एक अंश बढ़ाने में जितने तापकी आवश्यकता हो, उन दोनों तापोंकी मात्राओंका अनुपात।

आप्रवास—पु० (इमिग्रेशन) बाहरसे आकर किसी देशके भीतर बस जाना।

आप्रवासी—वि० (इमिग्रेंट) बाहरसे आकर किसी देशके भीतर बस जानेवाला।

आर्म्बल व्यापार—पु० (इंटरनल ट्रेड) दे० 'अंतर्बीजिय'।

आमूख सुधारवाद—पु० (रैडिकैलिज्म) अन्तरे या पूर्णतः सुधार करनेपर और देनेवाला राजनीतिक सिद्धांत।

आयस—पु० (रेफ्रैक्टिबिलिटी) वह समानांतर चतुर्भुज जिसका प्रत्येक कोण समकोण हो।

आयताकार—वि० (रेक्टैंगुलर) त्रिसूत्र आकार आयत

जैसा हो।

आवधवाक—पु० (बन्ड) किसी राज्यकी या किसी व्यक्ति अथवा संस्थाकी सत्ताक्रम में या किसी निश्चित काल तक होनेवाली संभावित आय एवं उसी अवधि के संभावित व्यय के अनुमानका लेखा, बन्ड।

आवधवाक-कलक—पु० (वैलेंस शीट) दे० 'द्वयादेव-कलक', चिट्ठा।

आवातक—पु० (रपॉर्टर) विदेशों में बड़ी मात्रा में माल मँगानेवाला व्यवसायी।

आयुक्त—पु० (कमिशनर) किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त 'आयोग'का सदस्य जिसे विशेष अधिकार दिया गया हो; विशेष कार्य के लिए जिसकी नियुक्ति की गयी हो; किस्मग या कमीशनरीका प्रधान अधिकारी।

आयुक्त अधिकारी—पु० (कमीशंड ऑफिसर) सेना या बेरका बड़ अधिकारी जिसकी नियुक्ति कमीशन या आयोग द्वारा की जाय।

आयोग—पु० (कमीशन) कोई विशेष कार्य संपन्न करने के लिए नियुक्त व्यक्तियोंका मंडल।

आरक्षक—पु० (गुकीन) देश में आंतरिक शांति बना-रखने तथा अपराधियों आदिको न्यायालयों के समक्ष उपस्थित करनेका काम करनेवाला कर्मचारी, पुलिसकर्मि, सिपाही।—बल—पु० (गुलीमफोर्स) आरक्षकोंका दल या समूह।

आरक्षित कोष—पु० (रिजर्व फंड) विदेश आवश्यकता या संकट के समय काम आ सकें, इस हेतु निश्चित किया जानेवाला कोष।

आरक्षित विषय—पु० (रिजर्व सबजेक्ट्स) वे विषय जो किसी विशेष दक्षिण या विशेष व्यक्ति के लिए, अथवा स्वयं अपने हाथ में, सुरक्षित रखे गये हों।

आरक्षी—पु० (गुकीन) दे० 'आरक्षक'।

आरक्षी-स्वतंत्रित्व—पु० (क्वांटगैरवैरिड आफ दि गुलिस-पुलिस्के मिपाजियोंका वह विशेष दल जो मोटर-गाड़ियों, मोटर-माशिनो आदि में सजित हो, जिससे वह स्वतंत्र गतिसे चोर-ठाकूनों, उपद्रवियोंका पीछा कर सकें; पुलिसका गुफानी दम्पा, द्रुतगामी आरक्षी-दल।

आरोग्यलाभ—पु० (क्वॉन्टेरेसेंस) बीमारी खाने के बाद क्रमशः स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करना, दे० 'शरीरपर स्वास्थ्यलाभ'।

आरोग्यशाला—जी० (सेनेटोरियम) दे० 'स्वास्थ्य निवास'।

आरोग्यपत्र—आरोग्यपत्रक—पु० (वार्जशीट) (न्यायालय द्वारा तैयार किया हुआ) वह पत्र जिसमें किसी व्यक्तिपर लगाये गये आरोपोंका ज्वारी दिया रहता है।

आर्द्रतामापी—पु० (हायग्रोमीटर) हवा में विद्यमान आर्द्रता- (नमी)की मात्रा बतलानेवाला यंत्र।

आर्द्रतामिति—जी० (हायग्रोमेट्री) भौतिक शास्त्रका वह अंग जो वायुमंडलकी आर्द्रता में संबंध रखता है।

आलेख—पु० (डिक्लेरेशन) जोर में कहना या इस तरह पढ़ना कि सुनकर लिखनेवाला उसे लिख ले; इस तरह सुनकर लिखा गया लेख या इबारत; अभिलेख, दस्ता।

आलोकचित्रण—पु० (फोटोग्राफी) रासायनिक प्रसक्तों में

तैयार किये गये विशेष पटलपर प्रकाशकी प्रतिक्रिया होने-से उत्तरनेवाला चित्र ।

आर्बंटन-पु० (एलाटमेंट) भूमि, संपत्ति आदिका हिस्सेमें बाँटा जाना; विभाजन; किसीके लिए भूमि आदिका कोई हिस्सा निर्धारित करना, (भूमिदान) = एलाटमेंट ऑफ लैंड । **राजस्वका** = एकमिट आक रेवेन्यू ।

आर्बन्ड-पु० (एलाट) वह जितने कोई वस्तु आर्बंटनमें दी गयी हो ।

आवर्तक, आवर्ती-वि० (रेकरिंग) बार-बार होने वा दिया जानेवाला (व्यय, अनुदान इ०) ।

आवर्तचक्र-पु० (डमिंग पाइड) जीवनमें या विकासक्रममें निर्णायक परिवर्तन कर देनेवाली विशेष स्थिति या कोई महत्वपूर्ण घटना ।

आवासीक, आवासी-वि० (रेजिडेंट) -उत्तम स्थानपर रहनेवाला (आवासी चिकित्सक, अध्यापक आदि) ।

आवासी प्रतिक्रिया-पु० (रेजिडेंट) किसी अर्द्ध स्वतन्त्र राज्यमें स्थायी रूपमें रहनेवाला अन्य देशका प्रतिनिधि ।

आधिभांडन-पु० (इन्वेष्टमेंट) दे० 'उद्भावन' ।

आशावाद्-पु० (आप्टिमिज्म) प्रत्येक घटना और प्रत्येक वस्तुमें संशयमें आशामयी दृष्टि रखना, सदा अप्प्री बानों और अच्छे परिणामोंकी आशा करनेका स्वभाव ।

आशावादी-वि० (आप्टिमिस्ट) सर्वदा अच्छी बातों और कल्याणमय परिणामोंकी आशा करनेवाला ।

आशुपत्र-पु० (एअरमेल लेटर) शीघ्रप्रापूर्वक भेजा जाने-वाला पत्र, वह पत्र जो पत्रालय (डाकघर) में पहुँचते ही हर-कारे द्वारा तुरन्त पानेवालेके पास भेज दिया जाय ।

आनुकूलिक-पु० (स्टेनोमाफर) आनुकूलि (शीमलफि)-की सहायतासे कोई भाषण या बोला-सुनाया गया मन्त्रमूर्त शीघ्रप्रापूर्वक बिना लेनेवाला कर्मचारी (व्यक्ति) ।

आलसकोण-पु० (पिटनेमेंट) वे कोण जो एक ही बिंदुपर एक उभयनिष्ठ मुजाके दोनों ओर बने हो ।

आमचय-पु० (ट्रिस्टिंगेशन) दे० 'अभिसाधन' ।

आसवनी-की० (डिस्टिलरी) दे० 'अभिसाधन' ।

आसिद्ध-वि० (अटैच्ड) कर्ज, जुमाने आदिकी वस्तुके लिए जिसपर कब्जा कर लिया गया हो ।

आसेच-पु० (अटैच्मेंट) कर्ज या जुमाने आदिकी वस्तुके लिए व्यापारिककी आपत्ति किसीकी संपत्तिपर अधिकार किया जाना, कुर्बी ।

आख्यान-पु० (अपेएस) कुछ समयके लिए स्थगित कर देना या लाशू न करना ।

आखारक-पु० (मेमोरियल) वह रचना, काव्य, मन्त्र इत्यादि जिसका लक्ष्य किसीकी याद बनाने रखना हो; कभी हुई बातों आदिका स्मरण दिलानेके लिए किसी अधिकारीके पास भेजा गया पत्रक ।

आहतोपकारी दल-पु० (ऐक्जैस्कोर) घावलोंका उपचार करनेवाले डाक्टरों, कंथावरों, परिचारकों आदिका दल, परिचारण-दल ।

आहार-विज्ञान, आहार-शास्त्र-पु० (डाइटेटिक्स) वह विज्ञान जिसमें खाद्य पदार्थोंके गुण-दोषों, योग, पोषक-तत्वों, वर्गीकरण आदिका विवेचन हो ।

आहिंजन-पु० (विप्रैमी) बेघर द्वारके, बेमालूम इधर-उधर भटकना; बेकार धूमना, आचारादी ।

आहत पूँजी-की० (कॉस्ट अप कैपिटल) किसी कारखाने, कंपनी आदिके बिके हुए हिस्सेका वह अंश जो आवश्य-कता पड़नेपर खर्चाकर्मी द्वारा हिस्सेदारोंमें भाँटा जाय ।

आह्वयपत्र-पु० (समस) न्यायालयमें उपस्थित होनेका आदेश, समन ।

इ

इतिवार्थवाद-पु० (सैडुअलिज्म) यह सिद्धांत कि हमें सब तरहका ज्ञान इतिवार्थों द्वारा होनेवाले अनुभवसे ही प्राप्त होता है, संवेदनवाद; इतिवार्थी दृष्टि ही जीवनका सभोच लक्ष्य माननेका सिद्धांत ।

इच्छापत्र-पु० (विले) मृत्युके पहले लिखा गया वह पत्र या प्रलेख जिसमें कोई व्यक्ति यह इच्छा प्रकट करता है कि मेरी संपत्ति इस-इस प्रकारसे इन्-इन व्यक्तियोंकी दी जाय, मेरी इच्छावादी इस स्थानपर इस ढंगमें की जाय इत्यादि, वनीयतनामा ।

उ

उत्त (उचित) खाता-पु० (सर्वेस अकाउंट) दे० 'अनुलव खाता' ।

उच्च न्यायालय-पु० (हाईकोर्ट) किसी प्रदेश या राज्यका प्रधान न्यायालय ।

उच्च सदन-पु० (अपर हाउस) धन, विद्या, वय आदिकी दृष्टिमें अधिक संपन्न या अनुभवी माने जानेवाले सदस्योंमें निर्मित मदन, द्वितीय सदन ।

उच्चातुक-पु० (हाई कमिशनर) राष्ट्रमंडलके किसी एक देशका राजदूत जो मंडलके किसी अन्य देशमें अपने देशका प्रतिनिधि बनकर रहे ।

उष्णका दल-पु० (फ्लाइंग स्क्वाड) पुलिसका वह दस्ता जिसका काम आकस्मिक संकट या दुर्घटनाके समय तुरन्त पहुँचकर जनताकी सहायता करना होता है, (पुलिसका) दफाना दस्ता ।

उ कथन-पु० (एक्जोजन) इतना खोलाना वा औठाना कि उफान आ जावे ।

उत्तमर्ग-पु० (केटिटर) दे० मूलमें ।

उत्तम साखपत्र-पु० (गिस्टपड्ड सिस्प्रिटीज) वे साख-पत्र या प्रतिभूतियाँ जो बिल्कुल सुरक्षित मानी जाती हों तथा जिनके द्रव्य जानेका कमसे कम खतरा हो । व्याव-सायिक संस्थाएँ, व्यापारी आदि हमने हमेशा लगाना शौक-से पसंद करते हैं (प्रथम श्रेणीके साखपत्र) ।

उत्तरस्थिति, उत्तरस्थिति-वि० (पोस्ट डेटेड) जिसपर बादकी तिथि डाली गयी हो (बंद प्रलेख, धनादेश आदि) ।

-धनादेश-पु० (पोस्ट डेटेड चेक) वह धनादेश जिसपर बादकी तिथि डाल दी गयी हो अतः जिसका भुगतान तुरन्त न होकर उक्त तिथिकी ही या उसके बाद समय हो सके ।

उत्तर-प्राप्त, उत्तरभोग्य-वि० (रिवर्शनी) जो बादमें, प्रायः मृत्युके उपरान्त, दिया जाय; जो प्राप्य ही जाने पर भी तुरन्त न दिया जाकर पूरी अवधि समाप्त हो जाने पर

या वस्तु हो जाने पर ही मिले।

उत्तरविचार-पुं० (आफ्टर थॉट) बारम्बार उठा हुआ (मनमें आया हुआ) विचार।

उत्प्रेक्ष्यवर्ध-पुं० (क्रि०) रेलके उभरे, भारी गाँठें आदि ऊपर उठानेवाला; सारसकी चोंच जैसा वंश।

उत्पादनक-पुं० (लिफ्ट) मकानके नीचेके खंडसे ऊपरके खंडमें पहुँचाने या उतारनेवाला विजलीका आगमन, उन्नयनवंत्र।

उत्पादक (उत्पादी) व्यव-पुं० (प्राडविटच एक्स्पेंडिचर) उत्पादन बढ़ानेवाला व्यव, उत्पादनका कार्योंके निमित्त या जानेवाला व्यव।

उत्पादनवाधा-स्त्री० (काउलनेक) वह वस्तु जो उत्पादनका कार्य सुचारु रूपसे चलनेमें बाधक हो।

उत्पादनसुरक-पुं० (एक्साइज ह्यूरी) देशमें उत्पादित वस्तुके वस्तुओपर लगनेवाला कर (आरतमें चीनी, तंबाकू आदिपर लगनेवाले करको आय वेंद्रीय सरकारको तथा अन्य, गाँजा आदिपरको आय राज्यकी सरकारको मिलती है)।

उत्पत्तिसी-पुं० (एमीग्रेंट) एक देश छोड़कर अन्य देशमें आ बसनेवाला।

उत्प्रेषणलेख, उत्प्रेषणादेश-पुं० (सर्टीफिकेट) अथवा न्यायालयमें विचार किये गये किसी मामलेके कामज-पत्र भेजित करनेका उच्च न्यायालयका आदेश।

उत्पादन-पुं० (रेवेन्यू) किसी विधि (कानून), अधिनियम, प्रथा आदिको उठा देना, रद्द कर देना; (एक्जिशन) नष्ट करना, अंत करना, विनाशन।

उद्बजन-पुं० (हाइड्रोजन) दे० 'जलजन'।

उदासीन भागीदार-पुं० (स्टांपिंग पार्टनर) ऐसा साझेदार जिसने कारखाने या व्यवसाय आदिमें हथपा तो लगाया हो पर जो प्रबंधादिमें लिच्छरही न लेता हो।

उद्ग्रहण-पुं० (लेबी) कर आदि अधिकारपूर्वक वसूल करना, उगाहना, उगाही।

उद्बोधना-स्त्री० (प्रोक्लेमेशन) सार्वजनिक रूपमें और सरकारी औरपर घोषित करना; सबको जानकारीके लिए ही जानेवाली सूचना।

उद्ग्रहण-पुं० (एक्स्प्रेट) किसीकी उक्ति, लेख या पुस्तकका अंश कभी उद्धृत करना; इस तरह दिया गया वैसादिका अंश।

उद्बोधन-पुं० (एक्जामिनेशन) मामूली बॉट-बपटके साथ समझाना, चेतावनी देना।

उद्ग्रहण-पुं० (ओरिजिनेटिंग चेंबर) न्यूनतम या विधान-मंडलका वह सदन जिसमें कोई प्रस्ताव पहले पेश हो स्थापित किया गया तथा स्वीकृत हुआ हो।

उद्ग्रहण, उद्ग्रहण-पुं० (इन्वेष्टिग) किसी बन्दी प्रणाली, वंशादिक निमोण करना (जिसका पहले अस्तित्व न रहा हो), अधिर्भाव, उपहा।

उद्ग्रहण-पुं० (हाइड्रॉलिक) उधानमें पेक-वीथि लगाने तथा उनकी देखभाल आदि करनेका काम।

उद्ग्रहण-स्त्री० (गार्डन पार्टी) किसीके उधानमें या बृक्षोप आदिपर आयोजित प्रीतिमोज अवका प्रीति-

समयक।

उद्योगवृत्ति-पुं० (इंडस्ट्रियलिज्म) किसी बड़े उद्योग या कारखानेका मालिक।

उद्योगसमीकरण-पुं० (रेशनेलिबेरेशन आफ इंडस्ट्री) श्रमिकोंके काम, समय तथा सामग्री आदि-संबंधी बरबादी दूर कर उद्योगकी स्थिति सुधारना।

उद्ग्रहण वंश-पुं० (पंच) पानी, तेल आदि ऊपर उठानेवाला निकालनेवाला विचकारी जैसा वंश।

उद्ग्रहित-वि० (टिस्केस्ट) दे० 'विस्थापित'।

उद्ग्रहित-वि० (रिवाइज्ड) जो आरंभिक अवस्थासे धीरे-धीरे पूर्ण विकासकी अवस्थाकी पहुँचाया गया हो, जो क्रमशः विकसित किया गया हो।

उद्योगवृत्ति अधिनियम-पुं० (इंड एंड लीज ऐक्ट) द्वितीय महायुद्धके समय अमेरिका द्वारा प्रवर्तित अधिनियम जिसके अनुसार वह युद्धकाल में अमेरिकाकी आवश्यक सामग्री या सैनिक मशरूमके अन्तर्गत उद्योग व्यवसाय घट्टेपर देता था और उनसे भी इसी प्रकार सहायता प्राप्त करता था।

उद्योगवृत्ति वस्तु-पुं० (कानवेक्म) वह वस्तु जिसका कोई भी कोण पुनर्मुक्त होण न हो।

उद्योगवृत्ति-पुं० (लिफ्ट) दे० 'उत्पादनक'।

उद्योग पोषक-पुं० (फी फोर्ट) वह मदरगाह जहाँ व्यापारिक वस्तुओपर किसी तरहका कर, चुगी आदि नहीं लगायी जाती-जो सब राष्ट्रीयके व्यापारके लिए समान रूपमें सुख हो।

उद्योग-स्त्री० (इन्डस्ट्री) कर देने, किसी वस्तुको पालन या रंगने, आक्रमणका संभावना आदिमें मुक्ति, विमुक्ति।

उद्योग-पुं० (अपक टिंग प्रोक्लेशन) नष्ट-मूलमें नष्ट करना, अस्तित्व मिटाना, पूर्ण रूपमें उठा देना, (किसी प्रथा, परंपरा आदिको) परिमार्पित, अन्त करना, उत्पादन।

उद्योग-पुं० (टिम्बार्ज) (सजा पूरी हो जानेपर) बंद या बंधनमें मुक्त कर देना; क्षणादि सुका देना।

उद्योग-पुं० (मेम) एक तरहका छोटा कर जो विविध वस्तुओपर विभिन्न स्थितियोंमें लगाया जाता है।

उद्योग-स्त्री० (हाइपरिस्ति) कोई बाप मित्र करनेके लिए पहलेसे ही कुछ मान लेना, जो बात प्रमाणित भी न सकती हो या जिसके सत्य होनेकी संभावना हो उसके कल्पना पहलेसे कर लेना।

उद्योग-कारपोरल-पुं० (लॉस कारपोरल) कारपोरलके ठीक नीचेका सैनिक अधिकारी।

उद्योगवृत्ति-पुं० (प्रो-वाल्सवाल्स) किसी विश्वविद्यालय वह अधिकारी जो कुलपतिका मतहत होता है और जो व्यवस्था-समन्वयी तथा अन्य कार्योंमें उसकी सहायता करता है।

उपक्रम और जनविर्द्वैत-पुं० (इनीशियेटिव एंड रेफ-रेंस) कोई विधि या अधिनियम बनानेके लिए जनता द्वारा स्वयं उपक्रम किया जाता तथा किसी महात्त्वपूर्ण प्रश्नके संबंधमें समस्त जनसंख्या मत किया जाता-जनताका वास्तविक मत जाननेके ये दो उपक्रम।

उपकर्म-पु० (एयरप्रैप्वर) किसी कारखाने या सयोगका वास्तविक नियंत्रण करनेवाला व्यक्ति ।

उपजीविका-ली० (आकुपेशन) दे० मूलमें ।

उपज्ञा-ली० (इनवेंशन) दे० 'उद्भाव' ।

उपकाकषर-पु० (सब पोस्ट आफिस) किसी छोटे शहर या उपनगर आदिका वह छोटा डाकघर जो जिले या शहरके प्रधान डाकघरके अधीन हो तथा जहाँ से पत्रों, पारसलों, मनी आर्डरों आदिके वितरणकी भी व्यवस्था हो ।

उपदान-पु० (प्रेजुडेंट) दे० 'मैनीपहार'; आनुवैयक्तिक ।

उपधारा-ली० (सब-मेम्बरशन) किसी अधिनियम आदिके अंतर्गत उसका कोई विभाग या उपभाग ।

उपनगर-पु० (सबब) दे० मूलमें ।

उपनियम-पु० (सबल) किसी नियमके अन्तर्गत बना हुआ अन्य छोटा नियम ।

उपनिर्वाचन-पु० (वाइस्लेक्शन) मृत्यु या अन्य कारण-से विधानसभा, नगरपालिका आदिके किसी सदस्यका या किसी पदाधिकारी आदिका स्थान रिक्त हो जानेपर होनेवाला चुनाव ।

उपनिवेशन-पु० (कोलोनिजेशन), अन्य देशोंमें जाकर अपनी बस्ती या उपनिवेश बनानेकी क्रिया ।

उपनीवाध्यक्ष-पु० (वाइस ऐडमिरल) नी-मैनाका वह अधिकारी जो प्रधान नौकाध्यक्षके ठीक नीचे काम करता हो ।

उपपंजीयक-पु० (मैजरिस्ट्रार) पंजायनका काम करनेवाला मान्यतम अधिकारी ।

उपपत्र-वि० (एक्स्प्रीटिपेट) अक्सरके उपयुक्त; मुविधानक या लानकारी, मसौदाविन ।

उपपाशन-पु० (एटवजने) किसी पदार्थको विघटन या चूषक शक्तिमें युक्त वस्तुके मलिकट से जाकर उमम की विघटन या चूषक शक्ति उपपन्न कर देना ।

उपप्रमेय-पु० (कारोल्मी) किसी प्रमेय (थ्योरम)की सत्यता प्रमाणित हो जानेके बाद उममें स्वतः सिद्ध होने या अनुमित की जा सकनेवाली बात ।

उपप्लव-पु० (इनसरेप्शन) राजमत्ता या सरकारके प्रति सौदे पैमानेपर किया गया, या आरम्भिक अवस्थाका, विद्रोह ।

उपबंध-पु० (प्रोविजन) किसी विधि, अधिनियम आदिके वे खंड या उपखंड जिनमें किसी बातकी समावना आदिको ध्यानमें रखते हुए पहलेसे कोई प्रबंध या गुंजा-श रख दी जाय; इस तरह रखी गयी गुंजारश या गुंजाश रखनेकी क्रिया ।

उपबंधित-वि० (प्रोवाइडेड) उपबन्धके अनुरूप, उपबंधमें निहित ।

उपभूमि-ली० (सब-माइल) भूमिके ऊपरी भाग या तलके नीचेका स्तर ।

उपभोग्य वस्तुएँ-ली० (कंज्यूमर्स गुड्स) मनुष्यके उप-योग या काममें आनेवाली आवश्यक वस्तुएँ-जैसे गन्ना, कपड़ा आदि ।

उपयोगितावाद-पु० (यूटिलिटीरियनिज्म) मिल आदि पारसियोंका वह मत कि अधिकसे अधिक लोगोंका

अधिकसे अधिक हित ही प्रत्येक सार्वजनिक कार्यका लक्ष्य होना चाहिये ।

उपबोजन-पु० (पेंसिविशन) (कोई वस्तु या धन) अधि-कारमें ले लेना या अपने प्रयोगमें ले आना, विनियोग ।

उपराजपति, उपराजप्रतिनिधि-पु० (लिगेट) अन्य देशमें रहनेवाला किसी राज्य या राष्ट्रका वह कूटनीतिक मंत्री या प्रतिनिधि जिसे अभी मुख्य राजदूतका पद प्राप्त न हुआ हो ।

उपराजदूतावास-पु० (लिगेशन) उपराजदूतका निवास-स्थान ।

उपराजसंरक्षक-पु० (वाइस रीजेंट) राजमरक्षककी अनु-पस्थितिमें उसका काम सभालनेवाला ।

उपराज्यपाल-पु० (लेफ्टनेंट गवर्नर) किसी छोटे प्रदेश-का सर्वोच्च पदाधिकारी या शासक जो गवर्नरसे छोटा होता है ।

उपराष्ट्रपति-पु० (वाइस प्रेसीडेंट) गणतंत्रका वह निर्वा-चित पदाधिकारी जो राष्ट्रपतिकी अनुपस्थिति, बीमारी आदि समय उसके कार्योंका निर्वाहन करता है (भारत-में यह पदेन राज्य-परिषद्का सभापति होता है) ।

उपलब्धि-ली० (एचैलेविजिटी; सप्लाय) किसी वस्तु-की वह संख्या वा परिमाण जो बाजारमें खरीदने वा माँगकी पूर्ति करनेके लिए किसी समय प्राप्य हो; (रसा-न्यूमें) किसी पदपर काम करनेसे वैनन, परिश्रम आदिके रूपमें मिलनेवाला लाभ; (अचैम्बलमेंट) प्राप्त की गयी सफलता-‘लोगोंकी अपने पूर्वजोंकी उपलब्धियोंपर गर्व हो रहा था’-भारतका वैधानिक विकास ।

उपवाणिज्यवृत्त-पु० (प्रोक्विस्तल) किसी देशके व्यापार-वाणिज्यसंबंधी हिंदोंकी निगरानीके लिए अन्य देशमें नियुक्त वाणिज्यदूतके अधीन काम करनेवाला छोटा दूत जो प्रायः राजधानीके अतिरिक्त अन्य महत्त्वके व्यापारिक केंद्रोंमें रहकर काम करता है ।

उपवायुपति-पु० (एयर कमिश्नीर) हवाई मैनाका सामान्य अधिकारी ।

उपविधि-ली० (वाइस्-ली) किसी विधिके अन्तर्गत बनायी गयी छोटी विधि; किसी नगर-पालिका या निगम आदि द्वारा निर्मित विधि ।

उपवेशन-पु० (सिटिंग) सभाकी बैठक होती रहना, बैठक होनी रहनेकी स्थिति ।

उपवेशिका-ली० (लाउंज) एक तरहका सोफा वा आराममें बैठने, बैठनेकी कुर्सी ।

उपधुलक-पु० (रेंट) स्थानीय आवश्यकताओंकी दृष्टिसे नगरपालिका आदि स्थानीय संस्थाओं द्वारा लिया जाने-वाला कर, उपकर ।

उपसंक्षेप-पु० (रेस्यूमेंट) किसी विवरण, हिस्सा आदि-का संक्षिप्त रूप; माराश ।

उपसभापति-पु० (वाइस प्रेसीडेंट) किसी संस्थाका वह अधिकारी जो सभापतिकी अनुपस्थितिमें उसका स्थान ग्रहण करे ।

उपस्कृत-वि० (कनिस्ट्र) मेत्र, कुर्सी आदि सामानोंसे सजाया हुआ ।

उपस्थापक-पु० (रीडर) दे० 'पेशकार' ।

उपस्थापन-पु० (प्रेजेंटेशन) विधानसभा आदिके सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित करना; किसी अधिकारीके सामने कोई विषय उसकी स्वीकृति प्राप्त करनेके लिए रखना ।

उपस्थापित करना-स० कि० (टु प्रेजेंट) विधान-सभा आदिके सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ रखना ।

उपाध्यक्ष-पु० (डिप्टी चेयरमैन; डिप्टी स्पीकर) किसी मन्त्र, मन्त्रालय, विधान सभा आदिका वह प्रशासिकारी जो अध्यक्षके सहायक रूपमें या उसके अनुपस्थित रहनेपर उसके स्थानपर काम करता है ।

उपोत्पादन-पु० (बाइप्राडन्ट) वह मीण उत्पादन (उत्पादित वस्तु) जो किसी अन्य मुख्य वस्तुका निम्नोत्पादक समर्थ अनायास तैयार हो जाय या की जाय ।

उभयसम्बन्ध-वि० (इंटरमीडियरी) दो व्यक्तियों या पक्षोंके बीच काम करनेवाला ।

उर्वरक-पु० (फर्टिलाइजर) वह रासायनिक खाद जो भूमि की उर्वरता बढ़ानेमें सहायक हो ।

उत्काश-पु० (मोटिवेयशन्) दे० 'उत्काशापाण' ।

उत्पत्ति-पु० (टारिफ जोन) पृथ्वीकी विषुव रेखाके दोनों ओरका वह भाग जो उपरमें कर्क रेखा और दक्षिणमें मकर रेखा द्वारा सीमित है तथा जहाँ सबसे अधिक गर्मी पड़ती है ।

उष्णक-पु० (ट्रॉपिक) तापकी वह मात्रा जो एक घाम पानीकी एक अंश सेठीसेठक गर्म मानेके लिए आवश्यक हो (तापमापक इकाई) ।

ऊ

ऊर्ध्वगति-स्त्री० (अपवर्ट ट्रेन्ट) ऊपरकी ओर, उड़की ओर, बढ़ने या जानेकी प्रवृत्ति ।

ऊर्ध्वतामापी-पु० [सं०] (कंथेडोमीटर) जलिकाओंमें गले हुए विभिन्न द्रव पदार्थोंकी ऊँचाई नापनेका एक आला ।

ऊर्ध्वपतन-पु० (मिक्लिमेशन) स्थूलमें एकदम वायुमें, बिना बीचकी तरल अवस्थाके पार किये, परिणत होना ।

ऊर्ध्वविदु-पु० (जेनिथ) मिरके ठीक ऊपरका सबसे ऊँचाईका स्थान या विदु; 'शीर्षविदु'; चरम मीमा ।

ऊ

ऊष्णकोण-पु० (स्टेट एंगल) वह कोण जो दो समकोणोंके बराबर हो ।

ऊष्णपरिशीघ्र-कोष-पु० (मिक्लिम फंड) उच्च या संख्या-विशेषके ऊष्णके क्रमिक परिशीघ्र (अदायगी)के उद्देश्यसे समस्त-समयपर धृक् रूपमें जमा की जानेवाली धनराशि, निक्षेप-निधि ।

ऊष्णपरिसमापन-पु० (लिक्विडेशन ऑफ डेट) ऋण पूरा-पूरा चुका देना, बका कर देना ।

ऊष्णवर्धन-पत्र-पु० (सी-नोट) वह पत्र या रक्का जो ऋण लेनेवाला शर्तोंके साथ रसीदके लीपपर लिखता है, बैंडनोट ।

ऊष्णमुक्ति-स्त्री० (हीटिंगशन) ऋणमें छूटकारा पाना, ऋण-का चुकाया जाना ।

ऊष्ण-विद्युत्-पु० (इलेक्ट्रोन) ऋण विद्युत्-शक्तिकी अभि-मान्य इकाई-स्वरूप के ऋण जो परमाणु (एटम)के धन-विद्युत् शक्तिकणके चारों तरफ, स्वयंमंडलके घर्शोंकी तरह घूमते हैं ।

ऊष्ण-संप्रिथ-पु० (कॉन्सालिडेशन ऑफ डेट) बहुतने ऋणोंकी मिलाकर एक कर देना, ऋणकी छोटी-छोटी रकमों-की मिलाकर एक बड़े धिंट या गश्तिमें परिणत कर देना ।

ऊष्णस्थान-पु० (मोटेरीयम) बैंकी आदि द्वारा (उच्च न्यायालयके या सरकारके आदेशमें) लोगोंका पानना या ऋण चुकाना अन्यायी रूपमें बंद कर दिया जाना ।

ए

एकजातीय, एकरूप-वि० (होमोजीनियम) एक ही जाति, वर्ग या किसका; जिसके सब अंग या अण एक सदस्य हो ।

एकतानता-स्त्री० (मानोटीनी) तान या स्वरकी नीरम एकदमता ।

एकदलीय शासनतंत्र-पु० (टोटेलिटैरियनिज्म) समूचे देशके लिए एक ही दली शासनकी प्रणाली जिसकी लक्ष्यमें नागरिकोंका सामूहिक जीवन ही नहीं, नि- और व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता है ।

एकपक्षीय-वि० (युनिटेरल) एक ही पक्ष या दल, सब पक्षनेतावाला, केवल एक पक्षमें होने या किये जानेवाला ।

एकल संक्रमणीय मत-पु० (मिगल ट्रान्स्फरल वोट; आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणालीमें) मतदाता द्वारा (सं- निवाचनक्षेत्रमें) गने जानेवाले अनेक सदस्योंमें, किन्तु एकको हम शर्तों-मिल गया मत कि यदि निर्धारित गणनामें मत प्राप्त हुए लेनेके कारण, उम डगही प्राप्त हो- कता न रहे, तो वह उम्मा बादके अधिमान दिने या उम्मेदवारके पक्षमें भ्रमणित हो जायगा ।

एकविद्युतामी रेखा-वि० (काइरेंट लाइन) १. ही विद्युत् एक दूसरेके काटनेवाली रेखाएँ ।

एकसद्व्यवस्था-वि० (युनिफ़ॉर्म) जिसमें केवल एक ही सदस्य, विधानसभा, हो ।

एकसद्व्यवस्था-निर्वाची क्षेत्र-पु० (मिगल मैचर काइरेंट) ही वह निर्वाचनक्षेत्र जहाँमें केवल एक ही सदस्य चुना जानेको हो ।

एकपक्ष-पु० (पेटेंट) किसी उद्भावित या स्वनिर्मित वस्तु होनेवाली जायका एकाधिकार देनेवाला सरकारी मुद्रा- किन्तु प्रत्यक्ष । -पत्र-पु० (लेटर्स पेटेंट) किसी बातका एकाधिकार प्रदान करनेवाला पत्र । -अपेक्ष-स्त्री० (पेटेंट मेसिसिन) वह अपेक्ष या दबा जिसे बेचने-बनानेका एकाधिकार सरकारी मुद्रांकित प्रत्यक्ष द्वारा उमके उद्भावक या मूल निर्माताकी ही प्राप्त हो ।

एकांतर-वि० (आल्टरनेट) बीचमें एकको छोड़कर दूसरा । **एकांतरिक-वि०** (आल्टरनेट) बीचमें एक दिन छोड़कर दूसरे दिन होने या जानेवाला; बीचमें एकको छोड़कर दूसरेसे संबंध रखनेवाला ।

एकवृत्तक-पु० क्रिकेट आदिके खेलमें दलीके स्थावर खिलाड़ियोंका समूह (फ्लेक्स) ।

एकाधिकार-पु० (मानोपार्थी) किसी वस्तुके व्यापारार्थिमें केवल एक ही आदमी या एक ही कंपनीका पूर्ण अधिकार, इजाजत ।

एकानुरूप-वि० (होमोलागस) जो एक सशस्त्र हों, समान मापस्थ स्थितिवाला ।

एकीकरण-पु० (एमक्यूगेशन) दो या अधिक समितियों, व्यापारिक संस्थाओं आदिका मिलाकर एक कर दिया जाना ।

आ

औद्योगिक योजना-स्त्री० (इंडस्ट्रियल स्कीम) उद्योगोंमें ऐव-पौधे लगाने तथा उनके रक्षण आदिकी योजना ।

औद्योगिक सन्ध-प० (इंडस्ट्रियल येटा) उद्योग-अध्याय सन्ध रखनेवाली प्रामाणिक बातें ।

औद्योगिक वासव्यवस्था-स्त्री० (इंडस्ट्रियल हाउसिंग कारखानोंमें काम करनेवाले) श्रमिकोंके लिए रहनेके भवनों बनवानेकी व्यवस्था ।

औद्योगिकीकरण-पु० (इंडस्ट्रियलाइजेशन) अनेक कारखानों, उद्योगों आदिकी स्थापना, विस्तार आदि द्वारा देशको उद्योग-प्रधान बनाना ।

औपचर्यनिर्देश-पु० (पेरिग्रेशन) किसी रोगके प्रमत्तायं चिकित्सक द्वारा रोगीकोके नाम, मात्रा, प्रयोगादिके सुबधमें दिया गया (लिखित) निर्देश ।

औपचर्यनिर्माणशास्त्र-पु० (फारमस्योपीया) औषध तैयार करनेकी विधा या उसकी विधि बतानेवाला ग्रन्थ ।

क

कंटिका-स्त्री० (पिन) नार आदिका बहुत पतला सुईवा दूकरा जिसमें ऊपरकी ओर चिपटी घड़ी या तोपी-सी होनी है और जो कागजों, कपड़ों आदिमें खोली जाती है, धातु, आलपीन ।

कंटिकाधार-पु० (पिनकूशन) काट, पीनल आदिका वह गरीदार जोना जिसमें आलपीन (कंटिका) स्थापित रखी जाती है, शूकपाती ।

कंट्रोलविस्थापन-स्त्री० (कंट्रोल कांफिडेंस) गल्फ काट में गोलों, अस्थं गहरी, प्रतिरोधिता ।

कंट्रोल-पु० (कंट्रोल) गलेमें बांधकर कमोर्कके ऊपर लटकाया जानेवाला रेशमी या सूती मुंडर पीना, घेवर ।

कंट्रोलिंग-पु० (कंट्रोलिंग) मानव कठ द्वारा उच्च-रित गीत ध्वनि ।

कक्षाकृति-स्त्री० (प्रमोशन) अधिक केंद्रों वक्षा या अधिक केंद्रों स्थितिमें चटा दिया, पहुँचा दिया जाना ।

कटौतीका प्रस्ताव-पु० (कटौती) दे० मूल्य ।

कठोरतावाद-पु० (क्यूटिनिस्म) (प्रोटैस्टैन्स) (प्रोटैस्टैन्स) कठोर जीवनको आदर्श माननेका सिद्धांत ।

कणीकरण-पु० (क्यूटिलाइजेशन) कणों या रबोंके रूपमें परिणत करना, दे० 'स्फटिकीकरण' ।

कपटाधारी, छलधारी-पु० (फ्राड) छिपकर या धोखे में शत्रुके शिविरपर गोलीबारी बौछार करनेवाला या हम मरह किसीकी मार डालने, आह्वन करनेवाला ।

करयिक-पु० (कराक) दे० 'विरिक, लेक्क' ।

कर-विचारण-पु० (असेसमेंट) मुख्य या लाभादिकी मात्रा के आधारपर निर्धार करना कि खेत, घर आदिके स्वामीपर कितना कर लगाया जाय ।

करबोध्य मुख्य-वि० (रेटैबिल वा टैक्सैबिल वैल्यू) कर लगायेंकी दृष्टिमें औँका गया किसी मकान, मंपति आदिका मुख्य या उममें किताये, मर आदिके रूपमें हो सकनेवाली भाव ।

करापरबन्ध-पु० (इंवेन्शन आब टैक्स) ऐसी हिकमत या बालाको करना जिसमें कर भट्ठा न करना पड़े ।

करारोपण-पु० (प्ली) कर आदि प्राधिकृत रूपमें संग्रह करना, वसूल करना या उठाइना ।

कर्ण-पु० (हार्डपाइन्स) दे० मूल्य ।

कर्णधार समिति-स्त्री० (स्टीयरिंग कमिटी) समुक्त राष्ट्र-संघ, कांम आदिकी वह समिति जो मध, कांममें आदि-को विभिन्न समितियोंके कार्यक्रम, विषयक्रम आदिका निर्धारण करती है; 'कांम' मंचालन-समिति ।

कर्मकार-अभिप्रेत-अभिनिवय-पु० (वर्कमैन कपेनेशन येट) दे० 'श्रमिक क्षति-पूति अभिनिवय' ।

कर्मचारि-संज्ञ-पु० (प्युरोक्रैमी) दे० 'अधिकारिराज्य', नौकर-शाही ।

कर्मचारिवृद्ध-पु० (स्ट्याफ) किसी प्रधान अधिकारीके नीचे काम करनेवाले (किसी मस्था आदिके) कर्मचारियोंका समूह ।

कर्मरोधन-पु० (स्ट्राइक) किसी अन्याय आदिके विरोधमें काम-काज आदि बंद कर देना, हड़ताल ।

कर्मशाला-स्त्री० (वर्कर्स, वर्कशाप) छोटे, लकड़ी आदिका या निर्माण-संबंधी अन्य काम करनेका स्थान ।

कलापंजी-स्त्री० (मिनिट बुक) वह पत्री या रजिस्टर जिसमें किसी मसाला-मसिनिका सक्षिप्त कार्य-विवरण लिखा जाय ।

कल्याणकारी राज्य-पु० (वेलफेयर स्टेट) 'जनकृतैषो राज्य' ।

कवक-पु० (फगस) छत्रक, कुकुरमुत्ता ।

कवचिन वाम-पु० (आर्मर्डकार, बुडमें काम आनेवाली वह गरी जिसपर तोपी आदिकी सामने उसे सुरक्षित रखनेके लिए कोहेकी मोटी चर चटा दी गयी हो तथा जो स्वयं तोपी, तोपचियों आदिके सुरक्षित हो ।

कष्टमहन योजना-स्त्री० (आस्टेरीटी स्कीम) दे० 'अल्प-भोग योजना' ।

कान्ययुग-पु० (कांय एज) उन्निहामका वह युग जब कामके बने औजारों और हथियारोंका प्रयोग होता था ।

'काम न करो' हड़ताल-स्त्री० (स्ट्रे-न-वर्क) हड़ताल-का वह प्रकार जिसमें श्रमिक वा कर्मों कारखाने आदिमें नौ जाते हैं पर कोई काम नहीं करने-अपने म्यानपर चुपचाप बैठे रहते हैं ।

कारागारिक-पु० (जेलर) बंदीगृह या बहोंके बंदियोंकी व्यवस्था, देखरेख आदि करनेवाला मुख्य अधिकारी, कारागारपाल ।

कारापाल-पु० (जेलर) दे० 'कारागारिक' ।

कारारोधन-पु० (इन्कारसरेजन) कारागृहमें बंद कर देने, जेल में न देनेकी क्रिया ।

कार्यकारी-वि० (रेजिटर) किसी पदाधिकारीके छुट्टी आदिपर जानेके समय उसके स्थानपर काम करनेवाला, कार्यवाहक।

कार्यग्रहणकाल-पु० (ग्राहिंग टाइम) किसी सम्था आदिमें या किसी पदपर नियुक्त होनेके बाद काम शुरू करनेका समय।

कार्यपरिपक्व-खी० (काउंसिल आफ गेवर्नर) किसी कार्य, कारवाय, आदोलन आदिका संचालन, निबंधन आदि करनेके लिए गठित परिपक्व।

कार्यपालिका-शक्ति-खी० (एग्जीक्यूटिव पावर) विधि, आज्ञा, न्यायिक अभिनिर्णय आदिको कायम परिणत कराने, पालन करानेकी शक्ति।

कार्यवाहक-पु० (एजेंट) वह जो किसी देश, मंस्था आदिकी ओरसे कार्य करनेके लिए अधिकृत किया गया हो, एजेंट।

कार्यवाह-संस्था-खी० (कोरम) दे० 'गणपति'।

कार्यसमिति-खी० (वर्किंग कमिटी) किसी सस्थाके सदस्यों की वह छोटी समिति जो हमके कार्योंका संचालन करनेके लिए बनायी गयी हो।

कार्यस्थान-प्रस्ताव-पु० (रेजर्जनमेंट प्रोपोजन) किसी अव्यक्त आवश्यक एवं मार्बांनिक महत्त्वके प्रश्नपर विचार करनेके लिए विधान-सभा आदिमें रखा गया प्रस्ताव जिसमें प्रार्थना की जाती है कि अन्य कार्य छोड़कर पहले इसीपर विचार किया जाय।

कालकोठरी-खी० (कालकोठी सेल) (तेलको) वह मंग और अधेरी कोठरी जिसमें भयंकर अपराध करनेवाले बंदी तनहाईमें रने जाते हैं।

कालदीप-पु० (एनाक्राजिजम) किसी वस्तु, व्यक्ति या पदनाका अपने नास्तविक या ठीक समयमें बहुत पहले अथवा पीछे होना वर्णित किया जाना, वतलाया जाना।

कालांतर-वि० (टाइम-बाउंड) निर्धारित अवधि या समय बीत जानेपर दस्तावेज, ऋण पत्रादिका विधिसे दृष्टिमें बेकार हो जाना।

कालापान-पु० (कैलपर्स) देहनों, गोलों आदिका व्याम नापनेका एक आला जो ठो चपटे, पेडे पौकारके डुकरीका बना होता है-वे एक ओरसे नोकदार व दूसरी ओरसे चौड़े होते हैं।

कालाधि-खी० (पीरियड) निर्धारित समयकी सीमा।

कीटनाशक-पु० (रन्मेडिमाइड) कीटाणुओंको नष्ट करनेवाली दवा।

कीटविज्ञान-पु० (एंटोमोलॉजी) कीड़ों-मकोड़ोंकी उत्पत्ति, स्वरूप, विशेषताओं आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान।

कीपस्टंभ-पु० (फेनल स्टैंड) वह स्तंभ जैसा आला जिनमें कीप फँसायी जाती है।

कीर्तमान-पु० (रिकार्ड) तैराकी, खेल-कूद आदिमें प्रदर्शित वस्तुताकी वह स्वरमसीआ जहाँतक किसी व्यक्तिके पहुँचनेका अभिकेस मिलता हो।

कुक्कुटादि-पालन-पु० (पोल्ड्री कीपिंग) कुक्कुट, बरक आदि पालने, उनसे अंडे बेचने आदिका व्यवसाय।

कुक्कुटक-वि० (बैट क्वैटर) (वह बरगु) जिसमें विजय

ताप आदिका परिचालन सुगमतासे न हो सके, कुत्त-वाहक।

कुट्टीरक्षिप-पु० (कॉटेज इंडस्ट्री) वह छोटा उद्योग या धंधा जो अपने घरपर ही बैठकर किया जा सके और जिसके लिए बड़े-बड़े वनों आदिकी आवश्यकता न हो।

कुट्टनीमला, कुट्टव्यसा-खी० (मैलिगिनेसिटी) कुट्टकर फैलाये जाने योग्य होनेका गुण या विशेषता।

कुपयवयन-पु० (मिस्ट-आइरेवशन) घुरे या मलट रास्तेपर ले जाना।

कुपोषण-पु० (मालन्यूट्रिशन) उत्तम-पोषणका अभाव या कमी, न्यूनपोषण।

कुलपति-पु० (वार्डन-चान्सेलर) विद्यापीठ या विश्वविद्यालयका प्रधान अधिकारी, जिसका पद अधिपति (चान्सेलर) के बाद ही माना जाता है।

कुलमन्त्रि-पु० (रजिस्ट्रार) दे० 'पीठमन्त्रि'।

कुलीन-लंघ-पु० (फाल्मिगैली) उच्च कल्क्यः व्यक्तियों द्वारा शासन चलायेकी प्रवृत्ति।

कुल्पाधिकारी(रिज)-पु० (मैजिस्ट्रेट ऑफ फ्रॉफिगर) नबरीकी देखरेख आदिका काम करनेवाला अधिकारी।

कुर्वटन-पु० (माल-डिस्ट्रिब्यूशन) अनुपयुक्त ढंग से किरानेवाला विन्यास, कुवितरण।

कुट्टालय-पु० (न्यू एंसाइलम) कौटिल्यकी देखरेख और सहायताकी दृष्टिमें बनाया गया निवास-स्थान।

कृति-स्वाम्य-पु० (कॉपीराइट) कोई लेख, पुस्तक, कविता कहानी आदि पुनः प्रकाशित करने, बेचने आदिकी अधिकार।

कृत्रिम गर्भोपण-पु० (आर्टिफिशल इनसेमिनेशन) विचकारी आदिकी महायुक्तानु शुक्राणु और प्रसिद्ध करार गर्भस्थिति कराना, कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान कराना।

कृमिसोधिना दुरुध-पु० (पैरिट्राइज) (म क) वह दूर जिसके कोशाणु विशेष प्रक्रिया द्वारा नष्ट कर दिये गये हों।

कृषिपत्र-पु० (ट्रेडर) यहिसेवाला एक तरहका दान जिसका प्रयोग कृषि-सम्बन्धी अनेक कार्योंमें किया जाता है।

कृषिदासना-खी० (सर्फटम) स्वतंत्र जीवन-शैलीका काम दान द्वारा करानेकी प्रथा; वह प्रथा जिसके अनुसार कृषि व्यक्तियोंमें जबरन किसीकी भूमि जीतने-बोनेका काम कराया जाता वा (रूम)।

कृष्य-वि० (कृष्टिरेविन) दे० मूलमें।

कंड-पु० (मिटर) इतना वह मन्त्र बिंदु जहाँमें परिमित प्रत्येक बिंदुकी दूरी एक हो हो।

कंड्रापसारी शक्ति-खी० (सेट्रिब्यूथल कोमंड) कंड्रा दूर इतनेवाली शक्तियाँ।

कंड्राभिसारी, कंड्राभ्युक्त शक्ति-खी० (सेट्रिब्यूथल कोमंड) कंड्राकी ओर ले जानेवाली शक्तियाँ।

कंड्रीय आवास-संरक्षक-पु० (सेट्रल हाउसिंग बोर्ड) नये नये आवासीय (घरों)का निर्माण करनेके लिए स्थापित कंड्रीय संस्था।

कंड्रीयकरण-पु० (सेट्रलाइजेशन) एक स्थान या क्षेत्र पर जाना, केंद्रित करना, जमा करना; एक हाथमें, एक व्यवस्थामें लाना।

केसवली, केसिका - स्त्री० (कैपिली त्वष्टा) बहुत ही पत्थर (केसके सार) धरासमानी नस्लिका ।

कोटिच्युत - वि० (डिपेडेंट) जो अपनी कोटि, मेणी या पदसे नीचेकी कोटि, मेणी या पदपर भंग दिया गया हो ।

कोटिबंध - पु० (प्रेडेशन) कोटि या वरनेके अनुसार रखना, कोटियोंमें विभक्त करना; वे० 'क्रमस्थापन' ।

कोण - पु० (एंगिल) अलग-अलग दिशाओंसे आकर एक बिन्दुपर मिलनेवाली दो सरल रेखाओंके बीचका झुकाव ।

कोसकीट-पाखण - पु० (मिरिकटवर) रेशमके कीड़े पालनेका काम या उद्योग ।

कोसाम्प - पु० (सेल) वे सक्षम सजीव कण जिनके योगसे पिका निर्माण होता है ।

कोषविषय - पु० (ट्रेजरी विस्स) वे० 'खजानेकी हुदियों' ।

कोडल्ल - पु० (पित्रल होल) (किसी आलमारी आदिमें) कपड़ारखे, दरबेकी तरफ, बसे खानेके भीतर बने हुए छोटे-छोटे खाने जिनमें कामज-पत्र रखे जाते हैं ।

क्रमस्थापन - पु० (मेथिंग) श्रेणी, कोटि या क्रमके अनुसार रखना ।

क्रमपंजी - स्त्री० (परचेजेंज जर्नल) प्रतिदिन खरीद की गयी वस्तुओं आदिका विवरण फिलनेकी वही, खरीद वही ।

क्रमपंजी - स्त्री० (परचेजेंज लेजर) वह पंजीय या खाता-वही जिसमें समय-समयपर खरीदी हुई विभिन्न वस्तुओंका विस्तार, हर एकका अलग-अलग, क्रमपंजीमें उतारकर लिखा जाता है ।

क्रमशक्ति - स्त्री० (परचेजिंग पावर) बाजारमें उपलब्ध वस्तुओंकी खरीद मन्नेकी जनताकी मायमध्य या क्षमता ।

कोषाधिकार - पु० (माइनेज) किसी काममें यात्रा करनेपर सरकार या गैरसरकारी कर्मचारीकी सीमाके हिमावमें मिलनेवाला भत्ता ।

कोल-मुक्ति - स्त्री० (रीडेस) किसी कपड़े, कठिनाई, उपपीकन आदिमें छूटकारा या जाना ।

कविदुर्भाषी सहाय्य - पु० (कैम्ब्रिज) विधानमन्त्र आदिका वह सहाय्य जो अपनी कम उम्र या कम अनुभवके कारण भ्रम या दलमें अशुद्धाकृत कम सहाय्य रखनेके कारण प्रायः पीछेकी ही पंक्तियोंमें बैठता और विवादादिमें नाममात्र का ही हिस्सा ग्रहण करता है ।

कथमांक - पु० (कॉन्सिडिग पॉइंट) वह विशेष नापक्रम जिनपर कोई द्रव वस्तु उबलने लगे ।

कसिद्ध - स्त्री० (एक्सप्ले) विद्युत्-प्राप्तिमें प्रभावित वे अश्वय किरणें जो हाथ या शरीरके अन्य किसी भागके आर-पार पहुँचकर हड्डियोंके छेदकेका छायाचित्र विशेष आयाही काचपट्टपर अंकित कर देती है, पारदर्शी किरण ।

कसिद्ध - पु० (स्कार) चोट लगने, जल जाने या फोड़े आदिके कारण पक्का हुआ निशान ।

कसिद्धि - स्त्री० (रिपरेरेंस) क्षति या हानि पूरी करानेका कार्य या इसके बदले दी जानेवाली रकम ।

कषकारी रोध - पु० (सेलिंग डिवाय) क्रमशः क्षीण या दुर्बल करता जानेवाला रोग ।

केन्द्रेक्षिक - स्त्री० (फोल्ड ग्लासेज) क्षेत्र या मैदान आदिमें बहुत छोटे-छोटे दूरीकी वस्तु देखनेका यंत्र ।

क्षेत्रक - पु० (एरिया) किसी समक्षेत्रकी घेदनेवाली रेखा या रेखाओंके भीतर आवे हुए समतलके आयको नाप ।

क्षेत्रमाप-पुस्तिका - स्त्री० (फोल्डबुक) क्षेत्रों, भूमि आदिकी माप या पैमाइश करते समय काममें आनेवाली पुस्तिका ।

क्षेत्रक्षक - पु० (फोल्डर) क्रिकेट, बैसबाल आदिके खेलमें क्षेत्ररक्षणका काम करनेवाला खेलाड़ी ।

क्षेत्रक्षण - पु०, **क्षेत्रक्षा** - स्त्री० (फोल्डिंग) क्रिकेट, बैसबाल आदिके मैदानमें खड़े होकर क्लेबजान द्वारा आइए गेंदकी रोकने, लोकने तथा फेंकनेवालेके पास छोटा देने आदिका काम ।

क्षेत्राधिकार - पु० (जुरिस्टिक्शन) किसी विशेष क्षेत्रके या विशेष प्रकारके मुकदमे सुननेका अधिकार ।

क्षेत्रावस्थान - पु० (कैंगमेशन आफ होस्टिज) वैद्वारेके कारण खेतका या जंगलका छोटे-छोटे टुकड़ोंमें विभक्त हो जाना ।

क्षेत्राभिरक्षक - पु० (वार्डन) नागरिक संपदनका वह अधिकारी जो हवाई हमलेके समय क्षेत्रविशेषके नागरिकोंकी रक्षाके काममें उहावता करे ।

क्षीरमंदिर, क्षीरालय - पु० (वार्मस सेलन) बाल बनवानेकी दुकान ।

ख

खंडकालिक - वि० (पार्ट टाइम) पूरे समयतक न चल्कर उसके कुछ अंश में ही किया जानेवाला (काम); जो पूरे समयके लिए नहीं, थोड़े समय ही काम करनेके लिए नियुक्त किया गया हो ।

खजानेकी हुदियों - स्त्री० (ट्रेजरी विस्स) वे खाता-वही हुदियों जो तात्कालिक आवश्यकतापूरे पूरी करनेके लिए धन प्राप्त करनेके निमित्त राज्यके खजानेसे जारी की जायें, कोष-विषय ।

खनिज-विज्ञान - पु० (मिनरेलोजी) खनिज पदार्थोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान ।

खनिजवस्ति - स्त्री० (माइनिंग सेटिलमेंट) लोहे, कोयले आदिकी किसी खानके पास बसे हुए लोगोंकी वस्ती ।

खर्पिड - पु० (मिनेस्टियल बॉडी) आकाशमें स्थित ग्रह, नक्षत्रादि ।

खाद्य समवितरण - पु० (फूड राशियज) नागरिकोंकी निर्धारित मात्रामें खाद्यान्नोंका समान रूपसे वितरण ।

खाद्योद्योग - पु० (विटामिन) प्राकृतिक खाद्य पदार्थोंमें पाया जानेवाला सूक्ष्म तत्त्व जो प्राणियोंके स्वास्थ्य एवं अभिवृद्धिके लिए आवश्यक माना जाता है (इसके कई भेद माने जाते हैं), पोषक तत्त्व, जीवन-तत्त्व, विटामिन ।

खुराकबंधी - स्त्री० (राशनिय) वे० 'समवितरण' ।

खेलन-प्रतियोगिता - स्त्री० (टूर्नामेंट) अंजी कुदान, लंबी कुदान, शतरंज, टेनिस आदिमें भाग लेनेवाले कुशल खेलाडियों वा व्यक्तियोंके बीच होनेवाली प्रतियोगिता ।

खेड-पंच - पु० (अंपायर) खेलमें, विशेषकर क्रिकेट आदिमें, विवाद उत्पन्न होनेपर अतिनिर्णय करनेवाला व्यक्ति । (रेफरी) फुटबाल, हाथकी आदिमें पंचकी काम करनेवाला ।

खेडमध्यस्थ - पु० (रेफरी) गेंद-बल्ला आदिके खेलमें खेला-

विर्गों के दोनों दलों के लेखका निरीक्षण करने तथा विवाद या मतभेद उत्पन्न होनेपर पक्ष या निर्णायकता काम करनेवाला, अभिनिर्णायक।

शेकाधार-पु० (प्ले-ग्राउंड) विचारक आदिसे संबद्ध वह मैदान जहाँ हाकी, गेंद-बल्ला आदि खेलनेकी व्यवस्था हो।

ग

गंज-पु० (एजिन) यंत्रों, कल-पुरजों आदिकी गति-प्रदान करनेवाला एक तरहका यांत्रिक साधन।

गगनचुंबी भवन-पु० (स्काई स्केपर) बहुत ऊँचा मकान जो आकाशको छूता हुआ माना जाने पर, अर्न्तकष।

गणक-पु० (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

गणतंत्रवादी-पु० (रिपब्लिकन) गणतन्त्र के सिद्धांतोंका प्रतिपादन, अनुसरण वा समर्थन करनेवाला; संयुक्त राष्ट्र, अमेरिकाका एक राजनीतिक दल जो व्यापारिक संरक्षण एवं केंद्रीय शक्तिके विस्तारका समर्थक माना जाता है।

गणवक्-प० (टेलिटर) चुनावमें प्राप्त वोटों या परीक्षामें प्राप्त अंकोंकी क्रमसे रत्नकर जोड़नेवाला व्यक्ति वा यंत्र।

गणना-पु० (अकाउंट) दे० 'लेखा'।

गणनापद्धति-पु० (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

गणपूर्ति-खी० (कोरम) सदस्योंकी वह अल्पतम निर्धारित संख्या जो किसी समाजका कार्य संचालित करनेके लिए आवश्यक मानी गयी हो।

गंभीरता, ग्राह्यशील-पु० (रेक्वाय) किसी वार्ता आदिमें ऐसी जटिल स्थिति या बाधाका उत्पन्न हो जाना जिससे उसे बढ़ने आदिकी संभावना ही न जाने पड़े, शिथिल।

गतिविधियाँ-पु० (डाइनेमिक्स) वस्तुओं या तन्त्रोंके गतिशील होनेके कारणों आदिका विवंचन करनेवाला शास्त्र।

गर्भसंज्ञ-पु० (कारमेन्स) एक तरहकी संलक्ष्य त्रियमें मरा हुआ बच्चा पेटसे निकाला जाता है।

गवेषक छात्र-पु० (रिसर्च स्कोलर) गवेषणा-काममें रुका हुआ छात्र।

गवेषका-खी० (रिसर्च) किसी विषयका विशेष परिश्रम और साधनानीके साथ अध्ययन तथा छान-बीन; अन्वेषण।-साक्षा-खी० (रिसर्च इन्स्टिट्यूट) अन्वेषण, छान-बीन आदि करनेका स्थान।

गार्हस्थ्य-विज्ञान-पु० (होमैस्टिक साइंस) गृहस्थीके कर्तव्यों (रिसेर्च बनाना, कपड़े सीना आदि)का विवंचन करने तथा उनको शिक्षा प्रदान करनेवाला शास्त्र।

गुरुत्वकेंद्र (ग्रिगुवका)-पु० (सेंट्रिग्रेड) विस्तृतकी सत्त्विक-कालिका मिलन-बिंदु।

गुरुत्वाकर्षण-खी० (ग्रेविटेशनल फोर्स) दे० 'गोपन-शपथ'।

गुरुपत्र-पु० (रेकड) दे० 'शुल्का', 'मसदान-पत्र'।

गुरुकेल-पु० (साफर) किसी या संवाद भेजनेकी युक्त लिपि-प्रणाली।-संक्षिप्ता-खी० (साफरकोड) गुरुकेल-संबंधी विषयोंके संबंधी आदिका संग्रह।

गुरुपति-पु० (गार्डन) दे० 'छात्राभिरक्षक'।

गुरुपरिभाषा-पु० (मिनिसेज) मकान और उसके चारों ओरकी सीमाके भीतरका क्षेत्र, गृहोपांत, परिसर।

गुरुमंथी-पु० (होम मिनिस्टर) राज्यके भीतरी मामलों- (कारिग्रा आदि) की व्यवस्था करनेवाला मंत्री।

गृहसंक-पु० (होमगार्ड) युद्ध या व्यापक अशांतिके समय गहर; युद्धके आदिकी रक्षा करनेवाली नागरिक सेनाका मद्रन्व।

गृहसाक्ष-पु० (होमैस्टिक साइंस) दे० 'गार्हस्थ्य-विज्ञान'।

गेंदबाज-पु० (बोल्सर) गेंदबल्ले (क्रिकेट) के खेलमें वह व्यक्ति जो बल्लेबाजके सामने गेंद फेंकनेका काम करे।

गेंदबाजी-खी० (बोल्सिंग) क्रिकेटके खेलमें (बल्लेबाजकी तरह) गेंद फेंकनेकी क्रिया।

गोपन-शपथ-खी० (ओथ ऑफ सीक्रेसी) मंत्रियों आदि द्वारा सरकारकी गोपनीय बातें प्रकट न करनेके संवधन पदप्रणयके समय की जानेवाली शपथ।

गोलिका-खी० (ग्लोब्यूल) दवा आदिकी छोटी गोली।

गोलिकाकार-वि० (ग्लोब्यूलर) जो छोटी गोलीके रूपमें हो, छोटी गोली तैयार।

ग्रंथागारिक-पु० (लाइब्रेरियन) ग्रंथागार (पुस्तकालय) में संग्रहित ग्रंथोंकी अभिरक्षा तथा उनमें आदान प्रदान महाशक्ति की व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति।

ग्राहकबंध, ग्राहकांश-पु० (रिसोम्बर) टेलीफोन, रेडियो या गारकी वाणी अथवा ध्वनि ग्रहण करनेवाला यंत्र-वह यंत्र वा यंत्रका भाग जिसकी सहायतासे दूरका वार्ता अथवा ध्वनि सुनाई दे सके।

ग्रंथ-पु० (नेकटाई) दे० 'बठबंध'।

घ

घटिकानुकूलमंस-पु० (क्लॉक वाइथ) घड़ीका कौटा (न-तरह घूमना है, उस तरह, दक्षिणावर्त रूपमें)।

घटकर-पु० (घेरी टॉक) नाव द्वारा या पुलपरमें न-पार करने या समान ल-त्रामे आदिके कारण धारपर रुकनेवाला कर।

घनचर्चनीय-वि० (मेकिथेबिल) (घनमें) पीटनेपर जो चपटा होकर बड़ जाय।

घनचर्चनीयता-खी० (मेकिथेबिलिटी) किसी ठोसका पीटनेपर चपटा होकर बड़ जानेका गुण।

घनीभूत साक्ष-पु० (कॉन्स्ट्रूटिव) दबाकर छोटा या गांठ किया हुआ साक्षपदार्थ।

घाटी मार्ग-पु० (गार्ज) बहावियोंके बीचमें नदीकी चार-आदि द्वारा बनाया हुआ संकीर्ण पथ।

घाटेका आवश्यक-पु० (डेफिसिट बजट) वह आय-व्यय जिसमें आयकी अपेक्षा व्यय अधिक दिखाया गया हो (और जिसमें अनुप्राप्ति घाटेकी पूर्तिके लिए करपुष्टि आदिका सहारा न किया गया हो, कोई उपबंध न रखा गया हो)।

घिरनीदार विज्ञान-पु० (ग्राइरोस्कोप) ऊपरकी ओर लगी हुई घिरगियोंकी सहायतासे आकाशमें उड़नेवाला विमान।

घिरी-खी० (पुली) (लकड़ी वा) कोईका बना हुआ घड़िया जिसका घेरा गालीदार होता है और जो सुगमतापूर्वक

स्वतंत्रतासे बूम सकता है, विरनी।

बुलनसीकता—की० (साल्वेजिस्टी) किसी द्रव पदार्थमें किसी स्थूल (या अन्य द्रव) पदार्थके बुलमिष्ठ जानेका गुण।

बुल्य—पु० (साल्वेट) वह स्थूल (या द्रव) पदार्थ जो किसी द्रव पदार्थमें डालनेसे उसमें बिलकुल बुलमिष्ठ जाय, जैसे नमक जो पानीमें डालनेसे बुल जाता है।

बोल—पु० (सोल्यूशन) दे० 'द्रावन'।

बोलक—वि० (साल्वेंट) जो बुला दे, बुला देनेवाला। पु० वह द्रव-पदार्थ (पानी, मद्यसार आदि) जिसमें डालनेसे कोई स्थूल (या द्रव) पदार्थ बिलकुल बुल-मिष्ठ जाय।

बोचविकस—पु० (आक्शन) दे० 'नीलाम'।

च

चक्रवात—पु० (वॉरिक्ल) सवारी या माल ढाने, ले जाने की कोई भी ऐसी गाड़ी जिसमें पहिये लगे हों।

चक्रवर्तिन—पु० (मायक्रोस्कोप) लेखनीकी ओंकर लगे हुए छोटेसे चक्रमें लिखे गये विशेष प्रकारके कागजमें बहुत-सी प्रतियाँ छाप देनेवाली मशीन।

चक्रानुक्रमसे—अ० (इन टोटेशन) चक्रकी तरह बराबारीसे; एकके बाद दूसरेके समुचित अनुक्रमसे।

चमर्तुज—पु० (कार्डिमेटरल) वह समप्रक्षेत्र जो चार मरक रेखाओंमें बिरा हो (तथा जिसमें चार कोण हों)।

चर्मोत्पादन—पु० (पीप प्रोडक्शन) अधिकतम मात्रामें किया गया उत्पादन।

चर्मरपंजी—की० (हेरेन्टर डूक) दे० 'आचरण-पंजी'।

चर्मप्रमाचक—वि० (टेक्स्चरमिटर) पशु पक्षियोंके चमड़े या त्वालकी प्रबल कर उसमें भ्रूमा आदि मरक मजाने या जीविन-रूप देनेका काम करनेवाला।

चर्मशोधन—पु० (टेनिंग) विशेष प्रकारके धोखोंम डालकर या अन्य प्रक्रिया द्वारा चमड़ेकी मिष्ठाना, मुलायम बनाना।

चर्मशोधनालय—पु० (टेनरी) वह स्थान या कारखाना जहाँ विशेष प्रक्रिया द्वारा चमड़ेकी मिष्ठाने, मुलायम बनानेका काम किया जाता है।

चर्मोदक—पु० (लिक) शरीरके चमड़े, या त्वलम हत्यादिमें निकलनेवाला एक तरहका लमीला पदार्थ, लमीका।

चलनिकोष—पु० (करेंट डिपॉजिट) बैंकमें चलने स्वात्तम त्रमा की हुई रकम।

चलाई—पु० (करैसी) वह मिका या मुद्रा जिसका प्रयोग या व्यवहार निरंतर होता रहता हो, जो एक आर्थिक इकाई दूसरेके हाथमें आता रहता हो।—**चत्र**—पु० (करैसी नोट) मिक्केकी तरह व्यवहृत होनेवाली कागजकी मुद्रा।
चलित्र—पु० (मोबीमोटिव) (रेलगाड़ी आदिकी) चलाने-वाला इंजन।

चाक्षुष महाह—पु० (आर्ग्यिनेस) वह गवाह जिसने स्वयं किसी घटनाकी घटित होती देखा हो।

चापकर्म—पु० दे० (कोर्ट) 'जीवा'।

चारकर्म—पु०, **चारकर्मवस्था**—की० (रिफ्रानेज) जलमयी का काम; जलमय नियुक्त कर इनमें काम लेना।

चित्तविकृति—की० (अनसाइनेस ऑफ माइंड) चित्त या मनका विकार या वृद्धि; मानसिक मदीपता।

चित्रावाह—की० (स्ट्रुबियो) चित्रकार, फोटोग्राफर आदि-के काम करनेका स्थान (दे० रंगशास्त्र)।

चित्राधार—पु० (एन्वम) चित्र, फोटो आदि सुरक्षित रूपसे रखनेकी किताब या भोटे पन्नोंकी खोली।

चित्रवापन—पु० (टेनेमिटी) ठोसके कणोंका परस्पर इस तरह चिपके रहना कि उन्हें पृथक् करनेके लिए बड़ी शक्तिकी आवश्यकता पड़े।

चिराम्य, चिरसम्मानित—वि० (डाइम ओनर) बहुत दिनोंमें जिसकी मान्यता रही हो, जिसका सम्मान होता आया हो।

चिरागुल—पु० (ब्लैक आउट) दे० 'अधाकृष्य'।

चिह्निक—पु० (पेक्चुरेशन) किसी रचना, वाक्य, प्रस्तर आदिमें विराम-चिह्न लगाकर (जहाँ आवश्यकता हो वहाँ उन्हें लिख देना)।

चिह्निकित—वि० (प्रेजुपेटेड) (वह गिलास, आदि) जिसपर नापके चिह्न चिह्न लगे हुए हों।

चौराह—पु० (मार्डुअरी) वह स्थान जहाँ दुर्घटनाओं आदि-में मरनेवालोंके शव, चौराहा या परीक्षण द्वारा मृत्युका कारण ज्ञान करनेके उद्देश्यसे, कुछ समयके लिए रोक दिये जाते हैं।

चुटकी—की० (क्लिप) कागज, नलिका आदिकी पकड़ रखनेका आला, क्लिप।

चेतक—पु० (क्लिप) वह अधिकारी जो संसद या विधान-सभामें अपने दलके सदस्यों द्वारा 'सभा'में अनुशासन पालन करने, उनकी उपस्थिति ठीक रखने, उन्हें आवश्यक सूचना देने, उन्हें वोट देनेके लिए बुलाने आदि-की व्यवस्था करना है, सचेतक।

चौयौन्माद—पु० (क्वैट्टोमेनिवा) चुरा लेने या छिपा रखने-की दुष्प्रवृत्ति।

चबवन—पु० (लीकेज) चूना, टपकना।—**छूट**—की०, —**मोक**—पु० किसी द्रव पदार्थके चू जाना, वह जाने आदिके बदलेमें दी जानेवाली छूट।

छ

छात्रनाम—पु० (स्टूडेंटिज) कोई लेख या पुस्तकादि भिखी समय लेखक द्वारा गृहीत बनायी नाम।

छात्रयुद्ध—पु० (ग्रैम फाइट) नकली लड़ाई, दिखाऊ युद्ध।

छात्रावरण, छात्रावरण—पु० (कैम्पलेज) शत्रुको धोखेमें डालनेके लिए विमानों, तोपों आदिकी दृष्टिको पतियों, बूमपट आदिके एक देना।

छात्रावरण—पु० (फिस्टर पैपर) तेल आदि छाननेका ममिशोष जैसा कागज।

छन्न—पु० (क्लिपेटेड) वह द्रव जो छात्रावरण आदिकी सहा-यतामें छन्नकर नीचे आ जाता है।

छन्नोत्पन्न—पु० (मैनिपुलेशन) चतुराईसे अर्थार्थ या बनायी रूप दे देना, ऐसी बात चलना जिससे कोई बन्तु मनोनुकूल रूप ग्रहण कर ले।

छात्रनामक—पु० (मोनिटर) कक्षाका प्रमुख विद्यार्थी

जिसका कर्तव्य-कक्षामें अनुशासनकी रक्षा आदि करना होता है ।

छात्राभिरक्षक-पु० (गार्डन) किसी विद्यालय, छात्रावास-आदिका अभिरक्षक; छात्रोंपर नियंत्रण रखनेवाला शिक्षा-भिकारी; गृहपति ।

छात्रावासीय विश्वविद्यालय-पु० (रिजिंजल युनिवर्सिटी) वह विश्वविद्यालय जिसके विद्यार्थी प्रायः सभीपक्ष छात्रावासीय, विश्वविद्यालयके वातावरणमें ही रहते हैं ।

छादनी-की० (स्कन) कूचे, मेल आदिकी वह पतली तह जो शीरे या चादनीके ऊपर छा जाती है ।

छायासृष्टि-पु० (एपेरियन) वह छाया ओ आतिवश किसी पुरख या व्यक्ति जैसी प्रतीत हो; अस्पष्ट, अशरीरी मूर्ति ।

छिद्रक-वि० (परफोरेटर) जिसमें नजदीक-नजदीक बहुतसे छेद एकस्थान में बना दिये गये हों ।

छेदक-पु०, छेदकरेखा-की० (सीकट) वह सरल रेखा जो वृत्तकी दो बिन्दुओंपर काटती है ।

ज

अनुविज्ञान-पु० (जूलॉजी) जन्तुओं-पशु-पक्षियों आदि-की उत्पत्ति, विकास, व्यवहार, वर्गीकरण इत्यादिका विवेचन करनेवाला शास्त्र ।

अजीकृत परिसंपत्-की० (क्रोडन प्रसेट्स) वह परिसंपत् जिसके विक्रय, हस्तांतरण आदिकी मनाही कर दी गयी हो ।

अनकम्पायमेंट-पु० (रेकॉमपेंसेटर) जनताके स्वास्थ्य, उन्नति तथा असाईने किए किये जानेवाले कार्योंका केंद्र ।

अनकालि-की० (ड्राइव) जंगलों या पहाड़ी स्थानों आदिमें रहनेवाले ऐसे लोगोंका मूड जो शिक्षा, सम्यता आदिमें समीपवर्ती स्थानोंके लोगोंसे कुछ पिछड़े हुए हैं और जो अपने-अपने मुखियों या सरदारोंके आदेशोंके अनुसार चलनेके आदी हैं ।

अनकालि-की० (वर्थ रेट) आबादीके प्रतिस्वस्थ व्यक्तियोंके प्रति होनेवाले शिशु-जन्मकी गति ।

अनविद्वेष-पु० (रिफरेंस) संसदमें पुरस्कारपित किसी महत्त्वपूर्ण विवादमूल विषयकी ममस्त जनताके धामने अतर्धान द्वारा अपना निर्णय देनेके लिए उपरिष्ठ करना ।

अनवरण-अधिनियम-पु० (पब्लिक सेफ्टी ऐक्ट) सर्व-साधारणकी रक्षानी दृष्टिसे बनाया गया अधिनियम ।

अनसंपर्काधिकारी-पु० (पब्लिक रिलेशन ऑफिसर) सरकारका अनुज्ञासे संपर्क बनाये रखनेवाला अधिकारी ।

अनसिद्धी राज्य-पु० (रेकॉमपेंसेटर) वह राज्य जहाँ जनताके स्वास्थ्य, शिक्षा, सुख-सुविधा आदिकी विशेष व्यवस्था हो तथा जीविका दिलाने एवं असमर्थता-रूपि आदिका आयोजन हो ।

अवाधिव्यक्त-पु० (डिप्लून) जनताके अधिकारोंके लिए कटनेवाला तथा जनता समर्थक ।

अवीष्यवी सेवा-की० (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस) दे० 'लोकपदीवी सेवा' ।

अव्यवस्थापक-पु० (वर्थ-सर्टिफिकेट) वह प्रमाणपत्र जिसमें

किसीकी जन्मतिथिका प्राधिकृत व्योरा दिया गया हो ।

अवाकर्ता-पु० (डिपार्टर) दे० 'निक्षेपक' ।

अवाधुमूल-पु० (क्लेस) अवाधुका वह ऊपरवाला हिस्सा जो गर्भाशयसे चिपटा रहता है और जो बच्चेका जन्म हो जानेके बाद बाहर निकलता है, पुरान, अपरा ।

अवजन-पु० (हार्डोजन) एक गर्भहीन, वर्गीहीन अणुय गैस (वायव्य) जिससे पानीका निर्माण होता है (पानीमें इसका दो तिहाई अंश विद्यमान रहता है), उद्जन ।

अवनिवासयोग्यता-की० (डेनेज स्कीम) दे० 'जलो-स्मारणयोग्यता' ।

अवप्रमाणी-की० (वाटर चैनल) दो समुद्रोंके बीचमें पड़नेवाला लंबा-या जलमार्ग जो जलमहामण्डमें अधिक चौका हो ।

अवप्रस्फोट-पु० (डिप्लोम) पानीमें फूटनेवाला प्रस्फोट (बम) जो किसी पदार्थकीपर या उसके निकट गिराया जाता है ।

अवप्रमाण-पु० (टेस्टिरीयल वाटर्स) दे० 'जलीय क्षेत्र' ।

अवर्ण, अवर्ण रंग-पु० (वाटरकलर) पानी मिलाकर तैयार किया गया रंग ।

अवर्तक-पु० (होइड्रोकोपिया) दे० मूलमें ।

अवर्धक-वि० (वाटरप्रूफ) जिसपर पानीका अमर न पड़े; जलावरोधक ।

अवर्धकरवाहिनी नौका-की० (मबमेरीन) एक नहरका रणपोत जो पानीकी सहायके नीचे डुबकी लगाकर भी अपने काम जारी रख सके और जो टारपीन-नौकों, नौयों आदि-सज्जित हो, पदचुनी, दृक्चुनी ।

अवर्धकरोधक-वि० (वाटरप्रूफ) पानीका प्रवेश या अमर रोकनेवाला कपड़ा इत्यादि । अवर्धक ।

अवर्धक क्षेत्र-पु० (टेस्टिरीयल वाटर्स) किसी देशके किनारे के आम-पामका समुद्र जिसपर उसकी सत्ता हो ।

अवर्धक भूमि-की० (एम्प्लियेड लैंड्स) बाढ़ आदि के द्वारा बहन कर लायी गयी भूमि, पूर द्वारा आनीत भूमि, बहारी भूमि ।

अवर्धकमयंत्र, अवर्धकमयंत्र-पु० (वाटर पंप) पानी नीचेसे ऊपर खींचकर बाहर निकालनेवाला यंत्र ।

अवर्धकमयंत्र-की० (डेनेज स्कीम) नावियों आदि बनाकर नगरका संघ पानी बाहर निकालनेकी योजना, जलनिकासयोजना ।

अवर्धक-पु० (अवर्धक) माल उतारने, चढ़ानेके लिए समुद्रतटके पास बनाया गया लकड़ी, पत्थर आदिका बाट ।

अवर्धक सैन्य-पु० (मिलिटरी) (युद्धकालमें) अपने नगर वा आस-पासके स्थानोंमें उपद्रवाधिका शमन करनेके लिए बनायी गयी नगररक्षिकी सेना ।

अवर्धक-की० (मिलिट्री बोर्ड) जिसके निर्वाचित प्रतिनिधियोंकी वह संस्था जो जिसके समस्त निवासियोंकी शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदिकी व्यवस्था करनी है, जिलाबोर्ड ।

अवर्धक-पु० (मोटोफायर) अवर्धक, अवर्धकदर्शी, बिना रणका पदार्थ जो अवर्धक, उद्जन, कर्षण तथा नभ-

जन्मे मेरसे बनता है और जो ही जीवों तथा पौधोंमें जीवनका मूलभार माना जाता है।

जीवनतत्त्व-पु० [मिटासिन] दे० 'सायोज'।

जीवनसाधनतत्त्व-पु० [कॉस्ट ऑफ़ लिविंग] जीवन-निर्वाहका व्यव-भोजन, वस्त्र, निवास आदिसंबंधी वह सामान्य व्यव जो जीवनसाधनके लिए आवश्यक होता है।

जीवनरक्षक नौका-जी० [क्राफ़्ट बोट] जहाज दुबने समय प्राण बचानेवाली विशेष प्रकारकी नौका।

जीवनरक्षक पेटी-जी० [क्राफ़्ट बेल्ट] दुबनेसे बचनेके लिए नौका जानेवाली पेटी जिसमें हवा भरी रहनी है या बग़ा-सा काग़ (कार्क) लटकता रहता है।

जीवनस्तर-पु० (स्टैंडर्ड ऑफ़ लिविंग) रहन-सहनका वह तरीका, भौतिक सुख-सुविधा की वह अल्पतम मात्रा, जिससे कोई व्यक्ति या वर्ग बुद्धिसंगत रूपसे संतुष्ट रह सके।

जीवा-जी० (कॉड) वह रेखा जो परिचित एक बिंदुसे दूसरेतक जीवी याव, किंतु जो केंद्रमें होकर न जाए, चापकर्म।

जीवाणु-पु० (बैक्टीरिया) विकारमे उत्पन्न होनेवाले अति-सूक्ष्म एक-कोषीय शाकाणु जिनमेंसे किनने ही तो रोगोंकी उत्पत्तिके कारण माने जाते हैं और कुछ शरीरके लिए लाभदायक भी होते हैं। -नासक-वि० (एटी-बायोटिक) जो रोगादि उत्पन्न करनेवाले जीवाणुओंका नाश करनेमें समर्थ हो (दवा)। -विज्ञान-पु० (बैक्टीरियोलॉजी) जीवाणुओंकी उत्पत्ति, विकास आदिका विवेचन करने-वाला विज्ञान। -विद्-पु० (बैक्टीरियोलॉजिस्ट) जीवाणुओं-संबंधी जानकारी रखनेवाला, जीवाणु-विज्ञान जाननेवाला।

जीवावशेष-पु० (फॉसिल) धरतीके भीतरी भूतलोंसे निकले हुए प्राचीन कालके जीवों, वनस्पतियों आदिके अवशिष्टांश।

ज्ञाप-पु० (मेमो) दे० 'ज्ञापन', स्मृति।

ज्ञापन-पु० (मेमोरेण्डम) वह पत्र जिसमें याद डिलानेके लिए आवश्यक बातें संक्षेपमें लिख दी गयी हों। घटनाओंका वह संक्षिप्त अभिलेख जो वाचनमें प्रयोगके लिए हो। स्मरण।

ज्वलनशील-वि० (कंबस्टिबल, इनफ्लेमिबल) जो बड़ी आसानीसे, योद्धेमें ही, जल उठे, भस्म उठे; ज्वलनीय, अवस्थ।

ज्वल्य-वि० (कंबस्टिबल) जल उठने या भस्म उठने योग्य।

ज्वालक-पु० (बर्नर) दे० 'वर्तिग्रह', कला।

ट

टंकण-पु० (कान्नेज) ताँबे, चाँदी आदिके सिक्कोंकी इकाई।

टंकपात्र, **टंकपात्र**-जी० (मिड) ताँबे, चाँदी आदिके सिक्के ढांकनेका स्थान।

टोडक विज्ञान-पु० (रिक्तनेसस, ट्रेन) शत्रुकी स्थितिका पता लगाने, सैनिक आवश्यकता या पुल आदि बनानेकी

शक्तिसे आस-पासके सूक्ष्मका पर्यवेक्षण करनेवाला विज्ञान।

ठ

ठंडी लवार्ड-जी० (कोल्ड वार) दे० 'क्रीतयुद्ध'।

ड

डट्टा-पु० (रिटार्ट स्टैंड) कोई चीज गरम करने, रखने आदिका पीछेकी ओर झुका या टेढ़ा-सा आला।

ड्राफींग आदेश-पु० (पोस्टल ऑर्डर) दे० 'पत्राकथिक आदेश'।

ड्राफींग प्रमाणपत्र-पु० (पोस्टल स्टैंडफिकेट) दे० 'पत्राकथीय प्रमाणपत्र'।

डिब-पु० (मोन्स) लीका वह कोशाणु जिसमें झुकाणुके प्रवेश करने और गर्भाशयमें पहुँचनेपर गर्भाधान होता है।

डिबासाब-पु० (ओम्बरी) लीके गर्भाशयकी वे दो ग्रन्थियाँ जिनमें डिब रहने और परिपक्व होते हैं।

डुबकनी-जी० (सबमेरीन) दे० 'अलाभ्वतरवाहिनी नौका'।

डू

डूकनशीलता-जी० (नैस्टिसिटी) डूकनशील होनेका गुण, गलाकर डाले जानेकी शक्ति या गुण।

त

तटस्थीकरण-पु० (न्यूट्रैलिजेशन) किसी देश या स्थानकी गटल बना देने, घोषित कर देनेकी क्रिया; प्रतिकूल गुण, शक्ति आदि द्वारा किसीके गुण या शक्तिका फल अथवा प्रभाव बेकाबू कर देनेकी क्रिया।

तदर्थ-समिति-जी० (एडहॉक कमिटी) किसी विशेष कार्यके लिए बनी हुई समिति जो कार्य-संपादनके बाद स्वतः विघटित हो जाती है।

तन्म्यता-जी० (ट्रैन्सिजेंट) तारके रूपमें खींचे जा सकनेका ठोसका गुण।

तरंग-दैर्घ्य-पु० (वेव लेंथ) आकाशमें प्रसारित मिश्र-मिश्र विद्युत्-चुम्बकीय लहरोंकी लंबाई (रेडियोके विभिन्न केंद्रोंसे प्रायः अलग-अलग तरंग-दैर्घ्यपर बातों प्रसारित की जाती है, इसीसे उसके सुनने-समझनेमें बाधा नहीं पड़ने पानी)।

तल-पु० (सरफेस) किसी वस्तुका ऊपरी पृष्ठ जिसमें लंबाई और चौड़ाई हो, पर मोटाई न हो।

ताप-पु० (हीट) आग या बिजली आदिके उत्पन्न वह शक्ति जिससे वस्तुपर गरम हो जाती है और घाता अधिक होनेपर पिघलने या वाष्पके रूपमें परिणत होने लगती है। -क्रम-पु० (टेंपरेचर) वस्तुओंके तापका क्रम या स्थिति सूचित करनेवाली संख्या। -तरंग-जी० (हीट-वेव) अत्यंत गरम हवाकी लहर जो कुछ स्थानोंसे अन्य स्थानोंकी ओर प्रवाहित होती जान पड़े। -निर्वाच्य-पु० (एयर कंडीशनिंग) कमरे आदिके भीतरकी हवाकी कुत्रिम रूपसे समशीतोष्ण बनाये रखनेकी क्रिया।

-निर्वाचित-वि० (एयरकंडीशंड) जिसके भीतरका तापमान कुत्रिम उपायों द्वारा समस्थितिमें रखा गया हो।

-विकिरण-पु० (रेडियेशन) तापलहरियोंका किसी एक

केंद्रे चारों दिशाओंमें प्रसारित वा विकसित किया जाना ।

तापक-पु० (हीटर) (कमरे आदिमें) गरमी पहुँचाने वा उत्पन्न करनेका यंत्र ।

तारक-पु०, तारका-खी० (स्टार, ऐस्टेरिस्क) दे० 'तारक-चिह्न' ।

तारकचिह्न-पु० (ऐस्टेरिस्क) पाठ्यपुष्पणी वा अभिनिर्देश-के लिए अथवा महत्त्व प्रदर्शित करनेके लिए छोटे वा लियेमें प्रयुक्त तारा जैसा चिह्न (★) ।

तारांकित-वि० (स्टार्ड) (बह शब्द, शब्द, प्रथ आदि) जिसके साथ सितारे (★) का चिह्न दिया गया हो । -प्रश्न-पु० विधानसभा आदिके अभिव्यक्तनमें प्रश्नोंपरके समय मौखिक उत्तर पानेकी दृष्टिसे पूछा गया प्रश्न ।

तारुण्यवयव-पु० (यूवर्टी) तनुवायुत्वका आगमन, यौव-नारभ, उस स्थितिका आरंभ जब खी वा पुत्रमें संतानो-त्पत्तिकी क्षमताका आगमन हो जाता है ।

तारुण्यवृद्धि-खी० (लॉक आउट) कर्मचारियोंपर दबाव डालनेके लिए मासिकीका कारखानेके फाटकर ताला लगाकर उन्हें बाहर रखनेका कार्य ।

तिथित-वि० (डेटेड) (बह पत्रादि) जिसपर कोई तिथि वा महीनेकी तारीख किसी वा वाली मयी हो, निर्नांकित ।

तिथिसंज्ञक-वि० (डिफास्टर), (न्यायालयमें) उपस्थित होने, कण्ठकी क्लिप्त आदि जमा करनेकी) निर्धारित तिथिका संक्रमण करनेवाला (उस तिथिकी उपस्थित होनेवाला, क्लिप्त न चुकानेवाला आदि) ।

तिर्यग्रेखा-खी० (ट्रांसवर्सल) वह रेखा जो दो वा अधिक दी हुई रेखाओंकी काटती है ।

तुसीकरण-पु० (मशीनमें) किसी कुछ वा सगुणपर उक्त व्यक्तिसे रियायत देकर, अनुनय-विनय द्वारा सज्ज करना, मनुहार ।

तुफानी दस्त-पु० दे० 'तुफांका दल' ।

तैलचित्र-पु० (आइल पेंटिंग) तेल मिले हुए रंगोंमें बना हुआ चित्र जो अधिक स्थायी होता है ।

तैलपोत-पु० (आइल टैंकर) खनिज तेल ढोनेवाला जहाज ।

तैलवायक पोत-पु० (टैंकर) बड़ी मात्रामें खनिज तेल अपनी टंकीमें भरकर ले जानेवाला जहाज, तैलपोत ।

तोपचिवा-खी० (गनेरी) बड़ी तोपोंके निर्माण तथा प्रबंधादिका काम ।

त्रिचक्रवाय-पु० (ट्रायसिकल) एक तरहकी तीन पहियों-वाली गाड़ी जो प्रायः वाणिज्यिकी तरह बैठक मारनेसे चलती है ।

त्रिज्या-खी० (रेडियस) दे० 'यूजमें' ।

त्रिचक्रवाय-पु० (ट्रायसिकल) एक तरहकी तिपाईं वा तीन पहियोंवाला आला जिसपर रखकर कोई वस्तु गरम की जाय ।

त्रिचक्रवाय-खी० (ट्रायसिकल) दे० 'त्रिचक्रवाय' ।

त्रिचक्र-पु० (ट्रायसिकल) वह समक्षेत्र जो तीन चुबानोंमें फिरा हो तथा तथा जिसमें तीन कोण हों, त्रिकोण । -कंठ-पु० (माय्डीयूड) त्रिभुजके शीर्षमें आधारतक खींची

जालेवाली वह सरल रेखा जो आधारपर श्रृंख (परपेंडि-क्यूलर) हो (हरे त्रिभुजकी ऊँचाई की कल्पना है) ।

त्रिविध बहिष्कार-पु० (ट्रिप्लि बॉयकोट) तीन तरहका या तीन चीजोंका बहिष्कार (भारतके भद्रवर्धन आंदोलनके समय इसका अर्थ विदेशी अदालती, विदेशी शिक्षाओं तथा विदेशी वस्तुओंका बहिष्कार किया जाता था) ।

त्वरान्वित-खी० (सार्टर्ड) दे० 'शीघ्रान्वित' ।

द

दंडक-पु० (प्युनिटिव टैक्स) दे० 'दंडात्मक कर' ।

दंडन्यायालय-पु० (किमिनल कोर्ट) (विधि-विधानोंका अंग करनेवाली) अपराधोंका विचार, निर्णय करनेवाली अदालत, दंड-व्यवस्था करनेवाला न्यायालय । दे० 'कीज-दारी अदालत' ।

दंडविज्ञान-पु० (पीनॉलॉजी) अपराधके अनुरूप दंड देने तथा कारागृहकी व्यवस्था आदि-संबंधी विद्या ।

दंडात्मक-वि० (प्युनिटिव) (सार्वजनिक उपद्रव आदि के कारण) क्षेत्र-विशेषके लोगोंको दंड देना ही जिसका उद्देश्य हो; दंड देनेकी गरजमें लगाया गया या बैठाया गया ।

-कर-पु० (प्युनिटिव टैक्स) दंड या सजाके रूपमें लगाया गया कर, दंडकर, नाजीरी कर ।

दंडादेश-पु० (सेंटेंस) किसी अपराधीको दंड देनेका न्यायाधीश द्वारा सुनाया जानेवाला आदेश या निर्णय ।

दंडादेशित-वि० (सेंटेंस्ड) जिसे किसी अपराधके कारण न्यायालय ने दंडका आदेश दिया हो ।

दंडाधिकारी-पु० (मजिस्ट्रेट) कीजदारी मुकदमे मनने और शासन-प्रबंधका काम करनेवाला अफसर ।

दंडोपबंध-पु० (सपशन) किसी अभियोगका अंतराल; सधि आदिके साथ म्मा हुआ वह उपबंध कि उम्मा फालत न करनेपर उल्लेखकारीकी सजा दंड मिलेगा ।

दंड्य पद्धत-पु० (किमिनल कांतिपेरी) ऐसा पद्धत जो देशकी विधि-व्यवस्थाके अनुसार दंडनीय हो, अपराध पद्धत ।

दंडिष्ठा-पु० (जिजर) मासिक वा किसी वर्षादिकी दौतीसे धुक्त पहिया अथवा पहियोंका समूह जो गति प्रदान करनेमें सहायक होता है ।

दंडोद्देशक-पु० (शिविग पोरियट) वह समय जब बन्धके हाँत निकल रहे हों ।

दक्षता-अर्थ-पु० (फफिशियंम बार) दे० 'प्रयुक्तता-अर्थ' ।

दक्षिणवर्त-वि० (क्लॉक वाइज) दे० 'यूजमें' ।

दक्षकप्रज्ञ-पु० (एक्जामन) किसीको दक्षक (मोठ) किया हुआ पुत्र बनानेका कार्य, दक्षक प्रज्ञ करने या स्वीकार करनेका कार्य ।

द्विचक्रवाय-खी० (सकम) गरीबोंकी वस्ती, मछिमावासी ।

द्विचक्र-वि० (पेवेलिक टेंड साइट) जिसका युगतान देखते ही, नुरत करना पड़े ।

द्वन्द्वता-पु० (केटन) श्रेष्ठमें सम्मिश्रित होनेवाले दो पदों वा द्रव्योंमें किसी एकका नेता, कताना मेगाकी दृक्की (कंपनी वा ग्रुप) का लक्ष्य ।

दसक-पु० (किनेट) दे० 'दशक'।

दसग्राम-पु० (डिका ग्राम) दस ग्रामका वजन, एक तोले-से कुछ कम।

दशमुख-पु० (डेकेगोन) वह आकृति जिसमें दस भुजाएँ हों।

दशमीटर-पु० (डेकामीटर) दस मीटरकी लंबाई, १२'८ फुट।

दशमग्राम-पु० (डेसीग्राम) एक ग्रामका दसवाँ भाग।

दशममीटर-पु० (डेसीमीटर) एक मीटरका दसवाँ भाग, लगभग ३ इंच।

दशम्व-पु०, दशी-की० (डेकेट) दस वर्षोंका समय, दशक।

दायकर-पु० (डनोरेटिड ट्रेण) उत्तराधिकारमें प्राप्त धन या संपत्तिपर लगाया जानेवाला कर, रिचकर।

दायाधिकारी होना-अ० कि० (सपरीट) किसीकी वस्तुके बाद उसकी संपत्ति पानेका अधिकारी होना, उत्तराधिकारी बनना।

दाहक प्रस्फोट(धम)-पु० (इनमेंडिअरी धम) आग लगा देनेवाला प्रस्फोट या धम।

दिग्दूतक बंध, दिग्बालक बंध-पु० (कपास, मरिनम बंधास) समुद्रपर तबाह चलाने समय दिशा ज्ञाननेके लिए नाविकों द्वारा प्रयुक्त २३ जिसमें चुंबकीय सुई लगी रहती है।

दिरसा-प्रस्ताव-पु० (आफर) किसीको कोई सहायता, धन या अन्य वस्तु देनेकी तैयारी हो जाना, जिसे स्वीकार करना, न करना उसकी इच्छापर निर्भर हो।

दिवपंजी-की० (दायग्री) वह रजिस्टर (पंजी), कापी इत्यादि जिसमें प्रतिदिन किये गये कार्यावली विवरण लिखा जाय, दैनंदिनी।

दिन-चिह्नित-विवरण-पु० (बंदर रिपोर्ट) दिन-रातमें होने-वाले ताप, जल, वायु-सम्बन्धी विचारोंका विवरण, योगिम-का ह्रास।

दिनांक-पु० (डेट) गणनाके अनुसार किसी वर्षके किसी महीनेका वह दिन जब कोई घटना हुई हो, हो रही हो या होनेवाली हो अथवा कोई पक्ष, अंशआदि लिखा गया हो, लिखा जा रहा हो या लिखा जानेवाला हो, तिथि।

दिनांकित-वि० (डेटेड) दे० 'तिथि'।

दीपस्नान-पु० (लाइट ड्राइंग) दे० 'प्रकाश स्नान'।

दीक्षिप्रसारण, दीक्षिविकिरण-पु० (रेडियेशन) प्रकाशकी किरणें चारों ओर प्रसारित करना, फैलाना।

दीर्घ बुलाकार-वि० (इलिप्टिकल) लंबोत्तरे या दबाये हुए, खिंचे हुए वृत्तकी तरह जिसका आकार हो, अंडाकार।

दीर्घसूत्रता-की० (रेड टेपिडम) सार्वजनिक कार्योंके संबंधमें सरकारी कर्मचारियों द्वारा आत्यधिक औपचारिकताके कारण की जानेवाली देर, लालचलेकी काररवाई।

दीर्घा-की० (लेटरी) सबनके भीतर दर्शकोंके बैठनेके लिए बना हुआ लंबा-लंबा लंबा स्थान।

दीर्घावकाश-पु० (डेकेस) व्यापारियों या विद्यार्थियोंके दो सत्रोंके बीचकी छुट्टी।

दूरकमापी-पु० (डिस्टोमीटर) एक यंत्र जिससे दूरीकी

विद्युतता ज्ञाती जाती है।

दूरकसर्करा-की० (डुगर आर्क मिस्क) दूधसे प्राप्त होने-वाली सर्करा।

दुग्धोद्योग-पु० (डेअरी इंडस्ट्री) दूध तथा उससे बननेवाले विभिन्न पदार्थ-मखन, घी आदि-तैयार करानेका उद्योग।

दुरभिचोवन-पु० (फ्लॉट) किसीकी हानि पहुँचाने आदिकी दृष्टिमें की जानेवाली गुप्त काररवाई।

दुरुसाहच-पु० (रुवेटमेंट) अपराधीको अपराध करनेमें सहायता या प्रोत्साहन देना।

दुरुपयोगन-पु० (मिसेप्रोपियेशन) (किसी चीज) कुछ वस्तु, धन आदिका) दुरुपयोग करना, अनुचित काममें लगा देना।

दुर्लभ मुद्रा-की० (हार्ड करेंसी) उस देशकी मुद्रा जिसका माग अन्य देश खरीदना ती चाहते हों, पर व्यापार तुल्य अपने विषयमें होनेके कारण उस मुद्रा वषेष्ट संख्यामें प्राप्त करनेमें कठिनाईका अनुभव करें। -**खेत्र-पु०** (हार्ड करेंसी परिया) दुर्लभ मुद्रावाले देशोंका क्षेत्र।

दुर्लभ फलक-पु० (डिस्ट्रीबीट) दे० 'दृष्टफलक'।

दुर्लभसूची-की० (रैरक लिस्ट) ऐसे व्यक्तियोंकी सूची जो किसी अपराध वा मिदनीय कार्य करनेके कारण कुप्रसिद्ध हो चुके हों और जो शांतिरक्षा आदिकी दृष्टिसे संदेहास्पद माने जाते हों।

दूरदर्शनबंध-पु० (टेलीविजन) वह बंध जिससे व्यवधान रहते हुए भी दूरकी वस्तुएँ, घटनाएँ आदि स्पष्ट देखी जा सकें।

दूरप्रभावी, दूरव्यापी-वि० (फार-रीचिंग) जिसका प्रभाव बहुत दूर तक पड़े।

दूरप्रहारी, दूरसार-सोप-की० (लागरेज गन) दूरतक गोला फेंकनेवाली, लंबा निशाना मारनेवाली तोप।

दूरभाष-पु०, दूरवाणी-की० (टेलीफोन) वह यंत्र जिसमें, प्रायः विद्युत्की सहायतासे, दूरके शब्द या दूरकी वाणी ज्योंकी त्यों सुनाई दे, टेलीफोन। -**मिस्त्रावर्द्ध-पु०** (टेलीफोन पर्सचेंज) किसी नगर या जिलेका प्रधान दूरवाणी-कार्यालय जहाँ स्थानीय व्यक्तियोंसे या बाहरके लोगोंसे दूरवाणी वशों द्वारा बातचीत करानेके लिए दोनों ओरके यंत्रोंमें संध्य रचापित करनेकी व्यवस्था की जाती है।

दूरविश्लेषक-पु० (ट्रांसमिटर) एक स्थानपर उत्पन्न की गयी ध्वनि, गति आदिकी विद्युत्तरंगों, प्रकाश-लहरी आदिकी सहायतासे दूर-दूरतक फैलानेवाला यंत्र।

दूरविश्लेषण-पु० (ट्रांसमिशन) एक स्थानपर उत्पन्न ध्वनि आदिकी दूर-दूरतक फैलाने, पहुँचानेकी क्रिया। -**केंद्र-पु०** (ट्रांसमिटिंग स्टेशन) वह स्थान जहाँसे दूरविश्लेषण-यंत्र द्वारा कोई ध्वनि (भाषण, नाटक, संगीत आदि) दूर-दूरतक फैलाने, पहुँचानेकी व्यवस्था हो। -**बंध-पु०** (ट्रांसमिटिंग परपैरेट) दे० 'दूरविश्लेषक'।

दूरबीक्षणबंध-पु० (टेलिस्कोप) वह यंत्र जिससे देखनेपर दूरकी वस्तुएँ निकटवर्ती जैसी तथा आकारमें अपेक्षाकृत बड़ी एवं स्पष्टतर दिखाई पड़ें।

दूरवाचन-पु० (लॉन) किसी शुद्ध, प्रासाद आदिके सामने, पीछे या बगलका वह खुला मैदान जो दूरवाचे आच्छादित हो।

दूरवाचन-पु० (स्पेक्ट्रम) देखी हुई किसी वस्तु किंवा द्रव्यका वह चित्र, प्रतिविम्ब या आभास जो जौलें बंद कर देनेके बाद भी सामने विद्यमान-सा प्रतीत हो।

दूरचित्र-पु० (हेलिसिनेशन) ऐसी किसी वस्तुका आभास होना जिसका वस्तुतः कोई बाह्य अस्तित्व न हो, आचार-हीन या अस्तित्वहीन वस्तु देखने-समयकेका धोखा, भ्रंति।

दूरवाचन-कलक-पु० (वैलेंस-हीट) किसी व्यापारिक सत्त्वा आदिका, समय-समयपर तैयार किया जानेवाला, समस्त देवों और आदेयों (पावनों तथा संपत्तिका) संक्षिप्त लेखा जिससे उसकी आर्थिक स्थितिका पता चले, बिड्डा।

दूर कौस-खी० (लिट को) निम्नत समयके दो-चार मिनट बाद कालमें छोड़ी जानेवाली बिड्डियोंपर कल्पनेवाला अनि-रिक्त बाकन्याय।

दूरवाचनी-खी० (ओरेकिल) किसी देवी, देवताके मुखसे निकली समझी जानेवाली बात, आकासवाणी।

दूरवाचक सेना-खी० (मिमीसुवा) दे० 'जानपर सैन्य'।

दूरवाचकसमय-पु० (ट्रांसमिशन) बीचके देश या सयु-द्वादि कौंकर अन्य देशमें चले जाना।

दूरवाचन-प्रवेश-पु० (ट्रांसमिशन) (आत्माका) एक देह या योनि त्यागकर दूसरी देह या योनि धारण कर लेना।

दैनिक पंजी-खी० (जर्नल) दैनिक घटनाओं (या लेन देन, क्रय-विक्रय) आदिका विवरण लिखनेकी बही; दैनिकिनी, बायरी।

दैनिकी-खी० (डेली रिपोर्ट) दिन-प्रतिदिन होनेवाली या प्रत्येक दिनकी घटनाओंका विवरण; (बायरी) दे० 'दैनिकिनी'।

दोगाना-पु० (दुपट) वह गाना जिसका कुछ अंश एक व्यक्ति द्वारा और कुछ अन्य व्यक्ति द्वारा क्रम-क्रमसे गाया या बजाया जाय।

दोषप्रमाणित-वि० (कॉन्विक्टेड) जिसका अपराध न्याया-लयमें प्रमाणित हो गया हो, दे० 'अभिज्ञातित'।

दोषधेयक-पु० (सेंसर) वह सरकारी कर्मचारी जो पत्र, पुस्तक, फिल्म आदिका तथा सेना-संबंधी सूचनाओंका परीक्षण कर आपत्तिजनक अंश निकाल देता है।

दोषधेयक-पु० (सेंसरशिप) पत्र, पुस्तकादिके उपेक्षक या आपत्तिजनक अंशोंका, निरीक्षणके बाद, हटा दिया जाना।

दोषसिद्ध-वि० (कॉन्विक्टेड) जिसका दोष या अपराध प्रमाणित हो गया हो, दोषप्रमाणित, अभिज्ञातित।

दोषसिद्धि-खी० (कॉन्विक्शन) दोष या अपराधका प्रमा-णित हो जाना।

द्रव्यवाचक-पु० (सिस्टिम पॉइंट) तापकी वह मात्रा जिसपर कोई वस्तु पिघलने-ठोसमें द्रव-रूपमें परिणत होने लगे।

द्रव्यवाचक-खी० (म्यूजिक) श्राव्य (अंगूर)के रससे बनी हुई बीनी।

द्रव्यवाच-पु० (ऑब्ज्क्शन) पानी, मयसूर आदिकें किसी

द्रव्य (या अन्य द्रव) पदार्थके पुनःमिश्र करनेसे बना हुआ पारदर्शी और समरूप (होमोमीस) मिश्रण, घोल।

द्रारसाक-पु० (कॉकमाउट) दे० 'तालाबंदी'।

द्रिक्कवाच-पु० (वाइसिफिकल) रबड़ टाबरोबाकी दो पक्षियोंकी गाथी जो बैठक घुमानेसे चलती है, सारकिल, पैरगाथी।

द्रिवातुता-खी०, द्रिवातुत्व-पु० (वाइमेटलिन) सोने तथा चाँदी दोनों ही धातुओंकी मुद्राका समान विधि-प्राप्त मुद्राके रूपमें प्रचलन।

द्रिवात्वीय प्रणाली-खी० (वाइमेटलिक सिस्टम) सोना-चाँदी दोनों धातुओंके सिद्धोंको निश्चित अनुपातके साथ, विधिप्राप्त मुद्रा माननेकी प्रणाली।

द्रिपक्षीय प्रसंविदा-खी० (वाइलेटरक कांटेक्ट) दो पक्षों-के बीच होनेवाला इकरार या समझौता।

द्रिक्कीय-पु० (गालिमेंरी) दो पक्षियोंसे विवाह करना, एक पक्षीके विद्यमान रहते हुए ही दूसरीसे विवाह करना।

द्रिस्वभावात्मक-वि० (वाइकमरक) विधानमंडलके दो सदस्यों (सभाओं)वाला।

द्रिस्ववर्धनवाची क्षेत्र-पु० (डबल मेंबर कांस्टिट्यूट) वह निर्वाचन-क्षेत्र जहाँमें दो सदस्य चुने जानेकी हो।

द्वीपंतरण-पु० (ट्रांसपोर्टेशन) भारी अपराध करनेवाले किसी बंदीको समुद्रके उस पार किसी अन्य स्थान या द्वीप-में रखनेके लिए भेज देना। (भारतमें ऐसे बंदी अब बाहर नहीं भेजे जाते)।

द्वैत्रिज्य-पु० (मेक्टर ऑफ़ ए मरकिल) वह आकृति जो दो विज्याओं और उनके बीच पड़नेवाले चापसे घिरी रहती है।

द्वैराज्य-पु० (करोमीनियम) एक ही देशपर दो राष्ट्रीका प्रभुत्व होना (जैसे मदानपर मिस्र तथा ब्रिटेनका रवाही)।

घ

घबमसिता-खी० (टारसो) इतना-पाद विहीन तथा मुह-रहित प्रतिया।

घनपक्ष-पु० (क्रेडिट साइड) हिसाब या कालेकी वह पक्ष (बायीं) जिसमें बाहरमें आनेवाले या किसी आदिके कारण अन्य लोगोंसे मिलनेवाले स्वरूपोंका व्यौरा लिखा जाता है; रोकवही आदिके दृष्टका जमावाला (बायीं तरफका) हिस्सा।

घनपक्षवाचक-पु० (मनीमांडर) बाकलानेका एक तरहका चेक या बनावेष्ट जिसके जरिये अन्यत्र स्थित व्यक्तिके पास बंधा लेजा जाता है, मनीमांडर।

घन-विद्युत्पु-पु० (प्रोडॉम) घन-विद्युत्-शक्तिकी वह इकाई जो परमाणुका मध्य बिंदु मानी जाती है और जिसके चारों ओर ऋण-विद्युत्पु चक्कर लगाते हैं।

घनविधेयक-पु० (मनी विक) संस्तर वा विधानसभा आदि-में पुरस्कारिता किया जानेवाला वह विधेयक जिसका उद्देश्य राज्यकी भाव बढ़ाना अथवा धन-संबंधी अन्य माँग स्वीकृत कराना हो; दे० 'विधविधेयक'।

घमावेष्ट-पु० (चेक) किसी बैंक (अधिकृत)को, जिसमें किसी व्यक्तिगत विद्याय हो, दिया गया इस आश्वासना

शिक्षित आदेश कि बाहक को वा नाम-निर्देशित व्यक्तिको आदेशमें उल्लिखित रहस्य, उसके हिसाबमेंसे, दे दी जाय; (मनीऑर्डर) दे० 'धनप्रेषणादेश'।

धनिकतंत्र-पु० (प्लूटार्की) वह शासन-व्यवस्था जिसमें धनिक-वर्गका प्राधान्य हो।

धनिक-कोकतंत्र-पु० (सुटोक्रैटिक डिमोक्रसी) वह 'लोक-तंत्र' जिसमें शासनसत्ता प्रायः धनिकोंके ही प्रतिनिधियोंके हाथमें हो।

धर्मतंत्र-पु० (थियोक्रसी) वह शासन-व्यवस्था जिसमें राज्यका कार्य ईश्वर या धर्मके नामपर प्रेरितों, भ्रातृ-पथकों आदि द्वारा ही संचालित हो।

धर्म-निरपेक्ष राज्य-पु० (मक्युलर स्टेट) वह राज्य जिसकी सरकार नीति धर्मके नाममेंसे निरपेक्ष या मध्य रहनेकी हो, असांप्रदायिक राज्य, नौकिक राज्य।

धर्मविता-पु० (गाद फादर) वह व्यक्ति जो वचनविद्या लेने-पर किसी बच्चेको धर्मकी शिक्षा देनेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले (ईसाई); विनू कर्मव्यवस्था पालन करनेवाला या पितृव्य व्यक्ति।

धर्मस्व-पु० (पब्लिज्मेंट्स) किसी मंदिरादिका स्वयं चलाये या किसी धार्मिक कृत्यादिके निर्वाहार्थ स्थायी व्यवस्थाका करनेके उद्देश्यमें दी गयी संपत्ति, धर्मोत्तमपत्ति।

धातुनिर्यात-पु० (मेटलर्जी) धातु तैयार करने, उन्ने पणि-भूत या शुद्ध करने आदिका वणन करनेवाला शास्त्र।

धात्विक मूल्य-पु० (इंड्रिजिक वैल्यू) किसी निष्के आदि-का वास्तविक मूल्य-वह मूल्य जो बाजारभावके अनुसार उसमें मिली हुई धातुका मूल्य हो और जो उसपर अतिरिक्त मूल्यमें कम या अधिक हो सकता है।

धारणावधि-खी० (टेम्पुर) वह समय या अवधि जबतक कोई पद, संपत्ति आदि धारणा की जाय या उसका उप-भोग किया जाय।

धारा-खी० (मेग्नाइन) किसी अधिनियम आदिका वह स्वतंत्र अंग या भाग जिसमें किसी एक विषयको सब बातें या आदेश एक भाषा में लिखित हो।

धावन-पु० (रन) क्रिकेटमें गेंदपर प्रहार करनेके बाद बल्लेबाज तथा उसके साथीका एक ओरके गतिजबमें दूसरी ओरके गतिजयत्नक बिना बहिर्गंत (आउट) हुए दोड़ लगातेको क्रिया; इस प्रकार लगायी गयी दौड़को क्रम-सख्या। -**खली**-खी० (पिच) क्रिकेटमें दोनों ओरके गतिजयत्नोंके बीचकी भूमि जिसपर, गेंदपर प्रहार करनेके बाद, बल्लेबाज तथा उसका सहयोगी धावन करनेका उप-क्रम करता है।

धावनमार्ग-पु० (रनवे) दे० 'अवतरणपथ'।

धुरीवेष्ट, धुरीसाहू-पु० (रसिडस कंट्रीज) दिनिय महा-युद्धके पूर्व बनाया गया नात्सी जर्मनी तथा फासिस्ट इटलीका गुट, जिसमें जापान भी शामिल हो गया था।

धूमपट, धूमधारण-पु० (स्मॉक रक्रीन) तोप, टंक तथा सेनाकी गतिविधि आदि छिपावमेंसे छिप कर लड़ाये गये धुएँके वाहक।

धूमधारण-पु० (स्मोकमिशन) (रौंगके कीटाणुनाश में मुक्त

करनेके लिए वा इवाकी गंदगी दूर करनेके लिए) किसी कमरे आदिमें सुगंधित धूम, संक्रमणनाशक गैस आदि प्रसारित करना।

ध्वंसावशेष-पु० (रिजेक्ट) विमान, पोतादिके टूटे-फूटे टुकड़े।

ध्वजपोत-पु० (फ्लॅगशिप) बड़ेका वह जहाज जिससे नौसालाध्यक्ष (नेमेनापति) यात्रा कर रहा हो और जिसपर उसका झंडा फहरा रहा हो।

ध्वजोत्तोलन-पु० (हॉइस्टिंग ऑफ दि फ्लैग) झंडेको खंभे आदिकी ऊँचाईतक उठाकर बढ़ाकर झंडेके साथ फहराना।

ध्वनिक्षेपक वंश-पु० (माइक्रोफोन) एक वंश जिसकी सहायतामें किसी स्थानपर किये गये भाषण आदिकी ध्वनि वैद्युत प्रक्रियामें चारों तरफ फैलायी जा सकती है।

ध्वनिचर्चक, ध्वनिचिह्नसारक-पु० (लाउडस्पीकर) ध्वनि या आवाजकी तीव्रता बढ़ानेवाला वंश।

ध्वनिक्षेपक-पु० (ट्रांसमीटर) दे० 'दूरक्षेपक'।

ध्वनिनिक्षेपण-पु० (ट्रांसमिशन) दे० 'दूरनिक्षेपण'।

ध्वनिसंग्राहक, ध्वन्यमिलेखक-पु० (साउंड रिकार्डर) ध्वनि का संग्रहण या अभिलेखन करनेवाला यंत्र अथवा माध्यम।

न

नक्षत्राक्ष-पु० (नक्शर) रातमें किया जानेवाला भोजन, व्याज।

नगर-आयोजन-पु० (टाउन प्लैनिंग) शोध-विचारकर नैयार की गयी योजनाके अनुसार चौकी सड़कों, उद्यानों, उपबनों (पावनों), बिचालों, खेलके मैदानों आदिसे युक्त नगर बनानेका आयोजन करना, नगर-निर्माण-योजना।

नगरनिगम-पु० (म्युनिसिपल कारपोरेशन) राज्यके किसी बड़े नगरकी नगरपालिका जिसे कानूनादि छेकना तथा कुछ अन्य अधिकार भी प्राप्त होते हैं।

नगर-निगमाध्यक्ष-पु० (मेयर) किसी नगर-निगमका अध्यक्ष।

नगरपाल-पु० (सिट्रीफादर) दे० 'नगरपति'।

नगरपालिका-खी० (म्युनिसिपलिट्री) नगरकी सफाई, रोशनी, सड़कों, पानी आदिकी व्यवस्था करनेवाली सत्त्वा जिसके सभी या अधिकतर सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं।

नगरपति-पु० (सिट्रीफादर) नगरपालिकाका सदस्य, नगर-शासक।

नगर-अवधन-पु० (टाउनहाल) नगरका वह सार्वजनिक भवन जहाँ सम्बंधित होकर किसी विषयपर विचार किया जाय या जहाँ सभाओं, भाषणों आदिका आयोजन किया जा सके।

नगरभास-पु० (वार्ड) स्थानीय प्रशासनकी सुविधाकी दृष्टि-से किये गये नगरके भागोंमेंसे कोई भाग, हलका।

नगरहृद-पु० (एश्टरमैन) नगर-निगमका मेयरमें छोटा पदाधिकारी।

नगरसेवा क्षेत्र-पु० (मोकमिल) केन्द्रस्थ नगरके आसपासके स्थान।

मन्मसावाह-पु० (म्यूडिज्म) पश्चिममें प्रचलित एक मित्रांत जिसके अनुयायी धूप और लुली हवाके समुचित मेवनकी रहित विषय रहते हैं।

मनोद्व-वि० (कोन्केश) जिम्का ऊपरी भाग चारों ओरने भीतरकी ओर झुका हो।

नदीवादी-धोखना-श्री० (रिव्हर व्हीली स्कीम) वह योजना जिसके अनुसार उपयुक्त स्थानोंपर नदीका बाँध आदि बनाकर नहरों द्वारा सिंचाईकी व्यवस्था की जाय।

नदीप्रवाह-विज्ञान-पु० (हाइड्रो-डायनेमिक्स) नदी-प्रवाह-के या जलादिके प्रवाहके नियंत्रण या उसमें उत्पन्न शक्ति-सम्बन्धी विज्ञान।

नम्रता-श्री० (प्रायविलिटी) भोजे जाने या झुका दिखे जाने-पर देना ही रह जानेकी शक्ति या गुण।

नरेंद्रमंडल-पु० (मिनेत्र चेंबर) ब्रिटिश शासनकालमें स्थापित देशी राजाओंकी परामर्शदात्री समिति।

नलकूप-पु० (व्हाइबेल) झेतों, मैदानों, चरों आदिमें भूमि-के नीचे प्रविष्ट कराया जानेवाला वह नौकदार नल जिसके यथेष्ट गहराईतक पहुँच जानेपर पानी ऊपर निकाला जा सकता है।

नलिका-श्री० (पिपेट) किसी द्रव पदार्थका धोखा-सा अंश एक पात्रसे निकालकर दूसरे पात्रमें डालने, गिरानेके लिए प्रयुक्त पतली छोटी नली (रसा० वि०)।

नवीकरण-पु० (रिनोवेशन) फिरसे नया कर देना, पुनः भली और चंगी स्थितिमें ला देना।

नवोत्थान-पु० (रिनेमी) दे० 'पुनरुत्थान'।

नवोद्भाव, नवोद्भाव-पु० (नवैवस) दे० 'उद्भावन'।

नवनिधि-पु० (नैव्रट्टे) दिवाग्निया।

नक्षत्र पञ्चमसूह-पु० (फाइल) तार आदिमें नक्षत्री कर एक जगह रखे गये कामच-पत्रोंका समूह।

नक्षत्रपंजी-श्री० (फाइल रजिस्टर) तार, डीनकी पंजी, विजय आदिमें फेंकाकर कागजपत्र एक जगह रखनेकी पंजी।

नक्षत्रपत्री-श्री० (फाइल) वह पंथी या कापी जिसे दाना जिसके भीतर महरवके कागज-पत्र नक्षत्री करके रखे जायें।

नाकारी-पु० (नीज) किसी प्रसायके विरोधमें 'ना' करने-वाले सदस्य।

नागरिक उद्युक्तविभाग-पु० (सिविल रेविजेशन डिपार्ट-मेंट) नागरिकोंकी हवाई यात्रा आदिकी देखभाल करने-वाला विभाग।

नाम-निर्देशनपत्र-पु० (नामिनेशन पपर) दे० 'नामांकन-पत्र'।

नामपटल, नामपट्ट-पु० (साइनबोर्ड) लकड़ी, लोहे आदि-का वह पट्ट या तख्ती जिसपर किसी व्यक्ति, संस्था, दूकान आदिका नाम लिखा रहता है और जिसे प्रायः दूकान, मकान आदिके सामने रखा देते हैं।

नामपत्र-पु० (लेटर) किसी शीशी-बोतल, टब आदिपर लगा हुआ कागजका वह टुकड़ा जिसपर उसके भीतरकी दवा आदिका नाम लिखा या छपा हो।

नामपत्रित-वि० (लेटर्ड) जिसपर नामपत्र (लेटर) लगा हुआ हो।

नामलेखनशुल्क-पु० (एनरोलमेंट फी) नाम लिखने, भरती करने, सदस्य बनाने आदिका शुल्क।

नामांकनपत्र-पु० (नामिनेशन पपर) वह आवेदनपत्र जो विधान-सभा, नगरपालिका आदिके चुनावमें उम्मेद-वारकी हैमियनमें खड़े होनेवाले व्यक्ति द्वारा अपनी अर्हता, नाम, प्रामाणिकता आदिका स्पष्टीकरण करने हुए चुनावके उपयुक्त अधिकारीके नामने उपस्थित किया जाय।

नामोक्तेख-पु० (नेमिंग) किसी कदाचरण या असमयीय कार्यके लिए अव्यक्त द्वार। मदनमें सदाचर्यके नामका उल्लेख किया जाना।

नामधिकरण-पु० (एटमिरलटी) राज्यके जहाजी बेचे, नौसेना आदिका संचालन करनेवाला अधिकारिवां या उनका विभाग भववा प्रधान कार्यालय।

नाथ-वि० (नेविगेशन) दे० 'नीतशील'। -जलमार्ग-पु० (नेविगेशन वाटरवेज) वे नदियाँ, नहरें आदि जिनसे नावों या जहाजों द्वारा यात्रा की जा सके।

नारिन्सल-वि० (हैब-नाट) जिसके पास कपड़ा-पैन्थ, शीन हो। अर्कचन, गरीब, निम्न।

निद्रा-प्रस्ताव-पु० (नोट ऑफ सल्ट) सामन-भवकी दिग्ग नीति या कामके प्रति अल्पसौष प्रकट करने, उसकी लक्ष्यके उद्देश्यमें राज्यके प्रधान मंत्री या किसी मन्त्रीके समक्ष, अथवा आदिरे विरुद्ध लाने का वाक्य, प्रस्ताव।

निष्वात्मिक भूमि-श्री० (नोमस लैंड) वह पट्टी भूमि जो किसीके अधिकारन त हो।

निकाय-पु० (बोडी) ममान उद्देश्यमें काम करनेवाले व्यक्तियोंका समूह, मर्यादा पत्रप्रतिनिधियोंका वह समूह मर्यादा नगर, त्रिज्या मर्यादा आदिकी व्यवस्था रखनेवाले आदि मर्यादा बानाकी देवभाल करनी तो।

निकाय-समाजवाद-पु० (निरड सोशलिज्म) एक मरहद मर्यादावाद जो मित्रेयमें प्रचलित था इसका सिद्धांत था कि अधिक सभ्यके निकाय बनने जायें और उन्हीं जायें कारखाना आदिका नियंत्रण सौंप दिया जाय, पर मरहदके अन्य विभागोंका नियंत्रण राज्यकी सम्पदके अधीन रहे।

निक्षेपक-पु० (डिपॉजिटर) बैंक आदिमें कद्रवा भ्रम करनेवाला।

निक्षेपनिधि-श्री० (संविदा कप) दे० 'कन-परिशोध-कोष'।

निक्षेप-निर्णय-पु० (दास) निष्ठा आदि हकमें फकत उसके नीचे गिरनेकी स्थितिमें कोई निश्चय करना, 'कोन पक्ष पक्षी पालीका खेल बारन करेगा'।

निष्ठातनिधि-श्री० (ट्रेजर ट्रीज) भूमिके भीतर पक्षी दुः संपत्ति जो बादमें खोदकर निकाली गयी हो।

निगम-पु० (कॉरपोरेशन) वह निकाय या संस्था जिसके निधि(कानून)के अनुसार एक व्यक्तिकी तरह काम करनेके लिए प्राधिकृत हो। -कह-पु० (कॉरपोरेशन) देना। व्यापारिक या औद्योगिक निगमों (संस्थाओं) पर लगाया जाता कर।

निगमित-वि० (इनकारपोरेट) निगमरूपमें परिणत या मर्यादित।

निज-सचिव-पु० (प्राइवेट सेक्रेटरी) किसी राज्यपाल, मुख्यमंत्री या अन्य बड़े आदमीके साथ रहकर उसके निजी कामोंकी देखभाल तथा पत्र व्यवहारदि करनेवाला सचिव।

निजी उपचारगृह-पु० (क्लिनिक) किसी टाक्टर आदिका वह निजी चिकित्सा-गृह जहाँ रोगियोंका निदान तथा उपचार किया जाता है; निदानगृह।

नितंज-अनुज्ञा-स्त्री० (वायरलेस लाइसेंस) बेतारका यंत्र (रेडियो) रखनेकी अनुमति।

निदानगृह-पु० (क्लिनिक) वह स्थान जहाँ रोगियोंका परीक्षण इत्यादि कर उनके चिकित्सा-सम्बंधी उत्पन्न मलाह दी जाती है।

निदानशास्त्री-पु० पेशेवाकिसर। रोगोंका निदान करनेवाला विशेषज्ञ।

निदेश-पु० (इंस्ट्रक्शन) शब्दों या चित्र बनाकर काय; करने या किने जानेका आदेश देना हिदायत।

निदेशक-पु० (इंस्ट्रक्टर) निदेश करनेवाला, चलचित्रोंमें पात्रोंकी वेशभूषा, कथोपनयन आदि निर्धारित करनेवाला (निर्देशक)।

निदेशिका-स्त्री० (इंस्पेक्टर) किसी नगर, प्रदेश आदिमें प्रमुख नागरिकों, व्यापारियों आदिका नाम; पना आदि नामोंका संग्रह देनेवाली पुस्तक।

निद्राधार, निद्राअमण-पु० (नोमनबुलिज्म) निद्रा-प्रसन्न रहते हुए भी चलना-फिरना या अन्य कार्य करना।

निधि-स्त्री० (सोकर) किसी उल्लासमान हिंदकी वह रेखा निम्नपर उस हिंदकी वन भविष्या हों जें किसी दिने हुए नियमका पालन करना हो।

निबंधक-पु० (रजिस्ट्रार) दे० 'पंजीयक'।

निबंधन-पु० (रजिस्ट्रेशन) दे० 'पंजीयन'।

निबद्ध-वि० (रजिस्टर्ड) (बद्ध देख, समझना आदि) जो सरकारी पंजीमें विधिवत रखा दिने जानेके कारण पक्का और प्रामाणिक हो गया हो, पंजीबद्ध।

निम्नमृद्वन-पु० (कोअर हाउस) दे० 'अवरमात'।

नियतकालिक पत्नीता-पु० (टाइम प्यूज) वह पत्नीता जिसमें उल्लंघनशील वस्तुएं भरी हों या जो उनमें दुर्भाग्य, सलिल कर बनाया गया हो; अतः जो निर्धारित समयके बाद तल उठे।

नियतकालिक प्रस्फोट-पु० (टाइम बम) दे० 'मावधिक प्रस्फोट'।

नियतमागी-पु० (एलाटा) वह व्यक्ति जिसे कोई वस्तु या कोई हिस्सा निर्दिष्ट किया गया हो, दे० 'आवय'।

नियतोक्त-पु० (कोटा) समूहों राशिका वह अंश जो किसी व्यक्तिके लेने या उसे देनेके लिए निर्धारित किया जाय।

नियमापत्ति-स्त्री० (पाइंट ऑफ आउट) किसी समा-समितिमें कार्यप्रणाली की मानी हुई परंपरा या स्वीकृत नियमोंके विरुद्ध कोई बात होनेपर उठाया गया या की गयी आपत्ति।

नियोजककेंद्र-पु० (एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज) बेकार व्यक्तियोंके नाम, पता आदिका ब्लोरा पंजीबद्ध कर उन्हें उपयुक्त नौकरी, काम-धंधा आदि प्राप्त करानेमें सहायता करने-

वाला कार्यालय, कामदिहाऊ दफ्तर।

नियोक्ता, नियोजक-पु० (एम्प्लॉयर) बेतन, मजदूरी आदि देकर अपने कारखाने, मिल आदिमें किसीको काम करनेके लिए नियुक्त करनेवाला।

नियोजन-पु० (एम्प्लॉयमेंट) बेतन, मजदूरी देकर किसीको किसी कामपर नियुक्त करने या कगनेका कार्य, सेवा-योजन।

नियोजनालय-पु० (एम्प्लॉयमेंट ऑफ़ीस) लोगोंको काम या नौकरी दिलानेमें सहायता करनेवाला दफ्तर, सेवा-योजनालय, कामदिहाऊ दफ्तर।

नियोजित-वि० (एम्प्लॉयड) बेतन, मजदूरी आदिपर किसी काममें नियुक्त। पु० (एम्प्लॉय) वह व्यक्ति जो बेतन या मजदूरीपर कारखाने आदिमें कामपर नियुक्त हो।

निर्देक घनादेश-पु० (स्ट्रोक चेक) वह घनादेश जिसपर रूपयेकी रकमा पहलेमें न लिखी गयी हो, वरन् पानेवाले द्वारा भरी जानेके लिए छोड़ दी गयी हो।

निरनुमोदन करना-स० कि० (टु डिमिसेप्रू) किसीके किये हुए प्रस्ताव, कार्य या नीति आदिका समर्थन न करना, उनके समर्थमें अपनी सहमति या स्वीकृति न देना।

निरमन-पु० (रिपील) किसी विधि आदिकी अधिकार-पूर्वक या वैधरीतिमें रद्द कर देना।

निरमित-वि० (रिरीन्ड) (विधि, अधिनियम आदि) जिसका निरमन कर दिया गया हो।

निरस्त्रीकरण-पु० (डिस-आर्मांग) अस्त्रविहीन करना; जस्त्रास्त्रोंकी संख्या घटाना।

निरस्त्रीकृत-वि० (डिस-आर्म्ड) जिसके हथियार छीन लिये गये हों, जो अस्त्रीकृत कर दिया गया हो।

निराकरण-पु० (एन्नीगेशन) राजा, प्रधान शासक या अधिकारी द्वारा किसी विधि, अध्यादेश, सधि आदिका रद्द कर दिया जाना।

निरामिष भोजनालय-पु० (वेजिटेरियन रिफ्रेशमेंट क्लब, वेजिटेरियन होटल) दाल, भात, रोटी आदि निरामिष भोजन प्रस्तुत करनेवाला भोजनालय।

निरीक्षक-पु० (इंस्पेक्टर) दे० मूलमें।

निरोध, निरोधन-पु० (हिंड्रेंस) किसी मद्रिथ या उप-द्रोह व्यक्तिको अभिरक्षा आदिमें रोक रखना जिसमें वह बाहर निकलकर किसी तरहका उपद्रव या अनिष्ट न कर सके।

निरोधनशिविर-पु० (कॉन्सेंट्रेशन कैंप) विरोधियों या शकास्पद समूहों जानेवाले व्यक्तियोंकी सैकड़ों, हजारोंकी संख्यामें एक ही स्थानपर नजरबंद रखनेका शिविर (हिंडलन ने नास्ती-विरोधियोंके लिए जर्मनीमें और भारतमें अंग्रेजी सरकारने १९४१ में देवरुलमें ऐसा शिविर माम्बादियोंके लिए खोला था), नजरबंदी-शिविर।

निरोधा-स्त्री० (कॉरनटीन) किसी ऐसे स्थानमें जहाँ सकामक रोग फैला हो, आनेवाले व्यक्तियों (या जहाजों) आदिके कुछ समयतकके लिए बिल्कुल पृथक् स्थान, घर आदिमें आवद्ध किये जानेका कार्य; वह स्थान जहाँ उन्हें हम प्रकार जायक होकर रहना पड़े।

विरोधाज्ञा-स्त्री० (रनत्रकशन) वह आका जो कोई होता हुआ अन्धायपूर्ण कार्य रोकनेके लिए किसी व्यापार्य द्वारा दी जाती है।

निर्वासद्वार-पु० (एक्ट) बाहर जानेका रास्ता।

निर्वास मूल्य-पु० (बश शास) कोई सार्वजनिक क्षण लते समय सरकार जिस मूल्यपर उसके हिस्से जारी करे वह मूल्य अथवा किसी बैंक, व्यापारिक सस्थाओं आदिके हिस्सोंका उनके जारी किये जानेके समयका मूल्य।

निर्वासित पूँजी-स्त्री० (इयूज कैपिटल) वह पूँजी जो कार खाने आदिकी आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए बाहर निकाली गयी हो।

निर्वाणीकरण-पु० (टीपापुलेशन) किसी स्थानका आबादी से रहित कर दिया जाना, किसी क्षेत्रमें बसे हुए लोगोंकी युद्धादिकी आवश्यकताके कारण बर्हासे हटा देना।

निर्वाणीकरण-पु० (टीहाइडेशन) रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वनस्पतियों आदिमें जलका अंश निकाल देना या उसे छुड़ा देना।

निर्वाचक मत-पु० (कास्टिंग वोट) किसी सभा आदिके सभापतिका वह मत जो किसी प्रश्नके संबंधमें मतदानके समय पक्ष-विपक्षमें समान मत आनेपर वह देना है और जिसमें ही उसके स्वीकृत अस्वीकृत होनेका निर्णय होता है।

निर्दिष्टि-स्त्री० (एनोकेशन, एलाउमेंट) किसीके लिए कोई वस्तु या कोई हिस्सा निर्धारित (निर्दिष्ट) करनेकी क्रिया, निर्धारण; आवंटन, वह वस्तु या हिस्सा जो हम तरह निर्दिष्ट किया गया हो।

निर्देशक-पु० (डायरेक्टर) दे० 'निदेशक'।

निर्देश-ग्रंथ-पु०, **निर्देश-पुस्तक**-स्त्री० (रेफरेंस बुक) वह पुस्तक जो साधारणतः अध्ययनके लिए न लिखी गयी हो, बल्कि जिसका उपयोग विशेष अवसरोंपर कुछ शान्तीकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए किया जाय।

निर्देशन-पु० (रेफरेंस) किसी अन्य स्थानपर आयी वा कही हुई बातका उल्लेख या उसकी ओर संकेत करनेकी क्रिया।

निर्देशिका-स्त्री० (डायरेक्टरी) दे० 'निदेशिका'।

निर्बंध-पु० (रेस्ट्रिक्शन) रोक, रक्काब, बाधा।

निर्बंधन-पु० (रेस्ट्रिक्शन) अपने लगाकर किसी बात, क्रिया, व्यक्ति आदिकी नियंत्रित या क्षेत्रविशेषतक सीमित करना।

निर्बंधित, निर्बंध-वि० (रेस्ट्रिक्टेड) जो रोक या गया हो या जिसमें बाधा डाली गयी हो।

निर्माणी-स्त्री० (मिल) वह निर्माणशाला जिसमें यंत्रोंकी सहायतासे धातु, लकड़, रेझम आदि तैयार किया जाता है, कारखाना।-**अधिनियम**-पु० (ऐक्टरी-येक्ट) कारखानों-संबंधी कानून।

निर्वातक-पु० (एक्स्टर्गट) व्यापारिक वस्तुएँ विदेशोंकी भेजनेवाला व्यापारी।

निर्वाचन-पु० (इंटरप्रेशन) किसी सम्पत्ति पर समूह या वाक्यादिकी अपनी समझके अनुसार अर्थ लगाना, व्याख्या करना।

निर्वाचकगण, निर्वाचकदर्श-पु० (एलेक्टरेट) निर्वाचकों-

का समूह वा वर्ग।

निर्वाचक-संसद-पु० (एलेक्टोरल कॉलेज) जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियोंका वह दल वा समूह जो सभ्ये लोक-सभा आदिके निर्दिष्टसंख्याक सदस्योंका अवस्था निर्वाचन करे।

निर्वाचक-सूची-स्त्री० (एलेक्टोरल रोल) निर्वाचनमें भाग लेनेकी अर्हता रखनेवाले मतदाताओंके नाम, पते, उम्र आदिका सूची।

निर्वाचन-केंद्राध्यक्ष-पु० (प्रिजाइविंग ऑफिसर) किसी एक निर्वाचन-क्षेत्रमें मतदान आदिकी देखभाल तथा व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

निर्वाचन-पदाधिकारी-पु० (रिटर्निंग ऑफिसर) किसी निर्वाचन-क्षेत्रके निर्वाचनकी नियामती, व्यवस्था आदि करनेवाला तथा मतोंकी गणना करके उसका परिणाम प्रकट करनेवाला अधिकारी, चुनाव अधिकारी।

निर्वाह-भूति-स्त्री० (लिविंग वेज) वह भूति वा वनन जिसपर कर्मचारी और उसका परिवार मुख्यमें जीवन-निर्वाह कर सके।

निर्वाह-व्यय-पु० (कोस्ट ऑफ मेन्टेनेंस) जीवन-निर्वाह का-भोजन वस्त्रादिका-व्यय।

निर्लंब खाना-पु० (मैपेम अकाउंट, वे० 'अनुलभ खाना')।

निर्लंब-पु० (गम्पदान) किसी कर्मचारीके अपराधी या दोषी होनेका स्पष्ट उपपक्ष हीनपर उसे मतदान। (नए अपने पदसे हटा देना जबतक उस संबंधमें घोषित छानबीन या जांच न हो वे; कोई नियम, अधिदान, कार्य आदि कुछ समयके लिए उठा रखना, गम्प देना या अपराधी कर देना, अनुलंबन।

निर्लंबित-वि० (मस्पेंडेड) (वह कर्मचारी) जो अपने किसी न्यायविषय अपराध वा दोषके कारण, अनियमित होनेतक, अस्थायी रूपमें पदच्युत कर दिया गया हो कुछ समयके लिए गेडा हुआ, अनुलंबित, मुअल्लम।

निवारक विरोध-अधिनियम-पु० (प्रिंटेड डिरेक्शन ऐक्ट) वह अधिनियम जिसके अनुसार किसी तरहका समाजविरोधी कार्य या उपद्रवादि करनेवाले व्यक्तियोंका या जिनके संबंधमें ऐसा आशंका हो उनका निरोध-उठाने ऐसा करनेमें रोकनेके लिए-किया जा सके।

निर्विघ्न-स्त्री० (उंडर) आवश्यक रकम लेकर बाधित वस्तुएँ जुटा देने, पहुँचा देनेका लिखित वादा।

निर्वृत्ति-स्त्री० (रिटायरमेंट) दे० 'अवकाश-ग्रहण'।

-पूर्व सुझी-स्त्री० (लीज बिफोर रिटायरमेंट) सेवामें अवकाश-ग्रहण करनेके ठीक पूर्व की गयी छुट्टी।

-वेतन-पु० (पेंशन) वह वेतन या भुत्ति जो किसी कर्मचारीकी काममें अवकाश-ग्रहणके बाद उसकी पूर्व-सेवाके विचारमें जीवन-निर्वाहके लिए मिले।

निवेश-पु० (प्रॉविजन) किसी विधि, अधिनियम आदिमें कोई वाक्यवर्ध या उपपारा आदि रख देना, जोड़ देना, जो किसी विशेष स्थिति आदिमें काम दे सके-(विधि-निवेश-प्रार्थीजन ऑफ ठी)।

निषेधाज्ञा-स्त्री० (रनत्रकशन) दे० 'निरोधाज्ञा'।

निषेधाधिकार-पु० (बीटी) दे० 'प्रतिषेधाधिकार'।

निष्पीडन-पु० (स्टेरिलाइजेशन) रासायनिक प्रक्रिया आदि की सहायता से किसी वस्तु को जीवाणुओं वा कीटाणुओं से रहित कर देना; (दे० बन्धोकरण)।

निष्पीडित-वि० (स्टेरिलाइज्ड) किसी प्रक्रिया द्वारा जिसके कीटाणु नष्ट कर दिये गये हों; बन्धोयुक्त।

निष्कृतिवच-पु० (रैनजम) किसीकी छुटकारा वा मुक्ति देनेके बरदे दबाव काटकर बन्धु किया जानेवाला धन।

निष्कामपत्र-पु० (पासपोर्ट) दे० 'पारपत्र'।

निष्कांतोंकी संपत्ति-कौ० (इवेकुई प्रापर्टी) (ज्ञान माल-के संकट से बचनेके लिए) जो लोग अपना पूर्व-ज्वा-न छोड़कर अन्यत्र चले गये हों, उनके द्वारा अपने पीछे छोड़ी हुई संपत्ति।

निष्कामप्रतिरोध-पु० (रेसिस्टेंस) शासककी ओर से होनेवाले दमनका प्रतिकार न कर उसकी अनुचित आज्ञा वा विधि(कानून)का उल्लंघन।

निस्कारण-पु० (डिमिशन) काम पूरा करने या निपटानेकी क्रिया।

निहित स्वार्थ-पु० (बेस्ट इंटरस्ट) व्यापार-व्यवसाय, भूमि आदिमें रुपया लगाकर प्राप्त किया गया निश्च स्वार्थ।
नीतिबोधधर्म-कौ० (मैनिफेस्टो) किसी दलके नेता वा राज्यके प्रधान मन्त्रिक आदि द्वारा अपनी नीति या मूल्य आदि; संक्षेप में लिखित रूपमें की गयी मार्ग-निर्देशक घोषणा, लोक-घोषणा।

नीराश्रितक भूमि-कौ० (नोमैन्स लैंड) दो देशोंकी सीमाओंके बीचमें पड़नेवाली वह भूमि जो दोनोमें किसीके की अधिकारमें न हो; दे० 'निःस्वामिक भूमि'।

नृत्तनीकरण-पु० (रिनोवेशन) दे० 'नवीकरण'।

नृत्तशिक्षण-पु० (गनप्रोपेण्डांसी) मानवव्यक्ति उत्पत्ति, विकास आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मानव-विज्ञान।

नेत्रविज्ञान-पु० (आप्टिकस) दृष्टि और प्रकाशके स्वरूप तथा भिन्न-भिन्नताओं आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान, दृष्टिविज्ञान।

नैराश्यवाद-पु० (पेसिमिज्म) संसारकी दुःसमय मानने, प्रत्येक वस्तु वा घटनाकी नैराश्यपूर्ण दृष्टिमें ही देखनेका सिद्धांत।

नौकाधिकरण-पु० (एडमिरल्टी) दे० 'नावधिकरण'।

नौतरज, नौपरिवहन-पु० (नैविगेशन) जहाज आदिमें बैठकर जल-मार्गमें यात्रा करना।

नौतरणीय-वि० (नैविगैबल) जिसमें नौका, जहाज आदि चक सकते हों (वह नदी, तालाब आदि); नौगम्य।

नौपरिवहनविषयक-वि० (नाटिकल) समुद्र यात्रा, जहाज द्वारा के जाने या जहाजों, नाविकों आदिमें जिसका संबंध हो।

नौप्रभार-पु० (टनेज) पोत वा जहाजपर लादे जा सकने-वाले मालका कुल भार; जहाजका सुद अपना भार वा उस जहाजका भार जो समुद्रादिमें संतरण किये जाने पर उसके द्वारा हलायी जाय।

नौवकाश-पु० (एडमिरल) नौवक वा नौसेनाका प्रधान सेनापति; नौसेनाका सबसे बड़ा अधिकारी।

नौविज्ञान-पु० (नौटिकल साइंस) जहाजों, नाविकों वा नौका-नयन-सम्बंधी विज्ञान।

न्यायज्ञ-पु० (जूरिस्ट) न्याय-शास्त्रका ज्ञाता।

न्यायपालिका-कौ० (जुडिसियरी) देशके न्यायाधीशोंका समूह; देशका न्याय-विभाग वा न्याय-व्यवस्था।

न्यायपीठ-पु० (बेंच) न्यायाधीशका आसन, धर्ममंडल।

न्यायसूचि-पु० (जस्टिस) दे० 'न्यायाधिपति'।

न्यायविश्लेष-पु० (मिलकैरिज ऑफ जस्टिस) न्यायका उचित मार्गमें भ्रष्ट हो जाना, न्यायके लक्ष्यकी निश्चिन्ने बहक जाना, न्यायवैफल्य।

न्यायशास्त्र-पु० (जूरिस्प्रुडेंस) न्याय या विधि-संबंधी शास्त्र; दे० 'विधि-विज्ञान'; दे० 'तर्कशास्त्र'।

न्यायशुल्क-पु० (कोर्ट फी) न्यायालयमें कोई आवेदनपत्र उपस्थापित करने समय दिया जानेवाला शुल्क जो प्रायः स्टॉप(अंकन)/के रूपमें होता है।

न्यायसम्य-पु० (जुरी) फौजदारीके कुछ खस खस मुकदमोंका विचार करने समय दौरा ज वकील महावत्ता करनेके लिए किन्तुक सम्मेलन, जिनकी संख्या प्रायः ३ से ५ तक होती है (इनमें न्यायाधीशका संसदे होनेपर मामला उच्च न्यायालयमें भेज दिया जाता है)।

न्यायाधिकरण-पु० (ट्राइब्यूनल) किसी विवादप्रसू विषय या विषयोपर विचार कर न्यायिक निर्णय करनेवाला अधिकारी या इसी उद्देश्यसे स्थापित विशेष न्यायालय।
न्यायाधिपति-पु० (जस्टिस) राज्यके मुख्य न्यायालय या देशके सर्वोच्च न्यायालयका न्यायाधीश, न्यायसूचि (इन न्यायाधीशोंमें जो प्रधान होता है उसे मुख्य न्यायाधिपति (चौफ जस्टिस) कहते हैं)।

न्यायिक निर्णय-पु० (एडजुडिकेशन) न्यायासनपर बैठकर किसी मामलेके संबंधमें निर्णय देना या इस तरह दिया गया निर्णय।

न्यायिक प्राधिकारी-पु० (जुडिशल अथॉरिटी) न्याय-विभागका प्राधिकारी।

न्यायिक मुद्दा-पु० (जुडिशल स्टॉप) न्यायालयके काम-चलावटके लवायी जानेवाली मुद्दा या मुद्दाकी छाप।

न्याय-पु० (इस्ट) किसी विशेष कार्यमें लगानेके लिए विधानपूर्वक सौंपी हुई संपत्ति या इन प्रकार सौंपनेका कार्य।

-धारी-पु० (ट्रस्टी) वह व्यक्ति जिसे ऐसी संपत्ति सौंपी जाय।

न्यासिता-कौ० (ट्रस्टीशिप) किसी संपत्ति या जायदादका प्रबंध ट्रस्टियों (न्यासियों)के द्वारा सौंप देनेकी क्रिया।

न्यासी-पु० (ट्रस्टी) वह व्यक्ति जिसे किसी धन वा संपत्तिकी न्यास (विशेष उद्देश्यसे विश्वासपूर्वक समर्पण) कर दिया गया हो; दे० 'न्यासधारी'।

न्यूनकोण-पु० (ऐक्यूट एंगल) वह कोण जो एक सम-कोणसे छोटा हो।

न्यूनकोणत्रिभुज-पु० (ऐक्यूट-एंगल्ड ट्राइएंगल) वह त्रिभुज जिसके तीनों कोण न्यूनकोण हों।

न्यूनताबोधक-वि० (डिम्निटिव) वह उससे न्यून या छोटा है, वह बोध करानेवाला (छम्प), कमवाचक, अल्पार्थक।

मूल्य-पु० (पत्रिजेट) बटा देना, कम कर देना, छोटा कर देना, संक्षेपण।

मूल्यपोषण-पु० (मिल्यूट्रीशन) खाद्य-वस्तुओंकी सुरक्षा, कमी आदिके कारण पर्याप्त पोषणका न मिलना, कुपोषण; (अन्डर-नरिश्यमेंट) पोषणकी वा पोषक तत्वोंकी कमी।

मूल्यबचस्क-वि० (माइनर) दे० 'नाफालिम', 'जबचस्क'।

मूल्यीकरण-पु० (अवेरमेंट) कम कर देना, बटा देना।

मूल्योन्नत क्षेत्र-पु० (अन्डर-डेवलप्ड एरिया) वह भूभाग जो उद्योगों, खनिज इत्यादि आदिकी दृष्टिसे बहुत पिछड़ा हुआ हो, जिसकी बहुत कम उन्नति हुई हो, अव्यवस्थित क्षेत्र।

प

पंक्तिपुत्र-वि० (क्विट्टेड) दे० 'कोटिपुत्र', जो अपनी पंक्ति या कोटि (दरजे) में नीचे बटा दिया गया हो।

पंच-पु० (आर्बिट्रेट) दो पक्षोंके बीचका झगड़ा निपटानेके लिए, दोनोंकी स्वीकृतिसे नियुक्त कोई तटल व्यक्ति, जिसका अतिनिर्णय माननेके लिए दोनों बाध्य हों।

-विन्य-पु० (आर्बिट्रेसल) पंच द्वारा किया गया निर्णय।

-स्वावाधिकरण-पु० (आर्बिट्रल ट्रिब्यूनल) वह अदालत जिसमें मामला निपटारा पक्षों द्वारा किया जाय।

पंचमाली-पु० (फिफथ क्लामिल) दूसरे देशमें युद्ध संबंध रखकर स्वदेशकी हानि पहुँचानेवाला, देशद्रोही, भेदिना, जबचंद (सेनकी राजधानी मैथिलपर अधिकार करनेके लिए बार कीजोके साथ लेकर बटनेवाले जनरल मैकोने पंचवीं मैनाके रूपमें इन देशद्रोहियों या भेदिनोंमें ही सहायता प्राप्त की थी, इसीमें इस तरहके लोग पंचवीं मैनाके जंग या 'पंचमाली' कहे जाते लगे)।

पंचाट-पु० (अवाट) दे० 'परिनिर्णय'।

पंजी-ली० (रजिस्टर) वह पुस्तक या बही जिसमें हिसाब, कार्य विवरण, जन्म-मृत्युका लेखा, गृह, भूमि आदिकी अधिकृत किन्ती या हस्तांतरण आदिका स्वीकार लिखा या दर्ज किया जाय। - **बन्ड-वि०** (रजिस्टर) जो पंजी वा रजिस्टरमें बंधा दिया गया हो।

पंजीबक-पु० (रजिस्ट्रार) किसी लेख, इच्छापत्र आदिकी प्रामाणिक प्रतिलिपि राजकीय पंजीमें सुरक्षित रखनेका प्रबंध करनेवाला अधिकारी; किसी विश्वविद्यालय, उच्च स्थापना, सहयोगसमितियों आदिका वह अधिकारी जो अपनी स्थावा विभागके सब प्रकारके महत्वपूर्ण लेख, कामज-पत्रादि सुरक्षित रूपसे रखनेकी व्यवस्था करता है।

पंजीबन-पु० (रजिस्ट्रेशन) मकान, जमीन आदिकी किन्ती या हस्तांतरण आदिका स्वीकार या किसी पारसक, बिट्टी आदिके सुरक्षित रूपसे भेजे जानेके लिए पानेवाले का नाम, पठा आदि पंजीमें पदाक्षर जमिलेखके रूपमें रखा जाना; अभ्यापित्री आदिके नाम-पत्नीमें नामका दर्ज कर दिया जाना।

पञ्चली-ली० (पञ्चमी) जेम्में कोई अक्षर उपमित होनेपर बजायी जानेवाली बंसी, खतरेकी घंटी।

पटल-पु० (टेबल) मेज, टेबल; (बीट) लकड़ीका तख्ता;

दफती।

पट्टकीटपाकन-पु० (मिरीकलचर) दे० 'कोसकीटपाकन'।

पट्टविलेख-पु० (सीटवीड) वह विलेख जिसमें किसी भूमि या संपत्तिके उपयोग-संबंधी अधिकार किसीकी दिये जानेकी शर्तें, पट्टेकी शर्तें, विवरण आदि रहता है।

पटन-पु०, **पटन-ली०** (रीटिंग) दे० 'वाचन'।

पत्राक्रिया-ली० (विटिंग) वाजी लगानेका कार्य, पणन।

पत्राक्षेत्र-पु०, **पत्राभूमि-ली०** (मारचैट) वस्तुएँ बेचने करीनेका स्थान, बाजार।

पत्रवाहक लीका-ली० (कारगो बोट) माल डोनेवाली नाव।

पत्राका-वीर्यक-पु० (बैनर हेडलाइन) समाचार-पत्रके मुखपृष्ठपर एक सिरिसे दूसरे सिरिगेक, पत्राका-रूपमें, दिया गया सर्वप्रधान शीर्षक, पृष्ठ (भ्यापी) शीर्षक।

पत्राकिता-वि० (पलेट) पत्राकालोंमें स्थित, जिसपर पत्रका लगायी गयी हो।

पत्र-चकार्य-पु० (पेपर-करंसी) छपे हुए कागज या नोटके रूपमें चलनेवाली मुद्रा, कागजी मुद्रा।

पत्रपाल-पु० (पोस्टमैन) डाकखानेका प्रधान अधिकारी, डाकपाल।

पत्रपेटिका-ली० (लेटरबाक्स) बनी जानेवाली बिट्टी या पैकेट छोड़नेका इलाका, मकानके द्वारादिएर लगाया हुआ सट्टक जिसमें बाहरमें आयी हुई चिट्ठियाँ आदि पत्र विवरक (डाकिया) द्वारा डाल दी जाती हैं।

पत्रवाह-संज्ञिका-ली० (प्लानुस) वह छोटी पत्री य. वही निम्नपर पत्रादिका स्वीकार नया दिया जाना है और जिसे पत्र-वाहक पानेवालेके इस्तेमाल करानेके लिए उपन साथ ले जाता है।

पत्रवितरक-पु० (पोस्टमैन) बाहरमें आये हुए पत्र आदिके पानेवालोंमें बाँट देने, उनके पामतक पहुँचा देनेवाला पत्राह्वक अग्रेसरी, टाकिया।

पत्रविद्योत्रक-पु० (सॉर्टर) भेजे जानेवाले स्थानोंके अनुसार पत्रों आदिको पृथक् पृथक् करनेवाला पत्रालयका कर्मचारी।

पत्रसूचना-विभाग-पु० (ब्रेम इनफार्मेशन ब्यूरो) समाचार-पत्रोंके लिए सूचनाएँ और समाचार देनेवाला सकारका, सेवा, पुलिस या किसी संस्थाका कार्यालय अथवा विभाग।

पत्राचार-पु० (कारेरण्डेंस) पत्रपत्रवाह, सव-किताबन। **पत्राक्षय-पु०** (पोस्ट आफिस) वह स्थान या कार्यालय जहाँसे बिट्टी, पारसक, बनीआर्दर आदि बाहर भेजने तथा बाहरसे आनेवाले पत्रों, पारसकों आदिकी उपयुक्त अधिकृतक पहुँचानेका प्रबंध हो, डाकखाना, डाकघर।

पत्राक्षयिक आवेष्ट-पु० (पोस्टल कवर्ड) पत्रालय (डाकखाने) द्वारा पत्रका लेकर जारी किया गया एक तरहका पत्रादेश (चेक) जो बँकके चेककी ही तरह देखाँतिका किया जा सकता है, पर जो पत्राक्षयिक कर अन्य किसीके नाम हस्तांतरित नहीं किया जा सकता, वाक्रीय आवेष्ट।

पत्राक्षयित-वि० (पोस्टेड) अन्यत्र भेजे जानेके लिए पत्रालय या पत्रपेटिका (डाकघर) या लेकर डाकमें छोड़ा हुआ।

पञ्चाक्षरीय प्रमाणपत्र-पु० (रीस्टक सर्टीफिकेट) कोई पत्र, पैकेट आदि अन्वय भेजनेके लिए पञ्चाक्षरको अर्पित किया गया इसका प्रमाण-पत्र जो पञ्चाक्षरके संरक्षक कर्मचारी द्वारा दिया जाय, आक्षरीय प्रमाणपत्र ।

पञ्चाक्षर-पु० (निगोक्षियेशन) विद्युद्-पत्ती आदिकी सहायतासे समक्षोक्ता रूप निश्चित करने या कोई बात तय करनेका कार्य ।

पथकर-पु० (टोल) किसी सबक या पुलपरमे जाने, माल ले जाने आदिके लिए लगानेवाला कर ।

पदकन्दुक-पु० (कुटवाल) दे० 'कुटवाल' ।

पदकारणात्, पदेन-अ० (एवम आक्षिप्यो) (व्यक्तिगत रूपसे नहीं, बल्कि) किसी पदपर आकृष्ट रहने या काम करने रहनेके कारण ।

पदधारण-सुरक्षा-की० (सीक्युरिटी ऑफ टेन्चर) किसी पदपर, नौकरी आदिपर काम करते रहने या सुरक्षित रूपसे बने रहनेकी पक्की आशा ।

पदबाधा, पदरोध (पदरोक)-पु० (ब्लिग रिफोर बिन्ड) (किसी बल्लेबाज द्वारा) रॉग आउट अर्थात् अनियमित रूपसे गेंदको बल्लेबाजी और बटनेसे रोक देना ।

पदमुक्त-वि० (आउट गौडिंग) अपना पद या स्थान छोड़कर अन्वय जानेवाला ।

पदभोजन-पु० (रिफोक) किसी पद या कर्तव्यमें मुक्त हो जाना, छुट्टी पा जाना, पृथक् हो जाना या कर दिधा जाना ।

पदभारण-की० (पासिंग) वाचनमें आये हुए पदका शब्दभेद, लिंग, वचन आदि बतलाना ।

पदशिक्षार्थी-वि०, पु० (एम्प्लि) नौकरी पानेकी आशामें रित्त। वेतन लिये काम मीलानेवाला, उम्मेदवार; किसी अनुभवप्राप्त व्यवसायी, कलाकार आदिकी देखरेखमें व्यवसाय, कला आदिकी शिक्षा प्राप्त करनेवाला, शिक्षणार्थ ।

पदसूचक चिह्न-पु० (इन्डिकेटर) राजा या किसी बड़े अधिकारी आदिके पदकी पहिचान करानेवाला विशेष चिह्न (मुकुट, दंड, पट्टा इ०) ।

पदार्थ-पु० (मैटर) ऐसी वस्तु जिसका ज्ञान हम अपनी शानंद्भिरागे प्राप्त कर सकते हैं तथा जो स्थान घेरती, भार रखती और संकायत पैदा करती है । -विज्ञान-पु० (फिजिक्स) दे० 'भौतिक शास्त्र' ।

पदार्थचि-की० (टेन्चर) किसी पदपर काम करते रहनेकी अवधि ।

पदस्थान-पु० (आफिशियल रेजिडेंस) किसी पदाधिकारीका सरकारी निवास-स्थान ।

पदस्थिति-की० (पदोन्नति) किसी कर्मचारीके पदमें होनेवाली वृद्धि या उन्नति, पदछेमें अधिक ऊँचे पदपर नियुक्त होना या भेजा जाना, पदवृद्धि, तरकी ।

पदस्थिकी-शक्ति-की० (हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर) जल-शक्तिसे संप्रयोगमें उत्पन्न होनेवाली विद्युत्की शक्ति, जलविद्युत्-शक्ति ।

परतुक्त-पु० (अर्थिजो) किसी अधिविवम, प्रत्येक आदिकी धाराके साथ लगी हुई कोई धारण या उमके पूर्ण रूपमें

पावन या कार्यान्वित लिये जानेमें पड़नेवाली किसी कठिनाईसे बचनेके लिए निकाला हुआ रास्ता ।

परकार-पु० (रिवाइज्ड) वृत्तकी परिधि बनाने, मापने आदिका दो सुवाचीवाला यंत्र आका ।

परकाम्य-पु० (निगोक्षियेशन) पूरे अधिकारों समेत (बंधनवादि) दूसरेकी हस्तांतरित करनेकी क्रिया ।

परकाम्य-वि० (डिगोक्षियेबिल) (बंद बंध-पत्रादि) जो दूसरेकी, ममल अधिकारों समेत हस्तांतरित किया जा सके ।

परक-माली-की० (टेस्ट्युष) दे० 'परिक्षण-मलिका' ।

परपक्षग्राही-वि० (टर्नकोट) अपना दल वा पक्ष छोड़कर दूसरा दल वा पक्ष ग्रहण कर लेनेवाला; अपने विचारों या सिद्धांतोंका परिवर्तन कर दूसरे विचारों-सिद्धांतोंका अनुवाची बन जानेवाला ।

परमन्वाचाक्षर-पु० (सुप्रिमाकोर्ट) दे० 'सर्वोच्च न्यायालय' ।

परमवीरचक्र-पु० भारतीय गणतंत्रमें शत्रुके सम्मुख असाधारण वीरता प्रदर्शित करनेपर भारत सेनाके किसी सैनिकी द्वारा जानेवाली 'विक्टोरिया क्रॉस'के ढंगका प्रथम मेणीका उपहार ।

परमजोड़-वि० (हिज एक्सेलेंसी) दे० 'महामहिम', तत्र अभाव ।

परमसत्ता-की० (ऐक्सल्यूट पावर) अनियंत्रित शक्ति या अधिकार, पूर्ण तथा अबाध सत्ता ।

परमाणु-पु० (एटम) किसी तत्त्वका सबसे छोटा इकाई । -बाह्य-पु० (एटमिअ) परमाणुओंमें वस्तुओंके निर्माण तथा परमाणुओंके कार्यों, प्रभावआदिका विवेचन करनेवाला सिद्धांत ।

परमाधिकार-पु० (मैरोगेटिव) दे० 'विशिष्टाधिकार' ।

परमावश्यक सेवाधु-की० (इसेंसल सर्विसेज) सर्वसाधारणकी पानी, बिजली आदि देने तथा सार्वजनिक सफाई आदि-संघर्ष कार्य ।

परांगमल्ली-वि० (पैरामाइट) दे० 'परोपजीवी' ।

परागण-पु० (पोलिनेशन) परागसे अभिर्पणित हो जाना, (हवाके हवाके आदिमें) पुष्पपर परागका फैल जाना, छा जाना ।

परामर्शक, परामर्शालय-पु० (कन्सल्टिंग रुम) किसी चिकित्सक वा बकीर आदिमें परामर्श करनेका स्थान, कमरा वा गुहा ।

परामर्शदात्री समिति-की० (एडवाइजरी कमिटी) किसी कार्य या विषयादिके संबंधमें सलाह देनेवाली समिति ।

पराधर्माह-पु० (एलटू इन्स) दूसरीकी सेवा या मलाईके लिए ही जीवित रहने वा कार्य करनेका मित्रांत ।

परिक्रम-पु० (ट्रै) दौरा; चारों ओर घूमना, यात्रा करना ।

परिगणना-की० (सेड्यूल) दे० 'अनुसूची' ।

परिगणित जातिधु-की० (सेड्यूल कांम्पुस) दे० 'अनुसूचित जातियों' ।

परिगतवृत्त-पु० (मरकम्प्राइज मरकिल) वह वृत्त जो त्रिभुजके तीनों शीर्षोंमें होकर गया हो ।

परिचयपत्र-पु० (लेटर ऑफ इंट्रोडक्शन) किसी आदमीका किसी अन्यसे परिचय करानेके लिए उसके नाम दिया गया पत्र ।

परिचारवादी-सी० (एम्ब्लेस कार) बावल हुए या भीमार व्यक्तियोंको लानेने जानेवाली गाडी ।

परिचारण-पु० (सरस्मूलेशन) स्थानों, विधेयों आदिका सदस्यों या अन्य लोगोंमें परिचारित किया जाना ।

परिचारक-पु० (एम्ब्लेस कोर) दे० 'आहतोपचारी' ।

परिचारित करना-स० क्रि० (टु सरस्मूलेट) कोई पत्र, विधेय आदि लोगोंको राख जाननेके लिए वारों तरफ विगलित करना वा पुमाना, परिपत्रित करना ।

परिचारक-पु० (कंडक्टर) परिचारण, निबंधन आदिका काम करनेवाला; ट्राम (रब्बायान), बस, ट्रेन आदिमें यात्रियोंको देखरेखका भार सँभालनेवाला कर्मचारी । वि० ताप वा विद्युत्को कणोंकी सहायतासे एक स्थानसे दूसरे स्थानतक पहुँचानेवाला; (बह वस्तु) जो विद्युत्को अपनेमेंसे होकर चला आने दे । (पुरा परिचारक-दे० 'कुचालक'; अच्छा परिचारक-दे० 'दुबलक') ।

परिचय-पु० (कंडक्शन) गर्मी वा विजलीके फैलनेकी वह रीति जिसमें गर्मी वा विजली एक कणसे दूसरे कणको मिलती है और कण स्वयं नहीं चलते ।

परिचीकी-वि० (सरवाइवर) दे० 'अतिजीवी' ।

परिचामी-वि० (रिजर्स्ट) जो दो या दोसे अधिक कारणोंका संयुक्त परिणाम हो, जो किसीके परिणामस्वरूप उत्पन्न हो या सामने आवे ।

परिलोचन-पु० (प्रेडिकेशन) दे० 'अनुगोषण' ।

परिवचन-पु० (एक्चेंजमेंट) पूर्णतः छोड़ देना, परिवर्तन ।

परिवर्तनी-सी० (चेंज अप कैपिटल) प्राचिन पूँजीका वह भाग जो संचालकों द्वारा सीमे ज़ानेपर हिस्सेदारों द्वारा जमा कर दिया गया हो ।

परिवेशना-सी० (कॉन्टै) वेदना या हानि पहुँचाने जानेके विरोधमें किया गया अन्धावेदन, दिकायतनामा, करियाद ।

परिधानक-पु० (ड्रेसिंग कम) कपड़े पहननेका कमरा; दे० 'परिधानगृह' ।

परिधानगृह-पु० (रीविंग कम) कपड़े वा पोशाक पहनने, बाळ सँभारने आदिका कमरा जिसमें प्रायः बड़ा शीशा भी लगा रहता है ।

परिधि-सी० (सरकफरेंस) वृत्त बनानेवाली मोल रेखा ।

परिनिर्णय-पु० (अवार्ड) अंतिम निर्णय, विशेषतः पंच या पंचों द्वारा किया गया, पचाउ ।

परिपत्र-पु० (सरस्मूलेट) कुछ निश्चित बातों, सुझाव आदिकी सूचना देनेके लिए वारों तरफ, विभिन्न संस्थाओं, व्यक्तियों आदिके पास, भेजा जानेवाला पत्र, गलती सिद्धी ।

परिपाकस्थिति-सी० (डेट ऑफ मैच्युरिटी) किसी वृद्धी या बीमारकी पाकस्थिति निर्धारित अवधि (सीमा) समाप्त होनेकी तिथि ।

परिपृच्छा-सी० (इनक्वायरी) कोई बात जानने वा किसी घटना आदिका पता लगानेके लिए की जानेवाली पूछ-ताछ, परिप्रेक्ष्य । -पृष्ट-पु० (इनक्वायरी ऑफिस) पूछ-ताछ करने, पता लगानेका दफ्तर ।

परिप्रेक्ष्य-पु० (इनक्वायरी) दे० 'परिपृच्छा' ।

परिमापचय-पु० (कॉलम अनी) सम्बन्धवार आदिका विशय करानेके लिए जमाननके रूपमें पहलेसे जमा किया गया धन ।

परिमापित-वि० (डिफाईड) जिसको परिमाप की गयी हो ।

परिमिति-सी० (पेरीमीटर) कन्ट्रिबुट (रेक्टलीनिवल) क्षेत्रकी भुजाओंकी लम्बाइयोंका योग ।

परिमोहन, परिकोमन-पु० (एंट्राइमेंट) किसी तरहका प्रलोभन वा आभासन देकर वा छुटी आशा उत्पन्न कर बहकाना, ललचाना ।

परिकोजना-सी० (प्रोजेक्ट) मनमें सोचकर, आगे आनेवाली स्थितिका अनुमान लगाकर, तैयार की गयी योजना वा परिकल्पना ।

परिष्कार-पु० (क्वैरेटर) किसी संग्रहालयकी देख-रेख आ व्यवस्था करनेवाला अधिकारी; (पेट्रोल) दे० 'परिष्की' ।

परिष्की-पु० (पेट्रोल) चारों तरफ घूम-घूमकर, इधर-उधर गहन लगाते हुए, रखाका कार्य करनेवाला; ।

परिरूप-पु० (डिजाइन) किसी भावी कार्य वा मैजार की जानेवाली वस्तुकी पहलेसे सोची हुई रूपरेखा; कपड़े हत्यादिपर चारों, फूल, बुटी या ऐसी चीजें बनानेका विशेष ढंग; किसी कलात्मक कृति वा सजावट आदिके प्रथमसे मनमें पड़ने में सोची-विचारी हुई परिकल्पना ।

परिरूपक-पु० (डिजाइनर) परिरूप बनानेवाला, रूप, कन करनेवाला ।

परिलिख-सी० (परफिक्ट) निर्धारित वेतन या भूमिके ऊपर अलगमें दिया गया भत्ता वा शुल्क, अनुलाभ ।

परिलान-पु० (इमायूमेंट) किसी पदपर काम करके या सेवा आदिके कारण वेतन, पुरस्कार हत्यादिके रूप में होनेवाला लाभ ।

परिवर्त्य-वि० (कानवर्टिबल) जो अन्य रूपमें बदला जा सके (कणपत्र, कंपनीक सिस्ते आदि) ।

परिवहय-पु० (ट्रानपोर्ट) कोई वस्तु एक स्थानसे दूसरे स्थानतक उठारकर वा लौकर ले जाना, पहुँचाना ।

वाक्का-सी० (वाटिकनेक) माल हत्यादिके एक स्थानमें दूसरे स्थानतक पहुँचाने जानेमें देलके दम्भी हत्यादिकी कमीके कारण पड़नेवाली बाधा । -व्यवस्थापक-पु० (डिप्टिक मैनेजर) देख-पहल द्वारा वाणिज्य तथा माल-व्यवस्थाके परिवहनकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी ।

परिवाह-पु० (कॉन्टै) शिफायत, दीपकधन, पुराई मताना, दुहाइ ।

परिवृष्ट-पु० (सरकम्प्लाइंट सरकिट) दे० 'परिवहवृत्त' ।

परिवृष्टि-सी० (कनवर्शन) एक तरहके जगपत्र, प्रमदलमें किसी आदिकी दूसरी तरहके कणपत्रों वा वस्तुओंमें बदलना; धर्म, विश्वास, मत आदिका बदलना ।

परिव्यय-पु० (कॉन्टै) किसी वस्तुके उपपन्न, निर्माणादि-

में लगायेवाला कपड़ा या खर्च, लागत ।

परिचय-वि० (एन्क्वायरे) बिलकुल ठीक, संधार्थ ।

परिचयवाला-स्त्री० (एन्क्वायरींग) बिलकुल ठीक, संधार्थ या सटीक होनेका भाव ।

परिचय-स्त्री० (काउंसिल) सलाह देनेवाले या विचार-दि-में हिस्सा लेनेवाले सदस्योंकी सभा; नगर या जिलेकी स्थानीय प्रबंध सभा; चुने हुए या मनोनीत किये हुए सदस्योंकी विशेष सभा ।

परिसंघ-पु० (कानफेडरेशन) भवतः राजाओं, राज्यों या राष्ट्रीका ऐसा समूह जो एक दूसरेकी सहायता करने और सामान्यरूपमें मनव रखनेवाले वैदेशिक प्रश्नों आदिके संबंधमें समान नीति निर्धारित करनेके उद्देश्यसे बनाया जाता है ।

परिसंपद-स्त्री० (असेट्स) किसी महाजन या व्यापारिक संस्था आदिकी वह संपत्ति तथा पावना आदि जिम्मे (उत्तरदा) देय या कृण चुकाया जा सके ।

परिसमापक-पु० (क्विट्टिडेटर) किसी प्रमदल, व्यापारिक संस्था आदिका देना पावना ले-देकर उसका कारबार समाप्त करनेवाला अधिकारी ।

परिसमापन-पु० (क्विट्टिडेशन) किसी व्यापारिक संस्था प्रमदल आदिके देने-पावनेका हिमाच चुभकर उसका कारबार समाप्त करना; कृण आदि पूरी तरह चुका देना ।

परिसमाप्ति-स्त्री० (रिमिनेशन) किसी चल्ने हुए काम, सुट्टी, रेलपथ आदिकी समाप्ति या अंत हो जाना ।

परिसीमन-पु० (सीमितेशन) किसी स्थान, क्षेत्र, प्रदेश आदिकी सीमा रीख करना ।

परिहार-पु० (एवाइड) त्याग करने, छोड़ देनेकी क्रिया; भवा जाने या प्रयोग न करनेकी क्रिया । (रौमीशन) अनावृष्टि आदि सकटके कारण हो जानेवाली कर या लगानकी माफी, छुट्टा कृण या रुड आदिम की गंधी कमी ।

परीक्षणकाल-पु० (प्रोवेशन) कोई कर्मचारी कामके योग्य है या, नहीं, इसकी जाँच या परख करनेका समय ।

परीक्षणनिका-स्त्री० (टेस्ट ट्यूब) परीक्षणके काम आने-वाली शीशे(कीच)की नलिका, परखनली ।

परीक्षाभवन, परीक्षाकक्ष-पु० (एग्जामिनेशन हाल) वह भवन या स्थान जहाँ बैठकर परीक्षार्थियोंको परीक्षा देनी पड़े ।

परीक्षार्थी, परीक्षित-पु० (एग्जामिनी) वह व्यक्ति जिसकी परीक्षा की जाय या जो परीक्षामें बैठे हो ।

परीक्षमात्र-वि० (प्रोवेशर) (वह कर्मचारी) जिसको नियुक्ति अभी पक्की न हुई हो, बरन् जो अभी परीक्षण-कालमें हो ।

परिचय-पु० (कौन्साइडर) वह व्यक्ति जो रेलगाड़ी आदिके परसलके रूपमें अपना माल किसी अन्य स्थानमें रहनेवाले व्यक्तिके पास भेजे ।

परिचय-पु० (कौन्साइडरी) वह व्यक्ति जिसके पास कोई माल रेलगाड़ीके द्वारा भेजा जाय ।

परिचय-वि० (कौन्साइडर) (वह माल) जो रेलगाड़ी शिफारिसे परसलके रूपमें अन्य किसीके पास भेजा गया हो ।

परीक्षार्थीचन-पु० (इन्टाइरेड एग्जमिन) नीधे जनताके मनदान द्वारा नहीं, बरन् निर्वाचन-मंडलों, नगरपालिकाओं आदि द्वारा किया जानेवाला चुनाव ।

परीषदी-वि० (पैरासाइट) दूसरीपर आश्रित रहकर जीवित रहनेवाला । वह वनस्पति या जंतु जो किसी अन्य वृत्त या जंतुके शरीरमें छिपकर उसका रस या रक्त चूसकर परिपुष्ट हो ।

परिचय-पु० (लीफलेट) कागजका छपा हुआ टुकड़ा जो लोगोंमें प्रायः बिना मूल्य वितरणके लिए होता है ।

परिचय-स्त्री० (कूपन) वस्तुओंके सीमित वितरणकी व्यवस्थामें वह पुरजी, कागजका टुकड़ा या टिकट जिसपर लिखा रहता है कि बहुत व्यक्तिउहे इतना कपड़ा, पेट्रोल या अन्य वस्तु दी जाय; ऐसा जमा करनेपर मिलनेवाला वह प्रमाणक जिसे अश्रित करनेपर कोई वस्तु (जैसे दुग्ध-शालाका दूध) या कोई सेवा प्राप्त की जा सके; मनी-आर्डर फार्म (बनपेवादेश-प्रपत्र)का वह निचला भाग जिसमें स्वयं भेजनेवाला पानेवालेके नाम कोई संदेश आदि लिख सकना है ।

परिचय राजवृत्त-पु० (रोमिंग एवैनेयर) किसी विशेष उद्देश्यमें विभिन्न देशोंमें परिभ्रमण कर लौट आनेवाला राजदूत ।

परिचयक-पु० (मर्च) किसी कामकी या किसी क्षेत्रादि-की आदिमें अंततक-एक छोरसे दूसरे छोरतक-स्थूल रूपसे देखना, जाँचना समझना, सर्वेक्षण ।

परिचयक-पु० (प्रपरवाइजर) किसी काम आदिकी निगरानी करनेवाला, चारों तरफ नजर रखनेवाला, देखभाल करनेवाला ।

परिचयक-पु० (प्रपरविजन) चारों तरफ नजर रखने, निगरानी करने आदिका काम, देखभाल ।

परिचयक-पु० (रेक्सकांडर) दखित होने या पकड़े जाने आदिके भयसे भाग जाने, छिप जानेवाला व्यक्ति ।

परिचयक-पु० (बटेरिनरी हॉस्पिटल) वह स्थान जहाँ घोड़े, गाय-बैल आदि परेन् पशुओंकी चिकित्साका प्रबंध हो ।

परिचय-पु० (लिबस्टाक) मनुष्य-परिवारके साथ रहने और उसके काम आनेवाले पशु-गाय, बैल, घोड़े, भेड़ आदि ।

परिचयक-पु०, **परिचयक**-स्त्री० (कैटिल पाउडर) शर-उपर विचरने हुए किसी तरहकी क्षति करने-वाले पशुओंकी रोककर रखनेकी जगह, आगारा पशुओंकी निर्धारित शुल्क देकर छुड़ा ले जानेतक रोक रखनेका बाड़ा या घर ।

परिचयक-पु० (बू) वह वन या कानन जहाँ विभिन्न प्रकारके पशु तथा पक्षी प्रदर्शन आदिके लिए रखे जाते हैं, चिकियाघर, जंतुशाला ।

परिचयक-पु० (लिबर्टी कार्म) गाय, भेड़, सूअर आदि पशुओंकी रखने, पालनेका स्थान ।

परिचयक-वि० (लैटर) जो बादमें कहा गया हो; वाक्यादि-में जिसका प्रयोग किसी अन्य (तद्वत्) शब्दके बादमें किया गया हो ।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—पुनरुत्थान (मैथिली-बौद्धिक) का अर्थ पुनरुत्थान उक्त पक्ष-पक्षिका विवेचन करनेवाला ज्ञान जो अथ पक्षर इत्यादिके रूपमें परिणत हो गये हैं।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(पाश्चात्य) किसी रथान, सिनेमा-ध्वन, सभा-गृह आदिके भीतर या बाहर जानेका लिखित अनुमति-पत्र; रेल आदि द्वारा बिना किराया दिये यात्रा करनेका अनुमतिपत्र।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(हांसपेरैसी) पदार्थोंके आर-पार देखे जा सकनेकी क्षमता या गुण, पारदर्शी होनेका गुण।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(एक्सरे) दे० 'क्ष-किरण'।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(पासपोर्ट) समुद्र-पार जानेका वह अनुमति-पत्र जिसमें यात्रायात्री सरक्षाका भी अनिवार्य सन्निविष्ट रहता है।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(रेसीमासिटी) व्यवहारमें एक दूसरेका ज्वाल रहना; परस्पर रियायत करने या सुविधा देनेका सिद्धांत।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(ओपेक) जिसके आर-पार दिखाई न दे, अपारदर्शी।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(ओपेसिटी) दे० 'अपारदर्शिता'।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(पास्ड) (प्रस्ताव, विवेक आदि) जो किसी मता, विधानसभा आदिमें विधिपूर्वक स्वीकृत हो चुका हो।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(कोशल मनी) जमानत या प्रति-भूतिके रूपमें अवका सन्वयवहार या सदुपयोगका निश्चय करानेके लिए पक्षसे जमा की या करावी गयी रकम।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(कॉन्सिडर) आक टैबिलकल नबंज विधिद्वारा अर्थमें प्रयुक्त होनेवाले शब्दोंकी सूची।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(रिग्नोरेशन) किसी सेवा या किये हुए काम आदिके बदले दिया जानेवाला धन, मंजूरमाना, उन्नत।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(काउन्सिलर) परिषद्का सदस्य।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(रेरेस्ट्रल टैक्सीप) पृथ्वीपर रखी हुई दूरकी वस्तुओंकी देखनेके काम आनेवाली दूरबीन।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(माजिनल नोट) पुस्तक, कापी आदिके छपपर किनारेकी तरफ लिखे गये विचार, हास्य बातें आदि।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(विंग कमांडर) वायुसेनाके दो-तीन दर्जोंकी बनी हुकमीका नायक (ग्रुप-कप्तान तथा कमांडर) लीडरके बीचका अधिकारी।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(ग्रन्ट) दायरे के अंदर बैठने समय नये अनुच्छेदोंकी पहली पंक्तिके पूर्वका हासिया (पाश्च) बढ़ा देना या किसी उद्धार आदिकी पंक्तियोंके एक ओर अवका दोनों ओरका हासिया लपिक चौड़ा कर देना।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(परीकमांड) पार्थकी रक्षा करनेवाली सेना।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(वाजिनल टैक्सीप) किसी छपे हुए वा छपनेवाले लेख, पुस्तकके अध्याय आदिमें विषय आदिकी ओर संकेत करनेवाला वह शीर्षक जो बीचमें न दिया जाकर पार्थमें, किनारेकी तरफ दिया जाय।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(प्लुरिमी) ठंड आदि लग जानेमें पार्थदेश-

में होनेवाली सूजन, जिसमें छाती या पसलीमें पीका होनी है और उभरादिये कक्षण भी देख पड़ते हैं।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(सिपट; इन्सुल) कारखानों आदिमें अधिकृतके एक दलके लिए बना हुआ काम करनेका समय जिसकी समाप्तिपर दूसरा दल काम शुरू करता है; शॉफी, किनेट आदि खेलोंमें खेलानियोंके किसी दलका पहली या दूसरी बार खेलना।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(एकनामिजमेंट) रूपवा या अन्य वस्तु मिल जानेका प्रमाणपत्र, प्राप्ति-पक्षीकार-पत्र, रसीद।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(मानधन) वर्षा-सूचक हवा; दे० मूलमें।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(स्टोन एज) दे० 'प्रस्तरयुग'।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(लप सम) किसीके रूपमें नहीं, बरन् एक ही बारमें पूरीकी पूरी दी जानेवाली रकम।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(वैदिकवाद) समाजकी वह प्राचीन व्यवस्था जिसमें घरका कोई बड़ा-बूढ़ा आदमी या गृहस्थामी ही समस्त परिवारका प्रबंधक होता था और उसीके अनु-ज्ञापनमें वंश वा परिवारकी विभिन्न शाखाओं, उपशाखाओं के सदस्योंकी रहना पड़ता था।

पाश्चात्य-पुनरुत्थान—(वैदिकवाद) (वह प्रथा या पद्धति जिसमें पिता या गृह-स्वामीकी ही मता सर्वोपरि माना जानी रही हो।

पीठ—(चेंबर) सभापति आदिके आसन; भीट; न्यायाधीशका आसन (न्यायापीठ); बिच विधानसभा आदिमें विभिन्न दलोंके बैठनेके लिए निर्धारित आसन या पन्थियाँ (भरकारी पीठ, विरोधी पीठ-बटु, (मेटर) म्यान, केंद्रादि (विभागीय)।

पीठस्थिति—(रिजिस्ट्रार) विश्वविद्यालय, विद्यापीठ, गुरुकुल आदिका वह मुख्य पदाधिकारी जो मन्त्रालय-पत्र, छात्रों मरपी विवरण इत्यादि रखना और उन्गकी शिक्षा दीक्षात्का प्रबंध करना है; कुलस्थिति।

पीठस्थिति—(प्रिजाइटिंग) जो अध्यक्षके स्थानपर आसीन हो। **पुन**—(होना) अवस्थान करना, अव्ययक, स्थान प्रवेश करना।

पीठिका—(नैपर्स) किसी प्राध्यापकका पद या का' (हुक्ति)।

पीठांतक—(वेलो पेरिल) वह अवधि कि चीन, जापान आदि देशोंकी पीठी जातियाँ अपनी शक्ति बढ़ाकर कहा मारे मंगलपर छा न जायें।

पुनरुत्थान—(पास प्राइवसन) कारखाने आदिमें किसी वस्तुका बही सल्लयमें या बड़े पैमानेपर किया गया उत्पादन, समूहीउत्पादन।

पुनरुत्थान—(रेप्लेस) जो पुनरीके रूपमें बना हो, जो पुनरीके रूपमें किसी अवसरके अधिक हो।

पुनरुत्थान—(रेप्लेस) दे० 'रेप्लेस'।

पुनरुत्थान—(री-इन्फेन्समेंट) दे० 'पुनरुत्थान'।

पुनरुत्थान—(री-जार्नेमेंट) पुनः अक्ष-संसार बढ़ाना, सेवाकी नये-नये आधुनिक शक्तियोंसे सज्जित करना; किसी देशकी अक्षविहीन की गयी सेवाओंकी पुनः अक्षादिसे युक्त करना।

पुनरावेष्टन-पु० (अपील) दे० 'पुनर्वाच-प्रार्थना'।

पुनरीक्षण-पु० (रीवीजन) संशोधन वा मूलसुधार आदि की दृष्टिसे मुकदमेकी फाइल, लेख, पुस्तक आदिकी मामली, आव-व्ययके आँकड़े आदि फिरसे देखना या पढ़ना।

पुनरीक्षित-वि० (रिवाइज्ड) संशोधन या सुधारकी दृष्टिसे जो फिरसे देख लिया गया हो।-**पाठ-पु०** (रिवाइज्ड वर्शन) वह विवरण, वक्तव्य आदि जो फिरसे मनी ऑर्नि देख लिया, जाँच लिया गया हो।

पुनरुज्जीवन-पु० (रिवाइवल) पुनः जीवन दान देना, फिरसे उन्नतिप्री और ले जाना।

पुनरुत्थान-पु० (रिनेसैंस) कला और साहित्यका पुनरुत्थान वा नये रूपसे होनेवाली उन्नति, नवोत्थान।

पुनरीकीकरण-पु० (री-यूनिवर्स) दो वस्तुओं, दलों आदि-को मिलाकर फिर एक कर देना।

पुनर्निष्पत्ति-जी० (री-इंस्टेटमेंट) किसी पद या कामपर फिरसे नियुक्त कर दिया जाना।

पुनर्वाचप्रार्थना-जी० (अपील) पुनर्विचारके लिए कोई मामला उच्चतर न्यायालयमें रखना, अपील।

पुनर्वाचप्रार्थी-पु० (एपेलेंट) वह जो अपना व्यवहार 'मामला' पुनर्विचारके लिए किसी उंचे न्यायालयमें रखे।

पुनर्मुद्रित-वि० (री-प्रिंटेड) जो फिरसे छपा गया हो।

पुनर्मूल्यन-पु० (री-वैल्यूएशन) फिरसे मूल्य आँकना या लमाना; मुद्रा आदिका फिरसे मूल्य निश्चित करना, ठहरना।

पुनर्मुख कोण-पु० (रीफ्लेक्स एंगिल) वह कोण जो दो समकोणीयें बना, किंतु चार समकोणीयें छोटा हो।

पुनर्वाच-पु० (री-इन्विजिडेशन) जिनका घर-बार नष्ट हो गया हो या जो उदासित हो गये हों उन्हें फिरसे बसाना।

पुनर्विचारन्यायाधिकरण-पु० (अपेलेट ट्रिब्यूनल) मामलों, मुकदमोंपर पुनः विचार करनेवाली अदालत।

पुनर्विचारन्यायालय-पु० (कोर्ट ऑफ अपील) छोटी या मानवत अदालतोंमें निर्धारित मामलोंपर पुनर्विचार करनेवाला न्यायालय।

पुनर्विचारप्रार्थी-पु० (एपेलेंट) दे० 'पुनर्वाचप्रार्थी'।

पुनर्विचारन-पु० (री-इन्वेस्टिगेशन) फिरसे कोई विधान, अधिनियम आदि बनाना, पुनर्विधायन।

पुनर्विलोकन-पु० (रीव्यू) देशदेश आदिपर फिरसे विचार करना; बीसी हुई घटनाओंकी मंजिस्त आलोचना।

पुरःस्थापन-पु०, **पुरःस्थापना-जी०** (इंस्टोपेशन) पुरः स्थापित करनेकी क्रिया।

पुरःस्थापित करना-स० कि० (टु इंस्टोप) (समा आदिमें) औपचारिक रूपसे रखना या सामने लाना।

पुराकेख-पु० (आरकाइव्स) पुराने सरकारी अभिलेख।-**पाल-पु०** (आरकाइविस्ट) राज्यके पुराने अभिलेखों आदिकी सुरक्षित रूपसे रखनेवाला अधिकारी।

पुरोहितवर्तन-पु० (इथरेरिकी) (रोमन कैथोलिकोंमें) पुरो-हितोंकी शासनव्यवस्था; दीर्घाधिक पादरीवर्ग, क्रमानुगत अधिकारियोंका वर्ग।

पुष्टीकरण-पु० (रेडिफिकेशन) दे० 'अनुसमर्थन'; किसी कथन वा कृत्यकी ठीक मानकर उसका समर्थन करना।

पुस्तकाव्यय-पु० (लाइब्रेरियन) दे० 'ग्रंथालयिक'।

पुस्तक-ढाक-पु० (बुकपीस्ट) छपी हुई पुस्तक, संवादपत्र या उसमें छपनेके लिए भेजे जानेवाले लेख, समाचार आदि टाक-विभाग द्वारा निर्धारित विशेष रिआयनी दरसे भेजने-की रीति।

पूँजीगतमूल्य-पु० (केपिटल वलुसपेडिचर) उत्पादक कार्यों-के लिए-जैसे रेकों, नहरों इत्यादिके निर्माणार्थ-किया जानेवाला व्यय।

पूँजीवाद-पु० (केपिटलिज्म) वह आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पादनके तथा वितरणके बी साधन प्रायः थोड़ेसे धनी आदमियोंके ही हाथमें होते हैं, जो अधिकसे अधिक मुनाफा पानेकी दृष्टिसे अपनी इच्छाके अनुसार उनका प्रयोग और संचालन करते हैं।

पूँजीवादी-पु० (केपिटलिस्ट) पूँजीवादके सिद्धांतोंका प्रयोग वा अनुसरण करनेवाला।

पूषन-पु० (प्यूट्रीफैक्शन) फोड़े आदिमें मवाद आ जाना।

प्राणीत मृत्ति-जी० (अटुव्डिजल मॉइल) दे० 'जलीय मृत्ति'।

पूर्णधिकारप्राप्त दूत-पु० (मिनिस्टर प्लेनोपेटेंसिअरी) वह दूत जिसे स्वयंसेवक काम लेते हुए व्यवस्थित निर्णय करनेका पूरा अधिकार दिया गया हो।

पूर्णअधिवेशन-पु० (फ्लोरी मेशन) किसी सभा, संस्था आदिका पूरा अधिवेशन-वह अधिवेशन जिसमें उसके सभी सदस्य सम्मिलित हो सकें।

पूर्वविभागा-पु० (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) नामीरातका मुख्यतः मार्गजनिक निर्माण-विभाग।

पूर्वसंस्था-जी० (वैरिटेबिल इतिवृत्तन) कुर्जों, ताकान आदि धर्मार्थ बनवानेवाली संस्था।

पूर्ति-जी० (सप्लाई) उपभोक्ताओंकी आवश्यकता पूरी करनेके लिए उन्हें चीजें देना; जुटाना, समावोग।

पूर्वधिकारी-पु० (सप्लायर) जनताकी आवश्यक-कामकी कतिपय वस्तुओं-छोहा, सीमेंट, कपड़ा आदिके मनुष्य वितरणको व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

पूर्वकालक अधिकार-पु० (राइट आफ प्री-एंपशन) कोई संपत्ति आदि औरोंमें पहले खरीद सकनेका अधिक अधिकार, हजमुफा।

पूर्वता, पूर्वसंज्ञता, पूर्वस्थानीयता-जी० (प्रेसिडेंस) समय वा स्थान आदिकी दृष्टिसे पहले रखे जाने, विचार किये जाने आदिका माव।

पूर्वस्थिति-वि० (प्रीइस्टेड) (वह प्रत्येकादि) जिसमें वास्तविक स्थितिसे पहलेकी स्थिति दी गयी हो।

पूर्वधारणा-जी० (प्रीजुडिस) किसीके पक्ष या विपक्षमें पहले से झिर की गयी धारणा, कायम कर ली गयी राय।

पूर्वधारणाविस्तृत, पूर्वधारणायुक्त-वि० (प्रीजुडिस्ट) जिसने पहलेसे ही किसीके पक्ष या विपक्षमें मन झिर कर लिया हो; (वह कथन) जो पूर्वधारणाके आधारपर किया गया हो।

पूर्वस्त्रावनिक-वि० (प्री ट्राइब्यूनल) प्रत्येक समयकी

बादके पहलेका ।

पूर्वावधारण-पु० (रस्तीरेक्षण) पहलेकी स्थितिमें ला देना, पूर्वचा देना; फिर बाध कर देना, प्रमादी बना देना ।

पूर्वसम्मोदन-पु० (प्रीतिवस संकलन) किसी आदेश, नियमादिके संबंधमें उच्चाधिकारियोंसे पहलेसे ही प्राप्त कर ली गयी स्वीकृति या पुष्टि ।

पूर्वस्थिति-स्थापन-पु० (रेस्टिट्यूशन) (कन्वैलेपन आदिके कारण) पुनः पूर्वस्थितिकी प्राप्त हो जाना, प्रत्यास्थापन ।

पूर्वांशमान-पु० (कोरकास्ट) निकट भविष्यमें होनेवाली वर्षा, ठंड, पैदावार या किसी समाहित घटना आदिके संबंध में पहलेसे किया गया अनुमान ।

पूर्वांशुमित निष्कर्ष-पु० (कोरगान कॉनक्लूजन) वह निष्कर्ष या नतीजा जिसका अनुमान पहलेसे ही कर लिया गया हो ।

पूर्वापराधी-पु० (विस्ट्रीडीटर) वह मुकदमा या कंडी जो पहले करे बार अपराध (जुर्म) कर चुका हो ।

पूर्वाभिव्य-पु० (विहसैल) क्षीप्र सेले जानेवाले किसी नाटकका या निर्धारित समयपर किये जानेवाले इमले आदि का पहलेसे किया गया पूरा अभिनय या अभ्यास ।

पूर्वाधानता-ली० (प्रोकाशन) अनिष्ट या हानिकर परिणामकी संभावनाका स्वरूप कर पहलेसे मानवान हो जानकी किया ।

पूर्वाह्वारण-पु० (मेजीरेंट) पहलेकी कोई घटना या आमका जो बादकी बैसी ही घटनाओंके लिए उदाहरण या नमूनेका काम दे; किसी व्यावसायिकका वह अभिनिर्णय वा कार्यविधि जो आदेश या नजीरका काम दे; नजीर ।

पूर्वापच-पु० (प्रोकाशन) अनिष्ट या हानिकरी संभावना रोक्नेके लिए पहलेसे किया गया उपाय ।

पृथक्तावादी नीति-ली० (आइसलैण्डनिज्म) (द्वितीय महायुद्धके पूर्व) अमेरिकाके कतिपय राजनीतिज्ञों तथा राजनेताओंका वह मत कि अमेरिकाकी यूरोपीय क्षमकोंसे पृथक् रहना चाहिये ।

पृथक्तासम-नीति-ली० (एपारथाइड पालिसी) कुछ लोगोंकी अन्य लोगोंसे-दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंकी यूरोपियनोंसे-पृथक् बसनेकी नीति ।

पृथक्कृत बुद्ध-पु० (रिपरागर्ग धनशन) पीछे इटनी हुई सेनाके प्रेमाम, पिछले हिस्सेकी रक्षा करनेवाली टुकड़ियों द्वारा शत्रुमें किया गया बुद्ध, अनुपलब्ध संघर्ष ।

पृष्ठ क्षीर्षक-पु० (गैर रेडक्लाइन) दे० 'पनाक्सीरिफ' ।

पृष्ठज्ञा-ली० (सिकमण) समाचारपत्रके पृष्ठकी समावृत्ति ।

पृष्ठकन-पु० (एंगार्समेंट) किसी लेख, पत्र, भनादेश आदिकी पीठपर हस्ताक्षर करना, समर्पण आदिके रूपमें कुछ लिख देना या किसीकी कुछ दिवें जाने आदिका लिखित आदेश देना; समर्पण करना ।

पृष्ठलिख-वि० (पंडास्ट) जिसपर वा जिसकी पीठपर हस्ताक्षर कर दिया गया वा कुछ लिख दिया गया हो ।

पोतघाट-पु० (पीर) पथर, कोई या लकड़ीका बना वह चतुरा जैसा ढाँचा जो मनुष्यकी गरक दीका हो और जिसपर जहाजसे उतरनेमें आसानी हो ।

पोतध्वज-पु० (एनसाइन) जहाजपर कहरानेवाला राष्ट्र-विशेष वा नौदलविशेषका प्रतिपाद्यक ध्वज ।

पोतमिसाण-उद्योग-पु० (शिप-डिलिग इंडस्ट्री) जहाज बनाने, तैयार करनेका उद्योग वा व्यवसाय ।

पोत-संस्तरण-पु० (लोडिंग एंशिए) किसी नये बने हुए जहाजकी पानीमें उतारना वा तैराना, जलावतरण ।

पोताधिरौध-पु० (एंगार्गो) किसी देशके नौसेना-विभाग द्वारा बंदरगाहोंपर अन्य देशके जहाजोंके आने वा बहाने जानेपर कुछ समयके लिए लगाया गया प्रतिबंध ।

पोषक तत्त्व-पु० (विटामिन) दे० 'खाद्योन्न' ।

पोषिका-ली० (एलिमेंटरी फैलाज) गलेके नीचेमें शुरू होनेवाली नली जिसमें भोजन पेटमें पहुँचता है और जो आगे छोटी तथा बड़ी अंतर्धियोंमें मिल जाती है, खाद्य-नलिका ।

पौंडपाचना-पु० (स्टॉल्म बैसेंस) (अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यादिके परिणामस्वरूप) ब्रिटेनसे किसी देशके पाबनेकी वह राकम जो बैंक आफ इंग्लैंडमें जमा रखनी है और जो उसके साथ हुए समझौतेकी शर्तोंके अनुसार क्रमशः चुकायी जानी है ।

पौष्टिक-वि० (नैट्रिक) (वक्त ज्ञान) निम्नमें द्वांघ या मदन पैदा हो गयी हो ।

प्रकाश-पु० (लाइट) वह भौतिक शक्ति जिसमें द्वारा हम वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं ।

प्रकाशान-पु० (पब्लिकेशन, पब्लिशिंग) छपवाकर जनताके सामने रखनेका कार्य; वह पुस्तकालि जो छपवाकर प्रकाशन की गयी हो ।

प्रकाशपरावर्तक-पु० (रीफ्लेक्टर) शीशे आदिका वह टुकड़ा या आला जो कहींमें प्रकाश ग्रहण कर उसे अन्य दिशामें प्रक्षेपित करे, वह यंत्र जो किसीकी छाया या प्रतिबिम्ब ग्रहण कर दूसरी ओर प्रतिफलित करे, प्रकाश-प्रतिफलक, प्रतिशेषक ।

प्रकाशप्रक्षेपक-पु० (सर्वलाइट) दे० 'अन्वेषक प्रकाश' ।

प्रकाशवर्ष-पु० (लाइट ईयर) वह दूरी जो प्रकाशकी किरणें एक वर्षमें तय करती हैं-लगभग ५८ करोड़ ७० अरब मील (एक सेकेंडमें १ लाइट ८६ हजार मील) ।

प्रकाशस्तंभ-पु० (लाइट हाउस) समुद्रमें बनाया गया वह स्तंभ या मीनार जिसपर रातमें जहाजोंकी चट्टानों या अन्य खतरोंमें बचानेके लिए नेत्र रोशनी की जाती है; रातमें विमानोंका पथ-प्रदर्शन करनेके लिए हवाई अड्डों पर दायें-बायें घूमनेवाला आकाश-दीप ।

प्रकीर्णलेखा-पु० (डिस्टेन्सियस अकाउंट) फुटकर आय-व्ययका हिसाब ।

प्रकीर्ण-पु० (कॉरी) विधानमंडल आदिके बाहरका कमरा, बरामदा, प्रांगण वा अन्य स्थान जहाँ बैठकर सदस्यगण निजी वीरपर बातचीत करते और एकदूसरों आदिमें मिलते हैं, संयत्त । -**बार्सल-ली०** (कॉन्सीटॉक) सदस्य वा विधानसभाके बाहर किसी स्थानपर की जानेवाला बातचीत ।

प्रकल्प-पु० (स्केच) प्रगति वा विकासके सिलसिलेमें (बीचमें) पब्लिशका कोई स्थान या कालमाध्य यात्रा आदिके

कम्पनी विशेष स्थिति या कुछ समयतक ठहरनेका स्थान, मंचिक ।

प्रक्रिया-सी० (प्रोसेस) किसी चीजके बनने, निकलने, पैदा होने आदिकी क्रिया ।

प्रक्षालनपात्र-पु० (लैवेटरी) हाथ-मुँह आदि धोनेका प्रकोष्ठ; दे० 'शौचालय' भी ।

प्रक्षयवित्त-वि० (प्रोमफ्रुटिड) (बह अथवादेश, आइसि, राज्यदेश आदि) जो सर्वसाधारणकी विस्थापित कर दिया गया हो, जिसकी विधोषणा कर ही गयी हो ।

प्रगतिरीच-पु० (सेट बैक) प्रगति या उन्नतिमें शाय पड़ना, प्रगतिमा रुक जाना ।

प्रगतिवाद-पु० (प्रोग्रेसिज्म) समाज, माहिल आदि की निरंतर उन्नतिपर जोर देनेका मिश्रता ।

प्रगुणता अर्गल-पु० (एफिशेंसी बार) (सरकारी या अर्द्ध-सरकारी) नौकरीमें बेतनबुद्धिके मार्गमें आनेवाली वह बाधा जो आवश्यक बोधयत्ना या दक्षताके अभावमें उपपन्न हो, दक्षता-अर्गल ।

प्रघोषक-पु० (एनाउन्सर) दे० 'अभिज्ञापक' ।

प्रचारकार्य-पु० (प्रोपेगैंडा) विचारों, मिश्रताओं, विशेष दलोंके समानाचारी आदिका दूसरोंमें मण्डित रूपमें प्रचार करनेका कार्य ।

प्रजाक्षेत्र-पु० (इन्सपेक्शन्) राजसत्ताके विरुद्ध प्रजाओं व्याप्त क्षेत्र या विद्रोहकी भावना ।

प्रजासिवात भेदभाव-पु० (रेशिडल डिस्क्रिमिनेशन) एक प्रजातिकी अन्य प्रजातिवर्गोंमें भेद मानकर उनमें भेदभाव करना, मिश्र-मिश्र प्रजातिवर्गोंके प्रति समानताकी नीति न बरतकर उनमें अंतर करना ।

प्रजातिसंहार-पु० (जेनोसाइड) किसी देशकी सरकार द्वारा एक सुनिश्चित नीतिके अनुसार राज्य सीमाके भीतर रहनेवाली किसी अल्पसंख्यक जाति या वर्गके विनाशका कार्य ।

प्रतिधि-पु० (सीक्रेट एजेंट) गुप्तचर ।

प्रतिकर-पु० (कंपेनसेशन) जिस भूमि, मण्डप आदिपर अधिकार कर लिया गया हो उसके बदलेमें, मुआवजेकी तरह, ही जानेवाली रकम ।

प्रतिक्रिया-सी० (रिएक्शन) सुधार, उन्नति या क्रांतिके विरुद्ध होनेवाली क्रिया या गति । -**बाध-पु०** (रिएक्शनरी) वह जो उन्नति या क्रांतिका विरोधी हो ।

प्रतिक्रियात्मक सहयोग-पु० (रेस्पॉन्सिब कोऑपरेशन) मध्यमके जवाबमें या उसके प्रतिक्रियात्मक रूप किया जानेवाला सहयोग ।

प्रतिक्षेपक-पु० (रीफ्लेक्टर) दे० 'प्रकाशपरिवर्तक' ।

प्रतिग्रहण-पु० (स्टैपमेंट) खुरसाने, कणकी रकम आदिके बदलेमें व्यापारिकके आदेशमें किसी संपत्ति आदिपर अधिकार कर लेना ।

प्रतिग्राहक-पु० (रिसीवर) मगनेमें वही कुछ संपत्ति या जो व्यक्ति दिवालिखा हो गया हो उसकी संपत्ति होनेवाली आमदनी लेने और उसकी निगरानी करनेवाला अधिकारी ।

प्रतिज्ञा-पु० (एफमेंशन) (विधानमभा आदिमें) किसी

तरफकी शपथ ग्रहण करनेके बजाय सत्यनिष्ठाके साथ और गंभीरतापूर्वक स्वीकार करना या प्रतिज्ञा करना ।

प्रतिज्ञा-पत्र-पु० (कॉमिमेंट) दे० 'प्रतिशुचिपत्र' ।

प्रतिज्ञा-पत्र-सुत्रा-सी० (सीमिलरी नोट) वह लेख या पत्र जिसमें कोई व्यक्ति वह प्रतिज्ञा करता है कि मैं अमुक श्रितिकी या जब कभी भी मौनपर अमुक व्यक्ति की या इसके बाहरीकी इतना रूपया दूँगा, बचनपत्र ।

प्रतिध्वनय-पु० (इकोरिंग) ध्वनिहरीके सामनेकी किसी वस्तुमें टकराकर वापस आनेकी क्रिया, ध्वनिके प्रत्या-वर्तित होकर सुनाई देनेकी क्रिया ।

प्रतिनिधिपत्र-पु० (पावर ऑफ एटर्नी) प्रतिनिधिरूपमें कार्य करनेका अधिकारपत्र, 'मुख्तारनामा' ।

प्रतिनिवाह-पु० (रीवरमरेशन) निनाद या शब्दका टकराकर वापस आना, प्रतिध्वनि ।

प्रतिनिपुण-वि० (डेप्टेंड) अधिकार या कार्य सौंपकर जो किसी दूसरेके स्थानपर काम करनेके लिए नियुक्त किया गया या रखा गया हो ।

प्रतिनिपुण-सी० (डेप्टेंशन) किसीके स्थानपर किसी अन्य व्यक्तिकी नियुक्त करना; दूसरेके स्थानपर कुछ समयतक काम करना किसीकी किसी विशेष कार्यके लिए नियुक्त करके भेजना ।

प्रतिपक्षनेता-पु० (कौन्टर आफ दि अपोसिशन) ससद या विधानसभामें सरकारी पक्षका विरोध करनेवाले मुख्य दलका नेता ।

प्रतिपक्षक-पु० (काउंटर फोर्स) चैककी किताब, बालान-बही, रसीद-बही आदिमें लगा रहनेवाला वह डफका जो देनेवाले या भेजनेवालेके पास ही रह जाता है और जिसपर किसीकी छिपे हुए दूसरे डफकी प्रतिलिपि या मक्षिप विवरण लिखा रहता है ।

प्रतिपक्षी-पु० (प्रॉक्सि) दे० 'प्रतिपुरुष' ।

प्रतिपक्ष विक्री कर-पु० (माल्टीफि सेल्स टैक्स) एक ही मालपर बार-बार लगनेवाला विक्री कर ।

प्रतिपरिपक्षपत्र-पु० (रिबर्स काउंसिल बिल) (ब्रिटिश शासनकालमें) लंदनस्थित भारतमंत्रीके नाम जारी की गयी हुडिबॉ जिनका मुगलान इंग्लैंडमें (विदेशोंमें) होना था । (भ्यापारसमुच्चन भारतके प्रतिकूल होनेपर इनकी आवश्यकता पड़ती थी। इन्हें "उलटी हुडिबॉ" भी कहते थे ।)

प्रतिपरीक्षण-पु० (कास-ग्रन्थामिनेशन) गवाह आदिका बयान हो चुकनेपर सत्यसत्यका या छिपायी गयी बातोंका पता लगानेके लिए उल्टे-सीधे प्रश्न करना, साक्षि-परीक्षा ।

प्रतिपर्व-पु० (काउंटर फोर्स) दे० 'प्रतिपक्ष' ।

प्रतिपालक-अधिकारण-पु० (कोर्ट ऑफ बार्ड्स) अल्प-वयस्की या अयोग्य व्यक्तियोंकी संपत्तिका प्रबंध तथा रक्षण करनेवाला सरकारी विभाग ।

प्रतिपीडन-पु० (रीप्रहजल) (शत्रु द्वारा की गयी) हानिके बदले हानि पहुँचाना, संपत्ति आदिपर अधिकार कर लेना या छीन लेना ।

प्रतिपुरुष-पु० (प्रॉक्सि) वह व्यक्ति जिसे किसी मभा

आदिमें किसीके प्रतिनिधिरूपमें काम करने, बोट देने आदिका अधिकार दिया जाय। —बन्ध-पु० (मॉन्सी) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्तिको किसीके बदले कुछ काम करने, बोट बाढ़ने आदिका अधिकार दिया जाय। प्रतिप्रेषण करना—स० कि० (रेफर) कोई आवेदनपत्रादि न्यायिक या भावव्यक्त कार्रवाईके लिए किसी ऊँचे प्राधिकारीके पास भेजना; कोई विवादास्पद वा संदेहयुक्त विषय उलझन बूर करने, संशय मिटानेके लिए किसी विशेषज्ञ या जानकारके पास भेजना।

प्रतिकलक-पु० (रीप्लेक्टर) दे० 'प्रकाशपरावर्तक'।

प्रतिबंध-पु० (रेंगमो) विदेशीको कोई विशेष माल भेजने, कण देने आदिपर लगायी गयी रोक; कोई समाचार आदि निर्धारित समयसे पूर्व प्रकाशित करनेकी मनाही; (प्राविजो) किसी अधिनियम आदिकी वारमें वा किसी प्रलेख आदिमें पढ़नेवाली कठिनाईसे बचनेके लिए लगायी गयी छत या बतया गयी उपाय, बरतुक।

प्रतिबाधित-वि० (प्रोन्ट्रडेड) जिसमें पहलेसे ही बाधा डाल दी गयी हो, जो पहलेसे रोक दिया या रोक रखा गया हो।

प्रतिभाष्य-वि० (रेलेविक) दे० 'प्रतिभूषण'।

प्रतिभू-पु० (स्पूटो) किसीकी जमानत करनेवाला, उसकी ओरने—जराकतमें हाविर होने, रकम चुकाने वा कोई प्रणिष्ठा पूरी करनेके लिए—अपने आपकी बचनबद्ध करनेवाला, जामिन।

प्रतिभूति-स्त्री० (बेल, सिम्पुटिटी) प्रतिभू द्वारा की गयी जमानत; कोई काम वा बचन पूरा करने आदिके लिए दिया गया निश्चित आश्वासन वा उसके बदले जमा की गयी वस्तु वा धन; कण आदिके भ्रमण-स्वरूप जारी किया गया सरकारी कागज, साक्ष्यपत्र।

प्रतिभूषण-वि० (रेलेविक) (वह अपराध) जिसमें किसीके जामिन बन जाने वा जमानत देनेपर अभियुक्त मामलेका निपटारा होनेक रिश्ता भूट दिया जाता है, प्रतिभाष्य।

प्रतिमान-पु० (स्टैंडर्ड) मापने या योग्यता, आदिका निर्धारण करनेके लिए लिए किया हुआ मानदण्ड।

प्रतिरक्षा-स्त्री० (डिफेंस) किन्हींके आक्रमणसे अपनी रक्षा करनेका कार्य वा व्यवस्था; रूपाये गये अभियोगसे अपना बचाव करने या अपनी निर्दोषिता दिखानेका प्रयत्न, सकार्य। —व्यव-पु० (डिफेंस एक्स्पैक्टिक्) किसी देशकी प्रतिरक्षा आदिके लिए किया जानेवाला व्यय।

प्रतिरूप-पु० (रेपेसिमेन) किसी वाणि, प्रवर्ग आदिकी वह इकाई जो गुण, स्वरूप आदिमें समस्त वाणि वा प्रवर्गका प्रतिनिधित्व कर सके वा जिससे उस प्राति वा वगकी अन्य वस्तुओंका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय; किसी वस्तुका वह योका अंश जिससे अंशोंके गुण, स्वरूप आदिका यथेष्ट परिचय मिल जाय, नमूना, वाक्सी।

प्रतिष्ठि-स्त्री० (रिकवरी) किसीकी पहलू दी हुई (वा खोयी हुई) वस्तु पुनः प्राप्त करना।

प्रतिष्ठिपिक-पु० (कॉपीहस्त) किसी लेख, पत्रादिकी प्रति-लिपि वा नकल करनेवाला।

प्रतिष्ठिपि-वि० (कॉपीह) जिसकी प्रतिष्ठिपि कर की गयी हो।

प्रतिष्ठिपि-पु० (कॉपीहस्त) दे० 'प्रतिष्ठिपिक'।

प्रतिष्ठिपि-पु० (ट्रांसक्रिप्शन) किसी पत्र, पुस्तक आदिसे कोई चीज खोली त्यों उतारना वा फिर उसी तरह लिखना।

प्रतिष्ठिपि-वि० (रिवशनीरी) (खानादिकी रकम) जो मुख्यके बाद प्राप्त हो; जो उच्चराधिकारके रूपमें भोग्य हो।

—अधिखाना-पु० (रिवशनीरी बीनस) बीमा-पत्रक आदिपर भिन्नेवाला वह अधिखाना (बीनस) जो मुख्यके बाद ही उसके उत्तराधिकारियोंको प्राप्त हो सके।

प्रतिष्ठिपि-पु० (रिपोर्ट) किसी कदना, कार्य, योजना आदिके संबंधमें छानबीन, पृथक्ता आदि करनेके बाद तैयार किया गया विवरण जो किसी अधिकारी या सभा आदिके सामने प्रस्तुत करनेको हो, आख्या।

प्रतिष्ठिपि-कर-पु० (कैपिटेशन टैक्स) प्रतिव्यक्तिके विसासे लगाया गया कर।

प्रतिष्ठिपि-पु० (कार्टरबेकिंग क्यूटी) आयात माल पर इस उद्देश्यमें लगाया गया कर जिससे वह स्वदेशमें प्रस्तुत की गयी वस्तुओंमें अधिक मस्ता न बिक सके, (वैट) द्वारा पहलेसे लगाये गये किसी शुल्कका अनिवार्य प्रभाव व्यर्थ करनेके लिए लगाया जानेवाला आयात कर।

प्रतिष्ठिपि-पु० (कॉर्बिनेट) वह पत्र वा प्रलेख जिसमें किसी बातकी प्रतिष्ठा की गयी हो; कोई बात करने या न करनेके संबंधमें आपनमें किया गया लिखित समझौता।

प्रतिष्ठिपि-पु० (रिट आफ प्रोविडिशन) किसी मामले में सुनवाई रूट कर देनेका उच्च न्यायालय द्वारा छोटी मान हन अदालतको दिया गया लिखित आदेश।

प्रतिष्ठिपि-पु० (पावर आफ वोटो) किसी देश, राष्ट्रपति या प्रधान शासकका विधानसभा द्वारा स्वीकृत प्रस्तावको अमान्य ठहरानेका अधिकार; सुरक्षापरिषद द्वारा स्वीकृत किसी प्रस्तावको न मानने या कार्यान्विष्ट होनेसे रोक देनेका पाँच महा-राष्ट्रोंमें प्रत्येकको प्राप्त विशेषाधिकार।

प्रतिष्ठिपि-पु० 'मिमीरिटम आफ अमोमिनेशन' (बिना व्यापारिक प्रत्या वा प्रमदलका मान, उद्देश्य आदि) बीरा देनेवाला वह लेख जो उसकी मंजूरापनके पूर सार्वजनिक रूपमें प्रकाशित किया जाय और धिक्क-लिम्का संजीवन किया जाय।

प्रतिष्ठिपि-पु० (रिवोक्शन) किसी अज्ञात, आदेश, अनुष्ठान, वचन आदिकी वापस लेना, रद्द कर देना।

प्रतिष्ठिपि-पु० (रिवी सिन्ड्रेटी) सिन्डिकी अनुपस्थितिमें उसके स्थानपर काम करनेवाला।

प्रतिष्ठिपि-स्त्री० (पेरिकल गवर्नमेंट) किसी देशमें प्रतिष्ठित सरकारकी प्रतिस्पर्धा या विरोधमें स्थापित अ। सरकार की उस सरकारके साथ-साथ ही कुछ मांगों पर शासन करने आदिका प्रयत्न बरे, ममकक्ष सरकार।

प्रतिष्ठिपि-पु० (सिमेट्री) शरीरके वा किसी रचना, अवस्था किसी वस्तुके विभिन्न अंगोंमें आकार-प्रकार, बनाव आदि-संबंधी वह उचित अनुपात जो उसे सुंदर और

मनीरमा बनानेमें सहायक हो ।

प्रतिसारण-पु० (ट्रेस) घावपर मरहमपट्टी करना (सुधुन) ।

प्रतिसारित-वि० (ट्रेस) जिसकी मरहम-पट्टीकी गयी हो ।

प्रतिस्थापन-पु० (मस्टिट्यूशन) दे० 'प्रतिवस्थापन' ।

प्रतिवस्थापित-वि० (काउंटरसाईड) (वह प्रलेख आदि) जिसपर पहलेमें किये गये हस्ताक्षरके सामने किसी अन्य अधिकारी आदिके हस्ताक्षर किये गये हों; जिसपर किसीके हस्ताक्षरोंकी साक्षात्कृत करनेके लिए हस्ताक्षर किये गये हों ।

प्रतिवस्थापन-पु० (मस्टिट्यूशन) कोई काम करने या बतानेके लिए एक आदमी वा एक वस्तुके बदलेमें, स्थानमें, दूसरा आदमी वा दूसरी वस्तु रखना ।

प्रतीकव्यूहन-पु० (टीकन कूट) (अपन; विशेष या असंतोष प्रकट करनेके लिए) आय व्ययकी किसी मदमें केवल प्रतीकके रूपमें नाममात्रकी कमी करानेका प्रस्ताव, आक्षेपिक व्यूहन ।

प्रतीपगामी-वि० (ग्रेटोरेमिव) विरुद्धाचरण करनेवाला, पीछेकी ओर लौटनेवाला ।

प्रतीकवाद-पु० (सिंबालिज्म) किसी वस्तु वा विषयको किसीके प्रतीकके रूपमें वर्णन करने या माननेका मित्रात ।

प्रतीक्षागृह, प्रतीक्षाकक्ष-पु० (वॉटिंग रूम) रेलगाड़ी, बस, विमानादिये भ्रममग्नवक प्रतीक्षा करनेवाले यात्रियोंके बैठनेवाला कमरा या छायादार स्थान; किसी अधिकारी, बड़े आदमी आदिमें मिलनेवालेके लिए बैठकर प्रतीक्षा करनेका कमरा वा घर ।

प्रत्येकन-पु० (ट्रिगिंग, क्विगिंग) कुछ दिनों आकृति आदिको ज्योंकी त्यों प्रतिकृति तैयार करना, विशेषकर उभरने, ऊपर पाण्डशी पतला कामज वा ममिपत्र नीचे रखकर ।

प्रत्यय-पु० (क्रेडिट) साक्ष, (कण चुकानेकी क्षमतामें) विश्वास, प्रतीति । -**पत्र-पु०** (लेटर) एक क्रेडिट किसी व्यापारी, महाजन आदि द्वारा किसी व्यक्तिको दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि आवश्यकता पड़नेपर हमें इतना धन हमारे (व्यापारी वा महाजनके) खातेमें या कणस्वरूप दिया जाय ।

प्रत्यर्पण-पु० (एक्स्चेंजिशन) किसी देशमें भागकर भागे हुए अपराधीको पुनः उक्त देशके उपयुक्त अधिकारीके हाथ मौप देना; (रिफंड) पहलेमें लौट्टे हुए या बचल की हुई रकम लौटाना ।

प्रत्यावयव-पु० (रेस्टिट्यूशन) पुनः लौटा दिया जाना, हस्तप्रतिदान ।

प्रत्याभूति-खी० (गारंटी) किसी संविदा आदिकी शर्तोंके पालनके लिए जमानतके रूपमें दी गयी वस्तु; रस बातकी लिखित वा अलिखित जिम्मेदारी कि कोई बात, घटना आदि सच्ची, साधार और विश्वसनीय है ।

प्रत्याव-खी० (रिटर्न) बदलेमें मिलनेवाली आमदनी वा लाभ, प्रतिफल ।

प्रत्यापुछ-वि० (इंक्वायरेट) जो प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया हो वा जिसे विशेष कामके लिए कुछ अधिकार प्रदान किया गया हो ।

प्रत्यापोजन-पु० (रेकट ऑफ डेलीगेशन) अपने कर्तव्य, शक्तियाँ आदि किसी दूसरे व्यक्तिको सौंपना वा दे देना ।

प्रत्यारोप-पु० (काउटर चार्ज) वह आरोप जो किसी आरोपके जबाबमें किया जाय ।

प्रत्यावेदन-पु० (काउंटर स्टेटमेंट) किसी वक्तव्य; कथन आदिके जवान वा विरोधमें कही गयी बात ।

प्रत्याधार्म-अ० (रन एंडिसिपेशन) किसी बातका होना पहलेमें ही पूर्ण निश्चिन मान लेनेकी स्थिति वा प्रतीक्षा ।

प्रत्यासित-वि० (पेटिसिपेटेड) जिसकी आज्ञा या अपेक्षा पहलेमें की गयी हो, जिसका पहलेमें अनुमान किया गया हो (आप, पढ़ी, वृद्धि आदि) ।

प्रत्यासित उत्तराधिकारी-पु० (एयर एक्स्पेक्टेंट) वह जिसके उत्तराधिकारी बननेकी आशा हो ।

प्रत्याहार-पु० (विब्रकाल) आदेश, प्रस्ताव, वचन, शब्दादिका वापस ले लिया जाना ।

प्रत्याह्वयन-पु० (रिकॉल) किसी स्थान वा घरसे किसी अधिकारी या बिदेस गये हुए प्रतिनिधिकी वापस बुला लेना ।

प्रत्युत्तर-पु० (रिजॉइंडर) मिले हुए उत्तरका उत्तर, वह जबाब जो किसी उत्तरके उत्तरमें दिया जाय ।

प्रथमदृष्टि-अ० (प्राइमफेसी) प्रथम बार देखनेपर ।

प्रथमदृष्टिसिद्ध-वि० (प्राइमफेसी) पहली बार देखनेसे उत्पन्न या सिद्ध जान पड़नेवाला ।

प्रथमाक्रमण-पु० (प्रेमेशन) आक्रमणका आरम्भ या पहला कार्य, लड़ाईकी पहल । -**कर्ता, -कारी-पु०** (प्रेमसर) आक्रमणमें पहल देनेवाला, आक्रमणात्मक कार्य आरम्भ करनेवाला ।

प्रथमोपचार-पु० (फर्स्ट एट) किसी बायल वा आहत व्यक्तिका उपयुक्त चिकित्सकी सहायता प्राप्त होनेके पूर्व किया गया उपचार, प्राथमिक उपचार । -**केंद्र-पु०** (फर्स्ट एट पोस्ट) वह स्थान जहाँ प्राथमिक उपचार किया जाय ।

प्रवृत्त अंश-खी० (पेट अप सेयर कैपिटल) किसी नीमित प्रमदल वा सत्वाके हिस्से खरीदनेमें लगायी गयी पूँजीका वह भाग जो चुका दिया गया हो ।

प्रवृत्तन-पु० (डिमांड्रेजन्) खुल्ले निकालकर वा नारे आदि लगाकर किसी प्रदनके संबंधमें सामूहिक रूपसे असंतोष प्रकट करना; किसी शिकायत, अन्याय आदिकी ओर अधिकारियोंका ध्यान दिलाने एवं जनताकी सहा-तुष्टि प्राप्त करनेके लिए खुल्ले आदि निकालना; कोई नेत्र, प्रयोग आदि करके दिखलाना ।

प्रव्राज्य-पु० (स्वेप्टिंग) कच्ची धातुको ऊँचे तापमें गलाकर सोना, चाँदी, लोहा आदि निकालनेकी क्रिया ।

प्रधान सैन्यावास-अध्यवस्थापक-पु० (कार्टर मास्टर-जनरल) सेनाके किसी विभागका वह प्रधान अधिकारी जो सैनिकोंके आवास, साजसज्जा, रसद आदिका प्रबंध करता है, प्रधान रसद-अध्यवस्थापक ।

प्रबंधी-खी० (मेजर) किसी बैंक, व्यापारिक संस्था आदिकी वह मुख्य पंजी (रजिस्टर) जिसमें व्यापारिक लेन-देन, आय-व्यय आदिका स्वीकृत लिखा रहता है । -**पूछ-**

पु० (लैज़र-कोलोनो) प्रपत्रिका वह पृष्ठ (वस्तुतः आमने-पामनेके दृष्ट्यर्थ) जिसपर किसीके रूपया या माल इत्यादि जमा करने या निकालनेका व्यवस्था दिया रहता है।

प्रपत्र-पु० (फार्म) किसी परीक्षा या स्थान आदिके लिए आवेदनपत्र देने, कोई विवरण प्रस्तुत करने या शपथ ग्रहण करने आदि संबंधी पत्रोंका वह रचना हुआ रूप जिसमें आवश्यक जानकारी देनेके लिए रिक्त स्थान, कोष्ठक आदिके व्यवस्था रहती है।

प्रबंध-अभिकर्ता-पु० (मैनेजिंग एजेंट्स) वह कंपनी या व्यावसायिक संस्था जो निर्धारित वेतन वा पारिश्रमिक लेकर किसी अन्य संस्था, कारखाने आदिके प्रबंधका काम, उसके संचालकोके विधिबिहित नियमोंके अनुसार, ग्रहण करे।

प्रबंधसंपादक-पु० (मैनेजिंग एडिटर) संपादकीय विभागकी व्यवस्था आदिकी देखभाल करनेवाला संपादक।

प्रबंधसमिति-श्री० (मैनेजिंग कमिटी) किसी सभा वा संस्थाका प्रबंध करनेवाली समिति।

प्रभात-पु० (चार्ज) किसी विभागान्तिके कार्यका भार वा जिम्मेदारी।

प्रभाती-वि० (इनचार्ज) जिसके ऊपर किसी विभागान्तिके कार्यका भार वा उत्तरदायित्व हो।

प्रभाती राजदूत-पु० (शासबंध केयर) अस्थायी रूपसे राजदूतका काम संपालनेवाला व्यक्ति; उप-राजदूत, छोटे देशोंमें नियुक्त राजदूत।

प्रभाती सचिव-पु० (मेजर इनचार्ज) वह सरस्व जिसपर किसी कार्य या पदका भार (उत्तरदायित्व) डाला गया, सौंपा गया हो।

प्रभाती-वि० (इफेक्टिव) निश्चयका प्रमाण पत्र हो, अमल करनेवाला।

प्रभु सत्ता-श्री० (मायरेन्टी) देश या राज्यपर ऐसी अखंड सत्ता जिसके ऊपर और किसीकी सत्ता वा अधिकार न हो, पूर्ण सत्ता।

प्रमदक-पु० (कंपनी) मिल-मुकदम कोई काम करने, विशेषकर व्यापारिकके लिए बनाया गया व्यापारिकीका सच वा समूह।

प्रमस्तिष्क-पु० (मेरेब्रम) प्रमस्तिष्कका नामनेका बड़ा भाग, प्रमस्तिष्काग्र।

प्रमाणक-पु० (वाचवर) किसी दकमें आय-व्ययके खातेमें चढ़ाये जानेकी सुष्टि वा प्रमाणके रूपमें खातमें लकी किया गया हिसाबके व्यौरका पुरजाम; प्रमाणपत्र।

प्रमाणक-पु० (सर्टिफिकेशन) किसी ग्रेड, कक्ष या बातका ठीक और प्रामाणिक होना लिखकर स्वीकार करना।

प्रमाणीकरण-पु० (सर्टिफिकेशन) किसी वास्तविकी सत्यता प्रमाणित करना, किसीकी विश्वसनीयताकी सुष्टि करना।

प्रमात्र-श्री० (क्वांटम) बंधे मात्रा, उतनी मात्रा जितनी आवश्यक हो; हिसा, माग, राशि जो आवश्यक, बांछित या स्वीकृत हो।

प्रमात्र-श्री० (स्टैंडर्ड) वह स्थिर की हुई एवं बहुमान्य माप वा मान जिसके आधारपर अन्य मापों वा मापोंका निश्चय किया जाय; योग्यता, मेलता आदि परखने,

नापनेका सुनिश्चित स्तर वा क्रम।

प्रमुख-पु० (सीकर) दे० 'अध्यक्ष'।

प्रमुखसभा-श्री० (सिनेट) प्रमुख या प्रख्यात व्यक्तियोंकी सभा।

प्रमुखक-पु० (गवर्नमेन्ट टैक्स) नाटक, चलचित्रोंके प्रदर्शन तथा मनोरंजनके ऐसे अन्य प्रकारोंपर लगनेवाला कर, मनोरंजनकर।

प्रमुखशी-श्री० (पिकनिक पार्टी) मित्रबंधीका नगरादिके बाहर जाकर किसी सुले स्थान, उद्यान आदिमें खान-पान, मनोरंजन आदिका आयोजन करना।

प्रयोग-पु० (एक्सपेरिमेंट) किसी सिद्धांतकी सम्यग्य प्रमाणित करने या किसी अज्ञात बातका पता लगाने, जांच करने आदिकी दृष्टिसे की गयी प्रक्रिया वा कार्य।

—शास्त्र-श्री० (मेथोडो) वह स्थान जहाँ पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र आदि-विषयक तथ्योंके समझने, जानने या नयी बातोंका पता लगानेकी दृष्टिमें विविध प्रयोग किये जाते हो।

प्रयोगपत्र-पु० (टिकट) यात्राके लिए रेलगाड़ीके टिकट, मोटरबस आदिका कुछ समयतक प्रयोग करनेका अधिकार प्रदान करनेवाला पत्र जिसपर प्रायः गंतव्य स्थान का नाम, गारीख, बिताया आदि लिखा रहता है।

—काव्य-पु० (मुनिम आक्तिम) रेलगाड़ीके टिकट, मोटरबस आदिमें यात्रा करनेके लिए प्रयोगपत्र जारी करने, देने का कार्यालय, स्थलपर।

प्रकाशी-वि० (क्रेडिट) लाभ देनेवाला, फायदे करने, विशेष लाभ हो (पद वा काम)।

प्रलेख-पु० (शायबुट) वह कागज वा लिपिपत्र पत्र जिसमें किसी बातका प्रमाण या कोई प्रमाणिक बात उल्लेख हो और जो विधि, दृष्टिसे किसी पक्ष या व्यवहार (माम) के समर्थनमें उपरिधन किया जा सके।

प्रलेखीय चलचित्र-पु० (ट्रायफ़ोर्मि) वह चलचित्र जिसमें किसी महत्वपूर्ण घटना, पुरातत्त्व, औद्योगिक प्रगति आदिका चित्रण किया गया हो, समाचार-चित्र।

प्रलोभन-पु० (फ्लूटमेंट) लालच देना; लालच पैदा बहकाना, फुसलाना, अपनी ओर कर लेना या किसी कार्यमें विरत करना।

प्रबन्ध-पु० (सीकमैन) किसी सभा वा सरकार आदि की ओरसे आधिकारिक रूपमें बोलनेवाला प्रतिनिधि।

प्रवरसमिति-श्री० (क्लेक्ट कमिटी) किसी विषयका छान-बीन करने और विचार-विमर्शके बाद निश्चय मत प्रकट करनेके लिए बनायी गयी चुने हुए विशेषज्ञ सदस्योंकी समिति।

प्रवर्ण-पु० (सैटेलरी) कई मार्गों, बलों वा भेजियोंमेंसे एक।

प्रविधि-श्री० (टेक्नीक) कोई (कलात्मक) कार्य करनेमें विशेष ढंग, विशेष विधि वा विशेष कौशल।

प्रविशक करना-श्री० (रीप्रिजेंट) सजाकी कार्रवाई स्थगित कर देना वा उसमें विराम करना।

प्रविष्ट शीर्ष-पु० (मनोरंजेंट) वह शीर्ष जो चिकित्सा व्यवस्था में रोककर चिकित्सा करनेके उपेक्ष्यमें रहती वा किया गया हो, अनर्वांशी शीर्ष।

प्रविष्टि-ली० (एंट्री) काते, पुस्तक आदिमें लिखने, चढ़ाने, दर्ज करनेकी क्रिया; वह चीज जो इस प्रकार लिखी या दर्ज की गयी हो।

प्रवेश-पु० (इंट्री) हिलने, चलने, काम करने आदिकी तीव्र गति; घटनाओं आदिका नब्दी-जल्दी और तेजीमें होना। (विज्ञांसिद्धि) किसी वस्तुके तेजीमें आगे बढ़ने, नीचे गिरने आदिकी रचना।

प्रवेशपत्र-पु० (टिकट) किसी सिनेमा, नाट्यशाला, संगीत-सम्मेलन आदिमें प्रवेशका अधिकार प्रदान करनेवाला पत्र।

प्रवेशद्वारीय-पु० (पिर्वेटिंग) अधिकारिनीं आदिसे अपनी भाँगी पूरी करानेके लिए या लोगोंकी कोई अनुचित काम करनेसे रोकनेके लिए कार्यालय, दुकान आदिके सामने अवसर बैठ जाना जिससे उनके प्रवेशमें बाधा पड़े, भरना।

प्रवचन-पु० (माग्नेशन) किसी एक देश या प्रदेशआदिसे ऊप्य देश या प्रदेशआदिमें, वर्षों बस जानेकी गरजसे, चले जाना।

प्रस्तावकीय-पु० (एग्जा) किसी वक्ताके भाषण करते समय उसके किसी कथन या प्रस्तावआदिके अनुमोदनमें श्रोताओं द्वारा की गयी प्रस्तावपूर्ण ध्वनि।

प्रस्तावक-पु० (एग्जिनिस्ट्रैट) राज्य या शासनप्रबंध करनेवाला अधिकारी, भूमिपतिका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

प्रस्तावन-पु० (एग्जिनिस्ट्रेशन) राज्यके शासन या परिचालनका प्रबंध। -**पत्र-पु०** (मैटर आफ एग्जिनिस्ट्रेशन) न्यायालय द्वारा जारी किया गया वह आदेशपत्र जिसके अनुसार इच्छा-पत्रहीन संपत्तिका प्रबंध करनेके लिए प्रस्तावकी नियुक्ति हो। -**अर्थ-पु०** (मैक टाउन आफ एग्जिनिस्ट्रेशन) आंतरिक उपद्रव, आर्थिक संकट आदिके कारण शासन-व्यवस्थाका ठप्प हो जाना।

प्रस्तावकीय कृष्य-पु० (एग्जिनिस्ट्रैटिव फंक्शन) राज्यके शासनसे संबंध रखनेवाले काम।

प्रशिक्षण-पु० (ट्रेनिंग) किसी व्यवसाय, कला, शिल्पादिकी या कुशल, दीर्घ आदिकी न्यायिक रूपमें लगातार कुछ समयतक दी जानेवाली शिक्षा। -**महाविद्यालय-पु०** (ट्रेनिंग कालेज) वह महाविद्यालय जिसमें अध्यापकों आदिके प्रशिक्षणकी व्यवस्था हो। -**विद्यालय-पु०** (नार्मल स्कूल) अध्यापनकलाकी शिक्षा देनेवाला विद्यालय। -**शिबिर-पु०** (ट्रेनिंग कैंप) वह शिविर जहाँ किसी कार्य, कला आदिके प्रशिक्षणकी व्यवस्था की गयी हो।

प्रशिक्षणार्थी-पु० (ट्रेनी) वह जो प्रशिक्षण पा रहा हो।

प्रशिक्षित-वि० (ट्रेड) जिसने किसी व्यवसाय, कला आदिकी क्रियात्मक शिक्षा पायी हो।

प्रसीलक-पु० (रीफ्रिजरेटर) दे० 'हिमीटर'।

प्रसूतक-पु० (डैरिफ) आयात-निर्गत-वस्तुओंपर लगानेवाला कर। -**अंशक-पु०** (डैरिफरीय) दिन वस्तुओंके आयात या निर्यातपर कितना कर लगाया जाय, इस संबंधमें समुचित विचार कर सरकारकी मंजूरी देनेवाली विशेषकीर्ती समिति।

प्रस्तावकी-ली० (इन्वापिन्स, एन्तरसाइज) पाठ्य-पुस्तकोंमें छात्रोंके अभ्यासके लिए एकत्र दिये हुए प्रश्न; दे० 'प्रस्तावकी-पत्रक'। -**पत्रक-पु०** (कैम्पेन्डर) किसी व्यवसायादिकी स्थिति या अन्य विषयकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए उसमें संबंध रखनेवाले विभिन्न व्यक्तियोंके पास लिखित रूपमें भेजा जानेवाला संक्षिप्त प्रश्नोंका समूह जिसका उत्तर देनेका उनसे अनुरोध किया जाता है।

प्रश्नोत्तरी-ली० (इंटेक्जिज्म) वह पुस्तक जिसमें कोई विषय प्रश्नों तथा उनके उत्तरोंके रूपमें समझाया गया हो।

प्रस्तावकाश-पु० (मैटरनिटी लीव) किसी लीकी प्रसवकालके समय दी जानेवाली छुट्टी, प्रत्यक्षकाश।

प्रभवोत्तरकाश-पु० (पोस्टनेटल पीरियड) शिशुकी जन्म दे चुकनेके बादकी जननीकी स्थिति या समय।

प्रसादन-पु० (प्रोपियिशन) किसी व्यक्तिकी संतुष्ट या प्रसन्न कर अपने अनुकूल बनाना।

प्रसादपर्यंत-भ० (ज्यूरिंग दि ड्रेटर ऑफ) (राष्ट्रपति आदि) जवकल चाहें नवनव, जवकल इच्छा या सुखी हो तबकल।

प्रसाधन-पु० (टाइलेट) बालोंकी सज्जने, साधन लगाने, ओठ या पर रंगने आदिकी क्रिया। -**ब्रह्म-पु०** -**सामग्री-ली०** (टाइलेट) शृंगार या प्रसाधनमें काम आनेवाली वस्तुएँ।

प्रसारण-पु० (मोबकास्टिंग) कोई समाचार, भाषण, गायन आदि दूर-दूरके लोगोंकी सुनानेके लिए आकाशवाणी द्वारा चारों ओर फैलाना।

प्रसारित-वि० (मोबकास्ट) दूर-दूरके लोगोंकी सुनानेके लिए आकाशवाणी द्वारा चारों ओर फैलाया हुआ।

प्रसाधिका-ली० (मिडवाइक) प्रसव कराने, बच्चा जनानेवाली स्त्री।

प्रस्तुति-कल्याणकार्य-पु० (मैटरनिटी वेल्फेयर वर्क) शिशुजननकी सुविधा तथा जन्म-बच्चाकी भलाईसे संबंधित कार्य, मातृकल्याणकार्य।

प्रस्तुतकाश-पु० (मैटरनिटी लीव) दे० 'प्रस्तावकाश'।

प्रस्तर-सुव्रज-पु० (लिथोग्राफ) विशेष प्रकारके पथपर लिखकर या खोदकर छापनेका कार्य।

प्रस्तरयुग-पु० (स्टोन एज) वह ऐतिहासिक काल जब मनुष्य काठने, छीलने आदिके लिए प्रायः पथरके बने औजारोंका ही प्रयोग करते थे, पाषाणयुग।

प्रस्ता-पु० (परस्पेक्शन) वस्तुओं, अक्षरों, अंकों आदिकी भिन्न-भिन्न प्रकारसे पक्तियों या कतारोंमें रखना।

प्रस्ताव-विचार-विमर्श-पु० (मिनीटिन ए मोशन) किसी विषयका आदिके संबंधमें विरोधियों द्वारा अनापव्यय बाधा डाले जानेपर अव्यस्यका समय निर्धारित कर उसे इस प्रकार नियंत्रित करना जिसमें समय बीतनेके पहले ही उसके स्वीकृत या अस्वीकृत होनेका निश्चय हो जाय।

प्रस्तावना-ली० (प्रोप्रीयल) किसी विधान, प्रलेख आदिका प्रारम्भिक भाग; किसी भाषण, लेख आदिके आरंभका अंश, प्राक्कथन।

प्रस्तुतांगशुद्ध-निर्माणशास्त्र-ली० (प्रोफेसिफिकेट हाउस

फैक्टर वह कारखाना जहाँ मकानके अलग-अलग हिस्से पहलेसे तैयार किये जायें ताकि बादमें उन्हें किसी भी स्थानपर एकत्र कर पूरी इमारत आसानीसे खड़ी की जा सके ।

प्रस्थापक-पु० (प्रचोत्र) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव रखने या सामने लानेवाला ।

प्रस्थापना-की० (प्रयोजक) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव लाना; वह प्रस्ताव जो प्रस्थापक द्वारा सभा आदिमें रखा जाय ।

प्रस्थापित करना-स० कि० (डु प्रचोत्र) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव रखना ।

प्रस्फोट-पु० (बम) विस्फोटक पदार्थोंसे भरा हुआ छोटेका गोला जो जहानसे गिराया जाता और हानिमें तथा गोपमें अरक भी फेंका जाता है ।

प्रस्थीकृत-वि० (रिडिगनाइज्ड) जो अविकृत रूपमें मान लिया गया हो; जिसे औपचारिक रूपसे मान्यता (संज्ञा) होने आदि की स्वीकृति दे दी गयी हो ।

प्रस्थीकृति-की० (रिडिगनाइज्ड) प्रधान या केंद्रीय संस्था द्वारा अन्य छोटी संस्था वा संस्थाओंका जस्तक; प्राधान्यता आदि मान लिया जाता, मान्यता; किसी वस्तुकी यथावस्था, विशेषता, दारे आदि मान लेना ।

प्रत्येक्ष-पु० (प्रिस्टेन्स) पत्तोला लाने, गरम जलमें लेकने आदिकी क्रिया, लेक, वाष्प-तापन ।

प्रतीक्ष्य व्यवसाय-पु० (प्रोस्पेक्टिव बिजनेस) प्राणों या किसी संस्थावन्तसे सम्भविता राज्योंकी प्राप्त स्वराज्य जिसके अनुसार उन्हें आंतरिक विषयों-सम्बंधी निर्णय करने वा प्रति निर्धारित करनेकी स्वतंत्रता होती है ।

प्रत्यक्ष-पु० (प्रिस्टेन्स) संभावित व्यय वा लागतका पहलेसे अनुमान लगाना या लगाया गया अनुमान ।

प्रतिभाषन-भुगतान-पु० (प्रि-पार्टीशन पेमेंट्स) नारतका विभाजन होनेके पहले किया गया कर्ष आदिका भुगतान ।

प्रारक्षा-पु० (प्रिक्साटन्) मंचेरे किया जानेवाले इस्का जीवन या नाशता, कलेश ।

प्राथमिकता-की० (प्रायोरिटी) प्राथमिक होनेका मास; किसी औरसे पहले स्थान या अवसर मिलना । -**खुशी-की०** (प्रायोरिटी लिस्ट) विषयों आदिकी सूची जिसमें सबसे महत्वपूर्ण तथा आवश्यक प्रयत्नोंकी प्रथम स्थान, प्राथमिकता, देनेका विशेष ध्यान रखा गया हो ।

प्रादेशिक सेना-की० (रेजिमेंटल फोर्स) किसी विशेष प्रदेश वा क्षेत्रमें स्थानीय सुरक्षाकी दृष्टिसे तैयार की जाने वाली (जागरूक) सेना ।

प्राधिकार-पु० (अथोरिजेशन) किसीको कोई काम करने, आदेश देने आदिका अधिकार प्रदान करना ।

प्राधिकार-पु० (अथोरिटी) कोई काम करने, आदेश देने आदिका अधिकार; इस तरह वह अधिकार जो किसी एकाधिकारीको अपने पदके कारण प्राप्त हो ।

प्राधिकारी-पु० (अथोरिटी) वह जिसे प्राधिकार प्राप्त हो । (प्राधिकारिबर्ग = अथोरिटीज़) ।

प्राधिकृत-वि० (अथोराइज्ड) जिसे विधिविहित अधिकार प्राप्त हो, जो विधिविहित अधिकारी द्वारा स्वीकृत हो ।

अधिकृत-पु० (अथोराइज्ड एजेंट) वह अधिकृत व्यक्ति विधिविहित अधिकार प्राप्त हो । -**सूची-की०** (अथोराइज्ड कैपिटल) कारखाने आदिमें कमानेके लिए हिस्सेदारोंसे की जानेवाली वह सूची जिसकी स्वीकृति विशेष प्राधिकारीने ले ली गयी हो ।

प्राध्यापक-पु० (लेक्चरर, प्रोफेसर) वह अध्यापक जो अपने विषयका अच्छा विद्वान् हो; किसी महाविद्यालय आदिका उच्च लेनीका अध्यापक ।

प्रायुमसिपक-पु० (परमिट) वह पत्र जिसमें कोई ऐसा माल, जिसपर किसी तरहका नियंत्रण हो, सीमित मात्रा में खरीदनेकी विशेष अनुमति दी गयी हो; माल उतारने या हटाने-बढ़ानेकी विशेष अनुमति प्रदान करनेवाला पत्र ।

प्रापक-पु० (पेयी) जिसे रूपा-पैसा आदि दिया जा, चुकाया जाय, वापसवाला ।

प्राप्तिकार-पु० (प्रिविलेज) वह विशेष अधिकार जें, कुछ ही लोगोंको प्राप्त हो; किसी व्यक्ति, वर्ग, संस्था आदि की उसकी विशेष स्थितिसे कारण प्राप्त विशेष अधिकार जें, स्वीकृत ।

प्राप्तानुज्ञा-वि० (लाइसेन्स) जिसे किसी वस्तुके बेचने या कोई काम करनेका अनुज्ञापन दिया गया हो । पु० (लाइसेंसी) वह व्यक्ति जिसे इस तरहका अनुज्ञापन दिया गया हो ।

प्रापक-पु० (क्लि) किसीके हाथ बेचे हुए माल या किसीके लिए किये हुए काम आदिका ध्यौरा और प्राप्य मूल्य लिखावेवाला पत्र ।

प्राप्तिकर्ता-पु० (रिसेपियंट) वह जिसे कोई वस्तु प्राप्त हो ।

प्राप्तिकर्ता-पु० (रटनी) वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य व्यक्ति या स्थायी औरने प्रतिनिधिरूपमें कार्य करनेके विधिविहित अधिकार प्राप्त हो; वह जिसे मुकदमें-मामलमें किसीकी ओरने देख-रेख करने आदिका विधिविहित अधिकार दिया गया हो ।

प्राप्तिकर्ता-पु० (प्रोसीक्यूटर) किसीके विरुद्ध कोई नामका चलानेवाला । -**पक्ष-पु०** (प्रोसीक्यूशन) वह पक्ष जिसकी ओरसे किसीके विरुद्ध कोई मामला चलाया-कर्म चलाया गया हो । -**राजकीय प्राप्तिकर्ता-पु०** (गवर्नमेंट प्रोसीक्यूटर) राज्यका वह विधिक अधिकारी जो सार्वजनिक हितकी दृष्टिसे किसीपर कोई न्यायचलावे ।

प्राप्तिकर्ता-पु० (प्रोसीक्यूशन) किसीके विरुद्ध कोई व्यक्ति या मामला चलाना ।

प्रार्थन-वि० (प्रिचीजन्स) प्रार्थनका या प्रार्थन-सम्बंधी ।

प्राप्य-पु० (ड्राफ्ट) किसी प्रस्ताव, योजना विषयक अधिकार वह प्राथमिक रूप जो प्रस्तावमें तैयार कर लिया जाता है, किंतु जिसमें बादमें कुछ काट-छँट वा संशोधन की आवश्यकता पवनी है, मसौदा, खर्चा, प्रारंभ ।

प्राप्य-पु० (ड्राफ्ट्समैन) प्राप्य वा मसौदा तैयार करनेवाला ।

प्राप्य सूची-की० (सप्लाइज्ड कैपिटल) किसी कारखाने आदिके लिए प्रापिकृत पूंजीय वह अंश जिसमें लिए नगम्य हिस्सेदारोंके प्रार्थनापत्र प्राप्त और स्वीकृत

हो चुके हों।

प्राक्लेख—पु० (इपिस्ट) दे० 'प्राक्प'।

प्राक्कथा—स्त्री० (कैज) परिचर्तन या विफासकी विशेष स्थिति; स्वरूप।

प्राक्प्रतिक—वि० (टेकनिकल) किसी कला, शिल्प आदि की विशेष कार्यविधि, प्रक्रिया आदि संघी।—**आपत्ति**—

स्त्री० (टेकनिकल आम्प्रेक्शन) नियम, प्रविधि आदिके अनुपालनके आधारपर की गयी आपत्ति।

प्राक्प्रिक्ल—पु० (टेकनीशियम) किसी कला, शिल्प आदि की विशेष कार्यविधि, प्रक्रियाओं आदिका जानकारी।

प्राक्प्रिक्ल—पु० (पैपर मैटर) छात्रों की किसी परीक्षा के लिए किसी विषयके प्रश्न छानने या चुननेवाला, प्रश्नपत्र तैयार करनेवाला।

प्रीति-सम्प्रेक्षण—पु० (सीशल गैडरिंग) विचार्य आदिके वार्थिकीयसके समय नये-पुराने छात्रों का एकत्र होकर एक दूसरेसे मिलना, साथ खेलना, जल्पपान, नाटक आदिमें मग्निलित होना, भोग-सम्प्रेक्षण।

प्रेचणकर्मी—पु० (डिप्लोमर) चिट्ठी, पैकेट आदि पत्रोंमें चढ़ाकर बाहर भेजनेका काम करनेवाला कर्मचारी, डाक-प्रेषक।

प्रेचणपुस्तक—स्त्री० (डिप्लोमर) वह पुस्तक या गद्दी जिसमें भेजी गयी चिट्ठियों, पारमलों आदिका ज्योरा लिखा जाता है।

प्रेचणदेहापत्र—पु० (आउट फार्म) वह पत्र जिसमें कोई वस्तु या माल किसी स्थानमें भेजनेका आदेश लिखा हो।

प्रेचिती—पु० (प्रेचिती) वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की जाय, पानेवाला।

प्रेचित्र—पु० (ट्रांसमिटर) वह यंत्र या साधन जिसकी सहायतामें कोई ध्वनि (समाचार, भाषण, नाटक आदि) अन्यत्र भेजनेका काम लिया जाय, दूरस्थित पत्र।

प्रेचबन्तु-आलेखन—पु० (नकिंग) 'रेकडे मालमोडम आदिसे भेजे जानेवाले मालका विवरण आदि रजिस्टरमें चढ़ाना और उसकी रसीद काटना।

प्रोक्लि—स्त्री० (कोटेशन) दूसरेकी उक्ति जो वही उद्धृत की जाय।

प्रोद्धारण—पु० (साइडेशन) किसी लेख, पुस्तक आदिते कोई अंश पढ़कर सुनाना या उद्धृत करना; इस तरह लिया हुआ अंश।

प्रोद्भूत होना—अ० कि० (ट्र एक्.) (पूँजीपर भ्राज आदि) निकलना, किसीके स्वाभाविक परिणाम या परिकाम आदिके रूपमें सामने आना, दिखाई देना।

प्रौद्योगिक शिक्षा—स्त्री० (टेक्निकल एजुकेशन) किसी विशेष कला या व्यवसाय-संघी शिक्षा।

प्राक्प्रतिक—वि० (प्राक्प्रतिक) महाप्राक्ल या प्रत्यक्ष संबंध रखनेवाला।

फ

फर्द्धुविज्ञान—पु० (फार्मोलाजी) पुरुष की लभनेके कारणों, विरोधक उपायों आदिपर मध्यक रूपसे विचार करनेकी विद्या।

फलपरिरक्षण—पु० (प्रिजर्वेशन ऑफ फ्रूट्स) रामायनिक माधनों या अन्य उपायों द्वारा फलोंकी क्षतिग्रस्त होने, सड़ने आदिते बचाना।

फिरंग रोग—पु० (वेनरियल डिजीज) दे० 'रतिज रोग'।

फुफुसप्रवाह—पु० (न्यूमोनिया) एक या दोनों फेफड़ोंमें अग्नेमाके जमा हो जानेसे होनेवाला शोथ या प्रदाह।

ब

बंदिकोड, **बंदीजाना**—पु० (लॉक अप) न्यायालयमें मामलेपर विचार होनेतक बंदियोंको तालेमें बंद कर या पहरमें रखनेकी जगह, हवाकात।

बंदिप्रस्थानीकरण—पु० (हेरियस कॉर्पस) बंदीको न्यायाधीशके सामने उपस्थित करनेका लिखित आदेश।

बंदककर्ता—पु० (मॉर्टिजर) अपना घर, भूत आदि किसीके पास रेंहन रखनेवाला।

बंदकगृहीता—पु० (माटेगेजी) वह महाजन आदि जिसके घाम कोई चीज रेंहन रखी गयी हो, रेंहनदार।

बंदपत्र—पु० (बीक/सरकार द्वारा या किसी सार्वजनिक संस्था (नगर-नियम आदि) द्वारा जारी किया गया वह कणपत्र जिसमें इस बातकी लिखित प्रतिष्ठा की जाती है कि निर्धारित अवधि समाप्त होनेपर कण की गयी सारी रकम अदा कर दी जायगी; कभी हुई बात पूरी न होनेपर किसीको कुछ रूपया या हरकाना आदि देनेका प्रतिष्ठापत्र; किसी पदपर नियुक्ति होनेके पूर्व नियुक्त व्यक्ति या नियोजक द्वारा लिखा गया वह प्रतिष्ठापत्र जिसमें इस बातका निश्चय दिखाया गया हो कि निर्दिष्ट अवधिके पूर्व नियुक्त व्यक्ति अपने पदमें न हटेगा अथवा न हटाना जायगा।

बसवर्षक, **बसवर्षी**—पु० (बमर) प्रसोदों (बमों)की वर्षा करनेवाला हवाई जहाज।

बायेंहाथ—वि० (लेफ्ट हैंडर) कामकाजमें बायें हाथका ही विशेष रूपमें प्रयोग करनेवाला; बायें हाथमें गैद फेंकनेवाला, बायेंहासिक।

बल—पु० (फोर्स) वह शक्ति जो स्थिरता अथवा चालकी दशाओंको बदल दे या बदलनेकी प्रवृत्ति पैदा कर दे।

परीक्षण—पु० (ओ-वाउन) परस्पर-प्रेषी दलों द्वारा (अंतर्गतवा) एक दूसरेकी शक्ति या बलकी परीक्षा लेनेके लिए किया जानेवाला प्रयत्न, अंतर्गत परीक्षा।—**साम्य**—पु० (वैलेंस ऑफ पावर) दे० 'सक्ति-सामुलन'।

बलात् सत्पापहरण—पु० (फुटेट) दे० 'सात्मिक विपर्यय'।

बलाद्वतरण—पु० (फोर्स लैंडिंग) इंसनकी खराबी आदिके कारण हवाई जहाजका हड़ताल भूमिपर उतर पड़ना।

बलाद्वतरित—वि० (फोर्स लैंडर) जो इंसनकी खराबी आदिके कारण भूमिपर उतर पड़नेकी बाध्य हो गया हो (विमान)।

बलाद्ग्रहण—पु० (एम्प्रेक्शन) रूपया-पैसा आदि किसीसे वलपूर्वक लेना; धन-संबंधी अनुचित माँग।

बलाधिकृत—पु० (मार्शल) सेनाका सर्वोच्च पदाधिकारी।

बहिष्कारितजीवन—पु० (सर्वाइवल ऑफ दि फिटेस्ट) सामाजिक और प्राकृतिक जीवन-सर्पथमें सबसे योग्य

या बलिष्ठोका जीवित बचे रहना ।

बल्गेवाच-पु० (मैट्समैन) क्रिकेट या गेंद-बल्लेके खेलमें वह खिलाड़ी जो अपनी ओर आते हुए गेंदपर प्रहार करता है और अक्सर देखकर 'रन' बनानेके लिए एक विकेटसे दूसरे विकेटकी ओर दौड़ता है ।

बल्गेवाची-खी० (मैट्समैनशिप) (गेंद-बल्लेके खेलमें) बल्गेसे गेंदपर प्रहार करनेकी क्रिया या कला ।

बहिःस्पर्शी-वि० (म्यूरफीशियल) भीतरतक न जानेवाला, ऊपरी, दिखाक ।

बहिर्गत-वि० (आउट) (गेंद-बल्ला आदिके खेलमें वह खिलाड़ी जो गेंदके आवागमन यष्टियोंके ऊपरकी गुल्लीके लिए जाने, पदबाधा या गेंदके लोक किये जाने आदिके कारण बल्गेवाची करते रहनेके अधिकारसे वंचित हो गया हो; जो घरमें या कार्यलय आदिमें न हो, बाहर गया हो; जो पदासीन या अधिकारादिक न रह गया हो; जो प्रकट या प्रकाशित हो गया हो ।

बहिर्गमनद्वार-पु० (एग्जिट) (किसी सिनेमा, नाट्यशाला आदिके) प्रवेश या अवनसे बाहर निकलनेका रास्ता ।

बहिर्वासी रोगी-पु० (आउटडोर पैशेंट) वह रोगी जो चिकित्सागृहके बाहर रहते हुए इलाज कराना हो (अंत-कोसी या अस्थि रोगीका उलटा), बाहरीरोगी ।

बहुपक्षित्व-पु० (पॉलिक्सी) एक साथ बहुतमें पक्षियोंकी पत्नी बनकर रहनेकी प्रथा ।

बहुभावाक-पु० (पॉलीक्वोट) बहुत-सी भाषाएँ जानने या बोलनेवाला ।

बहुकुरपर्वक-पु० (कैलीडोस्कोप) एक लंबी लकी जिसमें रंगीन काँचके टुकड़े इस तरह ढाल दिये जाते हैं कि उन्हे इधर-उधर हिलानेमें कई तरहकी मुर और कलापूर्ण दृश्यें दिखाई देनी हैं ।

बहुमुख-वि० (वर्सेटाइल) जो अनेक विषयोंका जानकारी हो; अनेक विद्याओंमें जानेवाला । (बहुमुखी प्रतिभा = वर्सेटाइल जीनियस) ।

बहुविध-वि० (वर्सेटाइल) जो अनेक विधाएँ जानना हो, जो विभिन्न विषयोंपर लेखादि लिख सकना हो या भाषण कर सकना हो, बहुमुख ।

बाह्यरोगी-पु० (आउटडोर पैशेंट) दे० 'बहिर्वासी रोगी' ।

बीजकेंद्र-पु० (न्यूक्लियस) वह मध्यभाग जिसके चारों तरफ और चीजें बादमें इकट्ठी हो जाती हैं; वह मध्यभाग जिसमें बीज रहता है ।

बीमापत्र-पु० (इन्स्यूरेंस पॉलिसी) बीमा करनेवाली संस्था और बीमा करानेवाले व्यक्ति या व्यक्तियोंके बीच हुए समझौतेका लिखित पत्र ।

बुद्धिजीवी वर्ग-पु० (इंटेलिजेंशिया) बुद्धिमें जीविका प्राप्त करनेवाले, दिमागी काम करनेवाले जीवोंका समुदाय ।

बुर्जोय-खी० (ट्रेड मैन) (चारों तरफ घूमनेवाले) बुर्जमें लगाई गयी तोप ।

बेपताबिड्डीधर-पु० (डिड डेटर ऑफिस) दे० 'कापता-चिड्डीधर' ।

बेकनाकार-वि० (सिलिन्ड्रिकल) जिसका आकार बेकनके समान हो ।

भू

भजनपरीक-वि० (मिटिल) (डोस) जो गिर जानेपर या पीटे जानेपर टूट जाय, टुकड़े-टुकड़े हो जाय ।

भलेमानुसीका समझौता-पु० (अंतिममेंस पैरोमेंट) एक तरहका अनौपचारिक समझौता जो जैनिक जवानी बात-चीत या सामान्य पत्राचारके आधारपर किया गया हो, कोई पक्की कित्ता-पट्टी न की गयी हो ।

भबधुबुध-वि० (वुक्स ऑनशिपपंटली) आपकी भाइया माननेवाला, आपके आदेशानुसार चलनेवाला (किसी मातहत कर्मचारी द्वारा अथवा पुत्र या छोटे भाई द्वारा, उच्च कर्मचारी, पिता या बड़े भाईकी किले गये आवेदन-पत्र, कुशलपत्रादिके अंतमें, हस्ताक्षर करनेके ठीक पहले प्रयुक्त विशेषण) ।

अबधुबुध-वि० (वुक्स सिनसियरली) आपमें स्नेह, मित्रता या सद्भाव रखनेवाला (किसी मित्र या सामान्य परिचित व्यक्तिकी किले गये पत्रके अंतमें लेखक द्वारा स्वयं अपने लिए प्रयुक्त विशेषण) ।

अबन-निर्माण-विज्ञान-पु० (आर्किटेक्चर) मकान आदि बनानेकी कला/का विवेचन करनेवाला शास्त्र ।

अवभाषचरण-पु० (डाउस ट्रेमपाम) किसीके मकानमें अवैध रूपमें प्रवेश करना ।

अवशिष्ट-वि० (वुक्स फेथफुल) आपमें विश्वास रखने वाला (अंग्रेजी दणके व्यापारिक पत्रों या सामान्य कार्योंके लिए प्रायः कम परिचित व्यक्तियोंके नाम मिले गये पत्रों के अन्तमें, इत्यादिके ठीक पहले, प्रयुक्त होनेवाला समस्तपद) ।

अविध्यनिधि-खी० (प्रोविडेंट फंड) किसी अन्कारों अर्द्ध-सफारी या व्यापारिक संस्था आदिमें काम करने-वाले कर्मचारीको कार्यमें अक्सर प्रयुक्त कर लेनेपर अलग-पोषणमें सहायक होनेकी दृष्टिमें दी जानेवाली वह मद-यता जो उसके वेतनमेंसे कटनेवाले उसके अपने अंशके साथ-साथ नियोजकों द्वारा निधिमें रूपमें जमा की जाती है, संघिन कोष, सचिन निधि, संयंतरनिधि ।

आंकारपाक-पु० (स्टोरफीवर) विविध वस्तुओंके संग्रह या आंकारकी रक्षा, देखरेख करनेवाला कर्मचारी ।

आंकारिक-पु० (स्टाफिस) दे० 'आंकारिक' ।

आई-अलीआबाद-पु० (नीपाटिजम) जौहरी, अधिक मूल्यता आदि दिकानेमें अपने भाई, अतीथे या किसी अन्य संबंधी आदिके साथ विशेष पक्षपात करना, स्वजनपक्षपात ।

आगिला-खी० (पार्टनरशिप) किसी कारबारमें भाड़ा होना; साझेदारी, हिस्सेदारी ।

आम्बवा-खी० (कोर्टी) बुद्धीय आदिका परिणाम देखकर या चिट्ठी निकालकर टिकट करीदनेवालोंमें इनाम बंटनेकी प्रकृति ।

आम्बपत्रक-पु० (लॉट) वह चिट्ठी या कागजकी गोली आदि जिसे फेंककर या छडाकर किसी माकके बंदबारे, किसीकी मित्रुक्ति, नुने जाने आदिका विशिष्ट क्रिया जाता है ।

भाटक-पु० (रेंट) मकान या जमीनका किराया, लगान ।

-राशि-खी० (रेंटल) किरायेते होनेवाली ममरन आय, किरायेके रूपमें प्राप्त चनराशि ।

भारद्वय संघर्ष-खी० (एनकराई एस्टेट) वह संपत्ति या भावदात्र जिसपर ऋणका भार हो गया हो ।

भारहाजि-खी० (लॉस ऑफ़ नेट) भार या बजनमें होनेवाली कमी ।

भारिक-पु० (बीटर) दे० मूलमें ।

भुगतानतुल्य-खी० (वैल्यू ऑफ़ पेमेंट) हिमावकी वे मदे (व्यापारकी वस्तुएँ, पूँजी, सूर, बीमा-शुल्क, जहाजका किराया आदि) जिनके संघर्षमें एक देशको दूसरे देशोंमें कुछ धावना हो या दूसरे देशोंको देना हो ।

भूकंपमापक यंत्र, भूकंपसूचक यंत्र-पु० (माइक्रोमीटर, माइक्रोमाक) भूकंपके धक्के, भूकंपके केंद्रकी दूरी, प्रवेग आदि सूचित करनेवाला यंत्र ।

भूकंपविज्ञान-पु० (माइक्रोमाक्री) भूकंपोंके कारणों तथा मूल्य आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान ।

भू-कर्म-पु० (ग्राउन्डवर्क) हवाई अड्डे के वे कर्मचारी जिनमें उड़नेवाले विमानोंके माद रहकर नहीं, अन्य भूमिपर ही काम करना पड़ता है ।

भूधरा-खी० (अंश) : सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहणके समय सूर्य अथवा चंद्रमाके विवरण परनेवाली छाया ।

भूदृश्य-पु० (लैंडस्केप) भूमिका वह दृश्य जे किमा ओर रहि टालनेपर दूर-दूर तक दिखाई दे । किमी भूभागमें स्थित पेड़ों, पहाड़ों, नदियों आदिका दृश्य ।

भूपरिमाण-खी० (अट मेट) भूमिके किमी डुकुट या डेग्रा, राज्यादिकी भूमिकी नाप-जोख ।

भूमापन-पु० (मैप) नौमा आदि निर्धारित करनेकी दृष्टिमें किमी क्षेत्र, भूमिके दुकड़े या देश प्रदेश आदिकी नाप-जोख (मेपमार्श) करना ।

भूमि-अवशिष्ट-अधिनियम-पु० (लैंड रेमिनिंग एक्ट) किमी भावजनिक कामके निमित्त या राज्यादिकी कोई विशेष आवश्यकता पूरी करनेके लिए दूसरेकी भूमि खरीदने, ले लेनेका अधिकार प्रदान करनेवाला अधिनियम ।

भूमि-संरक्षण-पु० (माइक्र कन्सेवशन क्ट) आदिमें भूमिका बचाव ।

भूमि-हस्तांतर-अधिनियम-पु० (लैंड ट्रांसफ़र एक्ट) भूमिका मूल्य या ह्यमित्व हस्तांतरित करनेमें मध्यस्थ होनेवाला अधिनियम ।

भूपाचार-पु० (कैडन) कपड़े आदि पहननेका विशिष्ट ढंग; समाजके उस वर्गमें प्रचलित या भात ढंग, रीति, नैतिकता ।

भूविनोदी-वि० (असीनरी) वेतन लेकर अवसर-विशेषपर किमीके लिए भी काम करने या रुकनेवाला, केवल रुपयेके लालचसे किमीकी सेवा करनेवाला, किरायेका या भाड़ेका (मेसिक), माईन ।

भौतिक विद्यालय-पु० (मेडिकल कॉलेज) रोगोंके निदान, उपचार आदिकी शिक्षा प्रदान करनेवाला विद्यालय ।

भोगाधिकार-पु० (आकुपैसी राइट) जेत, भूमि आदिके

भोगका स्थायी अधिकार जो प्रायः उत्तर निर्धारित अवधि-नक काविज रहनेके बाद किमीको प्राप्त होता है ।

अंशोद्धार-पु० (मैलवेज) दुबे हुए या ध्वस्त किये हुए जहाजका समुद्रगर्भसे उद्धार करना ।

म

मंत्रणाकार-पु० (पेटवाइज) सलाह या मंत्रणा देनेवाला, वह जिसमें बहुधा सलाह ली जाती हो ।

मंत्रणा-परिषद्-खी० (पेटवाइजरी कौंसिल) किमी विषयके संबंधमें सलाह देनेवाली परिषद् ।

मंत्रालय-पु० (मिनिस्ट्री) राज्यके किमी मंत्री तथा उसके विभागका कायोलय; मंत्री, उनके मन्त्रि तथा अन्य कर्मचारियोंका समूह (बी और उमका विभाग) ।

मंत्रिपरिषद्-खी० (कैबिनेट कौंसिल) राज्यके मंत्रियोंकी सभा जिनमें प्रधानमन्त्री विविध प्रश्नोंपर बातचीत, विचार-विमर्श आदि किया जाता है ।

मंत्रिमंडल-पु० (कैबिनेट) किमी (कोलन) राज्यके मंत्रियोंका समूह जो शासनके विभिन्न विभागोंकी देख-भाल करना है, अमान्यमन्त्र ।

मनुआ जहाज-पु० (टालर) मछलीका शिकार करनेकी नाव या जहाज ।

मतदाता-खी० (वोटेर्स लिस्ट) किमी नगर, जिले अदिके उन नागरिक व्यक्तियोंकी सूची जिनमें मतदानका अधिकार प्राप्त हो ।

मतदानकक्ष, मतदानकोष्ठ-पु० (पोलिंग बुथ) किमी मतदानकेंद्रका वह कमरा, घर या घेरा जहाँ किमी विशेष मुहान्ये या सुदृष्टीके मतदानार्थी या किमी एक समयामे किमी अन्य विशेष सम्पत्तिकाके निवासका या केवल स्थितो द्वारा मतदानकी व्यवस्था हो ।

मतदानकेंद्र-पु० (पोलिंग स्टेशन) वह स्थान जहाँ विधानमण्डल आदिकी सदस्यताके लिए खड़े होनेवालोंके संबंधमें निर्वासकों द्वारा मतदानकी व्यवस्था हो ।

मतदानपेटिका, मतपेटिका-खी० (बैलट बॉक्स) वह पेटो जिनमें मतदानार्थी द्वारा मतपत्र छोड़े या डाले जाते हैं ।

मतदेय-वि० (वोटैबल) (वह विषय) या व्ययकी वह मन्त्रिपरिषद् सदस्यका मत लिया जा सके ।

मतप्रार्थी-पु० (कैनडैसर) दे० "मतसुधाचक्र" ।

मताधिकार-पु० (क्रिचार्ज) लोकमता, विधानसभा, नगरपालिका आदिके लिए सदस्य चुननेका, मत प्रदान करनेका अधिकार ।

मतानुयायक-पु० (कैनडैसर) वह जो किमी क्षेत्रके मतदानार्थीके पास जाकर अपने पक्षमें मत देनेका अनु-रोध करे ।

मतार्थी-वि० (कैंडिडेट) मत देनेके लिए प्रार्थना करनेवाला, उम्मेदवार । **-घटक-पु०** (पोलिंग एजेंट) मतदानकेंद्रपर मतार्थीको ओरसे काम करनेवाला, उसके हितों और अधिकारोंकी रक्षाका ध्यान रखनेवाला व्यक्ति ।

मदनलहरी-खी० (आर्सेन) समीचीनी प्रबल वासना, कामोन्माद ।

मजुरिन-खी० (रिभरमैन) बिना रंगका एक मीठा-सा

इस पदार्थ जो प्रायः इसी काममें जाता है तथा विरफो-
टकों के निर्माणमें भी प्रयुक्त होता है ।

अध्वरा-पु० (मोक्ष) वह व्यक्ति जो कमीशन लेकर
करीबनेवाले और जेबनेवाले के बीचमें पकड़कर लौटा पठा
देनेका काम करे, दमाक ।

अध्वराज-पु० (मिःलमैन) दो पक्षों या दलोंमें संपर्क
स्थापित करनेवाला आदमी; वह व्यक्ति जो उत्पादकों
तथा उपभोक्तानोंके बीचमें पकड़कर मालके वितरण, खरीद-
विक्री आदिमें सहायता करता है ।

अध्वरुगानि-वि० (मिडिब्लक) इतिहासके अध्वरुगाने
मध्य रखनेवाला; अध्वरुगान ।

अध्वरुवित्तवर्ग-पु० (बुध्म) समाजके उन लोगोंकी श्रेणी
जो न अमीर कहे जा सकेंगे हैं और न गरीब, तथा जो
प्रायः बुद्धिजीवी होते हैं ।

अध्वरु-पु० (मीट्रियेटर) वह व्यक्ति जो दो पक्षोंके बीचमें
पकड़कर, दोनोंकी समझानुसार उनका आपसी झगड़ा
या विरोध दूर करनेका प्रयत्न करे ।

अध्वरुसरेखा-स्त्री (मेरीटियन) वह कल्पित रेखा जो
दोनों ध्रुवोंसे होती हुई किसी स्थानके पासमें पृथ्वीके
चारी और गयी हो ।

अध्वराकाश-पु० (रिसेस) दे० 'अध्वराकाश' ।

अध्वरुक्रम-पु० (एन्टरटेनमेंट टेक्स) दे० 'प्रमोटरक' ।

अध्वरुशोधविधिसूत्र-पु० (मार्किंगट्रिम्प) मानसिक रोगों-
का उपचार करनेवाला ।

अध्वरुश्री-स्त्री (कैन्डिड) मनमें ही विद्यमान कल्पना-
की वस्तु जिसका वस्तुतः कोई अस्तित्व न हो, अर्थात्,
सत्य-शी प्रतीत होनेवाली कोई छाया ।

अध्वराधि-स्त्री (विथरेड) आवादीके प्रतिस्पर्धक व्यक्तियोंके
पक्षे होनेवाली वस्तुओंकी संख्या ।

अध्वराध्वर-पु० (विथरुट्टी) किसीकी मृत्युके बाद उसकी
संपत्तिपर लगनेवाला वह कर जो उसके उत्तराधिकारीमें
बसूक किया जाय ।

अध्वराध्वरपद्धति-स्त्री (कॉन्सर्बेसी मिस्टम) नगरका कूड़ा-
करकट, मल आदि बाहर हटवा देनेकी पद्धति ।

अध्वरावासा-पु० (स्लज) मजदूरी या गरीबीकी गदी
वस्तियाँ ।

अध्वराध्वर-पु० (कार्बन पेपर) वह कागज जिसपर कोयले
आदिकी कालिख चढ़ा (चूका) दी गयी हो (इसे जो
कागजोंके बीचमें रखकर लिखने या टाइट करनेमें ऊपरकी
लिखी या टाइट की हुई सामग्री, उर्ध्वकी-स्त्री, नीचे की ऊपर
जाती है) ।

अध्वराध्वर-पु० (सिरेम) दे० 'प्रमोक्षक' ।

अध्वराध्वर-पु० (प्रकाउट-जनरल) दे० 'महा-
लेखापाल' ।

अध्वराधिकारपत्र-पु० (मैग्ना चार्टर) वैयक्तिक तथा राज-
नीतिक स्वतंत्रता प्रदान करनेवाला वह प्रसिद्ध अधिकार-
पत्र जो ब्रिटनके राजा जॉनसे सन् १२१५ ई० में कियाया
गया था ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (एटर्नी-जनरल) दे० 'महा
प्राधिकारी' ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (सेल्समस्टर-जनरल) राज्यकी राज-
धानीमें रहनेवाला डाक-विभागका सबसे बड़ा अधिकारी ।
अध्वराध्वराध्वरी-पु० (कॉन्फेमेंस) विशाल और असा-
ह्य अस्मिताके जिसमें आगकी संपत्ति बहुत दूर-दूर तक पहुँचें
और जिसमें भारी क्षति होनेकी संभावना हो ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (एटर्नी-जनरल) वह विधिक अधि-
कारी जो राज्यसंघकी मुकदमों-मामलोंमें सरकारी ओरमें
व्यवस्थादि करनेके लिए प्राधिकृत किया गया हो ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (सेल्समार्शल) कमांडिटोमें सबसे
बड़ा या प्रधान अधिकारी ।

अध्वराध्वरी-पु० (इपीचमेंट) राज्यके प्रधान या राज्यके
किसी बड़े अधिकारीपर, किसी जन्म अथवा या बहुत ही
अनुचित आचरणके कारण, चलाया गया अभियोग ।

अध्वराध्वरी-वि० (विज एक्सेम्प्ले) जिसकी बरी मदमा
हो (राज्यपालादिके सम्मानार्थ प्रयुक्त शब्द) ।

अध्वराध्वरी-वि० (विज मैजिस्ट्री) आवत माननीय (किसी
स्वतंत्र नरेश या स्वतंत्रके लिए प्रयुक्त सम्मानका शब्द) ।

अध्वराध्वरी-पु० (कैपिटल शिप) भारी रण-यान, जहाज ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (कॉन्फेमेंस) सरकारके अन्तर्गत
विभाग, अन्तर्विभाग आदि सार्वजनिक विभागोंका प्रधान
सहायक, महाप्रणाली-पक्ष ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (कौमल) किसी देशका वह
वाणिज्यदूत जो किसी अन्य देशकी राजधानीमें नियुक्त
किया गया हो और जो उस देशमें स्थित इनर वाणिज्य-
दूतोंका प्रधान हो ।

अध्वराध्वराध्वरी-पु० (परम मार्शल) वायुसेनाका सर्वोच्च
अधिकारी ।

अध्वराध्वरी-पु० (मैजिस्ट्री) किसी देशकी वीरक,
रणभूमिमें अत्यन्त बौद्धिक शक्तियोंके द्वारा ज्ञानेवाका
एक विशेष पदक जो परमवीर-पदकसे छोटा माना
जाता है ।

अध्वराध्वरी-स्त्री (मेडिटी गैस) अध्वराध्वरीके बैठनेका
स्थान ।

अध्वराध्वरी-पु० (मैजिस्ट्री) बेलफेयर डिप्टी वह
स्थान जहाँ भीम ही माता बननेवाली या पहलेमें मातृत्व
को प्राप्त शिवोंकी देख-आल, चिकित्सा, शिक्षाव्यवस्था आदि-
का विशेष प्रबंध रहता है ।

अध्वराध्वरी-वि० (मैजिस्ट्री) (वह प्रथा या पद्धति)
जिसमें माता या गृहस्वामिनीकी ही मर्यादा सर्वोपरि मानी
जाती रही हो ।

अध्वराध्वरी-स्त्री (सेक्रेटरी एलुकेस) प्रारंभिक
शिक्षाके बादकी तथा उच्च शिक्षाके पूर्वकी शिक्षा, प्रारंभिक
शिक्षाकी समाप्तिमें लेकर वैदिक (कहाँ-कहाँ इंटरमिडियट
शिक्षा ।

अध्वराध्वरी-पु० (मैजिस्ट्री) (एक्साइज डिपार्टमेंट)
गंगा, गोख आदि मादक द्रव्योंपर निर्धारण रखनेवाला
सरकारी विभाग ।

अध्वरी-पु० (सेक्रेटरी) दे० 'प्रभाव' ।

अध्वरी-पु० (मैजिस्ट्री) दे० 'प्रभाव' ।

सेवाके लिए स्वेच्छापूर्वक दिया जानेवाला पारिवर्गिक ।
मानवपन, मानवव्यापार—पु० (ट्रेडिक इन ह्युमन बीरिंग) मनुष्योंको बेचने-खरीदनेका काम ।

मानवविज्ञान—पु० (ऐनथ्रोपोलॉजी) दे० 'मनुष्यविज्ञान' ।

माचकी—खी० (स्केल) वह माला जिसमें सेंटीमीटर, १८ आदिके निशान बने हों और जिसमें मापनेका काम किया जाय ।

मार्गरेखाक—पु० (एस्कर्ट) वह (सहाय्य) व्यक्ति या व्यक्ति-समूह जो किसी अन्य व्यक्तिकी रक्षाके लिए मार्गमें उसके साथ-साथ चले; किसी जहाज वा बहानी बेचनेकी रक्षाके लिए साथ-साथ चलनेवाला हवाई जहाज; विश्वसक पोत आदि ।

मालघर—पु० (गुड्रज आफिस) मालवाही द्वारा माल भेजने या आया हुआ माल छुटानेकी व्यवस्था करनेवाला दफ्तर ।

मालवाहू—पु० (गुड्रजक्लार्क) रेल आदिमें भेजे जानेवाले मालपारिक मालको रजिस्टरमें दर्ज कर बाहरमें भेजने या बाहरसे आये मालकी पानेवालेके हाथ भीपने आदिका काम करनेवाला रेलका कर्मचारी ।

मालमंजी—पु० (रेवेन्यू मिनिस्टर) दे० 'राजस्वमंजी' ।

मिलोपभोगयोजना—खी० (आन्टेरिटी स्कीम) दे० 'अन्प-भोगयोजना' ।

मित्रराष्ट्र—पु०, मित्रराष्ट्रि—खी० (एलाइड पावर) मित्रता-पूर्ण संबंध रखनेवाला देश या राज्य ।

मिथ्यानाम—पु० (मिसनोम) ऐसा नाम या ऐसा शब्द जो किसी व्यक्ति, कार्य, वस्तु आदिके लिए उपयुक्त न हो ।

मिथ्यारोपण—पु० (डिलिफिकेशन) आधारहीन या झूठे आरोप लगाकर बदनाम करना ।

मिलानकेंद्र—पु० (एक्स्पेंज) नगर या जिलेका मुख्य दूरवाणी-कार्यालय जिसमें वहाँके सभी दूरवाणी यंत्र संभल गये हैं और जहाँ स्थानीय लोगोंमें या अन्य नगरवालोंमें दूरमाप करनेके लिए परस्पर संबंध मिला देनेकी व्यवस्था की जाती है ।

मित्रभानु—खी० (एक्वाय) दो या दोसे अधिक धातुओंके परस्पर मिला दिये जानेमें बनी धातु; बरियः धातुके साथ धटियाके मिला दिये जानेमें बनी धातु ।

मुंडकर—पु० (वील टैक्स) प्रत्येक व्यक्तिपर लगनेवाला कर, जो आदमी पीछे बगल किया जानेवाला कर ।

मुक्त बाणिज्य, मुक्त व्यापार—पु० (फ्री ट्रेड) विदेशोंके साथ होनेवाला आयात-निर्यात संबंधों या करोंमें मुक्त व्यापार । —नीति—खी० (फ्री ट्रेड पालिसी) बाहर-में जानेवाले मालपर बाधक कर न लगाने, किसी एक देशके साथ विशेष रियायत न करनेकी बाणिज्य-नीति ।

मुक्तिमुक्त—पु० (वार ऑफ लिबरेशन) दूसरे राष्ट्रकी अधीनता, दासतासे अपने देशको स्वतंत्र करने, छुटकारा दिलानेके लिए किया जानेवाला संघर्ष ।

मुक्तिमेवा—खी० (मैलब्रेडम आर्म) एक सामाजिक भय टन जिसका उद्देश्य जनताकी धार्मिक तथा नैतिक उन्नति करना है ।

मुक्कम्ह—पु० (मास्क) चेहरेको छिपानेके लिए पहना

जानेवाला कपड़ा, नकाब ।

मुखपत्र—पु० (आर्मन्) किसी दफ या संस्था द्वारा प्रकाशित वह सामयिक पत्र जिसमें उसके सिद्धांतों, उद्देश्यों आदिकी चर्चा की जाती है ।

मुखपत्र—पु० (स्वोक्समैन) सरकार या किसी संस्था आदि-की तरफसे आधिकारिक रूपमें कोई कथन करनेवाला, दे० 'प्रवक्ता' ।

मुखरोधक (मुखलावरोधक) अधिनियम—खी० (रेगिंग ऐक्ट) मुख बंद कर देने, भाषण करनेपर प्रतिबंध लगा देनेवाला अधिनियम ।

मुखरोधन—पु० (रेगिंग) बलपूर्वक किसीका मुँह बंद कर देना, बोलने या भाषण करनेपर प्रतिबंध लगा देना ।

मुख्य निर्वाचन-आयुक्त—पु० (चीफ इलेक्शन-कमिशनर) वह प्रधान अधिकारी जिसने सारे देशके निर्वाचन कार्यका आयोजन तथा संचालन करने और चुनाव-संबंधी याचिकाओंपर विचार करनेके लिए विशेष न्यायाधिकरण नियुक्त करने आदिका भार सौंपा गया हो ।

मुख्य न्यायाधिपति—पु० (चीफ जस्टिस) दे० 'न्यायाधिपति'के साथ ।

मुख्य न्यायाधीश—पु० (चीफ जज) किसी लघुबाद-न्यायालय या अन्य न्यायालयके न्यायाधीशोंमें जो प्रधान हो वह ।

मुख्य मंत्री—पु० (चीफ मिनिस्टर) भारतीय गणतंत्रके किसी राज्य (प्रान्त)का सबसे बड़ा मंत्री ।

मुख्यालय—पु० (हेड क्वार्टर) प्रधान कार्यालय या मुख्य निवास ।

मुख्याधिष्ठाता—पु० (रेक्टर) दे० 'अधिशिक्षक'; विद्व-विद्यालयकी व्यवस्था करनेवाला मुख्य (निर्वाचित) अधिका-री, प्रधान निवासक ।

मुद्र—पु० (टाइप) छपाईके काममें प्रयुक्त होनेवाले भीम आदिके अक्षर, टाइप । —छिन्ना—पु० (टाइपराइट) कागजपर टाइपके अक्षर छापनेकी मशीन । —लेखक—पु० (टाइपिस्ट) मुद्रालिखकी सहायतामें कागजपर टाइपके अक्षर छापनेवाला । —लेखनबंध—पु० (टाइपराइट) दे० 'मुद्रलिख' ।

मुद्रण-स्वातंत्र्य—पु० (फ्रीडम ऑफ प्रेस) सरकारी अधिकारीको दिखाये बिना या उसकी अनुमति लिये बिना किसी समाचारपत्रमें किसी विषयपर लेख लिखने, टीका करने या किसी पुस्तकादिमें उसकी चर्चा करनेकी स्वतंत्रता ।

मुद्रांकित—वि० (सील्ड) जिसपर (नाम, पद आदिकी) मोहर लगा दी गयी हो, जो मोहर लगाकर बंद कर दिया गया हो ।

मुद्राबाहुल्य, मुद्राबिस्फार—पु० (इन्फ्लेशन) दे० 'मुद्रास्फीति' ।

मुद्राविज्ञान—पु० (न्यूमिस्मेटिक्स) मुद्राओं-संबंधी विज्ञान; पुराने सिक्कोंके आधारपर इतिहासका विवेचन करनेवाला शास्त्र ।

मुद्राविस्फीति—खी० (इन्फ्लेशन) मुद्राओं प्रचलनमें हुई अमाधायन वृद्धिको घटाना या सामान्य स्थितिमें लाना

मुद्राके अधिक विस्तारमें कमी करना, मुद्रासंकोच ।
मुद्रासंकोच-पु० (कोफ्लेशन) दे० 'मुद्राविस्फोति' ।
मुद्रासंपत्ति-ली० (इनफ्लेशन) किसी राज्यमें कागजी मुद्राका चलन अन्वयाधारण रूपमें बंद जाना, जिसमें वस्तुओं के दाम बहुत बढ़ जाते हैं, मुद्रापाटुत्व, मुद्राविस्तार ।
-रोबक-वि० (पेंटी इनफ्लेशनरी) मुद्रासंपत्ति रोकने वाला (उपाय हो) ।
मुद्रिहंड-पु० (बॉमिसम) वह आपसका हंड जिसमें गरी-दार (गुलगुले) दलानोंमें एक दूसरेपर मुक्का प्रहार किया जाय ।
मूकपाठ-पु० (टेकस्ट) किसी लेखक, विचारक या प्रस्तावकके वे मूल शब्द जिनका प्रयोग उसने स्वयं ही अपने लेख, विवेक, प्रस्ताव आदिमें किया हो ।
मूल्यसूचक: मूल्यस्तर-पु० (लेवल ऑफ प्राइसेज) मूल्योंकी रूपरी रेखा या समष्टि ।
मूल्यव, मूल्यनिरूपण-पु० (वैल्युएशन) किसी वस्तु, संपत्ति या किसीकी योग्यता आदिका मूल्य निश्चित करना, किसी जानकार द्वारा किसी वस्तु आदिके मूल्यका अनुमान लगाया जाना ।
मूल्यनिर्बंधन-पु० (प्राइस कंट्रोल) वस्तुओंके मूल्यमें अनुचित वृद्धि न होने देनेकी रण्ठिमें किया जानेवाला नियंत्रण या प्रतिबंधन ।
मूल्यवृत्तनांक-पु० (इंडेक्स नंबर) स्लावाज्, कम तथा अन्य वस्तुओंका विभिन्न समयोंका मूल्य वर्तमानेवाला अंक । सामान्य स्थितिके समयका मूल्य प्रायः १०० मान लिया जाता है । इससे बढ़ते या घटते हुए अंक आर्थिक मंदीकी या सखीके परिचयक होते हैं ।
मूल्यहास-कोच-पु० (डेप्रिशियेशन फंड) वंज, सामान, उपकरणों आदिके पिस जाने, पुराने तथा ठेकाज हो जानेके कारण उनके मूल्यमें क्रमशः होनेवाली घटी पूरी करनेके उद्देश्यमें स्थापित कोष या निधि ।
मूल्यार्कन-पु० (वैल्युएशन) दे० 'मूल्यन' ।
मूल्यवदेव वस्तुर्दे-ली० (वैल्युपेदेविल आर्टिकल्स टाक-खाने द्वारा सेजी गयी वे वस्तुएँ, (या रेल द्वारा भेजे गये मालकी वे) रसोई, विनियर्ता आदि जो जानेवालेके हाथ उनपर प्रकृत मूल्य लेकर ही अणिग की जा सकती हैं ।
मूल्यचिरोह-पु० (डेप्रिशियेशन) दे० 'मूल्योत्कर्ष' ।
मूल्यानुपासी कर (मुल्क)-पु० (ग्रेड वेकोरिड ल्यूटी) किसी वस्तुपर उसके मूल्यके अनुसार लगानेवाला कर या शुल्क ।
मूल्यप्रापकत्व-पु० (डेप्रिशियेशन) मुद्रा, सरकारी ऋण-पत्री, कारखानोंमें प्रयुक्त वंधादिके मूल्यमें कमी हो जाना, उधार आ जाना, मूल्यहास, मूल्यानिरोहण ।
मूल्यवाचक-पु० (स्वॉप) वस्तुओंके मूल्यमें एकाएक तथा तेजीसे होनेवाली कमी, अर्थपतन, सखी ।
मूल्यवाचरोहण-पु० (डेप्रिशियेशन) दे० 'मूल्यप्रापकत्व' ।
मूल्योत्कर्ष-पु० (प्रीशियेशन) मुद्रा, सरकारी ऋण-पत्री आदिके मापके मूल्यमें वृद्धि होना, मूल्यचिरोह ।
मुतकेका-पु० (केड अकाउंट) (डाकपरके मेसिंग बैंक) वह लेखा जिसमें कने भरसेमें कोई रकम जमा न की गयी

हो अथवा न निकाली गयी हो, और इस कारण जो चाख न रह गया हो ।
मुत्पुकेल-पु० (टेरेमेंट) मृत्युके समय या मृत्युके कुछ पहलेके संपत्तिके विभाजन, दान आदिके संबंधमें अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिए लिखा गया लेख या पत्र ।
मुत्पुकर-पु० (मिडियेशन) नरम या हल्का बचा देना; तीक्ष्णता कम कर देना; धमन ।
मैथुनिक-वि० (सेप्युलर) संयोग-क्रिया या संयोग-वासनायें संबंध रखनेवाली; ली और पुष्पमें, उनके पार-स्परिक व्यवहारआदिमें जिसका संबंध हो ।
मौलिक परीक्षा-ली० (ब्यान्का नोटी) क्लिकर नहीं, जवानी की जानेवाली छात्री, पदाधिकार आदिकी परीक्षा ।
मौलिक-वि० (वानेटी) मुद्रा-संघर्ष ।

य

यंत्र-पु० (मशीन) वह कर्म या कार्य पुरजोंवाला रॉना जिसकी सहायतासे छोटे समयमें आसानीमें अधिक काम हो जाय । -**लातुरी-पु०** (टेकनीक) वंधादि चमत्कार, कल पुरजे आदि ठीक करनेकी विशेष योग्यता, नत्तरा ।
-जान-पु० (मशीनरी) विभिन्न यंत्रोंका समूह । -**पुत्रक-पु०** (मिचोट) मनुष्यकी आकृतिका वह यांत्रिक पुनर्जा जो बिजली आदिकी सहायतामें विविध उपयोगी कार्य करता है । -**विद्-पु०** (मिचियर) यंत्रविद्या ज्ञाननेवाला यंत्रशास्त्रका ज्ञान । -**विद्या-ली०**, -**शास्त्र-पु०** (मिचियरिंग) यंत्र, यंत्र आदि बनाने, चलाने तथा ठेका पुन आदि निमित्त करनेकी विद्या । -**यज (यज्ञित) मेना-ली०** (मेकेनाइज्ड आर्मी) की कवचिन गादियें, मोटरगादियें तथा ट्रेक्टरोंन आदि आधुनिक यंत्रोंका प्रयोग करनेवाली एवं उनमें कैम मेना । -**यमुचव-पु०** (यज) किसी कामका आदिमें ईंट, गये मरन यंत्रों, उपकरणों आदिका समूह; उद्योग यंत्रावली ।
यंत्रक, यंत्रज-पु० (मैकानिक) दे० 'यंत्र' ।
यंत्री-पु० (मैकानिक) यंत्रादिकी सहायतामें काम करनेवाला, कारीगर; यंत्र बनाने या मरम्मत करनेवाला; यंत्रक, यंत्रज ।
यथार्थवाद-पु० (रीयलिज्म) वास्तविकोंका वह सिद्धांत दुनियामें मौलिक पदार्थोंका स्वतंत्र और वास्तविक अस्तित्व है । (सोचने या विचार करनेवाले मन, जीवतमाके चिंतनपर ही उनकी सत्ता अवलंबित नहीं है); चिंतन ही साहित्य-निवेदिका वह सिद्धांत कि गुण-बोधमय संसारमें हमें जो वस्तुएँ जिन रूपमें देख पड़ती हैं, उनका उसी रूपमें चित्रण करना चाहिये, आदर्शवादाका पु' उनमें न दिया जाय ।
यथार्थवादी-वि० (रीयलिज्म) यथार्थवादका अनुयायी ।
यथास्थिति-अ० (ऐज दि केंस मे बी) वैसी स्थिति हो, उसीके अनुसार । -**यसमसीता-पु०** (स्टैंडस्टिल ग्रेडी मेंट) वर्तमान या विद्यमान स्थितिकी ओरका स्थो बना । रखनेवाला समझौता ।
यष्टिग्रह-पु० (डिकेटम) धावनस्थलीके दोनों सिरोप

करे किये जानेवाले वे तीन छत्रे जिनके सामने सड़ा होकर बल्लेबाज दूसरी ओरसे फेंके हुए गेंदपर प्रहार करने का प्रयत्न करता है और जिनके पीछे यष्टिरक्षक या गोलेंदाजका स्थान रहता है।

यष्टिरक्षक-पु० (विकेटरूम) यष्टित्रय (विकेट्स) के ठीक पीछे खड़ा रहनेवाला वह क्षेत्ररक्षक जो बल्लेबाजके प्रहारसे छछांले गये गेंदको लौटने अथवा धावन करनेवाले खिलाड़ीके अपने स्थानपर न पहुँच पानेकी हान्यतमे वापस मिले हुए गेंदने उनपर प्रहार करनेका प्रयत्न करता है।

यांत्रिक-पु० (मशीनिस्ट) मशीनों, यंत्रोंकी चलावेवाला, उनके कल-पुरजोंका रहस्य जाननेवाला; मशीनें बनाने वाला। वि० (मेकानिकल) यंत्र-सबधी; यंत्रचन चलनेवाला।

याचिक-खी० (पेटिशन) आवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र, अर्जी। **यातायात-पु०** (ट्रेफिक) किसी पथमें होनेवाला मालका तथा यात्रियों आदिका गमनागमन।

यात्राधिदेव-पु० (ट्रेवलिंग क्लाइम) यात्रा करनेमें होनेवाले खर्चके बन्दे मिलनेवाला भत्ता।

यात्रीबंधु-पु० (पैमेजर माष्ट) रेलयात्रियोंकी सुख सुविधाओंकी व्यवस्था करनेवाला कर्मचारी।

यानांतरण-पु० (ट्रांसमिटे) यात्रियों अथवा माल-भ्रमस्थानका एक पोल या प्लेकार्डे उतारफर दूसरे पोल या दूसरे यानमे पहुँचाया जाना।

यात्राधिदेव-पु० (क्लबिंग क्लाइम) किसी कर्मचारीको माइक्रिल, रक्षा आदि सवारी रखनेके लिए मिलनेवाला अधिदेव (भत्ता)।

युक्तिमूलक-वि० (रिजलन) युक्ति या तर्कपर आधारित, तर्कमग्न, बुद्धिमग्न।

युक्ताभास-पु० (मोर्फिस्ट्री) देखनेमें बुद्धिमत्तापूर्ण, किंतु वास्तवमें तथ्यहीन तर्क।

युग्मक-पु० (एब्स) डेनिस या बैरमिगटनके ग्रन्थमे दो-दो पुरुष मेलाधिकी या दो-दो स्त्री मेलाधिकीका जोड़ा।

युग्मय-पु० (कपलिंग) दो चीजों (रेलवेके टम्बों आदिकी) एकमे जोड़ देना।

युद्धपरिवर्त-खी० (वारक्रिमिल) युद्धका संवाहन करनेके लिए (संश्रमणकल के लिए) मध्यम मध्यमोंमें निर्माण विशेष समिति।

युद्धरत, युद्धरिक्त-वि० (वैलजेंट) (वह राष्ट्र या दल) जो नियमित रूपसे किसीके विरुद्ध लड़ाई छानकर युद्ध-कार्योंमें लगा हुआ हो।

युद्धस्वयन-पु० (सीत फायर) युद्धमें स्थायी या अस्थायी स्थिति होनेके पहले कलाशं बंद कर देनेकी स्थिति।

युद्धापरवाही-पु० (वारक्रिमिल) वह जिसने युद्ध-संबंधी कोई अपराध-छात्रके हाथ कोई उपयोगी सामग्री, ममाचार, मेद आदि देव देना-किया हो।

युद्धोत्तर-अर्थव्यवस्था-खी० (पोस्टवार एकोनामी) युद्ध-मामासिके बादकी स्थिति ईश्वरक उसके अनुकरण नैवार की गयी आर्थिक समस्याओंके निपटारेकी व्यवस्था या योजना।

युद्धोत्प्रेषक-वि० (वारमंगर) ऐसी नीतिका अनुसरण करनेवाला जिससे युद्ध छिड़ जानेकी संभावना हो।

युद्धोत्प्रेषक-पु० (वारमंगरिस्) अपने भावणों, वक्तव्यों, नीति आदिमे युद्धको उत्तेजन देनेका कार्य।

युद्धोपकरण-पु० (आरमेमेंट्स) गोला-बारूद, तोपें आदि युद्धकी सामग्री।

यौगिक-पु० (कपाउड) दो या अधिक तत्वोंमे बना हुआ पदार्थ (जैसे जल जो ऑक्सीजन तथा जलजनमे बनता है)।

यौनरोग-पु० (वेनेरियल डिजीज) टो 'रनिज रोग'।

र

रंगशाला-खी० (स्टूडियो) उद्यान, जलाशय, ध्वन्यभिलेखन-यंत्रादिमे मण्डित प्रकीर्ण तथा अन्य उपकरणोंमे सुक वह लंबा-चौड़ा हल्ला जहाँ चित्रपटके लिए चलचित्र तैयार किये जाते हैं; आकाशवाणी केंद्रका वह प्रकीर्ण जहाँसे किसी ध्वनिरोपक रंग द्वारा भाषण, सामयिक वार्ता, रूपक, कविमन्त्रेण आदिका प्रसारण होता अथवा जहाँ उनका ध्वन्यभिलेखन किया जाता है।

रंजनकारी साहित्य-पु० (लाइट फिटेर) ऐसी पुस्तकें, कहानियाँ आदि जिन्हें लोग मनबहलावके लिए पढ़ते हैं और जिनमें पढ़ने-मनमगनेमें विशेष आवागम नहीं करना पड़ता।

रक्तक्षेपण-पु० (ब्लडट्रांसफ्यूजन) एक व्यक्ति या प्राणीकी धमनियोंमे रक्त निकालकर किसी अन्य व्यक्ति या प्राणीकी धमनियोंमें पहुँचाया।

रक्तक्षय-पु० (ब्लडग्रेसर) हृदय द्वारा प्रक्षेपित रक्तका धमनी आदिकी दीवारपर पड़नेवाला दबाव जो उचित मात्रामे कम या अधिक होनेपर रोग या विकृतिका सूचक होता है।

रक्तदान-बैंक-पु० (ब्लडबैंक) युद्धमें वायल होने या अन्य कारणोंसे जिनकी धमनियोंमें रक्तकी नितांत कमी हो गयी हो उनके शरीरमें रक्तका निक्षेपण करनेके लिए पढ़नेमें ही स्वयं व्यक्तियोंकी देहसे लिया गया रक्त मध्य करनेवाली संस्था।

रक्तांडु-पु० (मीरम) रक्तका पतला, पारदर्शी भाग; वह रक्त जो अभी रक्तके रूपमें लाल न हुआ हो; वेप, सोम्य।

रक्षापोत-पु० (एस्कर्ट वेसल) व्यापारिक जेबे आदिकी रक्षाके लिए उनके साथ-साथ चलनेवाला पोत।

रक्षादल-पु० (होमगार्ड) पुलिसके महायुक्त-रूपमें काम करनेवाला नागरिकोंका संघटन।

रक्षरखाव-पु० (अपकोप, मेनेटेमेंस) देख-रेख करते हुए बनाये रखने, चान्द्र रखनेकी क्रिया।

रजतजर्जरी-खी० (सिलवर जुबिली) किसी व्यक्ति या मन्त्रा आदिके जीवनकालके २५ वर्ष समाप्त होनेपर मनाया जानेवाला उत्सव।

रजतपट-पु० (सिलवर स्क्रीन) वह सकेद परदा जिसपर चलचित्र (फिनेमा) का चित्र दिखाये जाते हैं।

रजोविरति-खी० (मिनोपाज) स्त्रीके जीवनका वह परिवर्तन जिसमें रजःस्राव अंतिम रूपसे बंद हो जाता है। (यह प्रायः ५० वर्षके आस-पासकी अवस्थामें होता है)।

रत्ननीति-खी० (स्ट्रेटजी) आक्रमण करने, युद्ध चलाने तथा मेनाका गृह्यन करने आदिका रंग या नैपुण्य।

रम्भपोत—पु० (वारशिप) युद्धके काम आनेवाला जहाज ।
रम्भबंदी—पु० (कैपिट) युद्धमें पकड़ा गया शत्रुका नैतिक, युद्धबंदी ।

रत्नज रोग—पु० (वेनीरियल डिजीज) संक्रमित उत्पन्न या सक्रमित रोग ।

रम्भावाज—पु० (ड्राम) मक्कोपर विद्यवा गयी लोहेकी पगली पटरीपर बिजली आदिकी मझावतासे चलनेवाली बड़ी सवारी गाड़ी ।

राजकीय पक्ष—पु० (ऑफिशल पार्टी) वह दल जिसके हाथमें देशका शासनसूत्र हो, जो राज्यका संचालन कर रहा हो, सरकार दल ।

राजकीय प्रामिषोक्ता—पु० (गवर्नमेंट प्रामिषक्चर) दे० 'प्रामिषोक्ता' के साथ ।

राजकीय नीति—की० (फिल्लज पॉलिसी) सरकारी कोष या आव-संबंधी नीति ।

राजचिह्न—पु० (इन्सिग्निया) राजाओंके अधिकारसूचक चिह्न—जैसे छत्र, दंड आदि, दे० 'परसूचक चिह्न' ।

राजदूता—की० (क्रीमेटो) प्राणदंड आदिकी सजा पाये हुए बंदीके प्रति राजा या प्रधान शासक द्वारा, क्षमा-प्रदान, दंडमूल्य आदिके रूपमें दिखायी गयी दवा ।

राजदूत—पु० (एम्बेसेडर) किसी अन्य देशकी राजधानीमें अपनी सरकारके प्रतिनिधि-रूपमें रहनेवाला प्रतिनिधि ।

राजदूतावास—पु० (एम्बेसी) राजदूतका निवासस्थान ।

राजपक्षि—वि० (मॅजेटेड) (वह अधिकारी) जिसको नियुक्ति, पदचढ़ाई, स्थानांतरण, छुट्टीपर जाने आदिकी सूचना सरकारी यात्रमें छपती हो ।

राजपदवि—की० (पालटी) नागरिक शासनका प्रकार, राजशासनकी प्रणाली ।

राजपुरुष—पु० (स्टेट्समैन) राज्यके शासन, प्रबंध आदिमें प्रमुख रूपमें भाग लेनेवाला अथवा उसकी कला या नीतिका ज्ञानकार, राजनेता, राजन्यायक ।

राजप्रमुख—पु० मैसूर, बिर्बापुर आदि राज्यों या मध्य-भारत आदि राज्य-संघोंमें राज्यपालका स्थान ग्रहण करनेवाला प्रमुख राजा ।

राजभवन—पु० (गवर्नमेंट हाउस) राजधानीका वह सरकारी भवन जहाँ राज्यपाल या उपराज्यपाल निवास करना है ।

राजसभा—की० (कौंसिल ऑफ स्टेट्स) दे० 'राज्य-परिषद्' ।

राजसाक्षी—पु० (ऐक्चर) अपराधियोंमें वह व्यक्ति जो क्षमा-वाचना कर सरकारी गवाह बन जाय और अपने पहलेके साक्षियोंका अपराध प्रमाणित करनेमें पुष्टिसकी सहायता करे, रक्षानी गवाह ।

राजस्व—पु० (रेवेन्यू) राज्यकी या सरकारकी भूमिक आदि-से होनेवाली आय ।—**व्यापारिक**—पु० (रेवेन्यूकोर्ट) दे० 'माल अदालत' ।—**अंश**—पु० (रेवेन्यूमिनिस्टर) माल मुद्रकमेंसे देशरेख करनेवाला मंत्री ।

राजार्क—पु० (इन्सिग्निया) दे० 'राजचिह्न' ।

राजविधेय—पु० (प्रिंसी पर्स) राजा या शासककी निजी खर्च-के लिए सरकारी खजानेसे दी जानेवाली रकम ।

राज्यक्षेत्राधीन अधिकार—पु० (एक्स्ट्रा टेरिटोरियल राइट) एक राज्यके क्षेत्रके भीतर न्याय आदिके मामलोंमें विदेशियोंकी अपने ही देशके अधिकार प्राप्त होना ।

राज्य परिषद्—की० (कौंसिल ऑफ स्टेट्स) राज्योंमें चुने हुए प्रतिनिधियोंकी वह उपपरिषद् जो निम्न मन्त्रोंके निर्णयोंपर पुनर्विचार करती है, राजसभा ।

राज्यपाल—पु० (गवर्नर) किसी प्रदेश (भारतमें 'के' श्रेणीके किसी राज्य)का सर्वोच्च पदाधिकारी और शासक जिसकी नियुक्ति प्रायः राष्ट्रपति अथवा सर्वोच्च राजसत्ताकी स्वीकृतिसे होती है ।

राज्यसंचालनपरिषद्—की० (रीजेंसी काउंसिल) राजाकी अल्पवयस्कता, लकी बीमारी आदिके समय राज्यकी संचालन करनेके निमित्त नियुक्त कनिष्ठ व्यक्तियोंका परिषद् ।

राज्यसंरक्षक—पु० (रीजेंट) वह व्यक्ति जिसे राजाकी अल्पवयस्कता, दीर्घकालीन कम्पता आदिके समय राज्यकी देख-रेख, व्यवस्था आदिका भार सौंपा गया हो ।

राष्ट्रपति—पु० (प्रेसिडेंट) गणतन्त्रका निर्धारित अव्यवस्थित रूपमें चुना गया प्रधान (सर्वोच्च पदाधिकारी) ।—**अवकाश**—पु० राष्ट्रपत्या (भारतमें दिव्यस्थित) सरकारी निवास स्थान ।

राष्ट्रमंडल—पु० (कामनवेल्थ ऑफ नेशन्स) भ्रमण कर और समान भावनामें आबद्ध भ्रमण राहोंका समूह ।

राष्ट्रवाद—पु० (नैशनलिज्म) देशवासियोंमें राष्ट्रीयताके भावनाके बढीकरण, राष्ट्रीय परंपराओंका और बंधुत्व बनाये रखने तथा राजनीतिक एकता स्थापित करने या पर धीनतासे मुक्ति आदिके लिए किया जानेवाला आंदोलन ।

राष्ट्रीयकरण—पु० (नैशनलाइजेशन) मुखाब्ज देकर । बिना मुखाब्जके देशके विशेष उद्योगों, भूमि आदिपर सरकारका अधिकार कर लेना और समूचे राष्ट्रके हितकी दृष्टिमें उनकी व्यवस्था करना ।

रामायनिक परीक्षक—पु० (कॅमिकल एग्जामिनेर) भ्रमण-वट या बनावट आदिका पना कलानेकी दृष्टिमें किया वस्तुके रामायनिक तत्वोंका विश्लेषण करनेवाला ।

रिक्तता—की० (वैक्यूमी) किसी पद, नौकरी या स्थानका खाली होना, किसी कार्यालय आदिमें कोई जगह 'पद' रिक्त होना ।

रिक्त स्थान—पु० (वैक्यूमी) दो या अधिक स्थानोंके बीचका खाली जगह; दे० 'रिक्त' ।

रिक्त—की० (वैक्यूमी) वह पद या स्थान जिसपर अभी किसी अधिकारी या कार्यकर्ताकी नियुक्ति न हुई हो, रिक्तता, दे० 'रिक्तस्थान' ।—**पूरक**—पु० (फिल्लर) रिक्त स्थानकी भरनेवाली वस्तु ।

रिक्त—पु० (एन्टेट) सूचपति, धन; (एन्टेट्स) कारवाण कमी वह पूंजी जो संपत्ति, सामान आदिके रूपमें हो ।—**पक्ष**—पु० (विज) वह पक्ष जिसमें रिक्त (अर्थात् उत्तराधिकारमें मिलनेवाले धन)के अनुकूल-अनुक प्रकारसे वेटवारेक संबंधमें ह्छा प्रकट की गयी हो, ह्छापक्ष ।

कर्मसाधकाश—पु० (मेडिकल कौंस) बीमारीके कारण की गयी छुट्टी ।

कृषक-कार्यक्रम-पु० (कीचर प्रोग्राम) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रम, अक्सन आदि संघों का कार्यक्रम।

कृषमेव-पु० (मासिकिकेशन) वर्ष या स्वस्थ आदिमें अधिक परिवर्तन करना, श्वर-उत्तर बदल देना।

कृषनेति-वि० (मासिकिकेशन) जिसमें श्वर-उत्तर व्यवस्था परिवर्तन कर दिया गया हो।

कृषक-पु० (टिक्कर) माली कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तु आदि की रूप-रेखा, बनावट-बुनावट आदि का ढंग निश्चित करने या सोचनेवाला।

कृषक-पु० (टिक्कर) किसी भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तु आदि की रूप-रेखा बनाना, मनमें किसी योजना आदि का रूप निश्चित करना, बनावट-बुनावट आदि का कोई विशेष ढंग या तर्ज सोचना, निर्धारित करना।

कृषांतर-पु० (ट्रांसफॉर्मेशन) किसी वस्तु का बदलाव।

कृषांतर-पु० (ट्रांसफॉर्मेशन) किसी वस्तु के रूप, आकार आदि का बदल दिया जाना, उनमें परिवर्तन हो जाना।

कृषांतरित-वि० (ट्रांसफॉर्म) जिसका रूप, आकार आदि बदल गया हो या बदल दिया गया हो।

रेखा-स्त्री० (लाइन) बिंदु की गति जिससे लंबाई हो, चौड़ाई, मोटाई न हो। -**गणित**-पु० (ज्यामिती) वह गणित जिसमें रेखाओं, कोणों, वृत्तों आदि का विवेचन होता है। -**विज्ञान**-पु० (वेक) किसी व्यक्ति या वस्तु का अंतर रेखाओं से बना हुआ चित्र। (चाट) दे० 'रेखा-पत्र'। -**पत्र**-पु० (चाट) विशेष सूचना या जानकारी प्रदान करनेवाला, मुख्य रूप से रेखाओं का बना वह चित्र जिसमें मुख्य-मुख्य बातें यथालाभ दिखायी गयी हों; लाते बनाकर तालिकाओं आदि के रूप में दिया गया विवरण, नाबिको, जहाज के स्थानों आदि के पास रहनेवाला वह समुद्री नक्शा जिसमें समुद्रतट, चट्टानें, खनरे के स्थान आदि दिखाये गये रहते हैं; वस्तुओं के उपादन एवं व्यवस्थापित-संबंधी तथा तात्पर्यात्मक करने-बदले आदि-संबंधी परिवर्तन कृष-लीन अर्थात्-उत्तरनेवाली रेखाओं द्वारा दिखानेवाला पत्र। -**बंदगी**-स्त्री० (बिन्डवूल) गणित की दो या अधिक राशियों के एक साथ बंधनेवाली वह अंगी रेखा जो उनके ऊपर खींच दी जाती है।

रेखित-पु० (लाइन) वह पनादेश जिसमें भावी और नीचे के उपरतक से समांतर रेखाएँ खींच दी गयी हों (रेखा) रूप या किसी के धर्म के स्वार्थ जमा होने के बाद ही निकाला जा सकता है।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेखित-पु० (रेखे रेख) रेखाओं व्यवस्था, संचालन, विकास आदि के कार्यों का नियंत्रण करनेवाली समिति।

हो जाने के बाद स्वास्थ्य की पूर्ति के लिए तथा पूर्ण स्वास्थ्य करने की क्रिया।

रोशनी-स्त्री० (स्टार लाइट) नममें लगा हुआ वह काम या दंड जो पानी की सतह पर स्थित स्थान तक पहुँच जाने के बाद पानी का अस्तर या मलमें आना अपने आप रोक देता है।

ल

ल-पु० (परपेंडीकुलर) किसी सरल रेखा के आधार पर दोनों तरफ एक-एक समकोण बनानेवाली रेखा।

ल-वि० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-वि० (पेंडिंग) किसी कार्य में धृष्टता से जुटा रहने-वाला; किसी मित्रांत, मित्र आदि पर कटा रहनेवाला।

ल-स्त्री० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

ल-पु० (पेंडिंग) (बह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंध में अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चय) अवस्था में हो।

स्थिति कर अपने स्थान पर सुव्यवस्था बैठ रहा।

लेखाधीन विभाग - सी० (निर्ण) जेरी जो इंग्लो कल्लोके सिरेपर लीला जानेवाली कोड़े, लीपे जाहिकी बनी वह नीलवार बस्तु जिसमें लिखा जाता है।

लेखा - पु० (अकाउंट) हिसाब, आय-व्ययका विवरण, गणना। - **कर्म - पु०** (अकाउंटसी) हिसाब-किताब रखने का कार्य, मुनीमी। - **कल्लोकेज - पु०** (मेनिपुलेशन ऑफ अकाउंट्स) हिसाब तैयार करनेमें चालबाजी करना। - **परीक्षक - पु०** (ऑडिटर) आय-व्ययकी जांच-पड़ताल करनेवाला। - **परीक्षण - पु०** (ऑडिट) हिसाबकी जांच-पड़ताल। - **पाक - पु०** (अकाउंटेंट) हिसाब (लेखा) रखने या लिखनेवाला, जो लेखा रखनेमें चतुर हो, मुनीम।

लेखाध्यक्ष - पु० (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

लेख - पु० (राकुमेट) दे० 'प्रलेख'।

लोक - पु० (पब्लिक) प्रजा, सामान्य भेष, जनता। - **कंडक - पीडक - वि०** (पब्लिक म्यूटुअल) सर्वसाधारणकी संग करनेवाला, सतानेवाला, हाथि पहुँचानेवाला। - **कार्य - पु०** (पब्लिक अफेयर्स) लोक या सर्वसाधारणसे संबंध रखनेवाले कार्य। - **कोषण - की०** (मेनिफेस्टो) दे० 'नीतिवोधना'। - **संज्ञीकरण - पु०** (किमोर्कटिजेसन) किसी राज्य, शासनपद्धति आदिकी लोकसंज्ञका रूप देना, उसे लोकतांत्रिक सिद्धांतोंके अनुरूप बनाना। - **निर्माण-विभाग - पु०** (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) नगरजनिक भवन, लकमें इत्यादि तैयार करनेवाला विभाग। - **नृत्य - पु०** (पीक डांस) सामान्य जनतामें प्रचलित नृत्य। - **हावन - पु०** (पब्लिक कैरियर) जनताका सामान देनेके लिए प्रयुक्त योटर ट्रक। - **निर्माण-संस्थालय - पु०** (इन्फ्रस्ट्रक्चर ऑफ पब्लिक एन्टरप्राइज) सार्वजनिक शिक्षा-विभागका प्रधान अधिकारी। - **समा - की०** (हाउस ऑफ पीपुल) लोकसभाकारी राज्योंमें विधान आदि बनानेवाली जनप्रतिनिधियोंकी सभा; भारतीय गणराज्यको संसद्का निम्न सदन। - **सेकक - पु०** (पब्लिक सेक्टर) जनताके सेवा-संबंधी कार्योंमें नियुक्त सरकारी कर्मचारी। - **सेवा - की०** (पब्लिक सर्विस) जनताके हितकी दृष्टिसे किया जानेवाला कार्य; राज्यकी या भ्रकारी मौकरी जिससे जनताकी सेवा या कष्ट-निवारण हो। - **सेवा-आयोग - पु०** (पब्लिक सर्विस कमिशन) प्रशासन-कार्य चलानेके लिए उच्च मैगीके लोक-सेवकोंका परीक्षादि द्वारा चुनान करनेमें सहायक; देनेवाला आयोग। - **स्वास्थ्य - पु०** (पब्लिक हेल्थ) जनताका स्वास्थ्य। - **हित - पु०** (पब्लिक गुड) सर्वसाधारणका हित या लाभ।

कोकोपयोगी सेवा - की० (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस) वह सेवा, कार्य या व्यवस्था जो जनताके लिए विशेष उपयोगी या कामकी हो (जैसे नगरकी जलकल-व्यवस्था, बिजली, स्काई आदिका काम)।

कोषविभाग - पु० (फर्स एंड कोमिंशंस) (हिसाब, व्योरे आदिके द्वारे) भूक और सूट, भूक-भूक।

कोड-आवरण, कोडपट - पु० (आवरन करटेज) ऐसा आवरण या प्रतिबंध-व्यवस्था जिसकी आरम्भ होनेवाली जाते

दूसरीपर प्रकट न होने पावे (विशेषकर आधुनिक कलत्र का कल्लेके शिकनेमें इसे देखी स्थापितके लिए प्रयुक्त)।

कोडपीपर - की० (आवरन करटेज) दे० 'कोडपट'।

कोडमांच - पु० (हाईवेयर) कोडे-नीतिके बने पात्र तथा अन्य वस्तुएँ।

कोडिबिहीन, कोडहर - वि० (नाम-कैरल) जिसमें कोडेका मेल न हो, कोडेकी ओरकर अन्य (बात)।

व

वंदन - पु० (वलाइमेंट) दे० 'नाचंदन'।

वर्तितारक - पु० (कीग) वह मंडा या हिस्सा जो किसीकी वंशित या किसीके लिए निर्धारित किया गया हो, विवर्तांक।

वर्गीकरण - पु० (स्टेरिकाइजेसन) विशेष प्रक्रिया द्वारा (भूमिकी) अनुसंधान या (जीवकी) बंधा बना देना; उप-वर्गकमता या पुस्तकमें रहित कर देना।

संसर्गहार-नीति - की० (जेनोसाइड) किसी ब्रह्म, जाति या संप्रदाय-विशेषके सामूहिक संहार या विनाशकी नीति, जातिसंहार-नीति।

वक्त्रेखा - की० (कम्ब काइन) वह रेखा जो सरल या सीधी न होकर टेढ़ी, घुमावदार हो।

वक्त्रपत्र - पु० (प्रामिनी नोट) वह कणपत्र जिसमें सरकार प्रजासे कुछ कण लेकर यह प्रतिष्ठा करती है कि, अमुक व्यक्तित्वे इगना कण लिया गया और उम्मायू' इस हिसाबमें कणदाताको दिया जायगा; दे० 'प्रतिष्ठा पत्रमुद्रा'।

वक्त्रबंध - पु० (एंगेजमेंट) किसीमें मिश्रित या अतिरिक्त काम करने आदिका आपसी निश्चय या बचन देना।

वक्त्रमंचारी - पु० (इंग्रमेन) फासी देनेका काम करनेवाला कर्मचारी; दे० 'वक्त्रमंचिकारी'।

वक्त्राकल - पु० (स्कांडर हाउस) पशुओंके वक्त्र करनेका स्थान।

वक्त्र - पु० (कारिस्ट) जगल। - **माकल - पु०** (वीकारिस्टेसन) किसी क्षेत्रकी जंगल या जगलोंसे रहित कर देना।

पाक - पु० (जेबर) जंगल या वनकी देख-भाल करनेवाला अधिकारी। - **रक्षक, संरक्षक - पु०** (कनसर्वेटर ऑफ कारिस्टेस) वनोंका संरक्षण करनेवाला; उन्हें हाथि या विनाशसे बचानेवाला। - **रोषण - पु०** (इक्वाइस्टेशन) किसी भूमिकी वन या जगलके रूपमें परिणत करनेका काम। - **विज्ञान - पु०** (मिलकी कल्लकर) वृक्षारोपण आदि-संबंधी विज्ञान।

वक्त्र-असाधिकार - पु० (एक्स्ट सफेज) विधानमंडल आदिके प्रतिनिधि चुननेका वह अधिकार जो राज्यके सभी वक्त्र नागरिकोंको, बिना किसी मेर-पात्रके, प्राप्त होता है।

वक्त्र - वि० (ओवर-एज) जिसकी उम्र अधिक हो गयी हो, जो निर्धारित वयसे अधिकका हो।

वरजस्वार्तन्त्र - पु० (ओवरन ऑफ वॉरस) वरण करने, चुननेकी स्वतंत्रता।

वरीयता - की० (प्रिफरेंस) दे० 'अधिवायता', तरजीब।

वर्णचिह्न-ली० (कोलरब रंगक) वह चिह्न जिसमें विवेक से रंगों के अनुसार रंगे और रंगे रंगों के रिक बानों में, जिसकी संख्या दोनों ओर से (अर्थात् एक, चार, और आठ तक) बराबर होती है, उपयुक्त आकार देकर शब्द बनाने पड़ते हैं तथा जहाँ एकसे अधिक शब्द बनाने की सुझाव हो वहाँ रचविकसे संशोधित शब्दका चुनाव करना पड़ता है।

वर्णचिह्न-ली० (सेक्रेट) दे० 'वर्णपत्र'।

वर्णपत्र-पु० (सेक्रेट) किसी छिद्र या दरार में आनेवाले प्रकाश के प्रिप्रायकाय (प्रिज्म) पर पड़ने में दिखाई देनेवाले सात रंगों की पट्टी, वर्णचिह्न (यि रंग वही होते हैं जो इन्द्रधनुष के होते हैं)।

वर्णविशेष-पु० (कलर प्रेजुडिस। अन्वये) वर्ण या रंग के कारण किसी व्यक्ति या व्यक्ति-समूह में विशेष करने की प्रवृत्ति।

वर्णचिह्न-पु० (कलर आइड) वह जो कुछ रंगों के बीचका जेद न पड़वाने लें।

वर्णानुक्रमसे-ज० (एल्फाबेटिकली) वर्णों के अनुक्रमसे।

वर्णन-पु० (कमीशन) एजेंट या दफ्तरकी किसी मीटिंग में निकलेवाली छूट या रकम, दस्तूरी। -अधिकारी-पु० (कमीशन एजेंट) कमीशन या दफ्तरकी लेकर किसी बड़े व्यवसायी या व्यापारिक मन्त्रालय प्रतिनिधि, अधिकारी (एजेंट) का काम करनेवाला।

वर्णग्रह-पु० (वर्नर) किसी दीपक, लूप आदिका वह भाग जिसमें बत्ती पड़ी रहती है तथा जो उसकी लौका नियंत्रण करता है (कुछ लोग इसे 'ग्लोबल' या 'डम्पक' भी कहते हैं)।

वर्षबोध-पु० (इयर बुक) प्रतिवर्ष प्रकाशित होनेवाली वह पुस्तक जिसमें वर्षभरकी मुख्य घटनाओं, सामाजिक और राजनीतिक इत्थल तथा विशेष जानकारीकी बातोंका संकलन किया गया हो।

वास्तुप्रमाणदेख-पु० (इन्डेंट) माल भेजने के लिए (देख के बाहरसे) दिया गया लिखित आदेश।

वाह्य-पु० (कान्फेक्चर) ताप या विद्युत् के एक स्थान में दूसरे स्थानको जानेकी वह रीति जिसमें वद्यार्थ के कण वस्तुसे अंतर होनेके कारण एक स्थान में इतर दूसरे स्थान पर पहुँचते हैं और ताप या विद्युत् देते हैं।

वागजाल-पु० (सरकमोन्फुजन) सीधी-साड़ी बातको टेढ़े-मेढ़े ढंगसे कहना, छद्म-वास्तुयका प्रयोग कर असली बात छिपा बाना।

वाक्य-पु० (टीकिंग) विधानसभा या लोकसभा में किसी विषयको रले जानेपर उसका विचार, बहस आदिके लिए पड़की, छुट्टी या सीसी बार पड़ा जाना, जिसके बाद ही वह अंतिम रूपसे स्वीकार किया जा सकता है।

वागिज-पु० (कामर्स) बड़े पैमाने पर किया जानेवाला व्यापार जिसमें बैंकोंका कारबार, कर्पारियोंके हिस्सोंकी खरीद-बिक्री, बीमा-संघोंकी खजाने आदि भी सम्मिलित हैं।

-हृत्-पु० (कौलक) दे० मूलमें।

वाणिज्यालय-पु० (इंक्विरिय) वाणिज्यका मुख्य स्थान, बाजार, बड़ी दुकान।

वायोम्पाइ-पु० (विस्मिरिया) एक तरहका सूक्ष्म रोग जो विशेष रूपसे स्त्रियोंकी होता है।

वायुचक्र-वायुचक्र-पु० (आरकेस्ट्र) वायुवायुमण्डल में विशेष स्थानपर समवेत होकर बाना बनानेवालीका इत्थ वा समूह।

वायुपत्र-पु० (वैर) वादी द्वारा किसीके विरुद्ध न्यायालय में उपस्थित किया गया लिखित आरोप।

वायुपत्र-पु० (इन्) न्यायालयके सामने रखा गया वह विषय जो उभय पक्षोंके बीचके झगड़ेका मूल कारण हो।

वायुचक्र-पु० (कॉज ऑफ ऐक्शन) कोई व्यवहार या मुकदमा न्यायालयमें उपस्थित किने जानेका कारण वह झगड़ा जिसके कारण न्यायालयमें मामला चलाया जाय।

वायुविषय-पु० (मैटर ऑफ डिस्कशन, सबजेक्ट मैटर) वह विषय जिसके संबंधमें विवाद या चर्चा की जाय, विचारणीय विषय।

वायुव्यय-पु० (कास्ट्स) बाइया मुकदमेका व्यय जो न्यायालय द्वारा जीतनेवाले पक्षकी दिलाया जाय।

वायु-समाप्ति-ली० (अवेटमेंट ऑफ सूट) मामले या मुकदमेका खारिज कर दिया जाना।

वाइहेनु-पु० (इन्) झगड़ेका विषय जो न्यायालयके सामने उपस्थित हो और जिसके संबंधमें न्यायाधीशको निर्णय करना हो; दे० 'बाइसू'।

वायुसंजीत-पु० (इन्स्ट्रुमेंटल म्यूजिक) वाद्य-यंत्रों द्वारा उत्पन्न की गयी मधुर ध्वनि।

वायुस्थान-पु० (आरकेस्ट्र) नाट्यशाला या वाद्य-मनका वह स्थान जहाँ सामूहिक रूपसे बाजा बजानेवाले बैठते हैं।

वायुपतिक जाल-ली० (कॉपोस्ट) गोहर, मल, पौधों आदि (के मिश्रण) में मिश्रित खाद, कूड़े आदिने बनी खाद।

वायुपंथी, वायुपंथी-पु० (लेफिस्ट) राजनीति आदिमें उन्नत विचारोंका अनुयायी।

वायुपतिक-वि० (लेफ्ट हैडर) दे० 'बयॉरथा'।

वायुपतिक-वि० (एटी स्काफाइन) दे० मूलमें।

वायुचक्र-पु० (गैसजार्) वेहनकी शक्तिका शीशिका लंबा-सा विशेष पात्र जिसमें औषजन आदि वायव्य इन्ध्र भरकर विविध प्रयोग किने जाते हैं।

वायुपति-पु० (एयर वास्त मार्शल) वायुसेनाका उच्चाधिकारी जो महावायुपति छोटा होता है।

वायुपथ, वायुमार्ग-पु० (एयरवेज) आकाश में वायुवानों के जाने-जानेका-विमान-यात्राका-मार्ग।

वायुमार्गापक यंत्र-पु० (वैरोमीटर) वायु-मंडल में हवाका दबाव या भार नापनेका यंत्र।

वायुमार्गकेली-पु० (वैरोग्राफ) हवाका दबाव अंकित करनेवाला यंत्र।

वारित साहित्य-पु० (प्रोस्क्राइब्ड लिटरेचर) वह प्रकाशित पुस्तक, लेख आदि जिसे पढ़ने या पासमें रखनेकी मरकाद द्वारा मनाही कर दी गयी हो।

वार्तावहक मंत्री-पु० (मिनिस्टर ऑफ कम्युनिकेशन्स) शासक विभागका मंत्री।

वार्तिक विचारविषय-पु० (एन्जल फाइनैशल स्टेट-मेंट) राज्यकी या किसी मन्त्रालय वर्षभरकी वित्तीय स्थिति-

१. विवरण :

वार्तिकी-जी० (पन्थुदय) वार्तिक रूपमें मिलनेवाली श्रुति, स्मृति, अनुशासन आदि ।

वाचस्पत्यय-पु० (कोमेंटेसन) दै० 'प्रत्येदन' ।

वाचस्पत्यय-वि० (कोलैटरल) जो श्रोत्रापूर्वक वाच्य बन कर वह वाच्य; जस्तिर (ज०) ।

वाच्यवाच्य-पु० (वैचोरेजेसन) वाच्यमें परिणत कर देना ।

वाचिज-पु० (वाइजर) इंसनका भाव तैयार करनेवाला नाम ।

वाच्यीकरण-पु० (वैचोरेजेसन) किसी पदार्थका, विशेषकर व्यवधानका, वाच्यरूपमें परिणत होना, भाव बन जाना ।

वास्तव्यवस्थान-जी० (रेसोनीबोडेसन) रहने वा ठहरनेका स्थान; सुविधा वा प्रबंध ।

वास्तुकर्मकार, वास्तुकर्मज्ञ-पु० (आर्किटेक्टर) इमारत, पुल आदि बनानेकी कला जाननेवाला ।

वाहक कवादेस-पु० (विक्टर चेक) वह बनादेस (चेक) जिसका कृपा किसी भी देसे व्यक्तिकी दिया जा सकता है जो उसे ठे जाकर बैंकके सामने उपस्थित करे ।

वाहक नलिका-जी० (त्रान्मिशन ट्यूब) एक पात्रसे दूसरे पात्रमें से जाने, पहुँचानेवाली नलिका ।

वाहिनीपति-पु० (मिनेडियर) वह मेनानायक जो वाहिनी (मिनेड)का नेतृत्व करे ।

विन्दु-पु० (पॉइंट) रेखागणितमें वह अत्यंत छोटा कल्पित स्थान जिसमें केवल स्थिति हो, किंतु लंबाई, चौड़ाई, मोटाई न हो ।

विन्दुपातक-पु० (डॉपर) जॉक, कान, आदिमें दबा छोड़ने की शीशियों वह नलिका जिसमें ऊपरकी ओर रबर लगा रहता है (इसे दबानेमें एक-एक बूँट टपकानेमें आसानी होती है) ।

विकसन-पु० (वेबिट) किसीको कणादिके रूपमें दी गयी रकम, या दिये गये माल आदिके मूल्यरूपमें प्राप्य वन, कातेमें उसके नाम लिखना; किसीके कातेमें खर्चकी ओर कीई रकम लिखना ।

विकलीकृत-वि० (डिस्टिन्ड) जो विकर्णन (डिक्लर), लुप्त आदि हो जानेके कारण अपना काम करनेमें असमर्थ हो गया हो ।

विकिरण-पु० (रेडियेशन) एक स्थान या केंद्रमें ताप, प्रकाश आदिका तीव्री रेखाओंमें बलकर इपर-ऊपर फैलना ।

विकृत टंक-पु० (डिफरेंट कॉइन) वह सिक्का जो विकर वदस्तक-सा हो गया हो और जिसकी म्तिमावत फटने में भी काँटमारी हो ।

विक्रीप्रवकरण-पु० (डिस्ट्रीबुजिशन) केंद्रमें प्रस्थापित सारा, लब्धिका आदिकी आस-पासके अंगों, अंगीन राखीं आदिमें बँटना ।

विक्रयधन-पु० (टर्नओवर) व्यापारी द्वारा की गयी एक दिन, एक सप्ताह आदिकी विक्रीमें प्राप्त कुल भन्तराति ।

विक्रयधर्मी-जी० (सेल्स जर्नल) प्रतिदिनकी विक्री आदिका विवरण लिखनेकी पंजी, विक्री-वही ।

विक्रयधर्मी-जी० (सेल्स लेजर) वह खाता-वही जिसमें

विभिन्न तिथियोंकी बेची गयी विभिन्न वस्तुओंकी मूल्य, प्रत्येकका वृत्तार्थक किया रहता है ।

विक्रयकील-पु० (सेल्मैन) वह कागद या केला-पत्र जिसमें 'सेल' भर आदिकी विक्रीका पूरा खीरा (आम, पत्ता, खेत, मूल्य आदि) लिपिबद्ध कर दिया गया हो तथा भित्तक। विविध पंजीयन करा दिया गया हो, वैसाया ।

विक्रयिक-पु० (सेल्समेन) दुकानपर बैठकर ग्राहकोंके हाथ सौदा बेचनेके लिए रखा गया कर्मचारी ।

विक्रयसूच्य-पु० (व्हेटिक असाइन्म) सामक या विविध वस्तुओंके रहनेका वह स्थान जहाँ उनकी देख-रेख तथा उपचार/दिकी व्यवस्था हो ।

विशोदय-पु० (रेसोनेसन) दै० 'उत्सादन' ।

विशोदयकरण-पु० [सं०] (मैजमेंटेसन) सेतोंका टुकड़ोंमें विभाजित किया जाना ।

विचारयोगी-जी० (सेमिनार) अनेक विद्वानोंका एक स्थानपर एकत्र होकर किसी महत्त्वपूर्ण विषयके संबंधमें अपने-अपने विचार प्रकट करनेकी क्रिया तथा उसका आयोजन ।

विचारधारा-जी० (आइडिऑलॉजी) किसी ज्ञाति वा संग्रहविशेषकी विचारधारा; किसी राजनीतिक वा आर्थिक पिढात-परंपराके मूलमें रहनेवाली विचार-धरणी ।

विजयचिह्न, विजयाक्ष-पु० (ट्रफकाय) विजय डिलानेवाला अक्ष वा साधन ।

विजयोपहार-पु० (ट्रफो) युद्धमें हुई जीत या हाकी, क्रिकेट आदिके खेलमें प्राप्त विजयके स्मृतिस्वरूप रखी जाने वाली कोई वस्तु (शील्ड, कप आदि) ।

विज्ञापनवाता-पु० (एडवर्टाइजर) पत्रों आदिमें विज्ञापन छपवानेवाला ।

विज-पु० (फारनेस) किसी राज्य वा मत्स्या आदिके भाग व्यवके साधन, राज्यकी सार्वजनिक पूँजी या धन; राज्य की वित्त-संबंधी व्यवस्था । - **प्रबंधक-पु०** (फारनेशियर) सरकारी भाग वा धनका प्रबंध करनेवाला अधिकारी । -

अंजी-पु० (फारनेस मिनिस्टर) राज्यके धन, भाग्य-व्यय के साधनों आदि-संबंधी विभागकी देख-रेख करनेवाला मंत्री । - **विधेयक-पु०** (फारनेस बिल) संसद या विधान-सभामें पुरस्तापित किया जानेवाला भाग्यव्यय-संबंधी विधेयक । - **साधन-पु०** (फारनेस) राज्य वा संस्था आदिके धन प्राप्त करनेके उद्देश्य ।

विशुद्धविज-पु० (इमेडियट जेनेरेटर) विजकी उत्पन्न करनेका यंत्र ।

विशुद्धपु-पु० (इमेडियट, प्रोटान) दै० 'कलविशुद्धपु' तथा 'वजविशुद्धपु' ।

विशुद्धपात-पु० (इमेडियटवूशन) विशुद्धका संस्पर्श करकर दिया जानेवाला प्राणबंद; विजकीके संस्पर्शसे होनेवाली धृष्टि ।

विशुद्धसंकर्ष-पु० (इमेडियटसकोन) कीर्ण दी हुई वस्तु विकृत्यव है वा नहीं, वह वस्तुजानेवाला यंत्र ।

विशुद्धधारक-पु० (फाइटिंग अरेस्टर) विजकी गिराते समय टेडीकोन, रेडियो आदिके धर्मीको क्षतिग्रस्त होनेसे बचानेके लिए लगाया जानेवाला साधन ।

विधान-पु० (लेजिस्लेशन) राज्यके विधानमंडल द्वारा स्वीकृत कोई अधिनियम, व्यवस्था या विधि जैसा प्रभाव रखनेवाला विनिश्चय । —परिचय-खी० (लेजिस्लेटिव कोमिल) (भारतके) जिस राज्यमें विधानमंडलके दो सदन हैं उसका वह दूसरा (अर्थात् विधानसभाको छोड़कर अन्य) सदन, जिसके सदस्य नगरपालिकाओं, विश्वविद्यालयके स्नातकों तथा शिक्षा-संस्थाओंके अध्यक्षोंके बने निर्वाचनमंडलों द्वारा और विधानसभाके सदस्यों द्वारा निर्वाचित किये जावें । —मंडल-पु० (लेजिस्लेचर) राज्यके लिए विधान बनानेवाले व्यक्तियोंका समूह-भारतके जिन राज्योंमें दो सदन हैं, वहाँ उन दोनों (और जिनमें एक ही सदन है उनमें उक्त सदन) तथा राज्यपालको मनुक रूपसे वह नाम दिया गया है । —सभा-खी० (लेजिस्लेटिव असंबल) जनप्रतिनिधियोंकी वह सभा जो राज्यके लिए विधान बनाती, आवश्यक स्वीकार करती तथा शासन कार्योंका नियंत्रण करती है । **विचारक-पु०** (लेजिस्लेटर) विधानसभाका सदस्य; विधान-संविदाके निर्माणका कार्य करनेवाला । **विधायन-पु०** (लेजिस्लेशन) विधान करना या बनाना; विधानसभा आदि द्वारा विधान या अधिनियमका कार्य । **विधायी कार्य-पु०** (लेजिस्लेटिव बिजनेस) (विधानसभा आदिमें) विधान-निर्माणका कार्य । **विधि-खी०** (ला) मनुष्योंके हितों, अधिकारों आदिकी रक्षाके लिए राजा, मंत्रिमंडल या विधानसभा आदि द्वारा निर्मित वे विधान या अधिनियम जिनका पालन करना प्रत्येक व्यक्तिके लिए अनिवार्य होता है और जिनकी अवहेलना करनेपर उसे दंड मिलना है या मेल मकलता है । —ब्राह्म मुद्रा-खी० (लीगल टेंडर मनी) वह मुद्रा जिसका प्रयोग कृण चुकानेके लिए करना विधिनिहित हो । —क्र-पु० (लायर) विधि-विधान जाननेवाला । —परामर्शी-पु० (लीगल रिमेन्डर) मरकारकी विधि (कानून)-मंथनी सलाह देनेवाला पदाधिकारी । —पालक-वि० (ला अगारिंग) राज्यकी विधियों (कानूनों)का पालन करते हुए जीवन यापन करनेवाला (मायरिक) । —अंग-पु० (लीच अफ ला) विधि(कानून)की उपेक्षा करना, विधिविरोधी कार्य द्वारा विधिक उल्लंघन । —विज्ञान, शास्त्र-पु० (ज्युरिस प्रुडेंस) नियमों, विधियों, मिश्रता आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र । —संविध-पु० (लीगल मेकेटरी) विधि-संबंधी प्रश्नोंमें सलाह देने या पत्रव्यवहारदि करनेवाला सचिव । —स्नातक-पु० (बैचलर ऑफ ला) वह व्यक्ति जिसने विधि(कानून)की परीक्षामें उत्तीर्ण होकर उपाधि प्राप्त की हो । **विधिक-वि०** (लीगल) विधि (कानून)-संबंधी; जो विधिक अनुकूल या अनुकूल हो । **विधेयक-पु०** (बिल) किसी विधान, अधिनियम आदिका वह प्राकृत्य (मसौदा) जो धारित होनेके लिए लोकसभा, विधानसभा आदिमें रखा जाय । **विधयुक्तक-वि०** (वैकिड) विधि (कानून)की दृष्टिमें किसी कोई छुट्टि न हो; जिसमें विधिक आवश्यकताओंका

मर्मांशों पालन या अनुसरण किया गया हो । **विनिमय-अधिकार-पु०** (एक्सचेंज बैंक) वह अधिकार (बैंक) वहाँ तक देशकी मुद्राके बरते दूसरे देशकी मुद्रा देने या बाहर प्रेषित करने आदिका काम होता है । **विविधंत्रण-पु०** (डीकंड्रोल) बुद्धिसिद्धि या उपलब्धिकी कमी आदिके कारण किसी वस्तुपर लगायी गयी मूल्य या बितरण-संबंधी नियंत्रण-व्यवस्थाका उठा लिया जाना । **विनियम-पु०** (रेगुलेशन) वह विशेष नियम जो किसी संस्था आदिके प्रबंध या नियंत्रणके लिए प्राधिकृत आदेश-में या विशेष निश्चयके अनुसार बनाया गया हो । **विनियमक-वि०** (रेगुलेटर) (पंसे आदिकी) गति या वेगका नियंत्रण करनेवाला आका । **विनियमन-पु०** (रेगुलेशन, रेगुलेंटिंग) नियमादि बनाकर नियंत्रित करना; गति, वेग, विस्तार आदि अधिक न बढ़ने देना, आवश्यकतानुसार घटाना-बढ़ाना या ठीक करना । **विनियोग-पु०** (एप्रोप्रियेशन) दे० 'उपवीजन' । —विधेयक-पु० (एप्रोप्रियेशन बिल) वह विधेयक जिसमें इस बातका भी ध्यान दिया रहता है कि राज्यस्वाका कितना अंश किस मदमें खर्च किया जायगा । **विनिर्देश-पु०** (प्रेसिफिकेशन) निश्चित रूपसे कोई बात कहना या निर्देश करना; इस प्रकार कही हुई बात; विवेचनाओं-संबंधी विवरण । **विनिश्चय-पु०** (डिटीजन) कोई काम करने आदिके मध्यमें किसी सभा आदिमें विशेष रूपसे कुछ निश्चय किया जाना, किसी प्रश्नका निपटारा । **विनिषिद्ध व्यापार-पु०** (कंस्ट्रिब्ड ट्रेड) उन वस्तुओंका व्यापार जिनके आयात या निर्यातकी मनाही कर दी गयी हो या जिन्हें कुछप्रकार देशोंके हाथ बेचना तटस्थ राष्ट्रोंके लिए अनुचित ठहराया गया हो । **विन्यास-पु०** (पंरजमेंट) सिलसिलेमें रखने, क्रम ठीक करने आदिका काम । **विपंच-पु०** (अंपायर) पक्षोंके बीच मतभेद होनेपर अमिनिर्णयके लिए आमंत्रित अन्य व्यक्ति । **विपन्न-पु०** (बिल) किसी महाजन, बैंक, खजाने आदि द्वारा दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा हो कि इसमें निर्दिष्ट रकम अमुक तिथितक चुका दी जायगी, हुंडी; खरीदे या मंगाये गये मालका मूल्य चुकानेके लिए जारी किया गया वह लिखित पत्र या नापन जो कृण चुकानेके लिए दोनों पक्षों द्वारा स्वीकार किया गया हो, विनिमय-पत्र । **विपरिधान-पु०** (यूनीफार्म) सेना, पुलिस आदिके कर्मचारियोंके लिए निर्धारित विशेष पहनावा, जो प्रायः सबके लिए एकसा होता है, समपरिधान, वर्दी । **विपरीततः खी-अ०** (बाइस वसी) (पहले कहे हुएके) उलटे प्रकार या क्रमसे भी, विपर्वयसे भी । **विपर्वयसे खी-अ०** (बाइस वसी) दे० 'विपरीततः खी' । **विपर्याय-पु०** (एंटीनिम) किसी शब्दका विरुद्ध विरोधी अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द ।

विशेषक-पु० (रेमिटर) किसी दूर रहनेवाले व्यक्ति के पास रुपया-पैसा या अन्य वस्तु भेजनेवाला।

विशेषण-पु० (रेमिटेड) किसी दूरस्थ आदमी के पास रुपया-पैसा आदि भेजना; वह वस्तु जो दूर भेजी जाय।

विभागाध्यक्ष-पु० (डिपार्टमेंटल हेड) किसी विभागका अध्यक्ष वा प्रधान अधिकारी।

विभाजन-वर्दी-जी० (डिवीजन वेल्) संसद या विधान-सभामें किसी प्रस्ताव आदि-संबंधी विवाद समाप्त हो जानेपर समाका मत जाननेके लिए सदस्योंको अपना-अपना स्थान ग्रहण कर दो पृथक्-पृथक् समूहोंमें विभक्त होनेके लिए तैयार रहनेकी सूचना देनेवाली वंदी।

विभेदीकरण-पु० (डिस्टिक्विनिशन) बराबरीय या व्यवहारविषयमें एकही तुलनामें दूसरेसे विभेद करना, विभेद वा पार्थक्यका ध्यान रखना (अनुपातन करना)।

विमति-टिप्पणी-जी० (मिनिट ऑफ डिमेंट) किसी विषयकी जाँच, अध्ययन आदिके बाद तैयार किये गये प्रतिवेदनमें बहुमतने जो सम्मति दी हो, उसमें अपना मतभेद प्रकट करनेके लिए एक वा एकाधिक सदस्यों द्वारा अलगसे जोड़ी नवी टिप्पणी या वक्तव्य।

विमानकर्म-पु० (एअर क्र) विमानमें काम करनेवाला कर्मचारी।

विमानगृह, विमानघर-पु० (हैंगर) वायुयान रखनेका घर।

विमानचक्र-पु० (एविएशन) हवाई जहाज चलानेकी विद्या वा क्रिया, उड़ान।

विमानचक्रविज्ञान-पु० (एरोनाटिक्स) विमान चलाने आदिके विद्या।

विमानपरिचारिका-जी० (एअर-होस्टेस) विमान द्वारा यात्रा करनेवालोंकी सुख-सुविधाका ध्यान रखनेवाली महिला-कर्मचारी।

विमानवाहक पोत-पु० (एयर क्राफ्ट कैरियर) विमानों-को ढीकर ले जानेवाला जहाज।

विमानवेधी तोप-जी० (एंटी एयरक्राफ्ट गन) विमानों-पर गोले बरमाकर उन्हें नष्ट कर डालनेवाली तोप।

विमानसेवाधिकारी-पु० (विंग कमांडर) विमान सेना-की डुकरीका नायक।

विमानस्थान-पु० (एयरवेल्) हवाई जहाजोंके ठहरने, रके जाने आदिका स्थान वा केंद्र।

विमुद्राकरण-पु० (डीमोनेटाइजेशन) किसी सिक्का, नोट आदिका मुद्राके रूपमें चलन बंद कर देना, उसका विनि-मय न रह जाना, (किसी बालू आदिका मुद्राके रूपमें) व्यर्थीकरण।

विकोषण-पु० (डिपेंडन) मुख्य चुकाकर बापस लेना वा बंधनादिसे छुटकारा; बंधन वा कैदसे छूटना।

विरंजन-पु० (व्हीथिंग) रंग उड़ानेका गुण वा कार्य।

विशमसंधि-जी० (ड्रस) किसी विशेष स्थितिमें दोनों पक्षोंकी स्वीकृतिसे कुछ समयके लिए युद्ध बंद रखनेकी संधि।

विक्रयकारी प्रस्ताव-पु० (डाइरेक्टरी मोशन) विधान-सभा आदिके सामने उपस्थित किसी विषयकी कार्रवाई

समाप्त होनेमें अधिकसे अधिक विलंब लगे, इसी उद्देश्यसे प्रस्तापित किया जानेवाला प्रस्ताव।

विक्रयचक्र-पु० (डिमेन्स) पारसक आदि अधिक देरसे चुकानेपर कल्पनेवाला अर्थव्यय; रेलका डब्बा वा जहाज निर्दिष्ट अवधिके बाद भी रोक रखनेपर हरजानेके रूपमें हो जानेवाली रकम।

विक्रयित करना-स० कि० (पोस्टपोन) कोई प्रश्न, कार्य, विचारदि किसी भावी तिथि वा समयके लिए टाल देना, विधिग या अनिश्चित कालतक रोक रखना।

विक्रय, विक्रयन-पु० (मार्ज) किसी छोटे राज्यका पड़ोसके बड़े राज्यमें मिककर एक हो जाना, इस तरह संयुक्त हो जाना कि उसकी पृथक् सत्ताका विलोप हो जाय।

विक्रय-पु० (बीट) वह किस्मत या मुष्टि माधनपत्र क्रिममें किसी समझौते, संविदा, विक्रय आदिका विवरण दिया गया हो और जिसपर निष्पादकने विधिबद्ध हस्ता-कर किये हों। तथा उन्मे दूसरे पक्षके धाम भेज दिया हो, स्पष्ट।

विक्रय, विक्रयन-पु० (ओमीशन) किसी वाक्य, रचना आदिमें कुछ अंश निकाल देनेकी क्रिया। (कमेंटेशन) रद कर देना, काट देना, निकाल देना।

विक्रयीकरण-पु० (रिपील) बिलुप्त कर देना, रद्द या अग्रभावी कर देना।

विवरणपर्यविका-जी० (प्रॉसेक्यूट) किसी विद्यालय वा किसी परीक्षा आदिकी नियमावली, पाठ्यक्रम तथा अन्य विवरण देनेवाली पुस्तिका।

विवरणी-जी० (रिजर्न) आँकड़ों आदिके साथ तैयार क: गयी पैदावार आदिकी (मरकुरी) रिपोर्ट जो उपर-विकाशिके धाम भेजी जाय।

विवादानिवारक समिति-जी० (पनीमिडेशन बोर्ड) अग्रिकों तथा कार्यवाहदारों आदिके बीच चलनेवा-अग्रिकोंकी निपटानेका प्रयत्न करनेवाली समिति।

विवादांतप्रस्ताव-पु० (मोशन ऑफ क्लोजर) (नम्र या विधानसभा आदिमें) विवाद समाप्त करनेके लिए पूरी सभा द्वारा किया गया प्रस्ताव, समापनप्रस्ताव।

विवेकाधिकार-पु० (डिस्टिक्विनिंग पावर) विवेक-बुद्धिके अनुसार निर्णय करनेका अधिकार।

विवेकाधीन-वि० (इन दि डिस्टिक्विनिंग) (किसीकी) विवेक-बुद्धिके अधीन वा उसपर अवलंबित।

विशिष्टजनीन मतसंग्रह-पु० (गैलप-वाल) भर्षमाधारित जनताका प्रतिनिधित्व कर सकनेवाले विशिष्ट जन-समूह द्वारा किसी विषयपर प्रकट किये गये मतोंका संग्रह, जिसकी व्यवस्था प्रायः किसी समाचारपत्रादि वा मत संग्रह करनेवाली संस्थाओं द्वारा की जाती है।

विशिष्टांग-पु० (कोवर्स) किसी वस्तु, माटक, देल, समाचारपत्र आदिकी मुख्य विशेषताएँ।

विशिष्टाधिकार-पु० (प्रीरोगेटिव) राजा वा प्रधान शासकका वह विशिष्ट अधिकार जिसपर स्वातंत्र्य: किसी तरहका प्रतिबंध न हो (परमाधिकार); वह विशेष अधिकार जिसका और कोई भागीदार न हो; किसीके

विशेष पक्ष, स्थिति आदिसे उद्भूत होनेवाला विशेष अधिकार ।

विश्लेषीकरण-पु० (स्पेशलाइजेशन) विशिष्ट लक्षणोंके अनुसार किसी वस्तुको धृक् या स्पर्शज करना विशेषता-सूचक (विशिष्ट) रूप देना; किसी विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त करना, विशिष्ट अध्ययन करना, विशेषता प्राप्त करना ।

विश्लेषिवाद्-पु० (एनैलिसिज्म) विशुद्ध वा कठोर बार्मिक जीवनको प्रधानता देनेवाला प्रोटेस्टेंट ईसाइयोंका मिश्रित, कठोरतावादी कठोर जीवन ।

विशेषित स्वीकृति-खी० (कालिफाइट ऐक्मेटेस) किसी प्रस्ताव आदिके संबंधमें विशेष प्रतिबंधोंके साथ या नौभित स्थितिमें दी गयी स्वीकृति, सप्रतिबंध स्वीकृति ।

विश्रांतिकाल-पु० (रिमेस) दे० 'अ' शावकाश' ।

विश्रामध्वज, विश्रामाक्षय-पु० (रेस्ट-वाक्स) बाजा या कीरेपर जानेवाले व्यक्तियों जबवा छोटे अधिकारियों आदिके ठहरने, शीजन, विश्रामादि करनेके लिए बजाया गया मयन ।

विश्व-स्वास्थ्यसंघटन-पु० (वर्ल्ड हेल्थ-आरगनाइजेशन) नम्रारके विभिन्न देशोंमें लोकस्वास्थ्यको उन्नतिके प्रयत्नोंमें सहायता करनेवाली अंतरराष्ट्रीय संस्था ।

विश्वामयप्रस्ताव-पु० (मोशन ऑफ कानफिडेंस) किसी मंत्रिमंडलमें या किसी संस्थाने, अध्यक्षीयमें विश्राम प्रकट करनेके लिए उपस्थित किया जानेवाला प्रस्ताव ।

विश्वोत्पत्ति-विज्ञान-पु० (कॉस्मोगोनी) विश्वको उत्पत्ति तथा विकासका विवेचन करनेवाला विज्ञान, सृष्टिविज्ञान ।

विषमवृत्त-पु० (विश्लेश मॉडल) दे० 'अपचक्र' ।

विश्वविज्ञान-पु० (टाकिमकालोजी) विश्वोंको उत्पत्ति, प्रभाव आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र ।

विश्वबाह्य-पु० (इनस्यूल्शन) विष्णु या तापका प्रवाह रोकनेके लिए किसी वस्तुको कुचालक पदार्थ द्वारा धृक् कर देना ।

विश्वबाहक-पु० (इनस्यूलेटर) चीनी मिट्टी आदिका बना वह कुचालक पदार्थ जो विद्युत या तापका प्रवाह रोकनेके लिए विद्युन्मय या तापमय पदार्थ तथा विद्युद्विहीन, तापविहीन पदार्थके बीचमें लगा दिया जाता है, अवरोधी ।

विस्तारणी-खी० (स्ट्रेचर) अममय रोगी या हताहत व्यक्तिको उठानेके जानेका फैला हुआ ढाँचा जिसे दोनो ओरसे दी आदमी धामे रहते हैं । -**बाहक**-पु० (स्ट्रेचर-बेयरर) विस्तारणीमें रोगी या आहत व्यक्तिको उठाकर ले जानेवाला (प्रत्येक) व्यक्ति ।

विस्तारी विधेयक-पु० (इक्सटेंडिंग बिल) किसी पुराने अधिनियम आदिकी अवधि बढ़ानेके लिए विधानसभा आदिमें उद्घोषापित विधेयक ।

विस्थापित-खी० (डिस्प्लेस्ड) जो अपने निवासस्थानमें अवतरू हटा दिया गया हो, उद्घासित ।

विश्लेषी-खी० (डीप्लेजेशन) बहुत कूले हुए पदार्थमेंसे हवा निकाल देने, कुचालक कम कर देनेकी क्रिया; मुद्राका बाहुल्य या विस्तार पदाकर पूर्व स्थितिपर पहुँचा देना ।

विहितनिषिद्ध कर्म-पु० (रेगुल ऑफ कमीशन एंड

ओमिशन) वे कर्म जिन्हें करनेका शास्त्र आदेश देता है तथा वे जिन्हें न करनेका शास्त्रीय विधान हो; वे कर्म जिन्हें करना चाहिये तथा वे जिन्हें न करना चाहिये ।

वीक्ष-पु० (लेस) किरणोंको केंद्राभूत करनेवाला शीशेका ताल ।

वीर-चक्र-पु० स्वतंत्र भारतके किसी सैनिकको रणक्षेत्रमें विशेष वीरता दिखानेपर दिया जानेवाला वृत्तीय मेधाका पदक ।

वीरगुजा-खी० (होरी बरगिज) वीरों, महापुरुषोंका अत्यधिक सम्मान करना ।

ईश्वर-पु० (शारकेस्ट्रा) नाट्यशाला आदिमें विशेष स्थानपर समवेत वक्त्रों द्वारा सामूहिक रूपमें प्रस्तुत किया गया नाय ।

ईश्वर-पु० (गरकिंग) वह समक्षेत्र जो ऐसी वक्र रेखासे घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उक्त क्षेत्रके केंद्र या मध्य बिंदुमें समान दूरीपर हो ।

ईश्वर-पु० (मेकटर) दो त्रिज्याओं (अर्द्ध-व्यास रेखाओं) तथा चापके द्वारा घिरा वृत्तका अंश ।

ईश्वर-पु० (ग्रनेल) वह वही या पक्ष जिसमें प्रतिदिनके कार्य या घटनावलीका विवरण अथवा जिसमें विधान-मन्त्र आदिके प्रतिदिनके विनिश्चयोंका संक्षिप्त अभिलेख लिखा जाता है ।

ईश्वर-पु० (विन्ट्रीशीट) वह पत्रक या फलक जिसपर किसी शब्दके पूर्वापर्यायोंका इतिहास या लेखा दिया रहता है, अपराध-लेखा, दुष्ट-त-फलक ।

ईश्वर-पु० (मरकम्पेंडल एबीडेंस) कोई बात साधित करनेमें सहायता करनेवाली ऐसी बात जो किसीने अपने बयानमें न कही हो, पर परिस्थिति या जानी हुई घटनाओंके आधारपर जिनका अनुमान किया जा सके ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

ईश्वर-पु० (प्रोक्लेशन टेकम) वृत्ति वा पेशेपर लगनेवाला कर ।

वैयक्तिक सवस्व-पु० (आल्टरनेटिव मेंबर) दोनों एक; एकके सदस्यता स्वीकार न करने आदिकी स्थितिमें जो उसका स्थान ग्रहण कर सके।

वैयक्तिक-पु० (वैयक्तिक) विधिक अनुसूच या अनुसूच बना देना; वैय रूप दे देना।

वैयक्तिक-वि० (वैयक्तिक) असहमति या विषय मत व्यक्त करनेवाला।

वैयक्तिक-पु० (व्यवस्था) विमान-चालक आदिका काम करनेवाला, विमानका चालक या अन्य कर्मचारी।

वैयक्तिक-पु० (पर्सनल बांड) किसी व्यक्ति द्वारा किया गया ऐसा प्रतिज्ञापन जिसमें किसी हुई बातें पूरी करनेको वह बाध्य हो तथा विनियं पूरा न करनेपर निर्धारित धन दंड-स्वरूप देनेके लिए वह अपने आपको जिम्मेदार समझे।

व्यपगत-वि० (लेप्स) दिखाई या भूलमें उचित समय-पर काममें न लाये जानेके कारण जो हाथमें निकल गया हो या बेकार (रह) हो गया हो।

व्यपगति-की०, **व्यपगमन-पु०** (लेप्स) किसी अधिकार, सुविधा आदिका उचित समयके भीतर प्रयोग न होनेके कारण हाथसे निकल जाना या रह हो जाना।

व्यर्थ-पु० (नकिफिकेशन) पहलेके किसी आदेश या निर्णयआदिको रद्द कर व्यर्थ बना देना।

व्यवसाय-प्रशिक्षण-पु० (वोकेशनल ट्रेनिंग) किसी व्यवसाय या वेधमें योग्यता प्राप्त करनेके लिए दिया जानेवाला प्रशिक्षण।

व्यवसाय-व्यवस्था-पु० (ड्रेव्निंग) किसी व्यवसाय, कारखाने आदिमें काम करनेवाले अमिकों तथा अन्य कर्मचारियोंकी संस्था जो माहिकों या नियोजकों के सामने कमियोंके हितके सपक्षकी बातें रखने आदिमें उनका प्रतिनिधित्व करे।

व्यवहार-निरीक्षण-पु० (कोर्ट इन्स्पेक्टर) वह कर्मचारी जो सामान्य मुकदमोंमें सरकारकी ओरसे पैरवी करता है।

व्यवहार-व्यापार-पु० (सिविल कोर्ट) नागरिकोंके अधिकारों आदि-संबंधी विवादोंपर विचार करनेवाला न्यायालय।

व्यवहार-वाद-पु० (सिविल थर) नागरिकोंके अधिकारों आदि-संबंधी विवादका मामला।

व्याख्यानपीठ-पु० (रोट्रम) मन्त्रका वह ऊँचा स्थान जहाँ खड़ा होकर कोई वक्ता व्याख्यान देता या भाषण करता है।

व्यापक पुरुषमताधिकार-पु० (यूनिवर्सल मैनुड सफ-रेन) देशके या राज्यके प्रायः प्रत्येक प्रायस्कत्व व्यक्ति को, जो पक्षिक न हो तथा जिसने किसी बड़े अपराधमें दंड न पाया हो, दिया गया मत प्रदान करनेका अधिकार।

व्यापार-विधि-पु० (ट्रेडमार्क) किसी व्यापारी या उद्योग-पति द्वारा अपने मालपर अंकित किया जानेवाला वह विशेष चिह्न जिससे उस माल अन्य किसीके मालमें अलग-पहचाना जा सके।

व्यापार-व्यवस्था-पु० (वैबर ऑफ कामर्स) व्यापारियोंका

प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था।

व्यावसायिक प्रतिनिधित्व-पु० (फंक्शनल रीप्रेजेंटेशन) व्यवसाय या वेधके आधारपर दिया गया प्रतिनिधित्व।

व्यास-पु० (डाइमीटर) केंद्रसे होनी हुई दोनों ओर परिधिपर समाप्त होनेवाली रेखा अथवा वह दूरी।

व्युत्थान-पु० (रिवोल्ट, अपराधिका) राजा या राज्य-शासनके विरुद्ध उठ खड़ा होना।

व्यवहार-गैस-की० (गैसटर गैस) एक तरहकी विद्युत गैस, जिसका संस्पर्श होनेमें शरीरपर चकते-से निकल आते हैं।

व्यवहार-वि० (प्रलसरेट) जो प्रगमें परिणत हो गया हो; जिसमें व्यवहार हो गया हो।

श

शंकु-पु० (कोन) गावदुम लंबोतरा बेम्बन जैसा धन त्रिकोणी ऊपर नीचे कोन जैसी हो।

शंकु-वि० (कोनिकल) त्रिभुजाकार या रूप शंकु (कोन) जैसा हो।

शंकु-कारण-पु० (कोन) दे० 'शंकु'।

शक्ति-परिष्कार-अ० (अल्ट्रावायलेट) किसीकी शक्ति या अधिकारके बाहर।

शक्ति-संग्रहण-पु० (बैलेंस ऑफ पावर) परस्पर विरोध करनेवाले देशोंका ऐसा विभाजन या गुटबंदी जिसमें दोनों ओरकी शक्ति संतुलित रहे, बलसाम्य।

शतक-पु०, **शती-की०** (सेचुरी) सौ वर्षों, सौ वर्षों या सौ वस्तुओंका समूह; क्रिकेटमें खेलमें किसी एक बल्लेबाज द्वारा किये गये सौ गानोंका समूह।

शतशत तापमापक-पु० (सेंटीग्रेड थर्मोमीटर) मी० अंशोंमें विभक्त तापमापक यंत्र।

शपथग्रहण-पु० (ओथटैकिंग) कोई वृद्धि ग्रहण करने समय निजका एवं गुप्तता आदिकी शपथ देना।

शपथपत्र-पु० (फिफ्टिडिट) किसी व्यापारिकमें शपथपत्रक दिया गया लिखित वक्तव्य जो प्रमाणके रूपमें प्रयुक्त किया जा सके।

शब्द-पु० (वार्ड्स ऑफ स्पीच) वाक्यमें प्रयुक्त-अर्थोंका, व्याकरणके अनुसार, उनके कार्य, प्रयोग आदिकी दृष्टिमें, किया गया भेद।

शारीकरण-पु० (पैसिफिकेशन) दो पक्षोंके बीच चलने-वाले झगड़े या विवादको दूर करना; शक्ति स्थापित करना; झुक या उल्लेखित व्यक्तियों (मैना, मीक आदि) को शांत करना।

शब्द-साक्षात्-की० (डॉरमिटर) वह वक्ता श्रवणकक्ष जिसमें कई व्यक्तियोंके मौनकी व्यवस्था हो।

शब्द-ग्रहण-पु० (रेडिओ) रोगीके बहुत विनीतक शब्दा-व्यस्त रहनेके कारण उसकी रीढ़ आदिकी छिल जानेमें होनेवाला वाद।

शरणस्थान-पु० (सेफ्टी) वह स्थान जहाँ क्षरण भेदमें कोई आदमी सना पाने, एकत्र जाने आदिमें अपने आपको बचा सकता है।

शरणार्थी-पु० (रिफ्यूजी) वह जो एक देशसे विस्थापित

होकर दूसरे देशमें आश्रय ग्रहण करे। - बस्ती-खी० (रिपब्लिकी डाउनशिप) देने योग्य जहाँ बस गये या बसाये गये हों वह बस्ती।

शस्त्राका-खी० (बैरुड) वह छोटी रंगीन गोली, पुरानी या टिकट नौ चुनावके समय मतदाना द्वारा गुप्त रूपमें मतदान-पैटीमें टांगा जाता है; इस प्रकारका गुप्त मतदान।

शस्त्र-पु० (मंत्रिकल इन्स्ट्रुमेंट) कोई या कृष्ण अंगको चीरने-काटनेमें प्रयुक्त होनेवाले औजार। - **कार-पु०** (सर्जन) दे० 'शस्त्र-चिकित्सक'। - **क्रिया-खी०** (सर्जरी) कोशे या बिह्वन अथवा कृष्ण अंगको चीर-फाँकर ठीक करनेकी क्रिया। - **चिकित्सक-पु०** (सर्जन) पु० कोशे, बिह्वन या कृष्ण अंगोंको चीर-फाँकर ठीक करनेवाला तथा टूटी या स्थानच्युत हड्डी आदिको जोड़ने-पैठानेवाला चिकित्सक। - **विज्ञान-पु०**, - **विद्या-खी०** (सर्जरी) चीर-फाँक द्वारा कोशे या बिह्वन एवं कृष्ण अंगोंको ठीक करनेकी क्रिया या शास्त्र।

शस्त्रोद्योग-पु० (सर्जिकल इन्स्ट्रुमेंट ड्रगस्ट्री) शस्त्र-चिकित्सामें प्रयुक्त होनेवाले औजारोंके निर्माणका उद्योग। **शवपरीक्षणालय-पु०** (पोस्टमार्टम रूम) वह कमरा या स्थान जहाँ शवोंका परीक्षण किया जाता है।

शवपरीक्षा-खी० (पोस्ट मार्टम) मृत्युके कारणका पता लगानेके लिए की गयी शवकी जाँच।

शस्त्रचिकित्सा-खी० (सर्जरी) दे० 'शस्त्र' विद्या। **शस्त्रनिर्माणशास्त्रा-खी०** (आर्टनेल फैक्टरी) नौपै, गोले तथा शस्त्रादि तैयार करनेका कारखाना।

शांतिवाद-पु० (पैसिफिज्म) विश्वमें शांति बनाये रखने, किमी भी शक्तिमें युद्ध न होने देनेपर जोर देनेका मित्रान या इसके लिए किया जानेवाला आन्दोलन।

शांतिवादी-वि० (पैसिफिस्ट) शांतिवादके मित्रानका अनुयायी।

शासनविद्वद्प्रदेश-पु० (मेनस्ट्रेट डेप्रीट) वे पिछड़े हुए प्रदेश या भूखंड जिनका शासनभार प्रथम महायुद्धके बाद राष्ट्रमण्डलके आदेशमें ब्रिटेन आदि उन्नत विदेशी राष्ट्रोंको सौंप दिया गया था।

शासनप्रदेश-पु० (मैमण्ट) प्रथम महायुद्धके पूर्व जर्मनी तथा तुर्कीके अधिकारमें जो उपनिवेश या क्षेत्र थे, उनपर उनके स्वशासनयोग्य होनेतक शासन करनेका ब्रिटेन, फ्रांस आदिकी राष्ट्रमण्डल द्वारा दिया गया आदेश।

शासनिक विषय-पु० (कूट्टा) शासन व्यवस्थामें एकापक एवं बलपूर्वक किया गया परिवर्तन; कण्ठात् सत्ता-पहार।

शासिकाव-पु० (गवर्निंग बोर्ड) (किसी विद्यालय, चिकित्सालय आदिकी) प्रबंध या नियंत्रण करनेवाले व्यक्तियोंका समूह या मंडल।

शांतिव्यवस्था-पु० (ऑपरटि) किमी कृत्य या नकारिकी युक्तिमें दिया जाने या मँगाना जानेवाला धर्मशास्त्र, विधिशास्त्र या किसी अन्य शास्त्रका प्रामाणिक हवाला।

शास्त्रशास्त्र-पु० (पेडेगोगी) छात्रोंकी कदामे, शिक्षा देनेकी विद्या।

शिक्षाप्रसार-बीजका-खी० (एजुकेशन एक्सपैशनस्कीम) बालकों, किशो, प्रौढ़ों, अंधों आदिमें अधिकाधिक कितार-पूर्वक शिक्षा फैलानेकी योजना।

शिक्षामंत्री-पु० (मिनिस्टर ऑफ एजुकेशन) शिक्षा-विभागकी देखरेख करनेवाला मंत्री।

शिवधाम-पु० (पैरेडिस) दे० 'पदशिक्षा'।

शिवर-सम्मेलन-पु० (समिट कानफेंस) किसी गंभीर समस्यापर विचार-विमर्श करनेके लिए आयोजित विभिन्न देशोंके शीर्षस्थ नेताओंका सम्मेलन।

शिरच्छेदबंधन-पु० (गिलोटिन) शिरच्छेद कर देने, धक्के मिरकी उठा देनेके निमित्त प्रयुक्त होनेवाला यंत्र।

शिरोविंद-पु० (ग्रेक्स) किसी विकीर्ण या अस्वाकार-घटनका शीर्ष या ऊपरी बिंदु।

शिक्षानिर्माण-विज्ञान-पु० (पेडगोगी) बच्चानोंकी रचना, स्वरूप आदिका अध्ययन करनेकी विद्या।

शिलासुश्रित-वि० (लिथोप्राक्चर) विशेष प्रकारके पत्थरपर लिख या खोदकर छापा हुआ।

शिलाविज्ञान-पु० (पिट्रोलॉजी) दे० 'शिलानिर्माण-विज्ञान'।

शिशुकल्याण-केंद्र-पु० (चाइल्डवेलफेयर सेंटर) वह स्थान जहाँ बच्चोंके स्वास्थ्य आदिके देखभाल की जाती और विविध उपायों द्वारा उनके हित-साधनका प्रयत्न किया जाता है।

शिष्टमंडल-पु० (डेलीगेशन) किसी सभा, संविधान आदिमें भाग लेनेके लिए भेजे गये अधिकृत प्रतिनिधियोंका दल।

शीघ्रलिपि-खी० (शार्ट हैंड) लिखनेका वह ढंग या प्रणाली जिसमें बोलनेवालेके शब्द अत्यंत शीघ्रतामें, उनके उच्चारण होनेके साथ-साथ लिखे जा सकें, त्वरालिपि, लघुलिपि।

शीतकारी पंजर-पु० (रेफ्रीजरेटर) ठंडक पहुँचाने, ठंडा बनानेवाला यंत्र; ठंडा बनाये रखकर जीवन आदिकी शीघ्र खराब होनेसे बचानेवाला आलमारी या सद्गुणके द्रवका ढाँचा।

शीततरंग, शीतलहरी-खी० (कोल्ड वेव) किसी स्थान या क्षेत्रमें तुषारापात आदि होनेके कारण ठंड बहुत अधिक बढ़ जानेसे उसके प्रभावमें आयी हुई हवाकी लहर जो अन्य स्थानोंमें भी जाफा या गलाव उत्पन्न कर देती है।

शीत युद्ध-पु० (कोल्ड वार) वह स्थिति जिसमें सेनाओं और शाखाओंके प्रत्यक्ष प्रयोगकी आवश्यकता न होते हुए भी राष्ट्रोंमें परस्पर अमैत्रीपूर्ण भाव विद्यमान हो, एक दूसरेके विरुद्ध प्रचारकार्य किया जा रहा हो तथा आर्थिक विध्वंसका भी प्रयत्न हो रहा हो।

शीतसंग्रह-पु० (कोल्ड स्टोरेज) विशेष रूपसे ठंडे बनाये गये कोष्ठ या कमरेमें रखी गयी वस्तुओंका संग्रह जिसमें वे सज्जे-बिगड़ने न पायें।

शीताव-पु० (फायरिया) मधुमेहसे खून तथा मवाद जानेका रोग।

शीर्ष-पु० (वरटेक्स) वह बिंदु जिसपर दो सरल रेखाएँ कोण बनायें।

शीर्षविधु-पु० (अभिध) दे० 'ऊर्ध्वविधु' ।

शुद्धात्म-पु० [सं०] (नेट प्राकटि) लगत या कुल सत्ता काटनेके बाद होनेवाला काम ।

सुक्काई-वि० (अप्टिकल) शुष्क या कर बैठाये जाने योग्य, जो उन वस्तुओंकी सूचीके अंतर्गत हो जिनपर शुष्क प्रथन करनेका नियम हुआ हो ।

सूक-पु० (पिच) दे० 'कटिका' । -**चाची-जी०** (पिन-कुशन) दे० 'कटिकाधार' ।

सूचिवेचन-पु० (इनवेष्टिगन) मंत्रकी सहायतासे दवाका प्रवेश कराना, अंतःश्लेपण; सूई (सूई देना, -छगाना) ।

शोष्यपत्र-पु० (प्रक) किसी छपनेवाली वस्तुका वह नमूना जो उसकी छपाईके पहले अनुसंधानों ठीक करनेके लिए तैयार किया जाता है ।

शोष्यशोधक-पु० [सं०] (प्रकरीयर) शोष्यपत्र (प्रक) पढ़कर उसकी अनुसंधानों दूर करनेवाला कर्मचारी, 'इंस्पायक' ।

शौचालय-पु० (लेबेरी) शौच जानेकी कोठरी या स्थान वह कोठरी या कक्ष जिसमें पानीकी तथा लघुसंका प्रवाहिकी व्यवस्था हो; दे० 'प्रक्षालनगृह' ।

असकायलक-पु० (लेबर म्युरी) अधिकोंकी सख्या, स्थिति आदि-संबंधी जानकारी देनेवाला कार्यालय ।

असविचार-पु० (लेबर डिस्प्यूट) अधिकोंके वेतन, अधि-कार्मांश तथा अन्य प्रश्नोंके संबंधमें उठ खड़ा हुआ विवाद या झगडा ।

अससंध-पु० (लेबर यूनियन) कारखानों आदिमें काम करनेवाले अधिकोंका सघ जो उनके स्थिति-सुधार तथा हितरक्षाकी ओर ध्यान देता है ।

अधिक-कल्याण-कार्य-पु० (लेबर वेल्फेयर वर्क) अधिकोंकी भलाईके लिए किया जानेवाला कार्य (स्वास्थ्यरक्षा, साफ और हवादार मकानोंकी व्यवस्था आदि) ।

अधिक-कल्याण-केंद्र-पु० (लेबर वेल्फेयर सेंटर) वह केंद्र या स्थान जहाँ अधिकोंकी भलाईके विभिन्न कार्य किये जाते हैं ।

अधिक-कृतिपूर्ति-अधिनियम-पु० 'वर्कमेंस कंपेन्सेशन ऐक्ट' अधिकों तथा कर्मचारियों का काम करते समय कमने-वाली छोट या अन्य रूपमें होनेवाली हानिके बदलेमें मासिक या आध्वसायिक संस्थाओंमें हरजाना दिलानेके लिए बनाया गया अधिनियम, कर्मकार-हानिपूर्णा-अधिनियम ।

अधिकदिन-पु० (मैन टैम) एक दिनमें एक आदमी द्वारा किये गये कामकी इकाई मानकर दृष्टताक आदिके समय हुई हानिका हिसाब लगातेमें प्राप्त दिनोंकी संख्या ।

सुलानुभूत-पु० (डियरते) बहुतेसे सुनी हुई बात, गप्प, किंवदंती । वि० बहुतेसे सुना हुआ; शर-उपर विमकी चर्चा हो । -**साक्ष्य-पु०** (डियरते एन्वीडेंस) विभिन्न लोगोंकी सुनी हुई बातोंपर आधारित साक्ष्य ।

अतिश्लेष-पु० (डिक्लेसन) किसीके बोले हुए वाक्योंको सुनकर छिछना या इस तरह जो कुछ किछा जाय, आलेख, इमला ।

आतृचर्च-पु० (आथिअंस) एक स्थानमें समवेत होकर

किसी नेता, उपदेशक, व्याख्याता आदिका भाषण, उपदेश, प्रवचन सुननेवाले समस्त लोग ।

इसेत धन-पु० (हाउट पेपर) किसी वार्ता, संधि-वचन आदिके अंतमें इसमें तब हुई बातों आदिके संबंधमें सरकार द्वारा प्रकाशित लिखित विवरण या वक्तव्य ।

इसेतसार-पु० (स्टार्च) स्फेद सत्त जैसा खाद्यतत्त्व जो आलू, चावल इत्यादिमें अधिक मात्रामें पाया जाता है (कपकोंपर कलक करनेमें इसका प्रयोग किया जाता है) ।

इसेतांक-पु० (वाटर-मार्क) कागजके भीतर, उसकी बना-वटमें ही, विशेष प्रक्रियामें बनाया हुआ स्फेद-सा चिह्न, छाप या अक्षरावली ।

इसेतांकित-वि० (वाटरमार्क) जिसपर इसेतांक बना हो ।

स

संकट-संकेत-पु० (सल. ओ. एस.-'एसोएस') दृश्ये हुए जहाज, ज्वस्त होते हुए विमान आदिमें भयकर संकटकी सूचना देनेके लिए अंतरके मार डगर प्रेषित संदेश ।

संकेतज्ञ-पु० (कानमेंट्रेजन) केन्द्रकी ओर में जाना, जमाना, एक स्थान या केंद्रपर लगाना, इकट्ठा करना (पान, शक्ति, फीस) । -**मिद्धांत-पु०** (मिथरी आन कानमेंट्रेशन) साम्यवादका यह सिद्धांत कि 'वर्ग' पूर्व की अनतोगत्या प्रायः सभी छोटे-पूँजीपमियोंकी या तो निकाल बाहर करेगे या अपनेमें मिश्रण गये प्रिमन मारीं पूर्व की योग्यमें शक्तिशाली गुटों, 'मार्क्स' (टुट्टी) या बहम संकेतित हो जायगी ।

संकेतित प्रथम-पु० 'कानमेंट्रेट एक्ट' वह प्रथम जिसमें सारी शक्ति एक ही स्थान या कामपर लगायी गयी हो ।

संकेतचिह्न, संकेतक-पु० (सीमिनिशन) नाम, पर आदिके सूचक चिह्न या लघु रूप जो मंत्रकी मरह प्रयुक्त होते हैं (जैसे अ० कि०-अकर्मक क्रिया) ।

संकेताक्षर-पु० (साइफर) संकेत रूपमें लिखे गये अक्षर, गुप्त लिपि ।

संकोचन-पु० (कॉम्पेसन) दबाव टाककर किसी वस्तुका आयतन कम करना ।

संकमन-काल, संक्रांति-काल-पु० (ट्रांजीशनल पीरियड) एक स्थिति या अवस्था में निकलकर पूर्ण रूपमें दूसरी स्थिति या अवस्था में संक्रमित (प्रविष्ट) हो जानेके बीचका समय ।

संकमननाश-पु० (डिस्ट्रक्शन) रोगके संक्रमणसे बचाव या मुक्ति ।

संकमननाशक-वि० (डिस्ट्रक्शन) जो रोग फैलने-वाले कीटाणुओंका नाश कर सके, रोगका संक्रमण न होने दे (देखा हो) ।

संक्रमित मास-पु० (गुएस्ट इन हाउसिड) वह मास जो किसी स्थानसे रवाना कर दिया गया हो, पर अभी उद्घिष्ठ स्थानतक पहुँचा न हो-बीचमें, वायाभागमें ही हो ।

संक्षारण-पु० (फोरोशन) मंत्रका आदि कमनेके कारण किसी पदार्थका तमक नष्ट या क्षीय होते जाना ।

संक्षिप्तविधि-जी० (शार्ट हैट) किसीकी एक प्रणाली

जिसमें विशेष भवितव्योके लिए छोटे-छोटे विधु निश्चिन रहते हैं।

संक्षिप्त विधिक विचार-पु० (समरी ट्रायल) न्यायालय द्वारा किसी बात या मामलेपर विधिक दृष्टिमें संक्षेपमें किया गया विचार।

संक्षेपण-पु० (एजिजमेट) संक्षेप करने, विस्तार आदि घटा देनेकी क्रिया।

संख्याविभागा-पु० [सं०] (स्टैटिक्स डिपार्टमेंट) जनन-मरण, उपादान आदि-संबंधी प्रामाणिक आँकड़े तैयार करनेवाला विभाग।

संशयनाश-की० (क्लियरेशन) गिनकर या हिसाब लगाकर देखना, आँकड़ों आदिके आधारपर ठीक-ठीक अंदाज़ लगाना।

संश्लेषण, संश्लेषणवाचक-पु० (स्यूरेटर) किसी संश्लेषक (स्यूनिवम)की देखरेख या व्यवस्था करनेवाला मुख्याधिकारी।

संश्लेषण-पु० (कॉन्फेन्सशन) धना या ठोस बना देना।

संश्लेषणवाचक-पु० 'रेटरेल कोर्ट' संश्लेषणका सर्वोच्च न्यायालय।

संघर्षसमिति-की० (कमिटी ऑफ़ ऐररन्स) स्वाधीनता या प्रायः अधिकारों, भागों आदिकी पूर्णिके लिए चलने जाने-वाले आंदोलन या संघर्षका समाप्ति करनेवाली समिति, आंदोलनसमिति।

संघसमाजवाद-पु० (सिडिकेलिज्म) वह क्रांतिकारी प्रतिक आंदोलन जो व्यवसायसंबंधी (ट्रेड यूनियन्स)की ही सामाजिक क्रांतिका तथा भावी समाजका आधार मानता है (इष्टताल करना इसका मुख्य साधन और लक्ष्य है); राज्यसंस्था समाप्त कर व्यवसायपक्षीकी सत्ता स्थापित करना।

संघीय संविधान-पु० (फ़ेडरल कांस्टिट्यूशन) उन राज्यों के संघका संविधान जो आंतरिक मामलोंमें तो प्रायः स्वतंत्र हों, किन्तु रक्षा एवं परराष्ट्र-नीतिके संबंधमें केंद्रीय या मध्यस्थकारके अधीन हों।

संचारसाधन-पु० (सीम्स ऑव कम्युनिकेशन) दो या अधिक स्थानों या व्यक्तियोंके बीच संबंध स्थापित करनेके साधन-टांक, तार, मसुद्री नाव, रेडियो आदि (वाता-वहनके साधन)।

संचालनव्यय-पु० (वर्किंग एक्सपेंडेचर) किसी कारखाने, संस्था, प्रमंडल आदिके चलानेका व्यय।

संचालनसमिति-की० (मैनेजिंग कमिटी) दे० 'हण्डल-समिति'।

संक्षिप्तकोष-पु० (प्रोविडेंट फंड) दे० 'मविधननिधि'।

संरक्षण-पु० (कंथिग) तैयार हो जानेपर किसी पौन आदिकी पहली बार पानोमें उतारना, तैराना।

संरक्षणशील द्विमसिका-की० (आइसबर्ग) पानीमें उतराकी हुई बर्फकी चट्टान।

संरक्षिका-की० (फ़ारमेल) दे० 'गर्मशंकु', संकसी।

संविधानमसूदी-की० (ब्लैक डिस्ट) दे० 'डुईसबुकी'।

संविधान-पु० (कॉन्स्टिट्यूशन) सत्यके संबंधमें किसी स्थिर विश्वास या सिद्धांतपर न पहुँच सकनेकी स्थिति या प्रवृत्ति,

संशयवाद।

संदेहवादी-वि० (स्केप्टिक) वस्तुतः सत्य या तथ्य क्या है, इस संबंधमें जो कोई निश्चय न कर सका हो, जिसके मनमें बराबर संदेह बना रहता हो (ऐना दार्शनिक); अनिश्चयी, संशयात्मा।

संघाता-पु० (क्वेटर) लोहे आदिके पदार्थों, टुकड़ोंका जोड़नेवाला।

संविच्छेद करना-स० फ़ि० (डिस्कनेक्ट) जोड़ या संबंध काट देना, पृथक् कर देना।

संपरीक्षण-पु० (इंक्विरी) किसी क्लेश, अनौनसपत्र, कार्य आदिकी सूक्ष्म जाँचकर वह देखना कि वह ठीक और नियमानुरूप है या नह।

संपर्कपदाधिकारी-पु० (रिलेय ऑफ़िसर) मित्र देशकी सेनाओंमें या सरकार के प्रजाजनोंमें परस्पर संबंध स्थापित करनेवाला पदाधिकारी, दूतनाधिकारी।

संपालक-पु० (कन्ट्रोलिंग) दे० 'अभिरक्षक'।

संपीड़न-पु० (कॉम्प्रेशन) दबाना; दबाकर निचोड़ना; घटाकर छोटा करना।

संपुष्टि-की० (कारोरीरेशन) किसीके बदन, वस्त्रव्यकी अन्य द्रव्योंमें पुष्टि हो जाना।

संप्रमाण-पु० (इंसिफ़ेशन) एक स्थान या एक व्यक्तिके पासमें दूसरे स्थान या व्यक्तिके पास (ममाचार, रोगाणु, विचारदि) सेजना, पहुँचाना, स्थानांतरित करना।

संभलीकरण-पु० (एफ़िलियेशन) किसी एक परिवार या समाजका सदस्य बना लिया जाना; किसी विद्यालय या महाविद्यालयका संघ विधिविधालयसे हो जाना।

संभरणनिधि-की० (प्रोविडेंट फंड) दे० 'मविधननिधि', मुख्यायक कोष।

संयुक्त निर्वाचकवर्ग-पु० (जॉइंट इलेक्टरेट) निर्वाचकोंका वह समूह जिसमें सभी संप्रदायोंके लोग हों तथा जिनके अनांप्रदायिकताके आधारपर ही मन देनेका अधिकार हो।

संयुक्त राष्ट्रसंघ-पु० (यूनाइटेड नेशन्स आर्गैनिजेशन) अंतरराष्ट्रीय झगड़ों और समस्याओंपर विचार करनेवाली विश्वके बहुमस्यक देशोंके आधिकारिक प्रतिनिधियोंकी संस्था।

संयुक्त लेखा-पु० (जॉइंट एकाउंट) एकसे अधिक व्यक्तियोंके नाम संयुक्त रूपसे चलनेवाला हिसाब किताब।

संयुक्त सरकार-की० (कोलीशन गवर्नमेंट) संकट या विशेष आवश्यकताकी स्थितिमें बनायी गयी दो या अधिक दलोंके सदस्योंकी सरकार।

संयुक्त रकषप्रमंडल-पु० (जॉइंट स्टोक कंपनी) वह प्रमंडल जिसमें एकाधिक व्यक्तियोंकी सझेदारी हो।

संयोजन करना-ज० फ़ि० (डू कनबीन) सभा आदिका आयोजन करना, समाधान करना। (संयोजक-कनबीनर)।

संरक्षण-पु० [सं०] (प्रोटेक्शन) विदेशी माछपर कर आदि लगाकर देशी उद्योग-व्यवसायकी बाहरकी अनुचित प्रतियोगितासे बचाना।

संरक्षणकर-पु० (प्रोटेक्टिव ड्यूटी) अनुचित प्रतियोगितासे देशी उद्योगव्यवसायकी रक्षा करनेके लिए बाहरी माछपर लगाया जानेवाला कर।

संस्कृत राज्य-पु० (प्रोटोस्टेट) वह छोटी तथा कमजोर रियासत जो सुरक्षाकी दृष्टिसे किसी बड़े राज्यके अधीन या या आश्रित हो।

संस्थापक-पु० (रिफाउण्डेशन) बड़े या अमूर्त व्यक्ति-को प्रमत्त करना, स्थापनाके दो पक्षोंमें पुनः अच्छे संबंध स्थापित करना।

संश्लेष-पु० (रीड) कोई विधिक कृत्व या उसका प्रामाणिक स्वीकृत देनेवाला किशित पत्र, दे० 'सिलेक्'।

संवहारी-स्त्री० (एनुअल) दे० 'बर्बोथ'।

संवर्णकोष-पु० (क्रॉनिग बैलेंस) दिनका हिमांश बंद करते समय बनी हुई रकम, रोक्क बाकी।

संवर्णसंकष-पु० (क्रॉनिग स्टॉक) दिनका (या निर्धारित अवधि) लेन-देन समाप्त होनेके बाद मौद्रिक बचा हुआ माल।

संवर्ती सूची-स्त्री० (कौन्सिलर लिस्ट) वह सूची जो एक साथ कई स्थानोंसे प्रकाशित की जाय।

संवादचिन्तोषण-पु० (क्वैक ऑडिट) समाचारपत्रोंमें कुछ विशेष प्रकारके समाचारोंका जान-बूझकर छोड़ दिया जाना, बिककुल ही प्रकाशित न किया जाना।

संविदा-स्त्री० (कंड्रैक्ट) कुछ निश्चित शर्तोंपर दो या दोसे अधिक पक्षोंके बीच होनेवाला समझौता।

संविधान-पु० (कांस्टिट्यूशन) वह विधान तथा मौलिक सिद्धान्तोंका समूह जिसके अनुसार किसी देश या राज्य या संस्थाका संवतन, मंचालन आदि होता है। -सभा-स्त्री० (कांस्टिट्यूट असेम्बली) किसी देशका मविधान तैयार करनेवाली सभा।

संविधानज्ञ-पु० [म०] (कांस्टिट्यूशनलिस्ट) मविधानकी जानकारी रखनेवाला; दे० 'संविधान-शास्त्री'।

संविधानशास्त्री (फिर्)-पु० [सं०] (कांस्टिट्यूशनलिस्ट) संविधानका विवेचक, उसकी शर्तियोंको समझनेवाला, संविधानज्ञ।

संविधि-स्त्री० (स्टैट्यूट) विधानसभा द्वारा स्वीकृत वह किशिन विधान जो न्यायी विधि (कानून)के रूपमें हो।

संविभाजन-पु० (प्रीसिजनमेंट) लोगोंको देने, बाँटने आदि-की दृष्टिसे किसी वस्तुके अलग-अलग अंश या टुकड़े करना; दोष या दायित्व आदिका सहिलष्ट व्यक्तियोंमें उचित रूपसे विभाजन करना।

संवेदनवाद-पु० (सेनसेशनलिज्म) यह सिद्धांत या मत कि हमें समस्त ज्ञानकी प्राप्ति संवेदनसे ही होती है।

संवेष्टक-पु० (वेक्टर) वह व्यक्ति जो पुष्पके, दवाकी या अन्य माल काचय; दफ्ती, बीरे आदिमें ऊपरकर या लट्क-में रखकर अन्यत्र भेजनेके लिए प्रस्तुत करे।

संवेष्टक-व्यव-पु० (वेडिंग चार्ज) बाहर भेजनेके लिए माल किसी डिब्बे, बीरे, बैगे आदिमें बंद करनेके कारण होनेवाला व्यय।

संवेष्टिका-स्त्री० (वेक्टर) किसी वस्तुका छोटा बक्कल, लकड़ी, दफ्ती आदिके डिब्बों आदिमें बंद किया हुआ माल।

संवेष्टित-वि० (एनक्लॉड) जो किसी अन्य कामज, पत्रादि के साथ भीतर रख दिया गया हो।

संघीवी विधेयक-पु० (पर्सनिय बिल) किसी अधिकविषय आदिमें संशोधन या सुधार करनेके लिए उपस्थित किया जानेवाला विधेयक।

संश्लेषण-पु० (सिंथेसिस) संकलन या संयोजन, विभिन्न कारणों या परिणामोंपर विचार कर संबंध दिखाना, मिलान करना।

संश्लेषण-पु० (सिंथेसिस) मुद्रके लिए (सिनाका) पूर्णतः तैयार या शक्काओंसे सज्जित किया जाना।

संस्पष्टित-वि० (सिंथेसिस) मुद्रके लिए प्रस्तुत या तैयार की गयी (सिना)।

संस्वर्-स्त्री० (पार्लिमेंट) किसी देश या राज्यकी जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियोंका वह संघ (केंद्रीय) विधान-सभा जिसका काम दामन संबंधों कायोंमें सहायता देना, आवश्यक स्वीकार करना, विधान बनाना, उनमें संशोधन करना आदि हो (साधारणतया इसमें दो सदन होते हैं, जैसे ब्रिटेनमें कामंसभा तथा सरदारमभा और भारतमें लोकसभा तथा राज्यपरिषद)।

संस्वर्ण-पु० (कॉमेडिय) प्रशंसा करनेका कार्य, किसी व्यक्तिको योग्य बनाकर किसीके सामने उसका मण्यन करने या उसकी निवृत्ति आदिपर जोर देनेका भाव।

संस्वाध करवा-भ० कि० (कॉमेड) योग्य समझकर किसीमें पक्षमें अनुकूल सम्मति देना या उसकी निवृत्ति आदिपर जोर देना।

संस्तम्भ-वि० 'कॉमेडिलि' प्रशमनीय।

संविदा-स्त्री० [सं०] (कंड्रैक्ट) अधिनियमों, विधियां आदिका क्रमबद्ध संग्रह।

सकल परिसंस्वर्-स्त्री० (ग्राम असेट्स) वह सम्पत्ति परि संपत्तिमें कृपाधिकी रकम बाद न की गयी हो।

सक्रिय सेवा-स्त्री० (एक्टिव सर्विस) किसी सैनिक द्वारा मुद्रलेत्रादिमें किया गया काम या सेवा।

सक्रिय-पु० (मेक्टेरी) मंत्री; किसी मंत्र्या या मण्यनके शासनके लिए उत्तरदायी व्यक्ति; किसीके मित्री कार्य, पत्र-व्यवहार, व्यवस्था आदिमें सहायता करनेवाला व्यक्ति; दामनव्यवस्थाके किसी विभागाका उपाधिकारी।

सक्रियालय-पु० (मेक्टेरियस) किसी राज्यकी सरकारके मंत्रियों, मंत्रियों तथा विभिन्न विभागोंके प्रधान अधिकारियों आदिके कार्यालयोंका समूह, वह इमारत या स्थान जहाँ वे स्थित हैं।

सचेतक-पु० (डिप) दे० 'चेतक'।

सक्रियता-स्त्री० (रोसिडि) ऐसे छिद्रोंमें चुक होना जिससे होकर पानी एक ओरसे दूसरी ओर नला जाय।

सजातीय कार्य-पु० (कानेट आम्बेडर) किसी क्रियाका वह कार्य जिसका वही अर्थ हो जो क्रियाका ही (जैसे मैं 'दीव' होता हूँ)।

सर्वाचारित प्रवेष्ट-पु० (सिंथेटेटिटी) वह प्रवेष्ट जिसका शासन या सत्ता दूसरेकी सौंप दी गयी हो; जो दूसरेकी मणित कर दिया गया हो।

सर्वाचारण-पु० (डेरिफिकेशन) अधिक-परास्वर्णके बाद किसी बातकी सल्लाह स्थापित करना; प्रमाणों आदि केर किमी कथनको सल्लाह दिखाना।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (सिद्धांत) जूरी आदिकी सहमतासे हस्ता आदि अभिव्यक्तिपर विचार करनेवाली अंगण ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (प्रोप्रीएशन) विधानसभा आदिकी पूर्णक संघ या उत्तरमें दिये बिना अभिव्यक्ति काटके लिए प्रायः अंगे समस्तके लिए, स्थापित कर दिया जाता ।

संस्कृत-पु० (हाउस) वह भवन या स्थान जहाँ किसी विधानमंडल या संसदका अधिवेशन हो। उक्त स्थानमें होनेवाली सभा या जसमें उपस्थित सदस्योंका समूह ।—**स्थान**—पु० (वाक आउट) दे० 'मन्त्रालय' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—को० (कन्सेलर होमीसाइट) ऐसा मानवधर्म जो दीव या जपराय माना जाय ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—सं० कि० (इ इन्स्ट) हटाये हुए शब्द, शब्दसमूह आदिके स्थानमें अन्य शब्द, शब्दसमूह आदि रखना या बैठना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (सिगरस इन्सिगनेट) वह कलावास्तु जिसमें बंदीसे कठिन परिश्रमके काम कराये जायें ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—स्त्री० (करीशनल या गालिकाइट एक्सेन्स) दे० 'विशेषित स्वीकृति' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—स्त्री० (पैरोल) किसी बर्तकका कारागृहमें इन प्रतिबंधपर कुछ समयके लिए छोड़ दिया जाना कि अवधि समाप्त होने ही वह पुनः कारागारमें उपस्थित हो जायगा और मुक्तिप्राप्तमें कोई अवधानयोग्य या वस्तिन कार्य न करेगा, मन्त्रिपरामुखि, साधिमुखि ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु०, (लोरी) दे० 'प्रकोष्ठ' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (लीडर जब डि हाउस) संसद या विधानमंडलके सदस्यों द्वारा चुना गया वह नेता जो संसद या सभाका कार्यक्रम आदि निर्धारित करना है (कभी-कभी वह प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्रीमें भिन्न भी होता है) ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (वाक आउट) अभ्यक्षकी किसी व्यवस्था या मन्त्राकी किसी कार्रवाई आदिमें विरोधमें एक या अधिक सदस्योंका सभा छोड़कर बाहर चले आना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (फॉर्मिटेरी सेक्रेटरी) विधानमंडल या लोकसभाका वह सदस्य जो किसी मंत्रीके साथ रहकर उसके समस्त विभागीय कामोंमें सहायता करता और जिसे उस कार्यके लिए वेतन भी मिलता है; स्मरसचिव ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—स्त्री० (पेरैल गवर्नमेंट) दे० 'प्रति-सरकार' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—वि० (कंटेरीरी) दे० 'समसापेक्षिक' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (राइट एंगिल) वह कोण जो ९० अंशके बराबर हो ।—**त्रिभुज**—पु० (राइट एंगिल ट्रायंगल) वह त्रिभुज जिसका एक कोण समकोण हो ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु०, **संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण**—स्त्री० (प्लेन फिगर) सम-तलका वह भाग जो एक या अधिक सरल या वक्र रेखाओंमें घिरा हो ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—वि० (होमीजीनिज्म) समान जाति या प्रकारका, एक ही प्रकारका ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (ड्रैन सरकिस) वह नथ जिसमें यदि कोई भी दी बिंदु के लिये कार्य हो इनको मिलानेवाली सरल

रेखा सब जगह उसी तलमें रहती है ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (ईक्विटारल ट्रायंगल) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (आइसोसिलीय ट्रायंगल) वह त्रिभुज जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—सं० कि० (इ बाइसेक्ट) दो बराबर भागोंमें बाँटना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (ट्राइसेक्शन) (किसी कोणादिकी) तीन बराबर हिस्सोंमें बाँटना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (बाइसेक्टर) दे० 'अर्द्धक' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (एक्स्ट्रीरेशन) किसी प्रदेश या क्षेत्रके भीतर जाकर, वहाँ पहुँचकर, चारों तरफसे स्थिति आदिका बता लगाना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (पुनोफर्) दे० 'विपरिधाय' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (कनफिजेशन) ईदके रूपमें सरकार द्वारा किसीके धन या संपत्तिका छेदन लिया जाना, उसपर दंडका दण्ड देना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (रेगुलर पासीगन) वह बहुभुज जो समान भुजिक और समान कोणिक, दोनों ही ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (ईक्विटारल पासीगन) वह बहुभुज जिसकी सब भुजाएँ आपसमें बराबर हों ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—स्त्री० (सिमेट्रिकल फिगर) वह आकृति जिसकी बीचकी रेखाके वल सह करनेपर रेखाके एक ओरका भाग ठीक-ठीक दूसरी ओरके भागको ढक ले ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—स्त्री० (सिमेट्री) शरीरके या किसी वस्तुके विभिन्न अंगोंमें उचित अनुपातका होना, सुलक्षण ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (वाटेंडर) दे० 'अधिकारपत्र' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (एग्जैम्पल) किसीमें मिलने, बात करने आदिके लिए कोई समय पहलेसे निर्धारित या निश्चिन कर देना ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—वि० (पक्वजल) समयकी पावड़ी रखने-वाला, प्रत्येक काम समयपर करनेवाला ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (कानिटेड) दे० 'प्रतिभूतिपत्र' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (टाइमटेबिल) दे० 'समवयुक्ती' ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—स्त्री० (टाइमटेबिल) डेनोंके पहुँचने तथा छूटने या विशेष विषयोंको पढ़ाई, परीक्षा आदि शुरू होनेके लिए निर्धारित समयकी सूची, समय-विभागापत्र ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (आइडेंटिक मोशन) किसी अन्ध प्रस्तावसे बिल्कुल मिलता-जुलता प्रस्ताव ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (सरेटर वैल्यू) अवधि पूरी होनेके पहले ही बीमापत्र समाप्त कर देनेपर बीमा करानेवालेको उसके घर ले दिया जानेवाला धन ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—पु० (प्लाकेट) किसी स्थान आदिकी शब्दकी लेनाओं, जहाँ-तहाँ आदि द्वारा हम तरह-तरह लिखा जाना जिससे आवश्यकके मार्ग बिल्कुल अवबद्ध हो जायें, नाकेबंदी ।

संस्कृत-शब्द-कोश-संस्करण—वि० (कनकर्ट) साथ-साथ होने, रहने या

समाचारिकाः ।

समाचारिक-पु० (राष्ट्रिके) साधारण या समाचारिकी कमी होनेपर नागरिकोंको प्रतिदिन वा प्रतिवासेके लिए निर्धारित समाज यात्रा वितरित करनेका कार्य या व्यवस्था, सुराकरंदी ।

समावेश-पु० (रैक) सत्त्वरी, अनुयायियों आदिका एक समूहपर जमा होना; तिर-वितर हुए सैनिकोंका पुनः एकत्र होना, समागमन ।

समावेश होना-क० कि० (उ योड, उ असेवक) एकत्र होना, समाके भस्त्रोंका समाके रूपमें एकत्र होना ।

समाश्लेषण कटिबंध-पु० (टेंपरेट जोन) उष्ण कटिबंध तथा उत्तरी शीत कटिबंध और उष्ण कटिबंध तथा दक्षिणी शीत कटिबंधके बीचमें पड़नेवाले पृथ्वीके वे दो कल्पित भाग जहाँ प्रायः समाश्लेषण जलवायु बसा जाता है ।

समासाधकिक-वि० (कमेटोरैरी) जो एक ही समयमें हुए हो या विचमान रहे हों ।

समाकलय-पु० (क्रिडेट) किसीके हाथमें उससे प्राप्त कोई रकम या धन जमाकी ओर लिखना ।

समाकलय-पु० (रैक) दे० 'समवेतन' ।

समाचार-त्रेच-पु० (न्चुन डिस्चैक) समाचारोंका जमा जाना वह सावधानी की समाचारके रूपमें भेजा जाना, समाचार-सावधानी ।

समाचार-सूचना-की० (मिड नोट) समाचारपत्रोंके लिए वा समाचारके रूपमें प्रकाशित सूचना ।

समाचार-पु० (सोशलिज्म) वह सिद्धांत कि व्यक्तिगत स्वतंत्रताकी अपेक्षा समाजके सामूहिक हितकी अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिये (वस्तुओंका उत्पादन सह-योगिताके आधारपर किया जाय, उसमें व्यक्तिगत प्रति-इच्छा न हो, भूमि और पूँजीपर समाजका नियंत्रण हो आदि बातें इसीके अंगगत हैं) ।

समाजवादी-पु० (सोशलिस्ट) समाजवादका अनुयायी । वि० समाजवादके अनुकूल या उसमें सवध रखनेवाला ।

समाजीकरण-पु० (सोसलाइजेशन) किसी उद्योग, व्यवसायादिकी ऐसा रूप देना जिसमें उसपर सारे समाजका अधिकार हो जाय और उसका लाभ सब लोग समान रूपसे उठा सकें ।

समाधिकेय-पु० (पविटा) किसी कर्म या समाधिके पक्षपर पाददाइसके रूपमें लिखा जानेवाला लेख ।

समाधेय-वि० (इंफ्रंटडेविक) जिसमें आपसमें निपटा लेने-समाधान करनेका अधिकार दोनों पक्षोंको हो (अपराध, विवाद) ।

समाजकीयिक बहुभुज-पु० (रेविन्यूएयर पालिमान) वह बहुभुज जिसके सब कोण आपसमें बराबर हों ।

समावांतर चतुर्भुज-पु० (पेरिलेकोग्राम) वह चतुर्भुज जिसकी आधुने-सामनेकी भुजाएँ समानांतर हों ।

समावांतर रेखाएँ-की० (पैरेलल लाइंस) वे रेखाएँ जो एक ही मध्यतलमें हों और जो एक दूसरीमें न मिलें ।

समापन-पु० (वाइदिंग अप, क्लोजर) कुछ और कहने या तर्क आदि देनेके बाद किसी प्रश्नका विचार या

विचार समाप्त करना । समापन-पु० (क्लोजर) किसीकी ओर दे० 'विश्रांतिप्रस्ताव' ।

समापनीक-पु० (टर्मिनेटिक कीक) कुछ समयके बाद समाप्त हो जानेवाला भट्ठा ।

समापनीक-पु० (संज्ञा) भाष्यक वस्तुओंका योग्य करना जो कुछ भाष्यक ही उसे सुदृढ़ता और फेरी व्यवस्था करना कि जिसे चाहिये उसे वह भिन्न भाषा, उसके पास पहुँच जाय ।

समाहृता-की० (वैरिटी) सूत्र, योग्यता आदिमें समान होना ।

समासाधिक-पु०, **समासरेखा-की०** (बाइकन) दो या दोसे अधिक शब्दोंको मिलकर संयुक्त शब्द बनानेके लिए उनके बीचमें दो जानेवाली छपुरेखा, संयोजक चिह्न ।

समीकरण-पु० (ईक्वेशन) दे० 'मूल्य' ।

समुद्रतटवर्षी प्रवेश-पु० (मैरिटिम प्राविंस) किसी देशका वह भूभाग जो समुद्रके किनारे हो ।

समुद्री तार-पु० (टेलिग) समुद्रमें पानीके भीतरमें जाने-वाला तार ।

समुद्रवायु-पु० (कन्सिडिबल) उद्योग-व्यवसायमें सामूहिक पूँजीके प्रयोगका प्रतिपादन करनेवाला सिद्धांत; भूमि तथा उत्पादनके साधनोंपर सामूहिक प्रत्यक्षीय आवश्यकता पर जोर देनेवाला सिद्धांत ।

समुद्रोन्पात-पु० (मास प्रोटक्शन) दे० 'पूजोपादन' ।

सम्मंजसा-की० (क्वाइरेम) परस्पर मझाह-प्रसवित करनेका कार्य ।

सम्मिलन विवेक-पु० (इस्टमेट-आव ऐकमेशन) वह लिखित समझौता, जिसमें किसी राज्य, भू-क्षेत्रादिके अन्य राज्यमें भूमिपति किये जानेकी शर्तें दी हैं और जिस पर दोनों पक्षोंके आधिकारिक व्यक्तियोंके हस्ताक्षर हों ।

सम्मिश्रक-पु० (इन्फाउटर) अन्धमालो वा पड़चमरी दण्ड के औषधालयोंमें कई औषधियोंका सम्मिश्रण कर रोग-विशेषकी दवा तैयार करनेवाला कर्मचारी ।

सम्युलकोन-पु० (वर्दिकी अयोपिट येंसिस) दो सभ्य देशोंके किसी एक बिंदुपर एक दूसरीकी काइनेसे बने हुए आगमें माननेके कोण ।

सम्प्रादन-पु० (संक्रान्त) किसी निश्चय, अधिनिश्चय आदिकी उपाधिकारियों द्वारा पुष्टि, आधिकारिक स्वीकृति ।

सम्प्रादनविद्या-की० (डिपनाटिक्स) कृत्रिम वषावों द्वारा उत्पन्न की गयी प्रगाढ़ निद्रा जैसी वह स्थिति जिसमें पक्षी कुछ क्षणोंके लिए सम्प्रादन करनेवालेके पास संकेतोंपर ही कोई कार्य करता है ।

सर्ग-वि० (रोरम) जिसमें सब अंग बहुत छोटे-छोटे छेद विद्यमान हों जिससे होकर पानी (वा अन्य तरल वसाव) धीरे-धीरे रिसता रहता हो ।

सरक रेखा-की० (स्रेट लाइन) वह रेखा जिसकी दिशा सर्वत्र एक ही रहती है ।

सरलीकरण-पु० (सिम्प्लिफिकेशन) किसी विषय, प्रदानादिकी सरल करनेका कार्य या भाव ।

सर्वक्षमता-की० (ऐनलैस्टी) किसी विशेष अवसरपर या विशेष कारणसे किसी कीटिके बहुतसे बंदिमोंकी क्षमता

प्रदान कर कारागृहमें मुक्त कर देना ।

सर्वक्षारणीति-न्त्री० (स्कोर्वं ट अर्थ पोस्ती) युद्ध-वृत्ति में पीछे हटनेवाली सेना द्वारा इमारतों, वस्तु, पुर्कों, देवी आदिका संपूर्ण विनाश जिससे शत्रु उनका प्रयोग न कर सके या उनसे लाभ न उठा सके, सर्वस्वाधानीति ।

सर्वतोयुद्ध-वि० (ओल राउण्डर) जो कई बानों, कामों आदिमें दक्ष हो; (बह लेखाली) जो बन्नेबाजी, गोल्डजाजी, क्षेपण आदि सभमें दक्ष हो ।

सर्वसामान्य-वि० (कामन) जो सबमें पाया जाय; (पब्लिक) जो सबके प्रयोगके लिए हो ।

सर्वस्वयुद्ध-पु० (रीटल वार) समस्त साधनोंमें लड़ा जानेवाला युद्ध, वह युद्ध जिसमें शत्रुके विरुद्ध समस्त साधन और सारी शक्ति लगा दी जाय, सर्वांगिक युद्ध ।

सर्वस्वाधानीति-न्त्री० (स्कोर्वं ट सब पास्ती) दे० 'सर्वक्षारणीति' ।

सर्वहारा-पु० (प्रोटेरेरियन्, गमगवाका अकिंचन वर्ग, निम्नतम श्रेणिक वर्ग ।

सर्वांगसम त्रिभुज-पु० (माइटेडिकल; ईकल; कायुप्ट) वे तीनों त्रिभुज जिनमेंसे एकके छोड़ो अग (तीनों भुजाएँ व तीनों कोण) दूसरेके छः अंगोंके बराबर हों ।

सर्वांगिक राष्ट्र-पु० (टीटेरिरेरियनस्टेट) वह राष्ट्र या राज्य जहाँ केवल एक ही दम (डायमंडल)का अधिकार्य हो जिसकी परिधिमें नागरिकोंका सार्वजनिक जीवन है, नहीं, व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता हो ।

सर्वेक्षण-पु० (सर्वे) दे० 'सर्वेचलोन्' ।

सर्वेश्वरवाद-पु० (सेव्हेंट्स) सर्व जगत् ईश्वरका प्रादुर्भाव और ईश्वर सब जगत्का, यह सिद्धांत; सब देवताओंको मानने, उनकी पूजा करनेका सिद्धांत ।

सर्वोच्च न्यायालय-पु० (सुप्रीम कोर्ट) देशका सर्वोच्च न्यायालय, उच्चतम न्यायालय ।

सर्वोच्च सत्ता-न्त्री० (पेरामाउट पावर) देशकी सर्वोच्च या प्रधान सत्ता (शक्ति) ।

सर्वोच्च चित्र-पु० (ट्राफी) वह चित्रचित्र जिसमें प्राणिके कार्य ही न दिखाएँ हैं, उनका बोलना, गाना, रोना आदि भी सुनाई दे-जो मनुज न रहकर बोलना हुआ भा जान पड़े, बोलपट ।

सखीर प्रतिष्ठा-पु० (होस्टेज) अमानतके रूपमें रखा गया आदमी, ओल ।

सभ्यता कारावास-पु० (रिगरम इन्प्रिजनमेंट) दे० 'मपरिभ्य कारावास' ।

सत्य-आश्चर्य-पु० (क्रापरिटेशन) खेलमें क्रम-क्रममें दूसरी फल बदल-बदलकर तैयार करना, फल-बदल ।

सहभाव-पु० (कोरस) कई व्यक्तियों द्वारा एक साथ गाया जानेवाला गान; कई व्यक्तियोंका एक साथ मिलकर गान, संयुक्त गान ।

सहप्रतिवादी-पु० (को-डिफेंडेंट) किसी मामलेमें मुख्य प्रतिवादीके साथ गौण रूपसे मान लिया गया अन्य प्रतिवादी ।

सहसिद्धारी-वि० (को-पससिद्धारि) साथ-साथ पैदा हुआ ।

सहसाध्यक क्यू-न्त्री० (शॉक ट्रप्स) सेनाकी वह डकड़ी जिसे अचानक ऐसा प्रयास आक्रमण करनेकी शिक्षा दी

गयी हो जिसमें असाधारण धैर्य और साहसकी आवश्यकता हो ।

सहस्रीपचार-पु० (शॉक ट्रीटमेंट) चिकित्सा करने या शस्त्र-क्षीर देनेवाला वह उपचार जो सहसा काममें लाया जाय, वह उपचार जो सहसा किसीकी मानसिक स्थितिपर प्रभाव डालकर रोगादिका शमन करनेके लिए किया जाय ।

सहापराधी-पु० (एक्कांफ्लिन्) किसी अपराधमें मुख्य अपराधीका साथ देनेवाला, उसकी सहायता करनेवाला ।

सहायक आजीविका-न्त्री० (सबसिस्टिवरी आन्स्युपेयन्) मुख्य पेशे या काममें होनेवाली आमदनीमें पूरा न पड़ने-पर सहायताके रूपमें किया जानेवाला कोई अन्य कार्य या धंधा ।

सहायतागृह-पु० (ररक्व होम) खतरे या संकटमें पड़े हुए लोगोंकी सहायताके लिए स्थापित गृह ।

सांख्यिक-पु० (स्टैटिस्टिकियन्) जनन, मरण, उत्पादन आदि-संबंधी प्रामाणिक आँकड़े एकत्र करनेवाला कर्मचारी अथवा विशेषज्ञ, आंकिक ।

सांख्यिकी-न्त्री० (स्टैटिस्टिक्स) जनन, मरण, उत्पादन, अपराध आदि-संबंधी आँकड़े (संख्याएँ) प्रामाणिक रूपसे एकत्र करने, तैयार करने आदिकी विधा; इस तरह तैयार किये गये आँकड़ोंका समूह ।

सांख्यिकीय मंत्रणाकार-पु० (स्टैटिस्टिकल एडवाइजर) जनन, मरण, उत्पादन आदिके आँकड़ोंके संग्रह, अध्ययन, विवेचन इत्यादिके संबंधमें परामर्श देनेवाला (आंकिक मंत्रणाकार) ।

सांवाचिक-पु० (न्यूतर्मेन्) सड़कपर घूम-घूमकर समाचार-पत्र बेचनेवाला; समाचार बेचनेवाला, पत्रकार ।

सांसद-वि० (पार्लिमेंटरी) जो संसद् या उसके सदस्योंकी मर्यादाके अनुसार हो ।

सांस्पर्शिक-वि० (कंटेजस) सम्पर्क या छूटने होने, फैलने-वाला (रोग); छूटका, छूटनेवाला (रोग) ।

साक्षरता-आँकड़-पु० (लिटरैसी कंफेन्) निरक्षरोंकी संख्या, अपठकोंकी पढ़ा हुआ, बमानेके लिए खलाया गया जाडोलन ।

साक्षिपरीक्षा-न्त्री० (क्रास-इक्वामिनेशन) दे० 'प्रतिपरीक्षण' ।

साक्षीकरण-पु० (अवेस्टेशन) किसी वातके साक्षिरूपमें हस्ताक्षर करना, किसी लेख या प्रमाणपत्रादिकी प्रतिलिपिपर हस्ताक्षर कर स्वीकार करना कि वह सच्ची और तभी प्रतिलिपि है, सत्यापन ।

साक्षीकृत-वि० (अवेस्टेड) जिसपर साक्षिरूपमें हस्ताक्षर किया गया हो, हस्ताक्षर द्वारा जिसका सच्ची प्रतिलिपि होना स्वीकार किया गया हो ।

साक्ष्यविधि-न्त्री० (ला ऑफ एविडेंस) साक्ष्य-संबंधी विधि या कानून ।

साक्षपत्र-पु० (सिक्चरिटीज) साक्षपर लिये गये कण-का सूचक पत्र, उस तरहके सार्वजनिक कणका सूचक पत्र जिसकी जायिन प्राज्ञः देशकी सरकार होती है और कथ-नियोंके विरुद्ध आदिकी तरह जिसकी खरीद-बिक्री अंकित मूल्यमें कम या अधिकपर की जा सकती है ।

सांख्यिक-वि० (मिक्टेरियल) सखि या उसके कर्तव्यों-में मग्न रखनेवाला । —**स्तरपर-वि०** (आन सेक्टेरियल सेवक) (समझौते, जॉन आदि-संबंधी बानचीत) जो दो या अधिक राज्यों के विनाशीय सन्धियों के बीच की जाय ।

सांख्यिक परीक्षा-खी० (टर्मिनल इन्वैस्टिगेशन) विद्यालय आदिका एक सत्र समाप्त होनेपर की जानेवाली परीक्षा ।

साधारण निर्वाचन-पु० (जनरल इलेक्शन) किसी विधान-मन्था या संसद् आदिके सदस्योंका साधारण मतदानाभे द्वारा निर्वाचन ।

साधुक्रम व्यवस्था-पु० (हायरैरकी) क्रमानुगत अधि-कारियोंवाली कोई मन्था ।

सापेक्षतावाद-पु० (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) आइन्स्टाइन-का यह सिद्धान्त कि प्रकाशको छोड़कर अन्य सब वस्तुओंकी गति सापेक्ष है और जमी तरह दिक, काल तथा पदार्थ की मात्रा भी सापेक्ष होती है । [गति बदनेपर मात्रा भी बदती है और दिक तथा कालका मापन ये जिस प्रणालीमें घूम रहे हैं, उस प्रणालीकी गतिपर निर्भर रहता है ।]

सामंस्तंत्र, सामंस्तवाद-पु० (फ्यूडल सिस्टम, फ्यूड-लिज्म) किसी राज्यकी वह प्राम्थन-व्यवस्था जिसमें राज्यकी भूमि बड़े-बड़े सामंतों, सरदारों वा जमींदारोंके जिम्मे रहती थी और ये उसके बड़े राजाको आर्थिक वा सैनिक सहायता देते थे ।

सामंस्तवैश-पु० (प्रिन्सिपैलिटी) किसी सामंत या सरदारके अधीन देश वा क्षेत्र ।

सामयिक पत्र-पु० (पीरियडिकल) दे० 'सामयिक पत्र' ।

सामयिक बाण-खी० (सेपिकल टांक) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित की जानेवाली सामयिक वदनाभे या किसी साम-यिक प्रदान, विषय आदिकी खबरी ।

सामाजिक व्यवस्था-खी० (सोशल आर्डर) समाजके निर्माणप्रदिका ढंग ।

सामाजिक सुरक्षा-खी० (सोशल सिक्युरिटी) बेकारी और अभाव तथा चोर-डाकुओं आदिके परित्राणकी व्यवस्था ।

सामान-धर-पु० (कमेज आफिस) रेक-ग्टेशन, वन ग्टेशन आदिका वह कमरा जहाँ सुमाफिकोंका सामान तोलकर महसूल लेने, सुरक्षित रखने आदिकी व्यवस्था होती है ।

सामिप ओजनालय-पु० (जान-बेन्डिटरियन रिफ्रेन्स-रूम या नोन-बेन्डिटरियन रीडरूम) वह ओजनालय जहाँ मांस वा मांसके बने पदार्थ भी ओजनालय उपलब्ध हों ।

सामुदायिक योजना-खी० (काम्युनिटी प्रोजेक्ट) कृषि-सुधार, शिक्षा-प्रसार, पथ-निर्माण, नल कूपखनन आदि-की ऐसी योजना जिसे देशके किसी भागका जनसमूह ही, मुख्य रूपसे, कार्यन्वित करे ।

साम्राज्यवाद-पु० (इंपीरियलिज्म) सैनिक विजय, राज-नीतिक छलबल अथवा आर्थिक आधिपत्य द्वारा साम्राज्य स्थापित करनेकी प्रवृत्ति या नीति ।

साम्राज्यवादीगत अधिमाम्यता-खी० (इंपीरियल ग्रेजेंस) व्यापार-वाणिज्यके मामलोंमें मित्रि-साम्राज्यके भीतरके देशोंकी, अन्य देशोंकी तुलनामें, परस्पर कम आयात-निर्वात-कर कपाटकर, अधिमाम्यता देनेकी नीति ।

साधनमास-पु० (डिनर) (वैतांग जातिधर्म) संध्याकी

किंवा जानेवाला मुख्य भोजन ।

सार्वजनिक निर्माणविभाग-पु० (पब्लिक वर्क्स डिपार्ट-मेंट) दे० 'लोकनिर्माण विभाग' ।

सार्वजनिक व्यवस्था-खी० (पब्लिक आर्डर) सर्वसाधारणमें शांति वनःये रखने तथा विधि-विधानोंके समुद्ररण-का नावः जनतामें उपद्रव, अशांति या विधिके उल्लंघन-की प्रवृत्ति न फैलने देना ।

सावधिक-वि० (पीरियाडिकल) निश्चित अवधिके बाद होने या निकलनेवाला । —**पत्र-पु०** (पीरियाडिकल) वह पत्र या पत्रिका जिसका प्रकाशन एक निश्चित अवधि-एक मताह, एक पक्ष, एक माह-के बाद होता हो ।

प्रस्फोट-पु० (टाइम बम) वह प्रस्फोट (बम) जो निधा-रित अवधिके बाद अपने आप फट पड़े, प्रवृत्ति हो उठे ।

सावधि विश्लेष-पु० (फिक्स्ड डिपॉजिट) विशेष अवधि-नकके लिए कथवा जमा करनाः मोबादी खातेमें जमा की गयी रकम ।

साहित्यविद्या महाविद्यालय-पु० (आई एम कॉलेज) साहित्य, इतिहास आदि विषयोंकी शिक्षा प्रदान करनेवाला महाविद्यालय ।

साहित्यिक उपनाम-पु० (पेन-नेम) व्यक्त का कर्तव्य साहित्यिक रचनाओंमें अपने अमली नामके बदले या उसके साथ साथ प्रयुक्त किया जानेवाला वन-वटी नाम ।

सीमांकन-पु० (टिमार्केशन) (विगी लेन, भूक्षेत्र आदिके) सीमा निश्चयन या निर्धारण करना ।

सीमापुष्प-पु० (बैरिअर) सीमापर स्थित चौकी ।

सीमाविह-पु० (नैटभाक) किसी देश, स्थान आदिके सीमा बगानेवाला पदार्थः देश, जानि वा व्यक्तिके टर्मि-नामके कोई मुख्य परिवर्तनकारी घटना ।

सीमापारण, सीमाप्रक्षेप(क)-पु० (बाउटरी) बल्लेस गद पर इतने जोरका प्रहार करना कि वह लक्ष्यके मरदानेः बाहरी सीमानक पहुँच जाय वा उसके पार हो जाय ।

सीमा-शुल्क-पु० (कस्टम् ड्यूटी) बाहर जानेवाले वा भीतर जानेवाले सामान पर देशको सीमाके समीप बसल किया जानेवाला शुल्क । —**अधिकारी-पु०** (कस्टम् आफिसर) सीमा-शुल्क बसल करनेवाला अधिकारी ।

सीस-अंकनी-खी० (लिटरेचिज) सीमेकी बनी पैमिल ।

सुखाधिकारवाद-पु० (गूट ऑफ इन्टेंसेट) वह मामला या नातिश जो दूसरेकी किसी भूमि, पथ आदिका अपने आरामके लिए प्रयोग करनेमें हो वा अपनी भूमि आदिका दूसरे द्वारा दुष्टप्रयोग होनेसे रोकना ही जिसका विषय हो, सुखाधिकार-संबंधी वाद ।

सुकोपेक्षी-पु० (स्टोवक) विविध सुखों एवं विहासादिके प्रति उदासीन रहते हुए सवाधारमय, सांख्यिक जीवन बितायेकी ही परय लक्ष्य माननेवाला दार्शनिक ।

सुगाच-वि० (कोर्टेजिज) जो आमाजीसे या बिना नौकाके पार किया जा सके ।

सुखाक-वि० (गूड कडयुट) (वह वस्तु) जिसमें विपुल, ताप आदिका परिचासन सुममतासे हो सके, सुसवाहक ।

सुधार-ग्रन्थास-पु० (इम्प्रूवमेंट टूल) किसी जनतके सुधार, नवनिर्माण आदिके लिए स्थापित संस्था ।

सुधारालय-पु० (रिफार्मेटरी) एक तरहका बंदीगृह जहाँ अपराध करनेके कारण सजा पाये हुए बाक्य हवे जाते हैं और श्लेष श्वादिकी शिक्षा देकर उन्हें सुधारनेका प्रयत्न किया जाता है।

सुभाषित और विनोद-पु० (विट एंड ज़्यूर) बनोकी बात कहने-बिह्वण उत्तर देने-की कला तथा हास्य-भिरता।

सुरंग-प्रसारक पोत-पु० (माइनलेयर) आक्रमणकारी घातके जहाजोंको रोकनेके लिए समुद्रमें बाधकी मुरीं बिछानेवाला पोत।

सुरंगमार्जक (-हारक)पोत-पु० (माइनबीपर) समुद्रमें बिछाये गयी बाधके भरी मुरीको हटाने, दूर करने-वाला जहाज।

सुरक्षापरिचर-ली० (मिम्यूरीटी काउन्सिल) संयुक्त राज-संघकी कार्यपालिका परिचर त्रिममें अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स तथा चीन-इन देशोंके पाँच ज्वायी सदस्य और अन्य राष्ट्रोके चार कन्सायी सदस्य किये जाते हैं।

(विश्वशांति संबंधी समस्याएँ) मुख्य रूपसे इन्की सामने विचारार्थ उपस्थित की जाती हैं।

सुरक्षित कोष्ठक-पु० (मिप्टीवायर्ड) किसी अधिकोष/बैंक-के कौषागारमें कबूतरके ठगनेकी तरह बने हुए कोष्ठक, घर या स्थाने त्रिममें घाबहरीमें किशोरों केर उनकी बहुमूल्य वस्तुएँ-आभूषण, मोना, रत्नादि-सुरक्षित रखी जाती हैं।

सुरासार-पु० (अल्कोहल) वह नास्विक नरक मादक द्रव्य त्रिमसे प्रसार बनती हैं।

सुखम गणक-पु० (रेकोरेकन) वह पुस्तक त्रिममें शी हुई विभिन्न पारिणियोंकी महायतामें प्याज, वेनन आदिका हिस्सा लयानेमें आसानी हो।

सुखम मुद्रा-ली० (माफ्ट करन्सी) किसी देशकी वह मुद्रा की अन्य देशोंके पास आवश्यकतामें अधिक मर्यादमें इकट्ठी हो गयी हो और त्रिमसे वे उस देशमें और अधिक माल मंगा-कर खर्च करनेमें असमर्थ हो। यह सुवर्णमें परिणत नहीं हो जा सकती, अन्यथा इसे देकर अन्यत्र देशोंसे माल मंगा लिया जाता और यह बढ़ने न पाती। -**ली०**-पु०। माफ्ट करन्सी परिचर। सुखम मुद्रावाले देशोंका क्षेत्र।

सुखमसाध-पु० (गोल्ड स्टैंडर्ड) वह मुद्रा-प्रणाली त्रिममें बैंकके नोटों (कागजी मुद्रा) का मुगमान किसी भी समय, निर्धारित दरके अनुसार, सुवर्णके रूपमें किया जा सके।

सुविधाधिकार-पु० (राइट ऑफ़ इन्तरेट) दे० 'सुसा-धिकारवाद'।

सुविधापक कोष-पु० (प्राविडेंट फंड) दे० 'सचिव कोष'।

सुसंपत्ति-ली० (रेकोमेंसी) अच्छी तरह मेल खाने, ठीक बैठने, उच्चुक्त होनेकी क्रिया या भाव।

सूक्ष्मारी-ली० (मिडिल वर्क) दे० 'सूक्ष्मकार'।

सुखमपरीक्षण-पु० (क्यूटिनी) शरीरकोसे जाँच करना, प्योर आदिके संबंधमें अच्छी तरह छान-बीन करना; बेईमानी, धाड़पात आदिकी शंका दौकपर समझानपत्रों, उत्तर-पुस्तकों आदिकी सावधानप्रापूर्वक क्रिमें जो जाँचे-बाकी जाँच।

सूचनाधिकारी-पु० (इनफर्मेशन ऑफिसर) राजस्व या

सुधारालय-सैन्यविशेषज्ञ

किसी मन्त्राका वह अधिकारी जो उसके कार्यों या प्रगति आदि-संबंधी प्रामाणिक जानकारी लोगोंमें प्रसारित या विस्त-रित करता है।

सूचनामंत्री-पु० (इनफर्मेशन मिनिस्टर) जनहित-संबंधी सरकारी कार्योंकी सूचना जनतामें प्रसारित करने और जनताकी माँगों, शिकायतों, कष्टों आदि-संबंधी विवरण सर-कारतक पहुँचानेका काम करनेवाले विभागका नियंत्रण करनेवाला मंत्री।

सूचनाविभाग-पु० (इनफर्मेशन डिपार्टमेंट) जनहित-संबंधी सरकारी कार्योंकी सूचना जनतामें प्रसारित करने और जनताकी माँगों, शिकायतों, कष्टों आदि-संबंधी विवर-ण सरकारतक पहुँचानेका काम करनेवाला विभाग।

सूचनालय-पु० (इनफर्मेशन ब्यूरो) आवश्यक ममाचार या जानकारी प्रसारित के, प्रदान करनेवाला कार्यालय।

सूचीकार्य, सूचीनिरूप-पु० (नीडिल वर्क) कपड़े आदिपर मूर् और टैरेमें रेख बूटे या कोई आकृति आदि बनानेका काम, सूँकारी।

सूत्र्यचालक-पु० (वायर पुलर) वह राजनीतिज्ञ जो गुप्त रूपसे घटनाओंका सूत्र-संचालन करता हो, दूरसिंचक।

सूत्रविज्ञान-पु० (कास्मोगोनी) दे० 'विश्वसंपत्ति विज्ञान'।

मेनावत् करना-म० कि० (कमाडियर) लोगोंको मेनामें भरती होनेके लिए विचित्र करना; सेनाकी आवश्यकताओंके लिए किसीकी संपत्ति आदिपर कब्जा कर लेना।

सेना-सम-विभाग-पु० (कमिसेरियट) सेनाके लिए स्थाय-मामग्री आदि जुटाने, पहुँचानेवाला विभाग।

सेवा-नियोजनालय-पु० (एम्प्लॉयमेंट ब्यूरो) दे० 'नियो-जनकेंद्र'।

सेवायुक्त-वि० (एम्प्लाइड) जो कोई काम करने या किसी सेवाके लिए नियुक्त किया गया हो, नियोजित।

सेवा-योजक-पु० (एम्प्लॉयर) कोई काम करने या किसी सेवाके लिए व्यक्तियोंको अपने कारखाने आदिपर नियुक्त करनेवाला, नियोजक।

सेवा-योजनालय-पु० (एम्प्लॉयमेंट ब्यूरो) दे० 'नियो-जालय'।

सेवोपहार-पु० (ग्रेड/ग्रेड) वह धन जो किसी सैनिक या कर्मचारीको अवकाश ग्रहणके समय, उसके (लंबे) सेवा-कालके उपहारस्वरूप दिया जाय।

सैनिक सहचारी-पु० (मिलिटरी अडेड) किसी राजदूतके टलबलका वह सैनिक कर्मचारी जिसे सैनिक विशेषकी विशेष जानकारी हो।

सैनिकीकरण-पु० (मिलिटरीशेशन) सैनिक शक्तमें संपन्न बनाना, मेनामें युक्त करना।

सैन्यद्वीप-पु० (म्यूटिनी) सचटित राजसत्ताके विरुद्ध, विशेषकर उच्चाधिकारियोंके विरुद्ध, मेना द्वारा किया गया विद्रोह।

सैन्य-विभागाध्यक्ष-पु० (एडजुटेंट जनरल) सेनाके किसी विभागका अध्यक्ष जो मेनापतिके आदेशों आदिका पालन कराता है।

सैन्यविशेषज्ञ-पु० (टिमोबिलान्तेजन) युद्धके आव-श्यकतावश प्रस्तुत किये गये सैनिकोंको सैन्यमेवामें पृथक

करना, सैन्यविषयक ।

सैन्यशिक्षार्थी-पु० (फ़ैट) सैनिक विद्यालयमें शिक्षा पाने-वाला युवक ।

सैन्यसंरक्षण-पु० (मोबिलिजेशन आर दि आरमी) सेना-औरों का सफ़ाक़ोसै सुमजित कर युद्धार्थ प्रयागके लिए तैयार रखना ।

सैन्यसैन्यवाहक-पु० (ट्रेकर) युद्ध-क्षेत्रमें सेनापतिके आदेश विभिन्न अधिकारियों, सैनिकों आदिके पास पहुँचाने तथा वस्तुस्थिति का विवरण सेनापतिके देनेवाला कर्मचारी ।
सैन्यवाहक-पु० (वेरक) सैनिकोंके रहनेके लिए बने दालान जैसे आवास, 'बारिक' ।

सैन्यवाहक-पु० (स्कार्टिंग पेपर) सेना, स्वाहीलोल ।

सैन्यवाहन-पु० (हायररकी) क्रमायुक्त अधिकारियोंका बस, पुरोहिततंत्र ।

सैन्यवाहक-जी० (लिफ्ट) दे० 'उपवाहन' । —**सैन्यवाहक-पु०** (लिफ्टवेन) उपवाहनमें बैठकर नीचेऊपर ले जाने-वाला कर्मचारी ।

सैन्यवाहक-पु० (इंस्ट्रिक्टर) सैन्य, सुचित्र और कला संबंधी छात्र ।

सैन्यवाहक-पु० (कौन्सिलर) इस पदार्थका जम जाना, ठोस रूप ग्रहण कर लेना ।

सैन्यवाहक-पु० (स्टॉक) बैचनेके लिए रखा गया तरह-तरहके माकका भांडार । —**सैन्यवाहक-जी०** (स्टॉक रजिस्टर) भांडार वा गोदाममें मौजूद माकका विवरण लिखनेकी पत्री ।

सैन्यवाहक-पु० (स्टॉक) किसीके लिए बहुत-सी चीज़ अपनी दुकान वा गोदाममें रखनेवाला ।

सैन्यवाहक-पु० (कॉम) समाचारपत्रादिके पृष्ठका सफ़ा विभाग वा किसी विशेष विषयके लिए निर्धारित अंग । —**सैन्यवाहक-पु०** (कॉमिस्टर) समाचार-पत्रमें विशेष विषयपर लेखादि लिखनेवाला ।

सैन्यवाहक-पु० (ट्रेडिगाइड) जो सारके रूपमें परिणत हो गया हो ।

सैन्यवाहक-पु० (आइनेरकी) जी वा किसी द्वारा परिचाकित शासन-व्यवस्था ।

सैन्यवाहक-पु० (सिक्रेटरी ऑफ़िसर) वह अधिकारी जो किसी अन्य अधिकारीके पदका आर ग्रहण कर उसे छुट्टी आदि लेकर कहाँ जाने या अपने पदसे कुछ कामके लिए हटनेका अवसर दे ।

सैन्यवाहक-पु० (ड्र इनट) किसी व्यक्तिकी गति-विधि स्थान-विशेषके भीतर ही सीमित कर देना, दे० 'अंतर्बोधि करना' ।

सैन्यवाहक-पु० (अनलीटेड) दे० 'अनालीन' ।

सैन्यवाहक-पु० (सैन्यवाहक-पु०) (लोकलिटेशन) हकर-उपर कैके हुए कार्यो, व्यापार, उपद्रवों आदिकी बंदीकर या कानूमें लाकर एक स्थानपर आबक करना, सीमित करवाना (उद्योगादिक) क्षेत्रविशेषके भीतर कर दिया जाना; किसीके लिए कोई स्थान निर्धारित करना या बताना ।

सैन्यवाहक-पु० (ट्रांसफर) किसी व्यक्ति या वस्तुका एक स्थानसे बढाकर किसी दूसरे स्थानपर पहुँचाया वा भेजा जाना; तबादला करना ।

सैन्यवाहक-पु० (ट्रांसफर) जो एक स्थानसे बढाकर आकर दूसरे स्थानपर पहुँचाया वा भेजा दिया गया हो, जिसका किसी अन्य स्थानको तबादला हो गया हो ।

सैन्यवाहक-पु० (सैन्यवाहक-पु०) (पेगिंग पेक) वह अस्थिर वस्तुके अनुसार कुछ बातों या वस्तुओं का विकास विशेष स्थान या क्षेत्रतक ही सीमित कर दिया गया हो (वैसा कि दक्षिण अफ्रीका में किया गया है) ।

सैन्यवाहक-पु० (इंटरनेट) किसी व्यक्तिको किसी स्थानपर कैद करना वा रोक रखना ।

सैन्यवाहक-पु० (लोकल सेक गवर्नमेंट) देश वा राज्यके नगरी, जिलों आदिकी प्राप्त अपनी सबके बनवाने, सफ़ाई, पानी आदिकी व्यवस्था करनेका अधिकार; वह शासनपद्धति जिसके अनुसार नगरी, जिलों आदिकी वह परिमित स्वराज्य प्राप्त हो ।

सैन्यवाहक-पु० (स्टेडिंग कमिटी) जुने हुए सदस्योंकी वह समिति जो अगले अधिवेशनतक सब कामोंकी व्यवस्था करती रहे; स्थायी रूपमें बनी रहकर कोई विशेष कार्य करनेके लिए नियुक्त की गयी समिति ।

सैन्यवाहक-पु० (इन्स्टिट्यूट) (मोडे वा कौन जानेके बात) पुनः पूर्व अवस्था प्राप्त कर देनेकी शक्ति या गुण, लचीलापन ।

सैन्यवाहक-पु० (पोस्ट प्रेजुएंट स्टडी) आ-तक (प्रेजुएंट) हो जानेके बात किया जाने, जारी रखा जानेवाला अध्ययन ।

सैन्यवाहक-पु० (नगर्भ सिस्टम) सुपुत्र्ना तथा उसमें सबक मालिकोंकी और शरीरों के अन्य भागोंकी नाशियोंका मरुह, नाबी-मरुह ।

सैन्यवाहक-पु० (न्यूट्रल) वह गैर युवा सैन्यक पदार्थ जिसमें प्रयोगमें मशीनों, कन्-पुर्जों आदिके निरुत्पादन लाकर इनके उत्पादनमें मरुहियन पैदा की जाती हैं ।

सैन्यवाहक-पु० (सोशल गैरिंग) दे० 'प्रो-सिस्टम' ।

सैन्यवाहक-पु० (टेलिग्रेट) ब्रसकी परिधिकी एक विदुपर गमन करती हुई बाहर की बाहर एक ओरसे दूसरी ओर जानेवाली तरह देना ।

सैन्यवाहक-पु० (क्रिस्टलिटेशन) ऐसी प्रक्रिया करना जिसमें कोई वस्तु स्फटिकता (वा स्फटिक मरुह)रूप ग्रहण कर ले; निश्चित और ठोस आकार धारण करना ।

सैन्यवाहक-पु० (क्रिस्टल) दीसनेपर जिसके कण चमकीले और सुन्दरे जान पड़े ।

सैन्यवाहक-पु० (डैमी) दे० 'हावन' ।

सैन्यवाहक-पु० (कनेमोरेसन वाक्स) किसी विद्वान्, शारीरिक, नेता आदिकी स्मृति बनाये रखनेके लिए रचिन ग्रंथ ।

सैन्यवाहक-पु० (न्यूनी) पुरानी घटनाओं, अवसरों, स्थानों आदिकी स्मृति बनाये रखनेके लिए रखा गया वा किसीकी स्मृति दिया गया विभाजिका संग्रह वा अन्य कोई वस्तु ।

सैन्यवाहक-पु० (रेजिड) किसी महात्मा वा महापुरुषके शरीरकी अस्थि, केश, दाँत आदि अथवा उसका कोई वस्त्र, सफ़ाई, पात्र आदि जो उसकी शुरुको बाद उसकी

सदृशिके रूपमें दुरक्षित रखा गया हो।

स्वभूद्वारा-वि० (होमसिक) जिसे बाहर जानेपर बाहर-बार अपने करका स्मरण आवे, धरने दूर जानेपर जिसे दुःखका अनुभव हो।

स्वभावसिद्ध तोष-बी० (आटोमेटिक मन) बिना किसी चात्कके, स्वतः चलनेवाली तोष।

स्वच्छतापचर्क-वि० (सैनिटी) नंगीका निवारण कर मकान आदिके चारों तरफकी स्वच्छता बढ़ानेवाला; स्वच्छता आदिके कारण स्वास्थ्यरक्षामें सहायक।

स्वजनपक्षपात-पु० (नीपादिम) (संरक्षण आदि देनेमें) अपने संबंधियों, मित्रों आदिके प्रति पक्षपात करना, आवि-भतीभाव।

स्वसंज्ञ पत्रकार-पु० (श्री कॉम जर्नालिस्ट) वह पत्रकार जो किसी एक ही पत्र या समादसंस्था आदिका जैन-भोगी कर्मचारी न होकर स्वतंत्र रूपमें लेख लिखकर या स्वतंत्र भेजकर पारिश्रमिक पाता हो और उसीमें निर्वाह करता हो।

स्वत्वसंश्लेष-पु० (टाइटिक डीब) वह संश्लेष या आधिकारिक लिखित पत्र जिसमें किसी मकान, जेत आदिपर किसीके पूर्ण और निर्द्वंद्व स्वत्वकी बात स्वीकार की गयी हो।

स्वास्त्व-पु० (रायट्टी) दे० 'स्वामित्व'।

स्वास्त्वहस्तांतरण-पु० (प्रक्रियनेट) किसी मर्याद आदिका अधिकार (स्वत्व) दूसरेको देना या उसके नाम लिखना।

स्वदेशनिस्सारण-पु० (एक्स्पैट्रियेशन) किसीकी स्वदेशमें बाहर भेज देना।

स्वदेशप्रतिश्रवण-पु० (रिपैट्रियेशन) किसीको उबरन उसके देश वापस भेज देना।

स्वमत (पक्ष) व्याप्ती-वि० (मैजोरिटी) अपने पूर्व विचारों या निष्ठांतोंका, अपने पक्षवालोंका, परिचालन कर देनेवाला।

स्वयंसिद्धि-बी० (एक्शेम) ऐसी सरल बात जिसका मन होना बिना किसी प्रमाणके ही मानना पड़े।

स्वयंसेवक-पु० (बालटियर) किसी तरहकी सामाजिक सेवा या सेवा ही अन्य कार्य स्वच्छामें, बिना वेतन किये, करनेवाला व्यक्ति।

स्वरपात-पु० (रिसेंटेड) किसी शब्दका उच्चारण करते समय शुरूके वा शीर्षके किसी वर्णपर फिचट रुकना; उमपर जोर देना।

स्वसचिव-पु० (प्राइवेट सेक्रेटरी) दे० 'मिजसचिव'।

स्वांगीकरण-पु० (एंग्लोमिलेशन) किसी पोषकतत्त्व, विचार, निष्ठाआदिकी अपनने पूरी तरह मिला लेना या मिलाकर एक कर लेना, आत्मसाधन करना।

स्वाक्षर-पु० (आटोग्राफ) किसी (प्रसिद्ध) व्यक्तिका स्व-हस्ताक्षर।

स्वागतसमिति-बी० (रिसेप्शन कमिटी) किसी सभा, सम्मेलनमें जानेवाले प्रतिनिधियों, दर्शकोंकी टिकाने, मिलाने-विक्रयिका प्रबंध करनेकी स्थानीय समिति।

स्वागतिका-बी० (एयरहोस्टेस) आतिथेया; दे० 'विमान-परिवारिका'।

स्वास्वभूद्वार-पु० (बार ऑफ इंट्रियेंस) विदेशी शासन-में मुक्त होने या स्वतंत्र होनेके लिए किया जानेवाला युद्ध।

स्वाभावसदृश-पु० (स्टडीकम) दे० 'अक्वयलकस'।

स्वाभाव समाचार-पु० (स्कूप न्यूज) विशेष महत्त्वका समाचार जो किसी समादशास्त्राने खोज निकाला हो। कदा-अपने पत्रकी समते पहले दिया हो, पैसांतिक समाचार।

स्वामित्व-पु० (रायट्टी) किसी वस्तुके लेखकको, किसी वस्तुका आविष्कार करनेवालेको या किसी भूमिके स्वामी-को उसकी रचना, आविष्कार या स्वामित्व होनेवाले लायके रूपमें मिलनेवाला पूर्ण आयका निश्चित अंश।

स्वामिहीनत्व-पु० (बीना बैकशिपा) किसी वस्तुके मिलने-पर उसका कोई स्वामी न जान पड़ना।

स्वावच शासन-पु० (आटोनामी) अपने देशका शासन स्वयं ही करनेका अधिकार; दे० मूलमें।

स्वावचशास्त्री-वि० (आटोनामस) (वह देश) जिसे अपना शासन स्वयं ही करनेका अधिकार प्राप्त हो।

स्वास्व्यनिवास-पु० (सैनेटोरियम) स्वास्थ्य-सुधारके लिए विशेषकर यद्यथापेक्षित व्यक्तियोंके लिए, पहाड़ी आदिपर बनाया गया निवास स्थान, आरोप्यशाला।

स्वास्व्यविज्ञान-पु० (हाइजीन) स्वास्थ्य-रक्षणके नियमों, सिद्धांतों, उपायों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

स्वास्व्यसदृश-पु० (सैनेटोरियम) दे० 'स्वास्व्यनिवास'।

स्वीकारात्मक-वि० (अफरमेटिव) ऐसा वाक्य, कथन वा उत्तर जिसमें कोई बात स्वीकार की गयी हो, मान ली गयी हो या उसकी पुष्टि की गयी हो, 'हाँ' सूचक।

स्वेच्छाकृत, स्वेच्छादत्त, स्वेच्छाप्रेरित-वि० (बालंटरी) जो बिना किसी बाहरी दबावके, स्वेच्छासे किया वा दिया गया हो।

स्वेच्छामैत्रिकवृत्त-पु० (बालंटरी कोर) स्वेच्छासे सैन्य-सेवाके लिए अपना नाम देनेवाले लोगोंका दल।

ह

हड़तालतोषक-पु० (व्हीकलेग) वह कर्मचारी जो किसी कारखाने या व्यापारिक संस्थानमें हड़ताल हो जानेपर भी अपने मासिकके लिए काम करनेको हड़तालियोंकी चेष्टा बिकल करनेकी कटिबद्ध हो।

हरिन-पु० (क्रोरिन) घीले तथा हरेने रंगकी दुर्गंधियुक्त गैस, जो बजनदार भी होती है।

हवाई अड्डा-पु० (एरोड्रोम) हवाई जहाजोंके उतरने, रुकने या प्रस्थान करनेका स्थान।

हवाई तोषधी-पु० (एयर मनर) हवाई जहाजपर रखी हुई तोष चलानेवाला कर्मचारी।

हवाई पत्रचित्र-पु० (एयरग्राफ) हवाई डाक द्वारा प्रेरित करनेके लिए चिट्ठियों आदिका पहले से ले किया गया चित्र, डाकीय लघु चित्र।

हवा-रोक-वि० (एयर टाइट) जिसमेंसे होकर वा जिसके द्वारा हवा न आ-या सके।

हस्तकला-बी० (मैनुअल आर्ट) हाथमें किया गया कलात्मक काम, हस्तकौशल।

हस्तपुस्तिका-बी० (मैनुअल) हाथमें आसानीमें आ जाने लायक छोटी-सी पुस्तक; किसी लंबे-चौड़े विषयपर साररूप-में लिखी गयी लघु पुस्तक।

हस्तकिल्पि विशेषण-पु० (हस्तकिल्पि वस्तुपद) वह जो हस्तकिल्पि पदार्थान् लेनेकी कलाका जानकार हो।

हस्तकिल्पावयव-पु० (हस्तकिल्पि) क्लिप्ता, सरकत आदि वा किसी दवा, सार्वाधिक सभा हत्यादिका वह छोटा विभाग जो हस्त-उपर हाथसे वितरित किया जाय।

हस्तकर्म-पु० (मैनुअल लैबर) हाथकी मेहनत, शारीरिक परिश्रम, श्रम

हस्ताक्षरकल्प-पु० (हस्तलेख) कल्प लेते समय हाथसे लिखा गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि कल्प लेनेवाला निर्धारित अवधिके भीतर कुछ रकम व्याजके समेत चुका देगा, प्रीनोट।

हस्ताक्षर-पु० (हस्ताक्षर) संपत्ति, छक्ति, अधिकार आदिका एक व्यक्ति के हाथसे दूसरे हाथमें जाना या दिया जाना।

हस्ताक्षरपत्र-पु० (कानवेंसेस) संपत्ति आदिके हस्ताक्षर-संबंधी प्रत्येक।

हस्ताक्षरित-वि० (हस्ताक्षर) वह संपत्ति आदि जो एक के हाथसे दूसरे के हाथमें गयी वा दी गयी हो।

हस्ताक्षरकर्ता-पु० (सिग्नेटरी) वह जिसने किसी संपत्ति, अवयव-वस्तु आदिपर हस्ताक्षर किये हों।

हस्ताक्षरित-पु० (हस्त लेख) कल्प-संपत्तिकर को जानेवाली कर्तव्य, शुल्क-शुल्की।

हस्तकारी-पु० (हस्त) किसी प्रस्तावके पक्ष वा सर्वप्रथम 'हाँ' कहनेवाले सदस्य।

हस्तकल्प-पु० (हस्तकल्प) उत्पादित वस्तुओंके

करीबने, वेधने तथा विक्रयानेकी व्यवस्था।

हस्तकपोत-पु० (हस्त) हुतपायी पुत्रपोत, प्रवाही पोत, गल्ली अहाज।

हस्ताधिकारी-पु० (बेनोफिशियरी) वह जिसे किसी वस्तु, व्यवस्था आदिमें काम हो रहा हो या होनेकी संभावना हो।

हस्तमय कृति-पु० (हस्त) वह वस्तु जिसमें पानीके साथ-साथ ओकों या हिमकी भी वस्तु हो।

हस्तरेखा-पु० (हस्ताक्षर) पर्यंतकी ऊँचाईपर मानी गयी वह रेखा जिसके ऊपर वरक निरंतर गयी रहती है, गर्भमि यी नहीं पिचकती।

हस्तसिद्धकल्प-पु० (व्यवस्था) हस्तकिल्पिका मिट्टी, पत्थर आदिसे मिश्रकर बनी बट्टान जैसा रूप धारण करनेके बाद वेतपूर्वक नीचे किसक पड़ना।

हस्ताक्ष-पु० (हस्ताक्षर) वह तापमान जहाँ पानी जमकर बर्फ बनने लगता है (फारेन हाइटका ३२ अंश जबवा सेल्सियस तापमापक बंजमें शून्य अंश)।

हस्तिकर-वि० (हस्तिकर) हस्तिकी तरह (ठंडा) बनः देनेवाला। पु० (हस्त पशुओंको) ठंडा बनाकर मरने या नष्ट होनेसे बचानेका यंत्र, प्रशीतक।

हस्तकर्मशी-पु० (हस्तकर्म) हस्तिकी दे० शून्य में।

हस्तप्रतिज्ञा-पु० (हस्तप्रतिज्ञा) छोटी हुई वा अन्न की हुई वस्तु, संपत्ति आदिका पुनः छोटा दिया जाना।

हस्तप्रत्यक्ष-पु० (हस्तप्रतिज्ञा) हस्त प्रत्यक्ष, छोटे हुए व्यक्ति या राज्यादिकी पुनः अवधि कर देना, मौप देना; दे० 'पूर्ववत्करण'।

अन्य पारिभाषिक शब्द

अनुपाय-पु० (स्केल) मापनेका साधन; (मापविधादि बनाते समय) निश्चित दूरीके लिए मानी हुई इकाई, पैमाना।

अनौपचारिक-वि० (इनफार्मल) जिसमें निर्धारित नियमों, रीतियों, उपचारों आदिका अनुपात न किया गया हो, लिहाज न रखा गया हो।

अभिनिर्देश-पु० (कन्सल्टेशन, रेफरेंस) किसी शब्दके अर्थ, प्रयोग, स्वरूप आदिके संबंधमें शंका उत्पन्न होनेपर या किसी कला, व्यक्ति आदिके संबंधमें विशेष जानकारी प्राप्त करनेके लिए कोई कोश या अन्य आकर-ग्रंथ खोलकर उसमें दिए हुए विवरण, व्यवस्था आदिसे सहायता लेनेका कार्य।

अर्थक-पु० (स्काइ-स्केपर) बायलोंकी छुनेवाला मकान, गगनचुंबी (बहुत ऊँचा) मकान।

आक्रम-पु० (हॉकर) धूम-फिरकर लौटा देनेवाला; फेरवाला।

आनंदमास-पु० (हनीमून) (पश्चिममें) विवाह होनेके ठीक बादका लगभग एक मासका वह समय जो वर-वधू द्वारा, प्रायः किसी रमणीक स्थानमें आकर सैर-सपाटे तथा आनंद-मोहमें बिताया जाता है, 'प्रमोदकाल'।

आनुप्रसंगिक कर्मशी-पु० (कन्सिडरेशन डेरिफ) आयाज-निर्माण-कर लगाते समय कुछ देनोंके माथ खास-रिजायत

करनेकी निमित्त।

आवृत्तिप्रतिमा-पु० (वस्तु) किसी व्यक्ति की वह प्रतिमा जिसमें उसके चित्र, कर्तव्य तथा वस्तुत्वका भाग आ गया हो, कर्णाग्रप्रतिमा।

उपस्कर-पु० (कनॉवर) वरकी सजावट आदिका मामान (मेज, कुर्सी आदि), परिवर्त।

कर्णाग्रप्रतिमा-पु० (वस्तु) दे० 'आवृत्तिप्रतिमा'।

एकसूत्रीकरण-पु० (कोऑर्डिनेशन) समान स्तर पर लाने, परस्पर समुचित रूपसे समझ करने आदिका कार्य।

ऐक्यसिद्धि समाचार-पु० (स्क्रूप न्यूज) दे० 'स्वामि समाचार'।

क्षेत्रीय विरोध-पु० (इंटरनेशन) किसी व्यक्तिकी वृत्ति-विधि आन-विशेष या क्षेत्र-विशेषके भीतर ही सीमित कर देना, स्थानांतरे।

साक्ष्यकिका-पु० (एलिमेंटरी कैनाल) दे० 'वैधिका'।

क्षिप्रवर्ण-पु० (संविण) किसी मुसीबी कीजैसे छेद कर देनेका कार्य।

जातिसंस्कारनीति-पु० (बेनोसाइड) दे० 'बंशसंस्कार-नीति'।

हारताक-पु० (हॉक आउट) दे० 'ताकाबंदी'।

म्यूसिकल-पु० (माइनर) दे० 'अवयव'।

प्रमोदकाल-पु० (हनीमून) दे० 'आनंदमास'।

परिशिष्ट—२

पारिभाषिक शब्दावली—अंग्रेजी-हिन्दी

A

Abandonment परित्यजन
Abatement ह्रास, कमी, न्यूनीकरण; समाप्ति
Abatement of suit वाद-समाप्ति
Abbreviation संक्षेपविज्ञ
Abdicate राजस्य-त्याग, राजपद-त्याग
Abduction अपनयन, बलात् जाना
Abolition दुर्हस्तादन
Abeyance आश्वयन
Abhorrence जुगुप्सा, घृणा
Abide अनुपालन, अनुसरण करना
Abnormal असाधारण
Abolition दन्तूनन, समाप्ति
Aboriginal आदिवासी
Abortion गर्भपात
Abortive निष्फल, विफल
Above par अधिकतम मूल्यसे ऊपर, अधिम-यव
Abridge मूल्य करना, संक्षेप करना
Abridged संक्षिप्त
Abridgement न्यूनन, संक्षेपण
Abrogate निराकरण; उत्सर्जन, विन्यसन
Abscondor पलायक, भगोड़ा
Absence अनुपस्थिति, अविद्यमानता, अभाव
Absolute परम; निरंकुश, अनियंत्रित; पूर्ण
Absolute monarchy निरंकुश राजनय
Absolute power परम सत्ता, निर्दह सत्ता
Abstinence संयम, विरति, निवृत्ति
Abstract सारांश; उल्लेख
Abuse दुर्व्ययोग
Academic discussion शास्त्रीय वाद-विवाद
Academy विद्यापरिषद्, उच्च शिक्षा-मण्डल, माहिम्न-परिषद्, विज्ञानपरिषद्, विद्वत्परिषद्
Accent स्वरपात
Access प्रवेश, पहुँच
Accession सम्मिलन
Accommodation वास-व्यवस्था; वसन्स्थान; सुविधा-दान
Accomplice सहापराधी, अभिप्रेमी
Account लेखा, गणना, हिसाब; विवरण, वृत्तान्त
Account, audited अंकेक्षित लेखा
Account book लेखावही, लेखापुस्तक
Accountancy लेखाकर्म, मुनीमी

Accountant लेखाध्यक्ष, गणनाध्यक्ष, गणक, लेखापाल, मुनीमी
Accountant General महामणनाध्यक्ष, महान् लेखापाल
Accredited विश्वस्त, प्रमाणित (प्रतिनिधि इ०)
Accrued प्राप्त, उपार्जित
Accumulated मुजिन, संचित
Accurate यथार्थ
Accusation अभियोग
Accused अभियुक्त
Acknowledgment प्राप्तिस्वीकार; प्राप्तिपत्र, पावनीपत्र
Acquired प्राप्त, अविगत, अर्जित
Acquisition प्राप्ति, अर्जन
Acquittal मुक्ति, रिहाई
Act अधिनियम
Acting कार्यकारी
Acting n. अभिनय
Acting in his discretion स्वविकल्पे कार्य करने हुए
Action, Direct प्रत्यक्ष काररवाई
Active service सक्रिय सेवा
Activities गतिविधि, कार्यकलाप, हलचल
Activity कार्यकलाप
Actual वास्तविक आंकड़े
Acute angle न्यूनकोण
Adapt अनुरूप या अनुकूल बनाना
Adaptation अनुकूलन
Adaptation of Act अधिनियमका अनुकूलकरण
Adapted अनुकूलित, अनुरूपित
Addendum संयोजक, अनुसूचित
Addition जोड़; परिशुद्धि
Additional अनिरीक
Address सूचोधन; अभिभाषण; अभिनदनपत्र; पता
Addressed सूचोधित
Addressed पानेवाला, प्रेषित
Adherence अनुष्क्ति
Ad hoc Committee तदर्थ समिति
Adjacent angle आसन्नकोण
Adjourn स्थगित करना
Adjournment motion कार्य-स्थगन प्रस्ताव
Adjudication न्यायिक निर्णय
Adjustment समाधान, समायोजन
Adjutant general सैनिक कार्यालयका विभागाध्यक्ष, सैन्यविभागाध्यक्ष

Administrative function प्रशासनिक कृत्य
 Administrator प्रशासक
 Admiral नौबलान्त्यक्ष, नौकाध्यक्ष
 Admiralty नौकाधिकरण
 Admissible ग्राह्य
 Admissibility ग्राह्यता
 Admission Card प्रवेशपत्रक
 Adolescent किशोर, अल्पवयस्क
 Adoption दत्तक-ग्रहण; ग्रहण, स्वीकरण
 Adult franchise, —suffrage बयस्क मतधिकार
 Adulteration अपमिश्रण
 Ad valorem मूलानुसार
 Advance अधिमपन, अग्रिम
 Adventure साहसिक प्रयत्न
 Advertiser विज्ञापनदाता, विज्ञापक
 Advice संज्ञा, परामर्श; सूचना
 Advisor संज्ञाकार
 Advisory Committee परामर्शदात्री समिति
 Advocate अधिवक्ता
 Advocate general महाअधिवक्ता
 Aegis संरक्षण, छत्रछाया
 Aerial विभुद्, धातुकतार, आकाशतार
 Aerial bombardment हवाई बमबर्षा
 Aerodrome हवाई अड्डा
 Aeronautical Survey of India भारतीय हवाई
 सर्वेक्षकीकन (सर्वेक्षण)
 Aeronautical Wireless Service वैमानिक बेतार-
 व्यवस्था
 Aeronautics विमानचालन विज्ञान
 Aesthetics सौन्दर्यबोध; सौन्दर्यविज्ञान
 Affectation बनाव, बाधावर्धन
 Affected areas प्रभावित क्षेत्र
 Affectionate gift स्नेहोपहार
 Affidavit छपय-पत्र
 Affiliation सम्बन्धिकरण
 Affinity निकट सम्बन्ध, वधुता; सासुर्य
 Affirmation प्रतिज्ञान; पुष्टि
 Affirmative स्वीकारात्मक
 Afforestation वनरोपण
 Agency अधिकरण
 Agenda कार्यसूची
 Agent कार्यवाहक, अधिकर्ता, एजेंट
 Agent, Polling मतार्थी एजेंट
 Aggravation क्रुधिका, क्रुधित्ववर्धनी
 Aggression प्रथमाक्रमण
 Agnosticism अज्ञेयवाद
 Agreement संधि, करार; सहमति
 Agricultural कृषि विषयक
 Aid, Grant in सहायक अनुदान
 Aide-de-camp अंगरक्षक; सैन्यादेशवाहक

Air battle आकाश युद्ध
 Air communication हवाई वातायान
 Air conditioned तापनियमित
 Air conditioning ताप-नियंत्रण
 Aircraft carrier विमानवाहक पोत
 Air-crew विमान-कर्म
 Air-graph हवाई चित्र
 Air-gunner हवाई तोपची
 Air-hostess स्वागतिनी, विमान-परिवारिका
 Air-man वैमानिक
 Air-navigation विमानसंचालन, विमानपरिवहन
 Air-raid-alarm हवाई खतराका नौपू
 Air raid precautions हवाई हमलेसे रक्षाजनक
 A.R.P. (ह. व. वि.)
 Air Raid Shelter हवाई खरणगृह, हवाई आश्रय
 Air Squadron विमानदल, हवाईदल
 Air strip अवतरण-पथ
 Au tight हठानेक
 Airways वायुमार्ग, वायुपथ
 Album चित्राधार
 Alcohol सुर,मार, मद्यमार
 Alibi अन्यत्र उपस्थिति, अन्यत्रोपस्थिति
 Alien अन्यदेशीय
 Alienate स्वतन्त्रत्वान्तरण, अन्य मकामण
 Alimentary Canal अन्ननलिका, स्वाशननलिका, पोषिक
 Alimony भूमि, निर्वाह-व्यय
 Alkali क्षार
 Alkaloid क्षारोद्, उपक्षार
 All char signal 'समस्त दूर'की सूचना
 Allegation अभिवलन
 Alleged तथाकथित
 Allegiance, Oath of निष्ठाकी शपथ
 Alliance मैत्रीसंधि
 Allied power मित्र-शक्ति
 Alliteration अनुप्रास
 All round progress सर्वोन्मुखी उन्नति
 Allocation बँटवारा, विभाजन, निर्दिष्टि
 Allot आवंटन
 Allotment निर्दिष्टि, निर्धारण, आवंटन
 Allottee निवृत्तभागी, आवंट्य
 Allowance अधिवेद्य, भत्ता; छूट
 Allowance, Conveyance वाताविरिय
 Allowance, Superannuation बृद्धता अधिवेद्य
 Allowance, Travelling यात्राविरिय
 Alloy मिश्र धातु; मिश्रण; मेल, संकर
 Alluvial soil जलोद्भूत भूमि, पुरानीत भूमि, कछरी भूमि
 Almanac वर्षाण, विविध
 Alphabetical order अक्षरक्रम, अक्षरक्रम
 Alternate एकाम्तर; एकान्तरिक
 Alternative n. विकल्प, adj. वैकल्पिक

Alternative foods वैकल्पिक खाद्य
Alternative member वैकल्पिक सदस्य
Altitude समुद्रसतहसे की जानेवाली ऊँचाई; विभुज-
ऊँच (स्वामिति)
Altruism परार्थवाद
Alum फिटकिरी
A. M. मध्याह्नपूर्व (म. पू.)
Amalgamation सम्मिश्रण
Ambassador राजदूत
„ „ roaming पर्यटक राजदूत
Ambiguous संदिग्धार्थ, दृव्यर्थक, अस्पष्ट
Ambulance आहत-परिचर्या विभाग 1—Car परिचार-
वाही; रेजीवाइक वाही 1— Corps आहतोपचारी दल
Amendment संशोधन
Amenities सुसुविधाएँ
Ammunition गोलाबारूद, बुदसामग्री—dump गोला-
बारूदका ढेर
Amnesty सर्वक्षमा
Amphibious operations जल-स्थलीय कार्रवायें
Amputation अंगविच्छेद
Amulate जंगल, लालीज
Amusement—tax प्रमोद कर
Adjustment of accounts लेखा समायोजन
Anachronism कालभेद
Anaesthesia (nisi) अचेतनीकरण, अचेतनता
Anaesthetic अचेतनक
Analogy सादृश्य, समरूपता
Analysis विश्लेषण
Anarchism अराजकतावाद
Ancillary सहायक
Angle कोण; (acute—न्यूनकोण; adjacent—संलग्न-
कोण; alternate—एकांतरकोण; base—आधारकोण;
common—सामान्यकोण; complementary—कोटि-
पूरककोण; corresponding—समतकोण; exterior—
बहिर्कोण; interior—अंतःकोण; obtuse—अधिककोण;
opposite—अभिमुखकोण; reflex—वृहत्कोण; right—
समकोण; straight—ऋजुकोण; supplementary—
संपूरककोण; vertical—शीर्षकोण)
Animal husbandry पशुपालन
Annexation संयोजन, अधिकारकरण
Annexed संयोजित, समावेशित
Annexure संयोजित वस्तु
Anniversary वार्षिकोत्सव, वार्षिकी
Annotated सूचीकृत
Announcement अभिज्ञापन; घोषणा, ऐलान
Announcer अभिज्ञापक, प्रघोषक
Annual संवत्सरी, वर्षवर्ष, अन्ध-कोट
Annual financial statement वार्षिक विपणन-विवरण
Annual review वार्षिक सिद्धांतकोटन
Annuitant वार्षिक भुक्ति, वार्षिकी

Annulment, Annulling अविच्छेदन
Anonymously अनाम, गुप्तनाम
Antedated पूर्वतिथीय
Antediluvial पूर्ववृष्णनिक
Anthropological Survey नृवशविज्ञान-पर्यवर्धकोटन
विभाग
Anthropology नृवशविज्ञान, मानवविज्ञान, मृतत्व-
विज्ञान
Anti-aircraft guns विमानवैधी तोपें
Antibiotic जीवाणुनाशक
Anticipated excess प्रत्याशित व्यय वृद्धि
Anticipation प्रत्याक्षा, पूर्वानुमान; प्रत्यपेक्षा
Anti-clockwise—नामावर्त
Anti-dote आरक
Anti-inflationary मुद्रास्फीतिरोधक
Anti Rabie १ हातंक रोग
Anti-rabbies Centre प्रलम्बकेंद्र
Anti-septic प्रतिपौतिक
Anti-Yanum Serum विषनिरोधक रस
Antonym विपरीत, निरुद्धार्थक
Apartheid policy वृक्षवासन-नीति
Apathy अरति, मौदासीन्य
Aper शिरोविडु
Apoplexy अवस्वार
Apparatus उपकरण-समूह; उपकरण, प्रयोगवर्धन
Apparent प्रतीयमान, मासमान
Apparition छायापुरुष; छायाव्यक्ति
Appeal पुनरावेदन, पुनर्न्याय-प्राथना
Appeasement सुहोकरण
Appellant पुनरवेदक, पुनर्न्याय-प्राथी
Appellate tribunal अपीली अदालत, पुनर्विचार
न्यायाधिकरण
Appellate authority अपील सुननेवाला अधिकारी,
पुनर्विचार अधिकारी
Appellation उपाधि
Appended संलग्न
Appendix परिशिष्ट
Applause प्रशंसा-शेष
Application आवेदनपत्र; प्रयोग
Apportionment संविभाजन
Appreciation मूल्योत्कर्ष, मूल्यापिरोह; रसास्वादन;
प्रशंसा; यथोचित गुणावधारण
Apprentice शिक्षमाण; उम्मेदवार, परशिक्षार्थी
Appropriate समुचित व. विनियोजन करना
Appropriation Bill विनियोग विधेयक
Approval अनुमोदन
Approver राजसाक्षी, इकनामी गवाह
Appropos अनुसार, अनुरूप;—to प्रसंगमें
Aquarium मत्स्यागार, मत्स्यालय
Aquarium कुमराशि

Aqueous जलीय
 Arbitral tribunal एवं न्यायाधिकरण
 Arbitration एवं-निर्णय
 Arbitrator एवं
 Arc चाप
 Archaeological पुरातत्त्व
 Archaeology पुरातत्त्वविज्ञान
 Archipelago द्वीपसुत्र
 Architect वास्तुकार, वास्तुकर्मज्ञ
 Architecture भवन निर्माण-विज्ञान, वास्तुकला
 Archive पुराणिक
 Archivist पुराणिक पाठ
 Aries देव राशि
 Aristocracy अधिवात-सत्त, कुलीनतंत्र
 Armaments युद्धोपकरण; सज्जसेना
 Armistice सन्ध्यावी संधि
 Armoured Car कवचित वाहन, बख्तरबंद गाड़ी
 Armoury आगुप्तशाला
 Army Head-quarters सेनाका प्रधान कार्यालय, बफा
 सैनिक दफ्तर
 Arrangement of files नक्षित पत्रियोंका विन्यास
 Arrear अवशेष (कलापशेष वा कार्यवशेष)
 Arsenal अस्त्रागार
 Arsenic लुक्किया
 Artery कसनी
 Article अनुच्छेद; लेख
 Articles of association संस्थाके नियम
 Artisan शिल्पी
 Asprite महाप्राण
 Assault प्रहार
 Assemble समवेत होना, एकत्र होना; समवेत करना
 Assembly विधान सभा; सभा
 Assent स्वीकृति, अनुमति
 Assessed कृता हुआ; आँका हुआ
 Assessment करनिर्धारण
 Assets आदेय, परिसम्पद (संपत्ति), मालमत्ता
 Assets and liabilities देना, पावना, देयादेय
 Assign स्वत्वापण करना, नियत करना, बंटना, विभक्त
 करना ।
 Assigned अन्वयित
 Assignee अन्वयिनी
 Assignment बनिहस्तांकन
 Assignor अन्वयक, अन्वयी
 Assimilation स्वांगीकरण; समीकरण
 Association संघ, संस्था; साहचर्य
 Association Memorandum of प्रतिष्ठानपत्र
 Asterisk तारक, तारक चिह्न
 Astronomy ज्योतिष (गणित)
 Atheism सिटीकरणवाद, नास्तिकता
 Atlas मानचित्र-संग्रह, मानचित्रावली

Atomic आणविक
 Atomism परमाणुवाद
 Attache सहायक
 Attached आसिद्ध (आसंभित)
 Attachment आसिद्ध, आसंजन, जुड़ी
 Attested सक्षीकृत
 Attestation सक्षीकरण
 Attorney प्राविकता
 Attorney General महान्यायवादी, महाप्राविकर्ता
 Auction वीचबिक्रय, नीलाम
 Auctioneer नीलाम करनेवाला, वीच-विशेता ।
 Audible श्रव्य
 Audience श्रोतृवर्ग; दर्शन, साक्षात्कार
 Audio-visual method श्रव्यदृश्य प्रणाली
 Audit लेखापरीक्षण
 Audited account अंशेक्षित लेखा
 Auditor General महालेखा परीक्षक, अध्यक्ष
 Auditorium दर्शक स्थान
 Austerity scheme कल्पयोग वा श्रमोपयोग योजना,
 म्यूनाहार-योजना, कष्ट-सहन-योजना
 Authentication प्रमाणिकरण
 Authorisation प्राधिकरण
 Authorised प्राधिकृत
 Authorised Agent प्राधिकृत अभिज्ञाता
 Authoritative प्राधिकार, आधिकारिक, प्रामाणिक
 Authority प्राधिकारी; प्राधिकार
 Autobiography आत्मचरित्र
 Autograph स्वाक्षर
 Automatic स्वचालित
 Autonomous स्वायत्तशासी
 Autonomy स्वायत्त शासन
 Avalanche हिमशिलास्खलन
 Award एवंनिर्णय, पंचाद, परिनिर्णय
 Axiom स्वयंसिद्धि
 Axis पुरी, अक्ष
 Axis country पुरीदेश; पुरीराष्ट्र
 Ayes हाँ पक्षवाले; हाँकारी

B

Bachelor of law विधिस्नातक
 Back bench कचिह्नापी (अस्पवादी) सदस्य
 Back door चोरदरवाजा, पक्ष-द्वार
 Background पृष्ठभूमि, पूर्वपीठिका
 Bacteria जीवाणु
 Bacteriologist जीवाणुविद्
 Bacteriology जीवाणु-विज्ञान
 Bad conductor कुशाकल, बुरा परिचाकल
 Badge चिह्न, परिचायक चिह्न
 Bail प्रतिभू; गुरुणी (निर्देश)
 Bailable प्रतिभूयोग्य, प्रतिभूय्य

Balance शेष; संतुलन
 Balanced diet संतुलित भोजन
 Balance of payment युग्मानु-प
 Balance of power शक्ति-संतुलन
 Balance of trade व्यापार-विव
 Balance sheet विहता, दैयादेय फलक
 Ball-bearing गृष्टिकाधार
 Ballad गाथा; गीत
 Ballot box मतपेटिका
 Ballot paper मतपत्र, शलाका, गूड़पत्र
 Banish निर्वासित करना
 Bank अधिकार, बैंक
 Banker अधिकारिक, कोठीवाल
 Bankrupt दिवालिया, नष्टविधि
 Bankruptcy दिवालियापन, नष्टनिष्ठ
 Banner heading पताका-शीर्षक, पृष्ठ-शीर्षक
 Bar स्काफ्ट, अर्गल, अभिवन्धन; धामालव; -fetter
 इटा-बेरी
 Barbed wire कैंददार तार
 Barograph वायुमारलेखी यंत्र, वायुदाब यंत्र
 Barometer वायुमारमापक यंत्र
 Barrack सैन्यावास
 Barrier सीमा-गुल्म, प्रतिबंध, स्काफ्ट
 Butter बस्तुविनिमय
 Bases, War सामरिक अड्डे
 Basic Education आधारभूत शिक्षा
 Bat-man बल्लेबाज
 Battalion बटालियन, पलटन
 Batting बल्लेबाजी
 Battleship बगी जहाज, महारणपोत
 Bearer बैर; बाहक; -Cheque बाहक धनदेश
 Beat मस्त; हलका, क्षेत्र
 Beel पुन हाजरी
 Bedstead शय्या-यंत्र
 Beleaguer सैन्यावरण करना
 Belligerency युद्धस्थिति, युद्धनिष्ठ, युद्धलग्नता
 Belligerent युद्धरत, युद्धनिष्ठ, युद्धमस्त, युद्धलग्न
 Below par बट्टेसे, अवमूल्यपर
 Bench न्यायाधीशमंडल, (न्यायाधीश), पीठ
 Beneficiary लाभार्थी, हिनाधिकारी
 Benefit हित
 Bequest अंतिमैच्छा द्वारा देना, कसीयत करना
 Betrothal वाग्दान, लग्नार्थ
 Betting धन लमना, पणम, पणक्रिया
 Bibliography (बिब्लिओ) ग्रंथसूची
 Bimetallic द्विसंज्ञात्मक, द्व्यन्तारिक
 Bicycle द्विचकवान, पैरवाही
 Biennial द्विवार्षिक
 Bigamy द्विवध्नीयता, द्विनामिक
 Bilateral contract द्विपक्षीय संविदा

Bill विधेयक
 Bill विपत्र, प्राप्यक
 Billiard बटिका खेल; -room बंदवर
 Bi-metallic द्विधातवीय
 Bimetallic द्विधातुता, द्विधातुत्व
 Binocular (telescope) द्विनेत्री
 Biology जीव-विज्ञान
 Birth certificate जन्म-प्रमाणक
 Birth control संवर्ति-निग्रह
 Birthrate जननगति
 Bisect समद्विभाग करना
 Bisector अर्धक, समद्विभाजक
 Black-leg हस्तकरोषक
 Black list अभिन सूची, दुष्ट सूची, सदिग्धजन-सूची
 Black market नीर बाजार
 Blackout विराजगुल, अंधाकुप; संवाह-विहीनपन
 Bladder मूत्राशय
 Blank Cheque निरंक धनादेश
 Bleaching विरंजन
 Blinds झेंझरी, झिलझिली
 Blister gas ज्वलकारक गैस
 Blockading नाकाबंदी, समबरोप
 Blocked capital समस्कृष्ट पूंजी
 Bloodbank रक्त-संग्रह बैंक
 Blood pressure रक्तचाप
 Blood transfusion रक्तक्षेपण
 Blotting paper स्वादीमोढ, सोखपत्र;
 Blueprint मूलचोजना
 Blunder भारी त्रुटि
 Board मण्डल, फलक
 Board, Arbitration पंच मंडल
 Board, District जिलापालिका, जिला बोर्ड, मांडलिक
 समिति, मंडल परिषद्
 Board, Municipal नगरपालिका
 Board of Directors संचालक-मंडल
 Board of revenue राजस्व-मंडल
 Boarding house छात्रावास
 Bobbin फिरकी
 Body निकाय, वर्ग
 Body, corporate नियम, निकाय
 Body, governing शासी निकाय
 Boiler वाष्पयंत्र
 Boiling point क्वथनांक
 Bomb प्रस्फोट, बम
 Bomb, incendiary दाहक बम, दाहक प्रस्फोट
 Bombast शब्दाटंकर
 Bomber बमबर्षा, बमबर्षक, बममार
 Bonafide विश्वास, प्रामाणिक; सद्भावपूर्ण (या सद्भाव-
 पूर्वक)
 Bonafides विश्वस्तता, प्रामाणिकता, सद्भाव

Bona vacantia स्वामिहीनत्व
 Bond बंधपत्र (क्षणपत्र); प्रतिज्ञापत्र
 Bone of contention कलहकारण
 Bonus अधिकांश
 Book, v दर्ज करना
 Book depot पुस्तक-विक्रयालय, पुस्तक-मगज
 Booking प्रवेशपत्र (प्रवीणपत्र) विक्रय; प्रेषक-पत्र-
 आलेखन
 Booking office प्रयोगपत्र-कार्यालय, टिकटघर
 Booklet पुस्तिका
 Bookpost पुस्तकडाक
 Booty लूटका माल
 Borrower अपभर्ता
 Borrowings उधार-ग्रहण
 Boss अधिपति
 Botany वनस्पति-शास्त्र
 Bottleneck कुर्यादनवाधा; परिवहन-बाधा; परिवहन-कट
 Bottleneck policy गलाबंद नीति
 Bottleneck विकासबरोध
 Boundary सीमा; सीमा-प्रक्षेपण
 Boundary, Natural प्राकृतिक सीमा
 Bounds परिधि
 Bowler मैदान, गोलंदाज
 Bowling मैदान, गोलंदाजी
 Boxing मुठिबंद; लुकेबाजी, लुकी
 Boy-scout बाल-नर
 Braces बैन्ड
 Bracket कोष्ठक (लघुकोष्ठक, गुरुकोष्ठक, संपोकारकोष्ठक)
 Breach दरार, छिद्र; भंग
 Breach of law विधिभंग
 Breach of Peace शांतिभंग
 Breach of trust विश्वासघात
 Breakdown of administration प्रशासन-विघ्नायन
 Breakfast प्रातःदाह, कलेवा
 Brengun ब्रेनगन, छोटी पंचदार तोप
 Brevity लघुता, अल्पता, संक्षिप्त कथन, कवृक्ति
 Bridgehead गुल्म
 Brief-n. वाचस्पति
 Brigade बहिनी
 Brigadier बहिनीपति
 Brittle संयुर
 Broadcast प्रसारित करना
 Broadcast talk प्रसारित वार्ता
 Broad gauge बड़ी काइन
 Broker मध्यम, दलाल
 Bronchitis स्वरनसिका प्रदाह
 Bronze age कांस्ययुग
 Brothel वैश्यालय
 Buck ammunition छर्मा
 Budget आयव्ययक

Budget, Deficit घटीका, कमीका, आयव्ययक
 Budget estimate आयव्ययका मासिकन
 Budget, Supplementary अनुपूरक आयव्ययक
 Buffer State अंतराक्ष राज्य
 Bulletin आधिकारिक विज्ञापित
 Bullion सोना-चांदी
 Burgoois मध्यवर्ग वर्ग
 Bureau कार्यालय, कार्यपीठ
 Bureau, Information सूचनालय
 Bureaucracy नौकरशाही, अधिकारिराज्य, कर्मचारी-
 तंत्र, अधिकारिधर्म
 Burner बर्निप्रद, कला, ज्वालक
 Business कार्य, कारवार
 „ reply card कारवारी जवाबी कार्ड
 Business crisis व्यापार-संकट
 Business, Government सरकारी कार्य
 Businessman व्यवसायी
 Business-mindedness व्यावसायिक बुद्धि
 Bust आयुध प्रतिमा, उद्योग प्रतिमा
 Buying and selling क्रयविक्रय
 Bye-election उपनिर्वाचन
 Bye-law उपविधि
 By-pass बचके निकल मार्ग
 By-products उपोत्पादन

C

Cabbage पानगोभी
 Cabinet मंत्रिमंडल
 Cabinet Council मंत्रिपरिषद्
 Cabinet Councillor मंत्रि-पारिषद्
 Cabinet crisis मंत्रिमंडलीय संकट
 Cabinet system मंत्रिमंडलीय प्रणाली
 Cable, to समुद्री तार भेजना
 Cadet सैन्यशिक्षार्थी, सैन्यछात्र
 Cadre of service सेवाशाला
 Calculation गणना
 Calculation, Rough रूखगणना
 Calendar तिथिपत्र
 Called up capital आहूत पूंजी, अभिवाहित पूंजी
 Calling आजीविका
 Calory उष्मांश (पोषणकी मात्रा)
 Camera meeting बंद कमरेमें बैठक
 Camouflage छुपावरण, छुपावरण
 Camp शिविर, शकबाजार, निवेश;—equipment
 निवेशसज्जा
 Campaign अभियान, जांचकन
 Canal system नहरमाला
 Cancellation निरोधन; निरसन
 Candidate अभ्यर्थी, उम्मेदवार; पदार्थी
 Canned products टिनबंद चीजें

Canvass shoe किरमिचका जूता
 Canvasser सतानुवाचक, अनुवाचक, मनप्राथी
 Canvassing पत्रप्रचार
 Capacity सामर्थ्य; आवयन, समाई
 Capillary कैपिलर adj.: कैपिलर n.
 Capillary tube कैपिलरी, कैपिलर
 Capital expenditure पूँजीगत व्यय
 Capital goods पूँजीगत माल
 Capital levy पूँजीकर
 Capital, Issued निर्गमित पूँजी
 Capital market पूँजीका बाजार
 Capital, Paid परिदत्त पूँजी
 Capital Ship महायुद्ध पोत
 Capital, Subscribed प्राप्ति पूँजी
 Capitation tax प्रतिव्यक्ति कर
 Capitulation आत्मसमर्पण
 Capricious सकर
 Capsule पुटी
 Capsuled पुटित
 Captain कप्तान, नायक, दम्भनेता (खेल)
 Capton शीपक
 Captive रजशरी
 Carbon अंगारक
 Carbon paper सनिपत्र
 Carbuncle दुष्टग्रन्थ
 Career जीविका
 Careerism उदर पूर्तिवाद
 Caretaker अन्वधानक, अन्वधाना
 Cargo boat पण्यवाहक नौका, भारवाही पोत
 Carriage परिवहन; गाड़ी
 Carrier वाहक; वाहन
 Carriage, Public लोकपरिवहन
 Carrot गाजर
 Carry-out कार्यान्विन करना
 Cartel सामरिक समझौता
 Case कांड, वाद, मामला
 Cashbook रोकड़ बही
 Cash Memo विक्रयपत्र, नकदी पुरजा, रोकड़पत्रक
 Cashier रोकड़िया
 Cash-crop नकदी फसलें
 Casting vote निर्णायक मत
 Casual vacancy आकस्मिक रिक्ति (रिक्तस्थान)
 Casualty हानाहत (मंशु)
 Cataract मोलिवानिद
 Catchment area—अवसाप्ति क्षेत्र
 Catechism—प्रश्नोत्तरी
 Category श्रेणी, कोटि
 Cathetometer कर्चतामापी
 Cattle-pound पशुनिरोध-गृह, पशुनिरोधिका, कौजी
 हाथस

Cauliflower फूलगोभी ।
 Cause वाद
 Cause of action वादमूल, वादपट्ट
 Caution money परिभाष्य धन
 Cease-fire युद्धसंलग्न, युद्धविराम
 Ceded territories सत्तांतरित प्रदेश
 Ceiling price उच्चतम (अधिकतम) मूल्य
 Celestial body खगोल
 Cell कोशानु; कोशिका
 Censor दोषवेचक; दोषवेचन, दोषान्वीक्षण, संवाद-नियंत्रक
 Censorship दोषवेचन, संवाद-नियंत्रण
 Census चननगणना
 Centralisation केंद्रीयकरण, (केंद्रीकरण)
 Central Housing Board केंद्रीय आवाससंयोजक
 Centrifugal forces केंद्रापसारक शक्तियाँ
 Centripetal forces केंद्रोपगामी (केंद्रोन्मुख) शक्तियाँ
 Century शती, शतक (शिलकी या समयकी); सताब्दी, सदी (समयकी)
 Cereals अनाज
 Cerebrum मस्तिष्काग्र, प्रमस्तिष्क
 Ceremonial आनुष्ठानिक
 Ceremony अनुष्ठान
 Certificate प्रमाणपत्र, (प्रमाणक)
 Certification प्रमाणन
 Certiorary, Writ of उत्प्रेषण-लेख, उत्प्रेषणादेश
 Cess उपकर
 Chair कुर्सी, मंचिका; अधिपीठ, पीठिका (वि. विद्या)
 Chamber मंडल
 Chamber of Commerce व्यापार-मंडल
 Chamber of Princes नरेंद्रमंडल
 Chancellor प्रधान मंत्री (जर्मनी); अधिवक्ता (विश्वविद्यालयका)
 Chancellor of the exchequer त्रिदेनका अर्थमंत्री
 Channel प्रणाली ।
 Channel, Through proper उचित क्रमसे, संबद्ध अधिकारियोंके पास होते हुए
 Character roll आचरण-पत्र
 Charge आरोप; दोषारोप, प्रसार; अधिरोप; व्यय
 Charge de affairs प्रसारो राजदूत
 Charge of office दफ्तर (दिना, लेना)
 Chargeable अधिरोप्य
 Charged विषमव्यय
 Charge sheet आरोपपत्र, आरोपफलक
 Charitable and religious endowment पूँच तथा धर्मव्यय, पूँच तथा देवोत्तर संपत्ति
 Charitable institution धर्मव्ययिक संस्था, पूँच संस्था
 Charity दानव्यय; सहायता
 Chart रेखापत्र
 Charter अधिकार-पत्र, अधिपत्र, समय
 Chartered accountant अधिकृत गणक

Chemical examiner रासायनिक परीक्षक
 Chemical fertilizer रासायनिक खाद या उर्वरक
 Cheque धनादेश, चेक
 Cheque, Bearer बाहक धनादेश
 Cheque, Blank निरंक धनादेश
 Cheque Crossed देखित धनादेश
 Cheque Order आदिष्ट धनादेश
 Cheque, Postdated उत्तरतिथीय धनादेश
 Chief Election Commissioner मुख्य निर्वाचन आयुक्त
 Chief Judge मुख्य न्यायाधीश
 Chief Justice मुख्य न्यायाधिपति
 Chief minister मुख्य मंत्री
 Chief of Protocol कूटनीतिक दृष्टाचार विभागका प्रधान
 Chief of staff सैनिक दफ्तरका प्रधान
 Child welfare centre शिशु-कल्याणकेंद्र
 Chord जीवा, नापकर्म
 Chorus सहगान, समवेत गान
 Chromometer कर्ममापक
 Chronic चिरकालिक, दीर्घ
 Chronicle पुरावृत्त
 Chronology कालक्रम
 C. I. D. गुप्तचर विभाग
 Cinema चलचित्रा चलचित्र-भरिद; सिनेमा
 Cipher संकेताक्षर, शब्द
 Circle क्षेत्र, मंडल; हल्का; वृत्त
 Circular परिपत्र; गहरी चिट्ठी
 Circulate परिचारित वा परिपत्रित करना
 Circulation प्रचार, परिचारण; प्रचार (मरुवा)
 Circumference परिधि
 Circumlocution वागबाहु
 Circumscribed circle परिगत वृत्त, परिबृत्त
 Circumstantial evidence कृतानुमेय साक्ष्य
 Citation प्रेरण
 Citizenship नागरिकता
 City Council नगर-परिषद्
 City father नगरपिता, नगरपाल
 City slums नगरकी गंदी बस्तियाँ (नक्तिमावास्त)
 Civic नागरिक
 Civic guard नगर-रक्षक
 Civil नागरिक, अस्त्रिक
 Civil aviation department नागरिक उड्डयन विभाग
 Civil code दीर्घानी संहिता
 Civil court व्यवहार न्यायालय
 Civil disobedience सविनय अवज्ञा
 Civil estimates प्रशासकीय व्ययानुमान
 Civil liberty नागरिक स्वतंत्रता
 Civil Service नागरिक सेवा (सेवा)

Claim दावा
 Clarification स्पष्टीकरण
 Clan गोत्र
 Clarion-call समाधान
 Classical Economics प्रतिष्ठित अर्थशास्त्र
 Classification वर्गीकरण
 Clause खंड
 Cleavage संभेद, विभेद, दरार, पार्थक्य, मतभेद ना
 Clemency राजदया
 Clerical mistake लिपिक-विषम
 Clerk लिपिक, लेखक, करणिक
 Climax पराकाष्ठा, चरमबिंदु
 Client ग्राहक, अवधिक
 Close निगमनगृह; निजी उपचारगृह
 Clique गुट
 Clue सूत्रवात्र
 Clock-tower घडघर
 Clock-wise घटिकानुक्रममे, दक्षिणावर्त
 Closing balance रोकहवाकी, सवरण शेष
 Closing entry संवरण प्रविष्टि
 Closing stock सवरण मूल्य
 Closure motion समापन प्रस्ताव, विचारान प्रस्ताव, बहसचर्चाका प्रस्ताव
 Club संकेत, मूल, सुराग
 Coach गाडी; सवारीका रथ
 Coagulation स्कंदन, जमाव, आतंकन
 Coalition government संयुक्त सरकार
 Coastal trade समुद्रतटवर्ती वाणवात
 Coat आवरण
 Cockpit अस्त्राक्ष; सपर्यम्पि
 Code महिना; माकेनिक भाषा
 Co-defendant सहप्रतिवादी
 Codified संगृहित, सहित
 Codification of law विधिवीका प्रयोगकरण
 Coefficient गुणक, गुणांक
 Coexisting सहवर्ती
 Coextensive सहविस्तारी
 Cognate सजातीय;—object सजातीय कर्म
 Cognisance अभिज्ञान; हस्तक्षेप
 Cogitation संज्ञान
 Cognizable हस्तक्षेप्य, संशेय, पुष्टिसक, हस्तक्षेप योग्य
 Coherence सामंजस्य
 Cohesion संसक्ति
 Coin टंक, मुद्रा, सिक्का
 Coin, spurious जाली सिक्का
 Coinage Coining टंकन
 Coincidence संघात, संयोग
 Coal Industry नारियलकटा उद्योग
 Cold शीत, प्रतिदवाय, ठुकाव
 Cold storage शीत-संग्रह; स्थगित करना

Cold war "शीत" युद्ध, राजनीतिक युद्ध, महाकौब युद्ध
 Cold wave शीत लहर, शीत तरंग, शीत लहरी
 Collapsible मिमटने वा मुकुटनेवाला, आकुंचनशील, संहरणशील
 Collateral समवंशज
 Collection संग्रहण, एकत्रीकरण
 Collection charges संग्रहण खर्च
 Collection of data सामग्री-संग्रहण
 Collective सामूहिक
 Collective responsibility सामूहिक उत्तरदायित्व
 Collective security सामूहिक सुरक्षा
 Collectivism समूहवाद; सामूहिकतावाद
 Collector समाहर्ता; बिलपोष
 Collector, Deputy प्रति समाहर्ता
 College महाविद्यालय
 Colloid कल्लि
 Colony उपनिवेश
 Colonisation उपनिवेशन
 Colour blind वर्णान्ध
 Colour prejudice वर्ण-विद्वेष
 Coloured races अन्धेन जातियां
 Column स्तंभ
 Columnist (पत्रका) स्तम्भलेखक
 Combatants and noncombatants युद्ध-ग्रस्त और युद्ध-निष्ठ
 Combustible दह्य, ज्वल्य, ज्वलनशील
 Come of age (वाक्) बचस्क होना
 Comma अल्पविराम
 Command समादेश; पूर्ण अधिकार, प्रभुत्व
 Commandant मेनानायक
 Commandeer मेनावत् करना
 Commander समादेशक; मेनानायक
 Commander-in-chief प्रधान मेनापति
 Commend सलाह करना
 Comment टीका, मतविवेचन, आलोचना
 Commentary विवृति, अभिप्रेषण, टीका
 Commerce वाणिज्य
 Commercial वाणिज्यिक
 Commercial Group वाणिज्यिक क्लब
 Commissioner मंत्री
 Commissariat मेना-रसद-विभाग
 Commission आयोग
 Commission कृय, बट्टा, बर्तन
 Commission agent बर्तन अधिकारी
 Commission and omission, Acts of विहित-निषिद्ध कर्म
 Commissioned officer आयुक्त अधिकारी
 Commissioner आयुक्त
 Commit निबुद्ध करना
 Committee समिति;—of action संघर्ष समिति

Committee, Select प्रवर समिति
 Committee, Standing स्थायी समिति
 Commodity पण्य द्रव्य, पण्य वस्तु; मिय
 Commodity market पण्यक्षेत्र, मिय बाजार
 Common friend उभयमित्र
 Common seal सामान्य मुद्रा
 Common sense सामान्य बुद्धि
 Commonwealth राष्ट्रमंडल
 Communist संग्रदायवादी
 Communicate संचार करना, संयुक्त करना
 Communication संचारण; संचार; संयोजना; सवाद-बहान
 Communication, Means of संचारसाधन
 Communicative विह्वलि
 Communism साम्यवाद
 Communist साम्यवादी
 Community समाज, सम्प्रदाय
 Community project सामुदायिक योजना
 Compute लघुकरण
 Computation of pension पेन्शनका संराजिधान
 Company प्रमदल
 Comparative तुलनात्मक
 Compass परकार; दिग्दर्शक यंत्र
 Compassion अनुकंपा
 Compatible संगत
 Compendium संक्षेपण; उपसंग्रह; लघुसुलिका
 Compensate क्षतिपूर्व
 Compensatory allowance प्रतिकर भत्ता
 Compensation क्षतिपूर्ति, प्रतिकर
 Competent सक्षम, समर्थ
 Compilation संकलन
 Compiled संकलित
 Complainant अभियोजक
 Complaint अभियोग, शिकायत, करिदाय; परिदेवना, परिवाद; परिवादपत्र
 Complement (विधेयार्थ) पूरक
 Complimentary adj. पूरक
 Compliance मान लेना, पालन, पूरा करना
 Compliments शुभकामना; प्रशंसा
 Component parts अंशभूत भाग, अवयवभूत अंश
 Compost बालस्पतिक खाद, कुर्वेकी खाद
 Compound यौगिक—addition मिश्रजोड़, मिश्र संकलन;—division मिश्रभाग;—fraction मिश्र भिन्न, —interest चक्रवृद्धि व्याज;—practice मिश्र व्यवहार
 Conspire—subtraction मिश्रव्यवकलन
 Compromisable मिश्रणशील; समाधि
 Compromisable offence समाधि अघराय, राजी-नामे योग्य अपराध
 Commander समिश्रक
 Comprehensive questionnaire विस्तृत प्रश्नावलि

Compression संघोष
 Compressibility संघोष्यता
 Compromise समझौता, बीचका रास्ता
 Comptroller निष्पक्ष
 Compulsory अनिवार्य, बाध्यतामूलक, आवश्यक
 -retirement अनिवार्य निवृत्ति
 Computation संगणना
 Concave lens नतोदर लाल
 Concentration सङ्केन्द्रण
 Concentration of authority प्राधिकारका सङ्केन्द्रण
 Concentration camp निरोधन शिविर, नजरबंदी शिविर; कारा-शिविर; उत्पीडन शिविर
 Concentrated efforts एकाग्रीकृत प्रयास, सङ्केद्रित प्रयास
 Concept संघोष, प्रत्यय
 Conception अवधारणा
 Concerned सम्बद्ध, संकित
 Concert संघीत समारोह
 Concession छूट, रियायत
 Conciliation board संराशन समिति, विवाद-निवारक-समिति
 Conclave गुप्त सभा
 Conclusion परिणाम, निष्कर्ष, निष्कर्ष
 Conclusive निश्चयात्मक, अखण्ड
 Concomitant सहवर्ती, साथ-साथ चलनेवाला (रहाति), सुगुणकारी, समवाची, समवाची
 Concur सम्मन होना
 Concurrence सहमति
 Concurrent समवाची, समवर्ती
 Concurrent list समवर्ती सूची
 Condensation संघनन
 Condensed food संघनित खाद्य
 Conditional सुप्रतिबंध
 Conditions of service सेवाकी शर्तें
 Condolence समवेदना
 Condominium द्वैराज्य; शासकता
 Condonation क्षमादान
 Condone क्षमा करना
 Conductor संवाहक
 Cone शंकु, शंकाकार घन
 Confederation परिसर
 Conference सम्मेलन; संग्रहणा
 Confession अपराध-स्वीकरण; स्वीकारोक्ति
 Confirmation अभिवृत्ति, पुष्टीकरण; स्वीकीकरण
 Confiscation समपहरण, बन्दी
 Conflagration अग्निकांड, महाप्रज्वलन
 Congenital सृज्जात
 Congratulation बधाई, प्रतिनंदन
 Congruent सर्वांगसम (विपुत्र)
 Conical शंकुक्रम, शृङ्खलाकार

Consanguine समीप
 Consanguinity समीपता
 Conscience अंतःकरण
 Conscript अनिवार्य भर्ती करना; बि० इस तरह २. सी किंवा हुला !
 Description अनिवार्य भर्ती
 Consecutive क्रमागत; लगातार
 Consensus एकहृषता, समानता
 Consensus of opinion ऐकमत्य
 Consent सम्मति, सहमति
 Consequential आनुवंशिक
 Consequently फलतः, परिणामस्वरूप
 Conservancy system मजबूतन प्रकृति
 Conservation संरक्षण
 Conservator of forests वनसंरक्षक
 Consigned परेषित, अर्पित
 Consignment परेषण, परेषित वस्तु
 Consignee परेषणी
 Consignor परेषक
 Constancy मर्यादा
 Consolidated एकीकृत. संचित, संग्रहित, - fund संचित निधि, - pay एकीकृत वेतन
 Consolidation of debt ऋण-संघटन
 „ of holdings ज़ेतांकी चक्रबंदी
 Conspiracy षड्यंत्र
 Constant cost स्थिर परिच्यय
 Constellation नक्षत्र
 Constipation मलाबरोध, मजबूतता, कब्ज
 Constituency निर्वाचन-क्षेत्र
 Constituent Assembly संविधान मन्त्रा
 Constitution संविधान; मण्डन; संकल्पपत्र; देहयज्ञ
 Constitutional deadlock सांविधानिक गतिरोध
 Constitutionalism संविधानवादी
 Constructive programme रचनात्मक कार्यक्रम
 Construe अर्थ करना
 Consul वाणिज्य-दूत; राजप्रतिनिधि
 Consul-general महावाणिज्यदूत
 Consulate वाणिज्य दूतावास
 Consulting room परामर्शालय, परामर्शकक्ष
 Consumer's goods उपभोग्य वस्तुएँ
 Consumption उपभोग. क्षय, क्षयरीम
 Contagious मांसपक्षिक, सार्वजनिक
 Contamination दूषण
 Contemporary समसामयिक, समवर्ती, समकालीन; सहवर्ती (समाचारपत्र)
 Contempt अवमान, अवमानना, अपमान; - of court अदालतकी अवज्ञा; न्यायालयका अवमान
 Contents अंतर्वस्तु, अंतर्विषय
 Context संदर्भ
 Contiguity संसक्ति, साधिष्य, संलक्षता

Contingency आकस्मिकता, आकस्मिक स्थिति
 Contingency fund प्रासंगिक व्यय, आकस्मिकता-
 निधि, पुटकर-निधि
 Contraband trade विनिमिक व्यापार, प्रतिबंधित
 व्यापार
 Contract अनुबंध, ठेका
 Contradiction संघटन, प्रतिपक्ष, असंगति
 Contrary विरुद्ध, प्रतिकूल
 Contribution अंशदान, अवदान, योगदान; चंदा
 Contributory Provident fund अंशदारी मुनि-
 भायक (या सचिव) कोष
 Control Room नियंत्रण-कक्ष
 Controversy झगड़ानमन, वादविवाद
 Convalescence (रोगोत्तर) स्वास्थ्यलाभ
 Convection बहन
 Convener संयोजक
 Convention प्रसभा; अभिसमय, रूढ़ि
 Conventional व्यवहार, पारंपरिक
 Convergent एकत्रोद्गमिमुख, एकविधुगामी
 Converse प्रतिकोम
 Conversion परिवर्तन, धर्मपरिवर्तन; मनपरिवर्तन
 Convertible परिवर्त्य
 Conversion रूपांतरण, परिवर्तन
 Convex उन्नतोदर; उन्नतोदर बहुभुज (त्र्यामिति)
 Conveyance हस्तांतरण; सवारी
 Convicted अभिप्रेत, दोषित
 Convocation दीक्षांत समारोह, समावर्तन, पदवीदान
 समारोह
 Co-operative Society सहकारा समिति
 Co-opt विनियुक्त करना, अधिनिर्वाचित करना
 Co-opted members अधिनिर्वाचित सदस्य
 Coordinate समान पदबाला, समकक्ष; तुल्यशील v.
 श्रेष्ठ बैठना
 Coordination एकसूत्रीकरण; समन्वय
 Co-partner सहयोगी, साझेदार
 Copied प्रतिलिपित
 Copper age ताम्रयुग
 Copper plate ताम्रपत्र
 Copy प्रतिलिपि, प्रतिलिपि
 Copyholder लेखकभक्त
 Copyist प्रतिलिखक; प्रतिलिपिक
 Copyright कृतिस्वाम्य
 Corollary उपप्रमेय
 Corner अवमुख्य मीमांसक
 Corporal punishment शारीरिक दंड
 Corporate जैवन
 Corporation नियम, वीरसंघ
 Corps निःकाय, दल, सेन्यदल
 Corps, Diplomatique राजदूत समूह, दूतसमाम
 Corrected शोधित

Correspondence पत्र-व्यवहार, पत्राचार
 Correspondent सूत्रादराता
 Corresponding उत्सवानीय, तदनुकूप; संगत (कोण)
 Corridor गलियारा, बीचमेंसे होकर जानेवाला
 संकीर्ण पथ
 Corrigendum सुद्धिपत्र
 Corroboration अभिपुष्टि
 Corrosion संक्षरण
 Corrupt practice भ्रष्ट-चार
 Cosmic Rays ब्रह्मांड रश्मि
 Cosmogony विद्वत्पद्धतिविज्ञान
 Cosmology ब्रह्मांड विज्ञान
 Cosmopolitan सांभदेशिक, सांभमीय; विद्वन्मात्यरिक
 Cosmopolitanism विश्वभक्ति
 Cosmos ब्रह्मांड
 Cost परिचय, लागत
 Cost of living जीवन-यापन व्यय
 Cost of maintenance निर्वाह-परिचय
 Cost of production उत्पादन-परिचय
 Costs बाद व्यय
 Cottage Industry गृहोद्योग, गृहशिल्प, कुटीर-शिल्प
 Council परिषद्
 Councillor परिषद्
 Council of action कार्य-परिषद्
 Council of States राज्य-परिषद्
 Counter मण्डाफलक; "खिचकी", फटक
 Counter act विपरिकार करना, प्रभावहीन या व्यर्थ
 बनाना
 Counter action प्रतिकरण, प्रतिकारमय कार्य
 Counter attack प्रत्याक्रमण
 Counter balance प्रतिसंतुलन;—ed प्रतिसंतुलित
 Counter charge प्रत्यारोप
 Counterfeit बाकी
 Counterfoil प्रतिपत्रक, प्रतिपत्र, दूसरी प्रति
 Counter part प्रतिरूप, प्रतिमूर्ति
 Countersigned प्रतिहस्ताक्षरित
 Counter statement प्रत्यावेदन; प्रतिवक्तव्य
 Countervailing duty प्रतिकुलक
 Coup d'état आकस्मिक शासन-परिवर्तन, शासनिक
 विप्लव; बलात् सत्तापहरण
 Coupling युग्मन
 Coupon शिफ्टा, कूपन
 Courier डाक, वाहन, दूतकारा
 Course पाठ्यक्रम; मार्ग, पथ; प्रवाह, धारा; रीति
 Court fee न्यायशुल्क, अधिकरण शुल्क
 Court, High उच्च न्यायालय
 Court Inspector व्यवहार-निरीक्षक
 Court martial सैनिक विचार; सैनिक न्यायालय
 Court of appeal पुनर्विचार न्यायालय
 Court of records अभिलेख न्यायालय

Court of wards प्रतिपालक अधिकरण
Court, Regional क्षेत्रीय न्यायालय
Court, Supreme सर्वोच्च न्यायालय
Covenant प्रतिभूति, प्रतिभूतिपत्र, प्रतिज्ञापन; समझौता
Covenanted प्रतिभूत
Crane भारीचालन यंत्र, भारीदहन यंत्र
Credentials पदविवरणपत्र
Credit प्रत्यय, साख; समाकलन; उधार
Credit balance समाकलन आधिक्य
Credit bill विप्रेषणनीय दुपट्टी
Credit entry समाकलन-प्रविष्टि
Credit facilities ऋणसुविधा
Credit note जमाकी दुपट्टी, समाकलन-पत्र
Creditor ऋणमर्ग, महाचयन
Credit sale उधार-विक्रय
Credit side धनपक्ष, जमाकी तरफ
Cremation ground, crematory दहनस्थान
Crew नाविक दल, सफाई; विमानकर्मियों
Cricket गेंदबल्ल, क्रिकेट
Crime अपराध
Criminal वि० दण्ड; अपराधशोध. पु० अपराधी
Criminal breach of trust दहनीय विश्वासघात
Criminal conspiracy दण्ड या अपराध षड्यंत्र
Criminal court दंड न्यायालय
Criminal investigation department अपराध-अन्वेषण विभाग, गुप्तचर विभाग
Criminal procedure code दण्डविधि संहिता
Criminal settlement बरायतमिच्छा लोगोंकी बस्ती
Criminal tribes अपराधशोध जातियों
Criterion निकष, मानदंड, कसौटी
Crop rotation क्रम्य कालचरन; फसल-चक्र
Cross bar fetters कैदी डबानेकी
Cross breeding क्रम्योन्नय प्रजनन, अंतर प्रजनन
Cross-examination प्रतिपरीक्षण; बिरह, साक्षि-परीक्षा
Crossword puzzle वर्णपहेली
Crusade धर्मयुद्ध
Cruiser लक्ष्मी जहाज, बिंदक पोत
Crystallisation स्फटिकीकरण, कलीकरण
Culpable homicide अपराध बरहत्या
Cultivable कृष्य, कृषियोग्य
Cultivable land कृषियोग्य भूमि
Culture संस्कृति, संस्कार; पाठन (जैसे कीककीटपाठन)
Cumulated ससुचित, ससुचकित
Curable चिकित्स्य, लाभ्य
Curator कण्ठ्य, परिरक्षक (संप्रदायिक आदिका)
Currency नकार्य, मुद्रा; प्रचलन
Current प्रचलित, वाह; न. धारा
Current account चालू खाता
Curve वक्रता, वक्र, (वक्ररेखा) मोड़
Curved line वक्ररेखा

Custodian संपालक, अभिरक्षक
Custodian of evanescent property निष्कालीनी
संपत्तिका अभिरक्षक
Custody अभिरक्षा, हिरासतमें लेना
Custom रूढ़ि, अभ्यास, रीति
Customs निराक्रम्यदर, सीमाशुल्क
Cut motion कटौती प्रस्ताव
Cut-throat competition झंडनछेदिस्पर्धा
Cycle चक्र; द्विवक्रपान
Cyclone चक्रवात
Cyclomyle चक्रविक्षिप्त
Cylindrical बेलनाकार
Cypher code गुप्तलेख संहिता

D

Daily register दैनिक पत्री
Dairy दुग्धशाला, दग्धशाला
Dais मंच
Dangle प्रतिभूति
Dash नमस्कार-चिह्न
Data लौकिक, सामग्री
Date तिथि, दिनांक
Dated तिथित, दिनांकित
Daybook दैनिकी
Day dream दिवाभ्रमन
Day, Preceding पूर्ववर्ती दिन
Day scholar अनामासिक छात्र
Days of grace अनुग्रहकाल
Dead account मृत लेखा, निष्क्रिय लेखा
Dead language मृत भाषा
Dead letter office बेपत्ता बिट्टीघर, पुनः प्रेषणकेंद्र
Dead-lock त्रुटिरूप, गत्यबरोध
Dealer व्यापारी
Dealings व्यवहार, लेना-देना
Death certificate मरण-प्रमाणपत्र, मृत्यु-प्रमाणक
Death-rate मरण-गति
Debauch जल्प, विभंग; पूर्ण पराजय
Debate वाद-विवाद
Debiture ऋणपत्र
Debit देवांश, विकलन
Debt conciliation board ऋण समझौता बोर्ड
Debt redemption ऋणमुक्ति
Debtor ऋणधर्म, कर्णी
Decagram दशाग्राम
Decimeter दशमीटर
Decigram दशांशग्राम
Decimeter दशांशमीटर
Decade दशाब्द, दशक, दशौं
Decadence अवनत्य, हास
Decagon दशभुज

Deceased प्रसूत, सुत
 Decentralization विकेंद्रीकरण (विकेंद्रीकरण)
 Deciding vote विनिश्चयकारी मत
 Decimal system दशमिक-क्रम, दशमलव-पद्धति
 Decision विनिश्चय
 Decision, pending the विनिश्चय होने तक
 Decisive विनिश्चयात्मक
 Declaration हावन, घोषणा
 Declension कारक-रचना, रूपसाधन
 Decomposition विघटन
 Decontrol विनियंत्रण
 Decorum—शिष्टाचार, शिष्टता
 Decree आदेश, आह्वयि
 Dedicate समर्पण करना
 Dedicated समर्पित
 Deduction काटना, कटौती; न्ययमन
 Deed संस्मय
 Defaced coin विकृत टका
 De facto तत्काल; तथ्यतः
 Defalcation व्यय, हरण, खराबान
 Defamatory अपकीर्तिकर
 Defaulter प्रमादी, निषि-संक्रामी, नाहिद, वाकीदार
 Defeatist attitude पराजयमूलक भावना
 Defence bond प्रतिरक्षा कर्तव्य
 Defence expenditure प्रतिरक्षा व्यय
 Deferred अभिवर्गित
 Deficit बाटा, न्यूनता
 Deficit area अभावग्रस्त क्षेत्र
 Deficit budget घाटेका आयव्ययक
 Deficit financing न्यूनार्थ-आवस्था
 Defined परिभाषित
 Deflation विस्फीति
 Deflection बलन
 Deform station बननाशन
 Deformity विकृता
 Degenerate अपव्रज
 Degeneration अपव्रज्य
 Degree अंश
 Dehumidifying plant आर्द्रतानाशक वन
 Dehydrated vegetable निजलीकृत शाक
 Dehydration निजलीकरण
 Deism ईश्वरवाद
 De-Jure विधानतः, अधिकारतः
 Delegated प्रेषक, प्राधिका, प्रत्यावाहित किया हुआ
 Delegation प्राधिकायन; शिष्टमंडल
 Delete अपघातजन करना, निकालना
 Delimitation परिशीलन
 Delinquency कर्तव्यहीनता, अपराध
 Deliverance उद्धार, मुक्ति
 Delivery साधनका अनुदान देना; लौपना; पत्र विन-

रण; बटनी; वाचनविधि; प्रसव; रिताई
 Deluge डूबान
 Demand अधिवाचन, माँग
 Demarcation सीमांकन
 Demilitarisation जलनिष्कीकरण
 Demobilisation सैन्य-विघटन, सैन्य-विघातन
 Democratisation लोकतंत्रीकरण
 Demonetisation विमुद्रीकरण
 Demonstration प्रदर्शन; उपपादन
 Demurrage बिलम्ब-शुल्क
 Denominator हर
 De novo कसे सिरेंगे
 Dentistry दन्तचिकित्सा
 Departmental पैमा, भेद, विभागीय
 Dependency अधीन राज्य
 Depot अस्तीकेंद्र; गोदाम
 Depopulation निर्वनीकरण
 Deposit जमा करना, निक्षेप करना
 Deposit, current चलनिक्षेप
 Deposition साक्षिका कथन
 Depositor निक्षेपक, जमाकर्ता
 Depreciatory remark अपमानकारी अभिवृत्ति
 Depreciation मूल्यहास, मूल्यापकर्ष, मूलावरोह, अर्धपतन
 Depressed class दलित वर्ग
 Depression अवसाद, व्यापारिक सैथिल्य, मंदी
 Deprive वंचित करना
 Depth charge समुद्री गोला, जलप्रस्फोट
 Deputation शिष्टमंडल; प्रतिनिधित्व
 Deputed प्रतिनिधित्व
 Deputy speaker उपाध्यक्ष
 Derailment पटरीपरमे उतर जाना
 Deranged अस्त-व्यस्त, विक्षिप्त, विडुष्य
 Derivation व्युत्पत्ति
 Derivative व्युत्पन्न
 Derogatory लघुकारक, अपकीर्तिकर, अपमानकारी
 Descendent वंशज
 Descent उद्भव
 Desert सपरित्याग करना, छोड़ देना
 Deserter दलत्यागी, अंगोड़ा, पलायक
 Design परिकल्पना, रूपकन, रचना-वैशिष्ट्य, परिष्प
 Designate (v.) नामोद्देशन करना, नामाभिधान करना; वि० नामोद्दिष्ट, अनोनीत
 Designation पदनाम, ओहदा
 Designer परिष्पक
 Despatch-book प्रेषण पुस्तक
 Despatcher डाकप्रेषक; प्रेषणकर्मी; प्रेषक
 Destroyer विध्वंसघात
 Detailed विस्तृत, व्योरेवार
 Details विस्तार, विवरण, व्योरेवार

Detention कारागार, जबरन, निरोध, निरोधन
 Deterioration of currency नकारात्मक अवस्था
 Determination पक्का निश्चय, अवधारणा
 Determinist नियतिवादी
 Deterrent sentence निवारक दंड, निरोधक दंड
 Detrimental अहितकारी
 Devaluation अवमूल्यन
 Development expenses विकास व्यय
 Deviate विचलित होना
 Deviation विचलन
 Devotion of power अधिकारका अवलम्वन
 Devolve अवक्रमण होना, सौंपना, भिन्ने आ पड़ना
 Diagnosis निदान
 Diagonal विकर्ण
 Diagram रेखाचित्र
 Dialectal materialism द्वास्थिक नैतिकवाद
 Dialogue कथोपकथन
 Diametre व्यास
 Diamond jubilee हीरक जयंती।
 Diarchy द्वैधशासन
 Diary दिनपंजी, दैनंदिनी
 Dictation आदेश, प्रवचना, वृत्तिरेक
 Dictator अधिकारक
 Dictatorship अधिनायकवाद; अधिनायकत्व; अधि-
 नायकत्व
 Didactics शिक्षाशास्त्र
 Diehard कट्टर, दुराग्रही (राजनीतिक)
 Diets आहार-साधन
 Differential duty संपिष्ट कर, भेदक कर
 Diffuse विस्तारित करना, प्रसारित करना, विर्काणं या
 प्रक्षेपित करना
 Digest संक्षिप्त संग्रह
 Dilemma परमसंकर, उभयसंकर
 Diluvial व्यावस्थिक
 Diminishing आकारहीन; घटमान
 Diminutive अवधारक, न्यूनताबोधक
 Dinner सायंभोज, सांध्य भोजन
 Diplomacy कूटनीति, राजनय
 Diploma उपाधिपत्र
 Direct निदेश करना
 Direct election प्रत्यक्ष निर्वाचन
 Direction निदेश
 Directive principles निदेशक सिद्धान्त
 Directorate निदेशक
 Director अधिकारी, संचालक, निदेशक
 Director General Commercial Intelligence
 and Statistics वाणिज्यिक तथ्यांक विभागके प्रधान
 संचालक
 Director, Managing प्रबंध-संचालक
 Director of Public Education लोकशिक्षण-

संचालक
 Directory विदेशिका
 Disability निर्वीर्यता
 Disabled विकलीकृत
 Disagreement असहमति
 Disapprobation प्रतिनिन्दन, अमान्यन
 Disapproved विरनुमोदित
 Disarmament निरस्त्रीकरण
 Disarmed निरस्त्रीकृत
 Disband सेनाभंग
 Disbursing officer भुगतानक अधिकारी
 Disbursement आयोजित वितरण
 Discharge उत्सृजन; परिशोधन; धारण; नाश
 Discharge of functions कृत्योका निर्वाहन
 Discipline अनुशासन
 Disconnect संविच्छेद करना
 Discord मतभेद, वैमन्य, कूट, सगड
 Discordant वैमन्यपूर्ण, विस्तर
 Discount, At a दृष्ट्य
 Discovery आविष्कार
 Discrepancy भिन्नता, अंतर; असंगति
 Discretion स्वधिक
 Discretionary विवेकाधीन;—power विवेकाधिका
 Discrimination विभेदीकरण, विभेद
 Discussion पर्यालोचन, बर्चा
 Disease, Venereal रतित्र रोग, बीज रोग
 Dishonesty अनार्थ
 Dishonour अनार्य
 Dishonoured cheque अनाद्यत धनारदेश
 Disinfectant भंक्रमण-नाशक
 Disintegration विघटन, विघटन
 Disinterested अकृत, निरस्य
 Disloyalty अमति
 Dismissal पदच्युति; अमान्यन
 Disparity अमनता, असमानता
 Dispensary (दाल्) औषधालय
 Disperse विसर्जन
 Displaced विस्थापित
 Displacement विस्थापन; स्थानच्युति, हटाव
 Disposal निस्तारण, समापन, निपटना
 Disposition मनोवृत्ति, मनोभव; स्वीक; विकस्य
 Disprove असत्य प्रमाणित करना, खंडन करना
 Dispute विवाद
 Disqualification निर्वीर्यता, अनर्हता
 Disqualified अनर्ह
 Disqualify निर्वीर्य बना देना, अनर्हिकरण
 Dissection विच्छेदन
 Dissemination फैलावा
 Dissent विमति (असहमति)
 Dissolution विलयन, विसर्जन, भंग होना, समापन

Dissonant असंगत
 Distillery अभिल्लावणी, आसवन
 Distillation अभिल्लावण, आसवन
 Distilled water अभिल्लावित जल, आसुत जल
 Distinct निश्च
 Distinction विशेष योग्यता
 Distress warrant अभिल्लरणका अधिपत्र
 Distribution वितरण; विभाजन
 District जिला, मंडल; प्रदेश, क्षेत्र
 District Board, दे० 'board'
 District Magistrate जिल्हाधीश
 Ditto तदेव
 Divergent अवसारी, अपसारी, अपविद्ध, विभिन्न दिशा-
 गामी
 Divergence अपसरण, अपविधुता
 Diversion विषयांतर; विचलन
 Dividend लाभांश; भाज्य
 Divisible भाज्य, भागाई
 Division भाग; विभाजन; विभाग; प्रमंडल; प्रखंड;
 चम्बू (बाहिनी = विंगेड)
 Divisional प्रामाणिक, प्रासंगिक
 Division bell विभाजन घटी
 Divorce विवाहविच्छेद; त्याग, वृषकोक्षण
 Dock जौनिवेक, बहाजी मालघाट, गोदी; कटघरा
 Doctrine धार्मिक सिद्धान्त, मत
 Incumbent प्रवेल्ल
 Documentary film प्रवेल्ल चित्र, वृत्तचित्र
 Documentary proof लिखित प्रमाण
 Domestic गृहस्थ, गार्हस्थ्य; परेक
 Domestic science गार्हस्थ्य-विज्ञान, गृहशास्त्र
 Domicile अधिवास
 Domicile certificate अधिवासी प्रमाणक
 Domitiled अधिवासी
 Dominion अधिराज्य, स्वतंत्र उपनिवेश
 Donation दान
 Dune प्रतिगुहाता, दानगुहाता
 Honor दाता
 Dormant सुप्त, अनुद्भूत
 Dormitory सुषमहाला
 Double द्विगुण; पु० प्रतिकृप
 Double plough बुकारा इक
 Double member constituency द्विमदस्य-निर्वाची
 क्षेत्र
 Double shift दोहरी घाटी
 Doublet युगल; 'ladies'-महिला युगल
 Draft प्रारूप; असीदा; हुंकी
 Draftsman प्रारूपकार; मानचित्रकार
 Drain निर्गम; सोपी; उत्सारण
 Drainage scheme जलोत्सारण योजना
 Draught cattle भारवाही (बाराकरी) पशु

Drawee आह्वयी; युगतानकर्ता
 Drawer आह्वरी, हुंकीकार
 Dressing अरहमपट्टी; प्रतिसारण, कपडे पहनना;
 -room परिधानकक्ष
 Dropper विन्दुपातक
 Drought सूखा, मनाइष्टि
 Drycleaning निर्जल धुलाई
 Dualism द्वैतवाद
 Ductility लव्यता
 Duck शून्व, अंडा (क्रिकेट)
 Due प्राप्य; देव, उपयुक्त; यथावत्
 Duet दोहाना
 Dug out भूगर्भ कोठरी
 Duly विधिक
 Dummy नमूनेका अक, ढोंचा
 Dump, Ammunition गोळा बाकडका डेर
 Dumping of goods वस्तुओंका राक्षिपातन; विदेशी-
 में माल अधिक सस्ता बेचना
 Duplicate प्रतिलिपि
 Duplicate copy द्वितीय प्रतिलिपि
 Durand टबाब, चमकी
 During the pleasure of प्रासादपर्यंत
 Dustbin अवकरी (अवकर = कूदा, कतवार), अवकर-
 पान, कूबेकी टोकरी
 Dutiable शुल्कयोग्य, शुल्काई
 Duty शुल्क; कर्तव्य
 Duty, On कामपर
 Dyarchy द्वैध शासन
 Dynamic गतिशील
 Dynamics गतिविज्ञान
 Dynamite प्रखमक

E

Earmarked वृभक्त रक्षित
 Earned leave अर्जित छुट्टी
 Earnest money बयाना, सत्यकार, साई
 Easement, Right of सुविधाधिकार, वयन-निर्गमना-
 पिकार, सुसाधिकार
 Ebullition उदकवन
 Eccentricity अनुठापन; सनक, शक
 Ecclesiastical धार्मिक, चर्च संघी
 Ecoing प्रतिष्थानन
 Economic advisor आर्थिक संघाकार
 Economic blockade आर्थिक समपरीथ
 Economic dislocation आर्थिक असम्यस्तता
 Economy अर्थव्यवस्था, सितम्यविति
 Economy committee बचत समिति
 Economy, Planned योजनायुक्त अर्थव्योति
 Edible खाद्य
 Edict राजादेश, राजबोधना

Edition, Evening सायं संस्करण
 Editorial संपादकीय (वि०, सं० दोनोंमें)
 Education Expansion scheme शिक्षाप्रसार-योजना
 Educationist शिक्षाविशेषज्ञ, शिक्षाविचारद, शिक्षाशास्त्री
 Effective, To be प्रयाची होना
 Effects संपत्ति
 Efficiency कार्यक्षमता, दक्षता
 Efficiency bar दक्षता-अंक
 Egress चले जाना, निर्गमन, निष्क्रमण
 Ejection निष्कासन, वेदलक्ष्मी
 Elastic स्थितिरूपक
 Election निर्वाचन
 Election, Bye उपनिर्वाचन
 Election campaign निर्वाचन-आंदोलन
 Election commissioner निर्वाचन आयुक्त
 Election malpractices निर्वाचन कदाचरण
 Election petition निर्वाचन प्रार्थनापत्र, निर्वाचन-
 याचिका
 Election returns निर्वाचन-विवरण
 Election tactics निर्वाचनकी चाल
 Election-tribunal निर्वाचन-अधिकरण
 Electoral college निर्वाचक मंडल
 Electoral roll निर्वाचक-नामालिखी, निर्वाचक-पुत्री
 Electorate निर्वाचकजन
 Electric generator विद्युत् जनित्र
 Electric mains विद्युत् प्रसवारी, बिजलीके मुख्य तार
 Electrical वैद्युतिक
 Electrified विद्युत्प्रय
 Electron विद्युत्
 Electrocutting बिजलीकी कानी, विद्युत्घात
 Electrometer विद्युत्मापी
 Electroscopie विद्युत्संकेत यंत्र
 Element तत्त्व, भूत, अंश
 Elementary प्रारंभिक, तारिखिक, मूल
 Elevans एकादशक
 Eliciting opinion सम्मति प्राप्त करना, राय जानना
 Eligible पात्र, बरणीय
 Eliminating जपारण, दूरीकरण
 Elipse दीर्घवृत्त
 Eliptical दीर्घवृत्ताकार
 Eloquence वक्तृत्वकला
 Elocution competition वक्तृत्व प्रतिस्पर्धिता
 Elucidation स्पष्टीकरण, विस्तारिकरण
 Emancipation उद्धार, विमोचन
 Embarkation आरंभ करना
 Embargo वीताभित्तीय प्रतिबंध
 Embassy दूतवास, राजदौतय
 Embezzlement लोपण, गबन, अपयोग, अपहार
 Embossed उभरा हुआ
 Embryo भ्रूण

Embryology भ्रूणविज्ञान, गर्भविज्ञान
 Emergency आकस्मिक संकटकाल, आपात
 Emergency area आपात-क्षेत्र
 Emergency commission आपातक आयोग
 Emergency order आकस्मिक आदेश
 Emergency, meeting आपाती अधिवेशन
 Emergency, State of संकटकी स्थिति
 Emergency Reserve संकटकोष
 Emigrant उत्प्रवासी (प्रवासी)
 Emigration उत्प्रवास
 Emisary प्रतिनिधि
 Emersion प्रवाह, भसन
 Emoluments परिक्रम, उपलब्धियाँ
 Emotional भावप्रवण
 Empiricism अनुभूतिवाद, अनुभववाद
 Employed सेवायुक्त
 Employee सेवी, कर्मचारी
 Employees State Insurance Act कर्मचारी बीमा-
 कानून
 Employer सेवायोजक, नियोजक
 Employer's liability सेवायोजक उत्तरदायित्व
 Employment सेवाविवरण, नियोजन
 Employment exchange कामदिवाङ्ग दफ्तर, भूति
 योजनालय; सेवायोजनालय, नियोजनालय
 Emportum वाणिज्यालय
 Emulation स्पर्धा
 Enact अभिनियम बनाना
 Enactment विधायन, अभिनियमन
 Emblock सामूहिक रूपसे, समूहगत; मुटका मुट. दफ्त.
 दफ्त
 Enclave परिगत भूभाग, जगत भूभाग
 Enclosed संवेष्टित, सन्निविष्ट, संवृष्टि
 Enclosure संवेष्टित वस्तु; घेरा, संवेष्टन
 Encumbrance कलप्रसङ्गता, कलमार
 Encumbered भारग्रस्त, कलग्रस्त
 Encyclopaedia विश्वकोश
 Endorsement पृष्ठांकन
 Endowed पृष्ठांकित
 Endowment प्राप्त, धर्मस्थ
 Endowment policy बंदीपल्ली बीमापत्र
 Energy ऊर्जा; क्षति
 Enforcement प्रवर्धन
 Engagement समबन्धन; विवाह-निश्चय; संघट्ट
 Engine गंत्र, इंजन
 Engineer अभियंता, संघविद्, इंजीनियर
 Engineering संघशास्त्र, संघविद्या
 Engineering, industry संघोद्योग
 Engrave उत्कीर्ण करना
 Enigma रहस्य
 Enlargement परिवर्धन

Enquiry परिप्रेक्ष्य

Enquiry office परिप्रेक्ष्य-गृह, वृत्तगृह दफ्तर

Enrolment fee नामलेखन शुल्क, पंजीयन शुल्क

Ereign पोटध्वज

Entente राष्ट्रमैत्री, गुटबंदी

Entertainment tax प्रमोदकर

Enthralment दासता

Enticement परिलोभन, परिमोहन

Entomology कीटविज्ञान

Entrance fee प्रवेश-शुल्क

Entrepreneur उद्योगी

Entry प्रविष्टि

Enumerated प्रयोजित

Eunuchism प्रतिज्ञा

Environment वातावरण

Envoy दूत

Epic महाकाव्य

Epidemic महामारी

Epigraph शिलालेख

Epitaph समाधि-लेख

Equal protection of laws विधियोंका समान संरक्षण

Equation समीकरण

Equator भूमध्यरेखा, विषुव रेखा

Equiangular polygon समानकोणिक बहुभुज

Equilateral समानभुजिक

Equilibrium सांध्य, सांध्यवस्था

Equinox सावन

Equipment सज्जा, साज-सज्जा, साज-सामान

Equitable सांध्य, (उपयुक्त)

Equitable tax न्यायसंगत कर

Equity न्यायमानता: साम्य

Equivalent पर्यायवाची, समानार्थक; बराबर; १) वयव

Era युग; संस्कृत

Erase उद्घोषण; अन्वयण

Erasures कटुट

Erosion कटाव

Erratum छुद्रिपत्र

Error विभ्रम

Errors and omissions लोप-विभ्रम, भूलवृत्त

Escort रक्षक बर्ग; मार्गरक्षक

Escort vessel रक्षक पोत

Espionage चारकर्म, चारकर्मबन्ध

Essential service करमावश्यक सेवाएँ

Establish स्थापित करना

Establishment प्रतिष्ठान; स्थापना

Establishment charges स्थापना-प्रभार, स्थापनम्यव

Estate रिवाज, सम्पदा, भूंपति

Estimates प्राकलन, अनुमान

Estimated cost प्राकलित (अनुमानित) परिम्यव

Eternal शाश्वत, चिरंतन

Ether आकाश; सूक्ष्म वायु

Ethnology प्रजातिविज्ञान

Evacuation निष्क्रमण

Evacuee निष्क्रांत

Evacuee properly निष्क्रांतोंको संपत्ति

Evaporation वाष्पीकरण, उद्घाटन

Evasion अपवर्जन

Evasion of tax करापवर्जन

Even distribution समवर्तन

Eviction अधिनिष्कासन

Evidence साक्ष्य

Evidence, Circumstantial वृत्तांतानुमेय साक्ष्य

Evidence, Hearsay श्रुताश्रुत साक्ष्य

Evolution उद्विकास

Evolutionary उद्विकासी

Evolved उद्विकसित

Exaction बलादसहन

Exaggerated अतिरंजित

Exaggeration अतिशयोक्ति, अतिरंजन

Examination Hall परीक्षामक, परीक्षालय

Examinee परीक्षित, परीक्षार्थी

Excavation खुदाई, उत्खनन

Except as provided उपर्युक्तके अतिरिक्त, हममें दिये

गये उपर्युक्तके छोड़कर

Excess profit tax अतिरिक्त लाभ-कर

Exchange, Bank of विनिमय अधिकार

Exchange, Favourable अनुकूल विनिमय

Exchange of opinion विचार-विनिमय

Exchange, Telephone दूरवाणी-विकास-केंद्र

Exchequer राजकोष, अर्थविभाग; विरा

Excise duty उत्पादन कर

Excise Commissioner, Central केंद्रीय उत्पादन

कर आयुक्त

Excise department आबकारी विभाग

Excise duty उत्पादन कर

Excluded Area अपवर्जित क्षेत्र

Exclusion अपवर्जन

Exclusive एकांतिक, अनन्य

Exclusive jurisdiction अनन्य क्षेत्राधिकार

Execution निष्पादन, हकरसी, तामील; पूरा करना;

फौसी

Executed निष्पादित, निष्पन्न; प्राप्तदेहित

Executive कार्यकारिणी, कार्यपालिका

Executive authority अधिपतासी अधिकारी

Executor निष्पादक, निर्वाहक; रिक्थसाधक

Exemption मुक्ति

Exequatur शक्ति दूतको राजमान्यता देना

Exercise of right अधिकारका उपयोग

Exhibit प्रदर्शित वस्तु

Exhibition प्रदर्शनी, नुमाइश

Exit बहिर्गमनद्वारा
 Exodus बहिर्गमन
 Ex-officio पदेन
 Expanding (university) प्रसार (विश्वविद्यालय)
 Expansion प्रसार
 Expansion of credit प्रत्यय-प्रसार
 Ex-parte एक-पक्षीय
 Expatriation स्वदेश-निस्तारण
 Expedient उपपन्न, समयोचित, (वांछनीय)
 Expedite शीघ्रता करना
 Expedition अभियान
 Expel निष्कासित करना
 Expenditure Contingent सम्भाव्य व्यय
 Expenditure charge on revenue राजस्वपर
 निहित (भारित) व्यय
 Expenditure, Side पार्श्व-व्यय
 Expenditure, Recurring आवर्ती व्यय
 Experiment प्रयोग; परीक्षण
 Experimental प्रायोगिक; संपरीक्ष्य
 „ farm संपरीक्ष्य प्रयोग
 „ Post office प्रयोग डाकघर
 Expert committee विस्तार-समिति, विशेषज्ञ-समिति
 Expiration अन्तस्तान
 Expiry समाप्ति, अन्तस्तान
 Explanation व्याख्या; स्पष्टीकरण
 Explanation, To demand उद्घाटन तलब करना
 Explanatory statement व्याख्यात्मक कथन
 Exploitation शोषण
 Exploited शोषित
 Exploiter शोषक
 Exploration समन्वेषण
 Explosion बकड़ा, विस्फोट
 Explosive विस्फोटक; विस्फोटक पदार्थ
 Export Bank निर्यात अधिकारी
 Export trade निर्यात व्यापार
 Exporter निर्यातक
 Exposition विह्वल
 Express स्पष्ट; आशुगम; व. व्यक्त करना;—delivery
 शीघ्रार्पण
 Express letter आशुपत्र
 Expressive व्यञ्जक, अभिव्यञ्जक
 Expropriate लुप्तपिहरण
 Expulsion अवसर्जन, निष्कासन
 Expunge निष्काट देना, उन्मादित कर देना, व्याप्त
 करना
 Extempore speech अतर्कित (अप्रस्तुत) भाषण;
 अतिथित भाषण, उत्पन्न-प्रस्तुत भाषण
 Extending bill वित्तसौ विधेयक
 Extension विस्तार
 Extent विस्तर

Extern निर्यातन, बहिर्गमन
 External trade बाह्य व्यापार
 Extinction विनाश, उच्छेद; क्षय
 Extirpation उन्मूलन, उपादन
 Extortion बलात् आदान
 Extract उद्धरण, निष्कर्ष
 Extra curricular activities पठ्योत्तर कार्य
 Extradite अपराधीको प्रेषित करना
 Extradition बहिर्गमन, उद्धरण
 Extraordinary charge असाधारण प्रभार
 Extra payment अतिरिक्त भुगतान
 Extra-territorial राज्यक्षेत्राधीन
 Extreme चरमसीमा; अत्यधिक
 Extremist चरमपथी
 Exuberance प्राचुर्य
 Eye-witness प्रत्यक्षदर्शी, साक्षुष गवाह

[

Fabricated evidence गढ़ा हुआ (अप-वर्णित) साक्ष्य
 Fabrication छद्मचना
 F. A. O. काष्ठ तथा कृषिमंडलन
 Fare value अंकित मूल्य
 Facility सुविधा, सौकर्य, मौल्य
 Facsimile अनुकृति
 Fact तथ्य
 Facts and figures तथ्य और अंक
 Factory उद्योगालय, निर्माणशाला, निर्माण, कारखाना
 Factory Act निर्माण-अभिनियम
 Factory cost निर्माण-व्यय
 Factory system निर्माण-प्रणालि
 Faculty विद्यापीठ कक्षापदधर; निकाय
 Fair dealing स्वयं व्यवहार, स्वायत्त व्यवहार
 Fair-wages committee उचित-वेतन-समिति
 Fair price उचित मूल्य
 Fait accompli सिद्ध वस्तु, सिद्ध कार्य
 Faith ब्रह्मा, विश्वास; निष्ठा, धर्म
 Faith and credit विश्वास तथा प्रत्यय
 Faithfully yours अवशिष्ट
 Fallacy (भ्रान्ति); हेतुबाध
 Fallow land अजोषा भूमि, परती भूमि
 False accounts कर्त्री हिसाब-किताब, कथित लेखा
 False charge मिथ्या आरोप
 Family allowance परिवार-अनुदान
 Family doctor पारिवारिक चिकित्सक
 Family Pedigree वंशवृक्ष
 Family Planning परिवार नियोजन, पारिवारिक
 आयोजना
 Family tradition कुल-परंपरा
 Famine relief fund दुग्ध-सहायता-कोष, अनाह
 सहायता-कोष

Fanatic पन्थी, मतांध; कटमुंडा
Farce प्रहसन, दिक्कान बस्तु, तमाशा
Far East पूर्वा पश्चिमा, "दूर पूर्व"
Fare किराया
Farewell address प्रस्थानकालिक मानपत्र
Far-fetched बकाल संकलित, अस्वाभाविक, छिष्ट
Far-reaching दूरगम्य, दूरगामी, बहुकालगामी
Fashion मूलाचार; देसाचार
Fatal लांघातक
Fatalist भाग्यवादी, दैववादी
Fatherland पितृभूमि, पितृदेश
Fatigue दृष्टि दुर्बल
Favourable balance of trade अनुकूल व्यापार-
 लघुजन (तुला)
Favouritism पक्षपात
Feasible संभाव्य
Feature पटना बिशालात्मक अंश
Feature programme रूपक कार्यक्रम
Features वैशिष्ट्य, विशिष्टाण
Federal Assembly संघीय विधानमण्डल
Federal Constitution संघीय संविधान
Federal Court संघ न्यायालय
Federation संघ, संघान
Fee शुल्क
Fellow (महाविद्यालयका) पारिचर्य
Fermentation अन्न-क्षोभ; किम्बन
Fermented क्लिप्त
Ferry toll घट्टाकर
Fertiliser उर्वरक, खाद
Feudalism सामंतवाद
Feudal system सामंत-तन्त्र
Fictitious account अवास्तविक लेखा
Fictitious assets अवास्तविक परिपक्व (देय, माग-
 मत्ता)
Field book क्षेत्रमाप-पुस्तिका
Fielder क्षेत्ररक्षक
Field-glasses क्षेत्र-दूरदर्शिका
Fieldgun रणक्षेत्रीय तोप
Fielding क्षेत्ररक्षण, क्षेत्ररक्षा
Field investigation क्षेत्रानुसंधान
Field-worker क्षेत्रकर्मी
Fifth columnist पंचमांगी
Fighter plane युद्धक विमान
Figurative आलंकारिक
Figure of speech अलंकार, काव्यालंकार
Figure-head नामधारी (अयुक्ता), नाममात्रका प्रमुख
File संस्ती, कभी; नसित पत्रमयूह. भंग्दृष्ट पत्रादि,
 नसिपत्री, देसी
Filed नसित; प्रस्तुत किया वा दाखर किया (ग्रामका)
File register नस्ती-पंजी

Filibuster अनावश्यक वाधा बाधनेवाला
Filler रिक्ति-पूरक
Film company चलचित्र-प्रदर्शक
Filteration निर्गमन, पालन
Filtered water निर्मलित जल
Final bill अंतिम प्राप्यक
Final dividend अंतिम लाभांश
Finance bill वित्त-विवेक
Finances वित्तसाधन, अव्ययवला
Financial वैयक्तिक, वित्तीय
Financier वित्तप्रबंधक, अर्थविनियोजक
Financing वित्त-प्रबंध करना
Finding न्यायिक निर्णय
Finger-print अंगुठचिह्न
Fire arm आग्नेयास्त्र
Fire fighting equipment आग बुझानेका सामान
Fire proof अग्निप्ररोधक, अग्निरोधक, अग्निजिप्त,
 अग्न्यरोध
Firm adj. दृढ
Firm n. व्यावसायिक प्रतिष्ठान, कौटो
First aid प्रथमोपचार
First aid post प्रथमोपचार-केंद्र; प्रारंभिक-सहायता-केंद्र
Fisc राजकोष
Fiscal policy करसंबंधी नीति, राजस्वविषयक नीति
Fiscal year राजकोषीय वर्ष, माली साल
Fisheries मत्स्यक्षेत्र
Fixation of pay वेतन-निर्धारण
Fixed asset स्थायी परिसंपत्ति
Fixed capital स्थिर, पूंजी
Fixed deposit स्थायी जमा, लाभांश निक्षेप
Fixed deposit account स्थायी खाता, लाभांश
 निक्षेप-लेखा ।
Fixtures स्थावर संपत्ति; लेख-प्रतिबोधिता आदि संबंधी
 निधि-निर्धारण
Flagged पताकित
Flag, halfmast आधा झुका झंडा, अर्द्धोल्लिख ध्वज
Flag-hoisting ध्वजोत्थान
Flagship ध्वज-पोत
Flag-staff ध्वजदंड, ध्वजस्तम्भ
Flag, unfurling } ध्वजा कहराना
or breaking } ध्वज-विस्फारण
Flank guard पार्श्वरक्षक सेना
Flash पल्लिख
Flexible नम्य, आनम्य, नमनीय, लचीला, लचकदार
Flexible constitution नम्य (या लचीला) संविधान
Floating capital चल पूंजी
Floating debt अल्पकालिक कर्ण, प्रवर्तमान कर्ण
Floor price निम्नतम (न्यूनतम) मूल्य
Florid पुष्पसज्जित, अलंकृत, अलंकारमयी (भाषा)
Flotilla विध्वंसक बेरा

Fluctuating market अस्थिर बाजार
 Flush latrine स्वच्छासन कौचालय
 Flying boat उड़न नौका
 Flying fortress उड़न किला
 Flying squad हुरतामी दल, (आरक्षी) स्वरित दल,
 (प्रुक्सक) टुकामी दस्ता
 Fodder चारा, पशुमोजन
 Folk dance लोकनृत्य
 Folk lore लोकसाहित्य
 Folk song लोकगीत
 Following निम्नलिखित, अधोलिखित, u. अनुवाची
 Fomentation रोक, सेचन, स्वेदन; हरीषण, उचैजन
 Food-control खाद्य-नियंत्रण
 Foodgrains खाद्यान्न
 Food rationing खाद्य-समवितरण, निर्बंधित खाद्य-
 वितरण
 Foot-path जलुरम्या, पट्टी
 Footing जापर, दृढ़ स्थिति
 Foot-wear पायुका, पदत्राण
 F O. R. price रेल भाड़ाभुक्त मूल्य, भाड़े समेत मूल्य
 Forbearance क्षमाशीलता, धैर्य
 Foreo, By बकाय
 Forced labour बेगार
 Forced landing विवश अवतरण, बलवदवतरण
 Forelanded बकायवतरित
 Fordable सुगम
 Forecast पूर्वानुमान
 Forecast of weather जलु-संघर्षी भविष्यकथन
 Forcups दक तरहकी चिमटी, गर्भसंकु, संरक्षक
 Foregoing पूर्ववर्ती
 Foregone conclusion पूर्वानुमित निष्कर्ष
 Foreign bill विदेशी हुंदी
 Foreign exchange वैदेशिक विनिमय
 Foreign minister विदेशमंत्री, परराष्ट्रमंत्री
 Foreman श्रमप्रमुख, श्रमनायक
 Forest department वन-विभाग
 Forest-ranger वनरक्षक
 Forest Research Institute वन-अनुसंधानसंस्थान
 Forestry वनविद्या
 Foreword प्राक्कथन
 *Forfeit अपवर्तन करना, राजसात् करना, जप्प करना,
 हरण करना
 Forfeiture अपवर्तन, हरण, जप्प
 Forged जाली, कूट;—document कूट लेख
 Forgery जालसाजी
 Form प्रपत्र; आकारपत्र, रूपपत्र; रूप; करमा
 Formal औपचारिक, दधानियम
 Formality औपचारिकता
 Formally औपचारिक रूपसे, उपचारानु, नियमनः
 Formula सूत्र

Formulated सूत्रित, संनिधक
 For public purposes लोक-प्रयोजनार्थ
 For the time being तत्काल, किञ्चकाल, संप्रतिस्तःप्रतिक
 Forwarded अग्रोदेषित, अग्रसारित
 Forward delivery अग्रप्रदान
 Forward exchange अग्रविनिमय
 Forward market बादा, बाटिका बाजार
 Forward price अग्रमूल्य
 Fossil (भूमियत) जीवाश्मशेष, पुरावशेष
 Fossilised प्रन्तरीभूत
 Foundation laying शिक्कान्यास
 Founder प्रतिष्ठाना, प्रवर्तक, संस्थापक
 Foundry उद्योग
 Four dimensions चतुर्विधगुण
 Fours चौदे, चौके
 Foxhole रणक्षेत्रमें एकको सैनिक किलेबंदी
 Fracas संशोधन, कोलाहल, विवाद
 Fraction भिन्न, प्रमाण, कषु अंश; फूट
 Fracture अस्थिवर्ध; विभंग
 Fragment अपखंड
 Fragmentation of holdings क्षेत्रापखंडन
 Frame ढाँचा; चौखटा; देहवहि, शरीर
 Frame a charge, To अपराध लगाना
 Franchise मतधिकार
 Franchise, functional वृत्तिमूलक (वा व्यावसायिक)
 मतधिकार
 Fraternity बंधुत्व, प्राणभाव
 Fraud धोखा, छल
 Fraudulent कपटी, प्रतापक
 Free competition अव्यव प्रतियोगिता
 Freedom of action कार्य-स्वातंत्र्य
 Freedom of choice चरण-स्वातंत्र्य
 Freedom of press मुद्रण-स्वातंत्र्य
 Freedom of speech भाषण-स्वातंत्र्य
 Freedom of worship उपासना-स्वातंत्र्य
 Free gift निर्यन्त्र देन, स्वेच्छा दान
 Free-hold उन्मुक्त भूम्यधिकार
 Freelance journalist स्वतंत्र पत्रकार
 Free of charge निःशुल्क
 Free passage निःशुल्क यात्रा
 Free port उन्मुक्त पोताश्रय
 Free-thinker स्वतंत्र मनीषी
 Free trade अबाध व्यापार, मुक्त वाणिज्य
 Freeze जल-पायनेका सुगन्धान बंद करना, रिकथवर्धन
 Freezing जर्दीकरण, स्तंभन
 Freezing point हिवांक
 Freights बस्तु-यात्रा
 Frequency बारंबारता, विशेष ध्वनिकहरी, ध्वनि-घनत्व
 Fresco सित्पिचित्र, स्वरचित्र (स्तर = एकस्तर)
 Friction संघर्ष; घर्षण

Front मोर्चा
 Front benches सरकारी बेंचे (पंक्तिवा)
 Front line अग्रिम पंक्ति
 Frontier सीमांत
 Frozen assets जशीकूल परिमंथन
 Fructose फलशर्करा
 Fruit preservation फल परिरक्षण
 Fruit sugar फलशर्करा
 Fugitive लपेटा, पलायक
 Pull bench पूर्ण न्यायपीठ
 Fully paid shares पूर्णदात अंश
 Fumigation धुंधीकरण, धुआँनाश, धुवन
 Function कृत्य, कार्य; उत्सव, समारोह
 Function, administrative प्रशासनीय कृत्य
 Functional representation व्यावसायिक प्रतिनिधि-
 धिप, वृत्तिमूलक प्रतिनिधित्व
 Functionary पदाधिकारी
 Fund निधि, कोष, मरमाकोष
 Fund, Depreciation मूल्यह्रास-कोष, विमर्श कोष
 Fund, Sinking कणपरिशोध-कोष, कणशीघ्रन-कोष
 Fundamental आधारभूत; मौलिक, तार्किक
 Fundamental rights मूल अधिकार
 Fungus छत्रक, कवक, कफंड
 Furnished उपसकृत
 Furniture उपस्कर; परिवर्त (गुराना शब्द)
 Fuse (पतले तारका) दहन, दहनवर्ति
 Fusion विलय, विलयन; सांयुज्य
 Future market भविष्य बाजार

(२)

Gage मूल्य बंध कराना, बोलने न देना, मूल्यगोचन, मूला-
 बोधन
 Gallery दीर्घा
 Gallery Assembly सभा दीर्घा
 Gallery, Council परिषद्-दीर्घा
 Gallery, Distinguished visitors' विशिष्टदर्शक-
 दीर्घा
 Gallery, Ladies' महिला-दीर्घा
 Gallery, Press पत्रकार-दीर्घा
 Gallery, Speaker's अध्यक्ष-दीर्घा
 Gallup survey विशिष्टजननी मतसंग्रह
 Gang समूह, दल, (काम करनेवालों, ठाकुओं आदिका)
 Gamut सप्तक, स्वरमाला
 Garbage गरोक, बान्धाला, गरोखाना
 Garrison सुरैरक्षक सेना, सुरै-निवेश
 Gauge माप; रेखीकी यंत्रियोंकी बीचका अंतर; मापना
 Gazette राजपत्र
 Gazetted राजपत्रित
 Gear दंतिचक्र, दौता, गीयर; उपयोज्य
 Gemini मिथुन

Genealogy वंशावली
 General व्यापक; सामान्य, सार्विक
 General good लोकहित
 General Headquarters प्रधान सैनिक केंद्र
 Generalisation साधारणीकरण, व्यापक परिणाम
 (निष्पत्ति) निकालना
 Generation उत्पादन; पीढ़ी
 Generator उत्पादन-यंत्र (गैस आदिका)
 Genius प्रतिभा; प्रतिभाशाली व्यक्ति
 Genocide प्रजातिसंहार
 Gentlemen's agreement अनैमानुसंगिक समझौता
 Gentlemen of the jury सम्मरण
 Genuine वास्तविक, अकृत्रिम, विशुद्ध
 Geologist भूगर्भ-विशेषज्ञ
 Geology भूगर्भविज्ञान
 Geographical भौगोलिक
 Geometrical ज्यामितीय, रेखागणित-संबंधी
 Geometry ज्यामिति, रेखा-गणित (भूमिति)
 Germ कोश
 Germination अंकुरण
 Glacier हिमानी, हिमनद, हिमप्रवाह
 Gilt edged securities उत्तम (प्रथम श्रेणीकी) साक्षपत्र
 Gist सारभाग
 Gist सारभाग
 Gland ग्रंथि, गिल्ली
 Glandular ग्रंथिमय
 Glass ware काच-बाद्य, काँचके सामान
 Gilder इंजनहीन विमान
 Globular गोलाकार
 Glucose द्राक्षशर्करा (fructose फलशर्करा, cane
 sugar (इंध-शर्करा)
 Glycerine गlycerin
 Gnat-keeper गोकरी, प्रवेशरीक्षक
 Gnat-father धर्मपिता
 Goadown मांढगार, गोदाम
 Gang concern उन्नतिशील संस्था
 Gold currency सुवर्ण चलाना
 Gold reserve सुवर्ण-कोष
 Gold standard सुवर्णमान
 Good conductor सुचालक, अच्छा परिचालक, सु-
 संचालक
 Good faith सद्भाव
 Goods वस्तु, सामान, माल,—office मालपर, माल-
 गोदाम।
 Goods, Consumer's उपभोग्य वस्तुएं
 Goods, Contraband विनिषिद्ध वस्तुएं
 Goodwill सद्भाव; मुनाफा, ख्याति
 Gorge घाटीमार्ग
 Governed by के द्वारा शासित, या नियमित
 Government सरकार, शासन
 Government house राजमन

Governor राज्यपाल, प्रांतपति
 Gradation क्रमस्थापन; कोटिबंध
 Grade of pay वेतनक्रम, वेतन-स्तर
 Grading of eggs अंडोंका क्रमस्थान
 Graduate स्नातक; v. विद्वान्निर्णय करना, मापांकित करना
 Graduated मानुक्रमिक, विद्वान्निर्णय, मापांकित, अन्वयित
 Grammar व्याकरण
 Grant अनुदान
 Grantee माफीदार
 Grant-in-aid सहायक अनुदान
 Graph paper बिन्दुस्थापन, लेखापत्र, कर्मांकित पत्र
 Gratification अनुतोषण
 Gratuitous निर्युक्त; स्वेच्छा-प्रदत्त; निष्कारण
 Gratuity सेवापहार, अनुग्रहपत्र
 Gravitation, Law of गुरुत्वाकर्षण
 Greater India बृहत्तर भारत
 Grievous hurt दायन्य क्षायाप
 Grounded आधारित; जो किलारेपर चढ़ गया हो; भू-जलपरित; जो उड़नेसे रोक दिया गया हो (विमान)
 Group leader टोली नेता
 Grouping of states रियासतोंका समूहीकरण
 Gross assets सकल परिसंपत्ति
 Gross income सकल आय
 Gross revenue सकल आयन
 Gross value सकल मूल्य
 Guarantee प्रत्याभूति, प्रतिभूति
 Guardian अधिभारक, अनिरक्षक
 Guerilla warfare छापामार लड़ाई
 Guest-house अतिथिगृह, अतिथि-भवन, अनिविजाला
 Guidance पथ-प्रदर्शन
 Guide पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक
 Guild शिल्पसंघ, श्रमिक-निकाय
 Guild socialism निकाय-समाजवाद, श्रेणी समाजवाद
 Guillotine शिरच्छेदक; मुकुबंध
 G. a motion प्रस्ताव-विवाद-निर्बन्धन, मुकाम-प्रयोग
 Guilty, To plead अपराध-स्वीकृतिका प्रतिपादन
 Gun, Anti-air-craft विमानव्यंसक (विमानवेधी) तोप
 Gun, Automatic स्वचालित तोप
 Gun, Long range दूरप्रहार तोप, लंबीमार तोप, दूरमार तोप
 Gun, Machine मशीनगन, चकतोप, बंधचालित तोप
 Gunpowder बारूद
 Gunshot छरी
 Gunner तोपधी
 Gunnery तोपविद्या
 Gutter गंदी नाली
 Gynarchy स्त्री-राज्य, स्त्रीसत्त्व
 Gyroplane विरहीदार विमान

H

Habeas corpus व्यक्ति-स्वातंत्र्य, गंदी-प्रत्यक्षीकरण
 Habitual drunkard अन्वस्त मत्तप
 Habitual offender अन्वस्त अपराधी, पक्का अपराधी
 Haemorrhage रक्तस्राव
 Hail ओला, उपक
 Hall-mark प्रमाणचिह्न
 Hallucination दृष्टिभ्रम, चित्रम, दृष्टि-बंध
 Halo प्रमाणचिह्न, परिदेश
 Hand bill हस्त-वितरणीय विज्ञापन, हस्त-विज्ञापनक
 Hand cuffed निगड़हल
 Hand-grenade हथगोलक
 Handicraft हस्तशिल्प, हस्तकारी
 Handloom industry करवा उद्योग
 Handmaid कटपुतली
 Handnote हस्तांकित कगपत्र
 Hand-out हस्तपत्रक, हलप्रापन
 Hand-to-hand fight हस्ताहस्तिका, संमुखयुद्ध
 Handwriting expert हस्तलिपि विशेषज्ञ
 Hangar विमानगृह, विमानघर, विमानशाला
 Harbour पोतालय, बंदरगाह
 Hard currency area दुर्लभ-मुद्रा-क्षेत्र
 Hardware लौहमाण्ड
 Have and have-nots अस्तित्वमय तथा नास्तित्वमय
 सस्व तथा निःस्व, सधन-अधन
 Hawker आग्राह्य, फेरीवाला
 Hazardous भ्रष्टारपद, संकटावह
 Head शीर्ष, मद; प्रधान, अध्यक्ष
 Heading शीर्ष
 Headman मुखिया
 Head of the department विभाग-अध्यक्ष
 Head office प्रधान कार्यालय
 Head quarters मंदर मुकाम, मुख्यालय, प्रधान निवास, मुख्यावास
 Hear, hear साथ, साथ; क्या बूँ ! क्या कहना है !
 Hearing सुनवाई
 Hearsay अनानुभूत, गुनोसुनारी
 Heatwave तापतरंग
 Heater तापक
 Heaven आकाश; स्वर्ग; सुखप्रदस्थान; ईश्वर
 Heinous शरित
 H. offence शरित अपराध
 Heir उत्तराधिकारी
 Heir apparent सुवराज, प्रत्यक्ष या निधिक उत्तराधिकारी, निकटतम उत्तराधिकारी
 Expectancy प्रत्याशित उत्तराधिकारी
 H. presumptive सम्भावित उत्तराधिकारी
 Hemp हन
 Herald अवधूत
 Herbaceous शाकीय (हर्बेस)

Hereditary वंशगत, आनुवंशिक
 Heredity वंशपरंपरा, आनुवंशिकता
 Heresy वैषम्य, धर्मद्रोह, ईश्वरनिन्दा
 Her Excellency सुसम्पत्ति, महामहिमान्वती
 Heritage पैतृक संपत्ति, दाग (वासी)
 - , cultural सांस्कृतिक उत्तराधिकार
 Hero-worship वीर-पूजा
 Heterogeneous विजातीय, मिश्र जातीय, विषमांग
 Hierarchy पुरोहिततंत्र, पुरोहित राज्य; सामुद्रम
 संज्ञान; अनुक्रम; आनुक्रम्य
 High command हाईकमान, उच्चाधिकारी
 High commissioner हाईकमिशनर, उच्चायुक्त (कारमारी)
 High court उच्च न्यायालय
 High-way राजमार्ग, राजपथ
 Hindu law हिन्दुधर्म, हिन्दु विधि
 His Excellency महामहिम
 His Majesty महामान्य
 History-sheet इतिवृत्त-पत्रक, दुर्घट कथक
 History-sheeter घृष्टांपराधी
 Hoarding अनुचित समग्र, अपसमग्र, अवसंचय
 • Hoarding and Profiteering Act अवसंचय तथा
 अपमान विरोधी अधिनियम
 Hold good काम देना, लागू होना; कार्यक्षम होना
 Holding कृषिस्वामित्व; क्षेत्र, जेत
 Holding, uneconomic अलाभकर जेत
 Homage अर्पण
 Home guard गृहरक्षक; रक्षार्क
 Home minister गृहमंत्री
 Home-sick स्वगृहस्मारी
 Homicide मानवहत्या, नरहत्या
 H. by misadventure दुर्दैवात् नरहत्या
 Homicide, Culpable अपराध नरहत्या
 H., justifiable न्याय्य नरहत्या
 H., mania नरहलोन्माद
 Homogeneity एकजातीयता, सजातीयता
 Homogeneous एकजातीय, एकरूप, समांग
 Homologous एकानुरूप, सजातीय
 Honey-moon मानन्दमास, प्रेमोदकास
 Honorarium मानदेय
 Honorary अमेतनिक
 Honour Military सैनिक सम्मान
 Honour (a bill or draft) सकारना
 Honourable माननीय
 Honourable Minister माननीय मंत्री
 Hooliganism गुंडागिरी
 Horizon क्षितिज
 Horizontal क्षैतिज, अनुप्रस्थ, दिगंगसम, सपाट
 Horse power अश्वशक्ति
 Horticultural scheme औद्यानिक योजना
 Horticulture उद्यानकर्म

Host मेजबान, आतिथेय
 Hostage सशरीर-प्रतिभू, व्यक्ति-प्रतिभू, ओठ
 Hostility दुर्दृष्टि; अशुभा, द्वेषभाव
 House सदन, मकान
 H., Lower निम्न सदन, अवरागार, प्रथम सदन
 H., Upper उच्च सदन; वरागार, द्वितीय सदन
 H. of commons कामन सभा, मिटिंग लोक-सभा
 H. of lords सरदार सभा
 H. of People लोक-सभा
 H. of representatives प्रतिनिधिसभा (अमेरिका)
 House-tax गृह-कर
 House-trespass मकानमें अनधिकृत प्रवेश, भवनापचरण
 Humanism मानववाद
 Humanitarianism मानववादाद, मानवतावाद
 Humidity आर्द्रता
 Humour विनोद
 Hunger-strike भूख हड़ताल
 Husbandry कृषिकर्म
 Hydraulic ऊदिक
 Hydro; dynamics नदीप्रवाह-विज्ञान
 Hydro-electric जलविद्युतीय
 Hydro electric power जलविद्युच्छक्ति
 Hydro-electricity जलविद्युत्, पनविजली
 Hydrogen उद्‌जन, जलजन
 Hydropathy जलचिकित्सा
 Hydrophobia जलार्तक
 Hygiene स्वास्थ्यविज्ञान
 Hygrometer आर्द्रतामापी
 Hygrometry आर्द्रतामिति
 Hyphen समामरेखा, समामन्त्रिह
 Hypnotism संमोहन विद्या
 Hypnotism कर्ण
 Hypothesis उपकल्पना, परिकल्पना
 Hypothetic उपकल्पित, परिकल्पित
 Hysteria बातोन्माद

I

Iceburg हिमश्रेक
 Ideal आदर्श
 Idealism आदर्शवाद; वेदान्त
 Idealist आदर्शवादी
 Identical motion समरूप प्रकाश
 Identification अभिज्ञान, पहिचान
 Identity ऐकात्म्य; समानिका; परिचय
 I. card परिचयपत्रक, अभिज्ञान-पत्रक
 Ideology विचारधारा
 Ideological सैद्धांतिक, विचारधारा-संबंधी
 Ill advised कुमंजित, अपमंजित
 Illegal अवैध
 Illegal practice अवैधप्रकरण

Illegitimate अवैध; विधिविरुद्ध; बारब
 Illicit अवैधता; अवैधप्राप्त, अननुमत
 Illusion भ्रंति, भावा; इंद्रजाल
 Illusory भ्रंतिजनक, भावामय
 Illustrative निदर्श
 I. election निदर्शों निर्वाचन
 Imaginary काल्पनिक
 Imaginative कल्पनात्मक
 Immersion प्रवाह; भ्रमण; डुबोना, निमग्न
 Immigrant आगमारी
 I. labour आगमारी श्रमिक
 Immature अपरिपक्व
 Immigration आगमन (आवागमन)
 Imminent अत्यंत
 Immoral अनैतिक
 Immovable property अचल संपत्ति, स्थावर संपत्ति
 Immunity उन्मुक्ति
 Impact संघात
 Impartiality निष्पक्षता
 Impeach प्राथिदोष करना
 Impeachment महाभियोग, प्राथिदोष
 Imperative Mood आज्ञार्थनियम
 Imperial साम्राज्य-संबंधी; शाही, राजकीय
 I. preference साम्राज्यगत अधिमान्यता
 Imperialism साम्राज्यवाद
 Impersonation छद्मव्यक्तित्व
 Implement n. उपकरण
 Implement v. अतिपूति करना, अमल करना; कया-
 न्वित करना
 Implicate आशित करना, फँसाना
 Implication निहितार्थ
 Implied ध्वनित, लक्षित, गमिन
 Import आयात
 Import duty आयातशुल्क
 Importer आयातकर्ता, आयातक
 Impose आरोपित करना, लगाना; छापने समय टाहपके
 पृष्ठोंका सिरुसिका ठीक करना; n. पृष्ठकम
 I. restriction निर्वंध लगाना
 Imposition आरोपण
 Impost कर
 Impounding रोधन (रोक रचना, बाँध रचना)
 Impregnated गर्भित
 Impregnation गर्भाधान
 Imprest अधिम देय; अग्रपथन
 I. account वैज्ञानिक हिसाब
 Imprison कारावास देना
 Imprisonment कारावास, कारारोध
 Improved सुशुद्ध
 Improvement trust सुधार-धन्यास
 Impulse अंतःप्रेरण, प्रेरण, आवेग

Impute अय्यारोपित करना
 Imputation अय्यारोप; अय्यारोप
 Imputed value अय्यारोपित मूल्य
 In abeyance अस्थगित, निर्धनित स्थितिमें
 In accordance with law विधिक अनुसार
 Inadmissible अग्रह
 Inadvertence असावधानता, अनवधानता, प्रमाद
 Inalienable अहस्तांतरकरणीय; अस्वेच्छम्य
 Inalienability of sovereignty प्रभुमताकी
 अहस्तांतरकरणीयता
 In anticipation प्रत्याशामें
 Inappropriate अनुपयुक्त
 Inauguration उद्घाटन
 In-camera गुप्त
 Incapacity असमर्थता
 Incarceration कारारोधन, कारावास
 Incarnation अवतार
 Incendiary bomb दाहक प्रस्फोट
 Incentive वि० उत्प्रेरक; पु० उत्प्रेरण
 In-charge प्रबारी, कार्यवाहक
 Incidence of taxation करानुपात
 Incident प्रसंग
 Incidental प्रासंगिक, आनुषंगिक
 In-circle अनवृत्त; अंतर्गत वृत्त
 Incision कर्चन, कटन
 Incite उत्प्रेरित करना
 Inclement weather औषी-पानी आदि, प्रतिकूल
 मौसम
 Inclusion बुझाव, जनि
 Inclusion अंतर्भाव
 Inclusive विरुद्ध
 Income, National राष्ट्रीय आय
 Income-tax आयकर
 Income-tax officer आयकर अधिकारी
 Income, unearned अर्जित आय
 Incompatible अनुरूप, संगतिविरुद्ध
 Incompetency अवीक्ष्यता, अक्षमता
 Incongruous असंबद्ध, विस्मृत
 Inconsistency असंगति
 Inconsistent असंगत
 Incontrovertible अस्संदेह्य, निर्विवाद
 Inconvertible अपरिवर्त्य
 Incorporate (v.) मिलावना, मिलायित करना
 Incorporated (adj.) समाविष्ट, मिलायित; अंतर्भाषित
 Incorporation company मिलायित प्रमंडल
 Incorporation निगमन
 Increment वृद्धि
 Incumbent निर्भर
 I. of an office पदबारी
 Incumbrance कणजाल

Incurable अक्षय्य, अप्रकृतिरूप	Industrial औद्योगिक
Incurred उपगत, प्राप्त, उठाया, लक्ष	Industrial Chemist औद्योगिक रसायनज्ञ
Indebted ऋणी	Industrial Court औद्योगिक न्यायालय
Indebtedness ऋणप्रसङ्ग	Industrial data औद्योगिक तथ्य
Indemnification क्षतिपूर्णा	Industrial depression औद्योगिक मंदी
Indemnity क्षतिपूर्ति कराना	Industrial dispute औद्योगिक विवाद
Indemnity क्षतिपूर्ति—bond क्षतिपूर्क प्रतिज्ञापत्र	Industrial efficiency औद्योगिक दक्षता
Indemnity bill क्षतिपूर्ति विपत्र	Industrial expansion औद्योगिक प्रसार
Indent (n.) वस्तु-प्रेषणादेश, माँगपत्र; पार्श्व-वृद्धि, पार्श्वप्रसारण	I. housing औद्योगिक वास्तव्यवस्था
Indent (v.) वस्तु मैगना	I. Trade औद्योगिक जालिसमझौता
Indenture प्रतिज्ञापत्र	Industrialisation औद्योगिकीकरण
Indentured labour प्रतिज्ञाबद्ध श्रमिक, अनुबद्ध श्रमिक	Industrialist उद्योगपति
Independent स्वतंत्र, अदलाय	Industry, Key आधारोद्योग, प्रमुख उद्योग
Indeterminate अनिर्धारित	Inefficiency अक्षमता
„ sentence अनिर्धारित डंड	Ineligible अपात्र, श्रेष्ठ, अवश्यीय
Index card निर्देशक पत्र	Ineligibility अक्षमता
Index finger प्रदेशिनी, तर्जनी, देशिनी	Inequality असमानता
Indexing सूचीबद्ध करना	Inequitable न्याय-विरुद्ध
Index number सूच्य सूचकांक	Inequity विषमता
Index of production उत्पादन-सूचकांक, उत्पादन-निर्देशनांक	Inevitable अपरिहार्य
India Act, Govt. of भारत-शासनविधान	Inevitable payments अपरिहार्य भुगतान
India office भारत-संज्ञो-कार्यालय	Inexpedient असमयोचित, अनुपयुक्त
Indian administrative service भारतीय प्रशासन सेवा, भारतीय प्रशासन-विभाग	Infant mortality शिशु-मरण
Indian Arms Act भारतीय शस्त्रविधान	Infanticide शिशु-हत्या
Indian Council of Agricultural Research भारतीय कृषि-अनुसंधान-परिषद	Infantile paralysis शिशु-पक्षाघात
Indian Penal Code भारतीय दंडविधान	Infantry पैदल सेना, पदाति
Indian Police Service भारतीय आरक्षी सेवा, भारतीय पुलिस विभाग	Infection संक्रमण
Indians overseas प्रवासी भारतीय	Infectious संक्रामक
Indianization भारतीयकरण	Inference निष्कर्ष, अन्वयहार, अनुमिति
Indict आरोप करना	Inferior Court निम्न न्यायालय
Indigenous देशी; देशज	Inferior servant निम्न कर्मचारी, अवर सेवक
Indirect tax अप्रत्यक्ष कर	Inferiority complex हीन मनोभाव, लघुमन्यता
Indirect election परोक्ष निर्वाचन	Infinite अनंत; असीम
Indiscriminate अविवेकी; विभेदहीन, अपायु	Infirmity हृष्टालय, अस्वताक
Indispensable अपरिहार्य	Infirmity निर्बलता, कमजोरी
Indisputable निर्विवाद	Inflammable ज्वलनशील
Individualism व्यक्तिवाद	Inflammatory उत्तेजक
Individualist व्यक्तिवादी, व्यक्तिवादी	Inflation मुद्रास्फीति, मुद्राविस्तार
Individuality व्यक्तित्व, विशिष्टत्व	Inflationary trend मुद्रास्फीतिकारी प्रवृत्ति, मुद्रावर्धन-प्रवृत्ति
Indivisible अविभाज्य	Inflexible अनाम्य
Indoor patient प्रविष्ट रोगी, अंतर्वासी रोगी	Inflexible constitution अनाम्य संविधान
Indorsement (See Endorsement) मक्काजना	Influence, undue अत्युक्त प्रभाव
Induction अनुगम; वृत्तपादन (विद्युत्का)	Influx अंतरागम, वृद्धि
Inductive system अनुगमन प्रणाली	Informal behaviour अनौपचारिक व्यवहार
In due course यथासमय	Informal meeting अन्वयाविधि भेंट; अनौपचारिक बैठक
	Informant सूचक
	Information सूचना; जानकारी
	Information department सूचना विभाग

Information minister सूचना-मंत्री

Information, On point of सूचनाएं

Informer सूचिवा

Infringe उल्लंघन करना

Infringement उल्लंघन, व्यापार

Ingenious पटु, चतुर; पटुतापूर्ण

Ingenuity पटुता, चतुर्य

Ingot सिक्का

Ingredient संघटक, संघोमांग

Ingross आना, प्रवेश

Inhabitant निवासी

Inherent सहाज, जन्मजात; अंतर्निहित

Inherent disease पैदादरोग, कन्मात्र व्याधि

Inherent power अंतर्निहित शक्ति

Inherent right जन्मज अधिकार

Inherit दाख पाना

Inheritance दाख, रिक्क

Inheritance, Law of दाखविधि

Inheritance, Right of दाखाधिकार

Inheritance tax दाखकर, रिक्ककर

In his discretion स्वविवेकसे

Inhuman अमानुषिक

Initialled आकहणित

Initial pay आरंभिक वेतन

Initials संक्षिप्त हस्ताक्षर, नामके आक्षर

Initiate सुरुपात या प्रारंभ करना, उपक्रमण करना

Initiative पटु, प्रेरणा; अविमर्कन, पटुककारी

Initiative and memorandum उपक्रम और जननिर्देश

Injection सुचिबोधन, सूई देना; सूई ('डेना'के माथ);

देखनीपचार; सूचीपिकिता

Injunction निरोधवा

Injunction, Writ of निरोधवा, समादेश

Inkling संकेत, सुझाव

Inland अंतर्देशीय

Inland revenue अंतर्देशीय आय

Inland trade अंतर्देशीय व्यापार

Inland waterways अंतर्देशीय जलपथ

Innermost अंतरतम

Innings पाकी

Innocent निर्दोष, निरपराध, निदोष

Innocuous अनपकारी, अहानिकर

Innovation अभिनव परिवर्तन

Innuendo अर्थव्यक्ति, व्यंग्यव्यक्ति, पर्मासोक्ति

Inoculation टीका लगाना

In open court खुली अदालतमें

Inoperative अपटु, अपवर्ती

Inopportune असाधयिक

In order नियम-संगत; नियमानुसार; यथाक्रम

Inordinate delay असाधयिक विराम

In person स्वयं

In partial modification आंशिक संशोधन करते हुए

In query प्रश्नवाचक विद्युत

Inquest अकाउन्ट-बुस्तु-विचारणा

Inquiry जांच, परिमर्शन, परिशुद्धता

Inquisition न्यायाधिक अन्वेषण

Inscribed अंतर्लिखित, अंतरहित

Inscription अंतर्लेखन, अंतरंकन

Insecticide कीटनाशक; कीटनाशन

Insemination गर्भ-रोपण

Insert सक्तिविष्ट करना

Insertion प्रकाशन; सक्तिवेश

Insomnia राजांक, राजविह्व; परसूचक चिह्न

Insoluble अविलेय

Insolvency दिवालियापन, अवसन्नता

Insolvent दिवालिया, डोनाशक

Insomnia उच्छिद्रोस

Inspection निरीक्षण

Inspector निरीक्षक

Inspector-General of Police पुलिसका महा

निरीक्षक, भारक्षी महानिरीक्षक

Inspectorate निरीक्षक-कार्यलय, निरीक्षकालय

Inspiration दैवी-प्रेरणा, अंतःप्रेरणा

Inspired अंतःप्रेरित, उत्प्रेरित

Installation प्रतिष्ठापन, प्रतिष्ठापन

Instalment प्रदान, किस्त, संशिका, किम्वद

Instinct सहाज प्रवृत्ति, अंतर्गत प्रेरणा

Instinctive साहजिक

Institute कानूनसंघिद; प्रतिष्ठान; १ दाखर करना, बैठाना

Institution संस्था; प्रथा

Instruction अनुदेश, (निर्देश) शिक्षा

Instrument बिलेख; किस्मन; करण, करण, करणपत्र

Instrumental (music) बाधसंगीत

Instrument of Accession सम्मिलन-बिलेख

" of divorce विवाहविच्छेद-करणपत्र

Instrument of instructions निर्देशका बिलेख

Insubordination अविनय, आज्ञा-मंग

Insular संकुचित, संकीर्णदृष्ट; द्वीपिक (-जलवायु)

Insulation विसंवाहक, अवरोधन

Insulator विसंवाहक, अवरोधी

In supercession of अकारण या दह करते हुए

Insurance बीमा

Insurance, Fire अग्न-बीमा

Insurance, Life जीवन-बीमा

Insurance policy बीमा-पत्रक

Insurgency प्रजाहीन

Insurrection उपक्रम

Infact अविश्वस, अनुमान, अशुद्ध

Integration एकीकरण

Integrity अश्वकता; ईमानदारी; व्यावसायिकता

Intellectualism बुद्धिवाद

Intelligence बुद्धि

Intelligence department बुद्धि विभाग

Intelligence test बुद्धि परीक्षा

Intelligentia बुद्धिशीली बर्ग

Intensive cultivation जमा कृषिकार्य, जमी मेजो

Intercede मध्यस्थ बनना, विचरई करना

Intercept बीचमें रोक लेना

Inter-dependant अन्योन्याश्रित

Interest व्याज

Interest compound सुदृढसुद, चक्रवृद्धि व्याज

Interest, vested निश्चित स्वाध

Interim अंतरिम, मध्यवर्ग

Interior, Minister of the गृहमन्त्री, स्वदेशमन्त्री

Intermediary उभय-मध्यस्थ, पत्र-व्यापी

Intern अंतर्वासित करना, स्थानबद्ध करना, नजरबंद करना

Internal आंतरिक

Internal affair घरेलू विषय

Internal disorder आंतरिक अशांति

Internal regulation आंतरिक विनियम

International अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

International conference अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

International, first माघमें द्वारा स्थापित प्रथम अंतरराष्ट्रीय समाजवादी संस्था

International, second प्रथम अंतरराष्ट्रीयके विघटनके बाद स्थापित समाजवादियोंके दूसरी अंतरराष्ट्रीय संस्था

International, third कम्युनिस्टोंकी अंतरराष्ट्रीय संस्था

Internationale कम्युनिस्टोंका अंतरराष्ट्रीय गीत

Interneccine war परस्पर सहायक युद्ध

Internee नजरबंद; अंतर्वासित

Internment नजरबंदी, अंतर्वासित, देशीय निरोध, स्थानांतरण

Interpellation प्रश्नोत्तर

Interpuso अंतस्स्थापन, बीचमें रखना

Interpret व्याख्या करना, अर्थ करना

Interpretation व्याख्या, निर्वाचन, अर्थोपपन्न; अर्थ

Interpreter बुद्धिवादी

Inter regnum राजसिंहासन तब तक हो

Interrex राजप्रतिनिधि

Interrogate प्रश्न करना

Interrogatory प्रश्नोत्तरक, प्रश्नपत्रक

Interview साक्षात्कार

Intestacy इच्छाप्रमाणहीनत्व

Intimation (निश्चित) सूचना

Intimidate धमकी देना, भयभीत करना

In toto पूर्णतया

Intoxication मादकता

Intransigent दुराग्रही

Intra wires अधिकारान्तर्गत

Intricate जटिल

Intrigue दुरमिर्षि

Intrinsic value आन्तरिक मूल्य, वास्तविक मूल्य

Introduce प्रस्तुत करना, पुरस्थापित करना; परिचय करना

Introduction, Letter of परिचय, पत्र

Intrusion अनाहुत प्रवेश

Intuition अंतर्ज्ञान, अंतर्बोध

In unequivocal terms अस्पष्टिग शब्दोंमें

Invald प्रमात्य; अयमर्थ

Invalidity pension अयमर्थता निवृत्ति वेतन

Inventory संपत्ति-पत्री, संपान पत्री

Inverse order (विलोमक्रम)

Inversion (विक्रमता; प्रतिलोमीकरण)

Invest पूँजी लगाना

Investigation जर्ख-पड़ताल

Investiture अभिषेक

Investment पूँजी लगाना; धनविनियोग

Ivory देशजनक

Irrigator निरोधक

Involute प्रचलित

Involute वीजक

Involve अंतर्ग्रसन

Involved अंतर्ग्रसन, अन्तर्गत

Ipso facto यथावर्णन; तथ्यतः

Iron-age लौहयुग

Iron curtain लौहपट, लौह-दीवार, लौह-आव

Iron ore कच्चा लौहा

Irony व्यंग्य

Irrecoverable अप्रत्यादेय

Indeemable अमोचनीय, अशोध्य

Irregular अनियमित

Irrelevant असंगत, अप्रासंगिक

Irrigation भूस्िचन, सिंचाई

Isolate एकाकीकरण, पृथक् करना

Isolationist policy पृथक्तावादी नीति

Issue समस्या; निर्गम; वादविषय; वादपद, विवादविषय

Issue department निर्गम-विभाग

Issue price निर्गम-मूल्य

Issues (n) वादहेतु

Illuminus स्थल-चमक मध्य

Item मद, विषय

Items on the agenda कार्यावलीका विषयक्रम

Itemwise विषयक्रममें

J

Jaggery गुड़

Jail कारागार

Jailor कारागारिक, कारावाज

Jammed अवरुद्ध (मार्ग); जकड़ गया (यंत्र, पुरजा)

Job कृष्य; नोकरी

Jobbers डेकेदार
Join कार्य श्रमण वा आरंभ करना
Joining time कार्य-प्रणाल्य
Joint संयुक्त
Joint account संयुक्त लेखा
Joint and several responsibility संयुक्त तथा पृथक् उत्तरदायित्व
Joint capital संयुक्त पूँजी
Joint electorate संयुक्त निर्वाचक वर्ग
Joint estate संयुक्त भूस्वत्ति
Joint family संयुक्त परिवार
Joint ownership संयुक्त स्वामित्व
Joint production संयुक्त उत्पादन
Joint secretary संयुक्त सचिव
Joint stock company संयुक्त समुत्पन्न, संयुक्त स्तंभ-प्रमंडल
Joint venture साझेदारी
Journal दैनिक पंजी; वृत्तपत्र
Journal entry पंजी-प्रविष्टि
[purchasers j. क्रयपंजी, खरीद-वही;
sales j. विक्रयपंजी, बिक्री-वही]
Journalism पत्रकारी, पत्रकारता; पत्रकारकला
Journalistic etiquette पत्रकारीका नैतिक आदर्श
Judge v. निर्णय करना
Judge n. न्यायाधिकारी, न्यायाधीश
Judge, additional अवर न्यायाधीश
Judge, Sessions सत्र न्यायाधीश
Judgement निर्णय, न्याय-निर्णय, (अदालतका) फैसला
Judicature न्यायाधिकरण, न्यायव्यवस्था
Judicial न्यायिक; —decision न्यायिक निर्णय;
—department न्याय-विभाग; —enquiry न्यायिक
जाँच; —notice न्यायिक अवगमन; न्यायालय द्वारा
किसी बातको स्वयं विचारमें लाना; —proceeding
न्यायालयकी कार्रवाई, अदालतकी कार्रवाई।
Judiciary न्यायपालिका; न्यायाधिकारी वर्ग
Judicious विवेकपूर्ण; न्यायसमन
Jurisdiction अधिकार-क्षेत्र; क्षेत्राधिकार
Jurisprudence न्यायशास्त्र; विधिशास्त्र
Jurist न्यायज्ञ
Jury न्याय-समूह; जुरी
Justice न्यायाधिपति; न्याय
Justice of peace शांतिके न्यायाधिकारी
Justiciable निर्णय, व्यवहार्य
Justifiable न्यायानुमोद्य, न्यायनः समर्थनीय
Juvenile delinquency किशोरीकी अपराधवृत्ति

K

Kaleidoscope बहुरूपदर्शक
Keeper of records अभिलेखपाक (उल्लेखपाक)
Kennel शान्तालय

Key industry आधारोद्योग, प्रमुख उद्योग
Kidnapping (बलापहरण); अपहरण
Kind, In उबज वा माकके रूपमें
Kindred (adj.) समीप, संबंध, नत्थमान; ग. रक्त-
संबंध
Kine house पट्टनिरोधशाला
Kinship रक्तसंबंध
Kit यात्राका सामान, सामानका झोला वा छोटा पुख्ता
Kleptomania चोरीभ्रम
Kulak शक्ति किसान

L

Lable नामपत्र
Labelled नामपरिचय
Labial जोष्ठ
Labio-dental इंसोष्ठ
Laboratory प्रयोगशाला
Labour श्रम, श्रमिक
Labour bureau श्रमान्वय, श्रमकायान्वय
Labour dispute श्रम विवाद
Labour federation श्रमिक संघान
Labour, organized संगठित श्रमिक
Labour party श्रमिकदल
Labour union श्रमिक-संघ, मजदूर संघ
Labour unrest श्रमिक अशांति
Labour, Unskilled अकुशल श्रमिक
Labour welfare centre श्रमहितकारी केंद्र
Labour welfare work श्रमिक-कल्याण-कार्य
Lactation Period दूध देनेकी अवधि
Lactometer दूधमापी
Lady-president समानेत्री
Ladies gallery महिला वीथ
Laissez-faire अहस्तक्षेप-नीति
Laminated wood परतदार लकड़ी
Lance Corporal उप-कारपोरल
Land acquisition act भूमि-अवधि-अधिनियम
Land alienation act भूमि-हस्तांतरण-अधिनियम
Landing ground अवतरण-भूमि
Landlord स्वामी
Landmark सीमाचिह्न
Land records भू-अभिलेख
Land revenue भू-राजस्व, माकयुजारी
Land route नल-मार्ग
Landed interest भूमिहित, भूमिगत स्वाध
Landed property भूस्वत्ति
Landscape नृपदृश्य
Land-survey भूपरिमाप
Lapse अत्यंत होना (कालातीत होना)
Large scale industry बड़े पैमानेको उद्योग
Large scale production बड़े पैमानेपर उत्पादन

Late भूतपूर्व; स्वर्गीय;—fee देरफीम—news छपते-छपतेका समाचार
 Latent अगपट, अगपट
 Latitude अक्षांश
 Latter अखरीक
 Launch (आरंभिकार्थ) आरंभ करना
 Launching a ship पोत-संस्तरण, पोतका उल्लापन
 Lavatory शौचालय, प्रक्षालनगृह
 Law विधि; नियम; निर्दण्ड
 —abiding विधिपालक
 —and order कानून और व्यवस्था
 —book विधि-पुस्तक
 —charges विधि-भय
 —International अंतरराष्ट्रीय विधि (या विधान)
 —of marginal utility सीमांत उपयोगिता नियम
 —of nature प्रकृतिका नियम
 Lawful विधिपूर्व, विधिवानुसार, (विध)
 Lawlessness अविध्या, अराजकता
 Law of evidence साक्ष्यविधि
 Lawn हलीचरा
 Lawyer विधिज्ञ, वकील
 Layman सामान्य जन, अविशेषज्ञ
 Lay-out अभिन्यास
 Lead अग्रज्ञ, अग्रभाग
 Leader नेता, अग्रणी; अग्रमेख
 Leader, Floor गृहाग्रणी
 Leader of the House सभाग्रणी, सभापति
 Leader of the opposition विरोधी दलका नेता, प्रतिपक्ष-नेता
 Leaderette सहायकीय टिप्पणी या छोटा अग्रमेख
 Leading article अग्रमेख
 Lead pencil सीम-अकनी, पेंसिल
 Leaflet पर्णक, पत्रा, चौपतिवा
 League of Nations राष्ट्रमंडल
 Leakage व्ययन; व्ययन-छुट, व्ययनमोक्ष, रक्ष्यका प्रकट हो जाना
 Leapyear (अधिक दिनयुक्त वर्ष) अधिवर्ष, लीडका साल
 Lease n. पट्टा
 Lease v. पट्टे पर देना
 Lease deed पट्टेका कायज, पट्ट-विलेख
 Lease, permanent दायमी पट्टा
 Lease, terminable समापनीय पट्टा
 Leave अवकाश, छुट्टी; अनुमति
 Leave, Maternity प्रसवावकाश, प्रसूति-छुट्टी, प्रसूत्यवकाश
 Leave of absence अनुपरिवर्तिका अनुमति
 Leave, privilege रियायती छुट्टी
 Leave preparatory to retirement निवृत्तिके पूर्वकी छुट्टी
 Leave, quarantine स्वध्वजन छुट्टी

Leave to withdraw a motion प्रस्ताव वापस लेनेकी अनुमति
 Lecturer विवेका, उपप्राध्यापक
 Ledger प्रबंधी
 creditors 1. उत्तमर्ण प्रबंधी
 purchases 1. क्रय-प्रबंधी
 sales 1. विक्रय-प्रबंधी
 suppliers 1. उत्तमर्ण प्रबंधी
 general 1. सामान्य प्रबंधी
 Ledger account प्रबंधी लेखा
 1. entry प्रबंधी-प्रविष्टि
 1. folio प्रबंधी-पृष्ठ
 Left hander बयेंदस्ता, वामहस्तिक; वामहस्ताक्षर
 Left side वाम पार्श्व
 Leftist वामपंथी; वामपंथी
 Leg before wicket पदबाधा, पदरोध
 Legacy शरीती; वस्तुपत्र; दायदान
 Legal वैध, विधि-विहित; विधिक
 Legal action वैध कार्रवाई, कानूनी कार्रवाई
 Legal defect वैधानिक छुट्टि
 Legal interest वैध हित
 Legal monopoly वैध एकाधिकार
 Legal procedure वैध प्रक्रिया
 Legal process वैध प्रणाली
 Legal remembrancer विधि-परामर्श, विधि-प्रज्ञापक
 Legal Secretary विधि-सचिव
 Legal tender विधियोग्य
 Legal tender money विधियोग्य मुद्रा
 Legate (विदेशस्थान) उपराज-प्रतिनिधि, उपराजदूत
 Legation उपदूतावास
 Legislation विधान
 Legislative विधायी
 Legislative Assembly विधान-सभा
 Legislative Council विधान-परिषद्
 Legislature विधान-मंडल
 Legitimate न्याय्य; वैध; युक्तियुक्त; यथार्थ; औरस
 Lender उधार देनेवाला, महाजन, साहूकार
 Lens लेंस, लाल
 Lental ममू
 Leo सिंह राशि
 Lepor asylum कुडालय
 Lessee पट्टेदार, पट्टारी
 Lesson पट्टा देनेवाला
 Lethal weapon घातक शस्त्र
 Letter box पत्रपेटिका
 Letter of administration प्रशासन-पत्र
 Letter of credit प्रत्यय-पत्र
 Letter of introduction परिचय-पत्र
 Letters patent पकस-पत्र
 Level of prices मूल्य-तल, मूल्य-स्तर

Leviabie आरोप्य

Levy आरोपण, उद्ग्रहण

Levy a tax कर लगाना, करारोपण

Lewis gun हकीदार बंदूक

Lexicon शब्दकोश, कोश

Liabilities देव, देव धन, कण

Liability देवता, दायित्व

Liasion officer प्रबन्धनाधिकारी, संपर्क पदाधिकारी

Libel अपमानलेख

Liberal Federation उदारदल सघ

Liberty, Civil नागरिक स्वाधीनता

Liberty of conscience विवेक-स्वातंत्र्य, अनन्तरणकी

स्वतंत्रता

Liberty of press मुद्रण-स्वातंत्र्य, प्रस-स्वातंत्र्य

Liberty of speech भाषण-स्वातंत्र्य

Libra तुला राशि

Librarian ग्रन्थालयिक, पुस्तकाध्यक्ष

Licence अनुज्ञापत्र, अनुमति

Licence fees अनुज्ञा-शुल्क

Licensed प्राप्तानुज्ञ, दत्तानुज्ञ

Licensee अनुज्ञापत्री, प्राप्तानुज्ञ

Licensor अनुज्ञाता

Lieutenant Governor उपराज्यपाल

Life belt जीवनरक्षक पेटी

Life boat जीवन-जोका

Lift उन्नयनक, उन्नयन-यंत्र, सोपानिका, लिफ्ट

Liftman सोपानिकाचालक, उन्नयनयंत्रचालक

Light प्रकाश

Light-house प्रकाशस्तंभ, कंदीलिया

Light literature रंजनकारी साहित्य

Lightning तड़ित्—(electricity विद्युत्)

Lightning arrester तड़ित्धारक

Lightning war क्षिप्रगति-युद्ध, विद्युत्-युद्ध

Limit सीमा

Limitation परिसीमा, परिसीमन; न्यूनता, वृद्धि

Limited coinage सीमित टकण

Limited company सीमित प्रमदक

Limited legal tender सीमित विधिघातक

Limited liability company सीमित-देय प्रमदक

Limited monarchy सीमित राजतंत्र

Limited option सीमित विकल्प

Limited partnership सीमित भागीपत्र

Line रेखा, वंक्ति

Liner निबधित यात्री-पोत

Linguist भाषाविद्

Linguistics तुलनात्मक भाषाविज्ञान

Liquidate परिसमापन करना

Liquidation of debt कण-परिसमापन

Liquidator परिसमापक; विघटनकर्ता

List of business कार्यसूची

List of prices मूल्य-सूची

Literacy campaign साक्षरता-आंदोलन

Lithographed प्रस्तर-मुद्रित, शिखामुद्रित

Litigant विवादी

Litigation मुकदमेबाजी

Livestock पशुधन

—farm पशुधनक्षेत्र

—inspector पशुनिरीक्षक

Living wage निर्वाहभुक्ति, (जीवनभुक्ति), निर्वाहिका

Load stone चुंबक प्रस्तर

Loan उधार, कण

Loan and advance कण एवं अग्रिम

Loan at short notice अल्पसूचना-द्वय कण

Loan, Public राश्य-कण

Loaves & fishes स्मरितान कान

Lobby नमाकक्ष, प्रकोष्ठ

Lobby talk प्रकोष्ठ-बात्ता, नमाकक्षीय बात

Local administration स्थानीय प्रशासन

Local authority स्थानीय प्राधिकारिण; स्थानी

प्राधिकार

Local board स्थानीय समिति

Local bodies स्थानीय सत्रधार

Local government स्थानीय शासन

Local self-government स्थानीय स्वशासन

Local staff स्थानीय कार्यचालिक

Local tax स्थानीय कर

Localisation स्थान-सीमन, स्थानीय-करण

Localisation of industries उद्योगोंका स्थान-भूमन

Localization of sovereignty प्रभुत्वका स्थान-

निर्धारण

Lockout दारनाल, तालाबंदी

Lock-up हवासान, अस्थायी बंदीगृह; रोधमार, बंदीखाना

Locomotive लल्लि

Loco workshop लोको कारखाना, इंजनघर

Locus निधि; किन्दुपथ

Locus standi ग्राम्य स्थिति

Locust दल्लि

Logic तर्कविज्ञान, न्यायशास्त्र; तर्क

Logical तर्कसंगन, तर्कप्रेरित

Logician नैयायिक, तर्कशास्त्री, नायिक

Longing उत्कट अभिलाषा, उत्कंठा

Longitude देशांतर

Longstanding complaint पुरानी शिकायत

Long term credit दीर्घकालि प्रत्यय, दीर्घकालिक स्वर

Loose leaf ledger अवहट्टक प्रपञ्जी

Loose tools अवहट्ट उपकरण

Loss हानि

Loss, gross सकल (संपूर्ण) हानि

Loss, Net वास्तविक (वा विमुक्त) हानि

Loss of weight भार-हानि

Loss sustained प्रलोभ हानि, उठावी या सही हुई हानि
 Loss, Total समस्त हानि
 Lost छुन, जो खो गया हो
 Lost bill छुन बिपत्र
 Lost cheque छुन धनादेश
 Lots भागवपत्रक, (भागवक)
 Lottery शङ्खदा, छाटरी
 Loud-speaker ध्वनि-विस्तारक, ध्वनिबोधक
 Lounge उपवेशिका
 Lower exchange निम्न विनिमय
 Lower house अवरागार, निम्न सदन, निम्न सदन,
 प्रथम सदन
 Lower house of legislature विधानमण्डलका अवरा-
 गार (निम्न सदन, प्रथम सदन)
 Loyalty राजभक्ति, निष्ठा
 Lubricants दिनचर्याकारी वस्तु, स्नेहक, चिकनाई, तेल
 Luggage office सामान घर
 Lubricating oil स्नेहक तेल
 Lucrative प्रलाभी
 Lubrication स्नेहन
 Lull स्तब्धता, शान्ति
 Lullaby लोरी
 Lump sum एक मुदत, एक राशि, एकतराशि
 Lunacy उन्माद
 Lunatic asylum विज्ञिनालय, पागलघर
 Luxury goods शिलाय-वस्तु
 Lymph ल्यम्फिक, लम्फिका
 Lyric गीत, गीतकाव्य
 Lyric poet गीतकार
 Lyrical गीतारमक

M

Machine यंत्र
 Machine gun मशीनगन, यंत्र-लीप, यंत्रचालित गोदा
 Machine-made यंत्र-निर्मित
 Machine-shop यंत्रशाला
 Machine tool यंत्रोपकरण
 Machinery यंत्रजात, यंत्रसमूह
 Machinist यांत्रिक
 Magazine छास्त्रागार, पत्रिका
 Magistrate दंडाधीश, दंडाधिकारी
 Magna charta महाधिकार-पत्र
 Magnetic चुंबकीय
 Magnitude परिमाण; मात्रा; विस्तार, विस्तार; महत्व
 Maiden speech प्रथम भाषण
 Maintained by the state राज्य द्वारा मपोषित
 Maintenance भरण-पोषण; रोटी-कपडा; संभरण
 —, cost of भरण-पोषणका व्यय; निर्बोध-व्यय
 Maintenance of law and order कानून और
 व्यवस्थाका संभरण

Maintenance, suit for रोटी-कपड़ेका दावा
 Major प्राप्तवयस्क, बालक
 Major charge मुख्य आरोप
 Majority बहुमत, प्राप्तवयस्कता
 —party बहुसंख्यक दल, संख्यागारिष्ठ दल
 Majority, Absolute पूर्ण बहुमत
 Make up बनाव-संगार; पूछ-सज्जा
 Malaria सचिरामज्वर, हिमज्वर, शीतज्वर, ज्वरी
 Maldistribution कुर्वटन, कुविनरण
 Malafide दुर्भावपूर्वक; दुर्भावपूर्ण
 Malleability कुट्टयता, कुट्टनीयता, धनवधनीयता
 Malnutrition कुपोषण, अपर्याप्त पोषण, न्यून पोषण
 Malpractice कटाचार
 Malpractitioner कटाचारी
 Mammal स्तनपायी
 Man-at-arms सैनिक
 Management charges प्रबंध-व्यय
 Manager, agents प्रबंध-अधिकारी
 Managing committee प्रबंध-समिति
 Managing director प्रबंध-संचालक
 Mandamus परमादेश
 Mandate ग्रामनादेश
 Mandated territory शासनादिष्ट प्रदेश
 Man-days श्रमिक दिन
 Manifestation अभिव्यक्ति
 Manifesto नीति-घोषणा, लोक-घोषणा
 Manipulation छलयोजन
 Manipulation of accounts लेखा-छलयोजन
 Manipulation of statistics सांख्यिकीय छलयोजन
 Mangeruvre मुकान्यास, संव्यव्यूहन; दुर्योजन, तिकड़म-
 बाजी
 Man-of-war दलसज्ज पोत
 Manor स्वामिभू, ग्रामीर
 Manpower जनशक्ति
 Manual हस्तपुस्तिका, गुटका; वि० हाथसे किया जाने-
 वाला, शारीरिक (श्रम)
 Manual art हस्तकला
 Manual labour हस्तश्रम
 Manual training हस्तकला-प्रशिक्षण
 Manufacture निर्माण
 Manufactured goods निमित्त वस्तुएँ
 Manuscript हस्तलिपि, पांडुलिपि
 March न. क्रमप्रवाण, प्रवाण
 March v. प्रवाण करना, कूच करना
 Margin पार्श्व, उपान, सीमाव, माथा
 Margin of profit लाभकी मात्रा
 Marginal मीमात
 Marginal cost मीमात परित्यग
 Marginal heading पार्श्व-शीर्षक
 Marginal note पार्श्व-टिप्पण

Marginal price सीमांत मूल्य
 Marginal profit सीमांत लाभ
 Marginal utility सीमांत उपयोगिता
 Marine सामुद्र, -hospital नाविक चिकित्सालय
 Maritime सामुद्रिक, -law सामुद्रिक विधि, नौविधि
 Mark चिह्न; अंक; चयन
 Marked चिह्नित
 Marked cheque चिह्नित भनादेश
 Marketable विपण्य
 Marketable goods विपण्य वस्तुएँ
 Marketing बटार-व्यवस्था
 Mars मंगल ग्रह
 Marshal बलाधिकृत
 Marshal, Field महातलाधिकृत
 Marshalling दफ्त कराना
 Martial सैनिक; युद्धप्रिय
 Martial law फौजी कानून, सैनिक विधि
 Martyr दुतात्मा, शहीद
 Masculine पुलिंग; हि० पुरुषोचित, पुरुषोंके बोध,
 पुरुषों जैसा
 Mask वर्णक, मकाव, मुखनरण, मुखच्छद
 Mass contact जनसंपर्क
 Mass migration सामूहिक प्रवाजन, सामूहिक
 स्थानांतर-यजन
 Mass production पुंजोत्पादन, समूहोत्पादन
 Mass treatment समूहोपचार
 Match जोड़; अनुकूल्य; समर, प्रतियोगिता
 Material n. सामग्री adj. भौतिक
 Maternal civilisation भौतिक सभ्यता
 Material goods भौतिक वस्तुएँ
 Material prosperity भौतिक वैभव
 Material resources भौतिक साधन
 Material well-being भौतिक कल्याण
 Materials, consumed उपभुक्त सामग्री
 Maternity home प्रसवशाला
 Maternity relief प्रवृत्ति-साहाय्य
 Maternity welfare centre मातृकल्याणगृह
 Maternity welfare work प्रवृत्ति-कल्याण-कार्य,
 मातृकल्याण-कार्य
 Matriarchal मातृसत्तात्मक
 Matriarchy मातृसत्ता
 Matricide मातृवध, मातृहत्या
 Matron मातृका
 Matter of fact तथ्यप्रसंग
 Mathematically गणितानुसार
 Maturation परिपक्व, परिपचन
 Mature, matured परिपक्व, प्रौढ
 Maturity परिपक्वता, परिपक्व
 Maturity, Date of परिपक्व-तिथि
 Maxim सूत्र; सिद्धांत; सिद्धांतवाक्य, नीतिवचन; अनु-

भवौकिक, तथ्योक्ति
 Maximum अधिकतम, महत्तम
 Mayor नगरनिगमाध्यक्ष, नगरपति
 Mean मध्यपरिमाण; मध्य
 Means साधन
 —of communication संचारके साधन
 — of subsistence निर्वाहके साधन
 of transportation परिवहनके साधन
 Measure उपाय; परिमाण; प्रस्ताव; काररवाई
 Mechanic नाविक, यंत्रविद्, मिश्री
 Mechanical advantage नाविक लाभ
 Mechanical condition नाविक दशा
 Mechanical transport नाविक परिवहन
 Mechanically propelled vessels यंत्र-प्रणोदित
 पोत, यंत्रचालित नौकाएँ
 Mechanisation of Agriculture कृषि-यंत्राकरण
 Mechanised army यंत्रसज्जित सेना
 Mechanism यंत्रचना; यंत्रचालन; रचना, बनावट,
 प्रक्रिया, गतिविधि
 Median सांख्यिक, मध्यान रेखा
 Mediation मध्यस्थता
 Media of publicity प्रकाशन, माध्यम
 Medical वैद्यक, चिकित्सकीय, चिकित्सा-संबंध
 —certificate वैद्यक (चिकित्सकीय) प्रमाणपत्र
 —college वैद्यक, विशालय
 —department चिकित्सा-विभाग
 —equipment चिकित्सा-सज्जा
 —expenditure चिकित्सा-व्यय
 —institution वैद्यक संस्था
 —literature वैद्यक साहित्य
 —practitioner वैद्यकवृत्तिक, चिकित्साज्ज्ञी
 —science वैद्यक विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान
 Medicine वैद्यक
 Medicinal वैद्यकीय (वेद्यिक = वैद्यक)
 Medicinal science वैद्यकविज्ञान (वैद्यकविज्ञान)
 Medieval मध्ययुगीन, मध्यकालीन
 Meditation ध्यान, चिंतन
 Mediterranean Sea मध्य सागर
 Medium माध्यम, साधन
 Medium gauge मझोटी गारन
 Medium of exchange विनिमय-माध्यम
 Medium of instruction शिक्षाका माध्यम
 Meeting अधिवेशन, बैठक
 —, Emergent आगामी अधिवेशन
 —, Extraordinary असाधारण अधिवेशन
 Melting point द्रवनांक, गलनांक
 Member in charge प्रभारि सदस्य
 Memo स्मार; छाप, हाथन
 Memoir संस्मरण; अनुसंधान-लेख
 Memorandum स्मारकपत्र, स्मारकपत्र, हाथन; अनु-

रोषक; संक्षेप-लेख

Memorandum of Association प्रविष्टानपत्र

Memorial आरमारक

Menace अभिधाप, विभीषिका

Menopause रजोविरति

Menses मासिकधर्म, माहवारी

Mensuration क्षेत्रमिति

Mental deficiency मनोदोषरूप

" weakness मनोदोषरूप

Mentioned उल्लिखित, कथित, चर्चित

Mercenary adj. भूमिप्रीति । n. मृतक सैनिक

Merchandise वाणिज्य-द्रव्य, माल

Merchandise mart वाणिज्यपोत, व्यापारिक बंदर

Merchantman, merchants' shop वाणिज्यपोत

Mercury धातु, धारा; बुधग्रह

Merey, Petition of दयाविज्ञा

Merged विलीन (विलयित)

Merger विलय, विलयन

Meridian दायोपर रेखा, मध्यरात्रि

Merit, accord १. १. उपायक्रममे, वाच्यता-क्रममे

Messenger संदेशवाहक, दूत

" service संदेशवाहक-सेवा

Metallurgy धातुविज्ञान

Metaphor रूपक

Metaphor, sustained मृग २२६

Metamorphose उत्क्रांति

Meteorology जलविज्ञानविज्ञान

Meter gauge छोटी मापन

Methodology पद्धतिशास्त्र

Mica श्वरक, अश्वक

Microphone ध्वनिक्षेपक यंत्र, सूत्रावक यंत्र

Microscope सूक्ष्मदर्शक यंत्र, अणुदर्शक यंत्र

Mido wave अनुचर

Middle East मध्यपूर्व (पश्चिमी एशिया तथा उत्तर पूर्वी अफ्रीका)

Middle man दलाल, मध्यमन

Midwife प्रसविका, दाई, धाई

Midwifery धाईविद्या

Migrant प्रवाचक

Migration प्रवाचन

Migration certificate विधिविद्यालयवाचन प्रमाणक

Milk breeds दुधधर जन्तु

Milage क्रोश संख्या; क्रोशविधेय

Militarisation सैनिकीकरण

Militarism सैनिकवाद

Military attache सैनिक सहाचारी

" installation सैनिक प्रतिष्ठान

Military tribunal सैनिक न्यायालय

Militia देशरक्षक सेना, जानपद सैन्य

Mill निर्माण, मिक, कारखाना; चक्की

[Flour mill आटा-चक्की]

Millennium सहस्राब्दी; स्वर्णयुग, सतयुग

Mine field सुरंग-क्षेत्र

Minelayer सुरंग-प्रसारक पोत, सुरंगपोत

Mineral resources खनिज-साधन, खनिज-संपत्ति

Mineralogy खनिजशास्त्र, खनिजविज्ञान

Mine-sweeper सुरंग-मार्जक पोत, सुरंगहारक या सुरंग-

नाशक पोत

Miniature लघुरूप

Minimum न्यूनतम, अल्पतम

Minimum subscription अल्पतम अभिदान, न्यूनतम

वरा

Mining settlement खनिजसति

Minister in-charge प्रभारी मंत्री

Minister of state स. मंत्री

Minister Plenipotentiary पूर्णाधिकारी दूत

Minister without portfolio बिना विभागका मंत्री,

निर्बिभाग मंत्री

Ministerial party मंत्रीपक्ष, मंत्रिपक्षीय दल

Ministerial service निम्न कर्मचारीधर्म

Ministry मंत्रिविभाग, मंत्रालय

" of industry and supply उद्योग और रसद-

नजालय

Minor अवयस्क, नाबालिग, न्यूनवयस्क; लघु, अमुख्य

Minor head लघु शीर्षक, लघु मद

Minority अल्पसंख्यक वर्ग, अल्पमत; अवयस्कता

" party अल्पसंख्यक दल, मध्यालक्षिण दल

Mint पुर्तना, टकनाल

Mist विद्युत, विरहित; कण-चिह्न

Minute book कक्ष-विवरण-पुस्तक

Minute of dissent विमति-टिप्पण

Minutes of proceeding कार्यवाहीका सभेय;

बैठकका; मक्षिण कार्यविवरण

Miracle आश्चर्यकी बात, चमत्कार

Misappropriation अपयोजन, दुरुपयोजन

Misbehaviour कटाचार

Miscarriage गर्भपात; विकलता; अपगमन

Miscarriage of justice न्यायवैफल्य, न्यायविजंश

Miscellaneous प्रकीर्ण, -account प्रकीर्ण लेखा

Misconception मिथ्याचरण

Misconduct दुराचरण

Misdirection विमार्श-दर्शन, कुपथ गमन

Mistaken मिथ्या नाम, अवधारण नाम

Misrepresentation मिथ्या प्रदर्शन, आतंकधन, धृष्ट

वर्जन

Mission प्रचारक दल; उद्देश्य, जीवन-कथ्य; सेवाप्रत,

दीर्घ

Mis-understanding मल्लतकहमी, समझकी भूल,

विग्रम

Mingation मृदूकरण, (न्यूनीकरण), शमन

Mixture मिश्रण
 Mob mentality सामूहिक मनोवृत्ति, सामूहिक प्रवृत्ति
 Mob psychology सामूहिक मनोविज्ञान, सामूहिक मनोभाव
 Mobile चरित्र, चलता-फिरता
 Mobilisation of industry सैन्यसंयोजन, सैन्य-संघटन
 Mobilisation of army उद्योग-संघटन
 Model प्रतिमान, आदर्श
 Moderate संयत, समुल्लस; अनुग्रह; अनधिक
 Moderation संयम; नरमी, मुलायमियन
 Moderator नरम बना देनेवाला, मध्यस्थ
 Modest विनयशील, नम्र; सतलज; लघु
 Modesty शील, मनोत्व (outrage the ... of शील-घात, शील भंग करना, मनोत्वनाश)
 Modification उपरिवर्तन, रूपभेद, रूपांतर
 Modus operandi कार्यप्रणाली, कार्यविधि
 Mofussil नगरेतर क्षेत्र
 Mole छिछ
 Molecule अणु
 Momentum प्रवर्तक शक्ति, वेगबल
 Monarchy राजतंत्र
 Monetary मुद्रा संबंधी, मौद्रिक
 Monetary fund मुद्राकोष
 Monetary unit मौद्रिक एकक (इकाई)
 Money bill (मुद्राविधेयक), धनविधेयक
 Money-lending साहूकारी, महाजनी
 Money order धनपत्रादेश, धनप्रेषणपत्रिका, (धनादेश)
 Monism अद्वैतवाद
 Monitor छात्रनायक
 Monitoring जॉचके लिए रेडियो या टेलीफोनपर सुनना
 Monogamy एकतन्त्री-विवाह, एकनिष्ठ विवाह, एकपत्नीत्व
 Mono-metallism एकधातुता
 Monopoly एकाधिकार, हजारा
 Monotony एकतानता, एकरसता; वैचित्र्याभाव, नीरसता
 Monument स्मारक
 Moral end नैतिक उद्देश्य; -ture नैतिक बल;
 -support नैतिक समर्थन
 Morale नैतिक स्तर, नैतिकता; हौसला
 Moratorium मोच-विलंबकाल; कल-व्ययन
 Morphology आकार विज्ञान, आकारिकी
 Morphological जाकारिकीय
 Mortar मॉर्टर नायक छोटी तोप
 Mortgage बंधक, प्राप्ति; -deed बंधकपत्र
 Mortgagee बंधक-प्राप्तता
 Mortgager बंधककर्ता
 Mortuary मुद्राघर, श्वालय, मृतकगृह
 Motherland मातृ-भूमि, मातृदेश
 Mother tongue मातृभाषा
 Motion गति; प्रस्ताव
 Motion, Adoption of प्रस्ताव स्वीकृत करना

—, Adjournment कार्य-रोकी प्रस्ताव, कार्यस्थगन प्रस्ताव
 — for consideration विचारार्थ प्रस्ताव
 Motive उद्देश्य; प्रेरक हेतु
 Motive, To impute नीयतमें शक करना
 Movable property चल संपत्ति
 Move, to प्रस्ताव करना
 Movement आंदोलन
 Mover प्रस्तावक
 Movies चलचित्र
 Multifarious बहुमुखी; -suit अनेकार्थवाद
 Multimember constituency बहुसंख्य-निर्वाची क्षेत्र
 Multiple गुणज, गुण्य
 Multipoint sales tax प्रतिपद विक्रीकर
 Multipurpose society बहुप्रयोजन-समिति
 „ „ scheme बहुमुखी योजना
 Mummy पुरातन शव, (सुरक्षित शव), ममी
 Municipal area नगरक्षेत्र
 Municipal committee नगरसमिति, नगरपालिका
 Municipal corporation नगर-निगम
 Municipality नगरपालिका
 Munition युद्ध सामग्री
 Muscels मासपेदी
 Museum संग्रहालय, अजायबघर
 Mushroom छत्रक, खुनी
 Mushroom growth अनियमित बाल, आकस्मिक वृद्धि
 Music, instrumental वाद्य-मगीत
 Music, Vocal कठ-संगीत
 Musket बंदूक
 Muster एकत्र करना, -roll हाजिरोका किताब
 Mutation परिवर्तन, नामांतर-लेखन
 Mutatis mutandis आवश्यक परिवर्तन सहित
 Mutiny सैन्य हड़द
 Muzzle मुखावधनी
 Mycology फफूंद विज्ञान
 Mystic रहस्यवादी
 Mysticism रहस्यवाद
 Myth पुराणकथा; कल्पना, इतकथा

N

Nadir अधोविंदु
 N. B. (see Nota Bene)
 Naked debenture अग्रतिमूत ऋणपत्र
 Naming नामोन्मेष
 Narration वर्णन, आख्यान
 Nasal अनुनासिक
 Nascent नवजात, उदीयमान
 Natal जन्मसंस्थी
 Nation राष्ट्र
 National राष्ट्रीय, जातीय

National Anthem राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान
 National debt राष्ट्रीय ऋण
 National Dietary राष्ट्रीय भोजन-विज्ञान
 National health राष्ट्रीय स्वास्थ्य
 Nationalisation राष्ट्रीयकरण
 Nationality राष्ट्रियता, जातीयता
 Native देशी
 Natural-born citizen जन्मतः नागरिक
 Natural boundary प्राकृतिक सीमा
 Naturalisation देशीयकरण
 Naturalism प्रकृतिवाद
 Nautical जौकाविषयक, नौपरिवहन-विषयक
 Naval नीमना-संबंधी, नाविक
 Naval attache नाविक महाबारी
 Navicert चोत-प्रमाणपत्र
 Navigable नौगम्य, नौताप्य, नाव्य
 Navigation नौपरिवहन, नौतरण
 Navy नौसेना, जहाजी बेश
 Near East 'मिडल पूर्व', पूर्वी यूरोप
 Nectary मकरंद कोष
 Nocktie कंडर, प्रवेग
 Needlework सूजीश्रम, सूजीकार्य, सुईकारी
 Negative नकारात्मक; विरोध; ऋण
 Negative attribute विरोध गुण
 Negatived निषेधित
 Negative number ऋण-संख्या
 Negative quantity ऋणराशि
 Negative vote नकारात्मक मत
 Negation निषेध
 Negotiable हस्तांतरणीय, परक्राम्य
 Negotiate समझौता-बार्ता करना
 Negotiation परक्रामण, हस्तांतरण; पत्रालाप
 Nepotism स्वजन-पक्षपात, कुनबापरस्ती, भाई-भगीजा-वाद
 Neptune बृहण
 Nerve स्नायु
 Nervous system स्नायुसंस्थान, स्नायुमंडल
 Net शुद्ध; वास्तविक
 -income शुद्ध आय
 -loss शुद्ध हानि, वास्तविक हानि
 -profit शुद्ध लाभ
 -price शुद्ध मूल्य
 Neuralgia वातशूल
 Neurasthenia नार्वी दीर्घत्व
 Neutral उदात्त
 Neutralisation तटस्थीकरण; अप्रभावीकरण
 Neutrality तटस्थता
 New-deal नव्य अर्थनीति (अमेरिकाकी)
 News समाचार
 News agency समाचार-समिति, वृत्त-संस्था

News commentary संवाद-भाष्यना
 News correspondent संवाददाता
 News despatch समाचार-पत्र
 „ reel समाचार-कलक
 News relay समाचार-प्रसारण
 Newsmen संवादिक
 Newspaper समाचारपत्र
 News sheet समाचार-पत्रक
 Nib लेखनी-विद्या
 Nihilism -शून्यवाद, निषेधवाद
 No-confidence motion अधिवासका प्रस्ताव
 Noes असहमत, 'ना' पक्ष, नाकारी
 Nomad यावावर, भ्रमणशील (जाति), खानाबदोश
 No-man's land निःस्वच्छक भूमि, नौराष्ट्रिक भूमि
 Nomenclature नामपद्धति
 Nominal नाममात्रका; अभिहित
 Nominal capital अभिहित पूँजी
 Nominal cost अभिहित परिश्रम्य
 Nominal price नाममात्रकी कीमत
 „ value अभिहित मूल्य
 Nominated मनोनीत
 Nomination paper नामनिर्देशन-पत्र, नामांकनपत्र, मनोनयन पत्र
 Nominee मनोनीत व्यक्ति
 Non-aggression pact अनाक्रमण संधि
 Non-bailable अप्रतिभाज्य, अकृष्णक मोक्ष्य
 Non-cognizable अदृष्टक्षेप्य, अननुसंधेय
 Non-combatant अयोद्धा
 Non-cumulative अंतर्चक्र
 Non-commissioned वे-समद, अनायुक्त
 -officer अनायुक्त अधिकारी
 Non-conductor अवाहक
 Non-entity नगम्य व्यक्ति
 Nonferrous लौहतर, लौहविहीन (धातु), अलौह
 Nongazetted अराजपत्रित
 Nonmetallic अवाह्य
 Non observance न वरतना, अपालन
 Non-official गैर-सरकारी
 Non-party conference निरंक सम्मेलन
 Non-payment न चुकता करना, अशोधन (कृपादिका)
 अदानुत्त, अप्रदानता (करादिकी)
 Nonproductive अनुत्पादी
 Non-recurring expenditure अनवर्ती व्यय
 Non-regulation province विधान परिश्रमांत
 Non-resident अनावासिक
 Non-sovereign state पूर्ण प्रभुत्वहीन राज्य
 Non-stop बिना रुके, अविराम
 Non-transferable अपरावर्तनीय, अहस्तांतरणीय
 Non violent resistance अहिंसात्मक प्रतिरोध
 Non-votable expenditure अमतद्वेय व्यय

Normal सामान्य

Normal, Below सामान्यसे नीचे

Normal school प्रशिक्षण विद्यालय

Nota bene धुनझ, विशेष सूचनाएं (वि० सू०), इदमपि अवश्यं (१० अ०)

Notary लेख्य-प्रमाणक

Notation स्वरलिपि, संकेत-प्रणाली

Note टिप्पणी; छपुलेख; सक्षिप्त अभिलेख; पाठसूच; परमुद्रा

Noted उल्लिखित; स्वीयनिर्मात; अभिलिखित

Notice सूचना; सूचना-पत्र

Notice-board सूचना-पट्ट

Notice in writing लिखित सूचना

Notice of motion प्रस्ताव-सूचना

Notice to quit निष्कासन-सूचना

Notification अभिसूचना

Notified area अधिव्यवस्थित क्षेत्र, सूचि क्षेत्र

Not less than से कम

Nuclear नैट्रिक, नाभिकीय

Nucleus केंद्रबिंदु, नाभिक-खण्ड, बीजकेंद्र, व्यष्टि, नाभिक

Nudism नग्नतावाद

Nuisance कंठक, बाधक, बाधा

Null and void शून्य और व्यर्थ

Nullification निरस्त-पत्र

Nullify रद्द करना

Numbered संख्यात, जिसपर नंबर डाला गया हो

Numerical order संख्याक्रम

Numismatics मुद्राविज्ञान

Nurse D. दयचारीका, परिचारिका

Nurse V. परिचर्या (परिचारण) करनी

Nursery जमीरा, बीजोद्यान, वीधशाला; शिशुशाला, शिशुवन

Nutrition पोषण

Nux Vomica कुकडा

O

Oasis हरितभूमि, मरुद्वीप, मरुवात, छाड़क

Oath of allegiance निष्ठाकी शपथ

Oath of fidelity एकानिष्ठाकी शपथ

Oath of office दफ्ती शपथ

Oath of secrecy गुप्तताकी शपथ, गोपन-शपथ

Oath, to administer शपथ देना

Obdurate दुराग्रही

Obedient servant, Most वरम आज्ञाकारी सेवक

Obituary notice मृत्यु-समाचार

Object उद्देश्य, अभिप्राय

Object and reason उद्देश्य और हेतु

Objection, technical छात्थिक आपत्ति, प्राविधिक आपत्ति

Objective वस्तुरूप, वस्तुगत; शब्द

Obligation जमापार दायित्व; अवश्यकरणीयता, बंधन,

वाध्यता

Obligation and right दायित्व और अधिकार

Obligatory अनिवार्य, अवश्यकरणीय, वाध्यतापूर्वक

Obliterate नष्ट करना, अभिलीपन करना

Oblivion, Act of विस्मृति व्यवस्था

Obnoxious अश्लीलकर

Observation पर्यवेक्षण

Observation post (पर्यवेक्षण) चौकी

Observatory वेधशाला

Observer पर्यवेक्षक; प्रेक्षक

Obtuse angle अधिक कोण

Obverse n. स्त्री तरफका वा सामनेका भाग, चेहरा; मध्यका दूसरी पक्ष वा भाग, adj. स्त्री

Occidental वायव्य

Occupancy right जमाधिकार, दस्तीदकारी

Occupation व्यवसाय, पंथा; अधिवास, अधिकृति

Occupation, Army of आधिपत्य करनेवाली सेना, अधिकारिका सेना

Occupation-franchise व्यावसायिक, मताधिकार

Octagon अष्टभुज

Octavo अठपुटी, अठपेजी

Oetron barrier उडार; चुगी-चौकी

Oetron-tax चुगीकर

Off duty कार्यरत छुटीपर

Office अपराध; आशेष; आक्रमण; उत्कीर्णन, आक्रोषण

Offence against law विधि-विरोध अपराध

Offence, Capital मृत्युदंड योग्य अपराध

Offensive expression आश्लेषबचन, आश्लेषपद. शिष्टकारी पदावली, अप्रीतिकर शब्दावली

Offer प्रस्ताव, दिस्ता-प्रस्ताव

Office पद; कार्यालय

Officer in charge प्रबारी अधिकारी, अवधारक अधिकारी

Official adj. सरकारी, शासकीय; n. अधिकारी

Official party राजकीय पक्ष, सरकारी पक्ष

Official Reporter राजकीय प्रतिवेदक, सरकारी प्रतिवेदक

Official residence पदावास, शासकीय निवास

Official visit शासकीय परिश्रम; आधिकारिक जागमन

Officiating स्वामाध

Offset अनुच्छेद

Offtake निष्कासी; निष्क-मलिका

Oil-tanker तैल-वीथ

Oligarchy अविजाततंत्र, अव्यवस्थ

Omission विहीन, विहीन, (१० विधि-विधि),

अनाचरण

Omnipotent सर्वशक्तिसंपन्न

Omnipresent सर्वव्यापक

Omniscient सर्वज्ञ

On average pay औसत वेतनपर

On service राजसेवामें, राजसेवा
 Oms मार, दासत्व
 Opacity पारंप्रता, अपारदर्शिता
 Opaque अपारदर्शी, पारंप्र
 Open General Licence सर्वसुलभ साधारण अनुज्ञापत्र
 Open door policy मुक्तद्वार नीति
 Opening balance प्रारम्भिक रोकेज
 Opening entry प्रारम्भिक प्रविष्टि
 Open market खुला बाजार
 Opera गीति-नाट्य
 Operate श्रम्यक्रिया करना; कार्यमपादन करना, प्रवृत्ति करना
 Operation श्रम्यक्रिया, श्रम्योपचार, चरकादः स्थापार
 Operation, military सारमरिक कार्य
 Operator बालक
 Opinion, Favourable अनुकूल मन
 Opportune समयानुकूल
 Opportunism अवसरवादिता, अवसरवाद
 Opportunist अवसरवादी
 Opposition विरोधी पक्ष, प्रतिपक्ष; विरोध
 Opposition bench विरोधी पीठ, विरोधी दलपक्ष
 Opposition, Leader of the विरोधी पक्षका नेता, प्रतिपक्ष-नेता
 Optics नेत्रविज्ञान, दृष्टिविज्ञान, वासिका
 Optimism आशावाद
 Optimist आशावादी
 Option विकल्प
 Optional वैकल्पिक, ऐच्छिक
 Oracle देववाणी, आकाशवाणी
 Oral evidence मौखिक साक्ष्य
 Orator सुवक्ता, वाग्मी
 Orchestra वादकदल, वादकवृन्द; वाद्यसमूह; वृन्दवाद्य, समूहवाद्य
 Ordeal अग्नि-परीक्षा
 Order आदेश, आह्वा; क्रम; व्यवस्था
 Order, By आह्वानुसार, की आशा
 Order-form प्रेषणादेश पत्र
 Order-in-Council सपरिषद-आदेश
 Order, Law and विधि और व्यवस्था
 Order of merit, in योग्यतानुसार, योग्यता-क्रममें
 „ of the day (किसी समयमें प्रचलित)
 सामान्य बात, वाली हुई बात
 Order, Order क्षाति ! क्षाति !
 Order, Standing स्थायी आदेश
 Ordinance अध्यादेश
 Ordinance factory गोलाबाकदका कारखाना, शस्त्र-निर्माणशाला
 Ordinance Stores अस्त्रसंग्रहालय
 Ore कषा कीटा, अमरक
 Organ अवयव, इंसिवा; मुखपत्र

Organic लैट्रिय
 Organisation संघटन
 Organiser संघटनकर्ता, आयोजक
 Organism कोशोन्माद, मदनलहरी
 Oriental प्राच्य, पौरस्त्य
 Origin उद्गम
 Original budget estimate आरम्भिकका प्रथम अनुमान
 Original draft मूल प्रारूप
 Original jurisdiction मूल अधिकार-क्षेत्र
 Originating chamber उद्भव वेदम
 Originator आरम्भक (वचनक)
 Orphanage अनाथालय
 Orthography वर्णलिखार
 Out-door patient नष्ट रोगी, बहिर्वासी रोगी
 Outflank पीछेसे हमला करना
 Outgoing पदमुक्त
 Outhouse बाह्यगृह
 Outlet निर्यात-द्वार, निकास
 Outlie-रूपरेखा, स्वरूप
 Out-of-date दिनातीत, विषयतीत
 Outpost बाहरी चौकी, नाका
 Outskirts नगरीपात, ग्रामपात, उपकण्ठ, परिसर
 Ovary डिवालय, अंडाशय
 Overlooked अधिशीलित
 Overall deficit कुल घाटा
 Overdraw (जमा किये हुए रुपयोंके विमाचमेंसे) खर्चमाने अधिक लेना या निकालना
 Overdraft अधिविकल्प
 Overleaf पथेके दूसरी ओर
 Overhead अतिभारित
 Overlord अधिराज
 Overpayments अधिक भुगतान
 Overpopulation अतिजनन, व्युत्तिसंख्या
 Overproduction अत्युत्पादन
 Overruled रद्द कर दिया गया, विपर्यस्त; अधिविधेयित; अत्यनुसाम्पित
 Oversee समुद्र-चार
 Overseer अधिकारी, कार्य-निरीक्षक
 Oxum डिब
 Own स्वामित्व होना; स्वीकार करना
 Owner स्वामी
 Ownership, Limited सीमित स्वामित्व
 Oxidation उपचयन

P

Pacification क्षातिकरण, समीकरण
 Pacifism क्षातिवाद
 Pacifist क्षातिवादी
 Package संवेदन

Packer संवेष्टक
 Packet संवेष्टिका
 Packing charges पकिंग-चार्ज
 Pact समझौता
 Paid वैतनिक
 Paid up Capital प्राप्त पूँजी, चुकता मूलधन
 Paid employee वैतनिक मेसक
 Paidup share capital प्रदत्त अंशपूँजी
 Painting चित्रण, रंग कला, रंजन
 Palatal ताळव्य
 Paleo Botany प्राच्य शास्त्र
 Pan Islamism सर्व-इस्लामवाद
 Panel कक्षी आदिका चौकोर टुकड़ा, पिला; चौकोर स्थान, ताकिका
 Panel of chairmen समायोजिताकिका
 Panic भयंकर
 Pantheism सर्वेश्वरवाद
 Papacy पोपपद, पोपतंत्र
 Papal state पोप-राज्य
 Paper currency पत्र-वसार्थ
 Paper Currency reserve पत्र-वसार्थ-रक्षित कोष
 Paper-Settler प्राथिनिक
 Paper-weight वजनमारक, वजनवाप
 Papers पत्रजात
 Par, Above अधिस्त्वपर
 Par, At समस्त्वपर
 Par, Below अधोस्त्वपर
 Par value सममूल्य
 Parachute हवाई छतरी; अवतरण छ
 Paradox विरोधाभास
 Paragraph कथिका, अनुच्छेद, प्रसार
 Parallel समानांतर; समकक्ष
 Parallel government प्रति-सरकार, समकक्ष सरकार
 Parallelogram समान्तर चतुर्भुज
 Paralyse ठप करना; गतिहीन वा लज्जालून बना देना
 Paramount power सर्वोच्च सत्ता, सर्वोच्च सत्ता
 Parapet छुडेर
 Parasite परजीवी, परोपजीवी, परांगमकी, पराजवी
 Parboiled rice भुजिया चावल
 Parcel पैट, पालक
 Pardon क्षमा
 Parity समार्हता, बराबरी
 Park उद्यान, लंदन (पुराना शब्द)
 Parking place गाडियोंके ठहरनेका स्थान ।
 Parliament संसद
 Parliamentary government पार्लमेंटरी शासन
 Parliementary language संसदीय भाषा, संसत वा छिट भाषा
 Parliamentary secretary संसद-सचिव, सभासचिव
 Parody अनुकृति काव्य

Parole प्रतीतिबचन; तयतिर्पथ मुक्ति, साधि मुक्ति, संयथ मुक्ति
 Parsing पदव्याख्या
 Part payment आंशिक भुगतान
 Partially आंशिक रूपसे, अंशतः
 Partially excluded areas अंशतः अपवर्जित क्षेत्र
 Particulars विवरण
 Parties concerned संबंध पक्ष
 Partition विभाजन
 Partnership भागिता
 Parts of speech शब्दभेद
 Part time खंडकाकिक
 Party पक्ष, दल; प्रीतिभोज
 Party-caucus दलकी भंगमौड़ी
 Party in power अधिकारपक्ष दल
 Pass v. पास होना या करना, कर्ण्य होना; पारित करना
 Pass n. प्रवेशपत्र; पारणक; दरी, दर्रा
 Passage लेखांस
 Passage way मार्गमध्य
 Passed पारित, स्वीकृत; उल्लिख
 Passenger guide यात्री संयु
 Passive resistance निष्क्रिय प्रतिरोध
 Passport पारपत्र, निष्क्रमपत्र, राहडानी
 Pasteurised milk कृमिरोधित दुध
 Pastureland लोचरभूमि, पशुचर भूमि
 Patent दकस्त्र
 Patent medicine दकस्त्र भेषज
 Patent, letters दकस्त्रपत्र
 Pathologist निदानशास्त्री
 Patriarchal विदुसत्तामक
 Patriarchy विदुसत्तामक व्यवस्था, विदुसत्ता
 Patrioids विदुहत्वा
 Patrimony पैदक धन
 Patrol n. परिरक्षक, पनरोल; v. रक्षा संबंध
 करना; परिक्रमण करना, गश्त करना
 Patron संरक्षक
 Patronage संरक्षण
 Pauper suit अकिंचन बाद
 Pawn भाषि
 Pawner भाषिकता
 Pawnee भाषिप्रांही
 Pay scale वेतन मान
 Payable देय
 —at sight दृष्टेदेय; —to bearer दाहकदेय;
 —to order आदेशदेय
 Payee प्राप्तक, प्राप्तिकर्ता
 Payer दाता
 Paymaster वेतनदाता
 Payment भुगतान, दौधन
 Payscale वेतनमान

Paysheet वेतन-फलक

Peace शांति

Peace offensive शांतिप्रवास

Peaceful Penetration शांतिपूर्वक प्रवेश वा -अधि-
कार करना

Peak production चरमोत्पादन

Peasantry कृषिवर्ग

Pecuniary धन-संबंधी

Pedagogical शिक्षाशास्त्रीय

Pedagogy शिक्षणशास्त्र

Pedigree वंशावली, कुलपरंपरा

Pedigree cattle बढ़िया नस्लके पशु

Pegging Act खानाबदकागी अधिनियम

Penal दंडविषयक; दंडनीय

Penal code दंडसंहिता

Penal settlement दंडितोंकी बस्ती

Penalize दंडित करना

Penalty दंड, सजा, निषेध

Pending विचारधीन; लंबित; रुकमान

Pen-down strike लेखनीकर्म-रोधन

Pendulum लोलक

Peninsula प्रायद्वीप

Pen-name साहित्यिक उगनाम

Penology दंड-विज्ञान

Penpicture अल्पचित्र

Pension निवृत्तिवेतन, पूर्वसेवाशुति

Pentagonal creek पंचांगी क्रिकेट

Poon पत्रवाह

—book पत्रवाहपत्रिका

People in power सत्ताकाद व्यक्ति

Peoples' war लोकयुद्ध

Per capita प्रतिव्यक्ति पीछे

Percentage प्रतिशतता

Per unit प्रति एकक

Peremptory order अनुज्ञापनीय आदेश

Perforated सछिद्र, छिद्रक

Perforator वेधनी

Perimeter परिमिति

Period अवधि, —of service सेवाकाल

Periodical साप्ताहिक, निवृत्तकालिक; सावधिक पत्र,
मासिक पत्र; —payment निवृत्तकालिक भुगतानPermanent settlement स्थायी व्यवस्था, स्थायी
भूस्वत्व

Permanent tenant स्थायी कृषक

Permission अनुमति, आज्ञाशुक्ति

Permit प्राज्ञुमतिपत्र

Permutation क्रमस्थान; क्रमचय, क्रमविस्थापन

Perpendicular संघ

Perpetual स्थायक

Perpetual succession स्थायक उत्तराधिकार

Perpetuality सात्वत

Perquisite अनुकूलन, परिकल्प

Persona grata ग्राह्य व्यक्ति

Persona non-grata अग्राह्य व्यक्ति

Personal Assistant वैयक्तिक सहायक, निजी सहायक

Personal bond वैयक्तिक बंध

Personality व्यक्तित्व

Personal law वैयक्तिक विधि, स्थीय विधि

Personnel मनुष्यगण, कर्मचारिगण

Pertinent समान

Pervasion व्याप्ति

Perverse मूर्खविमूढ़; विकृत, उल्टा

Pessimism दुःस्वभाव, नैराश्रयवाद

Petit bourgeois निम्न मध्यवर्ग

Petition प्रार्थनापत्र, याचिका; अर्ज

Petrology शिला विज्ञान

Phantom मनोभ्रम, छायापुरुष

Pharmacopoeia औषधनिर्माणशास्त्र

Pharmacy औषधालय, औषधालय

Pharmaceutical chemistry औषध रसायन

Phase स्वरूप, अवस्था

Phonology भाषाविज्ञान

Phonetics स्वर-विज्ञान

Phoney war झूठी युद्ध, झूठा युद्ध

Photo छायाचित्र

Phraseology पद-विन्यास; शब्दावली

Physical शारीरिक; भौतिक; प्राकृतिक (भूगोल)

Physically fit शरीरमे योग्य

Physiognomy आकृतिविज्ञान

Pocket फीटकी छोटी टुकड़ी

Pocketing धरना देना, प्रदर्शरोधन

Pecnic party बनभोज; प्रमोदभोज

Pecennial खड्ड

Pier पोतघाट

Pigeon-hole कोष्ठखंड

Pigment रंगद्रव्य, वर्णक

Pilot चालक

Pin शूक, कटिका; —cushion झुकावनी

Pindrop silence पूर्ण नीरवता

Pioneer अग्रगामी

Pipette नलिका

Piracy जलदस्त्रुप

Pirate जलदस्त्रु

Pitch धावनस्थली; उच्चतम स्थान

Placard मितिपत्रक

Placenta अपरा, जरायुमूल, पुररन

Plaint बाद-पत्र

Plaintiff वादी

Plan योजना, उपाय; मापचित्र

Plane figure समक्षेत्र, समतलाकृति

Plane surface समतल
 Planning आयोजना, नियोजन
 Plant उद्योग-यंत्रावली, पंज-समुच्चय
 Planter रोपक
 Plaster पकस्तर, स्तरण
 Platoon पकटन
 Play खेल; नाटक, अभिनय
 —ground खेलका मैदान, खेलभार
 Plea तर्क; प्रतिपादन; बहाना
 Plea, Admissible ग्राह्य तर्क
 Plead पक्ष-समर्थन, बकायत करना, अभिवचन करना
 Plead guilty दे० guilty में
 Pleader अभिवक्ता, वकील
 Pleading अभिवचन
 Plebian साधारणजन
 Plebiscite जनमतसंग्रह
 Pledge प्रतिज्ञा, बंधन
 Plenary session पूर्णाधिकेशन
 Plenipotentiary पूर्णाधिकार-प्राप्त दूत
 Pleurisy श्वसनरोग, उरीग्रह
 Pliability आनयता
 Plot दुरभियोग; भूक्षेत्र; कथानक
 Plum साबुत; -1 no साबुतमूल्य
 Plural vote अनेकसंख्यक मत
 Pluralism अनेकवाद
 Plutarchy भक्तिकेय
 Plutocratic democracy भक्तिकेय लोकतन्त्र
 Ply wood परतदार ककड़ी
 Pneumonia पुण्डुल-प्रवाह
 Pod कली
 Point n. बिंदु; प्रश्न; बात; संकेत, विषय
 Point v. निर्दिष्ट करना, लक्ष्य करना
 Point of order विषयवाचि; विधानका प्रश्न
 Poise अंगसौष्ठव
 Politbureau केंद्रीय समितिको अंतरंगमंडली, नीतिनिर्धारणी
 समिति (रूस और अन्य देशोंकी कम्युनिस्ट पार्टीकी)
 Politic, Body राज्य-संस्था
 Police आरक्षी, आरक्षक, पुलिस, -force आरक्षक बल,
 -guard पुलिस गारर; -station थाना
 Policy नीमावध; कार्यपद्धति
 Polish शोध
 Polity राज्यपद्धति
 Poll मतदान
 Pollen tube परागनलिका
 Pollination परागण
 Polyandry बहुपतित्व (प्रथा)
 Poll tax भुक्त-कर, व्यक्तिकर
 Polling booth मतदान-उपकेंद्र, मतदानकक्ष
 Polling station मतदान केंद्र
 Polygamy बहुविवाह, बहुपत्नीत्व

Polyglot बहुभाषाज्ञ, बहुभाषाविद्
 Polygon बहुभुज
 Pontiff रोमन धर्मगुरु (पैप)
 Pool मीछक
 Pooling एकत्रीकरण, समूहीकरण
 Popular Assembly जन-प्रतिनिधिक सभा
 Popular front जन-मोर्चा
 Porous छिद्र
 Port पोतागम, बंदरगाह
 Porter मारिक
 Portfolio मंत्रीका कार्य-विभाग, संग्रह
 Portrait प्रतिकृति, व्यक्तिचित्र
 Pos- ठपन, मुद्रा
 Position स्थिति, स्थान; पदवी; योग्यता
 Positive विप्यात्मक, निश्चयात्मक
 Positivism प्रत्यक्षवाद
 Possession अधिकार, कब्जा, स्वत्व
 Post पद; शब्द; सत्य; स्थान, जगह
 Postal order पत्राचारिक आदेश, डाकीय आदेश
 Postdated उत्तरतिथित
 Posted नियत, नियुक्त; पत्राचारित
 Post-entry पश्चात् इल्लेस
 Poster चित्रविज्ञापनक, विज्ञापनपत्रक
 Posterity भावी संतान
 Post-graduate study स्नातकोत्तर अध्ययन
 Posthumous मृत्युत्तर प्राप्त, मृत्युत्तरप्राप्त
 Posting नियुक्ति, स्थापन; पत्राचारित करना
 Post-master पत्राचार, डाकपति
 Postmaster General महापत्रपाक, महाडाकपति
 Post-mortem शवपरीक्षा; -examination मृत्युपश्चात्
 शवपरीक्षा
 " room कीचर, शव-परीक्षणालय
 Postnatal period प्रसवोत्तर काल
 Postman पत्रवितरक, डाकिया
 Post office पत्राचार, डाकघर
 Post-war युद्धोत्तर
 Post-war economy युद्धोत्तर अर्थव्यवस्था
 Posture अंगविन्यास, अंगस्थिति, व्यसन
 Potentiality क्षमता; संभाव्यता; दबाकी क्षति (प्रभाव-
 कारिता)
 Poultry keeping कुक्कुटपति पालन
 Pound बहुविक्रय-घृष्ट, बहुविक्रय-कक्षा
 Poundage निरीय-भुक्त
 Pourparler प्रारम्भिक चर्चा
 Power शक्ति; शक्तिसाजी देश; अधिकार
 Power, Conferment of अधिकार-प्रदान
 Power, Exercise of अधिकार-प्रयोग
 Power Politics अधिकारार्थ कुक्कुटपति; बड़े राष्ट्रों
 कुक्कुटपति
 Power of attorney हुक्मतारनामा, प्रतिनिधि-पत्र

Power, To assume अधिकार ग्रहण करना
 Practical प्रायोगिक, व्यावहारिक
 Practice व्यवहार, अभ्यास; दायदारी, वक्तव्य आदिका काम
 Preamble प्रस्तावना
 Precaution पूर्वोपाय, पूर्वबधानना
 Precautionary अतिरिक्त निवारक, पूर्वबधानना हेतुक
 Precedence पूर्वाता, पूर्ववर्तिता, पूर्वस्थानीयता
 Precedent पूर्वदृष्टांत, पूर्वोदाहरण, नजीर
 Precept उपदेश, निर्देश
 Precluded प्रतिबाधित
 Precursor प्रयोगामी
 Predecessor पूर्वोपकारी, पूर्वग
 Predominant प्रबल, सर्वोच्चधिक, सर्वप्रमुख
 Pre-eminent सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम
 Pre-emption पूर्वक्रय
 Pre-emption, Right of पूर्वक्रयका अधिकार
 Prefabricated house factory प्रस्तुतान-गृह-निर्माणशाला
 Preface प्राक्खन, प्रस्तावना
 Preference अधिमान, अधिमान्यता, बरीयता, नरजीह
 Preferential treatment श्रृङ्खलापूर्ण (या अधिमान्यतापूर्ण) व्यवहार
 Pregnant समीचीनवर्ती; अर्थगर्भ, मे युक्त, मे यमिन
 Prehistoric प्रागैतिहासिक
 Prejudice प्रतिकूल प्रभाव, पूर्व बारणा, पूर्वग्रह
 Prejudiced प्रतिकूल बारणायुक्त, पूर्व बारणान्वित
 Prelude संगीतारण
 Premises गृहपरिमाण, गृहोपात; परिसर
 Premium अधिकुल्य; बीमेकी किरत
 Prerogative विशिष्टाधिकार, परमाधिकार, प्राधिकार
 Prescribed प्रविष्ट; निश्चित; विहित
 Prescription औषधनिर्देश; चिरमोग, चिरजीव-जनित अधिकार
 Present v. उपस्थित करना, प्रस्तुत करना; n. उपहार
 में; adj. उपस्थित; विद्यमान, वर्तमान
 Preservation बरिद्धन
 Preservation of fruits फल-परिरक्षण
 Preside पीठासीन, समापति होना
 Presided by अध्यक्षतामें, समापनियमे
 Presidency समापतिका वह या वसुकी कार्यावधि;
 अवाता; महाप्रति (मिथिल आसनकाचमें)
 President समापति; राष्ट्रपति
 President, Deputy उपअध्यक्ष, उपसमापति
 President-elect प्रत्येकीत समापति
 Presiding officer अधिकृतता
 Presidium लोचिकत स्थायी कार्य-समिति, प्रेसीडियम
 Prevention of crime अपराध-निवारण
 Press मुद्रणालय; समाचारपत्र (साप्ताहिक रूपसे)
 Press conference सच-संतिविधि-सम्मेलन

Press information bureau पत्रसूचना-विभाग
 Press material प्रकाशक-सामग्री
 Press note समाचार-सूचना, प्रेस विज्ञापि
 Press and platform समाचारपत्र और समारं
 Presumption अनुमान, धारणा
 Presumptive आनुमानिक
 Prevention of Cruelty to Animals Act पशु-निर्दयता-निवारण-अधिनियम
 Preventive detention रीक्षात्मक कारावास, निवारक निरोध
 Preventive measures निरोधी व्यवस्था
 Previous consent पूर्व-सम्मति
 Previous saturation पूर्व सम्मोदन, पूर्व स्वीकृति
 Prewar युद्ध-पूर्व
 Price-control मूल्य-नियंत्रण
 Prima-facie प्रथम दृष्टिः, आपाततः
 Prime minister प्रधानमंत्री
 Print number अमाज्यसंख्या
 Primer प्रवेशिका
 Primitive society आदिम समाज
 Primogeniture अग्रजाधिकार
 Princes' chamber नरेंद्रमण्डल
 Principal (money) मूलधन
 Principal adj. मुख्य, प्रधान; n. आचार्य
 Principality राज, सामन्त देश
 Printer मुद्रक
 Prior claim प्राथमिक या अधिम दावा
 Priority अग्र्याधिकार; प्राथमिकता
 Priority list प्राथमिकता-सूची
 Prism त्रिपार्श्वकाच
 Prison कारावास; बंदीगृह
 Prison van कैदी गाडी, बंदीवाहन
 Prisoner बंदी
 Privacy एकान्तता; गुप्तता; एकान्तस्थान
 Private निजी; n. सामान्य सैनिक
 Private enterprise निजी उद्यम
 Private member गैर-सरकारी सदस्य
 Private secretary अंतरंग-सचिव, निजी सचिव
 Privation कष्ट, अशुविधा
 Privilege विशेषाधिकार, प्राप्ताधिकार, प्राप्त-अशुविधा
 Privileged classes विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग
 Privy council अंतरंग परिषद; मिथिल साम्राज्यका सर्वोच्च न्यायालय
 Privy purse राजाधिदेव, राजभत्ता
 Prize पारितोषिक
 Probation परीक्षणकाल
 Probation officer परीक्षाकार्थीन अधिकारी, अस्थायी अधिकारी
 Probationer परीक्षमाण
 Pro bono publico सर्वजनहिताय

Problem समस्या
Procedure कार्यप्रणालि, कार्यविधि, (कार्य-प्रक्रिया)
Procedure, Civil व्यवहार-विधि, व्यवहार-प्रक्रिया
Procedure, Criminal दंडविधि
Proceedings विहित विवरण, कार्यवाही
Process प्रक्रिया, आदेशिका;—surveiler तामीक करने-वाला
Process of unification एकीकरणकी प्रक्रिया
Process-fee आदेशिका-शुल्क
Proclamation उद्घोषणा
Proclamation of emergency आपातकी उद्घोषणा, संकटकारीन स्थितिकी घोषणा, संकट घोषणा
Procurator उप-नायक/दूत
Procurement बखरी (अन्वेषण), अधोपकृति
Product गुणनकत; उत्पादित वस्तु, उत्पादन
Production उत्पादन
Production of documents दस्तावेज-प्रस्तुति
Productivity उत्पादनक्षमता, उर्वरता
Profession वृत्ति, व्यवसाय, पेशा
Professional Conduct व्यावसायिक आचरण
Professor प्राध्यापक
Proficiency निपुणता
Profit लाभ
Profit Excess अतिरिक्त लाभ
Profit-sharing scheme लाभ-विभाजन योजना
Programme कार्यक्रम, (पुरोगम)
Progressive increase उत्तरोत्तर वृद्धि
Progressive tax क्रमशः वर्धमान कर
Progressivism प्रगतिवाद
Prohibited निषिद्ध, प्रतिषिद्ध
Prohibition मद्य-निषेध; प्रतिषेध
Prohibition, writ of प्रतिषेध-लेख
Prohibitory निषेधक, प्रतिषेधक
Project परियोजना
Projection प्रक्षेपण
Proletariat सर्वहारा वर्ग
Promissory note प्रतिज्ञापनपत्रिका; वचनपत्र
Promotion पदोन्नति; कर्तव्यवृत्ति; उन्नयन
Promoter प्रवर्तक
Prompt क्षिप्र
Prozulgate जारी करना, प्रवर्तन करना, प्रकाशपन करना, विमोचन करना
Pronunciation प्रवर्तन, विमोचन
Pronote कर्णवर्धन-पत्र
Proof प्रमाण; शोध-पत्र
Proof reader ईश्वराचक, शोध-शोधक
Propaganda प्रचारकार्य, प्रचार
Propagandist प्रचारक
Propagate प्रचार करना
Property संपत्ति; विदेशीयता; गुण

Property, movable and immovable चल तथा अचल संपत्ति
Property-tax संपत्तिकर
Prophet देवदूत, पैगंबर
Prophylactic Drug रोगनिरोधक द्रव्य
Propitiation प्रसादन
Proportional representation समुपासिक प्रति-निधित्व
Proposal प्रस्तापना
Proposer प्रस्तापक
Proposition प्रमेय; प्रस्तापना
Proprietorship स्वामित्व
Propriety सत्वावसान; (नित्यबोध)
Proscribe जप्त करना, प्रतिषिद्ध करना, वारित करना
Prosecution प्रातिवोधन; प्रातिवोक्षा पक्ष; इत्तगाना
Prosecutor, public राजकीय प्रातिवोक्षा
Prosody छन्दशास्त्र
Prospect प्रत्याशा, आसार
Prospective भावी
Prospectus विवरणपत्रिका (पाठ्यक्रमविधि) नियमावली
Prostitution वैवाहिक, वैवाहिक; दुष्प्रयोजन
Protection of industries उद्योगोका संरक्षण
Protective duty संरक्षण-कर
Protectorate संरक्षित राज्य
Protest प्रत्याख्यान
Protoplasm जीवद्रव्य
Protocol मूलपत्र, मूलसंधिपत्र; कूटनीतिक शिष्टाचार विन्यास
Protractor चौदा, कोणमापक
Provide निवेशित करना
Provided परंतु
Provided that पर, उपबंध यह है कि
Provident fund सविध्वनिधि, संचित कोष, संनिध निधि, सुविधाचक कोष; संभरण निधि
Provident fund, Contributory अंशदायी सचिव-कोष
Province प्रांत, प्रदेश; अधिकारक्षेत्र, कार्यक्षेत्र
Provincial autonomy प्रांतीय स्वायत्त; स्वायत्त शासन
Provincial Homeguards प्रांतीय रक्षक
Provincialism प्रांतीयता
Provision निवेद्य; रसद, आचलासमय; उपबंध
Provision of law विधि-निवेद्य
Provisional government अस्थायी सरकार
Provisional programme अस्थायी कार्यक्रम
Proviso प्रतिबंध, प्रतिबंधात्मक वाक्य, शर्त, परंतु
Provost Marshal सैनिक न्यायाधीश
Proximity समीपता, सांनिध्य
Proxy प्रतिपुङ्गव, प्रतिपत्नी
Pseudonym (व्यक्तिनिध) छद्मनाम

Psychiatrist मनोरोग-चिकित्सक
 Psychology मनोविज्ञान
 Psycho-analysis मनोविश्लेषण
 Puberty साक्ष्यायस
 Public accounts committee लोकसेवा-मिति
 Public activity लोक-कार्यकलाप
 Public affairs लोक-कार्य
 Public concern, matter of लोकविषयक बात
 Public criticism सार्वजनिक आलोचना
 Public debt सरकारी ऋण
 Public demand- सार्वजनिक अभियाचना
 Public entertainment लोक-प्रयोग
 Public function सार्वजनिक कृत्य
 Public good लोकहित
 Public health लोक-स्वास्थ्य
 Public holiday सार्वजनिक छुट्टी
 Public notification सार्वजनिक अधिवचना
 Public nuisance लोककष्ट, लोकपीडक; लोकपीडन
 Public opinion लोकमत
 Public order सार्वजनिक व्यवस्था
 Public relation officer राजसम्पर्क-अधिकारी
 Public Safety Act जन-आ अधिनियम
 Public servant राजसम्पर्क, लोकसेवक
 Public Service Commission जनसेवा आयोग
 Public utility services- लोकोपयोगी सेवाएँ, जनो-
 पयोगी सेवाएँ
 Publicist सार्वजनिक विषयोपर लेखादि लिखनेवाला
 Publicity प्रसिद्धि, लोकविभूति; प्रकाश, प्रचार, जन-
 संबन्धन
 Public Works Dept. लोकनिर्माण विभाग
 Punsney Judge छोटा नज, उप-न्यायाधीश
 Pulley धरनी, गथारी, चिर्ग
 Pulsation स्पन्दन
 Pulse दाल; मारी; स्पन्दन
 Pulverise पेषण
 Pump उदहन यंत्र
 Pun इच्छे
 Punching छिद्रवण
 Punctual समयमिति
 Punctuation चिह्निकन
 Punitive दंडात्मक
 Punitive tax दंडकर, लाजरी कर
 Purchasing power क्रयशक्ति
 Purge परिष्करण, परिष्कार, सफाई
 Puritanism विद्वत्प्रवाद, कठोरतावाद
 Purport अभिप्राय
 Purporting to be done कर्तुमसमने
 Purpose charitable पुण्यार्थ
 Putrefaction दूषण
 Pyorrhea होलाह (पुराना श्वन्)

Q. E. D. इति सिद्धम्
 Quadrangle चतुष्कोण
 Quadrilateral चतुर्भुज
 Quant विरुद्ध
 Qualification योग्यता, अर्हता
 Qualified acceptance विशेषित स्वीकृति, सप्रतिबंध
 स्वीकृति
 Quality marking गुण निह्न अंकन
 Quantum प्रमात्रा
 Quarantine post रोगप्रतिबंध निरोध, निरोध
 Quarter चतुर्थांश, प्रमाण; आवास, निवास; आश्रय,
 असाधन-गृहस्था, वस्ती
 Quarterly द्वैमासिक निवेदन १०; पु० त्रैमासिक पत्र
 Quarter-master-Quartermaster प्रधान-सम्पद-व्यवस्थापक,
 प्रधान सैन्यवास-व्यवस्थापक
 Quarto चौपैसी, चौदृष्ट
 Quam अर्थ
 Quell क्षमन करना
 Query प्रश्न
 Questionnaire प्रश्नावली-पत्रक
 Quickening अतिसर्पण
 Quinquennial पञ्चवर्षीय
 Quinsing विभीषण, जवचद, क्षत्रुघोषी
 Quittance उन्नीचन
 Quorum गणपूर्ति, कार्यवाह-संख्या
 Quota नियतांश, वटिमांश; अन्धोश
 Quotation अवतरण, प्रीति; वाजतराज (see rate-
 quotations)
 Quotient साफल्य, भजनफल
 Quo warranto अधिकार-पत्रिका

Race प्रजाति
 Racial discrimination प्रजातिगत भेदभाव
 Rack दण्ड
 Radiation दीप्तिप्रसारण; (ताप, प्रकाश या विद्युत्)
 विकिरण
 Radical आमूल परिवर्तनवादी, उग्र सुधारवादी
 Radicalism आमूल सुधारवाद
 Radio programme रेडियोवार्ता; आकाशवाणी-कार्यक्रम
 Radio transmitter रेडार यंत्र
 Radius अर्धव्यास; शिखर
 Raid धावा, छाप
 Raiden आक्रमणकारी
 Railway रेलवे, अयोमार्ग
 Rally एक होकर खड़े हो जाना, समर्थन, उपस्थान,
 समावृत्ति, समागमन (गाल-परीका)
 Rampart प्राकार
 Raneour अतिद्वेष, अतिद्रोह

Range पर्यवेक्षण; मात्ता; पकि; विस्तारक्षेत्र, गतिक्षेत्र;
 वितार
 Ranger बनपाल
 Rank श्रेणी, पदवी, पदवी
 Rank and file समस्त सामान्य सैनिक; सामान्य जन
 Ransom निष्कृतिपत्र; (वनहो-ओत्रपुरी)
 Ratable करबोध
 Rate उपभुक्त, उपकर; दर; अनुपात; गति
 Rating धुल्ल-निरूपण
 Ratification अनुसमर्थन, पुष्टिकरण
 —of boundaries सीमासंशोधन
 Rational बुद्धिमूलक
 Rationalisation of industry उद्योग-समीकरण;
 उद्योगकी वैज्ञानिक व्यवस्था; अभिनवीकरण
 Rationing समवितरण, निर्बंधित वितरण, सुराकरंदी
 Reactionary पतिक्रियावादी, प्रतिवाधी, प्रतिक्रियात्मक
 Reader पाठक; वाचक. पाठोपानी पुस्तक; पेशकार,
 उपस्थापक; प्राध्यापक
 Reading वाचन, पठन, पढ़न; अनुमान
 Ready money नकद
 Ready reckoner सुकभणक
 Real estate स्थावर भूतंपत्ति
 Realist द्वाधर्मादी
 Real value वास्तविक अर्था
 Rear पृष्ठभाग
 Rearguard अनुग्रह
 Rearguard Action पृष्ठरक्षक युद्ध
 Re-armament पुनरस्त्रीकरण
 Rebate छूट, अवहार
 Rebellion विद्रोह
 Recall v. वापस बुलाना, प्रत्याहृत करना; n. प्रत्याख्यान
 Receipt प्राप्ति; रसीद, प्राप्ति
 Receiver आग्राता; प्रतिग्राहक, ग्राहकबंध, ग्राहकग
 Receiving Apparatus ग्राहकयंत्र
 Reception Committee स्वागत-समिति
 Recess अस्थावकाश, मध्यावकाश, विश्रान्तिका
 Recession साधका गिरना
 Recipient प्राप्तिर्कारी, प्रापक
 Reciprocal पारस्परिक; परस्परबोधक (संबन्धम)
 Reciprocity पारस्पर्य, पारस्परिकता
 Recital भाषण, पाठ
 Reclaim (भूमिका) उद्धार करना; कुपक्वे सुपथपर लाना
 Recognition प्रस्वीकृति; मान्यता, अभिज्ञा
 Recognizance सुचलका
 Recognized प्रस्वीकृत; अभिज्ञात, मान्य
 Recollection अनुस्मरण
 Recommendation अभिलाष, सिफारिश, अनुशंसा
 Recommended अभिलाषित, अनुशंसित
 Recompense प्रतिदान देना
 Reconciliation फिर राजी करना, समझौता, मित्राव;

समाधान, सरापन
 Reconnaissance गदत, पर्यवेक्षण
 Reconnaissance place टोपक (टोह केनेवाला) विमान
 Reconnoitring सामरिक दृष्टि की जानेवाली जाँच-
 पड़नाक
 Record अभिलेख; लेखा-जोखा, लिखित विवरण;
 कीर्तिमान
 Recorded अभिलिखित
 Recording अभिलेखन, ध्वन्यभिलेखन
 Record-keeper अभिलेखपाक
 Record कागज-पत्र
 Recoup क्षान्तिपूर्व करना
 Recovery बख्शी, प्रत्यादान, प्रतिक्रिधि; स्वार्थकाम
 Recruitment भर्ती
 Rectangle आयत
 Rectangular आयताकार
 Rectify संशोधन करना, ठीक करना
 Rector अधिपति, मुख्याधिपति
 Recurring expenditure आवर्तक (निरवर्त) व्यय
 Redemption कर्मभूमि; विमोचन
 Redeemable विमोच्य
 Redemption charges विमोचन-व्यय
 Red letter शुभ; महत्त्वपूर्ण, रमणीय
 Red rag मरकानेवाली (नरंगकाटी) वस्तु
 Hedtapism दीर्घमूर्ता, अन्वीपचारिता
 Redress प्रतिपार, वलेशमुक्ति
 Reductio and absurdum असंगति प्रदर्शन
 Reduction कमी, छूट, उटनी
 Redundant व्यर्थ, अनावश्यक
 Re-enactment पुनरधिनियमन, पुनर्विधान
 Refer निर्देश करना; प्रतिप्रेषण करना
 Referee पंच, लेखपंच, अभिनिर्णायक
 Reference निर्देश, अभिनिर्देश
 Reference book भाकर-ग्रंथ (संदर्भ-ग्रंथ),
 Referendum निवाचकोंके मन केनेकी पड़ति, जन-
 निर्देश, आपृच्छा
 Reflection प्रतिबिम्ब
 Reflector प्रकाश-परावर्तक, प्रतिकलक, परावर्तक
 Reflex angle पुनर्तुल्य कोण
 Reformatory सुधारालय
 Refresher course पुनर्बोधन पाठ्यक्रम (प्रबोधन
 पाठ्यक्रम)
 Refrigerator हिमीकर, शशीलक
 Refugee कर्णार्थी
 Refugee township कर्णार्थी बस्ती
 Refund लौटाना, वापसी, (बन) प्रत्यर्पण
 Refundable प्रत्यर्पणीय, लौटाने जाने योग्य
 Refuting, refutation खंडन
 Regal राजीवित; राजकीय
 Regalia राजविह

Regency Council राज्यसंघालक परिषद्
 Regent प्रतिशासक, राज्यसंरक्षक
 Regiment सैन्यदल
 Region प्रदेश, प्रदेय
 Regional Council प्रादेशिक परिषद्
 Register पंजी; v. पंजीबद्ध करना
 Registered पंजीबद्ध, रजिस्ट्रीछुदा, निबद्ध
 Registrar लेखाकारिपति; पंजीयक, निबंधक
 Registrar (of a university) पीठस्थपिर, कुलसचिव
 Registration पंजीयन, दर्ज करना, निबंधन
 Regressive taxation प्रतिगामी कर
 Regular नियमित, नियमशील
 Regular army नियमित सेना
 Regulate विनियमन करना
 Regulating Act विनियमन-अधिनियम
 Regulation विनियम; विनियमन
 Regulator विनियमक
 Rehabilitation पुनर्वास, पुनर्वासन
 Rehearsal प्रशोभन
 Reign of terror आतंकका राज्य
 Reimbursement भरपायी, भुगतानी
 Reinforcement कुमक भेजना
 Reinforce पुनः प्रबलित करना; कुमक भेजना
 Reinstallation पुनरभिषेक, पुनर्स्थापन
 Re-instate पुनः नियुक्त करना, बहाल करना
 Reinstatement पुनर्नियुक्ति, पुनर्स्थापन, बहाली
 Rejection अस्वीकरण
 Rejoinder प्रत्युत्तर
 Relative सापेक्ष; n. संबंधी, रिश्तेदार
 Relay (पुनः) प्रसारित करना (आकाशवाणीका कार्यक्रम)
 Release मुक्ति, छोड़ दिया जाना
 Relevancy सुसंगति
 Relevant सुसंगत
 Reliability of data आँकड़ोंकी विश्वसनीयता
 Relic स्मृतिशेष
 Relief सहायता, आराम; परमोन्नत
 Relief map उचावधर नक्शा; उन्नत मानचित्र
 Relief work आपत्-सहाय-कार्य
 Relieving officer स्थानवाही अधिकारी
 Remand प्रत्यावर्तित करना, छोटा भजना, हवाला न
 वापस भेजना
 Remark कथुक्ति, टीका
 Remedial measures प्रतिकारक उपाय
 Remedy उपचार, उपाय, साधन
 Reminder अनुस्मारक, अनुस्मरण-पत्र
 Remuniscence संस्मरण
 Remission परिहार, क्षमा, क्षमादान
 Remit भेजना, विधेय
 „ a sentence दंडका प्रतिहार करना
 Remittance विधेयित भना; विधेयन

Remitter विधेयक
 Removal हटाना; एवकरण
 Remuneration पारिवर्तिक
 Renaissance पुनरुत्थान, पुनर्जागरण
 Renegade स्वमतत्यागी, स्वपक्षत्यागी
 Renewal नवीकरण, नवीनीकरण
 Renovation नूतनीकरण, नवीकरण
 Rent किराया, माटक, कमान, भूमिकर
 Rental माटक-राशि, कुल कमान
 Rent controller किराया-नियंत्रक
 Renunciation स्वत्वत्याग, संन्यास
 Reorganization पुनर्संघटन
 Repair मरम्मत, मरार, मरकार
 Repairable मरारयोग्य-पूर्णयोग्य
 Reparations क्षतिपूर्ति, हरजाना
 Repatriate स्वदेश प्रतिप्रेषण, पुनः स्वदेश लौटाना
 Repayable प्रतिदेय, प्रतिक्षेप्य
 Repeal प्रतिक्षेपण
 Repealment प्रतिक्षेपण
 Repeal विधेयन करना, विधेयनीकरण, निरसन, रद्द करना
 Repercussion मानसिक प्रतिक्रिया, अप्रत्यक्ष प्रभाव
 Repetition पुनरुक्ति, पुनरावृत्ति, आवृत्ति
 Replenishment क्षतिपूर्ति करना
 Replete विपुल, परिपूर्ण
 Report विवरण, विवरणी; सूचना देना; प्रतिवेदन
 Reporter सभासदाता, सूचक
 Represent निवेदन करना, प्रतिनिधित्व करना
 Representation प्रतिनिधित्व, निवेदन
 Representative n. प्रतिनिधि
 —, adj. प्रतिनिधिक, प्रतिनिधिमूलक
 Repression दमन
 Reprieve प्रविलंब करना
 Reprimand बर्तना
 Reprinted पुनर्मुद्रित
 Reprisal प्रतिपीडन; प्रतिदण्डन
 Reproduction पुनरुत्पादन, प्रजनन
 Reproductive organ जननेन्द्रिय
 Republic गणराज्य, प्रजातंत्र
 Republican गणतन्त्रात्मक; गणतन्त्रवादी
 Repudiate जननीकार करना
 Repugnance विरोध, घृणा
 Repugnant विरुद्ध, प्रतिकूल
 Reputed ख्यात, प्रसिद्ध
 Request निवेदन, प्रार्थना, अभिप्रायन
 Required अपेक्षित
 Requisite standard अपेक्षित मान
 Requisition अधिग्रहण, कामके लिए ले लेना; अधि-
 याजन, वस्तुसंग्रह; अपेक्षण
 Re-sending निरसन
 Rescued बचाना, उद्धार
 Rescue-home उद्धारशुद्ध

Research सर्वेक्षण, शोध
 Reservation आरक्षण, संरक्षण
 Reserve fund आरक्षित कोष
 Reserved आरक्षित, संरक्षित
 Reserved forest आरक्षित वन
 Reserved subject आरक्षित विषय
 Reshuffling हेर-फेर, आपरिवर्तन
 Resident निवासी; आवासिक; आवासी प्रतिनिधि
 Residential जहाँ लोग रहते हैं, छात्रावासीय
 (विश्वविद्यालय)
 Residential quarters आवासगृह
 Rendue अवशेष
 Residuary अवशिष्ट
 Residuary powers अवशिष्ट शक्तियाँ
 Resignation पदत्याग; त्यागपत्र; ईश्वरेच्छानुवृत्ति,
 अविरोधका भाव
 Resistance प्रतिरोध
 Resolution निश्चय, संकल्प; वदना
 Resolve संकल्प करना; दृढ़ निश्चय करना
 Resort आश्रय
 Resourcefulness साधनसंपन्नता, प्रत्युत्पन्नमत्तित्व
 Resources साधन; धन; भाव
 Respectively बधाक्रम, क्रमात्
 Respite लघु विराम, पुरस्ति; क्षणिक रक्ष्यन
 Respondent प्रतिवादी
 Response उत्तर
 Responsible, severally पृथक्-पृथक् उत्तरदायी
 Responsive cooperation प्रतिक्रियात्मक सहयोग,
 सापेक्ष सहयोग
 Rest-house विश्रामभवन, विश्रामालय
 Restitution प्रत्यानयन; हतप्रतिदान, प्रत्यपण; पूर्व-
 स्थितिस्थापन; क्षतिपूर्ति
 Restoration पुनर्स्थापना; प्रतिदान, हतप्रत्यपण; प्रत्या-
 नयन; पूर्ववत्करण
 Restraint संयम
 Restrict सीमित करना
 Restriction रक्काबद. निर्बंधन, (निरोध)
 Resultant परिणामी
 Resume one's seat पुनः आसन ग्रहण करना
 Resumption पुनर्ग्रहण, पुनरारम्भ
 Retail पुटकर
 Retail price पुटकर मूल्य
 Retail sale पुटकर बिक्री
 Retailer खुदरा बेचनेवाला
 Retire अवसर ग्रहण करना
 Retired अवसर-प्राप्त, अवकाश-प्राप्त, निवृत्त
 Retirement निवृत्ति, अवसर-ग्रहण
 Retort stand दृढ़
 Retrenchment छेटी
 Retribution प्रतिफल, प्रतिकार

Retrospective effect, With पूर्वप्रभाव सहित,
 अनुदृष्टी प्रभावसहित, गतकालपेक्षी प्रभावसहित
 Return प्रत्याग; प्रतिक्रम; विवरण; प्रत्यावर्तन, पुनरा-
 गमन
 Returning officer निर्वाचन-अधिकारी
 Reunion पुनरेकीकरण
 Revaluation पुनर्मूल्यन
 Revenue राजस्व, आयमन, माकसुबारी; किन्ती मदकी
 आय
 Revenue account आगम लेखा
 Revenue court माक न्यायालय
 Revenue minister माकमंत्री, राजस्वमंत्री
 Revenue year कुषिर्बर्ष, फसली साल
 Reverberation प्रतिनिनाद
 Reversal पराजय; विपर्यय
 Reverse v. उलट देना, विपर्यय करना, निरसन या
 अभिव्यञ्जन करना, प्रतिकरण; n. पीठ, पृष्ठ; adj.
 उलटा, विपरीत
 Reverse current bill प्रतिपरिवर्त्तविपय
 Reverses द्वार, पड़ाइ
 Reversion विपर्यय; प्रत्यावर्तन
 Reversionary प्रतिवर्ती; उत्तरभोग्य
 Reversionary bonus प्रतिवर्ती अफियाभात
 Reversioner उत्तरभोगी
 Revert प्रतिवर्तन करना; प्रत्यावर्तिन होना
 Review आलोचन, पुनर्विलोकन
 Revision पुनरीक्षण, निर्यानी; दोहराना
 Revision of scale स्तनक्रमका संशोधन
 Revival पुनरुज्जीवन, पुनःप्रचलन
 Revive पुनर्जीविन करना; पुनरुद्धार करना, पुनः प्र-
 क्तिन करना
 Revocation निरसन; प्रतिमहरण
 Revolution क्रांति
 Revolutionary क्रांतिकारी
 Revolutionist क्रांतिवादी
 Rewards पारितोषिक; प्रतिकर
 Rhetoric अलंकारशास्त्र, रीतिशास्त्र
 Rhombus विषमकोण सम बहुभुज
 Rhythmic साकबद्ध
 Right n. अधिकार, स्वत्व
 Right adj. ठीक, युक्त, उचित; सरक; दक्षिण
 Right angle समकोण
 Rightist दक्षिणपंथी
 Rights, Civic नागरिक अधिकार
 Rights, Civil दीवानी अधिकार
 Rinderepost खूनी दस्त
 Rise उदय; उपधान, उन्नति, उत्कर्ष
 Ritual संस्कार
 Rivalry प्रतिद्वन्द्विता, प्रतियोगिता
 River valley scheme नदी-वादी योजना

Roaming ambassador पर्यटक राजदूत
 Robing room परिधान-गृह
 Robot रॉबोट
 Roll सूची, तालिका, नियमावली
 Roller रोलर
 Rostrum व्याख्यानपीठ
 Rotation चक्रानुक्रम; पदोप
 Round दौर; वाद; चक्र, चक्कर, रीढ़, घड़न
 Round-Table Conference गोलमेज-सम्मेलन
 Route मार्ग
 Routine निरूपक्रम
 Rowdyism हुलस-धमाजी
 Royal seal राजमुद्रा
 Royalty अधिकार-सुल्क; स्वाभिम्व, स्वत्वम्भ
 Rule नियम; शासन
 Rule of the road नवनिषय
 Rule out नियमविरुद्ध घोषित करना
 Ruler शासक; रेशक
 Ruling व्यवस्था
 Rumour जनश्रुति, किंवदन्ती, प्रवाद
 Run धावन
 Runway विमानतट अवतरण-पथ, धावनमार्ग
 Rural ग्राम संबंधी, ग्राम्य
 Rural uplift ग्रामीणजी, ग्राम्यसुधार
 Rust गेरह
 Rusticate निस्सारित करना
 Rustication निस्सारण

S

Salvage अलभ्यंस्त, नोपकोष
 Sacrifice त्याग; याग, यज्ञ
 Safe conduct अमयपत्र, रक्षाचन्त्र
 Safe-guard सुरक्षण; परित्राण, रक्षाकवच
 Safety-vault सुरक्षित कोषक
 Salaried वैतनिक
 Salary वेतन
 Sale-deed विक्रय-लेख
 Sales-tax विक्रीकर
 Salesman विक्रयिक
 Salesmanship विक्रय-कला
 Salient प्रधान, मुख्य
 Saline लवणीय
 Salvage प्रक्षोकार
 Salvation Army मोक्ष-सेना, मुक्ति-सेना
 Salvo तोपोंकी बाढ़
 Sanatorium स्वास्थ्यनिवास, स्वास्थ्यमन्दन, आरोग्य-
 शाला
 Sanction स्वीकृति, संमोदन; दंडोपबंध
 Sanction, Military सैनिक अनुज्ञप्ति
 Sanctuary सुरगस्थान; अभयारण्य
 Sanitary स्वच्छिप्रस; रक्षमय

Sanitation स्वच्छता, संमार्जन
 Sapphire नीलम
 Sappers and miners सपर-खेना
 Sarcasm व्यंग्य, आक्षेप, ताना
 Satrap प्रांतपति, कुषप
 Satellite उपग्रह
 Saturated solution संतृप्त द्रावण
 Savant प्राज्ञ, पंडित, ज्ञानी
 Savings Bank बचत खाता
 Savings campaign भित्तव्यविता-आन्दोलन
 Saviour उद्धारक
 Scaffold फर्सीन, तरना
 Scaffolding मंच-पाठ
 Scale पैमाना, अनुमाप; मापनी; तराजू
 Scale, large बड़े पैमानेपर
 Scale of salary वेतन क्रम
 Scandal परित्याज, लोकप्रवाद, अपवाद
 Scar क्षतचिह्न
 Sceptic संदेहवादी, मस्याराम्य
 Scepticism संदेहवाद, मस्यवाद
 Sceptre राजदंड
 Schedule परिगणना, अनुसूची
 Scheduled castes परिगणित जातियाँ, अनुसूचित
 जातियाँ
 Scheduled time निर्धारित समय
 Scheduled tribes अनुसूचित जनजातियों
 Scheme योजना
 Schism कूट
 Scientific apparatus वैज्ञानिक यंत्र
 School शाला; मठ, सप्रदाय; अध्ययनशाला
 Scoop news स्वातंत्र समाचार; पेंकानिक समाचार
 Scope विस्तार, क्षेत्र, सीमा
 Scorching earth, policy मर्वक्षार नीति
 Score गोल करना; रन बनाना; विजयी होना; म.
 विषय; कारण
 Scorpio बुध्दिक राशि
 Scramble छीनाझपटी
 Screen पर्द
 —, Silver रजतपर्द
 Script लिपि
 Scripture धर्मग्रंथ
 Scrutiny सूक्ष्मपरीक्षण, संपरीक्षण
 Sculpture मूर्तिकला, भास्कर्य
 Scum छाननी
 Seaborne trade समुद्री व्यापार
 Sealed मुद्रांकित; मुहर किया हुआ
 Search-light प्रकाश प्रक्षेपक, अन्वेषक प्रकाश, विद-
 गंमालोक
 Season ticket म्वादी टिकट
 Seasonal occupations मौसमी पधे

Seasoned wood सिक्कायी लकड़ी

-worker अनुभवही कार्यकारी (भवनिक)

Seaworthiness of vessels जहाजोंकी वाता-सम्यता

Secant छेदक, छेदक रेखा

Secession संघर्ष-विच्छेद

Second, To अनुमीदन करना

Second chamber द्वितीय बेरम, अपर सदन

Second person मध्यम पुंस्य

Secondary माध्यमिक; शीघ्र; परवर्ती

-growth परवर्ती वृद्धि

Seconder अनुमेदक

Secret रहस्य; adj. गुप्त

Secret Agent प्रणिधि, गुप्तचर

Secret ballot गुप्त मसदान

Secret service गुप्तचर-विभाग

Secretariat सचिवालय

Secretary सचिव

Secretary, Additional अतिरिक्त सचिव, अपरसचिव

Secretary, Assistant सहायक सचिव

Secretary, Deputy उप-सचिव, प्रति-सचिव

Secretary, Joint संयुक्त सचिव

Secretary, Under अपरसचिव

Secretary of State राज्य मंत्री (ब्रिटेन), परराष्ट्र मंत्री (अमेरिका)

Secretary, Private निजी सचिव (निज-सचिव) स्व-सचिव, अंतरंग-सचिव

Secretion स्राव; निस्तारण

Sect छवसंप्रदाय

Sectarianism धार्मिक दलबंदी

Section बारा (नियम); अनुभाग; खंड;—Leader डुकरी नायक

Sector खंड; वृत्तखंड

-of a circle द्वैविध

Secular धर्मनिरपेक्ष, जैमिक

Secure सुरक्षित

Securities सार्वजनिक, प्रतिभूतियाँ

Security प्रतिभूति, प्रतिभू (व्यक्ति);—bond प्रतिभूत, अमानतनामा

Security Council सुरक्षापरिषद्

Security measure सुरक्षा-व्यवस्था

Security of tenure पदधारण-सुरक्षा

Sediments तलछट, कलक

Sedimentation कलकन

Sedition राजद्रोह

See यदीप्यस्यैव शेष

Segment of a circle अर्धवृत्त

Segregation धर्मनिरपेक्ष, पृथक्करण

Seismograph भूकंप-मापक यंत्र

Seismology भूकंपविज्ञान

Select committee प्रकर समिति

Selection (चुनाव) अंतर्भावक, प्रकरण

Self-contained स्वतःपूर्ण

Self contradictory स्वकीविरोधी

Self-determination आत्मनिर्णय

Self-government स्वाशासन

Self-sufficiency आत्मभरितता

Self-sufficiency plan आत्मभरित योजना

Selling विक्रय

Semi-circle अर्धवृत्त

Semi-final उपान्त, अंतिमप्राय

Seminar विचारमोड़ी, विचार-संमेलन; अध्ययन-मोड़ी

Semiweekly अर्धसाप्ताहिक

Semitic सामर्थ्योत्पन्न, आर्य-वहूदी

Senate प्रमुखसभा; प्रबंधसमिति

Sender प्रेषक

Senior स्वेष्ट; पुराणा

Seniority ज्येष्ठता, प्राथम्य

Sensation संवेदन; मनसनी

Sensationalism संवेदनवाद

Sense अभिप्राय, भाव, अर्थ; समझदारी; होश; सदा

Sense of the assembly सभाका अभिप्राय या भाव

Sensualism इन्द्रियार्थवाद

Sentence दंडदेश, सजाय वाक्य

Sentence, to uphold सजा बहाल रखना

Sentry बहरी, नंतरी

Sentimentality मायुकता

Septic पीतिक

Septimal Act मनुष्याधिक व्यवस्था

Serfdom कृषि दासता, कृषि दास प्रथा

Sereulture कोलकीट-पालन

Series श्रृंखला, शृंखला

Serum रक्तस्राव, सौम्य

Served अन्वयित (आदेश इ०), तामीक

Service सेवा, नौकरी, मूला—book सेवापुस्तिका

Service charge सेवा व्यय

Service, Civil नागरिक राज्यसेवा

Service, Condition of सेवाकी शर्तें

Servicemen सैनिक

Service of notice सूचनापत्रका तामीक होना

Session सत्र, अधिवेशन; बैठक

Session Court सत्र न्यायालय, दौरा अदालत

Session, termination of समाप्तता

Set-back (प्रतिकूल स्थिति), प्रगतिरोध

Settlement बस्ती; भूमिस्वत्व, वन्द्यत्व; निपटारा

Sovereignty of diplomatic relation राजनीतिक

संघर्ष-विच्छेद

Sexual वैयुक्तिक; कामजनित; लैंगिक

Sexuality कामुकता, कामवासना, किंगिता

Shade छाया, भावा; आभाशेय

Shadow प्रतिविम्ब, छाया

Sham छायांक; लघुचित्र
 Sham fight छायाचित्र
 Shampoo संवाद, संवादन
 Share अंश, भाग, हिस्सा
 Share-holder हिस्सेदार, भागीदार
 Share-market शेयर बाजार
 Sheet तारा; कलक
 Sheet, Charge आरोपपत्र
 Shell शेल (तोपका); कवच (कक्षा छिलका)
 Shift शाली
 Ship-building industry वीतनिर्माण-उद्योग
 Shock treatment चूहसोपचार
 Shock-troop सहस्राक्रामक बल
 Shorthand शीघ्रलिपि, स्वरलिपि
 Short-notice question अल्पसूचित प्रश्न
 Shorts बूटका, जेकर
 Short term loan अल्पकालीन ऋण, अ-बाधक ऋण
 Shot छुरी
 Show-down बलपरीक्षण, अन्तिम पराका
 Shrinkage सिकुचन, आकुचन
 Sign-board नाम-पट्ट, नामपटल
 Signal संकेत; सिग्नल
 Signatory हस्ताक्षरकर्ता
 Silt चक्राश
 Silver Jubilee राजन-त्रयवी
 —green राजनपट
 Silviculture वनविज्ञान, वनवर्धन
 Simple उपमा
 Simplification सरलीकरण
 Simultaneous समकालिक
 Since die अनिश्चित कालतकके लिए
 Single member constituency एक सदस्य निर्वाची क्षेत्र
 Single transferable vote एकल प्रक्रमणीय मत
 Singular एकवचन; अनोखा
 Sinking fund ऋणपरिक्षोभन कोष, निर्रपनिधि
 Sinus नासूर, नासीजन
 Sitting उपवेशन, बैठक
 Sixers, sixes छक्के, छीरे
 Sketch रूपरेखा, रेखाचित्र, शब्दचित्र
 Skilled labourer कुशल श्रमिक
 Skirmish छिटपुट संघर्ष
 Sky-scraper अशोक, गगनचुम्बी भवन
 Slander अपमान-वचन, अपवाद
 Slaughter-house पशु-बधालय
 Sleeper सिकपट
 Sleeping partner छद्मस्तीन भागीदार
 Sliding scale विद्युत अनुपात
 Sluggan मारा, शेष
 Slum इतिहासहीन, मलिनमावास

Slump मूल्यावपात, अर्थपतन, सस्ती
 Slur कलंक
 Small cause Court लघुवाद न्यायालय, अदालत-क्षेत्रीका
 Smelt प्रदायक
 Smoke-screen धूमपट, धूमावरण
 Smuggle करारहार, चुंगीचोरी, अवैध प्रेषण (अपहरण-कौटिब्य)
 Sniper कपटापानी, छलापाती
 Snowline हिमरेखा
 Soap stone मोरा पत्थर, नीचा पत्थर
 Social लोकप्रिय; सामाजिक
 Social lawyer न्यायाधिकार अधिकार
 Social custom सामाजिक रीति
 Social gathering सम्मेलन, प्रीतिसम्मेलन
 Social Insurance सामाजिक बीमा
 Social order सामाजिक व्यवस्था
 Social security सामाजिक सुरक्षा
 Social service सामाजिक सेवा
 Socialisation समाजीकरण
 Socialism समाजवाद
 Society समाज
 Society for prevention of cruelty to animals (S. P. C. A.) पशु-निर्ययता-निवारण-समिति
 Soft currency area सुलभ मुद्राक्षेत्र
 Soil conservation भूमिसंरक्षण
 Soil erosion भूमिकी कटन-छेदन, भूमिका कटाव
 Soil-candy बलुरे भूमि, मृद
 Soil, virgin अकृष्टभूमि, वंजरभूमि
 Solicit मागह प्रार्थना करना
 Solid ठोस, पट्ट
 Solidification सघटन
 Solitary cell काल-कोठरी; मौसत घर
 S confinement तनहाई कैद, एकांत कारावास
 Solubility घुलनशीलता, विलेयता
 Solution बोल, दायण, विलयन; डल
 Solute घुल्य
 Solvent बोलक
 Sombabulism निद्राभ्रमण, निद्राचार
 Sophistry सिद्धांतात्मक, बुद्ध्यात्मक
 Sore ज्वर, वाय
 Sooter पत्रविद्योक्त
 Sound स्वस्थ, निदोष
 S. O. S. मदद-संकेत
 Sound recorder ध्वनिसंसाहक, ध्वन्यभिलेखक
 Souvenir स्मृतिचिह्न, स्मृति-उपायन
 Sovereign Democratic Republic संपूर्ण प्रभुत्व-सुधक लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
 Sovereignty प्रभुसत्ता, पूर्णसत्ता
 Soviet पंचायत

Speaker बयस, प्रमुख
 Specialisation विशिष्टीकरण
 Specification विनिर्देश
 Specimen नमूना, प्रतिरूप
 Spectrum वर्णछट्टा, वर्णपट, रङ्गभास
 Speculation अटकलपारी; सट्टा, काटका
 Spelling लिखने, बर्तनी, अक्षरी, वर्णविह्वलि
 Sphere गोल; कार्यक्षेत्र, प्रभावक्षेत्र
 Spine मेकदंश, पुस्तकश, रीढ़; कटक
 Splinter दरार, नम आदिके पनले, टुकीले टुकड़े
 Spokesman प्रवक्ता, मुखपात्र
 Sponsor प्रवर्तक, सहायक
 Sporadic raids छिडपुट हमले
 Squadron इस्ता
 Square वर्ग; कस्कर
 Stabilization स्थिरकरण
 Staff कर्मचारिबृंद
 Stage प्रक्रम; अवस्थान; रंगमंच, मंच
 Stalk बुन्ध
 Stamp अंकपत्र
 Stamped अंकपत्रित
 Standard प्रमाण, मान, मानक, कोटि. म्तर. adj.
 प्रामाणिक
 Standard of living जीवनयापनका स्तर
 Standardization प्रमाणिकीकरण, प्रमाणीकरण; मान-निर्धारण
 Standing committee स्थायी समिति
 Stand-still agreement गन्धाम्बिनि समझौता
 Starch स्वेत सार, मण्ड
 Starred तारकित, तारांकित
 State राज्य
 State funds राज्यनिधि
 Stately मन्व, प्रौढ़
 Statement बक्तव्य, विवरण, कथन
 Statesman राज्यनेता, राज्यविशेषज्ञ, राजपुरुष, राष्ट्रनायक, राजनयक
 Station अवस्थान, स्टेशन
 Stationery लेखनसामग्री
 Station officer बड़े थानेदार
 Statistical Adviser सांख्यिकीय मंत्रणाकार, आंकिक मंत्रणाकार
 Statistician सांख्यिक आंकिक
 Statistics सांख्यिकी, आंकिकी; आँकड़े
 Status quo क्यापूर्व स्थिति
 Statute संविधि
 Statutory Rationing संविहित राशन-व्यवस्था
 Stay-in strike काम न करी इहसास
 Steering Committee कर्मचार समिति; संवाकन समिति
 Stenographer आधुनिक

Sterilization निष्कीटण; बंधवीकरण
 Sterilized निष्कीटित; बंधवीकृत, निर्धारित
 Sterling balance पीढ़ पाबना
 Stipend हृति
 Stipulation करार, सर्त, अभिसंधिदा
 Stock संवित राशि; भंड पूंजी; राजकरण; स्कंध
 Stock exchange सराफा, बेधि बस्वर
 Stockist स्कंधिक, भांडारिक
 Stock register स्कंध-पंजी
 Stone सुलोपेक्षी
 Stone-age प्रस्तर-युग
 Stop cock रोषनी
 Stop press छपते-छपते
 Storekeeper अंडारी, अंडारवाण
 Stores भांडार
 Straight angle ९० कोण
 Strata स्तर
 Stratagem दाब-पान, छल-बल
 Strategic सामरिक महत्त्ववाला
 Strategy रणनीति
 Stratified स्तरीभूत
 Stretcher बिस्तरणी
 Stretcher bearer विस्तरणीवाहक
 Structure शिवालीचना, निरासक अभ्युक्ति
 Strike इट्टाक, इहसास, कमेरोषन
 Stringency अस्वयं
 Stripes कोर, धारियाँ
 Student's Lodge छात्रनिहेन
 Studio विशाला; रंगशाला
 Study अध्ययन; अध्ययन-कक्ष
 Study circle अध्ययन-केंद्र
 Study group अध्ययन मंडल
 Stuffy दमपुट, बंध इवाका
 Sub-division उपविभाग; तहसील
 Subject matter विषय-वस्तु, धारविषय
 Subjects committee विषय-समिति
 Subject to confirmation अभिपुष्टि-सापेक्ष
 Sub-judice (न्यायालयके) विचाराधीन, अभिलिप्यवासीन
 Subjugation अधीनीकरण, पराभव
 Sublet शिकमी देना
 Sublimation उन्नयन; ऊर्ध्वपतन
 Submarine जलाभ्यंतराधिनी नौका, पनडुब्बी, डुबकन
 Subordinate अधीनस्थ, अवर
 Subordinate court अधीन न्यायालय
 Subordinate officer अधीन (वातहत) अधिकारी
 Subordination अधीनता, परबलता
 Sub post office उपपोस्टाफिस
 Sub registrar उपपंजीयक
 Subscribe बंधा देना; अनुब्रह्मण करना
 Subscribed capital प्राविष्ट पूंजी, विष्टी हुई पूंजी

Subscriber अभिदाता; पत्रादिका प्राहक, प्राहक
 Subscription अभिदान, चंदा
 Subsection उपधारा
 Subsequent अनुवर्ती
 Subsidiary सहायक, गौण
 Subsidiary occupation सहायक आजीविका
 Subsidy आर्थिक सहायता
 Subsistence allowance निर्वाह-अन्ना
 Subsoil उपभूमि
 Substitute स्थानापन्न व्यक्ति या वस्तु, प्रतिरूप, प्रति-
 निधि
 Substitution प्रतिहस्तापन, प्रतिस्थापन
 Subtenant शिकमी कान्चनकार
 Suburb उपनगर
 Subvention to religious association धर्मादा,
 धर्मार्थ सहायता
 Subversive विध्वंसकारी
 Succeeded दावाधिकारी होना, उत्तराधिकारी (या उत्तरा-
 सीन) होना
 Succeeding section उत्तरवर्ती धारा
 Succession उत्तराधिकार; आनुवंशिक; अग्न परंपरा
 Succession certificate उत्तराधिकार प्रमाणक
 Successive stages उत्तरीयर प्रक्रम
 Sue मुकदमा दायर करना, व्यवहार करना
 Suffragate सहाधिकारका आंदोलन करना
 Suffrage, Adult वयस्क सहाधिकार
 Suffragette सहाधिकारके बिंदु आंदोलन करनेवाली स्त्री
 Sugar of milk दुग्ध शर्करा
 Suit अभियोग, वाद
 Suit, Civil व्यवहारवाद, दीवानी मुकदमा
 Suit for injunction निरोधाज्ञावाद
 Summary trial संक्षिप्त विधिक विचार
 Summarily dealt with संक्षेपतः निर्णय
 Summon आह्वान, आह्वाय; आह्वानपत्र, आदेशपत्र
 Summon a meeting सभा बुलाना
 Sunbath आनन्दस्नान
 Super annuation pension वृद्धावस्थाकी (पंचपन-
 मास) पेंशन
 Supercede अग्रक्रम करना, अधिकृत करना
 Superficial बहिःस्थली, ऊपरी, दिखाऊ
 Superintendence अवीक्षण
 Superintendent अवीक्षक
 Superior प्रथम, उच्च, श्रेष्ठ
 Superiority complex अहम्भन्वा, गुरुभन्वा
 Supernatural आध्यात्मिक
 Super tax अतिकर
 Supervise पर्यवेक्षण
 Supplement अनुपूर्णा अनुपूरक, कोटपत्र
 Supplementary अनुपूर्णा
 Supplementary examination अनुपूरक परीक्षा

Supplementary question अनुपूरक प्रश्न
 Supplemented अनुपूर्ति
 Supplier पूरक, समायोजक
 Supply रखर, संभरण, पूर्ति, (उपलब्धि), समायोजन
 Supply officer पूर्वाधिकारी
 Supremacy of law विधि-सर्वोच्चता
 Supreme authority सर्वोच्च सत्ता
 Supreme command सर्वोच्च कमान, सर्वोच्च समादेश
 Supreme Court उच्चतम न्यायालय (सर्वोच्च न्यायालय),
 परम न्यायालय
 Surcharge अधिभार
 Surety प्रणिप्त
 Surety for appearance दर्शन-प्रतिज्ञा
 Surface तल; पृष्ठभाग
 Surgeon शल्यचिकित्सक; शल्यकार
 Surety दण्डविद्या, दण्ड-द्वारा; शल्यचिकित्सा, शल्य-
 चिकित्सा
 Surgical Instruments, Industry शल्योद्योग
 Surplus बचन
 Surrender value समर्पण-मूल्य
 Surveillance निगरानी
 Survey पर्यालोचन; क्षेत्रमाप, सर्वेक्षण
 Survival बच रहना, अतिजीवन
 Survival of the fittest बलिष्ठताजीवन
 Survivor अतिजीवी, परिजीवी
 Susceptible ग्रहणक्षम
 Suspended निलंबित, अनुलंबित
 Suspense account अनुलब्ध खाता, उचित खाता
 Suspension निलंबन, अनुलंबन
 Sustain metaphor सागरूपक
 Sustain अधिराज
 Suretyship अधिराज्य, अधिराजत्व
 Symbol प्रतीक
 Symbolism प्रतीकवाद
 Symmetrical प्रतिसम; सममित, समित
 Symmetry प्रतिसम्य, सममिति
 Syndicalism संघ-समाजवाद
 Synonym वचन, समानार्थक शब्द
 Synopsis सारांश, (परिचयात्मक) कपरेखा
 Synthesis संश्लेषण, समन्वय
 Synthetic products रसायनीक वस्तुएँ

T

Table मेज, पटल, तालिका, सूची, सारिणी
 Table of contents विषय-सूची
 Tableland उच्च समभूमि
 Taboo निषेध, बर्जन
 Tabulate तालिकाबद्ध करना, सारिणीबद्ध करना
 Tabulator गणनक; जोषक
 Tact मौन

Tacit acceptance मौन स्वीकरण
 Tactics क्राय-नीति
 Take-effect प्रभावी होना
 Take part सम्मिलित होना
 Talk बचपुता, भाषण, वार्ता
 Talkie चोकरट, स्लाइड चित्र
 Tan चर्मरोगी शिक्षा, चर्मरोग
 Tangent स्पर्श-रेखा
 Tanker तैलवाहक जहाज
 Tannery चर्मरोगनाशक
 Tapioca टैपियोका, दक्षिणी मूल
 Target लक्ष्य
 Tariff प्रभुत्व, गटकर; गटकर-अवस्था, प्रभुत्व-सूची
 Tariff Board प्रभुत्वमंडल
 Tarso त्र्य प्रतिमा
 Taurus वृषराशि
 Tax कर
 Tax, Calling आजीविका-कर
 Tax, Capitation प्रतिव्यक्ति-कर
 Tax, Corporation निगम-कर
 Tax Entertainment प्रबोध-कर, मनोरंजन-कर
 Tax-free करमुक्त
 Tax, Income आयकर
 Tax, Impact of कल-संपात
 Taxpayer करदाता
 Tax, Sales विक्री-कर
 Tax, Terminal सीमा-कर
 Tax, Trade व्यापार-कर
 Taxable कर-योग्य
 Taxidermist चर्मप्रसाधक
 Tear gas अशुभैल
 Technical पारिभाषिक; प्रौद्योगिक; प्राविधिक, पद्धति-संबंधी; विज्ञान और शिल्पसंबंधी
 Technical education शिल्प-शिक्षा, प्रौद्योगिक शिक्षा
 Technical objection प्राविधिक आपत्ति
 Technical point प्राविधिक प्रश्न
 Technical training शिल्प प्रशिक्षण, प्रौद्योगिक प्रशिक्षण
 Technical words पारिभाषिक शब्द
 Technician प्राविधिक, शिल्पी, बंकी
 Technique शैली, कार्यपद्धति, विशेष उपाय, बंध-बाहुल्य, प्रविधि
 Technology शिल्पविज्ञान
 Teething लसैव्योद, श्रुति निकलना
 Telegraph तार
 Telephone दूरवाणी, दूरवा, टेलीफोन
 Telephone exchange दूरवाणी निगमन-केंद्र
 Teleprinter दूरमुद्रक, दूरमुद्र
 Telescope दूरबीक्षण-बंध
 Television दूरदर्शनकारी बंध

Temperance नवनिषेध
 Temperate zone समशीतोष्ण कटिबंध
 Temperature तापमान
 Tempo प्रवेग, प्रगति
 Tenacious कठिण
 Tenancy Act काइसकारी कानून, कृषिविधान
 Tenant किसान; किरायेदार
 Tender प्राक्कलन-पत्र, निविद
 Tender money सत्यकार, बचाना
 Tenet सिद्धांत
 Tentative प्रयोगात्मक, परीक्षात्मक
 Tenure पदावधि, पदनायधि
 Tenure of land धारण-अधिकार
 Term कार्यकाल; अवधि; समय (सू. १०) से
 Terms of reference विचारणीय विषय
 Terminal शक्ति; अंतिम
 Terminal tax अंतिम कर; सीमाकर
 Terminal examination शक्ति परीक्षा
 Termination अवसान, परिसमाप्ति
 Terminology परिभाषा-संग्रह, पारिभाषिक शब्दावली
 Terrestrial telescope शक्ति दूरबीन
 Territorial Army प्रादेशिक सेना
 Territorial waters जलप्रांत, प्रकीय क्षेत्र
 Terrorist अतंकवादी
 Testament वस्तुनिष्ठ
 Testator रिक्थपत्रका, अनुज्ञाता, रिक्थ-संकल्पक
 Testimony प्रमाणित बचन वा कथन, साक्ष्य
 Testimonial प्रमाणपत्र
 Test-tube परीक्षण-नलिका, परखनली
 Text मूलपाठ
 Textile वस्त्र
 Textile industry वस्त्रोद्योग
 Theism आस्तिकवाद
 Theocracy चर्मतंत्र
 Thumb impression अंगुष्ठ चिह्न
 Theorem प्रमेय
 Theoretical सैद्धांतिक
 Theory दार, सिद्धांत
 Therapeutics औषधविज्ञान
 Thermometer तापमापक बंध
 Thesis अधिविर्णय, निर्वण
 Ticket प्रवेशपत्र, प्रयोगपत्र, टिकट
 Tidal waters जल-जल
 Tie बंधन; प्रवेग, कटबंध (निकटस्थ)
 Time-barred काकतिरोहित, काकातीत
 Timebomb निषण समयपर फूटनेवाला बम, साधकिक प्रस्फीट, नियतकालिक प्रस्फीट
 Timefuse नियतकालिक फूटता
 Timehonoured विरसम्मानित, विरवाच्य
 Time-table समयसूची, समय-सारणी, वेकावचक

समव्यवसायपत्र

Title हक, स्वत्व; उपाधि; शीर्षनाम

—page मुखपृष्ठ

Title deed स्वत्व-संकेत

Titular नामपात्रका, नामधारी

Toast श्रोतविषय

Toilet प्रसाधन; प्रसाधन द्रव्य, मझाकन गृह

Token cut प्रतीक कटौती, प्रतीक न्यूनन

Tolls पथकर

Tool उपकरण, औजार

Tonnage जहाजों वजन टनोंमें, नौप्रभार

Topical-talk सामयिक बातें

Topography स्थानवर्णन

Torrid zone उष्ण कटिबंध

Toss सिद्धा उछालकर निर्णय, निक्षेप-निर्णय

Total war सर्वत्र युद्ध, सार्वभौमिक युद्ध

Totalitarianism एकदलीय शासननैतन, सर्वाधिकारवाद, सर्वसत्तावाद

Totalitarian state सर्वाधिकारी राज्य, सर्वसत्तात्मक राज्य

Tour दौरा, पर्यटन

Tournament खेलन-प्रतियोगिता

Tribology विषयविज्ञान

Tower मीनार, पुर्ब, स्तंभगृह

Town planning नगरनिर्माण-योजना, नगर-आयोजना

Town-hall नगरभवन

Track चरणपथ, मार्ग

Trade व्यापार

Trade-dispute व्यापारिक विवाद

Trade-mark व्यापार-चिह्न, मार्का

Trade Union व्यवसाय-संघ, श्रमिक-संघ, कामिक-संघ

Trade Unionist श्रमिक-संघी

Traditionalism परंपरापालकता

Traffic वातावरण, व्यापार;—police वातावरण पुलिस

Traffic in human beings मानववपन, मानव-क्रय-विक्रय, मानव व्यापार

Traffic Manager परिवहन-व्यवस्थापक

Trainee प्रशिक्षणार्थी

Training प्रशिक्षण

Training of river courses नदी-मार्ग नियंत्रण

Trainway रेलमार्ग

Trance ललाहि

Tranquillity प्रसन्नति, अशोक

Transaction केन-देन करना, व्यवहार, सौदा

Transcription प्रतिकृति

Transfer हस्तांतरण, स्थानांतरण, तबादला

Transferable परामर्श; हस्तांतरणीय

Transformation रूपांतर, रूपांतरण

Transformed रूपांतरित

Transgression अतिक्रमण

Transshipment बानांतरण

Transit, goods in संक्रमित माल

Transit pass रक्सा, निकाली

Transition संक्रमण, संक्रांति

Transitional period संक्रांतिकाल, संक्रमण-काल

Transmigration देशांतर-गमन; देशांतर-प्रवेश

Transmission दूरविक्षेपण, ध्वनिविक्षेपण, संवेषण

Transmit संवेषित करना

Transmitter दूर-विक्षेपक, प्रेषित्र

Transmitting station दूर-विक्षेपण-केंद्र

Transparent पारदर्शक

Transplantation स्थानांतर-रोषण, अन्यस्थान-रोषण

Transport परिवहन; वातावात

Transportation निर्वाहण; परिवहन; द्रोषांतरण

Trapezium समलं चतुर्भुज

Travelling allowance यात्राविवेध, सफर-भत्ता

Transversal तिर्यंगरेखा (ज्यामिति)

Trawler मछुआ जहाज

Treason राजद्रोह, अभिद्रोह, देशद्रोह

Treasure-trove निष्कात-निधि

Treasurer कोषाध्यक्ष, खजानो

Treasury कोषगार, खजाना

Treasury-benches सरकारी पीठ, (बैंचें); मंत्रिवर्ग

Treasury-bills राजकोष-विषय, खजानेकी धुबियाँ

Treatise (साहित्यिक) रचना, निबंध, संदर्भ, पुस्तक

Treaty संधि

Treaty obligations संधि-दायित्व

Trend of market बाजारका रुत

Trends घटना-प्रवाह

Trespass अपहरण, अनधिकार-प्रवेश

Trespass, criminal दंडनीय अनधिकार-प्रवेश

Trial परीक्षा, परीक्षण; (न्यायिक) विचार, न्यायिक अपीक्षा

Triangle त्रिभुज, त्रिकोण

—, acuteangled न्यूनकोण त्रिभुज

—, equilateral समविबाहु त्रिभुज

—, isosceles समद्विबाहु त्रिभुज

—, obtuse angled अधिककोण त्रिभुज

—, right-angled समकोण त्रिभुज

—, scalene विषमबाहु त्रिभुज

Tribal areas कमायकी क्षेत्र, जनजाति-क्षेत्र

Tribe जनजाति

Tribunal न्यायाधिकरण

Tribune जनसभिका

Tributary कर्तृ राज्य, मांडलिकराज्य, सहायक नदी

Tricycle त्रिचक्र वाहन

Trennial वैशाधिकी

Tripartite treaty त्रिदलीय संधि

Triple boycott त्रिविध बहिष्कार

Tripod stand त्रिपादस्थान

Trisection त्रिभागिक

Tropics उष्ण कटिबंध

Trooper अश्वारोही सैनिक

Trophy विजयोपहार

Truce विराम-संधि

Trump card कोटका पत्ता; मक्कास, विजयाक्ष

Trust न्यास, प्रत्यास, दृष्ट

Trustee न्यासी, प्रत्यासी

Trusteeship न्यासिता

Tube-well मलकूप

Tuber कंदमूल

Tuition fee शिक्षण शुल्क

Tumour जलुद

Turbulent उपद्रवी

Turncoat परपक्षपाती

Turning point आवर्त बिंदु

Turnover समस्त क्रम-चिह्न; पूर्ण चिह्नी

Turpitude नीचता, कुदृता

Turret-gun बुर्ज तोप

Tutelage अभिरक्षण

Typed मुद्रित

Type मुद्र, छाप

Typewriter मुद्रलेखन यंत्र

Typist मुद्रलेखक, छाप वाक्

Typographical error मुद्रणसंघर्षी त्रुटि

Typography मुद्रणकला, मुद्रण-सौंदर्य

U

Ubiquity of the King राजाकी सर्वव्यापकता

U-boat जर्मन रणदुष्पी

Ucer ज्वर

Uloerated क्षणित

Ultimate अंतिम

Ultimatum अंतिम चेतावनी, अंतिमोत्तर

Ultimo अन्तमस

Ultra vires अधिकपरत्वात्, अधिक परे, अधिकार-

क्षमाके बाहर

Umbra भूछाया, प्रतिच्छाया

Umpire विषय; क्षेत्रपंच

Unanimous सर्वसम्मत

Unattached अलक्ष्य

Unauthorized अनधिकारिक; अनधिकृत

Unbecoming असौजन्य

Unbiased निष्पक्ष

Uncashed अनुक

Unclaimed document अस्वाधिक केलापत्र

Uncultivated अक्षिति

Under developed area अर्द्धविकसित क्षेत्र, न्यूनविकसित क्षेत्र

Undergraduate level, on स्नातकपूर्व स्तरपर

Underground गुप्त, अंतर्धीम, भूमिगत, भूमिगत

Underhand गुप्त, प्रच्छन्न, छलमछल

Under-nourishment अल्पपोषण, अल्पपोषण

Under-secretary सहायक, अवरसचिव

Unearned अनधिकृत

Undertaking बचन; स्वीकृति; इत्तमगृहीत व्यवसाय

विवा योजना

Under-trial अभिविवाचीन

Undischarged अनुमुक्त

Uneconomic holding अस्वाभकर जोत

Unemployment बेकारी

Unequivocal अलक्षित

Unicameral एक-सदनारमक

Uniform विपरिधान, समपरिधान

Unilateral एकपक्षीय

Union संघ

Union list संघ-स्वी

Union Public Service Commission संघ राज

सेवा कमीशन, केन्द्रीय जनसेवा आयोग, लोकसेवा आयोग

Unit टुकड़ी, इकाई, एकक

Unitary एकात्मक;—state एकात्मक वा एकीयराज्य

United Nations Organization संयुक्त राष्ट्रसंघ

Universal Manhood-suffrage व्यापक पुरुष मन-

धिकार

University Court विश्वविद्यालय मन्त्र

University Senate विश्वविद्यालय प्रबंध-मण्डि

Unlawful assembly अवैध सभा

Unofficial गैरसरकारी, गैरसरकारी

Unopposed निर्विरोध

Unparliamentary असास्य

Unproductive अनुत्पादक

Undeclared balance अज्ञोपित शेष

Useful स्थानव्युत्पन्न करना, अनासीन करना या होना;

स्थानवर्धित होना

Unseated वि० अनासीन, स्थानवर्धित

Unskilled labour अनियुक्त वा अकुशल श्रमिक

Unsoundness of mind विष-विकृति

Unspent balance अव्ययित शेष

Upward क्रम, अधिव

Unveil अनावरित करना

Unyielding अटल

Upper House उच्च सदन

Upstart लघुस्रोत व्यक्ति; लघुस्रोत (शिरोवृत्त) व्यक्ति

Uptodate अद्यावधिक

Upward trend अर्धवर्धित

Urban अग्र संघी

Urgent अनिवार्य, (अवधारक)

Usage रीति

Usual अवधि

Usury लघुस्रोती

Utilitarianism उपयोगितावाद

Utility उपयोगिता

Utopia रामराज्य, काश्पनिक स्वर्ग, (स्वप्नलोक)

Utterance उच्चार, उक्ति

V

Vacancy रिक्तता, रिक्ति

Vacancies रिक्तस्थान

Vacation दीर्घकाष्ठ

Vaccination टीका

Vaccinator टीकाक, टीका लगानेवाला

Vacuum शून्यस्थल, शून्य, निर्वात

Vagrancy अवागमन, आदिहन; अनिश्चिन्ता

Vague अस्पष्ट, धूमिल, अनिश्चिन्ता

Valid मान्य, विध्वनिकृत

Validation वैधीकरण

Validity मान्यता, विध्वनिकृतता

Valuation मूल्यांकन, मूल्यन, मूल्य मिरूपण

Valuepayable article मूल्यदेय वस्तु

Vaporisation वाष्पण

Variable capital परिवर्तनीय पूंजी

Variation रूपांतर, विचार, वचन

Varnigated चित्र-विचित्र

Vassal अधीन सरदार

- state अधीन राज्य

Vehicle वाहन

Vein शिरा

Velocity प्रवेग

Venereal disease यौन रोग, रक्ति रोग, किरणरोग

Venture उद्यम

Venue स्थल

Venus शुक

Verbal alteration शब्दिक परिवर्तन

Verbatim अक्षरशः

Verdict अंतिम निर्णय, अविनिर्णय

Verification सत्यापन, सत्याकरण

Versatile बहुविध, (बहुमूर्त); बहुमुखी

Versed निष्णात

Version, Authorized अधिकृत विवरण

Version, Revised पुनरीक्षित पाठ, संशोधित पाठ

Versus विरुद्ध, बनाम

Vertex शीर्ष

Vertical उन्नत

Vested interest निश्चित स्वार्थ

Veterinary doctor पशुचिकित्सक, शास्त्रिकी

Veterinary hospital पशु-चिकित्सालय, घोडा

अस्पताल

Veto प्रतिवैधाधिकार, रोक अधिकार

Veto v. प्रतिवैधाधिकारका प्रयोग करना

Via media मध्यपथ

Vice admiral उपनौकाध्यक्ष

Vice-Chairman उपाध्यक्ष

Vice-Chancellor कुलपति

Vice-regent उप-राजसंरक्षक

Vice-president उपराष्ट्रपति; उपसभापति

Vice versa विपरीत यी, विपरीततः यी, विचोमतः यी,

विपरीत क्रमसे यी

Vicious circle अपचक्र, दुष्चक्र, विषयवृत्त

Vicissitude चढ़ान-उतार, परिवर्तन

Victuals भोजन-सामग्री, भक्ष-सामग्री

View point दृष्टिकोण

Vilification विध्वारोषण

Village Council ग्रामपरिषद्

Village uplift ग्रामउन्नयन, ग्रामोन्नयन

Vinculum रेखाबन्धनी

Vindictive प्रतिदिग्भावक

Violation उल्लंघन, अतिक्रमण

Virgin soil अकृष्टपूर्वा भूमि

Virgo कन्याराशि

Visa अनुवेशपत्र, दस्ताक, देशागमनका अनुमतिपत्र

Visit दर्शनार्थ गमन

Visitor दर्शक, परितर्शक; दर्शनार्थी; आगंतुक

Vitamin खाद्यौष, जीवननस्य, पोषकतत्त्व, विटामिन

Vitality जीवन, जीवनशक्ति

Viva voce मौखिक परीक्षा

Vocal music कंठ-संगीत

Vocation व्यवसाय

Vocational training व्यवसाय-प्रशिक्षण

Voice, Active कर्तृवाच्य

- passive कर्मवाच्य

- Impersonal भाववाच्य

Void adj. शून्य, रिक्त; n. रिक्तता

Vola tile बाणपरीक; अक्षिर, चंचल

Voluntarily स्वेच्छापूर्वक, स्वेच्छया

Voluntary स्वेच्छिक, स्वेच्छादत्त, स्वेच्छाप्रेरित, स्वेच्छाकृत

Voluntary association स्वेच्छाकृत संयोग

Volunteer स्वयंसेवक

Volunteer corps स्वेच्छा-सैनिक-दल

Votable मनदेय

Vote n. मत; v. मत देना

Vote, Casting निर्णायक मत

Vote, List system of मतकी सूची-प्रणाली

Vote of censure निंदा-प्रस्ताव

Vote of credit प्रत्यवानुदान

Vote on account लेखाानुदान

Voter मतदाता

Voter-list मतदाता-सूची

Voucher खर्चका पुरजा, प्रमाणक

Vulnerability ज्वेयता, दुर्बलता, ज्वेयता

W

Wage मजदूरी, प्रति

Wage, Living निर्वाह-भुति, जीने योग्य मजदूरी
 Wager बाजी, पण; ठाननेवाला
 Wagon माकगाडीका बग्घा
 Waiting-room प्रतीक्षागृह, प्रतीक्षास्थान
 Waive आग्रह न करना, छोड़ देना
 Walkout सत्याग्रह
 Walk over अनावासिक विजय, सरक विजय
 Wall Street न्यूयार्कके शेयरबाजारका स्थान
 Wanted आवश्यकता है
 Want of confidence विश्वासका अभाव
 War, Cold ठंडी लड़ाई, "शीत युद्ध"
 War-crime युद्धापराधी
 War-efforts युद्धीय, युद्ध-प्रयत्न
 War-monger युद्धोत्तेजक, (युद्धविषाद)
 War-mongering युद्धोत्तेजन
 War, Offensive आक्रमणात्मक युद्ध
 War of attrition धैर्यनाशक युद्ध
 War of aggression आक्रमणात्मक युद्ध
 War of Independence स्वातंत्र्य-युद्ध
 War of liberation मुक्तियुद्ध
 War of nerves आतंकयुद्ध, आतंकप्रसार-युद्ध
 Ward हक्का, नगरपाला; (कारागृह या चिकित्सालयका)
 कक्ष, जवनारा; अभिरक्ष्य वाकक या बालिका, अभिरक्षित
 Ward-master कक्षाधिपति, छात्रावासादिका सलक्षक
 Warden छात्राभिरक्षक; क्षेत्राभिरक्षक
 Warder कक्षापालक
 Warfare युद्धकार्य
 Warrant अधिवचन
 Warship रणपोत, युद्धपोत
 Waste land परती भूमि
 Wastage छीजन, छीज
 Wasting disease क्षयकारी रोग
 Watch and ward पहरी और प्रविपादन (रक्षण)
 —police चौकी पुलिस-
 Watch-word पहरी-संकेत; दलसिद्धांत
 Water-channel जलप्रवाही
 Water-colour जलीय रंग, जलरंग
 Water-fall जलप्रपात
 Water-proof जिसपर पानीका जलर न हो, जला-
 नरोक्क, जलरोक्क, जलरोधक
 Water-mark स्वेतक
 Water pump जलीयचक्र पंप, जलीयहन पंप
 Water tight जलरोक्क
 Watertight compartment सर्वथा पक्क-पक्क खंड
 Water-works पानीकल
 Waterways जलमार्ग, जलपथ
 Wavelength तरंग-दैर्घ्य
 Ways and means उपाय और साधन
 Weapon हथियार
 Weather forecast जल-अनुमान

Weather report जल-वृत्तांत, मौसमका हाल, दिन-
 निकृति-विवरण
 Wedge झुंझेद, दरार
 Weevil बुन
 Weightage अधिक प्रतिनिधित्व, अधिप्रतिनिधित्व
 Welcome address अभिनंदनपत्र
 Welfare centre जन-कल्याण-केंद्र
 Welfare state कल्याणकारी राज्य, जनहितैसी राज्य
 Whale तिमिलिख
 Wharf जहाज घाट
 Wheatmeal मूदी
 Wheelie फुल्लाना
 Whereas वर, चूंकि
 Whip सचेतक, चेतक
 Whirlwind बवंडर
 Whitepaper द्धेतपत्र
 White-wash लीपा-पोती, अवधार्य विवरण देकर प्रप-
 राय या दोष छिपानेकी चेष्टा
 Whole time officer समग्रकालीन वदाधिकारी
 Wholesale थोक, राशिमाल
 " trade थोमक व्यापार, थोक व्यापार
 Wicket बटिप्रय, बटि, सेलाकी; धावन-स्थलीकी स्थिति
 Wicket-keeper बटि-रक्षक
 Will इच्छापत्र, वसीयत, विवधपत्र
 Wind-direction हवाका दल
 Winding up समापन
 Wing Commander पार्श्वनायक, विमान-मेनायक(री)
 Wireless license नितन-अनुज्ञा
 Wireless network बेतार-जाल, नितन-जाल
 Wirepullers मूझ-सवालक
 Wit and humour मुझापिन और विनोद
 Withdrawal प्रत्याहार
 With effect from से लगाकर, से शुरू कर
 With retrospective effect विगत अवधिसे, पूर्व
 प्रभाव सहित
 Withhold consent सहमत रोकना
 Women's Auxiliary Service महिला-सहायक-
 व्यवस्था
 Woodapple कैय
 Working छात्राणी
 Wordwar छुट्टयुद्ध
 Work, Contributionl संभरावी कर्म
 Working expenses कार्यसंचालन-अवय
 Working committee कार्यसमिति
 Working day कार्यदिवस
 Workman's Compensation Act मजदूरी-भुति-
 भुति अधिनियम
 Works कार्यकाला; कृतियाँ
 Workshop कर्मशाला, कारकाला
 Wreckage मत्वावशेष, ध्वंसावशेष

Writ लेख, निर्देशपत्र, आदेश
 Writ certiorari उद्देश्य लेख, उद्देश्यणादेश
 Writing लेख, लेखन, लिखावट; प्रकरचना
 Write off बट्टेखाते डालना
 Wrong अपकार, गन्दाब
 Wrongful confinement अवैध कारावास, अवैध
 गिराव

X

X-ray छकिरण, पारदर्शी किरण

Y

Yankee अमेरिकानिवासी, अमेरिकी
 Year-book वर्षवीथ, शब्दकोश, अब्द-पुस्तक
 Yearly वार्षिक
 Yellow peril पील जातिघोका आतंक, पीतारतक
 Yellow press ध्वंशकी बदनामी फैलानेवाले म्हादपत्र,
 प्रोत्तेजक समाचारपत्र

Yeomanry कृषक, अश्वदक
 Younger कनिष्ठ
 Yours faithfully भवतिष्ठ
 Yours obediently अवदनुगत
 Yours sincerely अवदतुरत

Z

Zamindari abolition जमींदारी-उन्मूलन, जमींदारी-
 समाप्ति
 Zenith शीर्षबिंदु, ऊर्ध्वबिंदु
 Zero hour संकटका क्षण, निवृत्त क्षण, निर्धारित क्षण;
 सुषकी, अभियानवेला
 Zionism यहूदीवाद
 Zodiac अंचक, राशिचक्र
 Zone कटिबंध, क्षेत्र, अंचक
 Zone, Demilitarized मनामुक्त (सिनाबरीन) अंचक
 Zono, Neutral निष्पक्ष अंचक
 Zoo जनुगारा, निव्रियाघर
 Zoology जनु-विज्ञान

मिलते-जुलते शब्दोंकी सूची

- 1 Abatement न्यूनीकरण
 Mitigation क्षुद्रकरण
- 2 Abrogation निराकरण; उल्पादन
 Annulment अभिशृंखन
 Cancellation विलोपन; निरसन
 Deletion अपमार्जन
 Discharge निस्कारण; क्षमोचन
 Dispolling दूरीकरण, निराकरण
 Repeal निरसन, विलोपन
 Rescinding निरसन
 Revoking प्रतिसंहारण, निरसन
- 3 Absconder अप-पलायक, अपगोप्त
 Deserter दलत्यागी
 Fugitive पलायक, भगोड़ा
 Renegade स्वपक्षत्यागी, स्वमतत्यागी
 Turncoat परपक्षप्राप्ति
- 4 Abstract सारांश; उपसंक्षेप
 Abridgement न्यूनन; संक्षेपण
 Compendium उपसंक्षेप; लघुपुस्तिका
 Summary संक्षेप
 Synopsis परिचयात्मक रूपरेखा
- 5 Acceptance स्वीकृति
 Admission स्वीकरण
 Assent अनुमति, स्वीकृति
 Consent सममति (dissent = विमत)

- Confession अपराध-स्वीकरण
 Leave अनुमति
 License अनुज्ञापत्र
 Permission अनुमति, प्रानुमति
 Permit प्रानुमति-पत्र
 Recognition प्रस्वीकृति
 Sanction समोदन, स्वीकृति
- 6 Accession सम्मिलन
 Amalgamation सम्मिश्रण
 Fusion द्रवीकरण, विलयन, गालन
 Integration द्रवीकरण
 Merger विलय, विलयन
- 7 Accusation अभिवोग
 Allegation अभिकथन
 Charge दोषारोप, अभियुक्ति
- 8 Act अधिनियम
 Bylaw उपविधि
 Law विधि
 Regulation विनियम
 Rule नियम
 Sub-rule उपनियम
- 9 Adjourned स्थगित
 Abeyance, in आस्थगित
 Deferred अभिस्थगित
 Postponed विलगित

- 10 Admission card प्रवेश-पत्र
Pass (प्रवेशपत्र), पारणक
Passport पारपत्र
Visa अनुप्रवेशपत्र
- 11 Affirmation पुष्टि; प्रतिज्ञा
Confirmation अभिपुष्टि
Corroboration संपुष्टि
Ratification अनुसमर्थन, पुष्टीकरण
Support समर्थन
Verification सत्यापन, सत्याकरण
- 12 Agenda कार्यक्रम, विचारविषय
Programme कार्यक्रम
- 13 Agitation क्रोध; Movement आंदोलन
- 14 Allocation विभाजन, निर्दिष्टि
Allotment आवंटन
Apportionment संविभाजन
- 15 Alteration अपरिवर्तन
Change परिवर्तन
Modification रूपरेखा, संपरिवर्तन
Reshuffling हेर-फेर, विपरिवर्तन
Transformation रूपान्तर
- 16 Alternative वैकल्पिक, विकल्प
Optional (वैकल्पिक), ऐच्छिक
Voluntary स्वेच्छादत्त, स्वेच्छाकृत, स्वेच्छा-भेदित
- 17 Ambassador राजदूत
Charge de affaires प्रबारी राजदूत
Consul काणिज्यदूत
Consul general महा-काणिज्यदूत
Envoy दूत; मिताईदूत
Envoy extraordinary असाधारणदूत
High commissioner उच्चायुक्त
Legate उपराजदूत
Plenipotentiary पूर्णाधिकारी दूत
- 18 Amnesty सर्वक्षमा; Condonation क्षमादान
- 19 Anonym अनाम, गुप्तनाम
Pen-name साहित्यिक उपनाम
Pseudonym छद्मनाम
- 20 Appeasement तुष्टीकरण
Conciliation संरापन
Gratification अनुत्तरेण
Pacification क्षमीकरण
Propitiation प्रसन्नन
- 21 Archive पुरालेख
Deed सलेख, विलेख
Document प्रलेख
Instrument लिखत, विलेख
Record अभिलेख
- 22 Armistice अस्माकी संधि
Ceasefire युद्धस्वयम
Truce विरामसंधि, रणविराम
- 23 Association संघ
Board मंडळ, समिति
Chamber मंडळ, बैठक
Committee समिति
Company प्रमंडळ
Concern व्यापारिक संस्था
Convention प्रस्ताव
Corporation निगम
Council परिषद
Establishment, Installation प्रतिष्ठान
Firm कोठी, कार्यालय
House घर, मकान
Institution संस्था, शाळा
Meeting सभा
Organisation संघटन
Society समाज
- 24 Authentication प्रमाणीकरण
Attestation सत्यीकरण
Certification प्रमाणन
Verification सत्यापन
- 25 Banishment विवासन, (निर्वासन)
Dismissal निस्सारण, पदच्युति
Discharge उन्नीजन
Ejection, Ejectment निष्कासन
Eviction अधिनिष्कासन
Exile निर्वासन
Expatriation स्वदेश-निस्सारण
Expulsion अपमार्जन, निष्कासन
Extermination बहिष्मरण
- 26 Battalion बतालियन
Brigade बहिनी
Division बटू, बनीकिनी
Regiment टुकड़ी
Squad रिसाल; Squadron इस्का
Troops पकटन
- 27 Battle-ship जंगी जहाज, विशाल युद्धपोत
Capital ship महापोत
War-ship रणपोत, युद्धपोत
- 28 Belligerent युद्धरत
Combatant युद्धप्रवृत्त
- 29 Bonus अधिभाग
Dividend कामांश
- 30 Collectivism समष्टिवाद
Communism साम्यवाद
Socialism समाजवाद
- 31 Conservation संरक्षण
Preservation परिरक्षण
Protection रक्षण, सुरक्षण
Reservation आरक्षण
- 32 Contagious सार्वजनिक

<p>Infections 'क्रामक</p> <p>38 Criticism आलोचना Examination परीक्षा, परीक्षण Experiment प्रयोग Observation अवलोकन Scrutiny संपरीक्षण Test निष्पत्ति, कसौटी, परीक्षा Trial परीक्षा; प्रयोग</p> <p>34 Coup d'état आकस्मिक शासनपरिवर्तन, शासनिक विप्लव</p> <p>Insurgency प्रजाक्षोभ Insurrection उपद्रव Mutiny सैन्य द्रोह, सैन्यक्षोभ Rebellion संप्रति सत्ता का विद्रोह, बल्ल्या Revolt विद्रोह Revolution क्रांति Sedition राजद्रोह, अभिद्रोह Treason अभिद्रोह, देशद्रोह</p> <p>35 Deadlock कलह, विवाद Relapse प्रत्यागति, विपत्ति, पुनःपतन, स्थितिबिपर्यय Setback प्रतिकूलता</p> <p>36 Encroachment अतिक्रमण Transgression अतिक्रमण Trespass अवचरण, अनधिकारप्रवेश Violation उल्लंघन, अतिक्रमण</p> <p>37 Expedient समबोधित Opportune समबानुकूल</p> <p>38 Extract उद्धरण Citation प्रोद्धरण Quotation उद्धरण</p> <p>39 Incompatible अननुकूल Inconsistent असंगत</p> <p>40 Indispensable अनिवार्य Inevitable अपरिहार्य</p> <p>41 Inspection निरीक्षण Superintendence अधीक्षण</p>	<p>Supervision पर्यवेक्षण Survey पर्यवेक्षण, पर्यालोचन; सूमापन</p> <p>42 Invention उद्भाव, उद्भावन, आविष्कार Discovery आविष्कार</p> <p>43 Journal, Register पत्रिका Ledger प्रपञ्जी</p> <p>44 Lapsed व्ययत Timebarred कालातीत</p> <p>45 Linguistics तुलनात्मक भाषाविज्ञान Philology भाषाविज्ञान</p> <p>46 Loud-speaker ध्वनिबर्धक या ध्वनिविस्तारक यंत्र Microphone ध्वनिविक्षेपक यंत्र</p> <p>47 Manipulation छलमोहन Manoeuvre छलमोहन; युद्धाभ्यास</p> <p>48 Minister मंत्री Secretary सचिव</p> <p>49 Motion प्रस्ताव Proposal प्रस्तापना Resolution निश्चय</p> <p>50 Precedence पूर्वता, पूर्वस्थानीयता Preference वरीयता, प्राथम्याप्यता Priority प्राथमिकता</p> <p>51 Printed मुद्रित Typed मुद्रितलिखित</p> <p>52 Procedure कार्यविधि Process प्रक्रिया</p> <p>53 Race प्रजाति Tribe जनजाति</p> <p>54 Reactionary प्रतिक्रियावादी Regressive प्रतिक्रियावादी Retrospective प्रतीपगामी</p> <p>55 Remission परिवार, माफी (छूट) Rebate अवहार, छूट</p> <p>56 Stockist स्टाफिक Store-keeper मांदारपाल</p>
--	---

परिशिष्ट-३

हृदे हृप चाब्द और अर्थ

अंकेक्षण-पु० [सं०] (ऑडिट) लेखा या हिसाब के भाग-ब्यवधि सम्बन्धी ऑफिसोंकी जाँच करनेवाला, लेखा-परीक्षक।

अंगुष्ठादी-पु० सवचर, अनुवाची।

अंगुक्ति-... १-प्रवृत्तिसूचक (फिंगर प्रिंट) किसी वस्तुकी प्रारि या अपराध आदिकी स्वीकृति सूचित करनेके लिए की गयी अंगुक्ति या अंगुक्तियोंके अगले हिस्सेकी छाप, अंगुक्तिछाप।

अंशरज-पु०...; किसी वस्तु, धन आदिका एकके हाथ या छातेसे दूसरेके हाथ या छातेमें जाना (इस्तेमाल)।

अंतरिक्ष-... १-आवेक (इंटरिक्स आर्ट) बीचके समयके लिए दी गयी आवा।

अंतः-... अन्तः-वि० (इंटरलॉक) सशोधन, परिवर्धन आदिके लिए जिसमें बीच-बीचमें सारे कागज लगे हैं।

-प्रारंभिक-वि० प्राप्तके भीतरी भागसे मिश्रका सवष हो।

-रज राज्य (बकर स्टेट) दो बड़े राज्योंके बीचमें रहनेवाला वह राज्य जिसके कारण उन दोनोंमें प्रत्यक्ष संपर्क न हो सके अतएव कम-से-कम संभावना हो, अंतराल राज्य।

अन्तिमेकम्-पु० (अन्तिमेटम्) किसी राज्यसे कोई वान मनवाने या उसपर कब्जा न करनेके लिए दी जानेवाली अन्तिम वृत्तवा, अन्तिम प्रस्ताव।

अंधेरे-... १-अंधी ली० मतमानी काररवाई, गड़बड़ी या अंधारवस्था।

अकादमी-पु० (एकेडेमी) उच्च शैक्षणिक संस्था, कला, विज्ञान आदिकी समुदायिकी लिए स्थापित विद्वानोंकी संस्था या परिषद।

आति-की० [सं०]...उत्पातिका अभाव, प्रगणिका रक गति।

आप्रसारित-वि० (फारवर्ड) (कोई कागज, आवेदन-पत्र आदि) जो विचारार्थ आगे, किसी उत्पाधिकारी आदिके पास, रदा दिया गया या भेज दिया गया हो।

अभिसामय-पु० [सं०] (इक्विमैन्) सामान्य अक्षियोंसे अधिक समतावाला या समान गुणोंवाला वस्तु।

अभिसारा-अव्य० [सं०] अक्षिपद, विलुक्त 'अने' १। प्रत्येक शरीरार्थ प्रसार अक्षिसारा विलुक्त रह जाती है।—आर १०-४६०।

अभिरचन (विचार)-वि० (इक्विप्रॉनिक) सम्यक् नीति अधिक गौर गतिसे उपनिर्वाह (साधुचार)।

अभिहित-वि०... १-अवार्थ पु० (कंटेड इंडरेस्ट) वह स्थाव जो किसी संस्था, प्रसिद्धि आदिके वन कमानेसे वस्तु हुआ हो।

अधोऽभि०, अधोऽधु-की० (अधो-आर) निचली भूमि;

भूमिके ऊपरी तरफके नीचेका भाग, निचली मिट्टी, अधोभूमि।

अधोरेखित-वि० (अडरलाइन्ड) (वह अक्ष या शब्दावली) जिसके नीचे, पाठका ध्यान दिलानेके लिए, धावेसे दायें रेखा बीच दी गयी हो।

अनभिष्क्रमणीय-वि० [म०] जिसका अधिकमण न हो सकना हो, अनुस्मयनीय।

अनभिदूर-अ० अधिक दूर नहीं, योही ही दूर।

अनपेक्षित-वि०...; (अन-एक्स्पेक्टेड) जिसके होनेकी अपेक्षा, प्रतीक्षा वा कल्पना न की गयी हो।

अन्याजी-वि० जो अनाजसे बनायी गयी हो (मिठाई इ०); जो 'कलाहारी' न हो।

अनिवार्य भरती-की० (बान्किंग) सेनामें या अन्य आवश्यक संवामें अनिवार्य रूपमें ले लिया जाना।

अनुपचरित-वि० [म०] जिसका उच्चारण न किया गया हो।

अनुसन्धित-पु० [म०] (अनर सेलेक्टी) मुख्य सचिवके मातहत किन्तु सहायक सचिवमें कंचा अधिकारी।

अनुबंध-पु०... १-पत्र-पु० इकारनामा (एक्सीमेट फार्म)।

अनुसंसा-... दे० सस्तुति।

अनैसर्गिक-वि० [म०] जो नैसर्गिक या प्राकृतिक न हो, अप्राकृतिक, अस्वाभाविक।

अनौपचारिक-वि० [म०] (इन-फार्मल) जिसमें उपचार या विशिष्ट परिपाटी, नियम आदिका पालन न किया गया हो (समाजी अनौपचारिक बैठक)।

अन्वोम्ब प्रजनन-पु० दे० 'सकरण'।

अपकेंद्री-वि० [म०] (सेण्ट्रीफ्यूगल) केन्द्रमें दूसरी दिशामें जाने या अलग होनेवाला (अपकेंद्री बल)।

अपनुष्टि-की० [म०] (एपीनोमेट) भय, दराव आदिके कारण किसीके अनुचित रूपमें प्रसन्न या सजुष्ट करना, मुहीनकरण।

अपवाहक-पु० [सं०] (मिस्कैरिज) चिट्ठी, तार या अन्य वस्तुको गलत स्थानपर पहुँचाना या ले जाना।

अपवादित-वि० [सं०] (मिस्कैरिज) जो उचित स्थानपर न ले जाया जाकर इधर-उधर पहुँचा दिया गया हो।

अपसामान्य-वि० (रेनोमरल) जो सामान्यके अपवाद स्वरूप या विचित्र हो।

अपारहर्षक, अपारहर्षी-वि० [सं०] (ओपेक) जिसके उस पार न दिखाई दे।

अभिजातसंबंध-पु० [सं०] (रिस्टोमैसी) वह शासन प्रणाली जिसमें शासन-व्यवस्था कुलीन वर्गके हाथमें हो।

अभिर्वाह-पु०... १-अव्य पु० वह प्रप जो किसी

उद्गीत-पु०...पवित्र सामर्थ्य गान वा नारा 'सुराज्य'...
 यह रणवीर राष्ट्रका परम उद्गीत रहा है—सुधीन्द्र ।
 उन्मिषादी-पु० उन्मेष । 'धीरे-धीरे होत बाधे उन्मिषा
 दी'-मान, १५४-५४ ।
 उपचेतन-वि० दे० 'अवचेतन' ।
 उपपाद-पु० [सं०] (गार् प्रोफट) वह उत्पादन जो
 उत्पन्न (मुख्य) वस्तुके साथ जुड़ा हो, उद्योपाद, मौल
 उत्पादन ।
 उपप्राप्ता-पु० (इन्वेण्टर) किसी नये वंश, सिद्धान्त आदि-
 का उद्घाटन करनेवाला, उद्घाटक ।
 उमयकिंग-वि० [सं०] दो किंगोंमें प्रयुक्त होनेवाला
 (शब्द); जो तथा युद्ध, दोनोंके विद्वाद्वाला (स्वयं) ।
 उमयवादी-अ० कि० उमयवा, कपर आना, उठना, 'जो
 कुछ मनमें उमड़ा, कह दिया'-टूटे कटि ।
 उलझा-पु० विहान् कौण (बहु व०)
 उत्तर-पु० (दि०) जीवों या वनस्पतियोंका वह वृक्ष अंश
 जो एक ही ढंगकी कैसिकाओंसे बना हो ।
 एकाग्र-वि० (परिहार) जिसके सरस्य एक साथ रहते
 हैं, सम्यक्सिद्ध (कुटुम्ब वा सम्पत्ति) ।
 एकाग्र-पु०, एकाग्र-सद्वीच-वि० (युक्तिमेरु) शासनका
 वह रूप या प्रकार जिसमें एक ही सदन वा विधान
 होता हो, दे० 'एक सदनसम्पत्ति' ।
 एकाग्र-वि०...पूर्ण 'उनमें एकान्त मौलिकता थी'-
 सुधीन्द्र । कि० वि० पूर्णतः 'एकता नीरस' ।
 ईद-पु०...।-हार-पु०...शोभाकी या प्रिय वस्तु
 'कविच विन्दी कवियोंका कण्ठहार रहा है'-सुधीन्द्र ।
 ईश्वर-पु०...कविकी वृत्ति । (युद्ध) ।
 कल-ग-पु० प्रारम्भिक ढाँच 'मुझे अभिनवका क, ख, ग
 तक नहीं आता था'-हम हिन्दु ।
 कलाह-अ० कबाई, हिन्दू 'अन्यास न करोगी तो
 कलाह दूर न होगी'-अबक मेरा कोर ।
 कलाह-अ० दे० 'कचोट' ।
 कविचाना-अ० कि० (दि०) कथा पढ़ना, विस्मृत न होना,
 भाषा-पीछा करना, कहराना । स० कि० कथा करना ।
 कचोट-अ० चुनम, बर्द, पीछा ।
 कण्ठ-पु० (रा मैट्रिक्स) कविज वा कविज्य
 पदार्थ जो अपने प्राकृतिक रूपमें ही और बिन्ने वंशवृद्धि
 सहायतासे 'पक्के' वा तैयार माकड़े रूपमें परिणत न
 किया गया हो ।
 कलकी-अ० कार्तिक सम्बन्धी । अ० कार्तिक मास भर
 रंग सजाव करनेवाली ।
 कविर्वा-अ० कविकी लोचमें केनेका एक वंश ।
 कवच-कलोट-पु० नृत्यके कपड़े छिन केनेवाला, लोदी ।
 कपरा-पु० कपड़ा, वस्त्र 'रंगाने जोकी कपरा'; कपड़ा ।
 कवाचकी-पु० किसी कविकी वा पवित्री-वाकित्तानकी
 उत्तर-पश्चिमी सीमापर रहनेवाली वन-वाकित्तानकी ध्वजि ।
 कवी-अ०...।-कवाच-कवी-कवी ।
 कवी-कवाच-अ० कवी-कवी, कवाच-वाच, वरा-कवा ।
 कवच-अ०...।-कवाच...कवचकी साकल देनेवाला
 (कवचकत उद्गीत) ।

कराँसी-...की० आरी ।
 करी-ति०...।- (रि)बद्ध, -बारबद्ध-पु० गणेशजी ।
 करी-वि०...सक्रिय, क्रियाशील ।
 कलप-पु०...।-बेल, -बेलि-अ० कलपलता, कलपलता ।
 कलाकारिता, कलाकारी-अ० कलाकारका कार्य या
 पेशा; कलाकारका भाव या प्रवृत्ति ।
 कवि-पु०...।-प्रसिद्धि-अ० पैसी उक्ति, कथन या बात
 जिसके लिख कोई ठोस आधार हो वा न हो पर जो
 कवियोंके बार-बार कथनसे सुप्रचलित या प्रसिद्ध हो गयी
 हो, जैसे चकना-चकनीका रातमें पास-पास रहते हुए भी
 परस्पर मिल न सकना ।
 काली-अ०-अ० कट या परेशानीमें पकड़ कही गयी बात,
 दुःखपूर्ण निवेदन ।
 कामनी-अ०-अ० कामिनी, सुन्दर स्त्री ।
 कारकी-अ०-अ० कारकि, कर्क ।
 कारकी-वि०...करना उत्पन्न करनेवाला, करणायुक्त
 (वर्णन, रूप इ०) ।
 कारकी-वि० जिसमें काम ठिकानेसे कर सकनेकी
 योग्यता वा शक्ति हो ।
 कारकी-अ०-अ० [सं०] (एफिडेन्सी) काम अच्छी तरहसे
 करनेकी योग्यता वा सामर्थ्य ।
 कारकी-अ०-अ० (एफिडेन्सी) शासनका वह विभाग
 जिसके विषये संसद् द्वारा स्वीकृत विधि-विधानोंकी कार्या-
 लय करानेका दायित्व हो ।
 कारकी-अ०-अ० किसी प्रस्ताव, आदेशादिका कार्यमें परि-
 णत किया जाना ।
 कारकी-अ०-अ० दे० 'कारकी' ।
 कार-पु०...।-कचि-वि० जिसे कालने अपना प्राप्त
 बना किया हो, मृत ।
 कारकी-अ०-अ० (एनाक्रानिड) एक दोष जिसमें कोई
 ऐसा वर्णन किया जाय जो काल-विशेषके अनुरूप वा
 अनुकूल न हो ।
 कार-वि०...।-अव-पु० अवैध या अनैतिक उपायों
 द्वारा प्राप्त तथा प्रायः छिपाकर रखा गया धन । -आज-
 पु० वह व्यापार जिसमें वस्तुएँ उचित या निवर्तित मूल्यके
 बजाय छुट-छिपकर अत्यधिक दामोंपर बेची या खरीदी
 जायें ।-अ० खरी-अ० (नैतिक छिस्ट) अवांछनीय, निम्न-
 नीय वा दंष्ट्र स्वस्वियोंकी वृत्ति ।
 किरा-अ०-अ० कृषि, खेती ।
 किलोग्राम-पु० [मं०] तोलकी एक नाप जो हजार ग्राम
 (लगभग २ मेर व तोल) के बराबर होती है ।
 क्रीडांग-पु० (लेखन) किलेट, हाकी आदि खेलकेका
 आधुनिक ढंगका विस्तृत मैदान जिसमें दसोंकोके बैठनेकी
 भी उचित व्यवस्था होती है ।
 कुँड-अ० दे० 'कुँड' ।
 कु-...।-बेल वि० अग्र वेजवाला, महा, कुप "सर्-
 डके लोह" उचरे होत कुनेड" ।-सीक-वि० डुरे
 लवाकवा, कुदरिष ।
 कुपाकी-अ० कुत्तित आचरण, कुचाल, 'फिरि कुकंड
 लोह कीक कुपाकी'-रावा०

कुम्भार-शब्द-श्री० कुम्हार, मारना-पीटना ।
 कुम्हार-शब्द-श्री०-विद्यावा-देने, बताने आदिसे साफ इन-
 कार करना, ठगा दिखाना ।
 कुम्हरी-शब्द-कोई नामक कपड़ ।
 कुम्हल-शब्द-आन्तरिक चिन्ता, मानसिक कष्ट ।
 कुम्हिल-शब्द-दे० 'कुम्हिल' ।
 कुम्हरी-शब्द-वि० कुम्हल देखा, कुम्हल ।
 कुम्हल-शब्द-वि० (किस्ल) रासायनिक तत्त्वका रसा जैसा
 रूप, मणिल ।
 कुम्हल-शब्द-श्री० (किस्लारनेशन) रसों वा मणियोंका रूप
 ग्रहण करनेकी क्रिया, मणिकरण ।
 कुम्हरी-शब्द-आमका छोटा फल, टिकोरा । वि० शी० भूरे
 रंगका ।
 कुम्हरी-शब्द-श्री० कोरा, गौद ।
 कुम्हरी-शब्द-श्री० कोलहल, शोर ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कुम्हल राजा, अवधिवर्ति, 'कुम्हल
 रस' कुम्हल-शब्द-श्री०-राम ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कुम्हल-शब्द-श्री०-किस्लके कुम्हलका
 समूह, कार्यवाही, कारनामे, (किस्लविही) कुम्हलालता,
 कर्मव्यवस्था ।
 कुम्हरी-शब्द-श्री०-श्रुति-शब्द-श्री०-यह नगर वा क्षेत्र जहाँ
 किनारे अनेक क्रीडाएँ की हैं, खेल-कदने दिन बिताने हैं;
 (क्रीडाउद्योग) खेलका मैदान ।-कुम्हली-शब्द-श्री० क्रीडाभूमि ।
 कुम्हिल-शब्द-श्री० स्टेटर, मोटे आदि बुननेकी सहाई ।
 कुम्हरी-शब्द-वि० (किस्लारनेशन) क्षार सम्बन्धी, क्षारयुक्त, क्षार-
 जैसा (सादृश) ।
 कुम्हल-शब्द-श्री० [सं०] (मिमांसक) उस जो बंधकी सहायता
 से बहुत दूर तक प्रेषित किये जा सकें, जैसे राकेट ।
 कुम्ह-शब्द-श्री०-ग्रहण-शब्द-श्री० मूर्त वा चन्द्रका देना ग्रहण
 जिसमें उसकी विन्धके केवल कुछ आगपर ही धृष्टीकी
 छाया पड़े ।
 कुम्हरी-शब्द-श्री० गन्धका एक नाप (छत्तीमण्ड); ग्राहों द्वारा
 लिया जानेवाला बीच नामक कर ।
 कुम्ह-शब्द-श्री०-श्री०-किस्ल-शब्द-श्री० (किस्लानामी) आका-
 शीय नक्षत्रों, ग्रहों आदिका वर्णन करनेवाला विज्ञान,
 ज्योतिष विज्ञान ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-किस्ल जाना, गोचरी और इट जाना;
 कम हो जाना, क्षीण हो जाना ।
 कुम्हली-शब्द-वि० आलस का; आलस, अपनी, निजी ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-दे० 'किस्ल' (हम विन्धु) ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-दे० 'कुम्हल' ।
 कुम्हरी-शब्द-श्री०-कुम्हलका कार्य वा हुक्मत, ईश्वरता;
 कुम्हली रचना । वि० ईश्वर सम्बन्धी, ईश्वरका दिया हुआ,
 दिया हुआ वा जेबा हुआ ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-दे० 'पुनपुन' ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कम समझीय कलना ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-को सामनेकी ओर मुड़ा हो, जिसके बाहर
 मुड़ी जगह हो; जो अधिक लीला वा होकर कुछकुछ
 मोड़ा किये हो, निरुद्ध (रंभ) ।
 कुम्हिल-शब्द-श्री०-दे० कुम्हल-शब्द-श्री०-प्रसक्त, मुड़ी ।

कुम्हल-शब्द-श्री०-दे० 'कुम्हल' के साथ ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-दे० 'कुम्हल', टिकना, ठेकना ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-दे० 'कुम्हल' के साथ ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-किस्ल; कुम्हल करना, मजाना, ठेका वा
 कुम्हलसका देता काम करना जिसका परिणाम कुम्ह-
 अनक हो ।
 कुम्हिल-शब्द-श्री०-गन्ध रखनेका मिष्टिका गोल, जंजीरवा
 पाय; कुम्हल, बहरीवा ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कोई-कोई बातों तककी पूछताछ,
 पुच्छ ठेकाच ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-को-लंग कोटी ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कोल उठना, झुड़ हो उठना 'कुम्हल गैर-
 की प्राकृतिक विशेषता है'-हम विन्धु ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-किस्ल विस्मय वा भीर पुष्पकी कीर्तिगाथाका
 वर्णन करनेवाला काम ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कुम्हल करनेवाला, गंधका ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-गोस्लाल, गन्धका ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-अनाप-सनाप मिठा हुआ 'गन्धमगन्ध
 है करो, तनु तनु सबको होव' ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-मजेदार बात, छटना वा कार्य जो हंसी
 उत्पन्न करे, दिखली ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-विज्ञान-शब्द-श्री० (गन्धवोली) गन्ध-
 सम्बन्धी विज्ञान, गन्ध-आपना तथा भ्रूणके वृद्धि-विकास
 आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कुम्हल बन् जाना; गुरी आदमके कारण
 विगड़ जाना, इटला और उड़त बन् जाना (पुर्ल) ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-क्षोभ-शब्द-श्री०-गलेके भीतर होनेवाली
 सूजन ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-कुम्हल, हंगाना; बलवा ।
 कुम्हल-शब्द-श्री० [अं०] अनेक पक्षिनी देशोंकी लिवोंका एक
 कम्पा पत्रनामा; यह मिश्रित कम्पा-सा परिधान जो रक्षा-
 लत, विज्ञान, गणित आदिकी उच्च परीक्षार्थ उत्तीर्ण करनेपर
 स्नातको द्वारा विशेष अवसरोंपर पत्रवा जा सकता है ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-नीला-सादा, भौड़, निपट मूर्त ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-अनापकी कच्चेसे पीठकर दाना हाचनेके
 लिये की जानेवाली क्रिया; एक मासिक छंद ।
 कुम्हल-शब्द-श्री० [सं०] पीठ रचनेवाला ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-विन्धु-शब्द-श्री०-किस्ल व्यापारिक वस्तुपर,
 उसकी उत्पत्ति, सुदृढता आदि सूचित करनेके लिये लगाया
 गया चिह्न ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-व्यापारिक मार्गिन) कुम्हल कमानेकी
 क्रिया (वि० कुम्हल-शब्द-श्री०) ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-अनाप-शब्द-श्री० (रौम निमिर्द) गृहमन्त्रीका
 कार्यवाही ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-अं०) समुद्रके किनारेपर स्थित माछ
 उतारने-व्यापारिक स्थान ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-मिर्दकी मण्डली वा सभा; विचार-विमर्श,
 मनीरंजन आदिके लिये किया जानेवाला परिचित आलसका
 खयाल (विचार-मनीर, खयाल-मनीर) ।
 कुम्हल-शब्द-श्री०-बाका-शब्द-श्री० 'प्रत्येक' ।

श्रीआचकार-पु० (समर वैदेशन) (शिखण-संस्थानों, न्यायार्थी आदिमें होनेवाली) गरीबी कमी छुड़िया।

छटाछोच-पु०... । -अचकार, -अचेश-पु० चारों दिशाओंकी छटनेवाला, गहरा अचकार।

झिबीझी-झी० दे० 'झडी'।

झुमर-वि० घुमरकन।

झुमना-अ० कि० घूमित होना, चक्कर खाना।

झूज-झी० ; झीज, जमीदापन; मसबाकापन (दे० 'झूज-बुधारा', 'बुधारा')।

झोराझी-झी० (किसी देश वा स्थानके) चारों तरफ बैरा काकर निकाल वा विकास बन्द कर देनेका कार्य।

झटझी-झी० चटकापान, चमका; छीमता, फुरती।

झटाझार-वि० चटारै जैसी बुनाबटवाला (कपड़ा इ०)।

झटाका, झटाका-पु०... ; तमाचा, बाटा।

झुरझ-विकास-पु० चारों तरफ होनेवाला, व्यापक, विकास।

झडूकि-झी०... ; बापलुनीसे जरा डुबा कवन।

झालू-वि० जो हल समय चक रहा हो, जारी हो; जो बन्द, खाल वा बेकार न हो गया हो।

झिलारी-पु० ऐवार, 'छाये चार झिलारी'-कम्पकान्ता।

झिरकन-पु० [सं०] झिर बनाने, चिकने रूपमें अंकित करनेका कार्य।

झिरोझिवा-वि० जुनटार (कपड़ा)।

झिमाही-झी० मौन, चुप्पी 'मै चिमार् साथे पवी झी'-टूटे काँटे।

झिमावा-अ० कि० चुप हो जाना, मौन रहना, (मुँदक)।

झुकावरा-पु० (कण) झुकानेकी किवा 'रिनके झुकावरेमें आये ऐसे बहनेसे दाग थे'-घुमनविक्रम।

झुनाच-पु०... । -वाचिका-झी० (इकेन्दन पेटिशन) किसी प्रतिनिधिके जुनाचमें कवेब तरीकीका प्रयोग होनेके विरोधमें दी गयी वाचिका (अजी)।

झूटना-अ० कि० चोटना, चुटकीसे चककर तोटना (विहारी)।

झेंकरी-झी० सिरका ऊपरी नाग, खोपरी (झेंकरीके बाक नोचना-मुँदक)।

झेंडुका-वि० छँटा हुआ; पचा-बुचा।

छपटावा-अ० कि० छिपटाना, छातीसे छपाना।

छपरा-पु० दे० 'छपर' (टूटे काँटे)।

छमाका-पु० मूषमें (छुंवरजीकी आवाजके साथ) बैरीकी चिकन 'जुमती हुत छपर बैरीकी छमाके देने लयी'-अचल मेरा कोई।

छमाच-झी०... ; छमर।

छिरपुट-कि० वि० छिरपटा हुआ, कुछ एक जगह कुछ छूटी जगह, अकम-अकम छमर वा साजवर।

छुवावरा-वि० झूझ 'छुवावरा सब मिथिवा गीरे'-रामा।

जंगनाच-पु० पुन आनेवाला, पुनकी वधावा देनेवाला।

जपकाल-पु० भाँकेकी जल।

जब-... । -बातेकी चक-झी० झीरे-झीरे चकना।

जकाक-वि० जकानेके कामका, जो जकवा जाता हो।

जाति-... । -बाह-पु० (देशकर्म, सेप्टेरीयनिक) जाति-विशेषकी जेठ बताने वा जातिविशेषका पक्ष देनेकी किता जम्मा प्रवृत्ति।

जाफरी-झी० छपरियों आदिका बना टटूर, परदा वा आव।

जिबारी-झी० जीनी, दीदी (मुँदक); बाजी (मुसक)। पु० दे० 'जिबरा'।

जीवन-पु०-जीका-स्त्री० दे० 'रखा-जीका'।

जुगाव-पु० जावइयक सापन वा वस्तु जुटाने, छहति लाकर उपस्थित करनेकी किता, कार्य-सिद्धिका उपाय वा प्रवृत्ति।

जुतिवा-पु० जीवतुनिका मत।

जेबा-स्त्री०... ; समथब, बराबा 'एचमने जेव दी, दीचक हाव साफ किये कि'-अचल मेरा कोई।

झकरा-स्त्री० तेज हवा; झ (मुँदक)।

झिरिवा-स्त्री० छेय हरना, छेदी कुर्वाँ वा गदी जिसमें अपने-आप पानी झरता हो।

झकम-पु०... ; 'दावप राइट' पर बसादि छापने, दावप करनेकी किता। -अच-पु० दे० 'दावप राइट'।

ठकेवहीसी-स्त्री० छुआपन; अथका काम; ठकने वा बहाना बनानेकी किता वा प्रवृत्ति।

झिच-स्त्री०... ; होठक वा जलपानमृदमें बेकराकी दी जाने वाली बरछीस।

टीका टीक-कि० वि० टीकनटीक, टीक, भरपूर, पूर्णतः, निकुल, ऐन 'टीका टीक दीपहरामें बसे देखा'-टूटे काँटे।

टीच-स्त्री०... ; समझाने वा सूचित करनेके लिये बोझमें किसी गयी कोई बात, नोट वा टिप्पणी; बस्तावेज।

हुवर्वा-पु० एक तरहका छोटा तोता।

टेंडुका, टेंडुवा-पु० गला, नट्ट।

टोपारा-दे० 'टिपारा'; बाँसकी तोछियों आदिसे बना बन्ना जैसा बाज, पिटारा।

टोवा-पु० जम्मापनी 'छककीकी कुणकीसे कपकेका टेवा छिकते मिल गया है'।

टेंडुकी-दे० 'कुदकी'।

टोंटा-पु० सियरेट आदिका जवबला टुकना जो घीनेके बाव जमीनपर रेंक दिया जाता है।

टोकनटोक-... स्त्री० चक्कमचक्का।

डब्ब-पु०... ; छोटा बन्ना, छकनदार छोटा बरतन।

डामर-पु०-निर्वातलका रेंक, देश-गिलाका, कामल 'उकका सिर कोहिया, फिर चाहे डामर बाना फरे'-अचल मेरा कोई।

डोसा-पु० पिते हुए चापक वा उकरकी दाकते बननेवाका एक पकवान।

डँच-पु०... । -बाह-पु० मूख्यतः, बाह-रोवा आदिमें विकसल।

डुवकन-पु० [सं०] (दावपुन) तीव्रता, चटकीलपन आदि कम करनेकी किता, झीमीकरण, गाढ़ापन वा तीव्रता कम करनेके लिये किसी (तरफ) बराबरी वाली चिकने वा चिकनीकी किता।

समागोही-वि० तब ही विसका कर हो । पु० क्षतिगा ।
 समाधानी-पु० दे० 'समाधानी' ।
 समेद-पु० तबिके भरतन बनानेवाला ।
 समाना-अ० कि० तर होना; कुछ होना, किसीपर
 विषयता । स० कि० तर करना; कुछ करना ।
 सम्यक्-पु० 'स०' ; दो देशों वा प्रदेशोंकी सीमापर जुंजी आदि
 दिने बिना चोरिते माल पहुँचाने वा छे जानेवाला
 (समगल) । -समाप-पु० चोरिते वा अवैध रूपसे माल
 मंगाने वा मेजनेका व्यापार ।
 सौधिया-वि० तबिके रंगका; तबिका । पु० एक तरहका
 धरतल ।
 सापकेली (खिन्)-पु० (धर्मोप्राप्त) वह आपमापक वंश
 जिसमें आपका घटान-बढान स्वयमेव अंतिम हो जाता है ।
 सामीप्य विभाग-पु० (शी० बज्ज० की०) मध्य-विमोच-
 विभाग ।
 ति-... । -कोमिया-की० कोनोंकी आपनेका एक
 भाग । -मंजिका-वि० तीव्र ध्वनिवाला (मकान) ।
 तिडारी-पु० केसरी नामक झोटा झण्ड ।
 तिकमिषा, तिज्जारी-की० चिनगारी (देख०) ।
 तीव-वि०... । -कावे-पु० शोधमें देता दौब पड़ना,
 जिसमें तीनों पातोंपर एक ही एक बिन्दी ऊपर आवे ।
 तुलकना-अ० कि० दे० 'तिलकना' ।
 तुलसी-की०... । -वरा-पु० आनन्दके मध्यमें बनी वह
 ऊँची (प्रायः चौकोर) जगह जहाँ तुलसीका पौधा लगाया
 जाता है और जिसके चारों तरफ परिक्रमा आदिके लिए
 जाल छूटा रहता है ।
 तेहरा-दे० 'तिहरा' ।
 तैराकी-की० नौनेका कार्य वा भाग । -प्रतिबोधित-
 की० वह समारोह जिसमें तैराकी वा पानीमें खेल जानेवाले
 खेलोंकी प्रतियोगिताका आयोजन हो ।
 तीव-पु०... ; अथवा की वा बेकार कर देनेवाला उपाय वा
 साधन । -कोव-की० नौबने-कोनने, बान-बुझकर नष्ट-भ्रष्ट
 करने वा क्षति पहुँचानेकी क्रिया (नौबेदात्र) ।
 त्वर-पु० [सं०] (विक्रमचन्द्र) किसी कार्य, योजना
 आदिकी पूर्तिमें शीघ्रता करना वा होना; वंश्रादिकी गतिमें
 शीघ्रता होना वा जाना ।
 त्व-पु०... । -हर्ष-पु० शीघ्रता सद्भा होना । 'अम्क रमका
 अधिक मेवम त्व-हर्ष उत्पन्न करता है'-कार्य०, अष्टौ ६४ ।
 दिनद्वन्द्व-कि० वि० दिनमें उस समय जब चारों तरफ
 पूरा प्रकाश हो; ठीक वा भरपूर दिनमें ।
 दुर्घाटी-की० (दुर्घाटी) दे० 'दुर्घाट' (दृष्ट कंठे) ।
 दुरस्सा-वि० दो तरहकी मोतिमाला, राममें वरनी तथा
 समेदें महर ठंडवाला (दिन) । दे० 'दौरता' ।
 धानुक-वि० (और) अपरिष्कृत धातु, अयस्क ।
 नक्षत्र-पु० (नक्षत्राक्षर दिग्ग) श्रुते मौर, निष्ठा-
 विनाय, दिशावदी दुन्ध ।
 नक्षत्र-पु० [सं०] (मौर) नगरकी मर्यादावाला
 प्रधान वा अग्रज ।
 नगरमहापञ्चिका-की० (मुनिविपक काराचरेकम) दे०
 'नगर-निगम' ।

नर्या-पु० जान ।
 नर्यामूर्ति-की० (दिनेसी) दे० 'पुनस्त्वान' ।
 नर्याम-पु० (दिनेसी) दे० 'पुनस्त्वान', नर्यामार्ति ।
 नाक-... । पु० नाकवासीकी वातिका, नाकके मांसखरका,
 एक कण ।
 निजस्वता-की० निजीपन, अपनी विशेषता 'युद्धाधी
 सेली अपनी निजस्वता किन्हे रहती है'-सुधीन्द्र ।
 निजमापयि-की० किसी विधान सभा, संस्था, संस्था,
 आदिके लिए स्वीकृत कार्यविधि अथवा शिष्टाचार-संबंधी
 नियमकी अवहेलनाको कथन कर उठावी मन्वी आपत्ति ।
 निर्दोष-वि० [सं०] जिसका सम्बन्ध किसी दल-विशेषसे
 न हो, स्वतंत्र (सदस्य) ।
 निर्दिष्टासी-वि० जिसका संबंध (शासनके) किसी विभागसे
 न हो, जिसके विषये कोई विभाग न हो (-मंत्री) ।
 निश्चित-वि० निर्दोष 'निश्चित आदेश' शासकके प्रतीक
 और-वाणीका प्रतीक ।
 नैस-वि०... 'रात्रिमें होनेवाला, चल्नेवाला वा काम करने
 वाला (नैस निनाह) ।
 पणि-पु० पणिज (फिनीशिया) (मिश्र ?)का व्यवहार
 (युद्धन विक्रय) ।
 पत्थरकूट-पु० कभी टीनों और पेलक जैसी मोल्लोवाला पत्र,
 पत्थी जो छोटी साबियों तथा जुनी हुई कृषि भूमिपर की,
 तथा छोटे सरोवरोंका शिकार करता है ।
 पथरा-पु० पत्थरों, सेली आदिकी वर्षा (लगाना फेंकना;
 जाना) ।
 पथरी-की० गोबर पाचनेकी क्रिया; गोबर पाचनेकी
 जगह 'गोबर उठाकर पथरीके पास डाल दो'-दृष्ट कंठे ।
 पथरी-की० बंधोका चुम्बन, चुम्बी, मिट्टी-'आ पथरी' 'न
 लगी'-नौशांका, कर० ६४ ।
 पथर-पु० बगलाका एक छन्द जो अनुकूल होता है ।
 पत्तली-अ० दे०, 'पतली' ।
 पादपञ्च-पु० [सं०] (फोर) किसी विशिष्ट प्रदेश, मध्य
 अथवा युगके पौधों, वनस्पति आदिका समूह वा सूची ।
 पादपञ्च-पु० [सं०] किसी अन्य अभिनेता वा अभिनेत्रीके
 दृष्टिके दृष्टिके योग्यता, स्वरक्षण करनेवाला, व्यक्ति ।
 पुरस्कृत-पु० सामने रखने वा लाने वाला, प्रारम्भिक
 वाला 'कहा होली कथिताने पुरस्कृत और वादक'-
 सुधीन्द्र ।
 प्रकाशकी-वि० [सं०] प्रकाशक संबंधी । पु० प्रकाशक
 की ओरसे, प्रकाशके आरम्भमें, दिया जानेवाला वस्तु
 वा निवेदन ।
 प्रवीर-अ० [सं०] प्रेरणा ।
 प्रवाही-वि० प्रधान युद्ध, जो प्रभाव उत्पन्न करे, सामना
 (प्रवाही रूपसे) ।
 प्रलेखन-पु० (इन्फोर्मेशन) कामप्रकार हेतु लेखक
 साहित्यकी शीघ्र, संकलन और व्यवस्थित रूपसे प्रस्तुत
 करनेकी क्रिया ।
 प्रकाश-पु०... ; किसीकी ओरसे दीकने वाला (स्वामीमें):
 प्रतिपादक, प्रतिपादक, पुरस्कृत 'सिद्धांत वत मनके
 प्रकाश के'-सुधीन्द्र ।

शब्दकोश-होमबन्ध—(४) विष्णुवन्दे, केवल, संवत्सरी) केवली को काव्य-पत्र न किने।

शक्ति-वि—(सं०) (सीतिवर) पर वा कमरे वरा। —**कम-वि** परमे सत्ते वरा, सत्तीक (सीतिवर मोक्ष)।

शक्ति, शक्ति-को—; काव्य वा कोटपर किन्नेकी पंक्ति।

शक्तिकुल-पु—(पर कंठीकनिय) कमरे, रेखे वन्दे आदिके भीतरकी हवाकी कुनिय रूपसे समझीतोन्य वनावे रखनेकी क्रिया, ताप-निबन्धन।

शक्तिकुलित-वि—(पर कंठीकन्य) जिसके भीतरकी हवाका वायुवायन सब स्थितिमें रखा गया हो, ताप निबन्धित।

शिक्ष-पु—[सं०] कदाह, आक्षेप, ताना—‘कनिने शिक्षापर शिक्ष किना है’—इत्यादि। शिक्ष वा विष्का रूप।

—काव्य-पु—(सैदापर) वह काव्य जिसमें किसीपर आक्षेप वा कटाक्ष किया गया हो। वि० जिसका रूप विगम गया हो, कुल्य, भदा।

विशेष-पु—[सं०]—विशेष—[इंस्ट्रुमेंट एपिपेट] पु० किसी विशेषण वा गुणका कारणके वरके भारतमें उल्लिखित होना, जिस वस्तुसे उसका संबंध हो उसके वजाय किसी अन्यमें उसका वर्णित होना—‘यह ही कुछ भावने उसके प्राण से किने।’ (कुल विशेषणका प्रयोग वान चक्रानेवालेके वजाय कुल भावने किने किया गया है)।

वीर-...। **वीर-पु**—(वेरुड) वीरता-वृत्त वा वीररस-पूर्ण गीत। **—वृत्त-को**—जाति वा देखके छिप प्राणोत्सर्ग करनेवाले वीरता वा महापुरुषके प्रति प्रकट की जाने वाली मन्त्र।

वैकुण्ठ-पु—(किरिड) गांधे वा सक्ने वीर्य काव्य, गीति-काव्य।

वैकुण्ठ-पु—(यवन-देविक) समय-सारणी, समय-ताकिका।

वीराजी-...। **—को**—शीराजीकी बनी मदिरा, ‘शीराजी और उसके अनेक बहिवा मेरु’—टूटे काँटे।

वीर्य-पु—[सं०]—**—काव्य-को**—वीर्यस्व नेताओं, प्रधान-अंशियों आदिके वीर्य वक्तव्याली वाक्चीत।

वीर्यवीर-पु—(प्लेनी) किसीकी मृत्युपर वा किसीके विरोधमें लिखी गयी कविता।

वीर्य-पु—[सं०] (क्रिस्ट ग्रीसिम) अकम-अकम जातिके पौधों वा जीवोंका प्रारम्भिक ससर्ग या मेक द्वारा उत्पन्न होना, कर्तव्य प्रजनन।

वीर्य-को—[सं०]—**—काव्य-पु**—उपर काव्य, उत्तरती अवका। **—वेक-को**—दे० ‘संचाकाव्य’।

संबोधनी-पु—(और) किसीकी सम्बोधन कर लिखी गयी कविता।

संज्ञा-पु—(विधीजन) प्रत्येक वा राज्यका वहा भाग

जिसमें कोई किने हो।

संस्तुति-को—(रिक्मिन्ट्रन) दे० ‘अभिस्तुति’ लिखा-रिख।

सम्बन्ध-पु—सम्बन्धी वीर्य।

सद्दीप्ती-कि—वि० शीम, समपते कुछ पदके हो ‘अरी सद्दीप्ती ही निकल पड़ी।’—टूटे काँटे। (‘सद्दीप्ती वीर्यवीर’)

सत्तरनी-वि—सात रंगीकाल (रङ्गपञ्च)।

सत्त्वती-को—[सं०]—**—पुत्र-पु**—विद्वान्, दानी व्यक्ति, पंक्ति।

सर्वजगद्गिरि-कि—वि० सपकी मज्जके किने।

सहस्र-को—[सं०] समान मति, विचारोंका मेक जाना, मतभेद।

साक्ष्य-पु—(अटेस्टेशन) किसी प्रमाण पचादिकी प्रतिक्रियापर साक्षी रूपमें हस्ताक्षर कर वह प्रमाणित करना कि वह मूल्यही सही प्रतिक्रिया है; साक्षी रूपमें हस्ताक्षर कर किसी चीजकी सत्यता प्रमाणित करनेका कार्य।

साक्ष्य-वि—(अटेस्टेट) हस्ताक्षर द्वारा जो प्रमाणित किया गया हो, जिसका साक्ष्यजन किया गया हो।

सिर-पु—[सं०]—**—वर्ष-पु**—माथेकी पीका; चिन्ता या परेशानीका कारण।

सुखवाद-पु—(हीरानिम) दे० ‘मौनवाद’।

सुरपुराणा-अ—कि० (शब्द बाहर निकालनेके निरु) ओठीका दिखना, ‘कुछ कलनेकी वस्तुसे ढोठ सुरपुरावे’—टूटे काँटे।

संज्ञा-को—[सं०]—संज्ञाकार वा वीरकर रखनेकी क्रिया: संवय, ‘हरसातके छिप कम्बोकी सेत हो जायगी’—टूटे काँटे।

संज्ञिबा-पु—संज्ञामें काम करनेवाला, साक्षेदार—‘फिर प्रेमके लोहिये बाल-बन्धे वन जाते हैं’—अवध मेरा कोर्।

स्थान-बंधन-पु—(इटनमेड) किसी व्यक्तिका जाना-जाना, चक्रना-फिरना स्थान-विशेष तक सीमित कर दिया जाना, नजरबंदी।

स्वच्छि-वि—[सं०] जिसका अस्तित्व केवल स्वप्नमें हो, स्वप्नमय (स्वप्निक भाषा)।

स्वार्थमन्त्र-अ—[सं०] जिसका मन्त्र स्वार्थमें लट हो, स्वार्थी।

विमकीरीदिनी-को—[सं०] विमका मुकुट धारण करने-वाली, मारत माता।

वीर्यमन्त्र-को—दे० कर्तुमन्त्रता।

वीर-पु—एक बंजायी प्रेयशील।

होमक-पु—(अं०) अपने देखकर अपना फासन, स्वराज; (लोकमान्य तिलक, भीमराव पेढी वेशेष्ट आदि द्वारा स्वयंसे फासनके छिप चक्रना गया आम्नीकन—‘जब होमक होगा, वरवैक कम्य छेगे। हाँ, हाँ जवान सब लो गुरूर जो कुछ हेंगे।’

बोर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

कात नं० ०३०.८- फाल्गुनी

लेखक बाबुलाल प्रसाद

शीर्षक बृहत् हिन्दी शोध